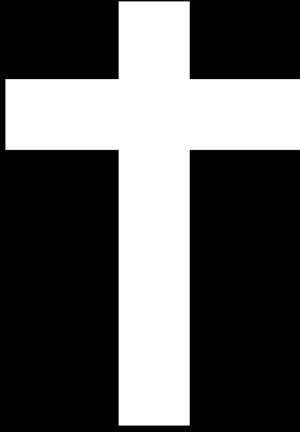


कतिबे-मुकद्दस



The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo Version, Hindi

Script

किताबे-मुकद्दस

# The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo Version, Hindi Script

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: اردو (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2023-11-29

---

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 22 Feb 2024 from source files dated 30 Nov 2023  
a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299

## Contents

पैदाइश . . . . .	1
खुरूज . . . . .	49
अहबार . . . . .	91
गिनती . . . . .	119
इस्तिसना . . . . .	155
यशुअ . . . . .	191
कुजात . . . . .	215
रूत . . . . .	240
1 समुएल . . . . .	244
2 समुएल . . . . .	277
1 सलातीन . . . . .	305
2 सलातीन . . . . .	338
1 तवारीख . . . . .	370
2 तवारीख . . . . .	400
अज़रा . . . . .	436
नहमियाह . . . . .	447
आस्तर . . . . .	463
अय्यूब . . . . .	471
जबूर . . . . .	499
अमसाल . . . . .	587
वाइज़ . . . . .	613
गज़लुल-गज़लात . . . . .	622
यसायाह . . . . .	628
यरमियाह . . . . .	683
नोहा . . . . .	741
हिज़कियेल . . . . .	748
दानियाल . . . . .	799
होसेअ . . . . .	814
योएल . . . . .	823
आमूस . . . . .	826
अबदियाह . . . . .	833
युनुस . . . . .	834
मीकाह . . . . .	836
नाहम . . . . .	841
हबनकूक . . . . .	844
सफनियाह . . . . .	847
हज्जी . . . . .	850
ज़करियाह . . . . .	852
मलाकी . . . . .	861

मत्ती	. . . . .	864
मरकुस	. . . . .	902
लूका	. . . . .	926
यहन्ना	. . . . .	967
आमाल	. . . . .	997
रोमियों	. . . . .	1034
1 कुरिथियों	. . . . .	1051
2 कुरिथियों	. . . . .	1066
गलतियों	. . . . .	1076
इफिसियों	. . . . .	1082
फिलिप्पियों	. . . . .	1087
कुलुस्सियों	. . . . .	1092
1 थिस्सलुनीकियों	. . . . .	1096
2 थिस्सलुनीकियों	. . . . .	1100
1 तीमुथियुस	. . . . .	1102
2 तीमुथियुस	. . . . .	1107
तितुस	. . . . .	1110
फिलेमोन	. . . . .	1112
इबरानियों	. . . . .	1113
याकूब	. . . . .	1127
1 पतरस	. . . . .	1131
2 पतरस	. . . . .	1136
1 यहन्ना	. . . . .	1139
2 यहन्ना	. . . . .	1143
3 यहन्ना	. . . . .	1144
यहूदाह	. . . . .	1145
मुकाशफा	. . . . .	1147

## पैदाइश

दुनिया की तखलीक का पहला दिन : रौशनी

1 इब्निदा में अल्लाह ने आसमान और ज़मीन को बनाया। 2 अभी तक ज़मीन वीरान और खाली थी। वह गहरे पानी से ढकी हुई थी जिसके ऊपर अंधेरा ही अंधेरा था। अल्लाह का रूह पानी के ऊपर मँडला रहा था।

3 फिर अल्लाह ने कहा, “रौशनी हो जाए” तो रौशनी पैदा हो गई। 4 अल्लाह ने देखा कि रौशनी अच्छी है, और उसने रौशनी को तारीकी से अलग कर दिया। 5 अल्लाह ने रौशनी को दिन का नाम दिया और तारीकी को रात का। शाम हुई, फिर सुबह। यों पहला दिन गुज़र गया।

दूसरा दिन : आसमान

6 अल्लाह ने कहा, “पानी के दरमियान एक ऐसा गुंबद पैदा हो जाए जिससे निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो जाए।” 7 ऐसा ही हुआ। अल्लाह ने एक ऐसा गुंबद बनाया जिससे निचला पानी ऊपर के पानी से अलग हो गया। 8 अल्लाह ने गुंबद को आसमान का नाम दिया। शाम हुई, फिर सुबह। यों दूसरा दिन गुज़र गया।

तीसरा दिन : ख़ुशक ज़मीन और पौदे

9 अल्लाह ने कहा, “जो पानी आसमान के नीचे है वह एक जगह जमा हो जाए ताकि दूसरी तरफ़ ख़ुशक जगह नज़र आए।” ऐसा ही हुआ। 10 अल्लाह ने ख़ुशक जगह को ज़मीन का नाम दिया और जमाशुदा पानी को समुंदर का। और अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। 11 फिर उसने कहा, “ज़मीन हरियावल पैदा करे, ऐसे पौदे जो बीज रखते हों और ऐसे दरख़्त जिनके फल अपनी अपनी क्रिस्म के बीज रखते हों।” ऐसा ही हुआ। 12 ज़मीन ने हरियावल पैदा की, ऐसे पौदे जो अपनी अपनी क्रिस्म के बीज रखते और ऐसे दरख़्त जिनके फल अपनी अपनी क्रिस्म के बीज रखते थे। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। 13 शाम हुई, फिर सुबह। यों तीसरा दिन गुज़र गया।

चौथा दिन : सूरज, चाँद और सितारे

14 अल्लाह ने कहा, “आसमान पर रौशनियाँ पैदा हो जाएँ ताकि दिन और रात में इम्तियाज़ हो और इसी तरह मुख़तलिफ़ मौसमों, दिनों और सालों में भी। 15 आसमान की यह रौशनियाँ दुनिया को रौशन करें।” ऐसा ही हुआ। 16 अल्लाह ने दो बड़ी रौशनियाँ बनाई, सूरज जो बड़ा था दिन पर हुकूमत करने को और चाँद जो छोटा था रात पर। इनके अलावा उसने सितारों को भी बनाया। 17 उसने उन्हें आसमान पर रखा ताकि वह दुनिया को रौशन करें, 18 दिन और रात पर हुकूमत करें और रौशनी और तारीकी में इम्तियाज़ पैदा करें। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। 19 शाम हुई, फिर सुबह। यों चौथा दिन गुज़र गया।

पाँचवाँ दिन : पानी और हवा के जानदार

20 अल्लाह ने कहा, “पानी आबी जानदारों से भर जाए और फ़िज़ा में परिदे उडते फ़िरें।” 21 अल्लाह ने बड़े बड़े समुंदरी जानवर बनाए, पानी की तमाम दीगर मख़लूक़ात और हर क्रिस्म के पर रखनेवाले जानदार भी बनाए। अल्लाह ने देखा कि यह अच्छा है। 22 उसने उन्हें बरक़त दी और कहा, “फ़लो-फ़लो और तादाद में बढ़ते जाओ। समुंदर तुमसे भर जाए। इसी तरह परिदे ज़मीन पर तादाद में बढ़ जाएँ।” 23 शाम हुई, फिर सुबह। यों पाँचवाँ दिन गुज़र गया।

छठा दिन : ज़मीन पर चलनेवाले जानवर और इनसान

24 अल्लाह ने कहा, “ज़मीन हर क्रिस्म के जानदार पैदा करे : मवेशी, रेंगनेवाले और जंगली जानवर।” ऐसा ही हुआ। 25 अल्लाह ने हर क्रिस्म के मवेशी, रेंगनेवाले और जंगली जानवर बनाए। उसने देखा कि यह अच्छा है।

26 अल्लाह ने कहा, “आओ अब हम इनसान को अपनी सूरत पर बनाएँ, वह हमसे मुशाबहत रखे। वह तमाम जानवरों पर हुकूमत करे, समुंदर की मछलियों पर, हवा के परिदों पर, मवेशियों पर, जंगली जानवरों पर और ज़मीन पर के तमाम रेंगनेवाले जानदारों पर।” 27 यों अल्लाह ने इनसान को अपनी सूरत पर बनाया, अल्लाह की सूरत पर। उसने उन्हें मर्द और औरत बनाया। 28 अल्लाह ने उन्हें बरक़त दी और कहा, “फ़लो-फ़लो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे भर जाए और तुम उस पर इख़्तियार रखो। समुंदर की मछलियों, हवा के परिदों और ज़मीन पर के तमाम रेंगनेवाले जानदारों पर हुकूमत करो।”

29 अल्लाह ने उनसे मज़ीद कहा, “तमाम बीजदार पौदे और फलदार दरख्त तुम्हारे ही हैं। मैं उन्हें तुमको खाने के लिए देता हूँ। 30 इस तरह मैं तमाम जानवरों को खाने के लिए हरियाली देता हूँ। जिसमें भी जान है वह यह खा सकता है, खाह वह ज़मीन पर चलने-फिरनेवाला जानवर, हवा का परिदा या ज़मीन पर रेंगनेवाला क्यो न हो।” ऐसा ही हुआ। 31 अल्लाह ने सब पर नज़र की तो देखा कि वह बहुत अच्छा बन गया है। शाम हुई, फिर सुबह। छटा दिन गुज़र गया।

## 2

### सातवाँ दिन : आराम

1 यों आसमानो-ज़मीन और उनकी तमाम चीज़ों की तखलीक मुकम्मल हुई। 2 सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तकमील को पहुँचा। इससे फ़ारिग होकर उसने आराम किया। 3 अल्लाह ने सातवें दिन को बरकत दी और उसे मख्सूसो-मुक़द्दस किया। क्योकि उस दिन उसने अपने तमाम तखलीकी काम से फ़ारिग होकर आराम किया।

### आदम और हव्वा

4 यह आसमानो-ज़मीन की तखलीक का बयान है। जब रब ख़ुदा ने आसमानो-ज़मीन को बनाया 5 तो शुरू में झाड़ियों और पौदे नहीं उगते थे। वज़ह यह थी कि अल्लाह ने बारिश का इंतज़ाम नहीं किया था। और अभी इनसान भी पैदा नहीं हुआ था कि ज़मीन की खेतीबाड़ी करता। 6 इसकी बजाए ज़मीन में से धुंध उठकर उस की पूरी सतह को तर करती थी। 7 फिर रब ख़ुदा ने ज़मीन से मिट्टी लेकर इनसान को तश्कील दिया और उसके नथनों में ज़िंदगी का दम फूँका तो वह जीती जान हुआ।

8 रब ख़ुदा ने मशरिक में मुल्के-अदन में एक बाग लगाया। उसमें उसने उस आदमी को रखा जिसे उसने बनाया था। 9 रब ख़ुदा के हुक्म पर ज़मीन में से तरह तरह के दरख्त फूट निकले, ऐसे दरख्त जो देखने में दिलकश और खाने के लिए अच्छे थे। बाग के बीच में दो दरख्त थे। एक का फल ज़िंदगी बख़्शता था जबकि दूसरे का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता था। 10 अदन में से एक दरिया निकलकर बाग की आबपाशी करता था। वहाँ से बहकर वह चार शाखों में तकसीम हुआ। 11-12 पहली शाख का नाम फीसून है। वह मुल्के-हवीला को घेरे हुए बहती है जहाँ खालिस सोना, गूगल का गूँद और अक्कीके-अहमर \* पाए जाते हैं। 13 दूसरी का नाम जैहन है जो कूश को घेरे हुए बहती है। 14 तीसरी का नाम दिजला है जो असूर के मशरिक को जाती है और चौथी का नाम फुरात है।

15 रब ख़ुदा ने पहले आदमी को बागो-अदन में रखा ताकि वह उस की बागबानी और हिफाज़त करे। 16 लेकिन रब ख़ुदा ने उसे आगाह किया, “तुझे हर दरख्त का फल खाने की इजाज़त है। 17 लेकिन जिस दरख्त का फल अच्छे और बुरे की पहचान दिलाता है उसका फल खाना मना है। अगर उसे खाए तो यक़ीनन मरेगा।”

18 रब ख़ुदा ने कहा, “अच्छा नहीं कि आदमी अकेला रहे। मैं उसके लिए एक मुनासिब मददगार बनाता हूँ।”

19 रब ख़ुदा ने मिट्टी से ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले जानवर और हवा के परिदे बनाए थे। अब वह उन्हें आदमी के पास ले आया ताकि मालूम हो जाए कि वह उनके क्या क्या नाम रखेगा। यों हर जानवर को आदम की तरफ से नाम मिल गया।

20 आदमी ने तमाम मवेशियों, परिदों और ज़मीन पर फिरनेवाले जानदारों के नाम रखे। लेकिन उसे अपने लिए कोई मुनासिब मददगार न मिला।

21 तब रब ख़ुदा ने उसे सुला दिया। जब वह गहरी नींद सो रहा था तो उसने उस की पसलियों में से एक निकालकर उस की जगह गोशत भर दिया। 22 पसली से उसने औरत बनाई और उसे आदमी के पास ले आया। 23 उसे देखकर वह पुकार उठा, “वाह! यह तो मुझ जैसी ही है, मेरी हड्डियों में से हड्डी और मेरे गोशत में से गोशत है। इसका नाम नारी रखा जाए क्योकि वह नर से निकाली गई है।” 24 इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है, और वह दोनों एक हो जाते हैं। 25 दोनों, आदमी और औरत नंगे थे, लेकिन यह उनके लिए शर्म का बाइस नहीं था।

## 3

### गुनाह का आगाज़

1 साँप ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले उन तमाम जानवरों से ज़्यादा चालाक था जिनको रब ख़ुदा ने बनाया था। उसने औरत से पूछा, “क्या अल्लाह ने वाकई कहा कि बाग के किसी भी दरख्त का फल न खाना?” 2 औरत ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं। हम बाग का हर फल खा सकते हैं, 3 सिर्फ़ उस दरख्त के फल से गुरेज़ करना है जो बाग के बीच में है। अल्लाह ने कहा कि उसका फल न खाओ बल्कि उसे छूना भी नहीं, वरना तुम यक़ीनन मर जाओगे।” 4 साँप ने औरत से कहा, “तुम हरगिज़ न मरोगे, 5 बल्कि अल्लाह जानता है कि जब तुम उसका फल खाओगे तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम अल्लाह की मानिंद हो जाओगे, तुम जो भी अच्छा और बुरा है उसे जान लोगे।”

\* 2:11-12 carnelian

6 औरत ने दरख्त पर गौर किया कि खाने के लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सबसे दिलफरेब बात यह कि उससे समझ हासिल हो सकती है! यह सोचकर उसने उसका फल लेकर उसे खाया। फिर उसने अपने शौहर को भी दे दिया, क्योंकि वह उसके साथ था। उसने भी खा लिया। 7 लेकिन खाते ही उनकी आँखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि हम नगे हैं। चुनौचे उन्होंने अंजीर के पत्ते सीकर लुंगियाँ बना लीं।

8 शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी तो उन्होंने रब खुदा को बाग़ में चलते-फिरते सुना। वह डर के मापे दरख्तों के पीछे छुप गए। 9 रब खुदा ने पुकारकर कहा, “आदम, तू कहाँ है?” 10 आदम ने जवाब दिया, “मैंने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना तो डर गया, क्योंकि मैं नंगा हूँ। इसलिए मैं छुप गया।” 11 उसने पूछा, “किसने तुझे बताया कि तू नंगा है? क्या तूने उस दरख्त का फल खाया है जिसे खाने से मैंने मना किया था?” 12 आदम ने कहा, “जो औरत तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है उसने मुझे फल दिया। इसलिए मैंने खा लिया।” 13 अब रब खुदा औरत से मुखातिब हुआ, “तूने यह क्यों किया?” औरत ने जवाब दिया, “साँप ने मुझे बहकाया तो मैंने खाया।”

14 रब खुदा ने साँप से कहा, “चूँकि तूने यह किया, इसलिए तू तमाम मवेशियों और जंगली जानवरों में लानती है। तू उग्र-भर पेट के बल रेंगेगा और खाक चाटेगा। 15 मैं तेरे और औरत के दरमिथान दुश्मनी पैदा करूँगा। उस की औलाद तेरी औलाद की दुश्मन होगी। वह तेरे सर को कुचल डालेगी जबकि तू उस की एड़ी पर काटेगा।”

16 फिर रब खुदा औरत से मुखातिब हुआ और कहा, “जब तू उम्मीद से होगी तो मैं तेरी तकलीफ़ को बहुत बढ़ाऊँगा। जब तेरे बच्चे होंगे तो तू शदीद दर्द का शिकार होगी। तू अपने शौहर की तमन्ना करेगी लेकिन वह तुझ पर हकूमत करेगा।”

17 आदम से उसने कहा, “तूने अपनी बीवी की बात मानी और उस दरख्त का फल खाया जिसे खाने से मैंने मना किया था। इसलिए तेरे सबब से ज़मीन पर लानत है। उससे खुराक हासिल करने के लिए तुझे उग्र-भर मेहनत-मशक्कत करनी पड़ेगी। 18 तेरे लिए वह खारदार पौदे और ऊँटकटारे पैदा करेगी, हालाँकि तू उससे अपनी खुराक भी हासिल करेगा। 19 पसीना बहा बहाकर तुझे रोटी कमाने के लिए भाग-दौड़ करनी पड़ेगी। और यह सिलसिला मौत तक जारी रहेगा। तू मेहनत करते करते दुबारा ज़मीन में लौट जाएगा, क्योंकि तू उसी से लिया गया है। तू खाक है और दुबारा खाक में मिल जाएगा।”

20 आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा यानी ज़िंदगी रखा, क्योंकि बाद में वह तमाम ज़िंदों की माँ बन गई। 21 रब खुदा ने आदम और उस की बीवी के लिए खालों से लिबास बनाकर उन्हें पहनाया। 22 उसने कहा, “इन्सान हमारी मानिंद हो गया है, वह अच्छे और बुरे का इम रखता है। अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर ज़िंदगी बख़्खनेवाले दरख्त के फल से ले और उससे खाकर हमेशा तक ज़िंदा रहे।” 23 इसलिए रब खुदा ने उसे बाग़े-अदन से निकालकर उस ज़मीन की खेतीबाड़ी करने की ज़िम्मादारी दी जिसमें से उसे लिया गया था। 24 इन्सान को खारिज करने के बाद उसने बाग़े-अदन के मशरिक़ में कस्बी फरिशते खड़े किए और साथ साथ एक आतिशी तलवार रखी जो इधर-उधर घूमती थी ताकि उस रास्ते की हिफ़ाज़त करे जो ज़िंदगी बख़्खनेवाले दरख्त तक पहुँचाता था।

## 4

### काबील और हाबील

1 आदम हव्वा से हमबिसतर हुआ तो उनका पहला बेटा काबील पैदा हुआ। हव्वा ने कहा, “रब की मदद से मैंने एक मर्द हासिल किया है!” 2 बाद में काबील का भाई हाबील पैदा हुआ। हाबील भेड़-बकरियों का चरवाहा बन गया जबकि काबील खेतीबाड़ी करने लगा।

### पहला क़त्ल

3 कुछ देर के बाद काबील ने रब को अपनी फसलों में से कुछ पेश किया। 4 हाबील ने भी नज़राना पेश किया, लेकिन उसने अपनी भेड़-बकरियों के कुछ पहलौठे उनकी चरबी समेत चढ़ाए। हाबील का नज़राना रब को पसंद आया, 5 मगर काबील का नज़राना मंज़ूर न हुआ। यह देखकर काबील बड़े गुस्से में आ गया, और उसका मुँह बिगड़ गया। 6 रब ने पूछा, “तू गुस्से में क्यों आ गया है? तेरा मुँह क्यों लटका हुआ है? 7 क्या अगर तू अच्छी नीयत रखता है तो अपनी नज़र उठाकर मेरी तरफ़ नहीं देख सकेगा? लेकिन अगर अच्छी नीयत नहीं रखता तो खबरदार! गुनाह दरवाज़े पर दबका बैठा है और तुझे चाहता है। लेकिन तेरा फ़र्ज़ है कि उस पर गालिब आए।”

8 एक दिन काबील ने अपने भाई से कहा, “आओ, हम बाहर खुले मैदान में चलें!” और जब वह खुले मैदान में थे तो काबील ने अपने भाई हाबील पर हमला करके उसे मार डाला।

9 तब रब ने काबील से पूछा, “तेरा भाई हाबील कहाँ है?” काबील ने जवाब दिया, “मुझे क्या पता! क्या अपने भाई की देख-भाल करना मेरी ज़िम्मादारी है?” 10 रब ने कहा, “तूने क्या किया है? तेरे भाई का खून ज़मीन में से पुकारकर मुझसे फ़रियाद कर रहा है। 11 इसलिए तुझ पर लानत है और ज़मीन ने तुझे रद्द किया है, क्योंकि ज़मीन को मुँह खोलकर

तेरे हाथ से कत्ल किए हुए भाई का खून पीना पड़ा।<sup>12</sup> अब से जब तू खेतीबाड़ी करेगा तो ज़मीन अपनी पैदावार देने से इनकार करेगी। तू मफ़्कर होकर मारा मारा फिरेगा।”<sup>13</sup> काबील ने कहा, “मेरी सज़ा निहायत सख्त है। मैं इसे बरदाश्त नहीं कर पाऊँगा।<sup>14</sup> आज तू मुझे ज़मीन की सतह से भगा रहा है और मुझे तेरे हुज़ूर से भी छुप जाना है। मैं मफ़्कर की हैसियत से मारा मारा फिरता रहूँगा, इसलिए जिसको भी पता चलेगा कि मैं कहीं हूँ वह मुझे कत्ल कर डालेगा।”<sup>15</sup> लेकिन रब ने उससे कहा, “हरगिज़ नहीं। जो काबील को कत्ल करे उससे सात गुना बदला लिया जाएगा।” फिर रब ने उस पर एक निशान लगाया ताकि जो भी काबील को देखे वह उसे कत्ल न कर दे।<sup>16</sup> इसके बाद काबील रब के हुज़ूर से चला गया और अदन के मशरिक की तरफ़ नोद के इलाके में जा बसा।

### काबील का खानदान

<sup>17</sup> काबील की बीवी हामिला हुई। बेटा पैदा हुआ जिसका नाम हनूक रखा गया। काबील ने एक शहर तामीर किया और अपने बेटे की खुशी में उसका नाम हनूक रखा।<sup>18</sup> हनूक का बेटा ईराद था, ईराद का बेटा महयाएल, महयाएल का बेटा मत्साएल और मत्साएल का बेटा लमक था।<sup>19</sup> लमक की दो बहिन थीं, अदा और ज़िल्ला।<sup>20</sup> अदा का बेटा याबल था। उस की नसल के लोग खैमों में रहते और मवेशी पालते थे।<sup>21</sup> याबल का भाई युबल था। उस की नसल के लोग सरोद \* और बाँसरी बजाते थे।<sup>22</sup> ज़िल्ला के भी बेटा पैदा हुआ जिसका नाम तुबल-काबील था। वह लोहार था। उस की नसल के लोग पीतल और लोहे की चीज़ें बनाते थे। तुबल-काबील की बहन का नाम नामा था।<sup>23</sup> एक दिन लमक ने अपनी बहिनों से कहा, “अदा और ज़िल्ला, मेरी बात सुनो! लमक की बहिनों, मेरे अलफ़ाज़ पर गौर करो!”<sup>24</sup> एक आदमी ने मुझे ज़ख़मी किया तो मैंने उसे मार डाला। एक लड़के ने मेरे चोट लगाई तो मैंने उसे कत्ल कर दिया। जो काबील को कत्ल करे उससे सात गुना बदला लिया जाएगा, लेकिन जो लमक को कत्ल करे उससे सततर गुना बदला लिया जाएगा।”

### सेत और अनूस

<sup>25</sup> आदम और हव्वा का एक और बेटा पैदा हुआ। हव्वा ने उसका नाम सेत रखकर कहा, “अल्लाह ने मुझे हाबील की जगह जिसे काबील ने कत्ल किया एक और बेटा बरखा है।”<sup>26</sup> सेत के हाँ भी बेटा पैदा हुआ। उसने उसका नाम अनूस रखा।

उन दिनों में लोग रब का नाम लेकर इबादत करने लगे।

## 5

### आदम से नूह तक का नसबनामा

<sup>1</sup> ज़ैल में आदम का नसबनामा दर्ज है।

जब अल्लाह ने इनसान को खलक किया तो उसने उसे अपनी सूरत पर बनाया।<sup>2</sup> उसने उन्हें मर्द और औरत पैदा किया। और जिस दिन उसने उन्हें खलक किया उसने उन्हें बरकत देकर उनका नाम आदम यानी इनसान रखा।

<sup>3</sup> आदम की उम्र 130 साल थी जब उसका बेटा सेत पैदा हुआ। सेत सूरत के लिहाज़ से अपने बाप की मानिंद था, वह उससे मुशाबहत रखता था।<sup>4</sup> सेत की पैदाइश के बाद आदम मज़ीद 800 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।<sup>5</sup> वह 930 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

<sup>6</sup> सेत 105 साल का था जब उसका बेटा अनूस पैदा हुआ।<sup>7</sup> इसके बाद वह मज़ीद 807 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।<sup>8</sup> वह 912 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

<sup>9</sup> अनूस 90 बरस का था जब उसका बेटा क्रीनान पैदा हुआ।<sup>10</sup> इसके बाद वह मज़ीद 815 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।<sup>11</sup> वह 905 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

<sup>12</sup> क्रीनान 70 साल का था जब उसका बेटा महललेल पैदा हुआ।<sup>13</sup> इसके बाद वह मज़ीद 840 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।<sup>14</sup> वह 910 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

<sup>15</sup> महललेल 65 साल का था जब उसका बेटा यारिद पैदा हुआ।<sup>16</sup> इसके बाद वह मज़ीद 830 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।<sup>17</sup> वह 895 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

<sup>18</sup> यारिद 162 साल का था जब उसका बेटा हनूक पैदा हुआ।<sup>19</sup> इसके बाद वह मज़ीद 800 साल ज़िंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।<sup>20</sup> वह 962 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

\* 4:21 लफ़्ज़ी तरजूमा : चंग। चूँकि यह साज़ बर्न-सगीर में कम ही इस्तेमाल होता है, इसलिए मुतरज़मीन ने इसकी जगह लफ़्ज़ ‘सरोद’ इस्तेमाल किया है।



21 हनुक 65 साल का था जब उसका बेटा मत्सिलह पैदा हुआ। 22 इसके बाद वह मज्जीद 300 साल अल्लाह के साथ चलता रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 23 वह कुल 365 साल दुनिया में रहा। 24 हनुक अल्लाह के साथ साथ चलता था। 365 साल की उम्र में वह गायब हुआ, क्योंकि अल्लाह ने उसे उठा लिया।

25 मत्सिलह 187 साल का था जब उसका बेटा लमक पैदा हुआ। 26 वह मज्जीद 782 साल जिंदा रहा। उसके और बेटे और बेटियाँ भी पैदा हुए। 27 वह 969 साल की उम्र में फौत हुआ।

28 लमक 182 साल का था जब उसका बेटा पैदा हुआ। 29 उसने उसका नाम नूह यानी तसल्ली रखा, क्योंकि उसने उसके बारे में कहा, “हमारा खेतीबाड़ी का काम निहायत तकलीफदेह है, इसलिए कि अल्लाह ने ज़मीन पर लानत भेजी है। लेकिन अब हम बेटे की मारिफत तसल्ली पाएँगे।” 30 इसके बाद वह मज्जीद 595 साल जिंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए। 31 वह 777 साल की उम्र में फौत हुआ।

32 नूह 500 साल का था जब उसके बेटे सिम, हाम और याफत पैदा हुए।

## 6

### लोगों की ज्यादातियाँ

1 दुनिया में लोगों की तादाद बढ़ने लगी। उनके हों बेटियाँ पैदा हुईं। 2 तब आसमानी हस्तियों ने देखा कि बनी नौ इनसान की बेटियाँ खूबसूरत हैं, और उन्होंने उनमें से कुछ चुनकर उनसे शादी की। 3 फिर रब ने कहा, “मेरी रूह हमेशा के लिए इनसान में न रहे क्योंकि वह फ़ानी मखलूक है। अब से वह 120 साल से ज़्यादा जिंदा नहीं रहेगा।” 4 उन दिनों में और बाद में भी दुनिया में देवकामत अफ़राद थे जो इनसानी औरतों और उन आसमानी हस्तियों की शादियों से पैदा हुए थे। यह देवकामत अफ़राद क़दीम ज़माने के मशहूर सूरमा थे।

5 रब ने देखा कि इनसान निहायत बिगड़ गया है, कि उसके तमाम खयालात लगातार बुराई की तरफ़ मायल रहते हैं। 6 वह पछताया कि मैंने इनसान को बनाकर दुनिया में रख दिया है, और उसे सख्त दुख हुआ। 7 उसने कहा, “मो मैं ही ने इनसान को खलक किया मैं उसे रू-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा। मैं न सिर्फ़ लोगों को बल्कि ज़मीन पर चलने-फिरने और रंगनेवाले जानवरों और हवा के परिदों को भी हलाक कर दूँगा, क्योंकि मैं पछताता हूँ कि मैंने उनको बनाया।”

### बड़े सैलाब के लिए नूह की तैयारियाँ

8 सिर्फ़ नूह पर रब की नज़रे-करम थी। 9 यह उस की जिंदगी का बयान है।

नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में सिर्फ़ वही बेकूसूर था। वह अल्लाह के साथ साथ चलता था। 10 नूह के तीन बेटे थे, सिम, हाम और याफत। 11 लेकिन दुनिया अल्लाह की नज़र में बिगड़ी हुई और ज़ुल्मो-तशद्द से भरी हुई थी। 12 जहाँ भी अल्लाह देखता दुनिया खराब थी, क्योंकि तमाम जानदारों ने ज़मीन पर अपनी रविश को बिगाड़ दिया था।

13 तब अल्लाह ने नूह से कहा, “मैंने तमाम जानदारों को खत्म करने का फैसला किया है, क्योंकि उनके सबब से पूरी दुनिया ज़ुल्मो-तशद्द से भर गई है। चुनौचे मैं उनको ज़मीन समेत तबाह कर दूँगा। 14 अब अपने लिए सरो\* की लकड़ी की कश्ती बना ले। उसमें कमरे हों और उसे अंदर और बाहर तारकोल लगा। 15 उस की लंबाई 450 फुट, चौड़ाई 75 फुट और ऊँचाई 45 फुट हो। 16 कश्ती की छत को यों बनाना कि उसके नीचे 18 इंच खुला रहे। एक तरफ़ दरवाज़ा हो, और उस की तीन मनज़िलें हों। 17 मैं पानी का इतना बड़ा सैलाब लाऊँगा कि वह ज़मीन के तमाम जानदारों को हलाक कर डालेगा। ज़मीन पर सब कुछ फ़ना हो जाएगा। 18 लेकिन तेरे साथ मैं अहद बाँधूँगा जिसके तहत तू अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं के साथ कश्ती में जाएगा। 19 हर क्रिस्म के जानवर का एक नर और एक मादा भी अपने साथ कश्ती में ले जाना ताकि वह तेरे साथ जीते बचें। 20 हर क्रिस्म के पर रखनेवाले जानवर और हर क्रिस्म के ज़मीन पर फिरने या रंगनेवाले जानवर दो दो होकर तेरे पास आएँगे ताकि जीते बच जाँएँ। 21 जो भी खुराक दरकार है उसे अपने और उनके लिए जमा करके कश्ती में महफूज़ कर लेना।”

22 नूह ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा अल्लाह ने उसे बताया।

## 7

### सैलाब का अगाज़

1 फिर रब ने नूह से कहा, “अपने घराने समेत कश्ती में दाखिल हो जा, क्योंकि इस दौर के लोगों में से मैंने सिर्फ़ तुझे रास्तबाज़ पाया है। 2 हर क्रिस्म के पाक जानवरों में से सात सात नरो-मादा के जोड़े जबकि नापाक जानवरों में से नरो-मादा

\* 6:14 इब्रानी लफ्ज़ मतस्क है। शायद इसका मतलब सरो या देवदार की लकड़ी हो।

का सिर्फ एक एक जोड़ा साथ ले जाना। 3 इसी तरह हर क्रिस्म के पर रखनेवालों में से सात सात नरो-मादा के जोड़े भी साथ ले जाना ताकि उनकी नसलें बची रहें। 4 एक हफते के बाद मैं चालीस दिन और चालीस रात मुतवातिर बारिश बरसाऊंगा। इससे मैं तमाम जानदारों को रूप-जमीन पर से मिटा डालूँगा, अगरचे मैं ही ने उन्हें बनाया है।”

5 नूह ने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था। 6 वह 600 साल का था जब यह तूफानी सैलाब जमीन पर आया।

7 तूफानी सैलाब से बचने के लिए नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं के साथ कशती में सवार हुआ। 8 जमीन पर फिरनेवाले पाक और नापाक जानवर, पर रखनेवाले और तमाम रंगनेवाले जानवर भी आए। 9 नरो-मादा की सूत में दो दो होकर वह नूह के पास आकर कशती में सवार हुए। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था। 10 एक हफते के बाद तूफानी सैलाब जमीन पर आ गया।

11 यह सब कुछ उस वक्त हुआ जब नूह 600 साल का था। दूसरे महीने के 17वें दिन जमीन की गहराइयों में से तमाम चश्मे फूट निकले और आसमान पर पानी के दरीचे खुल गए। 12 चालीस दिन और चालीस रात तक मूसलाधार बारिश होती रही। 13 जब बारिश शुरू हुई तो नूह, उसके बेटे सिम, हाम और याफत, उस की बीवी और बहुएँ कशती में सवार हो चुके थे। 14 उनके साथ हर क्रिस्म के जंगली जानवर, मवेशी, रंगने और पर रखनेवाले जानवर थे। 15 हर क्रिस्म के जानदार दो दो होकर नूह के पास आकर कशती में सवार हो चुके थे। 16 नरो-मादा आए थे। सब कुछ वैसा ही हुआ था जैसा अल्लाह ने नूह को हुक्म दिया था। फिर रब ने दरवाजे को बंद कर दिया।

17 चालीस दिन तक तूफानी सैलाब जारी रहा। पानी चढा तो उसने कशती को जमीन पर से उठा लिया। 18 पानी जोर पकड़कर बहुत बढ गया, और कशती उस पर तैरने लगी। 19 आखिरकार पानी इतना ज्यादा हो गया कि तमाम ऊँचे पहाड भी उसमें छुप गए, 20 बल्कि सबसे ऊँची चोटी पर पानी की गहराई 20 फुट थी। 21 जमीन पर रहनेवाली हर मखलूक हलाक हुई। परिदे, मवेशी, जंगली जानवर, तमाम जानदार जिनसे जमीन भरी हुई थी और इनसान, सब कुछ मर गया। 22 जमीन पर हर जानदार मखलूक हलाक हुई। 23 यों हर मखलूक को रूप-जमीन पर से मिटा दिया गया। इनसान, जमीन पर फिरने और रंगनेवाले जानवर और परिदे, सब कुछ खत्म कर दिया गया। सिर्फ नूह और कशती में सवार उसके साथी बच गए।

24 सैलाब डेढ सौ दिन तक जमीन पर गालिब रहा।

## 8

### सैलाब का इखिताम

1 लेकिन अल्लाह को नूह और तमाम जानवर याद रहे जो कशती में थे। उसने हवा चला दी जिससे पानी कम होने लगा। 2 जमीन के चश्मे और आसमान पर के पानी के दरीचे बंद हो गए, और बारिश रूक गई। 3 पानी घटता गया। 150 दिन के बाद वह काफी कम हो गया था। 4 सातवें महीने के 17वें दिन कशती अरारत के एक पहाड पर टिक गई। 5 दसवें महीने के पहले दिन पानी इतना कम हो गया था कि पहाडों की चोटियाँ नजर आने लगी थीं।

6-7 चालीस दिन के बाद नूह ने कशती की खिड़की खोलकर एक कौवा छोड दिया, और वह उडकर चला गया। लेकिन जब तक जमीन पर पानी था वह आता जाता रहा। 8 फिर नूह ने एक कबूतर छोड दिया ताकि पता चले कि जमीन पानी से निकल आई है या नहीं। 9 लेकिन कबूतर को कहीं भी बैठने की जगह न मिली, क्योंकि अब तक पूरी जमीन पर पानी ही पानी था। वह कशती और नूह के पास वापस आ गया, और नूह ने अपना हाथ बढ़ाया और कबूतर को पकड़कर अपने पास कशती में रख लिया।

10 उसने एक हफता और इंतजार करके कबूतर को दुबारा छोड दिया। 11 शाम के वक्त वह लौट आया। इस दफा उस की चोंच में जैतून का ताजा पत्ता था। तब नूह को मालूम हुआ कि जमीन पानी से निकल आई है।

12 उसने मज्जीद एक हफते के बाद कबूतर को छोड दिया। इस दफा वह वापस न आया।

13 जब नूह 601 साल का था तो पहले महीने के पहले दिन जमीन की सतह पर पानी खत्म हो गया। तब नूह ने कशती की छत खोल दी और देखा कि जमीन की सतह पर पानी नहीं है। 14 दूसरे महीने के 27वें दिन जमीन बिलकुल खूबक हो गई।

15 फिर अल्लाह ने नूह से कहा, 16 “अपनी बीवी, बेटों और बहुओं के साथ कशती से निकल आ। 17 जितने भी जानवर साथ हैं उन्हें निकाल दे, खाह परिदे हों, खाह जमीन पर फिरने या रंगनेवाले जानवर। वह दुनिया में फैल जाएँ, नसल बढ़ाएँ और तादाद में बढ़ते जाएँ।” 18 चुनौचे नूह अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं समेत निकल आया। 19 तमाम जानवर और परिदे भी अपनी अपनी क्रिस्म के गुरोहों में कशती से निकले।

20 उस वक्त नूह ने रब के लिए कुरबानागाह बनाई। उसने तमाम फिरने और उडनेवाले पाक जानवरों में से कुछ चुनकर उन्हें ज़बह किया और कुरबानागाह पर पूरी तरह जला दिया। 21 यह कुरबानियाँ देखकर रब खुश हुआ और अपने दिल में

कहा, “अब से मैं कभी ज़मीन पर इनसान की वजह से लानत नहीं भेजूँगा, क्योंकि उसका दिल बचपन ही से बुराई की तरफ माथल है। अब से मैं कभी इस तरह तमाम जान रखनेवाली मखलूक़ात को रूप-ज़मीन पर से नहीं मिटाऊँगा।” 22 दुनिया के मुर्कररा औकात जारी रहेंगे। बीज बोने और फ़सल काटने का वक़्त, ठंड और तपिश, गरमियों और सर्दियों का मौसम, दिन और रात, यह सब कुछ दुनिया के अख़ीर तक कायम रहेगा।”

## 9

अल्लाह का नूह के साथ अहद

1 फिर अल्लाह ने नूह और उसके बेटों को बरकत देकर कहा, “फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया तुमसे भर जाए। 2 ज़मीन पर फिरने और रेंगनेवाले जानवर, परिदे और मछलियाँ सब तुमसे डरेंगे। उन्हें तुम्हारे इख़्तियार में कर दिया गया है। 3 जिस तरह मैंने तुम्हारे खाने के लिए पौदों की पैदावार मुर्कर की है उसी तरह अब से तुम्हें हर किस्म के जानवर खाने की इजाज़त भी है। 4 लेकिन ख़बरदार! ऐसा गोशत न खाना जिसमें खून है, क्योंकि खून में उस की जान है।

5 किसी की जान लेना मना है। जो ऐसा करेगा उसे अपनी जान देनी पड़ेगी, खाह वह इनसान हो या हैवान। मैं खुद इसका मुतालबा करूँगा। 6 जो भी किसी का खून बहाए उसका खून भी बहाया जाएगा। क्योंकि अल्लाह ने इनसान को अपनी सूत पर बनाया है।

7 अब फलो-फूलो और तादाद में बढ़ते जाओ। दुनिया में फैल जाओ।”

8 तब अल्लाह ने नूह और उसके बेटों से कहा, 9 “अब मैं तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के साथ अहद कायम करता हूँ। 10 यह अहद उन तमाम जानवरों के साथ भी होगा जो क़र्ती में से निकले हैं यानी परिदों, मवेशियों और ज़मीन पर के तमाम जानवरों के साथ। 11 मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधकर वादा करता हूँ कि अब से ऐसा कभी नहीं होगा कि ज़मीन की तमाम ज़िंदगी सैलाब से ख़त्म कर दी जाएगी। अब से ऐसा सैलाब कभी नहीं आएगा जो पूरी ज़मीन को तबाह कर दे। 12 इस अबदी अहद का निशान जो मैं तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ कायम कर रहा हूँ यह है कि 13 मैं अपनी कमान बादलों में रखता हूँ। वह मेरे दुनिया के साथ अहद का निशान होगा। 14 जब कभी मेरे कहने पर आसमान पर बादल छा जाएंगे और कौसे-कुज़ह उनमें से नज़र आएगी 15 तो मैं यह अहद याद करूँगा जो तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ किया गया है। अब कभी भी ऐसा सैलाब नहीं आएगा जो तमाम ज़िंदगी को हलाक कर दे। 16 कौसे-कुज़ह नज़र आएगी तो मैं उसे देखकर उस दायमी अहद को याद करूँगा जो मेरे और दुनिया की तमाम जानदार मखलूक़ात के दरमियान है। 17 यह उस अहद का निशान है जो मैंने दुनिया के तमाम जानदारों के साथ किया है।”

नूह के बेटे

18 नूह के जो बेटे उसके साथ क़र्ती से निकले सिम, हाम और याफ़त थे। हाम कनान का बाप था। 19 दुनिया-भर के तमाम लोग इन तीनों की औलाद हैं।

20 नूह किसान था। शुरू में उसने अंगूर का बाग लगाया। 21 अंगूर से मैं बनाकर उसने इतनी पी ली कि वह नशे में धूत अपने डेर में नंगा पड़ा रहा। 22 कनान के बाप हाम ने उसे यों पड़ा हुआ देखा तो बाहर जाकर अपने दोनों भाइयों को उसके बारे में बताया। 23 यह सुनकर सिम और याफ़त ने अपने कंधों पर कपड़ा रखा। फिर वह उल्टे चलते हुए डेरों में दाखिल हुए और कपड़ा अपने बाप पर डाल दिया। उनके मुँह दूसरी तरफ मुड़े रहे ताकि बाप की बरनगी नज़र न आए।

24 जब नूह होश में आया तो उसको पता चला कि सबसे छोटे बेटे ने क्या किया है। 25 उसने कहा, “कनान पर लानत! वह अपने भाइयों का ज़लीलतरीन गुलाम होगा।

26 मुबारक हो रब जो सिम का ख़ुदा है। कनान सिम का गुलाम हो। 27 अल्लाह करे कि याफ़त की हूदूद बढ़ जाएँ। याफ़त सिम के डेरों में रहे और कनान उसका गुलाम हो।”

28 सैलाब के बाद नूह मज़ीद 350 साल ज़िंदा रहा। 29 वह 950 साल की उम्र में फ़ौत हुआ।

## 10

नूह की औलाद

1 यह नूह के बेटों सिम, हाम और याफ़त का नसबनामा है। उनके बेटे सैलाब के बाद पैदा हुए।

याफ़त की नसल

2 याफत के बेटे जूमर, माजूज, मादी, यावान, तबल, मसक और तीरास थे। 3 जूमर के बेटे अशकनाज़, रीफत और तुजरमा थे। 4 यावान के बेटे इलीसा और तरसीस थे। किती और दोदानी भी उस की औलाद हैं। 5 वह उन कौमों के आबा-ओ-अजदाद हैं जो साहिली इलाकों और जज़ीरों में फैल गईं। यह याफत की औलाद हैं जो अपने अपने कबीले और मुल्क में रहते हुए अपनी अपनी ज़बान बोलते हैं।

### हाम की नसल

6 हाम के बेटे कृश, मिसर, फूत और कनान थे। 7 कृश के बेटे सिबा, हवीला, सबता, रामा और सबतका थे। रामा के बेटे सबा और ददान थे।

8 कृश का एक और बेटा बनाम नमरूद था। वह दुनिया में पहला ज़बरदस्त हाकिम था। 9 रब के नज़दीक वह ज़बरदस्त शिकारी था। इसलिए आज भी किसी अच्छे शिकारी के बारे में कहा जाता है, “वह नमरूद की मानिंद है जो रब के नज़दीक ज़बरदस्त शिकारी था।” 10 उस की सलतनत के पहले मरकज़ मुल्के-सिनार में बाबल, अरक, अक्काद और कलना के शहर थे। 11 उस मुल्क से निकलकर वह अस्सूर चला गया जहाँ उसने नीनवा, रहोबोत-ईर, कलह 12 और रसन के शहर तामीर किए। बड़ा शहर रसन नीनवा और कलह के दरमियान वाके है।

13 मिसर इन कौमों का बाप था : लूदी, अनामी, लिहाबी, नफतूही, 14 फतरूसी, कसलूही (जिनसे फिलिस्ती निकले) और काफ़तूरी।

15 कनान का पहलौठा सैदा था। कनान जैल की कौमों का बाप भी था : हिती 16 यबूसी, अमोरी, जिरजासी, 17 हिब्वी, अरकी, सीनी, 18 अरवादी, समारी और हमाती। बाद में कनानी कबीले इतने फैल गए 19 कि उनकी हद्दूद शिमाल में सैदा से जुनूब की तरफ जिरार से होकर ग़ज़ज़ा तक और वहाँ से मशरिक की तरफ सदूम, अमूरा, अदमा और ज़बोईम से होकर लसा तक थी।

20 यह सब हाम की औलाद हैं, जो उनके अपने अपने कबीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने मुल्क और अपनी अपनी कौम के मुताबिक दर्ज हैं।

### सिम की नसल

21 सिम याफत का बड़ा भाई था। उसके भी बेटे पैदा हुए। सिम तमाम बनी इबर का बाप है।

22 सिम के बेटे ऐलाम, अस्सूर, अरफक्सद, लूद और अराम थे।

23 अराम के बेटे ऊज़, हल, जतर और मस थे।

24 अरफक्सद का बेटा सिलह और सिलह का बेटा इबर था।

25 इबर के हों दो बेटे पैदा हुए। एक का नाम फलज यानी तकसीम था, क्योंकि उन ऐयाम में दुनिया तकसीम हुई। फलज के भाई का नाम युक्रतान था।

26 युक्रतान के बेटे अलमूदाद, सलफ, हसरमावत, इराख, 27 हदराम, ऊज़ाल, दिकला, 28 ऊबाल, अबीमाएल, सबा, 29 ओफ़ीर, हवीला और यूबाब थे। यह सब युक्रतान के बेटे थे। 30 वह मेसा से लेकर सफ़र और मशरिकी पहाड़ी इलाके तक आबाद थे।

31 यह सब सिम की औलाद हैं, जो अपने अपने कबीले, अपनी अपनी ज़बान, अपने अपने मुल्क और अपनी अपनी कौम के मुताबिक दर्ज हैं।

32 यह सब नूह के बेटों के कबीले हैं, जो अपनी नसलों और कौमों के मुताबिक दर्ज किए गए हैं। सैलाब के बाद तमाम कौमों इन्हीं से निकलकर रूए-ज़मीन पर फैल गईं।

## 11

### बाबल का बुर्ज

1 उस वक़्त तक पूरी दुनिया के लोग एक ही ज़बान बोलते थे। 2 मशरिक की तरफ बढ़ते बढ़ते वह सिनार के एक मैदान में पहुँचकर वहाँ आबाद हुए। 3 तब वह एक दूसरे से कहने लगे, “आओ, हम मिट्टी से ईंट बनाकर उन्हें आग में खूब पकाएँ।” उन्होंने तामीरी काम के लिए पत्थर की जगह ईंट और मसाले की जगह तारकोल इस्तेमाल किया। 4 फिर वह कहने लगे, “आओ, हम अपने लिए शहर बना लें जिसमें ऐसा बुर्ज हो जो आसमान तक पहुँच जाए फिर हमारा नाम कायम रहेगा और हम रूए-ज़मीन पर बिखर जाने से बच जाएंगे।”

5 लेकिन रब उस शहर और बुर्ज को देखने के लिए उतर आया जिसे लोग बना रहे थे। 6 रब ने कहा, “यह लोग एक ही कौम हैं और एक ही ज़बान बोलते हैं। और यह सिर्फ़ उसका आगाज़ है जो वह करना चाहते हैं। अब से जो भी वह मिलकर

करना चाहेंगे उससे उन्हें रोका नहीं जा सकेगा। 7 इसलिए आओ, हम दुनिया में उतरकर उनकी ज्वान को दरहम-बरहम कर दें ताकि वह एक दूसरे की बात समझ न पाएँ।”

8 इस तरीके से रब ने उन्हें तमाम रूप-जमीन पर मुंतशिर कर दिया, और शहर की तामीर स्क गई। 9 इसलिए शहर का नाम बाबल यानी अबतरी ठहरा, क्योंकि रब ने वहाँ तमाम लोगों की ज्वान को दरहम-बरहम करके उन्हें तमाम रूप-जमीन पर मुंतशिर कर दिया।

सिम से अब्राम तक का नसबनामा

10 यह सिम का नसबनामा है :

सिम 100 साल का था जब उसका बेटा अरफक्सद पैदा हुआ। यह सैलाब के दो साल बाद हुआ। 11 इसके बाद वह मजीद 500 साल जिंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

12 अरफक्सद 35 साल का था जब सिलह पैदा हुआ। 13 इसके बाद वह मजीद 403 साल जिंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

14 सिलह 30 साल का था जब इबर पैदा हुआ। 15 इसके बाद वह मजीद 403 साल जिंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

16 इबर 34 साल का था जब फलज पैदा हुआ। 17 इसके बाद वह मजीद 430 साल जिंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

18 फलज 30 साल का था जब रऊ पैदा हुआ। 19 इसके बाद वह मजीद 209 साल जिंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

20 रऊ 32 साल का था जब सरूज पैदा हुआ। 21 इसके बाद वह मजीद 207 साल जिंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

22 सरूज 30 साल का था जब नहर पैदा हुआ। 23 इसके बाद वह मजीद 200 साल जिंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

24 नहर 29 साल का था जब तारह पैदा हुआ। 25 इसके बाद वह मजीद 119 साल जिंदा रहा। उसके और बेटे-बेटियाँ भी पैदा हुए।

26 तारह 70 साल का था जब उसके बेटे अब्राम, नहर और हारान पैदा हुए।

27 यह तारह का नसबनामा है : अब्राम, नहर और हारान तारह के बेटे थे। लूत हारान का बेटा था। 28 अपने बाप तारह की जिंदगी में ही हारान कसदियों के ऊर में इतकाल कर गया जहाँ वह पैदा भी हुआ था।

29 बाकी दोनों बेटों की शादी हुई। अब्राम की बीवी का नाम सारय था और नहर की बीवी का नाम मिलकाह। मिलकाह हारान की बेटि थी, और उस की एक बहन बनाम इस्का थी। 30 सारय बाँझ थी, इसलिए उसके बच्चे नहीं थे।

31 तारह कसदियों के ऊर से रवाना होकर मुल्के-कनान की तरफ सफर करने लगा। उसके साथ उसका बेटा अब्राम, उसका पोता लूत यानी हारान का बेटा और उस की बहू सारय थे। जब वह हारान पहुँचे तो वहाँ आबाद हो गए। 32 तारह 205 साल का था जब उसने हारान में वफात पाई।

## 12

अब्राम की बुलाहट

1 रब ने अब्राम से कहा, “अपने वतन, अपने रिश्तेदारों और अपने बाप के घर को छोड़कर उस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। 2 मैं तुझसे एक बड़ी कौम बनाऊँगा, तुझे बरकत दूँगा और तेरे नाम को बहुत बढ़ाऊँगा। तू दूसरों के लिए बरकत का बाइस होगा। 3 जो तुझे बरकत देंगे उन्हें मैं भी बरकत दूँगा। जो तुझ पर लानत करेगा उस पर मैं भी लानत करूँगा। दुनिया की तमाम कौमों तुझसे बरकत पाएँगी।”

4 अब्राम ने रब की सुनी और हारान से रवाना हुआ। लूत उसके साथ था। उस वक्त अब्राम 75 साल का था। 5 उसके साथ उस की बीवी सारय और उसका भतीजा लूत थे। वह अपने नौकर-चाकरों समेत अपनी पूरी मिलकियत भी साथ ले गया जो उसने हारान में हासिल की थी। चलते चलते वह कनान पहुँचे। 6 अब्राम उस मुल्क में से गुजरकर सिकम के मकाम पर ठहर गया जहाँ मोरिह के बलूत का दरख्त था। उस जमाने में मुल्क में कनानी कौमों आबाद थी।

7 वहाँ रब अब्राम पर जाहिर हुआ और उससे कहा, “मैं तेरी औलाद को यह मुल्क दूँगा।” इसलिए उसने वहाँ रब की ताजीम में कुरबानागाह बनाई जहाँ वह उस पर जाहिर हुआ था। 8 वहाँ से वह उस पहाड़ी इलाके की तरफ गया जो बैतेल के

मशरिक में है। वहाँ उसने अपना खैमा लगाया। मगरिब में बैतल था और मशरिक में आई। इस जगह पर भी उसने रब की ताज़ीम में कुरबानगाह बनाई और रब का नाम लेकर इबादत की।

9 फिर अब्राम दुबारा रवाना होकर जुनुब के दशते-नजब की तरफ चल पड़ा।

अब्राम मिसर में

10 उन दिनों में मुल्के-कनान में काल पड़ा। काल इतना सख्त था कि अब्राम उससे बचने की खातिर कुछ देर के लिए मिसर में जा बसा, लेकिन परदेसी की हैसियत से। 11 जब वह मिसर की सरहद के करीब आए तो उसने अपनी बीवी सारय से कहा, “मैं जानता हूँ कि तू कितनी खूबसूरत है। 12 मिसरी तुझे देखेंगे, फिर कहेंगे, ‘यह इसका शौहर है।’ नतीजे में वह मुझे मार डालेंगे और तुझे जिंदा छोड़ेंगे। 13 इसलिए लोगों से यह कहते रहना कि मैं अब्राम की बहन हूँ। फिर मेरे साथ अच्छा सुलूक किया जाएगा और मेरी जान तेरे सबसे बच जाएगी।”

14 जब अब्राम मिसर पहुँचा तो वाकई मिसरियों ने देखा कि सारय निहायत ही खूबसूरत है। 15 और जब फ़िरौन के अफसरान ने उसे देखा तो उन्होंने फ़िरौन के सामने सारय की तारीफ़ की। आखिरकार उसे महल में पहुँचाया गया। 16 फ़िरौन ने सारय की खातिर अब्राम पर एहसान करके उसे भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे-गधियाँ, नौकर-चाकर और ऊँट दिए।

17 लेकिन रब ने सारय के सबसे फ़िरौन और उसके घराने में सख्त किस्म के अमराज़ फैलाए। 18 आखिरकार फ़िरौन ने अब्राम को बुलाकर कहा, “तूने मेरे साथ क्या किया? तूने मुझे क्यों नहीं बताया कि सारय तेरी बीवी है? 19 तूने क्यों कहा कि वह मेरी बहन है? इस धोके की बिना पर मैंने उसे घर में रख लिया ताकि उससे शादी करूँ। देख, तेरी बीवी हाज़िर है। इसे लेकर यहाँ से निकल जा!” 20 फिर फ़िरौन ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया, और उन्होंने अब्राम, उस की बीवी और पूरी मिलकियत को स्रखत करके मुल्क से रवाना कर दिया।

## 13

अब्राम और लूत अलग हो जाते हैं

1 अब्राम अपनी बीवी, लूत और तमाम जायदाद को साथ लेकर मिसर से निकला और कनान के जुनुबी इलाके दशते-नजब में वापस आया।

2 अब्राम निहायत दौलतमंद हो गया था। उसके पास बहुत-से मवेशी और सोना-चाँदी थी। 3 वहाँ से जगह बजगह चलते हुए वह आखिरकार बैतल से होकर उस मकाम तक पहुँच गया जहाँ उसने शुरू में अपना डेरा लगाया था और जो बैतल और आई के दरमियान था। 4 वहाँ जहाँ उसने कुरबानगाह बनाई थी उसने रब का नाम लेकर उस की इबादत की।

5 लूत के पास भी बहुत-सी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और खैमे थे। 6 नतीजा यह निकला कि आखिरकार वह मिलकर न रह सके, क्योंकि इतनी जगह नहीं थी कि दोनों के रेवड़ एक ही जगह पर चर सकें। 7 अब्राम और लूत के चरवाहे आपस में झगड़ने लगे। (उस ज़माने में कनानी और फरिज्जी भी मुल्क में आबाद थे।) 8 तब अब्राम ने लूत से बात की, “ऐसा नहीं होना चाहिए कि तेरे और मेरे दरमियान झगड़ा हो या तेरे चरवाहों और मेरे चरवाहों के दरमियान। हम तो भाई हैं। 9 क्या ज़रूरत है कि हम मिलकर रहें जबकि तू आसानी से इस मुल्क की किसी और जगह रह सकता है। बेहतर है कि तू मुझसे अलग होकर कहीं और रहे। अगर तू बाएँ हाथ जाए तो मैं दाएँ हाथ जाऊँगा, और अगर तू दाएँ हाथ जाए तो मैं बाएँ हाथ जाऊँगा।”

10 लूत ने अपनी नज़र उठाकर देखा कि दरियाए-यरदन के पूरे इलाके में ज़ुगर तक पानी की कसरत है। वह रब के बाग़ या मुल्के-मिसर की मानिंद था, क्योंकि उस वक़्त रब ने सदूम और अमूरा को तबाह नहीं किया था। 11 चुनौचे लूत ने दरियाए-यरदन के पूरे इलाके को चुन लिया और मशरिक की तरफ़ जा बसा। यों दोनों रिश्तेदार एक दूसरे से जुदा हो गए। 12 अब्राम मुल्के-कनान में रहा जबकि लूत यरदन के इलाके के शहरों के दरमियान आबाद हो गया। वहाँ उसने अपने खैमे सदूम के करीब लगा दिए। 13 लेकिन सदूम के बाशिंदे निहायत शरीर थे, और उनके रब के खिलाफ़ गुनाह निहायत मकरूह थे।

रब का अब्राम के साथ दुबारा वादा

14 लूत अब्राम से जुदा हुआ तो रब ने अब्राम से कहा, “अपनी नज़र उठाकर चारों तरफ़ यानी शिमाल, जुनुब, मशरिक और मगरिब की तरफ़ देख। 15 जो भी ज़मीन तुझे नज़र आए उसे मैं तुझे और तेरी औलाद को हमेशा के लिए देता हूँ। 16 मैं तेरी औलाद को खाक की तरह बेशुमार होने दूँगा। जिस तरह खाक के ज़रे गिने नहीं जा सकते उसी तरह तेरी औलाद भी गिनी नहीं जा सकेगी। 17 चुनौचे उठकर इस मुल्क की हर जगह चल-फिर, क्योंकि मैं इसे तुझे देता हूँ।”

18 अब्राम रवाना हुआ। चलते चलते उसने अपने डेरे हबस्न के करीब ममेरे के दरख्तों के पास लगाए। वहाँ उसने रब की ताज़ीम में कुरबानगाह बनाई।

## 14

### अब्राम लूत को छुड़ाता है

1 कनान में जंग हुई। बैस्ने-मुल्क के चार बादशाहों ने कनान के पाँच बादशाहों से जंग की। बैस्ने-मुल्क के बादशाह यह थे : सिनार से अमराफिल, इल्लासर से अरयूक, ऐलाम से किदरलाउमर और जोयम से तिदाल। 2 कनान के बादशाह यह थे : सदूम से बिरा, अमूरा से बिरशा, अदमा से सिनियाब, ज़बोईम से शिमेबर और बाला यानी ज़ुगर का बादशाह।

3 कनान के इन पाँच बादशाहों का इतहाद हुआ था और वह वादीए-सिद्दीम में जमा हुए थे। (अब सिद्दीम नहीं है, क्योंकि उस की जगह बहीराए-मुरदार आ गया है)। 4 किदरलाउमर ने बारह साल तक उन पर हुकूमत की थी, लेकिन तेरहवें साल वह बागी हो गए थे।

5 अब एक साल के बाद किदरलाउमर और उसके इतहादी अपनी फौजों के साथ आए। पहले उन्होंने अस्तारात-करनैम में रफाइयों को, हाम में जूज़ियों को, सवी-किरियतायम में ऐमियों को 6 और होरियों को उनके पहाड़ी इलाके सईर में शिकस्त दी। यों वह एल-फारान तक पहुँच गए जो रेगिस्तान के किनारे पर है। 7 फिर वह वापस आए और ऐन-मिसफात यानी कादिस पहुँचे। उन्होंने अमालीकियों के पूरे इलाके को तबाह कर दिया और हससून-तमर में आबाद अमोरियों को भी शिकस्त दी।

8 उस वक्त सदूम, अमूरा, अदमा, ज़बोईम और बाला यानी ज़ुगर के बादशाह उनसे लड़ने के लिए सिद्दीम की वादी में जमा हुए। 9 इन पाँच बादशाहों ने ऐलाम के बादशाह किदरलाउमर, जोयम के बादशाह तिदाल, सिनार के बादशाह अमराफिल और इल्लासर के बादशाह अरयूक का मुकाबला किया। 10 इस वादी में तारकोल के मुतअद्दिद गढ़े थे। जब बागी बादशाह शिकस्त खाकर भागने लगे तो सदूम और अमूरा के बादशाह इन गढ़ों में गिर गए जबकि बाकी तीन बादशाह बचकर पहाड़ी इलाके में फरार हुए। 11 फ़तहमद बादशाह सदूम और अमूरा का तमाम माल तमाम खानेवाली चीज़ों समेत लूटकर वापस चल दिए। 12 अब्राम का भतीजा लूत सदूम में रहता था, इसलिए वह उसे भी उस की मिलकियत समेत छीनकर साथ ले गए।

13 लेकिन एक आदमी ने जो बच निकला था इब्रानी मर्द अब्राम के पास आकर उसे सब कुछ बता दिया। उस वक्त वह ममरे के दारख्तों के पास आबाद था। ममरे अमोरी था। वह और उसके भाई इसकाल और आनेर अब्राम के इतहादी थे। 14 जब अब्राम को पता चला कि भतीजे को गिरफ्तार कर लिया गया है तो उसने अपने घर में पैदा हुए तमाम जंगआजमूदा गुलामों को जमा करके दान तक दुश्मन का ताक्कुब किया। उसके साथ 318 अफ़राद थे। 15 वहाँ उसने अपने बंदों को गुरोहों में तकसीम करके रात के वक्त दुश्मन पर हमला किया। दुश्मन शिकस्त खाकर भाग गया और अब्राम ने दमिशक के शिमाल में वाके ख्बा तक उसका ताक्कुब किया। 16 वह उनसे लूटा हुआ तमाम माल वापस ले आया। लूत, उस की जायदाद, औरतें और बाकी कैदी भी दुश्मन के कब्जे से बच निकले।

### मलिके-सिद्क, सालिम का बादशाह

17 जब अब्राम किदरलाउमर और उसके इतहादियों पर फतह पाने के बाद वापस पहुँचा तो सदूम का बादशाह उससे मिलने के लिए वादीए-सवी में आया। (इसे आजकल बादशाह की वादी कहा जाता है)। 18 सालिम का बादशाह मलिके-सिद्क भी वहाँ पहुँचा। वह अपने साथ रोटी और मै ले आया। मलिके-सिद्क अल्लाह तआला का इमाम था। 19 उसने अब्राम को बरकत देकर कहा, “अब्राम पर अल्लाह तआला की बरकत हो, जो आसमानो-ज़मीन का खालिक है। 20 अल्लाह तआला मुबारक हो जिसने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दिया है।” अब्राम ने उसे तमाम माल का दसवाँ हिस्सा दिया।

21 सदूम के बादशाह ने अब्राम से कहा, “मुझे मेरे लोग वापस कर दें और बाकी चीज़ें अपने पास रख लें।” 22 लेकिन अब्राम ने उससे कहा, “मैंने रब से क्रसम खाई है, अल्लाह तआला से जो आसमानो-ज़मीन का खालिक है 23 कि मैं उसमें से कुछ नहीं लूँगा जो आपका है, चाहे वह धागा या जूती का तसमा ही क्यों न हो। ऐसा न हो कि आप कहें, ‘मैंने अब्राम को दौलतमद बना दिया है।’ 24 सिवाए उस खाने के जो मेरे आदमियों ने रास्ते में खाया है मैं कुछ कबूल नहीं करूँगा। लेकिन मेरे इतहादी आनेर, इसकाल और ममरे ज़रूर अपना अपना हिस्सा लें।”

## 15

### अब्राम के साथ रब का अहद

1 इसके बाद रब रोया में अब्राम से हमकलाम हुआ, “अब्राम, मत डर। मैं ही तेरी सिरप हूँ, मैं ही तेरा बहुत बड़ा अज़ हूँ।”

2 लेकिन अब्राम ने एतराज़ किया, “ऐ रब कादिश्-मुतलक, तू मुझे क्या देगा जबकि अभी तक मेरे हों कोई बच्चा नहीं है और इलियज़र दमिशकी मेरी मीरास पाएगा। 3 तूने मुझे ओलाद नहीं बख़्शी, इसलिए मेरे घराने का नौकर मेरा वारिस होगा।”

4 तब अब्राम को अल्लाह से एक और कलाम मिला। “यह आदमी इलियज़र तेरा वारिस नहीं होगा बल्कि तेरा अपना ही

बेटा तेरा वारिस होगा।” 5 रब ने उसे बाहर ले जाकर कहा, “आसमान की तरफ देख और सितारों को गिनने की कोशिश कर। तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।”

6 अब्राम ने रब पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया।

7 फिर रब ने उससे कहा, “मैं रब हूँ जो तुझे कसदियों के ऊर से यहाँ ले आया ताकि तुझे यह मुल्क मीरास में दे दूँ।”

8 अब्राम ने पूछा, “ऐ रब कादिरे-मुतलक, मैं किस तरह जानूँ कि इस मुल्क पर कब्ज़ा करूँगा?” 9 जवाब में रब ने कहा, “मेरे हुज़ूर एक तीन-साला गाय, एक तीन-साला बकरी और एक तीन-साला मेंढा ले आ। एक कुम्री और एक कबूतर का बच्चा भी ले आना।” 10 अब्राम ने ऐसा ही किया और फिर हर एक जानवर को दो हिस्सों में काटकर उनको एक दूसरे के आमने-सामने रख दिया। लेकिन परिदों को उसने सालिम रहने दिया। 11 शिकारी परिदे उन पर उतरने लगे, लेकिन अब्राम उन्हें भगाता रहा।

12 जब सूरज डूबने लगा तो अब्राम पर गहरी नींद तारी हुई। उस पर दहशत और अधेरा ही अधेरा छा गया। 13 फिर रब ने उससे कहा, “जान ले कि तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उसका नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और गुलाम होगी, और उस पर 400 साल तक बहुत ज़ुल्म किया जाएगा। 14 लेकिन मैं उस कौम की अदालत करूँगा जिसने उसे गुलाम बनाया होगा। इसके बाद वह बड़ी दौलत पाकर उस मुल्क से निकलेंगे। 15 तू ख़ुद उम्रस्रीदा होकर सलामती के साथ इंतकाल करके अपने बापदादा से जा मिलेगा और दफनाया जाएगा। 16 तेरी औलाद की चौथी पुश्त गैरवतन से वापस आएगी, क्योंकि उस वक्त तक मैं अमोरियों को बरदाश्त करूँगा। लेकिन आखिरकार उनके गुनाह इतने संगीन हो जाएंगे कि मैं उन्हें मुल्के-कनान से निकाल दूँगा।”

17 सूरज शुरू हुआ। अधेरा छा गया। अचानक एक धुआँदार तनूर और एक भड़कती हुई मशाल नजर आई और जानवरों के दो दो टुकड़ों के बीच में से गुज़रे।

18 उस वक्त रब ने अब्राम के साथ अहद किया। उसने कहा, “मैं यह मुल्क मिसर की सरहद से फुरात तक तेरी औलाद को दूँगा, 19 अगरचे अभी तक इसमें कानी, कनिज्जी, कदमूनी, 20 हिती, फरिज्जी, रफाई, 21 अमोरी, कनानी, जिरजासी और यबूसी आबाद हैं।”

## 16

### हाजिरा और इसमाईल

1 अब तक अब्राम की बीवी सारय के कोई बच्चा नहीं हुआ था। लेकिन उन्होंने एक मिसरी लौंडी रखी थी जिसका नाम हाजिरा था, 2 और एक दिन सारय ने अब्राम से कहा, “रब ने मुझे बच्चे पैदा करने से महरूम रखा है, इसलिए मेरी लौंडी के साथ हमबिसतर हों। शायद मुझे उस की मारिफत बच्चा मिल जाए।”

अब्राम ने सारय की बात मान ली। 3 चुनौचे सारय ने अपनी मिसरी लौंडी हाजिरा को अपने शौहर अब्राम को दे दिया ताकि वह उस की बीवी बन जाए उस वक्त अब्राम को कनान में बसते हुए दस साल हो गए थे। 4 अब्राम हाजिरा से हमबिसतर हुआ तो वह उम्मीद से हो गई। जब हाजिरा को यह मालूम हुआ तो वह अपनी मालिकन को हकीर जानने लगी। 5 तब सारय ने अब्राम से कहा, “जो ज़ुल्म मुझ पर किया जा रहा है वह आप ही पर आए। मैंने ख़ुद इसे आपके बाजूओं में दे दिया था। अब जब इसे मालूम हुआ है कि उम्मीद से है तो मुझे हकीर जानने लगी है। रब मेरे और आपके दरमियान फ़ैसला करे।” 6 अब्राम ने जवाब दिया, “देखो, यह तुम्हारी लौंडी है और तुम्हारे इख्तियार में है। जो तुम्हारा जी चाहे उसके साथ करो।”

इस पर सारय उससे इतना बुरा सलूक करने लगी कि हाजिरा फ़रार हो गई। 7 रब के फ़रिश्ते को हाजिरा रेगिस्तान के उस चरम के करीब मिली जो शूर के रास्ते पर है। 8 उसने कहा, “सारय की लौंडी हाजिरा, तू कहाँ से आ रही है और कहाँ जा रही है?” हाजिरा ने जवाब दिया, “मैं अपनी मालिकन सारय से फ़रार हो रही हूँ।” 9 रब के फ़रिश्ते ने उससे कहा, “अपनी मालिकन के पास वापस चली जा और उसके ताबे रह। 10 मैं तेरी औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि उसे गिना नहीं जा सकेगा।” 11 रब के फ़रिश्ते ने मज़ीद कहा, “तू उम्मीद से है। एक बेटा पैदा होगा। उसका नाम इसमाईल यानी ‘अल्लाह सुनता है’ रब, क्योंकि रब ने मूसीबत में तेरी आवाज़ सुनी। 12 वह जंगली गधे की मानिंद होगा। उसका हाथ हर एक के खिलाफ़ और हर एक का हाथ उसके खिलाफ़ होगा। तो भी वह अपने तमाम भाइयों के सामने आबाद रहेगा।”

13 रब के उसके साथ बात करने के बाद हाजिरा ने उसका नाम अताएल-रोई यानी ‘तू एक माबूद है जो मुझे देखता है’ रखा। उसने कहा, “क्या मैंने वाकई उसके पीछे देखा है जिसने मुझे देखा है?” 14 इसलिए उस जगह के कुएँ का नाम ‘बैर-लही-रोई’ यानी ‘उस जिंदा हस्ती का कुआँ जो मुझे देखता है’ पड़ गया। वह कादिस और बरद के दरमियान वाके है।

15 हाजिरा वापस गई, और उसके बेटा पैदा हुआ। अब्राम ने उसका नाम इसमाईल रखा। 16 उस वक्त अब्राम 86 साल का था।



## 17

अहद का निशान : खतना

1 जब अब्राम 99 साल का था तो रब उस पर जाहिर हुआ। उसने कहा, “मैं अल्लाह कादिरे-मुतलक हूँ। मेरे हज़र चलता हर और बेइलजाम हो। 2 मैं तेरे साथ अपना अहद बाँधूँगा और तेरी औलाद को बहुत ही ज्यादा बढ़ा दूँगा।”

3 अब्राम मुँह के बल गिर गया, और अल्लाह ने उससे कहा, 4 “मेरा तेरे साथ अहद है कि तू बहुत कौमों का बाप होगा। 5 अब से तू अब्राम यानी ‘अजीम बाप’ नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम इब्राहीम यानी ‘बहुत कौमों का बाप’ होगा। क्योंकि मैंने तुझे बहुत कौमों का बाप बना दिया है। 6 मैं तुझे बहुत ही ज्यादा औलाद बख्श दूँगा, इतनी कि कौमों बनेगी। तुझसे बादशाह भी निकलेंगे। 7 मैं अपना अहद तेरे और तेरी औलाद के साथ नसल-दर-नसल कायम करूँगा, एक अबदी अहद जिसके मुताबिक मैं तेरा और तेरी औलाद का खुदा हूँगा। 8 तू इस वक्त मुल्के-कनान में परदेसी है, लेकिन मैं इस पूरे मुल्क को तुझे और तेरी औलाद को देता हूँ। यह हमेशा तक उनका ही रहेगा, और मैं उनका खुदा हूँगा।”

9 अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, “तुझे और तेरी औलाद को नसल-दर-नसल मेरे अहद की शरायत पूरी करनी है। 10 इसकी एक शर्त यह है कि हर एक मर्द का खतना किया जाए। 11 अपना खतना कराओ। यह हमारे आपस के अहद का जाहिरी निशान होगा। 12 लाज़िम है कि तू और तेरी औलाद नसल-दर-नसल अपने हर एक बेटे का आठवें दिन खतना करवाएँ। यह उसूल उस पर भी लागू है जो तेरे घर में रहता है लेकिन तुझसे रिश्ता नहीं रखता, चाहे वह घर में पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से खरीदा गया हो। 13 घर के हर एक मर्द का खतना करना लाज़िम है, खाह वह घर में पैदा हुआ हो या किसी अजनबी से खरीदा गया हो। यह इस बात का निशान होगा कि मेरा तेरे साथ अहद हमेशा तक कायम रहेगा। 14 जिस मर्द का खतना न किया गया उसे उस की कौम में से मिटाया जाएगा, क्योंकि उसने मेरे अहद की शरायत पूरी न की।”

15 अल्लाह ने इब्राहीम से यह भी कहा, “अपनी बीवी सारय का नाम भी बदल देना। अब से उसका नाम सारय नहीं बल्कि सारा यानी शहज़ादी होगा। 16 मैं उसे बरकत बख्शूँगा और तुझे उस की मारिफत बेटा दूँगा। मैं उसे यहाँ तक बरकत दूँगा कि उससे कौमों बल्कि कौमों के बादशाह निकलेंगे।”

17 इब्राहीम मुँह के बल गिर गया। लेकिन दिल ही दिल में वह हँस पड़ा और सोचा, “यह किस तरह हो सकता है? मैं तो 100 साल का हूँ। ऐसे आदमी के हों बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? और सारा जैसी उम्रसीदा औरत के बच्चा किस तरह पैदा हो सकता है? उस की उम्र तो 90 साल है।” 18 उसने अल्लाह से कहा, “हाँ, इसमाईल ही तेरे सामने जीता रहे।”

19 अल्लाह ने कहा, “नहीं, तेरी बीवी सारा के हों बेटा पैदा होगा। तू उसका नाम इसहाक यानी ‘वह हँसता है’ रखना। मैं उसके और उस की औलाद के साथ अबदी अहद बाँधूँगा। 20 मैं इसमाईल के सिलसिले में भी तेरी दरखास्त पूरी करूँगा। मैं उसे भी बरकत देकर फलने फूलने दूँगा और उस की औलाद बहुत ही ज्यादा बढ़ा दूँगा। वह बारह रईसों का बाप होगा, और मैं उस की मारिफत एक बड़ी कौम बनाऊँगा। 21 लेकिन मेरा अहद इसहाक के साथ होगा, जो ऐन एक साल के बाद सारा के हों पैदा होगा।”

22 अल्लाह की इब्राहीम के साथ बात खत्म हुई, और वह उसके पास से आसमान पर चला गया।

23 उसी दिन इब्राहीम ने अल्लाह का हुक्म पूरा किया। उसने घर के हर एक मर्द का खतना करवाया, अपने बेटे इसमाईल का भी और उनका भी जो उसके घर में रहते लेकिन उससे रिश्ता नहीं रखते थे, चाहे वह उसके घर में पैदा हुए थे या खरीदे गए थे। 24 इब्राहीम 99 साल का था जब उसका खतना हुआ, 25 जबकि उसका बेटा इसमाईल 13 साल का था। 26 दोनों का खतना उसी दिन हुआ। 27 साथ साथ घराने के तमाम बाकी मर्दों का खतना भी हुआ, बशमूल उनके जिनका इब्राहीम के साथ रिश्ता नहीं था, चाहे वह घर में पैदा हुए या किसी अजनबी से खरीदे गए थे।

## 18

ममरे में इब्राहीम के तीन मेहमान

1 एक दिन रब ममरे के दरख्तों के पास इब्राहीम पर जाहिर हुआ। इब्राहीम अपने खैमे के दरवाजे पर बैठा था। दिन की गरमी उरूज पर थी। 2 दचानक उसने देखा कि तीन मर्द मेरे सामने खड़े हैं। उन्हें देखते ही वह खैमे से उनसे मिलने के लिए दौड़ा और मुँह के बल गिरकर सिजदा किया। 3 उसने कहा, “मेरे आका, अगर मुझ पर आपके करम की नज़र है तो आगे न बढ़े बल्कि कुछ देर अपने बंदे के घर ठहरें। 4 अगर इजाज़त हो तो मैं कुछ पानी ले आऊँ ताकि आप अपने पाँव धोकर दरख्त के साये में आराम कर सकें। 5 साथ साथ मैं आपके लिए थोड़ा-बहुत खाना भी ले आऊँ ताकि आप तकवियत पाकर आगे बढ़ सकें। मुझे यह करने दें, क्योंकि आप अपने खादिम के घर आ गए हैं।” उन्होंने कहा, “ठीक है। जो कुछ तूने कहा है वह कर।”

6 इब्राहीम खैमे की तरफ दौड़कर सारा के पास आया और कहा, “जल्दी करो! 16 किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले और उसे गूँधकर रोटियाँ बना।” 7 फिर वह भागकर बैलों के पास पहुँचा। उनमें से उसने एक मोटा-ताजा बछड़ा चुन लिया जिसका गोशत नरम था और उसे अपने नौकर को दिया जिसने जल्दी से उसे तैयार किया। 8 जब खाना तैयार था तो इब्राहीम ने उसे लेकर लस्सी और दूध के साथ अपने मेहमानों के आगे रख दिया। वह खाने लगे और इब्राहीम उनके सामने दरख्त के साये में खड़ा रहा।

9 उन्होंने पूछा, “तेरी बीवी सारा कहाँ है?” उसने जवाब दिया, “खैमे में।” 10 रब ने कहा, “ऐन एक साल के बाद मैं वापस आऊँगा तो तेरी बीवी सारा के बेटा होगा।”

सारा यह बातें सुन रही थी, क्योंकि वह उसके पीछे खैमे के दरवाजे के पास थी। 11 दोनों मियाँ-बीवी बूढ़े हो चुके थे और सारा उस उम्र से गुज़र चुकी थी जिसमें औरतों के बच्चे पैदा होते हैं। 12 इसलिए सारा अंदर ही अंदर हँस पड़ी और सोचा, “यह कैसे हो सकता है? क्या जब मैं बुढ़ापे के बाइस थिसे-फटे लिबास की मानिंद हूँ तो जवानी के जोबन का लुफ्त उठाऊँ? और मेरा शौहर भी बूढ़ा है।”

13 रब ने इब्राहीम से पूछा, “सारा क्यों हँस रही है? वह क्यों कह रही है, ‘क्या वाकई मेरे हों बच्चा पैदा होगा जबकि मैं इतनी उम्ररसीदा हूँ?’ 14 क्या रब के लिए कोई काम नामुमकिन है? एक साल के बाद मुकर्ररर वक्त पर मैं वापस आऊँगा तो सारा के बेटा होगा।” 15 सारा डर गई। उसने झूट बोलकर इनकार किया, “मैं नहीं हँस रही थी।”

रब ने कहा, “नहीं, तू जस्र हँस रही थी।”

### इब्राहीम सद्म के लिए मिन्नत करता है

16 फिर मेहमान उठकर रवाना हुए और नीचे वादी में सद्म की तरफ देखने लगे। इब्राहीम उन्हें ख़ुशत करने के लिए साथ साथ चल रहा था। 17 रब ने दिल में कहा, “मैं इब्राहीम से वह काम क्यों छुपाए रखूँ जो मैं करने के लिए जा रहा हूँ? 18 इसी से तो एक बड़ी और ताकतवर क़ौम निकलेगी और इसी से मैं दुनिया की तमाम क़ौमों को बरकत दूँगा। 19 उसी को मैंने चुन लिया है ताकि वह अपनी औलाद और अपने बाद के घराने को हुक्म दे कि वह रब की राह पर चलकर रास्त और मुंसिफ़ाना काम करें। क्योंकि अगर वह ऐसा करें तो रब इब्राहीम के साथ अपना वादा पूरा करेगा।”

20 फिर रब ने कहा, “सद्म और अमुरा की बदी के बाइस लोगों की आँहें बुलंद हो रही हैं, क्योंकि उनसे बहुत संगीन गुनाह सरज़द हो रहे हैं। 21 मैं उतरकर उनके पास जा रहा हूँ ताकि देखूँ कि यह इलज़ाम वाकई सच हैं जो मुझ तक पहुँचे हैं। अगर ऐसा नहीं है तो मैं यह जानना चाहता हूँ।”

22 दूसरे दो आदमी सद्म की तरफ आगे निकले जबकि रब कुछ देर के लिए वहाँ ठहरा रहा और इब्राहीम उसके सामने खड़ा रहा। 23 फिर उसने क़रीब आकर उससे बात की, “क्या तू रास्तबाज़ों को भी शरीरों के साथ तबाह कर देगा? 24 हो सकता है कि शहर में 50 रास्तबाज़ हों। क्या तू फिर भी शहर को बरबाद कर देगा और उसे उन 50 के सबब से मुआफ़ नहीं करेगा? 25 यह कैसे हो सकता है कि तू बेकूसरों को शरीरों के साथ हलाक कर दे? यह तो नामुमकिन है कि तू नेक और शरीर लोगों से एक जैसा सुलूक करे। क्या लाज़िम नहीं कि पूरी दुनिया का मुंसिफ़ इनसाफ़ करे?”

26 रब ने जवाब दिया, “अगर मुझे शहर में 50 रास्तबाज़ मिल जाएँ तो उनके सबब से तमाम को मुआफ़ कर दूँगा।”

27 इब्राहीम ने कहा, “मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि मैंने रब से बात करने की ज़रूरत की है अगरचे मैं ख़ाक और राख ही हूँ। 28 लेकिन हो सकता है कि सिर्फ़ 45 रास्तबाज़ उसमें हों। क्या तू फिर भी उन पाँच लोगों की कमी के सबब से पूरे शहर को तबाह करेगा?” उसने कहा, “अगर मुझे 45 भी मिल जाएँ तो उसे बरबाद नहीं करूँगा।”

29 इब्राहीम ने अपनी बात जारी रखी, “और अगर सिर्फ़ 40 नेक लोग हों तो?” रब ने कहा, “मैं उन 40 के सबब से उन्हें छोड़ दूँगा।”

30 इब्राहीम ने कहा, “रब गुस्सा न करे कि मैं एक दफ़ा और बात करूँ। शायद वहाँ सिर्फ़ 30 हों।” उसने जवाब दिया, “फिर भी उन्हें छोड़ दूँगा।”

31 इब्राहीम ने कहा, “मैं मुआफ़ी चाहता हूँ कि मैंने रब से बात करने की ज़रूरत की है। अगर सिर्फ़ 20 पाए जाएँ?” रब ने कहा, “मैं 20 के सबब से शहर को बरबाद करने से बाज़ रहूँगा।”

32 इब्राहीम ने एक आखिरी दफ़ा बात की, “रब गुस्सा न करे अगर मैं एक और बार बात करूँ। शायद उसमें सिर्फ़ 10 पाए जाएँ।” रब ने कहा, “मैं उसे उन 10 लोगों के सबब से भी बरबाद नहीं करूँगा।”

33 इन बातों के बाद रब चला गया और इब्राहीम अपने घर को लौट आया।

## 19

## सदूम और अमूरा की तबाही

1 शाम के वक्त यह दो फरिश्ते सदूम पहुँचे। लूत शहर के दरवाज़े पर बैठा था। जब उसने उन्हें देखा तो खड़े होकर उनसे मिलने गया और मुँह के बल गिरकर सिजदा किया।<sup>2</sup> उसने कहा, “साहबो, अपने बंदे के घर तशरीफ़ लाएँ ताकि अपने पाँव धोकर रात को ठहरेँ और फिर कल सुबह-सवेरे उठकर अपना सफ़र जारी रखें।” उन्होंने कहा, “कोई बात नहीं, हम चौक में रात गुज़ारेंगे।”<sup>3</sup> लेकिन लूत ने उन्हें बहुत मजबूर किया, और आख़िरकार वह उसके साथ उसके घर आए। उसने उनके लिए खाना पकाया और बेख़मीरी रोटी बनाई। फिर उन्होंने खाना खाया।

4 वह अभी सोने के लिए लेटे नहीं थे कि शहर के जवानों से लेकर बूढ़ों तक तमाम मर्दों ने लूत के घर को घेर लिया।<sup>5</sup> उन्होंने आवाज़ देकर लूत से कहा, “वह आदमी कहाँ है जो रात के वक्त तेरे पास आए? उनको बाहर ले आ ताकि हम उनके साथ हुरामकारी करें।”

6 लूत उनसे मिलने बाहर गया। उसने अपने पीछे दरवाज़ा बंद कर लिया<sup>7</sup> और कहा, “मेरे भाइयो, ऐसा मत करो, ऐसी बदकारी न करो।<sup>8</sup> देखो, मेरी दो कुँवारी बेटियाँ हैं। उन्हें मैं तुम्हारे पास बाहर ले आता हूँ। फिर जो जी चाहे उनके साथ करो। लेकिन इन आदमियों को छोड़ दो, क्योंकि वह मेरे मेहमान हैं।”

9 उन्होंने कहा, “रास्ते से हट जा! देखो, यह शख्स जब हमारे पास आया था तो अजनबी था, और अब यह हम पर हाकिम बनना चाहता है। अब तेरे साथ उनसे ज़्यादा बुरा सुलूक करेंगे।” वह उसे मजबूर करते करते दरवाज़े को तोड़ने के लिए आगे बढ़े।<sup>10</sup> लेकिन ऐन वक्त पर अंदर के आदमी लूत को पकड़कर अंदर ले आए, फिर दरवाज़ा दुबारा बंद कर दिया।<sup>11</sup> उन्होंने छोटों से लेकर बड़ों तक बाहर के तमाम आदमियों को अंधा कर दिया, और वह दरवाज़े को ढूँढते ढूँढते थक गए।

12 दोनों आदमियों ने लूत से कहा, “क्या तेरा कोई और रिश्तेदार इस शहर में रहता है, मसलन कोई दामाद या बेटा-बेटी? सबको साथ लेकर यहाँ से चला जा, <sup>13</sup> क्योंकि हम यह मकाम तबाह करने को हैं। इसके बाशिंदों की बंदी के बाइस लोगों की आँहें बुलंद होकर रब के हुज़ूर पहुँच गई हैं, इसलिए उसने हमें इसको तबाह करने के लिए भेजा है।”

14 लूत घर से निकला और अपने दामादों से बात की जिनका उस की बेटियों के साथ रिश्ता हो चुका था। उसने कहा, “जल्दी करो, इस जगह से निकलो, क्योंकि रब इस शहर को तबाह करने को है।” लेकिन उसके दामादों ने इसे मज़ाक ही समझा।

15 जब पौ फटने लगी तो दोनों आदमियों ने लूत को बहुत समझाया और कहा, “जल्दी कर! अपनी बीवी और दोनों बेटियों को साथ लेकर चला जा, वरना जब शहर को सज़ा दी जाएगी तो तू भी हलाक हो जाएगा।”<sup>16</sup> तो भी वह झिजकता रहा। आख़िरकार दोनों ने लूत, उस की बीवी और बेटियों के हाथ पकड़कर उन्हें शहर के बाहर तक पहुँचा दिया, क्योंकि रब को लूत पर तरस आता था।

17 ज्योंही वह उन्हें बाहर ले आए उनमें से एक ने कहा, “अपनी जान बचाकर चला जा। पीछे मुड़कर न देखना। मैदान में कहीं न ठहरना बल्कि पहाड़ों में पनाह लेना, वरना तू हलाक हो जाएगा।”

18 लेकिन लूत ने उनसे कहा, “नहीं मेरे आका, ऐसा न हो।<sup>19</sup> तेरे बंदे को तेरी नज़रे-करम हासिल हुई है और तूने मेरी जान बचाने में बहुत मेहरबानी कर दिखाई है। लेकिन मैं पहाड़ों में पनाह नहीं ले सकता। वहाँ पहुँचने से पहले यह मुसीबत मुझ पर आन पड़ेगी और मैं हलाक हो जाऊँगा।<sup>20</sup> देख, करीब ही एक छोटा कसबा है। वह इतना नज़दीक है कि मैं उस तरफ़ हिज़रत कर सकता हूँ। मुझे वहाँ पनाह लेने दे। वह छोटा ही है, ना? फिर मेरी जान बचेगी।”

21 उसने कहा, “चलो, ठीक है। तेरी यह दरखास्त भी मंज़ूर है। मैं यह क़सबा तबाह नहीं करूँगा।<sup>22</sup> लेकिन भागकर वहाँ पनाह ले, क्योंकि जब तक तू वहाँ पहुँच न जाए मैं कुछ नहीं कर सकता।” इसलिए कसबे का नाम जुगर यानी छोटा है।

23 जब लूत जुगर पहुँचा तो सूरज निकला हुआ था।<sup>24</sup> तब रब ने आसमान से सदूम और अमूरा पर गंधक और आग बरसाई।<sup>25</sup> यों उसने उस पूरे मैदान को उसके शहरों, बाशिंदों और तमाम हरियाली समेत तबाह कर दिया।<sup>26</sup> लेकिन फ़रार होते वक्त लूत की बीवी ने पीछे मुड़कर देखा तो वह फ़ौरन नमक का सतून बन गई।

27 इब्राहीम सुबह-सवेरे उठकर उस जगह वापस आया जहाँ वह कल रब के सामने खड़ा हुआ था।<sup>28</sup> जब उसने नीचे सदूम, अमूरा और पूरी वादी की तरफ़ नज़र की तो वहाँ से भट्टे का-सा धुआँ उठ रहा था।

29 यों अल्लाह ने इब्राहीम को याद किया जब उसने उस मैदान के शहर तबाह किए। क्योंकि वह उन्हें तबाह करने से पहले लूत को जो उनमें आबाद था वहाँ से निकाल लाया।

## लूत और उस की बेटियाँ

30 लूत और उस की बेटीयाँ ज्यादा देर तक जुगर में न ठहरे। वह खाना होकर पहाड़ों में आबाद हुए, क्योंकि लूत जुगर में रहने से डरता था। वहाँ उन्होंने एक गार को अपना घर बना लिया।

31 एक दिन बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, “अब्बू बढ़ा है और यहाँ कोई मर्द है नहीं जिसके जरीए हमारे बच्चे पैदा हो सकें।

32 आओ, हम अब्बू को मै पिलाएँ। जब वह नशे में धुत हो तो हम उसके साथ हमबिसतर होकर अपने लिए औलाद पैदा करें ताकि हमारी नसल कायम रहे।”

33 उस रात उन्होंने अपने बाप को मै पिलाई। जब वह नशे में था तो बड़ी बेटी अंदर जाकर उसके साथ हमबिसतर हुई। चूँकि लूत होश में नहीं था इसलिए उसे कुछ भी मालूम न हुआ। 34 अगले दिन बड़ी बहन ने छोटी बहन से कहा, “पिछली रात मैं अब्बू से हमबिसतर हुई। आओ, आज रात को हम उसे दुबारा मै पिलाएँ। जब वह नशे में धुत हो तो तुम उसके साथ हमबिसतर होकर अपने लिए औलाद पैदा करना ताकि हमारी नसल कायम रहे।” 35 चुनौचे उन्होंने उस रात भी अपने बाप को मै पिलाई। जब वह नशे में था तो छोटी बेटी उठकर उसके साथ हमबिसतर हुई। इस बार भी वह होश में नहीं था, इसलिए उसे कुछ भी मालूम न हुआ।

36 यों लूत की बेटीयाँ अपने बाप से उम्मीद से हुई। 37 बड़ी बेटी के हँ बेटा पैदा हुआ। उसने उसका नाम मोआब रखा। उससे मोआबी निकले हैं। 38 छोटी बेटी के हँ भी बेटा पैदा हुआ। उसने उसका नाम बिन-अम्मी रखा। उससे अम्मोनी निकले हैं।

## 20

### इब्राहीम और अबीमलिक

1 इब्राहीम वहाँ से ज़ुब की तरफ दशते-नजब में चला गया और कादिस और शूर के दरमियान जा बसा। कुछ देर के लिए वह जिरार में ठहरा, लेकिन अजनबी की हैसियत से। 2 वहाँ उसने लोगों को बताया, “सारा मेरी बहन है।” इसलिए जिरार के बादशाह अबीमलिक ने किसी को भिजवा दिया कि उसे महल में ले आए।

3 लेकिन रात के वक्त अल्लाह ख़ाब में अबीमलिक पर जाहिर हुआ और कहा, “मौत तेरे सर पर खड़ी है, क्योंकि जो औरत तू अपने घर ले आया है वह शादीशुदा है।”

4 असल में अबीमलिक अभी तक सारा के करीब नहीं गया था। उसने कहा, “मेरे आका, क्या तू एक बेकुसूर कौम को भी हलाक करेगा? 5 क्या इब्राहीम ने मुझे नहीं कहा था कि सारा मेरी बहन है? और सारा ने उस की हँ में हँ मिलाई। मेरी नीयत अच्छी थी और मैंने गलत काम नहीं किया।” 6 अल्लाह ने कहा, “हँ, मैं जानता हूँ कि इसमें तेरी नीयत अच्छी थी। इसलिए मैंने तुझे मेरा गुनाह करने और उसे छूने से रोक दिया। 7 अब उस औरत को उसके शौहर को वापस कर दे, क्योंकि वह नबी है और तेरे लिए दुआ करेगा। फिर तू नहीं मरेगा। लेकिन अगर तू उसे वापस नहीं करेगा तो जान ले कि तेरी और तेरे लोगों की मौत यकीनी है।”

8 अबीमलिक ने सुबह-सबरे उठकर अपने तमाम कारिदों को यह सब कुछ बताया। यह सुनकर उन पर दहशत छा गई। 9 फिर अबीमलिक ने इब्राहीम को बुलाकर कहा, “आपने हमारे साथ क्या किया है? मैंने आपके साथ क्या गलत काम किया कि आपने मुझे और मेरी सलतनत को इतने संगीन ज़ुर्म में फँसा दिया है? जो सुलूक आपने हमारे साथ कर दिखाया है वह किसी भी शाख़ के साथ नहीं करना चाहिए। 10 आपने यह क्यों किया?”

11 इब्राहीम ने जवाब दिया, “मैंने अपने दिल में कहा कि यहाँ के लोग अल्लाह का ख़ौफ नहीं रखते होंगे, इसलिए वह मेरी बीबी को हासिल करने के लिए मुझे कल्ल कर देंगे। 12 हकीकत में वह मेरी बहन भी है। वह मेरे बाप की बेटी है अगरचे उस की और मेरी माँ फ़रक हैं। यों मैं उससे शादी कर सका। 13 फिर जब अल्लाह ने होने दिया कि मैं अपने बाप के घराने से निकलकर इधर-उधर फिरूँ तो मैंने अपनी बीबी से कहा, ‘मुझ पर यह मेहरबानी कर कि जहाँ भी हम जाएँ मेरे बारे में कह देना कि वह मेरा भाई है।’”

14 फिर अबीमलिक ने इब्राहीम को भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गुलाम और लौंडियाँ देकर उस की बीबी सारा को उसे वापस कर दिया। 15 उसने कहा, “मेरा मुलक आपके लिए खुला है। जहाँ जी चाहे उसमें जा बसो।” 16 सारा से उसने कहा, “मैं आपके भाई को चाँदी के हज़ार सिकके देता हूँ। इससे आप और आपके लोगों के सामने आपके साथ किए गए नारवा सुलूक का इज़ाला हो और आपको बेकुसूर करार दिया जाए।”

17-18 तब इब्राहीम ने अल्लाह से दुआ की और अल्लाह ने अबीमलिक, उस की बीबी और उस की लौंडियों को शाफ़ा दी, क्योंकि रब ने अबीमलिक के घराने की तमाम औरतों को सारा के सबब से बाँझ बना दिया था। लेकिन अब उनके हँ दुबारा बच्चे पैदा होने लगे।

## 21

### इसहाक की पैदाइश

1 तब रब ने सारा के साथ वैसा ही किया जैसा उसने फरमाया था। जो वादा उसने सारा के बारे में किया था उसे उसने पूरा किया। 2 वह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। ऐन उस वक्त बड़े इब्राहीम के हों बेटा पैदा हुआ जो अल्लाह ने मुकर्रर करके उसे बताया था।

3 इब्राहीम ने अपने इस बेटे का नाम इसहाक यानी 'वह हँसता है' रखा। 4 जब इसहाक आठ दिन का था तो इब्राहीम ने उसका खतना कराया, जिस तरह अल्लाह ने उसे हुक्म दिया था। 5 जब इसहाक पैदा हुआ उस वक्त इब्राहीम 100 साल का था। 6 सारा ने कहा, "अल्लाह ने मुझे हँसाया, और हर कोई जो मेरे बारे में यह सुनेगा हँसेगा। 7 इससे पहले कौन इब्राहीम से यह कहने की जुरत कर सकता था कि सारा अपने बच्चों को दूध पिलाएगी? और अब मेरे हों बेटा पैदा हुआ है, अगरचे इब्राहीम बूढ़ा हो गया है।"

8 इसहाक बड़ा होता गया। जब उसका दूध छुड़ाया गया तो इब्राहीम ने उसके लिए बड़ी ज़ियाफत की।

### इब्राहीम हाजिरा और इसमाईल को निकाल देता है

9 एक दिन सारा ने देखा कि मिसरी लौंडी हाजिरा का बेटा इसमाईल इसहाक का मज़ाक उड़ा रहा है। 10 उसने इब्राहीम से कहा, "इस लौंडी और उसके बेटे को घर से निकाल दे, क्योंकि वह मेरे बेटे इसहाक के साथ मीरास नहीं पाएगा।"

11 इब्राहीम को यह बात बहुत बुरी लगी। आखिर इसमाईल भी उसका बेटा था। 12 लेकिन अल्लाह ने उससे कहा, "जो बात सारा ने अपनी लौंडी और उसके बेटे के बारे में कही है वह तुझे बुरी न लगे। सारा की बात मान ले, क्योंकि तेरी नसल इसहाक ही से कायम रहेगी। 13 लेकिन मैं इसमाईल से भी एक क्रौम बनाऊँगा, क्योंकि वह तेरा बेटा है।"

14 इब्राहीम सुबह-सवेरे उठा। उसने रोटी और पानी की मशक हाजिरा के कंधों पर रखकर उसे लडके के साथ घर से निकाल दिया। हाजिरा चलते चलते बैर-सबा के रेगिस्तान में इधर-उधर फिरने लगी। 15 फिर पानी खत्म हो गया। हाजिरा लडके को किसी झाड़ी के नीचे छोड़कर 16 कोई 300 फुट दूर बैठ गई। क्योंकि उसने दिल में कहा, "मैं उसे मरते नहीं देख सकती।" वह वहाँ बैठकर रोने लगी।

17 लेकिन अल्लाह ने बेटे की रोती हुई आवाज़ सुन ली। अल्लाह के फरिश्ते ने आसमान पर से पुकारकर हाजिरा से बात की, "हाजिरा, क्या बात है? मत डर, क्योंकि अल्लाह ने लडके का जो वहाँ पड़ा है रोना सुन लिया है। 18 उठ, लडके को उठाकर उसका हाथ थाम ले, क्योंकि मैं उससे एक बड़ी क्रौम बनाऊँगा।"

19 फिर अल्लाह ने हाजिरा की आँखें खोल दी, और उस की नज़र एक कुएँ पर पड़ी। वह वहाँ गई और मशक को पानी से भरकर लडके को पिलाया।

20 अल्लाह लडके के साथ था। वह जवान हुआ और तीरअंदाज़ बनकर बयाबान में रहने लगा। 21 जब वह फ़ारान के रेगिस्तान में रहता था तो उस की माँ ने उसे एक मिसरी औरत से ब्याह दिया।

### अबीमलिक के साथ अहद

22 उन दिनों में अबीमलिक और उसके सिपाहसालार फ़ीकुल ने इब्राहीम से कहा, "जो कुछ भी आप करते हैं अल्लाह आपके साथ है। 23 अब मुझे अल्लाह की कसम खाएँ कि आप मुझे और मेरी आलो-ओलाद को धोका नहीं देंगे। मुझ पर और इस मुल्क पर जिसमें आप परदेसी हैं वही मेहरबानी करें जो मैंने आप पर की है।"

24 इब्राहीम ने जवाब दिया, "मैं कसम खाता हूँ।" 25 फिर उसने अबीमलिक से शिकायत करते हुए कहा, "आपके बंदों ने हमारे एक कुएँ पर कब्ज़ा कर लिया है।" 26 अबीमलिक ने कहा, "मुझे नहीं मालूम कि किसने ऐसा किया है। आपने भी मुझे नहीं बताया। आज मैं पहली दफ़ा यह बात सुन रहा हूँ।"

27 तब इब्राहीम ने अबीमलिक को भेड-बकरियाँ और गाय-बैल दिए, और दोनों ने एक दूसरे के साथ अहद बाँधा। 28 फिर इब्राहीम ने भेड के सात मादा बच्चों को अलग कर लिया। 29 अबीमलिक ने पूछा, "आपने यह क्यों किया?" 30 इब्राहीम ने जवाब दिया, "भेड के इन सात बच्चों को मुझे से ले लें। यह इसके गवाह हों कि मैंने इस कुएँ को खोदा है।" 31 इसलिये उस जगह का नाम बैर-सबा यानी 'कसम का कुआँ' रखा गया, क्योंकि वहाँ उन दोनों मर्दों ने कसम खाई।

32 यों उन्होंने बैर-सबा में एक दूसरे से अहद बाँधा। फिर अबीमलिक और फ़ीकुल फिलिस्तियों के मुल्क वापस चले गए। 33 इसके बाद इब्राहीम ने बैर-सबा में झाऊ का दरख्त लगाया। वहाँ उसने रब का नाम लेकर उस की इबादत की जो अबदी खुदा है। 34 इब्राहीम बहुत अरसे तक फिलिस्तियों के मुल्क में आबाद रहा, लेकिन अजनबी की हैसियत से।

## 22

### इब्राहीम की आजमाइश

1 कुछ अरसे के बाद अल्लाह ने इब्राहीम को आजमाया। उसने उससे कहा, “इब्राहीम!” उसने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 2 अल्लाह ने कहा, “अपने इकलौते बेटे इसहाक को जिसे तू प्यार करता है साथ लेकर मोरियाह के इलाके में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर अपने बेटे को कुरबान कर दे। उसे जबह करके कुरबानगाह पर जला देना।”

3 सुबह-सवरे इब्राहीम उठा और अपने गधे पर जीन कसा। उसने अपने साथ दो नौकरों और अपने बेटे इसहाक को लिया। फिर वह कुरबानी को जलाने के लिए लकड़ी काटकर उस जगह की तरफ रवाना हुआ जो अल्लाह ने उसे बताई थी। 4 सफ़र करते करते तीसरे दिन कुरबानी की जगह इब्राहीम को दूर से नज़र आई। 5 उसने नौकरों से कहा, “यहाँ गधे के पास ठहरो। मैं लड़के के साथ वहाँ जाकर परस्तिश करूँगा। फिर हम तुम्हारे पास वापस आ जायेंगे।”

6 इब्राहीम ने कुरबानी को जलाने के लिए लकड़ियाँ इसहाक के कंधों पर रख दीं और खुद छुरी और आग जलाने के लिए अंगारों का बरतन उठाया। दोनों चल दिए। 7 इसहाक बोला, “अबू!” इब्राहीम ने कहा, “जी बेटा।” “अबू, आग और लकड़ियाँ तो हमारे पास हैं, लेकिन कुरबानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ है?” 8 इब्राहीम ने जवाब दिया, “अल्लाह खुद कुरबानी के लिए जानवर मुहैया करेगा, बेटा।” वह आगे बढ़ गए।

9 चलते चलते वह उस मकाम पर पहुँचे जो अल्लाह ने उस पर जाहिर किया था। इब्राहीम ने वहाँ कुरबानगाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ तरतीब से रख दीं। फिर उसने इसहाक को बाँधकर लकड़ियों पर रख दिया 10 और छुरी पकड़ ली ताकि अपने बेटे को जबह करे। 11 ऐन उसी वक़्त रब के फ़रिश्ते ने आसमान पर से उसे आवाज़ दी, “इब्राहीम, इब्राहीम!” इब्राहीम ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 12 फ़रिश्ते ने कहा, “अपने बेटे पर हाथ न चला, न उसके साथ कुछ कर। अब मैंने जान लिया है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है, क्योंकि तू अपने इकलौते बेटे को भी मुझे देने के लिए तैयार है।”

13 अचानक इब्राहीम को एक मेढा नज़र आया जिसके सींग गुंजान झाड़ियों में फँसे हुए थे। इब्राहीम ने उसे जबह करके अपने बेटे की जगह कुरबानी के तौर पर जला दिया। 14 उसने उस मकाम का नाम “रब मुहैया करता है” रखा। इसलिए आज तक कहा जाता है, “रब के पहाड़ पर मुहैया किया जाता है।”

15 रब के फ़रिश्ते ने एक बार फिर आसमान पर से पुकारकर उससे बात की। 16 “रब का फ़रमान है, मेरी ज़ात की क़सम, चूँकि तूने यह किया और अपने इकलौते बेटे को मुझे पेश करने के लिए तैयार था 17 इसलिए मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशमार होने दूँगा। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करेगी। 18 चूँकि तूने मेरी सुनी इसलिए तेरी औलाद से दुनिया की तमाम कौमों बरकत पाएँगी।”

19 इसके बाद इब्राहीम अपने नौकरों के पास वापस आया, और वह मिलकर बैर-सबा लौटे। वहाँ इब्राहीम आबाद रहा।

20 इन वाक़ियात के बाद इब्राहीम को इतला मिली, “आपके भाई नहर की बीवी मिलकाह के हों भी बेटे पैदा हुए हैं। 21 उसके पहलौठे ऊँज के बाद बज़, क़मुएल (अराम का बाप), 22 कसद, हज़, फ़िलदास, इदलाफ़ और बतुएल पैदा हुए हैं।” 23 मिलकाह और नहर के हों यह आठ बेटे पैदा हुए। (बतुएल रिबका का बाप था)। 24 नहर की हरम का नाम रुमा था। उसके हों भी बेटे पैदा हुए जिनके नाम तिबख, जाहम, तख़स और माका हैं।

## 23

### सारा की वफ़ात

1 सारा 127 साल की उम्र में हबस्न में इतकाल कर गई। 2 उस ज़माने में हबस्न का नाम किरियत-अरबा था, और वह मुल्के-कनान में था। इब्राहीम ने उसके पास आकर मातम किया। 3 फिर वह जनाजे के पास से उठा और हितियों से बात की। उसने कहा, 4 “मैं आपके दरमियान परदेसी और ग़ैरशहरी की हैसियत से रहता हूँ। मुझे क़ब्र के लिए ज़मीन बेचें ताकि अपनी बीवी को अपने घर से ले जाकर दफ़न कर सकूँ।” 5-6 हितियों ने जवाब दिया, “हमारे आका, हमारी बात सुनें! आप हमारे दरमियान अल्लाह के रईस हैं। अपनी बीवी को हमारी बेहतरीन क़ब्र में दफ़न करें। हममें से कोई नहीं जो आपसे अपनी क़ब्र का इनकार करेगा।”

7 इब्राहीम उठा और मुल्क के बाशिंदों यानी हितियों के सामने ताज़ीमन झुक गया। 8 उसने कहा, “अगर आप इसके लिए तैयार हैं कि मैं अपनी बीवी को अपने घर से ले जाकर दफ़न करूँ तो सुहर के बेटे इफ़रोन से मेरी सिफ़ारिश करें 9 कि वह मुझे मकफ़ीला का गार बेच दे। वह उसका है और उसके खेत के किनारे पर है। मैं उस की पूरी कीमत देने के लिए तैयार हूँ ताकि आपके दरमियान रहते हुए मेरे पास क़ब्र भी हो।”

10 इफ्रोन हितियों की जमात में मौजूद था। इब्राहीम की दरखास्त पर उसने उन तमाम हितियों के सामने जो शहर के दरवाजे पर जमा थे जवाब दिया, 11 “नहीं, मेरे आका! मेरी बात सुनें। मैं आपको यह खेत और उसमें मौजूद गार दे देता हूँ। सब जो हाज़िर हैं मेरे गवाह हैं, मैं यह आपको देता हूँ। अपनी बीवी को वहाँ दफन कर दें।”

12 इब्राहीम दुबारा मुल्क के बाशिंदों के सामने अदबन झुक गया। 13 उसने सबके सामने इफ्रोन से कहा, “मेहरबानी करके मेरी बात पर गौर करें। मैं खेत की पूरी कीमत अदा करूँगा। उसे कबूल करें ताकि वहाँ अपनी बीवी को दफन कर सकूँ।” 14-15 इफ्रोन ने जवाब दिया, “मेरे आका, सुनें। इस ज़मीन की कीमत सिर्फ 400 चाँदी के सिक्के है।\* आपके और मेरे दरमियान यह क्या है? अपनी बीवी को दफन कर दें।”

16 इब्राहीम ने इफ्रोन की मतलूबा कीमत मान ली और सबके सामने चाँदी के 400 सिक्के तोलकर इफ्रोन को दे दिए। इसके लिए उसने उस वक्त के रायज बाट इस्तेमाल किए। 17 चुनौचे मकफ़ीला में इफ्रोन की ज़मीन इब्राहीम की मिलकियत हो गई। यह ज़मीन ममरे के मशरिक में थी। उसमें खेत, खेत का गार और खेत की हद्द में मौजूद तमाम दरख्त शामिल थे।

18 हितियों की पूरी जमात ने जो शहर के दरवाजे पर जमा थी ज़मीन के इंतकाल की तसदीक की। 19 फिर इब्राहीम ने अपनी बीवी सारा को मुल्के-कनान के उस गार में दफन किया जो ममरे यानी हबस्न के मशरिक में वाक़े मकफ़ीला के खेत में था। 20 इस तरीके से यह खेत और उसका गार हितियों से इब्राहीम के नाम पर मुंतकिल कर दिया गया ताकि उसके पास कब्र हो।

## 24

### इसहाक और रिबका

1 इब्राहीम अब बहुत बूढ़ा हो गया था। रब ने उसे हर लिहाज़ से बरकत दी थी। 2 एक दिन उसने अपने घर के सबसे बुज़ुर्ग नौकर से जो उस की जायदाद का पूरा इंतज़ाम चलाता था बात की। “क़सम के लिए अपना हाथ मेरी रान के नीचे रखो। 3 रब की क़सम खाओ जो आसमानो-ज़मीन का खुदा है कि तुम इन कनानियों में से जिनके दरमियान मैं रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 4 बल्कि मेरे वतन में मेरे रिश्तेदारों के पास जाओगे और उन्हीं में से मेरे बेटे के लिए बीवी लाओगे।” 5 उसके नौकर ने कहा, “शाश्वद वह औरत मेरे साथ यहाँ आना न चाहे। क्या मैं इस सूरत में आपके बेटे को उस वतन में वापस ले जाऊँ जिससे आप निकले हैं?” 6 इब्राहीम ने कहा, “खबरदार! उसे हरगिज़ वापस न ले जाना। 7 रब जो आसमान का खुदा है अपना फ़रिशता तुम्हारे आगे भेजेगा, इसलिए तुम वहाँ मेरे बेटे के लिए बीवी चुनने में ज़रूर कामयाब होगे। क्योंकि वही मुझे मेरे बाप के घर और मेरे वतन से यहाँ ले आया है, और उसी ने क़सम खाकर मुझसे वादा किया है कि मैं कनान का यह मुल्क तेरी औलाद को दूँगा। 8 अगर वहाँ की औरत यहाँ आना न चाहे तो फिर तुम अपनी क़सम से आज़ाद होगे। लेकिन किसी सूरत में भी मेरे बेटे को वहाँ वापस न ले जाना।”

9 इब्राहीम के नौकर ने अपना हाथ उस की रान के नीचे रखकर क़सम खाई कि मैं सब कुछ ऐसा ही करूँगा। 10 फिर वह अपने आका के दस ऊँटों पर कीमती तोहफ़े लादकर मसोपुतामिया की तरफ़ रवाना हुआ। चलते चलते वह नहर के शहर पहुँच गया।

11 उसने ऊँटों को शहर के बाहर कुएँ के पास बिठाया। शाम का वक्त था जब औरतें कुएँ के पास आकर पानी भरती थीं। 12 फिर उसने दुआ की, “ऐ रब मेरे आका इब्राहीम के खुदा, मुझे आज कामयाबी बरख़ और मेरे आका इब्राहीम पर मेहरबानी कर। 13 अब मैं इस चश्मे पर खड़ा हूँ, और शहर की बेटीयाँ पानी भरने के लिए आ रही हैं। 14 मैं उनमें से किसी से कहूँगा, ‘ज़रा अपना घड़ा नीचे करके मुझे पानी पिलाएँ।’ अगर वह जवाब दे, ‘पी लें, मैं आपके ऊँटों को भी पानी पिला देती हूँ,’ तो वह वही होगी जिसे तूने अपने खादिम इसहाक के लिए चुन रखा है। अगर ऐसा हुआ तो मैं जान लूँगा कि तूने मेरे आका पर मेहरबानी की है।”

15 वह अभी दुआ कर ही रहा था कि रिबका शहर से निकल आई। उसके कंधे पर घड़ा था। वह बतुएल की बेटी थी (बतुएल इब्राहीम के भाई नहर की बीवी मिलकाह का बेटा था)। 16 रिबका निहायत खूबसूरत जवान लड़की थी, और वह कुँवारी भी थी। वह चश्मे तक उतरी, अपना घड़ा भरा और फिर वापस ऊपर आई।

17 इब्राहीम का नौकर दौड़कर उससे मिला। उसने कहा, “ज़रा मुझे अपने घड़े से थोड़ा-सा पानी पिलाएँ।” 18 रिबका ने कहा, “जनाब, पी लें।” जल्दी से उसने अपने घड़े को कंधे पर से उतारकर हाथ में पकड़ा ताकि वह पी सके। 19 जब वह पीने से फ़ारिग हुआ तो रिबका ने कहा, “मैं आपके ऊँटों के लिए भी पानी ले आती हूँ। वह भी पूरे तौर पर अपनी प्यास बुझाएँ।” 20 जल्दी से उसने अपने घड़े का पानी हौज़ में उडेल दिया और फिर भागकर कुएँ से इतना पानी लाती रही कि तमाम ऊँटों की प्यास बुझ गई।

\* 23:14-15 तकरीबन साठे चार किलोग्राम चाँदी।

21 इतने में इब्राहीम का आदमी खामोशी से उसे देखता रहा, क्योंकि वह जानना चाहता था कि क्या रब मुझे सफर की कामयाबी बख्शेगा या नहीं। 22 ऊँट पानी पीने से फारिग हुए तो उसने रिबका को सोने की एक नथ और दो कंगन दिए। नथ का वजन तकरीबन 6 ग्राम था और कंगनों का 120 ग्राम।

23 उसने पूछा, “आप किसकी बेटी हैं? क्या उसके हों इतनी जगह है कि हम वहाँ रात गुजार सकें?”

24 रिबका ने जवाब दिया, “मेरा बाप बतुएल है। वह नहर और मिलकाह का बेटा है। 25 हमारे पास भूसा और चारा है। रात गुजारने के लिए भी काफी जगह है।” 26 यह सुनकर इब्राहीम के नौकर ने रब को सिजदा किया। 27 उसने कहा, “मेरे आका इब्राहीम के खुदा की तमजीद हो जिसके करम और वफादारी ने मेरे आका को नहीं छोड़ा। रब ने मुझे सीधा मेरे मालिक के रिश्तेदारों तक पहुँचाया है।”

28 लड़की भागकर अपनी माँ के घर चली गई। वहाँ उसने सब कुछ बता दिया जो हुआ था। 29-30 जब रिबका के भाई लाबन ने नथ और बहन की कलाइयों में कंगनों को देखा और वह सब कुछ सुना जो इब्राहीम के नौकर ने रिबका को बताया था तो वह फौरन कुएँ की तरफ दौड़ा।

इब्राहीम का नौकर अब तक ऊँटों समेत वहाँ खड़ा था। 31 लाबन ने कहा, “रब के मुबारक बंदे, मेरे साथ आएँ। आप यहाँ शहर के बाहर क्यों खड़े हैं? मैंने अपने घर में आपके लिए सब कुछ तैयार किया है। आपके ऊँटों के लिए भी काफी जगह है।” 32 वह नौकर को लेकर घर पहुँचा। ऊँटों से सामान उतारा गया, और उनको भूसा और चारा दिया गया। पानी भी लाया गया ताकि इब्राहीम का नौकर और उसके आदमी अपने पाँव धोएँ।

33 लेकिन जब खाना आ गया तो इब्राहीम के नौकर ने कहा, “इससे पहले कि मैं खाना खाऊँ लाजिम है कि अपना मामला पेश करूँ।” लाबन ने कहा, “बताएँ अपनी बात।” 34 उसने कहा, “मैं इब्राहीम का नौकर हूँ। 35 रब ने मेरे आका को बहुत बरकत दी है। वह बहुत अमीर बन गया है। रब ने उसे कसरत से भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, सोना-चाँदी, गुलाम और लौडियों, ऊँट और गधे दिए हैं। 36 जब मेरे मालिक की बीवी बूढ़ी हो गई थी तो उसके बेटा पैदा हुआ था। इब्राहीम ने उसे अपनी पूरी मिलकियत दे दी है। 37 लेकिन मेरे आका ने मुझसे कहा, ‘कसम खाओ कि तुम इन कनानियों में से जिनके दरमियान मैं रहता हूँ मेरे बेटे के लिए बीवी नहीं लाओगे 38 बल्कि मेरे बाप के घराने और मेरे रिश्तेदारों के पास जाकर उसके लिए बीवी लाओगे।’ 39 मैंने अपने मालिक से कहा, ‘शायद वह औरत मेरे साथ आना न चाहे।’ 40 उसने कहा, ‘रब जिसके सामने मैं चलता रहा हूँ अपने फरिश्ते को तुम्हारे साथ भेजेगा और तुम्हें कामयाबी बख्शेगा। तुम्हें जरूर मेरे रिश्तेदारों और मेरे बाप के घराने से मेरे बेटे के लिए बीवी मिलेगी। 41 लेकिन अगर तुम मेरे रिश्तेदारों के पास जाओ और वह इनकार करें तो फिर तुम अपनी कसम से आज्ञाद होगे।’ 42 आज जब मैं कुएँ के पास आया तो मैंने दुआ की, ‘ऐ रब, मेरे आका के खुदा, अगर तेरी मरजी हो तो मुझे इस मिशन में कामयाबी बख्श जिसके लिए मैं यहाँ आया हूँ। 43 अब मैं इस कुएँ के पास खड़ा हूँ। जब कोई जवान औरत शहर से निकलकर यहाँ आए तो मैं उससे कहूँगा, ‘जरा मुझे अपने घड़े से थोड़ा-सा पानी पिलाएँ।’ 44 अगर वह कहे, ‘पी लें, मैं आपके ऊँटों के लिए भी पानी ले आऊँगी’ तो इसका मतलब यह हो कि तूने उसे मेरे आका के बेटे के लिए चुन लिया है कि उस की बीवी बन जाए।’

45 मैं अभी दिल में यह दुआ कर रहा था कि रिबका शहर से निकल आई। उसके कंधे पर घड़ा था। वह चश्मे तक उतरी और अपना घड़ा भर लिया। मैंने उससे कहा, ‘जरा मुझे पानी पिलाएँ।’ 46 जवाब में उसने जल्दी से अपने घड़े को कंधे पर से उतारकर कहा, ‘पी लें, मैं आपके ऊँटों को भी पानी पिलाती हूँ।’ मैंने पानी पिया, और उसने ऊँटों को भी पानी पिलाया। 47 फिर मैंने उससे पूछा, ‘आप किसकी बेटी हैं?’ उसने जवाब दिया, ‘मेरा बाप बतुएल है। वह नहर और मिलकाह का बेटा है।’ फिर मैंने उस की नाक में नथ और उस की कलाइयों में कंगन पहना दिए। 48 तब मैंने रब को सिजदा करके अपने आका इब्राहीम के खुदा की तमजीद की जिसने मुझे सीधा मेरे मालिक की भतीजी तक पहुँचाया ताकि वह इसहाक की बीवी बन जाए।

49 अब मुझे बताएँ, क्या आप मेरे आका पर अपनी मेहरबानी और वफादारी का इजहार करना चाहते हैं? अगर ऐसा है तो रिबका की इसहाक के साथ शादी कबूल करें। अगर आप मुतफिक नहीं हैं तो मुझे बताएँ ताकि मैं कोई और कदम उठा सकूँ।”

50 लाबन और बतुएल ने जवाब दिया, “यह बात रब की तरफ से है, इसलिए हम किसी तरह भी इनकार नहीं कर सकते।

51 रिबका आपके सामने है। उसे ले जाएँ। वह आपके मालिक के बेटे की बीवी बन जाए जिस तरह रब ने फरमाया है।”

52 यह सुनकर इब्राहीम के नौकर ने रब को सिजदा किया। 53 फिर उसने सोने और चाँदी के जेवरात और महँगे मलबूसात अपने सामान में से निकालकर रिबका को दिए। रिबका के भाई और माँ को भी कीमती तोहफे मिले।

54 इसके बाद उसने अपने हमसफरों के साथ शाम का खाना खाया। वह रात को वहीं ठहरे। अगले दिन जब उठे तो नौकर ने कहा, “अब हमें इजाज़त दें ताकि अपने आका के पास लौट जाएँ।” 55 रिबका के भाई और माँ ने कहा, “रिबका कुछ



दिन और हमारे हों ठहरे। फिर आप जाएँ।” 56 लेकिन उसने उनसे कहा, “अब देर न करे, क्योंकि रब ने मुझे मेरे मिशन में कामयाबी बख्शी है। मुझे इजाजत दें ताकि अपने मालिक के पास वापस जाऊँ।” 57 उन्होंने कहा, “चलें, हम लडकी को बुलाकर उसी से पूछ लेते हैं।”

58 उन्होंने रिबका को बुलाकर उससे पूछा, “क्या तू अभी इस आदमी के साथ जाना चाहती है?” उसने कहा, “जी, मैं जाना चाहती हूँ।” 59 चुनौचे उन्होंने अपनी बहन रिबका, उस की दाया, इब्राहीम के नौकर और उसके हमसफ़रों को सूखत कर दिया। 60 पहले उन्होंने रिबका को बरकत देकर कहा, “हमारी बहन, अल्लाह करे कि तू करोड़ों की माँ बने। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के दरवाजों पर कब्ज़ा करे।” 61 फिर रिबका और उस की नौकरानियाँ उठकर ऊँटों पर सवार हुईं और इब्राहीम के नौकर के पीछे हो लीं। चुनौचे नौकर उन्हें साथ लेकर रवाना हो गया।

62 उस वक़्त इसहाक मुल्क के जुनबी हिस्से, दशते-नजब में रहता था। वह बैर-लही-रोई से आया था। 63 एक शाम वह निकलकर खुले मैदान में अपनी सोचों में मगन टहल रहा था कि अचानक ऊँट उस की तरफ आते हुए नज़र आए। 64 जब रिबका ने अपनी नज़र उठाकर इसहाक को देखा तो उसने ऊँट से उतरकर 65 नौकर से पूछा, “वह आदमी कौन है जो मैदान में हमसे मिलने आ रहा है?” नौकर ने कहा, “मेरा मालिक है।” यह सुनकर रिबका ने चादर लेकर अपने चेहरे को ढँप लिया।

66 नौकर ने इसहाक को सब कुछ बता दिया जो उसने किया था। 67 फिर इसहाक रिबका को अपनी माँ सारा के डेरे में ले गया। उसने उससे शादी की, और वह उस की बीवी बन गई। इसहाक के दिल में उसके लिए बहुत मुहब्बत पैदा हुई। यों उसे अपनी माँ की मौत के बाद सुकून मिला।

## 25

### इब्राहीम की मज़ीद औलाद

1 इब्राहीम ने एक और शादी की। नई बीवी का नाम कतूरा था। 2 कतूरा के छः बेटे पैदा हुए, जिमरान, युक्रसान, मिदान, मिदियान, इसबाक और सूख। 3 युक्रसान के दो बेटे थे, सबा और ददान। अस्री, लतूसी और लूपी ददान की औलाद हैं। 4 मिदियान के बेटे ऐफा, इफ़र, हनुक, अबीदा और इल्दआ थे। यह सब कतूरा की औलाद थे।

5 इब्राहीम ने अपनी सारी मिलकियत इसहाक को दे दी। 6 अपनी मौत से पहले उसने अपनी दूसरी बीवियों के बेटों को तोहफ़े देकर अपने बेटे से दूर मशरिक की तरफ भेज दिया।

### इब्राहीम की वफ़ात

7-8 इब्राहीम 175 साल की उम्र में फ़ौत हुआ। गरज़ वह बहुत उम्ररसीदा और जिंदगी से आसूदा होकर इंतकाल करके अपने बापदादा से जा मिला। 9-10 उसके बेटों इसहाक और इसमाईल ने उसे मकफ़ीला के गार में दफ़न किया जो ममरे के मशरिक में है। यह वही गार था जिसे खेत समेत हिती आदमी इफ़रोन बिन सुहर से खरीदा गया था। इब्राहीम और उस की बीवी सारा दोनों को उसमें दफ़न किया गया।

11 इब्राहीम की वफ़ात के बाद अल्लाह ने इसहाक को बरकत दी। उस वक़्त इसहाक बैर-लही-रोई के करीब आबाद था।

### इसमाईल की औलाद

12 इब्राहीम का बेटा इसमाईल जो सारा की मिसरी लौंडी हाजिरा के हों पैदा हुआ उसका नसबनामा यह है। 13 इसमाईल के बेटे बड़े से लेकर छोटे तक यह हैं : नबायोत, कीदार, अदबियेल, मिबसाम, 14 मिशमा, दूमा, मस्सा, 15 हदद, तैमा, यतूर, नफ़ीस और किदमा।

16 यह बेटे बारह कबीलों के बानी बन गए, और जहाँ जहाँ वह आबाद हुए उन जगहों का वही नाम पड़ गया। 17 इसमाईल 137 साल का था जब वह कूच करके अपने बापदादा से जा मिला। 18 उस की औलाद उस इलाके में आबाद थी जो हवीला और शर के दरमियान है और जो मिसर के मशरिक में अस्रू की तरफ है। यों इसमाईल अपने तमाम भाइयों के सामने ही आबाद हुआ।

### एसौ और याक़ब की पैदाइश

19 यह इब्राहीम के बेटे इसहाक का बयान है।

20 इसहाक 40 साल का था जब उस की रिबका से शादी हुई। रिबका लाबन की बहन और अरामी मर्द बतुएल की बेटी थी (बतुएल मसोपुतामिया का था)। 21 रिबका के बच्चे पैदा न हुए। लेकिन इसहाक ने अपनी बीवी के लिए दुआ की तो रब ने उस की सुनी, और रिबका उम्मीद से हुई। 22 उसके पेट में बच्चे एक दूसरे से जोर-आज़माई करने लगे तो वह रब से पूछने गई, “अगर यह मेरी हालत रहेगी तो फिर मैं यहाँ तक क्यों पहुँच गई हूँ?” 23 रब ने उससे कहा, “तेरे अंदर दो क्रौमें हैं। वह

तुझसे निकलकर एक दूसरी से अलग अलग हो जाएँगी। उनमें से एक ज्यादा ताकतवर होगी, और बड़ा छोटे की खिदमत करेगा।”

24 पैदाइश का वक्त आ गया तो जुड़वाँ बेटे पैदा हुए। 25 पहला बच्चा निकला तो सुर्ख-सा था, और ऐसा लग रहा था कि वह घने बालों का कोट ही पहने हुए है। इसलिए उसका नाम एसौ यानी ‘बालोंवाला’ रखा गया। 26 इसके बाद दूसरा बच्चा पैदा हुआ। वह एसौ की एडी पकड़े हुए निकला, इसलिए उसका नाम याकूब यानी ‘एडी पकड़नेवाला’ रखा गया। उस वक्त इसहाक 60 साल का था।

27 लडके जवान हुए। एसौ माहिर शिकारी बन गया और खुले मैदान में खुश रहता था। उसके मुकाबले में याकूब शायस्ता था और डेरे में रहना पसंद करता था। 28 इसहाक एसौ को प्यार करता था, क्योंकि वह शिकार का गोश्त पसंद करता था। लेकिन रिबका याकूब को प्यार करती थी।

29 एक दिन याकूब सालन पका रहा था कि एसौ थकाहारा जंगल से आया। 30 उसने कहा, “मुझे जल्दी से लाल सालन, हॉं इसी लाल सालन से कुछ खाने को दो। मैं तो बेदम हो रहा हूँ।” (इसी लिए बाद में उसका नाम अदोम यानी सुर्ख पड़ गया।) 31 याकूब ने कहा, “पहले मुझे पहलौंठे का हक बेच दो।” 32 एसौ ने कहा, “मैं तो भूक से मर रहा हूँ, पहलौंठे का हक मेरे किस काम का?” 33 याकूब ने कहा, “पहले कसम खाकर मुझे यह हक बेच दो।” एसौ ने कसम खाकर उसे पहलौंठे का हक मुंत्किल कर दिया।

34 तब याकूब ने उसे कुछ रोटी और दाल दे दी, और एसौ ने खायी और पिया। फिर वह उठकर चला गया। यों उसने पहलौंठे के हक को हकीर जाना।

## 26

### इसहाक और रिबका जिरार में

1 उस मुल्क में दुबारा काल पडा, जिस तरह इब्राहीम के दिनों में भी पड़ गया था। इसहाक जिरार शहर गया जिस पर फिलिस्तिनों के बादशाह अबीमलिक की हुकमत थी। 2 रब ने इसहाक पर जाहिर होकर कहा, “मिसर न जा बल्कि उस मुल्क में बस जो मैं तुझे दिखाता हूँ। 3 उस मुल्क में अजनबी रह तो मैं तेरे साथ हूँगा और तुझे बरकत दूँगा। क्योंकि मैं तुझे और तेरी औलाद को यह तमाम इलाका दूँगा और वह वादा पूरा करूँगा जो मैंने कसम खाकर तेरे बाप इब्राहीम से किया था। 4 मैं तुझे इतनी औलाद दूँगा जितने आसमान पर सितारे हैं। और मैं यह तमाम मुल्क उन्हें दे दूँगा। तेरी औलाद से दुनिया की तमाम कौमों बरकत पाएँगी। 5 मैं तुझे इसलिए बरकत दूँगा कि इब्राहीम मेरे ताबे रहा और मेरी हिदायात और अहकाम पर चलता रहा।” 6 चुनौंचे इसहाक जिरार में आबाद हो गया।

7 जब वहाँ के मर्दों ने रिबका के बारे में पूछा तो इसहाक ने कहा, “यह मेरी बहन है।” वह उन्हें यह बताने से डरता था कि यह मेरी बीवी है, क्योंकि उसने सोचा, “रिबका निहायत खबसूरत है। अगर उन्हें मालूम हो जाए कि रिबका मेरी बीवी है तो वह उसे हासिल करने की खातिर मुझे कत्ल कर देंगे।”

8 काफ़ी वक्त गुज़र गया। एक दिन फिलिस्तिनों के बादशाह ने अपनी खिडकी में से झाँककर देखा कि इसहाक अपनी बीवी को प्यार कर रहा है। 9 उसने इसहाक को बुलाकर कहा, “वह तो आपकी बीवी है। आपने क्यों कहा कि मेरी बहन है?” इसहाक ने जवाब दिया, “मैंने सोचा कि अगर मैं बताऊँ कि यह मेरी बीवी है तो लोग मुझे कत्ल कर देंगे।”

10 अबीमलिक ने कहा, “आपने हमारे साथ कैसा सुल्क कर दिखाया! कितनी आसानी से मेरे आदमियों में से कोई आपकी बीवी से हमबिसतर हो जाता। इस तरह हम आपके सबब से एक बड़े जुर्म के कुसूरवार ठहरते।” 11 फिर अबीमलिक ने तमाम लोगों को हुक्म दिया, “जो भी इस मर्द या उस की बीवी को छेड़े उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।”

### इसहाक का फिलिस्तिनों के साथ झगडा

12 इसहाक ने उस इलाके में काशतकारी की, और उसी साल उसे सौ गुना फल मिला। यों रब ने उसे बरकत दी, 13 और वह अमीर हो गया। उस की दौलत बढ़ती गई, और वह निहायत दौलतमंद हो गया। 14 उसके पास इतनी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और गुलाम थे कि फिलिस्ती उससे हसद करने लगे। 15 अब ऐसा हुआ कि उन्होंने उन तमाम कुओं को मिट्टी से भरकर बंद कर दिया जो उसके बाप के नौकरों ने खोदे थे।

16 आखिरकार अबीमलिक ने इसहाक से कहा, “कहीं और जाकर रहें, क्योंकि आप हमसे ज्यादा जोरवार हो गए हैं।”

17 चुनौंचे इसहाक ने वहाँ से जाकर जिरार की वादी में अपने डेरे लगाए। 18 वहाँ फिलिस्तिनों ने इब्राहीम की मौत के बाद तमाम कुओं को मिट्टी से भर दिया था। इसहाक ने उनको दुबारा खुदवाया। उसने उनके वही नाम रखे जो उसके बाप ने रखे थे।

19 इसहाक के नौकरों को वादी में खोदते खोदते ताजा पानी मिल गया। 20 लेकिन जिरार के चरवाहे आकर इसहाक के चरवाहों से झगड़ने लगे। उन्होंने कहा, “यह हमारा कुआँ है!” इसलिए उसने उस कुएँ का नाम इसक यानी झगड़ा रखा। 21 इसहाक के नौकरों ने एक और कुआँ खोद लिया। लेकिन उस पर भी झगड़ा हुआ, इसलिए उसने उसका नाम सितना यानी मुखालफत रखा। 22 वहाँ से जाकर उसने एक तीसरा कुआँ खुदवाया। इस दफा कोई झगड़ा न हुआ, इसलिए उसने उसका नाम रहोबोत यानी ‘खुली जगह’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “रब ने हमें खुली जगह दी है, और अब हम मुल्क में फलें-फूलेगे।”

23 वहाँ से वह बैर-सबा चला गया। 24 उसी रात रब उस पर जाहिर हुआ और कहा, “मैं तेरे बाप इब्राहीम का खुदा हूँ। मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं तुझे बरकत दूँगा और तुझे अपने खादिम इब्राहीम की खातिर बहुत औलाद दूँगा।”

25 वहाँ इसहाक ने कुरबानगाह बनाई और रब का नाम लेकर इबादत की। वहाँ उसने अपने खैमे लगाए और उसके नौकरों ने कुआँ खोद लिया।

### अबीमलिक के साथ अहद

26 एक दिन अबीमलिक, उसका साथी अखुज़त और उसका सिपहसालार फ्रीकुल जिरार से उसके पास आए। 27 इसहाक ने पूछा, “आप क्यों मेरे पास आए हैं? आप तो मुझसे नफरत रखते हैं। क्या आपने मुझे अपने दरमियान से खारिज नहीं किया था?” 28 उन्होंने जवाब दिया, “हमने जान लिया है कि रब आपके साथ है। इसलिए हमने कहा कि हमारा आपके साथ अहद होना चाहिए। आइए हम कसम खाकर एक दूसरे से अहद बाँधें 29 कि आप हमें नुकसान नहीं पहुँचाएँगे, क्योंकि हमने भी आपको नहीं छेड़ा बल्कि आपसे सिर्फ अच्छा सुल्क किया और आपको सलामती के साथ रखसत किया है। और अब जाहिर है कि रब ने आपको बरकत दी है।”

30 इसहाक ने उनका जियाफत की, और उन्होंने खाया और पिया। 31 फिर सुबह-सबरे उठकर उन्होंने एक दूसरे के सामने कसम खाई। इसके बाद इसहाक ने उन्हें रखसत किया और वह सलामती से रवाना हुए।

32 उसी दिन इसहाक के नौकर आए और उसे उस कुएँ के बारे में इतला दी जो उन्होंने खोदा था। उन्होंने कहा, “हमें पानी मिल गया है।” 33 उसने कुएँ का नाम सबा यानी ‘कसम’ रखा। आज तक साथवाले शहर का नाम बैर-सबा है।

### एसौ की अजनबी बीवियों

34 जब एसौ 40 साल का था तो उसने दो हिती औरतों से शादी की, बैरी की बेटी यहदित से और ऐलोन की बेटी बासमत से। 35 यह औरतें इसहाक और रिबका के लिए बड़े दुख का बाइस बनीं।

## 27

### इसहाक याकूब को बरकत देता है

1 इसहाक बढ़ा हो गया तो उस की नज़र धूँधला गई। उसने अपने बड़े बेटे को बुलाकर कहा, “बेटा।” एसौ ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 2 इसहाक ने कहा, “मैं बढ़ा हो गया हूँ और खुदा जाने कब मर जाऊँ। 3 इसलिए अपना तीर कमान लेकर जंगल में निकल जा और मेरे लिए किसी जानवर का शिकार कर। 4 उसे तैयार करके ऐसा लज़ीज़ खाना पका जो मुझे पसंद है। फिर उसे मेरे पास ले आ। मरने से पहले मैं वह खाना खाकर तुझे बरकत देना चाहता हूँ।”

5 रिबका ने इसहाक की एसौ के साथ बातचीत सुन ली थी। जब एसौ शिकार करने के लिए चला गया तो उसने याकूब से कहा, “अभी अभी मैंने तुम्हारे अब्बू को एसौ से यह बात करते हुए सुना कि 7 मेरे लिए किसी जानवर का शिकार करके ले आ। उसे तैयार करके मेरे लिए लज़ीज़ खाना पका। मरने से पहले मैं यह खाना खाकर तुझे रब के सामने बरकत देना चाहता हूँ। 8 अब सुनो, मेरे बेटे! जो कुछ मैं बताती हूँ वह करो। 9 जाकर रेवड में से बकरियों के दो अच्छे अच्छे बच्चे चुन लो। फिर मैं वही लज़ीज़ खाना पकाऊँगी जो तुम्हारे अब्बू को पसंद है। 10 तुम यह खाना उसके पास ले जाओगे तो वह उसे खाकर मरने से पहले तुम्हें बरकत देगा।”

11 लेकिन याकूब ने एतराज़ किया, “आप जानती हैं कि एसौ के जिस्म पर घने बाल हैं जबकि मेरे बाल कम हैं। 12 कहीं मुझे झूठे से मेरे बाप को पता न चल जाए कि मैं उसे फरेब दे रहा हूँ। फिर मुझ पर बरकत नहीं बल्कि लानत आएगी।” 13 उस की माँ ने कहा, “तुम पर आनेवाली लानत मुझ पर आए, बेटा। बस मेरी बात मान लो। जाओ और बकरियों के वह बच्चे ले आओ।”

14 चुनौचे वह गया और उन्हें अपनी माँ के पास ले आया। रिबका ने ऐसा लज़ीज़ खाना पकाया जो याकूब के बाप को पसंद था। 15 एसौ के खास मौकों के लिए अच्छे लिबास रिबका के पास घर में थे। उसने उनमें से बेहतरीन लिबास चुनकर

अपने छोटे बेटे को पहना दिया। 16 साथ साथ उसने बकरियों की खालें उसके हाथों और गरदन पर जहाँ बाल न थे लपेट दी। 17 फिर उसने अपने बेटे याकूब को रोटी और वह लजीज़ खाना दिया जो उसने पकाया था।

18 याकूब ने अपने बाप के पास जाकर कहा, “अब्बू जी।” इसहाक ने कहा, “जी, बेटा। तू कौन है?” 19 उसने कहा, “मैं आपका पहलौटा एसौ हूँ। मैंने वह किया है जो आपने मुझे कहा था। अब ज़रा उठें और बैठकर मेरे शिकार का खाना खाएँ ताकि आप बाद में मुझे बरकत दें।” 20 इसहाक ने पूछा, “बेटा, तुझे यह शिकार इतनी जल्दी किस तरह मिल गया?” उसने जवाब दिया, “रब आपके खुदा ने उसे मेरे सामने से गुज़रने दिया।”

21 इसहाक ने कहा, “बेटा, मेरे करीब आ ताकि मैं तुझे छू लूँ कि तू वाकई मेरा बेटा एसौ है कि नहीं।” 22 याकूब अपने बाप के नज़दीक आया। इसहाक ने उसे छूकर कहा, “तेरी आवाज़ तो याकूब की है लेकिन तेरे हाथ एसौ के हैं।” 23 यों उसने फ़रेब ख़ाया। चूँकि याकूब के हाथ एसौ के हाथ की मानिंद थे इसलिए उसने उसे बरकत दी। 24 तो भी उसने दुबारा पूछा, “क्या तू वाकई मेरा बेटा एसौ है?” याकूब ने जवाब दिया, “जी, मैं वही हूँ।” 25 आख़िरकार इसहाक ने कहा, “शिकार का खाना मेरे पास ले आ, बेटा। उसे खाने के बाद मैं तुझे बरकत दूँगा।” याकूब खाना और मैं ले आया। इसहाक ने ख़ाया और पिया, 26 फिर कहा, “बेटा, मेरे पास आ और मुझे बोसा दे।” 27 याकूब ने पास आकर उसे बोसा दिया। इसहाक ने उसके लिबास को सूँघकर उसे बरकत दी। उसने कहा,

“मेरे बेटे की खुशबू उस खुले मैदान की खुशबू की मानिंद है जिसे रब ने बरकत दी है। 28 अल्लाह तुझे आसमान की ओस और ज़मीन की ज़रखेज़ी दे। वह तुझे कसरत का अनाज और अंगूर का रस दे। 29 कौम तेरी खिदमत करें, और उम्मतें तेरे सामने झुक जाएँ। अपने भाइयों का हुक्मरान बन, और तेरी माँ की औलाद तेरे सामने घुटने टेके। जो तुझ पर लानत करे वह खुद लानती हो और जो तुझे बरकत दे वह खुद बरकत पाए।”

### एसौ भी बरकत माँगता है

30 इसहाक की बरकत के बाद याकूब अभी स्रखसत ही हुआ था कि उसका भाई एसौ शिकार करके वापस आया। 31 वह भी लजीज़ खाना पकाकर उसे अपने बाप के पास ले आया। उसने कहा, “अब्बू जी, उठें और मेरे शिकार का खाना खाएँ ताकि आप मुझे बरकत दें।” 32 इसहाक ने पूछा, “तू कौन है?” उसने जवाब दिया, “मैं आपका बड़ा बेटा एसौ हूँ।”

33 इसहाक घबराकर शिदत से काँपने लगा। उसने पूछा, “फिर वह कौन था जो किसी जानवर का शिकार करके मेरे पास ले आया? तेरे आने से ज़रा पहले मैंने उस शिकार का खाना खाकर उस शख्स को बरकत दी। अब वह बरकत उसी पर रहेगी।”

34 यह सुनकर एसौ ज़ोरदार और तलख चीखें मारने लगा। “अब्बू, मुझे भी बरकत दें,” उसने कहा। 35 लेकिन इसहाक ने जवाब दिया, “तेरे भाई ने आकर मुझे फ़रेब दिया। उसने तेरी बरकत तुझसे छीन ली है।” 36 एसौ ने कहा, “उसका नाम याकूब ठीक ही रखा गया है, क्योंकि अब उसने मुझे दूसरी बार धोका दिया है। पहले उसने पहलौटे का हक मुझसे छीन लिया और अब मेरी बरकत भी ज़बरदस्ती ले ली। क्या आपने मेरे लिए कोई बरकत महफूज़ नहीं रखी?” 37 लेकिन इसहाक ने कहा, “मैंने उसे तेरा हुक्मरान और उसके तमाम भाइयों को उसके खादिम बना दिया है। मैंने उसे अनाज और अंगूर का रस मुहैया किया है। अब मुझे बता बेटा, क्या कुछ रह गया है जो मैं तुझे दूँ?” 38 लेकिन एसौ ख़ामोश न हुआ बल्कि कहा, “अब्बू, क्या आपके पास वाकई सिर्फ़ यही बरकत थी? अब, मुझे भी बरकत दें।” वह ज़ारो-कतार रोने लगा।

39 फिर इसहाक ने कहा, “तू ज़मीन की ज़रखेज़ी और आसमान की ओस से महरूम रहेगा। 40 तू सिर्फ़ अपनी तलवार के सहारे जिंदा रहेगा और अपने भाई की खिदमत करेगा। लेकिन एक दिन तू बैचैन होकर उसका जुआ अपनी गरदन पर से उतार फेंकेगा।”

### याकूब की हिज़रत

41 बाप की बरकत के सबसे एसौ याकूब का दुश्मन बन गया। उसने दिल में कहा, “वह दिन करीब आ गए हैं कि अब्बू इंतकाल कर जाएंगे और हम उनका मातम करेंगे। फिर मैं अपने भाई को मार डालूँगा।”

42 रिबका को अपने बड़े बेटे एसौ का यह इरादा मालूम हुआ। उसने याकूब को बुलाकर कहा, “तुम्हारा भाई बदला लेना चाहता है। वह तुम्हें कत्ल करने का इरादा रखता है। 43 बेटा, अब मेरी सुनो, यहाँ से हिज़रत कर जाओ। हारान शहर में मेरे भाई लाबन के पास चले जाओ। 44 वहाँ कुछ दिन ठहरे रहना जब तक तुम्हारे भाई का गुस्सा ठंडा न हो जाए। 45 जब उसका गुस्सा ठंडा हो जाएगा और वह तुम्हारे उसके साथ किए गए सुलूक को भूल जाएगा, तब मैं इतला दूँगी कि तुम वहाँ से वापस आ सकते हो। मैं क्यों एक ही दिन में तुम दोनों से महरूम हो जाऊँ?”

46 फिर रिबका ने इसहाक से बात की, “मैं एसौ की बीवियों के सबसे अपनी जिंदागी से तंग हूँ। अगर याकूब भी इस मुल्क की औरतों में से किसी से शादी करे तो बेहतर है कि मैं पहले ही मर जाऊँ।”

## 28

1 इसहाक ने याकूब को बुलाकर उसे बरकत दी और कहा, “लाज़िम है कि तू किसी कनानी औरत से शादी न करे।<sup>2</sup> अब सीधे मसोपुतामिया में अपने नाना बतुएल के घर जा और वहाँ अपने मामू लाबन की लड़कियों में से किसी एक से शादी कर।<sup>3</sup> अल्लाह कादिर-मुत्लक तुझे बरकत देकर फलने फूलने दे और तुझे इतनी औलाद दे कि तू बहुत सारी कौमों का बाप बने।<sup>4</sup> वह तुझे और तेरी औलाद को इब्राहीम की बरकत दे जिसे उसने यह मुल्क दिया जिसमें तू मेहमान के तौर पर रहता है। यह मुल्क तुम्हारे कब्जे में आए।”<sup>5</sup> यों इसहाक ने याकूब को मसोपुतामिया में लाबन के घर भेजा। लाबन अरामी मर्द बतुएल का बेटा और रिबका का भाई था।

एसौ एक और शादी करता है

6 एसौ को पता चला कि इसहाक ने याकूब को बरकत देकर मसोपुतामिया भेज दिया है ताकि वहाँ शादी करे। उसे यह भी मालूम हुआ कि इसहाक ने उसे कनानी औरत से शादी करने से मना किया है<sup>7</sup> और कि याकूब अपने माँ-बाप की सुनकर मसोपुतामिया चला गया है। 8 एसौ समझ गया कि कनानी औरतें मेरे बाप को मंज़ूर नहीं हैं।<sup>9</sup> इसलिए वह इब्राहीम के बेटे इसमाईल के पास गया और उस की बेटी महलत से शादी की। वह नबायत की बहन थी। यों उस की बीवियों में इजाफा हुआ।

बैतेल में याकूब का खाब

10 याकूब बैर-सबा से हारान की तरफ रवाना हुआ।<sup>11</sup> जब सूरज गुरुब हुआ तो वह रात गुज़ारने के लिए रुक गया और वहाँ के पत्थरों में से एक को लेकर उसे अपने सिरहाने रखा और सो गया।

12 जब वह सो रहा था तो खाब में एक सीढ़ी देखी जो ज़मीन से आसमान तक पहुँचती थी। फरिश्ते उस पर चढ़ते और उतरते नज़र आते थे।<sup>13</sup> रब उसके ऊपर खड़ा था। उसने कहा, “मैं रब इब्राहीम और इसहाक का खुदा हूँ। मैं तुझे और तेरी औलाद को यह ज़मीन दूँगा जिस पर तू लेटा है।<sup>14</sup> तेरी औलाद ज़मीन पर खाक की तरह बेशुमार होगी, और तू चारों तरफ फैल जाएगा। दुनिया की तमाम कौमों तेरे और तेरी औलाद के वसीले से बरकत पाएँगी।<sup>15</sup> मैं तेरे साथ हूँगा, तुझे महफूज़ रखूँगा और आखिरकार तुझे इस मुल्क में वापस लाऊँगा। मुमकिन ही नहीं कि मैं तेरे साथ अपना वादा पूरा करने से पहले तुझे छोड़ दूँ।”

16 तब याकूब जाग उठा। उसने कहा, “यकीनन रब यहाँ हाज़िर है, और मुझे मालूम नहीं था।”<sup>17</sup> वह डर गया और कहा, “यह कितना खौफनाक मकाम है। यह तो अल्लाह ही का घर और आसमान का दरवाज़ा है।”

18 याकूब सबह-सबरे उठा। उसने वह पत्थर लिया जो उसने अपने सिरहाने रखा था और उसे सतून की तरह खड़ा किया। फिर उसने उस पर जैतून का तेल उंडेल दिया।<sup>19</sup> उसने मकाम का नाम बैतेल यानी ‘अल्लाह का घर’ रखा (पहले साथवाले शहर का नाम लूज़ था)।<sup>20</sup> उसने क्रम ख़ाकर कहा, “अगर रब मेरे साथ हो, सफ़र पर मेरी हिफाज़त करे, मुझे खाना और कपड़ा मुहैया करे<sup>21</sup> और मैं सलामती से अपने बाप के घर वापस पहुँचूँ तो फिर वह मेरा खुदा होगा।<sup>22</sup> जहाँ यह पत्थर सतून के तौर पर खड़ा है वहाँ अल्लाह का घर होगा, और जो भी तू मुझे देगा उसका दसवाँ हिस्सा तुझे दिया करूँगा।”

## 29

याकूब लाबन के घर पहुँचता है

1 याकूब ने अपना सफ़र जारी रखा और चलते चलते मशरिकी कौमों के मुल्क में पहुँच गया।<sup>2</sup> वहाँ उसने खेत में कुआँ देखा जिसके इर्दगिर्द भेड़-बकरियों के तीन रेवड़ जमा थे। रेवड़ों को कुएँ का पानी पिलाया जाना था, लेकिन उसके मुँह पर बड़ा पत्थर पड़ा था।<sup>3</sup> वहाँ पानी पिलाने का यह तरीका था कि पहले चरवाहे तमाम रेवड़ों का इंतज़ार करते और फिर पत्थर को लुढ़काकर मुँह से हटा देते थे। पानी पिलाने के बाद वह पत्थर को दुबारा मुँह पर रख देते थे।

4 याकूब ने चरवाहों से पूछा, “मेरे भाइयों, आप कहाँ के हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “हारान के।”<sup>5</sup> उसने पूछा, “क्या आप नहर के पोते लाबन को जानते हैं?” उन्होंने कहा, “जी हाँ।”<sup>6</sup> उसने पूछा, “क्या वह खैरियत से है?” उन्होंने कहा, “जी, वह खैरियत से है। देखो, उधर उस की बेटी राखिल रेवड़ लेकर आ रही है।”<sup>7</sup> याकूब ने कहा, “अभी तो शाम तक बहुत वक्त बाकी है। रेवड़ों को जमा करने का वक्त तो नहीं है। आप क्यों उन्हें पानी पिलाकर दुबारा चरने नहीं देते?”<sup>8</sup> उन्होंने जवाब दिया, “पहले ज़रूरी है कि तमाम रेवड़ यहाँ पहुँचें। तब ही पत्थर को लुढ़काकर एक तरफ हटाया जाएगा और हम रेवड़ों को पानी पिलाएँगे।”

9 याकूब अभी उनसे बात कर ही रहा था कि राखिल अपने बाप का रेवड़ लेकर आ पहुँची, क्योंकि भेड़-बकरियों को चराना उसका काम था।<sup>10</sup> जब याकूब ने राखिल को मामू लाबन के रेवड़ के साथ आते देखा तो उसने कुएँ के पास जाकर

पत्थर को लुढ़काकर मुँह से हटा दिया और भेड़-बकरियों को पानी पिलाया। 11 फिर उसने उसे बोसा दिया और खूब रोने लगा। 12 उसने कहा, “मैं आपके अब्ब की बहन रिबका का बेटा हूँ।” यह सुनकर राखिल ने भागकर अपने अब्ब को इतला दी।

13 जब लाबन ने सुना कि मेरा भानजा याकूब आया है तो वह दौड़कर उससे मिलने गया और उसे गले लगाकर अपने घर ले आया। याकूब ने उसे सब कुछ बता दिया जो हुआ था। 14 लाबन ने कहा, “आप वाकई मेरे रिश्तेदार हैं।” याकूब ने वहाँ एक पूरा महीना गुजारा।

### अपनी बीवियों के लिए याकूब की मेहनत-मशक्कत

15 फिर लाबन याकूब से कहने लगा, “बेशक आप मेरे रिश्तेदार हैं, लेकिन आपको मेरे लिए काम करने के बदले में कुछ मिलना चाहिए। मैं आपको कितने पैसे दूँ?” 16 लाबन की दो बेटियाँ थीं। बड़ी का नाम लियाह था और छोटी का राखिल। 17 लियाह की आँखें चुंधी थीं जबकि राखिल हर तरह से खूबसूरत थी। 18 याकूब को राखिल से मुहब्बत थी, इसलिए उसने कहा, “अगर मुझे आपकी छोटी बेटी राखिल मिल जाए तो आपके लिए सात साल काम करूँगा।” 19 लाबन ने कहा, “किस्ती और आदमी की निसबत मुझे यह ज़्यादा पसंद है कि आप ही से उस की शादी कराऊँ।”

20 पस याकूब ने राखिल को पाने के लिए सात साल तक काम किया। लेकिन उसे ऐसा लगा जैसा दो एक दिन ही गुज़रे हों क्योंकि वह राखिल को शिद्दत से प्यार करता था। 21 इसके बाद उसने लाबन से कहा, “मुद्दत पूरी हो गई है। अब मुझे अपनी बेटी से शादी करने दें।” 22 लाबन ने उस मकाम के तमाम लोगों को दावत देकर शादी की ज़ियाफत की। 23 लेकिन उस रात वह राखिल की बजाए लियाह को याकूब के पास ले आया, और याकूब उसी से हमबिसतर हुआ। 24 (लाबन ने लियाह को अपनी लौंडी ज़िलफ़ा दे दी थीं ताकि वह उस की खिदमत करे।)

25 जब सुबह हुई तो याकूब ने देखा कि लियाह ही मेरे पास है। उसने लाबन के पास जाकर कहा, “यह आपने मेरे साथ क्या किया है? क्या मैंने राखिल के लिए काम नहीं किया? आपने मुझे धोका क्यों दिया?” 26 लाबन ने जवाब दिया, “यहाँ दस्तूर नहीं है कि छोटी बेटी की शादी बड़ी से पहले कर दी जाए। 27 एक हफ़ते के बाद शादी की स्ममात पूरी हो जाएँगी। उस वक़्त तक सब्र करें। फिर मैं आपको राखिल भी दे दूँगा। शर्त यह है कि आप मज़ीद सात साल मेरे लिए काम करें।”

28 याकूब मान गया। चुनौचे जब एक हफ़ते के बाद शादी की स्ममात पूरी हुई तो लाबन ने अपनी बेटी राखिल की शादी भी उसके साथ कर दी। 29 (लाबन ने राखिल को अपनी लौंडी बिलहाह दे दी ताकि वह उस की खिदमत करे।) 30 याकूब राखिल से भी हमबिसतर हुआ। वह लियाह की निसबत उसे ज़्यादा प्यार करता था। फिर उसने राखिल के एवज़ सात साल और लाबन की खिदमत की।

### याकूब के बच्चे

31 जब रब ने देखा कि लियाह से नफ़रत की जाती है तो उसने उसे औलाद दी जबकि राखिल के हॉ बच्चे पैदा न हुए।

32 लियाह हामिला हुई और उसके बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “रब ने मेरी मुसीबत देखी है और अब मेरा शौहर मुझे प्यार करेगा।” उसने उसका नाम रुबिन यानी ‘देखो एक बेटा’ रखा।

33 वह दुबारा हामिला हुई। एक और बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “रब ने सुना कि मुझसे नफ़रत की जाती है, इसलिए उसने मुझे यह भी दिया है।” उसने उसका नाम शमौन यानी ‘रब ने सुना है’ रखा।

34 वह एक और दफ़ा हामिला हुई। तीसरा बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “अब आखिरकार शौहर के साथ मेरा बंधन मज़बूत हो जाएगा, क्योंकि मैंने उसके लिए तीन बेटों को जन्म दिया है।” उसने उसका नाम लावी यानी बंधन रखा।

35 वह एक बार फिर हामिला हुई। चौथा बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “इस दफ़ा मैं रब की तमज़ीद करूँगी।” उसने उसका नाम यहदाह यानी तमज़ीद रखा। इसके बाद उससे और बच्चे पैदा न हुए।

## 30

1 लेकिन राखिल बेऔलाद ही रही, इसलिए वह अपनी बहन से हसद करने लगी। उसने याकूब से कहा, “मुझे भी औलाद दें वरना मैं मर जाऊँगी।” 2 याकूब को गुस्सा आया। उसने कहा, “क्या मैं अल्लाह हूँ जिसने तुझे औलाद से महरूम रखा है?” 3 राखिल ने कहा, “यहाँ मेरी लौंडी बिलहाह है। उसके साथ हमबिसतर हों ताकि वह मेरे लिए बच्चे को जन्म दे और मैं उस की मारिफत माँ बन जाऊँ।”

4 यों उसने अपने शौहर को बिलहाह दी, और वह उससे हमबिसतर हुआ। 5 बिलहाह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। 6 राखिल ने कहा, “अल्लाह ने मेरे हक़ में फ़ैसला दिया है। उसने मेरी दुआ सुनकर मुझे बेटा दे दिया है।” उसने उसका नाम दान यानी ‘किस्ती के हक़ में फ़ैसला करनेवाला’ रखा।

7 बिलहाह दुबारा हामिला हुई और एक और बेटा पैदा हुआ। 8 राखिल ने कहा, “मैंने अपनी बहन से सख्त कुशती लड़ी है, लेकिन जीत गई हूँ।” उसने उसका नाम नफताली यानी ‘कुशती में मुझे जीता गया’ रखा।

9 जब लियाह ने देखा कि मेरे और बच्चे पैदा नहीं हो रहे तो उसने याकूब को अपनी लौंडी ज़िलाफा दे दी ताकि वह भी उस की बीवी हो। 10 ज़िलाफा के भी एक बेटा पैदा हुआ। 11 लियाह ने कहा, “मैं कितनी खुशकिस्मत हूँ!” चुनौचे उसने उसका नाम जद यानी खुशकिस्मती रखा।

12 फिर ज़िलाफा के दूसरा बेटा पैदा हुआ। 13 लियाह ने कहा, “मैं कितनी मुबारक हूँ। अब खवातीन मुझे मुबारक कहेंगी।” उसने उसका नाम आशर यानी मुबारक रखा।

14 एक दिन अनाज की फसल की कटाई हो रही थी कि रुबिन बाहर निकलकर खेतों में चला गया। वहाँ उसे मर्दुमगयाह \* मिल गए। वह उन्हें अपनी माँ लियाह के पास ले आया। यह देखकर राखिल ने लियाह से कहा, “मुझे ज़रा अपने बेटे के मर्दुमगयाह में से कुछ दे दो।” 15 लियाह ने जवाब दिया, “क्या यही काफी नहीं कि तुमने मेरे शौहर को मुझे छीन लिया है? अब मेरे बेटे के मर्दुमगयाह को भी छीनना चाहती हो।” राखिल ने कहा, “अगर तुम मुझे अपने बेटे के मर्दुमगयाह में से दो तो आज रात याकूब के साथ सो सकती हो।”

16 शाम को याकूब खेतों से वापस आ रहा था कि लियाह आगे से उससे मिलने को गई और कहा, “आज रात आपको मेरे साथ सोना है, क्योंकि मैंने अपने बेटे के मर्दुमगयाह के एवज़ आपको उजरत पर लिया है।” चुनौचे याकूब ने लियाह के पास रात गुज़ारी।

17 उस वक़्त अल्लाह ने लियाह की दुआ सुनी और वह हामिला हुई। उसके पाँचवाँ बेटा पैदा हुआ। 18 लियाह ने कहा, “अल्लाह ने मुझे इसका अज़्र दिया है कि मैंने अपने शौहर को अपनी लौंडी दी।” उसने उसका नाम इशकार यानी अज़्र रखा।

19 इसके बाद वह एक और दफ़ा हामिला हुई। उसके छठा बेटा पैदा हुआ। 20 उसने कहा, “अल्लाह ने मुझे एक अच्छा-खासा तोहफा दिया है। अब मेरा खाविद मेरे साथ रहेगा, क्योंकि मुझे उसके छः बेटे पैदा हुए हैं।” उसने उसका नाम ज़बूलन यानी रिहाइश रखा।

21 इसके बाद बेटी पैदा हुई। उसने उसका नाम दीना रखा।

22 फिर अल्लाह ने राखिल को भी याद किया। उसने उस की दुआ सुनकर उसे औलाद बख़्शी। 23 वह हामिला हुई और एक बेटा पैदा हुआ। उसने कहा, “मुझे बेटा अता करने से अल्लाह ने मेरी इज़ज़त बहाल कर दी है। 24 रब मुझे एक और बेटा दे।” उसने उसका नाम यूसुफ़ यानी ‘वह और दे’ रखा।

### याकूब का लाबन के साथ सौदा

25 यूसुफ़ की पैदाइश के बाद याकूब ने लाबन से कहा, “अब मुझे इजाज़त दें कि मैं अपने वतन और घर को वापस जाऊँ। 26 मुझे मेरे बाल-बच्चे दें जिनके एवज़ मैंने आपकी खिदमत की है। फिर मैं चला जाऊँगा। आप तो खुद जानते हैं कि मैंने कितनी मेहनत के साथ आपके लिए काम किया है।”

27 लेकिन लाबन ने कहा, “मुझ पर मेहरबानी करें और यहीं रहें। मुझे गैबदानी से पता चला है कि रब ने मुझे आपके सबब से बरकत दी है। 28 अपनी उजरत खुद मुकर्रर करें तो मैं वही दिया करूँगा।”

29 याकूब ने कहा, “आप जानते हैं कि मैंने किस तरह आपके लिए काम किया, कि मेरे वसीले से आपके मवेशी कितने बढ़ गए हैं। 30 जो थोड़ा-बहुत मेरे आने से पहले आपके पास था वह अब बहुत ज़्यादा बढ़ गया है। रब ने मेरे काम से आपको बहुत बरकत दी है। अब वह वक़्त आ गया है कि मैं अपने घर के लिए कुछ करूँ।”

31 लाबन ने कहा, “मैं आपको क्या दूँ?” याकूब ने कहा, “मुझे कुछ न दें। मैं इस शर्त पर आपकी भेड़-बकरियों की देख-भाल जारी रखूँगा कि 32 आज मैं आपके रेवड़ में से गुज़रकर उन तमाम भेड़ों को अलग कर लूँगा जिनके जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे हों या जो सफ़ेद न हों। इसी तरह मैं उन तमाम बकरियों को भी अलग कर लूँगा जिनके जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे हों। यही मेरी उजरत होगी। 33 आइंदा जिन बकरियों के जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे होंगे या जिन भेड़ों का रंग सफ़ेद नहीं होगा वह मेरा अज़्र होंगी। जब कभी आप उनका मुआयना करेंगे तो आप मालूम कर सकेंगे कि मैं दियानतदार रहा हूँ। क्योंकि मेरे जानवरों के रंग से ही जाहिर होगा कि मैंने आपका कुछ चुराया नहीं है।” 34 लाबन ने कहा, “ठीक है। ऐसा ही हो जैसा आपने कहा है।”

35 उसी दिन लाबन ने उन बकरों को अलग कर लिया जिनके जिस्म पर धारियाँ या धब्बे थे और उन तमाम बकरियों को जिनके जिस्म पर छोटे या बड़े धब्बे थे। जिसके भी जिस्म पर सफ़ेद निशान था उसे उसने अलग कर लिया। इसी तरह उसने उन तमाम भेड़ों को भी अलग कर लिया जो पूरे तौर पर सफ़ेद न थे। फिर लाबन ने उन्हें अपने बेटों के सुपुर्द कर दिया

\* 30:14 एक पौदा जिसके बारे में खयाल किया जाता था कि उसे खाकर बौद्ध औरत भी बच्चे को जन्म देगी।

36 जो उनके साथ याकूब से इतना दूर चले गए कि उनके दरमियान तीन दिन का फासला था। तब याकूब लाबन की बाकी भेड़-बकरियों की देख-भाल करता गया।

37 याकूब ने सफेदा, बादाम और चनार की हरी हरी शाखें लेकर उनसे कुछ छिलका यों उतार दिया कि उस पर सफेद धारियाँ नजर आईं। 38 उसने उन्हें भेड़-बकरियों के सामने उन हौजों में गाड़ दिया जहाँ वह पानी पीती थे, क्योंकि वहाँ यह जानवर मस्त होकर मिलाप करते थे। 39 जब वह इन शाखों के सामने मिलाप करते तो जो बच्चे पैदा होते उनके जिस्म पर छोटे और बड़े धब्बे और धारियाँ होती थीं। 40 फिर याकूब ने भेड़ के बच्चों को अलग करके अपने रेवडों को लाबन के उन जानवरों के सामने चरने दिया जिनके जिस्म पर धारियाँ थीं और जो सफेद न थे। यों उसने अपने ज़ाती रेवडों को अलग कर लिया और उन्हें लाबन के रेवड के साथ चरने न दिया।

41 लेकिन उसने यह शाखें सिर्फ उस वक़्त हौजों में खड़ी की जब ताक़तवर जानवर मस्त होकर मिलाप करते थे। 42 कमज़ोर जानवरों के साथ उसने ऐसा न किया। इसी तरह लाबन को कमज़ोर जानवर और याकूब को ताक़तवर जानवर मिल गए। 43 यों याकूब बहुत अमीर बन गया। उसके पास बहुत-से रेवड, गुलाम और लौंडियाँ, ऊँट और गधे थे।

## 31

### याकूब की हिज़रत

1 एक दिन याकूब को पता चला कि लाबन के बेटे मेरे बारे में कह रहे हैं, “याकूब ने हमारे अब्बू से सब कुछ छीन लिया है। उसने यह तमाम दौलत हमारे बाप की मिलकियत से हासिल की है।” 2 याकूब ने यह भी देखा कि लाबन का मेरे साथ रवैया पहले की निसबत बिगड़ गया है। 3 फिर रब ने उससे कहा, “अपने बाप के मुल्क और अपने रिश्तेदारों के पास वापस चला जा। मैं तेरे साथ हूँगा।”

4 उस वक़्त याकूब खुले मैदान में अपने रेवडों के पास था। उसने वहाँ से राखिल और लियाह को बुलाकर 5 उससे कहा, “मैंने देख लिया है कि आपके बाप का मेरे साथ रवैया पहले की निसबत बिगड़ गया है। लेकिन मेरे बाप का खुदा मेरे साथ रहा है। 6 आप दोनों जानती हैं कि मैंने आपके अब्बू के लिए कितनी जॉफिशानी से काम किया है। 7 लेकिन वह मुझे फ़रेब देता रहा और मेरी उजरत दस बार बदली। ताहम अल्लाह ने उसे मुझे नुक़सान पहुँचाने न दिया। 8 जब मामूँ लाबन कहते थे, ‘जिन जानवरों के जिस्म पर धब्बे हों वही आपको उजरत के तौर पर मिलेंगे’ तो तमाम भेड़-बकरियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए जिनके जिस्मों पर धब्बे ही थे। जब उन्होंने कहा, ‘जिन जानवरों के जिस्म पर धारियाँ होंगी वही आपको उजरत के तौर पर मिलेंगे’ तो तमाम भेड़-बकरियों के ऐसे बच्चे पैदा हुए जिनके जिस्मों पर धारियाँ ही थीं। 9 यों अल्लाह ने आपके अब्बू के मवेशी छीनकर मुझे दे दिए हैं। 10 अब ऐसा हुआ कि हैवानों की मस्ती के मौसम में मैंने एक ख़ाब देखा। उसमें जो मेंढे और बकरे भेड़-बकरियों से मिलाप कर रहे थे उनके जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ थीं। 11 उस ख़ाब में अल्लाह के फ़रिश्ते ने मुझसे बात की, ‘याकूब!’ मैंने कहा, ‘जी, मैं हाज़िर हूँ।’ 12 फ़रिश्ते ने कहा, ‘अपनी नज़र उठाकर उस पर गौर कर जो हो रहा है। वह तमाम मेंढे और बकरे जो भेड़-बकरियों से मिलाप कर रहे हैं उनके जिस्म पर बड़े और छोटे धब्बे और धारियाँ हैं। मैं यह ख़ुद करवा रहा हूँ, क्योंकि मैंने वह सब कुछ देख लिया है जो लाबन ने तेरे साथ किया है। 13 मैं वह ख़ुदा हूँ जो बैतेल में तुझ पर जाहिर हुआ था, उस जगह जहाँ तूने सतून पर तेल उंडेलकर उसे मेरे लिए मख़सूस किया और मेरे हुज़ूर क़सम खाई थी। अब उठ और रवाना होकर अपने वतन वापस चला जा।’”

14 राखिल और लियाह ने जवाब में याकूब से कहा, “अब हमें अपने बाप की मीरास से कुछ मिलने की उम्मीद नहीं रही। 15 उसका हमारे साथ अज़नबी का-सा सुल्क है। पहले उसने हमें बेच दिया, और अब उसने वह सारे पैसे खा भी लिए हैं। 16 चुनौचे जो भी दौलत अल्लाह ने हमारे बाप से छीन ली है वह हमारी और हमारे बच्चों की ही है। अब जो कुछ भी अल्लाह ने आपको बताया है वह करें।”

17 तब याकूब ने उठकर अपने बाल-बच्चों को ऊँटों पर बिठाया 18 और अपने तमाम मवेशी और मसोपुतामिया से हासिल किया हुआ तमाम सामान लेकर मुल्के-कनान में अपने बाप के हों जाने के लिए रवाना हुआ। 19 उस वक़्त लाबन अपनी भेड़-बकरियों की पशम कतरने को गया हुआ था। उस की गैरमौजूदगी में राखिल ने अपने बाप के बत चूरा लिए।

20 याकूब ने लाबन को फ़रेब देकर उसे इतला न दी कि मैं जा रहा हूँ 21 बल्कि अपनी सारी मिलकियत समेटकर फ़रार हुआ। दरियाए-फ़ुरात को पार करके वह जिलियाद के पहाड़ी इलाके की तरफ़ सफ़र करने लगा।

लाबन याकूब का तावकुब करता है



22 तीन दिन गुजर गए। फिर लाबन को बताया गया कि याकूब भाग गया है। 23 अपने रिश्तेदारों को साथ लेकर उसने उसका ताकूब किया। सात दिन चलते चलते उसने याकूब को आ लिया जब वह जिलियाद के पहाड़ी इलाके में पहुँच गया था। 24 लेकिन उस रात अल्लाह ने खाब में लाबन के पास आकर उससे कहा, “खबरदार! याकूब को बुरा-भला न कहना।”

25 जब लाबन उसके पास पहुँचा तो याकूब ने जिलियाद के पहाड़ी इलाके में अपने खैमे लगाए हुए थे। लाबन ने भी अपने रिश्तेदारों के साथ वहीं अपने खैमे लगाए। 26 उसने याकूब से कहा, “यह आपने क्या किया है? आप मुझे धोका देकर मेरी बेटियों को क्यों जर्गी कैदियों की तरह हॉक लाए हैं? 27 आप क्यों मुझे फरेब देकर खामोशी से भाग आए हैं? अगर आप मुझे इतला देते तो मैं आपको खुशी खुशी दफ और सरोद के साथ गाते बजाते स्रखसत करता। 28 आपने मुझे अपने नवासे-नवासियों और बेटियों को बोसा देने का मौका भी न दिया। आपकी यह हरकत बड़ी अहमकाना थी। 29 मैं आपको बहुत नुकसान पहुँचा सकता हूँ। लेकिन पिछली रात आपके अब्बू के खुदा ने मुझसे कहा, ‘खबरदार! याकूब को बुरा-भला न कहना।’ 30 ठीक है, आप इसलिए चले गए कि अपने बाप के घर वापस जाने के बड़े आरज़ूद थे। लेकिन यह आपने क्या किया है कि मेरे बुत चुरा लाए हैं?”

31 याकूब ने जवाब दिया, “मुझे डर था कि आप अपनी बेटियों को मुझसे छीन लेंगे। 32 लेकिन अगर आपको यहाँ किसी के पास अपने बुत मिल जाएँ तो उसे सज़ाए-मौत दी जाए हमारे रिश्तेदारों की मौजूदगी में मालूम करें कि मेरे पास आपकी कोई चीज़ है कि नहीं। अगर है तो उसे ले लें।” याकूब को मालूम नहीं था कि राखिल ने बुतों को चुराया है।

33 लाबन याकूब के खैमे में दाखिल हुआ और ढूँडने लगा। वहाँ से निकलकर वह लियाह के खैमे में और दोनों लौंडियों के खैमे में गया। लेकिन उसके बुत कहीं नज़र न आए। आखिर में वह राखिल के खैमे में दाखिल हुआ। 34 राखिल बुतों को ऊँटों की एक काठी के नीचे छुपाकर उस पर बैठ गई थी। लाबन टटोल टटोलकर पूरे खैमे में से गुज़रा लेकिन बुत न मिले। 35 राखिल ने अपने बाप से कहा, “अबबू, मुझसे नाराज़ न होना कि मैं आपके सामने खड़ी नहीं हो सकती। मैं ऐयामे-माहवारी के सबब से उठ नहीं सकती।” लाबन उसे छोड़कर ढूँडला रहा, लेकिन कुछ न मिला।

36 फिर याकूब को गुस्सा आया और वह लाबन से झगड़ने लगा। उसने पूछा, “मुझसे क्या जुर्म सरज़द हुआ है? मैंने क्या गुनाह किया है कि आप इतनी तूदी से मेरे ताकूब के लिए निकले हैं? 37 आपने टटोल टटोलकर मेरे सारे सामान की तलाशी ली है। तो आपका क्या निकला है? उसे यहाँ अपने और मेरे रिश्तेदारों के सामने रखें। फिर वह फ़ैसला करें कि हममें से कौन हक़ पर है। 38 मैं बीस साल तक आपके साथ रहा हूँ। उस दौरान आपकी भेड़-बक़रियाँ बच्चों से महरूम नहीं रही बल्कि मैंने आपका एक मेंढा भी नहीं खाया। 39 जब भी कोई भेड़ या बक़री किसी जंगली जानवर ने फाड़ डाली तो मैं उसे आपके पास न लाया बल्कि मुझे खुद उसका नुकसान भरना पड़ा। आपका तकाज़ा था कि मैं खुद चोरी हुए माल का एवज़ाना दूँ, खाह वह दिन के वक्त चोरी हुआ या रात को। 40 मैं दिन की शदीद गरमी के बाइस पिघल गया और रात की शदीद सर्दी के बाइस जम गया। काम इतना सख़्त था कि मैं नौद से महरूम रहा। 41 पूरे बीस साल इसी हालत में गुज़र गए। चौदह साल मैंने आपकी बेटियों के एवज़ काम किया और छः साल आपकी भेड़-बक़रियों के लिए। उस दौरान आपने दस बार मेरी तनखाह बदल दी। 42 अगर मेरे बाप इसहाक़ का खुदा और मेरे दादा इब्राहीम का माबूद \* मेरे साथ न होता तो आप मुझे ज़रूर खाली हाथ स्रखसत करते। लेकिन अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरी सख़्त मेहनत-मशक्क़त देखी है, इसलिए उसने कल रात को मेरे हक़ में फ़ैसला दिया।”

### याकूब और लाबन के दरमियान अहद

43 तब लाबन ने याकूब से कहा, “यह बेटियाँ तो मेरी बेटियाँ हैं, और इनके बच्चे मेरे बच्चे हैं। यह भेड़-बक़रियाँ भी मेरी ही हैं। लेकिन अब मैं अपनी बेटियों और उनके बच्चों के लिए कुछ नहीं कर सकता। 44 इसलिए आओ, हम एक दूसरे के साथ अहद बाँधें। इसके लिए हम यहाँ पत्थरों का ढेर लगाएँ जो अहद की गवाही देता रहे।”

45 चुन्चेंचे याकूब ने एक पत्थर लेकर उसे सतून के तौर पर खड़ा किया। 46 उसने अपने रिश्तेदारों से कहा, “कुछ पत्थर जमा करें।” उन्होंने पत्थर जमा करके ढेर लगा दिया। फिर उन्होंने उस ढेर के पास बैठकर खाना खाया। 47 लाबन ने उसका नाम यज़र-शाहदूथा रखा जबकि याकूब ने जल-एद रखा। दोनों नामों का मतलब ‘गवाही का ढेर’ है यानी वह ढेर जो गवाही देता है। 48 लाबन ने कहा, “आज हम दोनों के दरमियान यह ढेर अहद की गवाही देता है।” इसलिए उसका नाम जल-एद रखा गया। 49 उसका एक और नाम मिसफाह यानी ‘पहरेदारों का मीनार’ भी रखा गया। क्योंकि लाबन ने कहा, “रब हम पर पहरा दे जब हम एक दूसरे से अलग हो जाएंगे। 50 मेरी बेटियों से बुरा सुलूक न करना, न उनके अलावा किसी और से शादी करना। अगर मुझे पता भी न चले लेकिन ज़रूर याद रखें कि अल्लाह मेरे और आपके सामने गवाह है। 51 यहाँ यह ढेर है जो मैंने लगा दिया है और यहाँ यह सतून भी है। 52 यह ढेर और सतून दोनों इसके गवाह हैं कि न मैं यहाँ से गुज़रकर

\* 31:42 लफ्ज़ी तरचुमा : दहशत यानी इसहाक़ का वह खुदा जिससे इंसान दहशत खाता है।

आपको नुकसान पहुँचाऊँगा और न आप यहाँ से गुजरकर मुझे नुकसान पहुँचाएँगे।<sup>53</sup> इब्राहीम, नहर और उनके बाप का खुदा हम दोनों के दरमियान फ़ैसला करे अगर ऐसा कोई मामला हो।” जवाब में याक़ब ने इसहाक के माबूद की कसम खाई कि मैं यह अहद कभी नहीं तोड़ूँगा।<sup>54</sup> उसने पहाड़ पर एक जानवर क़ुरबानी के तौर पर चढाया और अपने रिश्तेदारों को खाना खाने की दावत दी। उन्होंने खाना खाकर वही पहाड़ पर रात गुज़ारी।

<sup>55</sup> अगले दिन सुबह-सवेरे लाबन ने अपने नवासे-नवासियों और बेटियों को बोसा देकर उन्हें बरकत दी। फिर वह अपने घर वापस चला गया।

## 32

याक़ब एसौ से मिलने के लिए तैयार हो जाता है

<sup>1</sup> याक़ब ने भी अपना सफ़र जारी रखा। रास्ते में अल्लाह के फ़रिश्ते उससे मिले।<sup>2</sup> उन्हें देखकर उसने कहा, “यह अल्लाह की लशकरगाह है।” उसने उस मक़ाम का नाम महनायम यानी ‘दो लशकरगाहें’ रखा।

<sup>3</sup> याक़ब ने अपने भाई एसौ के पास अपने आगे आगे कासिद भेजे। एसौ सईर यानी अदोम के मुल्क में आबाद था।<sup>4</sup> उन्हें एसौ को बताना था, “आपका खादिम याक़ब आपको इतला देता है कि मैं परदेस में जाकर अब तक लाबन का मेहमान रहा हूँ।<sup>5</sup> वहाँ मुझे बैल, गधे, भेड़-बकरियाँ, गुलाम और लौडियॉ हासिल हुए हैं। अब मैं अपने मालिक को इतला दे रहा हूँ कि वापस आ गया हूँ और आपकी नज़रे-करम का खादिम हूँ।”

<sup>6</sup> जब कासिद वापस आए तो उन्होंने कहा, “हम आपके भाई एसौ के पास गए, और वह 400 आदमी साथ लेकर आपसे मिलने आ रहा है।”

<sup>7</sup> याक़ब घबराकर बहुत परेशान हुआ। उसने अपने साथ के तमाम लोगों, भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और ऊँटों को दो गुरोहों में तकसीम किया।<sup>8</sup> खयाल यह था कि अगर एसौ आकर एक गुरोह पर हमला करे तो बाकी गुरोह शायद बच जाए।<sup>9</sup> फिर याक़ब ने दुआ की, “ऐ मेरे दादा इब्राहीम और मेरे बाप इसहाक के खुदा, मेरी दुआ सुन! ऐ रब, तूने खुद मुझे बताया, ‘अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास वापस जा, और मैं तुझे कामयाबी दूँगा।’<sup>10</sup> मैं उस तमाम मेहरबानी और वफ़ादारी के लायक नहीं जो तूने अपने खादिम को दिखाई है। जब मैंने लाबन के पास जाते वक़्त दरियाए-य़रदन को पार किया तो मेरे पास सिर्फ़ यह लाठी थी, और अब मेरे पास यह दो गुरोह हैं।<sup>11</sup> मुझे अपने भाई एसौ से बचा, क्योंकि मुझे डर है कि वह मुझ पर हमला करके बाल-बच्चों समेत सब कुछ तबाह कर देगा।<sup>12</sup> तूने खुद कहा था, ‘मैं तुझे कामयाबी दूँगा और तेरी औलाद इतनी बढ़ाऊँगा कि वह समुंद्र की रेत की मानिंद बेशुमार होगी।’”

<sup>13</sup> याक़ब ने वहाँ रात गुज़ारी। फिर उसने अपने माल में से एसौ के लिए तोहफ़े चुन लिए: <sup>14</sup> 200 बकरियाँ, 20 बकरे, 200 भेड़े, 20 भेड़े, <sup>15</sup> 30 दूध देनेवाली ऊँटनियाँ बच्चों समेत, 40 गाएँ, 10 बैल, 20 गधियाँ और 10 गधे।<sup>16</sup> उसने उन्हें मुख़तलिफ़ रेवडों में तकसीम करके अपने मुख़तलिफ़ नौकरों के सुपुर्द किया और उनसे कहा, “मेरे आगे आगे चलो लेकिन हर रेवड के दरमियान फ़ासला रखो।”

<sup>17</sup> जो नौकर पहले रेवड लेकर आगे निकला उससे याक़ब ने कहा, “मेरा भाई एसौ तुमसे मिलेगा और पूछेगा, ‘तुम्हारा मालिक कौन है? तुम कहाँ जा रहे हो? तुम्हारे सामने के जानवर किसके हैं?’<sup>18</sup> जवाब में तुम्हें कहना है, ‘यह आपके खादिम याक़ब के हैं। यह तोहफ़ा है जो वह अपने मालिक एसौ को भेज रहे हैं। याक़ब हमारे पीछे पीछे आ रहे हैं।’”

<sup>19</sup> याक़ब ने यही हुक्म हर एक नौकर को दिया जिसे रेवड लेकर उसके आगे आगे जाना था। उसने कहा, “जब तुम एसौ से मिलोगे तो उससे यही कहना है।<sup>20</sup> तुम्हें यह भी ज़रूर कहना है, आपके खादिम याक़ब हमारे पीछे आ रहे हैं।” क्योंकि याक़ब ने सोचा, “मैं इन तोहफ़ों से उसके साथ सलह करूँगा। फिर जब उससे मुलाकात होगी तो शायद वह मुझे कबूल कर ले।”<sup>21</sup> यों उसने यह तोहफ़े अपने आगे आगे भेज दिए। लेकिन उसने खुद छैमागाह में रात गुज़ारी।

याक़ब की कुशती

<sup>22</sup> उस रात वह उठा और अपनी दो बीवियों, दो लौडियों और ग्यारह बेटों को लेकर दरियाए-य़ब्बोक को वहाँ से पार किया जहाँ कम गहराई थी।<sup>23</sup> फिर उसने अपना सारा सामान भी वहाँ भेज दिया।<sup>24</sup> लेकिन वह खुद अकेला ही पीछे रह गया।

उस वक़्त एक आदमी आया और पौ फटने तक उससे कुशती लडता रहा।<sup>25</sup> जब उसने देखा कि मैं याक़ब पर गालिब नहीं आ रहा तो उसने उसके कूल्हे को छुआ, और उसका जोड़ निकल गया।<sup>26</sup> आदमी ने कहा, “मुझे जाने दे, क्योंकि पौ फटनेवाली है।”

याकूब ने कहा, “पहले मुझे बरकत दें, फिर ही आपको जाने दूँगा।” 27 आदमी ने पूछा, “तेरा क्या नाम है?” उसने जवाब दिया, “याकूब।” 28 आदमी ने कहा, “अब से तेरा नाम याकूब नहीं बल्कि इसराईल यानी ‘वह अल्लाह से लड़ता है’ होगा। क्योंकि तू अल्लाह और आदमियों के साथ लड़कर गालिब आया है।”

29 याकूब ने कहा, “मुझे अपना नाम बताएँ।” उसने कहा, “तू क्यों मेरा नाम जानना चाहता है?” फिर उसने याकूब को बरकत दी।

30 याकूब ने कहा, “मैंने अल्लाह को स्वरूप देखा तो भी बच गया हूँ।” इसलिए उसने उस मकाम का नाम फनियेल रखा।

31 याकूब वहाँ से चला तो सूरज तुलु हो रहा था। वह कूल्हे के सबब से लँगडाला रहा।

32 यही वजह है कि आज भी इसराईल की औलाद कूल्हे के जोड़ पर की नस को नहीं खाते, क्योंकि याकूब की इसी नस को छुआ गया था।

## 33

याकूब एसौ से मिलता है

1 फिर एसौ उनकी तरफ आता हुआ नज़र आया। उसके साथ 400 आदमी थे। उन्हें देखकर याकूब ने बच्चों को बाँटकर लियाह, राखिल और दोनों लौंडियों के हवाले कर दिया। 2 उसने दोनों लौंडियों को उनके बच्चों समेत आगे चलने दिया। फिर लियाह उसके बच्चों समेत और आखिर में राखिल और यूसुफ आए। 3 याकूब खुद सबसे आगे एसौ से मिलने गया। चलते चलते वह सात दफा ज़मीन तक झुका। 4 लेकिन एसौ दौड़कर उससे मिलने आया और उसे गले लगाकर बोसा दिया। दोनों रो पड़े।

5 फिर एसौ ने औरतों और बच्चों को देखा। उसने पूछा, “तुम्हारे साथ यह लोग कौन है?” याकूब ने कहा, “यह आपके खादिम के बच्चे हैं जो अल्लाह ने अपने करम से नवाजे हैं।”

6 दोनों लौंडियाँ अपने बच्चों समेत आकर उसके सामने झुक गईं। 7 फिर लियाह अपने बच्चों के साथ आई और आखिर में यूसुफ और राखिल आकर झुक गए।

8 एसौ ने पूछा, “जिस जानवरों के बड़े गोल से मेरी मुलाकात हुई उससे क्या मुराद है?” याकूब ने जवाब दिया, “यह तोहफा है ताकि आपका खादिम आपकी नज़र में मकबूल हो।” 9 लेकिन एसौ ने कहा, “मेरे भाई, मेरे पास बहुत कुछ है। यह अपने पास ही रखो।” 10 याकूब ने कहा, “नहीं जी, अगर मुझ पर आपके करम की नज़र है तो मेरे इस तोहफे को ज़रूर कबूल फरमाएँ। क्योंकि जब मैंने आपका चेहरा देखा तो वह मेरे लिए अल्लाह के चेहरे की मानिंद था, आपने मेरे साथ इस कदर अच्छा सुलूक किया है। 11 मेहरबानी करके यह तोहफा कबूल करें जो मैं आपके लिए लाया हूँ। क्योंकि अल्लाह ने मुझ पर अपने करम का इज़हार किया है, और मेरे पास बहुत कुछ है।”

याकूब इसरार करता रहा तो आखिरकार एसौ ने उसे कबूल कर लिया। फिर एसौ कहने लगा, 12 “आओ, हम रवाना हो जाएँ। मैं तुम्हारे आगे आगे चलूँगा।” 13 याकूब ने जवाब दिया, “मेरे मालिक, आप जानते हैं कि मेरे बच्चे नाजूक हैं। मेरे पास भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और उनके दूध पीनेवाले बच्चे भी हैं। अगर मैं उन्हें एक दिन के लिए भी हद से ज़्यादा हॉकूँ तो वह मर जाएंगे। 14 मेरे मालिक, मेहरबानी करके मेरे आगे आगे जाएँ। मैं आराम से उसी रफ्तार से आपके पीछे पीछे चलता रहूँगा जिस रफ्तार से मेरे मवेशी और मेरे बच्चे चल सकेंगे। यों हम आहिस्ता चलते हुए आपके पास सईर पहुँचेंगे।” 15 एसौ ने कहा, “क्या मैं अपने आदमियों में से कुछ आपके पास छोड़ दूँ?” लेकिन याकूब ने कहा, “क्या ज़रूरत है? सबसे अहम बात यह है कि आपने मुझे कबूल कर लिया है।”

16 उस दिन एसौ सईर के लिए और 17 याकूब सुक्कात के लिए रवाना हुआ। वहाँ उसने अपने लिए मकान बना लिया और अपने मवेशियों के लिए झोंपड़ियाँ। इसलिए उस मकाम का नाम सुक्कात यानी झोंपड़ियाँ पड़ गया।

18 फिर याकूब चलते चलते सलामती से सिकम शहर पहुँचा। यों उसका मसोपुतामिया से मुल्के-कनान तक का सफर इख़्तिताम तक पहुँच गया। उसने अपने खैमे शहर के सामने लगाए। 19 उसके खैमे हमोर की औलाद की ज़मीन पर लगे थे। उसने यह ज़मीन चाँदी के 100 सिक्कों के बदले खरीद ली। 20 वहाँ उसने कुरबानगाह बनाई जिसका नाम उसने ‘एल खुदाए-इसराईल’ रखा।

## 34

दीना की इसमतदरी

1 एक दिन याकूब और लियाह की बेटी दीना कनानी औरतों से मिलने के लिए घर से निकली। 2 शहर में एक आदमी बनाम सिकम रहता था। उसका वालिद हमोर उस इलाके का हुक्मरान था और हिच्वी क्रौम से ताल्लुक रखता था। जब सिकम

ने दीना को देखा तो उसने उसे पकड़कर उस की इसमतदरी की।<sup>3</sup> लेकिन उसका दिल दीना से लग गया। वह उससे मुहब्बत करने लगा और प्यार से उससे बातें करता रहा।<sup>4</sup> उसने अपने बाप से कहा, “इस लड़की के साथ मेरी शादी करा दें।”

<sup>5</sup> जब याकूब ने अपनी बेटी की इसमतदरी की खबर सुनी तो उसके बेटे मवेशियों के साथ खुले मैदान में थे। इसलिए वह उनके वापस आने तक खामोश रहा।

<sup>6</sup> सिकम का बाप हमोर शहर से निकलकर याकूब से बात करने के लिए आया।<sup>7</sup> जब याकूब के बेटों को दीना की इसमतदरी की खबर मिली तो उनके दिल रंजिश और गुस्से से भर गए कि सिकम ने याकूब की बेटी की इसमतदरी से इसराईल की इतनी बेइज्जती की है। वह सीधे खुले मैदान से वापस आए।<sup>8</sup> हमोर ने याकूब से कहा, “मेरे बेटे का दिल आपकी बेटी से लग गया है। मेहरबानी करके उस की शादी मेरे बेटे के साथ कर दें।<sup>9</sup> हमारे साथ रिश्ता बाँधें, हमारे बेटे-बेटियों के साथ शादियाँ कराएँ।<sup>10</sup> फिर आप हमारे साथ इस मुल्क में रह सकेंगे और पूरा मुल्क आपके लिए खुला होगा। आप जहाँ भी चाहें आबाद हो सकेंगे, तिजारत कर सकेंगे और जमीन खरीद सकेंगे।”<sup>11</sup> सिकम ने खुद भी दीना के बाप और भाइयों से मिन्नत की, “अगर मेरी यह दरखास्त मंजूर हो तो मैं जो कुछ आप कहेंगे अदा कर दूँगा।<sup>12</sup> जितना भी महर और तोहफे आप मुकर्र करें मैं दे दूँगा। सिर्फ मेरी यह खाहिश पूरी करें कि यह लड़की मेरे अकद में आ जाए।”

<sup>13</sup> लेकिन दीना की इसमतदरी के सबब से याकूब के बेटों ने सिकम और उसके बाप हमोर से चालाकी करके<sup>14</sup> कहा, “हम ऐसा नहीं कर सकते। हम अपनी बहन की शादी किसी ऐसे आदमी से नहीं करा सकते जिसका खतना नहीं हुआ। इससे हमारी बेइज्जती होती है।<sup>15</sup> हम सिर्फ इस शर्त पर राजी होंगे कि आप अपने तमाम लड़कों और मर्दों का खतना करवाने से हमारी मानिंद हो जाएँ।<sup>16</sup> फिर आपके बेटे-बेटियों के साथ हमारी शादियाँ हो सकेंगी और हम आपके साथ एक क्रौम बन जाएँगे।<sup>17</sup> लेकिन अगर आप खतना कराने के लिए तैयार नहीं हैं तो हम अपनी बहन को लेकर चले जाएँगे।”

<sup>18</sup> यह बातें हमोर और उसके बेटे सिकम को अच्छी लगीं।<sup>19</sup> नौजवान सिकम ने फ़ौरन उन पर अमल किया, क्योंकि वह दीना को बहुत पसंद करता था। सिकम अपने खानदान में सबसे मुअज्जज था।<sup>20</sup> हमोर अपने बेटे सिकम के साथ शहर के दरवाजे पर गया जहाँ शहर के फ़ैसले किए जाते थे। वहाँ उन्होंने बाकी शहरियों से बात की।<sup>21</sup> “यह आदमी हमसे झगडनेवाले नहीं हैं, इसलिए क्यों न वह इस मुल्क में हमारे साथ रहें और हमारे दरमियान तिजारत करें? हमारे मुल्क में उनके लिए भी काफी जगह है। आओ, हम उनकी बेटियों और बेटों से शादियाँ करें।<sup>22</sup> लेकिन यह आदमी सिर्फ इस शर्त पर हमारे दरमियान रहने और एक ही क्रौम बनने के लिए तैयार है कि हम उनकी तरह अपने तमाम लड़कों और मर्दों का खतना कराएँ।<sup>23</sup> अगर हम ऐसा करें तो उनके तमाम मवेशी और सारा माल हमारा ही होगा। चुनौचे आओ, हम मुत्तफ़िक्र होकर फ़ैसला कर लें ताकि वह हमारे दरमियान रहें।”

<sup>24</sup> सिकम के शहरी हमोर और सिकम के मशवरे पर राजी हुए। तमाम लड़कों और मर्दों का खतना कराया गया।<sup>25</sup> तीन दिन के बाद जब खतने के सबब से लोगों की हालत बुरी थी तो दीना के दो भाई शमौन और लावी अपनी तलवारें लेकर शहर में दाखिल हुए। किसी को शक तक नहीं था कि क्या कुछ होगा। अंदर जाकर उन्होंने बच्चों से लेकर बूढ़ों तक तमाम मर्दों को कत्ल कर दिया<sup>26</sup> जिनमें हमोर और उसका बेटा सिकम भी शामिल थे। फिर वह दीना को सिकम के घर से लेकर चले गए।

<sup>27</sup> इस कत्ले-आम के बाद याकूब के बाकी बेटे शहर पर टूट पड़े और उसे लूट लिया। यों उन्होंने अपनी बहन की इसमतदरी का बदला लिया।<sup>28</sup> वह भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, गधे और शहर के अंदर और बाहर का सब कुछ लेकर चलते बने।<sup>29</sup> उन्होंने सारे माल पर कब्ज़ा किया, औरतों और बच्चों को कैदी बना लिया और तमाम घरों का सामान भी ले गए।

<sup>30</sup> फिर याकूब ने शमौन और लावी से कहा, “तुमने मुझे मुसीबत में डाल दिया है। अब कनानी, फ़रिज्जी और मुल्क के बाकी बाशिंदों में मेरी बदनामी हुई है। मेरे साथ कम आदमी है। अगर दूसरे मिलकर हम पर हमला करें तो हमारे पूरे खानदान का सत्यानास हो जाएगा।”<sup>31</sup> लेकिन उन्होंने कहा, “क्या यह ठीक था कि उसने हमारी बहन के साथ कसबी का-सा सुल्तक किया?”

## 35

### बैतेल में याकूब पर अल्लाह की बरकत

<sup>1</sup> अल्लाह ने याकूब से कहा, “उठ, बैतेल जाकर वहाँ आबाद हो। वहीं अल्लाह के लिए जो तुझ पर जाहिर हुआ जब तू अपने भाई एषौ से भाग रहा था कुरबानगाह बना।”<sup>2</sup> चुनौचे याकूब ने अपने घरवालों और बाकी सारे साथियों से कहा, “जो भी अजनबी बूत आपके पास हैं उन्हें फेंक दें। अपने आपको पाक-साफ़ करके अपने कपड़े बदलें, <sup>3</sup> क्योंकि हमें यह जगह छोड़कर बैतेल जाना है। वहाँ मैं उस खुदा के लिए कुरबानगाह बनाऊँगा जिसने मुसीबत के वक़्त मेरी दुआ सुनी। जहाँ भी मैं गया वहाँ वह मेरे साथ रहा है।”<sup>4</sup> यह सुनकर उन्होंने याकूब को तमाम बूत दे दिए जो उनके पास थे और तमाम बालियाँ जो

उन्होंने तावीज के तौर पर कानों में पहन रखी थी। उसने सब कुछ सिकम के करीब बलूत के दरख्त के नीचे जमीन में दबा दिया। 5 फिर वह रवाना हुए। इर्दगिर्द के शहरों पर अल्लाह की तरफ से इतना शदीद खौफ छा गया कि उन्होंने याकूब और उसके बेटों का तावकूब न किया।

6 चलते चलते याकूब अपने लोगों समेत लूज़ पहुँच गया जो मुल्के-कनान में था। आज लूज़ का नाम बैतेल है। 7 याकूब ने वहाँ कुरबानगाह बनाकर मकाम का नाम बैतेल यानी 'अल्लाह का घर' रखा। क्योंकि वहाँ अल्लाह ने अपने आपको उस पर जाहिर किया था जब वह अपने भाई से फरार हो रहा था।

8 वहाँ रिबका की दया दबोरा मर गई। वह बैतेल के जूनूब में बलूत के दरख्त के नीचे दफन हुई, इसलिए उसका नाम अल्लोन-बकूत यानी 'रोने का बलूत का दरख्त' रखा गया।

9 अल्लाह याकूब पर एक दफा और जाहिर हुआ और उसे बरकत दी। यह मसोपुतामिया से वापस आने पर दूसरी बार हुआ। 10 अल्लाह ने उससे कहा, "अब से तेरा नाम याकूब नहीं बल्कि इसराईल होगा।" यों उसने उसका नया नाम इसराईल रखा। 11 अल्लाह ने यह भी उससे कहा, "मैं अल्लाह कादिरे-मुतलक हूँ। फल-फूल और तादाद में बढ़ता जा। एक कौम नहीं बल्कि बहुत-सी कौमों तुझसे निकलेंगी। तेरी औलाद में बादशाह भी शामिल होंगे। 12 मैं तुझे वही मुल्क दूँगा जो इब्राहीम और इसहाक को दिया है। और तेरे बाद उसे तेरी औलाद को दूँगा।"

13 फिर अल्लाह वहाँ से आसमान पर चला गया। 14 जहाँ अल्लाह याकूब से हमकलाम हुआ था वहाँ उसने पत्थर का सतून खड़ा किया और उस पर मै और तेल डंडेलकर उसे मखसूस किया। 15 उसने जगह का नाम बैतेल रखा।

### राखिल की मौत

16 फिर याकूब अपने घरवालों के साथ बैतेल को छोड़कर इफराता की तरफ चल पड़ा। राखिल उम्मीद से थी, और रास्ते में बच्चे की पैदाइश का वक्त आ गया। बच्चा बड़ी मुश्किल से पैदा हुआ। 17 जब दर्दे-जह उरूज को पहुँच गया तो दाई ने उससे कहा, "मत डरो, क्योंकि एक और बेटा है।" 18 लेकिन वह दम तोड़नेवाली थी, और मरते मरते उसने उसका नाम बिन-ऊनी यानी 'मेरी मुसीबत का बेटा' रखा। लेकिन उसके बाप ने उसका नाम बिनयमीन यानी 'दहने हाथ या खुशकिसमती का बेटा' रखा। 19 राखिल फौत हुई, और वह इफराता के रास्ते में दफन हुई। आजकल इफराता को बैत-लमहा कहा जाता है। 20 याकूब ने उस की कब्र पर पत्थर का सतून खड़ा किया। वह आज तक राखिल की कब्र की निशानदेही करता है।

21 वहाँ से याकूब ने अपना सफर जारी रखा और मिजदल-इदर की परली तरफ अपने खैमे लगाए। 22 जब वह वहाँ ठहरे थे तो रुबिन याकूब की हरम बिलहाह से हमबिसतर हुआ। याकूब को मालूम हो गया।

### याकूब के बेटे

याकूब के बारह बेटे थे। 23 लियाह के बेटे यह थे : उसका सबसे बड़ा बेटा रुबिन, फिर शमौन, लावी, यहदाह, इशकार और जबलून। 24 राखिल के दो बेटे थे, यूसुफ और बिनयमीन। 25 राखिल की लौंडी बिलहाह के दो बेटे थे, दान और नफताली। 26 लियाह की लौंडी ज़िलफा के दो बेटे थे, जद और आशर। याकूब के यह बेटे मसोपुतामिया में पैदा हुए।

### इसहाक की मौत

27 फिर याकूब अपने बाप इसहाक के पास पहुँच गया जो हबरून के करीब ममरे में अजनबी की हैसियत से रहता था (उस वक्त हबरून का नाम किरियत-अरबा था)। वहाँ इसहाक और उससे पहले इब्राहीम रहा करते थे। 28-29 इसहाक 180 साल का था जब वह उम्ररसीदा और जिंदगी से आसूदा होकर अपने बापदादा से जा मिला। उसके बेटे एसौ और याकूब ने उसे दफन किया।

## 36

### एसौ की औलाद

1 यह एसौ की औलाद का नसबनामा है (एसौ को अदोम भी कहा जाता है) :

2 एसौ ने तीन कनानी औरतों से शादी की : हित्ती आदमी ऐलोन की बेटी अदा से, अना की बेटी उहलीबामा से जो हिक्वी आदमी सिबोन की नवासी थी 3 और इसमाईल की बेटी बासमत से जो नबायोट की बहन थी। 4 अदा का एक बेटा इलीफज़ और बासमत का एक बेटा रऊएल पैदा हुआ। 5 उहलीबामा के तीन बेटे पैदा हुए, यऊस, यालाम और क्रोरह। एसौ के यह तमाम बेटे मुल्के-कनान में पैदा हुए।

6 बाद में एसौ दूसरे मुल्क में चला गया। उसने अपनी बीवियों, बेटे-बेटियों और घर के रहनेवालों को अपने तमाम मवेशियों और मुल्के-कनान में हासिल किए हुए माल समेत अपने साथ लिया। 7 वह इस वजह से चला गया कि दोनों भाइयों

के पास इतने रेवड थे कि चराने की जगह कम पड़ गई।<sup>8</sup> चुनाँचे एसौ पहाड़ी इलाके सईर में आबाद हुआ। एसौ का दूसरा नाम अदोम है।

<sup>9</sup> यह एसौ यानी सईर के पहाड़ी इलाके में आबाद अदोमियों का नसबनामा है : <sup>10</sup> एसौ की बीवी अदा का एक बेटा इलीफ़ज़ था जबकि उस की बीवी बासमत का एक बेटा रऊएल था। <sup>11</sup> इलीफ़ज़ के बेटे तेमान, ओमर, सफ़ो, जाताम, कनज़ <sup>12</sup> और अमालीक थे। अमालीक इलीफ़ज़ की हरम तिमना का बेटा था। यह सब एसौ की बीवी अदा की औलाद में शामिल थे। <sup>13</sup> रऊएल के बेटे नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा थे। यह सब एसौ की बीवी बासमत की औलाद में शामिल थे। <sup>14</sup> एसौ की बीवी उहलीबामा जो अना की बेटी और सिबोन की नवासी थी के तीन बेटे यऊस, यालाम और कोरह थे।

<sup>15</sup> एसौ से मुख्तलिफ़ कबीलों के सरदार निकले। उसके पहलौठे इलीफ़ज़ से यह कबायली सरदार निकले : तेमान, ओमर, सफ़ो, कनज़, <sup>16</sup> कोरह, जाताम और अमालीक। यह सब एसौ की बीवी अदा की औलाद थे। <sup>17</sup> एसौ के बेटे रऊएल से यह कबायली सरदार निकले : नहत, ज़ारह, सम्मा और मिज़्ज़ा। यह सब एसौ की बीवी बासमत की औलाद थे। <sup>18</sup> एसौ की बीवी उहलीबामा यानी अना की बेटी से यह कबायली सरदार निकले : यऊस, यालाम और कोरह। <sup>19</sup> यह तमाम सरदार एसौ की औलाद हैं।

### सईर की औलाद

<sup>20</sup> मुल्के-अदोम के कुछ बाशिंदे होरी आदमी सईर की औलाद थे। उनके नाम लोतान, सोबल, सिबोन, अना, <sup>21</sup> दीसोन, एसर और दीसान थे। सईर के यह बेटे मुल्के-अदोम में होरी कबीलों के सरदार थे।

<sup>22</sup> लोतान होरी और हेमाम का बाप था। (तिमना लोतान की बहन थी।) <sup>23</sup> सोबल के बेटे अलवान, मानहत, ऐबाल, सफ़ो और ओनाम थे। <sup>24</sup> सिबोन के बेटे ऐयाह और अना थे। इसी अना को गरम चश्मे मिले जब वह बयाबान में अपने बाप के गधे चरा रहा था। <sup>25</sup> अना का एक बेटा दीसोन और एक बेटी उहलीबामा थी। <sup>26</sup> दीसोन के चार बेटे हमदान, इशबान, यितरान और किरान थे। <sup>27</sup> एसर के तीन बेटे बिलहान, ज़ावान और अक़ान थे। <sup>28</sup> दीसान के दो बेटे ऊज़ और अरान थे।

<sup>29-30</sup> यही यानी लोतान, सोबल, सिबोन, अना, दीसोन, एसर और दीसान सईर के मुल्क में होरी कबायल के सरदार थे।

### अदोम के बादशाह

<sup>31</sup> इससे पहले कि इसराईलियों का कोई बादशाह था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे मुल्के-अदोम में हुकूमत करते थे : <sup>32</sup> बाला बिन बओर जो दिनहाबा शहर का था मुल्के-अदोम का पहला बादशाह था। <sup>33</sup> उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बूसरा शहर का था। <sup>34</sup> उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के मुल्क का था। <sup>35</sup> उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिसने मुल्के-मोआब में मीडियानियों को शिकस्त दी। वह अवीत का था। <sup>36</sup> उस की मौत पर समला जो मसरिका का था। <sup>37</sup> उस की मौत पर साऊल जो दरियाए-फुरात पर रहोबोत शहर का था। <sup>38</sup> उस की मौत पर बाल-हनान बिन अकबोर। <sup>39</sup> उस की मौत पर हदद जो फ़ाऊ शहर का था (बीवी का नाम महेतबेल बिन मतरिद बिन मेज़ाहाब था)। <sup>40-43</sup> एसौ से अदोमी कबीलों के यह सरदार निकले : तिमना, अलवह, येते, उहलीबामा, ऐला, फ़ीनोन, कनज़, तेमान, मिबसार, मजदियेल और इराम। अदोम के सरदारों की यह फहरिस्त उनकी मौरूसी ज़मीन की आबादियों और कबीलों के मुताबिक ही बयान की गई है। एसौ उनका बाप है।

## 37

### यसूफ़ के खाब

<sup>1</sup> याक़ूब मुल्के-कनान में रहता था जहाँ पहले उसका बाप भी परदेसी था। <sup>2</sup> यह याक़ूब के खानदान का बयान है। उस वक़्त याक़ूब का बेटा यसूफ़ 17 साल का था। वह अपने भाइयों यानी बिलहाह और ज़िलफ़ा के बेटों के साथ भेड-बकरियों की देख-भाल करता था। यसूफ़ अपने बाप को अपने भाइयों की बुरी हरकतों की इतला दिया करता था। <sup>3</sup> याक़ूब यसूफ़ को अपने तमाम बेटों की निसबत ज़्यादा प्यार करता था। वजह यह थी कि वह तब पैदा हुआ जब बाप बूढ़ा था। इसलिए याक़ूब ने उसके लिए एक खास रंगदार लिबास बनवाया। <sup>4</sup> जब उसके भाइयों ने देखा कि हमारा बाप यसूफ़ को हमसे ज़्यादा प्यार करता है तो वह उससे नफरत करने लगे और अदब से उससे बात नहीं करते थे। <sup>5</sup> एक रात यसूफ़ ने खाब देखा। जब उसने अपने भाइयों को खाब सुनाया तो वह उससे और भी नफरत करने लगे। <sup>6</sup> उसने कहा, "सुनो, मैंने खाब देखा।" <sup>7</sup> हम सब खेत में पूले बाँध रहे थे कि मेरा पूला खड़ा हो गया। आपके पूले मेरे पूले के इर्दगिर्द

जमा होकर उसके सामने झुक गए।” 8 उसके भाइयों ने कहा, “अच्छा, तू बादशाह बनकर हम पर हुकूमत करेगा?” उसके खाबों और उस की बातों के सबसे उनकी उससे नफरत मज्जीद बढ़ गई।

9 कुछ देर के बाद यूसुफ ने एक और खाब देखा। उसने अपने भाइयों से कहा, “मैंने एक और खाब देखा है। उसमें सूरज, चाँद और ग्यारह सितारे मेरे सामने झुक गए।” 10 उसने यह खाब अपने बाप को भी सुनाया तो उसने उसे डाँटा। उसने कहा, “यह कैसा खाब है जो तुने देखा! यह कैसी बात है कि मैं, तेरी माँ और तेरे भाई आकर तेरे सामने ज़मीन तक झुक जाएँ?” 11 नतीजे में उसके भाई उससे बहुत हसद करने लगे। लेकिन उसके बाप ने दिल में यह बात महफूज रखी।

### यूसुफ को बेचा जाता है

12 एक दिन जब यूसुफ के भाई अपने बाप के रेवड चराने के लिए सिकम तक पहुँच गए थे 13 तो याकूब ने यूसुफ से कहा, “तेरे भाई सिकम में रेवडों को चरा रहे हैं। आ, मैं तुझे उनके पास भेज देता हूँ।” यूसुफ ने जवाब दिया, “ठीक है।” 14 याकूब ने कहा, “जाकर मालूम कर कि तेरे भाई और उनके साथ के रेवड खैरियत से हैं कि नहीं। फिर वापस आकर मुझे बता देना।” चुनौचे उसके बाप ने उसे वादीए-हबस्न से भेज दिया, और यूसुफ सिकम पहुँच गया।

15 वहाँ वह इधर-उधर फिरता रहा। आखिरकार एक आदमी उससे मिला और पूछा, “आप क्या ढूँड रहे हैं?” 16 यूसुफ ने जवाब दिया, “मैं अपने भाइयों को तलाश कर रहा हूँ। मुझे बताएँ कि वह अपने जानवरों को कहाँ चरा रहे हैं।” 17 आदमी ने कहा, “वह यहाँ से चले गए हैं। मैंने उन्हें यह कहते सुना कि आओ, हम दूतैन जाएँ।” यह सुनकर यूसुफ अपने भाइयों के पीछे दूतैन चला गया। वहाँ उसे वह मिल गए।

18 जब यूसुफ अभी दूर से नजर आया तो उसके भाइयों ने उसके पहुँचने से पहले उसे कत्ल करने का मनसूबा बनाया। 19 उन्होंने कहा, “देखो, खाब देखनेवाला आ रहा है। 20 आओ, हम उसे मार डालें और उस की लाश किसी गढे में फेंक दें। हम कहेंगे कि किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खायी है। फिर पता चलेगा कि उसके खाबों की क्या हकीकत है।”

21 जब रबिन ने उनकी बातें सुनी तो उसने यूसुफ को बचाने की कोशिश की। उसने कहा, “नहीं, हम उसे कत्ल न करें। 22 उसका खून न करना। बेशक उसे इस गढे में फेंक दें जो रेगिस्तान में है, लेकिन उसे हाथ न लगाएँ।” उसने यह इसलिए कहा कि वह उसे बचाकर बाप के पास वापस पहुँचाना चाहता था।

23 ज्योंही यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुँचा उन्होंने उसका रंगदार लिबास उतारकर 24 यूसुफ को गढे में फेंक दिया। गढा खाली था, उसमें पानी नहीं था। 25 फिर वह रोटी खाने के लिए बैठ गए। अचानक इसमाईलियों का एक काफिला नजर आया। वह जिलियाद से मिसर जा रहे थे, और उनके ऊँट क्रीमती मसालों यानी लादन, बलसान और मुर से लदे हुए थे। 26 तब यहदाह ने अपने भाइयों से कहा, “हमें क्या फायदा है अगर अपने भाई को कत्ल करके उसके खून को छुपा दें? 27 आओ, हम उसे इन इसमाईलियों के हाथ फरोख्त कर दें। फिर कोई ज़रूरत नहीं होगी कि हम उसे हाथ लगाएँ। आखिर वह हमारा भाई है।”

उसके भाई राज़ी हुए। 28 चुनौचे जब मिदियानी ताजिर वहाँ से गुज़रे तो भाइयों ने यूसुफ को खीचकर गढे से निकाला और चाँदी के 20 सिक्कों के एवज़ बेच डाला। इसमाईली उसे लेकर मिसर चले गए।

29 उस वक़्त रबिन मौजूद नहीं था। जब वह गढे के पास वापस आया तो यूसुफ उसमें नहीं था। यह देखकर उसने परेशानी में अपने कपड़े फाड़ डाले। 30 वह अपने भाइयों के पास वापस गया और कहा, “लडका नहीं है। अब मैं किस तरह अम्बू के पास जाऊँ?” 31 तब उन्होंने बकरा ज़बह करके यूसुफ का लिबास उसके खून में डुबोया, 32 फिर रंगदार लिबास इस खबर के साथ अपने बाप को भिजवा दिया कि “हमें यह मिला है। इसे गौर से देखें। यह आपके बेटे का लिबास तो नहीं?”

33 याकूब ने उसे पहचान लिया और कहा, “बेशक उसी का है। किसी वहशी जानवर ने उसे फाड़ खायी है। यकीनन यूसुफ को फाड़ दिया गया है।” 34 याकूब ने गम के मारे अपने कपड़े फाड़े और अपनी कमर से टाट ओढकर बड़ी देर तक अपने बेटे के लिए मातम करता रहा। 35 उसके तमाम बेटे-बेटियाँ उसे तसल्ली देने आए, लेकिन उसने तसल्ली पाने से इनकार किया और कहा, “मैं पाताल में उतरते हुए भी अपने बेटे के लिए मातम करूँगा।” इस हालत में वह अपने बेटे के लिए रोता रहा।

36 इतने में मिदियानी मिसर पहुँचकर यूसुफ को बेच चुके थे। मिसर के बादशाह फिरौन के एक आला अफसर फ़तीफार ने उसे ख़रीद लिया। फ़तीफार बादशाह के मुहाफिज़ों पर मुकर्रर था।

## 38

### यहदाह और तमर

1 उन दिनों में यहदाह अपने भाइयों को छोड़कर एक आदमी के पास रहने लगा जिसका नाम हीरा था और जो अदुल्लाम शहर से था। 2 वहाँ यहदाह की मूलाकात एक कनानी औरत से हुई जिसके बाप का नाम सुअ था। उसने उससे शादी की। 3 बेटा पैदा हुआ जिसका नाम यहदाह ने एर रखा। 4 एक और बेटा पैदा हुआ जिसका नाम बीवी ने ओनान रखा। 5 उसके तीसरा बेटा भी पैदा हुआ। उसने उसका नाम सेला रखा। यहदाह कर्जीब में था जब वह पैदा हुआ।

6 यहदाह ने अपने बड़े बेटे एर की शादी एक लडकी से कराई जिसका नाम तमर था। 7 रब के नज़दीक एर शरीर था, इसलिए उसने उसे हलाक कर दिया। 8 इस पर यहदाह ने एर के छोटे भाई ओनान से कहा, “अपने बड़े भाई की बेवा के पास जाओ और उससे शादी करो ताकि तुम्हारे भाई की नसल कायम रहे।” 9 ओनान ने ऐसा किया, लेकिन वह जानता था कि जो भी बच्चे पैदा होंगे वह कानून के मुताबिक मेरे बड़े भाई के होंगे। इसलिए जब भी वह तमर से हमबिसतर होता तो नुतफा को ज़मीन पर गिरा देता, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि मेरी मारिफ़त मेरे भाई के बच्चे पैदा हों। 10 यह बात रब को बुरी लगी, और उसने उसे भी सज़ाए-मौत दी। 11 तब यहदाह ने अपनी बहू तमर से कहा, “अपने बाप के घर वापस चली जाओ और उन वक्त तक बेवा रहो जब तक मेरा बेटा सेला बड़ा न हो जाए।” उसने यह इसलिए कहा कि उसे डर था कि कहीं सेला भी अपने भाइयों की तरह मर न जाए चुनौचे तमर अपने पैके चली गई।

12 काफ़ी दिनों के बाद यहदाह की बीवी जो सुअ की बेटी थी मर गई। मातम का वक्त गुज़र गया तो यहदाह अपने अदुल्लामी दोस्त हीरा के साथ तिमनत गया जहाँ यहदाह की भेड़ों की पशम कतरी जा रही थी। 13 तमर को बताया गया, “आपका सुसर अपनी भेड़ों की पशम कतरने के लिए तिमनत जा रहा है।” 14 यह सुनकर तमर ने बेवा के कपड़े उतारकर आम कपड़े पहन लिए। फिर वह अपना मुँह चादर से लपेटकर ऐनीम शहर के दरवाज़े पर बैठ गई जो तिमनत के रास्ते में था। तमर ने यह हरकत इसलिए की कि यहदाह का बेटा सेला अब बालिग हो चुका था तो भी उस की उसके साथ शादी नहीं की गई थी।

15 जब यहदाह वहाँ से गुज़रा तो उसने उसे देखकर सोचा कि यह कसबी है, क्योंकि उसने अपना मुँह छुपाया हुआ था। 16 वह रास्ते से हटकर उसके पास गया और कहा, “ज़रा मुझे अपने हों आने दें।” (उसने नहीं पहचाना कि यह मेरी बहू है)। तमर ने कहा, “आप मुझे क्या दोगे?” 17 उसने जवाब दिया, “मैं आपको बकरी का बच्चा भेज दूँगा।” तमर ने कहा, “ठीक है, लेकिन उसे भेजने तक मुझे ज़मानत दें।” 18 उसने पूछा, “मैं आपको क्या दूँ?” तमर ने कहा, “अपनी मुहर और उसे गले में लटकाने की डोरी। वह लाठी भी दें जो आप पकड़े हुए हैं।” चुनौचे यहदाह उसे यह चीज़ें देकर उसके साथ हमबिसतर हुआ। नतीज़े में तमर उम्मीद से हुई। 19 फिर तमर उठकर अपने घर वापस चली गई। उसने अपनी चादर उतारकर दुबारा बेवा के कपड़े पहन लिए।

20 यहदाह ने अपने दोस्त हीरा अदुल्लामी के हाथ बकरी का बच्चा भेज दिया ताकि वह चीज़ें वापस मिल जाएँ जो उसने ज़मानत के तौर पर दी थीं। लेकिन हीरा को पता न चला कि औरत कहाँ है। 21 उसने ऐनीम के बाशियों से पूछा, “वह कसबी कहाँ है जो यहाँ सड़क पर बैठी थी?” उन्होंने जवाब दिया, “यहाँ ऐसी कोई कसबी नहीं थी।”

22 उसने यहदाह के पास वापस जाकर कहा, “वह मुझे नहीं मिली बल्कि वहाँ के रहनेवालों ने कहा कि यहाँ कोई ऐसी कसबी थी नहीं।” 23 यहदाह ने कहा, “फिर वह ज़मानत की चीज़ें अपने पास ही रखे। उसे छोड़ दो वरना लोग हमारा मज़ाक़ उड़ाएँगे। हमने तो पूरे कोशिश की कि उसे बकरी का बच्चा मिल जाए, लेकिन खोज लगाने के बावजूद आपको पता न चला कि वह कहाँ है।”

24 तीन माह के बाद यहदाह को इतला दी गई, “आपकी बहू तमर ने ज़िना किया है, और अब वह हमिला है।” यहदाह ने हुकम दिया, “उसे बाहर लाकर जला दो।” 25 तमर को जलाने के लिए बाहर लाया गया तो उसने अपने सुसर को खबर भेज दी, “यह चीज़ें देखें। यह उस आदमी की हैं जिसकी मारिफ़त मैं उम्मीद से हूँ। पता करें कि यह मुहर, उस की डोरी और यह लाठी किसकी है।” 26 यहदाह ने उन्हें पहचान लिया। उसने कहा, “मैं नहीं बल्कि यह औरत हक़ पर है, क्योंकि मैंने उस की अपने बेटे सेला से शादी नहीं कराई।” लेकिन बाद में यहदाह कभी भी तमर से हमबिसतर न हुआ।

27 जब जन्म देने का वक्त आया तो मालूम हुआ कि जुड़वाँ बच्चे हैं। 28 एक बच्चे का हाथ निकला तो दाई ने उसे पकड़कर उसमें सुर्ख़ धागा बाँध दिया और कहा, “यह पहले पैदा हुआ।” 29 लेकिन उसने अपना हाथ वापस खींच लिया, और उसका भाई पहले पैदा हुआ। यह देखकर दाई बोल उठी, “तू किस तरह फूट निकला है!” उसने उसका नाम फ़ारस यानी फूट रखा। 30 फिर उसका भाई पैदा हुआ जिसके हाथ में सुर्ख़ धागा बाँधा हुआ था। उसका नाम ज़ारह यानी चमक रखा गया।



1 इसमाईलियों ने यूसुफ को मिसर ले जाकर बेच दिया था। मिसर के बादशाह के एक आला अफसर बनाम फूतीफार ने उसे खरीद लिया। वह शाही मुहाफिजों का कप्तान था। 2 रब यूसुफ के साथ था। जो भी काम वह करता उसमें कामयाब रहता। वह अपने मिसरी मालिक के घर में रहता था 3 जिसने देखा कि रब यूसुफ के साथ है और उसे हर काम में कामयाबी देता है। 4 चुनौचे यूसुफ को मालिक की खास मेहरबानी हासिल हुई, और फूतीफार ने उसे अपना जाती नौकर बना लिया। उसने उसे अपने घराने के इंतजाम पर मुकर्रर किया और अपनी पूरी मिलकियत उसके सुपर्द कर दी। 5 जिस वक्त से फूतीफार ने अपने घराने का इंतजाम और पूरी मिलकियत यूसुफ के सुपर्द की उस वक्त से रब ने फूतीफार को यूसुफ के सबसे बरकत दी। उस की बरकत फूतीफार की हर चीज पर थी, खाह घर में थी या खेत में। 6 फूतीफार ने अपनी हर चीज यूसुफ के हाथ में छोड़ दी। और चूँकि यूसुफ सब कुछ अच्छी तरह चलाता था इसलिए फूतीफार को खाना खाने के सिवा किसी भी मामले की फिकर नहीं थी।

यूसुफ निहायत खूबसूरत आदमी था। 7 कुछ देर के बाद उसके मालिक की बीवी की आँख उस पर लगी। उसने उससे कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!” 8 यूसुफ इनकार करके कहने लगा, “मेरे मालिक को मेरे सबसे किसी मामले की फिकर नहीं है। उन्होंने सब कुछ मेरे सुपर्द कर दिया है। 9 घर के इंतजाम पर उनका इख्तियार मेरे इख्तियार से ज्यादा नहीं है। आपके सिवा उन्होंने कोई भी चीज मुझसे बाज नहीं रखी। तो फिर मैं किस तरह इतना गलत काम करूँ? मैं किस तरह अल्लाह का गुनाह करूँ?”

10 मालिक की बीवी रोज बरोज यूसुफ के पीछे पड़ी रही कि मेरे साथ हमबिसतर हो। लेकिन वह हमेशा इनकार करता रहा।

11 एक दिन वह काम करने के लिए घर में गया। घर में और कोई नौकर नहीं था। 12 फूतीफार की बीवी ने यूसुफ का लिबास पकड़कर कहा, “मेरे साथ हमबिसतर हो!” यूसुफ भागकर बाहर चला गया लेकिन उसका लिबास पीछे औरत के हाथ में ही रह गया। 13 जब मालिक की बीवी ने देखा कि वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया है 14 तो उसने घर के नौकरों को बुलाकर कहा, “यह देखो! मेरे मालिक इस इब्रानी को हमारे पास ले आए हैं ताकि वह हमें जलील करे। वह मेरी इसमतदारी करने के लिए मेरे कमरे में आ गया, लेकिन मैं ऊँची आवाज से चीखने लगी। 15 जब मैं मदद के लिए ऊँची आवाज से चीखने लगी तो वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया।” 16 उसने मालिक के आने तक यूसुफ का लिबास अपने पास रखा। 17 जब वह घर वापस आया तो उसने उसे यही कहानी सुनाई, “यह इब्रानी गुलाम जो आप ले आए हैं मेरी तजलील के लिए मेरे पास आया। 18 लेकिन जब मैं मदद के लिए चीखने लगी तो वह अपना लिबास छोड़कर भाग गया।”

### यूसुफ कैदखाने में

19 यह सुनकर फूतीफार बड़े गुस्से में आ गया। 20 उसने यूसुफ को गिरफ्तार करके उस जेल में डाल दिया जहाँ बादशाह के कैदी रखे जाते थे। वही वह रहा। 21 लेकिन रब यूसुफ के साथ था। उसने उस पर मेहरबानी की और उसे कैदखाने के दारोगे की नजर में मकबूल किया। 22 यूसुफ यहाँ तक मकबूल हुआ कि दारोगे ने तमाम कैदियों को उसके सुपर्द करके उसे पूरा इंतजाम चलाने की जिम्मादारी दी। 23 दारोगे को किसी भी मामले की जिसे उसने यूसुफ के सुपर्द किया था फिकर न रही, क्योंकि रब यूसुफ के साथ था और उसे हर काम में कामयाबी बख्शी।

## 40

### कैदियों के खाब

1 कुछ देर के बाद यों हुआ कि मिसर के बादशाह के सरदार साक्की और बेकरी के इंचारज ने अपने मालिक का गुनाह किया। 2 फिरौन को दोनों अफसरों पर गुस्सा आ गया। 3 उसने उन्हें उस कैदखाने में डाल दिया जो शाही मुहाफिजों के कप्तान के सुपर्द था और जिसमें यूसुफ था। 4 मुहाफिजों के कप्तान ने उन्हें यूसुफ के हवाले किया ताकि वह उनकी खिदमत करे। वहाँ वह काफ़ी देर तक रही।

5 एक रात बादशाह के सरदार साक्की और बेकरी के इंचारज ने खाब देखा। दोनों का खाब फरक फरक था, और उनका मतलब भी फरक फरक था। 6 जब यूसुफ सुबह के वक्त उनके पास आया तो वह दबे हुए नजर आए। 7 उसने उनसे पूछा, “आज आप क्यों इतने पेशान हैं?” 8 उन्होंने जवाब दिया, “हम दोनों ने खाब देखा है, और कोई नहीं जो हमें उनका मतलब बताए।” यूसुफ ने कहा, “खाबों की ताबीर तो अल्लाह का काम है। जरा मुझे अपने खाब तो सुनाएँ।”

9 सरदार साक्की ने शुरू किया, “मैंने खाब में अपने सामने अंगूर की बेल देखी। 10 उस की तीन शाखें थीं। उसके पत्ते लगे, कोंपलें फूट निकलीं और अंगूर पक गए। 11 मेरे हाथ में बादशाह का प्याला था, और मैंने अंगूरों को तोड़कर यों भींच दिया कि उनका रस बादशाह के प्याले में आ गया। फिर मैंने प्याला बादशाह को पेश किया।”

12 यूसुफ ने कहा, “तीन शाखों से मुराद तीन दिन हैं। 13 तीन दिन के बाद फिरौन आपको बहाल कर लेगा। आपको पहली जिम्मादारी वापस मिल जाएगी। आप पहले की तरह सरदार साकी की हैसियत से बादशाह का प्याला सँभालेंगे। 14 लेकिन जब आप बहाल हो जाएँ तो मेरा खयाल करें। मेहरबानी करके बादशाह के सामने मेरा जिक्र करें ताकि मैं यहाँ से रिहा हो जाऊँ। 15 क्योंकि मुझे इब्रानियों के मुल्क से इगवा करके यहाँ लाया गया है, और यहाँ भी मुझसे कोई ऐसी गलती नहीं हुई कि मुझे इस गढ़े में फेंका जाता।”

16 जब शाही बेकरी के इंचार्ज ने देखा कि सरदार साकी के खाब का अच्छा मतलब निकला तो उसने यूसुफ से कहा, “मेरा खाब भी सुनें। मैंने सर पर तीन टोकरियाँ उठा रखी थीं जो बेकरी की चीजों से भरी हुई थीं। 17 सबसे ऊपरवाली टोकरी में वह तमाम चीजें थीं जो बादशाह की मेज़ के लिए बनाई जाती हैं। लेकिन परिदे आकर उन्हें खा रहे थे।”

18 यूसुफ ने कहा, “तीन टोकरियों से मुराद तीन दिन हैं। 19 तीन दिन के बाद ही फिरौन आपको कैदखाने से निकालकर दरख्त से लटका देगा। परिदे आपकी लाश को खा जाएंगे।”

20 तीन दिन के बाद बादशाह की सालगिरह थी। उसने अपने तमाम अफसरों की जियाफत की। इस मौके पर उसने सरदार साकी और बेकरी के इंचार्ज को जेल से निकालकर अपने हुज़ूर लाने का हुक्म दिया। 21 सरदार साकी को पहलेवाली जिम्मादारी सौंप दी गई, 22 लेकिन बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत देकर दरख्त से लटका दिया गया। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा यूसुफ ने कहा था।

23 लेकिन सरदार साकी ने यूसुफ का खयाल न किया बल्कि उसे भूल ही गया।

## 41

### बादशाह के खाब

1 दो साल गुज़र गए कि एक रात बादशाह ने खाब देखा। वह दरियाए-नील के किनारे खड़ा था। 2 अचानक दरिया में से सात खूबसूरत और मोटी गाएँ निकलकर सरकंडों में चरने लगीं। 3 उनके बाद सात और गाएँ निकल आईं। लेकिन वह बदसूरत और दुबली-पतली थीं। वह दरिया के किनारे दूसरी गायों के पास खड़ी होकर 4 पहली सात खूबसूरत और मोटी मोटी गायों को खा गईं। इसके बाद मिसर का बादशाह जाग उठा। 5 फिर वह दुबारा सो गया। इस दफा उसने एक और खाब देखा। अनाज के एक पौदे पर सात मोटी मोटी और अच्छी अच्छी बालें लगी थीं। 6 फिर सात और बालें फूट निकलीं जो दुबली-पतली और मशरिकी हवा से झुलसी हुई थीं। 7 अनाज की सात दुबली-पतली बालों ने सात मोटी और खूबसूरत बालों को निगल लिया। फिर फिरौन जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैंने खाब ही देखा है।

8 सुबह हुई तो वह परेशान था, इसलिए उसने मिसर के तमाम जादूगरों और आलिमों को बुलाया। उसने उन्हें अपने खाब सुनाए, लेकिन कोई भी उनकी ताबीर न कर सका।

9 फिर सरदार साकी ने फिरौन से कहा, “आज मुझे अपनी खताएँ याद आती हैं। 10 एक दिन फिरौन अपने खादिमों से नाराज़ हुए। हुज़ूर ने मुझे और बेकरी के इंचार्ज को कैदखाने में डलवा दिया जिस पर शाही मुहाफिज़ों का कप्तान मुकर्रर था। 11 एक ही रात में हम दोनों ने मुख्तलिफ खाब देखे जिनका मतलब फरक फरक था। 12 वहाँ जेल में एक इब्रानी नौजवान था। वह मुहाफिज़ों के कप्तान का गुलाम था। हमने उसे अपने खाब सुनाए तो उसने हमें उनका मतलब बता दिया। 13 और जो कुछ भी उसने बताया सब कुछ वैसा ही हुआ। मुझे अपनी जिम्मादारी वापस मिल गई जबकि बेकरी के इंचार्ज को सज़ाए-मौत देकर दरख्त से लटका दिया गया।”

14 यह सुनकर फिरौन ने यूसुफ को बुलाया, और उसे जल्दी से कैदखाने से लाया गया। उसने शैव करवाकर अपने कपड़े बदले और सीधे बादशाह के हुज़ूर पहुँचा।

15 बादशाह ने कहा, “मैंने खाब देखा है, और यहाँ कोई नहीं जो उस की ताबीर कर सके। लेकिन सुना है कि तू खाब को सुनकर उसका मतलब बता सकता है।” 16 यूसुफ ने जवाब दिया, “यह मेरे इख्तियार में नहीं है। लेकिन अल्लाह ही बादशाह को सलामती का पैगाम देगा।”

17 फिरौन ने यूसुफ को अपने खाब सुनाए, “मैं खाब में दरियाए-नील के किनारे खड़ा था। 18 अचानक दरिया में से सात मोटी मोटी और खूबसूरत गाएँ निकलकर सरकंडों में चरने लगीं। 19 इसके बाद सात और गाएँ निकलीं। वह निहायत बदसूरत और दुबली-पतली थीं। मैंने इतनी बदसूरत गाएँ मिसर में कहीं भी नहीं देखीं। 20 दुबली और बदसूरत गाएँ पहली मोटी गायों को खा गईं। 21 और निगलने के बाद भी मालूम नहीं होता था कि उन्होंने मोटी गायों को खाया है। वह पहले की तरह बदसूरत ही थीं। इसके बाद मैं जाग उठा। 22 फिर मैंने एक और खाब देखा। सात मोटी और अच्छी बालें एक ही पौदे पर लगी थीं। 23 इसके बाद सात और बालें निकलीं जो खराब, दुबली-पतली और मशरिकी हवा से झुलसी हुई थीं। 24 सात

दुबली-पतली बालों सात अच्छी बालों को निगल गई। मैंने यह सब कुछ अपने जादूगरों को बताया, लेकिन वह इसकी ताबिरी न कर सके।”

25 यूसुफ ने बादशाह से कहा, “दोनों खांबों का एक ही मतलब है। इनसे अल्लाह ने हुज़ूर पर जाहिर किया है कि वह क्या कुछ करने को है। 26 सात अच्छी गाथों से मुराद सात साल हैं। इसी तरह सात अच्छी बालों से मुराद भी सात साल हैं। दोनों खांब एक ही बात बयान करते हैं। 27 जो सात दुबली और बदसूरत गाएँ बाद में निकलें उनसे मुराद सात और साल हैं। यही सात दुबली-पतली और मशरिकी हवा से झूलसी हुई बालों का मतलब भी है। वह एक ही बात बयान करती हैं कि सात साल तक काल पड़ेगा। 28 यह वही बात है जो मैंने हुज़ूर से कही कि अल्लाह ने हुज़ूर पर जाहिर किया है कि वह क्या करेगा। 29 सात साल आँपों जिनके दौरान मिसर के पूरे मुल्क में कसरत से पैदावार होगी। 30 उसके बाद सात साल काल पड़ेगा। काल इतना शदीद होगा कि लोग भूल जाएँगे कि पहले इतनी कसरत थी। क्योंकि काल मुल्क को तबाह कर देगा। 31 काल की शिद्दत के बाइस अच्छे सालों की कसरत याद ही नहीं रहेगी। 32 हुज़ूर को इसलिये एक ही पैगाम दो मुख्तलिफ़ खांबों की सूरत में मिला कि अल्लाह इसका पक्का इरादा रखता है, और वह जल्द ही इस पर अमल करेगा। 33 अब बादशाह किसी समझदार और दानिशमंद आदमी को मुल्के-मिसर का इंतजाम सौंपे। 34 इसके अलावा वह ऐसे आदमी मुकर्रर करें जो सात अच्छे सालों के दौरान हर फ़सल का पौँचवें हिस्सा लें। 35 वह उन अच्छे सालों के दौरान ख़ुराक जमा करें। बादशाह उन्हें इख्तियार दें कि वह शहरों में गोदाम बनाकर अनाज को महफूज़ कर लें। 36 यह ख़ुराक काल के उन सात सालों के लिए मख़सूस की जाए जो मिसर में आनेवाले हैं। यों मुल्क तबाह नहीं होगा।”

### यूसुफ को मिसर पर हाकिम मुकर्रर किया जाता है

37 यह मनसूबा बादशाह और उसके अफसरान को अच्छा लगा। 38 उसने उनसे कहा, “हमें इस काम के लिए यूसुफ से ज़्यादा लायक आदमी नहीं मिलेगा। उसमें अल्लाह की रूह है।” 39 बादशाह ने यूसुफ से कहा, “अल्लाह ने यह सब कुछ तुझे पर जाहिर किया है, इसलिए कोई भी तुझसे ज़्यादा समझदार और दानिशमंद नहीं है। 40 मैं तुझे अपने महल पर मुकर्रर करता हूँ। मेरी तमाम रियाया तेरे ताबे रहेगी। तेरा इख्तियार सिर्फ़ मेरे इख्तियार से कम होगा। 41 अब मैं तुझे पूरे मुल्के-मिसर पर हाकिम मुकर्रर करता हूँ।”

42 बादशाह ने अपनी उँगली से वह अंगूठी उतारी जिससे मुहर लगाता था और उसे यूसुफ की उँगली में पहना दिया। उसने उसे कतान का बारीक लिबास पहनाया और उसके गले में सोने का गुलबंद पहना दिया। 43 फिर उसने उसे अपने दूसरे रथ में सवार किया और लोग उसके आगे आगे पुकारते रहे, “घुटने टेको! घुटने टेको!”

यों यूसुफ पूरे मिसर का हाकिम बना। 44 फिरौन ने उससे कहा, “मैं तो बादशाह हूँ, लेकिन तेरी इजाज़त के बग़ैर पूरे मुल्क में कोई भी अपना हाथ या पाँव नहीं हिलाएगा।” 45-46 उसने यूसुफ का मिसरी नाम साफनत-फ़ानेह रखा और ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा की बेटी आसनत के साथ उस की शादी कराई।

यूसुफ 30 साल का था जब वह मिसर के बादशाह फिरौन की खिदमत करने लगा। उसने फिरौन के हुज़ूर से निकलकर मिसर का दौरा किया।

47 सात अच्छे सालों के दौरान मुल्क में निहायत अच्छी फ़सलें उगीं। 48 यूसुफ ने तमाम ख़ुराक जमा करके शहरों में महफूज़ कर ली। हर शहर में उसने इर्दगिर्द के खेतों की पैदावार महफूज़ रखी। 49 जमाशुदा अनाज समुंद्र की रेत की मानिंद बकसरत था। इतना अनाज था कि यूसुफ ने आखिरकार उस की पैमाइश करना छोड़ दिया।

50 काल से पहले यूसुफ और आसनत के दो बेटे पैदा हुए। 51 उसने पहले का नाम मनस्सी यानी ‘जो भुला देता है’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “अल्लाह ने मेरी मुसीबत और मेरे बाप का घराना मेरी याददाश्त से निकाल दिया है।” 52 दूसरे का नाम उसने इफ़राइम यानी ‘दुगना फलदार’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “अल्लाह ने मुझे मेरी मुसीबत के मुल्क में फलने फूलने दिया है।”

53 सात अच्छे साल जिनमें कसरत की फ़सलें उगीं गुज़र गए। 54 फिर काल के सात साल शुरू हुए जिस तरह यूसुफ ने कहा था। तमाम दीगर ममालिक में भी काल पड़ गया, लेकिन मिसर में वाफ़िर ख़ुराक पाई जाती थी। 55 जब काल ने तमाम मिसर में ज़ोर पकड़ा तो लोग चीखकर खाने के लिए बादशाह से मिन्नत करने लगे। तब फिरौन ने उनसे कहा, “यूसुफ के पास जाओ। जो कुछ वह तुम्हें बताएगा वही करो।” 56 जब काल पूरी दुनिया में फैल गया तो यूसुफ ने अनाज के गोदाम खोलकर मिसरियों को अनाज बेच दिया। क्योंकि काल के बाइस मुल्क के हालात बहुत खराब हो गए थे। 57 तमाम ममालिक से भी लोग अनाज खरीदने के लिए यूसुफ के पास आए, क्योंकि पूरी दुनिया सख्त काल की गिरिफ्त में थी।

## 42

## यूसुफ के भाई मिसर में

1 जब याकूब को मालूम हुआ कि मिसर में अनाज है तो उसने अपने बेटों से कहा, “तुम क्यों एक दूसरे का मुँह तकते हो? 2 सुना है कि मिसर में अनाज है। वहाँ जाकर हमारे लिए कुछ खरीद लाओ ताकि हम भूके न मरें।”

3 तब यूसुफ के दस भाई अनाज खरीदने के लिए मिसर गए। 4 लेकिन याकूब ने यूसुफ के सगे भाई बिनयमीन को साथ न भेजा, क्योंकि उसने कहा, “ऐसा न हो कि उसे जानी नुकसान पहुँचे।” 5 यों याकूब के बेटे बहुत सारे और लोगों के साथ मिसर गए, क्योंकि मुल्के-कनान भी काल की गिरिफ्त में था।

6 यूसुफ मिसर के हाकिम की हैसियत से लोगों को अनाज बेचता था, इसलिए उसके भाई आकर उसके सामने मुँह के बल झुक गए। 7 जब यूसुफ ने अपने भाइयों को देखा तो उसने उन्हें पहचान लिया लेकिन ऐसा किया जैसा उसने नावाकिफ हो और सख्ती से उनसे बात की, “तुम कहाँ से आए हो?” उन्होंने जवाब दिया, “हम मुल्के-कनान से अनाज खरीदने के लिए आए हैं।” 8 गो यूसुफ ने अपने भाइयों को पहचान लिया, लेकिन उन्होंने उसे न पहचाना। 9 उसे वह ख़ाब याद आए जो उसने उनके बारे में देखे थे। उसने कहा, “तुम जासूस हो। तुम यह देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर गैरमहफूज़ है।”

10 उन्होंने कहा, “जनाब, हरगिज़ नहीं। आपके गुलाम गल्ला खरीदने आए हैं। 11 हम सब एक ही मर्द के बेटे हैं। आपके खादिम शरीफ लोग हैं, जासूस नहीं हैं।” 12 लेकिन यूसुफ ने इस्तरा किया, “नहीं, तुम देखने आए हो कि हमारा मुल्क किन किन जगहों पर गैरमहफूज़ है।”

13 उन्होंने अर्ज़ की, “आपके खादिम कुल बारह भाई हैं। हम एक ही आदमी के बेटे हैं जो कनान में रहता है। सबसे छोटा भाई इस वक़्त हमारे बाप के पास है जबकि एक मर गया है।” 14 लेकिन यूसुफ ने अपना इलज़ाम दोहराया, “ऐसा ही है जैसा मैंने कहा है कि तुम जासूस हो। 15 मैं तुम्हारी बातें जाँच लूँगा। फिरौन की हयात की कसम, पहले तुम्हारा सबसे छोटा भाई आए, वरना तुम इस जगह से कभी नहीं जा सकोगे। 16 एक भाई को उसे लाने के लिए भेज दो। बाकी सब यहाँ गिरिफ्तार रहेंगे। फिर पता चलेगा कि तुम्हारी बातें सच हैं कि नहीं। अगर नहीं तो फिरौन की हयात की कसम, इसका मतलब यह होगा कि तुम जासूस हो।”

17 यह कहकर यूसुफ ने उन्हें तीन दिन के लिए कैदखाने में डाल दिया। 18 तीसरे दिन उसने उनसे कहा, “मैं अल्लाह का खौफ मानता हूँ, इसलिए तुमको एक शर्त पर जीता छोड़ूँगा। 19 अगर तुम वाकई शरीफ लोग हो तो ऐसा करो कि तुममें से एक यहाँ कैदखाने में रहे जबकि बाकी सब अनाज लेकर अपने भूके घरवालों के पास वापस जाएँ। 20 लेकिन लाज़िम है कि तुम अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ। सिर्फ़ इससे तुम्हारी बातें सच साबित होंगी और तुम मौत से बच जाओगे।”

यूसुफ के भाई राजी हो गए। 21 वह आपस में कहने लगे, “बेशक यह हमारे अपने भाई पर ज़ुल्म की सज़ा है। जब वह इल्लेजा कर रहा था कि मुझ पर रहम करें तो हमने उस की बड़ी मुसीबत देखकर भी उस की न सुनी। इसलिए यह मुसीबत हम पर आ गई है।” 22 और रूबिन ने कहा, “क्या मैंने नहीं कहा था कि लडके पर ज़ुल्म मत करो, लेकिन तुमने मेरी एक न मानी। अब उस की मौत का हिसाब-किताब किया जा रहा है।”

23 उन्हें मालूम नहीं था कि यूसुफ हमारी बातें समझ सकता है, क्योंकि वह मुतरजिम की मारिफ़त उनसे बात करता था। 24 यह बातें सुनकर वह उन्हें छोड़कर रोने लगा। फिर वह सँभलकर वापस आया। उसने शमौन को चुनकर उसे उनके सामने ही बाँध लिया।

## यूसुफ के भाई कनान वापस जाते हैं

25 यूसुफ ने हुक्म दिया कि मुलाज़िम उनकी बोरियाँ अनाज से भरकर हर एक भाई के पैसे उस की बोरी में वापस रख दें और उन्हें सफ़र के लिए खाना भी दें। उन्होंने ऐसा ही किया। 26 फिर यूसुफ के भाई अपने गधों पर अनाज लादकर रवाना हो गए।

27 जब वह रात के लिए किसी जगह पर ठहरे तो एक भाई ने अपने गधे के लिए चारा निकालने की गरज़ से अपनी बोरी खोली तो देखा कि बोरी के मुँह में उसके पैसे पड़े हैं। 28 उसने अपने भाइयों से कहा, “मेरे पैसे वापस कर दिए गए हैं! वह मेरी बोरी में है।” यह देखकर उनके होश उड़ गए। कौंपते हुए वह एक दूसरे को देखने और कहने लगे, “यह क्या है जो अल्लाह ने हमारे साथ किया है?”

29 मुल्के-कनान में अपने बाप के पास पहुँचकर उन्होंने उसे सब कुछ सुनाया जो उनके साथ हुआ था। उन्होंने कहा, 30 “उस मुल्क के मालिक ने बड़ी सख्ती से हमारे साथ बात की। उसने हमें जासूस करार दिया। 31 लेकिन हमने उससे कहा, ‘हम जासूस नहीं बल्कि शरीफ लोग हैं।’ 32 हम बारह भाई हैं, एक ही बाप के बेटे। एक तो मर गया जबकि सबसे छोटा भाई इस वक़्त कनान में बाप के पास है।” 33 फिर उस मुल्क के मालिक ने हमसे कहा, ‘इससे मुझे पता चलेगा कि तुम शरीफ

लोग हो कि एक भाई को मेरे पास छोड़ दो और अपने भूके घरवालों के लिए खुराक लेकर चले जाओ।<sup>34</sup> लेकिन अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ ताकि मुझे मालूम हो जाए कि तुम जासूस नहीं बल्कि शरीफ लोग हो। फिर मैं तुमको तुम्हारा भाई वापस कर दूँगा और तुम इस मुल्क में आजादी से तिजारत कर सकोगे।”

<sup>35</sup> उन्होंने अपनी बोरियों से अनाज निकाल दिया तो देखा कि हर एक की बोरी में उसके पैसों की थैली रखी हुई है। यह कैसे देखकर वह खुद और उनका बाप डर गए।<sup>36</sup> उनके बाप ने उनसे कहा, “तुमने मुझे मेरे बच्चों से महरूम कर दिया है। यूसुफ नहीं रहा, शमौन भी नहीं रहा और अब तुम बिनयमीन को भी मुझसे छीनना चाहते हो। सब कुछ मेरे खिलाफ है।”<sup>37</sup> फिर रुबिन बोल उठा, “अगर मैं उसे सलामती से आपके पास वापस न पहुँचाऊँ तो आप मेरे दो बेटों को सजाए-मौत दे सकते हैं। उसे मेरे सुपर्द करें तो मैं उसे वापस ले आऊँगा।”<sup>38</sup> लेकिन याकूब ने कहा, “मेरा बेटा तुम्हारे साथ जाने का नहीं। क्योंकि उसका भाई मर गया है और वह अकेला ही रह गया है। अगर उसको रास्ते में जानी नुकसान पहुँचे तो तुम मुझ बड़े को गम के मोरे पाताल में पहुँचाओगे।”

## 43

### बिनयमीन के हमराह दूसरा सफर

<sup>1</sup> काल ने जोर पकड़ा।<sup>2</sup> जब मिसर से लाया गया अनाज खत्म हो गया तो याकूब ने कहा, “अब वापस जाकर हमारे लिए कुछ और गल्ला खरीद लाओ।”<sup>3</sup> लेकिन यहदाह ने कहा, “उस मर्द ने सख्ती से कहा था, ‘तुम सिर्फ इस सूरत में मेरे पास आ सकते हो कि तुम्हारा भाई साथ हो।’<sup>4</sup> अगर आप हमारे भाई को साथ भेजें तो फिर हम जाकर आपके लिए गल्ला खरीदेंगे<sup>5</sup> वरना नहीं। क्योंकि उस आदमी ने कहा था कि हम सिर्फ इस सूरत में उसके पास आ सकते हैं कि हमारा भाई साथ हो।”<sup>6</sup> याकूब ने कहा, “तुमने उसे क्यों बताया कि हमारा एक और भाई भी है? इससे तुमने मुझे बड़ी मुसीबत में डाल दिया है।”<sup>7</sup> उन्होंने जवाब दिया, “वह आदमी हमारे और हमारे खानदान के बारे में पछता रहा, ‘क्या तुम्हारा बाप अब तक जिंदा है? क्या तुम्हारा कोई और भाई है?’ फिर हमें जवाब देना पड़ा। हमें क्या पता था कि वह हमें अपने भाई को साथ लाने को कहेगा।”<sup>8</sup> फिर यहदाह ने बाप से कहा, “लडके को मेरे साथ भेज दें तो हम अभी रवाना हो जाएंगे। वरना आप, हमारे बच्चे बल्कि हम सब भूकों मर जाएंगे।<sup>9</sup> मैं खुद उसका जामिन हूँगा। आप मुझे उस की जान का जिम्मादार ठहरा सकते हैं। अगर मैं उसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं जिंदगी के आखिर तक कुसूरवार ठहरूँगा।<sup>10</sup> जितनी देर तक हम झिजकते रहे हैं उतनी देर मैं तो हम दो दफा मिसर जाकर वापस आ सकते थे।”

<sup>11</sup> तब उनके बाप इसराइल ने कहा, “अगर और कोई सूरत नहीं तो इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार में से कुछ तोहफे के तौर पर लेकर उस आदमी को दे दो यानी कुछ बलसान, शहद, लादन, मुर, पिस्ता और बादाम।<sup>12</sup> अपने साथ दुगनी रकम लेकर जाओ, क्योंकि तुम्हें वह पैसे वापस करने हैं जो तुम्हारी बोरियों में रखे गए थे। शायद किसी से गलती हुई हो।<sup>13</sup> अपने भाई को लेकर सीधे वापस पहुँचना।<sup>14</sup> अल्लाह कादिर-मुतलक करे कि यह आदमी तुम पर रहम करके बिनयमीन और तुम्हारे दूसरे भाई को वापस भेजे। जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, अगर मुझे अपने बच्चों से महरूम होना है तो ऐसा ही हो।”

<sup>15</sup> चुनौचे वह तोहफे, दुगनी रकम और बिनयमीन को साथ लेकर चल पड़े। मिसर पहुँचकर वह यूसुफ के सामने हाजिर हुए।<sup>16</sup> जब यूसुफ ने बिनयमीन को उनके साथ देखा तो उसने अपने घर पर मुर्करर मुलाजिम से कहा, “इन आदमियों को मेरे घर ले जाओ ताकि वह दोपहर का खाना मेरे साथ खाएँ। जानवर को जबह करके खाना तैयार करो।”

<sup>17</sup> मुलाजिम ने ऐसा ही किया और भाइयों को यूसुफ के घर ले गया।<sup>18</sup> जब उन्हें उसके घर पहुँचाया जा रहा था तो वह डरकर सोचने लगे, “हमें उन पैसों के सबब से यहाँ लाया जा रहा है जो पहली दफा हमारी बोरियों में वापस किए गए थे। वह हम पर अचानक हमला करके हमारे गधे छीन लेंगे और हमें गुलाम बना लेंगे।”

<sup>19</sup> इसलिए घर के दरवाजे पर पहुँचकर उन्होंने घर पर मुर्करर मुलाजिम से कहा,<sup>20</sup> “जनाबे-आली, हमारी बात सुन लीजिए। इससे पहले हम अनाज खरीदने के लिए यहाँ आए थे।<sup>21</sup> लेकिन जब हम यहाँ से रवाना होकर रास्ते में रात के लिए ठहरे तो हमने अपनी बोरियाँ खोलकर देखा कि हर बोरी के मुँह में हमारे पैसों की पूरी रकम पड़ी है। हम यह पैसे वापस ले आए हैं।<sup>22</sup> नीज, हम मज्दीद खुराक खरीदने के लिए और पैसे ले आए हैं। खुदा जाने किसने हमारे यह पैसे हमारी बोरियों में रख दिए।”

<sup>23</sup> मुलाजिम ने कहा, “फिकर न करें। मत डरें। आपके और आपके बाप के खुदा ने आपके लिए आपकी बोरियों में यह खजाना रखा होगा। बहरहाल मुझे आपके पैसे मिल गए हैं।”

मुलाजिम शमौन को उनके पास बाहर ले आया।<sup>24</sup> फिर उसने भाइयों को यूसुफ के घर में ले जाकर उन्हें पॉव धोने के लिए पानी और गधों को चारा दिया।<sup>25</sup> उन्होंने अपने तोहफे तैयार रखे, क्योंकि उन्हें बताया गया, “यूसुफ दोपहर का खाना आपके साथ ही खाएगा।”

26 जब यूसुफ घर पहुँचा तो वह अपने तोहफे लेकर उसके सामने आए और मुँह के बल झुक गए। 27 उसने उनसे खैरियत दरियाफ्त की और फिर कहा, “तुमने अपने बड़े बाप का जिक्र किया। क्या वह ठीक है? क्या वह अब तक जिंदा है?” 28 उन्होंने जवाब दिया, “जी, आपके खादिम हमारे बाप अब तक जिंदा हैं।” वह दुबारा मुँह के बल झुक गए।

29 जब यूसुफ ने अपने सगे भाई बिनयमीन को देखा तो उसने कहा, “क्या यह तुम्हारा सबसे छोटा भाई है जिसका तुमने जिक्र किया था? बेटा, अल्लाह की नज़रे-करम तुम पर हो।” 30 यूसुफ अपने भाई को देखकर इतना मूतअस्सिर हुआ कि वह रोने को था, इसलिए वह जल्दी से वहाँ से निकलकर अपने सोने के कमरे में गया और रो पड़ा। 31 फिर वह अपना मुँह धोकर वापस आया। अपने आप पर काबू पाकर उसने हुक्म दिया कि नौकर खाना ले आएँ।

32 नौकरों ने यूसुफ के लिए खाने का अलग इंतजाम किया और भाइयों के लिए अलग। मिसरियों के लिए भी खाने का अलग इंतजाम था, क्योंकि इब्रानियों के साथ खाना खाना उनकी नज़र में काबिले-नफरत था। 33 भाइयों को उनकी उम्र की तरतीब के मुताबिक यूसुफ के सामने बिठाया गया। यह देखकर भाई निहायत हैरान हुए। 34 नौकरों ने उन्हें यूसुफ की मेज़ पर से खाना लेकर खिलाया। लेकिन बिनयमीन को दूसरों की निसबत पाँच गुना ज़्यादा मिला। यों उन्होंने यूसुफ के साथ जी भरकर खाया और पिया।

## 44

### गुमशुदा प्याला

1 यूसुफ ने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम को हुक्म दिया, “उन मर्दों की बोरियाँ खुराक से इतनी भर देना जितनी वह उठाकर ले जा सकें। हर एक के पैसे उस की अपनी बोरी के मुँह में रख देना। 2 सबसे छोटे भाई की बोरी में न सिर्फ़ पैसे बल्कि मेरे चाँदी के प्याले को भी रख देना।” मुलाज़िम ने ऐसा ही किया।

3 अगली सुबह जब पौ फटने लगी तो भाइयों को उनके गधों समेत सख़सत कर दिया गया। 4 वह अभी शहर से निकलकर दूर नहीं गए थे कि यूसुफ ने अपने घर पर मुकर्रर मुलाज़िम से कहा, “जल्दी करो। उन आदमियों का ताक़्क़ुब करो। उनके पास पहुँचकर यह पूछना, ‘आपने हमारी भलाई के जवाब में ग़लत काम क्यों किया है?’ 5 आपने मेरे मालिक का चाँदी का प्याला क्यों चुराया है? उससे वह न सिर्फ़ पीते हैं बल्कि उसे ग़ैबदानी के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। आप एक निहायत संगीन ज़ुर्म के मुरतकिब हुए हैं।”

6 जब मुलाज़िम भाइयों के पास पहुँचा तो उसने उनसे यही बातें की। 7 जवाब में उन्होंने कहा, “हमारे मालिक ऐसी बातें क्यों करते हैं? कभी नहीं हो सकता कि आपके खादिम ऐसा करें। 8 आप तो जानते हैं कि हम मुल्के-कनान से वह पैसे वापस ले आए जो हमारी बोरियों में थे। तो फिर हम क्यों आपके मालिक के घर से चाँदी या सोना चुराएँगे? 9 अगर वह आपके खादिमों में से किसी के पास मिल जाए तो उसे मार डाला जाए और बाकी सब आपके गुलाम बनें।”

10 मुलाज़िम ने कहा, “ठीक है ऐसा ही होगा। लेकिन सिर्फ़ वही मेरा गुलाम बनेगा जिसने प्याला चुराया है। बाकी सब आज्ञाद हैं।” 11 उन्होंने जल्दी से अपनी बोरियाँ उतारकर ज़मीन पर रख दीं। हर एक ने अपनी बोरी खोल दी। 12 मुलाज़िम बोरियों की तलाशी लेने लगा। वह बड़े भाई से शुरू करके आख़िरकार सबसे छोटे भाई तक पहुँच गया। और वहाँ बिनयमीन की बोरी में से प्याला निकला। 13 भाइयों ने यह देखकर परेशानी में अपने लिबास फाड़ लिए। वह अपने गधों को दुबारा लादकर शहर वापस आ गए।

14 जब यहदाह और उसके भाई यूसुफ के घर पहुँचे तो वह अभी वहीं था। वह उसके सामने मुँह के बल गिर गए। 15 यूसुफ ने कहा, “यह तुमने क्या किया है? क्या तुम नहीं जानते कि मुझ जैसा आदमी ग़ैब का इल्म रखता है?” 16 यहदाह ने कहा, “जनाबे-आली, हम क्या कहें? अब हम अपने दिफ़ा में क्या कहें? अल्लाह ही ने हमें कुसूरवार ठहराया है। अब हम सब आपके गुलाम हैं, न सिर्फ़ वह जिसके पास से प्याला मिल गया।” 17 यूसुफ ने कहा, “अल्लाह न करे कि मैं ऐसा करूँ, बल्कि सिर्फ़ वही मेरा गुलाम होगा जिसके पास प्याला था। बाकी सब सलामती से अपने बाप के पास वापस चले जाएँ।”

### यहदाह बिनयमीन की सिफ़ारिश करता है

18 लेकिन यहदाह ने यूसुफ के करीब आकर कहा, “मेरे मालिक, मेहरबानी करके अपने बंदे को एक बात करने की इजाज़त दें। मुझ पर गुस्सा न करें अगरचे आप मिसर के बादशाह जैसे हैं। 19 जनाबे-आली, आपने हमसे पूछा, ‘क्या तुम्हारा बाप या कोई और भाई है?’ 20 हमने जवाब दिया, ‘हमारा बाप है। वह बूढ़ा है। हमारा एक छोटा भाई भी है जो उस वक्त पैदा हुआ जब हमारा बाप उम्ररसीदा था। उस लड़के का भाई मर चुका है। उस की माँ के सिर्फ़ यह दो बेटे पैदा हुए। अब वह अकेला ही रह गया है। उसका बाप उसे शिद्दत से प्यार करता है।’ 21 जनाबे-आली, आपने हमें बताया, ‘उसे यहाँ ले आओ ताकि मैं खुद उसे देख सकूँ।’ 22 हमने जवाब दिया, ‘यह लड़का अपने बाप को छोड़ नहीं सकता, वरना उसका बाप मर जाएगा।’ 23 फिर आपने कहा, ‘तुम सिर्फ़ इस सूत में मेरे पास आ सकोगे कि तुम्हारा सबसे छोटा भाई तुम्हारे साथ हो।’

24 जब हम अपने बाप के पास वापस पहुँचे तो हमने उन्हें सब कुछ बताया जो आपने कहा था। 25 फिर उन्होंने हमसे कहा, 'मिसर लौटकर कुछ गल्ला खरीद लाओ।' 26 हमने जवाब दिया, 'हम जा नहीं सकते। हम सिर्फ इस सूरत में उस मर्द के पास जा सकते हैं कि हमारा सबसे छोटा भाई साथ हो। हम तब ही जा सकते हैं जब वह भी हमारे साथ चले।' 27 हमारे बाप ने हमसे कहा, 'तुम जानते हो कि मेरी बीवी राखिल से मेरे दो बेटे पैदा हुए। 28 पहला मुझे छोड़ चुका है। किसी जंगली जानवर ने उसे फाड़ खाया होगा, क्योंकि उसी वक्त से मैंने उसे नहीं देखा। 29 अगर इसको भी मुझसे ले जाने की वजह से जानी नुकसान पहुँचे तो तुम मुझ बड़े को गम के मारे पाताल में पहुँचाओगे।' 1"

30-31 यहूदाह ने अपनी बात जारी रखी, "जनाबे-आली, अब अगर मैं अपने बाप के पास जाऊँ और वह देखें कि लडका मेरे साथ नहीं है तो वह दम तोड़ देंगे। उनकी जिंदगी इस कदर लडके की जिंदगी पर मूनहसिर है और वह इतने बड़े हैं कि हम ऐसी हरकत से उन्हें कब्र तक पहुँचा देंगे। 32 न सिर्फ यह बल्कि मैंने बाप से कहा, 'मैं खुद इसका जामिन हूँगा। अगर मैं इसे सलामती से वापस न पहुँचाऊँ तो फिर मैं जिंदगी के आखिर तक कुसूरवार ठहरूँगा।' 33 अब अपने खादिम की गुजारिश सुने। मैं यहाँ रहकर इस लडके की जगह गुलाम बन जाता हूँ, और वह दूसरे भाइयों के साथ वापस चला जाए। 34 अगर लडका मेरे साथ न हुआ तो मैं किस तरह अपने बाप को मुँह दिखा सकता हूँ? मैं बरदाश्त नहीं कर सकूँगा कि वह इस मुसीबत में मुस्तला हो जाएँ।"

## 45

यूसुफ अपने आपको जाहिर करता है

1 यह सुनकर यूसुफ अपने आप पर काबू न रख सका। उसने ऊँची आवाज से हुक्म दिया कि तमाम मुलाज़िम कमरे से निकल जाएँ। कोई और शख्स कमरे में नहीं था जब यूसुफ ने अपने भाइयों को बताया कि वह कौन है। 2 वह इतने जोर से रो पड़ा कि मिसरियों ने उस की आवाज़ सुनी और फ़िरौन के घराने को पता चल गया। 3 यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, "मैं यूसुफ हूँ। क्या मेरा बाप अब तक जिंदा है?"

लेकिन उसके भाई यह सुनकर इतने घबरा गए कि वह जवाब न दे सके।

4 फिर यूसुफ ने कहा, "मेरे करीब आओ।" वह करीब आए तो उसने कहा, "मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूँ जिसे तुमने बोलकर मिसर भिजवाया। 5 अब मेरी बात सुनो। न घबराओ और न अपने आपको इलज़ाम दो कि हमने यूसुफ को बेच दिया। असल में अल्लाह ने खुद मुझे तुम्हारे आगे यहाँ भेज दिया ताकि हम सब बचे रहें। 6 यह काल का दूसरा साल है। पाँच और साल के दौरान न हल चलेगा, न फ़सल कटेगी। 7 अल्लाह ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा ताकि दुनिया में तुम्हारा एक बचा-खुचा हिस्सा महफूज़ रहे और तुम्हारी जान एक बड़ी मख़लसी की मारिफ़त छूट जाए। 8 चुनौते तुमने मुझे यहाँ नहीं भेजा बल्कि अल्लाह ने। उसने मुझे फ़िरौन का बाप, उसके पूरे घराने का मालिक और मिसर का हाकिम बना दिया है। 9 अब जल्दी से मेरे बाप के पास वापस जाकर उनसे कहो, 'आपका बेटा यूसुफ आपको इतला देता है कि अल्लाह ने मुझे मिसर का मालिक बना दिया है। मेरे पास आ जाएँ, देर न करें। 10 आप ज़ुशन के इलाके में रह सकते हैं। वहाँ आप मेरे करीब होंगे, आप, आपकी आलो-औलाद, गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और जो कुछ भी आपका है। 11 वहाँ मैं आपकी ज़रूरियात पूरी करूँगा, क्योंकि काल को अभी पाँच साल और लगेंगे। वरना आप, आपके घरवाले और जो भी आपके हैं बदहाल हो जाएँगे।' 12 तुम खुद और मेरा भाई बिनयमीन देख सकते हो कि मैं यूसुफ ही हूँ जो तुम्हारे साथ बात कर रहा हूँ। 13 मेरे बाप को मिसर में मेरे असरो-रसूख के बारे में इतला दो। उन्हें सब कुछ बताओ जो तुमने देखा है। फिर जल्द ही मेरे बाप को यहाँ ले आओ।"

14 यह कहकर वह अपने भाई बिनयमीन को गले लगाकर रो पड़ा। बिनयमीन भी उसके गले लगकर रोने लगा। 15 फिर यूसुफ ने रोते हुए अपने हर एक भाई को बोसा दिया। इसके बाद उसके भाई उसके साथ बातें करने लगे।

16 जब यह ख़बर बादशाह के महल तक पहुँची कि यूसुफ के भाई आए हैं तो फ़िरौन और उसके तमाम अफ़सरान खुश हुए। 17 उसने यूसुफ से कहा, "अपने भाइयों को बता कि अपने जानवरों पर गल्ला लादकर मुल्के-कनान वापस चले जाओ। 18 वहाँ अपने बाप और खानदानों को लेकर मेरे पास आ जाओ। मैं तुमको मिसर की सबसे अच्छी ज़मीन दे दूँगा, और तुम इस मुल्क की बेहतरीन पैदावार खा सकोगे। 19 उन्हें यह हिदायत भी दे कि अपने बाल-बच्चों के लिए मिसर से गाड़ियाँ ले जाओ और अपने बाप को भी बिठाकर यहाँ ले आओ। 20 अपने माल की ज्यादा फ़िकर न करो, क्योंकि तुम्हें मुल्के-मिसर का बेहतरीन माल मिलेगा।"

21 यूसुफ के भाइयों ने ऐसा ही किया। यूसुफ ने उन्हें बादशाह के हुक्म के मुताबिक गाड़ियाँ और सफ़र के लिए ख़राक दी। 22 उसने हर एक भाई को कपड़ों का एक जोड़ा भी दिया। लेकिन बिनयमीन को उसने चाँदी के 300 सिक्के और पाँच जोड़े दिए। 23 उसने अपने बाप को दस गधे भिजवा दिए जो मिसर के बेहतरीन माल से लदे हुए थे और दस गधियाँ जो

अनाज, रोटी और बाप के सफर के लिए खाने से लदी हुई थी। 24 यों उसने अपने भाइयों को खसत करके कहा, “रास्ते में झगडा न करना।”

25 वह मिसर से रवाना होकर मुल्के-कनान में अपने बाप के पास पहुँचे। 26 उन्होंने उससे कहा, “यूसुफ जिंदा है! वह पूरे मिसर का हाकिम है।” लेकिन याकूब हक्का-बक्का रह गया, क्योंकि उसे यकीन न आया। 27 ताहम उन्होंने उसे सब कुछ बताया जो यूसुफ ने उससे कहा था, और उसने खुद वह गाड़ियाँ देखी जो यूसुफ ने उसे मिसर ले जाने के लिए भिजवा दी थीं। फिर याकूब की जान में जान आ गई, 28 और उसने कहा, “मेरा बेटा यूसुफ जिंदा है! यही काफी है। मरने से पहले मैं जाकर उससे मिलूँगा।”

## 46

### याकूब मिसर जाता है

1 याकूब सब कुछ लेकर रवाना हुआ और बैर-सबा पहुँचा। वहाँ उसने अपने बाप इसहाक के खूदा के हुजूर कुरबानियाँ चढाईं। 2 रात को अल्लाह रोया में उससे हमकलाम हुआ। उसने कहा, “याकूब, याकूब!” याकूब ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 3 अल्लाह ने कहा, “मैं अल्लाह हूँ, तैरे बाप इसहाक का खूदा। मिसर जाने से मत डर, क्योंकि वहाँ मैं तुझसे एक बड़ी कौम बनाऊँगा। 4 मैं तैरे साथ मिसर जाऊँगा और तुझे इस मुल्क में वापस भी ले आऊँगा। जब तू मेरेगा तो यूसुफ खुद तेरी आँखें बंद करेगा।”

5 इसके बाद याकूब बैर-सबा से रवाना हुआ। उसके बेटों ने उसे और अपने बाल-बच्चों को उन गाड़ियों में बिठा दिया जो मिसर के बादशाह ने भिजवाई थीं। 6 यों याकूब और उस की तमाम औलाद अपने मवेशी और कनान में हासिल किया हुआ माल लेकर मिसर चले गए। 7 याकूब के बेटे-बेटियाँ, पोते-पोतियाँ और बाकी औलाद सब साथ गए।

8 इसराईल की औलाद के नाम जो मिसर चली गई यह हैं :

याकूब के पहलौठे रुबिन 9 के बेटे हनुक, फल्लु, हसरोन और करमी थे। 10 शमौन के बेटे यमुएल, यमीन, उहद, यकीन, सुहर और साऊल थे (साऊल कनानी औरत का बच्चा था)। 11 लावी के बेटे जैरसोन, किहात और मिरारी थे। 12 यहदाह के बेटे एर, ओनान, सेला, फारस और जारह थे (एर और ओनान कनान में मर चुके थे)। फारस के दो बेटे हसरोन और हमूल थे। 13 इशकार के बेटे तोला, फुव्वा, योब और सिमरोन थे। 14 जबलून के बेटे सरद, ऐलोन और यहलियेल थे। 15 इन बेटों की माँ लियाह थी, और वह मसोपुतामिया में पैदा हुए। इनके अलावा दीना उस की बेटी थी। कुल 33 मर्द लियाह की औलाद थे।

16 जद के बेटे सिफियान, हज्जी, सूनी, इसबून, एरी, अरूदी और अरेली थे। 17 आशर के बेटे यिमना, इसवाह, इसवी और बरिया थे। आशर की बेटी सिरह थी, और बरिया के दो बेटे थे, हिबर और मलकियेल। 18 कुल 16 अफराद जिलफा की औलाद थे जिसे लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया था।

19 राखिल के बेटे यूसुफ और बिनयमीन थे। 20 यूसुफ के दो बेटे मनस्सी और इफराईम मिसर में पैदा हुए। उनकी माँ ओन के पुजारी फोतीफिरा की बेटी आसनत थीं। 21 बिनयमीन के बेटे बाला, बकर, अशबेल, जीरा, नामान, इखी, रोस, मुफ्फ्रीम, हुफ्फ्रीम और अर्द थे। 22 कुल 14 मर्द राखिल की औलाद थे।

23 दान का बेटा हुरीम था। 24 नफताली के बेटे यहसियेल, जूनी, यिसर और सिल्लीम थे। 25 कुल 7 मर्द बिलहाह की औलाद थे जिसे लाबन ने अपनी बेटी राखिल को दिया था।

26 याकूब की औलाद के 66 अफराद उसके साथ मिसर चले गए। इस तादाद में बेटों की बीवियाँ शामिल नहीं थीं।

27 जब हम याकूब, यूसुफ और उसके दो बेटे इनमें शामिल करते हैं तो याकूब के घराने के 70 अफराद मिसर गए।

### याकूब और उसका खानदान मिसर में

28 याकूब ने यहदाह को अपने आगे यूसुफ के पास भेजा ताकि वह जुशन में उनसे मिले। जब वह वहाँ पहुँचे 29 तो यूसुफ अपने रथ पर सवार होकर अपने बाप से मिलने के लिए जुशन गया। उसे देखकर वह उसके गले लगकर काफी देर रोता रहा। 30 याकूब ने यूसुफ से कहा, “अब मैं मरने के लिए तैयार हूँ, क्योंकि मैंने खुद देखा है कि तू जिंदा है।”

31 फिर यूसुफ ने अपने भाइयों और अपने बाप के खानदान के बाकी अफराद से कहा, “जस्री है कि मैं जाकर बादशाह को इतला दूँ कि मेरे भाई और मेरे बाप का पूरा खानदान जो कनान के रहनेवाले हैं मेरे पास आ गए हैं। 32 मैं उससे कहूँगा, ‘यह आदमी भेड-बकरियों के चरवाहे हैं। वह मवेशी पालते हैं, इसलिए अपनी भेड-बकरियाँ, गाय-बैल और बाकी सारा माल अपने साथ ले आए हैं।’ 33 बादशाह तुम्हें बुलाकर पूछेगा कि तुम क्या काम करते हो? 34 फिर तुमको जवाब देना है,



‘आपके खादिम बचपन से मवेशी पालते आए हैं। यह हमारे बापदादा का पेशा था और हमारा भी है।’ अगर तुम यह कहो तो तुम्हें जुशन में रहने की इजाजत मिलेगी। क्योंकि भेड़-बकरियों के चरवाहे मिसरियों की नज़र में काबिले-नफ़रत हैं।”

## 47

1 यूसुफ़ फिरौन के पास गया और उसे इतला देकर कहा, “मेरा बाप और भाई अपनी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और सारे माल समेत मुल्के-कनान से आकर जुशन में ठहरे हुए हैं।” 2 उसने अपने भाइयों में से पाँच को चुनकर फिरौन के सामने पेश किया। 3 फिरौन ने भाइयों से पूछा, “तुम क्या काम करते हो?” उन्होंने जवाब दिया, “आपके खादिम भेड़-बकरियों के चरवाहे हैं। यह हमारे बापदादा का पेशा था और हमारा भी है। 4 हम यहाँ आए हैं ताकि कुछ देर अजनबी की हैसियत से आपके पास ठहरे, क्योंकि काल ने कनान में बहुत जोर पकड़ा है। वहाँ आपके खादिमों के जानवरों के लिए चरागाहें ख़त्म हो गई हैं। इसलिए हमें जुशन में रहने की इजाजत दें।”

5 बादशाह ने यूसुफ़ से कहा, “तेरा बाप और भाई तेरे पास आ गए हैं। 6 मुल्के-मिसर तेरे सामने खुला है। उन्हें बेहतरीन जगह पर आबाद कर। वह जुशन में रहें। और अगर उनमें से कुछ हैं जो ख़ास काबिलियत रखते हैं तो उन्हें मेरे मवेशियों की निगहदाशत पर रख।”

7 फिर यूसुफ़ अपने बाप याक़ूब को ले आया और फिरौन के सामने पेश किया। याक़ूब ने बादशाह को बरकत दी। 8 बादशाह ने उससे पूछा, “तुम्हारी उम्र क्या है?” 9 याक़ूब ने जवाब दिया, “मैं 130 साल से इस दुनिया का मेहमान हूँ। मेरी ज़िंदगी मुख़तसर और तकलीफ़देह थी, और मेरे बापदादा मुझे ज़्यादा उम्रसीदा हुए थे जब वह इस दुनिया के मेहमान थे।” 10 यह कहकर याक़ूब फिरौन को दुबारा बरकत देकर चला गया।

11 फिर यूसुफ़ ने अपने बाप और भाइयों को मिसर में आबाद किया। उसने उन्हें रामसीस के इलाक़े में बेहतरीन ज़मीन दी जिस तरह बादशाह ने हुक्म दिया था। 12 यूसुफ़ अपने बाप के पूरे घराने को ख़ुराक मुहैया करता रहा। हर ख़ानदान को उसके बच्चों की तादाद के मुताबिक़ ख़ुराक मिलती रही।

### काल का सख़्त असर

13 काल इतना सख़्त था कि कहीं भी रोटी नहीं मिलती थी। मिसर और कनान में लोग निडाल हो गए।

14 मिसर और कनान के तमाम पैसे अनाज ख़रीदने के लिए सर्फ़ हो गए। यूसुफ़ उन्हें जमा करके फिरौन के महल में ले आया। 15 जब मिसर और कनान के पैसे ख़त्म हो गए तो मिसरियों ने यूसुफ़ के पास आकर कहा, “हमें रोटी दें! हम आपके सामने क्यों मरें? हमारे पैसे ख़त्म हो गए हैं।” 16 यूसुफ़ ने जवाब दिया, “अगर आपके पैसे ख़त्म हैं तो मुझे अपने मवेशी दें। मैं उनके एवज़ रोटी देता हूँ।” 17 चुनौचे वह अपने घोड़े, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और गधे यूसुफ़ के पास ले आए। इनके एवज़ उसने उन्हें ख़ुराक दी। उस साल उसने उन्हें उनके तमाम मवेशियों के एवज़ ख़ुराक मुहैया की।

18 अगले साल वह दुबारा उसके पास आए। उन्होंने कहा, “जनाबे-आली, हम यह बात आपसे नहीं छुपा सकते कि अब हम सिर्फ़ अपने आप और अपनी ज़मीन को आपको दे सकते हैं। हमारे पैसे तो ख़त्म हैं और आप हमारे मवेशी भी ले चुके हैं। 19 हम क्यों आपकी आँखों के सामने मर जाएँ? हमारी ज़मीन क्यों तबाह हो जाए? हमें रोटी दें तो हम और हमारी ज़मीन बादशाह की होगी। हम फिरौन के गुलाम होंगे। हमें बीज दें ताकि हम जीते बचें और ज़मीन तबाह न हो जाए।”

20 चुनौचे यूसुफ़ ने फिरौन के लिए मिसर की पूरी ज़मीन ख़रीद ली। काल की सख़ती के सबब से तमाम मिसरियों ने अपने खेत बेच दिए। इस तरीके से पूरा मुल्क फिरौन की मिलकियत में आ गया। 21 यूसुफ़ ने मिसर के एक सिरे से दूसरे सिरे तक के लोगों को शहरों में मुंत्किल कर दिया। 22 सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन आज़ाद रही। उन्हें अपनी ज़मीन बेचने की ज़रूरत ही नहीं थी, क्योंकि उन्हें फिरौन से इतना वज़ीफ़ा मिलता था कि गुज़ारा हो जाता था।

23 यूसुफ़ ने लोगों से कहा, “गौर से सुनें। आज मैंने आपको और आपकी ज़मीन को बादशाह के लिए ख़रीद लिया है। अब यह बीज लेकर अपने खेतों में बोना। 24 आपको फिरौन को फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा देना है। बाकी पैदावार आपकी होगी। आप इससे बीज बो सकते हैं, और यह आपके और आपके घरानों और बच्चों के खाने के लिए होगा।” 25 उन्होंने जवाब दिया, “आपने हमें बचाया है। हमारे मालिक हम पर मेहरबानी करें तो हम फिरौन के गुलाम बनेंगे।”

26 इस तरह यूसुफ़ ने मिसर में यह कानून नाफ़िज़ किया कि हर फ़सल का पाँचवाँ हिस्सा बादशाह का है। यह कानून आज तक जारी है। सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन बादशाह की मिलकियत में न आई।

### याक़ूब की आखिरी गुज़ारिश

27 इसराईली मिसर में जुशन के इलाक़े में आबाद हुए। वहाँ उन्हें ज़मीन मिली, और वह फले-फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए।

28 याकूब 17 साल मिसर में रहा। वह 147 साल का था जब फ़ौत हुआ। 29 जब मरने का वक़्त करीब आया तो उसने यूसुफ को बुलाकर कहा, “मेहरबानी करके अपना हाथ मेरी रान के नीचे रखकर कसम खा कि तू मुझ पर शफ़क़त और वफ़ादारी का इस तरह इजहार करेगा कि मुझे मिसर में दफ़न नहीं करेगा। 30 जब मैं मरकर अपने बापदादा से जा मिलूँगा तो मुझे मिसर से ले जाकर मेरे बापदादा की कब्र में दफ़नाना।” यूसुफ ने जवाब दिया, “ठीक है।” 31 याकूब ने कहा, “कसम खा कि तू ऐसा ही करेगा।” यूसुफ ने कसम खाई। तब इसराईल ने अपने बिस्तर के सिरहाने पर अल्लाह को सिजदा किया।

## 48

याकूब इफ़राईम और मनस्सी को बरकत देता है

1 कुछ देर के बाद यूसुफ को इतला दी गई कि आपका बाप बीमार है। वह अपने दो बेटों मनस्सी और इफ़राईम को साथ लेकर याकूब से मिलने गया।

2 याकूब को बताया गया, “आपका बेटा आ गया है” तो वह अपने आपको सँभालकर अपने बिस्तर पर बैठ गया। 3 उसने यूसुफ से कहा, “जब मैं कनानी शहर लज़ में था तो अल्लाह का दिरे-मुतलक मुझ पर जाहिर हुआ। उसने मुझे बरकत देकर 4 कहा, ‘मैं तुझे फलने फूलने दूँगा और तेरी औलाद बढ़ा दूँगा बल्कि तुझसे बहुत-सी कौम निकलने दूँगा। और मैं तेरी औलाद को यह मुल्क हमेशा के लिए दूँगा।’ 5 अब मेरी बात सुन। मैं चाहता हूँ कि तेरे बेटे जो मेरे आने से पहले मिसर में पैदा हुए मेरे बेटे हों। इफ़राईम और मनस्सी स्बिन और शमौन के बराबर ही मेरे बेटे हों। 6 अगर इनके बाद तेरे हों और बेटे पैदा हो जाएँ तो वह मेरे बेटे नहीं बल्कि तेरे ठहरेंगे। जो मीरास वह पाएँगे वह उन्हें इफ़राईम और मनस्सी की मीरास में से मिलेगी। 7 मैं यह तेरी माँ राखिल के सबब से कर रहा हूँ जो मसोपुतामिया से वापसी के वक़्त कनान में इफ़राता के करीब मर गई। मैंने उसे वहीं रास्ते में दफ़न किया।” (आज इफ़राता को बैत-लहम कहा जाता है)।

8 फिर याकूब ने यूसुफ के बेटों पर नज़र डालकर पूछा, “यह कौन हैं?” 9 यूसुफ ने जवाब दिया, “यह मेरे बेटे हैं जो अल्लाह ने मुझे यहाँ मिसर में दिए।” याकूब ने कहा, “उन्हें मेरे करीब ले आ ताकि मैं उन्हें बरकत दूँ।” 10 बूढ़ा होने के सबब से याकूब की आँखें कमजोर थीं। वह अच्छी तरह देख नहीं सकता था। यूसुफ अपने बेटों को याकूब के पास ले आया तो उसने उन्हें बोसा देकर गले लगाया 11 और यूसुफ से कहा, “मुझे तवक्को ही नहीं थी कि मैं कभी तेरा चेहरा देखूँगा, और अब अल्लाह ने मुझे तेरे बेटों को देखने का मौका भी दिया है।”

12 फिर यूसुफ उन्हें याकूब की गोद में से लेकर खुद उसके सामने मुँह के बल झुक गया। 13 यूसुफ ने इफ़राईम को याकूब के बाएँ हाथ रखा और मनस्सी को उसके दाएँ हाथ। 14 लेकिन याकूब ने अपना दहना हाथ बाईं तरफ़ बढ़ाकर इफ़राईम के सर पर रखा अगरचे वह छोटा था। इस तरह उसने अपना बायाँ हाथ दाईं तरफ़ बढ़ाकर मनस्सी के सर पर रखा जो बड़ा था। 15 फिर उसने यूसुफ को उसके बेटों की मारिफ़त बरकत दी, “अल्लाह जिसके हज़ुर मेरे बापदादा इब्राहीम और इसहाक चलते रहे और जो शूरू से आज तक मेरा चरवाहा रहा है इन्हें बरकत दे। 16 जिस फ़रिशते ने एवज़ाना देकर मुझे हर नुक़सान से बचाया है वह इन्हें बरकत दे। अल्लाह करे कि इनमें मेरा नाम और मेरे बापदादा इब्राहीम और इसहाक के नाम जीते रहें। दुनिया में इनकी औलाद की तादाद बहुत बढ़ जाए।”

17 जब यूसुफ ने देखा कि बाप ने अपना दहना हाथ छोटे बेटे इफ़राईम के सर पर रखा है तो यह उसे बुरा लगा, इसलिए उसने बाप का हाथ पकड़ा ताकि उसे इफ़राईम के सर पर से उठाकर मनस्सी के सर पर रखे। 18 उसने कहा, “अबू, ऐसे नहीं। दूसरा लडका बड़ा है। उसी पर अपना दहना हाथ रखें।” 19 लेकिन बाप ने इनकार करके कहा, “मुझे पता है बेटा, मुझे पता है। वह भी एक बड़ी कौम बनेगा। फिर भी उसका छोटा भाई उससे बड़ा होगा और उससे कौमों की बड़ी तादाद निकलेगी।”

20 उस दिन उसने दोनों बेटों को बरकत देकर कहा, “इसराईली तुम्हारा नाम लेकर बरकत दिया करेंगे। जब वह बरकत देंगे तो कहेंगे, ‘अल्लाह आपके साथ वैसा करे जैसा उसने इफ़राईम और मनस्सी के साथ किया है।’” इस तरह याकूब ने इफ़राईम को मनस्सी से बड़ा बना दिया। 21 यूसुफ से उसने कहा, “मैं तो मरनेवाला हूँ, लेकिन अल्लाह तुम्हारे साथ होगा और तुम्हें तुम्हारे बापदादा के मुल्क में वापस ले जाएगा। 22 एक बात में मैं तुझे तेरे भाइयों पर तरज़ीह देता हूँ, मैं तुझे कनान में वह कितना देता हूँ जो मैंने अपनी तलवार और कमान से अमोरियों से छीना था।”

## 49

याकूब अपने बेटों को बरकत देता है

1 याकूब ने अपने बेटों को बुलाकर कहा, “मेरे पास जमा हो जाओ ताकि मैं तुम्हें बताऊँ कि मुस्तक़बिल में तुम्हारे साथ क्या क्या होगा। 2 ये याकूब के बेटे, इक़ठे होकर सुनो, अपने बाप इसराईल की बातों पर गौर करो।

3 रुबिन, तुम मेरे पहलौंटे हो, मेरे जोर और मेरी ताकत का पहला फल। तुम इज्जत और कुव्वत के लिहाज से बरतार हो। 4 लेकिन चूँकि तुम बेकाबू सैलाब की मानिंद हो इसलिए तुम्हारी अब्बल हैसियत जाती रहे। क्योंकि तुमने मेरी हरम से हमबिसतर होकर अपने बाप की बेहरमती की है।

5 शमौन और लावी दोनों भाइयों की तलवारें जुल्मो-तशद्दु के हथियार रहे हैं। 6 मेरी जान न उनकी मजलिस में शामिल और न उनकी जमात में दाखिल हो, क्योंकि उन्होंने गुस्से में आकर दूसरों को कत्ल किया है, उन्होंने अपनी मरजी से बैलों की कोंचें काटी हैं। 7 उनके गुस्से पर लानत हो जो इतना जबरदस्त है और उनके तैश पर जो इतना सख्त है। मैं उन्हें याकूब के मुल्क में तित्तर-बित्तर करूँगा, उन्हें इसराईल में मुंतशिर कर दूँगा।

8 यहदाह, तुम्हारे भाई तुम्हारी तारीफ करेगा। तुम अपने दुश्मनों की गरदन पकड़े रहोगे, और तुम्हारे बाप के बेटे तुम्हारे सामने झुक जाएंगे। 9 यहदाह शेरबबर का बच्चा है। मेरे बेटे, तुम अभी अभी शिकार मारकर वापस आए हो। यहदाह शेरबबर बल्कि शेरनी की तरह दबककर बैठ जाता है। कौन उसे छेड़ने की जुरत करेगा? 10 शाही असा यहदाह से दूर नहीं होगा बल्कि शाही इख्तियार उस वक्त तक उस की औलाद के पास रहेगा जब तक वह हाकिम न आए जिसके ताबे कौमैं रहेगी। 11 वह अपना जवान गधा अंगूर की बेल से और अपनी गधी का बच्चा बेहतरीन अंगूर की बेल से बाँधेगा। वह अपना लिबास मै में और अपना कपड़ा अंगूर के खून में धोएगा। 12 उस की आँखें मै से ज़्यादा गदली और उसके दाँत दूध से ज़्यादा सफेद होंगे।

13 जबलून साहिल पर आबाद होगा जहाँ बहरी जहाज़ होंगे। उस की हद सैदा तक होगी।

14 इशकार ताकतवर गधा है जो अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठा है। 15 जब वह देखेगा कि उस की आरामगाह अच्छी और उसका मुल्क खुशनुमा है तो वह बोझ उठाने के लिए तैयार हो जाएगा और उजरत के बगैर काम करने के लिए मजबूर किया जाएगा।

16 दान अपनी कौम का इनसाफ करेगा अगरचे वह इसराईल के कबीलों में से एक ही है। 17 दान सडक के साँप और रास्ते के अफई की मानिंद होगा। वह घोड़े की एडियों को काटेगा तो उसका सवार पीछे गिर जाएगा।

18 ऐ रब, मै तेरी ही नजात के इंतज़ार में हूँ।

19 जद पर डाकुओं का जल्था हमला करेगा, लेकिन वह पलटकर उसी पर हमला कर देगा।

20 आशर को गिज़ायतवाली खुराक हासिल होगी। वह लज़ीज़ शाही खाना मुहैया करेगा।

21 नफताली आज़ाद छोड़ी हुई हिरनी है। वह ख्वसूरत बातें करता है। \*

22 यूसुफ फलदार बेल है। वह चरमे पर लगी हुई फलदार बेल है जिसकी शाखें दीवार पर चढ़ गई हैं। 23 तीरअंदाज़ों ने उस पर तीर चलाकर उसे तंग किया और उसके पीछे पड़ गए, 24 लेकिन उस की कमान मजबूत रही, और उसके बाजू याकूब के जोरावर खुदा के सबब से ताकतवर रहे, उस चरवाहे के सबब से जो इसराईल का ज़बरदस्त सूमा है। 25 क्योंकि तेरे बाप का खुदा तेरी मदद करता है, अल्लाह कादिरे-मुतलक तुझे आसमान की बरकत, जर्मीन की गहराइयों की बरकत और औलाद की बरकत देता है। 26 तेरे बाप की बरकत कदीम पहाड़ों और अबदी पहाड़ियों की मरगुब चीज़ों से ज़्यादा अज़ीम है। यह तमाम बरकत यूसुफ के सर पर हो, उस शख्स के चाँद पर जो अपने भाइयों पर शहज़ादा है।

27 बिनयमीन फाड़नेवाला भेडिया है। सुबह वह अपना शिकार खा जाता और रात को अपना लूटा हुआ माल तकसीम कर देता है।”

28 यह इसराईल के कुल बारह कबीले हैं। और यह वह कुछ है जो उनके बाप ने उनसे बरकत देते वक्त कहा। उसने हर एक को उस की अपनी बरकत दी।

### याकूब का इंतकाल

29 फिर याकूब ने अपने बेटों को हुक्म दिया, “अब मैं कूच करके अपने बापदादा से जा मिलूँगा। मुझे मेरे बापदादा के साथ उस गार में दफनाना जो हिली आदमी इफ्रोन के खेत में है। 30 यानी उस गार में जो मुल्के-कनान में मम्मे के मशरिक में मकफ्रीला के खेत में है। इब्राहीम ने उसे खेत समेत अपने लोगों को दफनाने के लिए इफ्रोन हिली से खरीद लिया था। 31 वहाँ इब्राहीम और उस की बीवी सारा दफनाए गए, वहाँ इसहाक और उस की बीवी रिबका दफनाए गए और वहाँ मैंने लियाह को दफन किया। 32 वह खेत और उसका गार हिलियों से खरीदा गया था।”

33 इन हिदायात के बाद याकूब ने अपने पाँव बिस्तर पर समेट लिए और दम छोड़कर अपने बापदादा से जा मिला।

\* 49:21 या ख्वसूरत बच्चे पैदा करती है।

## 50

याकूब को दफन किया जाता है

1 यासूफ अपने बाप के चेहरे से लिपट गया। उसने रोते हुए उसे बोसा दिया। 2 उसके मुलाज़िमों में से कुछ डाक्टर थे। उसने उन्हें हिदायत दी कि मेरे बाप इसराईल की लाश को हनूत करें ताकि वह गल न जाए। उन्होंने ऐसा ही किया। 3 इसमें 40 दिन लग गए। आम तौर पर हनूत करने के लिए इतने ही दिन लगते हैं। मिसरियों ने 70 दिन तक याकूब का मातम किया।

4 जब मातम का वक़्त ख़त्म हुआ तो यासूफ ने बादशाह के दरबारियों से कहा, “मेहरबानी करके यह ख़बर बादशाह तक पहुँचा दें 5 कि मेरे बाप ने मुझे क़सम दिलाकर कहा था, ‘मैं मरनेवाला हूँ। मुझे उस कब्र में दफन करना जो मैंने मुल्के-कनान में अपने लिए बनवाई।’ अब मुझे इजाज़त दें कि मैं वहाँ जाऊँ और अपने बाप को दफन करके वापस आऊँ।” 6 फिरौन ने जवाब दिया, “जा, अपने बाप को दफन कर जिस तरह उसने तुझे क़सम दिलाई थी।”

7 चुनौचे यासूफ अपने बाप को दफनाने के लिए कनान रवाना हुआ। बादशाह के तमाम मुलाज़िम, महल के बुजुर्ग और पूरे मिसर के बुजुर्ग उसके साथ थे। 8 यासूफ के घराने के अफ़राद, उसके भाई और उसके बाप के घराने के लोग भी साथ गए। सिर्फ़ उनके बच्चे, उनकी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल जुशन में रहे। 9 रथ और घुड़सवार भी साथ गए। सब मिलकर बड़ा लश्कर बन गए।

10 जब वह यरदन के करीब अतद के खलियान पर पहुँचे तो उन्होंने निहायत दिलसोज़ नोहा किया। वहाँ यासूफ ने सात दिन तक अपने बाप का मातम किया। 11 जब मक़ामी कनानियों ने अतद के खलियान पर मातम का यह नज़ारा देखा तो उन्होंने कहा, “यह तो मातम का बहुत बड़ा इंतज़ाम है जो मिसरी करवा रहे हैं।” इसलिए उस जगह का नाम अबील-मिसरीम यानी ‘मिसरियों का मातम’ पड़ गया। 12 यों याकूब के बेटों ने अपने बाप का हुक़म पूरा किया। 13 उन्होंने उसे मुल्के-कनान में ले जाकर मक़फ़ीला के खेत के गार में दफन किया जो ममरे के मशरिक में है। यह वही खेत है जो इब्राहीम ने इफ़रोन हिती से अपने लोगों को दफनाने के लिए ख़रीदा था।

14 इसके बाद यासूफ, उसके भाई और बाकी तमाम लोग जो जनाज़े के लिए साथ गए थे मिसर को लौट आए।

यासूफ अपने भाइयों को तसल्ली देता है

15 जब याकूब इंतकाल कर गया तो यासूफ के भाई डर गए। उन्होंने कहा, “खतरा है कि अब यासूफ हमारा ताबक़ूब करके उस ग़लत काम का बदला ले जो हमने उसके साथ किया था। फिर क्या होगा?” 16 यह सोचकर उन्होंने यासूफ को खबर भेजी, “आपके बाप ने मरने से पेशतर हिदायत दी 17 कि यासूफ को बताना, ‘अपने भाइयों के उस ग़लत काम को मुआफ़ कर देना जो उन्होंने तुम्हारे साथ किया।’ अब हमें जो आपके बाप के खुदा के पैरोकार हैं मुआफ़ कर दें।”

यह खबर सुनकर यासूफ रो पड़ा। 18 फिर उसके भाई खुद आए और उसके सामने गिर गए। उन्होंने कहा, “हम आपके खादिम हैं।” 19 लेकिन यासूफ ने कहा, “मत डरो। क्या मैं अल्लाह की जगह हूँ? हरगिज़ नहीं! 20 तुमने मुझे नुक़सान पहुँचाने का इरादा किया था, लेकिन अल्लाह ने उससे भलाई पैदा की। और अब इसका मक़सद पूरा हो रहा है। बहुत-से लोग मौत से बच रहे हैं। 21 चुनौचे अब डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को ख़ुराक मुहैया करता रहूँगा।”

यों यासूफ ने उन्हें तसल्ली दी और उनसे नरमी से बात की।

यासूफ का इंतकाल

22 यासूफ अपने बाप के खानदान समेत मिसर में रहा। वह 110 साल ज़िंदा रहा। 23 मौत से पहले उसने न सिर्फ़ इफ़राईम के बच्चों को बल्कि उसके पोतों को भी देखा। मनस्सी के बेटे मकीर के बच्चे भी उस की मौजूदगी में पैदा होकर उस की गोद में रखे गए। \*

24 फिर एक वक़्त आया कि यासूफ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं मरनेवाला हूँ। लेकिन अल्लाह ज़रूर आपकी देख-भाल करके आपको इस मुल्क से उस मुल्क में ले जाएगा जिसका उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से क़सम खाकर वादा किया है।” 25 फिर यासूफ ने इसराईलियों को क़सम दिलाकर कहा, “अल्लाह यकीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठाकर साथ ले जाना।”

26 फिर यासूफ फ़ौत हो गया। वह 110 साल का था। उसे हनूत करके मिसर में एक ताबूत में रखा गया।

\* 50:23 गा़ल्लिब इसका मतलब यह है कि उसने उन्हें लेपालक बनाया।

## खुर्रज

याकूब का खानदान मिसर में

1 जैल में उन बेटों के नाम हैं जो अपने बाप याकूब और अपने खानदानों समेत मिसर में आए थे : 2 रबिन, शमौन, लावी, यहदाह, 3 इशाकार, ज़बूलून, बिनयमीन, 4 दान, नफ़ताली, जद और आशर। 5 उस वक्त याकूब की औलाद की तादाद 70 थी। यूसुफ तो पहले ही मिसर आ चुका था।

6 मिसर में रहते हुए बहुत दिन गुजर गए। इतने में यूसुफ, उसके तमाम भाई और उस नसल के तमाम लोग मर गए। 7 इसराईली फले-फूले और तादाद में बहुत बढ़ गए। नतीजे में वह निहायत ही ताकतवर हो गए। पूरा मुल्क उनसे भर गया।

इसराईलियों को दबाया जाता है

8 होते होते एक नया बादशाह तख़्तनशीन हुआ जो यूसुफ से नावाकिफ़ था। 9 उसने अपने लोगों से कहा, “इसराईलियों को देखो। वह तादाद और ताकत में हमसे बढ़ गए हैं। 10 आओ, हम हिकमत से काम लें, वरना वह मज़ीद बढ़ जाएंगे। ऐसा न हो कि वह किसी जंग के मौके पर दुश्मन का साथ देकर हमसे लड़ें और मुल्क को छोड़ जाएँ।”

11 चुनौचे मिसरियों ने इसराईलियों पर निगरान मुकर्रर किए ताकि बेगार में उनसे काम करवाकर उन्हें दबाते रहें। उस वक्त उन्होंने पितोम और रामसीस के शहर तामीर किए। इन शहरों में फिरौन बादशाह के बड़े बड़े गोदाम थे। 12 लेकिन जितना इसराईलियों को दबाया गया उतना ही वह तादाद में बढ़ते और फैलते गए। आखिरकार मिसरी उनसे दहशत खाने लगे, 13 और वह बड़ी बेरहमी से उनसे काम करवाते रहे। 14 इसराईलियों का गुज़ारा निहायत मुश्किल हो गया। उन्हें गारा तैयार करके ईंट बनाना और खेतों में मुख़लिफ़ क्रिस्म के काम करना पड़े। इसमें मिसरी उनसे बड़ी बेरहमी से पेश आते रहे।

दाइयों अल्लाह की राह पर चलती हैं

15 इसराईलियों की दो दाइयों थी जिनके नाम सिफ़रा और फ़ुआ थे। मिसर के बादशाह ने उनसे कहा, 16 “जब इब्रानी औरतें तुम्हें मदद के लिए बुलाएँ तो ख़बरदार रहो। अगर लडका पैदा हो तो उसे जान से मार दो, अगर लडकी हो तो उसे जीता छोड़ दो।” 17 लेकिन दाइयों अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थी। उन्होंने मिसर के बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लडकों को भी जीने दिया।

18 तब मिसर के बादशाह ने उन्हें दुबारा बुलाकर पूछा, “तुमने यह क्यों किया? तुम लडकों को क्यों जीता छोड़ देती हो?” 19 उन्होंने जवाब दिया, “इब्रानी औरतों मिसरी औरतों से ज्यादा मज़बूत हैं। बच्चे हमारे पहुँचने से पहले ही पैदा हो जाते हैं।”

20 चुनौचे अल्लाह ने दाइयों को बरकत दी, और इसराईली कौम तादाद में बढ़कर बहुत ताकतवर हो गई। 21 और चूँकि दाइयों अल्लाह का ख़ौफ़ मानती थी इसलिए उसने उन्हें औलाद देकर उनके खानदानों को कायम रखा।

22 आखिरकार बादशाह ने अपने तमाम हमवतनों से बात की, “जब भी इब्रानियों के लडके पैदा हों तो उन्हें दरियाए-नील में फेंक देना। सिर्फ़ लडकियों को जिंदा रहने दो।”

## 2

मूसा की पैदाइश और बचाव

1 उन दिनों में लावी के एक आदमी ने अपने ही क़बीले की एक औरत से शादी की। 2 औरत हामिला हुई और बच्चा पैदा हुआ। माँ ने देखा कि लडका ख़ूबसूरत है, इसलिए उसने उसे तीन माह तक छुपाए रखा। 3 जब वह उसे और ज्यादा न छुपा सकी तो उसने आबी नरसल से टोकरी बनाकर उस पर तारकोल चढ़ाया। फिर उसने बच्चे को टोकरी में रखकर टोकरी को दरियाए-नील के किनारे पर उगे हुए सरकंडों में रख दिया। 4 बच्चे की बहन कुछ फ़ासले पर खड़ी देखती रही कि उसका क्या बनेगा।

5 उस वक्त फिरौन की बेटी नहाने के लिए दरिया पर आई। उस की नौकरानियाँ दरिया के किनारे टहलने लगीं। तब उसने सरकंडों में टोकरी देखी और अपनी लौंडी को उसे लाने भेजा। 6 उसे खोला तो छोटा लडका दिखाई दिया जो रो रहा था। फिरौन की बेटी को उस पर तरस आया। उसने कहा, “यह कोई इब्रानी बच्चा है।”

7 अब बच्चे की बहन फिरौन की बेटी के पास गई और पूछा, “क्या मैं बच्चे को दूध पिलाने के लिए कोई इब्रानी औरत ढूँढ़ लाऊँ?” 8 फिरौन की बेटी ने कहा, “हाँ, जाओ।” लडकी चली गई और बच्चे की सगीं माँ को लेकर वापस आई।

9 फिरौन की बेटी ने माँ से कहा, “बच्चे को ले जाओ और उसे मेरे लिए दूध पिलाया करो। मैं तुम्हें इसका मुआवजा दूँगी।” चुनौचे बच्चे की माँ ने उसे दूध पिलाने के लिए ले लिया।

10 जब बच्चा बड़ा हुआ तो उस की माँ उसे फिरौन की बेटी के पास ले गई, और वह उसका बेटा बन गया। फिरौन की बेटी ने उसका नाम मूसा यानी ‘निकाला गया’ रखकर कहा, “मैं उसे पानी से निकाल लाई हूँ।”

### मूसा फरार होता है

11 जब मूसा जवान हुआ तो एक दिन वह घर से निकलकर अपने लोगों के पास गया जो जबरी काम में मसरूफ थे। मूसा ने देखा कि एक मिसरी मेरे एक इब्रानी भाई को मार रहा है। 12 मूसा ने चारों तरफ नजर दौड़ाई। जब मालूम हुआ कि कोई नहीं देख रहा तो उसने मिसरी को जान से मार दिया और उसे रेत में छुपा दिया।

13 अगले दिन भी मूसा घर से निकला। इस दफा दो इब्रानी मर्द आपस में लड़ रहे थे। जो गलती पर था उससे मूसा ने पूछा, “तुम अपने भाई को क्यों मार रहे हो?” 14 आदमी ने जवाब दिया, “किसने आपको हम पर हुक्मरान और काज़ी मुकर्रर किया है? क्या आप मुझे भी कत्ल करना चाहते हैं जिस तरह मिसरी को मार डाला था?” तब मूसा डर गया। उसने सोचा, “हाय, मेरा भेद खुल गया है!”

15 बादशाह को भी पता लगा तो उसने मूसा को मरवाने की कोशिश की। लेकिन मूसा मिदियान के मुल्क को भाग गया। वहाँ वह एक कुएँ के पास बैठ गया। 16 मिदियान में एक इमाम था जिसकी सात बेटियाँ थीं। यह लड़कियाँ अपनी भेड़-बकरियों को पानी पिलाने के लिए कुएँ पर आईं और पानी निकालकर हौज भरने लगीं। 17 लेकिन कुछ चरवाहों ने आकर उन्हें भगा दिया। यह देखकर मूसा उठा और लड़कियों को चरवाहों से बचाकर उनके रेवड़ को पानी पिलाया।

18 जब लड़कियाँ अपने बाप रऊएल के पास वापस आईं तो बाप ने पूछा, “आज तुम इतनी जल्दी से क्यों वापस आ गई हो?” 19 लड़कियों ने जवाब दिया, “एक मिसरी आदमी ने हमें चरवाहों से बचाया। न सिर्फ यह बल्कि उसने हमारे लिए पानी भी निकालकर रेवड़ को पिला दिया।” 20 रऊएल ने कहा, “वह आदमी कौन है? तुम उसे क्यों छोड़कर आई हो? उसे बुलाओ ताकि वह हमारे साथ खाना खाए।”

21 मूसा रऊएल के घर में ठहरने के लिए राजी हो गया। बाद में उस की शादी रऊएल की बेटी सफफूरा से हुई। 22 सफफूरा के बेटा पैदा हुआ तो मूसा ने कहा, “इसका नाम जैरसोम यानी ‘अजनबी मुल्क में परदेसी’ हो, क्योंकि मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।”

23 काफी अरसा गुज़र गया। इतने में मिसर का बादशाह इंतकाल कर गया। इसराईली अपनी गुलामी तले कराहते और मदद के लिए पुकारते रहे, और उनकी चीखें अल्लाह तक पहुँच गईं। 24 अल्लाह ने उनकी आहें सुनीं और उस अहद को याद किया जो उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से बाँधा था। 25 अल्लाह इसराईलियों की हालत देखकर उनका खयाल करने लगा।

## 3

### जलती हुई झाड़ी

1 मूसा अपने सुसर यितरो की भेड़-बकरियों की निगहबानी करता था (मिदियान का इमाम रऊएल यितरो भी कहलाता था)। एक दिन मूसा रेवड़ को रेगिस्तान की परली जानिब ले गया और चलते चलते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच गया। 2 वहाँ रब का फरिश्ता आग के शोले में उस पर जाहिर हुआ। यह शोला एक झाड़ी में भड़क रहा था। मूसा ने देखा कि झाड़ी जल रही है लेकिन भस्म नहीं हो रही। 3 मूसा ने सोचा, “यह तो अजीब बात है। क्या वजह है कि जलती हुई झाड़ी भस्म नहीं हो रही? मैं जरा वहाँ जाकर यह हैरतअगेज़ मंज़र देखूँ।”

4 जब रब ने देखा कि मूसा झाड़ी को देखने आ रहा है तो उसने उसे झाड़ी में से पुकारा, “मूसा, मूसा!” मूसा ने कहा, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 5 रब ने कहा, “इससे ज्यादा करीब न आना। अपनी ज्तियाँ उतार, क्योंकि तू मुकद्दस ज़मीन पर खड़ा है। 6 मैं तेरे बाप का ख़ुदा, इब्राहीम का ख़ुदा, इसहाक का ख़ुदा और याकूब का ख़ुदा हूँ।” यह सुनकर मूसा ने अपना मुँह ढाँक लिया, क्योंकि वह अल्लाह को देखने से डरा।

7 रब ने कहा, “मैंने मिसर में अपनी क़ौम की बुरी हालत देखी और गुलामी में उनकी चीखें सुनी हैं, और मैं उनके दुखों को खूब जानता हूँ। 8 अब मैं उन्हें मिसरियों के काबू से बचाने के लिए उतर आया हूँ। मैं उन्हें मिसर से निकालकर एक अच्छे वसी मुल्क में ले जाऊँगा, एक ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कसरत है, गो इस वक़्त कनानी, हिती, अमोरी, फरिज्जी, हिव्वी और यबूसी उसमें रहते हैं। 9 इसराईलियों की चीखें मुझ तक पहुँची हैं। मैंने देखा है कि मिसरी उन पर किस

तरह का जल्म ढा रहे हैं। 10 चुनौचे अब जा। मैं तुझे फिरौन के पास भेजता हूँ, क्योंकि तुझे मेरी कौम इसराईल को मिसर से निकालकर लाना है।”

11 लेकिन मूसा ने अल्लाह से कहा, “मैं कौन हूँ कि फिरौन के पास जाकर इसराईलियों को मिसर से निकाल लाऊँ?”

12 अल्लाह ने कहा, “मैं तो तेरे साथ हूँगा। और इसका सबूत कि मैं तुझे भेज रहा हूँ यह होगा कि लोगों के मिसर से निकलने के बाद तुम यहाँ आकर इस पहाड़ पर मेरी इबादत करोगे।”

13 लेकिन मूसा ने एतराज किया, “अगर मैं इसराईलियों के पास जाकर उन्हें बताऊँ कि तुम्हारे बापदादा के खुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है तो वह पूछेंगे, ‘उसका नाम क्या है?’ फिर मैं उनको क्या जवाब दूँ?”

14 अल्लाह ने कहा, “मैं जो हूँ सो मैं हूँ। उनसे कहना, ‘मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।’ 15 रब जो तुम्हारे बापदादा का खुदा, इब्राहीम का खुदा, इसहाक का खुदा और याकूब का खुदा है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।’ यह अब तक मेरा नाम रहेगा। लोग यही नाम लेकर मुझे नसल-दर-नसल याद करेंगे।

16 अब जा और इसराईल के बुजुर्गों को जमा करके उनको बता दे कि रब तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब का खुदा मुझ पर जाहिर हुआ है। वह फरमाता है, ‘मैंने खूब देख लिया है कि मिसर में तुम्हारे साथ क्या सुलूक हो रहा है।

17 इसलिए मैंने फैसला किया है कि तुम्हें मिसर की मुसीबत से निकालकर कनानियों, हितियों, अमोरियों, फरिजियों, हिबियों और यबूसियों के मुल्क में ले जाऊँ, ऐसे मुल्क में जहाँ दूध और शहद की कसरत है।’ 18 बुजुर्ग तेरी सुनेंगे। फिर उनके साथ मिसर के बादशाह के पास जाकर उससे कहना, ‘रब इब्रानियों का खुदा हम पर जाहिर हुआ है। इसलिए हमें इजाजत दें कि हम तीन दिन का सफर करके रेगिस्तान में रब अपने खुदा के लिए कुरबानियाँ चढ़ाएँ।’

19 लेकिन मुझे मालूम है कि मिसर का बादशाह सिर्फ इस सूरत में तुम्हें जाने देगा कि कोई जबरदस्ती तुम्हें ले जाए।

20 इसलिए मैं अपनी कुदरत जाहिर करके अपने मोजिजों की मारिफत मिसरियों को मारूँगा। फिर वह तुम्हें जाने देगा।

21 उस वक्त मैं मिसरियों के दिलों को तुम्हारे लिए नरम कर दूँगा। तुम्हें खाली हाथ नहीं जाना पड़ेगा। 22 तमाम इब्रानी औरते अपनी मिसरी पड़ोसनों और अपने घर में रहनेवाली मिसरी औरतों से चाँदी और सोने के ज़ेवरात और नफ़ीस कपडे मॉगकर अपने बच्चों को पहनाएँगी। यों मिसरियों को लूट लिया जाएगा।”

## 4

1 मूसा ने एतराज किया, “लेकिन इसराईली न मेरी बात का यकीन करेंगे, न मेरी सुनेंगे। वह तो कहेंगे, ‘रब तुम पर जाहिर नहीं हुआ।’” 2 जवाब में रब ने मूसा से कहा, “तूने हाथ में क्या पकड़ा हुआ है?” मूसा ने कहा, “लाठी।” 3 रब ने कहा, “उसे ज़मीन पर डाल दे।” मूसा ने ऐसा किया तो लाठी साँप बन गई, और मूसा डरकर भागा। 4 रब ने कहा, “अब साँप की दूम को पकड़ ले।” मूसा ने ऐसा किया तो साँप फिर लाठी बन गया।

5 रब ने कहा, “यह देखकर लोगों को यकीन आएगा कि रब जो उनके बापदादा का खुदा, इब्राहीम का खुदा, इसहाक का खुदा और याकूब का खुदा है तुझ पर जाहिर हुआ है। 6 अब अपना हाथ अपने लिबास में डाल दे।” मूसा ने ऐसा किया। जब उसने अपना हाथ निकाला तो वह बर्फ की मानिंद सफेद हो गया था। कोढ़ जैसी बीमारी लग गई थी। 7 तब रब ने कहा, “अब अपना हाथ दुबारा अपने लिबास में डाल।” मूसा ने ऐसा किया। जब उसने अपना हाथ दुबारा निकाला तो वह फिर सेहतमंद था।

8 रब ने कहा, “अगर लोगों को पहला मोजिजा देखकर यकीन न आए और वह तेरी न सुनें तो शायद उन्हें दूसरा मोजिजा देखकर यकीन आए। 9 अगर उन्हें फिर भी यकीन न आए और वह तेरी न सुनें तो दरियाए-नील से कुछ पानी निकालकर उसे खुर्रक ज़मीन पर उंडेल दे। यह पानी ज़मीन पर गिरते ही खून बन जाएगा।”

10 लेकिन मूसा ने कहा, “मेरे आका, मैं माजरत चाहता हूँ, मैं अच्छी तरह बात नहीं कर सकता बल्कि मैं कभी भी यह लियाक़त नहीं रखता था। इस वक्त भी जब मैं तुझसे बात कर रहा हूँ मेरी यही हालत है। मैं स्क स्ककर बोलता हूँ।” 11 रब ने कहा, “किस्ने इन्सान का मुँह बनाया? कौन एक को गूँगा और दूसरे को बहरा बना देता है? कौन एक को देखने की काबिलियत देता है और दूसरे को इससे महरूम रखता है? क्या मैं जो रब हूँ यह सब कुछ नहीं करता? 12 अब जा! तेरे बोलते वक्त मैं खुद तेरे साथ हूँगा और तुझे वह कुछ सिखाऊँगा जो तुझे कहना है।”

13 लेकिन मूसा ने इल्तिजा की, “मेरे आका, मेहरबानी करके किसी और को भेज दे।”

14 तब रब मूसा से सख्त खफ़ा हुआ। उसने कहा, “क्या तेरा लावी भाई हास्न ऐसे काम के लिए हाज़िर नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह अच्छी तरह बोल सकता है। देख, वह तुझसे मिलने के लिए निकल चुका है। तुझे देखकर वह निहायत खुश होगा। 15 उसे वह कुछ बता जो उसे कहना है। तुम्हारे बोलते वक्त मैं तेरे और उसके साथ हूँगा और तुम्हें वह कुछ सिखाऊँगा

जो तुम्हें करना होगा। 16 हास्न तेरी जगह कौम से बात करेगा जबकि तू मेरी तरह उसे वह कुछ बताएगा जो उसे कहना है। 17 लेकिन यह लाठी भी साथ ले जाना, क्योंकि इसी के ज़रीए तू यह मोजिजे करेगा।”

### मूसा मिसर को लौट जाता है

18 फिर मूसा अपने सुसर यितरो के घर वापस चला गया। उसने कहा, “मुझे ज़रा अपने अजीजों के पास वापस जाने दें जो मिसर में हैं। मैं मालूम करना चाहता हूँ कि वह अभी तक ज़िंदा हैं कि नहीं।” यितरो ने जवाब दिया, “ठीक है, सलामती से जाएँ।” 19 मूसा अभी मिदियान में था कि रब ने उससे कहा, “मिसर को वापस चला जा, क्योंकि जो आदमी तुझे कल्ल करना चाहते थे वह मर गए हैं।” 20 चुनौचे मूसा अपनी बीवी और बेटों को गधे पर सवार करके मिसर को लौटने लगा। अल्लाह की लाठी उसके हाथ में थी।

21 रब ने उससे यह भी कहा, “मिसर जाकर फिरौन के सामने वह तमाम मोजिजे दिखा जिनका मैंने तुझे इख्तियार दिया है। लेकिन मेरे कहने पर वह अडा रहेगा। वह इसराईलियों को जाने की इजाज़त नहीं देगा। 22 उस वक्त फिरौन को बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि इसराईल मेरा पहलौठा है। 23 मैं तुझे बता चुका हूँ कि मेरे बेटे को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करे। अगर तू मेरे बेटे को जाने से मना करे तो मैं तेरे पहलौठे को जान से मार दूँगा।’”

24 एक दिन जब मूसा अपने खानदान के साथ रास्ते में किसी सराय में ठहरा हुआ था तो रब ने उस पर हमला करके उसे मार देने की कोशिश की। 25 यह देखकर सफ़फ़ूरा ने एक तेज़ पत्थर से अपने बेटे का खतना किया और काटे हुए हिस्से से मूसा के पैर छुए। उसने कहा, “यकीनन तुम मेरे खूनी दूल्हा हो।” 26 तब अल्लाह ने मूसा को छोड़ दिया। सफ़फ़ूरा ने उसे खतने के बाइस ही ‘खूनी दूल्हा’ कहा था।

27 रब ने हास्न से भी बात की, “रेगिस्तान में मूसा से मिलने जा।” हास्न चल पड़ा और अल्लाह के पहाड़ के पास मूसा से मिला। उसने उसे बोसा दिया। 28 मूसा ने हास्न को सब कुछ सुना दिया जो रब ने उसे कहने के लिए भेजा था। उसने उसे उन मोजिजों के बारे में भी बताया जो उसे दिखाने थे।

29 फिर दोनों मिलकर मिसर गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने इसराईल के तमाम बुजुर्गों को जमा किया। 30 हास्न ने उन्हें वह तमाम बातें सुनाई जो रब ने मूसा को बताई थीं। उसने मज़कूरा मोजिजे भी लोगों के सामने दिखाए। 31 फिर उन्हें यकीन आया। और जब उन्होंने सुना कि रब को तुम्हारा खयाल है और वह तुम्हारी मुसीबत से आगाह है तो उन्होंने रब को सिजदा किया।

## 5

### मूसा और हास्न फिरौन के दरबार में

1 फिर मूसा और हास्न फिरौन के पास गए। उन्होंने कहा, “रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मेरी कौम को रेगिस्तान में जाने दे ताकि वह मेरे लिए ईद मनाएँ।’” 2 फिरौन ने जवाब दिया, “यह रब कौन है? मैं क्यों उसका हुकम मानकर इसराईलियों को जाने दूँ? न मैं रब को जानता हूँ, न इसराईलियों को जाने दूँगा।”

3 हास्न और मूसा ने कहा, “इब्रानियों का ख़ुदा हम पर जाहिर हुआ है। इसलिए मेहरबानी करके हमें इजाज़त दें कि रेगिस्तान में तीन दिन का सफ़र करके रब अपने ख़ुदा के हज़ूर कुरबानियाँ पेश करें। कहीं वह हमें किसी बीमारी या तलवार से न मारे।”

4 लेकिन मिसर के बादशाह ने इनकार किया, “मूसा और हास्न, तुम लोगों को काम से क्यों रोक रहे हो? जाओ, जो काम हमने तुमको दिया है उस पर लग जाओ! 5 इसराईली वैसे भी तादाद में बहुत बढ़ गए हैं, और तुम उन्हें काम करने से रोक रहे हो।”

### जवाब में फिरौन का सख़्त दबाव

6 उसी दिन फिरौन ने मिसरी निगरानों और उनके तहत के इसराईली निगरानों को हुकम दिया, 7 “अब से इसराईलियों को ईंट बनाने के लिए भूसा मत देना, बल्कि वह ख़ुद जाकर भूसा जमा करें। 8 तो भी वह उतनी ही ईंट बनाएँ जितनी पहले बनाते थे। वह सुस्त हो गए हैं और इसी लिए चीख रहे हैं कि हमें जाने दें ताकि अपने ख़ुदा को कुरबानियाँ पेश करें। 9 उनसे और ज़्यादा सख़्त काम कराओ, उन्हें काम में लगाए रखो। उनके पास इतना वक्त ही न हो कि वह झूटी बातों पर ध्यान दें।”

10 मिसरी निगरान और उनके तहत के इसराईली निगरानों ने लोगों के पास जाकर उनसे कहा, “फिरौन का हुकम है कि तुम्हें भूसा न दिया जाए। 11 इसलिए ख़ुद जाओ और भूसा ढूँडकर जमा करो। लेकिन खबरदार! उतनी ही ईंट बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”



12 यह सुनकर इसराईली भूसा जमा करने के लिए पूरे मुल्क में फैल गए। 13 मिसरी निगरान यह कहकर उन पर दबाव डालते रहे कि उतनी ईंट बनाओ जितनी पहले बनाते थे। 14 जो इसराईली निगरान उन्होंने मुकर्र किए थे उन्हें वह पीटते और कहते रहे, “तुमने कल और आज उतनी ईंट क्यों नहीं बनवाई जितनी पहले बनवाते थे?”

15 फिर इसराईली निगरान फ़िरौन के पास गए। उन्होंने शिकायत करके कहा, “आप अपने खादिमों के साथ ऐसा सुल्क क्यों कर रहे हैं? 16 हमें भूसा नहीं दिया जा रहा और साथ साथ यह कहा गया है कि उतनी ईंट बनाओ जितनी पहले बनाते थे। नतीजे में हमें मारा पीटा भी जा रहा है हालाँकि ऐसा करने में आपके अपने लोग ग़लती पर हैं।”

17 फ़िरौन ने जवाब दिया, “तुम लोग सुस्त हो, तुम काम करना नहीं चाहते। इसलिए तुम यह जगह छोड़ना और रब को कुरबानियाँ पेश करना चाहते हो। 18 अब जाओ, काम करो। तुम्हें भूसा नहीं दिया जाएगा, लेकिन ख़बरदार! उतनी ही ईंट बनाओ जितनी पहले बनाते थे।”

19 जब इसराईली निगरानों को बताया गया कि ईंटों की मतलूबा तादाद कम न करो तो वह समझ गए कि हम फ़ैस गए हैं। 20 फ़िरौन के महल से निकलकर उनकी मुलाकात मूसा और हासून से हुई जो उनके इंतज़ार में थे। 21 उन्होंने मूसा और हासून से कहा, “रब खुद आपकी अदालत करे। क्योंकि आपके सबब से फ़िरौन और उसके मुलाज़िमों को हमसे धिन आती है। आपने उन्हें हमें मार देने का मौका दे दिया है।”

### मूसा की शिकायत और रब का जवाब

22 यह सुनकर मूसा रब के पास वापस आया और कहा, “ऐ आका, तूने इस कौम से ऐसा बुरा सुल्क क्यों किया? क्या तूने इसी मकसद से मुझे यहाँ भेजा है? 23 जब से मैंने फ़िरौन के पास जाकर उसे तेरी मरज़ी बताई है वह इसराईली कौम से बुरा सुल्क कर रहा है। और तूने अब तक उन्हें बचाने का कोई कदम नहीं उठाया।”

## 6

1 रब ने जवाब दिया, “अब तू देखेगा कि मैं फ़िरौन के साथ क्या कुछ करता हूँ। मेरी अज़ीम कुदरत का तजरबा करके वह मेरे लोगों को जाने देगा बल्कि उन्हें जाने पर मजबूर करेगा।”

2 अल्लाह ने मूसा से यह भी कहा, “मैं रब हूँ। 3 मैं इब्राहीम, इसहाक और याक़ूब पर जाहिर हुआ। वह मेरे नाम अल्लाह कादिरे-मुतलक \* से वाकिफ़ हुए, लेकिन मैंने उन पर अपने नाम रब † का इनकिशाफ़ नहीं किया। 4 मैंने उनसे अहद करके वादा किया कि उन्हें मुल्के-कनान दूँगा जिसमें वह अजनबी के तौर पर रहते थे। 5 अब मैंने सुना है कि इसराईली किस तरह मिसरियों की गुलामी में कराह रहे हैं, और मैंने अपना अहद याद किया है। 6 चुनौचे इसराईलियों को बताना है। मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिसरियों के जुए से आज़ाद करूँगा और उनकी गुलामी से बचाऊँगा। मैं बड़ी कुदरत के साथ तुम्हें छुड़ाऊँगा और उनकी अदालत करूँगा। 7 मैं तुम्हें अपनी कौम बनाऊँगा और तुम्हारा खुदा हूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ जिसने तुम्हें मिसरियों के जुए से आज़ाद कर दिया है। 8 मैं तुम्हें उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसका वादा मैंने कसम खाकर इब्राहीम, इसहाक और याक़ूब से किया है। वह मुल्क तुम्हारी अपनी मिलकियत होगा। मैं रब हूँ।”

9 मूसा ने यह सब कुछ इसराईलियों को बता दिया, लेकिन उन्होंने उस की बात न मानी, क्योंकि वह सख्त काम के बाइस हिम्मत हार गए थे। 10 तब रब ने मूसा से कहा, 11 “जा, मिसर के बादशाह फ़िरौन को बता देना कि इसराईलियों को अपने मुल्क से जाने दे।” 12 लेकिन मूसा ने एतराज़ किया, “इसराईली मेरी बात सुनना नहीं चाहते तो फ़िरौन क्यों मेरी बात माने जबकि मैं स्क स्ककर बोलता हूँ?”

13 लेकिन रब ने मूसा और हासून को हुक्म दिया, “इसराईलियों और मिसर के बादशाह फ़िरौन से बात करके इसराईलियों को मिसर से निकालो।”

### मूसा और हासून के आबा-ओ-अजदाद

14 इसराईल के आबाई घरानों के सरबराह यह थे : इसराईल के पहलौठे रबिन के चार बेटे हनुक, फ़ल्लू, हसरोन और करमी थे। इनसे रबिन की चार शाखें निकली।

15 शमौन के पाँच बेटे यमुएल, यमीन, उहद, यकीन, सुहर और साऊल थे। (साऊल कनानी औरत का बच्चा था)। इनसे शमौन की पाँच शाखें निकली।

16 लावी के तीन बेटे जैरसोन, किहात और मिरारी थे। (लावी 137 साल की उम्र में फ़ौत हुआ)।

\* 6:3 इब्रानी में एल-शदई। † 6:3 इब्रानी में यहवे।

17 जैरसोन के दो बेटे लिबनी और सिमई थे। इनसे जैरसोन की दो शाखें निकलीं। 18 किहात के चार बेटे अमराम, इज़हार, हबस्न और उज्जियेल थे। (किहात 133 साल की उम्र में फौत हुआ)। 19 मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे। इन सबसे लावी की मुख्तलिफ़ शाखें निकलीं।

20 अमराम ने अपनी फूफी यूकबिद से शादी की। उनके दो बेटे हास्न और मूसा पैदा हुए। (अमराम 137 साल की उम्र में फौत हुआ)। 21 इज़हार के तीन बेटे कोरह, नफ़ज और ज़िकरी थे। 22 उज्जियेल के तीन बेटे मीसाएल, इल्सफ़न और सितरी थे।

23 हास्न ने इलीसिबा से शादी की। (इलीसिबा अम्मीनदाब की बेटी और नहसोन की बहन थी)। उनके चार बेटे नदब, अबीह, इलियज़र और इतमर थे। 24 कोरह के तीन बेटे अस्सीर, इलकाना और अबियासफ़ थे। उनसे कोरहियों की तीन शाखें निकलीं। 25 हास्न के बेटे इलियज़र ने फूतियेल की एक बेटी से शादी की। उनका एक बेटा फ़ीनहास था।

यह सब लावी के आबाई घरानों के सरबराह थे।

26 रब ने अमराम के दो बेटों हास्न और मूसा को हुक्म दिया कि मेरी क्रौम को उसके खानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिसर से निकालो। 27 इन्ही दो आदमियों ने मिसर के बादशाह फ़िरौन से बात की कि इसराइलियों को मिसर से जाने दे।

रब दुबारा मूसा से हमकलाम होता है

28 मिसर में रब ने मूसा से कहा, 29 “मैं रब हूँ। मिसर के बादशाह को वह सब कुछ बता देना जो मैं तुझे बताता हूँ।” 30 मूसा ने एतराज़ किया, “मैं तो स्क़ स्क़कर बोलता हूँ। फ़िरौन किस तरह मेरी बात मानेगा?”

## 7

1 लेकिन रब ने कहा, “देख, मेरे कहने पर तू फ़िरौन के लिए अल्लाह की हैसियत रखेगा और तेरा भाई हास्न तेरा पैगंबर होगा। 2 जो भी हुक्म मैं तुझे दूँगा उसे तू हास्न को बता दे। फिर वह सब कुछ फ़िरौन को बताए ताकि वह इसराइलियों को अपने मुल्क से जाने दे। 3 लेकिन मैं फ़िरौन को अड जाने दूँगा। अगरचे मैं मिसर में बहुत-से निशानों और मोज़िज़ों से अपनी कुदरत का मुज़ाहरा करूँगा 4 तो भी फ़िरौन तुम्हारी नहीं सुनेगा। तब मिसरियों पर मेरा हाथ भारी हो जाएगा, और मैं उनको सख्त सज़ा देकर अपनी क्रौम इसराइल को खानदानों की तरतीब के मुताबिक़ मिसर से निकाल लाऊँगा। 5 जब मैं मिसर के खिलाफ़ अपनी कुदरत का इज़हार करके इसराइलियों को वहाँ से निकालूँगा तो मिसरी जान लेंगे कि मैं रब हूँ।”

6 मूसा और हास्न ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने उन्हें हुक्म दिया। 7 फ़िरौन से बात करते वक़्त मूसा 80 साल का और हास्न 83 साल का था।

मूसा की लाठी सॉप बन जाती है

8 रब ने मूसा और हास्न से कहा, 9 “जब फ़िरौन तुम्हें मोज़िज़ा दिखाने को कहेगा तो मूसा हास्न से कहे कि अपनी लाठी ज़मीन पर डाल दे। इस पर वह सॉप बन जाएगी।”

10 मूसा और हास्न ने फ़िरौन के पास जाकर ऐसा ही किया। हास्न ने अपनी लाठी फ़िरौन और उसके ओहदेदारों के सामने डाल दी तो वह सॉप बन गई। 11 यह देखकर फ़िरौन ने अपने आलिमों और जादूगरों को बुलाया। जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया। 12 हर एक ने अपनी लाठी ज़मीन पर फेंकी तो वह सॉप बन गई। लेकिन हास्न की लाठी ने उनकी लाठियों को निगूल लिया।

13 ताहम फ़िरौन इससे मुतअस्सिर न हुआ। उसने मूसा और हास्न की बात सुनने से इनकार किया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने कहा था।

पानी खून में बदल जाता है

14 फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़िरौन अड गया है। वह मेरी क्रौम को मिसर छोड़ने से रोकता है। 15 कल सुबह-सवेरे जब वह दरियाए-नील पर आया तो उससे मिलने के लिए दरिया के किनारे पर खड़े हो जाना। उस लाठी को थामे रखना जो सॉप बन गई थी। 16 जब वह वहाँ पहुँचे तो उससे कहना, ‘रब इब्रानियों के खुदा ने मुझे आपको यह बताने के लिए भेजा है कि मेरी क्रौम को मेरी इबादत करने के लिए रेगिस्तान में जाने दे। लेकिन आपने अभी तक उस की नहीं सुनी। 17 चुनूँचे अब आप जान लेंगे कि वह रब है। मैं इस लाठी को जो मेरे हाथ में है लेकर दरियाए-नील के पानी को माऊँगा। फिर वह खून में बदल जाएगा। 18 दरियाए-नील की मछलियों मर जाएँगी, दरिया से बढकू उठेगी और मिसरी दरिया का पानी नहीं पी सकेंगे।’”

19 रब ने मूसा से कहा, “हास्न को बता देना कि वह अपनी लाठी लेकर अपना हाथ उन तमाम जगहों की तरफ़ बढाए जहाँ पानी जमा होता है। तब मिसर की तमाम नदियों, नहरों, जोहड़ों और तालाबों का पानी खून में बदल जाएगा। पूरे मुल्क में खून ही खून होगा, यहाँ तक कि लकड़ी और पत्थर के बरतनों का पानी भी खून में बदल जाएगा।”

20 चुनाँचे मूसा और हास्न ने फ़िरौन और उसके ओहदेदारों के सामने अपनी लाठी उठाकर दरियाए-नील के पानी पर मारी। इस पर दरिया का सारा पानी खून में बदल गया। 21 दरिया की मछलियाँ मर गईं, और उससे इतनी बदबू उठने लगी कि मिसरी उसका पानी न पी सके। मिसर में चारों तरफ़ खून ही खून था।

22 लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू के ज़रीए ऐसा ही किया। इसलिए फ़िरौन अड़ गया और मूसा और हास्न की बात न मानी। वैसा ही हुआ वैसा रब ने कहा था। 23 फ़िरौन पलटकर अपने घर वापस चला गया। उसे उस की परवा नहीं थी जो मूसा और हास्न ने किया था। 24 लेकिन मिसरी दरिया से पानी न पी सके, और उन्होंने पीने का पानी हासिल करने के लिए दरिया के किनारे किनारे गढे खोदे। 25 पानी के बदल जाने के बाद सात दिन रुज़र गए।

## 8

### मेंढक

1 फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़िरौन के पास जाकर उसे बता देना कि रब फ़रमाता है, ‘मेरी कौम को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे, 2 वरना मैं पूरे मिसर को मेंढकों से सजा दूँगा। 3 दरियाए-नील मेंढकों से इतना भर जाएगा कि वह दरिया से निकलकर तेरे महल, तेरे सोने के कमरे और तेरे बिस्तर में जा घुसेंगे। वह तेरे ओहदेदारों और तेरी रिआया के घरों में आएँगे बल्कि तेरे तनूरों और आटा गूँधने के बरतनों में भी फुदकते फ़िरेंगे। 4 मेंढक तुझ पर, तेरी कौम पर और तेरे ओहदेदारों पर चढ़ जाएँगे।”

5 रब ने मूसा से कहा, “हास्न को बता देना कि वह अपनी लाठी को हाथ में लेकर उसे दरियाओं, नहरों और जोहडों के ऊपर उठाए ताकि मेंढक बाहर निकलकर मिसर के मुल्क में फैल जाएँ।” 6 हास्न ने मुल्के-मिसर के पानी के ऊपर अपनी लाठी उठाई तो मेंढकों के गोल पानी से निकलकर पूरे मुल्क पर छा गए। 7 लेकिन जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया। वह भी दरिया से मेंढक निकाल लाए।

8 फ़िरौन ने मूसा और हास्न को बुलाकर कहा, “रब से दुआ करो कि वह मुझसे और मेरी कौम से मेंढकों को दूर करे। फिर मैं तुम्हारी कौम को जाने दूँगा ताकि वह रब को कुरबानियाँ पेश करें।”

9 मूसा ने जवाब दिया, “वह वक्रत मुकर्रर करें जब मैं आपके ओहदेदारों और आपकी कौम के लिए दुआ करूँ। फिर जो मेंढक आपके पास और आपके घरों में हैं उसी वक्रत खत्म हो जाएँगे। मेंढक सिर्फ़ दरिया में पाए जाएँगे।”

10 फ़िरौन ने कहा, “ठीक है, कल उन्हें खत्म करो।” मूसा ने कहा, “जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा। इस तरह आपको मालूम होगा कि हमारे खुदा की मानिद कोई नहीं है। 11 मेंढक आप, आपके घरों, आपके ओहदेदारों और आपकी कौम को छोड़कर सिर्फ़ दरिया में रह जाएँगे।”

12 मूसा और हास्न फ़िरौन के पास से चले गए, और मूसा ने रब से मिन्नत की कि वह मेंढकों के वह गोल दूर करे जो उसने फ़िरौन के खिलाफ़ भेजे थे। 13 रब ने उस की दुआ सुनी। घरों, सहनों और खेतों में मेंढक मर गए। 14 लोगों ने उन्हें जमा करके उनके ढेर लगा दिए। उनकी बदबू पूरे मुल्क में फैल गई।

15 लेकिन जब फ़िरौन ने देखा कि मसला हल हो गया है तो वह फिर अकड़ गया और उनकी न सुनी। यों रब की बात दुस्त निकली।

### जुएँ

16 फिर रब ने मूसा से कहा, “हास्न से कहना कि वह अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारे। जब वह ऐसा करेगा तो पूरे मिसर की गर्द जुओं में बदल जाएगी।”

17 उन्होंने ऐसा ही किया। हास्न ने अपनी लाठी से ज़मीन की गर्द को मारा तो पूरे मुल्क की गर्द जुओं में बदल गई। उनके गोल जानवरों और आदमियों पर छा गए। 18 जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा करने की कोशिश की, लेकिन वह गर्द से जुएँ न बना सके। जुएँ आदमियों और जानवरों पर छा गईं। 19 जादूगरों ने फ़िरौन से कहा, “अल्लाह की कुदरत ने यह किया है।” लेकिन फ़िरौन ने उनकी न सुनी। यों रब की बात दुस्त निकली।

### काटनेवाली मक्खियाँ

20 फिर रब ने मूसा से कहा, “जब फ़िरौन सुबह-सवेरे दरिया पर जाए तो तुम्हारे रास्ते में खड़ा हो जाना। उसे कहना कि रब फ़रमाता है, ‘मेरी कौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें। 21 वरना मैं तेरे और तेरे ओहदेदारों के पास, तेरी कौम के पास और तेरे घरों में काटनेवाली मक्खियाँ भेज दूँगा। मिसरियों के घर मक्खियों से भर जाएँगे बल्कि जिस ज़मीन पर वह खड़े हैं वह भी मक्खियों से ढाँकी जाएगी। 22 लेकिन उस वक्रत मैं अपनी कौम के साथ जो जुशन में रहती है फ़रक

सुलक करूँगा। वहाँ एक भी काटनेवाली मक्खी नहीं होगी। इस तरह तुझे पता लगेगा कि इस मुल्क में मैं ही रब हूँ। 23 मैं अपनी कौम और तेरी कौम में इम्तियाज करूँगा। कल ही मेरी कुदरत का इज़हार होगा।”

24 रब ने ऐसा ही किया। काटनेवाली मक्खियों के गोल फ़िरौन के महल, उसके ओहदेदारों के घरों और पूरे मिसर में फैल गए। मुल्क का सत्यानास हो गया।

25 फिर फ़िरौन ने मूसा और हासून को बुलाकर कहा, “चलो, इसी मुल्क में अपने खुदा को कुरबानियाँ पेश करो।”

26 लेकिन मूसा ने कहा, “यह मुनासिब नहीं है। जो कुरबानियाँ हम रब अपने खुदा को पेश करेंगे वह मिसरियों की नजर में धिनौनी हैं। अगर हम यहाँ ऐसा करें तो क्या वह हमें संगसार नहीं करेंगे? 27 इसलिए लाज़िम है कि हम तीन दिन का सफ़र करके रेगिस्तान में ही रब अपने खुदा को कुरबानियाँ पेश करें जिस तरह उसने हमें हुक्म भी दिया है।”

28 फ़िरौन ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं तुम्हें जाने दूँगा ताकि तुम रेगिस्तान में रब अपने खुदा को कुरबानियाँ पेश करो। लेकिन तुम्हें ज़्यादा दूर नहीं जाना है। और मेरे लिए भी दुआ करना।”

29 मूसा ने कहा, “ठीक, मैं जाते ही रब से दुआ करूँगा। कल ही मक्खियाँ फ़िरौन, उसके ओहदेदारों और उस की कौम से दूर हो जाएँगी। लेकिन हमें दुबारा फ़रेब न देना बल्कि हमें जाने देना ताकि हम रब को कुरबानियाँ पेश कर सकें।”

30 फिर मूसा फ़िरौन के पास से चला गया और रब से दुआ की। 31 रब ने मूसा की दुआ सुनी। काटनेवाली मक्खियाँ फ़िरौन, उसके ओहदेदारों और उस की कौम से दूर हो गईं। एक भी मक्खी न रही। 32 लेकिन फ़िरौन फिर अकड़ गया। उसने इसराइलियों को जाने न दिया।

## 9

### मवेशियों में वबा

1 फिर रब ने मूसा से कहा, “फ़िरौन के पास जाकर उसे बता कि रब इब्रानियों का खुदा फ़रमाता है, ‘मेरी कौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।’ 2 अगर आप इनकार करें और उन्हें रोकते रहें 3 तो रब अपनी कुदरत का इज़हार करके आपके मवेशियों में भयानक वबा फैला देगा जो आपके घोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों और मेंढों में फैल जाएगी। 4 लेकिन रब इसराइल और मिसर के मवेशियों में इम्तियाज करेगा। इसराइलियों का एक भी जानवर नहीं मरेगा। 5 रब ने फैसला कर लिया है कि वह कल ही ऐसा करेगा।”

6 अगले दिन रब ने ऐसा ही किया। मिसर के तमाम मवेशी मर गए, लेकिन इसराइलियों का एक भी जानवर न मरा। 7 फ़िरौन ने कुछ लोगों को उनके पास भेज दिया तो पता चला कि एक भी जानवर नहीं मरा। ताहम फ़िरौन अडा रहा। उसने इसराइलियों को जाने न दिया।

### फोडे-फुंसियाँ

8 फिर रब ने मूसा और हासून से कहा, “अपनी मुठियाँ किसी भट्टी की राख से भरकर फ़िरौन के पास जाओ। फिर मूसा फ़िरौन के सामने यह राख हवा में उड़ा दे। 9 यह राख बारीक धूल का बादल बन जाएगी जो पूरे मुल्क पर छा जाएगी। उसके असर से लोगों और जानवरों के जिस्मों पर फोडे-फुंसियाँ फूट निकलेंगी।”

10 मूसा और हासून ने ऐसा ही किया। वह किसी भट्टी से राख लेकर फ़िरौन के सामने खड़े हो गए। मूसा ने राख को हवा में उड़ा दिया तो इनसानों और जानवरों के जिस्मों पर फोडे-फुंसियाँ निकल आए। 11 इस मरतबा जादूगर मूसा के सामने खड़े भी न हो सके क्योंकि उनके जिस्मों पर भी फोडे निकल आए थे। तमाम मिसरियों का यही हाल था। 12 लेकिन रब ने फ़िरौन को जिद्दी बनाए रखा, इसलिए उसने मूसा और हासून की न सुनी। यों वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा को बताया था।

### ओले

13 इसके बाद रब ने मूसा से कहा, “सुबह-सवेरे उठ और फ़िरौन के सामने खड़े होकर उसे बता कि रब इब्रानियों का खुदा फ़रमाता है, ‘मेरी कौम को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत कर सकें।’ 14 वरना मैं अपनी तमाम आफतें तुझ पर, तेरे ओहदेदारों पर और तेरी कौम पर आने दूँगा। फिर तू जान लेगा कि तमाम दुनिया में मुझ जैसा कोई नहीं है। 15 अगर मैं चाहता तो अपनी कुदरत से ऐसी वबा फैला सकता कि तुझे और तेरी कौम को दुनिया से मिटा दिया जाता। 16 लेकिन मैंने तुझे इसलिए बरपा किया है कि तुझ पर अपनी कुदरत का इज़हार करूँ और यों तमाम दुनिया में मेरे नाम का प्रचार किया जाए। 17 तू अभी तक अपने आपको सरफ़राज़ करके मेरी कौम के खिलाफ़ है और उन्हें जाने नहीं देता। 18 इसलिए कल मैं इसी वक़्त भयानक किस्म के ओलों का तूफ़ान भेज दूँगा। मिसरी कौम की इब्तिदा से लेकर आज तक मिसर में ओलों का ऐसा तूफ़ान कभी नहीं

आया होगा। 19 अपने बंदों को अभी भेजना ताकि वह तेरे मवेशियों को और खेतों में पड़े तेरे माल को लाकर महफूज कर लें। क्योंकि जो भी खुले मैदान में रहेगा वह ओलों से मर जाएगा, खाह इनसान हो या हैवान।”

20 फिरौन के कुछ ओहदेदार रब का पैगाम सुनकर डर गए और भागकर अपने जानवरों और गुलामों को घरों में ले आए।

21 लेकिन दूसरों ने रब के पैगाम की परवा न की। उनके जानवर और गुलाम बाहर खुले मैदान में रहे।

22 रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आसमान की तरफ बढ़ा दे। फिर मिसर के तमाम इनसानों, जानवरों और खेतों के पौदों पर ओले पड़ेंगे।” 23 मूसा ने अपनी लाठी आसमान की तरफ उठाई तो रब ने एक ज़बरदस्त तूफ़ान भेज दिया। ओले पड़े, बिजली गिरी और बादल गरजते रहे। 24 ओले पड़ते रहे और बिजली चमकती रही। मिसरी कौम की इन्तिदा से लेकर अब तक ऐसे खतरनाक ओले कभी नहीं पड़े थे। 25 इनसानों से लेकर हैवानों तक खेतों में सब कुछ बरबाद हो गया। ओलों ने खेतों में तमाम पौदे और दरख्त भी तोड़ दिए। 26 वह सिर्फ़ जुशन के इलाके में न पड़े जहाँ इसराईली आबाद थे।

27 तब फिरौन ने मूसा और हासून को बुलाया। उसने कहा, “इस मरतबा मैंने गुनाह किया है। रब हक पर है। मुझसे और मेरी कौम से गलती हुई है। 28 ओले और अल्लाह की गरजती आवाज़ें हद से ज्यादा हैं। रब से दुआ करो ताकि ओले स्क जाएँ। अब मैं तुम्हें जाने दूँगा। अब से तुम्हें यहाँ रहना नहीं पड़ेगा।”

29 मूसा ने फिरौन से कहा, “मैं शहर से निकलकर दोनों हाथ रब की तरफ उठाकर दुआ करूँगा। फिर गरज और ओले स्क जाएँगे और आप जान लेंगे कि पूरी दुनिया रब की है। 30 लेकिन मैं जानता हूँ कि आप और आपके ओहदेदार अभी तक रब ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं मानते।”

31 उस वक़्त सन के फूल निकल चुके थे और जौ की बालें लग गई थीं। इसलिए यह फसलें तबाह हो गईं। 32 लेकिन गेहूँ और एक और क्रिस्म की गंदुम जो बाद में पकती है बरबाद न हुईं।

33 मूसा फिरौन को छोड़कर शहर से निकला। उसने रब की तरफ अपने हाथ उठाए तो गरज, ओले और बारिश का तूफ़ान स्क गया। 34 जब फिरौन ने देखा कि तूफ़ान खत्म हो गया है तो वह और उसके ओहदेदार दुबारा गुनाह करके अकड़ गए।

35 फिरौन अड्डा रहा और इसराईलियों को जाने न दिया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा से कहा था।

## 10

### टिड्डियाँ

1 फिर रब ने मूसा से कहा, “फिरौन के पास जा, क्योंकि मैंने उसका और उसके दरबारियों का दिल सख़्त कर दिया है ताकि उनके दरमियान अपने मोजिज़ों और अपनी कुदरत का इज़हार कर सकूँ 2 और तुम अपने बेटे-बेटियों और पोते-पोतियों को सुना सको कि मैंने मिसरियों के साथ क्या सुलूक किया है और उनके दरमियान किस तरह के मोजिजे करके अपनी कुदरत का इज़हार किया है। यों तुम जान लोगे कि मैं रब हूँ।”

3 मूसा और हासून फिरौन के पास गए। उन्होंने उससे कहा, “रब इब्रानियों के ख़ुदा का फरमान है, ‘तू कब तक मेरे सामने हथियार डालने से इनकार करेगा? मेरी कौम को मेरी इबादत करने के लिए जाने दे, 4 वरना मैं कल तेरे मुल्क में टिड्डियाँ लाऊँगा। 5 उनके गोल ज़मीन पर यों छा जाएँगे कि ज़मीन नज़र ही नहीं आएगी। जो कुछ ओलों ने तबाह नहीं किया उसे वह चट कर जाएँगी। बचे हुए दरख्तों के पत्ते भी ख़त्म हो जाएँगे। 6 तेरे महल, तेरे ओहदेदारों और बाक़ी लोगों के घर उनसे भर जाएँगे। जब से मिसरी इस मुल्क में आबाद हुए हैं तुमने कभी टिड्डियों का ऐसा सख़्त हमला नहीं देखा होगा।’” यह कहकर मूसा पलटकर वहाँ से चला गया।

7 इस पर दरबारियों ने फिरौन से बात की, “हम कब तक इस मर्द के जाल में फँसे रहें? इसराईलियों को रब अपने ख़ुदा की इबादत करने के लिए जाने दें। क्या आपको अभी तक मालूम नहीं कि मिसर बरबाद हो गया है?”

8 तब मूसा और हासून को फिरौन के पास बुलाया गया। उसने उनसे कहा, “जाओ, अपने ख़ुदा की इबादत करो। लेकिन यह बताओ कि कौन कौन साथ जाएगा?” 9 मूसा ने जवाब दिया, “हमारे जवान और बूढ़े साथ जाएँगे। हम अपने बेटे-बेटियों, भेड़-बकरियों और गाय-बैलों को भी साथ लेकर जाएँगे। हम सबके सब जाएँगे, क्योंकि हमें रब की ईद मनानी है।”

10 फिरौन ने तंज़न कहा, “ठीक है, जाओ और रब तुम्हारे साथ हो। नहीं, मैं किस तरह तुम सबको बाल-बच्चों समेत जाने दे सकता हूँ? तुमने कोई बुरा मनसूबा बनाया है। 11 नहीं, सिर्फ़ मर्द जाकर रब की इबादत कर सकते हैं। तुमने तो यही दरखास्त की थी।” तब मूसा और हासून को फिरौन के सामने से निकाल दिया गया।

12 फिर रब ने मूसा से कहा, “मिसर पर अपना हाथ उठा ताकि टिड्डियाँ आकर मिसर की सरज़मीन पर फैल जाएँ। जो कुछ भी खेतों में ओलों से बच गया है उसे वह खा जाएँगी।”

13 मूसा ने अपनी लाठी मिसर पर उठाई तो रब ने मशरिक से आँधी चलाई जो सारा दिन और सारी रात चलती रही और अगली सुबह तक मिसर में टिट्टियाँ पहुँचाई। 14 बेशुमार टिट्टियाँ पूरे मुल्क पर हमला करके हर जगह बैठ गई। इससे पहले या बाद में कभी भी टिट्टियों का इतना सख्त हमला न हुआ था। 15 उन्होंने ज़मीन को यों ढँक लिया कि वह काली नज़र आने लगी। जो कुछ भी ओलों से बच गया था चाहे खेतों के पौदे या दरख्तों के फल थे उन्होंने खा लिया। मिसर में एक भी दरख्त या पौदा न रहा जिसके पत्ते बच गए हों।

16 तब फ़िरौन ने मूसा और हास्न को जल्दी से बुलवाया। उसने कहा, “मैंने तुम्हारे ख़ुदा का और तुम्हारा गुनाह किया है। 17 अब एक और मरतबा मेरा गुनाह मुआफ़ करो और रब अपने ख़ुदा से दुआ करो ताकि मौत की यह हालत मुझसे दूर हो जाए।”

18 मूसा ने महल से निकलकर रब से दुआ की। 19 जवाब में रब ने हवा का स्रज बदल दिया। उसने मगारिब से तेज़ आँधी चलाई जिसने टिट्टियों को उड़ाकर बहरे-कुलजुम में डाल दिया। मिसर में एक भी टिट्टी न रही। 20 लेकिन रब ने होने दिया कि फ़िरौन फिर अड गया। उसने इसराईलियों को जाने न दिया।

### अंधेरा

21 इसके बाद रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठा तो मिसर पर अंधेरा छा जाएगा। इतना अंधेरा होगा कि बंदा उसे छू सकेगा।” 22 मूसा ने अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाया तो तीन दिन तक मिसर पर गहरा अंधेरा छाया रहा। 23 तीन दिन तक लोग न एक दूसरे को देख सके, न कहीं जा सके। लेकिन जहाँ इसराईली रहते थे वहाँ रौशनी थी।

24 तब फ़िरौन ने मूसा को फिर बुलवाया और कहा, “जाओ, रब की इबादत करो! तुम अपने साथ बाल-बच्चों को भी ले जा सकते हो। सिर्फ़ अपनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पीछे छोड़ देना।” 25 मूसा ने जवाब दिया, “क्या आप ही हमें कुरबानियों के लिए जानवर देंगे ताकि उन्हें रब अपने ख़ुदा को पेश करें? 26 यकीनन नहीं। इसलिए लाज़िम है कि हम अपने जानवरों को साथ लेकर जाएँ। एक खुर भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्योंकि अभी तक हमें मालूम नहीं कि रब की इबादत के लिए किन किन जानवरों की ज़रूरत होगी। यह उस वक़्त ही पता चलेगा जब हम मनज़िले-मकसूद पर पहुँचेंगे। इसलिए ज़रूरी है कि हम सबको अपने साथ लेकर जाएँ।”

27 लेकिन रब की मरज़ी के मुताबिक़ फ़िरौन अड गया। उसने उन्हें जाने न दिया। 28 उसने मूसा से कहा, “दफ़ा हो जा। ख़बरदार! फिर कभी अपनी शक़ल न दिखाना, वरना तुझे मौत के हवाले कर दिया जाएगा।” 29 मूसा ने कहा, “ठीक है, आपकी मरज़ी। मैं फिर कभी आपके सामने नहीं आऊँगा।”

## 11

### आखिरी सज़ा का एलान

1 तब रब ने मूसा से कहा, “अब मैं फ़िरौन और मिसर पर आखिरी आफ़त लाने को हूँ। इसके बाद वह तुम्हें जाने देगा बल्कि तुम्हें ज़बरदस्ती निकाल देगा। 2 इसराईलियों को बता देना कि हर मर्द अपने पड़ोसी और हर औरत अपनी पड़ोसन से सोने-चाँदी की चीज़ें माँग ले।” 3 (रब ने मिसरियों के दिल इसराईलियों की तरफ़ मायल कर दिए थे। वह फ़िरौन के ओहदेदारों समेत खासकर मूसा की बड़ी इज़्ज़त करते थे)।

4 मूसा ने कहा, “रब फरमाता है, ‘आज आधी रात के वक़्त मैं मिसर में से गुज़रूँगा। 5 तब बादशाह के पहलौटे से लेकर चक्की पीसनेवाली नौकरानी के पहलौटे तक मिसरियों का हर पहलौटा मर जाएगा। चौपाइयों के पहलौटे भी मर जाएंगे। 6 मिसर की सरज़मीन पर ऐसा रोना पीटना होगा कि न माज़ी में कभी हुआ, न मुस्तक़बिल में कभी होगा। 7 लेकिन इसराईली और उनके जानवर बचे रहेंगे। कुत्ता भी उन पर नहीं भौकेगा। इस तरह तुम जान लोगे कि रब इसराईलियों की निसबत मिसरियों से फ़रक़ सलूक करता है।’ 8 मूसा ने यह कुछ फ़िरौन को बताया फिर कहा, ‘उस वक़्त आपके तमाम ओहदेदार आकर मेरे सामने झुक जाएंगे और निम्नत करेंगे, ‘अपने पैरोकारों के साथ चले जाएँ।’ तब मैं चला ही जाऊँगा।” यह कहकर मूसा फ़िरौन के पास से चला गया। वह बड़े गुस्से में था।

9 रब ने मूसा से कहा था, “फ़िरौन तुम्हारी नहीं सुनेगा। क्योंकि लाज़िम है कि मैं मिसर में अपनी क़ुदरत का मज़ीद इज़हार करूँ।” 10 गो मूसा और हास्न ने फ़िरौन के सामने यह तमाम मोजिज़े दिखाए, लेकिन रब ने फ़िरौन को जिद्दी बनाए रखा, इसलिए उसने इसराईलियों को मुल्क छोड़ने न दिया।

## 12

### फसह की ईद

1 फिर रब ने मिसर में मूसा और हासून से कहा, 2 “अब से यह महीना तुम्हारे लिए साल का पहला महीना हो।” 3 इसराईल की पूरी जमात को बताना कि इस महीने के दसवें दिन हर खानदान का सरपरस्त अपने घराने के लिए लेला यानी भेड़ या बकरी का बच्चा हासिल करे। 4 अगर घराने के अफ़राद पूरा जानवर खाने के लिए कम हों तो वह अपने सबसे करीबी पड़ोसी के साथ मिलकर लेला हासिल करे। इतने लोग उसमें से खाएँ कि सबके लिए काफी हो और पूरा जानवर खाया जाए। 5 इसके लिए एक साल का नर बच्चा चुन लेना जिसमें नुक्सन न हो। वह भेड़ या बकरी का बच्चा हो सकता है।

6 महीने के 14वें दिन तक उस की देख-भाल करो। उस दिन तमाम इसराईली सूरज के गुरूब होते वक़्त अपने लेले जबह करें। 7 हर खानदान अपने जानवर का कुछ खून जमा करके उसे उस घर के दरवाज़े की चौखट पर लगाए जहाँ लेला खाया जाएगा। यह खून चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाजूओं पर लगाया जाए। 8 लाज़िम है कि लोग जानवर को भुनकर उसी रात खाएँ। साथ ही वह कड़वा साग-पात और बेखमीरी रोटियाँ भी खाएँ। 9 लेले का गोशत कच्चा न खाना, न उसे पानी में उबालना बल्कि पूरे जानवर को सर, पैरों और अंदरूनी हिस्सों समेत आग पर भूना। 10 लाज़िम है कि पूरा गोशत उसी रात खाया जाए। अगर कुछ सुबह तक बच जाए तो उसे जलाना है। 11 खाना खाते वक़्त ऐसा लिबास पहनना जैसे तुम सफ़र पर जा रहे हो। अपने जूते पहने रखना और हाथ में सफ़र के लिए लाठी लिए हुए तुम उसे जल्दी जल्दी खाना। रब के फ़सह की ईद यों मनाना।

12 मैं आज रात मिसर में से गुज़रूँगा और हर पहलौठे को जान से मार दूँगा, खाह इनसान का हो या हैवान का। यों मैं जो रब हूँ मिसर के तमाम देवताओं की अदालत करूँगा। 13 लेकिन तुम्हारे घरों पर लगा हुआ खून तुम्हारा खास निशान होगा। जिस जिस घर के दरवाज़े पर मैं वह खून देखूँगा उसे छोड़ता जाऊँगा। जब मैं मिसर पर हमला करूँगा तो मोहलक वबा तुम तक नहीं पहुँचेगी। 14 आज की रात को हमेशा याद रखना। इसे नसल-दर-नसल और हर साल रब की खास ईद के तौर पर मनाना।

### बेखमीरी रोटी की ईद

15 सात दिन तक बेखमीरी रोटी खाना है। पहले दिन अपने घरों से तमाम खमीर निकाल देना। अगर कोई इन सात दिनों के दौरान खमीर खाए तो उसे क्रौम में से मिटाया जाए। 16 इस ईद के पहले और आखिरी दिन मुक़द्दस इजतिमा मुनअक़िद करना। इन तमाम दिनों के दौरान काम न करना। सिर्फ़ एक काम की इजाज़त है और वह है अपना खाना तैयार करना। 17 बेखमीरी रोटी की ईद मनाना लाज़िम है, क्योंकि उन दिन मैं तुम्हारे मुतअद्दिद खानदानों को मिसर से निकाल लाया। इसलिए यह दिन नसल-दर-नसल हर साल याद रखना। 18 पहले महीने के 14वें दिन की शाम से लेकर 21वें दिन की शाम तक सिर्फ़ बेखमीरी रोटी खाना। 19 सात दिन तक तुम्हारे घरों में खमीर न पाया जाए। जो भी इस दौरान खमीर खाए उसे इसराईल की जमात में से मिटाया जाए, खाह वह इसराईली शहरी हो या अजनबी। 20 गरज़, इस ईद के दौरान खमीर न खाना। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ बेखमीरी रोटी ही खाना है।

### पहलौठों की हलाकत

21 फिर मूसा ने तमाम इसराईली बूजुर्गों को बुलाकर उनसे कहा, “जाओ, अपने खानदानों के लिए भेड़ या बकरी के बच्चे चुनकर उन्हें फ़सह की ईद के लिए जबह करो। 22 जूफ़े का गुच्छा लेकर उसे खून से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे लेकर खून को चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाजूओं पर लगा देना। सुबह तक कोई अपने घर से न निकले। 23 जब रब मिसरियों को मार डालने के लिए मुल्क में से गुज़रेगा तो वह चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ बाएँ के बाजूओं पर लगा हुआ खून देखकर उन घरों को छोड़ देगा। वह हलाक करनेवाले फ़रिश्ते को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में जाकर तुम्हें हलाक करे।

24 तुम अपनी औलाद समेत हमेशा इन हिदायत पर अमल करना। 25 यह रस्म उस वक़्त भी अदा करना जब तुम उस मुल्क में पहुँचोगे जो रब तुम्हें देगा। 26 और जब तुम्हारे बच्चे तुमसे पूछें कि हम यह ईद क्यों मनाते हैं 27 तो उनसे कहो, ‘यह फ़सह की कुरबानी है जो हम रब को पेश करते हैं। क्योंकि जब रब मिसरियों को हलाक कर रहा था तो उसने हमारे घरों को छोड़ दिया था।’

यह सुनकर इसराईलियों ने अल्लाह को सिजदा किया। 28 फिर उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा और हासून को बताया था।

29 आधी रात को रब ने बादशाह के पहलौठे से लेकर जेल के कैदी के पहलौठे तक मिसरियों के तमाम पहलौठों को जान से मार दिया। चौपाइयों के पहलौठे भी मर गए। 30 उस रात मिसर के हर घर में कोई न कोई मर गया। फिरौन, उसके ओहेदेदार और मिसर के तमाम लोग जाग उठे और जोर जोर से रोने और चीखने लगे।

### इसराईलियों की हिज्रत

31 अभी रात थी कि फिरौन ने मूसा और हासून को बुलाकर कहा, “अब तुम और बाकी इसराइली मेरी कौम में से निकल जाओ। अपनी दरखास्त के मुताबिक रब की इबादत करो। 32 जिस तरह तुम चाहते हो अपनी भेड़-बकरियों को भी अपने साथ ले जाओ। और मुझे भी बरकत देना।” 33 बाकी मिसरियों ने भी इसराइलियों पर ज़ोर देकर कहा, “जल्दी जल्दी मुल्क से निकल जाओ, वरना हम सब मर जाएंगे।”

34 इसराइलियों के गँधे हुए आटे में खमीर नहीं था। उन्होंने उसे गँधने के बरतनों में रखकर अपने कपड़ों में लपेट लिया और सफ़र करते वक़्त अपने कंधों पर रख लिया। 35 इसराइली मूसा की हिदायत पर अमल करके अपने मिसरी पड़ोसियों के पास गए और उनसे कपड़े और सोने-चाँदी की चीज़ें माँगीं। 36 रब ने मिसरियों के दिलों को इसराइलियों की तरफ़ मायल कर दिया था, इसलिए उन्होंने उनकी हर दरखास्त पूरी की। यों इसराइलियों ने मिसरियों को लूट लिया।

37 इसराइली रामसीस से खाना होकर सुक्कत पहुँच गए। औरतों और बच्चों को छोड़कर उनके 6 लाख मर्द थे। 38 वह अपने भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के बड़े बड़े रेवड़ भी साथ ले गए। बहुत-से ऐसे लोग भी उनके साथ निकले जो इसराइली नहीं थे। 39 रास्ते में उन्होंने उस बेखमीरी आटे से रोटियाँ बनाई जो वह साथ लेकर निकले थे। आटे में इसलिए खमीर नहीं था कि उन्हें इतनी जल्दी से मिसर से निकाल दिया गया था कि खाना तैयार करने का वक़्त ही न मिला था।

40 इसराइली 430 साल तक मिसर में रहे थे। 41 430 साल के ऐन बाद, उसी दिन रब के यह तमाम खानदान मिसर से निकले। 42 उस खास रात रब ने खुद पहरा दिया ताकि इसराइली मिसर से निकल सकें। इसलिए तमाम इसराइलियों के लिए लाज़िम है कि वह नसल-दर-नसल इस रात रब की ताज़ीम में जागते रहें, वह भी और उनके बाद की औलाद भी।

### फ़सह की ईद की हिदायत

43 रब ने मूसा और हासून से कहा, “फ़सह की ईद के यह उस्ूल हैं :

किसी भी परदेसी को फ़सह की ईद का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। 44 अगर तुमने किसी गुलाम को खरीदकर उसका खतना किया है तो वह फ़सह का खाना खा सकता है। 45 लेकिन ग़ैरशहरी या मज़दूर को फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। 46 यह खाना एक ही घर के अंदर खाना है। न गोशत घर से बाहर ले जाना, न लेले की किसी हड्डी को तोड़ना। 47 लाज़िम है कि इसराइल की पूरी जमात यह ईद मनाए। 48 अगर कोई परदेसी तुम्हारे साथ रहता है जो फ़सह की ईद में शिरकत करना चाहे तो लाज़िम है कि पहले उसके घराने के हर मर्द का खतना किया जाए। तब वह इसराइली की तरह खाने में शरीक हो सकता है। लेकिन जिसका खतना न हुआ उसे फ़सह का खाना खाने की इजाज़त नहीं है। 49 यही उस्ूल हर एक पर लागू होगा, खाह वह इसराइली हो या परदेसी।”

50 तमाम इसराइलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा और हासून से कहा था। 51 उसी दिन रब तमाम इसराइलियों को खानदानों की तरतीब के मुताबिक मिसर से निकाल लाया।

## 13

### यह ईद नजात की याद दिलाती है

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराइलियों के हर पहलौटे को मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस करना है। हर पहला नर बच्चा मेरा ही है, खाह इनसान का हो या हैवान का।” 3 फिर मूसा ने लोगों से कहा, “इस दिन को याद रखो जब तुम रब की अज़ीम कुदरत के बाइस मिसर की गुलामी से निकले। इस दिन कोई चीज़ न खाना जिसमें खमीर हो। 4 आज ही अबीब के महीने \* में तुम मिसर से खाना हो रहे हो। 5 रब ने तुम्हारे बापदादा से कसम खाकर वादा किया है कि वह तुमको कनानी, हिती, अमोरी, हिब्वी और यबूसी कौमों का मुल्क देगा, एक ऐसा मुल्क जिसमें दूध और शहद की कसरत है। जब रब तुम्हें उस मुल्क में पहुँचा देगा तो लाज़िम है कि तुम इसी महीने में यह रस्म मनाओ। 6 सात दिन बेखमीरी रोटी खाओ। सातवें दिन रब की ताज़ीम में ईद मनाओ। 7 सात दिन खमीरी रोटी न खाना। कहीं भी खमीर न पाया जाए। पूरे मुल्क में खमीर का नामो-निशान तक न हो।

8 उस दिन अपने बेटे से यह कहो, “मैं यह ईद उस काम की खुशी में मनाता हूँ जो रब ने मेरे लिए किया जब मैं मिसर से निकला।” 9 यह ईद तुम्हारे हाथ या पेशानी पर निशान की मानिद हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब की शरीअत को तुम्हारे होंटों पर रहना है। क्योंकि रब तुम्हें अपनी अज़ीम कुदरत से मिसर से निकाल लाया। 10 इस दिन की याद हर साल ठीक वक़्त पर मनाना।

### पहलौठों की मखसूसियत

11 रब तुम्हें कनानियों के उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा उसने कसम खाकर तुम और तुम्हारे बापदादा से किया है। 12 लाज़िम है कि वहाँ पहुँचकर तुम अपने तमाम पहलौठों को रब के लिए मखसूस करो। तुम्हारे मवेशियों के तमाम पहलौटे

\* 13:4 मार्च ता अज़ैल।



भी रब की मिलकियत है। 13 अगर तुम अपना पहलौठा गधा खुद रखना चाहो तो रब को उसके बदले भेड़ या बकरी का बच्चा पेश करो। लेकिन अगर तुम उसे रखना नहीं चाहते तो उस की गरदन तोड़ डालो। लेकिन इनसान के पहलौठों के लिए हर सूरत में एवज़ी देना है।

14 आनेवाले दिनों में जब तुम्हारा बेटा पूछे कि इसका क्या मतलब है तो उसे जवाब देना, 'रब अपनी अज़ीम कुदरत से हमें मिसर की गुलामी से निकाल लाया। 15 जब फ़िरौन ने अकड़कर हमें जाने न दिया तो रब ने मिसर के तमाम इन्सानों और हैवानों के पहलौठों को मार डाला। इस वजह से मैं अपने जानवरों का हर पहला बच्चा रब को कुरबान करता और अपने हर पहलौठे के लिए एवज़ी देता हूँ। 16 यह दस्तूर तुम्हारे हाथ और पेशानी पर निशान की मानिंद हो जो तुम्हें याद दिलाए कि रब हमें अपनी कुदरत से मिसर से निकाल लाया।'

### मिसर से निकलने का रास्ता

17 जब फ़िरौन ने इसराइली कौम को जाने दिया तो अल्लाह उन्हें फ़िलिस्तिनों के इलाके में से गुज़रनेवाले रास्ते से लेकर न गया, अगरचे उस पर चलते हुए वह जदद ही मुल्के-कनान पहुँच जाते। बल्कि रब ने कहा, "अगर उस रास्ते पर चलेंगे तो उन्हें दूसरों से लड़ना पड़ेगा। ऐसा न हो कि वह इस वजह से अपना इरादा बदलकर मिसर लौट जाएँ।" 18 इसलिये अल्लाह उन्हें दूसरे रास्ते से लेकर गया, और वह रेगिस्तान के रास्ते से बहरे-कुलजुम की तरफ बढ़े। मिसर से निकलते वक़्त मर्द मुसल्लह थे। 19 मूसा यूसुफ का ताबूत भी अपने साथ ले गया, क्योंकि यूसुफ ने इसराइलियों को कसम दिलाकर कहा था, "अल्लाह यक़ीनन तुम्हारी देख-भाल करके वहाँ ले जाएगा। उस वक़्त मेरी हड्डियों को भी उठाकर साथ ले जाना।"

20 इसराइलियों ने सूककात को छोड़कर एताम में अपने ख़ैमे लगाए। एताम रेगिस्तान के किनारे पर था। 21 रब उनके आगे आगे चलता गया, दिन के वक़्त बादल के सतून में ताकि उन्हें रास्ते का पता लगे और रात के वक़्त आग के सतून में ताकि उन्हें रौशनी मिले। यों वह दिन और रात सफ़र कर सकते थे। 22 दिन के वक़्त बादल का सतून और रात के वक़्त आग का सतून उनके सामने रहा। वह कभी भी अपनी जगह से न हटा।

## 14

### इसराइल समुंदर में से गुज़रता है

1 तब रब ने मूसा से कहा, 2 "इसराइलियों को कह देना कि वह पीछे मुड़कर मिजदाल और समुंदर के बीच यानी फ़ी-हख़ीरोत के नजदीक रुक जाएँ। वह बाल-सफ़ोन के मुकाबिल साहिल पर अपने ख़ैमे लगाएँ। 3 यह देखकर फ़िरौन समझेगा कि इसराइली रास्ता भूलकर आवारा फिर रहे हैं और कि रेगिस्तान ने चारों तरफ उन्हें घेर रखा है। 4 फिर मैं फ़िरौन को दुबारा अड जाने दूँगा, और वह इसराइलियों का पीछा करेगा। लेकिन मैं फ़िरौन और उस की पूरी फ़ौज पर अपना जलाल जाहिर करूँगा। मिसरी जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।" इसराइलियों ने ऐसा ही किया।

5 जब मिसर के बादशाह को इतला दी गई कि इसराइली हिज़रत कर गए हैं तो उसने और उसके दरबारियों ने अपना खयाल बदलकर कहा, "हमने क्या किया है? हमने उन्हें जाने दिया है, और अब हम उनकी ख़िदमत से महरूम हो गए हैं।" 6 चुनौचे बादशाह ने अपना जंगी रथ तैयार करवाया और अपनी फ़ौज को लेकर निकला। 7 वह 600 बेहतरीन क्रिस्म के रथ और मिसर के बाकी तमाम रथों को साथ ले गया। तमाम रथों पर अफ़सरान मुकर्रर थे। 8 रब ने मिसर के बादशाह फ़िरौन को दुबारा अड जाने दिया था, इसलिए जब इसराइली बड़े इख़्तियार के साथ निकल रहे थे तो वह उनका ताक़तुब करने लगा। 9 इसराइलियों का पीछा करते करते फ़िरौन के तमाम घोड़े, रथ, सवार और फ़ौजी उनके करीब पहुँचे। इसराइली बहरे-कुलजुम के साहिल पर बाल-सफ़ोन के मुकाबिल फ़ी-हख़ीरोत के नजदीक ख़ैमे लगा चुके थे।

10 जब इसराइलियों ने फ़िरौन और उस की फ़ौज को अपनी तरफ बढ़ते देखा तो वह सख़्त घबरा गए और मदद के लिए रब के सामने चीखने-चिल्लाने लगे। 11 उन्होंने मूसा से कहा, "क्या मिसर में क़ब्रों की कमी थी कि आप हमें रेगिस्तान में ले आए हैं? हमें मिसर से निकालकर आपने हमारे साथ क्या किया है? 12 क्या हमने मिसर में आपसे दरखास्त नहीं की थी कि मेहनतानी करके हमें छोड़ दें, हमें मिसरियों की ख़िदमत करने दें? यहाँ आकर रेगिस्तान में मर जाने की निसबत बेहतर होता कि हम मिसरियों के गुलाम रहते।"

13 लेकिन मूसा ने जवाब दिया, "मत घबराओ। आराम से खड़े रहो और देखो कि रब तुम्हें आज किस तरह बचाएगा। आज के बाद तुम इन मिसरियों को फिर कभी नहीं देखोगे। 14 रब तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम्हें बस, चूप रहना है।"

15 फिर रब ने मूसा से कहा, "तुम्हारे सामने क्यों चीख रहा है? इसराइलियों को आगे बढ़ने का हुक़म दे। 16 अपनी लाठी को पकड़कर उसे समुंदर के ऊपर उठा तो वह दो हिस्सों में बट जाएगा। इसराइली ख़ुशक ज़मीन पर समुंदर में से गुज़रेगे। 17 मैं मिसरियों को अड़े रहने दूँगा ताकि वह इसराइलियों का पीछा करे। फिर मैं फ़िरौन, उस की सारी फ़ौज, उसके रथों

और उसके सवारों पर अपना जलाल जाहिर करूँगा। 18 जब मैं फिरौन, उसके रथों और उसके सवारों पर अपना जलाल जाहिर करूँगा तो मिसरी जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

19 अल्लाह का फरिश्ता इसराईली लश्कर के आगे चला रहा था। अब वह वहाँ से हटकर उनके पीछे खड़ा हो गया। बादल का सतून भी लोगों के आगे से हटकर उनके पीछे जा खड़ा हुआ। 20 इस तरह बादल मिसरियों और इसराईलियों के लश्करों के दरमियान आ गया। पूरी रात मिसरियों की तरफ अंधेरा ही अंधेरा था जबकि इसराईलियों की तरफ रौशनी थी। इसलिए मिसरी पूरी रात के दौरान इसराईलियों के करीब न आ सके।

21 मूसा ने अपना हाथ समुंद्र के ऊपर उठाया तो रब ने मशरिक से तेज़ आँधी चलाई। आँधी तमाम रात चलती रही। उसने समुंद्र को पीछे हटाकर उस की तह खूशक कर दी। समुंद्र दो हिस्सों में बट गया 22 तो इसराईली समुंद्र में से खूशक ज़मीन पर चलते हुए गुज़र गए। उनके दाईं और बाईं तरफ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

23 जब मिसरियों को पता चला तो फिरौन के तमाम घोड़े, रथ और घुड़सवार भी उनके पीछे पीछे समुंद्र में चले गए। 24 सुबह-सवेरे ही रब ने बादल और आग के सतून से मिसर की फौज पर निगाह की और उसमें अबतरी पैदा कर दी। 25 उनके रथों के पहिये निकल गए तो उन पर काबू पाना मुश्किल हो गया। मिसरियों ने कहा, “आओ, हम इसराईलियों से भाग जाएँ, क्योंकि रब उनके साथ है। वही मिसर का मुकाबला कर रहा है।”

26 तब रब ने मूसा से कहा, “अपना हाथ समुंद्र के ऊपर उठा। फिर पानी वापस आकर मिसरियों, उनके रथों और घुड़सवारों को डुबो देगा।” 27 मूसा ने अपना हाथ समुंद्र के ऊपर उठाया तो दिन निकलते वक़्त पानी मामूल के मुताबिक़ बहने लगा, और जिस तरफ़ मिसरी भाग रहे थे वहाँ पानी ही पानी था। यों रब ने उन्हें समुंद्र में बहाकर गरक़ कर दिया। 28 पानी वापस आ गया। उसने रथों और घुड़सवारों को ढौंक लिया। फिरौन की पूरी फौज जो इसराईलियों का ताक़ुक़ब कर रही थी डूबकर तबाह हो गई। उनमें से एक भी न बचा। 29 लेकिन इसराईली खूशक ज़मीन पर समुंद्र में से गुज़रे। उनके दाईं और बाईं तरफ़ पानी दीवार की तरह खड़ा रहा।

30 उस दिन रब ने इसराईलियों को मिसरियों से बचाया। मिसरियों की लाशें उन्हें साहिल पर नज़र आईं। 31 जब इसराईलियों ने रब की यह अज़ीम कुदरत देखी जो उसने मिसरियों पर जाहिर की थी तो रब का ख़ौफ़ उन पर छा गया। वह उस पर और उसके ख़ादिम मूसा पर एतमाद करने लगे।

## 15

### मूसा का गीत

1 तब मूसा और इसराईलियों ने रब के लिए यह गीत गाया,

“मैं रब की तमज़ीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि वह निहायत अज़ीम है। घोड़े और उसके सवार को उसने समुंद्र में पटरख़ दिया है।

2 रब मेरी कुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नज़ात बन गया है। वही मेरा ख़ुदा है, और मैं उस की तारीफ़ करूँगा। वही मेरे बाप का ख़ुदा है, और मैं उस की ताज़ीम करूँगा।

3 रब सरमा है, रब उसका नाम है।

4 फिरौन के रथों और फौज को उसने समुंद्र में पटरख़ दिया तो बादशाह के बेहतरीन अफ़सरान बहरे-कुलज़ुम में डूब गए।

5 गहरे पानी ने उन्हें ढौंक लिया, और वह पत्थर की तरह समुंद्र की तह तक उतर गए।

6 ऐ रब, तेरे दहने हाथ का जलाल बड़ी कुदरत से जाहिर होता है। ऐ रब, तेरा दहना हाथ दुश्मन को चकनाचूर कर देता है।

7 जो तेरे ख़िलाफ़ उठ खड़े होते हैं उन्हें तू अपनी अज़मत का इज़हार करके ज़मीन पर पटरख़ देता है। तेरा ग़ज़ब उन पर आन पड़ता है तो वह आग में भूसे की तरह जल जाते हैं।

8 तूने गुस्से में आकर फूँक मारी तो पानी ढेर की सूत में जमा हो गया। बहता पानी ठोस दीवार बन गया, समुंद्र गहराई तक जम गया।

9 दुश्मन ने डींग मारकर कहा, ‘मैं उनका पीछा करके उन्हें पकड़ लूँगा, मैं उनका लूटा हुआ माल तकसीम करूँगा। मेरी लालची जान उनसे सेर हो जाएगी, मैं अपनी तलवार खींचकर उन्हें हलाक करूँगा।’

10 लेकिन तूने उन पर फूँक मारी तो समुंद्र ने उन्हें ढौंक लिया, और वह सीसे की तरह जोरदार मौजों में डूब गए।

11 ऐ रब, कौन-सा माबूद तेरी मानिंद है? कौन तेरी तरह जलाली और कुदूस है? कौन तेरी तरह हैरतअगेज़ काम करता और अज़ीम मोजिज़े दिखाता है? कोई भी नहीं।

- 12 तुने अपना दहना हाथ उठाया तो जमीन हमारे दुश्मनों को निगल गई।  
 13 अपनी शफकत से तुने एवजाना देकर अपनी कौम को छुटकारा दिया और उस की राहनुमाई की है, अपनी कुदरत से तुने उसे अपनी मुकद्दस सुकूनतगाह तक पहुँचाया है।  
 14 यह सुनकर दीगर कौमों काँप उठी, फिलिस्ती डर के मारे पेचो-ताब खाने लगे।  
 15 अदोम के रईस सहम गए, मोआब के राहनुमाओं पर कपकपी तारी हो गई, और कनान के तमाम बाशिदे हिम्मत हार गए।  
 16 दहशत और खौफ उन पर छा गया। तेरी अज्जीम कुदरत के बाइस वह पत्थर की तरह जम गए। ऐ रब, वह न हिले जब तक तेरी कौम गुजर न गई। वह बेहिसो-हरकत रहे जब तक तेरी खरीदी हुई कौम गुजर न गई।  
 17 ऐ रब, तू अपने लोगों को लेकर पौदों की तरह अपने मौरूसी पहाड़ पर लगाएगा, उस जगह पर जो तुने अपनी सुकूनत के लिए चुन ली है, जहाँ तुने अपने हाथों से अपना मकदिस तैयार किया है।  
 18 रब अबद तक बादशाह है!”

19 जब फिरौन के घोड़े, रथ और घुड़सवार समुंदर में चले गए तो रब ने उन्हें समुंदर के पानी से ढाँक लिया। लेकिन इसराईली खुश्क जमीन पर समुंदर में से गुजर गए। 20 तब हासून की बहन मरियम जो नबिया थी ने दफ़ लिया, और बाक़ी तमाम औरतें भी दफ़ लेकर उसके पीछे हो लीं। सब गाने और नाचने लगीं। मरियम ने यह गाकर उनकी राहनुमाई की,  
 21 “रब की तमजीद में गीत गाओ, क्योंकि वह निहायत अज्जीम है। घोड़े और उसके सवार को उसने समुंदर में पटख दिया है।”

### मारा और एलीम के चरमे

22 मूसा के कहने पर इसराईली बहरे-कुलजूम से रवाना होकर दशते-शूर में चले गए। वहाँ वह तीन दिन तक सफ़र करते रहे। इस दौरान उन्हें पानी न मिला। 23 आखिरकार वह मारा पहुँचे जहाँ पानी दस्तयाब था। लेकिन वह कड़वा था, इसलिए मक़ाम का नाम मारा यानी कड़वाहट पड़ गया। 24 यह देखकर लोग मूसा के खिलाफ़ बुडबुडाकर कहने लगे, “हम क्या पिँए?” 25 मूसा ने मदद के लिए रब से इल्लिजा की तो उसने उसे लकड़ी का एक टुकड़ा दिखाया। जब मूसा ने यह लकड़ी पानी में डाली तो पानी की कड़वाहट ख़तम हो गई।  
 मारा में रब ने अपनी कौम को कवानीन दिए। वहाँ उसने उन्हें आजमाया भी। 26 उसने कहा, “गौर से रब अपने ख़ुदा की आवाज़ सुनो! जो कुछ उस की नज़र में दुस्त है वही करो। उसके अहक़ाम पर ध्यान दो और उस की तमाम हिदायात पर अमल करो। फिर मैं तुम पर वह बीमारियाँ नहीं लाऊँगा जो मिसरियों पर लाया था, क्योंकि मैं रब हूँ जो तुझे शफ़ा देता हूँ।”  
 27 फिर इसराईली रवाना होकर एलीम पहुँचे जहाँ 12 चरमे और खज़ूर के 70 दरख़ थे। वहाँ उन्होंने पानी की क़रीब अपने ख़ैमे लगाए।

## 16

### मन और बेटें

1 इसके बाद इसराईल की पूरी जमात एलीम से सफ़र करके सीन के रेगिस्तान में पहुँची जो एलीम और सीना के दरमियान है। वह मिसर से निकलने के बाद दूसरे महीने के 15वें दिन पहुँचे। 2 रेगिस्तान में तमाम लोग फिर मूसा और हासून के खिलाफ़ बुडबुडाने लगे। 3 उन्होंने कहा, “काश रब हमें मिसर में ही मार डालता! वहाँ हम कम अज़ कम जी भरकर गोशत और रोटी तो खा सकते थे। आप हमें सिर्फ़ इसलिए रेगिस्तान में ले आए हैं कि हम सब भूके मर जाएँ।”  
 4 तब रब ने मूसा से कहा, “मैं आसमान से तुम्हारे लिए रोटी बरसाऊँगा। हर रोज़ लोग बाहर जाकर उसी दिन की ज़रूरत के मुताबिक़ खाना जमा करें। इससे मैं उन्हें आजमाकर देखूँगा कि आया वह मेरी सुनते हैं कि नहीं। 5 हर रोज़ वह सिर्फ़ उतना खाना जमा करें जितना कि एक दिन के लिए काफ़ी हो। लेकिन छठे दिन जब वह खाना तैयार करेंगे तो वह अगले दिन के लिए भी काफ़ी होगा।”  
 6 मूसा और हासून ने इसराईलियों से कहा, “आज शाम को तुम जान लगे कि रब ही तुम्हें मिसर से निकाल लाया है। 7 और कल सुबह तुम रब का जलाल देखोगे। उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं, क्योंकि असल में तुम हमारे खिलाफ़ नहीं बल्कि रब के खिलाफ़ बुडबुडा रहे हो। 8 फिर भी रब तुमको शाम के वक़्त गोशत और सुबह के वक़्त वाफ़िर रोटी देगा, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं। तुम्हारी शिकायतें हमारे खिलाफ़ नहीं बल्कि रब के खिलाफ़ हैं।”  
 9 मूसा ने हासून से कहा, “इसराईलियों को बताना, ‘रब के सामने हाज़िर हो जाओ, क्योंकि उसने तुम्हारी शिकायतें सुन ली हैं।’” 10 जब हासून पूरी जमात के सामने बात करने लगा तो लोगों ने पलटकर रेगिस्तान की तरफ़ देखा। वहाँ रब का

जलाल बादल में जाहिर हुआ। 11 रब ने मूसा से कहा, 12 “मैंने इसराईलियों की शिकायत सुन ली है। उन्हें बता, ‘आज जब सूरज गुरूब होने लगेगा तो तुम गोशत खाओगे और कल सुबह पेट भरकर रोटी। फिर तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।’”

13 उसी शाम बटेरों के गोल आए जो पूरी खैमागाह पर छा गए। और अगली सुबह खैमे के चारों तरफ ओस पड़ी थी। 14 जब ओस सूख गई तो बर्फ के गालों जैसे पतले दाने पाले की तरह ज़मीन पर पड़े थे। 15 जब इसराईलियों ने उसे देखा तो एक दूसरे से पूछने लगे, “मन हूँ?” यानी “यह क्या है?” क्योंकि वह नहीं जानते थे कि यह क्या चीज़ है। मूसा ने उनको समझाया, “यह वह रोटी है जो रब ने तुम्हें खाने के लिए दी है। 16 रब का हुक्म है कि हर एक उतना जमा करे जितना उसके खानदान को जरूरत हो। अपने खानदान के हर फ़रद के लिए दो लिटर जमा करो।”

17 इसराईलियों ने ऐसा ही किया। बाज़ ने ज्यादा और बाज़ ने कम जमा किया। 18 लेकिन जब उसे नापा गया तो हर एक आदमी के लिए काफ़ी था। जिसने ज्यादा जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफ़ी था। 19 मूसा ने हुक्म दिया, “अगले दिन के लिए खाना न बचाना।”

20 लेकिन लोगों ने मूसा की बात न मानी बल्कि बाज़ ने खाना बचा लिया। लेकिन अगली सुबह मालूम हुआ कि बचे हुए खाने में कीड़े पड़ गए हैं और उससे बहुत बदबू आ रही है। यह सुनकर मूसा उनसे नाराज़ हुआ।

21 हर सुबह हर कोई उतना जमा कर लेता जितनी उसे जरूरत होती थी। जब धूप तेज़ होती तो जो कुछ ज़मीन पर रह जाता वह पिघलकर खत्म हो जाता था।

22 छठे दिन जब लोग यह खुराक जमा करते तो वह मिक्कदार में दुगनी होती थी यानी हर फ़रद के लिए चार लिटर। जब जमात के बुज़ुर्गों ने मूसा के पास आकर उसे इतला दी 23 तो उसने उनसे कहा, “रब का फ़रमान है कि कल आराम का दिन है, मुकद्दस सबत का दिन जो अल्लाह की ताज़ीम में मनाया है। आज तुम जो तनूर में पकाना चाहते हो पका लो और जो उबालना चाहते हो उबाल लो। जो बच जाए उसे कल के लिए महफूज़ रखो।”

24 लोगों ने मूसा के हुक्म के मुताबिक अगले दिन के लिए खाना महफूज़ कर लिया तो न खाने से बदबू आई, न उसमें कीड़े पड़े। 25 मूसा ने कहा, “आज यही बचा हुआ खाना खाओ, क्योंकि आज सबत का दिन है, रब की ताज़ीम में आराम का दिन। आज तुम्हें रेगिस्तान में कुछ नहीं मिलेगा। 26 छः दिन के दौरान यह खुराक जमा करना है, लेकिन सातवाँ दिन आराम का दिन है। उस दिन ज़मीन पर खाने के लिए कुछ नहीं होगा।”

27 तो भी कुछ लोग हफ़्ते को खाना जमा करने के लिए निकले, लेकिन उन्हें कुछ न मिला। 28 तब रब ने मूसा से कहा, “तुम लोग कब तक मेरे अहकाम और हिदायात पर अमल करने से इनकार करोगे? 29 देखो, रब ने तुम्हारे लिए मुकर्रर किया है कि सबत का दिन आराम का दिन है। इसलिए वह तुम्हें ज़ुमे को दो दिन के लिए खुराक देता है। हफ़्ते को सबको अपने खैमों में रहना है। कोई भी अपने घर से बाहर न निकले।”

30 चुनौचे लोग सबत के दिन आराम करते थे।

31 इसराईलियों ने इस खुराक का नाम ‘मन’ रखा। उसके दाने धनिये की मानिंद सफेद थे, और उसका जायका शहद से बने केक की मानिंद था।

32 मूसा ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘दो लिटर मन एक मरतबान में रखकर उसे आनेवाली नसलों के लिए महफूज़ रखना। फिर वह देख सकेगा कि मैं तुम्हें क्या खाना खिलाता रहा जब तुम्हें मिसर से निकाल लाया।’” 33 मूसा ने हास्न से कहा, “एक मरतबान लो और उसे दो लिटर मन से भरकर रब के सामने रखो ताकि वह आनेवाली नसलों के लिए महफूज़ रहे।”

34 हास्न ने ऐसा ही किया। उसने मन के इस मरतबान को अहद के संदूक के सामने रखा ताकि वह महफूज़ रहे।

35 इसराईलियों को 40 साल तक मन मिलता रहा। वह उस वक़्त तक मन खाते रहे जब तक रेगिस्तान से निकलकर कनान की सरहद पर न पहुँचे। 36 (जो पैमाना इसराईली मन के लिए इस्तेमाल करते थे वह दो लिटर का एक बरतन था जिसका नाम ओमर था।)

## 17

### चटान से पानी

1 फिर इसराईल की पूरी जमात सीन के रेगिस्तान से निकली। रब जिस तरह हुक्म देता रहा वह एक जगह से दूसरी जगह सफ़र करते रहे। रफ़ीदीम में उन्होंने खैमे लगाए। वहाँ पीने के लिए पानी न मिला। 2 इसलिए वह मूसा के साथ यह कहकर झगडने लगे, “हमें पीने के लिए पानी दो।” मूसा ने जवाब दिया, “तुम मुझसे क्यों झगड रहे हो? रब को क्यों आजमा रहे हो?” 3 लेकिन लोग बहुत प्यासे थे। वह मूसा के खिलाफ बुडबुडाने से बाज़ न आए बल्कि कहा, “आप हमें मिसर से क्यों लाए है? क्या इसलिए कि हम अपने बच्चों और रेवडों समेत प्यासे मर जाएँ?”

4 तब मूसा ने रब के हुज़ूर फ़रियाद की, “मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? हालात ज़रा भी और बिगड़ जाएँ तो वह मुझे संसार कर देंगे।” 5 रब ने मूसा से कहा, “कुछ बुजुर्ग साथ लेकर लोगों के आगे आगे चल। वह लाठी भी साथ ले जा जिससे तुने दरियाए-नील को मारा था। 6 मैं होरिब यानी सीना पहाड़ की एक चटान पर तैरे सामने खड़ा हूँगा। लाठी से चटान को मारना तो उससे पानी निकलेगा और लोग पी सकेंगे।”

मूसा ने इसराईल के बुजुर्गों के सामने ऐसा ही किया। 7 उसने उस जगह का नाम मस्सा और मरीबा यानी ‘आज़माना और झगडना’ रखा, क्योंकि वहाँ इसराईली बुड़बुड़ाए और यह पृथकर रब को आजमाया कि क्या रब हमारे दरमियान है कि नहीं?

### अमालीकियों की शिकस्त

8 रफ़ीदीम वह जगह भी थी जहाँ अमालीकी इसराईलियों से लड़ने आए। 9 मूसा ने यशुअ से कहा, “लड़ने के क्राबिल आदमियों को चुन लो और निकलकर अमालीकियों का मुकाबला करो। कल मैं अल्लाह की लाठी पकड़े हुए पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो जाऊँगा।”

10 यशुअ मूसा की हिदायत के मुताबिक अमालीकियों से लड़ने गया जबकि मूसा, हासून और हर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। 11 और यों हुआ कि जब मूसा के हाथ उठाए हुए थे तो इसराईली जीतते रहे, और जब वह नीचे थे तो अमालीकी जीतते रहे। 12 कुछ देर के बाद मूसा के बाजू थक गए। इसलिए हासून और हर एक चटान ले आए ताकि वह उस पर बैठ जाए। फिर उन्होंने उसके दाईं और बाईं तरफ खड़े होकर उसके बाजूओं को ऊपर उठाए रखा। सूरज के गुरूब होने तक उन्होंने यों मूसा की मदद की। 13 इस तरह यशुअ ने अमालीकियों से लड़ते लड़ते उन्हें शिकस्त दी।

14 तब रब ने मूसा से कहा, “यह वाकिया यादगारी के लिए किताब में लिख ले। लाज़िम है कि यह सब कुछ यशुअ की याद में रहे, क्योंकि मैं दुनिया से अमालीकियों का नामो-निशान मिटा दूँगा।” 15 उस वक़्त मूसा ने कुरबानगह बनाकर उसका नाम ‘रब मेरा झंडा है’ रखा। 16 उसने कहा, “रब के तख़्त के खिलाफ हाथ उठाया गया है, इसलिए रब की अमालीकियों से हमेशा तक जंग रहेगी।”

## 18

### यितरो से मुलाकात

1 मूसा का सुसर यितरो अब तक मिदियान में इमाम था। जब उसने सब कुछ सुना जो अल्लाह ने मूसा और अपनी कौम के लिए किया है, कि वह उन्हें मिसर से निकाल लाया है 2 तो वह मूसा के पास आया। वह उस की बीवी सफ़फ़रा को अपने साथ लाया, क्योंकि मूसा ने उसे अपने बेटों समेत मैके भेज दिया था। 3 यितरो मूसा के दोनों बेटों को भी साथ लाया। पहले बेटे का नाम जैरसोम यानी ‘अजनबी मुल्क में परदेसी’ था, क्योंकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा ने कहा था, “मैं अजनबी मुल्क में परदेसी हूँ।” 4 दूसरे बेटे का नाम इलियज़र यानी ‘मेरा खुदा मददगार है’ था, क्योंकि जब वह पैदा हुआ तो मूसा ने कहा था, “मेरे बाप के खुदा ने मेरी मदद करके मुझे फ़िरौन की तलवार से बचाया है।”

5 यितरो मूसा की बीवी और बेटे साथ लेकर उस वक़्त मूसा के पास पहुँचा जब उसने रेगिस्तान में अल्लाह के पहाड़ यानी सीना के करीब ख़ैमा लगाया हुआ था। 6 उसने मूसा को पैगाम भेजा था, “मैं, आपका सुसर यितरो आपकी बीवी और दो बेटों को साथ लेकर आपके पास आ रहा हूँ।”

7 मूसा अपने सुसर के इस्तक़बाल के लिए बाहर निकला, उसके सामने झुका और उसे बोसा दिया। दोनों ने एक दूसरे का हाल पूछा, फिर ख़ैमे में चले गए। 8 मूसा ने यितरो को तफ़सील से बताया कि रब ने इसराईलियों की खातिर फ़िरौन और मिसरियों के साथ क्या कुछ किया है। उसने रास्ते में पेश आई तमाम मुश्किलात का ज़िक्र भी किया कि रब ने हमें किस तरह उनसे बचाया है।

9 यितरो उन सारे अच्छे कामों के बारे में सुनकर खुश हुआ जो रब ने इसराईलियों के लिए किए थे जब उसने उन्हें मिसरियों के हाथ से बचाया था। 10 उसने कहा, “रब की तमज़ीद हो जिसने आपको मिसरियों और फ़िरौन के कब्ज़े से नजात दिलाई है। उसी ने कौम को गुलामी से छुड़ाया है! 11 अब मैंने जान लिया है कि रब तमाम माबूदों से अज़ीम है, क्योंकि उसने यह सब कुछ उन लोगों के साथ किया जिन्होंने अपने गुरूर में इसराईलियों के साथ बुरा सलूक किया था।” 12 फिर यितरो ने अल्लाह को भस्म होनेवाली कुरबानी और दीगर कई कुरबानियों पेश कीं। तब हासून और तमाम बुजुर्ग मूसा के सुसर यितरो के साथ अल्लाह के हुज़ूर खाना खाने बैठे।

### 70 बुजुर्गों को मुक़रर किया जाता है

13 अगले दिन मूसा लोगों का इनसाफ़ करने के लिए बैठ गया। उनकी तादाद इतनी ज़्यादा थी कि वह सबह से लेकर शाम तक मूसा के सामने खड़े रहे। 14 जब यितरो ने यह सब कुछ देखा तो उसने पूछा, “यह क्या है जो आप लोगों के साथ कर

रहे हैं? सारा दिन वह आपको घेरे रहते और आप उनकी अदालत करते रहते हैं। आप यह सब कुछ अकेले ही क्यों कर रहे हैं?”

15 मूसा ने जवाब दिया, “लोग मेरे पास आकर अल्लाह की मरजी मालूम करते हैं। 16 जब कभी कोई तनाजा या झगडा होता है तो दोनों पार्टियाँ मेरे पास आती हैं। मैं फैसला करके उन्हें अल्लाह के अहकाम और हिदायात बताता हूँ।”

17 मूसा के सुसर ने उससे कहा, “आपका तरीका अच्छा नहीं है। 18 काम इतना वसी है कि आप उसे अकेले नहीं सँभाल सकते। इससे आप और वह लोग जो आपके पास आते हैं बुरी तरह थक जाते हैं। 19 मेरी बात सुनें! मैं आपको एक मशवरा देता हूँ। अल्लाह उसमें आपकी मदद करे। लाज़िम है कि आप अल्लाह के सामने कौम के नुमाइंदे रहें और उनके मामलात उसके सामने पेश करें। 20 यह भी जरूरी है कि आप उन्हें अल्लाह के अहकाम और हिदायात सिखाएँ, कि वह किस तरह ज़िंदगी गुज़ारें और क्या क्या करें। 21 लेकिन साथ साथ कौम में से काबिले-एतमाद आदमी चुनें। वह ऐसे लोग हों जो अल्लाह का ख़ोफ मानते हों, रास्तदिल हों और रिश्त से नफ़रत करते हों। उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस आदमियों पर मुकर्रर करें। 22 उन आदमियों की ज़िम्मादारी यह होगी कि वह हर वक्त लोगों का इनसाफ़ करें। अगर कोई बहुत ही पेचीदा मामला हो तो वह फैसले के लिए आपके पास आएँ, लेकिन दीगर मामलों का फैसला वह खुद करें। यों वह काम में आपका हाथ बटाएँ और आपका बोझ हलका हो जाएगा।

23 अगर मेरा यह मशवरा अल्लाह की मरजी के मुताबिक हो और आप ऐसा करें तो आप अपनी ज़िम्मादारी निभा सकेंगे और यह तमाम लोग इनसाफ़ के मिलने पर सलामती के साथ अपने अपने घर जा सकेंगे।”

24 मूसा ने अपने सुसर का मशवरा मान लिया और ऐसा ही किया। 25 उसने इसराइलियों में से काबिले-एतमाद आदमी चुने और उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ, पचास पचास और दस दस आदमियों पर मुकर्रर किया। 26 यह मर्द काज़ी बनकर मुस्तकिल तौर पर लोगों का इनसाफ़ करने लगे। आसान मसलों का फैसला वह खुद करते और मुश्किल मामलों को मूसा के पास ले आते थे।

27 कुछ अरसे बाद मूसा ने अपने सुसर को सूखसत किया तो यितरो अपने वतन वापस चला गया।

## 19

### कोहे-सीना

1 इसराइलियों को मिसर से सफ़र करते हुए दो महीने हो गए थे। तीसरे महीने के पहले ही दिन वह सीना के रेगिस्तान में पहुँचे। 2 उस दिन वह रफ़ीदीम को छोड़कर दशने-सीना में आ पहुँचे। वहाँ उन्होंने रेगिस्तान में पहाड़ के करीब डेरे डाले।

3 तब मूसा पहाड़ पर चढ़कर अल्लाह के पास गया। अल्लाह ने पहाड़ पर से मूसा को पुकारकर कहा, “याक़ूब के घराने बनी इसराइल को बता, 4 ‘तुमने देखा है कि मैंने मिसरियों के साथ क्या कुछ किया, और कि मैं तुमको उकाब के परों पर उठाकर यहाँ अपने पास लाया हूँ। 5 चुनौचे अगर तुम मेरी सुनो और मेरे अहद के मुताबिक चलो तो फिर तमाम कौमों में से मेरी खास मिलकियत होगी। गो पूरी दुनिया मेरी ही है, 6 लेकिन तुम मेरे लिए मख़सूस इमामों की बादशाही और मुक़द्दस कौम होगी।’ अब जाकर यह सारी बातें इसराइलियों को बता।”

7 मूसा ने पहाड़ से उतरकर और कौम के बुज़ुर्गों को बुलाकर उन्हें वह तमाम बातें बताई जो कहने के लिए रब ने उसे हुक्म दिया था। 8 जवाब में पूरी कौम ने मिलकर कहा, “हम रब की हर बात पूरी करेंगे जो उसने फ़रमाई है।” मूसा ने पहाड़ पर लौटकर रब को कौम का जवाब बताया। 9 जब वह पहुँचा तो रब ने मूसा से कहा, “मैं घने बादल में तेरे पास आऊँगा ताकि लोग मुझे तुझसे हमकलाम होते हुए सुनें। फिर वह हमेशा तुझ पर भरोसा रखेंगे।” तब मूसा ने रब को वह तमाम बातें बताई जो लोगों ने की थीं।

10 रब ने मूसा से कहा, “अब लोगों के पास लौटकर आज और कल उन्हें मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर। वह अपने लिबास धोकर 11 तीसरे दिन के लिए तैयार हो जाएँ, क्योंकि उस दिन रब लोगों के देखते देखते कोहे-सीना पर उतरेगा। 12 लोगों की हिफ़ाज़त के लिए चारों तरफ़ पहाड़ की हँडें मुकर्रर कर। उन्हें ख़बरदार कर कि हद्द को पार न करो। न पहाड़ पर चढ़ो, न उसके दामन को छुओ। जो भी उसे छुए वह जरूर मारा जाए। 13 और उसे हाथ से छूकर नहीं मारना है बल्कि पत्थरों या तीरों से। ख़ाह इनसान हो या हैवान, वह ज़िंदा नहीं रह सकता। जब तक नरसिगा देर तक फूँका न जाए उस वक्त तक लोगों को पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त नहीं है।”

14 मूसा ने पहाड़ से उतरकर लोगों को अल्लाह के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया। उन्होंने अपने लिबास भी धोए। 15 उसने उनसे कहा, “तीसरे दिन के लिए तैयार हो जाओ। मर्द औरतों से हमबिसतर न हों।”

16 तीसरे दिन सुबह पहाड़ पर घना बादल छा गया। बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगा और नरसिगे की निहायत जोरदार आवाज़ सुनाई दी। ख़ैमागाह में लोग लरज उठे। 17 तब मूसा लोगों को अल्लाह से मिलने के लिए ख़ैमागाह से बाहर पहाड़ की तरफ़ ले गया, और वह पहाड़ के दामन में खड़े हुए। 18 सीना पहाड़ धुँसे ढका हुआ था, क्योंकि रब आग में उस

पर उतर आया। पहाड़ से धुआँ इस तरह उठ रहा था जैसे किसी भट्टे से उठता है। पूरा पहाड़ शिद्ध से लरजने लगा। 19 नरसिंगे की आवाज़ तेज़ से तेज़तर होती गई। मूसा बोलने लगा और अल्लाह उसे ऊँची आवाज़ में जवाब देता रहा।

20 रब सीना पहाड़ की चोटी पर उतरा और मूसा को ऊपर आने के लिए कहा। मूसा ऊपर चढ़ा। 21 रब ने मूसा से कहा, “फ़ौरन नीचे उतरकर लोगों को खबरदार कर कि वह मुझे देखने के लिए पहाड़ की हद्द में ज़बरदस्ती दाखिल न हों। अगर वह ऐसा करें तो बहुत-से हलाक हो जाएंगे। 22 इमाम भी जो रब के हुज़ूर आते हैं अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करें, वरना मेरा गज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

23 लेकिन मूसा ने रब से कहा, “लोग पहाड़ पर नहीं आ सकते, क्योंकि तूने खुद ही हमें खबरदार किया कि हम पहाड़ की हद्दें मुक़र्रर करके उसे मख़सूसो-मुक़द्दस करें।”

24 रब ने जवाब दिया, “तो भी उतर जा और हारून को साथ लेकर वापस आ। लेकिन इमामों और लोगों को मत आने दे। अगर वह ज़बरदस्ती मेरे पास आएँ तो मेरा गज़ब उन पर टूट पड़ेगा।”

25 मूसा ने लोगों के पास उतरकर उन्हें यह बातें बता दीं।

## 20

### दस अहकाम

1 तब अल्लाह ने यह तमाम बातें फरमाई, 2 “मैं रब तेरा खुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की गुलामी से निकाल लाया। 3 मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना। 4 अपने लिए बूत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुंदर में हो। 5 न बूतों की परस्तिश, न उनकी खिदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब गयरू खुदा हूँ। जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुरत तक सज़ा दूँगा। 6 लेकिन जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हजार पुरतों तक मेहरबानी करूँगा।

7 रब अपने खुदा का नाम बेमक़सद या ग़लत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

8 सबत के दिन का खयाल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो। 9 हफ़्ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, 10 लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे खुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी और न तेरे मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। 11 क्योंकि रब ने पहले छः दिन में आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है बनाया लेकिन सातवें दिन आराम किया। इसलिए रब ने सबत के दिन को बरकत देकर मुक़र्रर किया कि वह मख़सूस और मुक़द्दस हो।

12 अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा खुदा तुझे देनेवाला है देर तक जीता रहेगा।

13 क़ल्ल न करना।

14 ज़िना न करना।

15 चोरी न करना।

16 अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

17 अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उस की बीवी का, न उसके नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

### लोग घबरा जाते हैं

18 जब बाक़ी तमाम लोगों ने बादल की गरज और नरसिंगे की आवाज़ सुनी और बिजली की चमक और पहाड़ से उठते हुए धुएँ को देखा तो वह ख़ौफ़ के मारे काँपने लगे और पहाड़ से दूर खड़े हो गए। 19 उन्होंने मूसा से कहा, “आप ही हमसे बात करें तो हम सुनेंगे। लेकिन अल्लाह को हमसे बात न करने दें वरना हम मर जाएंगे।”

20 लेकिन मूसा ने उनसे कहा, “मत डरो, क्योंकि रब तुम्हें जाँचने के लिए आया है, ताकि उसका ख़ौफ़ तुम्हारी आँखों के सामने रहे और तुम गुनाह न करो।” 21 लोग दूर ही रहे जबकि मूसा उस गहरी तारीकी के करीब गया जहाँ अल्लाह था।

22 तब रब ने मूसा से कहा, “इसराईलियों को बता, ‘तुमने खुद देखा कि मैंने आसमान पर से तुम्हारे साथ बातें की हैं। 23 चुनौचे मेरी परस्तिश के साथ साथ अपने लिए सोने या चाँदी के बूत न बनाओ। 24 मेरे लिए मिट्टी की कुरबानगाह बनाकर उस पर अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाना। मैं तुझे वह जगहें दिखाऊँगा जहाँ मेरे नाम की तार्ज़ीम में कुरबानियाँ पेश करनी हैं। ऐसी तमाम जगहों पर मैं तेरे पास आकर तुझे बरकत दूँगा।

25 अगर तू मेरे लिए कुरबानगाह बनाने की खातिर पत्थर इस्तेमाल करना चाहे तो तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल न करना। क्योंकि तू तराशे के लिए इस्तेमाल होनेवाले औजार से उस की बेहुरमती करेगा। 26 कुरबानगाह को सीढियों के बगैर बनाना है ताकि उस पर चढ़ने से तेरे लिबास के नीचे से तेरा नंगापन नजर न आए।'

## 21

1 इसराईलियों को यह अहकाम बता,

इब्रानी गुलाम के हुक्क

2 'अगर तू इब्रानी गुलाम खरीदे तो वह छः साल तेरा गुलाम रहे। इसके बाद लाजिम है कि उसे आजाद कर दिया जाए। आजाद होने के लिए उसे पैसे देने की ज़रूरत नहीं होगी।

3 अगर गुलाम गैरशादीशुदा हालत में मालिक के घर आया हो तो वह आजाद होकर अकेला ही चला जाए। अगर वह शादीशुदा हालत में आया हो तो लाजिम है कि वह अपनी बीवी समेत आजाद होकर जाए। 4 अगर मालिक ने गुलाम की शादी कराई और बच्चे पैदा हुए हैं तो उस की बीवी और बच्चे मालिक की मिलकियत होंगे। छः साल के बाद जब गुलाम आजाद होकर जाए तो उस की बीवी और बच्चे मालिक ही के पास रहें।

5 अगर गुलाम कहे, "मैं अपने मालिक और अपने बीवी बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आजाद नहीं होना चाहता" 6 तो गुलाम का मालिक उसे अल्लाह के सामने लाए। वह उसे दरवाजे या उस की चौखट के पास ले जाए और सुताली यानी तेज़ औजार से उसके कान की लौ छेद दे। तब वह जिंदगी-भर उसका गुलाम बना रहेगा।

7 अगर कोई अपनी बेटी को गुलामी में बेच डाले तो उसके लिए आजादी मिलने की शरायत मर्द से फ़रक है। 8 अगर उसके मालिक ने उसे मुंतखब किया कि वह उस की बीवी बन जाए, लेकिन बाद में वह उसे पसंद न आए तो लाजिम है कि वह मुनासिब मुआवज़ा लेकर उसे उसके रिश्तेदारों को वापस कर दे। उसे औरत को गैरमुल्कियों के हाथ बेचने का इख्तियार नहीं है, क्योंकि उसने उसके साथ बेवफ़ा सुलूक किया है।

9 अगर लौंडी का मालिक उस की अपने बेटे के साथ शादी कराए तो औरत को बेटी के हुक्क हासिल होंगे।

10 अगर मालिक ने उससे शादी करके बाद में दूसरी औरत से भी शादी की तो लाजिम है कि वह पहली को भी खाना और कपड़े देता रहे। इसके अलावा उसके साथ हमबिसतर होने का फ़र्ज़ भी अदा करना है। 11 अगर वह यह तीन फ़रायज़ अदा न करे तो उसे औरत को आजाद करना पड़ेगा। इस सूरत में उसे मुफ्त आजाद करना होगा।

ज़खमी करने की सज़ा

12 जो किसी को जान-बूझकर इतना सख्त मारता हो कि वह मर जाए तो उसे ज़रूर सज़ाए-मौत देना है। 13 लेकिन अगर उसने उसे जान-बूझकर न मारा बल्कि यह इतफ़ाक से हुआ और अल्लाह ने यह होने दिया, तो मारनेवाला एक ऐसी जगह पनाह ले सकता है जो मैं मुकर्रर करूँगा। वहाँ उसे कत्ल किए जाने की इजाज़त नहीं होगी। 14 लेकिन जो दीदा-दानिस्ता और चालाकी से किसी को मार डालता है उसे मेरी कुरबानगाह से भी छीनकर सज़ाए-मौत देना है।

15 जो अपने बाप या अपनी माँ को मारता पीटता है उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

16 जिसने किसी को इग़वा कर लिया है उसे सज़ाए-मौत दी जाए, चाहे वह उसे गुलाम बनाकर बेच चुका हो या उसे अब तक अपने पास रखा हुआ हो।

17 जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

18 हो सकता है कि आदमी झगड़ें और एक शख्स दूसरे को पत्थर या मुक्के से इतना ज़खमी कर दे कि गो वह बच जाए वह बिस्तर से उठ न सकता हो। 19 अगर बाद में मरीज़ यहाँ तक शफ़ा पाए कि दुबारा उठकर लाठी के सहारे चल-फिर सके तो चोट पहुँचानेवाले को सज़ा नहीं मिलेगी। उसे सिर्फ़ उस वक़्त के लिए मुआवज़ा देना पड़ेगा जब तक मरीज़ पैसे न कमा सके। साथ ही उसे उसका पूरा इलाज़ करवाना है।

20 जो अपने गुलाम या लौंडी को लाठी से यों मारे कि वह मर जाए उसे सज़ा दी जाए। 21 लेकिन अगर गुलाम या लौंडी पिटाई के बाद एक या दो दिन जिंदा रहे तो मालिक को सज़ा न दी जाए। क्योंकि जो रकम उसने उसके लिए दी थी उसका नुक़सान उसे ख़ुद उठाना पड़ेगा।

22 हो सकता है कि लोग आपस में लड़ रहे हों और लड़ते लड़ते किसी हामिला औरत से यों टकरा जाएँ कि उसका बच्चा ज़ाय़ा हो जाए। अगर कोई और नुक़सान न हुआ हो तो ज़रब पहुँचानेवाले को ज़रमाना देना पड़ेगा। औरत का शौहर यह ज़रमाना मुकर्रर करे, और अदालत में इसकी तसदीक हो।



23 लेकिन अगर उस औरत को और नुकसान भी पहुँचा हो तो फिर जरूर पहुँचानेवाले को इस उसूल के मुताबिक सज़ा दी जाए कि जान के बदले जान, 24 आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव, 25 जलने के ज़ख़म के बदले जलने का ज़ख़म, मार के बदले मार, काट के बदले काट।

26 अगर कोई मालिक अपने गुलाम की आँख पर यों मारे कि वह जाया हो जाए तो उसे गुलाम को आँख के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे गुलाम मर्द हो या औरत। 27 अगर मालिक के पीटने से गुलाम का दाँत टूट जाए तो उसे गुलाम को दाँत के बदले आज़ाद करना पड़ेगा, चाहे गुलाम मर्द हो या औरत।

### नुक़सान का मुआवज़ा

28 अगर कोई बैल किसी मर्द या औरत को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो उस बैल को संगसार किया जाए। उसका गोशत खाने की इजाज़त नहीं है। इस सूत में बैल के मालिक को सज़ा न दी जाए। 29 लेकिन हो सकता है कि मालिक को पहले आगाह किया गया था कि बैल लोगों को मारता है, तो भी उसने बैल को खुला छोड़ा था जिसके नतीजे में उसने किसी को मार डाला। ऐसी सूत में न सिर्फ़ बैल को बल्कि उसके मालिक को भी संगसार करना है। 30 लेकिन अगर फ़ैसला किया जाए कि वह अपनी जान का फ़िधा दे तो जितना मुआवज़ा भी मुकर्रर किया जाए उसे देना पड़ेगा।

31 सज़ा में कोई फ़रक नहीं है, चाहे बेटे को मारा जाए या बेटों को। 32 लेकिन अगर बैल किसी गुलाम या लौड़ी को मार दे तो उसका मालिक गुलाम के मालिक को चाँदी के 30 सिक्के दे और बैल को संगसार किया जाए।

33 हो सकता है कि किसी ने अपने हौज़ को खुला रहने दिया या हौज़ बनाने के लिए गढ़ा खोदकर उसे खुला रहने दिया और कोई बैल या गधा उसमें गिरकर मर गया। 34 ऐसी सूत में हौज़ का मालिक मुरदा जानवर के लिए पैसे दे। वह जानवर के मालिक को उस की पूरी कीमत अदा करे और मुरदा जानवर ख़ुद ले ले।

35 अगर किसी का बैल किसी दूसरे के बैल को ऐसे मारे कि वह मर जाए तो दोनों मालिक ज़िंदा बैल को बेचकर उसके पैसे आपस में बराबर बाँट लें। इसी तरह वह मुरदा बैल को भी बराबर तकसीम करें। 36 लेकिन हो सकता है कि मालिक को मालूम था कि मेरा बैल दूसरे जानवरों पर हमला करता है, इसके बावज़ुद उसने उसे आज़ाद छोड़ दिया था। ऐसी सूत में उसे मुरदा बैल के एवज़ उसके मालिक को नया बैल देना पड़ेगा, और वह मुरदा बैल ख़ुद ले ले।

## 22

### मिलकियत की हिफ़ाज़त

1 जिसने कोई बैल या भेड़ चोरी करके उसे ज़बह किया या बेच डाला है उसे हर चोरी के बैल के एवज़ पाँच बैल और हर चोरी की भेड़ के एवज़ चार भेड़ें वापस करना है।

2 हो सकता है कि कोई चोर नक़ब लगा रहा हो और लोग उसे पकड़कर यहाँ तक मारते पीटते रहें कि वह मर जाए। अगर रात के वक़्त ऐसा हुआ हो तो वह उसके खून के ज़िम्मादार नहीं ठहर सकते। 3 लेकिन अगर सूरज के तुलू होने के बाद ऐसा हुआ हो तो जिसने उसे मारा वह क़ातिल ठहरेगा।

चोर को हर चुराई हुई चीज़ का एवज़ाना देना है। अगर उसके पास देने के लिए कुछ न हो तो उसे गुलाम बनाकर बेचना है। जो पैसे उसे बेचने के एवज़ मिलें वह चुराई हुई चीज़ों के बदले में दिए जाएँ।

4 अगर चोरी का जानवर चोर के पास ज़िंदा पाया जाए तो उसे हर जानवर के एवज़ दो देने पड़ेंगे, चाहे वह बैल, भेड़, बकरी या गधा हो।

5 हो सकता है कि कोई अपने मवेशी को अपने खेत या अंगूर के बाग में छोड़कर चरने दे और होते होते वह किसी दूसरे के खेत या अंगूर के बाग में जाकर चरने लगे। ऐसी सूत में लाज़िम है कि मवेशी का मालिक नुक़सान के एवज़ अपने अंगूर के बाग और खेत की बेहतरीन पैदावार में से दे।

6 हो सकता है कि किसी ने आग जलाई हो और वह कौंटेदार झाड़ियों के ज़रीए पड़ोसी के खेत तक फैलकर उसके अनाज के पलों को, उस की पकी हुई फसल को या खेत की किसी और पैदावार को बरबाद कर दे। ऐसी सूत में जिसने आग जलाई हो उसे उस की पूरी कीमत अदा करनी है।

7 हो सकता है कि किसी ने कुछ पैसे या कोई और माल अपने किसी वाकिफ़कार के सुपुर्द कर दिया हो ताकि वह उसे महफूज़ रखे। अगर यह चीज़ें उसके घर से चोरी हो जाएँ और बाद में चोर को पकड़ा जाए तो चोर को उस की दुगुनी कीमत अदा करनी पड़ेगी। 8 लेकिन अगर चोर पकड़ा न जाए तो लाज़िम है कि उस घर का मालिक जिसके सुपुर्द यह चीज़ें की गई थीं अल्लाह के हुज़ूर खड़ा हो ताकि मालूम किया जाए कि उसने ख़ुद यह माल चोरी किया है या नहीं।

9 हो सकता है कि दो लोगों का आपस में झगडा हो, और दोनों किसी चीज के बारे में दावा करते हों कि यह मेरी है। अगर कोई क्रीमती चीज हो मसलन बैल, गधा, भेड, बकरी, कपडे या कोई खोई हुई चीज तो मामला अल्लाह के हुजूर लाया जाए। जिसे अल्लाह कुसूरवार करार दे उसे दूसरे को ज़ेरे-बहस चीज की दुगानी क्रीमत अदा करनी है।

10 हो सकता है कि किसी ने अपना कोई गधा, बैल, भेड, बकरी या कोई और जानवर किसी वाकिफकार के सुपुर्द कर दिया ताकि वह उसे महफूज़ रखे। वहाँ जानवर मर जाए या ज़खमी हो जाए, या कोई उस पर कब्ज़ा करके उसे उस वक़्त ले जाए जब कोई न देख रहा हो। 11 यह मामला यों हल किया जाए कि जिसके सुपुर्द जानवर किया गया था वह रब के हुजूर कसम खाकर कहे कि मैंने अपने वाकिफकार के जानवर के लालच में यह काम नहीं किया। जानवर के मालिक को यह कबूल करना पड़ेगा, और दूसरे को इसके बदले कुछ नहीं देना होगा। 12 लेकिन अगर वाकई जानवर को चोरी किया गया है तो जिसके सुपुर्द जानवर किया गया था उसे उस की क्रीमत अदा करनी पड़ेगी। 13 अगर किसी जंगली जानवर ने उसे फाड डाला हो तो वह सबूत के तौर पर फाडी हुई लाश को ले आए। फिर उसे उस की क्रीमत अदा नहीं करनी पड़ेगी।

14 हो सकता है कि कोई अपने वाकिफकार से इजाज़त लेकर उसका जानवर इस्तेमाल करे। अगर जानवर को मालिक की गैरमौजूदगी में चोट लगे या वह मर जाए तो उस शख्स को जिसके पास जानवर उस वक़्त था उसका मुआवज़ा देना पड़ेगा। 15 लेकिन अगर जानवर का मालिक उस वक़्त साथ था तो दूसरे को मुआवज़ा देने की ज़रूरत नहीं होगी। अगर उसने जानवर को किराए पर लिया हो तो उसका नुकसान किराए से पूरा हो जाएगा।

### लडकी को वरगलाने का जुर्म

16 अगर किसी कुँवारी की मँगनी नहीं हुई और कोई मर्द उसे वरगलाकर उससे हमबिसतर हो जाए तो वह महर देकर उससे शादी करे। 17 लेकिन अगर लडकी का बाप उस की उस मर्द के साथ शादी करने से इनकार करे, इस सूरत में भी मर्द को कुँवारी के लिए मुकर्रर रक़म देनी पड़ेगी।

### सज़ाए-मौत के लायक ज़रायम

18 जादुगरनी को जीने न देना।

19 जो शख्स किसी जानवर के साथ जिंसी ताल्लुकात रखता हो उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

20 जो न सिर्फ़ रब को कुरबानियाँ पेश करे बल्कि दीगर माबूदों को भी उसे कौम से निकालकर हलाक किया जाए।

### कमज़ोरों की हिफाज़त के लिए अहकाम

21 जो परदेसी तैरे मुल्क में मेहमान है उसे न दबाना और न उससे बुरा सुल्क करना, क्योंकि तुम भी मिसर में परदेसी थे।

22 किसी बेवा या यतीम से बुरा सुल्क न करना। 23 अगर तू ऐसा करे और वह चिल्लाकर मुझसे फरियाद करे तो मैं ज़रूर उनकी सुनूँगा। 24 मैं बडे गुस्से में आकर तुम्हें तलवार से मार डालूँगा। फिर तुम्हारी बीवियाँ ख़ुद बेवाँ और तुम्हारे बच्चे ख़ुद यतीम बन जाएंगे।

25 अगर तुने मेरी कौम के किसी गरीब को कर्ज़ दिया है तो उससे सूद न लेना।

26 अगर तुझे किसी से उस की चादर गिरवी के तौर पर मिली हो तो उसे सूरज डूबने से पहले ही वापस कर देना है, 27 क्योंकि इसी को वह सोने के लिए इस्तेमाल करता है। वरना वह क्या चीज ओढकर सोएगा? अगर तू चादर वापस न करे और वह शख्स चिल्लाकर मुझसे फरियाद करे तो मैं उस की सुनूँगा, क्योंकि मैं मेहरबान हूँ।

### अल्लाह से मुताल्लिक फ़रायज़

28 अल्लाह को न कोसना, न अपनी कौम के किसी सरदार पर लानत करना।

29 मुझे वक़्त पर अपने खेत और कोल्हुओं की पैदावार में से नज़राने पेश करना। अपने पहलौठे मुझे देना। 30 अपने बैलों, भेडों और बकरियों के पहलौठों को भी मुझे देना। जानवर का पहलौठा पहले सात दिन अपनी माँ के साथ रहे। आठवें दिन वह मुझे दिया जाए।

31 अपने आपको मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस रखना। इसलिए ऐसे जानवर का गोशत मत खाना जिसे किसी जंगली जानवर ने फाड डाला है। ऐसे गोशत को कुत्तों को खाने देना।

1 गलत अफवाहें न फैलाना। किसी शरीर आदमी का साथ देकर झूटी गवाही देना मना है। 2 अगर अकसरियत गलत काम कर रही हो तो उसके पीछे न हो लेना। अदालत में गवाही देते वक़्त अकसरियत के साथ मिलकर ऐसी बात न करना जिससे गलत फैसला किया जाए। 3 लेकिन अदालत में किसी गरीब की तरफ़दारी भी न करना।

4 अगर तुझे तेरे दुश्मन का बैल या गधा आवारा फिरता हुआ नज़र आए तो उसे हर सूरत में वापस कर देना। 5 अगर तुझसे नफ़रत करनेवाले का गधा बोझ तले गिर गया हो और तुझे पता लगे तो उसे न छोड़ना बल्कि ज़रूर उस की मदद करना।

6 अदालत में गरीब के हुकूम न मारना। 7 ऐसे मामले से दूर रहना जिसमें लोग झूट बोलते हैं। जो बेगुनाह और हक़ पर है उसे सज़ाए-मौत न देना, क्योंकि मैं कुसूरवार को हक़-बजानिब नहीं ठहराऊँगा। 8 रिश्तवत न लेना, क्योंकि रिश्तवत देखनेवाले को अंधा कर देती है और उस की बात बनने नहीं देती जो हक़ पर है।

9 जो परदेसी तेरे मुल्क में मेहमान है उस पर दबाव न डालना। तुम ऐसे लोगों की हालत से खूब वाकिफ़ हो, क्योंकि तुम खुद मिसर में परदेसी रहे हो।

#### सबत का साल और सबत

10 छः साल तक अपनी ज़मीन में बीज बोकर उस की पैदावार जमा करना। 11 लेकिन सातवें साल ज़मीन को इस्तेमाल न करना बल्कि उसे पड़े रहने देना। जो कुछ भी उगे वह कौम के गरीब लोग खाएँ। जो उनसे बच जाए उसे जंगली जानवर खाएँ। अपने अंगूर और जैतून के बागों के साथ भी ऐसा ही करना है।

12 छः दिन अपना काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। फिर तेरा बैल और तेरा गधा भी आराम कर सकेंगे, तेरी लौंडी का बेटा और तेरे साथ रहनेवाला परदेसी भी ताज़ादम हो जाएंगे।

13 जो भी हिदायत मैंने दी है उस पर अमल कर। दीगर माबूदों की परस्तिश न करना। मैं तेरे मुँह से उनके नामों तक का जिक्र न सुनूँ।

#### तीन खास ईदें

14 साल में तीन दफ़ा मेरी ताज़ीम में ईद मनाना। 15 पहले, बेखमीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने \* में सात दिन तक तेरी रोटी में खमीर न हो जिस तरह मैंने हुकम दिया है, क्योंकि इस महीने में तू मिसर से निकला। इन दिनों में कोई मेरे हुज़ूर खाली हाथ न आए। 16 दूसरे, फ़सलकटाई की ईद उस वक़्त मनाना जब तू अपने खेत में बोई हुई पहली फ़सल काटेगा। तीसरे, जमा करने की ईद फ़सल की कटाई के इख़िताम † पर मनाना है जब तेरे अंगूर और बाक़ी बागों के फल जमा किए होंगे। 17 यों तेरे तमाम मर्द तीन मरतबा रब कादिरे-मुतलक के हुज़ूर हाज़िर हुआ करें।

18 जब तू किसी जानवर को ज़बह करके कुखानी के तौर पर पेश करे तो उसके खून के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिसमें खमीर हो। और जो जानवर तू मेरी ईदों पर चढ़ाए उनकी चरबी अगली सुबह तक बाक़ी न रहे।

19 अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का बेहतरीन हिस्सा रब अपने खुदा के घर में लाना।

भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।

#### रब का फ़रिश्ता राहनुमाई करेगा

20 मैं तेरे आगे आगे फ़रिश्ता भेजता हूँ जो रास्ते में तेरी हिफ़ाज़त करेगा और तुझे उस जगह तक ले जाएगा जो मैंने तेरे लिए तैयार की है। 21 उस की मौजूदगी में एह्लियात बरतना। उस की सुनना, और उस की खिलाफ़वर्ज़ी न करना। अगर तू सरकश हो जाए तो वह तुझे मुआफ़ नहीं करेगा, क्योंकि मेरा नाम उसमें हाज़िर होगा। 22 लेकिन अगर तू उस की सुने और सब कुछ करे जो मैं तुझे बताता हूँ तो मैं तेरे दुश्मनों का दुश्मन और तेरे मुखालिफ़ों का मुखालिफ़ हूँगा।

23 क्योंकि मेरा फ़रिश्ता तेरे आगे आगे चलेगा और तुझे मुल्के-कनान तक पहुँचा देगा जहाँ अमोरी, हिती, फ़रिज़्जी, कनानी, हिव्वी और यबूसी आबाद हैं। तब मैं उन्हें स्प-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। 24 उनके माबूदों को सिजदा न करना, न उनकी खिदमत करना। उनके रस्मो-रिवाज भी न अपनाना बल्कि उनके बुतों को तबाह कर देना। जिन सत्तों के सामने वह इबादत करते हैं उनको भी टुकड़े टुकड़े कर डालना। 25 रब अपने खुदा की खिदमत करना। फिर मैं तेरी ख़ुराक और पानी को बरक़त देकर तमाम बीमारियों तुझसे दूर करूँगा। 26 फिर तेरे मुल्क में न किसी का बच्चा ज़ाय़ा होगा, न कोई बाँझ होगी। साथ ही मैं तुझे तवील ज़िंदगी अता करूँगा।

27 मैं तेरे आगे आगे दहशत फैलाऊँगा। जहाँ भी तू जाएगा वहाँ मैं तमाम कौमों में अबतरी पैदा करूँगा। मेरे सबब से तेरे सारे दुश्मन पलटकर भाग जाएंगे। 28 मैं तेरे आगे जंबूर भेज दूँगा जो हिव्वी, कनानी और हिती को मुल्क छोड़ने पर मजबूर करेगा। 29 लेकिन जब तू वहाँ पहुँचेगा तो मैं उन्हें एक ही साल में मुल्क से नहीं निकालूँगा। वरना पूरा मुल्क वीरान हो जाएगा

\* 23:15 मार्च ता अप्रैल। † 23:16 सितंबर ता अक्तूबर।

और जंगली जानवर फैलकर तैरे लिए नुकसान का बाइस बन जाएंगे। 30 इसलिए मैं तैरे पहुँचने पर मुल्क के बाशिंदों को थोडा थोडा करके निकालता जाऊँगा। इतने में तैरी तादाद बढेगी और तू रफता रफता मुल्क पर कब्जा कर सकेगा।

31 मैं तैरी सरहदे मुकर्र करूँगा। बहरे-कुलजुम एक हद होगी और फिलिस्तिनों का समुंदर दूसरी, जुनब का रेगिस्तान एक होगी और दरियाए-फुरत दूसरी। मैं मुल्क के बाशिंदों को तैरे कब्जे में कर दूँगा, और तू उन्हें अपने आगे आगे मुल्क से दूर करता जाएगा। 32 लाजिम है कि तू उनके साथ या उनके माबूदों के साथ अहद न बाँधे। 33 उनका तैरे मुल्क में रहना मना है, वरना तू उनके सबब से मेरा गुनाह करेगा। अगर तू उनके माबूदों की इबादत करेगा तो यह तैरे लिए फंदा बन जाएगा।”

## 24

रब इसराईल से अहद बाँधता है

1 रब ने मूसा से कहा, “तू, हासन, नदब, अबीह और इसराईल के 70 बुजुर्ग मेरे पास ऊपर आएँ। कुछ फासले पर खड़े होकर मुझे सिजदा करो। 2 सिर्फ तू अकेला ही मेरे करीब आ, दूसरे दूर रहे। और क्रौम के बाकी लोग तैरे साथ पहाड पर न चढें।”

3 तब मूसा ने क्रौम के पास जाकर रब की तमाम बातें और अहकाम पेश किए। जवाब में सबने मिलकर कहा, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे।”

4 तब मूसा ने रब की तमाम बातें लिख लीं। अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठा और पहाड के पास गया। उसके दामन में उसने कुरबानागह बनाई। साथ ही उसने इसराईल के हर एक कबीले के लिए एक एक पत्थर का सतून खडा किया। 5 फिर उसने कुछ इसराईली नौजवानों को कुरबानी पेश करने के लिए बुलाया ताकि वह रब की ताज्जिम में भस्म होनेवाली कुरबानियाँ चढाएँ और जवान बैलों को सलामती की कुरबानी के तौर पर पेश करें। 6 मूसा ने कुरबानियों का खून जमा किया। उसका आधा हिस्सा उसने बासनों में डाल दिया और आधा हिस्सा कुरबानागह पर छिडक दिया।

7 फिर उसने वह किताब ली जिसमें रब के साथ अहद की तमाम शरायत दर्ज थी और उसे क्रौम को पढकर सुनाया। जवाब में उन्होंने कहा, “हम रब की इन तमाम बातों पर अमल करेंगे। हम उस की सुनेंगे।” 8 इस पर मूसा ने बासनों में से खून लेकर उसे लोगों पर छिडका और कहा, “यह खून उस अहद की तसदीक करता है जो रब ने तुम्हारे साथ किया है और जो उस की तमाम बातों पर मबनी है।”

9 इसके बाद मूसा, हासन, नदब, अबीह और इसराईल के 70 बुजुर्ग सीना पहाड पर चढे। 10 वहाँ उन्होंने इसराईल के खुदा को देखा। लगता था कि उसके पाँवों के नीचे संगे-लाजवर्द का-सा तख्ता था। वह आसमान की मानिंद साफो-शाफफाफ था। 11 अगरचे इसराईल के राहनुमाओं ने यह सब कुछ देखा तो भी रब ने उन्हें हलाक न किया, बल्कि वह अल्लाह को देखते रहे और उसके हुजूर अहद का खाना खाते और पीते रहे।

पत्थर की तख्तियाँ

12 पहाड से उतरने के बाद रब ने मूसा से कहा, “मेरे पास पहाड पर आकर कुछ देर के लिए ठहरे रहना। मैं तुझे पत्थर की तख्तियाँ दूँगा जिन पर मैंने अपनी शरीअत और अहकाम लिखे हैं और जो इसराईल की तालीमो-तरबियत के लिए जरूरी हैं।”

13 मूसा अपने मददगार यशुअ के साथ चल पडा और अल्लाह के पहाड पर चढ गया। 14 पहले उसने बुजुर्गों से कहा, “हमारी वापसी के इंतजार में यहाँ ठहरे रहो। हासन और हर तुम्हारे पास रहेंगे। कोई भी मामला हो तो लोग उन्हीं के पास जाएँ।”

मूसा रब से मिलता है

15 जब मूसा चढने लगा तो पहाड पर बादल छा गया। 16 रब का जलाल कोहे-सीना पर उतर आया। छः दिन तक बादल उस पर छाया रहा। सातवें दिन रब ने बादल में से मूसा को बुलाया। 17 रब का जलाल इसराईलियों को भी नजर आता था। उन्हें यों लगा जैसा कि पहाड की चोटी पर तेज आग भडक रही हो। 18 चढते चढते मूसा बादल में दाखिल हुआ। वहाँ वह चालीस दिन और चालीस रात रहा।

## 25

मुलाकात का खैमा बनाने के लिए हदिये

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को बता कि वह हदिये लाकर मुझे उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करें। लेकिन सिर्फ उनसे हदिये कबूल करो जो दलीली खुशी से दें। 3 उनसे यह चीजें हदिये के तौर पर कबूल करो : सोना, चाँदी,

पीतल; 4 नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, 5 मेंढों की सुर्ख रंगी हुई खालें, तखस \* की खालें, कीकर की लकड़ी, 6 शमादान के लिए जैतून का तेल, महस करने के लिए तेल और खुशबूदार बखर के लिए मसाले, 7 अक्कि-अहमर और दीगर जवाहर जो इमामे-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े जाएंगे। 8 इन चीजों से लोग मेरे लिए मकदिस बनाएँ ताकि मैं उनके दरमियान रहूँ। 9 मैं तुझे मकदिस और उसके तमाम सामान का नमूना दिखाऊँगा, क्योंकि तुम्हें सब कुछ ऐन उसी के मुताबिक बनाना है।

### अहद का संदूक

10-12 लोग कीकर की लकड़ी का संदूक बनाएँ। उस की लंबाई पौने चार फुट हो जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फुट हो। पूरे संदूक पर अंदर और बाहर से खालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। संदूक को उठाने के लिए सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें संदूक के चारपाइयों पर लगाना। दोनों तरफ़ दो दो कड़े हों। 13 फिर कीकर की दो लकड़ियाँ संदूक को उठाने के लिए तैयार करना। उन पर सोना चढ़ाकर 14 उनको दोनों तरफ़ के कड़ों में ढालना ताकि उनसे संदूक को उठाया जाए। 15 यह लकड़ियाँ संदूक के इन कड़ों में पड़ी रहें। उन्हें कभी भी दूर न किया जाए। 16 संदूक में शरीअत की वह दो तख्तियाँ रखना जो मैं तुझे दूँगा।

17 संदूक का ढकना खालिस सोने का बनाना। उस की लंबाई पौने चार फुट और चौड़ाई सवा दो फुट हो। उसका नाम कफफारे का ढकना है। 18-19 सोने से घड़कर दो कस्बी फरिशते बनाए जाएँ जो ढकने के दोनों सिरों पर खड़े हों। यह दो फरिशते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाने हैं। 20 फरिशतों के पर यों ऊपर की तरफ़ फैले हुए हों कि वह ढकने को पनाह दें। उनके मुँह एक दूसरे की तरफ़ किए हुए हों, और वह ढकने की तरफ़ देखें।

21 ढकने को संदूक पर लगा, और संदूक में शरीअत की वह दो तख्तियाँ रख जो मैं तुझे दूँगा। 22 वहाँ ढकने के ऊपर दोनों फरिशतों के दरमियान से मैं अपने आपको तुझ पर जाहिर करके तुझसे हमकलाम हूँगा और तुझे इसराइलियों के लिए तमाम अहकाम दूँगा।

### मखसूस रोटियों की मेज़

23 कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाना। उस की लंबाई तीन फुट, चौड़ाई डेढ़ फुट और ऊँचाई सवा दो फुट हो। 24 उस पर खालिस सोना चढ़ाना, और उसके इर्दगिर्द सोने की झालर लगाना। 25 मेज़ की ऊपर की सतह पर चौखटा लगाना जिसकी ऊँचाई तीन इंच हो और जिस पर सोने की झालर लगी हो। 26 सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें चारों कोनों पर लगाना जहाँ मेज़ के पाए लगे हैं। 27 यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए जाएँ। उनमें वह लकड़ियाँ डालनी हैं जिनसे मेज़ को उठाया जाएगा। 28 यह लकड़ियाँ भी कीकर की हों और उन पर सोना चढ़ाया जाए। उनसे मेज़ को उठाना है।

29 उसके थाल, प्याले, मरतबान और मै की नज़रें पेश करने के बरतन खालिस सोने से बनाना है। 30 मेज़ पर वह रोटियाँ हर वक्त मेरे हज़ूर पड़ी रहें जो मेरे लिए मखसूस हैं।

### शमादान

31 खालिस सोने का शमादान भी बनाना। उसका पाया और डंडी घड़कर बनाना है। उस की प्यालियों जो फूलों और कलियों की शकल की होगी पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा हों। 32 डंडी से दाईं और बाईं तरफ़ तीन तीन शाखें निकलें। 33 हर शाख पर तीन प्यालियाँ लगी हों जो बादाम की कलियों और फूलों की शकल की हों। 34 शमादान की डंडी पर भी इस किस्म की प्यालियाँ लगी हों, लेकिन तादाद में चार। 35 इनमें से तीन प्यालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाखों के नीचे लगी हों। वह यों लगी हों कि हर प्याली से दो शाखें निकलें। 36 शाखें और प्यालियाँ बल्कि पूरा शमादान खालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़कर बनाना है।

37 शमादान के लिए सात चरागा बनाकर उन्हें यों शाखों पर रखना कि वह सामने की जगह रौशन करें। 38 बत्ती कतरने की कैंचियाँ और जलते कोयले के लिए छोटे बरतन भी खालिस सोने से बनाए जाएँ। 39 शमादान और उस सारे सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम खालिस सोना इस्तेमाल किया जाए। 40 गौर कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।

## 26

### मुलाकात का खैमा

\* 25:5 गाल्विन इस मतसूक इब्रानी लफ़्ज से मुराद कोई समुंदरी जानवर है।

1 मुकद्दस खैमे के लिए दस परदे बनाना। उनके लिए बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा इस्तेमाल करना। परदों में किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फरिशतों का डिजायन बनवाना। 2 हर परदे की लंबाई 42 फुट और चौड़ाई 6 फुट हो। 3 पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह बाकी पाँच भी। यों दो बड़े टुकड़े बन जाएँगे। 4 दोनों टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए नीले धागे के हलके बनाना। यह हलके हर टुकड़े के 42 फुटवाले एक किनारे पर लगाए जाएँ, 5 एक टुकड़े के हाशिये पर 50 हलके और दूसरे पर भी उतने ही हलके। इन दो हाशियों के हलके एक दूसरे के आमने-सामने हों। 6 फिर सोने की 50 हुके बनाकर उनसे आमने-सामने के हलके एक दूसरे के साथ मिलाना। यों दोनों टुकड़े जुड़कर खैमे का काम देंगे।

7 बकरी के बालों से भी 11 परदे बनाना जिन्हें कपड़ेवाले खैमे के ऊपर रखा जाए। 8 हर परदे की लंबाई 45 फुट और चौड़ाई 6 फुट हो। 9 पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े जाएँ और इसी तरह बाकी छः भी। इन छः परदों के छटे परदे को एक दफा तह करना। यह सामनेवाले हिस्से से लटके।

10 बकरी के बाल के इन दोनों टुकड़ों को भी मिलाना है। इसके लिए हर टुकड़े के 45 फुटवाले एक किनारे पर पचास पचास हलके लगाना। 11 फिर पीतल की 50 हुकें बनाकर उनसे दोनों हिस्से मिलाना। 12 जब बकरियों के बालों का यह खैमा कपड़े के खैमे के ऊपर लगाया जाएगा तो आधा परदा बाकी रहेगा। वह खैमे की पिछली तरफ लटका रहे। 13 खैमे के दाईं और बाईं तरफ बकरी के बालों का खैमा कपड़े के खैमे की निसबत डेढ़ डेढ़ फुट लंबा होगा। यों वह दोनों तरफ लटके हुए कपड़े के खैमे को महफूज़ रखेगा।

14 एक दूसरे के ऊपर के इन दोनों खैमों की हिफाज़त के लिए दो गिलाफ़ बनाने हैं। बकरी के बालों के खैमे पर मेंढों की सुर्ख रँगी हुई खालें जोड़कर रखी जाएँ और उन पर तखस की खालें मिलाकर रखी जाएँ।

15 कीकर की लकड़ी के तख्ते बनाना जो खड़े किए जाएँ ताकि खैमे की दीवारों का काम दें। 16 हर तख्ते की ऊँचाई 15 फुट हो और चौड़ाई सवा दो फुट। 17 हर तख्ते के नीचे दो दो चूले हों। यह चूले हर तख्ते को उसके पाइयों के साथ जोड़ेगी ताकि तख्ता खड़ा रहे। 18 खैमे की जुनूबी दीवार के लिए 20 तख्तों की जरूरत है 19 और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों की। उन पर तख्ते खड़े किए जाएँगे। हर तख्ते के नीचे दो पाए होंगे, और हर पाए में एक चूल लगेगी। 20 इसी तरह खैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख्तों की जरूरत है 21 और साथ ही चाँदी के 40 पाइयों की। वह भी तख्तों को खड़ा करने के लिए हैं। हर तख्ते के नीचे दो पाए होंगे। 22 खैमे की पिछली यानी मगरिबी दीवार के लिए छः तख्ते बनाना। 23 इस दीवार को शिमाली और जुनूबी दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोनेवाले दो तख्ते बनाना। 24 इन दो तख्तों में नीचे से लेकर ऊपर तक कोना हो ताकि एक से शिमाली दीवार मगरिबी दीवार के साथ जुड़ जाएँ और दूसरे से जुनूबी दीवार मगरिबी दीवार के साथ। इनके ऊपर के सिरे कड़ों से मज़बूत किए जाएँ। 25 यों पिछले यानी मगरिबी तख्तों की पूरी तादाद 8 होगी और इनके लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख्ते के नीचे दो दो पाए होंगे।

26-27 इसके अलावा कीकर की लकड़ी के शहतीर बनाना, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच शहतीर। वह हर दीवार के तख्तों पर थोड़े लगाए जाएँ कि वह उन्हें एक दूसरे के साथ मिलाएँ। 28 दरमियानी शहतीर दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लगाया जाए। 29 शहतीरों को तख्तों के साथ लगाने के लिए सोने के कड़े बनाकर तख्तों में लगाना। तमाम तख्तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाना।

30 पूरे मुकद्दस खैमे को उसी नमूने के मुताबिक बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

### मुकद्दस खैमे के परदे

31 अब एक और परदा बनाना। इसके लिए भी बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा इस्तेमाल करना। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से करूबी फरिशतों का डिजायन बनवाना। 32 इसे सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी के चार सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर सोना चढ़ाया जाए और वह चाँदी के पाइयों पर खड़े हों। 33 यह परदा मुकद्दस कमरे को मुकद्दसतरिन कमरे से अलग करेगा जिसमें अहद का संदूक पड़ा रहेगा। परदे को लटकाने के बाद उसके पीछे मुकद्दसतरिन कमरे में अहद का संदूक रखना। 34 फिर अहद के संदूक पर कफ़फारे का ढकना रखना।

35 जिस मेज़ पर मेरे लिए मखसूस की गई रोटीयाँ पड़ी रहती हैं वह परदे के बाहर मुकद्दस कमरे में शिमाल की तरफ रखी जाए। उसके मुक़ाबिल जुनूब की तरफ शमादान रखा जाए।

36 फिर खैमे के दरवाज़े के लिए भी परदा बनाया जाए। इसके लिए भी बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा इस्तेमाल किया जाए। इस पर कढ़ाई का काम किया जाए। 37 इस परदे को सोने की हुकों से कीकर की लकड़ी के पाँच सतूनों से लटकाना। इन सतूनों पर भी सोना चढ़ाया जाए, और वह पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

## 27

### जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह

1 कीकर की लकड़ी की कुरबानगाह बनाना। उस की ऊँचाई साढ़े चार फुट हो जबकि उस की लंबाई और चौड़ाई साढ़े सात सात फुट हो। 2 उसके ऊपर चारों कोनों में से एक एक सींग निकले। सींग और कुरबानगाह एक ही टुकड़े के हों। सब पर पीतल चढ़ाना। 3 उसका तमाम साजो-सामान और बरतन भी पीतल के हों यानी राख को उठाकर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, काँटे, जलते हुए कोयले के लिए बरतन और छिड़काव के कटोरे।

4 कुरबानगाह को उठाने के लिए पीतल का जंगला बनाना जो ऊपर से खुला हो। जंगले के चारों कोनों पर कड़े लगाए जाएँ। 5 कुरबानगाह की आधी ऊँचाई पर किनारा लगाना, और कुरबानगाह को जंगले में इस किनारे तक रखा जाए। 6 उसे उठाने के लिए कीकर की दो लकड़ियाँ बनाना जिन पर पीतल चढ़ाना है। 7 उनको कुरबानगाह के दोनों तरफ के कड़ों में डाल देना।

8 पूरी कुरबानगाह लकड़ी की हो, लेकिन अंदर से खोखली हो। उसे ऐन उस नमूने के मुताबिक बनाना जो मैं तुझे पहाड़ पर दिखाता हूँ।

### खैमे का सहन

9 मुकद्दस खैमे के लिए सहन बनाना। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई जाए। चारदीवारी की लंबाई जूनब की तरफ 150 फुट हो। 10 कपड़े को चाँदी की हुकों और पट्टियों से लकड़ी के 20 खंबों के साथ लगाया जाए। हर खंबा पीतल के पाए पर खड़ा हो। 11 चारदीवारी शिमाल की तरफ भी इसी की मानिंद हो। 12 खैमे के पीछे मगरिब की तरफ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फुट हो और कपड़ा लकड़ी के 10 खंबों के साथ लगाया जाए। यह खंबे भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

13 सामने, मशरिक की तरफ जहाँ से सूरज तुलु होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फुट हो। 14-15 यहाँ चारदीवारी का दरवाजा हो। कपड़ा दरवाजे के दाईं तरफ साढ़े 22 फुट चौड़ा हो और उसके बाईं तरफ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ तीन तीन लकड़ी के खंबों के साथ लगाया जाए जो पीतल के पाइयों पर खड़े हों। 16 दरवाजे का परदा 30 फुट चौड़ा बनाना। वह नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया जाए, और उस पर कढ़ाई का काम हो। यह कपड़ा लकड़ी के चार खंबों के साथ लगाया जाए। वह भी पीतल के पाइयों पर खड़े हों।

17 तमाम खंबे पीतल के पाइयों पर खड़े हों और कपड़ा चाँदी की हुकों और पट्टियों से हर खंबे के साथ लगाया जाए। 18 चारदीवारी की लंबाई 150 फुट, चौड़ाई 75 फुट और ऊँचाई साढ़े 7 फुट हो। खंबों के तमाम पाए पीतल के हों। 19 जो भी साजो-सामान मुकद्दस खैमे में इस्तेमाल किया जाता है वह सब पीतल का हो। खैमे और चारदीवारी की मेखें भी पीतल की हों।

### शमादान का तेल

20 इसराइलियों को हुकम देना कि वह तेरे पास कूटे हुए जैतूनों का खालिस तेल लाएँ ताकि मुकद्दस कमरे के शमादान के चराग मुतवातिर जलते रहें। 21 हासून और उसके बेटे शमादान को मुलाकात के खैमे के मुकद्दस कमरे में रखें, उस परदे के सामने जिसके पीछे अहद का सद्क है। उसमें वह तेल डालते रहें ताकि वह रब के सामने शाम से लेकर सुबह तक जलता रहे। इसराइलियों का यह उसूल अबद तक कायम रहे।

## 28

### इमामों के लिबास

1 अपने भाई हासून और उसके बेटों नदब, अबीह, इलियज़र और इतमर को बुला। मैंने उन्हें इसराइलियों में से चुन लिया है ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी खिदमत करें। 2 अपने भाई हासून के लिए मुकद्दस लिबास बनवाना जो पुरवकार और शानदार हों। 3 लिबास बनाने की जिम्मादारी उन तमाम लोगों को देना जो ऐसे कामों में माहिर हैं और जिनको मैंने हिकमत की रूह से भर दिया है। क्योंकि जब हासून को मखसूस किया जाएगा और वह मुकद्दस खैमे की खिदमत संरजाम देगा तो उसे इन कपड़ों की ज़रूरत होगी।

4 उसके लिए यह लिबास बनाने हैं : सीने का कीसा, बालापोश, चोगा, बुना हुआ जेरजामा, पगड़ी और कमरबंद। यह कपड़े अपने भाई हासून और उसके बेटों के लिए बनवाने हैं ताकि वह इमाम के तौर पर खिदमत कर सकें। 5 इन कपड़ों के लिए सोना और नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

### हासून का बालापोश

6 बालापोश को भी सोने और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाना है। उस पर किसी माहिर कारीगर से कढ़ाई का काम करवाया जाए। 7 उस की दो पट्टियाँ हों जो कंधों पर रखकर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगी हों। 8 इसके अलावा एक पटका बुनना है जिससे बालापोश को बाँधा जाए और जो बालापोश के साथ एक टुकड़ा हो। उसके लिए भी सोना, नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया जाए।

9 फिर अक्रीके-अहमर के दो पत्थर चुनकर उन पर इसराईल के बारह बेटों के नाम कंदा करना। 10 हर जौहर पर छः छः नाम उनकी पैदाइश की तरतीब के मुताबिक कंदा किए जाएँ। 11 यह नाम उस तरह जौहरों पर कंदा किए जाएँ जिस तरह मुहर कंदा की जाती है। फिर दोनों जौहर सोने के खानों में जड़कर 12 बालापोश की दो पट्टियों पर ऐसे लगाना कि कंधों पर आ जाएँ। जब हास्न मेरे हज़ूर आएगा तो जौहरों पर के यह नाम उसके कंधों पर होंगे और मुझे इसराईलियों की याद दिलाएँगे।

13 सोने के खाने बनाना 14 और खालिस सोने की दो जंजीरें जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों। फिर इन दो जंजीरों को सोने के खानों के साथ लगाना।

### सिने का कीसा

15 सिने के लिए कीसा बनाना। उसमें वह कुरे पड़े रहें जिनकी मारिफत मेरी मरज़ी मालूम की जाएगी। माहिर कारीगर उसे उन्ही चीज़ों से बनाए जिनसे हास्न का बालापोश बनाया गया है यानी सोने और नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे और बारीक कतान से। 16 जब कपड़े को एक दफा तह किया गया हो तो कीसे की लंबाई और चौड़ाई नौ नौ इंच हो।

17 उस पर चार कतारों में जवाहर जड़ना। हर कतार में तीन तीन जौहर हों। पहली कतार में लाल, \* जबरजद † और ज़ुर्मुद। 18 दूसरी में फ़ीरोज़ा, संगे-लाजवर्द ‡ और हजस्त-कमर। § 19 तीसरी में ज़रकोन, \* अक्रीक † और याकूते-अरगवानी। ‡ 20 चौथी में पुखराज, § अक्रीके-अहमर \* और यशब। † हर जौहर सोने के खाने में जड़ा हुआ हो। 21 यह बारह जवाहर इसराईल के बारह कबीलों की नुमाइंदगी करते हैं। एक एक जौहर पर एक कबीले का नाम कंदा किया जाए। यह नाम उस तरह कंदा किए जाएँ जिस तरह मुहर कंदा की जाती है।

22 सिने के कीसे पर खालिस सोने की दो जंजीरें लगाना जो डोरी की तरह गुंधी हुई हों। 23 उन्हें लगाने के लिए दो कड़े बनाकर कीसे के ऊपर के दो कोनों पर लगाना। 24 अब दोनों जंजीरें उन दो कड़ों से लगाना। 25 उनके दूसरे सिरे बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों के दो खानों के साथ जोड़ देना, फिर सामने की तरफ लगाना। 26 कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के दो कड़े लगाना। वह अंदर, बालापोश की तरफ लगे हों। 27 अब दो और कड़े बनाकर बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों पर लगाना। यह भी सामने की तरफ लगे हों लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही। 28 सिने के कीसे के निचले कड़े नीली डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ बाँधे जाएँ। यों कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सिने के साथ लगा रहेगा।

29 जब भी हास्न मकदिस में दाखिल होकर रब के हज़ूर आएगा वह इसराईली कबीलों के नाम अपने दिल पर सिने के कीसे की सूत में साथ ले जाएगा। यों वह क्रौम की याद दिलाता रहेगा।

30 सिने के कीसे में दोनों कुरे बनाम ऊरीम और तुम्मिम रखे जाएँ। वह भी मकदिस में रब के सामने आते वक़्त हास्न के दिल पर हों। यों जब हास्न रब के हज़ूर होगा तो रब की मरज़ी पृच्छने का वसीला हमेशा उसके दिल पर होगा।

### हास्न का चोगा

31 चोगा भी बुनना। वह पूरी तरह नीले धागे से बनाया जाए। चोगे को बालापोश से पहले पहना जाए। 32 उसके ग्रेबान को बुने हुए कानर से मज़बूत किया जाए ताकि वह न फटे। 33 नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे से अनार बनाकर उन्हें चोगे के दामन में लगा देना। उनके दरमियान सोने की घंटियाँ लगाना। 34 दामन में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाना।

35 हास्न खिदमत करते वक़्त हमेशा चोगा पहने। जब वह मकदिस में रब के हज़ूर आएगा और वहाँ से निकलेगा तो घंटियाँ सुनाई देंगी। फिर वह नहीं मरेगा।

### माथे पर छोटी तख्ती, जेरजामा और पगड़ी

36 खालिस सोने की तख्ती बनाकर उस पर यह अलफ़ाज़ कंदा करना, 'रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस' यह अलफ़ाज़ यों कंदा किए जाएँ जिस तरह मुहर कंदा की जाती है। 37 उसे नीली डोरी से पगड़ी के सामनेवाले हिस्से से लगाया जाए 38 ताकि वह हास्न के माथे पर पड़ी रहे। जब भी वह मकदिस में जाए तो यह तख्ती साथ हो। जब इसराईली अपने नज़राने लाकर रब

\* 28:17 या एक किस्म का सुर्ख अक्रीक। याद रहे कि चूँकि क़दमी ज़माने के अकसर जवाहरात के नाम मत्सक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़लिफ़ तरज़ुमा हो सकता है। † 28:17 peridot ‡ 28:18 lapis lazuli § 28:18 moonstone \* 28:19 hyacinth † 28:19 agate ‡ 28:19 amethyst § 28:20 topas \* 28:20 carnelian † 28:20 jasper



के लिए मखसूस करें लेकिन किसी गलती के बाइस कुसूरवार हों तो उनका यह कुसूर हासून पर मुंतकिल होगा। इसलिए यह तख्ती हर वक़्त उसके माथे पर हो ताकि रब इसराईलियों को कबूल कर ले।

39 जेरजामे को बारीक कतान से बुनना और इस तरह पगड़ी भी। फिर कमरबंद बनाना। उस पर कढाई का काम किया जाए।

### बाकी लिबास

40 हासून के बेटों के लिए भी जेरजामे, कमरबंद और पगड़ियाँ बनाना ताकि वह पुरवकार और शानदार नज़र आएँ। 41 यह सब अपने भाई हासून और उसके बेटों को पहनाना। उनके सरों पर तेल उंडेलकर उन्हें मसह करना। यों उन्हें उनके ओहदे पर मुकर्रर करके मेरी खिदमत के लिए मखसूस करना।

42 उनके लिए कतान के पाजामे भी बनाना ताकि वह जेरजामे के नीचे नंगे न हों। उनकी लंबाई कमर से रान तक हो। 43 जब भी हासून और उसके बेटे मुलाकात के खैमे में दाखिल हों तो उन्हें यह पाजामे पहनने हैं। इसी तरह जब उन्हें मुकद्दस कमरे में खिदमत करने के लिए कुरबानगाह के पास आना होता है तो वह यह पहनें, वरना वह कुसूरवार ठहरकर मर जाएंगे। यह हासून और उस की औलाद के लिए एक अबदी उसूल है।

## 29

### इमामों की मखसूसियत

1 इमामों को मकदिस में मेरी खिदमत के लिए मखसूस करने का यह तरीका है :

एक जवान बैल और दो बेऐब मेढे चुन लेना। 2 बेहतरीन मैदे से तीन किसम की चीजें पकाना जिनमें खमीर न हो। पहले, सादा रोटी। दूसरे, रोटी जिसमें तेल डाला गया हो। तीसरे, रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो। 3 यह चीजें टोकरी में रखकर जवान बैल और दो मेंढों के साथ रब को पेश करना। 4 फिर हासून और उसके बेटों को मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर लाकर गुस्त कराना। 5 इसके बाद जेरजामा, चोगा, बालापोश और सीने का कीसा लेकर हासून को पहनाना। बालापोश को उसके महारत से बुने हुए पटके के जरीए बाँधना। 6 उसके सर पर पगड़ी बाँधकर उस पर सोने की मुकद्दस तख्ती लगाना। 7 हासून के सर पर मसह का तेल उंडेलकर उसे मसह करना।

8 फिर उसके बेटों को आगे लाकर जेरजामा पहनाना। 9 उनके पगड़ियाँ और कमरबंद बाँधना। यों तू हासून और उसके बेटों को उनके मंसब पर मुकर्रर करना। सिर्फ वह और उनकी औलाद हमेशा तक मकदिस में मेरी खिदमत करते रहें।

10 बैल को मुलाकात के खैमे के सामने लाना। हासून और उसके बेटे उसके सर पर अपने हाथ रखें। 11 उसे खैमे के दरवाजे के सामने रब के हज़ूर ज़बह करना। 12 बैल के खून में से कुछ लेकर अपनी उँगली से कुरबानगाह के सींगों पर लगाना और बाकी खून कुरबानगाह के पाए पर उंडेल देना। 13 अंतडियों पर की तमाम चरबी, जोड़कलेजी और दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत लेकर कुरबानगाह पर जला देना। 14 लेकिन बैल के गोशत, खाल और अंतडियों के गोबर को खैमागाह के बाहर जला देना। यह गुनाह की कुरबानी है।

15 इसके बाद पहले मेढे को ले आना। हासून और उसके बेटे अपने हाथ मेढे के सर पर रखें। 16 उसे ज़बह करके उसका खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कना। 17 मेढे को टुकड़े टुकड़े करके उस की अंतडियों और पिंडलियों को धोना। फिर उन्हें सर और बाकी टुकड़ों के साथ मिलाकर 18 पूरे मेढे को कुरबानगाह पर जला देना। जलनेवाली यह कुरबानी रब के लिए भस्म होनेवाली कुरबानी है, और उस की खुशबू रब को पसंद है।

19 अब दूसरे मेढे को ले आना। हासून और उसके बेटे अपने हाथ मेढे के सर पर रखें। 20 उसको ज़बह करना। उसके खून में से कुछ लेकर हासून और उसके बेटों के दहने कान की लौ पर लगाना। इसी तरह खून को उनके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर भी लगाना। बाकी खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कना। 21 जो खून कुरबानगाह पर पड़ा है उसमें से कुछ लेकर और मसह के तेल के साथ मिलाकर हासून और उसके कपड़ों पर छिड़कना। इसी तरह उसके बेटों और उनके कपड़ों पर भी छिड़कना। यों वह और उसके बेटे खिदमत के लिए मखसूसी-मुकद्दस हो जाएंगे।

22 इस मेढे का खास मक़सद यह है कि हासून और उसके बेटों को मकदिस में खिदमत करने का इख्तियार और ओहदा दिया जाए। मेढे की चरबी, दूध, अंतडियों पर की सारी चरबी, जोड़कलेजी, दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत और दहनी रान अलग करनी है। 23 उस टोकरी में से जो रब के हज़ूर यानी खैमे के दरवाजे पर पड़ी है एक सादा रोटी, एक रोटी जिसमें तेल डाला गया हो और एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो निकालना। 24 मेढे से अलग की गई चीजें और बेखमीरी रोटी की टोकरी की यह चीजें लेकर हासून और उसके बेटों के हाथों में देना, और वह उन्हें हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाएँ। 25 फिर यह चीजें उनसे वापस लेकर भस्म होनेवाली कुरबानी के साथ कुरबानगाह पर जला देना। यह रब के लिए जलनेवाली कुरबानी है, और उस की खुशबू रब को पसंद है।

26 अब उस मेंढे का सीना लेना जिसकी मारिफत हासून को इमामे-आज़म का इख्तियार दिया जाता है। सीने को भी हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाना। यह सीना कुरबानी का तेरा हिस्सा होगा। 27 यों तुझे हासून और उसके बेटों की मखसूसियत के लिए मुस्तामल मेंढे के टुकड़े मखसूसो-मुकद्दस करने हैं। उसके सीने को रब के सामने हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर हिलाया जाए और उस की रान को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर उठाया जाए। 28 हासून और उस की औलाद को इसराईलियों की तरफ से हमेशा तक यह मिलने का हक है। जब भी इसराईली रब को अपनी सलामती की कुरबानियाँ पेश करें तो इमामों को यह दो टुकड़े मिलेंगे।

29 जब हासून फौत हो जाएगा तो उसके मुकद्दस लिबास उस की औलाद में से उस मर्द को देने हैं जिसे मसह करके हासून की जगह मुक़र्र किया जाएगा। 30 जो बेटा उस की जगह मुक़र्र किया जाएगा और मकदिस में खिदमत करने के लिए मुलाकात के ख़ैमे में आएगा वह यह लिबास सात दिन तक पहने रहे।

31 जो मेंढा हासून और उसके बेटों की मखसूसियत के लिए ज़बह किया गया है उसे मुकद्दस जगह पर उबालना है। 32 फिर हासून और उसके बेटे मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर मेंढे का गोशत और टोकर्री की बेखमीरी रोटियाँ खाएँ। 33 वह यह चीज़ें खाएँ जिनसे उन्हें गुनाहों का कफ़ारा और इमाम का ओहदा मिला है। लेकिन कोई और यह न खाए, क्योंकि यह मखसूसो-मुकद्दस है। 34 और अगर अगली सुबह तक इस गोशत या रोटी में से कुछ बच जाए तो उसे जलाया जाए। उसे खाना मना है, क्योंकि वह मुकद्दस है।

35 जब तू हासून और उसके बेटों को इमाम मुक़र्र करेगा तो ऐन मेरी हिदायत पर अमल करना। यह तकरीब सात दिन तक मनाई जाए। 36 इसके दौरान गुनाह की कुरबानी के तौर पर रोज़ाना एक जवान बैल ज़बह करना। इससे तू कुरबानगाह का कफ़ारा देकर उसे हर तरह की नापाकी से पाक करेगा। इसके अलावा उस पर मसह का तेल उंडेलना। इससे वह भेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस हो जाएगा। 37 सात दिन तक कुरबानगाह का कफ़ारा देकर उसे पाक-साफ़ करना और उसे तेल से मखसूसो-मुकद्दस करना। फिर कुरबानगाह निहायत मुकद्दस होगी। जो भी उसे छुएगा वह भी मखसूसो-मुकद्दस हो जाएगा।

### रोज़मर्रा की कुरबानियाँ

38 रोज़ाना एक एक साल के दो भेड़ के नर बच्चे कुरबानगाह पर जला देना, 39 एक को सुबह के वक़्त, दूसरे को सूरज के ग़रब होने के ऐन बाद। 40 पहले जानवर के साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश किया जाए जो कूटे हुए ज़ैतूनों के एक लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। मै की नज़र के तौर पर एक लिटर मै भी कुरबानगाह पर उंडेलना। 41 दूसरे जानवर के साथ भी गल्ला और मै की यह दो नज़रें पेश की जाएँ। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है।

42 लाज़िम है कि आनेवाली तमाम नसलें भस्म होनेवाली यह कुरबानी बाकायदगी से मुकद्दस ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के हज़ूर चढ़ाएँ। वहाँ मैं तुमसे मिला करूँगा और तुमसे हमकलाम हूँगा। 43 वहाँ मैं इसराईलियों से भी मिला करूँगा, और वह जगह भेरे जलाल से मखसूसो-मुकद्दस हो जाएगी। 44 यों मैं मुलाकात के ख़ैमे और कुरबानगाह को मखसूस करूँगा और हासून और उसके बेटों को मखसूस करूँगा ताकि वह इमामों की हैसियत से मेरी खिदमत करें।

45 तब मैं इसराईलियों के दरमियान रहूँगा और उनका ख़ुदा हूँगा। 46 वह जान लेंगे कि मैं रब उनका ख़ुदा हूँ, कि मैं उन्हें मिसर से निकाल लाया ताकि उनके दरमियान सुक़नत करूँ। मैं रब उनका ख़ुदा हूँ।

## 30

### बख़ूर जलाने की कुरबानगाह

1 कीकर की लकड़ी की कुरबानगाह बनाना जिस पर बख़ूर जलाया जाए। 2 वह डेढ़ फुट लंबी, इतनी ही चौड़ी और तीन फुट ऊँची हो। उसके चारों कोनों में से सींग निकलें जो कुरबानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए हों। 3 उस की ऊपर की सतह, उसके चार पहलुओं और उसके सींगों पर खालिस सोना चढ़ाना। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द सोने की झालर हो। 4 सोने के दो कड़े बनाकर इन्हें उस झालर के नीचे एक दूसरे के मुक़ाबिल पहलुओं पर लगाना। इन कड़ों में कुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली जाएँगी। 5 यह लकड़ियाँ कीकर की हों, और उन पर भी सोना चढ़ाना।

6 इस कुरबानगाह को ख़ैमे के मुकद्दस कमरे में उस परदे के सामने रखना जिसके पीछे अहद का संदूक और उसका ढकना होंगे, वह ढकना जहाँ मैं तुझसे मिला करूँगा। 7 जब हासून हर सुबह शमादान के चरागा तैयार करे उस वक़्त वह उस पर खुशबूदार बख़ूर जलाए। 8 सूरज के ग़रब होने के बाद भी जब वह दुबारा चरागों की देख-भाल करेगा तो वह साथ साथ बख़ूर जलाए। यों रब के सामने बख़ूर मुतवातिर जलता रहे। लाज़िम है कि बाद की नसलें भी इस उसूल पर कायम रहें।

9 इस कुरबानगाह पर सिर्फ़ जायज़ बख़ूर इस्तेमाल किया जाए। इस पर न तो जानवरों की कुरबानियाँ चढ़ाई जाएँ, न गल्ला या मै की नज़रें पेश की जाएँ। 10 हासून साल में एक दफ़ा उसका कफ़ारा देकर उसे पाक करे। इसके लिए वह कफ़ारे के

दिन उस कुरबानी का कुछ खून सींगों पर लगाए। यह उसूल भी अबद तक कायम रहे। यह कुरबानगाह रब के लिए निहायत मुकद्दस है।”

### मर्दमशुमारी के पैसे

11 रब ने मुसा से कहा, 12 “जब भी तू इसराईलियों की मर्दमशुमारी करे तो लाज़िम है कि जिनका शुमार किया गया हो वह रब को अपनी जान का फ़िधा दें ताकि उनमें वबा न फैले। 13 जिस जिसका शुमार किया गया हो वह चाँदी के आधे सिक्के के बराबर रकम उठानेवाली कुरबानी के तौर पर दे। सिक्के का वज़न मक़दिस के सिक्कों के बराबर हो। यानी चाँदी के सिक्के का वज़न 11 ग्राम हो, इसलिए छः ग्राम चाँदी देनी है। 14 जिसकी भी उम्र 20 साल या इससे ज़ायद हो वह रब को यह रकम उठानेवाली कुरबानी के तौर पर दे। 15 अमीर और गरीब दोनों इतना ही दें, क्योंकि यहीं नज़राना रब को पेश करने से तुम्हारी जान का कफ़फ़ारा दिया जाता है। 16 कफ़फ़ारे की यह रकम मुलाकात के ख़ैमे की खिदमत के लिए इस्तेमाल करना। फिर यह नज़राना रब को याद दिलाता रहेगा कि तुम्हारी जानों का कफ़फ़ारा दिया गया है।”

### धोने का हौज़

17 रब ने मुसा से कहा, 18 “पीतल का ढाँचा बनाना जिस पर पीतल का हौज़ बनाकर रखना है। यह हौज़ धोने के लिए है। उसे सहन में मुलाकात के ख़ैमे और जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह के दरमियान रखकर पानी से भर देना। 19 हासून और उसके बेटे अपने हाथ-पाँव धोने के लिए उसका पानी इस्तेमाल करें। 20 मुलाकात के ख़ैमे में दाख़िल होने से पहले ही वह अपने आपको धोएँ वरना वह मर जाएंगे। इसी तरह जब भी वह ख़ैमे के बाहर की कुरबानगाह पर जानवरों की कुरबानियों चढ़ाएँ 21 तो लाज़िम है कि पहले हाथ-पाँव धो लें, वरना वह मर जाएंगे। यह उसूल हासून और उस की औलाद के लिए हमेशा तक कायम रहे।”

### मसह का तेल

22 रब ने मुसा से कहा, 23 “मसह के तेल के लिए उम्दा क्रिस्म के मसाले इस्तेमाल करना। 6 किलोग्राम आबे-मुर, 3 किलोग्राम ख़ुशबूदार दारचीनी, 3 किलोग्राम ख़ुशबूदार बेद 24 और 6 किलोग्राम तेजपात। यह चीज़ें मक़दिस के बाटों के हिसाब से तोलकर चार लिटर जैतून के तेल में डालना। 25 सब कुछ मिलाकर ख़ुशबूदार तेल तैयार करना। वह मुक़द्दस है और सिर्फ़ उस वक़्त इस्तेमाल किया जाए जब कोई चीज़ या शख्स मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए।

26 यही तेल लेकर मुलाकात का ख़ैमा और उसका सारा सामान मसह करना यानी ख़ैमा, अहद का संदूक, 27 मेज़ और उसका सामान, शमादान और उसका सामान, बख़ूर जलाने की कुरबानगाह, 28 जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह और उसका सामान, धोने का हौज़ और उसका ढाँचा। 29 यों तू यह तमाम चीज़ें मख़सूसो-मुक़द्दस करेगा। इससे वह निहायत मुक़द्दस हो जाएगी। जो भी उन्हें छुएगा वह मुक़द्दस हो जाएगा।

30 हासून और उसके बेटों को भी इस तेल से मसह करना ताकि वह मुक़द्दस होकर मेरे लिए इमाम का काम संरजाम दे सकें। 31 इसराईलियों को कह दे कि यह तेल हमेशा तक मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। 32 इसलिए इसे अपने लिए इस्तेमाल न करना और न इस तरकीब से अपने लिए तेल बनाना। यह तेल मख़सूसो-मुक़द्दस है और तुम्हें भी इसे यों ठहराना है। 33 जो इस तरकीब से आम इस्तेमाल के लिए तेल बनाता है या किसी आम शख्स पर लगाता है उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।”

### बख़ूर की कुरबानी

34 रब ने मुसा से कहा, “बख़ूर इस तरकीब से बनाना है : मस्तकी, ओनिका, \* बिरिजा और खालिस लुबान बराबर के हिस्सों में 35 मिलाकर ख़ुशबूदार बख़ूर बनाना। इत्रसाज़ का यह काम नमकीन, खालिस और मुक़द्दस हो। 36 इसमें से कुछ पीसकर पौडर बनाना और मुलाकात के ख़ैमे में अहद के संदूक के सामने डालना जहाँ मैं तुझसे मिला करूँगा।

इस बख़ूर को मुक़द्दसतरीन ठहराना। 37 इसी तरकीब के मुताबिक़ अपने लिए बख़ूर न बनाना। इसे रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस ठहराना है। 38 जो भी अपने ज़ाती इस्तेमाल के लिए इस क्रिस्म का बख़ूर बनाए उसे उस की क़ौम में से मिटा डालना है।”

## 31

### बज़लियेल और उहलियाब

\* 30:34 onycha (unguis odoratus)

1 फिर रब ने मूसा से कहा, 2 “मैंने यहदाह के कबीले के बजलियेल बिन ऊरी बिन हर को चुन लिया है ताकि वह मुकद्दस खैमे की तामीर में राहनुमाई करे। 3 मैंने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। 4 वह नक्रशे बनाकर उनके मुताबिक सोने, चाँदी और पीतल की चीज़ें बना सकता है। 5 वह जवाहर को काटकर जड़ने की काबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराशकर उससे मुव्वल्लिफ चीज़ें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है।

6 साथ ही मैंने दान के कबीले के उहलियाब बिन अखी-समक को मुकरूर किया है ताकि वह हर काम में उस की मदद करे। इसके अलावा मैंने तमाम समझदार कारीगरों को महारत दी है ताकि वह सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बना सकें जो मैंने तुझे दी हैं। 7 यानी मुलाकात का खैमा, कफफारे के ढकने समेत अहद का संदूक और खैमे का सारा दूसरा सामान, 8 मेज़ और उसका सामान, खालिस सोने का शमादान और उसका सामान, बखूर जलाने की कुरबानगाह, 9 जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह और उसका सामान, धोने का हौज़ उस ढाँचे समेत जिस पर वह रखा जाता है, 10 वह लिबास जो हासून और उसके बेटे मकदिस में खिदमत करने के लिए पहनते हैं, 11 मसह का तेल और मकदिस के लिए खुशबदार बखूर। यह सब कुछ वह वैसे ही बनाएँ जैसे मैंने तुझे हुक्म दिया है।”

### सबत यानी हफ़ते का दिन

12 रब ने मूसा से कहा, 13 “इसराईलियों को बता कि हर सबत का दिन जरूर मनाओ। क्योंकि सबत का दिन एक नुमायों निशान है जिससे जान लिया जाएगा कि मैं रब हूँ जो तुम्हें मखूससो-मुकद्दस करता हूँ। और यह निशान मेरे और तुम्हारे दरमियान नसल-दर-नसल कायम रहेगा। 14 सबत का दिन जरूर मनाना, क्योंकि वह तुम्हारे लिए मखूससो-मुकद्दस है। जो भी उस की बेहुरमती करे वह जरूर जान से मारा जाए। जो भी इस दिन काम करे उसे उस की कौम में से मिटाया जाए। 15 छः दिन काम करना, लेकिन सातवें दिन आराम का दिन है। वह रब के लिए मखूससो-मुकद्दस है।

16 इसराईलियों को हाल में और मुस्तकबिल में सबत का दिन अबदी अहद समझकर मनाना है। 17 वह मेरे और इसराईलियों के दरमियान अबदी निशान होगा। क्योंकि रब ने छः दिन के दौरान आसमानो-ज़मीन को बनाया जबकि सातवें दिन उसने आराम किया और ताजादम हो गया।”

### रब शरीअत की तख्तियों देता है

18 यह सब कुछ मूसा को बताने के बाद रब ने उसे सीना पहाड़ पर शरीअत की दो तख्तियाँ दीं। अल्लाह ने खुद पत्थर की इन तख्तियों पर तमाम बातें लिखी थीं।

## 32

### सोने का बछड़ा

1 पहाड़ के दामन में लोग मूसा के इंतज़ार में रहे, लेकिन बहुत देर हो गई। एक दिन वह हासून के गिर्द जमा होकर कहने लगे, “आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।”

2 जवाब में हासून ने कहा, “आपकी बीवियाँ, बेटे और बेटियाँ अपनी सोने की बालियाँ उतारकर मेरे पास ले आएँ।” 3 सब लोग अपनी बालियाँ उतार उतारकर हासून के पास ले आए 4 तो उसने यह जेवरत लेकर बछड़ा ढाल दिया। बछड़े को देखकर लोग बोल उठे, “ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।”

5 जब हासून ने यह देखा तो उसने बछड़े के सामने कुरबानगाह बनाकर एलान किया, “कल हम रब की ताज़ीम में ईद मनाएँगे।” 6 अगले दिन लोग सुबह-सवेरे उठे और भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाईं। वह खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।

### मूसा अपनी कौम की शफाअत करता है

7 उस वक्त रब ने मूसा से कहा, “पहाड़ से उतर जा। तेरे लोग जिन्हें तू मिसर से निकाल लाया बड़ी शरारतें कर रहे हैं। 8 वह कितनी जल्दी से उस रास्ते से हट गए हैं जिस पर चलने के लिए मैंने उन्हें हुक्म दिया था। उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाकर उसे सिजदा किया है। उन्होंने उसे कुरबानियाँ पेश करके कहा है, ‘ऐ इसराईल, यह तेरे देवता हैं। यही तुझे मिसर से निकाल लाए हैं।’” 9 अल्लाह ने मूसा से कहा, “मैंने देखा है कि यह कौम बड़ी हटधर्म है। 10 अब मुझे रोकने की कोशिश न कर। मैं उन पर अपना आज्ञाकंडेलकर उनको रूप-ज़मीन पर से मिटा दूँगा। उनकी जगह मैं तुझसे एक बड़ी कौम बना दूँगा।”

11 लेकिन मूसा ने कहा, “ऐ रब, तू अपनी क्रौम पर अपना गुस्सा क्यों उतारना चाहता है? तू खुद अपनी अजीम कुदरत से उसे मिसर से निकाल लाया है। 12 मिसरी क्यों कहें, ‘रब इसराईलियों को सिर्फ इस बुरे मकसद से हमारे मुल्क से निकाल ले गया है कि उन्हें पहाड़ी इलाके में मार डाले और यों उन्हें रूप-जमीन पर से मिटाए’? अपना गुस्सा ठंडा होने दे और अपनी क्रौम के साथ बुरा सुल्क करने से बाज़ रह। 13 याद रख कि तूने अपने खादिमों इब्राहीम, इसहाक और याकूब से अपनी ही कसम खाकर कहा था, ‘मैं तुम्हारी औलाद की तादाद यों बढ़ाऊँगा कि वह आसमान के सितारों के बराबर हो जाएगी। मैं उन्हें वह मुल्क दूँगा जिसका वादा मैंने किया है, और वह उसे हमेशा के लिए मीरास में पाएँगे।’”

14 मूसा के कहने पर रब ने वह नहीं किया जिसका एलान उसने कर दिया था बल्कि वह अपनी क्रौम से बुरा सुल्क करने से बाज़ रहा।

### बुतपरस्ती के नतायज

15 मूसा मुडकर पहाड़ से उतरा। उसके हाथों में शरीअत की दोनों तख्तियाँ थीं। उन पर आगे पीछे लिखा गया था।

16 अल्लाह ने खुद तख्तियों को बनाकर उन पर अपने अहकाम कंदा किए थे।

17 उतरते उतरते यशुअ ने लोगों का शोर सुना और मूसा से कहा, “खैमागाह में जंग का शोर मच रहा है!” 18 मूसा ने जवाब दिया, “न तो यह फ़तहमंदों के नारे हैं, न शिकस्त खाए हुए ओं की चीख-पुकार। मुझे गानेवालों की आवाज़ सुनाई दे रही है।”

19 जब वह खैमागाह के नज़दीक पहुँचा तो उसने लोगों को सोने के बछड़े के सामने नाचते हुए देखा। बड़े गुस्से में आकर उसने तख्तियों को ज़मीन पर पटख दिया, और वह टुकड़े टुकड़े होकर पहाड़ के दामन में गिर गईं। 20 मूसा ने इसराईलियों के बनाए हुए बछड़े को जला दिया। जो कुछ बच गया उसे उसने पीस पीसकर पौडर बना डाला और पौडर पानी पर छिड़ककर इसराईलियों को पिला दिया।

21 उसने हासून से पूछा, “इन लोगों ने तुम्हारे साथ क्या किया कि तुमने उन्हें ऐसे बड़े गुनाह में फँसा दिया?” 22 हासून ने कहा, “मेरे आका। गुस्से न हों। आप खुद जानते हैं कि यह लोग बदी पर तुले रहते हैं। 23 उन्होंने मुझसे कहा, ‘हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।’ 24 इसलिए मैंने उनको बताया, ‘जिसके पास सोने के ज़ेवरात हैं वह उन्हें उतार लाए।’ जो कुछ उन्होंने मुझे दिया उसे मैंने आग में फेंक दिया तो होते होते सोने का यह बछड़ा निकल आया।”

25 मूसा ने देखा कि लोग बेकाबू हो गए हैं। क्योंकि हासून ने उन्हें बेलगाम छोड़ दिया था, और यों वह इसराईल के दुश्मनों के लिए मज़ाक का निशाना बन गए थे। 26 मूसा खैमागाह के दरवाज़े पर खड़े होकर बोला, “जो भी रब का बंदा है वह मेरे पास आए।” जवाब में लावी के कबीले के तमाम लोग उसके पास जमा हो गए। 27 फिर मूसा ने उनसे कहा, “रब इसराईल का खुदा फरमाता है, ‘हर एक अपनी तलवार लेकर खैमागाह में से गुज़रे। एक सिरे के दरवाज़े से शुरू करके दूसरे सिरे के दरवाज़े तक चलते चलते हर मिलनेवाले को जान से मार दो, चाहे वह तुम्हारा भाई, दोस्त या रिश्तेदार ही क्यों न हो। फिर मुडकर मारते मारते पहले दरवाज़े पर वापस आ जाओ।’”

28 लावियों ने मूसा की हिदायत पर अमल किया तो उस दिन तकरीबन 3,000 मर्द हलाक हुए। 29 यह देखकर मूसा ने लावियों से कहा, “आज अपने आपको मकदिस में रब की खिदमत करने के लिए मखसूसो-मुकद्दस करो, क्योंकि तुम अपने बेटों और भाइयों के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार थे। इसलिए रब तुमको आज बरकत देगा।”

30 अगले दिन मूसा ने इसराईलियों से बात की, “तुमने निहायत संगीन गुनाह किया है। तो भी मैं अब रब के पास पहाड़ पर जा रहा हूँ। शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़फ़ारा दे सकूँ।”

31 चुनौचे मूसा ने रब के पास वापस जाकर कहा, “हाय, इस क्रौम ने निहायत संगीन गुनाह किया है। उन्होंने अपने लिए सोने का देवता बना लिया। 32 मेहरबानी करके उन्हें मुआफ़ कर। लेकिन अगर तू उन्हें मुआफ़ न करे तो फिर मुझे भी अपनी उस किताब में से मिटा दे जिसमें तूने अपने लोगों के नाम दर्ज किए हैं।” 33 रब ने जवाब दिया, “मैं सिर्फ उसको अपनी किताब में से मिटाता हूँ जो मेरा गुनाह करता है। 34 अब जा, लोगों को उस जगह ले चल जिसका ज़िक्र मैंने किया है। मेरा फ़रिशता तेरे आगे आगे चलेगा। लेकिन जब सज़ा का मुक़र्रर दिन आएगा तब मैं उन्हें सज़ा दूँगा।”

35 फिर रब ने इसराईलियों के दरमियान वबा फैलने दी, इसलिए कि उन्होंने उस बछड़े की पूजा की थी जो हासून ने बनाया था।

## 33

1 रब ने मूसा से कहा, “इस जगह से रवाना हो जा। उन लोगों को लेकर जिनको तू मिसर से निकाल लाया है उस मुल्क को जा जिसका वादा मैंने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया है। उन्हीं से मैंने कसम खाकर कहा था, ‘मैं यह मुल्क तुम्हारी

औलाद को दूँगा।<sup>2</sup> मैं तेरे आगे आगे फरिश्ता भेजकर कनानी, अमोरी, हिती, फरिज़्जी, हिल्वी और यबूसी अकवाम को उस मुल्क से निकाल दूँगा।<sup>3</sup> उठ, उस मुल्क को जा जहाँ दूध और शहद की कसरत है। लेकिन मैं साथ नहीं जाऊँगा। तुम इतने हटधर्म हो कि अगर मैं साथ जाऊँ तो खतरा है कि तुम्हें वहाँ पहुँचने से पहले ही बरबाद कर दूँ।”

<sup>4</sup> जब इसराईलियों ने यह सख्त अलफाज़ सुने तो वह मातम करने लगे। किसी ने भी अपने जेवर न पहने, <sup>5</sup> क्योंकि रब ने मूसा से कहा था, “इसराईलियों को बता कि तुम हटधर्म हो। अगर मैं एक लमहा भी तुम्हारे साथ चलूँ तो खतरा है कि मैं तुम्हें तबाह कर दूँ। अब अपने जेवरात उतार डालो। फिर मैं फ़ैसला करूँगा कि तुम्हारे साथ क्या किया जाए।”

<sup>6</sup> इन अलफाज़ पर इसराईलियों ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर अपने जेवर उतार दिए।

### मुलाकात का खैमा

<sup>7</sup> उस वक़्त मूसा ने खैमा लेकर उसे कुछ फासले पर खैमागाह के बाहर लगा दिया। उसने उसका नाम ‘मुलाकात का खैमा’ रखा। जो भी रब की मरज़ी दरियाफ़्त करना चाहता वह खैमागाह से निकलकर वहाँ जाता। <sup>8</sup> जब भी मूसा खैमागाह से निकलकर वहाँ जाता तो तमाम लोग अपने खैमों के दरवाज़ों पर खड़े होकर मूसा के पीछे देखने लगते। उसके मुलाकात के खैमे में ओझल होने तक वह उसे देखते रहते।

<sup>9</sup> मूसा के खैमे में दाखिल होने पर बादल का सतन उतरकर खैमे के दरवाज़े पर ठहर जाता। जितनी देर तक रब मूसा से बातें करता उतनी देर तक वह वहाँ ठहरा रहता। <sup>10</sup> जब इसराईली मुलाकात के खैमे के दरवाज़े पर बादल का सतन देखते तो वह अपने अपने खैमे के दरवाज़े पर खड़े होकर सिजदा करते। <sup>11</sup> रब मूसा से स्वरू बातें करता था, ऐसे शख्स की तरह जो अपने दोस्त से बातें करता है। इसके बाद मूसा निकलकर खैमागाह को वापस चला जाता। लेकिन उसका जवान मददगार यशुअ बिन नून खैमे को नहीं छोड़ता था।

### मूसा रब का जलाल देखता है

<sup>12</sup> मूसा ने रब से कहा, “देख, तू मुझे कहता आया है कि इस कौम को कनान ले चला। लेकिन तू मेरे साथ किस को भेजेगा? तूने अब तक यह बात मुझे नहीं बताई हालाँकि तूने कहा है, ‘मैं तुझे बनाम जानता हूँ, तुझे मेरा करम हासिल हुआ है।’<sup>13</sup> अगर मुझे वाकई तेरा करम हासिल है तो मुझे अपने रास्ते दिखा ताकि मैं तुझे जान लूँ और तेरा करम मुझे हासिल होता रहे। इस बात का खयाल रख कि यह कौम तेरी ही उम्मत है।”

<sup>14</sup> रब ने जवाब दिया, “मैं खुद तेरे साथ चलूँगा और तुझे आराम दूँगा।” <sup>15</sup> मूसा ने कहा, “अगर तू खुद साथ नहीं चलेगा तो फिर हमें यहाँ से रवाना न करना।<sup>16</sup> अगर तू हमारे साथ न जाए तो किस तरह पता चलेगा कि मुझे और तेरी कौम को तेरा करम हासिल हुआ है? हम सिर्फ़ इसी वजह से दुनिया की दीगर कौमों से अलग और मुमताज़ हैं।”

<sup>17</sup> रब ने मूसा से कहा, “मैं तेरी यह दरख़ास्त भी पूरी करूँगा, क्योंकि तुझे मेरा करम हासिल हुआ है और मैं तुझे बनाम जानता हूँ।”

<sup>18</sup> फिर मूसा बोला, “बराहे-करम मुझे अपना जलाल दिखा।” <sup>19</sup> रब ने जवाब दिया, “मैं अपनी पूरी भलाई तेरे सामने से गुज़रने दूँगा और तेरे सामने ही अपने नाम रब का एलान करूँगा। मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता हूँ, और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता हूँ।<sup>20</sup> लेकिन तू मेरा चेहरा नहीं देख सकता, क्योंकि जो भी मेरा चेहरा देखे वह ज़िंदा नहीं रह सकता।” <sup>21</sup> फिर रब ने फ़रमाया, “देख, मेरे पास एक जगह है। वहाँ की चटान पर खड़ा हो जा।<sup>22</sup> जब मेरा जलाल वहाँ से गुज़रेगा तो मैं तुझे चटान के एक शिगाफ़ में रखूँगा और अपना हाथ तेरे ऊपर फैलाऊँगा ताकि तू मेरे गुज़रने के दौरान महफूज़ रहे।<sup>23</sup> इसके बाद मैं अपना हाथ हटाऊँगा और तू मेरे पीछे देख सकेगा। लेकिन मेरा चेहरा देखा नहीं जा सकता।”

## 34

### पत्थर की नई तख्तियाँ

<sup>1</sup> रब ने मूसा से कहा, “अपने लिए पत्थर की दो तख्तियाँ तराश ले जो पहली दो की मानिंद हों। फिर मैं उन पर वह अलफाज़ लिखूँगा जो पहली तख्तियों पर लिखे थे जिन्हें तूने पटख दिया था।<sup>2</sup> सुबह तक तैयार होकर सीना पहाड़ पर चढ़ना। चोटी पर मेरे सामने खड़ा हो जा।<sup>3</sup> तेरे साथ कोई भी न आए बल्कि पूरे पहाड़ पर कोई और शख्स नज़र न आए, यहाँ तक कि भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल भी पहाड़ के दामन में न चरें।”

<sup>4</sup> चुनौतें मूसा ने दो तख्तियाँ तराश ली जो पहली की मानिंद थी। फिर वह सुबह-सवेरे उठकर सीना पहाड़ पर चढ़ गया जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था। उसके हाथों में पत्थर की दोनों तख्तियाँ थी।<sup>5</sup> जब वह चोटी पर पहुँचा तो रब बादल में उतर आया और उसके पास खड़े होकर अपने नाम रब का एलान किया।<sup>6</sup> मूसा के सामने से गुज़रते हुए उसने पुकारा, “रब,

रब, रहीम और मेहरबान खुदा। तहम्मूल, शफकत और वफा से भरपूर।<sup>7</sup> वह हज़ारों पर अपनी शफकत कायम रखता और लोगों का कूसर, नाफरमानी और गुनाह मुआफ करता है। लेकिन वह हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उनकी औलाद को भी तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा के नतायज भुगतने पड़ेंगे।”

8 मूसा ने जल्दी से झुककर सिजदा किया।<sup>9</sup> उसने कहा, “ऐ रब, अगर मुझ पर तेरा करम हो तो हमारे साथ चल। बेशक यह कौम हटधर्म है, तो भी हमारा कूसर और गुनाह मुआफ कर और बख्श दे कि हम दुबारा तेरे ही बन जाएँ।”

10 अब रब ने कहा, “मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधूँगा। तेरी कौम के सामने ही मैं ऐसे मोजिजे करूँगा जो अब तक दुनिया-भर की किसी भी कौम में नहीं किए गए। पूरी कौम जिसके दरमियान तू रहता है रब का काम देखेगी और उससे डर जाएगी जो मैं तेरे साथ करूँगा।<sup>11</sup> जो अहकाम मैं आज देता हूँ उन पर अमल करता रह। मैं अमोरी, कनानी, हित्ती, फरिज्जी, हिक्वी और यब्सी अकवाम को तेरे आगे आगे मुल्क से निकाल दूँगा।<sup>12</sup> खबरदार, जो उस मुल्क में रहते हैं जहाँ तू जा रहा है उनसे अहद न बाँधना। वरना वह तेरे दरमियान रहते हुए तुझे गुनाहों में फँसाते रहेंगे।<sup>13</sup> उनकी कुरबानागाहें ढा देना, उनके बुतों के सत्न टुकड़े टुकड़े कर देना और उनकी देवी यसीरत के खंबे काट डालना।

14 किसी और माबूद की परस्तिश न करना, क्योंकि रब का नाम गयूर है, अल्लाह गैरतमंद है।<sup>15</sup> खबरदार, उस मुल्क के बाशिंदों से अहद न करना, क्योंकि तेरे दरमियान रहते हुए भी वह अपने माबूदों की पैरवी करके जिना करेंगे और उन्हें कुरबानियाँ चढ़ाएँगे। आखिरकार वह तुझे भी अपनी कुरबानियों में शिरकत की दावत देंगे।<sup>16</sup> खतरा है कि तू उनकी बेटियों का अपने बेटों के साथ गिशता बाँधे। फिर जब यह अपने माबूदों की पैरवी करके जिना करेंगी तो उनके सबब से तेरे बेटे भी उनकी पैरवी करने लगेंगे।

17 अपने लिए देवता न ढालना।

#### सालाना ईद

18 बेखमीरी रोटी की ईद मनाना। अबीब के महीने \* में सात दिन तक तेरी रोटी में खमीर न हो जिस तरह मैंने हुक्म दिया है। क्योंकि इस महीने में तू मिसर से निकला।

19 हर पहलौठा मेरा है। तेरे माल मवेशियों का हर पहलौठा मेरा है, चाहे बछड़ा हो या लेला।<sup>20</sup> लेकिन पहलौठे गधे के एक्ज भेड़ देना। अगर यह मुमकिन न हो तो उस की गरदन तोड़ डालना। अपने पहलौठे बेटों के लिए भी एक्जी देना। कोई मेरे पास खाली हाथ न आए।

21 छः दिन काम-काज करना, लेकिन सातवें दिन आराम करना। खाह हल चलाना हो या फसल काटनी हो तो भी सातवें दिन आराम करना।

22 गंदुम की फसल की कटाई की ईद † उस वक़्त मनाना जब तू गेहूँ की पहली फसल काटेगा। अंगूर और फल जमा करने की ईद इसराइली साल के इखिताम पर मानी है।<sup>23</sup> लाज़िम है कि तेरे तमाम मर्द साल में तीन मरतबा रब कादिरे-मुतलक के सामने जो इसराइल का खुदा है हाज़िर हों।<sup>24</sup> मैं तेरे आगे आगे कौमों को मुल्क से निकाल दूँगा और तेरी सरहदें बढ़ाता जाऊँगा। फिर जब तू साल में तीन मरतबा रब अपने खुदा के हुज़ूर आया तो कोई भी तेरे मुल्क का लालच नहीं करेगा।

25 जब तू किसी जानवर को ज़बह करके कुरबानी के तौर पर पेश करता है तो उसके खून के साथ ऐसी रोटी पेश न करना जिसमें खमीर हो। ईदे-फसह की कुरबानी से अगली सुबह तक कुछ बाक़ी न रहे।

26 अपनी ज़मीन की पहली पैदावार में से बेहतरीन हिस्सा रब अपने खुदा के घर में ले आना। बकरी या भेड़ के बच्चे को उस की माँ के दूध में न पकाना।”

#### मूसा के चेहरे पर चमक

27 रब ने मूसा से कहा, “यह तमाम बातें लिख ले, क्योंकि यह उस अहद की बुनियाद है जो मैंने तेरे और इसराइल के साथ बाँधा है।”

28 मूसा चालीस दिन और चालीस रात वहीं रब के हुज़ूर रहा। इस दौरान न उसने कुछ खाया न पिया। उसने पत्थर की तख्तियों पर अहद के दस अहकाम लिखे।

29 इसके बाद मूसा शरीअत की दोनों तख्तियों को हाथ में लिए हुए सीना पहाड़ से उतरा। उसके चेहरे की जिल्द चमक रही थी, क्योंकि उसने रब से बात की थी। लेकिन उसने खुद इसका इल्म नहीं था।<sup>30</sup> जब हासन और तमाम इसराइलियों ने देखा कि मूसा का चेहरा चमक रहा है तो वह उसके पास आने से डर गए।<sup>31</sup> लेकिन उसने उन्हें बुलाया तो हासन और जमात के तमाम सरदार उसके पास आए, और उसने उनसे बात की।<sup>32</sup> बाद में बाक़ी इसराइली भी आए, और मूसा ने उन्हें तमाम अहकाम सुनाए जो रब ने उसे कोहे-सीना पर दिए थे।

\* 34:18 मार्च ता औ़ल। † 34:22 तितंबर ता अन्तंबर।

33 यह सब कुछ कहने के बाद मूसा ने अपने चेहरे पर निकाब डाल लिया। 34 जब भी वह रब से बात करने के लिए मुलाकात के खैमे में जाता तो निकाब को खैमे से निकलते वक्त तक उतार लेता। और जब वह निकलकर इसराइलियों को रब से मिले हुए अहकाम सुनाता 35 तो वह देखते कि उसके चेहरे की जिल्द चमक रही है। इसके बाद मूसा दुबारा निकाब को अपने चेहरे पर डाल लेता, और वह उस वक्त तक चेहरे पर रहता जब तक मूसा रब से बात करने के लिए मुलाकात के खैमे में न जाता था।

## 35

### सबत का दिन

1 मूसा ने इसराइल की पूरी जमात को इकट्ठा करके कहा, “रब ने तुमको यह हुक्म दिए हैं : 2 छः दिन काम-काज किया जाए, लेकिन सातवों दिन मख्सूसो-मुकद्दस हो। वह रब के लिए आराम का सबत है। जो भी इस दिन काम करे उसे सजाए-मौत दी जाए। 3 हफ्ते के दिन अपने तमाम घरों में आग तक न जलाना।”

### मुलाकात के खैमे के लिए सामान

4 मूसा ने इसराइल की पूरी जमात से कहा, “रब ने हिदायत दी है 5 कि जो कुछ तुम्हारे पास है उसमें से हदिये लाकर रब को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करो। जो भी दिली खुरशी से देना चाहे वह इन चीजों में से कुछ दे : सोना, चाँदी, पीतल; 6 नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, 7 मेंढों की सुख रँगी हुई खालें, तखस की खालें, कीकर की लकड़ी, 8 शमादान के लिए जैतून का तेल, मसह करने के लिए तेल और खुशबूदार बखूर के लिए मसाले, 9 अक्रीके-अहमर और दीगर जवाहर जो इमामे-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे में जड़े जाएंगे।

10 तुममें से जितने माहिर कारीगर हैं वह आकर वह कुछ बनाएँ जो रब ने फरमाया 11 यानी खैमा और वह गिलाफ जो उसके ऊपर लगाए जाएंगे, हुकें, दीवारों के तख्ते, शहतीर, सतून और पाए, 12 अहद का सूदक, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उसके कपफारे का ढकना, मुकद्दसतरीन कमरे के दरवाजे का परदा, 13 मख्सूस रोटियों की मेज़, उसे उठाने की लकड़ियाँ, उसका सारा सामान और रोटियाँ, 14 शमादान और उस पर रखने के चराग उसके सामान समेत, शमादान के लिए तेल, 15 बखूर जलाने की कुरबानगाह, उसे उठाने की लकड़ियाँ, मसह का तेल, खुशबूदार बखूर, मुकद्दस खैमे के दरवाजे का परदा, 16 जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह, उसका पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाकी सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखा जाता है, 17 चारदीवारी के परदे उनके खंबों और पाइयों समेत, सहन के दरवाजे का परदा, 18 खैमे और चारदीवारी की मेखें और रस्से, 19 और वह मुकद्दस लिबास जो हासन और उसके बेटे मक़दिस में खिदमत करने के लिए पहनते हैं।”

20 यह सुनकर इसराइल की पूरी जमात मूसा के पास से चली गई। 21 और जो जो दिली खुरशी से देना चाहता था वह मुलाकात के खैमे, उसके सामान या इमामों के कपडों के लिए कोई हदिया लेकर वापस आया। 22 रब के हदिये के लिए मर्द और खवातीन दिली खुरशी से अपने सोने के जेवरत मसलन जडाऊ पिनें, बालियाँ और छल्ले ले आए। 23 जिस जिसके पास दरकार चीजों में से कुछ था वह उसे मूसा के पास ले आया यानी नीले, किरमिजी और अरगवानी रंग का धागा, बारीक कतान, बकरी के बाल, मेंढों की सुख रँगी हुई खालें और तखस की खालें। 24 चाँदी, पीतल और कीकर की लकड़ी भी हदिये के तौर पर लाई गई। 25 और जितनी औरतें कातने में माहिर थीं वह अपनी काती हुई चीजें ले आईं यानी नीले, किरमिजी और अरगवानी रंग का धागा और बारीक कतान। 26 इसी तरह जो जो औरत बकरी के बाल कातने में माहिर थीं और दिली खुरशी से मक़दिस के लिए काम करना चाहती थीं वह यह कातकर ले आईं। 27 सरदार अक्रीके-अहमर और दीगर जवाहर ले आए जो इमामे-आज़म के बालापोश और सीने के कीसे के लिए दरकार थे। 28 वह शमादान, मसह के तेल और खुशबूदार बखूर के लिए मसाले और जैतून का तेल भी ले आए।

29 यों इसराइल के तमाम मर्द और खवातीन जो दिली खुरशी से रब को कुछ देना चाहते थे उस सारे काम के लिए हदिये ले आए जो रब ने मूसा की मारिफत करने को कहा था।

### बज़लियेल और उहलियाब

30 फिर मूसा ने इसराइलियों से कहा, “रब ने यहदाह के कबीले के बज़लियेल बिन ऊरी बिन हर को चुन लिया है। 31 उसने उसे इलाही रूह से मामूर करके हिकमत, समझ और तामीर के हर काम के लिए दरकार इल्म दे दिया है। 32 वह नक़शे बनाकर उनके मुताबिक सोने, चाँदी और पीतल की चीजें बना सकता है। 33 वह जवाहर को काटकर जड़ने की काबिलियत रखता है। वह लकड़ी को तराशकर उससे मुख्तलिफ चीजें बना सकता है। वह बहुत सारे और कामों में भी महारत रखता है। 34 साथ ही रब ने उसे और दान के कबीले के उहलियाब बिन अख़ी-समक को दूसरों को सिखाने की काबिलियत भी दी है। 35 उसने



उन्हें वह महारत और हिकमत दी है जो हर काम के लिए दरकार है यानी कारीगरी के हर काम के लिए, कढ़ाई के काम के लिए, नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे और बारीक कतान से कपडा बनाने के लिए और बुनाई के काम के लिए। वह माहिर कारीगर हैं और नक़शे भी बना सकते हैं।

## 36

1 लाज़िम है कि बज़लियेल, उहलियाब और बाकी कारीगर जिनको रब ने मक़दिस की तामीर के लिए हिकमत और समझ दी है सब कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक बनाएँ जो रब ने दी हैं।”

इसराईली दिली ख़ुशी से देते हैं

2 मूसा ने बज़लियेल और उहलियाब को बुलाया। साथ ही उसने हर उस कारीगर को भी बुलाया जिसे रब ने मक़दिस की तामीर के लिए हिकमत और महारत दी थी और जो ख़ुशी से आना और यह काम करना चाहता था। 3 उन्हें मूसा से तमाम हदिये मिले जो इसराईली मक़दिस की तामीर के लिए लाए थे।

इसके बाद भी लोग रोज़ बरोज़ सुबह के वक़्त हदिये लाते रहे। 4 आख़िरकार तमाम कारीगर जो मक़दिस बनाने के काम में लगे थे अपना काम छोड़कर मूसा के पास आए। 5 उन्होंने कहा, “लोग हद से ज्यादा ला रहे हैं। जिस काम का हुक़म रब ने दिया है उसके लिए इतने सामान की ज़रूरत नहीं है।” 6 तब मूसा ने पूरी ख़ैमागाह में एलान करवा दिया कि कोई मर्द या औरत मक़दिस की तामीर के लिए अब कुछ न लाए।

यों उन्हें मज़ीद चीज़ें लाने से रोका गया, 7 क्योंकि काम के लिए सामान ज़रूरत से ज्यादा हो गया था।

मुलाकात का ख़ैमा

8 जो कारीगर महारत रखते थे उन्होंने ख़ैमे को बनाया। उन्होंने बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिजी धागे से दस परदे बनाए। परदों पर किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से कर्बूबी फ़रिशतों का डिज़ायन बनाया गया। 9 हर परदे की लंबाई 42 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी। 10 पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इसी तरह बाकी पाँच भी। यों दो बड़े टुकड़े बन गए। 11 दोनों टुकड़ों को एक दूसरे के साथ मिलाने के लिए उन्होंने नीले धागे के हलके बनाए। यह हलके हर टुकड़े के 42 फ़ुटवाले एक किनारे पर लगाए गए, 12 एक टुकड़े के हाशिये पर 50 हलके और दूसरे पर भी उतने ही हलके। इन दो हाशियों के हलके एक दूसरे के आमने-सामने थे। 13 फिर बज़लियेल ने सोने की 50 हुकें बनाकर उनसे आमने-सामने के हलकों को एक दूसरे के साथ मिलाया। यों दोनों टुकड़ों के जोड़ने से ख़ैमा बन गया।

14 उसने बकरी के बालों से भी 11 परदे बनाए जिन्हें कपड़ेवाले ख़ैमे के ऊपर रखना था। 15 हर परदे की लंबाई 45 फ़ुट और चौड़ाई 6 फ़ुट थी। 16 पाँच परदों के लंबे हाशिये एक दूसरे के साथ जोड़े गए और इस तरह बाकी छः भी। 17 इन दोनों टुकड़ों को मिलाने के लिए उसने हर टुकड़े के 45 फ़ुटवाले एक किनारे पर पचास पचास हलके लगाए। 18 फिर पीतल की 50 हुकें बनाकर उसने दोनों हिस्से मिलाए।

19 एक दूसरे के ऊपर के दोनों ख़ैमों की हिफ़ाज़त के लिए बज़लियेल ने दो और ग़िलाफ़ बनाए। बकरी के बालों के ख़ैमे पर रखने के लिए उसने मेंढों की सुख़् रँगी हुई ख़ालें जोड़ दीं और उसके ऊपर रखने के लिए तख़स की ख़ालें मिलाईं।

20 इसके बाद उसने कीकर की लकड़ी के तख़ते बनाए जो ख़ैमे की दीवारों का काम देते थे। 21 हर तख़ते की ऊँचाई 15 फ़ुट थी और चौड़ाई सवा दो फ़ुट। 22 हर तख़ते के नीचे दो दो चूल्हे थीं। इन चूल्हों से हर तख़ते को उसके पाइयों के साथ जोड़ा जाता था ताकि तख़ता खड़ा रहे। 23 ख़ैमे की ज़नुबी दीवार के लिए 20 तख़ते बनाए गए 24 और साथ ही चाँदी के 40 पाए भी जिन पर तख़ते खड़े किए जाते थे। हर तख़ते के नीचे दो पाए थे, और हर पाए में एक चूल लगी थी। 25 इसी तरह ख़ैमे की शिमाली दीवार के लिए भी 20 तख़ते बनाए गए 26 और साथ ही चाँदी के 40 पाए जो तख़तों को खड़ा करने के लिए थे। हर तख़ते के नीचे दो पाए थे। 27 ख़ैमे की पिछली यानी मगरिबी दीवार के लिए छः तख़ते बनाए गए। 28 इस दीवार को शिमाली और ज़नुबी दीवारों के साथ जोड़ने के लिए कोनेवाले दो तख़ते बनाए गए। 29 इन दो तख़तों में नीचे से लेकर ऊपर तक कोना था ताकि एक से शिमाली दीवार मगरिबी दीवार के साथ जुड़ जाए और दूसरे से ज़नुबी दीवार मगरिबी दीवार के साथ। इनके ऊपर के सिरे कड़ों से मज़बूत किए गए। 30 यों पिछले यानी मगरिबी तख़तों की पूरी तादाद 8 थी और इनके लिए चाँदी के पाइयों की तादाद 16, हर तख़ते के नीचे दो पाए।

31-32 फिर बज़लियेल ने कीकर की लकड़ी के शहतीर बनाए, तीनों दीवारों के लिए पाँच पाँच शहतीर। वह हर दीवार के तख़तों पर यों लगाने के लिए थे कि उनसे तख़ते एक दूसरे के साथ मिलाए जाएँ। 33 दरमियानी शहतीर यों बनाया गया कि वह दीवार की आधी ऊँचाई पर दीवार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक लग सकता था। 34 उसने तमाम तख़तों और शहतीरों पर सोना चढ़ाया। शहतीरों को तख़तों के साथ लगाने के लिए उसने सोने के कड़े बनाए जो तख़तों में लगाने थे।

### मुकद्दस खैमे के परदे

35 अब बज्रलियेल ने एक और परदा बनाया। उसके लिए भी बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा इस्तेमाल हुआ। उस पर भी किसी माहिर कारीगर के कढ़ाई के काम से कर्बूबी फरिशतों का डिजाइन बनाया गया। 36 फिर उसने परदे को लटकाने के लिए कीकर की लकड़ी के चार सतून, सोने की हुकें और चाँदी के चार पाए बनाए। सतूनों पर सोना चढ़ाया गया।

37 बज्रलियेल ने खैमे के दरवाजे के लिए भी परदा बनाया। वह भी बारीक कतान और नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे से बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया। 38 इस परदे को लटकाने के लिए उसने सोने की हुकें और कीकर की लकड़ी के पाँच सतून बनाए। सतूनों के ऊपर के सिरोँ और पट्टियों पर सोना चढ़ाया गया जबकि उनके पाए पीतल के थे।

## 37

### अहद का संदक

1 बज्रलियेल ने कीकर की लकड़ी का संदक बनाया। उस की लंबाई पौने चार फुट थी जबकि उस की चौड़ाई और ऊँचाई सवा दो दो फुट थी। 2 उसने पूरे संदक पर अंदर और बाहर से खालिस सोना चढ़ाया। ऊपर की सतह के इर्दगिर्द उसने सोने की झालर लगाई। 3 संदक को उठाने के लिए उसने सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें संदक के चारपाइयों पर लगाया। दोनों तरफ दो दो कड़े थे। 4 फिर उसने कीकर की दो लकड़ियाँ संदक को उठाने के लिए तैयार कीं और उन पर सोना चढ़ाया। 5 उसने इन लकड़ियों को दोनों तरफ के कड़ों में डाल दिया ताकि उनसे संदक को उठाया जा सके।

6 बज्रलियेल ने संदक का ढकना खालिस सोने का बनाया। उस की लंबाई पौने चार फुट और चौड़ाई सवा दो फुट थी। 7-8 फिर उसने दो कर्बूबी फरिशते सोने से घड़कर बनाए जो ढकने के दोनों सिरोँ पर खड़े थे। यह दो फरिशते और ढकना एक ही टुकड़े से बनाए गए। 9 फरिशतों के पर यों ऊपर की तरफ फैले हुए थे कि वह ढकने को पनाह देते थे। उनके मुँह एक दूसरे की तरफ किए हुए थे, और वह ढकने की तरफ देखते थे।

### मखसूस रोटियों की मेज़

10 इसके बाद बज्रलियेल ने कीकर की लकड़ी की मेज़ बनाई। उस की लंबाई तीन फुट, चौड़ाई डेढ़ फुट और ऊँचाई सवा दो फुट थी। 11 उसने उस पर खालिस सोना चढ़ाकर उसके इर्दगिर्द सोने की झालर लगाई। 12 मेज़ की ऊपर की सतह पर उसने चौखटा भी लगाया जिसकी ऊँचाई तीन इंच थी और जिस पर सोने की झालर लगी थी। 13 अब उसने सोने के चार कड़े ढालकर उन्हें चारों कोनों पर लगाया जहाँ मेज़ के पाए लगे थे। 14 यह कड़े मेज़ की सतह पर लगे चौखटे के नीचे लगाए गए। उनमें वह लकड़ियाँ डालनी थीं जिनसे मेज़ को उठाना था। 15 बज्रलियेल ने यह लकड़ियाँ भी कीकर से बनाई और उन पर सोना चढ़ाया।

16 आखिरकार उसने खालिस सोने के वह थाल, प्याले, मै की नजरें पेश करने के बरतन और मरतबान बनाए जो उस पर रखे जाते थे।

### शमादान

17 फिर बज्रलियेल ने खालिस सोने का शमादान बनाया। उसका पाया और डंडी घड़कर बनाए गए। उस की प्यालियों जो फूलों और कलियों की शकल की थीं पाए और डंडी के साथ एक ही टुकड़ा थीं। 18 डंडी से दाईं और बाईं तरफ तीन तीन शाखें निकलती थीं। 19 हर शाख पर तीन प्यालियाँ लगी थीं जो बादाम की कलियों और फूलों की शकल की थीं। 20 शमादान की डंडी पर भी इस किस्म की प्यालियाँ लगी थीं, लेकिन तादाद में चार। 21 इनमें से तीन प्यालियाँ दाएँ बाएँ की छः शाखों के नीचे लगी थीं। वह यों लगी थीं कि हर प्याली से दो शाखें निकलती थीं। 22 शाखें और प्यालियाँ बल्कि पूरा शमादान खालिस सोने के एक ही टुकड़े से घड़कर बनाया गया।

23 बज्रलियेल ने शमादान के लिए खालिस सोने के सात चराग बनाए। उसने बत्ती कतरने की कैचियाँ और जलते कोयले के लिए छोटे बरतन भी खालिस सोने से बनाए। 24 शमादान और उसके तमाम सामान के लिए पूरे 34 किलोग्राम खालिस सोना इस्तेमाल हुआ।

### बखूर जलाने की कुरबानगाह

25 बज्रलियेल ने कीकर की लकड़ी की कुरबानगाह बनाई जो बखूर जलाने के लिए थी। वह डेढ़ फुट लंबी, इतनी ही चौड़ी और तीन फुट ऊँची थी। उसके चार कोनों में से सीग निकलते थे जो कुरबानगाह के साथ एक ही टुकड़े से बनाए गए थे। 26 उस की ऊपर की सतह, उसके चार पहलुओं और उसके सीगों पर खालिस सोना चढ़ाया गया। ऊपर की सतह के

इर्दगिर्द बजलियेल ने सोने की झालर बनाई। 27 सोने के दो कड़े बनाकर उसने उन्हें इस झालर के नीचे एक दूसरे के मुकाबिल पहलुओं पर लगाया। इन कड़ों में कुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ डाली गईं। 28 यह लकड़ियाँ कीकर की थीं, और उन पर भी सोना चढ़ाया गया।

29 बजलियेल ने मसह करने का मुकद्दस तेल और खुशबदार खालिस बखूर भी बनाया। यह इत्रसाज का काम था।

## 38

जानवरों को पेश करने की कुरबानगाह

1 बजलियेल ने कीकर की लकड़ी की एक और कुरबानगाह बनाई जो भस्म होनेवाली कुरबानियों के लिए थी। उस की ऊँचाई साढ़े चार फुट, उस की लंबाई और चौड़ाई साढ़े सात सात फुट थी। 2 उसके ऊपर चारों कोनों में से सींग निकलते थे। सींग और कुरबानगाह एक ही टुकड़े के थे, और उस पर पीतल चढ़ाया गया। 3 उसका तमाम साजो-सामान और बरतन भी पीतल के थे यानी राख को उठाकर ले जाने की बालटियाँ, बेलचे, कौंटे, जलते हुए कोयले के लिए बरतन और छिडकाव के कटोरे।

4 कुरबानगाह को उठाने के लिए उसने पीतल का जंगला बनाया। वह ऊपर से खुला था और यों बनाया गया कि जब कुरबानगाह उसमें रखी जाए तो वह उस किनारे तक पहुँचे जो कुरबानगाह की आधी ऊँचाई पर लगी थी। 5 उसने कुरबानगाह को उठाने के लिए चार कड़े बनाकर उन्हें जंगले के चार कोनों पर लगाया। 6 फिर उसने कीकर की दो लकड़ियाँ बनाकर उन पर पीतल चढ़ाया 7 और कुरबानगाह के दोनों तरफ लगे इन कड़ों में डाल दी। यों उसे उठाया जा सकता था। कुरबानगाह लकड़ी की थी लेकिन खोखली थी।

8 बजलियेल ने धोने का हौज और उसका ढाँचा भी पीतल से बनाया। उसका पीतल उन औरतों के आईनों से मिला था जो मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर खिदमत करती थी।

खैमे का सहन

9 फिर बजलियेल ने सहन बनाया। उस की चारदीवारी बारीक कतान के कपड़े से बनाई गई। चारदीवारी की लंबाई जुनब की तरफ 150 फुट थी। 10 कपड़े को लगाने के लिए चाँदी की हुकें, पट्टियाँ, लकड़ी के खंबे और उनके पाए बनाए गए। 11 चारदीवारी शिमाल की तरफ भी इसी तरह बनाई गई। 12 खैमे के पीछे मगारिब की तरफ चारदीवारी की चौड़ाई 75 फुट थी। कपड़े के अलावा उसके लिए 10 खंबे, 10 पाए और कपड़ा लगाने के लिए चाँदी की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं। 13 सामने, मशरिफ की तरफ जहाँ से सूरज तलू होता है चारदीवारी की चौड़ाई भी 75 फुट थी। 14-15 कपड़ा दरवाजे के दाईं तरफ साढ़े 22 फुट चौड़ा था और उसके बाईं तरफ भी उतना ही चौड़ा। उसे दोनों तरफ तीन तीन खंबों के साथ लगाया गया जो पीतल के पाइयों पर खड़े थे। 16 चारदीवारी के तमाम परदों के लिए बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। 17 खंबे पीतल के पाइयों पर खड़े थे, और परदे चाँदी की हुकों और पट्टियों से खंबों के साथ लगे थे। खंबों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। सहन के तमाम खंबों पर चाँदी की पट्टियाँ लगी थी।

18 चारदीवारी के दरवाजे का परदा नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे और बारीक कतान से बनाया गया, और उस पर कढ़ाई का काम किया गया। वह 30 फुट चौड़ा और चारदीवारी के दूसरे परदों की तरह साढ़े सात फुट ऊँचा था। 19 उसके चार खंबे और पीतल के चार पाए थे। उस की हुकें और पट्टियाँ चाँदी की थीं, और खंबों के ऊपर के सिरों पर चाँदी चढ़ाई गई थी। 20 खैमे और चारदीवारी की तमाम मेखें पीतल की थीं।

खैमे का तामीरी सामान

21 जैल में उस सामान की फहरिस्त है जो मकदिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ। मूसा के हुक्म पर इमामे-आजम हारून के बेटे इतमर ने लावियों की मारिफत यह फहरिस्त तैयार की। 22 (यहदाह के कबीले के बजलियेल बिन ऊरी बिन हर ने वह सब कुछ बनाया जो ख ने मूसा को बताया था। 23 उसके साथ दान के कबीले का उहलियाब बिन अखी-समक था जो कारिगरी के हर काम और कढ़ाई के काम में माहिर था। वह नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाने में भी माहिर था।)

24 उस सोने का वजन जो लोगों के हदियों से जमा हुआ और मकदिस की तामीर के लिए इस्तेमाल हुआ तकरीबन 1,000 किलोग्राम था (उसे मकदिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)।

25 तामीर के लिए चाँदी जो मर्दुमशमारी के हिसाब से वसूल हुई, उसका वजन तकरीबन 3,430 किलोग्राम था (उसे भी मकदिस के बाटों के हिसाब से तोला गया)। 26 जिन मर्दों की उम्र 20 साल या इससे जायद थी उन्हें चाँदी का आधा आधा सिक्का देना पड़ा। मर्दों की कुल तादाद 6,03,550 थी। 27 चूँकि दीवारों के तख्तों के पाए और मुकद्दसतरिन कमरे के दरवाजे के सत्नों के पाए चाँदी के थे इसलिए तकरीबन पूरी चाँदी इन 100 पाइयों के लिए सर्फ हुई। 28 तकरीबन 30

किलोग्राम चाँदी बच गई। इससे चारदीवारी के खंबों की हुकें और पट्टियाँ बनाई गईं, और यह खंबों के ऊपर के सिरों पर भी चढ़ाई गईं।

29 जो पीतल हदियों से जमा हुआ उसका वजन तकरीबन 2,425 किलोग्राम था। 30 खैमे के दरवाजे के पाए, जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह, उसका जंगला, बरतन और साजो-सामान, 31 चारदीवारी के पाए, सहन के दरवाजे के पाए और खैमे और चारदीवारी की तमाम मेखें इसी से बनाई गईं।

## 39

### हारून का बालापोश

1 बजलियेल की हिदायत पर कारीगरों ने नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा लेकर मक़दिस में खिदमत के लिए लिबास बनाए। उन्होंने हारून के मुक़द्दस कपड़े उन हिदायत के ऐन मुताबिक बनाए जो रब ने मूसा को दी थी। 2 उन्होंने इमामे-आज़म का बालापोश बनाने के लिए सोना, नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल किया। 3 उन्होंने सोने को कूट कूटकर वर्क बनाया और फिर उसे काटकर धागे बनाए। जब नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे और बारीक कतान से कपड़ा बनाया गया तो सोने का यह धागा महारत से कढ़ाई के काम में इस्तेमाल हुआ। 4 उन्होंने बालापोश के लिए दो पट्टियाँ बनाई और उन्हें बालापोश के कंधों पर रखकर सामने और पीछे से बालापोश के साथ लगाईं। 5 पटका भी बनाया गया जिससे बालापोश को बाँधा जाता था। इसके लिए भी सोना, नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का धागा और बारीक कतान इस्तेमाल हुआ। यह उन हिदायत के ऐन मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दी थी। 6 फिर उन्होंने अक्रीके-अहमर के दो पत्थर चुन लिए और उन्हें सोने के खानों में जड़कर उन पर इसराईल के बारह बेटों के नाम कंदा किए। यह नाम जौहरों पर उस तरह कंदा किए गए जिस तरह मुहर कंदा की जाती है। 7 उन्होंने पत्थरों को बालापोश की दो पट्टियों पर यों लगाया कि वह हारून के कंधों पर रब को इसराईलियों की याद दिलाते रहें। यह सब कुछ रब की दी गई हिदायत के ऐन मुताबिक हुआ।

### सीने का कीसा

8 इसके बाद उन्होंने सीने का कीसा बनाया। यह माहिर कारीगर का काम था और उन्हीं चीज़ों से बना जिनसे हारून का बालापोश भी बना था यानी सोने और नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे और बारीक कतान से। 9 जब कपड़े को एक दफा तह किया गया तो कीसे की लंबाई और चौड़ाई नौ नौ इंच थी। 10 उन्होंने उस पर चार कतारों में जवाहर जड़े। हर कतार में तीन तीन जौहर थे। पहली कतार में लाल, ज़बरजद और ज़ुमुरद। 11 दूसरी में फ़ीरोज़ा, संगे-लाजवर्द और हज़रूल-क़मर। 12 तीसरी में ज़रक्रोन, अक्रीक और याक़ूते-अरगवानी। 13 चौथी में पुरराज, अक्रीके-अहमर और यशब। हर जौहर सोने के खाने में जड़ा हुआ था। 14 यह बारह जवाहर इसराईल के बारह कबीलों की नुमाँइंदगी करते थे। एक एक जौहर पर एक कबीले का नाम कंदा किया गया, और यह नाम उस तरह कंदा किए गए जिस तरह मुहर कंदा की जाती है।

15 अब उन्होंने सीने के कीसे के लिए खालिस सोने की दो जंजीरें बनाई जो डोरी की तरह गुंथी हुई थीं। 16 साथ साथ उन्होंने सोने के दो खाने और दो कड़े भी बनाए। उन्होंने यह कड़े कीसे के ऊपर के दो कोनों पर लगाए। 17 फिर दोनों जंजीरें उन दो कड़ों के साथ लगाई गईं। 18 उनके दूसरे सिरे बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों के दो खानों के साथ जोड़ दिए गए, फिर सामने की तरफ लगाए गए। 19 उन्होंने कीसे के निचले दो कोनों पर भी सोने के दो कड़े लगाए। वह अंदर, बालापोश की तरफ लगे थे। 20 अब उन्होंने दो और कड़े बनाकर बालापोश की कंधोंवाली पट्टियों पर लगाए। यह भी सामने की तरफ लगे थे लेकिन नीचे, बालापोश के पटके के ऊपर ही। 21 उन्होंने सीने के कीसे के निचले कड़े नीली डोरी से बालापोश के इन निचले कड़ों के साथ बाँधे। यों कीसा पटके के ऊपर अच्छी तरह सीने के साथ लगा रहा। यह उन हिदायत के ऐन मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दी थीं।

### हारून का चोगा

22 फिर कारीगरों ने चोगा बुना। वह पूरी तरह नीले धागे से बनाया गया। चोगे को बालापोश से पहले पहनना था। 23 उसके ग़रेबान को बुने हुए कालर से मज़बूत किया गया ताकि वह न फटे। 24 उन्होंने नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे से अनार बनाकर उन्हें चोगे के दामन में लगा दिया। 25 उनके दरमियान खालिस सोने की घंटियाँ लगाई गईं। 26 दामन में अनार और घंटियाँ बारी बारी लगाई गईं। लाज़िम था कि हारून खिदमत करने के लिए हमेशा यह चोगा पहने। रब ने मूसा को यही हुक्म दिया था।

### खिदमत के लिए दीगर लिबास

27 कारीगरों ने हारून और उसके बेटों के लिए बारीक कतान के ज़ेरजामे बनाए। यह बुननेवाले का काम था। 28 साथ साथ उन्होंने बारीक कतान की पगडि़याँ और बारीक कतान के पाजामे बनाए। 29 कमरबंद को बारीक कतान और नीले,

अरगवानी और किरमिजी रंग के धागे से बनाया गया। कढ़ाई करनेवालों ने इस पर काम किया। सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थी।

30 उन्होंने मुकद्दस ताज यानी खालिस सोने की तख्ती बनाई और उस पर यह अलफाज कंदा किए, 'रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस।' 31 फिर उन्होंने इसे नीली डोरी से पगड़ी के सामनेवाले हिस्से से लगा दिया। यह भी उन हिदायात के मुताबिक बनाया गया जो रब ने मूसा को दी थी।

सारा सामान मूसा को दिखाया जाता है

32 आखिरकार मकदिस का काम मुकम्मल हुआ। इसराइलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बनाया था जो रब ने मूसा को दी थी। 33 वह मकदिस की तमाम चीजें मूसा के पास ले आए यानी मुकद्दस खैमा और उसका सारा सामान, उस की हुकें, दीवारों के तख्ते, शहतीर, सतून और पाए, 34 खैमे पर मेंदों की सुखई रंगी हुई खालों का गिलाफ और तखस की खालों का गिलाफ, मुकद्दसतरीन कमरे के दरवाजे का परदा, 35 अहद का संदूक जिसमें शरीअत की तख्तियाँ रखनी थी, उसे उठाने की लकड़ियाँ और उसका ढकना, 36 मखसूस रोटियों की मेज़, उसका सारा सामान और रोटियाँ, 37 खालिस सोने का शमादान और उस पर रखने के चराग उसके सारे सामान समेत, शमादान के लिए तेल, 38 बखूर जलाने की सोने की कुरबानगाह, मसह का तेल, खुशबूदार बखूर, मुकद्दस खैमे के दरवाजे का परदा, 39 जानवरों को चढ़ाने की पीतल की कुरबानगाह, उसका पीतल का जंगला, उसे उठाने की लकड़ियाँ और बाकी सारा सामान, धोने का हौज़ और वह ढाँचा जिस पर हौज़ रखना था, 40 चारदीवारी के परदे उनके खंबों और पाइयों समेत, सहन के दरवाजे का परदा, चारदीवारी के रस्से और मेंदें, मुलाकात के खैमे में खिदमत करने का बाकी सारा सामान 41 और मकदिस में खिदमत करने के वह मुकद्दस लिबास जो हासून और उसके बेटों को पहनने थे।

42 सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक बनाया गया था जो रब ने मूसा को दी थी। 43 मूसा ने तमाम चीजों का मुआयना किया और मालूम किया कि उन्होंने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक बनाया था। तब उसने उन्हें बरकत दी।

## 40

मकदिस को खड़ा करने की हिदायात

1 फिर रब ने मूसा से कहा, 2 "पहले महीने की पहली तारीख को मुलाकात का खैमा खड़ा करना। 3 अहद का संदूक जिसमें शरीअत की तख्तियाँ हैं मुकद्दसतरीन कमरे में रखकर उसके दरवाजे का परदा लगाना। 4 इसके बाद मखसूस रोटियों की मेज़ मुकद्दस कमरे में लाकर उस पर तमाम ज़रूरी सामान रखना। उस कमरे में शमादान भी ले आना और उस पर उसके चराग रखना। 5 बखूर की सोने की कुरबानगाह उस परदे के सामने रखना जिसके पीछे अहद का संदूक है। फिर खैमे में दाखिल होने के दरवाजे पर परदा लगाना। 6 जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह सहन में खैमे के दरवाजे के सामने रखी जाए। 7 खैमे और इस कुरबानगाह के दरमियान धोने का हौज़ रखकर उसमें पानी डालना। 8 सहन की चारदीवारी खड़ी करके उसके दरवाजे का परदा लगाना।

9 फिर मसह का तेल लेकर उसे खैमे और उसके सारे सामान पर छिड़क देना। यों तू उसे मेरे लिए मखसूस करेगा और वह मुकद्दस होगा। 10 फिर जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह और उसके सामान पर मसह का तेल छिड़कना। यों तू उसे मेरे लिए मखसूस करेगा और वह निहायत मुकद्दस होगा। 11 इसी तरह हौज़ और उस ढाँचे को भी मखसूस करना जिस पर हौज़ रखा गया है।

12 हासून और उसके बेटों को मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर लाकर गुस्तल कराना। 13 फिर हासून को मुकद्दस लिबास पहनाना और उसे मसह करके मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस करना ताकि इमाम के तौर पर मेरी खिदमत करे। 14 उसके बेटों को लाकर उन्हें जेरजामे पहना देना। 15 उन्हें उनके वालिद की तरह मसह करना ताकि वह भी इमामों के तौर पर मेरी खिदमत करें। जब उन्हें मसह किया जाएगा तो वह और बाद में उनकी औलाद हमेशा तक मकदिस में इस खिदमत के लिए मखसूस होंगे।"

मकदिस को खड़ा किया जाता है

16 मूसा ने सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक किया। 17 पहले महीने की पहली तारीख को मुकद्दस खैमा खड़ा किया गया। उन्हें मिसर से निकले पूरा एक साल हो गया था। 18 मूसा ने दीवार के तख्तों को उनके पाइयों पर खड़ा करके उनके साथ शहतीर लगाए। इसी तरह उसने सतूनों को भी खड़ा किया। 19 उसने रब की हिदायात के ऐन मुताबिक दीवारों पर कपड़े का खैमा लगाया और उस पर दूसरे गिलाफ रखे।

20 उसने शरीर की दोनों तख्तियों लेकर अहद के संदूक में रख दी, उठाने के लिए लकड़ियाँ संदूक के कड़ों में डाल दी और कफ़फ़ारे का ढकना उस पर लगा दिया। 21 फिर उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक संदूक को मुक़द्दसतरीन कमरे में रखकर उसके दरवाज़े का परदा लगा दिया। यों अहद के संदूक पर परदा पड़ा रहा। 22 मूसा ने मख़सूस रोटियों की मेज़ मुक़द्दस कमरे के शिमाली हिस्से में उस परदे के सामने रख दी जिसके पीछे अहद का संदूक था। 23 उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक रब के लिए मख़सूस की हुई रोटियाँ मेज़ पर रखीं। 24 उसी कमरे के जुनबी हिस्से में उसने शमादान को मेज़ के मुक़ाबिल रख दिया। 25 उस पर उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक रब के सामने चराग़ रख दिए। 26 उसने बखूर की सोने की कुरबानगाह भी उसी कमरे में रखी, उस परदे के बिलकुल सामने जिसके पीछे अहद का संदूक था। 27 उसने उस पर रब की हिदायत के ऐन मुताबिक ख़ुशबूदार बखूर जलाया।

28 फिर उसने ख़ैमे का दरवाज़ा लगा दिया। 29 बाहर जाकर उसने जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह ख़ैमे के दरवाज़े के सामने रख दी। उस पर उसने रब की हिदायत के ऐन मुताबिक भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और गल्ला की नज़रें चढ़ाईं।

30 उसने धोने के हौज़ को ख़ैमे और उस कुरबानगाह के दरमियान रखकर उसमें पानी डाल दिया। 31 मूसा, हासन और उसके बेटे उसे अपने हाथ-पाँव धोने के लिए इस्तेमाल करते थे। 32 जब भी वह मुलाकात के ख़ैमे में दाखिल होते या जानवरों को चढ़ाने की कुरबानगाह के पास आते तो रब की हिदायत के ऐन मुताबिक पहले गुस्ल करते।

33 आखिर में मूसा ने ख़ैमा, कुरबानगाह और चारदीवारी खड़ी करके सहन के दरवाज़े का परदा लगा दिया। यों मूसा ने मक़दिस की तामीर मुक़म्मल की।

### ख़ैमे में रब का जलाल

34 फिर मुलाकात के ख़ैमे पर बादल छा गया और मक़दिस रब के जलाल से भर गया। 35 मूसा ख़ैमे में दाखिल न हो सका, क्योंकि बादल उस पर ठहरा हुआ था और मक़दिस रब के जलाल से भर गया था।

36 तमाम सफ़र के दौरान जब भी मक़दिस के ऊपर से बादल उठता तो इसराईली सफ़र के लिए तैयार हो जाते। 37 अगर वह न उठता तो वह उस वक़्त तक ठहरे रहते जब तक बादल उठ न जाता। 38 दिन के वक़्त बादल मक़दिस के ऊपर ठहरा रहता और रात के वक़्त वह तमाम इसराईलियों को आग की सूरत में नज़र आता था। यह सिलसिला पूरे सफ़र के दौरान जारी रहा।

## अहबार

### भस्म होनेवाली कुरबानी

1 रब ने मुलाकात के खैमे में से मूसा को बुलाकर कहा 2 कि इसराईलियों को इतला दे,

“अगर तुममें से कोई रब को कुरबानी पेश करना चाहे तो वह अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से जानवर चुन ले।

3 अगर वह अपने गाय-बैलों में से भस्म होनेवाली कुरबानी चढाना चाहे तो वह बेऐब बैल चुनकर उसे मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर पेश करे ताकि रब उसे क़बूल करे। 4 कुरबानी पेश करनेवाला अपना हाथ जानवर के सर पर रखे तो यह कुरबानी मक़बूल होकर उसका कफ़ारा देगी। 5 कुरबानी पेश करनेवाला बैल को वहाँ रब के सामने ज़बह करे। फिर हास्न के बेटे जो इमाम हैं उसका खून रब को पेश करके उसे दरवाजे पर की कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 6 इसके बाद कुरबानी पेश करनेवाला खाल उतारकर जानवर के टुकड़े टुकड़े करे। 7 इमाम कुरबानगाह पर आग लगाकर उस पर तरतीब से लकड़ियाँ चुनें। 8 उस पर वह जानवर के टुकड़े सर और चरबी समेत रखें। 9 लाज़िम है कि कुरबानी पेश करनेवाला पहले जानवर की अंतडियाँ और पिंडलियाँ धोए, फिर इमाम पूरे जानवर को कुरबानगाह पर जला दे। इस जलनेवाली कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है।

10 अगर भस्म होनेवाली कुरबानी भेड़-बकरियों में से चुनी जाए तो वह बेऐब नर हो। 11 पेश करनेवाला उसे रब के सामने कुरबानगाह की शिमाली सिमत में ज़बह करे। फिर हास्न के बेटे जो इमाम हैं उसका खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 12 इसके बाद पेश करनेवाला जानवर के टुकड़े टुकड़े करे और इमाम यह टुकड़े सर और चरबी समेत कुरबानगाह की जलती हुई लकड़ियों पर तरतीब से रखे। 13 लाज़िम है कि कुरबानी पेश करनेवाला पहले जानवर की अंतडियाँ और पिंडलियाँ धोए, फिर इमाम पूरे जानवर को रब को पेश करके कुरबानगाह पर जला दे। इस जलनेवाली कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है।

14 अगर भस्म होनेवाली कुरबानी परिदा हो तो वह कुम्री या जवान कबूतर हो। 15 इमाम उसे कुरबानगाह के पास ले आए और उसका सर मरोड़कर कुरबानगाह पर जला दे। वह उसका खून यों निकलने दे कि वह कुरबानगाह की एक तरफ़ से नीचे टपके। 16 वह उसका पोटा और जो उसमें है दूर करके कुरबानगाह की मशरिकी सिमत में फेंक दे, वहाँ जहाँ राख फेंकी जाती है। 17 उसे पेश करते वक़्त इमाम उसके पर पकड़कर परिदे को फाड़ डाले, लेकिन यों कि वह बिलकुल टुकड़े टुकड़े न हो जाए। फिर इमाम उसे कुरबानगाह पर जलती हुई लकड़ियों पर जला दे। इस जलनेवाली कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है।

## 2

### गल्ला की नज़र

1 अगर कोई रब को गल्ला की नज़र पेश करना चाहे तो वह इसके लिए बेहतरीन मैदा इस्तेमाल करे। उस पर वह जैतून का तेल उंडेले और लुबान रखकर 2 उसे हास्न के बेटों के पास ले आए जो इमाम हैं। इमाम तेल से मिलाया गया मुट्ठी-भर मैदा और तमाम लुबान लेकर कुरबानगाह पर जला दे। यह यादगार का हिस्सा है, और उस की खुशबू रब को पसंद है। 3 बाकी मैदा और तेल हास्न और उसके बेटों का हिस्सा है। वह रब की जलनेवाली कुरबानियों में से एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है।

4 अगर यह कुरबानी तनूर में पकाई हुई रोटी हो तो उसमें खमीर न हो। इसकी दो किस्में हो सकती हैं, रोटियाँ जो बेहतरीन मैदे और तेल से बनी हुई हों और रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो।

5 अगर यह कुरबानी तवे पर पकाई हुई रोटी हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो। उसमें खमीर न हो। 6 चूँकि वह गल्ला की नज़र है इसलिए रोटी को टुकड़े टुकड़े करना और उस पर तेल डालना।

7 अगर यह कुरबानी कड़ाही में पकाई हुई रोटी हो तो वह बेहतरीन मैदे और तेल की हो।

8 अगर तूइन चीज़ों की बनी हुई गल्ला की नज़र रब के हज़ूर लाना चाहे तो उसे इमाम को पेश करना। वही उसे कुरबानगाह के पास ले आए। 9 फिर इमाम यादगार का हिस्सा अलग करके उसे कुरबानगाह पर जला दे। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है। 10 कुरबानी का बाकी हिस्सा हास्न और उसके बेटों के लिए है। वह रब की जलनेवाली कुरबानियों में से एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है।

11 गल्ला की जितनी नज़रें तुम रब को पेश करते हो उनमें खमीर न हो, क्योंकि लाज़िम है कि तुम रब को जलनेवाली कुरबानी पेश करते वक़्त न खमीर, न शहद जलाओ। 12 यह चीज़ें फ़सल के पहले फलों के साथ रब को पेश की जा सकती हैं, लेकिन उन्हें कुरबानगाह पर न जलाया जाए, क्योंकि वहाँ रब को उनकी खुशबू पसंद नहीं है। 13 गल्ला की हर नज़र में

नमक हो, क्योंकि नमक उस अहद की नुमाइंदगी करता है जो तेरे खुदा ने तेरे साथ बाँधा है। तुझे हर कुरबानी में नमक डालना है।

14 अगर तू गल्ला की नज़र के लिए फ़सल के पहले फल पेश करना चाहे तो कुचली हुई कचची बालियाँ भूनकर पेश करना। 15 चूँकि वह गल्ला की नज़र है इसलिए उस पर तेल उडेलना और लुबान रखना। 16 कुचले हुए दानों और तेल का जो हिस्सा रब का है यानी यादगार का हिस्सा उसे इमाम तमाम लुबान के साथ जला दे। यह नज़र रब के लिए जलनेवाली कुरबानी है।

### 3

#### सलामती की कुरबानी

1 अगर कोई रब को सलामती की कुरबानी पेश करने के लिए गाय या बैल चढ़ाना चाहे तो वह जानवर बेऐब हो। 2 वह अपना हाथ जानवर के सर पर रखकर उसे मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर ज़बह करे। हासून के बेटे जो इमाम हैं उसका खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 3-4 पेश करनेवाला अंतडियों पर की सारी चरबी, गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के करीब होती है और जोड़कलेजी जलनेवाली कुरबानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 5 फिर हासून के बेटे यह सब कुछ भस्म होनेवाली कुरबानी के साथ कुरबानगाह की लकड़ियों पर जला दें। यह जलनेवाली कुरबानी है, और इसकी ख़ुशबू रब को पसंद है।

6 अगर सलामती की कुरबानी के लिए भेड़-बकरियों में से जानवर चुना जाए तो वह बेऐब नर या मादा हो।

7 अगर वह भेड़ का बच्चा चढ़ाना चाहे तो वह उसे रब के सामने ले आए। 8 वह अपना हाथ उसके सर पर रखकर उसे मुलाकात के ख़ैमे के सामने ज़बह करे। हासून के बेटे उसका खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 9-10 पेश करनेवाला चरबी, पूरी टुम, अंतडियों पर की सारी चरबी, गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के करीब होती है और जोड़कलेजी जलनेवाली कुरबानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 11 इमाम यह सब कुछ रब को पेश करके कुरबानगाह पर जला दे। यह ख़ुराक जलनेवाली कुरबानी है।

12 अगर सलामती की कुरबानी बकरी की हो 13 तो पेश करनेवाला उस पर हाथ रखकर उसे मुलाकात के ख़ैमे के सामने ज़बह करे। हासून के बेटे जानवर का खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़कें। 14-15 पेश करनेवाला अंतडियों पर की सारी चरबी, गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के करीब होती है और जोड़कलेजी जलनेवाली कुरबानी के तौर पर रब को पेश करे। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 16 इमाम यह सब कुछ रब को पेश करके कुरबानगाह पर जला दे। यह ख़ुराक जलनेवाली कुरबानी है, और इसकी ख़ुशबू रब को पसंद है।

सारी चरबी रब की है। 17 तुम्हारे लिए खून या चरबी खाना मना है। यह न सिर्फ़ तुम्हारे लिए मना है बल्कि तुम्हारी औलाद के लिए भी, न सिर्फ़ यहाँ बल्कि हर जगह जहाँ तुम रहते हो।”

### 4

#### गुनाह की कुरबानी

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को बताना कि जो भी ग़ैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म को तोड़े वह यह करे :

#### इमाम के लिए गुनाह की कुरबानी

3 अगर इमाम-आज़म गुनाह करे और नतीजे में पूरी क़ौम कुसूरवार ठहरे तो फिर वह रब को एक बेऐब जवान बैल लेकर गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करे। 4 वह जवान बैल को मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े के पास ले आए और अपना हाथ उसके सर पर रखकर उसे रब के सामने ज़बह करे। 5 फिर वह जानवर के खून में से कुछ लेकर ख़ैमे में जाए। 6 वहाँ वह अपनी उँगली उसमें डालकर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कमरे के परदे पर छिड़के। 7 फिर वह ख़ैमे के अंदर की उस कुरबानगाह के चारों सींगों पर खून लगाए जिस पर बख़र जलाया जाता है। बाकी खून वह बाहर ख़ैमे के दरवाज़े पर की उस कुरबानगाह के पाए पर उडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 8 जवान बैल की सारी चरबी, अंतडियों पर की सारी चरबी, 9 गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के करीब होती है और जोड़कलेजी को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 10 यह बिलकुल उसी तरह किया जाए जिस तरह उस बैल के साथ किया गया जो सलामती की कुरबानी के लिए पेश किया जाता है। इमाम यह सब कुछ उस कुरबानगाह पर जला दे जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 11 लेकिन वह



उस की खाल, उसका सारा गोशत, सर और पिडलियाँ, अंतडियाँ और उनका गोबर 12 खैमागाह के बाहर ले जाए। यह चीजें उस पाक जगह पर जहाँ कुरबानियों की राख फेंकी जाती है लकड़ियों पर रखकर जला देनी हैं।

### कौम के लिए गुनाह की कुरबानी

13 अगर इसराईल की पूरी जमात न गैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुकम से तजावुज किया है और जमात को मालूम नहीं था तो भी वह कुसूरवार है। 14 जब लोगों को पता लगे कि हमने गुनाह किया है तो जमात मुलाकात के खैमे के पास एक जवान बैल ले आए और उसे गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करे। 15 जमात के बुजुर्ग रब के सामने अपने हाथ उसके सर पर रखें, और वह वहीं ज़बह किया जाए। 16 फिर इमामे-आज़म जानवर के खून में से कुछ लेकर मुलाकात के खैमे में जाए। 17 वहाँ वह अपनी उँगली उसमें डालकर उसे सात बार रब के सामने यानी मुक़द्दसतरीन कम्रे के परदे पर छिड़के। 18 फिर वह खैमे के अंदर की उस कुरबानगाह के चारों सींगों पर खून लगाए जिस पर बखूर जलाया जाता है। बाकी खून वह बाहर खैमे के दरवाज़े की उस कुरबानगाह के पाए पर उंडेले जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। 19 इसके बाद वह उस की तमाम चरबी निकालकर कुरबानगाह पर जला दे। 20 उस बैल के साथ वह सब कुछ करे जो उसे अपने जाती गैरइरादी गुनाह के लिए करना होता है। यों वह लोगों का कफ़फ़ारा देगा और उन्हें मुआफ़ी मिल जाएगी। 21 आखिर में वह बैल को खैमागाह के बाहर ले जाकर उस तरह जला दे जिस तरह उसे अपने लिए बैल को जला देना होता है। यह जमात का गुनाह दूर करने की कुरबानी है।

### कौम के राहनुमा के लिए गुनाह की कुरबानी

22 अगर कोई सरदार गैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुकम से तजावुज करे और यों कुसूरवार ठहरे तो 23 जब भी उसे पता लगे कि मुझसे गुनाह हुआ है तो वह कुरबानी के लिए एक बेऐब बकरा ले आए। 24 वह अपना हाथ बकरे के सर पर रखकर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होनेवाली कुरबानियाँ ज़बह की जाती हैं। यह गुनाह की कुरबानी है। 25 इमाम अपनी उँगली खून में डालकर उसे उस कुरबानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाकी खून वह कुरबानगाह के पाए पर उंडेले। 26 फिर वह उस की सारी चरबी उस तरह निकाले जिस तरह वह सलामती की कुरबानियों की चरबी जला देता है। यों इमाम उस आदमी का कफ़फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

### आम लोगों के लिए गुनाह की कुरबानी

27 अगर कोई आम शख्स गैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुकम से तजावुज करे और यों कुसूरवार ठहरे तो 28 जब भी उसे पता लगे कि मुझसे गुनाह हुआ है तो वह कुरबानी के लिए एक बेऐब बकरी ले आए। 29 वह अपना हाथ बकरी के सर पर रखकर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होनेवाली कुरबानियाँ ज़बह की जाती हैं। 30 इमाम अपनी उँगली खून में डालकर उसे उस कुरबानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाकी खून वह कुरबानगाह के पाए पर उंडेले। 31 फिर वह उस की सारी चरबी उस तरह निकाले जिस तरह वह सलामती की कुरबानियों की चरबी निकालता है। इसके बाद वह उसे कुरबानगाह पर जला दे। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है। यों इमाम उस आदमी का कफ़फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी हासिल हो जाएगी।

32 अगर वह गुनाह की कुरबानी के लिए भेड़ का बच्चा लाना चाहे तो वह बेऐब मादा हो। 33 वह अपना हाथ उसके सर पर रखकर उसे वहाँ ज़बह करे जहाँ भस्म होनेवाली कुरबानियाँ ज़बह की जाती हैं। 34 इमाम अपनी उँगली खून में डालकर उसे उस कुरबानगाह के चारों सींगों पर लगाए जिस पर जानवर जलाए जाते हैं। बाकी खून वह कुरबानगाह के पाए पर उंडेले। 35 फिर वह उस की तमाम चरबी उस तरह निकाले जिस तरह सलामती की कुरबानी के लिए ज़बह किए गए जवान मेंढे की चरबी निकाली जाती है। इसके बाद इमाम चरबी को कुरबानगाह पर उन कुरबानियों समेत जला दे जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यों इमाम उस आदमी का कफ़फ़ारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

## 5

### गुनाह की कुरबानियों के बारे में खास हिदायात

1 हो सकता है कि किसी ने यों गुनाह किया कि उसने कोई ज़ुर्म देखा या वह उसके बारे में कुछ जानता है। तो भी जब गवाहों को क्रमम के लिए बुलाया जाता है तो वह गवाही देने के लिए सामने नहीं आता। इस सूत में वह कुसूरवार ठहरता है।

2 हो सकता है कि किसी ने गैरइरादी तौर पर किसी नापाक चीज़ को छू लिया है, खाह वह किसी जंगली जानवर, मवेशी या रेंगेनेवाले जानवर की लाश क्यों न हो। इस सूत में वह नापाक है और कुसूरवार ठहरता है।

3 हो सकता है कि किसी ने गैरइरादी तौर पर किसी शख्स की नापाकी को छु लिया है यानी उस की कोई ऐसी चीज़ जिससे वह नापाक हो गया है। जब उसे मालूम हो जाता है तो वह कुस्वरार ठहरता है।

4 हो सकता है कि किसी ने बेपरवाई से कुछ करने की कसम खाई है, चाहे वह अच्छा काम था या गलत। जब वह जान लेता है कि उसने क्या किया है तो वह कुस्वरार ठहरता है।

5 जो इस तरह के किसी गुनाह की बिना पर कुस्वरार हो, लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तसलीम करे। 6 फिर वह गुनाह की कुरबानी के तौर पर एक भेड़ या बकरी पेश करे। यों इमाम उसका कफ़फारा देगा।

7 अगर कुस्वरार शख्स गुरबत के बाइस भेड़ या बकरी न दे सके तो वह रब को दो कुप्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक गुनाह की कुरबानी के लिए और एक भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए। 8 वह उन्हें इमाम के पास ले आए। इमाम पहले गुनाह की कुरबानी के लिए परिदा पेश करे। वह उस की गरदन मरोड़ डाले लेकिन ऐसे कि सर जुदा न हो जाए। 9 फिर वह उसके खून में से कुछ कुरबानगाह के एक पहलू पर छिड़के। बाकी खून वह यों निकलने दे कि वह कुरबानगाह के पाए पर टपके। यह गुनाह की कुरबानी है। 10 फिर इमाम दूसरे परिदे को क़वायद के मुताबिक भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करे। यों इमाम उस आदमी का कफ़फारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

11 अगर वह शख्स गुरबत के बाइस दो कुप्रियाँ या दो जवान कबूतर भी न दे सके तो फिर वह गुनाह की कुरबानी के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करे। वह उस पर न तेल उंडेले, न लुबान रखे, क्योंकि यह गल्ला की नज़र नहीं बल्कि गुनाह की कुरबानी है। 12 वह उसे इमाम के पास ले आए जो यादगार का हिस्सा यानी मुष्टी-भर उन कुरबानियों के साथ जला दे जो रब के लिए जलाई जाती हैं। यह गुनाह की कुरबानी है। 13 यों इमाम उस आदमी का कफ़फारा देगा और उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। गल्ला की नज़र की तरह बाकी मैदा इमाम का हिस्सा है।”

### कुस्र की कुरबानी

14 रब ने मूसा से कहा, 15 “अगर किसी ने बेईमानी करके गैरइरादी तौर पर रब की मख़सस और मुक़द्दस चीज़ों के सिलसिले में गुनाह किया हो, ऐसा शख्स कुस्र की कुरबानी के तौर पर रब को बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा या बकरा पेश करे। उस की क़ीमत मक़दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 16 जितना नुक़सान मक़दिस को हुआ है उतना ही वह दे। इसके अलावा वह मज़ीद 20 फ़ीसद अदा करे। वह उसे इमाम को दे दे और इमाम जानवर को कुस्र की कुरबानी के तौर पर पेश करके उसका कफ़फारा दे। यों उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।

17 अगर कोई गैरइरादी तौर पर गुनाह करके रब के किसी हुक्म से तजावुज़ करे तो वह कुस्वरार है, और वह उसका जिम्मादार ठहरेगा। 18 वह कुस्र की कुरबानी के तौर पर इमाम के पास एक बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा ले आए। उस की क़ीमत मक़दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। फिर इमाम यह कुरबानी उस गुनाह के लिए चढ़ाए जो कुस्वरार शख्स ने गैरइरादी तौर पर किया है। यों उसे मुआफ़ी मिल जाएगी। 19 यह कुस्र की कुरबानी है, क्योंकि वह रब का गुनाह करके कुस्वरार ठहरा है।”

## 6

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “हो सकता है किसी ने गुनाह करके बेईमानी की है, मसलन उसने अपने पड़ोसी की कोई चीज़ वापस नहीं की जो उसके सुपर्द की गई थी या जो उसे गिरवी के तौर पर मिली थी, या उसने उस की कोई चीज़ चोरी की, या उसने किसी से कोई चीज़ छीन ली, 3 या उसने किसी की गुमशुदा चीज़ के बारे में झूट बोला जब उसे मिल गई, या उसने कसम खाकर झूट बोला है, या इस तरह का कोई और गुनाह किया है। 4 अगर वह इस तरह का गुनाह करके कुस्वरार ठहरे तो लाज़िम है कि वह वही चीज़ वापस करे जो उसने चोरी की या छीन ली या जो उसके सुपर्द की गई या जो गुमशुदा होकर उसके पास आ गई है 5 या जिसके बारे में उसने कसम खाकर झूट बोला है। वह उसका उतना ही वापस करके 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। और वह यह सब कुछ उस दिन वापस करे जब वह अपनी कुस्र की कुरबानी पेश करता है। 6 कुस्र की कुरबानी के तौर पर वह एक बेऐब और क़ीमत के लिहाज़ से मुनासिब मेंढा इमाम के पास ले आए और रब को पेश करे। उस की क़ीमत मक़दिस की शरह के मुताबिक़ मुक़र्रर की जाए। 7 फिर इमाम रब के सामने उसका कफ़फारा देगा तो उसे मुआफ़ी मिल जाएगी।”

### भस्म होनेवाली कुरबानी

8 रब ने मूसा से कहा, 9 “हासून और उसके बेटों को भस्म होनेवाली कुरबानियों के बारे में ज़ैल की हिदायात देना : भस्म होनेवाली कुरबानी पूरी रात सुबह तक कुरबानगाह की उस जगह पर रहे जहाँ आग जलती है। आग को बुझने न देना। 10 सुबह को इमाम कतान का लिबास और कतान का पाजामा पहनकर कुरबानी से बची हुई राख कुरबानगाह के पास ज़मीन पर डाले।

11 फिर वह अपने कपड़े बदलकर राख को खैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर छोड़ आए। 12 कुरबानगाह पर आग जलती रहे। वह कभी भी न बुझे। हर सुबह इमाम लकड़ियाँ चुनकर उस पर भस्म होनेवाली कुरबानी तरतीब से रखे और उस पर सलामती की कुरबानी की चरबी जला दे। 13 आग हमेशा जलती रहे। वह कभी न बुझने पाए।

### गल्ला की नज़र

14 गल्ला की नज़र के बारे में हिदायात यह हैं : हास्न के बेटे उसे कुरबानगाह के सामने रब को पेश करें। 15 फिर इमाम यादगार का हिस्सा यानी तेल से मिलाया गया मुठी-भर बेहतरीन मैदा और कुरबानी का तमाम लुबान लेकर कुरबानगाह पर जला दे। इसकी ख़ुशबू रब को पसंद है। 16 हास्न और उसके बेटे कुरबानी का बाकी हिस्सा खा लें। लेकिन वह उसे मुक़द्दस जगह पर यानी मुलाकात के ख़ैमे की चारदीवारी के अंदर खाएँ, और उसमें खमीर न हो। 17 उसे पकाने के लिए उसमें खमीर न डाला जाए। मैंने जलनेवाली कुरबानियों में से यह हिस्सा उनके लिए मुक़र्रर किया है। यह गुनाह की कुरबानी और कुस्र की कुरबानी की तरह निहायत मुक़द्दस है। 18 हास्न की औलाद के तमाम मर्द उसे खाएँ। यह उसूल अबद तक कायम रहे। जो भी उसे छुएगा वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाएगा।”

19 रब ने मूसा से कहा, 20 “जब हास्न और उसके बेटों को इमाम की जिम्मादारी उठाने के लिए मख़सूस करके तेल से मसह किया जाएगा तो वह डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा पेश करें। उसका आधा हिस्सा सुबह को और आधा हिस्सा शाम के वक़्त पेश किया जाए। वह गल्ला की यह नज़र रोज़ाना पेश करें। 21 उसे तेल के साथ मिलाकर तवे पर पकाना है। फिर उसे टुकड़े टुकड़े करके गल्ला की नज़र के तौर पर पेश करना। उस की ख़ुशबू रब को पसंद है। 22 यह कुरबानी हमेशा हास्न की नसल का वह आदमी पेश करे जिसे मसह करके इमामे-आज़म का ओहदा दिया गया है, और वह उसे पूरे तौर पर रब के लिए जला दे। 23 इमाम की गल्ला की नज़र हमेशा पूरे तौर पर जलाना। उसे न खाना।”

### गुनाह की कुरबानी

24 रब ने मूसा से कहा, 25 “हास्न और उसके बेटों को गुनाह की कुरबानी के बारे में ज़ैल की हिदायात देना : गुनाह की कुरबानी को रब के सामने वही जबह करना है जहाँ भस्म होनेवाली कुरबानी जबह की जाती है। वह निहायत मुक़द्दस है। 26 उसे पेश करनेवाला इमाम उसे मुक़द्दस जगह पर यानी मुलाकात के ख़ैमे की चारदीवारी के अंदर खाए। 27 जो भी इस कुरबानी के गोशत को छू लेता है वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाता है। अगर कुरबानी के खून के छीटे किसी लिबास पर पड़ जाएँ तो उसे मुक़द्दस जगह पर धोना है। 28 अगर गोशत को हंडिया में पकाया गया हो तो उस बरतन को बाद में तोड़ देना है। अगर उसके लिए पीतल का बरतन इस्तेमाल किया गया हो तो उसे खूब मँझकर पानी से साफ़ करना। 29 इमामों के खानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं। यह खाना निहायत मुक़द्दस है। 30 लेकिन गुनाह की हर वह कुरबानी खाई न जाए जिसका खून मुलाकात के ख़ैमे में इसलिए लाया गया है कि मक़दिस में किसी का कफ़फ़ारा दिया जाए। उसे जलाना है।

## 7

### कुस्र की कुरबानी

1 कुस्र की कुरबानी जो निहायत मुक़द्दस है उसके बारे में हिदायात यह हैं :

2 कुस्र की कुरबानी वही जबह करनी है जहाँ भस्म होनेवाली कुरबानी जबह की जाती है। उसका खून कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़का जाए। 3 उस की तमाम चरबी निकालकर कुरबानगाह पर चढ़ानी है यानी उस की दूध, अंतडियों पर की चरबी, 4 गुरदे उस चरबी समेत जो उन पर और कमर के करीब होती है और जोड़कलेजी। इन चीज़ों को गुरदों के साथ ही अलग करना है। 5 इमाम यह सब कुछ रब को कुरबानगाह पर जलनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करे। यह कुस्र की कुरबानी है। 6 इमामों के खानदानों में से तमाम मर्द उसे खा सकते हैं। लेकिन उसे मुक़द्दस जगह पर खाया जाए। यह निहायत मुक़द्दस है।

7 गुनाह और कुस्र की कुरबानी के लिए एक ही उसूल है, जो इमाम कुरबानी को पेश करके कफ़फ़ारा देता है उसको उसका गोशत मिलता है। 8 इस तरह जो इमाम किसी जानवर को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर चढ़ाता है उसी को जानवर की खाल मिलती है। 9 और इसी तरह तनूर में, कड़ाही में या तवे पर पकाई गई गल्ला की हर नज़र उस इमाम को मिलती है जिसने उसे पेश किया है। 10 लेकिन हास्न के तमाम बेटों को गल्ला की बाकी नज़रें बराबर बराबर मिलती रहीं, खाह उनमें तेल मिलाया गया हो या वह ख़ुरक हों।

### सलामती की कुरबानी

11 सलामती की कुरबानी जो रब को पेश की जाती है उसके बारे में ज़ैल की हिदायात हैं :

12 अगर कोई इस कुरबानी से अपनी शक्रगुजारी का इजहार करना चाहे तो वह जानवर के साथ बेखमीरी रोटी जिसमें तेल डाला गया हो, बेखमीरी रोटी जिस पर तेल लगाया गया हो और रोटी जिसमें बेहतरीन मैदा और तेल मिलाया गया हो पेश करे। 13 इसके अलावा वह खमीरी रोटी भी पेश करे। 14 पेश करनेवाला कुरबानी की हर चीज का एक हिस्सा उठाकर रब के लिए मखसूस करे। यह उस इमाम का हिस्सा है जो जानवर का खून कुरबानगाह पर छिड़कता है। 15 गोशत उसी दिन खायी जाए जब जानवर को ज़बह किया गया हो। अगली सुबह तक कुछ नहीं बचना चाहिए।

16 इस कुरबानी का गोशत सिर्फ इस सूत में अगले दिन खायी जा सकता है जब किसी ने मन्नत मानकर या अपनी खुशी से उसे पेश किया है। 17 अगर कुछ गोशत तीसरे दिन तक बच जाए तो उसे जलाना है। 18 अगर उसे तीसरे दिन भी खायी जाए तो रब यह कुरबानी कबूल नहीं करेगा। उसका कोई फायदा नहीं होगा बल्कि उसे नापाक करार दिया जाएगा। जो भी उससे खाएगा वह कुसूरवार ठहरेगा। 19 अगर यह गोशत किसी नापाक चीज से लग जाए तो उसे नहीं खाना है बल्कि उसे जलाया जाए। अगर गोशत पाक है तो हर शख्स जो खुद पाक है उसे खा सकता है। 20 लेकिन अगर नापाक शख्स रब को पेश की गई सलामती की कुरबानी का यह गोशत खाए तो उसे उस की कौम में से मिटा डालना है। 21 हो सकता है कि किसी ने किसी नापाक चीज को छू लिया है चाहे वह नापाक शख्स, जानवर या कोई और धिनैनी और नापाक चीज हो। अगर ऐसा शख्स रब को पेश की गई सलामती की कुरबानी का गोशत खाए तो उसे उस की कौम में से मिटा डालना है।”

### चरबी और खून खाना मना है

22 रब ने मूसा से कहा, 23 “इसराइलियों को बता देना कि गाय-बैल और भेड़-बकरियों की चरबी खाना तुम्हारे लिए मना है। 24 तुम फितरी तौर पर मरे हुए जानवरों और फाड़े हुए जानवरों की चरबी दीगर कामों के लिए इस्तेमाल कर सकते हो, लेकिन उसे खाना मना है। 25 जो भी उस चरबी में से खाए जो जलाकर रब को पेश की जाती है उसे उस की कौम में से मिटा डालना है। 26 जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ परिटों या दीगर जानवरों का खून खाना मना है। 27 जो भी खून खाए उसे उस की कौम में से मिटाया जाए।”

### कुरबानियों में से इमाम का हिस्सा

28 रब ने मूसा से कहा, 29 “इसराइलियों को बताना कि जो रब को सलामती की कुरबानी पेश करे वह रब के लिए एक हिस्सा मखसूस करे। 30 वह जलनेवाली यह कुरबानी अपने हाथों से रब को पेश करे। इसके लिए वह जानवर की चरबी और सीना रब के सामने पेश करे। सीना हिलानेवाली कुरबानी हो। 31 इमाम चरबी को कुरबानगाह पर जला दे जबकि सीना हासून और उसके बेटों का हिस्सा है। 32 कुरबानी की दहनी रान इमाम को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर दी जाए। 33 वह उस इमाम का हिस्सा है जो सलामती की कुरबानी का खून और चरबी चढ़ाता है।

34 इसराइलियों की सलामती की कुरबानियों में से मैंने हिलानेवाला सीना और उठानेवाली रान इमामों को दी है। यह चीजें हमेशा के लिए इसराइलियों की तरफ से इमामों का हक हैं।”

35 यह उस दिन जलनेवाली कुरबानियों में से हासून और उसके बेटों का हिस्सा बन गई जब उन्हें मकदिस में रब की खिदमत में पेश किया गया। 36 रब ने उस दिन जब उन्हें तेल से मसह किया गया हुक्म दिया था कि इसराइली यह हिस्सा हमेशा इमामों को दिया करें।

37 गरज़ यह हिदायात तमाम कुरबानियों के बारे में हैं यानी भस्म होनेवाली कुरबानी, गल्ला की नज़र, गुनाह की कुरबानी, कुसूर की कुरबानी, इमाम को मकदिस में खिदमत के लिए मखसूस करने की कुरबानी और सलामती की कुरबानी के बारे में। 38 रब ने मूसा को यह हिदायात सीना पहाड़ पर दी, उस दिन जब उसने इसराइलियों को हुक्म दिया कि वह दशते-सीना में रब को अपनी कुरबानियाँ पेश करें।

## 8

### हासून और उसके बेटों की मखसूसियत

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “हासून और उसके बेटों को मेरे हज़र ले आना। नीज़ इमामों के लिबास, मसह का तेल, गुनाह की कुरबानी के लिए जवान बैल, दो मेंढे और बेखमीरी रोटियों की टोकरी ले आना। 3 फिर पूरी जमात को खैमे के दरवाजे पर जमा करना।”

4 मूसा ने ऐसा ही किया। जब पूरी जमात इकट्ठी हो गई तो 5 उसने उनसे कहा, “अब मैं वह कुछ करता हूँ जिसका हुक्म रब ने दिया है।” 6 मूसा ने हासून और उसके बेटों को सामने लाकर गुस्त कराया। 7 उसने हासून को कतान का जेरजामा पहनाकर कमरबंद लपेटा। फिर उसने चोगा पहनाया जिस पर उसने बालापोश को महारत से बुने हुए पटके से बाँधा। 8 इसके बाद उसने सीने का कीसा लगाकर उसमें दोनों कुरे बनाम ऊरीम और तुमीम रखे। 9 फिर उसने हासून के सर पर पगड़ी रखी

जिसके सामनेवाले हिस्से पर उसने मुकद्दस ताज यानी सोने की तख्ती लगा दी। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

10 इसके बाद मूसा ने मसह के तेल से मकदिस को और जो कुछ उसमें था मसह करके उसे मख्सूसो-मुकद्दस किया।

11 उसने यह तेल सात बार जानवर चढ़ाने की कुरबानागाह और उसके सामान पर छिड़क दिया। इसी तरह उसने सात बार धोने के हौज़ और उस ढोंचे पर तेल छिड़क दिया जिस पर हौज़ रखा हुआ था। यों यह चीज़ें मख्सूसो-मुकद्दस हुईं। 12 उसने हासून के सर पर मसह का तेल उंडेलकर उसे मसह किया। यों वह मख्सूसो-मुकद्दस हुआ।

13 फिर मूसा ने हासून के बेटों को सामने लाकर उन्हें जेरजामे पहनाए, कमरबंद लपेटे और उनके सरों पर पगडि़याँ बाँधीं। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

14 अब मूसा ने गुनाह की कुरबानी के लिए जवान बैल को पेश किया। हासून और उसके बेटों ने अपने हाथ उसके सर पर रखे। 15 मूसा ने उसे जबह करके उसके खून में से कुछ लेकर अपनी उँगली से कुरबानागाह के सींगों पर लगा दिया ताकि वह गुनाहों से पाक हो जाए। बाकी खून उसने कुरबानागाह के पाए पर उंडेल दिया। यों उसने उसे मख्सूसो-मुकद्दस करके उसका कफ़फ़ारा दिया। 16 मूसा ने अंतडियों पर की तमाम चरबी, जोड़कलेजी और दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत लेकर कुरबानागाह पर जला दिए। 17 लेकिन बैल की खाल, गोशत और अंतडियों के गोबर को उसने खैमागाह के बाहर ले जाकर जला दिया। सब कुछ उस हुक्म के मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दिया था।

18 इसके बाद उसने भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए पहला मेंढा पेश किया। हासून और उसके बेटों ने अपने हाथ उसके सर पर रख दिए। 19 मूसा ने उसे जबह करके उसका खून कुरबानागाह के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 20 उसने मेंढे को टुकड़े टुकड़े करके सर, टुकड़े और चरबी जला दी। 21 उसने अंतडियाँ और पिंडलियाँ पानी से साफ़ करके पूरे मेंढे को कुरबानागाह पर जला दिया। सब कुछ उस हुक्म के ऐन मुताबिक हुआ जो रब ने मूसा को दिया था। रब के लिए जलनेवाली यह कुरबानी भस्म होनेवाली कुरबानी थी, और उस की खुशबू रब को पसंद थी।

22 इसके बाद मूसा ने दूसरे मेंढे को पेश किया। इस कुरबानी का मकसद इमामों को मकदिस में खिदमत के लिए मख्सूस करना था। हासून और उसके बेटों ने अपने हाथ मेंढे के सर पर रख दिए। 23 मूसा ने उसे जबह करके उसके खून में से कुछ लेकर हासून के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाया। 24 यही उसने हासून के बेटों के साथ भी किया। उसने उन्हें सामने लाकर उनके दहने कान की लौ पर और उनके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर खून लगाया। बाकी खून उसने कुरबानागाह के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 25 उसने मेंढे की चरबी, दूध, अंतडियों पर की सारी चरबी, जोड़कलेजी, दोनों गुरदे उनकी चरबी समेत और दहनी रान अलग की। 26 फिर वह रब के सामने पड़ी बेखमीरी रोटियों की टोकरी में से एक सादा रोटी, एक रोटी जिसमें तेल डाला गया था और एक रोटी जिस पर तेल लगाया गया था लेकर चरबी और रान पर रख दी। 27 उसने यह सब कुछ हासून और उसके बेटों के हाथों पर रखकर उसे हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब को पेश किया। 28 फिर उसने यह चीज़ें उनसे वापस लेकर कुरबानागाह पर जला दी जिस पर पहले भस्म होनेवाली कुरबानी रखी गई थी। रब के लिए जलनेवाली यह कुरबानी इमामों को मख्सूस करने के लिए चढ़ाई गई, और उस की खुशबू रब को पसंद थी।

29 मूसा ने सीना भी लिया और उसे हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाया। यह मख्सूसियत के मेंढे में से मूसा का हिस्सा था। मूसा ने इसमें भी सब कुछ रब के हुक्म के ऐन मुताबिक किया।

30 फिर उसने मसह के तेल और कुरबानागाह पर के खून में से कुछ लेकर हासून, उसके बेटों और उनके कपड़ों पर छिड़क दिया। यों उसने उन्हें और उनके कपड़ों को मख्सूसो-मुकद्दस किया।

31 मूसा ने उनसे कहा, “गोशत को मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर उबालकर उसे उन रोटियों के साथ खाना जो मख्सूसियत की कुरबानियों की टोकरी में पड़ी हैं। क्योंकि रब ने मुझे यही हुक्म दिया है। 32 गोशत और रोटियों का बकाया जला देना। 33 सात दिन तक मुलाकात के खैमे के दरवाजे में से न निकलना, क्योंकि मकदिस में खिदमत के लिए तुम्हारी मख्सूसियत के इतने ही दिन हैं। 34 जो कुछ आज हुआ है वह रब के हुक्म के मुताबिक हुआ ताकि तुम्हारा कफ़फ़ारा दिया जाए। 35 तुम्हें सात रात और दिन तक खैमे के दरवाजे के अंदर रहना है। रब की इस हिदायत को मानो वरना तुम मर जाओगे, क्योंकि यह हुक्म मुझे रब की तरफ से दिया गया है।”

36 हासून और उसके बेटों ने उन तमाम हिदायत पर अमल किया जो रब ने मूसा की मारिफत उन्हें दी थीं।

## 9

हासून कुरबानियाँ चढ़ाता है

1 मखससियत के सात दिन के बाद मूसा ने आठवें दिन हासून, उसके बेटों और इसराईल के बुजुर्गों को बुलाया। 2 उसने हासून से कहा, “एक बेऐब बछड़ा और एक बेऐब मेंढा चुनकर रब को पेश कर। बछड़ा गुनाह की कुरबानी के लिए और मेंढा भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए हो। 3 फिर इसराईलियों को कह देना कि गुनाह की कुरबानी के लिए एक बकरा जबकि भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए एक बेऐब एकसाला बछड़ा और एक बेऐब एकसाला भेड़ का बच्चा पेश करो। 4 साथ ही सलामती की कुरबानी के लिए एक बैल और एक मेंढा चुनो। तेल के साथ मिलाई हुई गल्ला की नज़र भी लेकर सब कुछ रब को पेश करो। क्योंकि आज ही रब तुम पर जाहिर होगा।”

5 इसराईली मूसा की मतलूबा तमाम चीजें मुलाकात के खैमे के सामने ले आए। पूरी जमात करीब आकर रब के सामने खड़ी हो गई। 6 मूसा ने उनसे कहा, “तुम्हें वही करना है जिसका हुक्म रब ने तुम्हें दिया है। क्योंकि आज ही रब का जलाल तुम पर जाहिर होगा।”

7 फिर उसने हासून से कहा, “कुरबानगाह के पास जाकर गुनाह की कुरबानी और भस्म होनेवाली कुरबानी चढ़ाकर अपना और अपनी क्रौम का कफफारा देना। रब के हुक्म के मुताबिक क्रौम के लिए भी कुरबानी पेश करना ताकि उसका कफफारा दिया जाए।”

8 हासून कुरबानगाह के पास आया। उसने बछड़े को ज़बह किया। यह उसके लिए गुनाह की कुरबानी था। 9 उसके बेटे बछड़े का खून उसके पास ले आए। उसने अपनी उँगली खून में डुबोकर उसे कुरबानगाह के सींगों पर लगाया। बाकी खून को उसने कुरबानगाह के पाए पर उंडेल दिया। 10 फिर उसने उस की चरबी, गुरदों और जोड़कलेजी को कुरबानगाह पर जला दिया। जैसे रब ने मूसा को हुक्म दिया था वैसे ही हासून ने किया। 11 बछड़े का गोशत और खाल उसने खैमागाह के बाहर ले जाकर जला दी।

12 इसके बाद हासून ने भस्म होनेवाली कुरबानी को ज़बह किया। उसके बेटों ने उसे उसका खून दिया, और उसने उसे कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 13 उन्होंने उसे कुरबानी के मुब्तलिफ टुकड़े सर समेत दिए, और उसने उन्हें कुरबानगाह पर जला दिया। 14 फिर उसने उस की अंतड़ियाँ और पिंडलियाँ धोकर भस्म होनेवाली कुरबानी की बाकी चीजों पर रखकर जला दी।

15 अब हासून ने क्रौम के लिए कुरबानी चढ़ाई। उसने गुनाह की कुरबानी के लिए बकरा ज़बह करके उसे पहली कुरबानी की तरह चढ़ाया। 16 उसने भस्म होनेवाली कुरबानी भी कवायद के मुताबिक चढ़ाई। 17 उसने गल्ला की नज़र पेश की और उसमें से मुट्ठी-भर कुरबानगाह पर जला दिया। यह गल्ला की उस नज़र के अलावा थी जो सुबह को भस्म होनेवाली कुरबानी के साथ चढ़ाई गई थी। 18 फिर उसने सलामती की कुरबानी के लिए बैल और मेंढे को ज़बह किया। यह भी क्रौम के लिए थी। उसके बेटों ने उसे जानवरों का खून दिया, और उसने उसे कुरबानगाह के चार पहलुओं पर छिड़क दिया। 19 लेकिन उन्होंने बैल और मेंढे को चरबी, दुम, अंतड़ियों पर की चरबी और जोड़कलेजी निकालकर 20 सीने के टुकड़ों पर रख दिया। हासून ने चरबी का हिस्सा कुरबानगाह पर जला दिया। 21 सीने के टुकड़े और दहनी राने उसने हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाई। उसने सब कुछ मूसा के हुक्म के मुताबिक ही किया।

22 तमाम कुरबानियाँ पेश करने के बाद हासून ने अपने हाथ उठाकर क्रौम को बरकत दी। फिर वह कुरबानगाह से उतरकर 23 मूसा के साथ मुलाकात के खैमे में दाखिल हुआ। जब दोनों बाहर आए तो उन्होंने क्रौम को बरकत दी। तब रब का जलाल पूरी क्रौम पर जाहिर हुआ। 24 रब के हुज़ूर से आग निकलकर कुरबानगाह पर उतरी और भस्म होनेवाली कुरबानी और चरबी के टुकड़े भस्म कर दिए। यह देखकर लोग खुशी के नारे मारने लगे और मुँह के बल गिर गए।

## 10

### नदब और अबीह का गुनाह

1 हासून के बेटे नदब और अबीह ने अपने अपने बखूरदान लेकर उनमें जलते हुए कोयले डाले। उन पर बखूर डालकर वह रब के सामने आए ताकि उसे पेश करें। लेकिन यह आग नाजायज़ थी। रब ने यह पेश करने का हुक्म नहीं दिया था।

2 अचानक रब के हुज़ूर से आग निकली जिसने उन्हें भस्म कर दिया। वहीं रब के सामने वह मर गए।

3 मूसा ने हासून से कहा, “अब वही हुआ है जो रब ने फरमाया था कि जो मेरे करीब हैं उनसे मैं अपनी कुदूसियत जाहिर करूँगा, मैं तमाम क्रौम के सामने ही अपने जलाल का इज़हार करूँगा।”

हासून खामोश रहा। 4 मूसा ने हासून के चचा उज्जियेल के बेटों मीसाएल और इल्सफन को बुलाकर कहा, “इधर आओ और अपने रिश्तेदारों को मकदिस के सामने से उठाकर खैमागाह के बाहर ले जाओ।” 5 वह आए और मूसा के हुक्म के ऐन मुताबिक उन्हें उनके ज़ेरजामों समेत उठाकर खैमागाह के बाहर ले गए।

6 मूसा ने हास्न और उसके दीगर बेटों इलियज़र और इतमर से कहा, “मातम का इज़हार न करो। न अपने बाल बिखरने दो, न अपने कपड़े फाड़ो। वरना तुम मर जाओगे और रब पूरी जमात से नाराज़ हो जाएगा। लेकिन तुम्हारे रिश्तेदार और बाक़ी तमाम इसराईलीज़र इनका मातम करें जिनको रब ने आग से हलाक कर दिया है। 7 मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े के बाहर न निकलो वरना तुम मर जाओगे, क्योंकि तुम्हें रब के तेल से मसह किया गया है।” चुनौचे उन्हींने ऐसा ही किया।

### इमामों के लिए हिदायत

8 रब ने हास्न से कहा, 9 “जब भी तुझे या तेरे बेटों को मुलाकात के ख़ैमे में दाखिल होना है तो मैं या कोई और नशा-आवर चीज़ पीना मना है, वरना तुम मर जाओगे। यह उसूल आनेवाली नसलों के लिए भी अबद तक अनमिट है। 10 यह भी लाज़िम है कि तुम मुक़द्दस और ग़ैरमुक़द्दस चीज़ों में, पाक और नापाक चीज़ों में इम्तियाज़ करो। 11 तुम्हें इसराईलियों को तमाम पाबदियों सिखानी है जो मैंने तुम्हें मूसा की मारिफ़त बताई है।”

12 मूसा ने हास्न और उसके बचे हुए बेटों इलियज़र और इतमर से कहा, “गल्ला की नज़र का जो हिस्सा रब के सामने जलाया नहीं जाता उसे अपने लिए लेकर बेखमीरी रोटी पकाना और कुरबानगाह के पास ही खाना। क्योंकि वह निहायत मुक़द्दस है। 13 उसे मुक़द्दस जगह पर खाना, क्योंकि वह रब की जलनेवाली कुरबानियों में से तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा है। क्योंकि मुझे इसका हुक्म दिया गया है। 14 जो सीना हिलानेवाली कुरबानी और दहनी रान उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश की गई है, वह तुम और तुम्हारे बेटे-बेटियाँ खा सकते हैं। उन्हें मुक़द्दस जगह पर खाना है। इसराईलियों की सलामती की कुरबानियों में से यह टुकड़े तुम्हारा हिस्सा हैं। 15 लेकिन पहले इमाम रान और सीने को जलनेवाली कुरबानियों की चरबी के साथ पेश करें। वह उन्हें हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाएँ। रब फरमाता है कि यह टुकड़े अबद तक तुम्हारे और तुम्हारे बेटों का हिस्सा हैं।”

16 मूसा ने दरियाफ़्त किया कि उस बकरे के गोशत का क्या हुआ जो गुनाह की कुरबानी के तौर पर चढाया गया था। उसे पता चला कि वह भी जल गया था। यह सुनकर उसे हास्न के बेटों इलियज़र और इतमर पर गुस्सा आया। उसने पूछा, 17 “तुम्हें गुनाह की कुरबानी का गोशत क्यों नहीं खाया? तुम्हें उसे मुक़द्दस जगह पर खाना था। यह एक निहायत मुक़द्दस हिस्सा है जो रब ने तुम्हें दिया ताकि तुम जमात का कुसूर दूर करके रब के सामने लोगों का कफ़ारा दो। 18 चूँकि इस बकरे का खून मक़दिस में न लाया गया इसलिए तुम्हें उसका गोशत मक़दिस में खाना था जिस तरह मैंने तुम्हें हुक्म दिया था।”

19 हास्न ने मूसा को जवाब देकर कहा, “देखें, आज लोगों ने अपने लिए गुनाह की कुरबानी और भस्म होनेवाली कुरबानी रब को पेश की है जबकि मुझ पर यह आफ़त गुज़री है। अगर मैं आज गुनाह की कुरबानी से खाता तो क्या यह रब को अच्छा लगता?” 20 यह बात मूसा को अच्छी लगी।

## 11

### पाक और नापाक जानवर

1 रब ने मूसा और हास्न से कहा, 2 “इसराईलियों को बताना कि तुम्हें ज़मीन पर रहनेवाले जानवरों में से ज़ैल के जानवरों को खाने की इजाज़त है : 3 जिनके खुर या पाँव बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें खाने की इजाज़त है। 4-6 ऊँट, बिज्जू या खरगोश खाना मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक है, क्योंकि वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उनके खुर या पाँव चिरे हुए नहीं हैं। 7 सुअर न खाना। वह तुम्हारे लिए नापाक है, क्योंकि उसके खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। 8 न उनका गोशत खाना, न उनकी लाशों को छूना। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

9 समुंदरी और दरियाई जानवर खाने के लिए जायज़ हैं अगर उनके पर और छिलके हों। 10 लेकिन जिनके पर या छिलके नहीं हैं वह सब तुम्हारे लिए मकरूह हैं, खाह वह बड़ी तादाद में मिलकर रहते हैं या नहीं। 11 इसलिए उनका गोशत खाना मना है, और उनकी लाशों से भी धिन खाना है। 12 पानी में रहनेवाले तमाम जानवर जिनके पर या छिलके न हों तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

13 ज़ैल के परिदे तुम्हारे लिए काबिले-धिन हों। इन्हें खाना मना है, क्योंकि वह मकरूह हैं : उकाब, ददियल गिट्ट, काला गिट्ट, 14 लाल चील, हर किस्म की काली चील, 15 हर किस्म का कौवा, 16 उकाबी उल्लू, छोटे कानवाला उल्लू, बड़े कानवाला उल्लू, हर किस्म का बाज़, 17 छोटा उल्लू, कूक, चिंघाडनेवाला उल्लू, 18 सफेद उल्लू, दशती उल्लू, मिसरी गिट्ट, 19 लकलक, हर किस्म का बूतीमार, हुदहुद और चमगादड़। \*

\* 11:19 याद रहे कि क़दीम ज़माने के इन परिदों के अकसर नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़तलिफ़ तरज़ुमा हो सकता है।

20 तमाम पर रखनेवाले कीड़े जो चार पाँवों पर चलते हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं, 21 सिवाए उनके जिनकी टाँगों के दो हिस्से हैं और जो फुदकते हैं। उनको तुम खा सकते हो। 22 इस नाते से तुम मुख्तलिफ क्रिस्म के टिट्टे खा सकते हो। 23 बाकी सब पर रखनेवाले कीड़े जो चार पाँवों पर चलते हैं तुम्हारे लिए मकरूह हैं।

24-28 जो भी जैल के जानवरों की लाशें छुए वह शाम तक नापाक रहेगा : (अलिफ़) खुर रखनेवाले तमाम जानवर सिवाए उनके जिनके खुर या पाँव पूरे तौर पर चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं, (बे) तमाम जानवर जो अपने चार पंजों पर चलते हैं। यह जानवर तुम्हारे लिए नापाक हैं, और जो भी उनकी लाशें उठाए या छुए लाजिम है कि वह अपने कपड़े धो ले। इसके बावजूद भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

29-30 ज़मीन पर रंगेनेवाले जानवरों में से छहूँदर, मुख्तलिफ़ क्रिस्म के चूहे और मुख्तलिफ़ क्रिस्म की छिपकलियाँ तुम्हारे लिए नापाक हैं। 31 जो भी उन्हें और उनकी लाशें छू लेता है वह शाम तक नापाक रहेगा। 32 अगर उनमें से किसी की लाश किसी चीज़ पर गिर पड़े तो वह भी नापाक हो जाएगी। इससे कोई फ़रक नहीं पड़ता कि वह लकड़ी, कपड़े, चमड़े या टाट की बनी हो, न इससे कोई फ़रक पड़ता है कि वह किस काम के लिए इस्तेमाल की जाती है। उसे हर सूरत में पानी में डुबोना है। तो भी वह शाम तक नापाक रहेगी। 33 अगर ऐसी लाश मिट्टी के बरतन में गिर जाए तो जो कुछ भी उसमें है नापाक हो जाएगा और तुम्हें उस बरतन को तोड़ना है। 34 हर खानेवाली चीज़ जिस पर ऐसे बरतन का पानी डाला गया है नापाक है। इसी तरह उस बरतन से निकली हुई हर पीनेवाली चीज़ नापाक है। 35 जिस पर भी ऐसी लाश गिर पड़े वह नापाक हो जाता है। अगर वह तनूर या चूल्हे पर गिर पड़े तो उनको तोड़ देना है। वह नापाक है और तुम्हारे लिए नापाक रहेगा। 36 लेकिन जिस चश्मे या हौज़ में ऐसी लाश गिरे वह पाक रहता है। सिर्फ़ वह जो लाश को छू लेता है नापाक हो जाता है। 37 अगर ऐसी लाश बीजों पर गिर पड़े जिनको अभी बोना है तो वह पाक रहते हैं। 38 लेकिन अगर बीजों पर पानी डाला गया हो और फिर लाश उन पर गिर पड़े तो वह नापाक हैं।

39 अगर ऐसा जानवर जिसे खाने की इजाज़त है मर जाए तो जो भी उस की लाश छुए शाम तक नापाक रहेगा। 40 जो उसमें से कुछ खाए या उसे उठाकर ले जाए उसे अपने कपड़ों को धोना है। तो भी वह शाम तक नापाक रहेगा।

41 हर जानवर जो ज़मीन पर रेंगता है काबिले-धिन है। उसे खाना मना है, 42 चाहे वह अपने पेट पर चाहे चार या इससे जायद पाँवों पर चलता हो। 43 इन तमाम रंगेनेवालों से अपने आपको धिन का बाइस और नापाक न बनाना, 44 क्योंकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ। लाजिम है कि तुम अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस रखो, क्योंकि मैं कुद्दूस हूँ। अपने आपको ज़मीन पर रंगेनेवाले तमाम जानवरों से नापाक न बनाना। 45 मैं रब हूँ। मैं तुम्हें मिसर से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा ख़ुदा बनूँ। लिहाज़ा मुक़द्दस रहो, क्योंकि मैं कुद्दूस हूँ।

46 ज़मीन पर चलनेवाले जानवरों, परिदों, आबी जानवरों और ज़मीन पर रंगेनेवाले जानवरों के बारे में शर अ यही है। 47 लाजिम है कि तुम नापाक और पाक में इम्तियाज़ करो, ऐसे जानवरों में जो खाने के लिए जायज़ हैं और ऐसों में जो नाजायज़ हैं।”

## 12

### बच्चे की पैदाइश के बाद माँ पर पाबंदियाँ

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराइलियों को बता कि जब किसी औरत के लडका पैदा हो तो वह माहवारी के ऐयाम की तरह सात दिन तक नापाक रहेगी। 3 आठवें दिन लडके का खतना करवाना है। 4 फिर माँ मज्जीद 33 दिन इंतज़ार करे। इसके बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो खून बहने से पैदा हुई है। इस दौरान वह कोई मख़सूस और मुक़द्दस चीज़ न छुए, न मक़दिस के पास जाए।

5 अगर उसके लडकी पैदा हो जाए तो वह माहवारी के ऐयाम की तरह नापाक है। यह नापाकी 14 दिन तक रहेगी। फिर वह मज्जीद 66 दिन इंतज़ार करे। इसके बाद उस की वह नापाकी दूर हो जाएगी जो खून बहने से पैदा हुई है।

6 जब लडके या लडकी के सिलसिले में यह दिन गुज़र जाएँ तो वह मुलाक़ात के ख़ेमे के दरवाज़े पर इमाम को जैल की चीज़ें दे : भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए एक यकसाला भेड़ का बच्चा और गुनाह की कुरबानी के लिए एक जवान कबूतर या कुम्भी। 7 इमाम यह जानवर रब को पेश करके उसका कफ़फ़ारा दे। फिर खून बहने के बाइस पैदा होनेवाली नापाकी दूर हो जाएगी। उसूल एक ही है, चाहे लडका हो या लडकी।

8 अगर वह गुरबत के बाइस भेड़ का बच्चा न दे सके तो फिर वह दो कुम्भियाँ या दो जवान कबूतर ले आए, एक भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए और दूसरा गुनाह की कुरबानी के लिए। यों इमाम उसका कफ़फ़ारा दे और वह पाक हो जाएगी।”



## 13

## जिल्दी बीमारियाँ

1 रब ने मुसा और हासून से कहा, 2 “अगर किसी की जिल्द में सूजन या पपडी या सफेद दाग हो और खतरा है कि वबाई जिल्दी बीमारी हो तो उसे इमामों यानी हासून या उसके बेटों के पास ले आना है। 3 इमाम उस जगह का मुआयना करे। अगर उसके बाल सफेद हो गए हों और वह जिल्द में धँसी हुई हो तो वबाई बीमारी है। जब इमाम को यह मालूम हो तो वह उसे नापाक करार दे। 4 लेकिन हो सकता है कि जिल्द की जगह सफेद तो है लेकिन जिल्द में धँसी हुई नहीं है, न उसके बाल सफेद हुए हैं। इस सूत्र में इमाम उस शख्स को सात दिन के लिए अलहदगी में रखे। 5 सातवें दिन इमाम दुबारा उसका मुआयना करे। अगर वह देखे कि मुतअस्सिरा जगह वैसी ही है और फैली नहीं तो वह उसे मज़ीद सात दिन अलहदगी में रखे। 6 सातवें दिन वह एक और मरतबा उसका मुआयना करे। अगर उस जगह का रंग दुबारा सेहतमंद जिल्द के रंग की मानिंद हो रहा हो और फैली न हो तो वह उसे पाक करार दे। इसका मतलब है कि यह मरज़ आम पपडी से ज्यादा नहीं है। मरीज़ अपने कपडे धो ले तो वह पाक हो जाएगा। 7 लेकिन अगर इसके बाद मुतअस्सिरा जगह फैलने लगे तो वह दुबारा अपने आपको इमाम को दिखाए। 8 इमाम उसका मुआयना करे। अगर जगह वाकई फैल गई हो तो इमाम उसे नापाक करार दे, क्योंकि यह वबाई जिल्दी मरज़ है।

9 अगर किसी के जिस्म पर वबाई जिल्दी मरज़ नज़र आए तो उसे इमाम के पास लाया जाए। 10 इमाम उसका मुआयना करे। अगर मुतअस्सिरा जिल्द में सफेद सूजन हो, उसके बाल भी सफेद हो गए हों, और उसमें कच्चा गोशत मौजूद हो 11 तो इसका मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी पुरानी है। इमाम उस शख्स को सात दिन के लिए अलहदगी में रखकर इंतज़ार न करे बल्कि उसे फ़ौरन नापाक करार दे, क्योंकि यह उस की नापाकी का सबूत है। 12 लेकिन अगर बीमारी जल्दी से फैल गई हो, यहाँ तक कि सर से लेकर पाँव तक पूरी जिल्द मुतअस्सिरा हुई हो 13 तो इमाम यह देखकर मरीज़ को पाक करार दे। चूँकि पूरी जिल्द सफेद हो गई है इसलिए वह पाक है। 14 लेकिन जब भी कहीं कच्चा गोशत नज़र आए उस वक़्त वह नापाक हो जाता है। 15 इमाम यह देखकर मरीज़ को नापाक करार दे। कच्चा गोशत हर सूत्र में नापाक है, क्योंकि इसका मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 16 अगर कच्चे गोशत का यह ज़ख़म भर जाए और मुतअस्सिरा जगह की जिल्द सफेद हो जाए तो मरीज़ इमाम के पास जाए। 17 अगर इमाम देखे कि वाकई ऐसा ही हुआ है और मुतअस्सिरा जिल्द सफेद हो गई है तो वह उसे पाक करार दे।

18 अगर किसी की जिल्द पर फोडा हो लेकिन वह ठीक हो जाए 19 और उस की जगह सफेद सूजन या सुरखी-मायल सफेद दाग नज़र आए तो मरीज़ अपने आपको इमाम को दिखाए। 20 अगर वह उसका मुआयना करके देखे कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द के अंदर धँसी हुई है और उसके बाल सफेद हो गए हैं तो वह मरीज़ को नापाक करार दे। क्योंकि इसका मतलब है कि जहाँ पहले फोडा था वहाँ वबाई जिल्दी बीमारी पैदा हो गई है। 21 लेकिन अगर इमाम देखे कि मुतअस्सिरा जगह के बाल सफेद नहीं हैं, वह जिल्द में धँसी हुई नज़र नहीं आती और उसका रंग दुबारा सेहतमंद जिल्द की मानिंद हो रहा है तो वह उसे सात दिन के लिए अलहदगी में रखे। 22 अगर इस दौरान बीमारी मज़ीद फैल जाए तो इमाम मरीज़ को नापाक करार दे, क्योंकि इसका मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 23 लेकिन अगर दाग न फैले तो इसका मतलब है कि यह सिर्फ़ उस भरे हुए ज़ख़म का निशान है जो फोडे से पैदा हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक करार दे।

24 अगर किसी की जिल्द पर जलने का ज़ख़म लग जाए और मुतअस्सिरा जगह पर सुरखी-मायल सफेद दाग या सफेद दाग पैदा हो जाए 25 तो इमाम मुतअस्सिरा जगह का मुआयना करे। अगर मालूम हो जाए कि मुतअस्सिरा जगह के बाल सफेद हो गए हैं और वह जिल्द में धँसी हुई है तो इसका मतलब है कि चोट की जगह पर वबाई जिल्दी मरज़ लग गया है। इमाम उसे नापाक करार दे, क्योंकि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 26 लेकिन अगर इमाम ने मालूम किया है कि दाग में बाल सफेद नहीं हैं, वह जिल्द में धँसा हुआ नज़र नहीं आता और उसका रंग सेहतमंद जिल्द की मानिंद हो रहा है तो वह मरीज़ को सात दिन तक अलहदगी में रखे। 27 अगर वह सातवें दिन मालूम करे कि मुतअस्सिरा जगह फैल गई है तो वह उसे नापाक करार दे। क्योंकि इसका मतलब है कि वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 28 लेकिन अगर दाग फैला हुआ नज़र नहीं आता और मुतअस्सिरा जिल्द का रंग सेहतमंद जिल्द के रंग की मानिंद हो गया है तो इसका मतलब है कि यह सिर्फ़ उस भरे हुए ज़ख़म का निशान है जो जलने से पैदा हुआ था। इमाम मरीज़ को पाक करार दे।

29 अगर किसी के सर या दाढ़ी की जिल्द में निशान नज़र आए 30 तो इमाम मुतअस्सिरा जगह का मुआयना करे। अगर वह धँसी हुई नज़र आए और उसके बाल रंग के लिहाज़ से चमकते हुए सोने की मानिंद और बारीक हों तो इमाम मरीज़ को नापाक करार दे। इसका मतलब है कि ऐसी वबाई जिल्दी बीमारी सर या दाढ़ी की जिल्द पर लग गई है जो खारिश पैदा करती है। 31 लेकिन अगर इमाम ने मालूम किया कि मुतअस्सिरा जगह जिल्द में धँसी हुई नज़र नहीं आती अगरचे उसके बालों का रंग बदल गया है तो वह उसे सात दिन के लिए अलहदगी में रखे। 32 सातवें दिन इमाम जिल्द की मुतअस्सिरा जगह का

मुआयना करे। अगर वह फैली हुई नजर नहीं आती और उसके बालों का रंग चमकदार सोने की मानिंद नहीं है, साथ ही वह जगह जिल्द में धँसी हुई भी दिखाई नहीं देती, 33 तो मरीज़ अपने बाल मूँडवाए। सिर्फ़ वह बाल रह जाएँ जो मुतअस्सिरा जगह से निकलते हैं। इमाम मरीज़ को मज़ीद सात दिन अलहदगी में रखे। 34 सातवें दिन वह उसका मुआयना करे। अगर मुतअस्सिरा जगह नहीं फैली और वह जिल्द में धँसी हुई नजर नहीं आती तो इमाम उसे पाक करार दे। वह अपने कपड़े धो ले तो वह पाक हो जाएगा। 35 लेकिन अगर इसके बाद जिल्द की मुतअस्सिरा जगह फैलना शुरू हो जाए 36 तो इमाम दुबारा उसका मुआयना करे। अगर वह जगह वाकई फैली हुई नजर आए तो मरीज़ नापाक है, चाहे मुतअस्सिरा जगह के बालों का रंग चमकते सोने की मानिंद हो या न हो। 37 लेकिन अगर उसके खयाल में मुतअस्सिरा जगह फैली हुई नजर नहीं आती बल्कि उसमें से काले रंग के बाल निकल रहे हैं तो इसका मतलब है कि मरीज़ की सेहत बहाल हो गई है। इमाम उसे पाक करार दे।

38 अगर किसी मर्द या औरत की जिल्द पर सफ़ेद दाग पैदा हो जाएँ 39 तो इमाम उनका मुआयना करे। अगर उनका सफ़ेद रंग हलका-सा हो तो यह सिर्फ़ बेज़रर पपड़ी है। मरीज़ पाक है।

40-41 अगर किसी मर्द का सर माथे की तरफ़ या पीछे की तरफ़ गंजा है तो वह पाक है। 42 लेकिन अगर उस जगह जहाँ वह गंजा है सुरखी-मायल सफ़ेद दाग हो तो इसका मतलब है कि वहाँ वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। 43 इमाम उसका मुआयना करे। अगर गंजी जगह पर सुरखी-मायल सफ़ेद सूजन हो जो वबाई जिल्दी बीमारी की मानिंद नजर आए 44 तो मरीज़ को वबाई जिल्दी बीमारी लग गई है। इमाम उसे नापाक करार दे।

### नापाक मरीज़ का सुलूक

45 वबाई जिल्दी बीमारी का मरीज़ फटे कपड़े पहने। उसके बाल बिखरे रहें। वह अपनी मूँहों को किसी कपड़े से छुपाए और पुकारता रहे, 'नापाक, नापाक।' 46 जिस वक़्त तक वबाई जिल्दी बीमारी लगी रहे वह नापाक है। वह इस दौरान खैमागाह के बाहर जाकर तनहाई में रहे।

### फफूँदी से निपटने का तरीका

47 हो सकता है कि ऊन या कतान के किसी लिबास पर फफूँदी लग गई है, 48 या कि फफूँदी ऊन या कतान के किसी कपड़े के टुकड़े या किसी चमड़े या चमड़े की किसी चीज़ पर लग गई है। 49 अगर फफूँदी का रंग हरा या लाल-सा हो तो वह फैलनेवाली फफूँदी है, और लाज़िम है कि उसे इमाम को दिखाया जाए। 50 इमाम उसका मुआयना करके उसे सात दिन के लिए अलहदगी में रखे। 51 सातवें दिन वह दुबारा उसका मुआयना करे। अगर फफूँदी फैल गई हो तो इसका मतलब है कि वह नुक़सानदेह है। मुतअस्सिरा चीज़ नापाक है। 52 इमाम उसे जला दे, क्योंकि यह फफूँदी नुक़सानदेह है। लाज़िम है कि उसे जला दिया जाए। 53 लेकिन अगर इन सात दिनों के बाद फफूँदी फैली हुई नजर नहीं आती 54 तो इमाम हुक्म दे कि मुतअस्सिरा चीज़ को धुलवाया जाए। फिर वह उसे मज़ीद सात दिन के लिए अलहदगी में रखे। 55 इसके बाद वह दुबारा उसका मुआयना करे। अगर वह मालूम करे कि फफूँदी तो फैली हुई नजर नहीं आती लेकिन उसका रंग वैसे का वैसे है तो वह नापाक है। उसे जला देना, चाहे फफूँदी मुतअस्सिरा चीज़ के सामनेवाले हिस्से या पिछले हिस्से में लगी हो। 56 लेकिन अगर मालूम हो जाए कि फफूँदी का रंग मॉद पड़ गया है तो इमाम कपड़े या चमड़े में से मुतअस्सिरा जगह फाड़कर निकाल दे। 57 तो भी हो सकता है कि फफूँदी दुबारा उसी कपड़े या चमड़े पर नजर आए। इसका मतलब है कि वह फैल रही है और उसे जला देना लाज़िम है। 58 लेकिन अगर फफूँदी धोने के बाद गायब हो जाए तो उसे एक और दफा धोना है। फिर मुतअस्सिरा चीज़ पाक होगी।

59 इसी तरह फफूँदी से निपटना है, चाहे वह ऊन या कतान के किसी लिबास को लग गई हो, चाहे ऊन या कतान के किसी टुकड़े या चमड़े की किसी चीज़ को लग गई हो। इन्हीं उस्लूओं के तहत फ़ैसला करना है कि मुतअस्सिरा चीज़ पाक है या नापाक।”

## 14

### वबाई जिल्दी बीमारी के मरीज़ की शफा पर कुरबानी

1 ख़ब ने मूसा से कहा, 2 “अगर कोई शख्स जिल्दी बीमारी से शफा पाए और उसे पाक-साफ़ कराना है तो उसे इमाम के पास लाया जाए 3 जो खैमागाह के बाहर जाकर उसका मुआयना करे। अगर वह देखे कि मरीज़ की सेहत वाकई बहाल हो गई है 4 तो इमाम उसके लिए दो जिंदा और पाक परिंदे, देवदार की लकड़ी, किरमिज़ी रंग का धागा और जूफ़ा मँगवाए। 5 इमाम के हुक्म पर परिंदों में से एक को ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी के बरतन के ऊपर ज़बह किया जाए। 6 इमाम जिंदा परिंदे को देवदार की लकड़ी, किरमिज़ी रंग के धागे और जूफ़ा के साथ ज़बह किए गए परिंदे के उस खून में डुबो दे जो मिट्टी के बरतन के पानी में आ गया है। 7 वह पानी से मिलाया हुआ खून सात बार पाक होनेवाले शख्स पर छिड़ककर उसे पाक करार दे,

फिर जिंदा परिदे को खुले मैदान में छोड़ दे।<sup>8</sup> जो अपने आपको पाक-साफ़ करा रहा है वह अपने कपड़े धोए, अपने तमाम बाल मुँडवाए और नहा ले। इसके बाद वह पाक है। अब वह खैमागाह में दाखिल हो सकता है अगरचे वह मज्रीद सात दिन अपने डेर में नहीं जा सकता।<sup>9</sup> सातवें दिन वह दुबारा अपने सर के बाल, अपनी दाढ़ी, अपने अबर और बाकी तमाम बाल मुँडवाए। वह अपने कपड़े धोए और नहा ले। तब वह पाक है।

10 आठवें दिन वह दो भेड़ के नर बच्चे और एक यकसाला भेड़ चुन ले जो बेबेह हों। साथ ही वह गल्ला की नजर के लिए तेल के साथ मिलाया गया साढ़े 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 300 मिलीलिटर तेल ले।<sup>11</sup> फिर जिस इमाम ने उसे पाक करार दिया वह उसे इन कुरबानियों समेत मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर रब को पेश करे।<sup>12</sup> भेड़ का एक नर बच्चा और 300 मिलीलिटर तेल कुसूर की कुरबानी के लिए है। इमाम उन्हें हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए।<sup>13</sup> फिर वह भेड़ के इस बच्चे को खैमे के दरवाजे पर जबह करे जहाँ गुनाह की कुरबानियाँ और भस्म होनेवाली कुरबानियाँ जबह की जाती हैं। गुनाह की कुरबानियों की तरह कुसूर की यह कुरबानी इमाम का हिस्सा है और निहायत मुकद्दस है।<sup>14</sup> इमाम खून में से कुछ लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाए।<sup>15</sup> अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ लेकर अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले।<sup>16</sup> अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथवाली उँगली इस तेल में डुबोकर वह उसे सात बार रब के सामने छिड़के।<sup>17</sup> वह अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह कुसूर की कुरबानी का खून लगा चुका है।<sup>18</sup> इमाम अपनी हथेली पर का बाकी तेल पाक होनेवाले के सर पर डालकर रब के सामने उसका कफ़फ़ारा दे।

19 इसके बाद इमाम गुनाह की कुरबानी चढ़ाकर पाक होनेवाले का कफ़फ़ारा दे। आखिर में वह भस्म होनेवाली कुरबानी का जानवर जबह करे।<sup>20</sup> वह उसे गल्ला की नजर के साथ कुरबानगाह पर चढ़ाकर उसका कफ़फ़ारा दे। तब वह पाक है।

21 अगर शफ़ाय़ाब शख्स गुरबत के बाइस यह कुरबानियाँ नहीं चढ़ा सकता तो फिर वह कुसूर की कुरबानी के लिए भेड़ का सिर्फ़ एक नर बच्चा ले आए। काफी है कि कफ़फ़ारा देने के लिए यही रब के सामने हिलाया जाए। साथ साथ गल्ला की नजर के लिए डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिलाकर पेश किया जाए और 300 मिलीलिटर तेल।<sup>22</sup> इसके अलावा वह दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर पेश करे, एक को गुनाह की कुरबानी के लिए और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए।<sup>23</sup> आठवें दिन वह उन्हें मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर इमाम के पास और रब के सामने ले आए ताकि वह पाक-साफ़ हो जाए।<sup>24</sup> इमाम भेड़ के बच्चे को 300 मिलीलिटर तेल समेत लेकर हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए।<sup>25</sup> वह कुसूर की कुरबानी के लिए भेड़ के बच्चे को जबह करे और उसके खून में से कुछ लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगाए।<sup>26</sup> अब वह 300 मिलीलिटर तेल में से कुछ अपने बाएँ हाथ की हथेली पर डाले<sup>27</sup> और अपने दहने हाथ के अंगूठे के साथवाली उँगली इस तेल में डुबोकर उसे सात बार रब के सामने छिड़क दे।<sup>28</sup> वह अपनी हथेली पर के तेल में से कुछ और लेकर पाक होनेवाले के दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ और दहने पाँव के अंगूठों पर लगा दे यानी उन जगहों पर जहाँ वह कुसूर की कुरबानी का खून लगा चुका है।<sup>29</sup> अपनी हथेली पर का बाकी तेल वह पाक होनेवाले के सर पर डाल दे ताकि रब के सामने उसका कफ़फ़ारा दे।<sup>30</sup> इसके बाद वह शफ़ाय़ाब शख्स की गुंजाइश के मुताबिक दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर चढ़ाए,<sup>31</sup> एक को गुनाह की कुरबानी के लिए और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए। साथ ही वह गल्ला की नजर पेश करे। यों इमाम रब के सामने उसका कफ़फ़ारा देता है।<sup>32</sup> यह उसूल ऐसे शख्स के लिए है जो वबाई जिल्दी बीमारी से शफ़ा पा गया है लेकिन अपनी गुरबत के बाइस पाक हो जाने के लिए पूरी कुरबानी पेश नहीं कर सकता।”

### घरों में फफ़ूँदी

33 रब ने मूसा और हासन से कहा,<sup>34</sup> “जब तुम मुल्के-कनान में दाखिल होंगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो वहाँ ऐसे मकान होंगे जिनमें मैंने फफ़ूँदी फैलने दी है।<sup>35</sup> ऐसे घर का मालिक जाकर इमाम को बताए कि मैंने अपने घर में फफ़ूँदी जैसी कोई चीज़ देखी है।<sup>36</sup> तब इमाम हुक्म दे कि घर का मुआयना करने से पहले घर का पूरा सामान निकाला जाए। वरना अगर घर को नपाक करार दिया जाए तो सामान को भी नपाक करार दिया जाएगा। इसके बाद इमाम अंदर जाकर मकान का मुआयना करे।<sup>37</sup> वह दीवारों के साथ लगी हुई फफ़ूँदी का मुआयना करे। अगर मुतअसिरा जगहें हरी या लाल-सी हों और दीवार के अंदर धँसी हुई नजर आएँ<sup>38</sup> तो फिर इमाम घर से निकलकर सात दिन के लिए ताला लगाए।<sup>39</sup> सातवें दिन वह वापस आकर मकान का मुआयना करे। अगर फफ़ूँदी फैली हुई नजर आए<sup>40</sup> तो वह हुक्म दे कि मुतअसिरा पत्थरों को निकालकर आबादी के बाहर किसी नपाक जगह पर फेंका जाए।<sup>41</sup> नीज़ वह हुक्म दे कि अंदर की दीवारों को कुरेदा जाए और कुरेदी हुई मिट्टी को आबादी के बाहर किसी नपाक जगह पर फेंका जाए।<sup>42</sup> फिर लोग नए पत्थर लगाकर घर को नए गारे से पलस्तर

करें। 43 लेकिन अगर इसके बावजूद फफूँदी दुबारा पैदा हो जाए 44 तो इमाम आकर दुबारा उसका मुआयना करे। अगर वह देखे कि फफूँदी घर में फैल गई है तो इसका मतलब है कि फफूँदी नुकसानदेह है, इसलिए घर नापाक है। 45 लाजिम है कि उसे पूरे तौर पर ढा दिया जाए और सब कुछ यानी उसके पत्थर, लकड़ी और पलस्तर को आबादी के बाहर किसी नापाक जगह पर फेंका जाए।

46 अगर इमाम ने किसी घर का मुआयना करके ताला लगा दिया है और फिर भी कोई उस घर में दाखिल हो जाए तो वह शाम तक नापाक रहेगा। 47 जो ऐसे घर में सोए या खाना खाए लाजिम है कि वह अपने कपड़े धो ले। 48 लेकिन अगर घर को नए सिरे से पलस्तर करने के बाद इमाम आकर उसका दुबारा मुआयना करे और देखे कि फफूँदी दुबारा नहीं निकली तो इसका मतलब है कि फफूँदी खत्म हो गई है। वह उसे पाक करार दे। 49 उसे गुनाह से पाक-साफ कराने के लिए वह दो परिदे, देवदार की लकड़ी, किरमिजी रंग का धागा और जूफा ले ले। 50 वह परिदों में से एक को ताज़ा पानी से भरे हुए मिट्टी के बरतन के ऊपर ज़बह करे। 51 इसके बाद वह देवदार की लकड़ी, जूफा, किरमिजी रंग का धागा और ज़िंदा परिदा लेकर उस ताज़ा पानी में डुबो दे जिसके साथ ज़बह किए हुए परिदे का खून मिलाया गया है और इस पानी को सात बार घर पर छिड़क दे। 52 इन चीज़ों से वह घर को गुनाह से पाक-साफ करता है। 53 आखिर में वह ज़िंदा परिदे को आबादी के बाहर खुले मैदान में छोड़ दे। यों वह घर का कफ़फारा देगा, और वह पाक-साफ हो जाएगा।

54-56 लाजिम है कि हर किस्म की वबाई बीमारी से ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है, चाहे वह वबाई जिल्दी बीमारियों हों (मसलन खारिश, सज़न, पपड़ी या सफेद दाग), चाहे कपड़ों या घरों में फफूँदी हो। 57 इन उस्लों के तहत फैसला करना है कि कोई शख्स या चीज़ पाक है या नापाक।”

## 15

### मर्दों की नापाकी

1 रब ने मूसा और हासन से कहा, 2 “इसराईलियों को बताना कि अगर किसी मर्द को जरयान का मरज़ हो तो वह खारिज होनेवाले माए के सबब से नापाक है, 3 चाहे माए बहता रहता हो या स्क गया हो। 4 जिस चीज़ पर भी मरीज़ लेटता या बैठता है वह नापाक है। 5-6 जो भी उसके लेटने की जगह को छुए या उसके बैठने की जगह पर बैठ जाए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 7 इसी तरह जो भी ऐसे मरीज़ को छुए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 8 अगर मरीज़ किसी पाक शख्स पर थूके तो यही कुछ करना है और वह शख्स शाम तक नापाक रहेगा। 9 जब ऐसा मरीज़ किसी जानवर पर सवार होता है तो हर चीज़ जिस पर वह बैठ जाता है नापाक है। 10 जो भी ऐसी चीज़ छुए या उसे उठाकर ले जाए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 11 जिस किसी को भी मरीज़ अपने हाथ धोए बग़ैर छुए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 12 मिट्टी का जो बरतन ऐसा मरीज़ छुए उसे तोड़ दिया जाए। लकड़ी का जो बरतन वह छुए उसे खूब धोया जाए।

13 जिसे इस मरज़ से शफ़ा मिली है वह सात दिन इंतज़ार करे। इसके बाद वह ताज़ा पानी से अपने कपड़े धोकर नहा ले। फिर वह पाक हो जाएगा। 14 आठवें दिन वह दो कुभ्रियों या दो जवान कबूतर लेकर मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर रब के सामने इमाम को दे। 15 इमाम उनमें से एक को गुनाह की कुरबानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर चढ़ाए। यों वह रब के सामने उसका कफ़फारा देगा।

16 अगर किसी मर्द का नुतफ़ा खारिज हो जाए तो वह अपने पूरे जिस्म को धो ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 17 हर कपड़ा या चमड़ा जिससे नुतफ़ा लग गया हो उसे धोना है। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। 18 अगर मर्द और औरत के हमबिसतर होने पर नुतफ़ा खारिज हो जाए तो लाजिम है कि दोनों नहा लें। वह शाम तक नापाक रहेंगे।

### औरतों की नापाकी

19 माहवारी के वक़्त औरत सात दिन तक नापाक है। जो भी उसे छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। 20 इस दौरान जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती है वह नापाक है। 21-23 जो भी उसके लेटने की जगह को छुए या उसके बैठने की जगह पर बैठ जाए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 24 अगर मर्द औरत से हमबिसतर हो और उसी वक़्त माहवारी के दिन शुरू हो जाए तो मर्द खून लगाने के बाइस सात दिन तक नापाक रहेगा। जिस चीज़ पर भी वह लेटता है वह नापाक हो जाएगी।

25 अगर किसी औरत को माहवारी के दिन छोड़कर किसी और वक़्त कई दिनों तक खून आए या खून माहवारी के दिनों के बाद भी जारी रहे तो वह माहवारी के दिनों की तरह उस वक़्त तक नापाक रहेगी जब तक खून स्क न जाए। 26 जिस चीज़ पर भी वह लेटती या बैठती है वह नापाक है। 27 जो भी ऐसी चीज़ को छुए वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 28 खून के स्क जाने पर औरत मज़ीद सात दिन इंतज़ार करे। फिर वह पाक होगी। 29 आठवें दिन वह दो

कुभ्रियाँ या दो जवान कबूतर लेकर मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर इमाम के पास आए।<sup>30</sup> इमाम उनमें से एक को गुनाह की कुरबानी के लिए और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए चढ़ाए। यों वह रब के सामने उस की नापाकी का कफ़फ़ारा देगा।

31 लाज़िम है कि इसराईलियों को ऐसी चीज़ों से दूर रखा जाए जिनसे वह नापाक हो जाएँ। वरना मेरा वह मक़दिस जो उनके दरमियान है उनसे नापाक हो जाएगा और वह हलाक हो जाएंगे।

32 लाज़िम है कि इस किसम के मामलों से ऐसे निपटो जैसे बयान किया गया है। इसमें वह मर्द शामिल है जो जरयान का मरीज़ है और वह जो नुतफ़ा खारिज होने के बाइस नापाक है।<sup>33</sup> इसमें वह औरत भी शामिल है जिसके माहवारी के ऐयाम हैं और वह मर्द जो नापाक औरत से हमबिसतर हो जाता है।”

## 16

### योमे-कफ़फ़ारा

1 जब हास्न के दो बेटे रब के करीब आकर हलाक हुए तो इसके बाद रब मूसा से हमक़लाम हुआ।<sup>2</sup> उसने कहा,

“अपने भाई हास्न को बताना कि वह सिर्फ़ मुकर्रर वक्त पर परदे के पीछे मुक़द्दसतरीन कमरे में दाखिल होकर अहद के संदूक के ढकने के सामने खड़ा हो जाए, वरना वह मर जाएगा। क्योंकि मैं खुद उस ढकने के ऊपर बादल की सूरत में जाहिर होता हूँ।<sup>3</sup> और जब भी वह दाखिल हो तो गुनाह की कुरबानी के लिए एक जवान बैल और भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए एक मेंढा पेश करे।<sup>4</sup> पहले वह नहाकर इमाम के कतान के मुक़द्दस कपड़े पहन ले यानी जेरजामा, उसके नीचे पाजामा, फिर कमरबंद और पगड़ी।<sup>5</sup> इसराईल की जमात हास्न को गुनाह की कुरबानी के लिए दो बकरे और भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए एक मेंढा दे।

6 पहले हास्न अपने और अपने घराने के लिए जवान बैल को गुनाह की कुरबानी के तौर पर चढ़ाए।<sup>7</sup> फिर वह दोनों बकरों को मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर रब के सामने ले आए।<sup>8</sup> वहाँ वह कुरा डालकर एक को रब के लिए चुने और दूसरे को अज़ाज़ेल के लिए।<sup>9</sup> जो बकरा रब के लिए है उसे वह गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करे।<sup>10</sup> दूसरा बकरा जो कुरे के ज़रीए अज़ाज़ेल के लिए चुना गया उसे ज़िंदा हालत में रब के सामने खड़ा किया जाए ताकि वह जमात का कफ़फ़ारा दे। वहाँ से उसे रेगिस्तान में अज़ाज़ेल के पास भेजा जाए।

11 लेकिन पहले हास्न जवान बैल को गुनाह की कुरबानी के तौर पर चढ़ाकर अपना और अपने घराने का कफ़फ़ारा दे। उसे ज़बह करने के बाद<sup>12</sup> वह बख़र की कुरबानागह से जलते हुए कोयलों से भरा हुआ बरतन लेकर अपनी दोनों मुठ्रियाँ बारीक ख़ुशबूदार बख़र से भर ले और मुक़द्दसतरीन कमरे में दाखिल हो जाए।<sup>13</sup> वहाँ वह रब के हुज़ूर बख़र को जलते हुए कोयलों पर डाल दे। इससे पैदा होनेवाला धुआँ अहद के संदूक का ढकना छुपा देगा ताकि हास्न मर न जाए।<sup>14</sup> अब वह जवान बैल के खून में से कुछ लेकर अपनी उँगली से ढकने के सामनेवाले हिस्से पर छिड़के, फिर कुछ अपनी उँगली से सात बार उसके सामने ज़मीन पर छिड़के।<sup>15</sup> इसके बाद वह उस बकरे को ज़बह करे जो कौम के लिए गुनाह की कुरबानी है। वह उसका खून मुक़द्दसतरीन कमरे में ले आए और उसे बैल के खून की तरह अहद के संदूक के ढकने पर और सात बार उसके सामने ज़मीन पर छिड़के।<sup>16</sup> यों वह मुक़द्दसतरीन कमरे का कफ़फ़ारा देगा जो इसराईलियों की नापाकियों और तमाम गुनाहों से मुतअस्सिर होता रहता है। इससे वह मुलाकात के पूरे खैमे का भी कफ़फ़ारा देगा जो खैमागाह के दरमियान होने के बाइस इसराईलियों की नापाकियों से मुतअस्सिर होता रहता है।

17 जितना वक्त हास्न अपना, अपने घराने का और इसराईल की पूरी जमात का कफ़फ़ारा देने के लिए मुक़द्दसतरीन कमरे में रहेगा इस दौरान किसी दूसरे को मुलाकात के खैमे में ठहरने की इजाज़त नहीं है।<sup>18</sup> फिर वह मुक़द्दसतरीन कमरे से निकलकर खैमे में रब के सामने पड़ी कुरबानागह का कफ़फ़ारा दे। वह बैल और बकरे के खून में से कुछ लेकर उसे कुरबानागह के चारों सींगों पर लगाए।<sup>19</sup> कुछ खून वह अपनी उँगली से सात बार उस पर छिड़क दे। यों वह उसे इसराईलियों की नापाकियों से पाक करके मख़सूसो-मुक़द्दस करेगा।

20 मुक़द्दसतरीन कमरे, मुलाकात के खैमे और कुरबानागह का कफ़फ़ारा देने के बाद हास्न ज़िंदा बकरे को सामने लाए।

21 वह अपने दोनों हाथ उसके सर पर रखे और इसराईलियों के तमाम कुसूर यानी उनके तमाम जरायम और गुनाहों का इक्रार करके उन्हें बकरे के सर पर डाल दे। फिर वह उसे रेगिस्तान में भेज दे। इसके लिए वह बकरे को एक आदमी के सपुर्द करे जिसे यह ज़िम्मादारी दी गई है।<sup>22</sup> बकरा अपने आप पर उनका तमाम कुसूर उठाकर किसी वीरान जगह में ले जाएगा। वहाँ साथवाला आदमी उसे छोड़ आए।

23 इसके बाद हास्न मुलाकात के खैमे में जाए और कतान के वह कपड़े जो उसने मुक़द्दसतरीन कमरे में दाखिल होने से पेशतर पहन लिए थे उतारकर वहीं छोड़ दे।<sup>24</sup> वह मुक़द्दस जगह पर नहाकर अपनी ख़िदमत के आम कपड़े पहन ले।

फिर वह बाहर आकर अपने और अपनी कौम के लिए भस्म होनेवाली कुरबानी पेश करे ताकि अपना और अपनी कौम का कफ़फ़ारा दे। 25 इसके अलावा वह गुनाह की कुरबानी की चरबी कुरबानगाह पर जला दे।

26 जो आदमी अज़ाज़ेल के लिए बकरे को रेगिस्तान में छोड़ आया है वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। इसके बाद वह खैमागाह में आ सकता है।

27 जिस बैल और बकरे को गुनाह की कुरबानी के लिए पेश किया गया और जिनका खून कफ़फ़ारा देने के लिए मुक़द्दसतरीन कमरे में लाया गया, लाज़िम है कि उनकी खालें, गोशत और गोबर खैमागाह के बाहर जला दिया जाए। 28 यह चीज़ें जलानेवाला बाद में अपने कपड़े धोकर नहा ले। फिर वह खैमागाह में आ सकता है।

29 लाज़िम है कि सातवें महीने के दसवें दिन इसराइली और उनके दरमियान रहनेवाले परदेसी अपनी जान को दुख दें और काम न करें। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद तक कायम रहे। 30 इस दिन तुम्हारा कफ़फ़ारा दिया जाएगा ताकि तुम्हें पाक किया जाए। तब तुम रब के सामने अपने तमाम गुनाहों से पाक ठहरोगे। 31 पूरा दिन आराम करो और अपनी जान को दुख दो। यह उसूल अबद तक कायम रहे।

32 इस दिन इमामे-आज़म तुम्हारा कफ़फ़ारा दे, वह इमाम जिसे उसके बाप की जगह मसह किया गया और इख्तियार दिया गया है। वह कतान के मुक़द्दस कपड़े पहनकर 33 मुक़द्दसतरीन कमरे, मुलाकात के खैमे, कुरबानगाह, इमामों और जमात के तमाम लोगों का कफ़फ़ारा दे। 34 लाज़िम है कि साल में एक दफा इसराइलियों के तमाम गुनाहों का कफ़फ़ारा दिया जाए। यह उसूल तुम्हारे लिए अबद तक कायम रहे।”

सब कुछ वैसे ही किया गया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

## 17

### कुरबानी चढ़ाने का मक़ाम

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “हाज़न, उसके बेटों और तमाम इसराइलियों को हिदायत देना 3-4 कि जो भी इसराइली अपनी गाय या भेड़-बकरी मुलाकात के खैमे के दरवाज़े पर रब को कुरबानी के तौर पर पेश न करे बल्कि खैमागाह के अंदर या बाहर किसी और जगह पर जबह करे वह खून बहाने का कुसूरवार ठहरेगा। उसने खून बहाया है, और लाज़िम है कि उसे उस की कौम में से मिटाया जाए। 5 इस हिदायत का मक़सद यह है कि इसराइली अब से अपनी कुरबानियाँ खुले मैदान में जबह न करें बल्कि रब को पेश करें। वह अपने जानवरों को मुलाकात के खैमे के दरवाज़े पर इमाम के पास लाकर उन्हें रब को सलामती की कुरबानी के तौर पर पेश करें। 6 इमाम उनका खून मुलाकात के खैमे के दरवाज़े पर की कुरबानगाह पर छिड़के और उनकी चरबी उस पर जला दे। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है। 7 अब से इसराइली अपनी कुरबानियाँ उन बकरों के देवताओं को पेश न करें जिनकी पैरवी करके उन्होंने जिना किया है। यह उनके लिए और उनके बाद आनेवाली नसलों के लिए एक दायमी उसूल है।

8 लाज़िम है कि हर इसराइली और तुम्हारे दरमियान रहनेवाला परदेसी अपनी भस्म होनेवाली कुरबानी या कोई और कुरबानी 9 मुलाकात के खैमे के दरवाज़े पर लाकर रब को पेश करे। वरना उसे उस की कौम में से मिटाया जाएगा।

### खून खाना मना है

10 खून खाना बिलकुल मना है। जो भी इसराइली या तुम्हारे दरमियान रहनेवाला परदेसी खून खाए मैं उसके खिलाफ़ हो जाऊँगा और उसे उस की कौम में से मिटा डालूँगा। 11 क्योंकि हर मखलूक के खून में उस की जान है। मैंने उसे तुम्हें दे दिया है ताकि वह कुरबानगाह पर तुम्हारा कफ़फ़ारा दे। क्योंकि खून ही उस जान के ज़रीए जो उसमें है तुम्हारा कफ़फ़ारा देता है। 12 इसलिए मैं कहता हूँ कि न कोई इसराइली न कोई परदेसी खून खाए।

13 अगर कोई भी इसराइली या परदेसी किसी जानवर या परिंदे का शिकार करके पकड़े जिसे खाने की इज़ाज़त है तो वह उसे जबह करने के बाद उसका पूरा खून ज़मीन पर बहने दे और खून पर मिट्टी डाले। 14 क्योंकि हर मखलूक का खून उस की जान है। इसलिए मैंने इसराइलियों को कहा है कि किसी भी मखलूक का खून न खाओ। हर मखलूक का खून उस की जान है, और जो भी उसे खाए उसे कौम में से मिटा देना है।

15 अगर कोई भी इसराइली या परदेसी ऐसे जानवर का गोशत खाए जो फ़िखरी तौर पर मर गया या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो तो वह अपने कपड़े धोकर नहा ले। वह शाम तक नापाक रहेगा। 16 जो ऐसा नहीं करता उसे अपने कुसूर की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।”

## 18

## नाजायज़ जिंसी ताल्लुकात

1 रब ने मुसा से कहा, 2 “इसराइलियों को बताना कि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। 3 मिसरियों की तरह जिंदगी न गुज़ारना जिनमें तुम रहते थे। मुल्के-कनान के लोगों की तरह भी जिंदगी न गुज़ारना जिनके पास मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ। उनके रस्मो-रिवाज न अपनाना। 4 मेरे ही अहकाम पर अमल करो और मेरी हिदायात के मुताबिक चलो। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। 5 मेरी हिदायात और अहकाम के मुताबिक चलना, क्योंकि जो यों करेगा वह जीता रहेगा। मैं रब हूँ।

6 तुममें से कोई भी अपनी करीबी रिश्तेदार से हमबिसतर न हो। मैं रब हूँ।

7 अपनी माँ से हमबिसतर न होना, वरना तेरे बाप की बेहुरमती हो जाएगी। वह तेरी माँ है, इसलिए उससे हमबिसतर न होना।

8 अपने बाप की किसी भी बीवी से हमबिसतर न होना, वरना तेरे बाप की बेहुरमती हो जाएगी।

9 अपनी बहन से हमबिसतर न होना, चाहे वह तेरे बाप या तेरी माँ की बेटी हो, चाहे वह तेरे ही घर में या कहीं और पैदा हुई हो।

10 अपनी पोती या नवासी से हमबिसतर न होना, वरना तेरी अपनी बेहुरमती हो जाएगी।

11 अपने बाप की बीवी की बेटी से हमबिसतर न होना। वह तेरी बहन है।

12 अपनी फूफ़ी से हमबिसतर न होना। वह तेरे बाप की करीबी रिश्तेदार है।

13 अपनी खाला से हमबिसतर न होना। वह तेरी माँ की करीबी रिश्तेदार है।

14 अपने बाप के भाई की बीवी से हमबिसतर न होना, वरना तेरे बाप के भाई की बेहुरमती हो जाएगी। उस की बीवी तेरी चची है।

15 अपनी बहू से हमबिसतर न होना। वह तेरे बेटे की बीवी है।

16 अपनी भाबी से हमबिसतर न होना, वरना तेरे भाई की बेहुरमती हो जाएगी।

17 अगर तेरा जिंसी ताल्लुक किसी औरत से हो तो उस की बेटी, पोती या नवासी से हमबिसतर होना मना है, क्योंकि वह उस की करीबी रिश्तेदार है। ऐसा करना बड़ी शर्मनाक हरकत है।

18 अपनी बीवी के जीते-जी उस की बहन से शादी न करना।

19 किसी औरत से उस की माहवारी के दिनों में हमबिसतर न होना। इस दौरान वह नापाक है।

20 किसी दूसरे मर्द की बीवी से हमबिसतर न होना, वरना तू अपने आपको नापाक करेगा।

21 अपने किसी भी बच्चे को मलिक देवता को कुरबानी के तौर पर पेश करके जला देना मना है। ऐसी हरकत से तू अपने खुदा के नाम को दाग लगाएगा। मैं रब हूँ।

22 मर्द दूसरे मर्द के साथ जिंसी ताल्लुकात न रखे। ऐसी हरकत काबिले-घिन है।

23 किसी जानवर से जिंसी ताल्लुकात न रखना, वरना तू नापाक हो जाएगा। औरतों के लिए भी ऐसा करना मना है। यह बड़ी शर्मनाक हरकत है।

24 ऐसी हरकतों से अपने आपको नापाक न करना। क्योंकि जो कौम में तुम्हारे आगे मुल्क से निकालूँगा वह इसी तरह नापाक होती रही। 25 मुल्क खुद भी नापाक हुआ। इसलिए मैंने उसे उसके कुस्ूर के सबब से सजा दी, और नतीजे में उसने अपने बाशिंदों को उगल दिया। 26 लेकिन तुम मेरी हिदायात और अहकाम के मुताबिक चलो। न देखी और न परदेसी ऐसी कोई धिनौनी हरकत करें। 27 क्योंकि यह तमाम काबिले-घिन बातें उनसे हुई जो तुमसे पहले इस मुल्क में रहते थे। यों मुल्क नापाक हुआ। 28 लिहाज़ा अगर तुम भी मुल्क को नापाक करोगे तो वह तुम्हें इसी तरह उगल देगा जिस तरह उसने तुमसे पहले मौजूद कौमों को उगल दिया। 29 जो भी मज़कूरा धिनौनी हरकतों में से एक करे उसे उस की कौम में से मिटाया जाए। 30 मेरे अहकाम के मुताबिक चलते रहो और ऐसे काबिले-घिन रस्मो-रिवाज न अपनाना जो तुम्हारे आने से पहले रायज थे। इनसे अपने आपको नापाक न करना। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

## 19

## मुक़द्दस कौम के लिए हिदायात

1 रब ने मुसा से कहा, 2 “इसराइलियों की पूरी जमात को बताना कि मुक़द्दस रहो, क्योंकि मैं रब तुम्हारा खुदा कुद्दस हूँ।

3 तुममें से हर एक अपने माँ-बाप की इज़्जत करे। हफ़ते के दिन काम न करना। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। 4 न बुतों की तरफ रूज़ करना, न अपने लिए देवता ढालना। मैं ही रब तुम्हारा खुदा हूँ।

5 जब तुम रब को सलामती की कुरबानी पेश करते हो तो उसे यों चढाओ कि तुम मंज़ूर हो जाओ। 6 उसका गोशत उसी दिन या अगले दिन खया जाए। जो भी तीसरे दिन तक बच जाता है उसे जलाना है। 7 अगर कोई उसे तीसरे दिन खाए तो उसे इल्म होना चाहिए कि यह कुरबानी नापाक है और रब को पसंद नहीं है। 8 ऐसे शख्स को अपने कुसूर की सज़ा उठानी पड़ेगी, क्योंकि उसने उस चीज़ की मुक़द्दस हालत ख़तम की है जो रब के लिए मख़सूस की गई थी। उसे उस की क़ौम में से मिटाया जाए।

9 कटाई के वक़्त अपनी फ़सल पूरे तौर पर न काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना। इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच जाए उसे छोड़ना। 10 अंगूर के बाग़ों में भी जो कुछ अंगूर तोड़ते वक़्त बच जाए उसे छोड़ देना। जो अंगूर ज़मीन पर गिर जाएँ उन्हें उठाकर न ले जाना। उन्हें ग़रीबों और परदेसियों के लिए छोड़ देना। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

11 चोरी न करना, झूट न बोलना, एक दूसरे को धोका न देना।

12 मेरे नाम की क़सम खाकर धोका न देना, वरना तुम मेरे नाम को दाग़ लगाओगे। मैं रब हूँ।

13 एक दूसरे को न दबाना और न लटूना। किसी की मज़दूरी उसी दिन की शाम तक दे देना और उसे अगली सुबह तक रोके न रखना।

14 बहरे को न कोसना, न अंधे के रास्ते में कोई चीज़ रखना जिससे वह ठोकर खाए। इसमें भी अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना। मैं रब हूँ।

15 अदालत में किसी की हक़तलफ़ी न करना। फ़ैसला करते वक़्त किसी की भी जानिबदारी न करना, चाहे वह ग़रीब या असरो-रसूखवाला हो। इन्साफ़ से अपने पड़ोसी की अदालत कर।

16 अपनी क़ौम में इधर उधर फिरते हुए किसी पर बुहतान न लगाना। कोई भी ऐसा काम न करना जिससे किसी की जान ख़तरे में पड़ जाए। मैं रब हूँ।

17 दिल में अपने भाई से नफ़रत न करना। अगर किसी की सरज़निश करनी है तो रूबरू करना, वरना तू उसके सबब से कुसूरवार ठहरेगा।

18 इतक़ाम न लेना। अपनी क़ौम के किसी शख्स पर देर तक तेरा गुस्सा न रहे बल्कि अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है। मैं रब हूँ।

19 मेरी हिदायात पर अमल करो। दो मुख़्तलिफ़ किस्म के जानवरों को मिलाप न करने देना। अपने खेत में दो किस्म के बीज न बोना। ऐसा कपड़ा न पहनना जो दो मुख़्तलिफ़ किस्म के धाग़ों का बुना हुआ हो।

20 अगर कोई आदमी किसी लौंडी से जिसकी मँगनी किसी और से हो चुकी हो हमबिसतर हो जाए और लौंडी को अब तक न पैसों से न वैसे ही आज़ाद किया गया हो तो मुनासिब सज़ा दी जाए। लेकिन उन्हें सज़ाए-मौत न दी जाए, क्योंकि उसे अब तक आज़ाद नहीं किया गया। 21 कुसूरवार आदमी मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर एक मेंढा ले आए ताकि वह रब को कुसूर की कुरबानी के तौर पर पेश किया जाए। 22 इमाम इस कुरबानी से रब के सामने उसके गुनाह का कफ़फ़ारा दे। यों उसका गुनाह मुआफ़ किया जाएगा। 23 जब मुल्के-कनान में दाखिल होने के बाद तुम फलदार दरख़्त लगाओगे तो पहले तीन साल उनका फल न खाना बल्कि उसे ममन\* समझना। 24 चौथे साल उनका तमाम फल ख़ुशी के मुक़द्दस नज़राने के तौर पर रब के लिए मख़सूस किया जाए। 25 पाँचवें साल तुम उनका फल खा सकते हो। यों तुम्हारी फ़सल बढ़ाई जाएगी। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

26 ऐसा गोशत न खाना जिसमें खून हो। फाल या शुगून न निकालना।

27 अपने सर के बाल गोल शक्ल में न कटवाना, न अपनी दाढ़ी को तराशना। 28 अपने आपको मुरदों के सबब से काटकर ज़खमी न करना, न अपनी जिल्द पर नुक़्श गुदवाना। मैं रब हूँ।

29 अपनी बेटी को कसबी न बनाना, वरना उस की मुक़द्दस हालत जाती रहेगी और मुल्क जिनाकारी के बाइस हरामकारी से भर जाएगा।

30 हफ़ते के दिन आराम करना और मेरे मक़दिस का एहताराम करना। मैं रब हूँ।

31 ऐसे लोगों के पास न जाना जो मुरदों से राबिता करते हैं, न ग़ैबदानों की तरफ़ रूजू करना, वरना तुम उनसे नापाक हो जाओगे। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

32 बढ़े लोगों के सामने उठकर खड़ा हो जाना, बुजुर्गों की इज़्ज़त करना और अपने ख़ुदा का एहताराम करना। मैं रब हूँ।

33 जो परदेसी तुम्हारे मुल्क में तुम्हारे दरमियान रहता है उसे न दबाना। 34 उसके साथ ऐसा सलूक कर जैसा अपने हमवतनों के साथ करता है। जिस तरह तू अपने आपसे मुहब्बत रखता है उसी तरह उससे भी मुहब्बत रखना। याद रहे कि तुम ख़ुद मिसर में परदेसी थे। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

\* 19:23 लफज़ी तर्ज़ुमा : नामख़तना।



- 35 नाइनसाफी न करना। न अदालत में, न लंबाई नापते वक्त, न तोलते वक्त और न किसी चीज की मिकदार नापते वक्त।  
 36 सहीह तराजू, सहीह बाट और सहीह पैमाना इस्तेमाल करना। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से निकाल लाया हूँ।  
 37 मेरी तमाम हिदायात और तमाम अहकाम मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ।”

## 20

### जरायम की सज़ाएँ

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराइलियों को बताना कि तुममें से जो भी अपने बच्चे को मलिक देवता को कुरबानी के तौर पर पेश करे उसे सज़ाए-मौत देनी है। इसमें कोई फ़रक नहीं कि वह इसराइली है या परदेसी। जमात के लोग उसे संगसार करें। 3 मैं खुद ऐसे शरख के खिलाफ हो जाऊँगा और उसे उस की कौम में से मिटा डालूँगा। क्योंकि अपने बच्चों को मलिक को पेश करने से उसने मेरे मकदिस को नापाक किया और मेरे नाम को दाग लगाया है। 4 अगर जमात के लोग अपनी आँखें बंद करके ऐसे शरख की हरकतें नज़रंदाज़ करें और उसे सज़ाए-मौत न दें 5 तो फिर मैं खुद ऐसे शरख और उसके घराने के खिलाफ खड़ा हो जाऊँगा। मैं उसे और उन तमाम लोगों को कौम में से मिटा डालूँगा जिन्होंने उसके पीछे लगकर मलिक देवता को सिजदा करने से ज़िना किया है।

6 जो शरख मुरदों से राबिता करने और ग़ैबदानी करनेवालों की तरफ रूज़ करता है मैं उसके खिलाफ हो जाऊँगा। उनकी पैरवी करने से वह ज़िना करता है। मैं उसे उस की कौम में से मिटा डालूँगा। 7 अपने आपको मेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस रखो, क्योंकि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। 8 मेरी हिदायात मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ जो तुम्हें मखसूसो-मुकद्दस करता हूँ।

9 जिसने भी अपने बाप या माँ पर लानत भेजी है उसे सज़ाए-मौत दी जाए। इस हरकत से वह अपनी मौत का खुद ज़िम्मादार है।

10 अगर किसी मर्द ने किसी की बीवी के साथ ज़िना किया है तो दोनों को सज़ाए-मौत देनी है।

11 जो मर्द अपने बाप की बीवी से हमबिसतर हुआ है उसने अपने बाप की बेहुरमती की है। दोनों को सज़ाए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार है।

12 अगर कोई मर्द अपनी बहू से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को सज़ाए-मौत देनी है। जो कुछ उन्होंने किया है वह निहायत शर्मनाक है। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार है।

13 अगर कोई मर्द किसी दूसरे मर्द से ज़िंसी ताल्लुकात रखे तो दोनों को इस धिनौनी हरकत के बाइस सज़ाए-मौत देनी है। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार है।

14 अगर कोई आदमी अपनी बीवी के अलावा उस की माँ से भी शादी करे तो यह एक निहायत शर्मनाक बात है। दोनों को जला देना है ताकि तुम्हारे दरमियान कोई ऐसी खबीस बात न रहे।

15 जो मर्द किसी जानवर से ज़िंसी ताल्लुकात रखे उसे सज़ाए-मौत देना है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। 16 जो औरत किसी जानवर से ज़िंसी ताल्लुकात रखे उसे सज़ाए-मौत देनी है। उस जानवर को भी मार दिया जाए। वह अपनी मौत के खुद ज़िम्मादार है।

17 जिस मर्द ने अपनी बहन से शादी की है उसने शर्मनाक हरकत की है, चाहे वह बाप की बेटा हो या माँ की। उन्हें इसराइली कौम की नज़रों से मिटाया जाए। ऐसे शरख ने अपनी बहन की बेहुरमती की है। इसलिए उसे खुद अपने कुसूर के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे।

18 अगर कोई मर्द माहवारी के ऐयाम में किसी औरत से हमबिसतर हुआ है तो दोनों को उनकी कौम में से मिटाना है। क्योंकि दोनों ने औरत के खून के मंबा से परदा उठाया है।

19 अपनी खाला या फूफी से हमबिसतर न होना। क्योंकि जो ऐसा करता है वह अपनी करीबी रिश्तेदार की बेहुरमती करता है। दोनों को अपने कुसूर के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे।

20 जो अपनी चची या ताई से हमबिसतर हुआ है उसने अपने चचा या ताया की बेहुरमती की है। दोनों को अपने कुसूर के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे। वह बेऔलाद मरेंगे।

21 जिसने अपनी भाबी से शादी की है उसने एक नजिस हरकत की है। उसने अपने भाई की बेहुरमती की है। वह बेऔलाद रहेंगे।

22 मेरी तमाम हिदायात और अहकाम को मानो और उन पर अमल करो। वरना जिस मुल्क में मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ वह तुम्हें उगल देगा। 23 उन कौमों के रस्मो-रिवाज के मुताबिक ज़िंदगी न गुज़ारना जिन्हें मैं तुम्हारे आगे से निकाल दूँगा। मुझे इस सबब से उनसे धिन आने लगी कि वह यह सब कुछ करते थे। 24 लेकिन तुमसे मैंने कहा, ‘तुम ही उनकी ज़मीन पर कब्ज़ा करोगे। मैं ही उसे तुम्हें दे दूँगा, ऐसा मुल्क जिसमें कसरत का दूध और शहद है।’ मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ, जिसने तुमको दीगर

कौमों में से चुनकर अलग कर दिया है। <sup>25</sup> इसलिए लाज़िम है कि तुम ज़मीन पर चलनेवाले जानवरों और परिदों में पाक और नापाक का इम्तियाज़ करो। अपने आपको नापाक जानवर खाने से काबिले-घिन न बनाना, चाहे वह ज़मीन पर चलते या रंगते हैं, चाहे हवा में उड़ते हैं। मैं ही ने उन्हें तुम्हारे लिए नापाक करार दिया है। <sup>26</sup> तुम्हें मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होना है, क्योंकि मैं कुद्दूस हूँ, और मैंने तुम्हें दीगर कौमों में से चुनकर अपने लिए अलग कर लिया है।

<sup>27</sup> तुममें से जो मुरदों से राबिता या ग़ैबदानी करता है उसे सज़ाए-मौत देनी है, खाह औरत हो या मर्द। उन्हें संगसार करना। वह अपनी मौत के खुद जिम्मादार है।”

## 21

### इमामों के लिए हिदायात

<sup>1</sup> रब ने मूसा से कहा, “हास्न के बेटों को जो इमाम हैं बता देना कि इमाम अपने आपको किसी इसराईली की लाश के करीब जाने से नापाक न करे। <sup>2</sup> सिवाए अपने करीबी रिश्तेदारों के यानी माँ, बाप, बेटा, बेटी, भाई <sup>3</sup> और जो ग़ैरशादीशुदा बहन उसके घर में रहती है। <sup>4</sup> वह अपनी कौम में किसी और के बाइस अपने आपको नापाक न करे, वरना उस की मुक़द्दस हालत जाती रहेगी।

<sup>5</sup> इमाम अपने सर को न मुँडवाएँ। वह न अपनी दाढ़ी को तराशें और न काटने से अपने आपको ज़ख़मी करें।

<sup>6</sup> वह अपने खुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस रहें और अपने खुदा के नाम को दाग न लगाएँ। चूँकि वह रब को जलनेवाली कुरबानियाँ यानी अपने खुदा की रोटी पेश करते हैं इसलिए लाज़िम है कि वह मुक़द्दस रहें। <sup>7</sup> इमाम जिनाकार औरत, मंदिर की कसबी या तलाक़याफ़ता औरत से शादी न करें, क्योंकि वह अपने रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हैं। <sup>8</sup> इमाम को मुक़द्दस समझना, क्योंकि वह तेरे खुदा की रोटी को कुरबानागाह पर चढ़ाता है। वह तेरे लिए मुक़द्दस ठहरे क्योंकि मैं रब कुद्दूस हूँ। मैं ही तुम्हें मुक़द्दस करता हूँ।

<sup>9</sup> किसी इमाम की जो बेटी जिनाकारी से अपनी मुक़द्दस हालत को ख़त्म कर देती है वह अपने बाप की मुक़द्दस हालत को भी ख़त्म कर देती है। उसे जला दिया जाए।

<sup>10</sup> इमामे-आज़म के सर पर मसह का तेल उंडेला गया है और उसे इमामे-आज़म के मुक़द्दस कपड़े पहनने का इख़्तियार दिया गया है। इसलिए वह रंज के आलम में अपने बालों को बिखरने न दे, न कभी अपने कपड़ों को फाड़े। <sup>11</sup> वह किसी लाश के करीब न जाए, चाहे वह उसके बाप या माँ की लाश क्यों न हो, वरना वह नापाक हो जाएगा। <sup>12</sup> जब तक कोई लाश उसके घर में पड़ी रहे वह मक़दिस को छोड़कर अपने घर न जाए, वरना वह मक़दिस को नापाक करेगा। क्योंकि उसे उसके खुदा के तेल से मख़सूस किया गया है। मैं रब हूँ। <sup>13</sup> इमामे-आज़म को सिर्फ़ कुँवारी से शादी की इजाज़त है। <sup>14</sup> वह बेवा, तलाक़याफ़ता औरत, मंदिर की कसबी या जिनाकार औरत से शादी न करे बल्कि सिर्फ़ अपने कबीले की कुँवारी से, <sup>15</sup> वरना उस की औलाद मख़सूसो-मुक़द्दस नहीं होगी। क्योंकि मैं रब हूँ जो उसे अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ।”

<sup>16</sup> रब ने मूसा से यह भी कहा, <sup>17</sup> “हास्न को बताना कि तेरी औलाद में से कोई भी जिसके जिस्म में नुक्स हो मेरे हुज़ूर आकर अपने खुदा की रोटी न चढ़ाए। यह उसूल आनेवाली नसलों के लिए भी अटल है। <sup>18</sup> क्योंकि कोई भी माज़ूर मेरे हुज़ूर न आए, न अंधा, न लँगड़ा, न वह जिसकी नाक चिरी हुई हो या जिसके किसी अजू में कमी बेशी हो, <sup>19</sup> न वह जिसका पाँव या हाथ टूटा हुआ हो, <sup>20</sup> न कुबड़ा, न बौना, न वह जिसकी आँख में नुक्स हो या जिसे वबाई जिल्दी बीमारी हो या जिसके खुसिये कुचले हुए हों। <sup>21</sup> हास्न इमाम की कोई भी औलाद जिसके जिस्म में नुक्स हो मेरे हुज़ूर आकर रब को जलनेवाली कुरबानियाँ पेश न करे। चूँकि उसमें नुक्स है इसलिए वह मेरे हुज़ूर आकर अपने खुदा की रोटी न चढ़ाए। <sup>22</sup> उसे अल्लाह की मुक़द्दस बल्कि मुक़द्दसतरीन कुरबानियों में से भी इमामों का हिस्सा खाने की इजाज़त है। <sup>23</sup> लेकिन चूँकि उसमें नुक्स है इसलिए वह मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के परदे के करीब न जाए, न कुरबानागाह के पास आए। वरना वह मेरी मुक़द्दस चीज़ों को नापाक करेगा। क्योंकि मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करता हूँ।”

<sup>24</sup> मूसा ने यह हिदायात हास्न, उसके बेटों और तमाम इसराईलियों को दी।

## 22

### कुरबानी का गोश्त खाने की हिदायात

<sup>1</sup> रब ने मूसा से कहा, <sup>2</sup> “हास्न और उसके बेटों को बताना कि इसराईलियों की उन कुरबानियों का एहतराम करो जो तुमने मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस की हैं, वरना तुम मेरे नाम को दाग लगाओगे। मैं रब हूँ। <sup>3</sup> जो इमाम नापाक होने के बावजूद उन कुरबानियों के पास आ जाए जो इसराईलियों ने मेरे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस की हैं उसे मेरे सामने से मिटाना है। यह उसूल आनेवाली नसलों के लिए भी अटल है। मैं रब हूँ।

4 हास्न की औलाद में से जो भी वबाई जिल्दी बीमारी या जरयान का मरीज़ हो उसे मुकद्दस कुरबानियों में से अपना हिस्सा खाने की इजाज़त नहीं है। पहले वह पाक हो जाए। जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए जो लाश से नापाक हो गई हो या ऐसे आदमी को छुए जिसका नुतफा निकला हो वह नापाक हो जाता है। 5 वह नापाक रंगेनेवाले जानवर या नापाक शरख को छूने से भी नापाक हो जाता है, खाह वह किसी भी सबब से नापाक क्यों न हुआ हो। 6 जो ऐसी कोई भी चीज़ छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। इसके अलावा लाज़िम है कि वह मुकद्दस कुरबानियों में से अपना हिस्सा खाने से पहले नहा ले। 7 सूरज के गुरूब होने पर वह पाक होगा और मुकद्दस कुरबानियों में से अपना हिस्सा खा सकेगा। क्योंकि वह उस की रोज़ी है। 8 इमाम ऐसे जानवरों का गोशत न खाए जो फ़ितरी तौर पर मर गए या जिन्हें जंगली जानवरों ने फाड़ डाला हो, वरना वह नापाक हो जाएगा। मैं रब हूँ।

9 इमाम मेरी हिदायत के मुताबिक चले, वरना वह कुसूरवार बन जाये और मुकद्दस चीज़ों की बेहुरमती करने के सबब से मर जाये। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मखसूसो-मुकद्दस करता हूँ।

10 सिर्फ़ इमाम के खानदान के अफ़रद मुकद्दस कुरबानियों में से खा सकते हैं। ग़ैरशहरी या मज़दूर को इजाज़त नहीं है।

11 लेकिन इमाम का गुलाम या लौंडी उसमें से खा सकते हैं, चाहे उन्हें खरीदा गया हो या वह उसके घर में पैदा हुए हों। 12 अगर इमाम की बेटी ने किसी ऐसे शरख से शादी की है जो इमाम नहीं है तो उसे मुकद्दस कुरबानियों में से खाने की इजाज़त नहीं है। 13 लेकिन हो सकता है कि वह बेवा या तलाक़याप्तता हो और उसके बच्चे न हों। जब वह अपने बाप के घर लौटकर वहाँ ऐसे रहेगी जैसे अपनी जवानी में तो वह अपने बाप के उस खाने में से खा सकती है जो कुरबानियों में से बाप का हिस्सा है। लेकिन जो इमाम के खानदान का फ़रद नहीं है उसे खाने की इजाज़त नहीं है।

14 जिस शरख ने नादानिस्ता तौर पर मुकद्दस कुरबानियों में से इमाम के हिस्से से कुछ खया है वह इमाम को सब कुछ वापस करने के अलावा 20 फ़ीसद ज़्यादा दे। 15 इमाम रब को पेश की हुई कुरबानियों की मुकद्दस हालत यों ख़त्म न करें 16 कि वह दूसरे इसराईलियों को यह मुकद्दस चीज़ें खाने दें। ऐसी हरकत से वह उनको बड़ा कुसूरवार बना देंगे। मैं रब हूँ जो उन्हें अपने लिए मखसूसो-मुकद्दस करता हूँ।”

### जानवरों की कुरबानियों के बारे में हिदायत

17 रब ने मूसा से कहा, 18 “हास्न, उसके बेटों और इसराईलियों को बताना कि अगर तुममें से कोई इसराईली या परदेसी रब को भस्म होनेवाली कुरबानी पेश करना चाहे तो तरीक़े-कार में कोई फ़रक़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मानकर या वैसे ही दिली ख़ुशी से कर रहा हो। 19 इसके लिए लाज़िम है कि तुम एक बेपेब बैल, मेंढा या बकरा पेश करो। फिर ही उसे क़बूल किया जाएगा। 20 कुरबानी के लिए कभी भी ऐसा जानवर पेश न करना जिसमें नुक़्स हो, वरना तुम उसके बाइस मंज़ूर नहीं होगे। 21 अगर कोई रब को सलामती की कुरबानी पेश करना चाहे तो तरीक़े-कार में कोई फ़रक़ नहीं है, चाहे वह यह मन्नत मानकर या वैसे ही दिली ख़ुशी से कर रहा हो। इसके लिए लाज़िम है कि वह गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से बेपेब जानवर चुने। फिर उसे क़बूल किया जाएगा। 22 रब को ऐसे जानवर पेश न करना जो अंधे हों, जिनके आज़ा टूटे या कटे हुए हों, जिनको रसौली हो या जिन्हें वबाई जिल्दी बीमारी लग गई हो। रब को उन्हें जलनेवाली कुरबानी के तौर पर कुरबानगाह पर पेश न करना। 23 लेकिन जिस गाय-बैल या भेड़-बकरी के किसी अज़ु में कर्मी बेशी हो उसे पेश किया जा सकता है। शर्त यह है कि पेश करनेवाला उसे वैसे ही दिली ख़ुशी से चढ़ाए। अगर वह उसे अपनी मन्नत मानकर पेश करे तो वह क़बूल नहीं किया जाएगा। 24 रब को ऐसा जानवर पेश न करना जिसके ख़ुसिये कुचले, तोड़े या कटे हुए हों। अपने मुल्क में जानवरों को इस तरह ख़सी न बनाना, 25 न ऐसे जानवर किसी ग़ैरमुल्की से ख़रीदकर अपने ख़ुदा की रोटी के तौर पर पेश करना। तुम ऐसे जानवरों के बाइस मंज़ूर नहीं होगे, क्योंकि उनमें ख़राबी और नुक़्स है।”

26 रब ने मूसा से यह भी कहा, 27 “जब किसी गाय, भेड़ या बकरी का बच्चा पैदा होता है तो लाज़िम है कि वह पहले सात दिन अपनी माँ के पास रहे। आठवें दिन से पहले रब उसे जलनेवाली कुरबानी के तौर पर क़बूल नहीं करेगा। 28 किसी गाय, भेड़ या बकरी के बच्चे को उस की माँ समेत एक ही दिन ज़बह न करना। 29 जब तुम रब को सलामती की कोई कुरबानी चढ़ाना चाहते हो तो उसे यों पेश करना कि तुम मंज़ूर हो जाओ। 30 अगली सुबह तक कुछ बच्चा न रहे बल्कि उसे उसी दिन खाना है। मैं रब हूँ।

31 मेरे अहक़ाम मानो और उन पर अमल करो। मैं रब हूँ। 32 मेरे नाम को दाग़ न लगाना। लाज़िम है कि मुझे इसराईलियों के दरमियान कुद्दस माना जाए। मैं रब हूँ जो तुम्हें अपने लिए मखसूसो-मुकद्दस करता हूँ। 33 मैं तुम्हें मिसर से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा ख़ुदा हूँ। मैं रब हूँ।”

## 23

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को बताना कि यह मेरी, रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को मुकद्दस इजतिमा के लिए जमा करना है।

### सबत का दिन

3 हफ्ते में छः दिन काम करना, लेकिन सातवाँ दिन हर तरह से आराम का दिन है। उस दिन मुकद्दस इजतिमा हो। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ काम न करना। यह दिन रब के लिए मखसूस सबत है।

### फसह की ईद और बेखमीरी रोटी की ईद

4 यह रब की ईदें हैं जिन पर तुम्हें लोगों को मुकद्दस इजतिमा के लिए जमा करना है।

5 फसह की ईद पहले महीने के चौधवें दिन शुरू होती है। उस दिन सूरज के गुरूब होने पर रब की खुशी मनाई जाए। 6 अगले दिन रब की याद में बेखमीरी रोटी की ईद शुरू होती है। सात दिन तक तुम्हारी रोटी में खमीर न हो। 7 इन सात दिनों के पहले दिन मुकद्दस इजतिमा हो और लोग अपना हर काम छोड़ें। 8 इन सात दिनों में रोजाना रब को जलनेवाली कुरबानी पेश करो। सातवें दिन भी मुकद्दस इजतिमा हो और लोग अपना हर काम छोड़ें।”

### पहले पूले की ईद

9 रब ने मूसा से कहा, 10 “इसराईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा और वहाँ अनाज की फसल काटोगे तो तुम्हें इमाम को पहला पूला देना है। 11 इतवार को इमाम यह पूला रब के सामने हिलाए ताकि तुम मंज़ूर हो जाओ। 12 उस दिन भेड़ का एक यकसाला बेऐब बच्चा भी रब को पेश करना। उसे कुरबानगाह पर भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर चढ़ाना। 13 साथ ही गल्ला की नज़र के लिए तेल से मिलाया गया 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करना। जलनेवाली यह कुरबानी रब को पसंद है। इसके अलावा मै की नज़र के लिए एक लिटर मै भी पेश करना। 14 पहले यह सब कुछ करो, फिर ही तुम्हें नई फसल के अनाज से खाने की इजाज़त होगी, खाह वह भुना हुआ हो, खाह कच्चा या रोटी की सूरत में पकाया गया हो। जहाँ भी तुम रहते हो वहाँ ऐसा ही करना है। यह उसूल अबद तक कायम रहे।

### हफ्तों की ईद यानी पंतिकुस्त

15 जिस दिन तुमने अनाज का पूला पेश किया उस दिन से पूरे सात हफ्ते गिनो। 16 पचासवें दिन यानी सातवें इतवार को रब को नए अनाज की कुरबानी चढ़ाना। 17 हर धराने की तरफ से रब को हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर दो रोटियों पेश की जाएँ। हर रोटी के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। उनमें खमीर डालकर पकाना है। यह फसल की पहली पैदावार की कुरबानी है। 18 इन रोटियों के साथ एक जवान बैल, दो मेंढे और भेड़ के सात बेऐब और यकसाला बच्चे पेश करो। उन्हें रब के हज़र भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर चढ़ाना। इसके अलावा गल्ला की नज़र और मै की नज़र भी पेश करनी है। जलनेवाली इस कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है। 19 फिर गुनाह की कुरबानी के लिए एक बकरा और सलामती की कुरबानी के लिए दो यकसाला भेड़ के बच्चे चढ़ाओ। 20 इमाम भेड़ के यह दो बच्चे मज़कूरा रोटियों समेत हिलानेवाली कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस है और कुरबानियों में से इमाम का हिस्सा है। 21 उसी दिन लोगों को मुकद्दस इजतिमा के लिए जमा करो। कोई भी काम न करना। यह उसूल अबद तक कायम रहे, और इसे हर जगह मानना है।

22 कटाई के वक़्त अपनी फसल पूरे तौर पर न काटना बल्कि खेत के किनारों पर कुछ छोड़ देना। इस तरह जो कुछ कटाई करते वक़्त खेत में बच जाए उसे छोड़ना। बचा हुआ अनाज गरीबों और परदेसियों के लिए छोड़ देना। मै रब तुम्हारा खुदा है।”

### नए साल की ईद

23 रब ने मूसा से कहा, 24 “इसराईलियों को बताना कि सातवें महीने का पहला दिन आराम का दिन है। उस दिन मुकद्दस इजतिमा हो जिस पर याद दिलाने के लिए नरसिंगा फूँका जाए। 25 कोई भी काम न करना। रब को जलनेवाली कुरबानी पेश करना।”

### कफ़फ़ारा का दिन

26 रब ने मूसा से कहा, 27 “सातवें महीने का दसवाँ दिन कफ़फ़ारा का दिन है। उस दिन मुकद्दस इजतिमा हो। अपनी जान को दुख देना और रब को जलनेवाली कुरबानी पेश करना। 28 उस दिन काम न करना, क्योंकि यह कफ़फ़ारा का दिन है, जब रब तुम्हारे खुदा के सामने तुम्हारा कफ़फ़ारा दिया जाता है। 29 जो उस दिन अपनी जान को दुख नहीं देता उसे उस की कौम में से मिटाया जाए। 30 जो उस दिन काम करता है उसे मैं उस की कौम में से निकालकर हलाक करूँगा। 31 कोई भी काम

न करना। यह उसूल अबद तक कायम रहे, और इसे हर जगह मानना है। 32 यह दिन आराम का खास दिन है जिसमें तुम्हें अपनी जान को दुख देना है। इसे महीने के नवें दिन की शाम से लेकर अगली शाम तक मनाना।”

### झोंपड़ियों की ईद

33 रब ने मूसा से कहा, 34 “इसराईलियों को बताना कि सातवें महीने के पंद्रहवें दिन झोंपड़ियों की ईद शुरू होती है। इसका दौरानिया सात दिन है। 35 पहले दिन मुकद्दस इजतिमा हो। इस दिन कोई काम न करना। 36 इन सात दिनों के दौरान रब को जलनेवाली कुरबानियाँ पेश करना। आठवें दिन मुकद्दस इजतिमा हो। रब को जलनेवाली कुरबानी पेश करो। इस खास इजतिमा के दिन भी काम नहीं करना है।

37 यह रब की ईद है जिन पर तुम्हें मुकद्दस इजतिमा करना है ताकि रब को रोज़मर्रा की मतलूबा जलनेवाली कुरबानियाँ और मै की नज़रें पेश की जाएँ यानी भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, गल्ला की नज़रें, जबह की कुरबानियाँ और मै की नज़रें। 38 यह कुरबानियाँ उन कुरबानियों के अलावा हैं जो सबत के दिन चढ़ाई जाती हैं और जो तुमने हृदिये के तौर पर या मन्नत मानकर या अपनी दिली खुशी से पेश की हैं।

39 चुनौचे सातवें महीने के पंद्रहवें दिन फसल की कटाई के इख्तिताम पर रब की यह ईद यानी झोंपड़ियों की ईद मनाओ। इसे सात दिन मनाना। पहला और आखिरी दिन आराम के दिन हैं। 40 पहले दिन अपने लिए दरख्तों के बेहतरीन फल, खजूर की डालियाँ और घने दरख्तों और सफ़ेदा की शाखें तोड़ना। सात दिन तक रब अपने खुदा के सामने खुशी मनाओ। 41 हर साल सातवें महीने में रब की खुशी में यह ईद मनाना। यह उसूल अबद तक कायम रहे। 42 ईद के हफ़ते के दौरान झोंपड़ियों में रहना। तमाम मुल्क में आबाद इसराईली ऐसा करें। 43 फिर तुम्हारी औलाद जानेगी कि इसराईलियों को मिसर से निकालते वक्त मैंने उन्हें झोंपड़ियों में बसाया। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

44 मूसा ने इसराईलियों को रब की ईदों के बारे में यह बातें बताईं।

## 24

### रब के सामने शमादान और रोटियाँ

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को हुक्म दे कि वह तैरे पास कूटे हुए जैतनों का खालिस तेल ले आएँ ताकि मुकद्दस कमरे के शमादान के चराग़ मृतवातिर जलते रहें। 3 हासून उन्हें मुसलसल, शाम से लेकर सुबह तक रब के हज़ूर सँभाले यानी वहाँ जहाँ वह मुकद्दसतरिन कमरे के परदे के सामने पड़े हैं, उस परदे के सामने जिसके पीछे अहद का संदूक है। यह उसूल अबद तक कायम रहे। 4 वह खालिस सोने के शमादान पर लगे चराग़ों की देख-भाल यों करे कि यह हमेशा रब के सामने जलते रहें।

5 बारह रोटियाँ पकाना। हर रोटी के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। 6 उन्हें दो कतारों में रब के सामने खालिस सोने की मेज़ पर रखना। 7 हर कतार पर खालिस लुबान डालना। यह लुबान रोटी के लिए यादगारी की कुरबानी है जिसे बाद में रब के लिए जलाना है। 8 हर हफ़ते को रब के सामने ताजा रोटियाँ इसी तरीक़े से मेज़ पर रखनी हैं। यह इसराईलियों के लिए अबदी अहद की लाज़िमी शर्त है। 9 मेज़ की रोटियाँ हासून और उसके बेटों का हिस्सा हैं, और वह उन्हें मुकद्दस जगह पर खाएँ, क्योंकि वह जलनेवाली कुरबानियों का मुकद्दसतरिन हिस्सा हैं। यह अबद तक उनका हक़ रहेगा।”

### अल्लाह की तौहीन, खूबरेज़ी और ज़खमी करने की सजाएँ

10-11 ख़ैमागाह में एक आदमी था जिसका बाप मिसरी और माँ इसराईली थी। माँ का नाम सलूमीत था। वह दिवरी की बेटी और दान के कबीले की थी। एक दिन यह आदमी ख़ैमागाह में किसी इसराईली से झगड़ने लगा। लड़ते लड़ते उसने रब के नाम पर कुफ़र बककर उस पर लानत भेजी। यह सुनकर लोग उसे मूसा के पास ले आए। 12 वहाँ उन्होंने उसे पहरे में बिठाकर रब की हिदायत का इंतज़ार किया।

13 तब रब ने मूसा से कहा, 14 “लानत करनेवाले को ख़ैमागाह के बाहर ले जाओ। जिन्होंने उस की यह बातें सुनी हैं वह सब अपने हाथ उसके सर पर रखें। फिर पूरी ज़मात उसे संगसार करे। 15 इसराईलियों से कहना कि जो भी अपने खुदा पर लानत भेजे उसे अपने कुसूर के नतीजे बरदाश्त करने पड़ेंगे। 16 जो भी रब के नाम पर कुफ़र बके उसे सज़ाए-मौत दी जाए। पूरी ज़मात उसे संगसार करे। जिसने रब के नाम पर कुफ़र बका हो उसे ज़रूर सज़ाए-मौत देनी है, खाह देसी हो या परदेसी।

17 जिसने किसी को मार डाला है उसे सज़ाए-मौत दी जाए। 18 जिसने किसी के जानवर को मार डाला है वह उसका मुआवज़ा दे। जान के बदले जान दी जाए। 19 अगर किसी ने किसी को ज़खमी कर दिया है तो वही कुछ उसके साथ किया जाए जो उसने दूसरे के साथ किया है। 20 अगर दूसरे की कोई हड्डी टूट जाए तो उस की वही हड्डी तोड़ी जाए। अगर दूसरे की आँख ज़ाया हो जाए तो उस की आँख ज़ाया कर दी जाए। अगर दूसरे का दाँत टूट जाए तो उसका वही दाँत तोड़ा जाए।

जो भी ज़खम उसने दूसरे को पहुँचाया वही ज़खम उसे पहुँचाया जाए।<sup>21</sup> जिसने किसी जानवर को मार डाला है वह उसका मुआवज़ा दे, लेकिन जिसने किसी इन्सान को मार दिया है उसे सज़ाए-मौत देनी है।<sup>22</sup> देसी और परदेसी के लिए तुम्हारा एक ही कानून हो। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

<sup>23</sup> फिर मूसा ने इसराइलियों से बात की, और उन्होंने रब पर लानत भेजनेवाले को खैमागाह से बाहर ले जाकर उसे संगसार किया। उन्होंने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

## 25

### ज़मीन के लिए सबत का साल

<sup>1</sup> रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से कहा, <sup>2</sup> “इसराइलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा तो लाज़िम है कि रब की ताज़ीम में ज़मीन एक साल आराम करे। <sup>3</sup> छः साल के दौरान अपने खेतों में बीज बोना, अपने अंगूर के बागों की काँट-छाँट करना और उनकी फसलें जमा करना। <sup>4</sup> लेकिन सातवाँ साल ज़मीन के लिए आराम का साल है, रब की ताज़ीम में सबत का साल। उस साल न अपने खेतों में बीज बोना, न अपने अंगूर के बागों की काँट-छाँट करना। <sup>5</sup> जो अनाज ख़ुद बख़ुद उगता है उस की कटाई न करना और जो अंगूर उस साल लगते हैं उनको तोड़कर जमा न करना, क्योंकि ज़मीन को एक साल के लिए आराम करना है। <sup>6</sup> अलबत्ता जो भी यह ज़मीन आराम के साल में पैदा करेगी उससे तुम अपनी रोज़ाना की ज़रूरियात पूरी कर सकते हो यानी तू, तेरे गुलाम और लौडियॉँ, तेरे मजदूर, तेरे ग़ैरशहरी, तेरे साथ रहनेवाले परदेसी, <sup>7</sup> तेरे मवेशी और तेरी ज़मीन पर रहनेवाले जंगली जानवर। जो कुछ भी यह ज़मीन पैदा करती है वह ख़ाया जा सकता है।

### बहाली का साल

<sup>8</sup> सात सबत के साल यानी 49 साल के बाद एक और काम करना है। <sup>9</sup> पचासवें साल के सातवें महीने के दसवें दिन यानी कफ़रारा के दिन अपने मुल्क की हर जगह नरसिंगा बजाना। <sup>10</sup> पचासवाँ साल मख़सूसो-मुक़द्दस करो और पूरे मुल्क में एलान करो कि तमाम बाशिंदों को आज़ाद कर दिया जाए। यह बहाली का साल हो जिसमें हर शख्स को उस की मिलकियत वापस की जाए और हर गुलाम को आज़ाद किया जाए ताकि वह अपने रिश्तेदारों के पास वापस जा सके। <sup>11</sup> यह पचासवाँ साल बहाली का साल हो, इसलिए न अपने खेतों में बीज बोना, न ख़ुद बख़ुद उगनेवाले अनाज की कटाई करना, और न अंगूर तोड़कर जमा करना। <sup>12</sup> क्योंकि यह बहाली का साल है जो तुम्हारे लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। रोज़ाना उतनी ही पैदावार लेना कि एक दिन की ज़रूरियात पूरी हो जाएँ। <sup>13</sup> बहाली के साल में हर शख्स को उस की मिलकियत वापस की जाए।

<sup>14</sup> चुनौचे जब कभी तुम अपने किसी हमवतन भाई को ज़मीन बेचते या उससे ख़रीदते हो तो उससे नाजायज़ फ़ायदा न उठाना। <sup>15</sup> ज़मीन की कीमत इस हिसाब से मुक़रर की जाए कि वह अगले बहाली के साल तक कितने साल फ़सलें पैदा करेगी। <sup>16</sup> अगर बहुत साल रह गए हों तो उस की कीमत ज़्यादा होगी, और अगर कम साल रह गए हों तो उस की कीमत कम होगी। क्योंकि उन फ़सलों की तादाद बिक रही है जो ज़मीन अगले बहाली के साल तक पैदा कर सकती है।

<sup>17</sup> अपने हमवतन से नाजायज़ फ़ायदा न उठाना बल्कि रब अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना, क्योंकि मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।

<sup>18</sup> मेरी हिदायात पर अमल करना और मेरे अहकाम को मानकर उनके मुताबिक चलना। तब तुम अपने मुल्क में महफूज़ रहोगे। <sup>19</sup> ज़मीन अपनी पूरी पैदावार देगी, तुम सेरे हो जाओगे और महफूज़ रहोगे। <sup>20</sup> हो सकता है कोई पूछे, ‘हम सातवें साल में क्या खाएँगे जबकि हम बीज नहीं बोएँगे और फ़सल नहीं काटेंगे?’ <sup>21</sup> जवाब यह है कि मैं छठे साल में ज़मीन को इतनी बरकत दूँगा कि उस साल की पैदावार तीन साल के लिए काफ़ी होगी। <sup>22</sup> जब तुम आठवें साल बीज बोओगे तो तुम्हारे पास छठे साल की इतनी पैदावार बाकी होगी कि तुम फ़सल की कटाई तक गुज़ारा कर सकोगे।

### मौरूसी ज़मीन के हुक्क

<sup>23</sup> कोई ज़मीन भी हमेशा के लिए न बेची जाए, क्योंकि मुल्क की तमाम ज़मीन मेरी ही है। तुम मेरे हुज़ूर सिर्फ़ परदेसी और ग़ैरशहरी हो। <sup>24</sup> मुल्क में जहाँ भी ज़मीन बिक जाए वहाँ मौरूसी मालिक का यह हक़ माना जाए कि वह अपनी ज़मीन वापस ख़रीद सकता है।

<sup>25</sup> अगर तेरा कोई हमवतन भाई ग़रीब होकर अपनी कुछ ज़मीन बेचने पर मजबूर हो जाए तो लाज़िम है कि उसका सबसे करीबी रिश्तेदार उसे वापस ख़रीद ले। <sup>26</sup> हो सकता है कि ऐसे शख्स का कोई करीबी रिश्तेदार न हो जो उस की ज़मीन वापस ख़रीद सके, लेकिन वह ख़ुद कुछ देर के बाद इतने पैसे जमा करता है कि वह अपनी ज़मीन वापस ख़रीद सकता है। <sup>27</sup> इस सूत में वह हिसाब करे कि ख़रीदनेवाले के लिए अगले बहाली के साल तक कितने साल रह गए हैं। जितना नुक़सान ख़रीदनेवाले को ज़मीन को बहाली के साल से पहले वापस देने से पहुँचेगा उतने ही पैसे उसे देने हैं। <sup>28</sup> लेकिन अगर उसके

पास इतने पैसे न हों तो ज़मीन अगले बहाली के साल तक खरीदनेवाले के हाथ में रहेगी। फिर उसे मौस्सी मालिक को वापस दिया जाएगा।

29 अगर किसी का घर फ़सीलदार शहर में है तो जब वह उसे बेचेगा तो अपना घर वापस खरीदने का हक सिर्फ़ एक साल तक रहेगा। 30 अगर पहला मालिक उसे पहले साल के अंदर अंदर न खरीदे तो वह हमेशा के लिए खरीदनेवाले की मौस्सी मिलकियत बन जाएगा। वह बहाली के साल में भी वापस नहीं किया जाएगा।

31 लेकिन जो घर ऐसी आबादी में है जिसकी फ़सील न हो वह देहात में शुमार किया जाता है। उसके मौस्सी मालिक को हक़ हासिल है कि हर वक़्त अपना घर वापस खरीद सके। बहाली के साल में इस घर को लाज़िमन वापस कर देना है।

32 लेकिन लावियों को यह हक़ हासिल है कि वह अपने वह घर हर वक़्त खरीद सकते हैं जो उनके लिए मुकर्रर किए हुए शहरों में हैं। 33 अगर ऐसा घर किसी लावी के हाथ फ़रोख़्त किया जाए और वापस न खरीदा जाए तो उसे लाज़िमन बहाली के साल में वापस करना है। क्योंकि लावी के जो घर उनके मुकर्रर शहरों में होते हैं वह इसराईलियों में उनकी मौस्सी मिलकियत हैं। 34 लेकिन जो ज़मीन शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने के लिए मुकर्रर हैं उन्हें बेचने की इजाज़त नहीं है। वह उनकी दायमी मिलकियत हैं।

### गरीबों के लिए कर्ज़ा

35 अगर तेरा कोई हमवतन भाई गरीब हो जाए और गुज़ारा न कर सके तो उस की मदद कर। उस तरह उस की मदद करना जिस तरह परदेसी या ग़ैरशहरी की मदद करनी होती है ताकि वह तेरे साथ रहते हुए जिंदगी गुज़ार सके। 36 उससे किसी तरह का सूद न लेना बल्कि अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना ताकि तेरा भाई तेरे साथ जिंदगी गुज़ार सके। 37 अगर वह तेरा कर्ज़दार हो तो उससे सूद न लेना। इसी तरह ख़ुराक बेचते वक़्त उससे नफ़ा न लेना। 38 मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। मैं तुम्हें इसलिए मिसर से निकाल लाया कि तुम्हें मुल्के-कनान दूँ और तुम्हारा खुदा हूँ।

### इसराईली गुलामों के हुक्क

39 अगर तेरा कोई इसराईली भाई गरीब होकर अपने आपको तेरे हाथ बेच डाले तो उससे गुलाम का-सा काम न करना। 40 उसके साथ मज़दूर या ग़ैरशहरी का-सा सलूक करना। वह तेरे लिए बहाली के साल तक काम करे। 41 फिर वह और उसके बाल-बच्चे आज़ाद होकर अपने रिश्तेदारों और मौस्सी ज़मीन के पास वापस जाएँ। 42 चूँकि इसराईली मेरे खादिम हैं जिन्हें मैं मिसर से निकाल लाया इसलिए उन्हें गुलामी में न बेचा जाए। 43 ऐसे लोगों पर सख़्ती से हुक्मरानी न करना बल्कि अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना।

44 तुम पड़ोसी ममालिक से अपने लिए गुलाम और लौंडियाँ हासिल कर सकते हो। 45 जो परदेसी ग़ैरशहरी के तौर पर तुम्हारे मुल्क में आबाद हैं उन्हें भी तुम खरीद सकते हो। उनमें वह भी शामिल हैं जो तुम्हारे मुल्क में पैदा हुए हैं। वही तुम्हारी मिलकियत बनकर 46 तुम्हारे बेटों की मीरास में आ जाएँ और वही हमेशा तुम्हारे गुलाम रहें। लेकिन अपने हमवतन भाइयों पर सख़्त हुक्मरानी न करना।

47 अगर तेरे मुल्क में रहनेवाला कोई परदेसी या ग़ैरशहरी अमीर हो जाए जबकि तेरा कोई हमवतन भाई गरीब होकर अपने आपको उस परदेसी या ग़ैरशहरी या उसके खानदान के किसी फ़रद को बेच डाले 48 तो बिक जाने के बाद उसे आज़ादी खरीदने का हक़ हासिल है। कोई भाई, 49 चचा, थाया, चचा या थाया का बेटा या कोई और करीबी रिश्तेदार उसे वापस खरीद सकता है। वह खुद भी अपनी आज़ादी खरीद सकता है अगर उसके पास पैसे काफ़ी हों। 50 इस सूरत में वह अपने मालिक से मिलकर वह साल गिने जो उसके खरीदने से लेकर अगले बहाली के साल तक बाक़ी हैं। उस की आज़ादी के पैसे उस क़ीमत पर मबनी हों जो मज़दूर को इतने सालों के लिए दिए जाते हैं। 51-52 जितने साल बाक़ी रह गए हैं उनके मुताबिक़ उस की बिक जाने की क़ीमत में से पैसे वापस कर दिए जाएँ। 53 उसके साथ साल बसाल मज़दूर का-सा सलूक किया जाए। उसका मालिक उस पर सख़्त हुक्मरानी न करे। 54 अगर वह इस तरह के किसी तरीके से आज़ाद न हो जाए तो उसे और उसके बच्चों को हर हालत में अगले बहाली के साल में आज़ाद कर देना है, 55 क्योंकि इसराईली मेरे ही खादिम हैं। वह मेरे ही खादिम हैं जिन्हें मैं मिसर से निकाल लाया। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।

## 26

### फ़रमाँबरदारी का अज़्र

1 अपने लिए बुत न बनाना। न अपने लिए देवता के मुजस्समे या पत्थर के मख़सूस किए हुए सतून खड़े करना, न सिजदा करने के लिए अपने मुल्क में ऐसे पत्थर रखना जिनमें देवता की तस्वीर कंदा की गई हो। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। 2 सबत का दिन मानना और मेरे मक़दिस की तार्ज़ीम करना। मैं रब हूँ।

3 अगर तुम मेरी हिदायात पर चलो और मेरे अहकाम मानकर उन पर अमल करो 4 तो मैं वक्त पर बारिश भेजूँगा, ज़मीन अपनी पैदावार देगी और दरख्त अपने अपने फल लाएँगे। 5 कसरत के बाइस अनाज की फसल की कटाई अंगूर तोड़ते वक्त तक जारी रहेगी और अंगूर की फसल उस वक्त तक तोड़ी जाएगी जब तक बीज बोने का मौसम आएगा। इतनी ख़ुराक मिलेगी कि तुम कभी भूके नहीं होगे। और तुम अपने मुल्क में महफूज़ रहोगे।

6 मैं मुल्क को अमनो-अमान बख़ूँगा। तुम आराम से लेट जाओगे, क्योंकि किसी ख़तरे से डरने की ज़रूरत नहीं होगी। मैं वहशी जानवर मुल्क से दूर कर दूँगा, और वह तलवार की कत्लो-ग़ारत से बचा रहेगा। 7 तुम अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आकर उनका ताक्कुब करोगे, और वह तुम्हारी तलवार से मारे जाएँगे। 8 तुम्हारे पाँच आदमी सौ दुश्मनों का पीछा करेंगे, और तुम्हारे सौ आदमी उनके दस हज़ार आदमियों को भगा देंगे। तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी तलवार से मारे जाएँगे।

9 मेरी नज़रे-करम तुम पर होगी। मैं तुम्हारी औलाद की तादाद बढ़ाऊँगा और तुम्हारे साथ अपना अहद कायम रखूँगा। 10 एक साल इतनी फ़सल होगी कि जब अगली फ़सल की कटाई होगी तो नए अनाज के लिए जगह बनाने की खातिर पुराने अनाज को फेंक देना पड़ेगा। 11 मैं तुम्हारे दरमियान अपना मसकन कायम करूँगा और तुमसे धिन नहीं खाऊँगा। 12 मैं तुममें फिस्कूँगा, और तुम मेरी कौम होगे।

13 मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से निकाल लाया ताकि तुम्हारी गुलामी की हालत ख़त्म हो जाए। मैंने तुम्हारे जुए को तोड़ डाला, और अब तुम आज़ाद और सीधे होकर चल सकते हो।

### फ़रमाँबरदार न होने की सज़ा

14 लेकिन अगर तुम मेरी नहीं सुनोगे और इन तमाम अहकाम पर नहीं चलोगे, 15 अगर तुम मेरी हिदायात को रद्द करके मेरे अहकाम से धिन खाओगे और उन पर अमल न करके मेरा अहद तोड़ोगे 16 तो मैं जवाब में तुम पर अचानक दहशत तारी कर दूँगा। जिसम को ख़त्म करनेवाली बीमारियों और बुखार से तुम्हारी आँखें ज़ाया हो जाएँगी और तुम्हारी जान छिन जाएगी। जब तुम बीज बोओगे तो बेफ़ायदा, क्योंकि दुश्मन उस की फ़सल खा जाएगा। 17 मैं तुम्हारे खिलाफ़ हो जाऊँगा, इसलिए तुम अपने दुश्मनों के हाथ से शिकस्त खाओगे। तुमसे नफ़रत रखनेवाले तुम पर हकूमत करेंगे। उस वक्त भी जब कोई तुम्हारा ताक्कुब नहीं करेगा तुम भाग जाओगे।

18 अगर तुम इसके बाद भी मेरी न सुनो तो मैं तुम्हारे गुनाहों के सबब से तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 19 मैं तुम्हारा सख़्त गुस्सा ख़ाक में मिला दूँगा। तुम्हारे ऊपर आसमान लोहे जैसा और तुम्हारे नीचे ज़मीन पीतल जैसी होगी। 20 जितनी भी मेहनत करोगे वह बेफ़ायदा होगी, क्योंकि तुम्हारे खेतों में फ़सलें नहीं पकेंगी और तुम्हारे दरख़्त फल नहीं लाएँगे।

21 अगर तुम फिर भी मेरी मुखालाफ़त करोगे और मेरी नहीं सुनोगे तो मैं इन गुनाहों के जवाब में तुम्हें इससे भी सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 22 मैं तुम्हारे खिलाफ़ जंगली जानवर भेज दूँगा जो तुम्हारे बच्चों को फाड़ खाएँगे और तुम्हारे मवेशी बरबाद कर देंगे। आखिर में तुम्हारी तादाद इतनी कम हो जाएगी कि तुम्हारी सड़के वीरान हो जाएँगी।

23 अगर तुम फिर भी मेरी तरबियत कबूल न करो बल्कि मेरे मुखालिफ़ रहो 24 तो मैं खुद तुम्हारे खिलाफ़ हो जाऊँगा। इन गुनाहों के जवाब में मैं तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 25 मैं तुम पर तलवार चलाकर इसका बदला लूँगा कि तुमने मेरे अहद को तोड़ा है। जब तुम अपनी हिफ़ाज़त के लिए शहरों में भागकर जमा होगे तो मैं तुम्हारे दरमियान वबाई बीमारियों फैलाऊँगा और तुम्हें दुश्मनों के हाथ में दे दूँगा। 26 अनाज की इतनी कमी होगी कि दस औरतें तुम्हारी पूरी रोटी एक ही तनूर में पका सकेंगी, और वह उसे बड़ी एहतियात से तोल तोलकर तकसीम करेंगी। तुम खाकर भी भूके रहोगे।

27 अगर तुम फिर भी मेरी नहीं सुनोगे बल्कि मेरे मुखालिफ़ रहोगे 28 तो मेरा गुस्सा भड़केगा और मैं तुम्हारे खिलाफ़ होकर तुम्हारे गुनाहों के जवाब में तुम्हें सात गुना ज़्यादा सज़ा दूँगा। 29 तुम मुसीबत के बाइस अपने बेटे-बेटियों का गोशत खाओगे। 30 मैं तुम्हारी ऊँची जगहों की कुरबानगाहें और तुम्हारी बखूर की कुरबानगाहें बरबाद कर दूँगा। मैं तुम्हारी लाशों के ढेर तुम्हारे बेजान बुतों पर लगाऊँगा और तुमसे धिन खाऊँगा। 31 मैं तुम्हारे शहरों को खंडरात में बदलकर तुम्हारे मंदिरों को बरबाद करूँगा। तुम्हारी कुरबानियों की खुशबू मुझे पसंद नहीं आएगी। 32 मैं तुम्हारे मुल्क का सत्यानास यों करूँगा कि जो दुश्मन उसमें आबाद हो जाएँगे उनके रोंगटे खड़े हो जाएँगे। 33 मैं तुम्हें मुख़्तलिफ़ ममालिक में मूंतशिर कर दूँगा, लेकिन वहाँ भी अपनी तलवार को हाथ में लिए तुम्हारा पीछा करूँगा। तुम्हारी ज़मीन वीरान होगी और तुम्हारे शहर खंडरात बन जाएँगे। 34 उस वक्त जब तुम अपने दुश्मनों के मुल्क में रहोगे तुम्हारी ज़मीन वीरान हालत में आराम के वह साल मना सकेगी जिनसे वह महसूम रही है। 35 उन तमाम दिनों में जब वह बरबाद रहेगी उसे वह आराम मिलेगा जो उसे न मिला जब तुम मुल्क में रहते थे।



36 तुममें से जो बचकर अपने दुश्मनों के ममालिक में रहेंगे उनके दिलों पर मैं दहशत तारी करूँगा। वह हवा के झोंकों से गिरनेवाले पत्ते की आवाज से चौंककर भाग जाएंगे। वह फरार होंगे गोया कोई हाथ में तलवार लिए उनका ताकतुकुब कर रहा हो। और वह गिरकर मर जाएंगे हालाँकि कोई उनका पीछा नहीं कर रहा होगा। 37 वह एक दूसरे से टकराकर लड़खड़ाएँगे गोया कोई तलवार लेकर उनके पीछे चल रहा हो हालाँकि कोई नहीं है। चूँकि तुम अपने दुश्मनों का सामना नहीं कर सकोगे। 38 तुम दीगर कौमों में मुंशिर होकर हलाक हो जाओगे, और तुम्हारे दुश्मनों की ज़मीन तुम्हें हडप कर लेगी।

39 तुममें से बाकी लोग अपने और अपने बापदादा के कुसूर के बाइस अपने दुश्मनों के ममालिक में गल-सड़ जाएंगे। 40 लेकिन एक वक्त आया कि वह अपने और अपने बापदादा का कुसूर मान लेंगे। वह मेरे साथ अपनी बेवफाई और वह मुखालफत तसलीम करेंगे 41 जिसके सबब से मैं उनके खिलाफ हुआ और उन्हें उनके दुश्मनों के मुल्क में धकेल दिया था। पहले उनका खतना सिर्फ जाहिरी तौर पर हुआ था, लेकिन अब उनका दिल आजिज हो जाएगा और वह अपने कुसूर की क़ीमत अदा करेंगे। 42 फिर मैं इब्राहीम के साथ अपना अहद, इसहाक के साथ अपना अहद और याक़ूब के साथ अपना अहद याद करूँगा। मैं मुल्के-कनान भी याद करूँगा। 43 लेकिन पहले वह ज़मीन को छोड़ेंगे ताकि वह उनकी गैरमौजूदगी में वीरान होकर आराम के साल मनाए। यों इसराइली अपने कुसूर के नतीजे भुगतेंगे, इस सबब से कि उन्होंने मेरे अहकाम रद्द किए और मेरी हिदायत से धिन खाई। 44 इसके बावजूद भी मैं उन्हें दुश्मनों के मुल्क में छोड़कर रद्द नहीं करूँगा, न यहाँ तक उनसे धिन खाऊँगा कि वह बिनकुल तबाह हो जाएँ। क्योंकि मैं उनके साथ अपना अहद नहीं तोड़ने का। मैं रब उनका खुदा हूँ। 45 मैं उनकी खातिर उनके बापदादा के साथ बँधा हुआ अहद याद करूँगा, उन लोगों के साथ अहद जिन्हें मैं दूसरी कौमों के देखते देखते मिसर से निकाल लाया ताकि उनका खुदा हूँ। मैं रब हूँ।”

46 रब ने मूसा को इसराइलियों के लिए यह तमाम हिदायत और अहकाम सीना पहाड़ पर दिए।

## 27

### मखसूस की हुई चीज़ों की वापसी

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराइलियों को बताना कि अगर किसी ने मन्नत मानकर किसी को रब के लिए मखसूस किया हो तो वह उसे ज़ैल की रकम देकर आज़ाद कर सकता है (मुस्तामल सिक्के मक़दिस के सिक्कों के बराबर हों) : 3 उस आदमी के लिए जिसकी उम्र 20 और 60 साल के दरमियान है चाँदी के 50 सिक्के, 4 इसी उम्र की औरत के लिए चाँदी के 30 सिक्के, 5 उस लड़के के लिए जिसकी उम्र 5 और 20 साल के दरमियान हो चाँदी के 20 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए चाँदी के 10 सिक्के, 6 एक माह से लेकर 5 साल तक के लड़के के लिए चाँदी के 5 सिक्के, इसी उम्र की लड़की के लिए चाँदी के 3 सिक्के, 7 साठ साल से बड़े आदमी के लिए चाँदी के 15 सिक्के और इसी उम्र की औरत के लिए चाँदी के 10 सिक्के।

8 अगर मन्नत माननेवाला मुक़र्रर रकम अदा न कर सके तो वह मखसूस किए हुए शख्स को इमाम के पास ले आए। फिर इमाम ऐसी रकम मुक़र्रर करे जो मन्नत माननेवाला अदा कर सके।

9 अगर किसी ने मन्नत मानकर ऐसा जानवर मखसूस किया जो रब की क़ुरबानियों के लिए इस्तेमाल हो सकता है तो ऐसा जानवर मखसूसो-मुक़द़स हो जाता है। 10 वह उसे बदल नहीं सकता। न वह अच्छे जानवर की जगह नाक़िस, न नाक़िस जानवर की जगह अच्छा जानवर दे। अगर वह एक जानवर दूसरे की जगह दे तो दोनों मखसूसो-मुक़द़स हो जाते हैं।

11 अगर किसी ने मन्नत मानकर कोई नापाक जानवर मखसूस किया जो रब की क़ुरबानियों के लिए इस्तेमाल नहीं हो सकता तो वह उसको इमाम के पास ले आए। 12 इमाम उस की रकम उस की अच्छी और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके मुक़र्रर करे। इस मुक़र्रर क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। 13 अगर मन्नत माननेवाला उसे वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्रर क़ीमत जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

14 अगर कोई अपना घर रब के लिए मखसूसो-मुक़द़स करे तो इमाम उस की अच्छी और बुरी सिफ़्तों का लिहाज़ करके उस की रकम मुक़र्रर करे। इस मुक़र्रर क़ीमत में कमी बेशी नहीं हो सकती। 15 अगर घर को मखसूस करनेवाला उसे वापस ख़रीदना चाहे तो वह मुक़र्रर रकम जमा 20 फ़ीसद अदा करे।

16 अगर कोई अपनी मौसूसी ज़मीन में से कुछ रब के लिए मखसूसो-मुक़द़स करे तो उस की क़ीमत उस बीज की मिक़दार के मुताबिक मुक़र्रर की जाए जो उसमें बोना होता है। जिस खेत में 135 किलोग्राम जौ का बीज बोया जाए उस की क़ीमत चाँदी के 50 सिक्के होगी। 17 शर्त यह है कि वह अपनी ज़मीन बहाली के साल के ऐन बाद मखसूस करे। फिर उस की यही क़ीमत मुक़र्रर की जाए। 18 अगर ज़मीन का मालिक उसे बहाली के साल के कुछ देर बाद मखसूस करे तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहनेवाले सालों के मुताबिक ज़मीन की क़ीमत मुक़र्रर करे। जितने कम साल बाकी हैं उतनी कम उस की

क्रीमत होगी। 19 अगर मखसूस करनेवाला अपनी जमीन वापस खरीदना चाहे तो वह मुकर्ररा क्रीमत जमा 20 फ्रीसद अदा करे। 20 अगर मखसूस करनेवाला अपनी जमीन को रब से वापस खरीदे बगैर उसे किसी और को बेचे तो उसे वापस खरीदने का हक खत्म हो जाएगा। 21 अगले बहाली के साल यह जमीन मखसूसो-मुकद्दस रहेगी और रब की दायमी मिलकियत हो जाएगी। चुनोंचे वह इमाम की मिलकियत होगी।

22 अगर कोई अपना मौस्सी खेत नहीं बल्कि अपना खरीदा हुआ खेत रब के लिए मखसूस करे 23 तो इमाम अगले बहाली के साल तक रहनेवाले सालों का लिहाज करके उस की क्रीमत मुकर्रर करे। खेत का मालिक उसी दिन उसके पैसे अदा करे। यह पैसे रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस होंगे। 24 बहाली के साल में यह खेत उस शख्स के पास वापस आएगा जिसने उसे बेचा था।

25 वापस खरीदने के लिए मुस्तामल सिक्के मकदिस के सिक्कों के बराबर हों। उसके चाँदी के सिक्कों का वजन 11 ग्राम है।

26 लेकिन कोई भी किसी मवेशी का पहलौठा रब के लिए मखसूस नहीं कर सकता। वह तो पहले से रब के लिए मखसूस है। इसमें कोई फ़रक नहीं कि वह गाय, बैल या भेड़ हो। 27 अगर उसने कोई नापाक जानवर मखसूस किया हो तो वह उसे मुकर्ररा क्रीमत जमा 20 फ्रीसद के लिए वापस खरीद सकता है। अगर वह उसे वापस न खरीदे तो वह मुकर्ररा क्रीमत के लिए बेचा जाए।

28 लेकिन अगर किसी ने अपनी मिलकियत में से कुछ गैरमशरूत तौर पर रब के लिए मखसूस किया है तो उसे बेचा या वापस नहीं खरीदा जा सकता, खाह वह इनसान, जानवर या जमीन हो। जो इस तरह मखसूस किया गया हो वह रब के लिए निहायत मुकद्दस है। 29 इसी तरह जिस शख्स को तबाही के लिए मखसूस किया गया है उसका फ़िदा नहीं दिया जा सकता। लाज़िम है कि उसे सज़ाए-मौत दी जाए।

30 हर फसल का दसवाँ हिस्सा रब का है, चाहे वह अनाज हो या फल। वह रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस है। 31 अगर कोई अपनी फसल का दसवाँ हिस्सा छुड़ाना चाहता है तो वह इसके लिए उस की मुकर्ररा क्रीमत जमा 20 फ्रीसद दे। 32 इसी तरह गाय-बैलों और भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा भी रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस है, हर दसवाँ जानवर जो गल्लाबान के डंडे के नीचे से गुजरेगा। 33 यह जानवर चुनने से पहले उनका मुआयना न किया जाए कि कौन-से जानवर अच्छे या कमज़ोर हैं। यह भी न करना कि दसवाँ हिस्से के किसी जानवर के बदले कोई और जानवर दिया जाए। अगर फिर भी उसे बदला जाए तो दोनों जानवर रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस होंगे। और उन्हें वापस खरीदा नहीं जा सकता।”

34 यह वह अहकाम है जो रब ने सीना पहाड़ पर मूसा को इसराईलियों के लिए दिए।

## गिनती

### इसराइलियों की पहली मर्दमशुमारी

1 इसराइलियों को मिसर से निकले हुए एक साल से ज्यादा अरसा गुजर गया था। अब तक वह दस्ते-सीना में थे। दूसरे साल के दूसरे महीने के पहले दिन रब मुलाकात के खैमे में मूसा से हमकलाम हुआ। उसने कहा,

2 “तू और हास्न तमाम इसराइलियों की मर्दमशुमारी कुंभों और आबाई घरानों के मुताबिक करना। उन तमाम मर्दों की फहरिस्त बनाना 3 जो कम अज़ कम बीस साल के और जंग लडने के काबिल हों। 4 इसमें हर कबीले के एक खानदान का सरपरस्त तुम्हारी मदद करे। 5 यह उनके नाम हैं :

रुबिन के कबीले से इलीसर बिन शदियर,

6 शमौन के कबीले से सलूमियेल बिन सूरीशद्दी,

7 यहदाह के कबीले से नहसोन बिन अम्मीनदाब,

8 इशकार के कबीले से नतनियेल बिन जूगर,

9 जबूलन के कबीले से इलियाब बिन हेलोन,

10 यूसुफ के बेटे इफराईम के कबीले से इलीसमा बिन अम्मीहद,

यूसुफ के बेटे मनस्सी के कबीले से जमलियेल बिन फदाहस्स,

11 बिनयमीन के कबीले से अबिदान बिन जिदौनी,

12 दान के कबीले से अखियजर बिन अम्मीशद्दी,

13 आशर के कबीले से फजियेल बिन अकरान,

14 जद के कबीले से इलियासफ बिन दऊएल,

15 नफताली के कबीले से अखीरा बिन एनान।”

16 यही मर्द जमात से इस काम के लिए बुलाए गए। वह अपने कबीलों के राहनुमा और कुंभों के सरपरस्त थे। 17 इनकी मदद से मूसा और हास्न ने 18 उसी दिन पूरी जमात को इकट्ठा किया। हर इसराइली मर्द जो कम अज़ कम 20 साल का था रजिस्टर में दर्ज किया गया। रजिस्टर की तरतीब उनके कुंभों और आबाई घरानों के मुताबिक थी।

19 सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने हुक्म दिया था। मूसा ने सीना के रेगिस्तान में लोगों की मर्दमशुमारी की। नतीजा यह निकला :

20-21 रुबिन के कबीले के 46,500 मर्द,

22-23 शमौन के कबीले के 59,300 मर्द,

24-25 जद के कबीले के 45,650 मर्द,

26-27 यहदाह के कबीले के 74,600 मर्द,

28-29 इशकार के कबीले के 54,400 मर्द,

30-31 जबूलन के कबीले के 57,400 मर्द,

32-33 यूसुफ के बेटे इफराईम के कबीले के 40,500 मर्द,

34-35 यूसुफ के बेटे मनस्सी के कबीले के 32,200 मर्द,

36-37 बिनयमीन के कबीले के 35,400 मर्द,

38-39 दान के कबीले के 62,700 मर्द,

40-41 आशर के कबीले के 41,500 मर्द,

42-43 नफताली के कबीले के 53,400 मर्द।

44 मूसा, हास्न और कबीलों के बारह राहनुमाओं ने इन तमाम आदमियों को गिना। 45-46 उनकी पूरी तादाद 6,03,550 थी।

47 लेकिन लावियों की मर्दमशुमारी न हुई, 48 क्योंकि रब ने मूसा से कहा था, 49 “इसराइलियों की मर्दमशुमारी में लावियों को शामिल न करना। 50 इसके बजाए उन्हें शरीअत की सुकूनतगाह और उसका सारा सामान सँभालने की जिम्मादारी देना। वह सफर करते वक़्त यह खैमा और उसका सारा सामान उठाकर ले जाएँ, उस की खिदमत के लिए हाज़िर रहें और स्क़ते वक़्त उसे अपने खैमों से घेरे रखें। 51 रवाना होते वक़्त वही खैमे को समेटें और स्क़ते वक़्त वही उसे लगाएँ। अगर कोई और उसके करीब आए तो उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी। 52 बाकी इसराइली खैमागाह में अपने अपने दस्ते के मुताबिक और

अपने अपने अलम के इर्दगिर्द अपने खैमे लगाएँ।<sup>53</sup> लेकिन लावी अपने खैमों से शरीअत की सूकनतगाह को घेर लें ताकि मेरा गजब किसी गलत शख्स के नज़दीक आने से इसराईलियों की जमात पर नाज़िल न हो जाए। यों लावियों को शरीअत की सूकनतगाह को सँभालना है।”

<sup>54</sup> इसराईलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

## 2

### खैमागाह में कबीलों की तरतीब

<sup>1</sup> रब ने मूसा और हासून से कहा<sup>2</sup> कि इसराईली अपने खैमे कुछ फासले पर मुलाकात के खैमे के इर्दगिर्द लगाएँ। हर एक अपने अपने अलम और अपने अपने आबाई घराने के निशान के साथ खैमाज़न हो।

<sup>3</sup> इन हिदायात के मुताबिक मकदिस के मशरिफ़ में यहूदाह का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते खैमाज़न थे। पहले, यहूदाह का कबीला जिसका कर्माँडर नहसोन बिन अम्मीनदाब था,<sup>4</sup> और जिसके लशकर के 74,600 फ़ौजी थे।<sup>5</sup> दूसरे, इशकार का कबीला जिसका कर्माँडर नतनियेल बिन जुगर था,<sup>6</sup> और जिसके लशकर के 54,400 फ़ौजी थे।<sup>7</sup> तीसरे, जबलून का कबीला जिसका कर्माँडर इलियाब बिन हेलेन था<sup>8</sup> और जिसके लशकर के 57,400 फ़ौजी थे।<sup>9</sup> तीनों कबीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,86,400 थी। रवाना होते वक़्त यह आगे चलते थे।

<sup>10</sup> मकदिस के जुनूब में रूबिन का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते खैमाज़न थे। पहले, रूबिन का कबीला जिसका कर्माँडर इलीसूर बिन शदियूर था,<sup>11</sup> और जिसके 46,500 फ़ौजी थे।<sup>12</sup> दूसरे, शमौन का कबीला जिसका कर्माँडर सलूमियेल बिन सूरीशदी था,<sup>13</sup> और जिसके 59,300 फ़ौजी थे।<sup>14</sup> तीसरे, ज़द का कबीला जिसका कर्माँडर इलियासफ़ बिन दऊएल था,<sup>15</sup> और जिसके 45,650 फ़ौजी थे।<sup>16</sup> तीनों कबीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,51,450 थी। रवाना होते वक़्त यह मशरिफ़ी कबीलों के पीछे चलते थे।

<sup>17</sup> इन जुनूबी कबीलों के बाद लावी मुलाकात का खैमा उठाकर कबीलों के ऐन बीच में चलते थे। कबीले उस तरतीब से रवाना होते थे जिस तरतीब से वह अपने खैमे लगाते थे। हर कबीला अपने अलम के पीछे चलता था।

<sup>18</sup> मकदिस के मशरिफ़ में इफ़राइम का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते खैमाज़न थे। पहले, इफ़राइम का कबीला जिसका कर्माँडर इलीसमा बिन अम्मीहूद था,<sup>19</sup> और जिसके 40,500 फ़ौजी थे।<sup>20</sup> दूसरे, मनस्सी का कबीला जिसका कर्माँडर जमलियेल बिन फ़दाहसूर था,<sup>21</sup> और जिसके 32,200 फ़ौजी थे।<sup>22</sup> तीसरे, बिनयमीन का कबीला जिसका कर्माँडर अबिदान बिन जिदौनी था,<sup>23</sup> और जिसके 35,400 फ़ौजी थे।<sup>24</sup> तीनों कबीलों के फ़ौजियों की कुल तादाद 1,08,100 थी। रवाना होते वक़्त यह जुनूबी कबीलों के पीछे चलते थे।

<sup>25</sup> मकदिस के शिमाल में दान का अलम था जिसके इर्दगिर्द तीन दस्ते खैमाज़न थे। पहले, दान का कबीला जिसका कर्माँडर अख़ियज़र बिन अम्मीशदी था,<sup>26</sup> और जिसके 62,700 फ़ौजी थे।<sup>27</sup> दूसरे, आशर का कबीला जिसका कर्माँडर फ़जियेल बिन अकरान था,<sup>28</sup> और जिसके 41,500 फ़ौजी थे।<sup>29</sup> तीसरे, नफ़ताली का कबीला जिसका कर्माँडर अख़ीरा बिन एनान था,<sup>30</sup> और जिसके 53,400 फ़ौजी थे।<sup>31</sup> तीनों कबीलों की कुल तादाद 1,57,600 थी। वह आख़िर में अपना अलम उठाकर रवाना होते थे।

<sup>32</sup> पूरी खैमागाह के फ़ौजियों की कुल तादाद 6,03,550 थी।<sup>33</sup> सिर्फ़ लावी इस तादाद में शामिल नहीं थे, क्योंकि रब ने मूसा को हुक्म दिया था कि उनकी भरती न की जाए।

<sup>34</sup> यों इसराईलियों ने सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक़ किया जो रब ने मूसा को दी थीं। उनके मुताबिक़ ही वह अपने झंडों के इर्दगिर्द अपने खैमे लगाते थे और उनके मुताबिक़ ही अपने कुंबों और आबाई घरानों के साथ रवाना होते थे।

## 3

### हासून के बेटे

<sup>1</sup> यह हासून और मूसा के खानदान का बयान है। उस वक़्त का ज़िक़्र है जब रब ने सीना पहाड़ पर मूसा से बात की।<sup>2</sup> हासून के चार बेटे थे। बड़ा बेटा नदब था, फिर अबीह, इलियज़र और इतमर।<sup>3</sup> यह इमाम थे जिनको मसह करके इस खिदमत का इख़्तियार दिया गया था।<sup>4</sup> लेकिन नदब और अबीह उस वक़्त मर गए जब उन्होंने दशते-सीना में रब के हुज़ूर नाजायज़ आग पेश की। चूँकि वह बेऔलाद थे इसलिए हासून के जीते-जी सिर्फ़ इलियज़र और इतमर इमाम की खिदमत संरज़ाम देते थे।

लावियों की मकदिस में ज़िम्मादारी

5 रब ने मूसा से कहा, 6 “लावी के कबीले को लाकर हासून की खिदमत करने की जिम्मादारी दे। 7 उन्हें उसके लिए और पूरी जमात के लिए मुलाकात के खैमे की खिदमत सँभालना है। 8 वह मुलाकात के खैमे का सामान सँभालें और तमाम इसराइलियों के लिए मकदिस के फ़रायज अदा करें। 9 तमाम इसराइलियों में से सिर्फ़ लावियों को हासून और उसके बेटों की खिदमत के लिए मुकर्रर कर। 10 लेकिन सिर्फ़ हासून और उसके बेटों को इमाम की हैसियत हासिल है। जो भी बाक्रियों में से उनकी जिम्मादारियाँ उठाने की कोशिश करेगा उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।”

11 रब ने मूसा से यह भी कहा, 12 “मैंने इसराइलियों में से लावियों को चुन लिया है। वह तमाम इसराइली पहलौठों के एवज़ मेरे लिए मख़सूस हैं, 13 क्योंकि तमाम पहलौठे मेरे ही हैं। जिस दिन मैंने मिसर में तमाम पहलौठों को मार दिया उस दिन मैंने इसराइल के पहलौठों को अपने लिए मख़सूस किया, खाह वह इनसान के थे या हैवान के। वह मेरे ही हैं। मैं रब हूँ।”

### लावियों की मर्दमशुमारी

14 रब ने सीना के रेगिस्तान में मूसा से कहा, 15 “लावियों को गिनकर उनके आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक रजिस्टर में दर्ज करना। हर बेटे को गिनना है जो एक माह या इससे ज़ायद का है।” 16 मूसा ने ऐसा ही किया।

17 लावी के तीन बेटे ज़ैरसोन, किहात और मिरारी थे। 18 ज़ैरसोन के दो कुंबे उसके बेटों लिबनी और सिमई के नाम रखते थे। 19 किहात के चार कुंबे उसके बेटों अमराम, इज़हार, हबसून और उज़्जियेल के नाम रखते थे। 20 मिरारी के दो कुंबे उसके बेटों महली और मूशी के नाम रखते थे। गरज़ लावी के कबीले के कुंबे उसके पोतों के नाम रखते थे।

21 ज़ैरसोन के दो कुंबों बनाम लिबनी और सिमई 22 के 7,500 मर्द थे जो एक माह या इससे ज़ायद के थे। 23 उन्हें अपने खैमे मगारिब में मकदिस के पीछे लगाने थे। 24 उनका राहनुमा इलियासफ़ बिन लाएल था, 25 और वह खैमे को सँभालते थे यानी उस की पोशिशें, खैमे के दरवाज़े का परदा, 26 खैमे और कुरबानगाह की चारदीवारी के परदे, चारदीवारी के दरवाज़े का परदा और तमाम रस्से। इन चीज़ों से मुताल्लिक सारी खिदमत उनकी जिम्मादारी थी।

27 किहात के चार कुंबों बनाम अमराम, इज़हार, हबसून और उज़्जियेल 28 के 8,600 मर्द थे जो एक माह या इससे ज़ायद के थे और जिनको मकदिस की खिदमत करनी थी। 29 उन्हें अपने डेरे मकदिस के जुनूब में डालने थे। 30 उनका राहनुमा इलीसफ़न बिन उज़्जियेल था, 31 और वह यह चीज़ें सँभालते थे : अहद का सन्दूक, मेज़, शमादान, कुरबानगाहें, वह बरतन और साज़ो-सामान जो मकदिस में इस्तेमाल होता था और मुक़द्दसतरिन कमरे का परदा। इन चीज़ों से मुताल्लिक सारी खिदमत उनकी जिम्मादारी थी। 32 हासून इमाम का बेटा इलियज़र लावियों के तमाम राहनुमाओं पर मुकर्रर था। वह उन तमाम लोगों का इंचार्ज था जो मकदिस की देख-भाल करते थे।

33 मिरारी के दो कुंबों बनाम महली और मूशी 34 के 6,200 मर्द थे जो एक माह या इससे ज़ायद के थे। 35 उनका राहनुमा सूरियेल बिन अबीछेल था। उन्हें अपने डेरे मकदिस के शिमाल में डालने थे, 36 और वह यह चीज़ें सँभालते थे : खैमे के तख्ते, उसके ग़हतीर, खंबे, पाए और इस तरह का सारा सामान। इन चीज़ों से मुताल्लिक सारी खिदमत उनकी जिम्मादारी थी। 37 वह चारदीवारी के खंबे, पाए, मेखें और रस्से भी सँभालते थे।

38 मूसा, हासून और उनके बेटों को अपने डेरे मशरिफ़ में मकदिस के सामने डालने थे। उनकी जिम्मादारी मकदिस में बनी इसराइल के लिए खिदमत करना थी। उनके अलावा जो भी मकदिस में दाखिल होने की कोशिश करता उसे सज़ाए-मौत देनी थी।

39 उन लावी मर्दों की कुल तादाद जो एक माह या इससे ज़ायद के थे 22,000 थी। रब के कहने पर मूसा और हासून ने उन्हें कुंबों के मुताबिक गिनकर रजिस्टर में दर्ज किया।

### लावी के कबीले के मर्द पहलौठों के एवज़ी हैं

40 रब ने मूसा से कहा, “तमाम इसराइली पहलौठों को गिनना जो एक माह या इससे ज़ायद के हैं और उनके नाम रजिस्टर में दर्ज करना। 41 उन तमाम पहलौठों की जगह लावियों को मेरे लिए मख़सूस करना। इसी तरह इसराइलियों के मवेशियों के पहलौठों की जगह लावियों के मवेशी मेरे लिए मख़सूस करना। मैं रब हूँ।” 42 मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब ने उसे हुक्म दिया। उसने तमाम इसराइली पहलौठे 43 जो एक माह या इससे ज़ायद के थे गिन लिए। उनकी कुल तादाद 22,273 थी।

44 रब ने मूसा से कहा, 45 “मुझे तमाम इसराइली पहलौठों की जगह लावियों को पेश करना। इसी तरह मुझे इसराइलियों के मवेशियों की जगह लावियों के मवेशी पेश करना। लावी मेरे ही हैं। मैं रब हूँ। 46 लावियों की निसबत बाक़ी इसराइलियों के 273 पहलौठे ज़्यादा हैं। उनमें से 47 हर एक के एवज़ चाँदी के पाँच सिक्के ले जो मकदिस के वज़न के मुताबिक़ हों (फ़ी सिक्का तकरीबन 11 ग्राम)। 48 यह पैसे हासून और उसके बेटों को देना।”

49 मूसा ने ऐसा ही किया। 50 यों उसने चाँदी के 1,365 सिक्के (तकरीबन 16 किलोग्राम) जमा करके 51 हासून और उसके बेटों को दिए, जिस तरह रब ने उसे हुक्म दिया था।

## 4

## किहातियों की जिम्मादारियाँ

1 रब ने मूसा और हासून से कहा, 2 “लावी के कबीले में से किहातियों की मर्दूमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक करना। 3 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और मुलाकात के खैमे में खिदमत करने के लिए आ सकते हैं। 4 किहातियों की खिदमत मुकद्दसतरीन कमरे की देख-भाल है।

5 जब खैमे को सफ़र के लिए समेटना है तो हासून और उसके बेटे दाखिल होकर मुकद्दसतरीन कमरे का परदा उतारें और उसे शरीअत के संदूक पर डाल दें। 6 इस पर वह तख़स की खालों का गिलाफ़ और आखिर में पूरी तरह नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ। इसके बाद वह संदूक को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

7 वह उस मेज़ पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछाएँ जिस पर रब को रोटी पेश की जाती है। उस पर थाल, प्याले, मै की नज़रें पेश करने के बरतन और मरतबान रखे जाएँ। जो रोटी हमेशा मेज़ पर होती है वह भी उस पर रहे। 8 हासून और उसके बेटे इन तमाम चीज़ों पर किरमिज़ी रंग का कपड़ा बिछाकर आखिर में उनके ऊपर तख़स की खालों का गिलाफ़ डालें। इसके बाद वह मेज़ को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

9 वह शमादान और उसके सामान पर यानी उसके चराग, बत्ती कतरने की कैचियों, जलते कोयले के छोटे बरतनों और तेल के बरतनों पर नीले रंग का कपड़ा रखें। 10 यह सब कुछ वह तख़स की खालों के गिलाफ़ में लपेटें और उसे उठाकर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।

11 वह बखूर जलाने की सोने की कुरबानगाह पर भी नीले रंग का कपड़ा बिछाकर उस पर तख़स की खालों का गिलाफ़ डालें और फिर उसे उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ। 12 वह सारा सामान जो मुकद्दस कमरे में इस्तेमाल होता है लेकर नीले रंग के कपड़े में लपेटें, उस पर तख़स की खालों का गिलाफ़ डालें और उसे उठाकर ले जाने के लिए एक चौखटे पर रखें।

13 फिर वह जानवरों को जलाने की कुरबानगाह को राख से साफ़ करके उस पर अरगवानी रंग का कपड़ा बिछाएँ। 14 उस पर वह कुरबानगाह की खिदमत के लिए सारा ज़रूरी सामान रखें यानी छिडकाव के कटोरें, जलते हुए कोयले के बरतन, बेलचे और कौंटे। इस सामान पर वह तख़स की खालों का गिलाफ़ डालकर कुरबानगाह को उठाने की लकड़ियाँ लगाएँ।

15 सफ़र के लिए रवाना होते वक़्त यह सब कुछ उठाकर ले जाना किहातियों की जिम्मादारी है। लेकिन लाज़िम है कि पहले हासून और उसके बेटे यह तमाम मुकद्दस चीज़ें ढीपें। किहाती इनमें से कोई भी चीज़ न छुएँ वरना मर जाएंगे।

16 हासून इमाम का बेटा इलियज़र पुरे मुकद्दस खैमे और उसके सामान का इंचार्ज हो। इसमें चरागों का तेल, बखूर, गल्ला की रोज़ाना नज़र और मसह का तेल भी शामिल है।”

17 रब ने मूसा और हासून से कहा, 18 “खबरदार रहो कि किहात के कुंबे लावी के कबीले में से मिटने न पाएँ। 19 चुनौचे जब वह मुकद्दसतरीन चीज़ों के पास आएँ तो हासून और उसके बेटे हर एक को उस सामान के पास ले जाएँ जो उसे उठाकर ले जाना है ताकि वह न मरे बल्कि जीते रहे। 20 किहाती एक लमहे के लिए भी मुकद्दस चीज़ें देखने के लिए अंदर न जाएँ, वरना वह मर जाएंगे।”

## ज़ैरसोनियों की जिम्मादारियाँ

21 फिर रब ने मूसा से कहा, 22 “ज़ैरसोन की औलाद की मर्दूमशुमारी भी उनके आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक करना। 23 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और मुलाकात के खैमे में खिदमत के लिए आ सकते हैं। 24 वह यह चीज़ें उठाकर ले जाने के जिम्मादार हैं : 25 मुलाकात का खैमा, उस की छत, छत पर रखी हुई तख़स की खाल की पोशिश, खैमे के दरवाज़े का परदा, 26 खैमे और कुरबानगाह की चारदीवारी के परदे, चारदीवारी के दरवाज़े का परदा, उसके रस्से और उसे लगाने का बाक़ी सामान। वह उन तमाम कामों के जिम्मादार हैं जो इन चीज़ों से मुंसलिक हैं। 27 ज़ैरसोनियों की पूरी खिदमत हासून और उसके बेटों की हिदायात के मुताबिक हो। खबरदार रहो कि वह सब कुछ ऐन हिदायात के मुताबिक उठाकर ले जाएँ। 28 यह सब मुलाकात के खैमे में ज़ैरसोनियों की जिम्मादारियाँ हैं। इस काम में हासून इमाम का बेटा इतमर उन पर मुकर्रर है।”

## मिरारियों की जिम्मादारियाँ

29 रब ने कहा, “मिरारी की औलाद की मर्दूमशुमारी भी उनके आबाई घरानों और कुंबों के मुताबिक करना। 30 उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज करना जो 30 से लेकर 50 साल के हैं और मुलाकात के खैमे में खिदमत के लिए आ सकते हैं। 31 वह मुलाकात के खैमे की यह चीज़ें उठाकर ले जाने के जिम्मादार हैं : दीवार के तख़्ते, शहतीर, खंबे और पाए, 32 फिर खैमे की चारदीवारी के खंबे, पाए, मेखें, रस्से और यह चीज़ें लगाने का सामान। हर एक को तफ़सील से बताना कि वह क्या

क्या उठाकर ले जाए। 33 यह सब कुछ मिरारियों की मुलाकात के खैमे में जिम्मादारियों में शामिल है। इस काम में हास्न इमाम का बेटा इतमर उन पर मुकर्रर हो।”

### लावियों की मर्दुमशुमारी

34 मूसा, हास्न और जमात के राहनुमाओं ने क्रिहातियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक की। 35-37 उन्होंने उन तमाम मर्दों को रजिस्टर में दर्ज किया जो 30 से लेकर 50 साल के थे और जो मुलाकात के खैमे में खिदमत कर सकते थे। उनकी कुल तादाद 2,750 थी। मूसा और हास्न ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा की मारिफत फरमाया था। 38-41 फिर जैरसोनियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक हुई। खिदमत के लायक मर्दों की कुल तादाद 2,630 थी। मूसा और हास्न ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के जर्रीए फरमाया था। 42-45 फिर मिरारियों की मर्दुमशुमारी उनके कुंबों और आबाई घरानों के मुताबिक हुई। खिदमत के लायक मर्दों की कुल तादाद 3,200 थी। मूसा और हास्न ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा के जर्रीए फरमाया था। 46-48 लावियों के उन मर्दों की कुल तादाद 8,580 थी जिन्हें मुलाकात के खैमे में खिदमत करना और सफर करते वक्त उसे उठाकर ले जाना था।

49 मूसा ने रब के हुक्म के मुताबिक हर एक को उस की अपनी अपनी जिम्मादारी सौंपी और उसे बताया कि उसे क्या क्या उठाकर ले जाना है। यों उनकी मर्दुमशुमारी रब के उस हुक्म के ऐन मुताबिक की गई जो उसने मूसा की मारिफत दिया था।

## 5

### नापाक लोग खैमागाह में नहीं रह सकते

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराइलियों को हुक्म दे कि हर उस शख्स को खैमागाह से बाहर कर दो जिसको वबाई जिल्दी बीमारी है, जिसके ज़ख्मों से माए निकलता रहता है या जो किसी लाश को छूने से नापाक है। 3 खाह मर्द हो या औरत, सबको खैमागाह के बाहर भेज देना ताकि वह खैमागाह को नापाक न करे जहाँ मैं तुम्हारे दरमियान सुकूनत करता हूँ।” 4 इसराइलियों ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को कहा था। उन्होंने रब के हुक्म के ऐन मुताबिक इस तरह के तमाम लोगों को खैमागाह से बाहर कर दिया।

### गलत काम का मुआवज़ा

5 रब ने मूसा से कहा, 6 “इसराइलियों को हिदायत देना कि जो भी किसी से गलत सुल्क करे वह मेरे साथ बेवफाई करता है और कुसूरवार है, खाह मर्द हो या औरत। 7 लाज़िम है कि वह अपना गुनाह तसलीम करे और उसका पूरा मुआवज़ा दे बल्कि मुतअसिरा शख्स का नुकसान पूरा करने के अलावा 20 फीसद ज्यादा दे। 8 लेकिन अगर वह शख्स जिसका कुसूर किया गया था मर चुका हो और उसका कोई वारिस न हो जो यह मुआवज़ा वसूल कर सके तो फिर उसे रब को देना है। इमाम को यह मुआवज़ा उस मेंढे के अलावा मिलेगा जो कुसूरवार अपने कफ़फ़ारा के लिए देगा। 9-10 नीज़ इमाम को इसराइलियों की कुरबानियों में से वह कुछ मिलना है जो उठानेवाली कुरबानी के तौर पर उसे दिया जाता है। यह हिस्सा सिर्फ़ इमामों को ही मिलना है।”

### जिना के शक पर अल्लाह का फैसला

11 रब ने मूसा से कहा, 12 “इसराइलियों को बताना, हो सकता है कि कोई शादीशुदा औरत भटककर अपने शौहर से बेवफा हो जाए और 13 किसी और से हमबिसतर होकर नापाक हो जाए। उसके शौहर ने उसे नहीं देखा, क्योंकि यह पोशीदीगी में हुआ है और न किसी ने उसे पकड़ा, न इसका कोई गवाह है। 14 अगर शौहर को अपनी बीवी की वफ़ादारी पर शक हो और वह गैरत खाने लगे, लेकिन यकीन से नहीं कह सकता कि मेरी बीवी कुसूरवार है कि नहीं 15 तो वह अपनी बीवी को इमाम के पास ले आए। साथ साथ वह अपनी बीवी के लिए कुरबानी के तौर पर जो का डेड किलोग्राम बेहतरीन मैदा ले आए। इस पर न तेल उडैला जाए, न बाख़ूर डाला जाए, क्योंकि गल्ला की यह नज़र गैरत की नज़र है जिसका मकसद है कि पोशीदा कुसूर जाहिर हो जाए। 16 इमाम औरत को करीब आने दे और रब के सामने खड़ा करे। 17 वह मिट्टी का बरतन मुक़दस पानी से भरकर उसमें मक़दिस के फर्श की कुछ ख़ाक डाले। 18 फिर वह औरत को रब को पेश करके उसके बाल खूलवाए और उसके हाथों पर मैदे की नज़र रखे। इमाम के अपने हाथ में कड़वे पानी का वह बरतन हो जो लानत का बाइस है।

19 फिर वह औरत को कसम खिलाकर कहे, ‘अगर कोई और आदमी आपसे हमबिसतर नहीं हुआ है और आप नापाक नहीं हुई हैं तो इस कड़वे पानी की लानत का आप पर कोई असर न हो। 20 लेकिन अगर आप भटककर अपने शौहर से बेवफा हो गई हैं और किसी और से हमबिसतर होकर नापाक हो गई हैं 21 तो रब आपको आपकी कीम के सामने लानती

बनाए। आप बाँझ हो जाएँ और आपका पेट फूल जाए। 22 जब लानत का यह पानी आपके पेट में उतरे तो आप बाँझ हो जाएँ और आपका पेट फूल जाए।’ इस पर औरत कहे, ‘आमीन, ऐसा ही हो।’

23 फिर इमाम यह लानत लिखकर कागज को बरतन के पानी में यों धो दे कि उस पर लिखी हुई बातें पानी में घुल जाएँ। 24 बाद में वह औरत को यह पानी पिलाए ताकि वह उसके जिस्म में जाकर उसे लानत पहुँचाए। 25 लेकिन पहले इमाम उसके हाथों में से गैरत की कुरबानी लेकर उसे गल्ला की नजर के तौर पर रब के सामने हिलाए और फिर कुरबानगाह के पास ले आए। 26 उस पर वह मुठी-भर यादगारी की कुरबानी के तौर पर जलाए। इसके बाद वह औरत को पानी पिलाए। 27 अगर वह अपने शौहर से बेवफा थी और नापाक हो गई है तो वह बाँझ हो जाएगी, उसका पेट फूल जाएगा और वह अपनी कौम के सामने लानती ठहरेगी। 28 लेकिन अगर वह पाक-साफ है तो उसे सज़ा नहीं दी जाएगी और वह बच्चे जन्म देने के काबिल रहेगी।

29-30 चुनाँचे ऐसा ही करना है जब शौहर गैरत खाए और उसे अपनी बीवी पर जिना का शक हो। बीवी को कुरबानगाह के सामने खड़ा किया जाए और इमाम यह सब कुछ करे। 31 इस सूत में शौहर बेकुरूस ठहरेगा, लेकिन अगर उस की बीवी ने वाकई जिना किया हो तो उसे अपने गुनाह के नतीजे बरदारत करने पड़ेंगे।”

## 6

जो अपने आपको मखसूस करते हैं

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराइलियों को हिदायत देना कि अगर कोई अदमी या औरत मन्नत मानकर अपने आपको एक मुकर्ररा वक्त के लिए रब के लिए मखसूस करे 3 तो वह मै या कोई और नशा-आवर चीज न पिए। न वह अंगूर या किसी और चीज का सिरका पिए, न अंगूर का रस। वह अंगूर या किशमिश न खाए। 4 जब तक वह मखसूस है वह अंगूर की कोई भी पैदावार न खाए, यहाँ तक कि अंगूर के बीज या छिलके भी न खाए। 5 जब तक वह अपनी मन्नत के मुताबिक मखसूस है वह अपने बाल न कटवाए। जितनी देर के लिए उसने अपने आपको रब के लिए मखसूस किया है उतनी देर तक वह मुकद्दस है। इसलिए वह अपने बाल बढ़ने दे। 6 जब तक वह मखसूस है वह किसी लाश के करीब न जाए, 7 चाहे वह उसके बाप, माँ, भाई या बहन की लाश क्यों न हो। क्योंकि इससे वह नापाक हो जाएगा जबकि अभी तक उस की मखसूसियत लंबे बालों की सूत में नजर आती है। 8 वह अपनी मखसूसियत के दौरान रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस है।

9 अगर कोई अचानक मर जाए जब मखसूस शख्स उसके करीब हो तो उसके मखसूस बाल नापाक हो जाएंगे। ऐसी सूत में लाजिम है कि वह अपने आपको पाक-साफ करके सातवें दिन अपने सर को मुँडवाए। 10 आठवें दिन वह दो कुम्रियाँ या दो जवान कबूतर लेकर मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर आए और इमाम को दे। 11 इमाम इनमें से एक को गुनाह की कुरबानी के तौर पर चढ़ाए और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर। यों वह उसके लिए कफफारा देगा जो लाश के करीब होने से नापाक हो गया है। उसी दिन वह अपने सर को दुबारा मखसूस करे 12 और अपने आपको मुकर्ररा वक्त के लिए दुबारा रब के लिए मखसूस करे। वह कुरूस की कुरबानी के तौर पर एक साल का भेड़ का बच्चा पेश करे। जितने दिन उसने पहले मखसूसियत की हालत में गुजारे हैं वह शमार नहीं किए जा सकते क्योंकि वह मखसूसियत की हालत में नापाक हो गया था। वह दुबारा पहले दिन से शुरू करे।

13 शरीरत के मुताबिक जब मखसूस शख्स का मुकर्ररा वक्त गुजर गया हो तो पहले उसे मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर लाया जाए। 14 वहाँ वह रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए भेड़ का एक बेएब यकसाला नर बच्चा, गुनाह की कुरबानी के लिए एक बेएब यकसाला भेड़ और सलामती की कुरबानी के लिए एक बेएब मेंढा पेश करे। 15 इसके अलावा वह एक टोकर्री में बेखमीरी रोटियाँ जिनमें बेहतरीन मैदा और तेल मिलाया गया हो और बेखमीरी रोटियाँ जिन पर तेल लगाया गया हो मुताल्लिका गल्ला की नजर और मै की नजर के साथ 16 रब को पेश करे। पहले इमाम गुनाह की कुरबानी और भस्म होनेवाली कुरबानी रब के हज़ूर चढ़ाए। 17 फिर वह मेंढे को बेखमीरी रोटियों के साथ सलामती की कुरबानी के तौर पर पेश करे। इमाम गल्ला की नजर और मै की नजर भी चढ़ाए। 18 इस दौरान मखसूस शख्स मुलाकात के खैमे पर अपने मखसूस किए गए सर को मुँडवाकर तमाम बाल सलामती की कुरबानी की आग में फेंके।

19 फिर इमाम मेंढे का एक पका हुआ शाना और टोकर्री में से दोनों किस्मों की एक एक रोटी लेकर मखसूस शख्स के हाथों पर रखे। 20 इसके बाद वह यह चीजें वापस लेकर उन्हें हिलाने की कुरबानी के तौर पर रब के सामने हिलाए। यह एक मुकद्दस कुरबानी है जो इमाम का हिस्सा है। सलामती की कुरबानी का हिलाया हुआ सीना और उठाई हुई रान भी इमाम का हिस्सा हैं। कुरबानी के इखिताम पर मखसूस किए हुए शख्स को मै पीने की इजाज़त है।



21 जो अपने आपको रब के लिए मखसूस करता है वह ऐसा ही करे। लाज़िम है कि वह इन हिदायात के मुताबिक तमाम कुरबानियाँ पेश करे। अगर गुंजाइश हो तो वह और भी पेश कर सकता है। बहरहाल लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत और यह हिदायात पूरी करे।”

### इमाम की बरकत

- 22 रब ने मूसा से कहा, 23 “हासून और उसके बेटों को बता देना कि वह इसराइलियों को यों बरकत दें,  
24 ‘रब तुझे बरकत दे और तेरी हिफाज़त करे।  
25 रब अपने चेहरे का मेहरबान नूर तुझ पर चमकाए और तुझ पर रहम करे।  
26 रब की नज़रे-करम तुझ पर हो, और वह तुझे सलामती बख़्शे।’  
27 यों वह मेरा नाम लेकर इसराइलियों को बरकत दें। फिर मैं उन्हें बरकत दूँगा।”

## 7

### मकदिस की मखसूसियत के हदिये

1 जिस दिन मकदिस मुकम्मल हुआ उसी दिन मूसा ने उसे मखसूसो-मुकद्दस किया। इसके लिए उसने खैमे, उसके तमाम सामान, कुरबानागाह और उसके तमाम सामान पर तेल छिड़का। 2-3 फिर कबीलों के बारह सरदार मकदिस के लिए हदिये लेकर आए। यह वही राहनुमा थे जिन्होंने मर्दुमशुमारी के वक्त मूसा की मदद की थी। उन्होंने छतवाली छः बैलगाडियाँ और बारह बैल खैमे के सामने रब को पेश किए, दो दो सरदारों की तरफ से एक बैलगाड़ी और हर एक सरदार की तरफ से एक बैल।

4 रब ने मूसा से कहा, 5 “यह तोहफे कबूल करके मुलाकात के खैमे के काम के लिए इस्तेमाल कर। उन्हें लावियों में उनकी खिदमत की ज़रूरत के मुताबिक तकसीम करना।” 6 चुनौचे मूसा ने बैलगाडियाँ और बैल लावियों को दे दिए। 7 उसने दो बैलगाडियाँ चार बैलों समेत जैरसोनियों को 8 और चार बैलगाडियाँ आठ बैलों समेत मिरारियों को दीं। मिरारी हासून इमाम के बेटे इतमर के तहत खिदमत करते थे। 9 लेकिन मूसा ने किहातियों को न बैलगाडियाँ और न बैल दिए। वजह यह थी कि जो मुकद्दस चीज़ें उनके सुपर्द थीं वह उनको कंधों पर उठाकर ले जानी थीं।

10 बारह सरदार कुरबानागाह की मखसूसियत के मौके पर भी हदिये ले आए। उन्होंने अपने हदिये कुरबानागाह के सामने पेश किए। 11 रब ने मूसा से कहा, “सरदार बारह दिन के दौरान बारी बारी अपने हदिये पेश करें।” 12 पहले दिन यहदाह के सरदार नहसोन बिन अम्मीनदाब की बारी थी। उसके हदिये यह थे: 13 चाँदी का थाल जिसका वज़न डेढ़ किलोग्राम था और छिड़काव का चाँदी का कटोरा जिसका वज़न 800 ग्राम था। दोनों गल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाए गए बेहतरीन मैदे से भरे हुए थे। 14 इनके अलावा नहसोन ने यह चीज़ें पेश की: सोने का प्याला जिसका वज़न 110 ग्राम था और जो बख़र से भरा हुआ था, 15 एक जवान बैल, एक मेंढा, भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए भेड़ का एक यकसाला बच्चा, 16 गुनाह की कुरबानी के लिए एक बकरा 17 और सलामती की कुरबानी के लिए दो बैल, पाँच मेंढे, पाँच बकरे और भेड़ के पाँच यकसाला बच्चे।

18-23 अगले ग्यारह दिन बाकी सरदार भी यहीं हदिये मकदिस के पास ले आए। दूसरे दिन इशकार के सरदार नतनियेल बिन जुगर की बारी थी, 24-29 तीसरे दिन ज़बलून के सरदार इलियाब बिन हेलेन की, 30-47 चौथे दिन स्विन के सरदार इलीसूर बिन शदियूर की, पाँचवें दिन शमौन के सरदार सलुमियेल बिन सरीशड़ी की, छठे दिन जद के सरदार इलियासफ बिन उकएल की, 48-53 सातवें दिन इफ़राईम के सरदार इलीसमा बिन अम्मीहद की, 54-71 आठवें दिन मनस्सी के सरदार जमलियेल बिन फ़दाहसूर की, नवें दिन बिनयमीन के सरदार अबिदान बिन जिदौनी की, दसवें दिन दान के सरदार अखियज़र बिन अम्मीशड़ी की, 72-83 ग्यारहवें दिन आशर के सरदार फजियेल बिन अकरान की और बारहवें दिन नफ़ताली के सरदार अख़ीरा बिन एज़ान की बारी थी।

84 इसराइल के इन सरदारों ने मिलकर कुरबानागाह की मखसूसियत के लिए चाँदी के 12 थाल, छिड़काव के चाँदी के 12 कटोरे और सोने के 12 प्याले पेश किए। 85 हर थाल का वज़न डेढ़ किलोग्राम और छिड़काव के हर कटोरे का वज़न 800 ग्राम था। इन चीज़ों का कुल वज़न तकरीबन 28 किलोग्राम था। 86 बख़र से भरे हुए सोने के प्यालों का कुल वज़न तकरीबन डेढ़ किलोग्राम था (फ़ी प्याला 110 ग्राम)। 87 सरदारों ने मिलकर भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए 12 जवान बैल, 12 मेंढे और भेड़ के 12 यकसाला बच्चे उनकी गल्ला की नज़रों समेत पेश किए। गुनाह की कुरबानी के लिए उन्होंने 12 बकरे पेश किए 88 और सलामती की कुरबानी के लिए 24 बैल, 60 मेंढे, 60 बकरे और भेड़ के 60 यकसाला बच्चे। इन तमाम जानवरों को कुरबानागाह की मखसूसियत के मौके पर चढ़ाया गया।

89 जब मूसा मुलाकात के खैमे में रब के साथ बात करने के लिए दाखिल होता था तो वह रब की आवाज़ अहद के संदूक के ढकने पर से यानी दो कस्बी फरिशतों के दरमियान से सुनता था।

## 8

### शमादान पर चराग

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “हासून को मताना, ‘तुझे सात चरागों को शमादान पर यों रखना है कि वह शमादान का सामनेवाला हिस्सा रौशन करें’।”

3 हासून ने ऐसा ही किया। जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था उसी तरह उसने चरागों को रख दिया ताकि वह सामनेवाला हिस्सा रौशन करें। 4 शमादान पाए से लेकर ऊपर की कलियों तक सोने के एक घड़े हुए टुकड़े का बना हुआ था। मूसा ने उसे उस नमूने के ऐन मुताबिक बनवाया जो रब ने उसे दिखाया था।

### लावियों की मखसूसियत

5 रब ने मूसा से कहा, 6 “लावियों को दीगर इसराइलियों से अलग करके पाक-साफ करना। 7 इसके लिए गुनाह से पाक करनेवाला पानी उन पर छिड़ककर उन्हें हुक्म देना कि अपने जिस्म के पूरे बाल मुँडवाओ और अपने कपड़े धोओ। यों वह पाक-साफ हो जाएंगे। 8 फिर वह एक जवान बैल चुनें और साथ की गल्ला की नज़र के लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा लें। तू खुद भी एक जवान बैल चुन। वह गुनाह की कुरबानी के लिए होगा।

9 इसके बाद लावियों को मुलाकात के खैमे के सामने खड़ा करके इसराइल की पूरी जमात को वहाँ जमा करना। 10 जब लावी रब के सामने खड़े हों तो बाकी इसराइली उनके सरों पर अपने हाथ रखें। 11 फिर हासून लावियों को रब के सामने पेश करे। उन्हें इसराइलियों की तरफ से हिलाई हुई कुरबानी की हैसियत से पेश किया जाए ताकि वह रब की खिदमत कर सकें। 12 फिर लावी अपने हाथ दोनों बैलों के सरों पर रखें। एक बैल को गुनाह की कुरबानी के तौर पर और दूसरे को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर चढाओ ताकि लावियों का कफ़फारा दिया जाए।

13 लावियों को इस तरीके से हासून और उसके बेटों के सामने खड़ा करके रब को हिलाई हुई कुरबानी के तौर पर पेश करना है। 14 उन्हें बाकी इसराइलियों से अलग करने से वह मेरा हिस्सा बनेंगे। 15 इसके बाद ही वह मुलाकात के खैमे में आकर खिदमत करें, क्योंकि अब वह खिदमत करने के लायक हैं। उन्हें पाक-साफ करके हिलाई हुई कुरबानी के तौर पर पेश करने का सबब यह है 16 कि लावी इसराइलियों में से वह हैं जो मुझे पूरे तौर पर दिए गए हैं। मैंने उन्हें इसराइलियों के तमाम पहलौठों की जगह ले लिया है। 17 क्योंकि इसराइल में हर पहलौठा मेरा है, खाह वह इनसान का हो या हैवान का। उस दिन जब मैंने मिसरियों के पहलौठों को मार दिया मैंने इसराइल के पहलौठों को अपने लिए मखसूसो-मुकद्दस किया। 18 इस सिलसिले में मैंने लावियों को इसराइलियों के तमाम पहलौठों की जगह लेकर 19 उन्हें हासून और उसके बेटों को दिया है। वह मुलाकात के खैमे में इसराइलियों की खिदमत करें और उनके लिए कफ़फारा का इंतज़ाम कायम रखें ताकि जब इसराइली मक़दिस के करीब आएँ तो उनको वबा से मारा न जाए।”

20 मूसा, हासून और इसराइलियों की पूरी जमात ने एहतियात से रब की लावियों के बारे में हिदायात पर अमल किया। 21 लावियों ने अपने आपको गुनाहों से पाक-साफ करके अपने कपड़ों को धोया। फिर हासून ने उन्हें रब के सामने हिलाई हुई कुरबानी के तौर पर पेश किया और उनका कफ़फारा दिया ताकि वह पाक हो जाएँ। 22 इसके बाद लावी मुलाकात के खैमे में आए ताकि हासून और उसके बेटों के तहत खिदमत करें। यों सब कुछ वैसा ही किया गया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

23 रब ने मूसा से यह भी कहा, 24 “लावी 25 साल की उम्र में मुलाकात के खैमे में अपनी खिदमत शुरू करें 25 और 50 साल की उम्र में रिटायर हो जाएँ। 26 इसके बाद वह मुलाकात के खैमे में अपने भाइयों की मदद कर सकते हैं, लेकिन खुद खिदमत नहीं कर सकते। तुझे लावियों को इन हिदायात के मुताबिक उनकी अपनी अपनी जिम्मादारियाँ देनी हैं।”

## 9

### रेगिस्तान में ईदे-फ़सह

1 इसराइलियों को मिसर से निकले एक साल हो गया था। दूसरे साल के पहले महीने में रब ने दशते-सीना में मूसा से बात की।

2 “लाज़िम है कि इसराइली ईदे-फ़सह को मुकर्रर वक़्त पर मनाएँ, 3 यानी इस महीने के चौधवें दिन, सूरज के गुरुब होने के ऐन बाद। उसे तमाम क़वायद के मुताबिक मनाना।” 4 चुनौचे मूसा ने इसराइलियों से कहा कि वह ईदे-फ़सह मनाएँ, 5 और

उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने ईदे-फसह को पहले महीने के चौधवें दिन सूरज के गुरुत्व होने के ऐन बाद मनाया। उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

6 लेकिन कुछ आदमी नापाक थे, क्योंकि उन्होंने लाश छू ली थी। इस वजह से वह उस दिन ईदे-फसह न मना सके। वह मूसा और हासून के पास आकर 7 कहने लगे, “हमने लाश छू ली है, इसलिए नापाक हैं। लेकिन हमें इस सबब से ईदे-फसह को मनाने से क्यों रोका जाए? हम भी मुकर्ररा वक्त पर बाकी इसराइलियों के साथ रब की कुरबानी पेश करना चाहते हैं।”

8 मूसा ने जवाब दिया, “यहाँ मेरे इंतज़ार में खड़े रहो। मैं मालूम करता हूँ कि रब तुम्हारे बारे में क्या हुक्म देता है।”

9 रब ने मूसा से कहा, 10 “इसराइलियों को बता देना कि अगर तुम या तुम्हारी औलाद में से कोई ईदे-फसह के दौरान लाश छूने से नापाक हो या किसी दूर-दराज़ इलाके में सफर कर रहा हो, तो भी वह ईद मना सकता है। 11 ऐसा शख्स उसे ऐन एक माह के बाद मनाकर लेले के साथ बेखुमरी रोटी और कड़वा साग-पात खाए। 12 खाने में से कुछ भी अगली सुबह तक बाक़ी न रहे। जानवर की कोई भी हड्डी न तोड़ना। मनावेवाला ईदे-फसह के पूरे फरायज़ अदा करे। 13 लेकिन जो पाक होने और सफर न करने के बावजूद भी ईदे-फसह को न मनाए उसे उस की कौम में से मिटाया जाए, क्योंकि उसने मुकर्ररा वक्त पर रब को कुरबानी पेश नहीं की। उस शख्स को अपने गुनाह का नतीजा भुगतना पड़ेगा। 14 अगर कोई परदेसी तुम्हारे दरमियान रहते हुए रब के सामने ईदे-फसह मनाना चाहे तो उसे इजाज़त है। शर्त यह है कि वह पूरे फरायज़ अदा करे। परदेसी और देसी के लिए ईदे-फसह मनाने के फरायज़ एक जैसे हैं।”

### मुलाकात के ख़ैमे पर बादल का सतून

15 जिस दिन शरीअत के मुकद्दस ख़ैमे को खड़ा किया गया उस दिन बादल आकर उस पर छा गया। रात के वक्त बादल आग की सूरत में नज़र आया। 16 इसके बाद यही सूरते-हाल रही कि बादल उस पर छाया रहता और रात के दौरान आग की सूरत में नज़र आता। 17 जब भी बादल ख़ैमे पर से उठता इसराइली रवाना हो जाते। जहाँ भी बादल उतर जाता वहाँ इसराइली अपने डेरे डालते। 18 इसराइली रब के हुक्म पर रवाना होते और उसके हुक्म पर डेरे डालते। जब तक बादल मकदिस पर छाया रहता उस वक्त तक वह वहीं ठहरते। 19 कभी कभी बादल बड़ी देर तक ख़ैमे पर ठहरा रहता। तब इसराइली रब का हुक्म मानकर रवाना न होते। 20 कभी कभी बादल सिर्फ़ दो-चार दिन के लिए ख़ैमे पर ठहरता। फिर वह रब के हुक्म के मुताबिक़ ही ठहरते और रवाना होते थे। 21 कभी कभी बादल सिर्फ़ शाम से लेकर सुबह तक ख़ैमे पर ठहरता। जब वह सुबह के वक्त उठता तो इसराइली भी रवाना होते थे। जब भी बादल उठता वह भी रवाना हो जाते। 22 जब तक बादल मुकद्दस ख़ैमे पर छाया रहता उस वक्त तक इसराइली रवाना न होते, चाहे वह दो दिन, एक माह, एक साल या इससे ज्यादा अरसा मकदिस पर छाया रहता। लेकिन जब वह उठता तो इसराइली भी रवाना हो जाते। 23 वह रब के हुक्म पर ख़ैमे लगाते और उसके हुक्म पर रवाना होते थे। वह वैसा ही करते थे जैसा रब मूसा की मारिफ़त फरमाता था।

## 10

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “चौंदी के दो बिगुल घड़कर बनवा ले। उन्हें जमात को जमा करने और कबीलों को रवाना करने के लिए इस्तेमाल कर। 3 जब दोनों को देर तक बजाया जाए तो पूरी जमात मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर आकर तैरे सामने जमा हो जाए। 4 लेकिन अगर एक ही बजाया जाए तो सिर्फ़ कुंभों के बुजुर्ग़ तैरे सामने जमा हो जाएँ। 5 अगर उनकी आवाज़ सिर्फ़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मकदिस के मशरिक में मौजूद कबीले रवाना हो जाएँ। 6 फिर जब उनकी आवाज़ दूसरी बार थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो मकदिस के जुनूब में मौजूद कबीले रवाना हो जाएँ। जब उनकी आवाज़ थोड़ी देर के लिए सुनाई दे तो यह रवाना होने का एलान होगा। 7 इसके मुकाबले में जब उनकी आवाज़ देर तक सुनाई दे तो यह इस बात का एलान होगा कि जमात जमा हो जाए।

8 बिगुल बजाने की जिम्मादारी हासून के बेटों यानी इमामों को दी जाए। यह तुम्हारे और आनेवाली नसलों के लिए दायमी उसूल हो। 9 उनकी आवाज़ उस वक्त भी थोड़ी देर के लिए सुना दो जब तुम अपने मुल्क में किसी जालिम दुश्मन से जंग लड़ने के लिए निकलोगे। तब रब तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करके दुश्मन से बचाएगा।

10 इसी तरह उनकी आवाज़ मकदिस में ख़ुशी के मौकों पर सुनाई दे यानी मुकर्ररा ईदों और नए चौंद की ईदों पर। इन मौकों पर वह भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाते वक्त बजाए जाएँ। फिर तुम्हारा ख़ुदा तुम्हें याद करेगा। मैं रब तुम्हारा ख़ुदा हूँ।”

11 इसराइलियों को मिसर से निकले एक साल से जायद अरसा हो चुका था। दूसरे महीने के बीसवें दिन बादल मुलाकात के खैमे पर से उठा। 12 फिर इसराइली मुकर्ररा तरतीब के मुताबिक दशते-सीना से रवाना हुए। चलते चलते बादल फारान के रेगिस्तान में उतर आया।

13 उस वक्त वह पहली दफा उस तरतीब से रवाना हुए जो रब ने मूसा की मारिफत मुकर्रर की थी। 14 पहले यहदाह के कबीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल पड़े। तीनों का कर्माँडर नहसोन बिन अम्मीनदाब था। 15 साथ चलनेवाले कबीले इशकार का कर्माँडर नतनियेल बिन जुगर था। 16 जबलून का कबीला भी साथ चला जिसका कर्माँडर इलियाब बिन हेल्ोन था। 17 इसके बाद मुलाकात का खैमा उतारा गया। जैरसोनी और मिरारी उसे उठाकर चल दिए। 18 इन लावियों के बाद रुबिन के कबीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चलने लगे। तीनों का कर्माँडर इलीसूर बिन शदियूर था। 19 साथ चलनेवाले कबीले शमौन का कर्माँडर सलमियेल बिन सूरीशदी था। 20 जद का कबीला भी साथ चला जिसका कर्माँडर इलियासफ बिन दऊएल था। 21 फिर लावियों में से किहाती मकदिस का सामान उठाकर रवाना हुए। लाजिम था कि उनके अगली मनजिल पर पहुँचने तक मुलाकात का खैमा लगा दिया गया हो। 22 इसके बाद इफराईम के कबीले के तीन दस्ते अपने अलम के तहत चल दिए। उनका कर्माँडर इलीसामा बिन अम्मीहद था। 23 इफराईम के साथ चलनेवाले कबीले मनस्सी का कर्माँडर जमलियेल बिन फदाहसूर था। 24 बिनयमीन का कबीला भी साथ चला जिसका कर्माँडर अबिदान बिन जिदौनी था। 25 आखिर में दान के तीन दस्ते अकबी मुहाफिज के तौर पर अपने अलम के तहत रवाना हुए। उनका कर्माँडर अखियजर बिन अम्मीशदी था। 26 दान के साथ चलनेवाले कबीले आशर का कर्माँडर फजियेल बिन अकरान था। 27 नफताली का कबीला भी साथ चला जिसका कर्माँडर अखीरा बिन एनान था। 28 इसराइली इसी तरतीब से रवाना हुए।

**मूसा होबाब को साथ चलने पर मजबूर करता है**

29 मूसा ने अपने मिदियानी सुसर रऊएल यानी यितरो के बेटे होबाब से कहा, “हम उस जगह के लिए रवाना हो रहे हैं जिसका वादा रब ने हमसे किया है। हमारे साथ चलें! हम आप पर एहसान करेंगे, क्योंकि रब ने इसराइल पर एहसान करने का वादा किया है।” 30 लेकिन होबाब ने जवाब दिया, “मैं साथ नहीं जाऊँगा बल्कि अपने मुल्क और रिश्तेदारों के पास वापस चला जाऊँगा।” 31 मूसा ने कहा, “मेहरबानी करके हमें न छोड़ें। क्योंकि आप ही जानते हैं कि हम रेगिस्तान में कहाँ कहाँ अपने डेरे डाल सकते हैं। आप रेगिस्तान में हमें रास्ता दिखा सकते हैं।” 32 अगर आप हमारे साथ जाएँ तो हम आपको उस एहसान में शरीक करेंगे जो रब हम पर करेगा।”

**अहद के संदूक का सफर**

33 चुनौचे उन्होंने रब के पहाड़ से रवाना होकर तीन दिन सफर किया। इस दौरान रब का अहद का संदूक उनके आगे आगे चला ताकि उनके लिए आराम करने की जगह मालूम करे। 34 जब कभी वह रवाना होते तो रब का बादल दिन के वक्त उनके ऊपर रहता। 35 संदूक के रवाना होते वक्त मूसा कहता, “ऐ रब, उठ। तेरे दुश्मन तितर-बितर हो जाएँ। तुझसे नफरत करनेवाले तेरे सामने से फरार हो जाएँ।” 36 और जब भी वह स्कू जाता तो मूसा कहता, “ऐ रब, इसराइल के हजारों खानदानों के पास वापस आ।”

## 11

**तबएरा में रब की आग**

1 एक दिन लोग खूब शिकायत करने लगे। जब यह शिकायतें रब तक पहुँचीं तो उसे गुस्सा आया और उस की आग उनके दरमियान भड़क उठी। जलते जलते उसने खैमागाह का एक किनारा भस्म कर दिया। 2 लोग मदद के लिए मूसा के पास आकर चिल्लाने लगे तो उसने रब से दुआ की, और आग बुझ गई। 3 उस मकाम का नाम तबएरा यानी जलना पड़ गया, क्योंकि रब की आग उनके दरमियान जल उठी थी।

**मूसा 70 राहनुमा चुनता है**

4 इसराइलियों के साथ जो अजनबी सफर कर रहे थे वह गोशत खाने की शर्दीद आरजू करने लगे। तब इसराइली भी रो पड़े और कहने लगे, “कौन हमें गोशत खिलाएगा? 5 मिसर में हम मछली मुफ्त खा सकते थे। हाय, वहाँ के खीर, तरबूज, गंदने, प्याज और लहसन कितने अच्छे थे! 6 लेकिन अब तो हमारी जान सूख गई है। यहाँ बस मन ही मन नजर आता रहता है।”

7 मन धनिये के दानों की मानिंद था, और उसका रंग गूगल के गूँद की मानिंद था। 8-9 रात के वक्त वह खैमागाह में ओस के साथ ज़मीन पर गिरता था। सुबह के वक्त लोग इधर उधर घुमते-फिरते हुए उसे जमा करते थे। फिर वह उसे चक्की में

पीसकर या उखली में कूटकर उबालते या रोटी बनाते थे। उसका जायका ऐसी रोटी का-सा था जिसमें जैतून का तेल डाला गया हो।

10 तमाम खानदान अपने अपने खैमे के दरवाजे पर रोने लगे तो रब को शदीद गुस्सा आया। उनका शोर मूसा को भी बहुत बुरा लगा। 11 उसने रब से पूछा, “तूने अपने खादिम के साथ इतना बुरा सुलक क्यों किया? मैंने किस काम से तुझे इतना नाराज किया कि तूने इन तमाम लोगों को बोझ मुझ पर डाल दिया? 12 क्या मैंने हामिला होकर इस पूरी कौम को जन्म दिया कि तू मुझसे कहता है, ‘इसे उस तरह उठाकर ले चलना जिस तरह आया शीरखार बच्चे को उठाकर हर जगह साथ लिए फिरती है। इसी तरह इसे उस मुल्क में ले जाना जिसका वादा मैंने कसम खाकर इनके बापदादा से किया है।’ 13 ऐ अल्लाह, मैं इन तमाम लोगों को कहाँ से गोशत मुहैया करूँ? वह मेरे सामने रोते रहते हैं कि हमें खाने के लिए गोशत दो। 14 मैं अकेला इन तमाम लोगों की जिम्मादारी नहीं उठा सकता। यह बोझ मेरे लिए हद से ज्यादा भारी है। 15 अगर तू इस पर इसरार करे तो फिर बेहतर है कि अभी मुझे मार दे ताकि मैं अपनी तबाही न देखूँ।”

16 जवाब में रब ने मूसा से कहा, “मेरे पास इसराईल के 70 बुजुर्ग जमा कर। सिर्फ ऐसे लोग चुन जिनके बारे में तुझे मालूम है कि वह लोगों के बुजुर्ग और निगहबान हैं। उन्हें मुलाकात के खैमे के पास ले आ। वहाँ वह तेरे साथ खड़े हो जाएँ, 17 तो मैं उतरकर तेरे साथ हमकलाम हूँगा। उस वक़्त मैं उस रूह में से कुछ लूँगा जो मैंने तुझ पर नाज़िल किया था और उसे उन पर नाज़िल करूँगा। तब वह कौम का बोझ उठाने में तेरी मदद करेंगे और तू इसमें अकेला नहीं रहेगा। 18 लोगों को बताना, ‘अपने आपको मखसूसो-मुकद्दस करो, क्योंकि कल तुम गोशत खाओगे। रब ने तुम्हारी सुनी जब तुम रो पड़े कि कौन हमें गोशत खिलाएगा, मिसर में हमारी हालत बेहतर थी। अब रब तुम्हें गोशत मुहैया करेगा और तुम उसे खाओगे। 19 तुम उसे न सिर्फ एक, दो या पाँच दिन खाओगे बल्कि 10 या 20 दिन से भी ज्यादा अरसे तक। 20 तुम एक पूरा महीना खूब गोशत खाओगे, यहाँ तक कि वह तुम्हारी नाक से निकलेगा और तुम्हें उससे घिन आएगी। और यह इस सबब से होगा कि तुमने रब को जो तुम्हारे दरमियान है रू किया और रोते रोते उसके सामने कहा कि हम क्यों मिसर से निकले।’”

21 लेकिन मूसा ने एतराज किया, “अगर कौम के पैदल चलनेवाले गिने जाएँ तो छः लाख हैं। तू किस तरह हमें एक माह तक गोशत मुहैया करेगा? 22 क्या गाय-बैलों या भेड़-बकरियों को इतनी मिकदार में ज़बह किया जा सकता है कि काफी हो? अगर समुंदर की तमाम मछलियों उनके लिए पकड़ी जाएँ तो क्या काफी होंगी?”

23 रब ने कहा, “क्या रब का इख्तियार कम है? अब तू खुद देख लेगा कि मेरी बातें दुस्तत हैं कि नहीं।”

24 चुनौचे मूसा ने वहाँ से निकलकर लोगों को रब की यह बातें बताई। उसने उनके बुजुर्गों में से 70 को चुनकर उन्हें मुलाकात के खैमे के इर्दगिर्द खड़ा कर दिया। 25 तब रब बादल में उतरकर मूसा से हमकलाम हुआ। जो रूह उसने मूसा पर नाज़िल किया था उसमें से उसने कुछ लेकर उन 70 बुजुर्गों पर नाज़िल किया। जब रूह उन पर आया तो वह नबुव्वत करने लगे। लेकिन ऐसा फिर कभी न हुआ।

26 अब ऐसा हुआ कि इन सत्तर बुजुर्गों में से दो खैमागाह में रह गए थे। उनके नाम इलदाद और मेदाद थे। उन्हें चुना तो गया था लेकिन वह मुलाकात के खैमे के पास नहीं आए थे। इसके बावजूद रूह उन पर भी नाज़िल हुआ और वह खैमागाह में नबुव्वत करने लगे। 27 एक नौजवान भागकर मूसा के पास आया और कहा, “इलदाद और मेदाद खैमागाह में ही नबुव्वत कर रहे हैं।”

28 यशुअ बिन नून जो जवानी से मूसा का मददगार था बोल उठा, “मूसा मेरे आका, उन्हें रोक दें!” 29 लेकिन मूसा ने जवाब दिया, “क्या तू मेरी खातिर गैरत खा रहा है? काश रब के तमाम लोग नबी होते और वह उन सब पर अपना रूह नाज़िल करता!” 30 फिर मूसा और इसराईल के बुजुर्ग खैमागाह में वापस आए।

31 तब रब की तरफ से जोरदार हवा चलने लगी जिसने समुंदर को पार करनेवाले बटेरों के गोल धकेलकर खैमागाह के इर्दगिर्द ज़मीन पर फेंक दिए। उनके गोल तीन फुट ऊँचे और खैमागाह के चारों तरफ 30 किलोमीटर तक पड़े रहे। 32 उस पूरे दिन और रात और अगले पूरे दिन लोग निकलकर बटेरों जमा करते रहे। हर एक ने कम अज़ कम दस बड़ी टोकरियाँ भर लीं। फिर उन्होंने उनका गोशत खैमे के इर्दगिर्द ज़मीन पर फैला दिया ताकि वह खुश्क हो जाए।

33 लेकिन गोशत के पहले टुकड़े अभी मुँह में थे कि रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा, और उसने उनमें सख़्त वबा फैलाने दी। 34 चुनौचे मक़ाम का नाम क़ब्रत-हतावा यानी ‘लालच की क़ब्र’ रखा गया, क्योंकि वहाँ उन्होंने उन लोगों को दफ़न किया जो गोशत के लालच में आ गए थे।

35 इसके बाद इसराईली क़ब्रत-हतावा से रवाना होकर हसीरात पहुँच गए। वहाँ वह खैमाज़न हुए।

1 एक दिन मरियम और हास्न मूसा के खिलाफ बातें करने लगे। वजह यह थी कि उसने कृश की एक औरत से शादी की थी। 2 उन्होंने पूछा, “क्या रब सिर्फ मूसा की मारिफत बात करता है? क्या उसने हमसे भी बात नहीं की?” रब ने उनकी यह बातें सुनी।

3 लेकिन मूसा निहायत हलीम था। दुनिया में उस जैसा हलीम कोई नहीं था। 4 अचानक रब मूसा, हास्न और मरियम से मुखातिब हुआ, “तुम तीनों बाहर निकलकर मुलाकात के खैमे के पास आओ।”

तीनों वहाँ पहुँचे। 5 तब रब बादल के सतून में उतरकर मुलाकात के खैमे के दरवाजे पर खड़ा हुआ। उसने हास्न और मरियम को बुलाया तो दोनों आए। 6 उसने कहा, “मेरी बात सुनो। जब तुम्हारे दरमियान नबी होता है तो मैं अपने आपको रोया में उस पर जाहिर करता हूँ या खाब में उससे मुखातिब होता हूँ। 7 लेकिन मेरे खादिम मूसा की और बात है। उसे मैंने अपने पुरे घराने पर मुकर्रर किया है। 8 उससे मैं रूबरू हमकलाम होता हूँ। उससे मैं मुअम्मों के जरीए नहीं बल्कि साफ साफ बात करता हूँ। वह रब की सूरत देखता है। तो फिर तुम मेरे खादिम के खिलाफ बातें करने से क्यों न डरे?”

9 रब का गज़ब उन पर आन पड़ा, और वह चला गया। 10 जब बादल का सतून खैमे से दूर हुआ तो मरियम की जिल्द बर्फ की मानिंद सफ़ेद थी। वह कोठ का शिकार हो गई थी। हास्न उस की तरफ मुड़ा तो उस की हालत देखी 11 और मूसा से कहा, “मेरे आका, मेहरबानी करके हमें इस गुनाह की सज़ा न दें जो हमारी हमाकत के बाइस सरज़द हुआ है। 12 मरियम को इस हालत में न छोड़ें। वह तो ऐसे बच्चे की मानिंद है जो मुरदा पैदा हुआ हो, जिसके जिस्म का आधा हिस्सा गल चुका हो।”

13 तब मूसा ने पुकारकर रब से कहा, “ऐ अल्लाह, मेहरबानी करके उसे शफा दे।” 14 रब ने ज़वाब में मूसा से कहा, “अगर मरियम का बाप उसके मुँह पर थूकता तो क्या वह पुरे हफते तक शर्म महसूस न करती? उसे एक हफते के लिए खैमागाह के बाहर बंद रखा। इसके बाद उसे वापस लाया जा सकता है।”

15 चुनौचे मरियम को एक हफते के लिए खैमागाह के बाहर बंद रखा गया। लोग उस वक़्त तक सफ़र के लिए रवाना न हुए जब तक उसे वापस न लाया गया। 16 जब वह वापस आई तो इसराईली हसीरात से रवाना होकर फ़ारान के रेगिस्तान में खैमाज़न हुए।

## 13

### मुल्के-कनान में इसराईली जासूस

1 फिर रब ने मूसा से कहा, 2 “कुछ आदमी मुल्के-कनान का जायज़ा लेने के लिए भेज दे, क्योंकि मैं उसे इसराईलियों को देने को हूँ। हर कबीले में से एक राहनुमा को चुनकर भेज दे।”

3 मूसा ने रब के कहने पर उन्हें दशते-फ़ारान से भेजा। सब इसराईली राहनुमा थे। 4 उनके नाम यह हैं :

रूबिन के कबीले से सम्मुअ बिन जक्कूर,

5 शमौन के कबीले से साफ़त बिन होरी,

6 यहदाह के कबीले से कालिब बिन यफुन्ना,

7 इशकार के कबीले से इजाल बिन यूसुफ,

8 इफ़राईम के कबीले से होसेअ बिन नून,

9 बिनयमीन के कबीले से फलती बिन रफू,

10 ज़बलून के कबीले से ज़िथेल बिन सोदी,

11 यूसुफ के बेटे मनस्सी के कबीले से जिदी बिन सूसी,

12 दान के कबीले से अम्मियेल बिन जमल्ली,

13 आशर के कबीले से सतूर बिन मीकाएल,

14 नफताली के कबीले से नखबी बिन वुफ़सी,

15 जद के कबीले से जियुएल बिन माकी।

16 मूसा ने इन्हीं बारह आदमियों को मुल्क का जायज़ा लेने के लिए भेजा। उसने होसेअ का नाम यशुअ यानी ‘रब नजात है’ में बदल दिया।

17 उन्हें सूखसत करने से पहले उसने कहा, “दशते-नजब से गुज़रकर पहाड़ी इलाके तक पहुँचो। 18 मालूम करो कि यह किस तरह का मुल्क है और उसके बाशिंदे कैसे हैं। क्या वह ताक़तवर है या कमज़ोर, तादाद में कम है या ज्यादा? 19 जिस मुल्क में वह बसते हैं क्या वह अच्छा है कि नहीं? वह किस किसम के शहरों में रहते हैं? क्या उनकी चारदीवारियाँ हैं कि नहीं? 20 मुल्क की ज़मीन ज़रखेज़ है या बंजर? उसमें दरख़्त हैं कि नहीं? और ज़रूत करके मुल्क का कुछ फल चुनकर ले आओ।” उस वक़्त पहले अंगूर पक गए थे।

21 चुनौचे इन आदमियों ने सफर करके दशते-सीन से रहोब तक मुल्क का जायजा लिया। रहोब लबो-हमात के करीब है। 22 वह दशते-नजब से गुजरकर हबस्न पहुँचे जहाँ अनाक के बेटे अखीमान, सीसी और तलमी रहते थे। (हबस्न को मिसर के शहर जुअन से सात साल पहले तामीर किया गया था)। 23 जब वह वादीए-इस्काल तक पहुँचे तो उन्होंने एक डाली काट ली जिस पर अंगूर का गुच्छा लगा हुआ था। दो आदमियों ने यह अंगूर, कुछ अनार और कुछ अंजीर लाठी पर लटकाए और उसे उठाकर चल पड़े। 24 उस जगह का नाम उस गुच्छे के सबब से जो इसराइलियों ने वहाँ से काट लिया इसकाल यानी गुच्छा रखा गया।

25 चालीस दिन तक मुल्क का खोज लगाते लगाते वह लौट आए। 26 वह मूसा, हास्न और इसराइल की पूरी जमात के पास आए जो दशते-फारान में कादिस की जगह पर इंतज़ार कर रहे थे। वहाँ उन्होंने सब कुछ बताया जो उन्होंने मालूम किया था और उन्हें वह फल दिखाए जो लेकर आए थे। 27 उन्होंने मूसा को रिपोर्ट दी, “हम उस मुल्क में गए जहाँ आपने हमें भेजा था। वाकई उस मुल्क में दूध और शहद की कसरत है। यहाँ हमारे पास उसके कुछ फल भी हैं। 28 लेकिन उसके बाशिंदे ताकतवर हैं। उनके शहरों की फसीलें हैं, और वह निहायत बड़े हैं। हमने वहाँ अनाक की औलाद भी देखी। 29 अमालीकी दशते-नजब में रहते हैं जबकि हिन्ती, यबूसी और अमोरी पहाड़ी इलाके में आबाद हैं। कनानी साहिली इलाके और दरियाए-यरदन के किनारे किनारे बसते हैं।”

30 कालिब ने मूसा के सामने जमाशुदा लोगों को इशारा किया कि वह खामोश हो जाएँ। फिर उसने कहा, “आएँ, हम मुल्क में दाखिल हो जाएँ और उस पर कब्ज़ा कर लें, क्योंकि हम यकीनन यह करने के काबिल हैं।” 31 लेकिन दूसरे आदमियों ने जो उसके साथ मुल्क को देखने गए थे कहा, “हम उन लोगों पर हमला नहीं कर सकते, क्योंकि वह हमसे ताकतवर हैं।” 32 उन्होंने इसराइलियों के दरमियान उस मुल्क के बारे में गलत अफवाहें फैलाई जिसकी तफतीश उन्होंने की थी। उन्होंने कहा, “जिस मुल्क में से हम गुज़रे ताकि उसका जायजा लें वह अपने बाशिंदों को हड़प कर लेता है। जो भी उसमें रहता है निहायत दराज़कद है। 33 हमने वहाँ देवकामत अफराद भी देखे। (अनाक के बेटे देवकामत के अफराद की औलाद थे)। उनके सामने हम अपने आपको टिड्डी जैसा महसूस कर रहे थे, और हम उनकी नज़र में ऐसे थे भी।”

## 14

### लोग कनान में दाखिल नहीं होना चाहते

1 उस रात तमाम लोग चीखें मार मारकर रोते रहे। 2 सब मूसा और हास्न के खिलाफ बुड़बुडाने लगे। पूरी जमात ने उनसे कहा, “काश हम मिसर या इस रेगिस्तान में मर गए होते! 3 रब हमें क्यों उस मुल्क में ले जा रहा है? क्या इसलिए कि दुश्मन हमें तलवार से कत्ल करे और हमारे बाल-बच्चों को लूट ले? क्या बेहतर नहीं होगा कि हम मिसर वापस जाएँ?” 4 उन्होंने एक दूसरे से कहा, “आओ, हम राहुना चुनकर मिसर वापस चले जाएँ।”

5 तब मूसा और हास्न पूरी जमात के सामने मुँह के बल गिरे। 6 लेकिन यशुअ बिन नून और कालिब बिन यफुन्ना बाकी दस जासूसों से फरक थे। पेशानी के आलम में उन्होंने अपने कपड़े फाड़कर 7 पूरी जमात से कहा, “जिस मुल्क में से हम गुज़रे और जिसकी तफतीश हमने की वह निहायत ही अच्छा है। 8 अगर रब हमसे खुश है तो वह ज़रूर हमें उस मुल्क में ले जाएगा जिसमें दूध और शहद की कसरत है। वह हमें ज़रूर यह मुल्क देगा। 9 रब से बगावत मत करना। उस मुल्क के रहनेवालों से न डरें। हम उन्हें हड़प कर जाएंगे। उनकी पनाह उनसे जाती रही है जबकि रब हमारे साथ है। चुनौचे उनसे मत डरें।”

10 यह सुनकर पूरी जमात उन्हें संगसार करने के लिए तैयार हुई। लेकिन अचानक रब का जलाल मुलाकात के खैमे पर जाहिर हुआ, और तमाम इसराइलियों ने उसे देखा। 11 रब ने मूसा से कहा, “यह लोग मुझे कब तक हक़ीर जानेंगे? वह कब तक मुझ पर ईमान रखने से इनकार करेंगे अगरचे मैंने उनके दरमियान इतने मोजिजे किए हैं? 12 मैं उन्हें वबा से मार डालूँगा और उन्हें स्प-ज़मीन से भी मिटा दूँगा। उनकी जगह मैं तुझसे एक कौम बनाऊँगा जो उनसे बड़ी और ताकतवर होगी।”

13 लेकिन मूसा ने रब से कहा, “फिर मिसरी यह सुन लेंगे! क्योंकि तूने अपनी कुदरत से इन लोगों को मिसर से निकालकर यहाँ तक पहुँचाया है। 14 मिसरी यह बात कनान के बाशिंदों को बताएँगे। यह लोग पहले से सुन चुके हैं कि रब इस कौम के साथ है, कि तुझे स्बस् देखा जाता है, कि तेरा बादल उनके ऊपर ठहरा रहता है, और कि तू दिन के वक़्त बादल के सतून में और रात को आग के सतून में इनके आगे आगे चलता है। 15 अगर तू एकदम इस पूरी कौम को तबाह कर डाले तो बाकी कौमों यह सुनकर कहेंगी, 16 ‘रब इन लोगों को उस मुल्क में ले जाने के काबिल नहीं था जिसका वादा उसने उनसे कसम खाकर किया था। इसी लिए उसने उन्हें रेगिस्तान में हलाक कर दिया।’ 17 ऐ रब, अब अपनी कुदरत यों जाहिर कर जिस तरह तूने फरमाया है। क्योंकि तूने कहा, 18 ‘रब तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है। वह गुनाह और नाफ़रमानी मुआफ़ करता है, लेकिन हर एक को उस की मुनासिब सज़ा भी देता है। जब वालिदैन गुनाह करें तो उनकी औलाद को भी तीसरी और चौथी

पुश्त तक सज़ा के नतायज भुगतने पड़ेगे।' 19 इन लोगों का कुसूर अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मुआफ़ कर। उन्हें उस तरह मुआफ़ कर जिस तरह तू उन्हें मिसर से निकलते वक़्त अब तक मुआफ़ करता रहा है।''

20 रब ने जवाब दिया, "तेरे कहने पर मैंने उन्हें मुआफ़ कर दिया है। 21 इसके बावजूद मेरी हयात की कसम और मेरे जलाल की कसम जो पूरी दुनिया को मामूर करता है, 22 इन लोगों में से कोई भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। उन्होंने मेरा जलाल और मेरे मोज़िज़े देखे हैं जो मैंने मिसर और रेगिस्तान में कर दिखाए हैं। तो भी उन्होंने दस दफ़ा मुझे आज़माया और मेरी न सूनी। 23 उनमें से एक भी उस मुल्क को नहीं देखेगा जिसका वादा मैंने कसम खाकर उनके बापदादा से किया था। जिसने भी मुझे हक़ीर जाना है वह कभी उसे नहीं देखेगा। 24 सिर्फ़ मेरा खादिम कालिब मुख़ालिफ़ है। उस की रूह फ़रक़ है। वह पूरे दिल से मेरी पैरवी करता है, इसलिए मैं उसे उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसमें उसने सफ़र किया है। उस की औलाद मुल्क मीरास में पाएगी। 25 लेकिन फ़िलहाल अमालीकी और कनानी उस की वादियों में आबाद रहेंगे। चुनौचे कल मुडकर वापस चलो। रेगिस्तान में बहरे-कुलजुम की तरफ़ रवाना हो जाओ।''

26 रब ने मूसा और हासून से कहा, 27 "यह शरीर जमात कब तक मेरे खिलाफ़ बुडबुडाती रहेगी? उनके गिले-शिकवे मुझ तक पहुँच गए हैं। 28 इसलिए उन्हें बताओ, 'रब फ़रमाता है कि मेरी हयात की कसम, मैं तुम्हारे साथ वही कुछ करूँगा जो तुमने मेरे सामने कहा है। 29 तुम इस रेगिस्तान में मरकर यहीं पड़े रहोगे, हर एक जो 20 साल या इससे जायद का है, जो मर्दमशुमारी में गिना गया और जो मेरे खिलाफ़ बुडबुडाय़ा। 30 गो मैंने हाथ उठाकर कसम खाई थी कि मैं तुझे उसमें बसाऊँगा तुममें से कोई भी उस मुल्क में दाख़िल नहीं होगा। सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना और यशुअ बिन नून दाख़िल होंगे। 31 तुमने कहा था कि दुश्मन हमारे बच्चों को लूट लेंगे। लेकिन उन्हीं को मैं उस मुल्क में ले जाऊँगा जिसे तुमने रद किया है। 32 लेकिन तुम ख़ुद दाख़िल नहीं होगे। तुम्हारी लाशें इस रेगिस्तान में पड़ी रहेंगी। 33 तुम्हारे बच्चे 40 साल तक यहाँ रेगिस्तान में गल्लाबान होंगे। उन्हें तुम्हारी बेवफ़ाई के सबब से उस वक़्त तक तकलीफ़ उठानी पड़ेगी जब तक तुममें से आख़िरी शख्स मर न गया हो। 34 तुमने चालीस दिन के दौरान उस मुल्क का जायज़ा लिया। अब तुम्हें चालीस साल तक अपने गुनाहों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। तब तुम्हें पता चलेगा कि इसका क्या मतलब है कि मैं तुम्हारी मुख़ालफ़त करता हूँ। 35 मैं, रब ने यह बात फ़रमाई है। मैं यकीनन यह सब कुछ उस सारी शरीर जमात के साथ करूँगा जिसने मिलकर मेरी मुख़ालफ़त की है। इसी रेगिस्तान में वह ख़त्म हो जाएँगे, यहीं मर जाएँगे।''

36-37 जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का जायज़ा लेने के लिए भेजा था, रब ने उन्हें फ़ौरन मोहलक़ वबा से मार डाला, क्योंकि उनके ग़लत अफ़वाहों फैलाने से पूरी जमात बुडबुडाने लगी थी। 38 सिर्फ़ यशुअ बिन नून और कालिब बिन यफ़ुन्ना ज़िंदा रहे।

39 जब मूसा ने रब की यह बातें इसराइलियों को बताई तो वह ख़ुब मातम करने लगे। 40 अगली सुबह-सवّरे वह उठे और यह कहते हुए ऊँचे पहाड़ी इलाके के लिए रवाना हुए कि हमसे ग़लती हुई है, लेकिन अब हम हाज़िर हैं और उस जगह की तरफ़ जा रहे हैं जिसका ज़िक्र रब ने किया है।

41 लेकिन मूसा ने कहा, "तुम क्यों रब की खिलाफ़वरज़ी कर रहे हो? तुम कामयाब नहीं होगे। 42 वहाँ न जाओ, क्योंकि रब तुम्हारे साथ नहीं है। तुम दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे, 43 क्योंकि वहाँ अमालीकी और कनानी तुम्हारा सामना करेंगे। चूँकि तुमने अपना मुँह रब से फेर लिया है इसलिए वह तुम्हारे साथ नहीं होगा, और दुश्मन तुम्हें तलवार से मार डालेगा।''

44 तो भी वह अपने ग़ुर्र में ज़ुरत करके ऊँचे पहाड़ी इलाके की तरफ़ बढे, हालाँकि न मूसा और न अहद के संदूक ही ने ख़ैमागाह को छोड़ा। 45 फिर उस पहाड़ी इलाके में रहनेवाले अमालीकी और कनानी उन पर आन पड़े और उन्हें मारते मारते हुरमा तक तित्तर-बित्तर कर दिया।

## 15

### कनान में कुरबानियाँ पेश करने का तरीका

1 रब ने मूसा से कहा, 2 "इसराइलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाख़िल होगे जो मैं तुम्हें दूँगा 3-4 तो जलनेवाली कुरबानियाँ यों पेश करना :

आगर तुम अपने गाय-बैलों या भेड़-बकरियों में से ऐसी कुरबानी पेश करना चाहो जिसकी ख़ुशबू रब को पसंद हो तो साथ साथ डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करो जो एक लिटर जैतून के तेल के साथ मिलाया गया हो। इसमें कोई फ़रक़ नहीं कि यह भस्म होनेवाली कुरबानी, मन्नत की कुरबानी, दिली ख़ुशी की कुरबानी या किसी इद की कुरबानी हो।



5 हर भेड़ को पेश करते वक्त एक लिटर मै भी मै की नजर के तौर पर पेश करना। 6 जब मेंढा कुरबान किया जाए तो 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी साथ पेश करना जो सवा लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। 7 सवा लिटर मै भी मै की नजर के तौर पर पेश की जाए। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद आएगी।

8 अगर तू रब को भस्म होनेवाली कुरबानी, मन्नत की कुरबानी या सलामती की कुरबानी के तौर पर जवान बैल पेश करना चाहे 9 तो उसके साथ साढ़े 4 किलोग्राम बेहतरीन मैदा भी पेश करना जो दो लिटर तेल के साथ मिलाया गया हो। 10 दो लिटर मै भी मै की नजर के तौर पर पेश की जाए। ऐसी कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है। 11 लाजिम है कि जब भी किसी गाय, बैल, भेड़, मेंढे, बकरी या बकरे को चढाया जाए तो ऐसा ही किया जाए।

12 अगर एक से जायद जानवरों को कुरबान करना है तो हर एक के लिए मुकर्ररा गल्ला और मै की नजरें भी साथ ही पेश की जाएँ।

13 लाजिम है कि हर देसी इसराईली जलनेवाली कुरबानियाँ पेश करते वक्त ऐसा ही करे। फिर उनकी खुशबू रब को पसंद आएगी। 14 यह भी लाजिम है कि इसराईल में आरिजी या मुस्तकिल तौर पर रहनेवाले परदेसी इन उसूलों के मुताबिक अपनी कुरबानियाँ चढाएँ। फिर उनकी खुशबू रब को पसंद आएगी। 15 मुल्के-कनान में रहनेवाले तमाम लोगों के लिए पाबंदियाँ एक जैसी हैं, खाह वह देसी हों या परदेसी, क्योंकि रब की नजर में परदेसी तुम्हारे बराबर है। यह तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के लिए दायमी उसूल है। 16 तुम्हारे और तुम्हारे साथ रहनेवाले परदेसी के लिए एक ही शरीअत है।”

### फसल के लिए शुकुगुजारी की कुरबानी

17 रब ने मूसा से कहा, 18 “इसराईलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होगे जिसमें मैं तुम्हें ले जा रहा हूँ 19 और वहाँ की पैदावार खाओगे तो पहले उसका एक हिस्सा उठानेवाली कुरबानी के तौर पर रब को पेश करना। 20 फसल के पहले खालिस आटे में से मेरे लिए एक रोटी बनाकर उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करो। वह गाहने की जगह की तरफ से रब के लिए उठानेवाली कुरबानी होगी। 21 अपनी फसल के पहले खालिस आटे में से यह कुरबानी पेश किया करो। यह उसूल हमेशा तक लागू रहे।

### नादानिस्ता गुनाहों के लिए कुरबानियाँ

22 हो सकता है कि गैरइरादी तौर पर तुमसे गलती हुई है और तुमने उन अहकाम पर पूरे तौर पर अमल नहीं किया जो रब मूसा को दे चुका है 23 या जो वह आनेवाली नसलों को देगा। 24 अगर जमात इस बात से नावाक़िफ़ थी और गैरइरादी तौर पर उससे गलती हुई तो फिर पूरी जमात एक जवान बैल भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करे। साथ ही वह मुकर्ररा गल्ला और मै की नजरें भी पेश करे। इसकी खुशबू रब को पसंद होगी। इसके अलावा जमात गुनाह की कुरबानी के लिए एक बकरा पेश करे। 25 इमाम इसराईल की पूरी जमात का कफ़फ़ारा दे तो उन्हें मुआफ़ी मिलेगी, क्योंकि उनका गुनाह गैरइरादी था और उन्होंने रब को भस्म होनेवाली कुरबानी और गुनाह की कुरबानी पेश की है। 26 इसराईलियों की पूरी जमात को परदेसियों समेत मुआफ़ी मिलेगी, क्योंकि गुनाह गैरइरादी था।

27 अगर सिर्फ़ एक शख्स से गैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो गुनाह की कुरबानी के लिए वह एक यकसाला बकरी पेश करे। 28 इमाम रब के सामने उस शख्स का कफ़फ़ारा दे। जब कफ़फ़ारा दे दिया गया तो उसे मुआफ़ी हासिल होगी। 29 यही उसूल परदेसी पर भी लागू है। अगर उससे गैरइरादी तौर पर गुनाह हुआ हो तो वह मुआफ़ी हासिल करने के लिए वही कुछ करे जो इसराईली को करना होता है।

### दानिस्ता गुनाहों के लिए सज़ाए-मौत

30 लेकिन अगर कोई देसी या परदेसी जान-बूझकर गुनाह करता है तो ऐसा शख्स रब की इहानत करता है, इसलिए लाजिम है कि उसे उस की कौम में से मिटाया जाए। 31 उसने रब का कलाम हक़ीर जानकर उसके अहकाम तोड़ डाले हैं, इसलिए उसे जरूर कौम में से मिटाया जाए। वह अपने गुनाह का जिम्मादार है।”

32 जब इसराईली रेगिस्तान में से गुज़र रहे थे तो एक आदमी को पकड़ा गया जो हफ़ते के दिन लकड़ियाँ जमा कर रहा था। 33 जिन्होंने उसे पकड़ा था वह उसे मूसा, हारून और पूरी जमात के पास ले आए। 34 चूँकि साफ़ मालूम नहीं था कि उसके साथ क्या किया जाए इसलिए उन्होंने उसे गिरफ़्तार कर लिया।

35 फिर रब ने मूसा से कहा, “इस आदमी को जरूर सज़ाए-मौत दी जाए। पूरी जमात उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर संगसार करे।” 36 चुनौचे जमात ने उसे ख़ैमागाह के बाहर ले जाकर संगसार किया, जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

### अहकाम की याद दिलानेवाले फ़ुंदने

37 रब ने मूसा से कहा, 38 “इसराईलियों को बताना कि तुम और तुम्हारे बाद की नसलें अपने लिबास के किनारों पर फुँदने लगाएँ। हर फुँदना एक किरमिजी डोरी से लिबास के साथ लगा हो। 39 इन फुँदनों को देखकर तुम्हें रब के तमाम अहकाम याद रहेंगे और तुम उन पर अमल करोगे। फिर तुम अपने दिलों और आँखों की गलत खाहिशों के पीछे नहीं पड़ोगे बल्कि जिनाकारी से दूर रहोगे। 40 फिर तुम मेरे अहकाम को याद करके उन पर अमल करोगे और अपने खुदा के सामने मखसूसो-मुकद्दस रहोगे। 41 मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ जो तुम्हें मिसर से निकाल लाया ताकि तुम्हारा खुदा हूँ। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

## 16

कोरह, दातन और अबीराम की सरकशी

1-2 एक दिन कोरह बिन इज़हार मूसा के खिलाफ उठा। वह लावी के कबीले का किहाती था। उसके साथ रुबिन के कबीले के तीन आदमी थे, इलियाब के बेटे दातन और अबीराम और ओन बिन पलत। उनके साथ 250 और आदमी भी थे जो जमात के सरदार और असरो-रसूखवाले थे, और जो कौंसल के लिए चुने गए थे। 3 वह मिलकर मूसा और हासून के पास आकर कहने लगे, “आप हमसे ज्यादती कर रहे हैं। पूरी जमात मखसूसो-मुकद्दस है, और रब उसके दरमियान है। तो फिर आप अपने आपको क्यों रब की जमात से बढ़कर समझते हैं?”

4 यह सुनकर मूसा मुँह के बल गिरा। 5 फिर उसने कोरह और उसके तमाम साथियों से कहा, “कल सुबह रब जाहिर करेगा कि कौन उसका बंदा और कौन मखसूसो-मुकद्दस है। उसी को वह अपने पास आने देगा। 6 ऐ कोरह, कल अपने तमाम साथियों के साथ बखूरदान लेकर 7 रब के सामने उनमें अंगारे और बखूर डालो। जिस आदमी को रब चुनेगा वह मखसूसो-मुकद्दस होगा। अब तुम लावी खुद ज्यादती कर रहे हो।”

8 मूसा ने कोरह से बात जारी रखी, “ऐ लावी की औलाद, सुनो! 9 क्या तुम्हारी नज़र में यह कोई छोटी बात है कि रब तुम्हें इसराईली जमात के बाकी लोगों से अलग करके अपने करीब ले आया ताकि तुम रब के मकदिस में और जमात के सामने खड़े होकर उनकी खिद्यत करो? 10 वह तुझे और तेरे साथी लावियों को अपने करीब लाया है। लेकिन अब तुम इमाम का ओहदा भी अपनाना चाहते हो। 11 अपने साथियों से मिलकर तूने हासून की नहीं बल्कि रब की मुखालफत की है। क्योंकि हासून कौन है कि तुम उसके खिलाफ बुडबुडाओ?”

12 फिर मूसा ने इलियाब के बेटों दातन और अबीराम को बुलाया। लेकिन उन्होंने कहा, “हम नहीं आएँगे। 13 आप हमें एक ऐसे मुल्क से निकाल लाए हैं जहाँ दूध और शहद की कसरत है ताकि हम रेगिस्तान में हलाक हो जाएँ। क्या यह काफी नहीं है? क्या अब आप हम पर हुकूमत भी करना चाहते हैं? 14 न आपने हमें ऐसे मुल्क में पहुँचाया जिसमें दूध और शहद की कसरत है, न हमें खेतों और अंगूर के बागों के वारिस बनाया है। क्या आप इन आदमियों की आँखें निकाल डालेंगे? नहीं, हम हरगिज़ नहीं आएँगे।”

15 तब मूसा निहायत गुस्से हुआ। उसने रब से कहा, “उनकी कुरबानी को कबूल न कर। मैंने एक गधा तक उनसे नहीं लिया, न मैंने उनमें से किसी से बुरा सुल्क किया है।”

16 कोरह से उसने कहा, “कल तुम और तुम्हारे साथी रब के सामने हाज़िर हो जाओ। हासून भी आएगा। 17 हर एक अपना बखूरदान लेकर उसे रब को पेश करे।” 18 चुनौचे हर आदमी ने अपना बखूरदान लेकर उसमें अंगारे और बखूर डाल दिया। फिर सब मूसा और हासून के साथ मुलाकात के खैमे के दरवाज़े पर खड़े हुए। 19 कोरह ने पूरी जमात को दरवाज़े पर मूसा और हासून के मुकाबले में जमा किया था।

अचानक पूरी जमात पर रब का जलाल जाहिर हुआ। 20 रब ने मूसा और हासून से कहा, 21 “इस जमात से अलग हो जाओ ताकि मैं इसे फौरन हलाक कर दूँ।” 22 मूसा और हासून मुँह के बल गिरे और बोल उठे, “ऐ अल्लाह, तू तमाम जानों का खुदा है। क्या तेरा गज़ब एक ही आदमी के गुनाह के सबब से पूरी जमात पर आन पड़ेगा?”

23 तब रब ने मूसा से कहा, 24 “जमात को बता दे कि कोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो जाओ।” 25 मूसा उठकर दातन और अबीराम के पास गया, और इसराईल के बजुर्ग उसके पीछे चले। 26 उसने जमात को आगाह किया, “इन शरिरों के खैमों से दूर हो जाओ! जो कुछ भी उनके पास है उसे न छुओ, वरना तुम भी उनके साथ तबाह हो जाओगे जब वह अपने गुनाहों के बाइस हलाक होंगे।” 27 तब बाकी लोग कोरह, दातन और अबीराम के डेरों से दूर हो गए।

दातन और अबीराम अपने बाल-बच्चों समेत अपने खैमों से निकलकर बाहर खड़े थे। 28 मूसा ने कहा, “अब तुम्हें पता चलेगा कि रब ने मुझे यह सब कुछ करने के लिए भेजा है। मैं अपनी नहीं बल्कि उस की मरजी पूरी कर रहा हूँ। 29 अगर यह लोग दूसरों की तरह तबई मौत मरे तो फिर रब ने मुझे नहीं भेजा। 30 लेकिन अगर रब ऐसा काम करे जो पहले कभी नहीं

हुआ और जमीन अपना मुँह खोलकर उन्हें और उनका पूरा माल हडप कर ले और उन्हें जीते-जी दफना दे तो इसका मतलब होगा कि इन आदमियों ने रब को हकीर जाना है।”

31 यह बात कहते ही उनके नीचे की जमीन फट गई। 32 उसने अपना मुँह खोलकर उन्हें, उनके खानदानों को, कोरह के तमाम लोगों को और उनका सारा सामान हडप कर लिया। 33 वह अपनी पूरी मिलकियत समेत जीते-जी दफन हो गए। जमीन उनके ऊपर वापस आ गई। यों उन्हें जमात से निकाला गया और वह हलाक हो गए। 34 उनकी चीखें सुनकर उनके इर्दगिर्द खडे तमाम इसराईली भाग उठे, क्योंकि उन्होंने सोचा, “ऐसा न हो कि जमीन हमें भी निगल ले।”

35 उसी लमहे रब की तरफ से आग उतर आई और उन 250 आदमियों को भस्म कर दिया जो बखूर पेश कर रहे थे। 36 रब ने मूसा से कहा, 37 “हासून इमाम के बेटे इलियज़र को इतला दे कि वह बखूरदानों को राख में से निकालकर रखे। उनके अंगारे वह दूर फेंके। बखूरदानों को रखने का सबब यह है कि अब वह मखसूसो-मुकद्दस हैं। 38 लोग उन आदमियों के यह बखूरदान ले लें जो अपने गुनाह के बाइस जान-बहक हो गए। वह उन्हें कूटकर उनसे चादरें बनाएँ और उन्हें जलनेवाली कुरबानियों की कुरबानागाह पर चढ़ाएँ। क्योंकि वह रब को पेश किए गए हैं, इसलिए वह मखसूसो-मुकद्दस हैं। यों वह इसराईलियों के लिए एक निशान रहेंगे।”

39 चुनौचे इलियज़र इमाम ने पीतल के यह बखूरदान जमा किए जो भस्म किए हुए आदमियों ने रब को पेश किए थे। फिर लोगों ने उन्हें कूटकर उनसे चादरें बनाईं और उन्हें कुरबानागाह पर चढ़ा दिया। 40 हासून ने सब कुछ वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा की मारिफत बताया था। मकसद यह था कि बखूरदान इसराईलियों को याद दिलाते रहें कि सिर्फ हासून की औलाद ही को रब के सामने आकर बखूर जलाने की इजाज़त है। अगर कोई और ऐसा करे तो उसका हाल कोरह और उसके साथियों का-सा होगा।

41 अगले दिन इसराईल की पूरी जमात मूसा और हासून के खिलाफ बुडबुडाने लगी। उन्होंने कहा, “आपने रब की कौम को मार डाला है।” 42 लेकिन जब वह मूसा और हासून के मुकाबले में जमा हुए और मुलाकात के खैमे का सख किया तो अचानक उस पर बादल छा गया और रब का जलाल जाहिर हुआ। 43 फिर मूसा और हासून मुलाकात के खैमे के सामने आए, 44 और रब ने मूसा से कहा, 45 “इस जमात से निकल जाओ ताकि मैं इसे फ़ौरन हलाक कर दूँ।” यह सुनकर दोनों मुँह के बल गिरे। 46 मूसा ने हासून से कहा, “अपना बखूरदान लेकर उसमें कुरबानागाह के अंगारे और बखूर डालें। फिर भागकर जमात के पास चले जाएँ ताकि उनका कफ़ारा दें। जल्दी करें, क्योंकि रब का गज़ब उन पर टूट पड़ा है। वबा फैलने लगी है।”

47 हासून ने ऐसा ही किया। वह दौड़कर जमात के बीच में गया। लोगों में वबा शुरू हो चुकी थी, लेकिन हासून ने रब को बखूर पेश करके उनका कफ़ारा दिया। 48 वह जिंदों और मुरदों के बीच में खड़ा हुआ तो वबा रुक गई। 49 तो भी 14,700 अफ़राद वबा से मर गए। इसमें वह शामिल नहीं हैं जो कोरह के सबब से मर गए थे।

50 जब वबा रुक गई तो हासून मूसा के पास वापस आया जो अब तक मुलाकात के खैमे के दरवाज़े पर खड़ा था।

## 17

हासून की लाठी से कौंपले निकलती हैं

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों से बात करके उनसे 12 लाठियाँ माँगा ले, हर कबीले के सरदार से एक लाठी। हर लाठी पर उसके मालिक का नाम लिखना। 3 लावी की लाठी पर हासून का नाम लिखना, क्योंकि हर कबीले के सरदार के लिए एक लाठी होगी। 4 फिर उनको मुलाकात के खैमे में अहद के संदूक के सामने रख जहाँ मेरी तुमसे मुलाकात होती है। 5 जिस आदमी को मैंने चुन लिया है उस की लाठी से कौंपले फूट निकलेंगी। इस तरह मैं तुम्हारे खिलाफ इसराईलियों की बुडबुडाहट खत्म कर दूँगा।”

6 चुनौचे मूसा ने इसराईलियों से बात की, और कबीलों के हर सरदार ने उसे अपनी लाठी दी। इन 12 लाठियों में हासून की लाठी भी शामिल थी। 7 मूसा ने उन्हें मुलाकात के खैमे में अहद के संदूक के सामने रखा। 8 अगले दिन जब वह मुलाकात के खैमे में दाखिल हुआ तो उसने देखा कि लावी के कबीले के सरदार हासून की लाठी से न सिर्फ कौंपले फूट निकली हैं बल्कि फूल और पंके हुए बादाम भी लगे हैं।

9 मूसा तमाम लाठियाँ रब के सामने से बाहर लाकर इसराईलियों के पास ले आया, और उन्होंने उनका मुआयना किया। फिर हर एक ने अपनी अपनी लाठी वापस ले ली। 10 रब ने मूसा से कहा, “हासून की लाठी अहद के संदूक के सामने रख दे। यह बागी इसराईलियों को याद दिलाएगी कि वह अपना बुडबुडाना बंद करें, वरना हलाक हो जाएंगे।”

11 मूसा ने ऐसा ही किया। 12 लेकिन इसराईलियों ने मूसा से कहा, “हाय, हम मर जाएंगे। हाय, हम हलाक हो जाएंगे, हम सब हलाक हो जाएंगे। 13 जो भी रब के मकदिस के करीब आए वह मर जाएगा। क्या हम सब ही हलाक हो जाएंगे?”

## 18

## इमामों और लावियों की जिम्मादारियाँ

1 रब ने हासून से कहा, “मकदिस तेरी, तेरे बेटों और लावी के कबीले की जिम्मादारी है। अगर इसमें कोई गलती हो जाए तो तुम कुसूरवार ठहरोगे। इसी तरह इमामों की खिदमत सिर्फ तेरी और तेरे बेटों की जिम्मादारी है। अगर इसमें कोई गलती हो जाए तो तू और तेरे बेटे कुसूरवार ठहरेंगे। 2 अपने कबीले लावी के बाकी आदमियों को भी मेरे करीब आने दे। वह तेरे साथ मिलकर यों हिस्सा लें कि वह तेरी और तेरे बेटों की खिदमत करें जब तुम खैमे के सामने अपनी जिम्मादारियाँ निभाओगे। 3 तेरी खिदमत और खैमे में खिदमत उनकी जिम्मादारी है। लेकिन वह खैमे के मखसूसो-मुकद्दस सामान और कुरबानगाह के करीब न जाएँ, वरना न सिर्फ वह बल्कि तू भी हलाक हो जाएगा। 4 यों वह तेरे साथ मिलकर मुलाकात के खैमे के पूरे काम में हिस्सा लें। लेकिन किसी और को ऐसा करने की इजाजत नहीं है। 5 सिर्फ तू और तेरे बेटे मकदिस और कुरबानगाह की देख-भाल करें ताकि मेरा गजब द्वारा इसराइलियों पर न भडके। 6 मैं ही ने इसराइलियों में से तेरे भाइयों यानी लावियों को चुनकर तुझे तोहफे के तौर पर दिया है। वह रब के लिए मखसूस हैं ताकि खैमे में खिदमत करें। 7 लेकिन सिर्फ तू और तेरे बेटे इमाम की खिदमत संरजाम दें। मैं तुम्हें इमाम का ओहदा तोहफे के तौर पर देता हूँ। कोई और कुरबानगाह और मुकद्दस चीजों के नजदीक न आए, वरना उसे सजाए-मौत दी जाए।”

## इमामों का हिस्सा

8 रब ने हासून से कहा, “मैंने खुद मुकर्रर किया है कि तमाम उठानेवाली कुरबानियाँ तेरा हिस्सा हों। यह हमेशा तक कुरबानियों में से तेरा और तेरी औलाद का हिस्सा है। 9 तुम्हें मुकद्दसतरीन कुरबानियों का वह हिस्सा मिलना है जो जलाया नहीं जाता। हाँ, तुझे और तेरे बेटों को वही हिस्सा मिलना है, खाह वह मुझे गल्ला की नज़रें, गुनाह की कुरबानियाँ या कुसूर की कुरबानियाँ पेश करें। 10 उसे मुकद्दस जगह पर खाना। हर मर्द उसे खा सकता है। खयाल रख कि वह मखसूसो-मुकद्दस है।

11 मैंने मुकर्रर किया है कि तमाम हिलानेवाली कुरबानियों का उठाया हुआ हिस्सा तेरा है। यह हमेशा के लिए तेरे और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा है। तेरे घराने का हर फ़रद उसे खा सकता है। शर्त यह है कि वह पाक हो। 12 जब लोग रब को अपनी फ़सलों का पहला फल पेश करेंगे तो वह तेरा ही हिस्सा होगा। मैं तुझे जैतून के तेल, नई मै और अनाज का बेहतरीन हिस्सा देता हूँ। 13 फ़सलों का जो भी पहला फल वह रब को पेश करेंगे वह तेरा ही होगा। तेरे घराने का हर पाक फ़रद उसे खा सकता है। 14 इसराइल में जो भी चीज़ रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस की गई है वह तेरी होगी। 15 हर इनसान और हर हैवान का जो पहलौदा रब को पेश किया जाता है वह तेरा ही है। लेकिन लाज़िम है कि तू हर इनसान और हर नापाक जानवर के पहलौटे का फ़िघा देकर उसे छुड़ाए।

16 जब वह एक माह के हैं तो उनके एवज़ चाँदी के पाँच सिक्के देना। (हर सिक्के का वज़न मकदिस के बाटों के मुताबिक 11 ग्राम हो)। 17 लेकिन गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले बच्चों का फ़िघा यानी मुआवज़ा न देना। वह मखसूसो-मुकद्दस है। उनका खून कुरबानगाह पर छिड़क देना और उनकी चरबी जला देना। ऐसी कुरबानी रब को पसंद होगी। 18 उनका गोशत वैसे ही तुम्हारे लिए हो, जैसे हिलानेवाली कुरबानी का सीना और दहनी रान भी तुम्हारे लिए है।

19 मुकद्दस कुरबानियों में से तमाम उठानेवाली कुरबानियाँ तेरा और तेरे बेटे-बेटियों का हिस्सा है। मैंने उसे हमेशा के लिए तुझे दिया है। यह नामक का दायमी अहद है जो मैंने तेरे और तेरी औलाद के साथ कायम किया है।”

## लावियों का हिस्सा

20 रब ने हासून से कहा, “तू मीरास में ज़मीन नहीं पाएगा। इसराइल में तुझे कोई हिस्सा नहीं दिया जाएगा, क्योंकि इसराइलियों के दरमियान मैं ही तेरा हिस्सा और तेरी मीरास हूँ। 21 अपनी पैदावार का जो दसवाँ हिस्सा इसराइली मुझे देते हैं वह मैं लावियों को देता हूँ। यह उनकी विरासत है, जो उन्हें मुलाकात के खैमे में खिदमत करने के बदले में मिलती है। 22 अब से इसराइली मुलाकात के खैमे के करीब न जाएँ, वरना उन्हें अपनी खता का नतीजा बरदाश्त करना पड़ेगा और वह हलाक हो जाएंगे। 23 सिर्फ लावी मुलाकात के खैमे में खिदमत करें। अगर इसमें कोई गलती हो जाए तो वही कुसूरवार ठहरेंगे। यह एक दायमी उसूल है। उन्हें इसराइल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी। 24 क्योंकि मैंने उन्हें वही दसवाँ हिस्सा मीरास के तौर पर दिया है जो इसराइली मुझे उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करते हैं। इस वजह से मैंने उनके बारे में कहा कि उन्हें बाकी इसराइलियों के साथ मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।”

## लावियों का दसवाँ हिस्सा

25 रब ने मूसा से कहा, 26 “लावियों को बताना कि तुम्हें इसराइलियों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा मिलेगा। यह रब की तरफ से तुम्हारी विरासत होगी। लाज़िम है कि तुम इसका दसवाँ हिस्सा रब को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करो। 27 तुम्हारी यह कुरबानी नए अनाज या नए अंगूर के रस की कुरबानी के बराबर करार दी जाएगी। 28 इस तरह तुम भी रब को इसराइलियों की पैदावार के दसवें हिस्से में से उठानेवाली कुरबानी पेश करोगे। रब के लिए यह कुरबानी हासन इमाम को देना। 29 जो भी तुम्हें मिला है उसमें से सबसे अच्छा और मुकद्दस हिस्सा रब को देना। 30 जब तुम इसका सबसे अच्छा हिस्सा पेश करोगे तो उसे नए अनाज या नए अंगूर के रस की कुरबानी के बराबर करार दिया जाएगा। 31 तुम अपने घरानों समेत इसका बाकी हिस्सा कहीं भी खा सकते हो, क्योंकि यह मुलाकात के ख़ैमे में तुम्हारी ख़िदमत का अज़्र है। 32 अगर तुमने पहले इसका बेहतरिनी हिस्सा पेश किया हो तो फिर इसे खाने में तुम्हारा कोई कुसूर नहीं होगा। फिर इसराइलियों की मख़सूसो-मुकद्दस कुरबानियाँ तुमसे नापाक नहीं हो जाएँगी और तुम नहीं मरोगे।”

## 19

### सुर्ख़ गाय की राख

1 रब ने मूसा और हासन से कहा, 2 “इसराइलियों को बताना कि वह तुम्हारे पास सुर्ख़ रंग की जवान गाय लेकर आएँ। उसमें नुक्स न हो और उस पर कभी जुआ न रखा गया हो। 3 तुम उसे इलियज़र इमाम को देना जो उसे ख़ैमे के बाहर ले जाए। वहाँ उसे उस की मौजूदगी में ज़बह किया जाए। 4 फिर इलियज़र इमाम अपनी उँगली से उसके खून से कुछ लेकर मुलाकात के ख़ैमे के सामनेवाले हिस्से की तरफ़ छिड़के। 5 उस की मौजूदगी में पूरी की पूरी गाय को जलाया जाए। उस की खाल, गोशत, खून और अंतडियों का गोबर भी जलाया जाए। 6 फिर वह देवदार की लकड़ी, जूफ़ा और किरमिज़ी रंग का धागा लेकर उसे जलती हुई गाय पर फेंके। 7 इसके बाद वह अपने कपड़ों को धोकर नहा ले। फिर वह ख़ैमागाह में आ सकता है लेकिन शाम तक नापाक रहेगा।

8 जिस आदमी ने गाय को जलाया वह भी अपने कपड़ों को धोकर नहा ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा।

9 एक दूसरा आदमी जो पाक है गाय की राख इकट्ठी करके ख़ैमागाह के बाहर किसी पाक जगह पर डाल दे। वहाँ इसराइल की जमात उसे नापाकी दूर करने का पानी तैयार करने के लिए महफूज़ रखे। यह गुनाह से पाक करने के लिए इस्तेमाल होगा। 10 जिस आदमी ने राख इकट्ठी की है वह भी अपने कपड़ों को धो ले। वह भी शाम तक नापाक रहेगा। यह इसराइलियों और उनके दरमियान रहनेवाले परदेसियों के लिए दायमी उसूल हो।

### लाश छूने से पाक हो जाने का तरीका

11 जो भी लाश छुए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। 12 तीसरे और सातवें दिन वह अपने आप पर नापाकी दूर करने का पानी छिड़ककर पाक-साफ़ हो जाए। इसके बाद ही वह पाक होगा। लेकिन अगर वह इन दोनों दिनों में अपने आपको यों पाक न करे तो नापाक रहेगा। 13 जो भी लाश छूकर अपने आपको यों पाक नहीं करता वह रब के मक़दिस को नापाक करता है। लाज़िम है कि उसे इसराइल में से मिटाया जाए। चूँकि नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक रहेगा।

14 अगर कोई ड़ेरे में मर जाए तो जो भी उस वक्त उसमें मौजूद हो या दाखिल हो जाए वह सात दिन तक नापाक रहेगा।

15 हर खुला बरतन जो ढकने से बंद न किया गया हो वह भी नापाक होगा। 16 इसी तरह जो खुले मैदान में लाश छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा, खाह वह तलवार से या तबई मौत मरा हो। जो इनसान की कोई हड्डी या क़ब्र छुए वह भी सात दिन तक नापाक रहेगा।

17 नापाकी दूर करने के लिए उस सुर्ख़ रंग की गाय की राख में से कुछ लेना जो गुनाह दूर करने के लिए जलाई गई थी। उसे बरतन में डालकर ताज़ा पानी में मिलाना। 18 फिर कोई पाक आदमी कुछ जूफ़ा ले और उसे उस पानी में डुबोकर मरे हुए शख्स के ख़ैमे, उसके सामान और उन लोगों पर छिड़के जो उसके मरते वक्त वहाँ थे। इसी तरह वह पानी उस शख्स पर भी छिड़के जिसने तबई या ग़ैरतबई मौत मरे हुए शख्स को, किसी इनसान की हड्डी को या कोई क़ब्र छुई हो। 19 पाक आदमी यह पानी तीसरे और सातवें दिन नापाक शख्स पर छिड़के। सातवें दिन वह उसे पाक करे। जिसे पाक किया जा रहा है वह अपने कपड़े धोकर नहा ले तो वह उसी शाम पाक होगा।

20 लेकिन जो नापाक शख्स अपने आपको पाक नहीं करता उसे जमात में से मिटाना है, क्योंकि उसने रब का मक़दिस नापाक कर दिया है। नापाकी दूर करने का पानी उस पर नहीं छिड़का गया, इसलिए वह नापाक रहा है। 21 यह उनके लिए दायमी उसूल है। जिस आदमी ने नापाकी दूर करने का पानी छिड़का है वह भी अपने कपड़े धोए। बल्कि जिसने भी यह पानी छुआ है शाम तक नापाक रहेगा। 22 और नापाक शख्स जो भी चीज़ छुए वह नापाक हो जाती है। न सिर्फ़ यह बल्कि जो बाद में यह नापाक चीज़ छुए वह भी शाम तक नापाक रहेगा।”

## 20

## चटान से पानी

1 पहले महीने में इसराईल की पूरी जमात दशते-सीन में पहुँचकर कादिस में रहने लगी। वहाँ मरियम ने वफात पाई और वही उसे दफनाया गया।

2 कादिस में पानी दस्तयाब नहीं था, इसलिए लोग मूसा और हासून के मुकाबले में जमा हुए।<sup>3</sup> वह मूसा से यह कहकर झगडने लगे, “काश हम अपने भाइयों के साथ रब के सामने मर गए होते! 4 आप रब की जमात को क्यों इस रेगिस्तान में ले आए? क्या इसलिए कि हम यहाँ अपने मवेशियों समेत मर जाएँ? 5 आप हमें मिसर से निकालकर उस नाखुशगवार जगह पर क्यों ले आए हैं? यहाँ न तो अनाज, न अजीर, अंगूर या अनार दस्तयाब हैं। पानी भी नहीं है!”

6 मूसा और हासून लोगों को छोड़कर मुलाकात के खेमे के दरवाजे पर गए और मुँह के बल गिरे। तब रब का जलाल उन पर जाहिर हुआ। 7 रब ने मूसा से कहा, 8 “अहद के संदूक के सामने पड़ी लाठी पकड़कर हासून के साथ जमात को इकट्ठा कर। उनके सामने चटान से बात करो तो वह अपना पानी देगी। यों तू चटान में से जमात के लिए पानी निकालकर उन्हें उनके मवेशियों समेत पानी पिलाएगा।”

9 मूसा ने ऐसा ही किया। उसने अहद के संदूक के सामने पड़ी लाठी उठाई 10 और हासून के साथ जमात को चटान के सामने इकट्ठा किया। मूसा ने उनसे कहा, “ऐ बगावत करनेवालो, सुनो! क्या हम इस चटान में से तुम्हारे लिए पानी निकालें?” 11 उसने लाठी को उठाकर चटान को दो मरतबा मारा तो बहुत-सा पानी फूट निकला। जमात और उनके मवेशियों ने खूब पानी पिया।

12 लेकिन रब ने मूसा और हासून से कहा, “तुम्हारा मुझ पर इतना ईमान नहीं था कि मेरी कृदूसियत को इसराईलियों के सामने कायम रखते। इसलिए तुम उस जमात को उस मुल्क में नहीं ले जाओगे जो मैं उन्हें दूँगा।”

13 यह वाकिया मरीबा यानी ‘झगडना’ के पानी पर हुआ। वहाँ इसराईलियों ने रब से झगडा किया, और वहाँ उसने उन पर जाहिर किया कि वह कुदूस है।

## अदोम इसराईल को गुज़रने नहीं देता

14 कादिस से मूसा ने अदोम के बादशाह को इतला भेजी, “आपके भाई इसराईल की तरफ से एक गुज़ारिश है। आपको उन तमाम मूसीबतों के बारे में इल्म है जो हम पर आन पड़ी है। 15 हमारे बापदादा मिसर गए थे और वहाँ हम बहुत अरसे तक रहे। मिसरियों ने हमारे बापदादा और हमसे बुरा सुल्क किया। 16 लेकिन जब हमने चिल्लाकर रब से मिन्नत की तो उसने हमारी सुनी और फ़रिश्ता भेजकर हमें मिसर से निकाल लाया। अब हम यहाँ कादिस शहर में हैं जो आपकी सरहद पर है। 17 मेहरबानी करके हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम किसी खेत या अंगूर के बाग में नहीं जाएंगे, न किसी कुएँ का पानी पीएंगे। हम शाहराह पर ही रहेंगे। आपके मुल्क में से गुज़रते हुए हम उससे न दाईं और न बाईं तरफ़ हटेंगे।”

18 लेकिन अदोमियों ने जवाब दिया, “यहाँ से न गुज़रना, वरना हम निकलकर आपसे लडेंगे।” 19 इसराईल ने दुबारा खबर भेजी, “हम शाहराह पर रहते हुए गुज़रेंगे। अगर हमें या हमारे जानवरों को पानी की ज़रूरत हुई तो पैसे देकर ख़रीद लेंगे। हम पैदल ही गुज़रना चाहते हैं, और कुछ नहीं चाहते।”

20 लेकिन अदोमियों ने दुबारा इनकार किया। साथ ही उन्होंने उनके साथ लडने के लिए एक बड़ी और ताकतवर फ़ौज भेजी।

21 चूँकि अदोम ने उन्हें गुज़रने की इजाज़त न दी इसलिए इसराईली मुडकर दूसरे रास्ते से चले गए।

## हासून की वफात

22 इसराईल की पूरी जमात कादिस से रवाना होकर होर पहाड के पास पहुँची। 23 यह पहाड अदोम की सरहद पर वाके था। वहाँ रब ने मूसा और हासून से कहा, 24 “हासून अब कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा। वह उस मुल्क में दाखिल नहीं होगा जो मैं इसराईलियों को दूँगा, क्योंकि तुम दोनों ने मरीबा के पानी पर मेरे हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी की। 25 हासून और उसके बेटे इलियज़र को लेकर होर पहाड पर चढ़ जा। 26 हासून के कपडे उतारकर उसके बेटे इलियज़र को पहना देना। फिर हासून कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।”

27 मूसा ने ऐसा ही किया जैसा रब ने कहा। तीनों पूरी जमात के देखते देखते होर पहाड पर चढ़ गए। 28 मूसा ने हासून के कपडे उतरवाकर उसके बेटे इलियज़र को पहना दिए। फिर हासून वहाँ पहाड की चोटी पर फ़ौत हुआ, और मूसा और इलियज़र नीचे उतर गए। 29 जब पूरी जमात को मालूम हुआ कि हासून इतकाल कर गया है तो सबने 30 दिन तक उसके लिए मातम किया।

## 21

## कनानी मुल्के-अराद पर फतह

1 दशते-नजब के कनानी मुल्क अराद के बादशाह को खबर मिली कि इसराईली अथारिम की तरफ बढ रहे हैं। उसने उन पर हमला किया और कई एक को पकड़कर कैद कर लिया। 2 तब इसराईलियों ने रब के सामने मन्त मानकर कहा, “अगर तू हमें उन पर फतह देगा तो हम उन्हें उनके शहरों समेत तबाह कर देंगे।” 3 रब ने उनकी सुनी और कनानियों पर फतह बख्शी। इसराईलियों ने उन्हें उनके शहरों समेत पूरी तरह तबाह कर दिया। इसलिए उस जगह का नाम हुरमा यानी तबाही पड़ गया।

## पीतल का सौंप

4 होर पहाड़ से रवाना होकर वह बहरे-कुलजुम की तरफ चल दिए ताकि अदोम के मुल्क में से गुजरना न पड़े। लेकिन चलते चलते लोग बेसबर हो गए। 5 वह रब और मूसा के खिलाफ बातें करने लगे, “आप हमें मिसर से निकालकर रेगिस्तान में मरने के लिए क्यों ले आए हैं? यहाँ न रोटी दस्तयाब है न पानी। हमें इस घटिया क्रिस्म की खुराक से घिन आती है।”

6 तब रब ने उनके दरमियान ज़हरीले सौंप भेज दिए जिनके काटने से बहुत-से लोग मर गए। 7 फिर लोग मूसा के पास आए। उन्होंने कहा, “हमने रब और आपके खिलाफ बातें करते हुए गुनाह किया। हमारी सिफारिश करें कि रब हमसे सौंप दूर कर दे।”

मूसा ने उनके लिए दुआ की 8 तो रब ने मूसा से कहा, “एक सौंप बनाकर उसे खंबे से लटका दे। जो भी डसा गया हो वह उसे देखकर बच जाएगा।” 9 चुनौंचे मूसा ने पीतल का एक सौंप बनाया और खंबा खड़ा करके सौंप को उससे लटका दिया। और ऐसा हुआ कि जिसे भी डसा गया था वह पीतल के सौंप पर नज़र करके बच गया।

## मोआब की तरफ सफ़र

10 इसराईली रवाना हुए और ओबोत में अपने खेमे लगाए। 11 फिर वहाँ से कूच करके ऐये-अबारीम में डेरें डाले, उस रेगिस्तान में जो मशरिक की तरफ मोआब के सामने है। 12 वहाँ से रवाना होकर वह वादीए-ज़िरद में खैमाज़न हुए। 13 जब वादीए-ज़िरद से रवाना हुए तो दरियाए-अरनोन के परले यानी जुनूबी किनारे पर खैमाज़न हुए। यह दरिया रेगिस्तान में है और अमोरियों के इलाके से निकलता है। यह अमोरियों और मोआबियों के दरमियान की सरहद है। 14 इसका ज़िक्र किताब ‘रब की जंगें’ में भी है,

“वाहेब जो सूफा में है, दरियाए-अरनोन की वादियाँ 15 और वादियों का वह ढलान जो आर शहर तक जाता है और मोआब की सरहद पर वाके है।”

16 वहाँ से वह बैर यानी ‘कुआँ’ पहुँचे। यह वही बैर है जहाँ रब ने मूसा से कहा, “लोगों को इक़ठा कर तो मैं उन्हें पानी दूँगा।” 17 उस वक़्त इसराईलियों ने यह गीत गाया,

“ऐ कुएँ, फूट निकल! उसके बारे में गीत गाओ,

18 उस कुएँ के बारे में जिसे सरदारों ने खोदा, जिसे कौम के राहनुमाओं ने असाए-शाही और अपनी लाठियों से खोदा।” फिर वह रेगिस्तान से मतना को गए, 19 मतना से नहलियेल को और नहलियेल से बामात को। 20 बामात से वह मोआबियों के इलाके की उस वादी में पहुँचे जो पिसगा पहाड़ के दामन में है। इस पहाड़ की चोटी से वादीए-यरदन का जुनूबी हिस्सा यशीमोन खूब नज़र आता है।

## सीहोन और ओज की शिकस्त

21 इसराईल ने अमोरियों के बादशाह सीहोन को इतला भेजी, 22 “हमें अपने मुल्क में से गुजरने दें। हम सीधे सीधे गुज़र जाएंगे। न हम कोई खेत या अंगर का बाग़ छेड़ेंगे, न किसी कुएँ का पानी पिँएंगे। हम आपके मुल्क में से सीधे गुज़रते हुए शाहराह पर ही रहेंगे।” 23 लेकिन सीहोन ने उन्हें गुज़रने न दिया बल्कि अपनी फौज़ जमा करके इसराईल से लड़ने के लिए रेगिस्तान में चल पड़ा। यहज़ पहुँचकर उसने इसराईलियों से जंग की। 24 लेकिन इसराईलियों ने उसे कतल किया और दरियाए-अरनोन से लेकर दरियाए-यब्बोक तक यानी अम्मोनियों की सरहद तक उसके मुल्क पर कब्ज़ा कर लिया। वह इससे आगे न जा सके क्योंकि अम्मोनियों ने अपनी सरहद की हिसारबंदी कर रखी थी। 25 इसराईली तमाम अमोरी शहरों पर कब्ज़ा करके उनमें रहने लगे। उनमें हसबोन और उसके इर्दगिर्द की आबादियाँ शामिल थीं।

26 हसबोन अमोरी बादशाह सीहोन का दाख़ल-हुकूमत था। उसने मोआब के पिछले बादशाह से लड़कर उससे यह इलाका दरियाए-अरनोन तक छीन लिया था। 27 उस वाकिये का ज़िक्र शायरी में यों किया गया है,

“हसबोन के पास आकर उसे अज़ सरे-नौ तामीर करो, सीहोन के शहर को अज़ सरे-नौ कायम करो।

28 हसबोन से आग निकली, सीहोन के शहर से शोला भड़का। उसने मोआब के शहर आर को जला दिया, अरनोन की बुलदियों के मालिकों को भस्म किया।

29 ऐ मोआब, तुझ पर अफसोस! ऐ कमोस देवता की क्रौम, तू हलाक हुई है। कमोस ने अपने बेटों को मफरूर और अपनी बेटियों को अमोरी बादशाह सीहोन की कैदी बना दिया है।

30 लेकिन जब हमने अमोरियों पर तीर चलाए तो हसबोन का इलाका दीबोन तक बरबाद हुआ। हमने नुफह तक सब कुछ तबाह किया, वह नुफह जिसका इलाका मीदबा तक है।”

31 यों इसराईल अमोरियों के मुल्क में आबाद हुआ। 32 वहाँ से मूसा ने अपने जासूस याजेर शहर भेजे। वहाँ भी अमोरी रहते थे। इसराईलियों ने याजेर और उसके इर्दगिर्द के शहरों पर भी कब्जा किया और वहाँ के अमोरियों को निकाल दिया।

33 इसके बाद वह मुड़कर बसन की तरफ बढ़े। तब बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फौज लेकर उनसे लड़ने के लिए शहर इदरई आया। 34 उस वक़्त रब ने मूसा से कहा, “ओज से न डरना। मैं उसे, उस की तमाम फौज और उसका मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उसके साथ वही सुलूक कर जो तूने अमोरियों के बादशाह सीहोन के साथ किया, जिसका दास्त-हुकूमत हसबोन था।” 35 इसराईलियों ने ओज, उसके बेटों और तमाम फौज को हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। फिर उन्होंने बसन के मुल्क पर कब्जा कर लिया।

## 22

बलक बिलाम को इसराईल पर लानत भेजने के लिए बुलाता है

1 इसके बाद इसराईली मोआब के मैदानों में पहुँचकर दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर यरीह के आमने-सामने खैमाज़न हुए।

2 मोआब के बादशाह बलक बिन सफोर को मालूम हुआ कि इसराईलियों ने अमोरियों के साथ क्या कुछ किया है। 3 मोआबियों ने यह भी देखा कि इसराईली बहुत ज्यादा हैं, इसलिए उन पर दहशत छा गई। 4 उन्होंने मिदियानियों के बुज़ुर्गों से बात की, “अब यह हज़ूम उस तरह हमारे इर्दगिर्द का इलाका चट कर जाएगा जिस तरह बैल मैदान की घास चट कर जाता है।”

5 तब बलक ने अपने कासिद फ़तोर शहर को भेजे जो दरियाए-फ़ुरात पर वाके था और जहाँ बिलाम बिन बओर अपने वतन में रहता था। कासिद उसे बुलाने के लिए उसके पास पहुँचे और उसे बलक का पैगाम सुनाया, “एक क्रौम मिसर से निकल आई है जो रूए-ज़मीन पर छाकर मेरे करीब ही आबाद हुई है। 6 इसलिए आएँ और इन लोगों पर लानत भेजें, क्योंकि वह मुझे ज्यादा ताकतवर हैं। फिर शायद मैं उन्हें शिकस्त देकर मुल्क से भगा सकूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि जिन्हें आप बरकत देते हैं उन्हें बरकत मिलती है और जिन पर आप लानत भेजते हैं उन पर लानत आती है।”

7 यह पैगाम लेकर मोआब और मिदियान के बुज़ुर्ग खाना हुए। उनके पास इनाम के पैसे थे। बिलाम के पास पहुँचकर उन्होंने उसे बलक का पैगाम सुनाया। 8 बिलाम ने कहा, “रात यहाँ गुज़रो। कल मैं आपको बता दूँगा कि रब इसके बारे में क्या फ़रमाता है।” चुनौचे मोआबी सरदार उसके पास ठहर गए।

9 रात के वक़्त अल्लाह बिलाम पर जाहिर हुआ। उसने पूछा, “यह आदमी कौन है जो तेरे पास आए है?” 10 बिलाम ने जवाब दिया, “मोआब के बादशाह बलक बिन सफोर ने मुझे पैगाम भेजा है, 11 ‘जो क्रौम मिसर से निकल आई है वह रूए-ज़मीन पर छा गई है। इसलिए आएँ और मेरे लिए उन पर लानत भेजें। फिर शायद मैं उनसे लड़कर उन्हें भगा देने में कामयाब हो जाऊँ।’” 12 रब ने बिलाम से कहा, “उनके साथ न जाना। तुझे उन पर लानत भेजने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि उन पर मेरी बरकत है।”

13 अगली सुबह बिलाम जाग उठा तो उसने बलक के सरदारों से कहा, “अपने वतन वापस चले जाएँ, क्योंकि रब ने मुझे आपके साथ जाने की इजाज़त नहीं दी।” 14 चुनौचे मोआबी सरदार खाली हाथ बलक के पास वापस आए। उन्होंने कहा, “बिलाम हमारे साथ आने से इनकार करता है।” 15 तब बलक ने और सरदार भेजे जो पहलेवालों की निसबत तादाद और ओहदे के लिहाज़ से ज्यादा थे। 16 वह बिलाम के पास जाकर कहने लगे, “बलक बिन सफोर कहते हैं कि कोई भी बात आपको मेरे पास आने से न रोके, 17 क्योंकि मैं आपको बड़ा इनाम दूँगा। आप जो भी कहेंगे मैं करने के लिए तैयार हूँ। आएँ तो सही और मेरे लिए उन लोगों पर लानत भेजें।”

18 लेकिन बिलाम ने जवाब दिया, “अगर बलक अपने महल को चाँदी और सोने से भरकर भी मुझे दे तो भी मैं रब अपने खुदा के फ़रमान की खिलाफ़रजी नहीं कर सकता, खाह बात छोटी हो या बड़ी। 19 आप दूसरे सरदारों की तरह रात यहाँ गुज़रें। इतने में मैं मालूम करूँगा कि रब मुझे मज़ीद क्या कुछ बताता है।”

20 उस रात अल्लाह बिलाम पर जाहिर हुआ और कहा, “चूँकि यह आदमी तुझे बुलाने आए है इसलिए उनके साथ चला जा। लेकिन सिर्फ वही कुछ करना जो मैं तुझे बताऊँगा।”

बिलाम की गर्धी



21 सुबह को बिलाम ने उठकर अपनी गधी पर जीन कसा और मोआबी सरदारों के साथ चल पड़ा। 22 लेकिन अल्लाह निहायत गुस्से हुआ कि वह जा रहा है, इसलिए उसका फरिश्ता उसका मुकाबला करने के लिए रास्ते में खड़ा हो गया। बिलाम अपनी गधी पर सवार था और उसके दो नौकर उसके साथ चल रहे थे। 23 जब गधी ने देखा कि रब का फरिश्ता अपने हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा है तो वह रास्ते से हटकर खेत में चलने लगी। बिलाम उसे मारते मारते रास्ते पर वापस ले आया।

24 फिर वह अंगूर के दो बागों के दरमियान से गुजरने लगे। रास्ता तंग था, क्योंकि वह दोनों तरफ बागों की चारदीवारी से बंद था। अब रब का फरिश्ता वहाँ खड़ा हुआ। 25 गधी यह देखकर चारदीवारी के साथ साथ चलने लगी, और बिलाम का पाँव कुचला गया। उसने उसे दुबारा मारा।

26 रब का फरिश्ता आगे निकला और तीसरी मरतबा रास्ते में खड़ा हो गया। अब रास्ते से हट जाने की कोई गुंजाइश नहीं थी, न दाईं तरफ और न बाईं तरफ। 27 जब गधी ने रब का फरिश्ता देखा तो वह लेट गई। बिलाम को गुस्सा आ गया, और उसने उसे अपनी लाठी से खूब मारा।

28 तब रब ने गधी को बोलने दिया, और उसने बिलाम से कहा, “मैंने आपसे क्या गलत सुलूक किया है कि आप मुझे अब तीसरी दफा पीट रहे हैं?” 29 बिलाम ने जवाब दिया, “तूने मुझे बेबुकूफ बनाया है! काश मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं अभी तुझे ज़बह कर देता!” 30 गधी ने बिलाम से कहा, “क्या मैं आपकी गधी नहीं हूँ जिस पर आप आज तक सवार होते रहे हैं? क्या मुझे कभी ऐसा करने की आदत थी?” उसने कहा, “नहीं।”

31 फिर रब ने बिलाम की आँखें खोलीं और उसने रब के फरिश्ते को देखा जो अब तक हाथ में तलवार थामे हुए रास्ते में खड़ा था। बिलाम ने मुँह के बल गिरकर सिजदा किया। 32 रब के फरिश्ते ने पूछा, “तूने तीन बार अपनी गधी को क्यों पीटा? मैं तेरे मुकाबले में आया हूँ, क्योंकि जिस तरफ तू बढ़ रहा है उसका अंजाम बुरा है। 33 गधी तीन मरतबा मुझे देखकर मेरी तरफ से हट गई। अगर वह न हटती तो तू उस वक़्त हलाक हो गया होता अगरचे मैं गधी को छोड़ देता।”

34 बिलाम ने रब के फरिश्ते से कहा, “मैंने गुनाह किया है। मुझे मालूम नहीं था कि तू मेरे मुकाबले में रास्ते में खड़ा है। लेकिन अगर मेरा सफ़र तुझे बुरा लगे तो मैं अब वापस चला जाऊँगा।” 35 रब के फरिश्ते ने कहा, “इन आदमियों के साथ अपना सफ़र जारी रख। लेकिन सिर्फ वही कुछ कहना जो मैं तुझे बताऊँगा।” चुनौचे बिलाम ने बलक के सरदारों के साथ अपना सफ़र जारी रखा।

36 जब बलक को ख़बर मिली कि बिलाम आ रहा है तो वह उससे मिलने के लिए मोआब के उस शहर तक गया जो मोआब की सरहद दरियाए-अरनोन पर बाँके है। 37 उसने बिलाम से कहा, “क्या मैंने आपको इतला नहीं भेजी थी कि आप ज़रूर आएँ? आप क्यों नहीं आए? क्या आपने सोचा कि मैं आपको मुनासिब इनाम नहीं दे पाऊँगा?” 38 बिलाम ने जवाब दिया, “बहरहाल अब मैं पहुँच गया हूँ। लेकिन मैं सिर्फ वही कुछ कह सकता हूँ जो अल्लाह ने पहले ही मेरे मुँह में डाल दिया है।”

39 फिर बिलाम बलक के साथ किरियत-हुसात गया। 40 वहाँ बलक ने गाय-बैल और भेड़-बक़रियाँ कुरबान करके उनके गोशत में से बिलाम और उसके साथवाले सरदारों को दे दिया। 41 अगली सुबह बलक बिलाम को साथ लेकर एक ऊँची जगह पर चढ़ गया जिसका नाम बामोत-बाल था। वहाँ से इसराईली खैमागाह का किन्नारा नज़र आता था।

## 23

### बिलाम की पहली बरकत

1 बिलाम ने कहा, “यहाँ मेरे लिए सात कुरबानगाहें बनाएँ। साथ साथ मेरे लिए सात बैल और सात मेंढे तैयार कर रखें।” 2 बलक ने ऐसा ही किया, और दोनों ने मिलकर हर कुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा चढ़ाया। 3 फिर बिलाम ने बलक से कहा, “यहाँ अपनी कुरबानी के पास खड़े रहें। मैं कुछ फ़ासले पर जाता हूँ, शायद रब मुझसे मिलने आए। जो कुछ वह मुझ पर जाहिर करे मैं आपको बता दूँगा।”

यह कहकर वह एक ऊँचे मक़ाम पर चला गया जो हरियाली से बिल्कुल महसूस था। 4 वहाँ अल्लाह बिलाम से मिला। बिलाम ने कहा, “मैंने सात कुरबानगाहें तैयार करके हर कुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा कुरबान किया है।” 5 तब रब ने उसे बलक के लिए पैग़ाम दिया और कहा, “बलक के पास वापस जा और उसे यह पैग़ाम सुना।” 6 बिलाम बलक के पास वापस आया जो अब तक मोआबी सरदारों के साथ अपनी कुरबानी के पास खड़ा था। 7 बिलाम बोल उठा,

“बलक मुझे आराम से यहाँ लाया है, मोआबी बादशाह ने मुझे मशरिफी पहाड़ों से बुलाकर कहा, ‘आओ, याक़ूब पर मेरे लिए लानत भेजो। आओ, इसराईल को बददुआ दो।’

8 मैं किस तरह उन पर लानत भेजूँ जिन पर अल्लाह ने लानत नहीं भेजी? मैं किस तरह उन्हें बददुआ दूँ जिन्हें रब ने बददुआ नहीं दी?

9 मैं उन्हें चटानों की चोटी से देखता हूँ, पहाड़ियों से उनका मुशाहदा करता हूँ। वाकई यह एक ऐसी कौम है जो दूसरों से अलग रहती है। यह अपने आपको दूसरी कौमों से मुमताज़ समझती है।

10 कौन याकूब की औलादा को गिन सकता है जो गर्द की मानिंद बेशमार है। कौन इसराईलियों का चौथा हिस्सा भी गिन सकता है? रब करे कि मैं रास्तबाज़ों की मौत मरूँ, कि मेरा अंजाम उनके अंजाम जैसा अच्छा हो।”

11 बलक ने बिलाम से कहा, “आपने मेरे साथ क्या किया है? मैं आपको अपने दुश्मनों पर लानत भेजने के लिए लाया और आपने उन्हें अच्छी-खासी बरकत दी है।” 12 बिलाम ने जवाब दिया, “क्या लाज़िम नहीं कि मैं वही कुछ बोलूँ जो रब ने बताने को कहा है?”

### बिलाम की दूसरी बरकत

13 फिर बलक ने उससे कहा, “आएँ, हम एक और जगह जाएँ जहाँ से आप इसराईली कौम को देख सकेंगे, गो उनकी खैमागाह का सिर्फ़ किनारा ही नज़र आएगा। आप सबको नहीं देख सकेंगे। वही से उन पर मेरे लिए लानत भेजें।” 14 यह कहकर वह उसके साथ पिसगा की चोटी पर चढ़कर पहेरेदारों के मैदान तक पहुँच गया। वहाँ भी उसने सात कुरबानगाहें बनाकर हर एक पर एक बैल और एक मेंढा कुरबान किया। 15 बिलाम ने बलक से कहा, “यहाँ अपनी कुरबानगाह के पास खड़े रहें। मैं कुछ फ़ासले पर जाकर रब से मिलूँगा।”

16 रब बिलाम से मिला। उसने उसे बलक के लिए पैगाम दिया और कहा, “बलक के पास वापस जा और उसे यह पैगाम सुना दे।” 17 वह वापस चला गया। बलक अब तक अपने सरदारों के साथ अपनी कुरबानी के पास खड़ा था। उसने उससे पूछा, “रब ने क्या कहा?” 18 बिलाम ने कहा, “ए बलक, उठो और सुनो। ऐ सफ़ोर के बेटे, मेरी बात पर गौर करो।

19 अल्लाह आदमी नहीं जो झूट बोलता है। वह इनसान नहीं जो कोई फ़ैसला करके बाद में पछताए। क्या वह कभी अपनी बात पर अमल नहीं करता? क्या वह कभी अपनी बात पूरी नहीं करता?

20 मुझे बरकत देने को कहा गया है। उसने बरकत दी है और मैं यह बरकत रोक नहीं सकता।

21 याकूब के घराने में ख़राबी नज़र नहीं आती, इसराईल में दुख़ दिखाई नहीं देता। रब उसका ख़ुदा उसके साथ है, और कौम बादशाह की ख़ुशी में नारे लगाती है।

22 अल्लाह उन्हें मिसर से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की ताकत हासिल है।

23 याकूब के घराने के खिलाफ़ जादूगारी नाकाम है, इसराईल के खिलाफ़ ग़ैबदानी बेफ़ायदा है। अब याकूब के घराने से कहा जाएगा, ‘अल्लाह ने कैसा काम किया है!’

24 इसराईली कौम शेरनी की तरह उठती और शेरबबर की तरह खड़ी हो जाती है। जब तक वह अपना शिकार न खा ले वह आराम नहीं करता, जब तक वह मारे हुए लोगों का खून न पी ले वह नहीं लेटता।”

25 यह सुनकर बलक ने कहा, “अगर आप उन पर लानत भेजने से इनकार करें, कम अज़्र कम उन्हें बरकत तो न दें।”

26 बिलाम ने जवाब दिया, “क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि जो कुछ भी रब कहेगा मैं वही करूँगा?”

### बिलाम की तीसरी बरकत

27 तब बलक ने बिलाम से कहा, “आएँ, मैं आपको एक और जगह ले जाऊँ। शायद अल्लाह राज़ी हो जाए कि आप मेरे लिए वहाँ से उन पर लानत भेजें।” 28 वह उसके साथ फ़गर पहाड़ पर चढ़ गया। उस की चोटी से यरदन की वादी का जुन्बी हिस्सा यशीमोन दिखाई दिया। 29 बिलाम ने उससे कहा, “मेरे लिए यहाँ सात कुरबानगाहें बनाकर सात बैल और सात मेंढे तैयार कर रखें।” 30 बलक ने ऐसा ही किया। उसने हर एक कुरबानगाह पर एक बैल और एक मेंढा कुरबान किया।

## 24

1 अब बिलाम को उस बात का पूरा यकीन हो गया कि रब को पसंद है कि मैं इसराईलियों को बरकत दूँ। इसलिए उसने इस मरतबा पहले की तरह जादूगारी का तरीका इस्तेमाल न किया बल्कि सीधा रेगिस्तान की तरफ़ स्रख़ किया 2 जहाँ इसराईल अपने अपने कबीलों की तरतीब से ख़ैमाज़न था। यह देखकर अल्लाह का रुह उस पर नाज़िल हुआ, 3 और वह बोल उठा,

“बिलाम बिन बओर का पैगाम सुनो, उसके पैगाम पर गौर करो जो साफ़ साफ़ देखता है,

4 उसका पैगाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता है, कादिर-मुतलक की रोया को देख लेता है और ज़मीन पर गिरकर पोशीदा बातें देखता है।

5 ऐ याकूब, तेरे ख़ैमे कितने शानदार हैं! ऐ इसराईल, तेरे घर कितने अच्छे हैं!

6 वह दर तक फैली हुई वादियों की मानिंद, नहर के किनारे लगे बागों की मानिंद, रब के लगाए हुए ऊद के दरख्तों की मानिंद, पानी के किनारे लगे देवदार के दरख्तों की मानिंद हैं।

7 उनकी बालटियों से पानी छलकता रहेगा, उनके बीज को कसरत का पानी मिलेगा। उनका बादशाह अजाज से ज्यादा ताकतवर होगा, और उनकी सलतनत सरफराज़ होगी।

8 अल्लाह उन्हें मिसर से निकाल लाया, और उन्हें जंगली बैल की-सी ताकत हासिल है। वह मुखालिफ कौमों को हड़प करके उनकी हड्डियाँ चूर चूर कर देते हैं, वह अपने तीर चलाकर उन्हें मार डालते हैं।

9 इसराईल शेरबबर या शेरनी की मानिंद है। जब वह दबककर बैठ जाए तो कोई भी उसे छेड़ने की जुर्रत नहीं करता। जो तुझे बरकत दे उसे बरकत मिले, और जो तुझ पर लानत भेजे उस पर लानत आए।”

10 यह सुनकर बलक आपे से बाहर हुआ। उसने ताली बजाकर अपनी हिकारत का इज़हार किया और कहा, “मैंने तुझे इसलिए बुलाया था कि तू मेरे दुश्मनों पर लानत भेजे। अब तूने उन्हें तीनों बार बरकत ही दी है। 11 अब दफा हो जा! अपने घर वापस भाग जा! मैंने कहा था कि बड़ा इनाम दूँगा। लेकिन रब ने तुझे इनाम पाने से रोक दिया है।”

12 बिलाम ने जवाब दिया, “क्या मैंने उन लोगों को जिन्हें आपने मुझे बुलाने के लिए भेजा था नहीं बताया था 13 कि अगर बलक अपने महल को चाँदी और सोने से भरकर भी मुझे दे दे तो भी मैं रब की किसी बात की खिलाफ़रज़ी नहीं कर सकता, खाह मेरी नीयत अच्छी हो या बुरी। मैं सिर्फ़ वह कुछ कर सकता हूँ जो अल्लाह फ़रमाता है। 14 अब मैं अपने वतन वापस चला जाता हूँ। लेकिन पहले मैं आपको बता देता हूँ कि आखिरकार यह कौम आपकी कौम के साथ क्या कुछ करेगी।”

**बिलाम की चौथी बरकत**

15 वह बोल उठा,

“बिलाम बिन बओर का पैगाम सुनो, उसका पैगाम जो साफ़ साफ़ देखता है,

16 उसका पैगाम जो अल्लाह की बातें सुन लेता और अल्लाह तआला की मरज़ी को जानता है, जो कादिर-मुतलक की रोया को देख लेता और ज़मीन पर गिरकर पोशीदा बातें देखता है।

17 जिसे मैं देख रहा हूँ वह इस वक्त नहीं है। जो मुझे नज़र आ रहा है वह करीब नहीं है। याक़ब के घराने से सितारा निकलेगा, और इसराईल से असाए-शाही उठेगा जो मोआब के माथों और सेत के तमाम बेटों की खोपड़ियों को पाश पाश करेगा।

18 अदोम उसके कब्जे में आएगा, उसका दुश्मन सईर उस की मिलकियत बनेगा जबकि इसराईल की ताकत बढ़ती जाएगी।

19 याक़ब के घराने से एक हुक्मरान निकलेगा जो शहर के बचे हुएों को हलाक कर देगा।”

**बिलाम के आखिरी पैगाम**

20 फिर बिलाम ने अमालीक को देखा और कहा,

“अमालीक कौमों में अव्वल था, लेकिन आखिरकार वह ख़त्म हो जाएगा।”

21 फिर उसने क़िनियों को देखा और कहा,

“तेरी सुकूनतगाह मुस्तहकम है, तेरा चटान में बना घोंसला मज़बूत है।

22 लेकिन तू तबाह हो जाएगा जब अस्सूर तुझे गिरिफ़्तार करेगा।”

23 एक और दफा उसने बात की,

“हाय, कौन जिंदा रह सकता है जब अल्लाह यों करेगा?

24 कितीम के साहिल से बहरी जहाज़ आएँगे जो अस्सूर और इबर को जलील करेंगे, लेकिन वह ख़ुद भी हलाक हो जाएँगे।”

25 फिर बिलाम उठकर अपने घर वापस चला गया। बलक भी वहाँ से चला गया।

## 25

**मोआब इसराईलियों की आजमाइश करता है**

1 जब इसराईली शिन्तीम में रह रहे थे तो इसराईली मर्द मोआबी औरतों से ज़िनाकारी करने लगे। 2 यह ऐसा हुआ कि मोआबी औरतें अपने देवताओं को कुरबानियाँ पेश करते वक़्त इसराईलियों को शरीक होने की दावत देने लगीं। इसराईली दावत क़बूल करके कुरबानियों से खाने और देवताओं को सिजदा करने लगे। 3 इस तरीक़े से इसराईली मोआबी देवता बनाम बाल-फ़गूर की पूजा करने लगे, और रब का ग़ज़ब उन पर आन पड़ा। 4 उसने मूसा से कहा, “इस कौम के तमाम राहनुमाओं

को सजाए-मौत देकर सूरज की रौशनी में रब के सामने लटका, वरना रब का इसराईलियों पर से ग़ज़ब नहीं टलेगा।”<sup>5</sup> चुनौंचे मूसा ने इसराईल के काज़ियों से कहा, “लाज़िम है कि तुममें से हर एक अपने उन आदमियों को जान से मार दे जो बाल-फ़ग़ूर देवता की पूजा में शरीक हुए हैं।”

6 मूसा और इसराईल की पूरी जमात मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर जमा होकर रोने लगे। इतफ़ाक़ से उसी वक़्त एक आदमी वहाँ से गुज़रा जो एक मिदियानी औरत को अपने घर ले जा रहा था।<sup>7</sup> यह देखकर हासून का पोता फ़ीनहास बिन इलियज़र जमात से निकला और नेज़ा पकड़कर<sup>8</sup> उस इसराईली के पीछे चल पड़ा। वह औरत समेत अपने ख़ैमे में दाख़िल हुआ तो फ़ीनहास ने उनके पीछे पीछे जाकर नेज़ा इतने जोर से मारा कि वह दोनों में से गुज़र गया। उस वक़्त वबा फैलने लगी थी, लेकिन फ़ीनहास के इस अमल से वह रुक गई।<sup>9</sup> तो भी 24,000 अफ़राद मर चुके थे।

10 रब ने मूसा से कहा, “हासून के पोते फ़ीनहास बिन इलियज़र ने इसराईलियों पर मेरा गुस्सा ठंडा कर दिया है। मेरी ग़ैरत अपनाकर वह इसराईल में दीगर माबूदों की पूजा को बरदाश्त न कर सका। इसलिए मेरी ग़ैरत ने इसराईलियों को नेस्त-नाबूद नहीं किया।<sup>12</sup> लिहाज़ा उसे बता देना कि मैं उसके साथ सलामती का अहद कायम करता हूँ।<sup>13</sup> इस अहद के तहत उसे और उस की औलाद को अबद तक इमाम का ओहदा हासिल रहेगा, क्योंकि अपने खुदा की खातिर ग़ैरत खाकर उसने इसराईलियों का कफ़कारा दिया।”

14 जिस आदमी को मिदियानी औरत के साथ मार दिया गया उसका नाम ज़िमरी बिन सलू था, और वह शमौन के कबीले के एक आबाई घराने का सरपरस्त था।<sup>15</sup> मिदियानी औरत का नाम कज़बी था, और वह सूर की बेटे थी जो मिदियानियों के एक आबाई घराने का सरपरस्त था।

16 रब ने मूसा से कहा, “मिदियानियों को दुश्मन करार देकर उन्हें मार डालना।<sup>18</sup> क्योंकि उन्होंने अपनी चालाकियों से तुम्हारे साथ दुश्मन का-सा सुलूक किया, उन्होंने तुम्हें बाल-फ़ग़ूर की पूजा करने पर उकसाया और तुम्हें अपनी बहन मिदियानी सरदार की बेटे कज़बी के ज़रीए जिसे वबा फैलते वक़्त मार दिया गया बहकाया।”

## 26

### दूसरी मर्दमशूमारी

1 वबा के बाद रब ने मूसा और हासून के बेटे इलियज़र से कहा,

2 “पूरी इसराईली जमात की मर्दमशूमारी उनके आबाई घरानों के मुताबिक़ करना। उन तमाम मर्दों को गिनना जो 20 साल या इससे जायद के हैं और जो जंग लड़ने के काबिल हैं।”

3-4 मूसा और इलियज़र ने इसराईलियों को बताया कि रब ने उन्हें क्या हुक्म दिया है। चुनौंचे उन्होंने मोआब के मैदानी इलाके में यरीह के सामने, लेकिन दरियाए-यरदन के मशरिफ़ी किनारे पर मर्दमशूमारी की। यह वह इसराईली आदमी थे जो मिसर से निकले थे।

5-7 इसराईल के पहलौठे रुबिन के कबीले के 43,730 मर्द थे। कबीले के चार कुंभे हनूकी, फ़ल्लुवी, हसरोनी और करमी रुबिन के बेटों हनूक, फ़ल्लू, हसरोन और करमी से निकले हुए थे।<sup>8</sup> रुबिन का बेटा फ़ल्लू इलियाब का बाप था<sup>9</sup> जिसके बेटे नमुएल, दातन और अबीराम थे।

दातन और अबीराम वही लोग थे जिन्हें जमात ने चुना था और जिन्होंने कोरह के ग़रोह समेत मूसा और हासून से झगड़ते हुए खुद रब से झगड़ा किया।<sup>10</sup> उस वक़्त ज़मीन ने अपना मुँह खोलकर उन्हें कोरह समेत हड़प कर लिया था। उसके 250 साथी भी मर गए थे जब आग ने उन्हें भस्म कर दिया। यों वह सब इसराईल के लिए इब्रतअंगेज़ मिसाल बन गए थे।<sup>11</sup> लेकिन कोरह की पूरी नसल मिटाई नहीं गई थी।

12-14 शमौन के कबीले के 22,200 मर्द थे। कबीले के पाँच कुंभे नमुएली, यमीनी, यकीनी, ज़ारही और साऊली शमौन के बेटों नमुएल, यमीन, यकीन, ज़ारह और साऊल से निकले हुए थे।

15-18 जद के कबीले के 40,500 मर्द थे। कबीले के सात कुंभे सफ़ोनी, हज्जी, सूनी, उज़नी, एरी, अरूदी और अरेली जद के बेटों सफ़ोन, हज्जी, सूनी, उज़नी, एरी, अरूद और अरेली से निकले हुए थे।

19-22 यहदाह के कबीले के 76,500 मर्द थे। यहदाह के दो बेटे एर और ओनान मिसर आने से पहले कनान में मर गए थे। कबीले के तीन कुंभे सेलानी, फ़ारसी और ज़ारही यहदाह के बेटों सेला, फ़ारस और ज़ारह से निकले हुए थे।

फ़ारस के दो बेटों हसरोन और हमूल से दो कुंभे हसरोनी और हमूली निकले हुए थे।<sup>23-25</sup> इशकार के कबीले के 64,300 मर्द थे। कबीले के चार कुंभे तोलाई, फ़ुव्वी, यस्बी और सिमरोनी इशकार के बेटों तोला, फ़ुव्वा, यस्ब और सिमरोन से निकले हुए थे।

26-27 जबलून के कबीले के 60,500 मर्द थे। कबीले के तीन कुंभे सरदी, ऐलोनी और यहलियेली जबलून के बेटों सरद, ऐलोन और यहलियेल से निकले हुए थे।

28 यूसुफ के दो बेटों मनस्सी और इफराईम के अलग अलग कबीले बने।

29-34 मनस्सी के कबीले के 52,700 मर्द थे। कबीले के आठ कुंभे मकीरी, जिलियादी, इयज़री, खलक्री, असरियेली, सिकमी, समीदाई और हिफरी थे। मकीरी मनस्सी के बेटे मकीर से जबकि जिलियादी मकीर के बेटे जिलियाद से निकले हुए थे। बाक्री कुंभे जिलियाद के छः बेटों इयज़र, खलक, असरियेल, सिकम, समीदा और हिफर से निकले हुए थे।

हिफर सिलाफिहाद का बाप था। सिलाफिहाद का कोई बेटा नहीं बल्कि पाँच बेटियाँ महालाह, नुआह, हुजलाह, मिलकाह और तिरज़ा थीं।

35-37 इफराईम के कबीले के 32,500 मर्द थे। कबीले के चार कुंभे सूतलही, बकरी, तहनी और ईरानी थे। पहले तीन कुंभे इफराईम के बेटों सूतलह, बकर और तहन से जबकि ईरानी सूतलह के बेटे ईरान से निकले हुए थे।

38-41 बिनयमीन के कबीले के 45,600 मर्द थे। कबीले के सात कुंभे बालाई, अशबेली, अखीरामी, सूफामी, हूफामी, अरदी और नामानी थे। पहले पाँच कुंभे बिनयमीन के बेटों बाला, अशबेल, अखीराम, सूफाम और हूफाम से जबकि अरदी और नामानी बाला के बेटों से निकले हुए थे।

42-43 दान के कबीले के 64,400 मर्द थे। सब दान के बेटे सूहाम से निकले हुए थे, इसलिए सूहामी कहलाते थे।

44-47 आशर के कबीले के 53,400 मर्द थे। कबीले के पाँच कुंभे यिमनी, इसवी, बरीई, हिबरी और मलकियेली थे। पहले तीन कुंभे आशर के बेटों यिमना, इसवी और बरिया से जबकि बाक्री बरिया के बेटों हिबर और मलकियेल से निकले हुए थे। आशर की एक बेटी बनाम सिरह भी थी।

48-50 नफताली के कबीले के 45,400 मर्द थे। कबीले के चार कुंभे यहसियेली, जूनी, यिसरी और सिल्लीमी नफताली के बेटों यहसियेल, जूनी, यिसर और सिल्लीम से निकले हुए थे।

51 इसराईली मर्दों की कुल तादाद 6,01,730 थी।

52 रब ने मूसा से कहा, 53 “जब मुल्के-कनान को तकसीम किया जाएगा तो ज़मीन इनकी तादाद के मुताबिक देना है।

54 बड़े कबीलों को छोटे की निसबत ज्यादा ज़मीन दी जाए। हर कबीले का इलाका उस की तादाद से मुताबिकत रखे।

55-56 कुरा डालने से फ़ैसला किया जाए कि हर कबीले को कहीं ज़मीन मिलेगी। लेकिन हर कबीले के इलाके का रकबा इस पर मबनी हो कि कबीले के कितने अफ़राद हैं।”

57 लावी के कबीले के तीन कुंभे ज़ैरसोनी, किहाती और मिरारी लावी के बेटों ज़ैरसन, किहात और मिरारी से निकले हुए थे। 58 इसके अलावा लिबनी, हिब्रनी, महली, मूशी और कोरही भी लावी के कुंभे थे। किहात अमराम का बाप था।

59 अमराम ने लावी औरत युकबिद से शादी की जो मिसर में पैदा हुई थी। उनके दो बेटे हास्न और मूसा और एक बेटी मरियम पैदा हुए। 60 हास्न के बेटे नदब, अबीह, इलियज़र और इतमर थे। 61 लेकिन नदब और अबीह रब को बख़ूर की नाजायज़ कुरबानी पेश करने के बाइस मर गए। 62 लावियों के मर्दों की कुल तादाद 23,000 थी। इनमें वह सब शामिल थे जो एक माह या इससे जायद के थे। उन्हें दूसरे इसराईलियों से अलग गिना गया, क्योंकि उन्हें इसराईल में मीरास में ज़मीन नहीं मिलनी थी।

63 यों मूसा और इलियज़र ने मोआब के मैदानी इलाके में यरीह के सामने लेकिन दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर इसराईलियों की मर्दमशुमारी की। 64 लोगों को गिनते गिनते उन्हें मालूम हुआ कि जो लोग दशते-सीन में मूसा और हास्न की पहली मर्दमशुमारी में गिने गए थे वह सब मर चुके हैं। 65 रब ने कहा था कि वह सबके सब रेगिस्तान में मर जाएंगे, और ऐसा ही हुआ था। सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना और यशुअ बिन नून जिंदा रहे।

## 27

### सिलाफिहाद की बेटियाँ

1 सिलाफिहाद की पाँच बेटियाँ महालाह, नुआह, हुजलाह, मिलकाह और तिरज़ा थीं। सिलाफिहाद यूसुफ के बेटे मनस्सी के कुंभे का था। उसका पूरा नाम सिलाफिहाद बिन हिफर बिन जिलियाद बिन मकीर बिन मनस्सी बिन यूसुफ था। 2 सिलाफिहाद की बेटियाँ मुलाकात के ख़ैमे के दरवाजे पर आकर मूसा, इलियज़र इमाम और पूरी जमात के सामने खड़ी हुईं। उन्होंने कहा,

3 “हमारा बाप रेगिस्तान में फ़ौत हुआ। लेकिन वह कोरह के उन साथियों में से नहीं था जो रब के खिलाफ़ मुतहिद हुए थे। वह इस सबब से न मरा बल्कि अपने जाती गुनाह के बाइस। जब वह मर गया तो उसका कोई बेटा नहीं था। 4 क्या यह ठीक है कि हमारे खानदान में बेटा न होने के बाइस हमें ज़मीन न मिले और हमारे बाप का नामो-निशान मिट जाए? हमें भी हमारे बाप के दीगर रिश्तेदारों के साथ ज़मीन दें।”

5 मूसा ने उनका मामला रब के सामने पेश किया 6 तो रब ने उससे कहा, 7 “जो बात सिलाफिहाद की बेटीयाँ कर रही हैं वह दूस्त है। उन्हें ज़रूर उनके बाप के रिश्तेदारों के साथ ज़मीन मिलनी चाहिए। उन्हें बाप का विरास मिल जाए। 8 इसराईलियों को भी बताना कि जब भी कोई आदमी मर जाए जिसका बेटा न हो तो उस की बेटी को उस की मीरास मिल जाए। 9 अगर उस की बेटी भी न हो तो उसके भाइयों को उस की मीरास मिल जाए। 10 अगर उसके भाई भी न हों तो उसके बाप के भाइयों को उस की मीरास मिल जाए। 11 अगर यह भी न हों तो उसके सबसे करीबी रिश्तेदार को उस की मीरास मिल जाए। वह उस की जाती मिलकियत होगी। यह उसूल इसराईलियों के लिए कानूनी हैसियत रखता है। वह इसे वैसा मानें जैसा रब ने मूसा को हुक्म दिया है।”

यशुअ को मूसा का जानशीन मुकर्रर किया जाता है

12 फिर रब ने मूसा से कहा, “अबारीम के पहाड़ी सिलसिले के इस पहाड़ पर चढ़कर उस मुल्क पर निगाह डाल जो मैं इसराईलियों को दूँगा। 13 उसे देखने के बाद तू भी अपने भाई हासून की तरह कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा, 14 क्योंकि तुम दोनों ने दशते-सीन में मेरे हुक्म की खिलाफ़वरजी की। उस वक़्त जब पूरी जमात ने मरीबा में मेरे खिलाफ़ गिला-शिकवा किया तो तूने चटान से पानी निकालते वक़्त लोगों के सामने मेरी कुदूसियत कायम न रखी।” (मरीबा दशते-सीन के कादिस में चरमा है।)

15 मूसा ने रब से कहा, 16 “ऐ रब, तमाम जानों के खुदा, जमात पर किसी आदमी को मुकर्रर कर 17 जो उनके आगे आगे जंग के लिए निकले और उनके आगे आगे वापस आ जाए, जो उन्हें बाहर ले जाए और वापस ले आए। वरना रब की जमात उन भेड़ों की मानिंद होगी जिनका कोई चरवाहा न हो।”

18 जवाब में रब ने मूसा से कहा, “यशुअ बिन नून को चुन ले जिसमें मेरा रूह है, और अपना हाथ उस पर रख। 19 उसे इलियज़र इमाम और पूरी जमात के सामने खड़ा करके उनके रूबरू ही उसे राहनुमाई की जिम्मादारी दे। 20 अपने इख्तियार में से कुछ उसे दे ताकि इसराईल की पूरी जमात उस की इताअत करे। 21 रब की मरजी जानने के लिए वह इलियज़र इमाम के सामने खड़ा होगा तो इलियज़र रब के सामने ऊरीम और तुम्मीम इस्तेमाल करके उस की मरजी दरियाफ़्त करेगा। उसी के हुक्म पर यशुअ और इसराईल की पूरी जमात खैमागाह से निकलेंगे और वापस आएंगे।”

22 मूसा ने ऐसा ही किया। उसने यशुअ को चुनकर इलियज़र और पूरी जमात के सामने खड़ा किया। 23 फिर उसने उस पर अपने हाथ रखकर उसे राहनुमाई की जिम्मादारी सौंपी जिस तरह रब ने उसे बताया था।

## 28

रोज़मर्मा की कुरबानियाँ

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराईलियों को बताना, खयाल रखो कि तुम मुकर्ररा औकात पर मुझे जलनेवाली कुरबानियाँ पेश करो। यह मेरी रीटी है और इनकी खुशबू मुझे पसंद है। 3 रब को जलनेवाली यह कुरबानी पेश करना :

रोज़ाना भेड़ के दो एकसाला बच्चे जो बेऐब हों पूरे तौर पर जला देना। 4 एक को सुबह के वक़्त पेश करना और दूसरे को सूरज के डूबने के ऐन बाद। 5 भेड़ के बच्चे के साथ गल्ला की नज़र भी पेश की जाए यानी डेढ़ किलोग्राम बेहतरीन मैदा जो एक लिटर जैतून के कूटकर निकाले हुए तेल के साथ मिलाया गया हो। 6 यह रोज़मर्मा की कुरबानी है जो पूरे तौर पर जलाई जाती है और पहली दफा सीना पहाड़ पर चढ़ाई गई। इस जलनेवाली कुरबानी की खुशबू रब को पसंद है। 7-8 साथ ही एक लिटर शराब भी नज़र के तौर पर कुरबानगाह पर डाली जाए। सुबह और शाम की यह कुरबानियाँ दोनों ही इस तरीके से पेश की जाएँ।

सबत यानी हफ़्ते की कुरबानी

9 सबत के दिन भेड़ के दो और बच्चे चढ़ाना। वह भी बेऐब और एक साल के हों। साथ ही मै और गल्ला की नज़रें भी पेश की जाएँ। गल्ला की नज़र के लिए 3 किलोग्राम बेहतरीन मैदा तेल के साथ मिलाया जाए। 10 भस्म होनेवाली यह कुरबानी हर हफ़्ते के दिन पेश करनी है। यह रोज़मर्मा की कुरबानियों के अलावा है।

हर माह के पहले दिन की कुरबानी

11 हर माह के शुरू में रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात एकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक्स के हों। 12 हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र पेश करना जिसके लिए तेल में मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम 13 और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना। भस्म होनेवाली यह कुरबानियाँ रब को पसंद हैं। 14 इन कुरबानियों के साथ

मै की नज़र भी कुरबानगाह पर डालना यानी हर बैल के साथ दो लिटर, हर मेंढे के साथ सवा लिटर और भेड़ के हर बच्चे के साथ एक लिटर मै पेश करना। यह कुरबानी साल में हर महीने के पहले दिन के मौके पर पेश करनी है।<sup>15</sup> इस कुरबानी और रोज़मर्रा की कुरबानियों के अलावा रब को एक बकरा गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करना।

### फसह की कुरबानियाँ

<sup>16</sup> पहले महीने के चौथे दिन फसह की ईद मनाई जाए।<sup>17</sup> अगले दिन पूरे हफ्ते की वह ईद शुरू होती है जिसके दौरान तुम्हें सिर्फ़ बेखुमीरी रोटी खानी है।<sup>18</sup> पहले दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।<sup>19</sup> रब के हज़र भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे पेश करना। सब बग़ैर नुक्स के हों।<sup>20</sup> हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम<sup>21</sup> और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना।<sup>22</sup> गुनाह की कुरबानी के तौर पर एक बकरा भी पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़ारा दिया जाए।<sup>23-24</sup> इन तमाम कुरबानियों को ईद के दौरान हर रोज़ पेश करना। यह रोज़मर्रा की भस्म होनेवाली कुरबानियों के अलावा है। इस ख़ुराक की खुशबू रब को पसंद है।<sup>25</sup> सातवें दिन काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।

### फसल की कटाई की ईद की कुरबानियाँ

<sup>26</sup> फसल की कटाई के पहले दिन की ईद पर जब तुम रब को अपनी फसल की पहली पैदावार पेश करते हो तो काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना।<sup>27-29</sup> उस दिन दो जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे कुरबानगाह पर पूरे तौर पर जला देना। इसके साथ गल्ला और मै की वही नज़रें पेश करना जो फसह की ईद पर भी पेश की जाती हैं।<sup>30</sup> इसके अलावा रब को एक बकरा गुनाह की कुरबानी के तौर पर चढ़ाना।

<sup>31</sup> यह तमाम कुरबानियाँ रोज़मर्रा की भस्म होनेवाली कुरबानियों और उनके साथवाली गल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं। वह बेपेब हों।

## 29

### नए साल की ईद की कुरबानियाँ

<sup>1</sup> सातवें माह के पंद्रहवें दिन भी काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। उस दिन नरसिगे फूँके जाएँ।<sup>2</sup> रब को भस्म होनेवाली कुरबानी पेश की जाए जिसकी खुशबू उसे पसंद हो यानी एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे। सब नुक्स के बग़ैर हों।<sup>3</sup> हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल के साथ मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, मेंढे के साथ 3 किलोग्राम<sup>4</sup> और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना।<sup>5</sup> एक बकरा भी गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करना ताकि तुम्हारा कफ़ारा दिया जाए।<sup>6</sup> यह कुरबानियाँ रोज़ाना और हर माह के पहले दिन की कुरबानियाँ और उनके साथ की गल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं। इनकी खुशबू रब को पसंद है।

### कफ़ारा के दिन की कुरबानियाँ

<sup>7</sup> सातवें महीने के दसवें दिन मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। उस दिन काम न करना और अपनी जान को दुख देना।<sup>8-11</sup> रब को वही कुरबानियाँ पेश करना जो इसी महीने के पहले दिन पेश की जाती हैं। सिर्फ़ एक फ़रक़ है, उस दिन एक नहीं बल्कि दो बकरे गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश किए जाएँ ताकि तुम्हारा कफ़ारा दिया जाए। ऐसी कुरबानियाँ रब को पसंद हैं।

### झोंपड़ियों की ईद की कुरबानियाँ

<sup>12</sup> सातवें महीने के पंद्रहवें दिन भी काम न करना बल्कि मुक़द्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। सात दिन तक रब की ताज़ीम में ईद मनाना।<sup>13</sup> ईद के पहले दिन रब को 13 जवान बैल, 2 मेंढे और 14 भेड़ के यकसाला बच्चे भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करना। इनकी खुशबू उसे पसंद है। सब नुक्स के बग़ैर हों।<sup>14</sup> हर जानवर के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करना जिसके लिए तेल से मिलाया गया बेहतरीन मैदा इस्तेमाल किया जाए। हर बैल के साथ साढ़े 4 किलोग्राम, हर मेंढे के साथ 3 किलोग्राम<sup>15</sup> और भेड़ के हर बच्चे के साथ डेढ़ किलोग्राम मैदा पेश करना।<sup>16</sup> इसके अलावा एक बकरा भी गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करना। यह कुरबानियाँ रोज़ाना की भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और उनके साथवाली गल्ला और मै की नज़रों के अलावा हैं।<sup>17-34</sup> ईद के बाकी छः दिन यही कुरबानियाँ पेश करनी हैं। लेकिन हर दिन एक बैल कम हो यानी दूसरे दिन 12, तीसरे दिन 11, चौथे दिन 10, पाँचवें दिन 9, छठे दिन 8 और सातवें दिन 7 बैल। हर

दिन गुनाह की कुरबानी के लिए बकरा और मामूल की रोजाना की कुरबानियाँ भी पेश करना। 35 ईद के आठवें दिन काम न करना बल्कि मुकद्दस इजतिमा के लिए इकट्ठे होना। 36 रब को एक जवान बैल, एक मेंढा और भेड़ के सात यकसाला बच्चे भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करना। इनकी खूशबू रब को पसंद है। सब नुक़स के बग़ैर हों। 37-38 साथ ही वह तमाम कुरबानियाँ भी पेश करना जो पहले दिन पेश की जाती हैं। 39 यह सब वही कुरबानियाँ हैं जो तुम्हें रब को अपनी ईदों पर पेश करनी हैं। यह उन तमाम कुरबानियों के अलावा हैं जो तुम दिली खूशी से या मन्नत मानकर देते हो, चाहे वह भस्म होनेवाली, गल्ला की, मै की या सलामती की कुरबानियाँ क्यों न हों।”

40 मूसा ने रब की यह तमाम हिदायात इसराइलियों को बता दीं।

## 30

### मन्नत मानने के क़वायद

1 फिर मूसा ने क़बीलों के सरदारों से कहा, “रब फरमाता है,

2 अगर कोई आदमी रब को कुछ देने की मन्नत माने या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाए तो वह अपनी बात पर कायम रहकर उसे पूरा करे।

3 अगर कोई जवान औरत जो अब तक अपने बाप के घर में रहती है रब को कुछ देने की मन्नत माने या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाए 4 तो लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उसका बाप उसके बारे में सुनकर एतराज़ न करे। 5 लेकिन अगर उसका बाप यह सुनकर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मनसूख है, और वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा, क्योंकि उसके बाप ने उसे मना किया है।

6 हो सकता है कि किसी ग़ैरशादीशुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई, चाहे उसने दानिस्ता तौर पर या बेसोचे-समझे ऐसा किया। इसके बाद उस औरत ने शादी कर ली। 7 शादीशुदा हालत में भी लाज़िम है कि वह अपनी मन्नत या क़सम की हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उसका शौहर इसके बारे में सुनकर एतराज़ न करे। 8 लेकिन अगर उसका शौहर यह सुनकर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मनसूख है, और वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा। 9 अगर किसी बेवा या तलाक़शुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे।

10 अगर किसी शादीशुदा औरत ने मन्नत मानी या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई 11 तो लाज़िम है कि वह अपनी हर बात पूरी करे। शर्त यह है कि उसका शौहर उसके बारे में सुनकर एतराज़ न करे। 12 लेकिन अगर उसका शौहर उसे ऐसा करने से मना करे तो उस की मन्नत या क़सम मनसूख है। वह उसे पूरा करने से बरी है। रब उसे मुआफ़ करेगा, क्योंकि उसके शौहर ने उसे मना किया है। 13 चाहे बीवी ने कुछ देने की मन्नत मानी हो या किसी चीज़ से परहेज़ करने की क़सम खाई हो, उसके शौहर को उस की तसदीक या उसे मनसूख करने का इख्तियार है। 14 अगर उसने अपनी बीवी की मन्नत या क़सम के बारे में सुन लिया और अगले दिन तक एतराज़ न किया तो लाज़िम है कि उस की बीवी अपनी हर बात पूरी करे। शौहर ने अगले दिन तक एतराज़ न करने से अपनी बीवी की बात की तसदीक की है। 15 अगर वह इसके बाद यह मन्नत या क़सम मनसूख करे तो उसे इस कुसूर के नतायज भुगतने पड़ेंगे।”

16 रब ने मूसा को यह हिदायात दीं। यह ऐसी औरतों की मन्नतों या क़समों के उसूल हैं जो ग़ैरशादीशुदा हालत में अपने बाप के घर में रहती हैं या जो शादीशुदा हैं।

## 31

### मिदियानियों से जंग

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “मिदियानियों से इसराइलियों का बदला ले। इसके बाद तू कूच करके अपने बापदादा से जा मिलेगा।”

3 चुनौचे मूसा ने इसराइलियों से कहा, “हथियारों से अपने कुछ आदमियों को लैस करो ताकि वह मिदियान से जंग करके रब का बदला लें। 4 हर क़बीले के 1,000 मर्द जंग लड़ने के लिए भेजो।”

5 चुनौचे हर क़बीले के 1,000 मुसल्लह मर्द यानी कुल 12,000 आदमी चुने गए। 6 तब मूसा ने उन्हें जंग लड़ने के लिए भेज दिया। उसने इलियज़र इमाम के बेटे फ़ीनहास को भी उनके साथ भेजा जिसके पास मक़दिस की कुछ चीज़ें और एलान करने के बिगुल थे। 7 उन्होंने रब के हुक़म के मुताबिक मिदियानियों से जंग की और तमाम आदमियों को मौत के घाट उतार दिया। 8 इनमें मिदियानियों के पाँच बादशाह इवी, रक़म, सूर, हर और रबा थे। बिलाम बिन बओर को भी जान से मार दिया गया।



9 इसराइलियों ने मिदियानी औरतों और बच्चों को गिरिफ्तार करके उनके तमाम गाय-बैल, भेड़-बकरियाँ और माल लूट लिया। 10 उन्होंने उनकी तमाम आबादियों को खैमागाहों समेत जलाकर राख कर दिया। 11-12 फिर वह तमाम लूटा हुआ माल कैदियों और जानवरों समेत मूसा, इलियज़र इमाम और इसराइल की पूरी जमात के पास ले आए जो खैमागाह में इंतज़ार कर रहे थे। अभी तक वह मोआब के मैदानी इलाके में दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर यरीह के सामने ठहरे हुए थे। 13 मूसा, इलियज़र और जमात के तमाम सरदार उनका इस्तक़बाल करने के लिए खैमागाह से निकले।

14 उन्हें देखकर मूसा को हज़ार हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर मुक़र्रर अफ़सरान पर गुस्सा आया। 15 उसने कहा, “आपने तमाम औरतों को क्यों बचाए रखा? 16 उन्हीं ने बिलाम के मशवरे पर फ़गूर में इसराइलियों को रब से दूर कर दिया था। उन्हीं के सबब से रब की वबा उसके लोगों में फैल गई। 17 चुनोंचे अब तमाम लड़कों को जान से मार दो। उन तमाम औरतों को भी मौत के घाट उतारना जो कुँवारियाँ नहीं हैं। 18 लेकिन तमाम कुँवारियों को बचाए रखना। 19 जिसने भी किसी को मार दिया या किसी लाश को छुआ है वह सात दिन तक खैमागाह के बाहर रहे। तीसरे और सातवें दिन अपने आपको अपने कैदियों समेत गुनाह से पाक-साफ़ करना। 20 हर लिबास और हर चीज़ को पाक-साफ़ करना जो चमड़े, बकरियों के बालों या लकड़ी की हो।”

21 फिर इलियज़र इमाम ने जंग से वापस आनेवाले मर्दों से कहा, “जो शरीअत रब ने मूसा को दी उसके मुताबिक 22-23 जो भी चीज़ जल नहीं जाती उसे आग में से गुज़ार देना ताकि पाक-साफ़ हो जाए। उसमें सोना, चाँदी, पीतल, लोहा, टीन और सीसा शामिल है। फिर उस पर नापाकी दूर करने का पानी छिड़कना। बाकी तमाम चीज़ें पानी में से गुज़ार देना ताकि वह पाक-साफ़ हो जाएँ। 24 सातवें दिन अपने लिबास को धोना तो तुम पाक-साफ़ होकर खैमागाह में दाख़िल हो सकते हो।”

### लूटे हुए माल की तक्रसीम

25 रब ने मूसा से कहा, 26 “तमाम कैदियों और लूटे हुए जानवरों को गिन। इसमें इलियज़र इमाम और कबायली कुंबों के सरपरस्त तेरी मदद करें। 27 सारा माल दो बराबर के हिस्सों में तक्रसीम करना, एक हिस्सा फ़ौजियों के लिए और दूसरा बाकी जमात के लिए हो। 28 फ़ौजियों के हिस्से के पाँच पाँच सौ कैदियों में से एक एक निकालकर रब को देना। इसी तरह पाँच पाँच सौ बैलों, गधों, भेड़ों और बकरियों में से एक एक निकालकर रब को देना। 29 उन्हें इलियज़र इमाम को देना ताकि वह उन्हें रब को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करे। 30 बाकी जमात के हिस्से के पचास पचास कैदियों में से एक एक निकालकर रब को देना, इसी तरह पचास पचास बैलों, गधों, भेड़ों और बकरियों या दूसरे जानवरों में से भी एक एक निकालकर रब को देना। उन्हें उन लावियों को देना जो रब के मक़दिस को सँभालते हैं।”

31 मूसा और इलियज़र ने ऐसा ही किया। 32-34 उन्होंने 6,75,000 भेड़-बकरियाँ, 72,000 गाय-बैल और 61,000 गधे गिने। 35 इनके अलावा 32,000 कैदी कुँवारियाँ भी थीं। 36-40 फ़ौजियों को तमाम चीज़ों का आधा हिस्सा मिल गया यानी 3,37,500 भेड़-बकरियाँ, 36,000 गाय-बैल, 30,500 गधे और 16,000 कैदी कुँवारियाँ। इनमें से उन्होंने 675 भेड़-बकरियाँ, 72 गाय-बैल, 61 गधे और 32 लड़कियाँ रब को दीं। 41 मूसा ने रब का यह हिस्सा इलियज़र इमाम को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर दे दिया, जिस तरह रब ने हुक्म दिया था। 42-47 बाकी जमात को भी लूटे हुए माल का आधा हिस्सा मिल गया। मूसा ने पचास पचास कैदियों और जानवरों में से एक एक निकालकर उन लावियों को दे दिया जो रब का मक़दिस सँभालते थे। उसने वैसा ही किया जैसा रब ने हुक्म दिया था।

48 फिर वह अफ़सर मूसा के पास आए जो लशकर के हज़ार हज़ार और सौ सौ आदमियों पर मुक़र्रर थे। 49 उन्होंने उससे कहा, “आपके खादिमों ने उन फ़ौजियों को गिन लिया है जिन पर वह मुक़र्रर हैं, और हमें पता चल गया कि एक भी कम नहीं हुआ। 50 इसलिए हम रब को सोने का तमाम ज़ेवर कुरबान करना चाहते हैं जो हमें फ़तह पाने पर मिला था मसलन सोने के बाज़ूबंद, कंगन, मुहर लगाने की अंगूठियाँ, बालियाँ और हार। यह सब कुछ हम रब को पेश करना चाहते हैं ताकि रब के सामने हमारा कफ़फ़ारा हो जाए।”

51 मूसा और इलियज़र इमाम ने सोने की तमाम चीज़ें उनसे ले लीं। 52 जो चीज़ें उन्होंने अफ़सरान के लूटे हुए माल में से रब को उठानेवाली कुरबानी के तौर पर पेश की उनका पूरा वज़न तक्ररिबन 190 किलोग्राम था। 53 सिर्फ़ अफ़सरान ने ऐसा किया। बाकी फ़ौजियों ने अपना लूट का माल अपने लिए रख लिया। 54 मूसा और इलियज़र अफ़सरान का यह सोना मुलाकात के खैमे में ले आए ताकि वह रब को उस की कौम की याद दिलाता रहे।

## 32

दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर आबाद क़बीले

1 रबिन और जद के कबीलों के पास बहुत-से मवेशी थे। जब उन्होंने देखा कि याजेर और जिलियाद का इलाका मवेशी पालने के लिए अच्छा है 2 तो उन्होंने मूसा, इलियज़र इमाम और जमात के राहनुमाओं के पास आकर कहा, 3-4 “जिस इलाके को रब ने इसराईल की जमात के आगे आगे शिकस्त दी है वह मवेशी पालने के लिए अच्छा है। अतारात, दीबोन, याजेर, निमरा, हसबोन, इलियाली, सबाम, नबू और बऊन जो इसमें शामिल हैं हमारे काम आएंगे, क्योंकि आपके खादिमों के पास मवेशी हैं। 5 अगर आपकी नज़रे-क़रम हम पर हो तो हमें यह इलाका दिया जाए। यह हमारी मिलकियत बन जाए और हमें दरियाए-य़रदन को पार करने पर मजबूर न किया जाए।”

6 मूसा ने जद और रबिन के अफ़राद से कहा, “क्या तुम यहाँ पीछे रहकर अपने भाइयों को छोड़ना चाहते हो जब वह जंग लड़ने के लिए आगे निकलेंगे? 7 इस वक़्त जब इसराईली दरियाए-य़रदन को पार करके उस मुल्क में दाखिल होनेवाले हैं जो रब ने उन्हें दिया है तो तुम क्यों उनकी हौसलाशिकनी कर रहे हो? 8 तुम्हारे बापदादा ने भी यही कुछ किया जब मैंने उन्हें कादिस-बरनीअ से मुल्क के बारे में मालूमात हासिल करने के लिए भेजा। 9 इसकाल की वादी में पहुँचकर मुल्क की तफ़तीश करने के बाद उन्होंने इसराईलियों की हौसलाशिकनी की ताकि वह उस मुल्क में दाखिल न हों जो रब ने उन्हें दिया था। 10 उस दिन रब ने गुस्से में आकर कसम खाई, 11 ‘उन आदमियों में से जो मिसर से निकल आए हैं कोई उस मुल्क को नहीं देखेगा जिसका वादा मैंने कसम खाकर इब्राहीम, इसहाक और याक़ब से किया था। क्योंकि उन्होंने पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी न की। सिर्फ़ वह जिनकी उम्र उस वक़्त 20 साल से कम है दाखिल होंगे। 12 बुजुर्गों में से सिर्फ़ कालिब बिन यफ़ुन्ना कनिज़्ज़ी और यशुअ बिन नून मुल्क में दाखिल होंगे, इसलिए कि उन्होंने पूरी वफ़ादारी से मेरी पैरवी की।’ 13 उस वक़्त रब का गज़ब उन पर आन पड़ा, और उन्हें 40 साल तक रेगिस्तान में मारे मारे फिरना पड़ा, जब तक कि वह तमाम नसल ख़त्म न हो गई जिसने उसके नज़दीक़ ग़लत काम किया था। 14 अब तुम गुनाहगारों की औलाद अपने बापदादा की जगह खड़े होकर रब का इसराईल पर गुस्सा मज़ीद बढ़ा रहे हो। 15 अगर तुम उस की पैरवी से हटोगे तो वह दुबारा इन लोगों को रेगिस्तान में रहने देगा, और तुम इनकी हलाकत का बाइस बनोगे।”

16 इसके बाद रबिन और जद के अफ़राद दुबारा मूसा के पास आए और कहा, “हम यहाँ फ़िलहाल अपने मवेशी के लिए बाड़े और अपने बाल-बच्चों के लिए शहर बनाना चाहते हैं। 17 इसके बाद हम मुसल्लह होकर इसराईलियों के आगे आगे चलेंगे और हर एक को उस की अपनी जगह तक पहुँचाएँगे। इतने में हमारे बाल-बच्चे हमारे शहरों की फ़र्सीलों के अंदर मुल्क के मुख़ालिफ़ बाशिंदों से महफूज़ रहेंगे। 18 हम उस वक़्त तक अपने घरों को नहीं लौटेंगे जब तक हर इसराईली को उस की मौस्सी ज़मीन न मिल जाए। 19 दूसरे, हम ख़ुद उनके साथ दरियाए-य़रदन के मगरिकी किनारे पर मिल चुकी हैं।”

20 यह सुनकर मूसा ने कहा, “आगर तुम ऐसा ही करोगे तो ठीक है। फिर रब के सामने जंग के लिए तैयार हो जाओ 21 और सब हथियार बाँधकर रब के सामने दरियाए-य़रदन को पार करो। उस वक़्त तक न लौटो जब तक रब ने अपने तमाम दुश्मनों को अपने आगे से निकाल न दिया हो। 22 फिर जब मुल्क पर रब का कब्ज़ा हो गया होगा तो तुम लौट सकोगे। तब तुमने रब और अपने हमवतन भाइयों के लिए अपने फ़रायज़ अदा कर दिए होंगे, और यह इलाका रब के सामने तुम्हारा मौस्सी हक़ होगा। 23 लेकिन अगर तुम ऐसा न करो तो फिर तुम रब ही का गुनाह करोगे। यकीन जानो तुम्हें अपने गुनाह की सज़ा मिलेगी। 24 अब अपने बाल-बच्चों के लिए शहर और अपने मवेशियों के लिए बाड़े बना लो। लेकिन अपने वादे को ज़रूर पूरा करना।”

25 जद और रबिन के अफ़राद ने मूसा से कहा, “हम आपके खादिम हैं, हम अपने आका के हुक्म के मुताबिक ही करेंगे। 26 हमारे बाल-बच्चे और मवेशी यहीं जिलियाद के शहरों में रहेंगे। 27 लेकिन आपके खादिम मुसल्लह होकर दरिया को पार करेंगे और रब के सामने जंग करेंगे। हम सब कुछ वैसा ही करेंगे जैसा हमारे आका ने हमें हुक्म दिया है।”

28 तब मूसा ने इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और कबायली कुंभों के सरपरस्तों को हिदायत दी, 29 “लाज़िम है कि जद और रबिन के मर्द मुसल्लह होकर तुम्हारे साथ ही रब के सामने दरियाए-य़रदन को पार करें और मुल्क पर कब्ज़ा करें। अगर वह ऐसा करें तो उन्हें मीरास में जिलियाद का इलाका दो। 30 लेकिन अगर वह ऐसा न करें तो फिर उन्हें मुल्के-कनान ही में तुम्हारे साथ मौस्सी ज़मीन मिले।”

31 जद और रबिन के अफ़राद ने इसरार किया, “आपके खादिम सब कुछ करेंगे जो रब ने कहा है। 32 हम मुसल्लह होकर रब के सामने दरियाए-य़रदन को पार करेंगे और कनान के मुल्क में दाखिल होंगे, अगरचे हमारी मौस्सी ज़मीन य़रदन के मगरिकी किनारे पर होगी।”

33 तब मूसा ने जद, रबिन और मनस्सी के आधे कबीले को यह इलाका दिया। उसमें वह पूरा मुल्क शामिल था जिस पर पहले अमोरियों का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह ओज हुक्मत करते थे। इन शिकस्तख़ुदा ममालिक के देहातों समेत तमाम शहर उनके हवाले किए गए।

34 जद के कबीले ने दीबोन, अतारात, अरोईर, 35 अतारात-शोफान, याजेर, युगबहा, 36 बैत-निमरा और बैत-हारान के शहरों को दुबारा तामीर किया। उन्होंने उनकी फसीलें बनाई और अपने मवेशियों के लिए बाड़े भी। 37 रूबिन के कबीले ने हसबोन, इलियाली, किरियतायम, 38 नबू, बाल-मऊन और सिबमाह दुबारा तामीर किए। नबू और बाल-मऊन के नाम बदल गए, क्योंकि उन्होंने उन शहरों को नए नाम दिए जो उन्होंने दुबारा तामीर किए।

39 मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद ने जिलियाद जाकर उस पर कब्जा कर लिया और उसके तमाम अमोरी बाशिंदों को निकाल दिया। 40 चुन्चे मूसा ने मकीरियों को जिलियाद की सरजमीन दे दी, और वह वहाँ आबाद हुए। 41 मनस्सी के एक आदमी बनाम याईर ने उस इलाके में कुछ बस्तियों पर कब्जा करके उन्हें हव्वोत-याईर यानी 'याईर की बस्तियों' का नाम दिया। 42 इसी तरह उस कबीले के एक और आदमी बनाम नूबह ने जाकर कनात और उसके देहातों पर कब्जा कर लिया। उसने शहर का नाम नूबह रखा।

## 33

### इसराईल के सफ़र के मरहले

1 ज़ैल में उन जगहों के नाम हैं जहाँ जहाँ इसराईली कबीले अपने दस्तों के मुताबिक मूसा और हासून की राहनुमाई में मिसर से निकलकर खैमाज़न हुए थे। 2 रब के हुक्म पर मूसा ने हर जगह का नाम कलमबंद किया जहाँ उन्होंने अपने खैमे लगाए थे। उन जगहों के नाम यह हैं :

3 पहले महीने के पंद्रहवें दिन इसराईली रामसीस से रवाना हुए। यानी फ़सह के दिन के बाद के दिन वह बड़े इख्तियार के साथ तमाम मिसरियों के देखते देखते चले गए। 4 मिसरी उस वक़्त अपने पहलौठों को दफ़न कर रहे थे, क्योंकि रब ने पहलौठों को मारकर उनके देवताओं की अदालत की थी।

5 रामसीस से इसराईली सुक्कात पहुँच गए जहाँ उन्होंने पहली मरतबा अपने डेरे लगाए। 6 वहाँ से वह एताम पहुँचे जो रेगिस्तान के किनारे पर वाके है। 7 एताम से वह वापस मुडकर फ़ी-हखीरोत की तरफ बढे जो बाल-सफोन के मशरिक में है। वह मिजदाल के करीब खैमाज़न हुए। 8 फिर वह फ़ी-हखीरोत से कूच करके समुंदर में से गुज़र गए। इसके बाद वह तीन दिन एताम के रेगिस्तान में सफ़र करते करते मारा पहुँच गए और वहाँ अपने खैमे लगाए। 9 मारा से वह एलीम चले गए जहाँ 12 चश्मे और खज़र के 70 दरख़त थे। वहाँ ठहरने के बाद 10 वह बहरे-कुलजुम के साहिल पर खैमाज़न हुए, 11 फिर दशते-सीन में पहुँच गए।

12 उनके अगले मरहले यह थे : दुफ़का, 13-37 अलस, रफ़ीदीम जहाँ पीने का पानी दस्तयाब न था, दशते-सीना, कब्रोट-हतावा, हसीरात, रितमा, रिम्मोन-फ़ोरस, लिबना, रिस्सा, कहीलाता, साफ़र पहाड, हरादा, मकहीलोत, तहत, तारह, मितका, हशमना, मौसीरोत, बनी-याकान, होर-हज्जिदजाद, युतबाता, अबरूना, अस्यन-जाबर, दशते-सीन में वाके कादिस और होर पहाड जो अदोम की सरहद पर वाके है।

38 वहाँ रब ने हासून इमाम को हुक्म दिया कि वह होर पहाड पर चढ जाए। वही वह पाँचवें माह के पहले दिन फ़ौत हुआ। इसराईलियों को मिसर से निकले 40 साल गुज़र चुके थे। 39 उस वक़्त हासून 123 साल का था।

40 उन दिनों में अराद के कनानी बादशाह ने सुना कि इसराईली मेरे मुल्क की तरफ बढ रहे हैं। वह कनान के जुनूब में हुक्मत करता था।

41-47 होर पहाड से रवाना होकर इसराईली ज़ैल की जगहों पर ठहरे : ज़लमूना, फ़ोनोन, ओबोत, ऐये-अबारीम जो मोआब के इलाके में था, दीबोन-जद, अलमून-दिबलातायम और नबू के करीब वाके अबारीम का पहाडी इलाका। 48 वहाँ से उन्होंने यरदन की बादी में उतरकर मोआब के मैदानी इलाके में अपने डेरे लगाए। अब वह दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर यरीह शहर के सामने थे। 49 उनके खैमे बैत-यसीमोत से लेकर अबील-शित्तीम तक लगे थे।

### तमाम कनानी बाशिंदों को निकालने का हुक्म

50 वहाँ रब ने मूसा से कहा, 51 "इसराईलियों को बताना कि जब तुम दरियाए-यरदन को पार करके मुल्के-कनान में दाखिल होगे 52 तो लाज़िम है कि तुम तमाम बाशिंदों को निकाल दो। उनके तराशे और ढाले हुए बुतों को तोड डालो और उनकी ऊँची जगहों के मंदिरों को तबाह करो। 53 मुल्क पर कब्ज़ा करके उसमें आबाद हो जाओ, क्योंकि मैंने यह मुल्क तुम्हें दे दिया है। यह मेरी तरफ से तुम्हारी मौस्सी मिलकियत है। 54 मुल्क को मुख्तलिफ़ कबीलों और खानदानों में कुरा डालकर तकसीम करना। हर खानदान के अफ़राद की तादाद का लिहाज़ रखना। बड़े खानदान को निसबतन ज़्यादा ज़मीन देना और छोटे खानदान को निसबतन कम ज़मीन। 55 लेकिन अगर तुम मुल्क के बाशिंदों को नहीं निकालोगे तो बचे हुए तुम्हारी आँखों में खार और तुम्हारे पहलुओं में काँट बनकर तुम्हें उस मुल्क में तंग करेगे जिसमें तुम आबाद होगे। 56 फिर मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो उनके साथ करना चाहता हूँ।"

## 34

मुल्के-कनान की सरहदें

1 रब ने मूसा से कहा, 2 “इसराइलियों को बताना कि जब तुम उस मुल्क में दाखिल होंगे जो मैं तुम्हें मीरास में दूँगा तो उस की सरहदें यह होंगी :

3 उस की जुन्बी सरहद दशते-सीन में अदोम की सरहद के साथ साथ चलेगी। मशरिक में वह बहीराए-मुरदार के जुन्बी साहिल से शुरू होगी, फिर इन जगहों से होकर मगरिब की तरफ गुजरेगी : 4 दरीए-अक्रब्बीम के जुन्ब में से, दशते-सीन में से, कादिस-बरनीअ के जुन्ब में से हसर-अद्गर और अज़मून में से। 5 वहाँ से वह मुडकर मिसर की सरहद पर वाके वादीए-मिसर के साथ साथ बहीराए-स्म तक पहुँचेगी। 6 उस की मगरिबी सरहद बहीराए-स्म का साहिल होगा। 7 उस की शिमाली सरहद बहीराए-स्म से लेकर इन जगहों से होकर मशरिक की तरफ गुजरेगी : होर पहाड़, 8 लबो-हमात, सिदाद, 9 जिफ्रन और हसर-एनान। हसर-एनान शिमाली सरहद का सबसे मशरिकी मकाम होगा। 10 उस की मशरिकी सरहद शिमाल में हसर-एनान से शुरू होगी। फिर वह इन जगहों से होकर जुन्ब की तरफ गुजरेगी : सिफाम, 11 रिबला जो ऐन के मशरिक में है और किन्नरत यानी गलील की झील के मशरिक में वाके पहाड़ी इलाका। 12 इसके बाद वह दरियाए-यरदन के किनारे किनारे गुजरती हुई बहीराए-मुरदार तक पहुँचेगी। यह तुम्हारे मुल्क की सरहदें होंगी।”

13 मूसा ने इसराइलियों से कहा, “यह वही मुल्क है जिसे तुम्हें कुरा डालकर तकसीम करना है। रब ने हुक्म दिया है कि उसे बाकी साठे नौ कबीलों को देना है। 14 क्योंकि अढाई कबीलों के खानदानों को उनकी मीरास मिल चुकी है यानी रूबिन और जद के पूरे कबीले और मनस्सी के आधे कबीले को। 15 उन्हें यहाँ, दरियाए-यरदन के मशरिक में यरीह के सामने जमीन मिल चुकी है।”

मुल्क तकसीम करने के ज़िम्मादार आदर्मी

16 रब ने मूसा से कहा, 17 “इलियज़र इमाम और यशुअ बिन नून लोगों के लिए मुल्क तकसीम करें। 18 हर कबीले के एक एक राहमुमा को भी चुनना ताकि वह तकसीम करने में मदद करे। जिनको तुम्हें चुनना है उनके नाम यह हैं :

19 यहदाह के कबीले का कालिब बिन यफुन्ना,

20 शमौन के कबीले का समुएल बिन अम्मीहद,

21 बिनयमीन के कबीले का इलीदाद बिन किस्लोन,

22 दान के कबीले का बुक्की बिन युगली,

23 मनस्सी के कबीले का हन्नियेल बिन अफूद,

24 इफराईम के कबीले का कमुएल बिन सिफतान,

25 ज़बलून के कबीले का इलीसफन बिन फरनाक,

26 इशाकार के कबीले का फलतियेल बिन अज़्जान,

27 आशर के कबीले का अखीहद बिन शल्मी,

28 नफताली के कबीले का फिदाहेल बिन अम्मीहद।”

29 रब ने इन्हीं आदमियों को मुल्क को इसराइलियों में तकसीम करने की ज़िम्मादारी दी।

## 35

लावियों के लिए शहर

1 इसराइली अब तक मोआब के मैदानी इलाके में दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर यरीह के सामने थे। वहाँ रब ने मूसा से कहा,

2 “इसराइलियों को बता दे कि वह लावियों को अपनी मिली हुई जमीनों में से रहने के लिए शहर दें। उन्हें शहरों के इर्दगिर्द मवेशी चराने की जमीन भी मिले। 3 फिर लावियों के पास रहने के लिए शहर और अपने जानवर चराने के लिए जमीन होगी। 4 चराने के लिए जमीन शहर के इर्दगिर्द होगी, और चारों तरफ का फासला फसलीयों से 1,500 फुट हो। 5 चराने की यह जमीन मुरब्बा शकल की होगी जिसके हर पहलू का फासला 3,000 फुट हो। शहर इस मुरब्बा शकल के बीच में हो। यह रकबा शहर के बाशिंदों के लिए हो ताकि वह अपने मवेशी चरा सकें।

गैरइरादी खन्नेज़ी के लिए पनाह के शहर

6-7 लावियों को कुल 48 शहर देना। इनमें से छः पनाह के शहर मुकर्रर करना। उनमें ऐसे लोग पनाह ले सकेंगे जिनके हाथों गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो। 8 हर कबीला लावियों को अपने इलाके के रकबे के मुताबिक शहर दे। जिस

कबीले का इलाका बड़ा है उसे लावियों को ज्यादा शहर देने हैं जबकि जिस कबीले का इलाका छोटा है वह लावियों को कम शहर दे।”

9 फिर रब ने मूसा से कहा, 10 “इसराईलियों को बताना कि दरियाए-यरदन को पार करने के बाद 11 कुछ पनाह के शहर मुर्कर कराना। उनमें वह शख्स पनाह ले सकेगा जिसके हाथों गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो। 12 वहाँ वह इतकाम लेनेवाले से पनाह ले सकेगा और जमात की अदालत के सामने खड़े होने से पहले मारा नहीं जा सकेगा। 13 इसके लिए छः शहर चुन लो। 14 तीन दरियाए-यरदन के मशरिक में और तीन मुल्के-कनान में हों। 15 यह छः शहर हर किसी को पनाह देंगे, चाहे वह इसराईली, परदेसी या उनके दरमियान रहनेवाला गैरशहरी हो। जिससे भी गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो वह वहाँ पनाह ले सकता है।

16-18 अगर किसी ने किसी को जान-बूझकर लोहे, पत्थर या लकड़ी की किसी चीज से मार डाला हो वह कातिल है और उसे सजाए-मौत देनी है। 19 मकतूल का सबसे करीबी रिश्तेदार उसे तलाश करके मार दे। 20-21 क्योंकि जो नफरत या दुश्मनी के बाइस जान-बूझकर किसी को यों धक्का दे, उस पर कोई चीज फेंक दे या उसे मुक्का मारे कि वह मर जाए वह कातिल है और उसे सजाए-मौत देनी है।

22 लेकिन वह कातिल नहीं है जिससे दुश्मनी के बाइस नहीं बल्कि इतफाक से और गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो, चाहे उसने उसे धक्का दिया, कोई चीज उस पर फेंक दी 23 या कोई पत्थर उस पर गिरने दिया। 24 अगर ऐसा हुआ तो लाजिम है कि जमात इन हिदायत के मुताबिक उसके और इतकाम लेनेवाले के दरमियान फैसला करे। 25 अगर मुलजिम बेकूसर है तो जमात उस की हिफाजत करके उसे पनाह के उस शहर में वापस ले जाए जिसमें उसने पनाह ली है। वहाँ वह मुकद्दस तेल से मसह किए गए इमामे-आजम की मौत तक रहे। 26 लेकिन अगर यह शख्स इससे पहले पनाह के शहर से निकले तो वह महफूज नहीं होगा। 27 अगर उसका इतकाम लेनेवाले से सामना हो जाए तो इतकाम लेनेवाले को उसे मार डालने की इजाजत होगी। अगर वह ऐसा करे तो बेकूसर रहेगा। 28 पनाह लेनेवाला इमामे-आजम की वफात तक पनाह के शहर में रहे। इसके बाद ही वह अपने घर वापस जा सकता है। 29 यह उसूल दायमी है। जहाँ भी तुम रहते हो तुम्हें हमेशा इन पर अमल करना है।

30 जिस पर कल्ल का इलजाम लगाया गया हो उसे सिर्फ इस सूत्र में सजाए-मौत दी जा सकती है कि कम अज्र कम दो गवाह हों। एक गवाह काफ़ी नहीं है।

31 कातिल को जरूर सजाए-मौत देना। खाह वह इससे बचने के लिए कोई भी मुआवजा दे उसे आज़ाद न छोड़ना बल्कि सजाए-मौत देना। 32 उस शख्स से भी पैसे कबूल न करना जिससे गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो और जो इस सबब से पनाह के शहर में रह रहा है। उसे इजाजत नहीं कि वह पैसे देकर पनाह का शहर छोड़े और अपने घर वापस चला जाए। लाजिम है कि वह इसके लिए इमामे-आजम की वफात का इंतजार करे।

33 जिस मुल्क में तुम रहते हो उस की मुकद्दस हालत को नापाक न करना। जब किसी को उसमें कल्ल किया जाए तो वह नापाक हो जाता है। जब इस तरह खून बहता है तो मुल्क की मुकद्दस हालत सिर्फ उस शख्स के खून बहने से बहाल हो जाती है जिसने यह खून बहाया है। यानी मुल्क का सिर्फ कातिल की मौत से ही कफफारा दिया जा सकता है। 34 उस मुल्क को नापाक न करना जिसमें तुम आबाद हो और जिसमें मैं सुकूनत करता हूँ। क्योंकि मैं रब हूँ जो इसराईलियों के दरमियान सुकूनत करता हूँ।”

## 36

एक कबीले की मौरूसी ज़मीन शायी से दूसरे कबीले में मुंतकिल नहीं हो सकती

1 एक दिन जिलियाद बिन मकरी बिन मनस्सी बिन यूसुफ के कुंभे से निकले हुए आबाई घरानों के सरपरस्त मूसा और उन सरदारों के पास आए जो दीनार आबाई घरानों के सरपरस्त थे। 2 उन्होंने कहा, “रब ने आपको हुक्म दिया था कि आप कुरा डालकर मुल्क को इसराईलियों में तकसीम करें। उस वक़्त उसने यह भी कहा था कि हमारे भाई सिलाफिहाद की बेटियों को उस की मौरूसी ज़मीन मिलनी है। 3 अगर वह इसराईल के किसी और कबीले के मर्दों से शायी करें तो फिर यह ज़मीन जो हमारे कबीले का मौरूसी हिस्सा है उस कबीले का मौरूसी हिस्सा बनेगी और हम उससे महम्म हो जाएंगे। फिर हमारा क़बायली इलाका छोटा हो जाएगा। 4 और अगर हम यह ज़मीन वापस भी खरीदें तो भी वह अगले बहाली के साल में दूसरे कबीले को वापस चली जाएगी जिसमें इन औरतों ने शायी की है। इस तरह वह हमेशा के लिए हमारे हाथ से निकल जाएगी।”

5 मूसा ने रब के हुक्म पर इसराईलियों को बताया, “जिलियाद के मर्द हक-बजानिब हैं। 6 इसलिए रब की हिदायत यह है कि सिलाफिहाद की बेटियों को हर आदमी से शायी करने की इजाजत है, लेकिन सिर्फ इस सूत्र में कि वह उनके अपने

कबीले का हो। <sup>7</sup> इस तरह एक कबीले की मौस्सी जमीन किसी दूसरे कबीले में मुंतकिल नहीं होगी। लाज़िम है कि हर कबीले का पूरा इलाका उसी के पास रहे।

<sup>8</sup> जो भी बेटी मीरास में जमीन पाती है उसके लिए लाज़िम है कि वह अपने ही कबीले के किसी मर्द से शादी करे ताकि उस की जमीन कबीले के पास ही रहे। <sup>9</sup> एक कबीले की मौस्सी जमीन किसी दूसरे कबीले को मुंतकिल करने की इजाज़त नहीं है। लाज़िम है कि हर कबीले का पूरा मौस्सी इलाका उसी के पास रहे।”

<sup>10-11</sup> सिलाफिहाद की बेटियों महलाह, तिरज़ा, हुजलाह, मिलकाह और नुआह ने वैसा ही किया जैसा रब ने मूसा को बताया था। उन्होंने अपने चचाज़ाद भाइयों से शादी की। <sup>12</sup> चूँकि वह भी मनस्सी के कबीले के थे इसलिए यह मौस्सी जमीन सिलाफिहाद के कबीले के पास रही।

<sup>13</sup> रब ने यह अहकाम और हिदायात इसराइलियों को मूसा की मारिफत दी जब वह मोआब के मैदानी इलाके में दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर यरीह के सामने खैमाज़न थे।

## इस्तिस्ना

मूसा इसराइलियों से मुखातिब होता है

1 इस किताब में वह बातें दर्ज हैं जो मूसा ने तमाम इसराइलियों से कही जब वह दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर बायाबान में थे। वह यरदन की वादी में सूफ के करीब थे। एक तरफ फ़ारान शहर था और दूसरी तरफ तोफल, लाबन, हसीरात और दीज़हब के शहर थे। 2 अगर अदोम के पहाड़ी इलाके से होकर जाएँ तो होरिब यानी सीना पहाड़ से कादिस-बरनीअ तक का सफ़र 11 दिन में तय किया जा सकता है।

3 इसराइलियों को मिसर से निकले 40 साल हो गए थे। इस साल के ग्यारहवें माह के पहले दिन मूसा ने उन्हें सब कुछ बताया जो रब ने उसे उन्हें बताने को कहा था। 4 उस वक्त वह अमोरियों के बादशाह सीहोन को शिकस्त दे चुका था जिसका दाफ़्त-हुकूमत हसबोन था। बसन के बादशाह ओज पर भी फ़तह हासिल हो चुकी थी जिसकी हुकूमत के मरकज़ अस्तारात और इदरई थे।

5 वहाँ, दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर जो मोआब के इलाके में था मूसा अल्लाह की शरीअत की तशरीह करने लगा। उसने कहा,

6 जब तुम होरिब यानी सीना पहाड़ के पास थे तो रब हमारे ख़ुदा ने हमसे कहा, “तुम काफी देर से यहाँ ठहरे हुए हो। 7 अब इस जगह को छोड़कर आगे मुल्के-कनान की तरफ़ बढ़ो। अमोरियों के पहाड़ी इलाके और उनके पड़ोस की कौमों के पास जाओ जो यरदन के मैदानी इलाके में आबाद हैं। पहाड़ी इलाके में, मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके में, जुनूब के दशते-नजब में, साहिली इलाके में, मुल्के-कनान में और लुबनान में दरियाए-फ़ुरात तक चले जाओ। 8 मैंने तुम्हें यह मुल्क दे दिया है। अब जाकर उस पर कब्ज़ा कर लो। क्योंकि रब ने कसम खाकर तुम्हारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब से वादा किया था कि मैं यह मुल्क तुम्हें और तुम्हारी औलाद को दूँगा।”

राहनुमा मुक़र्रर किए गए

9 उस वक्त मैंने तुमसे कहा, “मैं अकेला तुम्हारी राहनुमाई करने की जिम्मादारी नहीं उठा सकता। 10 रब तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारी तादाद इतनी बढ़ा दी है कि आज तुम आसमान के सितारों की मानिंद बेशुमार हो। 11 और रब तुम्हारे बापदादा का ख़ुदा करे कि तुम्हारी तादाद मज़ीद हजार गुना बढ़ जाए। वह तुम्हें वह बरकत दे जिसका वादा उसने किया है। 12 लेकिन मैं अकेला ही तुम्हारा बोझ उठाने और झगड़ों को निपटाने की जिम्मादारी नहीं उठा सकता। 13 इसलिए अपने हर क़बीले में से कुछ ऐसे दानिशमंद और समझदार आदमी चुन लो जिनकी लियाक़त को लोग मानते हैं। फिर मैं उन्हें तुम पर मुक़र्रर करूँगा।”

14 यह बात तुम्हें पसंद आई। 15 तुमने अपने में से ऐसे राहनुमा चुन लिए जो दानिशमंद थे और जिनकी लियाक़त को लोग मानते थे। फिर मैंने उन्हें हज़ार हज़ार, सौ सौ और पचास पचास मर्दों पर मुक़र्रर किया। यों वह क़बीलों के निगहबान बन गए। 16 उस वक्त मैंने उन काज़ियों से कहा, “अदालत करते वक्त हर एक की बात गौर से सुनकर ग़ैरजानिबदार फ़ैसले करना, चाहे दो इसराइली फ़रीक एक दूसरे से झगड़ा कर रहे हों या मामला किसी इसराइली और परदेसी के दरमियान हो। 17 अदालत करते वक्त जानिबदारी न करना। छोटे और बड़े की बात सुनकर दोनों के साथ एक जैसा सुल्क करना। किसी से मत डरना, क्योंकि अल्लाह ही ने तुम्हें अदालत करने की जिम्मादारी दी है। अगर किसी मामले में फ़ैसला करना तुम्हारे लिए मुश्किल हो तो उसे मुझे पेश करो। फिर मैं ही उसका फ़ैसला करूँगा।” 18 उस वक्त मैंने तुम्हें सब कुछ बताया जो तुम्हें करना था।

मुल्के-कनान में जासूस

19 हमने वैसा ही किया जैसा रब ने हमें कहा था। हम होरिब से रवाना होकर अमोरियों के पहाड़ी इलाके की तरफ़ बढ़े। सफ़र करते करते हम उस वर्षी और होलनाक रेगिस्तान में से गुज़र गए जिसे तुमने देख लिया है। आख़िरकार हम कादिस-बरनीअ पहुँच गए। 20 वहाँ मैंने तुमसे कहा, “तुम अमोरियों के पहाड़ी इलाके तक पहुँच गए हो जो रब हमारा ख़ुदा हमें देनेवाला है। 21 देख, रब तेरे ख़ुदा ने तुझे यह मुल्क दे दिया है। अब जाकर उस पर कब्ज़ा कर ले जिस तरह रब तेरे बापदादा के ख़ुदा ने तुझे बताया है। मत डरना और बेदिल न हो जाना!”

22 लेकिन तुम सब मेरे पास आए और कहा, “क्यों न हम जाने से पहले कुछ आदमी भेजें जो मुल्क के हालात दरियाफ़्त करें और वापस आकर हमें उस रास्ते के बारे में बताएँ जिस पर हमें जाना है और उन शहरों के बारे में इतला दें जिनके पास हम पहुँचेंगे।” 23 यह बात मुझे पसंद आई। मैंने इस काम के लिए हर क़बीले के एक आदमी को चुनकर भेज दिया। 24 जब

यह बारह आदमी पहाड़ी इलाके में जाकर वादीए-इस्काल में पहुँचे तो उस की तफतीश की। 25 फिर वह मुल्क का कुछ फल लेकर लौट आए और हमें मुल्क के बारे में इतला देकर कहा, “जो मुल्क रब हमारा खुदा हमें देनेवाला है वह अच्छा है।”

26 लेकिन तुम जाना नहीं चाहते थे बल्कि सरकशी करके रब अपने खुदा का हुक्म न माना। 27 तुमने अपने खैमों में बुड़बुडाते हुए कहा, “रब हमसे नफरत रखता है। वह हमें मिसर से निकाल लाया है ताकि हमें अमोरियों के हाथों हलाक करवाए। 28 हम कहाँ जाएँ? हमारे भाइयों ने हमें बेदिल कर दिया है। वह कहते हैं, ‘वहाँ के लोग हमसे ताकतवर और दराजकद हैं। उनके बड़े बड़े शहरों की फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं। वहाँ हमने अनाक की औलाद भी देखी जो देवकामत हैं।’”

29 मैंने कहा, “न घबराओ और न उनसे खौफ खाओ। 30 रब तुम्हारा खुदा तुम्हारे आगे आगे चलता हुआ तुम्हारे लिए लड़ेगा। तुम खुद देख चुके हो कि वह किस तरह मिसर 31 और रेगिस्तान में तुम्हारे लिए लड़ा। यहाँ भी वह ऐसा ही करेगा। तू खुद गवाह है कि बयाबान में पूरे सफर के दौरान रब तुझे यों उठाए फिरा जिस तरह बाप अपने बेटे को उठाए फिरता है। इस तरह चलते चलते तुम यहाँ तक पहुँच गए।” 32 इसके बावजूद तुमने रब अपने खुदा पर भरोसा न रखा। 33 तुमने यह बात नज़रंदाज़ की कि वह सफर के दौरान रात के वक्त आग और दिन के वक्त बादल की सूरत में तुम्हारे आगे आगे चलता रहा ताकि तुम्हारे लिए खैमे लगाने की जगहें मालूम करे और तुम्हें रास्ता दिखाए।

34 जब रब ने तुम्हारी यह बातें सुनी तो उसे गुस्सा आया और उसने क्रसम खाकर कहा, 35 “इस शरीर नसल का एक मर्द भी उस अच्छे मुल्क को नहीं देखेगा अगरचे मैंने क्रसम खाकर तुम्हारे बापदादा से वादा किया था कि मैं उसे उन्हें दूँगा। 36 सिर्फ़ कालिब बिन यफुन्ना उसे देखेगा। मैं उसे और उस की औलाद को वह मुल्क दूँगा जिसमें उसने सफर किया है, क्योंकि उसने पूरे तौर पर रब की पैरवी की।”

37 तुम्हारी वजह से रब मुझसे भी नाराज़ हुआ और कहा, “तू भी उसमें दाखिल नहीं होगा। 38 लेकिन तेरा मददगार यशूअ बिन नून दाखिल होगा। उस की हौसलाअफज़ाई कर, क्योंकि वह मुल्क पर कब्ज़ा करने में इसराईल की राहनुमाई करेगा।”

39 तुमसे रब ने कहा, “तुम्हारे बच्चे जो अभी अच्छे और बुरे में इम्तियाज़ नहीं कर सकते, वही मुल्क में दाखिल होंगे, वही बच्चे जिनके बारे में तुमने कहा कि दुश्मन उन्हें मुल्के-कनान में छीन लेंगे। उन्हें मैं मुल्क दूँगा, और वह उस पर कब्ज़ा करेंगे। 40 लेकिन तुम खुद आगे न बढ़ो। पीछे मुड़कर दुबारा रेगिस्तान में बहरे-कुलजुम की तरफ सफर करो।”

41 तब तुमने कहा, “हमने रब का गुनाह किया है। अब हम मुल्क में जाकर लड़ेंगे, जिस तरह रब हमारे खुदा ने हमें हुक्म दिया है।” चुनौचे यह सोचते हुए कि उस पहाड़ी इलाके पर हमला करना आसान होगा, हर एक मुसल्लह हुआ। 42 लेकिन रब ने मुझसे कहा, “उन्हें बताना कि वहाँ जंग करने के लिए न जाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। तुम अपने दुश्मनों के हाथों शिकस्त खाओगे।”

43 मैंने तुम्हें यह बताया, लेकिन तुमने मेरी न सुनी। तुमने सरकशी करके रब का हुक्म न माना बल्कि मगसूर होकर पहाड़ी इलाके में दाखिल हुए। 44 वहाँ के अमोरी भाशिदे तुम्हारा सामना करने निकले। वह शहद की मक्खियों के गोल की तरह तुम पर टूट पड़े और तुम्हारा ताकुकुब करके तुम्हें सईर से हूरमा तक मारते गए।

45 तब तुम वापस आकर रब के सामने जारो-कतार रोने लगे। लेकिन उसने तबज्जुह न दी बल्कि तुम्हें नज़रंदाज़ किया। 46 इसके बाद तुम बहुत दिनों तक कादिस-बरनीअ में रहे।

## 2

### रेगिस्तान में दुबारा सफर

1 फिर जिस तरह रब ने मुझे हुक्म दिया था हम पीछे मुड़कर रेगिस्तान में बहरे-कुलजुम की तरफ सफर करने लगे। काफी देर तक हम सईर यानी अदोम के पहाड़ी इलाके के किनारे किनारे फिरते रहे।

2 एक दिन रब ने मुझसे कहा, 3 “तुम बहुत देर से इस पहाड़ी इलाके के किनारे किनारे फिर रहे हो। अब शिमाल की तरफ सफर करो। 4 कौम को बताना, आगले दिनों में तुम सईर के मुल्क में से गुज़रोगे जहाँ तुम्हारे भाई एसौ की औलाद आबाद है। वह तुमसे डरेंगे। तो भी बड़ी एहतियात से गुज़रना। 5 उनके साथ जंग न छेड़ना, क्योंकि मैं तुम्हें उनके मुल्क का एक मुरब्बा फ़ुट भी नहीं दूँगा। मैंने सईर का पहाड़ी इलाका एसौ और उस की औलाद को दिया है। 6 लाज़िम है कि तुम खाने और पीने की तमाम ज़रूरियात पैसे देकर खरीदो।”

7 जो भी काम तुने किया है रब ने उस पर बरकत दी है। इस वसी रेगिस्तान में पूरे सफर के दौरान उसने तेरी निगहबानी की। इन 40 सालों के दौरान रब तेरा खुदा तेरे साथ था, और तेरी तमाम ज़रूरियात पूरी होती रही।

8 चुनौचे हम सईर को छोड़कर जहाँ हमारे भाई एसौ की औलाद आबाद थी दूसरे रास्ते से आगे निकले। हमने वह रास्ता छोड़ दिया जो ऐलात और अस्थून-जाबर के शहरों से बहीराए-मुरदार तक पहुँचाता है और मोआब के बयाबान की तरफ बढ़ने



लगे।<sup>9</sup> वहाँ रब ने मुझसे कहा, “मोआब के बाशियों की मुखालफत न करना और न उनके साथ जंग छेड़ना, क्योंकि मैं उनके मुल्क का कोई भी हिस्सा तुझे नहीं दूँगा। मैंने आर शहर को लूत की औलाद को दिया है।”

10 पहले ऐमी वहाँ रहते थे जो अनाक की औलाद की तरह ताकतवर, दराज़कद और तादाद में ज्यादा थे।<sup>11</sup> अनाक की औलाद की तरह वह रफ़ाइयों में शमार किए जाते थे, लेकिन मोआबी उन्हें ऐमी कहते थे।

12 इसी तरह कदीम ज़माने में होरी सईर में आबाद थे, लेकिन एसौ की औलाद ने उन्हें वहाँ से निकाल दिया था। जिस तरह इसराइलियों ने बाद में उस मुल्क में किया जो रब ने उन्हें दिया था उसी तरह एसौ की औलाद बढ़ते बढ़ते होरियों को तबाह करके उनकी जगह आबाद हुए थे।

13 रब ने कहा, “अब जाकर वादीए-ज़िरद को उबर करो।” हमने ऐसा ही किया।<sup>14</sup> हमें कादिस-बरनीअ से खाना हुए 38 साल हो गए थे। अब वह तमाम आदमी मर चुके थे जो उस वक़्त जंग करने के काबिल थे। वैसा ही हुआ था जैसा रब ने क़राम खाकर कहा था।<sup>15</sup> रब की मुखालफत के बाइस आखिरकार ख़ैमागाह में उस नसल का एक मर्द भी न रहा।<sup>16</sup> जब वह सब मर गए थे<sup>17</sup> तब रब ने मुझसे कहा,<sup>18</sup> “आज तुम्हें आर शहर से होकर मोआब के इलाके में से गुज़रना है।<sup>19</sup> फिर तुम अम्मोनियों के इलाके तक पहुँचोगे। उनकी भी मुखालफत न करना, और न उनके साथ जंग छेड़ना, क्योंकि मैं उनके मुल्क का कोई भी हिस्सा तुम्हें नहीं दूँगा। मैंने यह मुल्क लूत की औलाद को दिया है।”

20 हकीकत में अम्मोनियों का मुल्क भी रफ़ाइयों का मुल्क समझा जाता था जो कदीम ज़माने में वहाँ आबाद थे। अम्मोनी उन्हें ज़मज़ूमी कहते थे,<sup>21</sup> और वह देवकामत थे, ताकतवर और तादाद में ज्यादा। वह अनाक की औलाद जैसे दराज़कद थे। जब अम्मोनी मुल्क में आए तो रब ने रफ़ाइयों को उनके आगे आगे तबाह कर दिया। चुनौचे अम्मोनी बढ़ते बढ़ते उन्हें निकालते गए और उनकी जगह आबाद हुए,<sup>22</sup> बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने एसौ की औलाद के आगे आगे होरियों को तबाह कर दिया था जब वह सईर के मुल्क में आए थे। वहाँ भी वह बढ़ते बढ़ते होरियों को निकालते गए और उनकी जगह आबाद हुए।<sup>23</sup> इसी तरह एक और कदीम कौम बनाम अब्वी को भी उसके मुल्क से निकाला गया। अब्वी गज्जा तक आबाद थे, लेकिन जब कफ़तूर कफ़तूर यानी क्रेते से आए तो उन्होंने उन्हें तबाह कर दिया और उनकी जगह आबाद हो गए।

### सीहोन बादशाह से जंग

24 रब ने मूसा से कहा, “अब जाकर वादीए-अरनोन को उबर करो। यों समझो कि मैं हसबोन के अमोरी बादशाह सीहोन को उसके मुल्क समेत तुम्हारे हवाले कर चुका हूँ। उस पर कब्ज़ा करना शुरू करो और उसके साथ जंग करने का मौका ढूँडो।<sup>25</sup> इसी दिन से मैं तमाम कौमों में तुम्हारे बारे में दहशत और ख़ौफ पैदा करूँगा। वह तुम्हारी ख़बर सुनकर ख़ौफ के मारे थरथराएँगी और काँपेगी।”

26 मैंने दशते-कदीमात से हसबोन के बादशाह सीहोन के पास कासिद भेजे। मेरा पैगाम नफ़रत और मुखालफत से खाली था। वह यह था,<sup>27</sup> “हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें। हम शाहराह पर ही रहेंगे और उससे न बाई, न दाई तरफ हटेंगे।<sup>28</sup> हम खाने और पीने की तमाम ज़रूरियात के लिए मुनासिब पैसे देंगे। हमें पैदल अपने मुल्क में से गुज़रने दें,<sup>29</sup> जिस तरह सईर के बाशियों एसौ की औलाद और आर के रहनेवाले मोआबियों ने हमें गुज़रने दिया। क्योंकि हमारी मनज़िल दरियाए-यरदन के मगरिब में है, वह मुल्क जो रब हमारा ख़ुदा हमें देनेवाला है।”

30 लेकिन हसबोन के बादशाह सीहोन ने हमें गुज़रने न दिया, क्योंकि रब तुम्हारे ख़ुदा ने उसे बे-लचक और हमारी बात से इनकार करने पर आमादा कर दिया था ताकि सीहोन हमारे काबू में आ जाए। और बाद में ऐसा ही हुआ।<sup>31</sup> रब ने मुझसे कहा, “यों समझ ले कि मैं सीहोन और उसके मुल्क को तेरे हवाले करने लगा हूँ। अब निकलकर उस पर कब्ज़ा करना शुरू करो।”

32 जब सीहोन अपनी सारी फ़ौज लेकर हमारा मुकाबला करने के लिए यहज़ आया<sup>33</sup> तो रब हमारे ख़ुदा ने हमें पूरी फ़तह बरख़्शी। हमने सीहोन, उसके बेटों और पूरी कौम को शिकस्त दी।<sup>34</sup> उस वक़्त हमने उसके तमाम शहरों पर कब्ज़ा कर लिया और उनके तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को मार डाला। कोई भी न बचा।<sup>35</sup> हमने सिर्फ़ मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

36 वादीए-अरनोन के किनारे पर वाक़े अरोईर से लेकर जिलियाद तक हर शहर को शिकस्त माननी पड़ी। इसमें वह शहर भी शामिल था जो वादीए-अरनोन में था। रब हमारे ख़ुदा ने उन सबको हमारे हवाले कर दिया।<sup>37</sup> लेकिन तुमने अम्मोनियों का मुल्क छोड़ दिया और न दरियाए-यबबोक के इर्दगिर्द के इलाके, न उसके पहाड़ी इलाके के शहरों को छोड़ा, क्योंकि रब हमारे ख़ुदा ने ऐसा करने से तुम्हें मना किया था।

## 3

1 इसके बाद हम शिमाल में बसन की तरफ बढ़ गए। बसन का बादशाह ओज अपनी तमाम फौज के साथ निकलकर हमारा मुकाबला करने के लिए इदरई आया। 2 रब ने मुझे कहा, “उससे मत डर। मैं उसे, उस की पूरी फौज और उसका मुल्क तेरे हवाले कर चुका हूँ। उसके साथ वह कुछ कर जो तूने अमोरी बादशाह सीहोन के साथ किया जो हसबोन में हुकूमत करता था।”

3 ऐसा ही हुआ। रब हमारे खुदा की मदद से हमने बसन के बादशाह ओज और उस की तमाम क्रौम को शिकस्त दी। हमने सबको हलाक कर दिया। कोई भी न बचा। 4 उसी वक्त हमने उसके तमाम शहरों पर कब्जा कर लिया। हमने कुल 60 शहरों पर यानी अरजब के सारे इलाके पर कब्जा किया जिस पर ओज की हुकूमत थी। 5 इन तमाम शहरों की हिफाजत ऊँची ऊँची फसीलों और कुंडेवाले दरवाजों से की गई थी। देहात में बहुत-सी ऐसी आबादियाँ भी मिल गईं जिनकी फसीलें नहीं थीं। 6 हमने उनके साथ वह कुछ किया जो हमने हसबोन के बादशाह सीहोन के इलाके के साथ किया था। हमने सब कुछ रब के हवाले करके हर शहर को और तमाम मर्दों, औरतों और बच्चों को हलाक कर डाला। 7 हमने सिर्फ तमाम मवेशी और शहरों का लूटा हुआ माल अपने लिए बचाए रखा।

8 यों हमने उस वक्त अमोरियों के इन दो बादशाहों से दरियाए-यरदन का मशरिकी इलाका वादीए-अरनोन से लेकर हरमून पहाड़ तक छीन लिया। 9 (सैदा के बाशिदे हरमून को सिरयून कहते हैं जबकि अमोरियों ने उसका नाम सनीर रखा)। 10 हमने ओज बादशाह के पूरे इलाके पर कब्जा कर लिया। इसमें मैदाने-मुरतफा के तमाम शहर शामिल थे, नीज सलका और इदरई तक जिलियाद और बसन के पूरे इलाके।

11 बादशाह ओज देवकामत कबीले रफाई का आखिरी मर्द था। उसका लोहे का ताबूत 13 से जायद फुट लंबा और छः फुट चौड़ा था और आज तक अम्मोनियों के शहर रब्बा में देखा जा सकता है।

### यरदन के मशरिक में मुल्क की तकसीम

12 जब हमने दरियाए-यरदन के मशरिकी इलाके पर कब्जा किया तो मैंने रबिन और जद के कबीलों को उसका जुन्बी हिस्सा शहरों समेत दिया। इस इलाके की जुन्बी सरहद दरियाए-अरनोन पर वाके शहर अरोईर है जबकि शिमाल में इसमें जिलियाद के पहाड़ी इलाके का आधा हिस्सा भी शामिल है। 13 जिलियाद का शिमाली हिस्सा और बसन का मुल्क मैंने मनस्सी के आधे कबीले को दिया।

(बसन में अरजब का इलाका है जहाँ पहले ओज बादशाह की हुकूमत थी और जो रफाइयों यानी देवकामत अफराद का मुल्क कहलाता था। 14 मनस्सी के कबीले के एक आदमी बनाम याईर ने अरजब पर जसूरियों और माकातियों की सरहद तक कब्जा कर लिया था। उसने इस इलाके की बस्तियों को अपना नाम दिया। आज तक यही नाम हव्वोत-याईर यानी याईर की बस्तियाँ चलता है।)

15 मैंने जिलियाद का शिमाली हिस्सा मनस्सी के कुंबे मकीर को दिया 16 लेकिन जिलियाद का जुन्बी हिस्सा रबिन और जद के कबीलों को दिया। इस हिस्से की एक सरहद जुन्ब में वादीए-अरनोन के बीच में से गुजरती है जबकि दूसरी सरहद दरियाए-यब्बोक है जिसके पार अम्मोनियों की हुकूमत है। 17 उस की मगरिबी सरहद दरियाए-यरदन है यानी किन्नरत (गलील) की झील से लेकर बहीराए-मुरदार तक जो पिसगा के पहाड़ी सिलसिले के दामन में है।

18 उस वक्त मैंने रबिन, जद और मनस्सी के कबीलों से कहा, “रब तुम्हारे खुदा ने तुम्हें मीरास में यह मुल्क दे दिया है। लेकिन शर्त यह है कि तुम्हारे तमाम जंग करने के काबिल मर्द मुसल्लह होकर तुम्हारे इसराईली भाइयों के आगे आगे दरियाए-यरदन को पार करें। 19 सिर्फ तुम्हारी औरतें और बच्चे पीछे रहकर उन शहरों में इंतजार कर सकते हैं जो मैंने तुम्हारे लिए मुकर्रर किए हैं। तुम अपने मवेशियों को भी पीछे छोड़ सकते हो, क्योंकि मुझे पता है कि तुम्हारे बहुत ज्यादा जानवर हैं। 20 अपने भाइयों के साथ चलते हुए उनकी मदद करते रहो। जब रब तुम्हारा खुदा उन्हें दरियाए-यरदन के मगरिब में वाके मुल्क देगा और वह तुम्हारी तरह आराम और सुकून से वहाँ आबाद हो जाएँ तब तुम अपने मुल्क में वापस जा सकते हो।”

### मुसा को यरदन पार करने की इजाजत नहीं मिलती

21 साथ साथ मैंने यशुअ से कहा, “तूने अपनी आँखों से सब कुछ देख लिया है जो रब तुम्हारे खुदा ने इन दोनों बादशाहों सीहोन और ओज से किया। वह यही कुछ हर उस बादशाह के साथ करेगा जिसके मुल्क पर तू दरिया को पार करके हमला करेगा। 22 उसने न डरो। तुम्हारा खुदा खूद तुम्हारे लिए जंग करेगा।”

23 उस वक्त मैंने रब से इल्तिजा करके कहा, 24 “ऐ रब कादिरे-मुतलक, तू अपने खादिम को अपनी अजमत और क़ुदरत दिखाने लगा है। क्या आसमान या ज़मीन पर कोई और खुदा है जो तेरी तरह के अजीम काम कर सकता है? हरगिज नहीं! 25 मेहरबानी करके मुझे भी दरियाए-यरदन को पार करके उस अच्छे मुल्क यानी उस बेहतरीन पहाड़ी इलाके को लुबनान तक देखने की इजाजत दे।”

26 लेकिन तुम्हारे सबब से रब मुझेसे नाराज़ था। उसने मेरी न सुनी बल्कि कहा, “बस कर! आइंदा मेरे साथ इसका ज़िक्र न करना। 27 पिसगा की चोट्टी पर चढकर चारों तरफ नज़र दौडा। वहाँ से गौर से देख, क्योंकि तू खुद दरियाए-यरदन को उबूर नहीं करेगा। 28 अपनी जगह यशुअ को मुकर्रर कर। उस की हौसलाअफ़जाई कर और उसे मज़बूत कर, क्योंकि वही इस क्रौम को दरियाए-यरदन के मारिगर में ले जाएगा और कब्ज़ीलों में उस मुल्क को तकसीम करेगा जिसे तू पहाड से देखेगा।”

29 चुनौचे हम बैत-फ़ग़र के करीब वादी में ठहरे।

## 4

### फ़रमाँबरदारी की अशइ ज़रूरत

1 ऐ इसराईल, अब वह तमाम अहकाम ध्यान से सुन ले जो मैं तुम्हें सिखाता हूँ। उन पर अमल करो ताकि तुम ज़िंदा रहो और जाकर उस मुल्क पर कब्ज़ा करो जो रब तुम्हारे बापदादा का खुदा तुम्हें देनेवाला है। 2 जो अहकाम मैं तुम्हें सिखाता हूँ उनमें न किसी बात का इज़ाफ़ा करो और न उससे कोई बात निकालो। रब अपने खुदा के तमाम अहकाम पर अमल करो जो मैंने तुम्हें दिए हैं। 3 तुमने खुद देखा है कि रब ने बाल-फ़ग़र से क्या कुछ किया। वहाँ रब तेरे खुदा ने हर एक को हलाक कर डाला जिसने फ़ग़र के बाल देवता की पूजा की। 4 लेकिन तुममें से जितने रब अपने खुदा के साथ लिपटे रहे वह सब आज तक ज़िंदा हैं।

5 मैंने तुम्हें तमाम अहकाम यों सिखा दिए हैं जिस तरह रब मेरे खुदा ने मुझे बताया। क्योंकि लाज़िम है कि तुम उस मुल्क में इनके ताबे रहो जिस पर तुम कब्ज़ा करनेवाले हो। 6 इन्हें मानो और इन पर अमल करो तो दूसरी क्रौमों को तुम्हारी दानिशमंदी और समझ नज़र आएगी। फिर वह इन तमाम अहकाम के बारे में सुनकर कहेंगी, “वाह, यह अज़ीम क्रौम कैसी दानिशमंद और समझदार है!” 7 कौन-सी अज़ीम क्रौम के माबूद इतने करीब हैं जितना हमारा खुदा हमारे करीब है? जब भी हम मदद के लिए पुकारते हैं तो रब हमारा खुदा मौजूद होता है। 8 कौन-सी अज़ीम क्रौम के पास ऐसे मुसिफ़ाना अहकाम और हिदायत हैं जैसे मैं आज तुम्हें पूरी शरीअत सुनाकर पेश कर रहा हूँ?

9 लेकिन खबरदार, एहतियात करना और वह तमाम बातें न भूलना जो तेरी आँखों ने देखी हैं। वह उग्र-भर तेरे दिल में से मिट न जाएँ बल्कि उन्हें अपने बच्चों और पोते-पोतियों को भी बताते रहना। 10 वह दिन याद कर जब तू होरिब यानी सीना पहाड पर रब अपने खुदा के सामने हाज़िर था और उसने मुझे बताया, “क्रौम को यहाँ मेरे पास जमा कर ताकि मैं उनसे बात करूँ और वह उग्र-भर मेरा खौफ़ मानें और अपने बच्चों को मेरी बातें सिखाते रहें।”

11 उस वक़्त तुम करीब आकर पहाड के दामन में खड़े हुए। वह जल रहा था, और उस की आग आसमान तक भडक रही थी जबकि काले बादलों और गहरे अंधेरे ने उसे नज़रों से छुपा दिया। 12 फिर रब आग में से तुमसे हमकलाम हुआ। तुमने उस की बातें सुनी लेकिन उस की कोई शक़्ल न देखी। सिर्फ़ उस की आवाज़ सुनाई दी। 13 उसने तुम्हारे लिए अपने अहद यानी उन 10 अहकाम का एलान किया और हुक़म दिया कि इन पर अमल करो। फिर उसने उन्हें पथर की दो तख्तियों पर लिख दिया। 14 रब ने मुझे हिदायत की, “उन्हें वह तमाम अहकाम सिखा जिनके मुताबिक़ उन्हें चलना होगा जब वह दरियाए-यरदन को पार करके कनान पर कब्ज़ा करेंगे।”

### बुतपरस्ती के बारे में आगाही

15 जब रब होरिब यानी सीना पहाड पर तुमसे हमकलाम हुआ तो तुमने उस की कोई शक़्ल न देखी। चुनौचे खबरदार रहो 16 कि तुम ग़लत काम करके अपने लिए किसी भी शक़्ल का बुत न बनाओ। न मर्द, औरत, 17 ज़मीन पर चलनेवाले जानवर, परिंदे, 18 रेंगनेवाले जानवर या मछली का बुत बनाओ। 19 जब तू आसमान की तरफ़ नज़र उठाकर आसमान का पूरा लशकर देखे तो सूरज, चाँद और सितारों की परस्तिश और खिदमत करने की आजमाइश में न पडना। रब तेरे खुदा ने इन चीज़ों को बाकी तमाम क्रौमों को अता किया है, 20 लेकिन तुम्हें उसने मिसर के भडकते भट्टे से निकाला है ताकि तुम उस की अपनी क्रौम और उस की मीरास बन जाओ। और आज ऐसा ही हुआ है।

21 तुम्हारे सबब से रब ने मुझेसे नाराज़ होकर क़सम खाई कि तू दरियाए-यरदन को पार करके उस अच्छे मुल्क में दाख़िल नहीं होगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में देनेवाला है। 22 मैं यही इसी मुल्क में मर जाऊँगा और दरियाए-यरदन को पार नहीं करूँगा। लेकिन तुम दरिया को पार करके उस बेहतरीन मुल्क पर कब्ज़ा करोगे। 23 हर सूरत में वह अहद याद रखना जो रब तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे साथ बाँधा है। अपने लिए किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना। यह रब का हुक़म है, 24 क्योंकि रब तेरा खुदा भस्म कर देनेवाली आग है, वह गयूर खुदा है।

25 तुम मुल्क में जाकर वहाँ रहोगे। तुम्हारे बच्चे और पोते-नवासे उसमें पैदा हो जाएंगे। जब इस तरह बहुत वक़्त गुज़र जाएगा तो ख़तरा है कि तुम ग़लत काम करके किसी चीज़ की मूरत बनाओ। ऐसा कभी न करना। यह रब तुम्हारे खुदा की नज़र में बुरा है और उसे गुस्सा दिलाएगा। 26 आज आसमान और ज़मीन मेरे गवाह हैं कि अगर तुम ऐसा करो तो जल्दी से उस

मुल्क में से मिट जाओगे जिस पर तुम दरियाए-यरदन को पार करके कब्जा करोगे। तुम देर तक वहाँ जीते नहीं रहोगे बल्कि पूरे तौर पर हलाक हो जाओगे। 27 रब तुम्हें मुल्क से निकालकर मुख्तलिफ कौमों में मुंतशिर कर देगा, और वहाँ सिर्फ थोड़े ही अफ़राद बचे रहेंगे। 28 वहाँ तुम इनसान के हाथों से बने हुए लकड़ी और पत्थर के बुतों की खिदमत करोगे, जो न देख सकते, न सुन सकते, न खा सकते और न सूँघ सकते हैं।

29 वही तू रब अपने खुदा को तलाश करेगा, और अगर उसे पूरे दिलो-जान से ढूँढ़े तो वह तुझे मिल भी जाएगा। 30 जब तू इस तकलीफ में मुक़्तला होगा और यह सारा कुछ तुझ पर से गुज़रेगा फिर आखिरकार रब अपने खुदा की तरफ रूज़ करके उस की सुनेगा। 31 क्योंकि रब तेरा खुदा रहीम खुदा है। वह तुझे न तर्क करेगा और न बराबाद करेगा। वह उस अहद को नहीं भूलेगा जो उसने क़सम खाकर तेरे बापदादा से बाँधा था।

### रब ही हमारा खुदा है

32 दुनिया में इनसान की तखलीक से लेकर आज तक माजी की तफ़तीश कर। आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक खोज लगा। क्या इससे पहले कभी इस तरह का मोजिज़ाना काम हुआ है? क्या किसी ने इससे पहले इस किस्म के अज़ीम काम की ख़बर सुनी है? 33 तूने आग में से बोलती हुई अल्लाह की आवाज़ सुनी तो भी जीता बचा! क्या किसी और कौम के साथ ऐसा हुआ है? 34 क्या किसी और माबूद ने कभी ज़रत की है कि रब की तरह पूरी कौम को एक मुल्क से निकालकर अपनी मिलकियत बनाया हो? उसने ऐसा ही तुम्हारे साथ किया। उसने तुम्हारे देखते देखते मिसरियों को आजमाया, उन्हें बड़े मोजिज़े दिखाए, उनके साथ जंग की, अपनी बड़ी कुदरत और इख़्तियार का इज़हार किया और हौलनाक कामों से उन पर गालिब आ गया।

35 तुझे यह सब कुछ दिखाया गया ताकि तू जान ले कि रब खुदा है। उसके सिवा कोई और नहीं है। 36 उसने तुझे नसीहत देने के लिए आसमान से अपनी आवाज़ सुनाई। ज़मीन पर उसने तुझे अपनी अज़ीम आग दिखाई जिसमें से तूने उस की बातें सुनीं। 37 उसे तेरे बापदादा से प्यार था, और उसने तुझे जो उनकी औलाद हैं चुन लिया। इसलिए वह खुद हाज़िर होकर अपनी अज़ीम कुदरत से तुझे मिसर से निकाल लाया। 38 उसने तेरे आगे से तुझसे ज़्यादा बड़ी और ताकतवर कौमों निकाल दी ताकि तुझे उनका मुल्क मीरास में मिल जाए। आज ऐसा ही हो रहा है।

39 चुनौचे आज जान ले और ज़हन में रख कि रब आसमान और ज़मीन का खुदा है। कोई और माबूद नहीं है। 40 उसके अहकाम पर अमल कर जो मैं तुझे आज सुना रहा हूँ। फिर तू और तेरी औलाद कामयाब होंगे, और तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जो रब तुझे हमेशा के लिए दे रहा है।

### यरदन के मशरिक में पनाह के शहर

41 यह कहकर मूसा ने दरियाए-यरदन के मशरिक में पनाह के तीन शहर चुन लिए। 42 उनमें वह शख्स पनाह ले सकता था जिसने दुश्मनी की बिना पर नहीं बल्कि ज़ैरइदादी तौर पर किसी को जान से मार दिया था। ऐसे शहर में पनाह लेने के सबब से उसे बदले में क़त्ल नहीं किया जा सकता था। 43 इसके लिए रूबिन के क़बीले के लिए मैदाने-मुरतफ़ा का शहर बसर, जद के क़बीले के लिए जिलियाद का शहर रामात और मनस्सी के क़बीले के लिए बसन का शहर जौलान चुना गया।

### शरीअत का पेशलफ़ज़

44 दर्जे-ज़ैल वह शरीअत है जो मूसा ने इसराईलियों को पेश की। 45 मूसा ने यह अहकाम और हिदायात उस वक़्त पेश की जब वह मिसर से निकल कर 46 दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर थे। बैत-फ़ग़ूर उनके मुक़ाबिल था, और वह अमोरी बादशाह सीहोन के मुल्क में ख़ैमाज्जन थे। सीहोन की रिहाइश हसबोन में थी और उसे इसराईलियों से शिकस्त हुई थी जब वह मूसा की राहनुमाई में मिसर से निकल आए थे। 47 उसके मुल्क पर कब्ज़ा करके उन्होंने बसन के मुल्क पर भी फ़तह पाई थी जिसका बादशाह ओज था। इन दोनों अमोरी बादशाहों का यह पूरा इलाका उनके हाथ में आ गया था। यह इलाका दरियाए-यरदन के मशरिक में था। 48 उस की जुनूबी सरहद दरियाए-अरनोन के किनारे पर वाक़े शहर अरोईर थी जबकि उस की शिमाली सरहद सिरयून यानी हरमून पहाड़ थी। 49 दरियाए-यरदन का पूरा मशरिकी किनारा पिसगा के पहाड़ी सिलसिले के दामन में वाक़े बहीराए-मुरदार तक उसमें शामिल था।

## 5

### दस अहकाम

1 मूसा ने तमाम इसराईलियों को जमा करके कहा,

ऐ इसराईल, ध्यान से वह हिदायात और अहकाम सुन जो मैं तुम्हें आज पेश कर रहा हूँ। उन्हें सीखो और बड़ी एहतियात से उन पर अमल करो। 2 रब हमारे खुदा ने होरिब यानी सीना पहाड़ पर हमारे साथ अहद बाँधा। 3 उसने यह अहद हमारे

बापदादा के साथ नहीं बल्कि हमारे ही साथ बाँधा है, जो आज इस जगह पर ज़िंदा है। 4 रब पहाड़ पर आग में से स्वरू होकर तुमसे हमकलाम हुआ। 5 उस वक़्त मैं तुम्हारे और रब के दरमियान खड़ा हुआ ताकि तुम्हें रब की बातें सुनाऊँ। क्योंकि तुम आग से डरते थे और इसलिए पहाड़ पर न चढ़े। उस वक़्त रब ने कहा,

6 “मैं रब तेरा खुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर की गुलामी से निकाल लाया। 7 मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना।

8 अपने लिए बूत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुंद्र में हो। 9 न बूतों की परस्तिश, न उनकी खिदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब गयूर खुदा हूँ। जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुशत तक सज़ा दूँगा। 10 लेकिन जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हजार पुशतों तक मेहरबानी करूँगा।

11 रब अपने खुदा का नाम बेमक़सद या गलत मक़सद के लिए इस्तेमाल न करना। जो भी ऐसा करता है उसे रब सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ेगा।

12 सबत के दिन का ख़याल रखना। उसे इस तरह मनाना कि वह मख़सूसो-मुक़द्दस हो, उसी तरह जिस तरह रब तेरे खुदा ने तुझे हुक्म दिया है। 13 हफ़्ते के पहले छः दिन अपना काम-काज कर, 14 लेकिन सातवाँ दिन रब तेरे खुदा का आराम का दिन है। उस दिन किसी तरह का काम न करना। न तू, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा नौकर, न तेरी नौकरानी, न तेरा बैल, न तेरा गधा, न तेरा कोई और मवेशी। जो परदेसी तेरे दरमियान रहता है वह भी काम न करे। तेरे नौकर और तेरी नौकरानी को तेरी तरह आराम का मौक़ा मिलना है। 15 याद रखना कि तू मिसर में गुलाम था और कि रब तेरा खुदा ही तुझे बड़ी कुदरत और इख़्तियार से वहाँ से निकाल लाया। इसलिए उसने तुझे हुक्म दिया है कि सबत का दिन मनाना।

16 अपने बाप और अपनी माँ की इज़ज़त करना जिस तरह रब तेरे खुदा ने तुझे हुक्म दिया है। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा खुदा तुझे देनेवाला है खुशहाल होगा और देर तक जीता रहेगा।

17 कल्ल न करना।

18 ज़िना न करना।

19 चोरी न करना।

20 अपने पड़ोसी के बारे में झूटी गवाही न देना।

21 अपने पड़ोसी की बीबी का लालच न करना। न उसके घर का, न उस की ज़मीन का, न उसके नौकर का, न उस की नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे का बल्कि उस की किसी भी चीज़ का लालच न करना।”

22 रब ने तुम सबको यह अहकाम दिए जब तुम सीना पहाड़ के दामन में जमा थे। वहाँ तुमने आग, बादल और गहरे अंधेरे में से उस की जोरदार आवाज़ सुनी। यही कुछ उसने कहा और बस। फिर उसने उन्हें पत्थर की दो तख़्तियों पर लिखकर मुझे दे दिया।

**लोग रब से डरते हैं**

23 जब तुमने तारीकी से यह आवाज़ सुनी और पहाड़ की जलती हुई हालत देखी तो तुम्हारे कबीलों के राहनुमा और बुज़ुर्ग मेरे पास आए। 24 उन्होंने कहा, “रब हमारे खुदा ने हम पर अपना जलाल और अज़मत ज़ाहिर की है। आज हमने आग में से उस की आवाज़ सुनी है। हमने देख लिया है कि जब अल्लाह इनसान से हमकलाम होता है तो ज़रूरी नहीं कि वह मर जाए। 25 लेकिन अब हम क्यों अपनी जान खतरे में डालें? अगर हम मज़ीद रब अपने खुदा की आवाज़ सुनें तो यह बड़ी आग हमें भस्म कर देगी और हम अपनी जान से हाथ धो बैठेंगे। 26 क्योंकि फ़ानी इनसानों में से कौन हमारी तरह ज़िंदा खुदा को आग में से बातें करते हुए सुनकर ज़िंदा रहा है? कोई भी नहीं! 27 आप ही करीब जाकर उन तमाम बातों को सुनें जो रब हमारा खुदा हमें बताता चाहता है। फिर लौटकर हमें वह बातें सुनाएँ। हम उन्हें सुनेंगे और उन पर अमल करेंगे।”

28 जब रब ने यह सुना तो उसने मुझसे कहा, “मैंने इन लोगों की यह बातें सुन ली हैं। वह ठीक कहते हैं। 29 काश उनकी सोच हमेशा ऐसी ही हो! काश वह हमेशा इसी तरह मेरा ख़ौफ़ मानें और मेरे अहकाम पर अमल करें! अगर वह ऐसा करेंगे तो वह और उनकी औलाद हमेशा कामयाब रहेंगे। 30 जा, उन्हें बता दे कि अपने ख़ैमों में लौट जाओ। 31 लेकिन तू यहाँ मेरे पास रह ताकि मैं तुझे तमाम कवानीन और अहकाम दे दूँ। उनको लोगों को सिखाना ताकि वह उस मुल्क में उनके मुताबिक चलें जो मैं उन्हें दूँगा।”

32 चुनौचे एहतियात से उन अहकाम पर अमल करो जो रब तुम्हारे खुदा ने तुम्हें दिए हैं। उनसे न दाईं तरफ़ हटो न बाईं तरफ़। 33 हमेशा उस राह पर चलते रहो जो रब तुम्हारे खुदा ने तुम्हें बताई है। फिर तुम कामयाब होगे और उस मुल्क में देर तक जीते रहोगे जिस पर तुम कब्ज़ा करोगे।

## 6

## सबसे बड़ा हुक्म

1 यह वह तमाम अहकाम हैं जो रब तुम्हारे खुदा ने मुझे तुम्हें सिखाने के लिए कहा। उस मुल्क में इन पर अमल करना जिसमें तुम जानेवाले हो ताकि उस पर कब्जा करो। 2 उम्र-भर तू, तेरे बच्चे और पोते-नवासे रब अपने खुदा का खौफ मानें और उसके उन तमाम अहकाम पर चलें जो मैं तुझे दे रहा हूँ। तब तू देर तक जीता रहेगा। 3 ऐ इसराईल, यह मेरी बातें सुन और बड़ी एहतियात से इन पर अमल कर! फिर रब तेरे खुदा का वादा पूरा हो जाएगा कि तू कामयाब रहेगा और तेरी तादाद उस मुल्क में खूब बढ़ती जाएगी जिसमें दूध और शहद की कसरत है।

4 सुन ऐ इसराईल! रब हमारा खुदा एक ही रब है। 5 रब अपने खुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपनी पूरी ताकत से प्यार करना। 6 जो अहकाम मैं तुझे आज बता रहा हूँ उन्हें अपने दिल पर नज़र कर। 7 उन्हें अपने बच्चों के ज़हननशीन करा। यही बातें हर वक़्त और हर जगह तेरे लंबों पर हों खाह तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो। 8 उन्हें निशान के तौर पर और याददिहानी के लिए अपने बाजूओं और माथे पर लगा। 9 उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख।

10 रब तेरे खुदा का वादा पूरा होगा जो उसने कसम खाकर तेरे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ किया कि मैं तुझे कनान में ले जाऊँगा। जो बड़े और शानदार शहर उसमें हैं वह तुने खुद नहीं बनाए। 11 जो मकान उसमें हैं वह ऐसी अच्छी चीज़ों से भरे हुए हैं जो तुने उनमें नहीं रखी। जो कुएँ उसमें हैं उनको तुने नहीं खोदा। जो अंगूर और जैतून के बाग उसमें हैं उन्हें तुने नहीं लगाया। यह हकीकत याद रख। जब तू उस मुल्क में कसरत का खाना खाकर सेर हो जाएगा 12 तो खबरदार! रब को न भूलना जो तुझे मिसर की गुलामी से निकाल लाया।

13 रब अपने खुदा का खौफ मानना। सिर्फ उसी की इबादत करना और उसी का नाम लेकर कसम खाना। 14 दीगर माबूदों की पैरवी न करना। इममें तमाम पड़ोसी अक्वाम के देवता भी शामिल हैं। 15 वरना रब तेरे खुदा का ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल होकर तुझे मुल्क में से मिटा डालेगा। क्योंकि वह गयूर खुदा है और तेरे दरमियान ही रहता है।

16 रब अपने खुदा को उस तरह न आजमाना जिस तरह तुमने मस्सा में किया था। 17 ध्यान से रब अपने खुदा के अहकाम के मुताबिक चलो, उन तमाम हिदायात और कवानीन पर जो उसने तुझे दिए हैं। 18 जो कुछ रब की नज़र में दुस्त और अच्छा है वह कर। फिर तू कामयाब रहेगा, तू जाकर उस अच्छे मुल्क पर कब्जा करेगा जिसका वादा रब ने तेरे बापदादा से कसम खाकर किया था। 19 तब रब की बात पूरी हो जाएगी कि तू अपने दुश्मनों को अपने आगे आगे निकाल देगा।

20 आनेवाले दिनों में तेरे बच्चे पछेंगे, “रब हमारे खुदा ने आपको इन तमाम अहकाम पर अमल करने को क्यों कहा?” 21 फिर उन्हें जवाब देना, “हम मिसर के बादशाह फिरौन के गुलाम थे, लेकिन रब हमें बड़ी कुदरत का इज़हार करके मिसर से निकाल लाया। 22 हमारे देखते देखते उसने बड़े बड़े निशान और मोजिजे किए और मिसर, फिरौन और उसके पूरे घराने पर हौलनाक मुसीबतें भेजी। 23 उस वक़्त वह हमें वहाँ से निकाल लाया ताकि हमें लेकर वह मुल्क दे जिसका वादा उसने कसम खाकर हमारे बापदादा के साथ किया था। 24 रब हमारे खुदा ही ने हमें कहा कि इन तमाम अहकाम के मुताबिक चलो और रब अपने खुदा का खौफ मानो। क्योंकि अगर हम ऐसा करें तो फिर हम हमेशा कामयाब और ज़िंदा रहेंगे। और आज तक ऐसा ही रहा है। 25 अगर हम रब अपने खुदा के हुज़ूर रहकर एहतियात से उन तमाम बातों पर अमल करेंगे जो उसने हमें करने को कही हैं तो वह हमें रास्तबाज़ करार देगा।”

## 7

## दूसरी कनानी क्रौमों को निकालना है

1 रब तेरा खुदा तुझे उस मुल्क में ले जाएगा जिस पर तू जाकर कब्जा करेगा। वह तेरे सामने से बहुत-सी क्रौमें भगा देगा। गो यह सात क्रौमें यानी हिन्ती, जिरजासी, अमोरी, कनानी, फ़रिज़्जी, हिच्वी और यबूसी तादाद और ताकत के लिहाज़ से तुझसे बड़ी होंगी 2 तो भी रब तेरा खुदा उन्हें तेरे हवाले करेगा। जब तू उन्हें शिकस्त देगा तो उन सबको उसके लिए मखसूस करके हलाक कर देना है। न उनके साथ अहद बाँधना और न उन पर रहम करना। 3 उनमें से किसी से शादी न करना। न अपनी बेटियों का रिश्ता उनके बेटों को देना, न अपने बेटों का रिश्ता उनकी बेटियों से करना। 4 वरना वह तुम्हारे बच्चों को मेरी पैरवी से दूर करेंगे और वह मेरी नहीं बल्कि उनके देवताओं की खिदमत करेंगे। तब रब का ग़ज़ब तुम पर नाज़िल होकर जल्दी से तुम्हें हलाक कर देगा। 5 इसलिए उनकी कुरबानागाहें ढा देना। जिन पत्थरों की वह पूजा करते हैं उन्हें चकनाचूर कर देना, उनके यसीरत देवी के खंबे काट डालना और उनके बूत जला देना।

6 क्योंकि तू रब अपने खुदा के लिए मखसूसो-मुकद्दस है। उसने दुनिया की तमाम कौमों में से तुझे चुनकर अपनी कौम और खास मिलकियत बनाया। 7 रब ने क्यों तुम्हारे साथ ताल्लुक कायम किया और तुम्हें चुन लिया? क्या इस वजह से कि तुम तादाद में दीगर कौमों की निसबत ज्यादा थे? हरगिज़ नहीं! तुम तो बहुत कम थे। 8 बल्कि वजह यह थी कि रब ने तुम्हें प्यार किया और वह वादा पूरा किया जो उसने कसम खाकर तुम्हारे बापदादा के साथ किया था। इसी लिए वह फ़िया देकर तुम्हें बड़ी कुदरत से मिसर की गुलामी और उस मुल्क के बादशाह के हाथ से बचा लाया। 9 चुनौचे जान ले कि सिर्फ़ रब तेरा खुदा ही खुदा है। वह वफ़ादार खुदा है। जो उससे मुहब्बत रखते और उसके अहकाम पर अमल करते हैं उनके साथ वह अपना अहद कायम रखेगा और उन पर हज़ार पुस्तों तक मेहरबानी करेगा। 10 लेकिन उससे नफ़रत करनेवालों को वह उनके स्वरू मुनासिब सज़ा देकर बरबाद करेगा। हाँ, जो उससे नफ़रत करते हैं, उनके स्वरू वह मुनासिब सज़ा देगा और झिज़केगा नहीं।

11 चुनौचे ध्यान से उन तमाम अहकाम पर अमल कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ ताकि तू उनके मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारे। 12 अगर तू उन पर तबज़ूह दे और एहतियात से उन पर चले तो फिर रब तेरा खुदा तेरे साथ अपना अहद कायम रखेगा और तुझ पर मेहरबानी करेगा, बिलकुल उस वादे के मुताबिक़ जो उसने कसम खाकर तेरे बापदादा से किया था। 13 वह तुझे प्यार करेगा और तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जो तुझे देने का वादा उसने कसम खाकर तेरे बापदादा से किया था। तुझे बहुत औलाद बख़्शने के अलावा वह तेरे खेतों को बरकत देगा, और तुझे कसरत का अनाज, अंगूर और जैतून हासिल होगा। वह तेरे रेवड़ों को भी बरकत देगा, और तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों की तादाद बढ़ती जाएगी। 14 तुझे दीगर तमाम कौमों की निसबत कहीं ज्यादा बरकत मिलेगी। न तुझमें और न तेरे मवेशियों में बाँझपन पाया जाएगा। 15 रब हर बीमारी को तुझसे दूर रखेगा। वह तुझमें वह खतरनाक वबाएँ फैलने नहीं देगा जिनसे तू मिसर में वाकिफ़ हुआ बल्कि उन्हें उनमें फैलाएगा जो तुझसे नफ़रत रखते हैं।

16 जो भी कौमों रब तेरा खुदा तेरे हाथ में कर देगा उन्हें तबाह करना लाज़िम है। उन पर रहम की निगाह से न देखना, न उनके देवताओं की खिदमत करना, वरना तू फँस जाएगा।

17 गो तेरा दिल कहे, “यह कौमों हमसे ताकतवर है। हम किस तरह इन्हें निकाल सकते हैं?” 18 तो भी उनसे न डर। वही कुछ ज़हन में रख जो रब तेरे खुदा ने फ़िरौन और पूरे मिसर के साथ किया। 19 क्योंकि तूने अपनी आँखों से रब अपने खुदा की वह बड़ी आजमानेवाली मुसीबतें और मौजिजे, उसका वह अज़ीम इख़्तियार और कुदरत देखी जिससे वह तुझे वहाँ से निकाल लाया। वही कुछ रब तेरा खुदा उन कौमों के साथ भी करेगा जिनसे तू इस वक्त डरता है। 20 न सिर्फ़ यह बल्कि रब तेरा खुदा उनके दरमियान ज़ंवर भी भेजेगा ताकि वह भी तबाह हो जाएँ जो पहले हमलों से बचकर छुप गए हैं। 21 उनसे दहशत न खा, क्योंकि रब तेरा खुदा तेरे दरमियान है। वह अज़ीम खुदा है जिससे सब ख़ौफ़ खाते हैं। 22 वह रफ़ता रफ़ता उन कौमों को तेरे आगे से भगा देगा। तू उन्हें एकदम ख़त्म नहीं कर सकेगा, वरना जंगली जानवर तेज़ी से बढ़कर तुझे नुक़सान पहुँचाएँगे।

23 रब तेरा खुदा उन्हें तेरे हवाले कर देगा। वह उनमें इतनी सख़्त अफ़रा-तफ़री पैदा करेगा कि वह बरबाद हो जाएँगे।

24 वह उनके बादशाहों को भी तेरे काबू में कर देगा, और तू उनका नामो-निशान मिटा देगा। कोई भी तेरा सामना नहीं कर सकेगा बल्कि तू उन सबको बरबाद कर देगा।

25 उनके देवताओं के मुज़स्समे जला देना। जो चाँदी और सोना उन पर चढ़ाया हुआ है उसका लालच न करना। उसे न लेना वरना तू फँस जाएगा। क्योंकि इन चीज़ों से रब तेरे खुदा को घिन आती है। 26 इस तरह की मकरूह चीज़ अपने घर में न लाना, वरना तुझे भी उसके साथ अलग करके बरबाद किया जाएगा। तेरे दिल में उससे शदीद नफ़रत और घिन हो, क्योंकि उसे पूरे तौर पर बरबाद करने के लिए मख़सूस किया गया है।

## 8

### रब को न भूलना

1 एहतियात से उन तमाम अहकाम पर अमल करो जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। क्योंकि ऐसा करने से तुम जीते रहोगे, तादाद में बढ़ोगे और जाकर उस मुल्क पर कब्ज़ा करोगे जिसका वादा रब ने तुम्हारे बापदादा से कसम खाकर किया था।

2 वह पूरा वक्त याद रख जब रब तेरा खुदा रेगिस्तान में 40 साल तक तेरी राहनुमाई करता रहा ताकि तुझे आजिज़ करके आजमाए और मालूम करे कि क्या तू उसके अहकाम पर चलेगा कि नहीं। 3 उसने तुझे आजिज़ करके भूके होने दिया, फिर तुझे मन खिलाया जिससे न तू और न तेरे बापदादा वाकिफ़ थे। क्योंकि वह तुझे सिखाना चाहता था कि इंसान की जिंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।

4 इन 40 सालों के दौरान तैरे कपड़े न धिसे न फटे, न तैरे पाँव सूजे। 5 चुनौचे दिल में जान ले कि जिस तरह बाप अपने बेटे की तरबियत करता है उसी तरह रब हमारा खुदा हमारी तरबियत करता है।

6 रब अपने खुदा के अहकाम पर अमल करके उस की राहों पर चल और उसका खौफ मान। 7 क्योंकि वह तुझे एक बेहतरीन मुल्क में ले जा रहा है जिसमें नहरें और ऐसे चश्मे हैं जो पहाड़ियों और वादियों की ज़मीन से फूट निकलते हैं। 8 उस की पैदावार अनाज, जौ, अंगूर, अंजीर, अनार, जैतून और शहद है। 9 उसमें रोटी की कमी नहीं होगी, और तू किसी चीज़ से महसूस नहीं रहेगा। उसके पत्थरों में लोहा पाया जाता है, और खुदाई से तू उस की पहाड़ियों से तौबा हासिल कर सकेगा।

10 जब तू कसरत का खाना खाकर सेर हो जाएगा तो फिर रब अपने खुदा की तमज़ीद करना जिसने तुझे यह शानदार मुल्क दिया है। 11 खबरदार, रब अपने खुदा को न भूल और उसके उन अहकाम पर अमल करने से गुरेज़ न कर जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। 12 क्योंकि जब तू कसरत का खाना खाकर सेर हो जाएगा, तू शानदार घर बनाकर उनमें रहेगा। 13 और तैरे रेवड़, सोने-चाँदी और बाक़ी तमाम माल में इज़ाफ़ा होगा। 14 तो कही तू मग़सूर होकर रब अपने खुदा को भूल न जाए जो तुझे मिसर की गुलामी से निकाल लाया। 15 जब तू उस वसी और हौलनाक रेगिस्तान में सफ़र कर रहा था जिसमें ज़हरीले साँप और बिच्छू थे तो वही तेरी राहनुमाई करता रहा। पानी से महसूस उस इलाके में वही सख़्त पत्थर में से पानी निकाल लाया। 16 रेगिस्तान में वही तुझे मन खिलाता रहा, जिससे तैरे बापदादा वाकिफ़ न थे। इन मुश्किलत से वह तुझे आजिज़ करके आज्ञामता रहा ताकि आख़िरकार तू कामयाब हो जाए।

17 जब तुझे कामयाबी हासिल होगी तो यह न कहना कि मैंने अपनी ही कुव्वत और ताक़त से यह सब कुछ हासिल किया है। 18 बल्कि रब अपने खुदा को याद करना जिसने तुझे दौलत हासिल करने की काबिलियत दी है। क्योंकि वह आज भी उसी अहद पर कायम है जो उसने तैरे बापदादा से किया था।

19 रब अपने खुदा को न भूलना, और न दीगर माबूदों के पीछे पड़कर उन्हें सिजदा और उनकी खिदमत करना। वरना मैं खुद गवाह हूँ कि तूम यक़ीनन हलाक हो जाओगे। 20 अगर तूम रब अपने खुदा की इताअत नहीं करोगे तो फिर वह तुम्हें उन कौमों की तरह तबाह कर देगा जो तुमसे पहले इस मुल्क में रहती थीं।

## 9

मुल्क मिलने का सबब इसराईल की रास्ती नहीं है

1 सुन ऐ इसराईल! आज तू दरियाए-य़रदन को पार करनेवाला है। दूसरी तरफ़ तू ऐसी कौमों को भगा देगा जो तुझसे बड़ी और ताक़तवर हैं और जिनके शानदार शहरों की फ़सीलें आसमान से बाते करती हैं। 2 वहाँ अनाक़ी बसते हैं जो ताक़तवर और दराज़क़द हैं। तू खुद जानता है कि उनके बारे में कहा जाता है, “कौन अनाक़ियों का सामना कर सकता है?” 3 लेकिन आज जान ले कि रब तेरा खुदा तैरे आगे आगे चलते हुए उन्हें भस्म कर देनेवाली आग की तरह हलाक करेगा। वह तैरे आगे आगे उन पर काबू पाएगा, और तू उन्हें निकालकर जल्दी मिटा देगा, जिस तरह रब ने वादा किया है।

4 जब रब तेरा खुदा उन्हें तैरे सामने से निकाल देगा तो तू यह न कहना, “मैं रास्तबाज़ हूँ, इसी लिए रब मुझे लायक समझकर यहाँ लाया और यह मुल्क मीरास में दे दिया है।” यह बात हरगिज़ दुस्त नहीं है। रब उन कौमों को उनकी ग़लत हरकतों की वजह से तैरे सामने से निकाल देगा। 5 तू अपनी रास्तबाज़ी और दियातदारी की बिना पर उस मुल्क पर कब्ज़ा नहीं करेगा बल्कि रब उन्हें उनकी शरीर हरकतों के बाइस तैरे सामने से निकाल देगा। दूसरे, जो वादा उसने तैरे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याक़ूब के साथ कसम खाकर किया था उसे पूरा होना है।

6 चुनौचे जान ले कि रब तेरा खुदा तुझे तेरी रास्ती के बाइस यह अच्छा मुल्क नहीं दे रहा। हकीक़त तो यह है कि तू हटधर्म कौम है।

सोने का बछड़ा

7 याद रख और कभी न भूल कि तूने रेगिस्तान में रब अपने खुदा को किस तरह नाराज़ किया। मिसर से निकलते वक़्त से लेकर यहाँ पहुँचने तक तूम रब से सरकश रहे हो। 8 खासकर होरिब यानी सीना के दामन में तुमने रब को इतना गुस्सा दिलाया कि वह तुम्हें हलाक करने को था। 9 उस वक़्त मैं पहाड़ पर चढ़ गया था ताकि पत्थर की तख़्तियाँ यानी उस अहद की तख़्तियाँ मिल जाएँ जो रब ने तुम्हारे साथ बाँधा था। कुछ खाए पिए बौर मैं 40 दिन और रात वहाँ रहा।

10-11 जो कुछ रब ने आग में से कहा था जब तूम पहाड़ के दामन में जमा थे वही कुछ उसने अपनी उँगली से दोनों तख़्तियों पर लिखकर मुझे दिया। 12 उसने मुझे कहा, “फ़ौरन यहाँ से उतर जा। तेरी कौम जिसे तू मिसर से निकाल लाया बिगड़ गई है। वह कितनी जल्दी से मेरे अहकाम से हट गए हैं। उन्होंने अपने लिए बुत ढाल लिया है। 13 मैंने जान लिया है



कि यह कौम कितनी जिद्दी है। 14 अब मुझे छोड़ दे ताकि मैं उन्हें तबाह करके उनका नामो-निशान दुनिया में से मिटा डालूँ। उनकी जगह मैं तुझसे एक कौम बना लूँगा जो उनसे बड़ी और ताकतवर होगी।”

15 मैं मुडकर पहाड़ से उतरा जो अब तक भडक रहा था। मेरे हाथों में अहद की दोनों तख्तियाँ थीं। 16 तुम्हें देखते ही मुझे मालूम हुआ कि तुमने रब अपने खुदा का गुनाह किया है। तुमने अपने लिए बछड़े का बतु डाल लिया था। तुम कितनी जल्दी से रब की मुकर्ररा राह से हट गए थे।

17 तब मैंने तुम्हारे देखते देखते दोनों तख्तियों को जमीन पर पटखकर टुकड़े टुकड़े कर दिया। 18 एक और बार मैं रब के सामने मुँह के बल गिरा। मैंने न कुछ खाया, न कुछ पिया। 40 दिन और रात मैं तुम्हारे तमाम गुनाहों के बाइस इसी हालत में रहा। क्योंकि जो कुछ तुमने किया था वह रब को निहायत बुरा लगा, इसलिए वह गजबनाक हो गया था। 19 वह तुमसे इतना नाराज़ था कि मैं बहुत डर गया। यों लग रहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा। लेकिन इस बार भी उसने मेरी सुन ली। 20 मैंने हासून के लिए भी दुआ की, क्योंकि रब उससे भी निहायत नाराज़ था और उसे हलाक कर देना चाहता था।

21 जो बछड़ा तुमने गुनाह करके बनाया था उसे मैंने जला दिया, फिर जो कुछ बाकी रह गया उसे कुचल दिया और पीस पीसकर पौडर बना दिया। यह पौडर मैंने उस चश्मे में फेंक दिया जो पहाड़ पर से बंध रहा था।

22 तुमने रब को तबएरा, मस्सा और कन्नोट-हतावा में भी गुस्सा दिलाया। 23 कादिस-बरनीअ में भी ऐसा ही हुआ। वहाँ से रब ने तुम्हें भेजकर कहा था, “जाओ, उस मुल्क पर कब्जा करो जो मैंने तुम्हें दे दिया है।” लेकिन तुमने सरकश होकर रब अपने खुदा के हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी की। तुमने उस पर एतमाद न किया, न उस की सुनी। 24 जब से मैं तुम्हें जानता हूँ तुम्हारा रब के साथ रवैया बागियाना ही रहा है।

25 मैं 40 दिन और रात रब के सामने जमीन पर मुँह के बल रहा, क्योंकि रब ने कहा था कि वह तुम्हें हलाक कर देगा। 26 मैंने उससे मिनत करके कहा, “ऐ रब कादिर-मुतलक, अपनी कौम को तबाह न कर। वह तो तेरी ही मिलकियत है जिसे तूने फ़िघा देकर अपनी अज़ीम क़ुदरत से बचाया और बड़े इख्तियार के साथ मिसर से निकाल लाया। 27 अपने खादिमों इब्राहीम, इसहाक और याक़ब को याद कर, और इस कौम की जिद, शरीर हरकतों और गुनाह पर तबज्जुह न दे। 28 वरना मिसरी कहेंगे, ‘रब उन्हें उस मुल्क में लाने के काबिल नहीं था जिसका वादा उसने किया था, बल्कि वह उनसे नफ़रत करता था। हाँ, वह उन्हें हलाक करने के लिए रेगिस्तान में ले आया।’ 29 वह तो तेरी कौम है, तेरी मिलकियत जिसे तू अपनी अज़ीम क़ुदरत और इख्तियार से मिसर से निकाल लाया।”

## 10

### मूसा को नई तख्तियाँ मिलती हैं

1 उस वक़्त रब ने मुझसे कहा, “पत्थर की दो और तख्तियाँ तराशना जो पहली तख्तियों की मानिंद हों। उन्हें लेकर मेरे पास पहाड़ पर चढ़ आ। लकड़ी का संदूक भी बनाना। 2 फिर मैं इन तख्तियों पर दुबारा वही बातें लिखूँगा जो मैं उन तख्तियों पर लिख चुका था जो तूने तोड़ डालीं। तुम्हें उन्हें संदूक में महफूज़ रखना है।”

3 मैंने कीकर की लकड़ी का संदूक बनवाया और दो तख्तियाँ तराशी जो पहली तख्तियों की मानिंद थीं। फिर मैं दोनों तख्तियाँ लेकर पहाड़ पर चढ़ गया। 4 रब ने उन तख्तियों पर दुबारा वह दस अहकाम लिख दिए जो वह पहली तख्तियों पर लिख चुका था। (उन्हीं अहकाम का एलान उसने पहाड़ पर आग में से किया था जब तुम उसके दामन में जमा थे।) फिर उसने यह तख्तियाँ मेरे सुपुर्द कीं। 5 मैं लौटकर उतरा और तख्तियों को उस संदूक में रखा जो मैंने बनाया था। वहाँ वह अब तक है। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब ने हुक्म दिया था।

### इमामों और लावियों की खिदमत

6 (इसके बाद इसराइली बनी-याकान के कुओं से रवाना होकर मौसीरा पहुँचे। वहाँ हासून फ़ौत हुआ। उसे दफ़न करने के बाद उसका बेटा इलियज़र उस की जगह इमाम बना। 7 फिर वह आगे सफ़र करते करते जुदज़ुदा, फिर युतबाता पहुँचे जहाँ नहरें हैं।

8 उन दिनों में रब ने लावी के कबीले को अलग करके उसे रब के अहद के संदूक को उठाकर ले जाने, रब के हुज़ूर खिदमत करने और उसके नाम से बरकत देने की जिम्मादारी दी। आज तक यह उनकी जिम्मादारी रही है। 9 इस वजह से लावियों को दीगर कबीलों की तरह न हिस्सा न मीरास मिली। रब तेरा खुदा खुद उनकी मीरास है। उसने खुद उन्हें यह फ़रमाया है।)

10 जब मैंने दूसरी मरतबा 40 दिन और रात पहाड़ पर गुज़ारे तो रब ने इस दफ़ा भी मेरी सुनी और तुझे हलाक न करने पर आमादा हुआ। 11 उसने कहा, “जा, कौम की राहनुमाई कर ताकि वह जाकर उस मुल्क पर कब्जा करें जिसका वादा मैंने क़सम खाकर उनके बापदादा से किया था।”

## रब का खौफ

12 ऐ इसराईल, अब मेरी बात सुन! रब तेरा खुदा तुझसे क्या तकाजा करता है? सिर्फ यह कि तू उसका खौफ माने, उस की तमाम राहों पर चले, उसे प्यार करे, अपने पूरे दिलो-जान से उस की खिदमत करे 13 और उसके तमाम अहकाम पर अमल करे। आज मैं उन्हें तुझे तेरी बेहतरी के लिए दे रहा हूँ।

14 पूरा आसमान, जमीन और जो कुछ उस पर है, सबका मालिक रब तेरा खुदा है। 15 तो भी उसने तेरे बापदादा पर ही अपनी खास शफकत का इज़हार करके उनसे मुहब्बत की। और उसने तुम्हें चुनकर दूसरी तमाम कौमों पर तरजीह दी जैसा कि आज ज़ाहिर है। 16 खतना उस की कौम का निशान है, लेकिन ध्यान रखो कि वह न सिर्फ ज़ाहिरी बल्कि बातिनी भी हो। आइंदा अड न जाओ।

17 क्योंकि रब तुम्हारा खुदा खुदाओं का खुदा और रबबों का रब है। वह अज़ीम और जोरावर खुदा है जिससे सब खौफ खाते हैं। वह जानिबदारी नहीं करता और रिश्तव नहीं लेता। 18 वह यतीमों और बेवाओं का इनसाफ करता है। वह परदेसी से प्यार करता और उसे खुराक और पोशाक मुहैया करता है। 19 तुम भी उनके साथ मुहब्बत से पेश आओ, क्योंकि तुम भी मिसर में परदेसी थे।

20 रब अपने खुदा का खौफ मान और उस की खिदमत कर। उससे लिपटा रह और उसी के नाम की कसम खा। 21 वही तेरा फरखर है। वह तेरा खुदा है जिसने वह तमाम अज़ीम और डरावने काम किए जो तुने खुद देखे। 22 जब तेरे बापदादा मिसर गए थे तो 70 अफ़राद थे। और अब रब तेरे खुदा ने तुझे सितारों की मानिंद बेशुमार बना दिया है।

# 11

## रब से मुहब्बत रख और उस की सुन

1 रब अपने खुदा से प्यार कर और हमेशा उसके अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ार। 2 आज जान लो कि तुम्हारे बच्चों ने नहीं बल्कि तुम्हीं ने रब अपने खुदा से तरबियत पाई। तुमने उस की अज़मत, बड़े इख्तियार और कुदरत को देखा, 3 और तुम उन मोजिजों के गवाह हो जो उसने मिसर के बादशाह फिरौन और उसके पूरे मुल्क के सामने किए। 4 तुमने देखा कि रब ने किस तरह मिसरी फ़ौज को उसके घोड़ों और रथों समेत बहरे-कुलज़ूम में गरक कर दिया जब वह तुम्हारा ताक़ुब कर रहे थे। उसने उन्हें यों तबाह किया कि वह आज तक बहाल नहीं हुए।

5 तुम्हारे बच्चे नहीं बल्कि तुम ही गवाह हो कि यहाँ पहुँचने से पहले रब ने रेगिस्तान में तुम्हारी किस तरह देख-भाल की। 6 तुमने उसका इलियाब के बेटों दातन और अबीराम के साथ सुल्क देखा जो रुबिन के क़बीले के थे। उस दिन ज़मीन ने खैमागाह के अंदर मुँह खोलकर उन्हें उनके घरानों, डेरों और तमाम जानदारों समेत हडप कर लिया।

7 तुमने अपनी ही आँखों से रब के यह तमाम अज़ीम काम देखे हैं। 8 चुनोंचे उन तमाम अहकाम पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ ताकि तुम्हें वह ताक़त हासिल हो जो दरकार होगी जब तुम दरियाए-यरदन को पार करके मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे। 9 अगर तुम फ़रमाँबरदार रहो तो देर तक उस मुल्क में जीते रहोगे जिसका वादा रब ने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था और जिसमें दूध और शहद की कसरत है।

10 क्योंकि यह मुल्क मिसर की मानिंद नहीं है जहाँ से तुम निकल आए हो। वहाँ के खेतों में तुझे बीज बोकर बड़ी मेहनत से उस की आबपाशी करनी पड़ती थी 11 जबकि जिस मुल्क पर तुम क़ब्ज़ा करोगे उसमें पहाड़ और वादियाँ हैं जिन्हें सिर्फ़ बारिश का पानी सेराब करता है। 12 रब तेरा खुदा खुद उस मुल्क का खयाल रखता है। रब तेरे खुदा की आँखें साल के पहले दिन से लेकर आखिर तक मुताबितर उस पर लगी रहती हैं।

13 चुनोंचे उन अहकाम के ताबे रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने खुदा से प्यार करो और अपने पूरे दिलो-जान से उस की खिदमत करो। 14 फिर वह खरीफ़ और बहार की सालाना बारिश वक्त पर भेजेगा। अनाज, अंगूर और जैतून की फ़सलें पकेगी, और तू उन्हें जमा कर लेगा। 15 नीज़, अल्लाह तेरी चरागाहों में तेरे रेवडों के लिए घास मुहैया करेगा, और तू खाकर सेर हो जाएगा।

16 लेकिन खबरदार, कही तुम्हें वरगलाया न जाए। ऐसा न हो कि तुम रब की राह से हट जाओ और दीगर माबूदों को सिजदा करके उनकी खिदमत करो। 17 वरना रब का ग़ज़ब तुम पर आन पड़ेगा, और वह मुल्क में बारिश होने नहीं देगा। तुम्हारी फ़सलें नहीं पकेगी, और तुम्हें जल्द ही उस अच्छे मुल्क में से मिटा दिया जाएगा जो रब तुम्हें दे रहा है।

18 चुनोंचे मेरी यह बातें अपने दिलों पर नक्श कर लो। उन्हें निशान के तौर पर और याददिहानी के लिए अपने हाथों और माथों पर लगाओ। 19 उन्हें अपने बच्चों को सिखाओ। हर जगह और हमेशा उनके बारे में बात करो, खाह तू घर में बैठा या रास्ते पर चलता हो, लेटा हो या खड़ा हो। 20 उन्हें अपने घरों की चौखटों और अपने शहरों के दरवाज़ों पर लिख 21 ताकि

जब तक ज़मीन पर आसमान कायम है तुम और तुम्हारी औलाद उस मुल्क में जीते रहें जिसका वादा रब ने कसम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था।

22 एहतियात से उन अहकाम की पैरवी करो जो मैं तुम्हें दे रहा हूँ। रब अपने खुदा से प्यार करो, उसके तमाम अहकाम पर अमल करो और उसके साथ लिपटे रहो। 23 फिर वह तुम्हारे आगे आगे यह तमाम क्रौमों निकाल देगा और तुम ऐसी क्रौमों की ज़मीनों पर क़ब्ज़ा करोगे जो तुमसे बड़ी और ताकतवर हैं। 24 तुम जहाँ भी क़दम रखोगे वह तुम्हारा ही होगा, ज़ुन्बीरिगिस्तान से लेकर लुबनान तक, दरियाए-फुरत से बहीराए-रूम तक। 25 कोई भी तुम्हारा सामना नहीं कर सकेगा। तुम उस मुल्क में जहाँ भी जाओगे वहाँ रब तुम्हारा खुदा अपने वादे के मुताबिक तुम्हारी दहशत और खौफ पैदा कर देगा। 26 आज तुम खुद फ़ैसला करो। क्या तुम रब की बरकत या उस की लानत पाना चाहते हो? 27 अगर तुम रब अपने खुदा के उन अहकाम पर अमल करो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ तो वह तुम्हें बरकत देगा। 28 लेकिन अगर तुम उनके ताबे न रहो बल्कि मेरी पेशकरदा राह से हटकर दीगर माबूदों की पैरवी करो तो वह तुम पर लानत भेजेगा।

29 जब रब तेरा खुदा तुझे उस मुल्क में ले जाएगा जिस पर तू क़ब्ज़ा करेगा तो लाज़िम है कि गरिज़ीम पहाड़ पर चढ़कर बरकत का एलान करे और ऐबाल पहाड़ पर लानत का। 30 यह दो पहाड़ दरियाए-यरदन के मगरिब में उन कनानियों के इलाके में वाके हैं जो वार्दीए-यरदन में आबाद हैं। वह मगरिब की तरफ जिलजाल शहर के सामने मोरिह के बलूत के दरख्तों के नज़दीक हैं। 31 अब तुम दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करनेवाले हो जो रब तुम्हारा खुदा तुम्हें दे रहा है। जब तुम उसे अपनाकर उसमें आबाद हो जाओगे 32 तो एहतियात से उन तमाम अहकाम पर अमल करते रहो जो मैं आज तुम्हें दे रहा हूँ।

## 12

### मुल्क में रब के अहकाम

1 ज़ैल में वह अहकाम और क़वानीन हैं जिन पर तुम्हें ध्यान से अमल करना होगा जब तुम उस मुल्क में आबाद होगे जो रब तेरे बापदादा का खुदा तुझे दे रहा है ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे। मुल्क में रहते हुए उग्र-भर उनके ताबे रहो।

### मुल्क में एक ही जगह पर मक़दिस हो

2 उन तमाम जगहों को बरबाद करो जहाँ वह क्रौमों जिन्हें तुम्हें निकालना है अपने देवताओं की पूजा करती हैं, खाह वह ऊँचे पहाड़ों, पहाड़ियों या घने दरख्तों के साथे में क्यों न हों। 3 उनकी कुरबानगाहों को ढा देना। जिन पथरों की पूजा वह करते हैं उन्हें चकनाचूर कर देना। यसीरत देवी के खंबे जला देना। उनके देवताओं के मुजस्समे काट डालना। गरज़ इन जगहों से उनका नामो-निशान मिट जाए।

4 रब अपने खुदा की परास्तिश करने के लिए उनके तरीके न अपनाना। 5 रब तुम्हारा खुदा क़बीलों में से अपने नाम की सुक़नत के लिए एक जगह चुन लेगा। इबादत के लिए वहाँ जाया करो, 6 और वहाँ अपनी तमाम कुरबानियाँ लाकर पेश करो, खाह वह भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, ज़बह की कुरबानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा, उठानेवाली कुरबानियाँ, मन्नत के हदिये, खुशी से पेश की गई कुरबानियाँ या मवेशियों के पहलौठे क्यों न हों। 7 वहाँ रब अपने खुदा के हुज़ूर अपने घरानों समेत खाना खाकर उन कामयाबियों की खुशी मनाओ जो तुझे रब तेरे खुदा की बरकत के बाइस हासिल हुई हैं।

8 उस वक़्त तुम्हें वह नहीं करना जो हम करते आए हैं। आज तक हर कोई अपनी मरज़ी के मुताबिक इबादत करता है, 9 क्योंकि अब तक तुम आराम की उस जगह नहीं पहुँचे जो तुझे रब तेरे खुदा से मीरास में मिलनी है। 10 लेकिन जल्द ही तुम दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क में आबाद हो जाओगे जो रब तुम्हारा खुदा तुम्हें मीरास में दे रहा है। उस वक़्त वह तुम्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से बचाए रखेगा, और तुम आराम और सुक़न से जिंदगी गुज़ार सकोगे। 11 तब रब तुम्हारा खुदा अपने नाम की सुक़नत के लिए एक जगह चुन लेगा, और तुम्हें सब कुछ जो मैं बताऊँगा वहाँ लाकर पेश करना है, खाह वह भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, ज़बह की कुरबानियाँ, पैदावार का दसवाँ हिस्सा, उठानेवाली कुरबानियाँ या मन्नत के खास हदिये क्यों न हों। 12 वहाँ रब के सामने तुम, तुम्हारे बेटे-बेटियाँ, तुम्हारे गुलाम और लौडियाँ खुशी मनाएँ। अपने शहरों में आबाद लावियों को भी अपनी खुशी में शरीक करो, क्योंकि उनके पास मौरूसी ज़मीन नहीं होगी।

13 ख़बरदार, अपनी भस्म होनेवाली कुरबानियाँ हर जगह पर पेश न करना 14 बल्कि सिर्फ़ उस जगह पर जो रब क़बीलों में से चुनेगा। वही सब कुछ यों मना जिस तरह मैं तुझे बताता हूँ।

15 लेकिन वह जानवर इसमें शामिल नहीं हैं जो तू कुरबानी के तौर पर पेश नहीं करना चाहता बल्कि सिर्फ़ खाना चाहता है। ऐसे जानवर तू आज़ादी से अपने तमाम शहरों में ज़बह करके उस बरकत के मुताबिक खा सकता है जो रब तेरे खुदा ने

तुझे दी है। ऐसा गोशत हिरन और गजाल के गोशत की मानिंद है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 16 लेकिन खून न खाना। उसे पानी की तरह जमीन पर उंडेलकर जाया कर देना।

17 जो भी चीजें रब के लिए मखसूस की गई हैं उन्हें अपने शहरों में न खाना मसलन अनाज, अंगूर के रस और जैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा, मवेशियों के पहलौटे, मन्त के हृदिये, खुशी से पेश की गई कुरबानियाँ और उठानेवाली कुरबानियाँ। 18 यह चीजें सिर्फ रब के हुज़ूर खाना यानी उस जगह पर जिसे वह मकदिस के लिए चुनेगा। वहीं तू अपने बेटे-बेटियों, गुलामों, लौडियों और अपने कबायली इलाके के लावियों के साथ जमा होकर खुशी मना कि रब ने हमारी मेहनत को बरकत दी है। 19 अपने मुल्क में लावियों की जरूरियात उम्र-भर पूरी करने की फिकर रख।

20 जब रब तेरा खुदा अपने वादे के मुताबिक तेरी सरहदें बढ़ा देगा और तू गोशत खाने की खाहिश रखेगा तो जिस तरह जी चाहे गोशत खा सकेगा। 21 अगर तेरा घर उस मकदिस से दूर हो जिसे रब तेरा खुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा तो तू जिस तरह जी चाहे अपने शहरों में रब से मिले हुए मवेशियों को ज़बह करके खा सकता है। लेकिन ऐसा ही करना जैसा मैंने हुक्म दिया है। 22 ऐसा गोशत हिरन और गजाल के गोशत की मानिंद है यानी पाक और नापाक दोनों ही उसे खा सकते हैं। 23 अलबत्ता गोशत के साथ खून न खाना, क्योंकि खून जानदार की जान है। उस की जान गोशत के साथ न खाना। 24 खून न खाना बल्कि उसे जमीन पर उंडेलकर जाया कर देना। 25 उसे न खाना ताकि तुझे और तेरी औलाद को कामयाबी हासिल हो, क्योंकि ऐसा करने से तू रब की नज़र में सही काम करेगा।

26 लेकिन जो चीजें रब के लिए मखसूस-मुकद्दस हैं या जो तुने मन्त मानकर उसके लिए मखसूस की हैं लाज़िम है कि तू उन्हें उस जगह ले जाए जिसे रब मकदिस के लिए चुनेगा। 27 वहीं, रब अपने खुदा की कुरबानागह पर अपनी भ्रम होनेवाली कुरबानियाँ गोशत और खून समेत चढ़ा। ज़बह की कुरबानियों का खून कुरबानागह पर उंडेल देना, लेकिन उनका गोशत तू खा सकता है।

28 जो भी हिदायत मैं तुझे दे रहा हूँ उन्हें पहतियात से पूरा कर। फिर तू और तेरी औलाद खुशहाल रहेंगे, क्योंकि तू वह कुछ करेगा जो रब तेरे खुदा की नज़र में अच्छा और दुस्त है।

29 रब तेरा खुदा उन कौमों को मिटा देगा जिनकी तरफ तू बढ़ रहा है। तू उन्हें उनके मुल्क से निकालता जाएगा और खुद उसमें आबाद हो जाएगा। 30 लेकिन खबरदार, उनके खत्म होने के बाद भी उनके देवताओं के बारे में मालमात हासिल न कर, वरना तू फँस जाएगा। मत कहना कि यह कौम किस तरीके से अपने देवताओं की पूजा करती है? हम भी ऐसा ही करें। 31 ऐसा मत कर! यह कौम ऐसे धिनौने तरीके से पूजा करती है जिसे रब नफरत करता है। वह अपने बच्चों को भी जलाकर अपने देवताओं को पेश करते हैं।

32 कलाम की जो भी बात मैं तुम्हें पेश करता हूँ उसके ताबे रहकर उस पर अमल करो। न किसी बात का इजाफा करना, न कोई बात निकालना।

## 13

### देवताओं की तरफ ले जानेवालों से सुल्क

1 तेरे दरमियान ऐसे लोग उठ खड़े होंगे जो अपने आपको नबी या खाब देखनेवाले कहेंगे। हो सकता है कि वह किसी इलाही निशान या मोजिजे का एलान करें 2 जो वाकई चुजूद में आए। साथ साथ वह कहें, “आ, हम दीगर माबदों की पूजा करें, हम उनकी खिदमत करें जिनसे तू अब तक वाकिफ़ नहीं है।” 3 ऐसे लोगों की न सुन। इससे रब तुम्हारा खुदा तुम्हें आजमाकर मालूम कर रहा है कि क्या तुम वाकई अपने पूरे दिलो-जान से उससे प्यार करते हो। 4 तुम्हें रब अपने खुदा की पैरवी करना और उसी का खौफ मानना है। उसके अहकाम के मुताबिक जिंदगी गुज़ारो, उस की सुनो, उस की खिदमत करो, उसके साथ लिपेट रहो। 5 ऐसे नबियों या खाब देखनेवालों को सज़ाए-मौत देना, क्योंकि वह तुझे रब तुम्हारे खुदा से बगावत करने पर उकसाना चाहते हैं, उसी से जिसने फ़िघा देकर तुम्हें मिसर की गुलामी से बचाया और वहाँ से निकाल लाया। चूँकि वह तुझे उस राह से हटाना चाहते हैं जिसे रब तेरे खुदा ने तेरे लिए मुकरर किया है इसलिए लाज़िम है कि उन्हें सज़ाए-मौत दी जाए। ऐसी बुराई अपने दरमियान से मिटा देना।

6 हो सकता है कि तेरा सगा भाई, तेरा बेटा या बेटी, तेरी बीवी या तेरा करीबी दोस्त तुझे चुपके से वरगलाने की कोशिश करे कि आ, हम जाकर दीगर माबदों की पूजा करें, ऐसे देवताओं की जिनसे न तू और न तेरे बापदादा वाकिफ़ थे। 7 खाह ईर्दगिर्द की या दूर-दराज़ की कौमों के देवता हों, खाह दुनिया के एक सिरे के या दूसरे सिरे के माबद हों, 8 किसी सूरत में अपनी रज़ामंदी का इज़हार न कर, न उस की सुन। उस पर रहम न कर। न उसे बचाए रख, न उसे पनाह दे 9 बल्कि उसे सज़ाए-मौत दे। और उसे संगसार करते वक़्त पहले तेरा हाथ उस पर पत्थर फेंके, फिर ही बाकी तमाम लोग हिस्सा लें। 10 उसे ज़रूर पत्थरों से सज़ाए-मौत देना, क्योंकि उसने तुझे रब तेरे खुदा से दूर करने की कोशिश की, उसी से जो तुझे मिसर की

गुलामी से निकाल लाया। 11 फिर तमाम इसराईल यह सुनकर डर जाएंगी और आइंदा तैरे दरमियान ऐसी शरीर हरकत करने की जूरत नही करेगा।

12 जब तू उन शहरों में रहने लगेगा जो रब तेरा खुदा तुझे दे रहा है तो शायद तुझे खबर मिल जाए 13 कि शरीर लोग तैरे दरमियान से उभर आए हैं जो अपने शहर के बाशिंदों को यह कहकर गलत राह पर लाए हैं कि आओ, हम दीगर माबूदों की पूजा करें, ऐसे माबूदों की जिनसे तुम वाकिफ नही हो। 14 लाजिम है कि तू दरियाफ्त करके इसकी तफतीश करे और खूब मालूम करे कि क्या हुआ है। अगर साबित हो जाए कि यह धिनीनी बात वाकई हुई है 15 तो फिर लाजिम है कि तू शहर के तमाम बाशिंदों को हलाक करे। उसे रब के सुपुर्द करके सरारस तबाह करना, न सिर्फ उसके लोग बल्कि उसके मवेशी भी। 16 शहर का पूरा माले-गनीमत चौक में इकट्ठा कर। फिर पूरे शहर को उसके माल समेत रब के लिए मखसूस करके जला देना। उसे दुबारा कभी न तामीर किया जाए बल्कि उसके खंडरात हमेशा तक रहे।

17 पूरा शहर रब के लिए मखसूस किया गया है, इसलिए उस की कोई भी चीज तैरे पास न पाई जाए। सिर्फ इस सूरत में रब का गज़ब ठंडा हो जाएगा, और वह तुझ पर रहम करके अपनी मेहरबानी का इज़हार करेगा और तेरी तादाद बढ़ाएगा, जिस तरह उसने कसम खाकर तैरे बापदादा से वादा किया है। 18 लेकिन यह सब कुछ इस पर मबनी है कि तू रब अपने खुदा की सुने और उसके उन तमाम अहकाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। वही कुछ कर जो उस की नज़र में दुस्त है।

## 14

### पाक और नापाक जानवर

1 तुम रब अपने खुदा के फ़रज़ंद हो। अपने आपको मुरदों के सबब से न ज़खमी करो, न अपने सर के सामनेवाले बाल मुँडवाओ। 2 क्योंकि तू रब अपने खुदा के लिए मखसूसो-मुकद्दस कौम है। दुनिया की तमाम कौमों में से रब ने तुझे ही चुनकर अपनी मिलकियत बना लिया है।

3 कोई भी मकरूह चीज़ न खाना।

4 तुम बैल, भेड़-बकरी, 5 हिरन, गज़ाल, मृग, \* पहाड़ी बकरी, महात, † गज़ाले-अफ़्रीका ‡ और पहाड़ी बकरी खा सकते हो। 6 जिनके खुर या पाँव बिलकुल चिरे हुए हैं और जो जुगाली करते हैं उन्हें खाने की इजाज़त है। 7 ऊँट, बिज्जू या खरगोश खाना मना है। वह तुम्हारे लिए नापाक हैं, क्योंकि वह जुगाली तो करते हैं लेकिन उनके खुर या पाँव चिरे हुए नहीं हैं। 8 सुअर न खाना। वह तुम्हारे लिए नापाक है, क्योंकि उसके खुर तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। न उनका गोशत खाना, न उनकी लाशों को छूना।

9 पानी में रहनेवाले जानवर खाने के लिए जायज़ हैं अगर उनके पर और छिलके हों। 10 लेकिन जिनके पर या छिलके नहीं हैं वह तुम्हारे लिए नापाक हैं।

11 तुम हर पाक परिदा खा सकते हो। 12 लेकिन जैल के परिदे खाना मना है : उकाब, दडियल गिद्ध, काला गिद्ध, 13 लाल चील, काली चील, हर किस्म का गिद्ध, 14 हर किस्म का कौवा, 15 उकाबी उल्लू, छोटे कानवाला उल्लू, बड़े कानवाला उल्लू, हर किस्म का बाज़, 16 छोटा उल्लू, चिंघाड़नेवाला उल्लू, सफेद उल्लू, 17 दशती उल्लू, मिसरी गिद्ध, कूक, 18 लकलक, हर किस्म का बूतीमार, हदहद और चमगादड़। §

19 तमाम पर रखनेवाले कीड़े तुम्हारे लिए नापाक हैं। उन्हें खाना मना है। 20 लेकिन तुम हर पाक परिदा खा सकते हो।

21 जो जानवर खुद बाख़ुद मर जाए उसे न खाना। तू उसे अपनी आबादी में रहनेवाले किसी परदेसी को दे या किसी अजनबी को बेच सकता है और वह उसे खा सकता है। लेकिन तू उसे मत खाना, क्योंकि तू रब अपने खुदा के लिए मखसूसो-मुकद्दस कौम है।

बकरी के बच्चे को उस की माँ के दूध में पकाना मना है।

### अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा मखसूस करना

22 लाजिम है कि तू हर साल अपने खेतों की पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के लिए अलग करे। 23 इसके लिए अपना अनाज, अंगूर का रस, जैतून का तेल और मवेशी के पहलौटे रब अपने खुदा के हज़ूर ले आना यानी उस जगह जो वह अपने नाम की सूकूनत के लिए चुनेगा। वहाँ यह चीज़ें कुरबान करके खा ताकि तू उम्र-भर रब अपने खुदा का ख़ौफ मानना सीखे।

\* 14:5 यह हिरन के मुशाबेह होता है लेकिन फ़ितरतन मुख़लिफ़ होता है। इसके सींग खोखले, बेशाख और अनझड़ होते हैं। antelope। याद रहे कि कदीम ज़माने के इन जानवरों के अकसर नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़लिफ़ तरज़ुमा हो सकता है। † 14:5 महात। दराज़कद हिरनों की एक नौ ज़िस्के सींग चक्रदार होते हैं। addax। ‡ 14:5 गज़ाले-अफ़्रीका। चिकरों की तीन इस्साम में से कोई जो अपने लंबे और हलकादार

सींगों की वजह से मुमताज़ है। oryx। § 14:18 याद रहे कि कदीम ज़माने के इन परिदों के अकसर नाम मतरूक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुख़लिफ़ तरज़ुमा हो सकता है।

24 लेकिन हो सकता है कि जो जगह रब तेरा खुदा अपने नाम की सुकनत के लिए चुनेगा वह तेरे घर से हद से ज्यादा दूर हो और रब तेरे खुदा की बरकत के बाइस मजकुरा दसवाँ हिस्सा इतना ज्यादा हो कि तू उसे मकदिस तक नहीं पहुँचा सकता। 25 इस सूरत में उसे बेचकर उसके पैसे उस जगह ले जा जो रब तेरा खुदा अपने नाम की सुकनत के लिए चुनेगा। 26 वहाँ पहुँचकर उन पैसों से जो जी चाहे खरीदना, खाह गाय-बैल, भेड़-बकरी, मै या मै जैसी कोई और चीज क्यों न हो। फिर अपने घराने के साथ मिलकर रब अपने खुदा के हुज़ूर यह चीज़ें खाना और खुशी मनाना। 27 ऐसे मौकों पर उन लावियों का खयाल रखना जो तेरे क़बायली इलाके में रहते हैं, क्योंकि उन्हें मीरास में ज़मीन नहीं मिलेगी।

28 हर तीसरे साल अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा अपने शहरों में जमा करना। 29 उसे लावियों को देना जिनके पास मौस्सी ज़मीन नहीं है, नीज़ अपने शहरों में आबाद परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को देना। वह आएँ और खाना खाकर सेर हो जाएँ ताकि रब तेरा खुदा तेरे हर काम में बरकत दे।

## 15

### कर्जदारों की बहाली का साल

1 हर सात साल के बाद एक दूसरे के कर्जें मुआफ़ कर देना। 2 उस वक़्त जिसने भी किसी इसराईली भाई को कर्ज दिया है वह उसे मनसूख करे। वह अपने पड़ोसी या भाई को पैसे वापस करने पर मजबूर न करे, क्योंकि रब की ताज़ीम में कर्जें मुआफ़ करने के साल का एलान किया गया है। 3 इस साल में तू सिर्फ़ गैरमुल्की कर्जदारों को पैसे वापस करने पर मजबूर कर सकता है। अपने इसराईली भाई के तमाम कर्जें मुआफ़ कर देना।

4 तेरे दरमियान कोई भी ग़रीब नहीं होना चाहिए, क्योंकि जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में देनेवाला है तो वह तुझे बहुत बरकत देगा। 5 लेकिन शर्त यह है कि तू पूरे तौर पर उस की सुने और एहतियात से उसके उन तमाम अहकाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 6 फिर रब तुम्हारा खुदा तुझे अपने वादे के मुताबिक बरकत देगा। तू किसी भी क़ौम से उधार नहीं लेगा बल्कि बहुत-सी क़ौमों को उधार देगा। कोई भी क़ौम तुझ पर हुक्मत नहीं करेगी बल्कि तू बहुत-सी क़ौमों पर हुक्मत करेगा।

7 जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब तेरा खुदा तुझे देनेवाला है तो अपने दरमियान रहनेवाले ग़रीब भाई से सख्त सुल्क न करना, न कंजूस होना। 8 खुले दिल से उस की मदद कर। जितनी उसे ज़रूरत है उसे उधार के तौर पर दे। 9 खबरदार, ऐसा मत सोच कि कर्जें मुआफ़ करने का साल करीब है, इसलिए मैं उसे कुछ नहीं दूँगा। अगर तू ऐसी शरीर बात अपने दिल में सोचते हुए ज़रूरतमंद भाई को कर्जें देने से इनकार करे और वह रब के सामने तेरी शिकायत करे तो तू कुसूरवार ठहरेगा। 10 उसे ज़रूर कुछ दे बल्कि खुशी से दे। फिर रब तेरा खुदा तेरे हर काम में बरकत देगा। 11 मुल्क में हमेशा ग़रीब और ज़रूरतमंद लोग पाए जाएंगे, इसलिए मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि खुले दिल से अपने ग़रीब और ज़रूरतमंद भाइयों की मदद कर।

### गुलामों को आज़ाद करने का फ़र्ज़

12 अगर कोई इसराईली भाई या बहन अपने आपको बेचकर तेरा गुलाम बन जाए तो वह छः साल तेरी ख़िदमत करे। लेकिन लाज़िम है कि सातवें साल उसे आज़ाद कर दिया जाए। 13 आज़ाद करते वक़्त उसे ख़ाली हाथ फ़ारिग न करना 14 बल्कि अपनी भेड़-बकरियों, अनाज, तेल और मै से उसे फ़ैयाज़ी से कुछ दे, यानी उन चीज़ों में से जिनसे रब तेरे खुदा ने तुझे बरकत दी है। 15 याद रख कि तू भी मिसर में गुलाम था और कि रब तेरे खुदा ने फ़िघा देकर तुझे छुड़ाया। इसी लिए मैं आज तुझे यह हुक्म देता हूँ।

16 लेकिन मुमकिन है कि तेरा गुलाम तुझे छोड़ना न चाहे, क्योंकि वह तुझसे और तेरे खानदान से मुहब्बत रखता है, और वह तेरे पास रहकर खुशहाल है। 17 इस सूरत में उसे दरवाज़े के पास ले जा और उसके कान की लौ चौखट के साथ लगाकर उसे सुताली यानी तेज़ औज़ार से छेद दे। तब वह जिंदागी-भर तेरा गुलाम बना रहेगा। अपनी लौंडी के साथ भी ऐसा ही करना।

18 अगर गुलाम तुझे छः साल के बाद छोड़ना चाहे तो बुरा न मानना। आख़िर अगर उस की जगह कोई और वही काम तनखाह के लिए करता तो तेरे अख़राजात दुगने होते। उसे आज़ाद करना तो रब तेरा खुदा तेरे हर काम में बरकत देगा।

### जानवरों के पहलौठे मखसूस हैं

19 अपनी गायों और भेड़-बकरियों के न पहलौठे रब अपने खुदा के लिए मखसूस करना। न गाय के पहलौठे को काम के लिए इस्तेमाल करना, न भेड़ के पहलौठे के बाल कतरना। 20 हर साल ऐसे बच्चे उस जगह ले जा जो रब अपने मकदिस के लिए चुनेगा। वहाँ उन्हें रब अपने खुदा के हुज़ूर अपने पूरे खानदान समेत खाना।

21 अगर ऐसे जानवर में कोई खराबी हो, वह अंधा या लँगड़ा हो या उसमें कोई और नुक़स हो तो उसे रब अपने खुदा के लिए कु़रबान न करना। 22 ऐसे जानवर तू घर में ज़बह करके खा सकता है। वह हिरन और ग़ज़ाल की मानिंद हैं जिन्हें तू खा

तो सकता है लेकिन कुरबानी के तौर पर पेश नहीं कर सकता। पाक और नापाक शख्स दोनों उसे खा सकते हैं।<sup>23</sup> लेकिन खून न खाना। उसे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेलकर जाया कर देना।

## 16

### फसल की ईद

1 अबीब के महीने \* में रब अपने ख़ुदा की ताज़ीम में फसल की ईद मनाना, क्योंकि इस महीने में वह तुझे रात के वक़्त मिसर से निकाल लाया।<sup>2</sup> उस जगह जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुक़नत के लिए चुनेगा। उसे कुरबानी के लिए भेड़-बकरियाँ या गाय-बैल पेश करना।<sup>3</sup> गोशत के साथ बेखमीरी रोटी खाना। सात दिन तक यही रोटी खा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह तूने किया जब जल्दी जल्दी मिसर से निकला। मुसीबत की यह रोटी इसलिए खा ताकि वह दिन तेरे जीते-जी याद रहे जब तू मिसर से रवाना हुआ।<sup>4</sup> लाज़िम है कि ईद के हफ़्ते के दौरान तेरे पूरे मुल्क में ख़मीर न पाया जाए।

जो कुरबानी तू ईद के पहले दिन की शाम को पेश करे उसका गोशत उसी वक़्त खा ले। अगली सुबह तक कुछ बाक़ी न रह जाए।<sup>5</sup> फसल की कुरबानी किसी भी शहर में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा न चढाना<sup>6</sup> बल्कि सिर्फ़ उस जगह जो वह अपने नाम की सुक़नत के लिए चुनेगा। मिसर से निकलते वक़्त की तरह कुरबानी के जानवर को सूरज ड़बते वक़्त ज़बह कर।<sup>7</sup> फिर उसे भूनकर उस जगह खाना जो रब तेरा ख़ुदा चुनेगा। अगली सुबह अपने घर वापस चला जा।<sup>8</sup> ईद के पहले छः दिन बेखमीरी रोटी खाता रह। सातवें दिन काम न करना बल्कि रब अपने ख़ुदा की इबादत के लिए जमा हो जाना।

### फसल की कटाई की ईद

9 जब अनाज की फसल की कटाई शुरू होगी तो पहले दिन के सात हफ़्ते बाद<sup>10</sup> फसल की कटाई की ईद मनाना। रब अपने ख़ुदा को उतना पेश कर जितना जी चाहे। वह उस बरक़त के मुताबिक़ हो जो उसने तुझे दी है।<sup>11</sup> इसके लिए भी उस जगह जमा हो जा जो रब अपने नाम की सुक़नत के लिए चुनेगा। वहाँ उसके हज़ूर ख़ुशी मना। तेरे बाल-बच्चे, तेरे गुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में रहनेवाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी ख़ुशी में शरीक हों।<sup>12</sup> इन अहक़ाम पर ज़रूर अमल करना और मत भूलना कि तू मिसर में गुलाम था।

### झोपड़ियों की ईद

13 अनाज गाहने और अंगूर का रस निकालने के बाद झोपड़ियों की ईद मनाना जिसका दौरानिया सात दिन हो।<sup>14</sup> ईद के मौके पर ख़ुशी मनाना। तेरे बाल-बच्चे, तेरे गुलाम और लौंडियाँ और तेरे शहरों में बसनेवाले लावी, परदेसी, यतीम और बेवाएँ सब तेरी ख़ुशी में शरीक हों।<sup>15</sup> जो जगह रब तेरा ख़ुदा मक़दिस के लिए चुनेगा वहाँ उस की ताज़ीम में सात दिन तक यह ईद मनाना। क्योंकि रब तेरा ख़ुदा तेरी तमाम फसलों और मेहनत को बरक़त देगा, इसलिए ख़ूब ख़ुशी मनाना।

16 इसराइल के तमाम मर्द साल में तीन मरतबा उस मक़दिस पर हाज़िर हो जाएँ जो रब तेरा ख़ुदा चुनेगा यानी बेखमीरी रोटी की ईद, फसल की कटाई की ईद और झोपड़ियों की ईद पर। कोई भी रब के हज़ूर खाली हाथ न आए।<sup>17</sup> हर कोई उस बरक़त के मुताबिक़ दे जो रब तेरे ख़ुदा ने उसे दी है।

### काज़ी मुक़र्रर करना

18 अपने अपने क़बायली इलाके में काज़ी और निगहबान मुक़र्रर कर। वह हर उस शहर में हों जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा। वह इन्साफ़ से लोगों की अदालत करें।<sup>19</sup> न किसी के हकूक़ मारना, न जानिबदारी दिखाना। रिश्वत कबूल न करना, क्योंकि रिश्वत दांनिशमंदों को अंधा कर देती और रास्तबाज़ की बाते पलट देती है।<sup>20</sup> सिर्फ़ और सिर्फ़ इन्साफ़ के मुताबिक़ चल ताकि तू जीता रहे और उस मुल्क पर क़ब्ज़ा करे जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा।

### बुतपरस्ती की सज़ा

21 जहाँ तू रब अपने ख़ुदा के लिए कुरबानगाह बनाएगा वहाँ न यसीरत देवी की पूजा के लिए लकड़ी का खंबा<sup>22</sup> और न कोई ऐसा पत्थर खड़ा करना जिसकी पूजा लोग करते हैं। रब तेरा ख़ुदा इन चीज़ों से नफ़रत रखता है।

## 17

1 रब अपने ख़ुदा को नाकिस गाय-बैल या भेड़-बकरी पेश न करना, क्योंकि वह ऐसी कुरबानी से नफ़रत रखता है।

2 जब तू उन शहरों में आबाद हो जाएगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देगा तो हो सकता है कि तेरे दरमियान कोई मर्द या औरत रब तेरे ख़ुदा का अहद तोड़कर वह कुछ करे जो उसे बुरा लगे।<sup>3</sup> मसलन वह दीगर माबदों को या सूरज, चाँद या सितारों के पूरे लशकर को सिजदा करे, हालाँकि मैंने यह मना किया है।<sup>4</sup> जब भी तुझे इस किस्म की खबर मिले तो इसका पूरा खोज

\* 16:1 मार्च ता अग़ैल।

लगा। अगर बात द्रुस्त निकले और ऐसी धिनौनी हरकत वाकई इसराईल में की गई हो<sup>5</sup> तो कुसरवार को शहर के बाहर ले जाकर संगसार कर देना।<sup>6</sup> लेकिन लाज़िम है कि पहले कम अज़ कम दो या तीन लोग गवाही दें कि उसने ऐसा ही किया है। उसे सज़ाए-मौत देने के लिए एक गवाह काफ़ी नहीं।<sup>7</sup> पहले गवाह उस पर पत्थर फेंकें, इसके बाद बाकी तमाम लोग उसे संगसार करें। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

### मकदिस में आलातरीन अदालत

<sup>8</sup> अगर तैरे शहर के काज़ियों के लिए किसी मुकदमे का फ़ैसला करना मुश्किल हो तो उस मकदिस में आकर अपना मामला पेश कर जो रब तेरा खुदा चुनेगा, खाह किसी को कत्ल किया गया हो, उसे ज़ख्मी कर दिया गया हो या कोई और मसला हो।<sup>9</sup> लावी के क़बीले के इमामों और मकदिस में खिदमत करनेवाले काज़ी को अपना मुकदमा पेश कर, और वह फ़ैसला करें।<sup>10</sup> जो फ़ैसला वह उस मकदिस में करेंगे जो रब चुनेगा उसे मानना पड़ेगा। जो भी हिदायत वह दें उस पर एहतियात से अमल कर।<sup>11</sup> शरीअत की जो भी बात वह तुझे सिखाएँ और जो भी फ़ैसला वह दें उस पर अमल कर। जो कुछ भी वह तुझे बताएँ उससे न दाई और न बाई तरफ़ मुडना।

<sup>12</sup> जो मकदिस में रब तैरे खुदा की खिदमत करनेवाले काज़ी या इमाम को हकीर जानकर उनकी नहीं सुनता उसे सज़ाए-मौत दी जाए। यों तू इसराईल से बुराई मिटा देगा।<sup>13</sup> फिर तमाम लोग यह सुनकर डर जाएंगे और आइंदा ऐसी गुस्ताखी करने की ज़ुरत नहीं करेंगे।

### बादशाह के बारे में उस्लू

<sup>14</sup> तू जल्द ही उस मुल्क में दाखिल होगा जो रब तेरा खुदा तुझे देनेवाला है। जब तू उस पर क़ब्ज़ा करके उसमें आबाद हो जाएगा तो हो सकता है कि तू एक दिन कहे, “आओ हम इर्दग़िर्द की तमाम क़ौमों की तरह बादशाह मुकर्रर करें जो हम पर हुकूमत करे।”<sup>15</sup> अगर तू ऐसा करे तो सिर्फ़ वह शख्स मुकर्रर कर जिसे रब तेरा खुदा चुनेगा। वह परदेसी न हो बल्कि तेरा अपना इसराईली भाई हो।<sup>16</sup> बादशाह बहुत ज़्यादा घोड़े न रखे, न अपने लोगों को उन्हें खरीदने के लिए मिसर भेजे। क्योंकि रब ने तुझसे कहा है कि कभी वहाँ वापस न जाना।<sup>17</sup> तेरा बादशाह ज़्यादा बीवियाँ भी न रखे, वरना उसका दिल रब से दूर हो जाएगा। और वह हद से ज़्यादा सोना-चाँदी जमा न करे।

<sup>18</sup> तख़्तनशीन होते वक़्त वह लावी के क़बीले के इमामों के पास पडी इस शरीअत की नक़ल लिखवाए।<sup>19</sup> यह किताब उसके पास महफूज़ रहे, और वह उम्र-भर रोज़ाना इसे पढ़ता रहे ताकि रब अपने खुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे। तब वह शरीअत की तमाम बातों की पैरवी करेगा,<sup>20</sup> अपने आपको अपने इसराईली भाइयों से ज़्यादा अहम नहीं समझेगा और किसी तरह भी शरीअत से हटकर काम नहीं करेगा। नतीजे में वह और उस की औलाद बहुत अरसे तक इसराईल पर हुकूमत करेंगे।

## 18

### इमामों और लावियों का हिस्सा

<sup>1</sup> इसराईल के हर क़बीले को मीरास में उसका अपना इलाका मिलेगा सिवाए लावी के क़बीले के जिसमें इमाम भी शामिल है। वह जलनेवाली और दीगर क़ुरबानियों में से अपना हिस्सा लेकर गुज़ारा करें।<sup>2</sup> उनके पास दूसरों की तरह मौस्सी ज़मीन नहीं होगी बल्कि रब खुद उनका मौस्सी हिस्सा होगा। यह उसने वादा करके कहा है।

<sup>3</sup> जब भी किसी बैल या भेड़ को क़ुरबान किया जाए तो इमामों को उसका शाना, जबड़े और ओझड़ी मिलने का हक़ है।<sup>4</sup> अपनी फ़सलों का पहला फल भी उन्हें देना यानी अनाज, मै, ज़ैतून का तेल और भेड़ों की पहली कतरी हुई ऊन।<sup>5</sup> क्योंकि रब ने तैरे तमाम क़बीलों में से लावी के क़बीले को ही मकदिस में रब के नाम में खिदमत करने के लिए चुना है। यह हमेशा के लिए उनकी और उनकी औलाद की ज़िम्मादारी रहेगी।

<sup>6</sup> कुछ लावी मकदिस के पास नहीं बल्कि इसराईल के मुख़्तलिफ़ शहरों में रहेंगे। अगर उनमें से कोई उस जगह आना चाहे जो रब मकदिस के लिए चुनेगा<sup>7</sup> तो वह वहाँ के खिदमत करनेवाले लावियों की तरह मकदिस में रब अपने खुदा के नाम में खिदमत कर सकता है।<sup>8</sup> उसे क़ुरबानियों में से दूसरों के बराबर लावियों का हिस्सा मिलना है, खाह उसे खानदानी मिलकियत बेचने से पैसे मिल गए हों या नहीं।

### जादग़री मना है

<sup>9</sup> जब तू उस मुल्क में दाखिल होगा जो रब तेरा खुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ की रहनेवाली क़ौमों के धिनौने दस्तूर न अपनाना।<sup>10</sup> तैरे दरमियान कोई भी अपने बेटे या बेटी को क़ुरबानी के तौर पर न जलाए। न कोई ग़ैबदानी करे, न फ़ाल या शुग़न निकाले या जादग़री करे।<sup>11</sup> इसी तरह मंत्र पढ़ना, हाज़िरात करना, किस्मत का हाल बताना या मुरदों की रूहों से



राबिता करना सख्त मना है। 12 जो भी ऐसा करे वह रब की नज़र में काबिले-धिन है। इन्हीं मकरूह दस्तूरों की वजह से रब तेरा खुदा तेरे आगे से उन कौमों को निकाल देगा। 13 इसलिए लाज़िम है कि तू रब अपने खुदा के सामने बेकुसूर रहे।

### नबी का वादा

14 जिन कौमों को तू निकालनेवाला है वह उनकी सुनती है जो फाल निकालते और गैबदानी करते हैं। लेकिन रब तेरे खुदा ने तुझे ऐसा करने की इजाज़त नहीं दी।

15 रब तेरा खुदा तेरे वास्ते तेरे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। उस की सुनना। 16 क्योंकि होरिब यानी सीना पहाड़ पर जमा होते वक़्त तूने खुद रब अपने खुदा से दरखास्त की, “न मैं मज़ीद रब अपने खुदा की आवाज़ सुनना चाहता, न यह भडकती हुई आग देखना चाहता हूँ, वरना मर जाऊँगा।” 17 तब रब ने मुझसे कहा, “जो कुछ वह कहते हैं वह ठीक है। 18 आइंदा मैं उनमें से तुझ जैसा नबी खड़ा करूँगा। मैं अपने अलफाज़ उसके मुँह में डाल दूँगा, और वह मेरी हर बात उन तक पहुँचाएगा। 19 जब वह नबी मेरे नाम में कुछ कहे तो लाज़िम है कि तू उस की सुन। जो नहीं सुनेगा उससे मैं खुद जवाब तलब करूँगा। 20 लेकिन अगर कोई नबी गुस्ताख़ होकर मेरे नाम में कोई बात कहे जो मैंने उसे बताने को नहीं कहा था तो उसे सज़ाए-मौत देनी है। इसी तरह उस नबी को भी हलाक कर देना है जो दीगर माबूदों के नाम में बात करे।”

21 शायद तेरे जहन में सवाल उभर आए कि हम किस तरह मालूम कर सकते हैं कि कोई कलाम वाकई रब की तरफ से है या नहीं। 22 जवाब यह है कि अगर नबी रब के नाम में कुछ कहे और वह पूरा न हो जाए तो मतलब है कि नबी की बात रब की तरफ से नहीं है बल्कि उसने गुस्ताखी करके बात की है। इस सूत्र में उससे मत डरना।

## 19

### पनाह के शहर

1 रब तेरा खुदा उस मुल्क में आबाद कौमों को तबाह करेगा जो वह तुझे दे रहा है। जब तू उन्हें भगाकर उनके शहरों और घरों में आबाद हो जाएगा 2-3 तो पूरे मुल्क को तीन हिस्सों में तकसीम कर। हर हिस्से में एक मरकज़ी शहर मुकर्रर कर। उन तक पहुँचानेवाले रास्ते साफ़-सुथरे रखना। इन शहरों में हर वह शख्स पनाह ले सकता है जिसके हाथ से कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ है। 4 वह ऐसे शहर में जाकर इंतकाम लेनेवालों से महफूज़ रहेगा। शर्त यह है कि उसने न कसदन और न दुश्मनी के बाइस किसी को मार दिया हो।

5 मसलन दो आदमी जंगल में दरख्त काट रहे हैं। कुल्हाड़ी चलाते वक़्त एक की कुल्हाड़ी दस्ते से निकलकर उसके साथी को लग जाए और वह मर जाए। ऐसा शख्स फ़रार होकर ऐसे शहर में पनाह ले सकता है ताकि बचा रहे। 6 इसलिए ज़रूरी है कि ऐसे शहरों का फासला ज़्यादा न हो। क्योंकि जब इंतकाम लेनेवाला उसका ताक़ुब करेगा तो खतरा है कि वह तैश में उसे पकड़कर मार डाले, अगरचे भागनेवाला बेकुसूर है। जो कुछ उसने किया वह दुश्मनी के सबब से नहीं बल्कि गैरइरादी तौर पर हुआ। 7 इसलिए लाज़िम है कि तू पनाह के तीन शहर अलग कर ले।

8 बाद में रब तेरा खुदा तेरी सरहदें मज़ीद बढ़ा देगा, क्योंकि यही वादा उसने कसम खाकर तेरे बापदादा से किया है। अपने वादे के मुताबिक वह तुझे पूरा मुल्क देगा, 9 अलबत्ता शर्त यह है कि तू एहतियात से उन तमाम अहकाम की पैरवी करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। दूसरे अलफाज़ में शर्त यह है कि तू रब अपने खुदा को प्यार करे और हमेशा उस की राहों में चलता रहे। अगर तू ऐसा ही करे और नतीजन रब का वादा पूरा हो जाए तो लाज़िम है कि तू पनाह के तीन और शहर अलग कर ले। 10 वरना तेरे मुल्क में जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में दे रहा है बेकुसूर लोगों को जान से मारा जाएगा और तू खुद ज़िम्मादार ठहरेगा।

11 लेकिन हो सकता है कोई दुश्मनी के बाइस किसी की ताक में बैठ जाए और उस पर हमला करके उसे मार डाले। अगर क्रातिल पनाह के किसी शहर में भागकर पनाह ले 12 तो उसके शहर के बुजुर्ग इंतला दें कि उसे वापस लाया जाए। उसे इंतकाम लेनेवाले के हवाले किया जाए ताकि उसे सज़ाए-मौत मिले। 13 उस पर रहम मत करना। लाज़िम है कि तू इसराइल में से बेकुसूर की मौत का दाग मिटाए ताकि तू खुशहाल रहे।

### ज़मीनों की हदें

14 जब तू उस मुल्क में रहेगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में देगा ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो ज़मीन की वह हदें आगे पीछे न करना जो तेरे बापदादा ने मुकर्रर की।

### अदालत में गवाह

15 तू किसी को एक ही गवाह के कहने पर कुसूरवार नहीं ठहरा सकता। जो भी जुर्म सरज़द हुआ है, कम अज़ कम दो या तीन गवाहों की ज़रूरत है। वरना तू उसे कुसूरवार नहीं ठहरा सकता।

16 अगर जिस पर इलज़ाम लगाया गया है इनकार करके दावा करे कि गवाह झूट बोल रहा है 17 तो दोनों मकदिस में रब के हज़र आकर खिदमत करनेवाले इमामों और काज़ियों को अपना मामला पेश करें। 18 काज़ी इसका खूब खोज लगाएँ। अगर बात दुस्त निकले कि गवाह ने झूट बोलकर अपने भाई पर गलत इलज़ाम लगाया है 19 तो उसके साथ वह कुछ किया जाए जो वह अपने भाई के लिए चाह रहा था। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। 20 फिर तमाम बाकी लोग यह सुनकर डर जाँगे और आइदा तेरे दरमियान ऐसी गलत हरकत करने की ज़ुत नहीं करेंगे। 21 कुसूरवार पर रहम न करना। उसूल यह हो कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत, हाथ के बदले हाथ, पाँव के बदले पाँव।

## 20

### जंग के उसूल

1 जब तू जंग के लिए निकलकर देखता है कि दुश्मन तादाद में ज्यादा हैं और उनके पास घोड़े और रथ भी हैं तो मत डरना। रब तेरा खुदा जो तुझे मिसर से निकाल लाया अब भी तेरे साथ है। 2 जंग के लिए निकलने से पहले इमाम सामने आए और फौज से मुख़ातिब होकर 3 कहे, “सुन ऐ इसराईल! आज तुम अपने दुश्मन से लड़ने जा रहे हो। उनके सबसे से परेशान न हो। उनसे न ख़ौफ़ खाओ, न घबराओ, 4 क्योंकि रब तुम्हारा खुदा खुद तुम्हारे साथ जाकर दुश्मन से लड़ेगा। वही तुम्हें फ़तह बख़्शेगा।”

5 फिर निगहबान फौज से मुख़ातिब हों, “क्या यहाँ कोई है जिसने हाल में अपना नया घर मुकम्मल किया लेकिन उसे मख़सूस करने का मौक़ा न मिला? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग के दौरान मारा जाए और कोई और घर को मख़सूस करके उसमें बसने लगे। 6 क्या कोई है जिसने अंगरू का बाग़ लगाकर इस वक़्त उस की पहली फ़सल के इंतज़ार में है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई और बाग़ का फ़ायदा उठाए। 7 क्या कोई है जिसकी मँगनी हुई है और जो इस वक़्त शादी के इंतज़ार में है? वह अपने घर वापस चला जाए। ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और कोई और उस की मंगेतर से शादी करे।”

8 निगहबान कहें, “क्या कोई ख़ौफ़ज़दा या परेशान है? वह अपने घर वापस चला जाए ताकि अपने साथियों को परेशान न करे।” 9 इसके बाद फ़ौज़ियों पर अफ़सर मुक़र्रर किए जाएँ।

10 किसी शहर पर हमला करने से पहले उसके बाशिंदों को हथियार डाल देने का मौक़ा देना। 11 अगर वह मान जाएँ और अपने दरवाज़े खोल दें तो वह तेरे लिए बेगार में काम करके तेरी खिदमत करें। 12 लेकिन अगर वह हथियार डालने से इनकार करें और जंग छिड़ जाए तो शहर का मुहासरा कर। 13 जब रब तेरा खुदा तुझे शहर पर फ़तह देगा तो उसके तमाम मर्दों को हलाक कर देना। 14 तू तमाम माले-गनीमत औरतों, बच्चों और मवेशियों समेत रख सकता है। दुश्मन की जो चीज़ें रब ने तेरे हवाले कर दी हैं उन सबको तू इस्तेमाल कर सकता है। 15 यों उन शहरों से निपटना जो तेरे अपने मुल्क से बाहर हैं।

16 लेकिन जो शहर उस मुल्क में वामे हैं जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में दे रहा है, उनके तमाम जानदारों को हलाक कर देना। 17 उन्हें रब के सुपर्द करके मुकम्मल तौर पर हलाक करना, जिस तरह रब तेरे खुदा ने तुझे हुक्म दिया है। इसमें हिन्ती, अमोरी, कनानी, फरिज़्ज़ी, हिब्वी और यबूसी शामिल हैं। 18 अगर तू ऐसा न करे तो वह तुम्हें रब तुम्हारे खुदा का गुनाह करने पर उकसाएँगे। जो धिनौनी हरकतें वह अपने देवताओं की पूजा करते वक़्त करते हैं उन्हें वह तुम्हें भी सिखाएँगे।

19 शहर का मुहासरा करते वक़्त इर्दगिर्द के फ़लदार दरख़्तों को काटकर तबाह न कर देना खाह बडीं देर भी हो जाए, वरना तू उनका फल नहीं खा सकेगा। उन्हें न काटना। क्या दरख़्त तेरे दुश्मन हैं जिनका मुहासरा करना है? हरगिज़ नहीं! 20 उन दरख़्तों की और बात है जो फल नहीं लाते। उन्हें तू काटकर मुहासरे के लिए इस्तेमाल कर सकता है जब तक शहर शिकस्त न जाए।

## 21

### नामालूम क़त्ल का कफ़फ़ारा

1 जब तू उस मुल्क में आबाद होगा जो रब तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू उस पर कब्ज़ा करे तो हो सकता है कि कोई लाश खुले मैदान में कहीं पड़ी पाई जाए। अगर मालूम न हो कि किसने उसे क़त्ल किया है 2 तो पहले इर्दगिर्द के शहरों के बुजुर्ग और काज़ी आकर पता करें कि कौन-सा शहर लाश के ज्यादा करीब है। 3 फिर उस शहर के बुजुर्ग एक जवान गाय चुन लें जो कभी काम के लिए इस्तेमाल नहीं हुई। 4 वह उसे एक ऐसी वादी में ले जाएँ जिसमें न कभी हल चलाया गया, न पौदे लगाए गए हों। वादी में ऐसी नहर हो जो पूरा साल बहती रहे। वही बुजुर्ग जवान गाय की गरदन तोड़ डालें।

5 फिर लावी के कबीले के इमाम करीब आएँ। क्योंकि रब तुम्हारे खुदा ने उन्हें चुन लिया है ताकि वह खिदमत करें, रब के नाम से बरकत दें और तमाम झगड़ों और हमलों का फ़ैसला करें। 6 उनके देखते देखते शहर के बुजुर्ग अपने हाथ गाय की

लाश के ऊपर धो लें। 7 साथ साथ वह कहें, “हमने इस शख्स को कत्ल नहीं किया, न हमने देखा कि किसने यह किया। 8 ऐ रब, अपनी कौम इसराईल का यह कफ़फ़ारा कबूल फ़रमा जिसे तूने फ़िधा देकर छुड़ाया है। अपनी कौम इसराईल को इस बेकूसूर के कत्ल का कुसूरवार न ठहरा।” तब मकतूल का कफ़फ़ारा दिया जाएगा।

9 यों तू ऐसे बेकूसूर शख्स के कत्ल का दाग अपने दरमियान से मिटा देगा। क्योंकि तूने वही कुछ किया होगा जो रब की नज़र में दुस्त है।

### जंगी कैदी औरत से शादी

10 हो सकता है कि तू अपने दुश्मन से जंग करे और रब तुम्हारा ख़ुदा तुझे फ़तह बख़्शे। जंगी कैदियों को जमा करते वक़्त 11 तुझे उनमें से एक ख़ूबसूरत औरत नज़र आती है जिसके साथ तेरा दिल लग जाता है। तू उससे शादी कर सकता है। 12 उसे अपने घर में ले आ। वहाँ वह अपने सर के बालों को मुँडवाए, अपने नाखून तराशे 13 और अपने वह कपड़े उतारे जो वह पहने हुए थी जब उसे कैद किया गया। वह पूरे एक महीने तक अपने वालिदेन के लिए मातम करे। फिर तू उसके पास जाकर उसके साथ शादी कर सकता है।

14 अगर वह तुझे किसी वक़्त पसंद न आए तो उसे जाने दे। वह वहाँ जाए जहाँ उसका जी चाहे। तुझे उसे बेचने या उससे लौटी का-सा सुलूक करने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि तूने उसे मजबूर करके उससे शादी की है।

### पहलौठे के हक़ूक

15 हो सकता है किसी मर्द की दो बीवियाँ हों। एक को वह प्यार करता है, दूसरी को नहीं। दोनों बीवियों के बेटे पैदा हुए हैं, लेकिन जिस बीवी से शौहर मुहब्बत नहीं करता उसका बेटा सबसे पहले पैदा हुआ। 16 जब बाप अपनी मिलकियत वसियत में तक्रसीम करता है तो लाज़िम है कि वह अपने सबसे बड़े बेटे का मौसूसी हक़ पूरा करे। उसे पहलौठे का यह हक़ उस बीवी के बेटे को मुंतकिल करने की इजाज़त नहीं जिसे वह प्यार करता है। 17 उसे तसलीम करना है कि उस बीवी का बेटा सबसे बड़ा है, जिससे वह मुहब्बत नहीं करता। नतीज़तन उसे उस बेटे को दूसरे बेटों की निषबत दुगना हिस्सा देना पड़ेगा, क्योंकि वह अपने बाप की ताकत का पहला इज़हार है। उसे पहलौठे का हक़ हासिल है।

### सरकश बेटा

18 हो सकता है कि किसी का बेटा हटधर्म और सरकश हो। वह अपने वालिदेन की इताअत नहीं करता और उनके तबीह करने और सज़ा देने पर भी उनकी नहीं सुनता। 19 इस सूरत में वालिदेन उसे पकड़कर शहर के दरवाज़े पर ले जाएँ जहाँ बुजुर्ग जमा होते हैं। 20 वह बुजुर्गों से कहें, “हमारा बेटा हटधर्म और सरकश है। वह हमारी इताअत नहीं करता बल्कि ऐयाश और शराबी है।” 21 यह सुनकर शहर के तमाम मर्द उसे संगसार करें। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। तमाम इसराईल यह सुनकर डर जाएगा।

### सज़ाए-मौत पानेवाले को उसी दिन दफ़नाना है

22 जब तू किसी को सज़ाए-मौत देकर उस की लाश किसी लकड़ी या दरख़्त से लटकाता है 23 तो उसे अगली सुबह तक वहाँ न छोड़ना। हर सूरत में उसे उसी दिन दफ़ना देना, क्योंकि जिसे भी दरख़्त से लटकाया गया है तो उस पर अल्लाह की लानत है। अगर उसे उसी दिन दफ़नाया न जाए तो तू उस मुल्क को नापाक कर देगा जो रब तेरा ख़ुदा तुझे मीरास में दे रहा है।

## 22

### मदद करने के लिए तैयार रहना

1 अगर तुझे किसी हमवतन भाई का बैल या भेड़-बकरी भटकी हुई नज़र आए तो उसे नज़रंदाज़ न करना बल्कि मालिक के पास वापस ले जाना। 2 अगर मालिक का घर करीब न हो या तुझे मालूम न हो कि मालिक कौन है तो जानवर को अपने घर लाकर उस वक़्त तक सँभाले रखना जब तक कि मालिक उसे ढूँडने न आए। फिर जानवर को उसे वापस कर देना। 3 यही कुछ कर अगर तेरे हमवतन भाई का गधा भटका हुआ नज़र आए या उसका गुमशुदा कोट या कोई और चीज़ कहीं नज़र आए। उसे नज़रंदाज़ न करना।

4 अगर तू देखे कि किसी हमवतन का गधा या बैल रास्ते में गिर गया है तो उसे नज़रंदाज़ न करना। जानवर को खड़ा करने में अपने भाई की मदद कर।

### कुदरती इंतज़ाम के तहत रहना

5 औरत के लिए मर्दों के कपड़े पहनना मना है। इसी तरह मर्द के लिए औरतों के कपड़े पहनना भी मना है। जो ऐसा करता है उससे रब तेरे ख़ुदा को घिन आती है।

6 अगर तुझे कहीं रास्ते में, किसी दरख्त में या ज़मीन पर घोंसला नज़र आए और परिदा अपने बच्चों या अंडों पर बैठा हुआ हो तो माँ को बच्चों समेत न पकड़ना। 7 तुझे बच्चे ले जाने की इजाज़त है लेकिन माँ को छोड़ देना ताकि तू खुशहाल और देर तक जीता रहे।

8 नया मकान तामीर करते वक़्त छत पर चारों तरफ़ दीवार बनाना। वरना तू उस शख्स की मौत का ज़िम्मादार ठहरेगा जो तेरी छत पर से गिर जाए।

9 अपने अंगूर के बाग़ में दो किस्म के बीज न बोना। वरना सब कुछ मक़दिस के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होगा, न सिर्फ़ वह फ़सल जो तुमने अंगूर के अलावा लगाई बल्कि अंगूर भी।

10 बैल और गधे को जोड़कर हल न चलाना।

11 ऐसे कपड़े न पहनना जिनमें बनते वक़्त ऊन और कतान मिलाए गए हैं।

12 अपनी चादर के चारों कोनों पर फूँदने लगाना।

### इज़दियाजी ज़िंदगी की हिफ़ाज़त

13 अगर कोई आदमी शादी करने के थोड़ी देर बाद अपनी बीवी को पसंद न करे 14 और फिर उस की बदनामी करके कहे, “इस औरत से शादी करने के बाद मुझे पता चला कि वह कुँवारी नहीं है” 15 तो जवाब में बीवी के वालिदिन शहर के दरवाज़े पर जमा होनेवाले बुजुर्गों के पास सबूत \* ले आएँ कि बेटी शादी से पहले कुँवारी थी। 16 बीवी का बाप बुजुर्गों से कहे, “मैंने अपनी बेटी की शादी इस आदमी से की है, लेकिन यह उससे नफ़रत करता है। 17 अब इसने उस की बदनामी करके कहा है, ‘मुझे पता चला कि तुम्हारी बेटी कुँवारी नहीं है।’ लेकिन यहाँ सबूत है कि मेरी बेटी कुँवारी थी।” फिर वालिदिन शहर के बुजुर्गों को मज़क़रा कपड़ा दिखाएँ।

18 तब बुजुर्ग उस आदमी को पकड़कर सज़ा दें, 19 क्योंकि उसने एक इसराईली कुँवारी की बदनामी की है। इसके अलावा उसे जुर्माने के तौर पर बीवी के बाप को चाँदी के 100 सिक्के देने पड़ेंगे। लाज़िम है कि वह शौहर के फ़रायज़ अदा करता रहे। वह उम्र-भर उसे तलाक़ नहीं दे सकेगा।

20 लेकिन अगर आदमी की बात दुस्त निकले और साबित न हो सके कि बीवी शादी से पहले कुँवारी थी 21 तो उसे बाप के घर लाया जाए। वहाँ शहर के आदमी उसे संसार कर दें। क्योंकि अपने बाप के घर में रहते हुए बदकारी करने से उसने इसराईल में एक अहमकाना और बेदीन हरकत की है। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा। 22 अगर कोई आदमी किसी की बीवी के साथ ज़िना करे और वह पकड़े जाएँ तो दोनों को सज़ाए-मौत देनी है। यों तू इसराईल से बुराई मिटा देगा।

23 अगर आबादी में किसी मर्द की मुलाकात किसी ऐसी कुँवारी से हो जिसकी किसी और के साथ मँगनी हुई है और वह उसके साथ हमबिसतर हो जाए 24 तो लाज़िम है कि तुम दोनों को शहर के दरवाज़े के पास लाकर संगसार करो। वजह यह है कि लड़की ने मदद के लिए न पुकारा अगरचे उस जगह लोग आबाद थे। मर्द का जुर्म यह था कि उसने किसी और की मंगेतर की इसमतदरी की है। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

25 लेकिन अगर मर्द गैरआबाद जगह में किसी और की मंगेतर की इसमतदरी करे तो सिर्फ़ उसी को सज़ाए-मौत दी जाए।

26 लड़की को कोई सज़ा न देना, क्योंकि उसने कुछ नहीं किया जो मौत के लायक हो। ज्यादती करनेवाले की हरकत उस शख्स के बराबर है जिसने किसी पर हमला करके उसे कत्ल कर दिया है। 27 चूँकि उसने लड़की को वहाँ पाया जहाँ लोग नहीं रहते, इसलिए अगरचे लड़की ने मदद के लिए पुकारा तो भी उसे कोई न बचा सका।

28 हो सकता है कोई आदमी किसी लड़की की इसमतदरी करे जिसकी मँगनी नहीं हुई है। अगर उन्हें पकड़ा जाए 29 तो वह लड़की के बाप को चाँदी के 50 सिक्के दे। लाज़िम है कि वह उसी लड़की से शादी करे, क्योंकि उसने उस की इसमतदरी की है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह उम्र-भर उसे तलाक़ नहीं दे सकता।

30 अपने बाप की बीवी से शादी करना मना है। जो कोई यह करे वह अपने बाप की बेहुरमती करता है।

## 23

### मुक़द्दस इजतिमा में शरीक होने की शरायत

1 जब इसराईली रब के मक़दिस के पास जमा होते हैं तो उसे हाज़िर होने की इजाज़त नहीं जो काटने या कुचलने से खोया बन गया है। 2 इसी तरह वह भी मुक़द्दस इजतिमा से दूर रहे जो नाजायज़ ताल्लूक़ात के नतीजे में पैदा हुआ है। उस की औलाद भी दसवीं पुस्त तक उसमें नहीं आ सकती।

3 कोई भी अम्मोनी या मोआबी मुक़द्दस इजतिमा में शरीक नहीं हो सकता। इन कौमों की औलाद दसवीं पुस्त तक भी इस जमात में हाज़िर नहीं हो सकती, 4 क्योंकि जब तुम मिसर से निकल आए तो वह रोटी और पानी लेकर तुमसे मिलने न

\* 22:15 यानी वह कपड़ा जिस पर नया जोड़ा सोया हुआ था।

आए। न सिर्फ यह बल्कि उन्होंने मसोपुतामिया के शहर फतोर में जाकर बिलाम बिन बओर को पैसे दिए ताकि वह तुझ पर लानत भेजे। <sup>5</sup> लेकिन रब तैरे खुदा ने बिलाम की न सुनी बल्कि उस की लानत बरकत में बदल दी। क्योंकि रब तेरा खुदा तुझसे प्यार करता है। <sup>6</sup> उग्र-भर कुछ न करना जिससे इन क्रौमों की सलामती और खुशहाली बढ़ जाए।

<sup>7</sup> लेकिन अदोमियों को मकरूह न समझना, क्योंकि वह तुम्हारे भाई हैं। इसी तरह मिसरियों को भी मकरूह न समझना, क्योंकि तू उनके मुल्क में परदेसी मेहमान था। <sup>8</sup> उनकी तीसरी नसल के लोग रब के मुकद्दस इजतिमा में शरीक हो सकते हैं।

### खैमागाह में नापाकी

<sup>9</sup> अपने दुश्मनों से जंग करते वक़्त अपनी लशकरगाह में हर नापाक चीज़ से दूर रहना। <sup>10</sup> मसलन अगर कोई आदमी रात के वक़्त एहतलाम के बाइस नापाक हो जाए तो वह लशकरगाह के बाहर जाकर शाम तक वहाँ ठहरे। <sup>11</sup> दिन ढलते वक़्त वह नहा ले तो सुरज डूबने पर लशकरगाह में वापस आ सकता है।

<sup>12</sup> अपनी हाजत रफ़ा करने के लिए लशकरगाह से बाहर कोई जगह मुक़र्र कर। <sup>13</sup> जब किसी को हाजत के लिए बैठना हो तो वह इसके लिए ग़द्दा खोदे और बाद में उसे मिट्टी से भर दे। इसलिए अपने सामान में खुदाई का कोई आला रखना ज़रूरी है।

<sup>14</sup> रब तेरा खुदा तेरी लशकरगाह में तैरे दरमियान ही घुमता-फिरता है ताकि तू महफूज़ रहे और दुश्मन तैरे सामने शिकस्त खाए। इसलिए लाज़िम है कि तेरी लशकरगाह उसके लिए मखसूसो-मुकद्दस हो। ऐसा न हो कि अल्लाह वहाँ कोई शर्मनाक बात देखकर तुझसे दूर हो जाए।

### फरार हुए गुलामों की मदद करना

<sup>15</sup> अगर कोई गुलाम तैरे पास पनाह ले तो उसे मालिक को वापस न करना। <sup>16</sup> वह तैरे साथ और तैरे दरमियान ही रहे, वहाँ जहाँ वह बसना चाहे, उस शहर में जो उसे पसंद आए। उसे न दबाना।

### मंदिर में इसमतफरोशी मना है

<sup>17</sup> किसी देवता की खिदमत में इसमतफरोशी करना हर इसराइली औरत और मर्द के लिए मना है। <sup>18</sup> मन्नत मानते वक़्त न कसबी का अज़्र, न कुते के पैसे \* रब के मक़दिस में लाना, क्योंकि रब तैरे खुदा को दोनों चीज़ों से घिन है।

### अपने हमवतनों से सूद न लेना

<sup>19</sup> अगर कोई इसराइली भाई तुझसे कर्ज़ ले तो उससे सूद न लेना, खाह तूने उसे पैसे, खाना या कोई और चीज़ दी हो। <sup>20</sup> अपने इसराइली भाई से सूद न ले बल्कि सिर्फ परदेसी से। फिर जब तू मुल्क पर कब्ज़ा करके उसमें रहेगा तो रब तेरा खुदा तैरे हर काम में बरकत देगा।

### अपनी मन्नत पूरी करना

<sup>21</sup> जब तू रब अपने खुदा के हुज़ूर मन्नत माने तो उसे पूरा करने में देर न करना। रब तेरा खुदा यकीनन तुझसे इसका मुतालबा करेगा। अगर तू उसे पूरा न करे तो कुस्वरार ठहरेगा। <sup>22</sup> अगर तू मन्नत मानने से बाज़ रहे तो कुस्वरार नहीं ठहरेगा, <sup>23</sup> लेकिन अगर तू अपनी दिली खुशी से रब के हुज़ूर मन्नत माने तो हर सूत में उसे पूरा कर।

### दूसरे के बाग में से गुज़रने का रवैया

<sup>24</sup> किसी हमवतन के अंगूर के बाग में से गुज़रते वक़्त तुझे जितना जी चाहे उसके अंगूर खाने की इजाज़त है। लेकिन अपने किसी बरतन में फल जमा न करना। <sup>25</sup> इसी तरह किसी हमवतन के अनाज के खेत में से गुज़रते वक़्त तुझे अपने हाथों से अनाज की बालियाँ तोड़ने की इजाज़त है। लेकिन दराँती इस्तेमाल न करना।

## 24

### तलाक और दुबारा शादी

<sup>1</sup> हो सकता है कोई आदमी किसी औरत से शादी करे लेकिन बाद में उसे पसंद न करे, क्योंकि उसे बीवी के बारे में किसी शर्मनाक बात का पता चल गया है। वह तलाकनामा लिखकर उसे औरत को देता और फिर उसे घर से वापस भेज देता है। <sup>2</sup> इसके बाद उस औरत की शादी किसी और मर्द से हो जाती है, <sup>3</sup> और वह भी बाद में उसे पसंद नहीं करता। वह भी तलाकनामा लिखकर उसे औरत को देता और फिर उसे घर से वापस भेज देता है। खाह दूसरा शौहर उसे वापस भेज दे या शौहर मर जाए, <sup>4</sup> औरत के पहले शौहर को उससे दुबारा शादी करने की इजाज़त नहीं है, क्योंकि वह औरत उसके लिए नापाक

\* <sup>23:18</sup> यकीन से नहीं कहा जा सकता कि 'कुते के पैसे' से क्या मुराद है। गाल्बिन इसके पीछे बुत्परस्ती का कोई दस्तूर है।

है। ऐसी हरकत रब की नज़र में काबिले-घिन है। उस मुल्क को यों गुनाहआलदा न करना जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में दे रहा है।

### मज़ीद हिदायात

5 अगर किसी आदमी ने अभी अभी शादी की हो तो तू उसे भरती करके जंग करने के लिए नहीं भेज सकता। तू उसे कोई भी ऐसी जिम्मादारी नहीं दे सकता, जिससे वह घर से दूर रहने पर मजबूर हो जाए। एक साल तक वह ऐसी जिम्मादारियों से बरी रहे ताकि घर में रहकर अपनी बीवी को खुश कर सके।

6 अगर कोई तुझसे उधार ले तो ज़मानत के तौर पर उससे न उस की छोटी चक्की, न उस की बड़ी चक्की का पाट लेना, क्योंकि ऐसा करने से तू उस की जान लेगा यानी तू वह चीज़ लेगा जिससे उसका गुज़ारा होता है।

7 अगर किसी आदमी को पकड़ा जाए जिसने अपने हमवतन को इग़ावा करके गुलाम बना लिया या बेच दिया है तो उसे सज़ाए-मौत देना है। यों तू अपने दरमियान से बुराई मिटा देगा।

8 अगर कोई वबाई जिल्दी बीमारी तुझे लग जाए तो बड़ी एहतियात से लावी के कबिले के इमामों की तमाम हिदायात पर अमल करना। जो भी हुक्म मैंने उन्हें दिया उसे पूरा करना। 9 याद कर कि रब तेरे खुदा ने मरियम के साथ क्या किया जब तुम मिसर से निकलकर सफ़र कर रहे थे।

### ग़रीबों के हक्क

10 अपने हमवतन को उधार देते वक़्त उसके घर में न जाना ताकि ज़मानत की कोई चीज़ मिले 11 बल्कि बाहर ठहरकर इंतज़ार कर कि वह खुद घर से ज़मानत की चीज़ निकालकर तुझे दे। 12 अगर वह इतना ज़रूरतमंद हो कि सिर्फ़ अपनी चादर दे सके तो रात के वक़्त ज़मानत तेरे पास न रहे। 13 उसे सूरज डूबने तक वापस करना ताकि कर्ज़दार उसमें लिपटकर सो सके। फिर वह तुझे बरकत देगा और रब तेरा खुदा तेरा यह कदम रास्त करार देगा।

14 ज़रूरतमंद मज़दूर से ग़लत फ़ायदा न उठाना, चाहे वह इसराईली हो या परदेसी। 15 उसे रोज़ाना सूरज डूबने से पहले पहले उस की मज़दूरी दे देना, क्योंकि इससे उसका गुज़ारा होता है। कहीं वह रब के हुज़ूर तेरी शिकायत न करे और तू कुसरवार ठहरे।

16 वालिंदैन को उनके बच्चों के ज़रायम के सबब से सज़ाए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उनके वालिंदैन के ज़रायम के सबब से। अगर किसी को सज़ाए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उसने खुद किया है।

17 परदेसियों और यतीमों के हक्क कायम रखना। उधार देते वक़्त ज़मानत के तौर पर बेवा की चादर न लेना। 18 याद रख कि तू भी मिसर में गुलाम था और कि रब तेरे खुदा ने फ़िघा देकर तुझे वहाँ से छुड़ाया। इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

19 अगर तू फ़सल की कटाई के वक़्त एक पूला भूलकर खेत में छोड़ आए तो उसे लाने के लिए वापस न जाना। उसे परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए वहाँ छोड़ देना ताकि रब तेरा खुदा तेरे हर काम में बरकत दे। 20 जब ज़ैतून की फ़सल पक गई हो तो दरख्तों को मार मारकर एक ही बार उनमें से फल उतार। इसके बाद उन्हें न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। 21 इसी तरह अपने अंगूर तोड़ने के लिए एक ही बार बाग़ में से गुज़रना। इसके बाद उसे न छेड़ना। बचा हुआ फल परदेसियों, यतीमों और बेवाओं के लिए छोड़ देना। 22 याद रख कि तू खुद मिसर में गुलाम था। इसी वजह से मैं तुझे यह हुक्म देता हूँ।

## 25

### कोड़े लगाने की मुनासिब सज़ा

1 अगर लोग अपना एक दूसरे के साथ झगडा खुद निपटा न सकें तो वह अपना मामला अदालत में पेश करें। काज़ी फैसला करे कि कौन बेकुसर है और कौन मुजरिम। 2 अगर मुजरिम को कोड़े लगाने की सज़ा देनी है तो उसे काज़ी के सामने ही मुँह के बल ज़मीन पर लिटाना। फिर उसे इतने कोड़े लगाए जाएँ जितनों के वह लायक है। 3 लेकिन उसको ज़्यादा से ज़्यादा 40 कोड़े लगाने हैं, वरना तेरे इसराईली भाई की सरे-आम बेइज़्जती हो जाएगी।

### बैल का मुँह न बाँधना

4 जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलाने देता है तो उसका मुँह बाँधकर न रखना।

मरहम भाई की बीवी से शादी करने का हुक्म

5 अगर कोई शादीशुदा मर्द बेऔलाद मर जाए और उसका सगा भाई साथ रहे तो उसका फर्ज है कि बेवा से शादी करे। बेवा शौहर के खानदान से हटकर किसी और से शादी न करे बल्कि सिर्फ अपने देवर से। 6 पहला बेटा जो इस रिश्ते से पैदा होगा पहले शौहर के बेटे की हैसियत रखेगा। यों उसका नाम कायम रहेगा।

7 लेकिन अगर देवर भाबी से शादी करना न चाहे तो भाबी शहर के दरवाजे पर जमा होनेवाले बुजुर्गों के पास जाए और उनसे कहे, “मेरा देवर मुझे शादी करने से इनकार करता है। वह अपना फर्ज अदा करने को तैयार नहीं कि अपने भाई का नाम कायम रखे।” 8 फिर शहर के बुजुर्ग देवर को बुलाकर उसे समझाएँ। अगर वह इसके बावजूद भी उससे शादी करने से इनकार करे 9 तो उस की भाबी बुजुर्गों की मौजूदगी में उसके पास जाकर उस की एक चप्पल उतार ले। फिर वह उसके मुँह पर थूककर कहे, “उस आदमी से ऐसा सुलूक किया जाता है जो अपने भाई की नसल कायम रखने को तैयार नहीं।” 10 आइंदा इसराइल में देवर की नसल “नंगे पाँववाले की नसल” कहलाएगी।

### झगड़े में नाजेबा हरकतें

11 अगर दो आदमी लड़ रहे हों और एक की बीवी अपने शौहर को बचाने की खातिर मुखालिफ के अजूए-तनासुल को पकड़ ले 12 तो लाजिम है कि तू औरत का हाथ काट डाले। उस पर रहम न करना।

### धोका न देना

13 तोलते वक़्त अपने थैले में सहीह वज़न के बाट रख, और धोका देने के लिए हलके बाट साथ न रखना। 14 इसी तरह अपने घर में अनाज की पैमाइश करने का सहीह बरतन रख, और धोका देने के लिए छोटा बरतन साथ न रखना। 15 सहीह वज़न के बाट और पैमाइश करने के सहीह बरतन इस्तेमाल करना ताकि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहे जो रब तेरा खुदा तुझे देगा। 16 क्योंकि उसे हर धोकेबाज़ से धिन है।

### अमालीक्रियों को सज़ा देना

17 याद रहे कि अमालीक्रियों ने तुझे क्या कुछ किया जब तुम मिसर से निकलकर सफ़र कर रहे थे। 18 जब तू थकाहारा था तो वह तुझ पर हमला करके पीछे पीछे चलनेवाले तमाम कमज़ोरों को जान से मारते रहे। वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानते थे। 19 चुनौचे जब रब तेरा खुदा तुझे ईर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से सुकून देगा और तू उस मुल्क में आबाद होगा जो वह तुझे मीरास में दे रहा है ताकि तू उस पर क़ब्ज़ा करे तो अमालीक्रियों को यों हलाक कर कि दुनिया में उनका नामो-निशान न रहे। यह बात मत भूलना।

## 26

### ज़मीन की पहली पैदावार रब को पेश करना

1 जब तू उस मुल्क में दाखिल होगा जो रब तेरा खुदा तुझे मीरास में दे रहा है और तू उस पर क़ब्ज़ा करके उसमें आबाद हो जाएगा 2 तो जो भी फ़सल तू काटेगा उसके पहले फल में से कुछ टोकरे में रखकर उस जगह ले जा जो रब तेरा खुदा अपने नाम की सुकूनत के लिए चुनेगा। 3 वहाँ खिदमत करनेवाले इमाम से कह, “आज मैं रब अपने खुदा के हुज़ूर एलान करता हूँ कि उस मुल्क में पहुँच गया हूँ जिसका हमें देने का वादा रब ने कसम खाकर हमारे बापदादा से किया था।”

4 तब इमाम तेरा टोकरा लेकर उसे रब तेरे खुदा की कुरबानागाह के सामने रख दे। 5 फिर रब अपने खुदा के हुज़ूर कह, “मेरा बाप आवारा फिरनेवाला अरामी था जो अपने लोगों को लेकर मिसर में आबाद हुआ। वहाँ पहुँचते वक़्त उनकी तादाद कम थी, लेकिन होते होते वह बड़ी और ताकतवर क़ौम बन गए। 6 लेकिन मिसरियों ने हमारे साथ बुरा सुलूक किया और हमें दबाकर सख़्त गुलामी में फँसा दिया। 7 फिर हमने चिल्लाकर रब अपने बापदादा के खुदा से फ़रियाद की, और रब ने हमारी सुनी। उसने हमारा दुख, हमारी मुसीबत और दबी हुई हालत देखी 8 और बड़े इख़्तियार और कुदरत का इज़हार करके हमें मिसर से निकाल लाया। उस वक़्त उसने मिसरियों में दहशत फैलाकर बड़े मोजिजे दिखाए। 9 वह हमें यहाँ ले आया और यह मुल्क दिया जिसमें दूध और शहद की कसरत है। 10 ऐ रब, अब मैं तुझे उस ज़मीन का पहला फल पेश करता हूँ जो तूने हमें बख़्शी है।”

अपनी पैदावार का टोकरा रब अपने खुदा के सामने रखकर उसे सिजदा करना। 11 खुशी मानना कि रब मेरे खुदा ने मुझे और मेरे घराने को इतनी अच्छी चीज़ों से नवाजा है। इस खुशी में अपने दरमियान रहनेवाले लावियों और परदेसियों को भी शामिल करना।

### फ़सल का ज़रूरतमंदों के लिए हिस्सा

12 हर तीसरे साल अपनी तमाम फ़सलों का दसवाँ हिस्सा लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को देना ताकि वह तेरे शहरों में खाना खाकर सेर हो जाएँ। 13 फिर रब अपने खुदा से कह, “मैंने वैसा ही किया है वैसा तूने मुझे हुक़म दिया।

मैंने अपने घर से तेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस हिस्सा निकालकर उसे लावियों, परदेसियों, यतीमों और बेवाओं को दिया है। मैंने सब कुछ तेरी हिदायात के ऐन मुताबिक किया है और कुछ नहीं भूला। 14 मातम करते वक़्त मैंने इस मखसूसो-मुकद्दस हिस्से से कुछ नहीं खाया। मैं इसे उठाकर घर से बाहर लाते वक़्त नापाक नहीं था। मैंने इसमें से मुरदों को भी कुछ पेश नहीं किया। मैंने रब अपने खुदा की इताअत करके वह सब कुछ किया है जो तूने मुझे करने को फ़रमाया था। 15 चुनौचे आसमान पर अपने मकदिस से निगाह करके अपनी क़ौम इसराईल को बरकत दे। उस मुल्क को भी बरकत दे जिसका वादा तूने क़सम खाकर हमारे बापदादा से किया और जो तूने हमें बख़्श भी दिया है, उस मुल्क को जिसमें दूध और शहद की क़सरत है।”

तुम रब की क़ौम हो

16 आज रब तेरा खुदा फ़रमाता है कि इन अहक़ाम और हिदायात की पैरवी कर। पूरे दिलो-जान से और बड़ी एहतियात से इन पर अमल कर।

17 आज तूने एलान किया है, “रब मेरा खुदा है। मैं उस की राहों पर चलता रहूँगा, उसके अहक़ाम के ताबे रहूँगा और उस की सुनूँगा।” 18 और आज रब ने एलान किया है, “तू मेरी क़ौम और मेरी अपनी मिलकियत है जिस तरह मैंने तुझसे वादा किया है। अब मेरे तमाम अहक़ाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ार। 19 जितनी भी क़ौमों में मैंने खलक की हैं उन सब पर मैं तुझे सरफ़राज़ करूँगा और तुझे तारीफ़, शोहरत और इज़्ज़त अता करूँगा। तू रब अपने खुदा के लिए मखसूसो-मुकद्दस क़ौम होगा जिस तरह मैंने वादा किया है।”

## 27

ऐबाल पहाड़ पर कुरबानगाह बनाना है

1 फिर मूसा ने बुज़ुर्गों से मिलकर क़ौम से कहा, “तमाम हिदायात के ताबे रहो जो मैं तुम्हें आज दे रहा हूँ। 2 जब तुम दरियाए-य़रदन को पार करके उस मुल्क में दाख़िल होगे जो रब तेरा खुदा तुझे दे रहा है तो वहाँ बड़े पत्थर खड़े करके उन पर सफ़ेदी कर। 3 उन पर लफ़ज़ बलफ़ज़ पूरी शरीअत लिख। दरिया को पार करने के बाद यही कुछ कर ताकि तू उस मुल्क में दाख़िल हो जो रब तेरा खुदा तुझे देगा और जिसमें दूध और शहद की क़सरत है। क्योंकि रब तेरे बापदादा के खुदा ने यह देने का तुझसे वादा किया है। 4 चुनौचे य़रदन को पार करके पत्थरों को ऐबाल पहाड़ पर खड़ा करो और उन पर सफ़ेदी कर।

5 वहाँ रब अपने खुदा के लिए कुरबानगाह बनाना। जो पत्थर तू उसके लिए इस्तेमाल करे उन्हें लोहे के किसी औज़ार से न तराशना। 6 सिर्फ़ सालिम पत्थर इस्तेमाल कर। कुरबानगाह पर रब अपने खुदा को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश कर। 7 सलामती की कुरबानियाँ भी उस पर चढ़ा। उन्हें वहाँ रब अपने खुदा के हज़ूर खाकर खुशी मना। 8 वहाँ खड़े किए गए पत्थरों पर शरीअत के तमाम अलफ़ाज़ साफ़ साफ़ लिखे जाएँ।”

ऐबाल पहाड़ पर से लानत

9 फिर मूसा ने लावी के कबीले के इमामों से मिलकर तमाम इसराईलियों से कहा, “ऐ इसराईल, खामोशी से सुन। अब तू रब अपने खुदा की क़ौम बन गया है, 10 इसलिए उसका फ़रमाँबरदार रह और उसके उन अहक़ाम पर अमल कर जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ।”

11 उसी दिन मूसा ने इसराईलियों को हुक़म देकर कहा, 12 “दरियाए-य़रदन को पार करने के बाद शमौन, लावी, यहदाह, इशकार, यूसुफ़ और बिनयमीन के कबीले गरिज़ीम पहाड़ पर खड़े हो जाएँ। वहाँ वह बरकत के अलफ़ाज़ बोलें। 13 बाकी कबीले यानी रूबिन, ज़द, आशर, ज़बलून, दान और नफ़ताली ऐबाल पहाड़ पर खड़े होकर लानत के अलफ़ाज़ बोलें।

14 फिर लावी तमाम लोगों से मुखातिब होकर ऊँची आवाज़ से कहें,

15 “उस पर लानत जो बुत तराशकर या ढालकर चुपके से खड़ा करे। रब को कारीगर के हाथों से बनी हुई ऐसी चीज़ से घिन है।”

जवाब में सब लोग कहें, ‘आमीन!’

16 फिर लावी कहें, ‘उस पर लानत जो अपने बाप या माँ की तहकीर करे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

17 ‘उस पर लानत जो अपने पड़ोसी की ज़मीन की हुदूद आगे पीछे करे।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

18 ‘उस पर लानत जो किसी अंधे की राहनुमाई करके उसे गलत रास्ते पर ले जाए।’

सब लोग कहें, ‘आमीन!’

19 ‘उस पर लानत जो परदेसियों, यतीमों या बेवाओं के हुकूक कायम न रखे।’



सब लोग कहें, 'आमीन!'

20 'उस पर लानत जो अपने बाप की बीबी से हमबिसतर हो जाए, क्योंकि वह अपने बाप की बेहुरमती करता है।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

21 'उस पर लानत जो जानवर से जिंसी ताल्लुक रखे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

22 'उस पर लानत जो अपनी सगी बहन, अपने बाप की बेटी या अपनी माँ की बेटी से हमबिसतर हो जाए।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

23 'उस पर लानत जो अपनी सास से हमबिसतर हो जाए।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

24 'उस पर लानत जो चुपके से अपने हमवतन को कत्ल कर दे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

25 'उस पर लानत जो पैसे लेकर किसी बेकूस्र शाख्स को कत्ल करे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

26 'उस पर लानत जो इस शरीअत की बातें कायम न रखे, न इन पर अमल करे।'

सब लोग कहें, 'आमीन!'

## 28

### फरमाँबरदारी की बरकतें

1 रब तेरा ख़ुदा तुझे दुनिया की तमाम कौमों पर सरफ़राज़ करेगा। शर्त यह है कि तू उस की सुने और एहतियात से उसके उन तमाम अहकाम पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 2 रब अपने ख़ुदा का फ़रमाँबरदार रह तो तुझे हर तरह की बरकत हासिल होगी। 3 रब तुझे शहर और देहात में बरकत देगा। 4 तेरी औलाद फले-फूलेगी, तेरी अच्छी-खासी फसलें पकेगी, तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के बच्चे तरक्की करेंगे। 5 तेरा टोकरा फल से भरा रहेगा, और आटा गूँधने का तेरा बरतन आटे से खाली नहीं होगा। 6 रब तुझे घर में आते और वहाँ से निकलते वक्त बरकत देगा।

7 जब तेरे दुश्मन तुझ पर हमला करेंगे तो वह रब की मदद से शिकस्त खाएँगे। गो वह मिलकर तुझ पर हमला करें तो भी तू उन्हें चारों तरफ़ मुँतशिर कर देगा।

8 अल्लाह तेरे हर काम में बरकत देगा। अनाज की कसरत के सबब से तेरे गोदाम भरे रहेंगे। रब तेरा ख़ुदा तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जो वह तुझे देनेवाला है। 9 रब अपनी कसम के मुताबिक़ तुझे अपनी मखसूसो-मुकद्दस कौम बनाएगा अगर तू उसके अहकाम पर अमल करे और उस की राहों पर चले। 10 फिर दुनिया की तमाम कौमों तुझसे खौफ़ खाएँगी, क्योंकि वह देखेंगी कि तू रब की कौम है और उसके नाम से कहलाता है।

11 रब तुझे बहुत औलाद देगा, तेरे रेवड़ बढ़ाएगा और तुझे कसरत की फसलें देगा। यों वह तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जिसका वादा उसने कसम खाकर तेरे बापदादा से किया। 12 रब आसमान के खज़ानों को खोलकर वक्त पर तेरी ज़मीन पर बारिश बरसाएगा। वह तेरे हर काम में बरकत देगा। तू बहुत-सी कौमों को उधार देगा लेकिन किसी का भी कर्ज़दार नहीं होगा। 13 रब तुझे कौमों की दूम नहीं बल्कि उनका सर बनाएगा। तू तरक्की करता जाएगा और ज़वाल का शिकार नहीं होगा। लेकिन शर्त यह है कि तू रब अपने ख़ुदा के वह अहकाम मानकर उन पर अमल करे जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 14 जो कुछ भी मैंने तुझे करने को कहा है उससे किसी तरह भी हटकर ज़िंदगी न गुज़ारना। न दीगर माबूदों की पैरवी करना, न उनकी खिदमत करना।

### नाफ़रमानी की लानतें

15 लेकिन अगर तू रब अपने ख़ुदा की न सुने और उसके उन तमाम अहकाम पर अमल न करे जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ तो हर तरह की लानत तुझ पर आएगी। 16 शहर और देहात में तुझ पर लानत होगी। 17 तेरे टोकरे और आटा गूँधने के तेरे बरतन पर लानत होगी। 18 तेरी औलाद पर, तेरे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के बच्चों पर और तेरे खेतों पर लानत होगी। 19 घर में आते और वहाँ से निकलते वक्त तुझ पर लानत होगी। 20 अगर तू गलत काम करके रब को छोड़े तो जो कुछ भी तू करे वह तुझ पर लानतें, पेशानियाँ और मुसीबतें आने देगा। तब तेरा जल्दी से सत्यानास होगा, और तू हलाक हो जाएगा।

21 रब तुझमें वबाई बीमारियाँ फैलाएगा जिनके सबब से तुझमें से कोई उस मुल्क में ज़िंदा नहीं रहेगा जिस पर तू अभी क़र्र्ज़ा करनेवाला है। 22 रब तुझे मोहलक बीमारियों, बुखार और सूजन से मारेगा। श्लत्सानेवाली गरमी, काल, पतरोग और फफूँदी तेरी फसलें ख़त्म करेगी। ऐसी मुसीबतों के बाइस तू तबाह हो जाएगा। 23 तेरे ऊपर आसमान पीतल जैसा सख़्त होगा

जबकि तेरे नीचे ज़मीन लोहे की मानिंद होगी। 24 बारिश की जगह रब तेरे मुल्क पर गर्द और रेत बरसाएगा जो आसमान से तेरे मुल्क पर छाकर तुझे बरबाद कर देगी।

25 जब तू अपने दुश्मनों का सामना करे तो रब तुझे शिकस्त दिलाएगा। गो तू मिलकर उनकी तरफ बढ़ेगा तो भी उनसे भागकर चारों तरफ मुंतशिर हो जाएगा। दुनिया के तमाम ममालिक में लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे जब वह तेरी मुसीबतें देखेंगे। 26 परिदे और जंगली जानवर तेरी लाशों को खा जाएंगे, और उन्हें भगनेवाला कोई नहीं होगा। 27 रब तुझे उन्हीं फोड़ों से मारेगा जो मिसरियों को निकले थे। ऐसे जिल्दी अमराज़ फैलेगे जिनका इलाज नहीं है। 28 तू पागलपन का शिकार हो जाएगा, रब तुझे अधेपन और जहनी अबतरी में मुब्तला कर देगा। 29 दोपहर के वक़्त भी तू अंधे की तरह टटोल टटोलकर फिरेगा। जो कुछ भी तू करे उसमें नाकाम रहेगा। रोज़ बरोज़ लोग तुझे दबाते और लूटते रहेंगे, और तुझे बचानेवाला कोई नहीं होगा।

30 तेरी मँगनी किसी औरत से होगी तो कोई और आकर उस की इसमतदारी करेगा। तू अपने लिए घर बनाएगा लेकिन उसमें नहीं रहेगा। तू अपने लिए अंगूर का बाग़ लगाएगा लेकिन उसका फल नहीं खाएगा। 31 तेरे देखते देखते तेरा बैल ज़बह किया जाएगा, लेकिन तू उसका गोशत नहीं खाएगा। तेरा गधा तुझसे छीन लिया जाएगा और वापस नहीं किया जाएगा। तेरी भेड़-बकरियाँ दुश्मन को दी जाएँगी, और उन्हें छुड़ानेवाला कोई नहीं होगा। 32 तेरे बेटे-बेटियों को किसी दूसरी कौम को दिया जाएगा, और तू कुछ नहीं कर सकेगा। रोज़ बरोज़ तू अपने बच्चों के इतज़ार में उफ़क को तकता रहेगा, लेकिन देखते देखते तेरी आँखें धुँधला जाएँगी।

33 एक अजनबी कौम तेरी ज़मीन की पैदावार और तेरी मेहनत-मशक्कत की कमाई ले जाएगी। तुझे उग्र-भर जुलम और दबाव बरदाश्त करना पड़ेगा।

34 जो हौलनाक बातें तेरी आँखें देखेंगी उनसे तू पागल हो जाएगा। 35 रब तुझे तकलीफ़देह और लाइलाज फोड़ों से मारेगा जो तल्वे से लेकर चाँदी तक पूरे जिस्म पर फैलकर तेरे घुटनों और टाँगों को मुतआस्सिर करेंगे।

36 रब तुझे और तेरे मुकर्रर किए हुए बादशाह को एक ऐसे मुल्क में ले जाएगा जिससे न तू और न तेरे बापदादा वाकिफ़ थे। वहाँ तू दीगर माबदों यानी लकड़ी और पत्थर के बुतों की खिदमत करेगा। 37 जिस जिस कौम में रब तुझे हॉक देगा वहाँ तुझे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और वह तेरा मज़ाक उड़ाएंगे। तू उनके लिए इबरतअगेज़ मिसाल होगा।

38 तू अपने खेतों में बहुत बीज बोने के बावजूद कम ही फ़सल काटेगा, क्योंकि टिट्टे उसे खा जाएंगे। 39 तू अंगूर के बाग़ लगाकर उन पर खूब मेहनत करेगा लेकिन न उनके अंगूर तोड़ेगा, न उनकी मै पिएगा, क्योंकि कीड़े उन्हें खा जाएंगे। 40 गो तेरे पूरे मुल्क में जैतून के दरख़्त होंगे तो भी तू उनका तेल इस्तेमाल नहीं कर सकेगा, क्योंकि जैतून खराब होकर ज़मीन पर गिर जाएंगे।

41 तेरे बेटे-बेटियाँ तो होंगे, लेकिन तू उनसे महरूम हो जाएगा। क्योंकि उन्हें गिरफ़्तार करके किसी अजनबी मुल्क में ले जाया जाएगा। 42 टिट्टियों के गोल तेरे मुल्क के तमाम दरख़्तों और फ़सलों पर कब्ज़ा कर लेंगे। 43 तेरे दरमियान रहनेवाला परदेसी तुझसे बढ़कर तरक्की करता जाएगा जबकि तुझ पर ज़वाल आ जाएगा। 44 उसके पास तुझे उधार देने के लिए पैसे होंगे जबकि तेरे पास उसे उधार देने को कुछ नहीं होगा। आखिर में वह सर और तू दुम होगा।

45 यह तमाम लानतें तुझ पर आन पड़ेंगी। जब तक तू तबाह न हो जाए वह तेरा तान्क़ुब करती रहेगी, क्योंकि तूने रब अपने खुदा की न सुनी और उसके अहक़ाम पर अमल न किया। 46 यों यह हमेशा तक तेरे और तेरी औलाद के लिए एक मौजिज़ाना और इबरतअगेज़ इलाही निशान रहेगी।

47 चूँकि तूने दिली ख़ुशी से उस वक़्त रब अपने खुदा की खिदमत न की जब तेरे पास सब कुछ था 48 इसलिए तू उन दुश्मनों की खिदमत करेगा जिन्हें रब तेरे खिलाफ़ भेजेगा। तू भूका, प्यासा, गंगा और हर चीज़ का हाजतमंद होगा, और रब तेरी गरदन पर लोहे का जुआ रखकर तुझे मुकम्मल तबाही तक ले जाएगा।

49 रब तेरे खिलाफ़ एक कौम खड़ी करेगा जो दूर से बल्कि दुनिया की इंतहा से आकर उकाब की तरह तुझ पर झपट्टा मारेगी। वह ऐसी ज़बान बोलेंगी जिससे तू वाकिफ़ नहीं होगा। 50 वह सख़्त कौम होगी जो न बुजुर्गों का लिहाज़ करेगी और न बच्चों पर रहम करेगी। 51 वह तेरे मवेशी और फ़सलें खा जाएगी और तू भूके मर जाएगा। तू हलाक हो जाएगा, क्योंकि तेरे लिए कुछ नहीं बचेगा, न अनाज, न मै, न तेल, न गाय-बैलों या भेड़-बकरियों के बच्चे। 52 दुश्मन तेरे मुल्क के तमाम शहरों का मुहासरा करेगा। आखिरकार जिन ऊँची और मज़बूत फ़सीलों पर तू एतमाद करेगा वह भी सब गिर पड़ेंगी। दुश्मन उस मुल्क का कोई भी शहर नहीं छोड़ेगा जो रब तेरा खुदा तुझे देनेवाला है।

53 जब दुश्मन तेरे शहरों का मुहासरा करेगा तो तू उनमें इतना शदीद भूका हो जाएगा कि अपने बच्चों को खा लेगा जो रब तेरे खुदा ने तुझे दिए हैं। 54-55 मुहासरे के दौरान तुममें से सबसे शरीफ़ और शायस्ता आदमी भी अपने बच्चे को ज़बह करके

खाएगा, क्योंकि उसके पास कोई और खुराक नहीं होगी। उस की हालत इतनी बुरी होगी कि वह उसे अपने सगे भाई, बीवी या बाकी बच्चों के साथ तकसीम करने के लिए तैयार नहीं होगा। 56-57 तुममें से सबसे शरीफ और शायस्ता औरत भी ऐसा ही करेगी, अगरचे पहले वह इतनी नाजुक थी कि फ़र्श को अपने तल्वे से छूने की ज़रूरत नहीं करती थी। मुहासरे के दौरान उसे इतनी शदीद भूक होगी कि जब उसके बच्चा पैदा होगा तो वह छुप छुपकर उसे खाएगी। न सिर्फ यह बल्कि वह पैदाइश के वक़्त बच्चे के साथ खारिज हुई आलाइश भी खाएगी और उसे अपने शौहर या अपने बाकी बच्चों में बाँटने के लिए तैयार नहीं होगी। इतनी मूसीबत तुझ पर मुहासरे के दौरान आएगी।

58 गरज़ एहतियात से शरीअत की उन तमाम बातों की पैरवी कर जो इस किताब में दर्ज हैं, और रब अपने खुदा के पुरजलाल और बारोब नाम का खौफ मानना। 59 वरना वह तुझ और तेरी औलाद में सख़्त और लाइलाज अमराज़ और ऐसी दहशतनाक वबाएँ फैलाएगा जो रोकी नहीं जा सकेंगी। 60 जिन तमाम वबाओं से तू मिसर में दहशत खाता था वह अब तेरे दरमियान फैलकर तेरे साथ चिमटी रहेगी। 61 न सिर्फ शरीअत की इस किताब में बयान की हुई बीमारियाँ और मूसीबतें तुझ पर आएँगी बल्कि रब और भी तुझ पर भेजेगा, जब तक कि तू हलाक न हो जाए।

62 अगर तू रब अपने खुदा की न सुने तो आखिरकार तुममें से बहुत कम बचे रहेंगे, गो तुम पहले सितारों जैसे बेशमार थे। 63 जिस तरह पहले रब खुशी से तुम्हें कामयाबी देता और तुम्हारी तादाद बढ़ाता था उसी तरह अब वह तुम्हें बरबाद और तबाह करने में खुशी महसूस करेगा। तुम्हें ज़बरदस्ती उस मुल्क से निकाला जाएगा जिस पर तू इस वक़्त दाखिल होकर कब्ज़ा करनेवाला है। 64 तब रब तुझे दुनिया के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक तमाम कौमों में मुंतशिर कर देगा। वहाँ तू दीगर माबूदों की पूजा करेगा, ऐसे देवताओं की जिनसे न तू और न तेरे बापदादा वाकिफ़ थे।

65 उन ममालिक में भी न तू आरामो-सुकून पाएगा, न तेरे पाँव जम जाएंगे। रब होने देगा कि तेरा दिल थरथरता रहेगा, तेरी आँखें परेशानी के बाइस धुँधला जाएँगी और तेरी जान से उम्मीद की हर किरण जाती रहेगी। 66 तेरी जान हर वक़्त खलते में होगी और तू दिन-रात दहशत खाते हुए मरने की तक्क़ो करेगा। 67 सुबह उठकर तू कहेगा, 'काश शाम हो!' और शाम के वक़्त, 'काश सुबह हो!' क्योंकि जो कुछ तू देखेगा उससे तेरे दिल को दहशत घेर लेगी।

68 रब तुझे जहाज़ों में बिठाकर मिसर वापस ले जाएगा अगरचे मैंने कहा था कि तू उसे दुबारा कभी नहीं देखेगा। वहाँ पहुँचकर तुम अपने दुश्मनों से बात करके अपने आपको गुलाम के तौर पर बेचने की कोशिश करोगे, लेकिन कोई भी तुम्हें खरीदना नहीं चाहेगा।”

## 29

### मोआब में रब के साथ नया अहद

1 जब इसराईली मोआब में थे तो रब ने मूसा को हुक्म दिया कि इसराईलियों के साथ एक और अहद बाँधे। यह उस अहद के अलावा था जो रब होरिब यानी सीना पर उनके साथ बाँध चुका था। 2 इस सिलसिले में मूसा ने तमाम इसराईलियों को बुलाकर कहा, “तुमने खुद देखा कि रब ने मिसर के बादशाह फिरौन, उसके मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के साथ क्या कुछ किया। 3 तुमने अपनी आँखों से वह बड़ी आजमाइशें, इलाही निशान और मोजिज़े देखे जिनके ज़रीए रब ने अपनी कुदरत का इज़हार किया।

4 मगर अफ़सोस, आज तक रब ने तुम्हें न समझदार दिल अता किया, न आँखें जो देख सकें या कान जो सुन सकें। 5 रेगिस्तान में मैंने 40 साल तक तुम्हारी राहनुमाई की। इस दौरान न तुम्हारे कपड़े फटे और न तुम्हारे जूते घिसे। 6 न तुम्हारे पास रोटी थी, न मैं या मैं जैसी कोई और चीज़। तो भी रब ने तुम्हारी ज़रूरियात पूरी की ताकि तुम सीख लो कि वही रब तुम्हारा खुदा है।

7 फिर हम यहाँ आए तो हसबोन का बादशाह सीहोन और बसन का बादशाह ओज निकलकर हमसे लड़ने आए। लेकिन हमने उन्हें शिकस्त दी। 8 उनके मुल्क पर कब्ज़ा करके हमने उसे रबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले को मीरास में दिया। 9 अब एहतियात से इस अहद की तमाम शरायत पूरी करो ताकि तुम हर बात में कामयाब हो।

10 इस वक़्त तुम सब रब अपने खुदा के हज़ूर खड़े हो, तुम्हारे कबीलों के सरदार, तुम्हारे बुज़ुर्ग, निगहबान, मर्द, 11 औरतें और बच्चे। तेरे दरमियान रहनेवाले परदेसी भी लकड़हारों से लेकर पानी भरनेवालों तक तेरे साथ यहाँ हाज़िर हैं। 12 तू इसलिए यहाँ जमा हुआ है कि रब अपने खुदा का वह अहद तसलीम करे जो वह आज कसम खाकर तेरे साथ बाँध रहा है। 13 इससे वह आज इसकी तसदीक कर रहा है कि तू उस की कौम और वह तेरा खुदा है यानी वही बात जिसका वादा उसने तुझसे और तेरे बापदादा इज़ाहीम, इसहाक और याक़ूब से किया था। 14-15 लेकिन मैं यह अहद कसम खाकर न सिर्फ़ तुम्हारे साथ जो हाज़िर हो बाँध रहा हूँ बल्कि तुम्हारी आनेवाली नसलों के साथ भी।

### बुतपरस्ती की सजा

16 तुम खुद जानते हो कि हम मिसर में किस तरह ज़िंदगी गुज़ारते थे। यह भी तुम्हें याद है कि हम किस तरह मुख्तलिफ़ ममालिक में से गुज़रते हुए यहाँ तक पहुँचे। 17 तुमने उनके नफ़रतअंगेज़ बुत देखे जो लकड़ी, पत्थर, चाँदी और सोने के थे। 18 ध्यान दो कि यहाँ मौजूद कोई भी मर्द, औरत, कुंभा या कबीला रब अपने खुदा से हटकर दूसरी कौमों के देवताओं की पूजा न करे। ऐसा न हो कि तुम्हारे दरमियान कोई जड़ फूटकर ज़हरीला और कड़वा फल लाए।

19 तुम सबने वह लानतें सुनी हैं जो रब नाफ़रमानों पर भेजेगा। तो भी हो सकता है कि कोई अपने आपको रब की बरकत का वारिस समझकर कहे, 'बेशक मैं अपनी गलत राहों से हटने के लिए तैयार नहीं हूँ, लेकिन कोई बात नहीं। मैं महफूज़ रहूँगा।' खबरदार, ऐसी हरकत से वह न सिर्फ़ अपने ऊपर बल्कि पूरे मुल्क पर तबाही लाएगा। \* 20 रब कभी भी उसे मुआफ़ करने पर आमादा नहीं होगा बल्कि वह उसे अपने ग़ज़ब और गैरत का निशाना बनाएगा। इस किताब में दर्ज तमाम लानतें उस पर आएँगी, और रब दुनिया से उसका नामो-निशान मिटा देगा। 21 वह उसे पूरी जमात से अलग करके उस पर अहद की वह तमाम लानतें लाएगा जो शरीअत की इस किताब में लिखी हुई हैं।

22 मुस्तक़बिल में तुम्हारी औलाद और दूर-दराज़ ममालिक से आनेवाले मुसाफ़िर उन मुसीबतों और अमराज़ का असर देखेंगे जिनसे रब ने मुल्क को तबाह किया होगा। 23 चारों तरफ़ ज़मीन झुलसी हुई और गंधक और नमक से ढकी हुई नजर आएगी। बीज उसमें बोया नहीं जाएगा, क्योंकि खुदरौ पौदों तक कुछ नहीं उगेगा। तुम्हारा मुल्क सद्म, अमूर, अदमा और ज़बोईम की मानिंद होगा जिनको रब ने अपने ग़ज़ब में तबाह किया। 24 तमाम कौमों पृच्छेंगी, 'रब ने इस मुल्क के साथ ऐसा क्यों किया? उसके साख़्त ग़ज़ब की क्या वजह थी?' 25 उन्हें जवाब मिलेगा, 'वजह यह है कि इस मुल्क के बाशिंदों ने रब अपने बापदादा के खुदा का अहद तोड़ दिया जो उसने उन्हें मिसर से निकालते वक़्त उनसे बाँधा था। 26 उन्होंने जाकर दीगर माबूदों की खिदमत की और उन्हें सिजदा किया जिनसे वह पहले वाकिफ़ नहीं थे और जो रब ने उन्हें नहीं दिए थे। 27 इसी लिए उसका ग़ज़ब इस मुल्क पर नाज़िल हुआ और वह उस पर वह तमाम लानतें लाया जिनका जिक्र इस किताब में है। 28 वह इतना गुस्से हुआ कि उसने उन्हें जड़ से उखाड़कर एक अजनबी मुल्क में फेंक दिया जहाँ वह आज तक आबाद हैं।'

29 बहुत कुछ पोशीदा है, और सिर्फ़ रब हमारा खुदा उसका इल्म रखता है। लेकिन उसने हम पर अपनी शरीअत का इनकिशाफ़ कर दिया है। लाज़िम है कि हम और हमारी औलाद उसके फ़रमाँबरदार रहें।

## 30

### तौबा के मुसबत नतीजे

1 मैंने तुझे बताया है कि तेरे लिए क्या कुछ बरकत का और क्या कुछ लानत का बाइस है। जब रब तेरा खुदा तुझे तेरी गलत हरकतों के सबब से मुख्तलिफ़ कौमों में मुंतशिर कर देगा तो तू मेरी बातें मान जाएगा। 2 तब तू और तेरी औलाद रब अपने खुदा के पास वापस आएँगे और पूरे दिलो-जान से उस की सुनकर उन तमाम अहकाम पर अमल करेंगे जो मैं आज तुझे दे रहा हूँ। 3 फिर रब तेरा खुदा तुझे बहाल करेगा और तुझ पर रहम करके तुझे उन तमाम कौमों से निकालकर जमा करेगा जिनमें उसने तुझे मुंतशिर कर दिया था। 4 हौं, रब तेरा खुदा तुझे हर जगह से जमा करके वापस लाएगा, चाहे तू सबसे दूर मुल्क में क्यों न पड़ा हो। 5 वह तुझे तेरे बापदादा के मुल्क में लाएगा, और तू उस पर कब्ज़ा करेगा। फिर वह तुझे तेरे बापदादा से ज़्यादा कामयाबी बख़्शेगा, और तेरी तादाद ज़्यादा बढ़ाएगा।

6 खतना रब की कौम का जाहिरी निशान है। लेकिन उस वक़्त रब तेरा खुदा तेरे और तेरी औलाद का बातिनी खतना करेगा ताकि तू उसे पूरे दिलो-जान से प्यार करे और जीता रहे। 7 जो लानतें रब तेरा खुदा तुझ पर लाया था उन्हें वह अब तेरे दुश्मनों पर आने देगा, उन पर जो तुझसे नफ़रत रखते और तुझे ईज़ा पहुँचाते हैं। 8 क्योंकि तू दुबारा रब की सुनेगा और उसके तमाम अहकाम की पैरवी करेगा जो मैं तुझे आज दे रहा हूँ। 9 जो कुछ भी तू करेगा उसमें रब तुझे बड़ी कामयाबी बख़्शेगा, और तुझे कसूरत की औलाद, मवेशी और फ़सलें हासिल होंगी। क्योंकि जिस तरह वह तेरे बापदादा को कामयाबी देने में खुशी महसूस करता था उसी तरह वह तुझे भी कामयाबी देने में खुशी महसूस करेगा।

10 शर्त सिर्फ़ यह है कि तू रब अपने खुदा की सुने, शरीअत में दर्ज उसके अहकाम पर अमल करे और पूरे दिलो-जान से उस की तरफ़ रूजू लाए।

11 जो अहकाम मैं आज तुझे दे रहा हूँ न वह हद से ज़्यादा मुश्किल हैं, न तेरी पहुँच से बाहर। 12 वह आसमान पर नहीं है कि तू कहे, 'कौन आसमान पर चढ़कर हमारे लिए यह अहकाम नीचे ले आए ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल

\* 29:19 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : सेराब ज़मीन ख़ुरक ज़मीन के साथ तबाह हो जाएगी।

कर सकें?’ 13 वह समुंद्र के पार भी नहीं है कि तू कहे, ‘कौन समुंद्र को पार करके हमारे लिए यह अहकाम लाएगा ताकि हम उन्हें सुन सकें और उन पर अमल कर सकें?’ 14 क्योंकि यह कलाम तेरे निहायत करीब बल्कि तेरे मुँह और दिल में मौजूद है। चुनौचे उस पर अमल करने में कोई भी स्कावट नहीं है।

### ज़िंदगी या मौत का चुनाव

15 देख, आज मैं तुझे दो रास्ते पेश करता हूँ। एक ज़िंदगी और खुशहाली की तरफ ले जाता है जबकि दूसरा मौत और हलाकत की तरफ। 16 आज मैं तुझे हुकम देता हूँ कि रब अपने खुदा को प्यार कर, उस की राहों पर चल और उसके अहकाम के ताबे रह। फिर तू ज़िंदा रहकर तरक्की करेगा, और रब तेरा खुदा तुझे उस मुल्क में बरकत देगा जिसमें तू दाखिल होनेवाला है।

17 लेकिन अगर तेरा दिल इस रास्ते से हटकर नाफरमानी करे तो बरकत की तवक्को न कर। अगर तू आजमाइश में पड़कर दीगर माबूदों को सिजदा और उनकी खिदमत करे 18 तो तुम जरूर तबाह हो जाओगे। आज मैं एलान करता हूँ कि इस सूरत में तुम ज़्यादा देर तक उस मुल्क में आबाद नहीं रहोगे जिसमें तू दरियाए-यरदन को पार करके दाखिल होगा ताकि उस पर कब्ज़ा करे।

19 आज आसमान और ज़मीन तुम्हारे खिलाफ भेरे गवाह हैं कि मैंने तुम्हें ज़िंदगी और बरकतों का रास्ता और मौत और लानतों का रास्ता पेश किया है। अब ज़िंदगी का रास्ता इख्तियार कर ताकि तू और तेरी औलाद ज़िंदा रहे। 20 रब अपने खुदा को प्यार कर, उस की सुन और उससे लिपटा रह। क्योंकि वही तेरी ज़िंदगी है और वही करेगा कि तू देर तक उस मुल्क में जीता रहेगा जिसका वादा उसने कसम खाकर तेरे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया था।”

## 31

### यशुअ को मूसा की जगह मुकर्रर किया जाता है

1 मूसा ने जाकर तमाम इसराईलियों से मज़ीद कहा,

2 “अब मैं 120 साल का हो चुका हूँ। मेरा चलना-फिरना मुश्किल हो गया है। और वैसे भी रब ने मुझे बताया है, ‘तू दरियाए-यरदन को पार नहीं करेगा।’ 3 रब तेरा खुदा खुद तेरे आगे आगे जाकर यरदन को पार करेगा। वही तेरे आगे आगे इन कौमों को तबाह करेगा ताकि तू उनके मुल्क पर कब्ज़ा कर सके। दरिया को पार करते वक्त यशुअ तेरे आगे चलेगा जिस तरह रब ने फरमाया है। 4 रब वहाँ के लोगों को बिलकुल उसी तरह तबाह करेगा जिस तरह वह अमोरियों को उनके बादशाहों सीहोन और ओज समेत तबाह कर चुका है। 5 रब तुम्हें उन पर गालिब आने देगा। उस वक्त तुम्हें उनके साथ वैसे सुलूक करना है जैसा मैंने तुम्हें बताया है। 6 मज़बूत और दिलेरे हो। उनसे खौफ न खाओ, क्योंकि रब तेरा खुदा तेरे साथ चलता है। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी नहीं तर्क नहीं करेगा।”

7 इसके बाद मूसा ने तमाम इसराईलियों के सामने यशुअ को बुलाया और उससे कहा, “मज़बूत और दिलेरे हो, क्योंकि तू इस कौम को उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा रब ने कसम खाकर उनके बापदादा से किया था। लाज़िम है कि तू ही उसे तकसीम करके हर कबीले को उसका मौरूसी इलाका दे। 8 रब खुद तेरे आगे आगे चलते हुए तेरे साथ होगा। वह तुझे कभी नहीं छोड़ेगा, तुझे कभी नहीं तर्क करेगा। खौफ न खाना, न घबराना।”

### हर सात साल के बाद शरीअत की तिलावत

9 मूसा ने यह पूरी शरीअत लिखकर इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों और लावी के कबीले के उन इमारों के सुपुर्द की जो सफ़र करते वक्त अहद का संदक उठाकर ले चलते थे। उसने उनसे कहा, 10-11 “हर सात साल के बाद इस शरीअत की तिलावत करना, यानी बहाली के साल में जब तमाम कर्ज़ मनसूख किए जाते हैं। तिलावत उस वक्त करना है जब इसराईली झोंपड़ियों की ईद के लिए रब अपने खुदा के सामने उस जगह हाज़िर होंगे जो वह मक़दिस के लिए चुनेगा। 12 तमाम लोगों को मर्दों, औरतों, बच्चों और परदेसियों समेत वहाँ जमा करना ताकि वह सुनकर सीखें, रब तुम्हारे खुदा का खौफ़ मानें और एहतियात से इस शरीअत की बातों पर अमल करें। 13 लाज़िम है कि उनकी औलाद जो इस शरीअत से नावाक़िफ़ है इसे सुने और सीखे ताकि उम्र-भर उस मुल्क में रब तुम्हारे खुदा का खौफ़ माने जिस पर तुम दरियाए-यरदन को पार करके कब्ज़ा करोगे।”

### रब मूसा को आखिरी हिदायात देता है

14 रब ने मूसा से कहा, “अब तेरी मौत करीब है। यशुअ को बुलाकर उसके साथ मुलाकात के ख़ैमे में हाज़िर हो जा। वहाँ मैं उसे उस की ज़िम्मादारियाँ सौंपूँगा।”

मूसा और यशुअ आकर ख़ैमे में हाज़िर हुए 15 तो रब ख़ैमे के दरवाज़े पर बादल के सतून में जाहिर हुआ। 16 उसने मूसा से कहा, “तू जल्द ही मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा। लेकिन यह कौम मुल्क में दाखिल होने पर ज़िंदा करके उसके

अजनबी देवताओं की पैरवी करने लग जाएगी। वह मुझे तर्क करके वह अहद तोड़ देगी जो मैंने उनके साथ बाँधा है। 17 फिर मेरा गजब उन पर भड़केगा। मैं उन्हें छोड़कर अपना चेहरा उनसे छुपा लूँगा। तब उन्हें कच्चा चबा लिया जाएगा और बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें उन पर आएँगी। उस वक़्त वह कहेंगे, 'क्या यह मुसीबतें इस वजह से हम पर नहीं आईं कि रब हमारे साथ नहीं है?' 18 और ऐसा ही होगा। मैं ज़रूर अपना चेहरा उनसे छुपाए रखूँगा, क्योंकि दीगर माबूदों के पीछे चलने से उन्होंने एक निहायत शरीर कदम उठाया होगा।

19 अब ज़ैल का गीत लिखकर इसराईलियों को यों सिखाओ कि वह ज़बानी याद रहे और मेरे लिए उनके खिलाफ गवाही दिया करे। 20 क्योंकि मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिसका वादा मैंने कसम खाकर उनके बापदादा से किया था, उस मुल्क में जिसमें दूध और शहद की कसरत है। वहाँ इतनी ख़राक होगी कि उनकी भूक जाती रहेगी और वह मोटे हो जाएंगे। लेकिन फिर वह दीगर माबूदों के पीछे लग जाएंगे और उनकी खिदमत करेंगे। वह मुझे रद्द करेंगे और मेरा अहद तोड़ेंगे। 21 नतीजे में उन पर बहुत सारी हैबतनाक मुसीबतें आएँगी। फिर यह गीत जो उनकी औलाद को याद रहेगा उनके खिलाफ गवाही देगा। क्योंकि गो मैं उन्हें उस मुल्क में ले जा रहा हूँ जिसका वादा मैंने कसम खाकर उनसे किया था तो भी मैं जानता हूँ कि वह अब तक किस तरह की सोच रखते हैं।”

22 मूसा ने उसी दिन यह गीत लिखकर इसराईलियों को सिखाया।

23 फिर रब ने यशुअ बिन नून से कहा, “मजबूत और दिलेर हो, क्योंकि तू इसराईलियों को उस मुल्क में ले जाएगा जिसका वादा मैंने कसम खाकर उनसे किया था। मैं खुद तेरे साथ हूँगा।”

24 जब मूसा ने पूरी शरीअत को किताब में लिख लिया 25 तो वह उन लावियों से मुखातिब हुआ जो सफ़र करते वक़्त अहद का संदूक उठाकर ले जाते थे। 26 “शरीअत की यह किताब लेकर रब अपने खुदा के अहद के संदूक के पास रखना। वहाँ वह पड़ी रहे और तेरे खिलाफ गवाही देती रहे। 27 क्योंकि मैं खूब जानता हूँ कि तू कितना सरकश और हटधर्म है। मेरी मौजूदगी में भी तुमने कितनी दफ़ा रब से सरकशी की। तो फिर मेरे मरने के बाद तुम क्या कुछ नहीं करोगे! 28 अब मेरे सामने अपने कर्बालों के तमाम बुजुर्गों और निगहबानों को जमा करो ताकि वह खुद मेरी यह बातें सुनें और आसमान और ज़मीन उनके खिलाफ गवाह हों। 29 क्योंकि मुझे मालूम है कि मेरी मौत के बाद तुम ज़रूर बिगड़ जाओगे और उस रास्ते से हट जाओगे जिस पर चलने की मैंने तुम्हें ताकीद की है। आखिरकार तुम पर मुसीबत आएगी, क्योंकि तुम वह कुछ करोगे जो रब को बुरा लगता है, तुम अपने हाथों के काम से उसे गुस्सा दिलाओगे।”

30 फिर मूसा ने इसराईल की तमाम जमात के सामने यह गीत शुरू से लेकर आखिर तक पेश किया,

## 32

### मूसा का गीत

1 ऐ आसमान, मेरी बात पर गौर कर! ऐ ज़मीन, मेरा गीत सुन!

2 मेरी तालीम बँदा-बँदी जैसी हो, मेरी बात शबनम की तरह ज़मीन पर पड़ जाए। वह बारिश की मानिंद हो जो हरियाली पर बरसती है।

3 मैं रब का नाम पुकारूँगा। हमारे खुदा की अज़मत की तमजीद करो!

4 वह चटान है, और उसका काम कामिल है। उस की तमाम राहें रास्त हैं। वह वफ़ादार खुदा है जिसमें फ़रेब नहीं है बल्कि जो आदिल और दियानतदार है।

5 एक टेढ़ी और कजरौ नसल ने उसका गुनाह किया। वह उसके फ़रज़ंद नहीं बल्कि दाग साबित हुए हैं।

6 ऐ मेरी अहमक और बेसमझ कौम, क्या तुम्हारा रब से ऐसा रवैया ठीक है? वह तो तुम्हारा बाप और खालिक है, जिसने तुम्हें बनाया और कायम किया।

7 क़दमी ज़माने को याद करना, माज़ी की नसलों पर तबज्जुह देना। अपने बाप से पूछना तो वह तुझे बता देगा, अपने बुजुर्गों से पता करना तो वह तुझे इत्ला देंगे।

8 जब अल्लाह तआला ने हर कौम को उसका अपना अपना मौस्सी इलाका देकर तमाम इनसानों को मुख़्तलिफ़ ग़ुरोहों में अलग कर दिया तो उसने कौमों की सरहदें इसराईलियों की तादाद के मुताबिक़ मुक़र्रर की।

9 क्योंकि रब का हिस्सा उस की कौम है, याक़ूब को उसने मीरास में पाया है।

10 यह कौम उसे रेगिस्तान में मिल गई, वीरानो-सुनसान बयाबान में जहाँ चारों तरफ़ हौलनाक आवाज़ें गूँजती थीं। उसने उसे घेरकर उस की देख-भाल की, उसे अपनी आँख की पुतली की तरह बचाए रखा।

11 जब उकाब अपने बच्चों को उडना सिखाता है तो वह उन्हें घोंसले से निकालकर उनके साथ उडता है। अगर वह गिर भी जाएं तो वह हाज़िर है और उनके नीचे अपने परो को फैलाकर उन्हें ज़मीन से टकरा जाने से बचाता है। रब का इसराईल के साथ यही सुलूक था।

12 रब ने अकेले ही उस की राहनुमाई की। किसी अजनबी माबूद ने शिरकत न की।

13 उसने उसे रथ पर सवार करके मुल्क की बुलंदियों पर से गुज़रने दिया और उसे खेत का फल खिलाकर उसे चटान से शहद और सख्त पत्थर से ज़ैतून का तेल मुहैया किया। \*

14 उसने उसे गाय की लस्सी और भेड़-बकरी का दूध चींदा भेड़ के बच्चों समेत खिलाया और उसे बसन के मोटे-ताज़े मेंढे, बकरे और बेहतरनी अनाज अता किया। उस वक़्त तू आला अंगूर की उम्दा मै से लुत्फ़अंदोज़ हुआ।

15 लेकिन जब यस्सून † मोटा हो गया तो वह दोलतियाँ झाड़ने लगा। जब वह हलक तक भरकर तनोमंद और फ़रबा हुआ तो उसने अपने खुदा और खालिक को रद्द किया, उसने अपनी नजात की चटान को हक़ीर जाना।

16 अपने अजनबी माबूदों से उन्होंने उस की ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने धिनौने बुतों से उसे गुस्सा दिलाया।

17 उन्होंने बदस्-हों को कुरबानियाँ पेश की जो खुदा नहीं हैं, ऐसे माबूदों को जिनसे न वह और न उनके बापदादा वाक़िफ़ थे, क्योंकि वह थोड़ी देर पहले वुजूद में आए थे।

18 तू वह चटान भूल गया जिसने तुझे पैदा किया, वही खुदा जिसने तुझे जन्म दिया।

19 रब ने यह देखकर उन्हें रद्द किया, क्योंकि वह अपने बेटे-बेटियों से नाराज़ था।

20 उसने कहा, “मैं अपना चेहरा उनसे छुपा लूँगा। फिर पता लगेगा कि मेरे बग़ैर उनका क्या अंजाम होता है। क्योंकि वह सारास बिगड़ गए हैं, उनमें वफ़ादारी पाई नहीं जाती।

21 उन्होंने उस की परस्तिश से जो खुदा नहीं है मेरी ग़ैरत को जोश दिलाया, अपने बेकार बुतों से मुझे गुस्सा दिलाया है। चुनौचे मैं खुद ही उन्हें ग़ैरत दिलाऊँगा, एक ऐसी क़ौम के ज़रीए जो हक़ीक़त में क़ौम नहीं है। एक नादान क़ौम के ज़रीए मैं उन्हें गुस्सा दिलाऊँगा।

22 क्योंकि मेरे गुस्से से आग भड़क उठी है जो पाताल की तह तक पहुँचेगी और ज़मीन और उस की पैदावार हड़प करके पाहाड़ों की बुनियादों को जला देगी।

23 मैं उन पर मुसीबत पर मुसीबत आने दूँगा और अपने तमाम तीर उन पर चलाऊँगा।

24 भूक के मारे उनकी ताक़त जाती रहेगी, और वह बुखार और वबाई अमराज़ का लुक़मा बनेंगे। मैं उनके खिलाफ़ फाड़नेवाले जानवर और ज़हरीले साँप भेज दूँगा।

25 बाहर तलवार उन्हें बेऔलाद कर देगी, और घर में दहशत फैल जाएगी। शीरखार बच्चे, नौजवान लड़के-लड़कियाँ और बुज़ुर्ग सब उस की गिरिफ़्त में आ जाएंगे।

26 मुझे कहना चाहिए था कि मैं उन्हें चकनाचूर करके इनसानों में से उनका नामो-निशान मिटा दूँगा।

27 लेकिन अंदेशा था कि दुश्मन ग़लत मतलब निकालकर कहे, ‘हम खुद उन पर गालिब आए, इसमें रब का हाथ नहीं है।’”

28 क्योंकि यह क़ौम बेसमझ और हिक्मत से खाली है।

29 काश वह दानिशमंद होकर यह बात समझें। काश वह जान लें कि उनका क्या अंजाम है।

30 क्योंकि दुश्मन का एक आदमी किस तरह हज़ार इसराईलियों का ताबूक़ुब कर सकता है? उसके दो मर्द किस तरह दस हज़ार इसराईलियों को भगा सकते हैं? वजह सिर्फ़ यह है कि उनकी चटान ने उन्हें दुश्मन के हाथ बेच दिया। रब ने खुद उन्हें दुश्मन के क़ब्ज़े में कर दिया।

31 हमारे दुश्मन खुद मानते हैं कि इसराईल की चटान हमारी चटान जैसी नहीं है।

32 उनकी बेल तो सदूम की बेल और अमूरा के बाग से है, उनके अंगूर ज़हरीले और उनके गुच्छे कड़वे हैं।

33 उनकी मै साँपों का मोहलक ज़हर है।

\* 32:13 लफ़ज़ी तरजूम : चूसने दिया। † 32:15 यानी इसराईल।

34 रब फरमाता है, “क्या मैंने इन बातों पर मुहर लगाकर उन्हें अपने खजाने में महफूज नहीं रखा?”

35 इंतकाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा। एक वक्त आया कि उनका पाँव फिसलेगा। क्योंकि उनकी तबाही का दिन करीब है, उनका अंजाम जल्द ही आनेवाला है।”

36 यकीनन रब अपनी कौम का इनसाफ़ करेगा। वह अपने खादिमों पर तरस खाएगा जब देखेगा कि उनकी ताकत जाती रही है और कोई नहीं बचा।

37 उस वक्त वह पूछेगा, “अब उनके देवता कहाँ हैं, वह चटान जिसकी पनाह उन्होंने ली?”

38 वह देवता कहाँ हैं जिन्होंने उनके बेहतरिन जानवर खाए और उनकी मै की नज़रें पी लीं। वह तुम्हारी मदद के लिए उठे और तुम्हें पनाह दें।

39 अब जान लो कि मैं और सिर्फ़ मैं खुदा हूँ। मेरे सिवा कोई और खुदा नहीं है। मैं ही हलाक करता और मैं ही जिंदा कर देता हूँ। मैं ही ज़खमी करता और मैं ही शफ़ा देता हूँ। कोई मेरे हाथ से नहीं बचा सकता।

40 मैं अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर एलान करता हूँ कि मेरी अबदी हयात की कसम,

41 जब मैं अपनी चमकती हुई तलवार को तेज़ करके अदालत के लिए पकड़ लूँगा तो अपने मुखालिफ़ों से इंतकाम और अपने नफ़रत करनेवालों से बदला लूँगा।

42 मेरे तीर खून पी पीकर नशे में धुत हो जाएंगे, मेरी तलवार मकतूलों और कैदियों के खून और दुश्मन के सरदारों के सरों से सेर हो जाएगी।”

43 ऐ दीगर कौमो, उस की उम्मत के साथ खुशी मनाओ! क्योंकि वह अपने खादिमों के खून का इंतकाम लेगा। वह अपने मुखालिफ़ों से बदला लेकर अपने मुल्क और कौम का कफ़ारा देगा।

44 मूसा और यशुअ बिन नून ने आकर इसराइलियों को यह पूरा गीत सुनाया। 45-46 फिर मूसा ने उनसे कहा, “आज मैंने तुम्हें इन तमाम बातों से आगाह किया है। लाज़िम है कि वह तुम्हारे दिलों में बैठ जाएँ। अपनी औलाद को भी हुक्म दो कि एहतियात से इस शरीअत की तमाम बातों पर अमल करे। 47 यह खाली बातें नहीं बल्कि तुम्हारी जिंदगी का सरचश्मा हैं। इनके मुताबिक़ चलने के बाइस तुम देर तक उस मुल्क में जीते रहोगे जिस पर तुम दरियाए-य़रदन को पार करके क़ब्ज़ा करनेवाले हो।”

मूसा का नब् पहाड़ पर इंतकाल

48 उसी दिन रब ने मूसा से कहा, 49 “पहाड़ी सिलसिले अबारीम के पहाड़ नब् पर चढ़ जा जो यरीह के सामने लेकिन यरदन के मशरिकी किनारे पर यानी मोआब के मुल्क में है। वहाँ से कनान पर नज़र डाल, उस मुल्क पर जो मैं इसराइलियों को दे रहा हूँ। 50 इसके बाद तू वहीं मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह तेरा भाई हासून होर पहाड़ पर मरकर अपने बापदादा से जा मिला है। 51 क्योंकि तुम दोनों इसराइलियों के रूबरू बेवफ़ा हुए। जब तुम दशते-सीन में कादिस के करीब थे और मरीबा के चश्मे पर इसराइलियों के सामने खड़े थे तो तुमने मेरी कूदूसियत कायम न रखी। 52 इस सबब से तू वह मुल्क सिर्फ़ दूर से देखेगा जो मैं इसराइलियों को दे रहा हूँ। तू खुद उसमें दाखिल नहीं होगा।”

## 33

मूसा कबीलों को बरकत देता है

1 मरने से पेशतर मर्दे-खुदा मूसा ने इसराइलियों को बरकत देकर 2 कहा,

“रब सीना से आया, सर्ई \* से उसका नूर उन पर तलु हुआ। वह कोहे-फ़ारान से रौशनी फैलाकर रिबबोत-कादिस से आया, वह अपने जुन्बी इलाके से रवाना होकर उनकी खातिर पहाड़ी ढलानों के पास आया।

3 यकीनन वह कौमों से मुहब्बत करता है, तमाम मुक़द्सीन तैरे हाथ में हैं। वह तैरे पाँवों के सामने झुककर तुज़से हिदायत पाते हैं।

4 मूसा ने हमें शरीअत दी यानी वह चीज़ जो याकूब की जमात की मौस्सी मिलकियत है।

5 इसराइल के राहनुमा अपने कबीलों समेत जमा हुए तो रब यसूरून † का बादशाह बन गया।

\* 33:2 अदोम। † 33:5 इसराइल।



6 रुबिन की बरकत :

रुबिन मर न जाए बल्कि जीता रहे। वह तादाद में बढ़ जाए।

7 यहदाह की बरकत :

ऐ रब, यहदाह की पुकार सुनकर उसे दुबारा उस की कौम में शामिल कर। उसके हाथ उसके लिए लड़ें। मुखालिफों का सामना करते वक्त उस की मदद कर।

8 लावी की बरकत :

तेरी मरजी मालूम करने के कुरे बनाम ऊरिम और तुम्मीम तेरे वफादार खादिम लावी के पास होते हैं। तूने उसे मस्सा में आजमाया और मरीबा में उससे लड़ा।<sup>9</sup> उसने तेरा कलाम सँभालकर तेरा अहद कायम रखा, यहाँ तक कि उसने न अपने मॉ-बाप का, न अपने सगे भाइयों या बच्चों का लिहाज किया।

10 वह याकूब को तेरी हिदायात और इसराईल को तेरी शरीअत सिखाकर तेरे सामने बखूर और तेरी कुरबानगाह पर भस्म होनेवाली कुरबानियाँ चढाता है।

11 ऐ रब, उस की ताकत को बढ़ाकर उसके हाथों का काम पसंद कर। उसके मुखालिफों की कमर तोड़ और उससे नफरत रखनेवालों को ऐसा मार कि आंदा कभी न उठें।

12 बिनयमीन की बरकत :

बिनयमीन रब को प्यारा है। वह सलामती से उसके पास रहता है, क्योंकि रब दिन-रात उसे पनाह देता है। बिनयमीन उस की पहाड़ी ढलानों के दरमियान महफूज रहता है।

13 यूसुफ की बरकत :

रब उस की ज़मीन को बरकत दे। आसमान से कीमती ओस टपके और ज़मीन के नीचे से चश्मे फूट निकलें।

14 यूसुफ को सूरज की बेहतरीन पैदावार और हर महीने का लज़ीज़तरीन फल हासिल हो।

15 उसे कदीम पहाड़ों और अबदी वादियों की बेहतरीन चीज़ों से नवाज़ा जाए।

16 ज़मीन के तमाम ज़खीरे उसके लिए खुल जाएँ। वह उसको पसंद हो जो जलती हुई झाड़ी में सुकूनत करता था। यह तमाम बरकतें यूसुफ के सर पर ठहरें, उसके सर पर जो अपने भाइयों में शहज़ादा है।

17 यूसुफ साँड़ के पहलौते जैसा अज़ीम है, और उसके सींग जंगली बैल के सींग हैं जिनसे वह दुनिया की इतहा तक सब कौमों को मारेगा। इफ़राईम के बेशुमार अफ़राद ऐसे ही हैं, मनस्सी के हज़ारों अफ़राद ऐसे ही हैं।

18 ज़बूलन और इशकार की बरकत :

ऐ ज़बूलन, घर से निकलते वक्त ख़ुशी मना। ऐ इशकार, अपने ख़ैमों में रहते हुए ख़ुश हो।

19 वह दीगर कौमों को अपने पहाड़ पर आने की दावत देगे और वहाँ रास्ती की कुरबानियाँ पेश करेंगे। वह समुंदर की कसरत और समुंदर की रेत में छुपे हुए खज़ानों को ज़बब कर लेंगे।

20 ज़द की बरकत :

मुबारक है वह जो ज़द का इलाका वसी कर दे। ज़द शेरबबर की तरह दबककर किसी का बाजू या सर फाड़ डालने के लिए तैयार रहता है।

21 उसने अपने लिए सबसे अच्छी ज़मीन चुन ली, राहनुमा का हिस्सा उसी के लिए महफूज रखा गया। जब कौम के राहनुमा जमा हुए तो उसने रब की रास्त मरज़ी पूरी की और इसराईल के बारे में उसके फ़ैसले अमल में लाया।

22 दान की बरकत :

दान शेरबबर का बच्चा है जो बसन से निकलकर छलौंग लगाता है।

23 नफ़ताली की बरकत :

नफ़ताली रब की मंजूरी से सेर है, उसे उस की पूरी बरकत हासिल है। वह गलील की झील और उसके जुनुब का इलाका मीरास में पाएगा।

24 आशर की बरकत :

आशर बेटों में सबसे मुबारक है। वह अपने भाइयों को पसंद हो। उसके पास जैतून का इतना तेल हो कि वह अपने पाँव उसमें डुबो सके।

25 तेरे शहरों के दरवाजों के कुंडे लोहे और पीतल के हों, तेरी ताकत उग्र-भर कायम रहे।

26 यस्सून † के खुदा की मानिंद कोई नहीं है, जो आसमान पर सवार होकर, हों अपने जलाल में बादलों पर बैठकर तेरी मदद करने के लिए आता है।

27 अजली खुदा तेरी पनाहगाह है, वह अपने अजली बाजू तेरे नीचे फैलाए रखता है। वह दुश्मन को तेरे सामने से भगाकर उसे हलाक करने को कहता है।

28 चुनोंचे इसराईल सलामती से ज़िंदगी गुज़ारेगा, याकूब का चश्मा अलग और महफ़ज़ रहेगा। उस की ज़मीन अनाज और अंगूर की कसरत पैदा करेगी, और उसके ऊपर आसमान ज़मीन पर ओस पड़ने देगा।

29 ऐ इसराईल, तू कितना मुबारक है। कौन तेरी मानिंद है, जिसे रब ने बचाया है। वह तेरी मदद की ढाल और तेरी शान की तलवार है। तेरे दुश्मन शिकस्त खाकर तेरी खुशामद करेंगे, और तू उनकी कमरों पाँवों तले कुचलेगा।”

## 34

मूसा की वफ़ात

1 यह बरकत देकर मूसा मोआब का मैदानी इलाका छोड़कर यरीह के मुकाबिल नबू पहाड़ पर चढ़ गया। नबू पिसगा के पहाड़ी सिलसिले की एक चोटी था। वहाँ से रब ने उसे वह पूरा मुल्क दिखाया जो वह इसराईल को देनेवाला था यानी जिलियाद के इलाके से लेकर दान के इलाके तक, 2 नफ़ताली का पूरा इलाका, इफ़राईम और मनस्सी का इलाका, यहदाह का इलाका बहीराए-रूम तक, 3 जुनूब में दशते-नजब और खजूर के शहर यरीह की वादी से लेकर ज़ुगर तक। 4 रब ने उससे कहा, “यह वह मुल्क है जिसका वादा मैंने कसम खाकर इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया। मैंने उनसे कहा था कि उनकी औलाद को यह मुल्क मिलेगा। तू उसमें दाखिल नहीं होगा, लेकिन मैं तुझे यहाँ ले आया हूँ ताकि तू उसे अपनी आँखों से देख सके।”

5 इसके बाद रब का खादिम मूसा वहीं मोआब के मुल्क में फ़ौत हुआ, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह रब ने कहा था।

6 रब ने उसे बैत-फ़ागर की किसी वादी में दफ़न किया, लेकिन आज तक किसी को भी मालूम नहीं कि उस की कब्र कहाँ है।

7 अपनी वफ़ात के वक़्त मूसा 120 साल का था। आखिर तक न उस की आँखें धुँधलाई, न उस की ताकत कम हुई।

8 इसराईलियों ने मोआब के मैदानी इलाके में 30 दिन तक उसका मातम किया।

9 फिर यशुअ बिन नून मूसा की जगह खड़ा हुआ। वह हिकमत की रूह से मामूर था, क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रख दिए थे। इसराईलियों ने उस की सुनी और वह कुछ किया जो रब ने उन्हें मूसा की मारिफ़त बताया था।

10 इसके बाद इसराईल में मूसा जैसा नबी कभी न उठा जिससे रब रूबरू बात करता था। 11 किसी और नबी ने ऐसे इलाही निशान और मोजिजे नहीं किए जैसे मूसा ने फिरौन बादशाह, उसके मुलाज़िमों और पूरे मुल्क के सामने किए जब रब ने उसे मिसर भेजा। 12 किसी और नबी ने इस क्रिस्म का बड़ा इख़्तियार न दिखाया, न ऐसे अज़ीम और हैबतनाक काम किए जैसे मूसा ने इसराईलियों के सामने किए।

## यशुअ

रब यशुअ को राहनमाई की जिम्मादारी सौंपता है

1 रब के खादिम मूसा की मौत के बाद रब मूसा के मददगार यशुअ बिन नून से हमकलाम हुआ। उसने कहा, 2 “मेरा खादिम मूसा फौत हो गया है। अब उठ, इस पूरी क्रीम के साथ दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क में दाखिल हो जा जो मैं इसराईलियों को देने को हूँ। 3 जिस जमीन पर भी तू अपना पाँव रखेगा उसे मैं मूसा के साथ किए गए वादे के मुताबिक तुझे दूँगा। 4 तुम्हारे मुल्क की सरहदें यह होंगी : जुनूब में नजब का रेगिस्तान, शिमाल में लुबनान, मशरिक में दरियाए-फुरात और मगरिब में बहीराए-रूम। हिली क्रीम का पूरा इलाका इसमें शामिल होगा। 5 तेरे जीते-जी कोई तेरा सामना नहीं कर सकेगा। जिस तरह मैं मूसा के साथ था, उसी तरह तेरे साथ भी हूँगा। मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, न तुझे तर्क करूँगा।

6 मजबूत और दिलेर हो, क्योंकि तू ही इस क्रीम को मीरास में वह मुल्क देगा जिसका मैंने उनके बापदादा से कसम खाकर वादा किया था। 7 लेकिन खबरदार, मजबूत और बहुत दिलेर हो। एहतियात से उस पूरी शरीअत पर अमल कर जो मेरे खादिम मूसा ने तुझे दी है। उससे न दाई और न बाई तरफ हटना। फिर जहाँ कहीं भी तू जाए कामयाब होगा। 8 जो बातें इस शरीअत की किताब में लिखी हैं वह तेरे मुँह से न हटें। दिन-रात उन पर गौर करता रह ताकि तू एहतियात से इसकी हर बात पर अमल कर सके। फिर तू हर काम में कामयाब और खुशहाल होगा।

9 मैं फिर कहता हूँ कि मजबूत और दिलेर हो। न घबरा और न हौसला हार, क्योंकि जहाँ भी तू जाएगा वहाँ रब तेरा खुदा तेरे साथ रहेगा।”

मुल्क में दाखिल होने की तैयारियाँ

10 फिर यशुअ क्रीम के निगहबानों से मुखातिब हुआ, 11 “खैमागाह में हर जगह जाकर लोगों को इतला दें कि सफर के लिए खाने का बंदोबस्त कर लें। क्योंकि तीन दिन के बाद आप दरियाए-यरदन को पार करके उस मुल्क पर कब्जा करेंगे जो रब आपका खुदा आपको वरसे में दे रहा है।”

12 फिर यशुअ रुबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले से मुखातिब हुआ, 13 “यह बात याद रखें जो रब के खादिम मूसा ने आपसे कही थी, ‘रब तुम्हारा खुदा तुमको दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर का यह इलाका देता है ताकि तुम यहाँ अमनो-अमान के साथ रह सको।’ 14 अब जब हम दरियाए-यरदन को पार कर रहे हैं तो आपके बाल-बच्चे और मवेशी यहीं रह सकते हैं। लेकिन लाजिम है कि आपके तमाम जंग करने के काबिल मर्द मुसल्लह होकर अपने भाइयों के आगे आगे दरिया को पार करें। आपको उस वक़्त तक अपने भाइयों की मदद करना है 15 जब तक रब उन्हें वह आराम न दे जो आपको हासिल है और वह उस मुल्क पर कब्जा न कर लें जो रब आपका खुदा उन्हें दे रहा है। इसके बाद ही आपको अपने उस इलाके में वापस जाकर आबाद होने की इजाजत होगी जो रब के खादिम मूसा ने आपको दरियाए-यरदन के मशरिकी किनारे पर दिया था।”

16 उन्होंने जवाब में यशुअ से कहा, “जो भी हुकम आपने हमें दिया है वह हम मानेंगे और जहाँ भी हमें भेजेंगे वहाँ जाएंगे। 17 जिस तरह हम मूसा की हर बात मानते थे उसी तरह आपकी भी हर बात मानेंगे। लेकिन रब आपका खुदा उसी तरह आपके साथ हो जिस तरह वह मूसा के साथ था। 18 जो भी आपके हुकम की खिलाफ़वर्जी करके आपको वह तमाम बातें न माने जो आप फरमाएँगे उसे सज़ाए-मौत दी जाए। लेकिन मजबूत और दिलेर हों!”

## 2

यरीह शहर में इसराईली जासूस

1 फिर यशुअ ने चुपके से दो जासूसों को शितीम से भेज दिया जहाँ इसराईली खैमागाह थी। उसने उनसे कहा, “जाकर मुल्क का जायज़ा लें, खासकर यरीह शहर का।” वह रवाना हुए और चलते चलते एक कसबी के घर पहुँचे जिसका नाम राहब था। वहाँ वह रात के लिए ठहर गए। 2 लेकिन यरीह के बादशाह को इतला मिली कि आज शाम को कुछ इसराईली मर्द यहाँ पहुँच गए हैं जो मुल्क की जासूसी करना चाहते हैं। 3 यह सुनकर बादशाह ने राहब को खबर भेजी, “उन आदमियों को निकाल दो जो तुम्हारे पास आकर ठहरे हुए हैं, क्योंकि यह पूरे मुल्क की जासूसी करने के लिए आए हैं।”

4 लेकिन राहब ने दोनों आदमियों को छुपा रखा था। उसने कहा, “जी, यह आदमी मेरे पास आए तो थे लेकिन मुझे मालूम नहीं था कि कहीं से आए हैं। 5 जब दिन ढलने लगा और शहर के दरवाज़ों को बंद करने का वक़्त आ गया तो वह चले गए। मुझे मालूम नहीं कि किस तरफ गए। अब जल्दी करके उनका पीछा करें। ऐन मुमकिन है कि आप उन्हें पकड़

लें।” 6 हकीकत में राहब ने उन्हें छत पर ले जाकर वहाँ पर पड़े सन के डंठलों के नीचे छुपा दिया था। 7 राहब की बात सुनकर बादशाह के आदमी वहाँ से चले गए और शहर से निकलकर जासूसों के ताकुकुब में उस रास्ते पर चलने लगे जो दरियाए-यरदन के उन कम-गहरे मकामों तक ले जाता है जहाँ उसे पैदल उबर किया जा सकता था। और ज्योंही यह आदमी निकले, शहर का दरवाज़ा उनके पीछे बंद कर दिया गया।

8 जासूसों के सो जाने से पहले राहब ने छत पर आकर 9 उनसे कहा, “मैं जानती हूँ कि रब ने यह मुल्क आपको दे दिया है। आपके बारे में सुनकर हम पर दहशत छा गई है, और मुल्क के तमाम बाशिंदे हिम्मत हार गए हैं। 10 क्योंकि हमें खबर मिली है कि आपके मिसर से निकलते वक़्त रब ने बहरे-कुलजुम का पानी किस तरह आपके आगे ख़ुशक कर दिया। यह भी हमारे सुनने में आया है कि आपने दरियाए-यरदन के मशरिक में रहनेवाले दो बादशाहों सीहोन और ओज के साथ क्या कुछ किया, कि आपने उन्हें पूरी तरह तबाह कर दिया। 11 यह सुनकर हमारी हिम्मत टूट गई। आपके सामने हम सब हौसला हार गए हैं, क्योंकि रब आपका खुदा आसमानो-जमीन का खुदा है। 12 अब रब की कसम खाकर मुझसे वादा करें कि आप उसी तरह मेरे खानदान पर मेहरबानी करेंगे जिस तरह कि मैंने आप पर की है। और ज़मानत के तौर पर मुझे कोई निशान दें 13 कि आप मेरे माँ-बाप, मेरे बहन-भाइयों और उनके घरवालों को ज़िंदा छोड़कर हमें मौत से बचाए रखेंगे।”

14 आदमियों ने कहा, “हम अपनी जानों को ज़मानत के तौर पर पेश करते हैं कि आप महफूज़ रहेंगे। अगर आप किसी को हमारे बारे में इतला न दें तो हम आपसे ज़रूर मेहरबानी और बफ़ादारी से पेश आएँगे जब रब हमें यह मुल्क अता फ़रमाएगा।”

15 तब राहब ने शहर से निकलने में उनकी मदद की। चूँकि उसका घर शहर की चारदीवारी से मुलहिक था इसलिए आदमी खिडकी से निकलकर रस्से के ज़रीए बाहर की ज़मीन पर उतर आए। 16 उतरने से पहले राहब ने उन्हें हिदायत की, “पहाड़ी इलाके की तरफ़ चले जाँ। जो आपका ताकुकुब कर रहे हैं वह वहाँ आपको ढूँढ़ नहीं सकेंगे। तीन दिन तक यानी जब तक वह वापस न आ जाएँ वहाँ छुपे रहना। इसके बाद जहाँ जाने का इरादा है चले जाना।”

17 आदमियों ने उससे कहा, “जो कसम आपने हमें खिलाई है हम ज़रूर उसके पाबंद रहेंगे। लेकिन शर्त यह है 18 कि आप हमारे इस मुल्क में आते वक़्त किरमिजी रंग का यह रस्सा उस खिडकी के सामने बाँध दें जिसमें से आपने हमें उतरने दिया है। यह भी लाज़िम है कि उस वक़्त आपके माँ-बाप, भाई-बहनें और तमाम घरवाले आपके घर में हों। 19 अगर कोई आपके घर में से निकले और मार दिया जाए तो यह हमारा कुसूर नहीं होगा, हम जिम्मादार नहीं ठहरेंगे। लेकिन अगर किसी को हाथ लगाया जाए जो आपके घर के अंदर हो तो हम ही उस की मौत के जिम्मादार ठहरेंगे। 20 और किसी को हमारे मामले के बारे में इतला न देना, वरना हम उस कसम से आज़ाद हैं जो आपने हमें खिलाई।”

21 राहब ने जवाब दिया, “ठीक है, ऐसा ही हो।” फिर उसने उन्हें सख़सत किया और वह रवाना हुए। और राहब ने अपनी खिडकी के साथ मज़क़रा रस्सा बाँध दिया।

22 जासूस चलते चलते पहाड़ी इलाके में आ गए। वहाँ वह तीन दिन रहे। इतने में उनका ताकुकुब करनेवाले पूरे रास्ते का खोज लगाकर खाली हाथ लौटे। 23 फिर दोनों जासूसों ने पहाड़ी इलाके से उतरकर दरियाए-यरदन को पार किया और यशुअ बिन नून के पास आकर सब कुछ बयान किया जो उनके साथ हुआ था। 24 उन्होंने कहा, “यकीनन रब ने हमें पूरा मुल्क दे दिया है। हमारे बारे में सुनकर मुल्क के तमाम बाशिंदों पर दहशत तारी हो गई है।”

### 3

#### इसराइली दरियाए-यरदन को उबर करते हैं

1 सुबह-सवेरे उठकर यशुअ और तमाम इसराइली शितीम से रवाना हुए। जब वह दरियाए-यरदन पर पहुँचे तो उसे उबर न किया बल्कि रात के लिए किनारे पर रुक गए। 2 वह तीन दिन वहाँ रहे। फिर निगहबानों ने ख़ैमागाह में से गुज़रकर 3 लोगों को हुक्म दिया, “जब आप देखें कि लावी के कबीले के इमाम रब आपके खुदा के अहद का संदूक उठाए हुए हैं तो अपने अपने मकाम से रवाना होकर उसके पीछे हो लें। 4 फिर आपको पता चलेगा कि कहाँ जाना है, क्योंकि आप पहले कभी वहाँ नहीं गए। लेकिन संदूक के तकरीबन एक किलोमीटर पीछे रहें और ज़्यादा करीब न जाएँ।”

5 यशुअ ने लोगों को बताया, “अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करें, क्योंकि कल रब आपके दरमियान हैरतअंगेज़ काम करेगा।”

6 अगले दिन यशुअ ने इमामों से कहा, “अहद का संदूक उठाकर लोगों के आगे आगे दरिया को पार करें।” चुनौचे इमाम संदूक को उठाकर आगे आगे चल दिए। 7 और रब ने यशुअ से फ़रमाया, “मैं तुझे तमाम इसराइलियों के सामने सरफ़राज़ कर दूँगा, और आज ही मैं यह काम शुरू करूँगा ताकि वह जान लें कि जिस तरह मैं मूसा के साथ था उसी तरह तैरे साथ भी हूँ। 8 अहद का संदूक उठानेवाले इमामों को बता देना, “जब आप दरियाए-यरदन के किनारे पहुँचेंगे तो वहाँ पानी में रुक जाएँ।”

9 यशुअ ने इसराइलियों से कहा, “मेरे पास आँ और रब अपने खुदा के फरमान सन लें। 10 आज आप जान लेंगे कि जिंदा खुदा आपके दरमियान है और कि वह यकीनन आपके आगे आगे जाकर दूसरी कौमों को निकाल देगा, खाह वह कनानी, हिती, हिच्वी, फरिज्जी, जिरजासी, अमोरी या यबूसी हों। 11 यह यों जाहिर होगा कि अहद का यह संदूक जो तमाम दुनिया के मालिक का है आपके आगे आगे दरियाए-यरदन में जाएगा। 12 अब ऐसा करें कि हर कबीले में से एक एक आदमी को चुन लें ताकि बारह अफ़राद जमा हो जाएँ। 13 फिर इमाम तमाम दुनिया के मालिक रब के अहद का संदूक उठाकर दरिया में जाएँगे। और ज्योंही वह अपने पाँव पानी में रखेंगे तो पानी का बहाव रुक जाएगा और आनेवाला पानी ढेर बनकर खड़ा रहेगा।”

14 चुनाँचे इसराइली अपने खैमों को समेटकर रवाना हुए, और अहद का संदूक उठानेवाले इमाम उनके आगे आगे चल दिए। 15 फसल की कटाई का मौसम था, और दरिया का पानी किनारों से बाहर आ गया था। लेकिन ज्योंही संदूक को उठानेवाले इमामों ने दरिया के किनारे पहुँचकर पानी में कदम रखा 16 तो आनेवाले पानी का बहाव रुक गया। वह उनसे दूर एक शहर के करीब ढेर बन गया जिसका नाम आदम था और जो ज़रतान के नज़दीक है। जो पानी दूसरी यानी बहीराए-मुरदार की तरफ बह रहा था वह पूरी तरह उतर गया। तब इसराइलियों ने यरीह शहर के मुकाबिल दरिया को पार किया। 17 रब का अहद का संदूक उठानेवाले इमाम दरियाए-यरदन के बीच में ख़रक ज़मीन पर खड़े रहे जबकि बाक़ी लोग ख़रक ज़मीन पर से गुज़र गए। इमाम उस वक़्त तक वहाँ खड़े रहे जब तक तमाम इसराइलियों ने ख़रक ज़मीन पर चलकर दरिया को पार न कर लिया।

## 4

### यादगार पत्थर

1 जब पूरी कौम ने दरियाए-यरदन को उबर कर लिया तो रब यशुअ से हमकलाम हुआ, 2 “हर कबीले में से एक एक आदमी को चुन लो। 3 फिर इन बारह आदमियों को हुक्म दे कि जहाँ इमाम दरियाए-यरदन के दरमियान खड़े हैं वहाँ से बारह पत्थर उठाकर उन्हें उस जगह रख दो जहाँ तुम आज रात ठहरोगे।”

4 चुनाँचे यशुअ ने उन बारह आदमियों को बुलाया जिन्हें उसने इसराइल के हर कबीले से चुन लिया था 5 और उनसे कहा, “रब अपने खुदा के संदूक के आगे आगे चलकर दरिया के दरमियान तक जाएँ। आपमें से हर आदमी एक एक पत्थर उठाकर अपने कंधे पर रखे और बाहर ले जाए। कुल बारह पत्थर होंगे, इसराइल के हर कबीले के लिए एक। 6 यह पत्थर आपके दरमियान एक यादगार निशान रहेंगे। आइंदा जब आपके बच्चे आपसे पूछेंगे कि इन पत्थरों का क्या मतलब है 7 तो उन्हें बताना, ‘यह हमें याद दिलाते हैं कि दरियाए-यरदन का बहाव रुक गया जब रब का अहद का संदूक उसमें से गुज़रा।’ यह पत्थर अबद तक इसराइल को याद दिलाते रहेंगे कि यहाँ क्या कुछ हुआ था।”

8 इसराइलियों ने ऐसा ही किया। उन्होंने दरियाए-यरदन के बीच में से अपने कबीलों की तादाद के मुताबिक बारह पत्थर उठाए, बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने यशुअ को फ़रमाया था। फिर उन्होंने यह पत्थर अपने साथ लेकर उस जगह रख दिए जहाँ उन्हें रात के लिए ठहरना था। 9 साथ साथ यशुअ ने उस जगह भी बारह पत्थर खड़े किए जहाँ अहद का संदूक उठानेवाले इमाम दरियाए-यरदन के दरमियान खड़े थे। यह पत्थर आज तक वहाँ पड़े हैं। 10 संदूक को उठानेवाले इमाम दरिया के दरमियान खड़े रहे जब तक लोगों ने तमाम अहकाम जो रब ने यशुअ को दिए थे पूरे न कर लिए। यों सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा मूसा ने यशुअ को फ़रमाया था।

लोग जल्दी जल्दी दरिया में से गुज़रे। 11 जब सब दूसरे किनारे पर थे तो इमाम भी रब का संदूक लेकर किनारे पर पहुँचे और दुबारा कौम के आगे आगे चलने लगे। 12 और जिस तरह मूसा ने फ़रमाया था, रुबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले के मर्द मुसल्लह होकर बाक़ी इसराइली कबीलों से पहले दरिया के दूसरे किनारे पर पहुँच गए थे। 13 तकरीबन 40,000 मुसल्लह मर्द उस वक़्त रब के सामने यरीह के मैदान में पहुँच गए ताकि वहाँ जंग करें। 14 उस दिन रब ने यशुअ को पूरी इसराइली कौम के सामने सरफ़राज़ किया। उसके जीते-जी लोग उसका यों ख़ौफ़ मानते रहे जिस तरह पहले मूसा का।

15 फिर रब ने यशुअ से कहा, 16 “अहद का संदूक उठानेवाले इमामों को दरिया में से निकलने का हुक्म दे।” 17 यशुअ ने ऐसा ही किया 18 तो ज्योंही इमाम किनारे पर पहुँच गए पानी दुबारा बहकर दरिया के किनारों से बाहर आने लगा।

19 इसराइलियों ने पहले महीने के दसवें दिन \* दरियाए-यरदन को उबर किया। उन्होंने अपने खैमे यरीह के मशरिक में वाके जिलजाल में खड़े किए। 20 वहाँ यशुअ ने दरिया में से चुने हुए बारह पत्थरों को खड़ा किया। 21 उसने इसराइलियों से कहा, “आइंदा जब आपके बच्चे अपने अपने बाप से पूछेंगे कि इन पत्थरों का क्या मतलब है 22 तो उन्हें बताना, ‘यह

\* 4:19 यानी अज़ैल में।

वह जगह है जहाँ इसराइली क्रौम ने खुरक जमीन पर दरियाए-यरदन को पार किया।' 23 क्योंकि रब आपके खुदा ने उस वक़्त तक आपके आगे आगे दरिया का पानी खुरक कर दिया जब तक आप वहाँ से गुज़र न गए, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह बहे-कुलजूम के साथ किया था जब हम उसमें से गुज़रे। 24 उसने यह काम इसलिए किया ताकि जमीन की तमाम क्रौमों अल्लाह की कुदरत को जान लें और आप हमेशा रब अपने खुदा का ख़ौफ़ मानें।”

## 5

1 यह ख़बर दरियाए-यरदन के मगरिब में आबाद तमाम अमोरी बादशाहों और साहिली इलाके में आबाद तमाम कनानी बादशाहों तक पहुँच गई कि रब ने इसराइलियों के सामने दरिया को उस वक़्त तक खुरक कर दिया जब तक सबने पार न कर लिया था। तब उनकी हिम्मत टूट गई और उनमें इसराइलियों का सामना करने की ज़रूरत न रही।

### जिलजाल में खतना

2 उस वक़्त रब ने यशुअ से कहा, “पत्थर की छुरियाँ बनाकर पहले की तरह इसराइलियों का खतना करवा दे।” 3 चुनोंचे यशुअ ने पत्थर की छुरियाँ बनाकर एक जगह पर इसराइलियों का खतना करवाया जिसका नाम बाद में ‘खतना पहाड़’ रखा गया। 4 बात यह थी कि जो मर्द मिसर से निकलते वक़्त जंग करने के काबिल थे वह रेगिस्तान में चलते चलते मर चुके थे। 5 मिसर से रवाना होनेवाले इन तमाम मर्दों का खतना हुआ था, लेकिन जितने लड़कों की पैदाइश रेगिस्तान में हुई थी उनका खतना नहीं हुआ था। 6 चूँकि इसराइली रब के ताबे नहीं रहे थे इसलिए उसने क़सम खाई थी कि वह उस मुल्क को नहीं देखेंगे जिसमें दूध और शहद की कसरत है और जिसका वादा उसने क़सम खाकर उनके बापदादा से किया था। नतीजे में इसराइली फ़ौज मुल्क में दाखिल न हो सके बल्कि उन्हें उस वक़्त तक रेगिस्तान में फिरना पड़ा जब तक वह तमाम मर्द मर न गए जो मिसर से निकलते वक़्त जंग करने के काबिल थे। 7 उनकी जगह रब ने उनके बेटों को खड़ा किया था। यशुअ ने उन्हीं का खतना करवाया। उनका खतना इसलिए हुआ कि रेगिस्तान में सफ़र के दौरान उनका खतना नहीं किया गया था।

8 पूरी क्रौम के मर्दों का खतना होने के बाद वह उस वक़्त तक खैमागाह में रहे जब तक उनके ज़ख़म ठीक नहीं हो गए थे। 9 और रब ने यशुअ से कहा, “आज मैंने मिसर की स़्वाइ तुमसे दूर कर दी है।” \* इसलिए उस जगह का नाम आज तक जिलजाल यानी लुढकाना रहा है।

10 जब इसराइली यरीह के मैदानी इलाके में वाके जिलजाल में खैमाज़न थे तो उन्होंने फ़सह की ईद भी मनाई। महीने का चौधवाँ दिन था, 11 और अगले ही दिन वह पहली दफ़ा उस मुल्क की पैदावार में से बेखमीरी रोटी और अनाज़ के भुने हुए दाने खाने लगे। 12 उसके बाद के दिन मन का सिलसिला ख़त्म हुआ और इसराइलियों के लिए यह सहलत न रही। उस साल से वह कनान की पैदावार से खाने लगे।

### फ़रिश्ते से यशुअ की मुलाकात

13 एक दिन यशुअ यरीह शहर के करीब था। अचानक एक आदमी उसके सामने खड़ा नज़र आया जिसके हाथ में नंगी तलवार थी। यशुअ ने उसके पास जाकर पूछा, “क्या आप हमारे साथ या हमारे दुश्मनों के साथ हैं?”

14 आदमी ने कहा, “नहीं, मैं रब के लशकर का सरदार हूँ और अभी अभी तेरे पास पहुँचा हूँ।”

यह सुनकर यशुअ ने गिरकर उसे सिजदा किया और पूछा, “मेरे आका अपने खादिम को क्या फ़रमाना चाहते हैं?”

15 रब के लशकर के सरदार ने जवाब में कहा, “अपने जूते उतार दे, क्योंकि जिस जगह पर तू खड़ा है वह मुक़द्दस है।” यशुअ ने ऐसा ही किया।

## 6

### यरीह की तबाही

1 उन दिनों में इसराइलियों की वजह से यरीह के दरवाज़े बंद ही रहे। न कोई बाहर निकला, न कोई अंदर गया। 2 रब ने यशुअ से कहा, “मैंने यरीह को उसके बादशाह और फ़ौजी अफ़सरों समेत तेरे हाथ में कर दिया है। 3 जो इसराइली जंग के लिए तेरे साथ निकलेंगे उनके साथ शहर की फ़सील के साथ साथ चलकर एक चक्कर लगाओ और फिर खैमागाह में वापस आ जाओ। छः दिन तक ऐसा ही करो। 4 सात इमाम एक एक नरसिंगा उठाए अहद के संदूक के आगे आगे चलें। फिर सातवें दिन शहर के गिर्द सात चक्कर लगाओ। साथ साथ इमाम नरसिंगे बजाते रहें। 5 जब वह नरसिंगों को बजाते बजाते लंबी-सी फूँक मारेंगे तो फिर तमाम इसराइली बड़े जोर से जंग का नारा लगाएँ। इस पर शहर की फ़सील गिर जाएगी और तेरे लोग हर जगह सीधे शहर में दाखिल हो सकेंगे।”

\* 5:9 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : लुढकाकर दूर कर दी है।

6 यशुअ बिन नून ने इमामों को बुलाकर उनसे कहा, “रब के अहद का संदूक उठाकर मेरे साथ चलें। और सात इमाम एक एक नरसिगा उठाए संदूक के आगे आगे चलें।” 7 फिर उसने बाक़ी लोगों से कहा, “आएँ, शहर की फ़सील के साथ साथ चलकर एक चक्कर लगाएँ। मुसल्लह आदमी रब के संदूक के आगे आगे चलें।”

8 सब कुछ यशुअ की हिदायात के मुताबिक हुआ। सात इमाम नरसिगे बजाते हुए रब के आगे आगे चले जबकि रब के अहद का संदूक उनके पीछे पीछे था। 9 मुसल्लह आदमियों में से कुछ बजानेवाले इमामों के आगे आगे और कुछ संदूक के पीछे पीछे चलने लगे। इतने में इमाम नरसिगे बजाते रहे। 10 लेकिन यशुअ ने बाक़ी लोगों को हुक्म दिया था कि उस दिन जंग का नारा न लगाएँ। उसने कहा, “जब तक मैं हुक्म न दूँ उस वक़्त तक एक लफ़्ज़ भी न बोलना। जब मैं इशारा दूँगा तो फिर ही खूब नारा लगाना।” 11 इसी तरह रब के संदूक ने शहर की फ़सील के साथ साथ चलकर चक्कर लगाया। फिर लोगों ने ख़ैमागाह में लौटकर वहाँ रात गुज़ारी।

12-13 अगले दिन यशुअ सुबह-सवेरे उठा, और इमामों और फ़ौजियों ने दूसरी मरतबा शहर का चक्कर लगाया। उनकी वही तरतीब थी। पहले कुछ मुसल्लह आदमी, फिर सात नरसिगे बजानेवाले इमाम, फिर रब के अहद का संदूक उठानेवाले इमाम और आखिर में मज़ीद कुछ मुसल्लह आदमी थे। चक्कर लगाने के दौरान इमाम नरसिगे बजाते रहे। 14 इस दूसरे दिन भी वह शहर का चक्कर लगाकर ख़ैमागाह में लौट आए। उन्होंने छः दिन तक ऐसा ही किया।

15 सातवें दिन उन्होंने सुबह-सवेरे उठकर शहर का चक्कर यों लगाया जैसे पहले छः दिनों में, लेकिन इस दफ़ा उन्होंने कुल सात चक्कर लगाए। 16 सातवें चक्कर पर इमामों ने नरसिगों को बजाते हुए लंबी-सी फ़ूँक मारी। तब यशुअ ने लोगों से कहा, “जंग का नारा लगाएँ, क्योंकि रब ने आपको यह शहर दे दिया है। 17 शहर को और जो कुछ उसमें है तबाह करके रब के लिए मख़सूस करना है। सिर्फ़ राहब कसबी को उन लोगों समेत बचाना है जो उसके घर में हैं। क्योंकि उसने हमारे उन जासूसों को छुपा दिया जिनको हमने यहाँ भेजा था। 18 लेकिन अल्लाह के लिए मख़सूस चीज़ों को हाथ न लगाना, क्योंकि अगर आप उनमें से कुछ ले लें तो अपने आपको तबाह करेंगे बल्कि इसराइली ख़ैमागाह पर भी तबाही और आफ़त लाएँगे। 19 जो कुछ भी चाँदी, सोने, पीतल या लोहे से बना है वह रब के लिए मख़सूस है। उसे रब के ख़जाने में डालना है।”

20 जब इमामों ने लंबी फ़ूँक मारी तो इसराइलियों ने जंग के जोरदार नारे लगाए। अचानक यरीह की फ़सील गिर गई, और हर शख्स अपनी अपनी जगह पर सीधा शहर में दाख़िल हुआ। यों शहर इसराइल के क़ब्ज़े में आ गया। 21 जो कुछ भी शहर में था उसे उन्होंने तलवार से मारकर रब के लिए मख़सूस किया, खाह मर्द या औरत, जवान या बुज़ुर्ग, गाय-बैल, भेड़-बकरी या गधा था।

22 जिन दो आदमियों ने मुल्क की जासूसी की थी उनसे यशुअ ने कहा, “अब अपनी क़सम का वादा पूरा करें। कसबी के घर में जाकर उसे और उसके तमाम घरवालों को निकाल लाएँ।” 23 चुनौचे यह जवान आदमी गए और राहब, उसके माँ-बाप, भाइयों और बाक़ी रिश्तेदारों को उस की मिलकियत समेत निकालकर ख़ैमागाह से बाहर कहीं बसा दिया। 24 फिर उन्होंने पूरे शहर को और जो कुछ उसमें था भस्म कर दिया। लेकिन चाँदी, सोने, पीतल और लोहे का तमाम माल उन्होंने रब के घर के ख़जाने में डाल दिया। 25 यशुअ ने सिर्फ़ राहब कसबी और उसके घरवालों को बचाए रखा, क्योंकि उसने उन आदमियों को छुपा दिया था जिन्हें यशुअ ने यरीह भेजा था। राहब आज तक इसराइलियों के दरमियान रहती है।

26 उस वक़्त यशुअ ने क़सम खाई, “रब की लानत उस पर हो जो यरीह का शहर नए सिरे से तामीर करने की कोशिश करे। शहर की बुनियाद रखते वक़्त वह अपने पहलौठे से महरूम हो जाएगा, और उसके दरवाज़ों को खड़ा करते वक़्त वह अपने सबसे छोटे बेटे से हाथ धो बैठेगा।”

27 यों रब यशुअ के साथ था, और उस की शोहरत पूरे मुल्क में फैल गई।

## 7

### अकन का गुनाह

1 लेकिन जहाँ तक रब के लिए मख़सूस चीज़ों का ताल्लुक था इसराइलियों ने बेवफ़ाई की। यहदाह के क़बीले के एक आदमी ने उनमें से कुछ अपने लिए ले लिया। उसका नाम अकन बिन करमी बिन ज़बदी बिन ज़ारह था। तब रब का ग़ज़ब इसराइलियों पर नाज़िल हुआ।

2 यह यों जाहिर हुआ कि यशुअ ने कुछ आदमियों को यरीह से अई शहर को भेज दिया जो बैतल के मशरिक में बैत-आवन के करीब है। उसने उनसे कहा, “उस इलाके में जाकर उस की जासूसी करें।” चुनौचे वह जाकर ऐसा ही करने लगे। 3 जब वापस आए तो उन्होंने यशुअ से कहा, “इसकी ज़रूरत नहीं कि तमाम लोग अई पर हमला करें। उसे शिकस्त देने के लिए दो या तीन हज़ार मर्द काफ़ी है। बाक़ी लोगों को न भेजे वरना वह खाहमखाह थक जाएँगे, क्योंकि दुश्मन के लोग कम हैं।”

4 चुनौचे तकरीबन तीन हज़ार आदमी अई से लड़ने गए। लेकिन वह अई के मर्दों से शिकस्त खाकर फ़रार हुए, 5 और उनके

36 अफराद शहीद हुए। आई के आदमियों ने शहर के दरवाजे से लेकर शबरीम तक उनका ताकतुब करके वहाँ की ढलान पर उन्हें मार डाला। तब इसराईली सख्त घबरा गए, और उनकी हिम्मत जवाब दे गई।

6 यशुअ ने रंजिशा का इजहार करके अपने कपड़ों को फाड़ दिया और रब के संदूक के सामने मुँह के बल गिर गया। वहाँ वह शाम तक पड़ा रहा। इसराईल के बुजुर्गों ने भी ऐसा ही किया और अपने सर पर खूब डाल ली। 7 यशुअ ने कहा, “हाय, ऐ रब का दिर्रे-मुतलक! तूने इस कौम को दरियाए-यरदन में से गुजरने क्यों दिया अगर तेरा मकसद सिर्फ यह था कि हमें अमोरियों के हवाले करके हलाक करे? काश हम दरिया के मशरिक्की किनारे पर रहने के लिए तैयार होते! 8 ऐ रब, अब मैं क्या कहूँ जब इसराईल अपने दुश्मनों के सामने से भाग आया है? 9 कनानी और मुलक की बाक्की कौम यह सुनकर हमें घेर लेंगी और हमारा नामो-निशान मिटा देंगी। अगर ऐसा होगा तो फिर तू खुद अपना अजीम नाम कायम रखने के लिए क्या करेगा?”

10 जवाब में रब ने यशुअ से कहा, “उठकर खड़ा हो जा! तू क्यों मुँह के बल पड़ा है? 11 इसराईल ने गुनाह किया है। उन्होंने मेरे अहद की खिलाफ़वरजी की है जो मैंने उनके साथ बाँधा था। उन्होंने मखसूसशदा चीजों में से कुछ ले लिया है, और चोरी करके चुपके से अपने सामान में मिला लिया है। 12 इसी लिए इसराईली अपने दुश्मनों के सामने कायम नहीं रह सकते बल्कि पीठ फेरकर भाग रहे हैं। क्योंकि इस हरकत से इसराईल ने अपने आपको भी हलाकत के लिए मखसूस कर लिया है। जब तक तुम अपने दरमियान से वह कुछ निकालकर तबाह न कर लो जो तबाही के लिए मखसूस है उस वक़्त तक मैं तुम्हारे साथ नहीं हूँगा। 13 अब उठ और लोगों को मेरे लिए मखसूसो-मुकइस कर। उन्हें बता देना, ‘अपने आपको कल के लिए मखसूसो-मुकइस करना, क्योंकि रब जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि ऐ इसराईल, तेरे दरमियान ऐसा माल है जो मेरे लिए मखसूस है। जब तक तुम उसे अपने दरमियान से निकाल न दो अपने दुश्मनों के सामने कायम नहीं रह सकोगे।’

14 कल सुबह को हर एक कबीला अपने आपको पेश करे। रब जाहिर करेगा कि कुसूरवार शख्स कौन-से कबीले का है। फिर उस कबीले के कुंबे बारी बारी सामने आएँ। जिस कुंबे को रब कुसूरवार ठहराएगा उसके मुख्तलिफ़ खानदान सामने आएँ। और जिस खानदान को रब कुसूरवार ठहराएगा उसके मुख्तलिफ़ अफ़राद सामने आएँ। 15 जो रब के लिए मखसूस माल के साथ पकड़ा जाएगा उसे उस की मिलकियत समेत जला देना है, क्योंकि उसने रब के अहद की खिलाफ़वरजी करके इसराईल में शर्मनाक काम किया है।”

16 अगले दिन सुबह-सबरे यशुअ ने कबीलों को बारी बारी अपने पास आने दिया। जब यहदाह के कबीले की बारी आई तो रब ने उसे कुसूरवार ठहराया। 17 जब उस कबीले के मुख्तलिफ़ कुंबे सामने आए तो रब ने ज़ारह के कुंबे को कुसूरवार ठहराया। जब ज़ारह के मुख्तलिफ़ खानदान सामने आए तो रब ने जबदी का खानदान कुसूरवार ठहराया। 18 आखिरकार यशुअ ने उस खानदान को फ़रदन फ़रदन अपने पास आने दिया, और अकन बिन करमी बिन जबदी बिन ज़ारह पकड़ा गया। 19 यशुअ ने उससे कहा, “बेटा, रब इसराईल के ख़ुदा को जलाल दो और उस की सताइश करो। मुझे बता दो कि तुमने क्या किया। कोई भी बात मुझसे मत छुपाना।”

20 अकन ने जवाब दिया, “वाकई मैंने रब इसराईल के ख़ुदा का गुनाह किया है। 21 मैंने लूटे हुए माल में से बाबल का एक शानदार चोगा, तक्कीबन सवा दो किलोग्राम चाँदी और आधे किलोग्राम से ज़ायद सोने की ईट ले ली थी। यह चीज़ें देखकर मैंने उनका लालच किया और उन्हें ले लिया। अब वह मेरे ख़ैमे की ज़मीन में दबी हुई हैं। चाँदी को मैंने बाक्की चीज़ों के नीचे छुपा दिया।”

22 यह सुनकर यशुअ ने अपने बंदों को अकन के ख़ैमे के पास भेज दिया। वह दौड़कर वहाँ पहुँचे तो देखा कि यह माल वाकई ख़ैमे की ज़मीन में छुपाना हुआ है और कि चाँदी दूसरी चीज़ों के नीचे पड़ी है। 23 वह यह सब कुछ ख़ैमे से निकालकर यशुअ और तमाम इसराईलियों के पास ले आए और रब के सामने रख दिया। 24 फिर यशुअ और तमाम इसराईली अकन बिन ज़ारह को पकड़कर वादीए-अकूर में ले गए। उन्होंने चाँदी, लिबास, सोने की ईट, अकन के बेटे-बेटियों, गाय-बैलों, गधों, भेड़-बक़रियों और उसके ख़ैमे गरज़ उस की पूरी मिलकियत को उस वादी में पहुँचा दिया।

25 यशुअ ने कहा, “तुम यह आफ़त हम पर क्यों लाए हो? आज रब तुम पर ही आफ़त लाएगा।” फिर पूरे इसराईल ने अकन को उसके घरवालों समेत संगसार करके जला दिया। 26 अकन के ऊपर उन्होंने पत्थरों का बड़ा ढेर लगा दिया जो आज तक वहाँ मौजूद है। यही वजह है कि आज तक उसका नाम वादीए-अकूर यानी आफ़त की वादी रहा है।

इसके बाद रब का सख्त ग़ज़ब ठंडा हो गया।

## 8



1 फिर रब ने यशुअ से कहा, “मत डर और मत घबरा बल्कि तमाम फौजी अपने साथ लेकर अई शहर पर हमला कर। क्योंकि मैंने अई के बादशाह, उस की कौम, उसके शहर और मुल्क को तेरे हाथ में कर दिया है। 2 लाज़िम है कि तू अई और उसके बादशाह के साथ वह कुछ करे जो तूने यरीह और उसके बादशाह के साथ किया था। लेकिन इस मरतबा तुम उसका माल और मवेशी अपने पास रख सकते हो। हमला करते वक़्त शहर के पीछे घात लगा।”

3 चुनौचे यशुअ पूरे लशकर के साथ अई पर हमला करने के लिए निकला। उसने अपने सबसे अच्छे फ़ौजियों में से 30,000 को चुन लिया और उन्हें रात के वक़्त अई के खिलाफ़ भेजकर 4 हुक़्म दिया, “ध्यान दें कि आप शहर के पीछे घात लगाएँ। सबके सब शहर के करीब ही तैयार रहें। 5 इतने में मैं बाकी मर्दों के साथ शहर के करीब आ जाऊँगा। और जब शहर के लोग पहले की तरह हमारे साथ लड़ने के लिए निकलेंगे तो हम उनके आगे आगे भाग जाएंगे। 6 वह हमारे पीछे पड़ जाएंगे और यों हम उन्हें शहर से दूर ले जाएंगे, क्योंकि वह समझेंगे कि हम इस दफ़ा भी पहले की तरह उनसे भाग रहे हैं। 7 फिर आप उस जगह से निकलें जहाँ आप घात में बैठे होंगे और शहर पर कब्ज़ा कर लें। रब आपका खुदा उसे आपके हाथ में कर देगा। 8 जब शहर आपके कब्ज़े में होगा तो उसे जला देना। वही करें जो रब ने फरमाया है। मेरी इन हिदायत पर ध्यान दें।”

9 यह कहकर यशुअ ने उन्हें अई की तरफ़ भेज दिया। वह रवाना होकर अई के मगरिब में घात में बैठ गए। यह जगह बैतेल और अई के दरमियान थी। लेकिन यशुअ ने यह रात बाकी लोगों के साथ ख़ैमागाह में गुज़ारी। 10 अगले दिन सुबह-सवेरे यशुअ ने आदमियों को जमा करके उनका जायज़ा लिया। फिर वह इसराईल के बुज़ुर्गों के साथ उनके आगे आगे अई की तरफ़ चल दिया। 11 जो लशकर उसके साथ था वह चलते चलते अई के सामने पहुँच गया। उन्होंने शहर के शिमाल में अपने ख़ैमे लगाए। उनके और शहर के दरमियान वादी थी।

12 जो शहर के मगरिब में अई और बैतेल के दरमियान घात लगाए बैठे थे वह तकरिबन 5,000 मर्द थे। 13 यों शहर के मगरिब और शिमाल में आदमी लड़ने के लिए तैयार हुए। रात के वक़्त यशुअ वादी में पहुँच गया।

14 जब अई के बादशाह ने शिमाल में इसराईलियों को देखा तो उसने जल्दी जल्दी तैयारियों की। अगले दिन सुबह-सवेरे वह अपने आदमियों के साथ शहर से निकला ताकि इसराईलियों के साथ लड़े। यह जगह वादीए-यरदन की तरफ़ थी। बादशाह को मालूम न हुआ कि इसराईली शहर के पीछे घात में बैठे हैं। 15 जब अई के मर्द निकले तो यशुअ और उसका लशकर शिकस्त का इज़हार करके रेगिस्तान की तरफ़ भागने लगे।

16 तब अई के तमाम मर्दों को इसराईलियों का ताक़्क़ुब करने के लिए बुलाया गया, और यशुअ के पीछे भागते भागते वह शहर से दूर निकल गए। 17 एक मर्द भी अई या बैतेल में न रहा बल्कि सबके सब इसराईलियों के पीछे पड़ गए। न सिर्फ़ यह बल्कि उन्होंने शहर का दरवाज़ा खुला छोड़ दिया।

18 फिर रब ने यशुअ से कहा, “जो शमशेर तेरे हाथ में है उसे अई के खिलाफ़ उठाए रख, क्योंकि मैं यह शहर तेरे हाथ में कर दूँगा।” यशुअ ने ऐसा ही किया, 19 और ज्योंही उसने अपनी शमशेर से अई की तरफ़ इशारा किया घात में बैठे आदमी जल्दी से अपनी जगह से निकल आए और दौड़ दौड़कर शहर पर झपट पड़े। उन्होंने उस पर कब्ज़ा करके जल्दी से उसे जला दिया।

20 जब अई के आदमियों ने मुडकर नज़र डाली तो देखा कि शहर से धुँएँ के बादल उठ रहे हैं। लेकिन अब उनके लिए भी बचने का कोई रास्ता न रहा, क्योंकि जो इसराईली अब तक उनके आगे आगे रेगिस्तान की तरफ़ भाग रहे थे वह अचानक मुडकर ताक़्क़ुब करनेवालों पर टूट पड़े। 21 क्योंकि जब यशुअ और उसके साथ के आदमियों ने देखा कि घात में बैठे इसराईलियों ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया है और कि शहर से धुँआँ उठ रहा है तो उन्होंने मुडकर अई के आदमियों पर हमला कर दिया। 22 साथ साथ शहर में दाखिल हुए इसराईली शहर से निकलकर पीछे से उनसे लड़ने लगे। चुनौचे अई के आदमी बीच में फँस गए। इसराईलियों ने सबको क़त्ल कर दिया, और न कोई बचा, न कोई फ़रार हो सका। 23 सिर्फ़ अई के बादशाह को जिंदा पकड़ा और यशुअ के पास लाया गया।

24 अई के मर्दों का ताक़्क़ुब करते करते उन सबको खुले मैदान और रेगिस्तान में तलवार से मार देने के बाद इसराईलियों ने अई शहर में वापस आकर तमाम बाशिंदों को हलाक कर दिया। 25 उस दिन अई के तमाम मर्द और औरतें मारे गए, कुल 12,000 अफ़राद। 26 क्योंकि यशुअ ने उस वक़्त तक अपनी शमशेर उठाए रखी जब तक अई के तमाम बाशिंदों को हलाक न कर दिया गया। 27 सिर्फ़ शहर के मवेशी और लूटा हुआ माल बच गया, क्योंकि इस दफ़ा रब ने हिदायत की थी कि इसराईली उसे ले जा सकते हैं।

28 यशुअ ने अई को जलाकर उसे हमेशा के लिए मलबे का ढेर बना दिया। यह मकाम आज तक वीरान है। 29 अई के बादशाह की लाश उसने शाम तक दरख़्त से लटकाए रखी। फिर जब सूरज डूबने लगा तो यशुअ ने अपने लोगों को हुक़्म

दिया कि बादशाह की लाश को दरख्त से उतार दें। तब उन्होंने उसे शहर के दरवाजे के पास फेंककर उस पर पत्थर का बड़ा ढेर लगा दिया। यह ढेर आज तक मौजूद है।

### ऐबाल पहाड़ पर अहद की तजदीद

30 उस वक़्त यशुअ ने रब इसराईल के ख़ुदा की ताज़ीम में ऐबाल पहाड़ पर कुरबानगाह बनाई<sup>31</sup> जिस तरह रब के खादिम मूसा ने इसराईलियों को हुक्म दिया था। उसने उसे मूसा की शरीअत की किताब में दर्ज हिदायत के मुताबिक बनाया। कुरबानगाह के पत्थर तराशे बग़ैर लगाए गए, और उन पर लोहे का आला न चलाया गया। उस पर उन्होंने रब को भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश की।

32 वहाँ यशुअ ने इसराईलियों की मौजूदगी में पत्थरों पर मूसा की शरीअत दुबारा लिख दी।<sup>33</sup> फिर बुज़ुर्गों, निगहबानों और काज़ियों के साथ मिलकर तमाम इसराईली दो गुरोहों में तकसीम हुए। परदेसी भी उनमें शामिल थे। एक गुरोह गरिज़ीम पहाड़ के सामने खड़ा हुआ और दूसरा ऐबाल पहाड़ के सामने। दोनों गुरोह एक दूसरे के मुकाबिल खड़े रहे जबकि लावी के क़बीले के इमाम उनके दरमियान खड़े हुए। उन्होंने रब के अहद का सन्दूक उठा रखा था। सब कुछ उन हिदायत के ऐन मुताबिक हुआ जो रब के खादिम मूसा ने इसराईलियों को बरकत देने के लिए दी थी।

34 फिर यशुअ ने शरीअत की तमाम बातों की तिलावत की, उस की बरकात भी और उस की लानतें भी। सब कुछ उसने वैया ही पढा जैसा कि शरीअत की किताब में दर्ज था।<sup>35</sup> जो भी हुक्म मूसा ने दिया था उसका एक भी लफ़्ज़ न रहा जिसकी तिलावत यशुअ ने तमाम इसराईलियों की पूरी जमात के सामने न की हो। और सबने यह बातें सुनीं। इसमें औरतें, बच्चे और उनके दरमियान रहनेवाले परदेसी सब शामिल थे।

## 9

### जिबऊनी यशुअ को धोका देते हैं

1 इन बातों की खबर दरियाए-यरदन के मगरिब के तमाम बादशाहों तक पहुँची, खाह वह पहाड़ी इलाके, मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके या साहिली इलाके में लुबनान तक रहते थे। उनकी यह क्रौमें थीं : हित्ती, अमोरी, कनानी, फ़रिज़्जी, हिब्वी और यबूसी।<sup>2</sup> अब यह यशुअ और इसराईलियों से लड़ने के लिए जमा हुए।

3 लेकिन जब जिबऊन शहर के बाशिंदों को पता चला कि यशुअ ने यरीह और अई के साथ क्या किया है<sup>4</sup> तो उन्होंने एक चाल चली। अपने साथ सफ़र के लिए खाना लेकर वह यशुअ के पास चल पड़े। उनके गधों पर खस्ताहाल बोरियाँ और मै की ऐसी पुरानी और धिसी-फटी मशकें लदी हुई थीं जिनकी बार बार मरम्मत हुई थी।<sup>5</sup> मर्दों ने ऐसे पुराने जूते पहन रखे थे जिन पर जगह जगह पैवंद लगे हुए थे। उनके कपड़े भी धिसे-फटे थे, और सफ़र के लिए जो रोटी उनके पास थी वह ख़ुरक और टुकड़े टुकड़े हो गई थी।<sup>6</sup> ऐसी हालत में वह यशुअ के पास जिलजाल की खैमागाह में पहुँच गए। उन्होंने उससे और बाकी इसराईली मर्दों से कहा, “हम एक दूर-दराज़ मुल्क से आए हैं। आँ, हमारे साथ मुआहदा करें।”

7 लेकिन इसराईलियों ने हिब्वियों से कहा, “शायद आप हमारे इलाके के बीच में कहीं बसते हैं। अगर ऐसा है तो हम किस तरह आपसे मुआहदा कर सकते हैं?”

8 वह यशुअ से बोले, “हम आपकी खिदमत के लिए हाज़िर हैं।”

यशुअ ने पूछा, “आप कौन हैं और कहाँ से आए हैं?”<sup>9</sup> उन्होंने जवाब दिया, “आपके खादिम आपके ख़ुदा के नाम के बाइस एक निहायत दूर-दराज़ मुल्क से आए हैं। क्योंकि उस की खबर हम तक पहुँच गई है, और हमने वह सब कुछ सुन लिया है जो उसने मिसर में<sup>10</sup> और दरियाए-यरदन के मशरिफ में रहनेवाले दो बादशाहों के साथ किया यानी हसबोन के बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह ओज के साथ जो अस्तारात में रहता था।<sup>11</sup> तब हमारे बुज़ुर्गों बल्कि हमारे मुल्क के तमाम बाशिंदों ने हमसे कहा, ‘सफ़र के लिए खाना लेकर उनसे मिलने जाएँ। उनसे बात करें कि हम आपकी खिदमत के लिए हाज़िर हैं। आँ, हमारे साथ मुआहदा करें।’<sup>12</sup> हमारी यह रोटी अभी गरम थी जब हम इसे सफ़र के लिए अपने साथ लेकर आपसे मिलने के लिए अपने घरों से रवाना हुए। और अब आप ख़ुद देख सकते हैं कि यह ख़ुरक और टुकड़े टुकड़े हो गई है।<sup>13</sup> और मै की इन मशकों की धिसी-फटी हालत देखें। भरते वक़्त यह नई और लचकदार थी। यही हमारे कपड़ों और जूतों की हालत भी है। सफ़र करते करते यह ख़त्म हो गए हैं।”

14 इसराईलियों ने मुसाफ़िरों का कुछ खाना लिया। अफसोस, उन्होंने रब से हिदायत न माँगी।<sup>15</sup> फिर यशुअ ने उनके साथ सुलह का मुआहदा किया और जमात के राहनुमाओं ने कसम खाकर उस की तसदीक की। मुआहदे में इसराईल ने वादा किया कि जिबऊनियों को जीने देगा।

16 तीन दिन गुजरे तो इसराइलियों को पता चला कि जिबऊनी हमारे करीब ही और हमारे इलाके के ऐन बीच में रहते हैं। 17 इसराइली रवाना हुए और तीसरे दिन उनके शहरों के पास पहुँचे जिनके नाम जिबऊन, कफ़ीरा, बैरोत और किरियत-यारिम थे। 18 लेकिन चूँकि जमात के राहनुमाओं ने रब इसराइल के ख़ुदा की क्रम खाकर उनसे वादा किया था इसलिए उन्होंने जिबऊनियों को हलाक न किया। पूरी जमात राहनुमाओं पर बुडबुडाने लगी, 19 लेकिन उन्होंने जवाब में कहा, “हमने रब इसराइल के ख़ुदा की क्रम खाकर उनसे वादा किया, और अब हम उन्हें छेड़ नहीं सकते। 20 चुनौचे हम उन्हें जीने देंगे और वह क्रम न तोड़ेंगे जो हमने उनके साथ खाई। ऐसा न हो कि अल्लाह का ग़ज़ब हम पर नाज़िल हो जाए। 21 उन्हें जीने दो।” फिर फैसला यह हुआ कि जिबऊनी लकड़हारे और पानी भरनेवाले बनकर पूरी जमात की खिदमत करें। यों इसराइली राहनुमाओं का उनके साथ वादा कायम रहा।

22 यशुअ ने जिबऊनियों को बुलाकर कहा, “तुमने हमें धोका देकर क्यों कहा कि हम आपसे निहायत दूर रहते हैं हालाँकि तुम हमारे इलाके के बीच में ही रहते हो? 23 चुनौचे अब तुम पर लानत हो। तुम लकड़हारे और पानी भरनेवाले बनकर हमेशा के लिए मेरे ख़ुदा के घर की खिदमत करोगे।”

24 उन्होंने जवाब दिया, “आपके खादिमों को साफ़ बताया गया था कि रब आपके ख़ुदा ने अपने ख़ादिम मूसा को क्या हुक्म दिया था, कि उसे आपको पूरा मुल्क देना और आपके आगे आगे तमाम बाशिंदों को हलाक करना है। यह सुनकर हम बहुत डर गए कि हमारी जान नहीं बचेगी। इसी लिए हमने यह सब कुछ किया। 25 अब हम आपके हाथ में हैं। हमारे साथ वह कुछ करें जो आपको अच्छा और ठीक लगता है।”

26 चुनौचे यशुअ ने उन्हें इसराइलियों से बचाया, और उन्होंने जिबऊनियों को हलाक न किया। 27 उसी दिन उसने जिबऊनियों को लकड़हारे और पानी भरनेवाले बना दिया ताकि वह जमात और रब की उस कुरबानगाह की खिदमत करें जिसका मक़ाम रब को अभी चुनना था। और यह लोग आज तक यहीं कुछ करते हैं।

## 10

### अमोरियों की शिकस्त

1 यरूशलम के बादशाह अदनी-सिदूक को खबर मिली कि यशुअ ने अई पर यों कब्ज़ा करके उसे मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया है जिस तरह उसने यरीह और उसके बादशाह के साथ भी किया था। उसे यह इतला भी दी गई कि जिबऊन के बाशिंदे इसराइलियों के साथ सुलह का मुआहदा करके उनके दरमियान रह रहे हैं। 2 यह सुनकर वह और उस की क्रीम निहायत डर गए, क्योंकि जिबऊन बड़ा शहर था। वह अहमियत के लिहाज से उन शहरों के बराबर था जिनके बादशाह थे, बल्कि वह अई शहर से भी बड़ा था, और उसके तमाम मर्द बेहतरीन फ़ौजी थे।

3 चुनौचे यरूशलम के बादशाह अदनी-सिदूक ने अपने कासिद हबस्न के बादशाह हहाम, यरमूत के बादशाह पीराम, लकीस के बादशाह यफ़ीअ और इजलून के बादशाह दबीर के पास भेज दिए। 4 पैगाम यह था, “आएँ और जिबऊन पर हमला करने में मेरी मदद करें, क्योंकि उसने यशुअ और इसराइलियों के साथ सुलह का मुआहदा कर लिया है।” 5 यरूशलम, हबस्न, यरमूत, लकीस और इजलून के यह पाँच अमोरी बादशाह मुत्तहिद हुए। वह अपने तमाम फ़ौजियों को लेकर चल पड़े और जिबऊन का मुहासरा करके उससे जंग करने लगे।

6 उस वक़्त यशुअ ने अपने ख़ैमे जिलजाल में लगाए थे। जिबऊन के लोगों ने उसे पैगाम भेज दिया, “अपने ख़ादिमों को तर्क न करें। जल्दी से हमारे पास आकर हमें बचाएँ! हमारी मदद कीजिए, क्योंकि पहाड़ी इलाके के तमाम अमोरी बादशाह हमारे खिलाफ़ मुत्तहिद हो गए हैं।”

7 यह सुनकर यशुअ अपनी पूरी फ़ौज के साथ जिलजाल से निकला और जिबऊन के लिए रवाना हुआ। उसके बेहतरीन फ़ौजी भी सब उसके साथ थे। 8 रब ने यशुअ से कहा, “उन्से मत डरना, क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में कर चुका हूँ। उनमें से एक भी तेरा मुक़ाबला नहीं करने पाएगा।” 9 और यशुअ ने जिलजाल से सारी रात सफ़र करते करते अचानक दुश्मन पर हमला किया। 10 उस वक़्त रब ने इसराइलियों के देखते देखते दुश्मन में अबतरी पैदा कर दी, और उन्होंने जिबऊन के करीब दुश्मन को ज़बरदस्त शिकस्त दी। इसराइली बैत-हौरून तक पहुँचानेवाले रास्ते पर अमोरियों का ताक्कुब करते करते उन्हें अजीका और मक्केदा तक मौत के घाट उतारते गए। 11 और जब अमोरी इस रास्ते पर अजीका की तरफ़ भाग रहे थे तो रब ने आसमान से उन पर बड़े बड़े ओले बरसाए जिनहोंने इसराइलियों की निसबत ज्यादा दुश्मनों को हलाक कर दिया।

12 उस दिन जब रब ने अमोरियों को इसराइल के हाथ में कर दिया तो यशुअ ने इसराइलियों की मौजूदगी में रब से कहा, “ऐ सूरज, जिबऊन के ऊपर रुक जा! ऐ चाँद, वादीए-ऐयालीन पर ठहर जा!”

13 तब सूरज स्क गया, और चाँद ने आगे हरकत न की। जब तक कि इसराईल ने अपने दुश्मनों से पूरा बदला न ले लिया उस वक्त तक वह स्के रहे। इस बात का जिक्र याशर की किताब में किया गया है। सूरज आसमान के बीच में स्क गया और तकरीबन एक पूरे दिन के दौरान गुरूब न हुआ। 14 यह दिन मुन्फरिद था। रब ने इनसान की इस तरह की दूआ न कभी इससे पहले, न कभी इसके बाद सुनी। क्योंकि रब खुद इसराईल के लिए लड़ रहा था। 15 इसके बाद यशुअ पूरे इसराईल समेत जिलजाल की खैमागाह में लौट आया।

### पाँच अमोरी बादशाहों की गिरिफ्तारी

16 लेकिन पाँचों अमोरी बादशाह फ़रार होकर मक्केदा के एक गार में छुप गए थे। 17 यशुअ को इतला दी गई 18 तो उसने कहा, “कुछ बड़े बड़े पत्थर लुढकाकर गार का मुँह बंद करना, और कुछ आदमी उस की पहरादारी करें। 19 लेकिन बाकी लोग न स्के बल्कि दुश्मनों का तान्क़ुब करके पीछे से उन्हें मारते जाएँ। उन्हें दुबारा अपने शहरों में दाखिल होने का मौका मत देना, क्योंकि रब आपके खुदा ने उन्हें आपके हाथ में कर दिया है।” 20 चुनौचे यशुअ और बाकी इसराईली उन्हें हलाक करते रहे, और कम ही अपने शहरों की फ़सील में दाखिल हो सके। 21 इसके बाद पूरी फ़ौज सहीह-सलामत यशुअ के पास मक्केदा की लशकरगाह में वापस पहुँच गई।

अब से किसी में भी इसराईलियों को धमकी देने की ज़रत न रही।

22 फिर यशुअ ने कहा, “गार के मुँह को खोलकर यह पाँच बादशाह मेरे पास निकाल लाएँ।” 23 लोग गार को खोलकर यस्शालम, हबस्न, यरमत, लकीस और इजलून के बादशाहों को यशुअ के पास निकाल लाए। 24 यशुअ ने इसराईल के मर्दों को बुलाकर अपने साथ खड़े फ़ौजी अफ़सरों से कहा, “इधर आकर अपने पैरों को बादशाहों की गर्दनों पर रख दें।” अफ़सरों ने ऐसा ही किया। 25 फिर यशुअ ने उनसे कहा, “न डरें और न हौसला हारें। मजबूत और दिलेर हों। रब यही कुछ उन तमाम दुश्मनों के साथ करेगा जिनसे आप लड़ेंगे।” 26 यह कहकर उसने बादशाहों को हलाक करके उनकी लाशें पाँच दरख्तों से लटका दीं। वहाँ वह शाम तक लटक रही। 27 जब सूरज डूबने लगा तो लोगों ने यशुअ के हुक्म पर लाशें उतारकर उस गार में फेंक दी जिसमें बादशाह छुप गए थे। फिर उन्होंने गार के मुँह को बड़े बड़े पत्थरों से बंद कर दिया। यह पत्थर आज तक वहाँ पड़े हुए हैं।

### मज़ीद अमोरी शहरों पर कब्ज़ा

28 उस दिन मक्केदा यशुअ के कब्ज़े में आ गया। उसने पूरे शहर को तलवार से रब के लिए मखसूस करके तबाह कर दिया। बादशाह समेत सब हलाक हुए और एक भी न बचा। शहर के बादशाह के साथ उसने वह सुलूक किया जो उसने यरीह के बादशाह के साथ किया था।

29 फिर यशुअ ने तमाम इसराईलियों के साथ वहाँ से आगे निकलकर लिबना पर हमला किया। 30 रब ने उस शहर और उसके बादशाह को भी इसराईल के हाथ में कर दिया। यशुअ ने तलवार से शहर के तमाम बाशिंदों को हलाक किया, और एक भी न बचा। बादशाह के साथ उसने वही सुलूक किया जो उसने यरीह के बादशाह के साथ किया था।

31 इसके बाद उसने तमाम इसराईलियों के साथ लिबना से आगे बढ़कर लकीस का मुहासरा किया। जब उसने उस पर हमला किया 32 तो रब ने यह शहर उसके बादशाह समेत इसराईल के हाथ में कर दिया। दूसरे दिन वह यशुअ के कब्ज़े में आ गया। शहर के सारे बाशिंदों को उसने तलवार से हलाक किया, जिस तरह कि उसने लिबना के साथ भी किया था। 33 साथ साथ यशुअ ने जज़र के बादशाह हर्म और उसके लोगों को भी शिकस्त दी जो लकीस की मदद करने के लिए आए थे। उनमें से एक भी न बचा।

34 फिर यशुअ ने तमाम इसराईलियों के साथ लकीस से आगे बढ़कर इजलून का मुहासरा कर लिया। उसी दिन उन्होंने उस पर हमला करके 35 उस पर कब्ज़ा कर लिया। जिस तरह लकीस के साथ हुआ उसी तरह इजलून के साथ भी किया गया यानी शहर के तमाम बाशिंदे तलवार से हलाक हुए।

36 इसके बाद यशुअ ने तमाम इसराईलियों के साथ इजलून से आगे बढ़कर हबस्न पर हमला किया। 37 शहर पर कब्ज़ा करके उन्होंने बादशाह, इर्दगिर्द की आबादियों और बाशिंदे सबके सब तहे-तेग कर दिए। कोई न बचा। इजलून की तरह उन्होंने उसे पूरे तौर पर तमाम बाशिंदों समेत रब के लिए मखसूस करके तबाह कर दिया।

38 फिर यशुअ तमाम इसराईलियों के साथ मुडकर दबीर की तरफ बढ़ गया। उस पर हमला करके 39 उसने शहर, उसके बादशाह और इर्दगिर्द की आबादियों पर कब्ज़ा कर लिया। सबको नेस्त कर दिया गया, एक भी न बचा। यों दबीर के साथ वह कुछ हुआ जो पहले हबस्न और लिबना उसके बादशाह समेत हुआ था।

40 इस तरह यशुअ ने ज़ुन्ही कनान के तमाम बादशाहों को शिकस्त देकर उनके पूरे मुल्क पर कब्ज़ा कर लिया यानी मुल्क के पहाड़ी इलाके पर, जुन्ब के दृशे-नजब पर, मगारिब के नशेबी पहाड़ी इलाके पर और वादीए-यरदन के मगारिब में

वाके पहाड़ी ढलानों पर। उसने किसी को भी बचने न दिया बल्कि हर जानदार को रब के लिए मखसूस करके हलाक कर दिया। यह सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब इसराईल के खुदा ने हुक्म दिया था।

41 यशुअ ने उन्हें कादिस-बरनीअ से लेकर गज्जा तक और जुशन के पूरे इलाके से लेकर जिबऊन तक शिकस्त दी।

42 इन तमाम बादशाहों और उनके ममालिक पर यशुअ ने एक ही वक्रत फतह पाई, क्योंकि इसराईल का खुदा इसराईल के लिए लड़ा।

43 इसके बाद यशुअ तमाम इसराईलियों के साथ जिलजाल की खैमागाह में लौट आया।

## 11

### शिमाली इतहादियों पर फतह

1 जब हसूर के बादशाह याबीन को इन वाकियात की खबर मिली तो उसने मदन के बादशाह युबाब और सिमरोन और अकशाफ के बादशाहों को पैगाम भेजे। 2 इसके अलावा उसने उन बादशाहों को पैगाम भेजे जो शिमाल में थे यानी शिमाली पहाड़ी इलाके में, वादीए-यरदन के उस हिस्से में जो किन्नरत यानी गलील के जुनब में है, मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके में, मगरिब में वाके नाफत-दोर में 3 और कनान के मशरिक और मगरिब में। याबीन ने अमोरियों, हितियों, फरिज्जियों, पहाड़ी इलाके के यबूसियों और हरमून पहाड़ के दामन में वाके मुल्के-मिसफाह के हिब्बियों को भी पैगाम भेजे।

4 चुनौचे यह अपनी तमाम फौजों को लेकर जंग के लिए निकले। उनके आदमी समुंदर के साहिल की रेत की मानिंद बेशमार थे। उनके पास मुतअदिद घोड़े और रथ भी थे। 5 इन तमाम बादशाहों ने इसराईल से लड़ने के लिए मुतहिद होकर अपने खैमे मरूम के चशमे पर लगा दिए।

6 रब ने यशुअ से कहा, “उससे मत डरना, क्योंकि कल इसी वक्रत तक मैंने उन सबको हलाक करके इसराईल के हवाले कर दिया होगा। तुझे उनके घोड़ों की कौंचों को काटना और उनके रथों को जला देना है।”

7 चुनौचे यशुअ अपने तमाम फौजियों को लेकर मरूम के चशमे पर आया और अचानक दुश्मन पर हमला किया। 8 और रब ने दुश्मनों को इसराईलियों के हवाले कर दिया। इसराईलियों ने उन्हें शिकस्त दी और उनका ताकुकुब करते करते शिमाल में बड़े शहर सैदा और मिसफात-मायम तक जा पहुँचे। इसी तरह उन्होंने मशरिक में वादीए-मिसफाह तक भी उनका ताकुकुब किया। आखिर में एक भी न बचा। 9 रब की हिदायत के मुताबिक यशुअ ने दुश्मन के घोड़ों की कौंचों को कटवाकर उसके रथों को जला दिया।

### शिमाली कनान पर कब्जा

10 फिर यशुअ वापस आया और हसूर को अपने कब्जे में ले लिया। हसूर उन तमाम बादशाहतों का सदर मकाम था जिन्हें उन्होंने शिकस्त दी थी। इसराईलियों ने शहर के बादशाह को मार दिया 11 और शहर के हर जानदार को अल्लाह के हवाले करके हलाक कर दिया। एक भी न बचा। फिर यशुअ ने शहर को जला दिया।

12 इसी तरह यशुअ ने उन बाकी बादशाहों के शहरों पर भी कब्जा कर लिया जो इसराईल के खिलाफ मुतहिद हो गए थे। हर शहर को उसने रब के खादिम मूसा के हुक्म के मुताबिक तबाह कर दिया। बादशाहों समेत सब कुछ नेस्त कर दिया गया। 13 लेकिन यशुअ ने सिर्फ हसूर को जलाया। पहाड़ियों पर के बाकी शहरों को उसने रहने दिया। 14 लूट का जो भी माल जानवरों समेत उनमें पाया गया उसे इसराईलियों ने अपने पास रख लिया। लेकिन तमाम बाशिंदों को उन्होंने मार डाला और एक भी न बचने दिया। 15 क्योंकि रब ने अपने खादिम मूसा को यही हुक्म दिया था, और यशुअ ने सब कुछ वैसे ही किया जैसे रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

16 यों यशुअ ने पूरे कनान पर कब्जा कर लिया। इसमें पहाड़ी इलाका, पूरा दशते-नजब, जुशन का पूरा इलाका, मगरिब का नशेबी पहाड़ी इलाका, वादीए-यरदन और इसराईल के पहाड़ उनके दामन की पहाड़ियों समेत शामिल थे। 17 अब यशुअ की पहुँच जुनब में सईर की तरफ बढ़नेवाले पहाड़ खलक से लेकर लुबनान के मैदानी इलाके के शहर बाल-जद तक थी जो हरमून पहाड़ के दामन में था। यशुअ ने इन इलाकों के तमाम बादशाहों को पकड़कर मार डाला। 18 लेकिन इन बादशाहों से जंग करने में बहुत वक्रत लगा, 19 क्योंकि जिबऊन में रहनेवाले हिब्बियों के अलावा किसी भी शहर ने इसराईलियों से सुलह न की। इसलिए इसराईल को उन सभ पर जंग करके ही कब्जा करना पड़ा। 20 रब ही ने उन्हें अकड़ने दिया था ताकि वह इसराईल से जंग करें और उन पर रहम न किया जाए बल्कि उन्हें पूरे तौर पर रब के हवाले करके हलाक किया जाए। लाजिम था कि उन्हें यों नेस्त-नाबूद किया जाए जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था।

21 उस वक्रत यशुअ ने उन तमाम अनाकियों को हलाक कर दिया जो हबस्न, दबीर, अनाब और उन तमाम जगहों में रहते थे जो यहदाह और इसराईल के पहाड़ी इलाके में थीं। उसने उन सबको उनके शहरों समेत अल्लाह के हवाले करके तबाह कर दिया। 22 इसराईल के पूरे इलाके में अनाकियों में से एक भी न बचा। सिर्फ गज्जा, जात और अशदूद में कुछ जिंदा रहे।

23 गरज यशुअ ने पूरे मुल्क पर यों कब्जा किया जिस तरह रब ने मूसा को बताया था। फिर उसने उसे कबीलों में तकसीम करके इसराईल को मीरास में दे दिया। जंग खत्म हुई, और मुल्क में अमनो-अमान कायम हो गया।

## 12

### मूसा की फुतूहात का खुलासा

1 दर्जे-जैल दरियाए-यरदन के मशरिक में उन बादशाहों की फहरिस्त है जिन्हें इसराईलियों ने शिकस्त दी थी और जिनके इलाके पर उन्होंने कब्जा किया था। यह इलाका जुनुब में वादीए-अरनोन से लेकर शिमाल में हरमून पहाड़ तक था, और उसमें वादीए-यरदन का पूरा मशरिकी हिस्सा शामिल था।

2 पहले का नाम सीहोन था। वह अमोरियों का बादशाह था और उसका दासल-हुकूमत हसबोन था। अरोईर शहर यानी वादीए-अरनोन के दरमियान से लेकर अम्मोनियों की सरहद दरियाए-यब्बोक तक सारा इलाका उस की गिरिफ्त में था। इसमें जिलियाद का आधा हिस्सा भी शामिल था। 3 इसके अलावा सीहोन का कब्जा दरियाए-यरदन के पूरे मशरिकी किनारे पर किन्नरत यानी गलील की झील से लेकर बहीराए-सुरदार के पास शहर बैत-यसीमोत तक बल्कि उसके जुनुब में पहाड़ी सिलसिले पिसगा के दामन तक था।

4 दूसरा बादशाह जिसने शिकस्त खाई थी बसन का बादशाह ओज था। वह रफाइयों के देवकामत कबीले में से बाकी रह गया था, और उस की हुकूमत के मरकज अस्तारत और इदरई थे। 5 शिमाल में उस की सलतनत की सरहद हरमून पहाड़ थी और मशरिक में सलका शहर। बसन का तमाम इलाका जसूरियों और माकातियों की सरहद तक उसके हाथ में था और इसी तरह जिलियाद का शिमाली हिस्सा बादशाह सीहोन की सरहद तक।

6 इसराईल ने रब के खादिम मूसा की राहनुमाई में इन दो बादशाहों पर फतह पाई थी, और मूसा ने यह इलाका रबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले के सुपर्द किया था।

### यशुअ की फुतूहात का खुलासा

7 दर्जे-जैल दरियाए-यरदन के मगरिब के उन बादशाहों की फहरिस्त है जिन्हें इसराईलियों ने यशुअ की राहनुमाई में शिकस्त दी थी और जिनकी सलतनत वादीए-लुबनान के शहर बाल-जद से लेकर सईर की तरफ बढ़नेवाले पहाड़ खलक तक थी। बाद में यशुअ ने यह सारा मुल्क इसराईल के कबीलों में तकसीम करके उन्हें मीरास में दे दिया 8 यानी पहाड़ी इलाका, मगरिब का नशेबी पहाड़ी इलाका, यरदन की वादी, उसके मगरिब में वाके पहाड़ी ढलानें, यहदाह का रेगिस्तान और दशते-नजब। पहले यह सब कुछ हितियों, अमोरियों, कनानियों, फरिज्जियों, हिब्जियों और यबूसियों के हाथ में था। जैल के हर शहर का अपना बादशाह था, और हर एक ने शिकस्त खाई : 9 यरीह, अई नज्द बैतेल, 10 यरुशलम, हबस्न, 11 यरमूत, लकीस, 12 इजलून, जजर, 13 दबीर, जिदर, 14 हरमा, अराद, 15 लिबना, अदुल्लाम, 16 मक्केदा, बैतेल, 17 तफकुअह, हिफर, 18 अफीक, लशरुस्न, 19 मदन, हसूर, 20 सिमरोन-मरोन, अकशाफ, 21 तानक, मजिदे, 22 कादिस, करमिल का युक्रनियाम, 23 नाफत-दोर में वाके दोर, जिलजाल का गोयम 24 और तिरजा। बादशाहों की कुल तादाद 31 थी।

## 13

### कनान के बाकी इलाकों पर कब्जा करने का हुक्म

1 जब यशुअ बढ़ा था तो रब ने उससे कहा, “तू बहुत बूढ़ा हो चुका है, लेकिन अभी काफी कुछ बाकी रह गया है जिस पर कब्जा करने की जरूरत है। 2-3 इसमें फिलिस्तियों के तमाम इलाके उनके शाही शहरों गज्जा, अशदूद, अस्कलून, जात और अकरुन समेत शामिल हैं और इसी तरह जसूर का इलाका जिसकी जुनुबी सरहद वादीए-सैहर है जो मिसर के मशरिक में है और जिसकी शिमाली सरहद अकरुन है। उसे भी मुल्के-कनान का हिस्सा करार दिया जाता है। अब्जियों का इलाका भी 4 जो जुनुब में है अब तक इसराईल के कब्जे में नहीं आया। यही बात शिमाल पर भी सादिक आती है। सैदानियों के शहर मआरा से लेकर अफीक शहर और अमोरियों की सरहद तक सब कुछ अब तक इसराईल की हुकूमत से बाहर है। 5 इसके अलावा जबलियों का मुल्क और मशरिक में पूरा लुबनान हरमून पहाड़ के दामन में बाल-जद से लेकर लबो-हमात तक बाकी रह गया है। 6 इसमें उन सैदानियों का तमाम इलाका भी शामिल है जो लुबनान के पहाड़ों और मिसफात-मायम के दरमियान के पहाड़ी इलाके में आबाद हैं। इसराईलियों के बढ़ते बढ़ते मैं खुद ही इन लोगों को उनके सामने से निकाल दूंगा। लेकिन लाजिम है कि तू कुरा डालकर यह पूरा मुल्क मेरे हुक्म के मुताबिक इसराईलियों में तकसीम करे। 7 उसे नौ बाकी कबीलों और मनस्सी के आधे कबीले को विरासत में दे दे।”

यरदन के मशरिक में मुल्क की तकसीम

8 रब का खादिम मूसा रबिन, जद और मनस्सी के बाकी आधे कबीले को दरियाए-यरदन का मशरिकी इलाका दे चुका था। 9-10 यों हसबोन के अमोरी बादशाह सीहोन के तमाम शहर उनके कब्जे में आ गए थे यानी जुनबी वादीए-अरनोन के किनारे पर शहर अरोईर और उसी वादी के बीच के शहर से लेकर शिमाल में अम्मोनियों की सरहद तक। दीबोन और मीदबा के दरमियान का मैदाने-मुरतफा भी इममें शामिल था 11 और इसी तरह जिलियाद, जसूरियों और माकातियों का इलाका, हरमून का पहाड़ी इलाका और सलका शहर तक बसन का सारा इलाका भी।

12 पहले यह सारा इलाका बसन के बादशाह ओज के कब्जे में था जिसकी हुकूमत के मरकज अस्तारात और इदरई थे। रफाइयों के देवकामत कबीले से सिर्फ ओज बाकी रह गया था। मूसा की राहनुमाई के तहत इसराईलियों ने उस इलाके पर फ्रतह पाकर तमाम बाशिंदों को निकाल दिया था। 13 सिर्फ जसूरी और माकाती बाकी रह गए थे, और यह आज तक इसराईलियों के दरमियान रहते हैं।

14 सिर्फ लावी के कबीले को कोई ज़मीन न मिली, क्योंकि उनका मौस्सी हिस्सा जलनेवाली वह कुरबानियाँ हैं जो रब इसराईल के खुदा के लिए चढाई जाती हैं। रब ने यही कुछ मूसा को बताया था।

रबिन का कबायली इलाका

15 मूसा ने रबिन के कबीले को उसके कुंबों के मुताबिक जैल का इलाका दिया। 16 वादीए-अरनोन के किनारे पर शहर अरोईर और उसी वादी के बीच के शहर से लेकर मीदबा 17 और हसबोन तक। वहाँ के मैदाने-मुरतफा पर वाके तमाम शहर भी रबिन के सुपर्द किए गए यानी दीबोन, बामात-बाल, बैत-बाल-मऊन, 18 यहज, कदीमात, मिफात, 19 किरियतायम, सिबमाह, जिरतुस-सरह जो बहीराए-मुरदार के मशरिक में वाके पहाड़ी इलाके में है, 20 बैत-फगर, पिसगा के पहाड़ी सिलसिले पर मौजूद आबादियाँ और बैत-यसीमोत। 21 मैदाने-मुरतफा के तमाम शहर रबिन के कबीले को दिए गए यानी अमोरियों के बादशाह सीहोन की पूरी बादशाही जिसका दास्त-हुकूमत हसबोन शहर था। मूसा ने सीहोन को मार डाला था और उसके साथ पाँच मिदियानी रईसों को भी जिन्हें सीहोन ने अपने मुल्क में मुकरर किया था। इन रईसों के नाम इवी, रकम, सर, हर और रबा थे। 22 जिन लोगों को उस वक़्त मारा गया उनमें से बिलाम बिन बओर भी था जो बैबदान था। 23 रबिन के कबीले की मगरिबी सरहद दरियाए-यरदन थी। यही शहर और आबादियाँ रबिन के कबीले को उसके कुंबों के मुताबिक दी गई, और वह उस की मीरास ठहरी।

जद के कबीले का इलाका

24 मूसा ने जद के कबीले को उसके कुंबों के मुताबिक जैल का इलाका दिया। 25 याज़ेर का इलाका, जिलियाद के तमाम शहर, अम्मोनियों का आधा हिस्सा रब्बा के करीब शहर अरोईर तक 26-27 और हसबोन के बादशाह सीहोन की बादशाही का बाकी शिमाली हिस्सा यानी हसबोन, रामतुल-मिसफाह और बत्नीम के दरमियान का इलाका और महनायम और दबीर के दरमियान का इलाका। इसके अलावा जद को वादीए-यरदन का वह मशरिकी हिस्सा भी मिल गया जो बैत-हारम, बैत-निमरा, सुक्कात और सफोन पर मुशतमिल था। यों उस की शिमाली सरहद किन्नरत यानी गलील की डील का जुनबी किनारा था। 28 यही शहर और आबादियाँ जद के कबीले को उसके कुंबों के मुताबिक दी गई, और वह उस की मीरास ठहरी।

मनस्सी के मशरिकी हिस्से का इलाका

29 जो इलाका मूसा ने मनस्सी के आधे हिस्से को उसके कुंबों के मुताबिक दिया था 30 वह महनायम से लेकर शिमाल में ओज बादशाह की तमाम बादशाही पर मुशतमिल था। उसमें मुल्के-बसन और वह 60 आबादियाँ शामिल थी जिन पर याईर ने फ्रतह पाई थी। 31 जिलियाद का आधा हिस्सा ओज की हुकूमत के दो मराकिज अस्तारात और इदरई समेत मकीर बिन मनस्सी की औलाद को उसके कुंबों के मुताबिक दिया गया। 32 मूसा ने इन मौस्सी जमीनों की तकसीम उस वक़्त की थी जब वह दरियाए-यरदन के मशरिक में मोआब के मैदानी इलाके में यरीह शहर के मुकाबिल था।

33 लेकिन लावी को मूसा से कोई मौस्सी जमीन नहीं मिली थी, क्योंकि रब इसराईल का खुदा उनका मौस्सी हिस्सा है जिस तरह उसने उनसे वादा किया था।

## 14

कनान की तकसीम

1 इसराईल के बाकी साठे नौ कबीलों को दरियाए-यरदन के मगरिब में यानी मुल्के-कनान में ज़मीन मिल गई। इसके लिए इलियजुर इमाम, यशुअ बिन नून और कबीलों के आबाई घरानों के सरबराहों ने 2 कुरा डालकर मुकरर किया कि हर कबीले को कौन कौन-सा इलाका मिल जाए। यों वैसा ही हुआ जिस तरह रब ने मूसा को हुक्म दिया था। 3-4 मूसा अढाई

कबीलों को उनकी मौरसी जमीन दरियाए-यरदन के मशरिक में दे चुका था, क्योंकि यूसुफ की औलाद के दो कबीले मनस्सी और इफराईम वजुद में आए थे। लेकिन लावियों को उनके दरमियान जमीन न मिली। इसराइलियों ने लावियों को जमीन न दी बल्कि उन्हें सिर्फ रिहाइश के लिए शहर और रेवडों के लिए चरागाहें दीं। 5 यों उन्होंने जमीन को उन्हीं हिदायात के मुताबिक तकसीम किया जो रब ने मूसा को दी थी।

### कालिब हबस्न पाने की गुजारिश करता है

6 जिलजाल में यहदाह के कबीले के मर्द यशुअ के पास आए। यफुन्ना कनिज्जी का बेटा कालिब भी उनके साथ था। उसने यशुअ से कहा, “आपको याद है कि रब ने मर्दे-खुदा मूसा से आपके और मेरे बारे में क्या कुछ कहा जब हम कादिस-बरनीअ में थे। 7 मैं 40 साल का था जब रब के खादिम मूसा ने मुझे मुल्के-कनान का जायजा लेने के लिए कादिस-बरनीअ से भेज दिया। जब वापस आया तो मैंने मूसा को दियानतदारी से सब कुछ बताया जो देखा था। 8 अफसोस कि जो भाई मेरे साथ गए थे उन्होंने लोगों को डराया। लेकिन मैं रब अपने खुदा का वफादार रहा। 9 उस दिन मूसा ने कसम खाकर मुझसे वादा किया, ‘जिस जमीन पर तैरे पाँव चले हैं वह हमेशा तक तेरी और तेरी औलाद की विरासत में रहेगी। क्योंकि तू रब मेरे खुदा का वफादार रहा है।’ 10 और अब ऐसा ही हुआ है जिस तरह रब ने वादा किया था। उसने मुझे अब तक जिंदा रहने दिया है। रब को मूसा से यह बात किए 45 साल गुजर गए हैं। उस सारे अरसे में हम रेगिस्तान में घुमते-फिरते रहे हैं। आज मैं 85 साल का हूँ, 11 और अब तक उतना ही ताकतवर हूँ जितना कि उस वक़्त था जब मैं जासूस था। अब तक मेरी बाहर निकलने और जंग करने की वही कुव्वत कायम है। 12 अब मुझे वह पहाड़ी इलाका दे दें जिसका वादा रब ने उस दिन मुझसे किया था। आपने खुद सुना है कि अनाकी वहाँ बड़े किलाबंद शहरों में बसते हैं। लेकिन शायद रब मेरे साथ हो और मैं उन्हें निकाल दूँ जिस तरह उसने फरमाया है।”

13 तब यशुअ ने कालिब बिन यफुन्ना को बरकत देकर उसे विरासत में हबस्न दे दिया। 14-15 पहले हबस्न किरियत-अरबा यानी अरबा का शहर कहलाता था। अरबा अनाकियों का सबसे बड़ा आदमी था। आज तक यह शहर कालिब की औलाद की मिलकियत रही है। वजह यह है कि कालिब रब इसराइल के खुदा का वफादार रहा। फिर जंग खत्म हुई, और मुल्क में अमनो-अमान कायम हो गया।

## 15

### यहदाह की सरहदे

1 जब इसराइलियों ने कुरा डालकर मुल्क को तकसीम किया तो यहदाह के कबीले को उसके कुंबों के मुताबिक कनान का जुन्बी हिस्सा मिल गया। इस इलाके की सरहद मुल्के-अदोम और इंतहाई जुन्ब में सीन का रेगिस्तान था।

2 यहदाह की जुन्बी सरहद बहीराए-मुरदार के जुन्बी सिरे से शुरू होकर 3 जुन्ब की तरफ चलती चलती दराए-अक्रब्बीम पहुँच गई। वहाँ से वह सीन की तरफ जारी हुई और कादिस-बरनीअ के जुन्ब में से आगे निकलकर हसरोन तक पहुँच गई। हसरोन से वह अद्गर की तरफ चढ़ गई और फिर करका की तरफ मुड़ी। 4 इसके बाद वह अजमून से होकर मिसर की सरहद पर वाके वादीए-मिसर तक पहुँच गई जिसके साथ साथ चलती हुई वह समुंद्र पर खत्म हुई। यह यहदाह की जुन्बी सरहद थी।

5 मशरिक में उस की सरहद बहीराए-मुरदार के साथ साथ चलकर वहाँ खत्म हुई जहाँ दरियाए-यरदन बहीराए-मुरदार में बहता है।

यहदाह की शिमाली सरहद यहीं से शुरू होकर 6 बैत-हुजलाह की तरफ चढ़ गई, फिर बैत-अरबा के शिमाल में से गुजरकर रबिन के बेटे बोहन के पत्थर तक पहुँच गई। 7 वहाँ से सरहद वादीए-अकूर में उतर गई और फिर दुबारा दबीर की तरफ चढ़ गई। दबीर से वह शिमाल यानी जिलजाल की तरफ जो दराए-अदुम्मीम के मुकाबिल है मुड़ गई (यह दरा वादी के जुन्ब में है)। यों वह चलती चलती शिमाली सरहद ऐन-शम्स और ऐन-राजिल तक पहुँच गई। 8 वहाँ से वह वादीए-बिन-हिन्नुम में से गुजरती हुई यबूसियों के शहर यरुशलम के जुन्ब में से आगे निकल गई और फिर उस पहाड़ पर चढ़ गई जो वादीए-बिन-हिन्नुम के मगारिब और मैदाने-रफाईम के शिमाली किनारे पर है। 9 वहाँ सरहद मुडकर चशमा बनाम निफतुह की तरफ बढ़ गई और फिर पहाड़ी इलाके इफरोन के शहरों के पास से गुजरकर बाला यानी किरियत-यारीम तक पहुँच गई। 10 बाला से मुडकर यहदाह की यह सरहद मगारिब में सईर के पहाड़ी इलाके की तरफ बढ़ गई और यारीम पहाड़ यानी कसलून के शिमाली दामन के साथ साथ चलकर बैत-शम्स की तरफ उतरकर तिमनत पहुँच गई। 11 वहाँ से वह अकस्न के शिमाल में से गुजर गई और फिर मुडकर सिक्कस्न और बाला पहाड़ की तरफ बढ़कर यबनियेल पहुँच गई। वहाँ यह शिमाली सरहद समुंद्र पर खत्म हुई।



12 समुंदर मुल्के-यहदाह की मगरिबी सरहद थी। यही वह इलाका था जो यहदाह के कबीले को उसके खानदानों के मुताबिक मिल गया।

हब्रून और दबीर पर फतह

13 रब के हुक्म के मुताबिक यशुअ ने कालिब बिन यफुन्ना को उसका हिस्सा यहदाह में दे दिया। वहाँ उसे हब्रून शहर मिल गया। उस वक़्त उसका नाम किरियत-अरबा था (अरबा अनाक का बाप था)। 14 हब्रून में तीन अनाकी बनाम सीसी, अखीमान और तलमी अपने घरानों समेत रहते थे। कालिब ने तीनों को हब्रून से निकाल दिया। 15 फिर वह आगे दबीर के बाशिदों से लड़ने चला गया। दबीर का पुराना नाम किरियत-सिफर था। 16 कालिब ने कहा, “जो किरियत-सिफर पर फतह पाकर कब्ज़ा करेगा उसके साथ मैं अपनी बेटी अकसा का रिश्ता बाँधूँगा।” 17 कालिब के भाई गुतनियेल बिन कनज़ ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया। चुनोंचे कालिब ने उसके साथ अपनी बेटी अकसा की शादी कर दी।

18 जब अकसा गुतनियेल के हों जा रही थी तो उसने उसे उभारा कि वह कालिब से कोई खेत पाने की दरख़ास्त करे। अचानक वह गधे से उतर गई। कालिब ने पूछा, “क्या बात है?” 19 अकसा ने जवाब दिया, “जहेज़ के लिए मुझे एक चीज़ से नवाज़ें। आपने मुझे दशते-नजब में ज़मीन दे दी है। अब मुझे चरमे भी दे दीजिए।” चुनोंचे कालिब ने उसे अपनी मिलकियत में से ऊपर और नीचेवाले चरमे भी दे दिए।

यहदाह के कबीले के शहर

20 जो मौरूसी ज़मीन यहदाह के कबीले को उसके कुंभों के मुताबिक मिली 21 उसमें ज़ैल के शहर शामिल थीं। जुनूब में मुल्के-अदीम की सरहद की तरफ यह शहर थे : कबज़ियेल, इदर, यज़र, 22 कनीना, दीमना, अदअदा, 23 कादिस, हसूर, इतनान, 24 ज़ीफ़, तलम, बालोत, 25 हसूर-हदता, करियोत-हसरोन यानी हसूर, 26 अमाम, समा, मोलादा, 27 हसार-जड़ा, हिशमोन, बैत-फलत, 28 हसार-सुआल, बैर-सबा, बिज़योतियाह, 29 बाला, इय्यीम, अज़म, 30 इलतोलद, कसील, हरमा, 31 सिक़लाज़, मदमन्ना, सनसन्ना, 32 लबाओत, सिलहीम, ऐन और रिम्मोन। इन शहरों की तादाद 29 थी। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

33 मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके में यह शहर थे : इस्ताल, सुरआ, अग्ना, 34 ज़नुह, ऐन-जन्नीम, तफ़फ़ुअह, ऐनाम, 35 यरमुत, अदुल्लाम, सोका, अज़ीका, 36 शौरैम, अदितैम और जदीरा यानी जदीरतैम। इन शहरों की तादाद 14 थी। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

37 इनके अलावा यह शहर भी थे : ज़नान, हदाशा, मिजदल-जद, 38 दिलान, मिसफ़ाह, युक्तियेल, 39 लकीस, बसकत, इज़लून, 40 कब्बून, लहमास, कितलीस, 41 जदीरोत, बैत-दज़ून, नामा और मक्केदा। इन शहरों की तादाद 16 थी। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

42 इस इलाके में यह शहर भी थे : लिबना, इतर, असन, 43 यिफ़ताह, अग्ना, नसीब, 44 कईला, अकज़ीब और मेरेसा। इन शहरों की तादाद 9 थी। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

45 इनके अलावा यह शहर भी थे : अकरून उसके गिर्दों-नवाह की आबादियों और देहातों समेत, 46 फिर अकरून से लेकर मगरिब की तरफ अशदूद तक तमाम कसबे और आबादियाँ। 47 अशदूद खुद भी उसके गिर्दों-नवाह की आबादियों और देहातों समेत इसमें शामिल था और इसी तरह गज़्जा उसके गिर्दों-नवाह की आबादियों और देहातों समेत यानी तमाम आबादियाँ मिसर की सरहद पर वाके वादीए-मिसर और समुंदर के साहिल तक।

48 पहाड़ी इलाके के यह शहर यहदाह के कबीले के थे : समीर, यतीर, सोका, 49 दन्ना, किरियत-सन्ना यानी दबीर, 50 अनाब, इस्तमोह, अनीम, 51 ज़ुशन, हौलून और जिलोह। इन शहरों की तादाद 11 थी, और उनके गिर्दों-नवाह की आबादियाँ भी उनके साथ गिनी जाती थीं।

52 इनके अलावा यह शहर भी थे : अराब, दूमा, इशआन, 53 यन्म, बैत-तफ़फ़ुअह, अफ़ीका, 54 हुमता, किरियत-अरबा यानी हब्रून और सीऊर। इन शहरों की तादाद 9 थी। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसमें गिनी जाती थीं।

55 इनके अलावा यह शहर भी थे : मऊन, कर्मिल, ज़ीफ़, यूता, 56 यज़्रएल, युक्तियाम, ज़नूह, 57 कैन, जिबिया और तिमनत। इन शहरों की तादाद 10 थी। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

58 इनके अलावा यह शहर भी थे : हलहल, बैत-सूर, जदूर, 59 मारात, बैत-अनोत और इलतकोन। इन शहरों की तादाद 6 थी। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

60 फिर किरियत-बाल यानी किरियत-यारीम और रब्बा भी यहदाह के पहाड़ी इलाके में शामिल थे। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

61 रेगिस्तान में यह शहर यहदाह के कबीले के थे : बैत-अराबा, मिद्दीन, सकाका, 62 निबसान, नमक का शहर और ऐन-जदी। इन शहरों की तादाद 6 थी। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं।

63 लेकिन यहदाह का कबीला यबूसियों को यरूशलम से निकालने में नाकाम रहा। इसलिए उनकी औलाद आज तक यहदाह के कबीले के दरमियान रहती है।

## 16

### इफ्राईम और मनस्सी की जुनूबी सरहद

1 कुरा डालने से यूसुफ की औलाद का इलाका मुकर्रर किया गया। उस की सरहद यरीह के करीब दरियाए-यरदन से शुरू हुई, शहर के मशरिक में चरमों के पास से गुजरी और रेगिस्तान में से चलती चलती बैतेल के पहाड़ी इलाके तक पहुँची। 2 लूज़ यानी बैतेल से आगे निकलकर वह अरकियों के इलाके में अतारात पहुँची। 3 वहाँ से वह मगरिब की तरफ उतरती उतरती यफलीतियों के इलाके में दाखिल हुई जहाँ वह नशेबी बैत-हौरून में से गुजरकर जजर के पीछे समुंदर पर खत्म हुई। 4 यह उस इलाके की जुनूबी सरहद थी जो यूसुफ की औलाद इफ्राईम और मनस्सी के कबीलों को विरासत में दिया गया।

### इफ्राईम का इलाका

5 इफ्राईम के कबीले को उसके कुंबों के मुताबिक यह इलाका मिल गया : उस की जुनूबी सरहद अतारात-अदर और बालाई बैत-हौरून से होकर 6-8 समुंदर पर खत्म हुई। उस की शिमाली सरहद मगरिब में समुंदर से शुरू हुई और काना नदी के साथ चलती चलती तपफुअह तक पहुँची। वहाँ से वह शिमाल की तरफ मुडी और मिक्मताह तक पहुँचकर दुबारा मशरिक की तरफ चलने लगी। फिर वह तानत-सैला से होकर यानूह पहुँची। मशरिकी सरहद शिमाल में यानूह से शुरू हुई और अतारात से होकर दरियाए-यरदन के मगरिबी किनारे तक उतरी और फिर किनारे के साथ जुनूब की तरफ चलती चलती नारा और इसके बाद यरीह पहुँची। वहाँ वह दरियाए-यरदन पर खत्म हुई। यही इफ्राईम और उसके कुंबों की सरहदें थीं।

9 इसके अलावा कुछ शहर और उनके गिर्दों-नवाह की आबादियाँ इफ्राईम के लिए मुकर्रर की गईं जो मनस्सी के इलाके में थीं। 10 इफ्राईम के मर्दों ने जजर में आबाद कनानियों को न निकाला। इसलिए उनकी औलाद आज तक वहाँ रहती है, अलबत्ता उसे बेगार में काम करना पड़ता है।

## 17

### मनस्सी का इलाका

1 यूसुफ के पहलौठे मनस्सी की औलाद को दो इलाके मिल गए। दरियाए-यरदन के मशरिक में मकीर के घराने को जिलियाद और बसन दिए गए। मकीर मनस्सी का पहलौठा और जिलियाद का बाप था, और उस की औलाद माहिर फौजी थी। 2 अब कुरा डालने से दरियाए-यरदन के मगरिब में वह इलाका मुकर्रर किया गया जहाँ मनस्सी के बाकी बेटों की औलाद को आबाद होना था। इनके छः कुंबे थे जिनके नाम अबियजर, खलक, असरियेल, सिकम, हिफर और समीदा थे।

3 सिलाफिहाद बिन हिफर बिन जिलियाद बिन मकीर बिन मनस्सी के बेटे नहीं थे बल्कि सिर्फ बेटियाँ। उनके नाम महलाह, नुआह, हुजलाह, मिलकाह और तिरज़ा थे। 4 यह खवातीन इलियजर इमाम, यशुअ बिन नून और कौम के बुजुर्गों के पास आईं और कहने लगीं, “रब ने मूसा को हुक्म दिया था कि वह हमें भी कबायली इलाके का कोई हिस्सा दे।” यशुअ ने रब का हुक्म मानकर न सिर्फ मनस्सी की नरीना औलाद को ज़मीन दी बल्कि उन्हें भी। 5 नतीजे में मनस्सी के कबीले को दरियाए-यरदन के मगरिब में ज़मीन के दस हिस्से मिल गए और मशरिक में जिलियाद और बसन। 6 मगरिब में न सिर्फ मनस्सी की नरीना औलाद के खानदानों को ज़मीन मिली बल्कि बेटियों के खानदानों को भी। इसके बरअक्स मशरिक में जिलियाद की ज़मीन सिर्फ नरीना औलाद में तकसीम की गई।

7 मनस्सी के कबीले के इलाके की सरहद आशर से शुरू हुई और सिकम के मशरिक में वाके मिक्मताह से होकर जुनूब की तरफ चलती हुई ऐन-तपफुअह की आबादी तक पहुँची। 8 तपफुअह के गिर्दों-नवाह की ज़मीन इफ्राईम की मिलकियत थी, लेकिन मनस्सी की सरहद पर के यह शहर मनस्सी की अपनी मिलकियत थे। 9 वहाँ से सरहद काना नदी के जुनूबी किनारे तक उतरी। फिर नदी के साथ चलती चलती वह समुंदर पर खत्म हुई। नदी के जुनूबी किनारे पर कुछ शहर इफ्राईम की मिलकियत थे अगरचे वह मनस्सी के इलाके में थे। 10 लेकिन मजमूई तौर पर मनस्सी का कबायली इलाका काना नदी के शिमाल में था और इफ्राईम का इलाका उसके जुनूब में। दोनों कबीलों का इलाका मगरिब में समुंदर पर खत्म हुआ। मनस्सी के इलाके के शिमाल में आशर का कबायली इलाका था और मशरिक में इशकारा।

11 आशर और इशकारा के इलाकों के दर्जे-जैल शहर मनस्सी की मिलकियत थे : बैत-शान, इबलियाम, दोर यानी नाफ्रत-दोर, ऐन-दोर, तानक और मजिदो उनके गिर्दों-नवाह की आबादियों समेत। 12 लेकिन मनस्सी का कबीला वहाँ के कनानियों को निकाल न सका बल्कि वह वहाँ बसते रहे। 13 बाद में भी जब इसराईल की ताकत बढ़ गई तो कनानियों को निकाला न गया बल्कि उन्हें बेगार में काम करना पड़ा।

इफराईम और मनस्सी मज्जीद ज़मीन का तकाज़ा करते हैं

14 यूसुफ़ के कबीले इफराईम और मनस्सी दरियाए-यरदन के मगरिब में ज़मीन पाने के बाद यशुअ के पास आए और कहने लगे, “आपने हमारे लिए कुरा डालकर ज़मीन का सिर्फ़ एक हिस्सा क्यों मुकर्रर किया? हम तो बहुत ज़्यादा लोग हैं, क्योंकि रब ने हमें बरकत देकर बड़ी क्रीम बनाया है।”

15 यशुअ ने जवाब दिया, “अगर आप इतने ज़्यादा हैं और आपके लिए इफराईम का पहाड़ी इलाका काफी नहीं है तो फिर फ़रिज़्जियों और रफ़ाइयों के पहाड़ी जंगलों में जाएँ और उन्हें काटकर काशत के काबिल बना लें।”

16 यूसुफ़ के कबीलों ने कहा, “पहाड़ी इलाका हमारे लिए काफी नहीं है, और मैदानी इलाके में आबाद कनानियों के पास लोहे के रथ हैं, उनके पास भी जो वादीए-यज़्रएल में हैं और उनके पास भी जो बैत-शान और उसके गिर्दों-नवाह की आबादियों में रहते हैं।”

17 लेकिन यशुअ ने जवाब में कहा, “आप इतनी बड़ी और ताकतवर क्रीम हैं कि आपका इलाका एक ही हिस्से पर महदूद नहीं रहेगा 18 बल्कि जंगल का पहाड़ी इलाका भी आपकी मिलकियत में आएगा। उसके जंगलों को काटकर काशत के काबिल बना लें तो यह तमाम इलाका आप ही का होगा। आप बाकी इलाके पर भी कब्ज़ा करके कनानियों को निकाल देंगे अगरचे वह ताकतवर हैं और उनके पास लोहे के रथ हैं।”

## 18

बाकी सात कबीलों को ज़मीन मिलती है

1 कनान पर गालिब आने के बाद इसराईल की पूरी जमात सैला शहर में जमा हुई। वहाँ उन्होंने मुलाकात का खैमा खडा किया।

2 अब तक सात कबीलों को ज़मीन नहीं मिली थी। 3 यशुअ ने इसराईलियों को समझाकर कहा, “आप कितनी देर तक सुस्त रहेंगे? आप कब तक उस मुल्क पर कब्ज़ा नहीं करेंगे जो रब आपके बापदादा के खुदा ने आपको दे दिया है? 4 अब हर कबीले के तीन तीन आदमियों को चुन लें। उन्हें मैं मुल्क का दौरा करने के लिए भेज दूँगा ताकि वह तमाम कबायली इलाकों की फ़हरिस्त तैयार करें। इसके बाद वह मेरे पास वापस आकर 5 मुल्क को सात इलाकों में तकसीम करें। लेकिन ध्यान रखें कि जुनूब में यहदाह का इलाका और शिमाल में इफराईम और मनस्सी का इलाका है। उनकी सरहदें मत छेड़ना! 6 वह आदमी लिख लें कि सात नए कबायली इलाकों की सरहदें कहाँ कहाँ तक हैं और फिर इनकी फ़हरिस्ते पेश करें। फिर मैं रब आपके खुदा के हुज़ूर मुकद्दस कुरा डालकर हर एक की ज़मीन मुकर्रर करूँगा। 7 याद रहे कि लावियों को कोई इलाका नहीं मिलना है। उनका हिस्सा यह है कि वह रब के इमाम हैं। और जद, रबिन और मनस्सी के आधे कबीले को भी मज्जीद कुछ नहीं मिलना है, क्योंकि उन्हें रब के खादिम मसा से दरियाए-यरदन के मशरिफ़ में उनका हिस्सा मिल चुका है।”

8 तब वह आदमी रवाना होने के लिए तैयार हुए जिन्हें मुल्क का दौरा करने के लिए चुना गया था। यशुअ ने उन्हें हुक्म दिया, “पूरे मुल्क में से गुज़रकर तमाम शहरों की फ़हरिस्त बनाएँ। जब फ़हरिस्त मुकम्मल हो जाए तो उसे मेरे पास ले आएँ। फिर मैं सैला में रब के हुज़ूर आपके लिए कुरा डाल दूँगा।” 9 आदमी चले गए और पूरे मुल्क में से गुज़रकर तमाम शहरों की फ़हरिस्त बना ली। उन्होंने मुल्क को सात हिस्सों में तकसीम करके तमाम तफ़सीलात किताब में दर्ज की और यह किताब सैला की खैमागाह में यशुअ को दे दी। 10 फिर यशुअ ने रब के हुज़ूर कुरा डालकर यह इलाके बाकी सात कबीलों और उनके कुंबों में तकसीम कर दिए।

बिनयमीन का इलाका

11 जब कुरा डाला गया तो बिनयमीन के कबीले और उसके कुंबों को पहला हिस्सा मिल गया। उस की ज़मीन यहदाह और यूसुफ़ के कबीलों के दरमियान थी। 12 उस की शिमाली सरहद दरियाए-यरदन से शुरू हुई और यरीह के शिमाल में पहाड़ी ढलान पर चढ़कर पहाड़ी इलाके में से मगरिब की तरफ़ गुज़री। बैत-आवन के बयाबान को पहुँचने पर 13 वह लूज़ यानी बैतेल की तरफ़ बढ़कर शहर के जुनूब में पहाड़ी ढलान पर चलती चलाती आगे निकल गई। वहाँ से वह अतारात-अध्रार और उस पहाड़ी तक पहुँची जो नशेबी बैत-हौस्न के जुनूब में है। 14 फिर वह जुनूब की तरफ़ मुड़कर मगरिबी सरहद के तौर पर किरियत-बाल यानी किरियत-यारीम के पास आई जो यहदाह के कबीले की मिलकियत थी। 15 बिनयमीन की जुनूबी सरहद किरियत-यारीम के मगरिबी किनारे से शुरू होकर निफतूह चरमा तक पहुँची। 16 फिर वह उस पहाड़ के दामन पर उतर आई जो वादीए-बिन-हिन्न्म के मगरिब में और मैदाने-रफ़ाईम के शिमाल में वाके है। इसके बाद सरहद यबूसियों के शहर के जुनूब में से गुज़री और यों वादीए-हिन्न्म को पार करके ऐन-राजिल के पास आई। 17 फिर वह शिमाल की तरफ़ मुड़कर ऐन-शम्म के पास से गुज़री और दर्राए-अदुम्मीम के मुकाबिल शहर जलीलौत तक पहुँचकर रबिन के बेटे बोहन के पत्थर के पास उतर आई। 18 वहाँ से वह उस ढलान के शिमाली स्रख पर से गुज़री जो वादीए-यरदन के मगरिबी किनारे पर है। फिर वह

वादी में उतरकर 19 बैत-हुजलाह की शिमाली पहाड़ी ढलान से गुजरी और बहीराए-मुरदार के शिमाली किनारे पर खत्म हुई, वहाँ जहाँ दरियाए-यरदन उसमें बहता है। यह थी बिनयमीन की जुन्बी सरहद। 20 उस की मशरिकी सरहद दरियाए-यरदन थी। यही वह इलाका था जो बिनयमीन के कबीले को उसके कुंबों के मुताबिक दिया गया।

21 ज़ैल के शहर इस इलाके में शामिल थे: यरीह, बैत-हुजलाह, इमक-कसीस, 22 बैत-अराबा, समरैम, बैतेल, 23 अब्जीम, फारा, उफ्रा, 24 कफरस-अम्मोनी, उफनी और जिबा। यह कुल 12 शहर थे। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं। 25 इनके अलावा यह शहर भी थे: जिबऊन, रामा, बैरोत, 26 मिसफाह, कफ्रीरा, मौज़ा, 27 रकम, इर्फ़ल, तराला, 28 ज़िला, अलिफ, यबूसियों का शहर यरूशलम, जिबिया और किरियत-यारीम। इन शहरों की तादाद 14 थी। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं। यह तमाम शहर बिनयमीन और उसके कुंबों की मिलकियत थे।

## 19

### शमौन का इलाका

1 जब कुरा डाला गया तो शमौन के कबीले और उसके कुंबों को दूसरा हिस्सा मिल गया। उस की ज़मीन यहदाह के कबीले के इलाके के दरमियान थी। 2 उसे यह शहर मिल गए: बैर-सबा (सबा), मोलादा, 3 हसार-सुआल, बाला, अज़म, 4 इलोतलद, बतूल, हुरमा, 5 सिकलाज, बैत-मर्कबोत, हसार-सूसा, 6 बैत-लबाओत और सासहन। इन शहरों की तादाद 13 थी। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं। 7 इनके अलावा यह चार शहर भी शमौन के थे: ऐन, रिम्मोन, इतर और असन। हर शहर के गिर्दों-नवाह की आबादियाँ उसके साथ गिनी जाती थीं। 8 इन शहरों के गिर्दों-नवाह की तमाम आबादियाँ बालात-बैर यानी नजब के रामा तक उनके साथ गिनी जाती थीं। यह थी शमौन और उसके कुंबों की मिलकियत। 9 यह जगहें इसलिए यहदाह के कबीले के इलाके से ली गई कि यहदाह का इलाका उसके लिए बहुत ज़्यादा था। यही वजह है कि शमौन का इलाका यहदाह के बीच में है।

### ज़बूलन का इलाका

10-12 जब कुरा डाला गया तो ज़बूलन के कबीले और उसके कुंबों को तीसरा हिस्सा मिल गया। उस की जुन्बी सरहद युक्रनियाम की नदी से शुरू हुई और फिर मशरिक की तरफ दबासत, मरअला और सारीद से होकर किसलोट-तबूर के इलाके तक पहुँची। इसके बाद वह मुड़कर मशरिकी सरहद के तौर पर दाबरत के पास आई और चढ़ती चढ़ती यफ्रीअ पहुँची। 13 वहाँ से वह मज़ीद मशरिक की तरफ बढ़ती हुई जात-हिफर, एत-काज़ीन और रिम्मोन से होकर नेआ के पास आई। 14 ज़बूलन की शिमाली और मगरिबी सरहद हन्नातोन में से गुज़रती गुज़रती वादीए-इफताहेल पर खत्म हुई। 15 बारह शहर उनके गिर्दों-नवाह की आबादियों समेत ज़बूलन की मिलकियत में आए जिनमें क़तात, नहलाल, सिमरोन, इदाला और बैत-लहम शामिल थे। 16 ज़बूलन के कबीले को यही कुछ उसके कुंबों के मुताबिक मिल गया।

### इशकार का इलाका

17 जब कुरा डाला गया तो इशकार के कबीले और उसके कुंबों को चौथा हिस्सा मिल गया। 18 उसका इलाका यज़्ज़ल से लेकर शिमाल की तरफ फैल गया। यह शहर उसमें शामिल थे: कसूलोत, शूनीम, 19 हफ़रैम, शियून, अनाखरत, 20 रब्बीत, क्रिसियोन, इबज़, 21 रैमत, ऐन-जन्नीम, ऐन-हद्दा और बैत-फ़स्सीस। 22 शिमाल में यह सरहद तबूर पहाड़ से शुरू हुई और शखसूमा और बैत-शम्स से होकर दरियाए-यरदन तक उतर आई। 16 शहर उनके गिर्दों-नवाह की आबादियों समेत इशकार की मिलकियत में आए। 23 उसे यह पूरा इलाका उसके कुंबों के मुताबिक मिल गया।

### आशर का इलाका

24 जब कुरा डाला गया तो आशर के कबीले और उसके कुंबों को पाँचवाँ हिस्सा मिल गया। 25 उसके इलाके में यह शहर शामिल थे: खिलकत, हली, बतन, अकशाफ, 26 अलम्मलिक, अमआद और मिसाल। उस की सरहद समुंद्र के साथ साथ चलती हुई करमिल के पहाड़ी सिलसिले के दामन में से गुज़री और उतरती उतरती सैहर-लिबनात तक पहुँची। 27 वहाँ वह मशरिक में बैत-दज़न की तरफ मुड़कर ज़बूलन के इलाके तक पहुँची और उस की मगरिबी सरहद के साथ चलती चलती शिमाल में वादीए-इफताहेल तक पहुँची। आगे बढ़ती हुई वह बैत-इमक और नइयेल से होकर शिमाल की तरफ मुड़ी जहाँ काबूल था। 28 फिर वह इबस्न, रहोब, हम्मून और काना से होकर बड़े शहर सैदा तक पहुँची। 29 इसके बाद आशर की सरहद रामा की तरफ मुड़कर फ़सीलदार शहर सू के पास आई। वहाँ वह हसा की तरफ मुड़ी और चलती चलती अकज़ीब के करीब समुंद्र पर खत्म हुई। 30 22 शहर उनके गिर्दों-नवाह की आबादियों समेत आशर की मिलकियत में आए। इनमें उम्मा, अफ्रीक और रहोब शामिल थे। 31 आशर को उसके कुंबों के मुताबिक यही कुछ मिला।

### नफताली का इलाका

32 जब कुरा डाला गया तो नफताली के कबीले और उसके कुंभों को छटा हिस्सा मिल गया। 33-34 जूनब में उस की सरहद दरियाए-यरदन पर लक्कूम से शुरू हुई और मगरिब की तरफ चलती चलती यबनियेल, अदामी-नकब, ऐलो-जाननीम और हलफ से होकर अजन्नूत-तबूर तक पहुँची। वहाँ से वह मगरिबी सरहद की हैसियत से हुक्क्रोक के पास आई। नफताली की जूनबी सरहद ज़बूलन की शिमाली सरहद और मगरिब में आशर की मशरिकी सरहद थी। दरियाए-यरदन और यहदाह \* उस की मशरिकी सरहद थी। 35 जैल के फसीलदार शहर नफताली की मिलकियत में आए : सदीम, सैर, हम्मत्, रक्कत, किन्नरत, 36 अदामा, रामा, हसूर, 37 कादिस, इदरई, ऐन-हसूर, 38 इस्न, मिजदलेल, हुरीम, बैत-अनात और बैत-शम्म। ऐसे 19 शहर थे। हर शहर के गिर्दो-नवाह की आबादियाँ भी उसके साथ गिनी जाती थीं। 39 नफताली को यहीं कुछ उसके कुंभों के मुताबिक मिला।

### दान का इलाका

40 जब कुरा डाला गया तो दान के कबीले और उसके कुंभों को सातवाँ हिस्सा मिला। 41 उसके इलाके में यह शहर शामिल थे : सरआ, इस्ताल, ईर-शम्म, 42 शालब्बीन, ऐयालोन, इतला, 43 ऐलो, तिमनत, अकरून, 44 इल्तकिह, जिब्बत्न, बालात, 45 यहद, बनी-बरक, जात-रिम्मोन, 46 मे-यरकून और रक्कून उस इलाके समेत जो याफा के मुकाबिल है। 47 अफसोस, दान का कबीला अपने इस इलाके पर कब्जा करने में कामयाब न हुआ, इसलिए उसके मर्दों ने लशम शहर पर हमला करके उस पर फतह पाई और उसके बाशिंदों को तलवार से मार डाला। फिर वह खुद वहाँ आबाद हुए। उस वक्त लशम शहर का नाम दान में तबदील हुआ। (दान उनके कबीले का बाप था।) 48 लेकिन यशुअ के ज़माने में दान के कबीले को उसके कुंभों के मुताबिक मज़कूरा तमाम शहर और उनके गिर्दो-नवाह की आबादियाँ मिल गईं।

### यशुअ को भी ज़मीन मिलती है

49 पूरे मुल्क को तकसीम करने के बाद इसराइलियों ने यशुअ बिन नून को भी अपने दरमियान कुछ मौरूसी ज़मीन दे दी। 50 रब के हुक्म पर उन्होंने उसे इफराईम का शहर तिमनत-सिरह दे दिया। यशुअ ने खुद इसकी दरखास्त की थी। वहाँ जाकर उसने शहर को अज़ सरे-नौ तामीर किया और उसमें आबाद हुआ।

51 गरज़ यह वह तमाम ज़मीनें हैं जो इलियज़र इमाम, यशुअ बिन नून और कबीलों के आबाई घरानों के सरबराहों ने सैला में मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर कुरा डालकर तकसीम की थीं। यों तकसीम करने का यह काम मुकम्मल हुआ।

## 20

### पनाह के छः शहर

1 रब ने यशुअ से कहा, 2 "इसराइलियों को हुक्म दे कि उन हिदायात के मुताबिक पनाह के शहर चुन लो जिन्हें मैं तुम्हें मूसा की मारिफत दे चुका हूँ। 3 इन शहरों में वह लोग फ़रार हो सकते हैं जिनसे कोई इत्फाकन यानी गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ हो। यह उन्हें मरे हुए शख्स के उन रिश्तेदारों से पनाह देगे जो बदला लेना चाहेंगे। 4 लाज़िम है कि ऐसा शख्स पनाह के शहर के पास पहुँचने पर शहर के दरवाज़े के पास बैठे बुजुर्गों को अपना मामला पेश करे। उस की बात सुनकर बुजुर्ग उसे अपने शहर में दाखिल होने की इजाज़त दें और उसे अपने दरमियान रहने के लिए जगह दे दें। 5 अब अगर बदला लेनेवाला उसके पीछे पड़कर वहाँ पहुँचे तो बुजुर्ग मुलज़िम को उसके हाथ में न दें, क्योंकि यह मौत गैरइरादी तौर पर और नफ़रत रखे बग़ैर हुई है। 6 वह उस वक्त तक शहर में रहे जब तक मक़ामी अदालत मामले का फ़ैसला न कर दे। अगर अदालत उसे बेगुनाह करार दे तो वह उस वक्त के इमामे-आज़म की मौत तक उस शहर में रहे। इसके बाद उसे अपने उस शहर और घर को वापस जाने की इजाज़त है जिससे वह फ़रार होकर आया है।"

7 इसराइलियों ने पनाह के यह शहर चुन लिए : नफताली के पहाड़ी इलाके में गलील का कादिस, इफराईम के पहाड़ी इलाके में सिकम और यहदाह के पहाड़ी इलाके में किरियत-अरबा यानी हबस्न। 8 दरियाए-यरदन के मशरिक में उन्होंने बसर को चुन लिया जो यरीह से काफ़ी दूर मैदाने-मुरतफ़ा में है और रूबिन के कबीले की मिलकियत है। मुल्के-जिलियाद में रामात जो जद के कबीले का है और बसन में जौलान जो मनस्सी के कबीले का है चुना गया।

9 यह शहर तमाम इसराइलियों और इसराइल में रहनेवाले अजनबियों के लिए मुकर्र किए गए। जिससे भी गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ उसे इनमें पनाह लेने की इजाज़त थी। इनमें वह उस वक्त तक बदला लेनेवालों से महफूज़ रहता था जब तक मक़ामी अदालत फ़ैसला नहीं कर देती थी।

\* 19:33-34 यहाँ यहदाह का मतलब मुल्के-बसन हो सकता है जो मनस्सी के इलाके में था लेकिन जिस पर यहदाह के कबीले के मर्द याई ने फ़तह पाई थी।

## 21

### लावियों के शहर और चरागाहें

1 फिर लावी के कबीले के आबाई घरानों के सबराह इलियजर इमाम, यशुअ बिन नून और इसराइल के बाकी कबीलों के आबाई घरानों के सबराहों के पास आए 2 जो उस वक्त सैला में जमा थे। लावियों ने कहा, “रब ने मूसा की मारिफत हुक्म दिया था कि हमें बसने के लिए शहर और रेवड़ों को चराने के लिए चरागाहें दी जाएँ।” 3 चुनौचे इसराइलियों ने रब की यह बात मानकर अपने इलाकों में से शहर और चरागाहें अलग करके लावियों को दे दीं।

4 कुरा डाला गया तो लावी के घराने किहात को उसके कुंबों के मुताबिक पहला हिस्सा मिल गया। पहले हास्न के कुंबे को यहदाह, शमौन और बिनयमीन के कबीलों के 13 शहर दिए गए। 5 बाकी किहातियों को दान, इफराईम और मगरिबी मनस्सी के कबीलों के 10 शहर मिल गए।

6 जैरसोन के घराने को इशकार, आशर, नफताली और मनस्सी के कबीलों के 13 शहर दिए गए। यह मनस्सी का वह इलाका था जो दरियाए-यरदन के मशरिक में मुल्के-बसन में था।

7 मिरारी के घराने को उसके कुंबों के मुताबिक रुबिन, जद और ज़बूलन के कबीलों के 12 शहर मिल गए।

8 यों इसराइलियों ने कुरा डालकर लावियों को मज़कुरा शहर और उनके गिर्दा-नवाह की चरागाहें दे दीं। वैसा ही हुआ जैसा रब ने मूसा की मारिफत हुक्म दिया था।

### किहात के घराने के शहर

9-10 कुरा डालते वक्त लावी के घराने किहात में से हास्न के कुंबे को पहला हिस्सा मिल गया। उसे यहदाह और शमौन के कबीलों के यह शहर दिए गए : 11 पहला शहर अनाक्रियों के बाप का शहर किरियत-अरबा था जो यहदाह के पहाड़ी इलाके में है और जिसका मौजूदा नाम हबस्न है। उस की चरागाहें भी दी गईं, 12 लेकिन हबस्न के इर्दगिर्द की आबादियाँ और खेत कालिब बिन यफुन्ना की मिलकियत रहे। 13 हास्न के कुंबे का यह शहर पनाह का शहर भी था जिसमें हर वह शख्स पनाह ले सकता था जिससे कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था। इसके अलावा हास्न के कुंबे को लिबना, 14 यतीर, इस्तिमुअ, 15 हौलून, दर्बीर, 16 ऐन, यूता और बैत-शम्म के शहर भी मिल गए। उसे यहदाह और शमौन के कबीलों के कुल 9 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए। 17-18 इनके अलावा बिनयमीन के कबीले के चार शहर उस की मिलकियत में आए यानी जिबऊन, जिबा, अनतोत और अलमोन। 19 गरज़ हास्न के कुंबे को 13 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए। 20 लावी के कबीले के घराने किहात के बाकी कुंबों को कुरा डालते वक्त इफराईम के कबीले के शहर मिल गए। 21 इनमें इफराईम के पहाड़ी इलाके का शहर सिकम शामिल था जिसमें हर वह शख्स पनाह ले सकता था जिससे कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, फिर जज़र, 22 किबज़ैम और बैत-हौस्न। इन चार शहरों की चरागाहें भी मिल गईं। 23-24 दान के कबीले ने भी उन्हें चार शहर उनकी चरागाहों समेत दिए यानी इल्तकिह, जिब्बतून, ऐयालोन और जात-रिम्मोन। 25 मनस्सी के मगरिबी हिस्से से उन्हें दो शहर तानक और जात-रिम्मोन उनकी चरागाहों समेत मिल गए। 26 गरज़ किहात के बाकी कुंबों को कुल 10 शहर उनकी चरागाहों समेत मिले।

### जैरसोन के घराने के शहर

27 लावी के कबीले के घराने जैरसोन को मनस्सी के मशरिकी हिस्से के दो शहर उनकी चरागाहों समेत दिए गए : मुल्के-बसन में जौलान जिसमें हर वह शख्स पनाह ले सकता था जिससे कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, और बइस्ताराह। 28-29 इशकार के कबीले ने उसे चार शहर उनकी चरागाहों समेत दिए : किसियोन, दाबरत, यरमूत और ऐन-जन्नीम। 30-31 इसी तरह उसे आशर के कबीले के भी चार शहर उनकी चरागाहों समेत दिए गए : मिसाल, अबदोन, खिलकत और रहोब। 32 नफताली के कबीले ने तीन शहर उनकी चरागाहों समेत दिए : गलील का कादिस जिसमें हर वह शख्स पनाह ले सकता था जिससे कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, फिर हम्मात-दोर और करतान। 33 गरज़ जैरसोन के घराने को 13 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए।

### मिरारी के घराने के शहर

34-35 अब रह गया लावी के कबीले का घराना मिरारी। उसे ज़बूलन के कबीले के चार शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए : युक्नियाम, करता, दिम्ना और नहलाल। 36-37 इसी तरह उसे रुबिन के कबीले के भी चार शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए : बसर, यहज़, कदीमात और मिफात। 38-39 जद के कबीले ने उसे चार शहर उनकी चरागाहों समेत दिए : मुल्के-जिलियाद का रामात जिसमें हर वह शख्स पनाह ले सकता था जिससे कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ था, फिर महनायम, हसबोन और याज़ेर। 40 गरज़ मिरारी के घराने को कुल 12 शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए।

41 इसराईल के मुखलाफि इलाकों में जो लावियों के शहर उनकी चरागाहों समेत थे उनकी कुल तादाद 48 थी। 42 हर शहर के इर्दगिर्द चरागाहें थीं।

अल्लाह ने अपना वादा पूरा किया

43 यों रब ने इसराईलियों को वह पूरा मुल्क दे दिया जिसका वादा उसने उनके बापदादा से क्रसम खाकर किया था। वह उस पर कब्जा करके उसमें रहने लगे। 44 और रब ने चारों तरफ अमनो-अमान मुहैया किया जिस तरह उसने उनके बापदादा से क्रसम खाकर वादा किया था। उसी की मदद से इसराईली तमाम दुश्मनों पर गालिब आए थे। 45 जो अच्छे वादे रब ने इसराईल से किए थे उनमें से एक भी नामुक्म्मल न रहा बल्कि सबके सब पूरे हो गए।

## 22

मशरिकी कबीलों को घर वापस जाने की इजाज़त

1 फिर यशुअ ने रुबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले के मर्दों को अपने पास बुलाकर 2 कहा, “जो भी हुक्म रब के खादिम मूसा ने आपको दिया था उसे आपने पूरा किया। और आपने मेरी हर बात मानी है। 3 आपने काफी अरसे से आज तक अपने भाइयों को तर्क नहीं किया बल्कि बिलकुल वही कुछ किया है जो रब की मरज़ी थी। 4 अब रब आपके खुदा ने आपके भाइयों को मौजूदा मुल्क दे दिया है, और वह सलामती के साथ उसमें रह रहे हैं। इसलिए अब वक़्त आ गया है कि आप अपने घर वापस चले जाएँ, उस मुल्क में जो रब के खादिम मूसा ने आपको दरियाए-यरदन के पार दे दिया है। 5 लेकिन ख़बरदार, एहतियात से उन हिदायात पर चलते रहें जो रब के खादिम मूसा ने आपको दे दीं। रब अपने खुदा से प्यार करें, उस की तमाम राहों पर चलें, उसके अहकाम मानें, उसके साथ लिपटे रहें, और पूरे दिलो-जान से उस की खिदमत करें।” 6 यह कहकर यशुअ ने उन्हें बरकत देकर ख़सत कर दिया, और वह अपने घर चले गए।

7 मनस्सी के आधे कबीले को मूसा से मुल्के-बसन में ज़मीन मिल गई थी। दूसरे हिस्से को यशुअ से ज़मीन मिल गई थी, यानी दरियाए-यरदन के मगरिब में जहाँ बाकी कबीले आबाद हुए थे। मनस्सी के मर्दों को ख़सत करते वक़्त यशुअ ने उन्हें बरकत देकर 8 कहा, “आप बड़ी दौलत के साथ अपने घर लौट रहे हैं। आपको बड़े रेवड़, सोना, चाँदी, लोहा और बहुत-से कापड़े मिल गए हैं। जब आप अपने घर पहुँचेंगे तो माले-गनीमत उनके साथ बाँटे जो घर में रह गए हैं।”

9 फिर रुबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले के मर्द बाकी इसराईलियों को सैला में छोड़कर मुल्के-जिलियाद की तरफ़ रवाना हुए जो दरियाए-यरदन के मशरिकि में है। वहाँ उनके अपने इलाके थे जिनमें उनके कबीले रब के उस हुक्म के मुताबिक़ आबाद हुए थे जो उसने मूसा की मारिफ़त दिया था।

मशरिकी कबीले कुरबानगाह बना लेते हैं

10 यह मर्द चलते चलते दरियाए-यरदन के मगरिब में एक जगह पहुँचे जिसका नाम गलीलोट था। वहाँ यानी मुल्के-कनान में ही उन्होंने एक बड़ी और शानदार कुरबानगाह बनाई। 11 इसराईलियों को ख़बर दी गई, “रुबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले ने कनान की सरहद पर गलीलोट में कुरबानगाह बना ली है। यह कुरबानगाह दरियाए-यरदन के मगरिब में यानी हमारे ही इलाके में है।”

12 तब इसराईल की पूरी जमात मशरिकी कबीलों से लड़ने के लिए सैला में जमा हुई। 13 लेकिन पहले उन्होंने इलियज़र इमाम के बेटे फ़ीनहास को मुल्के-जिलियाद को भेजा जहाँ रुबिन, जद और मनस्सी का आधा कबीला आबाद थे। 14 उसके साथ 10 आदमी यानी हर मगरिबी कबीले का एक नुमाइंदा था। हर एक अपने आबाई घराने और कुंभे का सरबराह था। 15 जिलियाद में पहुँचकर उन्होंने मशरिकी कबीलों से बात की। 16 “रब की पूरी जमात आपसे पूछती है कि आप इसराईल के खुदा से बेवफ़ा क्यों हो गए हैं? आपने रब से अपना मुँह फेरकर यह कुरबानगाह क्यों बनाई है? इससे आपने रब से सरकशी की है। 17 क्या यह काफ़ी नहीं था कि हमसे फ़ग़ूर के बुत की पूजा करने का गुनाह सरज़द हुआ? हम तो आज तक पूरे तौर पर उस गुनाह से पाक-साफ़ नहीं हुए गो उस वक़्त रब की जमात को वबा की सरत में सजा मिल गई थी। 18 तो फिर आप क्या कर रहे हैं? आप दुबारा रब से अपना मुँह फेरकर दूर हो रहे हैं। देखें, अगर आप आज रब से सरकशी करें तो कल वह इसराईल की पूरी जमात के साथ नाराज़ होगा। 19 अगर आप समझते हैं कि आपका मुल्क नापाक है और आप इसलिए उसमें रब की खिदमत नहीं कर सकते तो हमारे पास रब के मुल्क में आँएँ जहाँ रब की सूकूनतगाह है, और हमारी ज़मीनों में शरीक हो जाएँ। लेकिन रब से या हमसे सरकशी मत करना। रब हमारे खुदा की कुरबानगाह के अलावा अपने लिए कोई और कुरबानगाह न बनाएँ। 20 क्या इसराईल की पूरी जमात पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल न हुआ जब अकन बिन ज़ारह ने माले-गनीमत में से कुछ चोरी किया जो रब के लिए मख़सूस था? उसके गुनाह की सजा सिर्फ़ उस तक ही महदूद न रही बल्कि और भी हलाक हुआ।”

21 रबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले के मर्दों ने इसराईली कुंभों के सरबराहों को जवाब दिया, 22 “रब कादिरे-मुतलक खुदा, हॉ रब कादिरे-मुतलक खुदा हकीकत जानता है, और इसराईल भी यह बात जान ले! न हम सरकश हुए हैं, न रब से बेवफ़ा। अगर हम झूट बोलें तो आज ही हमें मार डालें! 23 हमने यह कुरबानगाह इसलिए नहीं बनाई कि रब से दूर हो जाएँ। हम उस पर कोई भी कुरबानी चढ़ाना नहीं चाहते, न भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, न गल्ला की नज़रें और न ही सलामती की कुरबानियाँ। अगर हम झूट बोलें तो रब खुद हमारी अदालत करे। 24 हकीकत में हमने यह कुरबानगाह इसलिए तामीर की कि हम डरते हैं कि मुस्तकबिल में किसी दिन आपकी औलाद हमारी औलाद से कहे, ‘आपका रब इसराईल के खुदा के साथ क्या वास्ता है?’ 25 आखिर रब ने हमारे और आपके दरमियान दरियाए-यरदन की सरहद मुकर्रर की है। चुनौचे आपको रब की इबादत करने का कोई हक नहीं!’ ऐसा करने से आपकी औलाद हमारी औलाद को रब की खिदमत करने से रोकेगी। 26 यही वजह है कि हमने यह कुरबानगाह बनाई, भस्म होनेवाली कुरबानियाँ या जबह की कोई और कुरबानी चढ़ाने के लिए नहीं 27 बल्कि आपको और आनेवाली नसलों को इस बात की याद दिलाने के लिए कि हमें भी रब के खेमे में भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, जबह की कुरबानियाँ और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाने का हक है। यह कुरबानगाह हमारे और आपके दरमियान गवाह रहेगी। अब आपकी औलाद कभी भी हमारी औलाद से नहीं कह सकेगी, ‘आपको रब की जमात के हुकूक हासिल नहीं।’ 28 और अगर वह किसी वक्त यह बात करे तो हमारी औलाद कह सकेगी, ‘यह कुरबानगाह देखें जो रब की कुरबानगाह की हबह नकल है। हमारे बापदादा ने इसे बनाया था, लेकिन इसलिए नहीं कि हम इस पर भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और जबह की कुरबानियाँ चढ़ाएँ बल्कि आपको और हमें गवाही देने के लिए कि हमें मिलकर रब की इबादत करने का हक है।’ 29 हालात कभी भी यहाँ तक न पहुँचें कि हम रब से सरकशी करके अपना मुँह उससे फेर लें। नहीं, हमने यह कुरबानगाह भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, गल्ला की नज़रें और जबह की कुरबानियाँ चढ़ाने के लिए नहीं बनाई। हम सिर्फ़ रब अपने खुदा की सूकनतगाह के सामने की कुरबानगाह पर ही अपनी कुरबानियाँ पेश करना चाहते हैं।”

30 जब फ़ीनहास और इसराईली जमात के कुंभों के सरबराहों ने जिलियाद में रबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले की यह बातें सुनी तो वह मुतमइन हुए। 31 फ़ीनहास ने उनसे कहा, “अब हम जानते हैं कि रब आइंदा भी हमारे दरमियान रहेगा, क्योंकि आप उससे बेवफ़ा नहीं हुए हैं। आपने इसराईलियों को रब की सज़ा से बचा लिया है।”

32 इसके बाद फ़ीनहास और बाक़ी इसराईली सरदार रबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले को मुल्के-जिलियाद में छोड़कर मुल्के-कनान में लौट आए। वहाँ उन्होंने सब कुछ बताया जो हुआ था। 33 बाक़ी इसराईलियों को यह बात पसंद आई, और वह अल्लाह की तमजीद करके रबिन और जद से जंग करने और उनका इलाका तबाह करने के इरादे से बाज़ आए। 34 रबिन और जद के कबीलों ने नई कुरबानगाह का नाम गवाह रखा, क्योंकि उन्होंने कहा, “यह कुरबानगाह हमारे और दूसरे कबीलों के दरमियान गवाह है कि रब हमारा भी खुदा है।”

## 23

### यशुअ की आखिरी नसीहतें

1 अब इसराईली काफ़ी देर से सलामती से अपने मुल्क में रहते थे, क्योंकि रब ने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हमलों से महफूज़ रखा। जब यशुअ बहुत बढ़ा हो गया था 2 तो उसने इसराईल के तमाम बुजुर्गों, सरदारों, काजियों और निगहबानों को अपने पास बुलाकर कहा, “अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। 3 आपने अपनी आँखों से देखा कि रब ने इस इलाके की तमाम कौमों के साथ क्या कुछ किया है। रब आपके खुदा ही ने आपके लिए जंग की। 4 याद रखें कि मैंने मशरिफ़ में दरियाए-यरदन से लेकर मारिब में समुंदर तक सारा मुल्क आपके कबीलों में तकसीम कर दिया है। बहुत-सी कौमों पर मैंने फ़तह पाई, लेकिन चंद एक अब तक बाक़ी रह गई हैं। 5 लेकिन रब आपका खुदा आपके आगे आगे चलते हुए उन्हें भी निकालकर भगा देगा। आप उनकी ज़मीनों पर क़ब्ज़ा कर लेंगे जिस तरह रब आपके खुदा ने वादा किया है।

6 अब पूरी हिम्मत से हर बात पर अमल करें जो मूसा की शरीअत की किताब में लिखी हुई है। न दाईं और न बाईं तरफ़ हटें। 7 उन दीगर कौमों से रिशता मत बँधना जो अब तक मुल्क में बाक़ी रह गई हैं। उनके बुतों के नाम अपनी ज़बान पर न लाना, न उनके नाम लेकर क़सम खाना। न उनकी खिदमत करना, न उन्हें सिजदा करना। 8 रब अपने खुदा के साथ यों लिपटे रहना जिस तरह आज तक लिपटे रहे हैं।

9 रब ने आपके आगे आगे चलकर बड़ी बड़ी और ताकतवर कौमों निकाल दी हैं। आज तक आपके सामने कोई नहीं खड़ा रह सका। 10 आपमें से एक शख्स हज़ार दुश्मनों को भगा देता है, क्योंकि रब आपका खुदा खुद आपके लिए लड़ता है जिस तरह उसने वादा किया था। 11 चुनौचे सज़ीदगी से ध्यान दें कि आप रब अपने खुदा से प्यार करें, क्योंकि आपकी ज़िंदगी इसी पर मुनहसिर है। 12 अगर आप उससे दूर होकर उन दीगर कौमों से लिपट जाएँ जो अब तक मुल्क में बाक़ी हैं



और उनके साथ रिश्ता बाँधें 13 तो रब आपका खुदा यकीनन इन कौमों को आपके आगे से नहीं निकालेगा। इसके बजाए यह आपको फँसाने के लिए फंदा और जाल बनेंगे। यह यकीनन आपकी पीठों के लिए कोड़े और आँखों के लिए कौंट बन जाएंगे। आखिर में आप उस अच्छे मुल्क में से मिट जाएंगे जो रब आपके खुदा ने आपको दे दिया है।

14 आज मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ किसी न किसी दिन दुनिया के हर शख्स को जाना होता है। लेकिन आपने पूरे दिलो-जान से जान लिया है कि जो भी वादा रब आपके खुदा ने आपके साथ किया वह पूरा हुआ है। एक भी अधूरा नहीं रह गया। 15 लेकिन जिस तरह रब ने हर वादा पूरा किया है बिलकुल उसी तरह वह तमाम आफतें आप पर नाज़िल करेगा जिनके बारे में उसने आपको खबरदार किया है अगर आप उसके ताबे न रहें। फिर वह आपको उस अच्छे मुल्क में से मिटा देगा जो उसने आपको दे दिया है। 16 अगर आप उस अहद को तोड़ें जो उसने आपके साथ बाँधा है और दीगर माबूदों की पूजा करके उन्हें सिजदा करें तो फिर रब का पूरा ग़ज़ब आप पर नाज़िल होगा और आप जल्द ही उस अच्छे मुल्क में से मिट जाएंगे जो उसने आपको दे दिया है।”

## 24

### अल्लाह और इसराईल के दरमियान अहद की तजदीद

1 फिर यशुअ ने इसराईल के तमाम कबीलों को सिकम शहर में जमा किया। उसने इसराईल के बुजुर्गों, सरदारों, काजियों और निगहबानों को बुलाया, और वह मिलकर अल्लाह के हज़ूर हाज़िर हुए।

2 फिर यशुअ इसराईली कौम से मुखातिब हुआ। “रब इसराईल का खुदा फरमाता है, ‘कदीम ज़माने में तुम्हारे बापदादा दरियाए-फुरात के पार बसते और दीगर माबूदों की पूजा करते थे। इब्राहीम और नहर का बाप तारह भी वहाँ आबाद था।

3 लेकिन मैं तुम्हारे बाप इब्राहीम को वहाँ से लेकर यहाँ लाया और उसे पूरे मुल्के-कनान में से गुज़रने दिया। मैंने उसे बहुत औलाद दी। मैंने उसे इसहाक दिया 4 और इसहाक को याकूब और एसी। एसी को मैंने पहाड़ी इलाका सईर अता किया, लेकिन याकूब अपने बेटों के साथ मिसर चला गया।

5 बाद में मैंने मूसा और हासून को मिसर भेज दिया और मुल्क पर बड़ी मुसीबतें नाज़िल करके तुम्हें वहाँ से निकाल लाया।

6 चलते चलते तुम्हारे बापदादा बहरे-कुलज़ूम पहुँच गए। लेकिन मिसरी अपने रथों और घुडसवारों से उनका ताक़्तब करने लगे। 7 तुम्हारे बापदादा ने मदद के लिए रब को पुकारा, और मैंने उनके और मिसरियों के दरमियान अधेरा पैदा किया। मैं समुंदर उन पर चढ़ा लाया, और वह उसमें गरक हो गए। तुम्हारे बापदादा ने अपनी ही आँखों से देखा कि मैंने मिसरियों के साथ क्या कुछ किया।

तुम बड़े अरसे तक रेगिस्तान में घूमते फिरे। 8 आखिरकार मैंने तुम्हें उन अमोरियों के मुल्क में पहुँचाया जो दरियाए-यरदन के मशरिक में आबाद थे। गो उन्होंने तुमसे जंग की, लेकिन मैंने उन्हें तुम्हारे हाथ में कर दिया। तुम्हारे आगे आगे चलकर मैंने उन्हें नेस्तो-नाबूद कर दिया, इसलिए तुम उनके मुल्क पर कब्ज़ा कर सके। 9 मोआब के बादशाह बलक बिन सफ़ोर ने भी इसराईल के साथ जंग छेड़ी। इस मकसद के तहत उसने बिलाम बिन बओर को बुलाया ताकि वह तुम पर लानत भेजे। 10 लेकिन मैं बिलाम की बात मानने के लिए तैयार नहीं था बल्कि वह तुम्हें बरकत देने पर मजबूर हुआ। यों मैंने तुम्हें उसके हाथ से महफूज़ रखा।

11 फिर तुम दरियाए-यरदन को पार करके यरीह के पास पहुँच गए। इस शहर के बाशिंदे और अमोरी, फरिज्जी, कनानी, हिती, जिरजासी, हिब्वी और यबूसी तुम्हारे खिलाफ लड़ते रहे, लेकिन मैंने उन्हें तुम्हारे कब्ज़े में कर दिया। 12 मैंने तुम्हारे आगे जंबू भेज दिए जिन्होंने अमोरियों के दो बादशाहों को मुल्क से निकाल दिया।

यह सब कुछ तुम्हारी अपनी तलवार और कमान से नहीं हुआ बल्कि मेरे ही हाथ से। 13 मैंने तुम्हें बीज बोने के लिए ज़मीन दी जिसे तैयार करने के लिए तुम्हें मेहनत न करनी पड़ी। मैंने तुम्हें शहर दिए जो तुम्हें तामीर करने न पड़े। उनमें रहकर तुम अंगूर और जैतून के ऐसे बागों का फल खाते हो जो तुमने नहीं लगाए थे।”

14 यशुअ ने बात जारी रखते हुए कहा, “चुनौचे रब का ख़ौफ़ मानें और पूरी वफ़ादारी के साथ उस की खिदमत करें। उन बूतों को निकाल फेंकें जिनकी पूजा आपके बापदादा दरियाए-फुरात के पार और मिसर में करते रहे। अब रब ही की खिदमत करें! 15 लेकिन अगर रब की खिदमत करना आपको बुरा लगे तो आज ही फैसला करें कि किसकी खिदमत करेंगे, उन देवताओं की जिनकी पूजा आपके बापदादा ने दरियाए-फुरात के पार की या अमोरियों के देवताओं की जिनके मुल्क में आप रह रहे हैं। लेकिन जहाँ तक मेरा और मेरे ख़ानदान का ताल्लुक है हम रब ही की खिदमत करेंगे।”

16 अवाम ने जवाब दिया, “ऐसा कभी न हो कि हम रब को तर्क करके दीगर माबूदों की पूजा करें। 17 रब हमारा खुदा ही हमारे बापदादा को मिसर की गुलामी से निकाल लाया और हमारी आँखों के सामने ऐसे अज़ीम निशान पेश किए। जब हमें

बहुत कौमों में से गुजरना पड़ा तो उसी ने हर वक्त हमारी हिफाजत की। 18 और रब ही ने हमारे आगे आगे चलकर इस मुल्क में आबाद अमोरियों और बाक्की कौमों को निकाल दिया। हम भी उसी की खिदमत करेंगे, क्योंकि वही हमारा खुदा है।”

19 यह सुनकर यशुअ ने कहा, “आप रब की खिदमत कर ही नहीं सकते, क्योंकि वह कुद्स और गयूर खुदा है। वह आपकी सरकशी और गुनाहों को मुआफ नहीं करेगा। 20 बेशक वह आप पर मेहरबानी करता रहा है, लेकिन अगर आप रब को तर्क करके अजनबी माबूदों की पूजा करें तो वह आपके खिलाफ होकर आप पर बलाएँ लाएगा और आपको नेस्तो-नाबूद कर देगा।”

21 लेकिन इसराईलियों ने इसरार किया, “जी नहीं, हम रब की खिदमत करेंगे!” 22 फिर यशुअ ने कहा, “आप खुद इसके गवाह हैं कि आपने रब की खिदमत करने का फैसला कर लिया है।” उन्होंने जवाब दिया, “जी हाँ, हम इसके गवाह हैं!” 23 यशुअ ने कहा, “तो फिर अपने दरमियान मौजूद बुतों को तबाह कर दें और अपने दिलों को रब इसराईल के खुदा के ताबे रखें।” 24 अवाम ने यशुअ से कहा, “हम रब अपने खुदा की खिदमत करेंगे और उसी की सुनेंगे।”

25 उस दिन यशुअ ने इसराईलियों के लिए रब से अहद बाँधा। वहाँ सिकम में उसने उन्हें अहकाम और कवायद देकर 26 अल्लाह की शरीअत की किताब में दर्ज किए। फिर उसने एक बड़ा पत्थर लेकर उसे उस बलूत के साये में खड़ा किया जो रब के मकदिस के पास था। 27 उसने तमाम लोगों से कहा, “इस पत्थर को देखें! यह गवाह है, क्योंकि इसने सब कुछ सुन लिया है जो रब ने हमें बता दिया है। अगर आप कभी अल्लाह का इनकार करें तो यह आपके खिलाफ गवाही देगा।”

28 फिर यशुअ ने इसराईलियों को फारिग कर दिया, और हर एक अपने अपने कबायली इलाके में चला गया।

### यशुअ और इलियज़र का इंतकाल

29 कुछ देर के बाद रब का खादिम यशुअ बिन नून फौत हुआ। उस की उम्र 110 साल थी। 30 उसे उस की मौस्सी ज़मीन में दफनाया गया, यानी तिमनत-सिरह में जो इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में जास पहाड़ के शिमाल में है।

31 जब तक यशुअ और वह बुज़ुर्ग जिंदा रहे जिन्होंने अपनी आँखों से सब कुछ देखा था जो रब ने इसराईल के लिए किया था उस वक्त तक इसराईल रब का वफ़ादार रहा।

32 मिसर को छोड़ते वक्त इसराईली यूसुफ़ की हड्डियाँ अपने साथ लाए थे। अब उन्होंने उन्हें सिकम शहर की उस ज़मीन में दफन कर दिया जो याकूब ने सिकम के बाप हमोर की औलाद से चाँदी के सौ सिक्कों के बदले खरीद ली थी। यह ज़मीन यूसुफ़ की औलाद की विरासत में आ गई थी।

33 इलियज़र बिन हास्न भी फौत हुआ। उसे जिबिया में दफनाया गया। इफ़राईम के पहाड़ी इलाके का यह शहर उसके बेटे फीनहास को दिया गया था।

## कुजात

जुन्वी कनान पर मुकम्मल काबू नहीं पाया जाता

1 यशुअ की मौत के बाद इसराइलियों ने रब से पूछा, “कौन-सा कबीला पहले निकलकर कनानियों पर हमला करे?”  
2 रब ने जवाब दिया, “यहदाह का कबीला शुरू करे। मैंने मुल्क को उनके कब्जे में कर दिया है।”

3 तब यहदाह के कबीले ने अपने भाइयों शमौन के कबीले से कहा, “आएँ, हमारे साथ निकलें ताकि हम मिलकर कनानियों को उस इलाके से निकाल दें जो कुरा ने यहदाह के कबीले के लिए मुकर्रर किया है। इसके बदले हम बाद में आपकी मदद करेंगे जब आप अपने इलाके पर कब्जा करने के लिए निकलेंगे।” चुनोंचे शमौन के मर्द यहदाह के साथ निकले। 4 जब यहदाह ने दुश्मन पर हमला किया तो रब ने कनानियों और फरिज्जियों को उसके काबू में कर दिया। बजक के पास उन्होंने उन्हें शिकस्त दी, गो उनके कुल 10,000 आदमी थे।

5 वहाँ उनका मुकाबला एक बादशाह से हुआ जिसका नाम अदूनी-बजक था। जब उसने देखा कि कनानी और फरिज्जी हार गए हैं 6 तो वह फरार हुआ। लेकिन इसराइलियों ने उसका ताकुकुब करके उसे पकड़ लिया और उसके हाथों और पैरों के अंगूठों को काट लिया। 7 तब अदूनी-बजक ने कहा, “मैंने खुद सत्तर बादशाहों के हाथों और पैरों के अंगूठों को कटवाया, और उन्हें मेरी मेज के नीचे गिरे हुए खाने के रूई टुकड़े जमा करने पड़े। अब अल्लाह मुझे इसका बदला दे रहा है।” उसे यरूशलम लाया गया जहाँ वह मर गया।

8 यहदाह के मर्दों ने यरूशलम पर भी हमला किया। उस पर फतह पाकर उन्होंने उसके बाशिंदों को तलवार से मार डाला और शहर को जला दिया। 9 इसके बाद वह आगे बढ़कर उन कनानियों से लड़ने लगे जो पहाड़ी इलाके, दशते-नजब और मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके में रहते थे। 10 उन्होंने हबस्न शहर पर हमला किया जो पहले किरियत-अरबा कहलाता था। वहाँ उन्होंने सीसी, अखीमाम और तलमी की फौजों को शिकस्त दी। 11 फिर वह आगे दबीर के बाशिंदों से लड़ने चले गए। दबीर का पुराना नाम किरियत-सिफर था।

12 कालिब ने कहा, “जो किरियत-सिफर पर फतह पाकर कब्जा करेगा उसके साथ मैं अपनी बेटी अकसा का रिश्ता बाँधूँगा।” 13 कालिब के छोटे भाई गुतनियेल बिन कनज ने शहर पर कब्जा कर लिया। चुनोंचे कालिब ने उसके साथ अपनी बेटी अकसा की शादी कर दी। 14 जब अकसा गुतनियेल के हों जा रही थी तो उसने उसे उभारा कि वह कालिब से कोई खेत पाने की दरखास्त करे। अचानक वह गधे से उतर गई। कालिब ने पूछा, “क्या बात है?” 15 अकसा ने जवाब दिया, “जहेज़ के लिए मुझे एक चीज से नवाजें। आपने मुझे दशते-नजब में जमीन दे दी है। अब मुझे चरमे भी दे दीजिए।” चुनोंचे कालिब ने उसे अपनी मिलकियत में से ऊपर और नीचेवाले चरमे भी दे दिए।

16 जब यहदाह का कबीला खजूरों के शहर से रवाना हुआ था तो कीनी भी उनके साथ यहदाह के रेगिस्तान में आए थे। (कीनी मूसा के सुसर यितरो की औलाद थे)। वहाँ वह दशते-नजब में अराद शहर के करीब दूसरे लोगों के दरमियान ही आबाद हुए।

17 यहदाह का कबीला अपने भाइयों शमौन के कबीले के साथ आगे बढ़ा। उन्होंने कनानी शहर सफत पर हमला किया और उसे अल्लाह के लिए मखसूस करके मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया। इसलिए उसका नाम हुरमा यानी अल्लाह के लिए तबाही पड़ा। 18 फिर यहदाह के फौजियों ने गज्जा, अस्कलून और अकरून के शहरों पर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत फतह पाई। 19 रब उनके साथ था, इसलिए वह पहाड़ी इलाके पर कब्जा कर सके। लेकिन वह समुंदर के साथ के मैदानी इलाके में आबाद लोगों को निकाल न सके। वजह यह थी कि इन लोगों के पास लोहे के रथ थे। 20 मूसा के वादे के मुताबिक कालिब को हबस्न शहर मिल गया। उसने उसमें से अनाक के तीन बेटों को उनके घरानों समेत निकाल दिया।

21 लेकिन बिनयमीन का कबीला यरूशलम के रहनेवाले यबूसियों को निकाल न सका। आज तक यबूसी वहाँ बिनयमीनियों के साथ आबाद हैं।

शिमाली कनान पर मुकम्मल काबू नहीं पाया जाता

22-23 इफराईम और मनस्सी के कबीले बैतेल पर कब्जा करने के लिए निकले (बैतेल का पुराना नाम लूज था)। जब उन्होंने अपने जासूसों को शहर की तफतीश करने के लिए भेजा तो रब उनके साथ था। 24 उनके जासूसों की मुलाकात एक आदमी से हुई जो शहर से निकल रहा था। उन्होंने उससे कहा, “हमें शहर में दाखिल होने का रास्ता दिखाएँ तो हम आप पर रहम करेंगे।” 25 उसने उन्हें अंदर जाने का रास्ता दिखाया, और उन्होंने उसमें घुसकर तमाम बाशिंदों को तलवार से मार

डाला सिवाए मजकूरा आदमी और उसके खानदान के। 26 बाद में वह हितियों के मुल्क में गया जहाँ उसने एक शहर तामीर करके उसका नाम लूज़ रखा। यह नाम आज तक रायज है।

27 लेकिन मनस्सी ने हर शहर के बाशिंदे न निकाले। बैत-शान, तानक, दोर, इबलियाम, मजिद्रो और उनके गिर्दो-नवाह की आबादियाँ रह गईं। कनानी पूरे अज़म के साथ उनमें टिके रहे। 28 बाद में जब इसराइल की ताकत बढ़ गई तो इन कनानियों को बेगार में काम करना पड़ा। लेकिन इसराइलियों ने उस वक्त भी उन्हें मुल्क से न निकाला।

29 इसी तरह इफ्राईम के कबीले ने भी जज़र के बाशिंदों को न निकाला, और यह कनानी उनके दरमियान आबाद रहे।

30 ज़बूलन के कबीले ने भी कितरोन और नहलाल के बाशिंदों को न निकाला बल्कि यह उनके दरमियान आबाद रहे, अलबत्ता उन्हें बेगार में काम करना पड़ा।

31 आशर के कबीले ने न अक्को के बाशिंदों को निकाला, न सैदा, अहलाब, अकज़ीब, हिलबा, अफ़्रीक या रहोब के बाशिंदों को। 32 इस वजह से आशर के लोग कनानी बाशिंदों के दरमियान रहने लगे।

33 नफताली के कबीले ने बैत-शम्म और बैत-अनात के बाशिंदों को न निकाला बल्कि वह भी कनानियों के दरमियान रहने लगे। लेकिन बैत-शम्म और बैत-अनात के बाशिंदों को बेगार में काम करना पड़ा।

34 दान के कबीले ने मैदानी इलाके पर कब्ज़ा करने की कोशिश तो की, लेकिन अमोरियों ने उन्हें आने न दिया बल्कि पहाड़ी इलाके तक महदूद रखा। 35 अमोरी पूरे अज़म के साथ हरिस पहाड़, ऐयालोन और सालबीम में टिके रहे। लेकिन जब इफ्राईम और मनस्सी की ताकत बढ़ गई तो अमोरियों को बेगार में काम करना पड़ा।

36 अमोरियों की सरहद दरीए-अक्रब्बीम से लेकर सिला से परे तक थी।

## 2

रब का फरिश्ता इसराइल को मलामत करता है

1 रब का फरिश्ता जिलजाल से चढ़कर बोकीम पहुँचा। वहाँ उसने इसराइलियों से कहा, “मैं तुम्हें मिसर से निकालकर उस मुल्क में लाया जिसका वादा मैंने कसम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था। उस वक्त मैंने कहा कि मैं तुम्हारे साथ अपना अहद कभी नहीं तोड़ूँगा। 2 और मैंने हुक्म दिया, ‘इस मुल्क की कौमों के साथ अहद मत बाँधना बल्कि उनकी कुरबानागाहों को गिरा देना।’ लेकिन तुमने मेरी न सुनी। यह तुमने क्या किया? 3 इसलिए अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं उन्हें तुम्हारे आगे से नहीं निकालूँगा। वह तुम्हारे पहलुओं में काँट बनेंगे, और उनके देवता तुम्हारे लिए फंदा बने रहेंगे।”

4 रब के फरिश्ते की यह बात सुनकर इसराइली खूब रोए। 5 यही वजह है कि उस जगह का नाम बोकीम यानी रोनेवाले पड़ गया। फिर उन्होंने वहाँ रब के हुज़ूर कुरबानियाँ पेश कीं।

इसराइल बेवफा हो जाता है

6 यशुअ के कौम को सबखत करने के बाद हर एक कबीला अपने इलाके पर कब्ज़ा करने के लिए रवाना हुआ था। 7 जब तक यशुअ और वह बुजुर्ग जिंदा रहे जिन्होंने वह अज़ीम काम देखे हुए थे जो रब ने इसराइलियों के लिए किए थे उस वक्त तक इसराइली रब की वफादारी से खिदमत करते रहे। 8 फिर रब का खादिम यशुअ बिन नून इंतकाल कर गया। उस की उम्र 110 साल थी। 9 उसे तिमनत-हरिस में उस की अपनी मौरूसी ज़मीन में दफनाया गया। (यह शहर इफ्राईम के पहाड़ी इलाके में जास पहाड़ के शिमाल में है।)

10 जब हमअसर इसराइली सब मरकर अपने बापदादा से जा मिले तो नई नसल उभर आई जो न तो रब को जानती, न उन कामों से वाकिफ थी जो रब ने इसराइल के लिए किए थे। 11 उस वक्त वह ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। उन्होंने बाल देवता के बुतों की पूजा करके 12 रब अपने बापदादा के खुदा को तर्क कर दिया जो उन्हें मिसर से निकाल लाया था। वह गिर्दो-नवाह की कौमों के दीगर माबुदों के पीछे लग गए और उनकी पूजा भी करने लगे। इससे रब का गज़ब उन पर भड़का, 13 क्योंकि उन्होंने उस की खिदमत छोड़कर बाल देवता और अस्तारात देवी की पूजा की। 14 रब यह देखकर इसराइलियों से नाराज़ हुआ और उन्हें डाकुओं के हवाले कर दिया जिन्होंने उनका माल लूटा। उसने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों के हाथ बेच डाला, और वह उनका मुकाबला करने के काबिल न रहे। 15 जब भी इसराइली लड़ने के लिए निकले तो रब का हाथ उनके खिलाफ था। नतीजतन वह हारते गए जिस तरह उसने कसम खाकर फ़रमाया था।

जब वह इस तरह बड़ी मुसीबत में थे 16 तो रब उनके दरमियान काज़ी बरपा करता जो उन्हें लटनेवालों के हाथ से बचाते। 17 लेकिन वह उनकी न सुनते बल्कि जिना करके दीगर माबुदों के पीछे लगे और उनकी पूजा करते रहते। गो उनके बापदादा रब के अहकाम के ताबे रहे थे, लेकिन वह खुद बड़ी जल्दी से उस राह से हट जाते जिस पर उनके बापदादा चले थे। 18 लेकिन जब भी वह दुश्मन के जुल्म और दबाव तले करहने लगते तो रब को उन पर तरस आ जाता, और वह किसी काज़ी को बरपा करता और उस की मदद करके उन्हें बचाता।

जितने अरसे तक काज़ी जिंदा रहता उतनी देर तक इसराईली दुश्मनों के हाथ से महफूज़ रहते। 19 लेकिन उसके मरने पर वह दुबारा अपनी पुरानी राहों पर चलने लगते, बल्कि जब वह मुड़कर दीगर माबदों की पैरवी और पूजा करने लगते तो उनकी रविश बापदादा की रविश से भी बुरी होती। वह अपनी शरीर हरकतों और हटधर्म राहों से बाज़ आने के लिए तैयार ही न होते। 20 इसलिए अल्लाह को इसराईल पर बड़ा गुस्सा आया। उसने कहा, “इस क्रौम ने वह अहद तोड़ दिया है जो मैंने इसके बापदादा से बाँधा था। यह मेरी नहीं सुनती, 21 इसलिए मैं उन क्रौमों को नहीं निकालूँगा जो यशुअ की मौत से लेकर आज तक मुल्क में रह गई हैं। यह क्रौमों इसमें आबाद रहेंगी, 22 और मैं उनसे इसराईलियों को आजमाकर देखूँगा कि आया वह अपने बापदादा की तरह रब की राह पर चलेंगे या नहीं।”

23 चुनौचे रब ने इन क्रौमों को न यशुअ के हवाले किया, न फौरन निकाला बल्कि उन्हें मुल्क में ही रहने दिया।

### 3

अल्लाह इसराईल को कनानी क्रौमों से आजमाता है

1 रब ने कई एक क्रौमों को मुल्के-कनान में रहने दिया ताकि उन तमाम इसराईलियों को आजमाए जो खुद कनान की जंगों में शरीक नहीं हुए थे। 2 नीज़, वह नई नसल को जंग करना सिखाना चाहता था, क्योंकि वह जंग करने से नावाकिफ थी। जैल की क्रौमों कनान में रह गई थी : 3 फिलिस्ती उनके पाँच हुक्मरानों समेत, तमाम कनानी, सैदानी और लुबनान के पहाड़ी इलाके में रहनेवाले हिब्वी जो बाल-हरमून पहाड़ से लेकर लबो-हमात तक आबाद थे। 4 उनसे रब इसराईलियों को आजमाना चाहता था। वह देखना चाहता था कि क्या यह मेरे उन अहकाम पर अमल करते हैं या नहीं जो मैंने मूसा की मारिफत उनके बापदादा को दिए थे।

गुतनियेल काज़ी

5 चुनौचे इसराईली कनानियों, हितियों, अमोरियों, फरिज्जियों, हिब्वियों और यबूसियों के दरमियान ही आबाद हो गए। 6 न सिर्फ़ यह बल्कि वह इन क्रौमों से अपने बेटे-बेटियों का रिश्ता बाँधकर उनके देवताओं की पूजा भी करने लगे। 7 इसराईलियों ने ऐसी हरकतें की जो रब की नज़र में बुरी थीं। रब को भूलकर उन्होंने बाल देवता और यसीरत देवी की खिदमत की।

8 तब रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और उसने उन्हें मसोपुतामिया के बादशाह कृशन-रिसअतैम के हवाले कर दिया। इसराईली आठ साल तक कृशन के गुलाम रहे। 9 लेकिन जब उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा तो उसने उनके लिए एक नजातदहिदा बरपा किया। कालिब के छोटे भाई गुतनियेल बिन कनज़ ने उन्हें दुश्मन के हाथ से बचाया। 10 उस वक़्त गुतनियेल पर रब का रूह नाज़िल हुआ, और वह इसराईल का काज़ी बन गया। जब वह जंग करने के लिए निकला तो रब ने मसोपुतामिया के बादशाह कृशन-रिसअतैम को उसके हवाले कर दिया, और वह उस पर गालिब आ गया।

11 तब मुल्क में चालीस साल तक अमनो-अमान कायम रहा। लेकिन जब गुतनियेल बिन कनज़ फ़ौत हुआ 12 तो इसराईली दुबारा वह कुछ करने लगे जो रब की नज़र में बुरा था। इसलिए उसने मोआब के बादशाह इज़लून को इसराईल पर गालिब आने दिया। 13 इज़लून ने अम्मोनियों और अमालीकियों के साथ मिलकर इसराईलियों से जंग की और उन्हें शिकस्त दी। उसने खज़ूरों के शहर पर कब्ज़ा किया, 14 और इसराईल 18 साल तक उस की गुलामी में रहा।

अहद काज़ी की चालाकी

15 इसराईलियों ने दुबारा मदद के लिए रब को पुकारा, और दुबारा उसने उन्हें नजातदहिदा अता किया यानी बिनयमीन के क़बीले का अहद बिन जीरा जो बाएँ हाथ से काम करने का आदी था। इसी शख्स को इसराईलियों ने इज़लून बादशाह के पास भेज दिया ताकि वह उसे खराज के पैसे अदा करे। 16 अहद ने अपने लिए एक दोधारी तलवार बना ली जो तकरबीन डेढ़ फुट लंबी थी। जाते वक़्त उसने उसे अपनी कमर के दाईं तरफ़ बाँधकर अपने लिबास में छुपा लिया। 17 जब वह इज़लून के दरबार में पहुँच गया तो उसने मोआब के बादशाह को खराज पेश किया। इज़लून बहुत मोटा आदमी था। 18 फिर अहद ने उन आदमियों को सूखसत कर दिया जिन्होंने उसके साथ खराज उठाकर उसे दरबार तक पहुँचाया था। 19-20 अहद भी वहाँ से रवाना हुआ, लेकिन जिलजाल के बूतों के करीब वह मुड़कर इज़लून के पास वापस गया।

इज़लून बालाखाने में बैठा था जो ज़्यादा ठंडा था और उसके ज़ाती इस्तेमाल के लिए मखसूस था। अहद ने अंदर जाकर बादशाह से कहा, “मेरी आपके लिए खुफ़िया खबर है।” बादशाह ने कहा, “ख़ामोश!” बाकी तमाम हाज़िरिन कमरे से चले गए तो अहद ने कहा, “जो खबर मेरे पास आपके लिए है वह अल्लाह की तरफ़ से है!” यह सुनकर इज़लून खड़ा होने लगा, 21 लेकिन अहद ने उसी लमहे अपने बाएँ हाथ से कमर के दाईं तरफ़ बाँधी हुई तलवार को पकड़कर उसे मियान से निकाला और इज़लून के पेट में धँसा दिया। 22 तलवार इतनी धँस गई कि उसका दस्ता भी चरबी में गायब हो गया और उस की नोक

टोंगों में से निकली। तलवार को उसमें छोड़कर <sup>23</sup> अहद ने कमरे के दरवाजों को बंद करके कुंडी लगाई और साथवाले कमरे में से निकलकर चला गया।

<sup>24</sup> थोड़ी देर के बाद बादशाह के नौकरों ने आकर देखा कि दरवाजों पर कुंडी लगी है। उन्होंने एक दूसरे से कहा, “वह हाजत रफा कर रहे होंगे,” <sup>25</sup> इसलिए कुछ देर के लिए ठहरे। लेकिन दरवाजा न खुला। इंतजार करते करते वह थक गए, लेकिन बेसुद, बादशाह ने दरवाजा न खोला। आखिरकार उन्होंने चाबी ढूँडकर दरवाजों को खोल दिया और देखा कि मालिक की लाश फर्श पर पड़ी हुई है।

<sup>26</sup> नौकरों के झिजकने की वजह से अहद बच निकला और जिलजाल के बूतों से गुजरकर सईरा पहुँच गया जहाँ वह महफूज था। <sup>27</sup> वहाँ इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में उसने नरसिंगा फूँक दिया ताकि इसराईली लड़ने के लिए जमा हो जाएँ। वह इकट्ठे हुए और उस की राहनुमाई में वादीए-यरदन में उतर गए। <sup>28</sup> अहद बोला, “मेरे पीछे हो लें, क्योंकि अल्लाह ने आपके दुश्मन मोआब को आपके हवाले कर दिया है।” चुनौचे वह उसके पीछे पीछे वादी में उतर गए। पहले उन्होंने दरियाए-यरदन के कम-गहरे मकामों पर कब्जा करके किसी को दरिया पार करने न दिया। <sup>29</sup> उस वक़्त उन्होंने मोआब के 10,000 ताकतवर और जंग करने के काबिल आदमियों को मार डाला। एक भी न बचा।

<sup>30</sup> उस दिन इसराईल ने मोआब को जेर कर दिया, और 80 साल तक मुल्क में अमनो-अमान कायम रहा।

### शमजर काज़ी

<sup>31</sup> अहद के दौर के बाद इसराईल का एक और नजातदहिदा उभर आया, शमजर बिन अनात। उसने बैल के आँकुस से 600 फिलिस्तियों को मार डाला।

## 4

### दबोरा नबिया और लशकर का सरदार बरक

<sup>1</sup> जब अहद फौत हुआ तो इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब के नजदीक बुरी थी। <sup>2-3</sup> इसलिए रब ने उन्हें कनान के बादशाह याबीन के हवाले कर दिया। याबीन का दास्त-हुकूमत हसर था, और उसके पास 900 लोहे के रथ थे। उसके लशकर का सरदार सीसरा था जो हरसुत-हगोयम में रहता था। याबीन ने 20 साल इसराईलियों पर बहुत जुल्म किया, इसलिए उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा।

<sup>4</sup> उन दिनों में दबोरा नबिया इसराईल की काज़ी थी। उसका शौहर लफ़ीदोत था, <sup>5</sup> और वह ‘दबोरा के खज़ूर’ के पास रहती थी जो इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में रामा और बैतल के दरमियान था। इस दरख़्त के साये में वह इसराईलियों के मामलात के फैसले किया करती थी। <sup>6</sup> एक दिन दबोरा ने बरक बिन अबीनुअम को बुलाया। बरक नफ़ताली के कबायली इलाके के शहर कादिस में रहता था। दबोरा ने बरक से कहा, “रब इसराईल का खुदा आपको हुकम देता है, ‘नफ़ताली और जबूलन के कबीलों में से 10,000 मर्दों को जमा करके उनके साथ तबूर पहाड पर चढ़ जा! <sup>7</sup> मैं याबीन के लशकर के सरदार सीसरा को उसके रथों और फ़ौज समेत तेरे करीब की कैसोन नदी के पास खींच लाऊँगा। वहाँ मैं उसे तेरे हाथ में कर दूँगा।’”

<sup>8</sup> बरक ने जवाब दिया, “मैं सिर्फ़ इस सूत में जाऊँगा कि आप भी साथ जाएँ। आपके बग़ैर मैं नहीं जाऊँगा।” <sup>9</sup> दबोरा ने कहा, “ठीक है, मैं जरूर आपके साथ जाऊँगी। लेकिन इस सूत में आपको सीसरा पर गालिब आने की इज़ज़त हासिल नहीं होगी बल्कि एक औरत को। क्योंकि रब सीसरा को एक औरत के हवाले कर देगा।”

चुनौचे दबोरा बरक के साथ कादिस गई। <sup>10</sup> वहाँ बरक ने जबूलन और नफ़ताली के कबीलों को अपने पास बुला लिया। 10,000 आदमी उस की राहनुमाई में तबूर पहाड पर चले गए। दबोरा भी साथ गई।

<sup>11</sup> उन दिनों में एक क़ीनी बनाम हिबर ने अपना ख़ैमा कादिस के करीब ऐलोन-जाननीम में लगाया हुआ था। क़ीनी मुसा के साले होबाब की औलाद में से था। लेकिन हिबर दूसरे क़ीनियों से अलग रहता था।

<sup>12</sup> अब सीसरा को इतला दी गई कि बरक बिन अबीनुअम फ़ौज लेकर पहाड तबूर पर चढ़ गया है। <sup>13</sup> यह सुनकर वह हरसुत-हगोयम से रवाना होकर अपने 900 रथों और बाक़ी लशकर के साथ कैसोन नदी पर पहुँच गया।

<sup>14</sup> तब दबोरा ने बरक से बात की, “हमला के लिए तैयार हो जाएँ, क्योंकि रब ने आज ही सीसरा को आपके काबू में कर दिया है। रब आपके आगे आगे चल रहा है।” चुनौचे बरक अपने 10,000 आदमियों के साथ तबूर पहाड से उतर आया।

<sup>15</sup> जब उन्होंने दुश्मन पर हमला किया तो रब ने कनानियों के पूरे लशकर में रथों समेत अफ़रा-तफ़री पैदा कर दी। सीसरा अपने रथ से उतरकर पैदल ही फ़रार हो गया।

<sup>16</sup> बरक के आदमियों ने भागनेवाले फ़ौजियों और उनके रथों का ताक़ूब करके उनको हरसुत-हगोयम तक मारते गए। एक भी न बचा।

### सीसरा का अंजाम

17 इतने में सीसरा पैदल चलकर क्रीनी आदमी हिबर की बीवी याएल के खैमे के पास भाग आया था। वजह यह थी कि हसूर के बादशाह याबीन के हिबर के घराने के साथ अच्छे ताल्लुकात थे। 18 याएल खैमे से निकलकर सीसरा से मिलने गई। उसने कहा, “आएँ मेरे आका, अंदर आएँ और न डरें।” चुनौचे वह अंदर आकर लेट गया, और याएल ने उस पर कमबल डाल दिया।

19 सीसरा ने कहा, “मुझे प्यास लगी है, कुछ पानी पिला दो।” याएल ने दूध का मशकीजा खोलकर उसे पिला दिया और उसे दुबारा छुपा दिया। 20 सीसरा ने दरखास्त की, “दरवाजे में खडी हो जाओ! अगर कोई आए और पूछे कि क्या खैमे में कोई है तो बोलो कि नहीं, कोई नहीं है।”

21 यह कहकर सीसरा गहरी नींद सो गया, क्योंकि वह निहायत थका हुआ था। तब याएल ने मेख और हथोडा पकड़ लिया और दबे पाँव सीसरा के पास जाकर मेख को इतने जोर से उस की कनपटी में ठोक दिया कि मेख ज़मीन में धँस गई और वह मर गया।

22 कुछ देर के बाद बरक सीसरा के ताक्कुब में वहाँ से गुज़रा। याएल खैमे से निकलकर उससे मिलने आई और बोली, “आऊँ, मैं आपको वह आदमी दिखाती हूँ जिसे आप ढूँढ़ रहे हैं।” बरक उसके साथ खैमे में दाखिल हुआ तो क्या देखा कि सीसरा की लाश ज़मीन पर पडी है और मेख उस की कनपटी में से गुज़रकर ज़मीन में गड़ गई है।

23 उस दिन अल्लाह ने कनानी बादशाह याबीन को इसराईलियों के सामने जेर कर दिया। 24 इसके बाद उनकी ताकत बढ़ती गई जबकि याबीन कमज़ोर होता गया और आखिरकार इसराईलियों के हाथों तबाह हो गया।

## 5

### दबोरा और बरक का गीत

1 फ़तह के दिन दबोरा ने बरक बिन अबीनुअम के साथ यह गीत गाया,

2 “अल्लाह की सताइश हो! क्योंकि इसराईल के सरदारों ने राहनुमाई की, और अवाम निकलने के लिए तैयार हुए।

3 ऐ बादशाहो, सुनो! ऐ हुक्मरानो, मेरी बात पर तवज्जुह दो! मैं रब की तमजीद में गीत गाऊँगी, रब इसराईल के खुदा की मद्दहसराई करूँगी।

4 ऐ रब, जब तू सईर से निकल आया और अदोम के खुले मैदान से रवाना हुआ तो ज़मीन काँप उठी और आसमान से पानी टपकने लगा, बादलों से बारिश बरसने लगी।

5 कोहे-सीना के रब के हज़ूर पहाड़ हिलने लगे, रब इसराईल के खुदा के सामने वह कपकपाने लगे।

6 शमज़र बिन अनात और याएल के दिनों में सफर के पक्के और सीधे रास्ते खाली रहे और मुसाफिर उनसे हटकर बल खाते हुए छोटे छोटे रास्तों पर चलकर अपनी मनज़िल तक पहुँचते थे।

7 देहात की ज़िंदगी सूनी हो गई। गौव में रहना मुश्किल था जब तक मैं, दबोरा जो इसराईल की माँ हूँ खडी न हुई।

8 शहर के दरवाज़ों पर जंग छिड़ गई जब उन्होंने नए माबूदों को चुन लिया। उस वक़्त इसराईल के 40,000 मर्दों के पास एक भी ढाल या नेजा न था।

9 मेरा दिल इसराईल के सरदारों के साथ है और उनके साथ जो खुशी से जंग के लिए निकले। रब की सताइश करो!

10 ऐ तुम जो सफेद गधों पर कपड़े बिछाकर उन पर सवार हो, अल्लाह की तमजीद करो! ऐ तुम जो पैदल चल रहे हो, अल्लाह की तारीफ करो!

11 सुनो! जहाँ जानवरों को पानी पिलाया जाता है वहाँ लोग रब के नजातबख्श कामों की तारीफ कर रहे हैं, उन नजातबख्श कामों की जो उसने इसराईल के देहातियों की खातिर किए। तब रब के लोग शहर के दरवाज़ों के पास उतर आए।

12 ऐ दबोरा, उठें, उठें! उठें, हाँ उठें और गीत गाएँ! ऐ बरक, खड़े हो जाँएँ! ऐ अबीनुअम के बेटे, अपने कैदियों को बाँधकर ले जाँएँ!

13 फिर बचे हुए फ़ौजी पहाड़ी इलाके से उतरकर कौम के शरफ़ा के पास आए, रब की कौम सूमाओं के साथ मेरे पास उतर आईं।

14 इफ़राईम से जिसकी जड़ें अमालीक में हैं वह उतर आए, और बिनयमीन के मर्द उनके पीछे हो लिए। मकीर से हुक्मरान और ज़बलून से सिपहसालार उतर आए।

15 इशकार के रईस भी दबोरा के साथ थे, और उसके फौजी बरक के पीछे होकर वादी में दौड़ आए। लेकिन रूबिन का कबीला अपने इलाके में रहकर सोच-बिचार में उलझा रहा।

16 तू क्यों अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठा रहा? क्या गल्लों के दरमियान चरवाहों की बाँसरियों की आवाज़ें सुनने के लिए? रूबिन का कबीला अपने इलाके में रहकर सोच-बिचार में उलझा रहा।

17 जिलियाद के घराने दरियाए-यरदन के मशरिक में ठहरे रहे। और दान का कबीला, वह क्यों बहरी जहाज़ों के पास रहा? आशर का कबीला भी साहिल पर बैठा रहा, वह आराम से अपनी बंदरगाहों के पास ठहरा रहा,

18 जबकि जबलून और नफताली अपनी जान पर खेलकर मैदाने-जंग में आ गए।

19 बादशाह आए और लड़े, कनान के बादशाह मजिदो नदी पर तानक के पास इसराईल से लड़े। लेकिन वहाँ से वह चाँदी का लूटा हुआ माल वापस न लाए।

20 आसमान से सितारों ने सीसरा पर हमला किया, अपनी आसमानी राहों को छोड़कर वह उससे और उस की कौम से लड़ने आए।

21 कैसोन नदी उन्हें उड़ा ले गई, वह नदी जो क़दीम ज़माने से बहती है। ऐ मेरी जान, मजबूती से आगे चलती जा!

22 उस वक्त टापों का बड़ा शोर सुनाई दिया। दुश्मन के ज़बरदस्त घोड़े सरपट दौड़ रहे थे।

23 रब के फ़रिश्ते ने कहा, 'मीरोज़ शहर पर लानत करो, उसके बाशिंदों पर खूब लानत करो! क्योंकि वह रब की मदद करने न आए, वह सूमाओं के खिलाफ़ रब की मदद करने न आए।'

24 हिबर कीनी की बीवी मुबारक है! ख़ैमों में रहनेवाली औरतों में से वह सबसे मुबारक है!

25 जब सीसरा ने पानी माँगा तो याएल ने उसे दूध पिलाया। शानदार प्याले में लस्सी डालकर वह उसे उसके पास लाई।

26 लेकिन फिर उसने अपने हाथ से मेख और अपने दहने हाथ से मजदूरों का हथोड़ा पकड़कर सीसरा का सर फोड़ दिया, उस की खोपड़ी टुकड़े टुकड़े करके उस की कनपटी को छेद दिया।

27 उसके पाँवों में वह तड़प उठा। वह गिरकर वहीं पड़ा रहा। हाँ, वह उसके पाँवों में गिरकर हलाक हुआ।

28 सीसरा की माँ ने खिड़की में से झाँका और दरिचे में से देखती देखती रोती रही, 'उसके रथ के पहुँचने में इतनी देर क्यों हो रही है? रथों की आवाज़ अब तक क्यों सुनाई नहीं दे रही?'

29 उस की दानिशमंद खवातीन उसे तसल्लती देती है और वह खुद उनकी बात दोहराती है, <sup>30</sup> 'वह लूटा हुआ माल आपस में बाँट रहे होंगे। हर मर्द के लिए एक दो लडकियाँ और सीसरा के लिए रंगदार लिबास होगा। हाँ, वह रंगदार लिबास और मेरी गरदन को सजाने के लिए दो नफ़ीस रंगदार कपड़े ला रहे होंगे।'

31 ऐ रब, तैरे तमाम दुश्मन सीसरा की तरह हलाक हो जाएँ! लेकिन जो तुझसे प्यार करते हैं वह पूरे ज़ोर से तुलू होनेवाले सूरज की मानिंद हों।''

बरक की इस फ़तह के बाद इसराईल में 40 साल अमनो-अमान कायम रहा।

## 6

### मिदियानी इसराईलियों को दबाते हैं

1 फिर इसराईली दुबारा वह कुछ करने लगे जो रब को बुरा लगा, और उसने उन्हें सात साल तक मिदियानियों के हवाले कर दिया। 2 मिदियानियों का दबाव इतना ज़्यादा बढ़ गया कि इसराईलियों ने उनसे पनाह लेने के लिए पहाड़ी इलाके में शिगाफ़, गार और गढियाँ बना लीं। 3 क्योंकि जब भी वह अपनी फसलें लगाते तो मिदियानी, अमालीकी और मशरिक के दीगर फौजी उन पर हमला करके 4 मुल्क को घेर लेते और फसलों को गज्जा शहर तक तबाह करते। वह खानेवाली कोई भी चीज़ नहीं छोड़ते थे, न कोई भेड़, न कोई बैल, और न कोई गधा। 5 और जब वह अपने मवेशियों और ख़ैमों के साथ पहुँचते तो टिट्टियों के दलों की मानिंद थे। इतने मर्द और ऊँट थे कि उनको गिना नहीं जा सकता था। यों वह मुल्क पर चढ़ आते थे ताकि उसे तबाह करें। 6 इसराईली मिदियान के सबब से इतने परतहाल हुए कि आखिरकार मदद के लिए रब को पुकारने लगे।

7-8 तब उसने उनमें एक नबी भेज दिया जिसने कहा, "रब इसराईल का खुदा फरमाता है कि मैं ही तुम्हें मिसर की गुलामी से निकाल लाया। 9 मैंने तुम्हें मिसर के हाथ से और उन तमाम ज़ालिमों के हाथ से बचा लिया जो तुम्हें दबा रहे थे। मैं उन्हें



तुम्हारे आगे आगे निकालता गया और उनकी ज़मीन तुम्हें दे दी।<sup>10</sup> उस वक़्त मैंने तुम्हें बताया, 'मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। जिन अमोरियों के मुल्क में तुम रह रहे हो उनके देवताओं का ख़ौफ़ मत मानना। लेकिन तुमने मेरी न सुनी।'।"

### रब जिदौन को बुलाता है

11 एक दिन रब का फ़रिश्ता आया और उफ़रा में बलूत के एक दरख़्त के साये में बैठ गया। यह दरख़्त अबियज़र के खानदान के एक आदमी का था जिसका नाम युआस था। वहाँ अंगूर का रस निकालने का हौज़ था, और उसमें युआस का बेटा जिदौन छुपकर गंदुम झाड़ रहा था, हौज़ में इसलिए कि गंदुम मिदियानियों से महफूज़ रहे।<sup>12</sup> रब का फ़रिश्ता जिदौन पर ज़ाहिर हुआ और कहा, "ए ज़बरदस्त सूरे, रब तेरे साथ है!"

13 जिदौन ने जवाब दिया, "नहीं जनाब, अगर रब हमारे साथ हो तो यह सब कुछ हमारे साथ क्यों हो रहा है? उसके वह तमाम मोज़िजे आज कहाँ नज़र आते हैं जिनके बारे में हमारे बापदादा हमें बताते रहे हैं? क्या वह नहीं कहते थे कि रब हमें मिसर से निकाल लाया? नहीं, जनाब। अब ऐसा नहीं है। अब रब ने हमें तर्क करके मिदियान के हवाले कर दिया है।"

14 रब ने उस की तरफ़ मुड़कर कहा, "अपनी इस ताक़त में जा और इसराईल को मिदियान के हाथ से बचा। मैं ही तुझे भेज रहा हूँ।"

15 लेकिन जिदौन ने एतराज़ किया, "ए रब, मैं इसराईल को किस तरह बचाऊँ? मेरा खानदान मनस्सी के कब्रिले का सबसे कमज़ोर खानदान है, और मैं अपने बाप के घर में सबसे छोटा हूँ।"

16 रब ने जवाब दिया, "मैं तेरे साथ हूँगा, और तू मिदियानियों को यों मारेगा जैसे एक ही आदमी को।"

17 तब जिदौन ने कहा, "अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र हो तो मुझे कोई इलाही निशान दिखा ताकि साबित हो जाए कि वाकई रब ही मेरे साथ बात कर रहा है।"<sup>18</sup> मैं अभी जाकर कुरबानी तैयार करता हूँ और फिर वापस आकर उसे तुझे पेश करूँगा। उस वक़्त तक रवाना न हो जाना।"

रब ने कहा, "ठीक है, मैं तेरी वापसी का इंतज़ार करके ही जाऊँगा।"

19 जिदौन चला गया। उसने बकरी का बच्चा ज़बह करके तैयार किया और पूरे 16 किलोग्राम मैदे से बेखमीरी रोटी बनाई। फिर गोशत को टोकर की में रखकर और उसका शोरबा अलग बरतन में डालकर वह सब कुछ रब के फ़रिश्ते के पास लाया और उसे बलूत के साये में पेश किया।

20 रब के फ़रिश्ते ने कहा, "गोशत और बेखमीरी रोटी को लेकर इस पत्थर पर रख दे, फिर शोरबा उस पर उंडेल दे।" जिदौन ने ऐसा ही किया।<sup>21</sup> रब के फ़रिश्ते के हाथ में लाठी थी। अब उसने लाठी के सिरे से गोशत और बेखमीरी रोटी को छू दिया। अचानक पत्थर से आग भड़क उठी और ख़राक भस्म हो गई। साथ साथ रब का फ़रिश्ता ओझल हो गया।

22 फिर जिदौन को यक़ीन आया कि यह वाकई रब का फ़रिश्ता था, और वह बोल उठा, "हाय रब कादिरे-मुतलक! मुझ पर अफ़सोस, क्योंकि मैंने रब के फ़रिश्ते को रूबरू देखा है।"

23 लेकिन रब उससे हमकलाम हुआ और कहा, "तेरी सलामती हो। मत डर, तू नहीं मरेगा।"

24 वही जिदौन ने रब के लिए कुरबानागाह बनाई और उसका नाम 'रब सलामत है' रखा। यह आज तक अबियज़र के खानदान के शहर उफ़रा में मौजूद है।

### जिदौन बाल की कुरबानागाह गिरा देता है

25 उसी रात रब जिदौन से हमकलाम हुआ, "अपने बाप के बैलों में से दूसरे बैल को जो सात साल का है चुन ले। फिर अपने बाप की वह कुरबानागाह गिरा दे जिस पर बाल देवता को कुरबानियाँ चढ़ाई जाती हैं, और यसीरत देवी का वह खंबा काट डाल जो साथ खड़ा है।"<sup>26</sup> इसके बाद उसी पहाड़ी किले की चोटी पर रब अपने खुदा के लिए सहीह कुरबानागाह बना दे। यसीरत के खंबे की कटी हुई लकड़ी और बैल को उस पर रखकर मुझे भस्म होनेवाली कुरबानी पेश कर।"

27 चुनौचे जिदौन ने अपने दस नौकरों को साथ लेकर वह कुछ किया जिसका हुक्म रब ने उसे दिया था। लेकिन वह अपने खानदान और शहर के लोगों से डरता था, इसलिए उसने यह काम दिन के बजाए रात के वक़्त किया।

28 सुबह के वक़्त जब शहर के लोग उठे तो देखा कि बाल की कुरबानागाह ढा दी गई है और यसीरत देवी का साथवाला खंबा काट दिया गया है। इनकी जगह एक नई कुरबानागाह बनाई गई है जिस पर बैल को चढ़ाया गया है।<sup>29</sup> उन्होंने एक दूसरे से पूछा, "किसने यह किया?" जब वह इस बात की तफ़तीश करने लगे तो किसी ने उन्हें बताया कि जिदौन बिन युआस ने यह सब कुछ किया है।

30 तब वह युआस के घर गए और तकाज़ा किया, "अपने बेटे को घर से निकाल लाएँ। लाज़िम है कि वह मर जाए, क्योंकि उसने बाल की कुरबानागाह को गिराकर साथवाला यसीरत देवी का खंबा भी काट डाला है।"

31 लेकिन युआस ने उनसे जो उसके सामने खड़े थे कहा, “क्या आप बाल के दिफा में लडना चाहते हैं? जो भी बाल के लिए लडेगा उसे कल सुबह तक मार दिया जाएगा। अगर बाल वाकई खुदा है तो वह खुद अपने दिफा में लडे जब कोई उस की कुरबानागाह को ढा दे।”

32 चूँकि जिदौन ने बाल की कुरबानागाह गिरा दी थी इसलिए उसका नाम यरूबाल यानी ‘बाल उससे लडे’ पड गया।

जिदौन अल्लाह से निशान माँगता है

33 कुछ देर के बाद तमाम मिदियानी, अमालीकी और दूसरी मशरिकी कौमों जमा हुई और दरियाए-यरदन को पार करके अपने डेरें मैदाने-यज़्रएल में लगाए। 34 फिर रब का रूह जिदौन पर नाज़िल हुआ। उसने नरसिंगा फूँककर अबियज़र के खानदान के मर्दों को अपने पीछे हो लेने के लिए बुलाया। 35 साथ साथ उसने अपने क्रासिदों को मनस्सी के कबीलों और आशर, जबलून और नफ़ताली के कबीलों के पास भी भेज दिया। तब वह भी आए और जिदौन के मर्दों के साथ मिलकर उसके पीछे हो लिए।

36 जिदौन ने अल्लाह से दुआ की, “अगर तू वाकई इसराईल को अपने वादे के मुताबिक मेरे ज़रीए बचाना चाहता है 37 तो मुझे यक्रीन दिला। मैं रात को ताज़ा कतरी हुई ऊन गंदुम गाहने के फ़र्श पर रख दूँगा। कल सुबह अगर सिर्फ़ ऊन पर ओस पडी हो और इर्दगिर्द का सारा फ़र्श ख़ुरक हो तो मैं जान लूँगा कि वाकई तू अपने वादे के मुताबिक इसराईल को मेरे ज़रीए बचाएगा।”

38 वही कुछ हुआ जिसकी दरखास्त जिदौन ने की थी। अगले दिन जब वह सुबह-सवैरे उठा तो ऊन ओस से तर थी। जब उसने उसे निचोड़ा तो इतना पानी था कि बरतन भर गया।

39 फिर जिदौन ने अल्लाह से कहा, “मुझसे गुस्से न हो जाना अगर मैं तुझसे एक बार फिर दरखास्त करूँ। मुझे एक आखिरी दफा ऊन के ज़रीए तेरी मरज़ी जाँचने की इजाज़त दे। इस दफा ऊन ख़ुरक रहे और इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पडी हो।” 40 उस रात अल्लाह ने ऐसा ही किया। सिर्फ़ ऊन ख़ुरक रही जबकि इर्दगिर्द के सारे फ़र्श पर ओस पडी थी।

## 7

अल्लाह जिदौन के साथियों को चुन लेता है

1 सुबह-सवैरे यरूबाल यानी जिदौन अपने तमाम लोगों को साथ लेकर हरोद चरमे के पास आया। वहाँ उन्होंने अपने डेरें लगाए। मिदियानियों ने अपनी ख़ैमागाह उनके शिमाल में मोरिह पहाड़ के दामन में लगाई हुई थी।

2 रब ने जिदौन से कहा, “तेरे पास ज्यादा लोग हैं! मैं इस किस्म के बड़े लशकर को मिदियानियों पर फ़तह नहीं दूँगा, वरना इसराईली मेरे सामने डींगें मारकर कहेंगे, ‘हमने अपनी ही ताकत से अपने आपको बचाया है!’” 3 इसलिए लशकरगाह में एलान कर कि जो डर के मोरे परेशान हो वह अपने घर वापस चला जाए।” जिदौन ने यों किया तो 22,000 मर्द वापस चले गए जबकि 10,000 जिदौन के पास रहे।

4 लेकिन रब ने दुबारा जिदौन से बात की, “अभी तक ज्यादा लोग हैं! इनके साथ उतरकर चरमे के पास जा। वहाँ मैं उन्हें जाँचकर उनको मुकर्रर करूँगा जिन्हें तेरे साथ जाना है।” 5 चुनौचे जिदौन अपने आदमियों के साथ चरमे के पास उतर आया। रब ने उसे हुक्म दिया, “जो भी अपना हाथ पानी से भरकर उसे कुत्ते की तरह चाट ले उसे एक तरफ़ खड़ा कर। दूसरी तरफ़ उन्हें खड़ा कर जो घुटने टेककर पानी पीते हैं।” 6 300 आदमियों ने अपना हाथ पानी से भरकर उसे चाट लिया जबकि बाकी सब पीने के लिए झुक गए।

7 फिर रब ने जिदौन से फ़रमाया, “मैं इन 300 चाटनेवाले आदमियों के ज़रीए इसराईल को बचाकर मिदियानियों को तेरे हवाले कर दूँगा। बाकी तमाम मर्दों को फ़ारिग कर। वह सब अपने अपने घर वापस चले जाएँ।” 8 चुनौचे जिदौन ने बाकी तमाम आदमियों को फ़ारिग कर दिया। सिर्फ़ मुकर्ररा 300 मर्द रह गए। अब यह दूसरों की ख़ुराक और नरसिंगे अपने पास रखकर जंग के लिए तैयार हुए। उस वक़्त मिदियानी ख़ैमागाह इसराईलियों के नीचे वादी में थी।

मिदियानियों पर जिदौन की फ़तह

9 जब रात हुई तो रब जिदौन से हमकलाम हुआ, “उठ, मिदियानी ख़ैमागाह के पास उतरकर उस पर हमला कर, क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में दे दूँगा। 10 लेकिन अगर तू इससे डरता है तो पहले अपने नौकर फ़ूराह के साथ उतरकर 11 वह बातें सुन ले जो वहाँ के लोग कह रहे हैं। तब उन पर हमला करने की ज़रूरत बढ जाएगी।”

जिदौन फ़ूराह के साथ ख़ैमागाह के किनारे के पास उतर आया। 12 मिदियानी, अमालीकी और मशरिक के दीगर फ़ौज़ी टिड्डियों के दल की तरह वादी में फैले हुए थे। उनके ऊँट साहिल की रेत की तरह बेशुमार थे। 13 जिदौन दबे पाँव दुश्मन के

इतने करीब पहुँच गया कि उनकी बातें सुन सकता था। ऐन उस वक्त एक फौजी दूसरे को अपना ख़ाब सुना रहा था, “मैंने ख़ाब में देखा कि जो की बड़ी रोटी लुढ़कती लुढ़कती हमारी ख़ैमागाह में उतर आई। यहाँ वह इतनी शिद्दत से ख़ैमे से टकरा गई कि ख़ैमा उलटकर ज़मीनबोस हो गया।” 14 दूसरे ने जवाब दिया, “इसका सिर्फ़ यह मतलब हो सकता है कि इसराईली मर्द जिदौन बिन युआस की तलवार ग़ालिब आएगी! अल्लाह उसे मिदियानियों और पूरी लश्करगाह पर फ़तह देगा।”

15 ख़ाब और उस की ताबीर सुनकर जिदौन ने अल्लाह को सिजदा किया। फिर उसने इसराईली ख़ैमागाह में वापस आकर एलान किया, “उठें! रब ने मिदियानी लश्करगाह को तुम्हारे हवाले कर दिया है।” 16 उसने अपने 300 मर्दों को सौ सौ के तीन गुरोहों में तकसीम करके हर एक को एक नरसिगा और एक घड़ा दे दिया। हर घड़े में मशाल थी। 17-18 उसने हुक़्म दिया, “जो कुछ मैं करूँगा उस पर गौर करके वही कुछ करे। पूरी ख़ैमागाह को घेर लें और ऐन वही कुछ करे जो मैं करूँगा। जब मैं अपने सौ लोगों के साथ ख़ैमागाह के किनारे पहुँचूँगा तो हम अपने नरसिगों को बजा देंगे। यह सुनते ही आप भी यही कुछ करें और साथ साथ नारा लगाएँ, ‘रब के लिए और जिदौन के लिए!’”

19 तकरीबन आधी रात को जिदौन अपने सौ मर्दों के साथ मिदियानी ख़ैमागाह के किनारे पहुँच गया। थोड़ी देर पहले पहेदारा बदल गए थे। अचानक इसराईलियों ने अपने नरसिगों को बजाया और अपने घड़ों को टुकड़े टुकड़े कर दिया। 20 फ़ौरन सौ सौ के दूसरे दो गुरोहों ने भी ऐसा ही किया। अपने दहने हाथ में नरसिगा और बाएँ हाथ में भड़कती मशाल पकड़कर वह नारा लगाते रहे, “रब के लिए और जिदौन के लिए!” 21 लेकिन वह ख़ैमागाह में दाख़िल न हुए बल्कि वही उसके इर्दगिर्द खड़े रहे। दुश्मन में बड़ी अफ़रा-तफ़री मच गई। चीखते-चिल्लाते सब भाग जाने की कोशिश करने लगे। 22 जिदौन के 300 आदमी अपने नरसिगे बजाते रहे जबकि रब ने ख़ैमागाह में ऐसी गड़बड़ पैदा की कि लोग एक दूसरे से लड़ने लगे। आख़िरकार पूरा लश्कर बैत-सिता, सरीरात और अबील-महला की सरहद तक फ़रार हुआ जो तब्बात के करीब है।

23 फिर जिदौन ने नफ़ताली, आशर और पूरे मनस्सी के मर्दों को बुला लिया, और उन्होंने मिलकर मिदियानियों का ताक्कुब किया। 24 उसने अपने कासिदों के ज़रीए इफ़राईम के पूरे पहाड़ी इलाके के बाशिंदों को भी पैगाम भेज दिया, “उतर आएँ और मिदियानियों को भाग जाने से रोके! बैत-बारा तक उन तमाम जगहों पर कब्ज़ा कर लें जहाँ दुश्मन दरियाए-यरदन को पा-प्यादा पार कर सकता है।”

इफ़राईमी मान गए, 25 और उन्होंने दो मिदियानी सरदारों को पकड़कर उनके सर कलम कर दिए। सरदारों के नाम औरेब और ज़एब थे, और जहाँ उन्हें पकड़ा गया उन जगहों के नाम ‘औरेब की चटान’ और ‘ज़एब का अंगूर का रस निकालनेवाला हौज़’ पड़ गया। इसके बाद वह दुबारा मिदियानियों का ताक्कुब करने लगे। दरियाए-यरदन को पार करने पर उनकी मुलाकात जिदौन से हुई, और उन्होंने दोनों सरदारों के सर उसके सुपर्द कर दिए।

## 8

### इफ़राईम नाराज़ हो जाता है

1 लेकिन इफ़राईम के मर्दों ने शिकायत की, “आपने हमसे कैसा सुल्क किया? आपने हमें क्यों नहीं बुलाया जब मिदियान से लड़ने गए?” ऐसी बातें करते करते उन्होंने जिदौन के साथ सख़्त बहस की। 2 लेकिन जिदौन ने जवाब दिया, “क्या आप मुझसे कहीं ज़्यादा कामयाब न हुए? और जो अंगूर फ़सल जमा करने के बाद इफ़राईम के बाग़ों में रह जाते हैं क्या वह मेरे छोटे खानदान अबियज़र की पूरी फ़सल से ज़्यादा नहीं होते? 3 अल्लाह ने तो मिदियान के सरदारों औरेब और ज़एब को आपके हवाले कर दिया। इसकी निसबत मुझसे क्या कामयाबी हासिल हुई है?” यह सुनकर इफ़राईम के मर्दों का गुस्सा ठंडा हो गया।

### सुक्कात और फ़नुएल जिदौन की मदद नहीं करते

4 जिदौन अपने 300 मर्दों समेत दरियाए-यरदन को पार कर चुका था। दुश्मन का ताक्कुब करते करते वह थक गए थे। 5 इसलिए जिदौन ने करीब के शहर सुक्कात के बाशिंदों से गुज़ारिश की, “मेरे फ़ौजियों को कुछ रोटी दे दें। वह थक गए हैं, क्योंकि हम मिदियानी सरदार जिबह और ज़लमुन्ना का ताक्कुब कर रहे हैं।” 6 लेकिन सुक्कात के बुजुर्गों ने जवाब दिया, “हम आपके फ़ौजियों को रोटी क्यों दें? क्या आप जिबह और ज़लमुन्ना को पकड़ चुके हैं कि हम ऐसा करें?” 7 यह सुनकर जिदौन ने कहा, “ज्योंही रब इन दो सरदारों जिबह और ज़लमुन्ना को मेरे हाथ में कर देगा मैं तुमको रेगिस्तान की कौटैदर झाड़ियों और ऊँटकारों से गाहकर तबाह कर दूँगा।”

8 वह आगे निकलकर फ़नुएल शहर पहुँच गया। वहाँ भी उसने रोटी माँगी, लेकिन फ़नुएल के बाशिंदों ने सुक्कात का-सा जवाब दिया। 9 यह सुनकर उसने कहा, “जब मैं सलामती से वापस आऊँगा तो तुम्हारा यह बुर्ज़ गिरा दूँगा!”

### मिदियानियों पर पूरी फतह

10 अब जिबह और जलमुन्ना करकूर पहुँच गए थे। 15,000 अफ़राद उनके साथ रह गए थे, क्योंकि मशरिकी इतहादियों के 1,20,000 तलवारों से लैस फ़ौजी हलाक हो गए थे। 11 जिदौन ने मिदियानियों के पीछे चलते हुए खानाबदोशों का वह रास्ता इस्तेमाल किया जो नूबह और युगबहा के मशरिक में हैं। इस तरीके से उसने उनकी लशकरगाह पर उस वक्त हमला किया जब वह अपने आपको महफूज़ समझ रहे थे। 12 दुश्मन में अफ़रा-तफ़री पैदा हुई और जिबह और जलमुन्ना फ़रा हो गए। लेकिन जिदौन ने उनका ताक़तुब करते करते उन्हें पकड़ लिया।

13 इसके बाद जिदौन लौटा। वह अभी हरिस के दर्रा से उतर रहा था 14 कि सुक्कात के एक जवान आदमी से मिला। जिदौन ने उसे पकड़कर मजबूर किया कि वह शहर के राहनुमाओं और बुजुर्गों की फ़हरिस्त लिखकर दे। 77 बुजुर्ग थे। 15 जिदौन उनके पास गया और कहा, “देखो, यह हैं जिबह और जलमुन्ना! तुमने इन्हीं की वजह से मेरा मज़ाक उड़ाकर कहा था कि हम आपके थकेहारे फ़ौजियों को रोटी क्यों दें? क्या आप जिबह और जलमुन्ना को पकड़ चुके हैं कि हम ऐसा करें?” 16 फिर जिदौन ने शहर के बुजुर्गों को गिरिफ़्तार करके उन्हें कँटिदार झाड़ियों और ऊँटकारों से गाहकर सबक सिखाया। 17 फिर वह फ़नुएल गया और वहाँ का बुजुं गिराकर शहर के मर्दों को मार डाला।

18 इसके बाद जिदौन जिबह और जलमुन्ना से मुखातिब हुआ। उसने पूछा, “उन आदमियों का हलिया कैसा था जिन्हें तुमने तबूर पहाड़ पर क़त्ल किया?”

उन्होंने जवाब दिया, “वह आप जैसे थे, हर एक शहज़ादा लग रहा था।”

19 जिदौन बोला, “वह मेरे सगे भाई थे। रब की हयात की क़सम, अगर तुम उनको ज़िंदा छोड़ते तो मैं तुम्हें हलाक न करता।”

20 फिर वह अपने पहलौंटे यतर से मुखातिब होकर बोला, “इनको मार डालो!” लेकिन यतर अपनी तलवार मियान से निकालने से झिजका, क्योंकि वह अभी बच्चा था और डरता था। 21 तब जिबह और जलमुन्ना ने कहा, “आप ही हमें मार दें! क्योंकि जैसा आदमी वैसी उस की ताक़त!” जिदौन ने खड़े होकर उन्हें तलवार से मार डाला और उनके ऊँटों की गर्दनों पर लगे तावीज़ उतारकर अपने पास रखे।

### जिदौन के सबब से इसराईल बुतपरस्ती में उलझ जाता है

22 इसराईलियों ने जिदौन के पास आकर कहा, “आपने हमें मिदियानियों से बचा लिया है, इसलिए हम पर हुक्मत करें, आप, आपके बाद आपका बेटा और उसके बाद आपका पोता।”

23 लेकिन जिदौन ने जवाब दिया, “न मैं आप पर हुक्मत करूँगा, न मेरा बेटा। रब ही आप पर हुक्मत करेगा। 24 मेरी सिर्फ़ एक गुज़ारिश है। हर एक मुझे अपने लुटे हुए माल में से एक एक बाली दे दे।” बात यह थी कि दुश्मन के तमाम अफ़राद ने सोने की बालियों पहन रखी थी, क्योंकि वह इसमाईली थे।

25 इसराईलियों ने कहा, “हम ख़ुशी से बाली देंगे।” एक चादर ज़मीन पर बिछाकर हर एक ने एक एक बाली उस पर फेंक दी। 26 सोने की इन बालियों का वज़न तकरीबन 20 किलोग्राम था। इसके अलावा इसराईलियों ने मुख़्तलिफ़ तावीज़, कान के आवेजे, अरगवानी रंग के शाही लिबास और ऊँटों की गर्दनों में लगी कीमती जंजीर भी दे दी।

27 इस सोने से जिदौन ने एक अफ़ोद \* बनाकर उसे अपने आबाई शहर उफ़रा में खड़ा किया जहाँ वह उसके और तमाम खानदान के लिए फ़ंदा बन गया। न सिर्फ़ यह बल्कि पूरा इसराईल जिना करके बुत की पूजा करने लगा।

28 उस वक्त मिदियान ने ऐसी शिकस्त खाई कि बाद में इसराईल के लिए ख़तरे का बाइस न रहा। और जितनी देर जिदौन ज़िंदा रहा यानी 40 साल तक मुल्क में अमनो-अमान कायम रहा।

29 जंग के बाद जिदौन बिन युआस द्वारा उफ़रा में रहने लगा। 30 उस की बहुत-सी बीवियाँ और 70 बेटे थे। 31 उस की एक दाशता भी थी जो सिकम शहर में रिहाइशपज़ीर थी और जिसके एक बेटा पैदा हुआ। जिदौन ने बेटे का नाम अभीमालिक रखा। 32 जिदौन उम्रसीदा था जब फ़ौत हुआ। उसे अबियज़रियों के शहर उफ़रा में उसके बाप युआस की क़ब्र में दफ़नाया गया।

33 जिदौन के मरते ही इसराईली द्वारा जिना करके बाल के बुतों की पूजा करने लगे। वह बाल-बरीत को अपना ख़ास देवता बनाकर 34 रब अपने ख़ुदा को भूल गए जिसने उन्हें इर्दगिर्द के दुश्मनों से बचा लिया था। 35 उन्होंने यरूबाल यानी जिदौन के खानदान को भी उस एहसान के लिए कोई मेहरबानी न दिखाई जो जिदौन ने उन पर किया था।

\* 8:27 आम तौर पर इसरानी में अफ़ोद का मतलब इगामे-आज़म का बालापोश था (देखिए ख़ुर्बज 28:4), लेकिन यहाँ इससे मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

## 9

अबीमलिक बादशाह बन जाता है

1 एक दिन यरूबाल यानी जिदौन का बेटा अबीमलिक अपने मामुओ और माँ के बाकी रिश्तेदारों से मिलने के लिए सिकम गया। उसने उनसे कहा, 2 “सिकम शहर के तमाम बाशिंदों से पूछें, क्या आप अपने आप पर जिदौन के 70 बेटों की हुकमत ज्यादा पसंद करेंगे या एक ही शख्स की? याद रहे कि मैं आपका खूनी रिश्तेदार हूँ!” 3 अबीमलिक के मामुओ ने सिकम के तमाम बाशिंदों के सामने यह बातें दोहराईं। सिकम के लोगों ने सोचा, “अबीमलिक हमारा भाई है” इसलिए वह उसके पीछे लग गए। 4 उन्होंने उसे बाल-बरीत देवता के मंदिर से चोंदी के 70 सिक्के भी दे दिए।

इन पैसों से अबीमलिक ने अपने इर्दगिर्द आवारा और बदमाश आदमियों का गुरोह जमा किया। 5 उन्हें अपने साथ लेकर वह उफरा पहुँचा जहाँ बाप का खानदान रहता था। वहाँ उसने अपने तमाम भाइयों यानी जिदौन के 70 बेटों को एक ही पत्थर पर कत्ल कर दिया। सिर्फ यूताम जो जिदौन का सबसे छोटा बेटा था कहीं छुपकर बच निकला। 6 इसके बाद सिकम और बैत-मिल्लो के तमाम लोग उस बलूत के साये में जमा हुए जो सिकम के सतून के पास था। वहाँ उन्होंने अबीमलिक को अपना बादशाह मुकर्रर किया।

यूताम की अबीमलिक और सिकम पर लानत

7 जब यूताम को इसकी इतला मिली तो वह गरिजीम पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया और ऊँची आवाज़ से चिल्लाया, “ऐ सिकम के बाशिंदो, सुनें मेरी बात! सुनें अगर आप चाहते हैं कि अल्लाह आपकी भी सुने। 8 एक दिन दरख्तों ने फ़ैसला किया कि हम पर कोई बादशाह होना चाहिए। वह उसे चुनने और मसह करने के लिए निकले। पहले उन्होंने जैतून के दरख्त से बात की, ‘हमारे बादशाह बन जाएँ!’ 9 लेकिन जैतून के दरख्त ने जवाब दिया, ‘क्या मैं अपना तेल पैदा करने से बाज़ आऊँ जिसकी अल्लाह और इनसान इतनी कदर करते हैं ताकि दरख्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!’ 10 इसके बाद दरख्तों ने अंजीर के दरख्त से बात की, ‘आएँ, हमारे बादशाह बन जाएँ!’ 11 लेकिन अंजीर के दरख्त ने जवाब दिया, ‘क्या मैं अपना मीठा और अच्छा फल लाने से बाज़ आऊँ ताकि दरख्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!’ 12 फिर दरख्तों ने अंगूर की बेल से बात की, ‘आएँ, हमारे बादशाह बन जाएँ!’ 13 लेकिन अंगूर की बेल ने जवाब दिया, ‘क्या मैं अपना रस पैदा करने से बाज़ आऊँ जिससे अल्लाह और इनसान खुश हो जाते हैं ताकि दरख्तों पर हुकूमत करूँ? हरगिज़ नहीं!’ 14 आखिरकार दरख्त कौटिदार झाड़ी के पास आए और कहा, ‘आएँ और हमारे बादशाह बन जाएँ!’ 15 कौटिदार झाड़ी ने जवाब दिया, ‘अगर तुम वाकई मुझे मसह करके अपना बादशाह बनाना चाहते हो तो आओ और मेरे साये में पनाह लो। अगर तुम ऐसा नहीं करना चाहते तो झाड़ी से आग निकलकर लुबनान के देवदार के दरख्तों को भस्म कर दे!’”

16 यूताम ने बात जारी रखकर कहा, “अब मुझे बताएँ, क्या आपने वफादारी और सच्चाई का इज़हार किया जब आपने अबीमलिक को अपना बादशाह बना लिया? क्या आपने जिदौन और उसके खानदान के साथ अच्छा सुलूक किया? क्या आपने उस पर शूक्रगुजारी का वह इज़हार किया जिसके लायक वह था? 17 मेरे बाप ने आपकी खातिर जंग की। आपको मिदियानियों से बचाने के लिए उसने अपनी जान खतरे में डाल दी। 18 लेकिन आज आप जिदौन के घराने के खिलाफ उठ खड़े हुए हैं। आपने उसके 70 बेटों को एक ही पत्थर पर ज़बह करके उस की लौड़ी के बेटे अबीमलिक को सिकम का बादशाह बना लिया है, और यह सिर्फ इसलिए कि वह आपका रिश्तेदार है। 19 अब सुनें! अगर आपने जिदौन और उसके खानदान के साथ वफादारी और सच्चाई का इज़हार किया है तो फिर अल्लाह करे कि अबीमलिक आपके लिए खुशी का बाइस हो और आप उसके लिए। 20 लेकिन अगर ऐसा नहीं था तो अल्लाह करे कि अबीमलिक से आग निकलकर आप सबको भस्म कर दे जो सिकम और बैत-मिल्लो में रहते हैं! और आग आपसे निकलकर अबीमलिक को भी भस्म कर दे!” 21 यह कहकर यूताम ने भागकर बैर में पनाह ली, क्योंकि वह अपने भाई अबीमलिक से डरता था।

सिकम के बाशिंदे अबीमलिक के खिलाफ हो जाते हैं

22 अबीमलिक की इसराईल पर हुकूमत तीन साल तक रही। 23 लेकिन फिर अल्लाह ने एक बुरी रूह भेज दी जिसने अबीमलिक और सिकम के बाशिंदों में नाइतफाकी पैदा कर दी। नतीजे में सिकम के लोगों ने बगावत की। 24 यों अल्लाह ने उसे इसकी सज़ा दी कि उसने अपने भाइयों यानी जिदौन के 70 बेटों को कत्ल किया था। सिकम के बाशिंदों को भी सज़ा मिली, क्योंकि उन्होंने इसमें अबीमलिक की मदद की थी।

25 उस वक्त सिकम के लोग इर्दगिर्द की चोटियों पर चढ़कर अबीमलिक की ताक में बैठ गए। जो भी वहाँ से गुजरा उसे उन्होंने लूट लिया। इस बात की खबर अबीमलिक तक पहुँच गई।

26 उन दिनों में एक आदमी अपने भाइयों के साथ सिकम आया जिसका नाम जाल बिन अबद था। सिकम के लोगों से उसका अच्छा-खासा ताल्लुक बन गया, और वह उस पर एतबार करने लगे। 27 अंगूर की फ़सल पक गई थी। लोग शहर

से निकले और अपने बागों में अंगूर तोड़कर उनसे रस निकालने लगे। फिर उन्होंने अपने देवता के मंदिर में जशन मनाया। जब वह खूब खा-पी रहे थे तो अबीमलिक पर लानत करने लगे।<sup>28</sup> जाल बिन अबद ने कहा, “सिकम का अबीमलिक के साथ क्या वास्ता कि हम उसके ताबे रहें? वह तो सिर्फ यरूबाल का बेटा है, जिसका नुमाइंदा ज़बूल है। उस की खिदमत मत करना बल्कि सिकम के बानी हमोर के लोगों की! हम अबीमलिक की खिदमत क्यों करें? <sup>29</sup> काश शहर का इंतजाम मेरे हाथ में होता! फिर मैं अबीमलिक को जल्द ही निकाल देता। मैं उसे चैलेंज देता कि आओ, अपने फौजियों को जमा करके हमसे लड़ो!”

### अबीमलिक सिकम से लड़ता है

<sup>30</sup> जाल बिन अबद की बात सुनकर सिकम का सरदार ज़बूल बड़े गुस्से में आ गया। <sup>31</sup> अपने कासिदों की मारिफत उसने अबीमलिक को चुपके से इतला दी, “जाल बिन अबद अपने भाइयों के साथ सिकम आ गया है जहाँ वह पूरे शहर को आपके खिलाफ़ खड़े हो जाने के लिए उकसा रहा है। <sup>32</sup> अब ऐसा करें कि रात के वक़्त अपने फौजियों समेत इधर आएँ और खेतों में ताक में रहें। <sup>33</sup> सुबह-सबैरे जब सूरज तूलू होगा तो शहर पर हमला करें। जब जाल अपने आदमियों के साथ आपके खिलाफ़ लड़ने आएगा तो उसके साथ वह कुछ करें जो आप मुनासिब समझते हैं।” <sup>34</sup> यह सुनकर अबीमलिक रात के वक़्त अपने फौजियों समेत रवाना हुआ। उसने उन्हें चार गुरोहों में तकसीम किया जो सिकम को घेरकर ताक में बैठ गए।

<sup>35</sup> सुबह के वक़्त जब जाल घर से निकलकर शहर के दरवाज़े में खड़ा हुआ तो अबीमलिक और उसके फौजी अपनी छुपने की जगहों से निकल आए। <sup>36</sup> उन्हें देखकर जाल ने ज़बूल से कहा, “देखो, लोग पहाड़ों की चोटियों से उतर रहे हैं!” ज़बूल ने जवाब दिया, “नहीं, नहीं, जो आपको आदमी लग रहे हैं वह सिर्फ़ पहाड़ों के साये हैं।” <sup>37</sup> लेकिन जाल को तसल्ली न हुई। वह दुबारा बोल उठा, “देखो, लोग दुनिया की नाफ़ \* से उतर रहे हैं। और एक और गुरोह रम्मालों के बलूत से होकर आ रहा है।” <sup>38</sup> फिर ज़बूल ने उससे कहा, “अब तेरी बड़ी बड़ी बातें कहाँ रहीं? क्या तूने नहीं कहा था, ‘अबीमलिक कौन है कि हम उसके ताबे रहें?’ अब यह लोग आ गए हैं जिनका मज़ाक़ तूने उड़ाया। जा, शहर से निकलकर उनसे लड़!”

<sup>39</sup> तब जाल सिकम के मर्दों के साथ शहर से निकला और अबीमलिक से लड़ने लगा। <sup>40</sup> लेकिन वह हार गया, और अबीमलिक ने शहर के दरवाज़े तक उसका ताक़ुक़ब किया। भागते भागते सिकम के बहुत-से अफ़राद रास्ते में गिरकर हलाक़ हो गए। <sup>41</sup> फिर अबीमलिक अरूमा चला गया जबकि ज़बूल ने पीछे रहकर जाल और उसके भाइयों को शहर से निकाल दिया।

<sup>42</sup> अगले दिन सिकम के लोग शहर से निकलकर मैदान में आना चाहते थे। जब अबीमलिक को यह खबर मिली <sup>43-44</sup> तो उसने अपनी फौज को तीन गुरोहों में तकसीम किया। यह गुरोह दुबारा सिकम को घेरकर घात में बैठ गए। जब लोग शहर से निकले तो अबीमलिक अपने गुरोह के साथ छुपने की जगह से निकल आया और शहर के दरवाज़े में खड़ा हो गया। बाकी दो गुरोह मैदान में मौजूद अफ़राद पर टूट पड़े और सबको हलाक़ कर दिया। <sup>45</sup> फिर अबीमलिक ने शहर पर हमला किया। लोग पूरा दिन लड़ते रहे, लेकिन आखिरकार अबीमलिक ने शहर पर कब्ज़ा करके तमाम बाशिंदों को मौत के घाट उतार दिया। उसने शहर को तबाह किया और खंडरात पर नमक बिखेरकर उस की हतमी तबाही जाहिर कर दी।

<sup>46</sup> जब सिकम के बुर्ज के रहनेवालों को यह इतला मिली तो वह एल-बरीत देवता के मंदिर के तहखाने में छुप गए। <sup>47</sup> जब अबीमलिक को पता चला <sup>48</sup> तो वह अपने फौजियों समेत ज़लमोन पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उसने कुल्हाड़ी से शाख़ काटकर अपने कंधों पर रख ली और अपने फौजियों को हुक़म दिया, “जल्दी करो! सब ऐसा ही करो।” <sup>49</sup> फौजियों ने भी शाख़े काटीं और फिर अबीमलिक के पीछे लगकर मंदिर के पास वापस आए। वहाँ उन्होंने तमाम लकड़ड़ी तहखाने की छत पर जमा करके उसे जला दिया। यों सिकम के बुर्ज के तकरीबन 1,000 मर्दों-खवातीन सब भस्म हो गए।

### अबीमलिक की मौत

<sup>50</sup> वहाँ से अबीमलिक तैबिज़ के खिलाफ़ बढ़ गया। उसने शहर का मुहासरा करके उस पर कब्ज़ा कर लिया। <sup>51</sup> लेकिन शहर के बीच में एक मज़बूत बुर्ज था। तमाम मर्दों-खवातीन उसमें फ़रार हुए और बुर्ज के दरवाज़ों पर कुंडी लगाकर छत पर चढ़ गए।

<sup>52</sup> अबीमलिक लड़ते लड़ते बुर्ज के दरवाज़े के करीब पहुँच गया। वह उसे जलाने की कोशिश करने लगा <sup>53</sup> तो एक औरत ने चक्की का ऊपर का पाट उसके सर पर फेंक दिया, और उस की खोपड़ी फट गई। <sup>54</sup> जल्दी से अबीमलिक ने अपने सिलाहबरदार को बुलाया। उसने कहा, “अपनी तलवार खींचकर मुझे मार दो! वरना लोग कहेंगे कि एक औरत ने मुझे मार डाला।” चुनौचे नौजवान ने अपनी तलवार उसके बदन में से गुज़ार दी और वह मर गया। <sup>55</sup> जब फौजियों ने देखा कि अबीमलिक मर गया है तो वह अपने अपने घर चले गए।

\* 9:37 मत्तलब गालिन कोहे-गरिजीम है।

56 यों अल्लाह ने अबीमलिक को उस बंदी का बदला दिया जो उसने अपने 70 भाइयों को कत्ल करके अपने बाप के खिलाफ की थी। 57 और अल्लाह ने सिकम के बाशिंदों को भी उनकी शरीर हरकतों की मुनासिब सजा दी। यूताम बिन यरूबाल की लानत पूरी हुई।

## 10

तोला और याईर

1 अबीमलिक की मौत के बाद तोला बिन फुव्वा बिन दोदो इसराईल को बचाने के लिए उठा। वह इशकार के कबीले से था और इफराईम के पहाड़ी इलाके के शहर समीर में रिहाइशपजीर था। 2 तोला 23 साल इसराईल का काजी रहा। फिर वह फ़ौत हुआ और समीर में दफनाया गया।

3 उसके बाद जिलियाद का रहनेवाला याईर काजी बन गया। उसने 22 साल इसराईल की राहनुमाई की। 4 याईर के 30 बेटे थे। हर बेटे का एक एक गधा और जिलियाद में एक एक आबादी थी। आज तक इनका नाम 'हव्वोत-याईर' यानी याईर की बस्तियाँ हैं। 5 जब याईर इंतकाल कर गया तो उसे कामोन में दफनाया गया।

इसराईल दुबारा रब से दूर हो जाता है

6 याईर की मौत के बाद इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगी। वह कई देवताओं के पीछे लग गए जिनमें बाल देवता, अस्तारात देवी और शाम, सैदा, मोआब, अम्मोनियों और फिलिस्तिनों के देवता शामिल थे। यों वह रब की परस्तिश और खिदमत करने से बाज़ आए। 7 तब उसका गजब उन पर नाजिल हुआ, और उसने उन्हें फिलिस्तिनों और अम्मोनियों के हवाले कर दिया। 8 उसी साल के दौरान इन कौमों ने जिलियाद में इसराईलियों के उस इलाके पर कब्जा किया जिसमें पुराने ज़माने में अमोरी आबाद थे और जो दरियाए-यरदन के मशरिक में था। फिलिस्ती और अम्मोनी 18 साल तक इसराईलियों को कुचलते और दबाते रहे। 9 न सिर्फ यह बल्कि अम्मोनियों ने दरियाए-यरदन को पार करके यहदाह, बिनयमीन और इफराईम के कबीलों पर भी हमला किया।

जब इसराईली बड़ी मुसीबत में थे 10 तो आखिरकार उन्होंने मदद के लिए रब को पुकारा और इकरार किया, "हमने तेरा गुनाह किया है। अपने खुदा को तर्क करके हमने बाल के बुतों की पूजा की है।" 11 रब ने जवाब में कहा, "जब मिसरी, अमोरी, अम्मोनी, फिलिस्ती, 12 सैदानी, अमालीकी और माओनी तुम पर ज़ुल्म करते थे और तुम मदद के लिए मुझे पुकारने लगे तो क्या मैंने तुम्हें न बचाया? 13 इसके बावजूद तुम बार बार मुझे तर्क करके दीगर माबूदों की पूजा करते रहे हो। इसलिए अब से मैं तुम्हारी मदद नहीं करूँगा। 14 जाओ, उन देवताओं के सामने चीखते-चिल्लाते रहो जिन्हें तुमने चुन लिया है! वही तुम्हें मुसीबत से निकालें।"

15 लेकिन इसराईलियों ने रब से फ़रियाद की, "हमसे गलती हुई है। जो कुछ भी तू मुनासिब समझता है वह हमारे साथ कर। लेकिन तू ही हमें आज बचा।" 16 वह अजनबी माबूदों को अपने बीच में से निकालकर रब की दुबारा खिदमत करने लगे। तब वह इसराईल का दुख बरदाशत न कर सका।

इफ़ताह काजी बन जाता है

17 उन दिनों में अम्मोनी अपने फ़ौजियों को जमा करके जिलियाद में खैमाज़न हुए। जवाब में इसराईली भी जमा हुए और मिसफाह में अपने खैमे लगाए। 18 जिलियाद के राहनुमाओं ने एलान किया, "हमें ऐसे आदमी की ज़रूरत है जो हमारे आगे चलकर अम्मोनियों पर हमला करे। जो कोई ऐसा करे वह जिलियाद के तमाम बाशिंदों का सरदार बनेगा।"

## 11

1 उस वक्त जिलियाद में एक जबरदस्त सुरमा बनाम इफ़ताह था। बाप का नाम जिलियाद था जबकि माँ कसबी थी। 2 लेकिन बाप की बीबी के बेटे भी थे। जब बालिग हुए तो उन्होंने इफ़ताह से कहा, "हम मीरास तेरे साथ नहीं बाँटेंगे, क्योंकि तू हमारा सगा भाई नहीं है।" उन्होंने उसे भगा दिया, 3 और वह वहाँ से हिजرات करके मुल्के-तोब में जा बसा। वहाँ कुछ आवारा लोग उसके पीछे हो लिए जो उसके साथ इधर उधर घुमते-फिरते रहे।

4 जब कुछ देर के बाद अम्मोनी फ़ौज इसराईल से लड़ने आई 5 तो जिलियाद के बुजुर्ग इफ़ताह को वापस लाने के लिए मुल्के-तोब में आए। 6 उन्होंने गुज़ारिश की, "आएँ, अम्मोनियों से लड़ने में हमारी राहनुमाई करें।" 7 लेकिन इफ़ताह ने एतराज़ किया, "आप इस वक्त मेरे पास क्यों आए हैं जब मुसीबत में हैं? आप ही ने मुझसे नफ़रत करके मुझे बाप के घर से निकाल दिया था।"

8 बुजुर्गों ने जवाब दिया, "हम इसलिए आपके पास वापस आए हैं कि आप अम्मोनियों के साथ जंग में हमारी मदद करें। अगर आप ऐसा करें तो हम आपको पूरे जिलियाद का हुक्मरान बना लेंगे।" 9 इफ़ताह ने पछा, "अगर मैं आपके साथ

अम्मोनियों के खिलाफ लड़ें और रब मुझे उन पर फतह दे तो क्या आप वाकई मुझे अपना हुक्मरान बना लेंगे?" 10 उन्होंने जवाब दिया, "रब हमारा गवाह है! वही हमें सजा दे अगर हम अपना वादा पूरा न करें।"

11 यह सुनकर इफताह जिलियाद के बुजुर्गों के साथ मिसफाह गया। वहाँ लोगों ने उसे अपना सरदार और फौज का कमाँडर बना लिया। मिसफाह में उसने रब के हुजूर वह तमाम बातें दोहराईं जिनका फैसला उसने बुजुर्गों के साथ किया था।

### जंग से गुरेज़ करने की कोशिश

12 फिर इफताह ने अम्मोनी बादशाह के पास अपने कासिदों को भेजकर पूछा, "हमारा आपसे क्या वास्ता कि आप हमसे लड़ने आए हैं?" 13 बादशाह ने जवाब दिया, "जब इसराईली मिसर से निकले तो उन्होंने अरनोन, यब्बोक और यरदन के दरियाओं के दरमियान का इलाका मुझसे छीन लिया। अब उसे झगडा किए बगैर मुझे वापस कर दो।"

14 फिर इफताह ने अपने कासिदों को दुबारा अम्मोनी बादशाह के पास भेजकर 15 कहा, "इसराईल ने न तो मोआबियों से और न अम्मोनियों से ज़मीन छीनी। 16 हकीकत यह है कि जब हमारी कौम मिसर से निकली तो वह रेगिस्तान में से गुज़रकर बहरे-कुलज़ूम और वहाँ से होकर कादिस पहुँच गई। 17 कादिस से उन्होंने अदोम के बादशाह के पास कासिद भेजकर गुज़ारिश की, 'हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें।' लेकिन उसने इनकार किया। फिर इसराईलियों ने मोआब के बादशाह से दरखास्त की, लेकिन उसने भी अपने मुल्क में से गुज़रने की इजाज़त न दी। इस पर हमारी कौम कुछ देर के लिए कादिस में रही। 18 आखिरकार वह रेगिस्तान में वापस जाकर अदोम और मोआब के चुनूब में चलते चलते मोआब के मशरिकी किनारे पर पहुँची, वहाँ जहाँ दरियाए-अरनोन उस की सरहद है। लेकिन वह मोआब के इलाके में दाखिल न हुए बल्कि दरिया के मशरिक में खैमाज़न हुए। 19 वहाँ से इसराईलियों ने हसबोन के रहनेवाले अमोरी बादशाह सीहोन को पैगाम भिजवाया, 'हमें अपने मुल्क में से गुज़रने दें ताकि हम अपने मुल्क में दाखिल हो सकें।' 20 लेकिन सीहोन को शक हुआ। उसे यकीन नहीं था कि वह मुल्क में से गुज़रकर आगे बढ़ेंगे। उसने न सिर्फ़ इनकार किया बल्कि अपने फौजियों को जमा करके यहज़ शहर में खैमाज़न हुआ और इसराईलियों के साथ लड़ने लगा।

21 लेकिन रब इसराईल के खुदा ने सीहोन और उसके तमाम फौजियों को इसराईल के हवाले कर दिया। उन्होंने उन्हें शिकस्त देकर अमोरियों के पूरे मुल्क पर कब्ज़ा कर लिया। 22 यह तमाम इलाका चुनूब में दरियाए-अरनोन से लेकर शिमाल में दरियाए-यब्बोक तक और मशरिक के रेगिस्तान से लेकर मगरिब में दरियाए-यरदन तक हमारे कब्ज़े में आ गया। 23 देखें, रब इसराईल के खुदा ने अपनी कौम के आगे आगे अमोरियों को निकाल दिया है। तो फिर आपका इस मुल्क पर कब्ज़ा करने का क्या हक है? 24 आप भी समझते हैं कि जिसे आपके देवता कर्मोस ने आपके आगे से निकाल दिया है उसके मुल्क पर कब्ज़ा करने का आपका हक है। इसी तरह जिसे रब हमारे खुदा ने हमारे आगे आगे निकाल दिया है उसके मुल्क पर कब्ज़ा करने का हक हमारा है। 25 क्या आप अपने आपको मोआबी बादशाह बलक बिन सफोर से बेहतर समझते हैं? उसने तो इसराईल से लड़ने बल्कि झगडने तक की हिम्मत न की। 26 अब इसराईली 300 साल से हसबोन और अरोईर के शहरों में उनके गिर्दानवाह की आबादियों समेत आबाद हैं और इसी तरह दरियाए-अरनोन के किनारे पर के शहरों में। आपने इस दौरान इन जगहों पर कब्ज़ा क्यों न किया? 27 चुनौचे मैंने आपसे गलत सुल्क नहीं किया बल्कि आप ही मेरे साथ गलत सुल्क कर रहे हैं। क्योंकि मुझसे जंग छेड़ना गलत है। रब जो मुंसिफ है वही आज इसराईल और अम्मोन के झगडे का फैसला करे!"

28 लेकिन अम्मोनी बादशाह ने इफताह के पैगाम पर ध्यान न दिया।

### इफताह की फतह

29 फिर रब का रूह इफताह पर नाज़िल हुआ, और वह जिलियाद और मनस्सी में से गुज़र गया, फिर जिलियाद के मिसफाह के पास वापस आया। वहाँ से वह अपनी फौज लेकर अम्मोनियों से लड़ने निकला।

30 पहले उसने रब के सामने कसम खाई, "अगर तू मुझे अम्मोनियों पर फतह दे 31 और मैं सहीह-सलामत लौटूँ तो जो कुछ भी पहले मेरे घर के दरवाजे से निकलकर मुझसे मिले वह तेरे लिए मखसूस किया जाएगा। मैं उसे भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करूँगा।"

32 फिर इफताह अम्मोनियों से लड़ने गया, और रब ने उसे उन पर फतह दी। 33 इफताह ने अरोईर में दुश्मन को शिकस्त दी और इसी तरह मिन्नीत और अबील-करामीम तक मज़ीद बीस शहरों पर कब्ज़ा कर लिया। यों इसराईल ने अम्मोन को जेर कर दिया।

### इफताह की वापसी

34 इसके बाद इफताह मिसफाह वापस चला गया। वह अभी घर के करीब था कि उस की इकलौती बेटी दफ बजाती और नाचती हुई घर से निकल आई। इफताह का कोई और बेटा या बेटी नहीं थी। 35 अपनी बेटी को देखकर वह रंज के मारे



अपने कपड़े फाड़कर चीख उठा, “हाय मेरी बेटी! तूने मुझे खाक में दबाकर तबाह कर दिया है, क्योंकि मैंने रब के सामने ऐसी क्रसम खाई है जो बदली नहीं जा सकती।”

36 बेटी ने कहा, “अब्बू, आपने क्रसम खाकर रब से वादा किया है, इसलिए लाजिम है कि मेरे साथ वह कुछ करें जिसकी क्रसम आपने खाई है। आखिर उसी ने आपको दुश्मन से बदला लेने की कामयाबी बख्श दी है।” 37 लेकिन मेरी एक गुजारिश है। मुझे दो माह की मोहलत दें ताकि मैं अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में जाकर अपनी गैरशादीशुदा हालत पर मातम करूँ।”

38 इफताह ने इजाजत दी। फिर बेटी दो माह के लिए अपनी सहेलियों के साथ पहाड़ों में चली गई और अपनी गैरशादीशुदा हालत पर मातम किया। 39 फिर वह अपने बाप के पास वापस आई, और उसने अपनी क्रसम का वादा पूरा किया। बेटी गैरशादीशुदा थी।

उस वक्त से इसराईल में दस्तूर रायज है 40 कि इसराईल की जवान औरतें सालाना चार दिन के लिए अपने घरों से निकलकर इफताह की बेटी की याद में जशन मनाती हैं।

## 12

इफराईम का कबीला इफताह पर हमला करता है

1 अम्मोनियों पर फतह के बाद इफराईम के कबीले के आदमी जमा हुए और दरियाए-यरदन को पार करके इफताह के पास आए जो सफोन में था। उन्होंने शिकायत की, “आप क्यों हमें बुलाए बगैर अम्मोनियों से लड़ने गए? अब हम आपको आपके घर समेत जला देंगे!”

2 इफताह ने एतराज किया, “जब मेरी और मेरी क्रौम का अम्मोनियों के साथ सख्त झगड़ा छिड़ गया तो मैंने आपको बुलाया, लेकिन आपने मुझे उनके हाथ से न बचाया।” 3 जब मैंने देखा कि आप मदद नहीं करेंगे तो अपनी जान खतरे में डालकर आपके बगैर ही अम्मोनियों से लड़ने गया। और रब ने मुझे उन पर फतह बख्शी। अब मुझे बताएँ कि आप क्यों मेरे पास आकर मुझ पर हमला करना चाहते हैं?”

4 इफराईमियों ने जवाब दिया, “तुम जो जिलियाद में रहते हो बस इफराईम और मनस्सी के कबीलों से निकले हुए भगोड़े हो।” तब इफताह ने जिलियाद के मर्दों को जमा किया और इफराईमियों से लड़कर उन्हें शिकस्त दी।

5 फिर जिलियादियों ने दरियाए-यरदन के कम-गहरे मकामों पर कब्जा कर लिया। जब कोई गुजरना चाहता तो वह पूछते, “क्या आप इफराईमी हैं?” अगर वह इनकार करता 6 तो जिलियाद के मर्द कहते, “तो फिर लफज ‘सिबबोलेत’ \* बोलें।” अगर वह इफराईमी होता तो इसके बजाए “सिबबोलेत” कहता। फिर जिलियादी उसे पकड़कर वही मार डालते। उस वक्त कुल 42,000 इफराईमी हलाक हुए।

7 इफताह ने छः साल इसराईल की राहनुमाई की। जब फौत हुआ तो उसे जिलियाद के किसी शहर में दफनाया गया।

इबजान, ऐलोन और अबदोन

8 इफताह के बाद इबजान इसराईल का काजी बना। वह बैत-लहम में आबाद था, 9 और उसके 30 बेटे और 30 बेटियाँ थीं। उस की तमाम बेटियाँ शादीशुदा थीं और इस वजह से बाप के घर में नहीं रहती थीं। लेकिन उसे 30 बेटों के लिए बीवियाँ मिल गई थीं, और सब उसके घर में रहते थे। इबजान ने सात साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई की। 10 फिर वह इंतकाल कर गया और बैत-लहम में दफनाया गया।

11 उसके बाद ऐलोन काजी बना। वह जबलून के कबीले से था और 10 साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई करता रहा। 12 जब वह कूच कर गया तो उसे जबलून के ऐयालोन में दफन किया गया।

13 फिर अबदोन बिन हिल्लेल काजी बना। वह शहर फिरआतोन का था। 14 उसके 40 बेटे और 30 पोते थे जो 70 गर्धों पर सफर किया करते थे। अबदोन ने आठ साल के दौरान इसराईल की राहनुमाई की। 15 फिर वह भी जान-बहक हो गया, और उसे अमालीकियों के पहाड़ी इलाके के शहर फिरआतोन में दफनाया गया, जो उस वक्त इफराईम का हिस्सा था।

## 13

समसम की पैदाइश की पेशगोई

1 फिर इसराईली दुबारा ऐसी हरकतें करने लगे जो रब को बुरी लगीं। इसलिए उसने उन्हें फिलिस्तिनों के हवाले कर दिया जो उन्हें 40 साल दबाते रहे। 2 उस वक्त एक आदमी सुरआ शहर में रहता था जिसका नाम मनोहा था। दान के कबीले का यह आदमी बेअौलाद था, क्योंकि उस की बीवी बाँझ थी।

\* 12:6 यानी नदी।

3 एक दिन रब का फरिश्ता मनोहा की बीवी पर जाहिर हुआ और कहा, “गो तुझसे बच्चे पैदा नहीं हो सकते, अब तू हामिला होगी, और तैरे बेटा पैदा होगा। 4 मैं या कोई और नशा-आवर चीज मत पीना, न कोई नापाक चीज खाना। 5 क्योंकि जो बेटा पैदा होगा वह पैदाइश से ही अल्लाह के लिए मखसूस होगा। लाज़िम है कि उसके बाल कभी न काटे जाएँ। यही बच्चा इसराईल को फिलिस्तिनों से बचाने लगेगा।”

6 बीवी अपने शौहर मनोहा के पास गई और उसे सब कुछ बताया, “अल्लाह का एक बंदा मेरे पास आया। वह अल्लाह का फरिश्ता लग रहा था, यहाँ तक कि मैं सख्त घबरा गई। मैंने उससे न पूछा कि वह कहाँ से है, और खुद उसने मुझे अपना नाम न बताया। 7 लेकिन उसने मुझे बताया, ‘तू हामिला होगी, और तैरे बेटा पैदा होगा। अब मैं या कोई और नशा-आवर चीज मत पीना, न कोई नापाक चीज खाना। क्योंकि बेटा पैदाइश से ही मौत तक अल्लाह के लिए मखसूस होगा।’”

8 यह सुनकर मनोहा ने रब से दुआ की, “ऐ रब, बराहे-करम मर्दे-खुदा को दुबारा हमारे पास भेज ताकि वह हमें सिखाए कि हम उस बेटे के साथ क्या करें जो पैदा होनेवाला है।” 9 अल्लाह ने उस की सुनी और अपने फरिश्ते को दुबारा उस की बीवी के पास भेज दिया। उस वक़्त वह शौहर के बौर खेत में थी। 10 फरिश्ते को देखकर वह जल्दी से मनोहा के पास आई और उसे इत्ला दी, “जो आदमी पिछले दिनों में मेरे पास आया वह दुबारा मुझ पर जाहिर हुआ है।”

11 मनोहा उठकर अपनी बीवी के पीछे पीछे फरिश्ते के पास आया। उसने पूछा, “क्या आप वही आदमी है जिसने पिछले दिनों में मेरी बीवी से बात की थी?” फरिश्ते ने जवाब दिया, “जी, मैं ही था।” 12 फिर मनोहा ने सवाल किया, “जब आपकी पेशगोई पूरी हो जाएगी तो हमें बेटे के तर्जे-ज़िंदगी और सुलूक के सिलसिले में किन किन बातों का खयाल करना है?”

13 रब के फरिश्ते ने जवाब दिया, “लाज़िम है कि तेरी बीवी उन तमाम चीजों से परहेज़ करे जिनका जिक्र मैंने किया। 14 वह अंगूर की कोई भी पैदावार न खाए। न वह मै, न कोई और नशा-आवर चीज पिए। नापाक चीजें खाना भी मना है। वह मेरी हर हिदायत पर अमल करे।”

15 मनोहा ने रब के फरिश्ते से गुज़ारिश की, “मेहरबानी करके थोड़ी देर हमारे पास ठहरें ताकि हम बकरी का बच्चा ज़बह करके आपके लिए खाना तैयार कर सकें।” 16 अब तक मनोहा ने यह बात नहीं पहचानी थी कि मेहमान असल में रब का फरिश्ता है। फरिश्ते ने जवाब दिया, “खाह तू मुझे रोके भी मैं कुछ नहीं खाऊँगा। लेकिन अगर तू कुछ करना चाहे तो बकरी का बच्चा रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश कर।”

17 मनोहा ने उससे पूछा, “आपका क्या नाम है? क्योंकि जब आपकी यह बातें पूरी हो जाएँगी तो हम आपकी इज़्जत करना चाहेंगे।” 18 फरिश्ते ने सवाल किया, “तू मेरा नाम क्यों जानना चाहता है? वह तो तेरी समझ से बाहर है।” 19 फिर मनोहा ने एक बड़े पत्थर पर रब को बकरी का बच्चा और गल्ला की नज़र पेश की। तब रब ने मनोहा और उस की बीवी के देखते देखते एक हैरतअंगेज़ काम किया। 20 जब आग के शोले आसमान की तरफ बुलंद हुए तो रब का फरिश्ता शोले में से ऊपर चढ़कर ओझल हो गया। मनोहा और उस की बीवी मुँह के बल गिर गए।

21 जब रब का फरिश्ता दुबारा मनोहा और उस की बीवी पर जाहिर न हुआ तो मनोहा को समझ आई कि रब का फरिश्ता ही था। 22 वह पुकार उठा, “हाय, हम मर जाएँगे, क्योंकि हमने अल्लाह को देखा है।” 23 लेकिन उस की बीवी ने एतराज़ किया, “अगर रब हमें मार डालना चाहता तो वह हमारी कुरबानी कबूल न करता। फिर न वह हम पर यह सब कुछ जाहिर करता, न हमें ऐसी बातें बताता।”

24 कुछ देर के बाद मनोहा के हाँ बेटा पैदा हुआ। बीवी ने उसका नाम समसून रखा। बच्चा बड़ा होता गया, और रब ने उसे बरकत दी। 25 अल्लाह का रूह पहली बार महने-दान में जो सुरआ और इस्ताल के दरमियान है उस पर नाज़िल हुआ।

## 14

### समसून की फिलिस्ती औरत से शादी

1 एक दिन समसून तिमनत में फिलिस्तिनों के पास ठहरा हुआ था। वहाँ उसने एक फिलिस्ती औरत देखी जो उसे पसंद आई। 2 अपने घर लौटकर उसने अपने वालिदिन को बताया, “मुझे तिमनत की एक फिलिस्ती औरत पसंद आई है। उसके साथ मेरा रिश्ता बौंधने की कोशिश करें।” 3 उसके वालिदिन ने जवाब दिया, “क्या आपके रिश्तेदारों और क्रोम में कोई काबिले-कबूल औरत नहीं है? आपको नामखतून और बेदीन फिलिस्तिनों के पास जाकर उनमें से कोई औरत ढूँडने की क्या ज़रूरत थी?” लेकिन समसून बजिद रहा, “उसी के साथ मेरी शादी कराएँ! वही मुझे ठीक लगती है।”

4 उसके माँ-बाप को मालूम नहीं था कि यह सब कुछ रब की तरफ से है जो फिलिस्तिनों से लड़ने का मौका तलाश कर रहा था। क्योंकि उस वक़्त फिलिस्ती इसराईल पर हुकूमत कर रहे थे।

5 चुनौचे समसून अपने माँ-बाप समेत तिमनत के लिए रवाना हुआ। जब वह तिमनत के अंगूर के बागों के करीब पहुँचे तो समसून अपने माँ-बाप से अलग हो गया। अचानक एक जवान शेरबबर दहाड़ता हुआ उस पर टूट पड़ा। 6 तब अल्लाह का

रूह इतने जोर से समसून पर नाज़िल हुआ कि उसने अपने हाथों से शेर को यों फाड़ डाला, जिस तरह आम आदमी बकरी के छोटे बच्चे को फाड़ डालता है। लेकिन उसने अपने वालिदिन को इसके बारे में कुछ न बताया।<sup>7</sup> अगर निकलकर वह तिमनत पहुँच गया। मज़क़्रा फिलिस्ती औरत से बात हुई और वह उसे ठीक लगी।

<sup>8</sup> कुछ देर के बाद वह शादी करने के लिए दुबारा तिमनत गए। शहर पहुँचने से पहले समसून रास्ते से हटकर शेरबबर की लाश को देखने गया। वहाँ क्या देखता है कि शहद की मक्खियों ने शेर के पिंजर में अपना छत्ता बना लिया है।<sup>9</sup> समसून ने उसमें हाथ डालकर शहद को निकाल लिया और उसे खाते हुए चला। जब वह अपने माँ-बाप के पास पहुँचा तो उसने उन्हें भी कुछ दिया, मगर यह न बताया कि कहाँ से मिल गया है।

<sup>10</sup> तिमनत पहुँचकर समसून का बाप दुलहन के खानदान से मिला जबकि समसून ने दूल्हे की हैसियत से ऐसी ज़ियाफ़त की जिस तरह उस ज़माने में दस्तूर था।

### फिलिस्ती समसून को धोका देते हैं

<sup>11</sup> जब दुलहन के घरवालों को पता चला कि समसून तिमनत पहुँच गया है तो उन्होंने उसके पास 30 जवान आदमी भेज दिए कि उसके साथ ख़ुशी मनाएँ।<sup>12</sup> समसून ने उनसे कहा, “मैं आपसे पहेली पछता हूँ। अगर आप ज़ियाफ़त के सात दिनों के दौरान इसका हल बता सकें तो मैं आपको कतान के 30 क्रीमती करते और 30 शानदार सूट दे दूँगा।<sup>13</sup> लेकिन अगर आप मुझे इसका सहीह मतलब न बता सकें तो आपको मुझे 30 क्रीमती करते और 30 शानदार सूट देने पड़ेंगे।” उन्होंने जवाब दिया, “अपनी पहेली सुनाएँ।”

<sup>14</sup> समसून ने कहा, “खानेवाले में से खाना निकला और जोरावर में से मिठास।”

तीन दिन गुज़र गए। जवान पहेली का मतलब न बता सके।<sup>15</sup> चौथे दिन उन्होंने दुलहन के पास जाकर उसे धमकी दी, “अपने शौहर को हमें पहेली का मतलब बताने पर उकसाओ, वरना हम तुम्हें तुम्हारे खानदान समेत जला देंगे। क्या तुम लोगों ने हमें सिर्फ़ इसलिए दावत दी कि हमें लूट लो?”

<sup>16</sup> दुलहन समसून के पास गई और आँसू बहा बहाकर कहने लगी, “तुम्हें प्यार नहीं करता! हकीकत में तू मुझसे नफ़रत करता है। तूने मेरी क्रीम के लोगों से पहेली पछी है लेकिन मुझे इसका मतलब नहीं बताया।” समसून ने जवाब दिया, “मैंने अपने माँ-बाप को भी इसका मतलब नहीं बताया तो तुझे क्यों बताऊँ?”<sup>17</sup> ज़ियाफ़त के पूरे हफ़ते के दौरान दुलहन उसके सामने रोती रही।

सातवें दिन समसून दुलहन की इल्तिजाओं से इतना तंग आ गया कि उसने उसे पहेली का हल बता दिया। तब दुलहन ने फुरती से सब कुछ फिलिस्तियों को सुना दिया।<sup>18</sup> सूरज के ग़रूब होने से पहले पहले शहर के मर्दों ने समसून को पहेली का मतलब बताया, “क्या कोई चीज़ शहद से ज़्यादा मीठी और शेरबबर से ज़्यादा जोरावर होती है?” समसून ने यह सुनकर कहा, “आपने मेरी जवान गाय लेकर हल चलाया है, वरना आप कभी भी पहेली का हल न निकाल सकते।”<sup>19</sup> फिर रब का रूह उस पर नाज़िल हुआ। उसने अस्कलून शहर में जाकर 30 फिलिस्तियों को मार डाला और उनके लिबास लेकर उन आदमियों को दे दिए जिन्होंने उसे पहेली का मतलब बता दिया था।

इसके बाद वह बड़े गुस्से में अपने माँ-बाप के घर चला गया।<sup>20</sup> लेकिन उस की बीबी की शादी समसून के शहबाले से कराई गई जो 30 जवान फिलिस्तियों में से एक था।

## 15

### समसून फिलिस्तियों से बदला लेता है

<sup>1</sup> कुछ दिन गुज़र गए। जब गंदुम की कटाई होने लगी तो समसून बकरी का बच्चा अपने साथ लेकर अपनी बीबी से मिलने गया। सुसर के घर पहुँचकर उसने बीबी के कमरे में जाने की दरखास्त की। लेकिन बाप ने इनकार किया।<sup>2</sup> उसने कहा, “यह नहीं हो सकता! मैंने बेटी की शादी आपके शहबाले से करा दी है। असल में मुझे यकीन हो गया था कि अब आप उससे सख्त नफ़रत करते हैं। लेकिन कोई बात नहीं। उस की छोटी बहन से शादी कर लें। वह ज़्यादा ख़ूबसूरत है।”

<sup>3</sup> समसून बोला, “इस दफ़ा मैं फिलिस्तियों से खूब बदला लूँगा, और कोई नहीं कह सकेगा कि मैं हक़ पर नहीं हूँ।”

<sup>4</sup> वहाँ से निकलकर उसने 300 लोमडियों को पकड़ लिया। दो दो की दूम्ओं को बाँधकर उसने हर जोड़े की दूम्ओं के साथ मशाल लगा दी<sup>5</sup> और फिर मशालों को जलाकर लोमडियों को फिलिस्तियों के अनाज के खेतों में भगा दिया। खेतों में पड़े प्ले उस अनाज समेत भस्म हुए जो अब तक काटा नहीं गया था। अंगूर और जैतून के बाग़ भी तबाह हो गए।

<sup>6</sup> फिलिस्तियों ने दरियाफ़त किया कि यह किसका काम है। पता चला कि समसून ने यह सब कुछ किया है, और कि वजह यह है कि तिमनत में उसके सुसर ने उस की बीबी को उससे छीनकर उसके शहबाले को दे दिया है। यह सुनकर फिलिस्ती

तिमनत गए और समसून के सुसर को उस की बेटी समेत पकड़कर जला दिया। <sup>7</sup> तब समसून ने उनसे कहा, “यह तुमने क्या किया है! जब तक मैंने पूरा बदला न लिया मैं नहीं स्कूंगा।” <sup>8</sup> वह इतने जोर से उन पर टूट पड़ा कि बेशमार फिलिस्ती हलाक हुए। फिर वह उस जगह से उतरकर ऐताम की चटान के गार में रहने लगा।

लही में समसून फिलिस्तियों से लड़ता है

<sup>9</sup> जवाब में फिलिस्ती कौज यहदाह के कबायली इलाके में दाखिल हुई। वहाँ वह लही शहर के पास खैमाज़न हुए। <sup>10</sup> यहदाह के बाशिंदों ने पूछा, “क्या वजह है कि आप हमसे लड़ने आए हैं?” फिलिस्तियों ने जवाब दिया, “हम समसून को पकड़ने आए हैं ताकि उसके साथ वह कुछ करें जो उसने हमारे साथ किया है।”

<sup>11</sup> तब यहदाह के 3,000 मर्द ऐताम पहाड़ के गार के पास आए और समसून से कहा, “यह आपने हमारे साथ क्या किया? आपको तो पता है कि फिलिस्ती हम पर हुकूमत करते हैं।” समसून ने जवाब दिया, “मैंने उनके साथ सिर्फ वह कुछ किया जो उन्होंने मेरे साथ किया था।”

<sup>12</sup> यहदाह के मर्द बोले, “हम आपको बाँधकर फिलिस्तियों के हवाले करने आए हैं।” समसून ने कहा, “ठीक है, लेकिन कसम खाएँ कि आप खुद मुझे कत्ल नहीं करेंगे।”

<sup>13</sup> उन्होंने जवाब दिया, “हम आपको हरगिज़ कत्ल नहीं करेंगे बल्कि आपको सिर्फ बाँधकर उनके हवाले कर देंगे।” चुनौचे वह उसे दो ताज़ा ताज़ा रस्सों से बाँधकर फिलिस्तियों के पास ले गए।

<sup>14</sup> समसून अभी लही से दूर था कि फिलिस्ती नारे लगाते हुए उस की तरफ दौड़े आए। तब रब का रूह बड़े जोर से उस पर नाज़िल हुआ। उसके बाजूओं से बँधे हुए रस्से सन के जले हुए धागे जैसे कमज़ोर हो गए, और वह पिघलकर हाथों से गिर गए। <sup>15</sup> कहीं से गधे का ताज़ा जबड़ा पकड़कर उसने उसके ज़रीए हज़ार अफ़राद को मार डाला।

<sup>16</sup> उस वक़्त उसने नारा लगाया, “गधे के जबड़े से मैंने उनके ढेर लगाए हैं। गधे के जबड़े से मैंने हज़ार मर्दों को मार डाला है!” <sup>17</sup> इसके बाद उसने गधे का यह जबड़ा फेंक दिया। उस जगह का नाम रामत-लही यानी जबड़ा पहाड़ी पड़ गया।

<sup>18</sup> समसून को वहाँ बड़ी प्यास लगी। उसने रब को पुकारकर कहा, “तू ही ने अपने खादिम के हाथ से इसराईल को यह बड़ी नज़ात दिलाई है। लेकिन अब मैं प्यास से मरकर नामख़तून दुश्मन के हाथ में आ जाऊँगा।” <sup>19</sup> तब अल्लाह ने लही में ज़मीन को छेदा, और गढ़े से पानी फूट निकला। समसून उसका पानी पीकर दुबारा ताज़ादम हो गया। यों उस चश्मे का नाम ऐन-हक्क़ोर यानी पुकारनेवाले का चश्मा पड़ गया। आज भी वह लही में मौजूद है।

<sup>20</sup> फिलिस्तियों के दौर में समसून 20 साल तक इसराईल का काज़ी रहा।

## 16

समसून गज्जा का दरवाज़ा उठा ले जाता है

<sup>1</sup> एक दिन समसून फिलिस्ती शहर गज्जा में आया। वहाँ वह एक कसबी को देखकर उसके घर में दाखिल हुआ। <sup>2</sup> जब शहर के बाशिंदों को इतला मिली कि समसून शहर में है तो उन्होंने कसबी के घर को घेर लिया। साथ साथ वह रात के वक़्त शहर के दरवाज़े पर ताक में रहे। फ़ैसला यह हुआ, “रात के वक़्त हम कुछ नहीं करेंगे, जब पौ फटेगी तब उसे मार डालेंगे।”

<sup>3</sup> समसून अब तक कसबी के घर में सो रहा था। लेकिन आधी रात को वह उठकर शहर के दरवाज़े के पास गया और दोनों किवाड़ों को कुंडे और दरवाज़े के दोनों बाजूओं समेत उखाड़कर अपने कंधों पर रख लिया। यों चलते चलते वह सब कुछ उस पहाड़ी की चोटी पर ले गया जो हबस्न के मुकाबिल है।

समसून और दलीला

<sup>4</sup> कुछ देर के बाद समसून एक औरत की मुहब्बत में गिरिफ़्तार हो गया जो वादीए-सूरिक में रहती थी। उसका नाम दलीला था। <sup>5</sup> यह सुनकर फिलिस्ती सरदार उसके पास आए और कहने लगे, “समसून को उकसाएँ कि वह आपको अपनी बड़ी ताक़त का भेद बताएँ। हम जानना चाहते हैं कि हम किस तरह उस पर ग़ालिब आकर उसे यों बाँध सकें कि वह हमारे कब्ज़े में रहे। अगर आप यह मालूम कर सकें तो हममें से हर एक आपको चाँदी के 1,100 सिक्के देगा।”

<sup>6</sup> चुनौचे दलीला ने समसून से सवाल किया, “मुझे अपनी बड़ी ताक़त का भेद बताएँ। क्या आपको किसी ऐसी चीज़ से बाँधा जा सकता है जिसे आप तोड़ नहीं सकते?” <sup>7</sup> समसून ने जवाब दिया, “अगर मुझे जानवरों की सात ताज़ा नसों से बाँधा जाए तो फिर मैं आम आदमी जैसा कमज़ोर हो जाऊँगा।” <sup>8</sup> फिलिस्ती सरदारों ने दलीला को सात ताज़ा नसों मुहैया कर दी, और उसने समसून को उनसे बाँध लिया। <sup>9</sup> कुछ फिलिस्ती आदमी साथवाले कमरे में छुप गए। फिर दलीला चिल्ला उठी, “समसून, फिलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं।” यह सुनकर समसून ने नसों को यों तोड़ दिया जिस तरह डोरी टूट जाती है जब आग में से गुज़रती है। चुनौचे उस की ताक़त का पोल न खुला।

10 दलीला का मुँह लटक गया। “आपने झूट बोलकर मुझे बेवकूफ बनाया है। अब आएँ, मेहरबानी करके मुझे बताएँ कि आपको किस तरह बाँधा जा सकता है।” 11 समसून ने जवाब दिया, “अगर मुझे गैरइस्तेमालशुदा रस्सों से बाँधा जाए तो फिर ही मैं आम आदमी जैसा कमजोर हो जाऊँगा।” 12 दलीला ने नए रस्से लेकर उसे उनसे बाँध लिया। इस मरतबा भी फिलिस्ती साथवाले कमरे में छुप गए थे। फिर दलीला चिल्ला उठी, “समसून, फिलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” लेकिन इस बार भी समसून ने रस्सों को यों तोड़ लिया जिस तरह आम आदमी डोरी को तोड़ लेता है।

13 दलीला ने शिकायत की, “आप बार बार झूट बोलकर मेरा मजाक उड़ा रहे हैं। अब मुझे बताएँ कि आपको किस तरह बाँधा जा सकता है।” समसून ने जवाब दिया, “लाज़िम है कि आप मेरी सात जुल्फों को खड़ी के ताने के साथ बुनें। फिर ही आम आदमी जैसा कमजोर हो जाऊँगा।” 14 जब समसून सो रहा था तो दलीला ने ऐसा ही किया। उस की सात जुल्फों को ताने के साथ बुनकर उसने उसे शटल के ज़रीए खड़ी के साथ लगाया। फिर वह चिल्ला उठी, “समसून, फिलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” समसून जाग उठा और अपने बालों को शटल समेत खड़ी से निकाल लिया।

15 यह देखकर दलीला ने मुँह फूलाकर मलामत की, “आप किस तरह दावा कर सकते हैं कि मुझसे मुहब्बत रखते हैं? अब आपने तीन मरतबा मेरा मजाक उड़ाकर मुझे अपनी बड़ी ताकत का भेद नहीं बताया।” 16 रोज़ बरोज़ वह अपनी बातों से उस की नाक में दम करती रही। आखिरकार समसून इतना तंग आ गया कि उसका जीना दूभर हो गया। 17 फिर उसने उसे खुलकर बात बताई, “मैं पैदाइश ही से अल्लाह के लिए मखसूस हूँ, इसलिए मेरे बालों को कभी नहीं काटा गया। अगर सर को मुँडवाया जाए तो मेरी ताकत जाती रहेगी और मैं हर दूसरे आदमी जैसा कमजोर हो जाऊँगा।”

18 दलीला ने जान लिया कि अब समसून ने मुझे पूरी हकीकत बताई है। उसने फिलिस्ती सरदारों को इतला दी, “आओ, क्योंकि इस मरतबा उसने मुझे अपने दिल की हर बात बताई है।” यह सुनकर वह मुकर्रर चाँदी अपने साथ लेकर दलीला के पास आए।

19 दलीला ने समसून का सर अपनी गोद में रखकर उसे सुला दिया। फिर उसने एक आदमी को बुलाकर समसून की सात जुल्फों को मुँडवाया। यों वह उसे पस्त करने लगी, और उस की ताकत जाती रही। 20 फिर वह चिल्ला उठी, “समसून, फिलिस्ती आपको पकड़ने आए हैं!” समसून जाग उठा और सोचा, “मैं पहले की तरह अब भी अपने आपको बचाकर बंधन को तोड़ दूँगा।” अफ़सोस, उसे मालूम नहीं था कि रब ने उसे छोड़ दिया है। 21 फिलिस्तियों ने उसे पकड़कर उस की आँखें निकाल दी। फिर वह उसे गज्जा ले गए जहाँ उसे पीतल की जंजीरों से बाँधा गया। वहाँ वह कैदखाने की चक्की पीसा करता था।

22 लेकिन होते होते उसके बाल दुबारा बढ़ने लगे।

### समसून का आखिरी इंतकाम

23 एक दिन फिलिस्ती सरदार बड़ा जशन मनाने के लिए जमा हुए। उन्होंने अपने देवता दज़न को जानवरों की बहुत-सी कुरबानियों पेश करके अपनी फ़तह की खुशी मनाई। वह बोले, “हमारे देवता ने हमारे दुश्मन समसून को हमारे हवाले कर दिया है।” 24 समसून को देखकर अवाम ने दज़न की तमज़ीद करके कहा, “हमारे देवता ने हमारे दुश्मन को हमारे हवाले कर दिया है! जिसने हमारे मुल्क को तबाह किया और हममें से इतने लोगों को मार डाला वह अब हमारे काबू में आ गया है!” 25 इस किस्म की बातें करते करते उनकी खुशी की इंतहा न रही। तब वह चिल्लाने लगे, “समसून को बुलाओ ताकि वह हमारे दिलों को बहलाए।”

चुनाँचे उसे उनकी तफ़रीह के लिए जेल से लाया गया और दो सत्नों के दरमियान खड़ा कर दिया गया। 26 समसून उस लडके से मुख़ातिब हुआ जो उसका हाथ पकड़कर उस की राहनुमाई कर रहा था, “मुझे छत को उठानेवाले सत्नों के पास ले जाओ ताकि मैं उनका सहारा लूँ।” 27 इमारत मर्दों और औरतों से भरी थी। फिलिस्ती सरदार भी सब आए हुए थे। सिर्फ़ छत पर समसून का तमाशा देखनेवाले तक़रीबन 3,000 अफ़राद थे।

28 फिर समसून ने दुआ की, “ऐ रब कादिर-मुतलक, मुझे याद कर। बस एक दफ़ा और मुझे पहले की तरह कुव्वत अता फ़रमा ताकि मैं एक ही वार से फिलिस्तियों से अपनी आँखों का बदला ले सकूँ।” 29 यह कहकर समसून ने उन दो मरकज़ी सत्नों को पकड़ लिया जिन पर छत का पूरा वजन था। उनके दरमियान खड़े होकर उसने पूरी ताकत से जोर लगाया 30 और दुआ की, “मुझे फिलिस्तियों के साथ मरने दे!” अचानक सतून हिल गए और छत धड़ाम से फिलिस्तियों के तमाम सरदारों और बाक़ी लोगों पर गिर गई। इस तरह समसून ने पहले की निसबत मरते वक़्त कहीं ज़्यादा फिलिस्तियों को मार डाला।

31 समसून के भाई और बाक़ी घरवाले आए और उस की लाश को उठाकर उसके बाप मनोहा की कब्र के पास ले गए। वहाँ यानी सुरआ और इस्ताल के दरमियान उन्होंने उसे दफ़नाया। समसून 20 साल इसराईल का काज़ी रहा।

## 17

## मीकाह का बुत

1 इफ्राईम के पहाड़ी इलाके में एक आदमी रहता था जिसका नाम मीकाह था।<sup>2</sup> एक दिन उसने अपनी माँ से बात की, “आपके चाँदी के 1,100 सिक्के चोरी हो गए थे, ना? उस वक्त आपने मेरे सामने ही चोर पर लानत भेजी थी। अब देखें, वह पैसे मेरे पास है। मैं ही चोर हूँ।” यह सुनकर माँ ने जवाब दिया, “मेरे बेटे, रब तुझे बरकत दे!”<sup>3</sup> मीकाह ने उसे तमाम पैसे वापस कर दिए, और माँ ने एलान किया, “अब से यह चाँदी रब के लिए मखसूस हो! मैं आपके लिए तराशा और ढाला हुआ बुत बनवाकर चाँदी आपको वापस कर देती हूँ।”

4 चुनौचे जब बेटे ने पैसे वापस कर दिए तो माँ ने उसके 200 सिक्के सुनार के पास ले जाकर लकड़ी का तराशा और ढाला हुआ बुत बनवाया। मीकाह ने यह बुत अपने घर में खड़ा किया,<sup>5</sup> क्योंकि उसका अपना मकदिस था। उसने मज्जीद बुत और एक अफोद\* भी बनवाया और फिर एक बेटे को अपना इमाम बना लिया।<sup>6</sup> उस जमाने में इसराईल का कोई बादशाह नहीं था बल्कि हर कोई वही कुछ करता जो उसे दुस्त लगता था।

7 उन दिनों में लावी के कबीले का एक जवान आदमी यहदाह के कबीले के शहर बैत-लहम में आबाद था।<sup>8</sup> अब वह शहर को छोड़कर रिहाइश की कोई और जगह तलाश करने लगा। इफ्राईम के पहाड़ी इलाके में से सफर करते करते वह मीकाह के घर पहुँच गया।<sup>9</sup> मीकाह ने पूछा, “आप कहाँ से आए हैं?” जवान ने जवाब दिया, “मैं लावी हूँ। मैं यहदाह के शहर बैत-लहम का रहनेवाला हूँ लेकिन रिहाइश की किसी और जगह की तलाश में हूँ।”

10 मीकाह बोला, “यहाँ मेरे पास अपना घर बनाकर मेरे बाप और इमाम बनें। तब आपको साल में चाँदी के दस सिक्के और ज़रूरत के मुताबिक कपड़े और खुराक मिलेगी।”

11 लावी मुतफिक हुआ। वह वहाँ आबाद हुआ, और मीकाह ने उसके साथ बेटों का-सा सुलूक किया।<sup>12</sup> उसने उसे इमाम मुकर्रर करके सोचा,<sup>13</sup> “अब रब मुझ पर मेहरबानी करेगा, क्योंकि लावी मेरा इमाम बन गया है।”

## 18

## दान का कबीला जमीन की तलाश करता है

1 उन दिनों में इसराईल का बादशाह नहीं था। और अब तक दान के कबीले को अपना कोई कबायली इलाका नहीं मिला था, इसलिए उसके लोग कहीं आबाद होने की तलाश में रहे।<sup>2</sup> उन्होंने अपने खानदानों में से सुरआ और इस्ताल के पाँच तजरबाकार फौजियों को चुनकर उन्हें मुल्क की तफतीश करने के लिए भेज दिया। यह मर्द इफ्राईम के पहाड़ी इलाके में से गुजरकर मीकाह के घर के पास पहुँच गए। जब वह वहाँ रात के लिए ठहरे हुए थे<sup>3</sup> तो उन्होंने देखा कि जवान लावी बैत-लहम की बोली बोलता है। उसके पास जाकर उन्होंने पूछा, “कौन आपको यहाँ लाया है? आप यहाँ क्या करते हैं? और आपका इस घर में रहने का क्या मकसद है?”<sup>4</sup> लावी ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, “मीकाह ने मुझे नौकरी देकर अपना इमाम बना लिया है।”<sup>5</sup> फिर उन्होंने उससे गुजारिश की, “अल्लाह से दरियाफत करें कि क्या हमारे सफर का मकसद पूरा हो जाएगा या नहीं?”<sup>6</sup> लावी ने उन्हें तसल्ली दी, “सलामती से आगे बढ़ें। आपके सफर का मकसद रब को कबूल है, और वह आपके साथ है।”

7 तब यह पाँच आदमी आगे निकले और सफर करते करते लैस पहुँच गए। उन्होंने देखा कि वहाँ के लोग सैदानियों की तरह पुरसुकून और बेफिकर ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। कोई नहीं था जो उन्हें दबाता या उन पर ज़ुल्म करता। यह भी मालूम हुआ कि अगर उन पर हमला किया जाए तो उनका इतहादी शहर सैदा उनसे इतनी दूर है कि उनकी मदद नहीं कर सकेगा, और करीब कोई इतहादी नहीं है जो उनका साथ दे।<sup>8</sup> वह पाँच जासूस सुरआ और इस्ताल वापस चले गए। जब वहाँ पहुँचे तो दूसरों ने पूछा, “सफर कैसा रहा?”<sup>9</sup> जासूसों ने जवाब में कहा, “आएँ, हम जंग के लिए निकलें! हमें एक बेहतरीन इलाका मिल गया है। आप क्यों झिजक रहे हैं? जल्दी करें, हम निकलें और उस मुल्क पर कब्ज़ा कर लें।”<sup>10</sup> वहाँ के लोग बेफिकर हैं और हमले की तवक्को ही नहीं करते। और जमीन वसी और ज़रखेज है, उसमें किसी भी चीज़ की कमी नहीं है। अल्लाह आपको वह मुल्क देने का इरादा रखता है।”

## दान के मर्द मीकाह का बुत इमाम समेत छीन लेते हैं

\* 17:5 आम तौर पर इमरानी में अफोद का मतलब इमामे-आज़म का बालापोश था (दिखिए खुरज 28:4), लेकिन यहाँ इससे मुराद बुतपरस्ती की कोई चीज़ है।

11 दान के कबीले के 600 मुसल्लह आदमी सुरआ और इस्ताल से रवाना हुए। 12 रास्ते में उन्होंने अपनी लशकरगाह यहदाह के शहर किरियत-यारिम के करीब लगाई। इसलिए यह जगह आज तक महने-दान यानी दान की खैमागाह कहलाती है। 13 वहाँ से वह इफ्राईम के पहाड़ी इलाके में दाखिल हुए और चलते चलते मीकाह के घर पहुँच गए।

14 जिन पाँच मर्दों ने लैस की तफतीश की थी उन्होंने अपने साथियों से कहा, “क्या आपको मालूम है कि इन घरों में एक अफोद, एक तराशा और ढाला हुआ बूत और दीगर कई बूत हैं? अब सोच लें कि क्या किया जाए।”

15 पाँचों ने मीकाह के घर में दाखिल होकर जवान लावी को सलाम किया 16 जबकि बाकी 600 मुसल्लह मर्द गेट पर खड़े रहे। 17 जब लावी बाहर खड़े मर्दों के पास गया तो इन पाँचों ने अंदर घुसकर तराशा और ढाला हुआ बूत, अफोद और बाकी बूत छीन लिए। 18 यह देखकर लावी चीखने लगा, “क्या कर रहे हो!”

19 उन्होंने कहा, “चुप! कोई बात न करो बल्कि हमारे साथ जाकर हमारे बाप और इमाम बनो। हमारे साथ जाओगे तो पूरे कबीले के इमाम बनोगे। क्या यह एक ही खानदान की खिदमत करने से कहीं बेहतर नहीं होगा?” 20 यह सुनकर इमाम खुश हुआ। वह अफोद, तराशा हुआ बूत और बाकी बूतों को लेकर मुसाफिरों में शरीक हो गया। 21 फिर दान के मर्द रवाना हुए। उनके बाल-बच्चे, मवेशी और क्रीमती मालो-मता उनके आगे आगे था।

22 जब मीकाह को बात का पता चला तो वह अपने पड़ोसियों को जमा करके उनके पीछे दौड़ा। इतने में दान के लोग घर से दूर निकल चुके थे। 23 जब वह सामने नज़र आए तो मीकाह और उसके साथियों ने चीखते-चिल्लाते उन्हें स्कने को कहा। दान के मर्दों ने पीछे देखकर मीकाह से कहा, “क्या बात है? अपने इन लोगों को बुलाकर क्यों ले आए हो?” 24 मीकाह ने जवाब दिया, “तुम लोगों ने मेरे बूतों को छीन लिया गो मैंने उन्हें ख़ुद बनवाया है। मेरे इमाम को भी साथ ले गए हो। मेरे पास कुछ नहीं रहा तो अब तुम पछते हो कि क्या बात है?”

25 दान के अफ़राद बोले, “ख़ामोश! ख़बरदार, हमारे कुछ लोग तेज़मिज़ाज हैं। ऐसा न हो कि वह गुस्से में आकर तुमको तुम्हारे खानदान समेत मार डालें।” 26 यह कहकर उन्होंने अपना सफ़र जारी रखा। मीकाह ने जान लिया कि मैं अपने थोड़े आदमियों के साथ उनका मुकाबला नहीं कर सकूँगा, इसलिए वह मुड़कर अपने घर वापस चला गया। 27 उसके बूत दान के क़ब्ज़े में रहे, और इमाम भी उनमें टिक गया।

### लैस पर क़ब्ज़ा और दान की बूतपरस्ती

फिर वह लैस के इलाके में दाखिल हुए जिसके बाशिंदे पुरसुकून और बेफ़िकर जिंदगी गुज़ार रहे थे। दान के फ़ौजी उन पर टूट पड़े और सबको तलवार से क़त्ल करके शहर को भस्म कर दिया। 28 किसी ने भी उनकी मदद न की, क्योंकि सैदा बहुत दूर था, और करीब कोई इतहादी नहीं था जो उनका साथ देता। यह शहर बैत-रहोब की वादी में था। दान के अफ़राद शहर को अज़ सरे-नौ तामीर करके उसमें आबाद हुए। 29 और उन्होंने उसका नाम अपने क़बीले के बानी के नाम पर दान रखा (दान इसराईल का बेटा था)।

30 वहाँ उन्होंने तराशा हुआ बूत रखकर पूजा के इंतज़ाम पर यूतन मुकर्रर किया जो मूसा के बेटे जैरसोम की औलाद में से था। जब यूतन फ़ौत हुआ तो उस की औलाद कौम की जिलावतनी तक दान के क़बीले में यही खिदमत करती रही।

31 मीकाह का बनवाया हुआ बूत तब तक दान में रहा जब तक अल्लाह का घर सैला में था।

## 19

### एक लावी की अपनी दाशता के साथ सुलह

1 उस ज़माने में जब इसराईल का कोई बादशाह नहीं था एक लावी ने अपने घर में दाशता रखी जो यहदाह के शहर बैत-लहम की रहनेवाली थी। आदमी इफ़्राईम के पहाड़ी इलाके के किसी दूर-दराज़ कोने में आबाद था। 2 लेकिन एक दिन औरत मर्द से नाराज़ हुई और मैके वापस चली गई। चार माह के बाद 3 लावी दो गोधे और अपने नौकर को लेकर बैत-लहम के लिए रवाना हुआ ताकि दाशता का गुस्सा ठंडा करके उसे वापस आने पर आमदा करे।

जब उस की मुलाकात दाशता से हुई तो वह उसे अपने बाप के घर में ले गई। उसे देखकर सुसर इतना खुश हुआ 4 कि उसने उसे जाने न दिया। दामाद को तीन दिन वहाँ ठहरना पड़ा जिस दौरान सुसर ने उस की ख़ूब मेहमान-नवाज़ी की। 5 चौथे दिन लावी सुबह-सवेरे उठकर अपनी दाशता के साथ रवाना होने की तैयारियाँ करने लगा। लेकिन सुसर उसे रोककर बोला, “पहले थोड़ा-बहुत खाकर ताज़ामद हो जाँ, फिर चले जाना।” 6 दोनों दुबारा खाने-पिने के लिए बैठ गए।

सुसर ने कहा, “बराहे-करम एक और रात यहाँ ठहरकर अपना दिल बहलाएँ।” 7 मेहमान जाने की तैयारियाँ करने तो लगा, लेकिन सुसर ने उसे एक और रात ठहरने पर मजबूर किया। चुनौचे वह हार मानकर स्क गया।

8 पाँचवें दिन आदमी सुबह-सवेरे उठा और जाने के लिए तैयार हुआ। सुसर ने जोर दिया, “पहले कुछ खाना खाकर ताज़ाम हो जाँ। आप दोपहर के वक़्त भी जा सकते हैं।” चुनाँचे दोनों खाने के लिए बैठ गए।

9 दोपहर के वक़्त लावी अपनी बीवी और नौकर के साथ जाने के लिए उठा। सुसर एतराज़ करने लगा, “अब देखें, दिन ढलनेवाला है। रात ठहरकर अपना दिल बहलाएँ। बेहतर है कि आप कल सुबह-सवेरे ही उठकर घर के लिए रवाना हो जाएँ।” 10-11 लेकिन अब लावी किसी भी सूत में एक और रात ठहरना नहीं चाहता था। वह अपने गधों पर ज़ीन कसकर अपनी बीवी और नौकर के साथ रवाना हुआ।

चलते चलते दिन ढलने लगा। वह यबूस यानी यस्-शलम के करीब पहुँच गए थे। शहर को देखकर नौकर ने मालिक से कहा, “आएँ, हम यबूसियों के इस शहर में जाकर वहाँ रात गुज़ारें।” 12 लेकिन लावी ने एतराज़ किया, “नहीं, यह अजनबियों का शहर है। हमें ऐसी जगह रात नहीं गुज़ारना चाहिए जो इसराईली नहीं है। बेहतर है कि हम आगे जाकर ज़िबिया की तरफ बढ़ें।” 13 अगर हम जल्दी करें तो हो सकता है कि ज़िबिया या उससे आगे रामा तक पहुँच सकें। वहाँ आराम से रात गुज़ार सकेंगे।”

14 चुनाँचे वह आगे निकले। जब सूरज ग़रूब होने लगा तो वह बिनयामीन के क़बीले के शहर ज़िबिया के करीब पहुँच गए 15 और रास्ते से हटकर शहर में दाख़िल हुए। लेकिन कोई उनकी मेहमान-नवाज़ी नहीं करना चाहता था, इसलिए वह शहर के चौक में रुक गए।

16 फिर अंधेरे में एक बूढ़ा आदमी वहाँ से गुज़रा। असल में वह इफ़राईम के पहाड़ी इलाके का रहनेवाला था और ज़िबिया में अजनबी था, क्योंकि बाक़ी बाशिदे बिनयामीनी थे। अब वह खेत में अपने काम से फ़ारिग होकर शहर में वापस आया था। 17 मुसाफ़िरों को चौक में देखकर उसने पूछा, “आप कहाँ से आए और कहाँ जा रहे हैं?” 18 लावी ने ज़वाब दिया, “हम यहदाह के बैत-लहम से आए हैं और इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के एक दूर-दराज़ कोने तक सफ़र कर रहे हैं। वहाँ मेरा घर है और वही से मैं रवाना होकर बैत-लहम चला गया था। इस वक़्त मैं रब के घर जा रहा हूँ। लेकिन यहाँ ज़िबिया में कोई नहीं जो हमारी मेहमान-नवाज़ी करने के लिए तैयार हो, 19 हालाँकि हमारे पास खाने की तमाम चीज़ें मौजूद हैं। गधों के लिए भूसा और चारा है, और हमारे लिए भी काफ़ी रोटी और मै है। हमें किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं है।”

20 बूढ़े ने कहा, “फिर मैं आपको अपने घर में ख़ुशआमदीद कहता हूँ। अगर आपको कोई चीज़ दरकार हो तो मैं उसे मुहैया करूँगा। हर सूत में चौक में रात मत गुज़ारना।” 21 वह मुसाफ़िरों को अपने घर ले गया और गधों को चारा खिलाया। मेहमानों ने अपने पाँव धोकर खाना खाया और मै पी।

### ज़िबिया के लोगों का जुर्म

22 वह यों खाने की रिफ़ाक़त से लुफ़अंदोज़ हो रहे थे कि ज़िबिया के कुछ शरीर मर्द घर को घेरकर दरवाज़े को जोर से खटखटाते लगे। वह चिल्लाए, “उस आदमी को बाहर ला जो तेरे घर में ठहरा हुआ है ताकि हम उससे ज्यादती करें!”

23 बूढ़ा आदमी बाहर गया ताकि उन्हें समझाए, “नहीं, भाइयो, ऐसा शैतानी अमल मत करना। यह अजनबी मेरा मेहमान है। ऐसी शर्मनाक हरकत मत करना! 24 इससे पहले मैं अपनी कुँवारी बेटी और मेहमान की दाशता को बाहर ले आता हूँ। उन्हीं से ज्यादती करें। जो जी चाहे उनके साथ करें, लेकिन आदमी के साथ ऐसी शर्मनाक हरकत न करें।”

25 लेकिन बाहर के मर्दाने ने उस की न सुनी। तब लावी अपनी दाशता को पकड़कर बाहर ले गया और उसके पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया। शहर के आदमी पूरी रात उस की बेहुरमती करते रहे। जब पौ फटने लगी तो उन्हींने उसे फ़ारिग कर दिया। 26 सूरज के तूल होने से पहले औरत उस घर के पास वापस आई जिसमें शौहर ठहरा हुआ था। दरवाज़े तक तो वह पहुँच गई लेकिन फिर गिरकर वहीं की वहीं पड़ी रही।

जब दिन चढ़ गया 27 तो लावी जाग उठा और सफ़र करने की तैयारियाँ करने लगा। जब दरवाज़ा खोला तो क्या देखता है कि दाशता सामने ज़मीन पर पड़ी है और हाथ दहलीज़ पर रखे हैं। 28 वह बोला, “उठो, हम चलते हैं।” लेकिन दाशता ने जवाब न दिया। यह देखकर आदमी ने उसे गधे पर लाद लिया और अपने घर चला गया।

29 जब पहुँचा तो उसने छुरी लेकर औरत की लाश को 12 टुकड़ों में काट लिया, फिर उन्हें इसराईल की हर जगह भेज दिया। 30 जिसने भी यह देखा उसने घबराकर कहा, “ऐसा जुर्म हमारे दरमियान कभी नहीं हुआ। जब से हम मिसर से निकलकर आए हैं ऐसी हरकत देखने में नहीं आई। अब लाज़िम है कि हम गौर से सोचें और एक दूसरे से मशवरा करके अगले कदम के बारे में फैसला करें।”



1 तमाम इसराइली एक दिल होकर मिसफाह में रब के हज़र जमा हुए। शिमाल के दान से लेकर जुनब के बैर-सबा तक सब आए। दरियाए-यरदन के पार जिलियाद से भी लोग आए। 2 इसराइली कबीलों के सरदार भी आए। उन्होंने मिलकर एक बड़ी फ़ौज तैयार की, तलवारों से लैस 4,00,000 मर्द जमा हुए। 3 बिनयमीनियों को इस जमात के बारे में इतला मिली।

इसराइलियों ने पूछा, “हमें बताएँ कि यह हैबतनाक जुर्म किस तरह सरज़द हुआ?” 4 मक़तूला के शौहर ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, “मैं अपनी दाशता के साथ जिबिया में आ ठहरा जो बिनयमीनियों के इलाके में है। हम वहाँ रात गुज़ारना चाहते थे। 5 यह देखकर शहर के मर्दों ने मेरे मेज़बान के घर को घेर लिया ताकि मुझे कत्ल करें। मैं तो बच गया, लेकिन मेरी दाशता से इतनी ज़्यादाती हुई कि वह मर गई। 6 यह देखकर मैंने उस की लाश को टुकड़े टुकड़े करके यह टुकड़े इसराइल की मीरास की हर जगह भेज दिए ताकि हर एक को मालूम हो जाए कि हमारे मुल्क में कितना धिनौना जुर्म सरज़द हुआ है। 7 इस पर आप सब यहाँ जमा हुए हैं। इसराइल के मर्दों, अब लाज़िम है कि आप एक दूसरे से मशवरा करके फ़ैसला करें कि क्या करना चाहिए।”

8 तमाम मर्द एक दिल होकर खड़े हुए। सबका फ़ैसला था, “हममें से कोई भी अपने घर वापस नहीं जाएगा 9 जब तक जिबिया को मुनासिब सज़ा न दी जाए। लाज़िम है कि हम फ़ौरन शहर पर हमला करें और इसके लिए कुरा डालकर रब से हिदायत लें। 10 हम यह फ़ैसला भी करें कि कौन कौन हमारी फ़ौज के लिए खाने-पीने का बंदोबस्त कराएगा। इस काम के लिए हममें से हर दसवाँ आदमी काफ़ी है। बाकी सब लोग सीधे जिबिया से लड़ने जाएँ ताकि उस शर्मनाक जुर्म का मुनासिब बदला लें जो इसराइल में हुआ है।”

11 यों तमाम इसराइली मुत्तहिद होकर जिबिया से लड़ने के लिए गए। 12 रास्ते में उन्होंने बिनयमीन के हर कुंवे को पैगाम भिजवाया, “आपके दरमियान धिनौना जुर्म हुआ है। 13 अब जिबिया के इन शरीर आदमियों को हमारे हवाले करें ताकि हम उन्हें सज़ाए-मौत देकर इसराइल में से बुराई मिटा दें।”

लेकिन बिनयमीनी इसके लिए तैयार न हुए। 14 वह पूरे क़बायली इलाके से आकर जिबिया में जमा हुए ताकि इसराइलियों से लड़ें। 15 उसी दिन उन्होंने अपनी फ़ौज का बंदोबस्त किया। जिबिया के 700 तजरबाकार फ़ौजियों के अलावा तलवारों से लैस 26,000 अफ़राद थे। 16 इन फ़ौजियों में से 700 ऐसे मर्द भी थे जो अपने बाएँ हाथ से फ़लाखन चलाने की इतनी महारत रखते थे कि पत्थर बाल जैसे छोटे निशाने पर भी लग जाता था। 17 दूसरी तरफ़ इसराइल के 4,00,000 फ़ौजी खड़े हुए, और हर एक के पास तलवार थी।

18 पहले इसराइली बैतल चले गए। वहाँ उन्होंने अल्लाह से दरियाफ़्त किया, “कौन-सा कबीला हमारे आगे आगे चले जब हम बिनयमीनियों पर हमला करें?” रब ने जवाब दिया, “यहूदाह सबसे आगे चले।”

### बिनयमीन के खिलाफ जंग

19 अगले दिन इसराइली रवाना हुए और जिबिया के करीब पहुँचकर अपनी लशकरगाह लगाई। 20 फिर वह हमला के लिए निकले और तरतीब से लड़ने के लिए खड़े हो गए। 21 यह देखकर बिनयमीनी शहर से निकले और उन पर टूट पड़े। नतीजे में 22,000 इसराइली शहीद हो गए।

22-23 इसराइली बैतल चले गए और शाम तक रब के हज़र रोते रहे। उन्होंने रब से पूछा, “क्या हम दुबारा अपने बिनयमीनी भाइयों से लड़ने जाएँ?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, उन पर हमला करो!” यह सुनकर इसराइलियों का हौसला बढ़ गया और वह अगले दिन वही खड़े हो गए जहाँ पहले दिन खड़े हुए थे। 24 लेकिन जब वह शहर के करीब पहुँचे 25 तो बिनयमीनी पहले की तरह शहर से निकलकर उन पर टूट पड़े। उस दिन तलवार से लैस 18,000 इसराइली शहीद हो गए।

26 फिर इसराइल का पूरा लशकर बैतल चला गया। वहाँ वह शाम तक रब के हज़र रोते और रोज़ा रखते रहे। उन्होंने रब को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और सलामती की कुरबानियाँ पेश करके 27 उससे दरियाफ़्त किया कि हम क्या करें। (उस वक़्त अल्लाह के अहद का सन्दूक बैतल में था 28 जहाँ फ़ीनहास बिन इलियज़र बिन हारुन इमाम था।) इसराइलियों ने पूछा, “क्या हम एक और मरतबा अपने बिनयमीनी भाइयों से लड़ने जाएँ या इससे बाज़ आएँ?” रब ने जवाब दिया, “उन पर हमला करो, क्योंकि कल ही मैं उन्हें तुम्हारे हवाले कर दूँगा।”

### बिनयमीन का सत्यानास

29 इस दफ़ा कुछ इसराइली जिबिया के इर्दगिर्द घात में बैठ गए। 30 बाकी अफ़राद पहले दो दिनों की-सी तरतीब के मुताबिक लड़ने के लिए खड़े हो गए। 31 बिनयमीनी दुबारा शहर से निकलकर उन पर टूट पड़े। जो रास्ते बैतल और जिबिया की तरफ़ ले जाते हैं उन पर और खुले मैदान में उन्होंने तकरीबन 30 इसराइलियों को मार डाला। यों लड़ते लड़ते वह शहर से दूर होते गए। 32 वह पुकारे, “अब हम उन्हें पहली दो मरतबा की तरह शिकस्त देंगे!”

लेकिन इसराइलियों ने मनसूबा बाँध लिया था, “हम उनके आगे आगे भागते हुए उन्हें शहर से दूर रास्तों पर खींच लेंगे।” 33 यों वह भागने लगे और बिनयमीनी उनके पीछे पड़ गए। लेकिन बाल-तमर के करीब इसराइली स्ककर मुड़ गए और उनका सामना करने लगे। अब बाकी इसराइली जो जिबा के इर्दगिर्द और खुले मैदान में घात में बैठे थे अपनी छुपने की जगहों से निकल आए। 34 अचानक जिबिया के बिनयमीनियों को 10,000 बेहतरीन फौजियों का सामना करना पड़ा, उन मर्दों का जो पूरे इसराइल से चुने गए थे। बिनयमीनी उनसे खूब लड़ने लगे, लेकिन उनकी आँखें अभी इस बात के लिए बंद थीं कि उनका अंजाम करीब आ गया है। 35 उस दिन इसराइलियों ने रब की मदद से फतह पाकर तलवार से लैस 25,100 बिनयमीनी फौजियों को मौत के घाट उतार दिया। 36 तब बिनयमीनियों ने जान लिया कि दुश्मन हम पर गालिब आ गए हैं। क्योंकि इसराइली फौज ने अपने भाग जाने से उन्हें जिबिया से दूर खींच लिया था ताकि शहर के इर्दगिर्द घात में बैठे मर्दों को शहर पर हमला करने का मौका मुहैया करें। 37 तब यह मर्द निकलकर शहर पर टूट पड़े और तलवार से तमाम बाशिंदों को मार डाला, 38-39 फिर मनसूबे के मुताबिक आग लगाकर धुँए का बड़ा बादल पैदा किया ताकि भागनेवाले इसराइलियों को इशारा मिल जाए कि वह मुड़कर बिनयमीनियों का मुकाबला करें।

उस वक़्त तक बिनयमीनियों ने तकरीबन 30 इसराइलियों को मार डाला था, और उनका खयाल था कि हम उन्हें पहले की तरह शिकस्त दे रहे हैं। 40 अचानक उनके पीछे धुँए का बादल आसमान की तरफ उठने लगा। जब बिनयमीनियों ने मुड़कर देखा कि शहर के कोने कोने से धुँआँ निकल रहा है 41 तो इसराइल के मर्द स्क गए और पलटकर उनका सामना करने लगे।

बिनयमीनी सख़्त घबरा गए, क्योंकि उन्होंने जान लिया कि हम तबाह हो गए हैं। 42-43 तब उन्होंने मशरिक के रेगिस्तान की तरफ़ फ़रार होने की कोशिश की। लेकिन अब वह मर्द भी उनका ताक़्क़ुब करने लगे जिन्होंने घात में बैठकर जिबिया पर हमला किया था। यों इसराइलियों ने मफ़्सरों को घेरकर मार डाला। 44 उस वक़्त बिनयमीन के 18,000 तजरबाकार फ़ौजी हलाक हुए। 45 जो बच गए वह रेगिस्तान की चटान रिम्मोन की तरफ़ भाग निकले। लेकिन इसराइलियों ने रास्ते में उनके 5,000 अफ़राद को मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद उन्होंने जिदओम तक उनका ताक़्क़ुब किया। मज़ीद 2,000 बिनयमीनी हलाक हुए। 46 इस तरह बिनयमीन के कुल 25,000 तलवार से लैस और तजरबाकार फ़ौजी मारे गए।

47 सिर्फ़ 600 मर्द बचकर रिम्मोन की चटान तक पहुँच गए। वहाँ वह चार महीने तक टिके रहे। 48 तब इसराइली ताक़्क़ुब करने से बाज़ आकर बिनयमीन के कबायली इलाक़े में वापस आए। वहाँ उन्होंने जगह बजगह जाकर सब कुछ मौत के घाट उतार दिया। जो भी उन्हें मिला वह तलवार की ज़द में आ गया, खाह इनसान था या हैवान। साथ साथ उन्होंने तमाम शहरों को आग लगा दी।

## 21

### बिनयमीनियों को औरतें मिलती हैं

1 जब इसराइली मिसफ़ाह में जमा हुए थे तो सबने कसम खाकर कहा था, “हम कभी भी अपनी बेटियों का किसी बिनयमीनी मर्द के साथ रिश्ता नहीं बाँधेंगे।” 2 अब वह बैतल चले गए और शाम तक अल्लाह के हज़ूर बैठे रहे। रो रोकर उन्होंने दुआ की, 3 “ए रब, इसराइल के खुदा, हमारी कौम का एक पूरा कबीला मिट गया है! यह मुसीबत इसराइल पर क्यों आई?”

4 अगले दिन वह सुबह-सवेरे उठे और कुरबानगाह बनाकर उस पर भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाईं। 5 फिर वह एक दूसरे से पृथक् लगे, “जब हम मिसफ़ाह में रब के हज़ूर जमा हुए तो हमारी कौम में से कौन कौन इजतिमा में शरीक न हुआ?” क्योंकि उस वक़्त उन्होंने कसम खाकर एलान किया था, “जिसने यहाँ रब के हज़ूर आने से इनकार किया उसे ज़स्त्र सज़ाए-मौत दी जाएगी।” 6 अब इसराइलियों को बिनयमीनियों पर अफ़सोस हुआ। उन्होंने कहा, “एक पूरा कबीला मिट गया है। 7 अब हम उन थोड़े बच्चे-खुचे आदमियों को बीवियाँ किस तरह मुहैया कर सकते हैं? हमने तो रब के हज़ूर कसम खाई है कि अपनी बेटियों का उनके साथ रिश्ता नहीं बाँधेंगे। 8 लेकिन हो सकता है कोई खानदान मिसफ़ाह के इजतिमा में न आया हो। आओ, हम पता करें।” मालूम हुआ कि यबीस-जिलियाद के बाशिंदे नहीं आए थे। 9 यह बात फ़ौजियों को गिन्ने से पता चली, क्योंकि गिन्ते वक़्त यबीस-जिलियाद का कोई भी शख्स फ़ौज में नहीं था।

10 तब उन्होंने 12,000 फ़ौजियों को चुनकर उन्हें हुक़्म दिया, “यबीस-जिलियाद पर हमला करके तमाम बाशिंदों को बाल-बच्चों समेत मार डालो। 11 सिर्फ़ कुँवारियों को ज़िंदा रहने दो।”

12 फ़ौजियों ने यबीस में 400 कुँवारियाँ पाईं। वह उन्हें सैला ले आए जहाँ इसराइलियों का लश्कर ठहरा हुआ था। 13 वहाँ से उन्होंने अपने कासिदों को रिम्मोन की चटान के पास भेजकर बिनयमीनियों के साथ सुलह कर ली। 14 फिर

बिनयमीन के 600 मर्द रेगिस्तान से वापस आए, और उनके साथ यबीस-जिलियाद की कुँवारियों की शादी हुई। लेकिन यह सबके लिए काफी नहीं थी।

15 इसराइलियों को बिनयमीन पर अफ़सोस हुआ, क्योंकि रब ने इसराइल के क़बीलों में ख़ला डाल दिया था। 16 ज़मात के बुज़ुर्गों ने दुबारा पूछा, “हमें बिनयमीन के बाकी मर्दों के लिए कहाँ से बीवियाँ मिलेंगी? उनकी तमाम औरतें तो हलाक हो गई हैं। 17 लाज़िम है कि उन्हें उनका मौरूसी इलाका वापस मिल जाए। ऐसा न हो कि वह बिलकुल मिट जाएँ। 18 लेकिन हम अपनी बेटियों की उनके साथ शादी नहीं करा सकते, क्योंकि हमने क़सम खाकर एलान किया है, ‘जो अपनी बेटी का रिश्ता बिनयमीन के किसी मर्द से बाँधेगा उस पर अल्लाह की लानत हो’।”

19 यों सोचते सोचते उन्हें आख़िरकार यह तरकीब सूझी, “कुछ देर के बाद यहाँ सैला में रब की सालाना ईद मनाई जाएगी। सैला बैतेल के शिमाल में, लबूना के जुनूब में और उस रास्ते के मशरिफ़ में है जो बैतेल से सिकम तक ले जाता है। 20 अब बिनयमीनी मर्दों के लिए हमारा मशवरा है कि ईद के दिनों में अंगूर के बागों में छुपकर घात में बैठ जाएँ। 21 जब लड़कियाँ लोकनाच के लिए सैला से निकलेंगी तो फिर बागों से निकलकर उन पर झपट पड़ना। हर आदमी एक लड़की को पकड़कर उसे अपने घर ले जाए। 22 जब उनके बाप और भाई हमारे पास आकर आपकी शिकायत करेंगे तो हम उनसे कहेंगे, ‘बिनयमीनियों पर तरस खाएँ, क्योंकि जब हमने यबीस पर फ़तह पाई तो हम उनके लिए काफी औरतें हासिल न कर सके। आप बेक़ुमूर हैं, क्योंकि आपने उन्हें अपनी बेटियों को इरादतन तो नहीं दिया’।” 23 बिनयमीनियों ने बुज़ुर्गों की इस हिदायत पर अमल किया। ईद के दिनों में जब लड़कियाँ नाच रही थीं तो बिनयमीनियों ने उतनी पकड़ ली कि उनकी कमी पूरी हो गई। फिर वह उन्हें अपने क़बायली इलाके में ले गए और शहरों को दुबारा तामीर करके उनमें बसने लगे। 24 बाकी इसराइली भी वहाँ से चले गए। हर एक अपने क़बायली इलाके में वापस चला गया। 25 उस ज़माने में इसराइल में कोई बादशाह नहीं था। हर एक वही कुछ करता जो उसे मुनासिब लगता था।

## स्त

इलीमलिक मोआब चला जाता है

1-2 उन दिनों जब काज़ी कौम की राहनुमाई किया करते थे तो इसराईल में काल पड़ा। यहदाह के शहर बैत-लहम में एक इफ़राती आदमी रहता था जिसका नाम इलीमलिक था। काल की वजह से वह अपनी बीवी नओमी और अपने दो बेटों महलोन और किलियोन को लेकर मुल्के-मोआब में जा बसा।

3 लेकिन कुछ देर के बाद इलीमलिक फ़ौत हो गया, और नओमी अपने दो बेटों के साथ अकेली रह गई। 4 महलोन और किलियोन ने मोआब की दो औरतों से शादी कर ली। एक का नाम उरफ़ा था और दूसरी का स्त। लेकिन तक्ररीबन दस साल के बाद 5 दोनों बेटे भी जान-बहक हो गए। अब नओमी का न शौहर और न बेटे ही रहे थे।

नओमी स्त के साथ वापस चली जाती है

6-7 एक दिन नओमी को मुल्के-मोआब में खबर मिली कि रब अपनी कौम पर रहम करके उसे दुबारा अच्छी फ़सलें दे रहा है। तब वह अपने वतन यहदाह के लिए रवाना हुई। उरफ़ा और स्त भी साथ चली।

जब वह उस रास्ते पर आ गई तो यहदाह तक पहुँचाता है 8 तो नओमी ने अपनी बहुओं से कहा, “अब अपने माँ-बाप के घर वापस चली जाएँ। रब आप पर उतना रहम करे जितना आपने मरहमों और मुझ पर किया है। 9 वह आपको नए घर और नए शौहर मुहैया करके सकून दे।”

यह कहकर उसने उन्हें बोसा दिया। दोनों रो पड़ी 10 और एतराज किया, “हरगिज नहीं, हम आपके साथ आपकी कौम के पास जाएँगी।” 11 लेकिन नओमी ने इसरार किया, “बेटियो, बस करें और अपने अपने घर वापस चली जाएँ। अब मेरे साथ जाने का क्या फ़ायदा? मुझसे तो मज़ीद कोई बेटा पैदा नहीं होगा जो आपका शौहर बन सके। 12 नहीं बेटियो, वापस चली जाएँ। मैं तो इतनी बूढ़ी हो चुकी हूँ कि दुबारा शादी नहीं कर सकती। और अगर इसकी उम्मीद भी होती बल्कि मेरी शादी आज रात को होती और मेरे हों बेटे पैदा होते 13 तो क्या आप उनके बालिग हो जाने तक इंतज़ार कर सकती? क्या आप उस वक़्त तक किसी और से शादी करने से इनकार करती? नहीं, बेटियो। रब ने अपना हाथ मेरे खिलाफ़ उठाया है, तो आप इस लानत की ज़द में क्यों आएँ?”

14 तब उरफ़ा और स्त दुबारा रो पड़ी। उरफ़ा ने अपनी सास को चूमकर अलविदा कहा, लेकिन स्त नओमी के साथ लिपटी रही। 15 नओमी ने उसे समझाने की कोशिश की, “देखें, उरफ़ा अपनी कौम और अपने देवताओं के पास वापस चली गई है। अब आप भी ऐसा ही करें।”

16 लेकिन स्त ने जवाब दिया, “मुझे आपको छोड़कर वापस जाने पर मजबूर न कीजिए। जहाँ आप जाएँगी मैं जाऊँगी। जहाँ आप रहेंगी वहाँ मैं भी रहूँगी। आपकी कौम मेरी कौम और आपका खुदा मेरा खुदा है। 17 जहाँ आप मरेगी वही मैं मरूँगी और वही दफ़न हो जाऊँगी। सिर्फ़ मौत ही मुझे आपसे अलग कर सकती है। अगर मेरा यह वादा पूरा न हो तो अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे!”

18 नओमी ने जान लिया कि स्त का साथ जाने का पक्का इरादा है, इसलिए वह खामोश हो गई और उसे समझाने से बाज़ आई। 19 वह चल पड़ी और चलते चलते बैत-लहम पहुँच गई। जब दाखिल हुई तो पूरे शहर में हलचल मच गई। औरतें कहने लगी, “क्या यह नओमी नहीं है?”

20 नओमी ने जवाब दिया, “अब मुझे नओमी \* मत कहना बल्कि मारा, † क्योंकि कादिरे-मुतलक ने मुझे सख़्त मुसीबत में डाल दिया है। 21 यहाँ से जाते वक़्त मेरे हाथ भरे हुए थे, लेकिन अब रब मुझे ख़ाली हाथ वापस ले आया है। चुनौतें मुझे नओमी मत कहना। रब ने खुद मेरे खिलाफ़ गवाही दी है, कादिरे-मुतलक ने मुझे इस मुसीबत में डाला है।”

22 जब नओमी अपनी मोआबी बहू के साथ बैत-लहम पहुँची तो जौ की फ़सल की कटाई शुरू हो चुकी थी।

## 2

स्त की बोअज़ से मुलाकात

1 बैत-लहम में नओमी के मरहम शौहर का रिश्तेदार रहता था जिसका नाम बोअज़ था। वह असरो-रसूख़ रखता था, और उस की ज़मीनें थीं।

\* 1:20 ख़ुशगवार, ख़ुशीवाली। † 1:20 कड़वी।

2 एक दिन स्त ने अपनी सास से कहा, “मैं खेतों में जाकर फसल की कटाई से बची हुई बालें चुन लूँ। कोई न कोई तो मुझे इसकी इजाजत देगा।” नओमी ने जवाब दिया, “ठीक है बेटी, जाएँ।” 3 स्त किसी खेत में गई और मजदूरों के पीछे पीछे चलती हुई बची हुई बालें चुनने लगी। उसे मालूम न था कि खेत का मालिक सुसर का रिश्तेदार बोअज़ है।

4 इतने में बोअज़ बैत-लहम से पहुँचा। उसने अपने मजदूरों से कहा, “रब आपके साथ हो।” उन्होंने जवाब दिया, “और रब आपको भी बरकत दे!” 5 फिर बोअज़ ने मजदूरों के इंचार्ज से पूछा, “उस जवान औरत का मालिक कौन है?” 6 आदमी ने जवाब दिया, “यह मोआबी औरत नओमी के साथ मुल्के-मोआब से आई है। 7 इसने मुझसे मजदूरों के पीछे चलकर बची हुई बालें चुनने की इजाजत ली। यह थोड़ी देर झोंपड़ी के साये में आराम करने के सिवा सुबह से लेकर अब तक काम में लगी रही है।”

8 यह सुनकर बोअज़ ने स्त से बात की, “बेटी, मेरी बात सुनें! किसी और खेत में बची हुई बालें चुनने के लिए न जाएँ बल्कि यहीं मेरी नौकरानियों के साथ रहें। 9 खेत के उस हिस्से पर ध्यान दें जहाँ फसल की कटाई हो रही है और नौकरानियों के पीछे पीछे चलती रहें। मैंने आदमियों को आपको छेड़ने से मना किया है। जब भी आपको प्यास लगे तो उन बरतनों से पानी पीना जो आदमियों ने कुएँ से भर रखे हैं।”

10 स्त मुँह के बल झुक गई और बोली, “मैं इस लायक नहीं कि आप मुझ पर इतनी मेहरबानी करें। मैं तो परदेसी हूँ। आप क्यों मेरी कदर करते हैं?” 11 बोअज़ ने जवाब दिया, “मुझे वह कुछ बताया गया है जो आपने अपने शौहर की वफात से लेकर आज तक अपनी सास के लिए किया है। आप अपने माँ-बाप और अपने वतन को छोड़कर एक कौम में बसने आई हैं जिसे पहले से नहीं जानती थीं। 12 आप रब इसराईल के खुदा के परों तले पनाह लेने आई हैं। अब वह आपको आपकी नेकी का पूरा अज़ दे।” 13 स्त ने कहा, “मेरे आका, अल्लाह करे कि मैं आइंदा भी आपकी मंजूरे-नजर रहूँ। गो मैं आपकी नौकरानियों की हैसियत भी नहीं रखती तो भी आपने मुझसे शफकत भरी बातें करके मुझे तसल्ली दी है।”

14 खाने के वक्त बोअज़ ने स्त को बुलाकर कहा, “इधर आकर रोटी खाएँ और अपना नवाला सिरके में डुबो दें।” स्त उसके मजदूरों के साथ बैठ गई, और बोअज़ ने उसे जौ के धुने हुए दाने दे दिए। स्त ने जी भरकर खाना खाया। फिर भी कुछ बच गया। 15 जब वह काम जारी रखने के लिए उठी तो बोअज़ ने हुकम दिया, “उसे पूलों के दरमियान भी बालें जमा करने दो, और अगर वह ऐसा करे तो उस की बेइज्जती मत करना। 16 न सिर्फ़ यह बल्कि काम करते वक्त इधर उधर पूलों की कुछ बालें ज़मीन पर गिरने दो। जब वह उन्हें जमा करने आए तो उसे मत झिड़कना!”

17 स्त ने खेत में शाम तक काम जारी रखा। जब उसने बालों को कूट लिया तो दानों के तकरीबन 13 किलोग्राम निकले। 18 फिर वह सब कुछ उठाकर अपने घर वापस ले आई और सास को दिखाया। साथ साथ उसने उसे वह धुने हुए दाने भी दिए जो दोपहर के खाने से बच गए थे। 19 नओमी ने पूछा, “आपने यह सब कुछ कहाँ से जमा किया? बताएँ, आप कहाँ थीं? अल्लाह उसे बरकत दे जिसने आपकी इतनी कदर की है!”

स्त ने कहा, “जिस आदमी के खेत में मैंने आज काम किया उसका नाम बोअज़ है।” 20 नओमी पुकार उठी, “रब उसे बरकत दे! वह तो हमारा करीबी रिश्तेदार है, और शरीअत के मुताबिक उसका हक है कि वह हमारी मदद करे। अब मुझे मालूम हुआ है कि अल्लाह हम पर और हमारे मरहम शौहरों पर रहम करने से बाज़ नहीं आया!”

21 स्त बोली, “उसने मुझसे यह भी कहा कि कहीं और न जाना बल्कि कटाई के इखिताम तक मेरे मजदूरों के पीछे पीछे बालें जमा करना।”

22 नओमी ने जवाब में कहा, “बहुत अच्छा। बेटी, ऐसा ही करें। उस की नौकरानियों के साथ रहने का यह फायदा है कि आप महफूज़ रहेंगी। किसी और के खेत में जाएँ तो हो सकता है कि कोई आपको तंग करे।”

23 चुनौचे स्त जौ और गंदुम की कटाई के पूरे मौसम में बोअज़ की नौकरानियों के पास जाती और बची हुई बालें चुनती। शाम को वह अपनी सास के घर वापस चली जाती थी।

### 3

#### स्त की शादी की कोशिशें

1 एक दिन नओमी स्त से मुखातिब हुई, “बेटी, मैं आपके लिए घर का बंदोबस्त करना चाहती हूँ, ऐसी जगह जहाँ आपकी ज़रूरियात आइंदा भी पूरी होती रहेंगी। 2 अब देखें, जिस आदमी की नौकरानियों के साथ आपने बालें चुनी हैं वह हमारा करीबी रिश्तेदार है। आज शाम को बोअज़ गाहने की जगह पर जौ फटकेगा। 3 तो सुन लें, अच्छी तरह नहाकर खुशबूदार तेल लगा लें और अपना सबसे खूबसूरत लिबास पहन लें। फिर गाहने की जगह जाएँ। लेकिन उसे पता न चले कि आप आई हैं। जब वह खाने-पीने से फारिग हो जाएँ 4 तो देख लें कि बोअज़ सोने के लिए कहाँ लोट जाता है। फिर जब वह सो जाएगा

तो वहाँ जाएँ और कम्बल को उसके पैरों से उतारकर उनके पास लेट जाएँ। बाकी जो कुछ करना है वह आपको उसी वक्त बताएगा।”

5 स्त ने जवाब दिया, “ठीक है। जो कुछ भी आपने कहा है मैं करूँगी।” 6 वह अपनी सास की हिदायत के मुताबिक तैयार हुई और शाम के वक्त गाहने की जगह पर पहुँची। 7 वहाँ बोअज़ खाने-पीने और खुशी मनाने के बाद जौ के ढेर के पास लेटकर सो गया। फिर स्त चुपके से उसके पास आई। उसके पैरों से कम्बल हटाकर वह उनके पास लेट गई।

8 आधी रात को बोअज़ घबरा गया। टटोल टटोलकर उसे पता चला कि पैरों के पास औरत पड़ी है। 9 उसने पूछा, “कौन है?” स्त ने जवाब दिया, “आपकी खादिमा स्त। मेरी एक गुज़ारिश है। चूँकि आप मेरे करीबी रिश्तेदार हैं इसलिए आपका हक है कि मेरी ज़रूरियात पूरी करें। मेहरबानी करके अपने लिबास का दामन मुझ पर बिछाकर जाहिर करें कि मेरे साथ शादी करेंगे।”

10 बोअज़ बोला, “बेटी, रब आपको बरकत दे! अब आपने अपने सुसराल से वफ़ादारी का पहले की निसबत ज़्यादा इज़हार किया है, क्योंकि आप जवान आदमियों के पीछे न लगी, खाह गरीब हों या अमीर। 11 बेटी, अब फ़िकर न करें। मैं ज़रूर आपकी यह गुज़ारिश पूरी करूँगा। आखिर तमाम मकामी लोग जान गए हैं कि आप शरीफ़ औरत हैं। 12 आपकी बात सच है कि मैं आपका करीबी रिश्तेदार हूँ और यह मेरा हक है कि आपकी ज़रूरियात पूरी करूँ। लेकिन एक और आदमी है जिसका आपसे ज़्यादा करीबी रिश्ता है। 13 रात के लिए यहाँ ठहरें! कल मैं उस आदमी से बात करूँगा। अगर वह आपसे शादी करके रिश्तेदारी का हक़ अदा करना चाहे तो ठीक है। अगर नहीं तो रब की क़सम, मैं यह ज़रूर करूँगा। आप सुबह के वक्त तक यहीं लेटी रहें।”

14 चुनौचे स्त बोअज़ के पैरों के पास लेटी रही। लेकिन वह सुबह मुँह अंधेरे उठकर चली गई ताकि कोई उसे पहचान न सके, क्योंकि बोअज़ ने कहा था, “किसी को पता न चले कि कोई औरत यहाँ गाहने की जगह पर मेरे पास आई है।” 15 स्त के जाने से पहले बोअज़ बोला, “अपनी चादर बिछा दें!” फिर उसने कोई बरतन छ: दफ़ा जौ के दानों से भरकर चादर में डाल दिया और उसे स्त के सर पर रख दिया। फिर वह शहर में वापस चला गया।

16 जब स्त घर पहुँची तो सास ने पूछा, “बेटी, वक्त कैसा रहा?” स्त ने उसे सब कुछ सुनाया जो बोअज़ ने जवाब में किया था। 17 स्त बोली, “जौ के यह दाने भी उस की तरफ़ से हैं। वह नहीं चाहता था कि मैं ख़ाली हाथ आपके पास वापस आऊँ।” 18 यह सुनकर नओमी ने स्त को तसल्ली दी, “बेटी, जब तक कोई नतीजा न निकले यहाँ ठहर जाएँ। अब यह आदमी आराम नहीं करेगा बल्कि आज ही मामले का हल निकालेगा।”

## 4

1 बोअज़ शहर के दरवाज़े के पास जाकर बैठ गया जहाँ बुजुर्ग़ फ़ैसले किया करते थे। कुछ देर के बाद वह रिश्तेदार वहाँ से गुज़रा जिसका ज़िक्र बोअज़ ने स्त से किया था। बोअज़ उससे मुखातिब हुआ, “दोस्त, इधर आएँ। मेरे पास बैठ जाएँ।”

रिश्तेदार उसके पास बैठ गया 2 तो बोअज़ ने शहर के दस बुजुर्ग़ों को भी साथ बिठाया। 3 फिर उसने रिश्तेदार से बात की, “नओमी मूलके-मोआब से वापस आकर अपने शौहर इलीमलिक की ज़मीन फ़रोख़्त करना चाहती है। 4 यह ज़मीन हमारे खानदान का मौरूसी हिस्सा है, इसलिए मैंने मुनासिब समझा कि आपको इतला दूँ ताकि आप यह ज़मीन ख़रीद लें। बैत-लहम के बुजुर्ग़ और साथ बैठे राहनुमा इसके गवाह होंगे। लाज़िम है कि यह ज़मीन हमारे खानदान का हिस्सा रहे, इसलिए बताएँ कि क्या आप इसे ख़रीदकर छुड़ाएँगे? आपका सबसे करीबी रिश्ता है, इसलिए यह आप ही का हक़ है। अगर आप ज़मीन ख़रीदना न चाहें तो यह मेरा हक़ बनेगा।” रिश्तेदार ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं इसे ख़रीदकर छुड़ाऊँगा।” 5 फिर बोअज़ बोला, “अगर आप नओमी से ज़मीन ख़रीदें तो आपको उस की मोआबी बहू स्त से शादी करनी पड़ेगी ताकि मरहम शौहर की जगह औलाद पैदा करें जो उसका नाम रखकर यह ज़मीन सँभालें।”

6 यह सुनकर रिश्तेदार ने कहा, “फिर मैं इसे ख़रीदना नहीं चाहता, क्योंकि ऐसा करने से मेरी मौरूसी ज़मीन को नुक़सान पहुँचेगा। आप ही इसे ख़रीदकर छुड़ाएँ।”

7 उस ज़माने में अगर ऐसे किसी मामले में कोई ज़मीन ख़रीदने का अपना हक़ किसी दूसरे को मुंताकिल करना चाहता था तो वह अपनी चप्पल उतारकर उसे दे देता था। इस तरीके से फ़ैसला कानूनी तौर पर तय हो जाता था। 8 चुनौचे स्त के ज़्यादा करीबी रिश्तेदार ने अपनी चप्पल उतारकर बोअज़ को दे दी और कहा, “आप ही ज़मीन को ख़रीद लें।” 9 तब बोअज़ ने बुजुर्ग़ों और बाकी लोगों के सामने एलान किया, “आज आप गवाह हैं कि मैंने नओमी से सब कुछ ख़रीद लिया है जो उसके मरहम शौहर इलीमलिक और उसके दो बेटों किलियोन और महलोन का था। 10 साथ ही मैंने महलोन की बेवा मोआबी औरत स्त से शादी करने का वादा किया है ताकि महलोन के नाम से बेटा पैदा हो। यों मरहम की मौरूसी ज़मीन खानदान से छिन नहीं जाएगी, और उसका नाम हमारे खानदान और बैत-लहम के बाशिंदों में कायम रहेगा। आज आप सब गवाह हैं।”

11 बूजुर्गों और शहर के दरवाजे पर बैठे दीगर मर्दों ने इसकी तसदीक की, “हम गवाह हैं! रब आपके घर में आनेवाली इस औरत को उन बरकतों से नवाजे जिनसे उसने राखिल और लियाह को नवाजा, जिनसे तमाम इसराईली निकले। रब करे कि आपकी दौलत और इज्जत इफराता यानी बैत-लहम में बढ़ती जाए। 12 वह आप और आपकी बीवी को उतनी औलाद बरख्शे जितनी तमर और यहदाह के बेटे फारस के खानदान को बरख्शी थी।”

13 चुनोंचे स्त बोअज़ की बीवी बन गई। और रब की मरज़ी से स्त शादी के बाद हामिला हुई। जब उसके बेटा हुआ 14 तो बैत-लहम की औरतों ने नओमी से कहा, “रब की तमज़ीद हो! आपको यह बच्चा अता करने से उसने ऐसा शख्स मुहैया किया है जो आपका खानदान सँभालेगा। अल्लाह करे कि उस की शोहरत पूरे इसराईल में फैल जाए। 15 उससे आप ताज़ादम हो जाएँगी, और बूढ़ापे में वह आपको सहारा देगा। क्योंकि आपकी बहू जो आपको प्यार करती है और जिसकी कदरो-कीमत सात बेटों से बढ़कर है उसी ने उसे जन्म दिया है।”

16 नओमी बच्चे को अपनी गोद में बिठाकर उसे पालने लगी। 17 पड़ोसी औरतों ने उसका नाम ओबेद यानी खिदमत करनेवाला रखा। उन्होंने कहा, “नओमी के हों बेटा पैदा हुआ है!”

ओबेद दाऊद बादशाह के बाप यस्सी का बाप था। 18 जैल में फारस का दाऊद तक नसबनामा है : फारस, हसरोन, 19 राम, अम्मीनदाब, 20 नहसोन, सलमोन, 21 बोअज़, ओबेद, 22 यस्सी और दाऊद।

## 1 समुएल

हन्ना अल्लाह से बच्चा माँगती है

1 इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के शहर रामातायम-सोफ़ीम यानी रामा में एक इफ़राईमी रहता था जिसका नाम इलकाना बिन यरोहाम बिन इलीहू बिन तुखू बिन सूफ़ था। 2 इलकाना की दो बीवियाँ थीं। एक का नाम हन्ना था और दूसरी का फ़निन्ना। फ़निन्ना के बच्चे थे, लेकिन हन्ना बेऔलाद थी।

3 इलकाना हर साल अपने खानदान समेत सफ़र करके सैला के मक़दिस के पास जाता ताकि वहाँ रब्बूल-अफ़वाज के हुज़ूर कुरबानी गुज़राने और उस की परस्तिश करे। उन दिनों में एली इमाम के दो बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास सैला में इमाम की खिदमत अंजाम देते थे। 4 हर साल इलकाना अपनी कुरबानी पेश करने के बाद कुरबानी के गोशत के टुकड़े फ़निन्ना और उसके बेटे-बेटियों में तकसीम करता। 5 हन्ना को भी गोशत मिलता, लेकिन जहाँ दूसरों को एक हिस्सा मिलता वहाँ उसे दो हिस्से मिलते थे। क्योंकि इलकाना उससे बहुत मुहब्बत रखता था, अगरचे अब तक रब की मरज़ी नहीं थी कि हन्ना के बच्चे पैदा हों। 6 फ़निन्ना की हन्ना से दुश्मनी थी, इसलिए वह हर साल हन्ना के बाँझपन का मज़ाक़ उड़ाकर उसे तंग करती थी। 7 साल बसाल ऐसा ही हुआ करता था। जब भी वह रब के मक़दिस के पास जाते तो फ़निन्ना हन्ना को इतना तंग करती कि वह उस की बातों सुन सुनकर रो पड़ती और खा-पी न सकती। 8 फिर इलकाना पृछता, “हन्ना, तू क्यों रो रही है? तू खाना क्यों नहीं खा रही? उदास होने की क्या ज़रूरत? मैं तो हूँ। क्या यह दस बेटों से कहीं बेहतर नहीं?”

9 एक दिन जब वह सैला में थे तो हन्ना खाने-पीने के बाद दुआ करने के लिए उठी। एली इमाम रब के मक़दिस के दरवाज़े के पास कुरसी पर बैठा था। 10 हन्ना शर्दीद परेशानी के आलम में फूट फूटकर रोने लगी। रब से दुआ करते करते 11 उसने कसम खाई, “ऐ रब्बूल-अफ़वाज, मेरी बुरी हालत पर नज़र डालकर मुझे याद कर! अपनी खादिमा को मत भूलना बल्कि बेटा अता फ़रमा! अगर तू ऐसा करे तो मैं उसे तुझे वापस कर दूँगी। ऐ रब, उस की पूरी जिंदगी तेरे लिए मख़सूस होगी! इसका निशान यह होगा कि उसके बाल कभी नहीं कटवाए जाएंगे।”

12 हन्ना बड़ी देर तक यों दुआ करती रही। एली उसके मुँह पर गौर करने लगा 13 तो देखा कि हन्ना के होंट तो हिल रहे हैं लेकिन आवाज़ सुनाई नहीं दे रही, क्योंकि हन्ना दिल ही दिल में दुआ कर रही थी। लेकिन एली को ऐसा लग रहा था कि वह नशे में धुत है, 14 इसलिए उसने उसे झिड़कते हुए कहा, “तू कब तक नशे में धुत रहेगी? मैं पीने से बाज़ आ!”

15 हन्ना ने जवाब दिया, “मेरे आका, ऐसी कोई बात नहीं है। मैंने न मै, न कोई और नशा-आवर चीज़ चखी है। बात यह है कि मैं बड़ी रंजीदा हूँ, इसलिए रब के हुज़ूर अपने दिल की आहो-जारी उंडेल दी है। \* 16 यह न समझें कि मैं निकम्मी औरत हूँ, बल्कि मैं बड़े ग़म और अज़ियत में दुआ कर रही थी।”

17 यह सुनकर एली ने जवाब दिया, “सलामती से अपने घर चली जा! इसराइल का खुदा तेरी दरखास्त पूरी करे।”

18 हन्ना ने कहा, “अपनी खादिमा पर आपकी नज़रे-करम हो!” फिर उसने जाकर कुछ खाया, और उसका चेहरा उदास न रहा।

समुएल की पैदाइश और बचपन

19 अगले दिन पूरा खानदान सुबह-सवेरे उठा। उन्होंने मक़दिस में जाकर रब की परस्तिश की, फिर रामा वापस चले गए जहाँ उनका घर था। और रब ने हन्ना को याद करके उस की दुआ सुनी। 20 इलकाना और हन्ना के बेटा पैदा हुआ। हन्ना ने उसका नाम समुएल यानी ‘उसका नाम अल्लाह है’ रखा, क्योंकि उसने कहा, “मैंने उसे रब से माँगा।”

21 अगले साल इलकाना खानदान के साथ मामूल के मुताबिक़ सैला गया ताकि रब को सालाना कुरबानी पेश करे और अपनी मन्नत पूरी करे। 22 लेकिन हन्ना न गई। उसने अपने शौहर से कहा, “जब बच्चा दूध पीना छोड़ देगा तब ही मैं उसे लेकर रब के हुज़ूर पेश करूँगी। उस वक़्त से वह हमेशा वही रहेगा।” 23 इलकाना ने जवाब दिया, “वह कुछ कर जो तुझे मुनासिब लगे। बच्चे का दूध छुड़ाने तक यहाँ रह। लेकिन रब अपना कलाम कायम रखे।” चुनौचे हन्ना बच्चे के दूध छुड़ाने तक घर में रही।

24 जब समुएल ने दूध पीना छोड़ दिया तो हन्ना उसे सैला में रब के मक़दिस के पास ले गई, गो बच्चा अभी छोटा था। कुरबानियों के लिए उसके पास तीन बैल, मैदे के तकरीबन 16 किलोग्राम और मै की मशक़ थी। 25 बैल को कुरबानगाह पर चढ़ाने के बाद इलकाना और हन्ना बच्चे को एली के पास ले गए। 26 हन्ना ने कहा, “मेरे आका, आपकी हयात की कसम,

\* 1:15 लफ़्ज़ी तरज़ुमा: अपनी जान उंडेल दी है।



मैं वही औरत हूँ जो कुछ साल पहले यहाँ आपकी मौजूदगी में खड़ी दूआ कर रही थी।<sup>27</sup> उस वक्त मैंने इलतमास की थी कि रब मुझे बेठा अता करे, और रब ने मेरी सुनी है।<sup>28</sup> चुनौचे अब मैं अपना वादा पूरा करके बेटे को रब को वापस कर देती हूँ। उम्र-भर वह रब के लिए मखसूस होगा।” तब उसने रब के हुज़ूर सिजदा किया।

## 2

### हन्ना का गीत

1 वहाँ हन्ना ने यह गीत गाया,

“मेरा दिल रब की खुशी मनाता है, क्योंकि उसने मुझे कुव्वत अता की है। मेरा मुँह दिलेरी से अपने दुश्मनों के खिलाफ बात करता है, क्योंकि मैं तेरी नजात के बाइस बाग बाग हूँ।

2 रब जैसा कुदूस कोई नहीं है, तेरे सिवा कोई नहीं है। हमारे खुदा जैसी कोई चटान नहीं है।<sup>3</sup> डींगें मारने से बाज़ आओ! गुस्ताख बातें मत बको! क्योंकि रब ऐसा खुदा है जो सब कुछ जानता है, वह तमाम आमाल को तोलकर परखता है।<sup>4</sup> अब बड़ों की कमानें टूट गई हैं जबकि गिरनेवाले कुव्वत से कमरबस्ता हो गए हैं।<sup>5</sup> जो पहले सेर थे वह रोटी मिलने के लिए मजदूरी करते हैं जबकि जो पहले भूके थे वह सेर हो गए हैं। बेऔलाद औरत के सात बच्चे पैदा हुए हैं जबकि वाफिर बच्चों की माँ मरुझा रही है।

6 रब एक को मरने देता और दूसरे को जिंदा होने देता है। वह एक को पाताल में उतरने देता और दूसरे को वहाँ से निकल आने देता है।<sup>7</sup> रब ही गरीब और अमीर बना देता है, वही पस्त करता और वही सरफराज़ करता है।<sup>8</sup> वह खाक में दबे आदमी को खड़ा करता है और राख में लेटे ज़रूरतमंद को सरफराज़ करता है, फिर उन्हें रईमों के साथ इज्जत की कुरसी पर बिठा देता है। क्योंकि दुनिया की बुनियादें रब की हैं, और उसी ने उन पर ज़मीन रखी है।

9 वह अपने वफादार पैरोकारों के पाँव महफूज़ रखेगा जबकि शरीर तारीकी में चुप हो जाएंगे। क्योंकि इनसान अपनी ताकत से कामयाब नहीं होता।<sup>10</sup> जो रब से लडने की ज़ुरत करें वह पाश पाश हो जाएंगे। रब आसमान से उनके खिलाफ गरजकर दुनिया की इंतहा तक सबकी अदालत करेगा। वह अपने बादशाह को तकवियत और अपने मसह किए हुए खादिम को कुव्वत अता करेगा।”

11 फिर इलकाना और हन्ना रामा में अपने घर वापस चले गए। लेकिन उनका बेटा एली इमाम के पास रहा और मकदिस में रब की खिदमत करने लगा।

### एली के बेटों की बेदीन जिंदगी

12 लेकिन एली के बेटे बदमाश थे। न वह रब को जानते थे,<sup>13</sup> न इमाम की हैसियत से अपने फरायज़ सहीह तौर पर अदा करते थे। क्योंकि जब भी कोई आदमी अपनी कुरबानी पेश करके रिफाकती खाने के लिए गोशत उबालता तो एली के बेटे अपने नौकर को वहाँ भेज देते। यह नौकर सिहशाखा काँटा<sup>14</sup> देग में डालकर गोशत का हर वह टुकड़ा अपने मालिकों के पास ले जाता जो काँटे से लग जाता। यही उनका तमाम इसराइलियों के साथ सुलूक था जो सैला में कुरबानियाँ चढ़ाने आते थे।<sup>15</sup> न सिर्फ यह बल्कि कई बार नौकर उस वक्त भी आ जाता जब जानवर की चरबी अभी कुरबानागाह पर जलानी होती थी। फिर वह तकाज़ा करता, “मुझे इमाम के लिए कच्चा गोशत दे दो! उसे उबला गोशत मंज़ूर नहीं बल्कि सिर्फ कच्चा गोशत, क्योंकि वह उसे भूना चाहता है।”<sup>16</sup> कुरबानी पेश करनेवाला एतराज़ करता, “पहले तो रब के लिए चरबी जलाना है, इसके बाद ही जो जी चाहे ले लें।” फिर नौकर बदतमीज़ी करता, “नहीं, उसे अभी दे दो, वरना मैं जबरदस्ती ले लूँगा।”<sup>17</sup> इन जवान इमामों का यह गुनाह रब की नज़र में निहायत संगीन था, क्योंकि वह रब की कुरबानियाँ हकीर जानते थे।

### माँ-बाप समुएल से मिलने आते हैं

18 लेकिन छोटा समुएल रब के हुज़ूर खिदमत करता रहा। उसे भी दूसरे इमामों की तरह कतान का बालापोश दिया गया था।<sup>19</sup> हर साल जब उस की माँ खाविद के साथ कुरबानी पेश करने के लिए सैला आती तो वह नया चोगा सीकर उसे दे देती।<sup>20</sup> और रवाना होने से पहले एली समुएल के माँ-बाप को बरकत देकर इलकाना से कहता, “हन्ना ने रब से बच्चा माँग लिया और जब मिला तो उसे रब को वापस कर दिया। अब रब आपको इस बच्चे की जगह मज़ीद बच्चे दे।” इसके बाद वह अपने घर चले जाते।<sup>21</sup> और वाकई, रब ने हन्ना को मज़ीद तीन बेटे और दो बेटियाँ अता कीं। यह बच्चे घर में रहे, लेकिन समुएल रब के हुज़ूर खिदमत करते करते जवान हो गया।

### एली के बेटे बाप की नहीं सुनते

22 एली उस वक़्त बहुत बूढ़ा हो चुका था। बेटों का तमाम इसराईल के साथ बुरा सुलूक उसके कानों तक पहुँच गया था, बल्कि यह भी कि बेटे उन औरतों से नाजायज़ ताल्लुकात रखते हैं जो मुलाकात के ख़ैमे के दरवाज़े पर खिदमत करती हैं। 23 उसने उन्हें समझाया भी था, “आप ऐसी हरकतें क्यों कर रहे हैं? मुझे तमाम लोगों से आपके शरीर कामों की ख़बरे मिलती रहती हैं। 24 बेटो, ऐसा मत करना! जो बातें आपके बारे में रब की क्रौम में फैल गई हैं वह अच्छी नहीं। 25 देखें, अगर इनसान किसी दूसरे इनसान का गुनाह करे तो हो सकता है अल्लाह दोनों का दरमियानी बनकर कुसूरवार शख्स पर रहम करे। लेकिन अगर कोई रब का गुनाह करे तो फिर कौन उसका दरमियानी बनकर उसे बचाएगा?”

लेकिन एली के बेटों ने बाप की न सुनी, क्योंकि रब की मरज़ी थी कि उन्हें सज़ाए-मौत मिल जाए।

26 लेकिन समुएल उनसे फरक था। जितना वह बड़ा होता गया उतनी उस की रब और इनसान के सामने कबूलियत बढ़ती गई।

### एली के घराने को सज़ा मिलने की पेशगोई

27 एक दिन एक नबी एली के पास आया और कहा, “रब फ़रमाता है, ‘क्या जब तेरा बाप हारून और उसका घराना मिसर के बादशाह के गुलाम थे तो मैंने अपने आपको उस पर जाहिर न किया? 28 गो इसराईल के बारह कबीले थे लेकिन मैंने मुक़र्रर किया कि उसी के घराने के मर्द मेरे इमाम बनकर कुरबानगाह के सामने खिदमत करें, बख़र जलाएँ और मेरे हुज़ूर इमाम का बालापोश पहनें। साथ साथ मैंने उन्हें कुरबानगाह पर जलनेवाली कुरबानियों का एक हिस्सा मिलने का हक़ दे दिया। 29 तो फिर तुम लोग ज़बह और ग़ल्ला की वह कुरबानियाँ हक़ीर क्यों जानते हो जो मुझे ही पेश की जाती हैं और जो मैंने अपनी सुकूनतगाह के लिए मुक़र्रर की थी? एली, तू अपने बेटों का मुझसे ज़्यादा एहताराम करता है। तुम तो मेरी क्रौम इसराईल की हर कुरबानी के बेहतरीन हिस्से खा खाकर मोटे हो गए हो।’

30 चुनौचे रब जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, वादा तो मैंने किया था कि लावी के कबीले का तेरा घराना हमेशा ही इमाम की खिदमत संरजाम देगा। लेकिन अब मैं एलान करता हूँ कि ऐसा कभी नहीं होगा! क्योंकि जो मेरा एहताराम करते हैं उनका मैं एहताराम करूँगा, लेकिन जो मुझे हक़ीर जानते हैं उन्हें हक़ीर जाना जाएगा। 31 इसलिए सुन! ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं तेरी और तेरे घराने की ताकत यों तोड़ डालूँगा कि घर का कोई भी बुज़ुर्ग नहीं पाया जाएगा। 32 और तू मक़दिस में मुसीबत देखेगा हालाँकि मैं इसराईल के साथ भलाई करता रहूँगा। तेरे घर में कभी भी बुज़ुर्ग नहीं पाया जाएगा। 33 मैं तुममें से हर एक को तो अपनी खिदमत से निकालकर हलाक नहीं करूँगा जब तेरी आँखें धुँधली-सी पड़ जाएँगी और तेरी जान हलकान हो जाएगी। लेकिन तेरी तमाम औलाद ग़ैरतबई मौत मरेगी। 34 तेरे बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास दोनों एक ही दिन हलाक हो जाएंगे। इस निशान से तुझे यकीन आएगा कि जो कुछ मैंने फ़रमाया है वह सच है।

35 तब मैं अपने लिए एक इमाम खड़ा करूँगा जो वफ़ादार रहेगा। जो भी मेरा दिल और मेरी जान चाहेगी वही वह करेगा। मैं उसके घर की मज़बूत बुनियादे रखूँगा, और वह हमेशा तक मेरे मसह किए हुए खादिम के हुज़ूर आता जाता रहेगा। 36 उस वक़्त तैर घर के बचे हुए तमाम अफ़राद उस इमाम के सामने झुक जाएँगे और पैसे और रोटी माँगकर इलतमास करेंगे, ‘मुझे इमाम की कोई न कोई ज़िम्मादारी दें ताकि रोटी का टुकड़ा मिल जाए’।”

## 3

### अल्लाह समुएल से हमक़लाम होता है

1 छोटा समुएल एली के ज़ेरे-निगरानी रब के हुज़ूर खिदमत करता था। उन दिनों में रब की तरफ़ से बहुत कम पैगाम या रोयाएँ मिलती थीं। 2 एक रात एली जिसकी आँखें इतनी कमज़ोर हो गई थी कि देखना तकरीबन नामुमकिन था मामूल के मुताबिक सो गया था। 3 समुएल भी लेट गया था। वह रब के मक़दिस में सो रहा था जहाँ अहद का संदूक पड़ा था। शमादान अब तक रब के हुज़ूर जल रहा था 4-5 कि अचानक रब ने आवाज़ दी, “समुएल!” समुएल ने जवाब दिया, “जी, मैं अभी आता हूँ।” वह भागकर एली के पास गया और कहा, “जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आपने मुझे बुलाया?” एली बोला, “नहीं, मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। वापस जाकर दुबारा लेट जाओ।” चुनौचे समुएल दुबारा लेट गया।

6 लेकिन रब ने एक बार फिर आवाज़ दी, “समुएल!” लडका दुबारा उठा और एली के पास जाकर बोला, “जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आपने मुझे बुलाया?” एली ने जवाब दिया, “नहीं बेटा, मैंने तुम्हें नहीं बुलाया। दुबारा सो जाओ।”

7 उस वक़्त समुएल रब की आवाज़ नहीं पहचान सकता था, क्योंकि अभी उसे रब का कोई पैगाम नहीं मिला था। 8 चुनौचे रब ने तीसरी बार आवाज़ दी, “समुएल!” एक और मरतबा समुएल उठ खड़ा हुआ और एली के पास जाकर बोला, “जी जनाब, मैं हाज़िर हूँ। आपने मुझे बुलाया?” यह सुनकर एली ने जान लिया कि रब समुएल से हमक़लाम हो रहा है।

9 इसलिए उसने लडके को बताया, “अब दुबारा लेट जाओ, लेकिन अगली दफा जब आवाज़ सुनाई दे तो तुम्हें कहना है, ‘ऐ रब, फरमा। तेरा खादिम सुन रहा है।’”

समुएल एक बार फिर अपने बिस्तर पर लेट गया। 10 रब आकर वहाँ खड़ा हुआ और पहले की तरह पुकारा, “समुएल! समुएल!” लडके ने जवाब दिया, “ऐ रब, फरमा। तेरा खादिम सुन रहा है।” 11 फिर रब समुएल से हमकलाम हुआ, “देख, मैं इसराइल में इतना होलनाक काम करूँगा कि जिसे भी इसकी खबर मिलेगी उसके कान बजने लगेंगे। 12 उस वक़्त मैं शूस से लेकर आखिर तक वह तमाम बातें पूरी करूँगा जो मैंने एली और उसके घराने के बारे में की हैं। 13 मैं एली को आगाह कर चुका हूँ कि उसका घराना हमेशा तक मेरी अदालत का निशाना बना रहेगा। क्योंकि गो उसे साफ मालूम था कि उसके बेटे अपनी गलत हरकतों से मेरा ग़ज़ब अपने आप पर लाएँगे तो भी उसने उन्हें करने दिया और न रोका। 14 मैंने कसम खाई है कि एली के घराने का कूसूर न ज़बह और न गल्ला की किसी कुरबानी से दूर किया जा सकता है बल्कि इसका कफ़ारा कभी भी नहीं दिया जा सकेगा!”

15 इसके बाद समुएल सुबह तक अपने बिस्तर पर लेटा रहा। फिर वह मामूल के मुताबिक उठा और रब के घर के दरवाज़े खोल दिए। वह एली को अपनी रोया बताने से डरता था, 16 लेकिन एली ने उसे बुलाकर कहा, “समुएल, मेरे बेटे!” समुएल ने जवाब दिया, “जी, मैं हाज़िर हूँ।” 17 एली ने पूछा, “रब ने तुम्हें क्या बताया है? कोई भी बात मुझसे मत छुपाना! अल्लाह तुम्हें सख्त सज़ा दे अगर तुम एक लफ़्ज़ भी मुझसे पोशीदा रखो।” 18 फिर समुएल ने उसे खुलकर सब कुछ बता दिया और एक बात भी न छुपाई। एली ने कहा, “वही रब है। जो कुछ उस की नज़र में ठीक है उसे वह करे।”

19 समुएल जवान होता गया, और रब उसके साथ था। उसने समुएल की हर बात पूरी होने दी। 20 पूरे इसराइल ने दान से लेकर बैर-सबा तक जान लिया कि रब ने अपने नबी समुएल की तसदीक की है। 21 अगले सालों में भी रब सैला में अपने कलाम से समुएल पर ज़ाहिर होता रहा।

## 4

1 यों समुएल का कलाम सैला से निकलकर पूरे इसराइल में फैल गया।

फिलिस्ती अहद का संदूक छीन लेते हैं

एक दिन इसराइल की फिलिस्तियों के साथ जंग छिड़ गई। इसराइलियों ने लड़ने के लिए निकलकर अबन-अज़र के पास अपनी लशकरगाह लगाई जबकि फिलिस्तियों ने अफ़ीक के पास अपने डेरें डाले। 2 पहले फिलिस्तियों ने इसराइलियों पर हमला किया। लड़ते लड़ते उन्होंने इसराइल को शिकस्त दी। तक़रीबन 4,000 इसराइली मैदाने-जंग में हलाक हुए।

3 फ़ौज लशकरगाह में वापस आई तो इसराइल के बुजुर्ग सोचने लगे, “रब ने फिलिस्तियों को हम पर क्यों फ़तह पाने दी? आओ, हम रब के अहद का संदूक सैला से ले आएँ ताकि वह हमारे साथ चलकर हमें दुश्मन से बचाए।”

4 चुनौचे अहद का संदूक जिसके ऊपर रब्बूल-अफ़वाज़ कस्बी फरिशतों के दरमियान तख़्तनशीन है सैला से लाया गया। एली के दो बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास भी साथ आए। 5 जब अहद का संदूक लशकरगाह में पहुँचा तो इसराइली निहायत ख़ुश होकर बुलंद आवाज़ से नारे लगाने लगे। इतना शोर मच गया कि ज़मीन हिल गई।

6 यह सुनकर फिलिस्ती चौंक उठे और एक दूसरे से पूछने लगे, “यह कैसा शोर है जो इसराइली लशकरगाह में हो रहा है?” जब पता चला कि रब के अहद का संदूक इसराइली लशकरगाह में आ गया है 7 तो वह घबराकर चिल्लाए, “उनका देवता उनकी लशकरगाह में आ गया है। हाय, हमारा सत्यानास हो गया है! पहले तो ऐसा कभी नहीं हुआ है। 8 हम पर अफ़सोस! कौन हमें इन ताकतवर देवताओं से बचाएगा? क्योंकि इन्हीं ने रेगिस्तान में मिसरियों को हर किस्म की बला से मारकर हलाक कर दिया था। 9 भाइयों, अब दिलेर हो और मरदानगी दिखाओ, वरना हम उसी तरह इब्रानियों के गुलाम बन जाएँगे जैसे वह अब तक हमारे गुलाम थे। मरदानगी दिखाकर लड़ो!” 10 आपस में ऐसी बातें करते करते फिलिस्ती लड़ने के लिए निकले और इसराइल को शिकस्त दी। हर तरफ कत्ले-आम नज़र आया, और 30,000 प्यादे इसराइली काम आए। बाकी सब फ़रार होकर अपने अपने घरों में छुप गए। 11 एली के दो बेटे हुफ़नी और फ़ीनहास भी उसी दिन हलाक हुए, और अल्लाह के अहद का संदूक फिलिस्तियों के कब्ज़े में आ गया।

एली की मौत

12 उसी दिन बिनयमीन के कबीले का एक आदमी मैदाने-जंग से भागकर सैला पहुँच गया। उसके कपड़े फटे हुए थे और सर पर खाक थी। 13-15 एली सड़क के किनारे अपनी कुरसी पर बैठा था। वह अब अंधा हो चुका था, क्योंकि उस की उम्र 98 साल थी। वह बड़ी बेचैनी से रास्ते पर ध्यान दे रहा था ताकि जंग की कोई ताज़ा खबर मिल जाए, क्योंकि उसे इस बात की बड़ी फ़िकर थी कि अल्लाह का संदूक लशकरगाह में है।

जब वह आदमी शहर में दाखिल हुआ और लोगों को सारा माजरा सुनाया तो पूरा शहर चिल्लाने लगा। जब एली ने शोर सुना तो उसने पूछा, “यह क्या शोर है?” बिनयमीनी दौड़कर एली के पास आया और बोला, 16 “मैं मैदाने-जंग से आया हूँ। आज ही मैं वहाँ से फ़रार हुआ।” एली ने पूछा, “बेटा, क्या हुआ?” 17 कासिद ने जवाब दिया, “इसराईली फ़िलिस्तिनों के सामने फ़रार हुए। फ़ौज को हर तरफ़ शिकस्त माननी पड़ी, और आपके दोनों बेटे हुफनी और फ़ीनहास भी मारे गए हैं। अफ़सोस, अल्लाह का संदूक भी दुश्मन के कब्ज़े में आ गया है।”

18 अहद के संदूक का ज़िक्र सुनते ही एली अपनी कुरसी पर से पीछे की तरफ़ गिर गया। चूँकि वह बूढ़ा और भारी-भरकम था इसलिए उस की गरदन टूट गई और वह वहीं मक़दिस के दरवाज़े के पास ही मर गया। वह 40 साल इसराईल का काज़ी रहा था।

### फ़ीनहास की बेवा की मौत

19 उस वक़्त एली की बहू यानी फ़ीनहास की बीवी का पाँव भारी था और बच्चा पैदा होनेवाला था। जब उसने सुना कि अल्लाह का संदूक दुश्मन के हाथ में आ गया है और कि सुसर और शौहर दोनों मर गए हैं तो उसे इतना सख़्त सदमा पहुँचा कि वह शदीद दर्द-ज़ह में मुब्तला हो गई। वह झुक गई, और बच्चा पैदा हुआ। 20 उस की जान निकलने लगी तो दाइयों ने उस की हौसला-अफ़ज़ाई करके कहा, “डरो मत! तुम्हारे बेटा पैदा हुआ है।” लेकिन माँ ने न जवाब दिया, न बात पर ध्यान दिया। 21-22 क्योंकि वह अल्लाह के संदूक के छिन जाने और सुसर और शौहर की मौत के बाइस निहायत बेदिल हो गई थी। उसने कहा, “बेटे का नाम यक़बोद यानी ‘जलाल कहीं रहा’ है, क्योंकि अल्लाह के संदूक के छिन जाने से अल्लाह का जलाल इसराईल से जाता रहा है।”

## 5

### फ़िलिस्तिनों में अहद का संदूक

1 फ़िलिस्ती अल्लाह का संदूक अबन-अजर से अशदूद शहर में ले गए। 2 वहाँ उन्होंने उसे अपने देवता दज़ून के मंदिर में बुत के करीब रख दिया। 3 अगले दिन सुबह-सवेरे जब अशदूद के बाशिदे मंदिर में दाखिल हुए तो क्या देखते हैं कि दज़ून का मुज़स्सा माँह के बल रब के संदूक के सामने ही पड़ा है। उन्होंने दज़ून को उठाकर दुबारा उस की जगह पर खड़ा किया। 4 लेकिन अगले दिन जब सुबह-सवेरे आए तो दज़ून दुबारा माँह के बल रब के संदूक के सामने पड़ा हुआ था। लेकिन इस मरतबा बुत का सर और हाथ टूटकर दहलीज़ पर पड़े थे। सिर्फ़ धड़ रह गया था। 5 यही वजह है कि आज तक दज़ून का कोई भी पुजारी या मेहमान अशदूद के मंदिर की दहलीज़ पर क़दम नहीं रखता।

6 फिर रब ने अशदूद और गिर्दा-नवाह के देहातों पर सख़्त दबाव डालकर बाशिदों को पेशान कर दिया। उनमें अचानक अज़ियतनाक फोड़ों की वबा फैल गई। 7 जब अशदूद के लोगों ने इसकी वजह जान ली तो वह बोले, “लाज़िम है कि इसराईल के ख़ुदा का संदूक हमारे पास न रहे। क्योंकि उसका हम पर और हमारे देवता दज़ून पर दबाव नाकाबिले-बरदाशत है।”

8 उन्होंने तमाम फ़िलिस्ती हुक्मरानों को इक़ठा करके पूछा, “हम इसराईल के ख़ुदा के संदूक के साथ क्या करें?” उन्होंने मशवरा दिया, “उसे जात शहर में ले जाएँ।” 9 लेकिन जब अहद का संदूक जात में छोड़ा गया तो रब का दबाव उस शहर पर भी आ गया। बड़ी अफ़रा-तफ़री पैदा हुई, क्योंकि छोटों से लेकर बड़ों तक सबको अज़ियतनाक फोड़े निकल आए। 10 तब उन्होंने अहद का संदूक आगे अक़रून भेज दिया।

लेकिन संदूक अभी पहुँचनेवाला था कि अक़रून के बाशिदे चीखने लगे, “वह इसराईल के ख़ुदा का संदूक हमारे पास लाए हैं ताकि हमें हलाक कर दें!” 11 तमाम फ़िलिस्ती हुक्मरानों को दुबारा बुलाया गया, और अक़रूनियों ने तकाज़ा किया कि संदूक को शहर से दूर किया जाए। वह बोले, “इसे वहाँ वापस भेजा जाए जहाँ से आया है, वरना यह हमें बल्कि पूरी क़ौम को हलाक कर डालेगा।” क्योंकि शहर पर रब का सख़्त दबाव हावी हो गया था। मोहलक वबा के बाइस उसमें ख़ौफ़ो-हिरास की लहर दौड़ गई। 12 जो मरने से बचा उसे कम अज़ कम फोड़े निकल आए। चारों तरफ़ लोगों की चीख-पुकार फ़िज़ा में बुलंद हुई।

## 6

अहद का संदूक इसराईल वापस लाया जाता है

1 अल्लाह का संदूक अब सात महीने फिलिस्तिनों के पास रहा था। 2 आखिरकार उन्होंने अपने तमाम पुजारियों और रम्मालों को बुलाकर उनसे मशवरा किया, “अब हम रब के संदूक का क्या करें? हमें बताएँ कि इसे किस तरह इसके अपने मुल्क में वापस भेजें।”

3 पुजारियों और रम्मालों ने जवाब दिया, “अगर आप उसे वापस भेजें तो वैसे मत भेजना बल्कि कुसूर की कुरबानी साथ भेजना। तब आपको शफा मिलेगी, और आप जान लेंगे कि वह आपको सजा देने से क्यों नहीं बाज़ आया।”

4 फिलिस्तिनों ने पूछा, “हम उसे किस क्रिस्म की कुसूर की कुरबानी भेजें?”

उन्होंने जवाब दिया, “फिलिस्तिनों के पाँच हुक्मरान हैं, इसलिए सोने के पाँच फोड़े और पाँच चूहे बनवाएँ, क्योंकि आप सब इस एक ही वबा की ज़द में आए हुए हैं, खाह हुक्मरान हों, खाह रिआया। 5 सोने के यह फोड़े और मुल्क को तबाह करनेवाले चूहे बनाकर इसराइल के देवता का पहताराम करें। शायद वह यह देखकर आप, आपके देवताओं और मुल्क को सजा देने से बाज़ आए। 6 अब क्यों पुराने ज़माने के मिसरियों और उनके बादशाह की तरह अड जाएँ? क्योंकि उस वक़्त अल्लाह ने मिसरियों को इतनी सख़्त मुसीबत में डाल दिया कि आखिरकार उन्हें इसराइलियों को जाने देना पड़ा।

7 अब बैलगाड़ी बनाकर उसके आगे दो गाएँ जोतें। ऐसी गाएँ हों जिनके दूध पीनेवाले बच्चे हों और जिन पर अब तक ज़ुआ न रखा गया हो। गायों को बैलगाड़ी के आगे जोतें, लेकिन उनके बच्चों को साथ जाने न दें बल्कि उन्हें कहीं बंद रखें। 8 फिर रब का संदूक बैलगाड़ी पर रखा जाए और उसके साथ एक थैला जिसमें सोने की वह चीज़ें हों जो आप कुसूर की कुरबानी के तौर पर भेज रहे हैं। इसके बाद गायों को खुला छोड़ दें। 9 गौर करें कि वह कौन-सा रास्ता इख्तियार करेंगी। अगर इसराइल के बैत-शम्म की तरफ चलें तो फिर मालूम होगा कि रब हम पर यह बड़ी मुसीबत लाया है। लेकिन अगर वह कहीं और चलें तो मतलब होगा कि इसराइल के देवता ने हमें सज़ा नहीं दी बल्कि सब कुछ इतफ़ाक से हुआ है।”

10 फिलिस्तिनों ने ऐसा ही किया। उन्होंने दो गाएँ नई बैलगाड़ी में जोतकर उनके छोटे बच्चों को कहीं बंद रखा। 11 फिर उन्होंने अहद का संदूक उस थैले समेत जिसमें सोने के चूहे और फोड़े थे बैलगाड़ी पर रखा।

12 जब गायों को छोड़ दिया गया तो वह डकराती डकराती सीधी बैत-शम्म के रास्ते पर आ गई और न दाई, न बाई तरफ हटी। फिलिस्तिनों के सरदार बैत-शम्म की सरहद तक उनके पीछे चले।

13 उस वक़्त बैत-शम्म के बाशिंदे नीचे वादी में गंदूम की फसल काट रहे थे। अहद का संदूक देखकर वह निहायत ख़ुश हुए। 14 बैलगाड़ी एक खेत तक पहुँची जिसका मालिक बैत-शम्म का रहनेवाला यशुअ था। वहाँ वह एक बड़े पत्थर के पास रुक गई। लोगों ने बैलगाड़ी की लकड़ी टुकड़े टुकड़े करके उसे जला दिया और गायों को ज़बह करके रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश किया। 15 लावी के कबीले के कुछ मर्दों ने रब के संदूक को बैलगाड़ी से उठाकर सोने की चीज़ों के थैले समेत पत्थर पर रख दिया। उस दिन बैत-शम्म के लोगों ने रब को भस्म होनेवाली और ज़बह की कुरबानियाँ पेश कीं।

16 यह सब कुछ देखने के बाद फिलिस्ती सरदार उसी दिन अकरून वापस चले गए। 17 फिलिस्तिनों ने अपना कुसूर दूर करने के लिए हर एक शहर के लिए सोने का एक फोड़ा बना लिया था यानी अशदद, गज़्ज़ा, अस्कलून, जात और अकरून के लिए एक एक फोड़ा। 18 इसके अलावा उन्होंने हर शहर और उसके गिर्दों-नवाह की आबादियों के लिए सोने का एक एक चूहा बना लिया था। जिस बड़े पत्थर पर अहद का संदूक रखा गया वह आज तक यशुअ बैत-शम्म की खेत में इस बात की गवाही देता है।

अहद का संदूक किरियत-यारीम में

19 लेकिन रब ने बैत-शम्म के बाशिंदों को सज़ा दी, क्योंकि उनमें से बाज़ ने अहद के संदूक में नज़र डाली थी। उस वक़्त 70 अफ़राद हलाक हुए। रब की यह सख़्त सज़ा देखकर बैत-शम्म के लोग मातम करने लगे। 20 वह बोले, “कौन इस मुक़द्दस ख़ुदा के हज़ूर कायम रह सकता है? यह हमारे बस की बात नहीं, लेकिन हम रब का संदूक किसके पास भेजें?”

21 आखिर में उन्होंने किरियत-यारीम के बाशिंदों को पैगाम भेजा, “फिलिस्तिनों ने रब का संदूक वापस कर दिया है। अब आएँ और उसे अपने पास ले जाएँ!”

## 7

1 यह सुनकर किरियत-यारीम के मर्द आए और रब का संदूक अपने शहर में ले गए। वहाँ उन्होंने उसे अबीनदाब के घर में रख दिया जो पहाड़ी पर था। अबीनदाब के बेटे इलियज़र को मख़सूस किया गया ताकि वह अहद के संदूक की पहरादारी करे।

तौबा की वजह से इसराइली फिलिस्तिनों पर फ़तह पाते हैं

2 अहद का संदूक 20 साल के तवील अरसे तक किरियत-यारीम में पड़ा रहा। इस दौरान तमाम इसराईल मातम करता रहा, क्योंकि लगता था कि रब ने उन्हें तर्क कर दिया है। 3 फिर समुएल ने तमाम इसराईलियों से कहा, “अगर आप वाकई रब के पास वापस आना चाहते हैं तो अजनबी माबुदों और अस्तारात देवी के बुत दूर कर दें। पुरे दिल के साथ रब के ताबे होकर उसी की खिदमत करें। फिर ही वह आपको फिलिस्तिनों से बचाएगा।”

4 इसराईलियों ने उस की बात मान ली। वह बाल और अस्तारात के बुतों को फेंककर सिर्फ रब की खिदमत करने लगे। 5 तब समुएल ने एलान किया, “पुरे इसराईल को मिसफाह में जमा करें तो मैं वहाँ रब से दुआ करके आपकी सिफारिश करूँगा।” 6 चुनौंचे वह सब मिसफाह में जमा हुए। तौबा का इज़हार करके उन्होंने कुएँ से पानी निकालकर रब के हुज़ूर उडेल दिया। साथ साथ उन्होंने पूरा दिन रोजा रखा और इकरार किया, “हमने रब का गुनाह किया है।” वहाँ मिसफाह में समुएल ने इसराईलियों के लिए कचहरी लगाई।

7 फिलिस्ती हुक्मरानों को पता चला कि इसराईली मिसफाह में जमा हुए हैं तो वह उनसे लडने के लिए आए। यह सुनकर इसराईली सख्त घबरा गए 8 और समुएल से मिन्नत की, “दुआ करते रहें! रब हमारे खुदा से इलतमास करने से न सके ताकि वह हमें फिलिस्तिनों से बचाए।” 9 तब समुएल ने भेड़ का दूध पीता बच्चा चुनकर रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश किया। साथ साथ वह रब से इलतमास करता रहा।

और रब ने उस की सुनी। 10 समुएल अभी कुरबानी पेश कर रहा था कि फिलिस्ती वहाँ पहुँचकर इसराईलियों पर हमला करने के लिए तैयार हुए। लेकिन उस दिन रब ने जोर से कडकती हुई आवाज़ से फिलिस्तिनों को इतना दहशतजदा कर दिया कि वह दरहम-बरहम हो गए और इसराईली आसानी से उन्हें शिकस्त दे सके। 11 इसराईलियों ने मिसफाह से निकलकर बैत-कार के नीचे तक दुश्मन का ताक्कुब किया। रास्ते में बहुत-से फिलिस्ती हलाक हुए।

12 इस फतह की याद में समुएल ने मिसफाह और शेन के दरमियान एक बड़ा पत्थर नसब कर दिया। उसने पत्थर का नाम अबन-अज़र यानी ‘मदद का पत्थर’ रखा। क्योंकि उसने कहा, “यहाँ तक रब ने हमारी मदद की है।” 13 इस तरह फिलिस्तिनों को मगलब किया गया, और वह दुबारा इसराईल के इलाके में न घुसे। जब तक समुएल जीता रहा फिलिस्तिनों पर रब का सख्त दबाव रहा। 14 और अकस्न से लेकर जात तक जितनी इसराईली आबादियाँ फिलिस्तिनों के हाथ में आ गई थीं वह सब उनकी ज़मीनों समेत दुबारा इसराईल के कब्जे में आ गईं। अमोरियों के साथ भी सुलह हो गई।

15 समुएल अपने जिते-जी इसराईल का काजी और राहनुमा रहा। 16 हर साल वह बैतल, जिलजाल और मिसफाह का दौरा करता, क्योंकि इन तीन जगहों पर वह इसराईलियों के लिए कचहरी लगाया करता था। 17 इसके बाद वह दुबारा रामा अपने घर वापस आ जाता जहाँ मुस्तकिल कचहरी थी। वहाँ उसने रब के लिए कुरबानागह भी बनाई थी।

## 8

### इसराईल बादशाह का तकाज़ा करता है

1 जब समुएल बढ़ा हुआ तो उसने अपने दो बेटों को इसराईल के काजी मुकरर किया। 2 बडे का नाम योएल था और छोटे का अबियाह। दोनों बैर-सबा में लोगों की कचहरी लगाते थे। 3 लेकिन वह बाप के नमूने पर नहीं चलते बल्कि रिश्वत खाकर गलत फैसले करते थे।

4 फिर इसराईल के बुज़ुर्ग मिलकर समुएल के पास आए, जो रामा में था। 5 उन्होंने कहा, “देखें, आप बूढ़े हो गए हैं और आपके बेटे आपके नमूने पर नहीं चलते। अब हम पर बादशाह मुकरर करें ताकि वह हमारी उस तरह राहनुमाई करे जिस तरह दीगर अकवाम में दस्तर है।”

6 जब बुज़ुर्गों ने राहनुमाई के लिए बादशाह का तकाज़ा किया तो समुएल निहायत नाखुश हुआ। चुनौंचे उसने रब से हिदायत माँगी। 7 रब ने जवाब दिया, “जो कुछ भी वह तुझसे माँगते हैं उन्हें दे दे। इससे वह तुझे रड़ नहीं कर रहे बल्कि मुझे, क्योंकि वह नहीं चाहते कि मैं उनका बादशाह रहूँ। 8 जब से मैं उन्हें मिसर से निकाल लाया वह मुझे छोड़कर दीगर माबुदों की खिदमत करते आए हैं। और अब वह तुझसे भी यही सुलूक कर रहे हैं। 9 उनकी बात मान ले, लेकिन संजीदागी से उन्हें उन पर हुक्मत करनेवाले बादशाह के हुक्क से आगाह कर।”

### बादशाह के हुक्क

10 समुएल ने बादशाह का तकाज़ा करनेवालों को सब कुछ कह सुनाया जो रब ने उसे बताया था। 11 वह बोला, “जो बादशाह आप पर हुक्मत करेगा उसके यह हुक्क होंगे : वह आपके बेटों की भरती करके उन्हें अपने रथों और घोड़ों को सँभालने की जिम्मादारी देगा। उन्हें उसके रथों के आगे आगे दौड़ना पड़ेगा। 12 कुछ उस की फौज के जनरल और कप्तान बनेंगे, कुछ उसके खेतों में हल चलाने और फसलें काटने पर मजबूर हो जाएंगे, और बाज़ को उसके हथियार और रथ का

सामान बनाना पड़ेगा। 13 बादशाह आपकी बेटियों को आपसे छीन लेगा ताकि वह उसके लिए खाना पकाएँ, रोटी बनाएँ और खुशबू तैयार करें। 14 वह आपके खेतों और आपके अंगूर और जैतून के बागों का बेहतरानि हिस्सा चुनकर अपने मुलाजिमों को दे देगा। 15 बादशाह आपके अनाज और अंगूर का दसवाँ हिस्सा लेकर अपने अफसरों और मुलाजिमों को दे देगा। 16 आपके नौकर-नौकरानियों, आपके मोटे-ताजे बैल और गधे उसी के इस्तेमाल में आएँगे। 17 वह आपकी भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा तलब करेगा, और आप खुद उसके गुलाम होंगे।

18 तब आप पछताकर कहेंगे, “हमने बादशाह का तकाजा क्यों किया?” लेकिन जब आप रब के हुज़ूर चीखते-चिल्लाते मदद चाहेंगे तो वह आपकी नहीं सुनेगा।”

19 लेकिन लोगों ने समुएल की बात न मानी बल्कि कहा, “नहीं, तो भी हम बादशाह चाहते हैं, 20 क्योंकि फिर ही हम दीगर कौमों की मानिंद होंगे। फिर हमारा बादशाह हमारी राहनुमाई करेगा और जंग में हमारे आगे आगे चलकर दुश्मन से लड़ेगा।” 21 समुएल ने रब के हुज़ूर यह बातें दोहराईं। 22 रब ने जवाब दिया, “उनका तकाजा पूरा कर, उन पर बादशाह मुकर्रर कर!”

फिर समुएल ने इसराईल के मर्दों से कहा, “हर एक अपने अपने शहर वापस चला जाए।”

## 9

साऊल बाप की गधियों तलाश करता है

1 बिनयमीन के कबायली इलाके में एक बिनयमीनी बनाम कीस रहता था जिसका अच्छा-खासा असरो-रसूख था। बाप का नाम अबियेल बिन सरोर बिन बकोरत बिन अफीख था। 2 कीस का बेटा साऊल जवान और खूबसूरत था बल्कि इसराईल में कोई और इतना खूबसूरत नहीं था। साथ साथ वह इतना लंबा था कि बाकी सब लोग सिर्फ उसके कंधों तक आते थे।

3 एक दिन साऊल के बाप कीस की गधियाँ गुम हो गईं। यह देखकर उसने अपने बेटे साऊल को हुक्म दिया, “नौकर को अपने साथ लेकर गधियों को ढूँढ लाएँ।” 4 दोनों आदमी इफ्राईम के पहाड़ी इलाके और सलीसा के इलाके में से गुजरे, लेकिन बेसूद। फिर उन्होंने सालीम के इलाके में खोज लगाया, लेकिन वहाँ भी गधियाँ न मिलीं। इसके बाद वह बिनयमीन के इलाके में घूमते फिरे, लेकिन बेफायदा। 5 चलते चलते वह सूफ के करीब पहुँच गए। साऊल ने नौकर से कहा, “आओ, हम घर वापस चलें, ऐसा न हो कि वालिद गधियों की नहीं बल्कि हमारी फिकर करें।”

6 लेकिन नौकर ने कहा, “इस शहर में एक मर्द-खुदा है। लोग उस की बड़ी इज्जत करते हैं, क्योंकि जो कुछ भी वह कहता है वह पूरा हो जाता है। क्यों न हम उसके पास जाएँ? शायद वह हमें बताए कि गधियों को कहाँ ढूँढना चाहिए।”

7 साऊल ने पूछा, “लेकिन हम उसे क्या दें? हमारा खाना खत्म हो गया है, और हमारे पास उसके लिए तोहफा नहीं है।”

8 नौकर ने जवाब दिया, “कोई बात नहीं, मेरे पास चाँदी का छोटा सिक्का \* है। यह मैं मर्द-खुदा को दे दूँगा ताकि बताए कि हम किस तरफ ढूँढें।”

9-11 साऊल ने कहा, “ठीक है, चलें।” वह शहर की तरफ चल पड़े ताकि मर्द-खुदा से बात करें। जब पहाड़ी ढलान पर शहर की तरफ चढ़ रहे थे तो कुछ लड़कियाँ पानी भरने के लिए निकलीं। आदमियों ने उनसे पूछा, “क्या गैबबीन शहर में है?” (पुराने ज़माने में नबी गैबबीन कहलाता था। अगर कोई अल्लाह से कुछ मालूम करना चाहता तो कहता, “आओ, हम गैबबीन के पास चलें।”)

12-13 लड़कियों ने जवाब दिया, “जी, वह अभी अभी पहुँचा है, क्योंकि शहर के लोग आज पहाड़ी पर कुरबानियाँ चढ़ाकर ईद मना रहे हैं। अगर जल्दी करें तो पहाड़ी पर चढ़ने से पहले उससे मुलाकात हो जाएगी। उस वक्त तक ज़ियाफत शुरू नहीं होगी जब तक गैबबीन पहुँच न जाए। क्योंकि उसे पहले खाने को बरकत देना है, फिर ही मेहमानों को खाना खाने की इजाज़त है। अब जाएँ, क्योंकि इसी वक्त आप उससे बात कर सकते हैं।”

14 चुन्चें साऊल और नौकर शहर की तरफ बढ़े। शहर के दरवाज़े पर ही समुएल से मुलाकात हो गई जो वहाँ से निकलकर कुरबानगाह की पहाड़ी पर चढ़ने को था।

समुएल साऊल की मेहमान-नवाज़ी करता है

15 रब समुएल को एक दिन पहले पैगाम दे चुका था, 16 “कल मैं इसी वक्त मुल्के-बिनयमीन का एक आदमी तेरे पास भेज दूँगा। उसे मसह करके मेरी कौम इसराईल पर बादशाह मुकर्रर कर। वह मेरी कौम को फिलिस्तिनों से बचाएगा। क्योंकि मैंने अपनी कौम की मुसीबत पर ध्यान दिया है, और मदद के लिए उस की चीखें मुझ तक पहुँच गई हैं।” 17 अब जब समुएल

\* 9:8 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : चाँदी के सिक्के की एक चौथाई

ने शहर के दरवाजे से निकलते हुए साऊल को देखा तो रब समुएल से हमकलाम हुआ, “देख, यही वह आदमी है जिसका जिक्क मैंने कल किया था। यही मेरी कौम पर हुक्मत करेगा।”

18 वही शहर के दरवाजे पर साऊल समुएल से मुखातिब हुआ, “मेहरबानी करके मुझे बताइए कि गैबबीन का घर कहाँ है?” 19 समुएल ने जवाब दिया, “मैं ही गैबबीन हूँ। आँ, उस पहाड़ी पर चलें जिस पर जियाफत हो रही है, क्योंकि आज आप मेरे मेहमान हैं। कल मैं सुबह-सवेरे आपको आपके दिल की बात बता दूँगा। 20 जहाँ तक तीन दिन से गुमशुदा गधियों का ताल्लुक है, उनकी फ़िकर न करें। वह तो मिल गई हैं। वैसे आप और आपके बाप के घराने को इसराईल की हर कीमती चीज़ हासिल है।” 21 साऊल ने पूछा, “यह किस तरह? मैं तो इसराईल के सबसे छोटे कबीले बिनयमीन का हूँ, और मेरा खानदान कबीले में सबसे छोटा है।”

22 समुएल साऊल को नौकर समेत उस हाल में ले गया जिसमें जियाफत हो रही थी। तकर्रीबन 30 मेहमान थे, लेकिन समुएल ने दोनों आदमियों को सबसे इज्जत की जगह पर बिठा दिया। 23 खानसामे को उसने हुकम दिया, “अब गोशत का वह टुकड़ा ले आओ जो मैंने तुम्हें देकर कहा था कि उसे अलग रखना है।” 24 खानसामे ने कुरबानी की रान लाकर उसे साऊल के सामने रख दिया। समुएल बोला, “यह आपके लिए महफूज़ रखा गया है। अब खाँ, क्योंकि दूसरों को दावत देते वक़्त मैंने यह गोशत आपके लिए और इस मौके के लिए अलग कर लिया था।” चुनौंके साऊल ने उस दिन समुएल के साथ खाना खाया।

25 जियाफत के बाद वह पहाड़ी से उतरकर शहर वापस आए, और समुएल अपने घर की छत पर साऊल से बातचीत करने लगा। 26 अगले दिन जब पौ फटने लगी तो समुएल ने नीचे से साऊल को जो छत पर सो रहा था आवाज़ दी, “उठें! मैं आपको सूखसत करूँ।” साऊल जाग उठा और वह मिलकर रवाना हुए। 27 जब वह शहर के किनारे पर पहुँचे तो समुएल ने साऊल से कहा, “अपने नौकर को आगे भेजें।” जब नौकर चला गया तो समुएल बोला, “ठहर जाँ, क्योंकि मुझे आपको अल्लाह का एक पैगाम सुनना है।”

## 10

### साऊल को मसह किया जाता है

1 फिर समुएल ने कुप्पी लेकर साऊल के सर पर जैतून का तेल उंडेल दिया और उसे बोसा देकर कहा, “रब ने आपको अपनी खास मिलकियत पर राहनुमा मुकर्रर किया है। 2 मेरे पास से चले जाने के बाद जब आप बिनयमीन की सरहद के शहर जिलज़ख के करीब राखिल की कन्न के पास से गुज़रेंगे तो आपकी मुलाकात दो आदमियों से होगी। वह आपसे कहेंगे, ‘जो गधियाँ आप ढूँढने गए वह मिल गई हैं। और अब आपके बाप गधियों की नहीं बल्कि आपकी फ़िकर कर रहे हैं। वह कह रहे हैं कि मैं किस तरह अपने बेटे का पता करूँ?’

3 आप आगे जाकर तबूर के बलत के दरख्त के पास पहुँचेंगे। वहाँ तीन आदमी आपसे मिलेंगे जो अल्लाह की इबादत करने के लिए बैतेल जा रहे होंगे। एक के पास तीन छोटी बकरियाँ, दूसरे के पास तीन रोटियाँ और तीसरे के पास मे की मशक होगी। 4 वह आपको सलाम कहकर दो रोटियाँ देंगे। उनकी यह रोटियाँ कबूल करें।

5 इसके बाद आप अल्लाह के जिबिया जाएंगे जहाँ फिलिस्तियों की चौकी है। शहर में दाखिल होते वक़्त आपकी मुलाकात नबियों के एक जुलूस से होगी जो उस वक़्त पहाड़ी की कुरबानागह से उतर रहा होगा। उनके आगे आगे सितार, दफ़, बाँसरियाँ और सरोद बजातेवाले चलेंगे, और वह नबुव्वत की हालत में होंगे। 6 रब का रूह आप पर भी नाज़िल होगा, और आप उनके साथ नबुव्वत करेंगे। उस वक़्त आप फ़रक़ शख्स में तबदील हो जाएंगे।

7 जब यह तमाम निशान वुजूद में आएँगे तो वह कुछ करें जो आपके जहन में आ जाए, क्योंकि अल्लाह आपके साथ होगा। 8 फिर मेरे आगे जिलज़ाल चले जाएँ। मैं भी आऊँगा और वहाँ भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश करूँगा। लेकिन आपको सात दिन मेरा इंतज़ार करना है। फिर मैं आकर आपको बता दूँगा कि आगे क्या करना है।”

9 साऊल रवाना होने के लिए समुएल के पास से मुडा तो अल्लाह ने उसका दिल तबदील कर दिया। जिन निशानों की भी पेशगोई समुएल ने की थी वह उसी दिन पूरी हुई। 10 जब साऊल और उसका नौकर जिबिया पहुँचे तो वहाँ उनकी मुलाकात मज़कूरा नबियों के जुलूस से हुई। अल्लाह का रूह साऊल पर नाज़िल हुआ, और वह उनके दरमियान नबुव्वत करने लगा। 11 कुछ लोग वहाँ थे जो बचपन से उससे वाकिफ़ थे। साऊल को यों नबियों के दरमियान नबुव्वत करते हुए देखकर वह आपस में कहने लगे, “क़ीस के बेटे के साथ क्या हुआ? क्या साऊल को भी नबियों में शुमार किया जाता है?” 12 एक मक़ामी आदमी ने जवाब दिया, “कौन इनका बाप है?” बाद में यह मुहावरा बन गया, “क्या साऊल को भी नबियों में शुमार किया जाता है?”



13 नबुव्वत करने के इखिताम पर साऊल पहाड़ी पर चढ़ गया जहाँ कुरबानगाह थी। 14 जब साऊल नौकर समेत वहाँ पहुँचा तो उसके चचा ने पूछा, “आप कहाँ थे?” साऊल ने जवाब दिया, “हम गुमशुदा गधियों को ढूँढने के लिए निकले थे। लेकिन जब वह न मिली तो हम समुएल के पास गए।” 15 चचा बोला, “अच्छा? उसने आपको क्या बताया?” 16 साऊल ने जवाब दिया, “खैर, उसने कहा कि गधियाँ मिल गई हैं।” लेकिन जो कुछ समुएल ने बादशाह बनने के बारे में बताया था उसका जिक्र उसने न किया।

साऊल बादशाह बन जाता है

17 कुछ देर के बाद समुएल ने अवाम को बुलाकर मिसफाह में रब के हज़ूर जमा किया। 18 उसने कहा, “रब इसराईल का खुदा फरमाता है, ‘मैं इसराईल को मिसर से निकाल लाया। मैंने तुम्हें मिसरियों और उन तमाम सलतनतों से बचाया जो तुम पर जुल्म कर रही थीं।’ 19 लेकिन गो मैंने तुम्हें तुम्हारी तमाम मुसीबतों और तंगियों से छुटकारा दिया तो भी तुमने अपने खुदा को मुस्तरद कर दिया। क्योंकि तुमने इसरार किया कि हम पर बादशाह मुकर्र करो! अब अपने अपने कबीलों और खानदानों की तरतीब के मुताबिक रब के हज़ूर खड़े हो जाओ!’”

20 यह कहकर समुएल ने तमाम कबीलों को रब के हज़ूर पेश किया। कुरा डाला गया तो बिनयमीन के कबीले को चुना गया। 21 फिर समुएल ने बिनयमीन के कबीले के सारे खानदानों को रब के हज़ूर पेश किया। मतरी के खानदान को चुना गया। यों कुरा डालते डालते साऊल बिन कीस को चुना गया। लेकिन जब साऊल को ढूँढा गया तो वह गायब था।

22 उन्होंने रब से दरियाफ्त किया, “क्या साऊल यहाँ पहुँच चुका है?” रब ने जवाब दिया, “वह सामान के बीच में छुप गया है।” 23 कुछ लोग दौड़कर उसे सामान में से निकालकर अवाम के पास ले आए। जब वह लोगों में खड़ा हुआ तो इतना लंबा था कि बाकी सब लोग सिर्फ उसके कंधों तक आते थे।

24 समुएल ने कहा, “यह आदमी देखो जिसे रब ने चुन लिया है। अवाम में उस जैसा कोई नहीं है!” तमाम लोग ख़ुशी के मारे “बादशाह जिंदाबाद!” का नारा लगाते रहे। 25 समुएल ने बादशाह के हक़ूक़ तफ़सील से सुनाए। उसने सब कुछ किताब में लिख दिया और उसे रब के मक़दिस में महफूज़ रखा। फिर उसने अवाम को सूखसत कर दिया।

26 साऊल भी अपने घर चला गया जो ज़िबिया में था। कुछ फ़ौजी उसके साथ चले जिनके दिलों को अल्लाह ने छू दिया था। 27 लेकिन ऐसे शरीर लोग भी थे जिन्होंने उसका मज़ाक़ उड़ाकर पूछा, “भला यह किस तरह हमें बचा सकता है?” वह उसे हक़ीर जानते थे और उसे तोहफ़े पेश करने के लिए भी तैयार न हुए। लेकिन साऊल उनकी बातें नज़रंदाज़ करके ख़ामोश ही रहा।

## 11

साऊल अम्मोनियों पर फ़तह पाता है

1 कुछ देर के बाद अम्मोनी बादशाह नाहस ने अपनी फ़ौज़ लेकर यबीस-जिलियाद का मुहासरा किया। यबीस के तमाम अफ़राद ने उससे गुज़ारिश की, “हमारे साथ मुआहदा करें तो हम आइंदा आपके ताबे रहेंगे।” 2 नाहस ने जवाब दिया, “ठीक है, लेकिन इस शर्त पर कि मैं हर एक की दहनी आँख निकालकर तमाम इसराईल की बेइज़्जती करूँगा!” 3 यबीस के बुजुर्गों ने दरखास्त की, “हमें एक हफ़ते की मोहलत दीजिए ताकि हम अपने कासिदों को इसराईल की हर जगह भेजें। अगर कोई हमें बचाने के लिए न आए तो हम हथियार डालकर शहर को आपके हवाले कर देंगे।”

4 कासिद साऊल के शहर ज़िबिया भी पहुँच गए। जब मक़ामी लोगों ने उनका पैगाम सुना तो पूरा शहर फूट फूटकर रोने लगा। 5 उस वक़्त साऊल अपने बैलों को खेतों से वापस ला रहा था। उसने पूछा, “क्या हुआ है? लोग क्यों रो रहे हैं?” उसे कासिदों का पैगाम सुनाया गया। 6 तब साऊल पर अल्लाह का रूह नाज़िल हुआ, और उसे सख़्त गुस्सा आया। 7 उसने बैलों का जोड़ा लेकर उन्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया। फिर कासिदों को यह टुकड़े पकड़ाकर उसने उन्हें यह पैगाम देकर इसराईल की हर जगह भेज दिया, “जो साऊल और समुएल के पीछे चलकर अम्मोनियों से लड़ने नहीं जाएगा उसके बैल इसी तरह टुकड़े टुकड़े कर दिए जाएंगे!”

यह ख़बर सुनकर लोगों पर रब की दहशत तारी हो गई, और सबके सब एक दिल होकर अम्मोनियों से लड़ने के लिए निकले। 8 बज़क के करीब साऊल ने फ़ौज़ का जायज़ा लिया। यहदाह के 30,000 अफ़राद थे और बाकी कबीलों के 3,00,000।

9 उन्होंने यबीस-जिलियाद के कासिदों को वापस भेजकर बताया, “कल दोपहर से पहले पहले आपको बचा लिया जाएगा।” वहाँ के बाशिंदे यह ख़बर सुनकर बहुत ख़ुश हुए। 10 उन्होंने अम्मोनियों को इतला दी, “कल हम हथियार डालकर शहर के दरवाज़े खोल देंगे। फिर वह कुछ करें जो आपको ठीक लगे।”

11 अगले दिन सुबह-सवेरे साऊल ने फौज को तीन हिस्सों में तकसीम किया। सूरज के तूल होने से पहले पहले उन्होंने तीन सिम्नों से दुश्मन की लश्करगाह पर हमला किया। दोपहर तक उन्होंने अम्मोनियों को मार मारकर खत्म कर दिया। जो थोड़े-बहुत लोग बच गए वह यों तितर-बितर हो गए कि दो भी इकट्ठे न रहे।

### साऊल की दुबारा तसदीक

12 फतह के बाद लोग समुएल के पास आकर कहने लगे, “वह लोग कहाँ हैं जिन्होंने एतराज किया कि साऊल हम पर हुकूमत करे? उन्हें ले आएँ ताकि हम उन्हें मार दें।” 13 लेकिन साऊल ने उन्हें रोक दिया। उसने कहा, “नहीं, आज तो हम किसी भी भाई को सजाए-मौत नहीं देंगे, क्योंकि इस दिन रब ने इसराईल को रिहाई बख्शी है।” 14 फिर समुएल ने एलान किया, “आओ, हम जिलजाल जाकर दुबारा इसकी तसदीक करें कि साऊल हमारा बादशाह है।”

15 चुनौचे तमाम लोगों ने जिलजाल जाकर रब के हुज़ूर इसकी तसदीक की कि साऊल हमारा बादशाह है। इसके बाद उन्होंने रब के हुज़ूर सलामती की कुरबानियों पेश करके बड़ा जशन मनाया।

## 12

### समुएल की अलविदाई तकरीर

1 तब समुएल तमाम इसराईल से मुखातिब हुआ, “मैंने आपकी हर बात मानकर आप पर बादशाह मुकर्रर किया है। 2 अब यही आपके आगे आगे चलकर आपकी राहनुमाई करेगा। मैं खुद बूढ़ा हूँ, और मेरे बाल सफेद हो गए हैं जबकि मेरे बेटे आपके दरमियान ही रहते हैं। मैं जवानी से लेकर आज तक आपकी राहनुमाई करता आया हूँ। 3 अब मैं हाज़िर हूँ। अगर मुझसे कोई गलती हुई है तो रब और उसके मसह किए हुए बादशाह के सामने इसकी गवाही दें। क्या मैंने किसी का बैल या गधा लूट लिया? क्या मैंने किसी से गलत फायदा उठाया या किसी पर जुल्म किया? क्या मैंने कभी किसी से रिश्तव लेकर गलत फ़ैसला किया है? अगर ऐसा हुआ तो मुझे बताएँ। फिर मैं सब कुछ वापस कर दूँगा।”

4 इजतिमा ने जवाब दिया, “न आपने हमसे गलत फायदा उठाया, न हम पर जुल्म किया है। आपने कभी भी रिश्तव नहीं ली।” 5 समुएल बोला, “आज रब और उसका मसह किया हुआ बादशाह गवाह हैं कि आपको मुझ पर इलज़ाम लगाने का कोई सबब न मिला।” अवाम ने कहा, “जी, ऐसा ही है।” 6 समुएल ने बात जारी रखी, “रब खुद मूसा और हासून को इसराईल के राहनुमा बनाकर आपके बापदादा को मिसर से निकाल लाया। 7 अब यहाँ रब के तख्ते-अदालत के सामने खड़े हो जाएँ तो मैं आपको उन तमाम भलाइयों की याद दिलाऊँगा जो रब ने आप और आपके बापदादा से की हैं।

8 आपका बाप याक़ब मिसर आया। जब मिसरी उस की औलाद को दबाने लगे तो उन्होंने चीखते-चिल्लाते रब से मदद माँगी। तब उसने मूसा और हासून को भेज दिया ताकि वह पूरी क़ौम को मिसर से निकालकर यहाँ इस मुल्क में लाएँ। 9 लेकिन जल्द ही वह रब अपने खुदा को भूल गए, इसलिए उसने उन्हें दुश्मन के हवाले कर दिया। कभी हम्सर शहर के बादशाह का कर्मोडर सीसरा उनसे लड़ा, कभी फिलिस्ती और कभी मोआब का बादशाह। 10 हर दफ़ा आपके बापदादा ने चीखते-चिल्लाते रब से मदद माँगी और इक्रार किया, ‘हमने गुनाह किया है, क्योंकि हमने रब को तर्क करके बाल और अस्तारत के बुतों की पूजा की है। लेकिन अब हमें दुश्मनों से बचा! फिर हम सिर्फ़ तेरी ही खिदमत करेंगे।’ 11 और हर बार रब ने किसी न किसी को भेज दिया, कभी जिदौन, कभी बरक, कभी इफ़ताह और कभी समुएल को। उन आदमियों की मारिफत अल्लाह ने आपको इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से बचाया, और मुल्क में अमनो-अमान कायम हो गया।

12 लेकिन जब अम्मोनी बादशाह नाहस आपसे लड़ने आया तो आप मेरे पास आकर तकाज़ा करने लगे कि हमारा अपना बादशाह हो जो हम पर हुकूमत करे, हालाँकि आप जानते थे कि रब हमारा खुदा हमारा बादशाह है। 13 अब वह बादशाह देखें जिसे आप माँग रहे थे। रब ने आपकी खाहिश पूरी करके उसे आप पर मुकर्रर किया है। 14 चुनौचे रब का ख़ौफ़ मारने, उस की खिदमत करें और उस की सुनें। सरकश होकर उसके अहकाम की खिलाफ़वरज़ी मत करना। अगर आप और आपका बादशाह रब से वकाफ़दार रहेंगे तो वह आपके साथ होगा। 15 लेकिन अगर आप उसके ताबे न रहें और सरकश होकर उसके अहकाम की खिलाफ़वरज़ी करें तो वह आपकी मुखालफत करेगा, जिस तरह उसने आपके बापदादा की भी मुखालफत की।

16 अब खड़े होकर देखें कि रब क्या करनेवाला है। वह आपकी आँखों के सामने ही बड़ा मोजिज़ा करेगा। 17 इस वक़्त गंदुम की कटाई का मौसम है। गो इन दिनों में बारिश नहीं होती, लेकिन मैं दुआ करूँगा तो रब गरजते बादल और बारिश भेजेगा। तब आप जान लेंगे कि आपने बादशाह का तकाज़ा करते हुए रब के नज़दीक कितनी बुरी बात की है।”

18 समुएल ने पुकारकर रब से दुआ की, और उस दिन रब ने गरजते बादल और बारिश भेज दी। यह देखकर इजतिमा सख़्त ध्वकारक समुएल और रब से डरने लगा। 19 सबने समुएल से इलतमास की, “रब अपने खुदा से दुआ करके हमारी सिफ़ारिश करें ताकि हम मर न जाएँ। क्योंकि बादशाह का तकाज़ा करने से हमने अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा किया है।”

20 समुएल ने लोगों को तसल्ली देकर कहा, “मत डरें। बेशक आपसे गलती हुई है, लेकिन आइंदा खयाल रखें कि आप रब से दूर न हो जाएँ बल्कि पूरे दिल से उस की खिदमत करें। 21 बेमानी बातों के पीछे मत पडना। न वह फायदे का बाइस है, न आपको बचा सकते हैं। उनकी कोई हैसियत नहीं है। 22 रब अपने अजीम नाम की खातिर अपनी कौम को नहीं छोड़ेगा, क्योंकि उसने आपको अपनी कौम बनाने का फैसला किया है। 23 जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मैं इसमें रब का गुनाह नहीं करूँगा कि आपकी सिफारिश करने से बाज़ आऊँ। और आइंदा भी मैं आपको अच्छे और सहीह रास्ते की तालीम देता रहूँगा। 24 लेकिन ध्यान से रब का खौफ मानें और पूरे दिल और बफादारी से उस की खिदमत करें। याद रहे कि उसने आपके लिए कितने अजीम काम किए हैं। 25 लेकिन अगर आप गलत काम करने पर तुले रहें तो आप अपने बादशाह समेत दुनिया में से मिट जाएंगे।”

## 13

### फिलिस्तिनों से जंग

1 साऊल 30 साल का था जब तख्तनशीन हुआ। दो साल हुक्मत करने के बाद 2 उसने अपनी फौज के लिए 3,000 इसराइली चुन लिए। जंग लड़ने के काबिल बाकी आदमियों को उसने फारिग कर दिया। 2,000 फौजियों की छूटी मिक्मास और बैतेल के पहाड़ी इलाके में लगाई गई जहाँ साऊल खुद था। बाकी 1,000 अफराद यूतन के पास बिनयमीन के शहर जिबिया में थे।

3 एक दिन यूतन ने जिबिया की फिलिस्ती चौकी पर हमला करके उसे शिकस्त दी। जल्द ही यह खबर दूसरे फिलिस्तिनों तक पहुँच गई। साऊल ने मुल्क के कोने कोने में कासिद भेज दिए, और वह नरसिंगा बजाते बजाते लोगों को यूतन की फतह सुनाते गए। 4 तमाम इसराइल में खबर फैल गई, “साऊल ने जिबिया की फिलिस्ती चौकी को तबाह कर दिया है, और अब इसराइल फिलिस्तिनों की खास नफरत का निशाना बन गया है।” साऊल ने तमाम मर्दों को फिलिस्तिनों से लड़ने के लिए जिलजाल में बुलाया।

5 फिलिस्ती भी इसराइलियों से लड़ने के लिए जमा हुए। उनके 30,000 रथ, 6,000 घुडसवार और साहिल की रेत जैसे बेशुमार प्यादा फौजी थे। उन्होंने बैत-आवन के मशरिक में मिक्मास के करीब अपने खैमे लगाए। 6 इसराइलियों ने देखा कि हम बड़े खतरे में आ गए हैं, और दुश्मन हम पर बहुत दबाव डाल रहा है तो पेशानी के आलम में कुछ गारों और दराइों में और कुछ पत्थरों के दरमियान या कब्रों और हौजों में छुप गए। 7 कुछ इतने डर गए कि वह दरियाए-यरदन को पार करके जद और जिलियाद के इलाके में चले गए।

### साऊल की बेसब्री

साऊल अब तक जिलजाल में था, लेकिन जो आदमी उसके साथ रहे थे वह खौफ के मारे थरथरा रहे थे। 8 समुएल ने साऊल को हिदायत दी थी कि सात दिन मेरा इंतजार करें। लेकिन सात दिन गुजर गए, और समुएल न आया। साऊल के फौजी मृतशिर होने लगे 9 तो साऊल ने हुक्म दिया, “भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ ले आओ।” फिर उसने खुद कुरबानियाँ पेश की।

10 वह अभी इस काम से फारिग ही हुआ था कि समुएल पहुँच गया। साऊल उसे खुशआमदीद कहने के लिए निकला। 11 लेकिन समुएल ने पूछा, “आपने क्या किया?”

साऊल ने जवाब दिया, “लोग मृतशिर हो रहे थे, और आप वक्त पर न आए। जब मैंने देखा कि फिलिस्ती मिक्मास के करीब जमा हो रहे हैं 12 तो मैंने सोचा, ‘फिलिस्ती यहाँ जिलजाल में आकर मुझ पर हमला करने को हैं, हालाँकि मैंने अभी रब से दूआ नहीं की कि वह हम पर मेहरबानी करे।’ इसलिए मैंने जूरत करके खुद कुरबानियाँ पेश की।”

13 समुएल बोला, “यह कैसी अहमकाना हरकत थी! आपने रब अपने खुदा का हुक्म न माना। रब तो आप और आपकी औलाद को हमेशा के लिए इसराइल पर मुर्करर करना चाहता था। 14 लेकिन अब आपकी बादशाहत कायम नहीं रहेगी। चूँकि आपने उस की न सुनी इसलिए रब ने किसी और को चुनकर अपनी कौम का राहनुमा मुर्करर किया है, एक ऐसे आदमी को जो उस की सोच रखेगा।”

15 फिर समुएल जिलजाल से चला गया।

### जंग की तैयारियाँ

बचे हुए इसराइली साऊल के पीछे दुश्मन से लड़ने गए। वह जिलजाल से रवाना होकर जिबिया पहुँच गए। जब साऊल ने वहाँ फौज का जायज़ा लिया तो बस 600 अफराद रह गए थे। 16 साऊल, यूतन और उनकी फौज बिनयमीन के शहर जिबिया में टिक गए जबकि फिलिस्ती मिक्मास के पास खैमाज़न थे। 17 कुछ देर के बाद फिलिस्तिनों के तीन दस्ते मुल्क

को लटने के लिए निकले। एक सुआल के इलाके के शहर उफरा की तरफ चल पड़ा, <sup>18</sup> दूसरा बैत-हौस्न की तरफ और तीसरा उस पहाड़ी सिलसिले की तरफ जहाँ से वादीए-जबोईम और रेगिस्तान देखा जा सकता है।

<sup>19</sup> उन दिनों में पूरे मुल्के-इसराईल में लोहार नहीं था, क्योंकि फिलिस्तीनी नहीं चाहते थे कि इसराईली तलवारों या नेजे बनाएँ। <sup>20</sup> अपने हलों, कुदालों, कुल्हाड़ियों या दारोंतियों को तेज़ करवाने के लिए तमाम इसराईलियों को फिलिस्तीनों के पास जाना पड़ता था। <sup>21</sup> फिलिस्तीनी हलों, कुदालों, कौंटों और कुल्हाड़ियों को तेज़ करने के लिए और आँकसों की नोक ठीक करने के लिए चाँदी के सिक्के की दो तिहाई लेते थे। <sup>22</sup> नतीजे में उस दिन साऊल और यूतन के सिवा किसी भी इसराईली के पास तलवार या नेजा नहीं था।

यूनतन फिलिस्तीनों पर हमला करता है

<sup>23</sup> फिलिस्तीनों ने मिक्मास के दर्रे पर कब्जा करके वहाँ चौकी कायम की थी।

## 14

<sup>1</sup> एक दिन यूनतन ने अपने जवान सिलाहबरदार से कहा, “आओ, हम परली तरफ जाएँ जहाँ फिलिस्ती फौज की चौकी है।” लेकिन उसने अपने बाप को इत्तला न दी।

<sup>2</sup> साऊल उस वक़्त अनार के दरख्त के साये में बैठा था जो जिबिया के करीब के मिजरोन में था। 600 मर्द उसके पास थे। <sup>3</sup> अखियाह इमाम भी साथ था जो इमाम का बालापोश पहने हुए था। अखियाह यकबोद के भाई अखीतब का बेटा था। उसका दादा फ़ीनहास और परदादा एली था, जो पुराने ज़माने में सैला में रब का इमाम था। किसी को भी मालूम न था कि यूनतन चला गया है।

<sup>4-5</sup> फिलिस्तीनी चौकी तक पहुँचने के लिए यूनतन ने एक तंग रास्ता इख्तियार किया जो दो कडाड़ों के दरमियान से गुज़रता था। पहले का नाम बोसीस था, और वह शिमाल में मिक्मास के मुक़ाबिल था। दूसरे का नाम सना था, और वह जुनूब में जिबा के मुक़ाबिल था। <sup>6</sup> यूनतन ने अपने जवान सिलाहबरदार से कहा, “आओ, हम परली तरफ जाएँ जहाँ इन नामख़तूनों की चौकी है। शायद रब हमारी मदद करे, क्योंकि उसके नज़दीक कोई फ़रक नहीं कि हम ज्यादा हों या कम।” <sup>7</sup> उसका सिलाहबरदार बोला, “जो कुछ आप ठीक समझते हैं, वही करें। ज़रूर जाएँ। जो कुछ भी आप कहेंगे, मैं हाज़िर हूँ।” <sup>8</sup> यूनतन बोला, “ठीक है। फिर हम यों दुश्मनों की तरफ बढ़ते जाएंगे, कि हम उन्हें साफ़ नज़र आएँ।” <sup>9</sup> अगर वह हमें देखकर पुकारे, ‘रुक जाओ, वरना हम तुम्हें मार देंगे!’ तो हम अपने मनसूबे से बाज़ आकर उनके पास नहीं जाएंगे। <sup>10</sup> लेकिन अगर वह पुकारे, ‘आओ, हमारे पास आ जाओ!’ तो हम ज़रूर उनके पास चढ़ जाएंगे। क्योंकि यह इसका निशान होगा कि रब उन्हें हमारे क़ब्जे में कर देगा।”

<sup>11</sup> चुनौचे वह चलते चलते फिलिस्तीनी चौकी को नज़र आए। फिलिस्तीनी शोर मचाने लगे, “देखो, इसराईली अपने छुपने के बिलों से निकल रहे हैं!” <sup>12</sup> चौकी के फ़ौजियों ने दोनों को चैलेंज किया, “आओ, हमारे पास आओ तो हम तुम्हें सबक सिखाएँगे।” यह सुनकर यूनतन ने अपने सिलाहबरदार को आवाज़ दी, “आओ, मेरे पीछे चलो! रब ने उन्हें इसराईल के हवाले कर दिया है।” <sup>13</sup> दोनों अपने हाथों और पैरों के बल चढ़ते चढ़ते चौकी तक जा पहुँचे। जब यूनतन आगे आगे चलकर फिलिस्तीनों के पास पहुँच गया तो वह उसके सामने गिरते गए। साथ साथ सिलाहबरदार पीछे से लोगों को मारता गया।

<sup>14</sup> इस पहले हमले के दौरान उन्होंने तकरीबन 20 आदमियों को मार डाला। उनकी लाशें आध एकड़ ज़मीन पर बिखरी पड़ी थीं। <sup>15</sup> अचानक पूरी फ़ौज में दहशत फैल गई, न सिर्फ़ लशकरगाह बल्कि खुले मैदान में भी। चौकी के मर्द और लटनेवाले दस्ते भी थरथराने लगे। साथ साथ जलजला आया। रब ने तमाम फिलिस्तीनी फ़ौजियों के दिलों में दहशत पैदा की।

रब फिलिस्तीनों पर फ़तह देता है

<sup>16</sup> साऊल के जो परहेदार जिबिया से दुश्मन की हरकतों पर गौर कर रहे थे उन्होंने अचानक देखा कि फिलिस्तीनी फ़ौज में हलचल मच गई है, अफ़रा-तफ़री कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़ बढ रही है। <sup>17</sup> साऊल ने फ़ौरन हुक्म दिया, “फ़ौजियों को गिनकर मालूम करो कि कौन चला गया है।” मालूम हुआ कि यूनतन और उसका सिलाहबरदार मौजूद नहीं हैं। <sup>18</sup> साऊल ने अखियाह को हुक्म दिया, “अहद का सन्दूक ले आएँ।” क्योंकि वह उन दिनों में इसराईली कैप में था। <sup>19</sup> लेकिन साऊल अभी अखियाह से बात कर रहा था कि फिलिस्तीनी लशकरगाह में हंगामा और शोर बहुत ज्यादा बढ गया। साऊल ने इमाम से कहा, “कोई बात नहीं, रहने दें।” <sup>20</sup> वह अपने 600 अफ़राद को लेकर फ़ौरन दुश्मन पर टूट पड़ा। जब उन तक पहुँच गए तो मालूम हुआ कि फिलिस्तीनी एक दूसरे को कत्ल कर रहे हैं, और हर तरफ़ हंगामा ही हंगामा है।

<sup>21</sup> फिलिस्तीनों ने काफ़ी इसराईलियों को अपनी फ़ौज में शामिल कर लिया था। अब यह लोग फिलिस्तीनों को छोड़कर साऊल और यूनतन के पीछे हो लिए। <sup>22</sup> इनके अलावा जो इसराईली इफ़राईम के पहाड़ी इलाके में इधर उधर छुप गए थे,

जब उन्हें खबर मिली कि फिलिस्ती भाग रहे हैं तो वह भी उनका ताकुकुब करने लगे।<sup>23</sup> लड़ते लड़ते मैदाने-जंग बैत-आवन तक फैल गया। इस तरह रब ने उस दिन इसराईलियों को बचा लिया।

### साऊल की बेसोचे-समझे लानत

<sup>24</sup> उस दिन इसराईली सख्त लडाई के बाइस बड़ी मुसीबत में थे। इसलिए साऊल ने कसम खाकर कहा, “उस पर लानत जो शाम से पहले खाना खाए। पहले मैं अपने दुश्मन से इंतकाम लूँगा, फिर ही सब खा-पी सकते हैं।” इस वजह से किसी ने रोटी को हाथ तक न लगाया।<sup>25</sup> पूरी फौज जंगल में दाखिल हुई तो वहाँ जमीन पर शहद के छत्ते थे।<sup>26</sup> तमाम लोग जब उनके पास से गुजरे तो देखा कि उनसे शहद टपक रहा है। लेकिन किसी ने थोड़ा भी लेकर खाने की जुरत न की, क्योंकि सब साऊल की लानत से डरते थे।

<sup>27</sup> यूनतन को लानत का इल्म न था, इसलिए उसने अपनी लाठी का सिरा किसी छत्ते में डालकर उसे चाट लिया। उस की आँखें फौरन चमक उठीं, और वह ताजादम हो गया।<sup>28</sup> किसी ने देखकर यूनतन को बताया, “आपके बाप ने फौज से कसम खिलाकर एलान किया है कि उस पर लानत जो इस दिन कुछ खाए। इसी वजह से हम सब इतने निढाल हो गए हैं।”<sup>29</sup> यूनतन ने जवाब दिया, “मेरे बाप ने मुल्क को मुसीबत में डाल दिया है! देखो, इस थोड़े-से शहद को चखने से मेरी आँखें कितनी चमक उठीं और मैं कितना ताजादम हो गया।<sup>30</sup> बेहतर होता कि हमारे लोग दुश्मन से लूटे हुए माल में से कुछ न कुछ खा लेते। लेकिन इस हालत में हम फिलिस्तियों को किस तरह ज्यादा नुकसान पहुँचा सकते हैं?”

<sup>31</sup> उस दिन इसराईली फिलिस्तियों को मिक्मास से मार मारकर ऐयालोन तक पहुँच गए। लेकिन शाम के वक्त वह निहायत निढाल हो गए थे।<sup>32</sup> फिर वह लूटे हुए रेवडों पर टूट पड़े। उन्होंने जल्दी जल्दी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों और बछड़ों को ज़बह किया। भूक की शिद्दत की वजह से उन्होंने खून को सहीह तौर से निकलने न दिया बल्कि जानवरों को जमीन पर छोड़कर गोशत को खून समेत खाने लगे।

<sup>33</sup> किसी ने साऊल को इतला दी, “देखें, लोग रब का गुनाह कर रहे हैं, क्योंकि वह गोशत खा रहे हैं जिसमें अब तक खून है।” यह सुनकर साऊल पुकार उठा, “आप रब से वफादार नहीं रहे!” फिर उसने साथवाले आदमियों को हुक्म दिया, “कोई बड़ा पत्थर लुढ़काकर इधर ले आएँ।<sup>34</sup> फिर तमाम आदमियों के पास जाकर उन्हें बता देना, ‘अपने जानवरों को मेरे पास ले आएँ ताकि उन्हें पत्थर पर ज़बह करके खाएँ। वरना आप खूनअलूदा गोशत खाकर रब का गुनाह करेंगे।’”

सब मान गए। उस शाम वह साऊल के पास आए और अपने जानवरों को पत्थर पर ज़बह किया।<sup>35</sup> वहाँ साऊल ने पहली दफा रब की ताज़ीम में कुरबानगाह बनाई।

<sup>36</sup> फिर उसने एलान किया, “आएँ, हम अभी इसी रात फिलिस्तियों का ताकुकुब करके उनमें लूट-मार का सिलसिला जारी रखें ताकि एक भी न बचे।” फौजियों ने जवाब दिया, “ठीक है, वह कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे।” लेकिन इमाम बोला, “पहले हम अल्लाह से हिदायत लें।”<sup>37</sup> चुनौचे साऊल ने अल्लाह से पूछा, “क्या हम फिलिस्तियों का ताकुकुब जारी रखें? क्या तु उन्हें इसराईल के हवाले कर देगा?” लेकिन इस मरतबा अल्लाह ने जवाब न दिया।

<sup>38</sup> यह देखकर साऊल ने फौज के तमाम राहनुमाओं को बुलाकर कहा, “किसी ने गुनाह किया है। मालूम करने की कोशिश करें कि कौन कुसूरवार है।<sup>39</sup> रब की हयात की कसम जो इसराईल का नजातदहिदा है, कुसूरवार को फौरन सजाए-मौत दी जाएगी, खाह वह मेरा बेटा यूनतन क्यों न हो।” लेकिन सब खामोश रहे।

<sup>40</sup> तब साऊल ने दुबारा एलान किया, “पूरी फौज एक तरफ़ खड़ी हो जाए और यूनतन और मैं दूसरी तरफ़।” लोगों ने जवाब दिया, “जो आपको मुनासिब लगे वह करें।”<sup>41</sup> फिर साऊल ने रब इसराईल के खुदा से दुआ की, “ऐ रब, हमें दिखा कि कौन कुसूरवार है।”

जब कुरा डाला गया तो यूनतन और साऊल के गुरोह को कुसूरवार करार दिया गया और बाकी फौज को बेकुसूर।<sup>42</sup> फिर साऊल ने हुक्म दिया, “अब कुरा डालकर पता करें कि मैं कुसूरवार हूँ या यूनतन।” जब कुरा डाला गया तो यूनतन कुसूरवार ठहरा।<sup>43</sup> साऊल ने पूछा, “बताएँ, आपने क्या किया?” यूनतन ने जवाब दिया, “मैंने सिर्फ़ थोड़ा-सा शहद चख लिया जो मेरी लाठी के सिरे पर लगा था। लेकिन मैं मरने के लिए तैयार हूँ।”<sup>44</sup> साऊल ने कहा, “यूनतन, अल्लाह मुझे सख्त सजा दे अगर मैं आपको इसके लिए सजाए-मौत न दूँ।”<sup>45</sup> लेकिन फौजियों ने एतराज किया, “यह कैसी बात है? यूनतन ही ने अपने ज़बरदस्त हमले से इसराईल को आज बचा लिया है। उसे किस तरह सजाए-मौत दी जा सकती है? कभी नहीं! अल्लाह की हयात की कसम, उसका एक बाल भी बीका नहीं होगा, क्योंकि आज उसने अल्लाह की मदद से फतह पाई है।” यों फौजियों ने यूनतन को मौत से बचा लिया।

<sup>46</sup> तब साऊल ने फिलिस्तियों का ताकुकुब करना छोड़ दिया और अपने घर चला गया। फिलिस्ती भी अपने मुल्क में वापस चले गए।

### साऊल की जंघें

47 जब साऊल तख्तनशीन हुआ तो वह मुल्क के इर्दगिर्द के तमाम दुश्मनों से लड़ा। इनमें मोआब, अम्मोन, अदोम, ज़ोबाह के बादशाह और फिलिस्ती शामिल थे। और जहाँ भी जंग छिड़ी वहाँ उसने फ़तह पाई। 48 वह निहायत बहादुर था। उसने अमालीकियों को भी शिकस्त दी और यों इसराइल को उन तमाम दुश्मनों से बचा लिया जो बार बार मुल्क की लूट-मार करते थे।

### साऊल का खानदान

49 साऊल के तीन बेटे थे, युनतन, इसवी और मलकीशुअ। उस की बड़ी बेटी मीरब और छोटी बेटी मीकल थी। 50 बीवी का नाम अखीनुअम बित अखीमाज था। साऊल की फ़ौज का कमाँडर अबिनैर था, जो साऊल के चचा नैर का बेटा था। 51 साऊल का बाप क्रीस और अबिनैर का बाप नैर सगे भाई थे जिनका बाप अबियेल था।

52 साऊल के जीते-जी फिलिस्तियों से सख्त जंग जारी रही। इसलिए जब भी कोई बहादुर और लड़ने के काबिल आदमी नज़र आया तो साऊल ने उसे अपनी फ़ौज में भरती कर लिया।

## 15

### तमाम अमालीकियों को हलाक करने का हुक्म

1 एक दिन समुएल ने साऊल के पास आकर उससे बात की, “रब ही ने मुझे आपको मसह करके इसराइल पर मुकर्र करने का हुक्म दिया था। अब रब का पैगाम सून लें! 2 रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है, ‘मैं अमालीकियों का मेरी क़ौम के साथ सुलूक नहीं भूल सकता। उस वक़्त जब इसराइली मिसर से निकलकर कनान की तरफ़ सफ़र कर रहे थे तो अमालीकियों ने रास्ता बंद कर दिया था। 3 अब वक़्त आ गया है कि तू उन पर हमला करे। सब कुछ तबाह करके मेरे हवाले कर दे। कुछ भी बचने न दे, बल्कि तमाम मर्दाँ, औरतों, बच्चों शीरखारों समेत, गाय-बैलों, भेड़-बकरियों, ऊँटों और गधों को मौत के घाट उतार दे।’ ”

4 साऊल ने अपने फ़ौजियों को बुलाकर तलायम में उनका जायज़ा लिया। कुल 2,00,000 प्यादे फ़ौजी थे, नीज़ यहूदाह के 10,000 अफ़राद। 5 अमालीकियों के शहर के पास पहुँचकर साऊल वादी में ताक में बैठ गया। 6 लेकिन पहले उसने क्रीनियों को खबर भेजी, “अमालीकियों से अलग होकर उनके पास से चले जाएँ, वरना आप उनके साथ हलाक हो जाएंगे। क्योंकि जब इसराइली मिसर से निकलकर रेगिस्तान में सफ़र कर रहे थे तो आपने उन पर मेहरबानी की थी।”

यह खबर मिलते ही क्रीनी अमालीकियों से अलग होकर चले गए। 7 तब साऊल ने अमालीकियों पर हमला करके उन्हें हवीला से लेकर मिसर की मशरिफी सरहद शर तक शिकस्त दी। 8 पूरी क़ौम को तलवार से मारा गया, सिर्फ़ उनका बादशाह अजाज जिंदा पकड़ा गया। 9 साऊल और उसके फ़ौजियों ने उसे जिंदा छोड़ दिया। इसी तरह सबसे अच्छी भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, मोटे-ताज़े बड़डों और चींदा भेड़ के बच्चों को भी छोड़ दिया गया। जो भी अच्छा था बच गया, क्योंकि इसराइलियों का दिल नहीं करता था कि तनुदुस्त और मोटे-ताज़े जानवरों को हलाक करें। उन्होंने सिर्फ़ उन तमाम कमज़ोर जानवरों को ख़त्म किया जिनकी क़दरो-क़ीमत न थी।

### फरमाँबरदारी कुरबानियों से अहम है

10 फिर रब समुएल से हमकलाम हुआ, 11 “मुझे दुख है कि मैंने साऊल को बादशाह बना लिया है, क्योंकि उसने मुझसे दूर होकर मेरा हुक्म नहीं माना।” समुएल को इतना गुस्सा आया कि वह पूरी रात बुलंद आवाज़ से रब से फरियाद करता रहा। 12 अगले दिन वह उठकर साऊल से मिलने गया। किसी ने उसे बताया, “साऊल करमिल चला गया। वहाँ अपने लिए यादगार खड़ा करके वह आगे जिलजाल चला गया है।” 13 जब समुएल जिलजाल पहुँचा तो साऊल ने कहा, “मुबारक हो! मैंने रब का हुक्म पूरा कर दिया है।” 14 समुएल ने पूछा, “जानवरों का यह शोर कहाँ से आ रहा है? भेड़-बकरियाँ ममया रही और गाय-बैल डकरा रहे हैं।” 15 साऊल ने जवाब दिया, “यह अमालीकियों के हाँ से लाए गए हैं। फ़ौजियों ने सबसे अच्छे गाय-बैलों और भेड़-बकरियों को जिंदा छोड़ दिया ताकि उन्हें रब आपके ख़ुदा के हज़ूर कुरबान करें। लेकिन हमने बाकी सबको रब के हवाले करके मार दिया।”

16 समुएल बोला, “ख़ामोश! पहले वह बात सून लें जो रब ने मुझे पिछली रात फरमाई।” साऊल ने जवाब दिया, “बताएँ।” 17 समुएल ने कहा, “जब आप तमाम क़ौम के राहनुमा बन गए तो एहसासे-कमतरी का शिकार थे। तो भी रब ने आपको मसह करके इसराइल का बादशाह बना दिया। 18 और उसने आपको भेजकर हुक्म दिया, ‘जा और अमालीकियों को पूरे तौर पर हलाक करके मेरे हवाले कर। उस वक़्त तक इन शरीर लोगों से लड़ता रह जब तक वह सबके सब मिट न जाएँ।’ 19 अब मुझे बताएँ कि आपने रब की क्योँ न सुनी? आप लूटे हुए माल पर क्योँ टूट पड़े? यह तो रब के नज़दीक गुनाह है।”

20 साऊल ने एतराज किया, “लेकिन मैंने ज़रूर रब की सुनी। जिस मकसद के लिए रब ने मुझे भेजा वह मैंने पूरा कर दिया है, क्योंकि मैं अमालीक के बादशाह अजाज को गिरफ्तार करके यहाँ ले आया और बाकी सबको मौत के घाट उतारकर रब के हवाले कर दिया। 21 मेरे फौजी लूटे हुए माल में से सिर्फ सबसे अच्छी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल चुनकर ले आए, क्योंकि वह उन्हें यहाँ जिलजाल में रब आपके ख़ुदा के हुज़ूर कुरबान करना चाहते थे।”

22 लेकिन समुएल ने जवाब दिया, “रब को क्या बात ज्यादा पसंद है, आपकी भस्म होनेवाली और जबह की कुरबानियाँ या यह कि आप उस की सुनते हैं? सुनना कुरबानी से कहीं बेहतर और ध्यान देना मेढ़े की चरबी से कहीं उम्दा है। 23 सरकशी गैबदानी के गुनाह के बराबर है और ग़रूर बुतपरस्ती के गुनाह से कम नहीं होता। आपने रब का हुक्म रद्द किया है, इसलिए उसने आपको रद्द करके बादशाह का ओहदा आपसे छीन लिया है।”

24 तब साऊल ने इकरार किया, “मुझे गुनाह हुआ है। मैंने आपकी हिदायत और रब के हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी की है। मैंने लोगों से डरकर उनकी बात मान ली। 25 लेकिन अब मेहरबानी करके मुझे मुआफ़ करें और मेरे साथ वापस आएं ताकि मैं आपकी मौजूदगी में रब की परस्तिश कर सकूँ।” 26 लेकिन समुएल ने जवाब दिया, “मैं आपके साथ वापस नहीं चलूँगा। आपने रब का कलाम रद्द किया है, इसलिए रब ने आपको रद्द करके बादशाह का ओहदा आपसे छीन लिया है।”

27 समुएल मुड़कर वहाँ से चलने लगा, लेकिन साऊल ने उसके चोगे का दामन इतने जोर से पकड़ लिया कि वह फटकर उसके हाथ में रह गया। 28 समुएल बोला, “जिस तरह कपड़ा फटकर आपके हाथ में रह गया बिल्कुल उसी तरह रब ने आज ही इसराइल पर आपका इख्तियार आपसे छीनकर किसी और को दे दिया है, ऐसे शख्स को जो आपसे कहीं बेहतर है। 29 जो इसराइल की शानो-शौकत है वह न झूट बोलता, न कभी अपनी सोच को बदलता है, क्योंकि वह इनसान नहीं कि एक बात कहकर बाद में उसे बदले।”

30 साऊल ने दुबारा मिन्नत की, “बेशक मैंने गुनाह किया है। लेकिन बराहे-करम कम अज़ कम मेरी कौम के बुजुर्गों और इसराइल के सामने तो मेरी इज़ज़त करें। मेरे साथ वापस आएं ताकि मैं आपकी मौजूदगी में रब आपके ख़ुदा की परस्तिश कर सकूँ।”

31 तब समुएल मान गया और साऊल के साथ दूसरों के पास वापस आया। साऊल ने रब की परस्तिश की, 32 फिर समुएल ने एलान किया, “अमालीक के बादशाह अजाज को मेरे पास ले आओ!” अजाज इतमीनान से समुएल के पास आया, क्योंकि उसने सोचा, “बेशक मौत का ख़तरा टल गया है।” 33 लेकिन समुएल बोला, “तेरी तलवार से बेशमार माएँ अपने बच्चों से महरूम हो गई हैं। अब तेरी माँ भी बेऔलाद हो जाएगी।” यह कहकर समुएल ने वही जिलजाल में रब के हुज़ूर अजाज को तलवार से टुकड़े टुकड़े कर दिया।

34 फिर वह रामा वापस चला गया, और साऊल अपने घर गया जो जिबिया में था। 35 इसके बाद समुएल जीते-जी साऊल से कभी न मिला, क्योंकि वह साऊल का मातम करता रहा। लेकिन रब को दुख था कि मैंने साऊल को इसराइल पर क्यों मुकर्र किया।

## 16

### नए बादशाह दाऊद को मुकर्र किया जाता है

1 एक दिन रब समुएल से हमकलाम हुआ, “तू कब तक साऊल का मातम करेगा? मैंने तो उसे रद्द करके बादशाह का ओहदा उससे ले लिया है। अब मेढ़े का सींग ज़ैतून के तेल से भरकर बैत-लहम चला जा। वहाँ एक आदमी से मिल जिसका नाम यस्सी है। क्योंकि मैंने उसके बेटों में से एक को चुन लिया है कि वह नया बादशाह बन जाए।” 2 लेकिन समुएल ने एतराज किया, “मैं किस तरह जा सकता हूँ? साऊल यह सुनकर मुझे मार डालेगा।” रब ने जवाब दिया, “एक जवान गाय अपने साथ लेकर लोगों को बता दे कि मैं इसे रब के हुज़ूर कुरबान करने के लिए आया हूँ। 3 यस्सी को दावत दे कि वह कुरबानी की ज़ियाफ़त में शरीक हो जाए। आगे मैं तुझे बताऊँगा कि क्या करना है। मैं तुझे दिखाऊँगा कि किस बेटे को मेरे लिए महसू करके चुन लेना है।”

4 समुएल मान गया। जब वह बैत-लहम पहुँच गया तो लोग चौक उठे। लरज़ते लरज़ते शहर के बुजुर्ग उससे मिलने आए और पूछा, “खैरियत तो है कि आप हमारे पास आ गए हैं?” 5 समुएल ने उन्हें तसल्ली देकर कहा, “खैरियत है। मैं रब के हुज़ूर कुरबानी पेश करने के लिए आया हूँ। अपने आपको रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस करें और फिर मेरे साथ कुरबानी की ज़ियाफ़त में शरीक हो जाएँ।” समुएल ने यस्सी और उसके बेटों को भी दावत दी और उन्हें अपने आपको मखसूसो-मुकद्दस करने को कहा।

6 जब यस्सी अपने बेटों समेत कुरबानी की ज़ियाफ़त के लिए आया तो समुएल की नज़र इलियाब पर पड़ी। उसने सोचा, “बेशक यह वह है जिसे रब महसू करके बादशाह बनाना चाहता है।” 7 लेकिन रब ने फरमाया, “इसकी शक्लो-सूरत और

लंबे कद से मुत आस्सिर न हो, क्योंकि यह मुझे नामंजूर है। मैं इनसान की नजर से नहीं देखता। क्योंकि इनसान जाहिरी सूरत पर गौर करके फ़ैसला करता है जबकि रब को हर एक का दिल साफ़ साफ़ नजर आता है।”

8 फिर यस्सी ने अपने दूसरे बेटे अबीनदाब को बुलाकर समुएल के सामने से गुज़रने दिया। समुएल बोला, “नहीं, रब ने इसे भी नहीं चुना।” 9 इसके बाद यस्सी ने तीसरे बेटे सम्मा को पेश किया। लेकिन यह भी नहीं चुना गया था। 10 यों यस्सी ने अपने सात बेटों को एक एक करके समुएल के सामने से गुज़रने दिया। इनमें से कोई रब का चुना हुआ बादशाह न निकला। 11 आखिरकार समुएल ने पूछा, “इनके अलावा कोई और बेटा तो नहीं है?” यस्सी ने जवाब दिया, “सबसे छोटा बेटा अभी बाकी रह गया है, लेकिन वह बाहर खेतों में भेड़-बकरियों की निगरानी कर रहा है।” समुएल ने कहा, “उसे फ़ौरन बुला लें। उसके आने तक हम खाने के लिए नहीं बैठेंगे।”

12 चुनौचे यस्सी छोटे को बुलाकर अंदर ले आया। यह बेटा गोरा था। उस की आँखें खूबसूरत और शक्तो-सूरत काबिले-तारीफ़ थीं। रब ने समुएल को बताया, “यही है। उठकर इसे मसह कर।” 13 समुएल ने तेल से मारा हुआ मेंढे का सींग लेकर उसे दाऊद के सर पर उंडेल दिया। सब भाई मौजूद थे। उसी वक़्त रब का रूह दाऊद पर नाज़िल हुआ और उस की सारी उम्र उस पर ठहरा रहा। फिर समुएल रामा वापस चला गया।

**दाऊद साऊल को बदरूह से आराम दिलाता है**

14 लेकिन रब के रूह ने साऊल को छोड़ दिया था। इसके बजाए रब की तरफ़ से एक बुरी रूह उसे दहशतज़दा करने लगी। 15 एक दिन साऊल के मुलाज़िमों ने उससे कहा, “अल्लाह की तरफ़ से एक बुरी रूह आपके दिल में दहशत पैदा कर रही है। 16 हमारा आका अपने खादिमों को हुक्म दे कि वह किसी को ढूँड लाएँ जो सरोद बजा सके। जब भी अल्लाह की तरफ़ से यह बुरी रूह आप पर आए तो वह अपना साज़ बजाकर आपको सूकून दिलाएगा।”

17 साऊल ने जवाब दिया, “ठीक है, ऐसा ही करो। किसी को बुला लाओ जो साज़ बजाने में माहिर हो।” 18 एक मुलाज़िम बोला, “मैंने एक आदमी को देखा है जो खूब बजा सकता है। वह बैत-लहम के रहनेवाले यस्सी का बेटा है। वह न सिर्फ़ महारत से सरोद बजा सकता है बल्कि बड़ा जंगजू भी है। यह भी उस की एक खूबी है कि वह हर मौके पर समझदारी से बात कर सकता है। और वह खूबसूरत भी है। रब उसके साथ है।”

19 साऊल ने फ़ौरन अपने कासिदों को यस्सी के पास भेजकर उसे इतला दी, “अपने बेटे दाऊद को जो भेड़-बकरियों को सँभालता है मेरे पास भेज देना।” 20 यह सुनकर यस्सी ने रोटी, मै का मशकीज़ा और एक जवान बकरी गधे पर लादकर दाऊद के हवाले कर दी और उसे साऊल के दरबार में भेज दिया।

21 इस तरह दाऊद साऊल की खिदमत में हाज़िर हो गया। वह बादशाह को बहुत पसंद आया बल्कि साऊल को इतना प्यारा लगा कि उसे अपना सिलाहबरदार बना लिया। 22 साऊल ने यस्सी को इतला भेजी, “दाऊद मुझे बहुत पसंद आया है, इसलिए उसे मुस्तक़िल तौर पर मेरी खिदमत करने की इजाज़त दें।” 23 और जब भी बुरी रूह साऊल पर आती तो दाऊद अपना सरोद बजाने लगता। तब साऊल को सूकून मिलता और बुरी रूह उस पर से दूर हो जाती।

## 17

**जाती जालूत**

1 एक दिन फिलिस्तिनों ने अपनी फ़ौज को यहदाह के शहर सोका के करीब जमा किया। वह इफ़स-दम्मीम में ख़ैमाज़न हुए जो सोका और अज़ीका के दरमियान है। 2 जवाब में साऊल ने अपनी फ़ौज को बुलाकर वादीए-पेला में जमा किया। वहाँ इसराईल के मर्द जंग के लिए तरतीब से खड़े हुए। 3 यों फिलिस्ती एक पहाड़ी पर खड़े थे और इसराईली दूसरी पहाड़ी पर। उनके बीच में वादी थी।

4 फिर फिलिस्ती सफ़ों से जात शहर का पहलवान निकलकर इसराईलियों के सामने खड़ा हुआ। उसका नाम जालूत था और वह 9 फुट से ज्यादा लंबा था। 5 उसने हिफ़ाज़त के लिए पीतल की कई चीज़ें पहन रखी थीं : सर पर खोद, धड़ पर ज़िरा-बकतर जो 57 किलोग्राम वज़नी था 6 और पिंडलियों पर बकतर। कंधों पर पीतल की शमशेर लटकनी हुई थी। 7 जो नेज़ा वह पकड़कर चल रहा था उसका दस्ता खड़ी के शहतीर जैसा मोटा और लंबा था, और उसके लोहे की नोक का वज़न 7 किलोग्राम से ज्यादा था। जालूत के आगे आगे एक आदमी उस की ढाल उठाए चल रहा था।

8 जालूत इसराईली सफ़ों के सामने स्करगर गरजा, “तुम सब क्यों लड़ने के लिए सफ़आरा हो गए हो? क्या मैं फिलिस्ती नहीं हूँ जबकि तुम सिर्फ़ साऊल के नौकर-चाकर हो? चलो, एक आदमी को चुनकर उसे यहाँ नीचे मेरे पास भेज दो। 9 अगर वह मुझसे लड़ सके और मुझे मार दे तो हम तुम्हारे गुलाम बन जाएंगे। लेकिन अगर मैं उस पर गालिब आकर उसे मार डालूँ तो तुम हमारे गुलाम बन जाओगे। 10 आज मैं इसराईली सफ़ों की बदनामी करके उन्हें चैलेंज करता हूँ कि मुझे एक आदमी



दो जो मेरे साथ लड़े।” 11 जालूत की यह बातें सुनकर साऊल और तमाम इसराईली घबरा गए, और उन पर दहशत तारी हो गई।

दाऊद भाइयों से मिलने के लिए फौज के पास जाता है

12 उस वक्त दाऊद का बाप यस्सी काफी बूढ़ा हो चुका था। उसके कुल 8 बेटे थे, और वह इफराता के इलाके के बैत-लहम में रहता था। 13 लेकिन उसके तीन सबसे बड़े बेटे फिलिस्तियों से लड़ने के लिए साऊल की फौज में भरती हो गए थे। सबसे बड़े का नाम इलियाब, दूसरे का अबीनदाब और तीसरे का सम्मा था। 14-15 दाऊद तो सबसे छोटा भाई था। वह दूसरों की तरह पूरा वक्त साऊल के पास न गुज़ार सका, क्योंकि उसे बाप की भेड़-बकरियों को सँभालने की जिम्मादारी दी गई थी। इसलिए वह आता जाता रहा। चुनौचे वह मौजूद नहीं था 16 जब जालूत 40 दिन सुबहो-शाम इसराईलियों की सफ़ों के सामने खड़े होकर उन्हें चैलेंज करता रहा।

17 एक दिन यस्सी ने दाऊद से कहा, “बेटा, अपने भाइयों के पास कैप में जाकर उनका पता करो। भुने हुए अनाज के यह 16 किलोग्राम और यह दस रोटियाँ अपने साथ लेकर जल्दी जल्दी उधर पहुँच जाओ। 18 पनीर की यह दस टिकियाँ उनके कप्तान को दे देना। भाइयों का हाल मालूम करके उनकी कोई चीज़ वापस ले आओ ताकि मुझे तसल्ली हो जाए कि वह ठीक है। 19 वह वादीए-पेला में साऊल और इसराईली फौज के साथ फिलिस्तियों से लड़ रहे हैं।” 20 अगले दिन सुबह-सवेरे दाऊद ने रेवड को किसी और के सुपुर्द करके सामान उठाया और यस्सी की हिदायत के मुताबिक चला गया। जब वह कैप के पास पहुँच गया तो इसराईली फौजी नारे लगा लगाकर मैदाने-जंग के लिए निकल रहे थे। 21 वह लड़ने के लिए तर्तीब से खड़े हो गए, और दूसरी तरफ़ फिलिस्ती सफ़े भी तैयार हुईं। 22 यह देखकर दाऊद ने अपनी चीज़ें उस आदमी के पास छोड़ दीं जो लश्कर के सामान की निगरानी कर रहा था, फिर भागकर मैदाने-जंग में भाइयों से मिलने चला गया।

वह अभी उनका हाल पूछ ही रहा था 23 कि जाती जालूत मामूल के मुताबिक फिलिस्तियों की सफ़ों से निकलकर इसराईलियों के सामने वही तंज की बातें बकने लगा। दाऊद ने भी उस की बातें सुनीं। 24 जालूत को देखते ही इसराईलियों के रोंगटे खड़े हो गए, और वह भागकर 25 आपस में कहने लगे, “क्या आपने इस आदमी को हमारी तरफ़ बढ़ते हुए देखा? सुनें कि वह किस तरह हमारी बदनामी करके हमें चैलेंज कर रहा है। बादशाह ने एलान किया है कि जो शख्स इसे मार दे उसे बड़ा अज्र मिलेगा। शहजादी से उस की शादी होगी, और आइंदा उसके बाप के खानदान को टैक्स नहीं देना पड़ेगा।”

26 दाऊद ने साथवाले फौजियों से पूछा, “क्या कह रहे हैं? उस आदमी को क्या इनाम मिलेगा जो इस फिलिस्ती को मारकर हमारी कौम की स्सवाई दूर करेगा? यह नामखतून फिलिस्ती कौन है कि जिंदा खुदा की फौज की बदनामी करके उसे चैलेंज करे!” 27 लोगों ने दुबारा दाऊद को बताया कि बादशाह उस आदमी को क्या देगा जो जालूत को मार डालेगा।

28 जब दाऊद के बड़े भाई इलियाब ने दाऊद की बातें सुनीं तो उसे गुस्सा आया और वह उसे झिड़कने लगा, “तू क्यों आया है? बयाबान में अपनी चंद एक भेड़-बकरियों को किसके पास छोड़ आया है? मैं तेरी शोखी और दिल की शरारत खूब जानता हूँ। तू सिर्फ़ जंग का तमाशा देखने आया है!” 29 दाऊद ने पूछा, “अब मुझसे क्या गलती हुई? मैंने तो सिर्फ़ सवाल पूछा।” 30 वह उससे मुड़कर किसी और के पास गया और वही बात पूछने लगा। वही जवाब मिला।

हथियार का चुनाव

31 दाऊद की यह बातें सुनकर किसी ने साऊल को इतला दी। साऊल ने उसे फौन बुलाया। 32 दाऊद ने बादशाह से कहा, “किसी को इस फिलिस्ती की वजह से हिम्मत नहीं हारना चाहिए। मैं उससे लड़ूँगा।” 33 साऊल बोला, “आप? आप जैसा लड़का किस तरह उसका मुकाबला कर सकता है? आप तो अभी बच्चे से हो जबकि वह तजरबाकार जंगजू है जो जवानी से हथियार इस्तेमाल करता आया है।”

34 लेकिन दाऊद ने इसार किया, “मैं अपने बाप की भेड़-बकरियों की निगरानी करता हूँ। जब कभी कोई शेरबबर या रीछ रेवड का जानवर छीनकर भाग जाता 35 तो मैं उसके पीछे जाता और उसे मार मारकर भेड़ को उसके मुँह से छुड़ा लेता था। अगर शेर या रीछ जवाब में मुझ पर हमला करता तो मैं उसके सर के बालों को पकड़कर उसे मार देता था। 36 इस तरह आपके खादिम ने कई शेरों और रीछों को मार डाला है। यह नामखतून भी उनकी तरह हलाक हो जाएगा, क्योंकि उसने जिंदा खुदा की फौज की बदनामी करके उसे चैलेंज किया है। 37 जिस रब ने मुझे शेर और रीछ के पंजे से बचा लिया है वह मुझे इस फिलिस्ती के हाथ से भी बचाएगा।”

साऊल बोला, “ठीक है, जाँए और रब आपके साथ हो।” 38 उसने दाऊद को अपना जिंदा-बकतर और पीतल का खोद पहनाया। 39 फिर दाऊद ने साऊल की तलवार बाँधकर चलने की कोशिश की। लेकिन उसे बहुत मुश्किल लग रहा था। उसने साऊल से कहा, “मैं यह चीज़ें पहनकर नहीं लड़ सकता, क्योंकि मैं इनका आदी नहीं हूँ।” उन्हें उतारकर 40 उसने

नदी से पाँच चिकने चिकने पत्थर चुनकर उन्हें अपनी चरवाहे की थैली में डाल लिया। फिर चरवाहे की अपनी लाठी और फलाखन पकड़कर वह फिलिस्ती से लड़ने के लिए इसराईली सफों से निकला।

### दाऊद की फ़तह

41 जालूत दाऊद की जानिब बढ़ा। हाल को उठानेवाला उसके आगे आगे चल रहा था। 42 उसने हिकारतआमेज़ नज़रों से दाऊद का जायज़ा लिया, क्योंकि वह गोरा और खूबसूरत नौजवान था। 43 वह गरजा, “क्या मैं कुत्ता हूँ कि तू लाठी लेकर मेरा मुकाबला करने आया है?” अपने देवताओं के नाम लेकर वह दाऊद पर लानत भेजकर 44 चिल्लाया, “इधर आ ताकि मैं तेरा गोशत परिदों और जंगली जानवरों को खिलाऊँ।”

45 दाऊद ने जवाब दिया, “आप तलवार, नेज़ा और शमशेर लेकर मेरा मुकाबला करने आए हैं, लेकिन मैं रब्बूल-अफवाज का नाम लेकर आता हूँ, उसी का नाम जो इसराईली फ़ौज का ख़ुदा है। क्योंकि आपने उसी को चैलेंज किया है। 46 आज ही रब आपको मेरे हाथ में कर देगा, और मैं आपका सर कलम कर दूँगा। इसी दिन मैं फिलिस्ती फ़ौजियों की लाशें परिदों और जंगली जानवरों को खिला दूँगा। तब तमाम दुनिया जान लेगी कि इसराईल का ख़ुदा है। 47 सब जो यहाँ मौजूद हैं जान लेंगे कि रब को हमें बचाने के लिए तलवार या नेज़े की ज़रूरत नहीं होती। वह ख़ुद ही जंग कर रहा है, और वही आपको हमारे कब्ज़े में कर देगा।”

48 जालूत दाऊद पर हमला करने के लिए आगे बढ़ा, और दाऊद भी उस की तरफ दौड़ा। 49 चलते चलते उसने अपनी थैली से पत्थर निकाला और उसे फ़लाखन में रखकर जोर से चलाया। पत्थर उड़ता उड़ता फिलिस्ती के माथे पर जा लगा। वह खोपड़ी में धँस गया, और पहलवान मुँह के बल गिर गया। 50-51 यों दाऊद फ़लाखन और पत्थर से फिलिस्ती पर गालिब आया। उसके हाथ में तलवार नहीं थी। तब उसने जालूत की तरफ दौड़कर उसी की तलवार मियान से खीचकर फिलिस्ती का सर काट डाला।

जब फिलिस्तियों ने देखा कि हमारा पहलवान हलाक हो गया है तो वह भाग निकले। 52 इसराईल और यहूदाह के मर्द फ़तह के नारे लगा लगाकर फिलिस्तियों पर टूट पड़े। उनका ताक्कुब करते करते वह जात और अक़रून के दरवाज़ों तक पहुँच गए। जो रास्ता शौरेम से जात और अक़रून तक जाता है उस पर हर तरफ फिलिस्तियों की लाशें नज़र आईं। 53 फिर इसराईलियों ने वापस आकर फिलिस्तियों की छोड़ी हुई लशकरगाह को लूट लिया।

54 बाद में दाऊद जालूत का सर यस्शलम को ले आया। फिलिस्ती के हथियार उसने अपने ख़ैमे में रख लिए।

### साऊल दाऊद के खानदान का पता करता है

55 जब दाऊद जालूत से लड़ने गया तो साऊल ने फ़ौज के कर्मांडर अबिनैर से पूछा, “इस जवान आदमी का बाप कौन है?” अबिनैर ने जवाब दिया, “आपकी हयात की कसम, मुझे मालूम नहीं।” 56 बादशाह बोला, “फिर पता करें!” 57 जब दाऊद फिलिस्ती का सर कलम करके वापस आया तो अबिनैर उसे बादशाह के पास लाया। दाऊद अभी जालूत का सर उठाए फिर रहा था। 58 साऊल ने पूछा, “आपका बाप कौन है?” दाऊद ने जवाब दिया, “मैं बैत-लहम के रहनेवाले आपके खादिम यस्सी का बेटा हूँ।”

## 18

### दाऊद और यूतन की दोस्ती

1 इस गुफ्तग के बाद दाऊद की मुलाकात बादशाह के बेटे यूतन से हुई। उनमें फ़ौरन गहरी दोस्ती पैदा हो गई, और यूतन दाऊद को अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखने लगा। 2 उस दिन से साऊल ने दाऊद को अपने दरबार में रख लिया और उसे बाप के घर वापस जाने न दिया। 3 और यूतन ने दाऊद से अहद बाँधा, क्योंकि वह दाऊद को अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखता था। 4 अहद की तसदीक के लिए यूतन ने अपना चोगा उतारकर उसे अपने ज़िरा-बकतर, तलवार, कमान और पेट्टी समेत दाऊद को दे दिया।

5 जहाँ भी साऊल ने दाऊद को लड़ने के लिए भेजा वहाँ वह कामयाब हुआ। यह देखकर साऊल ने उसे फ़ौज का बड़ा अफसर बना दिया। यह बात अवाम और साऊल के अफसरों को पसंद आई।

### साऊल दाऊद से हसद करता है

6 जब दाऊद फिलिस्तियों को शिकस्त देने से वापस आया तो तमाम शहरों से औरतें निकलकर साऊल बादशाह से मिलने आईं। दफ और साज़ बजाते हुए वह खुशी के गीत गा गाकर नाचने लगीं। 7 और नाचते नाचते वह गाती रही, “साऊल ने तो हज़ार हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हज़ार।”

8 साऊल बड़े गुस्से में आ गया, क्योंकि औरतों का गीत उसे निहायत बुरा लगा। उसने सोचा, “उनकी नज़र में दाऊद ने दस हजार हलाक किए जबकि मैंने सिर्फ़ हजार। अब सिर्फ़ यह बात रह गई है कि उसे बादशाह मुकर्रर किया जाए।” 9 उस वक़्त से साऊल दाऊद को शक की नज़र से देखने लगा। 10-11 अगले दिन अल्लाह ने दुबारा साऊल पर बुरी रूह आने दी, और वह घर के अंदर वज्द की हालत में आ गया। दाऊद मामूल के मुताबिक़ साज़ बजाने लगा ताकि बादशाह को सुकून मिले। साऊल के हाथ में नेज़ा था। अचानक उसने उसे फेंककर दाऊद को दीवार के साथ छेद डालने की कोशिश की। लेकिन दाऊद एक तरफ़ हटकर बच निकला। एक और दफ़ा ऐसा हुआ, लेकिन दाऊद फिर बच गया।

12 यह देखकर साऊल दाऊद से डरने लगा, क्योंकि उसने जान लिया कि रब मुझे छोड़कर दाऊद का हामी बन गया है। 13 आखिरकार उसने दाऊद को दरबार से दूर करके हजार फ़ौजियों पर मुकर्रर कर दिया। इन आदमियों के साथ दाऊद मुख़्तलिफ़ जंगों के लिए निकलता रहा। 14 और जो कुछ भी वह करता उसमें कामयाब रहता, क्योंकि रब उसके साथ था। 15 जब साऊल ने देखा कि दाऊद को कितनी ज़्यादा कामयाबी हुई है तो वह उससे मज़ीद डर गया। 16 लेकिन इसराइल और यहूदाह के बाक़ी लोग दाऊद से बहुत मुहब्बत रखते थे, क्योंकि वह हर जंग में निकलते वक़्त से लेकर घर वापस आते वक़्त तक उनके आगे आगे चलता था।

### दाऊद साऊल का दामाद बन जाता है

17 एक दिन साऊल ने दाऊद से बात की, “मैं अपनी बड़ी बेटी मीरब का रिश्ता आपके साथ बाँधना चाहता हूँ। लेकिन पहले साबित करें कि आप अच्छे फ़ौजी हैं, जो रब की जंगों में खूब हिस्सा लें।” लेकिन दिल ही दिल में साऊल ने सोचा, “खुद तो मैं दाऊद पर हाथ नहीं उठाऊँगा, बेहतर है कि वह फिलिस्तिनों के हाथों मारा जाए।” 18 लेकिन दाऊद ने एतराज़ किया, “मैं कौन हूँ कि बादशाह का दामाद बनूँ? इसराइल में तो मेरे खानदान और आबाई कुंभे की कोई हैसियत नहीं।”

19 तो भी शादी की तैयारियों की गईं। लेकिन जब मुकर्ररा वक़्त आ गया तो साऊल ने मीरब की शादी एक और आदमी बनाम अदरियेल महलाती से करवा दी।

20 इतने में साऊल की छोटी बेटी मीकल दाऊद से मुहब्बत करने लगी। जब साऊल को इसकी खबर मिली तो वह ख़ुश हुआ। 21 उसने सोचा, “अब मैं बेटी का रिश्ता उसके साथ बाँधकर उसे यों फँसा दूँगा कि वह फिलिस्तिनों से लड़ते लड़ते मर जाएगा।” दाऊद से उसने कहा, “आज आपको मेरा दामाद बनने का दुबारा मौक़ा मिलेगा।”

22 फिर उसने अपने मुलाज़िम्तों को हुक्म दिया कि वह चुपके से दाऊद को बताएँ, “सुनें, आप बादशाह को पसंद हैं, और उसके तमाम अफसर भी आपको प्यार करते हैं। आप ज़रूर बादशाह की पेशकश क़बूल करके उसका दामाद बन जाएँ।”

23 लेकिन दाऊद ने एतराज़ किया, “क्या आपकी दानिस्त में बादशाह का दामाद बनना छोटी-सी बात है? मैं तो गरीब आदमी हूँ, और मेरी कोई हैसियत नहीं।”

24 मुलाज़िम्तों ने बादशाह के पास वापस जाकर उसे दाऊद के अलफ़ाज़ बताए। 25 साऊल ने उन्हें फिर दाऊद के पास भेजकर उसे इतला दी, “बादशाह महर के लिए पैसे नहीं माँगता बल्कि यह कि आप उनके दुश्मनों से बदला लेकर 100 फिलिस्तिनों को क़त्ल कर दें। सबूत के तौर पर आपको उनका खतना करके ज़िल्द का कटा हुआ हिस्सा बादशाह के पास लाना पड़ेगा।” शर्त का मक़सद यह था कि दाऊद फिलिस्तिनों के हाथों मारा जाए।

26 जब दाऊद को यह खबर मिली तो उसे साऊल की पेशकश पसंद आई। मुकर्ररा वक़्त से पहले 27 उसने अपने आदमियों के साथ निकलकर 200 फिलिस्तिनों को मार दिया। लाशों का खतना करके वह ज़िल्द के कुल 200 टुकड़े बादशाह के पास लाया ताकि बादशाह का दामाद बने। यह देखकर साऊल ने उस की शादी मीकल से करवा दी।

28 साऊल को मानना पड़ा कि रब दाऊद के साथ है और कि मेरी बेटी मीकल उसे बहुत प्यार करती है। 29 तब वह दाऊद से और भी डरने लगा। इसके बाद वह जीते-जी दाऊद का दुश्मन बना रहा। 30 उन दिनों में फिलिस्ती सरदार इसराइल से लड़ते रहे। लेकिन जब भी वह जंग के लिए निकले तो दाऊद साऊल के बाक़ी अफसरों की निसबत ज़्यादा कामयाब होता था। नतीजे में उस की शोहरत पूरे मुल्क में फैल गई।

## 19

### यूनतन दाऊद की सिफारिश करता है

1 अब साऊल ने अपने बेटे यूनतन और तमाम मुलाज़िम्तों को साफ़ बताया कि दाऊद को हलाक करना है। लेकिन दाऊद यूनतन को बहुत प्यारा था, 2 इसलिए उसने उसे आगाह किया, “मेरा बाप आपको मार देने के मवाके ढूँढ़ रहा है। कल सुबह खबरदार रहें। कहीं छुपकर मेरा इंतज़ार करें। 3 फिर मैं अपने बाप के साथ शहर से निकलकर आपके करीब से गुज़रूँगा। वहाँ मैं उनसे आपका मामला छेड़कर मालूम करूँगा कि वह क्या इरादा रखते हैं। जो कुछ भी वह कहेंगे मैं आपको बता दूँगा।”

4 अगली सुबह जब यूनतन ने अपने बाप से बात की तो उसने दाऊद की सिफारिश करके कहा, “बादशाह अपने खादिम दाऊद का गुनाह न करें, क्योंकि उसने आपका गुनाह नहीं किया बल्कि हमेशा आपके लिए फायदामंद रहा है।” 5 उसी ने अपनी जान को खतरे में डालकर फिलिस्ती को मार डाला, और रब ने उसके वसीले से तमाम इसराईल को बड़ी नजात बाख्शी। उस वक़्त आप खुद भी सब कुछ देखकर खुश हुए। तो फिर आप गुनाह करके उस जैसे बेकुसूर आदमी को क्यों बिलावजह मरवाना चाहते हैं?”

6 यूनतन की बातें सुनकर साऊल मान गया। उसने वादा किया, “रब की हयात की कसम, दाऊद को मारा नहीं जाएगा।” 7 बाद में यूनतन ने दाऊद को बुलाकर उसे सब कुछ बताया, फिर उसे साऊल के पास लाया। तब दाऊद पहले की तरह बादशाह की खिदमत करने लगा।

#### साऊल का दाऊद पर दूसरा हमला

8 एक बार फिर जंग छिड़ गई, और दाऊद निकलकर फिलिस्तियों से लड़ा। इस दफा भी उसने उन्हें यों शिकस्त दी कि वह फरार हो गए। 9 लेकिन एक दिन जब साऊल अपना नेजा पकड़े घर में बैठा था तो अल्लाह की भेजी हुई बुरी रूह उस पर गालिब आई। उस वक़्त दाऊद सरोद बजा रहा था। 10 अचानक साऊल ने नेजे को फेंककर दाऊद को दीवार के साथ छेद डालने की कोशिश की। लेकिन वह एक तरफ हट गया और नेजा उसके करीब से गुज़रकर दीवार में धँस गया। दाऊद भाग गया और उस रात साऊल के हाथ से बच गया।

11 साऊल ने फ़ौरन अपने आदमियों को दाऊद के घर के पास भेज दिया ताकि वह मकान की पहरादारी करके दाऊद को सुबह के वक़्त कल्ल कर दें। लेकिन दाऊद की बीवी मीकल ने उसको आगाह कर दिया, “आज रात को ही यहाँ से चले जाएँ, वरना आप नहीं बचेंगे बल्कि कल सुबह ही मार दिए जाएंगे।” 12 चुनौचे दाऊद घर की खिडकी में से निकला, और मीकल ने उतरने में उस की मदद की। तब दाऊद भागकर बच गया।

13 मीकल ने दाऊद की चारपाई पर बुत रखकर उसके सर पर बकरियों के बाल लगा दिए और बाकी हिस्से पर कम्बल बिछा दिया। 14 जब साऊल के आदमी दाऊद को पकड़ने के लिए आए तो मीकल ने कहा, “वह बीमार है।” 15 फ़ौजियों ने साऊल को इतला दी तो उसने उन्हें हुकम दिया, “उसे चारपाई समेत ही मेरे पास ले आओ ताकि उसे मार दें।”

16 जब वह दाऊद को ले जाने के लिए आए तो क्या देखते हैं कि उस की चारपाई पर बुत पड़ा है जिसके सर पर बकरियों के बाल लगे हैं। 17 साऊल ने अपनी बेटी को बहुत झिड़का, “तूने मुझे इस तरह धोका देकर मेरे दुश्मन की फरार होने में मदद क्यों की? तेरी ही वजह से वह बच गया।” मीकल ने जवाब दिया, “उसने मुझे धमकी दी कि मैं तुझे कल्ल कर दूँगा अगर तू फरार होने में मेरी मदद न करे।”

#### दाऊद रामा में समुएल के पास

18 इस तरह दाऊद बच निकला। वह रामा में समुएल के पास फरार हुआ और उसे सब कुछ सुनाया जो साऊल ने उसके साथ किया था। फिर दोनों मिलकर नयोत चले गए। वहाँ वह ठहरे। 19 साऊल को इतला दी गई, “दाऊद रामा के नयोत में ठहरा हुआ है।” 20 उसने फ़ौरन अपने आदमियों को उसे पकड़ने के लिए भेज दिया। जब वह पहुँचे तो देखा कि नबियों का पूरा गुरोह वहाँ नबुवत कर रहा है, और समुएल खुद उनकी राहनुमाई कर रहा है। उन्हें देखते ही अल्लाह का रूह साऊल के आदमियों पर नाज़िल हुआ, और वह भी नबुवत करने लगे। 21 साऊल को इस बात की खबर मिली तो उसने मज़ीद आदमियों को रामा भेज दिया। लेकिन वह भी वहाँ पहुँचते ही नबुवत करने लगे। साऊल ने तीसरी बार आदमियों को भेज दिया, लेकिन यही कुछ उनके साथ भी हुआ।

22 आखिर में साऊल खुद रामा के लिए रवाना हुआ। चलते चलते वह सीकू के बड़े हौज़ पर पहुँचा। वहाँ उसने लोगों से पूछा, “दाऊद और समुएल कहाँ हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “रामा की आबादी नयोत में।”

23 साऊल अभी नयोत नहीं पहुँचा था कि अल्लाह का रूह उस पर भी नाज़िल हुआ, और वह नबुवत करते करते नयोत पहुँच गया। 24 वहाँ वह अपने कपड़ों को उतारकर समुएल के सामने नबुवत करता रहा। नबुवत करते करते वह ज़मीन पर लेट गया और वहाँ पूरे दिन और पूरी रात पड़ा रहा। इसी वजह से यह कौल मशहूर हुआ, “क्या साऊल को भी नबियों में शुमार किया जाता है?”

## 20

#### दाऊद और यूनतन अहद बाँधते हैं

1 अब दाऊद रामा के नयोत से भी भाग गया। चुपके से वह यूनतन के पास आया और पूछा, “मुझे क्या गलती हुई है? मेरा क्या कुसूर है? मुझे आपके बाप के खिलाफ क्या जुर्म सरजद हुआ है कि वह मुझे कल्ल करना चाहते हैं?”

2 यूनतन ने एतराज किया, “यह कभी नहीं हो सकता! आप नहीं मरेंगे। मेरा बाप तो मुझे हमेशा सब कुछ बता देता है, खाह बात बड़ी हो या छोटी। तो फिर वह ऐसा कोई मनस्वा मुझसे क्यों छुपाए? आपकी यह बात सरसर गलत है।”

3 लेकिन दाऊद ने क्रसम खाकर इसरार किया, “जाहिर है कि आपको इसके बारे में इल्म नहीं। आपके बाप को साफ मालूम है कि मैं आपको पसंद हूँ। ‘वह तो सोचते होंगे, यूनतन को इस बात का इल्म न हो, वरना वह दुख महसूस करेगा।’ लेकिन रब की ओर आपकी जान की कसम, मैं बड़े खतरे में हूँ, और मौत से बचना मुश्किल ही है।”

4 यूनतन ने कहा, “मुझे बताएँ कि मैं क्या करूँ तो मैं उसे करूँगा।” 5 तब दाऊद ने अपना मनस्वा पेश किया। “कल नए चाँद की ईद है, और बादशाह तवक्को करेंगे कि मैं उनकी ज़ियाफत में शरीक हूँ। लेकिन इस मरतबा मुझे परसों शाम तक बाहर खुले मैदान में छुपा रहने की इजाजत दें। 6 अगर आपके बाप मेरा पता करें तो उन्हें कह देना, ‘दाऊद ने बड़े जोर से मुझसे अपने शहर बैत-लहम को जाने की इजाजत माँगी। उसे बड़ी जल्दी थी, क्योंकि उसका पूरा खानदान अपनी सालाना कुरबानी चढ़ाना चाहता है।’ 7 अगर आपके बाप जवाब दें कि ठीक है तो फिर मालूम होगा कि खतरा टल गया है। लेकिन अगर वह बड़े गुस्से में आ जाएँ तो यकीन जानें कि वह मुझे नुकसान पहुँचाने का इरादा रखते हैं। 8 बराहे-करम मुझ पर मेहरबानी करके याद रखें कि आपने रब के सामने अपने खादिम से अहद बाँधा है। अगर मैं वाकई कुस्वार ठहरूँ तो आप खुद मुझे मार डालें। लेकिन किसी सूत में भी मुझे अपने बाप के हवाले न करें।”

9 यूनतन ने जवाब दिया, “फ़िकर न करें, मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा। जब भी मुझे इशारा मिल जाए कि मेरा बाप आपको कल्ल करने का इरादा रखता है तो मैं ज़रूर आपको फ़ौरन इतला दूँगा।” 10 दाऊद ने पृच्छा, “अगर आपके बाप गुस्से में जवाब दें तो कौन मुझे खबर पहुँचाएगा?”

11 यूनतन ने जवाब में कहा, “आएँ हम निकलकर खुले मैदान में जाएँ।” दोनों निकले 12 तो यूनतन ने दाऊद से कहा, “रब इसराईल के खुदा की कसम, परसों इस वक्त तक मैं अपने बाप से बात मालूम कर लूँगा। अगर वह आपके बारे में अच्छी सोच रखे और मैं आपको इतला न दूँ 13 तो रब मुझे सख्त सज़ा दे। लेकिन अगर मुझे पता चले कि मेरा बाप आपको मार देने पर तुला हुआ है तो मैं आपको इसकी इतला भी दूँगा। इस सूत में मैं आपको नहीं रोक्कूँगा बल्कि आपको सलामती से जाने दूँगा। रब उसी तरह आपके साथ हो जिस तरह वह पहले मेरे बाप के साथ था। 14 लेकिन दरखास्त है कि मेरे जिते-जी मुझ पर रब की-सी मेहरबानी करें ताकि मैं मर न जाऊँ। 15 मेरे खानदान पर भी हमेशा तक मेहरबानी करें। वह कभी भी आपकी मेहरबानी से महरूम न हो जाए, उस वक्त भी नहीं जब रब ने आपके तमाम दुश्मनों को रूप-जमीन पर से मिटा दिया होगा।”

16 चुनौचे यूनतन ने दाऊद से अहद बाँधकर कहा, “रब दाऊद के दुश्मनों से बदला ले।” 17 वह बोला, “क्रसम खाएँ कि आप यह अहद उतने पुख्ता इरादे से कायम रखेंगे जितनी आप मुझसे मुहब्बत रखते हैं।” क्योंकि यूनतन दाऊद को अपनी जान के बराबर अज़ीज़ रखता था।

18 फिर यूनतन ने अपना मनस्वा पेश किया। “कल तो नए चाँद की ईद है। जल्दी से पता चलेगा कि आप नहीं आए, क्योंकि आपकी कुरसी खाली रहेगी। 19 इसलिए परसों शाम के वक्त खुले मैदान में वहाँ चले जाएँ जहाँ पहले छुप गए थे। पत्थर के ढेर के करीब बैठ जाएँ। 20 उस वक्त मैं घर से निकलकर तीन तीर पत्थर के ढेर की तरफ चलाऊँगा गोया मैं किसी चीज़ को निशाना बनाकर मशक कर रहा हूँ। 21 फिर मैं लड़के को तीरों को ले आने के लिए भेज दूँगा। अगर मैं उसे बता दूँ, ‘तीर उरली तरफ पड़े हैं, उन्हें जाकर ले आओ’ तो आप ख़ौफ़ खाए बग़ैर छुपने की जगह से निकलकर मेरे पास आ सकेंगे। रब की हयात की कसम, इस सूत में कोई खतरा नहीं होगा। 22 लेकिन अगर मैं लड़के को बता दूँ, ‘तीर परली तरफ पड़े हैं’ तो आपको फ़ौरन हिजरत करनी पड़ेगी। इस सूत में रब खुद आपको यहाँ से भेज रहा होगा। 23 लेकिन जो बातें हमने आज आपस में की हैं रब खुद हमेशा तक इनका गवाह रहे।”

### साऊल की दाऊद से अलानिया दुश्मनी

24 चुनौचे दाऊद खुले मैदान में छुप गया। नए चाँद की ईद आई तो बादशाह ज़ियाफत के लिए बैठ गया। 25 मामूल के मुताबिक वह दीवार के पास बैठ गया। अबिनैर उसके साथ बैठा था और यूनतन उसके मुकाबिला। लेकिन दाऊद की जगह खाली रही।

26 उस दिन साऊल ने बात न छेड़ी, क्योंकि उसने सोचा, “दाऊद किसी वजह से नापाक हो गया होगा, इसलिए नहीं आया।”

27 लेकिन अगले दिन जब दाऊद की जगह फिर खाली रही तो साऊल ने यूनतन से पृच्छा, “यस्सी का बेटा न तो कल, न आज ज़ियाफत में शरीक हुआ है। क्या वजह है?” 28 यूनतन ने जवाब दिया, “दाऊद ने बड़े जोर से मुझसे बैत-लहम जाने की इजाजत माँगी। 29 उसने कहा, ‘मेहरबानी करके मुझे जाने दें, क्योंकि मेरा खानदान एक खास कुबानी चढ़ा रहा है, और

मेरे भाई ने मुझे आने का हुक्म दिया है। अगर आपको मंज़ूर हो तो बराह-करम मुझे अपने भाइयों के पास जाने की इजाज़त दें।' यही वजह है कि वह बादशाह की ज़ियाफत में शरीक नहीं हुआ।"

30 यह सुनकर साऊल आपे से बाहर हो गया। वह गरजा, "हरामज़ादे! मुझे खूब मालूम है कि तूने दाऊद का साथ दिया है। शर्म की बात है, तेरे लिए और तेरी माँ के लिए। 31 जब तक यस्सी का बेटा ज़िंदा है तब तक न तू और न तेरी बादशाहत कायम रहेगी। अब जा, उसे ले आ, क्योंकि उसे मरना ही है।"

32 यून्तन ने कहा, "क्यों? उसने क्या किया जो सज़ाए-मौत के लायक है?" 33 जवाब में साऊल ने अपना नेज़ा ज़ोर से यून्तन की तरफ फेंक दिया ताकि उसे मार डाले। यह देखकर यून्तन ने जान लिया कि साऊल दाऊद को क़त्ल करने का पुख़्ता इरादा रखता है। 34 बड़े गुस्से के आलम में वह खड़ा हुआ और चला गया। उस दिन उसने खाना खाने से इनकार किया। उसे बहुत दुख था कि मेरा बाप दाऊद की इतनी बेइज़्जती कर रहा है।

35 अगले दिन यून्तन सुबह के वक़्त घर से निकलकर खुले मैदान में उस जगह आ गया जहाँ दाऊद से मिलना था। एक लडका उसके साथ था। 36 उसने लडके को हुक्म दिया, "चलो, उस तरफ भागना शुरू करो जिस तरफ मैं तीरों को चलाऊँगा ताकि तुझे मालूम हो कि वह कहाँ है।" चूनाँचे लडका दौड़ने लगा, और यून्तन ने तीर इतने ज़ोर से चलाया कि वह उससे आगे कहीं दूर जा गिरा। 37 जब लडका तीर के करीब पहुँच गया तो यून्तन ने आवाज़ दी, "तीर परली तरफ है। 38 जल्दी करो, भागकर आगे निकलो और न स्को!" फिर लडका तीर को उठाकर अपने मालिक के पास वापस आ गया। 39 वह नहीं जानता था कि इसके पीछे क्या मक़सद है। सिर्फ़ यून्तन और दाऊद को इल्म था।

40 फिर यून्तन ने कमान और तीरों को लडके के सुपुर्द करके उसे हुक्म दिया, "जाओ, सामान लेकर शहर में वापस चले जाओ।" 41 लडका चला गया तो दाऊद पत्थर के ढेर के जुनूब से निकलकर यून्तन के पास आया। तीन मरतबा वह यून्तन के सामने मुँह के बल झुक गया। एक दूसरे को चूमकर दोनों खूब रोए, खासकर दाऊद। 42 फिर यून्तन बोला, "सलामती से जाएँ! और कभी वह वादे न भूलें जो हमने रब की क़सम खाकर एक दूसरे से किए हैं। यह अहद आपके और मेरे और आपके और मेरी औलाद के दरमियान हमेशा कायम रहे। रब खुद हमारा गवाह है।"

फिर दाऊद रवाना हुआ, और यून्तन शहर को वापस चला गया।

## 21

### दाऊद नोब में अख़ीमलिक के पास ठहरता है

1 दाऊद नोब में अख़ीमलिक इमाम के पास गया। अख़ीमलिक काँपते हुए उससे मिलने के लिए आया और पूछा, "आप अकेले क्यों आए हैं? कोई आपके साथ नहीं।" 2 दाऊद ने जवाब दिया, "बादशाह ने मुझे एक खास ज़िम्मादारी दी है जिसका ज़िक्र तक करना मना है। किसी को भी इसके बारे में जानना नहीं चाहिए। मैंने अपने आदमियों को हुक्म दिया है कि फुलों फुलों जगह पर मेरा इंतज़ार करें। 3 अब मुझे ज़रा बताएँ कि खाने के लिए क्या मिल सकता है? मुझे पाँच रोटियाँ दे दें, या जो कुछ भी आपके पास है।"

4 इमाम ने जवाब दिया, "मेरे पास आम रोटी नहीं है। मैं आपको सिर्फ़ रब के लिए मख़सूसशुदा रोटी दे सकता हूँ। शर्त यह है कि आपके आदमी पिछले दिनों में औरतों से हमबिसतर न हुए हों।" 5 दाऊद ने उसे तसल्ली देकर कहा, "फिकर न करें। पहले की तरह हमें इस मुहिम के दौरान भी औरतों से दूर रहना पड़ा है। मेरे फौजी आम मुहिमों के लिए भी अपने आपको पाक रखते हैं, तो इस दफ़ा वह कहीं ज्यादा पाक-साफ़ हैं।"

6 फिर इमाम ने दाऊद को मख़सूसशुदा रोटियाँ दीं यानी वह रोटियाँ जो मुलाकात के ख़ैमे में रब के हज़ूर रखी जाती थीं और उसी दिन ताज़ा रोटियाँ से तबदील हुई थीं। 7 उस वक़्त साऊल के चरवाहों का अदोमी इंचार्ज दोगए वहाँ था। वह किसी मजबूरी के बाइस रब के हज़ूर ठहरा हुआ था। उस की मौजूदगी में 8 दाऊद ने अख़ीमलिक से पूछा, "क्या आपके पास कोई नेज़ा या तलवार है? मुझे बादशाह की मुहिम के लिए इतनी जल्दी से निकलना पड़ा कि अपनी तलवार या कोई और हथियार साथ लाने के लिए फुरसत न मिली।"

9 अख़ीमलिक ने जवाब दिया, "जी है। वादीए-ऐला में आपके हाथों मोरे गए फिलिस्ती मर्द जालुत की तलवार मेरे पास है। वह एक कपड़े में लिपटी मेरे बालापोश के पीछे पड़ी है। अगर आप उसे अपने साथ ले जाना चाहें तो ले जाएँ। मेरे पास कोई और हथियार नहीं है।" दाऊद ने कहा, "इस किस्म की तलवार कहीं और नहीं मिलती। मुझे दे दें।"

### दाऊद फिलिस्ती बादशाह के पास

10 उसी दिन दाऊद आगे निकला ताकि साऊल से बच सके। इसराईल को छोड़कर वह फिलिस्ती शहर जात के बादशाह अकीस के पास गया। 11 लेकिन अकीस के मुलाज़िमों ने बादशाह को आगाह किया, “क्या यह मुल्क का बादशाह दाऊद नहीं है? इसी के बारे में इसराईली नाचकर गीत गाते हैं, ‘साऊल ने हज़ार हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हज़ार’।”

12 यह सुनकर दाऊद घबरा गया और जात के बादशाह अकीस से बहुत डरने लगा। 13 अचानक वह पागल आदमी का रूप भरकर उनके दरमियान अजीब अजीब हरकतें करने लगा। शहर के दरवाजे के पास जाकर उसने उस पर बेतुके-से निशान लगाए और अपनी दाढ़ी पर राल टपकने दी।

14 यह देखकर अकीस ने अपने मुलाज़िमों को झिड़का, “तुम इस आदमी को मेरे पास क्यों ले आए हो? तुम खुद देख सकते हो कि यह पागल है। 15 क्या मेरे पास पागलों की कमी है कि तुम इसको मेरे सामने ले आए हो ताकि इस तरह की हरकतें करे? क्या मुझे ऐसे मेहमान की जरूरत है?”

## 22

### अदुल्लाम के गार और मोआब में

1 इस तरह दाऊद जात से बच निकला और अदुल्लाम के गार में छुप गया। जब उसके भाइयों और बाप के घराने को इसकी खबर मिली तो वह बैत-लहम से आकर वहाँ उसके साथ जा मिले। 2 और लोग भी जल्दी से उसके गिर्द जमा हो गए, ऐसे जो किसी मुसीबत में पँसे हुए थे या अपना कर्ज़ अदा नहीं कर सकते थे और ऐसे भी जिनका दिल तलखी से भरा हुआ था। होते होते दाऊद तकरीबन 400 अफ़राद का राहनुमा बन गया।

3 दाऊद अदुल्लाम से रवाना होकर मुल्के-मोआब के शहर मिसफ़ाह चला गया। उसने मोआबी बादशाह से गुज़ारिश की, “मेरे माँ-बाप को उस वक़्त तक यहाँ पनाह दें जब तक मुझे पता न हो कि अल्लाह मेरे लिए क्या इरादा रखता है।” 4 वह अपने माँ-बाप को बादशाह के पास ले आया, और वह उतनी देर तक वहाँ ठहरे जितनी देर दाऊद अपने पहाड़ी किले में रहा।

5 एक दिन जाद नबी ने दाऊद से कहा, “यहाँ पहाड़ी किले में मत रहें बल्कि दुबारा यहदाह के इलाके में वापस चले जाएँ।” दाऊद उस की सुनकर हारत के जंगल में जा बसा।

### साऊल नोब के इमामों से बदला लेता है

6 साऊल को इतला दी गई कि दाऊद और उसके आदमी दुबारा यहदाह में पहुँच गए हैं। उस वक़्त साऊल अपना नेज़ा पकड़े झाऊ के उस दरख़्त के साये में बैठा था जो ज़िबिया की पहाड़ी पर था। साऊल के इर्दगिर्द उसके मुलाज़िम खड़े थे। 7 वह पुकार उठा, “बिनयमीन के मर्दों! सुनें, क्या यस्सी का बेटा आप सबको खेत और अंगूर के बाग देगा? क्या वह फ़ौज में आपको हज़ार हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर मुक़र्रर करेगा? 8 लगता है कि आप इसकी उम्मीद रखते हैं, वरना आप यों मेरे खिलाफ साज़िश न करते। क्योंकि आपमें से किसी ने भी मुझे यह नहीं बताया कि मेरे अपने बेटे ने इस आदमी के साथ अहद बाँधा है। आपको मेरी फ़िकर तक नहीं, वरना मुझे इतला देते कि यूतन ने मेरे मुलाज़िम दाऊद को उभारा है कि वह मेरी ताक में बैठ जाए। क्योंकि आज तो ऐसा ही हो रहा है।”

9 दोएग अदोमी साऊल के अफ़सरों के साथ वहाँ खड़ा था। अब वह बोल उठा, “मैंने यस्सी के बेटे को देखा है। उस वक़्त वह नोब में अख़ीमलिक बिन अख़ीतूब से मिलने आया। 10 अख़ीमलिक ने रब से दरियापत किया कि दाऊद का अगला कदम क्या हो। साथ साथ उसने उसे सफ़र के लिए खाना और फिलिस्ती मर्द जालूत की तलवार भी दी।”

11 बादशाह ने फ़ौरन अख़ीमलिक बिन अख़ीतूब और उसके बाप के पूरे खानदान को बुलाया। सब नोब में इमाम थे। 12 जब पहुँचे तो साऊल बोला, “अख़ीतूब के बेटे, सुनें।” अख़ीमलिक ने जवाब दिया, “जी मेरे आका, हुक्म।” 13 साऊल ने इलज़ाम लगाकर कहा, “आपने यस्सी के बेटे दाऊद के साथ मेरे खिलाफ साज़िशें क्यों की हैं? बताएँ, आपने उसे रोटी और तलवार क्यों दी? आपने अल्लाह से दरियापत क्यों किया कि दाऊद आगे क्या करे? आप ही की मदद से वह सरकश होकर मेरी ताक में बैठ गया है, क्योंकि आज तो ऐसा ही हो रहा है।”

14 अख़ीमलिक बोला, “लेकिन मेरे आका, क्या मुलाज़िमों में से कोई और आपके दामाद दाऊद जैसा वफ़ादार साबित हुआ है? वह तो आपके मुहाफ़िज़ दस्ते का कप्तान और आपके घराने का मुअज़ज़ज़ मेंबर है। 15 और यह पहली बार नहीं था कि मैंने उसके लिए अल्लाह से हिदायत माँगी। इस मामले में बादशाह मुझ और मेरे खानदान पर इलज़ाम न लगाए। मैंने तो किसी साज़िश का ज़िक्र तक नहीं सुना।”

16 लेकिन बादशाह बोला, “अख़ीमलिक, तुझे और तेरे बाप के पूरे खानदान को मरना है।” 17 उसने साथ खड़े अपने मुहाफ़िज़ों को हुक्म दिया, “जाकर इमामों को मार दो, क्योंकि यह भी दाऊद के इत्हादी हैं। गो इनको मालूम था कि दाऊद मुझसे भाग रहा है तो भी इन्होंने मुझे इतला न दी।”

लेकिन मुहाफिजों ने रब के इमामों को मार डालने से इनकार किया। 18 तब बादशाह ने दोएग अदोमी को हुक्म दिया, “फिर तुम ही इमामों को मार दो।” दोएग ने उनके पास जाकर उन सबको कत्ल कर दिया। कतान का बालापोश पहननेवाले कुल 85 आदमी उस दिन मारे गए। 19 फिर उसने जाकर इमामों के शहर नोब के तमाम बाशिंदों को मार डाला। शहर के मर्द, औरतें, बच्चे शीरखारों समेत, गाय-बैल, गधे और भेड़-बकरियाँ सब उस दिन हलाक हुए।

20 सिर्फ एक ही शख्स बच गया, अबियातर जो अखीमलिक बिन अखीतूब का बेटा था। वह भागकर दाऊद के पास आया 21 और उसे इतला दी कि साऊल ने रब के इमामों को कत्ल कर दिया है। 22 दाऊद ने कहा, “उस दिन जब मैंने दोएग अदोमी को वहाँ देखा तो मुझे मालूम था कि वह ज़रूर साऊल को खबर पहुँचाएगा। यह मेरा ही कुसर है कि आपके बाप का पूरा खानदान हलाक हो गया है। 23 अब मेरे साथ रहें और मत डरें। जो आदमी आपको कत्ल करना चाहता है वह मुझे भी कत्ल करना चाहता है। आप मेरे साथ रहकर महफूज रहेंगे।”

## 23

### दाऊद कईला को बचाता है

1 एक दिन दाऊद को खबर मिली कि फिलिस्ती कईला शहर पर हमला करके गाहने की जगहों से अनाज लूट रहे हैं। 2 दाऊद ने रब से दरियाफ्त किया, “क्या मैं जाकर फिलिस्तियों पर हमला करूँ?” रब ने जवाब दिया, “जा, फिलिस्तियों पर हमला करके कईला को बचा।”

3 लेकिन दाऊद के आदमी एतराज करने लगे, “हम पहले से यहाँ यहदाह में लोगों की मुखालफत से डरते हैं। जब हम कईला जाकर फिलिस्तियों पर हमला करेंगे तो फिर हमारा क्या बनेगा?” 4 तब दाऊद ने रब से दुबारा हिदायत माँगी, और दुबारा उसे यही जवाब मिला, “कईला को जा! मैं फिलिस्तियों को तेरे हवाले कर दूँगा।”

5 चुनौचे दाऊद अपने आदमियों के साथ कईला चला गया। उसने फिलिस्तियों पर हमला करके उन्हें बड़ी शिकस्त दी और उनकी भेड़-बकरियों को छीनकर कईला के बाशिंदों को बचाया। 6 वहाँ कईला में अबियातर दाऊद के लोगों में शामिल हुआ। उसके पास इमाम का बालापोश था।

7 जब साऊल को खबर मिली कि दाऊद कईला शहर में ठहरा हुआ है तो उसने सोचा, “अल्लाह ने उसे मेरे हवाले कर दिया है, क्योंकि अब वह फसीलदार शहर में जाकर फँस गया है।” 8 वह अपनी पूरी फौज को जमा करके जंग के लिए तैयारियाँ करने लगा ताकि उतरकर कईला का मुहासरा करे जिसमें दाऊद अब तक ठहरा हुआ था।

9 लेकिन दाऊद को पता चला कि साऊल उसके खिलाफ तैयारियाँ कर रहा है। उसने अबियातर इमाम से कहा, “इमाम का बालापोश ले आएँ ताकि हम रब से हिदायत माँगे।” 10 फिर उसने दुआ की, “ऐ रब इसराईल के खुदा, मुझे खबर मिली है कि साऊल मेरी वजह से कईला पर हमला करके उसे बरबाद करना चाहता है। 11 क्या शहर के बाशिंदे मुझे साऊल के हवाले कर देंगे? क्या साऊल वाकई आएगा? ऐ रब, इसराईल के खुदा, अपने खादिम को बता!” रब ने जवाब दिया, “हाँ, वह आएगा।” 12 फिर दाऊद ने मज्जीद दरियाफ्त किया, “क्या शहर के बुजुर्ग मुझे और मेरे लोगों को साऊल के हवाले कर देंगे?” रब ने कहा, “हाँ, वह कर देंगे।”

13 लिहाजा दाऊद अपने तकरीबन 600 आदमियों के साथ कईला से चला गया और इधर उधर फिरने लगा। जब साऊल को इतला मिली कि दाऊद कईला से निकलकर बच गया है तो वहाँ जाने से बाज आया।

### यूनतन दाऊद से मिलता है

14 अब दाऊद बयाबान के पहाड़ी किलों और दरते-जीफ के पहाड़ी इलाके में रहने लगा। साऊल तो मुसलसल उसका खोज लगाता रहा, लेकिन अल्लाह हमेशा दाऊद को साऊल के हाथ से बचाता रहा। 15 एक दिन जब दाऊद होरिश के करीब था तो उसे इतला मिली कि साऊल आपको हलाक करने के लिए निकला है। 16 उस वक्त यूनतन ने दाऊद के पास आकर उस की हैसला-अफजाई की कि वह अल्लाह पर भरोसा रखे। 17 उसने कहा, “डरें मत। मेरे बाप का हाथ आप तक नहीं पहुँचेगा। एक दिन आप ज़रूर इसराईल के बादशाह बन जाएंगे, और मेरा स्तबा आपके बाद ही आएगा। मेरा बाप भी इस हकीकत से खूब वाकिफ है।” 18 दोनों ने रब के हुज़ूर अहद बाँधा। फिर यूनतन अपने घर चला गया जबकि दाऊद वहाँ होरिश में ठहरा रहा।

### दाऊद जीफ में बच जाता है

19 दरते-जीफ में आबाद कुछ लोग साऊल के पास आ गए जो उस वक्त जिबिया में था। उन्होंने कहा, “हम जानते हैं कि दाऊद कहीं छुप गया है। वह होरिश के पहाड़ी किलों में है, उस पहाड़ी पर जिसका नाम हकीला है और जो यशीमोन के जुनूब में है। 20 ऐ बादशाह, जब भी आपको दिल चाहे आएं तो हम उसे पकड़कर आपके हवाले कर देंगे।” 21 साऊल ने



जवाब दिया, “रब आपको बरकत बख्शे कि आपको मुझ पर तरस आया है।<sup>22</sup> अब वापस जाकर मज़ीद तैयारियाँ करें। पता करें कि वह कहाँ आता जाता है और किसने उसे वहाँ देखा है। क्योंकि मुझे बताया गया है कि वह बहुत चालाक है।<sup>23</sup> हर जगह का खोज लगाएँ जहाँ वह छुप जाता है। जब आपको सारी तफ़सीलात मालूम हों तो मेरे पास आएँ। फिर मैं आपके साथ वहाँ पहुँचूँगा। अगर वह वाकई वहाँ कहीं हो तो मैं उसे ज़रूर ढूँढ निकालूँगा, खाह मुझे पूरे यहदाह की छानबीन क्यों न करनी पड़े।”

<sup>24-25</sup> जीफ के आदमी वापस चले गए। थोड़ी देर के बाद साऊल भी अपनी फौज समेत वहाँ के लिए निकला। उस वक्त दाऊद और उसके लोग दशते-मऊन में यशीमोन के जुनुब में थे। जब दाऊद को इतला मिली कि साऊल उसका ताबक़ुब कर रहा है तो वह रेगिस्तान के मज़ीद जुनुब में चला गया, वहाँ जहाँ बड़ी चटान नज़र आती है। लेकिन साऊल को पता चला और वह फौरन रेगिस्तान में दाऊद के पीछे गया।

<sup>26</sup> चलते चलते साऊल दाऊद के करीब ही पहुँच गया। आखिरकार सिर्फ एक पहाड़ी उनके दरमियान रह गई। साऊल पहाड़ी के एक दामन में था जबकि दाऊद अपने लोगों समेत दूसरे दामन में भागता हुआ बादशाह से बचने की कोशिश कर रहा था। साऊल अभी उन्हें घेरकर पकड़ने को था <sup>27</sup> कि अचानक कासिद साऊल के पास पहुँचा जिसने कहा, “जल्दी आएँ! फिलिस्ती हमारे मुल्क में घुस आए हैं।” <sup>28</sup> साऊल को दाऊद को छोड़ना पड़ा, और वह फिलिस्तियों से लड़ने गया। उस वक्त से पहाड़ी का नाम “अलहदगी की चटान” पड़ गया।

<sup>29</sup> दाऊद वहाँ से चला गया और ऐन-जदी के पहाड़ी किलों में रहने लगा।

## 24

दाऊद साऊल को कत्ल करने से इनकार करता है

<sup>1</sup> जब साऊल फिलिस्तियों का ताबक़ुब करने से वापस आया तो उसे खबर मिली कि दाऊद ऐन-जदी के रेगिस्तान में है।

<sup>2</sup> वह तमाम इसराईल के 3,000 चीदा फौजियों को लेकर पहाड़ी बकरियों की चटानों के लिए रवाना हुआ ताकि दाऊद को पकड़ ले।

<sup>3</sup> चलते चलते वह भेड़ों के कुछ बाड़ों से गुज़रने लगे। वहाँ एक ग़ार को देखकर साऊल अंदर गया ताकि अपनी हाज़त रफ़ा करे। इतफ़ाक से दाऊद और उसके आदमी उसी ग़ार के पिछले हिस्से में छुपे बैठे थे। <sup>4</sup> दाऊद के आदमियों ने आहिस्ता से उससे कहा, “रब ने तो आपसे वादा किया था, ‘मैं तेरे दुश्मन को तेरे हवाले कर दूँगा, और तू जो जी चाहे उसके साथ कर सकेगा।’ अब यह वक्त आ गया है!” दाऊद रंगते रंगते आगे साऊल के करीब पहुँच गया। चुपके से उसने साऊल के लिबास के किनारे का टुकड़ा काट लिया और फिर वापस आ गया। <sup>5</sup> लेकिन जब अपने लोगों के पास पहुँचा तो उसका ज़मीर उसे मलामत करने लगा। <sup>6</sup> उसने अपने आदमियों से कहा, “रब न करे कि मैं अपने आका के साथ ऐसा सुल्क करके रब के महसूब किए हुए बादशाह को हाथ लगाऊँ। क्योंकि रब ने खुद उसे महसूब करके चुन लिया है।” <sup>7</sup> यह कहकर दाऊद ने उनको समझाया और उन्हें साऊल पर हमला करने से रोक दिया।

थोड़ी देर के बाद साऊल ग़ार से निकलकर आगे चलने लगा। <sup>8</sup> जब वह कुछ फ़ासले पर था तो दाऊद भी निकला और पुकार उठा, “ऐ बादशाह सलामत, ऐ मेरे आका!” साऊल ने पीछे देखा तो दाऊद मुँह के बल झुककर <sup>9</sup> बोला, “जब लोग आपको बताते हैं कि दाऊद आपको नुक़सान पहुँचाने पर तुला हुआ है तो आप क्यों ध्यान देते हैं? <sup>10</sup> आज आप अपनी आँखों से देख सकते हैं कि यह झूट ही झूट है। ग़ार में आप अल्लाह की मरज़ी से मेरे कब्ज़े में आ गए थे। मेरे लोगों ने जोर दिया कि मैं आपको मार दूँ, लेकिन मैंने आपको न छोड़ा। मैं बोला, ‘मैं कभी भी बादशाह को नुक़सान नहीं पहुँचाऊँगा, क्योंकि रब ने खुद उसे महसूब करके चुन लिया है।’ <sup>11</sup> मेरे बाप, यह देखें जो मेरे हाथ में है! आपके लिबास का यह टुकड़ा मैं काट सका, और फिर भी मैंने आपको हलाक न किया। अब जान लें कि न मैं आपको नुक़सान पहुँचाने का इरादा रखता हूँ, न मैंने आपका गुनाह किया है। फिर भी आप मेरा ताबक़ुब करते हुए मुझे मार डालने के दरपै हैं। <sup>12</sup> रब खुद फैसला करे कि किससे ग़लती हो रही है, आपसे या मुझ से। वही आपसे मेरा बदला ले। लेकिन खुद मैं कभी आप पर हाथ नहीं उठाऊँगा। <sup>13</sup> कर्दीम कौल यही बात बयान करता है, ‘बदकारों से बदकारी पैदा होती है।’ मेरी नीयत तो साफ़ है, इसलिए मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा। <sup>14</sup> इसराईल का बादशाह किसके खिलाफ़ निकल आया है? जिसका ताबक़ुब आप कर रहे हैं उस की तो कोई हैसियत नहीं। वह मुरदा कुता या पिस्सू ही है। <sup>15</sup> रब हमारा मुंसिफ़ हो। वही हम दोनों का फैसला करे। वह मेरे मामले पर ध्यान दे, मेरे हक़ में बात करे और मुझे बेइलज़ाम ठहराकर आपके हाथ से बचाए।”

<sup>16</sup> दाऊद खामोश हुआ तो साऊल ने पछा, “दाऊद मेरे बेटे, क्या आपकी आवाज़ है?” और वह फूट फूटकर रोने लगा।

<sup>17</sup> उसने कहा, “आप मुझसे ज़्यादा रास्तबाज़ हैं। आपने मुझसे अच्छा सुल्क किया जबकि मैं आपसे बुरा सुल्क करता रहा हूँ। <sup>18</sup> आज आपने मेरे साथ भलाई का सबूत दिया, क्योंकि गो रब ने मुझे आपके हवाले कर दिया था तो भी आपने मुझे

हलाक न किया। 19 जब किसी का दुश्मन उसके कब्जे में आ जाता है तो वह उसे जाने नहीं देता। लेकिन आपने ऐसा ही किया। रब आपको उस मेहरबानी का अज्र दे जो आपने आज मुझ पर की है। 20 अब मैं जानता हूँ कि आप ज़रूर बादशाह बन जाएंगे, और कि आपके ज़रीए इसराईल की बादशाही कायम रहेगी। 21 चुनौचे रब की कसम खाकर मुझे वादा करें कि न आप मेरी औलाद को हलाक करेंगे, न मेरे आबाई घराने में से मेरा नाम मिटा देंगे।”

22 दाऊद ने कसम खाकर साऊल से वादा किया। फिर साऊल अपने घर चला गया जबकि दाऊद ने अपने लोगों के साथ एक पहाड़ी किले में पनाह ले ली।

## 25

### समूएल की मौत

1 उन दिनों में समूएल फौत हुआ। तमाम इसराईल रामा में जनाजे के लिए जमा हुआ। उसका मातम करते हुए उन्होंने उसे उस की खानदानी कब्र में दफन किया।

### नाबाल दाऊद की बेइज्जती करता है

उन दिनों में दाऊद दशते-फारान में चला गया।

2-4 मऊन में कालिब के खानदान का एक आदमी रहता था जिसका नाम नाबाल था। वह निहायत अमीर था। करमिल के करीब उस की 3,000 भेड़ें और 1,000 बकरियाँ थीं। बीबी का नाम अबीजेल था। वह जहीन भी थी और खूबसूरत भी। उसके मुकाबले में नाबाल सख्तमिजाज और कमीना था। एक दिन नाबाल अपनी भेड़ों के बाल कतरने के लिए करमिल आया।

जब दाऊद को खबर मिली 5 तो उसने 10 जवानों को भेजकर कहा, “करमिल जाकर नाबाल से मिलें और उसे मेरा सलाम दें। 6 उसे बताना, ‘अल्लाह आपको तवील जिंदगी अता करे। आप की, आपके खानदान की और आपकी तमाम मिलकियत की सलामती हो। 7 सुना है कि भेड़ों के बाल कतरने का वक़्त आ गया है। करमिल में आपके चरवाहे हमेशा हमारे साथ रहे। उस पूरे अरसे में न उन्हें हमारी तरफ से कोई नुकसान पहुँचा, न कोई चीज़ चोरी हुई। 8 अपने लोगों से खुद पूछ लें! वह इसकी तसदीक करेंगे। आज आप खुशी मना रहे हैं, इसलिए मेरे जवानों पर मेहरबानी करें। जो कुछ आप खुशी से दे सकते हैं वह उन्हें और अपने बेटे दाऊद को दे दें।”

9 दाऊद के आदमी नाबाल के पास गए। उसे दाऊद का सलाम देकर उन्होंने उसका पैगाम दिया और फिर जवाब का इंतज़ार किया। 10 लेकिन नाबाल ने करखत लहजे में कहा, “यह दाऊद कौन है? कौन है यस्सी का बेटा? आजकल बहुत-से ऐसे गुलाम हैं जो अपने मालिक से भागे हुए हैं। 11 मैं अपनी रोटी, अपना पानी और कतरनेवालों के लिए ज़बह किया गया गोशत लेकर ऐसे आवारा फिरनेवालों को क्यों दे दूँ? क्या पता है कि यह कहाँ से आए हैं।”

12 दाऊद के आदमी चले गए और दाऊद को सब कुछ बता दिया। 13 तब दाऊद ने हुकम दिया, “अपनी तलवारों बाँध लो!” सबने अपनी तलवारों बाँध लीं। उसने भी ऐसा किया और फिर 400 अफ़राद के साथ करमिल के लिए रवाना हुआ। बाकी 200 मर्द सामान के पास रहे।

### अबीजेल दाऊद का गुस्सा ठंडा करती है

14 इतने में नाबाल के एक नौकर ने उस की बीबी को इतला दी, “दाऊद ने रेगिस्तान में से अपने कासिदों को नाबाल के पास भेजा ताकि उसे मुबारकबाद दें। लेकिन उसने जवाब में गरजकर उन्हें गालियाँ दी हैं, 15 हालाँकि उन लोगों का हमारे साथ सलूक हमेशा अच्छा रहा है। हम अकसर रेवडों को चराने के लिए उनके करीब फिरते रहे, तो भी उन्होंने हमें कभी नुकसान न पहुँचाया, न कोई चीज़ चोरी की। 16 जब भी हम उनके करीब थे तो वह दिन-रात चारदीवारी की तरह हमारी हिफाज़त करते रहे। 17 अब सोच लें कि क्या किया जाए! क्योंकि हमारा मालिक और उसके तमाम घरवाले बड़े खतरे में हैं। वह खुद इतना शरीर है कि उससे बात करने का कोई फायदा नहीं।”

18 जितनी जल्दी हो सका अबीजेल ने कुछ सामान इकट्ठा किया जिसमें 200 रोटियाँ, मै की दो मशकें, खाने के लिए तैयार की गई पाँच भेड़ें, भुने हुए अनाज के साढे 27 किलोग्राम, किशमिश की 100 और अंजीर की 200 टिकिकियाँ शामिल थीं। सब कुछ गधों पर लादकर 19 उसने अपने नौकरों को हुकम दिया, “मेरे आगे निकल जाओ, मैं तुम्हारे पीछे पीछे आऊँगी।” अपने शौहर को उसने कुछ न बताया। 20 जब अबीजेल पहाड़ की आड़ में उतरने लगी तो दाऊद अपने आदमियों समेत उस की तरफ बढ़ते हुए नज़र आया। फिर उनकी मुलाकात हुई। 21 दाऊद तो अभी तक बड़े गुस्से में था, क्योंकि वह सोच रहा था, “इस आदमी की मदद करने का क्या फायदा था! हम रेगिस्तान में उसके रेवडों की हिफाज़त करते रहे और उस की कोई भी चीज़ गुम न होने दी। तो भी उसने हमारी नेकी के जवाब में हमारी बेइज्जती की है। 22 अल्लाह मुझे सख्त सज़ा दे अगर मैं कल सुबह तक उसके एक आदमी को भी जिंदा छोड़ दूँ!”

23-24 दाऊद को देखकर अबीजेल जल्दी से गधे पर से उतरकर उसके सामने मुँह के बल झुक गई। उसने कहा, “मेरे आका, मुझे ही कुसूरवार ठहराएँ। मेहरबानी करके अपनी खादिमा को बोलने दें और उस की बात सुनें।” 25 मेरे मालिक उस शरीर आदमी नाबाल पर ज़्यादा ध्यान न दें। उसके नाम का मतलब अहमक है और वह ही है अहमक। अफ़सोस, मेरी उन आदमियों से मुलाकात नहीं हुई जो आपने हमारे पास भेजे थे। 26 लेकिन रब की और आपकी हयात की कसम, रब ने आपको अपने हाथों से बदला लेने और कातिल बनने से बचाया है। और अल्लाह करे कि जो भी आपसे दुश्मनी रखते और आपको नुकसान पहुँचाना चाहते हैं उन्हें नाबाल की-सी सज़ा मिल जाए। 27 अब गुज़ारिश है कि जो बरकत हमें मिली है उसमें आप भी शरीक हों। जो चीज़ें आपकी खादिमा लाई हैं उन्हें कबूल करके उन जवानों में तकसीम कर दें जो मेरे आका के पीछे हो लिए हैं। 28 जो भी गलती हुई है अपनी खादिमा को मुआफ़ कीजिए। रब ज़रूर मेरे आका का घराना हमेशा तक कायम रखेगा, क्योंकि आप रब के दुश्मनों से लड़ते हैं। वह आपको जीते-जी गलतियाँ करने से बचाए रखे। 29 जब कोई आपका ताक़त करके आपको मार देने की कोशिश करे तो रब आपका खुदा आपकी जान जानदारों की थैली में महफूज़ रखेगा। लेकिन आपके दुश्मनों की जान वह फ़लाखन के पत्थर की तरह दूर फेंककर हलाक कर देगा। 30 जब रब अपने तमाम वादे पूरे करके आपको इसराईल का बादशाह बना देगा 31 तो कोई ऐसी बात सामने नहीं आएगी जो ठोकर का बाइस हो। मेरे आका का ज़मीर साफ़ होगा, क्योंकि आप बदला लेकर कातिल नहीं बने होंगे। गुज़ारिश है कि जब रब आपको कामयाबी दे तो अपनी खादिमा को भी याद करें।”

32 दाऊद बहुत खुश हुआ। “रब इसराईल के खुदा की तारीफ़ हो जिसने आज आपको मुझसे मिलने के लिए भेज दिया। 33 आपकी बसीरत मुबारक है! आप मुबारक हैं, क्योंकि आपने मुझे इस दिन अपने हाथों से बदला लेकर कातिल बनने से रोक दिया है। 34 रब इसराईल के खुदा की कसम जिसने मुझे आपको नुकसान पहुँचाने से रोक दिया, कल सुबह नाबाल के तमाम आदमी हलाक होते अगर आप इतनी जल्दी से मुझसे मिलने न आती।”

35 दाऊद ने अबीजेल की पेशकरदा चीज़ें कबूल करके उसे सख़्त किया और कहा, “सलामती से जाएँ। मैंने आपकी सुनी और आपकी बात मंज़ूर कर ली है।”

### रब नाबाल को सज़ा देता है

36 जब अबीजेल अपने घर पहुँची तो देखा कि बहुत रौनक है, क्योंकि नाबाल बादशाह की-सी ज़ियाफ़त करके खुशियाँ मना रहा था। चूँकि वह नशे में धुत था इसलिए अबीजेल ने उसे उस वक़्त कुछ न बताया।

37 अराली सुबह जब नाबाल होश में आ गया तो अबीजेल ने उसे सब कुछ कह सुनाया। यह सुनते ही नाबाल को दौरा पड गया, और वह पत्थर-सा बन गया। 38 दस दिन के बाद रब ने उसे मरने दिया। 39 जब दाऊद को नाबाल की मौत की खबर मिल गई तो वह पुकारा, “रब की तारीफ़ हो जिसने मेरे लिए नाबाल से लड़कर मेरी बेइज़्जती का बदला लिया है। उस की मेहरबानी है कि मैं ग़लत काम करने से बच गया हूँ जबकि नाबाल की बुराई उसके अपने सर पर आ गई है।”

### अबीजेल की दाऊद से शादी

कुछ देर के बाद दाऊद ने अपने लोगों को अबीजेल के पास भेजा ताकि वह दाऊद की उसके साथ शादी की दरखास्त पेश करें। 40 चुनौचे उसके मुलाज़िम करमिल में अबीजेल के पास जाकर बोले, “दाऊद ने हमें शादी का पैग़ाम देकर भेजा है।”

41 अबीजेल खड़ी हुई, फिर मुँह के बल झुककर बोली, “मैं उनकी खिदमत में हाज़िर हूँ। मैं अपने मालिक के खादिमों के पाँव धोने तक तैयार हूँ।”

42 वह जल्दी से तैयार हुई और गधे पर बैठकर दाऊद के मुलाज़िमों के साथ रवाना हुई। पाँच नौकरानियाँ उसके साथ चली गईं। यों अबीजेल दाऊद की बीवी बन गई।

43 अब दाऊद की दो बीवियाँ थीं, क्योंकि पहले उस की शादी अखीनुअम से हुई थी जो यज़्ज़र से थी। 44 जहाँ तक साऊल की बेटी मीकल का ताल्लूक था साऊल ने उसे दाऊद से लेकर उस की दुबारा शादी फ़लतियेल बिन लैस से करवाई थी जो जल्लीम का रहनेवाला था।

## 26

### दाऊद साऊल को दूसरी बार बचने देता है

1 एक दिन दशते-ज़ीफ़ के कुछ बाशिंदे दुबारा ज़िबिया में साऊल के पास आ गए। उन्होंने बादशाह को बताया, “हम जानते हैं कि दाऊद कहीं छुप गया है। वह उस पहाड़ी पर है जो हकीला कहलाती है और यशीमोन के मुकाबिल है।” 2 यह सुनकर साऊल इसराईल के 3,000 चीदा फ़ीजियों को लेकर दशते-ज़ीफ़ में गया ताकि दाऊद को ढूँढ़ निकाले। 3 हकीला पहाड़ी पर यशीमोन के मुकाबिल वह स्क़ गए। जो रास्ता पहाड़ पर से गुज़रता है उसके पास उन्होंने अपना कैप लगाया। दाऊद उस

वक्त रीगिस्तान में छुप गया था। जब उसे खबर मिली कि साऊल मेरा ताक्कुब कर रहा है 4 तो उसने अपने लोगों को मालूम करने के लिए भेजा। उन्होंने वापस आकर उसे इतला दी कि बादशाह वाकई अपनी फौज समेत रीगिस्तान में पहुँच गया है। 5 यह सुनकर दाऊद खुद निकलकर चुपके से उस जगह गया जहाँ साऊल का कैप था। उसको मालूम हुआ कि साऊल और उसका कर्माँडर अबिनैर बिन नैर कैप के ऐन बीच में सो रहे हैं जबकि बाकी आदमी दायरा बनाकर उनके इर्दगिर्द सो रहे हैं।

6 दो मर्द दाऊद के साथ थे, अखीमलिकि हिली और अबीशै बिन ज़रूयाह। ज़रूयाह योआब का भाई था। दाऊद ने पूछा, “कौन मेरे साथ कैप में घुसकर साऊल के पास जाएगा?” अबीशै ने जवाब दिया, “मैं साथ जाऊँगा।” 7 चुनौचे दोनों रात के वक्त कैप में घुस आए। सोए हुए फौजियों और अबिनैर से गुज़रकर वह साऊल तक पहुँच गए जो ज़मीन पर लेटा सो रहा था। उसका नेज़ा सर के करीब ज़मीन में गड़ा हुआ था। 8 अबीशै ने आहिस्ता से दाऊद से कहा, “आज अल्लाह ने आपके दुश्मन को आपके कब्जे में कर दिया है। अगर इजाज़त हो तो मैं उसे उसके अपने नेजे से ज़मीन के साथ छेद दूँ। मैं उसे एक ही वार में मार दूँगा। दूसरे वार की जरूरत ही नहीं होगी।”

9 दाऊद बोला, “न करो! उसे मत मारना, क्योंकि जो रब के मसह किए हुए खादिम को हाथ लगाए वह कुसूरवार ठहरेगा। 10 रब की हयात की क़सम, रब खुद साऊल की मौत मुकर्र करेगा, खाह वह बूढ़ा होकर मर जाए, खाह जंग में लड़ते हुए। 11 रब मुझे इससे महफूज़ रखे कि मैं उसके मसह किए हुए खादिम को नुकसान पहुँचाऊँ। नहीं, हम कुछ और करेंगे। उसका नेज़ा और पानी की सुराही पकड़ लो। आओ, हम यह चीज़ें अपने साथ लेकर यहाँ से निकल जाते हैं।” 12 चुनौचे वह दोनों चीज़ें अपने साथ लेकर चुपके से चले गए। कैप में किसी को भी पता न चला, कोई न जागा। सब सोए रहे, क्योंकि रब ने उन्हें गहरी नीद सुला दिया था।

13 दाऊद वादी को पार करके पहाड़ी पर चढ़ गया। जब साऊल से फासला काफी था 14 तो दाऊद ने फौज और अबिनैर को ऊँची आवाज़ से पुकारकर कहा, “ऐ अबिनैर, क्या आप मुझे जवाब नहीं देंगे?” अबिनैर पुकारा, “आप कौन हैं कि बादशाह को इस तरह की ऊँची आवाज़ दें?” 15 दाऊद ने तंज़न जवाब दिया, “क्या आप मर्द नहीं हैं? और इसराइल में कौन आप जैसा है? तो फिर आपने अपने बादशाह की सहीह हिफाज़त क्यों न की जब कोई उसे कल्ल करने के लिए कैप में घुस आया? 16 जो आपने किया वह ठीक नहीं है। रब की हयात की क़सम, आप और आपके आदमी सज़ाए-मौत के लायक हैं, क्योंकि आपने अपने मालिक की हिफाज़त न की, गो वह रब का मसह किया हुआ बादशाह है। खुद देख लें, जो नेज़ा और पानी की सुराही बादशाह के सर के पास थे वह कहाँ हैं?”

17 तब साऊल ने दाऊद की आवाज़ पहचान ली। वह पुकारा, “मेरे बेटे दाऊद, क्या आपकी आवाज़ है?” 18 दाऊद ने जवाब दिया, “जी, बादशाह सलामत। मेरे आका, आप मेरा ताक्कुब क्यों कर रहे हैं? मैं तो आपका खादिम हूँ। मैंने क्या किया? मुझसे क्या जुर्म सरज़द हुआ है? 19 गुज़ारिश है कि मेरा आका और बादशाह अपने खादिम की बात सुने। अगर रब ने आपको मेरे खिलाफ़ उकसाया हो तो वह मेरी गल्ला की नज़र क़बूल करे। लेकिन अगर इनसान इसके पीछे हैं तो रब के सामने उन पर लानत! अपनी हरकतों से उन्होंने मुझे मेरी मौरूसी ज़मीन से निकाल दिया है और नतीजे में मैं रब की कौम में नहीं रह सकता। हकीकत में वह कह रहे हैं, ‘जाओ, दीगर माबूदों की पूजा करो!’ 20 ऐसा न हो कि मैं वतन से और रब के हज़र से दूर मर जाऊँ। इसराइल का बादशाह पिस्सु को ढूँड निकालने के लिए क्यों निकल आया है? वह तो पहाड़ों में मेरा शिकार तीतर के शिकार की तरह कर रहे हैं।”

21 तब साऊल ने इकरार किया, “मैंने गुनाह किया है। दाऊद मेरे बेटे, वापस आएँ। अब से मैं आपको नुकसान पहुँचाने की कोशिश नहीं करूँगा, क्योंकि आज मेरी जान आपकी नज़र में क़ीमती थी। मैं बड़ी बेवकूफी कर गया हूँ, और मुझसे बड़ी गलती हुई है।”

22 दाऊद ने जवाब में कहा, “बादशाह का नेज़ा यहाँ मेरे पास है। आपका कोई जवान आकर उसे ले जाए। 23 रब हर उस शख्स को अज़्र देता है जो इनसाफ़ करता और वफ़ादार रहता है। आज रब ने आपको मेरे हवाले कर दिया, लेकिन मैंने उसके मसह किए हुए बादशाह को हाथ लगाने से इनकार किया। 24 और मेरी दुआ है कि जितनी क़ीमती आपकी जान आज मेरी नज़र में थी, उतनी क़ीमती मेरी जान भी रब की नज़र में हो। वही मुझे हर मुसीबत से बचाए रखे।” 25 साऊल ने जवाब दिया, “मेरे बेटे दाऊद, रब आपको बरकत दे। आइंदा आपको बड़ी कामयाबी हासिल होगी।”

इसके बाद दाऊद ने अपनी राह ली और साऊल अपने घर चला गया।

## 27

### दाऊद द्वारा अक़ीस के पास

1 इस तज़रबे के बाद दाऊद सोचने लगा, “अगर मैं यहीं ठहर जाऊँ तो किसी दिन साऊल मुझे मार डालेगा। बेहतर है कि अपनी हिफाज़त के लिए फिलिस्तिनों के मुल्क में चला जाऊँ। तब साऊल पूरे इसराइल में मेरा खोज लगाने से बाज़ आएगा,

और मैं महफूज रहूँगा।” 2 चुनौचे वह अपने 600 आदमियों को लेकर जात के बादशाह अकीस बिन माओक के पास चला गया। 3 उनके खानदान साथ थे। दाऊद की दो बीवियाँ अखीनुअम यज़एली और नाबाल की बेवा अबीजेल करमिली भी साथ थीं। अकीस ने उन्हें जात शहर में रहने की इजाज़त दी। 4 जब साऊल को खबर मिली कि दाऊद ने जात में पनाह ली है तो वह उसका खोज लगाने से बाज़ आया।

5 एक दिन दाऊद ने अकीस से बात की, “अगर आपकी नजरे-करम मुझ पर है तो मुझे देहात की किसी आबादी में रहने की इजाज़त दें। क्या ज़रूरत है कि मैं यहाँ आपके साथ दास-हुकूमत में रहूँ?” 6 अकीस मुत्फिक हुआ। उस दिन उसने उसे सिकलाज शहर दे दिया। यह शहर उस वक्त से यहदाह के बादशाहों की मिलकियत में रहा है। 7 दाऊद एक साल और चार महीने फिलिस्ती मुल्क में ठहरा रहा।

8 सिकलाज से दाऊद अपने आदमियों के साथ मुख्तलिफ जगहों पर हमला करने के लिए निकलता रहा। कभी वह जसूरियों पर धावा बोलते, कभी जिरज़ियों या अमालीकियों पर। यह कबीले कदीम ज़माने से यहदाह के जुनुब में शूर और मिसर की सरहद तक रहते थे। 9 जब भी कोई मकाम दाऊद के कब्जे में आ जाता तो वह किसी भी मर्द या औरत को ज़िंदा न रहने देता लेकिन भेड़-बकरियों, गाय-बैलों, गधों, ऊँटों और कपड़ों को अपने साथ सिकलाज ले जाता।

जब भी दाऊद किसी हमले से वापस आकर बादशाह अकीस से मिलता 10 तो वह पूछता, “आज आपने किस पर छापा मारा?” फिर दाऊद जवाब देता, “यहदाह के जुनुबी इलाके पर,” या “यहमियेलियों के जुनुबी इलाके पर,” या “क़िनियों के जुनुबी इलाके पर।” 11 जब भी दाऊद किसी आबादी पर हमला करता तो वह तमाम बाशियों को मौत के घाट उतार देता और न मर्द, न औरत को ज़िंदा छोड़कर जात लाता। क्योंकि उसने सोचा, “ऐसा न हो कि फिलिस्तियों को पता चले कि मैं असल में इसराइली आबादियों पर हमला नहीं कर रहा।”

जितना वक्त दाऊद ने फिलिस्ती मुल्क में गुज़ारा वह ऐसा ही करता रहा। 12 अकीस ने दाऊद पर पूरा भरोसा किया, क्योंकि उसने सोचा, “अब दाऊद को हमेशा तक मेरी खिदमत में रहना पड़ेगा, क्योंकि ऐसी हरकतों से उस की अपनी कौम उससे सख्त मुतनफ़िर हो गई है।”

## 28

1 उन दिनों में फिलिस्ती इसराइल से लड़ने के लिए अपनी फौजे जमा करने लगे। अकीस ने दाऊद से भी बात की, “तवक्को है कि आप अपने फौजियों समेत मेरे साथ मिलकर जंग के लिए निकलेंगे।”

2 दाऊद ने जवाब दिया, “ज़रूर। अब आप खुद देखेंगे कि आपका खादिम क्या करने के काबिल है!” अकीस बोला, “ठीक है। पूरी जंग के दौरान आप मेरे मुहाफिज़ होंगे।”

साऊल जादूगरनी की तरफ रूज करता है

3 उस वक्त समुएल इतकाल कर चुका था, और पूरे इसराइल ने उसका मातम करके उसे उसके आबाई शहर रामा में दफनाया था।

उन दिनों में इसराइल में मुरदों से राबिता करनेवाले और गैबदान नहीं थे, क्योंकि साऊल ने उन्हें पूरे मुल्क से निकाल दिया था।

4 अब फिलिस्तियों ने अपनी लशकरगाह शूनीम के पास लगाई जबकि साऊल ने तमाम इसराइलियों को जमा करके जिलबुअ के पास अपना कैप लगाया। 5 फिलिस्तियों की बड़ी फौज देखकर वह सख्त दहशत खाने लगा। 6 उसने रब से हिदायत हासिल करने की कोशिश की, लेकिन कोई जवाब न मिला, न खाब, न मुकद्दस कुरा डालने से और न नबियों की मारिफत। 7 तब साऊल ने अपने मुलाज़िमों को हुकम दिया, “मेरे लिए मुरदों से राबिता करनेवाली दूँडो ताकि मैं जाकर उससे मालूमात हासिल कर लूँ।” मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “ऐन-दोर में ऐसी औरत है।”

8 साऊल भेस बदलकर दो आदमियों के साथ ऐन-दोर के लिए रवाना हुआ।

रात के वक्त वह जादूगरनी के पास पहुँच गया और बोला, “मुरदों से राबिता करके उस रूह को पाताल से बुला दें जिसका नाम मैं आपको बताता हूँ।” 9 जादूगरनी ने एतराज़ किया, “क्या आप मुझे मरवाना चाहते हैं? आपको पता है कि साऊल ने तमाम गैबदानों और मुरदों से राबिता करनेवालों को मुल्क में से मिटा दिया है। आप मुझे क्यों फँसाना चाहते हैं?” 10 तब साऊल ने कहा, “रब की हयात की कसम, आपको यह करने के लिए सज़ा नहीं मिलेगी।” 11 औरत ने पूछा, “मैं किस को बुलाऊँ?” साऊल ने जवाब दिया, “समुएल को बुला दें।”

12 जब समुएल औरत को नज़र आया तो वह चीख उठी, “आपने मुझे क्यों धोका दिया? आप तो साऊल हैं!” 13 साऊल ने उसे तसल्ली देकर कहा, “डरें मत। बताएँ तो सही, क्या देख रही हैं?” औरत ने जवाब दिया, “मुझे एक रूह नज़र आ रही

है जो चढ़ती चढ़ती ज़मीन में से निकलकर आ रही है।" 14 साऊल ने पूछा, "उस की शक्लो-सूरत कैसी है?" जादूगरनी ने कहा, "चोगे में लिपटा हुआ बूढ़ा आदमी है।"

यह सुनकर साऊल ने जान लिया कि समुएल ही है। वह मुँह के बल ज़मीन पर झुक गया। 15 समुएल बोला, "तूने मुझे पाताल से बुलवाकर क्यों मुजतरिब कर दिया है?" साऊल ने जवाब दिया, "मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। फिलिस्ती मुझसे लड़ रहे हैं, और अल्लाह ने मुझे तर्क कर दिया है। न वह नबियों की मारिफत मुझे हिदायत देता है, न खाब के ज़रीए। इसलिए मैंने आपको बुलवाया है ताकि आप मुझे बताएँ कि मैं क्या करूँ।"

16 लेकिन समुएल ने कहा, "रब खुद ही तुझे छोड़कर तेरा दुश्मन बन गया है तो फिर मुझसे दरियाफत करने का क्या फायदा है? 17 रब इस वक़्त तेरे साथ वह कुछ कर रहा है जिसकी पेशगोई उसने मेरी मारिफत की थी। उसने तेरे हाथ से बादशाही छीनकर किसी और यानी दाऊद को दे दी है। 18 जब रब ने तुझे अमालीकियों पर उसका सख्त ग़ज़ब नाज़िल करने का हुक्म दिया था तो तूने उस की न सुनी। अब तुझे इसकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। 19 रब तुझे इसराइल समेत फिलिस्तियों के हवाले कर देगा। कल ही तू और तेरे बेटे यहाँ मेरे पास पहुँचेंगे। रब तेरी पूरी फौज भी फिलिस्तियों के कब्ज़े में कर देगा।"

20 यह सुनकर साऊल सख्त घबरा गया, और वह गिरकर ज़मीन पर दराज़ हो गया। जिस्म की पूरी ताकत खत्म हो गई थी, क्योंकि उसने पिछले पूरे दिन और रात रोज़ा रखा था।

21 जब जादूगरनी ने साऊल के पास जाकर देखा कि उसके रोंगटे खड़े हो गए हैं तो उसने कहा, "जनाब, मैंने आपका हुक्म मानकर अपनी जान खतरे में डाल दी। 22 अब ज़रा मेरी भी सुनें। मुझे इजाज़त दें कि मैं आपको कुछ खाना खिलाऊँ ताकि आप तकवियत पाकर वापस जा सकें।" 23 लेकिन साऊल ने इनकार किया, "मैं कुछ नहीं खाऊँगा।" तब उसके आदमियों ने औरत के साथ मिलकर उसे बहुत समझाया, और आखिरकार उसने उनकी सुनी। वह ज़मीन से उठकर चारपाई पर बैठ गया। 24 जादूगरनी के पास मोटा-ताज़ा बछड़ा था। उसे उसने जल्दी से ज़बह करवाकर तैयार किया। उसने कुछ आटा भी लेकर गूँधा और उससे बेखमीरी रोटी बनाई। 25 फिर उसने खाना साऊल और उसके मुलाज़िमों के सामने रख दिया, और उन्होंने खाया। फिर वह उसी रात दुबारा रवाना हो गए।

## 29

### फिलिस्ती दाऊद पर शक करते हैं

1 फिलिस्तियों ने अपनी फौजों को अफ्रीक के पास जमा किया, जबकि इसराइलियों की लश्करगाह यज़्रएल के चश्मे के पास थी। 2 फिलिस्ती सरदार जंग के लिए निकलने लगे। उनके पीछे सौ सौ और हजार हजार सिपाहियों के गुरोह हो लिए। आखिर में दाऊद और उसके आदमी भी अक्रीस के साथ चलने लगे।

3 यह देखकर फिलिस्ती कर्माँडरों ने पूछा, "यह इसराइली क्यों साथ जा रहे हैं?" अक्रीस ने जवाब दिया, "यह दाऊद है, जो पहले इसराइली बादशाह साऊल का फौजी अफसर था और अब काफी देर से मेरे साथ है। जब से वह साऊल को छोड़कर मेरे पास आया है मैंने उसमें ऐब नहीं देखा।"

4 लेकिन फिलिस्ती कर्माँडर गुस्से से बोले, "उसे उस शहर वापस भेज दें जो आपने उसके लिए मुकर्रर किया है! कहीं ऐसा न हो कि वह हमारे साथ निकलकर अचानक हम पर ही हमला कर दे। क्या अपने मालिक से सुलह कराने का कोई बेहतर तरीका है कि वह अपने मालिक को हमारे कटे हुए सर पेश करे? 5 क्या यह वही दाऊद नहीं जिसके बारे में इसराइली नाचते हुए गाते थे, 'साऊल ने हजार हलाक किए जबकि दाऊद ने दस हजार?'"

6 चुनौत अक्रीस ने दाऊद को बुलाकर कहा, "रब की हयात की कसम, आप दियानतदार हैं, और मेरी खाहिश थी कि आप इसराइल से लड़ने के लिए मेरे साथ निकलें, क्योंकि जब से आप मेरी खिदमत करने लगे हैं मैंने आपमें ऐब नहीं देखा। लेकिन अफ़सोस, आप सरदारों को पसंद नहीं हैं। 7 इसलिए मेहरबानी करके सलामती से लौट जाएँ और कुछ न करें जो उन्हें बुरा लगे।"

8 दाऊद ने पूछा, "मुझसे क्या गलती हुई है? क्या आपने उस दिन से मुझमें नुक़स पाया है जब से मैं आपकी खिदमत करने लगा हूँ? मैं अपने मालिक और बादशाह के दुश्मनों से लड़ने के लिए क्यों नहीं निकल सकता?"

9 अक्रीस ने जवाब दिया, "मेरे नज़दीक तो आप अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे अच्छे हैं। लेकिन फिलिस्ती कर्माँडर इस बात पर बज़िद हैं कि आप इसराइल से लड़ने के लिए हमारे साथ न निकलें। 10 चुनौत केवल सुबह-सवेंरे उठकर अपने आदमियों के साथ रवाना हो जाना। जब दिन चढ़े तो देर न करना बल्कि जल्दी से अपने घर चले जाना।"

11 दाऊद और उसके आदमियों ने ऐसा ही किया। अगले दिन वह सुबह-सवेंरे उठकर फिलिस्ती मुल्क में वापस चले गए जबकि फिलिस्ती यज़्रएल के लिए रवाना हुए।

## 30

सिकलाज की तबाही और दाऊद का बदला

1 तीसरे दिन जब दाऊद सिकलाज पहुँचा तो देखा कि शहर का सत्यानास हो गया है। उनकी गैरमौजूदगी में अमालीकियों ने दशते-नजब में आकर सिकलाज पर भी हमला किया था। शहर को जलाकर <sup>2</sup> वह तमाम बाशिंदों को छोटों से लेकर बड़ों तक अपने साथ ले गए थे। लेकिन कोई हलाक नहीं हुआ था बल्कि वह सबको अपने साथ ले गए थे। <sup>3</sup> चुनौचे जब दाऊद और उसके आदमी वापस आए तो देखा कि शहर भस्म हो गया है और तमाम बाल-बच्चे छिन गए हैं। <sup>4</sup> वह फूट फूटकर रोने लगे, इतने रोए कि आखिरकार रोने की सकत ही न रही। <sup>5</sup> दाऊद की दो बीवियों अख्डीनुअम यज़रएली और अबीजेल करमिली को भी असीर कर लिया गया था।

<sup>6</sup> दाऊद की जान बड़े खतरे में आ गई, क्योंकि उसके मर्द गम के मारे आपस में उसे संगसार करने की बातें करने लगे। क्योंकि बेटे-बेटियों के छिन जाने के बाइस सब सख्त रंजीदा थे। लेकिन दाऊद ने रब अपने खुदा में पनाह लेकर तकवियत पाई। <sup>7</sup> उसने अबियातर बिन अखीमलिक को हुक्म दिया, “कुरा डालने के लिए इमाम का बालापोश ले आएँ।” जब इमाम बालापोश ले आया <sup>8</sup> तो दाऊद ने रब से दरियाफ्त किया, “क्या मैं लुटेरों का ताक्कुब करूँ? क्या मैं उनको जा लूँगा?” रब ने जवाब दिया, “उनका ताक्कुब कर! तू न सिर्फ उन्हें जा लेगा बल्कि अपने लोगों को बचा भी लेगा।” <sup>9-10</sup> तब दाऊद अपने 600 मर्दों के साथ रवाना हुआ। चलते चलते वह बसोर नदी के पास पहुँच गए। 200 अफराद इतने निढाल हो गए थे कि वह वही रुक गए। बाकी 400 मर्द नदी को पार करके आगे बढ़े।

<sup>11</sup> रास्ते में उन्हें खुले मैदान में एक मिसरी आदमी मिला और उसे दाऊद के पास लाकर कुछ पानी पिलाया और कुछ रोटी, <sup>12</sup> अंजीर की टिककी का टुकड़ा और किशमिश की दो टिककियाँ खिलाई। तब उस की जान में जान आ गई। उसे तीन दिन और रात से न खाना, न पानी मिला था। <sup>13</sup> दाऊद ने पूछा, “तुम्हारा मालिक कौन है, और तुम कहाँ के हो?” उसने जवाब दिया, “मैं मिसरी गुलाम हूँ, और एक अमालीकी मेरा मालिक है। जब मैं सफर के दौरान बीमार हो गया तो उसने मुझे यहाँ छोड़ दिया। अब मैं तीन दिन से यहाँ पड़ा हूँ। <sup>14</sup> पहले हमने करेतियों यानी फिलिस्तियों के चुनबी इलाके और फिर यहदाह के इलाके पर हमला किया था, खासकर यहदाह के चुनबी हिस्से पर जहाँ कालिब की औलाद आबाद है। शहर सिकलाज को हमने भस्म कर दिया था।”

<sup>15</sup> दाऊद ने सवाल किया, “क्या तुम मुझे बता सकते हो कि यह लुटेरे किस तरफ गए हैं?” मिसरी ने जवाब दिया, “पहले अल्लाह की कसम खाकर वादा करे कि आप मुझे न हलाक करेंगे, न मेरे मालिक के हवाले करेंगे। फिर मैं आपको उनके पास ले जाऊँगा।” <sup>16</sup> चुनौचे वह दाऊद को अमालीकी लुटेरों के पास ले गया। जब वहाँ पहुँचे तो देखा कि अमालीकी इधर उधर बिखरे हुए बड़ा जशन मना रहे हैं। वह हर तरफ खाना खाते और मै पीते हुए नज़र आ रहे थे, क्योंकि जो माल उन्होंने फिलिस्तियों और यहदाह के इलाके से लूट लिया था वह बहुत ज्यादा था।

<sup>17</sup> सुबह-सवेरे जब अभी थोड़ी रौशनी थी दाऊद ने उन पर हमला किया। लड़ते लड़ते अगले दिन की शाम हो गई। दुश्मन हार गया और सबके सब हलाक हुए। सिर्फ 400 जवान बच गए जो ऊँटों पर सवार होकर फ़रार हो गए। <sup>18</sup> दाऊद ने सब कुछ छुड़ा लिया जो अमालीकियों ने लूट लिया था। उस की दो बीवियों भी सहीह-सलामत मिल गई। <sup>19</sup> न बच्चा न बुसुर्ग, न बेटा न बेटी, न माल या कोई और लूटी हुई चीज़ रही जो दाऊद वापस न लाया। <sup>20</sup> अमालीकियों के गाय-बैल और भेड़-बकरीयाँ दाऊद का हिस्सा बन गई, और उसके लोगों ने उन्हें अपने रेबड़ों के आगे आगे हाँककर कहा, “यह लूटे हुए माल में से दाऊद का हिस्सा है।”

माले-गनीमत की तकसीम

<sup>21</sup> जब दाऊद अपने आदमियों के साथ वापस आ रहा था तो जो 200 आदमी निढाल होने के बाइस बसोर नदी से आगे न जा सके वह भी उनसे आ मिले। दाऊद ने सलाम करके उनका हाल पूछा। <sup>22</sup> लेकिन बाकी आदमियों में कुछ शरारती लोग बुडबुडाने लगे, “यह हमारे साथ लड़ने के लिए आगे न निकले, इसलिए इन्हें लूटे हुए माल का हिस्सा पाने का हक नहीं। बस वह अपने बाल-बच्चों को लेकर चले जाएँ।”

<sup>23</sup> लेकिन दाऊद ने इनकार किया। “नहीं, मेरे भाइयो, ऐसा मत करना! यह सब कुछ रब की तरफ से है। उसी ने हमें महफूज़ रखकर हमलाआवर लुटेरों पर फ़तह बख़्शी। <sup>24</sup> तो फिर हम आपकी बात किस तरह मानें? जो पीछे रहकर सामान की हिफाज़त कर रहा था उसे भी उतना ही मिलेगा जितना कि उसे जो दुश्मन से लड़ने गया था। हम यह सब कुछ बराबर बराबर तकसीम करेंगे।”

<sup>25</sup> उस वक़्त से यह उल्ल बन गया। दाऊद ने इसे इसराईली कानून का हिस्सा बना दिया जो आज तक जारी है।

<sup>26</sup> सिकलाज वापस पहुँचने पर दाऊद ने लूटे हुए माल का एक हिस्सा यहदाह के बुजुर्गों के पास भेज दिया जो उसके दोस्त थे। साथ साथ उसने पैगाम भेजा, “आपके लिए यह तोहफा रब के दुश्मनों से लूट लिया गया है।” <sup>27</sup> यह तोहफे उसने जैल के

शहरों में भेज दिए : बैतेल, रामात-नजब, यतीर, 28 अरोईर, सिफमोत, इस्तिमुअ, 29-31 रकल, हरमा, बोर-असान, अताक और हबस्न। इसके अलावा उसने तोहफे यरहमियेलियों, कीनियों और बाकी उन तमाम शहरों को भेज दिए जिनमें वह कभी ठहरा था।

## 31

साऊल और उसके बेटों का अंजाम

1 इतने में फिलिस्तियों और इसराइलियों के दरमियान जंग छिड़ गई थी। लड़ते लड़ते इसराइली फरार होने लगे, लेकिन बहुत-से लोग जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर शहीद हो गए।

2 फिर फिलिस्ती साऊल और उसके बेटों यूनतन, अबीनदाब और मलकीशुअ के पास जा पहुँचे। तीनों बेटे हलाक हो गए

3 जबकि लड़ाई साऊल के इर्दगिर्द उरूज तक पहुँच गई। फिर वह तीरअंदाजों का निशाना बनकर बुरी तरह ज़खमी हो गया।

4 उसने अपने सिलाहबरदार को हुकम दिया, “अपनी तलवार मियान से खींचकर मुझे मार डाल, वरना यह नामखतून मुझे छेदकर बेइज्जत करेंगे।” लेकिन सिलाहबरदार ने इनकार किया, क्योंकि वह बहुत डरा हुआ था। आखिर में साऊल अपनी तलवार लेकर खुद उस पर गिर गया।

5 जब सिलाहबरदार ने देखा कि मेरा मालिक मर गया है तो वह भी अपनी तलवार पर गिरकर मर गया। 6 यों उस दिन साऊल, उसके तीन बेटे, उसका सिलाहबरदार और उसके तमाम आदमी हलाक हो गए।

7 जब मैदाने-यज़्बएल के पार और दरियाए-यरदन के पार रहनेवाले इसराइलियों को खबर मिली कि इसराइली फौज भाग गई और साऊल अपने बेटों समेत मारा गया है तो वह अपने शहरों को छोड़कर भाग निकले, और फिलिस्ती छोड़े हुए शहरों पर कब्ज़ा करके उनमें बसने लगे।

8 अगले दिन फिलिस्ती लाशों को लूटने के लिए दुबारा मैदाने-जंग में आ गए। जब उन्हें जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर साऊल और उसके तीनों बेटे मुरदा मिले 9 तो उन्होंने साऊल का सर काटकर उसका ज़िरा-बकतर उतार लिया और कासिदों को अपने पूरे मुल्क में भेजकर अपने बुतों के मंदिर में और अपनी कौम को फतह की इतला दी। 10 साऊल का ज़िरा-बकतर उन्होंने अस्तारात देवी के मंदिर में महफूज़ कर लिया और उस की लाश को बैत-शान की फसील से लटका दिया।

11 जब यबीस-जिलियाद के बाशिंदों को खबर मिली कि फिलिस्तियों ने साऊल की लाश के साथ क्या कुछ किया है 12 तो शहर के तमाम लड़ने के क़ाबिल आदमी बैत-शान के लिए रवाना हुए। पूरी रात चलते हुए वह शहर के पास पहुँच गए। साऊल और उसके बेटों की लाशों को फसील से उतारकर वह उन्हें यबीस को ले गए। वहाँ उन्होंने लाशों को भस्म कर दिया 13 और बची हुई हड्डियों को शहर में झाड़ू के दरख्त के साये में दफनाया। उन्होंने रोज़ा रखकर पूरे हफते तक उनका मातम किया।



## 2 समुएल

दाऊद को साऊल और यूनतन की मौत की खबर मिलती है

1 जब दाऊद अमालीकियों को शिकस्त देने से वापस आया तो साऊल बादशाह मर चुका था। वह अभी दो ही दिन सिकलाज में ठहरा था 2 कि एक आदमी साऊल की लशकरगाह से पहुँचा। दुख के इज़हार के लिए उसने अपने कपड़ों को फाड़कर अपने सर पर खाक डाल रखी थी। दाऊद के पास आकर वह बड़े एहताराम के साथ उसके सामने झुक गया। 3 दाऊद ने पूछा, “आप कहाँ से आए हैं?” आदमी ने जवाब दिया, “मैं बाल बाल बचकर इसराईली लशकरगाह से आया हूँ।” 4 दाऊद ने पूछा, “बताएँ, हालात कैसे हैं?” उसने बताया, “हमारे बहुत-से आदमी मैदाने-जंग में काम आए। बाकी भाग गए हैं। साऊल और उसका बेटा यूनतन भी हलाक हो गए हैं।”

5 दाऊद ने सवाल किया, “आपको कैसे मालूम हुआ कि साऊल और यूनतन मर गए हैं?” 6 जवान ने जवाब दिया, “इतफ़ाक़ से मैं जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर से गुज़र रहा था। वहाँ मुझे साऊल नज़र आया। वह नेजे का सहारा लेकर खड़ा था। दुश्मन के रथ और घुड़सवार तक्ररीबन उसे पकड़ने हीवाले थे 7 कि उसने मुड़कर मुझे देखा और अपने पास बुलाया। मैंने कहा, ‘जी, मैं हाज़िर हूँ।’ 8 उसने पूछा, ‘तुम कौन हो?’ मैंने जवाब दिया, ‘मैं अमालीकी हूँ।’ 9 फिर उसने मुझे हुक़म दिया, ‘आओ और मुझे मार डालो! क्योंकि गो मैं ज़िंदा हूँ मेरी जान निकल रही है।’ 10 चुनौचे मैंने उसे मार दिया, क्योंकि मैं जानता था कि बचने का कोई इमकान नहीं रहा था। फिर मैं उसका ताज और बाज़ूबंद लेकर अपने मालिक के पास यहाँ ले आया हूँ।”

11 यह सब कुछ सुनकर दाऊद और उसके तमाम लोगों ने गम के मारे अपने कपड़े फाड़ लिए। 12 शाम तक उन्होंने रो रोक और रोज़ा रखकर साऊल, उसके बेटे यूनतन और रब के उन बाकी लोगों का मातम किया जो मारे गए थे।

13 दाऊद ने उस जवान से जो उनकी मौत की खबर लाया था पूछा, “आप कहाँ के हैं?” उसने जवाब दिया, “मैं अमालीकी हूँ जो अजनबी के तौर पर आपके मुल्क में रहता हूँ।” 14 दाऊद बोला, “आपने रब के मसह किए हुए बादशाह को क़त्ल करने की ज़रत कैसे की?” 15 उसने अपने किसी जवान को बुलाकर हुक़म दिया, “इसे मार डालो!” उसी वक़्त जवान ने अमालीकी को मार डाला। 16 दाऊद ने कहा, “आपने अपने आपको खुद मुजरिम ठहराया है, क्योंकि आपने अपने मुँह से इकरार किया है कि मैंने रब के मसह किए हुए बादशाह को मार दिया है।”

साऊल और यूनतन पर मातम का गीत

17 फिर दाऊद ने साऊल और यूनतन पर मातम का गीत गाया। 18 उसने हिदायत दी कि यहूदाह के तमाम बाशिंदे यह गीत याद करें। गीत का नाम ‘कमान का गीत’ है और ‘याशर की किताब’ में दर्ज है। गीत यह है,

19 “हाय, ऐ इसराईल! तेरी शानो-शौकत तेरी बुलंदियों पर मारी गई है। हाय, तेरे सूरमे किस तरह गिर गए हैं!

20 जात में जाकर यह खबर मत सुनाना। अस्कलन की गलियों में इसका एलान मत करना, वरना फिलिस्तियों की बेटियाँ ख़ुशी मनाएँगी, नामखतूनों की बेटियाँ फ़तह के नारे लगाएँगी।

21 ऐ जिलबुअ के पहाड़ो! ऐ पहाड़ी ढलानो! आइंदा तुम पर न ओस पड़े, न बारिश बरसे। क्योंकि सूरमाओं की ढाल नापाक हो गई है। अब से साऊल की ढाल तेल मलकर इस्तेमाल नहीं की जाएगी।

22 यूनतन की कमान ज़बरदस्त थी, साऊल की तलवार कभी खाली हाथ न लौटी। उनके हथियारों से हमेशा दुश्मन का खून टपकता रहा, वह सूरमाओं की चरबी से चमकते रहे।

23 साऊल और यूनतन कितने प्यारे और मेहरबान थे! जीते-जी वह एक दूसरे के करीब रहे, और अब मौत भी उन्हें अलग न कर सकी। वह उकाब से तेज़ और शेरबबर से ताकतवर थे।

24 ऐ इसराईल की खवातीन! साऊल के लिए आँसू बहाएँ। क्योंकि उसी ने आपको क़िरमिज़ी रंग के शानदार कपड़ों से मुल्बबस किया, उसी ने आपको सोने के जेवरत से आरस्ता किया।

25 हाय, हमारे सूरमे लडते लडते शहीद हो गए हैं। हाय ऐ इसराईल, यूनतन मरदा हालत में तेरी बुलंदियों पर पड़ा है।

26 ऐ यूनतन मेरे भाई, मैं तेरे बारे में कितना दुखी हूँ। तू मुझे कितना अज़ीज़ था। तेरी मुझसे मुहब्बत अनोखी थी, वह औरतों की मुहब्बत से भी अनोखी थी।

27 हाय, हाय! हमारे सुरमे किस तरह गिरकर शहीद हो गए हैं। जंग के हथियार तबाह हो गए हैं।”

## 2

दाऊद यहदाह का बादशाह बन जाता है

1 इसके बाद दाऊद ने रब से दरियाफ्त किया, “क्या मैं यहदाह के किसी शहर में वापस चला जाऊँ?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, वापस जा।” दाऊद ने सवाल किया, “मैं किस शहर में जाऊँ?” रब ने जवाब दिया, “हबस्न में।” 2 चुनौचे दाऊद अपनी दो बीवियों अखीनुअम यज़्ज़एली और नाबाल की बेवा अबीजेल् करमिली के साथ हबस्न में जा बसा।

3 दाऊद ने अपने आदमियों को भी उनके खानदानों समेत हबस्न और गिर्दो-नवाह की आबादियों में मुंतकिल कर दिया।

4 एक दिन यहदाह के आदमी हबस्न में आए और दाऊद को मसह करके अपना बादशाह बना लिया।

जब दाऊद को खबर मिल गई कि यबीस-जिलियाद के मर्दों ने साऊल को दफना दिया है 5 तो उसने उन्हें पैगाम भेजा, “रब आपको इसके लिए बरकत दे कि आपने अपने मालिक साऊल को दफन करके उस पर मेहरबानी की है। 6 जवाब में रब आप पर अपनी मेहरबानी और वफादारी का इज़हार करे। मैं भी इस नेक अमल का अज़्र दूँगा। 7 अब मज़बूत और दिलेरे हों। आपका आका साऊल तो फौत हुआ है, लेकिन यहदाह के कबीले ने मुझे उस की जगह चुन लिया है।”

इशबोसत इसराईल का बादशाह बन जाता है

8 इतने में साऊल की फौज के कमाँडर अबिनैर बिन नैर ने साऊल के बेटे इशबोसत को महनायम शहर में ले जाकर 9 बादशाह मुकरर कर दिया। जिलियाद, यज़्ज़एल, आशर, इफराईम, बिनयमीन और तमाम इसराईल उसके कब्जे में रहे। 10 सिर्फ यहदाह का कबीला दाऊद के साथ रहा। इशबोसत 40 साल की उम्र में बादशाह बना, और उस की हुक्मत दो साल कायम रही। 11 दाऊद हबस्न में यहदाह पर साढे सात साल हुक्मत करता रहा।

इसराईल और यहदाह के दरमियान जंग

12 एक दिन अबिनैर इशबोसत बिन साऊल के मुलाजिमों के साथ महनायम से निकलकर जिबऊन आया। 13 यह देखकर दाऊद की फौज योआब बिन ज़स्याह की राहनुमाई में उनसे लड़ने के लिए निकली। दोनों फौजों की मुलाकात जिबऊन के तालाब पर हुई। अबिनैर की फौज तालाब की उरली तरफ स्क गई और योआब की फौज परली तरफ। 14 अबिनैर ने योआब से कहा, “आओ, हमारे चंद जवान हमारे सामने एक दूसरे का मुकाबला करें।” योआब बोला, “ठीक है।” 15 चुनौचे हर फौज ने बारह जवानों को चुनकर मुकाबले के लिए पेश किया। इशबोसत और बिनयमीन के कबीले के बारह जवान दाऊद के बारह जवानों के मुकाबले में खड़े हो गए। 16 जब मुकाबला शुरू हुआ तो हर एक ने एक हाथ से अपने मुखालिफ के बालों को पकड़कर दूसरे हाथ से अपनी तलवार उसके पेट में घोंप दी। सबके सब एक साथ मर गए। बाद में जिबऊन की इस जगह का नाम खिलकत-हज़्ज़ूमि पड़ गया।

17 फिर दोनों फौजों के दरमियान निहायत सख्त लड़ाई छिड़ गई। लड़ते लड़ते अबिनैर और उसके मर्द हार गए। 18 योआब के दो भाई अबीशी और असाहेल भी लड़ाई में हिस्सा ले रहे थे। असाहेल गज़ाल की तरह तेज दौड़ सकता था। 19 जब अबिनैर शिकस्त खाकर भागने लगा तो असाहेल सीधा उसके पीछे पड़ गया और न दाई, न बाई तरफ हटा। 20 अबिनैर ने पीछे देखकर पूछा, “क्या आप ही हैं, असाहेल?” उसने जवाब दिया, “जी, मैं ही हूँ।” 21 अबिनैर बोला, “दाई या बाई तरफ हटकर किसी और को पकड़ें! जवानों में से किसी से लड़कर उसके हथियार और ज़िरा-बकतर उतारें।”

लेकिन असाहेल उसका ताक्कुब करने से बाज़ न आया। 22 अबिनैर ने उसे आगाह किया, “खबरदार। मेरे पीछे से हट जाँ, वरना आपको मार देने पर मजबूर हो जाऊँगा। फिर आपके भाई योआब को किस तरह मुँह दिखाऊँगा?” 23 तो भी असाहेल ने पीछा न छोड़ा। यह देखकर अबिनैर ने अपने नेजे का दस्ता इतने जोर से उसके पेट में घोंप दिया कि उसका सिरा दूसरी तरफ निकल गया। असाहेल वहीं गिरकर जान-बहक हो गया। जिसने भी वहाँ से गुज़रकर यह देखा वह वहीं स्क गया।

24 लेकिन योआब और अबीशी अबिनैर का ताक्कुब करते रहे। जब सूरज गुरूब होने लगा तो वह एक पहाड़ी के पास पहुँच गए जिसका नाम अम्मा था। यह जियाह के मुकाबिल उस रास्ते के पास है जो मुसाफिर को जिबऊन से रेगिस्तान में पहुँचाता है। 25 बिनयमीन के कबीले के लोग वहाँ पहाड़ी पर अबिनैर के पीछे जमा होकर दुबारा लड़ने के लिए तैयार हो गए। 26 अबिनैर ने योआब को आवाज़ दी, “क्या यह ज़स्री है कि हम हमेशा तक एक दूसरे को मौत के घाट उतारते जाएँ? क्या आपको समझ नहीं आई कि ऐसी हरकतें सिर्फ तलाखी पैदा करती हैं? आप कब अपने मर्दों को हुक्म देंगे कि वह अपने इसराईली भाइयों का ताक्कुब करने से बाज़ आएँ?”

27 योआब ने जवाब दिया, “रब की हयात की कसम, अगर आप लड़ने का हुक्म न देते तो मेरे लोग आज सुबह ही अपने भाइयों का ताक्कुब करने से बाज़ आ जाते।” 28 उसने नरसिंगा बजा दिया, और उसके आदमी स्क्कर दूसरों का ताक्कुब करने से बाज़ आए। यों लड़ाई खत्म हो गई।

29 उस पूरी रात के दौरान अबिनैर और उसके आदमी चलते गए। दरियाए-यरदन की वादी में से गुज़रकर उन्होंने दरिया को पार किया और फिर गहरी घाटी में से होकर महनायम पहुँच गए।

30 योआब भी अबिनैर और उसके लोगों को छोड़कर वापस चला गया। जब उसने अपने आदमियों को जमा करके गिना तो मालूम हुआ कि असाहेल के अलावा दाऊद के 19 आदमी मारे गए हैं। 31 इसके मुकाबले में अबिनैर के 360 आदमी हलाक हुए थे। सब बिनयमीन के कबीले के थे। 32 योआब और उसके साथियों ने असाहेल की लाश उठाकर उसे बैत-लहम में उसके बाप की कब्र में दफन किया। फिर उसी रात अपना सफर जारी रखकर वह पौ फटते वक्त हब्रून पहुँच गए।

### 3

1 साऊल के बेटे इशबोसत और दाऊद के दरमियान यह जंग बड़ी देर तक जारी रही। लेकिन आहिस्ता आहिस्ता दाऊद जोर पकड़ता गया जबकि इशबोसत की ताकत कम होती गई।

**दाऊद का खानदान हब्रून में**

2 हब्रून में दाऊद के बाज़ बेटे पैदा हुए। पहले का नाम अमनोन था। उस की माँ अरखीनुअम यज़एली थी। 3 फिर किलियाब पैदा हुआ जिसकी माँ नाबाल की बेवा अबीजेल करमिली थी। तीसरा बेटा अबीसलूम था। उस की माँ माका थी जो जसूर के बादशाह तलमी की बेटी थी। 4 चौथे का नाम अदनियाह था। उस की माँ हज्जीत थी। पाँचवाँ बेटा सफतियाह था। उस की माँ अबीताल थी। 5 छठे का नाम इतरियाम था। उस की माँ इजला थी। यह छः बेटे हब्रून में पैदा हुए।

**अबिनैर इशबोसत से झगड़ता है**

6 जितनी देर तक इशबोसत और दाऊद के दरमियान जंग रही, उतनी देर तक अबिनैर साऊल के घराने का वफादार रहा।

7 लेकिन एक दिन इशबोसत अबिनैर से नाराज़ हुआ, क्योंकि वह साऊल मरहूम की एक दाशता से हमबिसतर हो गया था। औरत का नाम रिसफा बित एयाह था। इशबोसत ने शिकायत की, “आपने मेरे बाप की दाशता से ऐसा सुलूक क्यों किया?”

8 अबिनैर बड़े गुस्से में आकर गरजा, “क्या मैं यहदाह का कुत्ता \* हूँ कि आप मुझे ऐसा रवैया दिखाते हैं? आज तक मैं आपके बाप के घराने और उसके रिश्तेदारों और दोस्तों के लिए लड़ता रहा हूँ। मेरी ही वजह से आप अब तक दाऊद के हाथ से बचे रहे हैं। क्या यह इसका मुआवज़ा है? क्या एक ऐसी औरत के सबब से आप मुझे मुजरिम ठहरा रहे हैं? 9-10 अल्लाह मुझे सख्त सज़ा दे अगर अब से हर मुमकिन कोशिश न करूँ कि दाऊद पूरे इसराईल और यहदाह पर बादशाह बन जाए, शिमाल में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक। आखिर रब ने खुद कसम खाकर दाऊद से वादा किया है कि मैं बादशाही साऊल के घराने से छीनकर तुझे दूँगा।”

11 यह सुनकर इशबोसत अबिनैर से इतना डर गया कि मज़ीद कुछ कहने की ज़रूरत जाती रही।

**अबिनैर के दाऊद से मुजाकरात**

12 अबिनैर ने दाऊद को पैगाम भेजा, “मुल्क किसका है? मेरे साथ मुआहदा कर लें तो मैं पूरे इसराईल को आपके साथ मिला दूँगा।”

13 दाऊद ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं आपके साथ मुआहदा करता हूँ। लेकिन एक ही शर्त पर, आप साऊल की बेटी मीकल को जो मेरी बीवी है मेरे घर पहुँचाएँ, वरना मैं आपसे नहीं मिलूँगा।” 14 दाऊद ने इशबोसत के पास भी कासिद भेजकर तकाज़ा किया, “मुझे मेरी बीवी मीकल जिससे शादी करने के लिए मैंने सौ फिलिस्तियों को मारा वापस कर दें।”

15 इशबोसत मान गया। उसने हुक्म दिया कि मीकल को उसके मौजूदा शौहर फलतियेल बिन लैस से लेकर दाऊद को भेजा जाए। 16 लेकिन फलतियेल उसे छोड़ना नहीं चाहता था। वह रोते रोते बहरीम तक अपनी बीवी के पीछे चलता रहा। तब अबिनैर ने उससे कहा, “अब जाओ! वापस चले जाओ!” तब वह वापस चला।

17 अबिनैर ने इसराईल के बुज़ुर्गों से भी बात की, “आप तो काफ़ी देर से चाहते हैं कि दाऊद आपका बादशाह बन जाए।

18 अब कदम उठाने का वक़्त आ गया है! क्योंकि रब ने दाऊद से वादा किया है, ‘अपने खादिम दाऊद से मैं अपनी कौम इसराईल को फिलिस्तियों और बाक़ी तमाम दुश्मनों के हाथ से बचाऊँगा’।” 19 यही बात अबिनैर ने बिनयमीन के बुज़ुर्गों के पास जाकर भी की। इसके बाद वह हब्रून में दाऊद के पास आया ताकि उसके सामने इसराईल और बिनयमीन के बुज़ुर्गों का फैसला पेश करे।

\* 3:8 लफ्ज़ी तरज़ुमा : कुत्ते का सर

20 बीस आदमी अबिनेर के साथ हबस्न पहुँच गए। उनका इस्तकबाल करके दाऊद ने जियाफत की। 21 फिर अबिनेर ने दाऊद से कहा, “अब मुझे इजाजत दें। मैं अपने आका और बादशाह के लिए तमाम इसराईल को जमा कर लूँगा ताकि वह आपके साथ अहद बाँधकर आपको अपना बादशाह बना लें। फिर आप उस पूरे मुल्क पर हुक्मत करेंगे जिस तरह आपका दिल चाहता है।” फिर दाऊद ने अबिनेर को सलामती से सखसत कर दिया।

**अबिनेर को कत्ल किया जाता है**

22 थोड़ी देर के बाद योआब दाऊद के आदमियों के साथ किसी लड़ाई से वापस आया। उनके पास बहुत-सा लूटा हुआ माल था। लेकिन अबिनेर हबस्न में दाऊद के पास नहीं था, क्योंकि दाऊद ने उसे सलामती से सखसत कर दिया था। 23 जब योआब अपने आदमियों के साथ शहर में दाखिल हुआ तो उसे इतला दी गई, “अबिनेर बिन नैर बादशाह के पास था, और बादशाह ने उसे सलामती से सखसत कर दिया है।” 24 योआब फौरन बादशाह के पास गया और बोला, “आपने यह क्या किया है? जब अबिनेर आपके पास आया तो आपने उसे क्यों सलामती से सखसत किया? अब उसे पकड़ने का मौका जाता रहा है।” 25 आप तो उसे जानते हैं। हकीकत में वह इसलिए आया कि आपको मनवाकर आपके आने जाने और बाकी कामों के बारे में मालूमत हासिल करे।”

26 योआब ने दरबार से निकलकर कासिदों को अबिनेर के पीछे भेज दिया। वह अभी सफ़र करते करते सीरा के हौज़ पर से गुज़र रहा था कि कासिद उसके पास पहुँच गए। उनकी दावत पर वह उनके साथ वापस गया। लेकिन बादशाह को इसका इल्म न था। 27 जब अबिनेर दुबारा हबस्न में दाखिल होने लगा तो योआब शहर के दरवाज़े में उसका इस्तकबाल करके उसे एक तरफ़ ले गया जैसे वह उसके साथ कोई ख़ुफ़िया बात करना चाहता हो। लेकिन अचानक उसने अपनी तलवार को मियान से खींचकर अबिनेर के पेट में घोंप दिया। इस तरह योआब ने अपने भाई असाहेल का बदला लेकर अबिनेर को मार डाला।

28 जब दाऊद को इसकी इतला मिली तो उसने एलान किया, “मैं रब के सामने कसम खाता हूँ कि बेकुसूर हूँ। मेरा अबिनेर की मौत में हाथ नहीं था। इस नाते से मुझ पर और मेरी बादशाही पर कभी भी इलज़ाम न लगाया जाए, 29 क्योंकि योआब और उसके बाप का घराना कुसूरवार हैं। रब उसे और उसके बाप के घराने को मुनासिब सज़ा दे। अब से अबद तक उस की हर नसल में कोई न कोई हो जिसे ऐसे ज़ख़म लग जाएँ जो भर न पाएँ, किसी को कोढ़ लग जाए, किसी को बैसाखियों की मदद से चलना पड़े, कोई ग़ैरतबई मौत भर जाए, या किसी को ख़ुराक की मुसलसल कमी रहे।” 30 यों योआब और उसके भाई अबीशै ने अपने भाई असाहेल का बदला लिया। उन्होंने अबिनेर को इसलिए कत्ल किया कि उसने असाहेल को ज़िबऊन के करीब लड़ते वक़्त मौत के घाट उतार दिया था।

**दाऊद अबिनेर का मातम करता है**

31-32 दाऊद ने योआब और उसके साथियों को हुकम दिया, “अपने कपड़े फाड़ दो और टाट ओढ़कर अबिनेर का मातम करो!” जनाज़े का बंदोबस्त हबस्न में किया गया। दाऊद खुद जनाज़े के ऐन पीछे चला। कब्र पर बादशाह ऊँची आवाज़ से रो पड़ा, और बाकी सब लोग भी रोने लगे। 33 फिर दाऊद ने अबिनेर के बारे में मातमी गीत गाया,

34 “हाय, अबिनेर क्यों बेदीन की तरह मारा गया? तेरे हाथ बँधे हुए न थे, तेरे पाँव जंजीरों में जकड़े हुए न थे। जिस तरह कोई शरीरों के हाथ में आकर मर जाता है उसी तरह तू हलाक हुआ।”

तब तमाम लोग मज़ीद रोए। 35 दाऊद ने जनाज़े के दिन रोज़ा रखा। सबने मिन्नत की कि वह कुछ खाए, लेकिन उसने कसम खाकर कहा, “अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं सूज़ के गुरूब होने से पहले रोटी का एक टुकड़ा भी खा लूँ।”

36 बादशाह का यह व़ैया लोगों को बहुत पसंद आया। वैसे भी दाऊद का हर अमल लोगों को पसंद आता था। 37 यों तमाम हाज़िरिन बल्कि तमाम इसराईलियों ने जान लिया कि बादशाह का अबिनेर को कत्ल करने में हाथ न था। 38 दाऊद ने अपने दरबारियों से कहा, “क्या आपको समझ नहीं आई कि आज इसराईल का बड़ा सूरमा फ़ौत हुआ है? 39 मुझे अभी अभी मसह करके बादशाह बनाया गया है, इसलिए मेरी इतनी ताकत नहीं कि ज़रूयाह के इन दो बेटों योआब और अबीशै को कंट्रोल करूँ। रब उन्हें उनकी इस शरीर हरकत की मुनासिब सज़ा दे।”

## 4

**इशबोसत को कत्ल किया जाता है**

1 जब साऊल के बेटे इशबोसत को इतला मिली कि अबिनेर को हबस्न में कत्ल किया गया है तो वह हिम्मत हार गया, और तमाम इसराईल सख़्त घबरा गया। 2 इशबोसत के दो आदमी थे जिनके नाम बाना और रैकाब थे। जब कभी इशबोसत के फ़ौजी छापामारने के लिए निकलते तो यह दो भाई उन पर मुक़रर थे। उनका बाप रिम्मोन बिनयमीन के कबायली इलाके के शहर बैरोत का रहनेवाला था। बैरोत भी बिनयमीन में शुमार किया जाता है, 3 अगरचे उसके बाशिंदों को हिजरत करके जितैम में बसना पड़ा जहाँ वह आज तक परदेसी की हैसियत से रहते हैं।

4 युनतन का एक बेटा जिंदा रह गया था जिसका नाम मिफ्रीबोसत था। पाँच साल की उम्र में यज़रूल से खबर आई थी कि साऊल और युनतन मारे गए हैं। तब उस की आया उसे लेकर कहीं पनाह लेने के लिए भाग गई थी। लेकिन जल्दी की वजह से मिफ्रीबोसत गिरकर लँगड़ा हो गया था। उस वक़्त से उस की दोनों टाँगें मफ़लूज़ थीं।

5 एक दिन रिम्मोन बैरोती के बेटे कैाब और बाना दोपहर के वक़्त इशबोसत के घर गए। गरमी उरूज पर थी, इसलिए इशबोसत आराम कर रहा था। 6-7 दोनों आदमी यह बहाना पेश करके घर के अंदरूनी कमरे में गए कि हम कुछ अनाज ले जाने के लिए आए हैं। जब इशबोसत के कमरे में पहुँचे तो वह चारपाई पर लेटा सो रहा था। यह देखकर उन्होंने उसके पेट में तलवार घोंप दी और फिर उसका सर काटकर वहाँ से सलामती से निकल आए।

पूरी रात सफ़र करते करते वह दरियाए-यरदन की वादी में से गुज़रकर 8 हबस्न पहुँच गए। वहाँ उन्होंने दाऊद को इशबोसत का सर दिखाकर कहा, “यह देखें, साऊल के बेटे इशबोसत का सर। आपका दुश्मन साऊल बार बार आपको मार देने की कोशिश करता रहा, लेकिन आज रब ने उससे और उस की औलाद से आपका बदला लिया है।”

दाऊद कातिलों को सज़ा देता है

9 लेकिन दाऊद ने जवाब दिया, “रब की हयात की कसम जिसने फ़िधा देकर मुझे हर मुसीबत से बचाया है, 10 जिस आदमी ने मुझे उस वक़्त सिकल्लाज में साऊल की मौत की इतला दी वह भी समझता था कि मैं दाऊद को अच्छी खबर पहुँचा रहा हूँ। लेकिन मैंने उसे पकड़कर सज़ाए-मौत दे दी। यही था वह अज़्र जो उसे ऐसी खबर पहुँचाने के एवज़ मिला! 11 अब तुम शरीर लोगों ने इससे बढ़कर किया। तुमने बेकुसूर आदमी को उसके अपने घर में उस की अपनी चारपाई पर क़त्ल कर दिया है। तो क्या मेरा फ़र्ज़ नहीं कि तुमको इस क़त्ल की सज़ा देकर तुम्हें मुल्क में से मिटा दूँ?”

12 दाऊद ने दोनों को मार देने का हुक्म दिया। उसके मुलाज़िमों ने उन्हें मारकर उनके हाथों और पैरों को काट डाला और उनकी लाशों को हबस्न के तालाब के करीब कहीं लटका दिया। इशबोसत के सर को उन्होंने अबिनैर की कब्र में दफ़नाया।

## 5

दाऊद पूरे इसराईल का बादशाह बन जाता है

1 उस वक़्त इसराईल के तमाम कबीले हबस्न में दाऊद के पास आए और कहा, “हम आप ही की कौम और आप ही के रिश्तेदार हैं। 2 माजी में भी जब साऊल बादशाह था तो आप ही फ़ौजी मुहिमों में इसराईल की क्रियादत करते रहे। और रब ने आपसे वादा भी किया है कि तू मेरी कौम इसराईल का चरवाहा बनकर उस पर हुक्मत करेगा।” 3 जब इसराईल के तमाम बुज़ुर्ग हबस्न पहुँचे तो दाऊद बादशाह ने रब के हुज़ूर उनके साथ अहद बाँधा, और उन्होंने उसे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया।

4 दाऊद 30 साल की उम्र में बादशाह बन गया। उस की हुक्मत 40 साल तक जारी रही। 5 पहले साढ़े सात साल वह सिर्फ़ यहदाह का बादशाह था और उसका दास्त-हुक्मत हबस्न रहा। बाकी 33 साल वह यरूशालम में रहकर यहदाह और इसराईल दोनों पर हुक्मत करता रहा।

दाऊद यरूशालम पर कब्ज़ा करता है

6 बादशाह बनने के बाद दाऊद अपने फ़ौजियों के साथ यरूशालम गया ताकि उस पर हमला करे। वहाँ अब तक यबूसी आबाद थे। दाऊद को देखकर यबूसियों ने उसका मज़ाक उड़ाया, “आप हमारे शहर में कभी दाखिल नहीं हो पाएंगे! आपको रोकने के लिए हमारे लँगड़े और अंधे काफ़ी हैं।” उन्हें पूरा यकीन था कि दाऊद शहर में किसी भी तरीक़े से नहीं आ सकेगा।

7 तो भी दाऊद ने सियून के किले पर कब्ज़ा कर लिया जो आजकल ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। 8 जिस दिन उन्होंने शहर पर हमला किया उसने एतान किया, “जो भी यबूसियों पर फतह पाना चाहे उसे पानी की सुरंग में से गुज़रकर शहर में घुसना पड़ेगा ताकि उन लँगड़ों और अंधों को मारे जिनसे मेरी जान नफ़रत करती है।” इसलिए आज तक कहा जाता है, “लँगड़ों और अंधों को घर में जाने की इज़ाज़त नहीं।”

9 यरूशालम पर फतह पाने के बाद दाऊद किले में रहने लगा। उसने उसे ‘दाऊद का शहर’ करार दिया और उसके इर्दगिर्द शहर को बढ़ाने लगा। यह तामीरी काम इर्दगिर्द के चबूतरों से शुरू हुआ और होते होते किले तक पहुँच गया।

10 यों दाऊद ज़ोर पकड़ता गया, क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज उसके साथ था।

दाऊद की तरक्की

11 एक दिन सर के बादशाह हीराम ने दाऊद के पास वफ़द भेजा। बहई और राज भी साथ थे। उनके पास देवदार की लकड़ी थी, और उन्होंने दाऊद के लिए महल बना दिया। 12 यों दाऊद ने जान लिया कि रब ने मुझे इसराईल का बादशाह बनाकर मेरी बादशाही अपनी कौम इसराईल की खातिर सरफ़राज़ कर दी है।

13 हबस्न से यरूशलम में मुंतकिल होने के बाद दाऊद ने मजीद बीवियों और दाशताओं से शादी की। नतीजे में यरूशलम में उसके कई बेटे-बेटियाँ पैदा हुए। 14 जो बेटे वहाँ पैदा हुए वह यह थे : सम्मुअ, सोबाब, नातन, सुलेमान, 15 इबहार, इलीसुअ, नफ़ज, यफ़ीअ, 16 इलीसामा, इलियदा और इलीफलत।

### फिलिस्तियों पर फ़तह

17 जब फिलिस्तियों को इतला मिली कि दाऊद को मसह करके इसराईल का बादशाह बनाया गया है तो उन्होंने अपने फ़ौजियों को इसराईल में भेज दिया ताकि उसे पकड़ लें। लेकिन दाऊद को पता चल गया, और उसने एक पहाड़ी किले में पनाह ले ली।

18 जब फिलिस्ती इसराईल में पहुँचकर वादीए-रफ़ाईम में फैल गए 19 तो दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, “क्या मैं फिलिस्तियों पर हमला करूँ? क्या तू मुझे उन पर फ़तह बख़्शेगा?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, उन पर हमला कर! मैं उन्हें ज़रूर तैरे क़ब्ज़े में कर दूँगा।” 20 चुनौचे दाऊद अपने फ़ौजियों को लेकर बाल-पराज़ीम गया। वहाँ उसने फिलिस्तियों को शिकस्त दी। बाद में उसने गवाही दी, “जितने जोर से बंद के टूट जाने पर पानी उससे फूट निकलता है उतने जोर से आज रब मेरे देखते देखते दुश्मन की सफ़ों में से फूट निकला है।” चुनौचे उस जगह का नाम बाल-पराज़ीम यानी ‘फूट निकलने का मालिक’ पड़ गया। 21 फिलिस्ती अपने बूत छोड़कर भाग गए, और वह दाऊद और उसके आदमियों के क़ब्ज़े में आ गए।

22 एक बार फिर फिलिस्ती आकर वादीए-रफ़ाईम में फैल गए। 23 जब दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया तो उसने जवाब दिया, “इस मरतबा उनका सामना मत करना बल्कि उनके पीछे जाकर बका के दरख़्तों के सामने उन पर हमला कर। 24 जब उन दरख़्तों की चोटियों से कदमों की चाप सुनाई दे तो ख़बरदार! यह इसका इशारा होगा कि रब ख़ुद तैरे आगे आगे चलकर फिलिस्तियों को मारने के लिए निकल आया है।”

25 दाऊद ने ऐसा ही किया और नतीजे में फिलिस्तियों को शिकस्त देकर जिबऊन से लेकर जज़र तक उनका ताक़ुक़ब किया।

## 6

### दाऊद अहद का संदूक यरूशलम में ले आता है

1 एक बार फिर दाऊद ने इसराईल के चुनीदा आदमियों को जमा किया। 30,000 अफ़राद थे। 2 उनके साथ मिलकर वह यहदाह के बाला पहुँच गया ताकि अल्लाह का संदूक उठाकर यरूशलम ले जाएँ, वही संदूक जिस पर रब्बुल-अफ़वाज़ के नाम का ठप्पा लगा है और जहाँ वह संदूक के ऊपर क़रबी फ़रिशतों के दरमियान तख़्तनशीन है। 3-4 लोगों ने अल्लाह के संदूक को पहाड़ी पर वाके अबीनदाब के घर से निकालकर एक नई बैलगाड़ी पर रख दिया, और अबीनदाब के दो बेटे उज़्ज़ा और अख़ियो उसे यरूशलम की तरफ़ ले जाने लगे। अख़ियो गाड़ी के आगे आगे 5 और दाऊद बाक़ी तमाम लोगों के साथ पीछे चल रहा था। सब रब के हुज़ूर पूरे जोर से ख़ुशी मनाने और गीत गाने लगे। मुख़्तलिफ़ साज़ भी बजाए जा रहे थे। फ़िज़ा सितारों, सरोंदों, दफ़ों, खंजरियों\* और झाँझों की आवाज़ों से गूँज उठी।

6 वह गंदुम गाहने की एक जगह पर पहुँच गए जिसके मालिक का नाम नकोन था। वहाँ बैल अचानक बेकाबू हो गए। उज़्ज़ा ने जल्दी से अल्लाह का संदूक पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाए। 7 उसी लमहे रब का ग़ज़ब उस पर नाज़िल हुआ, क्योंकि उसने अल्लाह के संदूक को छूने की ज़रूत की थी। वही अल्लाह के संदूक के पास ही उज़्ज़ा गिरकर हलाक हो गया। 8 दाऊद को बड़ा रंज हुआ कि रब का ग़ज़ब उज़्ज़ा पर यों टूट पड़ा है। उस वक़्त से उस जगह का नाम परज़-उज़्ज़ा यानी ‘उज़्ज़ा पर टूट पडना’ है।

9 उस दिन दाऊद को रब से ख़ौफ़ आया। उसने सोचा, “रब का संदूक किस तरह मेरे पास पहुँच सकेगा?” 10 चुनौचे उसने फ़ैसला किया कि हम रब का संदूक यरूशलम नहीं ले जाएंगे बल्कि उसे ओबेद-अदोम जाती के घर में महफूज़ रखेंगे।

11 वहाँ वह तीन माह तक पड़ा रहा।

इन तीन महीनों के दौरान रब ने ओबेद-अदोम और उसके पूरे घराने को बरकत दी। 12 एक दिन दाऊद को इतला दी गई, “जब से अल्लाह का संदूक ओबेद-अदोम के घर में है उस वक़्त से रब ने उसके घराने और उस की पूरी मिलकियत को बरकत दी है।” यह सुनकर दाऊद ओबेद-अदोम के घर गया और ख़ुशी मनाते हुए अल्लाह के संदूक को दाऊद के शहर ले आया। 13 छः कदमों के बाद दाऊद ने रब का संदूक उठानेवालों को रोककर एक साँड़ और एक मोटा-ताज़ा बछड़ा कुरबान किया। 14 जब जुलूस आगे निकला तो दाऊद पूरे जोर के साथ रब के हुज़ूर नाचने लगा। वह कतान का बालापोश पहने हुए था। 15 ख़ुशी के नारे लगा लगाकर और नरसिंगे फूँक फूँककर दाऊद और तमाम इसराईली रब का संदूक यरूशलम ले आए।

\* 6:5 इब्रानी में इससे मुराद झुनझुने जैसा कोई साज़ है।

16 रब का संदूक दाऊद के शहर में दाखिल हुआ तो दाऊद की बीवी मीकल बित साऊल खिड़की में से चुलूस को देख रही थी। जब बादशाह रब के हज़र क़दता और नाचता हुआ नज़र आया तो मीकल ने दिल में उसे हकीर जाना।

17 रब का संदूक उस तंबू के दरमियान में रखा गया जो दाऊद ने उसके लिए लगवाया था। फिर दाऊद ने रब के हज़र भस्म होनेवाली और सलामीती की कुरबानियाँ पेश कीं। 18 इसके बाद उसने क़ौम को रब्बुल-अफ़वाज के नाम से बरकत देकर 19 हर इसराईली मर्द और औरत को एक रोटी, खज़ूर की एक टिक्की और किशमिश की एक टिक्की दे दी। फिर तमाम लोग अपने अपने घरों को वापस चले गए।

20 दाऊद भी अपने घर लौटा ताकि अपने खानदान को बरकत देकर सलाम करे। वह अभी महल के अंदर नहीं पहुँचा था कि मीकल निकलकर उससे मिलने आई। उसने तंज़न कहा, “वाह जी वाह। आज इसराईल का बादशाह कितनी शान के साथ लोगों को नज़र आया है! अपने लोगों की लौडियों के सामने ही उसने अपने कपड़े उतार दिए, बिलकुल उसी तरह जिस तरह वॉवर करते हैं।” 21 दाऊद ने जवाब दिया, “मैं रब ही के हज़र नाच रहा था, जिसने आपके बाप और उसके खानदान को तर्क करके मुझे चुन लिया और इसराईल का बादशाह बना दिया है। उसी की ताज़ीम में मैं आइँदा भी नाचूँगा। 22 हाँ, मैं इससे भी ज़्यादा ज़लील होने के लिए तैयार हूँ। जहाँ तक लौडियों का ताल्लुक है, वह ज़सर मेरी इज़्जत करेंगी।”

23 ज़िति-ज़ी मीकल बेओलाद रही।

## 7

रब दाऊद से अबदी बादशाही का वादा करता है

1 दाऊद बादशाह सुकून से अपने महल में रहने लगा, क्योंकि रब ने इर्दगिर्द के दुश्मनों को उस पर हमला करने से रोक दिया था। 2 एक दिन दाऊद ने नातन नबी से बात की, “देखें, मैं यहाँ देवदार के महल में रहता हूँ जबकि अल्लाह का संदूक अब तक तंबू में पड़ा है। यह मुनासिब नहीं है!”

3 नातन ने बादशाह की हौसलाअफ़जाई की, “जो कुछ भी आप करना चाहते हैं वह करें। रब आपके साथ है।”

4 लेकिन उसी रात रब नातन से हमकलाम हुआ, 5 “मेरे खादिम दाऊद के पास जाकर उसे बता दे कि रब फ़रमाता है, ‘क्या तू मेरी रिहाइश के लिए एक मकान तामीर करेगा? हरगिज़ नहीं! 6 आज तक मैं किसी मकान में नहीं रहा। जब से मैं इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया उस वक़्त से मैं ख़ैमे में रहकर जगह बजगह फिरता रहा हूँ। 7 जिस दौरान मैं तमाम इसराईलियों के साथ इधर उधर फिरता रहा क्या मैंने इसराईल के उन राहनुमाओं से कभी इस नाते से शिकायत की जिन्हें मैंने अपनी क़ौम की गल्लाबानी करने का हुक़्म दिया था? क्या मैंने उनमें से किसी से कहा कि तुमने मेरे लिए देवदार का घर क्यों नहीं बनाया?’”

8 चुनौचे मेरे खादिम दाऊद को बता दे, ‘रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि मैं ही ने तुझे चरागाह में भेड़ों की गल्लाबानी करने से फ़ारिग करके अपनी क़ौम इसराईल का बादशाह बना दिया है। 9 जहाँ भी तूने क़दम रखा वहाँ मैं तेरे साथ रहा हूँ। तेरे देखते देखते मैंने तेरे तमाम दुश्मनों को हलाक कर दिया है। अब मैं तेरा नाम सरफ़राज़ कर दूँगा, वह दुनिया के सबसे अज़ीम आदिमियों के नामों के बराबर ही होगा। 10 और मैं अपनी क़ौम इसराईल के लिए एक वतन मुहैया करूँगा, पौदे की तरह उन्हें यों लगा दूँगा कि वह जड़ पकड़कर महफूज़ रहेंगे और कभी बेचैन नहीं होंगे। बेदीन क़ौमों उन्हें उस तरह नहीं दबाएँगी जिस तरह माज़ी में किया करती थी, 11 उस वक़्त से जब मैं क़ौम पर काज़ी मुकर्रर करता था। मैं तेरे दुश्मनों को तुझसे दूर रखकर तुझे अमनो-अमान अता करूँगा। आज रब फ़रमाता है कि मैं ही तेरे लिए घर बनाऊँगा।

12 जब तू बूढ़ा होकर कूच कर जाएगा और अपने बापदादा के साथ आराम करेगा तो मैं तेरी जगह तेरे बेटों में से एक को तख़्त पर बिठा दूँगा। उस की बादशाही को मैं मज़बूत बना दूँगा। 13 वहीं मेरे नाम के लिए घर तामीर करेगा, और मैं उस की बादशाही का तख़्त अबद तक कायम रखूँगा। 14 मैं उसका बाप हूँगा, और वह मेरा बेटा होगा। जब कभी उससे गलती होगी तो मैं उसे यों छड़ी से सजा दूँगा जिस तरह इससानी बाप अपने बेटे की तरबियत करता है। 15 लेकिन मेरी नज़रे-करम कभी उससे नहीं हटेगी। उसके साथ मैं वह सुलूक नहीं करूँगा जो मैंने साऊल के साथ किया जब उसे तेरे सामने से हटा दिया। 16 तेरा घराना और तेरी बादशाही हमेशा मेरे हज़र कायम रहेगी, तेरा तख़्त हमेशा मज़बूत रहेगा।”

दाऊद की शक्रगुज़ारी

17 नातन ने दाऊद के पास जाकर उसे सब कुछ सुनाया जो रब ने उसे रोया में बताया था। 18 तब दाऊद अहद के संदूक के पास गया और रब के हज़र बैठकर दुआ करने लगा,

“ऐ रब कादिरे-मुतलक, मैं कौन हूँ और मेरा खानदान क्या हैसियत रखता है कि तूने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है? 19 और अब ऐ रब कादिरे-मुतलक, तू मुझे और भी ज़्यादा अता करने को है, क्योंकि तूने अपने खादिम के घराने के मुस्तक़बिल के

बारे में भी वादा किया है। क्या तू आम तौर पर इनसान के साथ ऐसा सुलुक करता है? हरगिज नहीं! 20 लेकिन मैं मज़ीद क्या कहूँ? ऐ रब कादिरे-मुतलक, तू तो अपने खादिम को जानता है। 21 तूने अपने फरमान की खातिर और अपनी मरज़ी के मुताबिक यह अज़ीम काम करके अपने खादिम को इतला दी है।

22 ऐ रब कादिरे-मुतलक, तू कितना अज़ीम है! तूज़ जैसा कोई नहीं है। हमने अपने कानों से सुन लिया है कि तेरे सिवा कोई और खुदा नहीं है। 23 दुनिया में कौन-सी क्रौम तेरी उम्मत इसराईल की मानिद है? तूने इसी एक क्रौम का फिघा देकर उसे गुलामी से छुड़ाया और अपनी क्रौम बना लिया। तूने इसराईल के वास्ते बड़े और हैबतनाक काम करके अपने नाम की शोहरत फैला दी। हमें मिसर से रिहा करके तूने कौमों और उनके देवताओं को हमारे आगे से निकाल दिया। 24 ऐ रब, तू इसराईल को हमेशा के लिए अपनी क्रौम बनाकर उनका खुदा बन गया है। 25 चुनौचे ऐ रब कादिरे-मुतलक, जो बात तूने अपने खादिम और उसके घराने के बारे में की है उसे अबद तक कायम रख और अपना वादा पूरा कर। 26 तब तेरा नाम अबद तक मशहर रहेगा और लोग तसलीम करेंगे कि रब्बुल-अफवाज इसराईल का खुदा है। फिर तेरे खादिम दाऊद का घराना भी तेरे हुज़ूर कायम रहेगा।

27 ऐ रब्बुल-अफवाज, इसराईल के खुदा, तूने अपने खादिम के कान को इस बात के लिए खोल दिया है। तू ही ने फरमाया, 'मैं तेरे लिए घर तामीर करूँगा।' सिर्फ़ इसी लिए तेरे खादिम ने यों तूझसे दुआ करने की ज़रत की है। 28 ऐ रब कादिरे-मुतलक, तू ही खुदा है, और तेरी ही बातों पर एतमाद किया जा सकता है। तूने अपने खादिम से इन अच्छी चीज़ों का वादा किया है। 29 अब अपने खादिम के घराने को बरकत देने पर राजी हो ताकि वह हमेशा तक तेरे हुज़ूर कायम रहे। क्योंकि तू ही ने यह फरमाया है, और चूँकि तू ऐ रब कादिरे-मुतलक ने बरकत दी है इसलिए तेरे खादिम का घराना अबद तक मुबारक रहेगा।”

## 8

### दाऊद की जंगें

1 फिर ऐसा वक़्त आया कि दाऊद ने फिलिस्तियों को शिकस्त देकर उन्हें अपने ताबे कर लिया और हुकूमत की बागडोर उनके हाथों से छीन ली।

2 उसने मोआबियों पर भी फ़तह पाई। मोआबी कैदियों की क़तार बनाकर उसने उन्हें ज़मीन पर लिटा दिया। फिर रस्सी का टुकड़ा लेकर उसने क़तार का नाप लिया। जितने लोग रस्सी की लंबाई में आ गए वह एक गुरोह बन गए। यों दाऊद ने लोगों को गुरोहों में तक्रसीम किया। फिर उसने गुरोहों के तीन हिस्से बनाकर दो हिस्सों के सर कलम किए और एक हिस्से को जिंदा छोड़ दिया। लेकिन जितने कैदी छूट गए वह दाऊद के ताबे रहकर उसे खराज देते रहे।

3 दाऊद ने शिमाली शाम के शहर जोबाह के बादशाह हददअज़र बिन रहोब को भी हरा दिया जब हददअज़र दरियाए-फुरात पर दूबारा काबू पाने के लिए निकल आया था। 4 दाऊद ने 1,700 घुड़सवारों और 20,000 प्यादा सिपाहियों को गिरफ़्तार कर लिया। रथों के 100 घोड़ों को उसने अपने लिए महफूज़ रखा, जबकि बाकियों की उसने कोंचें काट दीं ताकि वह आइंदा जंग के लिए इस्तेमाल न हो सकें।

5 जब दमिशक के अरामी बाशिदे जोबाह के बादशाह हददअज़र की मदद करने आए तो दाऊद ने उनके 22,000 अफ़राद हलाक कर दिए। 6 फिर उसने दमिशक के इलाके में अपनी फ़ौजी चौकियाँ कायम की। अरामी उसके ताबे हो गए और उसे खराज देते रहे। जहाँ भी दाऊद गया वहाँ रब ने उसे कामयाबी बख़शी। 7 सोने की जो ढालें हददअज़र के अफ़सरों के पास थीं उन्हें दाऊद यरूशलम ले गया। 8 हददअज़र के दो शहरों बताह और बेरोती से उसने कसरत का पीतल छीन लिया।

9 जब हमात के बादशाह तूई को इतला मिली कि दाऊद ने हददअज़र की पूरी फ़ौज पर फ़तह पाई है 10 तो उसने अपने बेटे यूराम को दाऊद के पास भेजा ताकि उसे सलाम कहे। यूराम ने दाऊद को हददअज़र पर फ़तह के लिए मुबारकबाद दी, क्योंकि हददअज़र तूई का दुश्मन था, और उनके दरमियान जंग रही थी। यूराम ने दाऊद को सोने, चाँदी और पीतल के तोहफे भी पेश किए। 11 दाऊद ने यह चीज़ें रब के लिए मखसूस कर दीं। जहाँ भी वह दूसरी कौमों पर गालिब आया वहाँ की सोना-चाँदी उसने रब के लिए मखसूस कर दी। 12 यों अदोम, मोआब, अम्मोन, फिलिस्तिया, अमालीक और जोबाह के बादशाह हददअज़र बिन रहोब की सोना-चाँदी रब को पेश की गईं।

13 जब दाऊद ने नमक की वादी में अदोमियों पर फ़तह पाई तो उस की शोहरत मज़ीद फैल गई। उस जंग में दुश्मन के 18,000 अफ़राद हलाक हुए। 14 दाऊद ने अदोम के पूरे मुल्क में अपनी फ़ौजी चौकियाँ कायम की, और तमाम अदोमी दाऊद के ताबे हो गए। दाऊद जहाँ भी जाता रब उस की मदद करके उसे फ़तह बख़शाता।

### दाऊद के आला अफसर

15 जितनी देर दाऊद पूरे इसराईल पर हुकूमत करता रहा उतनी देर तक उसने ध्यान दिया कि क्रौम के हर एक शाख़ को इनसाफ़ मिल जाए। 16 योआब बिन ज़रूयाह फ़ौज पर मुकर्रर था। यह्सफ़त बिन अखीलूद बादशाह का मुशरि-खास था।



17 सदोक बिन अखीतब और अखीमलिक बिन अबियातर इमाम थे। सिरायाह मीरमुंशी था। 18 बिनायाह बिन यहोयदा दाऊद के खास दस्ते बनाम करेतीओ-फलेती का कप्तान था। दाऊद के बेटे इमाम थे।

## 9

दाऊद यूतनन के बेटे पर मेहरबानी करता है

1 एक दिन दाऊद पछने लगा, “क्या साऊल के खानदान का कोई फरद बच गया है? मैं यूतनन की खातिर उस पर अपनी मेहरबानी का इज़हार करना चाहता हूँ।”

2 एक आदमी को बुलाया गया जो साऊल के घराने का मुलाज़िम था। उसका नाम जीबा था। दाऊद ने सवाल किया, “क्या आप जीबा हैं?” जीबा ने जवाब दिया, “जी, आपका खादिम हाज़िर है।” 3 बादशाह ने दरियाफ्त किया, “क्या साऊल के खानदान का कोई फरद जिंदा रह गया है? मैं उस पर अल्लाह की मेहरबानी का इज़हार करना चाहता हूँ।” जीबा ने कहा, “यूतनन का एक बेटा अब तक जिंदा है। वह दोनों टोंगों से मफ़लूज़ है।” 4 दाऊद ने पूछा, “वह कहाँ है?” जीबा ने जवाब दिया, “वह लो-दिबार में मकीर बिन अम्मियेल के हों रहता है।” 5 दाऊद ने उसे फ़ौरन दरबार में बुला लिया।

6 यूतनन के जिस बेटे का ज़िक्र जीबा ने किया वह मिफ़ीबोसत था। जब उसे दाऊद के सामने लाया गया तो उसने मुँह के बल झुककर उस की इज़्जत की। दाऊद ने कहा, “मिफ़ीबोसत!” उसने जवाब दिया, “जी, आपका खादिम हाज़िर है।”

7 दाऊद बोला, “डरें मत। आज मैं आपके बाप यूतनन के साथ किया हुआ वादा पूरा करके आप पर अपनी मेहरबानी का इज़हार करना चाहता हूँ। अब सुनें! मैं आपको आपके दादा साऊल की तमाम ज़मीनें वापस कर देता हूँ। इसके अलावा मैं चाहता हूँ कि आप रोज़ाना मेरे साथ खाना खाया करें।”

8 मिफ़ीबोसत ने दुबारा झुककर बादशाह की ताज़ीम की, “मैं कौन हूँ कि आप मुझ जैसे मुरदा कुते पर ध्यान देकर ऐसी मेहरबानी फरमाएँ!” 9 दाऊद ने साऊल के पुराने मुलाज़िम जीबा को बुलाकर उसे हिदायत दी, “मैंने आपके मालिक के पोते को साऊल और उसके खानदान की तमाम मिलकियत दे दी है। 10 अब आपकी जिम्मादारी यह है कि आप अपने बेटों और नौकरों के साथ उसके खेतों को सँभालें ताकि उसका खानदान ज़मीनों की पैदावार से गुज़ारा कर सके। लेकिन मिफ़ीबोसत खुद यहाँ रहकर मेरे बेटों की तरह मेरे साथ खाना खाया करेगा।” (जीबा के 15 बेटे और 20 नौकर थे)।

11 जीबा ने जवाब दिया, “मैं आपकी खिदमत में हाज़िर हूँ। जो भी हुक्म आप देंगे मैं करने के लिए तैयार हूँ।” 12-13 उस दिन से जीबा के घराने के तमाम अफ़राद मिफ़ीबोसत के मुलाज़िम हो गए। मिफ़ीबोसत खुद जो दोनों टोंगों से मफ़लूज़ था यस्त्रालम में रिहाइशपज़ीर हुआ और रोज़ाना दाऊद बादशाह के साथ खाना खाता रहा। उसका एक छोटा बेटा था जिसका नाम मीका था।

## 10

अम्मोनी दाऊद की बेइज़्जती करते हैं

1 कुछ देर के बाद अम्मोनियों का बादशाह फ़ौत हुआ, और उसका बेटा हनून तख़्तनशीन हुआ। 2 दाऊद ने सोचा, “नाहस ने हमेशा मुझ पर मेहरबानी की थी, इसलिए अब मैं भी उसके बेटे हनून पर मेहरबानी करूँगा।” उसने बाप की वफ़ात का अफ़सोस करने के लिए हनून के पास वफ़द भेजा।

लेकिन जब दाऊद के सफ़ीर अम्मोनियों के दरबार में पहुँच गए 3 तो उस मुल्क के बुर्ज़ा हनून बादशाह के कान में मनफ़ी बातें भरने लगे, “क्या दाऊद ने इन आदमियों को वाकई सिर्फ़ इसलिए भेजा है कि वह अफ़सोस करके आपके बाप का एहतारम करें? हरगिज़ नहीं! यह सिर्फ़ बहाना है। असल में यह जासूस हैं जो हमारे दाख़ल-हुक्ूमत के बारे में मालूमात हासिल करना चाहते हैं ताकि उस पर कब्ज़ा कर सकें।” 4 चुनौचे हनून ने दाऊद के आदमियों को पकड़वाकर उनकी दाढ़ियों का आधा हिस्सा मुँडवा दिया और उनके लिबास को कमर से लेकर पाँव तक काटकर उतरवाया। इसी हालत में बादशाह ने उन्हें फ़ारिग कर दिया।

5 जब दाऊद को इसकी ख़बर मिली तो उसने अपने कासिदों को उनसे मिलने के लिए भेजा ताकि उन्हें बताएँ, “यरीह में उस वक़्त तक ठहरे रहें जब तक आपकी दाढ़ियाँ दुबारा बहाल न हो जाएँ।” क्योंकि वह अपनी दाढ़ियों की वजह से बड़ी शरमिंदगी महसूस कर रहे थे।

अम्मोनियों से जंग

6 अम्मोनियों को ख़ूब मालूम था कि इस हरकत से हम दाऊद के दुश्मन बन गए हैं। इसलिए उन्होंने किराए पर कई जगहों से फ़ौजी तलब किए। बैत-रहोब और ज़ोबाह के 20,000 अरामी प्यादा सिपाही, माका का बादशाह 1,000 फ़ौजियों समेत और मुल्के-तोब के 12,000 सिपाही उनकी मदद करने आए। 7 जब दाऊद को इसका इल्म हुआ तो उसने योआब

को पूरी फौज के साथ उनका मुकाबला करने के लिए भेज दिया।<sup>8</sup> अम्मोनी अपने दास्त-हुकूमत रब्बा से निकलकर शहर के दरवाजे के सामने ही सफआरा हुए जबकि उनके अरामी इतहादी जोबाह और रहोब मुल्के-तोब और माका के मर्दा समेत कुछ फासले पर खुले मैदान में खड़े हो गए।

<sup>9</sup> जब योआब ने जान लिया कि सामने और पीछे दोनों तरफ से हमले का खतरा है तो उसने अपनी फौज को दो हिस्सों में तकसीम कर दिया। सबसे अच्छे फौजियों के साथ वह खुद शाम के सिपाहियों से लड़ने के लिए तैयार हुआ।<sup>10</sup> बाकी आदमियों को उसने अपने भाई अबीशै के हवाले कर दिया ताकि वह अम्मोनियों से लड़ें।<sup>11</sup> एक दूसरे से अलग होने से पहले योआब ने अबीशै से कहा, “अगर शाम के फौजी मुझ पर गालिब आने लेंगे तो मेरे पास आकर मेरी मदद करना। लेकिन अगर आप अम्मोनियों पर काबू न पा सकें तो मैं आकर आपकी मदद करूँगा।<sup>12</sup> हौसला रखें! हम दिलेरी से अपनी कौम और अपने खुदा के शहरों के लिए लड़ें। और रब वह कुछ होने दे जो उस की नजर में ठीक है।”

<sup>13</sup> योआब ने अपनी फौज के साथ शाम के फौजियों पर हमला किया तो वह उसके सामने से भागने लगे।<sup>14</sup> यह देखकर अम्मोनी अबीशै से फरार होकर शहर में दाखिल हुए। फिर योआब अम्मोनियों से लड़ने से बाज आया और यरूशलम वापस चला गया।

### शाम के खिलाफ जंग

<sup>15</sup> जब शाम के फौजियों को शिकस्त की बेइज्जती का एहसास हुआ तो वह दुबारा जमा हो गए।<sup>16</sup> हददअजर ने दरियाए-फुरात के पार मसोपुतामिया में आबाद अरामियों को बुलाया ताकि वह उस की मदद करें। फिर सब हिलाम पहुँच गए। हददअजर की फौज पर मुकरर अफसर सोबक उनकी राहनुमाई कर रहा था।<sup>17</sup> जब दाऊद को खबर मिली तो उसने इसराईल के तमाम लड़ने के काबिल आदमियों को जमा किया और दरियाए-यरदन को पार करके हिलाम पहुँच गया। शाम के फौजी सफआरा होकर इसराईलियों का मुकाबला करने लगे।<sup>18</sup> लेकिन उन्हें दुबारा शिकस्त मानकर फरार होना पड़ा। इस दफा उनके 700 रथबानों के अलावा 40,000 प्यादा सिपाही हलाक हुए। दाऊद ने फौज के कमांडर सोबक को इतना ज़खमी कर दिया कि वह मैदान-जंग में हलाक हो गया।

<sup>19</sup> जो अरामी बादशाह पहले हददअजर के ताबे थे उन्होंने अब हार मानकर इसराईलियों से सुलह कर ली और उनके ताबे हो गए। उस वक़्त से अरामियों ने अम्मोनियों की मदद करने की फिर ज़ुत न की।

## 11

### दाऊद और बत-सबा

<sup>1</sup> बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त जब बादशाह जंग के लिए निकलते हैं। दाऊद बादशाह ने भी अपने फौजियों को लड़ने के लिए भेज दिया। योआब की राहनुमाई में उसके अफसर और पूरी फौज अम्मोनियों से लड़ने के लिए रवाना हुए। वह दुश्मन को तबाह करके दास्त-हुकूमत रब्बा का मुहासरा करने लगे। दाऊद खुद यरूशलम में रहा।

<sup>2</sup> एक दिन वह दोपहर के वक़्त सो गया। जब शाम के वक़्त जाग उठा तो महल की छत पर टहलने लगा। अचानक उस की नजर एक औरत पर पड़ी जो अपने सहन में नहा रही थी। औरत निहायत खूबसूरत थी।<sup>3</sup> दाऊद ने किसी को उसके बारे में मालूमता हासिल करने के लिए भेज दिया। वापस आकर उसने इतला दी, “औरत का नाम बत-सबा है। वह इलियाम की बेटी और ऊरियाह हिती की बीवी है।”<sup>4</sup> तब दाऊद ने कासिदों को बत-सबा के पास भेजा ताकि उसे महल में ले आएँ। औरत आई तो दाऊद उससे हमबिसतर हुआ। फिर बत-सबा अपने घर वापस चली गईं। (थोड़ी देर पहले उसने वह रस्म अदा की थी जिसका तकाज़ा शरीअत माहवारी के बाद करती है ताकि औरत दुबारा पाक-साफ हो जाए।)

<sup>5</sup> कुछ देर के बाद उसे मालूम हुआ कि मेरा पाँव भारी हो गया है। उसने दाऊद को इतला दी, “मेरा पाँव भारी हो गया है।”<sup>6</sup> यह सुनते ही दाऊद ने योआब को पैगाम भेजा, “ऊरियाह हिती को मेरे पास भेज दें।” योआब ने उसे भेज दिया।<sup>7</sup> जब ऊरियाह दरबार में पहुँचा तो दाऊद ने उससे योआब और फौज का हाल मालूम किया और पूछा कि जंग किस तरह चल रही है?

<sup>8</sup> फिर उसने ऊरियाह को बताया, “अब अपने घर जाँ और पाँव धोकर आराम करें।” ऊरियाह अभी महल से दूर नहीं गया था कि एक मुलाज़िम ने उसके पीछे भागकर उसे बादशाह की तरफ से तोहफा दिया।<sup>9</sup> लेकिन ऊरियाह अपने घर न गया बल्कि रात के लिए बादशाह के मुहाफिज़ों के साथ ठहरा रहा जो महल के दरवाजे के पास सोते थे।

<sup>10</sup> दाऊद को इस बात का पता चला तो उसने अगले दिन उसे दुबारा बुलाया। उसने पूछा, “क्या बात है? आप तो बड़ी दूर से आए हैं। आप अपने घर क्यों न गए?”<sup>11</sup> ऊरियाह ने जवाब दिया, “अहद का संदूक और इसराईल और यहदाह के फौजी झोंपड़ियों में रह रहे हैं। योआब और बादशाह के अफसर भी खुले मैदान में ठहरे हुए हैं तो क्या मुनासिब है कि मैं अपने

घर जाकर आराम से खाऊँ पियूँ और अपनी बीवी से हमबिसतर हो जाऊँ? हरगिज नहीं! आपकी हयात की कसम, मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा।”

12 दाऊद ने उसे कहा, “एक और दिन यहाँ ठहरें। कल मैं आपको वापस जाने दूँगा।” चुनौचे ऊरियाह एक और दिन यरूशलम में ठहरा रहा।

13 शाम के वक़्त दाऊद ने उसे खाने की दावत दी। उसने उसे इतनी मै पिलाई कि ऊरियाह नशे में धुत हो गया, लेकिन इस मरतबा भी वह अपने घर न गया बल्कि दुबारा महल में मुहाफिज़ों के साथ सो गया।

दाऊद ऊरियाह को कत्ल करवाता है

14 अगले दिन सुबह दाऊद ने योआब को खत लिखकर ऊरियाह के हाथ भेज दिया। 15 उसमें लिखा था, “ऊरियाह को सबसे अगली सफ में खड़ा करें, जहाँ लड़ाई सबसे सख्त होती है। फिर अचानक पीछे की तरफ हटकर उसे छोड़ दें ताकि दुश्मन उसे मार दे।”

16 यह पढ़कर योआब ने ऊरियाह को एक ऐसी जगह पर खड़ा किया जिसके बारे में उसे इल्म था कि दुश्मन के सबसे ज़बरदस्त फौजी वहाँ लड़ते हैं। 17 जब अम्मोनियों ने शहर से निकलकर उन पर हमला किया तो कुछ इसराइली शहीद हुए। ऊरियाह हिती भी उनमें शामिल था।

18 योआब ने लड़ाई की पूरी रिपोर्ट भेज दी। 19 दाऊद को यह पैगाम पहुँचानेवाले को उसने बताया, “जब आप बादशाह को तफसील से लड़ाई का सारा सिलसिला सुनाएँगे 20 तो हो सकता है वह गुस्से होकर कहे, ‘आप शहर के इतने करीब क्यों गए? क्या आपको मालूम न था कि दुश्मन फसील से तीर चलाएँगे? 21 क्या आपको याद नहीं कि कदीम ज़माने में जिदौन के बेटे अबीमलिक के साथ क्या हुआ? तैबिज शहर में एक औरत ही ने उसे मार डाला। और वजह यह थी कि वह किले के इतने करीब आ गया था कि औरत दीवार पर से चक्की का ऊपर का पाट उस पर फेंक सकी। शहर की फसील के इस क़दर करीब लड़ने की क्या ज़रूरत थी?’ अगर बादशाह आप पर ऐसे इलज़ामात लगाएँ तो जवाब में बस इतना ही कह देना, ‘ऊरियाह हिती भी मारा गया है।’”

22 कासिद रवाना हुआ। जब यरूशलम पहुँचा तो उसने दाऊद को योआब का पूरा पैगाम सुना दिया, 23 “दुश्मन हमसे ज़्यादा ताकतवर थे। वह शहर से निकलकर खुले मैदान में हम पर टूट पड़े। लेकिन हमने उनका सामना यों किया कि वह पीछे हट गए, बल्कि हमने उनका ताक़त शहर के दरवाज़े तक किया। 24 लेकिन अफ़सोस कि फिर कुछ तीरअंदाज़ हम पर फसील पर से तीर बरसाने लगे। आपके कुछ खादिम खेत आए और ऊरियाह हिती भी उनमें शामिल है।” 25 दाऊद ने जवाब दिया, “योआब को बता देना कि यह मामला आपको हिम्मत हारने न दे। जंग तो ऐसी ही होती है। कभी कोई यहाँ तलवार का लुक़मा हो जाता है, कभी वहाँ। पूरे अज़म के साथ शहर से जंग जारी रखकर उसे तबाह कर दें। यह कहकर योआब की हौसलाअफ़ज़ाई करें।”

26 जब बत-सबा को इतला मिली कि ऊरियाह नहीं रहा तो उसने उसका मातम किया। 27 मातम का वक़्त पूरा हुआ तो दाऊद ने उसे अपने घर बुलाकर उससे शादी कर ली। फिर उसके बेटा पैदा हुआ।

लेकिन दाऊद की यह हरकत रब को निहायत बुरी लगी।

## 12

नातन दाऊद को मुज़रिम ठहराता है

1 रब ने नातन नबी को दाऊद के पास भेज दिया। बादशाह के पास पहुँचकर वह कहने लगा, “किसी शहर में दो आदमी रहते थे। एक अमीर था, दूसरा गरीब। 2 अमीर की बहुत भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे, 3 लेकिन गरीब के पास कुछ नहीं था, सिर्फ़ भेड़ की नन्ही-सी बच्ची जो उसने ख़रीद रखी थी। गरीब उस की परवरिश करता रहा, और वह घर में उसके बच्चों के साथ साथ बड़ी होती गई। वह उस की प्लेट से खाती, उसके प्याले से पीती और रात को उसके बाज़ुओं में सो जाती। गरज़ भेड़ गरीब के लिए बेटी की-सी हैसियत रखती थी। 4 एक दिन अमीर के हों मेहमान आया। जब उसके लिए खाना पकाना था तो अमीर का दिल नहीं करता था कि अपने रेवड़ में से किसी जानवर को ज़बह करे, इसलिए उसने गरीब आदमी से उस की नन्ही-सी भेड़ लेकर उसे मेहमान के लिए तैयार किया।”

5 यह सुनकर दाऊद को बड़ा गुस्सा आया। वह पुकारा, “रब की हयात की कसम, जिस आदमी ने यह किया वह सज़ाए-मौत के लायक है। 6 लाज़िम है कि वह भेड़ की बच्ची के एवज़ गरीब को भेड़ के चार बच्चे दे। यही उस की मुनासिब सज़ा है, क्योंकि उसने ऐसी हरकत करके गरीब पर तरस न खाया।”

7 नातन ने दाऊद से कहा, “आप ही वह आदमी हैं! रब इसराइल का खुदा फ़रमाता है, ‘मैंने तुझे मसह करके इसराइल का बादशाह बना दिया, और मैं ही ने तुझे साऊल से महफूज़ रखा। 8 साऊल का धराना उस की बीवियों समेत मैंने तुझे दे

दिया। हाँ, पूरा इसराईल और यहदाह भी तेरे तहत आ गए हैं। और अगर यह तेरे लिए कम होता तो मैं तुझे मज्जीद देने के लिए भी तैयार होता।<sup>9</sup> अब मुझे बता कि तूने मेरी मरजी को हकीर जानकर ऐसी हरकत क्यों की है जिससे मुझे नफरत है? तूने ऊरियाह हिली को कत्ल करवा के उस की बीवी को छीन लिया है। हाँ, तू कातिल है, क्योंकि तूने हुक्म दिया कि ऊरियाह को अम्मोनियों से लडते लडते मरवाना है।<sup>10</sup> चूँकि तूने मुझे हकीर जानकर ऊरियाह हिली की बीवी को उससे छीन लिया इसलिए आईदा तलवार तेरे घराने से नहीं हटेगी।’

11 रब फरमाता है, ‘मैं होने दूँगा कि तेरे अपने खानदान में से मुसीबत तुझ पर आएगी। तेरे देखते देखते मैं तेरी बीवियों को तुझसे छीनकर तेरे करीब के आदमी के हवाले कर दूँगा, और वह अलानिया उनसे हमबिसतर होगा।<sup>12</sup> तूने चुपके से गुनाह किया, लेकिन जो कुछ मैं जवाब में होने दूँगा वह अलानिया और पूरे इसराईल के देखते देखते होगा।’

13 तब दाऊद ने इकरार किया, ‘मैंने रब का गुनाह किया है।’ नातन ने जवाब दिया, ‘रब ने आपको मुआफ़ कर दिया है और आप नहीं मरेगे।<sup>14</sup> लेकिन इस हरकत से आपने रब के दुश्मनों को कुफ़र बकने का मौका फ़राहम किया है, इसलिए बत-सबा से होनेवाला बेटा मर जाएगा।’

15 तब नातन अपने घर चला गया।

### दाऊद का बेटा मर जाता है

फिर रब ने बत-सबा के बेटे को छू दिया, और वह सख्त बीमार हो गया।<sup>16</sup> दाऊद ने अल्लाह से इलतमास की कि बच्चे को बचने दे। रोज़ा रखकर वह रात के वक़्त नगे फ़र्श पर सोने लगा।<sup>17</sup> घर के बुजुर्ग उसके इर्दगिर्द खड़े कोशिश करते रहे कि वह फ़र्श से उठ जाए, लेकिन बेफ़ायदा। वह उनके साथ खाने के लिए भी तैयार नहीं था।

18 सातवें दिन बेटा फ़ौत हो गया। दाऊद के मुलाज़िमों ने उसे खबर पहुँचाने की ज़रूरत न की, क्योंकि उन्होंने सोचा, ‘जब बच्चा अभी ज़िंदा था तो हमने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन उसने हमारी एक भी न सुनी। अब अगर बच्चे की मौत की खबर दें तो खतरा है कि वह कोई नुक़सानदेह कदम उठाए।’

19 लेकिन दाऊद ने देखा कि मुलाज़िम धीमी आवाज़ में एक दूसरे से बात कर रहे हैं। उसने पूछा, ‘क्या बेटा मर गया है?’ उन्होंने जवाब दिया, ‘जी, वह मर गया है।’

20 यह सुनकर दाऊद फ़र्श पर से उठ गया। वह नहाया और जिस्म को खुशबूदार तेल से मलकर साफ़ कपड़े पहन लिए। फिर उसने रब के घर में जाकर उस की परस्तिश की। इसके बाद वह महल में वापस गया और खाना मँगवाकर खाया।<sup>21</sup> उसके मुलाज़िम हैरान हुए और बोले, ‘जब बच्चा ज़िंदा था तो आप रोज़ा रखकर रोते रहे। अब बच्चा जान-बूझकर हो गया है तो आप उठकर दुबारा खाना खा रहे हैं। क्या वजह है?’<sup>22</sup> दाऊद ने जवाब दिया, ‘जब तक बच्चा ज़िंदा था तो मैं रोज़ा रखकर रोता रहा। खयाल यह था कि शायद रब मुझ पर रहम करके उसे ज़िंदा छोड़ दे।<sup>23</sup> लेकिन जब वह कूच कर गया है तो अब रोज़ा रखने का क्या फ़ायदा? क्या मैं इससे उसे वापस ला सकता हूँ? हरगिज़ नहीं! एक दिन मैं खुद ही उसके पास पहुँचूँगा। लेकिन उसका यहाँ मेरे पास वापस आना नामुमकिन है।’

24 फिर दाऊद ने अपनी बीवी बत-सबा के पास जाकर उसे तसल्ली दी और उससे हमबिसतर हुआ। तब उसके एक और बेटा पैदा हुआ। दाऊद ने उसका नाम सुलेमान यानी अमनपसंद रखा। यह बच्चा रब को प्यारा था,<sup>25</sup> इसलिए उसने नातन नबी की मारिफ़त इतला दी कि उसका नाम यदीदियाह यानी ‘रब को प्यारा’ रखा जाए।

### रब्बा शहर पर फ़तह

26 अब तक योआब अम्मोनी दास्त-हुक़मत रब्बा का मुहासरा किए हुए था। फिर वह शहर के एक हिस्से बनाम ‘शाही शहर’ पर क़ब्ज़ा करने में कामयाब हो गया।<sup>27</sup> उसने दाऊद को इतला दी, ‘मैंने रब्बा पर हमला करके उस जगह पर क़ब्ज़ा कर लिया है जहाँ पानी दस्तयाब है।<sup>28</sup> चुनौचे अब फ़ौज के बाकी अफ़राद को लाकर खुद शहर पर क़ब्ज़ा कर लें। वरना लोग समझेगे कि मैं ही शहर का फ़ातेह हूँ।’

29 चुनौचे दाऊद फ़ौज के बाकी अफ़राद को लेकर रब्बा पहुँचा। जब शहर पर हमला किया तो वह उसके क़ब्ज़े में आ गया।<sup>30</sup> दाऊद ने हनून बादशाह का ताज उसके सर से उतारकर अपने सर पर रख लिया। सोने के इस ताज का वजन 34 किलोग्राम था, और उसमें एक बेशक़ीमत जौहर जड़ा हुआ था। दाऊद ने शहर से बहुत-सा लूटा हुआ माल लेकर<sup>31</sup> उसके बाशिंदों को गुलाम बना लिया। उन्हें पत्थर काटने की आरियाँ, लोहे की कुदालें और कुल्हाड़ियाँ दी गईं ताकि वह मजदूरी करें और भट्टों पर काम करें। यही सुलूक बाकी अम्मोनी शहरों के बाशिंदों के साथ भी किया गया।

जंग के इख़िताम पर दाऊद पूरी फ़ौज के साथ यस्शालम लौट आया।

## 13

## तमर की इसमतदरी

1 दाऊद के बेटे अबीसलूम की खूबसूरत बहन थी जिसका नाम तमर था। उसका सौतेला भाई अमनोन तमर से शदीद मुहब्बत करने लगा। 2 वह तमर को इतनी शिद्दत से चाहने लगा कि रंजिश के बाइस बीमार हो गया, क्योंकि तमर कुँवारी थी, और अमनोन को उसके करीब आने का कोई रास्ता नज़र न आया।

3 अमनोन का एक दोस्त था जिसका नाम यूनदब था। वह दाऊद के भाई सिमआ का बेटा था और बड़ा जहीन था। 4 उसने अमनोन से पूछा, “बादशाह के बेटे, क्या मसला है? रोज़ बरोज़ आप ज़्यादा बुझे हुए नज़र आ रहे हैं। क्या आप मुझे नहीं बताएँगे कि बात क्या है?” अमनोन बोला, “मैं अबीसलूम की बहन तमर से शदीद मुहब्बत करता हूँ।” 5 यूनदब ने अपने दोस्त को मशवरा दिया, “बिस्तर पर लेट जाएँ और ऐसा जाहिर करें गोया बीमार हैं। जब आपके वालिद आपका हाल पूछने आएँगे तो उनसे दरखास्त करना, ‘मेरी बहन तमर आकर मुझे मरीजों का खाना खिलाए। वह मेरे सामने खाना तैयार करे ताकि मैं उसे देखकर उसके हाथ से खाना खाऊँ।’”

6 चुनौचे अमनोन ने बिस्तर पर लेटकर बीमार होने का बहाना किया। जब बादशाह उसका हाल पूछने आया तो अमनोन ने गुज़ारिश की, “मेरी बहन तमर मेरे पास आएँ और मेरे सामने मरीजों का खाना बनाकर मुझे अपने हाथ से खिलाए।”

7 दाऊद ने तमर को इतला दी, “आपका भाई अमनोन बीमार है। उसके पास जाकर उसके लिए मरीजों का खाना तैयार करें।” 8 तमर ने अमनोन के पास आकर उस की मौजूदगी में मैदा गूँधा और खाना तैयार करके पकाया। अमनोन बिस्तर पर लेटा उसे देखता रहा। 9 जब खाना पक गया तो तमर ने उसे अमनोन के पास लाकर पेश किया। लेकिन उसने खाने से इनकार कर दिया। उसने हुक्म दिया, “तमाम नौकर कमरे से बाहर निकल जाएँ!” जब सब चले गए 10 तो उसने तमर से कहा, “खाने को मेरे सोने के कमरे में ले आएँ ताकि मैं आपके हाथ से खा सकूँ।” तमर खाने को लेकर सोने के कमरे में अपने भाई के पास आई।

11 जब वह उसे खाना खिलाने लगी तो अमनोन ने उसे पकड़कर कहा, “आ मेरी बहन, मेरे साथ हमबिसतर हो!” 12 वह पुकारी, “नहीं, मेरे भाई! मेरी इसमतदरी न करें। ऐसा अमल इसराईल में मना है। ऐसी बेदीन हरकत मत करना! 13 और ऐसी बेहुरमती के बाद मैं कहाँ जाऊँ? जहाँ तक आपका ताल्लुक है इसराईल में आपकी बुरी तरह बदनामी हो जाएगी, और सब समझेंगे कि आप निहायत शरीर आदमी हैं। आप बादशाह से बात क्यों नहीं करते? यकीनन वह आपको मुझसे शादी करने से नहीं रोकेंगे।” 14 लेकिन अमनोन ने उस की न सुनी बल्कि उसे पकड़कर उस की इसमतदरी की।

15 लेकिन फिर अचानक उस की मुहब्बत सख्त नफरत में बदल गई। पहले तो वह तमर से शदीद मुहब्बत करता था, लेकिन अब वह इससे बढ़कर उससे नफरत करने लगा। उसने हुक्म दिया, “उठ, दफा हो जा!” 16 तमर ने इलतमास की, “हाय, ऐसा मत करना। अगर आप मुझे निकालेंगे तो यह पहले गुनाह से ज़्यादा संगीन जुर्म होगा।” लेकिन अमनोन उस की सुनने के लिए तैयार न था। 17 उसने अपने नौकर को बुलाकर हुक्म दिया, “इस औरत को यहाँ से निकाल दो और इसके पीछे दरवाज़ा बंद करके कुंडी लगाओ!” 18 नौकर तमर को बाहर ले गया और फिर उसके पीछे दरवाज़ा बंद करके कुंडी लगा दी।

तमर एक लंबे बाजूओवाला फ्राक पहने हुए थी। बादशाह की तमाम कुँवारी बेटियाँ यही लिबास पहना करती थी। 19 बड़ी रंजिश के आलम में उसने अपना यह लिबास फाड़कर अपने सर पर राख डाल ली। फिर अपना हाथ सर पर रखकर वह चीखती-चिल्लाती वहाँ से चली गई। 20 जब घर पहुँच गई तो अबीसलूम ने उससे पूछा, “मेरी बहन, क्या अमनोन ने आपसे ज़्यादाती की है? अब खामोश हो जाएँ। वह तो आपका भाई है। इस मामले को हद से ज़्यादा अहमियत मत देना।” उस वक़्त से तमर अकेली ही अपने भाई अबीसलूम के घर में रही।

21 जब दाऊद को इस वाकिये की खबर मिली तो उसे सख्त गुस्सा आया। 22 अबीसलूम ने अमनोन से एक भी बात न की। न उसने उस पर कोई इलज़ाम लगाया, न कोई अच्छी बात की, क्योंकि तमर की इसमतदरी की वजह से वह अपने भाई से सख्त नफरत करने लगा था।

## अबीसलूम का इंतकाम

23 दो साल गुज़र गए। अबीसलूम की भेड़ें इफ़राईम के करीब के बाल-हसूर में लाई गईं ताकि उनके बाल कतरे जाएँ। इस मौक़े पर अबीसलूम ने बादशाह के तमाम बेटों को दावत दी कि वह वहाँ ज़ियाफ़त में शरीक हों। 24 वह दाऊद बादशाह के पास भी गया और कहा, “इन दिनों में मैं अपनी भेड़ों के बाल कतरा रहा हूँ। बादशाह और उनके अफ़सरों को भी मेरे साथ खुशी मनाने की दावत है।”

25 लेकिन दाऊद ने इनकार किया, “नहीं, मेरे बेटे, हम सब तो नहीं आ सकते। इतने लोग आपके लिए बोझ का बाइस बन जाएंगे।” अबीसलूम बहुत इसरार करता रहा, लेकिन दाऊद ने दावत को कबूल न किया बल्कि उसे बरकत देकर सख्त बनना चाहता था।

26 आखिरकार अबीसलूम ने दरखास्त की, “अगर आप हमारे साथ जा न सकें तो फिर कम अज़ कम मेरे भाई अमनोन को आने दें।” बादशाह ने पूछा, “खासकर अमनोन को क्यों?” 27 लेकिन अबीसलूम इतना जोर देता रहा कि दाऊद ने अमनोन को बाकी बेटों समेत बाल-हसूर जाने की इजाज़त दे दी।

28 ज़ियाफत से पहले अबीसलूम ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया, “सुने! जब अमनोन मै पी पीकर ख़ुश हो जाएगा तो मैं आपको अमनोन को मारने का हुक्म दूँगा। फिर आपको उसे मार डालना है। डरें मत, क्योंकि मैं ही ने आपको यह हुक्म दिया है। मज़बूत और दिलेर हों!”

29 मुलाज़िमों ने ऐसा ही किया। उन्होंने अमनोन को मार डाला। यह देखकर बादशाह के दूसरे बेटे उठकर अपने खच्चरों पर सवार हुए और भाग गए। 30 वह अभी रास्ते में ही थे कि अफवाह दाऊद तक पहुँची, “अबीसलूम ने आपके तमाम बेटों को कत्ल कर दिया है। एक भी नहीं बचा।”

31 बादशाह उठा और अपने कपड़े फाड़कर फ़र्श पर लेट गया। उसके दरबारी भी दुःख में अपने कपड़े फाड़ फाड़कर उसके पास खड़े रहे। 32 फिर दाऊद का भतीजा यूनदब बोल उठा, “मेरे आका, आप न सोचें कि उन्होंने तमाम शहज़ादों को मार डाला है। सिर्फ अमनोन मर गया होगा, क्योंकि जब से उसने तमर की इसमतदरी की उस वक्त से अबीसलूम का यही इरादा था। 33 लिहाज़ा इस खबर को इतनी अहमियत न दें कि तमाम बेटे हलाक हुए हैं। सिर्फ अमनोन मर गया होगा।”

34 इतने में अबीसलूम फ़रार हो गया था। फिर यरूशलम की फ़सील पर खड़े पहरेदार ने अचानक देखा कि मगरिब से लोगों का बड़ा गुरोह शहर की तरफ बढ़ रहा है। वह पहाड़ी के दामन में चले आ रहे थे। 35 तब यूनदब ने बादशाह से कहा, “लो, बादशाह के बेटे आ रहे हैं, जिस तरह आपके खादिम ने कहा था।” 36 वह अभी अपनी बात खत्म कर ही रहा था कि शहज़ादे अंदर आए और खूब रो पड़े। बादशाह और उसके अफ़सर भी रोने लगे।

37 दाऊद बड़ी देर तक अमनोन का मातम करता रहा। लेकिन अबीसलूम ने फ़रार होकर जसूर के बादशाह तलमी बिन अम्मीहद के पास पनाह ली जो उसका नाना था। 38 वहाँ वह तीन साल तक रहा। 39 फिर एक वक्त आ गया कि दाऊद का अमनोन के लिए दुःख दूर हो गया, और उसका अबीसलूम पर गुस्सा थम गया।

## 14

### योआब अबीसलूम की सिफ़ारिश करता है

1 योआब बिन ज़रूयाह को मालूम हुआ कि बादशाह अपने बेटे अबीसलूम को चाहता है, 2 इसलिए उसने तकुअ से एक दानिशमंद औरत को बुलाया। योआब ने उसे हिदायत दी, “मातम का रूप भरे जैसे आप देर से किसी का मातम कर रही हों। मातम के कपड़े पहनकर ख़ुशबूदार तेल मत लगाना। 3 बादशाह के पास जाकर उससे बात करें।” फिर योआब ने औरत को लफ़ज़ बलफ़ज़ वह कुछ सिखाया जो उसे बादशाह को बताना था।

4 दाऊद के दरबार में आकर औरत ने औंधे मुँह झुककर इलतमास की, “ऐ बादशाह, मेरी मदद करें!” 5 दाऊद ने दरियाफत किया, “क्या मसला है?” औरत ने जवाब दिया, “मैं बेवा हूँ, मेरा शौहर फ़ौत हो गया है। 6 और मेरे दो बेटे थे। एक दिन वह बाहर खेत में एक दूसरे से उलझ पड़े। और चूँकि कोई मौजूद नहीं था जो दोनों को अलग करता इसलिए एक ने दूसरे को मार डाला। 7 उस वक्त से पूरा कुंबा मेरे खिलाफ उठ खड़ा हुआ है। वह तकाज़ा करते हैं कि मैं अपने बेटे को उनके हवाले करूँ। वह कहते हैं, ‘उसने अपने भाई को मार दिया है, इसलिए हम बदले में उसे सज़ाए-मौत देंगे। इस तरह वारिस भी नहीं रहेगा।’ यों वह मेरी उम्मीद की आखिरी किरण को खत्म करना चाहते हैं। क्योंकि अगर मेरा यह बेटा भी मर जाए तो मेरे शौहर का नाम कायम नहीं रहेगा, और उसका खानदान सए-ज़मीन पर से मिट जाएगा।” 8 बादशाह ने औरत से कहा, “अपने घर चली जाएँ और फिकर न करें। मैं मामला हल कर दूँगा।”

9 लेकिन औरत ने गुज़ारिश की, “ऐ बादशाह, डर है कि लोग फिर भी मुझे मुजरिम ठहराएँ अगर मेरे बेटे को सज़ाए-मौत न दी जाए। आप पर तो वह इज़लाम नहीं लाएँगे।” 10 दाऊद ने इसरार किया, “अगर कोई आपको तंग करे तो उसे मेरे पास ले आएँ। फिर वह आइंदा आपको नहीं सताएगा!” 11 औरत को तसल्ली न हुई। उसने गुज़ारिश की, “ऐ बादशाह, बराहे-करम रब अपने ख़ुदा की कसम खाएँ कि आप किसी को भी मौत का बदला नहीं लेने देंगे। वरना नुक़सान में इज़ाफ़ा होगा और मेरा दूसरा बेटा भी हलाक हो जाएगा।” दाऊद ने जवाब दिया, “रब की हयात की कसम, आपके बेटे का एक बाल भी बीका नहीं होगा।”

12 फिर औरत असल बात पर आ गई, “मेरे आका, बराहे-करम अपनी खादिमा को एक और बात करने की इजाज़त दें।” बादशाह बोला, “करें बात।” 13 तब औरत ने कहा, “आप ख़ुद क्यों अल्लाह की क़ौम के खिलाफ ऐसा इरादा रखते हैं जिसे आपने अभी अभी ग़लत करार दिया है? आपने ख़ुद फ़रमाया है कि यह ठीक नहीं, और यों आपने अपने आपको ही मुजरिम ठहराया है। क्योंकि आपने अपने बेटे को रड़ करके उसे वापस आने नहीं दिया। 14 बेशक हम सबको किसी वक्त

मरना है। हम सब ज़मीन पर उंडेले गए पानी की मानिंद हैं जिसे ज़मीन ज़ब्त कर लेती है और जो दुबारा जमा नहीं किया जा सकता। लेकिन अल्लाह हमारी जिंदगी को बिलावजह मिटा नहीं देता बल्कि ऐसे मनसूबे तैयार रखता है जिनके ज़रीए मरदूद शख्स भी उसके पास वापस आ सके और उससे दूर न रहे। 15 ऐ बादशाह मेरे आका, मैं इस वक्त इसलिए आपके हुज़ूर आई हूँ कि मेरे लोग मुझे डराने की कोशिश कर रहे हैं। मैंने सोचा, मैं बादशाह से बात करने की ज़रूरत करूँगी, शायद वह मेरी सुनें 16 और मुझे उस आदमी से बचाएँ जो मुझे और मेरे बेटे को उस मौसूसी ज़मीन से महरूम रखना चाहता है जो अल्लाह ने हमें दे दी है। 17 खयाल यह था कि अगर बादशाह मामला हल कर दें तो फिर मुझे दुबारा सुकून मिलेगा, क्योंकि आप अच्छी और बुरी बातों का इन्तियाज़ करने में अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे हैं। रब आपका खुदा आपके साथ हो।”

18 यह सब कुछ सुनकर दाऊद बोल उठा, “अब मुझे एक बात बताएँ। इसका सहीह जवाब दें।” औरत ने जवाब दिया, “जी मेरे आका, बात फ़रमाइए।” दाऊद ने पूछा, “क्या योआब ने आपसे यह काम करवाया?” 19 औरत पुकारी, “बादशाह की हयात की कसम, जो कुछ भी मेरे आका फ़रमाते हैं वह निशाने पर लग जाता है, खाह बंदा बाई या दाई तरफ़ हटने की कोशिश क्यों न करे। जी हाँ, आपके खादिम योआब ने मुझे आपके हुज़ूर भेज दिया। उसने मुझे लफ़्ज बलफ़्ज सब कुछ बताया जो मुझे आपको अर्ज़ करना था, 20 क्योंकि वह आपको यह बात बराह-रास्त नहीं पेश करना चाहता था। लेकिन मेरे आका को अल्लाह के फ़रिश्ते की-सी हिक्मत हासिल है। जो कुछ भी मुल्क में वुक़््र में आता है उसका आपको पता चल जाता है।”

### अबीसलूम की वापसी

21 दाऊद ने योआब को बुलाकर उससे कहा, “ठीक है, मैं आपकी दरखास्त पूरी करूँगा। जाँ, मेरे बेटे अबीसलूम को वापस ले आएँ।” 22 योआब औधे मुँह झुक गया और बोला, “रब बादशाह को बरकत दे! मेरे आका, आज मुझे मालूम हुआ है कि मैं आपको मंज़ूर हूँ, क्योंकि आपने अपने खादिम की दरखास्त को पूरा किया है।” 23 योआब रवाना होकर जसूर चला गया और वहाँ से अबीसलूम को वापस लाया। 24 लेकिन जब वह यरूशलम पहुँचे तो बादशाह ने हुक्म दिया, “उसे अपने घर में रहने की इजाज़त है, लेकिन वह कभी मुझे नज़र न आए।” चुनौचे अबीसलूम अपने घर में दुबारा रहने लगा, लेकिन बादशाह से कभी मुलाकात न हो सकी।

25 पूरे इसराईल में अबीसलूम जैसा ख़ूबसूरत आदमी नहीं था। सब उस की खास तारीफ़ करते थे, क्योंकि सर से लेकर पाँव तक उसमें कोई नुक्स नज़र नहीं आता था। 26 साल में वह एक ही मरतबा अपने बाल कटवाता था, क्योंकि इतने में उसके बाल हद से ज्यादा वज़नी हो जाते थे। जब उन्हें तोला जाता तो उनका वज़न तकरीबन सवा दो किलोग्राम होता था। 27 अबीसलूम के तीन बेटे और एक बेटी थी। बेटी का नाम तमर था और वह निहायत खूबसूरत थी।

28 दो साल गुज़र गए, फिर भी अबीसलूम को बादशाह से मिलने की इजाज़त न मिली। 29 फिर उसने योआब को इतला भेजी कि वह उस की सिफ़ारिश करे। लेकिन योआब ने आने से इनकार किया। अबीसलूम ने उसे दुबारा बुलाने की कोशिश की, लेकिन इस बार भी योआब उसके पास न आया। 30 तब अबीसलूम ने अपने नौकरों को हुक्म दिया, “देखो, योआब का खेत मेरे खेत से मुलाहिक है, और उसमें जौ की फसल पक रही है। जाओ, उसे आग लगा दो!” नौकर गए और ऐसा ही किया।

31 जब खेत में आग लग गई तो योआब भागकर अबीसलूम के पास आया और शिकायत की, “आपके नौकरों ने मेरे खेत को आग क्यों लगाई है?” 32 अबीसलूम ने जवाब दिया, “देखें, आप नहीं आए जब मैंने आपको बुलाया। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप बादशाह के पास जाकर उनसे पूछें कि मुझे जसूर से क्यों लाया गया। बेहतर होता कि मैं वहीं रहता। अब बादशाह मुझसे मिलें या अगर वह अब तक मुझे कुसूरवार ठहराते हैं तो मुझे सजाए-मौत दें।”

33 योआब ने बादशाह के पास जाकर उसे यह पैगाम पहुँचाया। फिर दाऊद ने अपने बेटे को बुलाया। अबीसलूम अंदर आया और बादशाह के सामने औधे मुँह झुक गया। फिर बादशाह ने अबीसलूम को बोसा दिया।

## 15

### अबीसलूम की साज़िश

1 कुछ देर के बाद अबीसलूम ने रथ और घोड़े खरीदे और साथ साथ 50 मुहाफ़िज़ भी रखे जो उसके आगे आगे दौड़ें। 2 रोज़ाना वह सबह-सबरे उठकर शहर के दरवाज़े पर जाता। जब कभी कोई शख्स इस मकसद से शहर में दाख़िल होता कि बादशाह उसके किसी मुकदमे का फ़ैसला करे तो अबीसलूम उससे मुख़ातिब होकर पूछता, “आप किस शहर से हैं?” अगर वह जवाब देता, “मैं इसराईल के फ़ुलॉ क़बीले से हूँ,” 3 तो अबीसलूम कहता, “बेशक आप इस मुकदमे को जीत सकते हैं, लेकिन अफ़सोस! बादशाह का कोई भी बंदा इस पर सहीह ध्यान नहीं देगा।” 4 फिर वह बात जारी रखता, “काश मैं ही

मुल्क पर आला काजी मुकर्रर किया गया होता! फिर सब लोग अपने मुकदमे मुझे पेश कर सकते और मैं उनका सहीह इनसाफ कर देता।” 5 और अगर कोई करीब आकर अबीसलूम के सामने झुकने लगता तो वह उसे रोककर उसको गले लगाता और बोसा देता। 6 यह उसका उन तमाम इसराईलियों के साथ सुल्क था जो अपने मुकदमे बादशाह को पेश करने के लिए आते थे। यों उसने इसराईलियों के दिलों को अपनी तरफ मायल कर लिया।

7 यह सिलसिला चार साल जारी रहा। एक दिन अबीसलूम ने दाऊद से बात की, “मुझे हबस्न जाने की इजाजत दीजिए, क्योंकि मैंने रब से ऐसी मन्नत मानी है जिसके लिए जरूरी है कि हबस्न जाऊँ। 8 क्योंकि जब मैं जसूर में था तो मैंने कसम खाकर वादा किया था, ‘ऐ रब, अगर तू मुझे यरूशलम वापस लाए तो मैं हबस्न में तेरी परस्तिश करूँगा।’ 9 बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है। सलामती से जाएँ।”

10 लेकिन हबस्न पहुँचकर अबीसलूम ने खुफिया तौर पर अपने कासिदों को इसराईल के तमाम कबायली इलाकों में भेज दिया। जहाँ भी वह गए उन्होंने एलान किया, “ज्योंही नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दे आप सबको कहना है, ‘अबीसलूम हबस्न में बादशाह बन गया है!’” 11 अबीसलूम के साथ 200 मेहमान यरूशलम से हबस्न आए थे। वह बेलौस थे, और उन्हें इसके बारे में इल्म ही न था।

12 जब हबस्न में कुरबानियाँ चढ़ाई जा रही थीं तो अबीसलूम ने दाऊद के एक मुशीर को बुलाया जो जिलोह का रहनेवाला था। उसका नाम अखीतुफल जिलोनी था। वह आया और अबीसलूम के साथ मिल गया। यों अबीसलूम के पैरोकारों में इजाफा होता गया और उस की साजिशें जोर पकड़ने लगीं।

### दाऊद यरूशलम से हिजरत करता है

13 एक कासिद ने दाऊद के पास पहुँचकर उसे इतला दी, “अबीसलूम आपके खिलाफ उठ खड़ा हुआ है, और तमाम इसराईल उसके पीछे लग गया है।” 14 दाऊद ने अपने मुलाजिमों से कहा, “आओ, हम फौरन हिजरत करें, वरना अबीसलूम के क्रुद्धे में आ जाएंगे। जल्दी करें ताकि हम फौरन रवाना हो सकें, क्योंकि वह कोशिश करेगा कि जितनी जल्दी हो सके यहाँ पहुँचे। अगर हम उस वक्त शहर से निकले न हों तो वह हम पर आफत लाकर शहर के बाशिंदों को मार डालेगा।”

15 बादशाह के मुलाजिमों ने जवाब दिया, “जो भी फैसला हमारे आका और बादशाह करें हम हाजिर हैं।”

16 बादशाह अपने पूरे खानदान के साथ रवाना हुआ। सिर्फ दस दारताएँ महल को सँभालने के लिए पीछे रह गईं। 17 जब दाऊद अपने तमाम लोगों के साथ शहर के आखिरी घर तक पहुँचा तो वह रुक गया। 18 उसने अपने तमाम पैरोकारों को आगे निकलने दिया, पहले शाही दस्ते करेती-ओफ्लेती को, फिर उन 600 जाती आदमियों को जो उसके साथ जात से यहाँ आए थे और आखिर में बाकी तमाम लोगों को। 19 जब फिलिस्ती शहर जात का आदमी इती दाऊद के सामने से गुजरने लगा तो बादशाह उससे मुखातिब हुआ, “आप हमारे साथ क्यों जाएँ? नहीं, वापस चले जाएँ और नए बादशाह के साथ रहें। आप तो गैरमुल्की हैं और इसलिए इसराईल में रहते हैं कि आपको जिलावतन कर दिया गया है। 20 आपको यहाँ आए थोड़ी देर हुई है, तो क्या मुनासिब है कि आपको दुबारा मेरी वजह से कभी इधर कभी इधर घूमना पड़े? क्या पता है कि मुझे कहाँ कहाँ जाना पड़े। इसलिए वापस चले जाएँ, और अपने हमवतनों को भी अपने साथ ले जाएँ। रब आप पर अपनी मेहरबानी और वफादारी का इजहार करे।”

21 लेकिन इती ने एतराज किया, “मेरे आका, रब और बादशाह की हयात की कसम, मैं आपको कभी नहीं छोड़ सकता, खाह मुझे अपनी जान भी कुरबान करनी पड़े।” 22 तब दाऊद मान गया। “चलो, फिर आगे निकलें।” चुनौचे इती अपने लोगों और उनके खानदानों के साथ आगे निकला। 23 आखिर में दाऊद ने वादीए-किदरोन को पार करके रेगिस्तान की तरफ सूख किया। गिर्दा-नवाह के तमाम लोग बादशाह को उसके पैरोकारों समेत रवाना होते हुए देखकर फूट फूटकर रोने लगे।

24 सदोक इमाम और तमाम लावी भी दाऊद के साथ शहर से निकल आए थे। लावी अहद का संदूक उठाए चल रहे थे। अब उन्होंने उसे शहर से बाहर ज़मीन पर रख दिया, और अबियातर वहाँ कुरबानियाँ चढ़ाने लगा। लोगों के शहर से निकलने के पूरे अरसे के दौरान वह कुरबानियाँ चढ़ाता रहा। 25 फिर दाऊद सदोक से मुखातिब हुआ, “अल्लाह का संदूक शहर में वापस ले जाएँ। अगर रब की नज़रे-करम मुझ पर हुई तो वह किसी दिन मुझे शहर में वापस लाकर अहद के संदूक और उस की सुकूनतगाह को दुबारा देखने की इजाजत देगा। 26 लेकिन अगर वह फरमाए कि तू मुझे पसंद नहीं है, तो मैं यह भी बरदाश्त करने के लिए तैयार हूँ। वह मेरे साथ वह कुछ करे जो उसे मुनासिब लगे।

27 जहाँ तक आपका ताल्लुक है, अपने बेटे अखीमाज़ को साथ लेकर सहीह-सलामत शहर में वापस चले जाएँ। अबियातर और उसका बेटा युनतन भी साथ जाएँ। 28 मैं खूद रेगिस्तान में दरियाए-यरदन की उस जगह रुक जाऊँगा जहाँ हम आसानी से दरिया को पार कर सकेंगे। वहाँ आप मुझे यरूशलम के हालात के बारे में पैगाम भेज सकते हैं। मैं आपके इंतज़ार में रहूँगा।”



29 चुनौतियों सदीक और अबियातर अहद का संदूक शहर में वापस ले जाकर वही रहे। 30 दाऊद रोते रोते जैतून के पहाड़ पर चढ़ने लगा। उसका सर ढँपा हुआ था, और वह नंगे पाँव चल रहा था। बाकी सबके सर भी ढँपे हुए थे, सब रोते रोते चढ़ने लगे। 31 रास्ते में दाऊद को इतला दी गई, “अखीतुफल भी अबीसलूम के साथ मिल गया है।” यह सुनकर दाऊद ने दुआ की, “ऐ रब, बख्शा दे कि अखीतुफल के मशवरे नाकाम हो जाएँ।”

32 चलते चलते दाऊद पहाड़ की चोटी पर पहुँच गया जहाँ अल्लाह की परस्तिश की जाती थी। वहाँ हसी अरकी उससे मिलने आया। उसके कपड़े फटे हुए थे, और सर पर खाक थी। 33 दाऊद ने उससे कहा, “अगर आप मेरे साथ जाएँ तो आप सिर्फ बोझ का बाइस बनेंगे। 34 बेहतर है कि आप लौटकर शहर में जाएँ और अबीसलूम से कहें, ‘ऐ बादशाह, मैं आपकी खिदमत में हाजिर हूँ। पहले मैं आपके बाप की खिदमत करता था, और अब आप ही की खिदमत करूँगा।’ अगर आप ऐसा करें तो आप अखीतुफल के मशवरे नाकाम बनाने में मेरी बड़ी मदद करेंगे। 35-36 आप अकेले नहीं होंगे। दोनों इमाम सदीक और अबियातर भी यरूशलम में पीछे रह गए हैं। दरबार में जो भी मनसूबे बाँधे जायेंगे वह उन्हें बताएँ। सदीक का बेटा अखीमाज़ और अबियातर का बेटा यूनतन मुझे हर खबर पहुँचाएँगे, क्योंकि वह भी शहर में ठहरे हुए हैं।”

37 तब दाऊद का दोस्त हसी वापस चला गया। वह उस वक़्त पहुँच गया जब अबीसलूम यरूशलम में दाखिल हो रहा था।

## 16

जीबा मिफ्रीबोसत के बारे में झूट बोलता है

1 दाऊद अभी पहाड़ की चोटी से कुछ आगे निकल गया था कि मिफ्रीबोसत का मुलाज़िम जीबा उससे मिलने आया। उसके पास दो गधे थे जिन पर जीनें कसी हुई थीं। उन पर 200 रोटियाँ, किशमिश की 100 टिक्कियाँ, 100 ताज़ा फल और मैं की एक मशक लदी हुई थी। 2 बादशाह ने पूछा, “आप इन चीज़ों के साथ क्या करना चाहते हैं?” जीबा ने जवाब दिया, “गधे बादशाह के खानदान के लिए हैं, वह इन पर बैठकर सफ़र करें। रोटी और फल जवानों के लिए हैं, और मैं उनके लिए जो रेगिस्तान में चलते चलते थक जाएँ।” 3 बादशाह ने सवाल किया, “आपके पुराने मालिक का पोता मिफ्रीबोसत कहाँ है?” जीबा ने कहा, “वह यरूशलम में ठहरा हुआ है। वह सोचता है कि आज इसराईली मुझे बादशाह बना देंगे, क्योंकि मैं साऊल का पोता हूँ।” 4 यह सुनकर दाऊद बोला, “आज ही मिफ्रीबोसत की तमाम मिलकियत आपके नाम मुतक़िल की जाती है!” जीबा ने कहा, “मैं आपके सामने अपने घुटने टेकता हूँ। रब करे कि मैं अपने आका और बादशाह का मजूर-नज़र रहूँ।”

सिमई दाऊद को लान-तान करता है

5 जब दाऊद बादशाह बहरीम के करीब पहुँचा तो एक आदमी वहाँ से निकलकर उस पर लानतें भेजने लगा। आदमी का नाम सिमई बिन जीरा था, और वह साऊल का रिश्तेदार था। 6 वह दाऊद और उसके अप्सरों पर पत्थर भी फेंकने लगा, अगरचे दाऊद के बाएँ और दाएँ हाथ उसके मुहाफ़िज़ और बेहतरीन फौज़ी चल रहे थे। 7 लानत करते करते सिमई चीख़ रहा था, “चल, दफा हो जा! कातिल! बदमाश! 8 यह तेरा ही कुसूर था कि साऊल और उसका खानदान तबाह हुए। अब रब तुझे जो साऊल की जगह तख़्तनशीन हो गया है इसकी मुनासिब सज़ा दे रहा है। उसने तेरे बेटे अबीसलूम को तेरी जगह तख़्तनशीन करके तुझे तबाह कर दिया है। कातिल को सहीह मुआवज़ा मिल गया है!”

9 अबीशै बिन जरूयाह बादशाह से कहने लगा, “यह कैसा मुरदा कुत्ता है जो मेरे आका बादशाह पर लानत करे? मुझे इजाज़त दें, तो मैं जाकर उसका सर क़लम कर दूँ।” 10 लेकिन बादशाह ने उसे रोक दिया, “मेरा आप और आपके भाई योआब से क्या वास्ता? नहीं, उसे लानत करने दें। हो सकता है रब ने उसे यह करने का हुक्म दिया है। तो फिर हम कौन हैं कि उसे रोके।” 11 फिर दाऊद तमाम अप्सरों से भी मुखातिब हुआ, “जबकि मेरा अपना बेटा मुझे क़त्ल करने की कोशिश कर रहा है तो साऊल का यह रिश्तेदार ऐसा क्यों न करे? इसे छोड़ दो, क्योंकि रब ने इसे यह करने का हुक्म दिया है। 12 शायद रब मेरी मुसीबत का लिहाज़ करके सिमई की लानतें बरकत में बदल दे।”

13 दाऊद और उसके लोगों ने सफ़र जारी रखा। सिमई करीब की पहाड़ी डलान पर उसके बराबर चलते चलते उस पर लानतें भेजता और पत्थर और मिट्टी के ढेले फेंकता रहा। 14 सब थकेमौदे दरियाए-यरदन को पहुँच गए। वहाँ दाऊद ताज़ादाम हो गया।

अबीसलूम यरूशलम में

15 इतने में अबीसलूम अपने पैरोकारों के साथ यरूशलम में दाखिल हुआ था। अखीतुफल भी उनके साथ मिल गया था। 16 थोड़ी देर के बाद दाऊद का दोस्त हसी अरकी अबीसलूम के दरबार में हाज़िर होकर पुकारा, “बादशाह जिदाबाद! बादशाह जिदाबाद!” 17 यह सुनकर अबीसलूम ने उससे तंज़न कहा, “यह कैसी वफ़ादारी है जो आप अपने दोस्त दाऊद को दिखा

रहे हैं? आप अपने दोस्त के साथ रवाना क्यों न हुए?" 18 हसी ने जवाब दिया, "नहीं, जिस आदमी को रब और तमाम इसराइलियों ने मुकर्र किया है, वही मेरा मालिक है, और उसी की खिदमत में मैं हाज़िर रहूँगा। 19 दूसरे, अगर किसी की खिदमत करनी है तो क्या दाऊद के बेटे की खिदमत करना मुनासिब नहीं है? जिस तरह मैं आपके बाप की खिदमत करता रहा हूँ उसी तरह अब आपकी खिदमत करूँगा।"

20 फिर अबीसलूम अखीतुफल से मुखातिब हुआ, "आगे क्या करना चाहिए? मुझे अपना मशवरा पेश करें।" 21 अखीतुफल ने जवाब दिया, "आपके बाप ने अपनी कुछ दाशताओं को महल सँभालने के लिए यहाँ छोड़ दिया है। उनके साथ हमबिसतर हो जाएँ। फिर तमाम इसराइल को मालूम हो जाएगा कि आपने अपने बाप की ऐसी बेइज्जती की है कि सुलह का रास्ता बंद हो गया है। यह देखकर सब जो आपके साथ हैं मजबूत हो जाएँगे।" 22 अबीसलूम मान गया, और महल की छत पर उसके लिए खैमा लगाया गया। उसमें वह पूरे इसराइल के देखते देखते अपने बाप की दाशताओं से हमबिसतर हुआ।

23 उस वक़्त अखीतुफल का हर मशवरा अल्लाह के फरमान जैसा माना जाता था। दाऊद और अबीसलूम दोनों यों ही उसके मशवरों की कदर करते थे।

## 17

### हसी और अखीतुफल

1 अखीतुफल ने अबीसलूम को एक और मशवरा भी दिया। "मुझे इजाज़त दे तो मैं 12,000 फ़ौजियों के साथ इसी रात दाऊद का ताक़ुक़ब करूँ। 2 मैं उस पर हमला करूँगा जब वह थकामौदा और बेदिल है। तब वह घबरा जाएगा, और उसके तमाम फ़ौजी भाग जाएँगे। नतीजतन मैं सिर्फ़ बादशाह ही को मार दूँगा 3 और बाकी तमाम लोगों को आपके पास वापस लाऊँगा। जो आदमी आप पकड़ना चाहते हैं उस की मौत पर सब वापस आ जाएँगे। और क़ौम में अमनो-अमान कायम हो जाएगा।"

4 यह मशवरा अबीसलूम और इसराइल के तमाम बुजुर्गों को पसंद आया। 5 ताहम अबीसलूम ने कहा, "पहले हम हसी अरकी से भी मशवरा लें। कोई उसे बुला लाए।" 6 हसी आया तो अबीसलूम ने उसके सामने अखीतुफल का मनसूबा बयान करके पूछा, "आपका क्या ख़याल है? क्या हमें ऐसा करना चाहिए, या आपकी कोई और राय है?"

7 हसी ने जवाब दिया, "जो मशवरा अखीतुफल ने दिया है वह इस दफ़ा ठीक नहीं। 8 आप तो अपने वालिद और उनके आदमियों से वाकिफ़ हैं। वह सब माहिर फ़ौजी हैं। वह उस रीछनी की-सी शिदत से लड़ेंगे जिससे उसके बच्चे छीन लिए गए हैं। यह भी ज़हन में रखना चाहिए कि आपका बाप तजरबाकार फ़ौजी है। इमकान नहीं कि वह रात को अपने फ़ौजियों के दरमियान गुज़ारेगा। 9 गालिबन वह इस वक़्त भी गहरी खाई या कही और छुप गया है। हो सकता है वह वहाँ से निकलकर आपके दस्तों पर हमला करे और इब्तिदा ही में आपके थोड़े-बहुत अफ़राद मर जाएँ। फिर अफ़वाह फैल जाएगी कि अबीसलूम के दस्तों में क़त्ले-आम शुरू हो गया है। 10 यह सुनकर आपके तमाम अफ़राद डर के मारे बेदिल हो जाएँगे, ख़ाह वह शेरबबर जैसे बहादुर क्यों न हों। क्योंकि तमाम इसराइल जानता है कि आपका बाप बेहतरीन फ़ौजी है और कि उसके साथी भी दिलेर हैं।"

11 यह पेशे-नज़र रखकर मैं आपको एक और मशवरा देता हूँ। शिमाल में दान से लेकर ज़ूनूब में बैर-सबा तक लड़ने के काबिल तमाम इसराइलियों को बुलाएँ। इतने जमा करें कि वह साहिल की रेत की मानिद होंगे, और आप ख़ुद उनके आगे चलकर लड़ने के लिए निकलें। 12 फिर हम दाऊद का खोज लगाकर उस पर हमला करेंगे। हम उस तरह उस पर टूट पड़ेंगे जिस तरह ओस ज़मीन पर गिरती है। सबके सब हलाक हो जाएँगे, और न वह और न उसके आदमी बच पाएँगे। 13 अगर दाऊद किसी शहर में पनाह ले तो तमाम इसराइली फ़र्सील के साथ रस्से लगाकर पूरे शहर को वार्दी में घसीट ले जाएँगे। पत्थर पर पत्थर बाकी नहीं रहेगा।"

14 अबीसलूम और तमाम इसराइलियों ने कहा, "हसी का मशवरा अखीतुफल के मशवरे से बेहतर है।" हक़ीक़त में अखीतुफल का मशवरा कही बेहतर था, लेकिन रब ने उसे नाकाम होने दिया ताकि अबीसलूम को मुसीबत में डाले।

### दाऊद को अबीसलूम का मनसूबा बताया जाता है

15 हसी ने दोनों इमामों सदोक और अबियातर को वह मनसूबा बताया जो अखीतुफल ने अबीसलूम और इसराइल के बुजुर्गों को पेश किया था। साथ साथ उसने उन्हें अपने मशवरे के बारे में भी आगाह किया। 16 उसने कहा, "अब फ़ौरन दाऊद को इतला दे कि किसी सूत में भी इस रात को दरियाए-यरदन की उस जगह पर न गुज़रें जहाँ लोग दरिया को पार करते हैं। लाज़िम है कि आप आज ही दरिया को उबूर कर लें, वरना आप तमाम साथियों समेत बरबाद हो जाएँगे।"

17 यूनतन और अखीमाज़ यरूशलम से बाहर के चश्मे ऐन-राजिल के पास इंतज़ार कर रहे थे, क्योंकि वह शहर में दाखिल होकर किसी को नज़र आने का खतरा मोल नहीं ले सकते थे। एक नौकरानी शहर से निकल आई और उन्हें हूसी का पैगाम दे दिया ताकि वह आगे निकलकर उसे दाऊद तक पहुँचाएँ। 18 लेकिन एक जवान ने उन्हें देखा और भागकर अबीसलूम को इतला दी। दोनों जल्दी जल्दी वहाँ से चले गए और एक आदमी के घर में छुप गए जो बहरीम में रहता था। उसके सहन में कुआँ था। उसमें वह उतर गए। 19 आदमी की बीवी ने कुएँ के मुँह पर कपड़ा बिछाकर उस पर अनाज के दाने बिखेर दिए ताकि किसी को मालूम न हो कि वहाँ कुआँ है।

20 अबीसलूम के सिपाही उस घर में पहुँचे और औरत से पूछने लगे, “अखीमाज़ और यूनतन कहाँ हैं?” औरत ने जवाब दिया, “वह आगे निकल चुके हैं, क्योंकि वह नदी को पार करना चाहते थे।” सिपाही दोनों आदमियों का खोज लगाते लगाते थक गए। आखिरकार वह खाली हाथ यरूशलम लौट गए।

21 जब चले गए तो अखीमाज़ और यूनतन कुएँ से निकलकर सीधे दाऊद बादशाह के पास चले गए ताकि उसे पैगाम सुनाएँ। उन्होंने कहा, “लाज़िम है कि आप दरिया को फौरन पार करें!” फिर उन्होंने दाऊद को अखीतुफल का पूरा मनसूबा बताया। 22 दाऊद और उसके तमाम साथी जल्द ही रवाना हुए और उसी रात दरिया-ए-यरदन को उबूर किया। पौ फटते वक्त एक भी पीछे नहीं रह गया था।

23 जब अखीतुफल ने देखा कि मेरा मशवरा रद्द किया गया है तो वह अपने गधे पर ज़ीन कसकर अपने वतनी शहर वापस चला गया। वहाँ उसने घर के तमाम मामलात का बंदोबस्त किया, फिर जाकर फौसी ले ली। उसे उसके बाप की कब्र में दफनाया गया।

24 जब दाऊद महनायम पहुँच गया तो अबीसलूम इसराईली फौज के साथ दरिया-ए-यरदन को पार करने लगा। 25 उसने अमासा को फौज पर मुकर्रर किया था, क्योंकि योआब तो दाऊद के साथ था। अमासा एक इसमाईली बनाम इतरा का बेटा था। उस की माँ अबीजेल बित नाहस थी, और वह योआब की माँ ज़रूयाह की बहन थी। 26 अबीसलूम और उसके साथियों ने मुल्के-ज़िलियाद में पड़ाव डाला।

27 जब दाऊद महनायम पहुँचा तो तीन आदमियों ने उसका इस्तक़बाल किया। सोबी बिन नाहस अम्मोनियों के दास्त-हुक़मत रब्बा से, मकीर बिन अम्मियेल लो-दिबार से और बरजिल्ली जिलियादी राजिलीम से आए। 28 तीनों ने दाऊद और उसके लोगों को बिस्तर, बासन, मिट्टी के बरतन, गंदुम, जौ, मैदा, अनाज के भूने हुए दाने, लोबिया, मसूर, 29 शहद, दही, भेड़-बकरियाँ और गाय के दूध का पनीर मुहैया किया। क्योंकि उन्होंने सोचा, “यह लोग रेगिस्तान में चलते चलते ज़रूर भूके, प्यासे और थकेमँदे हो गए होंगे।”

## 18

### जंग के लिए तैयारियाँ

1 दाऊद ने अपने फौजियों का मुआयना करके हज़ार हज़ार और सौ सौ अफ़राद पर आदमी मुकर्रर किए। 2 फिर उसने उन्हें तीन हिस्सों में तक्रसीम करके एक हिस्से पर योआब को, दूसरे पर उसके भाई अबीशि बिन ज़रूयाह को और तीसरे पर इत्ती जाती को मुकर्रर किया।

उसने फौजियों को बताया, “मैं खुद भी आपके साथ लड़ने के लिए निकलूँगा।” 3 लेकिन उन्होंने एतराज़ किया, “ऐसा न करें! अगर हमें भाना भी पड़े या हमारा आधा हिस्सा मारा भी जाए तो अबीसलूम के फौजियों के लिए इतना कोई फ़रक नहीं पड़ेगा। वह आप ही को पकड़ना चाहते हैं, क्योंकि आप उनके नज़दीक हममें से 10,000 अफ़राद से ज़्यादा अहम हैं। चुनौचे बेहतर है कि आप शहर ही में रहें और वहाँ से हमारी हिमायत करें।”

4 बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है, जो कुछ आपको माकूल लगता है वही करूँगा।” वह शहर के दरवाज़े पर खड़ा हुआ, और तमाम मर्द सौ सौ और हज़ार हज़ार के गुरोहों में उसके सामने से गुज़रकर बाहर निकले। 5 योआब, अबीशि और इत्ती को उसने हुक्म दिया, “मेरी खातिर जवान अबीसलूम से नरमी से पेश आना!” तमाम फौजियों ने तीनों कमाँडरों से यह बात सुनी।

### अबीसलूम की शिकस्त

6 दाऊद के लोग खुले मैदान में इसराईलियों से लड़ने गए। इफ़राईम के जंगल में उनकी टक्कर हुई, 7 और दाऊद के फौजियों ने मुखालिफों को शिकस्ते-फ़ाश दी। उनके 20,000 अफ़राद हलाक हुए। 8 लड़ाई पूरे जंगल में फैलती गई। यह जंगल इतना खतरनाक था कि उस दिन तलवार की निसबत ज़्यादा लोग उस की ज़द में आकर हलाक हो गए।

9 अचानक दाऊद के कुछ फौजियों को अबीसलूम नजर आया। वह खच्चर पर सवार बलूत के एक बड़े दरख्त के साये में से गुजरने लगा तो उसके बाल दरख्त की शाखों में उलझ गए। उसका खच्चर आगे निकल गया जबकि अबीसलूम वहीं आसमानो-जमीन के दरमियान लटका रहा। 10 जिन आदमियों ने यह देखा उनमें से एक योआब के पास गया और इतला दी, “मैंने अबीसलूम को देखा है। वह बलूत के एक दरख्त में लटका हुआ है।”

11 योआब पुकारा, “क्या आपने उसे देखा? तो उसे वही क्यों न मार दिया? फिर मैं आपको इनाम के तौर पर चाँदी के दस सिक्के और एक कमरबंद दे देता।” 12 लेकिन आदमी ने एतराज किया, “अगर आप मुझे चाँदी के हजार सिक्के भी देते तो भी मैं बादशाह के बेटे को हाथ न लगाता। हमारे सुनते सुनते बादशाह ने आप, अबीश और इती को हुक्म दिया, ‘मेरी खातिर अबीसलूम को नुकसान न पहुँचाएँ।’ 13 और अगर मैं चुपके से भी उसे कत्ल करता तो भी इसकी खबर किसी न किसी वक्त बादशाह के कानों तक पहुँचती। क्योंकि कोई भी बात बादशाह से पोशीदा नहीं रहती। अगर मुझे इस सूरत में पकड़ा जाता तो आप मेरी हिमायत न करते।”

14 योआब बोला, “मेरा वक्त मज्जीद जाया मत करो।” उसने तीन नेजे लेकर अबीसलूम के दिल में धोप दिए जब वह अभी जिंदा हालत में दरख्त से लटका हुआ था। 15 फिर योआब के दस सिलाहबरदारों ने अबीसलूम को घेरकर उसे हलाक कर दिया।

16 तब योआब ने नरसिंगा बजा दिया, और उसके फौजी दूसरों का ताक्कूब करने से बाज आकर वापस आ गए। 17 बाकी इसराइली अपने अपने घर भाग गए। योआब के आदमियों ने अबीसलूम की लाश को एक गहरे गढ़े में फेंककर उस पर पत्थरों का बाढ़ डेर लगा दिया।

18 कुछ देर पहले अबीसलूम इस खयाल से बादशाह की वादी में अपनी याद में एक सतून खड़ा कर चुका था कि मेरा कोई बेटा नहीं है जो मेरा नाम कायम रखे। आज तक यह ‘अबीसलूम की यादगार’ कहलाता है।

#### दाऊद को अबीसलूम की मौत की खबर मिलती है

19 अखीमाज बिन सदोक ने योआब से दरखास्त की, “मुझे दौडकर बादशाह को खुशखबरी सुनाने दें कि रब ने उसे दृशमनों से बचा लिया है।” 20 लेकिन योआब ने इनकार किया, “जो पैगाम आपको बादशाह तक पहुँचाना है वह उसके लिए खुशखबरी नहीं है, क्योंकि उसका बेटा मर गया है। किसी और वक्त मैं ज़रूर आपको उसके पास भेज दूँगा, लेकिन आज नहीं।” 21 उसने एथोपिया के एक आदमी को हुक्म दिया, “जाएँ और बादशाह को बताएँ।” आदमी योआब के सामने औंधे मुँह झुक गया और फिर दौडकर चला गया।

22 लेकिन अखीमाज खुश नहीं था। वह इसरार करता रहा, “कुछ भी हो जाए, मेहरबानी करके मुझे उसके पीछे दौडने दें।” एक और बार योआब ने उसे रोकने की कोशिश की, “बेटे, आप जाने के लिए क्यों तड़पते हैं? जो खबर पहुँचानी है उसके लिए आपको इनाम नहीं मिलेगा।” 23 अखीमाज ने जवाब दिया, “कोई बात नहीं। कुछ भी हो जाए, मैं हर सूरत में दौडकर बादशाह के पास जाना चाहता हूँ।” तब योआब ने उसे जाने दिया। अखीमाज ने दरियाए-यरदन के खुले मैदान का रास्ता लिया, इसलिए वह एथोपिया के आदमी से पहले बादशाह के पास पहुँच गया।

24 उस वक्त दाऊद शहर के बाहर और अंदरवाले दरवाजों के दरमियान बैठा इंतज़ार कर रहा था। जब पहरेदार दरवाजे के ऊपर की फसील पर चढ़ा तो उसे एक तनहा आदमी नजर आया जो दौडता हुआ उनकी तरफ आ रहा था। 25 पहरेदार ने आवाज़ देकर बादशाह को इतला दी। दाऊद बोला, “अगर अकेला हो तो ज़रूर खुशखबरी लेकर आ रहा होगा।” यह आदमी भागता भागता करीब आ गया, 26 लेकिन इतने में पहरेदार को एक और आदमी नजर आया जो शहर की तरफ दौडता हुआ आ रहा था। उसने शहर के दरवाजे के दरबान को आवाज़ दी, “एक और आदमी दौडता हुआ दिखाई दे रहा है। वह भी अकेला ही आ रहा है।” दाऊद ने कहा, “वह भी अच्छी खबर लेकर आ रहा है।” 27 फिर पहरेदार पुकारा, “लगता है कि पहला आदमी अखीमाज बिन सदोक है, क्योंकि वही यों चलता है।” दाऊद को तसल्ली हुई, “अखीमाज अच्छा बंदा है। वह ज़रूर अच्छी खबर लेकर आ रहा होगा।”

28 दूर से अखीमाज ने बादशाह को आवाज़ दी, “बादशाह की सलामती हो!” वह औंधे मुँह बादशाह के सामने झुककर बोला, “रब आपके खुदा की तमजीद हो! उसने आपको उन लोगों से बचा लिया है जो मेरे आका और बादशाह के खिलाफ उठ खड़े हुए थे।” 29 दाऊद ने पूछा, “और मेरा बेटा अबीसलूम? क्या वह महफूज है?” अखीमाज ने जवाब दिया, “जब योआब ने मुझे और बादशाह के दूसरे खादिम को आपके पास सखसत किया तो उस वक्त बड़ी अफरा-तफरी थी। मुझे तफसील से मालूम न हुआ कि क्या हो रहा है।” 30 बादशाह ने हुक्म दिया, “एक तरफ होकर मेरे पास खड़े हो जाएँ।” अखीमाज ने ऐसा ही किया।

31 फिर एथोपिया का आदमी पहुँच गया। उसने कहा, “मेरे बादशाह, मेरी खुशखबरी सुनें! आज रब ने आपको उन सब लोगों से नजात दिलाई है जो आपके खिलाफ उठ खड़े हुए थे।” 32 बादशाह ने सवाल किया, “और मेरा बेटा अबीसलूम?

क्या वह महफूज है?" एथोपिया के आदमी ने जवाब दिया, "मेरे आका, जिस तरह उसके साथ हुआ है, उस तरह आपके तमाम दुश्मनों के साथ हो जाए, उन सबके साथ जो आपको नुकसान पहुँचाना चाहते हैं!"

33 यह सुनकर बादशाह लरज उठा। शहर के दरवाजे के ऊपर की फ़सील पर एक कमरा था। अब बादशाह रोते रोते सीढियों पर चढ़ने लगा और चीखते-चिल्लाते उस कमरे में चला गया, "हाय मेरे बेटे अबीसलूम! मेरे बेटे, मेरे बेटे अबीसलूम! काश मैं ही तेरी जगह मर जाता। हाय अबीसलूम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!"

## 19

योआब दाऊद को समझाता है

1 योआब को इतला दी गई, "बादशाह रोते रोते अबीसलूम का मातम कर रहा है।" 2 जब फौजियों को खबर मिली कि बादशाह अपने बेटे का मातम कर रहा है तो फ़तह पाने पर उनकी सारी खुशी काफ़ूर हो गई। हर तरफ़ मातम और गम का समौं था। 3 उस दिन दाऊद के आदमी चोरी चोरी शहर में घुस आए, ऐसे लोगों की तरह जो मैदाने-जंग से फ़रार होने पर शरमाते हुए चुपके से शहर में आ जाते हैं।

4 बादशाह अभी कमरे में बैठा था। अपने मुँह को ढाँपकर वह चीखता-चिल्लाता रहा, "हाय मेरे बेटे अबीसलूम! हाय अबीसलूम, मेरे बेटे, मेरे बेटे!" 5 तब योआब उसके पास जाकर उसे समझाने लगा, "आज आपके खादिमों ने न सिर्फ़ आपकी जान बचाई है बल्कि आपके बेटों, बेटियों, बहिनियों और दाशताओं की जान भी। तो भी आपने उनका मुँह काला कर दिया है। 6 जो आपसे नफ़रत करते हैं उनसे आप मुहब्बत रखते हैं जबकि जो आपसे प्यार करते हैं उनसे आप नफ़रत करते हैं। आज आपने साफ़ जाहिर कर दिया है कि आपके कमाँडर और दस्ते आपकी नज़र में कोई हैसियत नहीं रखते। हाँ, आज मैंने जान लिया है कि अगर अबीसलूम जिंदा होता तो आप खुश होते, खाह हम बाकी तमाम लोग हलाक क्यों न हो जाते। 7 अब उठकर बाहर जाएँ और अपने खादिमों की हौसलाअफ़जाई करें। रब की क़सम, अगर आप बाहर न निकलेंगे तो रात तक एक भी आपके साथ नहीं रहेगा। फिर आप पर ऐसी मुसीबत आएगी जो आपकी जवानी से लेकर आज तक आप पर नहीं आई है।"

8 तब दाऊद उठा और शहर के दरवाजे के पास उतर आया। जब फौजियों को बताया गया कि बादशाह शहर के दरवाजे में बैठा है तो वह सब उसके सामने जमा हुए।

दाऊद यस्शलम वापस आता है

इतने में इसराईली अपने घर भाग गए थे। 9 इसराईल के तमाम कबीलों में लोग आपस में बहस-मुबाहसा करने लगे, "दाऊद बादशाह ने हमें हमारे दुश्मनों से बचाया, और उसी ने हमें फिलिस्तियों के हाथ से आज़ाद कर दिया। लेकिन अबीसलूम की वजह से वह मुल्क से हिज़रत कर गया है। 10 अब जब अबीसलूम जिसे हमने मसह करके बादशाह बनाया था मर गया है तो आप बादशाह को वापस लाने से क्यों झिजकते हैं?"

11 दाऊद ने सदोक और अबियातर इमामों की मारिफ़त यहदाह के बुजुर्गों को इतला दी, "यह बात मुझ तक पहुँच गई है कि तमाम इसराईल अपने बादशाह का इस्तक़बाल करके उसे महल में वापस लाना चाहता है। तो फिर आप क्यों देर कर रहे हैं? क्या आप मुझे वापस लाने में सबसे आखिर में आना चाहते हैं? 12 आप मेरे भाई, मेरे करीबी रिश्तेदार हैं। तो फिर आप बादशाह को वापस लाने में आखिर में क्यों आ रहे हैं?" 13 और अबीसलूम के कमाँडर अमासा को दोनों इमामों ने दाऊद का यह पैगाम पहुँचाया, "सुनें, आप मेरे भतीजे हैं, इसलिए अब से आप ही योआब की जगह मेरी फौज के कमाँडर होंगे। अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं अपना यह वादा पूरा न करूँ।"

14 इस तरह दाऊद यहदाह के तमाम दिलों को जीत सका, और सबके सब उसके पीछे लग गए। उन्होंने उसे पैगाम भेजा, "वापस आएं, आप भी और आपके तमाम लोग भी।" 15 तब दाऊद यस्शलम वापस चलने लगा। जब वह दरियाए-यरदन तक पहुँचा तो यहदाह के लोग जिलजाल में आए ताकि उससे मिलें और उसे दरिया के दूसरे किनारे तक पहुँचाएँ।

दाऊद सिमई को मुआफ़ कर देता है

16 बिनयमीनी शहर बहरीम का सिमई बिन जीरा भी भागकर यहदाह के आदिमियों के साथ दाऊद से मिलने आया। 17 बिनयमीन के कबीले के हजार आदमी उसके साथ थे। साऊल का पुराना नौकर जीबा भी अपने 15 बेटों और 20 नौकरों समेत उनमें शामिल था। बादशाह के यरदन के किनारे तक पहुँचने से पहले पहले 18 वह जल्दी से दरिया को उबूर करके उसके पास आए ताकि बादशाह के घराने को दरिया के दूसरे किनारे तक पहुँचाएँ और हर तरह से बादशाह को खुश रखें।

दाऊद दरिया को पार करने को था कि सिमई औंधे मुँह उसके सामने गिर गया। 19 उसने इलतमास की, "मेरे आका, मुझे मुआफ़ करें। जो ज्यादती मैंने उस दिन आपसे की जब आपको यस्शलम को छोड़ना पड़ा वह याद न करें। बराहे-करम यह

बात अपने जहन से निकाल दें। 20 मैंने जान लिया है कि मुझे से बड़ा जर्म सरजद हुआ है, इसलिए आज मैं यूसुफ के घराने के तमाम अफराद से पहले ही अपने आका और बादशाह के हज़र आ गया हूँ।”

21 अबीशे बिन ज़रूयाह बोला, “सिमई सज़ाए-मौत के लायक है! उसने रब के मसह किए हुए बादशाह पर लानत की है।” 22 लेकिन दाऊद ने उसे डौटा, “मेरा आप और आपके भाई योआब के साथ क्या वास्ता? ऐसी बातों से आप इस दिन मेरे मुखालिफ बन गए हैं। आज तो इसराईल में किस्सी को सज़ाए-मौत देने का नहीं बल्कि ख़ुशी का दिन है। देखें, इस दिन मैं दुबारा इसराईल का बादशाह बन गया हूँ।” 23 फिर बादशाह सिमई से मुखातिब हुआ, “रब की कसम, आप नहीं मरेंगे।”

**मिफ़ीबोसत दाऊद से मिलने आता है**

24 साऊल का पोता मिफ़ीबोसत भी बादशाह से मिलने आया। उस दिन से जब दाऊद को यरूशलम को छोड़ना पड़ा आज तक जब वह सलामती से वापस पहुँचा मिफ़ीबोसत मातम की हालत में रहा था। न उसने अपने पाँव न अपने कपड़े धोए थे, न अपनी मूँछों की काँट-छाँट की थी। 25 जब वह बादशाह से मिलने के लिए यरूशलम से निकला तो बादशाह ने उससे सवाल किया, “मिफ़ीबोसत, आप मेरे साथ क्यों नहीं गए थे?”

26 उसने जवाब दिया, “मेरे आका और बादशाह, मैं जाने के लिए तैयार था, लेकिन मेरा नौकर जीबा मुझे धोका देकर अकेला ही चला गया। मैंने तो उसे बताया था, ‘मेरे गधे पर ज़ीन कसो ताकि मैं बादशाह के साथ खाना हो सकूँ।’ और मेरा जाने का कोई और वसलीला था नहीं, क्योंकि मैं दोनों टोंगों से माज़ूर हूँ। 27 जीबा ने मुझ पर तोहमत लगाई है। लेकिन मेरे आका और बादशाह अल्लाह के फ़रिश्ते जैसे हैं। मेरे साथ वही कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे। 28 मेरे दादा के पूरे घराने को आप हलाक कर सकते थे, लेकिन फिर भी आपने मेरी इज़्जत करके उन मेहमानों में शामिल कर लिया जो रोज़ाना आपकी मेज़ पर खाना खाते हैं। चुनौचे मेरा क्या हक है कि मैं बादशाह से मज़ीद अपील करूँ।”

29 बादशाह बोला, “अब बस करें। मैंने फ़ैसला कर लिया है कि आपकी ज़मीन आप और जीबा में बराबर तकसीम की जाएँ।” 30 मिफ़ीबोसत ने जवाब दिया, “वह सब कुछ ले ले। मेरे लिए यही काफ़ी है कि आज मेरे आका और बादशाह सलामती से अपने महल में वापस आ पहुँचे हैं।”

**दाऊद और बरज़िल्ली**

31 बरज़िल्ली जिलियादी राजिलीम से आया था ताकि बादशाह के साथ दरियाए-यरदन को पार करके उसे सख़सत करे। 32 बरज़िल्ली 80 साल का था। महनायम में रहते वक़्त उसी ने दाऊद की मेहमान-नवाज़ी की थी, क्योंकि वह बहुत अमीर था। 33 अब दाऊद ने बरज़िल्ली को दावत दी, “मेरे साथ यरूशलम जाकर वहाँ रहें। मैं आपका हर तरह से खयाल रखूँगा।”

34 लेकिन बरज़िल्ली ने इन्कार किया, “मेरी ज़िंदगी के थोड़े दिन बाक़ी हैं, मैं क्यों यरूशलम में जा बसूँ? 35 मेरी उम्र 80 साल है। न मैं अच्छी और बुरी चीज़ों में इम्तियाज़ कर सकता, न मुझे खाने-पीने की चीज़ों का मज़ा आता है। गीत गानेवालों की आवाज़ें भी मुझे सुनी नहीं जाती। नहीं मेरे आका और बादशाह, अगर मैं आपके साथ जाऊँ तो आपके लिए सिर्फ़ बोझ का बाइस हूँगा। 36 इसकी ज़रूरत नहीं कि आप मुझे इस किस्म का मुआवज़ा दें। मैं बस आपके साथ दरियाए-यरदन को पार करूँगा। 37 और फिर अगर इज़ाज़त हो तो वापस चला जाऊँगा। मैं अपने ही शहर में मरना चाहता हूँ, जहाँ मेरे माँ-बाप की कब्र है। लेकिन मेरा बेटा किमहाम आपकी खिदमत में हाज़िर है। वह आपके साथ चला जाए तो आप उसके लिए वह कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे।”

38 दाऊद ने जवाब दिया, “ठीक है, किमहाम मेरे साथ जाएँ और जो कुछ भी आप चाहेंगे मैं उसके लिए करूँगा। अगर कोई काम है जो मैं आपके लिए कर सकता हूँ तो मैं हाज़िर हूँ।”

39 फिर दाऊद ने अपने साथियों समेत दरिया को उबूर किया। बरज़िल्ली को बोसा देकर उसने उसे बरकत दी। बरज़िल्ली अपने शहर वापस चल पड़ा 40 जबकि दाऊद जिलजाल की तरफ़ बढ़ गया। किमहाम भी साथ गया। इसके अलावा यहदाह के सब और इसराईल के आधे लोग उसके साथ चले।

**इसराईल और यहदाह आपस में झगड़ते हैं**

41 रास्ते में इसराईल के मर्द बादशाह के पास आकर शिकायत करने लगे, “हमारे भाइयों यहदाह के लोगों ने आपको आपके घराने और फ़ौजियों समेत चोरी चोरी क्यों दरियाए-यरदन के मगरिबी किनारे तक पहुँचाया? यह ठीक नहीं है।”

42 यहदाह के मर्दों ने जवाब दिया, “बात यह है कि हम बादशाह के करीबी रिश्तेदार हैं। आपको यह देखकर गुस्सा क्यों आ गया है? न हमने बादशाह का खाना खाया, न उससे कोई तोहफा पाया है।”

43 तो भी इसराईल के मर्दों ने एतराज़ किया, “हमारे दस क़बीले हैं, इसलिए हमारा बादशाह की खिदमत करने का दस गुना ज़्यादा हक है। तो फिर आप हमें हकीर क्यों जानते हैं? हमने तो पहले अपने बादशाह को वापस लाने की बात की थी।” यों बहस-मुबाहसा जारी रहा, लेकिन यहदाह के मर्दों की बातें ज़्यादा सख़्त थीं।

## 20

सबा दाऊद के खिलाफ उठ खड़ा होता है

1 झगड़नेवालों में से एक बदमाश था जिसका नाम सबा बिन बिक्री था। वह बिनयमीनी था। अब उसने नरसिंगा बजाकर एलान किया, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा, न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ इसराईल, हर एक अपने घर वापस चला जाए!” 2 तब तमाम इसराईली दाऊद को छोड़कर सबा बिन बिक्री के पीछे लग गए। सिर्फ यहदाह के मर्द अपने बादशाह के साथ लिपटे रहे और उसे यरदन से लेकर यरूशलम तक पहुँचाया।

3 जब दाऊद अपने महल में दाखिल हुआ तो उसने उन दस दाशताओं का बंदोबस्त कराया जिनको उसने महल को सँभालने के लिए पीछे छोड़ दिया था। वह उन्हें एक खास घर में अलग रखकर उनकी तमाम जरूरियात पूरी करता रहा लेकिन उनसे कभी हमबिसतर न हुआ। वह कहीं जा न सकी, और उन्हें ज़िंदगी के आखिरी लमहे तक बेवा की-सी ज़िंदगी गुज़ारनी पड़ी।

4 फिर दाऊद ने अमासा को हुक्म दिया, “यहदाह के तमाम फौजियों को मेरे पास बुला लाएँ। तीन दिन के अंदर अंदर उनके साथ हाज़िर हो जाएँ।” 5 अमासा रवाना हुआ। लेकिन जब तीन दिन के बाद लौट न आया 6 तो दाऊद अबीशे से मुख़ातिब हुआ, “आखिर मैं सबा बिन बिक्री हूँ अबीसलूम की निसबत ज्यादा नुक़सान पहुँचाएगा। जल्दी करें, मेरे दस्तों को लेकर उसका ताक़ुक़ब करें। ऐसा न हो कि वह क़िताबत शहरों को क़ब्ज़े में ले ले और यों हमारा बड़ा नुक़सान हो जाए।” 7 तब योआब के सिपाही, बादशाह का दस्ता करेती-अफ़लेती और तमाम माहिर फौजी यरूशलम से निकलकर सबा बिन बिक्री का ताक़ुक़ब करने लगे।

8 जब वह जिबऊन की बड़ी चटान के पास पहुँचे तो उनकी मुलाकात अमासा से हुई जो थोड़ी देर पहले वहाँ पहुँच गया था। योआब अपना फौजी लिबास पहने हुए था, और उस पर उसने कमर में अपनी तलवार की पेटी बाँधी हुई थी। अब जब वह अमासा से मिलने गया तो उसने अपने बाएँ हाथ से तलवार को चोरी चोरी मियान से निकाल लिया। 9 उसने सलाम करके कहा, “भाई, क्या सब ठीक है?” और फिर अपने दहने हाथ से अमासा की दाढ़ी को यों पकड़ लिया जैसे उसे बोसा देना चाहता हो। 10 अमासा ने योआब के दूसरे हाथ में तलवार पर ध्यान न दिया, और अचानक योआब ने उसे इतने जोर से पेट में घोंप दिया कि उस की अंतडियाँ फूटकर ज़मीन पर गिर गईं। तलवार को दुबारा इस्तेमाल करने की जरूरत ही नहीं थी, क्योंकि अमासा फौरन मर गया।

फिर योआब और अबीशे सबा का ताक़ुक़ब करने के लिए आगे बढ़े। 11 योआब का एक फौजी अमासा की लाश के पास खड़ा रहा और गुज़रनेवाले फौजियों को आवाज़ देता रहा, “जो योआब और दाऊद के साथ है वह योआब के पीछे हो ले!” 12 लेकिन जितने वहाँ से गुज़रे वह अमासा का खून-आलूदा और तड़पता हुआ जिस्म देखकर रूक गए। जब आदमी ने देखा कि लाश स्कावट का बाइस बन गई है तो उसने उसे रास्ते से हटाकर खेत में घसीट लिया और उस पर कपड़ा डाल दिया। 13 लाश के गायब हो जाने पर सब लोग योआब के पीछे चले गए और सबा का ताक़ुक़ब करने लगे।

14 इतने में सबा पूरे इसराईल से गुज़रते गुज़रते शिमाल के शहर अबील-बैत-माका तक पहुँच गया था। बिक्री के खानदान के तमाम मर्द भी उसके पीछे लगकर वहाँ पहुँच गए थे। 15 तब योआब और उसके फौजी वहाँ पहुँचकर शहर का मुहासरा करने लगे। उन्होंने शहर की बाहरवाली दीवार के साथ साथ मिट्टी का बड़ा तोदा लगाया और उस पर से गुज़रकर अंदरवाली बड़ी दीवार तक पहुँच गए। वहाँ वह दीवार की तोड़-फोड़ करने लगे ताकि वह गिर जाए।

16 तब शहर की एक दानिशमंद औरत ने फ़सील से योआब के लोगों को आवाज़ दी, “सुने! योआब को यहाँ बुला लें ताकि मैं उससे बात कर सकूँ।” 17 जब योआब दीवार के पास आया तो औरत ने सवाल किया, “क्या आप योआब हैं?” योआब ने जवाब दिया, “मैं ही हूँ।” औरत ने दरखास्त की, “ज़रा मेरी बातों पर ध्यान दें।” योआब बोला, “ठीक है, मैं सुन रहा हूँ।” 18 फिर औरत ने अपनी बात पेश की, “पुराने ज़माने में कहा जाता था कि अबील शहर से मशवरा लो तो बात बनेगी। 19 देखें, हमारा शहर इसराईल का सबसे ज्यादा अमनपसंद और वफ़ादार शहर है। आप एक ऐसा शहर तबाह करने की कोशिश कर रहे हैं जो ‘इसराईल की मौँ’ कहलाता है। आप रब की मीरास को क्यों हड़प कर लेना चाहते हैं?”

20 योआब ने जवाब दिया, “अल्लाह न करे कि मैं आपके शहर को हड़प या तबाह करूँ। 21 मेरे आने का एक और मक़सद है। इफ़राईम के पहाड़ी इलाके का एक आदमी दाऊद बादशाह के खिलाफ उठ खड़ा हुआ है जिसका नाम सबा बिन बिक्री है। उसे ढूँढ़ रहे हैं। उसे हमारे हवाले करें तो हम शहर को छोड़कर चले जाएंगे।”

औरत ने कहा, “ठीक है, हम दीवार पर से उसका सर आपके पास फेंक देंगे।” 22 उसने अबील-बैत-माका के बाशिंदों से बात की और अपनी हिकमत से उन्हें कायल किया कि ऐसा ही करना चाहिए। उन्होंने सबा का सर क़लम करके योआब के पास फेंक दिया। तब योआब ने नरसिंगा बजाकर शहर को छोड़ने का हुक्म दिया, और तमाम फौजी अपने अपने घर वापस चले गए। योआब खुद यरूशलम में दाऊद बादशाह के पास लौट गया।

### दाऊद के आला अफसर

23 योआब पूरी इसराईली फौज पर, बिनायाह बिन यहोयदा शाही दस्ते करेतीओ-फलेती पर 24 और अदोराम बेगारियों पर मुकर्रर था। यहसफत बिन अखीलूद बादशाह का मुशरर-खास था। 25 सिवा मीरमुंशी था और सदोक और अबियातर इमाम थे। 26 ईरा याईरी दाऊद का जाती इमाम था।

## 21

### साऊल के जुर्म का कफफारा

1 दाऊद की हुकूमत के दौरान काल पड़ गया जो तीन साल तक जारी रहा। जब दाऊद ने इसकी वजह दरियाफ्त की तो रब ने जवाब दिया, “काल इसलिए खत्म नहीं हो रहा कि साऊल ने जिबऊनियों को कल्ल किया था।”

2 तब बादशाह ने जिबऊनियों को बुला लिया ताकि उनसे बात करे। असल में वह इसराईली नहीं बल्कि अमोरियों का बचा-खुचा हिस्सा थे। मुल्के-कनान पर कब्जा करते वक़्त इसराईलियों ने कसम खाकर वादा किया था कि हम आपको हलाक नहीं करेंगे। लेकिन साऊल ने इसराईल और यहदाह के लिए जोश में आकर उन्हें हलाक करने की कोशिश की थी।

3 दाऊद ने जिबऊनियों से पूछा, “मैं उस ज़्यादाती का कफफारा किस तरह दे सकता हूँ जो आपसे हुई है? मैं आपके लिए क्या करूँ ताकि आप दुबारा उस ज़मीन को बरकत दें जो रब ने हमें मीरस में दी है?” 4 उन्होंने जवाब दिया, “जो साऊल ने हमारे और हमारे खानदानों के साथ किया है उसका इज़ाला सोने-चौंदी से नहीं किया जा सकता। यह भी मुनासिब नहीं कि हम इसके एवज़ किसी इसराईली को मार दें।” दाऊद ने सवाल किया, “तो फिर मैं आपके लिए क्या करूँ?” 5 जिबऊनियों ने कहा, “साऊल ही ने हमें हलाक करने का मनसूबा बनाया था, वही हमें तबाह करना चाहता था ताकि हम इसराईल की किस्ती भी जगह कायम न रह सके। 6 इसलिए साऊल की औलाद में से सात मर्दों को हमारे हवाले कर दें। हम उन्हें रब के चुने हुए बादशाह साऊल के वतनी शहर जिबिया में रब के पहाड़ पर मौत के घाट उतारकर उसके हुज़ूर लटका दें।”

बादशाह ने जवाब दिया, “मैं उन्हें आपके हवाले कर दूँगा।” 7 यूतन का बेटा मिफिबोसत साऊल का पोता तो था, लेकिन बादशाह ने उसे न छोड़ा, क्योंकि उसने रब की कसम खाकर यूतन से वादा किया था कि मैं आपको औलाद को कभी नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। 8 चुनौचे उसने साऊल की दाशता रिसफा बित ऐयाह के दो बेटों अरमोनी और मिफिबोसत को और इसके अलावा साऊल की बेटे मीरब के पाँच बेटों को चुन लिया। मीरब बरजिल्ली महालती के बेटे अदरियेल की बीवी थी। 9 इन सात आदमियों को दाऊद ने जिबऊनियों के हवाले कर दिया।

सातों आदमियों को मज़क़रा पहाड़ पर लाया गया। वहाँ जिबऊनियों ने उन्हें कल्ल करके रब के हुज़ूर लटका दिया। वह सब एक ही दिन मर गए। उस वक़्त जौ की फसल की कटाई शुरू हुई थी।

10 तब रिसफा बित ऐयाह सातों लाशों के पास गई और पत्थर पर अपने लिए टाट का कपड़ा बिछाकर लाशों की हिफाज़त करने लगी। दिन के वक़्त वह परिदों को भगाती और रात के वक़्त जंगली जानवरों को लाशों से दूर रखती रही। वह बहार के मौसम में फसल की कटाई के पहले दिनों से लेकर उस वक़्त तक वहाँ ठहरी रही जब तक बारिश न हुई।

11 जब दाऊद को मालूम हुआ कि साऊल की दाशता रिसफा ने क्या किया है 12-14 तो वह यबीस-जिलियाद के बाशिंदों के पास गया और उनसे साऊल और उसके बेटे यूतन की हठियों को लेकर साऊल के बाप क्रीस की कब्र में दफनाया। (जब फिलिस्तीयों ने जिलबुअ के पहाड़ी इलाके में इसराईलियों को शिकस्त दी थी तो उन्होंने साऊल और यूतन की लाशों को बैत-शान के चौक में लटका दिया था। तब यबीस-जिलियाद के आदमी चोरी चोरी वहाँ आकर लाशों को अपने पास ले गए थे।) दाऊद ने जिबिया में अब तक लटकी सात लाशों को भी उतारकर ज़िला में क्रीस की कब्र में दफनाया। ज़िला बिनयमीन के कबीले की आबादी है।

जब सब कुछ दाऊद के हुकम के मुताबिक किया गया था तो रब ने मुल्क के लिए दुआएँ सुन लीं।

### फिलिस्तीयों से ज़ंज

15 एक और बार फिलिस्तीयों और इसराईलियों के दरमियान जंग छिड़ गई। दाऊद अपनी फौज समेत फिलिस्तीयों से लड़ने के लिए निकला। जब वह लड़ता लड़ता निढाल हो गया था 16 तो एक फिलिस्ती ने उस पर हमला किया जिसका नाम इशबी-बनोब था। यह आदमी देवकामत मर्द रफा की नसल से था। उसके पास नई तलवार और इतना लंबा नेज़ा था कि सिर्फ उस की पीतल की नोक का वजन तकरीबन साढ़े 3 किलोग्राम था। 17 लेकिन अबीशै बिन ज़रूयाह दौड़कर दाऊद की मदद करने आया और फिलिस्ती को मार डाला। इसके बाद दाऊद के फौजियों ने कसम खाई, “आइंदा आप लड़ने के लिए हमारे साथ नहीं निकलेंगे। ऐसा न हो कि इसराईल का चराम बुझ जाए।”

18 इसके बाद इसराईलियों को जूब के करीब भी फिलिस्तीयों से लड़ना पड़ा। वहाँ सिब्वकी हसाती ने देवकामत प्रद रफा की औलाद में से एक आदमी को मार डाला जिसका नाम सफ था।



19 जब के करीब एक और लड़ाई छिड़ गई। इसके दौरान बैत-लहम के इल्हानान बिन यारे-उरजीम ने जाती जालत को मौत के घाट उतार दिया। जालत का नेजा खट्टी के शहतीर जैसा बड़ा था। 20 एक और दफा जात के पास लड़ाई हुई। फिलिस्तीयों का एक फौजी जो रफा की नसल का था बहुत लंबा था। उसके हाथों और पैरों की छः छः उँगलियाँ यानी मिलकर 24 उँगलियाँ थीं। 21 जब वह इसराइलियों का मजाक उड़ाने लगा तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे यूनतन ने उसे मार डाला। 22 जात के यह देवकामत मर्द रफा की औलाद थे, और वह दाऊद और उसके फौजियों के हाथों हलाक हुए।

## 22

### दाऊद का गीत

- 1 जिस दिन रब ने दाऊद को तमाम दुश्मनों और साऊल के हाथ से बचाया उस दिन बादशाह ने गीत गाया,
- 2 “रब मेरी चटान, मेरा किला और मेरा नजातदहिदा है।
- 3 मेरा खुदा मेरी चटान है जिसमें मैं पनाह लेता हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का पहाड़, मेरा बुलंद हिसार और मेरी पनाहगाह है। तू मेरा नजातदहिदा है जो मुझे जुल्मी-तशद्दुद से बचाता है।
- 4 मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तमजीद हो! तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।
- 5 मौत की मौजों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।
- 6 पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।
- 7 जब मैं मुसीबत में फँस गया तो मैंने रब को पुकारा। मैंने मदद के लिए अपने खुदा से फरियाद की तो उसने अपनी सुकूनतगाह से मेरी आवाज़ सुनी, मेरी चीखें उसके कान तक पहुँच गईं।
- 8 तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी, आसमान की बुनियादें रब के गज़ब के सामने काँपने और झलने लगीं।
- 9 उस की नाक से धुआँ निकल आया, उसके मुँह से भस्म करनेवाले शोले और दहकते कोयले भडक उठे।
- 10 आसमान को झुकाकर वह नाज़िल हुआ। जब उतर आया तो उसके पाँवों के नीचे अधेरा ही अधेरा था।
- 11 वह कस्तूरी फरिश्ते पर सवार हुआ और उड़कर हवा के परों पर मँडलाने लगा।
- 12 उसने अधेरे को अपनी छुपने की जगह बनाया, बारिश के काले और घने बादल ख़ैमे की तरह अपने इर्दगिर्द लगाए।
- 13 उसके हज़ूर की तेज़ रौशनी से शोलाज़न कोयले फूट निकले।
- 14 रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह तआला की आवाज़ गूँज उठी।
- 15 उसने अपने तीर चला दिए तो दुश्मन तित्तर-बित्तर हो गए। उस की बिजली इधर उधर गिरती गई तो उनमें हलचल मच गई।
- 16 रब ने डॉटा तो समुंदर की वादियाँ ज़ाहिर हुईं, जब वह गुस्से में गरजा तो उसके दम के झोंकों से ज़मीन की बुनियादें नज़र आईं।
- 17 बुलंदियों पर से अपना हाथ बढ़ाकर उसने मुझे पकड़ लिया, गहरे पानी में से खीचकर मुझे निकाल लाया।
- 18 उसने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया, उनसे जो मुझसे नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं गालिब न आ सका।
- 19 जिस दिन मैं मुसीबत में फँस गया उस दिन उन्होंने मुझ पर हमला किया, लेकिन रब मेरा सहारा बना रहा।
- 20 उसने मुझे तंग जगह से निकालकर छुटकारा दिया, क्योंकि वह मुझसे खुश था।
- 21 रब मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज़्र देता है। मेरे हाथ साफ़ हैं, इसलिए वह मुझे बरकत देता है।
- 22 क्योंकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं बदी करने से अपने खुदा से दूर नहीं हुआ।
- 23 उसके तमाम अहकाम मेरे सामने रहे हैं, मैं उसके फरमानों से नहीं हटा।
- 24 उसके सामने ही मैं बेइलज़ाम रहा, गुनाह करने से बाज़ रहा हूँ।
- 25 इसलिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाज़ी का अज़्र दिया, क्योंकि उस की आँखों के सामने ही मैं पाक-साफ़ साबित हुआ।
- 26 ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उसके साथ तेरा सुलूक वफ़ादारी का है, जो बेइलज़ाम है उसके साथ तेरा सुलूक बेइलज़ाम है।
- 27 जो पाक है उसके साथ तेरा सुलूक पाक है। लेकिन जो कज़रौ है उसके साथ तेरा सुलूक भी कज़रवी का है।
- 28 तू पस्तहालों को नजात देता है, और तेरी आँखें मग़स्रों पर लगी रहती हैं ताकि उन्हें पस्त करें।

29 ऐ रब, तू ही मेरा चराग है, रब ही मेरे अंधेरे को रौशन करता है।

30 क्योंकि तेरे साथ मैं फौजी दस्ते पर हमला कर सकता, अपने खुदा के साथ दीवार को फलॉग सकता हूँ।

31 अल्लाह की राह कामिल है, रब का फरमान ख़ालिस है। जो भी उसमें पनाह ले उस की वह ढाल है।

32 क्योंकि रब के सिवा कौन खुदा है? हमारे खुदा के सिवा कौन चटान है?

33 अल्लाह मुझे कुव्वत से कमरबस्ता करता, वह मेरी राह को कामिल कर देता है।

34 वह मेरे पाँवों को हिरन की-सी फुरती अता करता, मुझे मजबूती से मेरी बुलंदियों पर खडा करता है।

35 वह मेरे हाथों को जंग करने की तरबियत देता है। अब मेरे बाजू पीतल की कमान को भी तान लेते हैं।

36 ऐ रब, तूने मुझे अपनी नजात की ढाल बख्श दी है, तेरी नरमी ने मुझे बडा बना दिया है।

37 तू मेरे कदमों के लिए रास्ता बना देता है, इसलिए मेरे टखने नहीं डगमगाते।

38 मैंने अपने दुश्मनों का ताक्कुब करके उन्हें कुचल दिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह खत्म न हो गए।

39 मैंने उन्हें तबाह करके यों पाश पाश कर दिया कि दुबारा उठ न सके बल्कि गिरकर मेरे पाँवों तले पड़े रहे।

40 क्योंकि तूने मुझे जंग करने के लिए कुव्वत से कमरबस्ता कर दिया, तूने मेरे मुखालिफों को मेरे सामने झुका दिया।

41 तूने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया, और मैंने नफरत करनेवालों को तबाह कर दिया।

42 वह मदद के लिए चीखते-चिल्लाते रहे, लेकिन बचानेवाला कोई नहीं था। वह रब को पुकारते रहे, लेकिन उसने जवाब न दिया।

43 मैंने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में उडा दिया। मैंने उन्हें गली में मिट्टी की तरह पाँवों तले रौदकर रेजा रेजा कर दिया।

44 तूने मुझे मेरी कौम के झगड़ों से बचाकर अक्रवाम पर मेरी हुकूमत कायम रखी है। जिस कौम से मैं नावाकिफ था वह मेरी खिदमत करती है।

45 परदेसी दबककर मेरी खुशामद करते हैं। ज्योंही मैं बात करता हूँ तो वह मेरी सुनते हैं।

46 वह हिम्मत हारकर काँपते हुए अपने किलों से निकल आते हैं।

47 रब जिंदा है! मेरी चटान की तमजीद हो! मेरे खुदा की तार्जीम हो जो मेरी नजात की चटान है।

48 वही खुदा है जो मेरा इंतकाम लेता, अक्रवाम को मेरे ताबे कर देता

49 और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है। यकीनन तू मुझे मेरे मुखालिफों पर सरफराज़ करता, मुझे जालिमों से बचाए रखता है।

50 ऐ रब, इसलिए मैं अक्रवाम में तेरी हम्दो-सना करूँगा, तेरे नाम की तारीफ में गीत गाऊँगा।

51 क्योंकि रब अपने बादशाह को बडी नजात देता है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।”

## 23

### दाऊद के आखिरी अलफाज़

1 दर्जे-जैल दाऊद के आखिरी अलफाज़ हैं :

“दाऊद बिन यस्सी का फरमान जिसे अल्लाह ने सरफराज़ किया, जिसे याकूब के खुदा ने मसह करके बादशाह बना दिया था, और जिसकी तारीफ इसराईल के गीत करते हैं,

2 रब के रूह ने मेरी मारिफत बात की, उसका फरमान मेरी ज़बान पर था।

3 इसराईल के खुदा ने फरमाया, इसराईल की चटान मुझसे हमकलाम हुई, ‘जो इनसाफ से हुकूमत करता है, जो अल्लाह का खौफ मानकर हुक्मरानी करता है,

4 वह सबह की रौशनी की मानिद है, उस तुलए-आफताब की मानिद जब बादल छापे नहीं होते। जब उस की किरणें बारिश के बाद जमीन पर पडती हैं तो पौदे फूट निकलते हैं।’

5 यकीनन मेरा घराना मजबूती से अल्लाह के साथ है, क्योंकि उसने मेरे साथ अबदी अहद बाँधा है, ऐसा अहद जिसका हर पहलू मुनज्जम और महफूज़ है। वह मेरी नजात तकमील तक पहुँचाएगा और मेरी हर आरजू पूरी करेगा।

6 लेकिन बेदीन खारदार झाड़ियों की मानिंद हैं जो हवा के झोंकों से इधर उधर बिखर गई हैं। काँटों की वजह से कोई भी हाथ नहीं लगाता।

7 लोग उन्हें लोहे के औज़ार या नेजे के दस्ते से जमा करके वही के वही जला देते हैं।”

### दाऊद के सूमा

8 दर्जे-ज़ैल दाऊद के सूमाओं की फ़हरिस्त है। जो तीन अफ़सर योआब के भाई अबीशे के ऐन बाद आते थे उनमें योशेब-बशेबत तहक़्मनी पहले नंबर पर आता था। एक बार उसने अपने नेजे से 800 आदमियों को मार दिया।

9 इन तीन अफ़सरों में से दूसरी जगह पर इलियज़र बिन दोदो बिन अखूही आता था। एक जंग में जब उन्होंने फिलिस्तिनों को चैलेंज दिया था और इसराईली बाद में पीछे हट गए तो इलियज़र दाऊद के साथ 10 फिलिस्तिनों का मुक़ाबला करता रहा। उस दिन वह फिलिस्तिनों को मारते मारते इतना थक गया कि आखिरकार तलवार उठाने से बल्कि हाथ तलवार के साथ जम गया। रब ने उस की मारिफ़त बड़ी फ़तह बख़्शी। बाक़ी दस्ते सिर्फ़ लाशों को लूटने के लिए लौट आए।

11 उसके बाद तीसरी जगह पर सम्मा बिन अजी-हरारी आता था। एक मरतबा फिलिस्ती लही के करीब मसूर के खेत में इसराईल के खिलाफ़ लड़ रहे थे। इसराईली फ़ौजी उनके सामने भागने लगे, 12 लेकिन सम्मा खेत के दरमियान तक बढ़ गया और वहाँ लड़ते लड़ते फिलिस्तिनों को शिकस्त दी। रब ने उस की मारिफ़त बड़ी फ़तह बख़्शी।

13-14 एक और जंग के दौरान दाऊद अदुल्लाम के गार के पहाड़ी किले में था जबकि फिलिस्ती फ़ौज ने वादीए-रफ़ाईम में अपनी लशकरगाह लगाई थी। उनके दस्तों ने बैत-लहम पर भी कब्ज़ा कर लिया था। फसल का मौसम था। दाऊद के तीस आला अफ़सरों में से तीन उससे मिलने आए। 15 दाऊद को शदीद प्यास लगी, और वह कहने लगा, “कौन मेरे लिए बैत-लहम के दरवाज़े पर के हौज़ से कुछ पानी लाएगा?” 16 यह सुनकर तीनों अफ़सर फिलिस्तिनों की लशकरगाह पर हमला करके उसमें घुस गए और लड़ते लड़ते बैत-लहम के हौज़ तक पहुँच गए। उससे कुछ पानी भरकर वह उसे दाऊद के पास ले आए। लेकिन उसने पाने से इनकार कर दिया बल्कि उसे कुरबानी के तौर पर उंडेलकर रब को पेश किया 17 और बोला, “रब न करे कि मैं यह पानी पिऊँ। अगर ऐसा करता तो उन आदमियों का खून पीता जो अपनी जान पर खेलकर पानी लाए हैं।” इसलिए वह उसे पीना नहीं चाहता था। यह इन तीन सूमाओं के ज़बरदस्त कामों की एक मिसाल है।

18-19 योआब बिन ज़रूयाह का भाई अबीशे मज़क़रा तीन सूमाओं पर मुक़र्र था। एक दफ़ा उसने अपने नेजे से 300 आदमियों को मार डाला। तीनों की निसबत उस की दुगनी इज़ज़त की जाती थी, लेकिन वह खुद उनमें गिना नहीं जाता था।

20 बिनायाह बिन य़होयदा भी ज़बरदस्त फ़ौजी था। वह क़बज़ियेल का रहनेवाला था, और उसने बहुत दफ़ा अपनी मरदानगी दिखाई। योआब के दो बड़े सूमा उसके हाथों हलाक हुए। एक बार जब बहुत बर्फ़ पड़ गई तो उसने एक हौज़ में उतरकर एक शेरबबर को मार डाला जो उसमें गिर गया था। 21 एक और मौक़े पर उसका वास्ता एक देवकामत मिसरी से पड़ा। मिसरी के हाथ में नेज़ा था जबकि उसके पास सिर्फ़ लाठी थी। लेकिन बिनायाह ने उस पर हमला करके उसके हाथ से नेज़ा छीन लिया और उसे उसके अपने हथियार से मार डाला। 22 ऐसी बहादुरी दिखाने की बिना पर बिनायाह बिन य़होयदा मज़क़रा तीन आदमियों के बराबर मशहूर हुआ। 23 तीस अफ़सरों के दीगर मर्दों की निसबत उस की ज़्यादा इज़ज़त की जाती थी, लेकिन वह मज़क़रा तीन आदमियों में गिना नहीं जाता था। दाऊद ने उसे अपने मुहाफिज़ों पर मुक़र्र किया।

24 ज़ैल के आदमी बादशाह के 30 सूमाओं में शामिल थे।

योआब का भाई असाहेल, बैत-लहम का इल्हनान बिन दोदो, 25 सम्मा हरोदी, इलीका हरोदी, 26 खलिस फ़लती, तकुअ का ईरा बिन अक्कीस, 27 अनतोट का अबियज़र, मबूनी हसाती, 28 ज़लमोन अखूही, महरी नतफ़ाती, 29 हलिब बिन बाना नतफ़ाती, बिनयमीनी शहर जिबिया का इती बिन रीबी, 30 बिनायाह फिरआतोनी, नहले-जास का हिदी, 31 अबियलबोन अरबाती, अज़मावत बरहमी, 32-33 इलियहबा सालबूनी, बनी यसीन, यूनतन बिन सम्मा हरारी, अखियाम बिन सरार-हरारी, 34 इलीफ़लत बिन अहस्वी माकाती, इलियाम बिन अखीतफ़ल ज़िलोनी, 35 हसरो करमिली, फारी अरबी, 36 ज़ोबाह का इज़ाल बिन नातन, बानी जादी, 37 सिलक अम्मोनी, योआब बिन ज़रूयाह का सिलाहबरदार नहरी बैरोती, 38 ईरा इतरी, जरीब इतरी 39 और ऊरियाह हिती। आदमियों की कुल तादाद 37 थी।

## 24

### दाऊद की मर्दमशुमारी

1 एक बार फिर रब को इसराईल पर गुस्सा आया, और उसने दाऊद को उन्हें मुसीबत में डालने पर उकसाकर उसके ज़हन में मर्दमशुमारी करने का खयाल डाल दिया।

2 चुनौचे दाऊद ने फ़ौज के कमांडर योआब को हुक़म दिया, “दान से लेकर बैर-सबा तक इसराईल के तमाम कबीलों में से गुज़रते हुए जंग करने के काबिल मर्दों को गिन लें ताकि मालूम हो जाए कि उनकी कुल तादाद क्या है।” 3 लेकिन योआब ने

एतराज किया, “ऐ बादशाह मेरे आका, काश रब आपका खुदा आपके देखते देखते फौजियों की तादाद सौ गुना बढ़ाए। लेकिन मेरे आका और बादशाह उनकी मर्दमशुमारी क्यों करना चाहते हैं?” 4 लेकिन बादशाह योआब और फौज के बड़े अफसरों के एतराजात के बावजूद अपनी बात पर डटा रहा। चुनौचे वह दरबार से रवाना होकर इसराईल के मर्दा की फहरिस्त तैयार करने लगे।

5 दरियाए-यरदन को उबूर करके उन्होंने अरोईर और वादीए-अरनोन के बीच के शहर में शुरू किया। वहाँ से वह जद और याजेर से होकर 6 जिलियाद और हितियों के मुल्क के शहर कादिस तक पहुँचे। फिर आगे बढ़ते बढ़ते वह दान और सैदा के गिर्दो-नवाह के इलाके 7 और किलाबंद शहर सूर और हिब्बियों और कनानियों के तमाम शहरों तक पहुँच गए। आखिरकार उन्होंने यहदाह के जुनूब की मर्दमशुमारी बैर-सबा तक की।

8 यों पूरे मुल्क में सफर करते करते वह 9 महीनों और 20 दिनों के बाद यरूशालम वापस आए। 9 योआब ने बादशाह को मर्दमशुमारी की पूरी रिपोर्ट पेश की। इसराईल में तलवार चलाने के काबिल 8 लाख अफराद थे जबकि यहदाह के 5 लाख मर्द थे।

10 लेकिन अब दाऊद का जमीर उसको मलामत करने लगा। उसने रब से दुआ की, “मुझसे संगीन गुनाह सरजद हुआ है। ऐ रब, अब अपने खादिम का कुसर सुआफ कर। मुझसे बड़ी हमाकत हुई है।”

11 अगले दिन जब दाऊद सुबह के वक्त उठा तो उसके गैबबीन जाद नबी को रब की तरफ से पैगाम मिल गया, 12 “दाऊद के पास जाकर उसे बता देना, ‘रब तुझे तीन सजाएँ पेश करता है। इनमें से एक चुन ले’।” 13 जाद दाऊद के पास गया और उसे रब का पैगाम सुना दिया। उसने सवाल किया, “आप किस सजा को तरजीह देते हैं? अपने मुल्क में सात साल के दौरान काल? या यह कि आपके दुश्मन आपको भगाकर तीन माह तक आपका ताब्रकुब करते रहें? या यह कि आपके मुल्क में तीन दिन तक वबा फैल जाए? ध्यान से इसके बारे में सोचें ताकि मैं उसे आपका जवाब पहुँचा सकूँ जिसने मुझे भेजा है।”

14 दाऊद ने जवाब दिया, “हाय, मैं क्या कहूँ? मैं बहुत परेशान हूँ। लेकिन आदमियों के हाथ में पडने की निसबत बेहतर है कि मैं रब ही के हाथ में पड जाऊँ, क्योंकि उसका रहम अजीम है।”

15 तब रब ने इसराईल में वबा फैलने दी। वह उसी सुबह शुरू हुई और तीन दिन तक लोगों को मौत के घाट उतारती गई। शिमाल में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक कुल 70,000 अफराद हलाक हुए। 16 लेकिन जब वबा का फरिश्ता चलते चलते यरूशालम तक पहुँच गया और उस पर हाथ उठाने लगा तो रब ने लोगों की मुसीबत को देखकर तरस खाया और तबाह करनेवाले फरिश्ते को हुक्म दिया, “बस कर! अब बाज आ।” उस वक्त रब का फरिश्ता वहाँ खडा था जहाँ अरौनाह यबूसी अपना अनाज गाहता था।

17 जब दाऊद ने फरिश्ते को लोगों को मारते हुए देखा तो उसने रब से इलतमास की, “मैं ही ने गुनाह किया है, यह मेरा ही कुसर है। इन भेड़ों से क्या गलती हुई है? बराहे-करम इनको छोड़कर मुझे और मेरे खानदान को सजा दे।”

18 उसी दिन जाद दाऊद के पास आया और उससे कहा, “अरौनाह यबूसी की गाहने की जगह के पास जाकर उस पर रब की कुरबानगाह बना ले।” 19 चुनौचे दाऊद चढकर गाहने की जगह के पास आया जिस तरह रब ने जाद की मारिफत फरमाया था।

20 जब अरौनाह ने बादशाह और उसके दरबारियों को अपनी तरफ चढता हुआ देखा तो वह निकलकर बादशाह के सामने औधे मुँह झुक गया। 21 उसने पूछा, “मेरे आका और बादशाह मेरे पास क्यों आ गए?” दाऊद ने जवाब दिया, “मैं आपकी गाहने की जगह खरीदना चाहता हूँ ताकि रब के लिए कुरबानगाह तामीर करूँ। क्योंकि यह करने से वबा स्क जाएगी।”

22 अरौनाह ने कहा, “मेरे आका और बादशाह, जो कुछ आपको अच्छा लगे उसे लेकर चढाएँ। यह बैल भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए हाजिर हैं। और अनाज को गाहने और बैलों को जोतने का सामान कुरबानगाह पर रखकर जला दें।” 23 बादशाह सलामत, मैं खुशी से आपको यह सब कुछ दे देता हूँ। दुआ है कि आप रब अपने खुदा को पसंद आएँ।”

24 लेकिन बादशाह ने इनकार किया, “नहीं, मैं ज़रूर हर चीज की पूरी कीमत अदा करूँगा। मैं रब अपने खुदा को ऐसी कोई भस्म होनेवाली कुरबानी पेश नहीं करूँगा जो मुझे मुफ्त में मिल जाए।”

चुनौचे दाऊद ने बैलों समेत गाहने की जगह चाँदी के 50 सिक्कों के एवज़ खरीद ली। 25 उसने वहाँ रब की ताजीम में कुरबानगाह तामीर करके उस पर भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढाई। तब रब ने मुल्क के लिए दुआ सुनकर वबा को रोक दिया।

## 1 सलातीन

### अदूनियाह की साजिश

1 दाऊद बादशाह बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसे हमेशा सदीं लगती थी, और उस पर मज़ीद बिस्तर डालने से कोई फ़ायदा न होता था। 2 यह देखकर मुलाज़िमों ने बादशाह से कहा, “अगर इजाज़त हो तो हम बादशाह के लिए एक नौजवान कुँवारी ढूँड लें जो आपकी खिदमत में हाज़िर रहे और आपकी देख-भाल करे। लड़की आपके साथ लेटकर आपको गरम रखे।” 3 चुनौचे वह पूरे मुल्क में किसी खूबसूरत लड़की की तलाश करने लगे। ढूँडते ढूँडते अबीशाग शूनीमी को चुनकर बादशाह के पास लाया गया। 4 अब से वह उस की खिदमत में हाज़िर होती और उस की देख-भाल करती रही। लड़की निहायत खूबसूरत थी, लेकिन बादशाह ने कभी उससे सोहबत न की।

5-6 उन दिनों में अदूनियाह बादशाह बनने की साजिश करने लगा। वह दाऊद की बीवी हज्जीत का बेटा था। यों वह अबीसलूम का सौतेला भाई और उसके मरने पर दाऊद का सबसे बड़ा बेटा था। शक्लो-सूरत के लिहाज़ से लोग उस की बड़ी तारीफ़ किया करते थे, और बचपन से उसके बाप ने उसे कभी नहीं डाँटा था कि तू क्या कर रहा है। अब अदूनियाह अपने आपको लोगों के सामने पेश करके एलान करने लगा, “मैं ही बादशाह बनूँगा।” इस मक़सद के तहत उसने अपने लिए रथ और घोड़े ख़रीदकर 50 आदमियों को रख लिया ताकि वह जहाँ भी जाए उसके आगे आगे चलते रहें। 7 उसने योआब बिन ज़रूयाह और अबियातर इमाम से बात की तो वह उसके साथी बनकर उस की हिमायत करने के लिए तैयार हुए। 8 लेकिन सदोक इमाम, बिनायाह बिन यहोयदा और नातन नबी उसके साथ नहीं थे, न सिमई, रेई या दाऊद के मुहाफ़िज़।

9 एक दिन अदूनियाह ने ऐन-राजिल चश्मे के करीब की चटान ज़हलत के पास ज़ियाफ़त की। काफ़ी भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल और मोटे-ताज़े बछड़े ज़बह किए गए। अदूनियाह ने बादशाह के तमाम बेटों और यहदाह के तमाम शाही अफ़सरों को दावत दी थी। 10 कुछ लोगों को जान-बूझकर इसमें शामिल नहीं किया गया था। उनमें उसका भाई सुलेमान, नातन नबी, बिनायाह और दाऊद के मुहाफ़िज़ शामिल थे।

### दाऊद सुलेमान को बादशाह करार देता है

11 तब नातन सुलेमान की माँ बत-सबा से मिला और बोला, “क्या यह खबर आप तक नहीं पहुँची कि हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने अपने आपको बादशाह बना लिया है? और हमारे आका दाऊद को इसका इल्म तक नहीं! 12 आपकी और आपके बेटे सुलेमान की जिंदगी बड़े ख़तरे में है। इसलिए लाज़िम है कि आप मेरे मशवरे पर फ़ौरन अमल करें। 13 दाऊद बादशाह के पास जाकर उसे बता देना, ‘ऐ मेरे आका और बादशाह, क्या आपने कसम खाकर मुझसे वादा नहीं किया था कि तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद तख़्तनशीन होगा? तो फिर अदूनियाह क्यों बादशाह बन गया है?’ 14 आपकी बादशाह से गुफ्तगू अभी ख़तम नहीं होगी कि मैं दाखिल होकर आपकी बात की तसदीक करूँगा।”

15 बत-सबा फ़ौरन बादशाह के पास गई जो सोने के कमरे में लेटा हुआ था। उस वक़्त तो वह बहुत उग्रसीदा हो चुका था, और अबीशाग उस की देख-भाल कर रही थी। 16 बत-सबा कमरे में दाखिल होकर बादशाह के सामने मुँह के बल झुक गई। दाऊद ने पूछा, “क्या बात है?” 17 बत-सबा ने कहा, “मेरे आका, आपने तो रब अपने खुदा की कसम खाकर मुझसे वादा किया था कि तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद तख़्तनशीन होगा। 18 लेकिन अब अदूनियाह बादशाह बन बैठा है और मेरे आका और बादशाह को इसका इल्म तक नहीं। 19 उसने ज़ियाफ़त के लिए बहुत-से गाय-बैल, मोटे-ताज़े बछड़े और भेड़-बकरियाँ ज़बह करके तमाम शहजादों को दावत दी है। अबियातर इमाम और फ़ौज का कमाँडर योआब भी इनमें शामिल हैं, लेकिन आपके खादिम सुलेमान को दावत नहीं मिली। 20 ऐ बादशाह मेरे आका, इस वक़्त तमाम इसराईल की आँखें आप पर लगी हैं। सब आपसे यह जानने के लिए तडपते हैं कि आपके बाद कौन तख़्तनशीन होगा। 21 अगर आपने जल्द ही कदम न उठाया तो आपके कूच कर जाने के फ़ौरन बाद मैं और मेरा बेटा अदूनियाह का निशाना बनकर मुजरिम ठहरेंगे।”

22-23 बत-सबा अभी बादशाह से बात कर ही रही थी कि दाऊद को इतली दी गई कि नातन नबी आपसे मिलने आया है। नबी कमरे में दाखिल होकर बादशाह के सामने औंधे मुँह झुक गया। 24 फिर उसने कहा, “मेरे आका, लगता है कि आप इस हक़ में हैं कि अदूनियाह आपके बाद तख़्तनशीन हो। 25 क्योंकि आज उसने ऐन-राजिल जाकर बहुत-से गाय-बैल, मोटे-ताज़े बछड़े और भेड़-बकरियों को ज़बह किया है। ज़ियाफ़त के लिए उसने तमाम शहजादों, तमाम फ़ौजी अफ़सरों और अबियातर इमाम को दावत दी है। इस वक़्त वह उसके साथ खाना खा खाकर और मैं पी पीकर नारा लगा रहे हैं, ‘अदूनियाह बादशाह जिंदाबाद!’ 26 कुछ लोगों को जान-बूझकर दावत नहीं दी। उनमें मैं आपका खादिम, सदोक इमाम, बिनायाह बिन यहोयदा

और आपका खादिम सुलेमान भी शामिल है। 27 मेरे आका, क्या आपने वाकई इसका हुक्म दिया है? क्या आपने अपने खादिमों को इतला दिए बगैर फ़ैसला किया है कि यह शख्स बादशाह बनेगा?"

28 जवाब में दाऊद ने कहा, "बत-सबा को बुलाएँ!" वह वापस आई और बादशाह के सामने खड़ी हो गई। 29 बादशाह बोला, "रब की हयात की क़सम जिसने फ़िघा देकर मुझे हर मुसीबत से बचाया है, 30 आपका बेटा सुलेमान मेरे बाद बादशाह होगा बल्कि आज ही मेरे तख़्त पर बैठ जाएगा। हाँ, आज ही मैं वह वादा पूरा करूँगा जो मैंने रब इसराइल के ख़ुदा की क़सम खाकर आपसे किया था।" 31 यह सुनकर बत-सबा औंधे मुँह झुक गई और कहा, "मेरा मालिक दाऊद बादशाह ज़िंदाबाद!"

32 फिर दाऊद ने हुक्म दिया, "सदोक इमाम, नातन नबी और बिनायाह बिन यहोयदा को बुला लाएँ।" तीनों आए 33 तो बादशाह उनसे मुखातिब हुआ, "मेरे बेटे सुलेमान को मेरे ख़चचर पर बिठाएँ। फिर मेरे अफ़सरों को साथ लेकर उसे ज़ैहन चशमे तक पहुँचा दें। 34 वहाँ सदोक और नातन उसे मसह करके इसराइल का बादशाह बना दें। नरसिगे को बजा बजाकर नारा लगाना, 'सुलेमान बादशाह ज़िंदाबाद!' 35 इसके बाद मेरे बेटे के साथ यहाँ वापस आ जाना। वह महल में दाख़िल होकर मेरे तख़्त पर बैठ जाए और मेरी जगह हुक्मत करे, क्योंकि मैंने उसे इसराइल और यहदाह का हुक्मरान मुकर्रर किया है।"

36 बिनायाह बिन यहोयदा ने जवाब दिया, "आमीन, ऐसा ही हो! रब मेरे आका का ख़ुदा इस फ़ैसले पर अपनी बरकत दे। 37 और जिस तरह रब आपके साथ रहा उसी तरह वह सुलेमान के साथ भी हो, बल्कि वह उसके तख़्त को आपके तख़्त से कहीं ज्यादा सरबुलंद करे!" 38 फिर सदोक इमाम, नातन नबी, बिनायाह बिन यहोयदा और बादशाह के मुहाफ़िज़ करेतियों और फ़लेतियों ने सुलेमान को बादशाह के ख़चचर पर बिठाकर उसे ज़ैहन चशमे तक पहुँचा दिया। 39 सदोक के पास तेल से भरा मेंढे का वह सींग था जो मुक़द्दस ख़ैमे में पड़ा रहता था। अब उसने यह तेल लेकर सुलेमान को मसह किया। फिर नरसिगा बजाया गया और लोग मिलकर नारा लगाने लगे, "सुलेमान बादशाह ज़िंदाबाद! सुलेमान बादशाह ज़िंदाबाद!" 40 तमाम लोग बाँसरी बजाते और ख़ुशी मनाते हुए सुलेमान के पीछे चलने लगे। जब वह दुबारा यरूशलम में दाख़िल हुआ तो इतना शोर था कि ज़मीन लरज़ उठी।

### अदूनियाह की शिकस्त

41 लोगों की यह आवाज़ें अदूनियाह और उसके मेहमानों तक भी पहुँच गई। थोड़ी देर पहले वह खाने से फ़ारिग हुए थे। नरसिगे की आवाज़ सुनकर योआब चौक उठा और पूछा, "यह क्या है? शहर से इतना शोर क्यों सुनाई दे रहा है?" 42 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि अबियातर का बेटा यूनतन पहुँच गया। योआब बोला, "हमारे पास आएँ। आप जैसे लायक आदमी अच्छी खबर लेकर आ रहे होंगे।"

43 यूनतन ने जवाब दिया, "अफ़सोस, ऐसा नहीं है। हमारे आका दाऊद बादशाह ने सुलेमान को बादशाह बना दिया है। 44 उसने उसे सदोक इमाम, नातन नबी, बिनायाह बिन यहोयदा और बादशाह के मुहाफ़िज़ करेतियों और फ़लेतियों के साथ ज़ैहन चशमे के पास भेज दिया है। सुलेमान बादशाह के ख़चचर पर सवार था। 45 ज़ैहन चशमे के पास सदोक इमाम और नातन नबी ने उसे मसह करके बादशाह बना दिया। फिर वह ख़ुशी मनाते हुए शहर में वापस चले गए। पूरे शहर में हलचल मच गई। यही वह शोर है जो आपको सुनाई दे रहा है। 46 अब सुलेमान तख़्त पर बैठ चुका है, 47 और दरबारी हमारे आका दाऊद बादशाह को मुबारकबाद देने के लिए उसके पास पहुँच गए हैं। वह कह रहे हैं, 'आपका ख़ुदा करे कि सुलेमान का नाम आपके नाम से भी ज्यादा मशहूर हो जाए। उसका तख़्त आपके तख़्त से कहीं ज्यादा सरबुलंद हो।' बादशाह ने अपने बिस्तर पर झुककर अल्लाह की परास्तिश की 48 और कहा, 'रब इसराइल के ख़ुदा की तमजीद हो जिसने मेरे बेटों में से एक को मेरी जगह तख़्त पर बिठा दिया है। उसका शुक्र है कि मैं अपनी आँखों से यह देख सका।'

49 यूनतन के मुँह से यह खबर सुनकर अदूनियाह के तमाम मेहमान घबरा गए। सब उठकर चारों तरफ़ मुंतिशर हो गए। 50 अदूनियाह सुलेमान से ख़ौफ़ खाकर मुक़द्दस ख़ैमे के पास गया और कुरबानगाह के सींगों से लिपट गया। 51 किसी ने सुलेमान के पास जाकर उसे इतला दी, "अदूनियाह को सुलेमान बादशाह से ख़ौफ़ है, इसलिए वह कुरबानगाह के सींगों से लिपटे हुए कह रहा है, 'सुलेमान बादशाह पहले क़सम खाए कि वह मुझे मौत के घाट नहीं उतारेगा।'।" 52 सुलेमान ने वादा किया, "अगर वह लायक साबित हो तो उसका एक बाल भी ब्रीका नहीं होगा। लेकिन जब भी उसमें बर्दी पाई जाए वह ज़रूर मरेगा।"

53 सुलेमान ने अपने लोगों को अदूनियाह के पास भेज दिया ताकि वह उसे बादशाह के पास पहुँचाएँ। अदूनियाह आया और सुलेमान के सामने औंधे मुँह झुक गया। सुलेमान बोला, "अपने घर चले जाओ!"

## 2

1 जब दाऊद को महसूस हुआ कि कूच कर जाने का वक़्त करीब है तो उसने अपने बेटे सुलेमान को हिदायत की, 2 “अब मैं वहाँ जा रहा हूँ जहाँ दुनिया के हर शख्स को जाना होता है। चुनौचे मजबूत हों और मरदानगी दिखाएँ। 3 जो कुछ रब आपका खुदा आपसे चाहता है वह करें और उस की राहों पर चलते रहें। अल्लाह की शरीअत में दर्ज हर हुक्म और हिदायत पर पूरे तौर पर अमल करें। फिर जो कुछ भी करेंगे और जहाँ भी जाएंगे आपको कामयाबी नसीब होगी। 4 फिर रब मेरे साथ अपना वादा पूरा करेगा। क्योंकि उसने फ़रमाया है, ‘अगर तेरी औलाद अपने चाल-चलन पर ध्यान देकर पूरे दिलो-जान से मेरी वफ़ादार रहे तो इसराईल पर उस की हुक्मत हमेशा तक कायम रहेगी।’

5 दो एक और बातें भी हैं। आपको खूब मालूम है कि योआब बिन ज़रूयाह ने मेरे साथ कैसा सुलूक किया है। इसराईल के दो कर्मांडरों अबिनैर बिन नैर और अमासा बिन यतर को उसने कत्ल किया। जब जंग नहीं थी उसने जंग का खून बहाकर अपनी पेटी और जूतों को बेक़सूर खून से आलूदा कर लिया है। 6 उसके साथ वह कुछ करें जो आपको मुनासिब लगे। योआब बूढ़ा तो है, लेकिन ध्यान दें कि वह तबई मौत न मरे। 7 ताहम बरज़िल्ली जिलियादी के बेटों पर मेहरबानी करें। वह आपकी मेज़ के मुस्तक़िल मेहमान रहें, क्योंकि उन्होंने मेरे साथ भी ऐसा ही सुलूक किया जब मैंने आपके भाई अबीसलूम की वजह से यरूशलम से हिजरत की। 8 बहरीम के बिनयमीनी सिमई बिन जीरा पर भी ध्यान दें। जिस दिन मैं हिजरत करते हुए महनायम से गुज़र रहा था तो उसने मुझ पर लानतें भेजी। लेकिन मेरी वापसी पर वह दरियाए-यरदन पर मुझसे मिलने आया और मैंने रब की क़सम खाकर उससे वादा किया कि उसे मौत के घाट नहीं उतारूँगा। 9 लेकिन आप उसका जुर्म नज़रंदाज़ न करें बल्कि उस की मुनासिब सज़ा दें। आप दानिशमंद हैं, इसलिए आप ज़रूर सज़ा देने का कोई न कोई तरीका ढूँढ़ निकालेंगे। वह बूढ़ा तो है, लेकिन ध्यान दें कि वह तबई मौत न मरे।”

10 फिर दाऊद मरकर अपने बापदादा से जा मिला। उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। 11 वह कुल 40 साल तक इसराईल का बादशाह रहा, सात साल हब्रून में और 33 साल यरूशलम में। 12 सुलेमान अपने बाप दाऊद के बाद तख़्तनशीन हुआ। उस की हुक्मत मजबूती से कायम हुई।

### अदूनियाह की मौत

13 एक दिन दाऊद की बीवी हज़्जिता का बेटा अदूनियाह सुलेमान की माँ बत-सबा के पास आया। बत-सबा ने पूछा, “क्या आप अमनपसंद इरादा रखकर आए हैं?” अदूनियाह बोला, “जी, 14 बल्कि मेरी आपसे गुज़ारिश है।”

बत-सबा ने जवाब दिया, “तो फिर बताएँ!” 15 अदूनियाह ने कहा, “आप तो जानती हैं कि असल में बादशाह बनने का हक़ मेरा था। और यह तमाम इसराईल की तबक्को भी थी। लेकिन अब तो हालात बदल गए हैं। मेरा भाई बादशाह बन गया है, क्योंकि यही रब की मरज़ी थी। 16 अब मेरी आपसे दरखास्त है। इससे इनकार न करें।” बत-सबा बोली, “बताएँ।” 17 अदूनियाह ने कहा, “मैं अबीशाग श्लीमी से शादी करना चाहता हूँ। बराहे-करम सुलेमान बादशाह के सामने मेरी सिफ़ारिश करें ताकि बात बन जाए। अगर आप बात करें तो वह इनकार नहीं करेगा।” 18 बत-सबा राज़ी हुई, “चलें, ठीक है। मैं आपका यह मामला बादशाह को पेश करूँगी।”

19 चुनौचे बत-सबा सुलेमान बादशाह के पास गई ताकि उसे अदूनियाह का मामला पेश करे। जब दरबार में पहुँची तो बादशाह उठकर उससे मिलने आया और उसके सामने झुक गया। फिर वह दुबारा तख़्त पर बैठ गया और हुक्म दिया कि माँ के लिए भी तख़्त रखा जाए। बादशाह के दबने हाथ बैठकर 20 उसने अपना मामला पेश किया, “मेरी आपसे एक छोट्टी-सी गुज़ारिश है। इससे इनकार न करें।” बादशाह ने जवाब दिया, “अर्मी, बताएँ अपनी बात, मैं इनकार नहीं करूँगा।” 21 बत-सबा बोली, “अपने भाई अदूनियाह को अबीशाग श्लीमी से शादी करने दें।”

22 यह सुनकर सुलेमान भडक उठा, “अदूनियाह की अबीशाग से शादी!! यह कैसी बात है जो आप पेश कर रही हैं? अगर आप यह चाहती हैं तो क्यों न बराहे-रास्त तकाज़ा करें कि अदूनियाह मेरी जगह तख़्त पर बैठ जाए। आखिर वह मेरा बड़ा भाई है, और अबियातर इमाम और योआब बिन ज़रूयाह भी उसका साथ दे रहे हैं।” 23 फिर सुलेमान बादशाह ने रब की क़सम खाकर कहा, “इस दरखास्त से अदूनियाह ने अपनी मौत पर मुहर लगाई है। अल्लाह मुझे सख़्त सज़ा दे अगर मैं उसे मौत के घाट न उतारूँ। 24 रब की क़सम जिसने मेरी तसदीक करके मुझे मेरे बाप दाऊद के तख़्त पर बिठा दिया और अपने वादे के मुताबिक़ मेरे लिए घर तामीर किया है, अदूनियाह को आज ही मरना है।”

25 फिर सुलेमान बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म दिया कि वह अदूनियाह को मौत के घाट उतार दे। चुनौचे वह निकला और उसे मार डाला।

### योआब और अबियातर की सज़ा

26 अबियातर इमाम से बादशाह ने कहा, “अब यहाँ से चले जाएँ। अनंतोत में अपने घर में रहें और वहाँ अपनी ज़मीन में सँभालें। गो आप सज़ाए-मौत के लायक हैं तो भी मैं इस वक्त आपको नहीं मार दूँगा, क्योंकि आप मेरे बाप दाऊद के सामने रख कादिरे-मुतलक के अहद का संदूक उठाए हर जगह उनके साथ गए। आप मेरे बाप के तमाम तकलीफ़देह और मुश्किलतरीन लमहात में शरीक रहे हैं।” 27 यह कहकर सुलेमान ने अबियातर का रब के हुज़ूर इमाम की खिदमत संरजाम देने का हक़ मनसूख़ कर दिया। यों रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो उसने सैला में एली के घराने के बारे में की थी।

28 योआब को जल्द ही पता चला कि अदनियाह और अबियातर से क्या कुछ हुआ है। वह अबीसलूम की साज़िशों में तो शरीक नहीं हुआ था लेकिन बाद में अदनियाह का साथी बन गया था। इसलिए अब वह भागकर रब के मुकद्दस ख़ैमे में दाख़िल हुआ और कुरबानगाह के सींगों को पकड़ लिया। 29 सुलेमान बादशाह को इतला दी गई, “योआब भागकर रब के मुकद्दस ख़ैमे में गया है। अब वह वहाँ कुरबानगाह के पास खड़ा है।” यह सुनकर सुलेमान ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म दिया, “जाओ, योआब को मार दो।”

30 बिनायाह रब के ख़ैमे में जाकर योआब से मुखातिब हुआ, “बादशाह फरमाता है कि ख़ैमे से निकल आओ!” लेकिन योआब ने जवाब दिया, “नहीं, अगर मरना है तो यहीं मरूँगा।” बिनायाह बादशाह के पास वापस आया और उसे योआब का जवाब सुनाया। 31 तब बादशाह ने हुक्म दिया, “चलो, उस की मरजी! उसे वहीं मारकर दफ़न कर दो ताकि मैं और मेरे बाप का घराना उन कत्लों के जवाबदेह न ठहरे जो उसने बिलावजह किए हैं। 32 रब उसे उन दो आदमियों के कत्ल की सज़ा दे जो उससे कहीं ज्यादा शरीफ़ और अच्छे थे यानी इसराईली फ़ौज का कर्माँडर अबिनेर बिन नैर और यहदाह की फ़ौज का कर्माँडर अमासा बिन यतर। योआब ने दोनों को तलवार से मार डाला, हालाँकि मेरे बाप को इसका इल्म नहीं था। 33 योआब और उस की औलाद हमेशा तक इन कत्लों के कुसूरवार ठहरे। लेकिन रब दाऊद, उस की औलाद, घराने और तख़्त को हमेशा तक सलामती अता करे।”

34 तब बिनायाह ने मुकद्दस ख़ैमे में जाकर योआब को मार दिया। उसे यहदाह के बयाबान में उस की अपनी ज़मीन में दफ़न दिया गया। 35 योआब की जगह बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को फ़ौज का कर्माँडर बना दिया। अबियातर का ओहदा उसने सदोक इमाम को दे दिया।

### सिमई की मौत

36 इसके बाद बादशाह ने सिमई को बुलाकर उसे हुक्म दिया, “यहाँ यरूशलम में अपना घर बनाकर रहना। आइंदा आपको शहर से निकलने की इजाज़त नहीं है, खाह आप कहीं भी जाना चाहें। 37 यक्रीन जानें कि ज्योंही आप शहर के दरवाज़े से निकलकर वादीए-किदरोन को पार करेंगे तो आपको मार दिया जाएगा। तब आप खुद अपनी मौत के ज़िम्मादार ठहरेंगे।”

38 सिमई ने जवाब दिया, “ठीक है, जो कुछ मेरे आका ने फ़रमाया है मैं करूँगा।”

सिमई देर तक बादशाह के हुक्म के मुताबिक़ यरूशलम में रहा। 39 तीन साल यों ही गुज़र गए। लेकिन एक दिन उसके दो गुलाम भाग गए। चलते चलते वह जात के बादशाह अकीस बिन माका के पास पहुँच गए। किसी ने सिमई को इतला दी, “आपके गुलाम जात में ठहरे हुए हैं।” 40 वह फ़ौरन अपने गधे पर ज़ीन कसकर गुलामों को ढूँढ़ने के लिए जात में अकीस के पास चला गया। दोनों गुलाम अब तक वहीं थे तो सिमई उन्हें पकड़कर यरूशलम वापस ले आया।

41 सुलेमान को खबर मिली कि सिमई जात जाकर लौट आया है। 42 तब उसने उसे बुलाकर पूछा, “क्या मैंने आपको आगाह करके नहीं कहा था कि यक्रीन जानें कि ज्योंही आप यरूशलम से निकलेंगे आपको मार दिया जाएगा, खाह आप कहीं भी जाना चाहें। और क्या आपने जवाब में रब की कसम खाकर नहीं कहा था, ‘ठीक है, मैं ऐसा ही करूँगा?’” 43 लेकिन अब आपने अपनी कसम तोड़कर मेरे हुक्म की खिलाफ़वर्ज़ी की है। यह आपने क्यों किया है?” 44 फिर बादशाह ने कहा, “आप खूब जानते हैं कि आपने मेरे बाप दाऊद के साथ कितना बुरा सुलूक किया। अब रब आपको इसकी सज़ा देगा। 45 लेकिन सुलेमान बादशाह को वह बरकत देता रहेगा, और दाऊद का तख़्त रब के हुज़ूर अबद तक कायम रहेगा।”

46 फिर बादशाह ने बिनायाह बिन यहोयदा को हुक्म दिया कि वह सिमई को मार दे। बिनायाह ने उसे बाहर ले जाकर तलवार से मार दिया। यों सुलेमान की इसराईल पर हुक्मत मज़बूत हो गई।

## 3

### सुलेमान रब से हिकमत माँगता है

1 सुलेमान फ़िरोन की बेटी से शादी करके मिसरी बादशाह का दामाद बन गया। शुरू में उस की बीवी शहर के उस हिस्से में रहती थी जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता था। क्योंकि उस वक्त नया महल, रब का घर और शहर की फ़सील ज़ेरे-तामीर थे।



2 उन दिनों में रब के नाम का घर तामीर नहीं हुआ था, इसलिए इसराईली अपनी कुरबानियाँ मुखलिफ ऊँची जगहों पर चढ़ाते थे। 3 सुलेमान रब से प्यार करता था और इसलिए अपने बाप दाऊद की तमाम हिदायात के मुताबिक जिंदगी गुजारता था। लेकिन वह भी जानवरों की अपनी कुरबानियाँ और बखूर ऐसे ही मकामों पर रब को पेश करता था।

4 एक दिन बादशाह जिबऊन गया और वहाँ भस्म होनेवाली 1,000 कुरबानियाँ चढाई, क्योंकि उस शहर की ऊँची जगह कुरबानियाँ चढ़ाने का सबसे अहम मरकज थी। 5 जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो रब खाब में उस पर जाहिर हुआ और फरमाया, “तेरा दिल क्या चाहता है? मुझे बता दे तो मैं तेरी खाहिश पूरी करूँगा।”

6 सुलेमान ने जवाब दिया, “तू मेरे बाप दाऊद पर बड़ी मेहरबानी कर चुका है। वजह यह थी कि तेरा खादिम वफादारी, इनसाफ और खुलसदिली से तेरे हुज़ूर चलता रहा। तेरी उस पर मेहरबानी आज तक जारी रही है, क्योंकि तूने उसका बेटा उस की जगह तख्तनशीन कर दिया है। 7 ऐ रब मेरे खुदा, तूने अपने खादिम को मेरे बाप दाऊद की जगह तख्त पर बिठा दिया है। लेकिन मैं अभी छोटा बच्चा हूँ जिसे अपनी जिम्मादारियाँ सहीह तौर पर सँभालने का तजरबा नहीं हुआ। 8 तो भी तेरे खादिम को तेरी चुनी हुई कौम के बीच में खड़ा किया गया है, इतनी अजीम कौम के दरमियान कि उसे गिना नहीं जा सकता। 9 चुनौचे मुझे सुननेवाला दिल अता फरमा ताकि मैं तेरी कौम का इनसाफ करूँ और सहीह और गलत बातों में इम्तियाज कर सकूँ। क्योंकि कौन तेरी इस अजीम कौम का इनसाफ कर सकता है?”

10 सुलेमान की यह दरखास्त रब को पसंद आई, 11 इसलिए उसने जवाब दिया, “मैं खुश हूँ कि तूने न उग्र की दराजी, न दौलत और न अपने दुश्मनों की हलाकत बल्कि इम्तियाज करने की सलाहियत माँगी है ताकि सुनकर इनसाफ कर सके। 12 इसलिए मैं तेरी दरखास्त पूरी करके तुझे इतना दानिशमंद और समझदार बना दूँगा कि उतना न माजी में कोई था, न मुस्तकबिल में कभी कोई होगा। 13 बल्कि तुझे वह कुछ भी दे दूँगा जो तूने नहीं माँगा, यानी दौलत और इज्जत तेरे जिते-जी कोई और बादशाह तेरे बराबर नहीं पाया जाएगा। 14 अगर तू मेरी राहों पर चलता रहे और अपने बाप दाऊद की तरह मेरे अहकाम के मुताबिक जिंदगी गुजारे तो फिर मैं तेरी उग्र दराज करूँगा।”

15 सुलेमान जाग उठा तो मालूम हुआ कि मैंने खाब देखा है। वह यस्शलम को वापस चला गया और रब के अहद के संदूक के सामने खड़ा हुआ। वहाँ उसने भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश की, फिर बड़ी जियाफत की जिसमें तमाम दरबारी शरीक हुए।

### दो कसबियों के बच्चे के बारे में सुलेमान का फैसला

16 एक दिन दो कसबियाँ बादशाह के पास आईं। 17 एक बात करने लगी, “मेरे आक्का, हम दोनों एक ही घर में बसती हैं। कुछ देर पहले इसकी मौजूदगी में घर में मेरे बच्चा पैदा हुआ। 18 दो दिन के बाद इसके भी बचा हुआ। हम अकेली ही थी, हमारे सिवा घर में कोई और नहीं था। 19 एक रात को मेरी साथी का बच्चा मर गया। मैं ने सोते में करवटें बदलते बदलते अपने बच्चे को ढबा दिया था। 20 रातों रात इसे मालूम हुआ कि बेटा मर गया है। मैं अभी गहरी नींद सो रही थी। यह देखकर इसने मेरे बच्चे को उठाया और अपने सुरदे बेटे को मेरी गोद में रख दिया। फिर वह मेरे बेटे के साथ सो गई। 21 सुबह के वक्त जब मैं अपने बेटे को दूध पिलाने के लिए उठी तो देखा कि उससे जान निकल गई है। लेकिन जब दिन मज्जीद चढ़ा और मैं गौर से उसे देख सकी तो क्या देखती हूँ कि यह वह बच्चा नहीं है जिसे मैंने जन्म दिया है।”

22 दूसरी औरत ने उस की बात काटकर कहा, “हरगिज नहीं! यह झूट है। मेरा बेटा जिंदा है और तेरा तो मर गया है।” पहली औरत चीख उठी, “कभी भी नहीं! जिंदा बच्चा मेरा और मुरदा बच्चा तेरा है।” ऐसी बातें करते करते दोनों बादशाह के सामने झगड़ती रहीं।

23 फिर बादशाह बोला, “सीधी-सी बात यह है कि दोनों ही दावा करती हैं कि जिंदा बच्चा मेरा है और मुरदा बच्चा दूसरी का है। 24 ठीक है, फिर मेरे पास तलवार ले आएँ!” उसके पास तलवार लाई गई। 25 तब उसने हुक्म दिया, “जिंदा बच्चे को बराबर के दो हिस्सों में काटकर हर औरत को एक एक हिस्सा दे दें।” 26 यह सुनकर बच्चे की हकीकी माँ ने जिसका दिल अपने बेटे के लिए तडपता था बादशाह से इलतमास की, “नहीं मेरे आक्का, उसे मत मारें! बराहे-करम उसे इसी को दे दीजिए।”

लेकिन दूसरी औरत बोली, “ठीक है, उसे काट दें। अगर यह मेरा नहीं होगा तो कम अज्र कम तेरा भी नहीं होगा।”

27 यह देखकर बादशाह ने हुक्म दिया, “पक्के! बच्चे पर तलवार मत चलाएँ बल्कि उसे पहली औरत को दे दें जो चाहती है कि जिंदा रहे। वही उस की माँ है।” 28 जल्द ही सुलेमान के इस फैसले की खबर पूरे मुल्क में फैल गई, और लोगों पर बादशाह का खौफ छा गया, क्योंकि उन्होंने जान लिया कि अल्लाह ने उसे इनसाफ करने की खास हिकमत अता की है।

## 4

सुलेमान के सरकारी अफसरों की फहरिस्त

- 1 अब सुलेमान पूरे इसराईल पर हुकूमत करता था। 2 यह उसके आला अफसर थे :  
इमामे-आज़म : अज़रियाह बिन सदोक,
- 3 मीरमुंशी : सीसा के बेटे इलीहरिफ और अखियाह,  
बादशाह का मुशरि-खास : यहसफत बिन अखीलूद,
- 4 फ़ौज़ का कर्मांडर : बिनायाह बिन यहोयदा,  
इमाम : सदोक और अबियातर,
- 5 ज़िलों पर मुकर्रर अफसरों का सरदार : अज़रियाह बिन नातन,  
बादशाह का करीबी मुशरि : इमाम जबूद बिन नातन,
- 6 महल का इंचारज : अखीसर,  
बेगारियों का इंचारज : अदनीराम बिन अबदा
- 7 सुलेमान ने मुल्के-इसराईल को बारह जिलों में तकसीम करके हर जिले पर एक अफसर मुकर्रर किया था। इन अफसरों की एक जिम्मादारी यह थी कि दरबार की ज़रूरियात पूरी करें। हर अफसर को साल में एक माह की ज़रूरियात पूरी करनी थी। 8 दर्जे-ज़ैल इन अफसरों और उनके इलाकों की फहरिस्त है। बिन-हर : इफ़राईम का पहाड़ी इलाका,
- 9 बिन-दिकर : मकस, सालबीम, बैत-शम्स और ऐलोन-बैत-हनान,
- 10 बिन-हसद : अरूबोत, सोका और हिफर का इलाका,
- 11 सुलेमान की बेटी ताफ़त का शौहर बिन-अबीनदाब : साहिली शहर दोर का पहाड़ी इलाका,
- 12 बाना बिन अखीलूद : तानक, मजिदो और उस बैत-शान का पूरा इलाका जो ज़रतान के पड़ोस में यज़्ज़एल के नीचे वाके है, नीज़ बैत-शान से लेकर अबील-मह्ला तक का पूरा इलाका बशमूल युक्रमियाय,
- 13 बिन-जबर : जिलियाद में रामात का इलाका बशमूल याईर बिन मनस्सी की बस्तियों, फिर बसन में अज़रूब का इलाका। इसमें 60 ऐसे फ़सलीदार शहर शामिल थे जिनके दरवाज़ों पर पीतल के कुंडे लगे थे,
- 14 अखी-नदाब बिन इडू : महनायम,
- 15 सुलेमान की बेटी बासमत का शौहर अखीमाज़ : नफ़ताली का कबायली इलाका,
- 16 बाना बिन हसी : आशर का कबायली इलाका और बालोत,
- 17 यहसफत बिन फ़रूह : इशकार का कबायली इलाका,
- 18 सिमई बिन ऐला : बिनयमीन का कबायली इलाका,
- 19 जबर बिन ऊरी जिलियाद का वह इलाका जिस पर पहले अमोरी बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह ओज की हुकूमत थी। इस पूरे इलाके पर सिर्फ़ यही एक अफसर मुकर्रर था।

सुलेमान की हुकूमत की अज़मत

- 20 उस ज़माने में इसराईल और यहदाह के लोग साहिल की रेत की मानिंद बेशुमार थे। लोगों को खाने और पीने की सब चीज़ें दस्तयाब थीं, और वह खुश थे।
- 21 सुलेमान दरियाए-फ़ुरात से लेकर फिलिस्तियों के इलाके और मिसरी सरहद तक तमाम ममालिक पर हुकूमत करता था। उसके जीते-जी यह ममालिक उसके ताबे रहे और उसे खराज देते थे।
- 22 सुलेमान के दरबार की रोज़ाना ज़रूरियात यह थी : तकर्रीबन 5,000 किलोग्राम बारीक मैदा, तकर्रीबन 10,000 किलोग्राम आम मैदा, 23 10 मोटे-ताजे बैल, चरागाहों में पले हुए 20 आम बैल, 100 भेड़-बकरियों, और इसके अलावा हिरन, गज़ाल, मृग और मुख़्तलिफ़ किस्म के मोटे-ताजे मृग।
- 24 जितने ममालिक दरियाए-फ़ुरात के मगारिब में थे उन सब पर सुलेमान की हुकूमत थी, यानी तिफसह से लेकर गज़्ज़ा तक। किसी भी पड़ोसी मुल्क से उसका झगडा नहीं था, बल्कि सबके साथ सुलह थी। 25 उसके जीते-जी पूरे यहदाह और इसराईल में सुलह-सलामती रही। शिमाल में दान से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक हर एक सलामती से अंगूर की अपनी बेल और अंजीर के अपने दरख़्त के साये में बैठ सकता था।
- 26 अपने रथों के घोड़ों के लिए सुलेमान ने 4,000 धान बनवाए। उसके 12,000 घोड़े थे। 27 बारह जिलों पर मुकर्रर अफसर बाकायदगी से सुलेमान बादशाह और उसके दरबार की ज़रूरियात पूरी करते रहे। हर एक को साल में एक माह के लिए सब कुछ मुहैया करना था। उनकी मेहनत की वजह से दरबार में कोई कमी न हुई। 28 बादशाह की हिदायत के मुताबिक़ वह रथों के घोड़ों और दूसरे घोड़ों के लिए दरकार जी और भूसा बराहे-रास्त उनके थानों तक पहुँचाते थे।

29 अल्लाह ने सुलेमान को बहुत ज्यादा हिकमत और समझ अता की। उसे साहिल की रेत जैसा वसी इल्म हासिल हुआ। 30 उस की हिकमत इसराईल के मशरिक में रहनेवाले और मिसर के आलिमों से कहीं ज्यादा थी। 31 इस लिहाज से कोई भी उसके बराबर नहीं था। वह ऐतान इजराही और महोल के बेटों हैमान, कलकूल और दरदा पर भी सबकत ले गया था। उस की शोहरत इर्दगिर्द के तमाम ममालिक में फैल गई। 32 उसने 3,000 कहावतें और 1,005 गीत लिख दिए। 33 वह तफ़सील से मुख्तलिफ़ किस्म के पौदों के बारे में बात कर सकता था, लुबनान में देवदार के बड़े दरख्त से लेकर छोटे पौदे ज़फ़ा तक जो दीवार की दर्राओं में उगता है। वह म्हारत से चौपाइयों, परिंदों, रेंगेनेवाले जानवरों और मखलियों की तफ़सीलात भी बयान कर सकता था। 34 चुनौचे तमाम ममालिक के बादशाहों ने अपने सफ़ीरों को सुलेमान के पास भेज दिया ताकि उस की हिकमत सुनें।

## 5

### हीराम बादशाह के साथ सुलेमान का मुआहदा

1 सू का बादशाह हीराम हमेशा दाऊद का अच्छा दोस्त रहा था। जब उसे खबर मिली कि दाऊद के बाद सुलेमान को मसह करके बादशाह बनाया गया है तो उसने अपने सफ़ीरों को उसे मुबारकबाद देने के लिए भेज दिया। 2 तब सुलेमान ने हीराम को पैगाम भेजा, 3 “आप जानते हैं कि मेरे बाप दाऊद रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर तामीर करना चाहते थे। लेकिन यह उनके बस की बात नहीं थी, क्योंकि उनके जीते-जी इर्दगिर्द के ममालिक उनसे जंग करते रहे। गो रब ने दाऊद को तमाम दुश्मनों पर फ़तह बख़्शी थी, लेकिन लड़ते लड़ते वह रब का घर न बना सके। 4 अब हालात फ़रक़ हैं : रब मेरे ख़ुदा ने मुझे पूरा सुकून अता किया है। चारों तरफ़ न कोई मुख़ालिफ़ नज़र आता है, न कोई ख़तरा। 5 इसलिए मैं रब अपने ख़ुदा के नाम के लिए घर तामीर करना चाहता हूँ। क्योंकि मेरे बाप दाऊद के जीते-जी रब ने उनसे वादा किया था, ‘तेरे जिस बेटे को मैं तेरे बाद तख़्त पर बिठाऊँगा वहीं मेरे नाम के लिए घर बनाएगा।’ 6 अब गुज़ारिश है कि आपके लकड़हारे लुबनान में मेरे लिए देवदार के दरख़्त काट दें। मेरे लोग उनके साथ मिलकर काम करेंगे। आपके लोगों की मज़दूरी मैं ही अदा करूँगा। जो कुछ भी आप कहेंगे मैं उन्हें दूँगा। आप तो ख़ुब जानते हैं कि हमारे हाँ सदैव के लकड़हारों जैसे माहिर नहीं हैं।”

7 जब हीराम को सुलेमान का पैगाम मिला तो वह बहुत ख़ुश होकर बोल उठा, “आज रब की हम्द हो जिसने दाऊद को इस बड़ी कौम पर हुकूमत करने के लिए इतना दानिशमंद बेटा अता किया है!” 8 सुलेमान को हीराम ने जवाब भेजा, “मुझे आपका पैगाम मिल गया है, और मैं आपकी ज़रूर मदद करूँगा। देवदार और जूनीपर की जितनी लकड़ी आपको चाहिए वह मैं आपके पास पहुँचा दूँगा। 9 मेरे लोग दरख़्तों के तने लुबनान के पहाड़ी इलाके से नीचे साहिल तक लाएँगे जहाँ हम उनके बेड़े बाँधकर समुंद्र पर उस जगह पहुँचा देंगे जो आप मुक़र्र करेंगे। वहाँ हम तनों के रस्से खोल देंगे, और आप उन्हें ले जा सकेंगे। मुआवज़े में आप मुझे इतनी ख़ुराक मुहैया करें कि मेरे दरबार की ज़रूरियात पूरी हो जाएँ।”

10 चुनौचे हीराम ने सुलेमान को देवदार और जूनीपर की उतनी लकड़ी मुहैया की जितनी उसे ज़रूरत थी। 11 मुआवज़े में सुलेमान उसे सालाना तकरीबन 32,50,000 किलोग्राम गंदुम और तकरीबन 4,40,000 लिटर जैतून का तेल भेजता रहा। 12 इसके अलावा सुलेमान और हीराम ने आपस में सुलह का मुआहदा किया। यों रब ने सुलेमान को हिकमत अता की जिस तरह उसने उससे वादा किया था।

### रब का घर बनाने की पहली तैयारियाँ

13-14 सुलेमान बादशाह ने लुबनान में यह काम करने के लिए इसराईल में से 30,000 आदमियों की बेगार पर भरती की। उसने अदूनीराम को उन पर मुक़र्र किया। हर माह वह बारी बारी 10,000 अफ़राद को लुबनान में भेजता रहा। यों हर मज़दूर एक माह लुबनान में और दो माह घर में रहता। 15 सुलेमान ने 80,000 आदमियों को कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें। 70,000 अफ़राद यह पत्थर यस्शलम लाते थे। 16 उन लोगों पर 3,300 निगरान मुक़र्र थे। 17 बादशाह के हुकम पर वह कानों से बेहतरीन पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े निकाल लाए और उन्हें तराशकर रब के घर की बुनियाद के लिए तैयार किया। 18 जबल के कारीगरों ने सुलेमान और हीराम के कारीगरों की मदद की। उन्होंने मिलकर पत्थर के बड़े बड़े टुकड़े और लकड़ी को तराशकर रब के घर की तामीर के लिए तैयार किया।

## 6

### रब के घर की तामीर

1 सुलेमान ने अपनी हुकूमत के चौथे साल के दूसरे महीने ज़ीब में रब के घर की तामीर शुरू की। इसराईल को मिसर से निकले 480 साल गुज़र चुके थे।

2 इमारत की लंबाई 90 फुट, चौड़ाई 30 फुट और ऊँचाई 45 फुट थी। 3 सामने एक बरामदा बनाया गया जो इमारत जितना चौड़ा यानी 30 फुट और आगे की तरफ 15 फुट लंबा था। 4 इमारत की दीवारों में खिड़कियाँ थी जिन पर जंगले लगे थे। 5 इमारत से बाहर आकर सुलेमान ने दाएँ बाएँ की दीवारों और पिछली दीवार के साथ एक ढाँचा खड़ा किया जिसकी तीन मनजिलें थी और जिसमें मुखलिफ़ कमरे थे। 6 निचली मनजिल की अंदर की चौड़ाई साढ़े 7 फुट, दरमियानी मनजिल की 9 फुट और ऊपर की मनजिल की साढ़े 10 फुट थी। वजह यह थी कि रब के घर की बैरूनी दीवार की मोटाई मनजिल बमनजिल कम होती गई। इस तरीके से बैरूनी ढाँचे की दूसरी और तीसरी मनजिल के शहतीरों के लिए रब के घर की दीवार में सुराख बनाने की जरूरत नहीं थी बल्कि उन्हें दीवार पर ही रखा गया। यानी दरमियानी मनजिल की इमारतवाली दीवार निचली की दीवार की निसबत कम मोटी और ऊपरवाली मनजिल की इमारतवाली दीवार दरमियानी मनजिल की दीवार की निसबत कम मोटी थी। यों इस ढाँचे की छतों के शहतीरों को इमारत की दीवार तोड़कर उसमें लगाने की जरूरत नहीं थी बल्कि उन्हें इमारत की दीवार पर ही रखा गया।

7 जो पत्थर रब के घर की तामीर के लिए इस्तेमाल हुए उन्हें पत्थर की कान के अंदर ही तराशकर तैयार किया गया। इसलिए जब उन्हें ज़ेरे-तामीर इमारत के पास लाकर जोड़ा गया तो न हथौड़ों, न छैनी न लोहे के किसी और औज़ार की आवाज़ सुनाई दी।

8 इस ढाँचे में दाखिल होने के लिए इमारत की दहनी दीवार में दरवाज़ा बनाया गया। वहाँ से एक सीढ़ी परस्तर को दरमियानी और ऊपर की मनजिल तक पहुँचाती थी। 9 यों सुलेमान ने इमारत को तकमील तक पहुँचाया। छत को देवदार के शहतीरों और तख्तों से बनाया गया। 10 जो ढाँचा इमारत के तीनों तरफ़ खड़ा किया गया उसे देवदार के शहतीरों से इमारत की बाहरवाली दीवार के साथ जोड़ा गया। उस की तीनों मनजिलों की ऊँचाई साढ़े सात सात फुट थी।

11 एक दिन रब सुलेमान से हमकलाम हुआ, 12 “जहाँ तक मेरी सुकूनतगाह का ताल्लुक है जो तु मेरे लिए बना रहा है, अगर तु मेरे तमाम अहकाम और हिदायात के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारे तो मैं तेरे लिए वह कुछ करूँगा जिसका वादा मैंने तेरे बाप दाऊद से किया है। 13 तब मैं इसराइल के दरमियान रहूँगा और अपनी क्रौम को कभी तर्क नहीं करूँगा।”

### रब के घर का अंदरूनी हिस्सा

14 जब इमारत की दीवारों और छत मुकम्मल हुई 15 तो अंदरूनी दीवारों पर फ़र्श से लेकर छत तक देवदार के तख्ते लगाए गए। फ़र्श पर ज़नीपर के तख्ते लगाए गए। 16 अब तक इमारत का एक ही कमरा था, लेकिन अब उसने देवदार के तख्तों से फ़र्श से लेकर छत तक दीवार खड़ी करके पिछले हिस्से में अलग कमरा बना दिया जिसकी लंबाई 30 फुट थी। यह मुक़द्दसतरीन कमरा बन गया। 17 जो हिस्सा सामने रह गया उसे मुक़द्दस कमरा मुकर्रर किया गया। उस की लंबाई 60 फुट थी। 18 इमारत की तमाम अंदरूनी दीवारों पर देवदार के तख्ते यों लगे थे कि कहीं भी पत्थर नज़र न आया। तख्तों पर तूँब और फूल कंदा किए गए थे।

19 पिछले कमरे में रब के अहद का संदूक रखना था। 20 इस कमरे की लंबाई 30 फुट, चौड़ाई 30 फुट और ऊँचाई 30 फुट थी। सुलेमान ने इसकी तमाम दीवारों और फ़र्श पर खालिस सोना चढ़ाया। मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने देवदार की कुरबानगाह थी। उस पर भी सोना मँढ़ा गया 21 बल्कि इमारत के सामनेवाले कमरे की दीवारों, छत और फ़र्श पर भी सोना मँढ़ा गया। मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े पर सोने की ज़ंजीरें लगाई गईं। 22 चुनौचे इमारत की तमाम अंदरूनी दीवारों, छत और फ़र्श पर सोना मँढ़ा गया, और इसी तरह मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने की कुरबानगाह पर भी।

23 फिर सुलेमान ने जैतून की लकड़ी से दो कर्बूबी फ़रिशते बनवाए जिन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में रखा गया। इन मुजस्समों का कद 15 फुट था। 24-25 दोनों शक्लो-सूरत में एक जैसे थे। हर एक के दो पर थे, और हर पर की लंबाई साढ़े सात सात फुट थी। चुनौचे एक पर के सिरे से दूसरे पर के सिरे तक का फासला 15 फुट था। 26 हर एक का कद 15 फुट था। 27 उन्हें मुक़द्दसतरीन कमरे में यों एक दूसरे के साथ खड़ा किया गया कि हर फ़रिशते का एक पर दूसरे के पर से लगता जबकि दाईं और बाईं तरफ़ हर एक का दूसरा पर दीवार के साथ लगता था। 28 इन फ़रिशतों पर भी सोना मँढ़ा गया।

29 मुक़द्दस और मुक़द्दसतरीन कमरों की दीवारों पर कर्बूबी फ़रिशते, खजूर के दरख्त और फूल कंदा किए गए। 30 दोनों कमरों के फ़र्श पर भी सोना मँढ़ा गया। 31 सुलेमान ने मुक़द्दसतरीन कमरे का दरवाज़ा जैतून की लकड़ी से बनवाया। उसके दो किवाड़ थे, और चौखट की लकड़ी के पाँच कोने थे। 32 दरवाज़े के किवाड़ों पर कर्बूबी फ़रिशते, खजूर के दरख्त और फूल कंदा किए गए। इन किवाड़ों पर भी फ़रिशतों और खजूर के दरख्तों समेत सोना मँढ़ा गया। 33 सुलेमान ने इमारत में दाखिल होनेवाले दरवाज़े के लिए भी जैतून की लकड़ी से चौखट बनवाई, लेकिन उस की लकड़ी के चार कोने थे। 34 इस दरवाज़े के दो किवाड़ ज़नीपर की लकड़ी के बने हुए थे। दोनों किवाड़ दीवार तक घूम सकते थे। 35 इन किवाड़ों पर भी कर्बूबी फ़रिशते, खजूर के दरख्त और फूल कंदा किए गए थे। फिर उन पर सोना यों मँढ़ा गया कि वह अच्छी तरह इन बेल-बटों के साथ लग गया।

36 इमारत के सामने एक अंदरूनी सहन बनाया गया जिसकी चारदीवारी यों तामीर हुई कि पत्थर के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्द लगाया गया।

37 रब के घर की बुनियाद सुलेमान की हुकूमत के चौथे साल के दूसरे महीने जीब \* में डाली गई, 38 और उस की हुकूमत के ग्यारहवें साल के आठवें महीने बूल † में इमारत मुकम्मल हुई। सब कुछ नक्शे के ऐन मुताबिक बना। इस काम पर कुल सात साल लग गए।

## 7

### सुलेमान का महल

1 जो महल सुलेमान ने बनवाया वह 13 साल के बाद मुकम्मल हुआ।

2-3 उस की एक इमारत का नाम 'लुबनान का जंगल' था। इमारत की लंबाई 150 फुट, चौड़ाई 75 फुट और ऊँचाई 45 फुट थी। निचली मनज़िल एक बड़ा हाल था जिसके देवदार की लकड़ी के 45 सतून थे। पंद्रह पंद्रह सतूनों को तीन कतारों में खड़ा किया गया था। सतूनों पर शहतीर थे जिन पर दूसरी मनज़िल के फर्श के लिए देवदार के तख्ते लगाए गए थे। दूसरी मनज़िल के मुख्तलिफ़ कमरे थे, और छत भी देवदार की लकड़ी से बनाई गई थी। 4 हाल की दोनों लंबी दीवारों में तीन तीन खिड़कियाँ थी, और एक दीवार की खिड़कियाँ दूसरी दीवार की खिड़कियों के बिलकुल मुकाबिल थी। 5 इन दीवारों के तीन तीन दरवाज़े भी एक दूसरे के मुकाबिल थे। उनकी चौखटों की लकड़ी के चार चार कोने थे।

6 इसके अलावा सुलेमान ने सतूनों का हाल बनवाया जिसकी लंबाई 75 फुट और चौड़ाई 45 फुट थी। हाल के सामने सतूनों का बरामदा था। 7 उसने दीवान भी तामीर किया जो दीवाने-अदल कहलाता था। उसमें उसका तख्त था, और वहाँ वह लोगों की अदालत करता था। दीवान की चारों दीवारों पर फर्श से लेकर छत तक देवदार के तख्ते लगे हुए थे।

8 दीवान के पीछे सहन था जिसमें बादशाह का रिहाइशी महल था। महल का डिज़ायन दीवान जैसा था। उस की मिसरी बीबी फ़िरौन की बेटी का महल भी डिज़ायन में दीवान से मुताबिकत रखता था।

9 यह तमाम इमारतें बुनियादों से लेकर छत तक और बाहर से लेकर बड़े सहन तक आला किस्म के पत्थरों से बनी हुई थी, ऐसे पत्थरों से जो चारों तरफ़ आरी से नाप के ऐन मुताबिक काटे गए थे। 10 बुनियादों के लिए उम्दा किस्म के बड़े बड़े पत्थर इस्तेमाल हुए। बाज़ की लंबाई 12 और बाज़ की 15 फुट थी। 11 इन पर आला किस्म के पत्थरों की दीवारें खड़ी की गईं। दीवारों में देवदार के शहतीर भी लगाए गए। 12 बड़े सहन की चारदीवारी यों बनाई गई कि पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्द लगाया गया था। जो अंदरूनी सहन रब के घर के इर्दगिर्द था उस की चारदीवारी भी इसी तरह ही बनाई गई, और इसी तरह रब के घर के बरामदे की दीवारें भी।

### रब के घर के सामने के दो खास सतून

13 फिर सुलेमान बादशाह ने सूर के एक आदमी को बुलाया जिसका नाम हीराम था। 14 उस की माँ इसराएली कबीले नफ़ताली की बेवा थी जबकि उसका बाप सूर का रहनेवाला और पीतल का कारीगर था। हीराम बड़ी हिकमत, समझदारी और महारत से पीतल की हर चीज़ बना सकता था। इस किस्म का काम करने के लिए वह सुलेमान बादशाह के पास आया।

15 पहले उसने पीतल के दो सतून ढाल दिए। हर सतून की ऊँचाई 27 फुट और घेरा 18 फुट था। 16 फिर उसने हर सतून के लिए पीतल का बालाई हिस्सा ढाल दिया जिसकी ऊँचाई साढ़े 7 फुट थी। 17 हर बालाई हिस्से को एक दूसरे के साथ खूबसूरती से मिलाई गई सात जंजीरों से आरामता किया गया। 18-20 इन जंजीरों के ऊपर हीराम ने हर बालाई हिस्से को पीतल के 200 अनारों से सजाया जो दो कतारों में लगाए गए। फिर बालाई हिस्से सतूनों पर लगाए गए। बालाई हिस्सों की सोसन के फूल की-सी शकल थी, और यह फूल 6 फुट ऊँचे थे। 21 हीराम ने दोनों सतून रब के घर के बरामदे के सामने खड़े किए। दहने हाथ के सतून का नाम उसने 'यकीन' और बाएँ हाथ के सतून का नाम 'बोअज़' रखा। 22 बालाई हिस्से सोसन-नुमा थे। चुनौचे काम मुकम्मल हुआ।

### पीतल का हौज

23 इसके बाद हीराम ने पीतल का बड़ा गोल हौज ढाल दिया जिसका नाम 'समुंदर' रखा गया। उस की ऊँचाई साढ़े 7 फुट, उसका मुँह 15 फुट चौड़ा और उसका घेरा तकरीबन 45 फुट था। 24 हौज के किनारे के नीचे तूँबों की दो कतारें थीं। फ्री फुट तकरीबन 6 तूँबे थे। तूँबे और हौज मिलकर ढाले गए थे। 25 हौज को बैलों के 12 मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों का सख़ शिमाल की तरफ़, तीन का सख़ मग़रिब की तरफ़, तीन का सख़ जुनुब की तरफ़ और तीन का सख़ मशरिक की तरफ़ था। उनके पिछले हिस्से हौज की तरफ़ थे, और हौज उनके कंधों पर पड़ा था। 26 हौज का किनारा प्याले बल्कि सोसन

\* 6:37 अप्रैल ता मई। † 6:38 अक्तूबर ता नवंबर।

के फूल की तरह बाहर की तरफ मुड़ा हुआ था। उस की दीवार तकरीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में पानी के तकरीबन 44,000 लिटर समा जाते थे।

**पानी के बासन उठाने की हथगाड़ियाँ**

27 फिर हीराम ने पानी के बासन उठाने के लिए पीतल की हथगाड़ियाँ बनाईं। हर गाड़ी की लंबाई 6 फुट, चौड़ाई 6 फुट और ऊँचाई साढ़े 4 फुट थी। 28 हर गाड़ी का ऊपर का हिस्सा सरियों से मज़बूत किया गया फ्रेम था। 29 फ्रेम के बैरूनी पहलू शेरबबरों, बैलों और कर्बूबी फ़रिशतों से सजे हुए थे। शेरों और बैलों के ऊपर और नीचे पीतल के सेहरे लगे हुए थे। 30 हर गाड़ी के चार पहिये और दो धुरे थे। यह भी पीतल के थे। चारों कोनों पर पीतल के ऐसे टुकड़े लगे थे जिन पर बासन रखे जाते थे। यह टुकड़े भी सेहरों से सजे हुए थे। 31 फ्रेम के अंदर जिस जगह बासन को रखा जाता था वह गोल थी। उस की ऊँचाई डेढ़ फुट थी, और उसका मुँह सवा दो फुट चौड़ा था। उसके बैरूनी पहलू पर चीज़ें कंदा की गई थी। गाड़ी का फ्रेम गोल नहीं बल्कि चौरस था। 32 गाड़ी के फ्रेम के नीचे मज़कूरा चार पहिये थे जो धुरों से जुड़े थे। धुरे फ्रेम के साथ ही ढल गए थे। हर पहिया सवा दो फुट चौड़ा था। 33 पहिये रथों के पहियों की मानिंद थे। उनके धुरे, किनारे, तार और नाभें सबके सब पीतल से ढाले गए थे। 34 गाड़ियों के चार कोनों पर दस्ते लगे थे जो फ्रेम के साथ मिलकर ढाले गए थे। 35-36 हर गाड़ी के ऊपर का किनारा नौ इंच ऊँचा था। कोनों पर लगे दस्ते और फ्रेम के पहलू हर जगह कर्बूबी फ़रिशतों, शेरबबरों और खज़ूर के दरख्तों से सजे हुए थे। चारों तरफ सेहरे भी कंदा किए गए। 37 हीराम ने दसों गाड़ियों को एक ही सौंच में ढाला, इसलिए सब एक जैसी थीं।

38 हीराम ने हर गाड़ी के लिए पीतल का बासन ढाल दिया। हर बासन 6 फुट चौड़ा था, और उसमें 880 लिटर पानी समा जाता था। 39 उसने पाँच गाड़ियाँ रब के घर के दाएँ हाथ और पाँच उसके बाएँ हाथ खड़ी कीं। हौज़ बनाम समुंद्र को उसने रब के घर के जुनूब-मशरिक में रख दिया।

**उस सामान की फ़हरिस्त जो हीराम ने बनाया**

40 हीराम ने बासन, बेलचे और छिडकाव के कटोरे भी बनाए। यों उसने रब के घर में वह सारा काम मुकम्मल किया जिसके लिए सुलेमान बादशाह ने उसे बुलाया था। उसने ज़ैल की चीज़ें बनाईं :

41 दो सतून,

सतनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,

बालाई हिस्सों पर लगी जंजीरों का डिजायन,

42 जंजीरों के ऊपर लगे अनार (फी बालाई हिस्सा 200 अदद),

43 10 हथगाड़ियाँ,

इन पर के पानी के 10 बासन,

44 हौज़ बनाम समुंद्र,

इसे उठानेवाले बैल के 12 मुजस्समे,

45 बालाटियाँ, बेलचे और छिडकाव के कटोरे।

यह तमाम सामान जो हीराम ने सुलेमान के हुक्म पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से ढालकर पालिश किया गया था।

46 बादशाह ने उसे वादीए-यरदन में सुक्कात और जरतान के दरमियान ढलवाया। वहाँ एक फ़ौंडरी थी जहाँ हीराम ने गारे के सौंचे बनाकर हर चीज़ ढाल दी। 47 इस सामान के लिए सुलेमान बादशाह ने इतना ज़्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि उसका कुल वज़न मालूम न हो सका।

**रब के घर के अंदर सोने का सामान**

48 रब के घर के अंदर के लिए सुलेमान ने दर्जे-ज़ैल सामान बनवाया :

सोने की कुरबानगाह,

सोने की वह मेज़ जिस पर रब के लिए मखसूस रोटियाँ पड़ी रहती थीं,

49 खालिस सोने के 10 शमादान जो मुकद्दसतरीन कमरे के सामने रखे गए, पाँच दरवाज़े के दहने हाथ और पाँच उसके बाएँ हाथ,

सोने के वह फूल जिनसे शमादान अरास्ता थे,

सोने के चराग और बत्ती को बुझाने के औज़ार,

50 खालिस सोने के बासन, चराग को कतरने के औज़ार, छिडकाव के कटोरे और प्याले,

जलते हुए कोयले के लिए खालिस सोने के बरतन,

मुकद्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाज़ों के कब्जे।

51 रब के घर की तकमील पर सुलेमान बादशाह ने वह सोना-चाँदी और बाकी तमाम क्रीमती चीजें रब के घर के खजानों में रखवा दीं जो उसके बाप दाऊद ने रब के लिए मखसूस की थीं।

## 8

अहद का संदूक रब के घर में लाया जाता है

1 फिर सुलेमान ने इसराईल के तमाम बुजुर्गों और कबीलों और कुंभों के तमाम सरपरस्तों को अपने पास यरूशलम में बुलाया, क्योंकि रब के अहद का संदूक अब तक यरूशलम के उस हिस्से में था जो 'दाऊद का शहर' या सिथ्यन कहलाता है। सुलेमान चाहता था कि क्रीम के नुमाइंदा हाज़िर हों जब संदूक को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया जाए। 2 चुनाँचे इसराईल के तमाम मर्द साल के सातवें महीने इतानीम \* में सुलेमान बादशाह के पास यरूशलम में जमा हुए। इसी महीने में झोंपडियों की ईद मनाई जाती थी।

3 जब सब जमा हुए तो इमाम रब के संदूक को उठाकर 4 रब के घर में लाए। लावियों के साथ मिलकर उन्होंने मुलाकात के खैमे को भी उसके तमाम मुकद्दस सामान समेत रब के घर में पहुँचाया। 5 वहाँ संदूक के सामने सुलेमान बादशाह और बाकी तमाम जमा हुए इसराईलियों ने इतनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल कुरबान किए कि उनकी तादाद गिनी नहीं जा सकती थी।

6 इमामों ने रब के अहद का संदूक पिछले यानी मुकद्दसतरीन कमरे में लाकर करूबी फरिशतों के परों के नीचे रख दिया। 7 फरिशतों के पर पूरे संदूक पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे। 8 तो भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लंबी थीं कि उनके सिरे सामनेवाले यानी मुकद्दस कमरे से नज़र आते थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा सकते थे। आज तक वह वही मौजूद हैं। 9 संदूक में सिर्फ पत्थर की वह दो तख्तियाँ थीं जिनको मूसा ने होरिब यानी कोहे-सीना के दामन में उसमें रख दिया था, उस वक़्त जब रब ने मिसर से निकले हुए इसराईलियों के साथ अहद बाँधा था।

10-11 जब इमाम मुकद्दस कमरे से निकलकर सहन में आए तो रब का घर एक बादल से भर गया। इमाम अपनी खिदमत अंजाम न दे सके, क्योंकि रब का घर उसके जलाल के बादल से मामूर हो गया था। 12 यह देखकर सुलेमान ने दुआ की, 'रब ने फरमाया है कि मैं घने बादल के अधरे में रहूँगा। 13 यक्रीनन मैंने तेरे लिए अज़ीम सुकूनतगाह बनाई है, एक मक़ाम जो तेरी अबदी सुकूनत के लायक है।'

रब के घर की मखसूसियत पर सुलेमान की तकरीर

14 फिर बादशाह ने मुडकर रब के घर के सामने खड़ी इसराईल की पूरी जमात की तरफ़ स़ब किया। उसने उन्हें बरकत देकर कहा,

15 'रब इसराईल के खुदा की तारीफ़ हो जिसने वह वादा पूरा किया है जो उसने मेरे बाप दाऊद से किया था। क्योंकि उसने फ़रमाया, 16 'जिस दिन मैं अपनी क्रीम इसराईल को मिसर से निकाल लाया उस दिन से लेकर आज तक मैंने कभी न फ़रमाया कि इसराईली कबीलों के किसी शहर में मेरे नाम की ताज़ीम में घर बनाया जाए। लेकिन मैंने दाऊद को अपनी क्रीम इसराईल का बादशाह बनाया है।'

17 मेरे बाप दाऊद की बड़ी खाहिश थी कि रब इसराईल के खुदा के नाम की ताज़ीम में घर बनाए। 18 लेकिन रब ने एतराज़ किया, 'मैं खुश हूँ कि तू मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना चाहता है, 19 लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही उसे बनाएगा।'

20 और वाकई, रब ने अपना वादा पूरा किया है। मैं रब के वादे के ऐन मुताबिक़ अपने बाप दाऊद की जगह इसराईल का बादशाह बनकर तख़्त पर बैठ गया हूँ। और अब मैंने रब इसराईल के खुदा के नाम की ताज़ीम में घर भी बनाया है। 21 उसमें मैंने उस संदूक के लिए मक़ाम तैयार कर रखा है जिसमें शरीअत की तख्तियाँ पड़ी हैं, उस अहद की तख्तियाँ जो रब ने हमारे बापदादा से मिसर से निकालते वक़्त बाँधा था।'

रब के घर की मखसूसियत पर सुलेमान की दुआ

22 फिर सुलेमान इसराईल की पूरी जमात के देखते देखते रब की कुरबानगाह के सामने खड़ा हुआ। उसने अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर 23 दुआ की,

'ए रब इसराईल के खुदा, तूज़ जैसा कोई खुदा नहीं है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना वह अहद कायम रखता है जिसे तूने अपनी क्रीम के साथ बाँधा है और अपनी मेहरबानी उन सब पर जाहिर करता है जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते हैं। 24 तूने अपने खादिम दाऊद से किया हुआ वादा पूरा किया है। जो बात तूने अपने मुँह से मेरे बाप से की वह तूने अपने हाथ से आज ही पूरी की है। 25 ए रब इसराईल के खुदा, अब अपनी दूसरी बात भी पूरी कर जो तूने अपने खादिम दाऊद से की

\* 8:2 सितंबर ता अक्टूबर

थी। क्योंकि तुने मेरे बाप से वादा किया था, 'अगर तेरी औलाद तेरी तरह अपने चाल-चलन पर ध्यान देकर मेरे हज़र चलती रहे तो इसराईल पर उस की हुकूमत हमेशा तक कायम रहेगी।' 26 ऐ इसराईल के खुदा, अब बराहे-करम अपना यह वादा पूरा कर जो तुने अपने खादिम मेरे बाप दाऊद से किया है।

27 लेकिन क्या अल्लाह वाकई ज़मीन पर सुकूनत करेगा? नहीं, तू तो बुलंदतरीन आसमान में भी समा नहीं सकता! तो फिर यह मकान जो मैंने बनाया है किस तरह तेरी सुकूनतगाह बन सकता है? 28 ऐ रब मेरे खुदा, तो भी अपने खादिम की दुआ और इल्लिजा सुन जब मैं आज तेरे हज़र पुकारते हुए इलतमास करता हूँ 29 कि बराहे-करम दिन-रात इस इमारत की निगरानी कर! क्योंकि यह वह जगह है जिसके बारे में तूने खुद फरमाया, 'यहाँ मेरा नाम सुकूनत करेगा।' चुनौतें अपने खादिम की गुज़ारिश सुन जो मैं इस मकाम की तरफ़ सख़ किए हुए करता हूँ। 30 जब हम इस मकाम की तरफ़ सख़ करके दुआ करें तो अपने खादिम और अपनी कौम की इल्लिजा सुन। आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन। और जब सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!

31 अगर किसी पर इलज़ाम लगाया जाए और उसे यहाँ तेरी कुरबानगाह के सामने लाया जाए ताकि हलफ़ उठाकर वादा करे कि मैं बेकुसूर हूँ 32 तो बराहे-करम आसमान पर से सुनकर अपने खादिमों का इन्साफ़ कर। कुसूरवार को मुज़रिम ठहराकर उसके अपने सर पर वह कुछ आने दे जो उससे सरज़द हुआ है, और बेकुसूर को बेइलज़ाम करार देकर उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।

33 हो सकता है किसी वक़्त तेरी कौम इसराईल तेरा गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने शिकस्त ख़ाए। अगर इसराईली आख़िरकार तेरे पास लौट आएँ और तेरे नाम की तमज़ीद करके यहाँ इस घर में तुझसे दुआ और इलतमास करें 34 तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना। अपनी कौम इसराईल का गुनाह मुआफ़ करके उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस लाना जो तूने उनके बापदादा को दे दिया था।

35 हो सकता है इसराईली तेरा इतना संगीन गुनाह करें कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश न बरसे। अगर वह आख़िरकार इस घर की तरफ़ सख़ करके तेरे नाम की तमज़ीद करें और तेरी सज़ा के बाइस अपना गुनाह छोड़कर लौट आएँ 36 तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना। अपने खादिमों और अपनी कौम इसराईल को मुआफ़ कर, क्योंकि तू ही उन्हें अच्छी राह की तालीम देता है। तब उस मुल्क पर दुबारा बारिश बरसा दे जो तूने अपनी कौम को मीरास में दे दिया है।

37 हो सकता है इसराईल में काल पड़ जाए, अनाज की फ़सल किसी बीमारी, फफूँदी, टिड्डियों या कीड़ों से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी शहर का मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी हो, 38 अगर कोई इसराईली या तेरी पूरी कौम उसका सबब जानकर अपने हाथों को इस घर की तरफ़ बढाए और तुझसे इलतमास करे 39 तो आसमान पर अपने तख़्त से उनकी फ़रियाद सुन लेना। उन्हें मुआफ़ करके वह कुछ कर जो ज़रूरी है। हर एक को उस की तमाम हरकतों का बदला दे, क्योंकि सिर्फ़ तू ही हर इन्सान के दिल को जानता है। 40 फिर जितनी देर वह उस मुल्क में ज़िंदगी गुज़ारेंगे जो तूने हमारे बापदादा को दिया था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़ मानेंगे।

41 आइंदा परदेसी भी तेरे नाम के सबब से दूर-दराज़ ममालिक से आएँगे। अगरचे वह तेरी कौम इसराईल के नहीं होंगे 42 तो भी वह तेरे अज़ीम नाम, तेरी बड़ी क़ुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों के बारे में सुनकर आएँगे और इस घर की तरफ़ सख़ करके दुआ करेंगे। 43 तब आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना। जो भी दरखास्त वह पेश करें वह पूरी करना ताकि दुनिया की तमाम अक़वाम तेरा नाम जानकर तेरी कौम इसराईल की तरह ही तेरा ख़ौफ़ मानें और जान लें कि जो इमारत मैंने तामीर की है उस पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।

44 हो सकता है तेरी कौम के मर्द तेरी हिदायत के मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए निकलें। अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ़ सख़ करके दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए तामीर की है 45 तो आसमान पर से उनकी दुआ और इलतमास सुनकर उनके हक़ में इन्साफ़ कायम रखना।

46 हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें तो हम सबसे सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे में तू नाराज़ होकर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे जो उन्हें कैद करके अपने किसी दूर-दराज़ या करीबी मुल्क में ले जाए। 47 शायद वह ज़िलावतनी में तौबा करके दुबारा तेरी तरफ़ रूजू करें और तुझसे इलतमास करें, 'हमने गुनाह किया है, हमसे ग़लती हुई है, हमने बेदीन हरकतें की हैं।' 48 अगर वह ऐसा करके दुश्मन के मुल्क में अपने पूरे दिलो-जान से दुबारा तेरी तरफ़ रूजू करें और तेरी तरफ़ से बापदादा को दिए गए मुल्क, तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ़ सख़ करके दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए तामीर की है 49 तो आसमान पर अपने तख़्त से उनकी दुआ और इलतमास सुन लेना। उनके हक़ में इन्साफ़ कायम करना, 50 और अपनी कौम के गुनाहों को मुआफ़ कर देना। जिस भी ज़ुर्म से उन्होंने तेरा गुनाह किया है वह मुआफ़ कर देना। बख़श



दे कि उन्हें गिरिफ्तार करनेवाले उन पर रहम करें। 51 क्योंकि यह तेरी ही क्रौम के अफराद हैं, तेरी ही मीरास जिसे तू मिसर के भडकते भट्टे से निकाल लाया।

52 ऐ अल्लाह, तेरी आँखें मेरी इल्तिजाओं और तेरी क्रौम इसराईल की फ़रियादों के लिए खुली रहें। जब भी वह मदद के लिए तुझे पुकारें तो उनकी सुन लेना! 53 क्योंकि तू, ऐ रब कादिरे-मुतलक ने इसराईल को दुनिया की तमाम क्रौमों से अलग करके अपनी खास मिलकियत बना लिया है। हमारे बापदादा को मिसर से निकालते वक़्त तूने मूसा की मारिफ़त इस हकीकत का एलान किया।”

### आखिरी दुआ और बरकत

54 इस दुआ के बाद सुलेमान खड़ा हुआ, क्योंकि दुआ के दौरान उसने रब की क़ुरबानगाह के सामने अपने घुटने टेके और अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाए हुए थे। 55 अब वह इसराईल की पूरी जमात के सामने खड़ा हुआ और बुलंद आवाज़ से उसे बरकत दी,

56 “रब की तमज़ीद हो जिसने अपने वादे के ऐन मुताबिक अपनी क्रौम इसराईल को आरामो-सुकून फ़राहम किया है। जितने भी ख़बसूरत वादे उसने अपने खादिम मूसा की मारिफ़त किए हैं वह सबके सब पूरे हो गए हैं। 57 जिस तरह रब हमारा ख़ुदा हमारे बापदादा के साथ था उसी तरह वह हमारे साथ भी रहे। न वह हमें छोड़े, न तर्क करे 58 बल्कि हमारे दिलों को अपनी तरफ़ मायल करे ताकि हम उस की तमाम राहों पर चलें और उन तमाम अहकाम और हिदायात के ताबे रहें जो उसने हमारे बापदादा को दी हैं।

59 रब के हुज़ूर मेरी यह फ़रियाद दिन-रात रब हमारे ख़ुदा के करीब रहे ताकि वह मेरा और अपनी क्रौम का इनसाफ़ कायम रखे और हमारी रोज़ाना ज़रूरियात पूरी करे। 60 तब तमाम अक्रवाम जान लेंगी कि रब ही ख़ुदा है और कि उसके सिवा कोई और माबूद नहीं है।

61 लेकिन लाज़िम है कि आप रब हमारे ख़ुदा के पूरे दिल से वफ़ादार रहें। हमेशा उस की हिदायात और अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारें, बिलकुल उसी तरह जिस तरह आप आज कर रहे हैं।”

### रब के घर की मख़सूसियत पर ज़शन

62-63 फिर बादशाह और तमाम इसराईल ने रब के हुज़ूर क़ुरबानियों पेश करके रब के घर को मख़सूस किया। इस सिलसिले में सुलेमान ने 22,000 गाय-बैलों और 1,20,000 भेड़-बकरियों को सलामती की क़ुरबानियों के तौर पर ज़बह किया। 64 उसी दिन बादशाह ने सहन का दरमियानी हिस्सा क़ुरबानियाँ चढ़ाने के लिए मख़सूस किया। वज़ह यह थी कि पीतल की क़ुरबानगाह इतनी क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए छोटी थी, क्योंकि भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और ग़ल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी। इसके अलावा सलामती की बेशुमार क़ुरबानियों की चरबी को भी जलाना था।

65 ईद 14 दिन तक मनाई गई। पहले हफ़्ते में सुलेमान और तमाम इसराईल ने रब के घर की मख़सूसियत मनाई और दूसरे हफ़्ते में झोंपड़ियों की ईद। बहुत ज़्यादा लोग शरीक हुए। वह दूर-दराज़ इलाकों से यस्शालम आए थे, शिमाल में लबो-हमात से लेकर जूनूब में उस वादी तक जो मिसर की सरहद थी। 66 दो हफ़्तों के बाद सुलेमान ने इसराईलियों को सख़सत किया। बादशाह को बरकत देकर वह अपने अपने घर चले गए। सब शादमान और दिल से ख़ुश थे कि रब ने अपने खादिम दाऊद और अपनी क्रौम इसराईल पर इतनी मेहरबानी की है।

## 9

### रब सुलेमान से हमक़लाम होता है

1 चुन्चें सुलेमान ने रब के घर और शाही महल को तक़मील तक पहुँचाया। जो कुछ भी उसने ठान लिया था वह पूरा हुआ। 2 उस वक़्त रब दुबारा उस पर ज़ाहिर हुआ, उस तरह जिस तरह वह ज़िबऊन में उस पर ज़ाहिर हुआ था। 3 उसने सुलेमान से कहा,

“जो दुआ और इल्तिजा तूने मेरे हुज़ूर की उसे मैंने सुनकर इस इमारत को जो तूने बनाई है अपने लिए मख़सूसो-मुक़द्दस कर लिया है। उसमें मैं अपना नाम अबद तक कायम रखूँगा। मेरी आँखें और दिल अबद तक वहाँ हाज़िर रहेंगे। 4 जहाँ तक तेरा ताल्लुक़ है, अपने बाप दाऊद की तरह दियानतदारी और रास्ती से मेरे हुज़ूर चलता रह। क्योंकि अगर तू मेरे तमाम अहकाम और हिदायात की पैरवी करता रहे 5 तो मैं तेरी इसराईल पर हुकूमत हमेशा तक कायम रखूँगा। फिर मेरा वह वादा कायम रहेगा जो मैंने तेरे बाप दाऊद से किया था कि इसराईल पर तेरी औलाद की हुकूमत हमेशा तक कायम रहेगी।

6 लेकिन ख़बरदार! अगर तू या तेरी औलाद मुझसे दूर होकर मेरे दिए गए अहकाम और हिदायात के ताबे न रहे बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रूज़ करके उनकी ख़िदमत और परस्तिश करे 7 तो मैं इसराईल को उस मुल्क में से मिटा दूँगा जो मैंने

उनको दे दिया था। न सिर्फ यह बल्कि मैं इस घर को भी रद्द कर दूँगा जो मैंने अपने नाम के लिए मख्सूसो-मुकद्दस कर लिया है। उस वक़्त इसराईल तमाम अक़वाम में मज़ाक़ और लान-तान का निशाना बन जाएगा।<sup>8</sup> इस शानदार घर की बुरी हालत देखकर यहाँ से गुज़रनेवाले तमाम लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह अपनी हिकारत का इज़हार करके पछेंगे, ‘रब ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा सुल्क क्यों किया?’<sup>9</sup> तब लोग जवाब देंगे, ‘इसलिए कि गो रब उनका खुदा उनके बापदादा को मिसर से निकालकर यहाँ लाया तो भी यह लोग उसे तर्क करके दीगर माबूदों से चिमट गए हैं। चूँकि वह उनकी परस्तिश और ख़िदमत करने से बाज़ न आए इसलिए रब ने उन्हें इस सारी मुसीबत में डाल दिया है।’”

### हीराम की मदद का सिला

<sup>10</sup> रब के घर और शाही महल को तामीर करने में <sup>20</sup> साल सर्फ़ हुए थे। <sup>11</sup> उस दौरान सूर का बादशाह हीराम सुलेमान को देवदार और जूनीपर की उतनी लकड़ी और उतना सोना भेजता रहा जितना सुलेमान चाहता था। जब इमारतें तकमिल तक पहुँच गई तो सुलेमान ने हीराम को मुआवज़े में गलील के <sup>20</sup> शहर दे दिए। <sup>12</sup> लेकिन जब हीराम उनका मुआयना करने के लिए सूर से गलील आया तो वह उसे पसंद न आए। <sup>13</sup> उसने सवाल किया, “मेरे भाई, यह कैसे शहर है जो आपने मुझे दिए हैं?” और उसने उस इलाके का नाम काबूल यानी ‘कुछ भी नहीं’ रखा। यह नाम आज तक रायज़ है। <sup>14</sup> बात यह थी कि हीराम ने इसराईल के बादशाह को तकरीबन 4,000 किलोग्राम सोना भेजा था।

### सुलेमान की मुख्तलिफ़ मुहिमात

<sup>15</sup> सुलेमान ने अपने तामीरी काम के लिए बेगारी लगाए। ऐसे ही लोगों की मदद से उसने न सिर्फ़ रब का घर, अपना महल, इर्दिगिर्द के चबूतरे और यरूशलम की फ़सील बनवाई बल्कि तीनों शहर हसूर, मजिदो और जज़र को भी।

<sup>16</sup> जज़र शहर पर मिसर के बादशाह फ़िरोन ने हमला करके क़ब्ज़ा कर लिया था। उसके कनानी बाशिंदों को क़त्ल करके उसने पूरे शहर को जला दिया था। जब सुलेमान की फ़िरोन की बेटी से शादी हुई तो मिसरी बादशाह ने जहेज़ के तौर पर उसे यह इलाका दे दिया। <sup>17</sup> अब सुलेमान ने जज़र का शहर दुबारा तामीर किया। इसके अलावा उसने नशेबी बैत-हैस्न,

<sup>18</sup> बालात और रेगिस्तान के शहर तदमूर में बहुत-सा तामीरी काम कराया।

<sup>19</sup> सुलेमान ने अपने गोदामों के लिए और अपने रथों और घोड़ों को रखने के लिए भी शहर बनवाए। जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या अपनी सलतनत की किसी और जगह बनवाना चाहता था वह उसने बनवाया।

<sup>20-21</sup> जिन आदमियों की सुलेमान ने बेगार पर भरती की वह इसराईली नहीं थे बल्कि अमोरी, हिती, फ़रिज़्जी, हिब्वी और यबूसी यानी कनान के पहले बाशिंदों की वह औलाद थे जो बाकी रह गए थे। मुल्क पर क़ब्ज़ा करते वक़्त इसराईली इन क्रौमों को पूरे तौर पर मिटा न सके, और आज तक इनकी औलाद को इसराईल के लिए बेगार में काम करना पड़ता है। <sup>22</sup> लेकिन सुलेमान ने इसराईलियों में से किसी को भी ऐसे काम करने पर मजबूर न किया बल्कि वह उसके फ़ौज़ी, सरकारी अफ़सर, फ़ौज़ के अफ़सर और रथों के फ़ौज़ी बन गए, और उन्हें उसके रथों और घोड़ों पर मुकर्रर किया गया। <sup>23</sup> सुलेमान के तामीरी काम पर भी 550 इसराईली मुकर्रर थे जो जिलों पर मुकर्रर अफ़सरों के ताबे थे। यह लोग तामीरी काम करनेवालों की निगरानी करते थे।

<sup>24</sup> जब फ़िरोन की बेटी यरूशलम के पुराने हिस्से बनाम ‘दाऊद का शहर’ से उस महल में मुंतकिल हुई जो सुलेमान ने उसके लिए तामीर किया था तो वह इर्दिगिर्द के चबूतरे बनवाने लगा। <sup>25</sup> सुलेमान साल में तीन बार रब को भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश करता था। वह उन्हें रब के घर की उस कुरबानगाह पर चढ़ाता था जो उसने रब के लिए बनवाई थी। साथ साथ वह बखूर भी जलाता था। यों उसने रब के घर को तकमिल तक पहुँचाया।

<sup>26</sup> इसके अलावा सुलेमान बादशाह ने बहरी जहाज़ों का बेड़ा भी बनवाया। इस काम का मरकज़ ऐलात के क़रीब शहर अस्थून-जाब्र था। यह बंदरगाह मुल्के-अदोम में बहरे-कुलज़ुम के साहिल पर है। <sup>27</sup> हीराम बादशाह ने उसे तज़रबाकार मल्लाह भेजे ताकि वह सुलेमान के आदमियों के साथ मिलकर जहाज़ों को चलाएँ। <sup>28</sup> उन्होंने ओफ़ीर तक सफ़र किया और वहाँ से तकरीबन 14,000 किलोग्राम सोना सुलेमान के पास ले आए।

## 10

### सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

<sup>1</sup> सुलेमान की शोहरत सबा की मलिका तक पहुँच गई। जब उसने उसके बारे में सुना और यह भी कि उसने रब के नाम के लिए क्या कुछ किया है तो वह सुलेमान से मिलने के लिए रवाना हुई ताकि उसे मुश्किल पहेलियाँ पेश करके उस की दानिशमंदी जाँच ले। <sup>2</sup> वह निहायत बड़े काफ़िले के साथ यरूशलम पहुँची जिसके ऊँट बलसान, कसरत के सोने और क्रीमती जवाहर से लदे हुए थे।

मलिका की सुलेमान से मुलाकात हुई तो उसने उससे वह तमाम मुश्किल सवालात पूछे जो उसके जहन में थे।<sup>3</sup> सुलेमान उसके हर सवाल का जवाब दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा नहीं थी कि बादशाह उसका मतलब मलिका को बता न सकता।<sup>4</sup> सबा की मलिका सुलेमान की वसी हिकमत और उसके नए महल से बहुत मुतअस्सिर हुई।<sup>5</sup> उसने बादशाह की मेज़ों पर के मुख्तलिफ़ खाने देखे और यह कि उसके अफ़सर किस तरीक़ब से उस पर बिठाए जाते थे। उसने बैरों की खिदमत, उनकी शानदार वरदियों और साकियों पर भी गौर किया। जब उसने इन बातों के अलावा भ्रम होनेवाली वह कुरबानियों भी देखीं जो सुलेमान रब के घर में चढ़ाता था तो मलिका हक्का-बक्का रह गई।

<sup>6</sup> वह बोल उठी, “वाकई, जो कुछ मैंने अपने मुल्क में आपके शाहकारों और हिकमत के बारे में सुना था वह दुस्त है।<sup>7</sup> जब तक मैंने खुद आकर यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा मुझे यकीन नहीं आता था। बल्कि हकीकत में मुझे आपके बारे में आधा भी नहीं बताया गया था। आपकी हिकमत और दौलत उन रिपोर्टों से कहीं ज्यादा है जो मुझ तक पहुँची थीं।<sup>8</sup> आपके लोग कितने मुबारक हैं! आपके अफ़सर कितने मुबारक हैं जो मुसलसल आपके सामने खड़े रहते और आपकी दानिश भरी बातें सुनते हैं।<sup>9</sup> रब आपके खुदा की तमजीद हो जिसने आपको पसंद करके इसराइल के तख़्त पर बिठाया है। रब इसराइल से अबदी मुहब्बत रखता है, इसी लिए उसने आपको बादशाह बना दिया है ताकि इन्साफ़ और रास्तबाज़ी कायम रखें।”

<sup>10</sup> फिर मलिका ने सुलेमान को तक्रीबन 4,000 किलोग्राम सोना, बहुत ज्यादा बलसान और जवाहर दिए। बाद में कभी भी उतना बलसान इसराइल में नहीं लाया गया जितना उस वक़्त सबा की मलिका लाई।

<sup>11</sup> हीराम के जहाज़ ओफ़ीर से न सिर्फ़ सोना लाए बल्कि उन्होंने कीमती लकड़ी और जवाहर भी बड़ी मिक़दार में इसराइल तक पहुँचाए।<sup>12</sup> जितनी कीमती लकड़ी उन दिनों में दरामद हुई उतनी आज तक कभी यहदाह में नहीं लाई गई। इस लकड़ी से बादशाह ने रब के घर और अपने महल के लिए कटहरे बनवाए। यह मौसीकारों के सरोद और सितार बनाने के लिए भी इस्तेमाल हुई।

<sup>13</sup> सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ़ से सबा की मलिका को बहुत-से तोहफ़े दिए। नीज़, जो कुछ भी मलिका चाहती थी या उसने माँगा वह उसे दिया गया। फिर वह अपने नौकर-चाकरों और अफ़सरों के हमराह अपने वतन वापस चली गई।

### सुलेमान की दौलत और शोहरत

<sup>14</sup> जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता था उसका वज़न तक्रीबन 23,000 किलोग्राम था।<sup>15</sup> इसमें वह टैक्स शामिल नहीं थे जो उसे सौदागरों, ताजिरो, अरब बादशाहों और जिलों के अफ़सरों से मिलते थे।

<sup>16-17</sup> सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और 300 छोटी ढालें बनवाईं। उन पर सोना मँदा गया। हर बड़ी ढाल के लिए तक्रीबन 7 किलोग्राम सोना इस्तेमाल हुआ और हर छोटी ढाल के लिए तक्रीबन साढ़े 3 किलोग्राम। सुलेमान ने उन्हें ‘लुबनान का जंगल’ नामी महल में महफूज़ रखा।

<sup>18</sup> इनके अलावा बादशाह ने हाथीदाँत से आस्ता एक बड़ा तख़्त बनवाया जिस पर ख़ालिस सोना चढ़ाया गया।<sup>19-20</sup> तख़्त की पुरत का ऊपर का हिस्सा गोल था, और उसके हर बाजू के साथ शेरबबर का मुजस्समा था। तख़्त कुछ ऊँचा था, और बादशाह छः पाएवाली सीढ़ी पर चढ़कर उस पर बैठता था। दाईं और बाईं तरफ़ हर पाए पर शेरबबर का मुजस्समा था। इस क्रिसम का तख़्त किसी और सलतनत में नहीं पाया जाता था।

<sup>21</sup> सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि ‘लुबनान का जंगल’ नामी महल में तमाम बरतन ख़ालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की नहीं थी, क्योंकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की कोई कदर नहीं थी।<sup>22</sup> बादशाह के अपने बहरी जहाज़ थे जो हीराम के जहाज़ों के साथ मिलकर मुख्तलिफ़ जगहों पर जाते थे। हर तीन साल के बाद वह सोने-चाँदी, हाथीदाँत, बंदरों और मोरों से लदे हुए वापस आते थे।

<sup>23</sup> सुलेमान की दौलत और हिकमत दुनिया के तमाम बादशाहों से कहीं ज्यादा थी।<sup>24</sup> पूरी दुनिया उससे मिलने की कोशिश करती रही ताकि वह हिकमत सुन ले जो अल्लाह ने उसके दिल में डाल दी थी।<sup>25</sup> साल बसाल जो भी सुलेमान के दरबार में आता वह कोई न कोई तोहफ़ा लाता। यों उसे सोने-चाँदी के बरतन, कीमती लिबास, हथियार, बलसान, घोड़े और ख़च्चर मिलते रहे।

<sup>26</sup> सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000 घोड़े थे। कुछ उसने रथों के लिए मख़सूस किए गए शहरों में और कुछ यस्शलम में अपने पास रखे।<sup>27</sup> बादशाह की सरगर्मियों के बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम हो गई और देवदार की कीमती लकड़ी यहदाह के मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके की अंजीर-तूत की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई।<sup>28</sup> बादशाह अपने घोड़े मिसर और क़ए यानी किलिकिया से दरामद करता था। उसके ताजिर इन जगहों पर जाकर उन्हें ख़रीद लाते थे।<sup>29</sup> बादशाह के रथ मिसर से दरामद होते थे। हर रथ की कीमत चाँदी के 600 सिक्के और हर घोड़े की कीमत चाँदी के 150 सिक्के थी। सुलेमान के ताजिर यह घोड़े बरामद करते हुए तमाम हिली और अरामी बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

# 11

सुलेमान रब से दूर हो जाता है

1 लेकिन सुलेमान बहुत-सी गैरमुल्की खवातीन से मुहब्बत करता था। फिरौन की बेटी के अलावा उस की शादी मोआबी, अम्मोनी, अदोमी, सैदानी और हिली औरतों से हुई। 2 इन कौमों के बारे में रब ने इसराइलियों को हुक्म दिया था, “न तुम इनके घरों में जाओ और न यह तुम्हारे घरों में आएँ, वरना यह तुम्हारे दिल अपने देवताओं की तरफ मायल कर देंगे।” तो भी सुलेमान बड़े प्यार से अपनी इन बीवियों से लिपटा रहा। 3 उस की शाही खानदानों से ताल्लुक रखनेवाली 700 बीवियाँ और 300 दासताएँ थीं। इन औरतों ने आखिरकार उसका दिल रब से दूर कर दिया। 4 जब वह बूढ़ा हो गया तो उन्होंने उसका दिल दीगर माबदों की तरफ मायल कर दिया। यों वह बुढ़ापे में अपने बाप दाऊद की तरह पूरे दिल से रब का वफादार न रहा 5 बल्कि सैदानियों की देवी अस्तारात और अम्मोनियों के देवता मिलकूम की पूजा करने लगा। 6 गरज उसने ऐसा काम किया जो रब को नापसंद था। वह वफादारी न रही जिससे उसके बाप दाऊद ने रब की खिदमत की थी।

7 यरूशलम के मशरिक में सुलेमान ने एक पहाड़ी पर दो मंदिर बनाए, एक मोआब के धिनैने देवता कमोस के लिए और एक अम्मोन के धिनैने देवता मलिक यानी मिलकूम के लिए। 8 ऐसे मंदिर उसने अपनी तमाम गैरमुल्की बीवियों के लिए तामीर किए ताकि वह अपने देवताओं को बखर और जबह की कुरबानियाँ पेश कर सकें।

9 रब को सुलेमान पर बड़ा गुस्सा आया, क्योंकि वह इसराइल के खुदा से दूर हो गया था, हालाँकि रब उस पर दो बार जाहिर हुआ था। 10 गो उसने उसे दीगर माबदों की पूजा करने से साफ मना किया था तो भी सुलेमान ने उसका हुक्म न माना। 11 इसलिए रब ने उससे कहा, “चूँकि तू मेरे अहद और अहकाम के मुताबिक जिंदगी नहीं गुजारता, इसलिए मैं बादशाही को तुझसे छीनकर तेरे किसी अफसर को दूँगा। यह बात यकीनी है। 12 लेकिन तेरे बाप दाऊद की खातिर मैं यह तेरे जिते-जी नहीं करूँगा बल्कि बादशाही को तेरे बेटे ही से छीनूँगा। 13 और मैं पूरी ममलकत उसके हाथ से नहीं लूँगा बल्कि अपने खादिम दाऊद और अपने चुने हुए शहर यरूशलम की खातिर उसके लिए एक कबीला छोड़ दूँगा।”

सुलेमान के दुश्मन हदद और रजून

14 फिर रब ने अदोम के शाही खानदान में से एक आदमी बनाम हदद को बरपा किया जो सुलेमान का सख्त मुखालिफ बन गया। 15 वह यों सुलेमान का दुश्मन बन गया कि चंद साल पहले जब दाऊद ने अदोम को शिकस्त दी तो उसका फौजी कमाँडर योआब मैदाने-जंग में पडी तमाम इसराइली लाशों को दफनाने के लिए अदोम आया। जहाँ भी गया वहाँ उसने हर अदोमी मर्द को मार डाला। 16 वह छः माह तक अपने फौजियों के साथ हर जगह फिरा और तमाम अदोमी मर्दों को मारता गया। 17 हदद उस वक्त बच गया और अपने बाप के चंद एक सरकारी अफसरों के साथ फरार होकर मिसर में पनाह ले सका।

18 रास्ते में उन्हें दशते-फारान के मुल्के-मिदियान से गुजरना पडा। वहाँ वह मजीद कुछ आदमियों को जमा कर सके और सफर करते करते मिसर पहुँच गए। हदद मिसर के बादशाह फिरौन के पास गया तो उसने उसे घर, कुछ जमीन और खुराक मुहैया की। 19 हदद फिरौन को इतना पसंद आया कि उसने उस की शादी अपनी बीवी मलिका तहफनीस की बहन के साथ कराई। 20 इस बहन के बेटा पैदा हुआ जिसका नाम जनबूत रखा गया। तहफनीस ने उसे शाही महल में पाला जहाँ वह फिरौन के बेटों के साथ परवान चढा।

21 एक दिन हदद को खबर मिली कि दाऊद और उसका कमाँडर योआब फौत हो गए हैं। तब उसने फिरौन से इजाजत माँगी, “मैं अपने मुल्क लौट जाना चाहता हूँ, बराहे-करम मुझे जाने दें।” 22 फिरौन ने एतराज़ किया, “यहाँ क्या कमी है कि तुम अपने मुल्क वापस जाना चाहते हो?” हदद ने जवाब दिया, “मैं किसी भी चीज़ से महरूम नहीं रहा, लेकिन फिर भी मुझे जाने दीजिए।”

23 अल्लाह ने एक और आदमी को भी सुलेमान के खिलाफ बरपा किया। उसका नाम रजून बिन इलियदा था। पहले वह जोबाह के बादशाह हददअज़र की खिदमत अंजाम देता था, लेकिन एक दिन उसने अपने मालिक से भागकर 24 कुछ आदमियों को अपने गिर्द जमा किया और डाकूओं के जत्थे का सरगना बन गया। जब दाऊद ने जोबाह को शिकस्त दे दी तो रजून अपने आदमियों के साथ दमिशक गया और वहाँ आबाद होकर अपनी हुकूमत कायम कर ली। 25 होते होते वह पूरे शाम का हुक्मरान बन गया। वह इसराइलियों से नफ़रत करता था और सुलेमान के जीते-जी इसराइल का ख़ास दुश्मन बना रहा। हदद की तरह वह भी इसराइल को तंग करता रहा।

यरुबियाम और अखियाह नबी

26 सुलेमान का एक सरकारी अफसर भी उसके खिलाफ उठ खड़ा हुआ। उसका नाम यरुबियाम बिन नबात था, और वह इफ्राइम के शहर सरिदा का था। उस की मौँ सरुआ बेवा थी। 27 जब यरुबियाम बागी हुआ तो उन दिनों में सुलेमान इर्दगिर्द

के चबूतरे और फ़सील का आखिरी हिस्सा तामीर कर रहा था।<sup>28</sup> उसने देखा कि यरुबियाम माहिर और मेहनती जवान हैं, इसलिए उसने उसे इफ़राईम और मनस्सी के कबीलों के तमाम बेगार में काम करनेवालों पर मुकर्रर किया।

<sup>29</sup> एक दिन यरुबियाम शहर से निकल रहा था तो उस की मुलाकात सैला के नबी अखियाह से हुई। अखियाह नई चादर ओढ़े फिर रहा था। खुले मैदान में जहाँ कोई और नज़र न आया <sup>30</sup> अखियाह ने अपनी चादर को पकड़कर बारह टुकड़ों में फाड़ लिया <sup>31</sup> और यरुबियाम से कहा,

“चादर के दस टुकड़े अपने पास रखे! क्योंकि रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है, इस वक़्त मैं इसराईल की बादशाही को सुलेमान से छीननेवाला हूँ। जब ऐसा होगा तो मैं उसके दस कबीले तैरे हवाले कर दूँगा। <sup>32</sup> एक ही कबीला उसके पास रहेगा, और यह भी सिर्फ़ उसके बाप दाऊद और उस शहर की खातिर जिसे मैंने तमाम कबीलों में से चुन लिया है। <sup>33</sup> इस तरह मैं सुलेमान को सज़ा दूँगा, क्योंकि वह और उसके लोग मुझे तर्क करके सैदानियों की देवी अस्तारात की, मोआबियों के देवता क़मोस की और अम्मोनियों के देवता मिलक़म की पूजा करने लगे हैं। वह मेरी राहों पर नहीं चलते बल्कि वही कुछ करते हैं जो मुझे बिलकुल नापसंद है। जिस तरह दाऊद मेरे अहक़ाम और हिदायात की पैरवी करता था उस तरह उसका बेटा नहीं करता।

<sup>34</sup> लेकिन मैं इस वक़्त पूरी बादशाही सुलेमान के हाथ से नहीं छीनूँगा। अपने खादिम दाऊद की खातिर जिसे मैंने चुन लिया और जो मेरे अहक़ाम और हिदायात के ताबे रहा मैं सुलेमान के जीते-जी यह नहीं करूँगा। वह खुद बादशाह रहेगा, <sup>35</sup> लेकिन उसके बेटे से मैं बादशाही छीनकर दस कबीले तैरे हवाले कर दूँगा। <sup>36</sup> सिर्फ़ एक कबीला सुलेमान के बेटे के सुपुर्द रहेगा ताकि मेरे खादिम दाऊद का चराग़ हमेशा मेरे हज़ूर यरूशलम में जलता रहे, उस शहर में जो मैंने अपने नाम की सुक़ूत के लिए चुन लिया है। <sup>37</sup> लेकिन तुझे, ऐ यरुबियाम, मैं इसराईल पर बादशाह बना दूँगा। जो कुछ भी तेरा जी चाहता है उस पर तू हुक़ूमत करेगा। <sup>38</sup> उस वक़्त अगर तू मेरे खादिम दाऊद की तरह मेरी हर बात मानेगा, मेरी राहों पर चलेगा और मेरे अहक़ाम और हिदायात के ताबे रहकर वह कुछ करेगा जो मुझे पसंद है तो फिर मैं तेरे साथ रहूँगा। फिर मैं तेरा शाही खानदान उतना ही कायमो-दायम कर दूँगा जितना मैंने दाऊद का किया है, और इसराईल तेरे ही हवाले रहेगा।

<sup>39</sup> यों मैं सुलेमान के गुनाह के बाइस दाऊद की औलाद को सज़ा दूँगा, अगरचे यह अबदी सज़ा नहीं होगी।”

<sup>40</sup> इसके बाद सुलेमान ने यरुबियाम को मरवाने की कोशिश की, लेकिन यरुबियाम ने फ़रार होकर मिसर के बादशाह सीसक के पास पनाह ली। वहाँ वह सुलेमान की मौत तक रहा।

### सुलेमान की मौत

<sup>41</sup> सुलेमान की ज़िंदगी और हिक़मत के बारे में मज़ीद बातें ‘सुलेमान के आमाल’ की किताब में बयान की गई हैं। <sup>42</sup> सुलेमान 40 साल पूरे इसराईल पर हुक़ूमत करता रहा। उसका दास्त-हुक़ूमत यरूशलम था। <sup>43</sup> जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफ़न किया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। फिर उसका बेटा रहुबियाम तख़्तनशीन हुआ।

## 12

### शिमाली कबीले अलग हो जाते हैं

<sup>1</sup> रहुबियाम सिकम गया, क्योंकि वहाँ तमाम इसराईली उसे बादशाह मुकर्रर करने के लिए जमा हो गए थे। <sup>2</sup> यरुबियाम बिन नबात यह ख़बर सुनते ही मिसर से जहाँ उसने सुलेमान बादशाह से भागकर पनाह ली थी इसराईल वापस आया। <sup>3</sup> इसराईलियों ने उसे बुलाया ताकि उसके साथ सिकम जाएँ। जब पहुँचा तो इसराईल की पूरी जमात यरुबियाम के साथ मिलकर रहुबियाम से मिलने गई। उन्होंने बादशाह से कहा, <sup>4</sup> “जो जुआ आपके बाप ने हम पर डाल दिया था उसे उठाना मुश्किल था, और जो वक़्त और पैसे हमें बादशाह की खिदमत में सर्फ़ करने थे वह नाकाबिले-बरदाशत थे। अब दोनों को कम कर दें। फिर हम खुशी से आपकी खिदमत करेंगे।”

<sup>5</sup> रहुबियाम ने जवाब दिया, “मुझे तीन दिन की मोहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आँ।” चुनौचे लोग चले गए।

<sup>6</sup> फिर रहुबियाम बादशाह ने उन बुजुर्गों से मशवरा किया जो सुलेमान के जीते-जी बादशाह की खिदमत करते रहे थे। उसने पूछा, “आपका क्या खयाल है? मैं इन लोगों को क्या जवाब दूँ?” <sup>7</sup> बुजुर्गों ने जवाब दिया, “हमारा मशवरा है कि इस वक़्त उनका खादिम बनकर उनकी खिदमत करें और उन्हें नरम जवाब दें। अगर आप ऐसा करें तो वह हमेशा आपके वफ़ादार खादिम बने रहेंगे।”

<sup>8</sup> लेकिन रहुबियाम ने बुजुर्गों का मशवरा रद्द करके उस की खिदमत में हाज़िर उन जवानों से मशवरा किया जो उसके साथ परवान चढ़े थे। <sup>9</sup> उसने पूछा, “मैं इस कौम को क्या जवाब दूँ? यह तकाज़ा कर रहे हैं कि मैं वह जुआ हलका कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर डाल दिया।” <sup>10</sup> जो जवान उसके साथ परवान चढ़े थे उन्होंने कहा, “अच्छा, यह लोग तकाज़ा कर

रहे हैं कि आपके बाप का जुआ हलका किया जाए? उन्हें बता देना, 'मेरी छोटी उँगली मेरे बाप की कमर से ज्यादा मोटी है! 11 बेशक जो जुआ उसने आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!'"

12 तीन दिन के बाद जब यरुशलेम तमाम इसराइलियों के साथ रहुबियाम का फैसला सुनने के लिए वापस आया 13 तो बादशाह ने उन्हें सख्त जवाब दिया। बुजुर्गों का मशवरा रद्द करके 14 उसने उन्हें जवानों का जवाब दिया, "बेशक जो जुआ मेरे बाप ने आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!" 15 यों रब की मरजी पूरी हुई कि रहुबियाम लोगों की बात नहीं मानेगा। क्योंकि अब रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो सैला के नबी अखियाह ने यरुशलेम बिन नबात को बताई थी।

16 जब इसराइलियों ने देखा कि बादशाह हमारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं है तो उन्होंने उससे कहा, "न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा, न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ इसराइल, सब अपने अपने घर वापस चले! ऐ दाऊद, अब अपना घर खुद सँभाल लो!" यह कहकर वह सब चले गए।

17 सिर्फ यहूदाह के कबीले के शहरों में रहनेवाले इसराइली रहुबियाम के तहत रहे। 18 फिर रहुबियाम बादशाह ने बेगारियों पर मुकर्रर अफसर अदनीराम को शिमाली कबीलों के पास भेज दिया, लेकिन उसे देखकर तमाम लोगों ने उसे संगसार किया। तब रहुबियाम जल्दी से अपने रथ पर सवार हुआ और भागकर यरुशलम पहुँच गया। 19 यों इसराइल के शिमाली कबीले दाऊद के शाही घराने से अलग हो गए और आज तक उस की हुकूमत नहीं मानते।

20 जब खबर शिमाली इसराइल में फैली कि यरुशलेम मिसर से वापस आ गया है तो लोगों ने कौमी इजलास मुनअकिद करके उसे बुलाया और वहाँ उसे अपना बादशाह बना लिया। सिर्फ यहूदाह का कबीला रहुबियाम और उसके घराने का वफादार रहा।

### रहुबियाम को इसराइल से जंग करने की इजाज़त नहीं मिलती

21 जब रहुबियाम यरुशलम पहुँचा तो उसने यहूदाह और बिनयमीन के कबीलों के चीदा चीदा फौजियों को इसराइल से जंग करने के लिए बुलाया। 1,80,000 मर्द जमा हुए ताकि रहुबियाम बिन सुलेमान के लिए इसराइल पर दुबारा काबू पाएँ। 22 लेकिन ऐन उस वक्त मर्द-खुदा समयाह को अल्लाह की तरफ से पैगाम मिला, 23 "यहूदाह के बादशाह रहुबियाम बिन सुलेमान, यहूदाह और बिनयमीन के तमाम अफराद और बाकी लोगों को इतला दे, 24 'रब फरमाता है कि अपने इसराइली भाइयों से जंग मत करना। हर एक अपने अपने घर वापस चला जाए, क्योंकि जो कुछ हुआ है वह मेरे हुकम पर हुआ है।'" तब वह रब की सुनकर अपने अपने घर वापस चले गए।

### यरुशलेम के सोने के बछड़े

25 यरुशलेम इफराइम के पहाड़ी इलाके के शहर सिकम को मजबूत करके वहाँ आबाद हुआ। बाद में उसने फनुएल शहर की भी किलाबंदी की और वहाँ मुंतकिल हुआ। 26 लेकिन दिल में अंदेशा रहा कि कहीं इसराइल दुबारा दाऊद के घराने के हाथ में न आ जाए। 27 उसने सोचा, "लोग बाकायदगी से यरुशलम आते-जाते हैं ताकि वहाँ रब के घर में अपनी कुरबानियाँ पेश करें। अगर यह सिलसिला तोड़ा न जाए तो आहिस्ता आहिस्ता उनके दिल दुबारा यहूदाह के बादशाह रहुबियाम की तरफ मायल हो जाएंगे। आखिरकार वह मुझे कत्ल करके रहुबियाम को अपना बादशाह बना लेंगे।"

28 अपने अफसरों के मशवरे पर उसने सोने के दो बछड़े बनवाए। लोगों के सामने उसने एलान किया, "हर कुरबानी के लिए यरुशलम जाना मुश्किल है! ऐ इसराइल देख, यह तेरे देवता हैं जो तुझे मिसर से निकाल लाए।" 29 एक बूत उसने जुन्बी शहर बैतेल में खड़ा किया और दूसरा शिमाली शहर दान में। 30 यों यरुशलेम ने इसराइलियों को गुनाह करने पर उकसाया। लोग दान तक सफर किया करते थे ताकि वहाँ के बूत की पूजा करें।

31 इसके अलावा यरुशलेम ने बहुत-सी ऊँची जगहों पर मंदिर बनवाए। उन्हें सँभालने के लिए उसने ऐसे लोग मुकर्रर किए जो लावी के कबीले के नहीं बल्कि आम लोग थे। 32 उसने एक नई ईद भी रायज की जो यहूदाह में मनाएवाली झोंपडियों की ईद की मानिंद थी। यह ईद आठवें माह \* के पंद्रहवें दिन मनाई जाती थी। बैतेल में उसने खुद कुरबानागार पर जाकर अपने बनवाए हुए बछड़ों को कुरबानियाँ पेश कीं, और वहीं उसने अपने उन मंदिरों के इमामों को मुकर्रर किया जो उसने ऊँची जगहों पर तामीर किए थे।

### नबी यरुशलेम को बुरी खबर पहुँचाता है

33 चुनौचे यरुशलेम के मुकर्ररकरदा दिन यानी आठवें महीने के पंद्रहवें दिन इसराइलियों ने बैतेल में ईद मनाई। तमाम मेहमानों के सामने यरुशलेम कुरबानागार पर चढ़ गया ताकि कुरबानियाँ पेश करे।

\* 12:32 अक्तूबर ता नवंबर

## 13

1 वह अभी कुरबानगाह के पास खड़ा अपनी कुरबानियाँ पेश करना ही चाहता था कि एक मर्दे-खुदा आन पहुँचा। रब ने उसे यहदाह से बैतल भेज दिया था। 2 बुलंद आवाज़ से वह कुरबानगाह से मुखातिब हुआ, “ऐ कुरबानगाह! ऐ कुरबानगाह! रब फरमाता है, “दाऊद के घराने से बेटा पैदा होगा जिसका नाम यूसियाह होगा। तुझ पर वह उन इमामों को कुरबान कर देगा जो ऊँची जगहों के मंदिरों में खिदमत करते और यहाँ कुरबानियाँ पेश करने के लिए आते हैं। तुझ पर इनसानों की हड्डियाँ जलाई जाएँगी।” 3 फिर मर्दे-खुदा ने इलाही निशान भी पेश किया। उसने एलान किया, “एक निशान साबित करेगा कि रब मेरी मारिफत बात कर रहा है! यह कुरबानगाह फट जाएगी, और इस पर मौजूद चरबी मिली राख ज़मीन पर बिखर जाएगी।”

4 यस्बियाम बादशाह अब तक कुरबानगाह के पास खड़ा था। जब उसने बैतल की कुरबानगाह के खिलाफ मर्दे-खुदा की बात सुनी तो वह हाथ से उस की तरफ इशारा करके गरजा, “उसे पकड़ो!” लेकिन ज्योंही बादशाह ने अपना हाथ बढ़ाया वह सूख गया, और वह उसे वापस न खींच सका। 5 उसी लमहे कुरबानगाह फट गई और उस पर मौजूद राख ज़मीन पर बिखर गई। बिलकुल वही कुछ हुआ जिसका एलान मर्दे-खुदा ने रब की तरफ से किया था।

6 तब बादशाह इलतमास करने लगा, “रब अपने खुदा का गुस्सा ठंडा करके मेरे लिए दुआ करें ताकि मेरा हाथ बहाल हो जाए।” मर्दे-खुदा ने उस की शफाअत की तो यस्बियाम का हाथ फौरन बहाल हो गया।

7 तब यस्बियाम बादशाह ने मर्दे-खुदा को दावत दी, “आएँ, मेरे घर में खाना खाकर ताज़ाम हो जाएँ। मैं आपको तोहफा भी दूँगा।” 8 लेकिन उसने इनकार किया, “मैं आपके पास नहीं आऊँगा, चाहे आप मुझे अपनी मिलकियत का आधा हिस्सा क्यों न दें। मैं यहाँ न रोटी खाऊँगा, न कुछ पिऊँगा। 9 क्योंकि रब ने मुझे हुक्म दिया है, ‘रास्ते में न कुछ खा और न कुछ पी। और वापस जाते वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर से तू बैतल पहुँचा है।’”

10 यह कहकर वह फरक रास्ता इख्तियार करके अपने घर के लिए रवाना हुआ।

### नबी की नाफरमानी

11 बैतल में एक बूढ़ा नबी रहता था। जब उसके बेटे उस दिन घर वापस आए तो उन्होंने उसे सब कुछ कह सुनाया जो मर्दे-खुदा ने बैतल में किया और यस्बियाम बादशाह को बताया था। 12 बाप ने पूछा, “वह किस तरफ गया?” बेटों ने उसे वह रास्ता बताया जो यहदाह के मर्दे-खुदा ने लिया था। 13 बाप ने हुक्म दिया, “मेरे गधे पर जल्दी से ज़ीन कसो!” बेटों ने ऐसा किया तो वह उस पर बैठकर 14 मर्दे-खुदा को ढूँढ़ने गया।

चलते चलते मर्दे-खुदा बलूत के दरख्त के साये में बैठा नज़र आया। बुजुर्ग ने पूछा, “क्या आप वही मर्दे-खुदा हैं जो यहदाह से बैतल आए थे?” उसने जवाब दिया, “जी, मैं वही हूँ।” 15 बुजुर्ग नबी ने उसे दावत दी, “आएँ, मेरे साथ। मैं घर में आपको कुछ खाना खिलाता हूँ।”

16 लेकिन मर्दे-खुदा ने इनकार किया, “नहीं, न मैं आपके साथ वापस जा सकता हूँ, न मुझे यहाँ खाने-पीने की इजाज़त है। 17 क्योंकि रब ने मुझे हुक्म दिया, ‘रास्ते में न कुछ खा और न कुछ पी। और वापस जाते वक़्त वह रास्ता न ले जिस पर से तू बैतल पहुँचा है।’”

18 बुजुर्ग नबी ने एतराज़ किया, “मैं भी आप जैसा नबी हूँ! एक फरिशते ने मुझे रब का नया पैगाम पहुँचाकर कहा, ‘उसे अपने साथ घर ले जाकर रोटी खिला और पानी पिला।’” बुजुर्ग झूट बोल रहा था, 19 लेकिन मर्दे-खुदा उसके साथ वापस गया और उसके घर में कुछ खाया और पिया।

20 वह अभी वहाँ बैठे खाना खा रहे थे कि बुजुर्ग पर रब का कलाम नाज़िल हुआ। 21 उसने बुलंद आवाज़ से यहदाह के मर्दे-खुदा से कहा, “रब फरमाता है, ‘तूने रब के कलाम की खिलाफ़वर्ज़ी की है! जो हुक्म रब तेरे खुदा ने तुझे दिया था वह तूने नज़रंदाज़ किया है। 22 गो उसने फ़रमाया था कि यहाँ न कुछ खा और न कुछ पी तो भी तूने वापस आकर यहाँ रोटी खाई और पानी पिया है। इसलिए मरते वक़्त तुझे तेरे बापदादा की कब्र में दफनया नहीं जाएगा।’”

23 खाने के बाद बुजुर्ग के गधे पर ज़ीन कसा गया और मर्दे-खुदा को उस पर बिठाया गया। 24 वह दुबारा रवाना हुआ तो रास्ते में एक शेरबबर ने उस पर हमला करके उसे मार डाला। लेकिन उसने लाश को न छेड़ा बल्कि वह वही रास्ते में पड़ी रही जबकि गधा और शेर दोनों ही उसके पास खड़े रहे।

25 कुछ लोग वहाँ से गुज़रे। जब उन्होंने लाश को रास्ते में पड़े और शेरबबर को उसके पास खड़े देखा तो उन्होंने बैतल जहाँ बुजुर्ग नबी रहता था आकर लोगों को इलला दी। 26 जब बुजुर्ग को खबर मिली तो उसने कहा, “वही मर्दे-खुदा है जिसने रब के फ़रमान की खिलाफ़वर्ज़ी की। अब वह कुछ हुआ है जो रब ने उसे फ़रमाया था यानी उसने उसे शेरबबर के हवाले कर दिया ताकि वह उसे फाड़कर मार डाले।” 27 बुजुर्ग ने अपने बेटों को गधे पर ज़ीन कसने का हुक्म दिया, 28 और वह

उस पर बैठकर रवाना हुआ। जब वहाँ पहुँचा तो देखा कि लाश अब तक रास्ते में पड़ी है और गधा और शेर दोनों ही उसके पास खड़े हैं। शेरबबर ने न लाश को छोड़ा और न गधे को फाड़ा था।

29 बुजुर्ग नबी ने लाश को उठाकर अपने गधे पर रखा और उसे बैतल लाया ताकि उसका मातम करके उसे वहाँ दफनाए। 30 उसने लाश को अपनी खानदानी कब्र में दफन किया, और लोगों ने “हाय, मेरे भाई” कहकर उसका मातम किया। 31 जनाजे के बाद बुजुर्ग नबी ने अपने बेटों से कहा, “जब मैं कूच कर जाऊँगा तो मुझे मर्दे-खुदा की कब्र में दफनाना। मेरी हड्डियों को उस की हड्डियों के पास ही रखें। 32 क्योंकि जो बातें उसने रब के हुक्म पर बैतल की कुरबानागाह और सामरिया के शहरों की ऊँची जगहों के मंदिरों के बारे में की हैं वह यकीनन पूरी हो जाएँगी।”

**यसबियाम फिर भी नाफरमान रहता है**

33 इन वाकियात के बावजूद यसबियाम अपनी शरीर हरकतों से बाज़ न आया। आम लोगों को इमाम बनाने का सिलसिला जारी रहा। जो कोई भी इमाम बनना चाहता उसे वह ऊँची जगहों के मंदिरों में खिदमत करने के लिए मखसूस करता था।

34 यसबियाम के घराने के इस संगीन गुनाह की वजह से वह आखिरकार तबाह हुआ और स्प-ज़मीन पर से मिट गया।

## 14

**यसबियाम को इलाही सज़ा मिलती है**

1 एक दिन यसबियाम का बेटा अबियाह बहुत बीमार हुआ। 2 तब यसबियाम ने अपनी बीवी से कहा, “जाकर अपना भेस बदलें ताकि कोई न पहचाने कि आप मेरी बीवी हैं। फिर सैला जाएँ। वहाँ अखियाह नबी रहता है जिसने मुझे इतला दी थी कि मैं इस कौम का बादशाह बन जाऊँगा। 3 उसके पास दस रोटियाँ, कुछ बिस्कुट और शहद का मरतबान ले जाएँ। वह आदमी आपको ज़रूर बता देगा कि लड़के के साथ क्या हो जाएगा।”

4 चुनौचे यसबियाम की बीवी अपना भेस बदलकर रवाना हुई और चलते चलते सैला में अखियाह के घर पहुँच गई। अखियाह उम्रसीदा होने के बाइस देख नहीं सकता था। 5 लेकिन रब ने उसे आगाह कर दिया, “यसबियाम की बीवी तुझसे मिलने आ रही है ताकि अपने बीमार बेटे के बारे में मालमात हासिल करे। लेकिन वह अपना भेस बदलकर आएगी ताकि उसे पहचाना न जाए।” फिर रब ने नबी को बताया कि उसे क्या जवाब देना है।

6 जब अखियाह ने औरत के कदमों की आहट सुनी तो बोला, “यसबियाम की बीवी, अंदर आएँ! रूप भरने की क्या ज़रूरत? मुझे आपको बुरी खबर पहुँचानी है। 7 जाएँ, यसबियाम को रब इसराईल के खुदा की तरफ से पैगाम दें, मैंने तुझे लोगों में से चुनकर खड़ा किया और अपनी कौम इसराईल पर बादशाह बना दिया। 8 मैंने बादशाही को दाऊद के घराने से छीनकर तुझे दे दिया। लेकिन अफसोस, तू मेरे खादिम दाऊद की तरह जिंदगी नहीं गुज़ारता जो मेरे अहकाम के ताबे रहकर पूरे दिल से मेरी पैरवी करता रहा और हमेशा वह कुछ करता था जो मुझे पसंद था। 9 जो तुझसे पहले थे उनकी निसबत तूने कहीं ज्यादा बढ़ी की, क्योंकि तूने बुत ढालकर अपने लिए दीगर माबूद बनाए हैं और यों मुझे तैश दिलाया। चूँकि तूने अपना मुँह मुझसे फेर लिया 10 इसलिए मैं तेरे खानदान को मुसीबत में डाल दूँगा। इसराईल में मैं यसबियाम के तमाम मर्दों को हलाक कर दूँगा, खाह वह बच्चे हों या बालिग। जिस तरह गोबर को झाड़ू देकर दूर किया जाता है उसी तरह यसबियाम के घराने का नामो-निशान मिट जाएगा। 11 तुममें से जो शहर में मरेंगे उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेंगे उन्हें परिदे चट कर जाएंगे। क्योंकि यह रब का फ़रमान है।”

12 फिर अखियाह ने यसबियाम की बीवी से कहा, “आप अपने घर वापस चली जाएँ। ज्योंही आप शहर में दाखिल होंगी लड़का फ़ौत हो जाएगा। 13 पूरा इसराईल उसका मातम करके उसे दफन करेगा। वह आपके खानदान का वाहिद फ़रद होगा जिसे सहीह तौर से दफनाया जाएगा। क्योंकि रब इसराईल के खुदा ने सिर्फ़ उसी में कुछ पाया जो उसे पसंद था। 14 रब इसराईल पर एक बादशाह मुकर्रर करेगा जो यसबियाम के खानदान को हलाक करेगा। आज ही से यह सिलसिला शुरू हो जाएगा। 15 रब इसराईल को भी सज़ा देगा, क्योंकि वह यसीरत देवी के खंबे बनाकर उनकी पूजा करते हैं। चूँकि वह रब को तैश दिलाते रहे हैं, इसलिए वह उन्हें मारेगा, और वह पानी में सरकंडे की तरह हिल जाएंगे। रब उन्हें इस अच्छे मुल्क से उखाड़कर दरियाए-फ़ुरात के पार मंतशिर कर देगा। 16 यों वह इसराईल को उन गुनाहों के बाइस तर्क करेगा जो यसबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया है।”

17 यसबियाम की बीवी तिरज़ा में अपने घर वापस चली गई। और घर के दरवाजे में दाखिल होते ही उसका बेटा मर गया। 18 तमाम इसराईल ने उसे दफनाकर उसका मातम किया। सब कुछ वैसे हुआ जैसे रब ने अपने खादिम अखियाह नबी की मारिफ़त फ़रमाया था।

**यसबियाम की मौत**



19 बाकी जो कुछ यरुशियाम की जिंदगी के बारे में लिखा है वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज है। उस किताब में पढ़ा जा सकता है कि वह किस तरह हुकूमत करता था और उसने कौन कौन-सी जंगें की। 20 यरुशियाम 22 साल बादशाह रहा। जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा नदब तख्तनशीन हुआ।

### यहदाह का बादशाह रहुबियाम

21 यहदाह में रहुबियाम बिन सुलेमान हुकूमत करता था। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। 41 साल की उम्र में वह तख्तनशीन हुआ और 17 साल बादशाह रहा। उसका दासल-हुकूमत यरुशलम था, वह शहर जिसे रब ने तमाम इसराईली कबीलों में से चुन लिया ताकि उसमें अपना नाम कायम करे।

22 लेकिन यहदाह के बाशिदे भी ऐसी हरकतें करते थे जो रब को नापसंद थी। अपने गुनाहों से वह उसे तैश दिलाते रहे, क्योंकि उनके यह गुनाह उनके बापदादा के गुनाहों से कहीं ज्यादा संगीन थे। 23 उन्होंने भी ऊँची जगहों पर मंदिर बनाए। हर ऊँची पहाड़ी पर और हर घने दरख्त के साये में उन्होंने मखसस पत्थर या यसीरत देवी के खंबे खड़े किए, 24 यहाँ तक कि मंदिरों में जिस्मफरोश मर्द और औरतें थे। गरज, उन्होंने उन क्रौमों के तमाम धिनौने रस्मो-रिवाज अपना लिए जिनको रब ने इसराईलियों के आगे आगे निकाल दिया था।

25 रहुबियाम बादशाह की हुकूमत के पाँचवें साल में मिसर के बादशाह सीसक ने यरुशलम पर हमला करके 26 रब के घर और शाही महल के तमाम खजाने लूट लिए। सोने की वह ढालें भी छीन ली गईं जो सुलेमान ने बनवाई थीं। 27 इनकी जगह रहुबियाम ने पीतल की ढालें बनवाई और उन्हें उन मुहाफिजों के अफसरों के सुपर्द किया जो शाही महल के दरवाजे की पहरादारी करते थे। 28 जब भी बादशाह रब के घर में जाता तब मुहाफिज यह ढालें उठाकर साथ ले जाते। इसके बाद वह उन्हें पहरेदारों के कमरे में वापस ले जाते थे।

29 बाकी जो कुछ रहुबियाम बादशाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहदाह की तारीख' की किताब में दर्ज है। 30 दोनों बादशाहों रहुबियाम और यरुशियाम के जीते-जी उनके दरमियान जंग जारी रही। 31 जब रहुबियाम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरुशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है खानदानी कब्र में दफनाया गया। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। फिर रहुबियाम का बेटा अबियाह तख्तनशीन हुआ।

## 15

### यहदाह का बादशाह अबियाह

1 अबियाह इसराईल के बादशाह यरुशियाम बिन नबात की हुकूमत के 18वें साल में यहदाह का बादशाह बना। 2 वह तीन साल बादशाह रहा, और उसका दासल-हुकूमत यरुशलम था। उस की माँ माका बित अबीसलूम थी। 3 अबियाह से वही गुनाह सरज़द हुए जो उसके बाप ने किए थे, और वह पूरे दिल से रब अपने खुदा का वफादार न रहा। गो वह इसमें अपने परदादा दाऊद से फरक था 4 तो भी रब उसके खुदा ने अबियाह का यरुशलम में चराग जलने दिया। दाऊद की खातिर उसने उसे जा-नशीन अता किया और यरुशलम को कायम रखा, 5 क्योंकि दाऊद ने वह कुछ किया था जो रब को पसंद था। जीते-जी वह रब के अहकाम के ताबे रहा, सिवाए उस जुर्म के जब उसने ऊरियाह हिन्ती के सिलसिले में गलत कदम उठाए थे।

6 रहुबियाम और यरुशियाम के दरमियान की जंग अबियाह की हुकूमत के दौरान भी जारी रही। 7 बाकी जो कुछ अबियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहदाह की तारीख' की किताब में दर्ज है। 8 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरुशलम के उस हिस्से में दफन किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर उसका बेटा आसा तख्तनशीन हुआ।

### यहदाह का बादशाह आसा

9 आसा इसराईल के बादशाह यरुशियाम के 20वें साल में यहदाह का बादशाह बन गया। 10 उस की हुकूमत का दौरानिया 41 साल था, और उसका दासल-हुकूमत यरुशलम था। माँ का नाम माका था, और वह अबीसलूम की बेटा थी। 11 अपने परदादा दाऊद की तरह आसा भी वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। 12 उसने उन जिस्मफरोश मर्दों और औरतों को निकाल दिया जो मंदिरों में नाम-निहाद खिदमत करते थे और उन तमाम बूतों को तबाह कर दिया जो उसके बापदादा ने बनाए थे। 13 और गो उस की माँ बादशाह की माँ होने के बाइस बहुत असरो-रसूख रखती थी, ताहम आसा ने यह ओहदा खत्म कर दिया जब माँ ने यसीरत देवी का धिनौना खंबा बनवा लिया। आसा ने यह बुत कटवाकर वादीए-किदरोन में जला दिया। 14 अफसोस कि उसने ऊँची जगहों के मंदिरों को दूर न किया। तो भी आसा जीते-जी पूरे दिल से रब का वफादार रहा। 15 सोना-चौँदी और बाकी जितनी चीजें उसके बाप और उसने रब के लिए मखसस की थी उन सबको वह रब के घर में लाया।

16 यहदाह के बादशाह आसा और इसराईल के बादशाह बाशा के दरमियान जिंदगी-भर जंग जारी रही। 17 एक दिन बाशा बादशाह ने यहदाह पर हमला करके रामा शहर की किलाबंदी की। मकसद यह था कि न कोई यहदाह के मुल्क में दाखिल हो सके, न कोई वहाँ से निकल सके। 18 जवाब में आसा ने शाम के बादशाह बिन-हदद के पास वफ़द भेजा। बिन-हदद का बाप ताबरिमोन बिन हजयून था, और उसका दास-हुकूमत दमिशक था। आसा ने रब के घर और शाही महल के खजानों का तमाम बचा हुआ सोना और चाँदी वफ़द के सुपर्द करके दमिशक के बादशाह को पैगाम भेजा, 19 “मेरा आपके साथ अहद है जिस तरह मेरे बाप का आपके बाप के साथ अहद था। गुज़ारिश है कि आप सोने-चाँदी का यह तोहफ़ा कबूल करके इसराईल के बादशाह बाशा के साथ अपना अहद मनसूख कर दें ताकि वह मेरे मुल्क से निकल जाए।”

20 बिन-हदद मुत्तफिक हुआ। उसने अपने फ़ौजी अफसरों को इसराईल के शहरों पर हमला करने के लिए भेज दिया तो उन्होंने ऐयून, दान, अबील-बैत-माका, तमाम किन्नरत और नफ़ताली पर कब्ज़ा कर लिया। 21 जब बाशा को इसकी खबर मिली तो वह रामा की किलाबंदी करने से बाज़ आया और तिरज़ा वापस चला गया।

22 फिर आसा बादशाह ने यहदाह के तमाम मर्दों की भरती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह उन तमाम पत्थरों और शहतीरों को उठाकर ले जाएँ जिनसे बाशा बादशाह रामा की किलाबंदी करना चाहता था। तमाम मर्दों को वहाँ जाना पडा, एक को भी छुट्टी न मिली। इस सामान से आसा ने बिनयमीन के शहर जिबा और मिसफाह की किलाबंदी की।

23 बाकी जो कुछ आसा की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहदाह की तारीख’ की किताब में दर्ज है। उसमें उस की कामयाबियों और उसके तामीर किए गए शहरों का जिक्र है। बुढ़ापे में उसके पाँवों को बीमारी लग गई। 24 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है खानदानी कब्र में दफ़नाया गया। फिर उसका बेटा यहसफत उस की जगह तख्तनशीन हुआ।

### इसराईल का बादशाह नदब

25 नदब बिन यरुबियाम यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के दूसरे साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया दो साल था। 26 उसका तर्ज़े-जिंदगी रब को पसंद नहीं था, क्योंकि वह अपने बाप के नमूने पर चलता रहा। जो बदी यरुबियाम ने इसराईल को करने पर उकसाया था उससे नदब भी दूर न हुआ।

27-28 एक दिन जब नदब इसराईली फ़ौज के साथ फिलिस्ती शहर जिब्बतून का मुहासरा किए हुए था तो इशकार के कबीले के बाशा बिन अखियाह ने उसके खिलाफ साज़िश करके उसे मार डाला और खुद इसराईल का बादशाह बन गया। यह यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के तीसरे साल में हुआ।

29 तख्त पर बैठते ही बाशा ने यरुबियाम के पूरे खानदान को मरवा दिया। उसने एक को भी जिंदा न छोडा। यों वह बात पूरी हुई जो रब ने सैला के रहनेवाले अपने खादिम अखियाह की मारिफत फरमाई थी। 30 क्योंकि जो गुनाह यरुबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया था उससे उसने रब इसराईल के खुदा को तैश दिलाया था।

31 बाकी जो कुछ नदब की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख’ की किताब में दर्ज है।

### इसराईल का बादशाह बाशा

32-33 बाशा बिन अखियाह यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के तीसरे साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 24 साल था, और उसका दास-हुकूमत तिरज़ा रहा। उसके और यहदाह के बादशाह आसा के दरमियान जिंदगी-भर जंग जारी रही। 34 लेकिन वह भी ऐसा काम करता था जो रब को नापसंद था, क्योंकि उसने यरुबियाम के नमूने पर चलकर वह गुनाह जारी रखे जो करने पर यरुबियाम ने इसराईल को उकसाया था।

## 16

1 एक दिन रब ने याह बिन हनानी को बाशा के पास भेजकर फरमाया, 2 “पहले तू कुछ नहीं था, लेकिन मैंने तुझे खाक में से उठाकर अपनी कौम इसराईल का हुक्मरान बना दिया। तो भी तूने यरुबियाम के नमूने पर चलकर मेरी कौम इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया और मुझे तैश दिलाया है। 3 इसलिए मैं तेरे घराने के साथ वही कुछ करूँगा जो यरुबियाम बिन नबात के घराने के साथ किया था। बाशा की पूरी नसल हलाक हो जाएगी। 4 खानदान के जो अफ़राद शहर में मरेंगे उन्हें कुत्ते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेंगे उन्हें परिदे चट कर जाएंगे।”

5 बाकी जो कुछ बाशा की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख’ की किताब में दर्ज है। 6 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे तिरज़ा में दफ़न किया गया। फिर उसका बेटा ऐला तख्तनशीन हुआ। 7 रब की सज़ा का जो पैगाम हनानी के बेटे याह नबी ने बाशा और उसके खानदान

को सुनाया उस की दो वजुहत थीं। पहले, बाशा ने यरुबियाम के खानदान की तरह वह कुछ किया जो रब को नापसंद था और उसे तैश दिलाया। दूसरे, उसने यरुबियाम के पूरे खानदान को हलाक कर दिया था।

### इसराईल का बादशाह ऐला

8 ऐला बिन बाशा यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के 26वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत के दो साल के दौरान उसका दास्त-हुकूमत तिरजा रहा। 9 ऐला का एक अफसर बनाम जिमरी था। जिमरी रथों के आधे हिस्से पर मुकर्रर था। अब वह बादशाह के खिलाफ साजिशें करने लगा। एक दिन ऐला तिरजा में महल के इंचार्ज अरजा के घर में बैठा मै पी रहा था। जब नशे में धुत हुआ 10 तो जिमरी ने अंदर जाकर उसे मार डाला। फिर वह खुद तख्त पर बैठ गया। यह यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के 27वें साल में हुआ।

11 तख्त पर बैठते ही जिमरी ने बाशा के पूरे खानदान को हलाक कर दिया। उसने किसी भी मर्द को जिंदा न छोड़ा, खाह वह दूर का रिश्तेदार था, खाह दोस्त। 12 यों वही कुछ हुआ जो रब ने याह नबी की मारिफत बाशा को फरमाया था। 13 क्योंकि बाशा और उसके बेटे ऐला से संगीन गुनाह सरजद हुए थे, और साथ साथ उन्होंने इसराईल को भी यह करने पर उकसाया था। अपने बातिल देवताओं से उन्होंने रब इसराईल के खुदा को तैश दिलाया था।

14 बाकी जो कुछ ऐला की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज है।

### इसराईल का बादशाह जिमरी

15 जिमरी यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के 27वें साल में इसराईल का बादशाह बना। लेकिन तिरजा में उस की हुकूमत सिर्फ सात दिन तक कायम रही। उस वक्त इसराईली फौज फिलिस्ती शहर जिब्बतून का मुहासरा कर रही थी। 16 जब फौज में खबर फैल गई कि जिमरी ने बादशाह के खिलाफ साजिश करके उसे कत्ल किया है तो तमाम इसराईलियों ने लशकरगाह में आकर उसी दिन अपने कर्मांडर उमरी को बादशाह बना दिया। 17 तब उमरी तमाम फौजियों के साथ जिब्बतून को छोड़कर तिरजा का मुहासरा करने लगा। 18 जब जिमरी को पता चला कि शहर दूसरों के ऋजे में आ गया है तो उसने महल के बर्ज में जाकर उसे आग लगाई। यों वह जलकर मर गया।

19 इस तरह उसे भी मुनासिब सजा मिल गई, क्योंकि उसने भी वह कुछ किया था जो रब को नापसंद था। यरुबियाम के नम्ने पर चलकर उसने वह तमाम गुनाह किए जो यरुबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया था। 20 जो कुछ जिमरी की हुकूमत के दौरान हुआ और जो साजिशें उसने की वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज है।

### इसराईल का बादशाह उमरी

21 जिमरी की मौत के बाद इसराईली दो फिरकों में बट गए। एक फिरका तिबनी बिन जीनत को बादशाह बनाना चाहता था, दूसरा उमरी को। 22 लेकिन उमरी का फिरका तिबनी के फिरके की निसबत ज्यादा ताकतवर निकला। चुनौचे तिबनी मर गया और उमरी पूरी क्रौम पर बादशाह बन गया।

23 उमरी यहदाह के बादशाह आसा की हुकूमत के 31वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 12 साल था। पहले छः साल दास्त-हुकूमत तिरजा रहा। 24 इसके बाद उसने एक आदमी बनाम समर को चौंदी के 6,000 सिक्के देकर उससे सामरिया पहाड़ी खरीद ली और वहाँ अपना नया दास्त-हुकूमत तामीर किया। पहले मालिक समर की याद में उसने शहर का नाम सामरिया रखा।

25 लेकिन उमरी ने भी वही कुछ किया जो रब को नापसंद था, बल्कि उसने माजी के बादशाहों की निसबत ज्यादा बर्दी की। 26 उसने यरुबियाम बिन नबात के नम्ने पर चलकर वह तमाम गुनाह किए जो यरुबियाम ने किए और इसराईल को करने पर उकसाया था। नतीजे में इसराईली रब अपने खुदा को अपने बातिल देवताओं से तैश दिलाते रहे। 27 बाकी जो कुछ उमरी की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में बयान की गई हैं। 28 जब उमरी मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में दफनाया गया। फिर उसका बेटा अखियब तख्तनशीन हुआ।

### इसराईल का बादशाह अखियब

29 अखियब बिन उमरी यहदाह के बादशाह आसा के 38वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 22 साल था, और उसका दास्त-हुकूमत सामरिया रहा। 30 अखियब ने भी ऐसे काम किए जो रब को नापसंद थे, बल्कि माजी के बादशाहों की निसबत उसके गुनाह ज्यादा संगीन थे। 31 यरुबियाम के नम्ने पर चलना उसके लिए काफी नहीं था बल्कि उसने इससे बढ़कर सैदा के बादशाह इतबाल की बेटी ईजबिल से शादी भी की। नतीजे में वह उसके देवता बाल के सामने झुककर उस की पूजा करने लगा। 32 सामरिया में उसने बाल का मंदिर तामीर किया और देवता के लिए

कुरबानगाह बनाकर उसमें रख दिया।<sup>33</sup> अखियब ने यसीरत देवी का भूत भी बनवा दिया। यों उसने अपने धिनौने कामों से माजी के तमाम इसराईली बादशाहों की निसबत कहीं ज्यादा रब इसराईल के खुदा को तैश दिलाया।

<sup>34</sup> अखियब की हुकूमत के दौरान बैतेल के रहनेवाले हियेल ने यरीह शहर को नए सिरे से तामीर किया। जब उस की बुनियाद रखी गई तो उसका सबसे बड़ा बेटा अबीराम मर गया, और जब उसने शहर के दरवाजे लगा दिए तो उसके सबसे छोटे बेटे सजूब को अपनी जान देनी पड़ी। यों रब की वह बात पूरी हुई जो उसने यशुअ बिन नून की मारिफत फरमाई थी।

## 17

कौवे इलियास नबी को खाना खिलाते हैं

<sup>1</sup> इस दिन इलियास नबी ने जो जिलियाद के शहर तिशाबी का था अखियब बादशाह से कहा, “रब इसराईल के खुदा की कसम जिसकी खिदमत मैं करता हूँ, आनेवाले सालों में न ओस, न बारिश पड़ेगी जब तक मैं न कहूँ।”

<sup>2</sup> फिर रब ने इलियास से कहा, <sup>3</sup> “यहाँ से चला जा! मशरिक की तरफ सफर करके वादीए-करीत में छुप जा जिसकी नदी दरियाए-यरदन में बहती है। <sup>4</sup> पानी तू नदी से पी सकता है, और मैंने कौवों को तुझे वहाँ खाना खिलाने का हुक्म दिया है।”

<sup>5</sup> इलियास रब की सुनकर रवाना हुआ और वादीए-करीत में रहने लगा जिसकी नदी दरियाए-यरदन में बहती है। <sup>6</sup> सुबहो-शाम कौवे उसे रोटी और गोशत पहुँचाते रहे, और पानी वह नदी से पीता था।

इलियास सारपत की बेवा के पास

<sup>7</sup> इस पूरे अरसे में बारिश न हुई, इसलिए नदी आहिस्ता आहिस्ता सूख गई। जब उसका पानी बिलकुल खत्म हो गया <sup>8</sup> तो रब दुबारा इलियास से हमकलाम हुआ, <sup>9</sup> “यहाँ से रवाना होकर सैदा के शहर सारपत में जा बस। मैंने वहाँ की एक बेवा को तुझे खाना खिलाने का हुक्म दिया है।” <sup>10</sup> चुनौचे इलियास सारपत के लिए रवाना हुआ।

सफर करते करते वह शहर के दरवाजे के पास पहुँच गया। वहाँ एक बेवा जलाने के लिए लकड़ियाँ चुनकर जमा कर रही थी। उसे बुलाकर इलियास ने कहा, “जरा किसी बरतन में पानी भरकर मुझे थोड़ा-सा पिलाएँ।”

<sup>11</sup> वह अभी पानी लाने जा रही थी कि इलियास ने उसके पीछे आवाज देकर कहा, “मेरे लिए रोटी का टुकड़ा भी लाना!”

<sup>12</sup> यह सुनकर बेवा स्क गई और बोली, “रब आपके खुदा की कसम, मेरे पास कुछ नहीं है। बस, एक बरतन में मट्टी-भर मैदा और दूसरे में थोड़ा-सा तेल रह गया है। अब मैं जलाने के लिए चंद एक लकड़ियाँ चुन रही हूँ ताकि अपने और अपने बेटे के लिए आखिरी खाना पकाऊँ। इसके बाद हमारी मौत यकीनी है।”

<sup>13</sup> इलियास ने उसे तसल्ली दी, “डरें मत! बेशक वह कुछ करें जो आपने कहा है। लेकिन पहले मेरे लिए छोटी-सी रोटी बनाकर मेरे पास ले आएँ। फिर जो बाकी रह गया हो उससे अपने और अपने बेटे के लिए रोटी बनाएँ। <sup>14</sup> क्योंकि रब इसराईल का खुदा फरमाता है, “जब तक रब बारिश बरसने न दे तब तक मैदे और तेल के बरतन खाली नहीं होंगे।”

<sup>15-16</sup> औरत ने जाकर वैसा ही किया जैसा इलियास ने उसे कहा था। वाकई मैदा और तेल कभी खत्म न हुआ। रोज बरोज इलियास, बेवा और उसके बेटे के लिए खाना दस्तयाब रहा। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा रब ने इलियास की मारिफत फरमाया था।

<sup>17</sup> एक दिन बेवा का बेटा बीमार हो गया। उस की तबियत बहुत खराब हुई, और होते होते उस की जान निकल गई।

<sup>18</sup> तब बेवा इलियास से शिकायत करने लगी, “मर्दे-खुदा, मेरा आपके साथ क्या वास्ता? आप तो सिर्फ इस मकसद से यहाँ आए हैं कि रब को मेरे गुनाह की याद दिलाकर मेरे बेटे को मार डालें!”

<sup>19</sup> इलियास ने जवाब में कहा, “अपने बेटे को मुझे दे दें।” वह लडके को औरत की गोद में से उठाकर छत पर अपने कमरे में ले गया और वहाँ उसे चारपाई पर रखकर <sup>20</sup> दुआ करने लगा, “ऐ रब मेरे खुदा, तूने इस बेवा को जिसका मेहमान मैं हूँ ऐसी मुसीबत में क्यों डाल दिया है? तूने उसके बेटे को मरने क्यों दिया?” <sup>21</sup> वह तीन बार लाश पर दराज हुआ और साथ साथ रब से इलतमास करता रहा, “ऐ रब मेरे खुदा, बराहे-करम बच्चे की जान को उसमें वापस आने दे!”

<sup>22</sup> रब ने इलियास की सुनी, और लडके की जान उसमें वापस आई। <sup>23</sup> इलियास उसे उठाकर नीचे ले आया और उसे उस की माँ को वापस देकर बोला, “देखें, आपका बेटा जिंदा है!” <sup>24</sup> औरत ने जवाब दिया, “अब मैंने जान लिया है कि आप अल्लाह के पैगंबर हैं और कि जो कुछ आप रब की तरफ से बोलते हैं वह सच है।”

## 18

इलियास इसराईल वापस जाता है

<sup>1</sup> बहुत दिन गुजर गए। फिर काल के तीसरे साल में रब इलियास से हमकलाम हुआ, “अब जाकर अपने आपको अखियब के सामने पेश कर। मैं बारिश का सिलसिला दुबारा शुरू कर दूँगा।”

2 चुनौचे इलियास अखियब से मिलने के लिए इसराईल चला गया। उस वक़्त सामरिया काल की सख़्त गिरिफ़्त में था, 3 इसलिए अखियब ने महल के इंचार्ज अबदियाह को बुलाया। (अबदियाह रब का ख़ौफ़ मानता था। 4 जब इज़बिल ने रब के तमाम नबियों को क़त्ल करने की कोशिश की थी तो अबदियाह ने 100 नबियों को दो ग़ारों में छुपा दिया था। हर ग़ार में 50 नबी रहते थे, और अबदियाह उन्हें खाने-पीने की चीज़ें पहुँचाता रहता था।) 5 अब अखियब ने अबदियाह को हुक़म दिया, “पूरे मुल्क में से गुज़रकर तमाम चश्मों और वादियों का मुआयना करें। शायद कहीं कुछ घास मिल जाए जो हम अपने घोड़ों और खच्चरों को खिलाकर उन्हें बचा सकें। ऐसा न हो कि हमें खाने की किरलत के बाइस कुछ जानवरों को ज़बह करना पड़े।”

6 उन्होंने मुक़र्रर किया कि अखियब कहाँ जाएगा और अबदियाह कहाँ, फिर दोनों एक दूसरे से अलग हो गए। 7 चलते चलते अबदियाह को अचानक इलियास उस की तरफ़ आते हुए नज़र आया। जब अबदियाह ने उसे पहचाना तो वह मुँह के बल झुककर बोला, “मेरे आका इलियास, क्या आप ही हैं?”

8 इलियास ने जवाब दिया, “जी, मैं ही हूँ। जाएँ, अपने मालिक को इतला दें कि इलियास आ गया है।”

9 अबदियाह ने एतराज़ किया, “मुझे क्या ग़लती हुई है कि आप मुझे अखियब से मरवाना चाहते हैं? 10 रब आपको खुदा की क़सम, बादशाह ने अपने बंदों को हर कौम और मुल्क में भेज दिया है ताकि आपको ढूँड निकालें। और जहाँ जवाब मिला कि इलियास यहाँ नहीं है वहाँ लोगों को क़सम खानी पड़ी कि हम इलियास का खोज़ लगाने में नाकाम रहे हैं। 11 और अब आप चाहते हैं कि मैं बादशाह के पास जाकर उसे बताऊँ कि इलियास यहाँ है? 12 ऐन मुमकिन है कि जब मैं आपको छोड़कर चला जाऊँ तो रब का रूह आपको उठाकर किसी नामालूम जगह ले जाए। अगर बादशाह मेरी यह इतला सुनकर यहाँ आए और आपको न पाए तो मुझे मार डालेगा। याद रहे कि मैं जवानी से लेकर आज तक रब का ख़ौफ़ मानता आया हूँ। 13 क्या मेरे आका तक यह ख़बर नहीं पहुँची कि जब इज़बिल रब के नबियों को क़त्ल कर रही थी तो मैंने क्या किया? मैं दो ग़ारों में पचास पचास नबियों को छुपाकर उन्हें खाने-पीने की चीज़ें पहुँचाता रहा। 14 और अब आप चाहते हैं कि मैं अखियब के पास जाकर उसे इतला दूँ कि इलियास यहाँ आ गया है? वह मुझे ज़रूर मार डालेगा।”

15 इलियास ने कहा, “रब्बुल-अफ़वाज़ की हयात की क़सम जिसकी ख़िदमत मैं करता हूँ, आज मैं अपने आपको ज़रूर बादशाह को पेश करूँगा।”

16 तब अबदियाह चला गया और बादशाह को इलियास की ख़बर पहुँचाई। यह सुनकर अखियब इलियास से मिलने के लिए आया।

**क्या बाल हकीकी माबूद है या रब?**

17 इलियास को देखते ही अखियब बोला, “ऐ इसराईल को मुसीबत में डालनेवाले, क्या आप वापस आ गए हैं?”

18 इलियास ने एतराज़ किया, “मैं तो इसराईल के लिए मुसीबत का बाइस नहीं बना बल्कि आप और आपके बाप का धराना। आप रब के अहक़ाम छोड़कर बाल के बुतों के पीछे लग गए हैं। 19 अब मैं आपको चैलेंज देता हूँ, तमाम इसराईल को बुलाकर करमिल पहाड़ पर जमा करें। साथ साथ बाल देवता के 450 नबियों को और इज़बिल की मेज़ पर शरीक होनेवाले यसीरत देवी के 400 नबियों को भी बुलाएँ।”

20 अखियब मान गया। उसने तमाम इसराईलियों और नबियों को बुलाया। जब वह करमिल पहाड़ पर जमा हो गए 21 तो इलियास उनके सामने जा खड़ा हुआ और कहा, “आप कब तक कभी इस तरफ़, कभी उस तरफ़ लँगडाले रहेंगे? \* अगर रब खुदा है तो सिर्फ़ उसी की पैरवी करें, लेकिन अगर बाल वाहिद खुदा है तो उसी के पीछे लग जाएँ।”

लोग ख़ामोश रहे। 22 इलियास ने बात जारी रखी, “रब के नबियों में से सिर्फ़ मैं ही बाकी रह गया हूँ। दूसरी तरफ़ बाल देवता के यह 450 नबी खड़े हैं। 23 अब दो बैल ले आएँ। बाल के नबी एक को पसंद करें और फिर उसे टुकड़े टुकड़े करके अपनी क़ुरबानाग़ाह की लकड़ियों पर रख दें। लेकिन वह लकड़ियों को आग न लगाएँ। मैं दूसरे बैल को तैयार करके अपनी क़ुरबानाग़ाह की लकड़ियों पर रख दूँगा। लेकिन मैं भी उन्हें आग नहीं लगाऊँगा। 24 फिर आप अपने देवता का नाम पुकारें जबकि मैं रब का नाम पुकारूँगा। जो माबूद क़ुरबानी को जलाकर जवाब देगा वही खुदा है।” तमाम लोग बोले, “आप ठीक कहते हैं।”

25 फिर इलियास ने बाल के नबियों से कहा, “शुरू करें, क्योंकि आप बहुत हैं। एक बैल को चुनकर उसे तैयार करें। लेकिन उसे आग मत लगाना बल्कि अपने देवता का नाम पुकारें ताकि वह आग भेज दे।” 26 उन्होंने बैलों में से एक को चुनकर उसे तैयार किया, फिर बाल का नाम पुकारने लगे। सुबह से लेकर दोपहर तक वह मुसलसल चीखते-चिल्लाते रहे,

\* 18:21 देखिए आयत 26।

“ऐ बाल, हमारी सुन!” साथ साथ वह उस कुरबानगाह के इर्दगिर्द नाचते रहे † जो उन्होंने बनाई थी। लेकिन न कोई आवाज़ सुनाई दी, न किसी ने जवाब दिया।

27 दोपहर के वक़्त इलियास उनका मज़ाक उड़ाने लगा, “ज़्यादा ऊँची आवाज़ से बोलें! शायद वह सोचों में गरक हो या अपनी हाज़त रफ़ा करने के लिए एक तरफ़ गया हो। यह भी हो सकता है कि वह कहीं सफ़र कर रहा हो। या शायद वह गहरी नींद सो गया हो और उसे जगाने की ज़रूरत है।”

28 तब वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से चीखने-चिल्लाने लगे। मामूल के मुताबिक वह छुरियों और नेज़ों से अपने आपको ज़खमी करने लगे, यहाँ तक कि खून बहने लगा। 29 दोपहर गुज़र गई, और वह शाम के उस वक़्त तक वज्र में रहे जब गल्ला की नज़र पेश की जाती है। लेकिन कोई आवाज़ न सुनाई दी। न किसी ने जवाब दिया, न उनके तमाशे पर तवज़ूह दी।

30 फिर इलियास इसराइलियों से मुखातिब हुआ, “आएँ, सब यहाँ मेरे पास आएँ!” सब करीब आए। वहाँ रब की एक कुरबानगाह थी जो गिराई गई थी। अब इलियास ने वह दुबारा खड़ी की। 31 उसने याकूब से निकले हर कबीले के लिए एक एक पत्थर चुन लिया। (बाद में रब ने याकूब का नाम इसराइल रखा था)। 32 इन बारह पत्थरों को लेकर इलियास ने रब के नाम की ताज़ीम में कुरबानगाह बनाई। इसके इर्दगिर्द उसने इतना चौड़ा गढ़ा खोदा कि उसमें तकरीबन 15 लिटर पानी समा सकता था। 33 फिर उसने कुरबानगाह पर लकड़ियों का ढेर लगाया और बैल को टुकड़े टुकड़े करके लकड़ियों पर रख दिया। इसके बाद उसने हुक्म दिया, “चार घंटे पानी से भरकर कुरबानी और लकड़ियों पर उड़ेल दें!” 34 जब उन्होंने ऐसा किया तो उसने दुबारा ऐसा करने का हुक्म दिया, फिर तीसरी बार। 35 आखिरकार इतना पानी था कि उसने चारों तरफ कुरबानगाह से टपककर गढ़े को भर दिया।

36 शाम के वक़्त जब गल्ला की नज़र पेश की जाती है इलियास ने कुरबानगाह के पास जाकर बुलंद आवाज़ से दुआ की, “ऐ रब, ऐ इज़ाहीम, इसहाक और इसराइल के ख़ुदा, आज लोगों पर जाहिर कर कि इसराइल में तू ही ख़ुदा है और कि मैं तेरा खादिम हूँ। साबित कर कि मैंने यह सब कुछ तेरे हुक्म के मुताबिक किया है। 37 ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मेरी सुन ताकि यह लोग जान लें कि तू, ऐ रब, ख़ुदा है और कि तू ही उनके दिलों को दुबारा अपनी तरफ़ मायल कर रहा है।”

38 अचानक आसमान से रब की आग नाज़िल हुई। आग ने न सिर्फ़ कुरबानी और लकड़ी को भस्म कर दिया बल्कि कुरबानगाह के पत्थरों और उसके नीचे की मिट्टी को भी। गढ़े में पानी भी एकदम सूख गया।

39 यह देखकर इसराइली औंधे मुँह गिरकर पुकारने लगे, “रब ही ख़ुदा है! रब ही ख़ुदा है!” 40 फिर इलियास ने उन्हें हुक्म दिया, “बाल के नबियों को पकड़ लें। एक भी बचने न पाएँ!” लोगों ने उन्हें पकड़ लिया तो इलियास उन्हें नीचे वादी-कैसोन में ले गया और वहाँ सबको मौत के घाट उतार दिया।

### बारिश होती है

41 फिर इलियास ने अखियब से कहा, “अब जाकर कुछ खाएँ और पिएँ, क्योंकि मूसलाधार बारिश का शोर सुनाई दे रहा है।” 42 चुनौचे अखियब खाने-पीने के लिए चला गया जबकि इलियास करमित पहाड़ की चोटी पर चढ़ गया। वहाँ उसने झुककर अपने सर को दोनों घुटनों के बीच में छुपा लिया। 43 अपने नौकर को उसने हुक्म दिया, “जाओ, समुंदर की तरफ़ देखो।”

नौकर गया और समुंदर की तरफ़ देखा, फिर वापस आकर इलियास को इतला दी, “कुछ भी नज़र नहीं आता।” लेकिन इलियास ने उसे दुबारा देखने के लिए भेज दिया। इस दफ़ा भी कुछ मालूम न हो सका। सात बार इलियास ने नौकर को देखने के लिए भेजा। 44 आखिरकार जब नौकर सातवीं दफ़ा गया तो उसने वापस आकर इतला दी, “एक छोटा-सा बादल समुंदर में से निकलकर ऊपर चढ़ रहा है। वह आदमी के हाथ के बराबर है।”

तब इलियास ने हुक्म दिया, “जाओ, अखियब को इतला दो, ‘घोड़ों को फ़ौरन रथ में जोतकर घर चले जाएँ, वरना बारिश आपको रोक लेगी।’” 45 नौकर इतला देने चला गया तो जल्द ही आँधी आई, आसमान पर काले काले बादल छा गए और मूसलाधार बारिश बरसने लगी। अखियब जल्दी से रथ पर सवार होकर यज़्रएल के लिए रवाना हो गया। 46 उस वक़्त रब ने इलियास को खास ताकत दी। सफ़र के लिए कमरबस्ता होकर वह अखियब के रथ के आगे आगे दौड़कर उससे पहले यज़्रएल पहुँच गया।

## 19

### इलियास भाग जाता है

† 18:26 लफज़ी तरज़ुमा : लँगाइते हए नाचते रहे। गालिबन बाल की ताज़ीम में एक खास किस्म का रक्स। लिहाज़ा आयत 21 में इलियास का सवाल, “आप कब तक . . . लँगाइते रहेंगे?”

1 अखियब ने ईज़बिल को सब कुछ सुनाया जो इलियास ने कहा था, यह भी कि उसने बाल के नबियों को किस तरह तलवार से मार दिया था। 2 तब ईज़बिल ने क्रासिद को इलियास के पास भेजकर उसे इतला दी, “देवता मुझे सख्त सजा दें अगर मैं कल इस वक़्त तक आपको उन नबियों की-सी सजा न दूँ।”

3 इलियास सख्त डर गया और अपनी जान बचाने के लिए भाग गया। चलते चलते वह यहदाह के शहर बैर-सबा तक पहुँच गया। वहाँ वह अपने नौकर को छोड़कर 4 आगे रेगिस्तान में जा निकला। एक दिन के सफ़र के बाद वह सीक की झाड़ी के पास पहुँच गया और उसके साथे में बैठकर दुआ करने लगा, “ऐ रब, मुझे मरने दे। बस अब काफी है। मेरी जान ले ले, क्योंकि मैं अपने बापदादा से बेहतर नहीं हूँ।” 5 फिर वह झाड़ी के साथे में लेटकर सो गया।

अचानक एक फ़रिश्ते ने उसे छूकर कहा, “उठ, खाना खा ले!” 6 जब उसने अपनी आँखें खोली तो देखा कि सिरहाने के क़रीब कोयलों पर बनाई गई रोटी और पानी की सुराही पड़ी है। उसने रोटी खाई, पानी पिया और दुबारा सो गया। 7 लेकिन रब का फ़रिश्ता एक बार फिर आया और उसे हाथ लगाकर कहा, “उठ, खाना खा ले, वरना आगे का लंबा सफ़र तैरे बस की बात नहीं होगी।”

8 तब इलियास ने उठकर दुबारा खाना खाया और पानी पिया। इस ख़ुराक ने उसे इतनी तकवियत दी कि वह चालीस दिन और चालीस रात सफ़र करते करते अल्लाह के पहाड़ होरिब यानी सीना तक पहुँच गया। 9 वहाँ वह रात गुज़राने के लिए एक गार में चला गया।

### रब इलियास की हौसलाअफ़जाई करता है

गार में रब उससे हमकलाम हुआ। उसने पूछा, “इलियास, तू यहाँ क्या कर रहा है?” 10 इलियास ने जवाब दिया, “मैंने रब, आसमानी लशक़रों के ख़ुदा की खिदमत करने की सिर-तोड़ कोशिश की है, क्योंकि इसराईलियों ने तैरे अहद को तर्क कर दिया है। उन्होंने तैरी क़ुरबानगाहों को गिराकर तैरे नबियों को तलवार से क़त्ल कर दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपै है।”

11 जवाब में रब ने फ़रमाया, “गार से निकलकर पहाड़ पर रब के सामने खड़ा हो जा!” फिर रब वहाँ से गुज़रा। उसके आगे आगे बड़ी और ज़बरदस्त आँधी आई जिसने पहाड़ों को चीरकर चटानों को टुकड़े टुकड़े कर दिया। लेकिन रब आँधी में नहीं था। 12 इसके बाद जलजला आया, लेकिन रब जलजले में नहीं था। 13 जलजले के बाद भडकती हुई आग वहाँ से गुज़री, लेकिन रब आग में भी नहीं था। फिर नरम हवा की धीमी धीमी आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ सुनकर इलियास ने अपने चेहरे को चादर से ढाँप लिया और निकलकर गार के मुँह पर खड़ा हो गया। एक आवाज़ उससे मुखातिब हुई, “इलियास, तू यहाँ क्या कर रहा है?” 14 इलियास ने जवाब दिया, “मैंने रब, आसमानी लशक़रों के ख़ुदा की खिदमत करने की सिर-तोड़ कोशिश की है, क्योंकि इसराईलियों ने तैरे अहद को तर्क कर दिया है। उन्होंने तैरी क़ुरबानगाहों को गिराकर तैरे नबियों को तलवार से क़त्ल कर दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपै है।”

15 रब ने जवाब में कहा, “रेगिस्तान में उस रास्ते से होकर वापस जा जिसने तुझे यहाँ पहुँचाया है। फिर दमिशक़ चला जा। वहाँ हज़ाएल को तेल से मसह करके शाम का बादशाह करार दे। 16 इसी तरह याहू बिन निमसी को मसह करके इसराईल का बादशाह करार दे और अबील-महला के रहनेवाले इलीशा बिन साफ़त को मसह करके अपना जान-नशीन मुक़र्रर कर। 17 जो हज़ाएल की तलवार से बच जाएगा उसे याहू मार देगा, और जो याहू की तलवार से बच जाएगा उसे इलीशा मार देगा। 18 लेकिन मैंने अपने लिए इसराईल में 7,000 अफ़राद को बचा लिया है, उन तमाम लोगों को जो अब तक न बाल देवता के सामने झुके, न उसके बुत को बोसा दिया है।”

### इलियास इलीशा को अपना जान-नशीन मुक़र्रर करता है

19 इलियास वहाँ से चला गया। इसराईल में वापस आकर उसे इलीशा बिन साफ़त मिला जो बैलों की बारह जोड़ियों की मदद से हल चला रहा था। ख़ुद वह बारहवीं जोड़ी के साथ चल रहा था। इलियास ने उसके पास आकर अपनी चादर उसके कंधों पर डाल दी और स्के बग़ैर आगे निकल गया।

20 इलीशा फ़ौरन अपने बैलों को छोड़कर इलियास के पीछे भागा। उसने कहा, “पहले मुझे अपने माँ-बाप को बोसा देकर ख़ैरबाद कहने दीजिए। फिर मैं आपके पीछे हो लूँगा।” इलियास ने जवाब दिया, “चलें, वापस जाएँ। लेकिन वह कुछ याद रहे जो मैंने आपके साथ किया है।” 21 तब इलीशा वापस चला गया। बैलों की एक जोड़ी को लेकर उसने दोनों को ज़बह किया। हल चलाने का सामान उसने गोशत पकाने के लिए जला दिया। जब गोशत तैयार था तो उसने उसे लोगों में तकसीम करके उन्हें खिला दिया। इसके बाद इलीशा इलियास के पीछे होकर उस की खिदमत करने लगा।

## 20

## शाम की फौज सामरिया का मुहासरा करती है

1 एक दिन शाम के बादशाह बिन-हदद ने अपनी पूरी फौज को जमा किया। 32 इतहादी बादशाह भी अपने रथों और घोड़ों को लेकर आए। इस बड़ी फौज के साथ बिन-हदद ने सामरिया का मुहासरा करके इसराइल से जंग का एलान किया। 2 उसने अपने कासिदों को शहर में भेजकर इसराइल के बादशाह अखियब को इतला दी, 3 “अब से आपका सोना, चाँदी, खवातीन और बेटे मेरे ही हैं।” 4 इसराइल के बादशाह ने जवाब दिया, “मेरे आका और बादशाह, आपकी मरजी। मैं और जो कुछ मेरा है आपकी मिलकियत है।”

5 थोड़ी देर के बाद कासिद बिन-हदद की नई खबर लेकर आए, “मैंने आपसे सोने, चाँदी, खवातीन और बेटों का तकाजा किया है। 6 अब गौर करें! कल इस वक्त मैं अपने मुलाजिमों को आपके पास भेज दूँगा, और वह आपके महल और आपके अफसरों के घरों की तलाशी लेंगे। जो कुछ भी आपको प्यारा है उसे वह ले जाएंगे।”

7 तब अखियब बादशाह ने मूलक के तमाम बुजुर्गों को बुलाकर उनसे बात की, “देखें यह आदमी कितना बुरा इरादा रखता है। जब उसने मेरी खवातीन, बेटों, सोने और चाँदी का तकाजा किया तो मैंने इनकार न किया।” 8 बुजुर्गों और बाकी लोगों ने मिलकर मशवरा दिया, “उस की न सुनें, और जो कुछ वह माँगता है उस पर राजी न हो जाएँ।” 9 चुनौचे बादशाह ने कासिदों से कहा, “मेरे आका बादशाह को जवाब देना, जो कुछ आपने पहली मरतबा माँग लिया वह मैं आपको देने के लिए तैयार हूँ, लेकिन यह आखिरी तकाजा मैं पूरा नहीं कर सकता।”

जब कासिदों ने बिन-हदद को यह खबर पहुँचाई 10 तो उसने अखियब को फौरन खबर भेज दी, “देवता मुझे सख्त सजा दें अगर मैं सामरिया को नेस्तो-नाबूद न कर दूँ। इतना भी नहीं रहेगा कि मेरा हर फौजी मुठी-भर खाक अपने साथ वापस ले जा सके!” 11 इसराइल के बादशाह ने कासिदों को जवाब दिया, “उसे बता देना कि जो अभी जंग की तैयारियाँ कर रहा है वह फतह के नारे न लगाए।”

12 जब बिन-हदद को यह इतला मिली तो वह लशकरगाह में अपने इतहादी बादशाहों के साथ मै पी रहा था। उसने अपने अफसरों को हुक्म दिया, “हमला करने के लिए तैयारियाँ करो!” चुनौचे वह शहर पर हमला करने की तैयारियाँ करने लगे।

## शाम की फौज से पहली जंग

13 इस दौरान एक नबी अखियब बादशाह के पास आया और कहा, “रब फरमाता है, ‘क्या तुझे दुश्मन की यह बड़ी फौज नजर आ रही है? तो भी मैं इसे आज ही तेरे हवाले कर दूँगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।’”

14 अखियब ने सवाल किया, “रब यह किसके वसीले से करेगा?” नबी ने जवाब दिया, “रब फरमाता है कि जिलों पर मुकर्रर अफसरों के जवान यह फतह पाएँगे।” बादशाह ने मज़ीद पूछा, “लडाई में कौन पहला कदम उठाए?” नबी ने कहा, “तू ही।”

15 चुनौचे अखियब ने जिलों पर मुकर्रर अफसरों के जवानों को बुलाया। 232 अफराद थे। फिर उसने बाकी इसराइलियों को जमा किया। 7,000 अफराद थे। 16-17 दोपहर को वह लड़ने के लिए निकले। जिलों पर मुकर्रर अफसरों के जवान सबसे आगे थे। बिन-हदद और 32 इतहादी बादशाह लशकरगाह में बैठे नशे में धुत मै पी रहे थे कि अचानक शहर का जायजा लेने के लिए बिन-हदद के भेजे गए सिपाही अंदर आए और कहने लगे, “सामरिया से आदमी निकल रहे हैं।” 18 बिन-हदद ने हुक्म दिया, “हर सूत में उन्हें ज़िंदा पकड़ें, खाह वह अमनपसंद इरादा रखते हों या न।”

19 लेकिन उन्हें यह करने का मौका न मिला, क्योंकि इसराइल के जिलों पर मुकर्रर अफसरों और बाकी फौजियों ने शहर से निकल कर 20 फौरन उन पर हमला कर दिया। और जिस भी दुश्मन का मुकाबला हुआ उसे मारा गया। तब शाम की पूरी फौज भाग गई। इसराइलियों ने उनका ताकुकुब किया, लेकिन शाम का बादशाह बिन-हदद घोड़े पर सवार होकर चंद एक घुड़सवारों के साथ बच निकला। 21 उस वक्त इसराइल का बादशाह जंग के लिए निकला और घोड़ों और रथों को तबाह करके अरामियों को ज़बरदस्त शिकस्त दी।

## शाम की फौज से दूसरी जंग

22 बाद में मज़क़रा नबी दुबारा इसराइल के बादशाह के पास आया। वह बोला, “अब मज़बूत होकर बड़े ध्यान से सोचें कि आनेवाले दिनों में क्या क्या तैयारियाँ करनी चाहिएँ, क्योंकि अगले बहार के मौसम में शाम का बादशाह दुबारा आप पर हमला करेगा।”

23 शाम के बादशाह को भी मशवरा दिया गया। उसके बड़े अफसरों ने खयाल पेश किया, “इसराइलियों के देवता पहाड़ी देवता हैं, इसलिए वह हम पर गालिब आ गए हैं। लेकिन अगर हम मैदानी इलाके में उनसे लड़ें तो हर सूत में जीतेंगे।

24 लेकिन हमारा एक और मशवरा भी है। 32 बादशाहों को हटाकर उनकी जगह अपने अफसरों को मुकर्रर करें। 25 फिर



एक नई फौज तैयार करें जो तबाहशुदा पुरानी फौज जैसी ताकतवर हो। उसके उतने ही रथ और घोड़े हों जितने पहले थे। फिर जब हम मैदानी इलाके में उनसे लड़ेंगे तो उन पर ज़रूर गालिब आएँगे।”

बादशाह उनकी बात मानकर तैयारियाँ करने लगा। 26 जब बहार का मौसम आया तो वह शाम के फ़ौजियों को जमा करके इसराईल से लड़ने के लिए अफ़्रीक शहर गया। 27 इसराईली फ़ौज भी लड़ने के लिए जमा हुई। खाने-पीने की अश्या का बंदोबस्त किया गया, और वह दुश्मन से लड़ने के लिए निकले। जब वहाँ पहुँचे तो उन्होंने अपने खैमों को दो जगहों पर लगाया। यह दो गुरोह शाम की वसी फ़ौज के मुकाबले में बकरियों के दो छोटे रेवड़ों जैसे लग रहे थे, क्योंकि पूरा मैदान शाम के फ़ौजियों से भरा था।

28 फिर मर्दे-ख़ुदा ने अख़ियब के पास आकर कहा, “रब फ़रमाता है, ‘शाम के लोग खयाल करते हैं कि रब पहाड़ी देवता है इसलिए मैदानी इलाके में नाकाम रहेगा। चुनौचे मैं उनकी ज़बरदस्त फ़ौज को तैरे हवाले कर दूँगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।”

29 सात दिन तक दोनों फ़ौजें एक दूसरे के मुकाबिल सफ़आरा रहीं। सातवें दिन लड़ाई का आगाज़ हुआ। इसराईली इस मरतबा भी शाम की फ़ौज पर गालिब आए। उस दिन उन्होंने उनके एक लाख प्यादा फ़ौजियों को मार दिया। 30 बाक़ी फ़रार होकर अफ़्रीक शहर में घुस गए। तकरीबन 27,000 आदमी थे। लेकिन अचानक शहर की फ़सील उन पर गिर गई, तो वह भी हलाक हो गए।

### अख़ियब शाम के बादशाह पर रहम करता है

बिन-हदद बादशाह भी अफ़्रीक में फ़रार हुआ था। अब वह कभी इस कमरे में, कभी उसमें खिसककर छुपने की कोशिश कर रहा था। 31 फिर उसके अफ़सरों ने उसे मशवरा दिया, “सुना है कि इसराईल के बादशाह नरमदिल होते हैं। क्यों न हम टाट ओढकर और अपनी गरदनोँ में रस्से डालकर इसराईल के बादशाह के पास जाएँ? शायद वह आपको ज़िंदा छोड़ दे।”

32 चुनौचे बिन-हदद के अफ़सर टाट ओढकर और अपनी गरदनोँ में रस्से डालकर इसराईल के बादशाह के पास आए। उन्होंने कहा, “आपका खादिम बिन-हदद गुज़ारिश करता है कि मुझे ज़िंदा छोड़ दें।” अख़ियब ने सवाल किया, “क्या वह अब तक ज़िंदा है? वह तो मेरा भाई है!” 33 जब बिन-हदद के अफ़सरों ने जान लिया कि अख़ियब का स्ट्यान किस्त तरफ़ है तो उन्होंने जल्दी से इसकी तसदीक की, “जी, बिन-हदद आपका भाई है!” अख़ियब ने हुक्म दिया, “जाकर उसे बुला लाएँ।”

तब बिन-हदद निकल आया, और अख़ियब ने उसे अपने रथ पर सवार होने की दावत दी। 34 बिन-हदद ने अख़ियब से कहा, “मैं आपको वह तमाम शहर वापस कर देता हूँ जो मेरे बाप ने आपके बाप से छीन लिए थे। आप हमारे दास्त-हुकूमत दमिशक में तिजारती मराकिज़ भी कायम कर सकते हैं, जिस तरह मेरे बाप ने पहले सामरिया में किया था।” अख़ियब बोला, “ठीक है। इसके बदले में मैं आपको रिहा कर दूँगा।” उन्होंने मुआहदा किया, फिर अख़ियब ने शाम के बादशाह को रिहा कर दिया।

### नबी अख़ियब को मलामत करता है

35 उस वक़्त रब ने नबियों में से एक को हिदायत की, “जाकर अपने साथी को कह दे कि वह तुझे मारे।” नबी ने ऐसा किया, लेकिन साथी ने इनकार किया। 36 फिर नबी बोला, “चूँकि आपने रब की नहीं सुनी, इसलिए ज्योंही आप मुझसे चले जाएँगे शेरबबर आपको फाड़ डालेगा।” और ऐसा ही हुआ। जब साथी वहाँ से निकला तो शेरबबर ने उस पर हमला करके उसे फाड़ डाला।

37 नबी की मुलाकात किसी और से हुई तो उसने उससे भी कहा, “मेहरबानी करके मुझे मारें!” उस आदमी ने नबी को मार मारकर ज़ख़मी कर दिया। 38 तब नबी ने अपनी आँखों पर पट्टी बाँधी ताकि उसे पहचाना न जाए, फिर रास्ते के किनारे पर अख़ियब बादशाह के इंतज़ार में खड़ा हो गया।

39 जब बादशाह वहाँ से गुज़रा तो नबी चिल्लाकर उससे मुखातिब हुआ, “जनाब, मैं मैदाने-जंग में लड़ रहा था कि अचानक किसी आदमी ने मेरे पास आकर अपने कैदी को मेरे हवाले कर दिया। उसने कहा, ‘इसकी निगरानी करना। अगर यह किसी भी वजह से भाग जाए तो आपको उस की जान के एवज़ अपनी जान देनी पड़ेगी या आपको एक मन चाँदी अदा करनी पड़ेगी।’ 40 लेकिन मैं इधर उधर मसरूफ़ रहा, और इतने में कैदी गायब हो गया।” अख़ियब बादशाह ने जवाब दिया, “आपने खुद अपने बारे में फ़ैसला दिया है। अब आपको इसका नतीजा भुगतना पड़ेगा।”

41 फिर नबी ने जल्दी से पट्टी को अपनी आँखों पर से उतार दिया, और बादशाह ने पहचान लिया कि यह नबियों में से एक है। 42 नबी ने कहा, “रब फ़रमाता है, ‘मैंने मुक़रर किया था कि बिन-हदद को मेरे लिए मख़सूस करके हलाक करना है, लेकिन तूने उसे रिहा कर दिया है। अब उस की जगह तू ही मरेगा, और उस की कौम की जगह तेरी कौम को नुक़सान पहुँचेगा।”

43 इसराईल का बादशाह बड़े गुस्से और बदमिजाजी के आलम में सामरिया में अपने महल में चला गया।

## 21

### इज़बिल के हाथों नबोत का कत्ल

1 इसके बाद एक और काबिले-ज़िक्र बात हुई। यज़्बल में सामरिया के बादशाह अखियब का एक महल था। महल की ज़मीन के साथ साथ अंगूर का बाग था। मालिक का नाम नबोत था। 2 एक दिन अखियब ने नबोत से बात की, “अंगूर का आपका बाग मेरे महल के करीब ही है। उसे मुझे दे दे, क्योंकि मैं उसमें सब्ज़ियाँ लगाना चाहता हूँ। मुआवज़े में मैं आपको उससे अच्छा अंगूर का बाग दे दूँगा। लेकिन अगर आप पैसे को तरजीह दें तो आपको उस की पूरी रकम अदा कर दूँगा।”

3 लेकिन नबोत ने जवाब दिया, “अल्लाह न करे कि मैं आपको वह मौरसी ज़मीन दूँ जो मेरे बापदादा ने मेरे सुपुर्द की है!”

4 अखियब बड़े गुस्से में अपने घर वापस चला गया। वह बेज़ार था कि नबोत अपने बापदादा की मौरसी ज़मीन बेचना नहीं चाहता। वह पलंग पर लेट गया और अपना मुँह दीवार की तरफ करके खाना खाने से इनकार किया। 5 उस की बीवी इज़बिल उसके पास आई और पूछने लगी, “क्या बात है? आप क्यों इतने बेज़ार हैं कि खाना भी नहीं खाना चाहते?” 6 अखियब ने जवाब दिया, “यज़्बल का रहनेवाला नबोत मुझे अंगूर का बाग नहीं देना चाहता। गो मैं उसे पैसे देना चाहता था बल्कि उसे इसकी जगह कोई और बाग देने के लिए तैयार था तो भी वह बज़िद रहा।”

7 इज़बिल बोली, “क्या आप इसराईल के बादशाह है कि नहीं? अब उठो! खाएँ, पिँएँ और अपना दिल बहलाएँ। मैं ही आपको नबोत यज़्बली का अंगूर का बाग दिला दूँगी।” 8 उसने अखियब के नाम से खूतूत लिखकर उन पर बादशाह की मुहर लगाई और उन्हें नबोत के शहर के बुजुर्गों और शरफा को भेज दिया। 9 खतों में ज़ैल की खबर लिखी थी,

“शहर में एलान करें कि एक दिन का रोज़ा रखा जाए। जब लोग उस दिन जमा हो जाएंगे तो नबोत को लोगों के सामने इज़्जत की कुरसी पर बिठा दें। 10 लेकिन उसके मुक़ाबिल दो बदमाशों को बिठा देना। इज़तिमा के दौरान यह आदमी सबके सामने नबोत पर इलज़ाम लगाएँ, ‘इस शख्स ने अल्लाह और बादशाह पर लानत भेजी है! हम इसके गवाह हैं।’ फिर उसे शहर से बाहर ले जाकर संगसार करें।”

11 यज़्बल के बुजुर्गों और शरफा ने ऐसा ही किया। 12 उन्होंने रोज़े के दिन का एलान किया। जब लोग मुकर्रर दिन जमा हुए तो नबोत को लोगों के सामने इज़्जत की कुरसी पर बिठा दिया गया। 13 फिर दो बदमाश आए और उसके मुक़ाबिल बैठ गए। इज़तिमा के दौरान यह आदमी सबके सामने नबोत पर इलज़ाम लगाने लगे, “इस शख्स ने अल्लाह और बादशाह पर लानत भेजी है! हम इसके गवाह हैं।” तब नबोत को शहर से बाहर ले जाकर संगसार कर दिया गया। 14 फिर शहर के बुजुर्गों ने इज़बिल को इत्तला दी, “नबोत मर गया है, उसे संगसार किया गया है।”

15 यह खबर मिलते ही इज़बिल ने अखियब से बात की, “जाएँ, नबोत यज़्बली के उस बाग पर कब्ज़ा करें जो वह आपको बेचने से इनकार कर रहा था। अब वह आदमी ज़िंदा नहीं रहा बल्कि मर गया है।”

16 यह सुनकर अखियब फ़ौरन नबोत के अंगूर के बाग पर कब्ज़ा करने के लिए रवाना हुआ।

### इलियास अखियब को सज़ा सुनाता है

17 तब रब इलियास तिश्बी से हमक़लाम हुआ, 18 “इसराईल के बादशाह अखियब से जो सामरिया में रहता है मिलने जा। इस वक्त वह नबोत के अंगूर के बाग में है, क्योंकि वह उस पर कब्ज़ा करने के लिए वहाँ पहुँचा है। 19 उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि तूने एक आदमी को बिलावजह क़त्ल करके उस की मित्कियत पर कब्ज़ा कर लिया है। रब फ़रमाता है कि जहाँ कुत्तों ने नबोत का खून चाटा है वहाँ वह तेरा खून भी चाटेंगे।’”

20 जब इलियास अखियब के पास पहुँचा तो बादशाह बोला, “मेरे दुश्मन, क्या आपने मुझे ढूँढ़ निकाला है?” इलियास ने जवाब दिया, “जी, मैंने आपको ढूँढ़ निकाला है, क्योंकि आपने अपने आपको बदी के हाथ में बेचकर ऐसा काम किया है जो रब को नापसंद है। 21 अब सुनें रब का फ़रमान, ‘मैं तुझे यों मुसीबत में डाल दूँगा कि तेरा नामो-निशान तक नहीं रहेगा। मैं इसराईल में से तेरे खानदान के हर मर्द को मिटा दूँगा, खाह वह बालिग हो या बच्चा। 22 तूने मुझे बड़ा तैश दिलाया और इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया है। इसलिए मेरा तेरे घराने के साथ वही सलूक होगा जो मैंने यस्बियाम बिन नबात और बाशा बिन अखियाह के साथ किया है।’ 23 इज़बिल पर भी रब की सज़ा आएगी। रब फ़रमाता है, ‘कुते यज़्बल की फ़सील के पास इज़बिल को खा जाएंगे। 24 अखियब के खानदान में से जो शहर में मरेगे उन्हें कुते खा जाएंगे, और जो खुले मैदान में मरेगे उन्हें परिदे चट कर जाएंगे।’”

25 और यह हकीकत है कि अखियब जैसा खराब शख्स कोई नहीं था। क्योंकि ईज़बिल के उकसाने पर उसने अपने आपको बदी के हाथ में बेचकर ऐसा काम किया जो रब को नापसंद था। 26 सबसे धिनौनी बात यह थी कि वह बुतों के पीछे लगा रहा, बिलकुल उन अमोरियों की तरह जिन्हें रब ने इसराईल से निकाल दिया था।

27 जब अखियब ने इलियास की यह बातें सुनीं तो उसने अपने कपड़े फाड़कर टाट ओढ़ लिया। रोज़ा रखकर वह गमगीन हालत में फिरता रहा। टाट उसने सोते वक्त भी न उतारा। 28 तब रब दुबारा इलियास तिशाबी से हमकलाम हुआ, 29 “क्या तुने गौर किया है कि अखियब ने अपने आपको मेरे सामने कितना पस्त कर दिया है? चूँकि उसने अपनी आजिजी का इज़हार किया है इसलिए मैं उसके जीते-जी उसके खानदान को मजकूरा मुसीबत में नहीं डालूँगा बल्कि उस वक्त जब उसका बेटा तख़्त पर बैठेगा।”

## 22

### झूठे नबियों और मीकायाह का मुकाबला

1 तीन साल तक शाम और इसराईल के दरमियान सुलह रही। 2 तीसरे साल यहूदाह का बादशाह यहसफ़त इसराईल के बादशाह अखियब से मिलने गया। 3 उस वक्त इसराईल के बादशाह ने अपने अफसरों से बात की, “देखें, रामात-जिलियाद हमारा ही शहर है। तो फिर हम क्यों कुछ नहीं कर रहे? हमें उसे शाम के बादशाह के कब्ज़े से छुड़वाना चाहिए।” 4 उसने यहसफ़त से सवाल किया, “क्या आप मेरे साथ रामात-जिलियाद जाएंगे ताकि उस पर कब्ज़ा करें?” यहसफ़त ने जवाब दिया, “जी ज़रूर। हम तो भाई हैं। मेरी कौम को अपनी कौम और मेरे घोड़ों को अपने घोड़े समझे। 5 लेकिन मेहरबानी करके पहले रब की मरज़ी मालूम कर लें।”

6 इसराईल के बादशाह ने तकरिबन 400 नबियों को बुलाकर उनसे पूछा, “क्या मैं रामात-जिलियाद पर हमला करूँ या इस इरादे से बाज़ रहूँ?” नबियों ने जवाब दिया, “जी करें, क्योंकि रब उसे बादशाह के हवाले कर देगा।”

7 लेकिन यहसफ़त मुतमइन न हुआ। उसने पूछा, “क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिससे हम दरियाफ़्त कर सकें?”

8 इसराईल का बादशाह बोला, “हाँ, एक तो है जिसके ज़रीए हम रब की मरज़ी मालूम कर सकते हैं। लेकिन मैं उससे नफ़रत करता हूँ, क्योंकि वह मेरे बारे में कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं करता। वह हमेशा बुरी पेशगोईयाँ सुनाता है। उसका नाम मीकायाह बिन इमला है।” यहसफ़त ने एतराज़ किया, “बादशाह ऐसी बात न कहे!” 9 तब इसराईल के बादशाह ने किसी मुलाज़िम को बुलाकर हुक्म दिया, “मीकायाह बिन इमला को फ़ौरन हमारे पास पहुँचा देना।”

10 अखियब और यहसफ़त अपने शाही लिबास पहने हुए सामरिया के दरवाज़े के करीब अपने अपने तख़्त पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह थी जहाँ अनाज गाहा जाता था। तमाम 400 नबी वहाँ उनके सामने अपनी पेशगोईयाँ पेश कर रहे थे। 11 एक नबी बनाम सिदकियाह बिन कनाना ने अपने लिए लोहे के सींग बनाकर एलान किया, “रब फ़रमाता है कि इन सींगों से तु शाम के फ़ौज़ियों को मार मारकर हलाक कर देगा।” 12 दूसरे नबी भी इस किस्म की पेशगोईयाँ कर रहे थे, “रामात-जिलियाद पर हमला करें, क्योंकि आप ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर को आपके हवाले कर देगा।”

13 जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के लिए भेजा गया था उसने रास्ते में उसे समझाया, “देखें, बाकी तमाम नबी मिलकर रहे हैं कि बादशाह को कामयाबी हासिल होगी। आप भी ऐसी ही बातें करें, आप भी फ़तह की पेशगोई करें!”

14 लेकिन मीकायाह ने एतराज़ किया, “रब की हयात की कसम, मैं बादशाह को सिर्फ़ वही कुछ बताऊँगा जो रब मुझे फ़रमाएगा।”

15 जब मीकायाह अखियब के सामने खड़ा हुआ तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम रामात-जिलियाद पर हमला करें या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?” मीकायाह ने जवाब दिया, “उस पर हमला करें, क्योंकि रब शहर को आपके हवाले करके आपको कामयाबी बख्शेगा।” 16 बादशाह नाराज़ हुआ, “मुझे कितनी दफ़ा आपको समझाना पड़ेगा कि आप कसम खाकर मुझे रब के नाम में सिर्फ़ वह कुछ सुनाएँ जो हकीकत है।”

17 तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे तमाम इसराईल गल्लाबान से मेहरूम भेड़-बकरियों की तरह पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र आया। फिर रब मुझे हमकलाम हुआ, ‘इनका कोई मालिक नहीं है। हर एक सलातीनी से अपने घर वापस चला जाए।’”

18 इसराईल के बादशाह ने यहसफ़त से कहा, “लो, क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि यह शख्स हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोईयाँ करता है?”

19 लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी, “रब का फ़रमान सुनें! मैंने रब को उसके तख़्त पर बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज़ उसके दाएँ और बाएँ हाथ खड़ी थी। 20 रब ने पूछा, ‘कौन अखियब को रामात-जिलियाद पर हमला करने पर उकसाएगा ताकि वह वहाँ जाकर मर जाए?’ एक ने यह मशवरा दिया, दूसरे ने वह। 21 आख़िरकार एक रूह रब के सामने खड़ी हुई और कहने लगी, ‘मैं उसे उकसाऊँगी।’ 22 रब ने सवाल किया, ‘किस तरह?’ रूह ने जवाब दिया, ‘मैं निकलकर

उसके तमाम नबियों पर यों काब पाऊँगी कि वह झूट ही बोलेंगे।’ रब ने फरमाया, ‘तू कामयाब होगी। जा और यों ही कर!’  
23 ऐ बादशाह, रब ने आप पर आफत लाने का फैसला कर लिया है, इसलिए उसने झूटी रूह को आपके इन तमाम नबियों के मुँह में डाल दिया है।”

24 तब सिदकियाह बिन कनाना ने आगे बढ़कर मीकायाह के मुँह पर थप्पड़ मारा और बोला, “रब का रूह किस तरह मुझे निकल गया ताकि तुझसे बात करे?” 25 मीकायाह ने जवाब दिया, “जिस दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उसमें खिसककर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन आपको पता चलेगा।”

26 तब अखियब बादशाह ने हुकम दिया, “मीकायाह को शहर पर मुकर्रर अफसर अमन और मेरे बेटे युआस के पास वापस भेज दो! 27 उन्हें बता देना, ‘इस आदमी को जेल में डालकर मेरे सहीह-सलामत वापस आने तक कम से कम रोटी और पानी दिया करें।’” 28 मीकायाह बोला, “अगर आप सहीह-सलामत वापस आएँ तो मतलब होगा कि रब ने मेरी मारिफत बात नहीं की।” फिर वह साथ खड़े लोगों से मुखातिब हुआ, “तमाम लोग ध्यान दें!”

### अखियब रामात के करीब मर जाता है

29 इसके बाद इसराईल का बादशाह अखियब और यहदाह का बादशाह यहसफत मिलकर रामात-जिलियाद पर हमला करने के लिए रवाना हुए। 30 जंग से पहले अखियब ने यहसफत से कहा, “मैं अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में जाऊँगा। लेकिन आप अपना शाही लिबास न उतारें।” चुनौचे इसराईल का बादशाह अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में आया। 31 शाम के बादशाह ने रथों पर मुकर्रर अपने 32 अफसरों को हुकम दिया था, “सिर्फ और सिर्फ बादशाह पर हमला करें। किसी और से मत लड़ना, खाह वह छोटा हो या बड़ा।”

32 जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफसर यहसफत पर टूट पड़े, क्योंकि उन्होंने कहा, “यकीनन यहीं इसराईल का बादशाह है!” लेकिन जब यहसफत मदद के लिए चिल्ला उठा 33 तो दुश्मनों को मालूम हुआ कि यह अखियब बादशाह नहीं है, और वह उसका ताकुकुब करने से बाज़ आए। 34 लेकिन किसी ने खास निशाना बाँधे बगैर अपना तीर चलाया तो वह अखियब को ऐसी जगह जा लगा जहाँ जिरा-बकतर का जोड़ था। बादशाह ने अपने रथबान को हुकम दिया, “रथ को मोड़कर मुझे मैदाने-जंग से बाहर ले जाओ! मुझे चोट लग गई है।” 35 लेकिन चूँकि उस पूरे दिन शदीद किस्म की लड़ाई जारी रही, इसलिए बादशाह अपने रथ में टेक लगाकर दुश्मन के मुकाबिल खड़ा रहा। खून ज़खम से रथ के फर्श पर टपकता रहा, और शाम के वक़्त अखियब मर गया। 36 जब सूरज गुरूब होने लगा तो इसराईली फौज में बुलंद आवाज़ से एलान किया गया, “हर एक अपने शहर और अपने इलाके में वापस चला जाए!”

37 बादशाह की मौत के बाद उस की लाश को सामरिया लाकर दफनाया गया। 38 शाही रथ को सामरिया के एक तालाब के पास लाया गया जहाँ कसबियों की नहाने की जगह थी। वहाँ उसे धोया गया। कुत्ते भी आकर खून को चाटने लगे। यों रब का फरमान पूरा हुआ।

39 बाकी जो कुछ अखियब की हुकमत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख’ की किताब में दर्ज है। उसमें बादशाह का तामीरकरदा हाथीदौत का महल और वह शहर बयान किए गए हैं जिनकी किलाबंदी उसने की। 40 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा अखज़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

### यहदाह का बादशाह यहसफत

41 आसा का बेटा यहसफत इसराईल के बादशाह अखियब की हुकमत के चौथे साल में यहदाह का बादशाह बना। 42 उस वक़्त उस की उम्र 35 साल थी। उसका दास्त-हुकमत यरूशलम रहा, और उस की हुकमत का दौरानिया 25 साल था। माँ का नाम अज़्बा बिन सिलही था। 43 वह हर काम में अपने बाप आसा के नमूने पर चलता और वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। लेकिन उसने भी ऊँचे मक़ामों के मंदिरों को ख़त्म न किया। ऐसी जगहों पर जानवरों को कुरबान करने और बखूर जलाने का इंतज़ाम जारी रहा। 44 यहसफत और इसराईल के बादशाह के दरमियान सुलह कायम रही।

45 बाकी जो कुछ यहसफत की हुकमत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-यहदाह की तारीख’ की किताब में दर्ज है। उस की कामयाबियाँ और जंगें सब उसमें बयान की गई हैं। 46 जो जिस्मफ़रोश मर्द और औरतें आसा के ज़माने में बच गए थे उन्हें यहसफत ने मुल्क में से मिटा दिया। 47 उस वक़्त मुल्के-अदोम का बादशाह न था बल्कि यहदाह का एक अफसर उस पर हुकमरानी करता था।

48 यहसफत ने बहरी जहाज़ों का बेड़ा बनवाया ताकि वह तिजारत करके ओफ़ीर से सोना लाएँ। लेकिन वह कभी इस्तेमाल न हुए बल्कि अपनी ही बंदरगाह अस्वून-जाबर में तबाह हो गए। 49 तबाह होने से पहले इसराईल के बादशाह अखज़ियाह बिन अखियब ने यहसफत से दरखास्त की थी कि इसराईल के कुछ लोग जहाज़ों पर साथ चलें। लेकिन यहसफत ने इनकार किया था।

50 जब यहसफत मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है खानदानी कब्र में दफनाया गया। फिर उसका बेटा यह्राम तख्तनशीन हुआ।

#### इसराईल का बादशाह अखज़ियाह

51 अखियब का बेटा अखज़ियाह यहदाह के बादशाह यहसफत की हुकूमत के 17वें साल में इसराईल का बादशाह बना। वह दो साल तक इसराईल पर हुक्मरान रहा। सामरिया उसका दास-हुकूमत था। 52 जो कुछ उसने किया वह रब को नापसंद था, क्योंकि वह अपने माँ-बाप और यरुबियाम बिन नबात के नमूने पर चलता रहा, उसी यरुबियाम के नमूने पर जिसने इसराईल को गुनाह करने पर उकसाया था। 53 अपने बाप की तरह बाल देवता की खिदमत और पूजा करने से उसने रब, इसराईल के खुदा को तैश दिलाया।

## 2 सलातीन

अखज्रियाह के लिए इलियास का पैगाम

1 अखियब की मौत के बाद मोआब का मुल्क बागी होकर इसराईल के ताबे न रहा।

2 सामरिया के शाही महल के बालाखाने की एक दीवार में जंगला लगा था। एक दिन अखज्रियाह बादशाह जंगले के साथ लग गया तो वह टूट गया और बादशाह जमीन पर गिरकर बहुत जखमी हुआ। उसने कासिदों को फिलिस्ती शहर अकरून भेजकर कहा, “जाकर अकरून के देवता बाल-जबूब से पता करें कि मेरी सेहत बहाल हो जाएगी कि नहीं।” 3 तब रब के फरिश्ते ने इलियास तिशबी को हुक्म दिया, “उठ, सामरिया के बादशाह के कासिदों से मिलने जा। उनसे पूछ, ‘आप दरियाफ्त करने के लिए अकरून के देवता बाल-जबूब के पास क्यों जा रहे हैं? क्या इसराईल में कोई खुदा नहीं है?’ 4 चुनौचे रब फरमाता है कि ऐ अखज्रियाह, जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उससे तू कभी नहीं उठने का। तू यकीनन मर जाएगा।”

इलियास जाकर कासिदों से मिला। 5 उसका पैगाम सुनकर कासिद बादशाह के पास वापस गए। उसने पूछा, “आप इतनी जल्दी वापस क्यों आए?” 6 उन्होंने जवाब दिया, “एक आदमी हमसे मिलने आया जिसने हमें आपके पास वापस भेजकर आपको यह खबर पहुँचाने को कहा, ‘रब फरमाता है कि तू अपने बारे में दरियाफ्त करने के लिए अपने बंदों को अकरून के देवता बाल-जबूब के पास क्यों भेज रहा है? क्या इसराईल में कोई खुदा नहीं है? चूँकि तूने यह किया है इसलिए जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उससे तू कभी नहीं उठने का। तू यकीनन मर जाएगा।’”

7 अखज्रियाह ने पूछा, “यह किस किस का आदमी था जिसने आपसे मिलकर आपको यह बात बताई?” 8 उन्होंने जवाब दिया, “उसके लंबे बाल थे, और कमर में चमड़े की पेटी बैधी हुई थी।” बादशाह बोल उठा, “यह तो इलियास तिशबी था।”

आसमान से आगे

9 फौरन उसने एक अफसर को 50 फौजियों समेत इलियास के पास भेज दिया। जब फौजी इलियास के पास पहुँचे तो वह एक पहाड़ी की चोटी पर बैठा था। अफसर बोला, “ऐ मर्दे-खुदा, बादशाह कहते हैं कि नीचे उतर आएँ।” 10 इलियास ने जवाब दिया, “अगर मैं मर्दे-खुदा हूँ तो आसमान से आग नाज़िल होकर आप और आपके 50 फौजियों को भस्म कर दे।” फौरन आसमान से आग नाज़िल हुई और अफसर को उसके लोगों समेत भस्म कर दिया। 11 बादशाह ने एक और अफसर को इलियास के पास भेज दिया। उसके साथ भी 50 फौजी थे। उसके पास पहुँचकर अफसर बोला, “ऐ मर्दे-खुदा, बादशाह कहते हैं कि फौरन उतर आएँ।” 12 इलियास ने दुबारा पुकारा, “अगर मैं मर्दे-खुदा हूँ तो आसमान से आग नाज़िल होकर आप और आपके 50 फौजियों को भस्म कर दे।” फौरन आसमान से अल्लाह की आग नाज़िल हुई और अफसर को उसके 50 फौजियों समेत भस्म कर दिया।

13 फिर बादशाह ने तीसरी बार एक अफसर को 50 फौजियों के साथ इलियास के पास भेज दिया। लेकिन यह अफसर इलियास के पास ऊपर चढ़ आया और उसके सामने घुटने टेककर इलतमास करने लगा, “ऐ मर्दे-खुदा, मेरी और अपने इन 50 खादिमों की जानों की कदर करें। 14 देखें, आग ने आसमान से नाज़िल होकर पहले दो अफसरों को उनके आदमियों समेत भस्म कर दिया है। लेकिन बराहे-करम हमारे साथ ऐसा न करें। मेरी जान की कदर करें।”

15 तब रब के फरिश्ते ने इलियास से कहा, “इससे मत डरना बल्कि इसके साथ उतर जा!” चुनौचे इलियास उठा और अफसर के साथ उतरकर बादशाह के पास गया। 16 उसने बादशाह से कहा, “रब फरमाता है, ‘तूने अपने कासिदों को अकरून के देवता बाल-जबूब से दरियाफ्त करने के लिए क्यों भेजा? क्या इसराईल में कोई खुदा नहीं है? चूँकि तूने यह किया है इसलिए जिस बिस्तर पर तू पड़ा है उससे तू कभी नहीं उठने का। तू यकीनन मर जाएगा।’”

अखज्रियाह की मौत

17 वैसा ही हुआ जैसा रब ने इलियास की मारिफत फरमाया था, अखज्रियाह मर गया। चूँकि उसका बेटा नहीं था इसलिए उसका भाई यहराम यहदाह के बादशाह यूराम बिन यहसफत की हुक्मत के दूसरे साल में तख्तनशीन हुआ। 18 बाकी जो कुछ अखज्रियाह की हुक्मत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख’ की किताब में बयान किया गया है।

## 2

इलियास को आसमान पर उठा लिया जाता है

1 फिर वह दिन आया जब रब ने इलियास को आँधी में आसमान पर उठा लिया। उस दिन इलियास और इलीशा जिलजाल शहर से रवाना होकर सफर कर रहे थे। 2 रास्ते में इलियास इलीशा से कहने लगा, “यही ठहर जाऊँ, क्योंकि रब ने मुझे बैतेल भेजा है।” लेकिन इलीशा ने इनकार किया, “रब और आपकी हयात की कसम, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।”

चुनौचे दोनों चलते चलते बैतेल पहुँच गए। 3 नबियों का जो गुरोह वहाँ रहता था वह शहर से निकलकर उनसे मिलने आया। इलीशा से मुखामिल होकर उन्होंने पूछा, “क्या आपको मालूम है कि आज रब आपके आका को आपके पास से उठा ले जाएगा?” इलीशा ने जवाब दिया, “जी, मुझे पता है। खामोश!” 4 दुबारा इलियास अपने साथी से कहने लगा, “इलीशा, यही ठहर जाऊँ, क्योंकि रब ने मुझे यरीह भेजा है।” इलीशा ने जवाब दिया, “रब और आपकी हयात की कसम, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।”

चुनौचे दोनों चलते चलते यरीह पहुँच गए। 5 नबियों का जो गुरोह वहाँ रहता था उसने भी इलीशा के पास आकर उससे पूछा, “क्या आपको मालूम है कि आज रब आपके आका को आपके पास से उठा ले जाएगा?” इलीशा ने जवाब दिया, “जी, मुझे पता है। खामोश!”

6 इलियास तीसरी बार इलीशा से कहने लगा, “यही ठहर जाऊँ, क्योंकि रब ने मुझे दरियाए-यरदन के पास भेजा है।” इलीशा ने जवाब दिया, “रब और आपकी हयात की कसम, मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।”

चुनौचे दोनों आगे बढ़े। 7 पचास नबी भी उनके साथ चल पड़े। जब इलियास और इलीशा दरियाए-यरदन के किनारे पर पहुँचे तो दूसरे उनसे कुछ दूर खड़े हो गए। 8 इलियास ने अपनी चादर उतारकर उसे लपेट लिया और उसके साथ पानी पर मारा। पानी तकसीम हुआ, और दोनों आदमी खुरक जमीन पर चलते हुए दरिया में से गुजर गए। 9 दूसरे किनारे पर पहुँचकर इलियास ने इलीशा से कहा, “मेरे आपके पास से उठा लिए जाने से पहले मुझे बताएँ कि आपके लिए क्या करूँ?” इलीशा ने जवाब दिया, “मुझे आपकी रूह का दगुना हिस्सा मीरास में मिले।” \* 10 इलियास बोला, “जो दरखास्त आपने की है उसे पूरा करना मुश्किल है। अगर आप मुझे उस वक्त देख सकेंगे जब मुझे आपके पास से उठा लिया जाएगा तो मतलब होगा कि आपकी दरखास्त पूरी हो गई है, वरना नहीं।” 11 दोनों आपस में बातें करते हुए चल रहे थे कि अचानक एक आतिशी रथ नजर आया जिसे आतिशी घोड़े खींच रहे थे। रथ ने दोनों को अलग कर दिया, और इलियास को आँधी में आसमान पर उठा लिया गया। 12 यह देखकर इलीशा चिल्ला उठा, “हाय मेरे बाप, मेरे बाप! इसराईल के रथ और उसके घोड़े!”

इलियास इलीशा की नजरों से ओझल हुआ तो इलीशा ने गम के मारे अपने कपड़ों को फाड़ डाला। 13 इलियास की चादर जमीन पर गिर गई थी। इलीशा उसे उठाकर दरियाए-यरदन के पास वापस चला। 14 चादर को पानी पर मारकर वह बोला, “रब और इलियास का खुदा कहाँ है?” पानी तकसीम हुआ और वह बीच में से गुजर गया।

15 यरीह से आए नबी अब तक दरिया के मगरिबी किनारे पर खड़े थे। जब उन्होंने इलीशा को अपने पास आते हुए देखा तो पुकार उठे, “इलियास की रूह इलीशा पर ठहरी हुई है!” वह उससे मिलने गए और औंधे मुँह उसके सामने झुककर 16 बोले, “हमारे 50 ताकतवर आदमी छिदमत के लिए हाज़िर हैं। अगर इजाज़त हो तो हम उन्हें भेज देंगे ताकि वह आपके आका को तलाश करें। हो सकता है रब के रूह ने उसे उठाकर किसी पहाड़ या वादी में रख छोड़ा हो।”

इलीशा ने मना करने की कोशिश की, “नहीं, उन्हें मत भेजना।” 17 लेकिन उन्होंने यहाँ तक इसरार किया कि आखिरकार वह मान गया और कहा, “चलो, उन्हें भेज दें।” उन्होंने 50 आदमियों को भेज दिया जो तीन दिन तक इलियास का खोज लगाते रहे। लेकिन वह कहीं नजर न आया। 18 हिम्मत हारकर वह यरीह वापस आए जहाँ इलीशा ठहरा हुआ था। उसने कहा, “क्या मैंने नहीं कहा था कि न जाऊँ?”

### इलीशा के मोजिजे

19 एक दिन यरीह के आदमी इलीशा के पास आकर शिकायत करने लगे, “हमारे आका, आप खुद देख सकते हैं कि इस शहर में अच्छा गुज़ारा होता है। लेकिन पानी खराब है, और नतीजे में बहुत दफ़ा बच्चे माँ के पेट में ही मर जाते हैं।”

20 इलीशा ने हुक्म दिया, “एक गैरइस्तेमालशुदा बरतन में नमक डालकर उसे मेरे पास ले आएँ।” जब बरतन उसके पास लाया गया 21 तो वह उसे लेकर शहर से निकला और चरमे के पास गया। वहाँ उसने नमक को पानी में डाल दिया और साथ साथ कहा, “रब फरमाता है कि मैंने इस पानी को बहाल कर दिया है। अब से यह कभी मौत या बच्चों के जाया होने का बाइस नहीं बनेगा।”

22 उसी लम्हें पानी बहाल हो गया। इलीशा के कहने के मुताबिक यह आज तक ठीक रहा है।

23 यरीह से इलीशा बैतेल को वापस चला गया। जब वह रास्ते पर चलते हुए शहर से गुजर रहा था तो कुछ लड़के शहर से निकल आए और उसका मज़ाक उड़ाकर चिल्लाने लगे, “ओए गंजे, इधर आ! ओए गंजे, इधर आ!” 24 इलीशा मुड़ गया

\* 2:9 इलीशा पहलौटे का हिस्सा माँग रहा है जो दूसरे वारियों की निस्वत दगुना होता है।

और उन पर नजर डालकर रब के नाम में उन पर लानत भेजी। तब दो रीछनियाँ जंगल से निकलकर लडकों पर टूट पड़ी और कुल 42 लडकों को फाड़ डाला।

25 इलियास आगे निकला और चलते चलते करमिल पहाड़ के पास आया। वहाँ से वापस आकर सामरिया पहुँच गया।

### 3

#### इसराईल का बादशाह यूराम

1 अखियब का बेटा यूराम यहदाह के बादशाह यहसफत के 18वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुक्मत का दौरानिया 12 साल था और उसका दास्त-हुक्मत सामरिया रहा। 2 उसका चाल-चलन रब को नापसंद था, अगरचे वह अपने माँ-बाप की निसबत कुछ बेहतर था। क्योंकि उसने बाल देवता का वह सतून दूर कर दिया जो उसके बाप ने बनवाया था। 3 तो भी वह यस्बियाम बिन नबात के उन गुनाहों के साथ लिपटा रहा जो करने पर यस्बियाम ने इसराईल को उकसाया था। वह कभी उनसे दूर न हुआ।

#### मोआब के खिलाफ जंग

4 मोआब का बादशाह मेसा भेड़ें रखता था, और सालाना उसे भेड़ के एक लाख बच्चे और एक लाख मेंढे उनकी ऊन समेत इसराईल के बादशाह को खराज के तौर पर अदा करने पड़ते थे। 5 लेकिन जब अखियब फौत हुआ तो मोआब का बादशाह तबे न रहा।

6 तब यूराम बादशाह ने सामरिया से निकलकर तमाम इसराईलियों की भरती की। 7 साथ साथ उसने यहदाह के बादशाह यहसफत को इतला दी, “मोआब का बादशाह सरकश हो गया है। क्या आप मेरे साथ उससे लड़ने जाएंगे?” यहसफत ने जवाब भेजा, “जी, मैं आपके साथ जाऊँगा। हम तो भाई हैं। मेरी कौम को अपनी कौम और मेरे घोड़ों को अपने घोड़े समझें। 8 हम किस रास्ते से जाएँ?” यूराम ने जवाब दिया, “हम अदोम के रेगिस्तान से होकर जाएंगे।”

9 चुनौचे इसराईल का बादशाह यहदाह के बादशाह के साथ मिलकर रवाना हुआ। मुल्के-अदोम का बादशाह भी साथ था। अपने मनसूबे के मूताबिक उन्होंने रेगिस्तान का रास्ता इख्तियार किया। लेकिन चूँकि वह सीधे नहीं बल्कि मुतबादिल रास्ते से होकर गए इसलिए सात दिन के सफर के बाद उनके पास पानी न रहा, न उनके लिए, न जानवरों के लिए।

10 इसराईल का बादशाह बोला, “हाय, रब हमें इसलिए यहाँ बुला लाया है कि हम तीनों बादशाहों को मोआब के हवाले करे।”

11 लेकिन यहसफत ने सवाल किया, “क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं है जिसकी मारिफत हम रब की मरजी जान सके?” इसराईल के बादशाह के किसी अफसर ने जवाब दिया, “एक तो है, इलीशा बिन साफत जो इलियास का करीबी शार्गिद था, वह उसके हाथों पर पानी डालने की खिदमत अंजाम दिया करता था।” 12 यहसफत बोला, “रब का कलाम उसके पास है।” तीनों बादशाह इलीशा के पास गए।

13 लेकिन इलीशा ने इसराईल के बादशाह से कहा, “मेरा आपके साथ क्या वास्ता? अगर कोई बात हो तो अपने माँ-बाप के नबियों के पास जाएँ।” इसराईल के बादशाह ने जवाब दिया, “नहीं, हम इसलिए यहाँ आए हैं कि रब ही हम तीनों को यहाँ बुला लाया है ताकि हमें मोआब के हवाले करे।” 14 इलीशा ने कहा, “रबबुल-अफवाज की हयात की कसम जिसकी खिदमत मैं करता हूँ, अगर यहदाह का बादशाह यहाँ मौजूद न होता तो फिर मैं आपका लिहाज न करता बल्कि आपकी तरफ देखता भी न। लेकिन मैं यहसफत का खयाल करता हूँ, 15 इसलिए किसी को बुलाएँ जो सरोद बजा सके।”

कोई सरोद बजाने लगा तो रब का हाथ इलीशा पर आ ठहरा, 16 और उसने एलान किया, “रब फरमाता है कि इस वादी में हर तरफ गढ़ों की खुदाई करो। 17 गो तुम न हवा और न बारिश देखोगे तो भी वादी पानी से भर जाएगी। पानी इतना होगा कि तुम, तुम्हारे रेवड़ और बाक्री तमाम जानवर पी सकेंगे। 18 लेकिन यह रब के नजदीक कुछ नहीं है, वह मोआब को भी तुम्हारे हवाले कर देगा। 19 तुम तमाम किलाबंद और मरकजी शहरों पर फ़तह पाओगे। तुम मुल्क के तमाम अच्छे दरख्तों को काटकर तमाम चशमों को बंद करोगे और तमाम अच्छे छेतों को पत्थरों से खराब करोगे।”

20 अगली सुबह तकरीबन उस वक़्त जब गल्ला की नजर पेश की जाती है मुल्के-अदोम की तरफ से सैलाब आया, और नतीजे में वादी के तमाम गढ़े पानी से भर गए।

#### मोआब पर फ़तह

21 इतने में तमाम मोआबियों को पता चल गया था कि तीनों बादशाह हमसे लड़ने आ रहे हैं। छोटों से लेकर बड़ों तक जो भी अपनी तलवार चला सकता था उसे बुलाकर सरहद की तरफ भेजा गया। 22 सुबह-सवेरे जब मोआबी लड़ने के लिए तैयार हुए तो तुलए-अफताब की सुर्ख रौशनी में वादी का पानी खून की तरह सुर्ख नजर आया। 23 मोआबी चिल्लाने लगे, “यह तो खून है! तीनों बादशाहों ने आपस में लडकर एक दूसरे को मार दिया होगा। आओ, हम उनको लूट लें!”



24 लेकिन जब वह इसराईली लशकरगाह के करीब पहुँचे तो इसराईली उन पर टूट पड़े और उन्हें मारकर भगा दिया। फिर उन्होंने उनके मुल्क में दाखिल होकर मोआब को शिकस्त दी। 25 चलते चलते उन्होंने तमाम शहरों को बरबाद किया। जब भी वह किसी अच्छे खेत से गुज़रे तो हर सिपाही ने एक पत्थर उस पर फेंक दिया। यों तमाम खेत पत्थरों से भर गए। इसराईलियों ने तमाम चरमों को भी बंद कर दिया और हर अच्छे दरख्त को काट डाला।

आखिर में सिर्फ़ कीर-हरासत कायम रहा। लेकिन फ़लाखन चलानेवाले उसका मुहासरा करके उस पर हमला करने लगे। 26 जब मोआब के बादशाह ने जान लिया कि मैं शिकस्त खा रहा हूँ तो उसने तलवारों से लैस 700 आदमियों को अपने साथ लिया और अदोम के बादशाह के करीब दुश्मन का मुहासरा तोड़कर निकलने की कोशिश की, लेकिन बेफायदा। 27 फिर उसने अपने पहलौटे को जिसे उसके बाद बादशाह बनना था लेकर फ़सील पर अपने देवता के लिए क़ुरबान करके जला दिया। तब इसराईलियों पर बड़ा ग़ज़ब नाज़िल हुआ, और वह शहर को छोड़कर अपने मुल्क वापस चले गए।

## 4

### इलीशा और बेवा का तेल

1 एक दिन एक बेवा इलीशा के पास आई जिसका शौहर जब ज़िंदा था नबियों के ग़रोह में शामिल था। बेवा चीखती-चिल्लाती इलीशा से मुखातिब हुई, “आप जानते हैं कि मेरा शौहर जो आपकी खिदमत करता था अल्लाह का ख़ौफ़ मानता था। अब जब वह फ़ौत हो गया है तो उसका एक साहकार आकर धमकी दे रहा है कि अगर कर्ज़ अदा न किया गया तो मैं तेरे दो बेटों को गुलाम बनाकर ले जाऊँगा।”

2 इलीशा ने पूछा, “मैं किस तरह आपकी मदद करूँ? बताएँ, घर में आपके पास क्या है?” बेवा ने जवाब दिया, “कुछ नहीं, सिर्फ़ जैतून के तेल का छोटा-सा बरतन।” 3 इलीशा बोला, “जाएँ, अपनी तमाम पडोसनों से ख़ाली बरतन माँगें। लेकिन ध्यान रखें कि थोड़े बरतन न हों। 4 फिर अपने बेटों के साथ घर में जाकर दरवाज़े पर कुंडी लगाएँ। तेल का अपना बरतन लेकर तमाम ख़ाली बरतनों में तेल उंडेलती जाएँ। जब एक भर जाए तो उसे एक तरफ़ रखकर दूसरे को भरना शुरू करें।”

5 बेवा ने जाकर ऐसा ही किया। वह अपने बेटों के साथ घर में गई और दरवाज़े पर कुंडी लगाई। बेटे उसे ख़ाली बरतन देते गए और माँ उनमें तेल उंडेलती गई। 6 बरतनों में तेल डलते डलते सब लंबालंब भर गए। माँ बोली, “मुझे एक और बरतन दे दो” तो एक लड़के ने जवाब दिया, “और कोई नहीं है।” तब तेल का सिलसिला रूक गया।

7 जब बेवा ने मर्दे-ख़ुदा के पास जाकर उसे इतला दी तो इलीशा ने कहा, “अब जाकर तेल को बेच दें और कर्ज़ के पैसे अदा करें। जो बच जाए उसे आप और आपके बेटे अपनी ज़रूरियात पूरी करने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।”

### इलीशा शूनीम में लड़के को ज़िंदा कर देता है

8 एक दिन इलीशा शूनीम गया। वहाँ एक अमीर औरत रहती थी जिसने ज़बरदस्ती उसे अपने घर बिठाकर खाना खिलाया। बाद में जब कभी इलीशा वहाँ से गुज़रता तो वह खाने के लिए उस औरत के घर ठहर जाता। 9 एक दिन औरत ने अपने शौहर से बात की, “मैंने जान लिया है कि जो आदमी हमारे हाँ आता रहता है वह अल्लाह का मुक़द्दस पैग़ंबर है। 10 क्यों न हम उसके लिए छत पर छोटा-सा कमरा बनाकर उसमें चारपाई, मेज़, कुरसी और शमादान रखें। फिर जब भी वह हमारे पास आए तो वह उसमें ठहर सकता है।”

11 एक दिन जब इलीशा आया तो वह अपने कमरे में जाकर बिस्तर पर लेट गया। 12 उसने अपने नौकर जैहाज़ी से कहा, “शूनीमी मेज़बान को बुला लाओ।” जब वह आकर उसके सामने खड़ी हुई 13 तो इलीशा ने जैहाज़ी से कहा, “उसे बता देना कि आपने हमारे लिए बहुत तकलीफ़ उठाई है। अब हम आपके लिए क्या कुछ करें? क्या हम बादशाह या फ़ौज़ के कर्माँडर से बात करके आपकी सिफ़ारिश करें?” औरत ने जवाब दिया, “नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं। मैं अपने ही लोगों के दरमियान रहती हूँ।”

14 बाद में इलीशा ने जैहाज़ी से बात की, “हम उसके लिए क्या करें?” जैहाज़ी ने जवाब दिया, “एक बात तो है। उसका कोई बेटा नहीं, और उसका शौहर काफी बूढ़ा है।” 15 इलीशा बोला, “उसे वापस बुलाओ।” औरत वापस आकर दरवाज़े में खड़ी हो गई। इलीशा ने उससे कहा, 16 “अगले साल इसी वक्त आपका अपना बेटा आपकी गोद में होगा।” शूनीमी औरत ने एतराज़ किया, “नहीं नहीं, मेरे आक्ना। मर्दे-ख़ुदा ऐसी बातें करके अपनी खादिमा को झूटी तसल्ली मत दें।”

17 लेकिन ऐसा ही हुआ। कुछ देर के बाद औरत का पाँव भारी हो गया, और ऐन एक साल के बाद उसके हाँ बेटा पैदा हुआ। सब कुछ वैसा ही हुआ जैसा इलीशा ने कहा था। 18 बच्चा परवान चढ़ा, और एक दिन वह घर से निकलकर खेत में अपने बाप के पास गया जो फ़सल की कटाई करनेवालों के साथ काम कर रहा था। 19 अचानक लड़का चीखने लगा,

“हाय मेरा सर, हाय मेरा सर!” बाप ने किसी मुलाज़िम को बताया, “लडके को उठाकर माँ के पास ले जाओ।” 20 नौकर उसे उठाकर ले गया, और वह अपनी माँ की गोद में बैठा रहा। लेकिन दोपहर को वह मर गया।

21 माँ लडके की लाश को लेकर छत पर चढ़ गई। मर्दे-खुदा के कमरे में जाकर उसने उसे उसके बिस्तर पर लिटा दिया। फिर दरवाज़े को बंद करके वह बाहर निकली 22 और अपने शौहर को बलुवाकर कहा, “जरा एक नौकर और एक गधी मेरे पास भेज दें। मुझे फ़ौरन मर्दे-खुदा के पास जाना है। मैं जल्द ही वापस आ जाऊँगी।” 23 शौहर ने हैरान होकर पूछा, “आज उसके पास क्यों जाना है? न तो नए चाँद की ईद है, न सबत का दिन।” बीबी ने कहा, “सब खेरियत है।” 24 गधी पर ज़ीन कसकर उसने नौकर को हुक्म दिया, “गधी को तेज़ चला ताकि हम जल्दी पहुँच जाएँ। जब मैं कहूँगी तब ही रुकना है, वरना नहीं।”

25 चलते चलते वह करमिल पहाड़ के पास पहुँच गए जहाँ मर्दे-खुदा इलीशा था। उसे दूर से देखकर इलीशा जैहाज़ी से कहने लगा, “देखो, शनीम की औरत आ रही है! 26 भागकर उसके पास जाओ और पूछो कि क्या आप, आपका शौहर और बच्चा ठीक है?” जैहाज़ी ने जाकर उसका हाल पूछा तो औरत ने जवाब दिया, “जी, सब ठीक है।” 27 लेकिन ज्योंही वह पहाड़ के पास पहुँच गई तो इलीशा के सामने गिरकर उसके पाँवों से चिमट गई। यह देखकर जैहाज़ी उसे हटाने के लिए करीब आया, लेकिन मर्दे-खुदा बोला, “छोड़ दो! कोई बात इसे बहुत तकलीफ़ दे रही है, लेकिन रब ने वजह मुझसे छुपाए रखी है। उसने मुझे इसके बारे में कुछ नहीं बताया।”

28 फिर शनीमी औरत बोल उठी, “मेरे आका, क्या मैंने आपसे बेटे की दरखास्त की थी? क्या मैंने नहीं कहा था कि मुझे गलत उम्मीद न दिलाएँ?” 29 तब इलीशा ने नौकर को हुक्म दिया, “जैहाज़ी, सफ़र के लिए कमरबस्ता होकर मेरी लाठी को ले लो और भागकर शनीम पहुँचो। अगर रास्ते में किसी से मिलो तो उसे सलाम तक न करना, और अगर कोई सलाम कहे तो उसे जवाब मत देना। जब वहाँ पहुँचोगे तो मेरी लाठी लडके के चेहरे पर रख देना।” 30 लेकिन माँ ने एतराज़ किया, “रब की और आपकी हयात की कसम, आपके बग़ैर मैं घर वापस नहीं जाऊँगी।”

चुनाँचे इलीशा भी उठा और औरत के पीछे पीछे चल पड़ा। 31 जैहाज़ी भाग भागकर उनसे पहले पहुँच गया और लाठी को लडके के चेहरे पर रख दिया। लेकिन कुछ न हुआ। न कोई आवाज़ सुनाई दी, न कोई हरकत हुई। वह इलीशा के पास वापस आया और बोला, “लडका अभी तक मुरदा ही है।”

32 जब इलीशा पहुँच गया तो लडका अब तक मुरदा हालत में उसके बिस्तर पर पड़ा था। 33 वह अकेला ही अंदर गया और दरवाज़े पर कुंडी लगाकर रब से दूआ करने लगा। 34 फिर वह लडके पर लेट गया, यों कि उसका मुँह बच्चे के मुँह से, उस की आँखें बच्चे की आँखों से और उसके हाथ बच्चे के हाथों से लग गए। और ज्योंही वह लडके पर झुक गया तो उसका जिस्म गरम होने लगा। 35 इलीशा खड़ा हुआ और घर में इधर उधर फिरने लगा। फिर वह एक और मरतबा लडके पर लेट गया। इस दफा लडके ने सात बार छीकें मारकर अपनी आँखें खोल दी।

36 इलीशा ने जैहाज़ी को आवाज़ देकर कहा, “शनीमी औरत को बुला लाओ।” वह कमरे में दाखिल हुई तो इलीशा बोला, “आएँ, अपने बेटे को उठाकर ले जाएँ।” 37 वह आई और इलीशा के सामने औंधे मुँह झुक गई, फिर अपने बेटे को उठाकर कमरे से बाहर चली गई।

### इलीशा जहरीले सालन को खाने के काबिल बना देता है

38 इलीशा जिलजाल को लौट आया। उन दिनों में मुल्क काल की गिरिफ्त में था। एक दिन जब नबियों का गुरोह उसके सामने बैठा था तो उसने अपने नौकर को हुक्म दिया, “बड़ी देग लेकर नबियों के लिए कुछ पका लो।”

39 एक आदमी बाहर निकलकर खुले मैदान में कदू ढूँडने गया। कहीं एक बेल नज़र आई जिस पर कदू जैसी कोई सब्जी लगी थी। इन कदुओं से अपनी चादर भरकर वह वापस आया और उन्हें काट काटकर देग में डाल दिया, हालाँकि किसी को भी मालूम नहीं था कि क्या चीज़ है।

40 सालन पककर नबियों में तकसीम हुआ। लेकिन उसे चखते ही वह चीखने लगे, “मर्दे-खुदा, सालन में जहर है! इसे खाकर बंदा मर जाएगा।” वह उसे बिलकुल न खा सके। 41 इलीशा ने हुक्म दिया, “मुझे कुछ मैदा लाकर दें।” फिर उसे देग में डालकर बोला, “अब इसे लोगों को खिला दें।” अब खाना खाने के काबिल था और उन्हें नुकसान न पहुँचा सका।

### 100 आदमियों के लिए खाना

42 एक और मौके पर किसी आदमी ने बाल-सलीसा से आकर मर्दे-खुदा को नई फसल के जौ की 20 रोटियाँ और कुछ अनाज दे दिया। इलीशा ने जैहाज़ी को हुक्म दिया, “इसे लोगों को खिला दो।”

43 जैहाजी हैरान होकर बोला, “यह कैसे मुमकिन है? यह तो 100 आदमियों के लिए काफी नहीं है।” लेकिन इलीशा ने इसरार किया, “इसे लोगों में तकसीम कर दो, क्योंकि रब फरमाता है कि वह जी भरकर खाएँगे बल्कि कुछ बच भी जाएगा।”

44 और ऐसा ही हुआ। जब नौकर ने आदमियों में खाना तकसीम किया तो उन्होंने जी भरकर खाया, बल्कि कुछ खाना बच भी गया। वैसा ही हुआ जैसा रब ने फरमाया था।

## 5

### नामान की शफा

1 उस वक़्त शाम की फ़ौज का कमाँडर नामान था। बादशाह उस की बहुत कदर करता था, और दूसरे भी उस की ख़ास इज़्जत करते थे, क्योंकि रब ने उस की मारिफ़त शाम के दुश्मनों पर फ़तह बख़्शी थी। लेकिन ज़बरदस्त फ़ौजी होने के बावजूद वह संगीन ज़िल्दी बीमारी का मरीज़ था। 2 नामान के घर में एक इसराईली लड़की रहती थी। किसी वक़्त जब शाम के फ़ौजियों ने इसराईल पर छापा मारा था तो वह उसे गिरिफ़्तार करके यहाँ ले आए थे। अब लड़की नामान की बीवी की खिदमत करती थी। 3 एक दिन उसने अपनी मालिकन से बात की, “काश मेरा आका उस नबी से मिलने जाता जो सामरिया में रहता है। वह उसे ज़रूर शफा देता।”

4 यह सुनकर नामान ने बादशाह के पास जाकर लड़की की बात दोहराई। 5 बादशाह बोला, “ज़रूर जाँ और उस नबी से मिलें। मैं आपके हाथ इसराईल के बादशाह को सिफारिशी ख़त भेज दूँगा।” चुनौचे नामान रवाना हुआ। उसके पास तकरीबन 340 किलोग्राम चाँदी, 68 किलोग्राम सोना और 10 क्रीमती सूट थे। 6 जो ख़त वह साथ लेकर गया उसमें लिखा था, “जो आदमी आपको यह ख़त पहुँचा रहा है वह मेरा खादिम नामान है। मैंने उसे आपके पास भेजा है ताकि आप उसे उस की ज़िल्दी बीमारी से शफा दें।”

7 ख़त पढ़कर यूराम ने रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़े और पुकारा, “इस आदमी ने मरीज़ को मेरे पास भेज दिया है ताकि मैं उसे शफा दूँ! क्या मैं अल्लाह हूँ कि किसी को जान से मारूँ या उसे ज़िंदा करूँ? अब गौर करें और देखें कि वह किस तरह मेरे साथ झगड़ने का मौका ढूँड रहा है।”

8 जब इलीशा को ख़बर मिली कि बादशाह ने घबराकर अपने कपड़े फाड़ लिए हैं तो उसने यूराम को पैगाम भेजा, “आपने अपने कपड़े क्यों फाड़ लिए? आदमी को मेरे पास भेज दें तो वह जान लेगा कि इसराईल में नबी है।”

9 तब नामान अपने रथ पर सवार इलीशा के घर के दरवाज़े पर पहुँच गया। 10 इलीशा खुद न निकला बल्कि किसी को बाहर भेजकर इतला दी, “जाकर सात बार दरियाए-यरदन में नहा लें। फिर आपके जिस्म को शफा मिलेगी और आप पाक-साफ़ हो जाएंगे।”

11 यह सुनकर नामान को गुस्सा आया और वह यह कहकर चला गया, “मैंने सोचा कि वह कम अज़ कम बाहर आकर मुझे मिलेगा। होना यह चाहिए था कि वह मेरे सामने खड़े होकर रब अपने ख़ुदा का नाम पुकारता और अपना हाथ बीमार जगह के ऊपर हिला हिलाकर मुझे शफा देता। 12 क्या दमिश्क के दरिया अबाना और फ़रफ़र तमाम इसराईली दरियाओं से बेहतर नहीं हैं? अगर नहाने की ज़रूरत है तो मैं क्यों न उनमें नहाकर पाक-साफ़ हो जाऊँ?”

यों बुड़बुडाते हुए वह बड़े गुस्से में चला गया। 13 लेकिन उसके मुलाज़िमों ने उसे समझाने की कोशिश की। “हमारे आका, अगर नबी आपसे किसी मुश्किल काम का तकाज़ा करता तो क्या आप वह करने के लिए तैयार न होते? अब जबकि उसने सिर्फ़ यह कहा है कि नहाकर पाक-साफ़ हो जाएँ तो आपको यह ज़रूर करना चाहिए।” 14 आखिरकार नामान मान गया और यरदन की वादी में उतर गया। दरिया पर पहुँचकर उसने सात बार उसमें डुबकी लगाई और वाकई उसका जिस्म लड़के के जिस्म जैसा सेहतमंद और पाक-साफ़ हो गया।

15 तब नामान अपने तमाम मुलाज़िमों के साथ मर्दे-ख़ुदा के पास वापस गया। उसके सामने खड़े होकर उसने कहा, “अब मैं जान गया हूँ कि इसराईल के ख़ुदा के सिवा पूरी दुनिया में ख़ुदा नहीं है। ज़रा अपने खादिम से तोहफा कबूल करें।” 16 लेकिन इलीशा ने इनकार किया, “रब की हयात की कसम जिसकी खिदमत मैं करता हूँ, मैं कुछ नहीं लूँगा।” नामान इसरार करता रहा, तो भी वह कुछ लेने के लिए तैयार न हुआ।

17 आखिरकार नामान मान गया। उसने कहा, “ठीक है, लेकिन मुझे ज़रा एक काम करने की इजाज़त दें। मैं यहाँ से इतनी मिट्टी अपने घर ले जाना चाहता हूँ जितनी दो खच्चर उठाकर ले जा सकते हैं। क्योंकि आइंदा मैं उस पर रब को भस्म होनेवाली और ज़बह की कुरबानियाँ चढाना चाहता हूँ। अब से मैं किसी और माबूद को कुरबानियाँ पेश नहीं करूँगा।

18 लेकिन रब मुझे एक बात के लिए मुआफ़ करे। जब मेरा बादशाह पूजा करने के लिए रिम्मोन के मंदिर में जाता है तो मेरे

बाजू का सहारा लेता है। यों मुझे भी उसके साथ झुक जाना पड़ता है जब वह बुत के सामने औंधे मुँह झुक जाता है। ख मेरी यह हरकत मुआफ़ कर दे।”

19 इलीशा ने जवाब दिया, “सलामती से जाएँ।”

### जैहाज़ी का लालच

नामान रवाना हुआ 20 तो कुछ देर के बाद इलीशा का नौकर जैहाज़ी सोचने लगा, “मेरे आका ने शाम के इस बंदे नामान पर हद से ज्यादा नरमदिली का इज़हार किया है। चाहिए तो था कि वह उसके तोहफ़े कबूल कर लेता। ख की हयात की क्रमस, मैं उसके पीछे दौड़कर कुछ न कुछ उससे ले लूँगा।”

21 चुनौचे जैहाज़ी नामान के पीछे भागा। जब नामान ने उसे देखा तो वह रथ से उतरकर जैहाज़ी से मिलने गया और पूछा, “क्या सब ख़ैरियत है?” 22 जैहाज़ी ने जवाब दिया, “जी, सब ख़ैरियत है। मेरे आका ने मुझे आपको इतला देने भेजा है कि अभी अभी नबियों के गुरोह के दो जवान इफ़राईम के पहाड़ी इलाके से मेरे पास आए हैं। मेहरबानी करके उन्हें 34 किलोग्राम चाँदी और दो क्रीमती सूट दे दें।” 23 नामान बोला, “ज़स्सर, बल्कि 68 किलोग्राम चाँदी ले लें।” इस बात पर वह बज़िद रहा। उसने 68 किलोग्राम चाँदी बोरियों में लपेट ली, दो सूट चुन लिए और सब कुछ अपने दो नौकरों को दे दिया ताकि वह सामान जैहाज़ी के आगे आगे ले चलें।

24 जब वह उस पहाड़ के दामन में पहुँचे जहाँ इलीशा रहता था तो जैहाज़ी ने सामान नौकरों से लेकर अपने घर में रख छोड़ा, फिर दोनों को झूठत कर दिया। 25 फिर वह जाकर इलीशा के सामने खड़ा हो गया। इलीशा ने पूछा, “जैहाज़ी, तुम कहाँ से आए हो?” उसने जवाब दिया, “मैं कहीं नहीं गया था।”

26 लेकिन इलीशा ने एतराज़ किया, “क्या मेरी रूह तुम्हारे साथ नहीं थी जब नामान अपने रथ से उतरकर तुमसे मिलने आया? क्या आज चाँदी, कपड़े, जैतून और अंगूर के बाग, भेड़-बकरियाँ, गाय-बैल, नौकर और नौकरानियाँ हासिल करने का वक़्त था? 27 अब नामान की जिल्दी बीमारी हमेशा तक तुम्हें और तुम्हारी औलाद को लगी रहेगी।”

जब जैहाज़ी कमरे से निकला तो जिल्दी बीमारी उसे लग चुकी थी। वह बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो गया था।

## 6

### कुल्हाड़ी का लोहा पानी की सतह पर तैरता है

1 एक दिन कुछ नबी इलीशा के पास आकर शिकायत करने लगे, “जिस तंग जगह पर हम आपके पास आकर ठहरे हैं उसमें हमारे लिए रहना मुश्किल है। 2 क्यों न हम दरियाए-यरदन पर जाएँ और हर आदमी वहाँ से शहतीर ले आए ताकि हम रहने की नई जगह बना सकें।” इलीशा बोला, “ठीक है, जाएँ।” 3 किसी ने गुज़ारिश की, “बराहे-करम हमारे साथ चले।” नबी राजी होकर 4 उनके साथ रवाना हुआ।

दरियाए-यरदन के पास पहुँचते ही वह दरख़्त काटने लगे। 5 काटते काटते अचानक किसी की कुल्हाड़ी का लोहा पानी में गिर गया। वह चिल्ला उठा, “हाय मेरे आका! यह मेरा नहीं था, मैंने तो उसे किसी से उधार लिया था।” 6 इलीशा ने सवाल किया, “लोहा कहाँ पानी में गिरा?” आदमी ने उसे जगह दिखाई तो नबी ने किसी दरख़्त से शाख़ काटकर पानी में फेंक दी। अचानक लोहा पानी की सतह पर आकर तैरने लगा। 7 इलीशा बोला, “इसे पानी से निकाल लो!” आदमी ने अपना हाथ बढाकर लोहे को पकड़ लिया।

### शाम के जंगी मनसूबे इलीशा के बाइस नाकाम रहते हैं

8 शाम और इसराईल के दरमियान जंग थी। जब कभी बादशाह अपने अफ़सरों से मशवरा करके कहता, “हम फ़ुल्लों फ़ुल्लों जगह अपनी लशकरगार लगा लेंगे” 9 तो फ़ौरन मर्दे-ख़ुदा इसराईल के बादशाह को अगाह करता, “फ़ुल्लों जगह से मत गुज़रना, क्योंकि शाम के फ़ौजी वहाँ घात में बैठे हैं।” 10 तब इसराईल का बादशाह अपने लोगों को मज़क़रा जगह पर भेजता और वहाँ से गुज़रने से मुहतात रहता था। ऐसा न सिर्फ़ एक या दो दफ़ा बल्कि कई मरतबा हुआ।

11 आख़िरकार शाम के बादशाह ने बहुत रंजीदा होकर अपने अफ़सरों को बुलाया और पूछा, “क्या कोई मुझे बता सकता है कि हममें से कौन इसराईल के बादशाह का साथ देता है?” 12 किसी अफ़सर ने जवाब दिया, “मेरे आका और बादशाह, हममें से कोई नहीं है। मसला यह है कि इसराईल का नबी इलीशा इसराईल के बादशाह को वह बातें भी बता देता है जो आप अपने सोने के कमरे में बयान करते हैं।” 13 बादशाह ने हुकम दिया, “जाएँ, उसका पता करें ताकि हम अपने फ़ौजियों को भेजकर उसे पकड़ लें।”

बादशाह को इतला दी गई कि इलीशा दूतैन नामी शहर में है। 14 उसने फ़ौरन एक बड़ी फ़ौज रथों और घोड़ों समेत वहाँ भेज दी। उन्होंने रात के वक़्त पहुँचकर शहर को घेर लिया। 15 जब इलीशा का नौकर सुबह-सवेरे जाग उठा और घर से निकला तो क्या देखाता है कि पूरा शहर एक बड़ी फ़ौज से घिरा हुआ है जिसमें रथ और घोड़े भी शामिल हैं। उसने इलीशा

से कहा, “हाय मेरे आका, हम क्या करें?” 16 लेकिन इलीशा ने उसे तसल्ली दी, “डरो मत! जो हमारे साथ हैं वह उनकी निसबत कहीं ज्यादा हैं जो दुश्मन के साथ हैं।” 17 फिर उसने दुआ की, “ऐ रब, नौकर की आँखें खोल ताकि वह देख सके।” रब ने इलीशा के नौकर की आँखें खोल दीं तो उसने देखा कि पहाड़ पर इलीशा के इर्दगिर्द आतिशी घोड़े और रथ फैले हुए हैं।

18 जब दुश्मन इलीशा की तरफ बढ़ने लगा तो उसने दुआ की, “ऐ रब, इनको अंधा कर दे!” रब ने इलीशा की सुनी और उन्हें अंधा कर दिया। 19 फिर इलीशा उनके पास गया और कहा, “यह रास्ता सहीह नहीं। आप गलत शहर के पास पहुँच गए हैं। मेरे पीछे हो लें तो मैं आपको उस आदमी के पास पहुँचा दूँगा जिसे आप ढूँढ रहे हैं।” यह कहकर वह उन्हें सामरिया ले गया।

20 जब वह शहर में दाखिल हुए तो इलीशा ने दुआ की, “ऐ रब, फौजियों की आँखें खोल दे ताकि वह देख सकें।” तब रब ने उनकी आँखें खोल दीं, और उन्हें मालूम हुआ कि हम सामरिया में फँस गए हैं।

21 जब इसराईल के बादशाह ने अपने दुश्मनों को देखा तो उसने इलीशा से पूछा, “मेरे बाप, क्या मैं उन्हें मार दूँ? क्या मैं उन्हें मार दूँ?” 22 लेकिन इलीशा ने मना किया, “ऐसा मत करें। क्या आप अपने जंगी कैदियों को मार देते हैं? नहीं, उन्हें खाना खिलाएँ, पानी पिलाएँ और फिर उनके मालिक के पास वापस भेज दें।”

23 चुनौचे बादशाह ने उनके लिए बड़ी ज़ियाफत का एहतमाम किया और खाने-पीने से फारिग होने पर उन्हें उनके मालिक के पास वापस भेज दिया। इसके बाद इसराईल पर शाम की तरफ से लूट-मार के छापे बंद हो गए।

### सामरिया का मुहासरा

24 कुछ देर के बाद शाम का बादशाह बिन-हदद अपनी पूरी फौज जमा करके इसराईल पर चढ़ आया और सामरिया का मुहासरा किया। 25 नतीजे में शहर में शदीद काल पड़ा। आखिर में गधे का सर चाँदी के 80 सिक्कों में और कबूतर की मुट्ठी-भर बीट चाँदी के 5 सिक्कों में मिलती थी।

26 एक दिन इसराईल का बादशाह यराम शहर की फसील पर सैर कर रहा था तो एक औरत ने उससे इतमामस की, “ऐ मेरे आका और बादशाह, मेरी मदद कीजिए।” 27 बादशाह ने जवाब दिया, “अगर रब आपकी मदद नहीं करता तो मैं किस तरह आपकी मदद करूँ? न मैं गाहने की जगह जाकर आपको अनाज दे सकता हूँ, न अंगूर का रस निकालने की जगह जाकर आपको रस पहुँचा सकता हूँ। 28 फिर भी मुझे बताएँ, मसला क्या है?” औरत बोली, “इस औरत ने मुझसे कहा था, ‘आएँ, आज आप अपने बेटे को कुरबान करें ताकि हम उसे खा लें, तो फिर कल हम मेरे बेटे को खा लेंगे।’ 29 चुनौचे हमने मेरे बेटे को पकाकर खा लिया। अगले दिन मैंने उससे कहा, ‘अब अपने बेटे को दे दें ताकि उसे भी खा लें।’ लेकिन उसने उसे छुपाए रखा।”

30 यह सुनकर बादशाह ने रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़ डाले। चूँकि वह अभी तक फसील पर खड़ा था इसलिए सब लोगों को नज़र आया कि कपड़ों के नीचे वह टाट पहने हुए था। 31 उसने पुकारा, “अल्लाह मुझे सख्त सज़ा दे अगर मैं इलीशा बिन साफ़त का आज ही सर कलम न करूँ!”

32 उसने एक आदमी को इलीशा के पास भेजा और खुद भी उसके पीछे चल पड़ा। इलीशा उस वक़्त घर में था, और शहर के बुजुर्ग उसके पास बैठे थे। बादशाह का कासिद अभी रास्ते में था कि इलीशा बुजुर्गों से कहने लगा, “अब ध्यान करें, इस कातिल बादशाह ने किसी को मेरा सर कलम करने के लिए भेज दिया है। उसे अंदर आने न दें बल्कि दरवाज़े पर कुंडी लगाएँ। उसके पीछे पीछे उसके मालिक के कदमों की आहट भी सुनाई दे रही है।”

33 इलीशा अभी बात कर ही रहा था कि कासिद पहुँच गया और उसके पीछे बादशाह भी। बादशाह बोला, “रब ही ने हमें इस मुसीबत में फँसा दिया है। मैं मजीद उस की मदद के इंतज़ार में क्यों रहूँ?”

## 7

1 तब इलीशा बोला, “रब का फ़रमान सुनें! रब फ़रमाता है कि कल इसी वक़्त शहर के दरवाज़े पर साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरीन मैदा और 11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए बिकेगा।” 2 जिस अफसर के बाज़ू का सहारा बादशाह लेता था वह मर्द-खुदा की बात सुनकर बोल उठा, “यह नामुमकिन है, खाह रब आसमान के दरीचे क्यों न खोल दे।” इलीशा ने जवाब दिया, “आप अपनी आँखों से इसका मुशाहदा करेंगे, लेकिन खुद उसमें से कुछ न खाएँगे।”

### शाम के फौज़ी फ़रार हो जाते हैं

3 शहर से बाहर दरवाज़े के करीब कोढ़ के चार मरीज़ बैठे थे। अब यह आदमी एक दूसरे से कहने लगे, “हम यहाँ बैठकर मौत का इंतज़ार क्यों करें? 4 शहर में काल है। अगर उसमें जाएँ तो भूके मर जाएँगे, लेकिन यहाँ रहने से भी कोई फ़रक नहीं

पड़ता। तो क्यों न हम शाम की लशकरगाह में जाकर अपने आपको उनके हवाले करें। अगर वह हमें जिंदा रहने दें तो अच्छा रहेगा, और अगर वह हमें क़त्ल भी कर दें तो कोई फ़रक नहीं पड़ेगा। यहाँ रहकर भी हमें मरना ही है।”

5 शाम के धुंधलके में वह रवाना हुए। लेकिन जब लशकरगाह के किनारे तक पहुँचे तो एक भी आदमी नज़र न आया। 6 क्योंकि रब ने शाम के फ़ौजियों को रथों, घोड़ों और एक बड़ी फ़ौज का शोर सुना दिया था। वह एक दूसरे से कहने लगे, “इसराईल के बादशाह ने हिली और मिसरी बादशाहों को उजरत पर बुलाया ताकि वह हम पर हमला करें!” 7 डर के मारे वह शाम के धुंधलके में फ़रार हो गए थे। उनके ख़ैमे, घोड़े, गधे बल्कि पूरी लशकरगाह पीछे रह गई थी जबकि वह अपनी जान बचाने के लिए भाग गए थे।

8 जब कोठी लशकरगाह में दाखिल हुए तो उन्होंने एक ख़ैमे में जाकर जी भरकर खाना खाया और मै पी। फिर उन्होंने सोना, चाँदी और कपड़े उठाकर कहीं छुपा दिए। वह वापस आकर किसी और ख़ैमे में गए और उसका सामान जमा करके उसे भी छुपा दिया। 9 लेकिन फिर वह आपस में कहने लगे, “जो कुछ हम कर रहे हैं ठीक नहीं। आज खुशी का दिन है, और हम यह खुशख़बरी दूसरों तक नहीं पहुँचा रहे। अगर हम सुबह तक इंतज़ार करें तो कुसूरवार उठेंगे। आँ, हम फ़ौज़र वापस जाकर बादशाह के घराने को इतला दें।”

10 चुनौचे वह शहर के दरवाज़े के पास गए और पहरेदारों को आवाज़ देकर उन्हें सब कुछ सुनाया, “हम शाम की लशकरगाह में गए तो वहाँ न कोई दिखाई दिया, न किसी की आवाज़ सुनाई दी। घोड़े और गधे बंधे हुए थे और ख़ैमे तरतीब से खड़े थे, लेकिन आदमी एक भी मौजूद नहीं था।”

11 दरवाज़े के पहरेदारों ने आवाज़ देकर दूसरों को खबर पहुँचाई तो शहर के अंदर बादशाह के घराने को इतला दी गई। 12 गो रात का वक़्त था तो भी बादशाह ने उठकर अपने अफ़सरों को बुलाया और कहा, “मैं आपको बताता हूँ कि शाम के फ़ौजी क्या कर रहे हैं। वह तो ख़ूब जानते हैं कि हम भूके मर रहे हैं। अब वह अपनी लशकरगाह को छोड़कर खुले मैदान में छुप गए हैं, क्योंकि वह समझते हैं कि इसराईली ख़ाली लशकरगाह को देखकर शहर से ज़रूर निकलेंगे और फिर हम उन्हें जिंदा पकड़कर शहर में दाखिल हो जाएंगे।”

13 लेकिन एक अफ़सर ने मशवरा दिया, “बेहतर है कि हम चंद एक आदमियों को पाँच बचे हुए घोड़ों के साथ लशकरगाह में भेजें। अगर वह पकड़े जाएँ तो कोई बात नहीं। क्योंकि अगर वह यहाँ रहें तो फिर भी उन्हें हमारे साथ मरना ही है।”

14 चुनौचे दो रथों को घोड़ों समेत तैयार किया गया, और बादशाह ने उन्हें शाम की लशकरगाह में भेज दिया। रथबानों को उसने हुक्म दिया, “जाएँ और पता करें कि क्या हुआ है।” 15 वह रवाना हुए और शाम के फ़ौजियों के पीछे पीछे चलने लगे। रास्ते में हर तरफ़ कपड़े और सामान बिखरा पड़ा था, क्योंकि फ़ौजियों ने भागते भागते सब कुछ फेंककर रास्ते में छोड़ दिया था। इसराईली रथसवार दरियाए-यरदान तक पहुँचे और फिर बादशाह के पास वापस आकर सब कुछ कह सुनाया।

16 तब सामरिया के बाशिंदे शहर से निकल आए और शाम की लशकरगाह में जाकर सब कुछ लूट लिया। यों वह कुछ पूरा हुआ जो रब ने फरमाया था कि साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरनी मैदा और 11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए बिकेगा।

17 जिस अफ़सर के बाजू का सहारा बादशाह लेता था उसे उसने दरवाज़े की निगरानी करने के लिए भेज दिया था। लेकिन जब लोग बाहर निकले तो अफ़सर उनकी ज़द में आकर उनके पैरों तले कुचला गया। यों वैसा ही हुआ जैसा मर्द-ख़ुदा ने उस वक़्त कहा था जब बादशाह उसके घर आया था। 18 क्योंकि इलीशा ने बादशाह को बताया था, “क़त्ल इसी वक़्त शहर के दरवाज़े पर साढ़े 5 किलोग्राम बेहतरनी मैदा और 11 किलोग्राम जौ चाँदी के एक सिक्के के लिए बिकेगा।” 19 अफ़सर ने एतराज़ किया था, “यह नामुमकिन है, खाह रब आसमान के दरीचे क्यों न खोल दे।” और मर्द-ख़ुदा ने जवाब दिया था, “आप अपनी आँखों से इसका मुशहदा करेंगे, लेकिन ख़ुद उसमें से कुछ नहीं खाएंगे।”

20 अब यह पेशगोई पूरी हुई, क्योंकि बेकाबू लोगों ने उसे शहर के दरवाज़े पर पाँवों तले कुचल दिया, और वह मर गया।

## 8

यूगम बादशाह श्नीमी औरत की ज़मीन वापस कर देता है

1 एक दिन इलीशा ने उस औरत को जिसका बेटा उसने जिंदा किया था मशवरा दिया, “अपने खानदान को लेकर आरिज़ी तौर पर बैस्ने-मुल्क चली जाएँ, क्योंकि रब ने हुक्म दिया है कि मुल्क में सात साल तक काल होगा।” 2 श्नीमी की औरत ने मर्द-ख़ुदा की बात मान ली। अपने खानदान को लेकर वह चली गई और सात साल फ़िलिस्ती मुल्क में रही। 3 सात साल गुज़र गए तो वह उस मुल्क से वापस आई। लेकिन किसी और ने उसके घर और ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर रखा था, इसलिए वह मदद के लिए बादशाह के पास गई।

4 ऐन उस वक़्त जब वह दरबार में पहुँची तो बादशाह मर्दे-खुदा इलीशा के नौकर जैहाज़ी से गुफ्तगू कर रहा था। बादशाह ने उससे दरखास्त की थी, “मुझे वह तमाम बड़े काम सुना दो जो इलीशा ने किए हैं।” 5 और अब जब जैहाज़ी सुना रहा था कि इलीशा ने मुरदा लडके को किस तरह जिंदा कर दिया तो उस की माँ अंदर आकर बादशाह से इलतमास करने लगी, “घर और ज़मीन वापस मिलने में मेरी मदद कीजिए।” उसे देखकर जैहाज़ी ने बादशाह से कहा, “मेरे आका और बादशाह, यह वही औरत है और यह उसका वही बेटा है जिसे इलीशा ने जिंदा कर दिया था।” 6 बादशाह ने औरत से सवाल किया, “क्या यह सही है?” औरत ने तसदीक में उसे दुबारा सब कुछ सुनाया। तब उसने औरत का मामला किसी दरबारी अफ़सर के सुपर्द करके हुक्म दिया, “ध्यान दें कि इसे पूरी मिलकियत वापस मिल जाए! और जितने पैसे कब्ज़ा करनेवाला औरत की गैरमौजूदगी में ज़मीन की फ़सलों से कमा सका वह भी औरत को दे दिए जाएँ।”

### बिन-हदद की मौत की पेशगोई

7 एक दिन इलीशा दमिशक आया। उस वक़्त शाम का बादशाह बिन-हदद बीमार था। जब उसे इतला मिली कि मर्दे-खुदा आया है 8 तो उसने अपने अफ़सर हज़ाएल को हुक्म दिया, “मर्दे-खुदा के लिए तोहफा लेकर उसे मिलने जाएँ। वह रब से दरियाफ्त करे कि क्या मैं बीमारी से शफा पाऊँगा या नहीं?”

9 हज़ाएल 40 ऊँटों पर दमिशक की बेहतरिन पैदावार लादकर इलीशा से मिलने गया। उसके पास पहुँचकर वह उसके सामने खड़ा हुआ और कहा, “आपके बेटे शाम के बादशाह बिन-हदद ने मुझे आपके पास भेजा है। वह यह जानना चाहता है कि क्या मैं अपनी बीमारी से शफा पाऊँगा या नहीं?”

10 इलीशा ने जवाब दिया, “जाएँ और उसे इतला दें, ‘आप ज़रूर शफा पाएँगे।’ लेकिन रब ने मुझ पर जाहिर किया है कि वह हकीकत में मर जाएगा।” 11 इलीशा खामोश हो गया और टिकटिकी बॉंधकर बड़ी देर तक उसे घूरता रहा, फिर रोने लगा। 12 हज़ाएल ने पूछा, “मेरे आका, आप क्यों रो रहे हैं?” इलीशा ने जवाब दिया, “मुझे मालूम है कि आप इसराईलियों को कितना नुक़सान पहुँचाएँगे। आप उनकी क़िलाबंद आबादियों को आग लगाकर उनके जवानों को तलवार से क़त्ल कर देंगे, उनके छोटे बच्चों को ज़मीन पर पटख देंगे और उनकी हामिला औरतों के पेट चीर डालेंगे।” 13 हज़ाएल बोला, “मुझ जैसे कुत्ते की क्या हैसियत है कि इतना बड़ा काम करूँ?” इलीशा ने कहा, “रब ने मुझे दिखा दिया है कि आप शाम के बादशाह बन जाएँगे।”

14 इसके बाद हज़ाएल चला गया और अपने मालिक के पास वापस आया। बादशाह ने पूछा, “इलीशा ने आपको क्या बताया?” हज़ाएल ने जवाब दिया, “उसने मुझे यकीन दिलाया कि आप शफा पाएँगे।” 15 लेकिन अगले दिन हज़ाएल ने कम्बल लेकर पानी में भिगो दिया और उसे बादशाह के मुँह पर रख दिया। बादशाह का साँस रुक गया और वह मर गया। फिर हज़ाएल तख़्तनशीन हुआ।

### यहदाह का बादशाह यहराम

16 यहराम बिन यहसफ़त इसराईल के बादशाह यराम की हुक्मत के पाँचवें साल में यहदाह का बादशाह बना। शुरू में वह अपने बाप के साथ हुक्मत करता था। 17 यहराम 32 साल की उम्र में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 8 साल तक हुक्मत करता रहा। 18 उस की शादी इसराईल के बादशाह अखियब की बेटी से हुई थी, और वह इसराईल के बादशाहों और ख़ासकर अखियब के खानदान के बुरे नमूने पर चलता रहा। उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। 19 तो भी वह अपने ख़ादिम दाऊद की खातिर यहदाह को तबाह नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसने दाऊद से वादा किया था कि तेरा और तेरी औलाद का चराग हमेशा तक जलता रहेगा।

20 यहराम की हुक्मत के दौरान अदोमियों ने बगावत की और यहदाह की हुक्मत को रद्द करके अपना बादशाह मुकर्रर किया। 21 तब यहराम अपने तमाम रथों को लेकर सईर के करीब आया। जब जंग छिड़ गई तो अदोमियों ने उसे और उसके रथों पर मुकर्रर अफ़सरों को घेर लिया। रात को बादशाह घेरनेवालों की सफ़ों को तोड़ने में कामयाब हो गया, लेकिन उसके फ़ौज़ी उसे छोड़कर अपने अपने घर भाग गए। 22 इस वजह से मुल्के-अदोम आज तक दुबारा यहदाह की हुक्मत के तहत नहीं आया। उसी वक़्त लिबना शहर भी संरक्ष होकर खुदमुखतार हो गया।

23 बाक़ी जो कुछ यहराम की हुक्मत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहदाह की तारीख’ की किताब में बयान किया गया है। 24 जब यहराम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है खानदानी कब्र में दफनाया गया। फिर उसका बेटा अखज़ियाह तख़्तनशीन हुआ।

### यहदाह का बादशाह अखज़ियाह

25 अखज़ियाह बिन यहराम इसराईल के बादशाह यराम बिन अखियब की हुक्मत के 12वें साल में यहदाह का बादशाह बना। 26 वह 22 साल की उम्र में तख़्तनशीन हुआ और यरूशलम में रहकर एक साल बादशाह रहा। उस की माँ अतलियाह

इसराईल के बादशाह उमरी की पोती थी।<sup>27</sup> अखज़ियाह भी अखियब के खानदान के बुरे नमूने पर चल पडा। अखियब के घराने की तरह उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। वजह यह थी कि उसका रिश्ता अखियब के खानदान के साथ बँध गया था।

<sup>28</sup> एक दिन अखज़ियाह बादशाह यूराम बिन अखियब के साथ मिलकर रामात-जिलियाद गया ताकि शाम के बादशाह हज़ाएल से लड़े। जब जंग छिड़ गई तो यूराम शाम के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़मी हुआ<sup>29</sup> और मैदाने-जंग को छोड़कर यज़्रएल वापस आया ताकि ज़ख़म भर जाएँ। जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो यहदाह का बादशाह अखज़ियाह बिन यहराम उसका हाल पूछने के लिए यज़्रएल आया।

## 9

### इलीशा याह को मसह करता है

<sup>1</sup> एक दिन इलीशा नबी ने नबियों के गुरोह में से एक को बुलाकर कहा, “सफ़र के लिए कमरबस्ता होकर रामात-जिलियाद के लिए रवाना हो जाएँ। जैतून के तेल की यह कुप्पी अपने साथ ले जाएँ।<sup>2</sup> वहाँ पहुँचकर याह बिन यहसफ़त बिन निमसी को तलाश करें। जब उससे मुलाकात हो तो उसे उसके साथियों से अलग करके किसी अंदरूनी कमरे में ले जाएँ।<sup>3</sup> वहाँ कुप्पी लेकर याह के सर पर तेल उड़ेल दें और कहें, ‘रब फ़रमाता है कि मैं तुझे तेल से मसह करके इसराईल का बादशाह बना देता हूँ।’ इसके बाद देर न करें बल्कि फ़ौरन दरवाज़े को खोलकर भाग जाएँ!”

<sup>4</sup> चुनौचे जवान नबी रामात-जिलियाद के लिए रवाना हुआ।<sup>5</sup> जब वहाँ पहुँचा तो फ़ौज़ी अफ़सर मिलकर बैठे हुए थे। वह उनके करीब गया और बोला, “मेरे पास कमाँडर के लिए पैगाम है।” याह ने सवाल किया, “हममें से किसके लिए?” नबी ने जवाब दिया, “आप ही के लिए।”

<sup>6</sup> याह खड़ा हुआ और उसके साथ घर में गया। वहाँ नबी ने याह के सर पर तेल उड़ेलकर कहा, “रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, मैंने तुझे मसह करके अपनी कौम का बादशाह बना दिया है।<sup>7</sup> तुझे अपने मालिक अखियब के पूरे खानदान को हलाक करना है। यों मैं उन नबियों का इंतकाम लूँगा जो मेरी खिदमत करते हुए शहीद हो गए हैं। हाँ, मैं रब के उन तमाम खादिमों का बदला लूँगा जिन्हें ईज़बिल ने कल्ल किया है।<sup>8</sup> अखियब का पूरा घराना तबाह हो जाएगा। मैं उसके खानदान के हर मर्द को हलाक कर दूँगा, खाह वह बालिग हो या बच्चा।<sup>9</sup> मेरा अखियब के खानदान के साथ वही सलूक होगा जो मैंने यरुबियाम बिन नबात और बाशा बिन अखियाह के खानदानों के साथ किया।<sup>10</sup> जहाँ तक ईज़बिल का ताल्लुक है उसे दफ़नाया नहीं जाएगा बल्कि कुत्ते उसे यज़्रएल की ज़मीन पर खा जाएंगे!” यह कहकर नबी दरवाज़ा खोलकर भाग गया।

<sup>11</sup> जब याह निकलकर अपने साथी अफ़सरों के पास वापस आया तो उन्होंने पूछा, “क्या सब ख़ैरियत है? यह दीवाना आपसे क्या चाहता था?” याह बोला, “खैर, आप तो इस किस्म के लोगों को जानते हैं कि किस तरह की गप्पें हॉकते हैं।”<sup>12</sup> लेकिन उसके साथी इस जवाब से मुतमइन न हुए, “झूट! सही बात बताएँ।” फिर याह ने उन्हें खुलकर बात बताई, “आदमी ने कहा, ‘रब फ़रमाता है कि मैंने तुझे मसह करके इसराईल का बादशाह बना दिया है।’”

<sup>13</sup> यह सुनकर अफ़सरों ने जल्दी जल्दी अपनी चादरों को उतारकर उसके सामने सीढियों पर बिछा दिया। फिर वह नरसिंगा बजा बजाकर नारा लगाने लगे, “याह बादशाह जिंदाबाद!”

### यूराम और अखज़ियाह का अंजाम

<sup>14</sup> याह बिन यहसफ़त बिन निमसी फ़ौरन यूराम बादशाह को तख़्त से उतारने के मनसूबे बाँधने लगा। यूराम उस वक़्त पूरी इसराईली फ़ौज समेत रामात-जिलियाद के करीब दमिश्क के बादशाह हज़ाएल से लड़ रहा था। लेकिन शहर का दिफ़ा करते करते<sup>15</sup> बादशाह शाम के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़मी हो गया था और मैदाने-जंग को छोड़कर यज़्रएल वापस आया था ताकि ज़ख़म भर जाएँ। अब याह ने अपने साथी अफ़सरों से कहा, “अगर आप वाकई मेरे साथ हैं तो किसी को भी शहर से निकलने न दें, वरना ख़तरा है कि कोई यज़्रएल जाकर बादशाह को इतला दे दे।”<sup>16</sup> फिर वह रथ पर सवार होकर यज़्रएल चला गया जहाँ यूराम आराम कर रहा था। उस वक़्त यहदाह का बादशाह अखज़ियाह भी यूराम से मिलने के लिए यज़्रएल आया हुआ था।

<sup>17</sup> जब यज़्रएल के बुर्ज पर खड़े पहरेदार ने याह के गोल को शहर की तरफ आते हुए देखा तो उसने बादशाह को इतला दी। यूराम ने हुक़म दिया, “एक घुड़सवार को उनकी तरफ भेजकर उनसे मालूम करें कि सब ख़ैरियत है या नहीं।”<sup>18</sup> घुड़सवार शहर से निकला और याह के पास आकर कहा, “बादशाह पछते हैं कि क्या सब ख़ैरियत है?” याह ने जवाब दिया, “इससे आपका क्या वास्ता? आँ, मेरे पीछे हो लें।” बुर्ज पर के पहरेदार ने बादशाह को इतला दी, “क्रासिद उन तक पहुँच गया है, लेकिन वह वापस नहीं आ रहा।”



19 तब बादशाह ने एक और घुड़सवार को भेज दिया। याह के पास पहुँचकर उसने भी कहा, “बादशाह पछते हैं कि क्या सब खैरियत है?” याह ने जवाब दिया, “इससे आपका क्या वास्ता? मेरे पीछे हो लें।” 20 बुर्ज पर के पहरेदार ने यह देखकर बादशाह को इतला दी, “हमारा क्रासिद उन तक पहुँच गया है, लेकिन यह भी वापस नहीं आ रहा। ऐसा लगता है कि उनका राहनुमा याह बिन निमसी है, क्योंकि वह अपने रथ को दीवाने की तरह चला रहा है।”

21 यूराम ने हुक्म दिया, “मेरे रथ को तैयार करो!” फिर वह और यहदाह का बादशाह अपने अपने रथ में सवार होकर याह से मिलने के लिए शहर से निकले। उनकी मुलाकात उस बाग के पास हुई जो नबोत यज़्ज़एली से छीन लिया गया था। 22 याह को पहचानकर यूराम ने पूछा, “याह, क्या सब खैरियत है?” याह बोला, “खैरियत कैसे हो सकती है जब तेरी माँ ईज़बिल की बुतपरस्ती और जादूगी हर तरफ फैली हुई है?” 23 यूराम बादशाह चिल्ला उठा, “ऐ अखज़ियाह, गद्दारी!” और मुड़कर भागने लगा।

24 याह ने फ़ौरन अपनी कमान खींचकर तीर चलाया जो सीधा यूराम के कंधों के दरमियान यों लगा कि दिल में से गुज़र गया। बादशाह एकदम अपने रथ में गिर पड़ा। 25 याह ने अपने साथवाले अफसर बिदकर से कहा, “इसकी लाश उठाकर उस बाग में फेंक दें जो नबोत यज़्ज़एली से छीन लिया गया था। क्योंकि वह दिन याद करें जब हम दोनों अपने रथों को इसके बाप अखियब के पीछे चला रहे थे और रब ने अखियब के बारे में एलान किया, 26 ‘यकीन जान कि कल नबोत और उसके बेटों का कत्ल मुझसे छुपा न रहा। इसका मुआवज़ा मैं तुझे नबोत की इसी ज़मीन पर दूँगा।’ चुनौचे अब यूराम को उठाकर उस ज़मीन पर फेंक दें ताकि रब की बात पूरी हो जाए।”

27 जब यहदाह के बादशाह अखज़ियाह ने यह देखा तो वह बैत-गान का रास्ता लेकर फ़रार हो गया। याह उसका ताक़्कुब करते हुए चिल्लाया, “उसे भी मार दो!” इबलियाम के करीब जहाँ रास्ता ज़र की तरफ चढ़ता है अखज़ियाह अपने रथ में चलते चलते ज़खमी हुआ। वह बच तो निकला लेकिन मजिदो पहुँचकर मर गया। 28 उसके मुलाज़िम लाश को रथ पर रखकर यरूशलम लाए। वहाँ उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है खानदानी कब्र में दफनाया गया। 29 अखज़ियाह यूराम बिन अखियब की हुक्मत के 11वें साल में यहदाह का बादशाह बन गया था।

### ईज़बिल का अंजाम

30 इसके बाद याह यज़्ज़एल चला गया। जब ईज़बिल को इतला मिली तो उसने अपनी आँखों में सुरमा लगाकर अपने बालों को खबसूरती से सँवारा और फिर खिडकी से बाहर झाँकने लगी। 31 जब याह महल के गेट में दाखिल हुआ तो ईज़बिल चिल्लाई, “ऐ ज़िमीर! जिसने अपने मालिक को कत्ल कर दिया है, क्या सब खैरियत है?” 32 याह ने ऊपर देखकर आवाज़ दी, “कौन मेरे साथ है, कौन?” दो या तीन ख्वाजासराओं ने खिडकी से बाहर देखकर उस पर नज़र डाली 33 तो याह ने उन्हें हुक्म दिया, “उसे नीचे फेंक दो!”

तब उन्होंने मलिका को नीचे फेंक दिया। वह इतने ज़ोर से ज़मीन पर गिरी कि खून के छींटे दीवार और घोड़ों पर पड़ गए। याह और उसके लोगों ने अपने रथों को उसके ऊपर से गुज़रने दिया। 34 फिर याह महल में दाखिल हुआ और खाया और पिया। इसके बाद उसने हुक्म दिया, “कोई जाए और उस लानती औरत को दफन करे, क्योंकि वह बादशाह की बेटी थी।”

35 लेकिन जब मुलाज़िम उसे दफन करने के लिए बाहर निकले तो देखा कि सिर्फ उस की खोपड़ी, हाथ और पाँव बाकी रह गए हैं। 36 याह के पास वापस जाकर उन्होंने उसे आगाह किया। तब उसने कहा, “अब सब कुछ पूरा हुआ है जो रब ने अपने खादिम इलियास तिशबी की मारिफत फ़रमाया था, ‘यज़्ज़एल की ज़मीन पर कुते ईज़बिल की लाश खा जाएंगे।’ 37 उस की लाश यज़्ज़एल की ज़मीन पर गोबर की तरह पड़ी रहेगी ताकि कोई यकीन से न कह सके कि वह कहाँ है।”

## 10

याह अखियब की औलाद को हलाक करता है

1 सामरिया में अखियब के 70 बेटे थे। अब याह ने खत लिखकर सामरिया भेज दिए। यज़्ज़एल के अफसरों, शहर के बुजुर्गों और अखियब के बेटों के सरपरस्तों को यह खत मिल गए, और उनमें जैल की खबर लिखी थी,

2 “आपके मालिक के बेटे आपके पास हैं। आप किलाबंद शहर में रहते हैं, और आपके पास हथियार, रथ और घोड़े भी हैं। इसलिए मैं आपको चैलेंज देता हूँ कि यह खत पढ़ते ही 3 अपने मालिक के सबसे अच्छे और लायक बेटे को चुनकर उसे उसके बाप के तख़्त पर बिठा दें। फिर अपने मालिक के खानदान के लिए लड़ें!”

4 लेकिन सामरिया के बुजुर्ग बेहद सहम गए और आपस में कहने लगे, “आगर दो बादशाह उसका मुकाबला न कर सके तो हम क्या कर सकते हैं?” 5 इसलिए महल के इंचारज, सामरिया पर मुकरर अफसर, शहर के बुजुर्गों और अखियब के

बेटों के सरपरस्तों ने याहू को पैगाम भेजा, “हम आपके खादिम हैं और जो कुछ आप कहेंगे हम करने के लिए तैयार हैं। हम किसी को बादशाह मुकर्रर नहीं करेंगे। जो कुछ आप मुनासिब समझते हैं वह करें।”

6 यह पढकर याहू ने एक और खत लिखकर सामरिया भेजा। उसमें लिखा था, “अगर आप वाकई मेरे साथ हैं और मेरे ताबे रहना चाहते हैं तो अपने मालिक के बेटों के सरों को काटकर कल इस वक़्त तक यज़्ज़एल में मेरे पास ले आएं।” क्योंकि अख़ियब के 70 बेटे सामरिया के बड़ों के पास रहकर परवरिश पा रहे थे। 7 जब खत उनके पास पहुँच गया तो इन आदिमियों ने 70 के 70 शहजादों को ज़बह कर दिया और उनके सरों को टोकरों में रखकर यज़्ज़एल में याहू के पास भेज दिया।

8 एक कासिद ने याहू के पास आकर इतला दी, “वह बादशाह के बेटों के सर लेकर आए हैं।” तब याहू ने हुक्म दिया, “शहर के दरवाज़े पर उनके दो ढेर लगा दो और उन्हें सुबह तक वहीं रहने दो।” 9 अगले दिन याहू सुबह के वक़्त निकला और दरवाज़े के पास खड़े होकर लोगों से मुख़ातिब हुआ, “यूराम की मौत के नाते से आप बेइलज़ाम हैं। मैं ही ने अपने मालिक के खिलाफ़ मनसूबे बाँधकर उसे मार डाला। लेकिन किसने इन तमाम बेटों का सर कलम कर दिया? 10 चुनौचे आज जान लें कि जो कुछ भी रब ने अख़ियब और उसके ख़ानदान के बारे में फ़रमाया है वह पूरा हो जाएगा। जिसका एलान रब ने अपने खादिम इलियास की मारिफ़त किया है वह उसने कर लिया है।” 11 इसके बाद याहू ने यज़्ज़एल में रहनेवाले अख़ियब के बाकी तमाम रिश्तेदारों, बड़े अफ़सरों, करीबी दोस्तों और पुजारियों को हलाक कर दिया। एक भी न बचा।

12 फिर वह सामरिया के लिए रवाना हुआ। रास्ते में जब बैत-इक़द-रोईम के करीब पहुँच गया 13 तो उस की मुलाकात यहूदाह के बादशाह अख़ज़ियाह के चंद एक रिश्तेदारों से हुई। याहू ने पूछा, “आप कौन हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “हम अख़ज़ियाह के रिश्तेदार हैं और सामरिया का सफ़र कर रहे हैं। वहाँ हम बादशाह और मलिका के बेटों से मिलना चाहते हैं।” 14 तब याहू ने हुक्म दिया, “उन्हें ज़िंदा पकड़ो!” उन्होंने उन्हें ज़िंदा पकड़कर बैत-इक़द के हौज़ के पास मार डाला। 42 आदिमियों में से एक भी न बचा।

15 उस जगह को छोड़कर याहू आगे निकला। चलते चलते उस की मुलाकात यून्दब बिन रैकाब से हुई जो उससे मिलने आ रहा था। याहू ने सलाम करके कहा, “क्या आपका दिल मेरे बारे में मुख़लिस है जैसा कि मेरा दिल आपके बारे में है?” यून्दब ने जवाब दिया, “जी हाँ।” याहू बोला, “अगर ऐसा है, तो मेरे साथ हाथ मिलाएँ।” यून्दब ने उसके साथ हाथ मिलाया तो याहू ने उसे अपने रथ पर सवार होने दिया। 16 फिर याहू ने कहा, “आएँ मेरे साथ और मेरी रब के लिए जिद्दो-जहद देखें।” चुनौचे यून्दब याहू के साथ सामरिया चला गया।

17 सामरिया पहुँचकर याहू ने अख़ियब के ख़ानदान के जितने अफ़राद अब तक बच गए थे हलाक कर दिए। जिस तरह रब ने इलियास को फ़रमाया था उसी तरह अख़ियब का पूरा घराना मिट गया।

**याहू बाल के तमाम पुजारियों को क़त्ल करता है**

18 इसके बाद याहू ने तमाम लोगों को जमा करके एलान किया, “अख़ियब ने बाल देवता की परस्तिश थोड़ी की है। मैं कहीं ज्यादा उस की पूजा करूँगा। 19 अब जाकर बाल के तमाम नबियों, खिदमतगुज़ारों और पुजारियों को बुला लाएँ। खयाल करें कि एक भी दूर न रहे, क्योंकि मैं बाल को बड़ी क़ुरबानी पेश करूँगा। जो भी आने से इनकार करे उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।”

इस तरह याहू ने बाल के खिदमतगुज़ारों के लिए जाल बिछा दिया ताकि वह उसमें फँसकर हलाक हो जाएँ। 20-21 उसने पूरे इसराईल में कासिद भेजकर एलान किया, “बाल देवता के लिए मुक़द्दस ईद मनाएँ।” चुनौचे बाल के तमाम पुजारी आए, और एक भी इजतिमा से दूर न रहा। इतने जमा हुए कि बाल का मंदिर एक सिरे से दूसरे सिरे तक भर गया।

22 याहू ने ईद के कपड़ों के इंचार्ज को हुक्म दिया, “बाल के तमाम पुजारियों को ईद के लिबास दे देना।” चुनौचे सबको लिबास दिए गए। 23 फिर याहू और यून्दब बिन रैकाब बाल के मंदिर में दाखिल हुए, और याहू ने बाल के खिदमतगुज़ारों से कहा, “ध्यान दें कि यहाँ आपके साथ रब का कोई खादिम मौजूद न हो। सिर्फ़ बाल के पुजारी होने चाहिएँ।”

24 दोनों आदमी सामने गए ताकि ज़बह की और भस्म होनेवाली क़ुरबानियों पेश करें। इतने में याहू के 80 आदमी बाहर मंदिर के इर्दगिर्द खड़े हो गए। याहू ने उन्हें हुक्म देकर कहा था, “ख़बरदार! जो पूजा करनेवालों में से किसी को बचने दे उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।”

25 ज्योंही याहू भस्म होनेवाली क़ुरबानी को चढ़ाने से फ़ारिग हुआ तो उसने अपने मुहाफिज़ों और अफ़सरों को हुक्म दिया, “अंदर जाकर सबको मार देना। एक भी बचने न पाए।” वह दाखिल हुए और अपनी तलवारों को खींचकर सबको मार डाला। लाशों को उन्होंने बाहर फेंक दिया। फिर वह मंदिर के सबसे अंदरवाले कमरे में गए 26 जहाँ बूत था। उसे उन्होंने निकालकर जला दिया 27 और बाल का सतन भी टुकड़े टुकड़े कर दिया। बाल का पूरा मंदिर ढा दिया गया, और वह जगह बैतुल-ख़ला बन गई। आज तक वह इसके लिए इस्तेमाल होता है।

### याह की हुकूमत

28 इस तरह याह ने इसराईल में बाल देवता की पूजा खत्म कर दी। 29 तो भी वह यरुसलियम बिन नबात के उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरुसलियम ने इसराईल को उकसाया था। बैतल और दान में कायम सोने के बछड़ों की पूजा खत्म न हुई।

30 एक दिन रब ने याह से कहा, “जो कुछ मुझे पसंद है उसे तुने अच्छी तरह सरंजाम दिया है, क्योंकि तुने अखियब के घराने के साथ सब कुछ किया है जो मेरी मर्ज़ी थी। इस वजह से तेरी औलाद चौथी पुरत तक इसराईल पर हुकूमत करती रहेगी।” 31 लेकिन याह ने पूरे दिल से रब इसराईल के खुदा की शरीअत के मुताबिक ज़िंदगी न गुज़ारी। वह उन गुनाहों से बाज़ आने के लिए तैयार नहीं था जो करने पर यरुसलियम ने इसराईल को उकसाया था।

32 याह की हुकूमत के दौरान रब इसराईल का इलाका छोटा करने लगा। शाम के बादशाह हज़ाएल ने इसराईल के उस पूरे इलाके पर क़ब्ज़ा कर लिया 33 जो दरियाए-यरदन के मशरिफ़ में था। जद, रुबिन और मनस्सी का इलाका जिलियाद बसन से लेकर दरियाए-अरनोन पर बाके अरोईर तक शाम के बादशाह के हाथ में आ गया।

34 बाकी जो कुछ याह की हुकूमत के दौरान हुआ, जो उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख’ की किताब में बयान किया गया है। 35-36 वह 28 साल सामरिया में बादशाह रहा। वहाँ वह दफन भी हुआ। जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा यहूआखज़ तख्तनशीन हुआ।

## 11

### यहदाह में अतलियाह की ज़ालिमाना हुकूमत

1 जब अखज़ियाह की माँ अतलियाह को मालूम हुआ कि मेरा बेटा मर गया है तो वह अखज़ियाह की तमाम औलाद को कत्ल करने लगी। 2 लेकिन अखज़ियाह की सभी बहन यहसबा ने अखज़ियाह के छोटे बेटे युआस को चुपके से उन शहज़ादों में से निकाल लिया जिन्हें कत्ल करना था और उसे उस की दाया के साथ एक स्टोर में छुपा दिया जिसमें बिस्तर वगैरा महफूज़ रखे जाते थे। इस तरह वह बच गया। 3 बाद में युआस को रब के घर में मुंतकिल किया गया जहाँ वह उसके साथ उन छः सालों के दौरान छुपा रहा जब अतलियाह मलिका थी।

### अतलियाह का अंजाम और युआस बादशाह बन जाता है

4 अतलियाह की हुकूमत के सातवें साल में यहोयदा इमाम ने सौ सौ सिपाहियों पर मुकर्रर अफसरों, कारी नामी दस्तों और शाही मुहाफिज़ों को रब के घर में बुला लिया। वहाँ उसने क्रम खिलाकर उनसे अहद बाँधा। फिर उसने बादशाह के बेटे युआस को पेश करके 5 उन्हें हिदायत की, “अगले सबत के दिन आपमें से जितने खूटी पर आएंगे वह तीन हिस्सों में तकसीम हो जाएँ। एक हिस्सा शाही महल पर पहरा दे, 6 दूसरा सू नामी दरवाज़े पर और तीसरा शाही मुहाफिज़ों के पीछे के दरवाज़े पर। यों आप रब के घर की हिफ़ाज़त करेंगे। 7 दूसरे दो गुरोह जो सबत के दिन खूटी नहीं करते उन्हें रब के घर में आकर युआस बादशाह की पहरादारी करनी है। 8 वह उसके इर्दगिर्द दायरा बनाकर अपने हथियारों को पकड़े रखें और जहाँ भी वह जाए उसे घेरे रखें। जो भी इस दायरे में घुसने की कोशिश करे उसे मार डालना।”

9 सौ सौ सिपाहियों पर मुकर्रर अफसरों ने ऐसा ही किया। अगले सबत के दिन वह सब अपने फ़ौजियों समेत यहोयदा इमाम के पास आए। वह भी आए जो खूटी पर थे और वह भी जिनकी अब छुट्टी थी। 10 इमाम ने अफसरों को दाऊद बादशाह के वह नेजे और ढालें दी जो अब तक रब के घर में महफूज़ रखी हुई थीं। 11 फिर मुहाफिज़ हथियारों को हाथ में पकड़े बादशाह के गिर्द खड़े हो गए। कुरबानगाह और रब के घर के दरमियान उनका दायरा रब के घर की जुन्बी दीवार से लेकर उस की शिमाली दीवार तक फैला हुआ था। 12 फिर यहोयदा बादशाह के बेटे युआस को बाहर लाया और उसके सर पर ताज रखकर उसे क़वानीन की किताब दे दी। यों युआस को बादशाह बना दिया गया। उन्होंने उसे मसह करके तालियों बजाई और बलूंद आवाज़ से नारा लगाने लगे, “बादशाह ज़िंदाबाद!”

13 जब मुहाफिज़ों और बाकी लोगों का शोर अतलियाह तक पहुँचा तो वह रब के घर के सहन में उनके पास आई। 14 वहाँ पहुँचकर वह क्या देखती है कि नया बादशाह उन सत्तन के पास खड़ा है जहाँ बादशाह रिवाज के मुताबिक खड़ा होता है, और वह अफसरों और तुरम बजानेवालों से घिरा हुआ है। तमाम उम्मत भी साथ खड़ी तुरम बजा बजाकर खुशी मना रही है। अतलियाह रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़कर चीख उठी, “गद्गारी, गद्गारी!”

15 यहोयदा इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर मुकर्रर उन अफसरों को बुलाया जिनके सुपुर्द फ़ौज की गई थी और उन्हें हुकम दिया, “उसे बाहर ले जाएँ, क्योंकि मुनासिब नहीं कि उसे रब के घर के पास मारा जाए। और जो भी उसके पीछे आए उसे तलवार से मार देना।”

16 वह अतलियाह को पकड़कर उस रास्ते पर ले गए जिस पर चलते हुए घोड़े महल के पास पहुँचते हैं। वहाँ उसे मार दिया गया। 17 फिर यहोयदा ने बादशाह और कौम के साथ मिलकर रब से अहद बाँधकर वादा किया कि हम रब की कौम रहेंगे। इसके अलावा बादशाह ने यहोयदा की मारिफत कौम से भी अहद बाँधा। 18 इसके बाद उम्मत के तमाम लोग बाल के मंदिर पर टूट पड़े और उसे ढा दिया। उस की कुरबानगाहों और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके उन्होंने बाल के पुजारी मतान को कुरबानगाहों के सामने ही मार डाला।

रब के घर पर पहरेदार खड़े करने के बाद 19 यहोयदा सौ सौ फौजियों पर मुकर्रर अफसरों, कारी नामी दस्तों, महल के मुहाफिजों और बाकी पूरी उम्मत के हमराह जुल्स निकालकर बादशाह को रब के घर से महल में ले गया। वह मुहाफिजों के दरवाजे से होकर दाखिल हुए। बादशाह शाही तख्त पर बैठ गया, 20 और तमाम उम्मत खुशी मनाती रही। यों यस्शलम शहर को सुकून मिला, क्योंकि अतलियाह को महल के पास तलवार से मार दिया गया था।

यहदाह का बादशाह युआस

21 युआस सात साल का था जब तख्तनशीन हुआ।

## 12

1 वह इसराईल के बादशाह याह की हुकूमत के सातवें साल में यहदाह का बादशाह बना, और यस्शलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 40 साल था। उस की माँ जिबियाह बैर-सबा की रहनेवाली थी। 2 जब तक यहोयदा उस की राहुमुमाई करता था युआस वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। 3 तो भी ऊँची जगहों के मंदिर दूर न किए गए। अवाम मामूल के मुताबिक वहाँ अपनी कुरबानियाँ पेश करते और बखूर जलाते रहे।

युआस रब के घर की मरम्मत करवाता है

4 एक दिन युआस ने इमामों को हुक्म दिया, “रब के लिए मखसूस जितने भी पैसे रब के घर में लाए जाते हैं उन सबको जमा करें, चाहे वह मर्दुमशुमारी के टैक्स \* या किसी मन्नत के ज़िन्न में दिए गए हों, चाहे रज़ाकाराना तौर पर अदा किए गए हों। 5 यह तमाम पैसे इमामों के सुपर्द किए जाएँ। इनसे आपको जहाँ भी ज़रूरत है रब के घर की दराडों की मरम्मत करवानी है।” 6 लेकिन युआस की हुकूमत के 23वें साल में उसने देखा कि अब तक रब के घर की दराडों की मरम्मत नहीं हुई। 7 तब उसने यहोयदा और बाकी इमामों को बुलाकर पूछा, “आप रब के घर की मरम्मत क्यों नहीं करा रहे? अब से आपको इन पैसों से आपकी अपनी ज़रूरियात पूरी करने की इजाज़त नहीं बल्कि तमाम पैसे रब के घर की मरम्मत के लिए इस्तेमाल करने हैं।”

8 इमाम मान गए कि अब से हम लोगों से हदिया नहीं लेंगे और कि इसके बदले हमें रब के घर की मरम्मत नहीं करवानी पड़ेगी। 9 फिर यहोयदा इमाम ने एक संदूक लेकर उसके ढकने में स्राख बना दिया। इस संदूक को उसने कुरबानगाह के पास रख दिया, उस दरवाजे के दहनी तरफ जिसमें से परस्तार रब के घर के सहन में दाखिल होते थे। जब लोग अपने हदियाजात रब के घर में पेश करते तो दरवाजे की पहरादारी करनेवाले इमाम तमाम पैसों को संदूक में डाल देते। 10 जब कभी पला चलता कि संदूक भर गया है तो बादशाह का मीरमुंशी और इमामे-आज़म आते और तमाम पैसे गिनकर थैलियों में डाल देते थे। 11 फिर यह गिने हुए पैसे उन ठेकेदारों को दिए जाते जिनके सुपर्द रब के घर की मरम्मत का काम किया गया था। इन पैसों से वह मरम्मत करनेवाले कारीगरों की उजरत अदा करते थे। इनमें बढई, इमारत पर काम करनेवाले, 12 राज और पथर तराशनेवाले शामिल थे। इसके अलावा उन्होंने यह पैसे दराडों की मरम्मत के लिए दरकार लकडी और तराशे हुए पथरों के लिए भी इस्तेमाल किए। बाकी जितने अखराजात रब के घर को बहाल करने के लिए ज़रूरी थे वह सब इन पैसों से पूरे किए गए। 13 लेकिन इन हदियाजात से सोने या चाँदी की चीज़ें न बनवाई गईं, न चाँदी के बासन, बर्ती कतरने के औज़ार, छिडकाव के कटोरे या तुरम। 14 यह सिर्फ और सिर्फ ठेकेदारों को दिए गए ताकि वह रब के घर की मरम्मत कर सकें। 15 ठेकेदारों से हिसाब न लिया गया जब उन्हें कारीगरों को पैसे देने थे, क्योंकि वह काबिले-एतमाद थे।

16 महज़ वह पैसे जो कुसर और गुनाह की कुरबानियों के लिए मिलते थे रब के घर की मरम्मत के लिए इस्तेमाल न हुए। वह इमामों का हिस्सा रहे।

खराज मिलने पर हज़ाएल यस्शलम को छोड़ता है

17 उन दिनों में शाम के बादशाह हज़ाएल ने जात पर हमला करके उस पर कब्ज़ा कर लिया। इसके बाद वह मुडकर यस्शलम की तरफ बढ़ने लगा ताकि उस पर भी हमला करे। 18 यह देखकर यहदाह के बादशाह युआस ने उन तमाम हदियाजात को इकट्ठा किया जो उसके बापदादा यहसफत, यहराम और अखज़ियाह ने रब के घर के लिए मखसूस किए थे। उसने वह भी

\* 12:4 देखिए खसूज 30:11-16

जमा किए जो उसने खुद रब के घर के लिए मखसूस किए थे। यह चीजें उस सारे सोने के साथ मिलाकर जो रब के घर और शाही महल के खजानों में था उसने सब कुछ हज़ाएल को भेज दिया। तब हज़ाएल यरूशलम को छोड़कर चला गया।

### युआस की मौत

19 बाक्री जो कुछ युआस की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया उसका जिक्र 'शाहाने-यहदाह' की किताब में किया गया है।<sup>20</sup> एक दिन उसके अफसरों ने उसके खिलाफ साजिश करके उसे कत्ल कर दिया जब वह बैत-मिल्लो के पास उस रास्ते पर था जो सिल्ला की तरफ उतर जाता था।<sup>21</sup> कातिलों के नाम यूज़बद बिन सिमआत और यहज़बद बिन शमीर थे। युआस को यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है खानदानी कब्र में दफनाया गया। फिर उसका बेटा अमसियाह तख्तनशीन हुआ।

## 13

### इसराईल का बादशाह यहआखज़

1 यहआखज़ बिन याह यहदाह के बादशाह युआस बिन अखज़ियाह की हुकूमत के 23वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 17 साल था, और उसका दास्त-हुकूमत सामरिया रहा।<sup>2</sup> उसका चाल-चलन रब को नापसंद था, क्योंकि वह भी यरूबियाम बिन नबात के बुरे नमूने पर चलता रहा। उसने वह गुनाह जारी रखे जो करने पर यरूबियाम ने इसराईल को उकसाया था। उस बुतपरस्ती से वह कभी बाज़ न आया।<sup>3</sup> इस वजह से रब इसराईल से बहुत नाराज़ हुआ, और वह शाम के बादशाह हज़ाएल और उसके बेटे बिन-हदद के वसीले से उन्हें बार बार दबाता रहा।

4 लेकिन फिर यहआखज़ ने रब का ग़ज़ब ठंडा किया, और रब ने उस की मिन्नतें सुनीं, क्योंकि उसे मालूम था कि शाम का बादशाह इसराईल पर कितना ज़ुल्म कर रहा है।<sup>5</sup> रब ने किसी को भेज दिया जिसने उन्हें शाम के ज़ुल्म से आज़ाद करवाया। इसके बाद वह पहले की तरह सुकून के साथ अपने घरों में रह सकते थे।<sup>6</sup> तो भी वह उन गुनाहों से बाज़ न आए जो करने पर यरूबियाम ने उन्हें उकसाया था बल्कि उनकी यह बुतपरस्ती जारी रही। यसीरत देवी का बुत भी सामरिया से हटाया न गया।

7 आखिर में यहआखज़ के सिर्फ 50 घुडसवार, 10 रथ और 10,000 प्यादा सिपाही रह गए। फ़ौज का बाक्री हिस्सा शाम के बादशाह ने तबाह कर दिया था। उसने इसराईली फ़ौजियों को कुचलकर यों उडा दिया था जिस तरह धूल अनाज को गाहते वक्रत उड जाती है।

8 बाक्री जो कुछ यहआखज़ की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में बयान की गई हैं।<sup>9</sup> जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में दफनाया गया। फिर उसका बेटा यहआस तख्तनशीन हुआ।

### इसराईल का बादशाह यहआस

10 यहआस बिन यहआखज़ यहदाह के बादशाह युआस की हुकूमत के 37वें साल में इसराईल का बादशाह बना।<sup>11</sup> यहआस का चाल-चलन रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यरूबियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था बल्कि यह बुतपरस्ती जारी रही।<sup>12</sup> बाक्री जो कुछ यहआस की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज हैं। उसमें उस की यहदाह के बादशाह अमसियाह के साथ जंग का जिक्र भी है।

13 जब यहआस मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में शाही कब्र में दफनाया गया। फिर यरूबियाम दुवूम तख्त पर बैठ गया।

### बिस्तरे-मर्ग पर यहआस की इलीशा से मुलाकात

14 यहआस के दौरे-हुकूमत में इलीशा शदीद बीमार हो गया। जब वह मरने को था तो इसराईल का बादशाह यहआस उससे मिलने गया। उसके ऊपर झुककर वह खूब रो पड़ा और चिल्लाया, "हाय, मेरे बाप, मेरे बाप। इसराईल के रथ और उसके घोड़े!"<sup>15</sup> इलीशा ने उसे हुक्म दिया, "एक कमान और कुछ तीर ले आएं।" बादशाह कमान और तीर इलीशा के पास ले आया।<sup>16</sup> फिर इलीशा बोला, "कमान को पकड़ें।" जब बादशाह ने कमान को पकड़ लिया तो इलीशा ने अपने हाथ उसके हाथों पर रख दिए।<sup>17</sup> फिर उसने हुक्म दिया, "मशरिकी खिडकी को खोल दें।" बादशाह ने उसे खोल दिया। इलीशा ने कहा, "तीर चलाएँ!" बादशाह ने तीर चलाया। इलीशा पुकारा, "यह रब का फतह दिलानेवाला तीर है, शाम पर फतह का तीर! आप अफ्रीक के पास शाम की फ़ौज को मुकम्मल तौर पर तबाह कर देंगे।"

18 फिर उसने बादशाह को हुक्म दिया, "अब बाक्री तीरों को पकड़ें।" बादशाह ने उन्हें पकड़ लिया। फिर इलीशा बोला, "इनको ज़मीन पर पटक दें।" बादशाह ने तीन मरतबा तीरों को ज़मीन पर पटक दिया और फिर रुक गया।<sup>19</sup> यह देखकर

मर्दे-खुदा गुस्से हो गया और बोला, “आपको तीरों को पाँच या छः मरतबा ज़मीन पर पटखना चाहिए था। अगर ऐसा करते तो शाम की फौज को शिकस्त देकर मुकम्मल तौर पर तबाह कर देते। लेकिन अब आप उसे सिर्फ़ तीन मरतबा शिकस्त देंगे।”

20 थोड़ी देर के बाद इलीशा फौत हुआ और उसे दफन किया गया। उन दिनों में मोआबी लुटेरे हर साल मौसम-बहार के दौरान मुल्क में घुस आते थे। 21 एक दिन किसी का जनाज़ा हो रहा था तो अचानक यह लुटेरे नज़र आए। मातम करनेवाले लाश को करीब की इलीशा की कब्र में फेंककर भाग गए। लेकिन ज्योंही लाश इलीशा की हड्डियों से टकराई उसमें जान आ गई और वह आदमी खड़ा हो गया।

**इलीशा के आखिरी अलफ़ाज़ पूरे हो जाते हैं**

22 यहूआख़ज़ के जीते-जी शाम का बादशाह हज़ाएल इसराईल को दबाता रहा। 23 तो भी रब को अपनी क़ौम पर तरस आया। उसने उन पर रहम किया, क्योंकि उसे वह अहद याद रहा जो उसने इब्राहीम, इसहाक और याक़ूब से बाँधा था। आज तक वह उन्हें तबाह करने या अपने हुज़ूर से ख़ारिज करने के लिए तैयार नहीं हुआ।

24 जब शाम का बादशाह हज़ाएल फौत हुआ तो उसका बेटा बिन-हदद तख़्तनशीन हुआ। 25 तब यहूआस बिन यहूआख़ज़ ने बिन-हदद से वह इसराईली शहर दुबारा छीन लिए जिन पर बिन-हदद के बाप हज़ाएल ने कब्ज़ा कर लिया था। तीन बार यहूआस ने बिन-हदद को शिकस्त देकर इसराईली शहर वापस ले लिए।

## 14

**यहूदाह का बादशाह अमसियाह**

1 अमसियाह बिन युआस इसराईल के बादशाह यहूआस बिन यहूआख़ज़ के दूसरे साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2 उस वक़्त वह 25 साल का था। वह यरूशलम में रहकर 29 साल हक़ूमत करता रहा। उस की माँ यहूअदान यरूशलम की रहनेवाली थी। 3 जो कुछ अमसियाह ने किया वह रब को पसंद था, अगरचे वह उतनी वफ़ादारी से रब की पैरवी नहीं करता था जितनी उसके बाप दाऊद ने की थी। हर काम में वह अपने बाप युआस के नमूने पर चला, 4 लेकिन उसने भी ऊँची जगहों के मंदिरों को दूर न किया। आम लोग अब तक वहाँ कुरबानियाँ चढ़ाते और बखूर जलाते रहे।

5 ज्योंही अमसियाह के पाँव मज़बूती से जम गए उसने उन अफ़सरों को सज़ाए-मौत दी जिन्होंने बाप को क़त्ल कर दिया था। 6 लेकिन उनके बेटों को उसने ज़िंदा रहने दिया और यों मूसवी शरीअत के तबे रहा जिसमें रब फ़रमाता है, “वालिदेन को उनके बच्चों के ज़रायम के सबब से सज़ाए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उनके वालिदेन के ज़रायम के सबब से। अगर किसी को सज़ाए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उसने खुद किया है।”

7 अमसियाह ने अदोमियों को नमक की वादी में शिकस्त दी। उस वक़्त उनके 10,000 फ़ौजी उससे लड़ने आए थे। जंग के दौरान उसने सिला शहर पर कब्ज़ा कर लिया और उसका नाम युक्कतियेल रखा। यह नाम आज तक रायज है।

**अमसियाह इसराईल के बादशाह यहूआस से लड़ता है**

8 इस फ़तह के बाद अमसियाह ने इसराईल के बादशाह यहूआस बिन यहूआख़ज़ को पैगाम भेजा, “आएँ, हम एक दूसरे का मुकाबला करें!” 9 लेकिन इसराईल के बादशाह यहूआस ने जवाब दिया, “लुबनान में एक काँटेदार झाड़ी ने देवदार के एक दरख़्त से बात की, ‘मेरे बेटे के साथ अपनी बेटी का रिश्ता बान्धो।’ लेकिन उसी वक़्त लुबनान के जंगली जानवरों ने उसके ऊपर से गुज़रकर उसे पाँवों तले कुचल डाला। 10 मुल्के-अदोम पर फ़तह पाने के सबब से आपका दिल मग़र्र हो गया है। लेकिन मेरा मशवरा है कि आप अपने घर में रहकर फ़तह में हासिल हुई शोहरत का मज़ा लेने पर इकतिका करें। आप ऐसी मुसीबत को क्यों दावत देते हैं जो आप और यहूदाह की तबाही का बाइस बन जाए?”

11 लेकिन अमसियाह मानने के लिए तैयार नहीं था, इसलिए यहूआस अपनी फ़ौज लेकर यहूदाह पर चढ़ आया। बैत-शम्म के पास उसका यहूदाह के बादशाह के साथ मुकाबला हुआ। 12 इसराईल की फ़ौज ने यहूदाह की फ़ौज को शिकस्त दी, और हर एक अपने अपने घर भाग गया। 13 इसराईल के बादशाह यहूआस ने यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन युआस बिन अख़ज़ियाह को वही बैत-शम्म में गिरफ़्तार कर लिया। फिर वह यरूशलम गया और शहर की फ़सील इफ़राईम नामी दरवाज़े से कोने के दरवाज़े तक गिरा दी। इस हिस्से की लंबाई तकरीबन 600 फ़ुट थी। 14 जितना भी सोना, चाँदी और कीमती सामान रब के घर और शाही महल के खज़ानों में था उसे उसने पूरे का पूरा छीन लिया। लूटा हुआ माल और बाज़ यरगमालों को लेकर वह सामरिया वापस चला गया।

**इसराईल के बादशाह यहूआस की मौत**

15 बाकी जो कुछ यहूआस की हक़ूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुई वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज हैं। उसमें उस की यहूदाह के बादशाह अमसियाह के साथ जंग का ज़िक्र भी

है। 16 जब यहूआस मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में इसराईल के बादशाहों की कब्र में दफनाया गया। फिर उसका बेटा यरुबियाम दुवुम तख्तनशीन हुआ।

### यहूदाह के बादशाह अमसियाह की मौत

17 इसराईल के बादशाह यहूआस बिन यहूआखज की मौत के बाद यहूदाह का बादशाह अमसियाह बिन युआस मज्जीद 15 साल जीता रहा। 18 बाकी जो कुछ अमसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख' की किताब में दर्ज है। 19 एक दिन लोग यरूशलम में उसके खिलाफ साजिश करने लगे। आखिरकार उसने फ़रार होकर लकीस में पनाह ली, लेकिन साजिश करनेवालों ने अपने लोगों को उसके पीछे भेजा, और वह वहाँ उसे क़त्ल करने में कामयाब हो गए। 20 उस की लाश घोड़े पर उठाकर यरूशलम लाई गई जहाँ उसे शहर के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है खानदानी कब्र में दफनाया गया।

21 यहूदाह के तमाम लोगों ने अमसियाह के बेटे उज्जियाह\* को बाप के तख्त पर बिठा दिया। उस की उम्र 16 साल थी 22 जब उसका बाप मरकर अपने बापदादा से जा मिला। बादशाह बनने के बाद उज्जियाह ने ऐलात शहर पर कब्जा करके उसे दुबारा यहूदाह का हिस्सा बना लिया। उसने शहर में बहुत तामीरी काम करवाया।

### इसराईल का बादशाह यरुबियाम दुवुम

23 यहूदाह के बादशाह अमसियाह बिन युआस के 15वें साल में यरुबियाम बिन यहूआस इसराईल का बादशाह बना। उस की हुकूमत का दौरानिया 41 साल था, और उसका दास्त-हुकूमत सामरिया रहा। 24 उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज न आया जो करने पर नबात के बेटे यरुबियाम अब्वल ने इसराईल को उकसाया था। 25 यरुबियाम दुवुम लबो-हमात से लेकर बहीराए-मुरदार तक उन तमाम इलाकों पर दुबारा कब्जा कर सका जो पहले इसराईल के थे। यों वह वादा पूरा हुआ जो रब इसराईल के खुदा ने अपने खादिम जात-हिफ़र के रहनेवाले नबी यूसुस बिन अमिती की मारिफ़त किया था। 26 क्योंकि रब ने इसराईल की निहायत बुरी हालत पर ध्यान दिया था। उसे मालूम था कि छोटे बड़े सब हलाक होनेवाले हैं और कि उन्हें छुड़ानेवाला कोई नहीं है। 27 रब ने कभी नहीं कहा था कि मैं इसराईल कौम का नामो-निशान मिटा दूँगा, इसलिए उसने उन्हें यरुबियाम बिन यहूआस के वसीले से नजात दिलाई।

28 बाकी जो कुछ यरुबियाम दुवुम की हुकूमत के दौरान हुआ, जो कुछ उसने किया और जो जंगी कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं उनका जिक्र 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में हुआ है। उसमें यह भी बयान किया गया है कि उसने किस तरह दमिश्क और हमात पर दुबारा कब्जा कर लिया। 29 जब यरुबियाम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे सामरिया में बादशाहों की कब्र में दफनाया गया। फिर उसका बेटा ज़करियाह तख्तनशीन हुआ।

## 15

### यहूदाह का बादशाह उज्जियाह

1 उज्जियाह बिन अमसियाह इसराईल के बादशाह यरुबियाम दुवुम की हुकूमत के 27वें साल में यहूदाह का बादशाह बना। 2 उस वक्त उस की उम्र 16 साल थी, और वह यरूशलम में रहकर 52 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ यकूलियाह यरूशलम की रहनेवाली थी। 3 अपने बाप अमसियाह की तरह उसका चाल-चलन रब को पसंद था, 4 लेकिन ऊँची जगहों को दूर न किया गया, और आम लोग वहाँ अपनी कुरबानियाँ चढ़ाते और बखूर जलाते रहे।

5 एक दिन रब ने बादशाह को सजा दी कि उसे कोढ़ लगा गया। उज्जियाह जीति-जी इस बीमारी से शफ़ा न पा सका, और उसे अलहदा घर में रहना पड़ा। उसके बेटे यूताम को महल पर मुकर्रर किया गया, और वही उम्मत पर हुकूमत करने लगा।

6 बाकी जो कुछ उज्जियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहूदाह की तारीख' की किताब में दर्ज है। 7 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है खानदानी कब्र में दफनाया गया। फिर उसका बेटा यूताम तख्तनशीन हुआ।

### इसराईल का बादशाह ज़करियाह

8 ज़करियाह बिन यरुबियाम यहूदाह के बादशाह उज्जियाह की हुकूमत के 38वें साल में इसराईल का बादशाह बना। उसका दास्त-हुकूमत भी सामरिया था, लेकिन छः माह के बाद उस की हुकूमत खत्म हो गई। 9 अपने बापदादा की तरह ज़करियाह का चाल-चलन भी रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज न आया जो करने पर यरुबियाम बिन नबात ने

\* 14:21 यहाँ कई जगहों पर इब्रानी में उज्जियाह का दूसरा नाम अज़रियाह मुस्तामल है।

इसराईल को उकसाया था। 10 सल्लूम बिन यबीस ने उसके खिलाफ साजिश करके उसे सबके सामने कत्ल किया। फिर वह उस की जगह बादशाह बन गया।

11 बाकी जो कुछ जकरियाह की हुकूमत के दौरान हुआ उसका जिक्र 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में किया गया है।

12 यों रब का वह वादा पूरा हुआ जो उसने याहू से किया था, "तेरी औलाद चौथी पुत्र तक इसराईल पर हुकूमत करती रहेगी।"

### इसराईल का बादशाह सल्लूम

13 सल्लूम बिन यबीस यहूदाह के बादशाह उज्जियाह के 39वें साल में इसराईल का बादशाह बना। वह सामरिया में रहकर सिर्फ एक माह तक तख्त पर बैठ सका। 14 फिर मनाहिम बिन जादी ने तिरज़ा से आकर सल्लूम को सामरिया में कत्ल कर दिया। इसके बाद वह खुद तख्त पर बैठ गया।

15 बाकी जो कुछ सल्लूम की हुकूमत के दौरान हुआ और जो साजिशें उसने की वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में बयान किया गया है।

16 उस वक्त मनाहिम ने तिरज़ा से आकर शहर तिफसह को उसके तमाम बाशिंदों और गिर्दो-नवाह के इलाके समेत तबाह किया। वजह यह थी कि उसके बाशिंदे अपने दरवाजों को खोलकर उसके ताबे हो जाने के लिए तैयार नहीं थे। जवाब में मनाहिम ने उनको मारा और तमाम हामिला औरतों के पेट चीर डाले।

### इसराईल का बादशाह मनाहिम

17 मनाहिम बिन जादी यहूदाह के बादशाह उज्जियाह की हुकूमत के 39वें साल में इसराईल का बादशाह बना। सामरिया उसका दास-हुकूमत था, और उस की हुकूमत का दौरानिया 10 साल था। 18 उसका चाल-चलन रब को नापसंद था, और वह जिंदागी-भर उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यस्बियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था।

19-20 मनाहिम के दौरे-हुकूमत में अस्ूर का बादशाह पूल यानी तिप्लत-पिलेसर मुल्क से लडने आया। मनाहिम ने उसे 34,000 किलोग्राम चाँदी दे दी ताकि वह उस की हुकूमत मजबूत करने में मदद करे। तब अस्ूर का बादशाह इसराईल को छोड़कर अपने मुल्क वापस चला गया। चाँदी के यह पैसे मनाहिम ने अमीर इसराईलियों से जमा किए। हर एक को चाँदी के 50 सिक्के अदा करने पड़े।

21 बाकी जो कुछ मनाहिम की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज है। 22 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा फिक्रहियाह तख्त पर बैठ गया।

### इसराईल का बादशाह फिक्रहियाह

23 फिक्रहियाह बिन मनाहिम यहूदाह के बादशाह उज्जियाह के 50वें साल में इसराईल का बादशाह बना। सामरिया में रहकर उस की हुकूमत का दौरानिया दो साल था। 24 फिक्रहियाह का चाल-चलन रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यस्बियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था।

25 एक दिन फौज के आला अफसर फिक्रह बिन रमलियाह ने उसके खिलाफ साजिश की। जिलियाद के 50 आदमियों को अपने साथ लेकर उसने फिक्रहियाह को सामरिया के महल के बुर्ज में मार डाला। उस वक्त दो और अफसर बनाम अरज़ूब और अरिया भी उस की जद में आकर मर गए। इसके बाद फिक्रह तख्त पर बैठ गया।

26 बाकी जो कुछ फिक्रहियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में बयान किया गया है।

### इसराईल का बादशाह फिक्रह

27 फिक्रह बिन रमलियाह यहूदाह के बादशाह उज्जियाह की हुकूमत के 52वें साल में इसराईल का बादशाह बना। सामरिया में रहकर वह 20 साल तक हुकूमत करता रहा। 28 फिक्रह का चाल-चलन रब को नापसंद था। वह उन गुनाहों से बाज़ न आया जो करने पर यस्बियाम बिन नबात ने इसराईल को उकसाया था।

29 फिक्रह के दौरे-हुकूमत में अस्ूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर ने इसराईल पर हमला किया। जैल के तमाम शहर उसके कब्जे में आ गए : ऐय्यून, अबील-बैत-माका, यानह, कादिस और हस्ूर। जिलियाद और गलील के इलाके भी नफताली के पूरे क़बायली इलाके समेत उस की गिरिफ्त में आ गए। अस्ूर का बादशाह इन तमाम जगहों में आबाद लोगों को गिरिफ्तार करके अपने मुल्क अस्ूर ले गया।

30 एक दिन होसेअ बिन ऐला ने फिक्रह के खिलाफ साजिश करके उसे मौत के घाट उतार दिया। फिर वह खुद तख्त पर बैठ गया। यह यहूदाह के बादशाह यूताम बिन उज्जियाह की हुकूमत के 20वें साल में हुआ।



31 बाकी जो कुछ फिकह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-इसराईल की तारीख' की किताब में दर्ज है।

यहदाह का बादशाह यूताम

32 उज्जियाह का बेटा यूताम इसराईल के बादशाह फिकह की हुकूमत के दूसरे साल में यहदाह का बादशाह बना। 33 वह 25 साल की उम्र में बादशाह बना और यस्शलम में रहकर 16 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ यरूसा बित सदोक थी। 34 वह अपने बाप उज्जियाह की तरह वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। 35 तो भी ऊँची जगहों के मंदिर हटाए न गए। लोग वहाँ अपनी कुरबानियाँ चढ़ाने और बखुर जलाने से बाज न आए। यूताम ने रब के घर का बालाई दरवाजा तामीर किया।

36 बाकी जो कुछ यूताम की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह 'शाहाने-यहदाह की तारीख' की किताब में कलमबंद है। 37 उन दिनों में रब शाम के बादशाह रजीन और फिकह बिन रमलियाह को यहदाह के खिलाफ भेजने लगा ताकि उससे लड़ें। 38 जब यूताम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यस्शलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है खानदानी कब्र में दफनाया गया। फिर उसका बेटा आखज तख्त पर बैठ गया।

## 16

यहदाह का बादशाह आखज

1 आखज बिन यूताम इसराईल के बादशाह फिकह बिन रमलियाह की हुकूमत के 17वें साल में यहदाह का बादशाह बना। 2 उस वक्त आखज 20 साल का था, और वह यस्शलम में रहकर 16 साल हुकूमत करता रहा। वह अपने बाप दाऊद के नमूने पर न चला बल्कि वह कुछ करता रहा जो रब को नापसंद था। 3 क्योंकि उसने इसराईल के बादशाहों का चाल-चलन अपनाया, यहाँ तक कि उसने अपने बेटे को कुरबानी के तौर पर जला दिया। यों वह उन कौमों के धिनोने रस्मो-रिवाज अदा करने लगा जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे मुल्क से निकाल दिया था। 4 आखज बखुर जलाकर अपनी कुरबानियाँ ऊँचे मकामों, पहाड़ियों की चोटियों और हर घने दरख्त के साये में चढ़ाता था।

आखज अस्ूर के बादशाह से मदद लेता है

5 एक दिन शाम का बादशाह रजीन और इसराईल का बादशाह फिकह बिन रमलियाह यस्शलम पर हमला करने के लिए यहदाह में घुस आए। उन्होंने शहर का मुहासरा तो किया लेकिन उस पर कब्जा करने में नाकाम रहे। 6 उन्हीं दिनों में रजीन ने ऐलात पर दुबारा कब्जा करके शाम का हिस्सा बना लिया। यहदाह के लोगों को वहाँ से निकालकर उसने वहाँ अदोमियों को बसा दिया। यह अदोमी आज तक वहाँ आबाद हैं।

7 आखज ने अपने कासिदों को अस्ूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर के पास भेजकर उसे इतला दी, "मैं आपका खादिम और बेटा हूँ। मेहरबानी करके आँ और मुझे शाम और इसराईल के बादशाहों से बचाएँ जो मुझ पर हमला कर रहे हैं।" 8 साथ साथ आखज ने वह चाँदी और सोना जमा किया जो रब के घर और शाही महल के खजानों में था और उसे तोहफे के तौर पर अस्ूर के बादशाह को भेज दिया। 9 तिग्लत-पिलेसर राजी हो गया। उसने दमिशक पर हमला करके शहर पर कब्जा कर लिया और उसके बाशिंदों को गिरिफ्तार करके कीर को ले गया। रजीन को उसने कत्ल कर दिया।

आखज रब के घर की बेहुरमती करता है

10 आखज बादशाह अस्ूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर से मिलने के लिए दमिशक गया। वहाँ एक कुरबानगाह थी जिसका नमूना आखज ने बनाकर ऊरियाह इमाम को भेज दिया। साथ साथ उसने डिजायन की तमाम तफसीलत भी यस्शलम भेज दीं। 11 जब ऊरियाह को हिदायात मिलीं तो उसने उन्हीं के मुताबिक यस्शलम में एक कुरबानगाह बनाई। आखज के दमिशक से वापस आने से पहले पहले उसे तैयार कर लिया गया।

12 जब बादशाह वापस आया तो उसने नई कुरबानगाह का मुआयना किया। फिर उस की सीढ़ी पर चढ़कर 13 उसने खुद कुरबानियाँ उस पर पेश कीं। भस्म होनेवाली कुरबानी और गल्ला की नजर जलाकर उसने मै की नजर कुरबानगाह पर उंडेल दी और सलामती की कुरबानियों का खून उस पर छिड़क दिया।

14 रब के घर और नई कुरबानगाह के दरमियान अब तक पीतल की पुरानी कुरबानगाह थी। अब आखज ने उसे उठाकर रब के घर के सामने से मुंतकिल करके नई कुरबानगाह के पीछे यानी शिमाल की तरफ रखवा दिया। 15 ऊरियाह इमाम को उसने हुक्म दिया, "अब से आपको तमाम कुरबानियों को नई कुरबानगाह पर पेश करना है। इनमें सुबहो-शाम की रोजाना कुरबानियाँ भी शामिल हैं और बादशाह और उम्मत की मुख्तलिफ कुरबानियाँ भी, मसलन भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और गल्ला और मै की नजरें। कुरबानियों के तमाम खून को भी सिर्फ नई कुरबानगाह पर छिड़कना है। आइदा पीतल की पुरानी

कुरबानगाह सिर्फ मेरे जाती इस्तेमाल के लिए होगी जब मुझे अल्लाह से कुछ दरियाफ्त करना होगा।” 16 ऊरियाह इमाम ने वैया ही किया जैसा बादशाह ने उसे हुकम दिया।

17 लेकिन आख़ज बादशाह रब के घर में मज़ीद तबदीलियों भी लाया। हथगाड़ियों के जिन फ्रेमों पर बासन रखे जाते थे उन्हें तोड़कर उसने बासनों को दूर कर दिया। इसके अलावा उसने ‘समुंदर’ नामी बड़े हौज़ को पीतल के उन बैलों से उतार दिया जिन पर वह शुरू से पड़ा था और उसे पत्थर के एक चबूतरे पर रखवा दिया। 18 उसने अस्ूर के बादशाह को खुश रखने के लिए एक और काम भी किया। उसने रब के घर से वह चबूतरा दूर कर दिया जिस पर बादशाह का तख़्त रखा जाता था और वह दरवाज़ा बंद कर दिया जो बादशाह रब के घर में दाख़िल होने के लिए इस्तेमाल करता था।

19 बाकी जो कुछ आख़ज की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। 20 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिलता तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है खानदानी कब्र में दफनाया गया। फिर उसका बेटा हिज़कियाह तख़्तनशीन हुआ।

## 17

### इसराईल का आख़िरी बादशाह होसेअ

1 होसेअ बिन ऐला यहदाह के बादशाह आख़ज की हुकूमत के 12वें साल में इसराईल का बादशाह बना। सामरिया उसका दास्त-हुकूमत रहा, और उस की हुकूमत का दौरानिया 9 साल था। 2 होसेअ का चाल-चलन रब को नापसंद था, लेकिन इसराईल के उन बादशाहों की निसबत जो उससे पहले थे वह कुछ बेहतर था।

3 एक दिन अस्ूर के बादशाह सल्मनसर ने इसराईल पर हमला किया। तब होसेअ शिकस्त मानकर उसके ताबे हो गया। उसे अस्ूर को खराज अदा करना पड़ा। 4 लेकिन चंद साल के बाद वह सरकश हो गया। उसने खराज का सालाना सिलसिला बंद करके अपने सफ़ीरों को मिसर के बादशाह सो के पास भेजा ताकि उससे मदद हासिल करे। जब अस्ूर के बादशाह को पता चला तो उसने उसे पकड़कर जेल में डाल दिया।

### सामरिया का अंजाम

5 सल्मनसर पूरे मुल्क में से गुज़रकर सामरिया तक पहुँच गया। तीन साल तक उसे शहर का मुहासरा करना पड़ा, 6 लेकिन आख़िरकार वह होसेअ की हुकूमत के नवें साल में कामयाब हुआ और शहर पर कब्ज़ा करके इसराईलियों को जिलावतन कर दिया। उन्हें अस्ूर लाकर उसने कुछ खलह के इलाके में, कुछ जौज़ान के दरियाए-खाबूर के किनारे पर और कुछ मादियों के शहरों में बसाए।

7 यह सब कुछ इसलिए हुआ कि इसराईलियों ने रब अपने ख़ुदा का गुनाह किया था, हालाँकि वह उन्हें मिसरी बादशाह फ़िरोन के कब्ज़े से रिहा करके मिसर से निकाल लाया था। वह दीगर माबूदों की पूजा करते 8 और उन कौमों के रस्मो-रिवाज की पैरवी करते जिनको रब ने उनके आगे से निकाल दिया था। साथ साथ वह उन रस्मों से भी लिपटे रहे जो इसराईल के बादशाहों ने शुरू की थी। 9 इसराईलियों को रब अपने ख़ुदा के खिलाफ़ बहुत तरकीबें सूझी जो ठीक नहीं थी। सबसे छोटी चौकी से लेकर बड़े से बड़े क़िलाबंद शहर तक उन्होंने अपने तमाम शहरों की ऊँची जगहों पर मंदिर बनाए। 10 हर पहाड़ी की चोटी पर और हर घने दरख़्त के साये में उन्होंने पत्थर के अपने देवताओं के सतून और यसीरत देवी के खंबे खड़े किए। 11 हर ऊँची जगह पर वह बाबूर जला देते थे, बिलकुल उन अक़वाम की तरह जिन्हें रब ने उनके आगे से निकाल दिया था। गरज़ इसराईलियों से बहुत-सी ऐसी शरीर हरकतें सरजद हुईं जिनको देखकर रब को गुस्सा आया। 12 वह बुतों की परस्तिश करते रहे अगरचे रब ने इससे मना किया था।

13 बार बार रब ने अपने नबियों और ग़ैबबीनों को इसराईल और यहदाह के पास भेजा था ताकि उन्हें आगाह करें, “अपनी शरीर राहों से बाज़ आओ। मेरे अहकाम और क़वायद के ताबे रहो। उस पूरी शरीरत की पैरवी करो जो मैंने तुम्हारे बापदादा को अपने ख़ादिमों यानी नबियों के वसीले से दे दी थी।”

14 लेकिन वह सुनने के लिए तैयार नहीं थे बल्कि अपने बापदादा की तरह अड़ गए, क्योंकि वह भी रब अपने ख़ुदा पर भरोसा नहीं करते थे। 15 उन्होंने उसके अहकाम और उस अहद को रद्द किया जो उसने उनके बापदादा से बाँधा था। जब भी उसने उन्हें किसी बात से आगाह किया तो उन्होंने उसे हक़ीर जाना। बेकार बुतों की पैरवी करते करते वह ख़ुद बेकार हो गए। वह गिर्दो-नवाह की कौमों के नमूने पर चल पड़े हालाँकि रब ने इससे मना किया था। 16 रब अपने ख़ुदा के तमाम अहकाम को मुस्तरद करके उन्होंने अपने लिए बख़डों के दो मुजस्समे ढाल लिए और यसीरत देवी का खंबा खड़ा कर दिया। वह सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लशकर के सामने झुक गए और बाल देवता की परस्तिश करने लगे। 17 अपने बेटे-बेटियों को उन्होंने अपने बुतों के लिए कुबान करके जला दिया। नुज़ूमियों से मशवरा लेना और जादूगरी करना आम हो गया। गरज़ उन्होंने अपने आपको बर्दी के हाथ में बेचकर ऐसा काम किया जो रब को नापसंद था और जो उसे गुस्सा दिलाता रहा।

18 तब रब का ग़ज़ब इसराईल पर नाज़िल हुआ, और उसने उन्हें अपने हज़ूर से खारिज कर दिया। सिर्फ़ यहूदाह का क़बीला मुल्क में बाक़ी रह गया।

19 लेकिन यहूदाह के अफ़राद भी रब अपने ख़ुदा के अहक़ाम के ताबे रहने के लिए तैयार नहीं थे। वह भी उन बुरे रस्मो-रिवाज़ की पैरवी करते रहे जो इसराईल ने शुरू किए थे। 20 फिर रब ने पूरी की पूरी क़ौम को रद्द कर दिया। उन्हें तंग करके वह उन्हें लुटेरों के हवाले करता रहा, और एक दिन उसने उन्हें भी अपने हज़ूर से खारिज कर दिया।

21 रब ने ख़ुद इसराईल के शिमाली क़बीलों को दाऊद के घराने से अलग कर दिया था, और उन्होंने यरूबियाम बिन नबात को अपना बादशाह बना लिया था। लेकिन यरूबियाम ने इसराईल को एक संगीन गुनाह करने पर उकसाकर रब की पैरवी करने से दूर किए रखा। 22 इसराईली यरूबियाम के बुरे नमूने पर चलते रहे और कभी इससे बाज़ न आए।

23 यही वजह है कि जो कुछ रब ने अपने खादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था वह पूरा हुआ। उसने उन्हें अपने हज़ूर से खारिज कर दिया, और दुश्मन उन्हें कैदी बनाकर अस्ूर ले गया जहाँ वह आज तक ज़िंदगी गुज़ारते हैं।

### सामरिया में अजनबी क़ौमों को आबाद किया जाता है

24 अस्ूर के बादशाह ने बाबल, क़ूता, अक्वा, हमात और सिफ़रवायम से लोगों को इसराईल में लाकर सामरिया के इसराईलियों से ख़ाली किए गए शहरों में बसा दिया। यह लोग सामरिया पर क़ब्ज़ा करके उसके शहरों में बसने लगे। 25 लेकिन आते वक़्त वह रब की परस्तिश नहीं करते थे, इसलिए रब ने उनके दरमियान शेरबबर भेज दिए जिन्होंने कई एक को फाड़ डाला।

26 अस्ूर के बादशाह को इतला दी गई, “जिन लोगों को आपने जिलावत करके सामरिया के शहरों में बसा दिया है वह नहीं जानते कि उस मुल्क का देवता किन किन बातों का तकाज़ा करता है। नतीजे में उसने उनके दरमियान शेरबबर भेज दिए हैं जो उन्हें फाड़ रहे हैं। और वजह यही है कि वह उस की सही पूजा करने से वाकिफ़ नहीं हैं।” 27 यह सुनकर अस्ूर के बादशाह ने हुक़म दिया, “सामरिया से यहाँ लाए गए इमामों में से एक को चुन लो जो अपने वतन लौटकर वहाँ दुबारा आबाद हो जाए और लोगों को सिखाए कि उस मुल्क का देवता अपनी पूजा के लिए किन किन बातों का तकाज़ा करता है।”

28 तब एक इमाम जिलावतनी से वापस आया। बैतल में आबाद होकर उसने नए बाशिंदों को सिखाया कि रब की मुनासिब इबादत किस तरह की जाती है। 29 लेकिन साथ साथ वह अपने जाती देवताओं की पूजा भी करते रहे। शहर बशहर हर क़ौम ने अपने अपने बुत बनाकर उन तमाम ऊँची जगहों के मंदिरों में खड़े किए जो सामरिया के लोगों ने बना छोड़े थे। 30 बाबल के बाशिंदों ने सुवक़ात-बनात के बुत, क़ूता के लोगों ने नैरगल के मुजस्समे, हमातवालों ने असीमा के बुत 31 और अक्वा के लोगों ने निबहाज़ और तरताक के मुजस्समे खड़े किए। सिफ़रवायम के बाशिंदे अपने बच्चों को अपने देवताओं अदममलिक और अनममलिक के लिए कुरबान करके जला देते थे। 32 गरज़ सब रब की परस्तिश के साथ साथ अपने देवताओं की पूजा भी करते और अपने लोगों में से मुख़्तलिफ़ किस्म के अफ़राद को चुनकर पुजारी मुकर्रर करते थे ताकि वह ऊँची जगहों के मंदिरों को सँभालें। 33 वह रब की इबादत भी करते और साथ साथ अपने देवताओं की उन क़ौमों के रिवाज़ों के मुताबिक़ इबादत भी करते थे जिनमें से उन्हें यहाँ लाया गया था।

34 यह सिलसिला आज तक जारी है। सामरिया के बाशिंदे अपने उन पुराने रिवाज़ों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हैं और सिर्फ़ रब की परस्तिश करने के लिए तैयार नहीं होते। वह उस की हिदायात और अहक़ाम की परवा नहीं करते और उस शरीअत की पैरवी नहीं करते जो रब ने याक़ूब की औलाद को दी थी। (रब ने याक़ूब का नाम इसराईल में बदल दिया था।)

35 क्योंकि रब ने इसराईल की क़ौम के साथ अहद बाँधकर उसे हुक़म दिया था,

“दूसरे किसी भी माबूद की इबादत मत करना! उनके सामने झुककर उनकी खिदमत मत करना, न उन्हें कुरबानियाँ पेश करना। 36 सिर्फ़ रब की परस्तिश करो जो बड़ी क़ुदरत और अज़ीम काम दिखाकर तुम्हें मिसर से निकाल लाया। सिर्फ़ उसी के सामने झुक जाओ, सिर्फ़ उसी को अपनी कुरबानियाँ पेश करो। 37 लाज़िम है कि तुम ध्यान से उन तमाम हिदायात, अहक़ाम और क़वायद की पैरवी करो जो मैंने तुम्हारे लिए क़लामबंद कर दिए हैं। किसी और देवता की पूजा मत करना। 38 वह अहद मत भूलना जो मैंने तुम्हारे साथ बाँध लिया है, और दीगर माबूदों की परस्तिश न करो। 39 सिर्फ़ और सिर्फ़ रब अपने ख़ुदा की इबादत करो। वही तुम्हें तुम्हारे तमाम दुश्मनों के हाथ से बचा लेगा।”

40 लेकिन लोग यह सुनने के लिए तैयार नहीं थे बल्कि अपने पुराने रस्मो-रिवाज़ के साथ लिपटे रहे। 41 चुनौचे रब की इबादत के साथ ही सामरिया के नए बाशिंदे अपने बुतों की पूजा करते रहे। आज तक उनकी औलाद यही कुछ करती आई है।

## 18

यहूदाह का बादशाह हिजकियाह

1 इसराईल के बादशाह होसेअ बिन ऐला की हुकूमत के तीसरे साल में हिजकियाह बिन आखज यहूदाह का बादशाह बना।  
2 उस वक्त उस की उम्र 25 साल थी, और वह यरूशलम में रहकर 29 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ अबी बित जकरियाह थी।<sup>3</sup> अपने बाप दाऊद की तरह उसने ऐसा काम किया जो रब को पसंद था।<sup>4</sup> उसने ऊँची जगहों के मंदिरों को गिरा दिया, पत्थर के उन सतनों को टुकड़े टुकड़े कर दिया जिनकी पूजा की जाती थी और यसीरत देवी के खंबों को काट डाला। पीतल का जो साँप मूसा ने बनाया था उसे भी बादशाह ने टुकड़े टुकड़े कर दिया, क्योंकि इसराईली उन ऐयाम तक उसके सामने बखूर जलाने आते थे। (साँप नरकुशतान कहलाता था।)

5 हिजकियाह रब इसराईल के खुदा पर भरोसा रखता था। यहूदाह में न इससे पहले और न इसके बाद ऐसा बादशाह हुआ।  
6 वह रब के साथ लिपटा रहा और उस की पैरवी करने से कभी भी बाज न आया। वह उन अहकाम पर अमल करता रहा जो रब ने मूसा को दिए थे।<sup>7</sup> इसलिए रब उसके साथ रहा। जब भी वह किसी मकसद के लिए निकला तो उसे कामयाबी हासिल हुई।

चुनाँचे वह अस्ूर की हुकूमत से आजाद हो गया और उसके ताबे न रहा।<sup>8</sup> फिलिस्तिनों को उसने सबसे छोटी चौकी से लेकर बड़े से बड़े किलाबंद शहर तक शिकस्त दी और उन्हें मारते मारते गज्जा शहर और उसके इलाके तक पहुँच गया।

अस्ूर इसराईल पर कब्जा करते हैं

9 हिजकियाह की हुकूमत के चौथे साल में और इसराईल के बादशाह होसेअ की हुकूमत के सातवें साल में अस्ूर के बादशाह सल्मनसर ने इसराईल पर हमला किया। सामरिया शहर का मुहासरा करके<sup>10</sup> वह तीन साल के बाद उस पर कब्जा करने में कामयाब हुआ। यह हिजकियाह की हुकूमत के छठे साल और इसराईल के बादशाह होसेअ की हुकूमत के नवें साल में हुआ।<sup>11</sup> अस्ूर के बादशाह ने इसराईलियों को जिलावतन करके कुछ खलह के इलाके में, कुछ जौजान के दरियाए-खाबूर के किनारे पर और कुछ मादियों के शहरों में बसाए।

12 यह सब कुछ इसलिए हुआ कि वह रब अपने खुदा के ताबे न रहे बल्कि उसके उनके साथ बँधे हुए अहद को तोड़कर उन तमाम अहकाम के फरमाँबरदार न रहे जो रब के खादिम मूसा ने उन्हें दिए थे। न वह उनकी सुनते और न उन पर अमल करते थे।

अस्ूर यरूशलम का मुहासरा करते हैं

13 हिजकियाह बादशाह की हुकूमत के 14वें साल में अस्ूर के बादशाह सनहेरिब ने यहूदाह के तमाम किलाबंद शहरों पर धावा बोलकर उन पर कब्जा कर लिया।<sup>14</sup> जब अस्ूर का बादशाह लकीस के आस-पास पहुँचा तो यहूदाह के बादशाह हिजकियाह ने उसे इतला दी, “मुझे से गलती हुई है। मुझे छोड़ दें तो जो कुछ भी आप मुझे तलब करेंगे मैं आपको अदा करूँगा।”

तब सनहेरिब ने हिजकियाह से चाँदी के तकरीबन 10,000 किलोग्राम और सोने के तकरीबन 1,000 किलोग्राम माँग लिया।<sup>15</sup> हिजकियाह ने उसे वह तमाम चाँदी दे दी जो रब के घर और शाही महल के खजानों में पड़ी थी।<sup>16</sup> सोने का तकाजा पूरा करने के लिए उसने रब के घर के दरवाजों और चौखटों पर लगा सोना उतरवाकर उसे अस्ूर के बादशाह को भेज दिया। यह सोना उसने खुद दरवाजों और चौखटों पर चढ़वाया था।

17 फिर भी अस्ूर का बादशाह मुतमन्न न हुआ। उसने अपने सबसे आला अफसरों को बड़ी फौज के साथ लकीस से यरूशलम को भेजा (उनकी अपनी जवान में अफसरों के ओहदों के नाम तरतान, रब-सारिस और रबशाकी थे)। यरूशलम पहुँचकर वह उस नाले के पास रुक गए जो पानी को ऊपरवाले तालाब तक पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो धोबियों के घाट तक ले जाता है)।<sup>18</sup> इन तीन अस्ुरी अफसरों ने इतला दी कि बादशाह हमसे मिलने आए, लेकिन हिजकियाह ने महल के इंचारज इलियाक्रीम बिन खिलकियाह, मीरमुंशी शिबनाह और मुशरि-खास युआख बिन आसफ को उनके पास भेजा।<sup>19</sup> रबशाकी ने उनके हाथ हिजकियाह को पैगाम भेजा,

“अस्ूर के अजीम बादशाह फरमाते हैं, तुम्हारा भरोसा किस चीज पर है? तुम समझते हो कि खाली बातें करना फौजी हिकमते-अमली और ताकत के बराबर है। यह कैसी बात है? तुम किस पर एतमाद कर रहे हो कि मुझे सरकश हो गए हो? तुम क्या तुम मिसर पर भरोसा करते हो? वह तो टूटा हुआ सरकंडा ही है। जो भी उस पर टेक लगाए उसका हाथ वह चीरकर ज़खमी कर देगा। यही कुछ उन सबके साथ हो जाएगा जो मिसर के बादशाह फिरौन पर भरोसा करें! तुम शायद तुम कहो, ‘हम रब अपने खुदा पर तबक्कुल करते हैं।’ लेकिन यह किस तरह हो सकता है? हिजकियाह ने तो उस की बेहुरमती की है। क्योंकि उसने ऊँची जगहों के मंदिरों और कुरबानगाहों को ढाकर यहूदाह और यरूशलम से कहा है कि सिर्फ यरूशलम की कुरबानगाह के सामने परस्तिश करें।

23 आओ, मेरे आका अस्र के बादशाह से सौदा करो। मैं तुम्हें 2,000 घोड़े दूँगा बशर्तकि तुम उनके लिए सवार मुहैया कर सको। लेकिन अफसोस, तुम्हारे पास इतने घुड़सवार हैं ही नहीं! 24 तुम मेरे आका अस्र के बादशाह के सबसे छोटे अफसर का भी मुकाबला नहीं कर सकते। लिहाजा मिसर के रथों पर भरोसा रखने का क्या फायदा? 25 शायद तुम समझते हो कि मैं रब की मरज़ी के बग़ैर ही इस जगह पर हमला करने आया हूँ ताकि सब कुछ बरबाद करूँ। लेकिन ऐसा हरगिज़ नहीं है! रब ने खुद मुझे कहा कि इस मुल्क पर धावा बोलकर इसे तबाह कर दे।”

26 यह सुनकर इलियाकीम बिन खिलकियाह, शिबनाह और युआख ने रबशाकी की तकरीर में दखल देकर कहा, “बराहे-करम अरामी ज़बान में अपने खादिमों के साथ गुफ्तगू कीजिए, क्योंकि हम यह अच्छी तरह बोल लेते हैं। इब्रानी ज़बान इस्तेमाल न करें, वरना शहर की फसील पर खड़े लोग आपकी बातें सुन लेंगे।” 27 लेकिन रबशाकी ने जवाब दिया, “क्या तुम समझते हो कि मेरे मालिक ने यह पैगाम सिर्फ़ तुम्हें और तुम्हारे मालिक को भेजा है? हरगिज़ नहीं! वह चाहते हैं कि तमाम लोग यह बातें सुन लें। क्योंकि वह भी तुम्हारी तरह अपना फुज्ला खाने और अपना पेशाब पीने पर मजबूर हो जाँगे।”

28 फिर वह फसील की तरफ़ मुड़कर बुलंद आवाज़ से इब्रानी ज़बान में अवाज़ से मुख़ातिब हुआ, “सुनो, शहनशाह, अस्र के बादशाह के फ़रमान पर ध्यान दो! 29 बादशाह फ़रमाते हैं कि हिज़कियाह तुम्हें धोका न दे। वह तुम्हें मेरे हाथ से बचा नहीं सकता। 30 बेशक वह तुम्हें तसल्ली दिलाने की कोशिश करके कहता है, ‘रब हमें ज़रूर छुटकारा देगा, यह शहर कभी भी अस्री बादशाह के क़ब्ज़े में नहीं आएगा।’ लेकिन इस किस्म की बातों से तसल्ली पाकर रब पर भरोसा मत करना। 31 हिज़कियाह की बातों न मानो बल्कि अस्र के बादशाह की। क्योंकि वह फ़रमाते हैं, मेरे साथ सुलह करो और शहर से निकलकर मेरे पास आ जाओ। फिर तुममें से हर एक अंगूर की अपनी बेल और अंजीर के अपने दरख़्त का फल खाएगा और अपने हौज़ का पानी पीएगा। 32 फिर कुछ देर के बाद मैं तुम्हें एक ऐसे मुल्क में ले जाऊँगा जो तुम्हारे अपने मुल्क की मानिंद होगा। उसमें भी अनाज़, नई मै, रोटी और अंगूर के बाग़, जैतून के दरख़्त और शहद है। गरज़, मौत की राह इख़्तियार न करना बल्कि जिंदगी की राह। हिज़कियाह की मत सुनना। जब वह कहता है, ‘रब हमें बचाएगा’ तो वह तुम्हें धोका दे रहा है। 33 क्या दीगर अक़वाम के देवता अपने मुल्कों को शाहे-अस्र से बचाने के काबिल रहे हैं? 34 हमारा और अरफ़ाद के देवता कहाँ रह गए हैं? सिफ़रवायम, हेना और इव्वा के देवता क्या कर सके? और क्या किसी देवता ने सामरिया को मेरी गिरिफ़्त से बचाया? 35 नहीं, कोई भी देवता अपना मुल्क मुझसे बचा न सका। तो फिर रब यस्शलम को किस तरह मुझसे बचाएगा?”

36 फसील पर खड़े लोग ख़ामोश रहे। उन्होंने कोई जवाब न दिया, क्योंकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि जवाब में एक लफ़ज़ भी न कहें। 37 फिर महल का इंचार्ज इलियाकीम बिन खिलकियाह, मीरमुंशी शिबनाह और मुशरि-खास युआख़ बिन आसफ़ रज़िश के मारे अपने लिबास फ़ाड़कर हिज़कियाह के पास वापस गए। दरबार में पहुँचकर उन्होंने बादशाह को सब कुछ कह सुनाया जो रबशाकी ने उन्हें कहा था।

## 19

### रब हिज़कियाह को तसल्ली देता है

1 यह बातें सुनकर हिज़कियाह ने अपने कपड़े फाड़े और टाट का मातमी लिबास पहनकर रब के घर में गया। 2 साथ साथ उसने महल के इंचार्ज इलियाकीम, मीरमुंशी शिबनाह और इमामों के बुजुर्गों को आमूस के बेटे यसायाह नबी के पास भेजा। सब टाट के मातमी लिबास पहने हुए थे। 3 नबी के पास पहुँचकर उन्होंने हिज़कियाह का पैगाम सुनाया, “आज हम बड़ी मुसीबत में हैं। सज़ा के इस दिन अस्रियों ने हमारी सख़्त बेइज़्जती की है। हमारा हाल दर्द-ज़ह में मुब्तला उस औरत का-सा है जिसके पेट से बच्चा निकलने को है, लेकिन जो इसलिए नहीं निकल सकता कि माँ की ताकत जाती रही है। 4 लेकिन शायद रब आपके ख़ुदा ने रबशाकी की वह तमाम बातें सुनी हों जो उसके आका अस्र के बादशाह ने जिंदा ख़ुदा की तौहीन में भेजी हैं। हो सकता है रब आपका ख़ुदा उस की बातें सुनकर उसे सज़ा दे। बराहे-करम हमारे लिए जो अब तक बचे हुए हैं दुआ करें।”

5 जब हिज़कियाह के अफ़सरों ने यसायाह को बादशाह का पैगाम पहुँचाया 6 तो नबी ने जवाब दिया, “अपने आका को बता देना कि रब फ़रमाता है, ‘उन धमकियों से ख़ौफ़ मत खा जो अस्री बादशाह के मुलाज़िमों ने मेरी इहानत करके दी हैं। 7 देख, मैं उसका इरादा बदल दूँगा। वह अफ़वाह सुनकर इतना मुज़तरिब हो जाएगा कि अपने ही मुल्क वापस चला जाएगा। वहाँ मैं उसे तलवार से मरवा दूँगा।’”

### सन्हेरिब की धमकियाँ और हिज़कियाह की दुआ

8 रबशाकी यस्शलम को छोड़कर अस्र के बादशाह के पास वापस चला गया जो उस वक़्त लकीस से रवाना होकर लिबना पर चढ़ाई कर रहा था।

9 फिर सनहेरिब को इतला मिली, “एथोपिया का बादशाह तिरहाका आपसे लड़ने आ रहा है।” तब उसने अपने कासिदों को दुबारा यरूशलम भेज दिया ताकि हिजकियाह को पैगाम पहुँचाएँ, 10 “जिस देवता पर तुम भरोसा रखते हो उससे फ़रेब न खाओ जब वह कहता है कि यरूशलम कभी अस्सी बादशाह के क़ब्ज़े में नहीं आएगा। 11 तुम तो सुन चुके हो कि अस्सूर के बादशाहों ने जहाँ भी गए क्या कुछ किया है। हर मुल्क को उन्होंने मुक़म्मल तौर पर तबाह कर दिया है। तो फिर तुम किस तरह बच जाओगे? 12 क्या जौज़ान, हारान और रसफ़ के देवता उनकी हिफ़ाज़त कर पाएँ? क्या मुल्के-अदन में तिलस्सार के बाशिंदे बच सके? नहीं, कोई भी देवता उनकी मदद न कर सका जब मेरे बापदादा ने उन्हें तबाह किया। 13 ध्यान दो, अब हमात, अरफ़ाद, सिफ़रवायम शहर, हेना और इच्वा के बादशाह कहाँ हैं?”

14 ख़त मिलने पर हिजकियाह ने उसे पढ़ लिया और फिर रब के घर के सहन में गया। ख़त को रब के सामने बिछाकर 15 उसने रब से दुआ की,

“ए रब इसराइल के ख़ुदा जो क़रूबी फ़रिशतों के दरमियान तख़्तनशीन है, तू अकेला ही दुनिया के तमाम ममालिक का ख़ुदा है। तू ही ने आसमानो-ज़मीन को ख़लक किया है। 16 ए रब, मेरी सुन! अपनी आँखें खोलकर देख! सनहेरिब की उन बातों पर ध्यान दे जो उसने इस मक़सद से हम तक पहुँचाई हैं कि जिंदा ख़ुदा की इहानत करे। 17 ए रब, यह बात सच है कि अस्सी बादशाहों ने इन कौमों को उनके मुल्कों समेत तबाह कर दिया है। 18 वह तो उनके बुतों को आग में फेंककर भस्म कर सकते थे, क्योंकि वह जिंदा नहीं बल्कि सिर्फ़ इनसान के हाथों से बने हुए लकड़ी और पत्थर के बुत थे। 19 ए रब हमारे ख़ुदा, अब मैं तुझसे इलतमास करता हूँ कि हमें अस्सी बादशाह के हाथ से बचा ताकि दुनिया के तमाम ममालिक जान लें कि तू ए रब, वाहिद ख़ुदा है।”

### अस्सी की लान-तान पर अल्लाह का जवाब

20 फिर यसायाह बिन आमुस ने हिजकियाह को पैगाम भेजा, “रब इसराइल का ख़ुदा फ़रमाता है कि मैंने अस्सी बादशाह सनहेरिब के बारे में तेरी दुआ सुनी है। 21 अब रब का उसके खिलाफ़ फ़रमान सुन,

कुँवारी सिय्यून बेटी तुझे हक़ीर जानती है, हों यरूशलम बेटी अपना सर हिला हिलाकर हिक़ारतआमेज़ नज़र से तेरे पीछे देखती है। 22 क्या तू नहीं जानता कि किस को ग़ालियों दीं और किसकी इहानत की है? क्या तुझे नहीं मालूम कि तूने किसके खिलाफ़ आवाज़ बुलंद की है? जिसकी तरफ़ तू गुस्स की नज़र से देख रहा है वह इसराइल का कुदूस है!

23 अपने कासिदों के ज़रीए तूने रब की इहानत की है। तू डींगें मारकर कहता है, ‘मैं अपने बेशुमार रथों से पहाड़ों की चोटियों और लुबनान की इतहा तक चढ़ गया हूँ। मैं देवदार के बड़े बड़े और ज़नीपर के बेहतरीन दरख़्तों को काटकर लुबनान के दूरतरीन कोनों तक, उसके सबसे घने जंगल तक पहुँच गया हूँ। 24 मैंने ग़ैरमुल्कों में कुएँ ख़ुदवाकर उनका पानी पी लिया है। मेरे तल्वों तले मिसर की तमाम नदियाँ ख़ुशक हो गईं।’

25 ए अस्सी बादशाह, क्या तूने नहीं सुना कि बड़ी देर से मैंने यह सब कुछ मुक़र्र किया? क़दीम ज़माने में ही मैंने इसका मनसूबा बाँध लिया, और अब मैं इसे वुज़द में लाया। मेरी मरज़ी थी कि तू क़िलाबंद शहरों को खाक में मिलाकर पत्थर के ढेरों में बदल दे। 26 इसी लिए उनके बाशिंदों की ताक़त जाती रही, वह घबराए और शरमिदा हुए। वह घास की तरह कमज़ोर थे, छत पर उगनेवाली उस हरियाली की मानिंद जो थोड़ी देर के लिए फ़लती-फूलती तो है, लेकिन लू चलते वक़्त एकदम मुरझा जाती है। 27 मैं तो तुझसे ख़ूब वाकिफ़ हूँ। मुझे मालूम है कि तू कहाँ ठहरा हुआ है, और तेरा आना जाना मुझसे पोशीदा नहीं रहता। मुझे पता है कि तू मेरे खिलाफ़ कितने तैश में आ गया है। 28 तेरा तैश और गुस्स देखकर मैं तेरी नाक में नकेल और तेरे मुँह में लगातम डालकर तुझे उस रास्ते पर से वापस घसीट ले जाऊँगा जिस पर से तू यहाँ आ पहुँचा है।

29 ए हिजकियाह, मैं इस निशान से तुझे तसल्ली दिलाऊँगा कि इस साल और आनेवाले साल तुम वह कुछ खाओगे जो खेतों में ख़ुद बख़ूद उगेगा। लेकिन तीसरे साल तुम बीज बोकर फ़सलें काटोगे और अंगूर के बाग़ लगाकर उनका फ़ल खाओगे। 30 यहदाह के बचे हुए बाशिंदे एक बार फिर जड़ पकड़कर फ़ल लाएँगे। 31 क्योंकि यरूशलम से कौम का बकिया निकल जाएगा, और कोहे-सिय्यून का जाना-खुचा हिस्सा दुबारा मुल्क में फैल जाएगा। रबूल-अफ़वाज़ की ग़ैरत यह कुछ सरंजाम देगी।

32 जहाँ तक अस्सी बादशाह का ताल्लुक है रब फ़रमाता है कि वह इस शहर में दाख़िल नहीं होगा। वह एक तीर तक उसमें नहीं चलाएगा। न वह ढाल लेकर उस पर हमला करेगा, न शहर की फ़सील के साथ मिट्टी का ढेर लगाएगा। 33 जिस रास्ते से बादशाह यहाँ आया उसी रास्ते पर से वह अपने मुल्क वापस चला जाएगा। इस शहर में वह घुसने नहीं पाएगा। यह रब का फ़रमान है। 34 क्योंकि मैं अपनी और अपने खादिम दाऊद की खातिर इस शहर का दिफ़ा करके इसे बचाऊँगा।”

35 उसी रात रब का फ़रिशता निकल आया और अस्सी लशकरगाह में से गुज़रकर 1,85,000 कौजियों को मार डाला। जब लोग सुबह-सवेरे उठे तो चारों तरफ़ लाशें ही लाशें नज़र आईं।

36 यह देखकर सनहेरिब अपने खैमे उखाड़कर अपने मुल्क वापस चला गया। नीनवा शहर पहुँचकर वह वहाँ ठहर गया। 37 एक दिन जब वह अपने देवता निसरूक के मंदिर में पूजा कर रहा था तो उसके बेटों अदम्मलिक और शराज़र ने उसे तलवार से क़त्ल कर दिया और फ़रार होकर मुल्के-अरारात में पनाह ली। फिर उसका बेटा असहँदून तख़्तनशीन हुआ।

## 20

अल्लाह हिज़क्रियाह को शफ़ा देता है

1 उन दिनों में हिज़क्रियाह इतना बीमार हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। आमूस का बेटा यसायाह नबी उससे मिलने आया और कहा, “रब फ़रमाता है कि अपने घर का बंदोबस्त कर ले, क्योंकि तुझे मरना है। तू इस बीमारी से शफ़ा नहीं पाएगा।”

2 यह सुनकर हिज़क्रियाह ने अपना मुँह दीवार की तरफ़ फेरकर दुआ की, 3 “ऐ रब, याद कर कि मैं वफ़ादारी और खुलूसदिली से तेरे सामने चलता रहा हूँ, कि मैं वह कुछ करता आया हूँ जो तुझे पसंद है।” फिर वह फूट फूटकर रोने लगा।

4 इतने में यसायाह चला गया था। लेकिन वह अभी अंदरूनी सहन से निकला नहीं था कि उसे रब का कलाम मिला, 5 “मेरी क़ौम के राहनुमा हिज़क्रियाह के पास वापस जाकर उसे बता देना कि रब तेरे बाप दाऊद का खुदा फ़रमाता है, ‘मैंने तेरी दुआ सुन ली और तेरे आँसू देखे हैं। मैं तुझे शफ़ा दूँगा। परसों तू दुबारा रब के घर में जाएगा। 6 मैं तेरी जिंदगी में 15 साल का इज़ाफ़ा करूँगा। साथ साथ मैं तुझे और इस शहर को अमूर के बादशाह से बचा लूँगा। मैं अपनी और अपने खादिम दाऊद की खातिर शहर का दिफ़ा करूँगा।”

7 फिर यसायाह ने हुक्म दिया, “अंजीर की टिक्की लाकर बादशाह के नासूर पर बौंध दो!” जब ऐसा किया गया तो हिज़क्रियाह को शफ़ा मिली। 8 पहले हिज़क्रियाह ने यसायाह से पूछा था, “रब मुझे कौन-सा निशान देगा जिससे मुझे यकीन आए कि वह मुझे शफ़ा देगा और कि मैं परसों दुबारा रब के घर की इबादत में शरीक हूँगा?” 9 यसायाह ने जवाब दिया, “रब धूपघड़ी का साया दस दर्जे आगे करेगा या दस दर्जे पीछे। इससे आप जान लेंगे कि वह अपना वादा पूरा करेगा। आप क्या चाहते हैं, क्या साया दस दर्जे आगे चले या दस दर्जे पीछे?” 10 हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, “यह करवाना कि साया दस दर्जे आगे चले आसान काम है। नहीं, वह दस दर्जे पीछे जाए।”

11 तब यसायाह नबी ने रब से दुआ की, और रब ने आख़ज की बनाई हुई धूपघड़ी का साया दस दर्जे पीछे कर दिया।

हिज़क्रियाह से संगीन ग़लती होती है

12 थोड़ी देर के बाद बाबल के बादशाह मरूदक-बलदान बिन बलदान ने हिज़क्रियाह की बीमारी की खबर सुनकर वफ़द के हाथ ख़त और तोहफ़े भेजे। 13 हिज़क्रियाह ने वफ़द का इस्तक़बाल करके उसे वह तमाम खज़ाने दिखाए जो ज़खीराख़ाने में महफूज़ रखे गए थे यानी तमाम सोना-चाँदी, बलसान का तेल और बाकी कीमती तेल। उसने असलिहाख़ाना और बाकी सब कुछ भी दिखाया जो उसके खज़ानों में था। पूरे महल और पूरे मुल्क में कोई ख़ास चीज़ न रही जो उसने उन्हें न दिखाई। 14 तब यसायाह नबी हिज़क्रियाह बादशाह के पास आया और पूछा, “इन आदमियों ने क्या कहा? कहीं से आए हैं?” हिज़क्रियाह ने जवाब दिया, “दूर-दराज़ मुल्क बाबल से आए हैं।” 15 यसायाह बोला, “उन्होंने महल में क्या कुछ देखा?” हिज़क्रियाह ने कहा, “उन्होंने महल में सब कुछ देख लिया है। मेरे खज़ानों में कोई चीज़ न रही जो मैंने उन्हें नहीं दिखाई।”

16 तब यसायाह ने कहा, “रब का फ़रमान सुनें! 17 एक दिन आनेवाला है कि तेरे महल का तमाम माल छीन लिया जाएगा। जितने भी खज़ाने तू और तेरे बापदादा ने आज तक जमा किए हैं उन सबको दुश्मन बाबल ले जाएगा। रब फ़रमाता है कि एक भी चीज़ पीछे नहीं रहेगी। 18 तेरे बेटों में से भी बाज़ छीन लिए जाएंगे, ऐसे जो अब तक पैदा नहीं हुए। तब वह ख्वाजासरा बनकर शाहे-बाबल के महल में खिदमत करेंगे।”

19 हिज़क्रियाह बोला, “रब का जो पैग़ाम आपने मुझे दिया है वह ठीक है।” क्योंकि उसने सोचा, “बड़ी बात यह है कि मेरे जीते-जी अमनो-अमान होगा।”

हिज़क्रियाह की मौत

20 बाकी जो कुछ हिज़क्रियाह की हुक्मत के दौरान हुआ और जो कामयाबियाँ उसे हासिल हुईं वह ‘शाहाने-यहदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज हैं। वहाँ यह भी बयान किया गया है कि उसने किस तरह तालाब बनवाकर वह सुरंग खूदवाई जिसके ज़रीए चश्मे का पानी शहर तक पहुँचता है। 21 जब हिज़क्रियाह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा मनस्सी तख़्तनशीन हुआ।

## 21

## यहूदाह का बादशाह मनस्सी

1 मनस्सी 12 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 55 साल था। उस की माँ हिफसीबाह थी। 2 मनस्सी का चाल-चलन रब को नापसंद था। उसने उन कौमों के काबिले-घिन रस्मो-रिवाज अपना लिए जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे से निकाल दिया था। 3 ऊँची जगहों के जिन मंदिरों को उसके बाप हिजकियाह ने ढा दिया था उन्हें उसने नए सिरे से तामीर किया। उसने बाल देवता की कुरबानगाहें बनवाईं और यसीरत देवी का खंबा खड़ा किया, बिलकुल उसी तरह जिस तरह इसराईल के बादशाह अखियब ने किया था। इनके अलावा वह सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लशकर को सिजदा करके उनकी खिदमत करता था। 4 उसने रब के घर में भी अपनी कुरबानगाहें खड़ी की, हालाँकि रब ने इस मकाम के बारे में फरमाया था, “मैं यरूशलम में अपना नाम कायम करूँगा।” 5 लेकिन मनस्सी ने परवा न की बल्कि रब के घर के दोनों सहनों में आसमान के पूरे लशकर के लिए कुरबानगाहें बनवाईं। 6 यहाँ तक कि उसने अपने बेटे को भी कुरबान करके जला दिया। जादगरी और गैबदानी करने के अलावा वह मुरदों की रूहों से राबिता करनेवालों और रम्मालों से भी मशवरा करता था।

गरज उसने बहुत कुछ किया जो रब को नापसंद था और उसे तैश दिलाया। 7 यसीरत देवी का खंबा बनवाकर उसने उसे रब के घर में खड़ा किया, हालाँकि रब ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से कहा था, “इस घर और इस शहर यरूशलम में जो मैंने तमाम इसराईली कबीलों में से चुन लिया है मैं अपना नाम अबद तक कायम रखूँगा। 8 अगर इसराईली एहतियात से मेरे उन तमाम अहकाम की पैरवी करें जो मुसा ने शरीअत में उन्हें दिए तो मैं कभी नहीं होने दूँगा कि इसराईलियों को उस मुल्क से जिलावतन कर दिया जाए जो मैंने उनके बापदादा को अता किया था।” 9 लेकिन लोग रब के ताबे न रहे, और मनस्सी ने उन्हें ऐसे गलत काम करने पर उकसाया जो उन कौमों से भी सरजद नहीं हुए थे जिन्हें रब ने मुल्क में दाखिल होते वक़्त उनके आगे से तबाह कर दिया था।

10 आखिरकार रब ने अपने खादिमों यानी नबियों की मारिफत एलान किया, 11 “यहूदाह के बादशाह मनस्सी से काबिले-घिन गुनाह सरजद हुए हैं। उस की हरकतें मुल्क में इसराईल से पहले रहनेवाले अमोरियों की निसबत कहीं ज्यादा शरीर हैं। अपने बूतों से उसने यहूदाह के बाशिंदों को गुनाह करने पर उकसाया है। 12 चुनौतें रब इसराईल का खुदा फरमाता है, ‘मैं यरूशलम और यहूदाह पर ऐसी आफत नाज़िल करूँगा कि जिसे भी इसकी खबर मिलेगी उसके कान बजने लगेंगे। 13 मैं यरूशलम को उसी नाप से नापूँगा जिससे सामरिया को नाप चुका हूँ। मैं उसे उस तराजू में रखकर तोलूँगा जिसमें अखियब का धराना तोल चुका हूँ। जिस तरह बरतन सफाई करते वक़्त पोंछकर उलटे रखे जाते हैं उसी तरह मैं यरूशलम का सफाया कर दूँगा। 14 उस वक़्त मैं अपनी मीरास का बचा-खुचा हिस्सा भी तर्क कर दूँगा। मैं उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर दूँगा जो उनकी लूट-मार करेंगे। 15 और वजह यही होगी कि उनसे ऐसी हरकतें सरजद हुई हैं जो मुझे नापसंद हैं। उस दिन से लेकर जब उनके बापदादा मिसर से निकल आए आज तक वह मुझे तैश दिलाते रहे हैं।”

16 लेकिन मनस्सी ने न सिर्फ यहूदाह के बाशिंदों को बुरपरस्ती और ऐसे काम करने पर उकसाया जो रब को नापसंद थे बल्कि उसने बेशुमार बेकूसूर लोगों को क़त्ल भी किया। उनके खून से यरूशलम एक सिरे से दूसरे सिरे तक भरा गया।

17 बाकी जो कुछ मनस्सी की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख’ की किताब में दर्ज है। उसमें उसके गुनाहों का जिक्र भी किया गया है। 18 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे उसके महल के बाग में दफनाया गया जो उज्जा का बाग कहलाता है। फिर उसका बेटा अमून तख़्तनशीन हुआ।

## यहूदाह का बादशाह अमून

19 अमून 22 साल की उम्र में बादशाह बना और दो साल तक यरूशलम में हुकूमत करता रहा। उस की माँ मसुल्लिमत बिनत हरूस युत्बा की रहनेवाली थी। 20 अपने बाप मनस्सी की तरह अमून ऐसा गलत काम करता रहा जो रब को नापसंद था। 21 वह हर तरह से अपने बाप के बुरे नमूने पर चलकर उन बूतों की खिदमत और पूजा करता रहा जिनकी पूजा उसका बाप करता आया था। 22 रब अपने बापदादा के खुदा को उसने तर्क किया, और वह उस की राहों पर नहीं चलता था।

23 एक दिन अमून के कुछ अफसरों ने उसके खिलाफ साज़िश करके उसे महल में क़त्ल कर दिया। 24 लेकिन उम्मत ने तमाम साज़िश करनेवालों को मार डाला और अमून के बेटे यूसियाह को बादशाह बना दिया।

25 बाकी जो कुछ अमून की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहूदाह की तारीख’ की किताब में बयान किया गया है। 26 उसे उज्जा के बाग में उस की अपनी कब्र में दफन किया गया। फिर उसका बेटा यूसियाह तख़्तनशीन हुआ।



## 22

यहूदाह का बादशाह यूसियाह

1 यूसियाह 8 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में रहकर उस की हुक्मत का दौरानिया 31 साल था। उस की माँ यदीदा बित अदायाह बसकत की रहनेवाली थी। 2 यूसियाह वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। वह हर बात में अपने बाप दाऊद के अच्छे नमूने पर चलता रहा और उससे न दाईं, न बाईं तरफ हटा।

3 अपनी हुक्मत के 18वें साल में यूसियाह बादशाह ने अपने मीरमुंशी साफन बिन असलियाह बिन मसुल्लाम को रब के घर के पास भेजकर कहा, 4 “इमामे-आज़म खिलक्रियाह के पास जाकर उसे बता देना कि उन तमाम पैसों को गिन लें जो दरबानों ने लोगों से जमा किए हैं। 5-6 फिर जैसे उन ठेकेदारों को दे दें जो रब के घर की मरम्मत करवा रहे हैं ताकि वह कारीगरों, तामीर करनेवालों और राजों की उजरत अदा कर सकें। इन पैसों से वह दराडों को ठीक करने के लिए दरकार लकडी और तराशे हुए पत्थर भी खरीदें। 7 ठेकेदारों को अखराजात का हिसाब-किताब देने की जरूरत नहीं है, क्योंकि वह काबिले-एतमाद हैं।”

रब के घर से शरीअत की किताब मिल जाती है

8 जब मीरमुंशी साफन खिलक्रियाह के पास पहुँचा तो इमामे-आज़म ने उसे एक किताब दिखाकर कहा, “मुझे रब के घर में शरीअत की किताब मिली है।” उसने उसे साफन को दे दिया जिसने उसे पढ़ लिया। 9 तब साफन बादशाह के पास गया और उसे इत्ला दी, “हमने रब के घर में जमाशुदा जैसे मरम्मत पर मुक़रर ठेकेदारों और बाकी काम करनेवालों को दे दिए हैं।” 10 फिर साफन ने बादशाह को बताया, “खिलक्रियाह ने मुझे एक किताब दी है।” किताब को खोलकर वह बादशाह की मौजूदगी में उस की तिलावत करने लगा।

11 किताब की बातें सुनकर बादशाह ने रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए। 12 उसने खिलक्रियाह इमाम, अखीकाम बिन साफन, अकबोर बिन मीकायाह, मीरमुंशी साफन और अपने खास खादिम असायाह को बुलाकर उन्हें हुक्म दिया, 13 “जाकर मेरी और कौम बल्कि तमाम यहूदाह की ख़ातिर रब से इस किताब में दर्ज बातों के बारे में दरियाफ़्त करें। रब का जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल होनेवाला है वह निहायत सख़्त है, क्योंकि हमारे बापदादा न किताब के फ़रमानों के ताबे रहे, न उन हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है जो उसमें हमारे लिए दर्ज की गई हैं।”

14 चुनौचे खिलक्रियाह इमाम, अखीकाम, अकबोर, साफन और असायाह ख़ुलदा नबिया को मिलने गए। ख़ुलदा का शौहर सल्लम बिन तिक़वा बिन ख़र्बस रब के घर के कपड़े सँभालता था। वह यरूशलम के नए इलाक़े में रहते थे। 15-16 ख़ुलदा ने उन्हें जवाब दिया,

“रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि जिस आदमी ने तुम्हें भेजा है उसे बता देना, ‘रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर और उसके बाशिंदों पर आफ़त नाज़िल करूँगा। वह तमाम बातें पूरी हो जाएँगी जो यहूदाह के बादशाह ने किताब में पढ़ी हैं। 17 क्योंकि मेरी कौम ने मुझे तर्क करके दीगर माबूदों को कुरबानियाँ पेश की हैं और अपने हाथों से बुत बनाकर मुझे तैश दिलाया है। मेरा ग़ज़ब इस मक़ाम पर नाज़िल हो जाएगा और कभी ख़त्म नहीं होगा।’

18 लेकिन यहूदाह के बादशाह के पास जाएँ जिसने आपको रब से दरियाफ़्त करने के लिए भेजा है और उसे बता दें कि रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, ‘मेरी बातें सुनकर 19 तेरा दिल नरम हो गया है। जब तुझे पता चला कि मैंने इस मक़ाम और इसके बाशिंदों के बारे में फ़रमाया है कि वह लानती और तबाह हो जाएँगे तो तूने अपने आपको रब के सामने परस्त कर दिया। तूने रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए और मेरे हुज़ूर फूट फूटकर रोया। रब फ़रमाता है कि यह देखकर मैंने तेरी सुनी है। 20 जब तू मेरे कहने पर मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा तो सलामती से दफ़न होगा। जो आफ़त मैं शहर पर नाज़िल करूँगा वह तू ख़ुद नहीं देखेगा।’”

अफ़सर बादशाह के पास वापस गए और उसे ख़ुलदा का जवाब सुना दिया।

## 23

यूसियाह रब से अहद बाँधता है

1 तब बादशाह यहूदाह और यरूशलम के तमाम बुज़ुर्गों को बुलाकर 2 रब के घर में गया। सब लोग छोटे से लेकर बड़े तक उसके साथ गए यानी यहूदाह के आदमी, यरूशलम के बाशिंदे, इमाम और नबी। वहाँ पहुँचकर जमात के सामने अहद की उस पूरी किताब की तिलावत की गई जो रब के घर में मिली थी।

3 फिर बादशाह ने सतून के पास खड़े होकर रब के हज़ूर अहद बाँधा और वादा किया, “हम रब की पैरवी करेंगे, हम पूरे दिलो-जान से उसके अहकाम और हिदायात पूरी करके इस किताब में दर्ज अहद की बातों कायाम रखेंगे।” पूरी क़ौम अहद में शरीक हुई।

यूसियाह बुतपरस्ती को खत्म करता है

4 अब बादशाह ने इमामे-आज़म खिलक्रियाह, दूसरे दर्जे पर मुक़र्रर इमामों और दरबानों को हुक्म दिया, “रब के घर में से वह तमाम चीज़ें निकाल दें जो बाल देवता, यसीरत देवी और आसमान के पूरे लश्कर की पूजा के लिए इस्तेमाल हुई हैं।” फिर उसने यह सारा सामान यस्-शलम के बाहर वादीए-किदरोन के खुले मैदान में जला दिया और उस की राख उठाकर बैतेल ले गया। 5 उसने उन बुतपरस्त पुजारियों को भी हटा दिया जिन्हें यहदाह के बादशाहों ने यहदाह के शहरों और यस्-शलम के गिर्दो-नवाह के मंदिरों में कुरबानियाँ पेश करने के लिए मुक़र्रर किया था। यह पुजारी न सिर्फ़ बाल देवता को अपने नज़राने पेश करते थे बल्कि सूरज, चाँद, झरमुटों और आसमान के पूरे लश्कर को भी। 6 यसीरत देवी का खंबा यूसियाह ने रब के घर से निकालकर शहर के बाहर वादीए-किदरोन में जला दिया। फिर उसने उसे पीसकर उस की राख गरीब लोगों की कन्नों पर बिखेर दी। 7 रब के घर के पास ऐसे मकान थे जो जिस्मफ़रोश मर्दों और औरतों के लिए बनाए गए थे। उनमें औरतें यसीरत देवी के लिए कपड़े भी बुनती थीं। अब बादशाह ने उनको भी गिरा दिया।

8 फिर यूसियाह तमाम इमामों को यस्-शलम वापस लाया। साथ साथ उसने यहदाह के शिमाल में जिबा से लेकर जुनूब में बैर-सबा तक ऊँची जगहों के उन तमाम मंदिरों की बेहुरमती की जहाँ इमाम पहले कुरबानियाँ पेश करते थे। यस्-शलम के उस दरवाज़े के पास भी दो मंदिर थे जो शहर के सरदार यशुअ के नाम से मशहूर था। इनको भी यूसियाह ने ढा दिया। (शहर में दाखिल होते वक़्त यह मंदिर बाई तरफ़ नज़र आते थे।) 9 जिन इमामों ने ऊँची जगहों पर खिदमत की थी उन्हें यस्-शलम में रब के हज़ूर कुरबानियाँ पेश करने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन वह बाक़ी इमामों की तरह बेखमीरी रोटी के लिए मख़सूस रोटी खा सकते थे। 10 बिन-हिन्नुम की वादी की कुरबानगाह बनाम तूफ़त को भी बादशाह ने ढा दिया ताकि आइंदा कोई भी अपने बेटे या बेटी को जलाकर मलिक देवता को कुरबान न कर सके। 11 घोड़े के जो मुजस्समे यहदाह के बादशाहों ने सूरज देवता की ताज़ीम में खड़े किए थे उन्हें भी यूसियाह ने गिरा दिया और उनके रथों को जला दिया। यह घोड़े रब के घर के सहन में दरवाज़े के साथ खड़े थे, वहाँ जहाँ दरबाही अफ़सर बनाम नातन-मलिक का कमरा था। 12 आख़ज बादशाह ने अपनी छत पर एक कमरा बनाया था जिसकी छत पर भी मुख़्तलिफ़ बादशाहों की बनी हुई कुरबानगाहें थीं। अब यूसियाह ने इनको भी ढा दिया और उन दो कुरबानगाहों को भी जो मनस्सी ने रब के घर के दो सहनों में खड़ी की थीं। इनको टुकड़े टुकड़े करके उसने मलबा वादीए-किदरोन में फेंक दिया। 13 नीज़, बादशाह ने यस्-शलम के मशरिक में ऊँची जगहों के मंदिरों की बेहुरमती की। यह मंदिर हलाक़त के पहाड़ के जुनूब में थे, और सुलेमान बादशाह ने उन्हें तामीर किया था। उसने उन्हें सैदा की शर्मनाक देवी अस्तारात, मोआब के मकरूह देवता क़मोस और अम्मोन के काबिले-धिन् देवता मिलकूम के लिए बनाया था। 14 यूसियाह ने देवताओं के लिए मख़सूस किए गए सतूनों को टुकड़े टुकड़े करके यसीरत देवी के खंबे कटवा दिए और मक़ामात पर इनसानी हड्डियाँ बिखेरकर उनकी बेहुरमती की।

यूसियाह बैतेल और सामरिया के मंदिरों को गिरा देता है

15-16 बैतेल में अब तक ऊँची जगह पर वह मंदिर और कुरबानगाह पड़ी थी जो यस्बियाम बिन नबात ने तामीर की थी। यस्बियाम ही ने इसराइल को गुनाह करने पर उकसाया था। जब यूसियाह ने देखा कि जिस पहाड़ पर कुरबानगाह है उस की ढलानों पर बहुत-सी कन्न हैं तो उसने हुक्म दिया कि उनकी हड्डियाँ निकालकर कुरबानगाह पर जला दी जाएँ। यों कुरबानगाह की बेहुरमती बिलकुल उसी तरह हुई जिस तरह रब ने मर्दे-ख़ुदा की मारिफ़त फ़रमाया था। इसके बाद यूसियाह ने मंदिर और कुरबानगाह को गिरा दिया। उसने यसीरत देवी का मुजस्समा कूट कूटकर आखिर में सब कुछ जला दिया।

17 फिर यूसियाह को एक और कन्न नज़र आई उसने शहर के बाशिंदों से पूछा, “यह किसकी कन्न है?” उन्होंने जवाब दिया, “यह यहदाह के उस मर्दे-ख़ुदा की कन्न है जिसने बैतेल की कुरबानगाह के बारे में ऐन वह पेशगोई की थी जो आज आपके वसीले से पूरी हुई है।” 18 यह सुनकर बादशाह ने हुक्म दिया, “इसे छोड़ दो! कोई भी इसकी हड्डियों को न छेड़े।” चुनौचे उस की और उस नबी की हड्डियाँ बच गईं जो सामरिया से उससे मिलने आया और बाद में उस की कन्न में दफ़नाया गया था।

19 जिस तरह यूसियाह ने बैतेल के मंदिर को तबाह किया उसी तरह उसने सामरिया के तमाम शहरों के मंदिरों के साथ किया। उन्हें ऊँची जगहों पर बनाकर इसराइल के बादशाहों ने रब को तैश दिलाया था। 20 इन मंदिरों के पुजारियों को उसने उनकी अपनी अपनी कुरबानगाहों पर सज़ाए-मौत दी और फिर इनसानी हड्डियाँ उन पर जलाकर उनकी बेहुरमती की। इसके बाद वह यस्-शलम लौट गया।

फसह की ईद मनाई जाती है

21 यरूशलम में आकर बादशाह ने हुकम दिया, “पूरी कौम रब अपने खुदा की ताज़ीम में फसह की ईद मनाए, जिस तरह अहद की किताब में फरमाया गया है।” 22 उस ज़माने से लेकर जब काज़ी इसराईल की राहनुमाई करते थे यूसियाह के दिनों तक फसह की ईद इस तरह नहीं मनाई गई थी। इसराईल और यहदाह के बादशाहों के ऐयाम में भी ऐसी ईद नहीं मनाई गई थी। 23 यूसियाह की हुकूमत के 18वें साल में पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में ऐसी ईद यरूशलम में मनाई गई।

यूसियाह की फरमोंबरदारी

24 यूसियाह उन तमाम हिदायात के ताबे रहा जो शरीअत की उस किताब में दर्ज थीं जो खिलकियाह इमाम को रब के घर में मिली थीं। चुनौचे उसने मुरदों की रूहों से राबिता करनेवालों, रम्मालों, घरेलू बुतों, दूसरे बुतों और बाक़ी तमाम मकरूह चीज़ों को ख़त्म कर दिया। 25 न यूसियाह से पहले, न उसके बाद उस जैसा कोई बादशाह हुआ जिसने उस तरह पूरे दिल, पूरी जान और पूरी ताकत के साथ रब के पास वापस आकर मूसवी शरीअत के हर फरमान के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारी हो। 26 तो भी रब यहदाह पर अपने गुस्से से बाज़ न आया, क्योंकि मनस्सी ने अपनी ग़लत हरकतों से उसे हद से ज़्यादा तैश दिलाया था। 27 इसी लिए रब ने फरमाया, “जो कुछ मैंने इसराईल के साथ किया वही कुछ यहदाह के साथ भी करूँगा। मैं उसे अपने हुज़ूर से खारिज कर दूँगा। अपने चुने हुए शहर यरूशलम को मैं रद करूँगा और साथ साथ उस घर को भी जिसके बारे में मैंने कहा, ‘वहाँ मेरा नाम होगा।’”

28 बाक़ी जो कुछ यूसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहदाह की तारीख़’ की किताब में बयान किया गया है।

29 यूसियाह की हुकूमत के दौरान मिसर का बादशाह निकोह फिरौन दरियाए-फ़रात के लिए रवाना हुआ ताकि अस्ूर के बादशाह से लड़े। रास्ते में यूसियाह उससे लड़ने के लिए निकला। लेकिन जब मजिदो के करीब उनका एक दूसरे के साथ मुकाबला हुआ तो निकोह ने उसे मार दिया। 30 यूसियाह के मुलाज़िम उस की लाश रथ पर रखकर मजिदो से यरूशलम ले आए जहाँ उसे उस की अपनी कब्र में दफ़न किया गया। फिर उम्मत ने उसके बेटे यहूआख़ज़ को मसह करके बाप के तख़्त पर बिठा दिया।

यहदाह का बादशाह यहूआख़ज़

31 यहूआख़ज़ 23 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह था। उस की माँ हमतल बित यरमियाह लिबना की रहनेवाली थी। 32 अपने बापदादा की तरह वह भी ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था। 33 निकोह फिरौन ने मुल्के-हमात के शहर रिबला में उसे गिरफ़्तार कर लिया, और उस की हुकूमत ख़त्म हुई। मुल्के-यहदाह को ख़राज के तौर पर तकरीबन 3,400 किलोग्राम चाँदी और 34 किलोग्राम सोना अदा करना पड़ा। 34 यहूआख़ज़ की जगह फिरौन ने यूसियाह के एक और बेटे को तख़्त पर बिठाया। उसके नाम इलियाक़ीम को उसने यह्यक़ीम में बदल दिया। यहूआख़ज़ को वह अपने साथ मिसर ले गया जहाँ वह बाद में मरा भी।

35 मतलूबा चाँदी और सोने की रकम अदा करने के लिए यह्यक़ीम ने लोगों से ख़ास टैक्स लिया। उम्मत को अपनी दौलत के मुताबिक़ पैसे देने पड़े। इस तरीक़े से यह्यक़ीम फिरौन को ख़राज अदा कर सका।

यहदाह का बादशाह यह्यक़ीम

36 यह्यक़ीम 25 साल की उम्र में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 11 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ जब्दा बित फिदायाह रूमाह की रहनेवाली थी। 37 बापदादा की तरह उसका चाल-चलन भी रब को नापसंद था।

## 24

1 यह्यक़ीम की हुकूमत के दौरान बाबल के बादशाह नबूक़दनज़र ने यहदाह पर हमला किया। नतीज़े में यह्यक़ीम उसके ताबे हो गया। लेकिन तीन साल के बाद वह सरकश हो गया। 2 तब रब ने बाबल, शाम, मोआब और अम्मोन से डाकुओं के जत्थे भेज दिए ताकि उसे तबाह करें। वैसा ही हुआ जिस तरह रब ने अपने खादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था। 3 यह आफ़तें इसलिए यहदाह पर आईं कि रब ने इनका हुकम दिया था। वह मनस्सी के संगीन गुनाहों की वजह से यहदाह को अपने हुज़ूर से खारिज करना चाहता था। 4 वह यह हक़ीक़त भी नज़रंदाज़ न कर सका कि मनस्सी ने यरूशलम को बेक़ुसूर लोगों के खून से भर दिया था। रब यह मुआफ़ करने के लिए तैयार नहीं था।

5 बाक़ी जो कुछ यह्यक़ीम की हुकूमत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह ‘शाहाने-यहदाह की तारीख़’ की किताब में दर्ज है। 6 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसका बेटा यह्यक़ीन तख़्तनशीन हुआ। 7 उस वक़्त

मिसर का बादशाह दुबारा अपने मुल्क से निकल न सका, क्योंकि बाबल के बादशाह ने मिसर की सरहद बनाम वादीए-मिसर से लेकर दरियाए-फुरात तक का सारा इलाका मिसर के कब्जे से छीन लिया था।

यह्याकीन की हुकूमत और यरूशलम पर बाबल का कब्जा

8 यह्याकीन 18 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह था। उस की माँ नहुशता बित् इलनातन यरूशलम की रहनेवाली थी। 9 अपने बाप की तरह यह्याकीन भी ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था।

10 उस की हुकूमत के दौरान बाबल के बादशाह नबूकदनज्जर की फौज यरूशलम तक बढ़कर उसका मुहासरा करने लगी। 11 नबूकदनज्जर खुद शहर के मुहासरे के दौरान पहुँच गया। 12 तब यह्याकीन ने शिकस्त मानकर अपने आपको अपनी माँ, मुलाजिमाँ, अफसरों और दरबारियों समेत बाबल के बादशाह के हवाले कर दिया। बादशाह ने उसे गिरिफ्तार कर लिया।

यह नबूकदनज्जर की हुकूमत के आठवें साल में हुआ। 13 जिसका एलान रब ने पहले किया था वह अब पूरा हुआ, नबूकदनज्जर ने रब के घर और शाही महल के तमाम खजाने छीन लिए। उसने सोने का वह सारा सामान भी लूट लिया जो सुलेमान ने रब के घर के लिए बनवाया था। 14 और जितने खाते-पीते लोग यरूशलम में थे उन सबको बादशाह ने जिलावतन कर दिया। उनमें तमाम अफसर, फौजी, दस्तकार और धातों का काम करनेवाले शामिल थे, कुल 10,000 अफराद। उम्मत के सिर्फ़ गरीब लोग पीछे रह गए। 15 नबूकदनज्जर यह्याकीन को भी कैदी बनाकर बाबल ले गया और उस की माँ, बीवियों, दरबारियों और मुल्क के तमाम असरो-रसूख रखनेवालों को भी। 16 उसने फौजियों के 7,000 अफराद और 1,000 दस्तकारों और धातों का काम करनेवालों को जिलावतन करके बाबल में बसा दिया। यह सब माहिर और जंग करने के काबिल आदमी थे। 17 यरूशलम में बाबल के बादशाह ने यह्याकीन की जगह उसके चचा मत्नियाह को तख्त पर बिठाकर उसका नाम सिदकियाह में बदल दिया।

यहदाह का बादशाह सिदकियाह

18 सिदकियाह 21 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 11 साल था। उस की माँ हमतल बित् यरमियाह लिबना शहर की रहनेवाली थी। 19 यह्यकीम की तरह सिदकियाह ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था। 20 रब यरूशलम और यहदाह के बाशिंदों से इतना नाराज हुआ कि आखिर में उसने उन्हें अपने हुजूर से खारिज कर दिया।

सिदकियाह का फरार और गिरिफ्तारी

एक दिन सिदकियाह बाबल के बादशाह से सरकश हुआ,

## 25

1 इसलिए शाहे-बाबल नबूकदनज्जर तमाम फौज को अपने साथ लेकर दुबारा यरूशलम पहुँचा ताकि उस पर हमला करे। सिदकियाह की हुकूमत के नवें साल में बाबल की फौज यरूशलम का मुहासरा करने लगी। यह काम दसवें महीने के दसवें दिन \* शुरू हुआ। पूरे शहर के इर्दगिर्द बादशाह ने पुरते बनवाए। 2 सिदकियाह की हुकूमत के 11वें साल तक यरूशलम कायम रहा। 3 लेकिन फिर काल ने शहर में जोर पकड़ा, और अवाम के लिए खाने की चीजें न रहीं।

चौथे महीने के नवें दिन † 4 बाबल के फौजियों ने फसील में रखना डाल दिया। उसी रात सिदकियाह अपने तमाम फौजियों समेत फरार होने में कामयाब हुआ, अगरचे शहर दुश्मन से घिरा हुआ था। वह फसील के उस दरवाजे से निकले जो शाही बाग के साथ मुलहिक दो दीवारों के बीच में था। वह वादीए-यरदन की तरफ भागने लगे, 5 लेकिन बाबल की फौज ने बादशाह का ताकतुब करके उसे यरीह के मैदान में पकड़ लिया। उसके फौजी उससे अलग होकर चारों तरफ मुंतशिर हो गए, 6 और वह खुद गिरिफ्तार हो गया।

फिर उसे रिबला में शाहे-बाबल के पास लाया गया, और वही सिदकियाह पर फैसला सादिर किया गया। 7 सिदकियाह के देखते देखते उसके बेटों को कल्ल किया गया। इसके बाद फौजियों ने उस की आँखें निकालकर उसे पीतल की जंजीरों में जकड़ लिया और बाबल ले गए।

यरूशलम और रब के घर की तबाही

8 शाहे-बाबल नबूकदनज्जर की हुकूमत के 19वें साल में बादशाह का ख़ास अफसर नबूज़ारादान यरूशलम पहुँचा। वह शाही मुहाफिज़ों पर मुकर्रर था। पाँचवें महीने के सातवें दिन ‡ उसने आकर 9 रब के घर, शाही महल और यरूशलम के तमाम मकानों को जला दिया। हर बड़ी इमारत भस्म हो गई। 10 उसने अपने तमाम फौजियों से शहर की फसील को भी गिरा दिया।

\* 25:1 यानी 15 जनवरी † 25:3 यानी 18 जुलाई ‡ 25:8 यानी 14 अगस्त

11 फिर नबूजरादान ने सबको जिलावतन कर दिया जो यरूशालम और यहदाह में पीछे रह गए थे। वह भी उनमें शामिल थे जो जंग के दौरान गढ़ारी करके शाहे-बाबल के पीछे लग गए थे। 12 लेकिन नबूजरादान ने सबसे निचले तबके के बाज़ लोगों को मुल्के-यहदाह में छोड़ दिया ताकि वह अंगर के बागों और खेतों को सँभालें।

13 बाबल के फ़ौजियों ने रब के घर में जाकर पीतल के दोनों सतूनों, पानी के बासनों को उठानेवाली हथगाड़ियों और समुंदर नामी पीतल के हौज़ को तोड़ दिया और सारा पीतल उठाकर बाबल ले गए। 14 वह रब के घर की खिदमत संरजाम देने के लिए दरकार सामान भी ले गए यानी बालटियों, बेलचे, बत्ती कतरने के औज़ार, बरतन और पीतल का बाकी सारा सामान। 15 ख़ालिस सोने और चाँदी के बरतन भी इसमें शामिल थे यानी जलते हुए कोयले के बरतन और छिड़काव के कटोरे। शाही मुहाफ़िज़ों का अफसर सारा सामान उठाकर बाबल ले गया। 16 जब दोनों सतूनों, समुंदर नामी हौज़ और बासनों को उठानेवाली हथगाड़ियों का पीतल तुड़वाया गया तो वह इतना वज़नी था कि उसे तोला न जा सका। सुलेमान बादशाह ने यह चीज़ें रब के घर के लिए बनवाई थीं। 17 हर सतून की ऊँचाई 27 फ़ुट थी। उनके बालाई हिस्सों की ऊँचाई साढ़े चार फ़ुट थी, और वह पीतल की जाली और अनारों से सजे हुए थे।

18 शाही मुहाफ़िज़ों के अफसर नबूजरादान ने ज़ैल के कैदियों को अलग कर दिया : इमामे-आज़म सिरायाह, उसके बाद आनेवाला इमाम सफनियाह, रब के घर के तीन दरबानों, 19 शहर के बचे हुएों में से उस अफसर को जो शहर के फ़ौजियों पर मुक़र्रर था, सिदकियाह बादशाह के पाँच मुशरिों, उम्मत की भरती करनेवाले अफसर और शहर में मौजूद उसके 60 मर्दों को। 20 नबूजरादान इन सबको अलग करके सूबा हमात के शहर रिबला ले गया जहाँ बाबल का बादशाह था। 21 वहाँ नबूकदनज़र ने उन्हें सज़ाए-मौत दी।

यों यहदाह के बाशिंदों को जिलावतन कर दिया गया।

### जिदलियाह की हुकूमत

22 जिन लोगों को बाबल के बादशाह नबूकदनज़र ने यहदाह में पीछे छोड़ दिया था, उन पर उसने जिदलियाह बिन अखीकाम बिन साफन मुक़र्रर किया। 23 जब फ़ौज के बचे हुए अफसरों और उनके दस्तों को खबर मिली कि जिदलियाह को गवर्नर मुक़र्रर किया गया है तो वह मिसफ़ाह में उसके पास आए। अफसरों के नाम इसमाईल बिन नतनियाह, यहनान बिन करीह, सिरायाह बिन तनहमत नतफ़ाती और याज़नियाह बिन माकाती थे। उनके फ़ौजी भी साथ आए।

24 जिदलियाह ने कसम खाकर उनसे वादा किया, “बाबल के अफसरों से मत डरना! मुल्क में रहकर बाबल के बादशाह की खिदमत करें तो आपकी सलामती होगी।”

25 लेकिन उस साल के सातवें महीने में इसमाईल बिन नतनियाह बिन इलीसमा ने दस साथियों के साथ मिसफ़ाह आकर धोके से जिदलियाह को क़त्ल किया। इसमाईल शाही नसल का था। जिदलियाह के अलावा उन्होंने उसके साथ रहनेवाले यहदाह और बाबल के तमाम लोगों को भी क़त्ल किया। 26 यह देखकर यहदाह के तमाम बाशिंदे छोटे से लेकर बड़े तक फ़ौजी अफसरों समेत हिज़रत करके मिसर चले गए, क्योंकि वह बाबल के इंतकाम से डरते थे।

### यहयाकीन को आज़ाद किया जाता है

27 यहदाह के बादशाह यहयाकीन की जिलावतनी के 37वें साल में अबील-मसूदक बाबल का बादशाह बना। उसी साल के 12वें महीने के 27वें दिन उसने यहयाकीन को कैदखाने से आज़ाद कर दिया। 28 उसने उससे नरम बातें करके उसे इज़ज़त की ऐसी कुरसी पर बिठाया जो बाबल में जिलावतन किए गए बाकी बादशाहों की निसबत ज्यादा अहम थी। 29 यहयाकीन को कैदियों के कपडे उतारने की इज़ाज़त मिली, और उसे ज़िंदगी-भर बादशाह की मेज़ पर बाकायदगी से शरीक होने का शरफ़ हासिल रहा। 30 बादशाह ने मुक़र्रर किया कि यहयाकीन को उम्र-भर इतना वज़ीफ़ा मिलता रहे कि उस की रोज़मर्रा ज़रूरियात पूरी होती रहें।

## 1 त्वारीख

आदम से इब्राहीम तक का नसबनामा

1 नूह तक आदम की औलाद सेत, अन्सू, 2 क्रीनान, महललेल, यारिद, 3 हनूक, मत्सिलह, लमक, 4 और नूह थीं। नूह के तीन बेटे सिम, हाम और याफत थे।

5 याफत के बेटे ज़मर, माजूज, मादी, यावान, तूबल, मसक और तीरास थे। 6 ज़मर के बेटे अश्कनाज़, रीफत और तुजरमा थे। 7 यावान के बेटे इलीसा और तरसीस थे। किन्ती और रोदानी भी उस की औलाद हैं।

8 हाम के बेटे कृश, मिसर, फूत और कनान थे। 9 कृश के बेटे सिबा, हवीला, सबता, रामा और सब्तका थे। रामा के बेटे सबा और ददान थे। 10 नमरूद भी कृश का बेटा था। वह ज़मीन पर पहला सूरमा था। 11 मिसर ज़ैल की कौमों का बाप था : लूदी, अनामी, लिहाबी, नफ़तूही, 12 फ़तस्सी, कसलूही (जिनसे फ़िल्िस्ती निकले) और कफ़तूरी। 13 कनान का पहलौठा सैदा था। कनान इन कौमों का बाप भी था : हिती 14 यवूसी, अमोरी, जिरजासी, 15 हिब्वी, अरकी, सीनी, 16 अरवादी, समारी और हमाती।

17 सिम के बेटे ऐलाम, अस्र, अरफ़क्सद, लूद और अराम थे। अराम के बेटे ऊज़, हूल, जतर और मसक थे। 18 अरफ़क्सद का बेटा सिलह और सिलह का बेटा इबर था। 19 इबर के दो बेटे पैदा हुए। एक का नाम फ़लज यानी तकसीम था, क्योंकि उन ऐयाम में दुनिया तकसीम हुई। फ़लज के भाई का नाम युक्रतान था। 20 युक्रतान के बेटे अलमूदाद, सलफ़, हसरमावत, इराख, 21 हदूराम, ऊज़ाल, दिक्ला, 22 ऊबाल, अबीमाएल, सबा, 23 ओफ़ीर, हवीला और यूबाब थे। यह सब उसके बेटे थे।

24 सिम का यह नसबनामा है : सिम, अरफ़क्सद, सिलह, 25 इबर, फ़लज, रऊ, 26 सरूज, नहर, तारह 27 और अब्राम यानी इब्राहीम।

इब्राहीम का नसबनामा

28 इब्राहीम के बेटे इसहाक और इसमाईल थे। 29 उनकी दर्जे-ज़ैल औलाद थी :

इसमाईल का पहलौठा नबायोट था। उसके बाकी बेटे कीदार, अदबियेल, मिबसाम, 30 मिशमा, दूमा, मस्सा, हदद, तैमा,

31 यतूर, नफ़ीस और किदमा थे। सब इसमाईल के हैं पैदा हुए।

32 इब्राहीम की दाशता क़तूरा के बेटे ज़िमरान, युक्रसान, मिदान, मिदियान, इसबाक और सूख थे। युक्रसान के दो बेटे सबा और ददान पैदा हुए 33 जबकि मिदियान के बेटे ऐफ़ा, इफ़र, हनूक, अबीदा और इल्दआ थे। सब क़तूरा की औलाद थे।

34 इब्राहीम के बेटे इसहाक के दो बेटे पैदा हुए, एसौ और इसराईल। 35 एसौ के बेटे इलीफ़ज़, रऊएल, यूक़स, यालाम और क्रोरह थे। 36 इलीफ़ज़ के बेटे तेमान, ओमर, सफ़ी, जाताम, कनज़ और अमालीक थे। अमालीक की माँ तिम्ना थी।

37 रऊएल के बेटे नेहत, ज़ारह, सम्मा और मिज्जा थे।

सईर यानी अदोम का नसबनामा

38 सईर के बेटे लोतान, सोबल, सिबोन, अना, दीसोन, एसर और दीसान थे। 39 लोतान के दो बेटे होरी और होमाम थे। (तिम्ना लोतान की बहन थी।) 40 सोबल के बेटे अलियान, मानहत, ऐबाल, सफ़ी और ओनाम थे। सिबोन के बेटे ऐयाह और अना थे। 41 अना के एक बेटा दीसोन पैदा हुआ। दीसोन के चार बेटे हमरान, इशबान, यितरान और किरान थे। 42 एसर के तीन बेटे बिलहान, ज़ावान और अकान थे। दीसान के दो बेटे ऊज़ और अरान थे।

अदोम के बादशाह

43 इससे पहले कि इसराईलियों का कोई बादशाह था ज़ैल के बादशाह यके बाद दीगरे मुल्के-अदोम में हुक्मत करते थे : बाला बिन बओर जो दिनहाबा शहर का था।

44 उस की मौत पर यूबाब बिन ज़ारह जो बूसरा शहर का था।

45 उस की मौत पर हुशाम जो तेमानियों के मुल्क का था।

46 उस की मौत पर हदद बिन बिदद जिसने मुल्के-मोआब में मिदियानियों को शिकस्त दी। वह अवीत शहर का था।

47 उस की मौत पर समला जो मसरिका शहर का था।

48 उस की मौत पर साऊल जो दरियाए-फुरात पर रहोबेत शहर का था।

49 उस की मौत पर बाल-हनान बिन अकबोर।

50 उस की मौत पर हदद जो फाऊ शहर का था। (बीवी का नाम महेतबेल बित मतरिद बित मेज़ाहाब था।) 51 फिर हदद मर गया।

अदोमी कबीलों के सरदार तिमना, अलिया, यतेत, 52 उहलीबामा, ऐला, फीनोन, 53 कनज़, तेमान, मिबसार, 54 मज्दियेल और इराम थे। यही अदोम के सरदार थे।

## 2

### याकूब यानी इसराईल के बेटे

1 इसराईल के बारह बेटे रूबिन, शमौन, लावी, यहदाह, इशकार, ज़बूलन, 2 दान, यूसुफ़, बिनयमीन, नफ़ताली, ज़द और आशर थे।

### यहदाह का नसबनामा

3 यहदाह की शादी कनानी औरत से हुई जो सुअ की बेटी थी। उनके तीन बेटे एर, ओनान और सेला पैदा हुए। यहदाह का पहलौटा एर रब के नज़दीक शरीर था, इसलिए उसने उसे मरने दिया। 4 यहदाह के मज़ीद दो बेटे उस की बहू तमर से पैदा हुए। उनके नाम फ़ारस और ज़ारह थे। यों यहदाह के कुल पाँच बेटे थे।

5 फ़ारस के दो बेटे हसरोन और हमूल थे।

6 ज़ारह के पाँच बेटे ज़िमरी, ऐतान, हैमान, कलकूल और दारा थे। 7 करमी बिन ज़िमरी का बेटा वही अकर यानी अकन था जिसने उस लूटे हुए माल में से कुछ लिया जो रब के लिए मख़सूस था। 8 ऐतान के बेटे का नाम अज़रियाह था।

9 हसरोन के तीन बेटे यरहमियेल, राम और कलूबी यानी कालिब थे।

### राम की औलाद

10 राम के हॉ अम्मीनदाब और अम्मीनदाब के हॉ यहदाह के कबीले का सरदार नहसोन पैदा हुआ। 11 नहसोन सलमोन का और सलमोन बोअज़ का बाप था। 12 बोअज़ ओबेद का और ओबेद यस्सी का बाप था। 13 बड़े से लेकर छोटे तक यस्सी के बेटे इलियाब, अबीनदाब, सिमा, 14 नतनियेल, रद्दी, 15 ओज़म और दाऊद थे। कुल सात भाई थे। 16 उनकी दो बहनें ज़रूयाह और अबीजेल थीं। ज़रूयाह के तीन बेटे अबीशै, योआब और असाहेल थे। 17 अबीजेल के एक बेटा अमासा पैदा हुआ। बाप यतर इसमाईली था।

### कालिब की औलाद

18 कालिब बिन हसरोन की बीवी अज़्बा के हॉ बेटी बनाम यरीओत पैदा हुई। यरीओत के बेटे यशर, सोबाब और अरदून थे। 19 अज़्बा के वफ़ात पाने पर कालिब ने इफ़रात से शादी की। उनके बेटा हर पैदा हुआ। 20 हर ऊरी का और ऊरी बज़लियेल का बाप था।

21 60 साल की उम्र में कालिब के बाप हसरोन ने दुबारा शादी की। बीवी जिलियाद के बाप मकीर की बेटी थी। इस रिश्ते से बेटा सज़ब पैदा हुआ। 22-23 सज़ब का बेटा वह याईर था जिसकी जिलियाद के इलाके में 23 बस्तियाँ बनाम 'याईर की बस्तियाँ' थीं। लेकिन बाद में जूसूर और शाम के फ़ौजियों ने उन पर कब्ज़ा कर लिया। उस वक़्त उन्हें कनात भी गिर्दो-नवाह के इलाके समेत हासिल हुआ। उन दिनों में कुल 60 आबादियाँ उनके हाथ में आ गईं। इनके तमाम बाशिंदे जिलियाद के बाप मकीर की औलाद थे। 24 हसरोन जिसकी बीवी अबियाह थी फ़ौत हुआ तो कालिब और इफ़राता के हॉ बेटा अशहर पैदा हुआ। बाद में अशहर तक्रुअ शहर का बानी बन गया।

### यरहमियेल की औलाद

25 हसरोन के पहलौठे यरहमियेल के बेटे बड़े से लेकर छोटे तक राम, बूना, ओरन, ओज़म और अखियाह थे। 26 यरहमियेल की दूसरी बीवी अतारा का एक बेटा ओनाम था।

27 यरहमियेल के पहलौठे राम के बेटे माज़, यमीन और एफ़र थे। 28 ओनाम के दो बेटे सम्मी और यदा थे। सम्मी के दो बेटे नदब और अबीसूर थे। 29 अबीसूर की बीवी अबीख़ैल के दो बेटे अरख़वान और मोलिट पैदा हुए। 30 नदब के दो बेटे सिलद और अफ़फ़ायम थे। सिलद बेऔलाद मर गया, 31 लेकिन अफ़फ़ायम के हॉ बेटा यिसई पैदा हुआ। यिसई सीसान का और सीसान अख़ली का बाप था। 32 सम्मी के भाई यदा के दो बेटे यतर और यूनतन थे। यतर बेऔलाद मर गया, 33 लेकिन यूनतन के दो बेटे फ़लत और ज़ाज़ा पैदा हुए। सब यरहमियेल की औलाद थे। 34-35 सीसान के बेटे नहीं थे बल्कि बेटियाँ। एक बेटी की शादी उसने अपने मिसरी गुलाम यरखा से करवाई। उनके बेटा अन्ती पैदा हुआ। 36 अन्ती के हॉ नातन पैदा हुआ और नातन के ज़बद, 37 ज़बद के इफ़लाल, इफ़लाल के ओबेद, 38 ओबेद के याह, याह के अज़रियाह, 39 अज़रियाह के

खलिस, खलिस के इलियासा, 40 इलियासा के सिसमी, सिसमी के सल्लूम, 41 सल्लूम के यकमियाह और यकमियाह के इलीसमा।

कालिब की औलाद का एक और नसबनामा

42 जैल में यहमियेल के भाई कालिब की औलाद है : उसका पहलौठा मेसा जीफ का बाप था और दूसरा बेटा मेरेसा हबरून का बाप। 43 हबरून के चार बेटे कोरह, तफफुअह, रकम और समा थे। 44 समा के बेटे रखम के हों युरकियाम पैदा हुआ। रकम सम्मी का बाप था, 45 सम्मी मऊन का और मऊन बैत-सूर का।

46 कालिब की दाशता ऐफा के बेटे हारान, मौजा और जाजिज पैदा हुए। हारान के बेटे का नाम जाजिज था। 47 यहदी के बेटे रजम, यूताम, जेसान, फलत, ऐफा और शाफ थे।

48 कालिब की दूसरी दाशता माका के बेटे शिबर, तिर्हना, 49 शाफ (मदमन्ना का बाप) और सिवा (मकबेना और जिबिया का बाप) पैदा हुए। कालिब की एक बेटी भी थी जिसका नाम अकसा था। 50 सब कालिब की औलाद थे।

इफराता के पहलौठे हर के बेटे किरियत-यारीम का बाप सोबल, 51 बैत-लहम का बाप सलमा और बैत-जादिर का बाप खारिफ थे। 52 किरियत-यारीम के बाप सोबल से यह घराने निकले : हराई, मानहत का आधा हिस्सा 53 और किरियत-यारीम के खानदान उत्तरी, फूती, सुमाती और मिसराई। इनसे सुरआती और इस्ताली निकले हैं।

54 सलमा से जैल के घराने निकले : बैत-लहम के बाशिंदे, नतूफाती, अतरात-बैत-योआब, मानहत का आधा हिस्सा, सुरई 55 और याबीज में आबाद मुन्शियों के खानदान तिरआती, सिमआती और सूकाती। यह सब कीनी थे जो रैकाबियों के बाप हम्मत से निकले थे।

### 3

दाऊद बादशाह की औलाद

1 हबरून में दाऊद बादशाह के दर्जे-जैल बेटे पैदा हुए :

पहलौठा अमनोन था जिसकी माँ अखीनुअम यज़रएली थी। दूसरा दानियाल था जिसकी माँ अबीजेल करमिली थी। 2 तीसरा अबीसलूम था। उस की माँ माका थी जो जसूर के बादशाह तलमी की बेटी थी। चौथा अदूनियाह था जिसकी माँ हज्जीत थी। 3 पाँचवाँ सफतियाह था जिसकी माँ अबीताल थी। छठा इतरियाम था जिसकी माँ इजला थी। 4 दाऊद के यह छः बेटे उन साढे सात सालों के दौरान पैदा हुए जब हबरून उसका दासल-हुकूमत था।

इसके बाद वह यरूशलम में मृतकिल हुआ और वहाँ मजिद 33 साल हुकूमत करता रहा। 5 उस दौरान उस की बीवी बत-सबा बिन अम्मियेल के चार बेटे सिमआ, सोबाब, नातन और सुलेमान पैदा हुए। 6 मजिद बेटे भी पैदा हुए, इबहार, इलीसुअ, इलीफलत, 7 नौजा, नफज, यफीअ, 8 इलीसमा, इलियदा और इलीफलत। कुल नौ बेटे थे। 9 तमर उनकी बहन थी। इनके अलावा दाऊद की दाशताओं के बेटे भी थे।

10 सुलेमान के हों रहुबियाम पैदा हुआ, रहुबियाम के अबियाह, अबियाह के आसा, आसा के यहसफत, 11 यहसफत के यहराम, यहराम के अखजियाह, अखजियाह के युआस, 12 युआस के अमसियाह, अमसियाह के अजरियाह यानी उज्जियाह, उज्जियाह के यूताम, 13 यूताम के आखज, आखज के हिजकियाह, हिजकियाह के मनस्सी, 14 मनस्सी के अम्मू और अम्मू के यूसियाह।

15 यूसियाह के चार बेटे बड़े से लेकर छोटे तक यहनान, यहयकीम, सिदकियाह और सल्लूम थे।

16 यहयकीम यहयाकीन \* का और यहयाकीन सिदकियाह का बाप था। 17 यहयाकीन † को बाबल में जिलावतन कर दिया गया। उसके सात बेटे सियालतियेल, 18 मलकिराम, फिदायाह, शेनाज्जर, यकमियाह, हसमा और नदबियाह थे। 19 फिदायाह के दो बेटे ज़रूबाबल और सिमई थे।

ज़रूबाबल के दो बेटे मसुल्लाम और हननियाह थे। एक बेटी बनाम सल्लूमीत भी पैदा हुई। 20 बाकी पाँच बेटों के नाम हसूबा, ओहल, बरकियाह, हसदियाह और यूसब-हसद थे।

21 हननियाह के दो बेटे फलतियाह और यसायाह थे। यसायाह रिफायाह का बाप था, रिफायाह अरनान का, अरनान अबदियाह का और अबदियाह सकनियाह का।

22 सकनियाह के बेटे का नाम समायाह था। समायाह के छः बेटे हतूश, इजाल, बरीह, नअरियाह और साफत थे।

23 नअरियाह के तीन बेटे इलियूएनी, हिजकियाह और अज़रीकाम पैदा हुए।

24 इलियूएनी के सात बेटे हदावियाह, इलियासिब, फिल्लयाह, अन्नकूब, यूहनान, दिलायाह और अनानी थे।

\* 3:16 इब्रानी में यहयाकीन का मुतरादिफ यकूमियाह मुस्तामल है। † 3:17 इब्रानी में यहयाकीन का मुतरादिफ यकूमियाह मुस्तामल है।



## 4

## यहदाह की औलाद

- 1 फ्रांस, हसरोन, करमी, हर और सोबल यहदाह की औलाद थे।
- 2 रियायाह बिन सोबल के हों यहत, यहत के अख्मी और अख्मी के लाहद पैदा हुआ। यह सुरआती खानदानों के बापदादा थे।
- 3 ऐताम के तीन बेटे यज़एल, इसमा और इदबास थे। उनकी बहन का नाम हज़लिलफ़ोनी था।
- 4 इफ़राता का पहलौठा हर बैत-लहम का बाप था। उसके दो बेटे जदूर का बाप फ़नुएल और हसा का बाप अज़र थे।
- 5 तकुअ के बाप अशहूर की दो बीवियाँ हीलाह और नारा थीं।
- 6 नारा के बेटे अख्ज़ज़ाम, हिफर, तेमनी और हख़सतरी थे।
- 7 हीलाह के बेटे ज़रत, सुहर और इतनान थे।
- 8 क़ज़ के बेटे अन्ब और हज़्जोबीबा थे। उससे अख़रख़ैल बिन हस्म के खानदान भी निकले।
- 9 याबीज़ की अपने भाइयों की निसबत ज़्यादा इज़्ज़त थी। उस की माँ ने उसका नाम याबीज़ यानी 'वह तकलीफ़ देता है' रखा, क्योंकि उसने कहा, "पैदा होते वक़्त मुझे बड़ी तकलीफ़ हुई।" 10 याबीज़ ने बुलंद आबाज़ से इसराईल के ख़ुदा से इलतमास की, "काश तू मुझे बरकत देकर मेरा इलाका वसी कर दे। तेरा हाथ मेरे साथ हो, और मुझे नुक़सान से बचा ताकि मुझे तकलीफ़ न पहुँचे।" और अल्लाह ने उस की सुनी।
- 11 सूखा के भाई कलब महीर का और महीर इस्तून का बाप था।
- 12 इस्तून के बेटे बैत-रफ़ा, फ़ासह और तखिन्ना थे। तखिन्ना नाहस शहर का बाप था जिसकी औलाद रैका में आबाद है। 13 क़नज़ के बेटे गुतनियेल और सिरायाह थे। गुतनियेल के बेटों के नाम हतत और मऊनाती थे।
- 14 मऊनाती उफ़रा का बाप था। सिरायाह योआब का बाप था जो 'वादीए-कारिगर' का बानी था। आबादी का यह नाम इसलिए पड़ गया कि उसके बाशिंदे कारिगर थे।
- 15 कालिब बिन यफ़ुन्ना के बेटे ईरू, ऐला और नाम थे। ऐला का बेटा क़नज़ था।
- 16 यहल्ललेल के चार बेटे जीफ़, जीफ़ा, तीरियाह और असरेल थे।
- 17-18 अज़रा के चार बेटे यतर, मरद, इफ़र और यलून थे। मरद की शादी मिसरी बादशाह फ़िरौन की बेटी बितियाह से हुई। उसके तीन बच्चे मरियम, सम्मी और इसबाह पैदा हुए। इसबाह इस्तिमुअ का बाप था। मरद की दूसरी बीवी यहदाह की थी, और उसके तीन बेटे जदूर का बाप यरद, सोका का बाप हिबर और ज़न्ह का बाप यक़तियेल थे।
- 19 हदियाह की बीवी नहम की बहन थी। उसका एक बेटा क़ईला ज़रमी का बाप और दूसरा इस्तिमुअ माकाती था।
- 20 सीमून के बेटे अमनोन, रिन्ना, बिन-हनान और तीलोन थे। यिसई के बेटे जोहित और बिन-जोहित थे।
- 21 सेला बिन यहदाह की दर्जे-ज़ैल औलाद थी : लेका का बाप एर, मेरेसा का बाप लादा, बैत-अशबीअ में आबाद बारीक कतान का काम करनेवालों के खानदान, 22 योक्नीम, कोज़ीबा के बाशिंदे, और युआस और साराफ़ जो कदीम रिवायत के मुताबिक़ मोआब पर हुक्मरानी करते थे लेकिन बाद में बैत-लहम वापस आए। 23 वह नताईम और जदीरा में रहकर कुम्हार और बादशाह के मुलाज़िम थे।

## शमौन की औलाद

- 24 शमौन के बेटे यमुएल, यमीन, यरीब, ज़ारह और साऊल थे। 25 साऊल के हों सल्लूम पैदा हुआ, सल्लूम के मिबसाम, मिबसाम के मिशमा, 26 मिशमा के हम्मुएल, हम्मुएल के ज़क्कूर और ज़क्कूर के सिमई। 27 सिमई के 16 बेटे और छः बेटियाँ थीं, लेकिन उसके भाइयों के कम बच्चे पैदा हुए। नतीजे में शमौन का कबीला यहदाह के कबीले की निसबत छोटा रहा।
- 28 ज़ैल के शहर उनके गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत शमौन का कबायली इलाका था : बैर-सबा, मोलादा, हसार-सुआल, 29 बिलहाह, अज़म, तोलद, 30 बतुएल, हरमा, सिकलाज, 31 बैत-मर्कबोत, हसार-सूसीम, बैत-बिरी और शोरम। दाऊद की हुक्मत तक यह कबीला इन जगहों में आबाद था, 32 नीज़ ऐताम, ऐन, रिम्मोन, तोकन और असन में भी। 33 इन पाँच आबादियों के गिर्दो-नवाह के देहात भी बाल तक शामिल थे। हर मक़ाम के अपने अपने तहरीरी नसबनामे थे।
- 34 शमौन के खानदानों के दर्जे-ज़ैल सरपरस्त थे : मिसोबाब, यमलीक, यशा बिन अमसियाह, 35 योएल, याह बिन यूसिबियाह बिन सिरायाह बिन असियेल, 36 इलियुऐनी, याक्बा, यशुखाया, असायाह, अदियेल, यसीमियेल, बिनायाह, 37 ज़ीज़ा बिन शिफई बिन अल्लोन बिन यदायाह बिन सिमरी बिन समायाह।

38 दर्जे-बाला आदमी अपने खानदानों के सरपरस्त थे। उनके खानदान बहुत बड़ गए, 39 इसलिए वह अपने रेवडों को चराने की जगहें ढूँढते ढूँढते वादी के मशरिक में जद्द तक फैल गए। 40 वहाँ उन्हें अच्छी और शादाब चरागाहें मिल गईं। इलाका खुला, पुरसुकून और आरामदेह भी था। पहले हाम की कुछ औलाद वहाँ आबाद थी, 41 लेकिन हिजकियाह बादशाह के ऐयाम में शमौन के मजकूरा सरपरस्तों ने वहाँ के रहनेवाले हामियों और मऊनियों पर हमला किया और उनके तंबूओं को तबाह करके सबको मार दिया। एक भी न बचा। फिर वह खुद वहाँ आबाद हुए। अब उनके रेवडों के लिए काफी चरागाहें थीं। आज तक वह इसी इलाके में रहते हैं।

42 एक दिन शमौन के 500 आदमी यिसई के चार बेटों फलतियाह, नअरियाह, रिफायाह और उज्जियेल की राहनुमाई में सईर के पहाड़ी इलाके में घुस गए। 43 वहाँ उन्होंने उन अमालीकियों को हलाक कर दिया जिन्होंने बचकर वहाँ पनाह ली थी। फिर वह खुद वहाँ रहने लगे। आज तक वह वहीं आबाद हैं।

## 5

### रुबिन की औलाद

1 इसराईल का पहलौठा रुबिन था। लेकिन चूँकि उसने अपने बाप की दाशता से हमबिसतर होने से बाप की बेहरमती की थी इसलिए पहलौठे का मौस्सी हक उसके भाई यूसुफ के बेटों को दिया गया। इसी वजह से नसबनामे में रुबिन को पहलौठे की हैसियत से बयान नहीं किया गया। 2 यहदाह दीगर भाइयों की निसबत ज्यादा ताकतवर था, और उससे कौम का बादशाह निकला। तो भी यूसुफ को पहलौठे का मौस्सी हक हासिल था।

3 इसराईल के पहलौठे रुबिन के चार बेटे हनुक, फल्लू, हसरोन और करमी थे।

4 योएल के हौं समायाह पैदा हुआ, समायाह के जूज, जूज के सिमई, 5 सिमई के मीकाह, मीकाह के रियायाह, रियायाह के बाल और 6 बाल के बईरा। बईरा को अस्ूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर ने जिलावतन कर दिया। बईरा रुबिन के कबीले का सरपरस्त था। 7 उनके नसबनामे में उसके भाई उनके खानदानों के मुताबिक दर्ज किए गए हैं, सरे-फहरिस्त यइयेल, फिर ज़करियाह 8 और बाला बिन अजज़ बिन समा बिन योएल।

रुबिन का कबीला अरोईर से लेकर नबू और बाल-मऊन तक के इलाके में आबाद हुआ। 9 मशरिक की तरफ वह उस रेगिस्तान के किनारे तक फैल गए जो दरियाए-फुरात से शुरू होता है। क्योंकि जिलियाद में उनके रेवडों की तादाद बहुत बड़ गई थी।

10 साऊल के ऐयाम में उन्होंने हाजिरियों से लड़कर उन्हें हलाक कर दिया और खुद उनकी आबादियों में रहने लगे। यों जिलियाद के मशरिक का पूरा इलाका रुबिन के कबीले की मिलकियत में आ गया।

### जद की औलाद

11 जद का कबीला रुबिन के कबीले के पडोसी मुल्क बसन में सलका तक आबाद था। 12 उसका सरबराह योएल था, फिर साफ़म, यानी और साफ़ता। वह सब बसन में आबाद थे। 13 उनके भाई उनके खानदानों समेत मीकाएल, मसुल्लाम, सबा, यूरी, याकान, जीअ और इबर थे। 14 यह सात आदमी अबीखैल बिन हरी बिन यासूह बिन जिलियाद बिन मीकाएल बिन यसीसी बिन यहदू बिन बूज के बेटे थे। 15 अखी बिन अबदियेल बिन जूनी इन खानदानों का सरपरस्त था।

16 जद का कबीला जिलियाद और बसन के इलाकों की आबादियों में आबाद था। शासून से लेकर सरहद तक की पूरी चरागाहें भी उनके कब्जे में थीं। 17 यह तमाम खानदान यहदाह के बादशाह यूताम और इसराईल के बादशाह यसबियाम के जमाने में नसबनामे में दर्ज किए गए।

### दरियाए-यरदन के मशरिक में कबीलों की जंग

18 रुबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले के 44,760 फ़ौजी थे। सब लडने के काबिल और तजरबाकार आदमी थे, ऐसे लोग जो तीर चला सकते और ढाल और तलवार से लैस थे। 19 उन्होंने हाजिरियों, यत्र, नफीस और नोदब से जंग की। 20 लडते वक़्त उन्होंने अल्लाह से मदद के लिए फ़रियाद की, तो उसने उनकी सुनकर हाजिरियों को उनके इतहादियों समेत उनके हवाले कर दिया। 21 उन्होंने उनसे बहुत कुछ लूट लिया : 50,000 ऊँट, 2,50,000 भेड़-बकरियों और 2,000 गधे। साथ साथ उन्होंने 1,00,000 लोगों को कैद भी कर लिया। 22 मैदाने-जंग में बेशुमार दुश्मन मारे गए, क्योंकि जंग अल्लाह की थी। जब तक इसराईलियों को अस्ूर में जिलावतन न कर दिया गया वह इस इलाके में आबाद रहे।

### मनस्सी का आधा कबीला

23 मनस्सी का आधा कबीला बहुत बड़ा था। उसके लोग बसन से लेकर बाल-हरमून और सनीर यानी हरमून के पहाड़ी सिलसिले तक फैल गए। 24 उनके खानदानी सरपरस्त इफ्र, यिसई, इलियेल, अज़रियेल, यरमियाह, हदावियाह और यहदियेल थे। सब माहिर फौजी, मशहर आदमी और खानदानी सरबराह थे।

### मशरिकी कबीलों की जिलावतनी

25 लेकिन यह मशरिकी कबीले अपने बापदादा के खुदा से बेवफा हो गए। वह जिना करके मुल्क के उन अकवाम के देवताओं के पीछे लग गए जिनको अल्लाह ने उनके आगे से मिटा दिया था। 26 यह देखकर इसराईल के खुदा ने असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर को उनके खिलाफ बरपा किया जिसने रुबिन, जद और मनस्सी के आधे कबीले को जिलावतन कर दिया। वह उन्हें खलह, दरियाए-खाबूर, हारा और दरियाए-जौजान को ले गया जहाँ वह आज तक आबाद हैं।

## 6

### इमामे-आज़म की नसल (लावी का कबीला)

1 लावी के बेटे जैरसोन, किहात और मिरारी थे। 2 किहात के बेटे अमराम, इज़हार, हबस्न और उज्जियेल थे।

3 अमराम के बेटे हास्न और मूसा थे। बेटी का नाम मरियम था। हास्न के बेटे नदब, अबीह, इलियजर और इतमर थे।

4 इलियजर के हॉ फीनहास पैदा हुआ, फीनहास के अबीसुअ, 5 अबीसुअ के बुक्की, बुक्की के उज्जी, 6 उज्जी के जरखियाह, जरखियाह के मिरायोत, 7 मिरायोत के अमरियाह, अमरियाह के अखीतूब, 8 अखीतूब के सदोक, सदोक के अखीमाज़, 9 अखीमाज़ के अज़रियाह, अज़रियाह के यहनान 10 और यहनान के अज़रियाह। यही अज़रियाह रब के उस घर का पहला इमामे-आज़म था जो सुलेमान ने यरूशलम में बनवाया था। 11 उसके हॉ अमरियाह पैदा हुआ, अमरियाह के अखीतूब, 12 अखीतूब के सदोक, सदोक के सल्लूम, 13 सल्लूम के खिलक्रियाह, खिलक्रियाह के अज़रियाह, 14 अज़रियाह के सिरायाह और सिरायाह के यहसदक। 15 जब रब ने नबूकदनज़र के हाथ से यरूशलम और पूरे यहदाह के बाशिदों को जिलावतन कर दिया तो यहसदक भी उनमें शामिल था।

### लावी की औलाद

16 लावी के तीन बेटे जैरसोम, किहात और मिरारी थे। 17 जैरसोम के दो बेटे लिबनी और सिमई थे। 18 किहात के चार बेटे अमराम, इज़हार, हबस्न और उज्जियेल थे। 19 मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे।

जैल में लावी के खानदानों की फहरिस्त उनके बानियों के मुताबिक दर्ज है।

20 जैरसोम के हॉ लिबनी पैदा हुआ, लिबनी के यहत, यहत के जिम्मा, 21 जिम्मा के युआख, युआख के इदू, इदू के ज़ारह और ज़ारह के यतरी।

22 किहात के हॉ अम्मीनदाब पैदा हुआ, अम्मीनदाब के कोरह, कोरह के अस्सीर, 23 अस्सीर के इलकाना, इलकाना के अबियासफ, अबियासफ के अस्सीर, 24 अस्सीर के तहत, तहत के ऊरियेल, ऊरियेल के उज्जियाह और उज्जियाह के साऊल। 25 इलकाना के बेटे अमासी, अखीमोत 26 और इलकाना थे। इलकाना के हॉ ज़फ़ी पैदा हुआ, ज़फ़ी के नहत, 27 नहत के इलियाब, इलियाब के यरोहाम, यरोहाम के इलकाना और इलकाना के समुएल। 28 समुएल का पहला बेटा योएल और दूसरा अबियाह था।

29 मिरारी के हॉ महली पैदा हुआ, महली के लिबनी, लिबनी के सिमई, सिमई के उज्जा, 30 उज्जा के सिमआ, सिमआ के हज्जियाह और हज्जियाह के असायाह।

### लावी की जिम्मादारियों

31 जब अहद का संदक यरूशलम में लाया गया ताकि आइंदा वहाँ रहे तो दाऊद बादशाह ने कुछ लावियों को रब के घर में गीत गाने की जिम्मादारी दी। 32 इससे पहले कि सुलेमान ने रब का घर बनवाया यह लोग अपनी खिदमत मुलाकात के ख़ेमे के सामने सरज़ाम देते थे। वह सब कुछ मुकर्रर हिदायात के मुताबिक अदा करते थे। 33 जैल में उनके नाम उनके बेटों के नामों समेत दर्ज हैं।

किहात के खानदान का हैमान पहला गुल्कार था। उसका पूरा नाम यह था : हैमान बिन योएल बिन समुएल 34 बिन इलकाना बिन यरोहाम बिन इलियेल बिन तूख 35 बिन सूफ बिन इलकाना बिन महत बिन अमासी 36 बिन इलकाना बिन योएल बिन अज़रियाह बिन सफनियाह 37 बिन तहत बिन अस्सीर बिन अबियासफ बिन कोरह 38 बिन इज़हार बिन किहात बिन लावी बिन इसराईल।

39 हैमान के दहने हाथ आसफ खड़ा होता था। उसका पूरा नाम यह था : आसफ बिन बरकियाह बिन सिमाअ 40 बिन मीकाएल बिन बासियाह बिन मलकियाह 41 बिन अत्री बिन ज़ारह बिन अदायाह 42 बिन ऐतान बिन जिम्मा बिन सिमई 43 बिन यहत बिन जैरसोम बिन लावी।

44 हैमान के बाएँ हाथ ऐतान खड़ा होता था। वह मिरारी के खानदान का फ़रद था। उसका पूरा नाम यह था : ऐतान बिन कीसी बिन अबदी बिन मल्लुक 45 बिन हसबियाह बिन अमसियाह बिन खिलक्रियाह 46 बिन अमसी बिन बानी बिन समर 47 बिन महली बिन मूशी बिन मिरारी बिन लावी।

48 दूसरे लावियों को अल्लाह की सुकूनतगाह में बाक्रीमाँदा जिम्मादारियों दी गई थीं।

49 लेकिन सिर्फ़ हास्न और उस की औलाद भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करते और बख़र की कुरबानगाह पर बख़र जलाते थे। वही मुक़द़सतरीन क़मरे में हर ख़िदमत सरंजाम देते थे। इसराईल का कफ़ारा देना उन्हीं की जिम्मादारी थी। वह सब कुछ ऐन उन हिदायात के मुताबिक़ अदा करते थे जो अल्लाह के ख़ादिम मूसा ने उन्हें दी थीं।

50 हास्न के हॉ इलियज़र पैदा हुआ, इलियज़र के फ़ीनहास, फ़ीनहास के अबीसुअ, 51 अबीसुअ के बुक्की, बुक्की के उज्ज़ी, उज्ज़ी के ज़रखियाह, 52 ज़रखियाह के मिरायोत, मिरायोत के अमरियाह, अमरियाह के अखीतब, 53 अखीतब के सदोक, सदोक के अखीमाज़।

### लावियों की आबादियाँ

54 ज़ैल में वह आबादियाँ और चरागाहें दर्ज हैं जो लावियों को कुरा डालकर दी गई।

कुरा डालते वक़्त पहले हास्न के बेटे किहात की औलाद को जगहें मिल गईं। 55 उसे यहदाह के कबीले से हबस्न शहर उस की चरागाहों समेत मिल गया। 56 लेकिन गिर्दो-नवाह के खेत और देहात कालिब बिन यफ़ुन्ना को दिए गए। 57 हबस्न उन शहरों में शामिल था जिनमें हर वह पनाह ले सकता था जिसके हाथों गैरइरादी तौर पर कोई हलाक हुआ हो। हबस्न के अलावा हास्न की औलाद को ज़ैल के मक़ाम उनकी चरागाहों समेत दिए गए : लिबना, यन्तीर, इस्तिमुअ, 58 हौलून, दबीर, 59 असन, और बैत-शम्म। 60 बिनयमीन के कबीले से उन्हें जिबऊन, जिबा, अलमत और अनतोत उनकी चरागाहों समेत दिए गए। इस तरह हास्न के खानदान को 13 शहर मिल गए।

61 किहात के बाकी खानदानों को मनस्सी के मगरिबी हिस्से के दस शहर मिल गए।

62 जैरसोम की औलाद को इशकार, आशर, नफ़ताली और मनस्सी के कबीलों के 13 शहर दिए गए। यह मनस्सी का वह इलाक़ा था जो दरियाए-यरदन के मशरिफ़ में मुल्के-बसन में था।

63 मिरारी की औलाद को रूबिन, जद और ज़बूलन के कबीलों के 12 शहर मिल गए।

64-65 यों इसराईलियों ने कुरा डालकर लावियों को मज़क़ूरा शहर दे दिए। सब यहदाह, शमौन और बिनयमीन के कबायली इलाकों में थे।

66 किहात के चंद एक खानदानों को इफ़राईम के कबीले से शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए। 67 इनमें इफ़राईम के पहाड़ी इलाके का शहर सिकम शामिल था जिसमें हर वह पनाह ले सकता था जिससे कोई गैरइरादी तौर पर हलाक हुआ होता था, फिर जज़र, 68 युक्मियाम, बैत-हौरून, 69 ऐयालोन और जात-रिम्मोन। 70 किहात के बाकी कुंबों को मनस्सी के मगरिबी हिस्से के दो शहर आनेर और बिलाम उनकी चरागाहों समेत मिल गए।

71 जैरसोम की औलाद को ज़ैल के शहर भी उनकी चरागाहों समेत मिल गए : मनस्सी के मशरिफ़ी हिस्से से जौलान जो बसन में है और अस्तारात। 72 इशकार के कबीले से कादिस, दाबरत, 73 रामात और आनीम। 74 आशर के कबीले से मिसाल, अब्दोन, 75 हुक्क और रहोब। 76 और नफ़ताली के कबीले से गलील का कादिस, हम्मून और किरियतायम।

77 मिरारी के बाकी खानदानों को ज़ैल के शहर उनकी चरागाहों समेत मिल गए : ज़बूलन के कबीले से रिम्मोन और तबूर। 78-79 रूबिन के कबीले से रेगिस्तान का बसर, यहज़, क़दीमात और मिफ़ात (यह शहर दरियाए-यरदन के मशरिफ़ में यरीह के मुकाबिल वाके हैं)। 80 जद के कबीले से जिलियाद का रामात, महनायम, 81 इसबोन और याजेर।

## 7

### इशकार की औलाद

1 इशकार के चार बेटे तोला, फ़ुव्वा, यसूब और सिमरोन थे।

2 तोला के पाँच बेटे उज्ज़ी, रिफ़ायाह, यरियेल, यहमी, इबसाम और समुएल थे। सब अपने खानदानों के सरपरस्त थे। नसबनामे के मुताबिक़ दाऊद के ज़माने में तोला के खानदान के 22,600 अफ़राद जंग करने के काबिल थे।

3 उज्ज़ी का बेटा इज़्रखियाह था जो अपने चार भाइयों मीकाएल, अबदियाह, योएल और थिसियाह के साथ खानदानी सरपरस्त था। 4 नसबनामे के मुताबिक़ उनके 36,000 अफ़राद जंग करने के काबिल थे। इनकी तादाद इसलिए ज़्यादा थी

कि उज्जी की औलाद के बहुत बाल-बच्चे थे। <sup>5</sup> इशकार के कबीले के खानदानों के कुल 87,000 आदमी जंग करने के काबिल थे। सब नसबनामे में दर्ज थे।

### बिनयमीन और नफताली की औलाद

<sup>6</sup> बिनयमीन के तीन बेटे बाला, बकर और यदियएल थे। <sup>7</sup> बाला के पाँच बेटे इसबून, उज्जी, उज्जियेल, यरीमोत और ईरी थे। सब अपने खानदानों के सरपरस्त थे। उनके नसबनामे के मुताबिक उनके 22,034 मर्द जंग करने के काबिल थे।

<sup>8</sup> बकर के 9 बेटे जमीरा, युआस, इलियजर, इलियुएनी, उमरी, यरीमोत, अबियाह, अनतोत और अलमत थे। <sup>9</sup> उनके नसबनामे में उनके सरपरस्त और 20,200 जंग करने के काबिल मर्द बयान किए गए हैं।

<sup>10</sup> बिलहान बिन यदियएल के सात बेटे यऊस, बिनयमीन, अहद, कनाना, जैतान, तरसीस और अखी-सहर थे। <sup>11</sup> सब अपने खानदानों के सरपरस्त थे। उनके 17,200 जंग करने के काबिल मर्द थे।

<sup>12</sup> सुफ्फी और हुफ्फी ईर की और हुशी अखीर की औलाद थे।

<sup>13</sup> नफताली के चार बेटे यहसियेल, जूनी, यिसर और सल्लूम थे। सब बिलहाह की औलाद थे।

### मनस्सी की औलाद

<sup>14</sup> मनस्सी की अरामी दाशता के दो बेटे असरियेल और जिलियाद का बाप मकीर पैदा हुए। <sup>15</sup> मकीर ने हुफ्फियों और सुफ्फियों की एक औरत से शादी की। बहन का नाम माका था। मकीर के दूसरे बेटे का नाम सिलाफिहाद था जिसके हों सिर्फ बेटियाँ पैदा हुईं।

<sup>16</sup> मकीर की बीवी माका के मजीद दो बेटे फरस और शरस पैदा हुए। शरस के दो बेटे औलाम और रकम थे। <sup>17</sup> औलाम के बेटे का नाम बिदान था। यही जिलियाद बिन मकीर बिन मनस्सी की औलाद थे।

<sup>18</sup> जिलियाद की बहन मूलिकत के तीन बेटे इशहद, अबियजर और महाला थे। <sup>19</sup> समीदा के चार बेटे अखियान, सिकम, लिक्ही और अनियाम थे।

### इफराईम की औलाद

<sup>20</sup> इफराईम के हों सूतलह पैदा हुआ, सूतलह के बरद, बरद के तहत, तहत के इलियादा, इलियादा के तहत, <sup>21</sup> तहत के ज़बद और ज़बद के सूतलह।

इफराईम के मजीद दो बेटे अज़र और इलियद थे। यह दो मर्द एक दिन जात गए ताकि वहाँ के रेवड़ लूट लें। लेकिन मकामी लोगों ने उन्हें पकड़कर मार डाला। <sup>22</sup> उनका बाप इफराईम काफ़ी अरसे तक उनका मातम करता रहा, और उसके रिश्तेदार उससे मिलने आए ताकि उसे तसल्ली दें। <sup>23</sup> जब इसके बाद उस की बीवी के बेटा पैदा हुआ तो उसने उसका नाम बरिया यानी मुसीबत रखा, क्योंकि उस वक्त खानदान मुसीबत में आ गया था। <sup>24</sup> इफराईम की बेटी सैरा ने बालाई और नशेबी बैत-हौस्न और उज्जन-सैरा को बनवाया।

<sup>25</sup> इफराईम के मजीद दो बेटे रफह और रसफ थे। रसफ के हों तिलह पैदा हुआ, तिलह के तहन, <sup>26</sup> तहन के लादान, लादान के अम्मीहद, अम्मीहद के इलीसमा, <sup>27</sup> इलीसमा के नून, नून के यशुआ।

<sup>28</sup> इफराईम की औलाद के इलाके में जैल के मकाम शामिल थे : बैतेल गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत, मशरिक में नारान तक, मगरिब में जज़र तक गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत, शिमाल में सिकम और ऐयाह तक गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत। <sup>29</sup> बैत-शान, तानक, मजिदो और दोर गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत मनस्सी की औलाद की मिलकियत बन गए। इन तमाम मकामों में यूसुफ बिन इसराईल की औलाद रहती थी।

### आशर की औलाद

<sup>30</sup> आशर के चार बेटे यिमना, इसवाह, इसवी और बरिया थे। उनकी बहन सिरह थी।

<sup>31</sup> बरिया के बेटे हिबर और बिरजायत का बाप मलकियेल थे।

<sup>32</sup> हिबर के तीन बेटे यफलीत, शमीर और खूताम थे। उनकी बहन सुअ थी।

<sup>33</sup> यफलीत के तीन बेटे फासक, बिमहाल और असवात थे। <sup>34</sup> शमीर के चार बेटे अखी, रूहजा, हुब्बा और अराम थे।

<sup>35</sup> उसके भाई हीलम के चार बेटे सुफह, इमना, सलस और अमल थे।

<sup>36</sup> सुफह के 11 बेटे सूह, हर्नफर, सुआल, बैरी, इमराह,

<sup>37</sup> बसर, हद, सम्मा, सिलसा, यितरान और बईरा थे।

<sup>38</sup> यतर के तीन बेटे यफुन्ना, फिसफाह और अरा थे।

<sup>39</sup> उल्ला के तीन बेटे अरख, हन्जियेल और रिजियाह थे।

40 आशर के दर्जे-बाला तमाम अफराद अपने अपने खानदानों के सरपरस्त थे। सब चीदा मर्द, माहिर फौजी और सरदारों के सरबराह थे। नसबनामे में 26,000 जंग करने के काबिल मर्द दर्ज हैं।

## 8

### बिनयमीन की औलाद

- 1 बिनयमीन के पाँच बेटे बड़े से लेकर छोटे तक बाला, अशबेल, अख्ख, 2 नूहा और रफा थे।  
 3 बाला के बेटे अद्गर, जीरा, अबीहद, 4 अबीसुअ, नामान, अख्ख, 5 जीरा, सफूफान और हुराम थे।  
 6-7 अहद के तीन बेटे नामान, अखियाह और जीरा थे। यह उन खानदानों के सरपरस्त थे जो पहले जिबा में रहते थे लेकिन जिन्हें बाद में जिलावतन करके मानहत्त में बसाया गया। उज्जा और अखीहद का बाप जीरा उन्हें वहाँ लेकर गया था।  
 8-9 सहैरम अपनी दो बीवियों हुशीम और बारा को तलाक देकर मोआब चला गया। वहाँ उस की बीवी हदस के सात बेटे यूबाब, जिबिया, मेसा, मलकाम, 10 यऊज़, सकियाह और मिरमा पैदा हुए। सब बाद में अपने खानदानों के सरपरस्त बन गए।  
 11 पहली बीवी हुशीम के दो बेटे अबीतूब और इलफाल पैदा हुए।  
 12-14 इलफाल के आठ बेटे इबर, मिशआम, समद, बरिया, समा, अखियो, शाशक और यरीमोत थे। समद ओनु, लूद और गिर्दो-नवाह की आबादियों का बानी था। बरिया और समा ऐयालोन के बाशिदों के सरबराह थे। उन्हीं ने जात के बाशिदों को निकाल दिया।  
 15-16 बरिया के बेटे ज़बदियाह, अराद, इदर, मीकाएल, इसफाह और यूखा थे।  
 17 इलफाल के मज़ीद बेटे ज़बदियाह, मसुल्लाम, हिज़की, हिबर, 18 यिसमरी, यिज़लियाह और यूबाब थे।  
 19-21 सिमई के बेटे यक्रीम, जिकरी, ज़बदी, इलियेनी, जिल्लती, इलियेल, अदायाह, बिरायाह और सिमरात थे।  
 22-25 शाशक के बेटे इसफान, इबर, इलियेल, अब्दोन, जिकरी, हनान, हननियाह, ऐलाम, अनतोतियाह, यफदियाह और फनुएल थे।  
 26-27 यरोहाम के बेटे सम्सरी, शहारियाह, अतलियाह, यारसियाह, इलियास और जिकरी थे। 28 यह तमाम खानदानी सरपरस्त नसबनामे में दर्ज थे और यरूशलम में रहते थे।
- जिबऊन में साऊल का खानदान  
 29 जिबऊन का बाप यइयेल जिबऊन में रहता था। उस की बीवी का नाम माका था। 30 बड़े से लेकर छोटे तक उनके बेटे अब्दोन, सूर, क्रीस, बाल, नदब, 31 जदूर, अखियो, जकर 32 और मिकलौत थे। मिकलौत का बेटा सिमाह था। वह भी अपने रिश्तेदारों के साथ यरूशलम में रहते थे।  
 33 नैर क्रीस का बाप था और क्रीस साऊल का। साऊल के चार बेटे यूनतन, मलकीशुअ, अबीनदाब और इशबाल थे।  
 34 यूनतन मरीब्बाल का बाप था और मरीब्बाल मीकाह का।  
 35 मीकाह के चार बेटे फीतून, मलिक, तारीअ और आखज़ थे।  
 36 आखज़ का बेटा यहअद था जिसके तीन बेटे अलमत, अज़मावत और ज़िमरी थे। ज़िमरी के हौं मौज़ा पैदा हुआ,  
 37 मौज़ा के बिनआ, बिनआ के राफा, राफा के इलियासा और इलियासा के असील।  
 38 असील के छः बेटे अज़रीकाम, बोकिरू, इसमाईल, सअरियाह, अबदियाह और हनान थे। 39 असील के भाई ईशक के तीन बेटे बड़े से लेकर छोटे तक औलाम, यूऊस और इलीफलत थे।  
 40 औलाम के बेटे तजरबाकार फौजी थे जो महारत से तीर चला सकते थे। उनके बहुत-से बेटे और पोते थे, कुल 150 अफराद। तमाम मजकुरा आदमी उनके खानदानों समेत बिनयमीन की औलाद थे।

## 9

### जिलावतनी के बाद यरूशलम के बाशिदे

- 1 तमाम इसराईल शाहाने-इसराईल की किताब के नसबनामों में दर्ज है।  
 फिर यहदाह के बाशिदों को बेवफाई के बाइस बाबल में जिलावतन कर दिया गया। 2 जो लोग पहले वापस आकर दुबारा शहरों में अपनी मौरूसी ज़मीन पर रहने लगे वह इमाम, लावी, रब के घर के खिदमतगार और बाकी चंद एक इसराईली थे।  
 3 यहदाह, बिनयमीन, इफराईम और मनस्सी के कबीलों के कुछ लोग यरूशलम में जा बसे।  
 4 यहदाह के कबीले के दर्जे-जैल खानदानी सरपरस्त वहाँ आबाद हुए :  
 ऊती बिन अम्मीहद बिन उमरी बिन इमरी बिन बानी। बानी फारस बिन यहदाह की औलाद में से था।  
 5 सैला के खानदान का पहलौठा असायाह और उसके बेटे।

6 जारह के खानदान का यऊएल। यहदाह के इन खानदानों की कुल तादाद 690 थी।

7-8 बिनयमीन के कबीले के दर्जे-जैल खानदानी सरपरस्त यरूशलम में आबाद हुए :

सल्लू बिन मसुल्लाम बिन हूदावियाह बिन सनुआह।

इबनियाह बिन यरोहाम।

एला बिन उज्ज़ी बिन मिक्की।

मसुल्लाम बिन सफतियाह बिन रऊएल बिन इबनियाह।

9 नसबनामे के मुताबिक बिनयमीन के इन खानदानों की कुल तादाद 956 थी।

10 जो इमाम जिलावतनी से वापस आकर यरूशलम में आबाद हुए वह जैल में दर्ज हैं :

यदायाह, यह्यरीब, यकीन, 11 अल्लाह के घर का इंचारज अजरियाह बिन खिलकियाह बिन मसुल्लाम बिन सदोक बिन मिरायोत बिन अखीतूब, 12 अदायाह बिन यरोहाम बिन फशहर बिन मलकियाह और मासी बिन अदियेल बिन यहजीराह बिन मसुल्लाम बिन मसिल्लिमित बिन इम्मेर। 13 इमामों के इन खानदानों की कुल तादाद 1,760 थी। उनके मद रब के घर में खिदमत संरंजाम देने के काबिल थे।

14 जो लावी जिलावतनी से वापस आकर यरूशलम में आबाद हुए वह दर्जे-जैल हैं :

मिरारी के खानदान का समायाह बिन हस्सूब बिन अजरीकाम बिन हसबियाह, 15 बकबक्कर, हरस, जलाल, मतनियाह बिन मीका बिन जिक्की बिन आसफ, 16 अबदियाह बिन समायाह बिन जलाल बिन यदून और बरकियाह बिन आसा बिन इलकाना। बरकियाह नतूफातियों की आबादियों का रहनेवाला था।

17 जैल के दरबान भी वापस आए : सल्लूम, अक्कूब, तलमून, अखीमान और उनके भाई। सल्लूम उनका इंचारज था।

18 आज तक उसका खानदान रब के घर के मशरिक में शाही दरवाजे की पहरादारी करता है। यह दरबान लावियों के खैमों के अफराद थे। 19 सल्लूम बिन कोरे बिन अबियासफ बिन कोरह अपने भाइयों के साथ कोरह के खानदान का था। जिस तरह उनके बापदादा की जिम्मादारी रब की खैमागाह में मुलाकात के खैमे के दरवाजे की पहरादारी करनी थी उसी तरह उनकी जिम्मादारी मकदिस के दरवाजे की पहरादारी करनी थी। 20 कदीम जमाने में फीनहास बिन इलियजर उन पर मुकर्र था, और रब उसके साथ था। 21 बाद में जकरियाह बिन मसलमियाह मुलाकात के खैमे के दरवाजे का दरबान था।

22 कुल 212 मदीनों को दरबान की जिम्मादारी दी गई थी। उनके नाम उनकी मकामी जगहों के नसबनामे में दर्ज थे। दाऊद और समुएल गैबबीन ने उनके बापदादा को यह जिम्मादारी दी थी। 23 वह और उनकी औलाद पहले रब के घर यानी मुलाकात के खैमे के दरवाजों पर पहरादारी करते थे। 24 यह दरबान रब के घर के चारों तरफ के दरवाजों की पहरादारी करते थे।

25 लावी के अकसर लोग यरूशलम में नहीं रहते थे बल्कि बारी बारी एक हफ्ते के लिए देहात से यरूशलम आते थे ताकि वहाँ अपनी खिदमत संरंजाम दें। 26 सिर्फ दरबानों के चार इंचारज मुसलसल यरूशलम में रहते थे। यह चार लावी अल्लाह के घर के कमरों और खजानों को भी सँभालते 27 और रात को भी अल्लाह के घर के इद्गिर्द गुजारते थे, क्योंकि उन्हीं को उस की हिफाजत करना और सुबह के वक्त उसके दरवाजों को खोलना था।

28 बाज दरबान इबादत का सामान सँभालते थे। जब भी उसे इस्तेमाल के लिए अंदर और बाद में दूबारा बाहर लाया जाता तो वह हर चीज को गिनकर चैक करते थे। 29 बाज बाकी सामान और मकदिस में मौजूद चीजों को सँभालते थे। रब के घर में मुस्तामल बारीक मैदा, मै, जैतून का तेल, बखूर और बलसान के मुखलिफ तेल भी इनमें शामिल थे। 30 लेकिन बलसान के तेलों को तैयार करना इमामों की जिम्मादारी थी। 31 कोरह के खानदान का लावी मतितियाह जो सल्लूम का पहलौठा था कुरबानी के लिए मुस्तामल रोटी बनाने का इंतजाम चलाता था। 32 किहात के खानदान के बाज लावियों के हाथ में वह रोटियाँ बनाने का इंतजाम था जो हर हफ्ते के दिन को रब के लिए मखसूस करके रब के घर के मुकद्दस कमरे की मेज़ पर रखी जाती थी।

33 मौसीकार भी लावी थे। उनके सरबराह बाकी तमाम खिदमत में हिस्सा नहीं लेते थे, क्योंकि उन्हें हर वक्त अपनी ही खिदमत संरंजाम देने के लिए तैयार रहना पड़ता था। इसलिए वह रब के घर के कमरों में रहते थे।

34 लावियों के यह तमाम खानदानी सरपरस्त नसबनामे में दर्ज थे और यरूशलम में रहते थे।

### जिबऊन में साऊल के खानदान

35 जिबऊन का बाप यइथेल जिबऊन में रहता था। उस की बीवी का नाम माका था। 36 बड़े से लेकर छोटे तक उनके बेटे अब्दोन, सर्, कीस, बाल, नैर, नदब, 37 जदूर, अखियो, जकरियाह और मिक्लोट थे। 38 मिक्लोट का बेटा सिमाह था। वह भी अपने भाइयों के मुकाबिल यरूशलम में रहते थे।

39 नैर कीस का बाप था और कीस साऊल का। साऊल के चार बेटे यूनतन, मलकेशुअ, अबीनदाब और इशबाल थे।

40 यूनतन मरीब्बाल का बाप था और मरीब्बाल मीकाह का। 41 मीकाह के चार बेटे फीतून, मलिक, तहरेअ और आखज थे। 42 आखज का बेटा यारा था। यारा के तीन बेटे अलमत, अजमावत और जिमरी थे। जिमरी के हॉ मौजा पैदा हुआ, 43 मौजा के बिनआ, बना के रिफायाह, रिफायाह के इलियासा और इलियासा के असील।

44 असील के छः बेटे अजरीकाम, बोकिरू, इसमाईल, सअरियाह, अबदियाह और हनान थे।

## 10

साऊल और उसके बेटों की मौत

1 जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर फिलिस्तियों और इसराईलियों के दरमियान जंग छिड़ गई। लड़ते लड़ते इसराईली फरार होने लगे, लेकिन बहुत लोग वहीं शहीद हो गए।

2 फिर फिलिस्ती साऊल और उसके बेटों यूनतन, अबीनदाब और मलकीशुअ के पास जा पहुँचे। तीनों बेटे हलाक हो गए, 3 जबकि लड़ाई साऊल के इर्दगिर्द उरूज तक पहुँच गई। फिर वह तीरअंदाजों का निशाना बनकर जखमी हो गया। 4 उसने अपने सिलाहबरदार को हुक्म दिया, “अपनी तलवार मियान से खींचकर मुझे मार डाल! वरना यह नामखतून मुझे बेइज्जत करेगा।” लेकिन सिलाहबरदार ने इनकार किया, क्योंकि वह बहुत डरा हुआ था। आखिर में साऊल अपनी तलवार लेकर खुद उस पर गिर गया।

5 जब सिलाहबरदार ने देखा कि मेरा मालिक मर गया है तो वह भी अपनी तलवार पर गिरकर मर गया। 6 यों उस दिन साऊल, उसके तीन बेटे और उसका तमाम घराना हलाक हो गए। 7 जब मैदाने-यज्जएल के इसराईलियों को खबर मिली कि इसराईली फौज भाग गई और साऊल अपने बेटों समेत मारा गया है तो वह अपने शहरों को छोड़कर भाग निकले, और फिलिस्ती छोड़े हुए शहरों पर कब्जा करके उनमें बसने लगे।

8 अगले दिन फिलिस्ती लाशों को लट्टने के लिए दुबारा मैदाने-जंग में आ गए। जब उन्हें जिलबुअ के पहाड़ी सिलसिले पर साऊल और उसके तीनों बेटे मुरदा मिले 9 तो उन्होंने साऊल का सर काटकर उसका जिंरा-बकतर उतार लिया और कासिदों को अपने पूरे मुल्क में भेजकर अपने बुतों और अपनी कौम को फतह की इतला दी। 10 साऊल का जिंरा-बकतर उन्होंने अपने देवताओं के मंदिर में महफूज कर लिया और उसके सर को दज्ज देवता के मंदिर में लटक दिया।

11 जब यबीस-जिलियाद के बाशिंदों को खबर मिली कि फिलिस्तियों ने साऊल की लाश के साथ क्या कुछ किया है 12 तो शहर के तमाम लड़ने के काबिल आदमी बैत-शान के लिए रवाना हुए। वहाँ पहुँचकर वह साऊल और उसके बेटों की लाशों को उतारकर यबीस ले गए जहाँ उन्होंने उनकी हड्डियों को यबीस के बड़े दरख्त के साये में दफनाया। उन्होंने रोजा रखकर पूरे हफ्ते तक उनका मातम किया।

13 साऊल को इसलिए मारा गया कि वह रब का वफादार न रहा। उसने उस की हिदायात पर अमल न किया, यहाँ तक कि उसने मुरदों की रूह से राबिता करनेवाली जादूगरनी से मशवरा किया, 14 हालाँकि उसे रब से दरियाफत करना चाहिए था। यही वजह है कि रब ने उसे सजाए-मौत देकर सलतनत को दाऊद बिन यस्सी के हवाले कर दिया।

## 11

दाऊद पूरे इसराईल का बादशाह बन जाता है

1 उस वक़्त तमाम इसराईल हबस्न में दाऊद के पास आया और कहा, “हम आप ही की कौम और आप ही के रिश्तेदार हैं। 2 माजी में भी जब साऊल बादशाह था तो आप ही फौजी मुहिमों में इसराईल की क्रियादत करते रहे। और रब आपके ख़ुदा ने आपसे वादा भी किया है कि तू मेरी कौम इसराईल का चरवाहा बनकर उस पर हुक्मत करेगा।”

3 जब इसराईल के तमाम बुर्ग हबस्न पहुँचे तो दाऊद बादशाह ने रब के हुज़ूर उनके साथ अहद बाँधा, और उन्होंने उसे महस करके इसराईल का बादशाह बना दिया। यों रब का समुएल की मारिफ़त किया हुआ वादा पूरा हुआ।

दाऊद यस्शलम पर कब्जा करता है

4 बादशाह बनने के बाद दाऊद तमाम इसराईलियों के साथ यस्शलम गया ताकि उस पर हमला करे। उस ज़माने में उसका नाम यबूस था, और यबूसी उसमें बसते थे। 5 दाऊद को देखकर यबूसियों ने उससे कहा, “आप हमारे शहर में कभी दाखिल नहीं हो पाएँगे!”

तो भी दाऊद ने सिय्यून के किले पर कब्जा कर लिया जो आजकल ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। 6 यबूस पर हमला करने से पहले दाऊद ने कहा था, “जो भी यबूसियों पर हमला करने में राहनुमाई करे वह फौज का कर्मांडर बनेगा।” तब योआब बिन ज़रूयाह ने पहले शहर पर चढ़ाई की। चुन्चि उसे कर्मांडर मुकर्र किया गया।



7 यरूशलम पर फतह पाने के बाद दाऊद किले में रहने लगा। उसने उसे 'दाऊद का शहर' करार दिया<sup>8</sup> और उसके इर्दगिर्द शहर को बढ़ाने लगा। दाऊद का यह तामीरी काम इर्दगिर्द के चबूतरों से शुरू हुआ और चारों तरफ फैलता गया जबकि योआब ने शहर का बाकी हिस्सा बहाल कर दिया।<sup>9</sup> यों दाऊद जोर पकड़ता गया, क्योंकि रब्बुल-अफवाज उसके साथ था।

### दाऊद के मशहर फौजी

10 दर्जे-जैल दाऊद के सूमाओं की फहरिस्त है। पूरे इसराईल के साथ उन्होंने मजबूती से उस की बादशाही की हिमायत करके दाऊद को रब के फरमान के मुताबिक अपना बादशाह बना दिया।

11 जो तीन अफसर योआब के भाई अबीशै के ऐन बाद आते थे उनमें यरूबियाम हकमूनी पहले नंबर पर आता था। एक बार उसने अपने नेजे से 300 आदमियों को मार दिया।<sup>12</sup> इन तीन अफसरों में से दूसरी जगह पर इलियजर बिन दोदो बिन अरूही आता था।<sup>13</sup> यह फस-दम्मी में दाऊद के साथ था जब फिलिस्ती वहाँ लड़ने के लिए जमा हो गए थे। मैदान-जंग में जौ का खेत था, और लडते लडते इसराईली फिलिस्तियों के सामने भागने लगे।<sup>14</sup> लेकिन इलियजर दाऊद के साथ खेत के बीच में फिलिस्तियों का मुकाबला करता रहा। फिलिस्तियों को मारते मारते उन्होंने खेत का दिफा करके रब की मदद से बड़ी फतह पाई।

15-16 एक और जंग के दौरान दाऊद अदुल्लाम के गार के पहाड़ी किले में था जबकि फिलिस्ती फौज ने वादी-ए-रफाईम में अपनी लशकरगाह लगाई थी। उनके दस्तों ने बैत-लहम पर भी कब्जा कर लिया था। दाऊद के तीस आला अफसरों में से तीन उससे मिलने आए।<sup>17</sup> दाऊद को शर्दीद प्यास लगी, और वह कहने लगा, "कौन मेरे लिए बैत-लहम के दरवाजे पर के हौज से कुछ पानी लाएगा?"

18 यह सुनकर तीनों अफसर फिलिस्तियों की लशकरगाह पर हमला करके उसमें घुस गए और लडते लडते बैत-लहम के हौज तक पहुँच गए। उससे कुछ पानी भरकर वह उसे दाऊद के पास ले आए। लेकिन उसने पीने से इनकार कर दिया बल्कि उसे कूरबानी के तौर पर उंडेलकर रब को पेश किया<sup>19</sup> और बोला, "अल्लाह न करे कि मैं यह पानी पिऊँ। अगर ऐसा करता तो उन आदमियों का खून पीता जो अपनी जान पर खेलकर पानी लाए हैं।" इसलिए वह उसे पीना नहीं चाहता था। यह इन तीन सूमाओं के जबरदस्त कामों की एक मिसाल है।

20-21 योआब का भाई अबीशै मजकूरा तीन सूमाओं पर मुकर्रर था। एक दफा उसने अपने नेजे से 300 आदमियों को मार डाला। तीनों की निसबत उस की ज्यादा इज्जत की जाती थी, लेकिन वह खुद इनमें गिना नहीं जाता था।

22 बिनायाह बिन यहोयदा भी जबरदस्त फौजी था। वह कबजियेल का रहनेवाला था, और उसने बहुत दफा अपनी मरदानगी दिखाई। मोआब के दो बड़े सूमा उसके हाथों हलाक हुए। एक बार जब बहुत बर्फ पड़ गई तो उसने एक हौज में उतरकर एक शेरबबर को मार डाला जो उसमें गिर गया था।<sup>23</sup> एक और मौके पर उसका वास्ता एक मिसरी से पड़ा जिसका कद साढे सात फुट था। मिसरी के हाथ में खट्टी के शहतीर जैसा बड़ा नेजा था जबकि उसके अपने पास सिर्फ लाठी थी। लेकिन बिनायाह ने उस पर हमला करके उसके हाथ से नेजा छीन लिया और उसे उसके अपने हथियार से मार डाला।<sup>24</sup> ऐसी बहादुरी दिखाने की बिना पर बिनायाह बिन यहोयदा मजकूरा तीन आदमियों के बराबर मशहर हुआ।<sup>25</sup> तीस अफसरों के दीगर मर्दों की निसबत उस की ज्यादा इज्जत की जाती थी, लेकिन वह मजकूरा तीन आदमियों में गिना नहीं जाता था। दाऊद ने उसे अपने मुहाफिजों पर मुकर्रर किया।

26 जैल के आदमी बादशाह के सूमाओं में शामिल थे।

योआब का भाई असाहेल, बैत-लहम का इल्हान बिन दोदो,<sup>27</sup> सम्मोत हरोरी, खलिस फलूनी,<sup>28</sup> तकुअ का ईरा बिन अक्कीस, अनतोत का अबियजर,<sup>29</sup> सिबन्की हसाती, ईली अरूही,<sup>30</sup> महर्री नरूफाती, हल्लिद बिन बाना नरूफाती,<sup>31</sup> बिनयमीनी शहर जिबिया का इती बिन रीबी, बिनायाह फिरआतोनी<sup>32</sup> नहले-जास का हरी, अबियेल अरबाती,<sup>33</sup> अजमावत बरहूमी, इलियहबा सालबनी,<sup>34</sup> हशीम जिज्नी के बेटे, युनतन बिन शजी हरारी,<sup>35</sup> अखियाम बिन सकार हरारी, इलीफल बिन ऊर,<sup>36</sup> हिफर मकीराती, अखियाह फलूनी,<sup>37</sup> हसरो करमिली, नारी बिन अजबी,<sup>38</sup> नातन का भाई योएल, मिबखार बिन हाजिरी,<sup>39</sup> सिलक अम्मोनी, योआब बिन जरूयाह का सिलाहबरदार नहरी बैरोती,<sup>40</sup> ईरा इतरी, यरीब इतरी,<sup>41</sup> ऊरियाह हित्ती, जबद बिन अखली,<sup>42</sup> अदीना बिन सीजा (रूबिन के कबीले का यह सरदार 30 फौजियों पर मुकर्रर था),<sup>43</sup> हनान बिन माका, युसफत मितनी,<sup>44</sup> उज्जियाह अस्तराती, खताम अरोईरी के बेटे समा और यइयेल,<sup>45</sup> यदियएल बिन सिमरी, उसका भाई यरूबा तीसी,<sup>46</sup> इलियेल महावी, इलनाम के बेटे यरीबी और यूसावियाह, यितमा मोआबी,<sup>47</sup> इलियेल, ओबेद और यासियेल मजोबाई।

## 12

साऊल के दौरे-हुकूमत में दाऊद के पैरोकार

1 जैल के आदमी सिकलाज में दाऊद के साथ मिल गए, उस वक्त जब वह साऊल बिन कीस से छुपा रहता था। यह उन फौजियों में से थे जो जंग में दाऊद के साथ मिलकर लड़ते थे<sup>2</sup> और बेहतरीन तीरअंदाज़ थे, क्योंकि यह न सिर्फ़ दहने बल्कि बाएँ हाथ से भी महारत से तीर और फ़लाखन का पत्थर चला सकते थे। इन आदमियों में से दर्जे-जैल बिनयमीन के कबीले और साऊल के खानदान से थे।

3 उनका राहनुमा अखियज़र, फिर युआस (दोनों समाआह जिबियाती के बेटे थे), यजियेल और फ़लत (दोनों अजमावत के बेटे थे), बराका, याह अनतोती,<sup>4</sup> इसमायाह जिबऊनी जो दाऊद के 30 अफ़सरों का एक सूरमा और लीडर था, यरमियाह, यहजियेल, यहनान, यज़बद जदीराती,<sup>5</sup> इलिऊजी, यरीमोत, बालियाह, समरियाह और सफ़तियाह ख़स्फ़ी।

6 कोरह के खानदान में से इलकाना, यिस्सियाह, अज़रेल, युअज़र और यसबियाम दाऊद के साथ थे।

7 इनके अलावा यरोहाम जदरी के बेटे यूईला और जबदियाह भी थे।

8 जद के कबीले से भी कुछ बहादुर और तजरबाकार फौजी साऊल से अलग होकर दाऊद के साथ मिल गए जब वह रेगिस्तान के किले में था। यह मर्द महारत से ढाल और नेज़ा इस्तेमाल कर सकते थे। उनके चेहरे शेरबबर के चेहरों की मानिंद थे, और वह पहाड़ी इलाके में गज़ालों की तरह तेज़ चल सकते थे।

9 उनका लीडर अज़र जैल के दस आदमियों पर मुक़रर था : अबदियाह, इलियाह,<sup>10</sup> मिस्मन्ना, यरमियाह,<sup>11</sup> अन्ती, इलियेल,<sup>12</sup> यूहनान, इल्ज़बद,<sup>13</sup> यरमियाह और मकबन्नी।

14 जद के यह मर्द सब आला फौजी अफ़सर बन गए। उनमें से सबसे कमज़ोर आदमी सौ आम फौजियों का मुकाबला कर सकता था जबकि सबसे ताकतवर आदमी हज़ार का मुकाबला कर सकता था।<sup>15</sup> इन्हीं ने बहार के मौसम में दरियाए-यरदन को पार किया, जब वह किनारों से बाहर आ गया था, और मशरिफ़ और मगरिब की वादियों को बंद कर रखा।

16 बिनयमीन और यहदाह के कबीलों के कुछ मर्द दाऊद के पहाड़ी किले में आए।<sup>17</sup> दाऊद बाहर निकलकर उनसे मिलने गया और पूछा, “क्या आप सलामती से मेरे पास आए हैं? क्या आप मेरी मदद करना चाहते हैं? अगर ऐसा है तो मैं आपका अच्छा साथी रहूँगा। लेकिन अगर आप मुझे दुश्मनों के हवाले करने के लिए आए हैं हालाँकि मुझे कोई भी ज़ुल्म नहीं हुआ है तो हमारे बापदादा का ख़ुदा इसे देखकर आपको सज़ा दे।”

18 फिर स्हुल-कुदूस् 30 अफ़सरों के राहनुमा अमासी पर नाज़िल हुआ, और उसने कहा, “ऐ दाऊद, हम तेरे ही लोग हैं। ऐ यस्सी के बेटे, हम तेरे साथ हैं। सलामती, सलामती तुझे हासिल हो, और सलामती उन्हें हासिल हो जो तेरी मदद करते हैं। क्योंकि तेरा ख़ुदा तेरी मदद करेगा।” यह सुनकर दाऊद ने उन्हें कबूल करके अपने छापामार दस्तों पर मुक़रर किया।

19 मनस्सी के कबीले के कुछ मर्द भी साऊल से अलग होकर दाऊद के पास आए। उस वक्त वह फिलिस्तिनों के साथ मिलकर साऊल से लड़ने जा रहा था, लेकिन बाद में उसे मैदाने-जंग में आने की इजाज़त न मिली। क्योंकि फिलिस्ती सरदारों ने आपस में मशवरा करने के बाद उसे यह कहकर वापस भेज दिया कि खतरा है कि यह हमें मैदाने-जंग में छोड़कर अपने पुराने मालिक साऊल से दुबारा मिल जाए। फिर हम तबाह हो जाएँगे।

20 जब दाऊद सिकलाज वापस जा रहा था तो मनस्सी के कबीले के दर्जे-जैल अफ़सर साऊल से अलग होकर उसके साथ हो लिए : अदना, यज़बद, यदियएल, मीकाएल, यज़बद, इलीह और जिल्लती। मनस्सी में हर एक को हज़ार हज़ार फौजियों पर मुक़रर किया गया था।<sup>21</sup> उन्होंने लूटनेवाले अमालीकी दस्तों को पकड़ने में दाऊद की मदद की, क्योंकि वह सब दिलेर और काबिल फौजी थे। सब उस की फौज में अफ़सर बन गए।

22 रोज़ बरोज़ लोग दाऊद की मदद करने के लिए आते रहे, और होते होते उस की फौज अल्लाह की फौज जैसी बड़ी हो गई।

### हबस्न में दाऊद की फौज

23 दर्जे-जैल उन तमाम फौजियों की फहरिस्त है जो हबस्न में दाऊद के पास आए ताकि उसे साऊल की जगह बादशाह बनाएँ, जिस तरह रब ने हुक्म दिया था।

24 यहदाह के कबीले के ढाल और नेजे से लैस 6,800 मर्द थे।

25 शमौन के कबीले के 7,100 तजरबाकार फौजी थे।

26 लावी के कबीले के 4,600 मर्द थे।<sup>27</sup> उनमें हास्न के खानदान का सरपरस्त यहोयदा भी शामिल था जिसके साथ 3,700 आदमी थे।<sup>28</sup> सदोक नामी एक दिलेर और जवान फौजी भी शामिल था। उसके साथ उसके अपने खानदान के 22 अफ़सर थे।

29 साऊल के कबीले बिनयमीन के भी 3,000 मर्द थे, लेकिन इस कबीले के अकसर फौजी अब तक साऊल के खानदान के साथ लिपटे रहे।

30 इफ़राइम के कबीले के 20,800 फौजी थे। सब अपने खानदानों में असरो-रसूख रखनेवाले थे।

31 मनस्सी के आधे कबीले के 18,000 मर्द थे। उन्हें दाऊद को बादशाह बनाने के लिए चुन लिया गया था।

32 इशकार के कबीले के 200 अफसर अपने दस्तों के साथ थे। यह लोग वक्त की जरूरत समझकर जानते थे कि इसराइल को क्या करना है।

33 जबलून के कबीले के 50,000 तजरबाकार फौजी थे। वह हर हथियार से लैस और पूरी वफादारी से दाऊद के लिए लड़ने के लिए तैयार थे।

34 नफताली के कबीले के 1,000 अफसर थे। उनके तहत ढाल और नेजे से मुसल्लह 37,000 आदमी थे।

35 दान के कबीले के 28,600 मर्द थे जो सब लड़ने के लिए मुस्तैद थे।

36 आशर के कबीले के 40,000 मर्द थे जो सब लड़ने के लिए तैयार थे।

37 दरियाए-यरदन के मशरिक में आबाद कबीलों रूबिन, जद और मनस्सी के आधे हिस्से के 1,20,000 मर्द थे। हर एक हर किस्म के हथियार से लैस था।

38 सब तरतीब से हबस्न आए ताकि पूरे अज़म के साथ दाऊद को पूरे इसराइल का बादशाह बनाएँ। बाकी तमाम इसराइली भी मुतफिक थे कि दाऊद हमारा बादशाह बन जाए।<sup>39</sup> यह फौजी तीन दिन तक दाऊद के पास रहे जिस दौरान उनके कबायली भाई उन्हें खाने-पीने की चीज़ें मुहैया करते रहे।<sup>40</sup> करीब के रहनेवालों ने भी इसमें उनकी मदद की। इशकार, जबलून और नफताली तक के लोग अपने गधों, ऊँटों, खच्चरों और बैलों पर खाने की चीज़ें लादकर वहाँ पहुँचे। मैदा, अंजीर और किशमिश की टिकियाँ, मै, तेल, बैल और भेड़-बकरियाँ बडी मिकदार में हबस्न लाई गई, क्योंकि तमाम इसराइली खुशी मना रहे थे।

## 13

दाऊद अहद का संदूक यस्शलम में लाना चाहता है

1 दाऊद ने तमाम अफसरों से मशवरा किया। उनमें हजार हजार और सौ सौ फौजियों पर मुकर्रर अफसर शामिल थे।  
2 फिर उसने इसराइल की पूरी जमात से कहा, “अगर आपको मंज़ूर हो और रब हमारे खुदा की मर्जी हो तो आएँ हम पूरे मुल्क के इसराइली भाइयों को दावत दें कि आकर हमारे साथ जमा हो जाएँ। वह इमाम और लावी भी शरीक हों जो अपने अपने शहरों और चरागाहों में बसते हैं।<sup>3</sup> फिर हम अपने खुदा के अहद का संदूक दुबारा अपने पास वापस लाएँ, क्योंकि साऊल के दौरे-हुकूमत में हम उस की फिकर नहीं करते थे।”

4 पूरी जमात मुतफिक हुई, क्योंकि यह मनसूबा सबको दुस्त लगा।<sup>5</sup> चुनाँचे दाऊद ने पूरे इसराइल को जुनूब में मिसर के सैहर से लेकर शिमाल में लबो-हमात तक बुलाया ताकि सब मिलकर अल्लाह के अहद का संदूक किरियत-यारीम से यस्शलम ले जाएँ।<sup>6</sup> फिर वह उनके साथ यहदाह के बाला यानी किरियत-यारीम गया ताकि रब खुदा का संदूक उठाकर यस्शलम ले जाएँ, वही संदूक जिस पर रब के नाम का ठप्पा लगा है और जहाँ वह संदूक के ऊपर कस्बी फरिशतों के दरमियान तखनशीन है।<sup>7</sup> किरियत-यारीम पहुँचकर लोगों ने अल्लाह के संदूक को अबीनदाब के घर से निकालकर एक नई बैलगाड़ी पर रख दिया, और उज्जा और अखियो उसे यस्शलम की तरफ ले जाने लगे।<sup>8</sup> दाऊद और तमाम इसराइली गाड़ी के पीछे चल पड़े। सब अल्लाह के हुज़ूर पूरे ज़ोर से खुशी मनाने लगे। ज़नीपर की लकड़ी के मुखलिफ साज़ भी बजाए जा रहे थे। फिज़ा सितारों, सरोदों, दर्फों, झोंझों और तुरमों की आवाज़ों से गूँज उठी।

9 वह गंदुम गाने की एक जगह पर पहुँच गए जिसके मालिक का नाम कैदून था। वहाँ बैल अचानक बेकाब हो गए। उज्जा ने जल्दी से अहद का संदूक पकड़ लिया ताकि वह गिर न जाए।<sup>10</sup> उसी लम्हे रब का गज़ब उस पर नाज़िल हुआ, क्योंकि उसने अहद के संदूक को छूने की ज़ुरत की थी। वही अल्लाह के हुज़ूर उज्जा गिरकर हलाक हुआ।<sup>11</sup> दाऊद को बड़ा रंज हुआ कि रब का गज़ब उज्जा पर यों टूट पड़ा है। उस वक्त से उस जगह का नाम परज़-उज्जा यानी ‘उज्जा पर टूट पड़ना’ है।

12 उस दिन दाऊद को अल्लाह से खौफ आया। उसने सोचा, “मैं किस तरह अल्लाह का संदूक अपने पास पहुँचा सकूँगा?”<sup>13</sup> चुनाँचे उसने फैसला किया कि हम अहद का संदूक यस्शलम नहीं ले जाएंगे बल्कि उसे ओबेद-अदोम जाती के घर में महफूज़ रखेंगे।<sup>14</sup> वहाँ वह तीन माह तक पड़ा रहा। इन तीन महीनों के दौरान रब ने ओबेद-अदोम के घराने और उस की पूरी मिलकियत को बरकत दी।

## 14

दाऊद की तरक्की

1 एक दिन सूर के बादशाह हीराम ने दाऊद के पास वफ़द भेजा। राज और बहई भी साथ थे। उनके पास देवदार की लकड़ी थी ताकि दाऊद के लिए महल बनाएँ। 2 यों दाऊद ने जान लिया कि रब ने मुझे इसराईल का बादशाह बनाकर मेरी बादशाही अपनी क्रीम इसराईल की खातिर बहुत सरफ़राज़ कर दी है।

3 यरूशलम में जा बसने के बाद दाऊद ने मज़ीद शादियों की। नतीजे में यरूशलम में उसके कई बेटे-बेटियाँ पैदा हुए। 4 जो बेटे वहाँ पैदा हुए वह यह थे : सम्मुअ, सोबाब, नातन, सुलेमान, 5 इबहार, इलीसुअ, इल्फलत, 6 नौजा, नफ़ज, यफ़ीअ, 7 इलीसमा, बाल-यदा और इलीफलत।

### फिलिस्तियों पर फ़तह

8 जब फिलिस्तियों को इतला मिली कि दाऊद को मसह करके इसराईल का बादशाह बनाया गया है तो उन्होंने अपने फ़ौजियों को इसराईल में भेज दिया ताकि उसे पकड़ लें। जब दाऊद को पता चल गया तो वह उनका मुकाबला करने के लिए गया। 9 जब फिलिस्ती इसराईल में पहुँचकर वादीए-रफ़ाईम में फैल गए 10 तो दाऊद ने रब से दरियाफ़्त किया, “क्या मैं फिलिस्तियों पर हमला करूँ? क्या तू मुझे उन पर फ़तह बख़्शेगा?” रब ने जवाब दिया, “हाँ, उन पर हमला कर! मैं उन्हें तेरे क़ब्ज़े में कर दूँगा।” 11 चुनौचे दाऊद अपने फ़ौजियों को लेकर बाल-पराज़ीम गया। वहाँ उसने फिलिस्तियों को शिकस्त दी। बाद में उसने गवाही दी, “जितने ज़ोर से बंद के टूट जाने पर पानी उससे फूट निकलता है उतने ज़ोर से आज अल्लाह मेरे वसीले से दुश्मन की सफ़ों में से फूट निकला है।” चुनौचे उस जगह का नाम बाल-पराज़ीम यानी ‘फूट निकलने का मालिक’ पड़ गया। 12 फिलिस्ती अपने देवताओं को छोड़कर भाग गए, और दाऊद ने उन्हें जला देने का हुक़्म दिया।

13 एक बार फिर फिलिस्ती आकर वादीए-रफ़ाईम में फैल गए। 14 इस दफा जब दाऊद ने अल्लाह से दरियाफ़्त किया तो उसने जवाब दिया, “इस मरतबा उनका सामना मत करना बल्कि उनके पीछे जाकर बका के दरख़्तों के सामने उन पर हमला कर। 15 जब उन दरख़्तों की चोटियों से कदमों की चाप सुनाई दे तो खबरदार! यह इसका इशारा होगा कि अल्लाह खुद तेरे आगे आगे चलकर फिलिस्तियों को मारने के लिए निकल आया है।” 16 दाऊद ने ऐसा ही किया और नतीजे में फिलिस्तियों को शिकस्त देकर ज़िबऊन से लेकर जज़र तक उनका ताक़्क़ुब किया।

17 दाऊद की शोहरत तमाम ममालिक में फैल गई। रब ने तमाम कौमों के दिलों में दाऊद का ख़ौफ़ डाल दिया।

## 15

### यरूशलम में अहद के संदूक के लिए तैयारियाँ

1 यरूशलम के उस हिस्से में जिसका नाम ‘दाऊद का शहर’ पड़ गया था दाऊद ने अपने लिए चंद इमारतें बनवाईं। उसने अल्लाह के संदूक के लिए भी एक जगह तैयार करके वहाँ खेमा लगा दिया। 2 फिर उसने हुक़्म दिया, “सिवाए लावियों के किसी को भी अल्लाह का संदूक उठाने की इजाज़त नहीं। क्योंकि रब ने इन्हीं को रब का संदूक उठाने और हमेशा के लिए उस की खिदमत करने के लिए चुन लिया है।”

3 इसके बाद दाऊद ने तमाम इसराईल को यरूशलम बुलाया ताकि वह मिलकर रब का संदूक उस जगह ले जाएँ जो उसने उसके लिए तैयार कर रखी थी। 4 बादशाह ने हारून और बाकी लावियों की औलाद को भी बुलाया। 5 दर्जे-ज़ैल उन लावी सरपरस्तों की फहरिस्त है जो अपने रिश्तेदारों को लेकर आए।

किहात के खानदान से ऊरियेल 120 मर्दों समेत,

6 मिरारी के खानदान से असायाह 220 मर्दों समेत,

7 जैरसोम के खानदान से योएल 130 मर्दों समेत,

8 इलीसफ़न के खानदान से समायाह 200 मर्दों समेत,

9 हबरून के खानदान से इलियेल 80 मर्दों समेत,

10 उज़्जियेल के खानदान से अम्मोनदाब 112 मर्दों समेत।

11 दाऊद ने दोनों इमामों सदोक और अबियातर को मज़क़ूरा छः लावी सरपरस्तों समेत अपने पास बुलाकर 12 उनसे कहा, “आप लावियों के सरबराह हैं। लाज़िम है कि आप अपने कबायली भाइयों के साथ अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करके रब इसराईल के खुदा के संदूक को उस जगह ले जाएँ जो मैंने उसके लिए तैयार कर रखी है। 13 पहली मरतबा जब हमने उसे यहाँ लाने की कोशिश की तो यह आप लावियों के ज़रीए न हुआ, इसलिए रब हमारे खुदा का क्रहर हम पर टूट पड़ा। उस वक़्त हमने उससे दरियाफ़्त नहीं किया था कि उसे उठाकर ले जाने का क्या मुनासिब तरीका है।” 14 तब इमामों और लावियों ने अपने आपको मख़सूसो-मुक़द्दस करके रब इसराईल के खुदा के संदूक को यरूशलम लाने के लिए तैयार किया।

15 फिर लावी अल्लाह के संदूक को उठाने की लकड़ियों से अपने कंधों पर यों ही रखकर चल पड़े जिस तरह मूसा ने रब के कलाम के मुताबिक फरमाया था।

16 दाऊद ने लावी सरबराहों को यह हुक्म भी दिया, “अपने कबीले में से ऐसे आदमियों को चुन लें जो साज़, सितार, सरोद और झोंझ बजाते हुए खुशी के गीत गाएँ।” 17 इस जिम्मादारी के लिए लावियों ने जैल के आदमियों को मुकर्रर किया : हैमान बिन योएल, उसका भाई आसफ बिन बरकियाह और मिरारी के खानदान का ऐतान बिन कौसायाह। 18 दूसरे मकाम पर उनके यह भाई आए : जकरियाह, यज़ियेल, समीरामोत, यहियेल, उन्नी, इलियाब, बिनायाह, मासियाह, मत्तितियाह, इलीफलेह, मिक्नियाह, ओबेद-अदोम और यइयेल। यह दरबान थे। 19 हैमान, आसफ और ऐतान गुलूकार थे, और उन्हें पीतल के झोंझ बजाने की जिम्मादारी दी गई। 20 जकरियाह, अजियेल, समीरामोत, यहियेल, उन्नी, इलियाब, मासियाह और बिनायाह को अलामूत के तर्ज़ पर सितार बजाना था। 21 मत्तितियाह, इलीफलेह, मिक्नियाह, ओबेद-अदोम, यइयेल और अजजियाह को शमीनीत के तर्ज़ पर सरोद बजाने के लिए चुना गया।

22 कननियाह ने लावियों की कवाइर की राहनुमाई की, क्योंकि वह इसमें माहिर था।

23-24 बरकियाह, इलकाना, ओबेद-अदोम और यहियाह अहद के संदूक के दरबान थे। सबनियाह, यूसफ़त, नतनियेल, अमासी, जकरियाह, बिनायाह और इलियज़र को तुरम बजाकर अल्लाह के संदूक के आगे आगे चलने की जिम्मादारी दी गई। सातों इमाम थे।

**दाऊद अहद का संदूक यरूशलम में ले आता है**

25 फिर दाऊद, इसराईल के बुजुर्ग और हज़ार हज़ार फ़ौजियों पर मुकर्रर अफसर खुशी मनाते हुए निकलकर ओबेद-अदोम के घर गए ताकि रब के अहद का संदूक वहाँ से लेकर यरूशलम पहुँचाएँ। 26 जब ज़ाहिर हुआ कि अल्लाह अहद के संदूक को उठानेवाले लावियों की मदद कर रहा है तो सात जवान सौँडों और सात मेंढों को कुरबान किया गया। 27 दाऊद बारीक कतान का लिबास पहने हुए था, और इस तरह अहद का संदूक उठानेवाले लावी, गुलूकार और कवाइर का लीडर कननियाह भी। इसके अलावा दाऊद कतान का बालापोश पहने हुए था। 28 तमाम इसराईली खुशी के नारे लगा लगाकर, नरसिंगे और तुरम फूँक फूँककर और झोंझ, सितार और सरोद बजा बजाकर रब के अहद का संदूक यरूशलम लाए।

29 रब का अहद का संदूक दाऊद के शहर में दाखिल हुआ तो दाऊद की बीवी मीकल बित साऊल खिड़की में से जुलूस को देख रही थी। जब बादशाह कूदता और नाचता हुआ नज़र आया तो मीकल ने उसे हकीर जाना।

## 16

1 अल्लाह का संदूक उस तंबू के दरमियान में रखा गया जो दाऊद ने उसके लिए लगवाया था। फिर उन्होंने अल्लाह के हज़र भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश कीं। 2 इसके बाद दाऊद ने कौम को रब के नाम से बरकत देकर 3 हर इसराईली मर्द और औरत को एक रोटी, खजूर की एक टिक्की और किशमिश की एक टिक्की दे दी। 4 उसने कुछ लावियों को रब के संदूक के सामने खिदमत करने की जिम्मादारी दी। उन्हें रब इसराईल के खुदा की तमजीद और हम्दो-सना करनी थी। 5 उनका सरबराह आसफ झोंझ बजाता था। उसका नायब जकरियाह था। फिर यइयेल, समीरामोत, यहियेल, मत्तितियाह, इलियाब, बिनायाह, ओबेद-अदोम और यइयेल थे जो सितार और सरोद बजाते थे। 6 बिनायाह और यहजियेल इमामों की जिम्मादारी अल्लाह के अहद के संदूक के सामने तुरम बजाना थी।

**शुक्र का गीत**

7 उस दिन दाऊद ने पहली दफा आसफ और उसके साथी लावियों के हवाले जैल का गीत करके उन्हें रब की सताइश करने की जिम्मादारी दी।

8 “रब का शुक्र करो और उसका नाम पुकारो! अक़वाम में उसके कामों का एलान करो।

9 साज़ बजाकर उस की मदहसराई करो। उसके तमाम अजायब के बारे में लोगों को बताओ।

10 उसके मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के तालिब दिल से खुश हों।

11 रब और उस की कुदरत की दरियाफ़्त करो, हर वक़्त उसके चेहरे के तालिब रहो।

12 जो मोजिज़े उसने किए उन्हें याद करो। उसके इलाही निशान और उसके मुँह के फ़ैसले दोहराते रहो।

13 तुम जो उसके खादिम इसराईल की औलाद और याक़ूब के फ़रज़द हो, जो उसके बरगुज़ीदा लोग हो, तुम्हें सब कुछ याद रहे!

- 14 वही रब हमारा खुदा है, वही पूरी दुनिया की अदालत करता है।  
 15 वह हमेशा अपने अहद का खयाल रखता है, उस कलाम का जो उसने हज़ार पुस्तों के लिए फरमाया था।  
 16 यह वह अहद है जो उसने इब्राहीम से बोँधा, वह वादा जो उसने कसम खाकर इसहाक से किया था।  
 17 उसने उसे याकूब के लिए कायम किया ताकि वह उसके मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारे, उसने तसदीक की कि यह मेरा इसराईल से अबदी अहद है।  
 18 साथ साथ उसने फरमाया, “मैं तुझे मुल्के-कनान दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।”  
 19 उस वक्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।
- 20 अब तक वह मुख्तलिफ़ कौमों और सलतनतों में घुमते-फिरते थे।  
 21 लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म करने न दिया, और उनकी खातिर उसने बादशाहों को डौंटा,  
 22 “मेरे महस किए हुए खादिमों को मत छेड़ना, मेरे नबियों को नुक़सान मत पहुँचाना।”
- 23 ऐ पूरी दुनिया, रब की तमज़ीद में गीत गा! रोज़ बरोज़ उस की नजात की खुशख़बरी सुना।  
 24 कौमों में उसका जलाल और तमाम उम्मतों में उसके अजायब बयान करो।  
 25 क्योंकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत लायक है। वह तमाम माबूदों से महीब है।  
 26 क्योंकि दीगर कौमों के तमाम माबूद बुत ही हैं जबकि रब ने आसमान को बनाया।  
 27 उसके हज़ूर शानो-शौकत, उस की सूक़नतगाह में कुदरत और जलाल है।  
 28 ऐ कौमों के क़बीलो, रब की तमज़ीद करो, रब के जलाल और कुदरत की सताइश करो।  
 29 रब के नाम को जलाल दो। कुरबानी लेकर उसके हज़ूर आओ। मुक़द्दस लिबास से आरास्ता होकर रब को सिजदा करो।  
 30 पूरी दुनिया उसके सामने लरज़ उठे। यकीनन दुनिया मज़बूती से कायम है और नहीं डगमगाएगी।  
 31 आसमान शादमान हो, और ज़मीन जशन मनाए। कौमों में कहा जाए कि रब बादशाह है।  
 32 समुंद्र और जो कुछ उसमें है खुशी से गरज उठे, भैदान और जो कुछ उसमें है बाग़ बाग़ हो।  
 33 फिर जंगल के दरख़्त रब के सामने शादिना बजाएंगे, क्योंकि वह आ रहा है, वह ज़मीन की अदालत करने आ रहा है।
- 34 रब का शुक़ करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।  
 35 उससे इलतमास करो, “ऐ हमारी नजात के खुदा, हमें बचा! हमें जमा करके दीगर कौमों के हाथ से छुड़ा। तब ही हम तेरे मुक़द्दस नाम की सताइश करेंगे और तेरे काबिले-तारीफ़ कामों पर फ़ख़र करेंगे।”  
 36 अज़ल से अबद तक रब, इसराईल के खुदा की हम्द हो!”  
 तब पूरी कौम ने “आमीन” और “रब की हम्द हो” कहा।

### लावियों की ज़िम्मादारियाँ

- 37 दाऊद ने आसफ़ और उसके साथी लावियों को रब के अहद के संदूक के सामने छोड़कर कहा, “आइंदा यहाँ बाकायदगी से रोज़ाना की ज़रूरी खिदमत करते जाँएँ।”  
 38 इस गुरोह में ओबेद-अदोम और मज़ीद 68 लावी शामिल थे। ओबेद-अदोम बिन यदूतून और हसा दरबान बन गए।  
 39 लेकिन सदोक़ इमाम और उसके साथी इमामों को दाऊद ने रब की उस सूक़नतगाह के पास छोड़ दिया जो जिबऊन की पहाड़ी पर थी। 40 क्योंकि लाज़िम था कि वह वहाँ हर सुबह और शाम को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करें और बाकी तमाम हिदायात पर अमल करें जो रब की तरफ़ से इसराईल के लिए शरीअत में बयान की गई हैं। 41 दाऊद ने हैमान, यदूतून और मज़ीद कुछ चीदा लावियों को भी जिबऊन में उनके पास छोड़ दिया। वहाँ उनकी खास ज़िम्मादारी रब की हम्दो-सना करना थी, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है। 42 उनके पास तुरम, झौँझ और बाकी ऐसे साज़ थे जो अल्लाह की तारीफ़ में गाए जानेवाले गीतों के साथ बजाए जाते थे। यदूतून के बेटों को दरबान बनाया गया।  
 43 ज़शन के बाद सब लोग अपने अपने घर चले गए। दाऊद भी अपने घर लौटा ताकि अपने ख़ानदान को बरक़त देकर सलाम करे।

## 17

रब दाऊद के लिए अबदी बादशाही का वादा करता है

1 दाऊद बादशाह सलामती से अपने महल में रहने लगा। एक दिन उसने नातन नबी से बात की, “देखें, मैं यहाँ देवदार के महल में रहता हूँ जबकि रब के अहद का संदूक अब तक तंबू में पड़ा है। यह मुनासिब नहीं!” 2 नातन ने बादशाह की हौसलाअफजाई की, “जो कुछ भी आप करना चाहते हैं वह करें। अल्लाह आपके साथ है।”

3 लेकिन उसी रात अल्लाह नातन से हमकलाम हुआ, 4 “मेरे खादिम दाऊद के पास जाकर उसे बता दे कि रब फरमाता है, ‘तू मेरी रिहाइश के लिए मकान तामीर नहीं करेगा। 5 आज तक मैं किसी मकान में नहीं रहा। जब से मैं इसराइलियों को मिसर से निकाल लाया उस वक़्त से मैं ख़ेमे में रहकर जगह बजगह फिरता रहा हूँ। 6 जिस दौरान मैं तमाम इसराइलियों के साथ इश्र उधर फिरता रहा क्या मैंने इसराइल के उन राहनुमाओं से कभी इस नाते से शिकायत की जिन्हें मैंने अपनी कौम की गल्लाबानी करने का हुक्म दिया था? क्या मैंने उनमें से किसी से कहा कि तुमने मेरे लिए देवदार का घर क्यों नहीं बनाया?’

7 चुनौचे मेरे खादिम दाऊद को बता दे, ‘रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि मैं ही ने तुझे चरागाह में भेड़ों की गल्लाबानी करने से फ़ारिग करके अपनी कौम इसराइल का बादशाह बना दिया है। 8 जहाँ भी तूने कदम रखा वहाँ मैं तेरे साथ रहा हूँ। तेरे देखते देखते मैंने तेरे तमाम दुश्मनों को हलाक कर दिया है। अब मैं तेरा नाम सरफ़राज कर दूँगा, वह दुनिया के सबसे अज़ीम आदिमियों के नामों के बराबर ही होगा। 9 और मैं अपनी कौम इसराइल के लिए एक वतन मुहैया करूँगा, पौदे की तरह उन्हें यों लगा दूँगा कि वह जड़ पकड़कर महफूज रहेंगे और कभी बेचैन नहीं होंगे। बेदीन कौमों उन्हें उस तरह नहीं दबाएँगी जिस तरह माज़ी में किया करती थी, 10 उस वक़्त से जब मैं कौम पर काज़ी मुकर्रर करता था। मैं तेरे दुश्मनों को खाक में मिला दूँगा। आज मैं फ़रमाता हूँ कि रब ही तेरे लिए घर बनाएगा। 11 जब तू बूढ़ा होकर कूच कर जाएगा और अपने बापदादा से जा मिलेगा तो मैं तेरी जगह तेरे बेटों में से एक को तख़्त पर बिठा दूँगा। उस की बादशाही को मैं मज़बूत बना दूँगा। 12 वही मेरे लिए घर तामीर करेगा, और मैं उसका तख़्त अबद तक कायम रखूँगा। 13 मैं उसका बाप हूँगा और वह मेरा बेटा होगा। मेरी नज़रे-करम साज़ुल पर न रही, लेकिन मैं उसे तेरे बेटे से कभी नहीं हटाऊँगा। 14 मैं उसे अपने घराने और अपनी बादशाही पर हमेशा कायम रखूँगा, उसका तख़्त हमेशा मज़बूत रहेगा।”

### दाऊद की शुक़ुग़ज़ारी

15 नातन ने दाऊद के पास जाकर उसे सब कुछ सुनाया जो रब ने उसे रोया में बताया था। 16 तब दाऊद अहद के संदूक के पास गया और रब के हुज़ूर बैठकर दुआ करने लगा,

“ऐ रब खुदा, मैं कौन हूँ और मेरा खानदान क्या हैसियत रखता है कि तूने मुझे यहाँ तक पहुँचाया है? 17 और अब ऐ अल्लाह, तू मुझे और भी ज़्यादा अता करने को है, क्योंकि तूने अपने खादिम के घराने के मुस्तकबिल के बारे में भी वादा किया है। ऐ रब खुदा, तूने यों मुझ पर निगाह डाली है गोया कि मैं कोई बहुत अहम बंदा हूँ। 18-19 लेकिन मैं मज़ीद क्या कहूँ जब तूने यों अपने खादिम की इज़ज़त की है? ऐ रब, तू तो अपने खादिम को जानता है। तूने अपने खादिम की खातिर और अपनी मरज़ी के मुताबिक़ यह अज़ीम काम करके इन अज़ीम वादों की इतला दी है।

20 ऐ रब, तुझ जैसा कोई नहीं है। हमने अपने कानों से सुन लिया है कि तेरे सिवा कोई और खुदा नहीं है। 21 दुनिया में कौन-सी कौम तेरी उम्मत इसराइल की मानिंद है? तूने इसी एक कौम का फ़िघा देकर उसे गुलामी से छुड़ाया और अपनी कौम बना लिया। तूने इसराइल के वास्ते बड़े और हैबतनाक काम करके अपने नाम की शोहरत फैला दी। हमें मिसर से रिहा करके तूने कौमों को हमारे आगे से निकाल दिया। 22 ऐ रब, तू इसराइल को हमेशा के लिए अपनी कौम बनाकर उनका खुदा बन गया है।

23 चुनौचे ऐ रब, जो बात तूने अपने खादिम और उसके घराने के बारे में की है उसे अबद तक कायम रख और अपना वादा पूरा कर। 24 तब वह मज़बूत रहेगा और तेरा नाम अबद तक मशहूर रहेगा। फिर लोग तसलीम करेंगे कि इसराइल का खुदा रब्बुल-अफ़वाज वाकई इसराइल का खुदा है, और तेरे खादिम दाऊद का घराना भी अबद तक तेरे हुज़ूर कायम रहेगा। 25 ऐ मेरे खुदा, तूने अपने खादिम के कान को इस बात के लिए खोल दिया है। तू ही ने फ़रमाया, ‘मैं तेरे लिए घर तामीर करूँगा।’ सिर्फ़ इसी लिए तेरे खादिम ने यों तुझसे दुआ करने की ज़ूरत की है। 26 ऐ रब, तू ही खुदा है। तूने अपने खादिम से इन अच्छी चीज़ों का वादा किया है। 27 अब तू अपने खादिम के घराने को बरकत देने पर राज़ी हो गया है ताकि वह हमेशा तक तेरे सामने कायम रहे। क्योंकि तू ही ने उसे बरकत दी है, इसलिए वह अबद तक मुबारक रहेगा।”

## 18

### दाऊद की ज़िं

1 फिर ऐसा वक्त आया कि दाऊद ने फिलिस्तिनों को शिकस्त देकर उन्हें अपने ताबे कर लिया और जात शहर पर गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत कब्जा कर लिया।

2 उसने मोआबियों पर भी फ्रतह पाई, और वह उसके ताबे होकर उसे खराज देने लगे।

3 दाऊद ने शिमाली शाम के शहर जोबाह के बादशाह हददअजर को भी हमात के करीब हरा दिया जब हददअजर दरियाए-पुरात पर काबू पाने के लिए निकल आया था। 4 दाऊद ने 1,000 रथों, 7,000 घुड़सवारों और 20,000 प्यादा सिपाहियों को गिरफ्तार कर लिया। रथों के 100 घोड़ों को उसने अपने लिए महफूज रखा जबकि बाकियों की उसने कोंचे काट दी ताकि वह आइंदा जंग के लिए इस्तेमाल न हो सके।

5 जब दमिश्क के अरामी बाशिंदे जोबाह के बादशाह हददअजर की मदद करने आए तो दाऊद ने उनके 22,000 अफराद हलाक कर दिए। 6 फिर उसने दमिश्क के इलाके में अपनी फौजी चौकियाँ कायम कीं। अरामी उसके ताबे हो गए और उसे खराज देते रहे। जहाँ भी दाऊद गया वहाँ रब ने उसे कामयाबी बख्शी। 7 सोने की जो ढालें हददअजर के अफसरों के पास थीं उन्हें दाऊद यरूशालम ले गया। 8 हददअजर के दो शहरों कून और तिबखत से उसने कसरत का पीतल छीन लिया। बाद में सुलेमान ने यह पीतल रब के घर में 'समुंदर' नामी पीतल का हौज़, सतून और पीतल का मुख्तलिफ सामान बनाने के लिए इस्तेमाल किया।

9 जब हमात के बादशाह तुई को इतला मिली कि दाऊद ने जोबाह के बादशाह हददअजर की पूरी फौज पर फ्रतह पाई है 10 तो उसने अपने बेटे हद्राम को दाऊद के पास भेजा ताकि उसे सलाम कहे। हद्राम ने दाऊद को हददअजर पर फ्रतह के लिए मुबारकबाद दी, क्योंकि हददअजर तुई का दुश्मन था, और उनके दरमियान जंग रही थी। हद्राम ने दाऊद को सोने, चाँदी और पीतल के बहुत-से तोहफे भी पेश किए। 11 दाऊद ने यह चीजें रब के लिए मखसूस कर दीं। जहाँ भी वह दूसरी कौमों पर गालिब आया वहाँ की सोना-चाँदी उसने रब के लिए मखसूस कर दी। यों अदोम, मोआब, अम्मोन, फिलिस्तिआ और अमालीक की सोना-चाँदी रब को पेश की गई।

12 अबीशै बिन जरूयाह ने नमक की वादी में अदोमियों पर फ्रतह पाकर 18,000 अफराद हलाक कर दिए। 13 उसने अदोम के पूरे मुल्क में अपनी फौजी चौकियाँ कायम कीं, और तमाम अदोमी दाऊद के ताबे हो गए। दाऊद जहाँ भी जाता रब उस की मदद करके उसे फ्रतह बख्शाता।

### दाऊद के आला अफसर

14 जितनी देर दाऊद पूरे इसराईल पर हुकूमत करता रहा उतनी देर तक उसने ध्यान दिया कि कौम के हर एक शख्स को इनसाफ मिल जाए। 15 योआब बिन जरूयाह फौज पर मुकर्रर था। यहसफत बिन अखीलूद बादशाह का मुशररि-खास था। 16 सदोक बिन अखीलूब और अबीमलिक बिन अबियातर इमाम थे। शौशा मीरसुंशी था। 17 बिनायाह बिन यहोयदा दाऊद के खास दस्ते बनाम करेती और फलेती का कमान मुकर्रर था। दाऊद के बेटे आला अफसर थे।

## 19

### अम्मोनी दाऊद की बेइज्जती करते हैं

1 कुछ देर के बाद अम्मोनियों का बादशाह नाहस फौत हुआ, और उसका बेटा तख्तनशीन हुआ। 2 दाऊद ने सोचा, "नाहस ने हमेशा मुझ पर मेहरबानी की थी, इसलिए अब मैं भी उसके बेटे हनून पर मेहरबानी करूँगा।" उसने बाप की वफात का अफसोस करने के लिए हनून के पास वफद भेजा।

लेकिन जब दाऊद के सफरि अम्मोनियों के दरबार में पहुँच गए ताकि हनून के सामने अफसोस का इजहार करें 3 तो उस मुल्क के बुजुर्ग हनून बादशाह के कान में मनफ्री बातें भरने लगे, "क्या दाऊद ने इन आदमियों को वाकई सिर्फ इसलिए भेजा है कि वह अफसोस करके आपके बाप का एहताराम करें? हरगिज़ नहीं! यह सिर्फ बहाना है। असल में यह जासूस हैं जो हमारे मुल्क के बारे में मालूमात हासिल करना चाहते हैं ताकि उस पर कब्जा कर सकें।" 4 चुनौचे हनून ने दाऊद के आदमियों को पकड़वाकर उनकी दाढियों मुँडवा दीं और उनके लिबास को कमर से लेकर पाँव तक काटकर उतरवाया। इसी हालत में बादशाह ने उन्हें फारिग कर दिया।

5 जब दाऊद को इसकी खबर मिली तो उसने अपने कासिदों को उनसे मिलने के लिए भेजा ताकि उन्हें बताएँ, "यरीह में उस वक्त तक ठहरे रहें जब तक आपकी दाढियाँ दुबारा बहाल न हो जाएँ।" क्योंकि वह अपनी दाढियों की वजह से बड़ी शरमिंदगी महसूस कर रहे थे।

### अम्मोनियों से जंग

6 अम्मोनियों को खूब मालूम था कि इस हरकत से हम दाऊद के दुश्मन बन गए हैं। इसलिए हनून और अम्मोनियों ने मसोपुतामिया, अराम-माका और जोबाह को चाँदी के 34,000 किलोग्राम भेजकर किराए पर रथ और रथसवार मँगवाए।



7 यों उन्हें 32,000 रथ उनके सवारों समेत मिल गए। माका का बादशाह भी अपने दस्तों के साथ उनसे मुत्तहिद हुआ। मीदबा के करीब उन्होंने अपनी लशकरगाह लगाई। अम्मोनी भी अपने शहरों से निकलकर जंग के लिए जमा हुए।<sup>8</sup> जब दाऊद को इसका इल्म हुआ तो उसने योआब को पूरी फ़ौज के साथ उनका मुकाबला करने के लिए भेज दिया।<sup>9</sup> अम्मोनी अपने दास्त-हुकूमत रब्बा से निकलकर शहर के दरवाज़े के सामने ही सफ़आरा हुए जबकि दूसरे ममालिक से आए हुए बादशाह कुछ फासले पर खुले मैदान में खड़े हो गए।

10 जब योआब ने जान लिया कि सामने और पीछे दोनों तरफ से हमले का खतरा है तो उसने अपनी फ़ौज को दो हिस्सों में तकसीम कर दिया। सबसे अच्छे फ़ौजियों के साथ वह खुद शाम के सिपाहियों से लड़ने के लिए तैयार हुआ।<sup>11</sup> बाकी आदमियों को उसने अपने भाई अबीशै के हवाले कर दिया ताकि वह अम्मोनियों से लड़ें।<sup>12</sup> एक दूसरे से अलग होने से पहले योआब ने अबीशै से कहा, “अगर शाम के फ़ौजी मुझ पर गालिब आने लगे तो मेरे पास आकर मेरी मदद करना। लेकिन अगर आप अम्मोनियों पर काबू न पा सकें तो मैं आकर आपकी मदद करूँगा।<sup>13</sup> हौसला रखें! हम दिलेरी से अपनी क्रौम और अपने खुदा के शहरों के लिए लड़ें। और रब वह कुछ होने दे जो उस की नज़र में ठीक है।”

14 योआब ने अपनी फ़ौज के साथ शाम के फ़ौजियों पर हमला किया तो वह उसके सामने से भागने लगे।<sup>15</sup> यह देखकर अम्मोनी भी उसके भाई अबीशै से फ़रार होकर शहर में दाखिल हुए। तब योआब यरूशालम वापस चला गया।

### शाम के खिलाफ जंग

16 जब शाम के फ़ौजियों को शिकस्त की बेइज़्जती का एहसास हुआ तो उन्होंने दरियाए-फुरात के पार मसोपुतामिया में आबाद अरामियों के पास कासिद भेजे ताकि वह भी लड़ने में मदद करें। हददअजर का कर्माँडर सोफक उन पर मुकर्रर हुआ।<sup>17</sup> जब दाऊद को खबर मिली तो उसने इसराईल के तमाम लड़ने के काबिल आदमियों को जमा किया और दरियाए-यरदन को पार करके उनके मुकाबिल सफ़आरा हुआ। जब वह यों उनसे लड़ने के लिए तैयार हुआ तो अरामी उसका मुकाबला करने लगे।<sup>18</sup> लेकिन उन्हें दुबारा शिकस्त मानकर फ़रार होना पड़ा। इस दफ़ा उनके 7,000 रथवानों के अलावा 40,000 प्यादा सिपाही हलाक हुए। दाऊद ने फ़ौज के कर्माँडर सोफक को भी मार डाला।

19 जो अरामी पहले हददअजर के ताबे थे उन्होंने अब हार मानकर इसराईलियों से सुलह कर ली और उनके ताबे हो गए। उस वक़्त से अरामियों ने अम्मोनियों की मदद करने की फिर ज़रूरत न की।

## 20

### रब्बा शहर पर फ़तह

1 बहार का मौसम आ गया, वह वक़्त जब बादशाह जंग के लिए निकलते हैं। तब योआब ने फ़ौज लेकर अम्मोनियों का मुल्क तबाह कर दिया। लड़ते लड़ते वह रब्बा तक पहुँच गया और उसका मुहासरा करने लगा। लेकिन दाऊद खुद यरूशालम में रहा। फिर योआब ने रब्बा को भी शिकस्त देकर खाक में मिला दिया।<sup>2</sup> दाऊद ने हनून बादशाह का ताज उसके सर से उतारकर अपने सर पर रख लिया। सोने के इस ताज का वज़न 34 किलोग्राम था, और उसमें एक बेशकीमत जौहर जड़ा हुआ था। दाऊद ने शहर से बहुत-सा लूटा हुआ माल लेकर<sup>3</sup> उसके बाशिंदों को गुलाम बना लिया। उन्हें पत्थर काटने की आरियाँ, लोहे की कुदालें और कुल्हाड़ियाँ दी गईं ताकि वह मजदूरी करें। यहीं सुलूक बाकी अम्मोनी शहरों के बाशिंदों के साथ भी किया गया। जंग के इख़िताम पर दाऊद पूरी फ़ौज के साथ यरूशालम लौट आया।

### फिलिस्तियों से जंग

4 इसके बाद इसराईलियों को जज़र के करीब फिलिस्तियों से लड़ना पड़ा। वहाँ सिब्बकी हसाती ने देवकामत मर्द रफा की औलाद में से एक आदमी को मार डाला जिसका नाम सफ़फ़ी था। यों फिलिस्तियों को ताबे कर लिया गया।<sup>5</sup> उनसे एक और लड़ाई के दौरान इल्हाना बिन याईर ने जाती जालूत के भाई लहमी को मौत के घाट उतार दिया। उसका नेजा खड़्गी के शहतीर जैसा बड़ा था।<sup>6</sup> एक और दफ़ा जात के पास लड़ाई हुई। फिलिस्तियों का एक फ़ौजी जो रफा की नसल का था बहुत लंबा था। उसके हाथों और पैरों की छः छः उँगलियाँ यानी मिलकर 24 उँगलियाँ थीं।<sup>7</sup> जब वह इसराईलियों का मज़ाक उड़ाने लगा तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे यूनतन ने उसे मार डाला।<sup>8</sup> जात के यह देवकामत मर्द रफा की औलाद थे, और वह दाऊद और उसके फ़ौजियों के हाथों हलाक हुए।

## 21

### दाऊद की मर्दमशुमारी

1 एक दिन इबलीस इसराईल के खिलाफ उठ खड़ा हुआ और दाऊद को इसराईल की मर्दुमशुमारी करने पर उकसाया।  
2 दाऊद ने योआब और क्रौम के बुजुर्गों को हुकम दिया, “दान से लेकर बैर-सबा तक इसराईल के तमाम कबीलों में से गुजरते हुए जंग करने के काबिल मर्दों को गिन लें। फिर वापस आकर मुझे इतला दें ताकि मालूम हो जाए कि उनकी कुल तादाद क्या है।”

3 लेकिन योआब ने एतराज किया, “ऐ बादशाह मेरे आका, काश रब अपने फौजियों की तादाद सौ गुना बढ़ा दे। क्योंकि यह तो सब आपके खादिम हैं। लेकिन मेरे आका उनकी मर्दुमशुमारी क्यों करना चाहते हैं? इसराईल आपके सबब से क्यों कुसूरवार ठहरे?”

4 लेकिन बादशाह योआब के एतराजात के बावजूद अपनी बात पर डटा रहा। चुनौचे योआब दरबार से रवाना हुआ और पूरे इसराईल में से गुजरकर उस की मर्दुमशुमारी की। इसके बाद वह यरूशलम वापस आ गया।<sup>5</sup> वहाँ उसने दाऊद को मर्दुमशुमारी की पूरी रिपोर्ट पेश की। इसराईल में 11,00,000 तलवार चलाने के काबिल अफ़राद थे जबकि यहदाह के 4,70,000 मर्द थे।<sup>6</sup> हालाँकि योआब ने लावी और बिनयमीन के कबीलों को मर्दुमशुमारी में शामिल नहीं किया था, क्योंकि उसे यह काम करने से घिन आती थी।

7 अल्लाह को दाऊद की यह हरकत बुरी लगी, इसलिए उसने इसराईल को सजा दी।<sup>8</sup> तब दाऊद ने अल्लाह से दुआ की, “मुझसे संगीन गुनाह सरजद हुआ है। अब अपने खादिम का कुसूर मुआफ़ कर। मुझसे बड़ी हमाक़त हुई है।”<sup>9</sup> तब रब दाऊद के ग़ैबबीन जाद नबी से हमकलाम हुआ,<sup>10</sup> “दाऊद के पास जाकर उसे बता देना, ‘रब तुझे तीन सज़ाएँ पेश करता है। इनमें से एक चुन ले।’”

11 जाद दाऊद के पास गया और उसे रब का पैगाम सुना दिया। उसने सवाल किया, “आप किस सज़ा को तरजीह देते हैं? 12 सात साल के दौरान काल? या यह कि आपके दुश्मन तीन माह तक आपको तलवार से मार मारकर आपका ताक़तुक़ करते रहें? या यह कि रब की तलवार इसराईल में से गुजरे? इस सूत में रब का फ़रिश्ता मुल्क में वबा फैलाकर पूरे इसराईल का सत्यानास कर देगा।”

13 दाऊद ने जवाब दिया, “हाय मैं क्या कहूँ? मैं बहुत परेशान हूँ। लेकिन आदमियों के हाथों में पड़ जाने की निसबत बेहतर है कि हम रब ही के हाथों में पड़ जाऊँ, क्योंकि उसका रहम निहायत अज़ीम है।”

14 तब रब ने इसराईल में वबा फैलाने दी। मुल्क में 70,000 अफ़राद हलाक़ हुए।<sup>15</sup> अल्लाह ने अपने फ़रिश्ते को यरूशलम को तबाह करने के लिए भी भेजा। लेकिन फ़रिश्ता अभी इसके लिए तैयार हो रहा था कि रब ने लोगों की मुसीबत को देखकर तरस खाया और तबाह करनेवाले फ़रिश्ते को हुकम दिया, “बस कर! अब बाज़ आ।” उस वक़्त रब का फ़रिश्ता वहाँ खड़ा था जहाँ उरनान यानी अरौनाह यबूसी अपना अनाज गाहता था।<sup>16</sup> दाऊद ने अपनी निगाह उठाकर रब के फ़रिश्ते को आसमानो-ज़मीन के दरमियान खड़े देखा। अपनी तलवार मियान से खींचकर उसने उसे यरूशलम की तरफ़ बढ़ाया था कि दाऊद बुजुर्गों समेत मुँह के बल गिर गया। सब टाट का लिबास ओढ़े हुए थे।<sup>17</sup> दाऊद ने अल्लाह से इलतमास की, “मैं ही ने हुकम दिया कि लड़ने के काबिल मर्दों को गिना जाए। मैं ही ने गुनाह किया है, यह मेरा ही कुसूर है। इन भेड़ों से क्या गलती हुई है? ऐ रब मेरे खुदा, बराहे-करम इनको छोड़कर मुझे और मेरे ख़ानदान को सज़ा दे। अपनी क्रौम से वबा दूर कर!”

18 फिर रब के फ़रिश्ते ने जाद की मारिफ़त दाऊद को पैगाम भेजा, “अरौनाह यबूसी की गाहने की जगह के पास जाकर उस पर रब की कुरबानगाह बना ले।”

19 चुनौचे दाऊद चढ़कर गाहने की जगह के पास आया जिस तरह रब ने जाद की मारिफ़त फ़रमाया था।<sup>20</sup> उस वक़्त अरौनाह अपने चार बेटों के साथ गंदुम गाह रहा था। जब उसने पीछे देखा तो फ़रिश्ता नज़र आया। अरौनाह के बेटे भागकर छुप गए।<sup>21</sup> इतने में दाऊद आ पहुँचा। उसे देखते ही अरौनाह गाहने की जगह को छोड़कर उससे मिलने गया और उसके सामने औंधे मुँह झुक गया।<sup>22</sup> दाऊद ने उससे कहा, “मुझे अपनी गाहने की जगह दे दें ताकि मैं यहाँ रब के लिए कुरबानगाह तामीर करूँ। क्योंकि यह करने से वबा स्क जाएगी। मुझे इसकी पूरी कीमत बताएँ।”

23 अरौनाह ने दाऊद से कहा, “मेरे आका और बादशाह, इसे लेकर वह कुछ करें जो आपको अच्छा लगे। देखें, मैं आपको अपने बैलों को भस्म होनेवाली कुरबानियों के लिए दे देता हूँ। अनाज को गाहने का सामान कुरबानगाह पर रखकर जला दें। मेरा अनाज गल्ला की नज़र के लिए हाज़िर है। मैं खुशी से आपको यह सब कुछ दे देता हूँ।”<sup>24</sup> लेकिन दाऊद बादशाह ने इनकार किया, “नहीं, मैं ज़रूर हर चीज़ की पूरी कीमत अदा करूँगा। जो आपकी है उसे मैं लेकर रब को पेश नहीं करूँगा, न मैं ऐसी कोई भस्म होनेवाली कुरबानी चढ़ाऊँगा जो मुझे मुफ़्त में मिल जाए।”

25 चुनौचे दाऊद ने अरौनाह को उस जगह के लिए सोने के 600 सिक्के दे दिए।<sup>26</sup> उसने वहाँ रब की ताज़ीम में कुरबानगाह तामीर करके उस पर भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाईं। जब उसने रब से इलतमास की तो रब

ने उस की सुनी और जवाब में आसमान से भस्म होनेवाली कुरबानी पर आग भेज दी।<sup>27</sup> फिर रब ने मौत के फरिश्ते को हुक्म दिया, और उसने अपनी तलवार को दुबारा मियान में डाल दिया।

<sup>28</sup> यों दाऊद ने जान लिया कि रब ने औरौनाह यबूसी की गहने की जगह पर मेरी सुनी जब मैंने यहाँ कुरबानियाँ चढाई।<sup>29</sup> उस वक़्त रब का वह मुक़द्दस खैमा जो मूसा ने रेगिस्तान में बनवाया था जिबऊन की पहाड़ी पर था। कुरबानियों को जलाने की कुरबानागाह भी वही थी।<sup>30</sup> लेकिन अब दाऊद में वहाँ जाकर रब के हुज़ूर उस की मरज़ी दरियाफ़्त करने की ज़रूरत न रही, क्योंकि रब के फ़रिश्ते की तलवार को देखकर उस पर इतनी शदीद दहशत तारी हुई कि वह जा ही नहीं सकता था।

## 22

<sup>1</sup> इसलिए दाऊद ने फैसला किया, “रब हमारे खुदा का घर गाहने की इस जगह पर होगा, और यहाँ वह कुरबानागाह भी होगी जिस पर इसराईल के लिए भस्म होनेवाली कुरबानी जलाई जाती है।”

**दाऊद रब का घर बनाने की तैयारियाँ करता है**

<sup>2</sup> चुनौचे उसने इसराईल में रहनेवाले परदेसियों को बुलाकर उन्हें अल्लाह के घर के लिए दरकार तराशे हुए पत्थर तैयार करने की ज़िम्मादारी दी।<sup>3</sup> इसके अलावा दाऊद ने दरवाजों के किवाड़ों की कीलों और कड़ों के लिए लोहे के बड़े ढेर लगाए। साथ साथ इतना पीतल इक़ठा किया गया कि आख़िरकार उसे तोला न जा सका।<sup>4</sup> इसी तरह देवदार की बहुत ज़्यादा लकड़ी यस्शलम लाई गई। सैदा और सूर के बाशिंदों ने उसे दाऊद तक पहुँचाया।<sup>5</sup> यह सामान जमा करने के पीछे दाऊद का यह खयाल था, “मेरा बेटा सुलेमान जवान है, और उसका अभी इतना तजरबा नहीं है, हालाँकि जो घर रब के लिए बनवाना है उसे इतना बड़ा और शानदार होने की ज़रूरत है कि तमाम दुनिया हक्का-बक्का रहकर उस की तारीफ़ करे। इसलिए मैं खुद जहाँ तक हो सके उसे बनवाने की तैयारियाँ करूँगा।” यही वजह थी कि दाऊद ने अपनी मौत से पहले इतना सामान जमा कराया।

**दाऊद सुलेमान को रब का घर बनवाने की ज़िम्मादारी देता है**

<sup>6</sup> फिर दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को बुलाकर उसे रब इसराईल के खुदा के लिए सुक़ूनतगाह बनवाने की ज़िम्मादारी देकर <sup>7</sup> कहा, “मेरे बेटे, मैं खुद रब अपने खुदा के नाम के लिए घर बनाना चाहता था।<sup>8</sup> लेकिन मुझे इजाज़त नहीं मिली, क्योंकि रब मुझे हमकलाम हुआ, ‘तूने शदीद क्रिस्म की जंगे लडकर बेशुमार लोगों को मार दिया है। नहीं, तू मेरे नाम के लिए घर तामीर नहीं करेगा, क्योंकि मेरे देखते देखते तू बहुत ख़ुनरेज़ी का सबब बना है।’<sup>9</sup> लेकिन तेरे एक बेटा पैदा होगा जो अमनपसंद होगा। उसे मैं अमनो-अमान मुहैया करूँगा, उसे चारों तरफ़ के दुश्मनों से लडना नहीं पड़ेगा। उसका नाम सुलेमान होगा, और उस की हुक़मत के दौरान मैं इसराईल को अमनो-अमान अता करूँगा।<sup>10</sup> वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा। वह मेरा बेटा होगा और मैं उसका बाप हूँगा। और मैं इसराईल पर उस की बादशाही का तख़्त हमेशा तक कायम रखूँगा।”

<sup>11</sup> दाऊद ने बात जारी रखकर कहा, “मेरे बेटे, रब आपके साथ हो ताकि आपको कामयाबी हासिल हो और आप रब अपने खुदा का घर उसके वादे के मुताबिक़ तामीर कर सकें।<sup>12</sup> आपको इसराईल पर मुक़र्रर करते वक़्त रब आपको हिक़मत और समझ अता करे ताकि आप रब अपने खुदा की शरीअत पर अमल कर सकें।<sup>13</sup> अगर आप एहतियात से उन हिदायात और अहक़ाम पर अमल करें जो रब ने मूसा की मारिफ़त इसराईल को दे दिए तो आपको ज़रूर कामयाबी हासिल होगी। मजबूत और दिलेरे हों। डरें मत और हिम्मत न हारें।<sup>14</sup> देखें, मैंने बड़ी जिदो-जहद के साथ रब के घर के लिए सोने के 34,00,000 किलोग्राम और चाँदी के 3,40,00,000 किलोग्राम तैयार कर रखे हैं। इसके अलावा मैंने इतना पीतल और लोहा इक़ठा किया कि उसे तोला नहीं जा सकता, नीज़ लकड़ी और पत्थर का ढेर लगाया, अगरचे आप और भी जमा करेंगे।<sup>15</sup> आपकी मदद करनेवाले कारीगर बहुत हैं। उनमें पत्थर को तराशनेवाले, राज, बढई और ऐसे कारीगर शामिल हैं जो महारत से हर क्रिस्म की चीज़ बना सकते हैं,<sup>16</sup> खाह वह सोने, चाँदी, पीतल या लोहे की क्यों न हो। बेशुमार ऐसे लोग तैयार खड़े हैं। अब काम शुरू करें, और रब आपके साथ हो।”

<sup>17</sup> फिर दाऊद ने इसराईल के तमाम राहनुमाओं को अपने बेटे सुलेमान की मदद करने का हुक्म दिया।<sup>18</sup> उसने उससे कहा, “रब आपका खुदा आपके साथ है। उसने आपको पडोसी कौमों से महफूज़ रखकर अमनो-अमान अता किया है। मुल्क के बाशिंदों को उसने मेरे हवाले कर दिया, और अब यह मुल्क रब और उस की कौम के ताबे हो गया है।<sup>19</sup> अब दिलो-जान से रब अपने खुदा के तालिब रहें। रब अपने खुदा के मक़दिस की तामीर शुरू करें ताकि आप जल्दी से अहद का सन्दूक और मुक़द्दस खैमे के सामान को उस घर में ला सकें जो रब के नाम की ताज़्ज़िम में तामीर होगा।”

## 23

<sup>1</sup> जब दाऊद उम्रसीदा था तो उसने अपने बेटे सुलेमान को इसराईल का बादशाह बना दिया।

### खिदमत के लिए लावियों के गुरोह

2 दाऊद ने इसराईल के तमाम राहनुमाओं को इमामों और लावियों समेत अपने पास बुला लिया। 3 तमाम उन लावियों को गिना गया जिनकी उम्र तीस साल या इससे जायद थी। उनकी कुल तादाद 38,000 थी। 4 इन्हें दाऊद ने मुख्तलिफ जिम्मादारियों सौंपी। 24,000 अफ़सर रब के घर की तामीर के निगारान, 6,000 अफ़सर और काज़ी, 5 4,000 दरबान और 4,000 ऐसे मौसीकार बन गए जिन्हें दाऊद के बनवाए हुए साजों को बजाकर रब की हम्दो-सना करनी थी।

6 दाऊद ने लावियों को लावी के तीन बेटों जैरसोन, किहात और मिरारी के मुताबिक तीन गुरोहों में तकसीम किया।

7 जैरसोन के दो बेटे लादान और सिमई थे। 8 लादान के तीन बेटे यहियेल, जैताम और योएल थे। 9 सिमई के तीन बेटे सल्मीत, हज़ियेल और हारान थे। यह लादान के घरानों के सरबराह थे। 10-11 सिमई के चार बेटे बड़े से लेकर छोटे तक यहत, जीजा, यऊस और बरिया थे। चूँकि यऊस और बरिया के कम बेटे थे इसलिए उनकी औलाद मिलकर खिदमत के लिहाज़ से एक ही खानदान और गुरोह की हैसियत रखती थी।

12 किहात के चार बेटे अमराम, इज़हार, हबरून और उज़्जियेल थे। 13 अमराम के दो बेटे हासून और मूसा थे। हासून और उस की औलाद को अलग किया गया ताकि वह हमेशा तक मुक़द्दसतरीन चीज़ों को मुखससो-मुक़द्दस रखें, रब के हुज़ूर कुरबानियाँ पेश करें, उस की खिदमत करें और उसके नाम से लोगों को बरकत दें। 14 मर्द-खुदा मूसा के बेटों को बाकी लावियों में शमार किया जाता था। 15 मूसा के दो बेटे जैरसोम और इलियज़र थे। 16 जैरसोम के पहलौठे का नाम सबुएल था। 17 इलियज़र का सिर्फ़ एक बेटा रहबियाह था। लेकिन रहबियाह की बेशमार औलाद थी। 18 इज़हार के पहलौठे का नाम सल्मीत था। 19 हबरून के चार बेटे बड़े से लेकर छोटे तक यरियाह, अमरियाह, यहजियेल और यकमियाम थे। 20 उज़्जियेल का पहलौठा मीकाह था। दूसरे का नाम यिसियाह था।

21 मिरारी के दो बेटे महली और मूशी थे। महली के दो बेटे इलियज़र और कीस थे। 22 जब इलियज़र फौत हुआ तो उस की सिर्फ़ बेटियाँ थीं। इन बेटियों की शादी कीस के बेटों यानी चचाज़ाद भाइयों से हुई। 23 मूशी के तीन बेटे महली, इदर और यरीमोत थे।

24 गरज़ यह लावी के कबीले के खानदान और सरपरस्त थे। हर एक को खानदानी रजिस्टर में दर्ज किया गया था। इनमें से जो रब के घर में खिदमत करते थे हर एक की उम्र कम अज़ कम 20 साल थी।

25-27 क्योंकि दाऊद ने मरने से पहले पहले हुक्म दिया था कि जितने लावियों की उम्र कम अज़ कम 20 साल है, वह खिदमत के लिए रजिस्टर में दर्ज किए जाएँ। इस नाते से उसने कहा था,

“रब इसराईल के खुदा ने अपनी कौम को अमनो-अमान अता किया है, और अब वह हमेशा के लिए यरूशलम में सुकूनत करेगा। अब से लावियों को मुलाकात का खैमा और उसका सामान उठाकर जगह बजगह ले जाने की ज़रूरत नहीं रही। 28 अब से वह इमामों की मदद करें जब यह रब के घर में खिदमत करते हैं। वह सहनों और छोटे कमरों को सँभालें और ध्यान दें कि रब के घर के लिए मखससो-मुक़द्दस की गई चीज़ें पाक-साफ़ रहें। उन्हें अल्लाह के घर में कई और जिम्मादारियाँ भी सौंपी जाएँ। 29 ज़ैल की चीज़ें सँभालना सिर्फ़ उन्हीं की जिम्मादारी है: मखससो-मुक़द्दस की गई रोटियाँ, गल्ला की नज़रों के लिए मुस्तामल मैदा, बेखमीरी रोटियाँ पकाने और गूँधने का इंतज़ाम। लाज़िम है कि वही तमाम लवाज़िमात को अच्छी तरह तोलें और नापें। 30 हर सुबह और शाम को उनके गुलूकार रब की हम्दो-सना करें। 31 जब भी रब को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश की जाएँ तो लावी मदद करें, खाह सबत को, खाह नए चाँद की ईद या किसी और ईद के मौके पर हो। लाज़िम है कि वह रोज़ाना मुकर्ररा तादाद के मुताबिक खिदमत के लिए हाज़िर हो जाएँ।”

32 इस तरह लावी पहले मुलाकात के खैमे में और बाद में रब के घर में अपनी खिदमत संरजाम देते रहे। वह रब के घर की खिदमत में अपने कबायली भाइयों यानी इमामों की मदद करते थे।

## 24

### खिदमत के लिए इमामों के गुरोह

1 हासून की औलाद को भी मुख्तलिफ गुरोहों में तकसीम किया गया। हासून के चार बेटे नदब, अबीह, इलियज़र और इतमर थे। 2 नदब और अबीह अपने बाप से पहले मर गए, और उनके बेटे नहीं थे। इलियज़र और इतमर इमाम बन गए। 3 दाऊद ने इमामों को खिदमत के मुख्तलिफ गुरोहों में तकसीम किया। सदोक और अखीमलिक ने इसमें दाऊद की मदद की (सदोक इलियज़र की औलाद में से और अखीमलिक इतमर की औलाद में से था)। 4 इलियज़र की औलाद को 16 गुरोहों में और इतमर की औलाद को 8 गुरोहों में तकसीम किया गया, क्योंकि इलियज़र की औलाद के इतने ही ज़्यादा खानदानी सरपरस्त थे। 5 तमाम जिम्मादारियाँ कुरा डालकर इन मुख्तलिफ गुरोहों में तकसीम की गई, क्योंकि इलियज़र और इतमर दोनों खानदानों के बहुत सारे ऐसे अफ़सर थे जो पहले से मक़दिस में रब की खिदमत करते थे।

6 यह जिम्मादारियाँ तकसीम करने के लिए इलियज़र और इतमर की औलाद बारी बारी कुरा डालते रहे। कुरा डालते वक्त बादशाह, इसराईल के बुज़ुर्ग, सदोक इमाम, अखीमलिक बिन अबियातर और इमामों और लावियों के खानदानी सरपरस्त हाज़िर थे। मीरमुंशी समयाह बिन नतनियेल ने जो ख़ुद लावी था ख़िदमत के इन गुरोहों की फ़हरिस्त ज़ैल की तरतीब से लिख ली जिस तरह वह कुरा डालने से मुकर्रर किए गए,

- 7 1. यहयरीब,
2. यदायाह,
- 8 3. हारिम,
4. सऊरीम,
- 9 5. मलकियाह,
6. मियामीन,
- 10 7. हक्कूज़,
8. अबियाह,
- 11 9. यशुअ,
10. सकनियाह,
- 12 11. इलियासिब,
12. यक्कीम,
- 13 13. ख़ुफ़ाह,
14. यसबियाब,
- 14 15. बिलजा,
16. इमेर,
- 15 17. ख़ज़ीर,
18. फ़िज़्ज़ीज़,
- 16 19. फ़तहियाह,
20. यहिज़केल,
- 17 21. यकीन,
22. ज़मूल,
- 18 23. दिलायाह,
24. माज़ियाह।

19 इमामों को इसी तरतीब के मुताबिक़ रब के घर में आकर अपनी ख़िदमत संरंजाम देनी थी, उन हिदायात के मुताबिक़ जो रब इसराईल के ख़ुदा ने उन्हें उनके बाप हासून की मारिफ़त दी थी।

ख़िदमत के लिए लावियों के मज़ीद गुरोह

20 ज़ैल के लावियों के मज़ीद ख़ानदानी सरपरस्त हैं :

अमराम की औलाद में से सूबाएल,

सूबाएल की औलाद में से यहदियाह

21 रहबियाह की औलाद में से यिस्सियाह सरपरस्त था,

22 इज़हार की औलाद में से सलूमीत,

सलूमीत की औलाद में से यहत,

23 हबसून की औलाद में से बड़े से लेकर छोटे तक यरियाह, अमरियाह, यहजियेल और यकमियाम,

24 उज़्जियेल की औलाद में से मीकाह,

मीकाह की औलाद में से समीर,

25 मीकाह का भाई यिस्सियाह,

यिस्सियाह की औलाद में से ज़करियाह,

26 मिरारी की औलाद में से महली और मूशी,

उसके बेटे याज़ियाह की औलाद,

27 मिरारी के बेटे याज़ियाह की औलाद में से सुहम, ज़क्कर और इबरी,

28-29 महली की औलाद में से इलियज़र और कीस। इलियज़र बेऔलाद था जबकि कीस के हौं यरहमियेल पैदा हुआ।

30 मूशी की औलाद में से महली, इदर और यरीमोत भी लावियों के इन मज़ीद ख़ानदानी सरपरस्तों में शामिल थे।

31 इमामों की तरह उनकी जिम्मादारियाँ भी कुरा-अंदाजी से मुकर्रर की गईं। इस सिलसिले में सबसे छोटे भाई के खानदान के साथ और सबसे बड़े भाई के खानदान के साथ सुल्क बराबर था। इस काररवाई के लिए भी दाऊद बादशाह, सदेक, अखीमलिक और इमामों और लावियों के खानदानी सरपरस्त हाजिर थे।

## 25

### रब के घर में मौसीकारों के गुरोह

1 दाऊद ने फौज के आला अफसरों के साथ आसफ, हैमान और यदूतून की औलाद को एक खास खिदमत के लिए अलग कर दिया। उन्हें नबुव्वत की रूह में सरोद, सितार और झॉझ बजाना था। ज़ैल के आदमियों को मुकर्रर किया गया :

2 आसफ के खानदान से आसफ के बेटे ज़क्कूर, यूसुफ, नतनियाह और असरेलाह। उनका बाप गुरोह का राहनुमा था, और वह बादशाह की हिदायात के मुताबिक नबुव्वत की रूह में साज बजाता था।

3 यदूतून के खानदान से यदूतून के बेटे जिदलियाह, जरी, यसायाह, सिमई, हसबियाह, और मत्तितियाह। उनका बाप गुरोह का राहनुमा था, और वह नबुव्वत की रूह में रब की हम्दो-सना करते हुए सितार बजाता था।

4 हैमान के खानदान से हैमान के बेटे बुक्कियाह, मत्तनियाह, उज्जियेल, सबएल, यरीमोत, हननियाह, हनानी, इलियाता, जिदालती, रूममतियजर, यसबिकाशा, मल्लूती, हौतीर और महाजियोत। 5 इन सबका बाप हैमान दाऊद बादशाह का गैबबीन था। अल्लाह ने हैमान से वादा किया था कि मैं तेरी ताकत बढ़ा दूँगा, इसलिए उसने उसे 14 बेटे और तीन बेटियाँ अता की थीं।

6 यह सब अपने अपने बाप यानी आसफ, यदूतून और हैमान की राहनुमाई में साज बजाते थे। जब कभी रब के घर में गीत गाए जाते थे तो यह मौसीकार साथ साथ झॉझ, सितार और सरोद बजाते थे। वह अपनी खिदमत बादशाह की हिदायात के मुताबिक संरजाम देते थे। 7 अपने भाइयों समेत जो रब की ताजीम में गीत गाते थे उनकी कुल तादाद 288 थी। सबके सब माहिर थे। 8 उनकी मुख्तलिफ जिम्मादारियाँ भी कुरा के जरीए मुकर्रर की गईं। इसमें सबके साथ सुल्क एक जैसा था, खाह जवान थे या बूढ़े, खाह उस्ताद थे या शागिर्द।

9 कुरा डालकर 24 गुरोहों को मुकर्रर किया गया। हर गुरोह के बारह बारह आदमी थे। यों ज़ैल के आदमियों के गुरोहों ने तश्कील पाई :

1. आसफ के खानदान का यूसुफ,
2. जिदलियाह,
- 10 3. ज़क्कूर,
- 11 4. जरी,
- 12 5. नतनियाह,
- 13 6. बुक्कियाह,
- 14 7. यसरेलाह,
- 15 8. यसायाह,
- 16 9. मत्तनियाह,
- 17 10. सिमई,
- 18 11. अज़रेल,
- 19 12. हसबियाह,
- 20 13. सबएल,
- 21 14. मत्तितियाह,
- 22 15. यरीमोत,
- 23 16. हननियाह,
- 24 17. यसबिकाशा,
- 25 18. हनानी,
- 26 19. मल्लूती,
- 27 20. इलियाता,
- 28 21. हौतीर,
- 29 22. जिदालती,
- 30 23. महाजियोत,

## 31 24. स्ममतियज़र।

हर गुरोह में राहनुमा के बेटे और कुछ रिश्तेदार शामिल थे।

## 26

## रब के घर के दरबान

1 रब के घर के सहन के दरवाज़ों पर पहरादारी करने के गुरोह भी मुकर्रर किए गए। उनमें ज़ैल के आदमी शामिल थे :

क्रोह के खानदान का फ़रद मसलमियाह बिन क्रोह जो आसफ़ की औलाद में से था। 2 मसलमियाह के सात बेटे बड़े से लेकर छोटे तक ज़करियाह, यदियएल, जबदियाह, यत्रियेल, 3 ऐलाम, यूहानान और इलीहूएनी थे।

4-5 ओबेद-अदोम भी दरबान था। अल्लाह ने उसे बरकत देकर आठ बेटे दिए थे। बड़े से लेकर छोटे तक उनके नाम समायाह, यहज़बद, युआख, सकार, नतनियेल, अम्मियेल, इशकार और फ़ऊल्लती थे। 6 समायाह बिन ओबेद-अदोम के बेटे खानदानी सरबराह थे, क्योंकि वह काफी असरो-रसूख रखते थे। 7 उनके नाम उतनी, रफ़ाएल, ओबेद और इल्ज़बद थे। समायाह के रिश्तेदार इलीहू और समकियाह भी गुरोह में शामिल थे, क्योंकि वह भी खास हैसियत रखते थे। 8 ओबेद-अदोम से निकले यह तमाम आदमी लायक थे। वह अपने बेटों और रिश्तेदारों समेत कुल 62 अफ़राद थे और सब महारत से अपनी खिदमत संरज़ाम देते थे।

9 मसलमियाह के बेटे और रिश्तेदार कुल 18 आदमी थे। सब लायक थे।

10 मिरारी के खानदान का फ़रद हूसा के चार बेटे सिमरी, खिलक्रियाह, तबलियाह और ज़करियाह थे। हूसा ने सिमरी को खिदमत के गुरोह का सरबराह बना दिया था अगरचे वह पहलौठा नहीं था। 11 दूसरे बेटे बड़े से लेकर छोटे तक खिलक्रियाह, तबलियाह और ज़करियाह थे। हूसा के कुल 13 बेटे और रिश्तेदार थे।

12 दरबानों के इन गुरोहों में खानदानी सरपरस्त और तमाम आदमी शामिल थे। बाक़ी लावियों की तरह यह भी रब के घर में अपनी खिदमत संरज़ाम देते थे। 13 क़ुरा-अंदाज़ी से मुकर्रर किया गया कि कौन-सा गुरोह सहन के किस दरवाज़े की पहरादारी करे। इस सिलसिले में बड़े और छोटे खानदानों में इम्तियाज़ न किया गया। 14 यों जब क़ुरा डाला गया तो मसलमियाह के खानदान का नाम मशरिकी दरवाज़े की पहरादारी करने के लिए निकला। ज़करियाह बिन मसलमियाह के खानदान का नाम शिमाली दरवाज़े की पहरादारी करने के लिए निकला। ज़करियाह अपने दाना मशक़रों के लिए मशहूर था। 15 जब क़ुरा चुनबी दरवाज़े की पहरादारी के लिए डाला गया तो ओबेद-अदोम का नाम निकला। उसके बेटों को गोदाम की पहरादारी करने की ज़िम्मादारी दी गई। 16 जब मगरिबी दरवाज़े और सल्कत दरवाज़े के लिए क़ुरा डाला गया तो सुफ़फ़ीम और हूसा के नाम निकले। सल्कत दरवाज़ा चढ़नेवाले रास्ते पर है।

पहरादारी की खिदमत यों बाँटी गई :

17 रोज़ाना मशरिकी दरवाज़े पर छः लावी पहरा देते थे, शिमाली और चुनबी दरवाज़ों पर चार चार अफ़राद और गोदाम पर दो। 18 रब के घर के सहन के मगरिबी दरवाज़े पर छः लावी पहरा देते थे, चार रास्ते पर और दो सहन में।

19 यह सब दरबानों के गुरोह थे। सब क्रोह और मिरारी के खानदानों की औलाद थे।

## खिदमत के लिए लावियों के मज़ीद गुरोह

20 दूसरे कुछ लावी अल्लाह के घर के खज़ानों और रब के लिए मख़सूस की गई चीज़ें सँभालते थे।

21-22 दो भाई ज़ैतम और योएल रब के घर के खज़ानों की पहरादारी करते थे। वह यहियेल के खानदान के सरपरस्त थे और यों लादान ज़ैरसोनी की औलाद थे। 23 अमराम, इज़हार, हबस्न और उज्जियेल के खानदानों की यह ज़िम्मादारियाँ थीं :

24 सबूएल बिन ज़ैरसोम बिन मूसा खज़ानों का निगरान था। 25 ज़ैरसोम के भाई इलियज़र का बेटा रहबियाह था। रहबियाह का बेटा यसायाह, यसायाह का बेटा यूराम, यूराम का बेटा ज़िकरी और ज़िकरी का बेटा सल्लूमीत था। 26 सल्लूमीत अपने भाइयों के साथ उन मुक़द्दस चीज़ों को सँभालता था जो दाऊद बादशाह, खानदानी सरपरस्तों, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुकर्रर अफ़सरों और दूसरे आला अफ़सरों ने रब के लिए मख़सूस की थीं। 27 यह चीज़ें जंगों में लूटे हुए माल में से लेकर रब के घर को मज़बूत करने के लिए मख़सूस की गई थीं। 28 इनमें वह सामान भी शामिल था जो समुएल गैबबीन, साऊल बिन क्रीस, अबिनैर बिन नैर और योआब बिन ज़रूयाह ने मक़दिस के लिए मख़सूस किया था। सल्लूमीत और उसके भाई इन तमाम चीज़ों को सँभालते थे।

29 इज़हार के खानदान के अफ़राद यानी कननियाह और उसके बेटों को रब के घर से बाहर की ज़िम्मादारियाँ दी गईं। उन्हें निगरानों और काज़ियों की हैसियत से इस्राईल पर मुकर्रर किया गया। 30 हबस्न के खानदान के अफ़राद यानी हसबियाह

और उसके भाइयों को दरियाए-यरदन के मगरिब के इलाके को सँभालने की जिम्मादारी दी गई। वहाँ वह रब के घर से मुताल्लिक कामों के अलावा बादशाह की खिदमत भी संजाम देते थे। इन लायक आदमियों की कुल तादाद 1,700 थी।

31 दाऊद बादशाह की हुक्मत के 40वें साल में नसबनामे की तहकीक की गई ताकि हबस्न के खानदान के बारे में मालूमत हासिल हो जाएँ। पता चला कि उसके कई लायक स्कन जिलियाद के इलाके के शहर याजेर में आबाद हैं। यरियाह उनका सरपरस्त था। 32 दाऊद बादशाह ने उसे रबिन, जद और मनस्सी के मशरिकी इलाके को सँभालने की जिम्मादारी दी। यरियाह की इस खिदमत में उसके खानदान के मज्दी 2,700 अफराद भी शामिल थे। सब लायक और अपने अपने खानदानों के सरपरस्त थे। उस इलाके में वह रब के घर से मुताल्लिक कामों के अलावा बादशाह की खिदमत भी संजाम देते थे।

## 27

### फौज के गुरोह

1 दर्जे-जैल उन खानदानी सरपरस्तों, हजार हजार और सौ सौ फौजियों पर मुकर्रर अफसरों और सरकारी अफसरों की फहरिस्त है जो बादशाह के मुलाजिम थे।

फौज 12 गुरोहों पर मुरतमिल थी, और हर गुरोह के 24,000 अफराद थे। हर गुरोह की झूटी साल में एक माह के लिए लगती थी। 2 जो अफसर इन गुरोहों पर मुकर्रर थे वह यह थे :

पहला माह : यस्बियाम बिन जबदियेल। 3 वह फ़ारस के खानदान का था और उस गुरोह पर मुकर्रर था जिसकी झूटी पहले महीने में होती थी।

4 दूसरा माह : दोदी अखूही। उसके गुरोह के आला अफसर का नाम मिकलोट था।

5 तीसरा माह : यहोयदा इमाम का बेटा बिनायाह। 6 यह दाऊद के बेहतरीन दस्ते बनाम 'तीस' पर मुकर्रर था और खुद जबरदस्त फौजी था। उसके गुरोह का आला अफसर उसका बेटा अम्मीजबद था।

7 चौथा माह : योआब का भाई असाहेल। उस की मौत के बाद असाहेल का बेटा जबदियाह उस की जगह मुकर्रर हुआ।

8 पाँचवाँ माह : समहत इजराखी।

9 छटा माह : ईरा बिन अन्नकीस तर्कूई।

10 सातवाँ माह : खलिस फ़लूनी इफ़राईमी।

11 आठवाँ माह : जारह के खानदान का सिबबकी हसाती।

12 नवाँ माह : बिनयमीन के कबीले का अबियजर अनतोती।

13 दसवाँ माह : जारह के खानदान का महरी नतूफाती।

14 ग्यारहवाँ माह : इफ़राईम के कबीले का बिनायाह फ़िरआतोनी।

15 बारहवाँ माह : गुतनियेल के खानदान का खलदी नतूफाती।

### कबीलों के सरपरस्त

16 जैल के आदमी इसराईली कबीलों के सरपरस्त थे :

रबिन का कबीला : इलियजर बिन जिकरी।

शमौन का कबीला : सफतियाह बिन माका।

17 लावी का कबीला : हसबियाह बिन क्रमुएल। हास्न के खानदान का सरपरस्त सदोक था।

18 यहदाह का कबीला : दाऊद का भाई इलीह।

इशकार का कबीला : उमरी बिन मीकाएल।

19 जबलून का कबीला : इसमायाह बिन अबदियाह।

नफताली का कबीला : यरीमोट बिन अजरियेल।

20 इफ़राईम का कबीला : होसेअ बिन अजजियाह।

मगरिबी मनस्सी का कबीला : योएल बिन फ़िदायाह।

21 मशरिकी मनस्सी का कबीला जो जिलियाद में था : यिहू बिन जकरियाह।

बिनयमीन का कबीला : यासियेल बिन अबिनैर।

22 दान का कबीला : अजरेल बिन यरोहाम।

यह बारह लोग इसराईली कबीलों के सरबराह थे।

23 जितने इसराईली मर्दों की उम्र 20 साल या इससे कम थी उन्हें दाऊद ने शुमार नहीं किया, क्योंकि रब ने उससे वादा किया था कि मैं इसराईलियों को आसमान पर के सितारों जैसा बेशुमार बना दूँगा। 24 नीज़, योआब बिन ज़रूयाह ने मर्दुमशुमारी



को शुरू तो किया लेकिन उसे इखिताम तक नहीं पहुँचाया था, क्योंकि अल्लाह का गज़ब मर्दूमशूमारी के बाइस इसराईल पर नाज़िल हुआ था। नतीजे में दाऊद बादशाह की तारीखी किताब में इसराईलियों की कुल तादाद कभी नहीं दर्ज हुई।

शाही मिलकियत के इंचार्ज

25 अज़मावत बिन अदियेल यस्शलम के शाही गोदामों का इंचार्ज था।

जो गोदाम देही इलाके, बाकी शहरों, गाँवों और किलों में थे उनको यूनतन बिन उज्जियाह सँभालता था।

26 अज़री बिन कलब शाही ज़मीनों की काश्तकारी करनेवालों पर मुकर्रर था।

27 सिमई रामाती अंगूर के बागों की निगरानी करता जबकि जबदी शिफमी इन बागों की मै के गोदामों का इंचार्ज था।

28 बाल-हनान जदीरुन और अंजीर-तूत के उन बागों पर मुकर्रर था जो मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके में थे। युआस जैतून के तेल के गोदामों की निगरानी करता था।

29 शास्न के मैदान में चरनेवाले गाय-बैल सितरी शास्नी के ज़ेरे-निगरानी थे जबकि साफ़त बिन अदली वादियों में चरनेवाले गाय-बैलों को सँभालता था। 30 ओबिल इसमाईली ऊँटों पर मुकर्रर था, यहदियाह मस्नेती गधियों पर 31 और याजीज़ हाजिरी भेड़-बकरियों पर।

यह सब शाही मिलकियत के निगरान थे।

बादशाह के करीबी मुशीर

32 दाऊद का समझदार और आलिम चचा यूनतन बादशाह का मुशीर था। यहियेल बिन हकमूनी बादशाह के बेटों की तरबियत के लिए जिम्मादार था। 33 अखीतुफल दाऊद का मुशीर जबकि हसी अरकी दाऊद का दोस्त था। 34 अखीतुफल के बाद यहोयाद बिन बिनायाह और अबियातर बादशाह के मुशीर बन गए। योआब शाही फ़ौज का कमांडर था।

## 28

इसराईल के बुज़ुर्गों के सामने दाऊद की तकरीर

1 दाऊद ने इसराईल के तमाम बुज़ुर्गों को यस्शलम बुलाया। इनमें कबीलों के सरपरस्त, फ़ौजी डिवीज़नों पर मुकर्रर अफसर, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुकर्रर अफसर, शाही मिलकियत और रेवडों के इंचार्ज, बादशाह के बेटों की तरबियत करनेवाले अफसर, दरबारी, मुल्क के सरमा और बाकी तमाम साहबे-हैसियत शामिल थे।

2 दाऊद बादशाह उनके सामने खड़े होकर उनसे मुखातिब हुआ,

“मेरे भाइयो और मेरी कौम, मेरी बात पर ध्यान दें! काफ़ी देर से मैं एक ऐसा मकान तामीर करना चाहता था जिसमें रब के अहद का संदूक मुस्तक़िल तौर पर रखा जा सके। आखिर यह तो हमारे खुदा की चौकी है। इस मक़सद से मैं तैयारियाँ करने लगा। 3 लेकिन फिर अल्लाह मुझसे हमकलाम हुआ, ‘मेरे नाम के लिए मकान बनाना तेरा काम नहीं है, क्योंकि तूने जंगज़ू होते हुए बहुत खून बहाया है।’

4 रब इसराईल के खुदा ने मेरे पूरे खानदान में से मुझे चुनकर हमेशा के लिए इसराईल का बादशाह बना दिया, क्योंकि उस की मरज़ी थी कि यहदाह का कबीला हुक़मत करे। यहदाह के खानदानों में से उसने मेरे बाप के खानदान को चुन लिया, और इसी खानदान में से उसने मुझे पसंद करके पूरे इसराईल का बादशाह बना दिया। 5 रब ने मुझे बहुत बेटे अता किए हैं। उनमें से उसने मुकर्रर किया कि सुलेमान मेरे बाद तख़्त पर बैठकर रब की उम्मत पर हुक़मत करे। 6 रब ने मुझे बताया, ‘तेरा बेटा सुलेमान ही मेरा घर और उसके सहन तामीर करेगा। क्योंकि मैंने उसे चुनकर फरमाया है कि वह मेरा बेटा होगा और मैं उसका बाप हूँगा। 7 अगर वह आज की तरह आइंदा भी मेरे अहकाम और हिदायात पर अमल करता रहे तो मैं उस की बादशाही अबद तक कायम रखूँगा।’

8 अब मेरी हिदायत पर ध्यान दें, पूरा इसराईल यानी रब की जमात और हमारा खुदा इसके गवाह हैं। रब अपने खुदा के तमाम अहकाम के ताबे रहें! फिर आइंदा भी यह अच्छा मुल्क आपकी मिलकियत और हमेशा तक आपकी औलाद की मौस्सी ज़मीन रहेगा। 9 ऐ सुलेमान मेरे बेटे, अपने बाप के खुदा को तसलीम करके पूरे दिलो-जान और ख़ुशी से उस की खिदमत करें। क्योंकि रब तमाम दिलों की तहक़ीक कर लेता है, और वह हमारे खयालों के तमाम मनसूबों से वाकिफ़ है। उसके तालिब रहें तो आप उसे पा लेंगे। लेकिन अगर आप उसे तर्क करें तो वह आपको हमेशा के लिए रद्द कर देगा। 10 याद रहे, रब ने आपको इसलिए चुन लिया है कि आप उसके लिए मुक़द्दस घर तामीर करें। मज़बूत रहकर इस काम में लगे रहें!”

रब के घर का नक्शा

11 फिर दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को रब के घर का नक्शा दे दिया जिसमें तमाम तफ़सीलात दर्ज थी यानी उसके बरामदे, खज़ानों के कमरे, बालाख़ाने, अंदरूनी कमरे, वह मुक़द्दसतरीन कमरा जिसमें अहद के संदूक को उसके कफ़फ़ारे के

ढकने समेत रखना था, 12 रब के घर के सहन, उसके इर्दगिर्द के कमरे और वह कमरे जिनमें रब के लिए मखसूस किए गए सामान को महफूज रखना था।

दाऊद ने रूह की हिदायत से यह पूरा नक्शा तैयार किया था। 13 उसने रब के घर की खिदमत के लिए दरकार इमामों और लावियों के गुरोहों को भी मुकर्रर किया, और साथ साथ रब के घर में बाक़ी तमाम जिम्मादारियाँ भी। इसके अलावा उसने रब के घर की खिदमत के लिए दरकार तमाम सामान की फ़हरिस्त भी तैयार की थी। 14 उसने मुकर्रर किया कि मुख्तलिफ़ चीज़ों के लिए कितना सोना और कितनी चाँदी इस्तेमाल करनी है। इनमें ज़ैल की चीज़ें शामिल थीं : 15 सोने और चाँदी के चरागदान और उनके चराग (मुख्तलिफ़ चरागदानों के वज़न फ़रक थे, क्योंकि हर एक का वज़न उसके मकसद पर मुनहसिर था), 16 सोने की वह मेज़ें जिन पर रब के लिए मखसूस रोटियाँ रखनी थीं, चाँदी की मेज़ें, 17 ख़ालिस सोने के कौंटे, छिड़काव के कटोरे और सुराही, सोने-चाँदी के प्याले 18 और बख़्ख़र जलाने की कु़रबानगाह पर मँढा हुआ ख़ालिस सोना। दाऊद ने रब के रथ का नक्शा भी सुलेमान के हवाले कर दिया, यानी उन क़रबी फ़रिशतों का नक्शा जो अपने परों को फैलाकर रब के अहद के संदूक को ढाँप देते हैं।

19 दाऊद ने कहा, “मैंने यह तमाम तफ़सीलात वैसे ही कलमबंद कर दी हैं जैसे रब ने मुझे हिकमत और समझ अता की है।”

20 फिर वह अपने बेटे सुलेमान से मुख़ातिब हुआ, “मज़बूत और दिलेर हों! डरें मत और हिम्मत मत हारना, क्योंकि रब ख़ुदा मेरा ख़ुदा आपके साथ है। न वह आपको छोड़ेगा, न तर्क करेगा बल्कि रब के घर की तकमील तक आपकी मदद करता रहेगा। 21 खिदमत के लिए मुकर्रर इमामों और लावियों के गुरोह भी आपका सहारा बनकर रब के घर में अपनी खिदमत संज़ाम देंगे। तामीर के लिए जितने भी माहिर कारीगरों की ज़रूरत है वह खिदमत के लिए तैयार खड़े हैं। बुजुर्गों से लेकर आम लोगों तक सब आपकी हर हिदायत की तामील करने के लिए मुस्तैद हैं।”

## 29

### रब के घर की तामीर के लिए नज़राने

1 फिर दाऊद दुबारा पूरी जमात से मुख़ातिब हुआ, “अल्लाह ने मेरे बेटे सुलेमान को चुनकर मुकर्रर किया है कि वह अगला बादशाह बने। लेकिन वह अभी जवान और नातज़रबाकार है, और यह तामीरी काम बहुत वसी है। उसे तो यह महल इनसान के लिए नहीं बनाना है बल्कि रब हमारे ख़ुदा के लिए। 2 मैं पूरी जॉफ़िशानी से अपने ख़ुदा के घर की तामीर के लिए सामान जमा कर चुका हूँ। इसमें सोना-चाँदी, पीतल, लोहा, लकड़ी, अक़ीके-अहमर, \* मुख्तलिफ़ जड़े हुए जवाहर और पच्चीकारी के मुख्तलिफ़ पत्थर बड़ी मिकदार में शामिल हैं। 3 और चूँकि मुझमें अपने ख़ुदा का घर बनाने के लिए बोझ है इसलिए मैंने इन चीज़ों के अलावा अपने जाती ख़जानों से भी सोना और चाँदी दी है 4 यानी तकरीबन 1,00,000 किलोग्राम ख़ालिस सोना और 2,35,000 किलोग्राम ख़ालिस चाँदी। मैं चाहता हूँ कि यह कमरों की दीवारों पर चढाई जाए। 5 कुछ कारीगरों के बाक़ी कामों के लिए भी इस्तेमाल हो सकता है। अब मैं आपसे पछता हूँ, आज कौन मेरी तरह ख़ुशी से रब के काम के लिए कुछ देने को तैयार है?”

6 यह सुनकर वहाँ हाज़िर ख़ानदानी सरपरस्तों, कबीलों के बुजुर्गों, हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर मुकर्रर अफ़सरों और बादशाह के आला सरकारी अफ़सरों ने ख़ुशी से काम के लिए हदिये दिए। 7 उस दिन रब के घर के लिए तकरीबन 1,70,000 किलोग्राम सोना, सोने के 10,000 सिक्के, 3,40,000 किलोग्राम चाँदी, 6,10,000 किलोग्राम पीतल और 34,00,000 किलोग्राम लोहा जमा हुआ। 8 जिसके पास जवाहर थे उसने उन्हें यहियेल जैरसोनी के हवाले कर दिया जो ख़जानची था और जिसने उन्हें रब के घर के ख़जाने में महफूज कर लिया। 9 पूरी क़ौम इस फ़राख़दिली को देखकर ख़ुश हुई, क्योंकि सबने दिली ख़ुशी और फ़ैयाज़ी से अपने हदिये रब को पेश किए। दाऊद बादशाह भी निहायत ख़ुश हुआ।

### दाऊद की दुआ

10 इसके बाद दाऊद ने पूरी जमात के सामने रब की तमज़ीद करके कहा,

“ऐ रब हमारे बाप इसराईल के ख़ुदा, अज़ल से अबद तक तेरी हम्द हो। 11 ऐ रब, अज़मत, कुदरत, जलाल और शानो-शौकत तेरे ही हैं, क्योंकि जो कुछ भी आसमान और ज़मीन में है वह तेरा ही है। ऐ रब, सलतनत तेरे हाथ में है, और तू तमाम चीज़ों पर सरफ़राज़ है। 12 दौलत और इज़्जत तुझसे मिलती है, और तू सब पर हुक्मरान है। तेरे हाथ में ताक़त और कुदरत है, और हर इनसान को तू ही ताक़तवर और मज़बूत बना सकता है। 13 ऐ हमारे ख़ुदा, यह देखकर हम तेरी सताइश और तेरे जलाली नाम की तारीफ़ करते हैं।

\* 29:2 carnelian

14 मेरी और मेरी कौम की क्या हैसियत है कि हम इतनी फैयाजी से यह चीजें दे सके? आखिर हमारी तमाम मिलकियत तेरी तरफ से है। जो कुछ भी हमने तुझे दे दिया वह हमें तेरे हाथ से मिला है। 15 अपने बापदादा की तरह हम भी तेरे नजदीक परदेसी और गैरशहरी हैं। दुनिया में हमारी जिंदगी साये की तरह आरिजी है, और मौत से बचने की कोई उम्मीद नहीं। 16 ऐ रब हमारे खुदा, हमने यह सारा तामीरी सामान इसलिए इकट्ठा किया है कि तेरे मुकद्दस नाम के लिए घर बनाया जाए। लेकिन हकीकत में यह सब कुछ पहले से तेरे हाथ से हासिल हुआ है। यह पहले से तेरा ही है। 17 ऐ मेरे खुदा, मैं जानता हूँ कि तू इनसान का दिल जाँच लेता है, कि दियानतदारी तुझे पसंद है। जो कुछ भी मैंने दिया है वह मैंने खुशी से और अच्छी नीयत से दिया है। अब मुझे यह देखकर खुशी है कि यहाँ हाज़िर तेरी कौम ने भी इतनी फैयाजी से तुझे हदिये दिए हैं।

18 ऐ रब हमारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और इसराईल के खुदा, गुजारिश है कि तू हमेशा तक अपनी कौम के दिलों में ऐसी ही तडप कायम रख। अता कर कि उनके दिल तेरे साथ लिपटे रहें। 19 मेरे बेटे सुलेमान की भी मदद कर ताकि वह पूरे दिलो-जान से तेरे अहकाम और हिदायात पर अमल करे और उस महल को तकमील तक पहुँचा सके जिसके लिए मैंने तैयारियाँ की हैं।”

20 फिर दाऊद ने पूरी जमात से कहा, “आपूँ, रब अपने खुदा की सताइश करें!” चुनाँचे सब रब अपने बापदादा के खुदा की तमजीद करके रब और बादशाह के सामने मुँह के बल झुक गए।

21 अगले दिन तमाम इसराईल के लिए भस्म होनेवाली बहुत-सी कुरबानियाँ उनकी मै की नज़रों समेत रब को पेश की गईं। इसके लिए 1,000 जवान बैलों, 1,000 मेंढों और 1,000 भेड़ के बच्चों को चढाया गया। साथ साथ जबह की बेशमार कुरबानियाँ भी पेश की गईं। 22 उस दिन उन्होंने रब के हुज़ूर खाते-पीते हुए बड़ी खुशी मनाई। फिर उन्होंने दुबारा इसकी तसदीक की कि दाऊद का बेटा सुलेमान हमारा बादशाह है। तेल से उसे मसह करके उन्होंने उसे रब के हुज़ूर बादशाह और सदोक को इमाम करार दिया।

### सुलेमान की जबरदस्त हुकूमत

23 यों सुलेमान अपने बाप दाऊद की जगह रब के तख्त पर बैठ गया। उसे कामयाबी हासिल हुई, और तमाम इसराईल उसके ताबे रहा। 24 तमाम आला अफसर, बड़े बड़े फौजी और दाऊद के बाकी बेटों ने भी अपनी ताबेदारी का इज़हार किया। 25 इसराईल के देखते देखते रब ने सुलेमान को बहुत सरफराज़ किया। उसने उस की सलतनत को ऐसी शानो-शौकत से नवाज़ा जो माजी में इसराईल के किसी भी बादशाह को हासिल नहीं हुई थी।

### दाऊद की वफ़ात

26-27 दाऊद बिन यस्सी कुल 40 साल तक इसराईल का बादशाह रहा, 7 साल हबस्न में और 33 साल यस्शलम में। 28 वह बहुत उम्रसीदा और उम्र, दौलत और इज्जत से आसूदा होकर इंतकाल कर गया। फिर सुलेमान तख्तनशीन हुआ।

29 बाकी जो कुछ दाऊद की हुकूमत के दौरान हुआ वह तीनों किताबों ‘समुएल गैबबीन की तारीख’, ‘नातन नबी की तारीख’ और ‘जाद गैबबीन की तारीख’ में दर्ज है। 30 इनमें उस की हुकूमत और असरो-रसूख की तफसीलात बयान की गई हैं, नीज़ वह कुछ जो उसके साथ, इसराईल के साथ और गिर्दो-नवाह के ममालिक के साथ हुआ।

## 2 त्वारीख

सुलेमान रब से हिकमत माँगता है

1 सुलेमान बिन दाऊद की हुकूमत मजबूत हो गई। रब उसका खुदा उसके साथ था, और वह उस की ताकत बढ़ाता रहा।  
2 एक दिन सुलेमान ने तमाम इसराईल को अपने पास बुलाया। उनमें हजार हजार और सौ सौ फौजियों पर मुकर्रर अफसर, काज़ी, तमाम बुजुर्ग और कुंबाँ के सरपरस्त शामिल थे।<sup>3</sup> फिर सुलेमान उनके साथ जिबऊन की उस पहाड़ी पर गया जहाँ अल्लाह का मुलाकात का खैमा था, वही जो रब के खादिम मूसा ने रेगिस्तान में बनवाया था।<sup>4</sup> अहद का संदूक उसमें नहीं था, क्योंकि दाऊद ने उसे किरियत-यारीम से यरूशालम लाकर एक खैमे में रख दिया था जो उसने वहाँ उसके लिए तैयार कर रखा था।<sup>5</sup> लेकिन पीतल की जो कुरबानगाह बजलिलियल बिन ऊरी बिन हर ने बनाई थी वह अब तक जिबऊन में रब के खैमे के सामने थी। अब सुलेमान और इसराईल उसके सामने जमा हुए ताकि रब की मरज़ी दरियाफ्त करें।<sup>6</sup> वहाँ रब के हुज़ूर सुलेमान ने पीतल की उस कुरबानगाह पर भस्म होनेवाली 1,000 कुरबानियाँ चढ़ाई।

7 उसी रात रब सुलेमान पर जाहिर हुआ और फरमाया, “तेरा दिल क्या चाहता है? मुझे बता दे तो मैं तेरी खाहिश पूरी करूँगा।”<sup>8</sup> सुलेमान ने जवाब दिया, “तू मेरे बाप दाऊद पर बड़ी मेहरबानी कर चुका है, और अब तूने उस की जगह मुझे तख्त पर बिठा दिया है।<sup>9</sup> तूने मुझे एक ऐसी कौम पर बादशाह बना दिया है जो ज़मीन की खाक की तरह बेशुमार है। चुनौते ऐ रब खुदा, वह वादा पूरा कर जो तूने मेरे बाप दाऊद से किया है।<sup>10</sup> मुझे हिकमत और समझ अता फरमा ताकि मैं इस कौम की राहनुमाई कर सकूँ। क्योंकि कौन तेरी इस अज़ीम कौम का इनसाफ कर सकता है?”

11 अल्लाह ने सुलेमान से कहा, “मैं खुश हूँ कि तू दिल से यही कुछ चाहता है। तूने न मालो-दौलत, न इज़्जत, न अपने दुश्मनों की हलाकत और न उम्र की दराज़ी बल्कि हिकमत और समझ माँगी है ताकि मेरी उस कौम का इनसाफ कर सके जिस पर मैंने तुझे बादशाह बना दिया है।<sup>12</sup> इसलिए मैं तेरी यह दरखास्त पूरी करके तुझे हिकमत और समझ अता करूँगा। साथ साथ मैं तुझे उतना मालो-दौलत और उतनी इज़्जत दूँगा जितनी न माज़ी में किसी बादशाह को हासिल थी, न मुस्तकबिल में कभी किसी को हासिल होगी।”

13 इसके बाद सुलेमान जिबऊन की उस पहाड़ी से उतरा जिस पर मुलाकात का खैमा था और यरूशालम वापस चला गया जहाँ वह इसराईल पर हुकूमत करता था।

सुलेमान की दौलत

14 सुलेमान के 1,400 रथ और 12,000 घोड़े थे। कुछ उसने रथों के लिए मखसूस किए गए शहरों में और कुछ यरूशालम में अपने पास रखे।<sup>15</sup> बादशाह की सरगारमियों के बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम हो गई और देवदार की कीमती लकड़ी मगारिब के नशेबी पहाड़ी इलाके की अंज़ीर-तूत की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई।<sup>16</sup> बादशाह अपने घोड़े मिसर और क़एयानी किलिकिया से दरामद करता था। उसके ताजिर इन जगहों पर जाकर उन्हें खरीद लाते थे।<sup>17</sup> बादशाह के रथ मिसर से दरामद होते थे। हर रथ की कीमत चाँदी के 600 सिक्के और हर घोड़े की कीमत चाँदी के 150 सिक्के थी। सुलेमान के ताजिर यह घोड़े बरामद करते हुए तमाम हिलती और अरामी बादशाहों तक भी पहुँचाते थे।

## 2

रब के घर की तामीर की तैयारियाँ

1 फिर सुलेमान ने रब के लिए घर और अपने लिए शाही महल बनाने का हुकम दिया।<sup>2</sup> इसके लिए उसने 1,50,000 आदमियों की भरती की। 80,000 को उसने पहाड़ी कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें जबकि 70,000 अफ़राद की जिम्मादारी यह पत्थर यरूशालम लाना थी। इन सब पर सुलेमान ने 3,600 निगरान मुकर्रर किए।<sup>3</sup> उसने सूरे के बादशाह हीराम को इतला दी, “जिस तरह आप मेरे बाप दाऊद को देवदार की लकड़ी भेजते रहे जब वह अपने लिए महल बना रहे थे उसी तरह मुझे भी देवदार की लकड़ी भेजें।<sup>4</sup> मैं एक घर तामीर करके उसे रब अपने खुदा के नाम के लिए मखसूस करना चाहता हूँ। क्योंकि हमें ऐसी जगह की ज़रूरत है जिसमें उसके हुज़ूर खुशबूदार बाख़र जलाया जाए, रब के लिए मखसूस रोटियों बाकायदगी से मेज़ पर रखी जाएँ और खास मौकों पर भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश की जाएँ यानी हर सुबहो-शाम, सबत के दिन, नए चाँद की ईदों और रब हमारे खुदा की दीगर मुकर्रर ईदों पर। यह इसराईल का दायमी फ़र्ज़ है।

5 जिस घर को मैं बनाने को हूँ वह निहायत अजीम होगा, क्योंकि हमारा खुदा दीगर तमाम माबूदों से कहीं अजीम है। 6 लेकिन कौन उसके लिए ऐसा घर बना सकता है जो उसके लायक हो? बुलंदतरिन आसमान भी उस की रिहाइश के लिए छोटा है। तो फिर मेरी क्या हैसियत है कि उसके लिए घर बनाऊँ? मैं सिर्फ़ ऐसी जगह बना सकता हूँ जिसमें उसके लिए कुर्बानियाँ चढ़ाई जा सकें।

7 चुनौचे मेरे पास किसी ऐसे समझदार कारीगर को भेज दें जो महारत से सोने-चाँदी, पीतल और लोहे का काम जानता हो। वह नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का कपड़ा बनाने और कंदाकारी का उस्ताद भी हो। ऐसा शख्स यरूशलम और यहूदाह में मेरे उन कारीगरों का इंचाज्बे नो जिन्हें मेरे बाप दाऊद ने काम पर लगाया है। 8 इसके अलावा मुझे लुबनान से देवदार, जूनीपर और दीगर कीमती दरख्तों की लकड़ी भेज दें। क्योंकि मैं जानता हूँ कि आपके लोग उम्दा किस्म के लकड़हारे हैं। मेरे आदमी आपके लोगों के साथ मिलकर काम करेंगे। 9 हमें बहुत-सी लकड़ी की जरूरत होगी, क्योंकि जो घर मैं बनाना चाहता हूँ वह बड़ा और शानदार होगा। 10 आपके लकड़हारों के काम के मुआवजे में मैं 32,75,000 किलोग्राम गंदुम, 27,00,000 किलोग्राम जौ, 4,40,000 लिटर मै और 4,40,000 लिटर जैतून का तेल दूँगा।”

11 सूर के बादशाह हीराम ने खत लिखकर सुलेमान को जवाब दिया, “रब अपनी कौम को प्यार करता है, इसलिए उसने आपको उसका बादशाह बनाया है। 12 रब इसराईल के खुदा की हम्द हो जिसने आसमानों-ज़मीन को खलक किया है कि उसने दाऊद बादशाह को इतना दानिशमंद बेटा अता किया है। उस की तमजीद हो कि यह अक़लमंद और समझदार बेटा रब के लिए घर और अपने लिए महल तामीर करेगा। 13 मैं आपके पास एक माहिर और समझदार कारीगर को भेज देता हूँ जिसका नाम हीराम-अबी है। 14 उस की इसराईली माँ, दान के कबीले की है जबकि उसका बाप सूर का है। हीराम सोने-चाँदी, पीतल, लोहे, पत्थर और लकड़ी की चीज़ें बनाने में महारत रखता है। वह नीले, अरगवानी और किरमिजी रंग का कपड़ा और कतान का बारीक कपड़ा बना सकता है। वह हर किस्म की कंदाकारी में भी माहिर है। जो भी मनसूबा उसे पेश किया जाए उसे वह पायाए-तकमील तक पहुँचा सकता है। यह आदमी आपके और आपके मुअज़्जज बाप दाऊद के कारीगरों के साथ मिलकर काम करेगा। 15 चुनौचे जिस गंदुम, जौ, जैतून के तेल और मै का जिक्र मेरे आका ने किया वह अपने खादिमों को भेज दें। 16 मुआवजे में हम आपके लिए दरकार दरख्तों को लुबनान में कटवाएँगे और उनके बेड़े बाँधकर समुंद्र के ज़रीए याफा शहर तक पहुँचा देंगे। वहाँ से आप उन्हें यरूशलम ले जा सकेंगे।”

17 सुलेमान ने इसराईल में आबाद तमाम गैरमुल्कियों की मर्दुमशुमारी करवाई। (उसके बाप दाऊद ने भी उनकी मर्दुमशुमारी करवाई थी।) मालूम हुआ कि इसराईल में 1,53,600 गैरमुल्की रहते हैं। 18 इनमें से उसने 80,000 को पहाड़ी कानों में लगाया ताकि वह पत्थर निकालें जबकि 70,000 अफ़राद की जिम्मादारी यह पत्थर यरूशलम लाना थी। इन सब पर सुलेमान ने 3,600 निगरान मुकर्रर किए।

### 3

#### रब के घर की तामीर

1 सुलेमान ने रब के घर को यरूशलम की पहाड़ी मोरियाह पर तामीर किया। उसका बाप दाऊद यह मकाम मुकर्रर कर चुका था। यहीं जहाँ पहले उरनान यानी अरोनाह यबूसी अपना अनाज गाहता था रब दाऊद पर जाहिर हुआ था। 2 तामीर का यह काम सुलेमान की हुकूमत के चौथे साल के दूसरे माह और उसके दूसरे दिन शुरू हुआ।

3 मकान की लंबाई 90 फुट और चौड़ाई 30 फुट थी। 4 सामने एक बरामदा बनाया गया जो इमारत जितना चौड़ा यानी 30 फुट और 30 फुट ऊँचा था। उस की अंदरूनी दीवारों पर उसने खालिस सोना चढ़ाया। 5 बड़े हाल की दीवारों पर उसने ऊपर से लेकर नीचे तक जूनीपर की लकड़ी के तख्ते लगाए, फिर तख्तों पर खालिस सोना मँढवाकर उन्हें खजूर के दरख्तों और जंजीरों की तस्वीरों से आरस्ता किया। 6 सुलेमान ने रब के घर को जवाहर से भी सजाया। जो सोना इस्तेमाल हुआ वह परवायम से मँगवाया गया था। 7 सोना मकान, तमाम शहतीरों, दहलीज़ों, दीवारों और दरवाज़ों पर मँढा गया। दीवारों पर कर्बूकी फ़रिशतों की तस्वीरें भी कंदा की गईं।

#### मुक़द्दसतरिन कमरा

8 इमारत का सबसे अंदरूनी कमरा बनाम मुक़द्दसतरिन कमरा इमारत जैसा चौड़ा यानी 30 फुट था। उस की लंबाई भी 30 फुट थी। इस कमरे की तमाम दीवारों पर 20,000 किलोग्राम से जायद सोना मँढा गया। 9 सोने की कीलों का वज़न तकरीबन 600 ग्राम था। बालाखानों की दीवारों पर भी सोना मँढा गया।

10 फिर सुलेमान ने कर्बूकी फ़रिशतों के दो मुजस्समे बनवाए जिन्हें मुक़द्दसतरिन कमरे में रखा गया। उन पर भी सोना चढ़ाया गया। 11-13 जब दोनों फ़रिशतों को एक दूसरे के साथ मुक़द्दसतरिन कमरे में खड़ा किया गया तो उनके चार परो की मिलकर लंबाई 30 फुट थी। हर एक के दो पर थे, और हर पर की लंबाई साढ़े सात सात फुट थी। उन्हें मुक़द्दसतरिन कमरे

में यों एक दूसरे के साथ खड़ा किया गया कि हर फरिश्ते का एक पर दूसरे के पर से लगता जबकि दाईं और बाईं तरफ हर एक का दूसरा पर दीवार के साथ लगता था। वह अपने पाँवों पर खड़े बड़े हाल की तरफ देखते थे।<sup>14</sup> मुकद्दसतरीन कमरे के दरवाजे पर सुलेमान ने बारीक कतान से बुना हुआ परदा लगवाया। वह नीले, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के धागे से सजा हुआ था, और उस पर कर्बूबी फरिश्तों की तस्वीरें थीं।

#### रब के घर के दरवाजे पर दो सतून

<sup>15</sup> सुलेमान ने दो सतून ढलवाकर रब के घर के दरवाजे के सामने खड़े किए। हर एक 27 फुट लंबा था, और हर एक पर एक बालाई हिस्सा रखा गया जिसकी ऊँचाई साढ़े 7 फुट थी।<sup>16</sup> इन बालाई हिस्सों को जंजीरों से सजाया गया जिनसे सौ अनार लटके हुए थे।<sup>17</sup> दोनों सतूनों को सुलेमान ने रब के घर के दरवाजे के दाईं और बाईं तरफ खड़ा किया। दहने हाथ के सतून का नाम उसने 'यकीन' और बाएँ हाथ के सतून का नाम 'बोअज' रखा।

## 4

#### कुरबानगाह और समुंदर नामी हौज़

<sup>1</sup> सुलेमान ने पीतल की एक कुरबानगाह भी बनवाई जिसकी लंबाई 30 फुट, चौड़ाई 30 फुट और ऊँचाई 15 फुट थी।  
<sup>2</sup> इसके बाद उसने पीतल का बड़ा गोल हौज़ ढलवाया जिसका नाम 'समुंदर' रखा गया। उस की ऊँचाई साढ़े 7 फुट, उसका मुँह 15 फुट चौड़ा और उसका घेरा तकर्रीबन 45 फुट था।<sup>3</sup> हौज़ के किनारे के नीचे बैलों की दो कतारें थीं। फी फुट तकर्रीबन 6 बैल थे। बैल और हौज़ मिलकर ढाले गए थे।<sup>4</sup> हौज़ को बैलों के 12 मुजस्समों पर रखा गया। तीन बैलों का स्रख शिमाल की तरफ, तीन का स्रख मगरिब की तरफ, तीन का स्रख जुनूब की तरफ और तीन का स्रख मशरिफ की तरफ था। उनके पिछले हिस्से हौज़ की तरफ थे, और हौज़ उनके कंधों पर पड़ा था।<sup>5</sup> हौज़ का किनारा प्याले बल्कि सोसन के फूल की तरह बाहर की तरफ मुड़ा हुआ था। उस की दीवार तकर्रीबन तीन इंच मोटी थी, और हौज़ में पानी के तकर्रीबन 66,000 लिटर समा जाते थे।

<sup>6</sup> सुलेमान ने 10 बासन ढलवाए। पाँच को रब के घर के दाएँ हाथ और पाँच को उसके बाएँ हाथ खड़ा किया गया। इन बासनों में गोशत के वह टुकड़े धोए जाते जिन्हें भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर जलाना था। लेकिन 'समुंदर' नामी हौज़ इमामों के इस्तेमाल के लिए था। उसमें वह नहाते थे।

#### सोने के शमादान और मेज़ें

<sup>7</sup> सुलेमान ने सोने के 10 शमादान मुकर्रर तफसीलात के मुताबिक बनवाकर रब के घर में रख दिए, पाँच को दाईं तरफ और पाँच को बाईं तरफ।<sup>8</sup> दस मेज़ें भी बनाकर रब के घर में रखी गईं, पाँच को दाईं तरफ और पाँच को बाईं तरफ। इन चीजों के अलावा सुलेमान ने छिड़काव के सोने के 100 कटोरें बनवाए।

#### सहन

<sup>9</sup> फिर सुलेमान ने वह अंदरूनी सहन बनवाया जिसमें सिर्फ इमामों को दाखिल होने की इजाज़त थी। उसने बड़ा सहन भी उसके दरवाजों समेत बनवाया। दरवाजों के किवाड़ों पर पीतल चढ़ाया गया।<sup>10</sup> 'समुंदर' नामी हौज़ को सहन के जुनूब-मशरिफ में रखा गया।

#### उस सामान की फहरिस्त जो हीराम ने तैयार किया

<sup>11</sup> हीराम ने बासन, बेलचे और छिड़काव के कटोरें भी बनाए। यों उसने अल्लाह के घर में वह सारा काम मुकम्मल किया जिसके लिए सुलेमान बादशाह ने उसे बुलाया था। उसने जैल की चीजें बनाई :

<sup>12</sup> दो सतून,

सतूनों पर लगे प्यालानुमा बालाई हिस्से,

बालाई हिस्सों पर लगी जंजीरों का डिज़ायन,

<sup>13</sup> जंजीरों के ऊपर लगे अनार (फी बालाई हिस्सा 200 अदद),

<sup>14</sup> हथगाड़ियाँ,

इन पर के पानी के बासन,

<sup>15</sup> हौज़ बनाम समुंदर,

इसे उठानेवाले बैल के 12 मुजस्समे,

<sup>16</sup> बालटियों, बेलचे, गोशत के कौंटे।

तमाम सामान जो हीराम-अबी ने सुलेमान के हुकम पर रब के घर के लिए बनाया पीतल से ढालकर पालिश किया गया था। 17 बादशाह ने उसे वादीए-यरदन में सुककात और जरतान के दरमियान ढलवाया। वहाँ एक फौडरी थी जहाँ हीराम ने गारे से साँचे बनाकर हर चीज़ ढाल दी। 18 इस सामान के लिए सुलेमान बादशाह ने इतना ज्यादा पीतल इस्तेमाल किया कि उसका कुल वजन मालूम न हो सका।

रब के घर के अंदर सोने का सामान

19 अल्लाह के घर के अंदर के लिए सुलेमान ने दर्जे-ज़ैल सामान बनवाया :

सोने की कुरबानगाह,

सोने की वह मेज़ें जिन पर रब के लिए मखसूस रोटियाँ पड़ी रहती थीं,

20 खालिस सोने के वह शमादान और चराग जिनको कवायद के मुताबिक मुकद्दसतरीन कमरे के सामने जलना था,

21 खालिस सोने के वह फूल जिनसे शमादान आरास्ता थे,

खालिस सोने के चराग और बत्ती को बुझाने के औज़ार,

22 चराग को कतरने के खालिस सोने के औज़ार, छिड़काव के खालिस सोने के कटोरे और प्याले,

जलते हुए कोयले के लिए खालिस सोने के बरतन,

मुकद्दसतरीन कमरे और बड़े हाल के दरवाजे।

## 5

1 रब के घर की तकमील पर सुलेमान ने वह सोना-चाँदी और बाक़ी तमाम क़ीमती चीज़ें रब के घर के खज़ानों में रखवा दी जो उसके बाप दाऊद ने अल्लाह के लिए मखसूस की थीं।

अहद का संदूक रब के घर में लाया जाता है

2 फिर सुलेमान ने इसराइल के तमाम बुजुर्गों और क़बीलों और कुंभों के तमाम सरपरस्तों को अपने पास यरूशलम में बुलाया, क्योंकि रब के अहद का संदूक अब तक यरूशलम के उस हिस्से में था जो 'दाऊद का शहर' या सिथ्यून कहलाता है। सुलेमान चाहता था कि क़ौम के नुमाइंदे हाज़िर हों जब संदूक को वहाँ से रब के घर में पहुँचाया जाए। 3 चुनौचे इसराइल के तमाम मर्द साल के सातवें महीने \* में बादशाह के पास यरूशलम में जमा हुए। इसी महीने में झोंपड़ियों की ईद मनाई जाती थी।

4 जब सब जमा हुए तो लावी रब के संदूक को उठाकर 5 रब के घर में लाए। इमामों के साथ मिलकर उन्होंने मुलाकात के ख़ैमे को भी उसके तमाम मुकद्दस सामान समेत रब के घर में पहुँचाया। 6 वहाँ संदूक के सामने सुलेमान बादशाह और बाक़ी तमाम जमाशुदा इसराइलियों ने इतनी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल कुरबान किए कि उनकी तादाद गिनी नहीं जा सकती थी।

7 इमामों ने रब के अहद का संदूक पिछले यानी मुकद्दसतरीन कमरे में लाकर क़रबी फ़रिशतों के परों के नीचे रख दिया। 8 फ़रिशतों के पर पूरे संदूक पर उस की उठाने की लकड़ियों समेत फैले रहे। 9 तो भी उठाने की यह लकड़ियाँ इतनी लंबी थीं कि उनके सिरे सामनेवाले यानी मुकद्दस कमरे से नज़र आते थे। लेकिन वह बाहर से देखे नहीं जा सकते थे। आज तक वह वही मौजूद हैं। 10 संदूक में सिर्फ पत्थर की वह दो तख्तियाँ थीं जिनको मूसा ने होरिब यानी कोहे-सीना के दामन में उसमें रख दिया था, उस वक़्त जब रब ने मिसर से निकले हुए इसराइलियों के साथ अहद बाँधा था। 11 फिर इमाम मुकद्दस कमरे से निकलकर सहन में आए।

जितने इमाम आए थे उन सबने अपने आपको पाक-साफ़ किया हुआ था, खाह उस वक़्त उनके गुरोह की रब के घर में झूटी थी या नहीं। 12 लावियों के तमाम गुल्क़ार भी हाज़िर थे। उनके राहनुमा आसफ़, हैमान और यदूतन अपने बेटों और रिश्तेदारों समेत सब बारीक कतान के लिबास पहने हुए कुरबानगाह के मशरिक में खड़े थे। वह झॉझ, सितार और सरोद बजा रहे थे, जबकि उनके साथ 120 इमाम तुरम फूँक रहे थे। 13 गानेवाले और तुरम बजानेवाले मिलकर रब की सताइश कर रहे थे। तुरमों, झॉझों और बाक़ी साज़ों के साथ उन्होंने बुलंद आवाज़ से रब की तमज़ीद में गीत गाया, "वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।"

तब रब का घर एक बादल से भर गया। 14 इमाम रब के घर में अपनी ख़िदमत अंजाम न दे सके, क्योंकि अल्लाह का घर उसके जलाल के बादल से मामूर हो गया था।

\* 5:3 सितंबर ता अक्तूबर

## 6

1 यह देखकर सुलेमान ने दुआ की, “रब ने फ़रमाया है कि मैं घने बादल के अधरे में रहूँगा। 2 मैंने तेरे लिए अज़ीम सुकूनतगाह बनाई है, एक मक़ाम जो तेरी अबदी सुकूनत के लायक है।”

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की तक़रीर

3 फिर बादशाह ने मुडकर रब के घर के सामने खड़ी इसराईल की पूरी जमात की तरफ़ स़ख़ किया। उसने उन्हें बरकत देकर कहा,

4 “रब इसराईल के खुदा की तराफ़ हो जिसने वह वादा पूरा किया है जो उसने मेरे बाप दाऊद से किया था। क्योंकि उसने फ़रमाया, 5 ‘जिस दिन मैं अपनी क़ौम को मिसर से निकाल लाया उस दिन से लेकर आज तक मैंने न कभी फ़रमाया कि इसराईली क़बीलों के किसी शहर में मेरे नाम की ताज़ीम में घर बनाया जाए, न किसी को मेरी क़ौम इसराईल पर हुकूमत करने के लिए मुकर्रर किया। 6 लेकिन अब मैंने यरूशलम को अपने नाम की सुकूनतगाह और दाऊद को अपनी क़ौम इसराईल का बादशाह बनाया है।’

7 मेरे बाप दाऊद की बड़ी खाहिश थी कि रब इसराईल के खुदा के नाम की ताज़ीम में घर बनाए। 8 लेकिन रब ने एतराज़ किया, ‘मैं खुश हूँ कि तू मेरे नाम की ताज़ीम में घर तामीर करना चाहता है, 9 लेकिन तू नहीं बल्कि तेरा बेटा ही उसे बनाएगा।’

10 और वाकई, रब ने अपना वादा पूरा किया है। मैं रब के वादे के ऐन मुताबिक अपने बाप दाऊद की जगह इसराईल का बादशाह बनकर तख़्त पर बैठ गया हूँ। और अब मैंने रब इसराईल के खुदा के नाम की ताज़ीम में घर भी बनाया है। 11 उसमें मैंने वह संदक़ रख दिया है जिसमें शरीअत की तख़्तियाँ पड़ी हैं, उस अहद की तख़्तियाँ जो रब ने इसराईलियों से बौंधा था।”

रब के घर की मख़सूसियत पर सुलेमान की दुआ

12 फिर सुलेमान ने इसराईल की पूरी जमात के देखते देखते रब की क़ुरबानगाह के सामने खड़े होकर अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाए। 13 उसने इस मौके के लिए पीतल का एक चबूतरा बनवाकर उसे बैरूनी सहन के बीच में रखवा दिया था। चबूतरा साढ़े 7 फ़ुट लंबा, साढ़े 7 फ़ुट चौड़ा और साढ़े 4 फ़ुट ऊँचा था। अब सुलेमान उस पर चढ़कर पूरी जमात के देखते देखते झुक गया। अपने हाथों को आसमान की तरफ़ उठाकर 14 उसने दुआ की,

“ऐ रब इसराईल के खुदा, तूज़ जैसा कोई खुदा नहीं है, न आसमान और न ज़मीन पर। तू अपना वह अहद कायम रखता है जिसे तूने अपनी क़ौम के साथ बौंधा है और अपनी मेहरबानी उन सब पर जाहिर करता है जो पूरे दिल से तेरी राह पर चलते हैं। 15 तूने अपने खादिम दाऊद से किया हुआ वादा पूरा किया है। जो बात तूने अपने मुँह से मेरे बाप से की वह तूने अपने हाथ से आज ही पूरी की है। 16 ऐ रब इसराईल के खुदा, अब अपनी दूसरी बात भी पूरी कर जो तूने अपने खादिम दाऊद से की थी। क्योंकि तूने मेरे बाप से वादा किया था, ‘अगर तेरी औलाद तेरी तरह अपने चाल-चलन पर ध्यान देकर मेरी शरीअत के मुताबिक मेरे हुज़ूर चलती रहे तो इसराईल पर उस की हुकूमत हमेशा तक कायम रहेगी।’ 17 ऐ रब इसराईल के खुदा, अब बराहे-करम अपना यह वादा पूरा कर जो तूने अपने खादिम दाऊद से किया है।

18 लेकिन क्या अल्लाह वाकई ज़मीन पर इनसान के दरमियान सुकूनत करेगा? नहीं, तू तो बुलंदतरिन आसमान में भी समा नहीं सकता! तो फिर यह मक़ान जो मैंने बनाया है किस तरह तेरी सुकूनतगाह बन सकता है? 19 ऐ रब मेरे खुदा, तो भी अपने खादिम की दुआ और इत्तिजा सुन जब मैं तेरे हुज़ूर पुकारते हुए इलतमास करता हूँ 20 कि बराहे-करम दिन-रात इस इमामत की निगरानी कर! क्योंकि यह वह जगह है जिसके बारे में तूने खुद फ़रमाया, ‘यहाँ मेरा नाम सुकूनत करेगा।’ चुनौते अपने खादिम की गुज़ारिश सुन जो मैं इस मक़ाम की तरफ़ स़ख़ किए हुए करता हूँ। 21 जब हम इस मक़ाम की तरफ़ स़ख़ करके दुआ करें तो अपने खादिम और अपनी क़ौम की इत्तिजाएँ सुन। आसमान पर अपने तख़्त से हमारी सुन। और जब सुनेगा तो हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर!

22 अगर किसी पर इलज़ाम लगाया जाए और उसे यहाँ तेरी क़ुरबानगाह के सामने लाया जाए ताकि हलफ़ उठाकर वादा करे कि मैं बेक़सूर हूँ 23 तो बराहे-करम आसमान पर से सुनकर अपने खादिमों का इनसाफ़ कर। क़सूरवार को सज़ा देकर उसके अपने सर पर वह कुछ आने दे जो उससे सरज़द हुआ है, और बेक़सूर को बेइलज़ाम करार दे और उस की रास्तबाज़ी का बदला दे।

24 हो सकता है किसी वक़्त तेरी क़ौम इसराईल तेरा गुनाह करे और नतीजे में दुश्मन के सामने शिकस्त खाए। अगर इसराईली आख़िरकार तेरे पास लौट आएँ और तेरे नाम की तमज़ीद करके यहाँ इस घर में तेरे हुज़ूर दुआ और इलतमास करें 25 तो आसमान पर से उनकी फ़रियाद सुन लेना। अपनी क़ौम इसराईल का गुनाह मुआफ़ करके उन्हें दुबारा उस मुल्क में वापस लाना जो तूने उन्हें और उनके बापदादा को दे दिया था।



26 हो सकता है इसराइलीं तेरा इतना संगीन गुनाह करे कि काल पड़े और बड़ी देर तक बारिश न बरसे। अगर वह आखिरकार इस घर की तरफ स्रख करके तेरे नाम की तमजीद करें और तेरी सजा के बाइस अपना गुनाह छोड़कर लौट आएँ 27 तो आसमान पर से उनकी फरियाद सुन लेना। अपने खादिमों और अपनी कौम इसराइल को मुआफ़ कर, क्योंकि तू ही उन्हें अच्छी राह की तालीम देता है। तब उस मुल्क पर दुबारा बारिश बरसा दे जो तूने अपनी कौम को मीरास में दे दिया है।

28 हो सकता है इसराइल में काल पड़ जाए, अनाज की फ़सल किसी बीमारी, फफूँदी, टिट्टियों या कीड़ों से मुतअस्सिर हो जाए, या दुश्मन किसी शहर का मुहासरा करे। जो भी मुसीबत या बीमारी हो, 29 अगर कोई इसराइलीं या तेरी पूरी कौम उसका सबब जानकर अपने हाथों को इस घर की तरफ बढ़ाए और तुझसे इलतमास करे 30 तो आसमान पर अपने तख़्त से उनकी फरियाद सुन लेना। उन्हें मुआफ़ करके हर एक को उस की तमाम हरकतों का बदला दे, क्योंकि सिर्फ़ तू ही हर इन्सान के दिल को जानता है। 31 फिर जितनी देर वह उस मुल्क में जिंदगी गुज़ारेंगे जो तूने हमारे बापदादा को दिया था उतनी देर वह तेरा ख़ौफ़ मानकर तेरी राहों पर चलते रहेंगे।

32 आइंदा परदेसी भी तेरे अज़ीम नाम, तेरी बड़ी कुदरत और तेरे ज़बरदस्त कामों के सबब से आएँगे और इस घर की तरफ स्रख करके दुआ करेंगे। अगरचे वह तेरी कौम इसराइल के नहीं होंगे 33 तो भी आसमान पर से उनकी फरियाद सुन लेना। जो भी दरखास्त वह पेश करें वह पूरी करना ताकि दुनिया की तमाम अक़्रवाम तेरा नाम जानकर तेरी कौम इसराइल की तरह ही तेरा ख़ौफ़ मानें और जान लें कि जो इमारत मैंने तामीर की है उस पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।

34 हो सकता है तेरी कौम के मर्द तेरी हिदायत के मुताबिक़ अपने दुश्मन से लड़ने के लिए निकलें। अगर वह तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ स्रख करके दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए तामीर की है 35 तो आसमान पर से उनकी दुआ और इलतमास सुनकर उनके हक़ में इन्साफ़ कायम रखना।

36 हो सकता है वह तेरा गुनाह करें, ऐसी हरकतें तो हम सबसे सरज़द होती रहती हैं, और नतीजे में तू नाराज़ होकर उन्हें दुश्मन के हवाले कर दे जो उन्हें कैद करके किसी दूर-दराज़ या करीबी मुल्क में ले जाए। 37 शायद वह जिलावतनी में तौबा करके दुबारा तेरी तरफ स्रख़ करें और तुझसे इलतमास करें, ‘हमने गुनाह किया है, हमसे गलती हुई है, हमने बेदीन हरकतें की हैं।’

38 अगर वह ऐसा करके अपनी कैद के मुल्क में अपने पूरे दिलो-जान से दुबारा तेरी तरफ स्रख़ करें और तेरी तरफ से बापदादा को दिए गए मुल्क, तेरे चुने हुए शहर और उस इमारत की तरफ स्रख करके दुआ करें जो मैंने तेरे नाम के लिए तामीर की है 39 तो आसमान पर अपने तख़्त से उनकी दुआ और इलतमास सुन लेना। उनके हक़ में इन्साफ़ कायम करना, और अपनी कौम के गुनाहों को मुआफ़ कर देना। 40 ऐ मेरे ख़ुदा, तेरी आँखें और तेरे कान उन दुआओं के लिए खुले रहें जो इस जगह पर की जाती हैं।

41 ऐ रब ख़ुदा, उठकर अपनी आरामगाह के पास आ, तू और अहद का संदूक जो तेरी कुदरत का इज़हार है। ऐ रब ख़ुदा, तेरे इमाम नजात से मुल्बबस हो जाएँ, और तेरे इमानदार तेरी भलाई की ख़ुशी मनाएँ। 42 ऐ रब ख़ुदा, अपने मसह किए हुए ख़ादिम को रद्द न कर बल्कि उस शफ़क़त को याद कर जो तूने अपने ख़ादिम दाऊद पर की है।”

## 7

### रब के घर की मख़सूसियत पर ज़शन

1 सुलेमान की इस दुआ के इख़्तिताम पर आग ने आसमान पर से नाज़िल होकर भस्म होनेवाली और ज़बह की कुरबानियों को भस्म कर दिया। साथ साथ रब का घर उसके जलाल से यों मामूर हुआ 2 कि इमाम उसमें दाख़िल न हो सके। 3 जब इसराइलियों ने देखा कि आसमान पर से आग नाज़िल हुई है और घर रब के जलाल से मामूर हो गया है तो वह मुँह के बल झुककर रब की हम्दो-सना करके गीत गाने लगे, “वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।”

4-5 फिर बादशाह और तमाम कौम ने रब के हुज़ूर कुरबानियाँ पेश करके अल्लाह के घर को मख़सूस किया। इस सिलसिले में सुलेमान ने 22,000 गाय-बैलें और 1,20,000 भेड़-बकरियों को कुरबान किया। 6 इमाम और लावी अपनी अपनी जिम्मादारियों के मुताबिक़ खड़े थे। लावी उन साज़ों को बजा रहे थे जो दाऊद ने रब की सताइश करने के लिए बनवाए थे। साथ साथ वह हम्द का वह गीत गा रहे थे जो उन्होंने दाऊद से सीखा था, “उस की शफ़क़त अबदी है।” लावियों के मुकाबिल इमाम तुरम बजा रहे थे जबकि बाक़ी तमाम लोग खड़े थे। 7 सुलेमान ने सहन का दरमियानी हिस्सा कुरबानियाँ चढ़ाने के लिए मख़सूस किया। वज़ह यह थी कि पीतल की कुरबानगाह इतनी कुरबानियाँ पेश करने के लिए छोटी थी, क्योंकि भस्म होनेवाली कुरबानियों और गल्ला की नज़रों की तादाद बहुत ज़्यादा थी। इसके अलावा सलामती की बेशुमार कुरबानियों की चरबी को भी जलाना था।

8-9 ईद 14 दिनों तक मनाई गई। पहले हफ्ते में सुलेमान और तमाम इसराइल ने कुरबानगाह की मखसूसियत मनाई और दूसरे हफ्ते में झोंपड़ियों की ईद। इस ईद में बहुत ज्यादा लोग शरीक हुए। वह दूर-दराज इलाकों से यरूशलम आए थे, शिमाल में लबो-हमात से लेकर जुनुब में उस वादी तक जो मिसर की सरहद थी। आखिरी दिन पूरी जमात ने इखितामी जशन मनाया। 10 यह सातवें माह के 23वें दिन वुकूपज़ीर हुआ। इसके बाद सुलेमान ने इसराइलियों को रखसत किया। सब शादमान और दिल से खुश थे कि रब ने दाऊद, सुलेमान और अपनी क्रौम इसराइल पर इतनी मेहरबानी की है।

रब सुलेमान से हमकलाम होता है

11 चुनौचे सुलेमान ने रब के घर और शाही महल को तकमील तक पहुँचाया। जो कुछ भी उसने ठान लिया था वह पूरा हुआ। 12 एक रात रब उस पर ज़ाहिर हुआ और कहा,

‘मैंने तेरी दुआ को सुनकर तय कर लिया है कि यह घर वही जगह हो जहाँ तुम मुझे कुरबानियाँ पेश कर सको। 13 जब कभी मैं बारिश का सिलसिला रोक्केँ, या फसलें खराब करने के लिए टिट्टियाँ भेजूँ या अपनी क्रौम में वबा फैलने दूँ 14 तो अगर मेरी क्रौम जो मेरे नाम से कहलाती है अपने आपको पस्त करे और दुआ करके मेरे चेहरे की तालिब हो और अपनी शरीर राहों से बाज़ आए तो फिर मैं आसमान पर से उस की सुनकर उसके गुनाहों को मुआफ़ कर दूँगा और मुल्क को बहाल करूँगा। 15 अब से जब भी यहाँ दुआ माँगी जाए तो मेरी आँखें खुली रहेंगी और मेरे कान उस पर ध्यान देंगे। 16 क्योंकि मैंने इस घर को चुनकर मखसूसो-मुक़द्दस कर रखा है ताकि मेरा नाम हमेशा तक यहाँ कायम रहे। मेरी आँखें और दिल हमेशा इसमें हाज़िर रहेंगे। 17 जहाँ तक तेरा ताल्लुक है, अपने बाप दाऊद की तरह मेरे हज़ूर चलता रह। क्योंकि अगर तू मेरे तमाम अहकाम और हिदायत की पैरवी करता रहे 18 तो मैं तेरी इसराइल पर हुक्मत कायम रखूँगा। फिर मेरा वह वादा कायम रहेगा जो मैंने तेरे बाप दाऊद से अहद बाँधकर किया था कि इसराइल पर तेरी औलाद की हुक्मत हमेशा तक कायम रहेगी।

19 लेकिन खबरदार! अगर तू मुझसे दूर होकर मेरे दिए गए अहकाम और हिदायत को तर्क करे बल्कि दीगर माबूदों की तरफ़ रूजू करके उनकी खिदमत और परस्तिश करे 20 तो मैं इसराइल को जड़ से उखाड़कर उस मुल्क से निकाल दूँगा जो मैंने उनको दे दिया है। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं इस घर को भी रद्द कर दूँगा जो मैंने अपने नाम के लिए मखसूसो-मुक़द्दस कर लिया है। उस वक़्त मैं इसराइल को तमाम अक़लाम में मज़ाक और लान-तान का निशाना बना दूँगा। 21 इस शानदार घर की बुरी हालत देखकर यहाँ से गुज़रनेवाले तमाम लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह पछेंगे, ‘रब ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा सलूक क्यों किया?’ 22 तब लोग जवाब देंगे, ‘इसलिए कि गो रब उनके बापदादा का खुदा उन्हें मिसर से निकालकर यहाँ लाया तो भी यह लोग उसे तर्क करके दीगर माबूदों से चिमट गए हैं। चूँकि वह उनकी परस्तिश और खिदमत करने से बाज़ न आए इसलिए उसने उन्हें इस सारी मुसीबत में डाल दिया है।’

## 8

सुलेमान की मुख्तलिफ़ मुहिमात

1 रब के घर और शाही महल को तामीर करने में 20 साल लग गए थे। 2 इसके बाद सुलेमान ने वह आबादियाँ नए सिरे से तामीर कीं जो हीराम ने उसे दे दी थी। इनमें उसने इसराइलियों को बसा दिया।

3 एक फ़ौजी मुहिम के दौरान उसने हमात-जोबाह पर हमला करके उस पर कब्ज़ा कर लिया। 4 इसके अलावा उसने हमात के इलाके में गोदाम के शहर बनाए। रेगिस्तान के शहर तदमूर में उसने बहुत-सा तामीरी काम कराया 5-6 और इसी तरह बालाई और नशेबी बैत-होरून और बालात में भी। इन शहरों के लिए उसने फसील और कुंडेवाले दरवाज़े बनवाए। सुलेमान ने अपने गोदामों के लिए और अपने रथों और घोड़ों को रखने के लिए भी शहर बनवाए।

जो कुछ भी वह यरूशलम, लुबनान या अपनी सलतनत की किसी और जगह बनवाना चाहता था वह उसने बनवाया। 7-8 जिन आदमियों की सुलेमान ने बेगार पर भरती की वह इसराइली नहीं थे बल्कि हित्ती, अमोरी, फरिज्जी, हिब्वी और यबूसी यानी कनान के पहले बाशिंदों की वह औलाद थे जो बाकी रह गए थे। मुल्क पर कब्ज़ा करते वक़्त इसराइली इन क्रौमों को पूरे तौर पर मिटा न सके, और आज तक इनकी औलाद को इसराइल के लिए बेगार में काम करना पड़ता है। 9 लेकिन सुलेमान ने इसराइलियों को ऐसे काम करने पर मजबूर न किया बल्कि वह उसके फ़ौजी और रथों के फ़ौजियों के अफसर बन गए, और उन्हें रथों और घोड़ों पर मुक़रर किया गया। 10 सुलेमान के तामीरी काम पर भी 250 इसराइली मुक़रर थे जो ज़िलों पर मुक़रर अफसरों के ताबे थे। यह लोग तामीरी काम करनेवालों की निगरानी करते थे।

11 फिरौन की बेटी यस्शलम के पुराने हिस्से बनाम 'दाऊद का शहर' से उस महल में मुंतकिल हुई जो सुलेमान ने उसके लिए तामीर किया था, क्योंकि सुलेमान ने कहा, "लाज़िम है कि मेरी अहलिया इसराईल के बादशाह दाऊद के महल में न रहे। चूँकि रब का संदक यहाँ से गुज़रा है, इसलिए यह जगह मुकद्दस है।"

रब के घर में खिदमत की तरतीब

12 उस वक़्त से सुलेमान रब को रब के घर के बड़े हाल के सामने की कुरबानगाह पर भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करता था। 13 जो कुछ भी मूसा ने रोज़ाना की कुरबानियों के मुताल्लिक फरमाया था उसके मुताबिक बादशाह कुरबानियाँ चढ़ाता था। इनमें वह कुरबानियाँ भी शामिल थीं जो सबत के दिन, नए चाँद की ईद पर और साल की तीन बड़ी ईदों पर यानी फ़सह की ईद, हफ़्तों की ईद और झोपड़ियों की ईद पर पेश की जाती थीं। 14 सुलेमान ने इमामों के मुख्तलिफ़ गुरोहों को वह जिम्मादारियाँ सौंपी जो उसके बाप दाऊद ने मुकर्रर की थीं। लावियों की जिम्मादारियाँ भी मुकर्रर की गईं। उनकी एक जिम्मादारी रब की हम्दो-सना करने में परस्तारों की राहनुमाई करनी थी। नीज़, उन्हें रोज़ाना की ज़रूरियात के मुताबिक इमामों की मदद करनी थी। रब के घर के दरवाज़ों की पहरादारी भी लावियों की एक खिदमत थी। हर दरवाज़े पर एक अलग गुरोह की झूटी लगाई गई। यह भी मर्दे-ख़ुदा दाऊद की हिदायात के मुताबिक हुआ। 15 जो भी हुक्म दाऊद ने इमामों, लावियों और खज़ानों के मुताल्लिक दिया था वह उन्होंने पूरा किया।

16 यों सुलेमान के तमाम मनसूबे रब के घर की बुनियाद रखने से लेकर उस की तकमील तक पूरे हुए।

17 बाद में सुलेमान अस्-यून-जाबर और ऐलात गया। यह शहर अदोम के साहिल पर बाँके थे। 18 वहाँ हीराम बादशाह ने अपने जहाज़ और तज़रबाकार मल्लाह भेजे ताकि वह सुलेमान के आदमियों के साथ मिलकर जहाज़ों को चलाएँ। उन्होंने ओफ़ीर तक सफ़र किया और वहाँ से सुलेमान के लिए तक्रीबन 15,000 किलोग्राम सोना लेकर आए।

## 9

सबा की मलिका सुलेमान से मिलती है

1 सुलेमान की शोहरत सबा की मलिका तक पहुँच गई। जब उसने उसके बारे में सुना तो वह सुलेमान से मिलने के लिए रवाना हुई ताकि उसे मुश्किल पहेलियों पेश करके उस की दानिशमंदी जाँच ले। वह निहायत बड़े काफ़िले के साथ यस्शलम पहुँची जिसके ऊँट बलसान, कसरत के सोने और कीमती जवाहर से लदे हुए थे।

मलिका की सुलेमान से मुलाकात हुई तो उसने उससे वह तमाम मुश्किल सवालात पछे जो उसके ज़हन में थे। 2 सुलेमान उसके हर सवाल का जवाब दे सका। कोई भी बात इतनी पेचीदा नहीं थी कि वह उसका मतलब मलिका को बता न सकता।

3 सबा की मलिका सुलेमान की हिकमत और उसके नए महल से बहुत मुतअस्सिर हुई। 4 उसने बादशाह की मेज़ों पर के मुख्तलिफ़ खाने देखे और यह कि उसके अफ़सर किस तरतीब से उस पर बिठाए जाते थे। उसने बैरों की खिदमत, उनकी शानदार वरदियों और साकियों की शानदार वरदियों पर भी गौर किया। जब उसने इन बातों के अलावा भस्म होनेवाली वह कुरबानियाँ भी देखी जो सुलेमान रब के घर में चढ़ाता था तो मलिका हक्का-बक्का रह गई।

5 वह बोल उठी, "वाकई, जो कुछ मैंने अपने मुल्क में आपके शाहकारों और हिकमत के बारे में सुना था वह दुस्त है। 6 जब तक मैंने ख़ुद आकर यह सब कुछ अपनी आँखों से न देखा मुझे यकीन नहीं आता था। लेकिन हकीकत में मुझे आपकी ज़बरदस्त हिकमत के बारे में आधा भी नहीं बताया गया था। वह उन रिपोर्टों से कहीं ज़्यादा है जो मुझ तक पहुँची थीं। 7 आपके लोग कितने मुबारक हैं! आपके अफ़सर कितने मुबारक हैं जो मुसलसल आपके सामने खड़े रहते और आपकी दानिश भरी बातें सुनते हैं! 8 रब आपके ख़ुदा की तमज़ीद हो जिसने आपको पसंद करके अपने तख़्त पर बिठाया ताकि रब अपने ख़ुदा की ख़ातिर हुक्मत करे। आपका ख़ुदा इसराईल से मुहब्बत रखता है, और वह उसे अबद तक कायम रखना चाहता है, इसी लिए उसने आपको उनका बादशाह बना दिया है ताकि इनसाफ़ और रास्तबाज़ी कायम रखें।"

9 फिर मलिका ने सुलेमान को तक्रीबन 4,000 किलोग्राम सोना, बहुत ज़्यादा बलसान और जवाहर दे दिए। पहले कभी भी उतना बलसान इसराईल में नहीं लाया गया था जितना उस वक़्त सबा की मलिका लाई।

10 हीराम और सुलेमान के आदमी ओफ़ीर से न सिर्फ़ सोना लाए बल्कि उन्होंने कीमती लकड़ी और जवाहर भी इसराईल तक पहुँचाए। 11 जितनी कीमती लकड़ी उन दिनों में यहदाह में दरामद हुई उतनी पहले कभी वहाँ लाई नहीं गई थी। इस लकड़ी से बादशाह ने रब के घर और अपने महल के लिए सीढियाँ बनवाईं। यह मौसीकारों के सरोद और सितार बनाने के लिए भी इस्तेमाल हुईं।

12 सुलेमान बादशाह ने अपनी तरफ़ से सबा की मलिका को बहुत-से तोहफ़े दिए। यह उन चीज़ों से ज़्यादा थे जो मलिका अपने मुल्क से उसके पास लाई थीं। जो भी मलिका चाहती थी या उसने माँगा वह उसे दिया गया। फिर वह अपने नौकर-चाकरों और अफ़सरों के हमराह अपने वतन वापस चली गईं।

### सुलेमान की दौलत और शोहरत

13 जो सोना सुलेमान को सालाना मिलता था उसका वजन तकरीबन 23,000 किलोग्राम था। 14 इसमें वह टैक्स शामिल नहीं थे जो उसे सौदागरों, ताजिरों, अरब बादशाहों और जिलों के अफसरों से मिलते थे। यह उसे सोना और चाँदी देते थे।

15-16 सुलेमान बादशाह ने 200 बड़ी और 300 छोटी ढालें बनवाई। उन पर सोना मँदा गया। हर बड़ी ढाल के लिए तकरीबन 7 किलोग्राम सोना इस्तेमाल हुआ और हर छोटी ढाल के लिए साढ़े 3 किलोग्राम। सुलेमान ने उन्हें 'लुबनान का जंगल' नामी महल में महफूज़ रखा।

17 इनके अलावा बादशाह ने हाथीदाँत से आरास्ता एक बड़ा तख्त बनवाया जिस पर खालिस सोना चढ़ाया गया। 18-19 उसके हर बाजू के साथ शेरबबर का मुजस्समा था। तख्त कुछ ऊँचा था, और बादशाह छः पाएवाली सीढ़ी पर चढ़कर उस पर बैठता था। दाईं और बाईं तरफ़ हर पाए पर शेरबबर का मुजस्समा था। पाँवों के लिए सोने की चौकी बनाई गई थी। इस किस्म का तख्त किसी और सलतनत में नहीं पाया जाता था।

20 सुलेमान के तमाम प्याले सोने के थे, बल्कि 'लुबनान का जंगल' नामी महल में तमाम बरतन खालिस सोने के थे। कोई भी चीज़ चाँदी की नहीं थी, क्योंकि सुलेमान के ज़माने में चाँदी की कोई कदर नहीं थी। 21 बादशाह के अपने बहरी जहाज़ थे जो हीराम के बंदों के साथ मिलकर मुख्तलिफ़ जगहों पर जाते थे। हर तीन साल के बाद वह सोने-चाँदी, हाथीदाँत, बंदरों और मोरों से लदे हुए वापस आते थे।

22 सुलेमान की दौलत और हिकमत दुनिया के तमाम बादशाहों से कहीं ज्यादा थी। 23 दुनिया के तमाम बादशाह उससे मिलने की कोशिश करते रहे ताकि वह हिकमत सुन लें जो अल्लाह ने उसके दिल में डाल दी थी। 24 साल बसाल जो भी सुलेमान के दरबार में आता वह कोई न कोई तोहफा लाता। यों उसे सोने-चाँदी के बरतन, क्रीमती लिबास, हथियार, बलसान, घोड़े और खच्चर मिलते रहे।

25 घोड़ों और रथों को रखने के लिए सुलेमान के 4,000 थान थे। उसके 12,000 घोड़े थे। कुछ उसने रथों के लिए मख्सस किए गए शहरों में और कुछ यरूशलम में अपने पास रखे। 26 सुलेमान उन तमाम बादशाहों का हुक्मरान था जो दरियाए-फुरात से लेकर फिलिस्तिनियों के मुल्क की मिसरी सरहद तक हुक्मत करते थे। 27 बादशाह की सरगरमियों के बाइस चाँदी पत्थर जैसी आम हो गई और देवदार की क्रीमती लकड़ी मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके की अंजीर-तूत की सस्ती लकड़ी जैसी आम हो गई। 28 बादशाह के घोड़े मिसर और दीगर कई मुल्कों से दरामद होते थे।

### सुलेमान की मौत

29 सुलेमान की ज़िंदगी के बारे में मज़ीद बातें शुरू से लेकर आखिर तक 'नातन नबी की तारीख़,' सैला के रहनेवाले नबी अखियाह की किताब 'अखियाह की नबूवत' और यरूबियाम बिन नबात से मुताल्लिक़ किताब 'इडू गैबबीन की रोयाएँ' में दर्ज हैं।

30 सुलेमान 40 साल के दौरान पूरे इसराईल पर हुक्मत करता रहा। उसका दारूल-हुक्मत यरूशलम था। 31 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफन किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर उसका बेटा रहुबियाम तख्तनशीन हुआ।

## 10

### शिमाली कबीले अलग हो जाते हैं

1 रहुबियाम सिकम गया, क्योंकि वहाँ तमाम इसराईली उसे बादशाह मुकर्रर करने के लिए जमा हो गए थे। 2 यरूबियाम बिन नबात यह खबर सुनते ही मिसर से जहाँ उसने सुलेमान बादशाह से भागकर पनाह ली थी इसराईल वापस आया। 3 इसराईलियों ने उसे बुलाया ताकि उसके साथ सिकम जाएँ। जब पहुँचा तो इसराईल की पूरी जमात यरूबियाम के साथ मिलकर रहुबियाम से मिलने गई। उन्होंने बादशाह से कहा, 4 "जो जुआ आपके बाप ने हम पर डाल दिया था उसे उठाना मुश्किल था, और जो वक्त और पैसे हमें बादशाह की खिदमत में सर्फ़ करने थे वह नाकाबिले-बरदाशत थे। अब दोनों को कम कर दें। फिर हम खुशी से आपकी खिदमत करेंगे।"

5 रहुबियाम ने जवाब दिया, "मुझे तीन दिन की मोहलत दें, फिर दुबारा मेरे पास आएँ।" चुनौचे लोग चले गए। 6 फिर रहुबियाम बादशाह ने उन बुजुर्गों से मशवरा किया जो सुलेमान के जीते-जी बादशाह की खिदमत करते रहे थे। उसने पूछा, "आपका क्या खयाल है? मैं इन लोगों को क्या जवाब दूँ?" 7 बुजुर्गों ने जवाब दिया, "हमारा मशवरा है कि इस वक्त उनसे मेहरबानी से पेश आकर उनसे अच्छा सुल्क करें और नरम जवाब दें। अगर आप ऐसा करें तो वह हमेशा आपके वफ़ादार खादिम बने रहेंगे।"

8 लेकिन रहुबियाम ने बुजुर्गों का मशवरा रद्द करके उस की खिदमत में हाजिर उन जवानों से मशवरा किया जो उसके साथ परवान चढ़े थे। 9 उसने पूछा, “मैं इस कौम को क्या जवाब दूँ? यह तकाजा कर रहे हैं कि मैं वह जुआ हलका कर दूँ जो मेरे बाप ने उन पर डाल दिया।” 10 जो जवान उसके साथ परवान चढ़े थे उन्होंने कहा, “अच्छा, यह लोग तकाजा कर रहे हैं कि आपके बाप का जुआ हलका किया जाए? उन्हें बता देना, ‘मेरी छोटी उँगली मेरे बाप की कमर से ज्यादा मोटी है! 11 बेशक जो जुआ उसने आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!’”

12 तीन दिन के बाद जब यरुबियाम तमाम इसराइलियों के साथ रहुबियाम का फैसला सुनने के लिए वापस आया 13 तो बादशाह ने उन्हें सख्त जवाब दिया। बुजुर्गों का मशवरा रद्द करके 14 उसने उन्हें जवानों का जवाब दिया, “बेशक जो जुआ मेरे बाप ने आप पर डाल दिया उसे उठाना मुश्किल था, लेकिन मेरा जुआ और भी भारी होगा। जहाँ मेरे बाप ने आपको कोड़े लगाए वहाँ मैं आपकी बिच्छुओं से तादीब करूँगा!” 15 यों रब की मरजी पूरी हुई कि रहुबियाम लोगों की बात नहीं मानेगा। क्योंकि अब रब की वह पेशगोई पूरी हुई जो सैला के नबी अखियाह ने यरुबियाम बिन नबात को बताई थी।

16 जब इसराइलियों ने देखा कि बादशाह हमारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं है तो उन्होंने उससे कहा, “न हमें दाऊद से मीरास में कुछ मिलेगा, न यस्सी के बेटे से कुछ मिलने की उम्मीद है। ऐ इसराइल, सब अपने अपने घर वापस चले! ऐ दाऊद, अब अपना घर खुद सँभाल लो!” यह कहकर वह सब चले गए।

17 सिर्फ यहदाह के कबीले के शहरों में रहनेवाले इसराइली रहुबियाम के तहत रहे। 18 फिर रहुबियाम बादशाह ने बेगारियों पर मुकर्रर अफसर अदूनराम को शिमाली कबीलों के पास भेज दिया, लेकिन उसे देखकर लोगों ने उसे संगसार किया। तब रहुबियाम जल्दी से अपने रथ पर सवार हुआ और भागकर यरुशलम पहुँच गया।

19 यों इसराइल के शिमाली कबीले दाऊद के शाही घराने से अलग हो गए और आज तक उस की हुकूमत नहीं मानते।

## 11

**रहुबियाम को इसराइल से लड़ने की इजाजत नहीं मिलती**

1 जब रहुबियाम यरुशलम पहुँचा तो उसने यहदाह और बिनयमीन के कबीलों के चीदा चीदा फौजियों को इसराइल से जंग करने के लिए बुलाया। 1,80,000 मर्द जमा हुए ताकि रहुबियाम के लिए इसराइल पर दुबारा काबू पाएँ। 2 लेकिन ऐन उस वक्त मर्द-खुदा समयाह को रब की तरफ से पैगाम मिला, 3 “यहदाह के बादशाह रहुबियाम बिन सुलेमान और यहदाह और बिनयमीन के तमाम अफराद को इत्ला दे, 4 ‘रब फरमाता है कि अपने भाइयों से जंग मत करना। हर एक अपने अपने घर वापस चला जाए, क्योंकि जो कुछ हुआ है वह मेरे हुकम पर हुआ है।’”

तब वह रब की सुनकर यरुबियाम से लड़ने से बाज आए।

**रहुबियाम की किलाबंदी**

5 रहुबियाम का दास्ल-हुकूमत यरुशलम रहा। यहदाह में उसने जैल के शहरों की किलाबंदी की : 6 बैत-लहम, ऐताम, तकुअ, 7 बैत-सूर, सोका, अदुल्लाम, 8 जात, मेसा, जीफ, 9 अदूराईम, लकीस, अजीका, 10 सुरआ, ऐयालोन और हबस्न। यहदाह और बिनयमीन के इन किलाबंद शहरों को 11 मजबूत करके रहुबियाम ने हर शहर पर अफसर मुकर्रर किए। उनमें उसने खुराक, जैतून के तेल और मै का जखीरा कर लिया 12 और साथ साथ उनमें ढाले और नेजे भी रखे। इस तरह उसने उन्हें बहुत मजबूत बनाकर यहदाह और बिनयमीन पर अपनी हुकूमत महफूज कर ली।

**इमाम और लावी यहदाह में मुंतकिल हो जाते हैं**

13 गो इमाम और लावी तमाम इसराइल में बिखरे रहते थे तो भी उन्होंने रहुबियाम का साथ दिया। 14 अपनी चरागाहों और मिलकियत को छोड़कर वह यहदाह और यरुशलम में आबाद हुए, क्योंकि यरुबियाम और उसके बेटों ने उन्हें इमाम की हैसियत से रब की खिदमत करने से रोक दिया था। 15 उनकी जगह उसने अपने जाती इमाम मुकर्रर किए जो ऊँची जगहों पर के मंदिरों को सँभालते हुए बकरे के देवताओं और बछड़े के बुतों की खिदमत करते थे। 16 लावियों की तरह तमाम कबीलों के बहुत-से ऐसे लोग यहदाह में मुंतकिल हुए जो पूरे दिल से रब इसराइल के खुदा के तालिब रहे थे। वह यरुशलम आए ताकि रब अपने बापदादा के खुदा को कुरबानियों पेश कर सकें। 17 यहदाह की सलतनत ने ऐसे लोगों से तकवियत पाई। वह रहुबियाम बिन सुलेमान के लिए तीन साल तक मजबूती का सबब थे, क्योंकि तीन साल तक यहदाह दाऊद और सुलेमान के अच्छे नमूने पर चलता रहा।

**रहुबियाम का खानदान**

18 रहुबियाम की शादी महलत से हुई जो यरीमोट और अबीखैल की बेटी थी। यरीमोट दाऊद का बेटा और अबीखैल इलियाब बिन यस्सी की बेटी थी। 19 महलत के तीन बेटे यऊस, समरियाह और जहम पैदा हुए। 20 बाद में रहुबियाम की माका बित अबीसलूम से शादी हुई। इस रिश्ते से चार बेटे अबियाह, अन्ती, जीजा और सलूमीत पैदा हुए। 21 रहुबियाम की 18 बीवियाँ और 60 दासताएँ थीं। इनके कुल 28 बेटे और 60 बेटियाँ पैदा हुईं। लेकिन माका बित अबीसलूम रहुबियाम को सबसे ज्यादा प्यारी थी। 22 उसने माका के पहलौठे अबियाह को उसके भाइयों का सबराह बना दिया और मुकरर किया कि यह बेटा मेरे बाद बादशाह बनेगा। 23 रहुबियाम ने अपने बेटों से बड़ी समझदारी के साथ सुलक किया, क्योंकि उसने उन्हें अलग अलग करके यहदाह और बिनयमीन के पूरे कबायली इलाके और तमाम किलाबंद शहरों में बसा दिया। साथ साथ वह उन्हें कसरत की खुराक और बीवियाँ मुहैया करता रहा।

## 12

### मिसर की यहदाह पर फ़तह

1 जब रहुबियाम की सलतनत जोर पकड़कर मज़बूत हो गई तो उसने तमाम इसराईल समेत रब की शरीअत को तर्क कर दिया। 2 उनकी रब से बेवफ़ाई का नतीजा यह निकला कि रहुबियाम की हुकूमत के पाँचवें साल में मिसर के बादशाह सीसक ने यरूशलम पर हमला किया। 3 उस की फ़ौज बहुत बड़ी थी। 1,200 रथों के अलावा 60,000 घुड़सवार और लिबिया, सुक्कियों के मुल्क और एथोपिया के बेशुमार प्यादा सिपाही थे। 4 उनके बाद दीगरे यहदाह के किलाबंद शहरों पर कब्ज़ा करते करते मिसरी बादशाह यरूशलम तक पहुँच गया।

5 तब समायाह नबी रहुबियाम और यहदाह के उन बुजुर्गों के पास आया जिन्होंने सीसक के आगे आगे भागकर यरूशलम में पनाह ली थी। उसने उनसे कहा, “रब फरमाता है, ‘तुमने मुझे तर्क कर दिया है, इसलिए अब मैं तुम्हें तर्क करके सीसक के हवाले कर दूँगा।’” 6 यह पैगाम सुनकर रहुबियाम और यहदाह के बुजुर्गों ने बड़ी इंकिसारी के साथ तसलीम किया कि रब ही आदिल है। 7 उनकी यह आजिजी देखकर रब ने समायाह से कहा, “चूँकि उन्होंने बड़ी ख़ाकसारी से अपना ग़लत रवैया तसलीम कर लिया है इसलिए मैं उन्हें तबाह नहीं करूँगा बल्कि जल्द ही उन्हें रिहा करूँगा। मेरा ग़ज़ब सीसक के ज़रीए यरूशलम पर नाज़िल नहीं होगा। 8 लेकिन वह इस कौम को ज़रूर अपने ताबे कर रहेगा। तब वह समझ लेंगे कि मेरी खिदमत करने और दीगर ममालिक के बादशाहों की खिदमत करने में क्या फ़रक है।”

9 मिसर के बादशाह सीसक ने यरूशलम पर हमला करते वक़्त रब के घर और शाही महल के तमाम खज़ाने लूट लिए। सोने की वह ढालें भी छीन ली गईं जो सुलेमान ने बनवाई थीं। 10 इनकी जगह रहुबियाम ने पीतल की ढालें बनवाई और उन्हें उन मुहाफ़िज़ों के अफ़सरों के सुपुर्द किया जो शाही महल के दरवाज़े की पहरादारी करते थे। 11 जब भी बादशाह रब के घर में जाता तब मुहाफ़िज़ यह ढालें उठाकर साथ ले जाते। इसके बाद वह उन्हें पहरेदारों के कमरे में वापस ले जाते थे।

12 चूँकि रहुबियाम ने बड़ी इंकिसारी से अपना ग़लत रवैया तसलीम किया इसलिए रब का उस पर ग़ज़ब ठंडा हो गया, और वह पूरे तौर पर तबाह न हुआ। दर-हकीकत यहदाह में अब तक कुछ न कुछ पाया जाता था जो अच्छा था।

### रहुबियाम की मौत

13 रहुबियाम की सलतनत ने दुबारा तकवियत पाई, और यरूशलम में रहकर वह अपनी हुकूमत जारी रख सका। 41 साल की उम्र में वह तख़्तनशीन हुआ था, और वह 17 साल बादशाह रहा। उसका दाम्ल-हुकूमत यरूशलम था, वह शहर जिसे रब ने तमाम इसराईली कबीलों में से चुन लिया ताकि उसमें अपना नाम कायम करे। उस की माँ नामा अम्मोनी थी। 14 रहुबियाम ने अच्छी जिंदगी न गुज़ारी, क्योंकि वह पूरे दिल से रब का तालिब न रहा था।

15 बाकी जो कुछ रहुबियाम की हुकूमत के दौरान शुरू से लेकर आखिर तक हुआ उसका समायाह नबी और गैबबीन इहू की तारीखी किताब में बयान है। वहाँ उसके नसबनामे का जिक्र भी है। दोनों बादशाहों रहुबियाम और यरूबियाम के जीते-जी उनके दरमियान जंग जारी रही। 16 जब रहुबियाम मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में दफनाया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। फिर उसका बेटा अबियाह तख़्तनशीन हुआ।

## 13

### यहदाह का बादशाह अबियाह

1 अबियाह इसराईल के बादशाह यरूबियाम अक्वल की हुकूमत के 18वें साल में यहदाह का बादशाह बना। 2 वह तीन साल बादशाह रहा, और उसका दाम्ल-हुकूमत यरूशलम था। उस की माँ माका बित ऊरियेल ज़िबिया की रहनेवाली थी।

एक दिन अबियाह और यरुबियाम के दरमियान जंग छिड़ गई। <sup>3</sup> 4,00,000 तजरबाकार फौजियों को जमा करके अबियाह यरुबियाम से लड़ने के लिए निकला। यरुबियाम 8,00,000 तजरबाकार फौजियों के साथ उसके मुकाबिल सफ़आरा हुआ। <sup>4</sup> फिर अबियाह ने इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के पहाड़ समूह पर चढ़कर बुलंद आवाज़ से पुकारा,

“यरुबियाम और तमाम इसराइलियों, मेरी बात सुनें! <sup>5</sup> क्या आपको नहीं मालूम कि रब इसराइल के खुदा ने दाऊद से नमक का अबदी अहद बाँधकर उसे और उस की औलाद को हमेशा के लिए इसराइल की सलतनत अता की है? <sup>6</sup> तो भी सुलेमान बिन दाऊद का मुलाज़िम यरुबियाम बिन नबात अपने मालिक के खिलाफ उठकर बागी हो गया। <sup>7</sup> उसके इर्दगिर्द कुछ बदमाश जमा हुए और रहुबियाम बिन सुलेमान की मुखालफत करने लगे। उस वक़्त वह जवान और नातजरबाकार था, इसलिए उनका सहीह मुकाबला न कर सका।

<sup>8</sup> और अब आप वाकई समझते हैं कि हम रब की बादशाही पर फतह पा सकते हैं, उसी बादशाही पर जो दाऊद की औलाद के हाथ में है। आप समझते हैं कि आपकी फौज बहुत ही बड़ी है, और कि सोने के बछड़े आपके साथ हैं, वही बूत जो यरुबियाम ने आपकी पूजा के लिए तैयार कर रखे हैं। <sup>9</sup> लेकिन आपने रब के इमामों यानी हारून की औलाद को लावियों समेत मुल्क से निकालकर उनकी जगह ऐसे पुजारी खिदमत के लिए मुकर्र किए जैसे बुतपरस्त कौमों में पाए जाते हैं। जो भी चाहता है कि उसे मखसूस करके इमाम बनाया जाए उसे सिर्फ एक जवान बैल और सात मेंढे पेश करने की जरूरत है। यह इन नाम-निहाद खुदाओं का पुजारी बनने के लिए काफी है।

<sup>10</sup> लेकिन जहाँ तक हमारा ताल्लुक है रब ही हमारा खुदा है। हमने उसे तर्क नहीं किया। सिर्फ हारून की औलाद ही हमारे इमाम हैं। सिर्फ यह और लावी रब की खिदमत करते हैं। <sup>11</sup> यही सुबह-शाम उसे भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और खुशबूदार बखूर पेश करते हैं। पाक मेज़ पर रब के लिए मखसूस रोटियाँ रखना और सोने के शमादान के चराम जलाना इन्हीं की जिम्मादारी रही है। गरज़, हम रब अपने खुदा की हिदायत पर अमल करते हैं जबकि आपने उसे तर्क कर दिया है। <sup>12</sup> चुनौचे अल्लाह हमारे साथ है। वही हमारा राहनुमा है, और उसके इमाम तुरम बजाकर आपसे लड़ने का एलान करेंगे। इसराइल के मर्दों, खबरदार! रब अपने बापदादा के खुदा से मत लड़ना। यह जंग आप जीत ही नहीं सकते!”

<sup>13</sup> इतने में यरुबियाम ने चुपके से कुछ दस्तों को यहदाह की फौज के पीछे भेज दिया ताकि वहाँ तक में बैठ जाएँ। यों उस की फौज का एक हिस्सा यहदाह की फौज के सामने और दूसरा हिस्सा उसके पीछे था। <sup>14</sup> अचानक यहदाह के फौजियों को पता चला कि दुश्मन सामने और पीछे से हम पर हमला कर रहा है। चीखते-चिल्लाते हुए उन्होंने रब से मदद माँगी। इमामों ने अपने तुरम बजाए <sup>15</sup> और यहदाह के मर्दों ने जंग का नारा लगाया। जब उनकी आवाज़ें बुलंद हुई तो अल्लाह ने यरुबियाम और तमाम इसराइलियों को शिकस्त देकर अबियाह और यहदाह की फौज के सामने से भगा दिया। <sup>16</sup> इसराइली फरार हुए, लेकिन अल्लाह ने उन्हें यहदाह के हवाले कर दिया। <sup>17</sup> अबियाह और उसके लोग उन्हें बड़ा नुकसान पहुँचा सके। इसराइल के 5,00,000 तजरबाकार फौजी मैदाने-जंग में मारे गए। <sup>18</sup> उस वक़्त इसराइल की बड़ी बेइज्जती हुई जबकि यहदाह को तकवियत मिली। क्योंकि वह रब अपने बापदादा के खुदा पर भरोसा रखते थे।

<sup>19</sup> अबियाह ने यरुबियाम का ताक्कुब करते करते उससे तीन शहर गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत छीन लिए, बैतेल, यसाना और इफ़रोन। <sup>20</sup> अबियाह के जीते-जी यरुबियाम दुबारा तकवियत न पा सका, और थोड़ी देर के बाद रब ने उसे मार दिया। <sup>21</sup> उसके मुकाबले में अबियाह की ताकत बढ़ती गई। उस की 14 बीवियों के 22 बेटे और 16 बेटियाँ पैदा हुईं।

<sup>22</sup> बाक़ी जो कुछ अबियाह की हुक्मत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया और कहा, वह इहू नबी की किताब में बयान किया गया है।

## 14

<sup>1</sup> जब अबियाह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरुशलम के उस हिस्से में दफ़नाया गया जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। फिर उसका बेटा आसा तख़्तनशीन हुआ।

### यहदाह का बादशाह आसा

आसा की हुक्मत के तहत मुल्क में <sup>10</sup> साल तक अमनो-अमान कायम रहा। <sup>2</sup> आसा वह कुछ करता रहा जो रब उसके खुदा के नज़दीक अच्छा और ठीक था। <sup>3</sup> उसने अजनबी माबूदों की कुरबानगाहों को ऊँची जगहों के मंदिरों समेत गिराकर देवताओं के लिए मखसूस किए गए सतूनों को टुकड़े टुकड़े कर दिया और यसीरत देवी के खंबे काट डाले। <sup>4</sup> साथ साथ उसने यहदाह के बाशिदों को हिदायत दी कि वह रब अपने बापदादा के खुदा के तालिब हों और उसके अहकाम के ताबे रहें। <sup>5</sup> यहदाह के तमाम शहरों से उसने बखूर की कुरबानगाहें और ऊँची जगहों के मंदिर दूर कर दिए। चुनौचे उस की हुक्मत के दौरान बादशाही में सुकून रहा।

6 अमनो-अमान के इन सालों के दौरान आसा यहदाह में कई शहरों की किलाबंदी कर सका। जंग का खतरा नहीं था, क्योंकि रब ने उसे सूकन मुहैया किया। 7 बादशाह ने यहदाह के बाशिंदों से कहा, “आएँ, हम इन शहरों की किलाबंदी करें! हम इनके इर्दगिर्द फसीलें बनाकर उन्हें बुर्जों, दरवाजों और कुंडों से मजबूत करें। क्योंकि अब तक मुल्क हमारे हाथ में है। चूंकि हम रब अपने खुदा के तालिब रहे हैं इसलिए उसने हमें चारों तरफ सुलह-सलामती मुहैया की है।” चुनाँचे किलाबंदी का काम शुरू हुआ बल्कि तकमील तक पहुँच सका।

### एथोपिया पर फ़तह

8 आसा की फ़ौज में बड़ी ढालों और नेत्रों से लैस यहदाह के 3,00,000 अफ़राद थे। इसके अलावा छोटी ढालों और कामानों से मुसल्लह बिनयमीन के 2,80,000 अफ़राद थे। सब तजरबाकार फ़ौजी थे।

9 एक दिन एथोपिया के बादशाह ज़ारह ने यहदाह पर हमला किया। उसके बेशुमार फ़ौजी और 300 रथ थे। बढ़ते बढ़ते वह मेरसा तक पहुँच गया। 10 आसा उसका मुकाबला करने के लिए निकला। वादीए-सफ़ाता में दोनों फ़ौजें लड़ने के लिए सफ़आरा हुईं। 11 आसा ने रब अपने खुदा से इलतमास की, “ऐ रब, सिर्फ़ तू ही बेबसों को ताकतवरों के हमलों से महफूज़ रख सकता है। ऐ रब हमारे खुदा, हमारी मदद कर! क्योंकि हम तुझ पर भरोसा रखते हैं। तेरा ही नाम लेकर हम इस बड़ी फ़ौज का मुकाबला करने के लिए निकले हैं। ऐ रब, तू ही हमारा खुदा है। ऐसा न होने दे कि इनसान तेरी मरज़ी की खिलाफ़वरज़ी करने में कामयाब हो जाए।”

12 तब रब ने आसा और यहदाह के देखते देखते दुश्मन को शिकस्त दी। एथोपिया के फ़ौजी फ़रार हुए, 13 और आसा ने अपने फ़ौजियों के साथ ज़िरार तक उनका ताक़ुक़ किया। दुश्मन के इतने अफ़राद हलाक हुए कि उस की फ़ौज बाद में बहाल न हो सकी। रब खुद और उस की फ़ौज ने दुश्मन को तबाह कर दिया था। यहदाह के मर्दों ने बहुत-सा माल लूट लिया। 14 वह ज़िरार के इर्दगिर्द के शहरों पर भी क़ब्ज़ा करने में कामयाब हुए, क्योंकि मक़ामी लोगों में रब की दहशत फैल गई थी। नतीजे में इन शहरों से भी बहुत-सा माल छीन लिया गया। 15 इस मुहिम के दौरान उन्होंने ग़ल्लाबानों की ख़ैमागाहों पर भी हमला किया और उनसे कसरत की भेड़-बकरियाँ और ऊँट लूटकर अपने साथ यस्शलम ले आए।

## 15

### आसा रब से अहद की तजदीद करता है

1 अल्लाह का रूह अज़रियाह बिन ओदीद पर नाज़िल हुआ, 2 और वह आसा से मिलने के लिए निकला और कहा, “ऐ आसा और यहदाह और बिनयमीन के तमाम बाशिंदो, मेरी बात सुनो! रब तुम्हारे साथ है अगर तुम उसी के साथ रहो। अगर तुम उसके तालिब रहो तो उसे पा लोगे। लेकिन जब भी तुम उसे तर्क करो तो वह तुम्हीं को तर्क करेगा। 3 लंबे अरसे तक इसराईली हकीकी खुदा के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारते रहे। न कोई इमाम था जो उन्हें अल्लाह की राह सिखाता, न शरीअत। 4 लेकिन जब कभी वह मुसीबत में फँस जाते तो दुबारा रब इसराईल के खुदा के पास लौट आते। वह उसे तलाश करते और नतीजे में उसे पा लेते। 5 उस ज़माने में सफ़र करना ख़तरनाक होता था, क्योंकि अमनो-अमान कहीं नहीं था। 6 एक कौम दूसरी कौम के साथ और एक शहर दूसरे के साथ लड़ता रहता था। इसके पीछे अल्लाह का हाथ था। वही उन्हें हर किस्म की मुसीबत में डालता रहा। 7 लेकिन जहाँ तक तुम्हारा ताल्लुक़ है, मजबूत हो और हिम्मत न हारो। अल्लाह ज़रूर तुम्हारी मेहनत का अज़्र देगा।”

8 जब आसा ने ओदीद के बेटे अज़रियाह नबी की पेशगोई सुनी तो उसका हौसला बढ़ गया, और उसने अपने पूरे इलाक़े के धिनौने बुतों को दूर कर दिया। इसमें यहदाह और बिनयमीन के अलावा इफ़राईम के पहाड़ी इलाक़े के वह शहर शामिल थे जिन पर उसने क़ब्ज़ा कर लिया था। साथ साथ उसने उस कुरबानागह की मरम्मत करवाई जो रब के घर के दरवाजे के सामने थी। 9 फिर उसने यहदाह और बिनयमीन के तमाम लोगों को यस्शलम बुलाया। उन इसराईलियों को भी दावत मिली जो इफ़राईम, मनस्सी और शमौन के क़बायली इलाकों से मुंतकिल होकर यहदाह में आबाद हुए थे। क्योंकि बेशुमार लोग यह देखकर कि रब आसा का खुदा उसके साथ है इसराईल से निकलकर यहदाह में जा बसे थे।

10 आसा बादशाह की हुक़मत के 15वें साल और तीसरे महीने में सब यस्शलम में जमा हुए। 11 वहाँ उन्होंने लूटे हुए माल में से रब को 700 बैल और 7,000 भेड़-बकरियाँ कुरबान कर दीं। 12 उन्होंने अहद बाँधा, ‘हम पूरे दिलो-जान से रब अपने बापदादा के खुदा के तालिब रहेंगे। 13 और जो रब इसराईल के खुदा का तालिब नहीं रहेगा उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी, खाह वह छोटा हो या बड़ा, मर्द हो या औरत।’ 14 बुलंद आवाज़ से उन्होंने क़सम खाकर रब से अपनी वफ़ादारी का एलान किया। साथ साथ तुरम और नरसिगे बजते रहे। 15 यह अहद तमाम यहदाह के लिए खुशी का बाइस था, क्योंकि



उन्होंने पूरे दिल से कसम खाकर उसे बाँधा था। और चूँकि वह पूरे दिल से खुदा के तालिब थे इसलिए वह उसे पा भी सके। नतीजे में रब ने उन्हें चारों तरफ अमनो-अमान मुहैया किया।

16 आसा की माँ माका बादशाह की माँ होने के बाइस बहुत असरो-रसूख रखती थी। लेकिन आसा ने यह ओहदा खत्म कर दिया जब माँ ने यसीरत देवी का धिनोना खंबा बनवा लिया। आसा ने यह बुत कटवाकर टुकड़े टुकड़े कर दिया और वादीए-किंदरोम में जला दिया। 17 अफसोस कि उसने इसराईल की ऊँची जगहों के मरिरो को दूर न किया। तो भी आसा अपने जीते-जी पूरे दिल से रब का वफादार रहा। 18 सोना-चाँदी और बाक्री जितनी चीजें उसके बाप और उसने रब के लिए मखसूस की थी उन सबको वह रब के घर में लाया।

19 आसा की हुकूमत के 35वें साल तक जंग दुबारा न छिड़ी।

## 16

### शाम के साथ आसा का मुआहदा

1 आसा की हुकूमत के 36वें साल में इसराईल के बादशाह बाशा ने यहदाह पर हमला करके रामा शहर की किलाबंदी की। मकसद यह था कि न कोई यहदाह के मुल्क में दाखिल हो सके, न कोई वहाँ से निकल सके।

2 जवाब में आसा ने शाम के बादशाह बिन-हदद के पास वफद भेजा जिसका दासल-हुकूमत दमिशक था। उसने रब के घर और शाही महल के खजानों की सोना-चाँदी वफद करके दमिशक के बादशाह को पैगाम भेजा, 3 “मेरा आपके साथ अहद है जिस तरह मेरे बाप का आपके बाप के साथ अहद था। गुजारिश है कि आप सोने-चाँदी का यह तोहफा कबूल करके इसराईल के बादशाह बाशा के साथ अपना अहद मनसूख कर दें ताकि वह मेरे मुल्क से निकल जाए।”

4 बिन-हदद मुत्तफिक हुआ। उसने अपने फौजी अफसरों को इसराईल के शहरों पर हमला करने के लिए भेज दिया तो उन्होंने ऐथ्यू, दान, अबील-मायम और नफताली के उन तमाम शहरों पर कब्जा कर लिया जिनमें शाही गोदाम थे। 5 जब बाशा को इसकी खबर मिली तो उसने रामा की किलाबंदी करने से बाज आकर अपनी यह मुहिम छोड़ दी।

6 फिर आसा बादशाह ने यहदाह के तमाम मर्दों की भरती करके उन्हें रामा भेज दिया ताकि वह उन तमाम पत्थरों और शहतीरों को उठाकर ले जाएँ जिनसे बाशा बादशाह रामा की किलाबंदी करना चाहता था। इस सामान से आसा ने जिबा और मिसफ्राह शहरों की किलाबंदी की।

### आसा के आखिरी साल और मौत

7 उस वक़्त हनानी गैबबीन यहदाह के बादशाह आसा को मिलने आया। उसने कहा, “अफसोस कि आपने रब अपने खुदा पर एतमाद न किया बल्कि अराम के बादशाह पर, क्योंकि इसका बुरा नतीजा निकला है। रब शाम के बादशाह की फौज को आपके हवाले करने के लिए तैयार था, लेकिन अब यह मौका जाता रहा है। 8 क्या आप भूल गए हैं कि एथोपिया और लिबिया की कितनी बड़ी फौज आपसे लड़ने आई थी? उनके साथ कसरत के रथ और घुड़सवार भी थे। लेकिन उस वक़्त आपने रब पर एतमाद किया, और जवाब में उसने उन्हें आपके हवाले कर दिया। 9 रब तो अपनी नज़र पूरी रूप-जमीन पर दौड़ाता रहता है ताकि उनकी तकवियत करे जो पूरी वफादारी से उससे लिपटे रहते हैं। आपकी अहमकाना हरकत की वजह से आपको अब से मुतवातिर जंगें तंग करती रहेंगी।” 10 यह सुनकर आसा गुस्से से लाल-पीला हो गया। आप से बाहर होकर उसने हुकम दिया कि नबी को गिरफ्तार करके उसके पाँव काठ में ठोंको। उस वक़्त से आसा अपनी क्रीम के कई लोगों पर जुल्म करने लगा।

11 बाक्री जो कुछ शुरू से लेकर आखिर तक आसा की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-यहदाहो-इसराईल की तारीख’ की किताब में बयान किया गया है। 12 हुकूमत के 39वें साल में उसके पाँवों को बीमारी लग गई। गो उस की बुरी हालत थी तो भी उसने रब को तलाश न किया बल्कि सिर्फ डाक्टरों के पीछे पड़ गया। 13 हुकूमत के 41वें साल में आसा मरकर अपने बापदादा से जा मिला। 14 उसने यस्शालम के उस हिस्से में जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है अपने लिए चटान में कब्र ताराशी थी। अब उसे इसमें दफन किया गया। जनाजे के वक़्त लोगों ने लाश को एक पलंग पर लिटा दिया जो बलसान के तेल और मुख्तलिफ किस्म के खुशबूदार मरहमों से ढाँपा गया था। फिर उसके एहतराम में लकड़ी का जबरदस्त ढेर जलाया गया।

## 17

### यहदाह का बादशाह यहसफत

1 आसा के बाद उसका बेटा यहसफत तख्तनशीन हुआ। उसने यहदाह की ताकत बढ़ाई ताकि वह इसराईल का मुकाबला कर सके। 2 यहदाह के तमाम किलाबंद शहरों में उसने दस्ते बिठाए। यहदाह के पूरे कबायली इलाके में उसने चौकियाँ तैयार कर रखी और इसी तरह इफ्राइम के उन शहरों में भी जो उसके बाप आसा ने इसराईल से छीन लिए थे। 3 रब यहसफत

के साथ था, क्योंकि वह दाऊद के नम्ने पर चलता था और बाल देवताओं के पीछे न लगा।<sup>4</sup> इसराईल के बादशाहों के बरअक्स वह अपने बाप के खूदा का तालिब रहा और उसके अहकाम पर अमल करता रहा।<sup>5</sup> इसी लिए रब ने यहदाह पर यहसफत की हुकूमत को ताकतवर बना दिया। लोग तमाम यहदाह से आकर उसे तोहफे देते रहे, और उसे बड़ी दौलत और इज्जत मिली।<sup>6</sup> रब की राहों पर चलते चलते उसे बड़ा हौसला हुआ और नतीजे में उसने ऊँची जगहों के मंदिरों और यसीरत देवी के खंबों को यहदाह से दूर कर दिया।

<sup>7</sup> अपनी हुकूमत के तीसरे साल के दौरान यहसफत ने अपने मुलाजिमों को यहदाह के तमाम शहरों में भेजा ताकि वह लोगों को रब की शरीअत की तालीम दें। इन अफसरों में बिन-खैल, अबदियाह, ज़करियाह, नतनियेल और मीकायाह शामिल थे।<sup>8</sup> उनके साथ 9 लावी बनाम समायाह, नतनियाह, ज़बदियाह, असाहेल, समीरामोत, यहनतन, अदूनियाह, तूबियाह, और तूब-अदूनियाह थे। इमामों की तरफ से इलीसमा और यह्राम साथ गए।<sup>9</sup> रब की शरीअत की किताब अपने साथ लेकर इन आदमियों ने यहदाह में शहर बशहर जाकर लोगों को तालीम दी।

<sup>10</sup> उस वक़्त यहदाह के पड़ोसी ममालिक पर रब का ख़ौफ़ छा गया, और उन्होंने यहसफत से जंग करने की ज़रत न की।<sup>11</sup> ख़राज के तौर पर उसे फिलिस्तियों से हदिये और चाँदी मिलती थी, जबकि अरब उसे 7,700 मेहे और 7,700 बकरे दिया करते थे।<sup>12</sup> यों यहसफत की ताकत बढ़ती गई। यहदाह की कई जगहों पर उसने किले और शाही गोदाम के शहर तामीर किए।<sup>13</sup> साथ साथ उसने यहदाह के शहरों में ज़रूरियाते-ज़िंदगी के बड़े ज़ख़ीर जमा किए और यस्शलम में तजरबाकार फ़ौजी रखे।

<sup>14</sup> यहसफत की फ़ौज को कुंबों के मुताबिक तरतीब दिया गया था। यहदाह के कबीले का कर्मौंडर अदना था। उसके तहत 3,00,000 तजरबाकार फ़ौजी थे।<sup>15</sup> उसके अलावा यहनान था जिसके तहत 2,80,000 अफ़राद थे।<sup>16</sup> और अमसियाह बिन जिकरी जिसके तहत 2,00,000 अफ़राद थे। अमसियाह ने अपने आपको रज़ाकाराना तौर पर रब की ख़िदमत के लिए वक़फ़ कर दिया था।<sup>17</sup> बिनयमीन के कबीले का कर्मौंडर इलियादा था जो ज़बरदस्त फ़ौजी था। उसके तहत कमान और ढालों से लैस 2,00,000 फ़ौजी थे।<sup>18</sup> उसके अलावा यहज़बद था जिसके 1,80,000 मुसल्लह आदमी थे।

<sup>19</sup> सब फ़ौज में बादशाह की ख़िदमत संरजाम देते थे। उनमें वह फ़ौजी नहीं शुमार किए जाते थे जिन्हें बादशाह ने पूरे यहदाह के किलाबंद शहरों में रखा हुआ था।

## 18

### झूटे नबियों और मीकायाह का मुकाबला

<sup>1</sup> गरज यहसफत को बड़ी दौलत और इज्जत हासिल हुई। उसने अपने पहलौठे की शादी इसराईल के बादशाह अख़ियब की बेटी से कराई।

<sup>2</sup> कुछ साल के बाद वह अख़ियब से मिलने के लिए सामरिया गया। इसराईल के बादशाह ने यहसफत और उसके साथियों के लिए बहुत-सी भेड-बकरियाँ और गाय-बैल ज़बह किए। फिर उसने यहसफत को अपने साथ रामात-जिलियाद से जंग करने पर उकसाया।<sup>3</sup> अख़ियब ने यहसफत से सवाल किया, “क्या आप मेरे साथ रामात-जिलियाद जाएंगे ताकि उस पर कब्ज़ा करें?” उसने जवाब दिया, “जी ज़रूर, हम तो भाई हैं, मेरी क़ौम को अपनी क़ौम समझें! हम आपके साथ मिलकर लड़ने के लिए निकलेंगे।”<sup>4</sup> लेकिन मेहरबानी करके पहले रब की मरजी मालूम कर लें।”

<sup>5</sup> इसराईल के बादशाह ने 400 नबियों को बुलाकर उनसे पूछा, “क्या हम रामात-जिलियाद पर हमला करें या मैं इस झारदे से बाज़ रहूँ?” नबियों ने जवाब दिया, “जी, करें, क्योंकि अल्लाह उसे बादशाह के हवाले कर देगा।”

<sup>6</sup> लेकिन यहसफत मुतमइन न हुआ। उसने पूछा, “क्या यहाँ रब का कोई नबी नहीं जिससे हम दरियाफ़्त कर सकें?”<sup>7</sup> इसराईल का बादशाह बोला, “हाँ, एक तो है जिसके ज़रीए हम रब की मरजी मालूम कर सकते हैं। लेकिन मैं उससे नफ़रत करता हूँ, क्योंकि वह मेरे बारे में कभी भी अच्छी पेशगोई नहीं करता। वह हमेशा बुरी पेशगोइयाँ सुनाता है। उसका नाम मीकायाह बिन इमला है।” यहसफत ने एतराज़ किया, “बादशाह ऐसी बात न कहे!”<sup>8</sup> तब इसराईल के बादशाह ने किसी मुलाजिम को बुलाकर हुकूम दिया, “मीकायाह बिन इमला को फ़ौरन हमारे पास पहुँचा देना!”

<sup>9</sup> अख़ियब और यहसफत अपने शाही लिबास पहने हुए सामरिया के दरवाज़े के करीब अपने अपने तख़्त पर बैठे थे। यह ऐसी खुली जगह थी जहाँ अनाज गाहा जाता था। तमाम 400 नबी वहाँ उनके सामने अपनी पेशगोइयाँ पेश कर रहे थे।<sup>10</sup> एक नबी बनाम सिदकियाह बिन कनाना ने अपने लिए लोहे के सींग बनाकर एलान किया, “रब फ़रमाता है कि इन सींगों से तू शाम के फ़ौजियों को मार मारकर हलाक कर देगा।”

11 दूसरे नबी भी इस किस्म की पेशगोइयाँ कर रहे थे, “रामात-जिलियाद पर हमला करें, क्योंकि आप ज़रूर कामयाब हो जाएंगे। रब शहर को आपके हवाले कर देगा।”

12 जिस मुलाज़िम को मीकायाह को बुलाने के लिए भेजा गया था उसने रास्ते में उसे समझाया, “देखें, बाकी तमाम नबी मिलकर कह रहे हैं कि बादशाह को कामयाबी हासिल होगी। आप भी ऐसी ही बातें करें, आप भी फ़तह की पेशगोई करें!”

13 लेकिन मीकायाह ने एतराज़ किया, “रब की हयात की कसम, मैं बादशाह को सिर्फ़ वही कुछ बताऊँगा जो मेरा खुदा फ़रमाएगा।”

14 जब मीकायाह अखियब के सामने खड़ा हुआ तो बादशाह ने पूछा, “मीकायाह, क्या हम रामात-जिलियाद पर हमला करें या मैं इस इरादे से बाज़ रहूँ?”

मीकायाह ने जवाब दिया, “उस पर हमला करें, क्योंकि उन्हें आपके हवाले कर दिया जाएगा, और आपको कामयाबी हासिल होगी।” 15 बादशाह नाराज़ हुआ, “मुझे कितनी दफा आपको समझाना पड़ेगा कि आप कसम खाकर मुझे रब के नाम में सिर्फ़ वह कुछ सुनाएँ जो हकीकत है।”

16 तब मीकायाह ने जवाब में कहा, “मुझे तमाम इसराईल गल्लाबान से मेहरूम भेड़-बकरियों की तरह पहाड़ों पर बिखरा हुआ नज़र आया। फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, ‘इनका कोई मालिक नहीं है। हर एक सलामती से अपने घर वापस चला जाए’।”

17 इसराईल के बादशाह ने यहसफ़त से कहा, “लो, क्या मैंने आपको नहीं बताया था कि यह शख्स हमेशा मेरे बारे में बुरी पेशगोइयाँ करता है?”

18 लेकिन मीकायाह ने अपनी बात जारी रखी, “रब का फ़रमान सुनें! मैंने रब को उसके तख़्त पर बैठे देखा। आसमान की पूरी फ़ौज़ उसके दाएँ और बाएँ हाथ खड़ी थी। 19 रब ने पूछा, ‘कौन इसराईल के बादशाह अखियब को रामात-जिलियाद पर हमला करने पर उकसाएगा ताकि वह वहाँ जाकर मर जाए?’ एक ने यह मशवरा दिया, दूसरे ने वह। 20 आखिरकार एक रूह रब के सामने खड़ी हुई और कहने लगी, ‘मैं उसे उकसाऊँगी।’ रब ने सवाल किया, ‘किस तरह?’ 21 रूह ने जवाब दिया, ‘मैं निकलकर उसके तमाम नबियों पर यों काबू पाऊँगी कि वह झूट ही बोलेंगे।’ रब ने फ़रमाया, ‘तू कामयाब होगी। जा और यों ही कर!’ 22 ऐ बादशाह, रब ने आप पर आफ़त लाने का फ़ैसला कर लिया है, इसलिए उसने झूटी रूह को आपके इन तमाम नबियों के मुँह में डाल दिया है।”

23 तब सिदकियाह बिन कनाना ने आगे बढ़कर मीकायाह के मुँह पर थपपड़ मारा और बोला, “रब का रूह किस तरह मुझसे निकल गया ताकि तुझसे बात करे?” 24 मीकायाह ने जवाब दिया, “जिस दिन आप कभी इस कमरे में, कभी उसमें खिसककर छुपने की कोशिश करेंगे उस दिन आपको पता चलेगा।”

25 तब अखियब बादशाह ने हुकम दिया, “मीकायाह को शहर पर मुक़र्रर अफ़सर अमून और मेरे बेटे युआस के पास वापस भेज दो! 26 उन्हें बता देना, ‘इस आदमी को जेल में डालकर मेरे सहीह-सलामत वापस आने तक कम से कम रोटी और पानी दिया करें।’” 27 मीकायाह बोला, “अगर आप सहीह-सलामत वापस आएँ तो मतलब होगा कि रब ने मेरी मारिफ़त बात नहीं की।” फिर वह साथ खड़े लोगों से मुख़ातिब हुआ, “तमाम लोग ध्यान दें!”

### अखियब रामात के करीब मर जाता है

28 इसके बाद इसराईल का बादशाह अखियब और यहदाह का बादशाह यहसफ़त मिलकर रामात-जिलियाद पर हमला करने के लिए रवाना हुए। 29 जंग से पहले अखियब ने यहसफ़त से कहा, “मैं अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में जाऊँगा। लेकिन आप अपना शाही लिबास न उतारें।” चुनौचे इसराईल का बादशाह अपना भेस बदलकर मैदाने-जंग में आया। 30 शाम के बादशाह ने रथों पर मुक़र्रर अपने अफ़सरों को हुकम दिया था, “सिर्फ़ और सिर्फ़ बादशाह पर हमला करें। किसी और से मत लड़ना, खाह वह छोटा हो या बड़ा।”

31 जब लड़ाई छिड़ गई तो रथों के अफ़सर यहसफ़त पर टूट पड़े, क्योंकि उन्होंने कहा, “यही इसराईल का बादशाह है!” लेकिन जब यहसफ़त मदद के लिए चिल्ला उठा तो रब ने उस की सुनी। उसने उनका ध्यान यहसफ़त से खींच लिया, 32 क्योंकि जब दुश्मनों को मालूम हुआ कि यह अखियब बादशाह नहीं है तो वह उसका ताक्कुब करने से बाज़ आए। 33 लेकिन किसी ने ख़ास निशाना बाँधे बग़ैर अपना तीर चलाया तो वह अखियब को ऐसी जगह जा लगा जहाँ ज़िरा-बकतर का जोड़ था। बादशाह ने अपने रथवान को हुकम दिया, “रथ को मोड़कर मुझे मैदाने-जंग से बाहर ले जाओ! मुझे चोट लग गई है।” 34 लेकिन चूँकि उस पूरे दिन शदीद किस्म की लड़ाई जारी रही, इसलिए बादशाह अपने रथ में टेक लगाकर दुश्मन के मुकाबिल खड़ा रहा। जब सूरज गुम्ब होने लगा तो वह मर गया।

## 19

1 लेकिन यहूदाह का बादशाह यहसफत सहीह-सलामत यरूशलम और अपने महल में पहुँचा। 2 उस वक़्त याह बिन हनानी जो ग़ैबबीन था उसे मिलने के लिए निकला और बादशाह से कहा, “क्या यह ठीक है कि आप शरीर की मदद करें? आप क्यों उनको प्यार करते हैं जो रब से नफ़रत करते हैं? यह देखकर रब का ग़ज़ब आप पर नाज़िल हुआ है। 3 तो भी आपमें अच्छी बातें भी पाई जाती हैं। आपने यसरित देवी के खंबों को मुल्क से दूर करके अल्लाह के तालिब होने का पक्का इ़ादा कर रखा है।”

यहसफत कानूनी काररवाई की इसलाह करता है

4 इसके बाद यहसफत यरूशलम में रहा। लेकिन एक दिन वह दुबारा निकला। इस बार उसने जुनूब में बैर-सबा से लेकर शिमाल में इफ़राईम के पहाड़ी इलाके तक पूरे यहूदाह का दौरा किया। हर जगह वह लोगों को रब उनके बापदादा के ख़ुदा के पास वापस लाया। 5 उसने यहूदाह के तमाम किलाबंद शहरों में काज़ी भी मुकर्रर किए। 6 उन्हें समझाते हुए उसने कहा, “अपनी रविश पर ध्यान दें! याद रहे कि आप इनसान के जवाबदेह नहीं हैं बल्कि रब के। वही आपके साथ होगा जब आप फैसले करेंगे। 7 चुनौचे अल्लाह का ख़ौफ़ मानकर एहतियात से लोगों का इनसाफ़ करें। क्योंकि जहाँ रब हमारा ख़ुदा है वहाँ बेइनसाफ़ी, जानिबदारी और रिश्तखोरी हो ही नहीं सकती।”

8 यरूशलम में यहसफत ने कुछ लावियों, इमामों और खानदानी सरपरस्तों को इनसाफ़ करने की जिम्मादारी दी। रब की शरीअत से मुताल्लिक किसी मामले या यरूशलम के बाशिंदों के दरमियान झगड़े की सूरत में उन्हें फैसला करना था। 9 यहसफ़त ने उन्हें समझाते हुए कहा, “रब का ख़ौफ़ मानकर अपनी ख़िदमत को वफ़ादारी और पूरे दिल से सरंजाम दें। 10 आपके भाई शहरों से आकर आपके सामने अपने झगड़े पेश करेंगे ताकि आप उनका फैसला करें। आपको क़त्ल के मुकदमों का फैसला करना पड़ेगा। ऐसे मामलात भी होंगे जो रब की शरीअत, किसी हुक़म, हिदायत या उसूल से ताल्लुक रखेंगे। जो भी हो, लाज़िम है कि आप उन्हें समझाएँ ताकि वह रब का गुनाह न करें। वरना उसका ग़ज़ब आप और आपके भाइयों पर नाज़िल होगा। अगर आप यह करें तो आप बेकुसूर रहेंगे। 11 इमामे-आज़म अमरियाह रब की शरीअत से ताल्लुक रखनेवाले मामलात का हतमी फैसला करेगा। जो मुकदमे बादशाह से ताल्लुक रखते हैं उनका हतमी फैसला यहूदाह के क़बीले का सरब्राह जबदियाह बिन इसमाईल करेगा। अदालत का इंतज़ाम चलाने में लावी आपकी मदद करेंगे। अब हौसला रखकर अपनी ख़िदमत सरंजाम दें। जो भी सहीह काम करेगा उसके साथ रब होगा।”

## 20

अम्मोनियों का यहूदाह पर हमला

1 कुछ देर के बाद मोआबी, अम्मोनी और कुछ मऊनी यहसफत से जंग करने के लिए निकले। 2 एक कासिद ने आकर बादशाह को इतला दी, “मुल्के-अदोम से एक बड़ी फ़ौज आपसे लड़ने के लिए आ रही है। वह बहीराए-मुरदार के दूसरे किनारे से बढ़ती बढ़ती इस वक़्त हससून-तमर पहुँच चुकी है” (हससून ऐन-जदी का दूसरा नाम है)।

3 यह सुनकर यहसफत घबरा गया। उसने रब से राहुमाई माँगने का फैसला करके एलान किया कि तमाम यहूदाह रोज़ा रखे। 4 यहूदाह के तमाम शहरों से लोग यरूशलम आए ताकि मिलकर मदद के लिए रब से दुआ माँगें। 5 वह रब के घर के नए सहन में जमा हुए और यहसफत ने सामने आकर 6 दुआ की,

“ऐ रब, हमारे बापदादा के ख़ुदा! तू ही आसमान पर तख़्तनशीन ख़ुदा है, और तू ही दुनिया के तमाम ममालिक पर हुक़मत करता है। तेरे हाथ में कुदरत और ताकत है। कोई भी तेरा मुकाबला नहीं कर सकता। 7 ऐ हमारे ख़ुदा, तूने इस मुल्क के पुराने बाशिंदों को अपनी क़ौम इसराईल के आगे से निकाल दिया। इब्राहीम तेरा दोस्त था, और उस की औलाद को तूने यह मुल्क हमेशा के लिए दे दिया। 8 इसमें तेरी क़ौम आबाद हुई। तेरे नाम की ताज़ीम में मक़दिस बनाकर उन्होंने कहा, 9 ‘जब भी आफ़त हम पर आए तो हम यहाँ तेरे हुज़ूर आ सकेंगे, चाहे जंग, बबा, काल या कोई और सज़ा हो। अगर हम उस वक़्त इस घर के सामने खड़े होकर मदद के लिए तुझे पुकारें तो तू हमारी सुनकर हमें बचाएगा, क्योंकि इस इमारात पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।’

10 अब अम्मोन, मोआब और पहाड़ी मुल्क सईर की हरकतों को देख! जब इसराईल मिसर से निकला तो तूने उसे इन क़ौमों पर हमला करने और इनके इलाके में से गुज़रने की इजाज़त न दी। इसराईल को मुतबादिल रास्ता इख्तियार करना पड़ा, क्योंकि उसे इन्हें हलाक करने की इजाज़त न मिली। 11 अब ध्यान दे कि यह बदले में क्या कर रहे हैं। यह हमें उस मौसूसी ज़मीन से निकालना चाहते हैं जो तूने हमें दी थी। 12 ऐ हमारे ख़ुदा, क्या तू उनकी अदालत नहीं करेगा? हम तो इस बड़ी

फौज के मुकाबले में बेबस हैं। इसके हमले से बचने का रास्ता हमें नजर नहीं आता, लेकिन हमारी आँखें मदद के लिए तुझ पर लगी हैं।”

13 यहदाह के तमाम मर्द, औरतें और बच्चे वहाँ रब के हुजूर खड़े रहे। 14 तब रब का रूह एक लावी बनाम यहज़ियेल पर नाज़िल हुआ जब वह जमात के दरमियान खड़ा था। यह आदमी आसफ़ के खानदान का था, और उसका पूरा नाम यहज़ियेल बिन जकरियाह बिन बिनायाह बिन यइयेल बिन मतनियाह था। 15 उसने कहा, “यहदाह और यरूशलम के लोगो, मेरी बात सुनें! ऐ बादशाह, आप भी इस पर ध्यान दें। फर प्रमाता है कि डरो मत, और इस बड़ी फौज को देखकर मत घबराना। क्योंकि यह जंग तुम्हारा नहीं बल्कि मेरा मामला है। 16 कल उनके मुकाबले के लिए निकलो। उस वक़्त वह दर्राए-सीस से होकर तुम्हारी तरफ बढ़ रहे होंगे। तुम्हारा उनसे मुकाबला उस वादी के सिरे पर होगा जहाँ यरूएल का रेगिस्तान शुरू होता है। 17 लेकिन तुम्हें लड़ने की ज़रूरत नहीं होगी। बस दुश्मन के आमने-सामने खड़े होकर रूक जाओ और देखो कि रब किस तरह तुम्हें छुटकारा देगा। लिहाज़ा मत डरो, ऐ यहदाह और यरूशलम, और दहशत मत खाओ। कल उनका सामना करने के लिए निकलो, क्योंकि रब तुम्हारे साथ होगा।”

18 यह सुनकर यहसफ़त मुँह के बल झुक गया। यहदाह और यरूशलम के तमाम लोगो ने भी औंधे मुँह झुककर रब की परस्तिश की। 19 फिर किहात और क्रौरह के खानदानों के कुछ लावी खड़े होकर बुलंद आवाज़ से रब इसराईल के खुदा की हम्दो-सना करने लगे।

### अम्मोनियों पर फतह

20 अगले दिन सुबह-सवेरे यहदाह की फौज तकुअ के रेगिस्तान के लिए रवाना हुई। निकलते वक़्त यहसफ़त ने उनके सामने खड़े होकर कहा, “यहदाह और यरूशलम के मर्दों, मेरी बात सुनें! रब अपने खुदा पर भरोसा रखें तो आप कायम रहेंगे। उसके नबियों की बातों का यक़ीन करें तो आपको कामयाबी हासिल होगी।” 21 लोगो से मशवरा करके यहसफ़त ने कुछ मर्दों को रब की ताज़ीम में गीत गाने के लिए मुकर्रर किया। मुक़द्दस लिबास पहने हुए वह फौज के आगे आगे चलकर हम्दो-सना का यह गीत गाते रहे, “रब की सताइश करो, क्योंकि उस की शफ़क़त अबदी है।”

22 उस वक़्त रब हमलाआवर फौज के मुखालिफ़ों को खड़ा कर चुका था। अब जब यहदाह के मर्द हम्द के गीत गाने लगे तो वह ताक में से निकलकर बढ़ती हुई फौज पर टूट पड़े और उसे शिकस्त दी। 23 फिर अम्मोनियों और मोआबियों ने मिलकर पहाड़ी मुल्क सईर के मर्दों पर हमला किया ताकि उन्हें मुकम्मल तौर पर ख़त्म कर दें। जब यह हलाक हुए तो अम्मोनी और मोआबी एक दूसरे को मौत के घाट उतारने लगे। 24 यहदाह के फौजियों को इसका इल्म नहीं था। चलते चलते वह उस मक़ाम तक पहुँच गए जहाँ से रेगिस्तान नजर आता है। वहाँ वह दुश्मन को तलाश करने लगे, लेकिन लाशें ही लाशें ज़मीन पर बिखरी नजर आईं। एक भी दुश्मन नहीं बचा था। 25 यहसफ़त और उसके लोगो के लिए सिर्फ़ दुश्मन को लूटने का काम बाकी रह गया था। कसरत के जानवर, किस्म किस्म का सामान, कपड़े और कई कीमती चीज़ें थीं। इतना सामान था कि वह उसे एक वक़्त में उठाकर अपने साथ ले जा नहीं सकते थे। सारा माल जमा करने में तीन दिन लगे।

26 चौथे दिन वह करीब की एक वादी में जमा हुए ताकि रब की तारीफ़ करें। उस वक़्त से वादी का नाम ‘तारीफ़ की वादी’ पड़ गया। 27 इसके बाद यहदाह और यरूशलम के तमाम मर्द यहसफ़त की राहनुमाई में खुशी मनाते हुए यरूशलम वापस आए। क्योंकि रब ने उन्हें दुश्मन की शिकस्त से खुशी का सुनहरा मौका अता किया था। 28 सितार, सरोद और तुम बजाते हुए वह यरूशलम में दाख़िल हुए और रब के घर के पास जा पहुँचे। 29 जब इर्दगिर्द के ममालिक ने सुना कि किस तरह रब इसराईल के दुश्मनों से लड़ा है तो उनमें अल्लाह की दहशत फैल गई। 30 उस वक़्त से यहसफ़त सूकन से हुक्मत कर सका, क्योंकि अल्लाह ने उसे चारों तरफ़ के ममालिक के हमलों से महफूज़ रखा था।

### यहसफ़त के आखिरी साल और मौत

31 यहसफ़त 35 साल की उम्र में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 25 साल हुक्मत करता रहा। उस की माँ अज़बा बित सिलही थी। 32 वह अपने बाप आसा के नमूने पर चलता और वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। 33 लेकिन उसने भी ऊँचे मक़ामों के मंदिरों को ख़त्म न किया, और लोगो के दिल अपने बापदादा के खुदा की तरफ़ मायल न हुए।

34 बाकी जो कुछ यहसफ़त की हुक्मत के दौरान हुआ वह शुरू से लेकर आखिर तक यह बिना हनानी की तारीख़ में बयान किया गया है। बाद में सब कुछ ‘शाहाने-इसराईल की तारीख़’ की किताब में दर्ज़ किया गया।

35 बाद में यहदाह के बादशाह यहसफ़त ने इसराईल के बादशाह अख़ज़ियाह से इतहाद किया, गो उसका रवैया बेदीनी का था। 36 दोनों ने मिलकर तिजारीती जहाज़ों का ऐसा बेड़ा बनवाया जो तरसीस तक पहुँच सके। जब यह जहाज़ बंदरगाह अर्यून-जाबर में तैयार हुए 37 तो भरेसा का रहनेवाला इलियज़र बिन ददावाह ने यहसफ़त के खिलाफ़ पेशगोई की, “चूँकि

आप अखजियाह के साथ मुतहिद हो गए हैं इसलिए रब आपका काम तबाह कर देगा!" और वाकई, यह जहाज कभी अपनी मनजिले-मकसद तरसीस तक पहुँच न सके, क्योंकि वह पहले ही टुकड़े टुकड़े हो गए।

## 21

1 जब यहसफत मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है खानदानी कब्र में दफन किया गया। फिर उसका बेटा यह्राम तख्तनशीन हुआ।

### यहदाह का बादशाह यह्राम

2 यहसफत के बाकी बेटे अजरियाह, यहियेल, जकरियाह, अजरियाह, मीकाएल और सफतियाह थे। 3 यहसफत ने उन्हें बहुत सोना-चाँदी और दीगर कीमती चीजें देकर यहदाह के किलाबंद शहरों पर मुकर्रर किया था। लेकिन यह्राम को उसने पहलीटा होने के बाइस अपना जा-नशीन बनाया था। 4 बादशाह बनने के बाद जब यहदाह की हुकूमत मजबूती से उसके हाथ में थी तो यह्राम ने अपने तमाम भाइयों को यहदाह के कुछ राहनुमाओं समेत कत्ल कर दिया।

5 यह्राम 32 साल की उम्र में बादशाह बना, और वह यरूशलम में रहकर 8 साल तक हुकूमत करता रहा। 6 उस की शादी इसराईल के बादशाह अखियब की बेटी से हुई थी, और वह इसराईल के बादशाहों और खासकर अखियब के खानदान के बुरे नमूने पर चलता रहा। उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। 7 तो भी वह दाऊद के घराने को तबाह नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसने दाऊद से अहद बाँधकर वादा किया था कि तेरा और तेरी औलाद का चराग हमेशा तक जलता रहेगा।

8 यह्राम की हुकूमत के दौरान अदोमियों ने बगावत की और यहदाह की हुकूमत को रद्द करके अपना बादशाह मुकर्रर किया। 9 तब यह्राम अपने अफसरों और तमाम रथों को लेकर उनके पास पहुँचा। जब जंग छिड़ गई तो अदोमियों ने उसे और उसके रथों पर मुकर्रर अफसरों को घेर लिया, लेकिन रात को बादशाह घेरनेवालों की सफ़ों को तोड़ने में कामयाब हो गया। 10 तो भी मुल्के-अदोम आज तक दुबारा यहदाह की हुकूमत के तहत नहीं आया। उसी वक़्त लिबना शहर भी सरकश होकर खुदमुखतार हो गया। यह सब कुछ इसलिए हुआ कि यह्राम ने रब अपने बापदादा के खुदा को तर्क कर दिया था, 11 यहाँ तक कि उसने यहदाह के पहाड़ी इलाके में कई ऊँची जगहों पर मंदिर बनवाए और यरूशलम के बाशिंदों को रब से बेवफा हो जाने पर उकसाया। पूरे यहदाह को वह बुतपरस्ती की गलत राह पर ले आया।

12 तब यह्राम को इलियास नबी से खत मिला जिसमें लिखा था, "रब आपके बाप दाऊद का खुदा फरमाता है, 'तू अपने बाप यहसफत और अपने दादा आसा बादशाह के अच्छे नमूने पर नहीं चला 13 बल्कि इसराईल के बादशाहों की गलत राहों पर। बिलकुल अखियब के खानदान की तरह तू यरूशलम और पूरे यहदाह के बाशिंदों को बुतपरस्ती की राह पर लाया है। और यह तैरे लिए काफ़ी नहीं था, बल्कि तूने अपने सगे भाइयों को भी जो तुझे बेहतर थे कत्ल कर दिया। 14 इसलिए रब तेरी कौम, तेरे बेटों और तेरी बीवियों को तेरी पूरी मिलकियत समेत बड़ी मुसीबत में डालने को है। 15 तू खुद बीमार हो जाएगा। लाइलाज मरज की ज़द में आकर तुझे बड़ी देर तक तकलीफ होगी। आखिरकार तेरी अंतडिवाँ जिसमें से निकलेगी।'"

16 उन दिनों में रब ने फिलिस्तियों और एथोपिया के पड़ोस में रहनेवाले अरब कबीलों को यह्राम पर हमला करने की तहरीक दी। 17 यहदाह में घुसकर वह यरूशलम तक पहुँच गए और बादशाह के महल को लूटने में कामयाब हुए। तमाम मालो-असबाब के अलावा उन्होंने बादशाह के बेटों और बीवियों को भी छीन लिया। सिर्फ सबसे छोटा बेटा यहूआखज यानी अखजियाह बच निकला।

18 इसके बाद रब का ग़ज़ब बादशाह पर नाजिल हुआ। उसे लाइलाज बीमारी लग गई जिससे उस की अंतडिवाँ मुतअस्सिर हुई। 19 बादशाह की हालत बहुत खराब होती गई। दो साल के बाद अंतडिवाँ जिसमें से निकल गई। यह्राम शदीद दर्द की हालत में कूच कर गया। जनाज़े पर उस की कौम ने उसके एहतराम में लकड़ी का बड़ा ढेर न जलाया, गो उन्होंने यह उसके बापदादा के लिए किया था।

20 यह्राम 32 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 8 साल तक हुकूमत करता रहा था। जब फ़ौत हुआ तो किसी को भी अफ़सोस न हुआ। उसे यरूशलम शहर के उस हिस्से में दफन तो किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है, लेकिन शाही कब्रों में नहीं।

## 22

### यहदाह का बादशाह अखजियाह

1 यरूशलम के बाशिंदों ने यह्राम के सबसे छोटे बेटे अखजियाह को तख्त पर बिठा दिया। बाकी तमाम बेटों को उन लूट्टों ने कत्ल किया था जो अरबों के साथ शाही लशकरगाह में घुस आए थे। यही वजह थी कि यहदाह के बादशाह यह्राम का बेटा अखजियाह बादशाह बना। 2 वह 22 साल की उम्र में तख्तनशीन हुआ और यरूशलम में रहकर एक साल बादशाह

रहा। उस की माँ अतलियाह इसराईल के बादशाह उमरी की पोती थी।<sup>3</sup> अखज़ियाह भी अखियब के खानदान के गलत नमूने पर चल पड़ा, क्योंकि उस की माँ उसे बेदीन राहों पर चलने पर उभारती रही।<sup>4</sup> बाप की वफ़ात पर वह अखियब के धराने के मशवरे पर चलने लगा। नतीजे में उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। आखिरकार यही लोग उस की हलाकत का सबब बन गए।

<sup>5</sup> इन्हीं के मशवरे पर वह इसराईल के बादशाह यूराम बिन अखियब के साथ मिलकर शाम के बादशाह हज़ाएल से लड़ने के लिए निकला। जब रामात-जिलियाद के करीब जंग छिड़ गई तो यूराम शाम के फ़ौजियों के हाथों ज़ख़मी हुआ<sup>6</sup> और मैदाने-जंग को छोड़कर यज़्रएल वापस आया ताकि ज़ख़म भर जाएँ। जब वह वहाँ ठहरा हुआ था तो यहदाह का बादशाह अखज़ियाह बिन यहराम उसका हाल पूछने के लिए यज़्रएल आया।<sup>7</sup> लेकिन अल्लाह की मरज़ी थी कि यह मुलाकात अखज़ियाह की हलाकत का बाइस बने। वहाँ पहुँचकर वह यूराम के साथ याह बिन निमसी से मिलने के लिए निकला, वही याह जिसे रब ने मसह करके अखियब के खानदान को नेस्तो-नाबूद करने के लिए मख़सूस किया था।<sup>8</sup> अखियब के खानदान की अदालत करते करते याह की मुलाकात यहदाह के कुछ अफ़सरों और अखज़ियाह के बाज़ रिशतेदारों से हुई जो अखज़ियाह की खिदमत में उसके साथ आए थे। इन्हें क़त्ल करके<sup>9</sup> याह अखज़ियाह को ढूँढ़ने लगा। पता चला कि वह सामरिया शहर में छुप गया है। उसे याह के पास लाया गया जिसने उसे क़त्ल कर दिया। तो भी उसे इज़ज़त के साथ दफ़न किया गया, क्योंकि लोगों ने कहा, “आखिर वह यहसफ़त का पोता है जो पूरे दिल से रब का तालिब रहा।” उस वक़्त अखज़ियाह के खानदान में कोई न पाया गया जो बादशाह का काम सँभाल सकता।

### अतलियाह की ज़ालिमाना हकूमत

<sup>10</sup> जब अखज़ियाह की माँ अतलियाह को मालूम हुआ कि मेरा बेटा मर गया है तो वह यहदाह के पूरे शाही खानदान को क़त्ल करने लगी।<sup>11</sup> लेकिन अखज़ियाह की सगी बहन यहसबा ने अखज़ियाह के छोटे बेटे युआस को चुपके से उन शहज़ादों में से निकाल लिया जिन्हें क़त्ल करना था और उसे उस की दाया के साथ एक स्टोर में छुपा दिया जिसमें बिस्तर वगैरा महफूज़ रखे जाते थे। वहाँ वह अतलियाह की गिरिफ्त से महफूज़ रहा। यहसबा यहोयदा इमाम की बीवी थी।<sup>12</sup> बाद में युआस को रब के घर में मृतकिल किया गया जहाँ वह उनके साथ उन छः सालों के दौरान छुपा रहा जब अतलियाह मलिका थी।

## 23

### अतलियाह का अंजाम और युआस की हकूमत

<sup>1</sup> अतलियाह की हकूमत के सातवें साल में यहोयदा ने ज़ूरत करके सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर पाँच अफ़सरों से अहद बाँधा। उनके नाम अज़रियाह बिन यरोहाम, इसमाईल बिन यहनान, अज़रियाह बिन ओबेद, मासियाह बिन अदायाह और इलीसाफ़त बिन ज़िकरी थे।<sup>2</sup> इन आदमियों ने चुपके से यहदाह के तमाम शहरों में से गुज़रकर लावियों और इसराईली खानदानों के सरपरस्तों को जमा किया और फिर उनके साथ मिलकर यरूशलम आए।<sup>3</sup> अल्लाह के घर में पूरी जमात ने जवान बादशाह युआस के साथ अहद बाँधा।

यहोयदा उनसे मुखातिब हुआ, “हमारे बादशाह का बेटा ही हम पर हकूमत करे, क्योंकि रब ने मुक़र्रर किया है कि दाऊद की औलाद यह ज़िम्मादारी सँभाले।<sup>4</sup> चुनौचे अगले सबत के दिन आप इमामों और लावियों में से जितने झूटी पर आएँगे वह तीन हिस्सों में तकसीम हो जाएँ। एक हिस्सा रब के घर के दरवाज़ों पर पहरा दे, <sup>5</sup> दूसरा शाही महल पर और तीसरा बुनियाद नामी दरवाज़े पर। बाक़ी सब आदमी रब के घर के सहनों में जमा हो जाएँ।<sup>6</sup> खिदमत करनेवाले इमामों और लावियों के सिवा कोई और रब के घर में दाखिल न हो। सिर्फ़ यही अंदर जा सकते हैं, क्योंकि रब ने उन्हें इस खिदमत के लिए मख़सूस किया है। लाज़िम है कि पूरी कौम रब की हिदायात पर अमल करे।<sup>7</sup> बाक़ी लावी बादशाह के इर्दगिर्द दायरा बनाकर अपने हथियारों को पकड़े रखें और जहाँ भी वह जाए उसे घेरे रखें। जो भी रब के घर में घुसने की कोशिश करे उसे मार डालना।”

<sup>8</sup> लावी और यहदाह के इन तमाम मर्दों ने ऐसा ही किया। अगले सबत के दिन सब अपने बंदों समेत उसके पास आए, वह भी जिनकी झूटी थी और वह भी जिनकी अब छुट्टी थी। क्योंकि यहोयदा ने खिदमत करनेवालों में से किसी को भी जाने की इजाज़त नहीं दी थी।<sup>9</sup> इमाम ने सौ सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर अफ़सरों को दाऊद बादशाह के वह नेजे और छोटी और बड़ी ढालें दी जो अब तक रब के घर में महफूज़ रखी हुई थी।<sup>10</sup> फिर उसने फ़ौजियों को बादशाह के इर्दगिर्द खड़ा किया। हर एक अपने हथियार पकड़े तैयार था। कुरबानगाह और रब के घर के दरमियान उनका दायरा रब के घर की जुनूबी दीवार से लेकर उस की शिमाली दीवार तक फैला हुआ था।<sup>11</sup> फिर वह युआस को बाहर लाए और उसके सर पर ताज रखकर

उसे कवानीन की किताब दे दी। यों युआस को बादशाह बना दिया गया। उन्होंने उसे मसह किया और बुलंद आवाज से नारा लगाने लगे, “बादशाह जिंदाबाद!”

12 लोगों का शोर अतलियाह तक पहुँचा, क्योंकि सब दौड़कर जमा हो रहे और बादशाह की खुशी में नारे लगा रहे थे। वह रब के घर के सहन में उनके पास आई 13 तो क्या देखती है कि नया बादशाह दरवाजे के करीब उस सतुर के पास खड़ा है जहाँ बादशाह रिवाज के मुताबिक खड़ा होता है, और वह अफसरों और तुरम बजानेवालों से घिरा हुआ है। तमाम उम्मत भी साथ खड़ी तुरम बजा बजाकर खुशी मना रही है। साथ साथ गुलुकार अपने साज बजाकर हम्द के गीत गाने में राहनुमाई कर रहे हैं। अतलियाह रंजिश के मारे अपने कपड़े फाड़कर चीख उठी, “गद्गारी, गद्गारी!”

14 यहोयदा इमाम ने सौ सौ फौजियों पर मुकरर उन अफसरों को बुलाया जिनके सुपुर्द फौज की गई थी और उन्हें हुक्म दिया, “उसे बाहर ले जाँ, क्योंकि मुनासिब नहीं कि उसे रब के घर के पास मारा जाए। और जो भी उसके पीछे आए उसे तलवार से मार देना।” 15 वह अतलियाह को पकड़कर वहाँ से बाहर ले गए और उसे घोड़ों के दरवाजे पर मार दिया जो शाही महल के पास था।

16 फिर यहोयदा ने कौम और बादशाह के साथ मिलकर रब से अहद बाँधकर वादा किया कि हम रब की कौम रहेंगे। 17 इसके बाद सब बाल के मंदिर पर टूट पड़े और उसे ढा दिया। उस की कुरबानगाहों और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके उन्होंने बाल के पुजारी मत्तान को कुरबानगाहों के सामने ही मार डाला।

18 यहोयदा ने इमामों और लावियों को दुबारा रब के घर को सँभालने की जिम्मादारी दी। दाऊद ने उन्हें खिदमत के लिए गुरोहों में तकसीम किया था। उस की हिदायात के मुताबिक उन्हीं को खुशी मनाते और गीत गाते हुए भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करनी थीं, जिस तरह मूसा की शरीअत में लिखा है। 19 रब के घर के दरवाजों पर यहोयदा ने दरबान खड़े किए ताकि ऐसे लोगों को अंदर आने से रोका जाए जो किसी भी वजह से नापाक हों।

20 फिर वह सौ सौ फौजियों पर मुकरर अफसरों, असरो-रसूखवालों, कौम के हुक्मरानों और बाकी पूरी उम्मत के हमराह जुलस निकालकर बादशाह को बालाई दरवाजे से होकर शाही महल में ले गया। वहाँ उन्होंने बादशाह को तख्त पर बिठा दिया, 21 और तमाम उम्मत खुशी मनाती रही। यों यरूशलम शहर को सुकून मिला, क्योंकि अतलियाह को तलवार से मार दिया गया था।

## 24

युआस रब के घर की मरम्मत करवाता है

1 युआस 7 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुक्मत का दौरानिया 40 साल था। उस की माँ जिवियाह बैर-सबा की रहनेवाली थी। 2 यहोयदा के जीते-जी युआस वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। 3 यहोयदा ने उस की शादी दो खवातीन से कराई जिनके बेटे-बेटियाँ पैदा हुए।

4 कुछ देर के बाद युआस ने रब के घर की मरम्मत कराने का फैसला किया। 5 इमामों और लावियों को अपने पास बुलाकर उसने उन्हें हुक्म दिया, “यह्दाह के शहरों में से गुजरकर तमाम लोगों से पैसे जमा करें ताकि आप साल बसाल अपने खुदा के घर की मरम्मत करवाएँ। अब जाकर जल्दी करें।” लेकिन लावियों ने बड़ी देर लगाई।

6 तब बादशाह ने इमामे-आज़म यहोयदा को बुलाकर पूछा, “आपने लावियों से मुतालबा क्यों नहीं किया कि वह यह्दाह के शहरों और यरूशलम से रब के घर की मरम्मत के पैसे जमा करें? यह तो कोई नई बात नहीं है, क्योंकि रब का खादिम मूसा भी मुलाकात का खैमा ठीक रखने के लिए इसराईली जमात से टैक्स लेता रहा। 7 आपको खुद मालूम है कि उस बेदीन औरत अतलियाह ने अपने पैरोकारों के साथ रब के घर में नकब लगाकर रब के लिए मखसूस हदिये छीन लिए और बाल के अपने बुतों की खिदमत के लिए इस्तेमाल किए थे।”

8 बादशाह के हुक्म पर एक संदूक बनवाया गया जो बाहर, रब के घर के सहन के दरवाजे पर रखा गया। 9 पूरे यह्दाह और यरूशलम में एलान किया गया कि रब के लिए वह टैक्स अदा किया जाए जिसका खुदा के खादिम मूसा ने रेगिस्तान में इसराईलियों से मुतालबा किया था। 10 यह सुनकर तमाम राहनुमा बल्कि पूरी कौम खुश हुई। अपने हदिये रब के घर के पास लाकर वह उन्हें संदूक में डालते रहे। जब कभी वह भर जाता 11 तो लावी उसे उठाकर बादशाह के अफसरों के पास ले जाते। अगर उसमें वाकई बहुत पैसे होते तो बादशाह का मीरमुंशी और इमामे-आज़म का एक अफसर आकर उसे खाली कर देते। फिर लावी उसे उस की जगह वापस रख देते थे। यह सिलसिला रोजाना जारी रहा, और आखिरकार बहुत बड़ी रकम इकट्ठी हो गई।

12 बादशाह और यहोयदा यह पैसे उन ठेकेदारों को दिया करते थे जो रब के घर की मरम्मत करवाते थे। यह पैसे पत्थर तराशनेवालों, बढ़इयों और उन कारीगरों की उजरत के लिए सर्फ हुए जो लोहे और पीतल का काम करते थे। 13 रब के घर



की मरम्मत के निगरानों ने मेहनत से काम किया, और उनके ज़ेरे-निगरानी तरक्की होती गई। आखिर में रब के घर की हालत पहले की-सी हो गई थी बल्कि उन्होंने उसे मज़ीद मज़बूत बना दिया। 14 काम के इख़िताम पर ठेकेदार बाकी पैसे युआस बादशाह और यहोयदा के पास लाए। इनसे उन्होंने रब के घर की खिदमत के लिए दरकार प्याले, सोने और चाँदी के बरतन और दीगर कई चीज़ें जो कुरबानियाँ चढ़ाने के लिए इस्तेमाल होती थीं बनवाईं। यहोयदा के जिते-जी रब के घर में बाकायदर्गी से भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश की जाती रही।

15 यहोयदा निहायत बूढ़ा हो गया। 130 साल की उम्र में वह फ़ौत हुआ। 16 उसे यस्शलम के उस हिस्से में शाही कब्रिस्तान में दफनाया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है, क्योंकि उसने इसराईल में अल्लाह और उसके घर की अच्छी खिदमत की थी।

**युआस बादशाह रब को तर्क करता है**

17 यहोयदा की मौत के बाद यहदाह के बुजुर्ग युआस के पास आकर मुँह के बल झुक गए। उस वक़्त से वह उनके मशवरों पर अमल करने लगा। 18 इसका एक नतीजा यह निकला कि वह उनके साथ मिलकर रब अपने बाप के खुदा के घर को छोड़कर यसरित देवी के खंबों और बुतों की पूजा करने लगा। इस गुनाह की वजह से अल्लाह का ग़ज़ब यहदाह और यस्शलम पर नाज़िल हुआ। 19 उसने अपने नबियों को लोगों के पास भेजा ताकि वह उन्हें समझाकर रब के पास वापस लाएँ। लेकिन कोई भी उनकी बात सुनने के लिए तैयार न हुआ। 20 फिर अल्लाह का रुह यहोयदा इमाम के बेटे ज़करियाह पर नाज़िल हुआ, और उसने क़ौम के सामने खड़े होकर कहा, "अल्लाह फ़रमाता है, 'तुम रब के अहकाम की खिलाफ़रजी क्यों करते हो? तुम्हें कामयाबी हासिल नहीं होगी। चूँकि तुमने रब को तर्क कर दिया है इसलिए उसने तुम्हें तर्क कर दिया है!'"

21 जवाब में लोगों ने ज़करियाह के खिलाफ़ साज़िश करके उसे बादशाह के हुकम पर रब के घर के सहन में संगसार कर दिया। 22 यों युआस बादशाह ने उस मेहरबानी का खयाल न किया जो यहोयदा ने उस पर की थी बल्कि उसे नज़रदाज़ करके उसके बेटे को क़त्ल किया। मरते वक़्त ज़करियाह बोला, "रब ध्यान देकर मेरा बदला ले!"

23 अगले साल के आगाज़ में शाम की फ़ौज़ युआस से लड़ने आई। यहदाह में घुसकर उन्होंने यस्शलम पर फ़तह पाई और क़ौम के तमाम बुजुर्गों को मार डाला। सारा लूटा हुआ माल दमिशक को भेजा गया जहाँ बादशाह था। 24 अगरचे शाम की फ़ौज़ यहदाह की फ़ौज़ की निसबत बहुत छोटी थी तो भी रब ने उसे फ़तह बख़्शी। चूँकि यहदाह ने रब अपने बापदादा के खुदा को तर्क कर दिया था इसलिए युआस को शाम के हाथों सज़ा मिली। 25 जंग के दौरान यहदाह का बादशाह शदीद ज़ख़मी हुआ। जब दुश्मन ने मुल्क को छोड़ दिया तो युआस के अफ़सरों ने उसके खिलाफ़ साज़िश की। यहोयदा इमाम के बेटे के क़त्ल का इतक़ाम लेकर उन्होंने उसे मार डाला जब वह बीमार हालत में बिस्तर पर पड़ा था। बादशाह को यस्शलम के उस हिस्से में दफन किया गया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। लेकिन शाही कब्रिस्तान में नहीं दफनाया गया। 26 साज़िश करनेवालों के नाम जबद और यहज़बद थे। पहले की माँ सिमआत अम्मोनी थी जबकि दूसरे की माँ सिमरीत मोआबी थी।

27 युआस के बेटों, उसके खिलाफ़ नबियों के फ़रमानों और अल्लाह के घर की मरम्मत के बारे में मज़ीद मालूमता 'शाहान की किताब' में दर्ज है। युआस के बाद उसका बेटा अमसियाह तख़्तनशीन हुआ।

## 25

**यहदाह का बादशाह अमसियाह**

1 अमसियाह 25 साल की उम्र में बादशाह बना और यस्शलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 29 साल था। उस की माँ यहूअदान यस्शलम की रहनेवाली थी। 2 जो कुछ अमसियाह ने किया वह रब को पसंद था, लेकिन वह पूरे दिल से रब की पैरवी नहीं करता था। 3 ज्योंही उसके पाँव मज़बूती से जम गए उसने उन अफ़सरों को सज़ाए-मौत दी जिन्होंने बाप को क़त्ल कर दिया था। 4 लेकिन उनके बेटों को उसने जिंदा रहने दिया और यों मुसवी शरीअत के ताबे रहा जिसमें फ़रमाता है, "वालिंदैन को उनके बच्चों के जरायम के सबब से सज़ाए-मौत न दी जाए, न बच्चों को उनके वालिंदैन के जरायम के सबब से। अगर किसी को सज़ाए-मौत देनी हो तो उस गुनाह के सबब से जो उसने खुद किया है।"

**अदोम से जंग**

5 अमसियाह ने यहदाह और बिनयमीन के क़बीलों के तमाम मर्दों को बुलाकर उन्हें खानदानों के मुताबिक़ तरतीब दिया। उसने हज़ार हज़ार और सौ सौ फ़ौजियों पर अफ़सर मुकरर किए। जितने भी मर्द 20 या इससे ज़ायद साल के थे उन सबकी भरती हुई। इस तरह 3,00,000 फ़ौजी जमा हुए। सब बड़ी ढालों और नेज़ों से लैस थे। 6 इसके अलावा अमसियाह ने

इसराईल के 1,00,000 तजरबाकार फौजियों को उजरत पर भरती किया ताकि वह जंग में मदद करें। उन्हें उसने चाँदी के तकरीबन 3,400 किलोग्राम दिए।

7 लेकिन एक मर्द-खुदा ने अमसियाह के पास आकर उसे समझाया, “बादशाह सलामत, लाज़िम है कि यह इसराईली फौजी आपके साथ मिलकर लड़ने के लिए न निकलें। क्योंकि रब उनके साथ नहीं है, वह इफ़राईम के किसी भी रहनेवाले के साथ नहीं है। 8 अगर आप उनके साथ मिलकर निकलें ताकि मज़बूती से दुश्मन से लड़ें तो अल्लाह आपको दुश्मन के सामने गिरा देगा। क्योंकि अल्लाह को आपकी मदद करने और आपको गिराने की कुदरत हासिल है।” 9 अमसियाह ने एतराज़ किया, “लेकिन मैं इसराईलियों को चाँदी के 3,400 किलोग्राम अदा कर चुका हूँ। इन पैसों का क्या बनेगा?” मर्द-खुदा ने जवाब दिया, “रब आपको इससे कहीं ज्यादा अता कर सकता है।” 10 चुनौचे अमसियाह ने इफ़राईम से आए हुए तमाम फौजियों को फारिग करके वापस भेज दिया, और वह यहदाह से बहुत नाराज़ हुए। हर एक बड़े तैश में अपने अपने घर चला गया।

11 तो भी अमसियाह ज़ुरत करके जंग के लिए निकला। अपनी फौज को नमक की वादी में ले जाकर उसने अदोमियों पर फ़तह पाई। उनके 10,000 मर्द मैदाने-जंग में मारे गए। 12 दुश्मन के मज़ीद 10,000 आदमियों को गिरफ़्तार कर लिया गया। यहदाह के फौजियों ने कैदियों को एक ऊँची चटान की चोटी पर ले जाकर नीचे गिरा दिया। इस तरह सब पाश पाश होकर हलाक हुए।

13 इतने में फ़ारिग किए गए इसराईली फौजियों ने सामरिया और बैत-हौरून के बीच में वाके यहदाह के शहरों पर हमला किया था। लड़ते लड़ते उन्होंने 3,000 मर्दों को मौत के घाट उतार दिया और बहुत-सा माल लूट लिया था।

### अमसियाह की बुतपरस्ती

14 अदोमियों को शिकस्त देने के बाद अमसियाह सर्ईर के बाशियों के बुतों को लूटकर अपने घर वापस लाया। वहाँ उसने उन्हें खड़ा किया और उनके सामने औंधे मुँह झुककर उन्हें कुरबानियाँ पेश कीं। 15 यह देखकर रब उससे बहुत नाराज़ हुआ। उसने एक नबी को उसके पास भेजा जिसने कहा, “तू इन देवताओं की तरफ़ क्यों रूज कर रहा है? यह तो अपनी क्रौम को तुझसे नजात न दिला सके।” 16 अमसियाह ने नबी की बात काटकर कहा, “हमने कब से तुझे बादशाह का मुश्रीर बना दिया है? खामोश, वरना तुझे मार दिया जाएगा।” नबी ने खामोश होकर इतना ही कहा, “मुझे मालूम है कि अल्लाह ने आपको आपकी इन हरकतों की वजह से और इसलिए कि आपने मेरा मशवरा कबूल नहीं किया तबाह करने का फैसला कर लिया है।”

### अमसियाह इसराईल के बादशाह युआस से लड़ता है

17 एक दिन यहदाह के बादशाह अमसियाह ने अपने मुश्रीरों से मशवरा करने के बाद युआस बिन यहूआख़ज बिन याहू को पैगाम भेजा, “आएँ, हम एक दूसरे का मुकाबला करें।” 18 लेकिन इसराईल के बादशाह युआस ने जवाब दिया, “लुबनान में एक काँटेदार झाड़ी ने देवदार के एक दरख़्त से बात की, ‘मेरे बेटे के साथ अपनी बेटों का रिश्ता बान्धो।’ लेकिन उसी वक़्त लुबनान के जंगली जानवरों ने उसके ऊपर से गुज़रकर उसे पाँवों तले कुचल डाला। 19 अदोम पर फ़तह पाने के सबब से आपका दिल मग़रूर होकर मज़ीद शोहरत हासिल करना चाहता है। लेकिन मेरा मशवरा है कि आप अपने घर में रहें। आप ऐसी मुसीबत को क्यों दावत देते हैं जो आप और यहदाह की तबाही का बाइस बन जाए?” 20 लेकिन अमसियाह मानने के लिए तैयार नहीं था। अल्लाह उसे और उस की क्रौम को इसराईलियों के हवाले करना चाहता था, क्योंकि उन्होंने अदोमियों के देवताओं की तरफ़ रूज किया था।

21 तब इसराईल का बादशाह युआस अपनी फौज लेकर यहदाह पर चढ़ आया। बैत-शम्म के पास उसका यहदाह के बादशाह अमसियाह के साथ मुकाबला हुआ। 22 इसराईली फौज ने यहदाह की फौज को शिकस्त दी, और हर एक अपने अपने घर भाग गया। 23 इसराईल के बादशाह युआस ने यहदाह के बादशाह अमसियाह बिन युआस बिन अख़ज़ियाह को वहीं बैत-शम्म में गिरफ़्तार कर लिया। फिर वह उसे यरूशलम लाया और शहर की फ़रील इफ़राईम नामी दरवाज़े से लेकर कोने के दरवाज़े तक गिरा दी। इस हिस्से की लंबाई तकरीबन 600 फुट थी। 24 जितना भी सोना, चाँदी और क़ीमती सामान रब के घर और शाही महल के खज़ानों में था उसे उसने पूरे का पूरा छीन लिया। उस वक़्त ओबेद-अदोम रब के घर के खज़ाने सँभालता था। युआस लूटा हुआ माल और बाज़ यरग़मालों को लेकर सामरिया वापस चला गया।

### अमसियाह की मौत

25 इसराईल के बादशाह युआस बिन यहूआख़ज की मौत के बाद यहदाह का बादशाह अमसियाह बिन युआस मज़ीद 15 साल जीता रहा। 26 बाकी जो कुछ अमसियाह की हुकूमत के दौरान हुआ वह शुरू से लेकर आखिर तक ‘शहाने-इसराईलो-यहदाह’ की किताब में दर्ज़ है। 27 जब से वह रब की पैरवी करने से बाज़ आया उस वक़्त से लोग यरूशलम में उसके खिलाफ़

साजिश करने लगे। आखिरकार उसने फरार होकर लकीस में पनाह ली, लेकिन साजिश करनेवालों ने अपने लोगों को उसके पीछे भेजा, और वह वहाँ उसे कत्ल करने में कामयाब हो गए। 28 उस की लाश घोड़े पर उठाकर यहदाह के शहर यरूशलम लाई गई जहाँ उसे खानदानी कब्र में दफनाया गया।

## 26

### यहदाह का बादशाह उज्जियाह

1 यहदाह के तमाम लोगों ने अमसियाह की जगह उसके बेटे उज्जियाह को तख्त पर बिठा दिया। उस की उम्र 16 साल थी 2 जब उसका बाप मरकर अपने बापदादा से जा मिला। बादशाह बनने के बाद उज्जियाह ने ऐलात शहर पर कब्जा करने उसे दुबारा यहदाह का हिस्सा बना लिया। उसने शहर में बहुत तामीरी काम करवाया।

3 उज्जियाह 16 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 52 साल हुकूमत करता रहा। उस की माँ यकूलियाह यरूशलम की रहनेवाली थी। 4 अपने बाप अमसियाह की तरह उसका चाल-चलन रब को पसंद था। 5 इमामे-आज़म ज़करियाह के जीते-जी उज्जियाह रब का तालिब रहा, क्योंकि ज़करियाह उसे अल्लाह का ख़ौफ मानने की तालिम देता रहा। जब तक बादशाह रब का तालिब रहा उस वक्त तक अल्लाह उसे कामयाबी बख़्शाता रहा।

6 उज्जियाह ने फिलिस्तिनों से जंग करके जात, यबान और अशदूद की फ़सीलों को ढा दिया। दीगर कई शहरों को उसने नाए सिरे से तामीर किया जो अशदूद के करीब और फिलिस्तिनों के बाकरी इलाके में थे। 7 लेकिन अल्लाह ने न सिर्फ़ फिलिस्तिनों से लड़ते वक्त उज्जियाह की मदद की बल्कि उस वक्त भी जब जूर-बाल में रहनेवाले अरबों और मऊनियों से जंग छिड़ गई। 8 अम्मोनियों को उज्जियाह को ख़राज अदा करना पड़ा, और वह इतना ताकतवर बना कि उस की शोहरत मिसर तक फैल गई।

9 यरूशलम में उज्जियाह ने कोने के दरवाजे, वादी के दरवाजे और फ़सील के मोड़ पर मज़बूत बुर्ज बनवाए। 10 उसने बयाबान में भी बुर्ज तामीर किए और साथ साथ पत्थर के बेशुमार हौज़ तराशे, क्योंकि मगरबी यहदाह के नशेबी पहाड़ी इलाके और मैदानी इलाके में उसके बड़े बड़े रेवड चरते थे। बादशाह को काश्तकारी का काम खास पसंद था। बहुत लोग पहाड़ी इलाकों और जरखेज़ वादियों में उसके खेतों और अंगूर के बागों की निगरानी करते थे।

11 उज्जियाह की ताकतवर फ़ौज थी। बादशाह के आला अफ़सर हननियाह की राहुनुमाई में मीरमुंशी यश्येल ने अफ़सर मासियाह के साथ फ़ौज की भरती करके उसे तरतीब दिया था। 12 इन दस्तों पर कुंबों के 2,600 सरपरस्त मुकर्रर थे। 13 फ़ौज 3,07,500 जंग लड़ने के काबिल मर्दों पर मुश्तमिल थी। जंग में बादशाह उन पर पूरा भरोसा कर सकता था। 14 उज्जियाह ने अपने तमाम फ़ौजियों को ढालों, नेज़ों, खोदों, ज़िरा-बकतरों, कमारों और फ़लाखन के सामान से मुसल्लह किया। 15 और यरूशलम के बुर्जों और फ़सील के कोनों पर उसने ऐसी मशीनें लगाएँ जो तीर चला सकती और बड़े बड़े पत्थर फेंक सकती थीं।

### उज्जियाह मग़सर हो जाता है

गरज़, अल्लाह की मदद से उज्जियाह की शोहरत दूर दूर तक फैल गई, और उस की ताकत बढ़ती गई।

16 लेकिन इस ताकत ने उसे मग़सर कर दिया, और नतीजे में वह ग़लत राह पर आ गया। रब अपने खुदा का बेवफा होकर वह एक दिन रब के घर में घुस गया ताकि बख़ूर की क़ुरबानगाह पर बख़ूर जलाए। 17 लेकिन इमामे-आज़म अज़रियाह रब के मज़ीद 80 बहादुर इमामों को अपने साथ लेकर उसके पीछे पीछे गया। 18 उन्होंने बादशाह उज्जियाह का सामना करके कहा, “मुनासिब नहीं कि आप रब को बख़ूर की क़ुरबानी पेश करें। यह हासून की औलाद यानी इमामों की ज़िम्मादारी है जिन्हें इसके लिए मख़सूस किया गया है। मक़दिस से निकल जाएँ, क्योंकि आप अल्लाह से बेवफा हो गए हैं, और आपकी यह हरकत रब खुदा के सामने इज़्जत का बाइस नहीं बनेगी।” 19 उज्जियाह बख़ूरदान को पकड़े बख़ूर को पेश करने को था कि इमामों की बातें सुनकर आंग-बग़ला हो गया। लेकिन उसी लमहे उसके माथे पर कोढ़ फूट निकला। 20 यह देखकर इमामे-आज़म अज़रियाह और दीगर इमामों ने उसे जल्दी से रब के घर से निकाल दिया। उज्जियाह ने खुद भी वहाँ से निकलने की जल्दी की, क्योंकि रब ही ने उसे सज़ा दी थी।

21 उज्जियाह जीते-जी इस बीमारी से शफा न पा सका। उसे अलहदा घर में रहना पड़ा, और उसे रब के घर में दाखिल होने की इजाज़त नहीं थी। उसके बेटे यूताम को महल पर मुकर्रर किया गया, और वही उम्मत पर हुकूमत करने लगा।

22 बाकरी जो कुछ उज्जियाह की हुकूमत के दौरान शुरू से लेकर आखिर तक हुआ वह आमूस के बेटे यसायाह नबी ने क़त्लमबंद किया है। 23 जब उज्जियाह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे कोढ़ की वजह से दूसरे बादशाहों के साथ नहीं दफनाया गया बल्कि करीब के एक खेत में जो शाही खानदान का था। फिर उसका बेटा यूताम तख़्तनशीन हुआ।

## 27

## यहदाह का बादशाह यूताम

1 यूताम 25 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 16 साल तक हुकूमत करता रहा। उस की माँ यरूसा बलि सदेक थी। 2 यूताम ने वह कुछ किया जो रब को पसंद था। वह अपने बाप उज्जियाह के नमूने पर चलता रहा, अगरचे उसने कभी भी बाप की तरह रब के घर में घुस जाने की कोशिश न की। लेकिन आम लोग अपनी गलत राहों से न हटे।

3 यूताम ने रब के घर का बालाई दरवाजा तामीर किया। ओफल पहाड़ी जिस पर रब का घर था उस की दीवार को उसने बहुत जगहों पर मजबूत बना दिया। 4 यहदाह के पहाड़ी इलाके में उसने शहर तामीर किए और जंगली इलाकों में किले और बुर्ज बनाए। 5 जब अम्मोनी बादशाह के साथ जंग छिड़ गई तो उसने अम्मोनियों को शिकस्त दी। तीन साल तक उन्हें उसे सालाना खराज के तौर पर तकरीबन 3,400 किलोग्राम चाँदी, 16,00,000 किलोग्राम गंदुम और 13,50,000 किलोग्राम जौ अदा करना पड़ा। 6 यों यूताम की ताकत बढ़ती गई। और वजह यह थी कि वह साबितकदमी से रब अपने खुदा के हुज़ूर चलता रहा।

7 बाकी जो कुछ यूताम की हुकूमत के दौरान हुआ वह 'शाहाने-इसराईलो-यहदाह' की किताब में कलमबंद है। उसमें उस की तमाम जंगों और बाकी कामों का जिक्र है। 8 वह 25 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 16 साल हुकूमत करता रहा। 9 जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम के उस हिस्से में जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है दफनाया गया। फिर उसका बेटा आखज तख्तनशीन हुआ।

## 28

## यहदाह का बादशाह आखज

1 आखज 20 साल की उम्र में बादशाह बना और यरूशलम में रहकर 16 साल हुकूमत करता रहा। वह अपने बाप दाऊद के नमूने पर न चला बल्कि वह कुछ करता रहा जो रब को नापसंद था। 2 क्योंकि उसने इसराईल के बादशाहों का चाल-चलन अपनाया। बाल के बूत ढलवाकर 3 उसने न सिर्फ वादीए-बिन-हिन्मूम में बुतों को कुरबानियाँ पेश की बल्कि अपने बेटों को भी कुरबानी के तौर पर जला दिया। यों वह उन क्रौमों के धिनौने रस्मो-रिवाज अदा करने लगा जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे मुल्क से निकाल दिया था। 4 आखज बखर जलाकर अपनी कुरबानियाँ ऊँचे मकामों, पहाड़ियों की चोटियों और हर घने दरख्त के साये में चढ़ाता था।

5 इसी लिए रब उसके खुदा ने उसे शाम के बादशाह के हवाले कर दिया। शाम की फौज ने उसे शिकस्त दी और यहदाह के बहुत-से लोगों को कैदी बनाकर दमिशक ले गई। आखज को इसराईल के बादशाह फिकह बिन रमलियाह के हवाले भी कर दिया गया जिसने उसे शदीद नुकसान पहुँचाया। 6 एक ही दिन में यहदाह के 1,20,000 तजरबाकार फौजी शहीद हुए। यह सब कुछ इसलिए हुआ कि क्रौम ने रब अपने बापदादा के खुदा को तर्क कर दिया था। 7 उस वक्त इफ्राईम के कबीले के पहलवान जिकरी ने आखज के बेटे मासियाह, महल के इंचारज अजरीकाम और बादशाह के बाद सबसे आला अफसर इलकाना को मार डाला। 8 इसराईलियों ने यहदाह की 2,00,000 औरतें और बच्चे छीन लिए और कसरत का माल लूटकर सामरिया ले गए।

## इसराईल कैदियों को रिहा कर देता है

9 सामरिया में रब का एक नबी बनाम ओदीद रहता था। जब इसराईली फौजी मैदाने-जंग से वापस आए तो ओदीद उनसे मिलने के लिए निकला। उसने उनसे कहा, "देखें, रब आपके बापदादा का खुदा यहदाह से नाराज था, इसलिए उसने उन्हें आपके हवाले कर दिया। लेकिन आप लोग तैश में आकर उन पर यों टूट पड़े कि उनका कल्ले-आम आसमान तक पहुँच गया है। 10 लेकिन यह काफ़ी नहीं था। अब आप यहदाह और यरूशलम के बच्चे हुआओ को अपने गुलाम बनाना चाहते हैं। क्या आप समझते हैं कि हम उनसे अच्छे हैं? नहीं, आपसे भी रब अपने खुदा के खिलाफ गुनाह सरजद हुए हैं। 11 चुनौचे मेरी बात सुनें! इन कैदियों को वापस करें जो आपने अपने भाइयों से छीन लिए हैं। क्योंकि रब का सख्त गज़ब आप पर नाज़िल होनेवाला है।"

12 इफ्राईम के कबीले के कुछ सरपरस्तों ने भी फौजियों का सामना किया। उनके नाम अजरीयाह बिन यहनान, बरकियाह बिन मसिल्लमोत, यहिजक्रियाह बिन सल्लम और अमासा बिन खदली थे। 13 उन्होंने कहा, "इन कैदियों को यहाँ मत ले आएं, वरना हम रब के सामने कुसूरवार ठहरेंगे। क्या आप चाहते हैं कि हम अपने गुनाहों में इजाफा करें? हमारा कुसूर पहले ही बहुत बड़ा है। हाँ, रब इसराईल पर सख्त गुस्से है।"

14 तब फ़ौजियों ने अपने कैदियों को आजाद करके उन्हें लूटे हुए माल के साथ बुजुर्गों और पूरी जमात के हवाले कर दिया। 15 मज़क़रा चार आदमियों ने सामने आकर कैदियों को अपने पास महफूज़ रखा। लूटे हुए माल में से कपड़े निकालकर उन्होंने उन्हें उनमें तकसीम किया जो बरना था। इसके बाद उन्होंने तमाम कैदियों को कपड़े और जूते दे दिए, उन्हें खाना खिलाया, पानी पिलाया और उनके ज़ख्मों की मरहम-पट्टी की। जितने थकावट की वजह से चल न सकते थे उन्हें उन्होंने गधों पर बिठाया, फिर चलते चलते सबको खज़र के शहर यरीह तक पहुँचाया जहाँ उनके अपने लोग थे। फिर वह सामरिया लौट आए।

आख़ज असूर के बादशाह से मदद लेता है

16 उस वक़्त आख़ज बादशाह ने असूर के बादशाह से इलतमास की, “हमारी मदद करने आएँ।” 17 क्योंकि अदोमी यहदाह में घुसकर कुछ लोगों को गिरफ़्तार करके अपने साथ ले गए थे। 18 साथ साथ फिलिस्ती मगरिबी यहदाह के नशेबी पहाड़ी इलाके और जुनूबी इलाके में घुस आए थे और ज़ैल के शहरों पर कब्ज़ा करके उनमें रहने लगे थे: बैत-शमस, ऐयालोन, जदीरोत, नीज़ सोका, तिमनत और जिमज़ू गिर्दा-नवाह की आबादियों समेत। 19 इस तरह रब ने यहदाह को आख़ज की वजह से ज़ेर कर दिया, क्योंकि बादशाह ने यहदाह में बेलगाम बेराहरवी फैलाने दी और रब से अपनी बेवफ़ाई का साफ़ इज़हार किया था।

20 असूर के बादशाह तिग्लत-पिलेसर अपनी फ़ौज लेकर मुल्क में आया, लेकिन आख़ज की मदद करने के बजाए उसने उसे तंग किया। 21 आख़ज ने रब के घर, शाही महल और अपने आला अफसरों के खज़ानों को लूटकर सारा माल असूर के बादशाह को भेज दिया, लेकिन बेफायदा। इससे उसे सही मदद न मिली।

22 गो वह उस वक़्त बड़ी मुसीबत में था तो भी रब से और दूर हो गया। 23 वह शाम के देवताओं को कुरबानियाँ पेश करने लगा, क्योंकि उसका खयाल था कि इन्हीं ने मुझे शिकस्त दी है। उसने सोचा, “शाम के देवता अपने बादशाहों की मदद करते हैं! अब से मैं उन्हें कुरबानियाँ पेश करूँगा ताकि वह मेरी भी मदद करें।” लेकिन यह देवता बादशाह आख़ज और पूरी क़ौम के लिए तबाही का बाइस बन गए। 24 आख़ज ने हुक्म दिया कि अल्लाह के घर का सारा सामान निकालकर टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए। फिर उसने रब के घर के दरवाज़ों पर ताला लगा दिया। उस की जगह उसने यरूशलम के कोने कोने में कुरबानगाहें खड़ी कर दीं। 25 साथ साथ उसने दीगर माबूदों को कुरबानियाँ पेश करने के लिए यहदाह के हर शहर की ऊँची जगहों पर मंदिर तामीर किए। ऐसी हरकतों से वह रब अपने बापदादा के खुदा को तैश दिलाता रहा।

26 बाकी जो कुछ उस की हुक्मत के दौरान हुआ और जो कुछ उसने किया वह शुरू से लेकर आखिर तक ‘शाहाने-यहदाहो-इसराईल’ की किताब में दर्ज है। 27 जब आख़ज मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे यरूशलम में दफन किया गया, लेकिन शाही कब्रिस्तान में नहीं। फिर उसका बेटा हिज़कियाह तख्तनशीन हुआ।

## 29

हिज़कियाह बादशाह रब के घर को दुबारा खोल देता है

1 जब हिज़कियाह बादशाह बना तो उस की उम्र 25 साल थी। यरूशलम में रहकर वह 29 साल हुक्मत करता रहा। उस की माँ अबियाह बित जकरियाह थी।

2 अपने बाप दाऊद की तरह उसने ऐसा काम किया जो रब को पसंद था। 3 अपनी हुक्मत के पहले साल के पहले महीने में उसने रब के घर के दरवाज़ों को खोलकर उनकी मरम्मत करवाई। 4 लावियों और इमामों को बुलाकर उसने उन्हें रब के घर के मशरिकी सहन में जमा किया 5 और कहा,

“ए लावियो, मेरी बात सुनें! अपने आपको खिदमत के लिए मख़ससो-मुक़द्दस करें, और रब अपने बापदादा के खुदा के घर को भी मख़ससो-मुक़द्दस करें। तमाम नापाक चीज़ें मक़दिस से निकालें! 6 हमारे बापदादा बेवफ़ा होकर वह कुछ करते गए जो रब हमारे खुदा को नापसंद था। उन्होंने उसे छोड़ दिया, अपने मुँह को रब की सूकूनतगाह से फेरकर दूसरी तरफ़ चल पड़े। 7 रब के घर के सामनेवाले बरामदे के दरवाज़ों पर उन्होंने ताला लगाकर चरामों को बुझा दिया। न इसराईल के खुदा के लिए बख़र जलाया जाता, न भस्म होनेवाली कुरबानियाँ मक़दिस में पेश की जाती थीं। 8 इसी वजह से रब का ग़ज़ब यहदाह और यरूशलम पर नाज़िल हुआ है। हमारी हालत को देखकर लोग घबरा गए, उनके रोंगटे खड़े हो गए हैं। हम दूसरों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गए हैं। आप खुद इसके गवाह हैं। 9 हमारी बेवफ़ाई की वजह से हमारे बाप तलवार की ज़द में आकर मारे गए और हमारे बेटे-बेटियाँ और बीवियाँ हमसे छीन ली गई हैं। 10 लेकिन अब मैं रब इसराईल के खुदा के साथ अहद बाँधना चाहता हूँ ताकि उसका सख़्त क़हर हमसे टल जाए। 11 मेरे बेटो, अब सुस्ती न दिखाएँ, क्योंकि रब ने आपको चुनकर अपने खादिम बनाया है। आपको उसके हुज़ूर खड़े होकर उस की खिदमत करने और बख़र जलाने की जिम्मादारी दी गई है।”

12 फिर जैल के लावी खिदमत के लिए तैयार हुए :

किहात के खानदान का महत बिन अमासी और योएल बिन अजरियाह, मिरारी के खानदान का कीस बिन अबदी और अजरियाह बिन यहल्ललेल, जैरसोन के खानदान का युआख बिन जिम्मा और अदन बिन युआख,

13 इलीसफ़न के खानदान का सिमरी और यइयेल,

आसफ़ के खानदान का ज़करियाह और मतनियाह,

14 हैमान के खानदान का यहियेल और सिमई,

यदतून के खानदान का समायाह और उज्जियेल।

15 बाकी लावियों को बुलाकर उन्होंने अपने आपको रब की खिदमत के लिए मखसूसो-मुक़द्दस किया। फिर वह बादशाह के हुक्म के मुताबिक रब के घर को पाक-साफ़ करने लगे। काम करते करते उन्होंने इसका खयाल किया कि सब कुछ रब की हिदायात के मुताबिक हो रहा हो। 16 इमाम रब के घर में दाखिल हुए और उसमें से हर नापाक चीज़ निकालकर उसे सहन में लाए। वहाँ से लावियों ने सब कुछ उठाकर शहर से बाहर वादीए-क्रिद्रोन में फेंक दिया। 17 रब के घर की कुदूसियत बहाल करने का काम पहले महीने के पहले दिन शुरू हुआ, और एक हफ़ते के बाद वह सामनेवाले बरामदे तक पहुँच गए थे। एक और हफ़ता पूरे घर को मखसूसो-मुक़द्दस करने में लग गया।

पहले महीने के 16वें दिन काम मुकम्मल हुआ। 18 हिज़क्रियाह बादशाह के पास जाकर उन्होंने कहा, “हमने रब के पूरे घर को पाक-साफ़ कर दिया है। इसमें जानवरों को जलाने की कुरबानगाह उसके सामान समेत और वह मेज़ जिस पर रब के लिए मखसूस रोटियाँ रखी जाती हैं उसके सामान समेत शामिल है। 19 और जितनी चीज़ें आख़ज ने बेवफ़ा बनकर अपनी हुक़मत के दौरान रद्द कर दी थी उन सबको हमने ठीक करके दुबारा मखसूसो-मुक़द्दस कर दिया है। अब वह रब की कुरबानगाह के सामने पड़ी हैं।”

### रब के घर की दुबारा मखसूसियत

20 अगले दिन हिज़क्रियाह बादशाह सुबह-सवेरे शहर के तमाम बुजुर्गों को बुलाकर उनके साथ रब के घर के पास गया। 21 सात जवान बैल, सात मेंढे और भेड़ के सात बच्चे भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए सहन में लाए गए, नीज़ सात बकरे जिन्हें गुनाह की कुरबानी के तौर पर शाही खानदान, मक़दिस और यहदाह के लिए पेश करना था। हिज़क्रियाह ने हास्न की औलाद यानी इमामों को हुक्म दिया कि इन जानवरों को रब की कुरबानगाह पर चढ़ाएँ। 22 पहले बैलों को जबह किया गया। इमामों ने उनका खून जमा करके उसे कुरबानगाह पर छिड़का। इसके बाद मेंढों को जबह किया गया। इस बार भी इमामों ने उनका खून कुरबानगाह पर छिड़का। भेड़ के बच्चों के खून के साथ भी यही कुछ किया गया। 23 आखिर में गुनाह की कुरबानी के लिए मखसूस बकरों को बादशाह और जमात के सामने लाया गया, और उन्होंने अपने हाथों को बकरों के सरों पर रख दिया। 24 फिर इमामों ने उन्हें जबह करके उनका खून गुनाह की कुरबानी के तौर पर कुरबानगाह पर छिड़का ताकि इसराईल का कफ़ारा दिया जाए। क्योंकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि भस्म होनेवाली और गुनाह की कुरबानी तमाम इसराईल के लिए पेश की जाए।

25 हिज़क्रियाह ने लावियों को झंझ, सितार और सरोद थमाकर उन्हें रब के घर में खड़ा किया। सब कुछ उन हिदायात के मुताबिक हुआ जो रब ने दाऊद बादशाह, उसके ग़ैबबीन जाद और नातन नबी की मारिफ़त दी थी। 26 लावी उन साज़ों के साथ खड़े हो गए जो दाऊद ने बनवाए थे, और इमाम अपने तुरमों को थामे उनके साथ खड़े हुए। 27 फिर हिज़क्रियाह ने हुक्म दिया कि भस्म होनेवाली कुरबानी कुरबानगाह पर पेश की जाए। जब इमाम यह काम करने लगे तो लावी रब की तारीफ़ में गीत गाने लगे। साथ साथ तुरम और दाऊद बादशाह के बनवाए हुए साज़ बजने लगे। 28 तमाम जमात औंधे मुँह झुक गईं जबकि लावी गीत गाते और इमाम तुरम बजाते रहे। यह सिलसिला इस कुरबानी की तकमील तक जारी रहा। 29 इसके बाद हिज़क्रियाह और तमाम हाज़िरीन दुबारा मुँह के बल झुक गए। 30 बादशाह और बुजुर्गों ने लावियों को कहा, “दाऊद और आसफ़ ग़ैबबीन के ज़बूर गाकर रब की सताइश करें।” चुनौचे लावियों ने बड़ी ख़ुशी से हम्दो-सना के गीत गाए। वह भी औंधे मुँह झुक गए।

31 फिर हिज़क्रियाह लोगों से मुखातिब हुआ, “आज आपने अपने आपको रब के लिए वक्फ़ कर दिया है। अब वह कुछ रब के घर के पास ले आएँ जो आप जबह और सलामती की कुरबानी के तौर पर पेश करना चाहते हैं।” तब लोग जबह और सलामती की अपनी कुरबानियाँ ले आए। नीज़, जिसका भी दिल चाहता था वह भस्म होनेवाली कुरबानियाँ लाया। 32 इस तरह भस्म होनेवाली कुरबानी के लिए 70 बैल, 100 मेंढे और भेड़ के 200 बच्चे जमा करके रब को पेश किए गए। 33 उनके अलावा 600 बैल और 3,000 भेड़-बकरियाँ रब के घर के लिए मखसूस की गईं। 34 लेकिन इतने जानवरों की

खालों को उतारने के लिए इमाम कम थे, इसलिए लावियों को उनकी मदद करनी पड़ी। इस काम के इखिताम तक बल्कि जब तक मजीद इमाम खिदमत के लिए तैयार और पाक नहीं हो गए थे लावी मदद करते रहे। इमामों की निसबत ज्यादा लावी पाक-साफ हो गए थे, क्योंकि उन्होंने ज्यादा लमन से अपने आपको रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस किया था।<sup>35</sup> भस्म होनेवाली बेष्मार कुरबानियों के अलावा इमामों ने सलामती की कुरबानियों की चरबी भी जलाई। साथ साथ उन्होंने मै की नजरे पेश की।

यों रब के घर में खिदमत का नए सिरे से आगाज हुआ।<sup>36</sup> हिज्रकियाह और पूरी कौम ने खुशी मनाई कि अल्लाह ने यह सब कुछ इतनी जल्दी से हमें मुहैया किया है।

## 30

### फ़सह की ईद के लिए दावत

1 हिज्रकियाह ने इसराइल और यहदाह की हर जगह अपने कासिदों को भेजकर लोगों को रब के घर में आने की दावत दी, क्योंकि वह उनके साथ रब इसराइल के खुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाना चाहता था। उसने इफ़राईम और मनस्सी के कबीलों को भी दावतनामे भेजे।<sup>2</sup> बादशाह ने अपने अफ़सरों और यस्शलम की पूरी जमात के साथ मिलकर फ़ैसला किया कि हम यह ईद दूसरे महीने में मनाएँगे।<sup>3</sup> आम तौर पर यह पहले महीने में मनाई जाती थी, लेकिन उस वक़्त तक खिदमत के लिए तैयार इमाम काफ़ी नहीं थे। क्योंकि अब तक सब अपने आपको पाक-साफ़ न कर सके। दूसरी बात यह थी कि लोग इतनी जल्दी से यस्शलम में जमा न हो सके।<sup>4</sup> इन बातों के पेशे-नज़र बादशाह और तमाम हाज़िरान इस पर मुत्फ़िक़ हुए कि फ़सह की ईद मुलतवी की जाए।<sup>5</sup> उन्होंने फ़ैसला किया कि हम तमाम इसराइलियों को जुनूब में बैर-सबा से लेकर शिमाल में दान तक दावत देंगे। सब यस्शलम आएँ ताकि हम मिलकर रब इसराइल के खुदा की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाएँ। असल में यह ईद बड़ी देर से हिदायात के मुताबिक़ नहीं मनाई गई थी।

6 बादशाह के हुक्म पर कासिद इसराइल और यहदाह में से गुज़रे। हर जगह उन्होंने लोगों को बादशाह और उसके अफ़सरों के ख़त पहुँचा दिए। ख़त में लिखा था,

“ए इफ़राइलियो, रब इब्नाहीम, इसहाक और इसराइल के खुदा के पास वापस आएँ! फिर वह भी आपके पास जो असूरी बादशाहों के हाथ से बच निकले हैं वापस आएगा।<sup>7</sup> अपने बापदादा और भाइयों की तरह न बनें जो रब अपने बापदादा के खुदा से बेवफ़ा हो गए थे। यही वजह है कि उसने उन्हें ऐसी हालत में छोड़ दिया कि जिसने भी उन्हें देखा उसके रोंगटे खड़े हो गए। आप खुद इसके गवाह हैं।<sup>8</sup> उनकी तरह अडे न रहें बल्कि रब के ताबे हो जाएँ। उसके मक़दिस में आएँ, जो उसने हमेशा के लिए मखसूसो-मुक़द्दस कर दिया है। रब अपने खुदा की खिदमत करें ताकि आप उसके सख़्त ग़ज़ब का निशाना न रहें।<sup>9</sup> अगर आप रब के पास लौट आएँ तो जिन्होंने आपके भाइयों और उनके बाल-बच्चों को कैद कर लिया है वह उन पर रहम करके उन्हें इस मुलक में वापस आने देंगे। क्योंकि रब आपका खुदा मेहरबान और रहीम है। अगर आप उसके पास वापस आएँ तो वह अपना मुँह आपसे नहीं फेरेंगा।”

10 कासिद इफ़राईम और मनस्सी के पूरे कबायली इलाके में से गुज़रे और हर शहर को यह पैगाम पहुँचाया। फिर चलते चलते वह जबलून तक पहुँच गए। लेकिन अकसर लोग उनकी बात सुनकर हँस पड़े और उनका मज़ाक़ उड़ाने लगे।<sup>11</sup> सिर्फ़ आशर, मनस्सी और जबलून के चंद एक आदमी फ़रोतनी का इज़हार करके मान गए और यस्शलम आए।<sup>12</sup> यहदाह में अल्लाह ने लोगों को तहरीक़ दी कि उन्होंने एकदिली से उस हुक्म पर अमल किया जो बादशाह और बुजुर्गों ने रब के फ़रमान के मुताबिक़ दिया था।

### हिज्रकियाह और कौम फ़सह की ईद मनाते हैं

13 दूसरे महीने में बहुत ज्यादा लोग बेख़मीरी रोटी की ईद मनाने के लिए यस्शलम पहुँचे।<sup>14</sup> पहले उन्होंने शहर से बुतों की तमाम कुरबानागाहों को दूर कर दिया। बख़र जलाने की छोटी कुरबानागाहों को भी उन्होंने उठाकर वादीए-किद्रोन में फेंक दिया।<sup>15</sup> दूसरे महीने के 14वें दिन फ़सह के लेलों को ज़बह किया गया। इमामों और लावियों ने शरमिदा होकर अपने आपको खिदमत के लिए पाक-साफ़ कर रखा था, और अब उन्होंने भस्म होनेवाली कुरबानियों को रब के घर में पेश किया।<sup>16</sup> वह खिदमत के लिए यों खड़े हो गए जिस तरह मर्दे-खुदा मूसा की शरीअत में फ़रमाया गया है। लावी कुरबानियों का खून इमामों के पास लाए जिन्होंने उसे कुरबानगाह पर छिड़का।

17 लेकिन हाज़िरान में से बहुत-से लोगों ने अपने आपको सहीह तौर पर पाक-साफ़ नहीं किया था। उनके लिए लावियों ने फ़सह के लेलों को ज़बह किया ताकि उनकी कुरबानियों को भी रब के लिए मखसूस किया जा सके।<sup>18</sup> खासकर इफ़राईम, मनस्सी, जबलून और इशकार के अकसर लोगों ने अपने आपको सहीह तौर पर पाक-साफ़ नहीं किया था। चुनौचे वह फ़सह

के खाने में उस हालत में शरीक न हुए जिसका तकाजा शरीअत करती है। लेकिन हिजकियाह ने उनकी शफाअत करके दुआ की, “रब जो मेहरबान है हर एक को मुआफ करे 19 जो पूरे दिल से रब अपने बापदादा के खुदा का तालिब रहने का इरादा रखता है, खाह उसे मकदिस के लिए दरकार पाकीजगी हासिल न भी हो।” 20 रब ने हिजकियाह की दुआ सुनकर लोगों को बहाल कर दिया।

21 यस्शलम में जमाशुदा इसराइलियों ने बड़ी खुशी से सात दिन तक बेखमीरी रोटी की ईद मनाई। हर दिन लावी और इमाम अपने साज बजाकर बुलंद आवाज़ से रब की सताइश करते रहे। 22 लावियों ने रब की खिदमत करते वक़्त बड़ी समझदारी दिखाई, और हिजकियाह ने इसमें उनकी हौसलाअफ़जाई की।

पूरे हफ़ते के दौरान इसराइली रब को सलामती की कुरबानियाँ पेश करके कुरबानी का अपना हिस्सा खाते और रब अपने बापदादा के खुदा की तमजीद करते रहे।

23 इस हफ़ते के बाद पूरी जमात ने फैसला किया कि ईद को मज़ीद सात दिन मनाया जाए। चुनाँचे उन्होंने खुशी से एक और हफ़ते के दौरान ईद मनाई। 24 तब यहदाह के बादशाह हिजकियाह ने जमात के लिए 1,000 बैल और 7,000 भेड़-बकरियाँ पेश की जबकि बुजुर्गों ने जमात के लिए 1,000 बैल और 10,000 भेड़-बकरियाँ चढ़ाई। इतने में मज़ीद बहुत-से इमामों ने अपने आपको रब की खिदमत के लिए मखसूस-मुक़द्दस कर लिया था।

25 जितने भी आए थे खुशी मना रहे थे, खाह वह यहदाह के बाशिंदे थे, खाह इमाम, लावी, इसराइली या इसराइल और यहदाह में रहनेवाले परदेसी मेहमान। 26 यस्शलम में बड़ी शादमानी थी, क्योंकि ऐसी ईद दाऊद बादशाह के बेटे सुलेमान के जमाने से लेकर उस वक़्त तक यस्शलम में मनाई नहीं गई थी।

27 ईद के इख़िताम पर इमामों और लावियों ने खड़े होकर कौम को बरकत दी। और अल्लाह ने उनकी सुनी, उनकी दुआ आसमान पर उस की मुक़द्दस सुकूनतगाह तक पहुँची।

## 31

### पूरे यहदाह में बूतपरस्ती का खाताम

1 ईद के बाद जमात के तमाम इसराइलियों ने यहदाह के शहरों में जाकर पत्थर के बूतों को टुकड़े टुकड़े कर दिया, यसीरत देवी के खंबों को काट डाला, ऊँची जगहों के मंदिरों को ढा दिया और ग़लत कुरबानगाहों को ख़त्म कर दिया। जब तक उन्होंने यह काम यहदाह, बिनयमीन, इफ़राईम और मनस्सी के पूरे इलाकों में तकमिल तक नहीं पहुँचाया था उन्होंने आराम न किया। इसके बाद वह सब अपने अपने शहरों और घरों को चले गए।

### रब के घर में इंतज़ाम की इसलाह

2 हिजकियाह ने इमामों और लावियों को दुबारा खिदमत के वैसे ही गुरोहों में तकसीम किया जैसे पहले थे। उनकी जिम्मादारियाँ भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाना, रब के घर में मुख्तलिफ़ किस्म की खिदमात अंजाम देना और हम्दो-सना के गीत गाना थी।

3 जो जानवर बादशाह अपनी मिलकियत से रब के घर को देता रहा वह भस्म होनेवाली उन कुरबानियों के लिए मुकर्रर थे जिनको रब की शरीअत के मुताबिक हर सुबह-शाम, सबत के दिन, नए चाँद की ईद और दीगर ईदों पर रब के घर में पेश की जाती थी।

4 हिजकियाह ने यस्शलम के बाशिंदों को हुक्म दिया कि अपनी मिलकियत में से इमामों और लावियों को कुछ दें ताकि वह अपना वक़्त रब की शरीअत की तकमिल के लिए वक्फ़ कर सकें। 5 बादशाह का यह एलान सुनते ही इसराइली फ़राखदिली से ग़ल्ला, अंगूर के रस, जैतून के तेल, शहद और खेतों की बाक़ी पैदावार का पहला फल रब के घर में लाए। बहुत कुछ इक़श हुआ, क्योंकि लोगों ने अपनी पैदावार का पूरा दसवाँ हिस्सा वहाँ पहुँचाया। 6 यहदाह के बाक़ी शहरों के बाशिंदे भी साथ रहनेवाले इसराइलियों समेत अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा रब के घर में लाए। जो भी बैल, भेड़-बकरियाँ और बाक़ी चीज़ें उन्होंने रब अपने खुदा के लिए वक्फ़ की थीं वह रब के घर में पहुँची जहाँ लोगों ने उन्हें बड़े ढेर लगाकर इक़श किया। 7 चीज़ें जमा करने का यह सिलसिला तीसरे महीने में शुरू हुआ और सातवें महीने में इख़िताम को पहुँचा। 8 जब हिजकियाह और उसके अफ़सरों ने आकर देखा कि कितनी चीज़ें इक़ठी हो गई हैं तो उन्होंने रब और उस की कौम इसराइल को मुबारक कहा।

9 जब हिजकियाह ने इमामों और लावियों से इन ढेरों के बारे में पूछा 10 तो सदोक के खानदान का इमामे-आज़म अज़रियाह ने जवाब दिया, “जब से लोग अपने हृदिये यहाँ ले आते हैं उस वक़्त से हम जी भरकर खा सकते हैं बल्कि काफ़ी कुछ बच भी जाता है। क्योंकि रब ने अपनी कौम को इतनी बरकत दी है कि यह सब कुछ बाक़ी रह गया है।”



11 तब हिज्रकियाह ने हुकम दिया कि रब के घर में गोदाम बनाए जाएँ। जब ऐसा किया गया 12 तो रज़ाकाराना हदिये, पैदावार का दसवाँ हिस्सा और रब के लिए मखसूस किए गए अतियात उनमें रखे गए। कुननियाह लावी इन चीजों का इंचार्ज बना जबकि उसका भाई सिमई उसका मददगार मुकर्रर हुआ। 13 इमामे-आज़म अज़रियाह रब के घर के पूरे इंतज़ाम का इंचार्ज था, इसलिए हिज्रकियाह बादशाह ने उसके साथ मिलकर दस निगरान मुकर्रर किए जो कुननियाह और सिमई के तहत खिदमत अंजाम दें। उनके नाम यहियेल, अज़ज़ियाह, नहत, असाहेल, यरीमोत, यूज़बद, इलियेल, इसमाकियाह, महत और बिनायाह थे।

14 जो लावी मशरिक्की दरवाजे का दरबान था उसका नाम कोरे बिन यिमना था। अब उसे रब को रज़ाकाराना तौर पर दिए गए हदिये और उसके लिए मखसूस किए गए अतीए तकसीम करने का निगरान बनाया गया। 15 अदन, मिन्यमीन, यशुअ, समायाह, अमरियाह और सकनियाह उसके मददगार थे। उनकी जिम्मादारी लावियों के शहरों में रहनेवाले इमामों को उनका हिस्सा देना थी। बड़ी वफादारी से वह खयाल रखते थे कि खिदमत के मुखज़लिफ़ गुरोहों के तमाम इमामों को वह हिस्सा मिल जाए जो उनका हक बनता था, खाह वह बड़े थे या छोटे। 16 जो अपने गुरोह के साथ रब के घर में खिदमत करता था उसे उसका हिस्सा बराह-रास्त मिलता था। इस सिलसिले में लावी के कबिले के जितने मर्दों और लड़कों की उम्र तीन साल या इससे ज़ायद थी उनकी फ़हरिस्त बनाई गई। 17 इन फ़हरिस्तों में इमामों को उनके कुंबों के मुताबिक दर्ज किया गया। इसी तरह 20 साल या इससे ज़ायद के लावियों को उन जिम्मादारियों और खिदमत के मुताबिक जो वह अपने गुरोहों में सँभालते थे फ़हरिस्तों में दर्ज किया गया। 18 खानदानों की औरतों और बेटे-बेटियाँ छोटे बच्चों समेत भी इन फ़हरिस्तों में दर्ज थीं। चूँकि उनके मर्द वफादारी से रब के घर में खिदमत करते थे, इसलिए यह दीगर अफ़रद भी मखसूसो-मुकदस समझे जाते थे। 19 जो इमाम शहरों से बाहर उन चरागाहों में रहते थे जो उन्हें हारून की औलाद की हैसियत से मिली थीं उन्हें भी हिस्सा मिलता था। हर शहर के लिए आदमी चुने गए जो इमामों के खानदानों के मर्दों और फ़हरिस्त में दर्ज तमाम लावियों को वह हिस्सा दिया करें जो उनका हक था।

20 हिज्रकियाह बादशाह ने हुकम दिया कि पूरे यहदाह में ऐसा ही किया जाए। उसका काम रब के नज़दीक अच्छा, मुसिफाना और वफादाराना था। 21 जो कुछ उसने अल्लाह के घर में इंतज़ाम द्वारा चलाने और शरीअत को कायम करने के सिलसिले में किया उसके लिए वह पूरे दिल से अपने ख़ुदा का तालिब रहा। नतीजे में उसे कामयाबी हासिल हुई।

## 32

अस्री यहदाह में घुस आते हैं

1 हिज्रकियाह ने वफादारी से यह तमाम मनसूबे तकमील तक पहुँचाए। फिर एक दिन असूर का बादशाह सनहेरिब अपनी फ़ौज के साथ यहदाह में घुस आया और क़िलाबंद शहरों का मुहासरा करने लगा ताकि उन पर क़ब्ज़ा करे। 2 जब हिज्रकियाह को इतला मिली कि सनहेरिब आकर यरूशालम पर हमला करने की तैयारियाँ कर रहा है 3 तो उसने अपने सरकारी और फ़ौजी अफसरों से मशवरा किया। खयाल यह पेश किया गया कि यरूशालम शहर के बाहर तमाम चरमों को मलबे से बंद किया जाए। सब मुत्तफ़िक़ हो गए, 4 क्योंकि उन्होंने कहा, “असूर के बादशाह को यहाँ आकर कसरत का पानी क्यों मिले?” बहुत-से आदमी जमा हुए और मिलकर चरमों को मलबे से बंद कर दिया। उन्होंने उस ज़मीनदोज़ नाले का मुँह भी बंद कर दिया जिसके ज़रीए पानी शहर में पहुँचता था।

5 इसके अलावा हिज्रकियाह ने बड़ी मेहनत से फ़र्सील के टूटे-फूटे हिस्सों की मरम्मत करवाकर उस पर बुर्ज बनवाए। फ़र्सील के बाहर उसने एक और चारदीवारी तामीर की जबकि यरूशालम के उस हिस्से के चबूतरे मज़ीद मज़बूत करवाए जो ‘दाऊद का शहर’ कहलाता है। साथ साथ उसने बड़ी मिकदार में हथियार और ढालें बनवाईं। 6 हिज्रकियाह ने लोगों पर फ़ौजी अफसर मुकर्रर किए।

फिर उसने सबको दरवाजे के साथवाले चौक पर इक़ठा करके उनकी हौसलाअफ़ज़ाई की, 7 “मज़बूत और दिलेर हो! असूर के बादशाह और उस की बड़ी फ़ौज को देखकर मत डरें, क्योंकि जो ताक़त हमारे साथ है वह उसे हासिल नहीं है। 8 असूर के बादशाह के लिए सिर्फ़ खाकी आदमी लड़ रहे हैं जबकि रब हमारा ख़ुदा हमारे साथ है। वही हमारी मदद करके हमारे लिए लड़ेगा!” हिज्रकियाह बादशाह के इन अलफ़ाज़ से लोगों की बड़ी हौसलाअफ़ज़ाई हुई।

अस्री यरूशालम का मुहासरा करते हैं

9 जब असूर का बादशाह सनहेरिब अपनी पूरी फ़ौज के साथ लकीस का मुहासरा कर रहा था तो उसने वहाँ से यरूशालम को वफ़द भेजा ताकि यहदाह के बादशाह हिज्रकियाह और यहदाह के तमाम बाशिंदों को पैगाम पहुँचाए,

10 “शाहे-असूर सनहेरिब फ़रमाते हैं, तुम्हारा भरोसा किस चीज़ पर है कि तुम मुहासरे के वक़्त यरूशालम को छोड़ना नहीं चाहते? 11 जब हिज्रकियाह कहता है, ‘रब हमारा ख़ुदा हमें असूर के बादशाह से बचाएगा’ तो वह तुम्हें ग़लत राह पर ला

रहा है। इसका सिर्फ यह नतीजा निकलेगा कि तुम भुके और प्यासे मर जाओगे।<sup>12</sup> हिजकियाह ने तो इस खुदा की बेहुरमती की है। क्योंकि उसने उस की ऊँची जगहों के मंदिरों और कुरबानगाहों को ढाकर यहदाह और यरूशलम से कहा है कि एक ही कुरबानगाह के सामने परस्तिश करें, एक ही कुरबानगाह पर कुरबानियाँ चढ़ाएँ।<sup>13</sup> क्या तुम्हें इल्म नहीं कि मैं और मेरे बापदादा ने दीगर ममालिक की तमाम कौमों के साथ क्या कुछ किया? क्या इन कौमों के देवता अपने मुल्कों को मुझसे बचाने के काबिल रहे हैं? हरगिज़ नहीं! <sup>14</sup> मेरे बापदादा ने इन सबको तबाह कर दिया, और कोई भी देवता अपनी कौम को मुझसे बचा न सका। तो फिर तुम्हारा देवता तुम्हें किस तरह मुझसे बचाएगा? <sup>15</sup> हिजकियाह से फरेब न खाओ! वह इस तरह तुम्हें गलत राह पर न लाए। उस की बात पर एतमाद मत करना, क्योंकि अब तक किसी भी कौम या सलतनत का देवता अपनी कौम को मेरे या मेरे बापदादा के कब्जे से छुटकारा न दिला सका। तो फिर तुम्हारा देवता तुम्हें मेरे कब्जे से किस तरह बचाएगा?"

16 ऐसी बातें करते करते सनहेरिब के अफसर रब इसराईल के खुदा और उसके खादिम हिजकियाह पर कुफर बकते गए।

17 अस्ूर के बादशाह ने वफद के हाथ खत भी भेजा जिसमें उसने रब इसराईल के खुदा की इहानत की। खत में लिखा था, "जिस तरह दीगर ममालिक के देवता अपनी कौमों को मुझसे महफूज न रख सके उसी तरह हिजकियाह का देवता भी अपनी कौम को मेरे कब्जे से नहीं बचाएगा।"

18 अस्ुरी अफसरों ने बुलंद आवाज़ से इब्रानी ज़बान में बादशाह का पैगाम फसील पर खडे यरूशलम के बाशिंदों तक पहुँचाया ताकि उनमें खौफो-हिरास फैल जाए और यों शहर पर कब्जा करने में आसानी हो जाए।<sup>19</sup> इन अफसरों ने यरूशलम के खुदा का यों तमस्खुर उड़ाया जैसा वह दुनिया की दीगर कौमों के देवताओं का उड़ाया करते थे, हालाँकि दीगर माबूद सिर्फ इन्सानी हाथों की पैदावार थे।

### रब सनहेरिब को सज़ा देता है

20 फिर हिजकियाह बादशाह और आमूस के बेटे यसायाह नबी ने चिल्लाते हुए आसमान पर तख्तनशीन खुदा से इलतमास की।<sup>21</sup> जवाब में रब ने अस्ुरियों की लशकरगाह में एक फरिशता भेजा जिसने तमाम बेहतरीन फौजियों को अफसरों और कमाँडरों समेत मौत के घाट उतार दिया। चुनौचे सनहेरिब शरमिदा होकर अपने मुल्क लौट गया। वहाँ एक दिन जब वह अपने देवता के मंदिर में दाखिल हुआ तो उसके कुछ बेटों ने उसे तलवार से कल्ल कर दिया।

22 इस तरह रब ने हिजकियाह और यरूशलम के बाशिंदों को शाहे-अस्ूर सनहेरिब से छुटकारा दिलाया। उसने उन्हें दूसरी कौमों के हमलों से भी महफूज रखा, और चारों तरफ अमनो-अमान फैल गया।<sup>23</sup> बेशुमार लोग यरूशलम आए ताकि रब को कुरबानियाँ पेश करें और हिजकियाह बादशाह को क्रीमती तोहफे दें। उस वक़्त से तमाम कौमों उसका बड़ा एहताराम करने लगी।

### हिजकियाह के आखिरी साल

24 उन दिनों में हिजकियाह इतना बीमार हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। तब उसने रब से दुआ की, और रब ने उस की सुनकर एक इलाही निशान से इसकी तसदीक की।<sup>25</sup> लेकिन हिजकियाह मगरूर हुआ, और उसने इस मेहरबानी का मुनासिब जवाब न दिया। नतीजे में रब उससे और यहदाह और यरूशलम से नाराज़ हुआ।<sup>26</sup> फिर हिजकियाह और यरूशलम के बाशिंदों ने पछताकर अपना गुरूर छोड़ दिया, इसलिए रब का ग़ज़ब हिजकियाह के जीते-जी उन पर नाज़िल न हुआ।

27 हिजकियाह को बहुत दौलत और इज़्जत हासिल हुई, और उसने अपनी सोने-चाँदी, जवाहर, बलसान के क्रीमती तेल, ढालों और बाकी क्रीमती चीज़ों के लिए ख़ास ख़जाने बनवाए।<sup>28</sup> उसने गल्ला, अंगूर का रस और जैतून का तेल महफूज रखने के लिए गोदाम तामीर किए और अपने गाय-बैलों और भेड़-बकरियों को रखने की बहुत-सी जगहें भी बनवा लीं।<sup>29</sup> उसके गाय-बैलों और भेड़-बकरियों में इज़ाफा होता गया, और उसने कई नए शहरों की बुनियाद रखी, क्योंकि अल्लाह ने उसे निहायत ही अमीर बना दिया था।<sup>30</sup> हिजकियाह ही ने जैहन चश्मे का मुँह बंद करके उसका पानी सुरंग के ज़रीए मगरिब की तरफ यरूशलम के उस हिस्से में पहुँचाया जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। जो भी काम उसने शुरू किया उसमें वह कामयाब रहा।<sup>31</sup> एक दिन बाबल के हुक्मरानों ने उसके पास वफद भेजा ताकि उस इलाही निशान के बारे में मालुमात हासिल करें जो यहदाह में हुआ था। उस वक़्त अल्लाह ने उसे अकेला छोड़ दिया ताकि उसके दिल की हकीकी हालत जाँच ले।

32 बाकी जो कुछ हिजकियाह की हुक्मत के दौरान हुआ और जो नेक काम उसने किया वह 'आमूस के बेटे यसायाह नबी की रोया' में कलमबंद है जो 'शाहाने-यहदाहो-इसराईल' की किताब में दर्ज है।<sup>33</sup> जब वह मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे शाही कब्रिस्तान की एक ऊँची जगह पर दफनाया गया। जब जनाज़ा निकला तो यहदाह और यरूशलम के तमाम बाशिंदों ने उसका एहताराम किया। फिर उसका बेटा मनस्सी तख्तनशीन हुआ।

## 33

## यहूदाह का बादशाह मनस्सी

1 मनस्सी 12 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 55 साल था। 2 मनस्सी का चाल-चलन रब को नापसंद था। उसने उन कौमों के काबिले-घिन रस्मो-रिवाज अपना लिए जिन्हें रब ने इसराईलियों के आगे से निकाल दिया था। 3 ऊँची जगहों के जिन मंदिरों को उसके बाप हिजकियाह ने ढा दिया था उन्हें उसने नए सिरे से तामीर किये। उसने बाल देवताओं की कुरबानागाहें बनवाई और यसीरत देवी के खंबे खड़े किए। इनके अलावा वह सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लशकर को सिजदा करके उनकी खिदमत करता था। 4 उसने रब के घर में भी अपनी कुरबानागाहें खड़ी कीं, हालाँकि रब ने इस मकाम के बारे में फरमाया था, “यरूशलम में मेरा नाम अबद तक कायम रहेगा।” 5 लेकिन मनस्सी ने परवा न की बल्कि रब के घर के दोनों सहनों में आसमान के पूरे लशकर के लिए कुरबानागाहें बनवाईं। 6 यहाँ तक कि उसने वादीए-बिन-हिन्नुम में अपने बेटों को भी कुरबान करके जला दिया। जादूगरी, गैबदानी और अफसूंगरी करने के अलावा वह मुरदों की रूहों से राबिता करनेवालों और रम्मालों से भी मशवरा करता था।

गरज उसने बहुत कुछ किया जो रब को नापसंद था और उसे तैश दिलाया। 7 देवी का बूत बनवाकर उसने उसे अल्लाह के घर में खड़ा किया, हालाँकि रब ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से कहा था, “इस घर और इस शहर यरूशलम में जो मैंने तमाम इसराईली कबीलों में से चुन लिया है मैं अपना नाम अबद तक कायम रखूँगा। 8 अगर इसराईली एहतियात से मेरे उन तमाम अहकाम और हिदायत की पैरवी करें जो मूसा ने शरीअत में उन्हें दिए तो मैं कभी नहीं होने दूँगा कि इसराईलियों को उस मुल्क से जिलावतन कर दिया जाए जो मैंने उनके बापदादा को अता किया था।” 9 लेकिन मनस्सी ने यहूदाह और यरूशलम के बाशिंदों को ऐसे गलत काम करने पर उकसाया जो उन कौमों से भी सरजद नहीं हुए थे जिन्हें रब ने मुल्क में दाखिल होते वक्त उनके आगे से तबाह कर दिया था।

10 गो रब ने मनस्सी और अपनी कौम को समझाया, लेकिन उन्होंने परवा न की। 11 तब रब ने असूरी बादशाह के कमाँडरों को यहूदाह पर हमला करने दिया। उन्होंने मनस्सी को पकड़कर उस की नाक में नकेल डाली और उसे पीतल की जंजीरों में जकड़कर बाबल ले गए। 12 जब वह यों मुसीबत में फँस गया तो मनस्सी रब अपने खुदा का ग़ज़ब ठंडा करने की कोशिश करने लगा और अपने आपको अपने बापदादा के खुदा के हज़ूर पस्त कर दिया।

13 और रब ने उस की इलतमास पर ध्यान देकर उस की सुनी। उसे यरूशलम वापस लाकर उसने उस की हुकूमत बहाल कर दी। तब मनस्सी ने जान लिया कि रब ही खुदा है।

14 इसके बाद उसने ‘दाऊद के शहर’ की बैरूनी फसलील नए सिरे से बनवाई। यह फसलील जैहन चश्मे के मगरिब से शुरू हुई और वादीए-किंदरोन में से गुज़रकर मखली के दरवाजे तक पहुँच गई। इस दीवार ने रब के घर की पूरी पहाड़ी बनाम ओफल का इहाता कर लिया और बहुत बृन्द थी। इसके अलावा बादशाह ने यहूदाह के तमाम किरलाबंद शहरों पर फ़ौजी अफसर मुकर्रर किए। 15 उसने अजनबी माबूदों को बूत समेत रब के घर से निकाल दिया। जो कुरबानागाहें उसने रब के घर की पहाड़ी और बाकी यरूशलम में खड़ी की थीं उन्हें भी उसने ढाकर शहर से बाहर फेंक दिया। 16 फिर उसने रब की कुरबानागाह को नए सिरे से तामीर करके उस पर सलामती और शुक्रगुजारी की कुरबानियाँ चढाईं। साथ साथ उसने यहूदाह के बाशिंदों से कहा कि रब इसराईल के खुदा की खिदमत करें। 17 गो लोग इसके बाद भी ऊँची जगहों पर अपनी कुरबानियाँ पेश करते थे, लेकिन अब से वह इन्हें सिर्फ़ रब अपने खुदा को पेश करते थे।

18 बाकी जो कुछ मनस्सी की हुकूमत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-इसराईल की तारीख’ की किताब में दर्ज है। वहाँ उस की अपने खुदा से दुआ भी बयान की गई है और वह बातें भी जो गैबबीनों ने रब इसराईल के खुदा के नाम में उसे बताई थीं। 19 गैबबीनों की किताब में भी मनस्सी की दुआ बयान की गई है और यह कि अल्लाह ने किस तरह उस की सुनी। वहाँ उसके तमाम गुनाहों और बेवफाई का जिक्र है, नीज़ उन ऊँची जगहों की फहरिस्त दर्ज है जहाँ उसने अल्लाह के ताबे हो जाने से पहले मंदिर बनाकर यसीरत देवी के खंबे और बुत खड़े किए थे। 20 जब मनस्सी मरकर अपने बापदादा से जा मिला तो उसे उसके महल में दफन किया गया। फिर उसका बेटा अमून तख़्तनशीन हुआ।

## यहूदाह का बादशाह अमून

21 अमून 22 साल की उम्र में बादशाह बना और दो साल तक यरूशलम में हुकूमत करता रहा। 22 अपने बाप मनस्सी की तरह वह ऐसा गलत काम करता रहा जो रब को नापसंद था। जो बूत उसके बाप ने बनवाए थे उन्हीं की पूजा वह करता और उन्हीं को कुरबानियाँ पेश करता था। 23 लेकिन उसमें और मनस्सी में यह फ़रक था कि बेटे ने अपने आपको रब के सामने पस्त न किया बल्कि उसका कुसूर मज़ीद संगीन होता गया। 24 एक दिन अमून के कुछ अफसरों ने उसके खिलाफ़

साजिश करके उसे महल में कत्ल कर दिया। <sup>25</sup> लेकिन उम्मत ने तमाम साजिश करनेवालों को मार डाला और अमून की जगह उसके बेटे यूसियाह को बादशाह बना दिया।

## 34

यूसियाह बादशाह बुतपरस्ती की मुखालफत करता है

1 यूसियाह 8 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में रहकर उस की हुकूमत का दौरानिया 31 साल था।  
2 यूसियाह वह कुछ करता रहा जो रब को पसंद था। वह अपने बाप दाऊद के अच्छे नमूने पर चलता रहा और उससे न दाई, न बाई तरफ हटा।

3 अपनी हुकूमत के आठवें साल में वह अपने बाप दाऊद के खुदा की मरज़ी तलाश करने लगा, गो उस वक़्त वह जवान ही था। अपनी हुकूमत के 12वें साल में वह ऊँची जगहों के मंदिरों, यसीरत देवी के खंबों और तमाम तराशे और ढाले हुए बुतों को पूरे मुल्क से दूर करने लगा। यों तमाम यरूशलम और यहूदाह इन चीज़ों से पाक-साफ हो गया। <sup>4</sup> बादशाह के ज़ेरे-निगरानी बाल देवताओं की कुरबानागहों को ढा दिया गया। बखूर की जो कुरबानागहें उनके ऊपर थीं उन्हें उसने टुकड़े टुकड़े कर दिया। यसीरत देवी के खंबों और तराशे और ढाले हुए बुतों को ज़मीन पर पटाखकर उसने उन्हें पीसकर उनकी कन्नों पर बिखेर दिया जिन्होंने जीते-जी उनको कुरबानियाँ पेश की थीं। <sup>5</sup> बुतपरस्त पुजारियों की हड्डियों को उनकी अपनी कुरबानागहों पर जलाया गया। इस तरह से यूसियाह ने यरूशलम और यहूदाह को पाक-साफ कर दिया। <sup>6-7</sup> यह उसने न सिर्फ यहूदाह बल्कि मनस्सी, इफ्राईम, शमौन और नफताली तक के शहरों में इर्दगिर्द के खंडरात समेत भी किया। उसने कुरबानागहों को गिराकर यसीरत देवी के खंबों और बुतों को टुकड़े टुकड़े करके चकनाचूर कर दिया। तमाम इसराईल की बखूर की कुरबानागहों को उसने ढा दिया। इसके बाद वह यरूशलम वापस चला गया।

रब के घर की मरम्मत

8 अपनी हुकूमत के 18वें साल में यूसियाह ने साफन बिन असलियाह, यरूशलम पर मुकर्रर अफसर मासियाह और बादशाह के मुशरि-खास युआख बिन युआखज़ को रब अपने खुदा के घर के पास भेजा ताकि उस की मरम्मत करावाएँ। उस वक़्त मुल्क और रब के घर को पाक-साफ करने की मुहिम जारी थी। <sup>9</sup> इमामे-आज़म खिलकियाह के पास जाकर उन्होंने उसे वह पैसे दिए जो लावी के दरबानों ने रब के घर में जमा किए थे। यह हदिये मनस्सी और इफ्राईम के बाशिंदों, इसराईल के तमाम बचे हुए लोगों और यहूदाह, बिनयमीन और यरूशलम के रहनेवालों की तरफ से पेश किए गए थे।

10 अब यह पैसे उन ठेकेदारों के हवाले कर दिए गए जो रब के घर की मरम्मत करवा रहे थे। इन पैसों से ठेकेदारों ने उन कारीगरों की उजरत अदा की जो रब के घर की मरम्मत करके उसे मज़बूत कर रहे थे। <sup>11</sup> कारीगरों और तामीर करनेवालों ने इन पैसों से तराशे हुए पत्थर और शहतीरों की लकड़ी भी खरीदी। इमारतों में शहतीरों को बदलने की ज़रूरत थी, क्योंकि यहूदाह के बादशाहों ने उन पर ध्यान नहीं दिया था, लिहाज़ा वह गल गए थे। <sup>12</sup> इन आदमियों ने वफ़ादारी से खिदमत संरंजाम दी। चार लावी इनकी निगरानी करते थे जिनमें यहत और अबदियाह मिरारी के खानदान के थे जबकि जकरियाह और मसुल्लाम किहात के खानदान के थे। जितने लावी साज़ बजाने में माहिर थे <sup>13</sup> वह मज़दूरों और तमाम दीगर कारीगरों पर मुकर्रर थे। कुछ और लावी मुंशी, निगरान और दरबान थे।

रब के घर में शरीअत की किताब मिल जाती है

14 जब वह पैसे बाहर लाए गए जो रब के घर में जमा हुए थे तो खिलकियाह को शरीअत की वह किताब मिली जो रब ने मूसा की मारिफ़त दी थी। <sup>15</sup> उसे मीरमुंशी साफन को देकर उसने कहा, “मुझे रब के घर में शरीअत की किताब मिली है।” <sup>16</sup> तब साफन किताब को लेकर बादशाह के पास गया और उसे इत्ला दी, “जो भी जिम्मादारी आपके मुलाज़िमों को दी गई उन्हें वह अच्छी तरह पूरा कर रहे हैं।” <sup>17</sup> उन्होंने रब के घर में जमाशुदा पैसे मरम्मत पर मुकर्रर ठेकेदारों और बाकी काम करनेवालों को दे दिए हैं।” <sup>18</sup> फिर साफन ने बादशाह को बताया, “खिलकियाह ने मुझे एक किताब दी है।” किताब को खोलकर वह बादशाह की मौजूदगी में उस की तिलावत करने लगा।

19 किताब की बातें सुनकर बादशाह ने रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए। <sup>20</sup> उसने खिलकियाह, अखीकाम बिन साफन, अब्दोन बिन मीकाह, मीरमुंशी साफन और अपने खास खादिम असायाह को बुलाकर उन्हें हुकम दिया, <sup>21</sup> “जाकर मेरी और इसराईल और यहूदाह के बचे हुए अफ़राद की खातिर रब से इस किताब में दर्ज बातों के बारे में दरियाफ़्त करें। रब का जो ग़ज़ब हम पर नाज़िल होनेवाला है वह निहायत सख़्त है, क्योंकि हमारे बापदादा न रब के फ़रमान के ताबे रहे, न उन हिदायात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है जो किताब में दर्ज की गई है।”

22 चुनाँचे खिलक्रियाह बादशाह के भेजे हुए चंद आदमियों के साथ खुलदा नबिया को मिलने गया। खुलदा का शौहर सल्लम बिन तोकहत बिन खसरा रब के घर के कपड़े सँभालता था। वह यरूशलम के नए इलाके में रहते थे। 23-24 खुलदा ने उन्हें जवाब दिया,

“रब इसराईल का खुदा फरमाता है कि जिस आदमी ने तुम्हें भेजा है उसे बता देना, ‘रब फरमाता है कि मैं इस शहर और इसके बाशिंदों पर आफत नाज़िल करूँगा। वह तमाम लानतें पूरी हो जाएँगी जो बादशाह के हज़ूर पढ़ी गई किताब में बयान की गई हैं। 25 क्योंकि मेरी कौम ने मुझे तर्क करके दीगर माबूदों को कुरबानियाँ पेश की हैं और अपने हाथों से बुत बनाकर मुझे तैश दिलाया है। मेरा गज़ब इस मकाम पर नाज़िल हो जाएगा और कभी ख़त्म नहीं होगा।’ 26 लेकिन यहदाह के बादशाह के पास जाएँ जिसने आपको रब से दरियाफ्त करने के लिए भेजा है और उसे बता दें कि रब इसराईल का खुदा फरमाता है, ‘मेरी बातें सुनकर 27 तेरा दिल नरम हो गया है। जब तुझे पता चला कि मैंने इस मकाम और इसके बाशिंदों के खिलाफ बात की है तो तूने अपने आपको अल्लाह के सामने परत कर दिया। तूने बड़ी इंकिसारी से रंजीदा होकर अपने कपड़े फाड़ लिए और मेरे हज़ूर फूट फूटकर रोया। रब फरमाता है कि यह देखकर मैंने तेरी सुनी है। 28 जब तू मेरे कहने पर मरकर अपने बापदादा से जा मिलेगा तो सलामती से दफन होगा। जो आफत मैं शहर और उसके बाशिंदों पर नाज़िल करूँगा वह तू खुद नहीं देखेगा।’”

अफसर बादशाह के पास वापस गए और उसे खुलदा का जवाब सुना दिया।

**यूसियाह रब से अहद बाँधता है**

29 तब बादशाह यहदाह और यरूशलम के तमाम बुजुर्गों को बुलाकर 30 रब के घर में गया। सब लोग छोटे से लेकर बड़े तक उसके साथ गए यानी यहदाह के आदमी, यरूशलम के बाशिंदे, इमाम और लावी। वहाँ पहुँचकर जमात के सामने अहद की उस पूरी किताब की तिलावत की गई जो रब के घर में मिली थी।

31 फिर बादशाह ने अपने सतून के पास खड़े होकर रब के हज़ूर अहद बाँधा और वादा किया, “हम रब की पैरवी करेंगे, हम पूरे दिलो-जान से उसके अहकाम और हिदायात पूरी करके इस किताब में दर्ज अहद की बातें कायम रखेंगे।” 32 यूसियाह ने मुतालबा किया कि यरूशलम और यहदाह के तमाम बाशिंदे अहद में शरीक हो जाएँ। उस वक्त से यरूशलम के बाशिंदे अपने बापदादा के खुदा के अहद के साथ लिपटे रहे।

33 यूसियाह ने इसराईल के पूरे मुल्क से तमाम धिनौने बुतों को दूर कर दिया। इसराईल के तमाम बाशिंदों को उसने ताकदी की, “रब अपने खुदा की खिदमत करें।” चुनाँचे यूसियाह के जीते-जी वह रब अपने बापदादा की राह से दूर न हुए।

## 35

**यूसियाह फ़सह की ईद मनाता है**

1 फिर यूसियाह ने रब की ताज़ीम में फ़सह की ईद मनाई। पहले महीने के 14वें दिन फ़सह का लेला जबह किया गया। 2 बादशाह ने इमामों को काम पर लगाकर उनकी हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह रब के घर में अपनी खिदमत अच्छी तरह अंजाम दें। 3 लावियों को तमाम इसराईलियों को शरीअत की तालीम देने की जिम्मादारी दी गई थी, और साथ साथ उन्हें रब की खिदमत के लिए मखसूस किया गया था। उनसे यूसियाह ने कहा,

“मुक़दस संदूक को उस इमारत में रखें जो इसराईल के बादशाह दाऊद के बेटे सुलेमान ने तामीर किया। उसे अपने कंधों पर उठाकर इधर उधर ले जाने की ज़रूरत नहीं है बल्कि अब से अपना वक्त रब अपने खुदा और उस की कौम इसराईल की खिदमत में सर्फ़ करें। 4 उन खानदानी ग़रोहों के मुताबिक़ खिदमत के लिए तैयार रहें जिनकी तरतीब दाऊद बादशाह और उसके बेटे सुलेमान ने लिखकर मुकर्रर की थी। 5 फिर मक़दिस में उस जगह खड़े हो जाएँ जो आपके खानदानी ग़रोह के लिए मुकर्रर है और उन खानदानों की मदद करें जो कुरबानियाँ चढ़ाने के लिए आते हैं और जिनकी खिदमत करने की जिम्मादारी आपको दी गई है। 6 अपने आपको खिदमत के लिए मखसूस करें और फ़सह के लेले जबह करके अपने हमवतनों के लिए इस तरह तैयार करें जिस तरह रब ने मूसा की मारिफ़त हुक्म दिया था।”

7 ईद की खुशी में यूसियाह ने ईद मनानेवालों को अपनी मिलकियत में से 30,000 भेड-बकरियों के बच्चे दिए। यह जानवर फ़सह की कुरबानी के तौर पर चढ़ाए गए जबकि बादशाह की तरफ़ से 3,000 बैल दीगर कुरबानियों के लिए इस्तेमाल हुए। 8 इसके अलावा बादशाह के अफ़सरों ने भी अपनी खुशी से कौम, इमामों और लावियों को जानवर दिए। अल्लाह के घर के सबसे आला अफ़सरों खिलक्रियाह, ज़करियाह और यहियेल ने दीगर इमामों को फ़सह की कुरबानी के लिए 2,600 भेड-बकरियों के बच्चे दिए, नीज़ 300 बैल। 9 इसी तरह लावियों के राहनुमाओं ने दीगर लावियों को फ़सह की कुरबानी के लिए 5,000 भेड-बकरियों के बच्चे दिए, नीज़ 500 बैल। उनमें से तीन भाई बनाम कूननियाह, समायाह और नतनियेल थे जबकि दूसरों के नाम हसबियाह, यइयेल और यज़बद थे। 10 जब हर एक खिदमत के लिए तैयार था तो

इमाम अपनी अपनी जगह पर और लावी अपने अपने गुरोहों के मुताबिक खड़े हो गए जिस तरह बादशाह ने हिदायत दी थी। 11 लावियों ने फ़सह के लेलों को ज़बह करके उनकी खालें उतारी जबकि इमामों ने लावियों से जानवरों का खून लेकर कुरबानागह पर छिड़का। 12 जो कुछ भस्म होनेवाली कुरबानियों के लिए मुकर्रर था उसे क्रोम के मुख्तलिफ़ खानदानों के लिए एक तरफ़ रख दिया गया ताकि वह उसे बाद में रब को कुरबानी के तौर पर पेश कर सकें, जिस तरह मूसा की शरीअत में लिखा है। बैलों के साथ भी ऐसा ही किया गया। 13 फ़सह के लेलों को हिदायत के मुताबिक आग पर भूना गया जबकि बाक़ी गोशत को मुख्तलिफ़ क्रिस्म की देगों में उबाला गया। ज्योंही गोशत पक गया तो लावियों ने उसे जल्दी से हाज़िरिनी में तकसीम किया। 14 इसके बाद उन्होंने अपने और इमामों के लिए फ़सह के लेले तैयार किए, क्योंकि हास्न की औलाद यानी इमाम भस्म होनेवाली कुरबानियों और चरबी को चढ़ाने में रात तक मसरूफ़ रहे।

15 ईद के पूरे दौरान आसफ़ के खानदान के गुल्कार अपनी अपनी जगह पर खड़े रहे, जिस तरह दाऊद, आसफ़, हैमान और बादशाह के गैबबीनी यद्तून ने हिदायत दी थी। दरबान भी रब के घर के दरवाज़ों पर मुसलसल खड़े रहे। उन्हें अपनी जगहों को छोड़ने की ज़रूरत भी नहीं थी, क्योंकि बाक़ी लावियों ने उनके लिए भी फ़सह के लेले तैयार कर रखे। 16 यों उस दिन यूसियाह के हुक्म पर कुरबानियों के पूरे इंतज़ाम को तरतीब दिया गया ताकि आइंदा फ़सह की ईद मनाई जाए और भस्म होनेवाली कुरबानियों रब की कुरबानागह पर पेश की जाएं।

17 यस्शलम में जमा हुए इसराइलियों ने फ़सह की ईद और बेखमीरी रोटी की ईद एक हफ़ते के दौरान मनाई। 18 फ़सह की ईद इसराइल में समुएल नबी के ज़माने से लेकर उस वक़्त तक इस तरह नहीं मनाई गई थी। इसराइल के किसी भी बादशाह ने उसे यों नहीं मनाया था जिस तरह यूसियाह ने उसे उस वक़्त इमामों, लावियों, यस्शलम और तमाम यहूदाह और इसराइल से आए हुए लोगों के साथ मिलकर मनाई। 19 यूसियाह बादशाह की हुक्मत के 18वें साल में पहली दफ़ा रब की ताज़ीम में ऐसी ईद मनाई गई।

### यूसियाह की मौत

20 रब के घर की बहाली की तकमील के बाद एक दिन मिसर का बादशाह निकोह दरियाए-फ़ुरात पर के शहर करकिमीस के लिए रवाना हुआ ताकि वहाँ दुश्मन से लड़ें। लेकिन रास्ते में यूसियाह उसका मुकाबला करने के लिए निकला। 21 निकोह ने अपने कासिदों को यूसियाह के पास भेजकर उसे इत्तला दी,

“ऐे यहूदाह के बादशाह, मेरा आपसे क्या वास्ता? इस वक़्त मैं आप पर हमला करने के लिए नहीं निकला बल्कि उस शाही खानदान पर जिसके साथ मेरा झगडा है। अल्लाह ने फ़रमाया है कि मैं जल्दी करूँ। वह तो मेरे साथ है। चुनौचे उसका मुकाबला करने से बाज़ आऊँ, वरना वह आपको हलाक कर देगा।”

22 लेकिन यूसियाह बाज़ न आया बल्कि लड़ने के लिए तैयार हुआ। उसने निकोह की बात न मानी गो अल्लाह ने उसे उस की मारिफ़त अगाह किया था। चुनौचे वह भेस बदलकर फ़िरौन से लड़ने के लिए मजिदों के मैदान में पहुँचा। 23 जब लडाई छिड़ गई तो यूसियाह तीरों से ज़खमी हुआ, और उसने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया, “मुझे यहाँ से ले जाओ, क्योंकि मैं सख़्त ज़खमी हो गया हूँ।” 24 लोगों ने उसे उसके अपने रथ पर से उठाकर उसके एक और रथ में रखा जो उसे यस्शलम ले गया। लेकिन उसने वफ़ात पाई, और उसे अपने बापदादा के खानदानी कब्रिस्तान में दफ़न किया गया। पूरे यहूदाह और यस्शलम ने उसका मातम किया।

25 यरमियाह ने यूसियाह की याद में मातमी गीत लिखे, और आज तक गीत गानेवाले मदर्ने-खवातीन यूसियाह की याद में मातमी गीत गाते हैं, यह पक्का दस्तूर बन गया है। यह गीत ‘नोहा की किताब’ में दर्ज है।

26-27 बाक़ी जो कुछ शुरू से लेकर आखिर तक यूसियाह की हुक्मत के दौरान हुआ वह ‘शाहाने-यहूदाहो-इसराइल’ की किताब में बयान किया गया है। वहाँ उसके नेक कामों का ज़िक्र है और यह कि उसने किस तरह शरीअत के अहकाम पर अमल किया।

## 36

### यहूदाह का बादशाह यहूआख़ज़

1 उम्मत ने यूसियाह के बेटे यहूआख़ज़ को बाप के तख़्त पर बिठा दिया। 2 यहूआख़ज़ 23 साल की उम्र में बादशाह बना, और यस्शलम में उस की हुक्मत का दौरानिया तीन माह था। 3 फिर मिसर के बादशाह ने उसे तख़्त से उतार दिया, और मुल्के-यहूदाह को तकरीबन 3,400 किलोग्राम चाँदी और 34 किलोग्राम सोना ख़राज के तौर पर अदा करना पडा। 4 मिसर के बादशाह ने यहूआख़ज़ के सगे भाई इलियाक्रीम को यहूदाह और यस्शलम का नया बादशाह बनाकर उसका नाम यहूयक्रीम में बदल दिया। यहूआख़ज़ को वह कैद करके अपने साथ मिसर ले गया।

### यहदाह का बादशाह यह्यकीम

5 यह्यकीम 25 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में रहकर वह 11 साल तक हुकूमत करता रहा। उसका चाल-चलन रब उसके खुदा को नापसंद था। 6 एक दिन बाबल के नबूकदनज्जर ने यहदाह पर हमला किया और यह्यकीम को पीतल की जंजीरों में जकड़कर बाबल ले गया। 7 नबूकदनज्जर रब के घर की कई कीमती चीजें भी छीनकर अपने साथ बाबल ले गया और वहाँ अपने मंदिर में रख दीं।

8 बाकी जो कुछ यह्यकीम की हुकूमत के दौरान हुआ वह 'शाहाने-यहदाहो-इसराईल' की किताब में दर्ज है। वहाँ यह बयान किया गया है कि उसने कैसी धिनौनी हरकतें की और कि क्या कुछ उसके साथ हुआ। उसके बाद उसका बेटा यह्याकीन तख्तनशीन हुआ।

### यह्याकीन की हुकूमत

9 यह्याकीन 18 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया तीन माह और दस दिन था। उसका चाल-चलन रब को नापसंद था। 10 बहार के मौसम में नबूकदनज्जर बादशाह ने हुकूम दिया कि उसे गिरिफ्तार करके बाबल ले जाया जाए। साथ साथ फौजियों ने रब के घर की कीमती चीजें भी छीनकर बाबल पहुँचाईं। यह्याकीन की जगह नबूकदनज्जर ने यह्याकीन के चचा सिदकियाह को यहदाह और यरूशलम का बादशाह बना दिया।

### सिदकियाह बादशाह और यरूशलम की तबाही

11 सिदकियाह 21 साल की उम्र में तख्तनशीन हुआ, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 11 साल था। 12 उसका चाल-चलन रब उसके खुदा को नापसंद था। जब यरमियाह नबी ने उसे रब की तरफ से आगाह किया तो उसने अपने आपको नबी के सामने पस्त न किया। 13 सिदकियाह को अल्लाह की कसम खाकर नबूकदनज्जर बादशाह का वफादार रहने का वादा करना पड़ा। तो भी वह कुछ देर के बाद सरकश हो गया। वह अड गया, और उसका दिल इतना सख्त हो गया कि वह रब इसराईल के खुदा की तरफ दुबारा रूज करने के लिए तैयार नहीं था।

14 लेकिन यहदाह के राहनुमाओं, इमामों और कौम की बेवफाई भी बढ़ती गई। पड़ोसी कौमों के धिनौने रसमो-रिवाज अपनाकर उन्होंने रब के घर को नापाक कर दिया, गो उसने यरूशलम में यह इमारत अपने लिए मखसूस की थी।

15 बाबू रब उनके बापदादा का खुदा अपने पैगंबरों को उनके पास भेजकर उन्हें समझाता रहा, क्योंकि उसे अपनी कौम और सुकनतगाह पर तरस आता था। 16 लेकिन लोगों ने अल्लाह के पैगंबरों का मजाक उड़ाया, उनके पैगाम हकीर जाने और नबियों को लान-तान की। आखिरकार रब का गज़ब उन पर नाज़िल हुआ, और बचने का कोई रास्ता न रहा। 17 उसने बाबल के बादशाह नबूकदनज्जर को उनके खिलाफ भेजा तो दुश्मन यहदाह के जवानों को तलवार से कल्ल करने के लिए मकदिस में घुसने से भी न झिजके। किसी पर भी रहम न किया गया, खाह जवान मर्द या जवान खातून, खाह बुजुर्ग या उम्ररसीदा हो। रब ने सबको नबूकदनज्जर के हवाले कर दिया। 18 नबूकदनज्जर ने अल्लाह के घर की तमाम चीजें छीन लीं, खाह वह बड़ी थी या छोटी। वह रब के घर, बादशाह और उसके आला अफसरों के तमाम खजाने भी बाबल ले गया। 19 फौजियों ने रब के घर और तमाम महलों को जलाकर यरूशलम की फसील को गिरा दिया। जितनी भी कीमती चीजें रह गई थीं वह तबाह हुईं। 20 और जो तलवार से बच गए थे उन्हें बाबल का बादशाह कैद करके अपने साथ बाबल ले गया। वहाँ उन्हें उस की और उस की औलाद की खिदमत करनी पड़ी। उनकी यह हालत उस वक़्त तक जारी रही जब तक फारसी कौम की सलतनत शुरू न हुई।

21 यों वह कुछ पूरा हुआ जिसकी पेशगोई रब ने यरमियाह नबी की मारिफ़त की थी, क्योंकि ज़मीन को आखिरकार सबत का वह आराम मिल गया जो बादशाहों ने उसे नहीं दिया था। जिस तरह नबी ने कहा था, अब ज़मीन 70 साल तक तबाह और वीरान रही।

### जिलावतनी से वापसी

22 फारस के बादशाह खोरस की हुकूमत के पहले साल में रब ने वह कुछ पूरा होने दिया जिसकी पेशगोई उसने यरमियाह की मारिफ़त की थी। उसने खोरस को ज़ैल का एलान करने की तहरीक दी। यह एलान जबानी और तहरीरी तौर पर पूरी बादशाही में किया गया।

23 "फारस का बादशाह खोरस फरमाता है, रब आसमान के खुदा ने दुनिया के तमाम ममालिक मेरे हवाले कर दिए हैं। उसने मुझे यहदाह के शहर यरूशलम में उसके लिए घर बनाने की जिम्मादारी दी है। आपमें से जितने उस की कौम के हैं यरूशलम के लिए रवाना हो जाएँ। रब आपका खुदा आपके साथ हो।"

## अजरा

### जिलावतनी से वापसी

1 फारस के बादशाह खोरस की हुकूमत के पहले साल में रब ने वह कुछ पूरा होने दिया जिसकी पेशगोई उसने यरमियाह की मारिफत की थी। उसने खोरस को जैल का एलान करने की तहरीक दी। यह एलान जबानी और तहरीरी तौर पर पूरी बादशाही में किया गया।

2 “फारस का बादशाह खोरस फरमाता है, रब आसमान के खूदा ने दुनिया के तमाम ममालिक मेरे हवाले कर दिए हैं। उसने मुझे यहदाह के शहर यरूशलम में उसके लिए घर बनाने की जिम्मादारी दी है।<sup>3</sup> आपमें से जितने उस की क्रौम के हैं यरूशलम के लिए रवाना हो जाएं ताकि वहाँ रब इसराईल के खूदा के लिए घर बनाएँ, उस खूदा के लिए जो यरूशलम में सुकूनत करता है। आपका खूदा आपके साथ हो।<sup>4</sup> जहाँ भी इसराईली क्रौम के बचे हुए लोग रहते हैं, वहाँ उनके पड़ोसियों का फर्ज है कि वह सोने-चाँदी और माल-मवेशी से उनकी मदद करें। इसके अलावा वह अपनी खुशी से यरूशलम में अल्लाह के घर के लिए हदिये भी दें।”

5 तब कुछ इसराईली रवाना होकर यरूशलम में रब के घर को तामीर करने की तैयारियाँ करने लगे। उनमें यहदाह और बिनयमीन के खानदानी सरपरस्त, इमाम और लावी शामिल थे यानी जितने लोगों को अल्लाह ने तहरीक दी थी।<sup>6</sup> उनके तमाम पड़ोसियों ने उन्हें सोना-चाँदी और माल-मवेशी देकर उनकी मदद की। इसके अलावा उन्होंने अपनी खुशी से भी रब के घर के लिए हदिये दिए।

7 खोरस बादशाह ने वह चीजें वापस कर दीं जो नबूकदनज्जर ने यरूशलम में रब के घर से लूटकर अपने देवता के मंदिर में रख दी थीं।<sup>8</sup> उन्हें निकालकर फारस के बादशाह ने मित्रदात खजानची के हवाले कर दिया जिसने सब कुछ गिनकर यहदाह के बुजुर्ग शेषबज्जर को दे दिया।<sup>9</sup> जो फहरिस्त उसने लिखी उसमें जैल की चीजें थीं :

सोने के 30 बासन,

चाँदी के 1,000 बासन,

29 छुरियाँ,

10 सोने के 30 प्याले,

चाँदी के 410 प्याले,

बाकी चीजें 1,000 अदद।

11 सोने और चाँदी की कुल 5,400 चीजें थीं। शेषबज्जर यह सब कुछ अपने साथ ले गया जब वह जिलावतनों के साथ बाबल से यरूशलम के लिए रवाना हुआ।

## 2

### वापस आए हुए इसराईलियों की फहरिस्त

1 जैल में यहदाह के उन लोगों की फहरिस्त है जो जिलावतनी से वापस आए। बाबल का बादशाह नबूकदनज्जर उन्हें कैद करके बाबल ले गया था, लेकिन अब वह यरूशलम और यहदाह के उन शहरों में फिर जा बसे जहाँ उनके खानदान पहले रहते थे।<sup>2</sup> उनके राहनुमा जर्म्बाबल, यशुअ, नहमियाह, सिरायाह, रालायाह, मर्दकी, बिलशान, मिसफार, बिगवई, रहम और बाना थे। जैल की फहरिस्त में वापस आए हुए खानदानों के मर्द बयान किए गए हैं।

<sup>3</sup> परऊस का खानदान : 2,172,

<sup>4</sup> सफतियाह का खानदान : 372,

<sup>5</sup> अरख का खानदान : 775,

<sup>6</sup> पखत-मोआब का खानदान यानी यशुअ और योआब की औलाद : 2,812,

<sup>7</sup> ऐलाम का खानदान : 1,254,

<sup>8</sup> जन्तु का खानदान : 945,

<sup>9</sup> जवकी का खानदान : 760,

<sup>10</sup> बानी का खानदान : 642,

<sup>11</sup> बबी का खानदान : 623,

<sup>12</sup> अजजाद का खानदान : 1,222,

<sup>13</sup> अदूनिकाम का खानदान : 666,



- 14 बिगवई का खानदान : 2,056,  
 15 अदीन का खानदान : 454,  
 16 अतीर का खानदान यानी हिजक्रियाह की औलाद : 98,  
 17 बज्जी का खानदान : 323,  
 18 यूरा का खानदान : 112,  
 19 हाशूम का खानदान : 223,  
 20 जिब्बार का खानदान : 95,  
 21 बैत-लहम के बाशिंदे : 123,  
 22 नतूफा के 56 बाशिंदे,  
 23 अनतोत के बाशिंदे : 128,  
 24 अजमावत के बाशिंदे : 42,  
 25 क्रिरियत-यारीम, कफ़ीरा और बैरोत के बाशिंदे : 743,  
 26 रामा और जिबा के बाशिंदे : 621,  
 27 मिक्मास के बाशिंदे : 122,  
 28 बेतेल और अई के बाशिंदे : 223,  
 29 नबू के बाशिंदे : 52,  
 30 मजबीस के बाशिंदे : 156,  
 31 दूसरे ऐलाम के बाशिंदे : 1,254,  
 32 हारिम के बाशिंदे : 320,  
 33 लूद, हादीद और ओनु के बाशिंदे : 725,  
 34 यरीह के बाशिंदे : 345,  
 35 सनाआह के बाशिंदे : 3,630।  
 36 जैल के इमाम जिलावतनी से वापस आए।  
 यदायाह का खानदान जो यशुअ की नसल का था : 973,  
 37 इम्मेर का खानदान : 1,052,  
 38 फशहर का खानदान : 1,247,  
 39 हारिम का खानदान : 1,017।  
 40 जैल के लावी जिलावतनी से वापस आए। यशुअ और कदमियेल का खानदान यानी हदावियाह की औलाद : 74,  
 41 गुल्कार : आसफ के खानदान के 128 आदमी,  
 42 रब के घर के दरबान : सल्लूम, अतीर, तलमून, अक्कूब, खतीता और सोबी के खानदानों के 139 आदमी।  
 43 रब के घर के खिदमतगारों के दर्जे-जैल खानदान जिलावतनी से वापस आए।  
 जीहा, हसूफा, तब्बाओत, 44 करूस, सियाहा, फदून, 45 लिबाना, हजाबा, अक्कूब, 46 हजाब, शलमी, हनान, 47 जिदेल,  
 जहर, रियायाह, 48 रज़ीन, नक़्दा, जज्जाम, 49 उज्जा, फ़ासिह, बरी, 50 असा, मऊनीम, नफूसीम, 51 बकबूक, हक़्फ़ा,  
 हरहर, 52 बजलूत, महीदा, हर्शा, 53 बरकूस, सीसरा, तामह, 54 नजियाह और खतीफ़ा।  
 55 सुलेमान के खादिमों के दर्जे-जैल खानदान जिलावतनी से वापस आए।  
 सूती, सूफ़िरत, फरूदा, 56 याला, दरकून, जिदेल, 57 सफतियाह, खतील, फूकिरत-ज़बायम और अमी।  
 58 रब के घर के खिदमतगारों और सुलेमान के खादिमों के खानदानों में से वापस आए हुए मर्दों की तादाद 392 थी।  
 59-60 वापस आए हुए खानदानों दिलायाह, तुबियाह और नक़्दा के 652 मर्द साबित न कर सके कि इसराईल की औलाद  
 हैं, गो वह तल-मिलह, तल-हर्शा, करूस, अदून और इम्मेर के रहनेवाले थे।  
 61-62 हबायाह, हक्कूज़ और बरजिल्ली के खानदानों के कुछ इमाम भी वापस आए, लेकिन उन्हें रब के घर में खिदमत  
 करने की इजाज़त न मिली। क्योंकि गो उन्होंने नसबनामे में अपने नाम तलाश किए उनका कहीं जिक्र न मिला, इसलिए  
 उन्हें नापाक करार दिया गया। (बरजिल्ली के खानदान के बानी ने बरजिल्ली जिलियादी की बेटी से शादी करके अपने सुसर  
 का नाम अपना लिया था।) 63 यहदाह के गवर्नर ने हुक्म दिया कि इन तीन खानदानों के इमाम फ़िलहाल कुरबानियों का वह  
 हिस्सा खाने में शरीक न हों जो इमामों के लिए मुकर्रर है। जब दुबारा इमामे-आज़म मुकर्रर किया जाए तो वही ऊरीम और  
 तुम्मीम नामी कुरा डालकर मामला हल करें।

64 कुल 42,360 इसराईली अपने वतन लौट आए, 65 नीज उनके 7,337 गुलाम और लौडियों और 200 गुल्कार जिनमें मर्दो-खवातीन शामिल थे।

66 इसराईलियों के पास 736 घोड़े, 245 खच्चर, 67 435 ऊँट और 6,720 गधे थे।

68 जब वह यरूशलम में रब के घर के पास पहुँचे तो कुछ खानदानी सरपरस्तों ने अपनी खुशी से हदिये दिए ताकि अल्लाह का घर नए सिरे से उस जगह तामीर किया जा सके जहाँ पहले था। 69 हर एक ने उतना दे दिया जितना दे सका। उस वक्त सोने के कुल 61,000 सिक्के, चाँदी के 2,800 किलोग्राम और इमामों के 100 लिबास जमा हुए।

70 इमाम, लावी, गुल्कार, रब के घर के दरबान और खिदमतगार, और अवाम के कुछ लोग अपनी अपनी आबाई आबादियों में दुबारा जा बसे। यों तमाम इसराईली दुबारा अपने अपने शहरों में रहने लगे।

### 3

नई कुरबानगाह पर कुरबानियाँ

1 सातवें महीने की इब्रित्दा में पूरी कौम यरूशलम में जमा हुई। उस वक्त इसराईली अपनी आबादियों में दुबारा आबाद हो गए थे। 2 जमा होने का मकसद इसराईल के खुदा की कुरबानगाह को नए सिरे से तामीर करना था ताकि मर्द-खुदा मूसा की शरीअत के मुताबिक उस पर भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश की जा सकें। चुनौचे यशुअ बिन यूसदक और ज़रूबाबल बिन सियालतियेल काम में लग गए। यशुअ के इमाम भाइयों और ज़रूबाबल के भाइयों ने उनकी मदद की। 3 गो वह मुल्क में रहनेवाली दीगर कौमों से सहमे हुए थे ताहम उन्होंने कुरबानगाह को उस की पुरानी बुनियाद पर तामीर किया और सुबह-शाम उस पर रब को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करने लगे। 4 झोंपडियों की ईद उन्होंने शरीअत की हिदायत के मुताबिक मनाई। उस हफ्ते के हर दिन उन्होंने भस्म होनेवाली उतनी कुरबानियाँ चढाई जितनी ज़रूरी थी।

5 उस वक्त से इमाम भस्म होनेवाली तमाम दरकार कुरबानियाँ बाकायदगी से पेश करने लगे, नीज नए चाँद की ईदों और रब की बाकी मखसूसो-मुक़द्दस ईदों की कुरबानियाँ। कौम अपनी खुशी से भी रब को कुरबानियाँ पेश करती थी। 6 गो रब के घर की बुनियाद अभी डाली नहीं गई थी तो भी इसराईली सातवें महीने के पहले दिन से रब को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश करने लगे। 7 फिर उन्होंने राजों और कारीगरों को पैसे देकर काम पर लगाया और सूर और सैदा के बाशिंदों से देवदार की लकड़ी मँगवाई। यह लकड़ी लुबनान के पहाड़ी इलाके से समुंद्र तक लाई गई और वहाँ से समुंद्र के रास्ते याफा पहुँचाई गई। इसराईलियों ने मुआवजे में खाने-पीने की चीजें और जैतून का तेल दे दिया। फ़ारस के बादशाह खोरस ने उन्हें यह करवाने की इजाजत दी थी।

रब के घर की तामीर-नौ

8 जिलावतनी से वापस आने के दूसरे साल के दूसरे महीने में रब के घर की नए सिरे से तामीर शुरू हुई। इस काम में ज़रूबाबल बिन सियालतियेल, यशुअ बिन यूसदक, दीगर इमाम और लावी और वतन में वापस आए हुए बाकी तमाम इसराईली शरीक हुए। तामीरी काम की निगरानी उन लावियों के जिम्मे लगा दी गई जिनकी उम्र 20 साल या इससे जायद थी।

9 जैल के लोग मिलकर रब का घर बनानेवालों की निगरानी करते थे : यशुअ अपने बेटों और भाइयों समेत, कदमियेल और उसके बेटे जो हुदावियाह की औलाद थे और हनदाद के खानदान के लावी।

10 रब के घर की बुनियाद रखते वक्त इमाम अपने मुक़द्दस लिबास पहने हुए साथ खड़े हो गए और तुरम बजाने लगे। आसफ़ के खानदान के लावी साथ साथ झोंझ बजाने और रब की सताइश करने लगे। सब कुछ इसराईल के बादशाह दाऊद की हिदायत के मुताबिक हुआ। 11 वह हम्दो-सना के गीत से रब की तारीफ़ करने लगे, “वह भला है, और इसराईल पर उस की शफ़क़त अबदी है।” जब हाज़िरिने न देखा कि रब के घर की बुनियाद रखी जा रही है तो सब रब की खुशी में ज़ोरदार नारे लगाने लगे।

12 लेकिन बहुत-से इमाम, लावी और खानदानी सरपरस्त हाज़िर थे जिन्होंने रब का पहला घर देखा हुआ था। जब उनके देखते देखते रब के नए घर की बुनियाद रखी गई तो वह बुलंद आवाज़ से रोने लगे जबकि बाकी बहुत सारे लोग खुशी के नारे लगा रहे थे। 13 इतना शोर था कि खुशी के नारों और रोने की आवाज़ों में इम्तियाज़ न किया जा सका। शोर दूर दूर तक सुनाई दिया।

### 4

रब के घर की तामीर की मुख़ालफ़त

1 यहूदाह और बिनयमीन के दुश्मनों को पता चला कि वतन में वापस आए हुए इसराईली रब इसराईल के खुदा के लिए घर तामीर कर रहे हैं। 2 ज़रूबाबल और खानदानी सरपरस्तों के पास आकर उन्होंने दरखास्त की, “हम भी आपके साथ मिलकर

रब के घर को तामीर करना चाहते हैं। क्योंकि जब से अस्र के बादशाह असहृदुन ने हमें यहाँ लाकर बसाया है उस वक्त से हम आपके खुदा के तालिब रहे और उसे कुरबानियाँ पेश करते आए हैं।”<sup>3</sup> लेकिन जस्रूबाबल, यशुअ और इसराईल के बाकी खानदानी सरपरस्तों ने इनकार किया, “नहीं, इसमें आपका हमारे साथ कोई वास्ता नहीं। हम अकेले ही रब इसराईल के खुदा के लिए घर बनाएँगे, जिस तरह फ़ारस के बादशाह ख़ोरस ने हमें हुकम दिया है।”

<sup>4</sup> यह सुनकर मुल्क की दूसरी क्रौमें यहूदाह के लोगों की हौसलाशिकनी और उन्हें डराने की कोशिश करने लगी ताकि वह इमारत बनाने से बाज़ आएँ।<sup>5</sup> यहाँ तक कि वह फ़ारस के बादशाह ख़ोरस के कुछ मुश्रीरों को रिश्वत देकर काम रोकने में कामयाब हो गए। यों रब के घर की तामीर ख़ोरस बादशाह के दौरे-हुकूमत से लेकर दारा बादशाह की हुकूमत तक स्की रही।

<sup>6</sup> बाद में जब अबस्वेस्स बादशाह की हुकूमत शुरू हुई तो इसराईल के दुश्मनों ने यहूदाह और यस्शलम के बाशिदों पर इलज़ाम लगाकर शिकायती खत लिखा।

<sup>7</sup> फिर अर्तखशस्ता बादशाह के दौरे-हुकूमत में उसे यहूदाह के दुश्मनों की तरफ से शिकायती खत भेजा गया। खत के पीछे खासकर बिशलाम, मित्रदात और ताबियेल थे। पहले उसे अरामी ज़बान में लिखा गया, और बाद में उसका तरज़ुमा हुआ।<sup>8</sup> सामरिया के गवर्नर रहम और उसके मीरमुंशी शम्सी ने शहनशाह को खत लिख दिया जिसमें उन्होंने यस्शलम पर इलज़ामात लगाए। पते में लिखा था,

<sup>9</sup> अज्ञ : रहम गवर्नर और मीरमुंशी शम्सी, नीज़ उनके हमखिदमत काज़ी, सफ़ीर और तरपल, सिप्पर, अरक, बाबल और सोसन यानी ऐलाम के मर्द,<sup>10</sup> नीज़ बाकी तमाम क्रौमें जिनको अज़ीम और अज़ीज़ बादशाह अशूरबनीपाल ने उठाकर सामरिया और दरियाए-फ़ुरात के बाकीमाँदा मगरिबी इलाके में बसा दिया था।

<sup>11</sup> खत में लिखा था,

“शहनशाह अर्तखशस्ता के नाम,

अज्ञ : आपके खादिम जो दरियाए-फ़ुरात के मगरिब में रहते हैं।

<sup>12</sup> शहनशाह को इल्म हो कि जो यहूदी आपके हज़ूर से हमारे पास यस्शलम पहुँचे हैं वह इस वक्त उस बागी और शरीर शहर को नए सिरे से तामीर कर रहे हैं। वह फ़सील को बहाल करके बुनियादों की मरम्मत कर रहे हैं।<sup>13</sup> शहनशाह को इल्म हो कि अगर शहर नए सिरे से तामीर हो जाए और उस की फ़सील तकमिल तक पहुँचे तो यह लोग टैक्स, खराज और महसूल अदा करने से इनकार कर देंगे। तब बादशाह को नुकसान पहुँचेगा।<sup>14</sup> हम तो नमकहराम नहीं हैं, न शहनशाह की तौहीन बरदाशत कर सकते हैं। इसलिए हम गुज़ारिश करते हैं<sup>15</sup> कि आप अपने बापदादा की तारीखी दस्तावेज़ात से यस्शलम के बारे में मालूमतात हासिल करें, क्योंकि उनमें इस बात की तसदीक मिलेगी कि यह शहर माज़ी में सरकश रहा। हकीकत में शहर को इसी लिए तबाह किया गया कि वह बादशाहों और सबों को तंग करता रहा और कदीम ज़माने से ही बगावत का मंबा रहा है।<sup>16</sup> गरज़ हम शहनशाह को इत्ला देते हैं कि अगर यस्शलम को दुबारा तामीर किया जाए और उस की फ़सील तकमिल तक पहुँचे तो दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाके पर आपका काबू जाता रहेगा।”

<sup>17</sup> शहनशाह ने जवाब में लिखा,

“मैं यह खत रहम गवर्नर, शम्सी मीरमुंशी और सामरिया और दरियाए-फ़ुरात के मगरिब में रहनेवाले उनके हमखिदमत अफ़सरों को लिख रहा हूँ।

आपको सलाम! <sup>18</sup> आपके खत का तरज़ुमा मेरी मौजूदगी में हुआ है और उसे मेरे सामने पढ़ा गया है। <sup>19</sup> मेरे हुकम पर यस्शलम के बारे में मालूमतात हासिल की गई है। मालूम हुआ कि वाकई यह शहर कदीम ज़माने से बादशाहों की मुख़ालफ़त करके सरकशी और बगावत का मंबा रहा है।<sup>20</sup> नीज़, यस्शलम ताकतवर बादशाहों का दाख़ल-हुकूमत रहा है। उनकी इतनी ताकत थी कि दरियाए-फ़ुरात के पूरे मगरिबी इलाके को उन्हें मुख़तलिफ़ क्रिस्म के टैक्स और खराज अदा करना पड़ा।<sup>21</sup> चुनौचे अब हुकम दें कि यह आदमी शहर की तामीर करने से बाज़ आएँ। जब तक मैं खुद हुकम न दूँ उस वक्त तक शहर को नए सिरे से तामीर करने की इज़ाज़त नहीं है।<sup>22</sup> ध्यान दें कि इस हुकम की तकमिल में सुस्ती न की जाए, ऐसा न हो कि शहनशाह को बड़ा नुकसान पहुँचे।”

<sup>23</sup> ज्योंही खत की कापी रहम, शम्सी और उनके हमखिदमत अफ़सरों को पढ़कर सुनाई गई तो वह यस्शलम के लिए रवाना हुए और यहूदियों को जबरदस्ती काम जारी रखने से रोक दिया।

<sup>24</sup> चुनौचे यस्शलम में अल्लाह के घर का तामीरी काम रुक गया, और वह फ़ारस के बादशाह दारा की हुकूमत के दूसरे साल तक रुका रहा।

## 5

रब के घर की तामीर दुबारा शुरू होती है

1 एक दिन दो नबी बनाम हज्जी और जकरियाह बिन इद् उठकर इसराईल के खुदा के नाम में जो उनके ऊपर था यहूदाह और यरूशलम के यहूदियों के सामने नबूवत करने लगे। 2 उनके हौसलाअफजा अलफाज सुनकर जरूबाबल बिन सियालतियेल और यशुअ बिन यूसदक ने फैसला किया कि हम दुबारा यरूशलम में अल्लाह के घर की तामीर शुरू करेंगे। दोनों नबी इसमें उनके साथ थे और उनकी मदद करते रहे।

3 लेकिन ज्योंही काम शुरू हुआ तो दरियाए-फुरात के मगरिबी इलाके के गर्वनर ततनी और शतर-बोजनी अपने हमखिदमत अफसरों समेत यरूशलम पहुँचे। उन्होंने पूछा, “किसने आपको यह घर बनाने और इसका ढाँचा तकमील तक पहुँचाने की इजाजत दी? 4 इस काम के लिए जिम्मादार आदमियों के नाम हमें बताएं!” 5 लेकिन उनका खुदा यहूदाह के बुजुर्गों की निगरानी कर रहा था, इसलिए उन्हें रोका न गया। क्योंकि लोगों ने सोचा कि पहले दारा बादशाह को इतला दी जाए। जब तक वह फैसला न करे उस वक़्त तक काम रोका न जाए।

6 फिर दरियाए-फुरात के मगरिबी इलाके के गर्वनर ततनी, शतर-बोजनी और उनके हमखिदमत अफसरों ने दारा बादशाह को जैल का खत भेजा,

7 “दारा बादशाह को दिल की गहराइयों से सलाम कहते हैं! 8 शहनशाह को इल्म हो कि सबा यहूदाह में जाकर हमने देखा कि वहाँ अजीम खुदा का घर बनाया जा रहा है। उसके लिए बड़े तराशे हुए पत्थर इस्तेमाल हो रहे हैं और दीवारों में शहतीर लगाए जा रहे हैं। लोग बड़ी जाँफिशानी से काम कर रहे हैं, और मकान उनकी मेहनत के बाइस तेजी से बन रहा है। 9 हमने बुजुर्गों से पूछा, ‘किसने आपको यह घर बनाने और इसका ढाँचा तकमील तक पहुँचाने की इजाजत दी है?’ 10 हमने उनके नाम भी मालूम किए ताकि लिखकर आपको भेज सकें। 11 उन्होंने हमें जवाब दिया,

‘हम आसमानो-जमीनी के खुदा के खादिम हैं, और हम उस घर को अज़ सरे-नौ तामीर कर रहे हैं जो बहुत साल पहले यहाँ कायम था। इसराईल के एक अजीम बादशाह ने उसे कदीम ज़माने में बनाकर तकमील तक पहुँचाया था। 12 लेकिन हमारे बापदादा ने आसमान के खुदा को तैश दिलाया, और नतीजे में उसने उन्हें बाबल के बादशाह नबूकदनज्जर के हवाले कर दिया जिसने रब के घर को तबाह कर दिया और कौम को कैद करके बाबल में बसा दिया। 13 लेकिन बाद में जब खोरस बादशाह बन गया तो उसने अपनी हुकूमत के पहले साल में हुकम दिया कि अल्लाह के इस घर को दुबारा तामीर किया जाए। 14 साथ साथ उसने सोने-चौँदी की वह चीज़ें वापस कर दी जो नबूकदनज्जर ने यरूशलम में अल्लाह के घर से लूटकर बाबल के मंदिर में रख दी थीं। खोरस ने यह चीज़ें एक आदमी के सुपुर्द कर दी जिसका नाम शेषबज्जर था और जिसे उसने यहूदाह का गर्वनर मुकर्र किया था। 15 उसने उसे हुकम दिया कि सामान को यरूशलम ले जाओ और रब के घर को पुरानी जगह पर अज़ सरे-नौ तामीर करके यह चीज़ें उसमें महफूज़ रखो। 16 तब शेषबज्जर ने यरूशलम आकर अल्लाह के घर की बुनियाद रखी। उसी वक़्त से यह इमारत ज़ेरे-तामीर है, अगरचे यह आज तक मुकम्मल नहीं हुई।’

17 चुनौचे अगर शहनशाह को मंज़ूर हो तो वह तफतीश करें कि क्या बाबल के शाही दफ्तर में कोई ऐसी दस्तावेज़ मौजूद है जो इस बात की तसदीक करे कि खोरस बादशाह ने यरूशलम में रब के घर को अज़ सरे-नौ तामीर करने का हुकम दिया। गुजारिश है कि शहनशाह हमें अपना फैसला पहुँचा दें।”

## 6

### दारा बादशाह यहूदियों की मदद करता है

1 तब दारा बादशाह ने हुकम दिया कि बाबल के खज़ाने के दफ्तर में तफतीश की जाए। इसका खोज लगाते लगाते 2 आखिरकार मादी शहर इन्कबताना के किले में तूमर मिल गया जिसमें लिखा था,

3 “खोरस बादशाह की हुकूमत के पहले साल में शहनशाह ने हुकम दिया कि यरूशलम में अल्लाह के घर को उस की पुरानी जगह पर नए सिरे से तामीर किया जाए ताकि वहाँ दुबारा कुरबानियों पेश की जा सकें। उस की बुनियाद रखने के बाद उस की ऊँचाई 90 और चौड़ाई 90 फुट हो। 4 दीवारों को यों बनाया जाए कि तराशे हुए पत्थरों के हर तीन रद्दों के बाद देवदार के शहतीरों का एक रद्दा लगाया जाए। अखराजात शाही खज़ाने से पूरे किए जाएँ। 5 नीज़ सोने-चौँदी की जो चीज़ें नबूकदनज्जर यरूशलम के इस घर से निकालकर बाबल लाया वह वापस पहुँचाई जाएँ। हर चीज़ अल्लाह के घर में उस की अपनी जगह पर वापस रख दी जाए।”

6 यह खबर पढ़कर दारा ने दरियाए-फुरात के मगरिबी इलाके के गर्वनर ततनी, शतर-बोजनी और उनके हमखिदमत अफसरों को जैल का जवाब भेज दिया,

“अल्लाह के इस घर की तामीर में मुदाखलत मत करना! 7 लोगों को काम जारी रखने दें। यहूदियों का गर्वनर और उनके बुजुर्ग अल्लाह का यह घर उस की पुरानी जगह पर तामीर करें।

8 न सिर्फ यह बल्कि मैं हुकम देता हूँ कि आप इस काम में बुजुर्गों की मदद करें। तामीर के तमाम अखराजात वक्त पर मुहैया करें ताकि काम न स्के। यह जैसे शाही खजाने यानी दरियाए-फुरात के मगारिबी इलाके से जमा किए गए टैक्सों में से अदा किए जाएँ।<sup>9</sup> रोज़ बरोज़ इमामों को भस्म होनेवाली कुरबानियों के लिए दरकार तमाम चीज़ें मुहैया करते रहें, खाह वह जवान बैल, मेंढे, भेड़ के बच्चे, गंदुम, नमक, मै या जैतून का तेल क्यों न माँगें। इसमें सुस्ती न करें।<sup>10</sup> ताकि वह आसमान के खुदा को पसंदीदा कुरबानियाँ पेश करके शहनशाह और उसके बेटों की सलामती के लिए दुआ कर सकें।

11 इसके अलावा मैं हुकम देता हूँ कि जो भी इस फ़रमान की खिलाफ़वर्ज़ी करे उसके घर से शहतीर निकालकर खड़ा किया जाए और उसे उस पर मसलूब किया जाए। साथ साथ उसके घर को मलबे का ढेर बनाया जाए।<sup>12</sup> जिस खुदा ने वहाँ अपना नाम बसाया है वह हर बादशाह और कौम को हलाक करे जो मेरे इस हुकम की खिलाफ़वर्ज़ी करके यरूशलम के घर को तबाह करने की ज़रत करे। मैं, दारा ने यह हुकम दिया है। इसे हर तरह से पूरा किया जाए।”

### रब के घर की मखसूसियत

13 दरियाए-फ़ुरात के मगारिबी इलाके के गर्वनर ततनी, शतर-बोज़नी और उनके हमखिदमत अफ़सरों ने हर तरह से दारा बादशाह के हुकम की तामील की।<sup>14</sup> चुनौचे यहदी बुजुर्ग रब के घर पर काम जारी रख सके। दोनों नबी हज्जी और ज़करियाह बिन इडू अपनी नबुवतों से उनकी हौसलाअफ़जाई करते रहे, और यों सारा काम इसराईल के खुदा और फ़ारस के बादशाहों खोरस, दारा और अर्तख़शस्ता के हुकम के मुताबिक ही मुकम्मल हुआ।

15 रब का घर दारा बादशाह की हुकमत के छठे साल में तकमील तक पहुँचा। अदार के महीने का तीसरा दिन \* था।

16 इसराईलियों ने इमामों, लावियों और जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईलियों समेत बड़ी ख़ुशी से रब के घर की मखसूसियत की इंद मनाई।<sup>17</sup> उन्होंने 100 बैल, 200 मेंढे और भेड़ के 400 बच्चे कुरबान किए। पूरे इसराईल के लिए गुनाह की कुरबानी भी पेश की गई, और इसके लिए फ़ी क़बीला एक बकरा यानी मिलकर 12 बकरे चढाए गए।<sup>18</sup> फिर इमामों और लावियों को रब के घर की खिदमत के मुख्तलिफ़ गुरोहों में तकसीम किया गया, जिस तरह मूसा की शरीअत हिदायत देती है।

### इसराईली फ़सह की इंद मनाते हैं

19 पहले महीने के 14वें दिन † जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईलियों ने फ़सह की इंद मनाई।<sup>20</sup> तमाम इमामों और लावियों ने अपने आपको पाक-साफ़ कर रखा था। सबके सब पाक थे। लावियों ने फ़सह के लेले जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईलियों, उनके भाइयों यानी इमामों और अपने लिए ज़बह किए।<sup>21</sup> लेकिन न सिर्फ़ जिलावतनी से वापस आए हुए इसराईली इस खाने में शरीक हुए बल्कि मुल्क के वह तमाम लोग भी जो गैरयहदी कौमों की नापाक राहों से अलग होकर उनके साथ रब इसराईल के खुदा के तालिब हुए थे।<sup>22</sup> उन्होंने सात दिन बड़ी ख़ुशी से बेख़मीरी रोटी की इंद मनाई। रब ने उनके दिलों को ख़ुशी से भर दिया था, क्योंकि उसने फ़ारस के बादशाह का दिल उनकी तरफ़ मायल कर दिया था ताकि उन्हें इसराईल के खुदा के घर को तामीर करने में मदद मिले।

## 7

### अज़रा इमाम को यरूशलम भेजा जाता है

1 इन वाक़ियात के काफ़ी अरसे बाद एक आदमी बनाम अज़रा बाबल को छोड़कर यरूशलम आया। उस वक्त फ़ारस के बादशाह अर्तख़शस्ता की हुकमत थी। आदमी का पूरा नाम अज़रा बिन सिरायाह बिन अज़रियाह बिन खिलक्रियाह<sup>2</sup> बिन सल्लूम बिन सदोक बिन अख़ीतूब<sup>3</sup> बिन अमरियाह बिन अज़रियाह बिन मिरायोत<sup>4</sup> बिन ज़रखियाह बिन उज्जी बिन बुक्की<sup>5</sup> बिन अबीसुअ बिन फ़ीनहास बिन इलियज़र बिन हासून था। (हासून इमामे-आज़म था)।

6 अज़रा पाक नविशतों का उस्ताद और उस शरीअत का आलिम था जो रब इसराईल के खुदा ने मूसा की मारिफ़त दी थी। जब अज़रा बाबल से यरूशलम के लिए रवाना हुआ तो शहनशाह ने उस की हर ख़ाहिश पूरी की, क्योंकि रब उसके खुदा का शफ़ीक हाथ उस पर था।<sup>7</sup> कई इसराईली उसके साथ गए। इमाम, लावी, गुल्कार और रब के घर के दरबान और खिदमतगार भी उनमें शामिल थे। यह अर्तख़शस्ता बादशाह की हुकमत के सातवें साल में हुआ।<sup>8-9</sup> काफ़िला पहले महीने के पहले दिन \* बाबल से रवाना हुआ और पाँचवें महीने के पहले दिन † सहीह-सलामत यरूशलम पहुँचा, क्योंकि अल्लाह का शफ़ीक हाथ अज़रा पर था।<sup>10</sup> वजह यह थी कि अज़रा ने अपने आपको रब की शरीअत की तफ़तीश करने, उसके मुताबिक ज़िदगी गुज़ारने और इसराईलियों को उसके अहकाम और हिदायत की तालीम देने के लिए वक्फ़ किया था।

\* 6:15 12 मार्च। † 6:19 21 अप्रैल। \* 7:8-9 8 अप्रैल। † 7:8-9 4 अगस्त।

शहनशाह अजरा को मुखतारानामा देता है

11 अर्तखशस्ता बादशाह ने अजरा इमाम को जैल का मुखतारानामा दे दिया, उसी अजरा को जो पाक नविशतों का उस्ताद और उन अहकाम और हिदायात का आलिम था जो रब ने इसराईल को दी थीं। मुखतारानामे में लिखा था,

12 “अजः शहनशाह अर्तखशस्ता

अजरा इमाम को जो आसमान के खुदा की शरीअत का आलिम है, सलाम! 13 मैं हुक्म देता हूँ कि अगर मेरी सलतनत में मौजूद कोई भी इसराईली आपके साथ यरूशलम जाकर वहाँ रहना चाहे तो वह जा सकता है। इसमें इमाम और लावी भी शामिल हैं, 14 शहनशाह और उसके सात मुशीर आपको यहदाह और यरूशलम भेज रहे हैं ताकि आप अल्लाह की उस शरीअत की रौशनी में जो आपके हाथ में है यहदाह और यरूशलम का हाल जाँच लें। 15 जो सोना-चाँदी शहनशाह और उसके मुशीरों ने अपनी खुशी से यरूशलम में सुकूनत करनेवाले इसराईल के खुदा के लिए कुरबान की है उसे अपने साथ ले जाएँ। 16 नीज़, जितनी भी सोना-चाँदी आपको सूबा बाबल से मिल जाएगी और जितने भी हदिये क्रौम और इमाम अपनी खुशी से अपने खुदा के घर के लिए जमा करें उन्हें अपने साथ ले जाएँ। 17 उन पैसों से बैल, मेंढे, भेड़ के बच्चे और उनकी कुरबानियों के लिए दरकार गल्ला और मै की नज़रें खरीद लें, और उन्हें यरूशलम में अपने खुदा के घर की कुरबानगाह पर कुरबान करें। 18 जो पैसे बच जाएँ उनको आप और आपके भाई वैसे खर्च कर सकते हैं जैसे आपको मुनासिब लगे। शर्त यह है कि आपके खुदा की मरज़ी के मुताबिक हो। 19 यरूशलम में अपने खुदा को वह तमाम चीज़ें पहुँचाएँ जो आपको रब के घर में खिदमत के लिए दी जाएँगी। 20 बाकी जो कुछ भी आपको अपने खुदा के घर के लिए खरीदना पड़े उसके पैसे शाही खजाना अदा करेगा।

21 मैं, अर्तखशस्ता बादशाह दरियाए-फुरात के मगरिब में रहनेवाले तमाम खजानचियों को हुक्म देता हूँ कि हर तरह से अजरा इमाम की माली मदद करें। जो भी आसमान के खुदा की शरीअत का यह उस्ताद माँगे वह उसे दिया जाए। 22 उसे 3,400 किलोग्राम चाँदी, 16,000 किलोग्राम गंदुम, 2,200 लिटर मै और 2,200 लिटर जैतून का तेल तक देना। नमक उसे उतना मिले जितना वह चाहे। 23 ध्यान से सब कुछ मुहैया करें जो आसमान का खुदा अपने घर के लिए माँगे। ऐसा न हो कि शहनशाह और उसके बेटों की सलतनत उसके गज़ब का निशाना बन जाए। 24 नीज़, आपको इल्म हो कि आपको अल्लाह के इस घर में खिदमत करनेवाले किसी शख्स से भी खराज या किसी किस्म का टैक्स लेने की इजाज़त नहीं है, खाह वह इमाम, लावी, गुलकार, रब के घर का दरबान या उसका खिदमतगार हो।

25 ऐ अजरा, जो हिकमत आपके खुदा ने आपको अता की है उसके मुताबिक मजिस्ट्रेट और काज़ी मुक़रर करें जो आपको कौम के उन लोगों का इनसाफ करें जो दरियाए-फुरात के मगरिब में रहते हैं। जितने भी आपके खुदा के अहकाम जानते हैं वह इसमें शामिल हैं। और जितने इन अहकाम से वाकिफ़ नहीं हैं उन्हें आपको तालीम देनी है। 26 जो भी आपके खुदा की शरीअत और शहनशाह के कानून की खिलाफ़वर्ज़ी करे उसे सख्ती से सज़ा दी जाए। जुर्म की संजीदगी का लिहाज़ करके उसे या तो सज़ाए-मौत दी जाए या जिलावतन किया जाए, उस की मिलकियत ज़ब्त की जाए या उसे जेल में डाला जाए।”

अजरा की सताइश

27 रब हमारे बापदादा के खुदा की तमज़ीद हो जिसने शहनशाह के दिल को यरूशलम में रब के घर को शानदार बनाने की तहरीक दी है। 28 उसी ने शहनशाह, उसके मुशीरों और तमाम असरोर-सूख़ रखनेवाले अफ़सरों के दिलों को मेरी तरफ़ मायल कर दिया है। चूँकि रब मेरे खुदा का शफ़ीक़ हाथ मुझ पर था इसलिए मेरा हौसला बढ़ गया, और मैंने इसराईल के खानदानी सरपरस्तों को अपने साथ इसराईल वापस जाने के लिए जमा किया।

## 8

अजरा के साथ जिलावतनी से वापस आनेवालों की फ़हरिस्त

1 दर्जे-जैल उन खानदानी सरपरस्तों की फ़हरिस्त है जो अर्तखशस्ता बादशाह की हुक्मत के दौरान मेरे साथ बाबल से यरूशलम के लिए रवाना हुए। हर खानदान के मर्दों की तादाद भी दर्ज है :

2-3 फ़्रीनहास के खानदान का जैरसोम,

इतमर के खानदान का दानियाल,

दाऊद के खानदान का हतुश बिन सकनियाह,

परऊस के खानदान का ज़करियाह। 150 मर्द उसके साथ नसबनामे में दर्ज थे।

4 परखत-मोआब के खानदान का इलीहएनी बिन ज़रखियाह 200 मर्दों के साथ,

5 ज़तू के खानदान का सकनियाह बिन यहज़ियेल 300 मर्दों के साथ,

6 अदीन के खानदान का अबद बिन यूनतन 50 मर्दों के साथ,

- 7 ऐलाम के खानदान का यसायाह बिन अतलियाह 70 मर्दों के साथ,
- 8 सफतियाह के खानदान का जबदियाह बिन मीकाएल 80 मर्दों के साथ,
- 9 योआब के खानदान का अबदियाह बिन यहियेल 218 मर्दों के साथ,
- 10 बानी के खानदान का सल्मीत बिन यूसिफियाह 160 मर्दों के साथ,
- 11 बबी के खानदान का जकरियाह बिन बबी 28 मर्दों के साथ,
- 12 अजजाद के खानदान का यहनान बिन हक्कातान 110 मर्दों के साथ,
- 13 अदूनिकाम के खानदान के आखिरी लोग इलीफ़लत, यश्येल और समायाह 60 मर्दों के साथ,
- 14 बिगवई का खानदान का ऊती और जबद 70 मर्दों के साथ।

15 मैं यानी अजरा ने मजकूरा लोगों को उस नहर के पास जमा किया जो अहावा की तरफ बहती है। वहाँ हम खैमे लगाकर तीन दिन ठहरे रहे। इस दौरान मुझे पता चला कि गो आम लोग और इमाम आ गए हैं लेकिन एक भी लावी हाज़िर नहीं है। 16 चुनौचे मैंने इलियज़र, अरियेल, समायाह, इलनातन, यरिब, इलनातन, नातन, जकरियाह और मसुल्लाम को अपने पास बुला लिया। यह सब खानदानी सरपरस्त थे जबकि शरीअत के दो उस्ताद बनाम यूयारीब और इलनातन भी साथ थे। 17 मैंने उन्हें लावियों की आबादी कासिफ़ियाह के बुजुर्ग इडू के पास भेजकर वह कुछ बताया जो उन्हें इडू, उसके भाइयों और रब के घर के खिदमतगारों को बताना था ताकि वह हमारे खुदा के घर के लिए खिदमतगार भेजें। 18 अल्लाह का शफ़ीक हाथ हम पर था, इसलिए उन्होंने हमें महली बिन लावी बिन इसराईल के खानदान का समझदार आदमी सरिबियाह भेज दिया। सरिबियाह अपने बेटों और भाइयों के साथ पहुँचा। कुल 18 मर्द थे। 19 इनके अलावा मिरारी के खानदान के हसबियाह और यसायाह को भी उनके बेटों और भाइयों के साथ हमारे पास भेजा गया। कुल 20 मर्द थे। 20 उनके साथ रब के घर के 220 खिदमतगार थे। इनके तमाम नाम नसबनामे में दर्ज थे। दाऊद और उसके मुलाज़िमों ने उनके बापदादा को लावियों की खिदमत करने की जिम्मादारी दी थी।

#### यस्शलम के लिए रवानगी की तैयारियाँ

21 वही अहावा की नहर के पास ही मैंने एलान किया कि हम सब रोज़ा रखकर अपने आपको अपने खुदा के सामने परत करें और दूआ करें कि वह हमें हमारे बाल-बच्चों और सामान के साथ सलामती से यस्शलम पहुँचाए। 22 क्योंकि हमारे साथ फ़ौज़ी और घुडसवार नहीं थे जो हमें रास्ते में डाकुओं से महफूज़ रखते। बात यह थी कि मैं शहनशाह से यह माँगने से शर्म महसूस कर रहा था, क्योंकि हमने उसे बताया था, “हमारे खुदा का शफ़ीक हाथ हर एक पर ठहरता है जो उसका तालिब रहता है। लेकिन जो भी उसे तर्क करे उस पर उसका सख्त ग़ज़ब नाज़िल होता है।” 23 चुनौचे हमने रोज़ा रखकर अपने खुदा से इततमास की कि वह हमारी हिफ़ाज़त करे, और उसने हमारी सुनी।

24 फिर मैंने इमामों के 12 राहनुमाओं को चुन लिया, नीज़ सरिबियाह, हसबियाह और मज़ीद 10 लावियों को। 25 उनकी मौजूदगी में मैंने सोना-चौँदी और बाकी तमाम सामान तोल लिया जो शहनशाह, उसके मुश्रीरों और अफसरों और वहाँ के तमाम इसराईलियों ने हमारे खुदा के घर के लिए अता किया था।

26 मैंने तोलकर ज़ैल का सामान उनके हवाले कर दिया : तकर्रीबन 22,000 किलोग्राम चौँदी, चौँदी का कुछ सामान जिसका कुल वज़न तकर्रीबन 3,400 किलोग्राम था, 3,400 किलोग्राम सोना, 27 सोने के 20 प्याले जिनका कुल वज़न तकर्रीबन साढ़े 8 किलोग्राम था, और पीतल के दो पालिश किए हुए प्याले जो सोने के प्यालों जैसे कीमती थे।

28 मैंने आदमियों से कहा, “आप और यह तमाम चीज़ें रब के लिए मखसूस हैं। लोगों ने अपनी खुशी से यह सोना-चौँदी रब आपके बापदादा के खुदा के लिए क़रबान की है। 29 सब कुछ एहतियात से महफूज़ रखें, और जब आप यस्शलम पहुँचेंगे तो इसे रब के घर के खज़ाने तक पहुँचाकर राहनुमा इमामों, लावियों और खानदानी सरपरस्तों की मौजूदगी में दुबारा तोलना।”

30 फिर इमामों और लावियों ने सोना-चौँदी और बाकी सामान लेकर उसे यस्शलम में हमारे खुदा के घर में पहुँचाने के लिए महफूज़ रखा।

#### यस्शलम तक सफ़र

31 हम पहले महीने के 12वें दिन \* अहावा नहर से यस्शलम के लिए रवाना हुए। अल्लाह का शफ़ीक हाथ हम पर था, और उसने हमें रास्ते में दुश्मनों और डाकुओं से महफूज़ रखा। 32 हम यस्शलम पहुँचे तो पहले तीन दिन आराम किया। 33 चौथे दिन हमने अपने खुदा के घर में सोना-चौँदी और बाकी मखसूस सामान तोलकर इमाम मरीमोत बिन ऊरियाह के

\* 8:31 19 औल।

हवाले कर दिया। उस वक्त इलियज़र बिन फ़ीनहास और दो लावी बनाम यूज़बद बिन यशुअ और नौअदियाह बिन बिन्नूई उसके साथ थे। 34 हर चीज़ गिनी और तोली गई, फिर उसका पूरा वज़न फ़हरिस्त में दर्ज़ किया गया।

35 इसके बाद जिलावतनी से वापस आए हुए तमाम लोगों ने इसराईल के ख़ुदा को भस्म होनेवाली कुरबानियाँ पेश कीं। इस नाते से उन्होंने पूरे इसराईल के लिए 12 बैल, 96 भेड़े, भेड़ के 77 बच्चे और गुनाह की कुरबानी के 12 बकरे कुरबान किए।

36 मुसाफ़िरों ने दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाके के गवर्नरों और हाकिमों को शहनशाह की हिदायत पहुँचाई। इनको पढ़कर उन्होंने इसराईली कौम और अल्लाह के घर की हिमायत की।

## 9

### शैरयहूदी बीवियों पर अफ़सोस

1-2 कुछ देर बाद क़ौम के राहनुमा मेरे पास आए और कहने लगे, “क़ौम के आम लोगों, इमामों और लावियों ने अपने आपको मुल्क की दीगर क़ौमों से अलग नहीं रखा, गो यह धिनौने रस्मो-रिवाज के पैरोकार हैं। उनकी औरतों से शादी करके उन्होंने अपने बेटों की भी शादी उनकी बेटियों से कराई है। यों अल्लाह की मुक़द्दस क़ौम कनानियों, हितियों, फ़रिज़्जियों, यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिसरियों और अमोरियों से आलूदा हो गई है। और बुजुर्गों और अफ़सरों ने इस बेवफ़ाई में पहल की है!”

3 यह सुनकर मैंने रंजीदा होकर अपने कपड़ों को फाड़ लिया और सर और दाढ़ी के बाल नोच नोचकर नंगे फ़र्श पर बैठ गया। 4 वहाँ मैं शाम की कुरबानी तक बेहिसो-हरकत बैठा रहा। इतने में बहुत-से लोग मेरे इर्दगिर्द जमा हो गए। वह जिलावतनी से वापस आए हुए लोगों की बेवफ़ाई के बाइस थरथरा रहे थे, क्योंकि वह इसराईल के ख़ुदा के जवाब से निहायत ख़ौफ़ज़दा थे। 5 शाम की कुरबानी के वक़्त मैं वहाँ से उठ खड़ा हुआ जहाँ मैं तौबा की हालत में बैठा हुआ था। वही फटे हुए कपड़े पहने हुए मैं घुटने टेककर झुक गया और अपने हाथों को आसमान की तरफ उठाए हुए रब अपने ख़ुदा से दुआ करने लगा,

6 “ऐ मेरे ख़ुदा, मैं निहायत शर्मिदा हूँ। अपना मुँह तेरी तरफ उठाने की मुझमें ज़ूरत नहीं रही। क्योंकि हमारे गुनाहों का इतना बड़ा ढेर लग गया है कि वह हमसे ऊँचा है, बल्कि हमारा कुसूर आसमान तक पहुँच गया है। 7 हमारे बापदादा के ज़माने से लेकर आज तक हमारा कुसूर सँजीदा रहा है। इसी वजह से हम बार बार परदेसी हुक्मरानों के कब्जे में आए हैं जिन्होंने हमें और हमारे बादशाहों और इमामों को कत्ल किया, गिरिफ़्तार किया, लूट लिया और हमारी बेहुरमती की। बल्कि आज तक हमारी हालत यही रही है।

8 लेकिन इस वक़्त रब हमारे ख़ुदा ने थोड़ी देर के लिए हम पर मेहरबानी की है। हमारी क़ौम के बचे-खुचे हिस्से को उसने रिहाई देकर अपने मुक़द्दस मक़ाम पर महफूज़ रखा है। यों हमारे ख़ुदा ने हमारी आँखों में दुबारा चमक पैदा की और हमें कुछ सुकून मुहैया किया है, गो हम अब तक गुलामी में हैं। 9 बेशक हम गुलाम हैं, तो भी अल्लाह ने हमें तर्क नहीं किया बल्कि फ़ारस के बादशाह को हम पर मेहरबानी करने की तहरीक दी है। उसने हमें अज़ सरे-नौ ज़िंदा अता की है ताकि हम अपने ख़ुदा का घर दुबारा तामीर और उसके खंडरात बहाल कर सकें। अल्लाह ने हमें यहद्वह और यस्ख़ालम में एक महफूज़ चारदीवारी से घेर रखा है।

10 लेकिन ऐ हमारे ख़ुदा, अब हम क्या करें? अपनी इन हरकतों के बाद हम क्या जवाब दें? हमने तेरे उन अहकाम को नज़रंदाज़ किया है 11 जो तूने अपने ख़ादिमों यानी नबियों की मारिफ़त दिए थे।

तूने फ़रमाया, ‘जिस मुल्क में तूम दाख़िल हो रहे हो ताकि उस पर क़ब्ज़ा करो वह उसमें रहनेवाली क़ौमों के धिनौने रस्मो-रिवाज के सबब से नापाक है। मुल्क एक सिरे से दूसरे सिरे तक उनकी नापाकी से भर गया है। 12 लिहाज़ा अपनी बेटियों की उनके बेटों के साथ शादी मत करवाना, न अपने बेटों का उनकी बेटियों के साथ रिश्ता बाँधना। कुछ न करो जिससे उनकी सलामती और कामयाबी बढ़ती जाए। तब ही तूम ताक़तवर होकर मुल्क की अच्छी पैदावार खाओगे, और तुम्हारी औलाद हमेशा तक मुल्क की अच्छी चीज़ें विरासत में पाती रहेगी।’

13 अब हम अपनी शरीर हरकतों और बड़े कुसूर की सज़ा भुगत रहे हैं, गो ऐ अल्लाह, तूने हमें इतनी सख़्त सज़ा नहीं दी जितनी हमें मिलनी चाहिए थी। तूने हमारा यह बचा-खुचा हिस्सा ज़िंदा छोड़ा है। 14 तो क्या यह ठीक है कि हम तेरे अहकाम की खिलाफ़वर्ज़ी करके ऐसी क़ौमों से रिश्ता बाँधें जो इस किस्म की धिनौनी हरकतें करती हैं? हरगिज़ नहीं! क्या इसका यह नतीजा नहीं निकलेगा कि तेरा ग़ज़ब हम पर नाज़िल होकर सब कुछ तबाह कर देगा और यह बचा-खुचा हिस्सा भी ख़त्म हो जाएगा? 15 ऐ रब इसराईल के ख़ुदा, तू ही आदिल है। आज हम बचे हुए हिस्से की हैसियत से तेरे हुज़ूर खड़े हैं। हम कुसूरवार हैं और तेरे सामने कायम नहीं रह सकते।”



## 10

## बुतपरस्त बीवियों को तलाक

1 जब अजरा इस तरह दुआ कर रहा और अल्लाह के घर के सामने पड़े हुए और रोते हुए कौम के कुसूर का इकरार कर रहा था तो उसके इर्दगिर्द इसराईली मर्दों, औरतों और बच्चों का बड़ा हजूम जमा हो गया। वह भी फूट फूटकर रोने लगे।

2 फिर ऐलाम के खानदान के सकनियाह बिन यहियेल ने अजरा से कहा,

“वाकई हमने पड़ोसी कौमों की औरतों से शादी करके अपने खुदा से बेवफाई की है। तो भी अब तक इसराईल के लिए उम्मीद की किरण बाकी है।<sup>3</sup> आँ, हम अपने खुदा से अहद बाँधकर वादा करें कि हम उन तमाम औरतों को उनके बच्चों समेत वापस भेज देंगे। जो भी मशवरा आप और अल्लाह के अहकाम का खोफ माननेवाले दीगर लोग हमें देंगे वह हम करेंगे। सब कुछ शरीअत के मुताबिक किया जाए।<sup>4</sup> अब उठें! क्योंकि यह मामला दुस्त करना आप ही का फर्ज है। हम आपके साथ हैं, इसलिए हौसला रखें और वह कुछ करें जो ज़स्ती है।”

5 तब अजरा उठा और राहनुमा इमामों, लावियों और तमाम कौम को कसम खिलाई कि हम सकनियाह के मशवरे पर अमल करेंगे।<sup>6</sup> फिर अजरा अल्लाह के घर के सामने से चला गया और यहनान बिन इलियासिब के कमरे में दाखिल हुआ। वहाँ उसने पूरी रात कुछ खाए पिए बग़ैर गुज़ारी। अब तक वह जिलावतनी से वापस आए हुए लोगों की बेवफाई पर मातम कर रहा था।

7-8 सरकारी अफसरों और बुजुर्गों ने फैसला किया कि यरूशलम और पूरे यहदाह में एलान किया जाए, “लाज़िम है कि जितने भी इसराईली जिलावतनी से वापस आए हैं वह सब तीन दिन के अंदर अंदर यरूशलम में जमा हो जाएँ। जो भी इस दौरान हाज़िर न हो उसे जिलावतनों की जमात से खारिज कर दिया जाएगा और उस की तमाम मिलकियत ज़ब्त हो जाएगी।”

9 तब यहदाह और बिनयमीन के कबीलों के तमाम आदमी तीन दिन के अंदर अंदर यरूशलम पहुँचे। नवें महीने के बीसवें दिन \* सब लोग अल्लाह के घर के सहन में जमा हुए। सब मामले की संजीदगी और मौसम के सबसे से कोंप रहे थे, क्योंकि बारिश हो रही थी।

10 अजरा इमाम खड़े होकर कहने लगा, “आप अल्लाह से बेवफा हो गए हैं। गैरयहदी औरतों से रिश्ता बाँधने से आपने इसराईल के कुसूर में इज़ाफा कर दिया है।<sup>11</sup> अब रब अपने बापदादा के खुदा के हज़ूर अपने गुनाहों का इकरार करके उस की मरजी पूरी करें। पड़ोसी कौमों और अपनी परदेसी बीवियों से अलग हो जाएँ।”

12 पूरी जमात ने बुलंद आवाज़ से जवाब दिया, “आप ठीक कहते हैं! लाज़िम है कि हम आपकी हिदायत पर अमल करें।<sup>13</sup> लेकिन यह कोई ऐसा मामला नहीं है जो एक या दो दिन में दुस्त किया जा सके। क्योंकि हम बहुत लोग हैं और हमसे संजीदा गुनाह सरजद हुआ है। नीज़, इस वक़्त बरसात का मौसम है, और हम ज़्यादा देर तक बाहर नहीं ठहर सकते।<sup>14</sup> बेहतर है कि हमारे बुजुर्ग पूरी जमात की नुमाइंदगी करें। फिर जितने भी आदमियों की गैरयहदी बीवियाँ हैं वह एक मुकर्रर दिन मक़ामी बुजुर्गों और काज़ियों को साथ लेकर यहाँ आएँ और मामला दुस्त करें। और लाज़िम है कि यह सिलसिला उस वक़्त तक जारी रहे जब तक रब का ग़ज़ब ठंडा न हो जाए।”

15 तमाम लोग मुत्तफिक हुए, सिर्फ़ यूनतन बिन असाहेल और यहज़ियाह बिन तिकवा ने फैसले की मुखालफत की जबकि मसूल्लाम और सब्ती लावी उनके हक में थे।<sup>16-17</sup> तो भी इसराईलियों ने मनसबे पर अमल किया। अजरा इमाम ने चंद एक खानदानी सरपरस्तों के नाम लेकर उन्हें यह जिम्मादारी दी कि जहाँ भी किसी यहदी मर्द की गैरयहदी औरत से शादी हुई है वहाँ वह पूरे मामले की तहक़ीक करें। उनका काम दसवें महीने के पहले दिन † शुरू हुआ और पहले महीने के पहले दिन ‡ तकमील तक पहुँचा।

18-19 दर्जे-ज़ैल उन आदमियों की फ़हरिस्त है जिन्होंने गैरयहदी औरतों से शादी की थी। उन्होंने कसम खाकर वादा किया कि हम अपनी बीवियों से अलग हो जाएंगे। साथ साथ हर एक ने कुसूर की कुरबानी के तौर पर मेंडा कुरबान किया।

इमामों में से कुसूरवार :

यशुअ बिन यूसदक और उसके भाई मासियाह, इलियज़र, यरीब और ज़िदलियाह,

20 इम्वेर के खानदान का हनानी और ज़बदियाह,

21 हारिम के खानदान का मासियाह, इलियास, समायाह, यहियेल और उज़्ज़ियाह,

22 फ़शहर के खानदान का इलियूएनी, मासियाह, इसमाईल, नतनियेल, यूज़बद और इलियासा।

23 लावियों में से कुसूरवार :

यूज़बद, सिमई, किलायाह यानी कलीता, फ़तहियाह, यहदाह और इलियज़र।

24 गुल्कारों में से कुसूरवार :

इलियासिब।

रब के घर के दरबानों में से कुसूरवार :

सल्लूम, तलम और ऊरी।

25 बाकी कुसूरवार इसराईली :

परऊस के खानदान का रमियाह, यज्जियाह, मलकियाह, मियामीन, इलियज़र, मलकियाह और बिनायाह।

26 ऐलाम के खानदान का मतनियाह, ज़करियाह, यहियेल, अबदी, यरीमोत और इलियास,

27 ज़तू के खानदान का इलियूएनी, इलियासिब, मतनियाह, यरीमोत, ज़बद और अजीज़ा।

28 बबी के खानदान का यहनान, हननियाह, ज़ब्बी और अतली।

29 बानी के खानदान का मसुल्लाम, मल्लूक, अदायाह, यसूब, सियाल और यरीमोत।

30 परखत-मोआब के खानदान का अदना, किलाल, बिनायाह, मासियाह, मतनियाह, बज़लियेल, बिन्नुई और मनस्सी।

31 हारिम के खानदान का इलियज़र, यिस्सियाह, मलकियाह, समायाह, शमौन, 32 बिनयमीन, मल्लूक और समरियाह।

33 हाशम के खानदान का मतनी, मतताह, ज़बद, इलीफलत, येमी, मनस्सी और सिमई।

34 बानी के खानदान का मादी, अमराम, ऊएल, 35 बिनायाह, बदियाह, कलूही, 36 वनियाह, मरीमोत, इलियासिब,

37 मतनियाह, मतनी और यासी।

38 बिन्नुई के खानदान का सिमई, 39 सलमियाह, नातन, अदायाह, 40 मकनदबी, सासी, सारी, 41 अज़रेल, सलमियाह, समरियाह, 42 सल्लूम, अमरियाह और यूसुफ़।

43 नबू के खानदान का यइयेल, मत्तितियाह, ज़बद, ज़बीना, यद्दी, योएल और बिनायाह।

44 इन तमाम आदमियों की गैरयहूदी औरतों से शादी हुई थी, और उनके हों बच्चे पैदा हुए थे।

## नहमियाह

नहमियाह यरूशलम के लिए दुआ करता है

1 जैल में नहमियाह बिन हकलियाह की रिपोर्ट दर्ज है।

मैं अर्तखशस्ता बादशाह की हुकूमत के 20वें साल किसलेव के महीने में सोसन के किले में था 2 कि एक दिन मेरा भाई हनानी मुझसे मिलने आया। उसके साथ यहदाह के चंद्र एक आदमी थे। मैंने उनसे पूछा, “जो यहदी बचकर जिलावतनी से यहदाह वापस गए हैं उनका क्या हाल है? और यरूशलम शहर का क्या हाल है?” 3 उन्होंने जवाब दिया, “जो यहदी बचकर जिलावतनी से यहदाह वापस गए हैं उनका बहुत बुरा और जिल्लतआमेज हाल है। यरूशलम की फर्सील अब तक ज़मीनबोस है, और उसके तमाम दरवाजे राख हो गए हैं।”

4 यह सुनकर मैं बैठकर रोने लगा। कई दिन मैं रोज़ा रखकर मातम करता और आसमान के खुदा से दुआ करता रहा,

5 “ए रब, आसमान के खुदा, तू कितना अज़ीम और महीब खुदा है! जो तुझे प्यार और तेरे अहकाम की पैरवी करते हैं उनके साथ तू अपना अहद कायम रखता और उन पर मेहरबानी करता है। 6 मेरी बात सुनकर ध्यान दे कि तेरा खादिम किस तरह तुझसे इलतमास कर रहा है। दिन-रात मैं इसराइलियों के लिए जो तेरे खादिम हैं दुआ करता हूँ। मैं इकरार करता हूँ कि हमने तेरा गुनाह किया है। इसमें मैं और मेरे बाप का घराना भी शामिल है। 7 हमने तेरे खिलाफ निहायत शरीर कदम उठाए हैं, क्योंकि जो अहकाम और हिदायात तूने अपने खादिम मूसा को दी थीं हम उनके ताबे न रहे। 8 लेकिन अब वह कुछ याद कर जो तूने अपने खादिम को फरमाया, ‘अगर तुम बेवफ़ा हो जाओ तो मैं तुम्हें मुख्तलिफ़ क्रौमों में मुंतशिर कर दूँगा, 9 लेकिन अगर तुम मेरे पास वापस आकर दुबारा मेरे अहकाम के ताबे हो जाओ तो मैं तुम्हें तुम्हारे वतन में वापस लाऊँगा, खाह तुम ज़मीन की इंतहा तक क्यों न पहुँच गए हो। मैं तुम्हें उस जगह वापस लाऊँगा जिसे मैंने चुन लिया है ताकि मेरा नाम वहाँ सुकूनत करे।’ 10 ए रब, यह लोग तो तेरे अपने खादिम हैं, तेरी अपनी क्रौम जिसे तूने अपनी अज़ीम कुदरत और क़वी हाथ से फ़िघा देकर छुड़ाया है। 11 ए रब, अपने खादिम और उन तमाम खादिमों की इलतमास सुन जो पूरे दिल से तेरे नाम का ख़ौफ़ मानते हैं। जब तेरा खादिम आज शहनशाह के पास होगा तो उसे कामयाबी अता कर। बख़्श दे कि वह मुझ पर रहम करे।”

मैंने यह इसलिए कहा कि मैं शहनशाह का साकी था।

## 2

नहमियाह को यरूशलम जाने की इजाज़त मिलती है

1 चार महीने गुज़र गए। नीसान के महीने के एक दिन जब मैं शहनशाह अर्तखशस्ता को मैं पिला रहा था तो मेरी मायूसी उसे नज़र आई। पहले उसने मुझे कभी उदास नहीं देखा था, 2 इसलिए उसने पूछा, “आप इतने गमगीन क्यों दिखाई दे रहे हैं? आप बीमार तो नहीं लगते बल्कि कोई बात आपके दिल को तंग कर रही है।”

मैं सख़्त घबरा गया 3 और कहा, “शहनशाह अबद तक जीता रहे! मैं किस तरह खुश हो सकता हूँ? जिस शहर में मेरे बापदादा को दफननाया गया है वह मलबे का ढेर है, और उसके दरवाजे राख हो गए हैं।”

4 शहनशाह ने पूछा, “तो फिर मैं किस तरह आपकी मदद करूँ?” ख़ामोशी से आसमान के खुदा से दुआ करके 5 मैंने शहनशाह से कहा, “अगर बात आपको मंज़ूर हो और आप अपने खादिम से खुश हों तो फिर बराहे-करम मुझे यहदाह के उस शहर भेज दीजिए जिसमें मेरे बापदादा दफन हुए हैं ताकि मैं उसे दुबारा तामीर करूँ।”

6 उस वक़्त मलिका भी साथ बैठी थी। शहनशाह ने सवाल किया, “सफ़र के लिए कितना वक़्त दरकार है? आप कब तक वापस आ सकते हैं?” मैंने उसे बताया कि मैं कब तक वापस आऊँगा तो वह मुतफ़िक्क हुआ। 7 फिर मैंने गुज़ारिश की, “अगर बात आपको मंज़ूर हो तो मुझे दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाके के गवर्नरों के लिए ख़त दीजिए ताकि वह मुझे अपने इलाकों में से गुज़रने दें और मैं सलामती से यहदाह तक पहुँच सकूँ। 8 इसके अलावा शाही जंगलात के निगरान आसफ़ के लिए ख़त लिखवाएँ ताकि वह मुझे लकड़ी दे। जब मैं रब के घर के साथवाले किले के दरवाजे, फ़र्सील और अपना घर बनाऊँगा तो मुझे शहतीरों की ज़रूरत होगी।” अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ मुझ पर था, इसलिए शहनशाह ने मुझे यह ख़त दे दिए।

9 शहनशाह ने फ़ौजी अफ़सर और घुड़सवार भी मेरे साथ भेजे। यों रवाना होकर मैं दरियाए-फ़ुरात के मगरिबी इलाके के गवर्नरों के पास पहुँचा और उन्हें शहनशाह के ख़त दिए। 10 जब गवर्नर संबल्लत हौरूनी और अम्मोनी अफ़सर त्वबियाह को मालूम हुआ कि कोई इसराइलियों की बहबूदी के लिए आ गया है तो वह निहायत नारख़ुश हुए।

नहमियाह फसील का मुआयना करता है

11 सफर करते करते मैं यरूशलम पहुँच गया। तीन दिन के बाद 12 मैं रात के वक़्त शहर से निकला। मेरे साथ चंद एक आदमी थे, और हमारे पास सिर्फ़ वही जानवर था जिस पर मैं सवार था। अब तक मैंने किसी को भी उस बोझ के बारे में नहीं बताया था जो मेरे खुदा ने मेरे दिल पर यरूशलम के लिए डाल दिया था। 13 चुनौचे मैं अंधेरे में वादी के दरवाजे से शहर से निकला और जुनूब की तरफ़ अज़दहे के चश्मे से होकर कचरे के दरवाजे तक पहुँचा। हर जगह मैंने गिरी हुई फसील और भस्म हुए दरवाजों का मुआयना किया। 14 फिर मैं शिमाल यानी चश्मे के दरवाजे और शाही तालाब की तरफ़ बढ़ा, लेकिन मलबे की कसरत की वजह से मेरे जानवर को गुज़रने का रास्ता न मिला, 15 इसलिए मैं वादीए-किदरोन में से गुज़रा। अब तक अंधेरा ही अंधेरा था। वहाँ भी मैं फसील का मुआयना करता गया। फिर मैं मुडा और वादी के दरवाजे में से दुबारा शहर में दाखिल हुआ।

फसील को तामीर करने का फैसला

16 यरूशलम के अफसरों को मालूम नहीं था कि मैं कहाँ गया और क्या कर रहा था। अब तक मैंने न उधेरे और न इमामों या दीगर उन लोगों को अपने मनसूबे से आगाह किया था जिन्हें तामीर का यह काम करना था। 17 लेकिन अब मैं उनसे मुखातिब हुआ, “आपको खुद हमारी मुसीबत नज़र आती है। यरूशलम मलबे का ढेर बन गया है, और उसके दरवाजे राख हो गए हैं। आँ, हम फसील को नए सिरे से तामीर करें ताकि हम दूसरों के मज़ाक का निशाना न बने रहें।” 18 मैंने उन्हें बताया कि अल्लाह का शफ़ीक़ हाथ किस तरह मुझ पर रहा था और कि शहनशाह ने मुझसे किस किस्म का वादा किया था। यह सुनकर उन्होंने जवाब दिया, “ठीक है, आँ हम तामीर का काम शुरू करें!” चुनौचे वह इस अच्छे काम में लग गए।

19 जब संबल्लत होस्नी, अम्मोनी अफसर तूबियाह और जशम अरबी को इसकी खबर मिली तो उन्होंने हमारा मज़ाक उड़ाकर हिकारतआमेज़ लहजे में कहा, “यह तुम लोग क्या कर रहे हो? क्या तुम शहनशाह से ग़दारी करना चाहते हो?” 20 मैंने जवाब दिया, “आसमान का खुदा हमें कामयाबी अता करेगा। हम जो उसके खादिम हैं तामीर का काम शुरू करेंगे। जहाँ तक यरूशलम का ताल्लुक है, न आज और न माज़ी में आपका कभी कोई हिस्सा या हक था।”

### 3

फसील की तामीर-नौ

1 इमामे-आज़म इलियासिब बाकी इमामों के साथ मिलकर तामीरी काम में लग गया। उन्होंने भेड़ के दरवाजे को नए सिरे से बना दिया और उसे मखसूस करके उसके किवाड लगा दिए। उन्होंने फसील के साथवाले हिस्से को भी मिया बुर्ज और हनेनेल के बुर्ज तक बनाकर मखसूस किया।

2 यरीह के आदिमियों ने फसील के अगले हिस्से को खड़ा किया जबकि जक्कर बिन इमरी ने उनके हिस्से से मुलहिक हिस्से को तामीर किया।

3 मछली का दरवाज़ा सनाआह के खानदान की जिम्मादारी थी। उसे शहतीरों से बनाकर उन्होंने किवाड, चटरखिनियों और कुंडे लगा दिए।

4 अगले हिस्से की मरम्मत मरीमोत बिन ऊरियाह बिन हक्कूज़ ने की।

अगला हिस्सा मसुल्लाम बिन बरकियाह बिन मशेज़बेल की जिम्मादारी थी।

सदोक बिन बाना ने अगले हिस्से को तामीर किया।

5 अगला हिस्सा तकुअ के बाशिंदों ने बनाया। लेकिन शहर के बड़े लोग अपने बुजुर्गों के तहत काम करने के लिए तैयार न थे।

6 यसाना का दरवाज़ा योयदा बिन फासिह और मसुल्लाम बिन बसुदियाह की जिम्मादारी थी। उसे शहतीरों से बनाकर उन्होंने किवाड, चटरखिनियों और कुंडे लगा दिए।

7 अगला हिस्सा मलतियाह जिबऊनी और यदून मरुनोती ने खड़ा किया। यह लोग जिबऊन और मिसफाह के थे, वही मिसफाह जहाँ दरियाए-फुरात के मगारिबी इलाके के गवर्नर का दास्त-हुकूमत था।

8 अगले हिस्से की मरम्मत एक सुनार बनाम उज्जियेल बिन हरहियाह के हाथ में थी।

अगले हिस्से पर एक इन्नसाज़ बनाम हननियाह मुकर्रर था। इन लोगों ने फसील की मरम्मत ‘मोटी दीवार’ तक की।

9 अगले हिस्से को रिफायाह बिन हर ने खड़ा किया। यह आदमी ज़िले यरूशलम के आधे हिस्से का अफसर था।

10 यदायाह बिन हरूमफ ने अगले हिस्से की मरम्मत की जो उसके घर के मुकाबिल था।

अगले हिस्से को हतूश बिन हसब्नियाह ने तामीर किया।

11 अगले हिस्से को तनूरों के बुर्ज तक मलकियाह बिन हारिम और हस्सब बिन पखत-मोआब ने खड़ा किया।

12 अगला हिस्सा सल्लूम बिन हल्लुहेश की जिम्मादारी थी। यह आदमी ज़िले यरूशलम के दूसरे आधे हिस्से का अफसर था। उस की बेटियों ने उस की मदद की।

13 हनून ने ज़नूह के बाशियों समेत वादी के दरवाजे को तामीर किया। शहतीरों से उसे बनाकर उन्होंने किवाड़, चटखनियाँ और कुंडे लगाए। इसके अलावा उन्होंने फ़र्सील को वहाँ से कचरे के दरवाजे तक खड़ा किया। इस हिस्से का फासला तकरीबन 1,500 फुट यानी आधा किलोमीटर था।

14 कचरे का दरवाजा मलकियाह बिन रेकाब की जिम्मादारी थी। यह आदमी ज़िले बैत-करम का अफसर था। उसने उसे बनाकर किवाड़, चटखनियाँ और कुंडे लगाए।

15 चश्मे के दरवाजे की तामीर सल्लून बिन कुलहोज़ा के हाथ में थी जो ज़िले मिसफाह का अफसर था। उसने दरवाजे पर छत बनाकर उसके किवाड़, चटखनियाँ और कुंडे लगा दिए। साथ साथ उसने फ़र्सील के उस हिस्से की मरम्मत की जो शाही बाग के पासवाले तालाब से गुज़रता है। यह वही तालाब है जिसमें पानी नाले के ज़रीए पहुँचता है। सल्लून ने फ़र्सील को उस सीढ़ी तक तामीर किया जो यरूशलम के उस हिस्से से उतरती है जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है।

16 अगला हिस्सा नहमियाह बिन अज़बुक की जिम्मादारी थी जो ज़िले बैत-सूर के आधे हिस्से का अफसर था। फ़र्सील का यह हिस्सा दाऊद बादशाह के क़ब्रिस्तान के मुकाबिल था और मसनुई तालाब और सूमाओं के कमरों पर खत्म हुआ।

17 ज़ैल के लावियों ने अगले हिस्सों को खड़ा किया : पहले रहम बिन बानी का हिस्सा था।

ज़िले कईला के आधे हिस्से के अफसर हसबियाह ने अगले हिस्से की मरम्मत की।

18 अगले हिस्से को लावियों ने बिन्नुई बिन हनदाद के ज़ेरे-निगरानी खड़ा किया जो ज़िले कईला के दूसरे आधे हिस्से पर मुकर्रर था।

19 अगला हिस्सा मिसफाह के सरदार अज़र बिन यशुअ की जिम्मादारी थी। यह हिस्सा फ़र्सील के उस मोड़ पर था जहाँ रास्ता असलाखाने की तरफ चढ़ता है।

20 अगले हिस्से को बास्क बिन ज़ब्बी ने बड़ी मेहनत से तामीर किया। यह हिस्सा फ़र्सील के मोड़ से शुरू होकर इमामे-आज़म इलियासिब के घर के दरवाजे पर खत्म हुआ।

21 अगला हिस्सा मरीमोत बिन ऊरियाह बिन हन्नकूज़ की जिम्मादारी थी और इलियासिब के घर के दरवाजे से शुरू होकर उसके कोने पर खत्म हुआ।

22 ज़ैल के हिस्से उन इमामों ने तामीर किए जो शहर के गिर्दो-नवाह में रहते थे।

23 अगले हिस्से की तामीर बिनयमीन और हस्सूब के ज़ेरे-निगरानी थी। यह हिस्सा उनके घरों के सामने था।

अज़रियाह बिन मासियाह बिन अननियाह ने अगले हिस्से की मरम्मत की। यह हिस्सा उसके घर के पास ही था।

24 अगला हिस्सा बिन्नुई बिन हनदाद की जिम्मादारी थी। यह अज़रियाह के घर से शुरू हुआ और मुडते मुडते कोने पर खत्म हुआ।

25 अगला हिस्सा फालाल बिन ऊज़ी की जिम्मादारी थी। यह हिस्सा मोड़ से शुरू हुआ, और ऊपर का जो बुर्ज शाही महल से उस जगह निकलता है जहाँ मुहाफिज़ों का सहन है वह भी इसमें शामिल था।

अगला हिस्सा फिदायाह बिन परऊस 26 और ओफल पहाड़ी पर रहनेवाले रब के घर के खिदमतगारों के ज़िम्मे था। यह हिस्सा पानी के दरवाजे और वहाँ से निकले हुए बुर्ज पर खत्म हुआ।

27 अगला हिस्सा इस बुर्ज से लेकर ओफल पहाड़ी की दीवार तक था। तकुअ के बाशियों ने उसे तामीर किया।

28 घोड़े के दरवाजे से आगे इमामों ने फ़र्सील की मरम्मत की। हर एक ने अपने घर के सामने का हिस्सा खड़ा किया।

29 उनके बाद सदोक बिन इम्मेर का हिस्सा आया। यह भी उसके घर के मुकाबिल था।

अगला हिस्सा समायाह बिन सकनियाह ने खड़ा किया। यह आदमी मशरिकी दरवाजे का पहरेदार था।

30 अगला हिस्सा हननियाह बिन सलमियाह और सलफ़ के छठे बेटे हनून के ज़िम्मे था।

अगला हिस्सा मसुल्लाम बिन बरकियाह ने तामीर किया जो उसके घर के मुकाबिल था।

31 एक सुनार बनाम मलकियाह ने अगले हिस्से की मरम्मत की। यह हिस्सा रब के घर के खिदमतगारों और ताजिरों के उस मकान पर खत्म हुआ जो पहेरे के दरवाजे के सामने था। फ़र्सील के कोने पर वाके बालाखाना भी इसमें शामिल था।

32 आखिरी हिस्सा भेड़ के दरवाजे पर खत्म हुआ। सुनारों और ताजिरों ने उसे खड़ा किया।

## 4

संबल्लत यहूदियों का मज़ाक उड़ाता है

1 जब संबल्लत को पता चला कि हम फ़र्सील को दुबारा तामीर कर रहे हैं तो वह आग-बगला हो गया। हमारा मज़ाक उड़ा उड़ाकर 2 उसने अपने हमखिदमत अफसरों और सामरिया के फ़ौजियों की मौजूदगी में कहा, "यह ज़ईफ़ यहूदी क्या कर

रहे हैं? क्या यह वाकई यरूशलम की किलाबंदी करना चाहते हैं? क्या यह समझते हैं कि चंद एक कुरबानियाँ पेश करके हम फ़सील को आज ही खड़ा करेंगे? वह इन जले हुए पत्थरों और मलबे के इस ढेर से किस तरह नई दीवार बना सकते हैं?”  
3 अम्मोनी अफ़सर तबियाह उसके साथ खड़ा था। वह बोला, “उन्हें करने दो! दीवार इतनी कमज़ोर होगी कि अगर लोमड़ी भी उस पर छलांग लगाए तो गिर जाएगी।”

4 ए हमारे ख़ुदा, हमारी सुन, क्योंकि लोग हमें हक़ीर जानते हैं। जिन बातों से उन्होंने हमें ज़लील किया है वह उनकी ज़िल्लत का बाइस बन जाएँ। बख़्श दे कि लोग उन्हें लूट लें और उन्हें कैद करके जिलावतन कर दें।<sup>5</sup> उनका कुसर नज़रदाज़ न कर बल्कि उनके गुनाह तुझे याद रहें। क्योंकि उन्होंने फ़सील को तामीर करनेवालों को ज़लील करने से तुझे तैश दिलाया है।

6 मुख़ालफ़त के बावजूद हम फ़सील की मरम्मत करते रहे, और होते होते पूरी दीवार की आधी ऊँचाई खड़ी हुई, क्योंकि लोग पूरी लगन से काम कर रहे थे।

### दुश्मन के हमलों की मुदाफअत

7 जब सबल्लत, तबियाह, अरबों, अम्मोनियों और अशदूद के बाशिंदों को इतला मिली कि यरूशलम की फ़सील की तामीर में तरक्की हो रही है बल्कि जो हिस्से अब तक खड़े न हो सके थे वह भी बंद होने लगे हैं तो वह बड़े गुस्से में आ गए।  
8 सब मुतहिद होकर यरूशलम पर हमला करने और उसमें गड़बड़ पैदा करने की साज़िशें करने लगे।<sup>9</sup> लेकिन हमने अपने ख़ुदा से इलतमास करके पहरेदार लगाए जो हमें दिन-रात उनसे बचाए रखें।

10 उस वक़्त यहदाह के लोग कराहने लगे, “मजदूरों की ताक़त ख़त्म हो रही है, और अभी तक मलबे के बड़े ढेर बाक़ी हैं। फ़सील को बनाना हमारे बस की बात नहीं है।”

11 दूसरी तरफ़ दुश्मन कह रहे थे, “हम अचानक उन पर टूट पड़ेंगे। उनको उस वक़्त पता चलेगा जब हम उनके बीच में होंगे। तब हम उन्हें मार देंगे और काम रूक जाएगा।”

12 जो यहूदी उनके करीब रहते थे वह बार बार हमारे पास आकर हमें इतला देते रहे, “दुश्मन चारों तरफ़ से आप पर हमला करने के लिए तैयार खड़ा है।”

13 तब मैंने लोगों को फ़सील के पीछे एक जगह खड़ा कर दिया जहाँ दीवार सबसे नीची थी, और वह तलवारों, नेज़ों और कमानों से लैस अपने खानदानों के मुताबिक़ खूले मैदान में खड़े हो गए।<sup>14</sup> लोगों का जायज़ा लेकर मैं खड़ा हुआ और कहने लगा, “उन्से मत डरें! रब को याद करें जो अज़ीम और महीब है। ज़हन में रखें कि हम अपने भाइयों, बेटों बेटियों, बीवियों और घरों के लिए लड़ रहे हैं।”

15 जब हमारे दुश्मनों को मालूम हुआ कि उनकी साज़िशों की ख़बर हम तक पहुँच गई है और कि अल्लाह ने उनके मनसूबे को नाकाम होने दिया तो हम सब अपनी अपनी जगह पर दुबारा तामीर के काम में लग गए।<sup>16</sup> लेकिन उस दिन से मेरे जवानों का सिर्फ़ आधा हिस्सा तामीरी काम में लगा रहा। बाक़ी लोग नेज़ों, ढालों, कमानों और ज़िरा-बक़तर से लैस पहरा देते रहे। अफ़सर यहदाह के उन तमाम लोगों के पीछे खड़े रहे<sup>17</sup> जो दीवार को तामीर कर रहे थे। सामान उठानेवाले एक हाथ से हथियार पकड़े काम करते थे।<sup>18</sup> और जो भी दीवार को खड़ा कर रहा था उस की तलवार कमर में बँधी रहती थी। जिस आदमी को तुरम बजाकर ख़तरे का एलान करना था वह हमेशा मेरे साथ रहा।<sup>19</sup> मैंने शरफ़ा, बुसुराँ और बाक़ी लोगों से कहा, “यह काम बहुत ही बड़ा और वसी है, इसलिए हम एक दूसरे से दूर और बिखरे हुए काम कर रहे हैं।<sup>20</sup> ज्योंही आपको तुरम की आवाज़ सुनाई दे तो भागकर आवाज़ की तरफ़ चले जाएँ। हमारा ख़ुदा हमारे लिए लड़ेगा!”

21 हम पौ फ़टने से लेकर उस वक़्त तक काम में मसरूफ़ रहते जब तक सितारे नज़र न आते, और हर वक़्त आदमियों का आधा हिस्सा नेज़े पकड़े पहरा देता था।<sup>22</sup> उस वक़्त मैंने सबको यह हुक्म भी दिया, “हर आदमी अपने मददगारों के साथ रात का वक़्त यरूशलम में गुज़ारे। फिर आप रात के वक़्त पहरादारी में भी मदद करेंगे और दिन के वक़्त तामीरी काम में भी।”<sup>23</sup> उन तमाम दिनों के दौरान न मैं, न मेरे भाइयों, न मेरे जवानों और न मेरे पहरेदारों ने कभी अपने कपड़े उतारे। नीज़, हर एक अपना हथियार पकड़े रहा।

## 5

### ग़रीबों का क़र्ज़ा मनसूख

1 कुछ देर बाद कुछ मर्दों-ख़वातीन मेरे पास आकर अपने यहूदी भाइयों की शिकायत करने लगे।<sup>2</sup> बाज़ ने कहा, “हमारे बहुत ज़्यादा बेटे-बेटियाँ हैं, इसलिए हमें मज़ीद अनाज मिलना चाहिए, वरना हम ज़िंदा नहीं रहेंगे।”<sup>3</sup> दूसरों ने शिकायत की, “काल के दौरान हमें अपने खेतों, अंगूर के बाग़ों और घरों को गिरवी रखना पड़ा ताकि अनाज मिल जाए।”<sup>4</sup> कुछ और

बोले, “हमें अपने खेतों और अंगूर के बागों पर बादशाह का टैक्स अदा करने के लिए उधार लेना पड़ा।<sup>5</sup> हम भी दूसरों की तरह यहूदी कौम के हैं, और हमारे बच्चे उनसे कम हैसियत नहीं रखते। तो भी हमें अपने बच्चों को गुलामी में बेचना पड़ता है ताकि गुजारा हो सके। हमारी कुछ बेटीयाँ लौडियाँ बन चुकी हैं। लेकिन हम खुद बेबस हैं, क्योंकि हमारे खेत और अंगूर के बाग दूसरों के कब्जे में हैं।”

<sup>6</sup> उनका वावैला और शिकायतें सुनकर मुझे बड़ा गुस्सा आया।<sup>7</sup> बहुत सोच-बिचार के बाद मैंने शरफा और अफसरों पर इलजाम लगाया, “आप अपने हमवतन भाइयों से गैरमुनासिब सूद ले रहे हैं!” मैंने उनसे निपटने के लिए एक बड़ी जमात इकट्ठी करके<sup>8</sup> कहा, “हमारे कई हमवतन भाइयों को गैरयहूदियों को बेचा गया था। जहाँ तक मुमकिन था हमने उन्हें वापस खरीदकर आजाद करने की कोशिश की। और अब आप खुद अपने हमवतन भाइयों को बेच रहे हैं। क्या हम अब उन्हें दुबारा वापस खरीदें?” वह खामोश रहे और कोई जवाब न दे सके।

<sup>9</sup> मैंने बात जारी रखी, “आपका यह सुलूक ठीक नहीं। आपको हमारे खुदा का ख़ौफ मानकर ज़िंदगी गुज़ारना चाहिए ताकि हम अपने गैरयहूदी दुश्मनों की लान-तान का निशाना न बनें।<sup>10</sup> मैं, मेरे भाइयों और मुलाज़िमों ने भी दूसरों को उधार के तौर पर पैसे और अनाज दिया है। लेकिन आँ, हम उनसे सूद न लें! <sup>11</sup> आज ही अपने कर्ज़दारों को उनके खेत, घर और अंगूर और जैतून के बाग वापस कर दें। जितना सूद आपने लगाया था उसे भी वापस कर दें, खाह उसे पैसों, अनाज, ताज़ा मै या जैतून के तेल की सूरत में अदा करना हो।”<sup>12</sup> उन्होंने जवाब दिया, “हम उसे वापस कर देंगे और आइंदा उनसे कुछ नहीं माँगेगे। जो कुछ आपने कहा वह हम करेंगे।”

तब मैंने इमामों को अपने पास बुलाया ताकि शरफा और बुजुर्ग उनकी मौजूदगी में कस्म खाएँ कि हम ऐसा ही करेंगे।<sup>13</sup> फिर मैंने अपने लिबास की तहें झाड़ झाड़कर कहा, “जो भी अपनी कसम तोड़े उसे अल्लाह इसी तरह झाड़कर उसके घर और मिलकियत से महरूम कर दे!”

तमाम जमाशुदा लोग बोले, “आमीन, ऐसा ही हो!” और रब की तारीफ करने लगे। सबने अपने वादे पूरे किए।

### नहमियाह का अच्छा नमूना

<sup>14</sup> मैं कुल बारह साल सूबा यहूदाह का गवर्नर रहा यानी अर्तखशस्ता बादशाह की हुकूमत के 20वें साल से उसके 32वें साल तक। इस पूरे अरसे में न मैंने और न मेरे भाइयों ने वह आमदनी ली जो हमारे लिए मुकर्रर की गई थी।<sup>15</sup> असल में माज़ी के गवर्नरों ने कौम पर बड़ा बोझ डाल दिया था। उन्होंने रिआया से न सिर्फ़ रोटी और मै बल्कि फ़ी दिन चाँदी के 40 सिक्के भी लिए थे। उनके अफसरों ने भी आम लोगों से गलत फ़ायदा उठाया था। लेकिन चूँकि मैं अल्लाह का ख़ौफ मानता था, इसलिए मैंने उनसे ऐसा सुलूक न किया।<sup>16</sup> मेरी पूरी ताकत फ़सील की तकमील में सर्फ़ हुई, और मेरे तमाम मुलाज़िम भी इस काम में शरीक रहे। हममें से किसी ने भी ज़मीन न खरीदी।<sup>17</sup> मैंने कुछ न माँगा हालाँकि मुझे रोज़ाना यहूदाह के 150 अफसरों की मेहमान-नवाज़ी करनी पड़ती थी। उनमें वह तमाम मेहमान शामिल नहीं हैं जो गाहे बगाहे पड़ोसी ममालिक से आते रहे।<sup>18</sup> रोज़ाना एक बैल, छः बेहतररीन भेड़-बकरियाँ और बहुत-से परिदे मेरे लिए जबह करके तैयार किए जाते, और दस दस दिन के बाद हमें कई किस्म की बहुत-सी मै खरीदनी पड़ती थी। इन अखराजात के बालुजूद मैंने गवर्नर के लिए मुकर्ररा वज़ीफा न माँगा, क्योंकि कौम पर बोझ वैसे भी बहुत ज्यादा था।

<sup>19</sup> ऐ मेरे खुदा, जो कुछ मैंने इस कौम के लिए किया है उसके बाइस मुझ पर मेहरबानी कर।

## 6

### नहमियाह के खिलाफ साज़िश

<sup>1</sup> संबल्लत, तूबियाह, जशम अरबी और हमारे बाकी दुश्मनों को पता चला कि मैंने फ़सील को तकमील तक पहुँचाया है और दीवार में कहीं भी ख़ाली जगह नज़र नहीं आती। सिर्फ़ दरवाज़ों के किवाड़ अब तक लगाए नहीं गए थे।<sup>2</sup> तब संबल्लत और जशम ने मुझे पैगाम भेजा, “हम वादीए-ओनु के शहर कफ़रीम में आपसे मिलना चाहते हैं।” लेकिन मुझे मालूम था कि वह मुझे नुकसान पहुँचाना चाहते हैं।<sup>3</sup> इसलिए मैंने कासिदों के हाथ जवाब भेजा, “मैं इस वक्त एक बड़ा काम तकमील तक पहुँचा रहा हूँ, इसलिए मैं आ नहीं सकता। अगर मैं आपसे मिलने आऊँ तो पूरा काम स्क जाएगा।”

<sup>4</sup> चार दफा उन्होंने मुझे यही पैगाम भेजा और हर बार मैंने वही जवाब दिया।<sup>5</sup> पाँचवें मरतबा जब संबल्लत ने अपने मुलाज़िम को मेरे पास भेजा तो उसके हाथ में एक खुला खत था।<sup>6</sup> खत में लिखा था, “पड़ोसी ममालिक में अफ़वाह फैल गई है कि आप और बाकी यहूदी बगावत की तैयारियाँ कर रहे हैं। जशम ने इस बात की तसदीक की है। लोग कहते हैं कि इसी वजह से आप फ़सील बना रहे हैं। इन रिपोर्टों के मुताबिक आप उनके बादशाह बनेंगे।<sup>7</sup> कहा जाता है कि आपने नबियों को

मुकर्रर किया है जो यरूशलम में एलान करें कि आप यहदाह के बादशाह हैं। बेशक ऐसी अफवाहें शहनशाह तक भी पहुँचेंगी। इसलिए आँ, हम मिलकर एक दूसरे से मशवरा करें कि क्या करना चाहिए।”

8 मैंने उसे जवाब भेजा, “जो कुछ आप कह रहे हैं वह झूट ही झूट है। कुछ नहीं हो रहा, बल्कि आपने फरजी कहानी घड ली है!” 9 असल में दुश्मन हमें डराना चाहते थे। उन्होंने सोचा, “अगर हम ऐसी बातें कहें तो वह हिम्मत हारकर काम से बाज़ आँगे।” लेकिन अब मैंने ज्यादा अज़म के साथ काम जारी रखा।

10 एक दिन मैं समायाह बिन दिलायाह बिन महेतबेल से मिलने गया जो ताला लगाकर घर में बैठा था। उसने मुझे कहा, “आँ, हम अल्लाह के घर में जमा हो जाँ और दरवाज़ों को अपने पीछे बंद करके कुंडी लगाँ। क्योंकि लोग इसी रात आपको कत्ल करने के लिए आँगे।”

11 मैंने एतराज़ किया, “क्या यह ठीक है कि मुझ जैसा आदमी भाग जाए? या क्या मुझ जैसा शख्स जो इमाम नहीं है रब के घर में दाखिल होकर जिंदा रह सकता है? हरगिज़ नहीं! मैं ऐसा नहीं करूँगा!” 12 मैंने जान लिया कि समायाह की यह बात अल्लाह की तरफ से नहीं है। संबल्लत और त्वबियाह ने उसे रिश्वत दी थी, इसी लिए उसने मेरे बारे में ऐसी पेशगोई की थी। 13 इससे वह मुझे डराकर गुनाह करने पर उकसाना चाहते थे ताकि वह मेरी बदनामी करके मुझे मज़ाक का निशाना बना सकें।

14 ऐ मेरे ख़ुदा, त्वबियाह और संबल्लत की यह बुरी हरकतें मत भूलना! नौअदियाह नबिया और बाक़ी उन नबियों को याद रख जिन्होंने मुझे डराने की कोशिश की है।

### फ़सील की तकमील

15 फ़सील इल्ल के महीने के 25वें दिन \* यानी 52 दिनों में मुकम्मल हुई। 16 जब हमारे दुश्मनों को यह ख़बर मिली तो पड़ोसी ममालिक सहम गए, और वह एहसासे-कमतरती का शिकार हो गए। उन्होंने जान लिया कि अल्लाह ने ख़ुद यह काम तकमील तक पहुँचाया है।

17 उन 52 दिनों के दौरान यहदाह के शरफ़ा त्वबियाह को खत भेजते रहे और उससे जवाब मिलते रहे थे। 18 असल में यहदाह के बहुत-से लोगों ने कसम खाकर उस की मदद करने का वादा किया था। वजह यह थी कि वह सकनियाह बिन अरख का दामाद था, और उसके बेटे यहनान की शादी मसुल्लाम बिन बरकियाह की बेटी से हुई थी। 19 त्वबियाह के यह मददगार मेरे सामने उसके नेक कामों की तारीफ़ करते रहे और साथ साथ मेरी हर बात उसे बताते रहे। फिर त्वबियाह मुझे खत भेजता ताकि मैं डरकर काम से बाज़ आऊँ।

## 7

1 फ़सील की तकमील पर मैंने दरवाज़ों के किवाड़ लगावाए। फिर रब के घर के दरबान, गुलूकार और खिदमतगुज़ार लावी मुकर्रर किए गए। 2 मैंने दो आदमियों को यरूशलम के हुक्मरान बनाया। एक मेरा भाई हनानी और दूसरा किले का कमाँडर हननियाह था। हननियाह को मैंने इसलिए चुन लिया कि वह वफ़ादार था और अकसर लोगों की निसबत अल्लाह का ज्यादा ख़ौफ़ मानता था। 3 मैंने दोनों से कहा, “यरूशलम के दरवाज़े दोपहर के वक़्त जब धूप की शिदत है खुले न रहें, और पहरा देते वक़्त भी उन्हें बंद करके कुंडे लगाँ। यरूशलम के आदमियों को पहरादारी के लिए मुकर्रर करें जिनमें से कुछ फ़सील पर और कुछ अपने घरों के सामने ही पहरा दें।”

### जिलावतनी से वापस आए हुआ की फ़हरिस्त

4 गो यरूशलम शहर बड़ा और वसी था, लेकिन उसमें आबादी थोड़ी थी। ढाए गए मकान अब तक दुबारा तामीर नहीं हुए थे। 5 चुनौचे मेरे ख़ुदा ने मेरे दिल को शरफ़ा, अफ़सरों और अवाम को इकट्ठा करने की तहरीक दी ताकि खानदानों की रजिस्ट्री तैयार करूँ। इस सिलसिले में मुझे एक किताब मिल गई जिसमें उन लोगों की फ़हरिस्त दर्ज थी जो हमसे पहले जिलावतनी से वापस आए थे। उसमें लिखा था,

6 “ज़ैल में यहदाह के उन लोगों की फ़हरिस्त है जो जिलावतनी से वापस आए। बाबल का बादशाह नबूक़दनज़र उन्हें कैद करके बाबल ले गया था, लेकिन अब वह यरूशलम और यहदाह के उन शहरों में फिर जा बसे जहाँ पहले रहते थे।

7 उनके राहनूमा ज़रूबाबल, यशुअ, नहमियाह, अज़रियाह, रामियाह, नहमानी, मर्दकी, बिलशान, मिस्फ़रत, बिगवई, नहम और बाना थे।

ज़ैल की फ़हरिस्त में वापस आए हुए खानदानों के मर्द बयान किए गए हैं।

8 परऊस का खानदान : 2,172,

9 सफ़तियाह का खानदान : 372,

\* 6:15 2 अक्तूबर।



- 10 अरख का खानदान : 652,
- 11 पखत-मोआब का खानदान यानी यशुअ और योआब की औलाद : 2,818,
- 12 ऐलाम का खानदान : 1,254,
- 13 जत्तू का खानदान : 845,
- 14 जक्की का खानदान : 760,
- 15 बिन्नुई का खानदान : 648,
- 16 बबी का खानदान : 628,
- 17 अज़जाद का खानदान : 2,322,
- 18 अदूनिकाम का खानदान : 667,
- 19 बिगवई का खानदान : 2,067,
- 20 अदीन का खानदान : 655,
- 21 अतीर का खानदान यानी हिज़कियाह की औलाद : 98,
- 22 हाशूम का खानदान : 328,
- 23 बज़ी का खानदान : 324,
- 24 खारिफ़ का खानदान : 112,
- 25 जिबऊन का खानदान : 95,
- 26 बैत-लहम और नत्फ़ा के बाशिंदे : 188,
- 27 अनतोत के बाशिंदे : 128,
- 28 बैत-अज़मावत के बाशिंदे : 42,
- 29 किरियत-यारीम, कफ़ीरा और बैरोत के बाशिंदे : 743,
- 30 रामा और जिबा के बाशिंदे : 621,
- 31 मिक्मास के बाशिंदे : 122,
- 32 बैतैल और अई के बाशिंदे : 123,
- 33 दूसरे नब् के बाशिंदे : 52,
- 34 दूसरे ऐलाम के बाशिंदे : 1,254,
- 35 हारिम के बाशिंदे : 320,
- 36 यरीह के बाशिंदे : 345,
- 37 लूद, हादीद और ओन् के बाशिंदे : 721,
- 38 सनाआह के बाशिंदे : 3,930।
- 39 ज़ैल के इमाम जिलावतनी से वापस आए।  
यदायाह का खानदान जो यशुअ की नसल का था : 973,
- 40 इम्मेर का खानदान : 1,052,
- 41 फ़शहर का खानदान : 1,247,
- 42 हारिम का खानदान : 1,017।
- 43 ज़ैल के लावी जिलावतनी से वापस आए।  
यशुअ और कदमियेल का खानदान यानी हूदावियाह की औलाद : 74,
- 44 गुलूकार : आसफ़ के खानदान के 148 आदमी,
- 45 रब के घर के दरबान : सल्लूम, अतीर, तलमून, अक्कूब, खतीता और सोबी के खानदानों के 138 आदमी।
- 46 रब के घर के खिदमतगारों के दर्जे-ज़ैल खानदान जिलावतनी से वापस आए।  
जीहा, हस्फ़ा, तब्बाओत, 47 क़रूस, सिया, फ़दून, 48 लिबाना, हजाबा, शलमी, 49 हनान, जिदेल, जहर, 50 रियायाह, रज़ीन, नक़्दा, 51 जज़ज़ाम, उज्ज़ा, फ़ासिह, 52 बसी, मऊनीम, नफ़ूसीम, 53 बकबूक, हक़ूफ़ा, हरहर, 54 बज़लूत, महीदा, हर्शा, 55 बरकूस, सीसरा, तामह, 56 नज़ियाह और खतीफ़ा।
- 57 सुलेमान के खादिमों के दर्जे-ज़ैल खानदान जिलावतनी से वापस आए।  
सूती, सूफ़िरत, फ़रूदा, 58 याला, दरकून, जिदेल, 59 सफ़तियाह, खतील, फूकिरत-ज़बायम और अमून।
- 60 रब के घर के खिदमतगारों और सुलेमान के खादिमों के खानदानों में से वापस आए हुए मर्दों की तादाद 392 थी।

61-62 वापस आए हुए खानदानों में से दिलायाह, त्बियाह और नक़्दा के 642 मर्द साबित न कर सके कि इसराईल की औलाद हैं, गो वह तल-मिलह, तल-हर्शा, कर्ब, अद्न और इम्मेर के रहनेवाले थे।

63-64 हबायाह, हक्कूज़ और बरज़िल्ली के खानदानों के कुछ इमाम भी वापस आए, लेकिन उन्हें रब के घर में खिदमत करने की इजाज़त न मिली। क्योंकि गो उन्होंने नसबनामे में अपने नाम तलाश किए लेकिन उनका कहीं जिक्र न मिला, इसलिए उन्हें नापाक करार दिया गया। (बरज़िल्ली के खानदान के बानी ने बरज़िल्ली जिलियादी की बेटी से शादी करके अपने सुसर का नाम अपना लिया था।) 65 यहदाह के गवर्नर ने हुक्म दिया कि इन तीन खानदानों के इमाम फ़िलहाल कुरबानियों का वह हिस्सा खाने में शरीक न हों जो इमामों के लिए मुकर्रर हैं। जब दुबारा इमामे-आज़म मुकर्रर किया जाए तो वही उरामी और तुम्मी नामी कुरा डालकर मामला हल करे।

66 कुल 42,360 इसराईली अपने वतन लौट आए, 67 नीज़ उनके 7,337 गुलाम और लौंडियों और 245 गुल्कार जिनमें मर्दो-खवातीन शामिल थे।

68 इसराईलियों के पास 736 घोड़े, 245 खच्चर, 69 435 ऊँट और 6,720 गधे थे।

70 कुछ खानदानी सरपरस्तों ने रब के घर की तामीर-नौ के लिए अपनी खुशी से हदिये दिए। गवर्नर ने सोने के 1,000 सिक्के, 50 कटरे और इमामों के 530 लिबास दिए। 71 कुछ खानदानी सरपरस्तों ने खजाने में सोने के 20,000 सिक्के और चाँदी के 1,200 किलोग्राम डाल दिए। 72 बाक़ी लोगों ने सोने के 20,000 सिक्के, चाँदी के 1,100 किलोग्राम और इमामों के 67 लिबास अता किए।

73 इमाम, लावी, रब के घर के दरबान और खिदमतगार, गुल्कार और अवाम के कुछ लोग अपनी अपनी आबाई आबादियों में दुबारा जा बसे। यों तमाम इसराईली दुबारा अपने अपने शहरों में रहने लगे।”

अज़रा शरीअत की तिलावत करता है

सातवें महीने यानी अक्तूबर में जब इसराईली अपने अपने शहरों में दुबारा आबाद हो गए थे

## 8

1 तो सब लोग मिलकर पानी के दरवाज़े के चौक में जमा हो गए। उन्होंने शरीअत के आलिम अज़रा से दरखास्त की कि वह शरीअत ले आएँ जो रब ने मूसा की मारिफ़त इसराईली कौम को दे दी थी। 2 चुनौचे अज़रा ने हाज़िरिन के सामने शरीअत की तिलावत की। सातवें महीने का पहला दिन \* था। न सिर्फ़ मर्द बल्कि औरतें और शरीअत की बातें समझने के काबिल तमाम बच्चे भी जमा हुए थे। 3 सुबह-सवैरे से लेकर दोपहर तक अज़रा पानी के दरवाज़े के चौक में पढ़ता रहा, और तमाम जमात ध्यान से शरीअत की बातें सुनती रही।

4 अज़रा लकड़ी के एक चबूतरे पर खड़ा था जो खासकर इस मौक़े के लिए बनाया गया था। उसके दाँए हाथ मत्तितियाह, समा, अनायाह, ऊरियाह, खिलकियाह और मासियाह खड़े थे। उसके बाएँ हाथ फ़िदायाह, मीसाएल, मलकियाह, हाशूम, हस्बद्दाना, ज़करियाह और मसुल्लाम खड़े थे।

5 चूँकि अज़रा ऊँची जगह पर खड़ा था इसलिए वह सबको नज़र आया। चुनौचे जब उसने किताब को खोल दिया तो सब लोग खड़े हो गए। 6 अज़रा ने रब अज़ीम खुदा की सताइश की, और सबने अपने हाथ उठाकर जवाब में कहा, “आमीन, आमीन।” फिर उन्होंने झुककर रब को सिजदा किया।

7 कुछ लावी हाज़िर थे जिन्होंने लोगों के लिए शरीअत की तशरीह की। उनके नाम यशुअ, बानी, सरिबियाह, यमीन, अक्कूब, सब्बती, ह्दियाह, मासियाह, कलीता, अज़रियाह, यूज़बद, हनान और फ़िलायाह थे। हाज़िरिन अब तक खड़े थे। 8 शरीअत की तिलावत के साथ साथ मज़क़रा लावी क़दम बक़दम उस की तशरीह यों करते गए कि लोग उसे अच्छी तरह समझ सकें।

9 शरीअत की बातें सुन सुनकर वह रोने लगे। लेकिन नहमियाह गवर्नर, शरीअत के आलिम अज़रा इमाम और शरीअत की तशरीह करनेवाले लावियों ने उन्हें तसल्ली देकर कहा, “उदास न हों और मत रोएँ! आज रब आपके खुदा के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस ईद है। 10 अब जाँए, उम्दा खाना खाकर और पीने की मीठी चीज़ें पीकर खुशी मनाएँ। जो अपने लिए कुछ तैयार न कर सकें उन्हें अपनी खुशी में शरीक करें। यह दिन हमारे रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। उदास न हों, क्योंकि रब की खुशी आपको पनाहगाह है।”

11 लावियों ने भी तमाम लोगों को सुकून दिलाकर कहा, “उदास न हों, क्योंकि यह दिन रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है।”

\* 8:2 8 अक्तूबर।

12 फिर सब अपने अपने घर चले गए। वहाँ उन्होंने बड़ी खुशी से खा-पीकर जशन मनाया। साथ साथ उन्होंने दूसरों को भी अपनी खुशी में शरीक किया। उनकी बड़ी खुशी का सबब यह था कि अब उन्हें उन बातों की समझ आई थी जो उन्हें सुनाई गई थी।

### झोपड़ियों की ईद

13 आले दिन † खानदानी सरपरस्त, इमाम और लावी दुबारा शरीअत के आलिम अजरा के पास जमा हुए ताकि शरीअत की मज़ीद तालीम पाएँ। 14 जब वह शरीअत का मुतालआ कर रहे थे तो उन्हें पता चला कि रब ने मूसा की मारिफत हुक्म दिया था कि इसराईली सातवें महीने की ईद के दौरान झोपड़ियों में रहें। 15 चुनाँचे उन्होंने यस्शलम और बाकी तमाम शहरों में एलान किया, “पहाड़ों पर से जैतून, आस, ‡ खजूर और बाकी सायादार दरख्तों की शाखें तोड़कर अपने घर ले जाएँ। वहाँ उनसे झोपड़ियाँ बनाएँ, जिस तरह शरीअत ने हिदायत दी है।”

16 लोगों ने ऐसा ही किया। वह घरों से निकले और दरख्तों की शाखें तोड़कर ले आए। उनसे उन्होंने अपने घरों की छतों पर और सहनों में झोपड़ियाँ बना लीं। बाज़ ने अपनी झोपड़ियों को रब के घर के सहनों, पानी के दरवाजे के चौक और इफ़राईम के दरवाजे के चौक में भी बनाया। 17 जितने भी जिलावतनी से वापस आए थे वह सब झोपड़ियाँ बनाकर उनमें रहने लगे। यशुअ बिन नून के जमाने से लेकर उस वक़्त तक यह ईद इस तरह मनाई गई थी। सब निहायत ही खुश थे। 18 ईद के हर दिन अजरा ने अल्लाह की शरीअत की तिलावत की। सात दिन इसराईलियों ने ईद मनाई, और आठवें दिन सब लोग इजतिमा के लिए इकट्ठे हुए, बिलकुल उन हिदायत के मुताबिक जो शरीअत में दी गई हैं।

## 9

### इसराईली अपने गुनाहों का इकरार करते हैं

1 उसी महीने के 24वें दिन \* इसराईली रोज़ा रखने के लिए जमा हुए। टाट के लिबास पहने हुए और सर पर खाक डालकर वह यस्शलम आए। 2 अब वह तमाम ग़ैरयहूदियों से अलग होकर उन गुनाहों का इकरार करने के लिए हाज़िर हुए जो उनसे और उनके बापदादा से सरजद हुए थे। 3 तीन घंटे वह खड़े रहे, और उस दौरान रब उनके ख़ुदा की शरीअत की तिलावत की गई। फिर वह रब अपने ख़ुदा के सामने मुँह के बल झुककर मज़ीद तीन घंटे अपने गुनाहों का इकरार करते रहे।

4 यशुअ, बानी, कदमियेल, सबनियाह, बुनी, सरिबियाह, बानी और कनानी जो लावी थे एक चबूतरे पर खड़े हुए और बलंद आवाज़ से रब अपने ख़ुदा से दुआ की।

5 फिर यशुअ, कदमियेल, बानी, हसबनियाह, सरिबियाह, हदियाह, सबनियाह और फ़तहियाह जो लावी थे बोल उठे, “खड़े होकर रब अपने ख़ुदा की जो अज़ल से अबद तक है सताइश करें!”

उन्होंने दुआ की,

“तेरे जलाली नाम की तमज़ीद हो, जो हर मुबारकबादी और तारीफ से कहीं बढ़कर है। 6 ऐ रब, तू ही वाहिद ख़ुदा है! तूने आसमान को एक सिरे से दूसरे सिरे तक उसके लशकर समेत खलक किया। ज़मीन और जो कुछ उस पर है, समुंदर और जो कुछ उसमें है सब कुछ तू ही ने बनाया है। तूने सबको ज़िंदगी बख़्शी है, और आसमानी लशकर तुझे सिजदा करता है।

7 तू ही रब और वह ख़ुदा है जिसने अब्राम को चुन लिया और कसदियों के शहर ऊर से बाहर लाकर इब्राहीम का नाम रखा। 8 तूने उसका दिल वफ़ादार पाया और उससे अहद बाँधकर वादा किया, ‘मैं तेरी औलाद को कनानियों, हितियों, अमोरियों, फ़रिज़ियों, यबूसियों और जिरजासियों का मुल्क अता करूँगा।’ और तू अपने वादे पर पूरा उतरा, क्योंकि तू काबिले-एतमाद और आदिल है।

9 तूने हमारे बापदादा के मिसर में बुरे हाल पर ध्यान दिया, और बहरे-कुलजुम के किनारे पर मदद के लिए उनकी चीखें सुनीं। 10 तूने इलाही निशानों और मोजिज़ों से फ़िरौन, उसके अफ़सरों और उसके मुल्क की कौम को सज़ा दी, क्योंकि तू जानता था कि मिसरी हमारे बापदादा से कैसा गुस्ताख़ाना सुल्क करते रहे हैं। यों तारा नाम मशहर हुआ और आज तक याद रहा है। 11 कौम के देखते देखते तूने समुंदर को दो हिस्सों में तक़सीम कर दिया, और वह ख़ुशक ज़मीन पर चलकर उसमें से गुजर सके। लेकिन उनका ताक़्क़ुब करनेवालों को तूने मुतलातिम पानी में फेंक दिया, और वह पत्थरों की तरह समुंदर की गहराइयों में डूब गए।

† 8:13 9 अन्तुब। ‡ 8:15 myrtle \* 9:1 31 अन्तुब।

12 दिन के वक्त तुने बादल के सतून से और रात के वक्त आग के सतून से अपनी कौम की राहनुमाई की। यों वह रास्ता अंधेरे में भी रौशन रहा जिस पर उन्हें चलना था। 13 तू कोहे-सीना पर उतर आया और आसमान से उनसे हमकलाम हुआ। तुने उन्हें साफ हिदायात और काबिले-एतमाद अहकाम दिए, ऐसे कवायद जो अच्छे हैं। 14 तुने उन्हें सबत के दिन के बारे में आगाह किया, उस दिन के बारे में जो तेरे लिए मखसूसो-मुकद्दस है। अपने खादिम मूसा की मारिफत तुने उन्हें अहकाम और हिदायात दी। 15 जब वह भूके थे तो तुने उन्हें आसमान से रोटी खिलाई, और जब प्यासे थे तो तुने उन्हें चटान से पानी पिलाया। तुने हुक्म दिया, 'जाओ, मुल्क में दाखिल होकर उस पर कब्जा कर लो, क्योंकि मैंने हाथ उठाकर कसम खाई है कि तुम्हें यह मुल्क दूँगा।'

16 अफसोस, हमारे बापदादा मगसर और जिद्दी हो गए। वह तेरे अहकाम के ताबे न रहे। 17 उन्होंने तेरी सुनने से इनकार किया और वह मोजिजात याद न रखे जो तुने उनके दरमियान किए थे। वह यहाँ तक अड गए कि उन्होंने एक राहनुमा को मुकर्रर किया जो उन्हें मिसर की गुलामी में वापस ले जाए। लेकिन तू मुआफ करनेवाला खुदा है जो मेहरबान और रहीम, तहम्मूल और शफकत से भरपूर है। तुने उन्हें तर्क न किया, 18 उस वक्त भी नहीं जब उन्होंने अपने लिए सोने का बछड़ा ढालकर कहा, 'यह तेरा खुदा है जो तुझे मिसर से निकाल लाया।' इस किस्म का संजीदा कुफर वह बकते रहे। 19 लेकिन तू बहुत रहमदिल है, इसलिए तुने उन्हें रेगिस्तान में न छोड़ा। दिन के वक्त बादल का सतून उनकी राहनुमाई करता रहा, और रात के वक्त आग का सतून वह रास्ता रौशन करता रहा जिस पर उन्हें चलना था। 20 न सिर्फ यह बल्कि तुने उन्हें अपना नेक रूह अता किया जो उन्हें तालीम दे। जब उन्हें भूक और प्यास थी तो तू उन्हें मन खिलाने और पानी पिलाने से बाज न आया। 21 चालीस साल वह रेगिस्तान में फिरते रहे, और उस पूरे अरसे में तू उनकी जरूरियात को पूरा करता रहा। उन्हें कोई भी कमी नहीं थी। न उनके कपड़े घिसकर फटे और न उनके पाँव सूजे।

22 तुने ममालिक और कौम उनके हवाले कर दी, मुख्तलिफ इलाके यके बाद दीगरे उनके कब्जे में आए। यों वह सीहोन बादशाह के मुल्क हसबोन और ओज बादशाह के मुल्क बसन पर फतह पा सके। 23 उनकी औलाद तेरी मरजी से आसमान पर के सितारों जैसी बेशमार हुई, और तू उन्हें उस मुल्क में लाया जिसका वादा तुने उनके बापदादा से किया था। 24 वह मुल्क में दाखिल होकर उसके मालिक बन गए। तुने कनान के बाशिंदों को उनके आगे आगे जेर कर दिया। मुल्क के बादशाह और कौम उनके कब्जे में आ गई, और वह अपनी मरजी के मुताबिक उनसे निपट सके। 25 किलाबंद शहर और जरखेज जमीन तेरी कौम के काबू में आ गई, नीज़ हर किस्म की अच्छी चीजों से भरे घर, तैयारशुदा हौज़, अंगूर के बाग और कसरत के जैतून और दीगर फलदार दरखत। वह जी भरकर खाना खाकर मोटे हो गए और तेरी बरकतों से लुफ्तअंदोज होते रहे।

26 इसके बावजूद वह ताबे न रहे बल्कि सरकश हुए। उन्होंने अपना मुँह तेरी शरीअत से फेर लिया। और जब तेरे नबी उन्हें समझा समझाकर तेरे पास वापस लाना चाहते थे तो उन्होंने बड़े कुफर बककर उन्हें कल्ल कर दिया। 27 यह देखकर तुने उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर दिया जो उन्हें तंग करते रहे। जब वह मुसीबत में फँस गए तो वह चीखे मार मारकर तुझसे फरियाद करने लगे। और तुने आसमान पर से उनकी सुनी। बड़ा तरस खाकर तुने उनके पास ऐसे लोगों को भेज दिया जिन्होंने उन्हें दुश्मनों के हाथ से छुड़ाया। 28 लेकिन ज्योंही इसराईलियों को सुकून मिलता वह दुबारा ऐसी हरकतें करने लगते जो तुझे नापसंद थीं। नतीजे में तू उन्हें दुबारा उनके दुश्मनों के हाथ में छोड़ देता। जब वह उनकी हुक्मत के तहत पिसने लगते तो वह एक बार फिर चिल्ला चिल्लाकर तुझसे इलतमास करने लगते। इस बार भी तू आसमान पर से उनकी सुनता। हाँ, तू इतना रहमदिल है कि तू उन्हें बार बार छुटकारा देता रहा! 29 तू उन्हें समझाता रहा ताकि वह दुबारा तेरी शरीअत की तरफ रूज करें, लेकिन वह मगसर थे और तेरे अहकाम के ताबे न हुए। उन्होंने तेरी हिदायात की खिलाफवरजी की, हालाँकि इन्हीं पर चलने से इनसान को जिंदागी हासिल होती है। लेकिन उन्होंने परवा न की बल्कि अपना मुँह तुझसे फेरकर अड गए और सुनने के लिए तैयार न हुए।

30 उनकी हरकतों के बावजूद तू बहुत सालों तक सब्र करता रहा। तेरा रूह उन्हें नबियों के जरीए समझाता रहा, लेकिन उन्होंने ध्यान न दिया। तब तुने उन्हें गैरकौमों के हवाले कर दिया। 31 ताहम तेरा रहम से भरा दिल उन्हें तर्क करके तबाह नहीं करना चाहता था। तू कितना मेहरबान और रहीम खुदा है!

32 ऐ हमारे खुदा, ऐ अज़ीम, कबी और महीब खुदा जो अपना अहद और अपनी शफकत कायम रखता है, इस वक्त हमारी मुसीबत पर ध्यान दे और उसे कम न समझ! क्योंकि हमारे बादशाह, बुजुर्ग, इमाम और नबी बल्कि हमारे बापदादा

और पूरी कौम असूरी बादशाहों के पहले हमलों से लेकर आज तक सख्त मुसीबत बरदाश्त करते रहे हैं।<sup>33</sup> हकीकत तो यह है कि जो भी मुसीबत हम पर आई है उसमें तू रास्त साबित हुआ है। तू वफादार रहा है, गो हम कुसूरवार ठहरे हैं।<sup>34</sup> हमारे बादशाह और बुजुर्ग, हमारे इमाम और बापदादा, उन सबने तेरी शरीअत की पैरवी न की। जो अहकाम और तंबीह तूने उन्हें दी उस पर उन्होंने ध्यान ही न दिया।<sup>35</sup> तूने उन्हें उनकी अपनी बादशाही, कसरत की अच्छी चीजों और एक वसी और जरखेज्ज मुल्क से नवाजा था। तो भी वह तेरी खिदमत करने के लिए तैयार न थे और अपनी गलत राहों से बाज़ न आए।

<sup>36</sup> इसका अंजाम यह हुआ है कि आज हम उस मुल्क में गुलाम हैं जो तूने हमारे बापदादा को अता किया था ताकि वह उस की पैदावार और दौलत से लुफ्तअंदोज हो जाएँ।<sup>37</sup> मुल्क की वाफ़िर पैदावार उन बादशाहों तक पहुँचती है जिन्हें तूने हमारे गुनाहों की वजह से हम पर मुकर्रर किया है। अब वही हम पर और हमारे मवेशियों पर हकूमत करते हैं। उन्हीं की मरज़ी चलती है। चुनौचे हम बड़ी मुसीबत में फँसे हैं।

### कौम का अहदनामा

<sup>38</sup> यह तमाम बातें मड़े-नजर रखकर हम अहद बाँधकर उसे कलमबंद कर रहे हैं। हमारे बुजुर्ग, लावी और इमाम दस्तखत करके अहदनामे पर मुहर लगा रहे हैं।”

## 10

1 जैल के लोगों ने दस्तखत किए।

गवर्नर नहमियाह बिन हकलियाह, सिदकियाह,<sup>2</sup> सिरायाह, अज़रियाह, यरमियाह,<sup>3</sup> फ़शहर, अमरियाह, मलकियाह,<sup>4</sup> हतुश, सबनियाह, मल्लूक,<sup>5</sup> हारिम, मरीमोत, अबदियाह,<sup>6</sup> दानियाल, जिन्नतून, बारूक,<sup>7</sup> मसुल्लाम, अबियाह, मियामीन,<sup>8</sup> माज़ियाह, बिलजी और समायाह। सिरायाह से लेकर समायाह तक इमाम थे।

9 फिर जैल के लावियों ने दस्तखत किए।

यशुअ बिन अज़नियाह, हनदाद के खानदान का बिन्नुई, कदमियेल,<sup>10</sup> उनके भाई सबनियाह, हदियाह, कलीता, फ़िलायाह, हनान,<sup>11</sup> मीका, रोहब, हसबियाह,<sup>12</sup> ज़कूर, सरिबियाह, सबनियाह,<sup>13</sup> हदियाह, बानी और बनीनू।

14 इनके बाद जैल के कौमी बुजुर्गों ने दस्तखत किए।

परऊस, पखत-मोआब, ऐलाम, जत्तू, बानी<sup>15</sup> बुन्नी, अज़जाद, बबी,<sup>16</sup> अदूनियाह, बिगवई, अदीन,<sup>17</sup> अतीर, हिज़कियाह, अज़्ज़र,<sup>18</sup> हदियाह, हाशूम, बजी,<sup>19</sup> खारिफ़, अनतोत, नेबी,<sup>20</sup> मगफ़ियास, मसुल्लाम, हिज़ीर<sup>21</sup> मशेज़बेल, सदोक, यदू,<sup>22</sup> फ़लतियाह, हनान, अनायाह,<sup>23</sup> होसेअ, हननियाह, हस्सूब,<sup>24</sup> हल्लहेश, फ़िलहा, सोबेक,<sup>25</sup> रहम, हसब्नाह, मासियाह,<sup>26</sup> अखियाह, हनान, अनान,<sup>27</sup> मल्लूक, हारिम और बाना।

<sup>28</sup> कौम के बाक़ी लोग भी अहद में शरीक हुए यानी बाक़ी इमाम, लावी, रब के घर के दरबान और खिदमतगार, गुलूकार, नीज़ सब जो ग़ैरयहूदी कौमों से अलग हो गए थे ताकि रब की शरीअत की पैरवी करें। उनकी बीवियों और वह बेटे-बेटियाँ भी शरीक हुए जो अहद को समझ सकते थे।<sup>29</sup> अपने बुजुर्ग भाइयों के साथ मिलकर उन्होंने कसम खाकर वादा किया, “हम उस शरीअत की पैरवी करेंगे जो अल्लाह ने हमें अपने खादिम मूसा की मारिफ़त दी है। हम एहतियात से रब अपने आका के तमाम अहकाम और हिदायात पर अमल करेंगे।”

<sup>30</sup> नीज़, उन्होंने कसम खाकर वादा किया,

“हम अपने बेटे-बेटियों की शादी ग़ैरयहूदियों से नहीं कराएँगे।

<sup>31</sup> जब ग़ैरयहूदी हमें सबत के दिन या रब के लिए मख़सूस किसी और दिन अनाज या कोई और माल बेचने की कोशिश करें तो हम कुछ नहीं खरीदेंगे।

हर सातवें साल हम ज़मीन की खेतीबाड़ी नहीं करेंगे और तमाम कर्जे मनसूख करेंगे।

<sup>32</sup> हम सालाना रब के घर की खिदमत के लिए चाँदी का छोटा सिक्का \* देंगे। इस खिदमत में जैल की चीज़ें शामिल हैं :

<sup>33</sup> अल्लाह के लिए मख़सूस रोटी, गल्ला की नजर और भस्म होनेवाली वह कुरबानियाँ जो रोज़ाना पेश की जाती हैं, सबत के दिन, नए चाँद की ईद और बाक़ी ईदों पर पेश की जानेवाली कुरबानियाँ, खास मुक़द्दस कुरबानियाँ, इसराइल का कफ़फ़ारा देनेवाली गुनाह की कुरबानियाँ, और हमारे ख़ुदा के घर का हर काम।

<sup>34</sup> हमने कुरा डालकर मुकर्रर किया है कि इमामों, लावियों और बाक़ी कौम के कौन कौन-से खानदान साल में किन किन मुकर्रर मौकों पर रब के घर में लकड़ी पहुँचाएँ। यह लकड़ी हमारे ख़ुदा की कुरबानग़ाह पर कुरबानियाँ जलाने के लिए इस्तेमाल की जाएगी, जिस तरह शरीअत में लिखा है।

\* **10:32** चाँदी के तक्कीबन 4 ग्राम।

35 हम सालाना अपने खेतों और दरख्तों का पहला फल रब के घर में पहुँचाएँगे।

36 जिस तरह शरीअत में दर्ज है, हम अपने पहलौठों को रब के घर में लाकर अल्लाह के लिए मखसूस करेंगे। गाय-बैलों और भेड़-बकरियों के पहले बच्चे हम खिदमतगुजार इमामों को कुरबान करने के लिए देंगे। 37 उन्हें हम साल के पहले गल्ला से गँधा हुआ आटा, अपने दरख्तों का पहला फल, अपनी नई मै और जैतून के नए तेल का पहला हिस्सा देकर रब के घर के गोदामों में पहुँचाएँगे।

देहात में हम लावियों को अपनी फसलों का दसवाँ हिस्सा देंगे, क्योंकि वही देहात में यह हिस्सा जमा करते हैं। 38 दसवाँ हिस्सा मिलते वक़्त कोई इमाम यानी हासन के खानदान का कोई मर्द लावियों के साथ होगा, और लावी माल का दसवाँ हिस्सा हमारे खुदा के घर के गोदामों में पहुँचाएँगे। 39 आम लोग और लावी वहाँ गल्ला, नई मै और जैतून का तेल लाएँगे। इन कमरों में मकदिस की खिदमत के लिए दरकार तमाम सामान महफूज रखा जाएगा। इसके अलावा वहाँ इमामों, दरबानों और गुलकारों के कमरे होंगे।

हम अपने खुदा के घर में तमाम फ़रायज़ संरंजाम देने में गफलत नहीं बरतेंगे।”

## 11

### यस्शालम और यहदाह के बाशिंदे

1 क्रौम के बुजुर्ग यस्शालम में आबाद हुए थे। फैसला किया गया कि बाकी लोगों के हर दसवें खानदान को मुकद्दस शहर यस्शालम में बसना है। यह खानदान कुरा डालकर मुकर्रर किए गए। बाकी खानदानों को उनकी मकामी जगहों में रहने की इजाज़त थी। 2 लेकिन जितने लोग अपनी ख़ुशी से यस्शालम जा बसे उन्हें दूसरों ने मुबारकबाद दी।

3 जैल में सबे के उन बुजुर्गों की फ़हरिस्त है जो यस्शालम में आबाद हुए। (अकसर लोग यहदाह के बाकी शहरों और देहात में अपनी मौस्सी ज़मीन पर बसते थे। इनमें आम इसराईली, इमाम, लावी, रब के घर के खिदमतगार और सुलेमान के खादिमों की औलाद शामिल थे। 4 लेकिन यहदाह और बिनयमीन के चंद एक लोग यस्शालम में जा बसे।)

यहदाह का कबीला :

फ़ारस के खानदान का अतायाह बिन उज्जियाह बिन ज़करियाह बिन अमरियाह बिन सफ़तियाह बिन महललेल,

5 सिलोनी के खानदान का मासियाह बिन बास्क बिन कुलहोज़ा बिन हज़ायाह बिन अदायाह बिन यूयारीब बिन ज़करियाह।

6 फ़ारस के खानदान के 468 असरो-रसूख रखनेवाले आदमी अपने खानदानों समेत यस्शालम में रिहाइशपज़ीर थे।

7 बिनयमीन का कबीला :

सल्लू बिन मसुल्लाम बिन योएद बिन फिदायाह बिन कौलायाह बिन मासियाह बिन इतियेल बिन यसायाह।

8 सल्लू के साथ जब्बी और सल्लूी थे। कुल 928 आदमी थे। 9 इन पर योएल बिन ज़िकरी मुकर्रर था जबकि यहदाह बिन सनुआह शहर की इंतज़ामिया में दूसरे नंबर पर आता था।

10 यस्शालम में जैल के इमाम रहते थे।

यदायाह, यूयारीब, यकीन 11 और सिरायाह बिन खिलकियाह बिन मसुल्लाम बिन सदोक बिन मिरायेत बिन अखीतूब। सिरायाह अल्लाह के घर का मुन्तज़िम था।

12 इन इमामों के 822 भाई रब के घर में खिदमत करते थे।

नीज़, अदायाह बिन यरोहाम बिन फिलतियाह बिन अमसी बिन ज़करियाह बिन फ़शहर बिन मलकियाह। 13 उसके साथ 242 भाई थे जो अपने अपने खानदानों के सरपरस्त थे।

इनके अलावा अमशसी बिन अज़रेल बिन अखज़ी बिन मसिल्लमोत बिन इम्मेर। 14 उसके साथ 128 असरो-रसूख रखनेवाले भाई थे। ज़बदियेल बिन हज्जदलीम उनका इंचार्ज था।

15 जैल के लावी यस्शालम में रिहाइशपज़ीर थे। समायाह बिन हस्सूब बिन अज़रीकाम बिन हसबियाह बिन बुन्नी,

16 नीज़ सब्बती और यूज़बद जो अल्लाह के घर से बाहर के काम पर मुकर्रर थे,

17 नीज़ शूक्रगुज़ारी का राहनुमा मतनियाह बिन मीका बिन ज़बदी बिन आसफ़ था जो दुआ करते वक़्त हम्दो-सना की राहनुमाई करता था,

नीज़ उसका मददगार मतनियाह का भाई बकबूकियाह,

और आखिर में अबदा बिन सम्मुअ बिन जलाल बिन यदतून।

18 लावियों के कुल 284 मर्द मुकद्दस शहर में रहते थे।

19 रब के घर के दरबानों के दर्जे-जैल मर्द यस्शालम में रहते थे।

अन्नकूब और तलमून अपने भाइयों समेत दरवाज़ों के पहरेदार थे। कुल 172 मर्द थे।

20 कौम के बाकी लोग, इमाम और लावी यरूशलम से बाहर यहदाह के दूसरे शहरों में आबाद थे। हर एक अपनी आबाई जमीन पर रहता था।

21 रब के घर के खिदमतगार ओफल पहाड़ी पर बसते थे। जीहा और जिसफा उन पर मुकर्रर थे।

22 यरूशलम में रहनेवाले लावियों का निगरान उज्जी बिन बानी बिन हसबियाह बिन मत्तनियाह बिन मीका था। वह आसफ के खानदान का था, उस खानदान का जिसके गुलकार अल्लाह के घर में खिदमत करते थे। 23 बादशाह ने मुकर्रर किया था कि आसफ के खानदान के किन किन आदमियों को किस किस दिन रब के घर में गीत गाने की खिदमत करनी है।

24 फतहियाह बिन मशेजबेल इसराईली मामलों में फारस के बादशाह की नुमाईंदगी करता था। वह जारह बिन यहदाह के खानदान का था।

25 यहदाह के कबीले के अफराद जैल के शहरों में आबाद थे।

क्रियत-अरबा, दीबोन और कबजियेल गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत, 26 यशुअ, मोलादा, बैत-फलत, 27 हसार-सुआल, बैर-सबा गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत, 28 सिकलाज, मकूनह गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत, 29 ऐन-रिम्मोन, सुरआ, यरमूत, 30 जनुह, अदुल्लाम गिर्दो-नवाह की हवेलियों समेत, लकीस गिर्दो-नवाह के खेतों समेत और अजीका गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत। गरज, वह जुनुब में बैर-सबा से लेकर शिमाल में वादीए-हिन्मुम तक आबाद थे।

31 बिनयमीन के कबीले की रिहाइश जैल के मकामों में थी।

जिबा, मिक्मास, ऐयाह, बैतेल गिर्दो-नवाह की आबादियों समेत, 32 अनतोत, नोब, अननियाह, 33 हसर, रामा, जितैम, 34 हादीद, ज़बोईम, नबल्लात, 35 लूद, ओनु और कारीगरों की वादी।

36 लावी कबीले के कुछ खानदान जो पहले यहदाह में रहते थे अब बिनयमीन के कबायली इलाके में आबाद हुए।

## 12

### इमामों और लावियों की फहरिस्त

1 दर्जे-जैल उन इमामों और लावियों की फहरिस्त है जो ज़रूबाबल बिन सियालतियेल और यशुअ के साथ जिलावतनी से वापस आए।

इमाम :

सिरायाह, यरमियाह, अज़रा, 2 अमरियाह, मल्लूक, हतूश, 3 सकनियाह, रहम, मरीमोत, 4 इडू, जिन्नतून, अबियाह, 5 मिचामीन, मुअदियाह, बिलजा, 6 समायाह, यूसारीब, यदायाह, 7 सल्लू, अमूक, खिलक्रियाह, और यदायाह। यह यशुअ के ज़माने में इमामों और उनके भाइयों के राहनुमा थे।

8 लावी :

यशुअ, बिन्नुई, कदमियेल, सरिबियाह, यहदाह और मत्तनियाह। मत्तनियाह अपने भाइयों के साथ रब के घर में हम्दो-सना के गीत गाने में राहनुमाई करता था। 9 बकबूक्रियाह और उन्नी अपने भाइयों के साथ इबादत के दौरान उनके मुकाबिल खड़े होते थे।

10 इमामे-आज़म यशुअ की औलाद :

यशुअ यूयक्रीम का बाप था, यूयक्रीम इलियासिब का, इलियासिब योयदा का, 11 योयदा यूनतन का, यूनतन यदू का।

12 जब यूयक्रीम इमामे-आज़म था तो जैल के इमाम अपने खानदानों के सरपरस्त थे।

सिरायाह के खानदान का मिरायाह,

यरमियाह के खानदान का हननियाह,

13 अज़रा के खानदान का मसुल्लाम,

अमरियाह के खानदान का यहनान,

14 मल्लूक के खानदान का यूनतन,

सबनियाह के खानदान का यूसुफ,

15 हारिम के खानदान का अदना,

मिरायोत के खानदान का खिलकी,

16 इडू के खानदान का ज़करियाह,

जिन्नतून के खानदान का मसुल्लाम,

17 अबियाह के खानदान का जिकरी,

मिन्यमीन के खानदान का एक आदमी,

मुअदियाह के खानदान का फिलती,

18 बिलजा के खानदान का सम्मुअ,

समायाह के खानदान का यहनतन,  
 19 ययारीब के खानदान का मत्तनी,  
 यदायाह के खानदान का उज्जी,  
 20 सल्ली के खानदान का कल्ली,  
 अमूक के खानदान का इबर,  
 21 खिलकियाह के खानदान का हसबियाह,  
 यदायाह के खानदान का नतनिये।

22 जब इलियासिब, योयदा, यहनान और यहू इमामे-आजम थे तो लावी के सरपरस्तों की फहरिस्त तैयार की गई और इसी तरह फ़ारस के बादशाह द्वारा के ज़माने में इमामों के खानदानी सरपरस्तों की फहरिस्त।

23 लावी के खानदानी सरपरस्तों के नाम इमामे-आजम यहनान बिन इलियासिब के ज़माने तक तारीख की किताब में दर्ज किए गए।

24-25 लावी के खानदानी सरपरस्त हसबियाह, सरिबियाह, यशुअ, बिनूई और कदमियेल खिदमत के उन गुरोहों की राहनुमाई करते थे जो रब के घर में हम्दो-सना के गीत गाते थे। उनके मुकाबिल मत्तनियाह, बकबकियाह और अबदियाह अपने गुरोहों के साथ खड़े होते थे। गीत गाते वक़्त कभी यह गुरोह और कभी उसके मुकाबिल का गुरोह गाता था। सब कुछ उस तरतीब से हुआ जो मर्दे-खुदा दाऊद ने मुकर्रर की थी।

मसल्लाम, तलमून और अन्नकूब दरबान थे जो रब के घर के दरवाजों के साथ वाके गोदामों की पहरादारी करते थे।

26 यह आदमी इमामे-आजम यूयकीम बिन यशुअ बिन यूसदक, नहमियाह गवर्नर और शरीअत के आलिम अज़रा इमाम के ज़माने में अपनी खिदमत संरजाम देते थे।

### फ़सील की मखसूसियत

27 फ़सील की मखसूसियत के लिए पूरे मुल्क के लावियों को यरूशलम बुलाया गया ताकि वह खुशी मनाने में मदद करके हम्दो-सना के गीत गाएँ और झोंझ, सितार और सरोद बजाएँ। 28 गुल्कार यरूशलम के गिदो-नवाह से, नतूफतियों के देहात, 29 बैत-जिलजाल और जिबा और अज़मावत के इलाके से आए। क्योंकि गुल्कारों ने अपनी अपनी आबादियाँ यरूशलम के इर्दगिर्द बनाई थीं। 30 पहले इमामों और लावियों ने अपने आपको जशन के लिए पाक-साफ किया, फिर उन्होंने आम लोगों, दरवाजों और फ़सील को भी पाक-साफ कर दिया।

31 इसके बाद मैंने यहदाह के कबीले के बुजुर्गों को फ़सील पर चढ़ने दिया और गुल्कारों को शूक्रगुजारी के दो बड़े गुरोहों में तक्रसीम किया। पहला गुरोह फ़सील पर चलते चलते जुनूब में वाके कचरे के दरवाजे की तरफ बढ़ गया। 32 इन गुल्कारों के पीछे हसायाह यहदाह के आधे बुजुर्गों के साथ चला 33 जबकि इनके पीछे अज़रियाह, अज़रा, मसल्लाम, 34 यहदाह, बिनयमीन, समायाह और यरमियाह चले। 35 आखिरी गुरोह इमाम थे जो तुम बजाते रहे। इनके पीछे जैल के मौसीकार आए : जकरियाह बिन यूनतन बिन समायाह बिन मत्तनियाह बिन मीकायाह बिन जक्कर बिन आसफ 36 और उसके भाई समायाह, अज़रेल, मिलली, जिलली, माई, नतनियेल, यहदाह और हनानी। यह आदमी मर्दे-खुदा दाऊद के साज बजाते रहे। शरीअत के आलिम अज़रा ने जुलूस की राहनुमाई की। 37 चश्मे के दरवाजे के पास आकर वह सीधे उस सीढ़ी पर चढ़ गए जो यरूशलम के उस हिस्से तक पहुँचाती है जो 'दाऊद का शहर' कहलाता है। फिर दाऊद के महल के पीछे से गुज़रकर वह शहर के मगरिब में वाके पानी के दरवाजे तक पहुँच गए।

38 शूक्रगुजारी का दूसरा गुरोह फ़सील पर चलते चलते शिमाल में वाके तनूरों के बुर्ज और 'मोटी दीवार' की तरफ बढ़ गया, और मैं बाक़ी लोगों के साथ उसके पीछे हो लिया। 39 हम इफ़राईम के दरवाजे, यसाना के दरवाजे, मछली के दरवाजे, हनेल के बुर्ज, मिया बुर्ज और भेड़ के दरवाजे से होकर मुहाफिजों के दरवाजे तक पहुँच गए जहाँ हम रुक गए।

40 फिर शूक्रगुजारी के दोनों गुरोह रब के घर के पास खड़े हो गए। मैं भी बुजुर्गों के आधे हिस्से 41 और जैल के तुम बजानेवाले इमामों के साथ रब के घर के सहन में खड़ा हुआ : इलियाकीम, मासियाह, मिन्यमीन, मीकायाह, इलियुएनी, जकरियाह और हननियाह। 42 मासियाह, समायाह, इलियजर, उज्जी, यहनान, मलकियाह, ऐलाम और अज़र भी हमारे साथ थे। गुल्कार इज़्रखियाह की राहनुमाई में हम्दो-सना के गीत गाते रहे।

43 उस दिन जबह की बड़ी बड़ी कुरवानियाँ पेश की गईं, क्योंकि अल्लाह ने हम सबको बाल-बच्चों समेत बड़ी खुशी दिलाई थी। खुशियों का इतना शोर मच गया कि उस की आवाज़ दूर-दराज़ इलाकों तक पहुँच गई।

रब के घर के गोदामों की ज़िम्मादारी



44 उस वक्त कुछ आदमियों को उन गोदामों के निगरान बनाया गया जिनमें हदिये, फसलों का पहला फल और पैदावार का दसवाँ हिस्सा महफूज रखा जाता था। उनमें शहरों की फसलों का वह हिस्सा जमा करना था जो शरीअत ने इमामों और लावियों के लिए मुकर्रर किया था। क्योंकि यहदाह के बाशिंदे खिदमत करनेवाले इमामों और लावियों से खुश थे 45 जो अपने खुदा की खिदमत तहारत के रस्मो-रिवाज समेत अच्छी तरह अंजाम देते थे। रब के घर के गुल्कार और दरबान भी दाऊद और उसके बेटे सुलेमान की हिदायात के मुताबिक ही खिदमत करते थे। 46 क्योंकि दाऊद और आसफ के जमाने से ही गुल्कारों के लीडर अल्लाह की हम्दी-सना के गीतों में राहनुमाई करते थे।

47 चुनौचे जम्बाबल और नहमियाह के दिनों में तमाम इसराईल रब के घर के गुल्कारों और दरबानों की रोजाना जरूरियात पूरी करता था। लावियों को वह हिस्सा दिया जाता जो उनके लिए मखसूस था, और लावी उसमें से इमामों को वह हिस्सा दिया करते थे जो उनके लिए मखसूस था।

## 13

### मोआवियों और अम्मोनियों से अलहदगी

1 उस दिन कौम के सामने मसा की शरीअत की तिलावत की गई। पढते पढते मालूम हुआ कि अम्मोनियों और मोआवियों को कभी भी अल्लाह की कौम में शरीक होने की इजाजत नहीं। 2 वजह यह है कि इन कौमों ने मिसर से निकलते वक्त इसराईलियों को खाना खिलाने और पानी पिलाने से इनकार किया था। न सिर्फ यह बल्कि उन्होंने बिलाम को पैसे दिए थे ताकि वह इसराईली कौम पर लानत भेजे, अगरचे हमारे खुदा ने लानत को बरकत में तबदील किया। 3 जब हाजिरिन ने यह हुक्म सुना तो उन्होंने तमाम गैरयहदियों को जमात से खारिज कर दिया।

### रब के घर के इंतजाम की इसलाह

4 इस वाकिये से पहले रब के घर के गोदामों पर मुकर्रर इमाम इलियासिब ने अपने रिशतेदार त्बियाह 5 के लिए एक बड़ा कमरा खाली कर दिया था जिसमें पहले गल्ला की नजरें, बखुर और कुछ आलात रखे जाते थे। नीज, गल्ला, नई मै और जैतून के तेल का जो दसवाँ हिस्सा लावियों, गुल्कारों और दरबानों के लिए मुकर्रर था वह भी उस कमरे में रखा जाता था और साथ साथ इमामों के लिए मुकर्रर हिस्सा भी। 6 उस वक्त मै यरूशलम में नहीं था, क्योंकि बाबल के बादशाह अर्तखशस्ता की हुक्मत के 32वें साल में मै उसके दरबार में वापस आ गया था। कुछ देर बाद मै शहनशाह से इजाजत लेकर दुबारा यरूशलम के लिए रवाना हुआ। 7 वहाँ पहुँचकर मुझे पता चला कि इलियासिब ने कितनी बुरी हरकत की है, कि उसने अपने रिशतेदार त्बियाह के लिए रब के घर के सहन में कमरा खाली कर दिया है। 8 यह बात मुझे निहायत ही बुरी लगी, और मैंने त्बियाह का सारा सामान कमरे से निकालकर फेंक दिया। 9 फिर मैंने हुक्म दिया कि कमरे नए सिरे से पाक-साफ कर दिए जाएँ। जब ऐसा हुआ तो मैंने रब के घर का सामान, गल्ला की नजरें और बखुर दुबारा वहाँ रख दिया।

10 मुझे यह भी मालूम हुआ कि लावी और गुल्कार रब के घर में अपनी खिदमत को छोड़कर अपने खेतों में काम कर रहे हैं। वजह यह थी कि उन्हें वह हिस्सा नहीं मिल रहा था जो उनका हक था। 11 तब मैंने जिम्मादार अफसरों को झिडककर कहा, “आप अल्लाह के घर का इंतजाम इतनी बेपरवाई से क्यों चला रहे हैं?” मैंने लावियों और गुल्कारों को वापस बुलाकर दुबारा उनकी जिम्मादारियों पर लगाया। 12 यह देखकर तमाम यहदाह गल्ला, नई मै और जैतून के तेल का दसवाँ हिस्सा गोदामों में लाने लगा। 13 गोदामों की निगरानी मैंने सलमियाह इमाम, सदेक मुंशी और फिदायाह लावी के सुपुर्द करके हनान बिन जक्कर बिन मतनियाह को उनका मददगार मुकर्रर किया, क्योंकि चारों को काबिले-एतमाद समझा जाता था। उन्हीं को इमामों और लावियों में उनके मुकर्रर हिस्से तकसीम करने की जिम्मादारी दी गई।

14 ऐ मेरे खुदा, इस काम के बाइस मुझे याद कर! वह सब कुछ न भूल जो मैंने वफादारी से अपने खुदा के घर और उसके इंतजाम के लिए किया है।

### सबत की बहाली

15 उस वक्त मैंने यहदाह में कुछ लोगों को देखा जो सबत के दिन अंगूर का रस निचोड़कर मै बना रहे थे। दूसरे गल्ला लाकर मै, अंगूर, अंजीर और दीगर मुख्तलिफ क्रिस्म की पैदावार के साथ गधों पर लाद रहे और यरूशलम पहुँचा रहे थे। यह सब कुछ सबत के दिन हो रहा था। मैंने उन्हें तंबीह की कि सबत के दिन खुराक फरोख्त न करना। 16 सुर के कुछ आदमी भी जो यरूशलम में रहते थे सबत के दिन मछली और दीगर कई चीजें यरूशलम में लाकर यहदाह के लोगों को बेचेते थे। 17 यह देखकर मैंने यहदाह के शुरफा को डॉक्टर कहा, “यह कितनी बुरी बात है! आप तो सबत के दिन की बेहुरमती कर रहे हैं। 18 जब आपके बापदादा ने ऐसा किया तो अल्लाह यह सारी आफत हम पर और इस शहर पर लाया। अब आप सबत के दिन की बेहुरमती करने से अल्लाह का इसराईल पर गज़ब मज्जीद बढ़ा रहे हैं।”

19 मैंने हुक्म दिया कि जुमे को यस्शलम के दरवाजे शाम के उस वक़्त बंद किए जाएँ जब दरवाजे सायों में डूब जाएँ, और कि वह सबत के पूरे दिन बंद रहें। सबत के इख़िताम तक उन्हें खोलने की इजाज़त नहीं थी। मैंने अपने कुछ लोगों को दरवाज़ों पर खड़ा भी किया ताकि कोई भी अपना सामान सबत के दिन शहर में न लाए। 20 यह देखकर ताजिरों और बेचनेवालों ने कई मरतबा सबत की रात शहर से बाहर गुज़ारी और वहाँ अपना माल बेचने की कोशिश की। 21 तब मैंने उन्हें तबीह की, “आप सबत की रात क्यों फ़र्सील के पास गुज़ारते हैं? अगर आप दुबारा ऐसा करें तो आपको हवालाए-पुलिस किया जाएगा।” उस वक़्त से वह सबत के दिन आने से बाज़ आए। 22 लावियों को मैंने हुक्म दिया कि अपने आपको पाक-साफ़ करके शहर के दरवाज़ों की पहरादारी करें ताकि अब से सबत का दिन मख़सूसो-मुक़द्दस रहे।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे इस नेकी के बाइस याद करके अपनी अज़ीम शफ़क़त के मुताबिक़ मुझ पर मेहरबानी कर।

### ग़ैरयहूदियों से रिश्ता बाँधना मना है

23 उस वक़्त मुझे यह भी मालूम हुआ कि बहुत-से यहूदी मर्दों की शादी अशदूद, अम्मोन और मोआब की औरतों से हुई है। 24 उनके आधे बच्चे सिर्फ़ अशदूद की ज़बान या कोई और ग़ैरमुल्की ज़बान बोल लेते थे। हमारी ज़बान से वह नावाक़िफ़ ही थे। 25 तब मैंने उन्हें झिड़का और उन पर लानत भेजी। बाज़ एक के बाल नोच नोचकर मैंने उनकी पिटाई की। मैंने उन्हें अल्लाह की कसम खिलाने पर मजबूर किया कि हम अपने बेटे-बेटियों की शादी ग़ैरमुल्कियों से नहीं कराएँगे। 26 मैंने कहा, “इसराईल के बादशाह सुलेमान को याद करें। ऐसी ही शादियों ने उसे गुनाह करने पर उकसाया। उस वक़्त उसके बराबर कोई बादशाह नहीं था। अल्लाह उसे प्यार करता था और उसे पूरे इसराईल का बादशाह बनाया। लेकिन उसे भी ग़ैरमुल्की बीवियों की तरफ़ से गुनाह करने पर उकसाया गया। 27 अब आपके बारे में भी यही कुछ सुनना पड़ता है! आपसे भी यही बड़ा गुनाह सरज़द हो रहा है। ग़ैरमुल्की औरतों से शादी करने से आप हमारे ख़ुदा से बेवफ़ा हो गए हैं।”

28 इमामे-आज़म इलियासिब के बेटे योयदा के एक बेटे की शादी संबल्लत हौस्नी की बेटी से हुई थी, इसलिए मैंने बेटे को यस्शलम से भगा दिया।

29 ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें याद कर, क्योंकि उन्होंने इमाम के ओहदे और इमामों और लावियों के अहद की बेहुरमती की है।

30 चुनौचे मैंने इमामों और लावियों को हर ग़ैरमुल्की चीज़ से पाक-साफ़ करके उन्हें उनकी खिदमत और मुख्तलिफ़ ज़िम्मादारियों के लिए हिदायात दी।

31 नीज़, मैंने ध्यान दिया कि फ़सल की पहली पैदावार और कुरबानियों को जलाने की लकड़ी वक़्त पर रब के घर में पहुँचाई जाए।

ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे याद करके मुझ पर मेहरबानी कर!।

## आस्तर

अखस्वेस्स जशन मनाता है

1 अखस्वेस्स बादशाह की सलतनत भारत से लेकर एशोपिया तक 127 सूबों पर मुश्तमिल थी। 2 जिन वाकियात का जिक्क है वह उस वकत हुए जब वह सोसन शहर के किले से हुक्मत करता था। 3 अपनी हुक्मत के तीसरे साल में उसने अपने तमाम बुजुर्गों और अफसरों की जियाफत की। फारस और मादी के फौजी अफसर और सूबों के शुरफा और रईस सब शरीक हुए। 4 शहनशाह ने पूरे 180 दिन तक अपनी सलतनत की जबरदस्त दौलत और अपनी कुव्वत की शानो-शौकत का मुजाहरा किया।

5 इसके बाद उसने सोसन के किले में रहनेवाले तमाम लोगों की छोटे से लेकर बड़े तक जियाफत की। यह जशन सात दिन तक शाही बाग के सहन में मनाया गया। 6 मरमर \* के सत्नों के दरमियान कतान के सफेद और किरमिजी रंग के क्रीमती परदे लटकाए गए थे, और वह सफेद और अरगवानी रंग की डोरियों के जरीए सत्नों में लगे चाँदी के छल्लों के साथ बँधे हुए थे। मेहमानों के लिए सोने और चाँदी के सोफे पच्चीकारी के ऐसे फर्श पर रखे हुए थे जिसमें मरमर के अलावा मज्जिद तीन क्रीमती पत्थर इस्तेमाल हुए थे। 7 मै सोने के प्यालों में पिलाई गई। हर प्याला फरक और लासानी था, और बादशाह की फ़ैयाजी के मुताबिक शाही मै की कसरत थी। 8 हर कोई जितनी जी चाहे पी सकता था, क्योंकि बादशाह ने हुक्म दिया था कि साक़ी मेहमानों की हर खाहिश पूरी करें।

वशती मलिका की बरतरफ़ी

9 इस दौरान वशती मलिका ने महल के अंदर खवातीन की जियाफत की। 10 सातवें दिन जब बादशाह का दिल मै पी पीकर बहल गया था तो उसने उन सात खवाजासराओं को बुलाया जो खास उस की खिदमत करते थे। उनके नाम महमान, बिज्जता, खरबुना, बिगता, अबगता, जितार और कर्कस थे। 11 उसने हुक्म दिया, “वशती मलिका को शाही ताज पहनाकर मेरे हुज़ूर ले आओ ताकि शुरफा और बाक़ी मेहमानों को उस की खबसूरती मालूम हो जाए।” क्योंकि वशती निहायत खबसूरत थी। 12 लेकिन जब खवाजासरा मलिका के पास गए तो उसने आने से इनकार कर दिया।

यह सुनकर बादशाह आग-बग़ला हो गया 13 और दानाओं से बात की जो औकात के आलिम थे, क्योंकि दस्तूर यह था कि बादशाह कानूनी मामलों में उलमा से मशवरा करे। 14 आलिमों के नाम कारशीना, सितार, अदमाता, तरसीस, मरस, मरसिना और मम्कान थे। फारस और मादी के यह सात शुरफा आजादी से बादशाह के हुज़ूर आ सकते थे और सलतनत में सबसे आला ओहदा रखते थे।

15 अखस्वेस्स ने पूछा, “कानून के लिहाज़ से वशती मलिका के साथ क्या सुल्क किया जाए? क्योंकि उसने खवाजासराओं के हाथ भेजे हुए शाही हुक्म को नहीं माना।”

16 मम्कान ने बादशाह और दीगर शुरफा की मौजूदगी में जवाब दिया, “वशती मलिका ने इससे न सिर्फ़ बादशाह का बल्कि उसके तमाम शुरफा और सलतनत के तमाम सूबों में रहनेवाली कौमों का भी गुनाह किया है। 17 क्योंकि जो कुछ उसने किया है वह तमाम खवातीन को मालूम हो जाएगा। फिर वह अपने शौहरों को हकीर जानकर कहेंगी, ‘गो बादशाह ने वशती मलिका को अपने हुज़ूर आने का हुक्म दिया तो भी उसने उसके हुज़ूर आने से इनकार किया।’ 18 आज ही फारस और मादी के शुरफा की बीवियाँ मलिका की यह बात सुनकर अपने शौहरों से ऐसा ही सुल्क करेंगी। तब हम जिल्लत और गुस्से के जाल में उलझ जाएँगे। 19 अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो वह एलान करें कि वशती मलिका को फिर कभी अखस्वेस्स बादशाह के हुज़ूर आने की इजाज़त नहीं। और लाजिम है कि यह एलान फारस और मादी के कवानीन में दर्ज किया जाए ताकि उसे मनसूख न किया जा सके। फिर बादशाह किसी और को मलिका का ओहदा दे, ऐसी औरत को जो ज्यादा लायक हो। 20 जब एलान पूरी सलतनत में किया जाएगा तो तमाम औरतें अपने शौहरों की इज्जत करेंगी, खाह वह छोटे हों या बड़े।”

21 यह बात बादशाह और उसके शुरफा को पसंद आई। मम्कान के मशवरे के मुताबिक 22 अखस्वेस्स ने सलतनत के तमाम सूबों में खत भेजे। हर सूबे को उसके अपने तर्जे-तहरिर में और हर कौम को उस की अपनी ज़बान में खत मिल गया कि हर मर्द अपने घर का सरपरस्त है और कि हर खानदान में शौहर की ज़बान बोली जाए।

## 2

नई मलिका की तलाश

\* 1:6 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : सगे-जर्हाहत, alabaster।

1 बाद में जब बादशाह का गुस्सा ठंडा हो गया तो मलिका उसे दुबारा याद आने लगी। जो कुछ वशती ने किया था और जो फैसला उसके बारे में हुआ था वह भी उसके जहन में घूमता रहा। 2 फिर उसके मुलाज़िमों ने खयाल पेश किया, “क्यों न पूरी सलतनत में शहनशाह के लिए खबसूरत कुँवारियाँ तलाश की जाएँ? 3 बादशाह अपनी सलतनत के हर सुबे में अफसर मुकर्रर करें जो यह खबसूरत कुँवारियाँ चुनकर सोसन के किले के जनानखाने में लाएँ। उन्हें जनानखाने के इंचारज हैजा ख्वाजासरा की निगरानी में दे दिया जाए और उनकी खबसूरती बढ़ाने के लिए रंग निखारने का हर जरूरी तरीका इस्तेमाल किया जाए। 4 फिर जो लडकी बादशाह को सबसे ज़्यादा पसंद आए वह वशती की जगह मलिका बन जाए।”

यह मनसूबा बादशाह को अच्छा लगा, और उसने ऐसा ही किया।

5 उस वक़्त सोसन के किले में बिनयमीन के कबीले का एक यहूदी रहता था जिसका नाम मर्दकी बिन याईर बिन सिमई बिन कीस था। 6 मर्दकी का खानदान उन इसराइलियों में शामिल था जिनको बाबल का बादशाह नबुकदन्जज़र यहूदाह के बादशाह यहयाकीन \* के साथ जिलावतन करके अपने साथ ले गया था। 7 मर्दकी के चचा की एक निहायत खबसूरत बेटी बनाम हदस्साह थी जो आस्तर भी कहलाती थी। उसके वालिदिन के मरने पर मर्दकी ने उसे लेकर अपनी बेटी की हैसियत से पाल लिया था।

8 जब बादशाह का हुकम सादिर हुआ तो बहुत-सी लडकियों को सोसन के किले में लाकर जनानखाने के इंचारज हैजा के सुपुर्द कर दिया गया। आस्तर भी उन लडकियों में शामिल थी। 9 वह हैजा को पसंद आई बल्कि उसे उस की खास मेहरबानी हासिल हुई। ख्वाजासरा ने जल्दी जल्दी बनाव-सिंगार का सिलसिला शुरू किया, खाने-पीने का मुनासिब इंतज़ाम करवाया और शाही महल की सात चुनीदा नौकरानियाँ आस्तर के हवाले कर दीं। रिहाइश के लिए आस्तर और उस की लडकियों को जनानखाने के सबसे अच्छे कमरे दिए गए।

10 आस्तर ने किसी को नहीं बताया था कि मैं यहूदी औरत हूँ, क्योंकि मर्दकी ने उसे हुकम दिया था कि इसके बारे में खामोश रहे। 11 हर दिन मर्दकी जनानखाने के सहन से गुज़रता ताकि आस्तर के हाल का पता करे और यह कि उसके साथ क्या क्या हो रहा है।

12-13 अखस्वेस्स बादशाह से मिलने से पहले हर कुँवारी को बारह महीनों का मुकर्ररा बनाव-सिंगार करवाना था, छः माह मुर के तेल से और छः माह बलसान के तेल और रंग निखारने के दीगर तरीकों से। जब उसे बादशाह के महल में जाना था तो जनानखाने की जो भी चीज़ वह अपने साथ लेना चाहती उसे दी जाती।

14 शाम के वक़्त वह महल में जाती और अगले दिन उसे सुबह के वक़्त दूसरे जनानखाने में लाया जाता जहाँ बादशाह की दाशताएँ शाशजज़ ख्वाजासरा की निगरानी में रहती थीं। इसके बाद वह फिर कभी बादशाह के पास न आती। उसे सिर्फ़ इसी सूरत में वापस लाया जाता कि वह बादशाह को खास पसंद आती और वह उसका नाम लेकर उसे बुलाता।

### आस्तर मलिका बन जाती है

15 होते होते आस्तर बित अबीख़ैल की बारी आई (अबीख़ैल मर्दकी का चचा था, और मर्दकी ने उस की बेटी को लेपालक बना लिया था)। जब आस्तर से पूछा गया कि आप जनानखाने की क्या चीज़ें अपने साथ ले जाना चाहती हैं तो उसने सिर्फ़ वह कुछ ले लिया जो हैजा ख्वाजासरा ने उसके लिए चुना। और जिसने भी उसे देखा उसने उसे सराहा। 16 चुनौचे उसे बादशाह की हुकूमत के सातवें साल के दसवें महीने बनाम तेबत में अखस्वेस्स के पास महल में लाया गया।

17 बादशाह को आस्तर दूसरी लडकियों की निसबत कहीं ज़्यादा प्यारी लगी। दीगर तमाम कुँवारियों की निसबत उसे उस की खास कबूलियत और मेहरबानी हासिल हुई। चुनौचे बादशाह ने उसके सर पर ताज रखकर उसे वशती की जगह मलिका बना दिया। 18 इस मौके की खुशी में उसने आस्तर के एजाज़ में बड़ी ज़ियाफत की। तमाम शूरफा और अफसरों को दावत दी गई। साथ साथ सुबों में कुछ टैक्सों की मुआफ़ी का एलान किया गया और फैयाज़ी से तोहफ़े तक़सीम किए गए।

### मर्दकी बादशाह को बचाता है

19 जब कुँवारियों को एक बार फिर जमा किया गया तो मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े में बैठा था। † 20 आस्तर ने अब तक किसी को नहीं बताया था कि मैं यहूदी हूँ, क्योंकि मर्दकी ने यह बताने से मना किया था। पहले की तरह जब वह उसके घर में रहती थी अब भी आस्तर उस की हर बात मानती थी।

21 एक दिन जब मर्दकी शाही सहन के दरवाज़े में बैठा था तो दो ख्वाजासरा बनाम बिगतान और तरश गुस्से में आकर अखस्वेस्स को कत्ल करने की साज़िशें करने लगे। दोनों शाही कमरों के पहरेदार थे। 22 मर्दकी को पता चला तो उसने आस्तर को खबर पहुँचाई जिसने मर्दकी का नाम लेकर बादशाह को इत्ला दी। 23 मामले की तफ़तीश की गई तो दुस्त

\* 2:6 इब्रानी में यहयाकीन का मुरादिफ यकूनियाह मुस्तामल है।

मर्दकी शाही मुलाज़िम हो।

† 2:19 शाही सहन के दरवाज़े में शाही इंतज़ामिया थी, इसलिए ऐन मुमकिन है कि

साबित हुआ, और दोनों मुलाज़िमों को फाँसी दे दी गई। यह वाकिया बादशाह की मौजूदगी में उस किताब में दर्ज किया गया जिसमें रोज़ाना उस की हुकूमत के अहम वाकियात लिखे जाते थे।

### 3

हामान यहूदी क़ौम को हलाक करना चाहता है

1 कुछ देर के बाद बादशाह ने हामान बिन हम्मदाता अजाजी को सरफ़राज़ करके दरबार में सबसे आला ओहदा दिया। 2 जब कभी हामान आ मौजूद होता तो शाही सहन के दरवाज़े के तमाम शाही अफसर मुँह के बल झुक जाते, क्योंकि बादशाह ने ऐसा करने का हुकम दिया था। लेकिन मर्दकी ऐसा नहीं करता था।

3 यह देखकर दीगर शाही मुलाज़िमों ने उससे पूछा, “आप बादशाह के हुकम की खिलाफ़वरज़ी क्यों कर रहे हैं?”

4 उसने जवाब दिया, “मैं तो यहूदी हूँ।” रोज़ बरोज़ दूसरे उसे समझाते रहे, लेकिन वह न माना। आखिरकार उन्होंने हामान को इतला दी, क्योंकि वह देखना चाहते थे कि क्या वह मर्दकी का जवाब कबूल करेगा या नहीं।

5 जब हामान ने खुद देखा कि मर्दकी मेरे सामने मुँह के बल नहीं झुकता तो वह आग-बगला हो गया। 6 वह फ़ौरन मर्दकी को कत्ल करने के मनसूबे बनाने लगा। लेकिन यह उसके लिए काफ़ी नहीं था। चूँकि उसे बताया गया था कि मर्दकी यहूदी है इसलिए वह फ़ारसी सलतनत में रहनेवाले तमाम यहूदियों को हलाक करने का रास्ता ढूँडने लगा।

7 चुनौचे अखस्वेस्स बादशाह की हुकूमत के 12वें साल के पहले महीने नीसान \* में हामान की मौजूदगी में कुरा डाला गया। कुरा डालने से हामान यहूदियों को कत्ल करने की सबसे मुबारक तारीख़ मालूम करना चाहता था। (कुरा के लिए ‘पूर’ कहा जाता था।) इस तरीके से 12वें महीने अदार का 13वाँ दिन † निकला। 8 तब हामान ने बादशाह से बात की, “आपकी सलतनत के तमाम सबों में एक क़ौम बिखरी हुई है जो अपने आपको दीगर क़ौमों से अलग रखती है। उसके क़वानीन दूसरी तमाम क़ौमों से मुख़्तलिफ़ हैं, और उसके अफ़राद बादशाह के क़वानीन को नहीं मानते। मुनासिब नहीं कि बादशाह उन्हें बरदाश्त करें!”

9 अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो एलान करें कि इस क़ौम को हलाक कर दिया जाए। तब मैं शाही ख़ज़ानों में 3,35,000 किलोग्राम चाँदी जमा करा दूँगा।”

10 बादशाह ने अपनी उँगली से वह अंगूठी उतारी जो शाही मुहर लगाने के लिए इस्तेमाल होती थी और उसे यहूदियों के दुश्मन हामान बिन हम्मदाता अजाजी को देकर 11 कहा, “चाँदी और क़ौम आप ही की हैं, उसके साथ वह कुछ करें जो आपको अच्छा लगे।”

12 पहले महीने के 13वें दिन ‡ हामान ने शाही मुहरिरो को बुलाया ताकि वह उस की तमाम हिदायात के मुताबिक़ ख़त लिखकर बादशाह के गवर्नरों, सबों के दीगर हाकिमों और तमाम क़ौमों के बुज़ुर्गों को भेजे। यह ख़त हर क़ौम के अपने तर्जे-तहरि़र और अपनी ज़बान में कलमबंद हुए। उन्हें बादशाह का नाम लेकर लिखा गया, फिर शाही अंगूठी की मुहर उन पर लगाई गई। उनमें ज़ैल का एलान किया गया।

13 “एक ही दिन में तमाम यहूदियों को हलाक और पूरे तौर पर तबाह करना है, खाह छोटे हों या बड़े, बच्चे हों या औरतें। साथ साथ उनकी मिलकियत भी ज़ब्त कर ली जाए।” इसके लिए 12वें महीने अदार का 13वाँ दिन § मुकर्रर किया गया।

यह एलान तेज़रौ कासिदों के ज़रीए सलतनत के तमाम सबों में पहुँचाया गया 14 ताकि उस की तसदीक़ क़ानूनी तौर पर की जाए और तमाम क़ौमों मुकर्रर दिन के लिए तैयार हों।

15 बादशाह के हुकम पर कासिद चल निकले। यह एलान सोसन के किले में भी किया गया। फिर बादशाह और हामान खाने-पीने के लिए बैठ गए। लेकिन पूरे शहर में हलचल मच गई।

### 4

मर्दकी आस्तर से मदद माँगता है

1 जब मर्दकी को मालूम हुआ कि क्या हुआ है तो उसने रंजिश से अपने कपड़ों को फाड़कर टाट का लिबास पहन लिया और सर पर राख डाल ली। फिर वह निकलकर बुलंद आवाज़ से गिर्याओ-ज़ारी करते करते शहर में से गुज़रा। 2 वह शाही सहन के दरवाज़े तक पहुँच गया लेकिन दाखिल न हुआ, क्योंकि मातमी कपड़े पहनकर दाखिल होने की इजाज़त नहीं थी। 3 सलतनत के तमाम सबों में जहाँ जहाँ बादशाह का एलान पहुँचा वहाँ यहूदी ख़ूब मातम करने और रोज़ा रखकर रोने और गिर्याओ-ज़ारी करने लगे। बहुत-से लोग टाट का लिबास पहनकर राख में लेट गए।

\* 3:7 औरल ता मर्द। † 3:7 मार्च, 473 क म। ‡ 3:12 17 औरल। § 3:13 7 मार्च।

4 जब आस्तर की नौकरानियों और ख्वाजासराओं ने आकर उसे इतला दी तो वह सख्त घबरा गई। उसने मर्दकी को कपड़े भेज दिए जो वह अपने मातमी कपड़ों के बदले पहन ले, लेकिन उसने उन्हें कबूल न किया।<sup>5</sup> तब आस्तर ने हताक ख्वाजासरा को मर्दकी के पास भेजा ताकि वह मालूम करे कि क्या हुआ है, मर्दकी ऐसी हरकतें क्यों कर रहा है। (बादशाह ने हताक को आस्तर की खिदमत करने की जिम्मादारी दी थी।)

6 हताक शाही सहन के दरवाजे से निकलकर मर्दकी के पास आया जो अब तक साथवाले चौक में था।<sup>7</sup> मर्दकी ने उसे हामान का पूरा मनसूबा सुनाकर यह भी बताया कि हामान ने यहूदियों को हलाक करने के लिए शाही खजाने को कितने पैसे देने का वादा किया है।<sup>8</sup> इसके अलावा मर्दकी ने ख्वाजासरा को उस शाही फरमान की कापी दी जो सोसन में सादिर हुआ था और जिसमें यहूदियों को नेस्तो-नाबूद करने का एलान किया गया था। उसने गुज़ारिश की, “यह एलान आस्तर को दिखाकर उन्हें तमाम हालात से बा-खबर कर दें। उन्हें हिदायत दें कि बादशाह के हुज़ूर जाएँ और उससे इल्तिजा करके अपनी क्रौम की सिफारिश करें।”

9 हताक वापस आया और मर्दकी की बातों की खबर दी।<sup>10</sup> यह सुनकर आस्तर ने उसे दुबारा मर्दकी के पास भेजा ताकि उसे बताए, <sup>11</sup> “बादशाह के तमाम मुलाज़िम बल्कि सबों के तमाम बाशिदे जानते हैं कि जो भी बुलाए बग़ैर महल के अंदरूनी सहन में बादशाह के पास आए उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी, खाह वह मर्द हो या औरत। वह सिर्फ़ इस सूत में बच जाएगा कि बादशाह सोने का अपना असा उस की तरफ़ बढ़ाए। बात यह भी है कि बादशाह को मुझे बुलाए 30 दिन हो गए हैं।”

12 आस्तर का पैगाम सुनकर <sup>13</sup> मर्दकी ने जवाब वापस भेजा, “यह न सोचना कि मैं शाही महल में रहती हूँ, इसलिए गो दीगर तमाम यहूदी हलाक हो जाएँ मैं बच जाऊँगी। <sup>14</sup> अगर आप इस वक़्त ख़ामोश रहेंगी तो यहूदी कहीं और से रिहाई और छुटकारा पा लेंगे जबकि आप और आपके बाप का घराना हलाक हो जाएंगे। क्या पता है, शायद आप इसी लिए मलिका बन गई हैं कि ऐसे मौक़े पर यहूदियों की मदद करें।”

15 आस्तर ने मर्दकी को जवाब भेजा, <sup>16</sup> “ठीक है, फिर जाएँ और सोसन में रहनेवाले तमाम यहूदियों को जमा करें। मेरे लिए रोज़ा रखकर तीन दिन और तीन रात न कुछ खाएँ, न पिएँ। मैं भी अपनी नौकरानियों के साथ मिलकर रोज़ा रखूँगी। इसके बाद बादशाह के पास जाऊँगी, गो यह क़ानून के खिलाफ़ है। अगर मरना है तो मर ही जाऊँगी।”

17 तब मर्दकी चला गया और वैसा ही किया जैसा आस्तर ने उसे हिदायत की थी।

## 5

आस्तर बादशाह और हामान को दावत देती है

1 तीसरे दिन आस्तर मलिका अपना शाही लिबास पहने हुए महल के अंदरूनी सहन में दाखिल हुई। यह सहन उस हाल के सामने था जिसमें तख़्त लगा था। उस वक़्त बादशाह दरवाजे के मुकाबिल अपने तख़्त पर बैठा था।<sup>2</sup> आस्तर को सहन में खड़ी देखकर वह खुश हुआ और सोने के शाही असा को उस की तरफ़ बढ़ा दिया। तब आस्तर करीब आई और असा के सिरे को छू दिया।<sup>3</sup> बादशाह ने उससे पूछा, “आस्तर मलिका, क्या बात है? आप क्या चाहती हैं? मैं उसे देने के लिए तैयार हूँ, खाह सलतनत का आधा हिस्सा क्यों न हो।”

4 आस्तर ने जवाब दिया, “मैंने आज के लिए ज़ियाफ़्त की तैयारियाँ की हैं। अगर बादशाह को मंज़ूर हो तो वह हामान को अपने साथ लेकर उसमें शिरक़त करें।”

5 बादशाह ने अपने मुलाज़िमों को हुक्म दिया, “जल्दी करो! हामान को बुलाओ ताकि हम आस्तर की खाहिश पूरी कर सकें।” चुनौचे बादशाह और हामान आस्तर की तैयारशुदा ज़ियाफ़्त में शरीक हुए।<sup>6</sup> मैं पी पीकर बादशाह ने आस्तर से पूछा, “अब मुझे बताएँ, आप क्या चाहती हैं? वह आपको दिया जाएगा। अपनी दरखास्त पेश करें, क्योंकि मैं सलतनत के आधे हिस्से तक आपको देने के लिए तैयार हूँ।”

7 आस्तर ने जवाब दिया, “मेरी दरखास्त और आरज़ू यह है, <sup>8</sup> अगर बादशाह मुझसे खुश हों और उन्हें मेरी गुज़ारिश और दरखास्त पूरी करना मंज़ूर हो तो वह कल एक बार फिर हामान के साथ एक ज़ियाफ़्त में शिरक़त करें जो मैं आपके लिए तैयार करूँ। फिर मैं बादशाह को जवाब दूँगी।”

मर्दकी को क़त्ल करने के लिए हामान की तैयारियाँ

9 उस दिन जब हामान महल से निकला तो वह बड़ा खुश और ज़िंदादिल था। लेकिन फिर उस की नज़र मर्दकी पर पड़ गई जो शाही सहन के दरवाजे के पास बैठा था। न वह खड़ा हुआ, न हामान को देखकर काँप गया। हामान लाल-पीला हो गया, <sup>10</sup> लेकिन अपने आप पर काबू रखकर वह चला गया।

घर पहुँचकर वह अपने दोस्तों और अपनी बीवी ज़रिश को अपने पास बुलाकर <sup>11</sup> उनके सामने अपनी ज़बरदस्त दौलत और मुतअदिद बेटों पर शेख़ी मारने लगा। उसने उन्हें उन सारे मौक़ों की फ़हरिस्त सुनाई जिन पर बादशाह ने उस की इज़्जत

की थी और फखर किया कि बादशाह ने मुझे तमाम बाकी शूरफा और अफसरों से ज्यादा ऊँचा ओहदा दिया है।<sup>12</sup> हामान ने कहा, “न सिर्फ यह, बल्कि आज आस्तर मलिका ने ऐसी जियाफत की जिसमें बादशाह के अलावा सिर्फ मैं ही शरीक था। और मुझे मलिका से कल के लिए भी दावत मिली है कि बादशाह के साथ जियाफत में शिरकत करूँ।<sup>13</sup> लेकिन जब तक मर्दकी यहूदी शाही महल के सहन के दरवाजे पर बैठा नज़र आता है मैं चैन का सौँस नहीं लूँगा।”

14 उस की बीवी ज़रिश और बाक़ी अज़ीज़ों ने मशवरा दिया, “सूली बनवाएँ जिसकी ऊँचाई 75 फुट हो। फिर कल सुबह-सवेरे बादशाह के पास जाकर गुज़ारिश करें कि मर्दकी को उससे लटकाया जाए। इसके बाद आप तसल्ली से बादशाह के साथ जाकर जियाफत के मजे ले सकते हैं।” यह मनसूबा हामान को अच्छा लगा, और उसने सूली तैयार करवाई।

## 6

बादशाह मर्दकी की इज़ज़त करता है

1 उस रात बादशाह को नींद न आई, इसलिए उसने हुक्म दिया कि वह किताब लाई जाए जिसमें रोज़ाना हुक्मत के अहम वाक़ियात लिखे जाते हैं। उसमें से पढ़ा गया<sup>2</sup> तो इसका भी ज़िक्र हुआ कि मर्दकी ने किस तरह बादशाह को दोनों ख्वाजासराओं बिगताना और तरश के हाथ से बचाया था, कि जब शाही कमरों के इन पहरेदारों ने अख़स्वेस्स को क़त्ल करने की साज़िश की तो मर्दकी ने बादशाह को इतला दी थी।<sup>3</sup> जब यह वाक़िया पढ़ा गया तो बादशाह ने पूछा, “इसके एवज़ मर्दकी को क्या एज़ाज़ दिया गया?” मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “कुछ भी नहीं दिया गया।”

4 उसी लमहे हामान महल के बैरूनी सहन में आ पहुँचा था ताकि बादशाह से मर्दकी को उस सूली से लटकाने की इजाज़त माँगे जो उसने उसके लिए बनवाई थी। बादशाह ने सवाल किया, “बाहर सहन में कौन है?”<sup>5</sup> मुलाज़िमों ने जवाब दिया, “हामान है।” बादशाह ने हुक्म दिया, “उसे अंदर आने दो।”

6 हामान दाख़िल हुआ तो बादशाह ने उससे पूछा, “उस आदमी के लिए क्या किया जाए जिसकी बादशाह ख़ास इज़ज़त करना चाहे?” हामान ने सोचा, “वह मेरी ही बात कर रहा है! क्योंकि मेरी निसबत कौन है जिसकी बादशाह ज्यादा इज़ज़त करना चाहता है?”<sup>7</sup> चुनौते उसने जवाब दिया, “जिस आदमी की बादशाह ख़ास इज़ज़त करना चाहे<sup>8</sup> उसके लिए शाही लिबास चुना जाए जो बादशाह ख़ुद पहन चुके हों। एक घोड़ा भी लाया जाए जिसका सर शाही सजावट से सजा हुआ हो और जिस पर बादशाह ख़ुद सवार हो चुके हों।<sup>9</sup> यह लिबास और घोड़ा बादशाह के आलातरीन अफसरों में से एक के सुपुर्द किया जाए। वही उस शख्स को जिसकी बादशाह ख़ास इज़ज़त करना चाहते हैं कपड़े पहनाए और उसे घोड़े पर बिठाकर शहर के चौक में से गुज़ारे। साथ साथ वह उसके आगे आगे चलकर एलान करे, ‘यही उसके साथ किया जाता है जिसकी इज़ज़त बादशाह करना चाहते हैं।’”

10 अख़स्वेस्स ने हामान से कहा, “फिर जल्दी करें, मर्दकी यहूदी शाही सहन के दरवाजे के पास बैठा है। शाही लिबास और घोड़ा मँगवाकर उसके साथ ऐसा ही सलूक करें। जो भी करने का मशवरा आपने दिया वही कुछ करें, और ध्यान दें कि इसमें किसी भी चीज़ की कमी न हो!”

11 हामान को ऐसा ही करना पड़ा। शाही लिबास को चुनकर उसने उसे मर्दकी को पहना दिया। फिर उसे बादशाह के अपने घोड़े पर बिठाकर उसने उसे शहर के चौक में से गुज़ारा। साथ साथ वह उसके आगे आगे चलकर एलान करता रहा, “यही उस शख्स के साथ किया जाता है जिसकी इज़ज़त बादशाह करना चाहता है।”<sup>12</sup> फिर मर्दकी शाही सहन के दरवाजे के पास वापस आया।

लेकिन हामान उदास होकर जल्दी से अपने घर चला गया। शर्म के मारे उसने मुँह पर कपड़ा डाल लिया था।<sup>13</sup> उसने अपनी बीवी ज़रिश और अपने दोस्तों को सब कुछ सुनाया जो उसके साथ हुआ था। तब उसके मुश्रीरों और बीवी ने उससे कहा, “आपका बेड़ा गरक हो गया है, क्योंकि मर्दकी यहूदी है और आप उसके सामने शिकस्त खाने लगे हैं। आप उसका मुकाबला नहीं कर सकेंगे।”

14 वह अभी उससे बात कर ही रहे थे कि बादशाह के ख्वाजासरा पहुँच गए और उसे लेकर जल्दी जल्दी आस्तर के पास पहुँचाया। जियाफत तैयार थी।

## 7

हामान का सत्यानास

1 चुनौते बादशाह और हामान आस्तर मलिका की जियाफत में शरीक हुए।<sup>2</sup> मैं पिते वक़्त बादशाह ने पहले दिन की तरह अब भी पूछा, “आस्तर मलिका, अब बताएँ, आप क्या चाहती हैं? वह आपको दिया जाएगा। अपनी दरखास्त पेश करें, क्योंकि मैं सलतनत के आधे हिस्से तक आपको देने के लिए तैयार हूँ।”

3 मलिका ने जवाब दिया, “अगर बादशाह मुझसे खुश हों और उन्हें मेरी बात मंजूर हो तो मेरी गुजारिश पूरी करें कि मेरी और मेरी कौम की जान बची रहे। 4 क्योंकि मुझे और मेरी कौम को उनके हाथ बेच डाला गया है जो हमें तबाह और हलाक करके नेस्तो-नाबूद करना चाहते हैं। अगर हम बिककर गुलाम और लौडियाँ बन जाते तो मैं खामोश रहती। ऐसी कोई मुसीबत बादशाह को तंग करने के लिए काफ़ी न होती।”

5 यह सुनकर अखस्वेस्स ने आस्तर से सवाल किया, “कौन ऐसी हरकत करने की ज़रूरत करता है? वह कहाँ है?”

6 आस्तर ने जवाब दिया, “हमारा दुश्मन और मुखालिफ़ यह शरीर आदमी हामान है!”

तब हामान बादशाह और मलिका से दहशत खाने लगा। 7 बादशाह आग-बगूला होकर खड़ा हो गया और मैं को छोड़कर महल के बाग में टहलने लगा। हामान पीछे रहकर आस्तर से इल्लिजा करने लगा, “मेरी जान बचाएँ” क्योंकि उसे अंदाज़ा हो गया था कि बादशाह ने मुझे सज़ाए-मौत देने का फैसला कर लिया है।

8 जब बादशाह वापस आया तो क्या देखाता है कि हामान उस सोफ़े पर गिर गया है जिस पर आस्तर टेक लगाए बैठी है। बादशाह गरजा, “क्या यह आदमी यहीं महल में मेरे हुज़ूर मलिका की इसमतदारी करना चाहता है?” ज्योंही बादशाह ने यह अलफ़ाज़ कहे मुलाज़िमों ने हामान के मुँह पर कपड़ा डाल दिया। 9 बादशाह का ख्वाजासख़र बूनाह बोल उठा, “हामान ने अपने घर के करीब सूली तैयार करवाई है जिसकी ऊँचाई 75 फुट है। वह मर्दकी के लिए बनवाई गई है, उस शख्स के लिए जिसने बादशाह की जान बचाई।” बादशाह ने हुक़म दिया, “हामान को उससे लटका दो।”

10 चुनौचे हामान को उसी सूली से लटका दिया गया जो उसने मर्दकी के लिए बनवाई थी। तब बादशाह का गुस्सा ठंडा हो गया।

## 8

### अखस्वेस्स यहूदियों की मदद करता है

1 उसी दिन अखस्वेस्स ने आस्तर मलिका को यहूदियों के दुश्मन हामान का घर दे दिया। फिर मर्दकी को बादशाह के सामने लाया गया, क्योंकि आस्तर ने उसे बता दिया था कि वह मेरा रिश्तेदार है। 2 बादशाह ने अपनी उँगली से वह अंगूठी उतारी जो मुहर लगाने के लिए इस्तेमाल होती थी और जिसे उसने हामान से वापस ले लिया था। अब उसने उसे मर्दकी के हवाले कर दिया। उस वक़्त आस्तर ने उसे हामान की मिलकियत का निगरान भी बना दिया।

3 एक बार फिर आस्तर बादशाह के सामने गिर गई और रो रोकर इलतमास करने लगी, “जो शरीर मनसूबा हामान अजाजी ने यहूदियों के खिलाफ़ बाँध लिया है उसे रोक दें।” 4 बादशाह ने सोने का अपना असा आस्तर की तरफ़ बढ़ाया, तो वह उठकर उसके सामने खड़ी हो गई। 5 उसने कहा, “अगर बादशाह को बात अच्छी और मुनासिब लगे, अगर मुझे उनकी मेहरबानी हासिल हो और वह मुझसे खुश हों तो वह हामान बिन हम्मदाता अजाजी के उस फ़रमान को मनसूख़ करें जिसके मुताबिक़ सलतनत के तमाम सबों में रहनेवाले यहूदियों को हलाक करना है। 6 अगर मेरी कौम और नसल मुसीबत में फँसकर हलाक हो जाए तो मैं यह किस तरह बरदाश्त करूँगी?”

7 तब अखस्वेस्स ने आस्तर और मर्दकी यहूदी से कहा, “मैंने आस्तर को हामान का घर दे दिया। उसे खुद मैंने यहूदियों पर हमला करने की वजह से फाँसी दी है। 8 लेकिन जो भी फ़रमान बादशाह के नाम में सादिर हुआ है और जिस पर उस की अंगूठी की मुहर लगी है उसे मनसूख़ नहीं किया जा सकता। लेकिन आप एक और काम कर सकते हैं। मेरे नाम में एक और फ़रमान जारी करें जिस पर मेरी मुहर लगी हो। उसे अपनी तसल्लती के मुताबिक़ यों लिखें कि यहूदी महफूज़ हो जाएँ।”

9 उसी वक़्त बादशाह के मुहरि़र बुलाए गए। तीसरे महीने सीवान का 23वाँ दिन \* था। उन्होंने मर्दकी की तमाम हिदायात के मुताबिक़ फ़रमान लिख दिया जिसे यहूदियों और तमाम 127 सबों के गवर्नरों, हाकिमों और रईसों को भेजना था। भारत से लेकर एथोपिया तक वह फ़रमान हर सबू के अपने तर्ज़े-तहरीर और हर कौम की अपनी ज़बान में क़लमबंद था। यहूदी कौम को भी उसके अपने तर्ज़े-तहरीर और उस की अपनी ज़बान में फ़रमान मिल गया। 10 मर्दकी ने यह फ़रमान बादशाह के नाम में लिखकर उस पर शाही मुहर लगाई। फिर उसने उसे शाही डाक के तेज़रफ़तार घोड़ों पर सवार कासिदों के हवाले कर दिया। फ़रमान में लिखा था,

11 “बादशाह हर शहर के यहूदियों को अपने दिफ़ा के लिए जमा होने की इजाज़त देते हैं। अगर मुख़लिफ़ कौमों और सबों के दुश्मन उन पर हमला करें तो यहूदियों को उन्हें बाल-बच्चों समेत तबाह करने और हलाक करके नेस्तो-नाबूद करने की इजाज़त है। नीज़, वह उनकी मिलकियत पर कब्ज़ा कर सकते हैं। 12 एक ही दिन यानी 12वें महीने अदार के 13वें दिन † यहूदियों को बादशाह के तमाम सबों में यह कुछ करने की इजाज़त है।”

\* 8:9 25 जून † 8:12 7 मार्च।



13 हर सबे में फरमान की कानूनी तसदीक करनी थी और हर कौम को इसकी खबर पहुँचानी थी ताकि मुकर्ररा दिन यहदी अपने दुश्मनों से इंतकाम लेने के लिए तैयार हों। 14 बादशाह के हुक्म पर तेजरी कासिद शाही डाक के बेहतरीन घोड़ों पर सवार होकर चल पड़े। फरमान का एलान सोसन के किले में भी हुआ।

15 मर्दकी किरमिजी और सफेद रंग का शाही लिबास, नफीस कतान और अरगवानी रंग की चादर और सर पर सोने का बड़ा ताज पहने हुए महल से निकला। तब सोसन के बाशिदे नारे लगा लगाकर खुशी मनाने लगे। 16 यहदियों के लिए आबो-ताब, खुशीओ-शादमानी और इज्जतो-जलाल का जमाना शुरू हुआ। 17 हर सबे और हर शहर में जहाँ भी बादशाह का नया फरमान पहुँच गया, वहाँ यहदियों ने खुशी के नारे लगा लगाकर एक दूसरे की जियाफत की और जशन मनाया। उस वक्त दूसरी कौमों के बहुत-से लोग यहदी बन गए, क्योंकि उन पर यहदियों का खौफ छा गया था।

## 9

### यहदी बदला लेते हैं

1 फिर 12वें महीने अदार का 13वाँ दिन \* आ गया जब बादशाह के फरमान पर अमल करना था। दुश्मनों ने उस दिन यहदियों पर गालिब आने की उम्मीद रखी थी, लेकिन अब इसके उलट हुआ, यहदी खुद उन पर गालिब आए जो उनसे नफरत रखते थे। 2 सलतनत के तमाम सबों में वह अपने अपने शहरों में जमा हुए ताकि उन पर हमला करें जो उन्हें नुकसान पहुँचाना चाहते थे। कोई उनका मुकाबला न कर सका, क्योंकि दीगर तमाम कौमों के लोग उनसे डर गए थे। 3 साथ साथ सबों के शरफा, गवर्नरों, हाकिमों और दीगर शाही अफसरों ने यहदियों की मदद की, क्योंकि मर्दकी का खौफ उन पर तारी हो गया था, 4 और दरबार में उसके ऊँचे ओहदे और उसके बढ़ते हुए असरो-रसख की खबर तमाम सबों में फैल गई थी।

5 उस दिन यहदियों ने अपने दुश्मनों को तलवार से मार डाला और हलाक करके नेस्तो-नाबूद कर दिया। जो भी उनसे नफरत रखता था उसके साथ उन्होंने जो जी चाहा सुलूक किया। 6 सोसन के किले में उन्होंने 500 आदमियों को मार डाला, 7-10 नीज यहदियों के दुश्मन हामान के 10 बेटों को भी। उनके नाम परशंदाता, दलफून, असपाता, पोरता, अदलियाह, अरीदाता, परमशता, अरीसी, अरिदी और वैजाता थे। लेकिन यहदियों ने उनका माल न लूटा।

11 उसी दिन बादशाह को इतला दी गई कि सोसन के किले में कितने अफराद हलाक हुए थे। 12 तब उसने आस्तर मलिका से कहा, “सिर्फ यहाँ सोसन के किले में यहदियों ने हामान के 10 बेटों के अलावा 500 आदमियों को मौत के घाट उतार दिया है। तो फिर उन्होंने दीगर सबों में क्या कुछ न किया होगा! अब मुझे बताएँ, आप मर्जीद क्या चाहती हैं? वह आपको दिया जाएगा। अपनी दरखास्त पेश करें, क्योंकि वह पूरी की जाएगी।” 13 आस्तर ने जवाब दिया, “अगर बादशाह को मंजूर हो तो सोसन के यहदियों को इजाजत दी जाए कि वह आज की तरह कल भी अपने दुश्मनों पर हमला करें। और हामान के 10 बेटों की लाशें सूली से लटकई जाएँ।”

14 बादशाह ने इजाजत दी तो सोसन में इसका एलान किया गया। तब हामान के 10 बेटों को सूली से लटका दिया गया, 15 और अगले दिन यानी महीने के 14वें दिन † शहर के यहदी दुबारा जमा हुए। इस बार उन्होंने 300 आदमियों को कत्ल किया। लेकिन उन्होंने किसी का माल न लूटा।

16-17 सलतनत के सबों के बाकी यहदी भी महीने के 13वें दिन ‡ अपने दिफा के लिए जमा हुए थे। उन्होंने 75,000 दुश्मनों को कत्ल किया लेकिन किसी का माल न लूटा था। अब वह दुबारा चैन का साँस लेकर आराम से जिंदगी गुज़ार सकते थे। अगले दिन उन्होंने एक दूसरे की जियाफत करके खुशी का बड़ा जशन मनाया। 18 सोसन के यहदियों ने महीने के 13वें और 14वें दिन जमा होकर अपने दुश्मनों पर हमला किया था, इसलिए उन्होंने 15वें दिन खुशी का बड़ा जशन मनाया। 19 यही वजह है कि देहात और खुले शहरों में रहनेवाले यहदी आज तक 12वें महीने के 14वें दिन § जशन मनाते हुए एक दूसरे की जियाफत करते और एक दूसरे को तोहफे देते हैं।

### इंदि-पूरीम की इन्बिदा

20 जो कुछ उस वक्त हुआ था उसे मर्दकी ने कलमबंद कर दिया। साथ साथ उसने फारसी सलतनत के करीबी और दूर-दराज के तमाम सबों में आबाद यहदियों को खत लिख दिए 21 जिनमें उसने एलान किया, “अब से सालाना अदार महीने के 14वें और 15वें दिन जशन मनाना है। 22 खुशी मनाते हुए एक दूसरे की जियाफत करना, एक दूसरे को तोहफे देना और गरीबों में खैरत तकसीम करना, क्योंकि इन दिनों के दौरान आपको अपने दुश्मनों से सुकून हासिल हुआ है, आपका दुख सुख में और आपका मातम शादमानी में बदल गया।”

\* 9:17 मार्च। † 9:15 8 मार्च। ‡ 9:16-17 7 मार्च। § 9:19 फरवरी ता मार्च।

23 मर्दकी की इन हिदायत के मुताबिक इन दो दिनों का जशन दस्त्र बन गया।

24-26 ईद का नाम 'प्रीम' पड़ गया, क्योंकि जब यहदियों का दुश्मन हामान बिन हम्मदाता अजाजी उन सबको हलाक करने का मनसूबा बाँध रहा था तो उसने यहदियों को मारने का सबसे मुबारक दिन मालूम करने के लिए कुरा बनाम पूर डाल दिया। जब अखस्वेस्स को सब कुछ मालूम हुआ तो उसने हुक्म दिया कि हामान को वह सज़ा दी जाए जिसकी तैयारियाँ उसने यहदियों के लिए की थीं। तब उसे उसके बेटों समेत फाँसी से लटकाया गया।

चूँकि यहदी इस तजरबे से गुजरे थे और मर्दकी ने हिदायत दी थी 27 इसलिए वह मुत्फिक हुए कि हम सालाना इसी वक्त यह दो दिन ऐन हिदायत के मुताबिक मनाएँगे। यह दस्त्र न सिर्फ़ हमारा फ़र्ज है, बल्कि हमारी औलाद और उन ग़ैरयहदियों का भी जो यहदी मज़हब में शरीक हो जाएंगे। 28 लाज़िम है कि जो कुछ हुआ है हर नसल और हर खानदान उसे याद करके मनाता रहे, खाह वह किसी भी सूबे या शहर में क्यों न हो। ज़स्री है कि यहदी प्रीम की ईद मनाने का दस्त्र कभी न भूलें, कि उस की याद उनकी औलाद में से कभी भी मिट न जाए।

29 मलिका आस्तर बित अबीख़ैल और मर्दकी यहदी ने पूरे इख़्तियार के साथ प्रीम की ईद के बारे में एक और खत लिख दिया ताकि उस की तसदीक हो जाए। 30 यह खत फ़ारसी सलतनत के 127 सूबों में आबाद तमाम यहदियों को भेजा गया। सलामती की दुआ और अपनी बफ़ादारी का इज़हार करने के बाद 31 मलिका और मर्दकी ने उन्हें दुबारा हिदायत की, "जिस तरह हमने फ़रमाया है, यह ईद लाज़िमन मुतैयिन औकात के ऐन मुताबिक़ मनानी है। इसे मनाने के लिए यों मुत्फिक़ हो जाएँ जिस तरह आपने अपने और अपनी औलाद के लिए रोज़ा रखने और मातम करने के दिन मुकर्रर किए हैं।" 32 अपने इस फ़रमान से आस्तर ने प्रीम की ईद और उसे मनाने के क़वायद की तसदीक़ की, और यह तारीख़ी किताब में दर्ज किया गया।

## 10

**मर्दकी अपनी क़ौम का सहारा बना रहता है**

1 बादशाह ने पूरी सलतनत के तमाम ममालिक पर साहिली इलाक़ों तक टैक्स लगाया। 2 उस की तमाम ज़बरदस्त कामयाबियों का बयान 'शाहाने-मादीओ-फ़ारस की तारीख' की किताब में किया गया है। वहाँ इसका भी पूरा जिक्र है कि उसने मर्दकी को किस ऊँचे ओहदे पर फ़ायज़ किया था। 3 मर्दकी बादशाह के बाद सलतनत का सबसे आला अफ़सर था। यहदियों में वह मुअज़ज़ था, और वह उस की बड़ी क़दर करते थे, क्योंकि वह अपनी क़ौम की बहबूदी का तालिब रहता और तमाम यहदियों के हक़ में बात करता था।

## अय्यूब

### अय्यूब की दीनदारी

1 मुल्के-ऊज में एक बेइलजाम आदमी रहता था जिसका नाम अय्यूब था। वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का खौफ मानता और हर बुराई से दूर रहता था।<sup>2</sup> उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं।<sup>3</sup> साथ साथ उसके बहुत माल-मवेशी थे : 7,000 भेड़-बकरियाँ, 3,000 ऊँट, बैलों की 500 जोड़ियाँ और 500 गधियाँ। उसके बेशुमार नौकर-नौकरानियाँ भी थी। गरज मशरिक के तमाम बाशिंदों में इस आदमी की हैसियत सबसे बड़ी थी।

4 उसके बेटों का दस्तूर था कि बारी बारी अपने घरों में जियाफत करें। इसके लिए वह अपनी तीन बहनों को भी अपने साथ खाने और पीने की दावत देते थे।<sup>5</sup> हर दफा जब जियाफत के दिन इखिताम तक पहुँचते तो अय्यूब अपने बच्चों को बुलाकर उन्हें पाक-साफ कर देता और सुबह-सवेरे उठकर हर एक के लिए भस्म होनेवाली एक एक कुरबानी पेश करता। क्योंकि वह कहता था, “हो सकता है मेरे बच्चों ने गुनाह करके दिल में अल्लाह पर लानत की हो।” चुनौचे अय्यूब हर जियाफत के बाद ऐसा ही करता था।

### अय्यूब के किरदार पर इलजाम

6 एक दिन फरिश्ते \* अपने आपको रब के हुज़ूर पेश करने आए। इबलीस भी उनके दरमियान मौजूद था।<sup>7</sup> रब ने इबलीस से पूछा, “तु कहीं से आया है?” इबलीस ने जवाब दिया, “मैं दुनिया में इधर उधर घुमता-फिरता रहा।”

8 रब बोला, “क्या तूने मेरे बंदे अय्यूब पर तवज्जुह दी? दुनिया में उस जैसा कोई और नहीं। क्योंकि वह बेइलजाम है, वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का खौफ मानता और हर बुराई से दूर रहता है।”

9 इबलीस ने रब को जवाब दिया, “बेशक, लेकिन क्या अय्यूब यों ही अल्लाह का खौफ मानता है? <sup>10</sup> तूने तो उस के, उसके घराने के और उस की तमाम मिलकियत के इर्दगिर्द हिफाजती बाड़ लगाई है। और जो कुछ उसके हाथ ने किया उस पर तूने बरकत दी, नतीजे में उस की भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल पूरे मुल्क में फैल गए हैं। <sup>11</sup> लेकिन वह क्या करेगा अगर तू अपना हाथ जरा बढ़ाकर सब कुछ तबाह करे जो उसे हासिल है। तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ पर लानत करेगा।”

12 रब ने इबलीस से कहा, “ठीक है, जो कुछ भी उसका है वह तेरे हाथ में है। लेकिन उसके बदन को हाथ न लगाना।” इबलीस रब के हुज़ूर से चला गया।

13 एक दिन अय्यूब के बेटे-बेटियाँ मामूल के मुताबिक जियाफत कर रहे थे। वह बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे। <sup>14</sup> अचानक एक कासिद अय्यूब के पास पहुँचकर कहने लगा, “बैल खेत में हल चला रहे थे और गधियाँ साथवाली ज़मीन पर चर रही थीं <sup>15</sup> कि सबा के लोगों ने हम पर हमला करके सब कुछ छीन लिया। उन्होंने तमाम मुलाजिमों को तलवार से मार डाला, सिर्फ मैं ही आपको यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”

16 वह अभी बात कर ही रहा था कि एक और कासिद पहुँचा जिसने इतला दी, “अल्लाह की आग ने आसमान से गिरकर आपकी तमाम भेड़-बकरियों और मुलाजिमों को भस्म कर दिया। सिर्फ मैं ही आपको यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”

17 वह अभी बात कर ही रहा था कि तीसरा कासिद पहुँचा। वह बोला, “बाबल के कसदियों ने तीन गुरोहों में तकसीम होकर हमारे ऊँटों पर हमला किया और सब कुछ छीन लिया। तमाम मुलाजिमों को उन्होंने तलवार से मार डाला, सिर्फ मैं ही आपको यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”

18 वह अभी बात कर ही रहा था कि चौथा कासिद पहुँचा। उसने कहा, “आपके बेटे-बेटियाँ अपने बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मै पी रहे थे <sup>19</sup> कि अचानक रेगिस्तान की जानिब से एक जोरदार आँधी आई जो घर के चारों कोनों से यों टकराई कि वह जवानों पर गिर पड़ा। सबके सब हलाक हो गए। सिर्फ मैं ही आपको यह बताने के लिए बच निकला हूँ।”

20 यह सब कुछ सुनकर अय्यूब उठा। अपना लिबास फाड़कर उसने अपने सर के बाल मुँडवाए। फिर उसने ज़मीन पर गिरकर औंधे मुँह रब को सिजदा किया। <sup>21</sup> वह बोला, “मैं नंगी हालत में माँ के पेट से निकला और नंगी हालत में कूच कर जाऊँगा। रब ने दिया, रब ने लिया, रब का नाम मुबारक हो!”

22 इस सारे मामले में अय्यूब ने न गुनाह किया, न अल्लाह के बारे में कुफ़र बका।

\* 1:6 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : अल्लाह के फ़रज़ंद।

## 2

## अथर्व पर बीमारी का हमला

1 एक दिन फ़रिश्ते \* दुबारा अपने आपको रब के हज़ूर पेश करने आए। इबलीस भी उनके दरमियान मौजूद था। 2 रब ने इबलीस से पूछा, “तू कहीं से आया है?” इबलीस ने जवाब दिया, “मैं दुनिया में इधर उधर घुमता-फिरता रहा।” 3 रब बोला, “क्या तूने मेरे बंदे अथर्व पर तवज्जुह दी? ज़मीन पर उस जैसा कोई और नहीं। वह बेइलज़ाम है, वह सीधी राह पर चलता, अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और हर बुराई से दूर रहता है। अभी तक वह अपने बेइलज़ाम किरदार पर कायम है हालाँकि तूने मुझे उसे बिलावजह तबाह करने पर उकसाया।”

4 इबलीस ने जवाब दिया, “खाल का बदला खाल ही होता है! इनसान अपनी जान को बचाने के लिए अपना सब कुछ दे देता है। 5 लेकिन वह क्या करेगा अगर तू अपना हाथ ज़रा बढ़ाकर उसका जिस्म † छू दे? तब वह तेरे मुँह पर ही तुझ पर लानत करेगा।”

6 रब ने इबलीस से कहा, “ठीक है, वह तेरे हाथ में है। लेकिन उस की जान को मत छेड़ना।” 7 इबलीस रब के हज़ूर से चला गया और अथर्व को सताने लगा। चाँद से लेकर तल्वे तक अथर्व के पूरे जिस्म पर बदतरीन किस्म के फोड़े निकल आए। 8 तब अथर्व राख में बैठ गया और ठीकरे से अपनी जिल्द को खुरचने लगा।

9 उस की बीवी बोली, “क्या तू अब तक अपने बेइलज़ाम किरदार पर कायम है? अल्लाह पर लानत करके दम छोड़ दे!” 10 लेकिन उसने जवाब दिया, “तू अहमक औरत की-सी बातें कर रही है। अल्लाह की तरफ से भलाई तो हम कबूल करते हैं, तो क्या मुनासिब नहीं कि उसके हाथ से मुसीबत भी कबूल करें?” इस सारे मामले में अथर्व ने अपने मुँह से गुनाह न किया।

## अथर्व के तीन दोस्त

11 अथर्व के तीन दोस्त थे। उनके नाम इलीफ़ज़ तेमानी, बिलदद सूखी और ज़फ़र नामाती थे। जब उन्हें इलला मिली कि अथर्व पर यह तमाम आफ़त आ गई है तो हर एक अपने घर से खाना हुआ। उन्होंने मिलकर फैसला किया कि इकट्ठे अफ़सोस करने और अथर्व को तसल्ली देने जाएंगे। 12 जब उन्होंने दूर से अपनी नज़र उठाकर अथर्व को देखा तो उस की इतनी बुरी हालत थी कि वह पहचाना नहीं जाता था। तब वह ज़ारो-कतार रोने लगा। अपने कपड़े फाड़कर उन्होंने अपने सरों पर खाक डाली। 13 फिर वह उसके साथ ज़मीन पर बैठ गए। सात दिन और सात रात वह इसी हालत में रहे। इस पूरे अरसे में उन्होंने अथर्व से एक भी बात न की, क्योंकि उन्होंने देखा कि वह शदीद दर्द का शिकार है।

## 3

## अथर्व की आहो-जाती

1 तब अथर्व बोल उठा और अपने जन्म दिन पर लानत करने लगा। 2 उसने कहा,

3 “वह दिन मिट जाए जब मैंने जन्म लिया, वह रात जिसने कहा, ‘पेट में लड़का पैदा हुआ है!’ 4 वह दिन अंधेरा ही अंधेरा हो जाए, एक किरण भी उसे रौशन न करे। अल्लाह भी जो बुलंदियों पर है उसका खयाल न करे। 5 तारीकी और घना अंधेरा उस पर क़ब्ज़ा करे, काले काले बादल उस पर छाए रहें, हों वह रौशनी से महरूम होकर सख़्त दहशतज़दा हो जाए। 6 घना अंधेरा उस रात को छीन ले जब मैं माँ के पेट में पैदा हुआ। उसे न साल, न किसी महीने के दिनों में श्मारा किया जाए। 7 वह रात बौझ रहे, उसमें ख़ुशी का नारा न लगाया जाए। 8 जो दिनों पर लानत भेजते और लिवियातान अज़दहे को तहरीक में लाने के काबिल होते हैं वही उस रात पर लानत करें। 9 उस रात के धूँधलके में टिमटिमानेवाले सितारे बुझ जाएँ, फ़जर का इंतज़ार करना बेफ़ायदा ही रहे बल्कि वह रात तुलू-सुबह की पलकें \* भी न देखे। 10 क्योंकि उसने मेरी माँ को मुझे जन्म देने से न रोका, वरना यह तमाम मुसीबत मेरी आँखों से छुपी रहती।

11 मैं पैदाइश के वक़्त क्यों मर न गया, माँ के पेट से निकलते वक़्त जान क्यों न दे दी? 12 माँ के घटनों ने मुझे ख़ुशआमदीद क्यों कहा, उस की छातियों ने मुझे दूध क्यों पिलाया? 13 अगर यह न होता तो इस वक़्त मैं सूकून से लेटा रहता, आराम से सोया होता। 14 मैं उन्ही के साथ होता जो पहले बादशाह और दुनिया के मुश्रीर थे, जिन्होंने खंडरात अज़ सरे-नौ तामीर किए। 15 मैं उनके साथ होता जो पहले हुक्मरान थे और अपने घरों को सोने-चाँदी से भर लेते थे। 16 मुझे ज़ाया हो जानेवाले बच्चे की तरह क्यों न ज़मीन में दबा दिया गया? मुझे उस बच्चे की तरह क्यों न दफनाया गया जिसने कभी रौशनी न देखी? 17 उस जगह बेदीन अपनी बेलगाम हरकतों से बाज़ आते और वह आराम करते हैं जो तगो-दौ करते करते

\* 2:1 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : अल्लाह के फ़रज़द।

† 2:5 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : गोशत-पोस्त और हफ़ियॉ।

\* 3:9 पलकों से मुराद पहली किरणें हैं।

थक गए थे। 18 वहाँ कैदी इतमीनान से रहते हैं, उन्हें उस जालिम की आवाज़ नहीं सुनी पड़ती जो उन्हें जीते-जी हॉकता रहा। 19 उस जगह छोटे और बड़े सब बराबर होते हैं, गुलाम अपने मालिक से आज़ाद रहता है।

20 अल्लाह मुसीबतजदों को रौशनी और शिकस्तादिलों को ज़िदगी क्यों अता करता है? 21 वह तो मौत के इंतज़ार में रहते हैं लेकिन बेफ़ायदा। वह खोद खोदकर उसे यों तलाश करते हैं जिस तरह किसी पोशीदा खजाने को। 22 अगर उन्हें कब्र नसीब हो तो वह बाग बाग होकर जशन मनाते हैं। 23 अल्लाह उसको ज़िदा क्यों रखता जिसकी नज़रों से रास्ता ओझल हो गया है और जिसके चारों तरफ़ उसने बाड़ लगाई है। 24 क्योंकि जब मुझे रोटी खानी है तो हाय हाय करता हूँ, मेरी आँहें पानी की तरह मुँह से फूट निकलती हैं। 25 जिस चीज़ से मैं डरता था वह मुझ पर आई, जिससे मैं खौफ़ खाता था उससे मेरा वास्ता पड़ा। 26 न मुझे इतमीनान हुआ, न सूकन या आराम बल्कि मुझ पर बेचैनी गालिब आई।”

## 4

इलीफ़ज़ का एतराज़ : इनसान अल्लाह के हुज़ूर रास्त नहीं ठहर सकता

1 यह कुछ सुनकर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब दिया,

2 “क्या तुझसे बात करने का कोई फ़ायदा है? तू तो यह बरदाशत नहीं कर सकता। लेकिन दूसरी तरफ़ कौन अपने अलफ़ाज़ रोक सकता है? 3 ज़रा सोच ले, तूने खुद बहुतों को तरबियत दी, कई लोगों के थकेमँदे हाथों को तकवियत दी है। 4 तेरे अलफ़ाज़ ने ठोकर खानेवाले को दुबारा खड़ा किया, डगमगाते हुए घुटने तूने मज़बूत किए। 5 लेकिन अब जब मुसीबत तुझ पर आ गई तो तू उसे बरदाशत नहीं कर सकता, अब जब खुद उस की ज़द में आ गया तो तेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। 6 क्या तेरा एतमाद इस पर मुनहसिर नहीं है कि तू अल्लाह का खौफ़ माने, तेरी उम्मीद इस पर नहीं कि तू बेइलज़ाम राहों पर चले?

7 सोच ले, क्या कभी कोई बेगुनाह हलाक हुआ है? हरगिज़ नहीं! जो सीधी राह पर चलते हैं वह कभी रूप-ज़मीन पर से मिट नहीं गए। 8 जहाँ तक मैंने देखा, जो नाइनसाफी का हल चलाए और नुकसान का बीज बोए वह इसकी फ़सल काटता है। 9 ऐसे लोग अल्लाह की एक फूँक से तबाह, उसके कहर के एक झोंके से हलाक हो जाते हैं। 10 शेरबबर की दहाड़ें खामोश हो गईं, जवान शेर के दाँत झड़ गए हैं। 11 शिकार न मिलने की वजह से शेर हलाक हो जाता और शेरनी के बच्चे परागंदा हो जाते हैं।

12 एक बार एक बात चोरी-छुपे मेरे पास पहुँची, उसके चंद अलफ़ाज़ मेरे कान तक पहुँच गए। 13 रात को ऐसी रोयाँ पेश आई जो उस वक़्त देखी जाती हैं जब इनसान गहरी नींद सोया होता है। इनसे मैं परेशानकुन खयालात में मुब्तला हुआ। 14 मुझ पर दहशत और थरथराहट गालिब आई, मेरी तमाम हड्डियाँ लरज़ उठीं। 15 फिर मेरे चेहरे के सामने से हवा का झोंका गुज़र गया और मेरे तमाम रोंगटे खड़े हो गए। 16 एक हस्ती मेरे सामने खड़ी हुई जिसे मैं पहचान न सका, एक शकल मेरी आँखों के सामने दिखाई दी। खामोशी थी, फिर एक आवाज़ ने फ़रमाया, 17 “क्या इनसान अल्लाह के हुज़ूर रास्तबाज़ ठहर सकता है, क्या इनसान अपने खालिक के सामने पाक-साफ़ ठहर सकता है?” 18 देख, अल्लाह अपने खादिमों पर भरोसा नहीं करता, अपने फ़रिशतों को वह अहमक ठहरता है। 19 तो फिर वह इनसान पर क्यों भरोसा रखे जो मिट्टी के घर में रहता, ऐसे मकान में जिसकी बुनियाद खाक पर ही रखी गई है। उसे पतंगे की तरह कुचला जाता है। 20 सुबह को वह ज़िदा है लेकिन शाम तक पाश पाश हो जाता, अबद तक हलाक हो जाता है, और कोई भी ध्यान नहीं देता। 21 उसके ख़ैमे के रस्से ढीले करो तो वह हिकमत हासिल किए बग़ैर इंतकाल कर जाता है।

## 5

अल्लाह की तादीब तसलीम कर

1 बेशक आवाज़ दे, लेकिन कौन जवाब देगा? कोई नहीं! मुक़द्दसीन में से तू किसकी तरफ़ रूज़ कर सकता है? 2 क्योंकि अहमक की रंजीदगी उसे मार डालती, सादालौह की सरगामी उसे मौत के घाट उतार देती है। 3 मैंने खुद एक अहमक को जड़ पकड़ते देखा, लेकिन मैंने फ़ौरन ही उसके घर पर लानत भेजी। 4 उसके फ़रज़ंद नजात से दूर रहते। उन्हें शहर के दरवाज़े में रौदा जाता है, और बचानेवाला कोई नहीं। 5 भूके उस की फ़सल खा जाते, कँटदार बाड़ों में महफूज़ माल भी छीन लेते हैं। प्यासे अफ़राद हॉपते हुए उस की दौलत की पीछे पड़ जाते हैं। 6 क्योंकि बुराई खाक से नहीं निकलती और दुख-दर्द मिट्टी से नहीं फूटता 7 बल्कि इनसान खुद इसका बाइस है, दुख-दर्द उस की विरासत में ही पाया जाता है। यह इतना यकीनी है जितना यह कि आग की चिंगारियाँ ऊपर की तरफ़ उड़ती हैं।

8 लेकिन अगर मैं तेरी जगह होता तो अल्लाह से दरियाफ़्त करता, उसे ही अपना मामला पेश करता। 9 वही इतने अज़ीम काम करता है कि कोई उनकी तह तक नहीं पहुँच सकता, इतने मोजिज़े कि कोई उन्हें गिन नहीं सकता। 10 वही रूप-ज़मीन को बारिश अता करता, खुले मैदान पर पानी बरसा देता है। 11 पस्तहालों को वह सरफ़राज़ करता और मातम करनेवालों

को उठाकर महफूज मकाम पर रख देता है।<sup>12</sup> वह चालाकों के मनसबे तोड़ देता है ताकि उनके हाथ नाकाम रहें।<sup>13</sup> वह दानिशमंदों को उनकी अपनी चालाकी के फंदे में फँसा देता है तो होशियारों की साजिशें अचानक ही खत्म हो जाती हैं।<sup>14</sup> दिन के वक़्त उन पर अंधेरा छा जाता, और दोपहर के वक़्त भी वह टटोल टटोलकर फिरते हैं।<sup>15</sup> अल्लाह ज़रूरतमंदों को उनके मुँह की तलवार और ज़बरदस्त के कब्ज़े से बचा लेता है।<sup>16</sup> यों पस्तहालों को उम्मीद दी जाती और नाइन्साफी का मुँह बंद किया जाता है।

<sup>17</sup> मुबारक है वह इनसान जिसकी मलामत अल्लाह करता है! चुनौचे कादिरे-मुतलक की तादीब को हकीर न जान।<sup>18</sup> क्योंकि वह ज़खमी करता लेकिन मरहम-पट्टी भी लगा देता है, वह ज़रब लगाता लेकिन अपने हाथों से शफा भी बख़्शता है।<sup>19</sup> वह तुझे छः मुसीबतों से छुड़ाएगा, और अगर इसके बाद भी कोई आए तो तुझे नुकसान नहीं पहुँचेगा।<sup>20</sup> अगर काल पड़े तो वह फ़िधा देकर तुझे मौत से बचाएगा, जंग में तुझे तलवार की ज़द में आने नहीं देगा।<sup>21</sup> तू ज़बान के कोड़ों से महफूज रहेगा, और जब तबाही आए तो डरने की ज़रूरत नहीं होगी।<sup>22</sup> तू तबाही और काल की हँसी उड़ाएगा, ज़मीन के वहशी जानवरों से ख़ौफ़ नहीं खाएगा।<sup>23</sup> क्योंकि तेरा खुले मैदान के पत्थरों के साथ अहद होगा, इसलिए उसके जंगली जानवर तेरे साथ सलामती से ज़िंदगी गुज़ारेंगे।<sup>24</sup> तू जान लेगा कि तेरा ख़ैमा महफूज है। जब तू अपने घर का मुआयना करे तो मालूम होगा कि कुछ गम नहीं हुआ।<sup>25</sup> तू देखेगा कि तेरी औलाद बढ़ती जाएगी, तेरे फ़रज़द ज़मीन पर घास की तरह फैलते जाएंगे।<sup>26</sup> तू वक़्त पर जमाशुदा पत्तों की तरह उम्ररसीदा होकर क़ब्र में उतरेगा।

<sup>27</sup> हमने तहकीक करके मालूम किया है कि ऐसा ही है। चुनौचे हमारी बात सुनकर उसे अपना ले!"

## 6

अय्यब का जवाब : साबित करो कि मुझसे क्या गलती हुई है

<sup>1</sup> तब अय्यब ने जवाब देकर कहा,

<sup>2</sup> "काश मेरी रंजीदगी का वज़न किया जा सके और मेरी मुसीबत तराजू में तोली जा सके!<sup>3</sup> क्योंकि वह समुंदर की रेत से ज़्यादा भारी हो गई है। इसी लिए मेरी बातें बेतुकी-सी लग रही हैं।<sup>4</sup> क्योंकि कादिरे-मुतलक के तीर मुझमें गड़ गए हैं, मेरी रूह उनका ज़हर पी रही है। हाँ, अल्लाह के हौलनाक हमले मेरे खिलाफ़ सफ़आरा है।<sup>5</sup> क्या जंगली गधा डीनचूँ डीनचूँ करता है जब उसे घास दस्तयाब हो? या क्या बैल डक़राता है जब उसे चारा हासिल हो? <sup>6</sup> क्या फीका खाना नमक के बग़ैर खाया जाता, या अंडे की सफेदी \* में जायका है? <sup>7</sup> ऐसी चीज़ को मैं छूता भी नहीं, ऐसी ख़राक से मुझे घिन ही आती है।

<sup>8</sup> काश मेरी गुज़ारिश पूरी हो जाए, अल्लाह मेरी आरजू पूरी करे!<sup>9</sup> काश वह मुझे कुचल देने के लिए तैयार हो जाए, वह अपना हाथ बढ़ाकर मुझे हलाक करे।<sup>10</sup> फिर मुझे कम अज़ कम तसल्ली होती बल्कि मैं मुस्तक़िल दर्द के मारे पेचो-ताब खाने के बावजूद ख़ुशी मनाता कि मैंने क़ुदूस ख़ुदा के फ़रमानों का इनकार नहीं किया।

<sup>11</sup> मेरी इतनी ताक़त नहीं कि मज़ीद इंतज़ार करूँ, मेरा क्या अच्छा अंजाम है कि सब्र करूँ? <sup>12</sup> क्या मैं पत्थरों जैसा ताक़तवर हूँ? क्या मेरा जिस्म पीतल जैसा मज़बूत है? <sup>13</sup> नहीं, मुझसे हर सहारा छीन लिया गया है, मेरे साथ ऐसा सुलूक हुआ है कि कामयाबी का इमकान ही नहीं रहा।

<sup>14</sup> जो अपने दोस्त पर डेहरबानी करने से इनकार करे वह अल्लाह का ख़ौफ़ तर्क करता है।<sup>15</sup> मेरे भाइयों ने बादी की उन नदियों जैसी बेवफ़ाई की है जो बरसात के मौसम में अपने किनारों से बाहर आ जाती हैं।<sup>16</sup> उस वक़्त वह बर्फ़ से भरकर गदली हो जाती हैं, <sup>17</sup> लेकिन उरूज तक पहुँचते ही वह सूख जाती, तपती गरमी में ओझल हो जाती हैं।<sup>18</sup> तब काफ़िले अपनी राहों से हट जाते हैं ताकि पानी मिल जाए, लेकिन बेफ़ायदा। वह रेगिस्तान में पहुँचकर तबाह हो जाते हैं।<sup>19</sup> तैमा के काफ़िले इस पानी की तलाश में रहते, सबा के सफ़र करनेवाले ताज़िर उस पर उम्मीद रखते हैं, <sup>20</sup> लेकिन बेसूद। जिस पर उन्होंने पतमाद किया वह उन्हें मायूस कर देता है। जब वहाँ पहुँचते हैं तो शरमिदा हो जाते हैं।

<sup>21</sup> तुम भी इतने ही बेकार साबित हुए हो। तुम हौलनाक बात देखकर दहशतज़दा हो गए हो।<sup>22</sup> क्या मैंने कहा, 'मुझे तोहफ़ा दे दो, अपनी दौलत में से मेरी ख़ातिर रिश्तव दो, <sup>23</sup> मुझे दुश्मन के हाथ से छुड़ाओ, फ़िधा देकर जालिम के कब्ज़े से बचाओ'?

<sup>24</sup> मुझे साफ़ हिदायत दो तो मैं मानकर ख़ामोश हो जाऊँगा। मुझे बताओ कि किस बात में मुझसे गलती हुई है।<sup>25</sup> सीधी राह की बातें कितनी तकलीफ़देह हो सकती हैं! लेकिन तुम्हारी मलामत से मुझे किस क्रिस्म की तरबियत हासिल होगी?<sup>26</sup> क्या तुम समझते हो कि ख़ाली अलफ़ाज़ मामले को हल करेंगे, गो तुम मायूसी में मुब्तला आदमी की बात नज़रंदाज़ करते हो? <sup>27</sup> क्या तुम यतीम के लिए भी कुरा डालते, अपने दोस्त के लिए भी सौदाबाज़ी करते हो?

\* 6:6 या ख़ल्मी का रसा।

28 लेकिन अब खुद फैसला करो, मुझे पर नज़र डालकर सोच लो। अल्लाह की कसम, मैं तुम्हारे स्वरूढ़ नहीं बोलता। 29 अपनी गलती तसलीम करो ताकि नाइनसाफी न हो। अपनी गलती मान लो, क्योंकि अब तक मैं हक पर हूँ। 30 क्या मेरी ज़बान झूट बोलती है? क्या मैं फ़रेबदेह बातें पहचान नहीं सकता?

## 7

अल्लाह मुझे क्यों नहीं छोड़ता?

1 इनसान दुनिया में सख्त खिदमत करने पर मजबूर होता है, जीते-जी वह मजदूर की-सी ज़िंदगी गुज़ारता है। 2 गुलाम की तरह वह शाम के साथे का आरज़ुमंद होता, मजदूर की तरह मजदूरी के इंतज़ार में रहता है। 3 मुझे भी बेमानी महीने और मुसीबत की रातें नसीब हुई हैं। 4 जब बिस्तर पर लेट जाता तो सोचता हूँ कि कब उठ सकता हूँ? लेकिन लगता है कि रात कभी खत्म नहीं होगी, और मैं फ़जर तक बेचैनी से करवटें बदलता रहता हूँ। 5 मेरे जिस्म की हर जगह कीड़े और खुरंड फैल गए हैं, मेरी सुकड़ी हुई जिल्द में पीप पड़ गई है। 6 मेरे दिन ज़ुल्हाहे की नाल \* से कहीं ज़्यादा तेज़ी से गुज़र गए हैं। वह अपने अंजाम तक पहुँच गए हैं, धागा खत्म हो गया है।

7 ऐ अल्लाह, खयाल रख कि मेरी ज़िंदगी दम-भर की ही है! मेरी आँखें आइंदा कभी खुशहाली नहीं देखेंगी। 8 जो मुझे इस वक़्त देखे वह आइंदा मुझे नहीं देखेगा। तू मेरी तरफ देखेगा, लेकिन मैं हूँगा नहीं। 9 जिस तरह बादल ओझल होकर खत्म हो जाता है उसी तरह पाताल में उतरनेवाला वापस नहीं आता। 10 वह दुबारा अपने घर वापस नहीं आएगा, और उसका मक़ाम उसे नहीं जानता।

11 चुनौचे मैं वह कुछ रोक नहीं सकता जो मेरे मुँह से निकलना चाहता है। मैं रंजीदा हालत में बात करूँगा, अपने दिल की तलखी का इज़हार करके आहो-ज़ारी करूँगा। 12 ऐ अल्लाह, क्या मैं समुंदरी या समुंदरी अज़दहा हूँ कि तूने मुझे नज़रबंद कर रखा है? 13 जब मैं कहता हूँ, 'मेरा बिस्तर मुझे तसल्ली दे, सोने से मेरा ग़म हलका हो जाए' 14 तो तू मुझे हौलनाक ख़ाबों से हिम्मत हारने देता, रोयाओ से मुझे दहशत खिलाता है। 15 मेरी इतनी बुरी हालत हो गई है कि सोचता हूँ, काश कोई मेरा गला घूँटकर मुझे मार डाले, काश मैं ज़िंदा न रहूँ बल्कि दम छोड़ूँ। 16 मैंने ज़िंदगी को रद्द कर दिया है, अब मैं ज़्यादा देर तक ज़िंदा नहीं रहूँगा। मुझे छोड़, क्योंकि मेरे दिन दम-भर के ही हैं।

17 इनसान क्या है कि तू उस की इतनी कदर करे, उस पर इतना ध्यान दे? 18 वह इतना अहम तो नहीं है कि तू हर सुबह उसका मुआयना करे, हर लमहा उस की जॉच-पड़ताल करे। 19 क्या तू मुझे तकने से कभी नहीं बाज़ आएगा? क्या तू मुझे इतना सुकून भी नहीं देगा कि पल-भर के लिए थूक निगलूँ? 20 ऐ इनसान के पहेरदार, अगर मुझसे गलती हुई भी तो इससे मैंने तेरा क्या नुक़सान किया? तूने मुझे अपने गज़ब का निशाना क्यों बनाया? मैं तेरे लिए बोझ क्यों बन गया हूँ? 21 तू मेरा जुर्म मुआफ़ क्यों नहीं करता, मेरा कूसूर दरगुज़र क्यों नहीं करता? क्योंकि जल्द ही मैं ख़ाक हो जाऊँगा। अगर तू मुझे तलाश भी करे तो नहीं मिलूँगा, क्योंकि मैं हूँगा नहीं।”

## 8

बिलदद का जवाब : अपने गुनाह से तौबा कर!

1 तब बिलदद सूखी ने जवाब देकर कहा,

2 “तू कब तक इस किस्म की बातें करेगा? कब तक तेरे मुँह से आँधी के झोंके निकलेंगे? 3 क्या अल्लाह इनसाफ़ का खून कर सकता, क्या कादिरे-मुतलक रास्ती को आगे पीछे कर सकता है? 4 तेरे बेटों ने उसका गुनाह किया है, इसलिए उसने उन्हें उनके ज़ुर्म के कब्जे में छोड़ दिया। 5 अब तेरे लिए लाज़िम है कि तू अल्लाह का तालिब हो और कादिरे-मुतलक से इत्तिजा करे, 6 कि तू पाक हो और सीधी राह पर चले। फिर वह अब भी तेरी खातिर जोश में आकर तेरी रास्तबाज़ी की सुकूनतगाह को बहाल करेगा। 7 तब तेरा मुस्तकबिल निहायत अज़ीम होगा, खाह तेरी इब्तिदाई हालत कितनी पस्त क्यों न हो।

8 गुज़रता नसल से ज़रा पूछ ले, उस पर ध्यान दे जो उनके बापदादा ने तहकीकात के बाद मालूम किया। 9 क्योंकि हम खुद कल ही पैदा हुए और कुछ नहीं जानते, ज़मीन पर हमारे दिन साथे जैसे आरिज़ी हैं। 10 लेकिन यह तुझे तालीम देकर बात बता सकते हैं, यह तुझे अपने दिल में जमाशुदा इल्म पेश कर सकते हैं। 11 क्या आबी नरसल वहाँ उगता है जहाँ दलदल नहीं? क्या सरकंडा वहाँ फलता-फूलता है जहाँ पानी नहीं? 12 उस की कौपलें अभी निकल रही हैं और उसे तोड़ा नहीं गया कि अगर पानी न मिले तो बाकी हरियाली से पहले ही सूख जाता है। 13 यह है उनका अंजाम जो अल्लाह को भूल जाते हैं, इसी तरह बेदीन की उम्मीद जाती रहती है। 14 जिस पर वह एतमाद करता है वह निहायत ही नाजुक है, जिस पर उसका

\* 7:6 यानी शटल।

भरोसा है वह मकड़ी के जाले जैसा कमजोर है। 15 जब वह जाले पर टेक लगाए तो खडा नहीं रहता, जब उसे पकड़ ले तो कायम नहीं रहता।

16 बेदीन धूप में शादाब बेल की मानिंद है। उस की कोपलें चारों तरफ फैल जाती, 17 उस की जड़ें पत्थर के ढेर पर छाकर उनमें टिक जाती हैं। 18 लेकिन अगर उसे उखाड़ा जाए तो जिस जगह पहले उग रही थी वह उसका इनकार करके कहेगी, 'मैंने तुझे कभी देखा भी नहीं।' 19 यह है उस की राह की नाम-निहाद खुशी! जहाँ पहले था वहाँ दीगर पौदे जमीन से फूट निकलेंगे।

20 यकीनन अल्लाह बेइलजाम आदमी को मुस्तरद नहीं करता, यकीनन वह शरीर आदमी के हाथ मज़बूत नहीं करता। 21 वह एक बार फिर तुझे ऐसी खुशी बख्शेगा कि तू हँस उठेगा और शादमानी के नारे लगाएगा। 22 जो तुझसे नफ़रत करते हैं वह शर्म से मुलब्स हो जाएंगे, और बेदीनों के ख़ैमे नेस्तो-नाबूद होंगे।”

## 9

अथर्व का जवाब : सालिस के बगैर मैं रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

1 अथर्व ने जवाब देकर कहा,

2 “मैं ख़ूब जानता हूँ कि तेरी बात दुस्तर है। लेकिन अल्लाह के हुज़ूर इनसान किस तरह रास्तबाज़ ठहर सकता है? 3 अगर वह अदालत में अल्लाह के साथ लड़ना चाहे तो उसके हजार सवालान पर एक का भी जवाब नहीं दे सकेगा। 4 अल्लाह का दिल दानिशमंद और उस की कुदरत अज़ीम है। कौन कभी उससे बहस-मुबाहसा करके कामयाब रहा है?

5 अल्लाह पहाड़ों को खिसका देता है, और उन्हें पता ही नहीं चलता। वह गुस्से में आकर उन्हें उलटा देता है। 6 वह जमीन को हिला देता है तो वह लरज़कर अपनी जगह से हट जाती है, उसके बुनियादी सतून काँप उठते हैं। 7 वह सूरज को हुक्म देता है तो तूलू नहीं होता, सितारों पर मुहर लगाता है तो उनकी चमक-दमक बंद हो जाती है।

8 अल्लाह ही आसमान को ख़ैमे की तरह तान देता, वही समुंदरी अज़दहे की पीठ को पीठों तले कुचल देता है। 9 वही दुब्बे-अकबर, जौजे, खोशाए-परवीन और जुनुबी सितारों के झुरमुटों का खालिक है। 10 वह इतने अज़ीम काम करता है कि कोई उनकी तह तक नहीं पहुँच सकता, इतने मोजिजे करता है कि कोई उन्हें गिन नहीं सकता। 11 जब वह मेरे सामने से गुज़रे तो मैं उसे नहीं देखता, जब वह मेरे करीब से फिरे तो मुझे मालूम नहीं होता। 12 अगर वह कुछ छीन ले तो कौन उसे रोकेगा? कौन उससे कहेगा, ‘तू क्या कर रहा है?’ 13 अल्लाह तो अपना ग़ज़ब नाज़िल करने से बाज़ नहीं आता। उसके रोब तले रहब अज़दहे के मददगार भी दबक गए।

14 तो फिर मैं किस तरह उसे जवाब दूँ, किस तरह उससे बात करने के मुनासिब अलफ़ाज़ चुन लूँ? 15 अगर मैं हक़ पर होता भी तो अपना दिफ़ान न कर सकता। इस मुख़ालिफ़ से मैं इल्लिजा करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकता। 16 अगर वह मेरी चीखों का जवाब देता भी तो मुझे यकीन न आता कि वह मेरी बात पर ध्यान देगा।

17 थोड़ी-सी गलती के जवाब में वह मुझे पाश पाश करता, बिलावजह मुझे बार बार ज़खमी करता है। 18 वह मुझे साँस भी नहीं लेने देता बल्कि कड़वे जहर से सेर कर देता है। 19 जहाँ ताक़त की बात है तो वही कवी है, जहाँ इनसाफ़ की बात है तो कौन उसे पेशी के लिए बुला सकता है? 20 गो मैं बेगुनाह हूँ तो भी मेरा अपना मुँह मुझे कुसूरवार ठहराएगा, गो बेइलजाम हूँ तो भी वह मुझे मुजरिम करार देगा।

21 जो कुछ भी हो, मैं बेइलजाम हूँ। मैं अपनी जान की परवा ही नहीं करता, अपनी ज़िंदगी हकीर जानता हूँ। 22 ख़ैर, एक ही बात है, इसलिए मैं कहता हूँ, ‘अल्लाह बेइलजाम और बेदीन दोनों को ही हलाक कर देता है।’ 23 जब कभी अचानक कोई आफ़त इनसान को मौत के घाट उतारे तो अल्लाह बेगुनाह की परेशानी पर हँसता है। 24 अगर कोई मुल्क बेदीन के हवाले किया जाए तो अल्लाह उसके काज़ियों की आँखें बंद कर देता है। अगर यह उस की तरफ से नहीं तो फिर किसकी तरफ से है?

25 मेरे दिन दौड़नेवाले आदमी से कहीं ज़्यादा तेज़ी से बीत गए, खुशी देखे बगैर भाग निकले हैं। 26 वह सरकंडे के बहरी जहाज़ों की तरह गुज़र गए हैं, उस उकाब की तरह जो अपने शिकार पर झपट्टा मारता है। 27 अगर मैं कहूँ, ‘आओ मैं अपनी आँहें भूल जाऊँ, अपने चेहरे की उदासी दूर करके खुशी का इज़हार करूँ’ 28 तो फिर भी मैं उन तमाम तकालीफ़ से डरता हूँ जो मुझे बरदाश्त करनी हैं। क्योंकि मैं जानता हूँ कि तू मुझे बेगुनाह नहीं ठहराता।

29 जो कुछ भी हो मुझे कुसूरवार ही करार दिया गया है, चुनौचे इसका क्या फ़ायदा कि मैं बेमानी तगो-दौ मैं मसफ़ रहूँ? 30 गो मैं साबुन से नहा लूँ और अपने हाथ सोडे \* से धो लूँ 31 ताहम तू मुझे गढे की कीचड़ में यों धँसे देता है कि मुझे अपने कपड़ों से धिन आती है।

\* 9:30 लफ़्ज़ी मतलब : कलियाब, लाई (lye)।



32 अल्लाह तो मुझे जैसा इनसान नहीं कि मैं जवाब में उससे कहूँ, 'आओ हम अदालत में जाकर एक दूसरे का मुकाबला करें।' 33 काश हमारे दरमियान सालिस हो जो हम दोनों पर हाथ रखे, 34 जो मेरी पीठ पर से अल्लाह का डंडा हटाए ताकि उसका खौफ मुझे दहशतजदा न करे। 35 तब मैं अल्लाह से खौफ खाए बगैर बोलता, क्योंकि फितरी तौर पर मैं ऐसा नहीं हूँ।

## 10

मुझे अपनी जान से घिन आती है

1 मुझे अपनी जान से घिन आती है। मैं आज़ादी से आहो-ज़ारी करूँगा, खुले तौर पर अपना दिली गम बयान करूँगा। 2 मैं अल्लाह से कहूँगा कि मुझे मुजरिम न ठहरा बल्कि बता कि तेरा मुझ पर क्या इलज़ाम है। 3 क्या तू जुल्म करके मुझे रड करने में खुशी महसूस करता है हालाँकि तेरे अपने ही हाथों ने मुझे बनाया? साथ साथ तू बेदीनों के मनसूबों पर अपनी मंजूरी का नूर चमकाता है। क्या यह तुझे अच्छा लगता है? 4 क्या तेरी आँखें इनसानी हैं? क्या तू सिर्फ़ इनसान की-सी नज़र से देखता है? 5 क्या तेरे दिन और साल फ़ानी इनसान जैसे महदूद हैं? हरगिज़ नहीं! 6 तो फिर क्या ज़रूरत है कि तू मेरे कुसूर की तलाश और मेरे गुनाह की तहकीक़ करता रहे? 7 तू तो जानता है कि मैं बेकुसूर हूँ और कि तेरे हाथ से कोई बचा नहीं सकता।

8 तेरे अपने हाथों ने मुझे तश्कील देकर बनाया। और अब तूने मुझकर मुझे तबाह कर दिया है। 9 ज़रा इसका खयाल रख कि तूने मुझे मिट्टी से बनाया। अब तू मुझे दुबारा खाक में तबदील कर रहा है। 10 तूने खूद मुझे दूध की तरह उंडेलकर पनीर की तरह जमने दिया। 11 तू ही ने मुझे जिल्द और गोशत-पोस्त से मुलब्वस किया, हड्डियों और नसों से तैयार किया। 12 तू ही ने मुझे ज़िंदगी और अपनी मेहरबानी से नवाज़ा, और तेरी देख-भाल ने मेरी रूह को महफूज़ रखा।

13 लेकिन एक बात तूने अपने दिल में छुपाए रखी, हौं मुझे तेरा इरादा मालूम हो गया है। 14 वह यह है कि 'अगर अय्यब गुनाह करे तो मैं उस की पहरादारी करूँगा। मैं उसे उसके कुसूर से बरी नहीं करूँगा।'

15 अगर मैं कुसूरवार हूँ तो मुझ पर अफ़सोस! और अगर मैं बेगुनाह भी हूँ ताहम मैं अपना सर उठाने की ज़रूरत नहीं करता, क्योंकि मैं शर्म खा खाकर सेर हो गया हूँ। मुझे खूब मुसीबत पिलाई गई है। 16 और अगर मैं खड़ा भी हो जाऊँ तो तू शेरबगर की तरह मेरा शिकार करता और मुझ पर दुबारा अपनी मौजिज़ाना कुदरत का इज़हार करता है। 17 तू मेरे ख़िलाफ़ नए गवाहों को खड़ा करता और मुझ पर अपने गज़ब में इज़ाफ़ा करता है, तेरे लशकर सफ़-दर-सफ़ मुझ पर हमला करते हैं। 18 तू मुझे मेरी माँ के पेट से क्यों निकाल लाया? बेहतर होता कि मैं उसी वक़्त मर जाता और किसी को नज़र न आता। 19 यों होता जैसा मैं कभी ज़िंदा ही न था, मुझे सीधा माँ के पेट से क़ब्र में पहुँचाया जाता। 20 क्या मेरे दिन थोड़े नहीं हैं? मुझे तनहा छोड़! मुझसे अपना मुँह फेर ले ताकि मैं चंद एक लमहों के लिए ख़ुश हो सकूँ, 21 क्योंकि जल्द ही मुझे कूच करके वहाँ जाना है जहाँ से कोई वापस नहीं आता, उस मुल्क में जिसमें तारीकी और घने साये रहते हैं। 22 वह मुल्क अंधेरा ही अंधेरा और काला ही काला है, उसमें घने साये और बेतरतीबी है। वहाँ रौशनी भी अंधेरा ही है।''

## 11

ज़फ़र का जवाब : तौबा कर

1 फिर ज़फ़र नामाती ने जवाब देकर कहा,

2 "क्या इन तमाम बातों का जवाब नहीं देना चाहिए? क्या यह आदमी अपनी खाली बातों की बिना पर ही रास्तबाज़ ठहरेगा? 3 क्या तेरी बेमानी बातें लोगों के मुँह यों बंद करेंगी कि तू आज़ादी से लान-तान करता जाए और कोई तुझे शरमिदा न कर सके? 4 अल्लाह से तू कहता है, 'मेरी तालीम पाक है, और तेरी नज़र में मैं पाक-साफ़ हूँ।'

5 काश अल्लाह खूद तेरे साथ हमकलाम हो, वह अपने हाँटों को खोलकर तुझसे बात करे! 6 काश वह तेरे लिए हिकमत के भेद खोले, क्योंकि वह इनसान की समझ के नज़दीक मौजिजे से है। तब तू जान लेता कि अल्लाह तेरे गुनाह का काफ़ी हिस्सा दरगुज़र कर रहा है।

7 क्या तू अल्लाह का राज़ खोल सकता है? क्या तू कादिर-मुतलक के कामिल इल्म तक पहुँच सकता है? 8 वह तो आसमान से बुलंद है, चुनौचे तू क्या कर सकता है? वह पाताल से गहरा है, चुनौचे तू क्या जान सकता है? 9 उस की लंबाई ज़मीन से बड़ी और चौड़ाई समुंद्र से ज्यादा है।

10 अगर वह कही से गुज़रकर किसी को गिरफ़्तार करे या अदालत में उसका हिसाब करे तो कौन उसे रोकेगा? 11 क्योंकि वह फ़रेबदेह आदमियों को जान लेता है, जब भी उसे बुराई नज़र आए तो वह उस पर खूब ध्यान देता है। 12 अक़्ल से खाली आदमी किस तरह समझ पा सकता है? यह उतना ही नामुमकिन है जितना यह कि जंगली गधे से इनसान पैदा हो।

13 ऐ अथर्व, अपना दिल पूरे ध्यान से अल्लाह की तरफ मायल कर और अपने हाथ उस की तरफ उठा! 14 अगर तेरे हाथ गुनाह में मूलव्वस हों तो उसे दूर कर और अपने खैमे में बुराई बसने न दे! 15 तब तू बेइलजाम हालत में अपना चेहरा उठा सकेगा, तू मजबूती से खड़ा रहेगा और डरेगा नहीं। 16 तू अपना दुख-दर्द भूल जाएगा, और वह सिर्फ गुजरे सैलाब की तरह याद रहेगा। 17 तेरी जिंदगी दोपहर की तरह चमकदार, तेरी तारीकी सुबह की मानिंद रौशन हो जाएगी। 18 चूंकि उम्मीद होगी इसलिए तू महफूज होगा और सलामती से लेट जाएगा। 19 तू आराम करेगा, और कोई तुझे दहशतजदा नहीं करेगा बल्कि बहुत लोग तेरी नजरे-इनायत हासिल करने की कोशिश करेंगे। 20 लेकिन बेदीनों की आँखें नाकाम हो जाएँगी, और वह बच नहीं सकेंगे। उनकी उम्मीद मायसकुन होगी।” \*

## 12

अथर्व का जवाब : मैं मजाक का निशाना बन गया हूँ

1 अथर्व ने जवाब देकर कहा,

2 “लगतता है कि तुम ही वाहिद दानिशमंद हो, कि हिकमत तुम्हारे साथ ही मर जाएगी। 3 लेकिन मुझे समझ है, इस नाते से मैं तुमसे अदना नहीं हूँ। वैसे भी कौन ऐसी बातें नहीं जानता? 4 मैं तो अपने दोस्तों के लिए मजाक का निशाना बन गया हूँ, मैं जिसकी दूआँ अल्लाह सुनता था। हाँ, मैं जो बेगुनाह और बेइलजाम हूँ दूसरों के लिए मजाक का निशाना बन गया हूँ! 5 जो सुकून से जिंदगी गुजारता है वह मुसीबतजदा को हकीर जानता है। वह कहता है, ‘आओ, हम उसे ठोकर मारें जिसके पाँव डगमगाने लगे हैं।’ 6 गारतगारों के खैमों में आरामो-सुकून है, और अल्लाह को तैश दिलानेवाले हिफाजत से रहते हैं, गो वह अल्लाह के हाथ में है।

7 ताहम तुम कहते हो कि जानवरों से पूछ ले तो वह तुझे सहीह बात सिखाएँगे। परिदों से पता कर तो वह तुझे दुस्त जवाब देंगे। 8 ज़मीन से बात कर तो वह तुझे तालीम देगी, बल्कि समुंदर की मछलियों भी तुझे इसका मफहम सुनाएँगी। 9 इनमें से एक भी नहीं जो न जानता हो कि रब के हाथ ने यह सब कुछ किया है। 10 उसी के हाथ में हर जानदार की जान, तमाग इनसानों का दम है। 11 कान तो अलफाज की यों जाँच-पडताल करता है जिस तरह ज़बान खानों में इम्तियाज करती है। 12 और हिकमत उनमें पाई जाती है जो उप्ररसीदा हैं, समझ मृतअधिद दिन गुजरने के बाद ही आती है।

13 हिकमत और कुदरत अल्लाह की है, वही मसलहत और समझ का मालिक है। 14 जो कुछ वह ढा दे वह दुबारा तामीर नहीं होगा, जिसे वह गिरिफ्तार करे उसे आज़ाद नहीं किया जाएगा। 15 जब वह पानी रोके तो काल पडता है, जब उसे खुला छोड़े तो वह मुल्क में तबाही मचा देता है।

16 उसके पास कुव्वत और दानाई है। भटकने और भटकानेवाला दोनों ही उसके हाथ में हैं। 17 मुशीरों को वह नंगे पाँव अपने साथ ले जाता है, काज़ियों को अहमक साबित करता है। 18 वह बादशाहों का पटका खोलकर उनकी कमरों में रस्सा बाँधता है। 19 इमामों को वह नंगे पाँव अपने साथ ले जाता है, मजबूती से खड़े आदमियों को तबाह करता है। 20 काबिले-एतमाद अफ़राद से वह बोलने की काबिलियत और बुजुर्गों से इम्तियाज करने की लियाक़त छीन लेता है। 21 वह शुरफ़ा पर अपनी हिकारत का इज़हार करके जोरावरों का पटका खोल देता है।

22 वह अंधेरे के पोशीदा भेद खोल देता और गहरी तारीकी को रौशनी में लाता है। 23 वह कौमों को बड़ा भी बनाता और तबाह भी करता है, उम्मों को मुंतशिर भी करता और उनकी क्रियादत भी करता है। 24 वह मुल्क के राहनुमाओं को अक्ल से महसूम करके उन्हें ऐसे बयाबान में आवारा फिरने देता है जहाँ रास्ता ही नहीं। 25 तब वह अंधेरे में रौशनी के बगैर टटोल टटोलकर घूमते हैं। अल्लाह ही उन्हें नशे में धुत शराबियों की तरह भटकने देता है।

## 13

1 यह सब कुछ मैंने अपनी आँखों से देखा, अपने कानों से सुनकर समझ लिया है। 2 इल्म के लिहाज से मैं तुम्हारे बराबर हूँ। इस नाते से मैं तुमसे कम नहीं हूँ। 3 लेकिन मैं कादिर-मुतलक से ही बात करना चाहता हूँ, अल्लाह के साथ ही मुबाहसा करने की आरजू रखता हूँ।

4 जहाँ तक तुम्हारा ताल्लुक है, तुम सब फ़रेबदेह लेप लगानेवाले और बेकार डाक्टर हो। 5 काश तुम सरासर खामोश रहते! ऐसा करने से तुम्हारी हिकमत कहीं ज़्यादा ज़ाहिर होती। 6 मुबाहसे में ज़रा मेरा मौक़िफ़ सुनो, अदालत में मेरे बयानात पर गौर करो!

\* 11:20 या उनकी वाहिद उम्मीद इस्मे होगी कि दम छोड़े।

7 क्या तुम अल्लाह की खातिर कजरौ बातें पेश करते हो, क्या उसी की खातिर झूट बोलते हो? 8 क्या तुम उस की जानिबदारी करना चाहते हो, अल्लाह के हक में लडना चाहते हो? 9 सोच लो, अगर वह तुम्हारी जाँच करे तो क्या तुम्हारी बात बनेगी? क्या तुम उसे यों धोका दे सकते हो जिस तरह इनसान को धोका दिया जाता है?

10 अगर तुम खुफिया तौर पर भी जानिबदारी दिखाओ तो वह तुम्हें जरूर सख्त सज़ा देगा। 11 क्या उसका रोब तुम्हें खौफ़ज़दा नहीं करेगा? क्या तुम उससे सख्त दहशत नहीं खाओगे? 12 फिर जिन कहावतों की याद तुम दिलाते रहते हो वह राख की अमसाल साबित होंगी, पता चलेगा कि तुम्हारी बातें मिट्टी के अलफ़ाज़ हैं।

13 खामोश होकर मुझसे बाज़ आओ! जो कुछ भी मेरे साथ हो जाए, मैं बात करना चाहता हूँ। 14 मैं अपने आपको खतरे में डालने के लिए तैयार हूँ, मैं अपनी जान पर खेलूँगा। 15 शायद वह मुझे मार डाले। कोई बात नहीं, क्योंकि मेरी उम्मीद जाती रही है। जो कुछ भी हो मैं उसी के सामने अपनी राहों का दिफ़ा करूँगा। 16 और इसमें मैं पनाह लेता हूँ कि बेदीन उसके हज़ूर आने की ज़रूरत नहीं करता।

17 ध्यान से मेरे अलफ़ाज़ सुनो, अपने कान मेरे बयानात पर धरो। 18 तुम्हें पता चलेगा कि मैंने एहतियात और तरतीब से अपना मामला तैयार किया है। मुझे साफ़ मालूम है कि मैं हक पर हूँ। 19 अगर कोई मुझे मुजरिम साबित कर सके तो मैं चुप हो जाऊँगा, दम छोड़ने तक खामोश रहूँगा।

### अय्यब की मायूसी में दूआ

20 ऐ अल्लाह, मेरी सिर्फ़ दो दरखास्तें मंज़ूर कर ताकि मुझे तुझसे छुप जाने की जरूरत न हो। 21 पहले, अपना हाथ मुझसे दूर कर ताकि तेरा खौफ़ मुझे दहशतज़दा न करे। 22 दूसरे, इसके बाद मुझे बुला ताकि मैं जवाब दूँ, या मुझे पहले बोलने दे और तू ही इसका जवाब दे।

23 मुझसे कितने गुनाह और गलतियाँ हुई हैं? मुझ पर मेरा जुर्म और मेरा गुनाह जाहिर कर! 24 तू अपना चेहरा मुझसे छुपाए क्यों रखता है? तू मुझे क्यों अपना दुश्मन समझता है? 25 क्या तू हवा के झोंकों के उडाए हुए पते को दहशत खिलाना चाहता, ख़ुशक भंसे का ताकुकुब करना चाहता है?

26 यह तेरा ही फैसला है कि मैं तलख़ तजरबों से गुज़रूँ, तेरी ही मरज़ी है कि मैं अपनी जवानी के गुनाहों की सज़ा पाऊँ।

\* 27 तू मेरे पाँवों को काठ में ठोंककर मेरी तमाम राहों की पहरादारी करता है। तू मेरे हर एक नक्शे-कदम पर ध्यान देता है, 28 गो मैं मैंै की घिसी-फटी मशक और कीड़ों का खराब किया हुआ लिबास हूँ।

## 14

1 औरत से पैदा हुआ इनसान चंद एक दिन जिंदा रहता है, और उस की जिंदगी बेचैनी से भरी रहती है। 2 फूल की तरह वह चंद लमहों के लिए फूट निकलता, फिर मुरझा जाता है। साये की तरह वह थोड़ी देर के बाद ओझल हो जाता और कायम नहीं रहता। 3 क्या तू वाकई एक ऐसी मखलूक का इतने गौर से मुआयना करना चाहता है? मैं कौन हूँ कि तू मुझे पेशी के लिए अपने हुज़ूर लाए?

4 कौन नापाक चीज़ को पाक-साफ़ कर सकता है? कोई नहीं! 5 इनसान की उम्र तो मुकर्रर हुई है, उसके महीनों की तादाद तुझे मालूम है, क्योंकि तू ही ने उसके दिनों की वह हद बाँधी है जिससे आगे वह बढ़ नहीं सकता। 6 चुनाँचे अपनी निगाह उससे फेर ले और उसे छोड़ दे ताकि वह मजदूर की तरह अपने थोड़े दिनों से कुछ मज़ा ले सके।

7 अगर दरख़्त को काटा जाए तो उसे थोड़ी-बहुत उम्मीद बाकी रहती है, क्योंकि ऐन मुमकिन है कि मुह से कोपलें फूट निकलें और उस की नई शाखें उगती जाएँ। 8 बेशक उस की जड़ें पुरानी हो जाएँ और उसका मुह मिट्टी में खत्म होने लगे, 9 लेकिन पानी की खुशबू सूँघते ही वह कोपलें निकालने लगेगा, और पनीरी की-सी टहनियाँ उससे फूटने लगेंगी।

10 लेकिन इनसान फ़रक़ है। मरते वक़्त उस की हर तरह की ताक़त जाती रहती है, दम छोड़ते वक़्त उसका नामो-निशान तक नहीं रहता। 11 वह उस झील की मानिंद है जिसका पानी ओझल हो जाए, उस नदी की मानिंद जो सुकड़कर ख़ुशक हो जाए। 12 वफ़ात पानेवाले का यही हाल है। वह लेट जाता और कभी नहीं उठेगा। जब तक आसमान कायम है न वह जाग उठेगा, न उसे जगाया जाएगा।

13 काश तू मुझे पाताल में छुपा देता, मुझे वहाँ उस वक़्त तक पोशीदा रखता जब तक तेरा कहर ठंडा न हो जाता! काश तू एक वक़्त मुकर्रर करे जब तू मेरा दुबारा खयाल करेगा। 14 (क्योंकि अगर इनसान मर जाए तो क्या वह दुबारा जिंदा हो जाएगा?) फिर मैं अपनी सख्त ख़िदमत के तमाम दिन बरदाशत करता, उस वक़्त तक इंतज़ार करता जब तक मेरी सबुकदोशी न हो जाती। 15 तब तू मुझे आवाज़ देता और मैं जवाब देता, तू अपने हाथों के काम का अगरज़मंद होता। 16 उस वक़्त भी तू

\* 13:26 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : मीरास में पाऊँ।

मेरे हर कदम का शूमार करता, लेकिन न सिर्फ़ इस मकसद से कि मेरे गुनाहों पर ध्यान दे। 17 तू मेरे जरायम थैले में बाँधकर उस पर मुहर लगा देता, मेरी हर गलती को ढाँक देता।

18 लेकिन अफ़सोस! जिस तरह पहाड़ गिरकर चूर चूर हो जाता और चटान खिसक जाती है, 19 जिस तरह बहता पानी पत्थर को रगड़ रगड़कर खत्म करता और सैलाब मिट्टी को बहा ले जाता है उसी तरह तू इनसान की उम्मीद खाक में मिला देता है। 20 तू मुकम्मल तौर पर उस पर गालिब आ जाता तो वह कूच कर जाता है, तू उसका चेहरा बिगाड़कर उसे फ़ारिग कर देता है। 21 अगर उसके बच्चों को सरफ़राज़ किया जाए तो उसे पता नहीं चलता, अगर उन्हें पस्त किया जाए तो यह भी उसके इल्म में नहीं आता। 22 वह सिर्फ़ अपने ही जिस्म का दर्द महसूस करता और अपने लिए ही मातम करता है।”

## 15

**इलीफ़ज़ का जवाब : अथर्व कुफ़र बक रहा है**

1 तब इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब देकर कहा,

2 “क्या दानिशमंद को जवाब में बेहदा ख़यालात पेश करने चाहिए? क्या उसे अपना पेट तपती मशरिकी हवा से भरना चाहिए? 3 क्या मुनासिब है कि वह फज़ूल बहस-मुबाहसा करे, ऐसी बातें करे जो बेफायदा हैं? हरगिज़ नहीं!

4 लेकिन तेरा रवैया इससे कहीं बुरा है। तू अल्लाह का ख़ौफ़ छोड़कर उसके हुज़ूर गौरो-ख़ौज़ करने का फ़र्ज़ हकीर जानता है। 5 तेरा कुसूर ही तेरे मुँह को ऐसी बातें करने की तहरीक दे रहा है, इसी लिए तूने चालाकों की ज़बान अपना ली है। 6 मुझे तुझे कुसूरवार ठहराने की ज़रूरत ही नहीं, क्योंकि तेरा अपना ही मुँह तुझे मुजरिम ठहराता है, तेरे अपने ही होंट तेरे खिलाफ़ गवाही देते हैं।

7 क्या तू सबसे पहले पैदा हुआ इनसान है? क्या तूने पहाड़ों से पहले ही जन्म लिया? 8 जब अल्लाह की मजलिस मुनअक़िद हो जाए तो क्या तू भी उनकी बातें सुनता है? क्या सिर्फ़ तुझे ही हिकमत हासिल है? 9 तू क्या जानता है जो हम नहीं जानते? तुझे किस बात की समझ आई है जिसका इल्म हम नहीं रखते? 10 हमारे दरमियान भी अज़रसीदा बुज़ुर्ग़ हैं, ऐसे आदमी जो तेरे वालिद से भी बूढ़े हैं।

11 ऐ अथर्व, क्या तेरी नज़र में अल्लाह की तसल्ली देनेवाली बातों की कोई अहमियत नहीं? क्या तू इसकी कदर नहीं कर सकता कि नरमी से तुझसे बात की जा रही है? 12 तेरे दिल के जज़बात तुझे यों उडाकर क्यों ले जाएँ, तेरी आँखें क्यों इतनी चमक उठें 13 कि आखिरकार तू अपना गुस्सा अल्लाह पर उतारकर ऐसी बातें अपने मुँह से उगल दे?

14 भला इनसान क्या है कि पाक-साफ़ ठहरे? और त से पैदा हुई मखलूक क्या है कि रास्तबाज़ साबित हो? कुछ भी नहीं! 15 अल्लाह तो अपने मुक़द्दस ख़ादिमों पर भी भरोसा नहीं रखता, बल्कि आसमान भी उस की नज़र में पाक नहीं है। 16 तो फिर वह इनसान पर भरोसा क्यों रखे जो काबिले-धिन और बिगड़ा हुआ है, जो बुराई को पानी की तरह पी लेता है।

17 मेरी बात सुन, मैं तुझे कुछ सुनाना चाहता हूँ। मैं तुझे वह कुछ बयान करूँगा जो मुझ पर जाहिर हुआ है, 18 वह कुछ जो दानिशमंदों ने पेश किया और जो उन्हें अपने बापदादा से मिला था। उनसे कुछ छुपाया नहीं गया था। 19 (बापदादा से मुराद वह वाहिद लोग हैं जिन्हें उस वक़्त मुल्क दिया गया जब कोई भी परदेसी उनमें नहीं फिरता था)।

20 वह कहते थे, बेदीन अपने तमाम दिन डर के मारे तडपता रहता, और जितने भी साल ज़ालिम के लिए महफूज़ रखे गए हैं उतने ही साल वह पेचो-ताब खाता रहता है। 21 दहशतनाक आवाज़ें उसके कानों में गूँजती रहती हैं, और अमनो-अमान के वक़्त ही तबाही मचानेवाला उस पर टूट पड़ता है। 22 उसे अंधेरे से बचने की उम्मीद ही नहीं, क्योंकि उसे तलवार के लिए तैयार रखा गया है।

23 वह मारा मारा फिरता है, आखिरकार वह गिट्टों की खोराक बनेगा। उसे ख़ुद इल्म है कि तारीकी का दिन करीब ही है। 24 तंगी और मुसीबत उसे दहशत खिलाती, हमलाआवर बादशाह की तरह उस पर गालिब आती है। 25 और वजह क्या है? यह कि उसने अपना हाथ अल्लाह के खिलाफ़ उठाया, कादिर-मुतलक के सामने तकब्बुर दिखाया है। 26 अपनी मोटी और मज़बूत ढाल की पनाह में अकड़कर वह तेज़ी से अल्लाह पर हमला करता है।

27 गो इस वक़्त उसका चेहरा चरबी से चमकता और उस की कमर मोटी है, 28 लेकिन आइंदा वह तबाहशुदा शहरों में बसेगा, ऐसे मकानों में जो सबके छोड़े हुए हैं और जो जल्द ही पत्थर के ढेर बन जाएंगे। 29 वह अमीर नहीं होगा, उस की दौलत कायम नहीं रहेगी, उस की जायदाद मुल्क में फैली नहीं रहेगी।

30 वह तारीकी से नहीं बचेगा। शोला उस की कोंपलों को मुरझाने देगा, और अल्लाह उसे अपने मुँह की एक फूँक से उडाकर तबाह कर देगा। 31 वह धोके पर भरोसा न करे, वरना वह भटक जाएगा और उसका अज़ धोका ही होगा। 32 वक़्त से पहले ही उसे इसका पूरा मुआवज़ा मिलेगा, उस की कोंपल कभी नहीं फले-फूलेगी।

33 वह अंगूर की उस बेल की मानिंद होगा जिसका फल कच्ची हालत में ही गिर जाए, जैतून के उस दरख्त की मानिंद जिसके तमाम फूल झड़ जाएँ। 34 क्योंकि बेदीनों का जल्था बंजर रहेगा, और आग रिश्तखोरों के खेमों को भस्म करेगी। 35 उनके पाँव दुख-दर्द से भारी हो जाते, और वह बुराई को जन्म देते हैं। उनका पेट धोका ही पैदा करता है।”

## 16

अय्यब का जवाब : मैं बेगुनाह हूँ

1 अय्यब ने जवाब देकर कहा,

2 “इस तरह की मैंने बहुत-सी बातें सुनी हैं, तुम्हारी तसल्ली सिर्फ दुख-दर्द का बाइस है। 3 क्या तुम्हारी लफ्फाजी कभी खत्म नहीं होगी? तुझे क्या चीज बेचैन कर रही है कि तू मुझे जवाब देने पर मजबूर है? 4 अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं भी तुम्हारी जैसी बातें कर सकता। फिर मैं भी तुम्हारे खिलाफ पुरअलफाज तकरीर पेश करके तौबा तौबा कह सकता। 5 लेकिन मैं ऐसा न करता। मैं तुम्हें अपनी बातों से तकवियत देता, अफसोस के इजहार से तुम्हें तसकीन देता। 6 लेकिन मेरे साथ ऐसा सुल्क नहीं हो रहा। अगर मैं बोलूँ तो मुझे सुकून नहीं मिलता, अगर चुप रहूँ तो मेरा दर्द दूर नहीं होता।

7 लेकिन अब अल्लाह ने मुझे थका दिया है, उसने मेरे पूरे घराने को तबाह कर दिया है। 8 उसने मुझे सुकड़ने दिया है, और यह बात मेरे खिलाफ गवाह बन गई है। मेरी दुबली-पतली हालत खड़ी होकर मेरे खिलाफ गवाही देती है। 9 अल्लाह का गज़ब मुझे फाड़ रहा है, वह मेरा दुश्मन और मेरा मुखालिफ बन गया है जो मेरे खिलाफ दौत पीस पीसकर मुझे अपनी आँखों से छेद रहा है। \* 10 लोग गला फाड़कर मेरा मज़ाक उड़ाते, मेरे गाल पर थपड़ मारकर मेरी बेइज्जती करते हैं। सबके सब मेरे खिलाफ मुत्तहिद हो गए हैं। 11 अल्लाह ने मुझे शरीरों के हवाले कर दिया, मुझे बेदीनों के चंगुल में फँसा दिया है। 12 मैं सुकून से जिंदगी गुज़ार रहा था कि उसने मुझे पाश कर दिया, मुझे गले से पकड़कर ज़मीन पर पटख दिया। उसने मुझे अपना निशाना बना लिया, 13 फिर उसके तीरअंदाजों ने मुझे घेर लिया। उसने बेरहमी से मेरे गुरदों को चीर डाला, मेरा पित ज़मीन पर उंडेल दिया। 14 बार बार वह मेरी क़िलाबंदी में रखना डालता रहा, पहलवान की तरह मुझ पर हमला करता रहा।

15 मैंने टोंके लगाकर अपनी जिल्द के साथ टाट का लिबास जोड़ लिया है, अपनी शानो-शौकत खाक में मिलाई है। 16 रो रोकर मेरा चेहरा सूज गया है, मेरी पलकों पर घना अधेरा छा गया है। 17 लेकिन वजह क्या है? मेरे हाथ तो जुल्म से बरी रहे, मेरी दुआ पाक-साफ रही है।

18 ऐ ज़मीन, मेरे खून को मत ढाँपना! मेरी आहो-ज़ारी कभी आराम की जगह न पाए बल्कि गूँजती रहे। 19 अब भी मेरा गवाह आसमान पर है, मेरे हक में गवाही देनेवाला बुलंदियों पर है। 20 मेरी आहो-ज़ारी मेरा तरजुमान है, मैं बेखुाबी से अल्लाह के इंतज़ार में रहता हूँ। 21 मेरी आहें अल्लाह के सामने फ़ानी इनसान के हक़ में बात करेंगी, उस तरह जिस तरह कोई अपने दोस्त के हक़ में बात करे। 22 क्योंकि थोड़े ही सालों के बाद मैं उस रास्ते पर खाना हो जाऊँगा जिससे वापस नहीं आऊँगा।

## 17

अल्लाह से इल्तिज़ा

1 मेरी रूह शिकस्ता हो गई, मेरे दिन बूझ गए हैं। कब्रिस्तान ही मेरे इंतज़ार में है। 2 मेरे चारों तरफ मज़ाक ही मज़ाक सुनाई देता, मेरी आँखें लोगों का हठधर्म रबैया देखते देखते थक गई हैं। 3 ऐ अल्लाह, मेरी ज़मानत मेरे अपने हाथों से कबूल फरमा, क्योंकि और कोई नहीं जो उसे दे। 4 उनके ज़हनों को तूने बंद कर दिया, इसलिए तो उनसे इज्जत नहीं पाएगा। 5 वह उस आदमी की मानिंद है जो अपने दोस्तों को जियाफत की दावत दे, हालाँकि उसके अपने बच्चे भूके मर रहे हों।

6 अल्लाह ने मुझे मज़ाक का यों निशाना बनाया है कि मैं कौमों में इबरतअगेज़ मिसाल बन गया हूँ। मुझे देखते ही लोग मेरे मुँह पर थकते हैं। 7 मेरी आँखें गम खा खाकर धुँधला गई हैं, मेरे आज्ञा यहाँ तक सूख गए कि साया ही रह गया है। 8 यह देखकर सीधी राह पर चलनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाते और बेगुनाह बेदीनों के खिलाफ मुश्तइल हो जाते हैं। 9 रास्तबाज़ अपनी राह पर कायम रहते, और जिनके हाथ पाक हैं वह तकवियत पाते हैं। 10 लेकिन जहाँ तक तुम सबका ताल्लुक है, आओ दुबारा मुझ पर हमला करो! मुझे तुममें एक भी दाना आदमी नहीं मिलेगा।

11 मेरे दिन गुज़र गए हैं। मेरे वह मनसूबे और दिल की आरजूएँ खाक में मिल गई हैं 12 जिनसे रात दिन में बदल गई और रौशनी अधेरे को दूर करके करीब आई थी। 13 अगर मैं सिर्फ इतनी ही उम्मीद रखूँ कि पाताल मेरा घर होगा तो यह कैसी उम्मीद होगी? अगर मैं अपना बिस्तर तारीकी में बिछाकर 14 कब्र से कहूँ, ‘तू मेरा बाप है’ और कीड़े से, ‘ऐ मेरी अम्मी, ऐ

\* 16:9 लफ्फाजी तरजुमा : अपनी आँखें मेरे खिलाफ तेज़ करता है।

मेरी बहन' 15 तो फिर यह कैसी उम्मीद होगी? कौन कहेगा, 'मुझे तेरे लिए उम्मीद नज़र आती है'? 16 तब मेरी उम्मीद मेरे साथ पाताल में उतरेगी, और हम मिलकर खाक में धँस जाएंगे।"

## 18

बिलदद : अल्लाह बेदीनों को सज़ा देता है

1 बिलदद सूखी ने जवाब देकर कहा,

2 "तू कब तक ऐसी बातें करेगा? इनसे बाज़ आकर होश में आ! तब ही हम सही बात कर सकेंगे। 3 तू हमें डंगर जैसे अहमक क्यों समझता है? 4 गो तू आग-बगला होकर अपने आपको फाड़ रहा है, लेकिन क्या तेरे बाइस ज़मीन को वीरान होना चाहिए और चटानों को अपनी जगह से खिसकना चाहिए? हरगिज़ नहीं!

5 यकीनन बेदीन का चराग बुझ जाएगा, उस की आग का शोला आइंदा नहीं चमकेगा। 6 उसके खैमे में रौशनी अंधेरा हो जाएगी, उसके ऊपर की शमा बुझ जाएगी। 7 उसके लंबे कदम स्क स्ककर आगे बढ़ेंगे, और उसका अपना मनसूबा उसे पटख देगा।

8 उसके अपने पाँव उसे जाल में फँसा देते हैं, वह दाम पर ही चलता-फिरता है। 9 फंदा उस की एड़ी पकड़ लेता, कंमद उसे जकड़ लेती है। 10 उसे फँसाने का रस्सा ज़मीन में छुपा हुआ है, रास्ते में फंदा बिछा है।

11 वह ऐसी चीज़ों से घिरा रहता है जो उसे कदम बकदम दहशत खिलाती और उस की नाक में दम करती हैं। 12 आफत उसे हडप कर लेना चाहती है, तबाही तैयार खड़ी है ताकि उसे गिरते वक़्त ही पकड़ ले। 13 बीमारी उस की जिल्द को खा जाती, मौत का पहलौठा उसके आज़ा को निगल लेता है। 14 उसे उसके खैमे की हिफ़ाज़त से छीन लिया जाता और घसीटकर दहशतों के बादशाह के सामने लाया जाता है।

15 उसके खैमे में आग बसती, उसके घर पर गंधक बिखर जाती है। 16 नीचे उस की जड़ें सूख जाती, ऊपर उस की शाखें मुरझा जाती हैं। 17 ज़मीन पर से उस की याद मिट जाती है, कहीं भी उसका नामो-निशान नहीं रहता।

18 उसे रौशनी से तारीकी में धकेला जाता, दुनिया से भगाकर खारिज किया जाता है। 19 कौम में उस की न औलाद न नसल रहेगी, जहाँ पहले रहता था वहाँ कोई नहीं बचेगा। 20 उसका अंजाम देखकर मगरिब के बाशिंदों के रोगते खडे हो जाते और मशरिक के बाशिंदे दहशतज़दा हो जाते हैं। 21 यही है बेदीन के घर का अंजाम, उसी के मकाम का जो अल्लाह को नहीं जानता।"

## 19

अथर्व्य : मैं जानता हूँ कि मेरा नजातदहिदा जिंदा है

1 तब अथर्व्य ने जवाब में कहा,

2 "तुम कब तक मुझ पर तशदुद करना चाहते हो, कब तक मुझे अलफ़ाज़ से टुकड़े टुकड़े करना चाहते हो? 3 अब तुमने दस बार मुझे मलामत की है, तुमने शर्म किए बग़ैर मेरे साथ बदसलूकी की है। 4 अगर यह बात सही भी हो कि मैं ग़लत राह पर आ गया हूँ तो मुझे ही इसका नतीजा भुगतना है। 5 लेकिन चूँकि तुम मुझ पर अपनी सबक़त दिखाना चाहते और मेरी स्सबाई मुझे डॉटने के लिए इस्तेमाल कर रहे हो 6 तो फिर जान लो, अल्लाह ने खुद मुझे ग़लत राह पर लाकर अपने दाम से घेर लिया है।

7 गो मैं चीखकर कहूँ, 'मुझ पर ज़ुल्म हो रहा है,' लेकिन जवाब कोई नहीं मिलता। गो मैं मदद के लिए पुकारूँ, लेकिन इससाफ नहीं पाता। 8 उसने मेरे रास्ते में ऐसी दीवार खड़ी कर दी कि मैं गुज़र नहीं सकता, उसने मेरी राहों पर अंधेरा ही छा जाने दिया है। 9 उसने मेरी इज़ज़त मुझसे छीनकर मेरे सर से ताज़ उतार दिया है। 10 चारों तरफ से उसने मुझे ढा दिया तो मैं तबाह हुआ। उसने मेरी उम्मीद को दरख़्त की तरह जड़ से उखाड़ दिया है। 11 उसका कहर मेरे खिलाफ़ भडक उठा है, और वह मुझे अपने दुश्मनों में शमार करता है। 12 उसके दस्ते मिलकर मुझ पर हमला करने आए हैं। उन्होंने मेरी फ़र्सील के साथ मिट्टी का ढेर लगाया है ताकि उसमें रखना डालें। उन्होंने चारों तरफ से मेरे खैमे का मुहासरा किया है।

13 मेरे भाइयों को उसने मुझसे दूर कर दिया, और मेरे जाननेवालों ने मेरा हुक्का-पानी बंद कर दिया है। 14 मेरे रिश्तेदारों ने मुझे तर्क कर दिया, मेरे करीबी दोस्त मुझे भूल गए हैं। 15 मेरे दामनगीर और नौकरानियाँ मुझे अजनबी समझते हैं। उनकी नज़र में मैं अजनबी हूँ। 16 मैं अपने नौकर को बुलाता हूँ तो वह जवाब नहीं देता। गो मैं अपने मुँह से उससे इल्तिजा करूँ तो भी वह नहीं आता।

17 मेरी बीवी मेरी जान से धिन खाती है, मेरे सगे भाई मुझे मकरूह समझते हैं। 18 यहाँ तक कि छोटे बच्चे भी मुझे हकीर जानते हैं। अगर मैं उठने की कोशिश करूँ तो वह अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लेते हैं। 19 मेरे दिली दोस्त मुझे कराहियत की

निगाह से देखते हैं, जो मुझे प्यारे थे वह मेरे मुखालिफ हो गए हैं। 20 मेरी जिल्द सुकड़कर मेरी हड्डियों के साथ जा लगी है। मैं मौत से बाल बाल बच गया हूँ। \*

21 मेरे दोस्तों, मुझ पर तरस खाओ, मुझ पर तरस खाओ। क्योंकि अल्लाह ही के हाथ ने मुझे मारा है। 22 तुम क्यों अल्लाह की तरह मेरे पीछे पड़ गए हो, क्यों मेरा गोश्त खा खाकर सेर नहीं होते?

23 काश मेरी बातें क्लमबंद हो जाएँ! काश वह यादगार पर कंदा की जाएँ, 24 लोहे की छैनी और सीसे से हमेशा के लिए पत्थर में नक्श की जाएँ! 25 लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ानेवाला जिंदा है और आखिरकार मेरे हक में ज़मीन पर खड़ा हो जाएगा, 26 गो मेरी जिल्द यों उतारी भी गई हो। लेकिन मेरी आरजू है कि जिस्म में होते हुए अल्लाह को देखूँ, 27 कि मैं खुद ही उसे देखूँ, न कि अजनबी बल्कि अपनी ही आँखों से उस पर निगाह करूँ। इस आरजू की शिद्दत से मेरा दिल तबाह हो रहा है।

28 तुम कहते हो, 'हम कितनी सख्ती से अय्यब का ताक्कुब करेंगे' और 'मसले की जड तो उसी में पिनहाँ है।' 29 लेकिन तुम्हें खुद तलवार से डरना चाहिए, क्योंकि तुम्हारा गुस्सा तलवार की सजा के लायक है, तुम्हें जानना चाहिए कि अदालत आनेवाली है।"

## 20

**जूफर : गलत काम की मुसिफाना सजा दी जाएगी**

1 तब जूफर नामाती ने जवाब देकर कहा,

2 "यक़ीनन मेरे मुज़तरिब खयालालत और वह एहसासात जो मेरे अंदर से उभर रहे हैं मुझे जवाब देने पर मजबूर कर रहे हैं।

3 मुझे ऐसी नसीहत सुननी पड़ी जो मेरी बेइज़्जती का बाइस थी, लेकिन मेरी समझ मुझे जवाब देने की तहरीक दे रही है।

4 क्या तुझे मालूम नहीं कि कर्दीम ज़माने से यानी जब से इनसान को ज़मीन पर रखा गया 5 शरीर का फतहमंद नारा आरिज़ी और बेदीन की खुशी पल-भर की साबित हुई है? 6 गो उसका कदो-कामत आसमान तक पहुँचे और उसका सर बादलों को छूए 7 ताहम वह अपने फुज़्ले की तरह अबद तक तबाह हो जाएगा। जिन्होंने उसे पहले देखा था वह पछेंगे, 'अब वह कहाँ है?'

8 वह खाब की तरह उड़ जाता और आइंदा कही नहीं पाया जाएगा, उसे रात की रोया की तरह भुला दिया जाता है।

9 जिस आँख ने उसे देखा वह उसे आइंदा कभी नहीं देखेगी। उसका घर दुबारा उसका मुशाहदा नहीं करेगा। 10 उस की औलाद को गरीबों से भीक माँगनी पड़ेगी, उसके अपने हाथों को दौलत वापस देने की पड़ेगी। 11 जवानी की जिस ताकत से उस की हड्डियाँ भरी हैं वह उसके साथ ही ख़ाक में मिल जाएगी।

12 बुराई बेदीन के मुँह में मीठी है। वह उसे अपनी ज़बान तले छुपाए रखता, 13 उसे महफूज़ रखकर जाने नहीं देता।

14 लेकिन उस की खुराक पेट में आकर खराब हो जाती बल्कि साँप का ज़हर बन जाती है। 15 जो दौलत उसने निगल ली उसे वह उगल देगा, अल्लाह ही यह चीज़ें उसके पेट से खारिज़ करेगा। 16 उसने साँप का ज़हर चूस लिया, और साँप ही की ज़बान उसे मार डालेगी। 17 वह नदियों से लुफ़्तअंदोज़ नहीं होगा, शहद और बालाई की नहरों से मज़ा नहीं लेगा। 18 जो कुछ उसने हासिल किया उसे वह हज़म नहीं करेगा बल्कि सब कुछ वापस करेगा। जो दौलत उसने अपने कारोबार से कमाई उससे वह लुफ़्त नहीं उठाएगा। 19 क्योंकि उसने पस्तहालों पर जुल्म करके उन्हें तर्क किया है, उसने ऐसे घरों को छीन लिया है जिन्हें उसने तामीर नहीं किया था। 20 उसने पेट में कभी सुकून महसूस नहीं किया बल्कि जो कुछ भी चाहता था उसे बचने नहीं दिया। 21 जब वह खाना खाता है तो कुछ नहीं बचता, इसलिए उस की खुशहाली कायम नहीं रहेगी। 22 ज्योंही उसे कसरत की चीज़ें हासिल होंगी वह मुसीबत में फँस जाएगा। तब दुख-दर्द का पूरा जोर उस पर आएगा। 23 काश अल्लाह बेदीन का पेट भरकर अपना भडकता कहर उस पर नाज़िल करे, काश वह अपना ग़ज़ब उस पर बरसाए।

24 गो वह लोहे के हथियार से भाग जाए, लेकिन पीतल का तीर उसे चीर डालेगा। 25 जब वह उसे अपनी पीठ से निकाले तो तीर की नोक उसके कलेजे में से निकलेगी। उसे दहशतनाक वाकियात पेश आँगे। 26 गहरी तारीकी उसके खज़ानों की ताक में बैठी रहेगी। ऐसी आग जो इनसानों ने नहीं लगाई उसे भस्म करेगी। उसके ख़ैमे के जितने लोग बच निकले उन्हें वह खा जाएगा। 27 आसमान उसे मुज़रिम ठहराएगा, ज़मीन उसके खिलाफ़ गवाही देने के लिए खड़ी हो जाएगी। 28 सैलाब उसका घर उड़ा ले जाएगा, ग़ज़ब के दिन शिद्दत से बहता हुआ पानी उस पर से गुज़रेगा। 29 यह है वह अज़्र जो अल्लाह बेदीनों को देगा, वह विरासत जिसे अल्लाह ने उनके लिए मुकर्रर की है।"

\* 19:20 लफ़्ज़ी तरक़ुम : 'मेरे दाँतों की जिल्द ही बच गई है।' मतलब मुबहम-सा है।

## 21

अय्यब : बहुत दफा बेदीनों को सजा नहीं मिलती

1 फिर अय्यब ने जवाब में कहा,

2 “ध्यान से मेरे अलफाज़ सुनो! यही करने से मुझे तसल्ली दो! 3 जब तक मैं अपनी बात पेश न करूँ मुझे बरदाशत करो, इसके बाद अगर चाहो तो मेरा मजाक उड़ाओ। 4 क्या मैं किसी इनसान से एहतजाज कर रहा हूँ? हरगिज़ नहीं! तो फिर क्या अजब कि मेरी रूह इतनी तंग आ गई है। 5 मुझ पर नज़र डालो तो तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जाएंगे और तुम हैरानी से अपना हाथ मुँह पर रखोगे।

6 जब कभी मुझे वह खयाल याद आता है जो मैं पेश करना चाहता हूँ तो मैं दहशतज़दा हो जाता हूँ, मेरे जिस्म पर थरथराहट तारी हो जाती है। 7 खयाल यह है कि बेदीन क्यों जीते रहते हैं? न सिर्फ़ वह उम्रसीदा हो जाते बल्कि उनकी ताकत बढ़ती रहती है।

8 उनके बच्चे उनके सामने कायम हो जाते, उनकी औलाद उनकी आँखों के सामने मजबूत हो जाती है। 9 उनके घर महफूज़ है। न कोई चीज़ उन्हें डराती, न अल्लाह की सज़ा उन पर नाज़िल होती है। 10 उनका साँड नसल बढ़ाने में कभी नाकाम नहीं होता, उनकी गाय वक्त पर जन्म देती, और उसके बच्चे कभी जाया नहीं होते।

11 वह अपने बच्चों को बाहर खेलने के लिए भेजते हैं तो वह भेड़-बकरियों के रेवड की तरह घर से निकलते हैं। उनके लडके कूदते फौंदते नज़र आते हैं। 12 वह दफ और सरोद बजाकर गीत गाते और बॉसरी की सुरीली आवाज़ निकालकर अपना दिल बहलाते हैं। 13 उनकी जिंदगी खुशहाल रहती है, वह हर दिन से पूरा लुफ़ उठाते और आखिरकार बड़े सुकून से पाताल में उतर जाते हैं।

14 और यह वह लोग हैं जो अल्लाह से कहते हैं, ‘हमसे दूर हो जा, हम तेरी राहों को जानना नहीं चाहते। 15 कादिर-मुतलक कौन है कि हम उस की खिदमत करें? उससे दुआ करने से हमें क्या फायदा होगा?’ 16 क्या उनकी खुशहाली उनके अपने हाथ में नहीं होती? क्या बेदीनों के मनसूखे अल्लाह से दूर नहीं रहते?

17 ऐसा लगता है कि बेदीनों का चराग कभी नहीं बुझता। क्या उन पर कभी मुसीबत आती है? क्या अल्लाह कभी कहर में आकर उन पर वह तबाही नाज़िल करता है जो उनका मुनासिब हिस्सा है? 18 क्या हवा के झोंके कभी उन्हें भूसे की तरह और आँधी कभी उन्हें तूँडी की तरह उड़ा ले जाती है? अफसोस, ऐसा नहीं होता। 19 शायद तुम कहो, ‘अल्लाह उन्हें सजा देने के बजाए उनके बच्चों को सजा देगा।’ लेकिन मैं कहता हूँ कि उसे बाप को ही सजा देनी चाहिए ताकि वह अपने गुनाहों का नतीजा खूब जान ले। 20 उस की अपनी ही आँखें उस की तबाही देखें, वह खुद कादिर-मुतलक के गज़ब का प्याला पी ले। 21 क्योंकि जब उस की जिंदगी के मुकर्रर दिन इख़िताम तक पहुँचें तो उसे क्या परवा होगी कि मेरे बाद घरवालों के साथ क्या होगा।

22 लेकिन कौन अल्लाह को इल्म सिखा सकता है? वह तो बुलदियों पर रहनेवालों की भी अदालत करता है। 23 एक शख्स वफ़ात पाते वक्त खूब तनदुस्त होता है। जीते-जी वह बड़े सुकून और इतमीनान से जिंदगी गुज़ार सका। 24 उसके बरतन दूध से भरे रहे, उस की हड्डियों का गूदा तरो-ताज़ा रहा। 25 दूसरा शख्स शिकस्ता हालत में मर जाता है और उसे कभी खुशहाली का लुफ़ नसीब नहीं हुआ। 26 अब दोनों मिलकर खाक में पड़े रहते हैं, दोनों कीड़े-मकौड़ों से ढँपे रहते हैं।

27 सुनो, मैं तुम्हारे खयालात और उन साज़िशों से वाकिफ़ हूँ जिनसे तुम मुझ पर ज़ुल्म करना चाहते हो। 28 क्योंकि तुम कहते हो, ‘रईस का घर कहीं है? वह खेमा किधर गया जिसमें बेदीन बसते थे? वह अपने गुनाहों के सबब से ही तबाह हो गए हैं।’ 29 लेकिन उनसे पूछ लो जो इधर उधर सफ़र करते रहते हैं। तुम्हें उनकी गवाही तसलीम करनी चाहिए 30 कि आफत के दिन शरीर को सहीह-सलामत छोड़ा जाता है, कि गज़ब के दिन उसे रिहाई मिलती है।

31 कौन उसके रूबरू उसके चाल-चलन की मलामत करता, कौन उसे उसके गलत काम का मुनासिब अज़्र देता है? 32 लोग उसके जनाज़े में शरीक होकर उसे कब्र तक ले जाते हैं। उस की कब्र पर चौकीदार लगाया जाता है। 33 वादी की मिट्टी के ढेले उसे मीठे लगते हैं। जनाज़े के पीछे पीछे तमाम दुनिया, उसके आगे आगे अनगिनत हज़ूम चलता है। 34 चुनौचे तुम मुझे अबस बातों से क्यों तसल्ली दे रहे हो? तुम्हारे जवाबों में तुम्हारी बेवफ़ाई ही नज़र आती है।”

## 22

इलीफ़ज़ : अय्यब शरीर है

1 फिर इलीफ़ज़ तेमानी ने जवाब देकर कहा,

2 “क्या अल्लाह इनसान से फायदा उठा सकता है? हरगिज़ नहीं! उसके लिए दानिशमंद भी फायदे का बाइस नहीं।

3 अगर तू रास्तबाज़ हो भी तो क्या वह इससे अपने लिए नफा उठा सकता है? हरगिज़ नहीं! अगर तू बेइलज़ाम जिंदगी



गुजारे तो क्या उसे कुछ हासिल होता है? 4 अल्लाह तुझे तेरी खुदातरस जिंदगी के सबब से मलामत नहीं कर रहा। यह न सोच कि वह इसी लिए अदालत में तुझसे जवाब तलब कर रहा है। 5 नहीं, वजह तेरी बड़ी बदकारी, तेरे लामहदद गुनाह हैं।

6 जब तेरे भाइयों ने तुझसे कर्ज लिया तो तुने बिलावजह वह चीजें अपना ली होंगी जो उन्होंने तुझे जमानत के तौर पर दी थी, तुने उन्हें उनके कपड़ों से महसूम कर दिया होगा। 7 तुने थकेमाँदों को पानी पिलाने से और भूके मरनेवालों को खाना खिलाने से इनकार किया होगा। 8 बेशक तेरा रवैया इस खयाल पर मबनी था कि पूरा मुल्क ताकतवरों की मिलकियत है, कि सिर्फ बड़े लोग उसमें रह सकते हैं। 9 तुने बेवाओं को खाली हाथ मोड़ दिया होगा, यतीमों की ताकत पाश पाश की होगी। 10 इसी लिए तू फंदों से घिरा रहता है, अचानक ही तुझे दहशतनाक वाकियत डरते हैं। 11 यही वजह है कि तुझ पर ऐसा अधेरा छा गया है कि तू देख नहीं सकता, कि सैलाब ने तुझे डुबो दिया है।

12 क्या अल्लाह आसमान की बुलदियों पर नहीं होता? वह तो सितारों पर नजर डालता है, खाह वह कितने ही ऊँचे क्यों न हों। 13 तो भी तू कहता है, 'अल्लाह क्या जानता है? क्या वह काले बादलों में से देखकर अदालत कर सकता है? 14 वह घने बादलों में छुपा रहता है, इसलिए जब वह आसमान के गुंबद पर चलता है तो उसे कुछ नजर नहीं आता।' 15 क्या तू उस कदमी राह से बाज नहीं आया जिस पर बदकार चलते रहे हैं? 16 वह तो अपने मुकररा वक्त से पहले ही सुकड़ गए, उनकी बुनियादें सैलाब से ही उडा ली गईं। 17 उन्होंने अल्लाह से कहा, 'हमसे दूर हो जा, और 'कादिरे-मुतलक हमारे लिए क्या कुछ कर सकता है?' 18 लेकिन अल्लाह ही ने उनके घरों को भरपूर खुशहाली से नवाजा, गो बेदीनों के बुरे मनस्खे उससे दूर ही दूर रहते हैं। 19 रास्तबाज उनकी तबाही देखकर खुश हुए, बेकुसूरों ने उनकी हँसी उडाकर कहा, 20 'लो, यह देखो, उनकी जायदाद किस तरह मिट गई, उनकी दौलत किस तरह भस्म हो गई है!'

21 ऐ अय्यब, अल्लाह से सुलह करके सलामती हासिल कर, तब ही तू खुशहाली पाएगा। 22 अल्लाह के मुँह की हिदायत अपना ले, उसके फरमान अपने दिल में महफूज रख। 23 अगर तू कादिरे-मुतलक के पास वापस आए तो बहाल हो जाएगा, और तेरे खैमे से बदी दूर ही रहेगी। 24 सोने को ख़ाक के बराबर, ओफ़ीर का खालिस सोना वादी के पत्थर के बराबर समझ ले 25 तो कादिरे-मुतलक खूद तेरा सोना होगा, वही तेरे लिए चाँदी का ढेर होगा। 26 तब तू कादिरे-मुतलक से लुफ़अंदोज़ होगा और अल्लाह के हुज़ूर अपना सर उठा सकेगा। 27 तू उससे इल्तिजा करेगा तो वह तेरी सुनेगा और तू अपनी मन्नतें बढ़ा सकेगा। 28 जो कुछ भी तू करने का इरादा रखे उसमें तुझे कामयाबी होगी, तेरी राहों पर रौशनी चमकेगी। 29 क्योंकि जो शेखी बघारता है उसे अल्लाह पस्त करता जबकि जो पस्तहाल है उसे वह नजात देता है। 30 वह बेकुसूर को छुड़ाता है, चुनौचे अगर तेरे हाथ पाक हों तो वह तुझे छुड़ाएगा।”

## 23

अय्यब : काश मैं अल्लाह को कहीं पाता

1 अय्यब ने जवाब में कहा,

2 “बेशक आज मेरी शिकायत सरकशी का इज़हार है, हालाँकि मैं अपनी आहों पर काबू पाने की कोशिश कर रहा हूँ।

3 काश मैं उसे पाने का इल्म रखूँ ताकि उस की सूकूनतगाह तक पहुँच सकूँ। 4 फिर मैं अपना मामला तर्तीबवार उसके सामने पेश करता, मैं अपना मुँह दलायल से भर लेता। 5 तब मुझे उसके जवाबों का पता चलता, मैं उसके बयानात पर गौर कर सकता। 6 क्या वह अपनी अज़ीम कुव्वत मुझसे लड़ने पर सर्फ़ करता? हरगिज नहीं! वह यकीनन मुझ पर तवज्जुह देता। 7 अगर मैं वहाँ उसके हुज़ूर आ सकता तो दियानतदार आदमी की तरह उसके साथ मुकदमा लड़ता। तब मैं हमेशा के लिए अपने मुसिफ़ से बच निकलता!

8 लेकिन अफ़सोस, अगर मैं मशरिफ़ की तरफ़ जाऊँ तो वह वहाँ नहीं होता, मगरिब की जानिब बढ़ूँ तो वहाँ भी नहीं मिलता। 9 शिमाल में उसे ढूँढ़ूँ तो वह दिखाई नहीं देता, जुनूब की तरफ़ सूख करूँ तो वहाँ भी पोशीदा रहता है। 10 क्योंकि वह मेरी राह को जानता है। अगर वह मेरी जौच-पड़ताल करता तो मैं खालिस सोना साबित होता। 11 मेरे कदम उस की राह में रहे हैं, मैं राह से न बाई, न दाई तरफ़ हटा बल्कि सीधा उस पर चलता रहा। 12 मैं उसके होंटों के फरमान से बाज नहीं आया बल्कि अपने दिल में ही उसके मुँह की बातें महफूज रखी हैं।

13 अगर वह फ़ैसला करे तो कौन उसे रोक सकता है? जो कुछ भी वह करना चाहे उसे अमल में लाता है। 14 जो भी मनसूबा उसने मेरे लिए बाँधा उसे वह जरूर पूरा करेगा। और उसके जहन में मजीद बहुत-से ऐसे मनसूबे हैं। 15 इसी लिए मैं उसके हुज़ूर दहशतजदा हूँ। जब भी मैं इन बातों पर ध्यान दूँ तो उससे डरता हूँ। 16 अल्लाह ने खूद मुझे शिकस्तादिल किया, कादिरे-मुतलक ही ने मुझे दहशत खिलाई है। 17 क्योंकि न मैं तारीकी से तबाह हो रहा हूँ, न इसलिए कि घने अधेरे ने मेरे चेहरे को ढँप दिया है।

## 24

जमीन पर कितनी नाइनसाफी पाई जाती है

1 कादिरे-मुतलक अदालत के औकात क्यों नहीं मुकर्रर करता? जो उसे जानते हैं वह ऐसे दिन क्यों नहीं देखते? 2 बेदीन अपनी जमीनों की हदूद को आगे पीछे करते और दूसरों के रेवड लूटकर अपनी चरागाहों में ले जाते हैं। 3 वह यतीमों का गधा हॉककर ले जाते और इस शर्त पर बेवा को कर्ज देते हैं कि वह उन्हें जमानत के तौर पर अपना बैल दे। 4 वह ज़रूरतमंदों को रास्ते से हटाते हैं, चुनौचे मुल्क के गरीबों को सरासर छुप जाना पड़ता है।

5 ज़रूरतमंद बयाबान में जंगली गधों की तरह काम करने के लिए निकलते हैं। खुराक का खोज लगा लगाकर वह इधर उधर घूमते-फिरते हैं बल्कि रेगिस्तान ही उन्हें उनके बच्चों के लिए खाना मुहैया करता है। 6 जो खेत उनके अपने नहीं हैं उनमें वह फ़सल काटते हैं, और बेदीनों के अंगूर के बागों में जाकर वह दो-चार अंगूर चुन लेते हैं जो फ़सल चुनने के बाद बाकी रह गए थे। 7 कपड़ों से महरूम रहकर वह रात को बरहना हालत में गुज़ारते हैं। सर्दी में उनके पास कम्बल तक नहीं होता। 8 पहाड़ों की बारिश से वह भीग जाते और पनाहगाह न होने के बाइस पत्थरों के साथ लिपट जाते हैं।

9 बेदीन बाप से महरूम बच्चे को माँ की गोद से छीन लेते हैं बल्कि इस शर्त पर मुसीबतजदा को कर्ज देते हैं कि वह उन्हें जमानत के तौर पर अपना शीरखार बच्चा दे। 10 गरीब बरहना हालत में और कपड़े पहने बग़ैर फिरते हैं, वह भूके होते हुए पूले उठाए चलते हैं। 11 ज़ैतून के जो दरख्त बेदीनों ने सफ़-दर-सफ़ लगाए थे उनके दरमियान गरीब ज़ैतून का तेल निकालते हैं। प्यासी हालत में वह शरीरों के हौजों में अंगूर को पाँवों तले कुचलकर उसका रस निकालते हैं। 12 शहर से मरनेवालों की आहें निकलती हैं और ज़ख़मी लोग मदद के लिए चीखते-चिल्लाते हैं। इसके बावजूद अल्लाह किसी को भी मुजरिम नहीं ठहराता।

13 यह बेदीन उनमें से हैं जो नूर से सरकश हो गए हैं। न वह उस की राहों से वाकिफ़ हैं, न उनमें रहते हैं। 14 सुबह-सवैरे कातिल उठता है ताकि मुसीबतजदा और ज़रूरतमंद को कत्ल करे। रात को चोर चक्कर काटता है। 15 जिनाकार की आँखें शाम के धूँधलके के इंतज़ार में रहती हैं, यह सोचकर कि उस वक्त मैं किसी को नज़र नहीं आऊँगा। निकलते वक्त वह अपने मुँह को ढाँप लेता है। 16 डाकू अंधेरे में घरों में नकब लगाते जबकि दिन के वक्त वह छुपकर अपने पीछे कुंडी लगा लेते हैं। नूर को वह जानते ही नहीं। 17 गहरी तारीकी ही उनकी सुबह होती है, क्योंकि उनकी घने अंधेरे की दहशतों से दोस्ती हो गई है।

18 लेकिन बेदीन पानी की सतह पर झाग हैं, मुल्क में उनका हिस्सा मलऊन है और उनके अंगूर के बागों की तरफ़ कोई रूज़ नहीं करता। 19 जिस तरह काल और झुलसती गरमी बर्फ़ का पानी छीन लेती हैं उसी तरह पाताल गुनाहगारों को छीन लेता है। 20 माँ का रहम उन्हें भूल जाता, कीड़ा उन्हें चूस लेता और उनकी याद जाती रहती है। यकीनन बेदीनी लकड़ी की तरह टूट जाती है। 21 बेदीन बाँझ औरत पर ज़ुल्म और बेवाओं से बदसलूकी करते हैं, 22 लेकिन अल्लाह जबरदस्तों को अपनी कुदरत से घसीटकर ले जाता है। वह मजबूती से खड़े भी हों तो भी कोई यकीन नहीं कि जिंदा रहेंगे। 23 अल्लाह उन्हें हिफ़ाज़त से आराम करने देता है, लेकिन उस की आँखें उनकी राहों की पहरादारी करती रहती हैं। 24 लमहा-भर के लिए वह सरफ़राज़ होते, लेकिन फिर नेस्तो-नाबूद हो जाते हैं। उन्हें खाक में मिलाकर सबकी तरह जमा किया जाता है, वह गंदम की कटी हुई बालों की तरह मुरझा जाते हैं।

25 क्या ऐसा नहीं है? अगर कोई मुतफ़िक़ नहीं तो वह साबित करे कि मैं गलती पर हूँ, वह दिखाए कि मेरे दलायल कातिल हैं।”

## 25

बिलदद : अल्लाह के सामने कोई रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता

1 फिर बिलदद सूखी ने जवाब देकर कहा,

2 “अल्लाह की हुकूमत दहशतनाक है। वही अपनी बलदियों पर सलामती कायम रखता है। 3 क्या कोई उसके दस्तों की तादाद गिन सकता है? उसका नूर किस पर नहीं चमकता? 4 तो फिर इनसान अल्लाह के सामने किस तरह रास्तबाज़ ठहर सकता है? जो औरत से पैदा हुआ वह किस तरह पाक-साफ़ साबित हो सकता है? 5 उस की नज़र में न चाँद पुरनूर है, न सितारे पाक हैं। 6 तो फिर इनसान किस तरह पाक ठहर सकता है जो कीड़ा ही है? आदमज़ाद तो मकोडा ही है।”

## 26

अय्यब : तूने मुझे कितने अच्छे मशवरे दिए हैं!

1 अय्यब ने जवाब देकर कहा,

- 2 “वाह जी वाह! तूने क्या खूब उसे सहारा दिया जो बेबस है, क्या खूब उस बाजू को मजबूत कर दिया जो बेताकत है!  
3 तूने उसे कितने अच्छे मशवरे दिए जो हिकमत से महसूस है, अपनी समझ की कितनी गहरी बातें उस पर जाहिर की हैं।  
4 तूने किसकी मदद से यह कुछ पेश किया है? किसने तेरी रूह में वह बातें डाली जो तेरे मुँह से निकल आई हैं?”

कौन अल्लाह की अज़मत का अंदाज़ा लगा सकता है?

5 अल्लाह के सामने वह तमाम मुरदा अरवाह जो पानी और उसमें रहनेवालों के नीचे बसती हैं डर के मारे तड़प उठती हैं। 6 हाँ, उसके सामने पाताल बरहना और उस की गहराइयाँ बेनिकाब हैं।

7 अल्लाह ही ने शिमाल को वीरानो-सुनसान जगह के ऊपर तान लिया, उसी ने ज़मीन को यों लगा दिया कि वह किसी चीज़ से लटकती हुई नहीं है। 8 उसने अपने बादलों में पानी लपेट लिया, लेकिन वह बोझ तले न फटे। 9 उसने अपना तख़्त नज़रों से छुपाकर अपना बादल उस पर छा जाने दिया। 10 उसने पानी की सतह पर दायरा बनाया जो रौशनी और अंधेरे के दरमियान हद बन गया।

11 आसमान के सतून लरज़ उठे। उस की धमकी पर वह दहशतज़दा हुए। 12 अपनी कुदरत से अल्लाह ने समुंदर को थमा दिया, अपनी हिकमत से रहब अज़दहे को टुकड़े टुकड़े कर दिया। 13 उसके रूह ने आसमान को साफ़ किया, उसके हाथ ने फ़रार होनेवाले सौंप को छेद डाला। 14 लेकिन ऐसे काम उस की राहों के किनारे पर ही किए जाते हैं। जो कुछ हम उसके बारे में सुनते हैं वह धीमी धीमी आवाज़ से हमारे कान तक पहुँचता है। तो फिर कौन उस की कुदरत की कड़कती आवाज़ समझ सकता है?”

## 27

मैं बेक़सूर हूँ

1 फिर अव्यय ने अपनी बात जारी रखी,

2 “अल्लाह की हयात की क़सम जिसने मेरा इनसाफ़ करने से इनकार किया, कादिरे-मुतलक की क़सम जिसने मेरी ज़िंदगी तलख़ कर दी है, 3 मेरे जीते-जी, हाँ जब तक अल्लाह का दम मेरी नाक में है 4 मेरे होंट झूट नहीं बोलेंगे, मेरी ज़बान धोका बयान नहीं करेगी। 5 मैं कभी तसलीम नहीं करूँगा कि तुम्हारी बात दुस्त है। मैं बेइलज़ाम हूँ और मरते दम तक इसके उलट नहीं कहूँगा। 6 मैं इसरार करता हूँ कि रास्तबाज़ हूँ और इससे कभी बाज़ नहीं आऊँगा। मेरा दिल मेरे किसी भी दिन के बारे में मुझे मलामत नहीं करता।

7 अल्लाह करे कि मेरे दुश्मन के साथ वही सुलूक किया जाए जो बेदीनों के साथ किया जाएगा, कि मेरे मुखालिफ़ का वह अंजाम हो जो बदकारों को पेश आएगा। 8 क्योंकि उस वक़्त शरीर की क्या उम्मीद रहेगी जब उसे इस ज़िंदगी से मुक़्त किया जाएगा, जब अल्लाह उस की जान उससे तलब करेगा? 9 क्या अल्लाह उस की चीखें सुनेगा जब वह मुसीबत में फँसकर मदद के लिए पुकारेगा? 10 या क्या वह कादिरे-मुतलक से लुत्फ़अंदोज़ होगा और हर वक़्त अल्लाह को पुकारेगा?

11 अब मैं तुम्हें अल्लाह की कुदरत के बारे में तालीम दूँगा, कादिरे-मुतलक का इरादा तुमसे नहीं छुपाऊँगा। 12 देखो, तुम सबने इसका मुशाहदा किया है। तो फिर इस क़िस्म की बातिल बातें क्यों करते हो?

बेदीन ज़िंदा नहीं रहेगा

13 बेदीन अल्लाह से क्या अज़ पाएगा, ज़ालिम को कादिरे-मुतलक से मीरास में क्या मिलेगा? 14 गो उसके बच्चे मुतअद्दिद हों, लेकिन आखिरकार वह तलवार की ज़द में आएँगे। उस की औलाद भूकी रहेगी। 15 जो बच जाएँ उन्हें मोहलक बीमारी से कब्र में पहुँचाया जाएगा, और उनकी बेवाएँ मातम नहीं कर पाएँगी। 16 बेशक वह खाक की तरह चाँदी का ढेर लगाएँ और मिट्टी की तरह नफ़ीस कपड़ों का तोड़ा इक़ठा करे, 17 लेकिन जो कपड़े वह जमा करे उन्हें रास्तबाज़ पहन लेगा, और जो चाँदी वह इक़ठी करे उसे बेक़सूर तकसीम करेगा। 18 जो घर बेदीन बना ले वह घोंसले की मानिंद है, उस आरिज़ी झोंपड़ी की मानिंद जो चौकीदार अपने लिए बना लेता है। 19 वह अमीर हालत में सो जाता है, लेकिन आखिरी दफ़ा। जब अपनी आँखें खोल लेता तो तमाम दौलत जाती रही है। 20 उस पर हौलनाक वाक़ियात का सैलाब टूट पड़ता, उसे रात के वक़्त आँधी छीन लेती है। 21 मशरिकी लू उसे उडा ले जाती, उसे उठाकर उसके मक़ाम से दूर फेंक देती है। 22 बेरहमी से वह उस पर यों झपट्टा मारती रहती है कि उसे बार बार भागना पड़ता है। 23 वह तालियों बजाकर अपनी हिकारत का इज़हार करती, अपनी जगह से आवाज़े कसती है।

## 28

हिकमत कहाँ पाई जाती है?

1 यक्रीनन चाँदी की कानों होती हैं और ऐसी जगहें जहाँ सोना खालिस किया जाता है। 2 लोहा ज़मीन से निकाला जाता और लोग पत्थर पिघलाकर तौबा बना लेते हैं। 3 इनसान अंधेरे को खत्म करके ज़मीन की गहरी गहरी जगहों तक कच्ची धात का खोज लगाता है, खाह वह कितने अंधेरे में क्यों न हो। 4 एक अजनबी क्रौम सुरंग लगाती है। जब रस्सों से लटके हुए काम करते और इन्सानों से दूर कान में झूमते हैं तो ज़मीन पर गुज़रनेवालों को उनकी याद ही नहीं रहती। 5 ज़मीन की सतह पर खुराक पैदा होती है जबकि उस की गहराइयों यों तबदील हो जाती हैं जैसे उसमें आग लगी हो। 6 पत्थरों से संगे-लाजवर्द निकाला जाता है जिसमें सोने के ज़र्र भी पाए जाते हैं।

7 यह ऐसे रास्ते हैं जो कोई भी शिकारी परिदा नहीं जानता, जो किसी भी बाज़ ने नहीं देखा। 8 जंगल के रोबदार जानवरों में से कोई भी इन राहों पर नहीं चला, किसी भी शेरबबर ने इन पर कदम नहीं रखा। 9 इनसान संगे-चक्रमाक पर हाथ लगाकर पहाड़ों को जड़ से उलटा देता है। 10 वह पत्थर में सुरंग लगाकर हर क्रिस्म की कीमती चीज़ देख लेता 11 और ज़मीनदोज़ नदियों को बंद करके पोशीदा चीज़ें रौशनी में लाता है।

12 लेकिन हिकमत कहाँ पाई जाती है, समझ कहाँ से मिलती है? 13 इनसान उस तक जानेवाली राह नहीं जानता, क्योंकि उसे मुल्के-हयात में पाया नहीं जाता। 14 समुंदर कहता है, 'हिकमत मेरे पास नहीं है,' और उस की गहराइयाँ बयान करती हैं, 'यहाँ भी नहीं है।'

15 हिकमत को न खालिस सोने, न चाँदी से खरीदा जा सकता है। 16 उसे पाने के लिए न ओफ़ीर का सोना, न बेशकीमत अक्रीके-अहमर \* या संगे-लाजवर्द † काफ़ी हैं। 17 सोना और शीशा उसका मुक़ाबला नहीं कर सकते, न वह सोने के ज़ेवरात के एवज़ मिल सकती है। 18 उस की निसबत मूँगा और बिल्लौर की क्या कदर है? हिकमत से भरी थैली मोतियों से कहीं ज़्यादा कीमती है। 19 एथोपिया का ज़बरजद ‡ उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता, उसे खालिस सोने के लिए खरीदा नहीं जा सकता।

20 हिकमत कहाँ से आती, समझ कहाँ से मिल सकती है? 21 वह तमाम जानदारों से पोशीदा रहती बल्कि परिदों से भी छुपी रहती है। 22 पाताल और मौत उसके बारे में कहते हैं, 'हमने उसके बारे में सिर्फ़ अफ़वाहें सुनी हैं।'

23 लेकिन अल्लाह उस तक जानेवाली राह को जानता है, उसे मालूम है कि कहाँ मिल सकती है। 24 क्योंकि उसी ने ज़मीन की हृद तक देखा, आसमान तले सब कुछ पर नज़र डाली 25 ताकि हवा का वज़न मुकर्रर करे और पानी की पैमाइश करके उस की हृद मुतैयिन करे। 26 उसी ने बारिश के लिए फ़रमान जारी किया और बादल की कड़कती बिजली के लिए रास्ता तैयार किया। 27 उसी वक्त उसने हिकमत को देखकर उस की जाँच-पड़ताल की। उसने उसे कायम भी किया और उस की तह तक तहक़ीक़ भी की। 28 इनसान से उसने कहा, 'सुनो, अल्लाह का ख़ौफ़ मानना ही हिकमत और बुराई से दूर रहना ही समझ है।'

## 29

काश मेरी ज़िंदगी पहले की तरह हो

1 अथर्व ने अपनी बात जारी रखकर कहा,

2 "काश मैं दुबारा माज़ी के वह दिन गुज़ार सकूँ जब अल्लाह मेरी देख-भाल करता था, 3 जब उस की शमा मेरे सर के ऊपर चमकती रही और मैं उस की रौशनी की मदद से अंधेरे में चलता था। 4 उस वक्त मेरी जवानी उरूज़ पर थी और मेरा ख़ैमा अल्लाह के साथे में रहता था। 5 कादिरि-मुतलक मेरे साथ था, और मैं अपने बेटों से घिरा रहता था। 6 कसरत के बाइस मेरे कदम दही से धोए रहते और चटान से तेल की नदियाँ फूटकर निकलती थीं।

7 जब कभी मैं शहर के दरवाज़े से निकलकर चौक में अपनी कुरसी पर बैठ जाता 8 तो जवान आदमी मुझे देखकर पीछे हटकर छुप जाते, बुजुर्ग उठकर खड़े रहते, 9 रईस बोलने से बाज़ आकर मुँह पर हाथ रखते, 10 शुरफ़ा की आवाज़ दब जाती और उनकी ज़बान तालू से चिपक जाती थी।

11 जिस कान ने मेरी बातें सुनी उसने मुझे मुबारक कहा, जिस आँख ने मुझे देखा उसने मेरे हक़ में गवाही दी। 12 क्योंकि जो मुसीबत में आकर आवाज़ देता उसे मैं बचाता, बेसहारा यतीम को छुटकारा देता था। 13 तबाह होनेवाले मुझे बरकत देते थे। मेरे बाइस बेवाओं के दिलों से ख़ुशी के नारे उभर आते थे। 14 मैं रास्तबाज़ी से मुल्बबस और रास्तबाज़ी मुझसे मुल्बबस रहती थी, इनसाफ़ मेरा चोगा और पगड़ी था।

15 अंधों के लिए मैं अँखें, लँगडों के लिए पाँव बना रहता था। 16 मैं ग़रीबों का बाप था, और जब कभी अजनबी को मुकदमा लड़ना पड़ा तो मैं ग़ौर से उसके मामले का मुआयना करता था ताकि उसका हक़ मारा न जाए। 17 मैंने बेदीन का जबड़ा तोड़कर उसके दाँतों में से शिकार छुड़ाया।

\* 28:16 carnelian † 28:16 lapis lazuli ‡ 28:19 peridot

18 उस वक्त मेरा खयाल था, 'मैं अपने ही घर में वफात पाऊँगा, सीमुरग की तरह अपनी जिंदगी के दिनों में झंझाफा करूँगा। 19 मेरी जड़ें पानी तक फैली और मेरी शाखें ओस से तर रहेंगी। 20 मेरी इज्जत हर वक्त ताजा रहेगी, और मेरे हाथ की कमान को नई तकवियत मिलती रहेगी।'

21 लोग मेरी सुनकर खामोशी से मेरे मशवरो के इंतज़ार में रहते थे। 22 मेरे बात करने पर वह जवाब में कुछ न कहते बल्कि मेरे अलफाज़ हलकी-सी बूँदा-बौंदी की तरह उन पर टपकते रहते। 23 जिस तरह इनसान शिद्दत से बारिश के इंतज़ार में रहता है उसी तरह वह मेरे इंतज़ार में रहते थे। वह मुँह पसारकर बहार की बारिश की तरह मेरे अलफाज़ को जज़ब कर लेते थे। 24 जब मैं उनसे बात करते वक्त मुसकराता तो उन्हें यकीन नहीं आता था, मेरी उन पर मेहरबानी उनके नज़दीक निहायत क़ीमती थी। 25 मैं उनकी राह उनके लिए चुनकर उनकी क्रियादत करता, उनके दरमियान यों बसता था जिस तरह बादशाह अपने दस्तों के दरमियान। मैं उस की मानिंद था जो मातम करनेवालों को तसल्ली देता है।

## 30

### मुझे रड़ किया गया है

1 लेकिन अब वह मेरा मज़ाक उड़ाते हैं, हालाँकि उनकी उम्र मुझसे कम है और मैं उनके बापों को अपनी भेड़-बकरियों की देख-भाल करनेवाले कुतों के साथ काम पर लगाने के भी लायक नहीं समझता था। 2 मेरे लिए उनके हाथों की मदद का क्या फायदा था? उनकी पूरी ताकत तो जाती रही थी। 3 खुराक की कमी और शदीद भूक के मोरे वह खुरक ज़मीन की थोड़ी-बहुत पैदावार कतर कतरकर खाते हैं। हर वक्त वह तबाही और वीरानी के दामन में रहते हैं। 4 वह झाड़ियों से खत्मी का फल तोड़कर खाते, झाड़ियों \* की जड़ें आग तापने के लिए इकट्ठी करते हैं। 5 उन्हें आबादियों से खारिज किया गया है, और लोग 'चोर चोर' चिल्लाकर उन्हें भगा देते हैं। 6 उन्हें घाटियों की ढलानों पर बसना पड़ता, वह ज़मीन के गारों में और पत्थरों के दरमियान ही रहते हैं। 7 झाड़ियों के दरमियान वह आवाज़ें देते और मिलकर ऊँटकटारों तले दबक जाते हैं। 8 इन कर्मिं और बेनाम लोगों को मार मारकर मुल्क से भगा दिया गया है।

9 और अब मैं इन्हीं का निशाना बन गया हूँ। अपने गीतों में वह मेरा मज़ाक उड़ाते हैं, मेरी बुरी हालत उनके लिए मज़हकाखेज़ मिसाल बन गई है। 10 वह धिन खाकर मुझसे दूर रहते और मेरे मुँह पर थूकने से नहीं सकते। 11 चूँकि अल्लाह ने मेरी कमान की तौत खोलकर मेरी ससवाई की है, इसलिए वह मेरी मौजूदगी में बेलगाम हो गए हैं। 12 मेरे दहने हाथ हज़ूम खड़े होकर मुझे ठोकर खिलाते और मेरी फ़सील के साथ मिट्टी के ढेर लगाते हैं ताकि उसमें रखना डालकर मुझे तबाह करें। 13 वह मेरी किलाबंदियों ढाकर मुझे खाक में मिलाने में कामयाब हो जाते हैं। किसी और की मदद दरकार ही नहीं। 14 वह रखने में दाखिल होते और जौक-दर-जौक तबाहशुदा फ़सील में से गुज़रकर आगे बढ़ते हैं। 15 हौलनाक वाकियात मेरे खिलाफ खड़े हो गए हैं, और वह तेज़ हवा की तरह मेरे वकार को उड़ा ले जा रहे हैं। मेरी सलामती बादल की तरह ओझल हो गई है।

16 और अब मेरी जान निकल रही है, मैं मुसीबत के दिनों के काबू में आ गया हूँ। 17 रात को मेरी हड्डियों को छेदा जाता है, कतरनेवाला दर्द मुझे कभी नहीं छोड़ता। 18 अल्लाह बड़े जोर से मेरा कपड़ा पकड़कर ग़रेबान की तरह मुझे अपनी सख्त गिरिफ्त में रखता है। 19 उसने मुझे कीचड़ में फेंक दिया है, और देखने में मैं खाक और मिट्टी ही बन गया हूँ। 20 मैं तुझे पुकारता, लेकिन तू जवाब नहीं देता। मैं खड़ा हो जाता, लेकिन तू मुझे घूरता ही रहता है। 21 तू मेरे साथ अपना सुलूक बदलकर मुझ पर ज़ुल्म करने लगा, अपने हाथ के पूरे जोर से मुझे सताने लगा है। 22 तू मुझे उड़ाकर हवा पर सवार होने देता, गरजते तूफ़ान में घुलने देता है। 23 हाँ, अब मैं जानता हूँ कि तू मुझे मौत के हवाले करेगा, उस घर में पहुँचाएगा जहाँ एक दिन तमाम जानदार जमा हो जाते हैं।

24 यकीनन मैंने कभी भी अपना हाथ किसी ज़रूरतमंद के खिलाफ नहीं उठाया जब उसने अपनी मुसीबत में आवाज़ दी। 25 बल्कि जब किसी का बुरा हाल था तो मैं हमदर्दी से रोने लगा, ग़रीबों की हालत देखकर मेरा दिल ग़म खाने लगा। 26 ताहम मुझ पर मुसीबत आई, अगरचे मैं भलाई की उम्मीद रख सकता था। मुझ पर घना अंधेरा छा गया, हालाँकि मैं रौशनी की तवक्को कर सकता था। 27 मेरे अंदर सब कुछ मुज़तरिब है और कभी आराम नहीं कर सकता, मेरा वास्ता तकलीफ़देह दिनों से पड़ता है। 28 मैं मातमी लिबास में फिरता हूँ और कोई मुझे तसल्ली नहीं देता, हालाँकि मैं ज़मात में खड़े होकर मदद के लिए आवाज़ देता हूँ। 29 मैं गीदड़ों का भाई और उकाबी उल्लुओ का साथी बन गया हूँ। 30 मेरी जिल्द काली हो गई, मेरी हड्डियाँ तपती गरमी के सबब से झुलस गई हैं। 31 अब मेरा सरोद सिर्फ़ मातम करने और मेरी बाँसरी सिर्फ़ रोनेवालों के लिए इस्तेमाल होती है।

\* 30:4 यानी झाड़ी बनाम broom, सीक किस्म की झाड़ी जिसके फूल ज़रद होते हैं।

## 31

मेरी आखिरी बात : मैं बेगुनाह हूँ

1 मैंने अपनी आँखों से अहद बाँधा है। तो फिर मैं किस तरह किसी कुँवारी पर नज़र डाल सकता हूँ? 2 क्योंकि इनसान को आसमान पर रहनेवाले खुदा की तरफ से क्या नसीब है, उसे बुलंदियों पर बसनेवाले कादिरे-मुतलक से क्या विरासत पाना है? 3 क्या ऐसा नहीं है कि नारास्त शख्स के लिए आफत और बदकार के लिए तबाही मुकर्रर है? 4 मेरी राहें तो अल्लाह को नज़र आती हैं, वह मेरा हर क़दम गिन लेता है।

5 न मैं कभी धोके से चला, न मेरे पाँवों ने कभी फ़रेब देने के लिए फुरती की। अगर इसमें ज़रा भी शक हो 6 तो अल्लाह मुझे इनसाफ के तराजू में तोल ले, अल्लाह मेरी बेइज़ामा हालत मालूम करे। 7 अगर मेरे क़दम सहीह राह से हट गए, मेरी आँखें मेरे दिल को गलत राह पर ले गईं या मेरे हाथ दागदार हुए 8 तो फिर जो बीज मैंने बोया उस की पैदावार कोई और खाए, जो फ़सलें मैंने लगाईं उन्हें उखाड़ा जाए।

9 अगर मेरा दिल किसी औरत से नाजायज़ ताल्लूक़ात रखने पर उकसाया गया और मैं इस मक़सद से अपने पड़ोसी के दरवाज़े पर ताक लगाए बैठा 10 तो फिर अल्लाह करे कि मेरी बीवी किसी और आदमी की गंदुम पीसे, कि कोई और उस पर झुक जाए। 11 क्योंकि ऐसी हरकत शर्मनाक होती, ऐसा जुर्म सज़ा के लायक होता है। 12 ऐसे गुनाह की आग पाताल तक सब कुछ भस्म कर देती है। अगर वह मुझसे सरज़द होता तो मेरी तमाम फ़सल जड़ों तक राख कर देता।

13 अगर मेरा नौकर-नौकरानियों के साथ झगडा था और मैंने उनका हक मारा 14 तो मैं क्या करूँ जब अल्लाह अदालत में खडा हो जाए? जब वह मेरी पूछ-गछ करे तो मैं उसे क्या जवाब दूँ? 15 क्योंकि जिसने मुझे मेरी माँ के पेट में बनाया उसने उन्हें भी बनाया। एक ही ने उन्हें भी और मुझे भी रहम में तश्कील दिया।

16 क्या मैंने पस्तहालों की ज़रूरियात पूरी करने से इनकार किया या बेवा की आँखों को बड़ने दिया? हरगिज़ नहीं! 17 क्या मैंने अपनी रोटी अकेले ही खाई और यतीम को उसमें शरीक न किया? 18 हरगिज़ नहीं, बल्कि अपनी जवानी से लेकर मैंने उसका बाप बनकर उस की परवरिश की, अपनी पैदाइश से ही बेवा की राहनुमाई की। 19 जब कभी मैंने देखा कि कोई कपड़ों की कमी के बाइस हलाक हो रहा है, कि किसी गरीब के पास कम्बल तक नहीं 20 तो मैंने उसे अपनी भेड़ों की कुछ ऊन दी ताकि वह गरम हो सके। ऐसे लोग मुझे दुआ देते थे। 21 मैंने कभी भी यतीमों के खिलाफ हाथ नहीं उठाया, उस वक़्त भी नहीं जब शहर के दरवाज़े में बैठे बुज़ुर्ग मेरे हक में थे। 22 अगर ऐसा न था तो अल्लाह करे कि मेरा शाना कंधे से निकलकर गिर जाए, कि मेरा बाजू जोड़ से फाड़ा जाए। 23 ऐसी हरकतें मेरे लिए नामुमकिन थीं, क्योंकि अगर मैं ऐसा करता तो मैं अल्लाह से दहशत खाता रहता, मैं उससे डर के मारे कायम न रह सकता।

24 क्या मैंने सोने पर अपना पूरा भरोसा रखा या खालिस सोने से कहा, 'तुझ पर ही मेरा एतमाद है?' हरगिज़ नहीं! 25 क्या मैं इसलिए खुश था कि मेरी दौलत ज़्यादा है और मेरे हाथ ने बहुत कुछ हासिल किया है? हरगिज़ नहीं! 26 क्या सरज़ की चमक-दमक और चाँद की पुरवकार रविश देखकर 27 मेरे दिल को कभी चुपके से गलत राह पर लाया गया? क्या मैंने कभी उनका एहताराम किया? \* 28 हरगिज़ नहीं, क्योंकि यह भी सज़ा के लायक जुर्म है। अगर मैं ऐसा करता तो बुलंदियों पर रहनेवाले खुदा का इनकार करता।

29 क्या मैं कभी खुश हुआ जब मुझसे नफरत करनेवाला तबाह हुआ? क्या मैं बाग बाग हुआ जब उस पर मुसीबत आई? हरगिज़ नहीं! 30 मैंने अपने मुँह को इज़ाज़त न दी कि गुनाह करके उस की जान पर लानत भेजे। 31 बल्कि मेरे ख़ेमे के आदमियों को तसलीम करना पडा, 'कोई नहीं है जो अथ्यब के गोशत से सेर न हुआ।' 32 अजन्बी को बाहर गली में रात गुज़ारनी नहीं पडती थी बल्कि मेरा दरवाज़ा मुसाफ़िरों के लिए खुला रहता था। 33 क्या मैंने कभी आदम की तरह अपना गुनाह छुपाकर अपना कुसर दिल में पोशीदा रखा, 34 इसलिए कि हूजूम से डरता और अपने रिश्तेदारों से दहशत खाता था? हरगिज़ नहीं! मैंने कभी भी ऐसा काम न किया जिसके बाइस मुझे डर के मारे चुप रहना पडता और घर से निकल नहीं सकता था।

35 काश कोई मेरी सुने! देखो, यहाँ मेरी बात पर मेरे दस्तख़त हैं, अब कादिरे-मुतलक मुझे जवाब दे। काश मेरे मुखालिफ लिखकर मुझे वह इलज़ामात बताएँ जो उन्होंने मुझ पर लगाए हैं! 36 अगर इलज़ामात का कागज़ मिलता तो मैं उसे उठाकर अपने कंधे पर रखता, उसे पगडी की तरह अपने सर पर बाँध लेता। 37 मैं अल्लाह को अपने क़दमों का पूरा हिसाब-किताब देकर रईस की तरह उसके करीब पहुँचता।

38 क्या मेरी ज़मीन ने मदद के लिए पुकारकर मुझ पर इलज़ाम लगाया है? क्या उस की रेघारयाँ मेरे सबब से मिलकर रो पडी हैं? 39 क्या मैंने उस की पैदावार अज़्र दिए बग़ैर खाई, उस पर मेहनत-मशक्कत करनेवालों के लिए आहें भरने का

\* 31:27 लफ्ज़ी तरज़ुमा : हाथ से उन्हें बोसा दिया।

बाइस बन गया? हरगिज नहीं! 40 अगर मैं इसमें कुसूरवार ठहरूँ तो गंदम के बजाए खारदार झाड़ियों और जौ के बजाए धत्रा † उगे।” यों अय्यब की बातें इखिताम को पहुँच गईं।

## 32

### चौथे साथी इलीह की तकरीर

1 तब मजक़रा तीनों आदमी अय्यब को जवाब देने से बाज़ आए, क्योंकि वह अब तक समझता था कि मैं रास्तबाज़ हूँ। 2 यह देखकर इलीह बिन बरकेल गुस्से हो गया। बूज़ शहर के रहनेवाले इस आदमी का खानदान राम था। एक तरफ तो वह अय्यब से खफ़ा था, क्योंकि यह अपने आपको अल्लाह के सामने रास्तबाज़ ठहराता था। 3 दूसरी तरफ़ वह तीनों दोस्तों से भी नाराज़ था, क्योंकि न वह अय्यब को सहीह जवाब दे सके, न साबित कर सके कि मुजरिम है। 4 इलीह ने अब तक अय्यब से बात नहीं की थी। जब तक दूसरों ने बात पूरी नहीं की थी वह खामोश रहा, क्योंकि वह बुसुर्ग थे। 5 लेकिन अब जब उसने देखा कि तीनों आदमी मज़ीद कोई जवाब नहीं दे सकते तो वह भडक उठा 6 और जवाब में कहा, “मैं कमउम्र हूँ जबकि आप सब उम्रसीदा हैं, इसलिए मैं कुछ शरमीला था, मैं आपको अपनी राय बताने से डरता था। 7 मैंने सोचा, चलो वह बोलें जिनके ज्यादा दिन गुजरे हैं, वह तालीम दें जिन्हें मुतअदिद सालों का तजरबा हासिल है।

8 लेकिन जो रूह इनसान में है यानी जो दम कादिरे-मुतलक ने उसमें फूँक दिया वही इनसान को समझ अता करता है। 9 न सिर्फ़ बूढ़े लोग दानिशमंद हैं, न सिर्फ़ वह इनसाफ़ समझते हैं जिनके बाल सफेद हैं। 10 चुनौचे मैं गुज़ारिश करता हूँ कि ज़रा मेरी बात सुनें, मुझे भी अपनी राय पेश करने दीजिए।

11 मैं आपके अलफ़ाज़ के इंतज़ार में रहा। जब आप मौजूँ जवाब तलाश कर रहे थे तो मैं आपकी दानिशमंद बातों पर गौर करता रहा। 12 मैंने आप पर पूरी तवज्जुह दी, लेकिन आपमें से कोई अय्यब को गलत साबित न कर सका, कोई उसके दलायल का मुनासिब जवाब न दे पाया। 13 अब ऐसा न हो कि आप कहें, ‘हमने अय्यब में हिकमत पाई है, इनसान उसे शिकस्त देकर भगा नहीं सकता बल्कि सिर्फ़ अल्लाह ही।’ 14 क्योंकि अय्यब ने अपने दलायल की तरतीब से मेरा मुकाबला नहीं किया, और जब मैं जवाब दूँगा तो आपकी बातें नहीं दोहराऊँगा।

15 आप घबराकर जवाब देने से बाज़ आए हैं, अब आप कुछ नहीं कह सकते। 16 क्या मैं मज़ीद इंतज़ार करूँ, गो आप खामोश हो गए हैं, आप स्क्रकर मज़ीद जवाब नहीं दे सकते? 17 मैं भी जवाब देने में हिस्सा लेना चाहता हूँ, मैं भी अपनी राय पेश करूँगा। 18 क्योंकि मेरे अंदर से अलफ़ाज़ छलक रहे हैं, मेरी रूह मेरे अंदर मुझे मजबूर कर रही है।

19 हकीकत में मैं अंदर से उस नई मैं की मानिंद हूँ जो बंद रखी गई हो, मैं नई मैं से भरी हुई नई मशकों की तरह फटने को हूँ। 20 मुझे बोलना है ताकि आराम पाऊँ, लाज़िम ही है कि मैं अपने होंटों को खोलकर जवाब दूँ। 21 यकीनन न मैं किसी की जानिबदारी, न किसी की चापलूसी करूँगा। 22 क्योंकि मैं खुशामद कर ही नहीं सकता, वरना मेरा खालिक मुझे जल्द ही उड़ा ले जाएगा।

## 33

### अल्लाह कई तरीकों से इनसान से हमकलाम होता है

1 ऐ अय्यब, मेरी तकरीर सुनें, मेरी तमाम बातों पर कान धरें! 2 अब मैं अपना मुँह खोल देता हूँ, मेरी ज़बान बोलती है। 3 मेरे अलफ़ाज़ सीधी राह पर चलनेवाले दिल से उभर आते हैं, मेरे होंट दियानतदारी से वह कुछ बयान करते हैं जो मैं जानता हूँ। 4 अल्लाह के रूह ने मुझे बनाया, कादिरे-मुतलक के दम ने मुझे जिंदगी बख्शी।

5 अगर आप इस काबिल हों तो मुझे जवाब दें और अपनी बातें तरतीब से पेश करके मेरा मुकाबला करें। 6 अल्लाह की नज़र में मैं तो आपके बराबर हूँ, मुझे भी मिट्टी से लेकर तश्कील दिया गया है। 7 चुनौचे मुझे आपके लिए दहशत का बाइस नहीं होना चाहिए, मेरी तरफ़ से आप पर भारी बोझ नहीं आएगा।

8 आपने मेरे सुनते ही कहा बल्कि आपके अलफ़ाज़ अभी तक मेरे कानों में गूँज रहे हैं, 9 मैं पाक हूँ, मुझसे जुर्म सरज़द नहीं हुआ, मैं बेगुनाह हूँ, मेरा कोई कुसूर नहीं। 10 तो भी अल्लाह मुझसे झगड़ने के मवाके ढूँढता और मुझे अपना दुश्मन समझता है। 11 वह मेरे पाँवों को काठ में डालकर मेरी तमाम राहों की पहरादारी करता है।’

12 लेकिन आपकी यह बात दुस्त नहीं, क्योंकि अल्लाह इनसान से आला है। 13 आप उससे झगड़कर क्यों कहते हैं, ‘वह मेरी किसी भी बात का जवाब नहीं देता?’ 14 शायद इनसान को अल्लाह नज़र न आए, लेकिन वह ज़रूर कभी इस तरीके, कभी उस तरीके से उससे हमकलाम होता है।

† 31:40 एक बदबदार पौदा।

15 कभी वह खब या रात की रोया में उससे बात करता है। जब लोग बिस्तर पर लेटकर गहरी नींद सो जाते हैं 16 तो अल्लाह उनके कान खोलकर अपनी नसीहतों से उन्हें दहशतजदा कर देता है। 17 यों वह इनसान को गलत काम करने और माग्नर होने से बाज़ रखकर 18 उस की जान गढे में उतरने और दरियाए-मौत को उबूर करने से रोक देता है।

19 कभी अल्लाह इनसान की बिस्तर पर दर्द के ज़रीए तरबियत करता है। तब उस की हड्डियों में लगातार जंग होती है। 20 उस की जान को ख़ुराक से घिन आती बल्कि उसे लजीज़तरीन खाने से भी नफ़रत होती है। 21 उसका गोशत-पोस्त सुकड़कर गायब हो जाता है जबकि जो हड्डियाँ पहले छुपी हुई थीं वह नुमायाँ तौर पर नज़र आती हैं। 22 उस की जान गढे के करीब, उस की ज़िंदगी हलाक करनेवालों के नज़दीक पहुँचती है।

23 लेकिन अगर कोई फ़रिश्ता, हज़ारों में से कोई सालिस उसके पास हो जो इनसान को सीधी राह दिखाए 24 और उस पर तरस खाकर कहे, 'उसे गढे में उतरने से छुड़ा, मुझे फ़िघा मिल गया है, 25 अब उसका जिस्म जवानी की निसबत ज़्यादा तरो-ताज़ा हो जाए और वह दुबारा जवानी की-सी ताकत पाए' 26 तो फिर वह शख्स अल्लाह से इल्तिज़ा करेगा, और अल्लाह उस पर मेहरबान होगा। तब वह बड़ी ख़ुशी से अल्लाह का चेहरा तकता रहेगा। इसी तरह अल्लाह इनसान की रास्तबाज़ी बहाल करता है।

27 ऐसा शख्स लोगों के सामने गाएगा और कहेगा, 'मैंने गुनाह करके सीधी राह टेढ़ी-मेढ़ी कर दी, और मुझे कोई फ़ायदा न हुआ। 28 लेकिन उसने फ़िघा देकर मेरी जान को मौत के गढे में उतरने से छुड़ाया। अब मेरी ज़िंदगी नूर से लुफ़अंदोज़ होगी।'

29 अल्लाह इनसान के साथ यह सब कुछ दो-चार मरतबा करता है 30 ताकि उस की जान गढे से वापस आए और वह ज़िंदगी के नूर से रौशन हो जाए।

31 ऐ अय्यब, ध्यान से मेरी बात सुनें, खामोश हो जाएँ ताकि मैं बात करूँ। 32 अगर आप जवाब में कुछ बताना चाहें तो बताएँ। बोलें, क्योंकि मैं आपको रास्तबाज़ ठहराने की आरज़ रखता हूँ। 33 लेकिन अगर आप कुछ बयान नहीं कर सकते तो मेरी सुनें, चुप रहें ताकि मैं आपको हिकमत की तालीम दूँ।"

## 34

अल्लाह हर एक को मुनासिब अज़्र देता है

1 फिर इलीह ने बात जारी रखकर कहा,

2 "ऐ दानिशमंदो, मेरे अलफ़ाज़ सुनें! ऐ आलिमो, मुझ पर कान धरे! 3 क्योंकि कान यों अलफ़ाज़ की जाँच-पड़ताल करता है जिस तरह ज़बान ख़ुराक को चख लेती है। 4 आएँ, हम अपने लिए वह कुछ चुन लें जो दुस्त है, आपस में जान लें कि क्या कुछ अच्छा है। 5 अय्यब ने कहा है, 'गो मैं बेगुनाह हूँ तो भी अल्लाह ने मुझे मेरे हुक्क से महरूम कर रखा है। 6 जो फ़ैसला मेरे बारे में किया गया है उसे मैं झूट करार देता हूँ। गो मैं बेकूसर हूँ तो भी तीर ने मुझे यों ज़खमी कर दिया कि उसका इलाज मुमकिन ही नहीं।' 7 अब मुझे बताएँ, क्या कोई अय्यब जैसा बुरा है? वह तो कुफ़र की बातें पानी की तरह पीते, 8 बदकारों की सोहबत में चलते और बेदीनों के साथ अपना वक़्त गुज़ारते हैं। 9 क्योंकि वह दावा करते हैं कि अल्लाह से लुफ़अंदोज़ होना इनसान के लिए बेफ़ायदा है।

10 चुनौचे ऐ समझदार मर्दो, मेरी बात सुनें! यह कैसे हो सकता है कि अल्लाह शरीर काम करे? यह तो मुमकिन ही नहीं कि कादिरे-मुतलक नाइन्साफ़ी करे। 11 यकीनन वह इनसान को उसके आमाल का मुनासिब अज़्र देकर उस पर वह कुछ लाता है जिसका तकाज़ा उसका चाल-चलन करता है। 12 यकीनन अल्लाह बेदीन हरकतें नहीं करता, कादिरे-मुतलक इनसाफ़ का खून नहीं करता। 13 किसने ज़मीन को अल्लाह के हवाले किया? किसने उसे पूरी दुनिया पर इख्तियार दिया? कोई नहीं! 14 अगर वह कभी इरादा करे कि अपनी रूह और अपना दम इनसान से वापस ले 15 तो तमाम लोग दम छोड़कर दुबारा ख़ाक हो जाएंगे।

16 ऐ अय्यब, अगर आपको समझ है तो सुनें, मेरी बातों पर ध्यान दें। 17 जो इन्साफ़ से नफ़रत करे क्या वह हुक्मत कर सकता है? क्या आप उसे मुज़रिम ठहराना चाहते हैं जो रास्तबाज़ और कादिरे-मुतलक है, 18 जो बादशाह से कह सकता है, 'ऐ बदमाश!' और शरफ़ा से, 'ऐ बेदीनो!?' 19 वह तो न रईसों की जानिबदारी करता, न ओहदेदारों को पस्तहालों पर तरजीह देता है, क्योंकि सब ही को उसके हाथों ने बनाया है। 20 वह पल-भर में, आधी रात ही मर जाते हैं। शरफ़ा को हिलाया जाता है तो वह कूच कर जाते हैं, ताकतवरों को बग़ैर किसी तगो-दौ के हटया जाता है।

21 क्योंकि अल्लाह की आँखें इनसान की राहों पर लगी रहती हैं, आदमज़ाद का हर क़दम उसे नज़र आता है। 22 कहीं इतनी तारीकी या घना अंधेरा नहीं होता कि बदकार उसमें छुप सके। 23 और अल्लाह किसी भी इनसान को उस वक़्त से आगाह नहीं करता जब उसे इलाही तख़्ते-अदालत के सामने आना है। 24 उसे तहकीक़ात की ज़रूरत ही नहीं बल्कि वह



जोरावरों को पाश पाश करके दूसरों को उनकी जगह खड़ा कर देता है।<sup>25</sup> वह तो उनकी हरकतों से वाकिफ है और उन्हें रात के वक़्त यों तहो-बाला कर सकता है कि चूर चूर हो जाएँ।<sup>26</sup> उनकी बेदीनी के जवाब में वह उन्हें सबकी नज़रों के सामने पटक देता है।<sup>27</sup> उस की पैरवी से हटने और उस की राहों का लिहाज़ न करने का यही नतीजा है।<sup>28</sup> क्योंकि उनकी हरकतों के बाइस पस्तहालों की चीखें अल्लाह के सामने और मुसीबतजदों की इल्लिजाएँ उसके कान तक पहुँची।<sup>29</sup> लेकिन अगर वह खामोश भी रहे तो कौन उसे मुज़रिम करार दे सकता है? अगर वह अपने चेहरे को छुपाए रखे तो कौन उसे देख सकता है? वह तो कौम पर बल्कि हर फ़रद पर हुकूमत करता है<sup>30</sup> ताकि शरीर हुकूमत न करे और कौम फँस न जाए।

<sup>31</sup> बेहतर है कि आप अल्लाह से कहें, 'मुझे गलत राह पर लाया गया है, आइंदा मैं दुबारा बुरा काम नहीं करूँगा।'<sup>32</sup> जो कुछ मुझे नज़र नहीं आता वह मुझे सिखा, अगर मुझसे नाइनसाफी हुई है तो आइंदा ऐसा नहीं करूँगा।'<sup>33</sup> क्या अल्लाह को आपको वह अज़्र देना चाहिए जो आपकी नज़र में मुनासिब है, गो आपने उसे रद्द कर दिया है? लाज़िम है कि आप खुद ही फ़ैसला करें, न कि मैं। लेकिन ज़रा वह कुछ पेश करें जो कुछ आप सहीह समझते हैं।<sup>34</sup> समझदार लोग बल्कि हर दानिशमंद जो मेरी बात सुने फ़रमाएगा, <sup>35</sup> 'अथर्व इल्म के साथ बात नहीं कर रहा, उसके अलफ़ाज़ फ़हम से खाली हैं।'<sup>36</sup> काश अथर्व की पूरी जॉच-पड़ताल की जाए, क्योंकि वह शरीरों के-से जवाब पेश करता, <sup>37</sup> वह अपने गुनाह में इज़ाफ़ा करके हमारे रूब-रू अपने जुर्म पर शक डालता और अल्लाह पर मुतअद्दिद इलज़ामात लगाता है!'"

## 35

अपने आपको रास्तबाज़ मत ठहराना

1 फिर इलीह ने अपनी बात जारी रखी,

2 "आप कहते हैं, 'मैं अल्लाह से ज़्यादा रास्तबाज़ हूँ।' क्या आप यह बात दुस्त समझते हैं<sup>3</sup> या यह कि 'मुझे क्या फ़ायदा है, गुनाह न करने से मुझे क्या नफ़ा होता है?'<sup>4</sup> मैं आपको और साथी दोस्तों को इसका जवाब बताता हूँ।

5 अपनी निगाह आसमान की तरफ उठाएँ, बुलदियों के बादलों पर गौर करें।<sup>6</sup> अगर आपने गुनाह किया तो अल्लाह को क्या नुक़सान पहुँचा है? गो आपसे मुतअद्दिद ज़रायम भी सरज़द हुए हों ताहम वह मुतअस्सिर नहीं होगा।<sup>7</sup> रास्तबाज़ जिंदगी गुज़ारने से आप उसे क्या दे सकते हैं? आपके हाथों से अल्लाह को क्या हासिल हो सकता है? कुछ भी नहीं!<sup>8</sup> आपके हमज़िस इनसान ही आपकी बेदीनी से मुतअस्सिर होते हैं, और आदमज़ाद ही आपकी रास्तबाज़ी से फ़ायदा उठाते हैं।

9 जब लोगों पर सख़्त जुल्म होता है तो वह चीखते-चिल्लाते और बड़ों की ज़्यादती के बाइस मदद के लिए आवाज़ देते हैं।<sup>10</sup> लेकिन कोई नहीं कहता, 'अल्लाह, मेरा खालिक कहाँ है? वह कहाँ है जो रात के दौरान नग़मे अता करता, <sup>11</sup> जो हमें ज़मीन पर चलनेवाले जानवरों की मिसबत ज़्यादा तालीम देता, हमें परिदों से ज़्यादा दानिशमंद बनाता है?'<sup>12</sup> उनकी चीखों के बावजूद अल्लाह जवाब नहीं देता, क्योंकि वह घमंडी और बुरे है।

13 यकीनन अल्लाह ऐसी बातिल फ़रियाद नहीं सुनता, कादिरे-मुतलक उस पर ध्यान ही नहीं देता।<sup>14</sup> तो फिर वह आप पर क्यों तवज़ुह दे जब आप दावा करते हैं, 'मैं उसे नहीं देख सकता,' और 'मेरा मामला उसके सामने ही है, मैं अब तक उसका इंतज़ार कर रहा हूँ?'<sup>15</sup> वह आपकी क्यों सुने जब आप कहते हैं, 'अल्लाह का ग़ज़ब कभी सज़ा नहीं देता, उसे बुराई की परवा ही नहीं?'<sup>16</sup> जब अथर्व मुँह खोलता है तो बेमानी बातें निकलती हैं। जो मुतअद्दिद अलफ़ाज़ वह पेश करता है वह इल्म से खाली है।"

## 36

अल्लाह कितना अज़ीम है

1 इलीह ने अपनी बात जारी रखी,

2 "थोड़ी देर के लिए सब करके मुझे इसकी तशरीह करने दें, क्योंकि मज़ीद बहुत कुछ है जो अल्लाह के हक में कहना है।<sup>3</sup> मैं दूर दूर तक फ़िरूंगा ताकि वह इल्म हासिल करूँ जिससे मेरे खालिक की रास्ती साबित हो जाए।<sup>4</sup> यकीनन जो कुछ मैं कहूँगा वह फ़रेबदेह नहीं होगा। एक ऐसा आदमी आपके सामने खड़ा है जिसने खुलूसदिली से अपना इल्म हासिल किया है।

5 गो अल्लाह अज़ीम कुदरत का मालिक है ताहम वह खुलूसदिलों को रद्द नहीं करता।<sup>6</sup> वह बेदीन को ज़्यादा देर तक जीने नहीं देता, लेकिन मुसीबतजदों का इनसाफ़ करता है।<sup>7</sup> वह अपनी आँखों को रास्तबाज़ों से नहीं फेरता बल्कि उन्हें बादशाहों के साथ तख़तनशीन करके बुलदियों पर सरफ़राज़ करता है।

8 फिर अगर उन्हें जंजीरों में जकड़ा जाए, उन्हें मुसीबत के रस्सों में गिरफ़्तार किया जाए<sup>9</sup> तो वह उन पर ज़ाहिर करता है कि उनसे क्या कुछ सरज़द हुआ है, वह उन्हें उनके ज़रायम पेश करके उन्हें दिखाता है कि उनका तकब्बुर का रवैया है।

10 वह उनके कानों को तरबियत के लिए खोलकर उन्हें हुकम देता है कि अपनी नाइनसाफी से बाज़ आकर वापस आओ। 11 अगर वह मानकर उस की खिदमत करने लगे तो फिर वह जीते-जी अपने दिन खुशहाली में और अपने साल सुकून से गुज़ारेगे। 12 लेकिन अगर न मानें तो उन्हें दरियाए-मौत को उबर करना पड़ेगा, वह इल्म से महरूम रहकर मर जाएंगे।

13 बेदीन अपनी हरकतों से अपने आप पर इलाही गज़ब लाते हैं। अल्लाह उन्हें बाँध भी ले, लेकिन वह मदद के लिए नहीं पुकारते। 14 जवानी में ही उनकी जान निकल जाती, उनकी ज़िंदगी मुकद्दस फ़रिशतों के हाथों खत्म हो जाती है। 15 लेकिन अल्लाह मुसीबतज़दा को उस की मुसीबत के ज़रीए नजात देता, उस पर होनेवाले जुल्म की मारिफ़त उसका कान खोल देता है।

16 वह आपको भी मुसीबत के मुँह से निकलने की तरगीब दिलाकर एक ऐसी खुली जगह पर लाना चाहता है जहाँ स्कावट नहीं है, जहाँ आपकी मेज़ उम्दा खानों से भरी रहेगी। 17 लेकिन इस वक़्त आप अदालत का वह प्याला पीकर सेर हो गए हैं जो बेदीनों के नसीब में है, इस वक़्त अदालत और इनसाफ़ ने आपको अपनी सख़्त गिरिफ़्त में ले लिया है। 18 खबरदार कि यह बात आपको कुफ़र बकने पर न उकसाए, ऐसा न हो कि तावान की बडी रकम आपको ग़लत राह पर ले जाए। 19 क्या आपकी दौलत आपका दिफ़ा करके आपको मुसीबत से बचाएगी? या क्या आपकी सिर-तोड़ कोशिशें यह संरजाम दे सकती हैं? हरगिज़ नहीं! 20 रात की आरज़ू न करें, उस वक़्त की जब कौमें जहाँ भी हों नेस्तो-नाबूद हो जाती हैं। 21 खबरदार रहें कि नाइनसाफी की तरफ़ रूज़ न करें, क्योंकि आपको इसी लिए मुसीबत से आजमाया जा रहा है।

22 अल्लाह अपनी कुदरत में सरफ़राज़ है। कौन उस जैसा उस्ताद है? 23 किसने मुकर्रर किया कि उसे किस राह पर चलना है? कौन कह सकता है, 'तूने ग़लत काम किया'? कोई नहीं! 24 उसके काम की तमज़ीद करना न भूलें, उस सारे काम की जिसकी लोगों ने अपने गीतों में हम्दो-सना की है। 25 हर शख्स ने यह काम देख लिया, इनसान ने दूर दूर से उसका मुलाहज़ा किया है।

26 अल्लाह अज़ीम है और हम उसे नहीं जानते, उसके सालों की तादाद मालूम नहीं कर सकते। 27 क्योंकि वह पानी के कतरे ऊपर खीचकर धुंध से बारिश निकाल लेता है, 28 वह बारिश जो बादल ज़मीन पर बरसा देते और जिसकी बौछाड़ें इनसान पर पड़ती हैं। 29 कौन समझ सकता है कि बादल किस तरह छा जाते, कि अल्लाह के मसकन से बिजलियाँ किस तरह कड़कती हैं? 30 वह अपने इर्दगिर्द रौशनी फैलाकर समुंदर की जड़ों तक सब कुछ रौशन करता है। 31 यों वह बादलों से कौमों की परवरिश करता, उन्हें कसरत की ख़ुराक मुहैया करता है। 32 वह अपनी मुश्रियों को बादल की बिजलियों से भरकर हुकम देता है कि क्या चीज़ अपना निशाना बनाएँ। 33 उसके बादलों की गरजती आवाज़ उसके गज़ब का एलान करती, नाइनसाफी पर उसके शदीद कहर को जाहिर करती है।

## 37

1 यह सोचकर मेरा दिल लरज़कर अपनी जगह से उछल पड़ता है। 2 सुनें और उस की गज़बनाक आवाज़ पर गौर करें, उस गुरीती आवाज़ पर जो उसके मुँह से निकलती है। 3 आसमान तले हर मक़ाम पर बल्कि ज़मीन की इंतहा तक वह अपनी बिजली चमकने देता है। 4 इसके बाद कड़कती आवाज़ सुनाई देती, अल्लाह की रोबदार आवाज़ गरज उठती है। और जब उस की आवाज़ सुनाई देती है तो वह बिजलियों को नहीं रोकता।

5 अल्लाह अनोखे तरीके से अपनी आवाज़ गरजने देता है। साथ साथ वह ऐसे अज़ीम काम करता है जो हमारी समझ से बाहर है। 6 क्योंकि वह बर्फ़ को फ़रमाता है, 'ज़मीन पर पड़ जा' और मूसलाधार बारिश को, 'अपना पूरा जोर दिखा।' 7 यों वह हर इनसान को उसके घर में रहने पर मजबूर करता है ताकि सब जान लें कि अल्लाह काम में मसरूफ़ है। 8 तब जंगली जानवर भी अपने भटों में छुप जाते, अपने घरों में पनाह लेते हैं।

9 तूफ़ान अपने कमरे से निकल आता, शिमाली हवा मुल्क में ठंड फैला देती है। 10 अल्लाह फूँक मारता तो पानी जम जाता, उस की सतह दूर दूर तक मुंजमिद हो जाती है। 11 अल्लाह बादलों को नमी से बोझिल करके उनके ज़रीए दूर तक अपनी बिजली चमकाता है। 12 उस की हिदायत पर वह मँडलाते हुए उसका हर हुकम तकमील तक पहुँचाते हैं। 13 यों वह उन्हें लोगों की तरबियत करने, अपनी ज़मीन को बरकत देने या अपनी शफ़क़त दिखाने के लिए भेज देता है।

14 ऐ अथर्व, मेरी इस बात पर ध्यान दें, स्करकर अल्लाह के अज़ीम कामों पर गौर करें। 15 क्या आपको मालूम है कि अल्लाह अपने कामों को कैसे तरतीब देता है, कि वह अपने बादलों से बिजली किस तरह चमकने देता है? 16 क्या आप बादलों की नक़लो-हरकत जानते हैं? क्या आपको उसके अनोखे कामों की समझ आती है जो कामिल इल्म रखता है? 17 जब ज़मीन जुन्वी लू की ज़द में आकर चुप हो जाती और आपके कपड़े तपने लगते हैं 18 तो क्या आप अल्लाह के साथ मिलकर आसमान को ठोक ठोककर पीतल के आईने की मानिद सख़्त बना सकते हैं? हरगिज़ नहीं!

19 हमें बताएँ कि अल्लाह से क्या कहें! अफसोस, अंधेरे के बाइस हम अपने खयालात को तरतीब नहीं दे सकते। 20 अगर मैं अपनी बात पेश करूँ तो क्या उसे कुछ मालूम हो जाएगा जिसका पहले इल्म न था? क्या कोई भी कुछ बयान कर सकता है जो उसे पहले मालूम न हो? कभी नहीं! 21 एक वक़्त धूप नज़र नहीं आती और बादल ज़मीन पर साया डालते हैं, फिर हवा चलने लगती और मौसम साफ़ हो जाता है। 22 शिमाल से सुनहरी चमक करीब आती और अल्लाह रोबदार शानो-शौकत से घिरा हुआ आ पहुँचता है। 23 हम तो कादिरे-मुतलक तक नहीं पहुँच सकते। उस की कुदरत आला और रास्ती जोरवार है, वह कभी इन्साफ़ का खून नहीं करता। 24 इसलिए आदमज़ाद उससे डरते और दिल के दानिशमंद उसका ख़ौफ़ मानते हैं।”

## 38

### अल्लाह का जवाब

1 फिर अल्लाह ख़ुद अय्यब से हमकलाम हुआ। तूफ़ान में से उसने उसे जवाब दिया,

2 “यह कौन है जो समझ से ख़ाली बातें करने से मेरे मनस्बे के सहीह मतलब पर परदा डालता है? 3 मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझसे सवाल करता हूँ, और तू मुझे तालीम दे।

4 तू कहाँ था जब मैंने ज़मीन की बुनियाद रखी? अगर तुझे इसका इल्म हो तो मुझे बता! 5 किसने उस की लंबाई और चौड़ाई मुर्करर की? क्या तुझे मालूम है? किसने नापकर उस की पैमाइश की? 6 उसके सतून किस चीज़ पर लगाए गए? किसने उसके कोने का बुनियादी पत्थर रखा, 7 उस वक़्त जब सबह के सितारे मिलकर शादियाना बजा रहे, तमाम फ़रिश्ते ख़ुशी के नारे लगा रहे थे?

8 जब समुंदर रहम से फूट निकला तो किसने दरवाज़े बंद करके उस पर काबू पाया? 9 उस वक़्त मैंने बादलों को उसका लिबास बनाया और उसे घने अंधेरे में यों लपेटा जिस तरह नौज़ाद को पोटडों में लपेटा जाता है। 10 उस की हृद्द मुर्करर करके मैंने उसे रोकने के दरवाज़े और कुंडे लगाए। 11 मैं बोला, ‘तुझे यहाँ तक आना है, इससे आगे न बढ़ना, तेरी रोबदार लहरों को यही स्कना है।’

12 क्या तूने कभी सबह को हुकम दिया या उसे तुलू होने की जगह दिखाई 13 ताकि वह ज़मीन के किनारों को पकड़कर बेदीनों को उससे झाड़ दे? 14 उस की रौशनी में ज़मीन यों तश्कील पाती है जिस तरह मिट्टी जिस पर मुहर लगाई जाए। सब कुछ रंगदार लिबास पहने नज़र आता है। 15 तब बेदीनों की रौशनी रोकी जाती, उनका उठाया हुआ बाजू तोड़ा जाता है।

16 क्या तू समुंदर के सरचश्मों तक पहुँचकर उस की गहराइयों में से गुज़रा है? 17 क्या मौत के दरवाज़े तुझ पर जाहिर हुए, तुझे घने अंधेरे के दरवाज़े नज़र आए हैं? 18 क्या तुझे ज़मीन के वर्सी मैदानों की पूरी समझ आई है? मुझे बता अगर यह सब कुछ जानता है!

19 रौशनी के मंबा तक ले जानेवाला रास्ता कहाँ है? अंधेरे की रिहाइशगाह कहाँ है? 20 क्या तू उन्हें उनके मकामों तक पहुँचा सकता है? क्या तू उनके घरों तक ले जानेवाली राहों से वाकिफ़ है? 21 बेशक तू इसका इल्म रखता है, क्योंकि तू उस वक़्त जन्म ले चुका था जब यह पैदा हुए। तू तो कर्दमी ज़माने से ही ज़िंदा है!

22 क्या तू वहाँ तक पहुँच गया है जहाँ बर्फ़ के ज़खीरि जमा होते हैं? क्या तूने ओलों के गोदामों को देख लिया है? 23 मैं उन्हें मुसीबत के वक़्त के लिए महफूज़ रखता हूँ, ऐसे दिनों के लिए जब लड़ाई और जंग छिड़ जाए। 24 मुझे बता, उस जगह तक किस तरह पहुँचना है जहाँ रौशनी तकसीम होती है, या उस जगह जहाँ से मशरिकी हवा निकलकर ज़मीन पर बिखर जाती है?

25 किसने मूसलाधार बारिश के लिए रास्ता और गरजते तूफ़ान के लिए राह बनाई 26 ताकि इन्सान से ख़ाली ज़मीन और ग़ैरआबाद रेगिस्तान की आबपाशी हो जाए, 27 ताकि वीरानो-सुनसान बयाबान की प्यास बुझ जाए और उससे हरियाली फूट निकले? 28 क्या बारिश का बाप है? कौन शबनम के कतरों का वालिद है?

29 बर्फ़ किस माँ के पेट से पैदा हुई? जो पाला आसमान से आकर ज़मीन पर पड़ता है किसने उसे जन्म दिया? 30 जब पानी पत्थर की तरह सख़्त हो जाए बल्कि गहरे समुंदर की सतह भी जम जाए तो कौन यह सरंजाम देता है? 31 क्या तू खोशाए-परवीन को बाँध सकता या जौजे की जंजीरों को खोल सकता है? 32 क्या तू करवा सकता है कि सितारों के मुख़लिफ़ झरमुट उनके मुर्कररा औकात के मुताबिक़ निकल आएँ? क्या तू दुब्बे-अकबर की उसके बच्चों समेत कियादत करने के काबिल है? 33 क्या तू आसमान के क़वानीन जानता या उस की ज़मीन पर हुकूमत मुतैयिन करता है?

34 क्या जब तू बुलंद आवाज़ से बादलों को हुकम दे तो वह तुझ पर मूसलाधार बारिश बरसाते हैं? 35 क्या तू बादल की बिजली ज़मीन पर भेज सकता है? क्या वह तेरे पास आकर कहती है, ‘मैं ख़िदमत के लिए हाज़िर हूँ?’ 36 किसने मिसर के लक़लक़ को हिक्मत दी, मुरग़ को समझ अता की? 37 किस को इतनी दानाई हासिल है कि वह बादलों को गिन सके?

कौन आसमान के इन घड़ों को उस वक्त उंडेल सकता है 38 जब मिट्टी ढाले हुए लोहे की तरह सख्त हो जाए और ढेले एक दूसरे के साथ चिपक जाएँ? कोई नहीं!

39 क्या तू ही शेरनी के लिए शिकार करता या शेरों को सेर करता है 40 जब वह अपनी छुपने की जगहों में दबक जाएँ या गुंजान जंगल में कहीं ताक लगाए बैठे हों? 41 कौन कौवे को खुराक मुहैया करता है जब उसके बच्चे भूक के बाइस अल्लाह को आवाज़ दें और मारे मारे फिरे?

## 39

1 क्या तुझे मालूम है कि पहाड़ी बकरियों के बच्चे कब पैदा होते हैं? जब हिरनी अपना बच्चा जन्म देती है तो क्या तू इसको मुलाहजा करता है? 2 क्या तू वह महीने गिनाता रहता है जब बच्चे हिरनियों के पेट में हों? क्या तू जानता है कि किस वक्त बच्चे जन्म देती है? 3 उस दिन वह दबक जाती, बच्चे निकल आते और दर्द-ज़ह खत्म हो जाता है। 4 उनके बच्चे ताकतवर होकर खुले मैदान में फलते-फूलते, फिर एक दिन चले जाते हैं और अपनी माँ के पास वापस नहीं आते।

5 किसने जंगली गधे को खुला छोड़ दिया? किसने उसके रस्से खोल दिए? 6 मैं ही ने बयाबान उसका घर बना दिया, मैं ही ने मुकर्र किया कि बंजर ज़मीन उस की रिहाइशगाह हो। 7 वह शहर का शोर-शराबा देखकर हँस उठता, और उसे हॉकनेवाले की आवाज़ सुननी नहीं पड़ती। 8 वह चरने के लिए पहाड़ी इलाक़े में इधर उधर घूमता और हरियाली का खोज लगाता रहता है।

9 क्या जंगली बैल तेरी खिदमत करने के लिए तैयार होगा? क्या वह कभी रात को तेरी चरनी के पास गुजारेगा? 10 क्या तू उसे बाँधकर हल चला सकता है? क्या वह वादी में तेरे पीछे चलकर सुहागा फेरेगा? 11 क्या तू उस की बड़ी ताकत देखकर उस पर एतमाद करेगा? क्या तू अपना सख्त काम उसके सुपर्द करेगा? 12 क्या तू भरोसा कर सकता है कि वह तेरा अनाज जमा करके गाहने की जगह पर ले आए? हरगिज़ नहीं!

13 शतुरमुरगा ख़ुशी से अपने परों को फड़फड़ाता है। लेकिन क्या उसका शाहपर लकलक या बाज़ के शाहपर की मानिंद है? 14 वह तो अपने अंडे ज़मीन पर अकेले छोड़ता है, और वह मिट्टी ही पर पकते हैं। 15 शतुरमुरगा को खयाल तक नहीं आता कि कोई उन्हें पाँवों तले कुचल सकता या कोई जंगली जानवर उन्हें रौंद सकता है। 16 लगता नहीं कि उसके अपने बच्चे हैं, क्योंकि उसका उनके साथ सलूक इतना सख्त है। अगर उस की मेहनत नाकाम निकले तो उसे परवा ही नहीं, 17 क्योंकि अल्लाह ने उसे हिकमत से महरूम रखकर उसे समझ से न नवाज़ा। 18 तो भी वह इतनी तेज़ी से उछलकर भाग जाता है कि घोड़े और घुडसवार की दौड़ देखकर हँसने लगता है।

19 क्या तू घोड़े को उस की ताकत देकर उस की गरदन को अयाल से आरास्ता करता है? 20 क्या तू ही उसे टिड्डी की तरह फलाने देता है? जब वह जोर से अपने नथनों को फूलाकर आवाज़ निकालता है तो कितना रोबदार लगता है! 21 वह वादी में सुम मार मारकर अपनी ताकत की ख़ुशी मनाता, फिर भागकर मैदाने-जंग में आ जाता है। 22 वह खौफ का मज़ाक उड़ाता और किसी से भी नहीं डरता, तलवार के रूबरू भी पीछे नहीं हटता। 23 उसके ऊपर तरकश खड़खड़ाता, नेज़ा और शमशेर चमकती है। 24 वह बड़ा शोर मचाकर इतनी तेज़ी और जोशो-खुरोश से दुश्मन पर हमला करता है कि बिगुल बजते वक्त भी रोका नहीं जाता। 25 जब भी बिगुल बजे वह जोर से हिनहिनाता और दूर ही से मैदाने-जंग, कमाँडरों का शोर और जंग के नारे सुँघ लेता है।

26 क्या बाज़ तेरी ही हिकमत के ज़रीए हवा में उड़कर अपने परों को जुनब की जानिब फैला देता है? 27 क्या उकाब तेरे ही हुकम पर बुलंदियों पर मँडलाता और ऊँची ऊँची जगहों पर अपना घोंसला बना लेता है? 28 वह चटान पर रहता, उसके टूटे-फूटे किनारों और किलाबंद जगहों पर बसेरा करता है। 29 वहाँ से वह अपने शिकार का खोज लगाता है, उस की आँखें दूर दूर तक देखती हैं। 30 उसके बच्चे खून के लालच में रहते, और जहाँ भी लाश हो वहाँ वह हाज़िर होता है।”

## 40

अय्यब रब को जवाब नहीं दे सकता

1 रब ने अय्यब से पूछा,

2 “क्या मलामत करनेवाला अदालत में कादिरे-मुतलक से झगड़ना चाहता है? अल्लाह की सरज़निश करनेवाला उसे जवाब दे!”

3 तब अय्यब ने जवाब देकर रब से कहा,

4 “मैं तो नालायक हूँ, मैं किस तरह तुझे जवाब दूँ? मैं अपने मुँह पर हाथ रखकर खामोश रहूँगा। 5 एक बार मैंने बात की और इसके बाद मज़ीद एक दफा, लेकिन अब से मैं जवाब में कुछ नहीं कहूँगा।”

अल्लाह का जवाब : क्या तुझे मेरी जैसी कुदरत हासिल है?

6 तब अल्लाह तुफान में से अय्यब से हमकलाम हुआ,

7 “मर्द की तरह कमरबस्ता हो जा! मैं तुझसे सवाल करूँ और तू मुझे तालीम दे। 8 क्या तू वाकई मेरा इनसाफ़ मनसूख करके मुझे मुजरिम ठहराना चाहता है ताकि खुद रास्तबाज़ ठहरे? 9 क्या तेरा बाजू अल्लाह के बाजू जैसा ज़ोरावर है? क्या तेरी आवाज़ उस की आवाज़ की तरह कड़कती है। 10 आ, अपने आपको शानो-शौकत से आरास्ता कर, इज़्तो-जलाल से मूलबबस हो जा! 11 बयकवक्त अपना शदीद कहर मुख्तलिफ़ जगहों पर नाज़िल कर, हर मगरूर को अपना निशाना बनाकर उसे खाक में मिला दे। 12 हर मुतकब्बिर पर गौर करके उसे पस्त कर। जहाँ भी बेदीन हो वहाँ उसे कुचल दे। 13 उन सबको मिट्टी में छुपा दे, उन्हें रस्सों में जकड़कर किसी खुफ़िया जगह गिरिफ़्तार कर। 14 तब ही मैं तेरी तारीफ़ करके मान जाऊँगा कि तेरा दहना हाथ तुझे नजात दे सकता है।

अल्लाह की कुदरत और हिकमत की दो मिसालें

15 बहेमोत \* पर गौर कर जिसे मैंने तुझे खलक करते वक्त बनाया और जो बैल की तरह घास खाता है। 16 उस की कमर में कितनी ताकत, उसके पेट के पठों में कितनी कुव्वत है। 17 वह अपनी दुम को देवदार के दरख्त की तरह लटकने देता है, उस की रानों की नसें मज़बूती से एक दूसरी से जुड़ी हुई हैं। 18 उस की हड्डियाँ पीतल के-से पायप, लोहे के-से सरीए हैं। 19 वह अल्लाह के कामों में से अब्वल है, उसके खालिक ही ने उसे उस की तलवार दी। 20 पहाड़ियाँ उसे अपनी पैदावार पेश करती, खुले मैदान के तमाम जानवर वहाँ खेलते कुदते हैं। 21 वह काँटेदार झाड़ियों के नीचे आराम करता, सरकंडों और दलदल में छुपा रहता है। 22 खारदार झाड़ियाँ उस पर साया डालती और नदी के सफ़ेदा के दरख्त उसे घेरे रखते हैं। 23 जब दरिया सैलाब की सूत इख्तियार करे तो वह नहीं भागता। गो दरियाए-यरदन उसके मुँह पर फूट पड़े तो भी वह अपने आपको महफूज़ समझता है। 24 क्या कोई उस की आँखों में उंगलियाँ डालकर उसे पकड़ सकता है? अगर उसे फंदे में पकड़ा भी जाए तो क्या कोई उस की नाक को छेद सकता है? हरगिज़ नहीं!

## 41

1 क्या तू लिवियातान \* अज़दहे को मछली के काँटे से पकड़ सकता या उस की ज़बान को रस्से से बाँध सकता है? 2 क्या तू उस की नाक छेदकर उसमें से रस्सा गुज़ार सकता या उसके जबड़े को काँटे से चीर सकता है? 3 क्या वह कभी तुझसे बार बार रहम माँगगा या नरम नरम अलफ़ाज़ से तेरी खुशामद करेगा? 4 क्या वह कभी तेरे साथ अहद करेगा कि तू उसे अपना गुलाम बनाए रखे? हरगिज़ नहीं! 5 क्या तू परिदे की तरह उसके साथ खेल सकता या उसे बाँधकर अपनी लड़कियों को दे सकता है ताकि वह उसके साथ खेलें? 6 क्या सौदागर कभी उसका सौदा करेगा या उसे ताज़िरो में तकसीम करेगा? कभी नहीं! 7 क्या तू उस की खाल को भालों से या उसके सर को हारपूनों से भर सकता है? 8 एक दफ़ा उसे हाथ लगाया तो यह लड़ाई तुझे हमेशा याद रहेगी, और तू आइंदा ऐसी हरकत कभी नहीं करेगा!

9 यकीनन उस पर काबू पाने की हर उम्मीद फ़रेबदेह साबित होगी, क्योंकि उसे देखते ही इनसान गिर जाता है। 10 कोई इतना बेधडक नहीं है कि उसे मुश्तइल करे। तो फिर कौन मेरा सामना कर सकता है? 11 किसने मुझे कुछ दिया है कि मैं उसका मुआवज़ा दूँ। आसमान तले हर चीज़ मेरी ही है!

12 मैं तुझे उसके आज़ा के बयान से महरूम नहीं रखूँगा, कि वह कितना बड़ा, ताकतवर और खूबसूरत है। 13 कौन उस की खाल † उतार सकता, कौन उसके जि़रा-बक़र की दो तर्हों के अंदर तक पहुँच सकता है? 14 कौन उसके मुँह का दरवाज़ा खोलने की ज़रूत करे? उसके हौलनाक दाँत देखकर इनसान के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। 15 उस की पीठ पर एक दूसरी से खूब जुड़ी हुई ढालों की कतारें होती हैं। 16 वह इतनी मज़बूती से एक दूसरी से लगी होती हैं कि उनके दरमियान से हवा भी नहीं गुज़र सकती, 17 बल्कि यों एक दूसरी से चिमटी और लिपटी रहती हैं कि उन्हें एक दूसरी से अलग नहीं किया जा सकता।

18 जब छीकें मारे तो बिजली चमक उठती है। उस की आँखें तुलूए-सुबह की पलकों की मानिंद हैं। 19 उसके मुँह से मशालें और चिंगारियाँ खारिज़ होती हैं, 20 उसके नथनों से धुआँ यों निकलता है जिस तरह भडकती और दहकती आग पर रखी गई देग से। 21 जब फूँक मारे तो कोयले दहक उठते और उसके मुँह से शोले निकलते हैं।

22 उस की गरदन में इतनी ताकत है कि जहाँ भी जाए वहाँ उसके आगे आगे मायूसी फैल जाती है। 23 उसके गोशर-पोस्त की तर्हें एक दूसरी से खूब जुड़ी हुई हैं, वह ढाले हुए लोहे की तरह मज़बूत और बे-लचक हैं। 24 उसका दिल पत्थर जैसा सख्त, चक्की के निचले पाट जैसा मुस्तहकम है।

\* 40:15 साइंसदान मुत्फिक़ नहीं कि यह कौन-सा जानवर था।  
† 41:13 लफज़ी तरकुमा : बैस्नी लिबास।

\* 41:1 साइंसदान मुत्फिक़ नहीं कि यह कौन-सा जानवर था। † 41:13 लफज़ी

25 जब उठे तो जोरावर डर जाते और दहशत खाकर पीछे हट जाते हैं। 26 हथियारों का उस पर कोई असर नहीं होता, खाह कोई तलवार, नेजे, बरछी या तीर से उस पर हमला क्यों न करे। 27 वह लोहे को भूसा और पीतल को गली सड़ी लकड़ी समझता है। 28 तीर उसे नहीं भगा सकते, और अगर फलाखन के पत्थर उस पर चलाओ तो उनका असर भूसे के बराबर है। 29 डंडा उसे तिनका-सा लगता है, और वह शमशेर का शोर-शराबा सुनकर हँस उठता है। 30 उसके पेट पर तेज़ ठीकरे से लगे हैं, और जिस तरह अनाज पर गाहने का आला चलाया जाता है उसी तरह वह कीचड़ पर चलता है। 31 जब समुंदर की गहराइयों में से गुजरे तो पानी उबलती देग की तरह खौलने लगता है। वह मरहम के मुख्तलिफ अजजा को मिला मिलाकर तैयार करनेवाले अतार की तरह समुंदर को हरकत में लाता है। 32 अपने पीछे वह चमकता-दमकता रास्ता छोड़ता है। तब लगता है कि समुंदर की गहराइयों के सफेद बाल हैं। 33 दुनिया में उस जैसा कोई मखलूक नहीं, ऐसा बनाया गया है कि कभी न डरे। 34 जो भी आला हो उस पर वह हिकारत की निगाह से देखता है, वह तमाम रोबदार जानवरों का बादशाह है।”

## 42

### अथर्व की आखिरी बात

1 तब अथर्व ने जवाब में रब से कहा,

2 “मैंने जान लिया है कि तू सब कुछ कर पाता है, कि तेरा कोई भी मनसूबा रोका नहीं जा सकता। 3 तूने फरमाया, ‘यह कौन है जो समझ से खाली बातें करने से मेरे मनसूबे के सहीह मतलब पर परदा डालता है?’ यकीनन मैंने ऐसी बातें बयान की जो मेरी समझ से बाहर हैं, ऐसी बातें जो इतनी अनोखी हैं कि मैं उनका इल्म रख ही नहीं सकता। 4 तूने फरमाया, ‘सुन मेरी बात तो मैं बोलूँगा। मैं तुझसे सवाल करता हूँ, और तू मुझे तालीम दे।’ 5 पहले मैंने तेरे बारे में सिर्फ सुना था, लेकिन अब मेरी अपनी आँखों ने तुझे देखा है। 6 इसलिए मैं अपनी बातें मुस्तरद करता, अपने आप पर खाक और राख डालकर तौबा करता हूँ।”

### अथर्व अपने दोस्तों की शफाअत करता है

7 अथर्व से यह तमाम बातें कहने के बाद रब इलीफ़ज़ तेमानी से हमकलाम हुआ, “मैं तुझसे और तेरे दो दोस्तों से गुस्से हूँ, क्योंकि गो मेरे बंदे अथर्व ने मेरे बारे में दुस्तर बातें की मगर तुमने ऐसा नहीं किया। 8 चुनौचे अब सात जवान बैल और सात मेंढे लेकर मेरे बंदे अथर्व के पास जाओ और अपनी खातिर भस्म होनेवाली कुरबानी पेश करो। लाज़िम है कि अथर्व तुम्हारी शफाअत करे, वरना मैं तुम्हें तुम्हारी हमाकत का पूरा अज़ दूँगा। लेकिन उस की शफाअत पर मैं तुम्हें मुआफ करूँगा, क्योंकि मेरे बंदे अथर्व ने मेरे बारे में वह कुछ बयान किया जो सहीह है जबकि तुमने ऐसा नहीं किया।”

9 इलीफ़ज़ तेमानी, बिलदद सूखी और ज़फ़र नामाती ने वह कुछ किया जो रब ने उन्हें करने को कहा था तो रब ने अथर्व की सुनी।

10 और जब अथर्व ने दोस्तों की शफाअत की तो रब ने उसे इतनी बरकत दी कि आखिरकार उसे पहले की निसबत दुगनी दौलत हासिल हुई। 11 तब उसके तमाम भाई-बहनें और पुराने जाननेवाले उसके पास आए और घर में उसके साथ खाना खाकर उस आफत पर अफसोस किया जो रब अथर्व पर लाया था। हर एक ने उसे तसल्ली देकर उसे एक सिक्का और सोने का एक छल्ला दे दिया।

12 अब से रब ने अथर्व को पहले की निसबत कहीं ज्यादा बरकत दी। उसे 14,000 बकरियाँ, 6,000 ऊँट, बैलों की 1,000 जोड़ियाँ और 1,000 गधियाँ हासिल हुईं। 13 नीज़, उसके मज़ीद सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं। 14 उसने बेटियों के यह नाम रखे : पहली का नाम यमीमा, दूसरी का कसियह और तीसरी का करन-हप्पुक। 15 तमाम मुल्क में अथर्व की बेटियों जैसी खबसूरत खवातीन पाई नहीं जाती थी। अथर्व ने उन्हें भी मीरास में मिलकियत दी, ऐसी मिलकियत जो उनके भाइयों के दरमियान ही थी।

16 अथर्व मज़ीद 140 साल जिंदा रहा, इसलिए वह अपनी औलाद को चौथी पुश्त तक देख सका। 17 फिर वह दराज़ जिंदगी से आसूदा होकर इतकाल कर गया।

## जबूर पहली किताब : 1-41

### 1

दो राहें

- 1 मुबारक है वह जो न बेदीनों के मशवरे पर चलता, न गुनाहगारों की राह पर क़दम रखता, और न तानाज़नों के साथ बैठता है।
- 2 बल्कि रब की शरीअत से लुफ़अंदोज़ होता और दिन-रात उसी पर ग़ौरो-ख़ौज़ करता रहता है।
- 3 वह नहरों के किनारे पर लगे दरख़्त की मानिद है। वक़्त पर वह फल लाता, और उसके पत्ते नहीं मुरझाते। जो कुछ भी करे उसमें वह कामयाब है।

4 बेदीनों का यह हाल नहीं होता। वह भूसे की मानिद है जिसे हवा उड़ा ले जाती है।

5 इसलिए बेदीन अदालत में कायम नहीं रहेंगे, और गुनाहगार का रास्तबाज़ों की मजलिस में मक़ाम नहीं होगा।

6 क्योंकि रब रास्तबाज़ों की राह की पहरादारी करता है जबकि बेदीनों की राह तबाह हो जाएगी।

### 2

अल्लाह का मसीह

- 1 अक़वाम क्यों तैश में आ गई हैं? उम्मतें क्यों बेकार साज़िशें कर रही हैं?
- 2 दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए, हुक़मरान रब और उसके मसीह के खिलाफ़ जमा हो गए हैं।
- 3 वह कहते हैं, “आओ, हम उनकी जंजीरों को तोड़कर आज़ाद हो जाएँ, उनके रस्सों को दूर तक फेंक दें।”
- 4 लेकिन जो आसमान पर तख़्तनशीन है वह हँसता है, रब उनका मज़ाक़ उड़ाता है।
- 5 फिर वह गुस्से से उन्हें डाँटता, अपना शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके उन्हें डराता है।
- 6 वह फ़रमाता है, “मैंने खुद अपने बादशाह को अपने मुक़द्दस पहाड़ सिव्यून पर मुक़र्र किया है!”
- 7 आओ, मैं रब का फ़रमान सुनाऊँ। उसने मुझसे कहा, “तू मेरा बेटा है, आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।
- 8 मुझसे माँग तो मैं तूझे मीरास में तमाम अक़वाम अता करूँगा, दुनिया की इतहा तक सब कुछ बख़्श दूँगा।
- 9 तू उन्हें लोहे के शाही असा से पाश पाश करेगा, उन्हें मिट्टी के बरतनों की तरह चकनाचूर करेगा।”
- 10 चुनौचे ऐ बादशाहो, समझ से काम लो! ऐ दुनिया के हुक़मरानो, तरबियत कबूल करो!
- 11 ख़ौफ़ करते हुए रब की ख़िदमत करो, लरजते हुए ख़ुशी मनाओ।
- 12 बेटे को बोसा दो, ऐसा न हो कि वह गुस्से हो जाए और तुम रास्ते में ही हलाक हो जाओ। क्योंकि वह एकदम तैश में आ जाता है। मुबारक है वह सब जो उसमें पनाह लेते हैं।

### 3

सुबह को मदद के लिए दुआ

1 दाऊद का ज़बूर। उस वक़्त जब उसे अपने बेटे अबीसलूम से भागना पड़ा।

ऐ रब, मेरे दुश्मन कितने ज्यादा हैं, कितने लोग मेरे खिलाफ़ उठ खड़े हुए हैं!

2 मेरे बारे में बहुतेरे कह रहे हैं, “अल्लाह इसे छुटकारा नहीं देगा।” (सिलाह) \*

3 लेकिन तू ऐ रब, चारों तरफ़ मेरी हिफ़ाज़त करनेवाली ढाल है। तू मेरी इज़्जत है जो मेरे सर को उठाए रखता है।

4 मैं बुलंद आवाज़ से रब को पुकारता हूँ, और वह अपने मुक़द्दस पहाड़ से मेरी सुनता है। (सिलाह)

5 मैं आराम से लेटकर सो गया, फिर जाग उठा, क्योंकि रब खुद मुझे सँभाले रखता है।

6 उन हज़ारों से मैं नहीं डरता जो मुझे घेरे रखते हैं।

\* 3:2 सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरिन में इसके मतलब के बारे में इत्फ़ाके-राय नहीं होती।

7 ऐ रब, उठ! ऐ मेरे खुदा, मुझे रिहा कर! क्योंकि तूने मेरे तमाम दुश्मनों के मुँह पर थप्पड़ मारा, तूने बेदीनों के दाँतों को तोड़ दिया है।

8 रब के पास नजात है। तेरी बरकत तेरी कौम पर आए। (सिलाह)

## 4

शाम को मदद के लिए दुआ

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तारदार साजों के साथ गाना है।

ऐ मेरी रास्ती के खुदा, मेरी सुन जब मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ तू जो मुसीबत में मेरी मखलसी रहा है मुझ पर मेहरबानी करके मेरी इल्तिजा सुन!

2 ऐ आदमजादो, मेरी इज्जत कब तक खाक में मिलाई जाती रहेगी? तुम कब तक बातिल चीजों से लिपटे रहोगे, कब तक झूट की तलाश में रहोगे? (सिलाह)

3 जान लो कि रब ने ईमानदार को अपने लिए अलग कर रखा है। रब मेरी सुनेगा जब मैं उसे पुकारूँगा।

4 गुस्से में आते वक्त गुनाह मत करना। अपने बिस्तर पर लेटकर मामले पर सोच-बिचार करो, लेकिन दिल में, खामोशी से। (सिलाह)

5 रास्ती की कुरबानियाँ पेश करो, और रब पर भरोसा रखो।

6 बहूँतरे शक कर रहे है, “कौन हमारे हालात ठीक करेगा?” ऐ रब, अपने चेहरे का नूर हम पर चमका!

7 तूने मेरे दिल को खुशी से भर दिया है, ऐसी खुशी से जो उनके पास भी नहीं होती जिनके पास कसरत का अनाज और अंगूर है।

8 मैं आराम से लेटकर सो जाता हूँ, क्योंकि तू ही ऐ रब मुझे हिफाजत से बसने देता है।

## 5

हिफाजत के लिए दुआ

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। इसे बाँसरी के साथ गाना है।

ऐ रब, मेरी बातें सुन, मेरी आहों पर ध्यान दे!

2 ऐ मेरे बादशाह, मेरे खुदा, मदद के लिए मेरी चीखें सुन, क्योंकि मैं तुझी से दुआ करता हूँ।

3 ऐ रब, सबह को तू मेरी आवाज सुनता है, सबह को मैं तुझे सब कुछ तरतीब से पेश करके जवाब का इंतजार करने लगता हूँ।

4 क्योंकि तू ऐसा खुदा नहीं है जो बेदीनी से खूश हो। जो बुरा है वह तेरे हुज़ूर नहीं ठहर सकता।

5 मग़्स्तर तेरे हुज़ूर खड़े नहीं हो सकते, बदकार से तू नफरत करता है।

6 झूट बोलनेवालों को तू तबाह करता, खूनखार और धोकेबाज़ से रब धिन खाता है।

7 लेकिन मुझ पर तूने बड़ी मेहरबानी की है, इसलिए मैं तेरे घर में दाखिल हो सकता, मैं तेरा खौफ मानकर तेरी मुकद्दस सुकूनतगाह के सामने सिजदा करता हूँ।

8 ऐ रब, अपनी रास्त राह पर मेरी राहनुमाई कर ताकि मेरे दुश्मन मुझ पर गालिब न आएँ। अपनी राह को मेरे आगे हमवार कर।

9 क्योंकि उनके मुँह से एक भी काबिले-एतमाद बात नहीं निकलती। उनका दिल तबाही से भरा रहता, उनका गला खुली कब्र है, और उनकी ज़बान चिकनी-चुपड़ी बातें उगलती रहती है।

10 ऐ रब, उन्हें उनके गलत काम का अज़्र दे। उनकी साज़िशें उनकी अपनी तबाही का बाइस बनें। उन्हें उनके मुतअदिद गुनाहों के बाइस निकालकर मुंतशिर कर दे, क्योंकि वह तुझसे सरकश हो गए हैं।

11 लेकिन जो तुझमें पनाह लेते हैं वह सब खूश हों, वह अबद तक शादियाना बजाएँ, क्योंकि तू उन्हें महफूज़ रखता है। तेरे नाम को प्यार करनेवाले तेरा जशन मनाएँ।



12 क्योंकि तू ऐ रब, रास्तबाज़ को बरकत देता है, तू अपनी मेहरबानी की ढाल से उस की चारों तरफ़ हिफाज़त करता है।

## 6

मुसीबत में दुआ (तौबा का पहला जब्र)

1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।

ऐ रब, गुस्से में मुझे सज़ा न दे, तैश में मुझे तंबीह न कर।

2 ऐ रब, मुझ पर रहम कर, क्योंकि मैं निढाल हूँ। ऐ रब, मुझे शफ़ा दे, क्योंकि मेरे आज्ञा दहशतजदा है।

3 मेरी जान निहायत ख़ौफ़जदा है। ऐ रब, तू कब तक देर करेगा?

4 ऐ रब, वापस आकर मेरी जान को बचा। अपनी शफ़कत की खातिर मुझे छुटकारा दे।

5 क्योंकि मुरदा तुझे याद नहीं करता। पाताल में कौन तेरी सताइश करेगा?

6 मैं कराहते कराहते थक गया हूँ। पूरी रात रोने से बिस्तर भीग गया है, मेरे आँसुओं से पलंग गल गया है।

7 गम के मारे मेरी आँखें सूज़ गई हैं, मेरे मुखालिफ़ों के हमलों से वह ज़ाया होती जा रही है।

8 ऐ बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ, क्योंकि रब ने मेरी आहो-बुका सुनी है।

9 रब ने मेरी इल्तिजाओं को सुन लिया है, मेरी दुआ रब को कबूल है।

10 मेरे तमाम दुश्मनों की स्सवाई हो जाएगी, और वह सख़्त घबरा जाएंगे। वह मुडकर अचानक ही शरमिदा हो जाएंगे।

## 7

इनसाफ़ के लिए दुआ

1 दाऊद का वह मातमी गीत जो उसने कूश बिनयमीनी की बातों पर रब की तमजीद में गाया।

ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। मुझे उन सबसे बचाकर छुटकारा दे जो मेरा ताक्कुब कर रहे हैं,

2 वरना वह शेरबबर की तरह मुझे फाड़कर टुकड़े टुकड़े कर देंगे, और बचानेवाला कोई नहीं होगा।

3 ऐ रब मेरे ख़ुदा, अगर मुझसे यह कुछ सरज़द हुआ और मेरे हाथ कुस्स्वार हों,

4 अगर मैंने उससे बुरा सुलूक किया जिसका मेरे साथ झगडा नहीं था या अपने दुश्मन को खाहमखाह लूट लिया हो

5 तो फिर मेरा दुश्मन मेरे पीछे पड़कर मुझे पकड़ ले। वह मेरी जान को मिट्टी में कुचल दे, मेरी इज़ज़त को ख़ाक में मिलाए।

(सिलाह)

6 ऐ रब, उठ और अपना ग़ज़ब दिखा! मेरे दुश्मनों के तैश के खिलाफ़ खडा हो जा। मेरी मदद करने के लिए जाग उठ! तूने ख़ुद अदालत का हुक़म दिया है।

7 अक्रवाम तेरे इद्दीर्गद जमा हो जाएँ जब तू उनके ऊपर बुलंदियों पर तख़्तनशीन हो जाए।

8 रब अक्रवाम की अदालत करता है। ऐ रब, मेरी रास्तबाज़ी और बेगुनाही का लिहाज़ करके मेरा इनसाफ़ कर।

9 ऐ रास्त ख़ुदा, जो दिल की गहराइयों को तह तक जाँच लेता है, बेदीनों की शरारतें ख़त्म कर और रास्तबाज़ को कायम रख।

10 अल्लाह मेरी ढाल है। जो दिल से सीधी राह पर चलते हैं उन्हें वह रिहाई देता है।

11 अल्लाह आदिल मुंसिफ़ है, ऐसा ख़ुदा जो रोज़ाना लोगों की सरज़निश करता है।

12 यकीनन इस वक़्त भी दुश्मन अपनी तलवार को तेज़ कर रहा, अपनी कमान को तानकर निशाना बाँध रहा है।

13 लेकिन जो मोहलक हथियार और जलते हुए तीर उसने तैयार कर रखे हैं उनकी ज़द में वह ख़ुद ही आ जाएगा।

14 देख, बुराई का बीज उसमें उग आया है। अब वह शरारत से हामिला होकर फिरता और झूट के बच्चे जन्म देता है।

15 लेकिन जो गढा उसने दूसरों को फँसाने के लिए खोद खोदकर तैयार किया उसमें ख़ुद गिर पडा है।

16 वह ख़ुद अपनी शरारत की ज़द में आया, उसका जुल्म उसके अपने सर पर नाज़िल होगा।

17 मैं रब की सताइश करूँगा, क्योंकि वह रास्त है। मैं रब तआला के नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।

## 8

मखलूकात का ताज

1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : गितीत।

ऐ रब हमारे आका, तेरा नाम पूरी दुनिया में कितना शानदार है! तूने आसमान पर ही अपना जलाल जाहिर कर दिया है।

2 अपने मुखालिफों के जवाब में तूने छोटे बच्चों और शीरखारों की जवान को तैयार किया है ताकि वह तेरी कुव्वत से दुश्मन और कीनापरवर को खत्म करें।

3 जब मैं तेरे आसमान का मुलाहजा करता हूँ जो तेरी उँगलियों का काम है, चाँद और सितारों पर गौर करता हूँ जिनको तूने अपनी अपनी जगह पर कायम किया

4 तो इनसान कौन है कि तू उसे याद करे या आदमजाद कि तू उसका खयाल रखे?

5 तूने उसे फरिश्तों से कुछ ही कम बनाया, \* तूने उसे जलाल और इज्जत का ताज पहनाया।

6 तूने उसे अपने हाथों के कामों पर मुकर्रर किया, सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया,

7 खाह भेड़-बकरियाँ हों खाह गाय-बैल, जंगली जानवर,

8 परिदे, मछलियाँ या समुंदरी राहों पर चलनेवाले बाकी तमाम जानवर।

9 ऐ रब हमारे आका, पूरी दुनिया में तेरा नाम कितना शानदार है!

## 9

अल्लाह की क़ुदरत और इनसाफ

1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : अलामूत-लब्बीन।

ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश करूँगा, तेरे तमाम मोजिजात का बयान करूँगा।

2 मैं शादमान होकर तेरी खुशी मनाऊँगा। ऐ अल्लाह तआला, मैं तेरे नाम की तमजीद में गीत गाऊँगा।

3 जब मेरे दुश्मन पीछे हट जाएंगे तो वह ठोकर खाकर तेरे हुज़ूर तबाह हो जाएंगे।

4 क्योंकि तूने मेरा इनसाफ किया है, तू तख़्त पर बैठकर रास्त मुसिफ साबित हुआ है।

5 तूने अक्रवाम को मलामत करके बेदीनों को हलाक कर दिया, उनका नामो-निशान हमेशा के लिए मिटा दिया है।

6 दुश्मन तबाह हो गया, अबद तक मलबे का ढेर बन गया है। तूने शहरों को जड़ से उखाड़ दिया है, और उनकी याद तक बाकी नहीं रहेगी।

7 लेकिन रब हमेशा तक तख़्तनशीन रहेगा, और उसने अपने तख़्त को अदालत करने के लिए खड़ा किया है।

8 वह रास्ती से दुनिया की अदालत करेगा, इनसाफ से उम्मतों का फैसला करेगा।

9 रब मजलूमों की पनाहगाह है, एक क़िला जिसमें वह मुसीबत के वक़्त महफूज़ रहते हैं।

10 ऐ रब, जो तेरा नाम जानते वह तुझ पर भरोसा रखते हैं। क्योंकि जो तेरे तालिब हैं उन्हें तूने कभी तर्क नहीं किया।

11 रब की तमजीद में गीत गाओ जो सिय्यून पहाड़ पर तख़्तनशीन है, उम्मतों में वह कुछ सुनाओ जो उसने किया है।

12 क्योंकि जो मकतूलों का इतक़ाम लेता है वह मुसीबतज़दों की चीखें नज़रंदाज़ नहीं करता।

13 ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मेरी उस तकलीफ पर गौर कर जो नफ़रत करनेवाले मुझे पहुँचा रहे हैं। मुझे मौत के दरवाज़ों में से निकालकर उठा ले

14 ताकि मैं सिय्यून बेटी के दरवाज़ों में तेरी सताइश करके वह कुछ सुनाऊँ जो तूने मेरे लिए किया है, ताकि मैं तेरी नज़ात की खुशी मनाऊँ।

15 अक्रवाम उस गढ़े में ख़ुद गिर गई है जो उन्होंने दूसरों को पकड़ने के लिए खोदा था। उनके अपने पाँव उस जाल में फँस गए हैं जो उन्होंने दूसरों को फँसाने के लिए बिछा दिया था।

16 रब ने इनसाफ करके अपना इज़हार किया तो बेदीन अपने हाथ के फंदे में उलझ गया। (हिग्गायून का तर्ज। सिलाह)

\* 8:5 एक और मुमकिन तर्जुमा : तूने उसे थोड़ी देर के लिए फरिश्तों से काम कर दिया (देखिए इब्रानियों 2:7,9)।

- 17 बेदीन पाताल में उतरेंगे, जो उम्मतें अल्लाह को भूल गई हैं वह सब वहाँ जाएँगी।  
 18 क्योंकि वह ज़रूरतमंदों को हमेशा तक नहीं भूलेगा, मुसीबतजदों की उम्मीद अबद तक जाती नहीं रहेगी।  
 19 ऐ रब, उठ खड़ा हो ताकि इनसान गालिब न आए। बख़्श दे कि तेरे हुज़ूर अक़वाम की अदालत की जाए।  
 20 ऐ रब, उन्हें दहशतजदा कर ताकि अक़वाम जान लें कि इनसान ही हैं। (सिलाह)

## 10

### इन्साफ़ के लिए दुआ

- 1 ऐ रब, तू इतना दूर क्यों खड़ा है? मुसीबत के वक़्त तू अपने आपको पोशीदा क्यों रखता है?  
 2 बेदीन तकब्बुर से मुसीबतजदों के पीछे लग गए हैं, और अब बेचारे उनके जालों में उलझने लगे हैं।  
 3 क्योंकि बेदीन अपनी दिली आरज़ुओं पर शेख़ी मारता है, और नाजायज़ नफ़ा कमानेवाला लानत करके रब को हक़ीर जानता है।  
 4 बेदीन ग़ूर से फूलकर कहता है, “अल्लाह मुझसे ज़वाबतलबी नहीं करेगा।” उसके तमाम खयालात इस बात पर मबनी हैं कि कोई ख़ुदा नहीं है।  
 5 जो कुछ भी करे उसमें वह कामयाब है। तेरी अदालतें उसे बुलंदियों में कहीं दूर लगती हैं जबकि वह अपने तमाम मुखालिफ़ों के खिलाफ़ फुँकारता है।  
 6 दिल में वह सोचता है, “मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा, नसल-दर-नसल मुसीबत के पंजों से बचा रहूँगा।”  
 7 उसका मुँह लानतों, फ़रेब और ज़ुल्म से भरा रहता, उस की ज़बान नुक़सान और आफ़त पहुँचाने के लिए तैयार रहती है।  
 8 वह आबादियों के करीब ताक में बैठकर चुपके से बेगुनाहों को मार डालता है, उस की आँखें बदकिस्मतों की घात में रहती हैं।  
 9 जंगल में बैठे शेरबबर की तरह ताक में रहकर वह मुसीबतजदा पर हमला करने का मौक़ा ढूँडता है। जब उसे पकड़ ले तो उसे अपने जाल में घसीटकर ले जाता है।  
 10 उसके शिकार पाश पाश होकर झुक जाते हैं, बेचारे उस की ज़बरदस्त ताक़त की ज़द में आकर गिर जाते हैं।  
 11 तब वह दिल में कहता है, “अल्लाह भूल गया है, उसने अपना चेहरा छुपा लिया है, उसे यह कभी नज़र नहीं आएगा।”  
 12 ऐ रब, उठ! ऐ अल्लाह, अपना हाथ उठाकर नाचारों की मदद कर और उन्हें न भूल।  
 13 बेदीन अल्लाह की तहक़ीर क्यों करे, वह दिल में क्यों कहे, “अल्लाह मुझसे ज़वाब तलब नहीं करेगा?”  
 14 ऐ अल्लाह, हक़ीक़त में तू यह सब कुछ देखता है। तू हमारी तकलीफ़ और परेशानी पर ध्यान देकर मुनासिब ज़वाब देगा। नाचार अपना मामला तुझ पर छोड़ देता है, क्योंकि तू यतीमों का मददगार है।  
 15 शरीर और बेदीन आदमी का बाज़ू तोड़ दे! उससे उस की शरारतों की ज़वाबतलबी कर ताकि उसका पूरा असर मिट जाए।

- 16 रब अबद तक बादशाह है। उसके मुल्क से दीगर अक़वाम ग़ायब हो गई हैं।  
 17 ऐ रब, तूने नाचारों की आरज़ू सुन ली है। तू उनके दिलों को मज़बूत करेगा और उन पर ध्यान देकर  
 18 यतीमों और मज़लूमों का इन्साफ़ करेगा ताकि आइंदा कोई भी इनसान मुल्क में दहशत न फैलाए।

## 11

### रब पर भरोसा

- 1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए।  
 मैंने रब में पनाह ली है। तो फिर तूम किस तरह मुझसे कहते हो, “चल, परिदे की तरह फडफडाकर पहाड़ों में भाग जा?”  
 2 क्योंकि देखो, बेदीन क़मान तानकर तीर को तौत पर लगा चुके हैं। अब वह अंधेरे में बैठकर इस इंतज़ार में हैं कि दिल से सीधी राह पर चलनेवालों पर चलाएँ।  
 3 रास्तबाज़ क्या करे? उन्होंने तो बुनियाद को ही तबाह कर दिया है।

- 4 लेकिन रब अपनी मुकद्दस सुकूनतगाह में है, रब का तख्त आसमान पर है। वहाँ से वह देखता है, वहाँ से उस की आँखें आदमजादों को परखती हैं।
- 5 रब रास्तबाज़ को परखता तो है, लेकिन बेदीन और जालिम से नफ़रत ही करता है।
- 6 बेदीनों पर वह जलते हुए कोयले और शोलाज़न गंधक बरसा देगा। झुलसनेवाली आँधी उनका हिस्सा होगी।
- 7 क्योंकि रब रास्त है, और उसे इनसाफ़ प्यारा है। सिर्फ़ सीधी राह पर चलनेवाले उसका चेहरा देखेंगे।

## 12

### मदद के लिए दुआ

- 1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : शमीनीत।  
ऐ रब, मदद फ़रमा! क्योंकि ईमानदार ख़त्म हो गए हैं। दियानतदार इनसानों में से मिट गए हैं।
- 2 आपस में सब झूट बोलते हैं। उनकी ज़बान पर चिकनी-चुपड़ी बातें होती हैं जबकि दिल में कुछ और ही होता है।
- 3 रब तमाम चिकनी-चुपड़ी और शेखीबाज़ ज़बानों को काट डाले!
- 4 वह उन सबको मिटा दे जो कहते हैं, “हम अपनी लायक ज़बान के बाइस ताकतवर हैं। हमारे होंट हमें सहारा देते हैं तो कौन हमारा मालिक होगा? कोई नहीं!”
- 5 लेकिन रब फ़रमाता है, “नाचारों पर तुम्हारे ज़ुल्म की ख़बर और ज़स्ूरतमंदों की कराहती आवाज़ें मेरे सामने आई हैं। अब मैं उठकर उन्हें उनसे छुटकारा दूँगा जो उनके खिलाफ़ फ़ुँकारते हैं।”
- 6 रब के फ़रमान पाक हैं, वह भट्टी में सात बार साफ़ की गई चाँदी की मानिंद ख़ालिस है।
- 7 ऐ रब, तू ही उन्हें महफ़ूज़ रखेगा, तू ही उन्हें अबद तक इस नसल से बचाए रखेगा,
- 8 जो बेदीन आजादी से इधर उधर फिरते हैं, और इनसानों के दरमियान कमीनापन का राज़ है।

## 13

### मदद के लिए दुआ

- 1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए।  
ऐ रब, कब तक? क्या तू मुझे अबद तक भूला रहेगा? तू कब तक अपना चेहरा मुझसे छुपाए रखेगा?
- 2 मेरी जान कब तक परेशानियों में मुब्तला रहे, मेरा दिल कब तक रोज़ बरोज़ दुख उठाता रहे? मेरा दुश्मन कब तक मुझ पर ग़ालिब रहेगा?
- 3 ऐ रब मेरे ख़ुदा, मुझ पर नज़र डालकर मेरी सुन! मेरी आँखों को रौशन कर, वरना मैं मौत की नींद सो जाऊँगा।
- 4 तब मेरा दुश्मन कहेगा, “मैं उस पर ग़ालिब आ गया हूँ!” और मेरे मुखालिफ़ शादियाना बजाएंगे कि मैं हिल गया हूँ।
- 5 लेकिन मैं तेरी शफ़क़त पर भरोसा रखता हूँ, मेरा दिल तेरी नजात देखकर खुशी मनाएगा।
- 6 मैं रब की तमज़ीद में गीत गाऊँगा, क्योंकि उसने मुझ पर एहसान किया है।

## 14

### बेदीन की हमाक़त

- 1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए।  
अहमक़ दिल में कहता है, “अल्लाह है ही नहीं!” ऐसे लोग बदचलन हैं, उनकी हरकतें काबिले-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।
- 2 रब ने आसमान से इनसान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का तालिब है?
- 3 अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए, सबके सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।
- 4 क्या जो बदी करके मेरी क़ौम को रोटी की तरह खा लेते हैं उनमें से एक को भी समझ नहीं आती? वह तो रब को पुकारते ही नहीं।

5 तब उन पर सख्त दहशत छा गई, क्योंकि अल्लाह रास्तबाज़ की नसल के साथ है।

6 तुम नाचार के मनसुबों को खाक में मिलाना चाहते हो, लेकिन रब खुद उस की पनाहगाह है।

7 काश कोहे-सिय्यून से इसराईल की नजात निकले! जब रब अपनी कौम को बहाल करेगा तो याकूब खुशी के नारे लगाएगा, इसराईल बाग बाग होगा।

## 15

कौन अल्लाह के हुज़ूर कायम रह सकता है?

1 दाऊद का जब्र।

ऐ रब, कौन तेरे खैमे में ठहर सकता है? किस को तेरे मुकद्दस पहाड पर रहने की इजाज़त है?

2 वह जिसका चाल-चलन बेगुनाह है, जो रास्तबाज़ जिंदगी गुज़ारकर दिल से सच बोलता है।

3 ऐसा शख्स अपनी ज़बान से किसी पर तोहमत नहीं लगाता। न वह अपने पड़ोसी पर ज़्यादाती करता, न उस की बेइज़्जती करता है।

4 वह मरदूद को हकीर जानता लेकिन खुदातरस की इज़्जत करता है। जो वादा उसने कसम खाकर किया उसे पूरा करता है, खाह उसे कितना ही नुकसान क्यों न पहुँचे।

5 वह सूद लिए बग़ैर उधार देता है और उस की रिश्तत कबूल नहीं करता जो बेगुनाह का हक मारना चाहता है। ऐसा शख्स कभी डौर्वोडोल नहीं होगा।

## 16

एतमाद की दुआ

1 दाऊद का एक सुनहरा जब्र।

ऐ अल्लाह, मुझे महफूज़ रख, क्योंकि तुझमें मैं पनाह लेता हूँ।

2 मैंने रब से कहा, “तू मेरा आका है, तू ही मेरी खुशहाली का वाहिद सरचश्मा है।”

3 मुल्क में जो मुकद्दसीन हैं वही मेरे सूमे हैं, उन्हीं को मैं पसंद करता हूँ।

4 लेकिन जो दीगर माबदों के पीछे भागे रहते हैं उनकी तकलीफ बढ़ती जाएगी। न मैं उनकी खून की कुरबानियों को पेश करूँगा, न उनके नामों का जिक्र तक करूँगा।

5 ऐ रब, तू मेरी मीरास और मेरा हिस्सा है। मेरा नसीब तेरे हाथ में है।

6 जब कुरा डाला गया तो मुझे खुशगवार ज़मीन मिल गई। यकीनन मेरी मीरास मुझे बहुत पसंद है।

7 मैं रब की सताइश करूँगा जिसने मुझे मशवरा दिया है। रात को भी मेरा दिल मेरी हिदायत करता है।

8 रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहता है। वह मेरे दहने हाथ रहता है, इसलिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।

9 इसलिए मेरा दिल शादमान है, मेरी जान खुशी के नारे लगाती है। हाँ, मेरा बदन पुरसकून जिंदगी गुज़ारेगा।

10 क्योंकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा, और न अपने मुकद्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा।

11 तू मुझे जिंदगी की राह से आगाह करता है। तेरे हुज़ूर से भरपूर खुशियाँ, तेरे दहने हाथ से अबदी मसरतें हासिल होती हैं।

## 17

बेगुनाह शख्स की दुआ

1 दाऊद की दुआ।

ऐ रब, इनसाफ के लिए मेरी फरियाद सुन, मेरी आहो-ज़ारी पर ध्यान दे। मेरी दुआ पर गौर कर, क्योंकि वह फ़रेबदेह होंटों से नहीं निकलती।

2 तेरे हुज़ूर मेरा इनसाफ किया जाए, तेरी आँखें उन बातों का मुशाहादा करें जो सच हैं।

3 तूने मेरे दिल को ज़ाँच लिया, रात को मेरा मुआयना किया है। तूने मुझे भट्टी में डाल दिया ताकि नापाक चीज़ें दूर करे, गो ऐसी कोई चीज़ नहीं मिली। क्योंकि मैंने पूरा इरादा कर लिया है कि मेरे मुँह से बुरी बात नहीं निकलेगी।

4 जो कुछ भी दूसरे करते हैं मैंने खुद तेरे मुँह के फरमान के ताबे रहकर अपने आपको जालिमों की राहों से दूर रखा है।

5 मैं कदम बकदम तेरी राहों में रहा, मेरे पाँव कभी न डगमगाए।

- 6 ऐ अल्लाह, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि तू मेरी सुनेगा। कान लगाकर मेरी दुआ को सुन।
- 7 तू जो अपने दहने हाथ से उन्हें रिहाई देता है जो अपने मुखालिफों से तुझमें पनाह लेते हैं, मोजिजाना तौर पर अपनी शफकत का इजहार कर।
- 8 आँख की पुतली की तरह मेरी हिफाजत कर, अपने परों के साये में मुझे छुपा ले।
- 9 उन बेदीनों से मुझे महफूज रख जो मुझ पर तबाहकून हमले कर रहे हैं, उन दुश्मनों से जो मुझे घेरकर मार डालने की कोशिश कर रहे हैं।
- 10 वह सरकश हो गए हैं, उनके मुँह घमंड की बातें करते हैं।
- 11 जिधर भी हम कदम उठाएँ वहाँ वह भी पहुँच जाते हैं। अब उन्होंने हमें घेर लिया है, वह धूर धूरकर हमें ज़मीन पर पटखने का मौका ढूँड रहे हैं।
- 12 वह उस शेरबबर की मानिंद हैं जो शिकार को फाड़ने के लिए तडपता है, उस जवान शेर की मानिंद जो ताक में बैठा है।
- 13 ऐ रब, उठ और उनका सामना कर, उन्हें ज़मीन पर पटख दे! अपनी तलवार से मेरी जान को बेदीनों से बचा।
- 14 ऐ रब, अपने हाथ से मुझे इनसे छुटकारा दे। उन्हें तो इस दुनिया में अपना हिस्सा मिल चुका है। क्योंकि तूने उनके पेट को अपने माल से भर दिया, बल्कि उनके बेटे भी सेर हो गए हैं और इतना बाक़ी है कि वह अपनी औलाद के लिए भी काफ़ी कुछ छोड़ जाएंगे।
- 15 लेकिन मैं खुद रास्तबाज़ साबित होकर तेरे चेहरे का मुशाहदा करूँगा, मैं जागकर तेरी सूत से सेर हो जाऊँगा।

## 18

### दाऊद का फ़तह का गीत

- 1 रब के खादिम दाऊद का ज़बर। मौसीक़ी के राहनुमा के लिए। दाऊद ने रब के लिए यह गीत गाया जब रब ने उसे तमाम दुश्मनों और साऊल से बचाया। वह बोला,
- ऐ रब मेरी कुव्वत, मैं तुझे प्यार करता हूँ।
- 2 रब मेरी चटान, मेरा क़िला और मेरा नजातदहिदा है। मेरा खुदा मेरी चटान है जिसमें मैं पनाह लेता हूँ। वह मेरी ढाल, मेरी नजात का पहाड़, मेरा बुलंद हिसार है।
- 3 मैं रब को पुकारता हूँ, उस की तमजीद हो! तब वह मुझे दुश्मनों से छुटकारा देता है।
- 4 मौत के रस्सों ने मुझे घेर लिया, हलाकत के सैलाब ने मेरे दिल पर दहशत तारी की।
- 5 पाताल के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया, मौत ने मेरे रास्ते में अपने फंदे डाल दिए।
- 6 जब मैं मुसीबत में फँस गया तो मैंने रब को पुकारा। मैंने मदद के लिए अपने खुदा से फरियाद की तो उसने अपनी सूकूनतगाह से मेरी आवाज़ सुनी, मेरी चीखें उसके कान तक पहुँच गई।
- 7 तब ज़मीन लरज़ उठी और थरथराने लगी, पहाड़ों की बुनियादें रब के ग़ज़ब के सामने काँपने और झूलने लगीं।
- 8 उस की नाक से धुआँ निकल आया, उसके मुँह से भस्म करनेवाले शोले और दहकते कोयले भड़क उठे।
- 9 आसमान को झुकाकर वह नाज़िल हुआ। जब उतर आया तो उसके पाँवों के नीचे अंधेरा ही अंधेरा था।
- 10 वह करूबी फरिशते पर सवार हुआ और उडकर हवा के परों पर मँडलाने लगा।
- 11 उसने अंधेरे को अपनी छुपने की जगह बनाया, बारिश के काले और घने बादल खैमे की तरह अपने गिर्दागिर्द लगाए।
- 12 उसके हज़र की तेज़ रौशनी से उसके बादल ओले और शोलाज़न कोयले लेकर निकल आए।
- 13 रब आसमान से कड़कने लगा, अल्लाह तआला की आवाज़ गुँज उठी। तब ओले और शोलाज़न कोयले बरसने लगे।
- 14 उसने अपने तीर चलाए तो दुश्मन तित्तर-बित्तर हो गए। उस की तेज़ बिजली इधर उधर गिरती गई तो उनमें हलचल मच गई।
- 15 ऐ रब, तूने डाँटा तो समुंदर की वादियाँ जाहिर हुईं, जब तू गुस्से में गरजा तो तेरे दम के झोंकों से ज़मीन की बुनियादें नज़र आईं।

- 16 बुलंदियों पर से अपना हाथ बढ़ाकर उसने मुझे पकड़ लिया, मुझे गहरे पानी में से खींचकर निकाल लाया।
- 17 उसने मुझे मेरे ज़बरदस्त दुश्मन से बचाया, उनसे जो मुझसे नफ़रत करते हैं, जिन पर मैं ग़ालिब न आ सका।
- 18 जिस दिन मैं मुसीबत में फँस गया उस दिन उन्होंने मुझ पर हमला किया, लेकिन रब मेरा सहारा बना रहा।

- 19 उसने मुझे तंग जगह से निकालकर छुटकारा दिया, क्योंकि वह मुझसे खुश था।
- 20 रब मुझे मेरी रास्तबाजी का अज्र देता है। मेरे हाथ साफ हैं, इसलिए वह मुझे बरकत देता है।
- 21 क्योंकि मैं रब की राहों पर चलता रहा हूँ, मैं बदी करने से अपने ख़ुदा से दूर नहीं हुआ।
- 22 उसके तमाम अहकाम मेरे सामने रहे हैं, मैंने उसके फ़रमानों को रद्द नहीं किया।
- 23 उसके सामने ही मैं बेइलज़ाम रहा, गुनाह करने से बाज़ रहा हूँ।
- 24 इसलिए रब ने मुझे मेरी रास्तबाजी का अज्र दिया, क्योंकि उस की आँखों के सामने ही मैं पाक-साफ़ साबित हुआ।
- 25 ऐ अल्लाह, जो वफ़ादार है उसके साथ तेरा सुलूक वफ़ादारी का है, जो बेइलज़ाम है उसके साथ तेरा सुलूक बेइलज़ाम है।
- 26 जो पाक है उसके साथ तेरा सुलूक पाक है। लेकिन जो कजरौ है उसके साथ तेरा सुलूक भी कजरवी का है।
- 27 क्योंकि तू पस्तहालों को नजात देता और मग़स्र आँखों को पस्त करता है।
- 28 ऐ रब, तू ही मेरा चराग जलाता, मेरा ख़ुदा ही मेरे अंधेरे को रौशन करता है।
- 29 क्योंकि तेरे साथ मैं फ़ौजी दस्ते पर हमला कर सकता, अपने ख़ुदा के साथ दीवार को फ़लाँग सकता हूँ।
- 30 अल्लाह की राह कामिल है, रब का फ़रमान ख़ालिस है। जो भी उसमें पनाह ले उस की वह ढाल है।
- 31 क्योंकि रब के सिवा कौन ख़ुदा है? हमारे ख़ुदा के सिवा कौन चटान है?
- 32 अल्लाह मुझे कुव्वत से कमरबस्ता करता, वह मेरी राह को कामिल कर देता है।
- 33 वह मेरे पाँवों को हिरन की-सी फुरती अता करता, मुझे मज़बूती से मेरी बुलंदियों पर खड़ा करता है।
- 34 वह मेरे हाथों को जंग करने की तरबियत देता है। अब मेरे बाजू पीतल की कमान को भी तान लेते हैं।
- 35 ऐ रब, तूने मुझे अपनी नजात की ढाल बख़्श दी है। तेरे दहने हाथ ने मुझे कायम रखा, तेरी नरमी ने मुझे बड़ा बना दिया है।
- 36 तू मेरे कदमों के लिए रास्ता बना देता है, इसलिए मेरे टखने नहीं डगमगाते।
- 37 मैंने अपने दुश्मनों का ताक्कुब करके उन्हें पकड़ लिया, मैं बाज़ न आया जब तक वह ख़तम न हो गए।
- 38 मैंने उन्हें यों पाश पाश कर दिया कि दुबारा उठ न सके बल्कि गिरकर मेरे पाँवों तले पड़े रहे।
- 39 क्योंकि तूने मुझे जंग करने के लिए कुव्वत से कमरबस्ता कर दिया, तूने मेरे मुखालिफ़ों को मेरे सामने झुका दिया।
- 40 तूने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने से भगा दिया, और मैंने नफ़रत करनेवालों को तबाह कर दिया।
- 41 वह मदद के लिए चीखते-चिल्लाते रहे, लेकिन बचानेवाला कोई नहीं था। वह रब को पुकारते रहे, लेकिन उसने जवाब न दिया।
- 42 मैंने उन्हें चूर चूर करके गर्द की तरह हवा में उड़ा दिया। मैंने उन्हें कचरे की तरह गली में फेंक दिया।
- 43 तूने मुझे कौम के झगड़ों से बचाकर अक्रवाम का सरदार बना दिया है। जिस कौम से मैं नावाकिफ़ था वह मेरी ख़िदमत करती है।
- 44 ज्योंही मैं बात करता हूँ तो लोग मेरी सुनते हैं। परदेसी दबककर मेरी ख़ुशामद करते हैं।
- 45 वह हिम्मत हारकर काँपते हुए अपने किलों से निकल आते हैं।
- 46 रब जिंदा है! मेरी चटान की तमजीद हो! मेरी नजात के ख़ुदा की ताज़ीम हो!
- 47 वही ख़ुदा है जो मेरा इंतकाम लेता, अक्रवाम को मेरे ताबे कर देता
- 48 और मुझे मेरे दुश्मनों से छुटकारा देता है। यक़ीनन तू मुझे मेरे मुखालिफ़ों पर सरफ़राज़ करता, मुझे ज़ालिमों से बचाए रखता है।
- 49 ऐ रब, इसलिए मैं अक्रवाम में तेरी हम्दो-सना करूँगा, तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
- 50 क्योंकि रब अपने बादशाह को बड़ी नजात देता है, वह अपने मसह किए हुए बादशाह दाऊद और उस की औलाद पर हमेशा तक मेहरबान रहेगा।

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।  
आसमान अल्लाह के जलाल का एलान करते हैं, आसमानी गुंबद उसके हाथों का काम बयान करता है।
- 2 एक दिन दूसरे को इतला देता, एक रात दूसरी को खबर पहुँचाती है,
- 3 लेकिन ज़बान से नहीं। गो उनकी आवाज़ सुनाई नहीं देती,
- 4 तो भी उनकी आवाज़ निकलकर पूरी दुनिया में सुनाई देती, उनके अलफ़ाज़ दुनिया की इतहा तक पहुँच जाते हैं। वहाँ अल्लाह ने आफ़ताब के लिए ख़ैमा लगाया है।
- 5 जिस तरह दूल्हा अपनी ख़ाबगाह से निकलता है उसी तरह सूरज निकलकर पहलवान की तरह अपनी दौड़ दौड़ने पर खुशी मनाता है।
- 6 आसमान के एक सिरे से चढ़कर उसका चक्कर दूसरे सिरे तक लगता है। उस की तपती गरमी से कोई भी चीज़ पोशीदा नहीं रहती।
- 7 रब की शरीअत कामिल है, उससे जान में जान आ जाती है। रब के अहकाम काबिले-एतमाद है, उनसे सादालौह दानिशमंद हो जाता है।
- 8 रब की हिदायात बा-इनसाफ़ है, उनसे दिल बाग़ बाग़ हो जाता है। रब के अहकाम पाक हैं, उनसे आँखें चमक उठती हैं।
- 9 रब का ख़ौफ़ पाक है और अबद तक कायम रहेगा। रब के फ़रमान सच्चे और सबके सब रास्त हैं।
- 10 वह सोने बल्कि ख़ालिस सोने के ढेर से ज़्यादा मरगूब है। वह शहद बल्कि छत्ते के ताज़ा शहद से ज़्यादा मीठे हैं।
- 11 उनसे तैरे ख़ादिम को आगाह किया जाता है, उन पर अमल करने से बड़ा अज़्र मिलता है।
- 12 जो ख़ताएँ बेख़बरी में सरज़द हुई कौन उन्हें जानता है? मेरे पोशीदा गुनाहों को मुआफ़ कर!
- 13 अपने ख़ादिम को गुस्ताखों से महफूज़ रख ताकि वह मुज़्र पर हकूमत न करें। तब मैं बेइलज़ाम होकर संगीन गुनाह से पाक रहूँगा।
- 14 ऐ रब, बख़्श दे कि मेरे मुँह की बातें और मेरे दिल की सोच-बिचार तुझे पसंद आए। तू ही मेरी चटान और मेरा छुड़ानेवाला है।

## 20

### फतह के लिए दुआ

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।  
मुसीबत के दिन रब तेरी सुने, याक़ूब के ख़ुदा का नाम तुझे महफूज़ रखे।
- 2 वह मक़दिस से तेरी मदद भेजे, वह सिय्यून से तेरा सहारा बने।
- 3 वह तेरी ग़ल्ला की नज़रें याद करे, तेरी भस्म होनेवाली कुरबानियाँ क़बूल फ़रमाए। (सिलाह)
- 4 वह तेरे दिल की आरजू पूरी करे, तेरे तमाम मनसूबों को कामयाबी बख़्शे।
- 5 तब हम तेरी नज़ात की खुशी मनाएँगे, हम अपने ख़ुदा के नाम में फतह का झंडा गाड़ेंगे। रब तेरी तमाम गुज़ारिशें पूरी करे।
- 6 अब मैंने जान लिया है कि रब अपने मसह किए हुए बादशाह की मदद करता है। वह अपने मुक़द्दस आसमान से उस की सुनकर अपने दहने हाथ की कुदरत से उसे छुटकारा देगा।
- 7 बाज़ अपने रथों पर, बाज़ अपने घोड़ों पर फ़रखर करते हैं, लेकिन हम रब अपने ख़ुदा के नाम पर फ़रखर करेंगे।
- 8 हमारे दुश्मन झुककर गिर जाएँगे, लेकिन हम उठकर मज़बूती से खड़े रहेंगे।
- 9 ऐ रब, हमारी मदद फ़रमा! बादशाह हमारी सुने जब हम मदद के लिए पुकारें।

## 21

### बादशाह के लिए अल्लाह की मदद

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।  
ऐ रब, बादशाह तेरी कुव्वत देखकर शादमान है, वह तेरी नज़ात की कितनी बड़ी खुशी मनाता है।



2 तूने उस की दिली खाहिश पूरी की और इनकार न किया जब उस की आरजू ने होंटों पर अलफाज़ का रूप धारा।  
(सिलाह)

3 क्योंकि तू अच्छी अच्छी बरकतें अपने साथ लेकर उससे मिलने आया, तूने उसे खालिस सोने का ताज पहनाया।

4 उसने तुझसे जिंदगी पाने की आरजू की तो तूने उसे उम्र की दराज़ी बख्शी, मज़ीद इतने दिन कि उनकी इंतहा नहीं।

5 तेरी नजात से उसे बडी इज्जत हासिल हुई, तूने उसे शानो-शौकत से आरास्ता किया।

6 क्योंकि तू उसे अबद तक बरकत देता, उसे अपने चेहरे के हुज़ूर लाकर निहायत खुश कर देता है।

7 क्योंकि बादशाह रब पर एतमाद करता है, अल्लाह तआला की शफ़कत उसे डगमगाने से बचाएगी।

8 तेरे दुश्मन तेरे कब्जे में आ जाएंगे, जो तुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें तेरा दहना हाथ पकड़ लेगा।

9 जब तू उन पर ज़ाहिर होगा तो वह भड़कती भट्टी की-सी मुसीबत में फँस जाएंगे। रब अपने ग़ज़ब में उन्हें हडप कर लेगा,  
और आग उन्हें खा जाएगी।

10 तू उनकी औलाद को रूप-ज़मीन पर से मिटा डालेगा, इनसानों में उनका नामो-निशान तक नहीं रहेगा।

11 गो वह तेरे खिलाफ़ साज़िशें करते हैं तो भी उनके बुरे मनसूबे नाकाम रहेंगे।

12 क्योंकि तू उन्हें भगाकर उनके चेहरों को अपने तीरों का निशाना बना देगा।

13 ऐ रब, उठ और अपनी कुदरत का इज़हार कर ताकि हम तेरी कुदरत की तमज़ीद में साज़ बजाकर गीत गाएँ।

## 22

### रास्तबाज़ का दुख

1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तुलए-सुबह की हिरनी।

ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है? मैं चीख रहा हूँ, लेकिन मेरी नजात नज़र नहीं आती।

2 ऐ मेरे ख़ुदा, दिन को मैं चिल्लाता हूँ, लेकिन तू जवाब नहीं देता। रात को पुकारता हूँ, लेकिन आराम नहीं पाता।

3 लेकिन तू कूदूस है, तू जो इसराईल की मदहसराई पर तख़्तनशीन होता है।

4 तुझ पर हमारे बापदादा ने भरोसा रखा, और जब भरोसा रखा तो तूने उन्हें रिहाई दी।

5 जब उन्होंने मदद के लिए तुझे पुकारा तो बचने का रास्ता खुल गया। जब उन्होंने तुझ पर एतमाद किया तो शर्मिदा न हुए।

6 लेकिन मैं कीड़ा हूँ, मुझे इनसान नहीं समझा जाता। लोग मेरी बेइज्जती करते, मुझे हकीर जानते हैं।

7 सब मुझे देखकर मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। वह मुँह बनाकर तौबा तौबा करते और कहते हैं,

8 “उसने अपना मामला रब के सुपर्द किया है। अब रब ही उसे बचाए। वही उसे छुटकारा दे, क्योंकि वही उससे खुश है।”

9 यकीनन तू मुझे माँ के पेट से निकाल लाया। मैं अभी माँ का दूध पीता था कि तूने मेरे दिल में भरोसा पैदा किया।

10 ज्योंही मैं पैदा हुआ मुझे तुझ पर छोड़ दिया गया। माँ के पेट से ही तू मेरा ख़ुदा रहा है।

11 मुझेसे दूर न रह। क्योंकि मुसीबत ने मेरा दामन पकड़ लिया है, और कोई नहीं जो मेरी मदद करे।

12 मृत अफ़िद बेलों ने मुझे घेर लिया, बसन के ताकतवर साँड़ चारों तरफ़ जमा हो गए हैं।

13 मेरे खिलाफ़ उन्होंने अपने मुँह खोल दिए हैं, उस दहाड़ते हुए शेरबबर की तरह जो शिकार को फाड़ने के जोश में आ गया है।

14 मुझे पानी की तरह ज़मीन पर उंडेला गया है, मेरी तमाम हड्डियाँ अलग अलग हो गई हैं, जिस्म के अंदर मेरा दिल मोम की तरह पिघल गया है।

15 मेरी ताकत ठीक़े की तरह ख़ूशक हो गई, मेरी ज़बान तालू से चिपक गई है। हाँ, तूने मुझे मौत की खाक में लिटा दिया है।

16 कुत्तों ने मुझे घेर रखा, शरीरों के जत्थे ने मेरा इहाता किया है। उन्होंने मेरे हाथों और पाँवों को छेद डाला है।

17 मैं अपनी हड्डियों को गिन सकता हूँ। लोग घूर घूरकर मेरी मुसीबत से खुश होते हैं।

18 वह आपस में मेरे कपड़े बाँट लेते और मेरे लिबास पर कुरा डालते हैं।

19 लेकिन तू ऐ रब, दूर न रह! ऐ मेरी कुव्वत, मेरी मदद करने के लिए जल्दी कर!

20 मेरी जान को तलवार से बचा, मेरी जिंदगी को कुत्ते के पंजे से छुड़ा।

21 शेर के मुँह से मुझे मखलसी दे, जंगली बैलों के सींगों से रिहाई अता कर।

ऐ रब, तूने मेरी सुनी है!

22 मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का एलान करूँगा, जमात के दरमियान तेरी मद्दहसराई करूँगा।

23 तुम जो रब का ख़ौफ़ मानते हो, उस की तमज़ीद करो! ऐ याक़ूब की तमाम औलाद, उसका एहतराम करो! ऐ इसराईल के तमाम फ़रज़ंदो, उससे ख़ौफ़ खाओ!

24 क्योंकि न उसने मुसीबतज़दा का दुख़ हकीर जाना, न उस की तकलीफ़ से घिन खाई। उसने अपना मुँह उससे न छुपाया बल्कि उस की सुनी जब वह मदद के लिए चीखने-चिल्लाने लगा।

25 ऐ खुदा, बड़े इजतिमा में मैं तेरी सताइश करूँगा, खुदातरसों के सामने अपनी मन्नत पूरी करूँगा।

26 नाचार जी भरकर खाएँगे, रब के तालिब उस की हम्दो-सना करेंगे। तुम्हारे दिल अबद तक जिंदा रहें!

27 लूग दुनिया की इंतहा तक रब को याद करके उस की तरफ़ रूजू करेंगे। ग़ैरअक़वाम के तमाम खानदान उसे सिजदा करेंगे।

28 क्योंकि रब को ही बादशाही का इख्तियार हासिल है, वही अक़वाम पर हुकूमत करता है।

29 दुनिया के तमाम बड़े लोग उसके हज़ूर खाएँगे और सिजदा करेंगे। खाक में उतरनेवाले सब उसके सामने झुक जाएंगे, वह सब जो अपनी जिंदगी को खुद कायम नहीं रख सकते।

30 उसके फ़रज़ंद उस की खिदमत करेंगे। एक आनेवाली नसल को रब के बारे में सुनाया जाएगा।

31 हाँ, वह आकर उस की रास्ती एक कौम को सुनाएँगे जो अभी पैदा नहीं हुई, क्योंकि उसने यह कुछ किया है।

## 23

अच्छा चरवाहा

1 दाऊद का जब्र।

रब मेरा चरवाहा है, मुझे कमी न होगी।

2 वह मुझे शादाब चरागाहों में चराता और पुरसुकून चशमों के पास ले जाता है।

3 वह मेरी जान को ताज़ादम करता और अपने नाम की खातिर रास्ती की राहों पर मेरी क्रियादत करता है।

4 गो मैं तारीक़तरीन वादी में से गुज़रूँ मैं मुसीबत से नहीं डरूँगा, क्योंकि तू मेरे साथ है, तेरी लाठी और तेरा असा मुझे तसल्ली देते हैं।

5 तू मेरे दुश्मनों के रूबरू मेरे सामने मेज़ बिछाकर मेरे सर को तेल से तरो-ताज़ा करता है। मेरा प्याला तेरी बरकत से छलक उठता है।

6 यक़ीनन भलाई और शफ़क़त उग्र-भर मेरे साथ साथ रहेंगी, और मैं ज़िते-जी रब के घर में सुकूनत करूँगा।

## 24

बादशाह का इस्तक़बाल

1 दाऊद का जब्र।

ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का है, दुनिया और उसके बाशिंदे उसी के हैं। 2 क्योंकि उसने ज़मीन की बुनियाद समुंदरों पर रखी और उसे दरियाओं पर कायम किया।

3 किस को रब के पहाड़ पर चढ़ने की इजाज़त है? कौन उसके मुक़द्दस मक़ाम में खड़ा हो सकता है?

4 वह जिसके हाथ पाक और दिल साफ़ हैं, जो न फ़रेब का इरादा रखता, न कसम खाकर झूट बोलता है।

5 वह रब से बरकत पाएगा, उसे अपनी नजात के खुदा से रास्ती मिलेगी।

6 यह होगा उन लोगों का हाल जो अल्लाह की मरज़ी दरियाफ़्त करते, जो तेरे चेहरे के तालिब होते हैं, ऐ याक़ूब के खुदा। (सिलाह)

- 7 ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ कदीम दरवाजो, पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह दाखिल हो जाए।
- 8 जलाल का बादशाह कौन है? रब जो कवी और कादिर है, रब जो जंग में जोरावर है।
- 9 ऐ फाटको, खुल जाओ! ऐ कदीम दरवाजो, पूरे तौर पर खुल जाओ ताकि जलाल का बादशाह दाखिल हो जाए।
- 10 जलाल का बादशाह कौन है? रब्बुल-अफवाज, वही जलाल का बादशाह है। (सिलाह)

## 25

मुआफी और राहनुमाई के लिए दुआ

- 1 दाऊद का जबूर।
- ऐ रब, मैं तेरा आरजूमंद हूँ।
- 2 ऐ मेरे खुदा, तुझ पर मैं भरोसा रखता हूँ। मुझे शरमिदा न होने दे कि मेरे दुश्मन मुझ पर शादियाना बजाएँ।
- 3 क्योंकि जो भी तुझ पर उम्मीद रखे वह शरमिदा नहीं होगा जबकि जो बिलावजह बेवफा होते हैं वही शरमिदा हो जाएंगे।
- 4 ऐ रब, अपनी राहें मुझे दिखा, मुझे अपने रास्तों की तालीम दे।
- 5 अपनी सच्चाई के मुताबिक मेरी राहनुमाई कर, मुझे तालीम दे। क्योंकि तू मेरी नजात का खुदा है। दिन-भर मैं तेरे इंतज़ार में रहता हूँ।
- 6 ऐ रब, अपना वह रहम और मेहरबानी याद कर जो तू कदीम ज़माने से करता आया है।
- 7 ऐ रब, मेरी जवानी के गुनाहों और मेरी बेवफा हरकतों को याद न कर बल्कि अपनी भलाई की खातिर और अपनी शफ़क़त के मुताबिक मेरा खयाल रख।

- 8 रब भला और आदिल है, इसलिए वह गुनाहगारों को सही राह पर चलने की तलक़ीन करता है।
- 9 वह फ़रोतनों की इनसाफ़ की राह पर राहनुमाई करता, हलीमों को अपनी राह की तालीम देता है।
- 10 जो रब के अहद और अहक़ाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारें उन्हें रब मेहरबानी और वफ़ादारी की राहों पर ले चलता है।
- 11 ऐ रब, मेरा कूसूर संगीन है, लेकिन अपने नाम की खातिर उसे मुआफ़ कर।
- 12 रब का ख़ौफ़ माननेवाला कहाँ है? रब खुद उसे उस राह की तालीम देगा जो उसे चुनना है।
- 13 तब वह खुशहाल रहेगा, और उस की औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी।
- 14 जो रब का ख़ौफ़ माने उन्हें वह अपने हमराज़ बनाकर अपने अहद की तालीम देता है।
- 15 मेरी आँखें रब को तकती रहती हैं, क्योंकि वही मेरे पाँवों को जाल से निकाल लेता है।
- 16 मेरी तरफ़ मायल हो जा, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि मैं तनहा और मुसीबतजदा हूँ।
- 17 मेरे दिल की पेशानियाँ दूर कर, मुझे मेरी तकालीफ़ से रिहाई दे।
- 18 मेरी मुसीबत और तंगी पर नज़र डालकर मेरी ख़ताओं को मुआफ़ कर।
- 19 देख, मेरे दुश्मन कितने ज्यादा हैं, वह कितना ज़ुल्म करके मुझसे नफ़रत करते हैं।
- 20 मेरी जान को महफूज़ रख, मुझे बचा! मुझे शरमिदा न होने दे, क्योंकि मैं तुझमें पनाह लेता हूँ।
- 21 बेगुनाही और दियानतदारी मेरी पहरादारी करें, क्योंकि मैं तेरे इंतज़ार में रहता हूँ।
- 22 ऐ अल्लाह, फ़िघा देकर इसराईल को उस की तमाम तकालीफ़ से आज़ाद कर!

## 26

बेगुनाह का इक़्रार और इल्तिजा

- 1 दाऊद का जबूर।
- ऐ रब, मेरा इनसाफ़ कर, क्योंकि मेरा चाल-चलन बेकूसूर है। मैंने रब पर भरोसा रखा है, और मैं डॉवॉडोल नहीं हो जाऊँगा।
- 2 ऐ रब, मुझे जाँच ले, मुझे आजमाकर दिल की तह तक मेरा मुआयना कर।
- 3 क्योंकि तेरी शफ़क़त मेरी आँखों के सामने रही है, मैं तेरी सच्ची राह पर चलता रहा हूँ।
- 4 न मैं धोकेबाज़ों की मजलिस में बैठता, न चालाक लोगों से रिफ़ाक़त रखता हूँ।
- 5 मुझे शरीरों के इजतिमाओं से नफ़रत है, बेदीनों के साथ मैं बैठता भी नहीं।

- 6 ऐ रब, मैं अपने हाथ धोकर अपनी बेगुनाही का इजहार करता हूँ। मैं तेरी कुरबानागह के गिर्द फिरकर  
 7 बुलंद आवाज़ से तेरी हम्दो-सना करता, तेरे तमाम मोजिजात का एलान करता हूँ।  
 8 ऐ रब, तेरी सुकूनतगाह मुझे प्यारी है, जिस जगह तेरा जलाल ठहरता है वह मुझे अजीज़ है।  
 9 मेरी जान को मुझसे छीनकर मुझे गुनाहगारों में शामिल न कर! मेरी जिंदगी को मिटाकर मुझे खूनखारों में शुमार न कर,  
 10 ऐसे लोगों में जिनके हाथ शर्मनाक हरकतों से आलूदा हैं, जो हर वक़्त रिश्वत खाते हैं।  
 11 क्योंकि मैं बेगुनाह जिंदगी गुज़ारता हूँ। फ़िधा देकर मुझे छुटकारा दे! मुझ पर मेहरबानी कर!  
 12 मेरे पाँव हमवार ज़मीन पर कायम हो गए हैं, और मैं इजतिमाओं में रब की सताइश करूँगा।

## 27

अल्लाह से रिफ़ाक़त

1 दाऊद का जब्र।

रब मेरी रौशनी और मेरी नजात है, मैं किससे डरूँ? रब मेरी जान की पनाहगाह है, मैं किससे दहशत खाऊँ?

2 जब शरीर मुझ पर हमला करे ताकि मुझे हडप कर लें, जब मेरे मुखालिफ़ और दुश्मन मुझ पर टूट पड़ें तो वह ठोकर खाकर गिर जाएंगे।

3 गो फ़ौज़ मुझे घेर ले मेरा दिल ख़ौफ़ नहीं खाएगा, गो मेरे खिलाफ़ जंग छिड़ जाए मेरा भरोसा कायम रहेगा।

4 रब से मेरी एक गुज़ारिश है, मैं एक ही बात चाहता हूँ। यह कि जीते-जी रब के घर में रहकर उस की शफ़क़त से लुत्फ़अंतेज़ हो सकूँ, कि उस की सुकूनतगाह में ठहरकर महवे-खयाल रह सकूँ।

5 क्योंकि मुसीबत के दिन वह मुझे अपनी सुकूनतगाह में पनाह देगा, मुझे अपने ख़ैमे में छुपा लेगा, मुझे उठाकर ऊँची चटान पर रखेगा।

6 अब मैं अपने दुश्मनों पर सरबुलंद हूँगा, अगरचे उन्होंने मुझे घेर रखा है। मैं उसके ख़ैमे में ख़ुशी के नारे लगाकर कुरबानियाँ पेश करूँगा, साज़ बजाकर रब की मद्दहसराई करूँगा।

7 ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन जब मैं तुझे पुकारूँ, मुझ पर मेहरबानी करके मेरी सुन।

8 मेरा दिल तुझे याद दिलाता है कि तूने ख़ुद फ़रमाया, “मेरे चेहरे के तालिब रहो!” ऐ रब, मैं तेरे ही चेहरे का तालिब रहा हूँ।

9 अपने चेहरे को मुझसे छुपाए न रख, अपने खादिम को गुस्से से अपने हज़ूर से न निकाल। क्योंकि तू ही मेरा सहारा रहा है। ऐ मेरी नजात के ख़ुदा, मुझे न छोड़, मुझे तर्क न कर।

10 क्योंकि मेरे माँ-बाप ने मुझे तर्क कर दिया है, लेकिन रब मुझे क़बूल करके अपने घर में लाएगा।

11 ऐ रब, मुझे अपनी राह की तरबियत दे, हमवार रास्ते पर मेरी राहनुमाई कर ताकि अपने दुश्मनों से महफूज़ रहूँ।

12 मुझे मुखालिफ़ों के लालच में न आने दे, क्योंकि झूठे गवाह मेरे खिलाफ़ उठ खड़े हुए हैं जो तशद्दुद करने के लिए तैयार हैं।

13 लेकिन मेरा पूरा ईमान यह है कि मैं जिंदों के मुल्क में रहकर रब की भलाई देखूँगा।

14 रब के इतज़ार में रह! मज़बूत और दिलेर हो, और रब के इतज़ार में रह!

## 28

मदद के लिए दुआ और जवाब के लिए शक्रगुज़ारी

1 दाऊद का जब्र।

ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ। ऐ मेरी चटान, खामोशी से अपना मुँह मुझसे न फेर। क्योंकि अगर तू चुप रहे तो मैं मौत के गढे में उतरनेवालों की मानिंद हो जाऊँगा।

2 मेरी इल्तिजाएँ सुन जब मैं चीखते-चिल्लाते तुझसे मदद माँगता हूँ, जब मैं अपने हाथ तेरी सुकूनतगाह के मुक़द्दसतरीन कमरे की तरफ़ उठाता हूँ।

3 मुझे उन बेदीनों के साथ घसीटकर सजा न दे जो गलत काम करते हैं, जो अपने पड़ोसियों से बजाहिर दोस्ताना बातें करते, लेकिन दिल में उनके खिलाफ बुरे मनसूबे बाँधते हैं।

4 उन्हें उनकी हरकतों और बुरे कामों का बदला दे। जो कुछ उनके हाथों से सरजद हुआ है उस की पूरी सजा दे। उन्हें उतना ही नुकसान पहुँचा दे जितना उन्होंने दूसरों को पहुँचाया है।

5 क्योंकि न वह रब के आमाल पर, न उसके हाथों के काम पर तवज्जुह देते हैं। अल्लाह उन्हें ढा देगा और दुबारा कभी तामीर नहीं करेगा।

6 रब की तमजीद हो, क्योंकि उसने मेरी इल्लिजा सुन ली।

7 रब मेरी कुव्वत और मेरी ढाल है। उस पर मेरे दिल ने भरोसा रखा, उससे मुझे मदद मिली है। मेरा दिल शादियाना बजाता है, मैं गीत गाकर उस की सताइश करता हूँ।

8 रब अपनी कौम की कुव्वत और अपने मसह किए हुए खादिम का नजातबरख्शा किला है।

9 ऐ रब, अपनी कौम को नजात दे! अपनी मीरास को बरकत दे! उनकी गल्लाबानी करके उन्हें हमेशा तक उठाए रख।

## 29

रब के जलाल की तमजीद

1 दाऊद का जब्र।

ऐ अल्लाह के फ़रजंदो, रब की तमजीद करो! रब के जलाल और कुदरत की सताइश करो!

2 रब के नाम को जलाल दो। मुकद्दस लिबास से आरास्ता होकर रब को सिजदा करो।

3 रब की आवाज़ समुंदर के ऊपर गूँजती है। जलाल का खुदा गरजता है, रब गहरे पानी के ऊपर गरजता है।

4 रब की आवाज़ जोरदार है, रब की आवाज़ पुरजलाल है।

5 रब की आवाज़ देवदार के दरख्तों को तोड़ डालती है, रब लुबनान के देवदार के दरख्तों को टुकड़े टुकड़े कर देता है।

6 वह लुबनान को बछड़े और कोहे-सिरयून \* को जंगली बैल के बच्चे की तरह कूदने फाँदने देता है।

7 रब की आवाज़ आग के शोले भड़का देती है।

8 रब की आवाज़ रेगिस्तान को हिला देती है, रब दश्ये-कादिस को काँपने देता है।

9 रब की आवाज़ सुनकर हिरनी दर्द-जह में मुब्तला हो जाती और जंगलों के पत्ते झड़ जाते हैं। लेकिन उस की सुकूनतगाह में सब पुकारते हैं, “जलाल!”

10 रब सैलाब के ऊपर तख्तनशीन है, रब बादशाह की हैसियत से अब्द तक तख्तनशीन है।

11 रब अपनी कौम को तकवियत देगा, रब अपने लोगों को सलामती की बरकत देगा।

## 30

मौत से छुटकारे पर शुक़रुजारी

1 दाऊद का जब्र। रब के घर की मखसूसियत के मौके पर गीत।

ऐ रब, मैं तेरी सताइश करता हूँ, क्योंकि तूने मुझे गहराइयों में से खींच निकाला। तूने मेरे दुश्मनों को मुझ पर बगलें बजाने का मौका नहीं दिया।

2 ऐ रब मेरे खुदा, मैंने चीखते-चिल्लाते हुए तुझसे मदद माँगी, और तूने मुझे शफा दी।

3 ऐ रब, तू मेरी जान को पाताल से निकाल लाया, तूने मेरी जान को मौत के गढे में उतरने से बचाया है।

4 ऐ ईमानदारो, साज बजाकर रब की तारीफ में गीत गाओ। उसके मुकद्दस नाम की हम्दो-सना करो।

5 क्योंकि वह लमहा-भर के लिए गुस्से होता, लेकिन जिंदगी-भर के लिए मेहरबानी करता है। गो शाम को रोना पड़े, लेकिन सुबह को हम खुशी मनाएँगे।

6 जब हालात पुरसुकून थे तो मैं बोला, “मैं कभी नहीं डगमगाऊँगा।”

7 ऐ रब, जब तू मुझसे खूश था तो तूने मुझे मजबूत पहाड़ पर रख दिया। लेकिन जब तूने अपना चेहरा मुझसे छुपा लिया तो मैं सख्त धबरा गया।

8 ऐ रब, मैंने तुझे पुकारा, हाँ खुदावंद से मैंने इल्लिजा की,

\* 29:6 सिरयून हम्मन का दूसरा नाम है।

9 “क्या फायदा है अगर मैं हलाक होकर मौत के गढे में उतर जाऊँ? क्या खाक तेरी सताइश करेगी? क्या वह लोगों को तेरी वफादारी के बारे में बताएगी?”

10 ऐ रब, मेरी सुन, मुझ पर मेहरबानी कर। ऐ रब, मेरी मदद करने के लिए आ!”

11 तूने मेरा मातम ख़ुशी के नाच में बदल दिया, तूने मेरे मातमी कपड़े उतारकर मुझे शादमानी से मुलम्बस किया।

12 क्योंकि तू चाहता है कि मेरी जान ख़ामोश न हो बल्कि गीत गाकर तेरी तमज़ीद करती रहे। ऐ रब मेरे ख़ुदा, मैं अबद तक तेरी हम्दो-सना करूँगा।

## 31

हिफाज़त के लिए दुआ

1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, मैंने तुझमें पनाह ली है। मुझे कभी शर्मिंदा न होने दे बल्कि अपनी रास्ती के मुताबिक मुझे बचा!

2 अपना कान मेरी तरफ झुका, जल्द ही मुझे छुटकारा दे। चटान का मेरा बुर्ज़ हो, पहाड़ का किला जिसमें मैं पनाह लेकर नजात पा सकूँ।

3 क्योंकि तू मेरी चटान, मेरा किला है, अपने नाम की खातिर मेरी राहनुमाई, मेरी क्रियादत कर।

4 मुझे उस जाल से निकाल दे जो मुझे पकड़ने के लिए चुपके से बिछाया गया है। क्योंकि तू ही मेरी पनाहगाह है।

5 मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ। ऐ रब, ऐ वफादार ख़ुदा, तूने फ़िधा देकर मुझे छुड़ाया है!

6 मैं उनसे नफ़रत रखता हूँ जो बेकार बुतों से लिपटे रहते हैं। मैं तो रब पर भरोसा रखता हूँ।

7 मैं बाग़ बाग़ हूँगा और तेरी शफ़क़त की ख़ुशी मनाऊँगा, क्योंकि तूने मेरी मुसीबत देखकर मेरी जान की परेशानी का ख़याल किया है।

8 तूने मुझे दुश्मन के हवाले नहीं किया बल्कि मेरे पाँवों को खुले मैदान में कायम कर दिया है।

9 ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ। गम के मारे मेरी आँखें सूज़ गई हैं, मेरी जान और जिस्म गल रहे हैं।

10 मेरी जिंदगी दुख की चक्की में पिस रही है, मेरे साल आहें भरते भरते जाया हो रहे हैं। मेरे कुसूर की वजह से मेरी ताक़त जवाब दे गई, मेरी हड्डियाँ गलने-सड़ने लगी हैं।

11 मैं अपने दुश्मनों के लिए मज़ाक का निशाना बन गया हूँ बल्कि मेरे हमसाये भी मुझे लान-तान करते, मेरे जाननेवाले मुझसे दहशत खाते हैं। गली में जो भी मुझे देखे मुझसे भाग जाता है।

12 मैं मुरदों की मानिंद उनकी याददाशत से मिट गया हूँ, मुझे ठीकरे की तरह फेंक दिया गया है।

13 बहुतों की अफ़वाहें मुझ तक पहुँच गई हैं, चारों तरफ़ से हौलनाक ख़बरें मिल रही हैं। वह मिलकर मेरे खिलाफ़ साज़िशें कर रहे, मुझे कल्ल करने के मनसूबे बाँध रहे हैं।

14 लेकिन मैं ऐ रब, तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मैं कहता हूँ, “तू मेरा ख़ुदा है!”

15 मेरी तकदीर \* तेरे हाथ में है। मुझे मेरे दुश्मनों के हाथ से बचा, उनसे जो मेरे पीछे पड़ गए हैं।

16 अपने चेहरे का नूर अपने खादिम पर चमका, अपनी मेहरबानी से मुझे नजात दे।

17 ऐ रब, मुझे शर्मिंदा न होने दे, क्योंकि मैंने तुझे पुकारा है। मेरे बजाए बेदीनों के मुँह काले हो जाएँ, वह पाताल में उतरकर चुप हो जाएँ।

18 उनके फ़रेबदेह होंट बंद हो जाएँ, क्योंकि वह तकब्बुर और हिकारत से रास्तबाज़ के खिलाफ़ कुफ़र बकते हैं।

19 तेरी भलाई कितनी अज़ीम है! तू उसे उनके लिए तैयार रखता है जो तेरा ख़ौफ़ मानते हैं, उसे उन्हें दिखाता है जो इससानों के सामने से तुझमें पनाह लेते हैं।

20 तू उन्हें अपने चेहरे की आड़ में लोगों के हमलों से छुपा लेता, उन्हें ख़ैमे में लाकर इलज़ामतराश ज़बानों से महफूज़ रखता है।

\* 31:15 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : मेरे औकात।

- 21 रब की तमजीद हो, क्योंकि जब शहर का मुहासरा हो रहा था तो उसने मोजिजाना तौर पर मुझ पर मेहरबानी की।  
 22 उस वक़्त मैं घबराकर बोला, “हाय, मैं तेरे हुज़ूर से मुंक्रते हो गया हूँ!” लेकिन जब मैंने चीखते-चिल्लाते हुए तुझसे मदद माँगी तो तूने मेरी इल्तिजा सुन ली।  
 23 ऐ रब के तमाम ईमानदारो, उससे मुहब्बत रखो! रब वफादारों को महफूज़ रखता, लेकिन मग़स्रों को उनके खव्ये का पूरा अज़्र देगा।  
 24 चुनौचे मज़बूत और दिलेर हो, तुम सब जो रब के इंतज़ार में हो।

## 32

मुआफी की बरकत (तौबा का दूसरा जब्र)

- 1 दाऊद का जब्र। हिकमत का गीत।  
 मुबारक है वह जिसके जरायम मुआफ़ किए गए, जिसके गुनाह ढँपे गए हैं।  
 2 मुबारक है वह जिसका गुनाह रब हिसाब में नहीं लाएगा और जिसकी रूह में फ़रेब नहीं है।  
 3 जब मैं चुप रहा तो दिन-भर अहें भरने से मेरी हड्डियाँ गलने लगीं।  
 4 क्योंकि दिन-रात मैं तेरे हाथ के बोझ तले पिसता रहा, मेरी ताक़त गोया मौसम-गरमा की झुलसती तपिश में जाती रही। (सिलाह)  
 5 तब मैंने तेरे सामने अपना गुनाह तसलीम किया, मैं अपना गुनाह छुपाने से बाज़ आया। मैं बोला, “मैं रब के सामने अपने जरायम का इकरार करूँगा।” तब तूने मेरे गुनाह को मुआफ़ कर दिया। (सिलाह)  
 6 इसलिए तमाम ईमानदार उस वक़्त तुझसे दूआ करें जब तू मिल सकता है। यकीनन जब बड़ा सैलाब आए तो उन तक नहीं पहुँचेगा।  
 7 तू मेरी छुपने की जगह है, तू मुझे परेशानी से महफूज़ रखता, मुझे नजात के नगमों से घेर लेता है। (सिलाह)  
 8 “मैं तुझे तालीम दूँगा, तुझे वह राह दिखाऊँगा जिस पर तुझे जाना है। मैं तुझे मशवरा देकर तेरी देख-भाल करूँगा।  
 9 नासमझ घोड़े या खच्चर की मानिंद न हो, जिन पर काबू पाने के लिए लगाम और दहाने की ज़रूरत है, वरना वह तेरे पास नहीं आएँगे।”  
 10 बेदीन की मुतअद्दिद परेशानियाँ होती हैं, लेकिन जो रब पर भरोसा रखे उसे वह अपनी शफ़क़त से घेर रखता है।  
 11 ऐ रास्तबाज़ो, रब की खुशी में जशन मनाओ! ऐ तमाम दियानतदारो, शादमानी के नारे लगाओ!

## 33

अल्लाह की हुक़मत और मदद की तारीफ़

- 1 ऐ रास्तबाज़ो, रब की खुशी मनाओ! क्योंकि मुनासिब है कि सीधी राह पर चलनेवाले उस की सताइश करें।  
 2 सरोद बजाकर रब की हमदो-सना करो। उस की तमजीद में दस तारोंवाला साज़ बजाओ।  
 3 उस की तमजीद में नया गीत गाओ, महारत से साज़ बजाकर खुशी के नारे लगाओ।  
 4 क्योंकि रब का कलाम सच्चा है, और वह हर काम वफादारी से करता है।  
 5 उसे रास्तबाज़ी और इनसाफ़ प्यारे हैं, दुनिया रब की शफ़क़त से भरी हुई है।  
 6 रब के कहने पर आसमान खलक हुआ, उसके मुँह के दम से सितारों का पूरा लशकर वुजूद में आया।  
 7 वह समुंदर के पानी का बड़ा ढेर जमा करता, पानी की गहराइयों को गोदामों में महफूज़ रखता है।  
 8 कुल दुनिया रब का ख़ौफ़ माने, ज़मीन के तमाम बाशिंदे उससे दहशत खाएँ।  
 9 क्योंकि उसने फ़रमाया तो फ़ौरन वुजूद में आया, उसने हुक़म दिया तो उसी वक़्त कायम हुआ।  
 10 रब अक्रवाम का मनसूबा नाकाम होने देता, वह उम्मतों के इरादों को शिकस्त देता है।  
 11 लेकिन रब का मनसूबा हमेशा तक कामयाब रहता, उसके दिल के इरादे पुरत-दर-पुरत कायम रहते हैं।  
 12 मुबारक है वह क़ौम जिसका ख़ुदा रब है, वह क़ौम जिसे उसने चुनकर अपनी मीरास बना लिया है।

- 13 रब आसमान से नज़र डालकर तमाम इनसानों का मुलाहज़ा करता है।
- 14 अपने तख़्त से वह ज़मीन के तमाम बाशिंदों का मुआयना करता है।
- 15 जिससे उन सबके दिलों को तश्कील दिया वह उनके तमाम कामों पर ध्यान देता है।
- 16 बादशाह की बड़ी फ़ौज उसे नहीं छुड़ाती, और सूरमे की बड़ी ताक़त उसे नहीं बचाती।
- 17 घोड़ा भी मदद नहीं कर सकता। जो उस पर उम्मीद रखे वह धोका खाएगा। उस की बड़ी ताक़त छुटकारा नहीं देती।
- 18 यक़ीनन रब की आँख़ उन पर लगी रहती है जो उसका ख़ौफ़ मानते और उस की मेहरबानी के इंतज़ार में रहते हैं,
- 19 कि वह उनकी जान मौत से बचाए और काल में महफूज़ रखे।
- 20 हमारी जान रब के इंतज़ार में है। वही हमारा सहारा, हमारी ढाल है।
- 21 हमारा दिल उसमें ख़ुश है, क्योंकि हम उसके मुक़द्दस नाम पर भरोसा रखते हैं।
- 22 ऐ रब, तेरी मेहरबानी हम पर रहे, क्योंकि हम तुझ पर उम्मीद रखते हैं।

## 34

### अल्लाह की हिफ़ाज़त

- 1 दाऊद का यह जबूर उस वक़्त से मुताल्लिक है जब उसने फ़िलिस्ती बादशाह अबीमलिक के सामने पागल बनने का रूप भर लिया। यह देखकर बादशाह ने उसे भगा दिया। चले जाने के बाद दाऊद ने यह गीत गाया।  
हर वक़्त मैं रब की तमज़ीद करूँगा, उस की हम्दो-सना हमेशा ही मेरे होंटों पर रहेगी।
- 2 मेरी जान रब पर फ़ख़र करेगी। मुसीबतज़दा यह सुनकर ख़ुश हो जाएँ।
- 3 आओ, मेरे साथ रब की ताज़ीम करो। आओ, हम मिलकर उसका नाम सरबुलंद करें।
- 4 मैंने रब को तलाश किया तो उसने मेरी सुनी। जिन चीज़ों से मैं दहशत खा रहा था उन सबसे उसने मुझे रिहाई दी।
- 5 जिनकी आँखें उस पर लगी रहें वह ख़ुशी से चमकेंगे, और उनके मुँह शरमिंदा नहीं होंगे।
- 6 इस नाचार ने पुकारा तो रब ने उस की सुनी, उसने उसे उस की तमाम मुसीबतों से नजात दी।
- 7 जो रब का ख़ौफ़ मानें उनके इर्दगिर्द उसका फ़रिश्ता ख़ैमाज़न होकर उनको बचाए रखता है।
- 8 रब की भलाई का तज़रबा करो। मुबारक है वह जो उसमें पनाह ले।
- 9 ऐ रब के मुक़द्दसीन, उसका ख़ौफ़ मानो, क्योंकि जो उसका ख़ौफ़ मानें उन्हें कमी नहीं।
- 10 जवान शेरबबर कभी ज़स्तरतमंद और भूके होते हैं, लेकिन रब के तालिबों को किसी भी अच्छी चीज़ की कमी नहीं होगी।
- 11 ऐ बचचो, आओ, मेरी बातें सुनो! मैं तुम्हें रब के ख़ौफ़ की तालीम दूँगा।
- 12 कौन मज़े से ज़िंदगी गुज़ारना और अच्छे दिन देखना चाहता है?
- 13 वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से रोके और अपने होंटों को झूट बोलने से।
- 14 वह बुराई से मुँह फेरकर नेक काम करे, सुलह-सलामती का तालिब होकर उसके पीछे लगा रहे।
- 15 रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं, और उसके कान उनकी इल्तिजाओं की तरफ़ मायल हैं।
- 16 लेकिन रब का चेहरा उनके खिलाफ़ है जो ग़लत काम करते हैं। उनका ज़मीन पर नामो-निशान तक नहीं रहेगा।
- 17 जब रास्तबाज़ फ़रियाद करें तो रब उनकी सुनता, वह उन्हें उनकी तमाम मुसीबत से छुटकारा देता है।
- 18 रब शिकस्तादिलों के करीब होता है, वह उन्हें रिहाई देता है जिनकी रूह को ख़ाक में कुचला गया हो।
- 19 रास्तबाज़ की मुतअद्दित तकालीफ़ होती है, लेकिन रब उसे उन सबसे बचा लेता है।
- 20 वह उस की तमाम हड्डियों की हिफ़ाज़त करता है, एक भी नहीं तोड़ी जाएगी।
- 21 बुराई बेदीन को मार डालेगी, और जो रास्तबाज़ से नफ़रत करे उसे मुनासिब अन्न मिलेगा।
- 22 लेकिन रब अपने खादिमों की जान का फ़िघा देगा। जो भी उसमें पनाह ले उसे सज़ा नहीं मिलेगी।

## 35

शरीरों के हमलों से रिहाई के लिए दुआ



1 दाऊद का जब्र।

ऐ रब, उनसे झगड़ जो मेरे साथ झगड़ते हैं, उनसे लड़ जो मेरे साथ लड़ते हैं।

2 लंबी और छोटी ढाल पकड़ ले और उठकर मेरी मदद करने आ।

3 नेजे और बरछी को निकालकर उन्हें रोक दे जो मेरा ताकतुक कर रहे हैं! मेरी जान से फरमा, “मैं तेरी नजात हूँ!”

4 जो मेरी जान के लिए कोशिशें हैं उनका मुँह काला हो जाए, वह स्सवा हो जाएँ। जो मुझे मुसीबत में डालने के मनस्बे बाँध रहे हैं वह पीछे हटकर शर्मिदा हों।

5 वह हवा में भूसे की तरह उड़ जाएँ जब रब का फरिश्ता उन्हें भगा दे।

6 उनका रास्ता तारीक और फिसलना हो जब रब का फरिश्ता उनके पीछे पड़ जाए।

7 क्योंकि उन्होंने बेसबब और चुपके से मेरे रास्ते में जाल बिछाया, बिलावजह मुझे पकड़ने का गढा खोदा है।

8 इसलिए तबाही अचानक ही उन पर आ पड़े, पहले उन्हें पता ही न चले। जो जाल उन्होंने चुपके से बिछाया उसमें वह खुद उलझ जाएँ, जिस गढे को उन्होंने खोदा उसमें वह खुद गिरकर तबाह हो जाएँ।

9 तब मेरी जान रब की खुशी मनाएगी और उस की नजात के बाइस शादमान होगी।

10 मेरे तमाम आज्ञा कह उठेंगे, “ऐ रब, कौन तेरी मानिंद है? कोई भी नहीं! क्योंकि तू ही मुसीबतजदा को जब्रदस्त आदमी से छुटकारा देता, तू ही नाचार और गरीब को लटनेवाले के हाथ से बचा लेता है।”

11 ज़ालिम गवाह मेरे खिलाफ उठ खड़े हो रहे हैं। वह ऐसी बातों के बारे में मेरी पूछ-गछ कर रहे हैं जिनसे मैं वाकिफ ही नहीं।

12 वह मेरी नेकी के एवज़ मुझे नुक़सान पहुँचा रहे हैं। अब मेरी जान तने-तनहा है।

13 जब वह बीमार हुए तो मैंने टाट ओढकर और रोज़ा रखकर अपनी जान को दुख दिया। काश मेरी दुआ मेरी गोद में वापस आए!

14 मैंने यों मातम किया जैसे मेरा कोई दोस्त या भाई हो। मैं मातमी लिबास पहनकर यों खाक में झुक गया जैसे अपनी माँ का जनाज़ा हो।

15 लेकिन जब मैं खुद ठोकर खाने लगा तो वह खुश होकर मेरे खिलाफ जमा हुए। वह मुझ पर हमला करने के लिए इकट्ठे हुए, और मुझे मालूम ही नहीं था। वह मुझे फाड़ते रहे और बाज़ न आए।

16 मुसलसल कुफ़र बक बककर वह मेरा मज़ाक उड़ाते, मेरे खिलाफ दौत पीसते थे।

17 ऐ रब, तू कब तक खामोशी से देखता रहेगा? मेरी जान को उनकी तबाहक़ुन हरकतों से बचा, मेरी ज़िंदगी को जवान शेरों से छुटकारा दे।

18 तब मैं बड़ी जमात में तेरी सताइश और बड़े हुज़ूम में तेरी तारीफ करूँगा।

19 उन्हें मुझ पर बगालें बजाने न दे जो बेसबब मेरे दुश्मन हैं। उन्हें मुझ पर नाक-भौं चढ़ाने न दे जो बिलावजह मुझसे कीना रखते हैं।

20 क्योंकि वह खैर और सलामती की बातें नहीं करते बल्कि उनके खिलाफ फ़रेबदेह मनस्बे बाँधते हैं जो अमन और सुकून से मुल्क में रहते हैं।

21 वह मुँह फाड़कर कहते हैं, “लो जी, हमने अपनी आँखों से उस की हरकतें देखी हैं।”

22 ऐ रब, तुझे सब कुछ नज़र आया है। खामोश न रह! ऐ रब, मुझसे दूर न हो।

23 ऐ रब मेरे खुदा, जाग उठ! मेरे दिफा में उठकर उनसे लड़!

24 ऐ रब मेरे खुदा, अपनी रास्ती के मुताबिक मेरा इन्साफ़ कर। उन्हें मुझ पर बगालें बजाने न दे।

25 वह दिल में न सोचें, “लो जी, हमारा इरादा पूरा हुआ है!” वह न बोलें, “हमने उसे हड़प कर लिया है।”

26 जो मेरा नुक़सान देखकर खुश हुए उन सबका मुँह काला हो जाए, वह शर्मिदा हो जाएँ। जो मुझे दबाकर अपने आप पर फ़ख़र करते हैं वह शर्मिदागी और स्सवाई से मुल्बबस हो जाएँ।

27 लेकिन जो मेरे इन्साफ़ के आरज़ुमंद हैं वह खुश हों और शादियाना बजाएँ। वह कहें, “रब की बड़ी तारीफ हो, जो अपने खादिम की खैरियत चाहता है।”

28 तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती बयान करेगी, वह सारा दिन तेरी तमज़ीद करती रहेगी।

## 36

अल्लाह की मेहरबानी की तारीफ

- 1 रब के खादिम दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
- बदकारी बेदीन के दिल ही में उससे बात करती है। उस की आँखों के सामने अल्लाह का खौफ नहीं होता,
- 2 क्योंकि उस की नज़र में यह बात फ़खर का बाइस है कि उसे कुसूरवार पाया गया, कि वह नफ़रत करता है।
- 3 उसके मुँह से शरारत और फ़रेब निकलता है, वह समझदार होने और नेक काम करने से बाज़ आया है।
- 4 अपने बिस्तर पर भी वह शरारत के मनसूबे बाँधता है। वह मज़बूती से बुरी राह पर खड़ा रहता और बुराई को मुस्तरद नहीं करता।

- 5 ऐ रब, तेरी शफ़क़त आसमान तक, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।
- 6 तेरी रास्ती बुलंदतरीन पहाड़ों की मानिंद, तेरा इन्साफ़ समुंदर की गहराइयों जैसा है। ऐ रब, तू इन्सानो-हैवान की मदद करता है।
- 7 ऐ अल्लाह, तेरी शफ़क़त कितनी बेशकीमत है! आदमज़ाद तेरे परो के साथे में पनाह लेते हैं।
- 8 वह तेरे घर के उम्दा खाने से तरो-ताज़ा हो जाते हैं, और तू उन्हें अपनी खुशियों की नदी में से पिलाता है।
- 9 क्योंकि जिंदगी का सरचश्मा तेरे ही पास है, और हम तेरे नूर में रहकर नूर का मुशाहदा करते हैं।
- 10 अपनी शफ़क़त उन पर फैलाए रख जो तुझे जानते हैं, अपनी रास्ती उन पर जो दिल से दियानतदार हैं।
- 11 मास्त्रों का पीव मुझ तक न पहुँचे, बेदीनों का हाथ मुझे बेघर न बनाए।
- 12 देखो, बदकार गिर गए हैं! उन्हें ज़मीन पर पटख दिया गया है, और वह दुबारा कभी नहीं उठेंगे।

## 37

बेदीनों की बज़ाहिर ख़ुशहाली

- 1 दाऊद का जबूर।
- शरीरों के बाइस बेचैन न हो जा, बदकारों पर रश्क न कर।
- 2 क्योंकि वह घास की तरह जल्द ही मुरझा जाएंगे, हरियाली की तरह जल्द ही सूख जाएंगे।
- 3 रब पर भरोसा रखकर भलाई कर, मुल्क में रहकर वफ़ादारी की परवरिश कर।
- 4 रब से लुत्फ़अंदोज़ हो तो जो तेरा दिल चाहे वह तुझे देगा।
- 5 अपनी राह रब के सुपर्द कर। उस पर भरोसा रख तो वह तुझे कामयाबी बख़्शेगा।
- 6 तब वह तेरी रास्तबाज़ी सूरज की तरह तूलू होने देगा और तेरा इन्साफ़ दोपहर की रौशनी की तरह चमकने देगा।
- 7 रब के हज़ूर चुप होकर सब्र से उसका इंतज़ार कर। बेकरार न हो अगर साज़िशें करनेवाला कामयाब हो।
- 8 ख़फ़ा होने से बाज़ आ, गुस्से को छोड़ दे। रंजीदा न हो, वरना बुरा ही नतीजा निकलेगा।
- 9 क्योंकि शरीर मिट जाएंगे जबकि रब से उम्मीद रखनेवाले मुल्क को मीरास में पाएँगे।
- 10 मज़ीद थोड़ी देर सब्र कर तो बेदीन का नामो-निशान मिट जाएगा। तू उसका खोज़ लगाएगा, लेकिन कही नहीं पाएगा।
- 11 लेकिन हलीम मुल्क को मीरास में पाकर बड़े अमन और सुकून से लुत्फ़अंदोज़ होंगे।
- 12 बेशक बेदीन दाँत पीस पीसकर रास्तबाज़ के खिलाफ़ साज़िशें करता रहे।
- 13 लेकिन रब उस पर हँसता है, क्योंकि वह जानता है कि उसका अंजाम करीब ही है।
- 14 बेदीनों ने तलवार को खींचा और कमान को तान लिया है ताकि नाचारों और ज़रूरतमंदों को गिरा दें और सीधी राह पर चलनेवालों को कल्ल करें।
- 15 लेकिन उनकी तलवार उनके अपने दिल में घोपी जाएगी, उनकी कमान टूट जाएगी।
- 16 रास्तबाज़ को जो थोड़ा-बहुत हासिल है वह बहुत बेदीनों की दौलत से बेहतर है।
- 17 क्योंकि बेदीनों का बाज़ू टूट जाएगा जबकि रब रास्तबाज़ों को सँभालता है।
- 18 रब बेइलज़ामों के दिन जानता है, और उनकी मौस्सी मिलकियत हमेशा के लिए कायम रहेगी।
- 19 मुसीबत के वक़्त वह शर्मसार नहीं होंगे, काल भी पड़े तो सेर होंगे।
- 20 लेकिन बेदीन हलाक हो जाएंगे, और रब के दुश्मन चरागाहों की शान की तरह नेस्त हो जाएंगे, धुँएँ की तरह ग़ायब हो जाएंगे।

- 21 बेदीन कर्ज लेता और उसे नहीं उतारता, लेकिन रास्तबाज़ मेहरबान है और फैयाज़ी से देता है।  
 22 क्योंकि जिन्हें रब बरकत दे वह मुल्क को मीरास में पाएँगे, लेकिन जिन पर वह लानत भेजे उनका नामो-निशान तक नहीं रहेगा।  
 23 अगर किसी के पाँव जम जाएँ तो यह रब की तरफ से है। ऐसे शख्स की राह को वह पसंद करता है।  
 24 अगर गिर भी जाए तो पड़ा नहीं रहेगा, क्योंकि रब उसके हाथ का सहारा बना रहेगा।  
 25 मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ। लेकिन मैंने कभी नहीं देखा कि रास्तबाज़ को तर्क किया गया या उसके बच्चों को भीक माँगनी पड़ी।  
 26 वह हमेशा मेहरबान और कर्ज देने के लिए तैयार है। उस की औलाद बरकत का बाइस होगी।  
 27 बुराई से बाज़ आकर भलाई कर। तब तू हमेशा के लिए मुल्क में आबाद रहेगा,  
 28 क्योंकि रब को इनसाफ़ प्यारा है, और वह अपने ईमानदारों को कभी तर्क नहीं करेगा। वह अबद तक महफूज़ रहेगे जबकि बेदीनों की औलाद का नामो-निशान तक नहीं रहेगा।  
 29 रास्तबाज़ मुल्क को मीरास में पाकर उसमें हमेशा बसेंगे।  
 30 रास्तबाज़ का मुँह हिकमत बयान करता और उस की ज़बान से इनसाफ़ निकलता है।  
 31 अल्लाह की शरीअत उसके दिल में है, और उसके कदम कभी नहीं डगमगाएँगे।  
 32 बेदीन रास्तबाज़ की ताक में बैठकर उसे मार डालने का मौका ढूँडता है।  
 33 लेकिन रब रास्तबाज़ को उसके हाथ में नहीं छोड़ेगा, वह उसे अदालत में मुजरिम नहीं ठहरने देगा।  
 34 रब के इंतज़ार में रह और उस की राह पर चलता रह। तब वह तुझे सरफ़राज़ करके मुल्क का वारिस बनाएगा, और तू बेदीनों की हलाकत देखेगा।  
 35 मैंने एक बेदीन और ज़ालिम आदमी को देखा जो फलते-फलते देवदार के दरख्त की तरह आसमान से बातें करने लगा।  
 36 लेकिन थोड़ी देर के बाद जब मैं दुबारा वहाँ से गुज़रा तो वह था नहीं। मैंने उसका खोज लगाया, लेकिन कहीं न मिला।  
 37 बेइलज़ाम पर ध्यान दे और दियातदार पर गौर कर, क्योंकि आखिरकार उसे अमन और सुकून हासिल होगा।  
 38 लेकिन मुजरिम मिलकर तबाह हो जाएँगे, और बेदीनों को आखिरकार रूए-ज़मीन पर से मिटाया जाएगा।  
 39 रास्तबाज़ों की नजात रब की तरफ से है, मुसीबत के वक़्त वही उनका क़िला है।  
 40 रब ही उनकी मदद करके उन्हें छुटकारा देगा, वही उन्हें बेदीनों से बचाकर नजात देगा। क्योंकि उन्होंने उसमें पनाह ली है।

## 38

सज़ा से बचने की इल्तिज़ा (तौबा का तीसरा ज़ब्र)

- 1 दाऊद का ज़ब्र। याददाश्त के लिए।  
 ऐ रब, अपने ग़ज़ब में मुझे सज़ा न दे, क़हर में मुझे तंबीह न कर!  
 2 क्योंकि तेरे तीर मेरे जिस्म में लग गए हैं, तेरा हाथ मुझ पर भारी है।  
 3 तेरी लानत के बाइस मेरा पूरा जिस्म बीमार है, मेरे गुनाह के बाइस मेरी तमाम हड्डियाँ गलने लगी हैं।  
 4 क्योंकि मैं अपने गुनाहों के सैलाब में डूब गया हूँ, वह नाकाबिले-बरदाश्त बोझ बन गए हैं।  
 5 मेरी हमाक़त के बाइस मेरे ज़ख़मों से बदबू आने लगी, वह गलने लगे हैं।  
 6 मैं कुबड़ा बनकर खाक में दब गया हूँ, पूरा दिन मातमी लिबास पहने फिरता हूँ।  
 7 मेरी कमर में शदीद सोज़िश है, पूरा जिस्म बीमार है।  
 8 मैं निढाल और पाश पाश हो गया हूँ। दिल के अज़ाब के बाइस मैं चीख़ता-चिल्लाता हूँ।  
 9 ऐ रब, मेरी तमाम आरजू तेरे सामने है, मेरी आँहें तुझसे पोशीदा नहीं रहती।  
 10 मेरा दिल जोर से धड़कता, मेरी ताक़त जवाब दे गई बल्कि मेरी आँखों की रौशनी भी जाती रही है।  
 11 मेरे दोस्त और साथी मेरी मुसीबत देखकर मुझसे ग़ुरेज़ करते, मेरे क़रीब के रिश्तेदार दूर खड़े रहते हैं।  
 12 मेरे जानी दुश्मन फंदे बिछा रहे हैं, जो मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं वह धमकियाँ दे रहे और सारा सारा दिन फ़रेबदेह मनसूबे बाँध रहे हैं।

- 13 और मैं? मैं तो गोया बहरा हूँ, मैं नहीं सुनता। मैं गूँगे की मानिंद हूँ जो अपना मुँह नहीं खोलता।
- 14 मैं ऐसा शख्स बन गया हूँ जो न सुनता, न जवाब में एतराज करता है।
- 15 क्योंकि ऐ रब, मैं तेरे इंतज़ार में हूँ। ऐ रब मेरे खुदा, तू ही मेरी सुनेगा।
- 16 मैं बोला, “ऐसा न हो कि वह मेरा नुक़सान देखकर बग़ालें बजाएँ, वह मेरे पाँवों के डगमगाने पर मुझे दबाकर अपने आप पर फ़ख़र करें।”
- 17 क्योंकि मैं लड़खड़ाने को हूँ, मेरी अज़ियत मुतवातिर मेरे सामने रहती है।
- 18 चुनौचे मैं अपना कुसूर तसलीम करता हूँ, मैं अपने गुनाह के बाइस गमगीन हूँ।
- 19 मेरे दुश्मन ज़िंदा और ताक़तवर हैं, और जो बिलावजह मुझसे नफ़रत करते हैं वह बहुत हैं।
- 20 वह नेकी के बदले बंदी करते हैं। वह इसलिए मेरे दुश्मन हैं कि मैं भलाई के पीछे लगा रहता हूँ।
- 21 ऐ रब, मुझे तर्क न कर! ऐ अल्लाह, मुझसे दूर न रह!
- 22 ऐ रब मेरी नजात, मेरी मदद करने में जल्दी कर!

## 39

इनसान के फ़ानी होने के पेशे-नज़र इल्तिजा

- 1 दाऊद का जब्र। यदूतन के लिए। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
- मैं बोला, “मैं अपनी राहों पर ध्यान दूँगा ताकि अपनी ज़बान से गुनाह न करूँ। जब तक बेदीन मेरे सामने रहे उस वक़्त तक अपने मुँह को लगाम दिए रहूँगा।”
- 2 मैं चुप-चाप हो गया और अच्छी चीज़ों से दूर रहकर खामोश रहा। तब मेरी अज़ियत बढ़ गई।
- 3 मेरा दिल पेशानी से तपने लगा, मेरे कराहते कराहते मेरे अंदर बेचैनी की आग-सी भड़क उठी। तब बात ज़बान पर आ गई,
- 4 “ऐ रब, मुझे मेरा अंजाम और मेरी उम्र की हद दिखा ताकि मैं जान लूँ कि कितना फ़ानी हूँ।
- 5 देख, मेरी ज़िंदगी का दौरानिया तेरे सामने लमहा-भर का है। मेरी पूरी उम्र तेरे नज़दीक कुछ भी नहीं है। हर इनसान दम-भर का ही है, खाह वह कितनी ही मज़बूती से खड़ा क्यों न हो। (सिलाह)
- 6 जब वह इधर उधर घूमे फिरे तो साया ही है। उसका शोर-शराबा बातिल है, और गो वह दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे तो भी उसे मालूम नहीं कि बाद में किसके कब्ज़े में आएगी।”
- 7 चुनौचे ऐ रब, मैं किसके इंतज़ार में रहूँ? तू ही मेरी वाहिद उम्मीद है!
- 8 मेरे तमाम गुनाहों से मुझे छुटकारा दे। अहमक को मेरी स्सवाई करने न दे।
- 9 मैं खामोश हो गया हूँ और कभी अपना मुँह नहीं खोलता, क्योंकि यह सब कुछ तेरे ही हाथ से हुआ है।
- 10 अपना अज़ाब मुझसे दूर कर! तेरे हाथ की जरबों से मैं हलाक हो रहा हूँ।
- 11 जब तू इनसान को उसके कुसूर की मुनासिब सज़ा देकर उसको तंबीह करता है तो उस की खूबसूरती कीडा लगे कपड़े की तरह जाती रहती है। हर इनसान दम-भर का ही है। (सिलाह)
- 12 ऐ रब, मेरी दुआ सुन और मदद के लिए मेरी आहों पर तबज्जुह दे। मेरे आँसुओ को देखकर खामोश न रह। क्योंकि मैं तेरे हुज़ूर रहनेवाला परदेसी, अपने तमाम बापदादा की तरह तेरे हुज़ूर बसनेवाला गैरशहरी हूँ।
- 13 मुझसे बाज़ आ ताकि मैं कूच करके नेस्त हो जाने से पहले एक बार फिर हश्शाश-बश्शाश हो जाऊँ।

## 40

शुक़ और दरखास्त

- 1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए।
- मैं सब से रब के इंतज़ार में रहा तो वह मेरी तरफ़ मायल हुआ और मदद के लिए मेरी चीखों पर तबज्जुह दी।
- 2 वह मुझे तबाही के गढे से खीच लाया, दलदल और कीचड़ से निकाल लाया। उसने मेरे पाँवों को चटान पर रख दिया, और अब मैं मज़बूती से चल-फिर सकता हूँ।

3 उसने मेरे मुँह में नया गीत डाल दिया, हमारे खुदा की हम्दो-सना का गीत उभरने दिया। बहुत-से लोग यह देखेंगे और खौफ खाकर रब पर भरोसा रखेंगे।

4 मुबारक है वह जो रब पर पूरा भरोसा रखता है, जो तंग करनेवालों और फ़रेब में उलझे हुआ की तरफ़ सख़ नहीं करता।

5 ऐ रब मेरे खुदा, बार बार तूने हमें अपने मोजिजे दिखाए, जगह बजगह अपने मनसूबे वुजूद में लाकर हमारी मदद की। तुझ जैसा कोई नहीं है। तेरे अज़ीम काम बेशुमार हैं, मैं उनकी पूरी फ़ह्रिस्त बता भी नहीं सकता।

6 तू कुरबानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था, लेकिन तूने मेरे कानों को खोल दिया। तूने भस्म होनेवाली कुरबानियों और गुनाह की कुरबानियों का तकाज़ा न किया।

7 फिर मैं बोल उठा, “मैं हाज़िर हूँ जिस तरह मेरे बारे में कलामे-मुकद्दस \* में लिखा है।

8 ऐ मेरे खुदा, मैं खुशी से तेरी मरज़ी पूरी करता हूँ, तेरी शरीअत मेरे दिल में टिक गई है।”

9 मैंने बड़े इजतिमा में रास्ती की खुशखबरी सुनाई है। ऐ रब, यकीनन तू जानता है कि मैंने अपने होंटों को बंद न रखा।

10 मैंने तेरी रास्ती अपने दिल में छुपाए न रखी बल्कि तेरी वफ़ादारी और नजात बयान की। मैंने बड़े इजतिमा में तेरी शफ़क़त और सदाक़त की एक बात भी पोशीदा न रखी।

11 ऐ रब, तू मुझे अपने रहम से महरूम नहीं रखेगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी मुसलसल मेरी निगहबानी करेगी।

12 क्योंकि बेशुमार तकलीफ़ों ने मुझे घेर रखा है, मेरे गुनाहों ने आख़िरकार मुझे आ पकड़ा है। अब मैं नज़र भी नहीं उठा सकता। वह मेरे सर के बालों से ज्यादा हैं, इसलिए मैं हिम्मत हार गया हूँ।

13 ऐ रब, मेहरबानी करके मुझे बचा! ऐ रब, मेरी मदद करने में जल्दी कर!

14 मेरे जानी दुश्मन सब शरमिंदा हो जाएँ, उनकी सख़्त सस्वाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने से लुत्फ़ उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उनका मुँह काला हो जाए।

15 जो मेरी मुसीबत देखकर कहकहा लगाते हैं वह शर्म के मारे तबाह हो जाएँ।

16 लेकिन तेरे तालिब शादमान होकर तेरी खुशी मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें, “रब अज़ीम है।”

17 मैं नाचार और ज़रूरतमंद हूँ, लेकिन रब मेरा खयाल रखता है। तू ही मेरा सहारा और मेरा नजातदहिदा है। ऐ मेरे खुदा, देर न कर!

## 41

### मरीज़ की दुआ

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

मुबारक है वह जो पस्तहाल का खयाल रखता है। मुसीबत के दिन रब उसे छुटकारा देगा।

2 रब उस की हिफ़ाज़त करके उस की जिंदगी को महफूज़ रखेगा, वह मुल्क में उसे बरकत देकर उसे उसके दुश्मनों के लालच के हवाले नहीं करेगा।

3 बीमारी के वक़्त रब उसको बिस्तर पर सँभालेगा। तू उस की सेहत पूरी तरह बहाल करेगा।

4 मैं बोला, “ऐ रब, मुझ पर रहम कर! मुझे शफ़ा दे, क्योंकि मैंने तेरा ही गुनाह किया है।”

5 मेरे दुश्मन मेरे बारे में ग़लत बातें करके कहते हैं, “वह कब मरेगा? उसका नामो-निशान कब मिटेगा?”

6 जब कभी कोई मुझसे मिलने आए तो उसका दिल झूट बोलता है। पसे-परदा वह ऐसी नुक़सानदेह मालूमात जमा करता है जिन्हें बाद में बाहर जाकर ग़लियों में फैला सके।

7 मुझसे नफ़रत करनेवाले सब आपस में मेरे खिलाफ़ फुसफुसाते हैं। वह मेरे खिलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधकर कहते हैं,

8 “उसे मोहलक मरज़ लग गया है। वह कभी अपने बिस्तर पर से दुबारा नहीं उठेगा।”

9 मेरा दोस्त भी मेरे खिलाफ़ उठ खड़ा हुआ है। जिस पर मैं एतमाद करता था और जो मेरी रोटी खाता था, उसने मुझ पर लात उठाई है।

10 लेकिन तू ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर! मुझे दुबारा उठा खड़ा कर ताकि उन्हें उनके सुलूक का बदला दे सकूँ।

\* 40:7 लफ़ज़ी तरज़ुमा : किताब के त्मार में।

- 11 इससे मैं जानता हूँ कि तू मुझसे खुश है कि मेरा दुश्मन मुझ पर फतह के नारे नहीं लगाता।  
 12 तूने मुझे मेरी दियानतदारी के बाइस कायम रखा और हमेशा के लिए अपने हुजूर खड़ा किया है।  
 13 रब की हम्द हो जो इसराईल का खुदा है। अजल से अबद तक उस की तमजीद हो। आमीन, फिर आमीन।

## दूसरी किताब 42-72

### 42

परदेस में अल्लाह का आरज़ुमंद

- 1 क्रोरह की औलाद का जबूर। हिकमत का गीत। मौसीकी के राहनुमा के लिए।  
 ऐ अल्लाह, जिस तरह हिरनी नदियों के ताज़ा पानी के लिए तड़पती है उसी तरह मेरी जान तेरे लिए तड़पती है।  
 2 मेरी जान खुदा, हॉ जिंदा खुदा की प्यासी है। मैं कब जाकर अल्लाह का चेहरा देखूँगा?  
 3 दिन-रात मेरे आँसू मेरी गिज़ा रहे हैं। क्योंकि पूरा दिन मुझसे कहा जाता है, “तेरा खुदा कहाँ है?”  
 4 पहले हालात याद करके मैं अपने सामने अपने दिल की आहो-ज़ारी उंडेल देता हूँ। \* कितना मज़ा आता था जब हमारा जुलूस निकलता था, जब मैं हुजूम के बीच में खुशी और शुकगुज़ारी के नारे लगाते हुए अल्लाह की सुकूनतगाह की जानिब बढ़ता जाता था। कितना शोर मच जाता था जब हम जशन मनाते हुए घुमते-फिरते थे।  
 5 ऐ मेरी जान, तू गम क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा खुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

6 मेरी जान गम के मारे पिघल रही है। इसलिए मैं तुझे यरदन के मुल्क, हरमून के पहाड़ी सिलसिले और कोहे-मिसआर से याद करता हूँ।

7 जब से तेरे आबशारों की आवाज़ बुलंद हुई तो एक सैलाब दूसरे को पुकारने लगा है। तेरी तमाम मौजें और लहरें मुझ पर से गुज़र गई हैं।

8 दिन के वक़्त रब अपनी शफ़क़त भेजेगा, और रात के वक़्त उसका गीत मेरे साथ होगा, मैं अपनी हयात के खुदा से दुआ करूँगा।

9 मैं अल्लाह अपनी चटान से कहूँगा, “तू मुझे क्यों भूल गया है? मैं अपने दुश्मन के जुल्म के बाइस क्यों मातमी लिबास पहने फिस्कूँ?”

10 मेरे दुश्मनों की लान-तान से मेरी हड्डियाँ टूट रही हैं, क्योंकि पूरा दिन वह कहते हैं, “तेरा खुदा कहाँ है?”

11 ऐ मेरी जान, तू गम क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा खुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

### 43

1 ऐ अल्लाह, मेरा इनसाफ़ कर! मेरे लिए ग़ैरईमानदार कौम से लड़, मुझे धोकेबाज़ और शरीर आदमियों से बचा।

2 क्योंकि तू मेरी पनाह का खुदा है। तूने मुझे क्यों रड़ किया है? मैं अपने दुश्मन के जुल्म के बाइस क्यों मातमी लिबास पहने फिस्कूँ?

3 अपनी रौशनी और सच्चाई को भेज ताकि वह मेरी राहनुमाई करके मुझे तेरे मुकद्दस पहाड़ और तेरी सुकूनतगाह के पास पहुँचाएँ।

4 तब मैं अल्लाह की कुरबानगाह के पास आऊँगा, उस खुदा के पास जो मेरी खुशी और फ़रहत है। ऐ अल्लाह मेरे खुदा, वहाँ मैं सरोद बजाकर तेरी सताइश करूँगा।

5 ऐ मेरी जान, तू गम क्यों खा रही है, बेचैनी से क्यों तड़प रही है? अल्लाह के इंतज़ार में रह, क्योंकि मैं दुबारा उस की सताइश करूँगा जो मेरा खुदा है और मेरे देखते देखते मुझे नजात देता है।

\* 42:4 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : अपनी जान उंडेल देता हूँ।

## 44

क्या अल्लाह ने अपनी क्रौम को रद्द किया है?

- 1 क्रोरह की औलाद का जबूर। हिकमत का गीत। मौसीकी के राहनुमा के लिए।  
ऐ अल्लाह, जो कुछ तूने हमारे बापदादा के ऐयाम में यानी कदीम ज़माने में किया वह हमने अपने कानों से उनसे सुना है।
- 2 तूने खुद अपने हाथ से दीगर क्रौमों को निकालकर हमारे बापदादा को मुल्क में पौदे की तरह लगा दिया। तूने खुद दीगर उम्मतों को शिकस्त देकर हमारे बापदादा को मुल्क में फलने फूलने दिया।
- 3 उन्होंने अपनी ही तलवार के ज़रीए मुल्क पर कब्ज़ा नहीं किया, अपने ही बाजू से फतह नहीं पाई बल्कि तेरे दहने हाथ, तेरे बाजू और तेरे चेहरे के नूर ने यह सब कुछ किया। क्योंकि वह तुझे पसंद थे।
- 4 तू मेरा बादशाह, मेरा खुदा है। तेरे ही हुकम पर याकूब को मदद हासिल होती है।
- 5 तेरी मदद से हम अपने दुश्मनों को ज़मीन पर पटख देते, तेरा नाम लेकर अपने मुखालिफों को कुचल देते हैं।
- 6 क्योंकि मैं अपनी कमान पर एतमाद नहीं करता, और मेरी तलवार मुझे नहीं बचाएगी
- 7 बल्कि तू ही हमें दुश्मन से बचाता, तू ही उन्हें शरमिदा होने देता है जो हमसे नफरत करते हैं।
- 8 पूरा दिन हम अल्लाह पर फ़खर करते हैं, और हम हमेशा तक तेरे नाम की तमज़ीद करेंगे। (सिलाह)
- 9 लेकिन अब तूने हमें रद्द कर दिया, हमें शरमिदा होने दिया है। जब हमारी फ़ौज़ें लड़ने के लिए निकलती हैं तो तू उनका साथ नहीं देता।
- 10 तूने हमें दुश्मन के सामने पसपा होने दिया, और जो हमसे नफरत करते हैं उन्होंने हमें लूट लिया है।
- 11 तूने हमें भेड़-बकरियों की तरह कस्साब के हाथ में छोड़ दिया, हमें मुख्तलिफ़ क्रौमों में मुंतशिर कर दिया है।
- 12 तूने अपनी क्रौम को खफ़ीफ़-सी रक़म के लिए बेच डाला, उसे फ़रोख़्त करने से नफ़ा हासिल न हुआ।
- 13 यह तेरी तरफ़ से हुआ कि हमारे पड़ोसी हमें स्सवा करते, गिर्दों-नवाह के लोग हमें लान-तान करते हैं।
- 14 हम अक्रवाम में इब्रतअगेज़ मिसाल बन गए हैं। लोग हमें देखकर तौबा तौबा कहते हैं।
- 15 दिन-भर मेरी स्सवाई मेरी आँखों के सामने रहती है। मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है,
- 16 क्योंकि मुझे उनकी गालियों और कुफ़र सुनना पड़ता है, दुश्मन और इंतक़ाम लेने पर तुले हुए को बरदाश्त करना पड़ता है।

- 17 यह सब कुछ हम पर आ गया है, हालाँकि न हम तुझे भूल गए और न तेरे अहद से बेवफ़ा हुए हैं।
- 18 न हमारा दिल बागी हो गया, न हमारे क़दम तेरी राह से भटक गए हैं।
- 19 ताहम तूने हमें चूर चूर करके गीदड़ों के दरमियान छोड़ दिया, तूने हमें गहरी तारीकी में डूबने दिया है।
- 20 अगर हम अपने खुदा का नाम भूलकर अपने हाथ किसी और माबूद की तरफ़ उठाते
- 21 तो क्या अल्लाह को यह बात मालूम न हो जाती? ज़स्र! वह तो दिल के राज़ों से वाकिफ़ होता है।
- 22 लेकिन तेरी खातिर हमें दिन-भर मौत का सामना करना पड़ता है, लोग हमें ज़बह होनेवाली भेड़ों के बराबर समझते हैं।
- 23 ऐ रब, जाग उठ! तू क्यों सोया हुआ है? हमें हमेशा के लिए रद्द न कर बल्कि हमारी मदद करने के लिए खड़ा हो जा।
- 24 तू अपना चेहरा हमसे पोशीदा क्यों रखता है, हमारी मुसीबत और हम पर होनेवाले जुत्म को नज़रंदाज़ क्यों करता है?
- 25 हमारी जान खाक में दब गई, हमारा बदन मिट्टी से चिमट गया है।
- 26 उठकर हमारी मदद कर! अपनी शफ़क़त की खातिर फ़िघा देकर हमें छुड़ा!

## 45

बादशाह की शादी

- 1 क्रोरह की औलाद का जबूर। हिकमत और मुहब्बत का गीत। तर्ज़ : सोसन के फूल। मौसीकी के राहनुमा के लिए।  
मेरे दिल से ख़ब्सूरत गीत छलक रहा है, मैं उसे बादशाह को पेश करूँगा। मेरी ज़बान माहिर कातिब के क़लम की मानिंद हो!
- 2 तू आदमियों में सबसे ख़ब्सूरत है! तेरे होंट शफ़क़त से मसह किए हुए हैं, इसलिए अल्लाह ने तुझे अबदी बरक़त दी है।
- 3 ऐ सूरमे, अपनी तलवार से कमरबस्ता हो, अपनी शानो-शौक़त से मुल्बस हो जा!

4 गलबा और कामयाबी हासिल कर। सच्चाई, इंकिसारी और रास्ती की खातिर लड़ने के लिए निकल आ। तेरा दहना हाथ तुझे हैरतअंगेज काम दिखाए।

5 तेरे तेज़ तीर बादशाह के दुश्मनों के दिलों को छेद डालें। क्रौमों तेरे पाँवों में गिर जाएँ।

6 ऐ अल्लाह, तेरा तख्त अज़ल से अबद तक कायमो-दायम रहेगा, और इनसाफ़ का शाही असा तेरी बादशाही पर हुक्मत करेगा।

7 तूने रास्तबाज़ी से मुहब्बत और बेदीनी से नफ़रत की, इसलिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे ख़ुशी के तेल से मसह करके तुझे तेरे साथियों से कहीं ज्यादा सरफ़राज़ कर दिया।

8 मूर, ऊद और अमलतास की बेशक़रीमत ख़ुशबू तेरे तमाम कपड़ों से फैलती है। हाथीदाँत के महलों में तारदार मौसीकी तेरा दिल बहलाती है।

9 बादशाहों की बेटियाँ तेरे ज़ेवरात से सजी फिरती हैं। मलिका ओफ़ीर का सोना पहने हुए तेरे दहने हाथ खड़ी है।

10 ऐ बेटी, सुन मेरी बात! गौर कर और कान लगा। अपनी क्रौम और अपने बाप का घर भूल जा।

11 बादशाह तेरे हुस्र का आरज़ूमंद है, क्योंकि वह तेरा आका है। चुनोंचे झुककर उसका एहताराम कर।

12 सूर की बेटी तोहफ़ा लेकर आएगी, क्रौम के अमीर तेरी नज़रे-करम हासिल करने की कोशिश करेंगे।

13 बादशाह की बेटी कितनी शानदार चीज़ों से आरास्ता है। उसका लिबास सोने के धागों से बना हुआ है।

14 उसे नफ़ीस रंगदार कपड़े पहने बादशाह के पास लाया जाता है। जो कुँवारी सहेलियाँ उसके पीछे चलती हैं उन्हें भी तेरे सामने लाया जाता है।

15 लोग शादमान होकर और ख़ुशी मनाते हुए उन्हें वहाँ पहुँचाते हैं, और वह शाही महल में दाखिल होती है।

16 ऐ बादशाह, तेरे बेटे तेरे बापदादा की जगह खड़े हो जाएंगे, और तू उन्हें रईस बनाकर पूरी दुनिया में ज़िम्मादारियाँ देगा।

17 पुशत-दर-पुशत मैं तेरे नाम की तमजीद करूँगा, इसलिए क्रौमों हमेशा तक तेरी सताइश करेंगी।

## 46

अल्लाह हमारी कुव्वत है

1 क्रोरह की औलाद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। गीत का तर्ज़ : कुँवारियाँ।

अल्लाह हमारी पनाहगाह और कुव्वत है। मुसीबत के वक़्त वह हमारा मज़बूत सहारा साबित हुआ है।

2 इसलिए हम ख़ौफ़ नहीं खाएँगे, गो ज़मीन लरज़ उठे और पहाड़ झूमकर समुंदर की गहराइयों में गिर जाएँ,

3 गो समुंदर शोर मचाकर ठाठें मारे और पहाड़ उस की दहाड़ों से काँप उठें। (सिलाह)

4 दरिया की शाखें अल्लाह के शहर को ख़ुश करती हैं, उस शहर को जो अल्लाह तआला की मुक़द्दस सुकूनतगाह है।

5 अल्लाह उसके बीच में है, इसलिए शहर नहीं डगमगाएगा। सुबह-सवेरे ही अल्लाह उस की मदद करेगा।

6 क्रौमों शोर मचाने, सलतनतें लड़खड़ाने लगीं। अल्लाह ने आवाज़ दी तो ज़मीन लरज़ उठी।

7 रब्बूल-अफ़वाज़ हमारे साथ है, याक़ूब का ख़ुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

8 आओ, रब के अज़ीम कामों पर नज़र डालो! उसी ने ज़मीन पर हौलनाक़ तबाही नाज़िल की है।

9 वही दुनिया की इंतहा तक जंगें रोक देता, वही कमान को तोड़ देता, नेजे को टुकड़े टुकड़े करता और ढाल को जला देता है।

10 वह फ़रमाता है, “अपनी हरकतों से बाज़ आओ! जान लो कि मैं ख़ुदा हूँ। मैं अक़वाम में सरबुलंद और दुनिया में सरफ़राज़ हूँगा।”

11 रब्बूल-अफ़वाज़ हमारे साथ है। याक़ूब का ख़ुदा हमारा क़िला है। (सिलाह)

## 47

अल्लाह तमाम क्रौमों का बादशाह है

1 क्रोरह की औलाद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।



ऐ तमाम क्रौमो, ताली बजाओ! खुशी के नारे लगाकर अल्लाह की मद्दहसराई करो!

2 क्योंकि रब तआला पुरजलाल है, वह पूरी दुनिया का अज़ीम बादशाह है।

3 उसने क्रौमों को हमारे तहत कर दिया, उम्मतों को हमारे पाँवों तले रख दिया।

4 उसने हमारे लिए हमारी मीरास को चुन लिया, उसी को जो उसके प्यारे बंदे याक़ब के लिए फ़ख़र का बाइस था। (सिलाह)

5 अल्लाह ने सऊद फ़रमाया तो साथ साथ खुशी का नारा बुलंद हुआ, रब बुलंदी पर चढ़ गया तो साथ साथ नरसिंगा बजता रहा।

6 मद्दहसराई करो, अल्लाह की मद्दहसराई करो! मद्दहसराई करो, हमारे बादशाह की मद्दहसराई करो!

7 क्योंकि अल्लाह पूरी दुनिया का बादशाह है। हिकमत का गीत गाकर उस की सताइश करो।

8 अल्लाह क्रौमों पर हुकूमत करता है, अल्लाह अपने मुकद्दस तख़्त पर बैठता है।

9 दीगर क्रौमों के शरफ़ा इब्राहीम के ख़ुदा की क्रौम के साथ जमा हो गए हैं, क्योंकि वह दुनिया के हुकमरानों का मालिक है। वह निहायत ही सरबुलंद है।

## 48

अल्लाह का शहर यरूशालम

1 गीत। कोरह की औलाद का जबूर।

रब अज़ीम और बडी तारीफ़ के लायक है। उसका मुकद्दस पहाड़ हमारे ख़ुदा के शहर में है।

2 कोहे-सिय्यून की बुलंदी ख़ूबसूरत है, पूरी दुनिया उससे खुश होती है। कोहे-सिय्यून दूरतरिन शिमाल का इलाही पहाड़ ही है, वह अज़ीम बादशाह का शहर है।

3 अल्लाह उसके महलों में है, वह उस की पनाहगाह साबित हुआ है।

4 क्योंकि देखो, बादशाह जमा होकर यरूशालम से लड़ने आए।

5 लेकिन उसे देखते ही वह हैरान हुए, वह दहशत खाकर भाग गए।

6 वहाँ उन पर कपकपी तारी हुई, और वह दर्द-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाने लगे।

7 जिस तरह मशरिकी आँधी तरसीस के शानदार जहाज़ों को टुकड़े टुकड़े कर देती है उसी तरह तुने उन्हें तबाह कर दिया।

8 जो कुछ हमने सुना है वह हमारे देखते देखते रब्बुल-अफ़वाज़ हमारे ख़ुदा के शहर पर सादिक आया है, अल्लाह उसे अबद तक कायम रखेगा। (सिलाह)

9 ऐ अल्लाह, हमने तेरी सुकूनतगाह में तेरी शफ़क़त पर ग़ौरो-ख़ौज़ किया है।

10 ऐ अल्लाह, तेरा नाम इस लायक है कि तेरी तारीफ़ दुनिया की इंतहा तक की जाए। तेरा दहना हाथ रास्ती से भरा रहता है।

11 कोहे-सिय्यून शादमान हो, यहदाह की बेटियाँ \* तेरे मुसिफ़ाना फ़ैसलों के बाइस खुशी मनाएँ।

12 सिय्यून के इर्दगिर्द घूमो फ़िरो, उस की फ़सील के साथ साथ चलकर उसके बुर्ज़ गिन लो।

13 उस की क़िलाबंदी पर ख़ूब ध्यान दो, उसके महलों का मुआयना करो ताकि आनेवाली नसल को सब कुछ सुना सको।

14 यकीनन अल्लाह हमारा ख़ुदा हमेशा तक ऐसा ही है। वह अबद तक हमारी राहनुमाई करेगा।

## 49

अमीरों की शान सराब ही है

1 कोरह की औलाद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ तमाम क्रौमो, सुनो! दुनिया के तमाम बाशिंदो, ध्यान दो!

2 छोटे और बड़े, अमीर और ग़रीब सब तवज्जुह दें।

3 मेरा मुँह हिकमत बयान करेगा और मेरे दिल का ग़ौरो-ख़ौज़ समझ अता करेगा।

4 मैं अपना कान एक कहावत की तरफ़ झुकाऊँगा, सरोद बजाकर अपनी पहेली का हल बताऊँगा।

\* 48:11 यहाँ यहदाह की बेटियों से मुराद उसके शहर भी हो सकते हैं।

- 5 मैं खौफ क्यों खाऊँ जब मुसीबत के दिन आएँ और मक्कारों का बुरा काम मुझे घेर ले?
- 6 ऐसे लोग अपनी मिलकियत पर एतमाद और अपनी बड़ी दौलत पर फखर करते हैं।
- 7 कोई भी फ़िघा देकर अपने भाई की जान को नहीं छुड़ा सकता। वह अल्लाह को इस किस्म का तावान नहीं दे सकता।
- 8 क्योंकि इतनी बड़ी रकम देना उसके बस की बात नहीं। आखिरकार उसे हमेशा के लिए ऐसी कोशिशों से बाज़ आना पड़ेगा।
- 9 चुनौचे कोई भी हमेशा के लिए ज़िंदा नहीं रह सकता, आखिरकार हर एक मौत के गढे में उतरेगा।
- 10 क्योंकि हर एक देख सकता है कि दानिशमंद भी वफ़ात पाते और अहमक और नासमझ भी मिलकर हलाक हो जाते हैं। सबको अपनी दौलत दूसरों के लिए छोड़नी पड़ती है।
- 11 उनकी कन्नू अबद तक उनके घर बनी रहेंगी, पुरत-दर-पुरत वह उनमें बसे रहेंगे, गो उन्हें ज़मीनें हासिल थीं जो उनके नाम पर थीं।
- 12 इनसान अपनी शानो-शौकत के बावजूद कायम नहीं रहता, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।
- 13 यह उन सबकी तकदीर है जो अपने आप पर एतमाद रखते हैं, और उन सबका अंजाम जो उनकी बातें पसंद करते हैं। (सिलाह)
- 14 उन्हें भेड़-बकरियों की तरह पाताल में लाया जाएगा, और मौत उन्हें चराएगी। क्योंकि सबह के वक़्त दियानतदार उन पर हुकूमत करेंगे। तब उनकी शक्लो-सूरत धिसे-फटे कपड़े की तरह गल-सड़ जाएगी, पाताल ही उनकी रिहाइशग़ाह होगा।
- 15 लेकिन अल्लाह मेरी जान का फ़िघा देगा, वह मुझे पकड़कर पाताल की गिरिफ़्त से छुड़ाएगा। (सिलाह)
- 16 मत घबरा जब कोई अमीर हो जाए, जब उसके घर की शानो-शौकत बढ़ती जाए।
- 17 मरते वक़्त तो वह अपने साथ कुछ नहीं ले जाएगा, उस की शानो-शौकत उसके साथ पाताल में नहीं उतरेगी।
- 18 बेशक वह जीते-जी अपने आपको मुबारक कहेगा, और दूसरे भी ख़ाते-पीते आदमी की तारीफ़ करेंगे।
- 19 फिर भी वह आखिरकार अपने बापदादा की नसल के पास उतरेगा, उनके पास जो दुबारा कभी रौशनी नहीं देखेंगे।
- 20 जो इनसान अपनी शानो-शौकत के बावजूद नासमझ है, उसे जानवरों की तरह हलाक होना है।

## 50

### सहीह इबादत

- 1 आसफ़ का जबूर।
- रब कारिरे-मुतलक ख़ुदा बोल उठा है, उसने तुलए-सुबह से लेकर गुरुबे-आफ़ताब तक पूरी दुनिया को बुलाया है।
- 2 अल्लाह का नूर सिय्यून से चमक उठा है, उस पहाड़ से जो कामिल हुस्र का इज़हार है।
- 3 हमारा ख़ुदा आ रहा है, वह ख़ामोश नहीं रहेगा। उसके आगे आगे सब कुछ भस्म हो रहा है, उसके इर्दगिर्द तेज़ आँधी चल रही है।
- 4 वह आसमानो-ज़मीन को आवाज़ देता है, “अब मैं अपनी क़ौम की अदालत करूँगा।
- 5 मेरे इमानदारों को मेरे हुज़ूर जमा करो, उन्हें जिन्होंने कुरबानियों पेश करके मेरे साथ अहद बाँधा है।”
- 6 आसमान उस की रास्ती का एलान करेंगे, क्योंकि अल्लाह ख़ुद इनसाफ़ करनेवाला है। (सिलाह)
- 7 “ऐ मेरी क़ौम, सुन! मुझे बात करने दे। ऐ इसराईल, मैं तेरे खिलाफ़ गवाही दूँगा। मैं अल्लाह तेरा ख़ुदा हूँ।
- 8 मैं तुझे तेरी ज़बह की कुरबानियों के बाइस मलामत नहीं कर रहा। तेरी भस्म होनेवाली कुरबानियों तो मुसलसल मेरे सामने हैं।
- 9 न मैं तेरे घर से बैल लूँगा, न तेरे बाड़ों से बकरे।
- 10 क्योंकि जंगल के तमाम जानदार मेरे ही हैं, हज़ारों पहाड़ियों पर बसनेवाले जानवर मेरे ही हैं।
- 11 मैं पहाड़ों के हर परिदे को जानता हूँ, और जो भी मैदानों में हरकत करता है वह मेरा है।
- 12 अगर मुझे भूक लगती तो मैं तुझे न बताता, क्योंकि ज़मीन और जो कुछ उस पर है मेरा है।
- 13 क्या तू समझता है कि मैं सौँडों का गोशत खाना या बकरों का खून पीना चाहता हूँ?
- 14 अल्लाह को शुक्रगुशारी की कुरबानी पेश कर, और वह मन्नत पूरी कर जो तूने अल्लाह तआला के हुज़ूर मानी है।
- 15 मुसीबत के दिन मुझे पुकार। तब मैं तुझे नजात दूँगा और तू मेरी तमज़ीद करेगा।”

16 लेकिन बेदीन से अल्लाह फरमाता है, “मेरे अहकाम सुनाने और मेरे अहद का जिक्र करने का तेरा क्या हक है?

17 तू तो तरबियत से नफरत करता और मेरे फरमान कचरे की तरह अपने पीछे फेंक देता है।

18 किसी चोर को देखते ही तू उसका साथ देता है, तू जिनाकारों से रिफाकत रखता है।

19 तू अपने मुँह को बुरे काम के लिए इस्तेमाल करता, अपनी ज़बान को धोका देने के लिए तैयार रखता है।

20 तू दूसरों के पास बैठकर अपने भाई के खिलाफ बोलता है, अपनी ही माँ के बेटे पर तोहमत लगाता है।

21 यह कुछ तूने किया है, और मैं खामोश रहा। तब तू समझा कि मैं बिलकुल तुझ जैसा हूँ। लेकिन मैं तुझे मलामत करूँगा, तेरे सामने ही मामला तरतीब से सुनाऊँगा।

22 तुम जो अल्लाह को भूले हुए हो, बात समझ लो, वरना मैं तुम्हें फाड़ डालूँगा। उस वक्त कोई नहीं होगा जो तुम्हें बचाए।

23 जो शुक़रुज्जारी की कुरबानी पेश करे वह मेरी ताज़ीम करता है। जो मुसम्मम इरादे से ऐसी राह पर चले उसे मैं अल्लाह की नजात दिखाऊँगा।”

## 51

मुझे जैसे गुनाहगार पर रहम कर! (तौबा का चौथा ज़बूर)

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। यह गीत उस वक्त से मुताल्लिक है जब दाऊद के बत-सबा के साथ जिना करने के बाद नातन नबी उसके पास आया।

ऐ अल्लाह, अपनी शफ़क़त के मुताबिक मुझे पर मेहरबानी कर, अपने बड़े रहम के मुताबिक मेरी सरकशी के दाग मिटा दे।

2 मुझे धो दे ताकि मेरा कुसूर दूर हो जाए, जो गुनाह मुझसे सरजद हुआ है उससे मुझे पाक कर।

3 क्योंकि मैं अपनी सरकशी को मानता हूँ, और मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने रहता है।

4 मैंने तेरे, सिर्फ तेरे ही खिलाफ गुनाह किया, मैंने वह कुछ किया जो तेरी नज़र में बुरा है। क्योंकि लाज़िम है कि तू बोलते वक्त रास्त ठहरे और अदालत करते वक्त पाकीज़ा साबित हो जाए।

5 यकीनन मैं गुनाहआल्लाहा हालत में पैदा हुआ। ज्योंही मैं माँ के पेट में वजूद में आया तो गुनाहगार था।

6 यकीनन तू बातिन की सच्चाई पसंद करता और पोशीदगी में मुझे हिकमत की तालीम देता है।

7 ज़फ़ा लेकर मुझसे गुनाह दूर कर ताकि पाक-साफ़ हो जाऊँ। मुझे धो दे ताकि बर्फ़ से ज़्यादा सफ़ेद हो जाऊँ।

8 मुझे दुबारा खुशी और शादमानी सुनने दे ताकि जिन हड्डियों को तूने कुचल दिया वह शादियाना बजाएँ।

9 अपने चेहरे को मेरे गुनाहों से फेर ले, मेरा तमाम कुसूर मिटा दे।

10 ऐ अल्लाह, मेरे अंदर पाक दिल पैदा कर, मुझमें नए सिरे से साबितकदम रूह कायम कर।

11 मुझे अपने हज़र से खारिज न कर, न अपने मुक़द्दस रूह को मुझसे दूर कर।

12 मुझे दुबारा अपनी नजात की खुशी दिला, मुझे मुस्तैद रूह अता करके सँभाले रख।

13 तब मैं उन्हें तेरी राहों की तालीम दूँगा जो तुझसे बेवफ़ा हो गए हैं, और गुनाहगार तेरे पास वापस आएँगे।

14 ऐ अल्लाह, मेरी नजात के खुदा, कल्ल का कुसूर मुझसे दूर करके मुझे बचा। तब मेरी ज़बान तेरी रास्ती की हम्दो-सना करेगी।

15 ऐ रब, मेरे होंटों को खोल ताकि मेरा मुँह तेरी सताइश करे।

16 क्योंकि तू ज़बह की कुरबानी नहीं चाहता, वरना मैं वह पेश करता। भस्म होनेवाली कुरबानियाँ तुझे पसंद नहीं।

17 अल्लाह को मंज़ूर कुरबानी शिकस्ता रूह है। ऐ अल्लाह, तू शिकस्ता और कुचले हुए दिल को हकीर नहीं जानेगा।

18 अपनी मेहरबानी का इज़हार करके सिय्यून को खुशहाली बख़्श, यस्शलम की फ़सील तामीर कर।

19 तब तुझे हमारी सहीह कुरबानियाँ, हमारी भस्म होनेवाली और मुकम्मल कुरबानियाँ पसंद आएँगी। तब तेरी कुरबानगाह पर बैल चढ़ाए जाएँगे।

## 52

## जुलम के बावजूद तसल्ली

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। हिकमत का यह गीत उस वक्त से मुताल्लिक है जब दोएग अदोमी साऊल बादशाह के पास गया और उसे बताया, “दाऊद अखीमलिक इमाम के घर में गया है।”

ऐ सूरे, तू अपनी बर्दी पर क्यों फ़ख़र करता है? अल्लाह की शफ़क़त दिन-भर कायम रहती है।

2 ऐ धोकेबाज़, तेरी ज़बान तेज़ उस्तरे की तरह चलती हुई तबाही के मनसूबे बाँधती है।

3 तुझे भलाई की निसबत बुराई ज्यादा प्यारी है, सच बोलने की निसबत झूट ज्यादा पसंद है। (सिलाह)

4 ऐ फ़रेबदेह ज़बान, तू हर तबाहक़ुन बात से प्यार करती है।

5 लेकिन अल्लाह तुझे हमेशा के लिए खाक में मिलाएगा। वह तुझे मार मारकर तेरे ख़ैमे से निकाल देगा, तुझे जड़ से उखाड़कर ज़िंदों के मुल्क से खारिज कर देगा। (सिलाह)

6 रास्तबाज़ यह देखकर खौफ़ खाएँगे। वह उस पर हँसकर कहेंगे,

7 “लो, यह वह आदमी है जिसने अल्लाह में पनाह न ली बल्कि अपनी बड़ी दौलत पर एतमाद किया, जो अपने तबाहक़ुन मनसूबों से ताक़तवर हो गया था।”

8 लेकिन मैं अल्लाह के घर में ज़ैतून के फलते-फूलते दरख़्त की मानिंद हूँ। मैं हमेशा के लिए अल्लाह की शफ़क़त पर भरोसा रखूँगा।

9 मैं अबद तक उसके लिए तेरी सताइश करूँगा जो तूने किया है। मैं तेरे इमानदारों के सामने ही तेरे नाम के इंतज़ार में रहूँगा, क्योंकि वह भला है।

## 53

## बेदीन की हमाक़त

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। हिकमत का गीत। तर्ज़ : महलत।

अहमक़ दिल में कहता है, “अल्लाह है ही नहीं!” ऐसे लोग बदचलन हैं, उनकी हरकतें काबिले-घिन हैं। एक भी नहीं है जो अच्छा काम करे।

2 अल्लाह ने आसमान से इनसान पर नज़र डाली ताकि देखे कि क्या कोई समझदार है? क्या कोई अल्लाह का तालिब है?

3 अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए, सबके सब बिगड़ गए हैं। कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।

4 क्या जो बर्दी करके मेरी क़ौम को रोटी की तरह खा लेते हैं उन्हें समझ नहीं आती? वह तो अल्लाह को पुकारते ही नहीं।

5 तब उन पर सख़्त दहशत वहाँ छा गई जहाँ पहले दहशत का सबब नहीं था। जिन्होंने तुझे घेर रखा था अल्लाह ने उनकी हिठ्ठियाँ बिखेर दी। तूने उनको स्साव किया, क्योंकि अल्लाह ने उन्हें रद्द किया है।

6 काश कोहे-सिय्यून से इसराईल की नजात निकले! जब रब अपनी क़ौम को बहाल करेगा तो याक़ूब ख़ुशी के नारे लगाएगा, इसराईल बाग़ बाग़ होगा।

## 54

## खतरे में फँसे हुए शरख़्स की इल्तिजा

1 दाऊद का जबूर। हिकमत का यह गीत तारदार साज़ों के साथ गाना है। यह उस वक्त से मुताल्लिक है जब जीफ के बाशिंदों ने साऊल के पास जाकर कहा, “दाऊद हमारे पास छुपा हुआ है।”

ऐ अल्लाह, अपने नाम के ज़रीए से मुझे छुटकारा दे! अपनी कुदरत के ज़रीए से मेरा इनसाफ़ कर!

2 ऐ अल्लाह, मेरी इल्तिजा सुन, मेरे मुँह के अलफ़ाज़ पर ध्यान दे।

3 क्योंकि परदेसी मेरे खिलाफ़ उठ खड़े हुए हैं, ज़ालिम जो अल्लाह का लिहाज़ नहीं करते मेरी जान लेने के दरपै हैं। (सिलाह)

- 4 लेकिन अल्लाह मेरा सहारा है, रब मेरी जिंदगी कायम रखता है।
- 5 वह मेरे दुश्मनों की शरारत उन पर वापस लाएगा। चुनौचे अपनी वफादारी दिखाकर उन्हें तबाह कर दे।
- 6 मैं तुझे रजाकाराना कुरबानी पेश करूँगा। ऐ रब, मैं तेरे नाम की सताइश करूँगा, क्योंकि वह भला है।
- 7 क्योंकि उसने मुझे सारी मुसीबत से रिहाई दी, और अब मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देखकर खुश हूँगा।

## 55

### झूटे भाइयों पर शिकायत

- 1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए। हिकमत का यह गीत तारदार साजों के साथ गाना है।  
ऐ अल्लाह, मेरी दुआ पर ध्यान दे, अपने आपको मेरी इल्तिजा से छुपाए न रख।
- 2 मुझ पर गौर कर, मेरी सुन। मैं बेचैनी से इधर उधर घूमते हुए आहें भर रहा हूँ।
- 3 क्योंकि दुश्मन शोर मचा रहा, बेदीन मुझे तंग कर रहा है। वह मुझ पर आफ़त लाने पर तुले हुए हैं, गुस्से में मेरी मुखालफ़त कर रहे हैं।
- 4 मेरा दिल मेरे अंदर तड़प रहा है, मौत की दहशत मुझ पर छा गई है।
- 5 खौफ़ और लरज़िश मुझ पर तारी हुई, हैबत मुझ पर गालिब आ गई है।
- 6 मैं बोला, “काश मेरे कबूतर के-से पर हों ताकि उड़कर आरामो-सुकून पा सकूँ!
- 7 तब मैं दूर तक भागकर रेगिस्तान में बसेरा करता,
- 8 मैं जल्दी से कहीं पनाह लेता जहाँ तेज़ आँधी और तूफ़ान से महफूज़ रहता।” (सिलाह)
- 9 ऐ रब, उनमें अबतरी पैदा कर, उनकी ज़बान में इख़्तिलाफ़ डाल! क्योंकि मुझे शहर में हर तरफ़ जुल्म और झगड़े नज़र आते हैं।
- 10 दिन-रात वह फ़सील पर चक्कर काटते हैं, और शहर फ़साद और ख़राबी से भरा रहता है।
- 11 उसके बीच में तबाही की हुकूमत है, और जुल्म और फ़रेब उसके चौक को नहीं छोड़ते।
- 12 अगर कोई दुश्मन मेरी स्सवाई करता तो काबिले-बरदाशत होता। अगर मुझसे नफ़रत करनेवाला मुझे दबाकर अपने आपको सरफ़राज़ करता तो मैं उससे छुप जाता।
- 13 लेकिन तू ही ने यह किया, तू जो मुझ जैसा है, जो मेरा करीबी दोस्त और हमराज़ है।
- 14 मेरी तेरे साथ कितनी अच्छी रिफ़ाक़त थी जब हम हज़ूम के साथ अल्लाह के घर की तरफ़ चलते गए!
- 15 मौत अचानक ही उन्हें अपनी गिरिफ़्त में ले ले। जिंदा ही वह पाताल में उतर जाएँ, क्योंकि बुराई ने उनमें अपना घर बना लिया है।
- 16 लेकिन मैं पुकारकर अल्लाह से मदद माँगता हूँ, और रब मुझे नज़ात देगा।
- 17 मैं हर वक़्त आहो-जारी करता और कराहता रहता हूँ, खाह सुबह हो, खाह दोपहर या शाम। और वह मेरी सुनेगा।
- 18 वह फ़िघा देकर मेरी जान को उनसे छुड़ाएगा जो मेरे खिलाफ़ लड़ रहे हैं। गो उनकी तादाद बड़ी है वह मुझे आरामो-सुकून देगा।
- 19 अल्लाह जो अज़ल से तख़्तनशीन है मेरी सुनकर उन्हें मुनासिब जवाब देगा। (सिलाह) क्योंकि न वह तबदील हो जाएंगे, न कभी अल्लाह का खौफ़ मानेंगे।
- 20 उस शख्स ने अपना हाथ अपने दोस्तों के खिलाफ़ उठाया, उसने अपना अहद तोड़ लिया है।
- 21 उस की ज़बान पर मक्खन की-सी चिकनी-चुपड़ी बातें और दिल में जंग है। उसके तेल से ज़्यादा नरम अलफ़ाज़ हकीकत में खीची हुई तलवारों हैं।
- 22 अपना बोझ रब पर डाल तो वह तुझे सँभालेगा। वह रास्तबाज़ को कभी डगमगाने नहीं देगा।
- 23 लेकिन ऐ अल्लाह, तू उन्हें तबाही के गढ़े में उतरने देगा। खूनख़ार और धोकेबाज़ आधी उम्र भी नहीं पाएँगे बल्कि जल्दी मरेगे। लेकिन मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ।

## 56

## मुसीबत में भरोसा

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : दूर-दराज जज़ीरों का कबूतर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक है जब फिलिस्तियों ने उसे जात में पकड़ लिया।  
ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि लोग मुझे तंग कर रहे हैं, लड़नेवाला दिन-भर मुझे सता रहा है।
- 2 दिन-भर मेरे दुश्मन मेरे पीछे लगे हैं, क्योंकि वह बहुत हैं और गुस्से से मुझे लड़ रहे हैं।
- 3 लेकिन जब खौफ मुझे अपनी गिरिफ्त में ले ले तो मैं तुझ पर ही भरोसा रखता हूँ।
- 4 अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इन्सान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा सकता है?
- 5 दिन-भर वह मेरे अलफ़ाज़ को तोड़-मरोड़कर ग़लत मानी निकालते, अपने तमाम मनसूबों से मुझे ज़रर पहुँचाना चाहते हैं।
- 6 वह हमलाआवर होकर ताक में बैठ जाते और मेरे हर क़दम पर गौर करते हैं। क्योंकि वह मुझे मार डालने पर तुले हुए हैं।
- 7 जो ऐसी शरीर हरकतें करते हैं, क्या उन्हें बचना चाहिए? हरगिज़ नहीं! ऐ अल्लाह, अक़वाम को गुस्से में खाक में मिला दे।
- 8 जितने भी दिन मैं बेघर फिरा हूँ उनका तूने पूरा हिसाब रखा है। ऐ अल्लाह, मेरे आँसू अपने मशकीज़े में डाल ले! क्या वह पहले से तेरी किताब में कलमबंद नहीं है? ज़रूर!
- 9 फिर जब मैं तुझे पुकारूँगा तो मेरे दुश्मन मुझसे बाज़ आएँगे। यह मैंने जान लिया है कि अल्लाह मेरे साथ है!
- 10 अल्लाह के कलाम पर मेरा फ़ख़र है, रब के कलाम पर मेरा फ़ख़र है।
- 11 अल्लाह पर मेरा भरोसा है। मैं डरूँगा नहीं, क्योंकि फ़ानी इन्सान मुझे क्या नुक़सान पहुँचा सकता है?
- 12 ऐ अल्लाह, तेरे हुज़ूर मैंने मन्नतें मानी हैं, और अब मैं तुझे शक्रगुज़ारी की कुरबानियाँ पेश करूँगा।
- 13 क्योंकि तूने मेरी जान को मौत से बचाया और मेरे पाँवों को ठोकर खाने से महफूज़ रखा ताकि जिंदगी की रौशनी में अल्लाह के हुज़ूर चलीं।

## 57

## आज़माइश में अल्लाह पर एतमाद

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत उस वक़्त से मुताल्लिक है जब वह साऊल से भागकर गार में छुप गया।  
ऐ अल्लाह, मुझ पर मेहरबानी कर, मुझ पर मेहरबानी कर! क्योंकि मेरी जान तुझमें पनाह लेती है। जब तक आफ़त मुझ पर से गुज़र न जाए मैं तेरे परों के साथे में पनाह लूँगा।
- 2 मैं अल्लाह तआला को पुकारता हूँ, अल्लाह से जो मेरा मामला ठीक करेगा।
- 3 वह आसमान से मदद भेजकर मुझे छुटकारा देगा और उनकी स्सवाई करेगा जो मुझे तंग कर रहे हैं। (सिलाह) अल्लाह अपना करम और वफ़ादारी भेजेगा।
- 4 मैं इन्सान को हड़प करनेवाले शेरबबरों के बीच में लेटा हुआ हूँ, उनके दरमियान जिनके दाँत नेजे और तीर हैं और जिनकी ज़बान तेज़ तलवार है।
- 5 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरबुलंद हो जा! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए!
- 6 उन्होंने मेरे कदमों के आगे फंदा बिछा दिया, और मेरी जान खाक में दब गई है। उन्होंने मेरे सामने गढ़ा खोद लिया, लेकिन वह खूद उसमें गिर गए हैं। (सिलाह)
- 7 ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत, मेरा दिल साबितक़दम है। मैं साज़ बजाकर तेरी मद्दहसराई करूँगा।
- 8 ऐ मेरी जान, जाग उठ! ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! आओ, मैं तुलूए-सुबह को जगाऊँ।

- 9 ऐ रब, कौमों में मैं तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी मदहसराई करूँगा।
- 10 क्योंकि तेरी अजीम शफकत आसमान जितनी बुलंद है, तेरी वफादारी बादलों तक पहुँचती है।
- 11 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफराज हो! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।

## 58

### इंतकाम की दुआ

- 1 दाऊद का सुनहरा गीत। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : तबाह न कर।  
ऐ हुक्मरानो, क्या तुम वाकई मुसिफाना फैसला करते, क्या दियानतदारी से आदमजादों की अदालत करते हो?
- 2 हरगिज नहीं, तुम दिल में बंदी करते और मुल्क में अपने जालिम हाथों के लिए रास्ता बनाते हो।
- 3 बेदीन पैदाइश से ही सहीह राह से दूर हो गए हैं, झट बोलनेवाले माँ के पेट से ही भटक गए हैं।
- 4 वह सौंप की तरह ज़हर उगलते हैं, उस बहरे नाग की तरह जो अपने कानों को बंद कर रखता है
- 5 ताकि न जादूगर की आवाज सुने, न माहिर सपेरे के मंत्र।
- 6 ऐ अल्लाह, उनके मुँह के दौंत तोड़ डाल! ऐ रब, जवान शेरबबरो के जबड़े को पाश पाश कर!
- 7 वह उस पानी की तरह जाया हो जाएँ जो बहकर गायब हो जाता है। उनके चलाए हुए तीर बेअसर रहें।
- 8 वह धूप में धोंगे की मानिंद हों जो चलता चलता पिघल जाता है। उनका अंजाम उस बच्चे का-सा हो जो माँ के पेट में जाया होकर कभी सूरज नहीं देखेगा।
- 9 इससे पहले कि तुम्हारी देगें कौटेदार टहनियों की आग महसूस करें अल्लाह उन सबको आँधी में उडाकर ले जाएगा।
- 10 आखिरकार दुश्मन को सजा मिलेगी। यह देखकर रास्तबाज़ खुश होगा, और वह अपने पाँवों को बेदीनों के खून में धो लेगा।
- 11 तब लोग कहेंगे, “वाकई रास्तबाज़ को अज़ मिलता है, वाकई अल्लाह है जो दुनिया में लोगों की अदालत करता है!”

## 59

### दुश्मन के दरमियान दुआ

- 1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : तबाह न कर। यह सुनहरा गीत उस वक्त से मुताल्लिक है जब साऊल ने अपने आदमियों को दाऊद के घर की पहरादारी करने के लिए भेजा ताकि जब मौका मिले उसे कत्ल करें।  
ऐ मेरे खुदा, मुझे मेरे दुश्मनों से बचा। उनसे मेरी हिफाज़त कर जो मेरे खिलाफ उठे हैं।
- 2 मुझे बदकारों से छुटकारा दे, खूनखारों से रिहा कर।
- 3 देख, वह मेरी ताक में बैठे हैं। ऐ रब, जबरदस्त आदमी मुझ पर हमलाआवर हैं, हालाँकि मुझसे न खता हुई न गुनाह।
- 4 मैं बेकुसूर हूँ, ताहम वह दौड़ दौड़कर मुझसे लड़ने की तैयारियाँ कर रहे हैं। चुनाँचे जाग उठ, मेरी मदद करने आ, जो कुछ हो रहा है उस पर नज़र डाल।
- 5 ऐ रब, लशकरोँ और इसराईल के खुदा, दीगर तमाम कौमों को सजा देने के लिए जाग उठ! उन सब पर करम न फरमा जो शरीर और गद्गार हैं। (सिलाह)
- 6 हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घुमते-फिरते हैं।
- 7 देख, उनके मुँह से राल टपक रही है, उनके होंटों से तलवारें निकल रही हैं। क्योंकि वह समझते हैं, “कौन सुनेगा?”
- 8 लेकिन तू ऐ रब, उन पर हँसता है, तू तमाम कौमों का मज़ाक उडाता है।
- 9 ऐ मेरी कुव्वत, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहेंगी, क्योंकि अल्लाह मेरा किला है।
- 10 मेरा खुदा अपनी मेहरबानी के साथ मुझसे मिलने आएगा, अल्लाह बख्श देगा कि मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देखकर खुश हूँगा।
- 11 ऐ अल्लाह हमारी ढाल, उन्हें हलाक न कर, वरना मेरी कौम तेरा काम भूल जाएगी। अपनी कुदरत का इज़हार यों कर कि वह इधर उधर लड़खड़ाकर गिर जाएँ।

12 जो कुछ भी उनके मुँह से निकलता है वह गुनाह है, वह लानतें और झूट ही सुनाते हैं। चुनौचे उन्हें उनके तकब्बुर के जाल में फँसने दे।

13 गुस्से में उन्हें तबाह कर! उन्हें यों तबाह कर कि उनका नामो-निशान तक न रहे। तब लोग दुनिया की इतहा तक जान लेंगे कि अल्लाह याकूब की औलाद पर हुकूमत करता है। (सिलाह)

14 हर शाम को वह वापस आ जाते और कुत्तों की तरह भौंकते हुए शहर की गलियों में घूमते-फिरते हैं।

15 वह इधर उधर गश्त लगाकर खाने की चीजें ढूँढते हैं। अगर पेट न भरे तो गुरति रहते हैं।

16 लेकिन मैं तेरी कुदरत की मदहसराई करूँगा, सुबह को खुशी के नारे लगाकर तेरी शफकत की सताइश करूँगा। क्योंकि तू मेरा किला और मुसीबत के वक्त मेरी पनाहगाह है।

17 ऐ मेरी कुव्वत, मैं तेरी मदहसराई करूँगा, क्योंकि अल्लाह मेरा किला और मेरा मेहरबान खुदा है।

## 60

### मरदद कौम की दुआ

1 दाऊद का जब्र। तर्ज : अहद का सोसन। तालीम के लिए यह सुनहरा गीत उस वक्त से मुताल्लिक है जब दाऊद ने मसोपुतामिया के अरामियों और जोबाह के अरामियों से जंग की। वापसी पर योआब ने नमक की वादी में 12,000 अदोमियों को मार डाला।

ऐ अल्लाह, तूने हमें रद्द किया, हमारी किलाबंदी में रखना डाल दिया है। लेकिन अब अपने गजब से बाज आकर हमें बहाल कर।

2 तूने जमीन को ऐसे झटके दिए कि उसमें दराडें पड़ गईं। अब उसके शिगाफों को शफा दे, क्योंकि वह अभी तक थरथरा रही है।

3 तूने अपनी कौम को तलख तजरबों से दोचार होने दिया, हमें ऐसी तेज मै पिला दी कि हम डगमगाने लगे हैं।

4 लेकिन जो तेरा खौफ मानते हैं उनके लिए तूने झंडा गाड़ दिया जिसके इर्दगिर्द वह जमा होकर तीरों से पनाह ले सकते हैं। (सिलाह)

5 अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि जो तुझे प्यारे हैं वह नजात पाएँ।

6 अल्लाह ने अपने मकदिस में फरमाया है, "मैं फतह मनाते हुए सिकम को तकसीम करूँगा और वादीए-सुक्कात को नापकर बाँट दूँगा।

7 जिलियाद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ्राईम मेरा खोद और यहदाह मेरा शाही असा है।

8 मोआब मेरा गुस्ल का बरतन है, और अदोम पर मैं अपना जूता फेंक दूँगा। ऐ फिलिस्ती मुल्क, मुझे देखकर ज़ोरदार नारे लगा!"

9 कौन मुझे किलाबंद शहर में लाएगा? कौन मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?

10 ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तूने हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फौजों का साथ नहीं देता जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।

11 मुसीबत में हमें सहारा दे, क्योंकि इस वक्त इनसानी मदद बेकार है।

12 अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे, क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

## 61

### दू से दरखास्त

1 दाऊद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तारदार साज के साथ गाना है।

ऐ अल्लाह, मेरी आहो-जारी सुन, मेरी दुआ पर तवज्जुह दे।

2 मैं तुझे दुनिया की इतहा से पुकार रहा हूँ, क्योंकि मेरा दिल निढाल हो गया है। मेरी राहनुमाई करके मुझे उस चटान पर पहुँचा दे जो मुझसे बुलंद है।

3 क्योंकि तू मेरी पनाहगाह रहा है, एक मजबूत बुर्ज जिसमें मैं दुश्मन से महफूज हूँ।



4 मैं हमेशा के लिए तेरे खैमे में रहना, तेरे परों तले पनाह लेना चाहता हूँ। (सिलाह)

5 क्योंकि ऐ अल्लाह, तूने मेरी मन्नतों पर ध्यान दिया, तूने मुझे वह मीरास बख्शी जो उन सबको मिलती है जो तेरा खौफ मानते हैं।

6 बादशाह को उम्र की दराजी बख्श दे। वह पुरत-दर-पुरत जीता रहे।

7 वह हमेशा तक अल्लाह के हुजूर तख्तनशीन रहे। शफकत और वफादारी उस की हिफाजत करें।

8 तब मैं हमेशा तक तेरे नाम की मद्दहसराई करूँगा, रोज़ बरोज़ अपनी मन्नतें पूरी करूँगा।

## 62

खामोशी से अल्लाह का इंतज़ार कर

1 दाऊद का जबूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए। यदतून के लिए।

मेरी जान खामोशी से अल्लाह ही के इंतज़ार में है। उसी से मुझे मदद मिलती है।

2 वही मेरी चटान, मेरी नजात और मेरा किला है, इसलिए मैं ज्यादा नहीं डगमगाऊँगा।

3 तुम कब तक उस पर हमला करोगे जो पहले ही झुकी हुई दीवार की मानिंद है? तुम सब कब तक उसे कत्ल करने पर तुले रहोगे जो पहले ही गिरनेवाली चारदीवारी जैसा है?

4 उनके मनसूबों का एक ही मकसद है, कि उसे उसके ऊँचे ओहदे से उतारें। उन्हें झूट से मजा आता है। मुँह से वह बरकत देते, लेकिन अंदर ही अंदर लानत करते हैं। (सिलाह)

5 लेकिन तू ऐ मेरी जान, खामोशी से अल्लाह ही के इंतज़ार में रह। क्योंकि उसी से मुझे उम्मीद है।

6 सिर्फ वही मेरी जान की चटान, मेरी नजात और मेरा किला है, इसलिए मैं नहीं डगमगाऊँगा।

7 मेरी नजात और इज्जत अल्लाह पर मबनी है, वही मेरी महफूज चटान है। अल्लाह में मैं पनाह लेता हूँ।

8 ऐ उम्मत, हर वक़्त उस पर भरोसा रख! उसके हुजूर अपने दिल का रंजो-अलम पानी की तरह उंडेल दे। अल्लाह ही हमारी पनाहगाह है। (सिलाह)

9 इनसान दम-भर का ही है, और बड़े लोग फ़रेब ही हैं। अगर उन्हें तराजू में तोला जाए तो मिलकर उनका वज़न एक फूँक से भी कम है।

10 जुल्म पर एतमाद न करो, चोरी करने पर फज़ूल उम्मीद न रखो। और अगर दौलत बढ़ जाए तो तुम्हारा दिल उससे लिपट न जाए।

11 अल्लाह ने एक बात फ़रमाई बल्कि दो बार मैंने सुनी है कि अल्लाह ही कादिर है।

12 ऐ ख़, यक़ीनन तू मेहरबान है, क्योंकि तू हर एक को उसके आमाल का बदला देता है।

## 63

अल्लाह के लिए आरजू

1 दाऊद का जबूर। यह उस वक़्त से मुताल्लिक है जब वह यहदाह के रेगिस्तान में था।

ऐ अल्लाह, तू मेरा खुदा है जिसे मैं ढूँढता हूँ। मेरी जान तेरी प्यासी है, मेरा पूरा जिस्म तेरे लिए तरसता है। मैं उस ख़ुश्क और निडाल मुल्क की मानिंद हूँ जिसमें पानी नहीं है।

2 चुनौचे मैं मकदिस में तुझे देखने के इंतज़ार में रहा ताकि तेरी कुदरत और जलाल का मुशाहदा करूँ।

3 क्योंकि तेरी शफक़त ज़िंदगी से कहीं बेहतर है, मेरे होंट तेरी मद्दहसराई करेंगे।

4 चुनौचे मैं जीते-जी तेरी सताइश करूँगा, तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊँगा।

5 मेरी जान उम्दा गिज़ा से सेर हो जाएगी, मेरा मुँह ख़ुशी के नारे लगाकर तेरी हम्दो-सना करेगा।

6 बिस्तर पर मैं तुझे याद करता, पूरी रात के दौरान तेरे बारे में सोचता रहता हूँ।

7 क्योंकि तू मेरी मदद करने आया, और मैं तेरे परों के साथे मैं ख़ुशी के नारे लगाता हूँ।

8 मेरी जान तेरे साथ लिपटी रहती, और तेरा दहना हाथ मुझे संभालता है।

9 लेकिन जो मेरी जान लेने पर तुले हुए हैं वह तबाह हो जाएंगे, वह ज़मीन की गहराइयों में उतर जाएंगे।

10 उन्हें तलवार के हवाले किया जाएगा, और वह गीदड़ों की खुराक बन जाएंगे।

11 लेकिन बादशाह अल्लाह की खुशी मनाएगा। जो भी अल्लाह की कसम खाता है वह फ़ख़र करेगा, क्योंकि झूट बोलनेवालों के मुँह बंद हो जाएंगे।

## 64

शरीअत के पोशीदा हमलों से हिफ़ाज़त की दुआ

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, सुन जब मैं अपनी आहो-ज़ारी पेश करता हूँ। मेरी ज़िंदगी दुश्मन की दहशत से महफूज़ रख।

2 मुझे बदमाशों की साज़िशों से छुपाए रख, उनकी हलचल से जो ग़लत काम करते हैं।

3 वह अपनी ज़बान को तलवार की तरह तेज़ करते और अपने ज़हरीले अलफ़ाज़ को तीरों की तरह तैयार रखते हैं

4 ताकि ताक में बैठकर उन्हें बेक़ुसूर पर चलाएँ। वह अचानक और बेबाकी से उन्हें उस पर बरसा देते हैं।

5 वह बुरा काम करने में एक दूसरे की हौसलाअफ़जाई करते, एक दूसरे से मशवरा लेते हैं कि हम अपने फंदे किस तरह छुपाकर लगाएँ? वह कहते हैं, “यह किसी को भी नज़र नहीं आएँगे।”

6 वह बड़ी बारीकी से बुरे मनसूबों की तैयारियाँ करते, फिर कहते हैं, “चलो, बात बन गई है, मनसूबा सोच-बिचार के बाद तैयार हुआ है।” यकीनन इनसान के बातिन और दिल की तह तक पहुँचना मुश्किल ही है।

7 लेकिन अल्लाह उन पर तीर बरसाएगा, और अचानक ही वह ज़खमी हो जाएंगे।

8 वह अपनी ही ज़बान से ठोकर खाकर गिर जाएंगे। जो भी उन्हें देखेगा वह “तौबा तौबा” कहेगा।

9 तब तमाम लोग ख़ौफ़ खाकर कहेंगे, “अल्लाह ही ने यह किया!” उन्हें समझ आएगी कि यह उसी का काम है।

10 रास्तबाज़ अल्लाह की खुशी मनाकर उसमें पनाह लेगा, और जो दिल से दियानतदार है वह सब फ़ख़र करेगा।

## 65

रूहानी और जिस्मानी बरकतों के लिए शुक्रगुज़ारी

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए गीत।

ऐ अल्लाह, तू ही इस लायक है कि इनसान कोहे-सिय्यून पर खामोशी से तेरे इंतज़ार में रहे, तेरी तमज़ीद करे और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करे।

2 तू दुआओं को सुनता है, इसलिए तमाम इनसान तेरे हुज़ूर आते हैं।

3 गुनाह मुझ पर गालिब आ गए हैं, तू ही हमारी सरकश हरकतों को मुआफ़ कर।

4 मुबारक है वह जिसे तू चुनकर करीब आने देता है, जो तेरी बारगाहों में बस सकता है। बख़्श दे कि हम तेरे घर, तेरी मुक़दस सुकूनतगाह की अच्छी चीज़ों से सेर हो जाएँ।

5 ऐ हमारी नजात के ख़ुदा, हैबतनाक कामों से अपनी रास्ती कायम करके हमारी सुन! क्योंकि तू ज़मीन की तमाम हद्द और दूर-दराज़ समुंदरों तक सबकी उम्मीद है।

6 तू अपनी कुदरत से पहाड़ों की मज़बूत बुनियादें डालता और कुव्वत से कमरबस्ता रहता है।

7 तू मुतलातिम समुंदरों को थमा देता है, तू उनकी गरजती लहरों और उम्मतों का शोर-शराबा खत्म कर देता है।

8 दुनिया की इतहा के बाशिंदे तेरे निशानात से ख़ौफ़ खाते हैं, और तू तुलूए-सुबह और गुल्बे-आफ़ताब को खुशी मनाने देता है।

9 तू ज़मीन की देख-भाल करके उसे पानी की कसरत और ज़रखेजी से नवाज़ता है, चुनौचे अल्लाह की नदी पानी से भरी रहती है। ज़मीन को यों तैयार करके तू इनसान को अनाज की अच्छी फ़सल मुहैया करता है।

10 तू खेत की रैचारियों को शराबोर करके उसके ढेलों को हमवार करता है। तू बारिश की बौछाड़ों से ज़मीन को नरम करके उस की फ़सलों को बरकत देता है।

- 11 तू साल को अपनी भलाई का ताज पहना देता है, और तेरे नक्शे-कदम तेल की फरावानी से टपकते हैं।  
 12 बयाबान की चरागाहें तेल \* की कसरत से टपकती हैं, और पहाड़ियाँ भरपूर खुशी से मूलबब्स हो जाती हैं।  
 13 सब्जाज़ार भेड़-बकरियों से आरास्ता हैं, वादियाँ अनाज से ढकी हुई हैं। सब खुशी के नारे लगा रहे हैं, सब गीत गा रहे हैं।

## 66

अल्लाह की मोजिज़ाना मदद की तारीफ़

- 1 मौसीकी के राहनुमा के लिए। जब्र। गीत।  
 ऐ सारी ज़मीन, खुशी के नारे लगाकर अल्लाह की मद्दहसराई कर!  
 2 उसके नाम के जलाल की तमज़ीद करो, उस की सताइश उरूज तक ले जाओ!  
 3 अल्लाह से कहो, “तेरे काम कितने पुरजलाल हैं। तेरी बड़ी कुदरत के सामने तेरे दुश्मन दबककर तेरी खुशामद करने लगते हैं।  
 4 तमाम दुनिया तुझे सिजदा करे! वह तेरी तारीफ़ में गीत गाए, तेरे नाम की सताइश करे।” (सिलाह)  
 5 आओ, अल्लाह के काम देखो! आदमज़ाद की खातिर उसने कितने पुरजलाल मोजिज़े किए हैं!  
 6 उसने समुंदर को ख़ुशक ज़मीन में बदल दिया। जहाँ पहले पानी का तेज़ बहाव था वहाँ से लोग पैदल ही गुज़रे। चुनाँचे आओ, हम उस की खुशी मनाएँ।  
 7 अपनी कुदरत से वह अबद तक हुकूमत करता है। उस की आँखें क्रौमों पर लगी रहती हैं ताकि सरकश उसके खिलाफ़ न उठे। (सिलाह)

- 8 ऐ उम्मतो, हमारे खुदा की हम्द करो। उस की सताइश दूर तक सुनाई दे।  
 9 क्योंकि वह हमारी ज़िंदगी कायम रखता, हमारे पाँवों को डगमगाने नहीं देता।  
 10 क्योंकि ऐ अल्लाह, तूने हमें आजमाया। जिस तरह चाँदी को पिघलाकर साफ़ किया जाता है उसी तरह तूने हमें पाक-साफ़ कर दिया है।  
 11 तूने हमें जाल में फँसा दिया, हमारी कमर पर अज़ियतनाक बोझ डाल दिया।  
 12 तूने लोगों के रथों को हमारे सरों पर से गुज़रने दिया, और हम आग और पानी की ज़द में आ गए। लेकिन फिर तूने हमें मुसीबत से निकालकर फरावानी की जगह पहुँचाया।  
 13 मैं भस्म होनेवाली कुरबानियाँ लेकर तेरे घर में आऊँगा और तेरे हुज़ूर अपनी मन्नतें पूरी करूँगा,  
 14 वह मन्नतें जो मेरे मुँह ने मुसीबत के वक्रत मानी थीं।  
 15 भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर मैं तुझे मोटी-ताज़ी भेड़ें और मेंढों का धुआँ पेश करूँगा, साथ साथ बैल और बक़रे भी चढाऊँगा। (सिलाह)  
 16 ऐ अल्लाह का ख़ौफ़ माननेवालो, आओ और सुनो! जो कुछ अल्लाह ने मेरी जान के लिए किया वह तुम्हें सुनाऊँगा।  
 17 मैंने अपने मुँह से उसे पुकारा, लेकिन मेरी ज़बान उस की तारीफ़ करने के लिए तैयार थी।  
 18 अगर मैं दिल में गुनाह की परवरिश करता तो रब मेरी न सुनता।  
 19 लेकिन यक़ीनन रब ने मेरी सुनी, उसने मेरी इल्तिज़ा पर तवज्जुह दी।  
 20 अल्लाह की हम्द हो, जिसने न मेरी दुआ रद्द की, न अपनी शफ़क़त मुझसे बाज़ रखी।

## 67

तमाम क्रौमों अल्लाह की तारीफ़ करें

- 1 जब्र। तारदार साज़ों के साथ गाना है। मौसीकी के राहनुमा के लिए।  
 अल्लाह हम पर मेहरबानी करे और हमें बरकत दे। वह अपने चेहरे का नूर हम पर चमकाए (सिलाह)  
 2 ताकि ज़मीन पर तेरी राह और तमाम क्रौमों में तेरी नज़ात मालूम हो जाए।

\* 65:12 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : ‘चरबी,’ जो फरावानी का निशान था।

3 ऐ अल्लाह, क्रौमें तेरी सताइश करे, तमाम क्रौमें तेरी सताइश करें।

4 उम्मतें शादमान होकर खुशी के नारे लगाएँ, क्योंकि तू इनसाफ से क्रौमों की अदालत करेगा और ज़मीन पर उम्मतों की क्रियादत्त करेगा। (सिलाह)

5 ऐ अल्लाह, क्रौमें तेरी सताइश करे, तमाम क्रौमें तेरी सताइश करें।

6 ज़मीन अपनी फसलें देती है। अल्लाह हमारा खुदा हमें बरकत दे!

7 अल्लाह हमें बरकत दे, और दुनिया की इंतहाएँ सब उसका खौफ मानें।

## 68

### अल्लाह की फ़तह

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए गीत।

अल्लाह उठे तो उसके दुश्मन तितर-बितर हो जाएँगे, उससे नफ़रत करनेवाले उसके सामने से भाग जाएँगे।

2 वह धुएँ की तरह बिखर जाएँगे। जिस तरह मोम आग के सामने पिघल जाता है उसी तरह बेदीन अल्लाह के हुज़ूर हलाक हो जाएँगे।

3 लेकिन रास्तबाज़ खुशो-खुर्रम होंगे, वह अल्लाह के हुज़ूर ज़शन मनाकर फूले न समाएँगे।

4 अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ, उसके नाम की मद्दहसराई करो! जो रथ पर सवार बयाबान में से गुज़र रहा है उसके लिए रास्ता तैयार करो। रब उसका नाम है, उसके हुज़ूर खुशी मनाओ!

5 अल्लाह अपनी मुकद्दस सुकूनतगाह में यतीमों का बाप और बेवाओं का हामी है।

6 अल्लाह बेघरों को घरों में बसा देता और कैदियों को कैद से निकालकर खुशहाली अता करता है। लेकिन जो सरकश हैं वह झुलसे हुए मुल्क में रहेंगे।

7 ऐ अल्लाह, जब तू अपनी क्रौम के आगे आगे निकला, जब तू रेगिस्तान में क़दम बक़दम आगे बढ़ा (सिलाह)

8 तो ज़मीन लरज़ उठी और आसमान से बारिश टपकने लगी। हाँ, अल्लाह के हुज़ूर जो कोहे-सीना और इसराईल का खुदा है ऐसा ही हुआ।

9 ऐ अल्लाह, तूने कसरत की बारिश बरसने दी। जब कभी तेरा मौसी मुल्क निदाल हुआ तो तूने उसे ताज़ामद किया।

10 यों तेरी क्रौम उसमें आबाद हुई। ऐ अल्लाह, अपनी भलाई से तूने उसे ज़ररतमंदों के लिए तैयार किया।

11 रब फ़रमान सादिर करता है तो खुशख़बरी सुनानेवाली औरतों का बड़ा लशकर निकलता है,

12 “फ़ौजों के बादशाह भाग रहे हैं। वह भाग रहे हैं और औरतें लूट का माल तकसीम कर रही हैं।

13 तुम क्यों अपने ज़ीन के दो बोरों के दरमियान बैठे रहते हो? देखो, कबूतर के परो पर चाँदी और उसके शाहपरो पर पीला सोना चढाया गया है।”

14 जब कादिर-मुतलक ने वहाँ के बादशाहों को मुंतशिर कर दिया तो कोहे-ज़लमोन पर बर्फ़ पड़ी।

15 कोहे-बसन इलाही पहाड़ है, कोहे-बसन की मुतअद्दिद चोटियाँ हैं।

16 ऐ पहाड़ की मुतअद्दिद चोटियो, तुम उस पहाड़ को क्यों रशक की निगाह से देखती हो जिसे अल्लाह ने अपनी सुकूनतगाह के लिए पसंद किया है? यकीनन रब वहाँ हमेशा के लिए सुकूनत करेगा।

17 अल्लाह के बेशमार रथ और अनगिनत फ़ौजी हैं। खुदाबंद उनके दरमियान है, सीना का खुदा मक़दिस में है।

18 तूने बुलंदी पर चढकर कैदियों का हुज़ूम गिरिफ़्तार कर लिया, तुझे इनसानों से तोहफ़े मिले, उनसे भी जो सरकश हो गए थे। यों ही रब खुदा वहाँ सुकूनतपज़ीर हुआ।

19 रब की तमज़ीद हो जो रोज़ बरोज़ हमारा बोझ उठाए चलता है। अल्लाह हमारी नजात है। (सिलाह)

20 हमारा खुदा वह खुदा है जो हमें बार बार नजात देता है, रब कादिर-मुतलक हमें बार बार मौत से बचने के रास्ते मुहैया करता है।

21 यकीनन अल्लाह अपने दुश्मनों के सरों को कुचल देगा। जो अपने गुनाहों से बाज़ नहीं आता उस की खोपड़ी वह पाश पाश करेगा।

22 ख़ ने फ़रमाया, “मैं उन्हें बसन से वापस लाऊँगा, समुंदर की गहराइयों से वापस पहुँचाऊँगा।

23 तब तू अपने पाँवों को दुश्मन के खून में धो लेगा, और तेरे कुत्ते उसे चाट लेंगे।”

24 ऐ अल्लाह, तेरे ज़ुलूस नज़र आ गए हैं, मेरे ख़ुदा और बादशाह के जुलूस मक़दिस में दाखिल होते हुए नज़र आ गए हैं।

25 आगे गुलूकार, फिर साज़ बजानेवाले चल रहे हैं। उनके आस-पास कुँवारियाँ दफ़ बजाते हुए फिर रही हैं।

26 “जमातों में अल्लाह की सताइश करो! जितने भी इसराईल के सरचश्मे से निकले हुए हो रब की तमज़ीद करो!”

27 वहाँ सबसे छोटा भाई बिनयमीन आगे चल रहा है, फिर यहदाह के बुजुर्गों का पुरशोर हज़ूम जबलून और नफ़ताली के बुजुर्गों के साथ चल रहा है।

28 ऐ अल्लाह, अपनी कुदरत बरूए-कार ला! ऐ अल्लाह, जो कुदरत तूने पहले भी हमारी खातिर दिखाई उसे दुबारा दिखा!

29 उसे यरूशलम के ऊपर अपनी सुकूनतगाह से दिखा। तब बादशाह तेरे हज़ूर तोहफ़े लाएँगे।

30 सरकंडों में छुपे हुए दरिदे को मलामत कर! सौँडों का जो गोल बछडों जैसी कौमों में रहता है उसे डॉंट! उन्हें कुचल दे जो चौंदी को प्यार करते हैं। उन कौमों को मुंतशिर कर जो जंग करने से लुत्फअंदोज़ होती हैं।

31 मिसर से सफ़ीर आएँगे, एथोपिया अपने हाथ अल्लाह की तरफ उठाएगा।

32 ऐ दुनिया की सलतनतो, अल्लाह की ताज़ीम में गीत गाओ! रब की मदहसराई करो (सिलाह)

33 जो अपने रथ पर सवार होकर क़दमी ज़माने के बुलंदतरीन आसमानों में से गुज़रता है। सुनो उस की आवाज़ जो जोर से गरज रहा है।

34 अल्लाह की कुदरत को तसलीम करो! उस की अज़मत इसराईल पर छाई रहती और उस की कुदरत आसमान पर है।

35 ऐ अल्लाह, तू अपने मक़दिस से जाहिर होते वक़्त कितना महीब है। इसराईल का ख़ुदा ही कौम को कुव्वत और ताक़त अता करता है। अल्लाह की तमज़ीद हो!

## 69

आज़माइश से नजात की दुआ

1 दाऊद का जब्र। तर्ज : सोसन के फूल। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह, मुझे बचा! क्योंकि पानी मेरे गले तक पहुँच गया है।

2 मैं गहरी दलदल में धँस गया हूँ, कहीं पाँव ज़माने की जगह नहीं मिलती। मैं पानी की गहराइयों में आ गया हूँ, सैलाब मुझ पर गालिब आ गया है।

3 मैं चिल्लाते चिल्लाते थक गया हूँ। मेरा गला बैठ गया है। अपने ख़ुदा का इंतज़ार करते करते मेरी आँखें धुँधला गई।

4 जो बिलावजह मुझसे कीना रखते हैं वह मेरे सर के बालों से ज़्यादा हैं, जो बेसबब मेरे दुश्मन हैं और मुझे तबाह करना चाहते हैं वह ताक़तवर हैं। जो कुछ मैंने नहीं लूटा उसे मुझसे तलब किया जाता है।

5 ऐ अल्लाह, तू मेरी हमाक़त से वाकिफ़ है, मेरा कुसूर तुझसे पोशीदा नहीं है।

6 ऐ कादिर-मुतलक रब्बुल-अफवाज़, जो तेरे इंतज़ार में रहते हैं वह मेरे बाइस शरमिदा न हों। ऐ इसराईल के ख़ुदा, मेरे बाइस तेरे तालिब की रसवाई न हो।

7 क्योंकि तेरी खातिर मैं शरमिदगी बरदाश्त कर रहा हूँ, तेरी खातिर मेरा चेहरा शर्मसार ही रहता है।

8 मैं अपने सगे भाइयों के नज़दीक अजनबी और अपनी माँ के बेटों के नज़दीक परदेसी बन गया हूँ।

9 क्योंकि तेरे धर की गैरत मुझे खा गई है, जो तुझे गालियाँ देते हैं उनकी गालियाँ मुझ पर आ गई हैं।

10 जब मैं रोज़ा रखकर रोता था तो लोग मेरा मज़ाक उड़ाते थे।

11 जब मातमी लिबास पहने फिरता था तो उनके लिए इबरतअंगेज़ मिसाल बन गया।

12 जो बुजुर्ग शहर के दरवाज़े पर बैठे हैं वह मेरे बारे में गप्पे हँकते हैं। शराबी मुझे अपने तंज़ भरे गीतों का निशाना बनाते हैं।

13 लेकिन ऐ रब, मेरी तुझसे दुआ है कि मैं तुझे दुबारा मंजूर हो जाऊँ। ऐ अल्लाह, अपनी अज़ीम शफ़कत के मुताबिक मेरी सुन, अपनी यकीनी नजात के मुताबिक मुझे बचा।

14 मुझे दलदल से निकाल ताकि गरक़ न हो जाऊँ। मुझे उनसे छुटकारा दे जो मुझसे नफ़रत करते हैं। पानी की गहराइयों से मुझे बचा।

15 सैलाब मुझ पर गालिब न आए, समुंदर की गहराई मुझे हडप न कर ले, गढ़ा मेरे ऊपर अपना मुँह बंद न कर ले।

16 ऐ रब, मेरी सुन, क्योंकि तेरी शफ़क़त भली है। अपने अज़ीम रहम के मुताबिक मेरी तरफ़ रूजू कर।

17 अपना चेहरा अपने खादिम से छुपाए न रख, क्योंकि मैं मुसीबत में हूँ। जल्दी से मेरी सुन!

18 क़रीब आकर मेरी जान का फ़िधा दे, मेरे दुश्मनों के सबब से एवज़ाना देकर मुझे छुड़ा।

19 तू मेरी स्सवाई, मेरी शरमिदागी और तज़लील से वाकिफ़ है। तेरी आँखें मेरे तमाम दुश्मनों पर लगी रहती हैं।

20 उनके तानों से मेरा दिल टूट गया है, मैं बीमार पड़ गया हूँ। मैं हमदर्दी के इंतज़ार में रहा, लेकिन बेफायदा। मैंने तबक्को की कि कोई मुझे दिलासा दे, लेकिन एक भी न मिला।

21 उन्होंने मेरी ख़ुराक में कड़वा ज़हर मिलाया, मुझे सिरका पिलाया जब प्यासा था।

22 उनकी मेज़ उनके लिए फंदा और उनके साथियों के लिए जाल बन जाए।

23 उनकी आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख न सकें। उनकी कमर हमेशा तक डगमगाती रहे।

24 अपना पूरा गुस्सा उन पर उतार, तेरा सख़्त ग़ज़ब उन पर आ पड़े।

25 उनकी रिहाइशगाह सुनसान हो जाए और कोई उनके ख़ैमों में आबाद न हो,

26 क्योंकि जिसे तू ही ने सज़ा दी उसे वह सताते हैं, जिसे तू ही ने ज़खमी किया उसका दुख दूसरों को सुनाकर ख़ुश होते हैं।

27 उनके कुसूर का सख़्ती से हिसाब-किताब कर, वह तेरे सामने रास्तबाज़ न ठहरें।

28 उन्हें किताब-हयात से मिटाया जाए, उनका नाम रास्तबाज़ों की फहरिस्त में दर्ज़ न हो।

29 हाय, मैं मुसीबत में फँसा हुआ हूँ, मुझे बहुत दर्द है। ऐ अल्लाह, तेरी नजात मुझे महफूज़ रखे।

30 मैं अल्लाह के नाम की मदहसराई करूँगा, शुक़गुज़ारी से उस की ताज़ीम करूँगा।

31 यह रब को बैल या सींग और खुर रखनेवाले साँड़ से कहीं ज़्यादा पसंद आएगा।

32 हलीम अल्लाह का काम देखकर ख़ुश हो जाएंगे। ऐ अल्लाह के तालिबो, तसल्ली पाओ!

33 क्योंकि रब मुहताजों की सुनता और अपने क़ैदियों को हकीर नहीं जानता।

34 आसमानो-ज़मीन उस की तमज़ीद करें, समुंदर और जो कुछ उसमें हरकत करता है उस की सताइश करे।

35 क्योंकि अल्लाह सियून को नजात देकर यहूदाह के शहरों को तामीर करेगा, और उसके खादिम उन पर कब्ज़ा करके उनमें आबाद हो जाएंगे।

36 उनकी औलाद मुल्क को मीरास में पाएगी, और उसके नाम से मुहब्बत रखनेवाले उसमें बसे रहेंगे।

## 70

दुश्मन से नजात की दुआ

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। याददाश्त के लिए।

ऐ अल्लाह, जल्दी से आकर मुझे बचा! ऐ रब, मेरी मदद करने में जल्दी कर!

2 मेरे जानी दुश्मन शरमिदा हो जाएँ, उनकी सख़्त स्सवाई हो जाए। जो मेरी मुसीबत देखने से लुफ़ उठाते हैं वह पीछे हट जाएँ, उनका मुँह काला हो जाए।

3 जो मेरी मुसीबत देखकर कहकहा लगाते हैं वह शर्म के मारे पुरत दिखाएँ।

4 लेकिन तेरे तालिब शादमान होकर तेरी ख़ुशी मनाएँ। जिन्हें तेरी नजात प्यारी है वह हमेशा कहें, “अल्लाह अज़ीम है!”

5 लेकिन मैं नाचार और मुहताज हूँ। ऐ अल्लाह, जल्दी से मेरे पास आ! तू ही मेरा सहारा और मेरा नजातदहिदा है। ऐ रब, देर न कर!

## 71

हिफाजत के लिए दुआ

- 1 ऐ रब, मैंने तुझमें पनाह ली है। मुझे कभी शर्मिंदा न होने दे।
- 2 अपनी रास्ती से मुझे बचाकर छुटकारा दे। अपना कान मेरी तरफ झुकाकर मुझे नजात दे।
- 3 मेरे लिए चटान पर महफूज घर हो जिसमें मैं हर वक्त पनाह ले सकूँ। तूने फरमाया है कि मुझे नजात देगा, क्योंकि तू ही मेरी चटान और मेरा किला है।
- 4 ऐ मेरे खुदा, मुझे बेदीन के हाथ से बचा, उसके कब्जे से जो बेइन्साफ और जालिम है।
- 5 क्योंकि तू ही मेरी उम्मीद है। ऐ रब कादिर-मुतलक, तू मेरी जवानी ही से मेरा भरोसा रहा है।
- 6 पैदाइश से ही मैंने तुझ पर तकिया किया है, मॉ के पेट से तूने मुझे संभाला है। मैं हमेशा तेरी हम्दो-सना करूँगा।
- 7 बहुतों के नजदीक मैं बदशगूनी हूँ, लेकिन तू मेरी मजबूत पनाहगाह है।
- 8 दिन-भर मेरा मुँह तेरी तमजीद और ताज़ीम से लबरेज रहता है।
- 9 बुढ़ापे में मुझे रद्द न कर, ताकत के खत्म होने पर मुझे तर्क न कर।
- 10 क्योंकि मेरे दुश्मन मेरे बारे में बातें कर रहे हैं, जो मेरी जान की ताक लगाए बैठे हैं वह एक दूसरे से सलाह-मशवरा कर रहे हैं।
- 11 वह कहते हैं, “अल्लाह ने उसे तर्क कर दिया है। उसके पीछे पड़कर उसे पकड़ो, क्योंकि कोई नहीं जो उसे बचाए।”
- 12 ऐ अल्लाह, मुझसे दूर न हो। ऐ मेरे खुदा, मेरी मदद करने में जल्दी कर।
- 13 मेरे हरीफ शर्मिंदा होकर फना हो जाएँ, जो मुझे नुकसान पहुँचाने के दरपै हैं वह लान-तान और स्सवाई तले दब जाएँ।
- 14 लेकिन मैं हमेशा तेरे इंतजार में रहूँगा, हमेशा तेरी सताइश करता रहूँगा।
- 15 मेरा मुँह तेरी रास्ती सुनाता रहेगा, सारा दिन तेरे नजातबख्श कामों का जिक्र करता रहेगा, गो मैं उनकी पूरी तादाद गिन भी नहीं सकता।
- 16 मैं रब कादिर-मुतलक के अज़ीम काम सुनाते हुए आऊँगा, मैं तेरी, सिर्फ तेरी ही रास्ती याद करूँगा।
- 17 ऐ अल्लाह, तू मेरी जवानी से मुझे तालीम देता रहा है, और आज तक मैं तेरे मोजिजात का एलान करता आया हूँ।
- 18 ऐ अल्लाह, खाह मैं बुढ़ा हो जाऊँ और मेरे बाल सफ़ेद हो जाएँ मुझे तर्क न कर जब तक मैं आनेवाली पुरत के तमाम लोगों को तेरी कुव्वत और कुदरत के बारे में बता न लूँ।
- 19 ऐ अल्लाह, तेरी रास्ती आसमान से बातें करती है। ऐ अल्लाह, तुझ जैसा कौन है जिसने इतने अज़ीम काम किए हैं?
- 20 तूने मुझे सुतअद्दिद तलख तजरबों में से गुज़रने दिया है, लेकिन तू मुझे दुबारा जिंदा भी करेगा, तू मुझे ज़मीन की गहराइयों में से वापस लाएगा।
- 21 मेरा स्तबा बढ़ा दे, मुझे दुबारा तसल्लि दे।
- 22 ऐ मेरे खुदा, मैं सितार बजाकर तेरी सताइश और तेरी वफ़ादारी की तमजीद करूँगा। ऐ इसराईल के कूदूस, मैं सरोद बजाकर तेरी तारीफ़ में गीत गाऊँगा।
- 23 जब मैं तेरी मद्दहसराई करूँगा तो मेरे होंट खुशी के नारे लगाएँगे, और मेरी जान जिसे तूने फ़िघा देकर छुड़ाया है शादियाना बजाएगी।
- 24 मेरी ज़बान भी दिन-भर तेरी रास्ती बयान करेगी, क्योंकि जो मुझे नुकसान पहुँचाना चाहते थे वह शर्मसार और स्सवा हो गए हैं।

## 72

सलामती का बादशाह

1 सुलेमान का जबर्।

ऐ अल्लाह, बादशाह को अपना इन्साफ़ अता कर, बादशाह के बेटे को अपनी रास्ती बख्श दे

- 2 ताकि वह रास्ती से तेरी क्रीम और इनसाफ से तेरे मुसीबतजदों की अदालत करे।
- 3 पहाड़ क्रीम को सलामती और पहाड़ियाँ रास्ती पहुँचाएँ।
- 4 वह क्रीम के मुसीबतजदों का इनसाफ करे और मुहताजों की मदद करके जालिमों को कुचल दे।
- 5 तब लोग पुरत-दर-पुरत तेरा खौफ मानेंगे जब तक सूरज चमके और चाँद रौशनी दे।
- 6 वह कटी हुई घास के खेत पर बरसनेवाली बारिश की तरह उतर आए, ज़मीन को तर करनेवाली बौछाड़ों की तरह नाज़िल हो जाए।
- 7 उसके दौरे-हुकूमत में रास्तबाज़ फले-फूलेगा, और जब तक चाँद नेस्त न हो जाए सलामती का गलबा होगा।
- 8 वह एक समुंदर से दूसरे समुंदर तक और दरियाए-फुरात से दुनिया की इतहा तक हुकूमत करे।
- 9 रेगिस्तान के बाशिंदे उसके सामने झुक जाएँ, उसके दुश्मन खाक चाटें।
- 10 तरसीस और साहिली इलाकों के बादशाह उसे खराज पहुँचाएँ, सबा और सिबा उसे बाज पेश करें।
- 11 तमाम बादशाह उसे सिजदा करें, सब अक्रवाम उस की खिदमत करें।
- 12 क्योंकि जो ज़रूरतमंद मदद के लिए पुकारे उसे वह छुटकारा देगा, जो मुसीबत में है और जिसकी मदद कोई नहीं करता उसे वह रिहाई देगा।
- 13 वह पस्तहालों और गरीबों पर तरस खाएगा, मुहताजों की जान को बचाएगा।
- 14 वह एबजाना देकर उन्हें ज़ुल्मो-तशद्द से छुड़ाएगा, क्योंकि उनका खून उस की नज़र में क्रीमती है।
- 15 बादशाह जिंदाबाद! सबा का सोना उसे दिया जाए। लोग हमेशा उसके लिए दुआ करें, दिन-भर उसके लिए बरकत चाहें।
- 16 मुल्क में अनाज की कसरत हो, पहाड़ों की चोटियों पर भी उस की फसलें लहलहाएँ। उसका फल लुबनान के फल जैसा उम्दा हो, शहरों के बाशिंदे हरियाली की तरह फलें-फूलें।
- 17 बादशाह का नाम अबद तक कायम रहे, जब तक सूरज चमके उसका नाम फले-फूले। तमाम अक्रवाम उससे बरकत पाएँ, और वह उसे मुबारक कहें।
- 18 रब खुदा की तमजीद हो जो इसराईल का खुदा है। सिर्फ वही मोजिजे करता है!
- 19 उसके जलाली नाम की अबद तक तमजीद हो, पूरी दुनिया उसके जलाल से भर जाए। आमीन, फिर आमीन।
- 20 यहाँ दाऊद बिन यस्सी की दुआएँ खत्म होती हैं।

## तीसरी किताब 73-89

### 73

#### बेदीनों की कामयाबी के बावजूद तसल्ली

- 1 आसफ का जबूर।
- यक्रीनन अल्लाह इसराईल पर मेहरबान है, उन पर जिनके दिल पाक हैं।
- 2 लेकिन मैं फिसलने को था, मेरे कदम लगज़िश खाने को थे।
- 3 क्योंकि शेखीबाजों को देखकर मैं बेचैन हो गया, इसलिए कि बेदीन इतने खूशहाल हैं।
- 4 मरते वक्त उनको कोई तकलीफ नहीं होती, और उनके जिस्म मोटे-ताजे रहते हैं।
- 5 आम लोगों के मसायल से उनका वास्ता नहीं पडता। जिस दर्दो-करब में दूसरे मुब्तला रहते हैं उससे वह आज़ाद होते हैं।
- 6 इसलिए उनके गले में तकब्बुर का हार है, वह ज़ुल्म का लिबास पहने फिरते हैं।
- 7 चरबी के बाइस उनकी आँखें उभर आई हैं। उनके दिल बेलगाम वहमों की गिरिफ्त में रहते हैं।
- 8 वह मजाक उड़ाकर बुरी बातें करते हैं, अपने गुरूर में ज़ुल्म की धमकियाँ देते हैं।
- 9 वह समझते हैं कि जो कुछ हमारे मुँह से निकलता है वह आसमान से है, जो बात हमारी ज़बान पर आ जाती है वह पूरी ज़मीन के लिए अहमियत रखती है।
- 10 चुनौचे अवाम उनकी तरफ रूजू होते हैं, क्योंकि उनके हाँ कसरत का पानी पिया जाता है।
- 11 वह कहते हैं, “अल्लाह को क्या पता है? अल्लाह तआला को इल्म ही नहीं।”



- 12 देखो, यही है बेदीनों का हाल। वह हमेशा सुकून से रहते, हमेशा अपनी दौलत में इजाफा करते हैं।
- 13 यकीनन मैंने बेफायदा अपना दिल पाक रखा और अबस अपने हाथ गलत काम करने से बाज रखे।
- 14 क्योंकि दिन-भर मैं दर्दों-करब में मुब्तला रहता हूँ, हर सुबह मुझे सजा दी जाती है।
- 15 अगर मैं कहता, "मैं भी उनकी तरह बोलूँगा," तो तैरे फरजंदों की नसल से गदारी करता।
- 16 मैं सोच-बिचार में पड़ गया ताकि बात समझूँ, लेकिन सोचते सोचते थक गया, अजियत में सिर्फ इजाफा हुआ।
- 17 तब मैं अल्लाह के मकदिस में दाखिल होकर समझ गया कि उनका अंजाम क्या होगा।
- 18 यकीनन तू उन्हें फिसलनी जगह पर रखेगा, उन्हें फरेब में फँसाकर ज़मीन पर पटख देगा।
- 19 अचानक ही वह तबाह हो जाएंगे, दहशतनाक मुसीबत में फँसकर मुकम्मल तौर पर फना हो जाएंगे।
- 20 ऐ रब, जिस तरह ख़ाब जाग उठते वक़्त गैरहकीकी साबित होता है उसी तरह तू उठते वक़्त उन्हें वहम करार देकर हकीर जानेगा।
- 21 जब मेरे दिल में तलखी पैदा हुई और मेरे बातन में सख़्त दर्द था
- 22 तो मैं अहमक था। मैं कुछ नहीं समझता था बल्कि तैरे सामने मवेशी की मानिंद था।
- 23 तो भी मैं हमेशा तैरे साथ लिपटा रहूँगा, क्योंकि तू मेरा दहना हाथ थामे रखता है।
- 24 तू अपने मशवरे से मेरी क्रियादत करके आखिर में इज्जत के साथ मेरा ख़ैरमक़दम करेगा।
- 25 जब तू मेरे साथ है तो मुझे आसमान पर क्या कमी होगी? जब तू मेरे साथ है तो मैं ज़मीन की कोई भी चीज़ नहीं चाहूँगा।
- 26 ख़ाह मेरा जिस्म और मेरा दिल ज़वाब दे जाएँ, लेकिन अल्लाह हमेशा तक मेरे दिल की चटान और मेरी मीरास है।
- 27 यकीनन जो तुझसे दूर हैं वह हलाक हो जाएंगे, जो तुझसे बेवफा हैं उन्हें तू तबाह कर देगा।
- 28 लेकिन मेरे लिए अल्लाह की कुरबत सब कुछ है। मैंने रब कादिरे-मुतलक को अपनी पनाहगाह बनाया है, और मैं लोगों को तैरे तमाम काम सुनाऊँगा।

## 74

रब के घर की बेहुरमती पर अफ़सोस

- 1 आसफ़ का जबूर। हिकमत का गीत।  
ऐ अल्लाह, तूने हमें हमेशा के लिए क्यों रद्द किया है? अपनी चरागाह की भेड़ों पर तेरा कहर क्यों भडकता रहता है?
- 2 अपनी जमात को याद कर जिसे तूने क़दीम ज़माने में ख़रीदा और एवज़ाना देकर छुड़ाया ताकि तेरी मीरास का क़बीला हो। कोहे-सिय्यून को याद कर जिस पर तू सुकूनतपज़ीर रहा है।
- 3 अपने क़दम इन दायमी खंडरात की तरफ़ बढ़ा। दुश्मन ने मक़दिस में सब कुछ तबाह कर दिया है।
- 4 तैरे मुख़ालिफ़ों ने गरजते हुए तेरी जलसागाह में अपने निशान गाड़ दिए हैं।
- 5 उन्होंने गुंजान जंगल में लकड़हारों की तरह अपने कुल्हाड़े चलाए,
- 6 अपने कुल्हाड़ों और कुदालों से उस की तमाम कंदाकारी को टुकड़े टुकड़े कर दिया है।
- 7 उन्होंने तैरे मक़दिस को भस्म कर दिया, फ़र्श तक तैरे नाम की सुकूनतगाह की बेहुरमती की है।
- 8 अपने दिल में वह बोले, "आओ, हम उन सबको ख़ाक में मिलाएँ!" उन्होंने मुल्क में अल्लाह की हर इबादतगाह नज़रे-आतिश कर दी है।
- 9 अब हम पर कोई इलाही निशान ज़ाहिर नहीं होता। न कोई नबी हमारे पास रह गया, न कोई और मौजूद है जो जानता हो कि ऐसे हालात कब तक रहेंगे।
- 10 ऐ अल्लाह, हरीफ़ कब तक लान-तान करेगा, दुश्मन कब तक तैरे नाम की तकफ़ीर करेगा?
- 11 तू अपना हाथ क्यों हटाता, अपना दहना हाथ दूर क्यों रखता है? उसे अपनी चादर से निकालकर उन्हें तबाह कर दे!
- 12 अल्लाह क़दीम ज़माने से मेरा बादशाह है, वही दुनिया में नजातबख़्श काम अंजाम देता है।
- 13 तू ही ने अपनी कुदरत से समुंदर को चीरकर पानी में अज़दहाओं के सरों को तोड़ डाला।
- 14 तू ही ने लिवियातान के सरों को चूर चूर करके उसे जंगली जानवरों को खिला दिया।

- 15 एक जगह तुने चश्मे और नदियाँ फूटने दी, दूसरी जगह कभी न सखनेवाले दरिया सूखने दिए।
- 16 दिन भी तेरा है, रात भी तेरी ही है। चाँद और सूरज तेरे ही हाथ से कायम हुए।
- 17 तू ही ने ज़मीन की हृद्द मुकर्रर की, तू ही ने गरमियों और सर्दियों के मौसम बनाए।
- 18 ऐ रब, दुश्मन की लान-तान याद कर। खयाल कर कि अहमक कौम तेरे नाम पर कुफ़र बकती है।
- 19 अपने कबूतर की जान को वहशी जानवरों के हवाले न कर, हमेशा तक अपने मुसीबतज़दों की जिंदगी को न भूल।
- 20 अपने अहद का लिहाज़ कर, क्योंकि मुल्क के तारीक कोने ज़ुल्म के मैदानों से भर गए हैं।
- 21 होने न दे कि मजज़लूमों को शरमिदा होकर पीछे हटना पड़े बल्कि बख़्श दे कि मुसीबतज़दा और गरीब तेरे नाम पर फ़ख़र कर सकें।
- 22 ऐ अल्लाह, उठकर अदालत में अपने मामले का दिफ़ा कर। याद रहे कि अहमक दिन-भर तुझे लान-तान करता है।
- 23 अपने दुश्मनों के नारे न भूल बल्कि अपने मुखालिफ़ों का मुसलसल बढ़ता हुआ शोर-शराबा याद कर।

## 75

अल्लाह मगर्रों की अदालत करता है

- 1 आसफ़ का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : तबाह न कर।  
ऐ अल्लाह, तेरा शुक़ हो, तेरा शुक़! तेरा नाम उनके करीब है जो तेरे मोजिज़े बयान करते हैं।
- 2 अल्लाह फ़रमाता है, “जब मेरा वक़्त आया तो मैं इनसाफ़ से अदालत करूँगा।
- 3 गो ज़मीन अपने बाशिंदों समेत डगमगाने लगे, लेकिन मैं ही ने उसके सत्नों को मजबूत कर दिया है। (सिलाह)
- 4 शेख़ीबाज़ों से मैंने कहा, ‘डीगें मत मारो,’ और बेदीनों से, ‘अपने आप पर फ़ख़र मत करो।’\*
- 5 न अपनी ताकत पर शेख़ी मारो, † न अकड़कर कुफ़र बको।”
- 6 क्योंकि सरफ़राज़ी न मशरिक से, न मगरिब से और न बयाबान से आती है
- 7 बल्कि अल्लाह से जो मुंसिफ़ है। वही एक को पस्त कर देता है और दूसरे को सरफ़राज़।
- 8 क्योंकि रब के हाथ में झागदार और मसालेदार मै का प्याला है जिसे वह लोगों को पिला देता है। यकीनन दुनिया के तमाम बेदीनों को इसे आखिरी क़तरे तक पीना है।
- 9 लेकिन मैं हमेशा अल्लाह के अज़ीम काम सुनाऊँगा, हमेशा याक़ूब के ख़ुदा की मद्दहसराई करूँगा।
- 10 अल्लाह फ़रमाता है, “मैं तमाम बेदीनों की कमर तोड़ दूँगा जबकि रास्तबाज़ सरफ़राज़ होगा।” ‡

## 76

अल्लाह मुंसिफ़ है

- 1 आसफ़ का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तारदार साज़ों के साथ गाना है।  
अल्लाह यहदाह में मशहर है, उसका नाम इसराईल में अज़ीम है।
- 2 उसने अपनी मौँद सालिम \* में और अपना भट कोहे-सिय्यून पर बना लिया है।
- 3 वहाँ उसने जलते हुए तीरों को तोड़ डाला और ढाल, तलवार और जंग के हथियारों को चूर चूर कर दिया है। (सिलाह)
- 4 ऐ अल्लाह, तू दरख़्वाँ है, तू शिकार के पहाड़ों से आया हुआ अज़ीमूश-शान सूरमा है।
- 5 बहादुरों को लूट लिया गया है, वह मौत की नींद सो गए हैं। फ़ौजियों में से एक भी हाथ नहीं उठा सकता।
- 6 ऐ याक़ूब के ख़ुदा, तेरे डॉटने पर घोड़े और रथबान बेहिसो-हरकत हो गए हैं।
- 7 तू ही महीब है। जब तू झिड़के तो कौन तेरे हुज़ूर कायम रहेगा?
- 8 तुने आसमान से फैसले का एलान किया। ज़मीन सहमकर चुप हो गई
- 9 जब अल्लाह अदालत करने के लिए उठा, जब वह तमाम मुसीबतज़दों को नजात देने के लिए आया। (सिलाह)

\* 75:4 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : सीग मत उठाओ। † 75:5 लफ़्ज़ी मतलब : न अपना सीग उठाओ। ‡ 75:10 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : बेदीनों के तमाम सीगों को काट डालूँगा जबकि रास्तबाज़ों का सीग सरफ़राज़ हो जाएगा। \* 76:2 सालिम से मुराद यस्ख़लम है।

10 क्योंकि इनसान का तैश भी तेरी तमजीद का बाइस है। उसके तैश का आखिरी नतीजा तेरा जलाल ही है। †

11 रब अपने खुदा के हुज़ूर मन्नतें मानकर उन्हें पूरा करो। जितने भी उसके इर्दगिर्द हैं वह पुरजलाल खुदा के हुज़ूर हदिये लाएँ।

12 वह हुक्मरानों को शिकस्ता रह कर देता है, उसी से दुनिया के बादशाह दहशत खाते हैं।

## 77

अल्लाह के अज़ीम कामों से तसल्ली मिलती है

1 आसफ का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए। यदूतन के लिए।

मैं अल्लाह से फरियाद करके मदद के लिए चिल्लाता हूँ, मैं अल्लाह को पुकारता हूँ कि मुझ पर ध्यान दे।

2 अपनी मुसीबत में मैंने रब को तलाश किया। रात के वक़्त मेरे हाथ बिलानागा उस की तरफ उठे रहे। मेरी जान ने तसल्ली पाने से इनकार किया।

3 मैं अल्लाह को याद करता हूँ तो आहें भरने लगता हूँ, मैं सोच-बिचार में पड़ जाता हूँ तो रह निढाल हो जाती है। (सिलाह)

4 तू मेरी आँखों को बंद होने नहीं देता। मैं इतना बेचैन हूँ कि बोल भी नहीं सकता।

5 मैं क़दीम ज़माने पर गौर करता हूँ, उन सालों पर जो बड़ी देर हुए गुज़र गए हैं।

6 रात को मैं अपना गीत याद करता हूँ। मेरा दिल महबे-खयाल रहता और मेरी रह तफ़्तीश करती रहती है।

7 “क्या रब हमेशा के लिए रड़ करेगा, क्या आइंदा हमें कभी पसंद नहीं करेगा?

8 क्या उस की शफ़क़त हमेशा के लिए जाती रही है? क्या उसके वादे अब से ज़वाब दे गए हैं?

9 क्या अल्लाह मेहरबानी करना भूल गया है? क्या उसने गुस्से में अपना रहम बाज़ रखा है?” (सिलाह)

10 मैं बोला, “इससे मुझे दुख है कि अल्लाह तआला का दहना हाथ बदल गया है।”

11 मैं रब के काम याद करूँगा, हौं क़दीम ज़माने के तेरे मोजिज़े याद करूँगा।

12 जो कुछ तूने किया उसके हर पहलू पर ग़ीरो-ख़ोज़ करूँगा, तेरे अज़ीम कामों में महबे-खयाल रहूँगा।

13 ऐ अल्लाह, तेरी राह कुडूस है। कौन-सा माबूद हमारे खुदा जैसा अज़ीम है?

14 तू ही मोजिज़े करनेवाला खुदा है। अक़वाम के दरमियान तूने अपनी कुदरत का इज़हार किया है।

15 बड़ी कुव्वत से तूने एवज़ाना देकर अपनी क़ौम, याक़ूब और यूसुफ़ की औलाद को रिहा कर दिया है। (सिलाह)

16 ऐ अल्लाह, पानी ने तुझे देखा, पानी ने तुझे देखा तो तड़पने लगा, गहराइयों तक लरज़ने लगा।

17 मुसलाधार बारिश बरसी, बादल गरज उठे और तेरे तीर इधर उधर चलने लगे।

18 आँधी में तेरी आवाज़ कड़कती रही, दुनिया बिजलियों से रौशन हुई, ज़मीन काँपती काँपती उछल पड़ी।

19 तेरी राह समुंदर में से, तेरा रास्ता गहरे पानी में से गुज़रा, तो भी तेरे नक़्शे-क़दम किसी को नज़र न आए।

20 मूसा और हासून के हाथ से तूने रेवड की तरह अपनी क़ौम की राहनुमाई की।

## 78

इसराईल की तारीख में इलाही सज़ा और रहम

1 आसफ़ का जब्र। हिकमत का गीत।

ऐ मेरी क़ौम, मेरी हिदायत पर ध्यान दे, मेरे मुँह की बातों पर कान लगा।

2 मैं तमसीलों में बात करूँगा, क़दीम ज़माने के मुअममे बयान करूँगा।

3 जो कुछ हमने सुन लिया और हमें मालूम हुआ है, जो कुछ हमारे बापदादा ने हमें सुनाया है

4 उसे हम उनकी औलाद से नहीं छुपाएँगे। हम आनेवाली पुस्त को रब के काबिले-तारीफ़ काम बताएँगे, उस की कुदरत और मोजिज़ात बयान करेंगे।

5 क्योंकि उसने याक़ूब की औलाद को शरीअत दी, इसराईल में अहकाम कायम किए। उसने फ़रमाया कि हमारे बापदादा यह अहकाम अपनी औलाद को सिखाएँ

† 76:10 लफ्ज़ी तज़ुम्मा : तू बचे हुए तैश से कमरबस्ता हो जाता है।

6 ताकि आनेवाली पुरत भी उन्हें अपनाए, वह बच्चे जो अभी पैदा नहीं हुए थे। फिर उन्हें भी अपने बच्चों को सुनाना था।

7 क्योंकि अल्लाह की मरजी है कि इस तरह हर पुरत अल्लाह पर एतमाद रखकर उसके अजीम काम न भूले बल्कि उसके अहकाम पर अमल करे।

8 वह नहीं चाहता कि वह अपने बापदादा की मानिंद हों जो जिद्दी और सरकश नसल थे, ऐसी नसल जिसका दिल साबितकदम नहीं था और जिसकी रूह वफादारी से अल्लाह से लिपटी न रही।

9 चुनौचे इफराईम के मर्द गो कमानों से लैस थे जंग के वक्रत फरार हुए।

10 वह अल्लाह के अहद के वफादार न रहे, उस की शरीअत पर अमल करने के लिए तैयार नहीं थे।

11 जो कुछ उसने किया था, जो मोजिजे उसने उन्हें दिखाए थे, इफराईमी वह सब कुछ भूल गए।

12 मुल्के-मिसर के इलाके जुअन में उसने उनके बापदादा के देखते देखते मोजिजे किए थे।

13 समुंदर को चीरकर उसने उन्हें उसमें से गुजरने दिया, और दोनों तरफ पानी मजबूत दीवार की तरह खड़ा रहा।

14 दिन को उसने बादल के जरीए और रात-भर चमकदार आग से उनकी क्रियादत की।

15 रेगिस्तान में उसने पत्थरों को चाक करके उन्हें समुंदर की-सी कसरत का पानी पिलाया।

16 उसने होने दिया कि चटान से नदियाँ फूट निकलें और पानी दरियाओं की तरह बहने लगे।

17 लेकिन वह उसका गुनाह करने से बाज न आए बल्कि रेगिस्तान में अल्लाह तआला से सरकश रहे।

18 जान-बुझकर उन्होंने अल्लाह को आजमाकर वह खुराक माँगी जिसका लालच करते थे।

19 अल्लाह के खिलाफ कुफर बककर वह बोले, “क्या अल्लाह रेगिस्तान में हमारे लिए मेज़ बिछा सकता है?”

20 बेशक जब उसने चटान को मारा तो पानी फूट निकला और नदियाँ बहने लगीं। लेकिन क्या वह रोटी भी दे सकता है, अपनी कौम को गोशत भी मुहैया कर सकता है? यह तो नामुमकिन है।”

21 यह सुनकर रब तैश में आ गया। याकूब के खिलाफ आग भडक उठी, और उसका गजब इसराईल पर नाजिल हुआ।

22 क्यों? इसलिए कि उन्हें अल्लाह पर यकीन नहीं था, वह उस की नजात पर भरोसा नहीं रखते थे।

23 इसके बावजूद अल्लाह ने उनके ऊपर बादलों को हुक्म देकर आसमान के दरवाजे खोल दिए।

24 उसने खाने के लिए उन पर मन बरसाया, उन्हें आसमान से रोटी खिलाई।

25 हर एक ने फरिशतों की यह रोटी खाई बल्कि अल्लाह ने इतना खाना भेजा कि उनके पेट भर गए।

26 फिर उसने आसमान पर मशरिकी हवा चलाई और अपनी कुदरत से जुन्बी हवा पहुँचाई।

27 उसने गर्द की तरह उन पर गोशत बरसाया, समुंदर की रेत जैसे बेशमार परिदे उन पर गिरने दिए।

28 छैमागाह के बीच में ही वह गिर पड़े, उनके घरों के इर्दगिर्द ही ज़मीन पर आ गिरे।

29 तब वह खा खाकर खूब सेर हो गए, क्योंकि जिसका लालच वह करते थे वह अल्लाह ने उन्हें मुहैया किया था।

30 लेकिन उनका लालच अभी पूरा नहीं हुआ था और गोशत अभी उनके मुँह में था

31 कि अल्लाह का गजब उन पर नाजिल हुआ। कौम के खाते-पीते लोग हलाक हुए, इसराईल के जवान खाक में मिल गए।

32 इन तमाम बातों के बावजूद वह अपने गुनाहों में इज़ाफा करते गए और उसके मोजिज़ात पर ईमान न लाए।

33 इसलिए उसने उनके दिन नाकामी में गुजरने दिए, और उनके साल दहशत की हालत में इख़ितामपजीर हुए।

34 जब कभी अल्लाह ने उनमें क़त्लो-गारत होने दी तो वह उसे ढूँढ़ने लगे, वह मुडकर अल्लाह को तलाश करने लगे।

35 तब उन्हें याद आया कि अल्लाह हमारी चटान, अल्लाह तआला हमारा छुड़ानेवाला है।

36 लेकिन वह मुँह से उसे धोका देते, ज़बान से उसे झूट पेश करते थे।

37 न उनके दिल साबितकदमी से उसके साथ लिपटे रहे, न वह उसके अहद के वफादार रहे।

38 तो भी अल्लाह रहमदिल रहा। उसने उन्हें तबाह न किया बल्कि उनका कुसूर मुआफ़ करता रहा। बार बार वह अपने गजब से बाज आया, बार बार अपना पूरा कहर उन पर उतारने से गुरेज़ किया।

39 क्योंकि उसे याद रहा कि वह फ़ानी इन्सान हैं, हवा का एक झोंका जो गुजरकर कभी वापस नहीं आता।

40 रेगिस्तान में वह कितनी दफा उससे सरकश हुए, कितनी मरतबा उसे दुख पहुँचाया।

- 41 बार बार उन्होंने अल्लाह को आजमाया, बार बार इसराईल के कुदूस को रंजीदा किया।  
 42 उन्हें उस की कुदरत याद न रही, वह दिन जब उसने फिघा देकर उन्हें दुश्मन से छुड़ाया,  
 43 वह दिन जब उसने मिसर में अपने इलाही निशान दिखाए, जुअन के इलाके में अपने मोजिजे किए।  
 44 उसने उनकी नहरों का पानी खून में बदल दिया, और वह अपनी नदियों का पानी पी न सके।  
 45 उसने उनके दरमियान जुओं के गोल भेजे जो उन्हें खा गईं, मेंढक जो उन पर तबाही लाए।  
 46 उनकी पैदावार उसने जवान टिड्डियों के हवाले की, उनकी मेहनत का फल बालिग टिड्डियों के सुपर्द किया।  
 47 उनकी अंगूर की बेलें उसने ओलों से, उनके अंजीर-तूत के दरख्त सैलाब से तबाह कर दिए।  
 48 उनके मवेशी उसने ओलों के हवाले किए, उनके रेवड़ बिजली के सुपर्द किए।  
 49 उसने उन पर अपना शोलाज्ज गजब नाजिल किया। कहर, खफगी और मुसीबत यानी तबाही लानेवाले फरिशतों का पूरा दस्ता उन पर हमलाआवर हुआ।  
 50 उसने अपने गजब के लिए रास्ता तैयार करके उन्हें मौत से न बचाया बल्कि मोहलक वबा की ज़द में आने दिया।  
 51 मिसर में उसने तमाम पहलौठों को मार डाला और हाम के खैमों में मरदानगी का पहला फल तमाम कर दिया।  
 52 फिर वह अपनी कौम को भेड़-बकरियों की तरह मिसर से बाहर लाकर रेगिस्तान में रेवड़ की तरह लिए फिरा।  
 53 वह हिफाजत से उनकी क्रियादत करता रहा। उन्हें कोई डर नहीं था जबकि उनके दुश्मन समुंदर में डूब गए।  
 54 यों अल्लाह ने उन्हें मुक़द्दस मुल्क तक पहुँचाया, उस पहाड़ तक जिसे उसके दहने हाथ ने हासिल किया था।  
 55 उनके आगे आगे वह दीगर कौमों में निकालता गया। उनकी ज़मीन उसने तक्सीम करके इसराईलियों को मीरास में दी, और उनके खैमों में उसने इसराईली कबीले बसाए।

- 56 इसके बावजूद वह अल्लाह तआला को आजमाने से बाज़ न आए बल्कि उससे सरकश हुए और उसके अहकाम के ताबे न रहे।  
 57 अपने बापदादा की तरह वह ग़द्दर बनकर बेवफ़ा हुए। वह डीली कमान की तरह नाकाम हो गए।  
 58 उन्होंने ऊँची जगहों की गलत कुरबानागहों से अल्लाह को गुस्सा दिलाया और अपने बुतों से उसे रंजीदा किया।  
 59 जब अल्लाह को खबर मिली तो वह ग़जबनाक हुआ और इसराईल को मुकम्मल तौर पर मुस्तरद कर दिया।  
 60 उसने सैला में अपनी सुकूनतगाह छोड़ दी, वह खैमा जिसमें वह इनसान के दरमियान सुकूनत करता था।  
 61 अहद का सन्दूक उस की कुदरत और जलाल का निशान था, लेकिन उसने उसे दुश्मन के हवाले करके जिलावतनी में जाने दिया।  
 62 अपनी कौम को उसने तलवार की ज़द में आने दिया, क्योंकि वह अपनी मौस्सी मिलकियत से निहायत नाराज़ था।  
 63 कौम के जवान नज़रे-आतिश हुए, और उस की कुँवारियों के लिए शादी के गीत गाए न गए।  
 64 उसके इमाम तलवार से कल्ल हुए, और उस की बेवाओं ने मातम न किया।  
 65 तब रब जाग उठा, उस आदमी की तरह जिसकी नींद उचाट हो गई हो, उस सूरमे की मानिंद जिससे नशे का असर उतर गया हो।  
 66 उसने अपने दुश्मनों को मार मारकर भगा दिया और उन्हें हमेशा के लिए शरमिदा कर दिया।  
 67 उस वक़्त उसने यूसुफ़ का खैमा रड़ किया और इफ़राईम के कबीले को न चुना  
 68 बल्कि यहदाह के कबीले और कोहे-सियून को चुन लिया जो उसे प्यारा था।  
 69 उसने अपना मक़दिस बुलदियों की मानिंद बनाया, ज़मीन की मानिंद जिसे उसने हमेशा के लिए कायम किया है।  
 70 उसने अपने खादिम दाऊद को चुनकर भेड़-बकरियों के बाड़ों से बुलाया।  
 71 हाँ, उसने उसे भेड़ों \* की देख-भाल से बुलाया ताकि वह उस की कौम याकूब, उस की मीरास इसराईल की गल्लाबानी करे।  
 72 दाऊद ने खुलूसदिली से उनकी गल्लाबानी की, बड़ी महारत से उसने उनकी राहनुमाई की।

## 79

जंग की मुसीबत में कौम की दुआ

1 आसफ़ का जबर्।

\* 78:71 इब्रानी मतन से मुराद वह भेड़ है जो अभी अपने बच्चों को दूध पिलाती है।

ऐ अल्लाह, अजनबी कौमें तेरी मौरूसी जमीन में घुस आई हैं। उन्होंने तेरी मुकद्दस सुकूनतगाह की बेहुरमती करके यस्शलाम को मलबे का ढेर बना दिया है।

2 उन्होंने तेरे खादिमों की लाशें परिदों को और तेरे इमानदारों का गोशत जंगली जानवरों को खिला दिया है।

3 यस्शलाम के चारों तरफ उन्होंने खून की नदियाँ बहाई, और कोई बाकी न रहा जो मुरदों को दफनाता।

4 हमारे पडोसियों ने हमें मज़ाक का निशाना बना लिया है, इर्दगिर्द की कौमें हमारी हँसी उड़ाती और लान-तान करती हैं।

5 ऐ रब, कब तक? क्या तू हमेशा तक गुस्से होगा? तेरी गैरत कब तक आग की तरह भडकती रहेगी?

6 अपना गज़ब उन अकवाम पर नाज़िल कर जो तुझे तसलीम नहीं करती, उन सलतनतों पर जो तेरे नाम को नहीं पुकारती।

7 क्योंकि उन्होंने याकूब को हडप करके उस की रिहाइशगाह तबाह कर दी है।

8 हमें उन गुनाहों के कुसूरवार न ठहरा जो हमारे बापदादा से सरज़द हुए। हम पर रहम करने में जल्दी कर, क्योंकि हम बहुत पस्तहाल हो गए हैं।

9 ऐ हमारी नजात के खुदा, हमारी मदद कर ताकि तेरे नाम को जलाल मिले। हमें बचा, अपने नाम की खातिर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर।

10 दीगर अकवाम क्यों कहें, “उनका खुदा कहाँ है?” हमारे देखते देखते उन्हें दिखा कि तू अपने खादिमों के खून का बदला लेता है।

11 कैदियों की आहें तुझ तक पहुँची, जो मरने को हैं उन्हें अपनी अज़ीम कुदरत से महफूज़ रख।

12 ऐ रब, जो लान-तान हमारे पडोसियों ने तुझ पर बरसाई है उसे सात गुना उनके सरों पर वापस ला।

13 तब हम जो तेरी कौम और तेरी चरागाह की भेड़ें हैं अबद तक तेरी सताइश करेंगे, पुशत-दर-पुशत तेरी हम्दो-सना करेंगे।

## 80

अंगूर की बेल की बहाली के लिए दुआ

1 आसफ़ का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : अहद के सोसना।

ऐ इसराईल के गल्लाबान, हम पर ध्यान दे! तू जो यूसुफ़ की रेवड की तरह राहनुमाई करता है, हम पर तबज्जुह कर! तू जो कस्बी फ़रिशतों के दरमियान तख़्तनशीन है, अपना नूर चमका!

2 इफ़राईम, बिनयमीन और मनस्सी के सामने अपनी कुदरत को हरकत में ला। हमें बचाने आ!

3 ऐ अल्लाह, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

4 ऐ रब, लशकरो के खुदा, तेरा गज़ब कब तक भडकता रहेगा, हालाँकि तेरी कौम तुझसे इल्तिजा कर रही है?

5 तूने उन्हें आँसुओं की रोटी खिलाई और आँसुओं का प्याला खूब पिलाया।

6 तूने हमें पडोसियों के झगड़ों का निशाना बनाया। हमारे दुश्मन हमारा मज़ाक उड़ाते हैं।

7 ऐ लशकरो के खुदा, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

8 अंगूर की जो बेल मिसर में उग रही थी उसे तू उखाडकर मुल्के-कनान लाया। तूने वहाँ की अकवाम को भगाकर यह बेल उनकी जगह लगाई।

9 तूने उसके लिए ज़मीन तैयार की तो वह जड पकड़कर पूरे मुल्क में फैल गई।

10 उसका साया पहाडों पर छा गया, और उस की शाखों ने देवदार के अज़ीम दरख्तों को ढँक लिया।

11 उस की टहनियों मगरिब में समुंदर तक फैल गई, उस की डालियाँ मशरिक में दरियाए-फ़ुरात तक पहुँच गई।

12 तूने उस की चारदीवारी क्यों गिरा दी? अब हर गुज़रनेवाला उसके अंगूर तोड़ लेता है।

13 जंगल के सुअर उसे खा खाकर तबाह करते, खुले मैदान के जानवर वहाँ चरते हैं।

14 ऐ लशकरो के खुदा, हमारी तरफ़ दुबारा रूजू फ़रमा! आसमान से नज़र डालकर हालात पर ध्यान दे। इस बेल की देख-भाल कर।

- 15 उसे महफूज़ रख जिसे तेरे दहने हाथ ने ज़मीन में लगाया, उस बेटे को जिसे तूने अपने लिए पाला है।  
 16 इस वक़्त वह कटकर नज़रे-आतिश हुआ है। तेरे चेहरे की डॉट-डपट से लोग हलाक हो जाते हैं।  
 17 तेरा हाथ अपने दहने हाथ के बंदे को पनाह दे, उस आदमज़ाद को जिसे तूने अपने लिए पाला था।  
 18 तब हम तुझसे दूर नहीं हो जाएंगे। बख़्श दे कि हमारी जान में जान आए तो हम तेरा नाम पुकारेंगे।
- 19 ऐ रब, लशकरों के ख़ुदा, हमें बहाल कर। अपने चेहरे का नूर चमका तो हम नजात पाएँगे।

## 81

हकीकी इबादत क्या है?

- 1 आसफ़ का ज़बूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज़ : गितीत।  
 अल्लाह हमारी कुव्वत है। उस की ख़ुशी में शादियाना बजाओ, याक़ूब के ख़ुदा की ताज़ीम में ख़ुशी के नारे लगाओ।  
 2 गीत गाना शुरू करो। दफ़ बजाओ, सरोद और सितार की सुरीली आवाज़ निकालो।  
 3 नए चाँद के दिन नरसिंगा फूँको, पुरे चाँद के जिस दिन हमारी ईद होती है उसे फूँको।  
 4 क्योंकि यह इसराईल का फ़र्ज़ है, यह याक़ूब के ख़ुदा का फ़रमान है।  
 5 जब यूसुफ़ मिसर के खिलाफ़ निकला तो अल्लाह ने ख़ुद यह मुक़र्रर किया।

मैंने एक ज़बान सुनी, जो मैं अब तक नहीं जानता था,

- 6 "मैंने उसके कंधे पर से बोझ उतारा और उसके हाथ भारी टोकरी उठाने से आज़ाद किए।  
 7 मुसीबत में तूने आवाज़ दी तो मैंने तुझे बचाया। गरजते बादल में से मैंने तुझे जवाब दिया और तुझे मरीबा के पानी पर आज़माया। (सिलाह)  
 8 ऐ मेरी कौम, सुन, तो मैं तुझे आगाह करूँगा। ऐ इसराईल, काश तू मेरी सुने!  
 9 तेरे दरमियान कोई और ख़ुदा न हो, किसी अजनबी माबूद को सिजदा न कर।  
 10 मैं ही रब तेरा ख़ुदा हूँ जो तुझे मुल्के-मिसर से निकाल लाया। अपना मुँह ख़ूब खोल तो मैं उसे भर दूँगा।
- 11 लेकिन मेरी कौम ने मेरी न सुनी, इसराईल मेरी बात मानने के लिए तैयार न था।  
 12 चुनौचे मैंने उन्हें उनके दिलों की ज़िद के हवाले कर दिया, और वह अपने जाती मशवरों के मुताबिक़ ज़िदगी गुज़ारने लगे।  
 13 काश मेरी कौम सुने, इसराईल मेरी राहों पर चले!  
 14 तब मैं ज़ल्दी से उसके दुश्मनों को जेर करता, अपना हाथ उसके मुखालिफ़ों के खिलाफ़ उठाता।  
 15 तब रब से नफ़रत करनेवाले दबककर उस की ख़ुशामद करते, उनकी शिक़स्त अबदी होती।  
 16 लेकिन इसराईल को मैं बेहतरीन गंदुम खिलाता, मैं चटान में से शहद निकालकर उसे सेर करता।"

## 82

सबसे आला मुंसिफ़

- 1 आसफ़ का ज़बूर।

अल्लाह इलाही मजलिस में खड़ा है, माबूदों के दरमियान वह अदालत करता है,

- 2 "तुम कब तक अदालत में ग़लत फैसले करके बेदीनों की जानिबदारी करोगे? (सिलाह)  
 3 पस्तहालों और यतीमों का इनसाफ़ करो, मुसीबतज़दों और ज़स्तरतमंदों के हकूक कायम रखो।  
 4 पस्तहालों और गरीबों को बचाकर बेदीनों के हाथ से छुड़ाओ।"

5 लेकिन वह कुछ नहीं जानते, उन्हें समझ ही नहीं आती। वह तारीकी में टटोल टटोलकर घुमते-फिरते हैं जबकि ज़मीन की तमाम बुनियादें झूमने लगी हैं।

6 बेशक मैंने कहा, "तुम ख़ुदा हो, सब अल्लाह तआला के फ़रज़द हो।

7 लेकिन तुम फ़ानी इनसान की तरह मर जाओगे, तुम दीगर हकूमरानों की तरह गिर जाओगे।"

8 ऐ अल्लाह, उठकर ज़मीन की अदालत कर! क्योंकि तमाम अक़वाम तेरी ही मौसीकी मिलकियत हैं।

## 83

क्रौम के दुश्मनों के खिलाफ दूआ

1 गीत। आसफ का जबूर।

ऐ अल्लाह, खामोश न रह! ऐ अल्लाह, चुप न रह!

2 देख, तेरे दुश्मन शोर मचा रहे हैं, तुझसे नफरत करनेवाले अपना सर तेरे खिलाफ उठा रहे हैं।

3 तेरी क्रौम के खिलाफ वह चालाक मनसूबे बाँध रहे हैं, जो तेरी आड़ में छुप गए हैं उनके खिलाफ साजिशें कर रहे हैं।

4 वह कहते हैं, “आओ, हम उन्हें मिटा दें ताकि क्रौम नेस्त हो जाए और इसराईल का नामो-निशान बाकी न रहे।”

5 क्योंकि वह आपस में सलाह-मशवरा करने के बाद दिली तौर पर मुतहिद हो गए हैं, उन्होंने तेरे ही खिलाफ अहद बाँधा है।

6 उनमें अदोम के खैमे, इसमाईली, मोआब, हाजिरी,

7 जबाल, अम्मोन, अमालीक, फिलिस्तिआ और सूर के बाशिदे शामिल हो गए हैं।

8 असूर भी उनमें शरीक होकर लूत की औलाद को सहारा दे रहा है। (सिलाह)

9 उनके साथ वही सुलूक कर जो तुने मिदियानियों से यानी कैसोन नदी पर सीसरा और याबीन से किया।

10 क्योंकि वह ऐन-दोर के पास हलाक होकर खेत में गोबर बन गए।

11 उनके शुरफा के साथ वही बरताव कर जो तुने औरैब और ज़एब से किया। उनके तमाम सरदार ज़िबह और ज़लमुन्ना की मानिंद बन जाएँ,

12 जिन्होंने कहा, “आओ, हम अल्लाह की चरगाहों पर कब्ज़ा करें।”

13 ऐ मेरे ख़ुदा, उन्हें लुढ़कबूटी और हवा में उड़ते हुए भूसे की मानिंद बना दे।

14 जिस तरह आग पूरे जंगल में फैल जाती और एक ही शोला पहाड़ों को झुलसा देता है,

15 उसी तरह अपनी आँधी से उनका ताक़ूब कर, अपने तूफ़ान से उनको दहशतज़दा कर दे।

16 ऐ रब, उनका मुँह काला कर ताकि वह तेरा नाम तलाश करें।

17 वह हमेशा तक शर्मिदा और हवासबाख़्ता रहें, वह शर्मसार होकर हलाक हो जाएँ।

18 तब ही वह जान लेंगे कि तू ही जिसका नाम रब है अल्लाह तआला यानी पूरी दुनिया का मालिक है।

## 84

रब के घर पर ख़ुशी

1 क्रोहर खानदान का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : गीतीत।

ऐ रब्बूल-अफ़वाज, तेरी सुकूनतगाह कितनी प्यारी है!

2 मेरी जान रब की बारगाहों के लिए तडपती हुई निढाल है। मेरा दिल बल्कि पूरा जिस्म जिंदा ख़ुदा को जोर से पुकार रहा है।

3 ऐ रब्बूल-अफ़वाज, ऐ मेरे बादशाह और ख़ुदा, तेरी कुरबानगाहों के पास परिदे को भी घर मिल गया, अबाबील को भी अपने बच्चों को पालने का घोंसला मिल गया है।

4 मुबारक हैं वह जो तेरे घर में बसते हैं, वह हमेशा ही तेरी सताइश करेंगे। (सिलाह)

5 मुबारक हैं वह जो तुझमें अपनी ताकत पाते, जो दिल से तेरी राहों में चलते हैं।

6 वह बुका की ख़ुशक वादी \* में से गुज़रते हुए उसे शादाब जगह बना लेते हैं, और बारिशें उसे बरकतों से ढाँप देती हैं।

7 वह कदम बकदम तकवियत पाते हुए आगे बढ़ते, सब कोहे-सिय्यून पर अल्लाह के सामने हाज़िर हो जाते हैं।

8 ऐ रब, ऐ लशकरो के ख़ुदा, मेरी दूआ सुन! ऐ याक़ूब के ख़ुदा, ध्यान दे! (सिलाह)

9 ऐ अल्लाह, हमारी ढाल पर करम की निगाह डाल। अपने मसह किए हुए खादिम के चेहरे पर नज़र कर।

10 तेरी बारगाहों में एक दिन किसी और जगह पर हज़ार दिनों से बेहतर है। मुझे अपने ख़ुदा के घर के दरवाज़े पर हाज़िर रहना बेदीनों के घरों में बसने से कहीं ज़्यादा पसंद है।

\* 84:6 या रनेवाली यानी अँसुओं की वादी।



11 क्योंकि रब खुदा आफताब और ढाल है, वही हमें फजल और इज्जत से नवाज़ता है। जो दियानतदारी से चलें उन्हें वह किसी भी अच्छी चीज़ से महरूम नहीं रखता।

12 ऐ रब्बुल-अफवाज़, मुबारक है वह जो तुझ पर भरोसा रखता है!

## 85

नए सिरे से बरकत पाने के लिए दुआ

1 क्रोहर की औलाद का जबूर। मौसीक्री के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, पहले तूने अपने मुल्क को पसंद किया, पहले याकूब को बहाल किया।

2 पहले तूने अपनी कौम का कुसूर मुआफ किया, उसका तमाम गुनाह ढौंप दिया। (सिलाह)

3 जो गज़ब हम पर नाज़िल हो रहा था उसका सिलसिला तूने रोक दिया, जो कहर हमारे खिलाफ भड़क रहा था उसे छोड़ दिया।

4 ऐ हमारी नजात के खुदा, हमें दुबारा बहाल कर। हमसे नाराज़ होने से बाज़ आ।

5 क्या तू हमेशा तक हमसे गुस्से रहेगा? क्या तू अपना कहर पुशत-दर-पुशत कायम रखेगा?

6 क्या तू दुबारा हमारी जान को ताज़ादम नहीं करेगा ताकि तेरी कौम तुझसे खुश हो जाए?

7 ऐ रब, अपनी शफकत हम पर जाहिर कर, अपनी नजात हमें अता फरमा।

8 मैं वह कुछ सुनूँगा जो खुदा रब फरमाएगा। क्योंकि वह अपनी कौम और अपने ईमानदारों से सलामती का वादा करेगा, अलबन्ता लाज़िम है कि वह दुबारा हमाक़त में उलझ न जाएँ।

9 यकीनन उस की नजात उनके करीब है जो उसका खौफ मानते हैं ताकि जलाल हमारे मुल्क में सुकूनत करे।

10 शफक़त और वफ़ादारी एक दूसरे के गले लग गए हैं, रास्ती और सलामती ने एक दूसरे को बोसा दिया है।

11 सच्चाई ज़मीन से फूट निकलेगी और रास्ती आसमान से ज़मीन पर नज़र डालेगी।

12 अल्लाह ज़रूर वह कुछ देगा जो अच्छा है, हमारी ज़मीन ज़रूर अपनी फसलें पैदा करेगी।

13 रास्ती उसके आगे आगे चलकर उसके क़दमों के लिए रास्ता तैयार करेगी।

## 86

मुसीबत में दुआ

1 दाऊद की दुआ।

ऐ रब, अपना कान झुकाकर मेरी सुन, क्योंकि मैं मुसीबतज़दा और मुहताज़ हूँ।

2 मेरी जान को महफूज़ रख, क्योंकि मैं ईमानदार हूँ। अपने खादिम को बचा जो तुझ पर भरोसा रखता है। तू ही मेरा खुदा है!

3 ऐ रब, मुझ पर मेहरबानी कर, क्योंकि दिन-भर मैं तुझे पुकारता हूँ।

4 अपने खादिम की जान को खुश कर, क्योंकि मैं तेरा आरज़ुमंद हूँ।

5 क्योंकि तू ऐ रब भला है, तू मुआफ करने के लिए तैयार है। जो भी तुझे पुकारते हैं उन पर तू बड़ी शफक़त करता है।

6 ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओं पर तबज़ुह कर।

7 मुसीबत के दिन मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि तू मेरी सुनता है।

8 ऐ रब, माबूदों में से कोई तेरी मानिद नहीं है। जो कुछ तू करता है कोई और नहीं कर सकता।

9 ऐ रब, जितनी भी कौमों तूने बनाई वह आकर तेरे हुज़ूर सिजदा करेंगी और तेरे नाम को जलाल देंगी।

10 क्योंकि तू ही अज़ीम है और मोजिज़े करता है। तू ही खुदा है।

11 ऐ रब, मुझे अपनी राह सिखा ताकि तेरी वफ़ादारी में चलूँ। बख़्श दे कि मैं पूरे दिल से तेरा खौफ माँऊँ।

12 ऐ रब मेरे खुदा, मैं पूरे दिल से तेरा शुक्र करूँगा, हमेशा तक तेरे नाम की ताज़ीम करूँगा।

13 क्योंकि तेरी मुझ पर शफक़त अज़ीम है, तूने मेरी जान को पाताल की गहराइयों से छुड़ाया है।

14 ऐ अल्लाह, मगर मेरे खिलाफ उठ खड़े हुए हैं, ज़ालिमों का जल्था मेरी जान लेने के दरपै है। यह लोग तेरा लिहाज़ नहीं करते।

15 लेकिन तू, ऐ रब, रहीम और मेहरबान खुदा है। तू तहम्मूल, शफ़कत और वफ़ा से भरपूर है।

16 मेरी तरफ़ रज़ू फ़रमा, मुझ पर मेहरबानी कर! अपने खादिम को अपनी कुव्वत अता कर, अपनी खादिमा के बेटे को बचा।

17 मुझे अपनी मेहरबानी का कोई निशान दिखा। मुझसे नफ़रत करनेवाले यह देखकर शर्मिंदा हो जाएँ कि तू रब ने मेरी मदद करके मुझे तसल्ली दी है।

## 87

सिय्यून अक़वाम की माँ है

1 क्रोहर की औलाद का जब्र। गीत।

उस की बुनियाद मुक़द्दस पहाड़ों पर रखी गई है।

2 रब सिय्यून के दरवाज़ों को याक़ूब की दीगर आबादियों से कहीं ज़्यादा प्यार करता है।

3 ऐ अल्लाह के शहर, तेरे बारे में शानदार बातें सुनाई जाती हैं। (सिलाह)

4 रब फ़रमाता है, “मैं मिस्र और बाबल को उन लोगों में शमार करूँगा जो मुझे जानते हैं।” फिलिस्तिया, सूर और एथोपिया के बारे में भी कहा जाएगा, “इनकी पैदाइश यहीं हुई है।”

5 लेकिन सिय्यून के बारे में कहा जाएगा, “हर एक बाशिंदा उसमें पैदा हुआ है। अल्लाह तआला खुद उसे कायम रखेगा।”

6 जब रब अक़वाम को किताब में दर्ज करेगा तो वह साथ साथ यह भी लिखेगा, “यह सिय्यून में पैदा हुई है।” (सिलाह)

7 और लोग नाचते हुए गाएँगे, “मेरे तमाम चश्मे तुझमें हैं।”

## 88

तर्क किए गए शख्स के लिए दुआ

1 क्रोहर की औलाद का जब्र। मौसीकी के राहनुमा के लिए। तर्ज : महलत लअन्नोत। हैमान इज़राही का हिकमत का गीत।

ऐ रब, ऐ मेरी नजात के खुदा, दिन-रात मैं तेरे हुज़ूर चीखता-चिल्लाता हूँ।

2 मेरी दुआ तेरे हुज़ूर पहुँचे, अपना कान मेरी चीखों की तरफ़ झुका।

3 क्योंकि मेरी जान दुख से भरी है, और मेरी टाँगें क़ब्र में लटकी हुई हैं।

4 मुझे उनमें शमार किया जाता है जो पाताल में उतर रहे हैं। मैं उस मर्द की मानिंद हूँ जिसकी तमाम ताकत जाती रही है।

5 मुझे मुरदों में तनहा छोड़ा गया है, क़ब्र में उन मकतूलों की तरह जिनका तू अब खयाल नहीं रखता और जो तेरे हाथ के सहारे से मुंक्रते हो गए हैं।

6 तूने मुझे सबसे गहरे गढे में, तारीक़तरीन गहराइयों में डाल दिया है।

7 तेरे गज़ब का पूरा बोझ मुझ पर आ पड़ा है, तूने मुझे अपनी तमाम मौजों के नीचे दबा दिया है। (सिलाह)

8 तूने मेरे करीबी दोस्तों को मुझसे दूर कर दिया है, और अब वह मुझसे धिन खाते हैं। मैं फ़ैसा हुआ हूँ और निकल नहीं सकता।

9 मेरी आँखें ग़म के मारे पज़मुरदा हो गई हैं। ऐ रब, दिन-भर मैं तुझे पुकारता, अपने हाथ तेरी तरफ़ उठाए रखता हूँ।

10 क्या तू मुरदों के लिए मोजिजे करेगा? क्या पाताल के बाशिंदे उठकर तेरी तमजीद करेंगे? (सिलाह)

11 क्या लोग क़ब्र में तेरी शफ़कत या पाताल में तेरी वफ़ा बयान करेंगे?

12 क्या तारीकी में तेरे मोजिजे या मुल्के-फ़रामोश में तेरी रास्ती मालूम हो जाएगी?

13 लेकिन ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ, मेरी दुआ सुबह-सवेरे तेरे सामने आ जाती है।

14 ऐ रब, तू मेरी जान को क्यों रड़ करता, अपने चेहरे को मुझसे पोशीदा क्यों रखता है?

15 मैं मुसीबतज़दा और जवानी से मौत के करीब रहा हूँ। तेरे दहशतनाक हमले बरदाश्त करते करते मैं जान से हाथ धो बैठा हूँ।

- 16 तेरा भडकता क्रहर मुझ पर से गुजर गया, तेरे हौलनाक कामों ने मुझे नाबूद कर दिया है।
- 17 दिन-भर वह मुझे सैलाब की तरह घेरे रखते हैं, हर तरफ से मुझ पर हमलाआवर होते हैं।
- 18 तूने मेरे दोस्तों और पड़ोसियों को मुझसे दूर कर रखा है। तारीकी ही मेरी करीबी दोस्त बन गई है।

## 89

इसराईल की मुसीबत और दाऊद से वादा

- 1 ऐतान इजराही का हिकमत का गीत।
- मैं अबद तक रब की मेहरबानियों की मदहसराई करूँगा, पुरत-दर-पुरत मुँह से तेरी वफा का एलान करूँगा।
- 2 क्योंकि मैं बोला, “तेरी शफकत हमेशा तक कायम है, तूने अपनी वफा की मजबूत बुनियाद आसमान पर ही रखी है।”
- 3 तूने फरमाया, “मैंने अपने चुने हुए बंदे से अहद बाँधा, अपने खादिम दाऊद से कसम खाकर वादा किया है,
- 4 “मैं तेरी नसल को हमेशा तक कायम रखूँगा, तेरा तख्त हमेशा तक मजबूत रखूँगा।” (सिलाह)
- 5 ऐ रब, आसमान तेरे मोजिजों की सताइश करेंगे, मुकद्दसीन की जमात में ही तेरी वफादारी की तमजीद करेंगे।
- 6 क्योंकि बादलों में कौन रब की मानिंद है? इलाही हस्तियों में से कौन रब की मानिंद है?
- 7 जो भी मुकद्दसीन की मजलिस में शामिल है वह अल्लाह से खौफ खाते हैं। जो भी उसके इर्दगिर्द होते हैं उन पर उस की अजमत और रोब छाया रहता है।
- 8 ऐ रब, ऐ लशकरो के खुदा, कौन तेरी मानिंद है? ऐ रब, तू कवी और अपनी वफा से घिरा रहता है।
- 9 तू ठाठे मारते हुए समुंदर पर हुकूमत करता है। जब वह मौजजन हो तो तू उसे थमा देता है।
- 10 तूने समुंदरी अजदहे रहब को कुचल दिया, और वह मकतूल की मानिंद बन गया। अपने कवी बाजू से तूने अपने दुश्मनों को तितर-बितर कर दिया।
- 11 आसमानो-जमीन तेरे ही हैं। दुनिया और जो कुछ उसमें है तूने कायम किया।
- 12 तूने शिमालो-जुनूब को खलक किया। तब्र और हरमून तेरे नाम की खुशी में नारे लगाते हैं।
- 13 तेरा बाजू कवी और तेरा हाथ ताकतवर है। तेरा दहना हाथ अज्जीम काम करने के लिए तैयार है।
- 14 रास्ती और इनसाफ तेरे तख्त की बुनियाद हैं। शफकत और वफा तेरे आगे आगे चलती हैं।
- 15 मुबारक है वह कौम जो तेरी खुशी के नारे लगा सके। ऐ रब, वह तेरे चेहरे के नूर में चलेंगे।
- 16 रोजाना वह तेरे नाम की खुशी मनाएँगे और तेरी रास्ती से सरफराज होंगे।
- 17 क्योंकि तू ही उनकी ताकत की शान है, और तू अपने करम से हमें सरफराज करेगा।
- 18 क्योंकि हमारी ढाल रब ही की है, हमारा बादशाह इसराईल के कुद्स ही का है।
- 19 माजी में तू रोया में अपने ईमानदारों से हमकलाम हुआ। उस वक्त तूने फरमाया, “मैंने एक सूरे को ताकत से नवाजा है, कौम में से एक को चुनकर सरफराज किया है।
- 20 मैंने अपने खादिम दाऊद को पा लिया और उसे अपने मुकद्दस तेल से मसह किया है।
- 21 मेरा हाथ उसे कायम रखेगा, मेरा बाजू उसे तकवियत देगा।
- 22 दुश्मन उस पर गालिब नहीं आएगा, शरीर उसे खाक में नहीं मिलाएँगे।
- 23 उसके आगे आगे मैं उसके दुश्मनों को पाश पाश करूँगा। जो उससे नफरत रखते हैं उन्हें जमीन पर पटख दूँगा।
- 24 मेरी वफा और मेरी शफकत उसके साथ रहेंगी, मेरे नाम से वह सरफराज होगा।
- 25 मैं उसके हाथ को समुंदर पर और उसके दहने हाथ को दरियाओं पर हुकूमत करने दूँगा।
- 26 वह मुझे पुकारकर कहेगा, ‘तू मेरा बाप, मेरा खुदा और मेरी नजात की चटान है।’
- 27 मैं उसे अपना पहलौठा और दुनिया का सबसे आला बादशाह बनाऊँगा।
- 28 मैं उसे हमेशा तक अपनी शफकत से नवाजता रहूँगा, मेरा उसके साथ अहद कभी तमाम नहीं होगा।
- 29 मैं उस की नसल हमेशा तक कायम रखूँगा, जब तक आसमान कायम है उसका तख्त कायम रखूँगा।
- 30 अगर उसके बेटे मेरी शरीअत तर्क करके मेरे अहकाम पर अमल न करें,
- 31 अगर वह मेरे फरमानों की बेहरमती करके मेरी हिदायात के मुताबिक ज़िदगी न गुजारें
- 32 तो मैं लाठी लेकर उनकी तादीब करूँगा और मोहलक वबाओ से उनके गुनाहों की सजा दूँगा।

- 33 लेकिन मैं उसे अपनी शफ़क़त से महसूस नहीं करूँगा, अपनी वफ़ा का इनकार नहीं करूँगा।
- 34 न मैं अपने अहद की बेहुरमती करूँगा, न वह कुछ तबदील करूँगा जो मैंने फ़रमाया है।
- 35 मैंने एक बार सदा के लिए अपनी क़ुदूसियत की क़सम खाकर वादा किया है, और मैं दाऊद को कभी धोका नहीं दूँगा।
- 36 उस की नसल अबद तक कायम रहेगी, उसका तख़्त आफ़ताब की तरह मेरे सामने खड़ा रहेगा।
- 37 चाँद की तरह वह हमेशा तक बरकरार रहेगा, और जो गवाह बादलों में है वह वफ़ादार है।” (सिलाह)
- 38 लेकिन अब तूने अपने महसूब किए हुए ख़ादिम को ठुकराकर रड़ किया, तू उससे ग़ज़बनाक हो गया है।
- 39 तूने अपने ख़ादिम का अहद नामज़ूर किया और उसका ताज़ ख़ाक़ में मिलाकर उस की बेहुरमती की है।
- 40 तूने उस की तमाम फ़सीलें ढाकर उसके किलों को मलबे के ढेर बना दिया है।
- 41 जो भी वहाँ से गुज़रे वह उसे लूट लेता है। वह अपने पड़ोसियों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गया है।
- 42 तूने उसके मुख़ालिफ़ों का दहना हाथ सरफ़राज़ किया, उसके तमाम दुश्मनों को खुश कर दिया है।
- 43 तूने उस की तलवार की तेज़ी बेअसर करके उसे जंग में फ़तह पाने से रोक दिया है।
- 44 तूने उस की शान ख़त्म करके उसका तख़्त ज़मीन पर पटख़ दिया है।
- 45 तूने उस की ज़वानी के दिन मुख़तसर करके उसे स़्सावई की चादर में लपेटा है। (सिलाह)
- 46 ऐ रब, कब तक? क्या तू अपने आपको हमेशा तक छुपाए रखेगा? क्या तेरा क़हर अबद तक आग की तरह भड़कता रहेगा?
- 47 याद रहे कि मेरी ज़िंदागी कितनी मुख़तसर है, कि तूने तमाम इनसान कितने फ़ानी खलक किए हैं।
- 48 कौन है जिसका मौत से वास्ता न पड़े, कौन है जो हमेशा ज़िंदा रहे? कौन अपनी जान को मौत के क़ब्ज़े से बचाए रख सकता है? (सिलाह)
- 49 ऐ रब, तेरी वह पुरानी मेहरबानियाँ कहीं हैं जिनका वादा तूने अपनी वफ़ा की क़सम खाकर दाऊद से किया?
- 50 ऐ रब, अपने ख़ादिमों की ख़जालत याद कर। मेरा सीना मुतअद्दिद कौमों की लान-तान से दुखता है,
- 51 क्योंकि ऐ रब, तेरे दुश्मनों ने मुझे लान-तान की, उन्होंने तेरे महसूब किए हुए ख़ादिम को हर क़दम पर लान-तान की है।
- 52 अबद तक रब की हम्द हो! आमीन, फ़िर आमीन।

## चौथी किताब 90-106

### 90

फ़ानी इनसान अल्लाह में पनाह ले

- 1 मर्द-ख़ुदा मूसा की दुआ।
- ऐ रब, पुरत-दर-पुरत तू हमारी पनाहगाह रहा है।
- 2 इससे पहले कि पहाड़ पैदा हुए और तू ज़मीन और दुनिया को वुजूद में लाया तू ही था। ऐ अल्लाह, तू अज़ल से अबद तक है।
- 3 तू इनसान को दुबारा ख़ाक़ होने देता है। तू फ़रमाता है, ‘ऐ आदमज़ादो, दुबारा ख़ाक़ में मिल जाओ!’
- 4 क्योंकि तेरी नज़र में हज़ार साल कल के गुज़रे हुए दिन के बराबर या रात के एक पहर की मानिंद हैं।
- 5 तू लोगों को सैलाब की तरह बहा ले जाता है, वह नींद और उस घास की मानिंद हैं जो सुबह को फूट निकलती है।
- 6 वह सुबह को फूट निकलती और उगती है, लेकिन शाम को मुरझाकर सूख जाती है।
- 7 क्योंकि हम तेरे ग़ज़ब से फ़ना हो जाते और तेरे क़हर से हवासबाख़्ता हो जाते हैं।
- 8 तूने हमारी ख़ताओं को अपने सामने रखा, हमारे पोशीदा गुनाहों को अपने चेहरे के नूर में लाया है।
- 9 चुनौचे हमारे तमाम दिन तेरे क़हर के तहत घटते घटते ख़त्म हो जाते हैं। जब हम अपने सालों के इख़िताम पर पहुँचते हैं तो ज़िंदागी सर्द आह के बराबर ही होती है।
- 10 हमारी उम्र 70 साल या अग़र ज़्यादा ताक़त हो तो 80 साल तक पहुँचती है, और जो दिन फ़रख़र का बाइस थे वह भी तकलीफ़देह और बेकार हैं। ज़ल्द ही वह गुज़र जाते हैं, और हम परिदों की तरह उड़कर चले जाते हैं।

- 11 कौन तेरे गजब की पूरी शिद्दत जानता है? कौन समझता है कि तेरा कहर हमारी खुदातरसी की कमी के मुताबिक ही है?
- 12 चुनौचे हमें हमारे दिनों का सहीह हिसाब करना सिखा ताकि हमारे दिल दानिशमंद हो जाएँ।
- 13 ऐ रब, दुबारा हमारी तरफ रजू फरमा! तू कब तक दूर रहेगा? अपने खादिमों पर तरस खा!
- 14 सुबह को हमें अपनी शफकत से सेर कर! तब हम जिंदगी-भर बाग बाग होंगे और खुशी मनाएँगे।
- 15 हमें उतने ही दिन खुशी दिला जितने तूने हमें पस्त किया है, उतने ही साल जितने हमें दुख सहना पड़ा है।
- 16 अपने खादिमों पर अपने काम और उनकी औलाद पर अपनी अजमत जाहिर कर।
- 17 रब हमारा खुदा हमें अपनी मेहरबानी दिखाए। हमारे हाथों का काम मजबूत कर, हों हमारे हाथों का काम मजबूत कर!

## 91

अल्लाह की पनाह में

- 1 जो अल्लाह तआला की पनाह में रहे वह कादिरे-मुतलक के साये में सुकूनत करेगा।
- 2 मैं कहूँगा, “ऐ रब, तू मेरी पनाह और मेरा किला है, मेरा खुदा जिस पर मैं भरोसा रखता हूँ।”
- 3 क्योंकि वह तुझे चिडीमार के फंदे और मोहलक मरज से छुड़ाएगा।
- 4 वह तुझे अपने शाहपरों के नीचे ढॉप लेगा, और तू उसके परों तले पनाह ले सकेगा। उस की वफादारी तेरी ढाल और पुरता रहेगी।
- 5 रात की दहशतों से खौफ मत खा, न उस तीर से जो दिन के वक़्त चले।
- 6 उस मोहलक मरज से दहशत मत खा जो तारीकी में घूमे फिरे, न उस वबाई बीमारी से जो दोपहर के वक़्त तबाही फैलाए।
- 7 गो तेरे साथ खडे हजार अफ़राद हलाक हो जाएँ और तेरे दहने हाथ दस हजार मर जाएँ, लेकिन तू उस की ज़द में नहीं आएगा।
- 8 तू अपनी आँखों से इसका मुलाहज़ा करेगा, तू खुद बेदीनों की सज़ा देखेगा।
- 9 क्योंकि तूने कहा है, “रब मेरी पनाहगाह है,” तू अल्लाह तआला के साये में छुप गया है।
- 10 इसलिए तेरा किसी बला से वास्ता नहीं पड़ेगा, कोई आफ़त भी तेरे ख़ैमे के करीब फटकने नहीं पाएगी।
- 11 क्योंकि वह अपने फरिशतों को हर राह पर तेरी हिफ़ाज़त करने का हुक़म देगा,
- 12 और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न लगे।
- 13 तू शेरबबरो और जहरीले साँपों पर कदम रखेगा, तू जवान शेरों और अजदहाओं को कुचल देगा।
- 14 रब फरमाता है, “चूँकि वह मुझसे लिपटा रहता है इसलिए मैं उसे बचाऊँगा। चूँकि वह मेरा नाम जानता है इसलिए मैं उसे महफूज़ रखूँगा।
- 15 वह मुझे पुकारेगा तो मैं उस की सुनूँगा। मुसीबत में मैं उसके साथ हूँगा। मैं उसे छुड़ाकर उस की इज़्जत करूँगा।
- 16 मैं उसे उम्र की दराज़ी बख़ूँगा और उस पर अपनी नजात जाहिर करूँगा।”

## 92

अल्लाह की सताइश करने की खुशी

- 1 जबूर। सबत के लिए गीत।
- रब का शुक़ करना भला है। ऐ अल्लाह तआला, तेरे नाम की मदहसराई करना भला है।
- 2 सुबह को तेरी शफकत और रात को तेरी वफा का एलान करना भला है,
- 3 खासकर जब साथ साथ दस तारोंवाला साज़, सितार और सरोद बजते हैं।
- 4 क्योंकि ऐ रब, तूने मुझे अपने कामों से खुश किया है, और तेरे हाथों के काम देखकर मैं खुशी के नारे लगाता हूँ।
- 5 ऐ रब, तेरे काम कितने अजीम, तेरे खयालात कितने गहरे हैं।
- 6 नादान यह नहीं जानता, अहमक को इसकी समझ नहीं आती।
- 7 गो बेदीन घास की तरह फूट निकलते और बदकार सब फलते-फूलते हैं, लेकिन आखिरकार वह हमेशा के लिए हलाक हो जाएंगे।

8 मगर तू, ऐ रब, अबद तक सरबुलंद रहेगा।

9 क्योंकि तेरे दुश्मन, ऐ रब, तेरे दुश्मन यकीनन तबाह हो जाएंगे, बदकार सब तित्तर-बित्तर हो जाएंगे।

10 तूने मुझे जंगली बैल की-सी ताकत देकर ताजा तेल से मसह किया है।

11 मेरी आँख अपने दुश्मनों की शिकस्त से और मेरे कान उन शरीरों के अंजाम से लुत्फअंदोज हुए हैं जो मेरे खिलाफ उठ खड़े हुए हैं।

12 रास्तबाज खजूर के दरख्त की तरह फले-फूलेगा, वह लुबनान के देवदार के दरख्त की तरह बढेगा।

13 जो पौदे रब की सुकूनतगाह में लगाए गए हैं वह हमारे खुदा की बारगाहों में फलें-फूलेंगे।

14 वह बुढापे में भी फल लाएँगे और तरो-ताजा और हे-भरे रहेंगे।

15 उस वक्त भी वह एलान करेंगे, “रब रास्त है। वह मेरी चटान है, और उसमें नारास्ती नहीं होती।”

## 93

अल्लाह अबदी बादशाह है

1 रब बादशाह है, वह जलाल से मुलब्बस है। रब जलाल से मुलब्बस और कुदरत से कमरबस्ता है। यकीनन दुनिया मजबूत बुनियाद पर कायम है, और वह नहीं डगमगाएगी।

2 तेरा तख्त कदीम ज़माने से कायम है, तू अज़ल से मौजूद है।

3 ऐ रब, सैलाब गरज उठे, सैलाब शोर मचाकर गरज उठे, सैलाब ठाठे मारकर गरज उठे।

4 लेकिन एक है जो गहरे पानी के शोर से ज्यादा जोरावर, जो समुंदर की ठाठों से ज्यादा ताकतवर है। रब जो बुलदियों पर रहता है कहीं ज्यादा अज़ीम है।

5 ऐ रब, तेरे अहकाम हर तरह से काबिले-एतमाद हैं। तेरा घर हमेशा तक कुदूसियत से आरास्ता रहेगा।

## 94

कौम पर जुल्म करनेवालों से रिहाई के लिए दुआ

1 ऐ रब, ऐ इंतकाम लेनेवाले खुदा! ऐ इंतकाम लेनेवाले खुदा, अपना नूर चमका।

2 ऐ दुनिया के मुंसिफ, उठकर मगारों को उनके आमाल की मुनासिब सजा दे।

3 ऐ रब, बेदीन कब तक, हाँ कब तक फतह के नारे लगाएँगे?

4 वह कुफ़र की बातें उगलते रहते, तमाम बदकार शेखी मारते रहते हैं।

5 ऐ रब, वह तेरी कौम को कुचल रहे, तेरी मौस्सी मिलकियत पर जुल्म कर रहे हैं।

6 बेवाओ और अजनबियों को वह मौत के घाट उतार रहे, यतीमों को कत्ल कर रहे हैं।

7 वह कहते हैं, “यह रब को नज़र नहीं आता, याक़ब का खुदा ध्यान ही नहीं देता।”

8 ऐ कौम के नादानो, ध्यान दो! ऐ अहमको, तुम्हें कब समझ आएगी?

9 जिसने कान बनाया, क्या वह नहीं सुनता? जिसने आँख को तश्कील दिया क्या वह नहीं देखता?

10 जो अक़वाम को तंबीह करता और इनसान को तालीम देता है क्या वह सज़ा नहीं देता?

11 रब इनसान के खयालात जानता है, वह जानता है कि वह दम-भर के ही हैं।

12 ऐ रब, मुबारक है वह जिसे तू तरबियत देता है, जिसे तू अपनी शरीअत की तालीम देता है

13 ताकि वह मुसीबत के दिनों से आराम पाए और उस वक्त तक सुकून से ज़िंदगी गुज़ारे जब तक बेदीनों के लिए गढा तैयार न हो।

14 क्योंकि रब अपनी कौम को रड़ नहीं करेगा, वह अपनी मौस्सी मिलकियत को तर्क नहीं करेगा।

15 फ़ैसले दुबारा इन्साफ़ पर मबनी होंगे, और तमाम दियानतदार दिल उस की पैरवी करेंगे।

- 16 कौन शरीरों के सामने मेरा दिफा करेगा? कौन मेरे लिए बदकारों का सामना करेगा?
- 17 अगर रब मेरा सहारा न होता तो मेरी जान जल्द ही खामोशी के मुल्क में जा बसती।
- 18 ऐ रब, जब मैं बोला, “मेरा पौंव डगमगाने लगा है” तो तेरी शफकत ने मुझे सँभाला।
- 19 जब तशवीशनाक खयालात मुझे बेचैन करने लगे तो तेरी तसल्लियों ने मेरी जान को ताज़ाम किया।

20 ऐ अल्लाह, क्या तबाही की हुकमत तेरे साथ मुत्तहिद हो सकती है, ऐसी हुकमत जो अपने फरमानों से ज़ुल्म करती है? हरगिज़ नहीं!

21 वह रास्तबाज़ की जान लेने के लिए आपस में मिल जाते और बेकुसूरों को कातिल ठहराते हैं।

22 लेकिन रब मेरा किला बन गया है, और मेरा खुदा मेरी पनाह की चटान साबित हुआ है।

23 वह उनकी नाइनसाफी उन पर वापस आने देगा और उनकी शरीर हरकतों के जवाब में उन्हें तबाह करेगा। रब हमारा खुदा उन्हें नेस्त करेगा।

## 95

परस्तिश और फरमाँबरदारी की दावत

1 आओ, हम शादियाना बजाकर रब की मदहसराई करें, खुशी के नारे लगाकर अपनी नजात की चटान की तमजीद करें!

2 आओ, हम शुक़गुजारी के साथ उसके हुज़ूर आँ, गीत गाकर उस की सताइश करें।

3 क्योंकि रब अज़ीम खुदा और तमाम माबूदों पर अज़ीम बादशाह है।

4 उसके हाथ में ज़मीन की गहराइयों हैं, और पहाड़ की बुलंदियों भी उसी की हैं।

5 समुंदर उसका है, क्योंकि उसने उसे खलक किया। खुशकी उस की है, क्योंकि उसके हाथों ने उसे तरकील दिया।

6 आओ हम सिजदा करें और रब अपने खालिक के सामने झुककर घुटने टेकें।

7 क्योंकि वह हमारा खुदा है और हम उस की चरागाह की कौम और उसके हाथ की भेड़ें हैं। अगर तुम आज उस की

आवाज़ सुनो

8 “तो अपने दिलों को सख्त न करो जिस तरह मरीबा में हुआ, जिस तरह रेगिस्तान में मस्सा में हुआ।

9 वहाँ तुम्हारे बापदादा ने मुझे आजमाया और जाँचा, हालाँकि उन्होंने मेरे काम देख लिए थे।

10 चालीस साल मैं उस नसल से धिन खाता रहा। मैं बोला, ‘उनके दिल हमेशा सहीह राह से हट जाते हैं, और वह मेरी राहें नहीं जानते।’

11 अपने गज़ब में मैंने कसम खाई, ‘यह कभी उस मुल्क में दाखिल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।’”

## 96

दुनिया का खालिक और मुंसिफ

1 रब की तमजीद में नया गीत गाओ, ऐ पूरी दुनिया, रब की मदहसराई करो।

2 रब की तमजीद में गीत गाओ, उसके नाम की सताइश करो, रोज़ बरोज़ उस की नजात की खुशखबरी सुनाओ।

3 कौमों में उसका जलाल और तमाम उम्मतों में उसके अजायब बयान करो।

4 क्योंकि रब अज़ीम और सताइश के बहुत लायक है। वह तमाम माबूदों से महीब है।

5 क्योंकि दीगर कौमों के तमाम माबूद बुत ही हैं जबकि रब ने आसमान को बनाया।

6 उसके हुज़ूर शानो-शौकत, उसके मकदिस में कुदरत और जलाल है।

7 ऐ कौमों के कबीलो, रब की तमजीद करो, रब के जलाल और कुदरत की सताइश करो।

8 रब के नाम को जलाल दो। कुरबानी लेकर उस की बारगाहों में दाखिल हो जाओ।

9 मुकद्दस लिबास से आरास्ता होकर रब को सिजदा करो। पूरी दुनिया उसके सामने लरज़ उठे।

10 कौमों में एलान करो, “रब ही बादशाह है! यकीनन दुनिया मज़बूती से कायम है और नहीं डगमगाएगी। वह इनसाफ से कौमों की अदालत करेगा।”

11 आसमान खुश हो, ज़मीन जशन मनाए! समुंदर और जो कुछ उसमें है खुशी से गरज उठे।

12 मैदान और जो कुछ उसमें है बाग बाग हो। फिर जंगल के दरख्त शादियाना बजाएंगे।

13 वह रब के सामने शादियाना बजाएंगे, क्योंकि वह आ रहा है, वह दुनिया की अदालत करने आ रहा है। वह इनसाफ से दुनिया की अदालत करेगा और अपनी सदाकत से अक्रवाम का फ़ैसला करेगा।

## 97

अल्लाह की सलतनत पर ख़ुशी

- 1 रब बादशाह है! ज़मीन ज़शन मनाए, साहिली इलाके दूर दूर तक ख़ुश हों।
- 2 वह बादलों और गहरे अंधेरे से घिरा रहता है, रास्ती और इनसाफ उसके तख़्त की बुनियाद हैं।
- 3 आग उसके आगे आगे भड़ककर चारों तरफ उसके दुश्मनों को भस्म कर देती है।
- 4 उस की कड़कती बिजलियों ने दुनिया को रौशन कर दिया तो ज़मीन यह देखकर पेचो-ताब खाने लगी।
- 5 रब के आगे आगे, हों पूरी दुनिया के मालिक के आगे आगे पहाड़ मोम की तरह पिघल गए।
- 6 आसमानों ने उस की रास्ती का एलान किया, और तमाम कौमों ने उसका जलाल देखा।
- 7 तमाम बुतपरस्त, हों सब जो बुतों पर फ़ख़र करते हैं शर्मिदा हों। ऐ तमाम माबूदो, उसे सिजदा करो!
- 8 कोहे-सियून सुनकर ख़ुश हुआ। ऐ रब, तैरे फ़ैसलों के बाइस यहदाह की बेटियाँ \* बाग बाग हुईं।
- 9 क्योंकि तू ऐ रब, पूरी दुनिया पर सबसे आला है, तू तमाम माबूदों से सरबुलंद है।

10 तुम जो रब से मुहब्बत रखते हो, बुराई से नफरत करो! रब अपने इमानदारों की जान को महफूज़ रखता है, वह उन्हें बेदीनों के कब्ज़े से छुडाता है।

- 11 रास्तबाज़ के लिए नूर का और दिल के दियातदारों के लिए शादमानी का बीज बोया गया है।
- 12 ऐ रास्तबाज़ो, रब से ख़ुश हो, उसके मुक़द्दस नाम की सताइश करो।

## 98

पूरी दुनिया का शाही मुंसिफ

- 1 रब की तमजीद में नया गीत गाओ, क्योंकि उसने मोजिज़े किए हैं। अपने दहने हाथ और मुक़द्दस बाजू से उसने नजात दी है।
- 2 रब ने अपनी नजात का एलान किया और अपनी रास्ती कौमों के रूबरू जाहिर की है।
- 3 उसने इसराइल के लिए अपनी शफ़क़त और वफ़ा याद की है। दुनिया की इतहाओ ने सब हमारे ख़ुदा की नजात देखी है।
- 4 ऐ पूरी दुनिया, नारे लगाकर रब की मद्दहसराई करो! आपे में न समाओ और ज़शन मनाकर हम्द के गीत गाओ!
- 5 सरोद बजाकर रब की मद्दहसराई करो, सरोद और गीत से उस की सताइश करो।
- 6 तुम और नरसिंगा फूँककर रब बादशाह के हुज़ूर ख़ुशी के नारे लगाओ!
- 7 समुंदर और जो कुछ उसमें है, दुनिया और उसके बाशिदे ख़ुशी से गरज उठें।
- 8 दरिया तालियाँ बजाएँ, पहाड़ मिलकर ख़ुशी मनाएँ,
- 9 वह रब के सामने ख़ुशी मनाएँ। क्योंकि वह ज़मीन की अदालत करने आ रहा है। वह इनसाफ से दुनिया की अदालत करेगा, रास्ती से कौमों का फ़ैसला करेगा।

## 99

कुद्दस ख़ुदा

- 1 रब बादशाह है, अक्रवाम लरज़ उठें! वह क़रूबी फ़रिशतों के दरमियान तख़्तनशीन है, दुनिया डगमगाए!
- 2 कोहे-सियून पर रब अज़ीम है, तमाम अक्रवाम पर सरबुलंद है।
- 3 वह तैरे अज़ीम और पुरजलाल नाम की सताइश करें, क्योंकि वह कुद्दस है।
- 4 वह बादशाह की कुदरत की तमजीद करें जो इनसाफ से प्यार करता है। ऐ अल्लाह, तू ही ने अदल कायम किया, तू ही ने याक़ूब में इनसाफ और रास्ती पैदा की है।
- 5 रब हमारे ख़ुदा की ताज़ीम करो, उसके पाँवों की चौकी के सामने सिजदा करो, क्योंकि वह कुद्दस है।

\* 97:8 एक और मुमकिन तर्ज़ुमा : यहदाह की आबादियाँ।



6 मूसा और हासून उसके इमामों में से थे। समुएल भी उनमें से था जो उसका नाम पुकारते थे। उन्होंने रब को पुकारा, और उसने उनकी सुनी।

7 वह बादल के सतून में से उनसे हमकलाम हुआ, और वह उन अहकाम और फरमानों के ताबे रहे जो उसने उन्हें दिए थे।

8 ऐ रब हमारे खुदा, तूने उनकी सुनी। तू जो अल्लाह है उन्हें मुआफ़ करता रहा, अलबता उन्हें उनकी बुरी हरकतों की सज़ा भी देता रहा।

9 रब हमारे खुदा की ताज़ीम करो और उसके मुकद्दस पहाड़ पर सिजदा करो, क्योंकि रब हमारा खुदा कुद्दूस है।

## 100

अल्लाह की सताइश करो!

1 शक्रगुजारी की कुरबानी के लिए जबूर।

ऐ पूरी दुनिया, खुशी के नारे लगाकर रब की मद्दहसराई करो!

2 खुशी से रब की इबादत करो, जशन मनाते हुए उसके हुज़ूर आओ!

3 जान लो कि रब ही खुदा है। उसी ने हमें खलक किया, और हम उसके हैं, उस की कौम और उस की चरागाह की भेड़ें।

4 शक्र करते हुए उसके दरवाज़ों में दाखिल हो, सताइश करते हुए उस की बारगाहों में हाज़िर हो। उसका शक्र करो, उसके नाम की तमज़ीद करो!

5 क्योंकि रब भला है। उस की शफ़कत अबदी है, और उस की वफ़ादारी पुशत-दर-पुशत कायम है।

## 101

बादशाह की हुकमत कैसी होनी चाहिए?

1 दाऊद का जबूर।

मैं शफ़कत और इनसाफ़ का गीत गाऊंगा। ऐ रब, मैं तेरी मद्दहसराई करूँगा।

2 मैं बड़ी एहतियात से बेइलज़ाम राह पर चलूँगा। लेकिन तू कब मेरे पास आएगा? मैं खुलूसदिली से अपने घर में ज़िंदगी गुज़ाँगा।

3 मैं शरारत की बात अपने सामने नहीं रखता और बुरी हरकतों से नफरत करता हूँ। ऐसी चीज़ें मेरे साथ लिपट न जाएँ।

4 झूटा दिल मुझसे दूर रहे। मैं बुराई को जानना ही नहीं चाहता।

5 जो चुपके से अपने पड़ोसी पर तोहमत लगाए उसे मैं खामोश कराऊँगा, जिसकी आँखें मगरूर और दिल मुतकब्बिर हो उसे बरदाशत नहीं करूँगा।

6 मेरी आँखें मुल्क के वफ़ादारों पर लगी रहती हैं ताकि वह मेरे साथ रहें। जो बेइलज़ाम राह पर चले वही मेरी ख़िदमत करे।

7 धोकेबाज़ मेरे घर में न ठहरे, झूट बोलनेवाला मेरी मौजूदगी में कायम न रहे।

8 हर सुबह को मैं मुल्क के तमाम बेदीनों को खामोश कराऊँगा ताकि तमाम बदकारों को रब के शहर में से मिटाया जाए।

## 102

सिय्यून की बहाली के लिए दुआ (तौबा का पाँचवाँ जबूर)

1 मुसीबतज़दा की दुआ, उस वक्त जब वह निढाल होकर रब के सामने अपनी आहो-जारी उंडेल देता है।

ऐ रब, मेरी दुआ सुन! मदद के लिए मेरी आहें तेरे हुज़ूर पहुँचें।

2 जब मैं मुसीबत में हूँ तो अपना चेहरा मुझसे छुपाए न रख बल्कि अपना कान मेरी तरफ़ झुका। जब मैं पुकारूँ तो जल्द ही मेरी सुन।

3 क्योंकि मेरे दिन धुँके की तरह गायब हो रहे हैं, मेरी हड्डियाँ कोयलों की तरह दहक रही हैं।

4 मेरा दिल घास की तरह झुलसकर सूख गया है, और मैं रोटी खाना भी भूल गया हूँ।

5 आहो-जारी करते करते मेरा जिस्म सुकड़ गया है, जिल्द और हड्डियाँ ही रह गई हैं।

6 मैं रेगिस्तान में दशती उल्लू और खंडरात में छोटे उल्लू की मानिद हूँ।

7 मैं बिस्तर पर जागता रहता हूँ, छत पर तनहा परिदे की मानिद हूँ।

8 दिन-भर मैं दुश्मन मुझे लान-तान करते हैं। जो मेरा मज़ाक़ उड़ते हैं वह मेरा नाम लेकर लानत करते हैं।

9 राख मेरी रोटी है, और जो कुछ पीता हूँ उसमें मेरे आँसू मिले होते हैं।

10 क्योंकि मुझे पर तेरी लानत और तेरा गज़ब नाज़िल हुआ है। तूने मुझे उठाकर ज़मीन पर पटक दिया है।

11 मेरे दिन शाम के ढलनेवाले साये की मानिंद हैं। मैं घास की तरह सूख रहा हूँ।

12 लेकिन तू ऐ रब अबद तक तख़्तनशीन है, तेरा नाम पुशत-दर-पुशत कायम रहता है।

13 अब आ, कोहे-सिय्यून पर रहम कर। क्योंकि उस पर मेहरबानी करने का वक़्त आ गया है, मुकर्ररा वक़्त आ गया है।

14 क्योंकि तेरे खादिमों को उसका एक एक पत्थर प्यारा है, और वह उसके मलबे पर तरस खाते हैं।

15 तब ही क्रौमें रब के नाम से डरेंगी, और दुनिया के तमाम बादशाह तेरे जलाल का ख़ौफ़ खाएंगे।

16 क्योंकि रब सिय्यून को अज़ सरे-नौ तामीर करेगा, वह अपने पूरे जलाल के साथ ज़ाहिर हो जाएगा।

17 मुफ़लिसों की दुआ पर वह ध्यान देगा और उनकी फ़रियादों को हक़ीर नहीं जानेगा।

18 आनेवाली नसल के लिए यह कलमबंद हो जाए ताकि जो क्रौम अभी पैदा नहीं हुई वह रब की सताइश करे।

19 क्योंकि रब ने अपने मक़दिस की बुलंदियों से झँका है, उसने आसमान से ज़मीन पर नज़र डाली है

20 ताकि कैदियों की आहो-जारी सुने और मरनेवालों की जंजीरें खोले।

21 क्योंकि उस की मरजी है कि वह कोहे-सिय्यून पर रब के नाम का एलान करे और यरूश्लम में उस की सताइश करे,

22 कि क्रौमें और सलतनतें मिलकर जमा हो जाएँ और रब की इबादत करें।

23 रास्ते में ही अल्लाह ने मेरी ताकत तोड़कर मेरे दिन मुख़तसर कर दिए हैं।

24 मैं बोला, “ऐ मेरे ख़ुदा, मुझे जिंदों के मुल्क से दूर न कर, मेरी जिंदगी तो अधूरी रह गई है। लेकिन तेरे साल पुशत-दर-पुशत कायम रहते हैं।

25 तूने कदीम ज़माने में ज़मीन की बुनियाद रखी, और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।

26 यह तो तबाह हो जाएंगे, लेकिन तू कायम रहेगा। यह सब कपड़े की तरह धिस फट जाएंगे। तू उन्हें पुराने लिबास की तरह बदल देगा, और वह जाते रहेंगे।

27 लेकिन तू वही का वही रहता है, और तेरी जिंदगी कभी ख़त्म नहीं होती।

28 तेरे खादिमों के फ़रज़द तेरे हुज़ूर बसते रहेंगे, और उनकी औलाद तेरे सामने कायम रहेगी।”

## 103

रब की शफ़क़त की सताइश

1 दाऊद का जबूर।

ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! मेरा रगो-रेशा उसके कुदूस नाम की हम्द करे!

2 ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर और जो कुछ उसने तेरे लिए किया है उसे भूल न जा।

3 क्योंकि वह तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करता, तुझे तमाम बीमारियों से शफ़ा देता है।

4 वह एवज़ाना देकर तेरी जान को मौत के गढे से छुड़ा लेता, तेरे सर को अपनी शफ़क़त और रहमत के ताज से आरास्ता करता है।

5 वह तेरी जिंदगी को अच्छी चीज़ों से सेर करता है, और तू दुबारा जवान होकर उकाब की-सी तकवियत पाता है।

6 रब तमाम मज़लूमों के लिए रास्ती और इनसाफ़ कायम करता है।

7 उसने अपनी राहें मूसा पर और अपने अज़ीम काम इसराईलियों पर ज़ाहिर किए।

8 रब रहीम और मेहरबान है, वह तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है।

9 न वह हमेशा डौंटता रहेगा, न अबद तक नाराज़ रहेगा।

10 न वह हमारी ख़ताओं के मुताबिक़ सज़ा देता, न हमारे गुनाहों का मुनासिब अज़्र देता है।

11 क्योंकि जितना बुलंद आसमान है, उतनी ही अज़ीम उस की शफ़क़त उन पर है जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं।

12 जितनी दूर मशरिक़ मगरिब से है उतना ही उसने हमारे कुसूर हमसे दूर कर दिए हैं।

13 जिस तरह बाप अपने बच्चों पर तरस खाता है उसी तरह रब उन पर तरस खाता है जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं।

- 14 क्योंकि वह हमारी साख्त जानता है, उसे याद है कि हम खाक ही हैं।
- 15 इनसान के दिन घास की मानिंद हैं, और वह जंगली फूल की तरह ही फलता-फूलता है।
- 16 जब उस पर से हवा गुजरे तो वह नहीं रहता, और उसके नामो-निशान का भी पता नहीं चलता।
- 17 लेकिन जो रब का ख़ौफ़ मानें उन पर वह हमेशा तक मेहरबानी करेगा, वह अपनी रास्ती उनके पोतों और नवासों पर भी जाहिर करेगा।
- 18 शर्त यह है कि वह उसके अहद के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारें और ध्यान से उसके अहकाम पर अमल करें।
- 19 रब ने आसमान पर अपना तख़्त कायम किया है, और उस की बादशाही सब पर हुकूमत करती है।
- 20 ऐ रब के फ़रिशतो, उसके ताकतवर सूरमाओ, जो उसके फ़रमान पूरे करते हो ताकि उसका कलाम माना जाए, रब की सताइश करो!
- 21 ऐ तमाम लशकरो, तुम सब जो उसके खादिम हो और उस की मरज़ी पूरी करते हो, रब की सताइश करो!
- 22 तुम सब जिन्हें उसने बनाया, रब की सताइश करो! उस की सलतनत की हर जगह पर उस की तमज़ीद करो। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर!

## 104

### खालिक की हम्दो-सना

- 1 ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! ऐ रब मेरे ख़ुदा, तू निहायत ही अज़ीम है, तू जाहो-जलाल से आरास्ता है।
- 2 तेरी चादर नूर है जिसे तू ओढे रहता है। तू आसमान को ख़ैमे की तरह तानकर
- 3 अपना बालाखाना उसके पानी के बीच में तामीर करता है। बादल तेरा रथ है, और तू हवा के परों पर सवार होता है।
- 4 तू हवाओं को अपने कासिद और आग के शोलों को अपने खादिम बना देता है।
- 5 तूने ज़मीन को मज़बूत बुनियाद पर रखा ताकि वह कभी न डगमगाए।
- 6 सैलाब ने उसे लिबास की तरह ढॉप दिया, और पानी पहाड़ों के ऊपर ही खड़ा हुआ।
- 7 लेकिन तेरे डॉटने पर पानी फ़रार हुआ, तेरी गरजती आवाज़ सुनकर वह एकदम भाग गया।
- 8 तब पहाड़ ऊँचे हुए और वादियाँ उन जगहों पर उतर आईं जो तूने उनके लिए मुकर्रर की थीं।
- 9 तूने एक हद बाँधी जिससे पानी बढ नहीं सकता। आइंदा वह कभी पूरी ज़मीन को नहीं ढॉकने का।
- 10 तू वादियों में चश्मे फूटने देता है, और वह पहाड़ों में से बह निकलते हैं।
- 11 बहते बहते वह ख़ुले मैदान के तमाम जानवरों को पानी पिलाते हैं। जंगली गधे आकर अपनी प्यास बुझाते हैं।
- 12 परिदे उनके किनारों पर बसेरा करते, और उनकी चहचहाती आवाज़ें घने बेल-बूटों में से सुनाई देती हैं।
- 13 तू अपने बालाखाने से पहाड़ों को तर करता है, और ज़मीन तेरे हाथ से सेर होकर हर तरह का फल लाती है।
- 14 तू जानवरों के लिए घास फूटने और इनसान के लिए पौदे उगने देता है ताकि वह ज़मीन की काशतकारी करके रोटी हासिल करे।
- 15 तेरी मैं इनसान का दिल खुश करती, तेरा तेल उसका चेहरा रौशन कर देता, तेरी रोटी उसका दिल मज़बूत करती है।
- 16 रब के दरख्त यानी लुबनान में उसके लगाए हुए देवदार के दरख्त सेराब रहते हैं।
- 17 परिदे उनमें अपने अपने घोंसले बना लेते हैं, और लक़लक़ ज़नीपर के दरख्त में अपना आशियाना।
- 18 पहाड़ों की बुलदियों पर पहाड़ी बकरों का राज है, चटानों में बिज्जू पनाह लेते हैं।
- 19 तूने साल को महीनों में तकसीम करने के लिए चाँद बनाया, और सूरज को गुरुब होने के औकात मालूम है।
- 20 तू अंधेरा फैलने देता है तो दिन ढल जाता है और जंगली जानवर हरकत में आ जाते हैं।
- 21 जवान शेरबकर दहाड़कर शिकार के पीछे पड़ जाते और अल्लाह से अपनी ख़ुराक का मुतालबा करते हैं।
- 22 फिर सूरज तुलू होने लगता है, और वह खिसककर अपने भटों में छुप जाते हैं।
- 23 उस वक़्त इनसान घर से निकलकर अपने काम में लग जाता और शाम तक मसरूफ़ रहता है।
- 24 ऐ रब, तेरे अनगिनत काम कितने अज़ीम हैं! तूने हर एक को हिकमत से बनाया, और ज़मीन तेरी मख़लूक़ात से भरी पड़ी है।

- 25 समुंद्र को देखो, वह कितना बड़ा और वसी है। उसमें बेशुमार जानदार हैं, बड़े भी और छोटे भी।
- 26 उस की सतह पर जहाज़ इधर उधर सफर करते हैं, उस की गहराइयों में लिवियातान फिरता है, वह अजदहा जिसे तूने उसमें उछलने कूदने के लिए तशकील दिया था।
- 27 सब तेरे इंतज़ार में रहते हैं कि तू उन्हें वक़्त पर खाना मुहैया करे।
- 28 तू उनमें ख़ुराक तकसीम करता है तो वह उसे इक़्श करते हैं। तू अपनी मुठ्ठी खोलता है तो वह अच्छी चीज़ों से सेर हो जाते हैं।
- 29 जब तू अपना चेहरा छुपा लेता है तो उनके हवास गुम हो जाते हैं। जब तू उनका दम निकाल लेता है तो वह नेस्त होकर दुबारा खाक में मिल जाते हैं।
- 30 तू अपना दम भेज देता है तो वह पैदा हो जाते हैं। तू ही रूए-ज़मीन को बहाल करता है।
- 31 रब का जलाल अबद तक कायम रहे! रब अपने काम की ख़ुशी मनाए!
- 32 वह ज़मीन पर नज़र डालता है तो वह लरज़ उठती है। वह पहाड़ों को छू देता है तो वह धुआँ छोड़ते हैं।
- 33 मैं उग्र-भर रब की तमज़ीद में गीत गाऊँगा, जब तक जिंदा हूँ अपने ख़ुदा की मद्दहसराई करूँगा।
- 34 मेरी बात उसे पसंद आए! मैं रब से कितना ख़ुश हूँ!
- 35 गुनाहगार ज़मीन से मिट जाएँ और बेदीन नेस्तो-नाबूद हो जाएँ। ऐ मेरी जान, रब की सताइश कर! रब की हम्द हो!

## 105

माज़ी में रब की नजात की हम्द

- 1 रब का शुक़ करो और उसका नाम पुकारो! अक़वाम में उसके कामों का एलान करो।
- 2 साज़ बजाकर उस की मद्दहसराई करो। उसके तमाम अजायब के बारे में लोगों को बताओ।
- 3 उसके मुक़द्दस नाम पर फ़ख़र करो। रब के तालिब दिल से ख़ुश हों।
- 4 रब और उस की कुदरत की दरियाफ़्त करो, हर वक़्त उसके चेहरे के तालिब रहो।
- 5 जो मोज़िज़े उसने किए उन्हें याद करो। उसके इलाही निशान और उसके मुँह के फ़ैसले दोहराते रहो।
- 6 तुम जो उसके खादिम इब्राहीम की औलाद और याक़ूब के फ़रज़द हो, जो उसके बरगुज़ीदा लोग हो, तुम्हें सब कुछ याद रहे!
- 7 वही रब हमारा ख़ुदा है, वही पूरी दुनिया की अदालत करता है।
- 8 वह हमेशा अपने अहद का ख़याल रखता है, उस कलाम का जो उसने हज़ार पुरतों के लिए फ़रमाया था।
- 9 यह वह अहद है जो उसने इब्राहीम से बाँधा, वह वादा जो उसने क़सम खाकर इसहाक़ से किया था।
- 10 उसने उसे याक़ूब के लिए कायम किया ताकि वह उसके मुताबिक़ जिंदागी गुज़ारे, उसने तसदीक़ की कि यह मेरा इसराईल से अबदी अहद है।
- 11 साथ साथ उसने फ़रमाया, “मैं तुझे मुल्के-कनान दूँगा। यह तेरी मीरास का हिस्सा होगा।”
- 12 उस वक़्त वह तादाद में कम और थोड़े ही थे बल्कि मुल्क में अजनबी ही थे।
- 13 अब तक वह मुख़्तलिफ़ कौमों और सलतनतों में घुमते-फिरते थे।
- 14 लेकिन अल्लाह ने उन पर किसी को ज़ुल्म करने न दिया, और उनकी खातिर उसने बादशाहों को डँटा,
- 15 “मेरे मसह किए हुए खादिमों को मत छेड़ना, मेरे नबियों को नुक़सान मत पहुँचाना।”
- 16 फिर अल्लाह ने मुल्के-कनान में काल पड़ने दिया और ख़ुराक का हर ज़ख़ीरा ख़त्म किया।
- 17 लेकिन उसने उनके आगे आगे एक आदमी को मिसर भेजा यानी यूसुफ़ को जो गुलाम बनकर फ़रोख़्त हुआ।
- 18 उसके पाँव और गरदन जंजीरों में जकड़े रहे
- 19 जब तक वह कुछ पूरा न हुआ जिसकी पेशगोई यूसुफ़ ने की थी, जब तक रब के फ़रमान ने उस की तसदीक़ न की।
- 20 तब मिसरी बादशाह ने अपने बंदों को भेजकर उसे रिहाई दी, कौमों के हुक्मरान ने उसे आज़ाद किया।
- 21 उसने उसे अपने घराने पर निगरान और अपनी तमाम मिलकियत पर हुक्मरान मुकर्रर किया।
- 22 यूसुफ़ को फ़िरौन के रईसों को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ चलाने और मिसरी बुजुर्गों को हिकमत की तालीम देने की जिम्मादारी भी दी गई।

- 23 फिर याकूब का खानदान मिसर आया, और इसराईल हाम के मुल्क में अजनबी की हैसियत से बसने लगा।
- 24 वहाँ अल्लाह ने अपनी कौम को बहुत फलने फूलने दिया, उसने उसे उसके दुश्मनों से ज्यादा ताकतवर बना दिया।
- 25 साथ साथ उसने मिसरियों का रवैया बदल दिया, तो वह उस की कौम इसराईल से नफरत करके रब के खादिमों से चालाकियाँ करने लगे।
- 26 तब अल्लाह ने अपने खादिम मूसा और अपने चुने हुए बंदे हारून को मिसर में भेजा।
- 27 मुल्के-हाम में आकर उन्होंने उनके दरमियान अल्लाह के इलाही निशान और मोजिजे दिखाए।
- 28 अल्लाह के हुक्म पर मिसर पर तारीकी छा गई, मुल्क में अंधेरा हो गया। लेकिन उन्होंने उसके फरमान न माने।
- 29 उसने उनका पानी खून में बदलकर उनकी मछलियों को मरवा दिया।
- 30 मिसर के मुल्क पर मेंढकों के गोल छा गए जो उनके हुक्मरानों के अंदरूनी कमरों तक पहुँच गए।
- 31 अल्लाह के हुक्म पर मिसर के पूरे इलाके में मक्खियों और जुओं के गोल फैल गए।
- 32 बारिश की बजाए उसने उनके मुल्क पर ओले और दहकते शोले बरसाए।
- 33 उसने उनकी अंगूर की बेलें और अंजीर के दरख्त तबाह कर दिए, उनके इलाके के दरख्त तोड़ डाले।
- 34 उसके हुक्म पर अनगिनत टिट्टियाँ अपने बच्चों समेत मुल्क पर हमलाआवर हुई।
- 35 वह उनके मुल्क की तमाम हरियाली और उनके खेतों की तमाम पैदावार चट कर गई।
- 36 फिर अल्लाह ने मिसर में तमाम पहलौठों को मार डाला, उनकी मरदानगी का पहला फल तमाम हुआ।
- 37 इसके बाद वह इसराईल को चाँदी और सोने से नवाज़कर मिसर से निकाल लाया। उस वक़्त उसके कर्बीलों में ठोकर खानेवाला एक भी नहीं था।
- 38 मिसर ख़ुश था जब वह रवाना हुए, क्योंकि उन पर इसराईल की दहशत छा गई थी।
- 39 दिन को अल्लाह ने उनके ऊपर बादल कम्बल की तरह बिछा दिया, रात को आग मुहैया की ताकि रौशनी हो।
- 40 जब उन्होंने ख़ुराक माँगी तो उसने उन्हें बटेर पहुँचाकर आसमानी रोटी से सेर किया।
- 41 उसने चटान को चाक किया तो पानी फूट निकला, और रेगिस्तान में पानी की नदियाँ बहने लगीं।
- 42 क्योंकि उसने उस मुकद्दस वादे का खयाल रखा जो उसने अपने खादिम इब्राहीम से किया था।
- 43 चुन्नेचे वह अपनी चुनी हुई कौम को मिसर से निकाल लाया, और वह ख़ुशी और शादमानी के नारे लगाकर निकल आए।
- 44 उसने उन्हें दीगर अक़वाम के ममालिक दिए, और उन्होंने दीगर उम्मतों की मेहनत के फल पर कब्ज़ा किया।
- 45 क्योंकि वह चाहता था कि वह उसके अहकाम और हिदायात के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारे। रब की हम्द हो।

## 106

### अल्लाह का फजल और इसराईल की सरकशी

- 1 रब की हम्द हो! रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।
- 2 कौन रब के तमाम अज़ीम काम सुना सकता, कौन उस की मुनासिब तमज़ीद कर सकता है?
- 3 मुबारक है वह जो इनसाफ़ कायम रखते, जो हर वक़्त रास्त काम करते हैं।
- 4 ऐ रब, अपनी कौम पर मेहरबानी करते वक़्त मेरा खयाल रख, नजात देते वक़्त मेरी भी मदद कर
- 5 ताकि मैं तेरे चुने हुए लोगों की ख़ुशहाली देख सकूँ और तेरी कौम की ख़ुशी में शरीक होकर तेरी मीरास के साथ सताइश कर सकूँ।
- 6 हमने अपने बापदादा की तरह गुनाह किया है, हमसे नाइनसाफी और बेदीनी सरज़द हुई है।
- 7 जब हमारे बापदादा मिसर में थे तो उन्हें तेरे मोजिज़ों की समझ न आई और तेरी मुतअदिद मेहरबानियाँ याद न रही बल्कि वह समुंदर यानी बहरे-कुलजूम पर सरकश हुए।
- 8 तो भी उसने उन्हें अपने नाम की खातिर बचाया, क्योंकि वह अपनी कुदरत का इज़हार करना चाहता था।
- 9 उसने बहरे-कुलजूम को झिडका तो वह ख़ुरक हो गया। उसने उन्हें समुंदर की गहराइयों में से यों गुज़रने दिया जिस तरह रेगिस्तान में से।

- 10 उसने उन्हें नफरत करनेवाले के हाथ से छुड़ाया और एवजाना देकर दुश्मन के हाथ से रिहा किया।
- 11 उनके मुखालिफ पानी में डूब गए। एक भी न बचा।
- 12 तब उन्होंने अल्लाह के फरमानों पर ईमान लाकर उस की मदहसराई की।
- 13 लेकिन जल्द ही वह उसके काम भूल गए। वह उस की मरजी का इतज़ार करने के लिए तैयार न थे।
- 14 रेगिस्तान में शदीद लालच में आकर उन्होंने वही बयाबान में अल्लाह को आजमाया।
- 15 तब उसने उनकी दरखास्त पूरी की, लेकिन साथ साथ मोहलक वबा भी उनमें फैला दी।
- 16 खैमागाह में वह मूसा और रब के मुक़द्दस इमाम हारून से हसद करने लगे।
- 17 तब ज़मीन खुल गई, और उसने दातन को हड़प कर लिया, अबीराम के जत्थे को अपने अंदर दफन कर लिया।
- 18 आग उनके जत्थे में भड़क उठी, और बेदीन नज़रे-आतिश हुए।
- 19 वह कोहे-होरिब यानी सीना के दामन में बछड़े का बुत ढालकर उसके सामने औंधे मुँह हो गए।
- 20 उन्होंने अल्लाह को जलाल देने के बजाए घास खानेवाले बैल की पूजा की।
- 21 वह अल्लाह को भूल गए, हालाँकि उसी ने उन्हें छुड़ाया था, उसी ने मिसर में अज़ीम काम किए थे।
- 22 जो मोजिज़े हाम के मुल्क में हुए और जो जलाली वाक़ियात बहरे-कुलजुम पर पेश आए थे वह सब अल्लाह के हाथ से हुए थे।
- 23 चुनौचे अल्लाह ने फरमाया कि मैं उन्हें नेस्तो-नाबूद करूँगा। लेकिन उसका चुना हुआ खादिम मूसा रखने में खड़ा हो गया ताकि उसके ग़ज़ब को इस्राईलियों को मिटाने से रोके। सिर्फ़ इस वजह से अल्लाह अपने इरादे से बाज़ आया।
- 24 फिर उन्होंने कनान के खुशगवार मुल्क को हक़ीर जाना। उन्हें यकीन नहीं था कि अल्लाह अपना वादा पूरा करेगा।
- 25 वह अपने खैमों में बुडबुडाने लगे और रब की आवाज़ सुनने के लिए तैयार न हुए।
- 26 तब उसने अपना हाथ उनके खिलाफ़ उठाया ताकि उन्हें वही रेगिस्तान में हलाक करे
- 27 और उनकी औलाद को दीगर अक़वाम में फ़ैककर मुख्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दे।
- 28 वह बाल-फ़ग़ूर देवता से लिपट गए और मुरदों के लिए पेश की गई कुरबानियों का गोशत खाने लगे।
- 29 उन्होंने अपनी हरकतों से रब को तैश दिलाया तो उनमें मोहलक बीमारियाँ फैल गई।
- 30 लेकिन फ़ीनहास ने उठकर उनकी अदालत की। तब वबा स्क गई।
- 31 इसी बिना पर अल्लाह ने उसे पुरत-दर-पुरत और अबद तक रास्तबाज़ करार दिया।
- 32 मरीबा के चश्मे पर भी उन्होंने रब को गुस्सा दिलाया। उन्हीं के बाइस मूसा का बुरा हाल हुआ।
- 33 क्योंकि उन्होंने उसके दिल में इतनी तलखी पैदा की कि उसके मुँह से बेजा बातें निकली।
- 34 जो दीगर क़ौमों मुल्क में थीं उन्हें उन्होंने नेस्त न किया, हालाँकि रब ने उन्हें यह करने को कहा था।
- 35 न सिर्फ़ यह बल्कि वह ग़ैरक़ौमों से रिरता बाँधकर उनमें घुल मिल गए और उनके रस्मो-रिवाज़ अपना लिए।
- 36 वह उनके बूतों की पूजा करने में लग गए, और यह उनके लिए फंदे का बाइस बन गए।
- 37 वह अपने बेटे-बेटियों को बदरूहों के हज़ूर कुरबान करने से भी न कतराए।
- 38 हाँ, उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को कनान के देवताओं के हज़ूर पेश करके उनका मासूम खून बहाया। इससे मुल्क की बेहृमती हुई।
- 39 वह अपनी ग़लत हरकतों से नापाक और अपने ज़िनाकाराना कामों से अल्लाह से बेवफ़ा हुए।
- 40 तब अल्लाह अपनी क़ौम से सख़्त नाराज़ हुआ, और उसे अपनी मौस्सी मिलकियत से घिन आने लगी।
- 41 उसने उन्हें दीगर क़ौमों के हवाले किया, और जो उनसे नफरत करते थे वह उन पर हुकूमत करने लगे।
- 42 उनके दुश्मनों ने उन पर ज़ुल्म करके उनको अपना मुती बना लिया।
- 43 अल्लाह बार बार उन्हें छुड़ाता रहा, हालाँकि वह अपने सरकश मनसख़ों पर तुले रहे और अपने कुसर में डूबते गए।
- 44 लेकिन उसने मदद के लिए उनकी आहें सुनकर उनकी मुसीबत पर ध्यान दिया।
- 45 उसने उनके साथ अपना अहद याद किया, और वह अपनी बड़ी शफ़क़त के बाइस पछताया।

46 उसने होने दिया कि जिसने भी उन्हें गिरफ्तार किया उसने उन पर तरस खाया।

47 ऐ रब हमारे खुदा, हमें बचा! हमें दीगर कौमों से निकालकर जमा कर। तब ही हम तेरे मुकद्दस नाम की सताइश करेंगे और तेरे काबिले-तारीफ कामों पर फ़ख़र करेंगे।

48 अज़ल से अबद तक रब, इसराईल के खुदा की हम्द हो। तमाम कौम कहे, “आमीन! रब की हम्द हो!”

## पाँचवीं किताब 107-15

### 107

#### नजातयाफ़ता की शुक्रगुज़ारी

1 रब का शुक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।

2 रब के नजातयाफ़ता जिनको उसने एवज़ाना देकर दुश्मन के क़ब्ज़े से छुड़ाया है सब यह कहें।

3 उसने उन्हें मशारिक़ से मग़रिब तक और शिमाल से जुनूब तक दीगर ममालिक से इक़ठा किया है।

4 बाज़ रेगिस्तान में सहीह रास्ता भूलकर वीरान रास्ते पर मारे मारे फिरे, और कहीं भी आबादी न मिली।

5 भूक और प्यास के मारे उनकी जान निढाल हो गई।

6 तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

7 उसने उन्हें सहीह राह पर लाकर ऐसी आबादी तक पहुँचाया जहाँ रह सकते थे।

8 वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

9 क्योंकि वह प्यासी जान को आसूदा करता और भूकी जान को कसरत की अच्छी चीज़ों से सेर करता है।

10 दूसरे जंजीरों और मुसीबत में जकड़े हुए अंधेरे और गहरी तारीकी में बसते थे,

11 क्योंकि वह अल्लाह के फ़रमानों से सरकश हुए थे, उन्होंने अल्लाह तआला का फ़ैसला हकीर जाना था।

12 इसलिए अल्लाह ने उनके दिल को तकलीफ़ में मुब्तला करके पस्त कर दिया। जब वह ठोकर खाकर गिर गए और

मदद करनेवाला कोई न रहा था

13 तो उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

14 वह उन्हें अंधेरे और गहरी तारीकी से निकाल लाया और उनकी जंजीरें तोड़ डालीं।

15 वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

16 क्योंकि उसने पीतल के दरवाज़े तोड़ डाले, लोहे के कुंडे टुकड़े टुकड़े कर दिए हैं।

17 कुछ लोग अहमक थे, वह अपने सरकश चाल-चलन और गुनाहों के बाइस परेशानियों में मुब्तला हुए।

18 उन्हें हर ख़राक से धिन आने लगी, और वह मौत के दरवाज़ों के क़रीब पहुँचे।

19 तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें उनकी तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

20 उसने अपना कलाम भेजकर उन्हें शफ़ा दी और उन्हें मौत के गढ़े से बचाया।

21 वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

22 वह शुक्रगुज़ारी की कुरबानियाँ पेश करें और ख़ुशी के नारे लगाकर उसके कामों का चर्चा करें।

23 बाज़ बहरी जहाज़ में बैठ गए और तिजारत के सिलसिले में समुंद्र पर सफ़र करते करते दूर-दराज़ इलाकों तक पहुँचे।

24 उन्होंने रब के अज़ीम काम और समुंद्र की गहराइयों में उसके मोजिज़े देखे हैं।

25 क्योंकि रब ने हुक्म दिया तो आँधी चली जो समुंद्र की मौज़ें बुलंदियों पर लाई।

26 वह आसमान तक चढ़ी और गहराइयों तक उतरी। परेशानी के बाइस मल्लाहों की हिम्मत जवाब दे गई।

27 वह शराब में धुत आदमी की तरह लडखड़ाते और डगमगाते रहे। उनकी तमाम हिकमत नाकाम साबित हुई।

28 तब उन्होंने अपनी मुसीबत में रब को पुकारा, और उसने उन्हें तमाम परेशानियों से छुटकारा दिया।

29 उसने समुंद्र को थमा दिया और ख़ामोशी फैल गई, लहरें साफ़ित हो गईं।

30 मुसाफ़िर पुरसूकन हालात देखकर ख़ुश हुए, और अल्लाह ने उन्हें मनज़िले-मक़सूद तक पहुँचाया।

31 वह रब का शुक्र करें कि उसने अपनी शफ़क़त और अपने मोजिज़े इनसान पर ज़ाहिर किए हैं।

- 32 वह कौम की जमात में उस की ताज्जीम करें, बुजुर्गों की मजलिस में उस की हम्द करें।
- 33 कई जगहों पर वह दरियाओ को रेगिस्तान में और चश्मों को प्यासी ज़मीन में बदल देता है।
- 34 बाशियों की बुराई देखकर वह जरखेज ज़मीन को कल्लर के बयाबान में बदल देता है।
- 35 दूसरी जगहों पर वह रेगिस्तान को झील में और प्यासी ज़मीन को चश्मों में बदल देता है।
- 36 वहाँ वह भूकों को बसा देता है ताकि आबादियाँ कायम करें।
- 37 तब वह खेत और अंगूर के बाग लगाते हैं जो खूब फल लाते हैं।
- 38 अल्लाह उन्हें बरकत देता है तो उनकी तादाद बहुत बढ़ जाती है। वह उनके रेवडों को भी कम होने नहीं देता।
- 39 जब कभी उनकी तादाद कम हो जाती और वह मुसीबत और दुख के बोझ तले खाक में दब जाते हैं
- 40 तो वह शरफा पर अपनी हिकारत उंडेल देता और उन्हें रेगिस्तान में भगाकर सहीह रास्ते से दूर फिरने देता है।
- 41 लेकिन मुहताज को वह मुसीबत की दलदल से निकालकर सरफराज करता और उसके खानदानों को भेड़-बकरियों की तरह बढ़ा देता है।
- 42 सीधी राह पर चलनेवाले यह देखकर खुश होंगे, लेकिन बेइनसाफ का मुँह बंद किया जाएगा।
- 43 कौन दानिशमंद है? वह इस पर ध्यान दे, वह रब की मेहरबानियों पर गौर करे।

## 108

जंग में रब पर उम्मीद

1 दाऊद का जबूर। गीत।

ऐ अल्लाह, मेरा दिल मज़बूत है। मैं साज़ बजाकर तेरी मद्दहसराई करूँगा। ऐ मेरी जान, जाग उठ!

2 ऐ सितार और सरोद, जाग उठो! मैं तुलूए-सुबह को जगाऊँगा।

3 ऐ रब, मैं कौमों में तेरी सताइश, उम्मतों में तेरी मद्दहसराई करूँगा।

4 क्योंकि तेरी शफ़क़त आसमान से कहीं बुलंद है, तेरी वफ़ादारी बादलों तक पहुँचती है।

5 ऐ अल्लाह, आसमान पर सरफ़राज हो! तेरा जलाल पूरी दुनिया पर छा जाए।

6 अपने दहने हाथ से मदद करके मेरी सुन ताकि जो तुझे प्यारे हैं नजात पाएँ।

7 अल्लाह ने अपने मक़दिस में फ़रमाया है, “मैं फ़तह मनाते हुए सिकम को तकसीम करूँगा और वादीए-सुक्कात को नापकर बाँट दूँगा।

8 जिलियाद मेरा है और मनस्सी मेरा है। इफ़राईम मेरा ख़ोद और यहदाह मेरा शाही असा है।

9 मोआब मेरा गुस्ल का बरतन है, और अदोम पर मैं अपना जूता फेंक दूँगा। मैं फ़िलिस्ती मुल्क पर जोरदार नारे लगाऊँगा!”

10 कौन मुझे किलाबंद शहर में लाएगा? कौन मेरी राहनुमाई करके मुझे अदोम तक पहुँचाएगा?

11 ऐ अल्लाह, तू ही यह कर सकता है, गो तूने हमें रद्द किया है। ऐ अल्लाह, तू हमारी फौजों का साथ नहीं देता जब वह लड़ने के लिए निकलती हैं।

12 मुसीबत में हमें सहारा दे, क्योंकि इस वक़्त इनसानी मदद बेकार है।

13 अल्लाह के साथ हम ज़बरदस्त काम करेंगे, क्योंकि वही हमारे दुश्मनों को कुचल देगा।

## 109

बेरहम मुखालिफ़ के सामने अल्लाह से दुआ

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ अल्लाह मेरे फ़ख़र, ख़ामोश न रह!

2 क्योंकि उन्होंने अपना बेदीन और फ़रेबदेह मुँह मेरे खिलाफ़ खोलकर झूटी ज़बान से मेरे साथ बात की है।

3 वह मुझे नफ़रत के अलाफ़ाज़ से घेरकर बिलावजह मुझसे लड़े हैं।

4 मेरी मुहब्बत के जवाब में वह मुझ पर अपनी दुश्मनी का इज़हार करते हैं। लेकिन दुआ ही मेरा सहारा है।

5 मेरी नेकी के एवज़ वह मुझे नुक़सान पहुँचाते और मेरे प्यार के बदले मुझसे नफ़रत करते हैं।



6 ऐ अल्लाह, किसी बेदीन को मुकर्रर कर जो मेरे दुश्मन के खिलाफ गवाही दे, कोई मुखालिफ उसके दहने हाथ खडा हो जाए जो उस पर इलजाम लगाए।

7 मुकदमे में उसे मुजरिम ठहराया जाए। उस की दुआएँ भी उसके गुनाहों में शमार की जाएँ।

8 उस की जिदगी मुखतसर हो, कोई और उस की जिम्मादारी उठाए।

9 उस की औलाद यतीम और उस की बीवी बेवा बन जाए।

10 उसके बच्चे आवारा फिरें और भीक माँगने पर मजबूर हो जाएँ। उन्हें उनके तबाहशुदा घरों से निकलकर इधर उधर रोटी ढूँडनी पड़े।

11 जिससे उसने कर्जा लिया था वह उसके तमाम माल पर कब्जा करे, और अजनबी उस की मेहनत का फल लूट लें।

12 कोई न हो जो उस पर मेहरबानी करे या उसके यतीमों पर रहम करे।

13 उस की औलाद को मिटाया जाए, अगली पुष्ट में उनका नामो-निशान तक न रहे।

14 रब उसके बापदादा की नाइनसाफी का लिहाज करे, और वह उस की माँ की खता भी दरगुजर न करे।

15 उनका बुरा किरदार रब के सामने रहे, और वह उनकी याद रूप-जमीन पर से मिटा डाले।

16 क्योंकि उसको कभी मेहरबानी करने का खयाल न आया बल्कि वह मुसीबतजदा, मुहताज और शिकस्तादिल का ताक्कुब करता रहा ताकि उसे मार डाले।

17 उसे लानत करने का शौक था, चुनाँचे लानत उसी पर आए! उसे बरकत देना पसंद नहीं था, चुनाँचे बरकत उससे दूर रहे।

18 उसने लानत चादर की तरह ओढ़ ली, चुनाँचे लानत पानी की तरह उसके जिस्म में और तेल की तरह उस की हड्डियों में सरायत कर जाए।

19 वह कपड़े की तरह उससे लिपटी रहे, पटके की तरह हमेशा उससे कमरबस्ता रहे।

20 रब मेरे मुखालिफों को और उन्हें जो मेरे खिलाफ बुरी बातें करते हैं यही सजा दे।

21 लेकिन तू ऐ रब क्रादिर-मुतलक, अपने नाम की खातिर मेरे साथ मेहरबानी का सुलक कर। मुझे बचा, क्योंकि तेरी ही शफकत तसल्लीबख्शा है।

22 क्योंकि मैं मुसीबतजदा और जरूरतमंद हूँ। मेरा दिल मेरे अंदर मजसूह है।

23 शाम के ढलते साये की तरह मैं खत्म होनेवाला हूँ। मुझे टिड्डी की तरह झाड़कर दूर कर दिया गया है।

24 रोजा रखते रखते मेरे घटने डगमगाने लगे और मेरा जिस्म सूख गया है।

25 मैं अपने दुश्मनों के लिए मजाक का निशाना बन गया हूँ। मुझे देखकर वह सर हिलाकर “तौबा तौबा” कहते हैं।

26 ऐ रब मेरे खुदा, मेरी मदद कर! अपनी शफकत का इजहार करके मुझे छुड़ा!

27 उन्हें पता चले कि यह तेरे हाथ से पेश आया है, कि तू रब ही ने यह सब कुछ किया है।

28 जब वह लानत करें तो मुझे बरकत दे! जब वह मेरे खिलाफ उठें तो बख्शा दे कि शरमिदा हो जाएँ जबकि तेरा खादिम खुश हो।

29 मेरे मुखालिफ रसवाई से मुलबबस हो जाएँ, उन्हें शरमिदगी की चादर ओढ़नी पड़े।

30 मैं जोर से रब की सताइश करूँगा, बहुतों के दरमियान उस की हम्द करूँगा।

31 क्योंकि वह मुहताज के दहने हाथ खडा रहता है ताकि उसे उनसे बचाए जो उसे मुजरिम ठहराते हैं।

## 110

अबदी बादशाह और इमाम

1 दाऊद का जबूर।

रब ने मेरे रब से कहा, “मेरे दहने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।”

2 रब सिध्यून् से तेरी सलतनत की सरहदें बढ़ाकर कहेगा, “आस-पास के दुश्मनों पर हुकूमत कर!”

3 जिस दिन तू अपनी फौज को खडा करेगा तेरी कौम खुशी से तेरे पीछे हो लेगी। तू मुकद्दस शानो-शौकत से आरास्ता होकर तुलए-सुबह के बातिन से अपनी जवानी की ओस पाएगा।

4 रब ने क्रसम खाई है और इससे पछताएगा नहीं, “तू अबद तक इमाम है, ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क था।”

- 5 रब तेरे दहने हाथ पर रहेगा और अपने गज़ब के दिन दीगर बादशाहों को चूर चूर करेगा।
- 6 वह कौमों में अदालत करके मैदान को लाशों से भर देगा और दूर तक सरों को पाश पाश करेगा।
- 7 रास्ते में वह नदी से पानी पी लेगा, इसलिए अपना सर उठाए फिरेगा।

## 111

अल्लाह के फ़ज़ल की तमज़ीद

- 1 रब की हम्द हो! मैं पूरे दिल से दियानतदारों की मजलिस और जमात में रब का शुक़ करूँगा।
- 2 रब के काम अज़ीम हैं। जो उनसे लुत्फ़अंदोज़ होते हैं वह उनका ख़ूब मुतालआ करते हैं।
- 3 उसका काम शानदार और जलाली है, उस की रास्ती अबद तक कायम रहती है।
- 4 वह अपने मोज़िजे याद कराता है। रब मेहरबान और रहीम है।
- 5 जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं उन्हें उसने ख़ुराक मुहैया की है। वह हमेशा तक अपने अहद का खयाल रखेगा।
- 6 उसने अपनी कौम को अपने ज़बरदस्त कामों का एलान करके कहा, “मैं तुम्हें ग़ैरकौमों की मीरास अता करूँगा।”
- 7 जो भी काम उसके हाथ करें वह सच्चे और रास्त हैं। उसके तमाम अहकाम काबिले-एतमाद हैं।
- 8 वह अज़ल से अबद तक कायम हैं, और उन पर सच्चाई और दियानतदारी से अमल करना है।
- 9 उसने अपनी कौम का फ़िघा भेजकर उसे छुड़ाया है। उसने फ़रमाया, “मेरा कौम के साथ अहद अबद तक कायम रहे।”

उसका नाम कुदूस और पुरजलाल है।

10 हिकमत इससे शुरू होती है कि हम रब का ख़ौफ़ मानें। जो भी उसके अहकाम पर अमल करे उसे अच्छी समझ हासिल होगी। उस की हम्द हमेशा तक कायम रहेगी।

## 112

अल्लाह के ख़ौफ़ की तारीफ़

- 1 रब की हम्द हो! मुबारक है वह जो अल्लाह का ख़ौफ़ मानता और उसके अहकाम से बहुत लुत्फ़अंदोज़ होता है।
- 2 उसके फ़रज़द मुल्क में ताकतवर होंगे, और दियानतदार की नसल को बरकत मिलेगी।
- 3 दौलत और ख़ुशहाली उसके घर में रहेगी, और उस की रास्तबाज़ी अबद तक कायम रहेगी।
- 4 अंधेरे में चलते वक़्त दियानतदारों पर रौशनी चमकती है। वह रास्तबाज़, मेहरबान और रहीम है।
- 5 मेहरबानी करना और कर्ज़ देना बा-बरकत है। जो अपने मामलों को इनसाफ़ से हल करे वह अच्छा करेगा,
- 6 क्योंकि वह अबद तक नहीं डगमगाएगा। रास्तबाज़ हमेशा ही याद रहेगा।
- 7 वह बुरी ख़बर मिलने से नहीं डरता। उसका दिल मज़बूत है, और वह रब पर भरोसा रखता है।
- 8 उसका दिल मुस्तहकम है। वह सहमा हुआ नहीं रहता, क्योंकि वह जानता है कि एक दिन मैं अपने दुश्मनों की शिकस्त देखकर खुश हूँगा।
- 9 वह फ़ैयाज़ी से ज़रतमदों में ख़ैरात बिखेर देता है। उस की रास्तबाज़ी हमेशा कायम रहेगी, और उसे इज़ज़त के साथ सरफ़राज़ किया जाएगा।
- 10 बेदीन यह देखकर नाराज़ हो जाएगा, वह दौत पीस पीसकर नेस्त हो जाएगा। जो कुछ बेदीन चाहते हैं वह जाता रहेगा।

## 113

अल्लाह की अज़मत और मेहरबानी

- 1 रब की हम्द हो! ऐ रब के खादिमो, रब के नाम की सताइश करो, रब के नाम की तारीफ़ करो।
- 2 रब के नाम की अब से अबद तक तमज़ीद हो।
- 3 तुलूए-सुबह से गुरुबे-आफ़ताब तक रब के नाम की हम्द हो।
- 4 रब तमाम अक़वाम से सरबुलंद है, उसका जलाल आसमान से अज़ीम है।
- 5 कौन रब हमारे ख़ुदा की मानिंद है जो बुलंदियों पर तख़्तनशीन है
- 6 और आसमानो-ज़मीन को देखने के लिए नीचे झुकता है?
- 7 पस्तहाल को वह खाक में से उठाकर पाँवों पर खड़ा करता, मुहताज को राख़ से निकालकर सरफ़राज़ करता है।
- 8 वह उसे शुरफ़ा के साथ, अपनी कौम के शुरफ़ा के साथ बिठा देता है।

9 बाँझ को वह औलाद अता करता है ताकि वह घर में खुशी से जिंदगी गुजार सके। रब की हम्द हो!

## 114

मिसर में अल्लाह के मोजिजात

- 1 जब इसराईल मिसर से रवाना हुआ और याकूब का धराना अजनबी ज़बान बोलनेवाली कौम से निकल आया
- 2 तो यहूदाह अल्लाह का मकदिस बन गया और इसराईल उस की बादशाही।
- 3 यह देखकर समुंदर भाग गया और दरियाए-यरदन पीछे हट गया।
- 4 पहाड़ मेंढों की तरह कूदने और पहाड़ियाँ जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगीं।
- 5 ऐ समुंदर, क्या हुआ कि तू भाग गया है? ऐ यरदन, क्या हुआ कि तू पीछे हट गया है?
- 6 ऐ पहाड़ो, क्या हुआ कि तुम मेंढों की तरह कूदने लगे हो? ऐ पहाड़ियो, क्या हुआ कि तुम जवान भेड़-बकरियों की तरह फाँदने लगीं हो?
- 7 ऐ ज़मीन, रब के हुज़र, याकूब के खुदा के हुज़र लरज़ उठ,
- 8 उसके सामने थरथरा जिसने चटान को जोहड़ में और सख्त पत्थर को चश्मे में बदल दिया।

## 115

अल्लाह ही की हम्द हो

- 1 ऐ रब, हमारी ही इज्जत की खातिर काम न कर बल्कि इसलिए कि तेरे नाम को जलाल मिले, इसलिए कि तू मेहरबान और वफ़ादार खुदा है।
- 2 दीगर अक्रवाम कयों कहे, “उनका खुदा कहाँ है?”
- 3 हमारा खुदा तो आसमान पर है, और जो जी चाहे करता है।
- 4 उनके बूत सोने-चाँदी के हैं, इनसान के हाथ ने उन्हें बनाया है।
- 5 उनके मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते। उनकी आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।
- 6 उनके कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते, उनकी नाक हैं लेकिन वह सूँघ नहीं सकते।
- 7 उनके हाथ हैं, लेकिन वह छू नहीं सकते। उनके पाँव हैं, लेकिन वह चल नहीं सकते। उनके गले से आवाज़ नहीं निकलती।
- 8 जो बूत बनाते हैं वह उनकी मानिंद हो जाएँ, जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिसो-हरकत हो जाएँ।
- 9 ऐ इसराईल, रब पर भरोसा रख! वही तेरा सहारा और तेरी ढाल है।
- 10 ऐ हास्न के घराने, रब पर भरोसा रख! वही तेरा सहारा और तेरी ढाल है।
- 11 ऐ रब का खौफ माननेवालो, रब पर भरोसा रखो! वही तुम्हारा सहारा और तुम्हारी ढाल है।
- 12 रब ने हमारा खयाल किया है, और वह हमें बरकत देगा। वह इसराईल के घराने को बरकत देगा, वह हास्न के घराने को बरकत देगा।
- 13 वह रब का खौफ माननेवालों को बरकत देगा, खाह छोटे हों या बड़े।
- 14 रब तुम्हारी तादाद में इज़ाफ़ा करे, तुम्हारी भी और तुम्हारी औलाद की भी।
- 15 रब जो आसमानो-ज़मीन का खालिक है तुम्हें बरकत से मालामाल करे।
- 16 आसमान तो रब का है, लेकिन ज़मीन को उसने आदमज़ादों को बाख़्श दिया है।
- 17 ऐ रब, मुरदे तेरी सताइश नहीं करते, खामोशी के मुल्क में उतरनेवालों में से कोई भी तेरी तमजीद नहीं करता।
- 18 लेकिन हम रब की सताइश अब से अबद तक करेंगे। रब की हम्द हो!

## 116

मौत से नजात पर शुक़गुज़ारी

- 1 मैं रब से मुहब्बत रखता हूँ, क्योंकि उसने मेरी आवाज़ और मेरी इल्तिजा सुनी है।
- 2 उसने अपना कान मेरी तरफ़ झुकाया है, इसलिए मैं उम्र-भर उसे पुकारूँगा।

3 मौत ने मुझे अपनी जंजीरों में जकड़ लिया, और पाताल की परेशानियों मुझ पर गालिब आईं। मैं मुसीबत और दुख में फँस गया।

4 तब मैंने रब का नाम पुकारा, “ऐ रब, मेहरबानी करके मुझे बचा!”

5 रब मेहरबान और रास्त है, हमारा खुदा रहीम है।

6 रब सादा लोगों की हिफाजत करता है। जब मैं पस्तहाल था तो उसने मुझे बचाया।

7 ऐ मेरी जान, अपनी आरामगाह के पास वापस आ, क्योंकि रब ने तेरे साथ भलाई की है।

8 क्योंकि ऐ रब, तूने मेरी जान को मौत से, मेरी आँखों को आँसू बहाने से और मेरे पाँवों को फिसलने से बचाया है।

9 अब मैं जिंदों की ज़मीन में रहकर रब के हुज़ूर चलाँगा।

10 मैं ईमान लाया और इसलिए बोला, “मैं शदीद मुसीबत में फँस गया हूँ।”

11 मैं सख्त घबरा गया और बोला, “तमाम इनसान दरोगो हैं।”

12 जो भलाइयाँ रब ने मेरे साथ की हैं उन सबके एवज़ मैं क्या दूँ?

13 मैं नजात का प्याला उठाकर रब का नाम पुकारूँगा।

14 मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने ही अपनी मन्तते पूरी करूँगा।

15 रब की निगाह में उसके ईमानदारों की मौत गिराँकदर है।

16 ऐ रब, यकीनन मैं तेरा खादिम, हूँ तेरा खादिम और तेरी खादिमा का बेटा हूँ। तूने मेरी जंजीरों को तोड़ डाला है।

17 मैं तुझे शक्रगुजारी की कुरबानी पेश करके तेरा नाम पुकारूँगा।

18 मैं रब के हुज़ूर उस की सारी क़ौम के सामने ही अपनी मन्तते पूरी करूँगा।

19 मैं रब के घर की बारगाहों में, ऐ यस्-शलम तेरे बीच में ही उन्हें पूरा करूँगा। रब की हम्द हो।

## 117

तमाम अक़वाम अल्लाह की हम्द करें

1 ऐ तमाम अक़वाम, रब की तमजीद करो! ऐ तमाम उम्मतो, उस की मदहसराई करो!

2 क्योंकि उस की हम पर शफ़क़त अज़ीम है, और रब की वफ़ादारी अबदी है। रब की हम्द हो!

## 118

अल्लाह की मदद पर शक्रगुजारी

1 रब का शुक़ करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफ़क़त अबदी है।

2 इसराईल कहे, “उस की शफ़क़त अबदी है।”

3 हासून का धराना कहे, “उस की शफ़क़त अबदी है।”

4 रब का ख़ौफ़ माननेवाले कहे, “उस की शफ़क़त अबदी है।”

5 मुसीबत में मैंने रब को पुकारा तो रब ने मेरी सुनकर मेरे पाँवों को खुले मैदान में कायम कर दिया है।

6 रब मेरे हक़ में है, इसलिए मैं नहीं डरूँगा। इनसान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?

7 रब मेरे हक़ में है और मेरा सहारा है, इसलिए मैं उनकी शिक़स्त देखकर खुश हूँगा जो मुझसे नफ़रत करते हैं।

8 रब में पनाह लेना इनसान पर एतमाद करने से कहीं बेहतर है।

9 रब में पनाह लेना शरफ़ा पर एतमाद करने से कहीं बेहतर है।

10 तमाम अक़वाम ने मुझे घेर लिया, लेकिन मैंने अल्लाह का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।

11 उन्होंने मुझे घेर लिया, हूँ चारों तरफ़ से घेर लिया, लेकिन मैंने अल्लाह का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।

12 वह शहद की मक्खियों की तरह चारों तरफ़ से मुझ पर हमलाआवर हुए, लेकिन कौँटदार झाड़ियों की आग की तरह जल्द ही बुझ गए। मैंने रब का नाम लेकर उन्हें भगा दिया।

13 दुश्मन ने मुझे धक्का देकर गिराने की कोशिश की, लेकिन रब ने मेरी मदद की।

14 रब मेरी कुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है।

- 15 खुशी और फतह के नारे रास्तबाजों के खैमों में गँजते हैं, “रब का दहना हाथ जबरदस्त काम करता है!
- 16 रब का दहना हाथ सरफराज करता है, रब का दहना हाथ जबरदस्त काम करता है!”
- 17 मैं नहीं मरूँगा बल्कि जिंदा रहकर रब के काम बयान करूँगा।
- 18 गो रब ने मेरी सख्त तादीब की है, उसने मुझे मौत के हवाले नहीं किया।

- 19 रास्ती के दरवाजे मेरे लिए खोल दो ताकि मैं उनमें दाखिल होकर रब का शुक़ करूँ।
- 20 यह रब का दरवाज़ा है, इसी में रास्तबाज़ दाखिल होते हैं।

- 21 मैं तेरा शुक़ करता हूँ, क्योंकि तूने मेरी सुनकर मुझे बचाया है।
- 22 जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।
- 23 यह रब ने किया और देखने में कितना हैरतअंगेज़ है।
- 24 इसी दिन रब ने अपनी कुदरत दिखाई है। आओ, हम शादियाना बजाकर उस की खुशी मनाएँ।
- 25 ऐ रब, मेहरबानी करके हमें बचा! ऐ रब, मेहरबानी करके कामयाबी अता फरमा!

26 मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है। रब की सुकूनतगाह से हम तुम्हें बरकत देते हैं।

27 रब ही खुदा है, और उसने हमें रौशनी बरख्शी है। आओ, ईद की कुरबानी रस्सियों से कुरबानगाह के सींगों के साथ बान्धो।

28 तू मेरा खुदा है, और मैं तेरा शुक़ करता हूँ। ऐ मेरे खुदा, मैं तेरी ताज़ीम करता हूँ।

29 रब की सताइश करो, क्योंकि वह भला है और उस की शफक़त अबदी है।

## 119

### अल्लाह के कलाम की शान

#### 1

- 1 मुबारक है वह जिनका चाल-चलन बेइलज़ाम है, जो रब की शरीअत के मुताबिक जिंदगी गुज़ारते हैं।
- 2 मुबारक है वह जो उसके अहकाम पर अमल करते और पूरे दिल से उसके तालिब रहते हैं,
- 3 जो बर्दी नहीं करते बल्कि उस की राहों पर चलते हैं।
- 4 तूने हमें अपने अहकाम दिए हैं, और तू चाहता है कि हम हर लिहाज़ से उनके ताबे रहें।
- 5 काश मेरी राहें इतनी पुख्ता हों कि मैं साबितक़दमी से तेरे अहकाम पर अमल करूँ!
- 6 तब मैं शर्मिदा नहीं हूँगा, क्योंकि मेरी आँखें तेरे तमाम अहकाम पर लगी रहेंगी।
- 7 जितना मैं तेरे बा-इनसाफ़ फ़ैसलों के बारे में सीखूँगा उतना ही दियानतदार दिल से तेरी सताइश करूँगा।
- 8 तेरे अहकाम पर मैं हर वक़्त अमल करूँगा। मुझे पूरी तरह तर्क न कर!

#### 2

- 9 नौजवान अपनी राह को किस तरह पाक रखे? इस तरह कि तेरे कलाम के मुताबिक जिंदगी गुज़ारे।
- 10 मैं पूरे दिल से तेरा तालिब रहा हूँ। मुझे अपने अहकाम से भटकने न दे।
- 11 मैंने तेरा कलाम अपने दिल में महफूज़ रखा है ताकि तेरा गुनाह न करूँ।
- 12 ऐ रब, तेरी हम्द हो! मुझे अपने अहकाम सिखा।
- 13 अपने होंटों से मैं दूसरों को तेरे मुँह की तमाम हिदायात सुनाता हूँ।
- 14 मैं तेरे अहकाम की राह से उतना लुत्फअंदोज़ होता हूँ जितना कि हर तरह की दौलत से।
- 15 मैं तेरी हिदायात में महबे-ख़याल रहूँगा और तेरी राहों को तकता रहूँगा।
- 16 मैं तेरे फ़रमानों से लुत्फअंदोज़ होता हूँ और तेरा कलाम नहीं भूलता।

#### 3

- 17 अपने ख़ादिम से भलाई कर ताकि मैं जिंदा रहूँ और तेरे कलाम के मुताबिक जिंदगी गुज़ारूँ।
- 18 मेरी आँखों को खोल ताकि तेरी शरीअत के अजायब देखूँ।
- 19 दुनिया में मैं परदेसी ही हूँ। अपने अहकाम मुझसे छुपाए न रख!
- 20 मेरी जान हर वक़्त तेरी हिदायात की आरजू करते करते निढाल हो रही है।

- 21 तू मगरूरो को डौंटता है। उन पर लानत जो तेरे अहकाम से भटक जाते हैं!
- 22 मुझे लोगों की तौहीन और तहकीर से रिहाई दे, क्योंकि मैं तेरे अहकाम के ताबे रहा हूँ।
- 23 जो बुजुर्ग मेरे खिलाफ मनस्बे बाँधने के लिए बैठ गए हैं, तेरा खादिम तेरे अहकाम में महवे-खयाल रहता है।
- 24 तेरे अहकाम से ही मैं लुफ उठाता हूँ, वही मेरे मुशीर हैं।

## 4

- 25 मेरी जान खाक में दब गई है। अपने कलाम के मुताबिक मेरी जान को ताजादम कर।
- 26 मैंने अपनी राहें बयान की तो तूने मेरी सुनी। मुझे अपने अहकाम सिखा।
- 27 मुझे अपने अहकाम की राह समझने के काबिल बना ताकि तेरे अजायब में महवे-खयाल रहूँ।
- 28 मेरी जान दुख के मारे निढाल हो गई है। मुझे अपने कलाम के मुताबिक तकवियत दे।
- 29 फ़रेब की राह मुझसे दूर रख और मुझे अपनी शरीअत से नवाज़।
- 30 मैंने वफ़ा की राह इख्तियार करके तेरे आईन अपने सामने रखे हैं।
- 31 मैं तेरे अहकाम से लिपटा रहता हूँ। ऐ रब, मुझे शर्मिदा न होने दे।
- 32 मैं तेरे फ़रमानों की राह पर दौड़ता हूँ, क्योंकि तूने मेरे दिल को कुशादगी बख़्शी है।

## 5

- 33 ऐ रब, मुझे अपने आईन की राह सिखा तो मैं उम्र-भर उन पर अमल करूँगा।
- 34 मुझे समझ अता कर ताकि तेरी शरीअत के मुताबिक जिंदगी गुज़ारूँ और पूरे दिल से उसके ताबे रहूँ।
- 35 अपने अहकाम की राह पर मेरी राहनुमाई कर, क्योंकि यही मैं पसंद करता हूँ।
- 36 मेरे दिल को लालच में आने न दे बल्कि उसे अपने फ़रमानों की तरफ़ मायल कर।
- 37 मेरी आँखों को बातिल चीज़ों से फेर ले, और मुझे अपनी राहों पर सँभालकर मेरी जान को ताजादम कर।
- 38 जो वादा तूने अपने खादिम से किया वह पूरा कर ताकि लोग तेरा ख़ौफ़ माँगे।
- 39 जिस ससवाई से मुझे ख़ौफ़ है उसका खतरा दूर कर, क्योंकि तेरे अहकाम अच्छे हैं।
- 40 मैं तेरी हिदायात का शदीद आरज़ूमंद हूँ, अपनी रास्ती से मेरी जान को ताजादम कर।

## 6

- 41 ऐ रब, तेरी शफ़क़त और वह नजात जिसका वादा तूने किया है मुझ तक पहुँचे
- 42 ताकि मैं बेइज़्ज़ती करनेवाले को जवाब दे सकूँ। क्योंकि मैं तेरे कलाम पर भरोसा रखता हूँ।
- 43 मेरे मुँह से सच्चाई का कलाम न छीन, क्योंकि मैं तेरे फ़रमानों के इतज़ार में हूँ।
- 44 मैं हर वक़्त तेरी शरीअत की पैरवी करूँगा, अब से अबद तक उसमें कायम रहूँगा।
- 45 मैं खुले मैदान में चलता फिस्सूँगा, क्योंकि तेरे आईन का तालिब रहता हूँ।
- 46 मैं शर्म किए बग़ैर बादशाहों के सामने तेरे अहकाम बयान करूँगा।
- 47 मैं तेरे फ़रमानों से लुफ़अंदोज़ होता हूँ, वह मुझे प्यारे हैं।
- 48 मैं अपने हाथ तेरे फ़रमानों की तरफ़ उठाऊँगा, क्योंकि वह मुझे प्यारे हैं। मैं तेरी हिदायात में महवे-खयाल रहूँगा।

## 7

- 49 उस बात का खयाल रख जो तूने अपने खादिम से की और जिससे तूने मुझे उम्मीद दिलाई है।
- 50 मुसीबत में यही तसल्ली का बाइस रहा है कि तेरा कलाम मेरी जान को ताजादम करता है।
- 51 मगरूर मेरा हद से ज़्यादा मज़ाक उड़ाते हैं, लेकिन मैं तेरी शरीअत से दूर नहीं होता।
- 52 ऐ रब, मैं तेरे कदीम फ़रमान याद करता हूँ तो मुझे तसल्ली मिलती है।
- 53 बेदीनों को देखकर मैं आग-बग़ला हो जाता हूँ, क्योंकि उन्होंने तेरी शरीअत को तर्क किया है।
- 54 जिस घर में मैं परदेसी हूँ उसमें मैं तेरे अहकाम के गीत गाता रहता हूँ।
- 55 ऐ रब, रात को मैं तेरा नाम याद करता हूँ, तेरी शरीअत पर अमल करता रहता हूँ।
- 56 यह तेरी बख़्शिश है कि मैं तेरे आईन की पैरवी करता हूँ।

## 8

- 57 रब मेरी मीरास है। मैंने तेरे फ़रमानों पर अमल करने का वादा किया है।
- 58 मैं पूरे दिल से तेरी शफ़क़त का तालिब रहा हूँ। अपने वादे के मुताबिक मुझ पर मेहरबानी कर।
- 59 मैंने अपनी राहों पर ध्यान देकर तेरे अहकाम की तरफ़ कदम बढ़ाए हैं।

- 60 मैं नहीं झिजकता बल्कि भागकर तेरे अहकाम पर अमल करने की कोशिश करता हूँ।  
 61 बेदीनों के रस्सों ने मुझे जकड़ लिया है, लेकिन मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।  
 62 आधी रात को मैं जाग उठता हूँ ताकि तेरे रास्त फरमानों के लिए तेरा शुक्र करूँ।  
 63 मैं उन सबका साथी हूँ जो तेरा खौफ मानते हैं, उन सबका दोस्त जो तेरी हिदायात पर अमल करते हैं।  
 64 ऐ रब, दुनिया तेरी शफ़क़त से मामूर है। मुझे अपने अहकाम सिखा!

## 9

- 65 ऐ रब, तूने अपने कलाम के मुताबिक़ अपने खादिम से भलाई की है।  
 66 मुझे सहीह इम्तियाज़ और इरफ़ान सिखा, क्योंकि मैं तेरे अहकाम पर ईमान रखता हूँ।  
 67 इससे पहले कि मुझे पस्त किया गया मैं आवाज़ फिरता था, लेकिन अब मैं तेरे कलाम के ताबे रहता हूँ।  
 68 तू भला है और भलाई करता है। मुझे अपने आईन सिखा!  
 69 मग़स्रों ने झूट बोलकर मुझ पर कीचड़ उछाली है, लेकिन मैं पूरे दिल से तेरी हिदायात की फ़रमाँबरदारी करता हूँ।  
 70 उनके दिल अकड़कर बेहिस हो गए हैं, लेकिन मैं तेरी शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।  
 71 मेरे लिए अच्छा था कि मुझे पस्त किया गया, क्योंकि इस तरह मैंने तेरे अहकाम सीख लिए।  
 72 जो शरीअत तेरे मुँह से सादिर हुई है वह मुझे सोने-चाँदी के हज़ारों सिक्कों से ज्यादा पसंद है।

## 10

- 73 तेरे हाथों ने मुझे बनाकर मज़बूत बुनियाद पर रख दिया है। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि तेरे अहकाम सीख लूँ।  
 74 जो तेरा खौफ़ मानते हैं वह मुझे देखकर खुश हो जाएँ, क्योंकि मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में रहता हूँ।  
 75 ऐ रब, मैंने जान लिया है कि तेरे फ़ैसले रास्त हैं। यह भी तेरी वफ़ादारी का इज़हार है कि तूने मुझे पस्त किया है।  
 76 तेरी शफ़क़त मुझे तसल्ली दे, जिस तरह तूने अपने खादिम से वादा किया है।  
 77 मुझ पर अपने रहम का इज़हार कर ताकि मेरी जान में जान आए, क्योंकि मैं तेरी शरीअत से लुत्फ़अंदोज़ होता हूँ।  
 78 जो मग़स्र मुझे झूट से पस्त कर रहे हैं वह शरमिदा हो जाएँ। लेकिन मैं तेरे फ़रमानों में महवे-खयाल रहूँगा।  
 79 काश जो तेरा खौफ़ मानते और तेरे अहकाम जानते हैं वह मेरे पास वापस आएँ!  
 80 मेरा दिल तेरे आईन की पैरवी करने में बेइलज़ाम रहे ताकि मेरी सस्वाई न हो जाए।

## 11

- 81 मेरी जान तेरी नज़ात की आरज़ करते करते निढाल हो रही है, मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में हूँ।  
 82 मेरी आँखें तेरे वादे की राह देखते देखते धुँधली रही हैं। तू मुझे कब तसल्ली देगा?  
 83 मैं धुँप में सुकड़ी हुई मशक की मानिद हूँ लेकिन तेरे फ़रमानों को नहीं भूलता।  
 84 तेरे खादिम को मज़ीद कितनी देर इंतज़ार करना पड़ेगा? तू मेरा ताक्कुब करनेवालों की अदालत कब करेगा?  
 85 जो मग़स्र तेरी शरीअत के ताबे नहीं होते उन्होंने मुझे फँसाने के लिए गाढे खोद लिए हैं।  
 86 तेरे तमाम अहकाम पुरवफ़ा हैं। मेरी मदद कर, क्योंकि वह झूट का सहारा लेकर मेरा ताक्कुब कर रहे हैं।  
 87 वह मुझे रूए-ज़मीन पर से मिटाने के करीब ही हैं, लेकिन मैंने तेरे आईन को तर्क नहीं किया।  
 88 अपनी शफ़क़त का इज़हार करके मेरी जान को ताज़ादम कर ताकि तेरे मुँह के फ़रमानों पर अमल करूँ।

## 12

- 89 ऐ रब, तेरा कलाम अबद तक आसमान पर कायमो-दायम है।  
 90 तेरी वफ़ादारी पुरत-दर-पुरत रहती है। तूने ज़मीन की बुनियाद रखी, और वह वहीं की वहीं बरकरार रहती है।  
 91 आज तक आसमानो-ज़मीन तेरे फ़रमानों को पूरा करने के लिए हाज़िर रहते हैं, क्योंकि तमाम चीज़ें तेरी खिदमत करने के लिए बनाई गई हैं।  
 92 अगर तेरी शरीअत मेरी खुशी न होती तो मैं अपनी मुसीबत में हलाक हो गया होता।  
 93 मैं तेरी हिदायात कभी नहीं भूलूँगा, क्योंकि उन्हीं के ज़रीए तू मेरी जान को ताज़ादम करता है।  
 94 मैं तेरा ही हूँ, मुझे बचा! क्योंकि मैं तेरे अहकाम का तालिब रहा हूँ।  
 95 बेदीन मेरी ताक में बैठ गए हैं ताकि मुझे मार डालें, लेकिन मैं तेरे आईन पर ध्यान देता रहूँगा।  
 96 मैंने देखा है कि हर कामिल चीज़ की हद होती है, लेकिन तेरे फ़रमान की कोई हद नहीं होती।  
 13  
 97 तेरी शरीअत मुझे कितनी प्यारी है! दिन-भर मैं उसमें महवे-खयाल रहता हूँ।

- 98 तेरा फरमान मुझे मेरे दुश्मनों से ज्यादा दानिशमंद बना देता है, क्योंकि वह हमेशा तक मेरा खजाना है।  
 99 मुझे अपने तमाम उस्तादों से ज्यादा समझ हासिल है, क्योंकि मैं तेरे आईन में महवे-खयाल रहता हूँ।  
 100 मुझे बुजुर्गों से ज्यादा समझ हासिल है, क्योंकि मैं वफादारी से तेरे अहकाम की पैरवी करता हूँ।  
 101 मैंने हर बुरी राह पर कदम रखने से गुरेज किया है ताकि तेरे कलाम से लिपटा रहूँ।  
 102 मैं तेरे फरमानों से दूर नहीं हुआ, क्योंकि तू ही ने मुझे तालीम दी है।  
 103 तेरा कलाम कितना लजीज़ है, वह मेरे मुँह में शहद से ज्यादा मीठा है।  
 104 तेरे अहकाम से मुझे समझ हासिल होती है, इसलिए मैं झूट की हर राह से नफ़रत करता हूँ।

#### 14

- 105 तेरा कलाम मेरे पाँवों के लिए चराग है जो मेरी राह को रौशन करता है।  
 106 मैंने कसम खाई है कि तेरे रास्त फरमानों की पैरवी करूँगा, और मैं यह वादा पूरा भी करूँगा।  
 107 मुझे बहुत पस्त किया गया है। ऐ रब, अपने कलाम के मुताबिक मेरी जान को ताज़ादम कर।  
 108 ऐ रब, मेरे मुँह की रज़ाकाराना कुरबानियों को पसंद कर और मुझे अपने आईन सिखा!  
 109 मेरी जान हमेशा खतरे में है, लेकिन मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।  
 110 बेदीनों ने मेरे लिए फंदा तैयार कर रखा है, लेकिन मैं तेरे फरमानों से नहीं भटका।  
 111 तेरे अहकाम मेरी अबदी मीरास बन गए हैं, क्योंकि उनसे मेरा दिल खुशी से उछलता है।  
 112 मैंने अपना दिल तेरे अहकाम पर अमल करने की तरफ़ मायल किया है, क्योंकि इसका अज़्र अबदी है।

#### 15

- 113 मैं दोदिलों से नफ़रत लेकिन तेरी शरीअत से मुहब्बत करता हूँ।  
 114 तू मेरी पनाहगाह और मेरी ढाल है, मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में रहता हूँ।  
 115 ऐ बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ, क्योंकि मैं अपने खुदा के अहकाम से लिपटा रहूँगा।  
 116 अपने फरमान के मुताबिक मुझे सँभाल ताकि जिंदा रहूँ। मेरी आस टूटने न दे ताकि शरमिदा न हो जाऊँ।  
 117 मेरा सहारा बन ताकि बचकर हर वक्त तेरे आईन का लिहाज़ रखूँ।  
 118 तू उन सबको रद्द करता है जो तेरे अहकाम से भटके फिरते हैं, क्योंकि उनकी धोकेबाजी फ़रेब ही है।  
 119 तू ज़मीन के तमाम बेदीनों को नापाक चाँदी से खारिज की हुई मैल की तरह फेंककर नेस्त कर देता है, इसलिए तेरे फरमान मुझे प्यारे हैं।  
 120 मेरा जिस्म तुझसे दहशत खाकर थरथरता है, और मैं तेरे फ़ैसलों से डरता हूँ।

#### 16

- 121 मैंने रास्त और बा-इनसाफ़ काम किया है, चुनाँचे मुझे उनके हवाले न कर जो मुझ पर जुल्म करते हैं।  
 122 अपने खादिम की खुशहाली का ज़ामिन बनकर मग़स्टों को मुझ पर जुल्म करने न दे।  
 123 मेरी आँखें तेरी नजात और तेरे रास्त वादे की राह देखते देखते रह गई हैं।  
 124 अपने खादिम से तेरा सुल्क तेरी शफ़क़त के मुताबिक हो। मुझे अपने अहकाम सिखा।  
 125 मैं तेरा ही खादिम हूँ। मुझे फ़हम अता फ़रमा ताकि तेरे आईन की पूरी समझ आए।  
 126 अब वक़्त आ गया है कि रब कदम उठाए, क्योंकि लोगों ने तेरी शरीअत को तोड़ डाला है।  
 127 इसलिए मैं तेरे अहकाम को सोने बल्कि ख़ालिस सोने से ज्यादा प्यार करता हूँ।  
 128 इसलिए मैं एहतियात से तेरे तमाम आईन के मुताबिक जिंदागी गुज़ारता हूँ। मैं हर फ़रेबदेह राह से नफ़रत करता हूँ।

#### 17

- 129 तेरे अहकाम ताज्जुब-अगेज़ है, इसलिए मेरी जान उन पर अमल करती है।  
 130 तेरे कलाम का इनकिशाफ़ रौशनी बख़्शता और सादालौह को समझ अता करता है।  
 131 मैं तेरे फरमानों के लिए इतना प्यासा हूँ कि मुँह खोलकर हॉप रहा हूँ।  
 132 मेरी तरफ़ रूज़ फ़रमा और मुझ पर वही मेहरबानी कर जो तू उन सब पर करता है जो तेरे नाम से प्यार करते हैं।  
 133 अपने कलाम से मेरे कदम मज़बूत कर, किसी भी गुनाह को मुझ पर हकूमत न करने दे।  
 134 फ़िघा देकर मुझे इनसान के जुल्म से छुटकारा दे ताकि मैं तेरे अहकाम के ताबे रहूँ।  
 135 अपने चेहरे का नूर अपने खादिम पर चमका और मुझे अपने अहकाम सिखा।  
 136 मेरी आँखों से आँसुओं की नदियाँ बह रही हैं, क्योंकि लोग तेरी शरीअत के ताबे नहीं रहते।



## 18

- 137 ऐ रब, तू रास्त है, और तेरे फ़ैसले दुस्त है।  
 138 तूने रास्ती और बड़ी वफ़ादारी के साथ अपने फ़रमान जारी किए हैं।  
 139 मेरी जान ग़ैरत के बाइस तबाह हो गई है, क्योंकि मेरे दुश्मन तेरे फ़रमान भूल गए हैं।  
 140 तेरा कलाम आजमाकर पाक-साफ़ साबित हुआ है, तेरा खादिम उसे प्यार करता है।  
 141 मुझे ज़लील और हकीर जाना जाता है, लेकिन मैं तेरे आईन नहीं भूलता।  
 142 तेरी रास्ती अबदी है, और तेरी शरीअत सच्चाई है।  
 143 मुसीबत और परेशानी मुझे पर ग़ालिब आ गई हैं, लेकिन मैं तेरे अहकाम से लुफ़अंदोज़ होता हूँ।  
 144 तेरे अहकाम अबद तक रास्त हैं। मुझे समझ अता फ़रमा ताकि मैं जीता रहूँ।

## 19

- 145 मैं पूरे दिल से पुकारता हूँ, “ऐ रब, मेरी सुन! मैं तेरे आईन के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारूँगा।”  
 146 मैं पुकारता हूँ, “मुझे बचा! मैं तेरे अहकाम की पैरवी करूँगा।”  
 147 पौ फटने से पहले पहले मैं उठकर मदद के लिए पुकारता हूँ। मैं तेरे कलाम के इंतज़ार में हूँ।  
 148 रात के वक़्त ही मेरी आँखें खुल जाती हैं ताकि तेरे कलाम पर ग़ौरो-ख़ौज़ करूँ।  
 149 अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी आवाज़ सुन! ऐ रब, अपने फ़रमानों के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।  
 150 जो चालाकी से मेरा ताक्कुब कर रहे हैं वह करीब पहुँच गए हैं। लेकिन वह तेरी शरीअत से इतहाई दूर हैं।  
 151 ऐ रब, तू करीब ही है, और तेरे अहकाम सच्चाई हैं।  
 152 बड़ी देर पहले मुझे तेरे फ़रमानों से मालूम हुआ है कि तूने उन्हें हमेशा के लिए कायम रखा है।

## 20

- 153 मेरी मुसीबत का खयाल करके मुझे बचा! क्योंकि मैं तेरी शरीअत नहीं भूलता।  
 154 अदालत में मेरे हक़ में लड़कर मेरा एवज़ाना दे ताकि मेरी जान छूट जाए। अपने वादे के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।  
 155 नजात बेदीनों से बहुत दूर है, क्योंकि वह तेरे अहकाम के तालिब नहीं होते।  
 156 ऐ रब, तू मूतअद्दि तरीकों से अपने रहम का इज़हार करता है। अपने आईन के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।  
 157 मेरा ताक्कुब करनेवालों और मेरे दुश्मनों की बड़ी तादाद है, लेकिन मैं तेरे अहकाम से दूर नहीं हुआ।  
 158 बेवफ़ाओं को देखकर मुझे धिन आती है, क्योंकि वह तेरे कलाम के मुताबिक़ जिंदगी नहीं गुज़ारते।  
 159 देख, मुझे तेरे अहकाम से प्यार है। ऐ रब, अपनी शफ़क़त के मुताबिक़ मेरी जान को ताज़ादम कर।  
 160 तेरे कलाम का लुब्बे-लुबाब सच्चाई है, तेरे तमाम रास्त फ़रमान अबद तक कायम हैं।

## 21

- 161 सरदार बिलावजह मेरा पीछा करते हैं, लेकिन मेरा दिल तेरे कलाम से ही डरता है।  
 162 मैं तेरे कलाम की खुशी उस की तरह मनाता हूँ जिसे कसरत का माले-ग़नीमत मिल गया हो।  
 163 मैं झूट से नफ़रत करता बल्कि धिन खाता हूँ, लेकिन तेरी शरीअत मुझे प्यारी है।  
 164 मैं दिन में सात बार तेरी सताइश करता हूँ, क्योंकि तेरे अहकाम रास्त हैं।  
 165 जिन्हें शरीअत प्यारी है उन्हें बड़ा सुकून हासिल है, वह किसी भी चीज़ से ठोकर खाकर नहीं गिरेंगे।  
 166 ऐ रब, मैं तेरी नजात के इंतज़ार में रहते हुए तेरे अहकाम की पैरवी करता हूँ।  
 167 मेरी जान तेरे फ़रमानों से लिपटी रहती है, वह उसे निहायत प्यारे हैं।  
 168 मैं तेरे आईन और हिदायात की पैरवी करता हूँ, क्योंकि मेरी तमाम राहें तेरे सामने हैं।

## 22

- 169 ऐ रब, मेरी आहें तेरे सामने आएँ, मुझे अपने कलाम के मुताबिक़ समझ अता फ़रमा।  
 170 मेरी इल्तिजाएँ तेरे सामने आएँ, मुझे अपने कलाम के मुताबिक़ छुड़ा!  
 171 मेरे होंटों से हम्दो-सना फूट निकले, क्योंकि तू मुझे अपने अहकाम सिखाता है।  
 172 मेरी ज़बान तेरे कलाम की मदहसराई करे, क्योंकि तेरे तमाम फ़रमान रास्त हैं।  
 173 तेरा हाथ मेरी मदद करने के लिए तैयार रहे, क्योंकि मैंने तेरे अहकाम इख़्तियार किए हैं।  
 174 ऐ रब, मैं तेरी नजात का आरज़ूद हूँ, तेरी शरीअत से लुफ़अंदोज़ होता हूँ।

175 मेरी जान जिंदा रहे ताकि तेरी सताइश कर सके। तेरे आईन मेरी मदद करें।

176 मैं भटकी हुई भेड़ की तरह आवारा फिर रहा हूँ। अपने खादिम को तलाश कर, क्योंकि मैं तेरे अहकाम नहीं भूलता।

## 120

तोहमत लगानेवालों से रिहाई के लिए दुआ

1 ज़ियारत का गीत।

मुसीबत में मैंने रब को पुकारा, और उसने मेरी सुनी।

2 ऐ रब, मेरी जान को झूटे होंटों और फरेबदेह ज़बान से बचा।

3 ऐ फरेबदेह ज़बान, वह तेरे साथ किया करे, मज़ीद तुझे क्या दे?

4 वह तुझ पर जंगजू के तेज़ तीर और दहकते कोयले बरसाए!

5 मुझ पर अफ़सोस! मुझे अजनबी मुल्क मसक में, कीदार के खैमों के पास रहना पड़ता है।

6 इतनी देर से अमन के दुश्मनों के पास रहने से मेरी जान तंग आ गई है।

7 मैं तो अमन चाहता हूँ, लेकिन जब कभी बोलूँ तो वह जंग करने पर तुले होते हैं।

## 121

इनसान का बफ़ादार मुहाफ़िज़

1 ज़ियारत का गीत।

मैं अपनी आँखों को पहाड़ों की तरफ उठाता हूँ। मेरी मदद कहाँ से आती है?

2 मेरी मदद रब से आती है, जो आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक है।

3 वह तेरा पाँव फिसलने नहीं देगा। तेरा मुहाफ़िज़ ऊँघने का नहीं।

4 यक़ीनन इसराईल का मुहाफ़िज़ न ऊँघता है, न सोता है।

5 रब तेरा मुहाफ़िज़ है, रब तेरे दहने हाथ पर सायबान है।

6 न दिन को सूरज, न रात को चाँद तुझे जरूर पहुँचाएगा।

7 रब तुझे हर नुक़सान से बचाएगा, वह तेरी जान को महफूज़ रखेगा।

8 रब अब से अबद तक तेरे आने जाने की पहरादारी करेगा।

## 122

यस्शलम पर बरकत

1 दाऊद का ज़ियारत का गीत।

मैं उनसे खुश हुआ जिन्होंने मुझसे कहा, “आओ, हम रब के घर चलें।”

2 ऐ यस्शलम, अब हमारे पाँव तेरे दरवाज़ों में खड़े हैं।

3 यस्शलम शहर यों बनाया गया है कि उसके तमाम हिस्से मज़बूती से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं।

4 वहाँ क़बीले, हों रब के क़बीले हाज़िर होते हैं ताकि रब के नाम की सताइश करें जिस तरह इसराईल को फरमाया गया है।

5 क्योंकि वहाँ तख़्ते-अदालत करने के लिए लगाए गए हैं, वहाँ दाऊद के घराने के तख़्त हैं।

6 यस्शलम के लिए सलामती माँगो! “जो तुझसे प्यार करते हैं वह सुकून पाएँ।

7 तेरी फ़सील में सलामती और तेरे महलों में सुकून हो।”

8 अपने भाइयों और हमसायों की खातिर मैं कहूँगा, “तेरे अंदर सलामती हो!”

9 रब हमारे खुदा के घर की खातिर मैं तेरी खुशहाली का तालिब रहूँगा।

## 123

अल्लाह हम पर मेहरबानी करे

1 ज़ियारत का गीत।

मैं अपनी आँखों को तेरी तरफ उठाता हूँ, तेरी तरफ जो आसमान पर तख़्तनशीन है।

- 2 जिस तरह गुलाम की आँखें अपने मालिक के हाथ की तरफ और लौंडी की आँखें अपनी मालिकन के हाथ की तरफ लगी रहती हैं उसी तरह हमारी आँखें रब अपने खुदा पर लगी रहती हैं, जब तक वह हम पर मेहरबानी न करे।  
 3 ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर, हम पर मेहरबानी कर! क्योंकि हम हद से ज्यादा हिकारत का मिशाना बन गए हैं।  
 4 सुकून से ज़िंदगी गुज़ारनेवालों की लान-तान और मगस्रों की तहकीर से हमारी जान दूबर हो गई है।

## 124

मुसीबत में अल्लाह हमारा सहारा है

- 1 दाऊद का ज़ियारत का गीत।  
 इसराईल कहे, “अगर रब हमारे साथ न होता,  
 2 अगर रब हमारे साथ न होता जब लोग हमारे खिलाफ उठे  
 3 और आग-बगला होकर अपना पूरा गुस्सा हम पर उतारा, तो वह हमें ज़िंदा हडप कर लेते।  
 4 फिर सैलाब हम पर टूट पड़ता, नदी का तेज़ धारा हम पर गालिब आ जाता  
 5 और मुतलातिम पानी हम पर से गुज़र जाता।”  
 6 रब की हम्द हो जिसने हमें उनके दाँतों के हवाले न किया, वरना वह हमें फाड़ खाते।  
 7 हमारी जान उस चिड़िया की तरह छूट गई है जो चिड़ीमार के फंदे से निकलकर उड़ गई है। फंदा टूट गया है, और हम बच निकले हैं।  
 8 रब का नाम, हाँ उसी का नाम हमारा सहारा है जो आसमानो-ज़मीन का खालिक है।

## 125

चारों तरफ से कौम की हिफाज़त

- 1 ज़ियारत का गीत।  
 जो रब पर भरोसा रखते हैं वह कोहे-सियून की मानिंद हैं जो कभी नहीं डगमगाता बल्कि अबद तक कायम रहता है।  
 2 जिस तरह यरूशलम पहाड़ों से घिरा रहता है उसी तरह रब अपनी कौम को अब से अबद तक चारों तरफ से महफूज़ रखता है।  
 3 क्योंकि बेदीनों की रास्तबाज़ों की मीरास पर हुकूमत नहीं रहेगी, ऐसा न हो कि रास्तबाज़ बदकारी करने की आजमाइश में पड़ जाएँ।  
 4 ऐ रब, उनसे भलाई कर जो नेक हैं, जो दिल से सीधी राह पर चलते हैं।  
 5 लेकिन जो भटककर अपनी टेढ़ी-मेढ़ी राहों पर चलते हैं उन्हें रब बदकारों के साथ खारिज कर दे। इसराईल की सलामती हो!

## 126

रब अपने क़ैदियों को रिहाई देता है

- 1 ज़ियारत का गीत।  
 जब रब ने सियून को बहाल किया तो ऐसा लग रहा था कि हम खाब देख रहे हैं।  
 2 तब हमारा मुँह हँसी-खुशी से भर गया, और हमारी ज़बान शादमानी के नारे लगाने से रूक न सकी। तब दीगर कौमों में कहा गया, “रब ने उनके लिए ज़बरदस्त काम किया है।”  
 3 रब ने वाकई हमारे लिए ज़बरदस्त काम किया है। हम कितने खुश थे, कितने खुश!  
 4 ऐ रब, हमें बहाल कर। जिस तरह मौसमे-बरसात में दशते-नजब के ख़ुश नाले पानी से भर जाते हैं उसी तरह हमें बहाल कर।  
 5 जो आँसू बहा बहाकर बीज बोएँ वह ख़ुशी के नारे लगाकर फ़सल काटेंगे।  
 6 वह रोते हुए बीज बोने के लिए निकलेंगे, लेकिन जब फ़सल पक जाए तो ख़ुशी के नारे लगाकर पूले उठाए अपने घर लौटेंगे।

## 127

अल्लाह ही हमारा घर तामीर करता है

- 1 सुलेमान का ज़ियारत का गीत।

अगर रब घर को तामीर न करे तो उस पर काम करनेवालों की मेहनत अबस है। अगर रब शहर की पहरादारी न करे तो इनसानी पहरेदारों की निगहबानी अबस है।

2 यह भी अबस है कि तुम सुबह-सवेरे उठो और पूरे दिन मेहनत-मशक्कत के साथ रोज़ी कमाकर रात गए सो जाओ। क्योंकि जो अल्लाह को प्यारे हैं उन्हें वह उनकी ज़रूरियात उनके सोते में पूरी कर देता है।

3 बच्चे ऐसी नेमत हैं जो हम मीरास में रब से पाते हैं, औलाद एक अज़्र है जो वही हमें देता है।

4 जवानी में पैदा हुए बेटे सूमे के हाथ में तीरों की मानिद हैं।

5 मुबारक है वह आदमी जिसका तरकश उनसे भरा है। जब वह शहर के दरवाज़े पर अपने दुश्मनों से झगड़ेगा तो शर्मिदा नहीं होगा।

## 128

जिस खानदान को अल्लाह बरकत देता है

1 ज़ियारत का गीत।

मुबारक है वह जो रब का ख़ौफ़ मानकर उस की राहों पर चलता है।

2 यक़ीनत न अपनी मेहनत का फल खाएगा। मुबारक हो, क्योंकि तू कामयाब होगा।

3 घर में तेरी बीबी अंगूर की फलदार बेल की मानिद होगी, और तेरे बेटे मेज़ के इर्दगिर्द बैठकर जैतून की ताज़ा शाखों \* की मानिद होंगे।

4 जो आदमी रब का ख़ौफ़ माने उसे ऐसी ही बरकत मिलेगी।

5 रब तुझे कोहे-सिय्यून से बरकत दे। वह करे कि तू जीते-जी यरूशलम की खुशहाली देखे,

6 कि तू अपने पोतों-नवासों को भी देखे। इसराईल की सलामती हो!

## 129

मदद के लिए इसराईल की दुआ

1 ज़ियारत का गीत।

इसराईल कहे, “मेरी जवानी से ही मेरे दुश्मन बार बार मुझ पर हमलाआवर हुए हैं।

2 मेरी जवानी से ही वह बार बार मुझ पर हमलाआवर हुए हैं। तो भी वह मुझ पर गालिब न आए।”

3 हल चलानेवालों ने मेरी पीठ पर हल चलाकर उस पर अपनी लंबी लंबी रेघारयाँ बनाई हैं।

4 रब रास्त है। उसने बेदीनों के रस्से काटकर मुझे आज़ाद कर दिया है।

5 अल्लाह करे कि जितने भी सिय्यून से नफरत रखें वह शर्मिदा होकर पीछे हट जाएँ।

6 वह छतों पर की घास की मानिद हों जो सहीह तौर पर बढ़ने से पहले ही मुरझा जाती है

7 और जिससे न फसल काटनेवाला अपना हाथ, न पूले बाँधनेवाला अपना बाजू भर सके।

8 जो भी उनसे गुज़रे वह न कहे, “रब तुम्हें बरकत दे।”

हम रब का नाम लेकर तुम्हें बरकत देते हैं!

## 130

बड़ी मुसीबत से रिहाई की दुआ (तौबा का छटा ज़ब्र)

1 ज़ियारत का गीत।

ऐ रब, मैं तुझे गहराइयों से पुकारता हूँ।

2 ऐ रब, मेरी आवाज़ सुन! कान लगाकर मेरी इल्तिजाओं पर ध्यान दे!

3 ऐ रब, अगर तू हमारे गुनाहों का हिसाब करे तो कौन कायम रहेगा? कोई भी नहीं!

4 लेकिन तुझसे मुआफी हासिल होती है ताकि तेरा ख़ौफ़ माना जाए।

5 मैं रब के इंतज़ार में हूँ, मेरी जान शिदत से इंतज़ार करती है। मैं उसके कलाम से उम्मीद रखता हूँ।

\* 128:3 इससे मुराद है पैन्दकारी के लिए दरख़्त से काटी गई टहनियाँ।

6 पहरेदार जिस शिदत से पौ फटने के इंतज़ार में रहते हैं, मेरी जान उससे भी ज्यादा शिदत के साथ, हों ज्यादा शिदत के साथ रब की मुंतज़िर रहती है।

7 ऐ इसराईल, रब की राह देखता रह! क्योंकि रब के पास शफकत और फिघा का ठोस बंदोबस्त है।

8 वह इसराईल के तमाम गुनाहों का फिघा देकर उसे नजात देगा।

## 131

बच्चे का-सा ईमान

1 ज़ियारत का गीत।

ऐ रब, न मेरा दिल घमंडी है, न मेरी आँखें मगसूर हैं। जो बातें इतनी अज़ीम और हैरानकुन हैं कि मैं उनसे निपट नहीं सकता उन्हें मैं नहीं छेड़ता।

2 यकीनन मैंने अपनी जान को राहत और सुकून दिलाया है, और अब वह माँ की गोद में बैठे छोटे बच्चे की मानिद है, हों मेरी जान छोटे बच्चे \* की मानिद है।

3 ऐ इसराईल, अब से अबद तक रब के इंतज़ार में रह!

## 132

दाऊद का घराना और सिय्यून पर मकदिस

1 ज़ियारत का गीत।

ऐ रब, दाऊद का खयाल रख, उस की तमाम मुसीबतों को याद कर।

2 उसने कसम खाकर रब से वादा किया और याकूब के कवी खुदा के हुज़ूर मन्नत मानी,

3 “न मैं अपने घर में दाखिल हूँगा, न बिस्तर पर लेटूँगा,

4 न मैं अपनी आँखों को सोने दूँगा, न अपने पपोटों को ऊँघने दूँगा

5 जब तक रब के लिए मकाम और याकूब के सुरमे के लिए सुकूनतगाह न मिले।”

6 हमने इफराता में अहद के संदूक की खबर सुनी और यार के खुले मैदान में उसे पा लिया।

7 आओ, हम उस की सुकूनतगाह में दाखिल होकर उसके पाँवों की चौकी के सामने सिजदा करें।

8 ऐ रब, उठकर अपनी आरामगाह के पास आ, तू और अहद का संदूक जो तेरी क़ुदरत का इज़हार है।

9 तेरे इमान रास्ती से मुलब्स हो जाँ, और तेरे इमानदार ख़ुशी के नारे लगाएँ।

10 ऐ अल्लाह, अपने खादिम दाऊद की खातिर अपने मसह किए हुए बंदे के चेहरे को रड़ न कर।

11 रब ने कसम खाकर दाऊद से वादा किया है, और वह उससे कभी नहीं फिरेगा, “मैं तेरी औलाद में से एक को तेरे तख्त पर बिठाऊँगा।

12 अगर तेरे बेटे मेरे अहद के वफादार रहें और उन अहकाम की पैरवी करें जो मैं उन्हें सिखाऊँगा तो उनके बेटे भी हमेशा तक तेरे तख्त पर बैठेंगे।”

13 क्योंकि रब ने कोहे-सिय्यून को चुन लिया है, और वही वहाँ सुकूनत करने का आरज़ूमंद था।

14 उसने फरमाया, “यह हमेशा तक मेरी आरामगाह है, और यहाँ मैं सुकूनत करूँगा, क्योंकि मैं इसका आरज़ूमंद हूँ।

15 मैं सिय्यून की खुराक को कसरत की बरकत देकर उसके ग़रीबों को रोटी से सेर करूँगा।

16 मैं उसके इमामों को नजात से मुलब्स करूँगा, और उसके इमानदार ख़ुशी से जोरदार नारे लगाएँगे।

17 यहाँ मैं दाऊद की ताकत बढ़ा दूँगा, \* और यहाँ मैंने अपने मसह किए हुए खादिम के लिए चराग तैयार कर रखा है।

18 मैं उसके दुश्मनों को शरमिंदगी से मुलब्स करूँगा जबकि उसके सर का ताज चमकता रहेगा।”

## 133

भाइयों की यागांत की बरकत

\* 131:2 जिस बच्चे ने माँ का दूध पीना छोड़ दिया है।

\* 132:17 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : मैं दाऊद का सींग फटने दूँगा।

- 1 दाऊद का जबूर। ज़ियारत का गीत।  
जब भाई मिलकर और यागांगत से रहते हैं यह कितना अच्छा और प्यारा है।
- 2 यह उस नफ़ीस तेल की मानिंद है जो हासून इमाम के सर पर उंडेला जाता है और टपक टपककर उस की दाढी और लिबास के ग़रेबान पर आ जाता है।
- 3 यह उस ओस की मानिंद है जो कोहे-हरमून से सिय्यून के पहाड़ों पर पड़ती है। क्योंकि रब ने फ़रमाया है, “वही हमेशा तक बरकत और ज़िंदगी मिलेगी।”

## 134

रब के घर में रात की सताइश

1 ज़ियारत का गीत।

आओ, रब की सताइश करो, ऐ रब के तमाम खादिमो जो रात के वक़्त रब के घर में खड़े हो।

2 मक़दिस में अपने हाथ उठाकर रब की तमज़ीद करो!

3 रब सिय्यून से तुझे बरकत दे, आसमानो-ज़मीन का ख़ालिक तुझे बरकत दे।

## 135

अल्लाह की परस्तिश

1 रब की हम्द हो! रब के नाम की सताइश करो! उस की तमज़ीद करो, ऐ रब के तमाम खादिमो,

2 जो रब के घर में, हमारे ख़ुदा की बारगाहों में खड़े हो।

3 रब की हम्द करो, क्योंकि रब भला है। उसके नाम की मद्हसराई करो, क्योंकि वह प्यारा है।

4 क्योंकि रब ने याकूब को अपने लिए चुन लिया, इसराईल को अपनी मिलकियत बना लिया है।

5 हौं, मैंने जान लिया है कि रब अज़ीम है, कि हमारा रब दीगर तमाम माबूदों से ज्यादा अज़ीम है।

6 रब जो जी चाहे करता है, खाह आसमान पर हो या ज़मीन पर, खाह समुंदरों में हो या गहराइयों में कहीं भी हो।

7 वह ज़मीन की इंतहा से बादल चढ़ने देता और बिजली बारिश के लिए पैदा करता है, वह हवा अपने गोदामों से निकाल लाता है।

8 मिसर में उसने इनसानो-हैवान के तमाम पहलौठों को मार डाला।

9 ऐ मिसर, उसने अपने इलाही निशान और मोज़िजात तेरे दरमियान ही किए। तब फिरौन और उसके तमाम मुलाज़िम उनका निशाना बन गए।

10 उसने मृतअइद कौमों को शिकस्त देकर ताकतवर बादशाहों को मौत के घाट उतार दिया।

11 अमोरियों का बादशाह सीहोन, बसन का बादशाह ओज और मुल्के-कनान की तमाम सलतनतें न रहीं।

12 उसने उनका मुल्क इसराईल को देकर फ़रमाया कि आइंदा यह मेरी कौम की मौरूसी मिलकियत होगा।

13 ऐ रब, तेरा नाम अबदी है। ऐ रब, तुझे पुशत-दर-पुशत याद किया जाएगा।

14 क्योंकि रब अपनी कौम का इनसाफ़ करके अपने खादिमों पर तरस खाएगा।

15 दीगर कौमों के बूत सोने-चाँदी के हैं, इनसान के हाथ ने उन्हें बनाया।

16 उनके मुँह हैं लेकिन वह बोल नहीं सकते, उनकी आँखें हैं लेकिन वह देख नहीं सकते।

17 उनके कान हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते, उनके मुँह में साँस ही नहीं होती।

18 जो बूत बनाते हैं वह उनकी मानिंद हो जाएँ, जो उन पर भरोसा रखते हैं वह उन जैसे बेहिसो-हरकत हो जाएँ।

19 ऐ इसराईल के घराने, रब की सताइश कर। ऐ हासून के घराने, रब की तमज़ीद कर।

20 ऐ लावी के घराने, रब की हम्दो-सना कर। ऐ रब का ख़ौफ़ माननेवालो, रब की सताइश करो।

21 सिय्यून से रब की हम्द हो। उस की हम्द हो जो यरूशलम में सकूनत करता है। रब की हम्द हो!

## 136

तख़लीक़ और कौम की तारीख़ में अल्लाह के मोज़िज़े

- 1 रब का शक्र करो, क्योंकि वह भला है, और उस की शफकत अबदी है।
- 2 खुदाओं के खुदा का शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 3 मालिकों के मालिक का शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 4 जो अकेला ही अजीम मोजिजे करता है उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 5 जिसने हिकमत के साथ आसमान बनाया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 6 जिसने ज़मीन को मज़बूती से पानी के ऊपर लगा दिया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 7 जिसने आसमान की रौशिनियों को खलक किया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 8 जिसने सूरज को दिन के वक़्त हकूमत करने के लिए बनाया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 9 जिसने चाँद और सितारों को रात के वक़्त हकूमत करने के लिए बनाया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 10 जिसने मिसर में पहलौठों को मार डाला उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 11 जो इसराईल को मिसरियों में से निकाल लाया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 12 जिसने उस वक़्त बड़ी ताक़त और क़ुदरत का इज़हार किया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 13 जिसने बहरे-कुलजुम को दो हिस्सों में तकसीम कर दिया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 14 जिसने इसराईल को उसके बीच में से गुज़रने दिया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 15 जिसने फ़िरौन और उस की फ़ौज को बहरे-कुलजुम में बहाकर गरक कर दिया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 16 जिसने रेगिस्तान में अपनी क़ौम की क्रियादत की उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 17 जिसने बड़े बादशाहों को शिकस्त दी उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 18 जिसने ताक़तवर बादशाहों को मार डाला उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 19 जिसने अमोरियों के बादशाह सीहोन को मौत के घाट उतारा उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 20 जिसने बसन के बादशाह ओज को हलाक कर दिया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 21 जिसने उनका मुल्क इसराईल को मीरास में दिया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 22 जिसने उनका मुल्क अपने खादिम इसराईल की मौस्सी मिलकियत बनाया उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 23 जिसने हमारा खयाल किया जब हम ख़ाक में दब गए थे उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 24 जिसने हमें उनके क़ब्जे से छुड़ाया जो हम पर ज़ुल्म कर रहे थे उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 25 जो तमाम जानदारों को ख़ुराक मुहैया करता है उसका शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।
- 26 आसमान के खुदा का शक्र करो, क्योंकि उस की शफकत अबदी है।

## 137

बाबल में जिलावतनों की आहो-जारी

- 1 जब सिय्यून की याद आई तो हम बाबल की नहरों के किनारे ही बैठकर रो पड़े।
- 2 हमने वहाँ के सफ़ेदा के दरख़्तों से अपने सरोद लटका दिए,
- 3 क्योंकि जिन्होंने हमें गिरफ़्तार किया था उन्होंने हमें वहाँ गीत गाने को कहा, और जो हमारा मज़ाक़ उड़ाते हैं उन्होंने खुशी का मुतालबा किया, “हमें सिय्यून का कोई गीत सुनाओ!”
- 4 लेकिन हम अजनबी मुल्क में किस तरह रब का गीत गाएँ?
- 5 ऐ यरूशलम, अगर मैं तुझे भूल जाऊँ तो मेरा दहना हाथ सूख जाए।
- 6 अगर मैं तुझे याद न करूँ और यरूशलम को अपनी अज़ीमतरनी खुशी से ज़्यादा क़ीमती न समझूँ तो मेरी ज़बान तालू से चिपक जाए।

7 ऐ रब, वह कुछ याद कर जो अदोमियों ने उस दिन किया जब यरूशलम दुश्मन के क़ब्जे में आया। उस वक़्त वह बोले, “उसे ढा दो! बुनियादों तक उसे गिरा दो!”

8 ऐ बाबल बेटी जो तबाह करने पर तुली हुई है, मुबारक है वह जो तुझे उसका बदला दे जो तूने हमारे साथ किया है।

9 मुबारक है वह जो तेरे बच्चों को पकड़कर पत्थर पर पटख़ दे।

## 138

अल्लाह की मदद के लिए शुक़गुज़ारी

1 दाऊद का जबूर।

ऐ रब, मैं पूरे दिल से तेरी सताइश कर्ँगा, माबूदों के सामने ही तेरी तमज़ीद कर्ँगा।

2 मैं तेरी मुक़द्दस सुकूनतगाह की तरफ़ स़ख़ करके सिजदा कर्ँगा, तेरी मेहरबानी और वफ़ादारी के बाइस तेरा शुक़ कर्ँगा।  
क्योंकि तूने अपने नाम और कलाम को तमाम चीज़ों पर सरफ़राज़ किया है।

3 जिस दिन मैंने तुझे पुकारा तूने मेरी सुनकर मेरी जान को बड़ी तकवियत दी।

4 ऐ रब, दुनिया के तमाम हुक़मरान तेरे मुँह के फ़रमान सुनकर तेरा शुक़ करें।

5 वह रब की राहों की मदहसराई करें, क्योंकि रब का जलाल अज़ीम है।

6 क्योंकि गो रब बुलंदियों पर है वह पस्तहाल का खयाल करता और मग़स्रों को दूर से ही पहचान लेता है।

7 जब कभी मुसीबत मेरा दामन नहीं छोड़ती तो तू मेरी जान को ताज़ादम करता है, तू अपना दहना हाथ बढ़ाकर मुझे मेरे दुश्मनों के तैश से बचाता है।

8 रब मेरी खातिर बदला लेगा। ऐ रब, तेरी शफ़क़त अबदी है। उन्हें न छोड़ जिनको तेरे हाथों ने बनाया है!

## 139

अल्लाह सब कुछ जानता और हर जगह मौजूद है

1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।

ऐ रब, तू मेरा मुआयना करता और मुझे ख़ुब जानता है।

2 मेरा उठना बैठना तुझे मालूम है, और तू दूर से ही मेरी सोच समझता है।

3 तू मुझे जाँचता है, ख़ाह मैं रास्ते में हूँ या आराम कर्ँ। तू मेरी तमाम राहों से वाकिफ़ है।

4 क्योंकि जब भी कोई बात मेरी ज़बान पर आए तू ऐ रब पहले ही उसका पूरा इल्म रखता है।

5 तू मुझे चारों तरफ़ से घेरे रखता है, तेरा हाथ मेरे ऊपर ही रहता है।

6 इसका इल्म इतना हैरानकुन और अज़ीम है कि मैं इसे समझ नहीं सकता।

7 मैं तेरे रूह से कहाँ भाग जाऊँ, तेरे चेहरे से कहाँ फ़रार हो जाऊँ?

8 अगर आसमान पर चढ़ जाऊँ तो तू वहाँ मौजूद है, अगर उतरकर अपना बिस्तर पाताल में बिछाऊँ तो तू वहाँ भी है।

9 गो मैं तुलू-सुबह के परोँ पर उडकर समुंदर की दूरतरीन हद पर जा बसूँ,

10 वहाँ भी तेरा हाथ मेरी क्रियादत करेगा, वहाँ भी तेरा दहना हाथ मुझे थामे रखेगा।

11 अगर मैं कहूँ, “तारीकी मुझे छुपा दे, और मेरे इर्दगिर्द की रौशनी रात में बदल जाए,” तो भी कोई फ़रक़ नहीं पड़ेगा।

12 तेरे सामने तारीकी भी तारीक़ नहीं होती, तेरे हज़ूर रात दिन की तरह रौशन होती है बल्कि रौशनी और अंधेरा एक जैसे होते हैं।

13 क्योंकि तूने मेरा बातिन बनाया है, तूने मुझे माँ के पेट में तश्कील दिया है।

14 मैं तेरा शुक़ करता हूँ कि मुझे जलाली और मोज़िज़ाना तौर से बनाया गया है। तेरे काम हैरतअंगेज़ है, और मेरी जान यह ख़ुब जानती है।

15 मेरा ढाँचा तुझसे छुपा नहीं था जब मुझे पोशीदगी में बनाया गया, जब मुझे ज़मीन की गहराइयों में तश्कील दिया गया।

16 तेरी आँखों ने मुझे उस वक़्त देखा जब मेरे जिस्म की शक़ल अभी नामुकम्मल थी। जितने भी दिन मेरे लिए मुक़रर थे वह सब तेरी किताब में उस वक़्त दर्ज थे, जब एक भी नहीं गुज़रा था।

17 ऐ अल्लाह, तेरे खयालालत समझना मेरे लिए कितना मुश्किल है! उनकी कुल तादाद कितनी अज़ीम है।

18 अगर मैं उन्हें गिन सकता तो वह रेत से ज़्यादा होते। मैं जाग उठता हूँ तो तेरे ही साथ होता हूँ।

19 ऐ अल्लाह, काश तू बेदीन को मार डाले, कि खूनखार मुझसे दूर हो जाएँ।



- 20 वह फरेब से तेरा जिक्र करते हैं, हाँ तेरे मुखालिफ झूट बोलते हैं।  
 21 ऐ रब, क्या मैं उनसे नफरत न करूँ जो तुझसे नफरत करते हैं? क्या मैं उनसे धिन न खाऊँ जो तेरे खिलाफ उठे हैं?  
 22 यकीनन मैं उनसे सख्त नफरत करता हूँ। वह मेरे दुश्मन बन गए हैं।  
 23 ऐ अल्लाह, मेरा मुआयना करके मेरे दिल का हाल जान ले, मुझे जाँचकर मेरे बेचैन खयालात को जान ले।  
 24 मैं नुकसानदेह राह पर तो नहीं चल रहा? अबदी राह पर मेरी कियादात कर!

## 140

दुश्मन से रिहाई की दुआ

- 1 दाऊद का जबूर। मौसीकी के राहनुमा के लिए।  
 ऐ रब, मुझे शरीरों से छुड़ा और जालिमों से महफूज रख।  
 2 दिल में वह बुरे मनसूबे बाँधते, रोज़ाना जंग छेड़ते हैं।  
 3 उनकी ज़बान सौंप की ज़बान जैसी तेज़ है, और उनके होंटों में सौंप का ज़हर है। (सिलाह)  
 4 ऐ रब, मुझे बेदीन के हाथों से महफूज रख, जालिम से मुझे बचाए रख, उनसे जो मेरे पाँवों को ठोकर खिलाने के मनसूबे बाँध रहे हैं।  
 5 मासरों ने मेरे रास्ते में फंदा और रस्से छुपाए हैं, उन्होंने जाल बिछाकर रास्ते के किनारे किनारे मुझे पकड़ने के फंदे लगाए हैं। (सिलाह)  
 6 मैं रब से कहता हूँ, “तू ही मेरा ख़ुदा है, मेरी इल्तिजाओं की आवाज़ सुन!”  
 7 ऐ रब कादिर-मुतलक, ऐ मेरी कवी नजात! जंग के दिन तू अपनी ढाल से मेरे सर की हिफाज़त करता है।  
 8 ऐ रब, बेदीन का लालच पूरा न कर। उसका इरादा कामयाब होने न दे, ऐसा न हो कि यह लोग सरफराज़ हो जाएँ। (सिलाह)  
 9 उन्होंने मुझे घेर लिया है, लेकिन जो आफत उनके होंट मुझ पर लाना चाहते हैं वह उनके अपने सरों पर आए!  
 10 दहकते कोयले उन पर बरसें, और उन्हें आग में, अथाह गढ़ों में फेंका जाए ताकि आइंदा कभी न उठें।  
 11 तोहमत लगानेवाला मुल्क में कायम न रहे, और बुराई जालिम को मार मारकर उसका पीछा करे।  
 12 मैं जानता हूँ कि रब अदालत में मुसीबतज़दा का दिफा करेगा। वही ज़रूरतमंद का इनसाफ करेगा।  
 13 यकीनन रास्तबाज़ तेरे नाम की सताइश करेंगे, और दियानतदार तेरे हुज़ूर बसेंगे।

## 141

हिफाज़त की गुज़ारिश

- 1 दाऊद का जबूर।  
 ऐ रब, मैं तुझे पुकार रहा हूँ, मेरे पास आने में जल्दी कर! जब मैं तुझे आवाज़ देता हूँ तो मेरी फरियाद पर ध्यान दे!  
 2 मेरी दुआ तेरे हुज़ूर बख़र की कुरबानी की तरह कबूल हो, मेरे तेरी तरफ उठाए हुए हाथ शाम की गल्ला की नजर की तरह मंज़ूर हों।  
 3 ऐ रब, मेरे मुँह पर पहरा बिठा, मेरे होंटों के दरवाजे की निगहबानी कर।  
 4 मेरे दिल को गलत बात की तरफ मायल न होने दे, ऐसा न हो कि मैं बदकारों के साथ मिलकर बुरे काम में मुल्त्वस हो जाऊँ और उनके लज़ीज़ खानों में शिरकत करूँ।  
 5 रास्तबाज़ शफ़क़त से मुझे मारे और मुझे तबीह करे। मेरा सर इससे इनकार नहीं करेगा, क्योंकि यह उसके लिए शफ़ाबख़श तेल की मानिंद होगा। लेकिन मैं हर वक़्त शरीरों की हरकतों के खिलाफ दुआ करता हूँ।  
 6 जब वह गिरकर उस चटान के हाथ में आएँगे जो उनका मुंसिफ है तो वह मेरी बातों पर ध्यान देंगे, और उन्हें समझ आएगी कि वह कितनी प्यारी है।  
 7 ऐ अल्लाह, हमारी हड्डियाँ उस ज़मीन की मानिंद हैं जिस पर किसी ने इतने जोर से हल चलाया है कि ढेले उड़कर इधर उधर बिखर गए हैं। हमारी हड्डियाँ पाताल के मुँह तक बिखर गई हैं।

- 8 ऐ रब कादिर-मृतलक, मेरी आँखें तुझ पर लगी रहती हैं, और मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। मुझे मौत के हवाले न कर।  
 9 मुझे उस जाल से महफूज रख जो उन्होंने मुझे पकड़ने के लिए बिछाया है। मुझे बदकारों के फंदों से बचाए रख।  
 10 बेदीन मिलकर उनके अपने जालों में उलझ जाएँ जबकि मैं बचकर आगे निकलूँ।

## 142

### सख्त मुसीबत में मदद की पुकार

- 1 हिकमत का गीत। दुआ जो दाऊद ने की जब वह गार में था।  
 मैं मदद के लिए चीखता-चिल्लाता रब को पुकारता हूँ, मैं ज़ोरदार आवाज़ से रब से इल्तिजा करता हूँ।  
 2 मैं अपनी आहो-जारी उसके सामने उंडेल देता, अपनी तमाम मुसीबत उसके हुज़ूर पेश करता हूँ।  
 3 जब मेरी रूह मेरे अंदर निढाल हो जाती है तो तू ही मेरी राह जानता है। जिस रास्ते में मैं चलता हूँ उसमें लोगों ने फंदा छुपाया है।  
 4 मैं दहनी तरफ नज़र डालकर देखता हूँ, लेकिन कोई नहीं है जो मेरा खयाल करे। मैं बच नहीं सकता, कोई नहीं है जो मेरी जान की फ़िकर करे।  
 5 ऐ रब, मैं मदद के लिए तुझे पुकारता हूँ। मैं कहता हूँ, “तू मेरी पनाहगाह और जिंदों के मुल्क में मेरा मौरूसी हिस्सा है।”  
 6 मेरी चीखों पर ध्यान दे, क्योंकि मैं बहुत पस्त हो गया हूँ। मुझे उनसे छुड़ा जो मेरा पीछा कर रहे हैं, क्योंकि मैं उन पर काबू नहीं पा सकता।  
 7 मेरी जान को कैदखाने से निकाल ला ताकि तेरे नाम की सताइश करूँ। जब तू मेरे साथ भलाई करेगा तो रास्तबाज़ मेरे इर्दगिर्द जमा हो जाएंगे।

## 143

### बचाव और क्रियादत की गुज़ारिश (तौबा का सातवाँ जबूर)

- 1 दाऊद का जबूर।  
 ऐ रब, मेरी दुआ सुन, मेरी इल्तिजाओ पर ध्यान दे। अपनी वफ़ादारी और रास्ती की खातिर मेरी सुन।  
 2 अपने खादिम को अपनी अदालत में न ला, क्योंकि तेरे हुज़ूर कोई भी जानदार रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता।  
 3 क्योंकि दुश्मन ने मेरी जान का पीछा करके उसे खाक में कुचल दिया है। उसने मुझे उन लोगों की तरह तारीकी में बसा दिया है जो बड़े अरसे से मुरदा हैं।  
 4 मेरे अंदर मेरी रूह निढाल है, मेरे अंदर मेरा दिल दहशत के मारे बेहिसो-हरकत हो गया है।  
 5 मैं कदीम ज़माने के दिन याद करता और तेरे कामों पर ग़ौरो-ख़ौज़ करता हूँ। जो कुछ तेरे हाथों ने किया उसमें मैं महवे-खयाल रहता हूँ।  
 6 मैं अपने हाथ तेरी तरफ उठाता हूँ, मेरी जान ख़ुशक ज़मीन की तरह तेरी प्यासी है। (सिलाह)  
 7 ऐ रब, मेरी सुनने में जल्दी कर। मेरी जान तो खत्म होनेवाली है। अपना चेहरा मुझसे छुपाए न रख, वरना मैं गढे में उतरनेवालों की मानिंद हो जाऊँगा।  
 8 सुबह के वक़्त मुझे अपनी शफ़क़त की ख़बर सुना, क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूँ। मुझे वह राह दिखा जिस पर मुझे जाना है, क्योंकि मैं तेरा ही आरज़ूमंद हूँ।  
 9 ऐ रब, मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ा, क्योंकि मैं तुझमें पनाह लेता हूँ।  
 10 मुझे अपनी मरज़ी पूरी करना सिखा, क्योंकि तू मेरा खुदा है। तेरा नेक रूह हमवार ज़मीन पर मेरी राहनुमाई करे।  
 11 ऐ रब, अपने नाम की खातिर मेरी जान को ताज़ादम कर। अपनी रास्ती से मेरी जान को मुसीबत से बचा।  
 12 अपनी शफ़क़त से मेरे दुश्मनों को हलाक कर। जो भी मुझे तंग कर रहे हैं उन्हें तबाह कर! क्योंकि मैं तेरा खादिम हूँ।

## 144

### नजात और ख़ुशहाली की दुआ

- 1 दाऊद का जबूर।

रब मेरी चटान की हम्द हो, जो मेरे हाथों को लडने और मेरी उँगलियों को जंग करने की तरबियत देता है।

2 वह मेरी शफकत, मेरा किला, मेरा नजातदहिदा और मेरी ढाल है। उसी में मैं पनाह लेता हूँ, और वही दीगर अकवाम को मेरे ताबे कर देता है।

3 ऐ रब, इनसान कौन है कि तू उसका खयाल रखे? आदमजाद कौन है कि तू उसका लिहाज करे?

4 इनसान दम-भर का ही है, उसके दिन तेजी से गुजरनेवाले साये की मानिद हैं।

5 ऐ रब, अपने आसमान को झुकाकर उतर आ! पहाड़ों को छू ताकि वह धुआँ छोड़ें।

6 बिजली भेजकर उन्हें मुंतशिर कर, अपने तीर चलाकर उन्हें दरहम-बरहम कर।

7 अपना हाथ बुलंदियों से नीचे बढ़ा और मुझे छुड़ाकर पानी की गहराइयों और परदेसियों के हाथ से बचा,

8 जिनका मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फरेब देता है।

9 ऐ अल्लाह, मैं तेरी तमजीद में नया गीत गाऊँगा, दस तारों का सितार बजाकर तेरी मद्दहसराई करूँगा।

10 क्योंकि तू बादशाहों को नजात देता और अपने खादिम दाऊद को मोहलक तलवार से बचाता है।

11 मुझे छुड़ाकर परदेसियों के हाथ से बचा, जिनका मुँह झूट बोलता और दहना हाथ फरेब देता है।

12 हमारे बेटे जवानी में फलने फूलनेवाले पौदों की मानिद हों, हमारी बेटियाँ महल को सजाने के लिए तराशे हुए कोने के सत्न की मानिद हों।

13 हमारे गोदाम भरे रहें और हर किस्म की खुराक मुहैया करें। हमारी भेड़-बकरियाँ हमारे मैदानों में हजारों बल्कि बेशुमार बच्चे जन्म दें।

14 हमारे गाय-बैल मोटे-ताजे हों, और न कोई जाया हो जाए, न किसी को नुकसान पहुँचे। हमारे चौकों में आहो-जारी की आवाज सुनाई न दे।

15 मुबारक है वह कौम जिस पर यह सब कुछ सादिक आता है, मुबारक है वह कौम जिसका खुदा रब है!

## 145

अल्लाह की अबदी शफकत

1 दाऊद का जब्र। हम्दो-सना का गीत।

ऐ मेरे खुदा, मैं तेरी ताजीम करूँगा। ऐ बादशाह, मैं हमेशा तक तेरे नाम की सताइश करूँगा।

2 रोजाना मैं तेरी तमजीद करूँगा, हमेशा तक तेरे नाम की हम्द करूँगा।

3 रब अजीम और बडी तारीफ के लायक है। उस की अजमत इनसान की समझ से बाहर है।

4 एक पुशत अगली पुशत के सामने वह कुछ सराहे जो तूने किया है, वह दूसरों को तेरे जबरदस्त काम सुनाएँ।

5 मैं तेरे शानदार जलाल की अजमत और तेरे मोजिजों में महवे-खयाल रहूँगा।

6 लोग तेरे हैबतनाक कामों की कुदरत पेश करें, और मैं भी तेरी अजमत बयान करूँगा।

7 वह जोश से तेरी बडी भलाई को सराहें और खुशी से तेरी रास्ती की मद्दहसराई करें।

8 रब मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मूल और शफकत से भरपूर है।

9 रब सबके साथ भलाई करता है, वह अपनी तमाम मखलूक़ात पर रहम करता है।

10 ऐ रब, तेरी तमाम मखलूक़ात तेरा शुक़ करें। तेरे ईमानदार तेरी तमजीद करें।

11 वह तेरी बादशाही के जलाल पर फ़खर करें और तेरी कुदरत बयान करें

12 ताकि आदमजाद तेरे क़वी कामों और तेरी बादशाही की जलाली शानो-शौकत से आगाह हो जाएँ।

13 तेरी बादशाही की कोई इतहा नहीं, और तेरी सलतनत पुशत-दर-पुशत हमेशा तक कायम रहेगी।

14 रब तमाम गिरेनेवालों का सहारा है। जो भी दब जाए उसे वह उठा खड़ा करता है।

15 सबकी आँखें तेरे इंतज़ार में रहती हैं, और तू हर एक को वक़्त पर उसका खाना मुहैया करता है।

16 तू अपनी मुडी खोलकर हर जानदार की खाहिश पूरी करता है।

17 रब अपनी तमाम राहों में रास्त और अपने तमाम कामों में वफ़ादार है।

- 18 रब उन सबके करीब है जो उसे पुकारते हैं, जो दियानतदारी से उसे पुकारते हैं।
- 19 जो उसका खौफ मांनें उनकी आरजू वह पूरी करता है। वह उनकी फरियादें सुनकर उनकी मदद करता है।
- 20 रब उन सबको महफूज़ रखता है जो उसे प्यार करते हैं, लेकिन बेदीनों को वह हलाक करता है।
- 21 मेरा मुँह रब की तारीफ बयान करे, तमाम मखलूक़ात हमेशा तक उसके मुक़द्दस नाम की सताइश करें।

## 146

अल्लाह की अबदी वफ़ादारी

- 1 रब की हम्द हो! ऐ मेरी जान, रब की हम्द कर।
- 2 जीते-जी मैं रब की सताइश करूँगा, उग्र-भर अपने खुदा की मद्दहसराई करूँगा।
- 3 शूरफ़ा पर भरोसा न रखो, न आदमज़ाद पर जो नजात नहीं दे सकता।
- 4 जब उस की रूह निकल जाए तो वह दुबारा ख़ाक में मिल जाता है, उसी वक़्त उसके मनसूबे अधूरे रह जाते हैं।
- 5 मुबारक है वह जिसका सहारा याक़ूब का खुदा है, जो रब अपने खुदा के इतज़ार में रहता है।
- 6 क्योंकि उसने आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है बनाया है। वह हमेशा तक वफ़ादार है।
- 7 वह मज़लूमों का इनसाफ़ करता और भूकों को रोटी खिलाता है। रब कैदियों को आज़ाद करता है।
- 8 रब अंधों की आँखें बहाल करता और ख़ाक में दबे हुआँ को उठा खड़ा करता है, रब रास्तबाज़ को प्यार करता है।
- 9 रब परदेसियों की देख-भाल करता, यतीमों और बेवाओं को कायम रखता है। लेकिन वह बेदीनों की राह को टेढ़ा बनाकर कामयाब होने नहीं देता।

- 10 रब अबद तक हुकूमत करेगा। ऐ सिध्यून, तेरा खुदा पुशत-दर-पुशत बादशाह रहेगा। रब की हम्द हो।

## 147

कायनात और तारीख में रब का बंदोबस्त

- 1 रब की हम्द हो! अपने खुदा की मद्दहसराई करना कितना भला है, उस की तमज़ीद करना कितना प्यारा और खूबसूरत है।
- 2 रब यरूशलम को तामीर करता और इसराईल के मुंतशिर जिलावतनों को जमा करता है।
- 3 वह दिलशिकस्तों को शफ़ा देकर उनके ज़ख़मों पर मरहम-पट्टी लगाता है।
- 4 वह सितारों की तादाद गिन लेता और हर एक का नाम लेकर उन्हें बुलाता है।
- 5 हमारा रब अज़ीम है, और उस की कुदरत ज़बरदस्त है। उस की हिकमत की कोई इंतहा नहीं।
- 6 रब मुसीबतज़दों को उठा खड़ा करता लेकिन बदकारों को ख़ाक में मिला देता है।
- 7 रब की तमज़ीद में शुक़ का गीत गाओ, हमारे खुदा की खुशी में सरोद बजाओ।
- 8 क्योंकि वह आसमान पर बादल छाने देता, ज़मीन को बारिश मुहैया करता और पहाड़ों पर घास फूटने देता है।
- 9 वह मवेशी को चारा और कौवे के बच्चों को वह कुछ खिलाता है जो वह शोर मचाकर माँगते हैं।
- 10 न वह घोड़े की ताक़त से लुत्फ़अंदोज़ होता, न आदमी की मज़बूत टाँगों से खुश होता है।
- 11 रब उन्हीं से खुश होता है जो उसका खौफ़ मानते और उस की शफ़क़त के इतज़ार में रहते हैं।
- 12 ऐ यरूशलम, रब की मद्दहसराई कर! ऐ सिध्यून, अपने खुदा की हम्द कर!
- 13 क्योंकि उसने तेरे दरवाज़ों के कुंडे मज़बूत करके तेरे दरमियान बसनेवाली औलाद को बरकत दी है।
- 14 वही तेरे इलाके में अमन और सुकून कायम रखता और तुझे बेहतरीन गंदूम से सेर करता है।
- 15 वह अपना फ़रमान ज़मीन पर भेजता है तो उसका कलाम तेज़ी से पहुँचता है।
- 16 वह ऊन जैसी बर्फ़ मुहैया करता और पाला राख की तरह चारों तरफ़ बिखेर देता है।
- 17 वह अपने ओले कंकरो की तरह ज़मीन पर फेंक देता है। कौन उस की शदीद सर्दों बरदाशत कर सकता है?

18 वह एक बार फिर अपना फरमान भेजता है तो बर्फ पिघल जाती है। वह अपनी हवा चलने देता है तो पानी टपकने लगता है।

19 उसने याकूब को अपना कलाम सुनाया, इसराईल पर अपने अहकाम और आईन जाहिर किए हैं।

20 ऐसा सुलूक उसने किसी और कौम से नहीं किया। दीगर अक़वाम तो तेरे अहकाम नहीं जानतीं। रब की हम्द हो!

## 148

आसमानो-ज़मीन पर अल्लाह की तमज़ीद

1 रब की हम्द हो! आसमान से रब की सताइश करो, बुलंदियों पर उस की तमज़ीद करो!

2 ऐ उसके तमाम फ़रिशतो, उस की हम्द करो! ऐ उसके तमाम लशकरो, उस की तारीफ़ करो!

3 ऐ सूरज और चाँद, उस की हम्द करो! ऐ तमाम चमकदार सितारो, उस की सताइश करो!

4 ऐ बुलंदतरिन आसमानो और आसमान के ऊपर के पानी, उस की हम्द करो!

5 वह रब के नाम की सताइश करें, क्योंकि उसने फ़रमाया तो वह वुजूद में आए।

6 उसने नाकाबिले-मनसूख़ फ़रमान जारी करके उन्हें हमेशा के लिए कायम किया है।

7 ऐ समुंदर के अज़दहाओ और तमाम गहराइयो, ज़मीन से रब की तमज़ीद करो!

8 ऐ आग, ओलो, बर्फ़, धुंध और उसके हुक़म पर चलनेवाली आँधियो, उस की हम्द करो!

9 ऐ पहाडो और पहाडियो, फ़लदार दरख़तो और तमाम देवदारो, उस की तारीफ़ करो!

10 ऐ जंगली जानवरो, मवीशियो, रेंगनेवाली मख़लूक़ात और परिदो, उस की हम्द करो!

11 ऐ ज़मीन के बादशाहो और तमाम कौमो, सरदारो और ज़मीन के तमाम हुक़मरानो, उस की तमज़ीद करो!

12 ऐ नौजवानो और कुँवारियो, बुज़ुर्गो और बच्चो, उस की हम्द करो!

13 सब रब के नाम की सताइश करें, क्योंकि सिर्फ़ उसी का नाम अज़ीम है, उस की अज़मत आसमानो-ज़मीन से आला है।

14 उसने अपनी कौम को सरफ़राज़ करके \* अपने तमाम ईमानदारों की शोहरत बढ़ाई है, यानी इसराईलियों की शोहरत, उस कौम की जो उसके करीब रहती है। रब की हम्द हो!

## 149

सिय्यून रब की हम्द करे!

1 रब की हम्द हो! रब की तमज़ीद में नया गीत गाओ, ईमानदारों की जमात में उस की तारीफ़ करो।

2 इसराईल अपने ख़ालिक से खुश हो, सिय्यून के फ़रज़द अपने बादशाह की खुशी मनाएँ।

3 वह नाचकर उसके नाम की सताइश करें, दफ़ और सरोद से उस की मद्दहसराई करें।

4 क्योंकि रब अपनी कौम से खुश है। वह मुसीबतज़दों को अपनी नजात की शानो-शौक़त से आरास्ता करता है।

5 ईमानदार इस शानो-शौक़त के बाइस खुशी मनाएँ, वह अपने बिस्तरों पर शादमानी के नारे लगाएँ।

6 उनके मुँह में अल्लाह की हम्दो-सना और उनके हाथों में दौधारी तलवार हो

7 ताकि दीगर अक़वाम से इतक़ाम लें और उम्मतों को सज़ा दें।

8 वह उनके बादशाहों को जंजीरों में और उनके शूरफ़ा को बेडियों में जकड़ लेंगे

9 ताकि उन्हें वह सज़ा दें जिसका फ़ैसला कलमबंद हो चुका है। यह इज़ज़त अल्लाह के तमाम ईमानदारों को हासिल है। रब की हम्द हो!

## 150

रब की हम्दो-सना

\* 148:14 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : अपनी कौम का सींग बुलंद करके।

- 1 रब की हम्द हो! अल्लाह के मकदिस में उस की सताइश करो। उस की कुदरत के बने हुए आसमानी गुंबद में उस की तमजीद करो।
- 2 उसके अज़ीम कामों के बाइस उस की हम्द करो। उस की ज़बरदस्त अज़मत के बाइस उस की सताइश करो।
- 3 नरसिंगा फूँककर उस की हम्द करो, सितार और सरोद बजाकर उस की तमजीद करो।
- 4 दफ़ और लोकनाच से उस की हम्द करो। तारदार साज़ और बाँसरी बजाकर उस की सताइश करो।
- 5 झाँझों की झंकारती आवाज़ से उस की हम्द करो, गुँजती झाँझ से उस की तारीफ़ करो।
- 6 जिसमें भी सौँस है वह रब की सताइश करे। रब की हम्द हो!!

## अमसाल

### किताब का मकसद

- 1 जैल में इसराईल के बादशाह सुलेमान बिन दाऊद की अमसाल कलमबंद हैं।  
 2 इनसे तू हिकमत और तरबियत हासिल करेगा, बसीरत के अलफाज़ समझने के काबिल हो जाएगा, 3 और दानाई दिलानेवाली तरबियत, रास्ती, इनसाफ और दियानतदारी अपनाएगा। 4 यह अमसाल सादालौह को होशियारी और नौजवान को इल्म और तमीज़ सिखाती हैं। 5 जो दाना है वह सुनकर अपने इल्म में इज़ाफा करे, जो समझदार है वह राहनुमाई करने का फ़न सीख ले। 6 तब वह अमसाल और तमसीलें, दानिशमंदों की बातें और उनके मुअम्मे समझ लेगा।  
 7 हिकमत इससे शुरू होती है कि हम रब का ख़ौफ़ मानें। सिर्फ़ अहमक हिकमत और तरबियत को हकीर जानते हैं।

### गलत साथियों से खबरदार

- 8 मेरे बेटे, अपने बाप की तरबियत के ताबे रह, और अपनी माँ की हिदायत मुस्तरद न कर। 9 क्योंकि यह तेरे सर पर दिलकश सेहरा और तेरे गले में गुलबंद हैं। 10 मेरे बेटे, जब खताकार तुझे फुसलाने की कोशिश करें तो उनके पीछे न हो ले। 11 उनकी बात न मान जब वह कहें, “आ, हमारे साथ चल! हम ताक में बैठकर किसी को कतल करें, बिलावजह किसी बेक़सूर की घात लगाएँ। 12 हम उन्हें पाताल की तरह जिंदा निगल लें, उन्हें मौत के गढे में उतरनेवालों की तरह एकदम हड़प कर लें। 13 हम हर क्रिस्म की क्रीमती चीज़ हासिल करेंगे, अपने घरों को लूट के माल से भर लेंगे। 14 आ, ज़ुरत करके हममें शरीक हो जा, हम लूट का तमाम माल बराबर तकसीम करेंगे।”  
 15 मेरे बेटे, उनके साथ मत जाना, अपना पाँव उनकी राहों पर रखने से रोक लेना। 16 क्योंकि उनके पाँव गलत काम के पीछे दौड़ते, खून बहाने के लिए भागते हैं। 17 जब चिड़ीमार अपना जाल लगाकर उस पर परिदों को फाँसने के लिए रोटी के टुकड़े बिखेर देता है तो परिदों की नज़र में यह बेमक़सद है। 18 यह लोग भी एक दिन फँस जाएंगे। जब ताक में बैठ जाते हैं तो अपने आपको तबाह करते हैं, जब दूसरों की घात लगाते हैं तो अपनी ही जान को नुक़सान पहुँचाते हैं। 19 यही उन सबका अंजाम है जो नारवा नफ़ा के पीछे भागते हैं। नाजायज़ नफ़ा अपने मालिक की जान छीन लेता है।

### हिकमत की पुकार

- 20 हिकमत गली में जोर से आवाज़ देती, चौकों में बुलंद आवाज़ से पुकारती है। 21 जहाँ सबसे ज्यादा शोर-शराबा है वहाँ वह चिल्ला चिल्लाकर बोलती, शहर के दरवाज़ों पर ही अपनी तकरीर करती है, 22 “ऐ सादालौह लोगो, तुम कब तक अपनी सादालौही से मुहब्बत रखोगे? मज़ाक़ उड़ानेवाले कब तक अपने मज़ाक़ से लुप्त उठाएँगे, अहमक कब तक इल्म से नफ़रत करेंगे? 23 आओ, मेरी सरज़निश पर ध्यान दो। तब मैं अपनी रूह का चश्मा तुम पर फूटने दूँगी, तुम्हें अपनी बातें सुनाऊँगी।  
 24 लेकिन जब मैंने आवाज़ दी तो तुमने इनकार किया, जब मैंने अपना हाथ तुम्हारी तरफ़ बढ़ाया तो किसी ने भी तबज़ुह न दी। 25 तुमने मेरे किसी मशवरे की परवा न की, मेरी मलामत तुम्हारे नज़दीक़ काबिले-कबूल नहीं थी। 26 इसलिए जब तुम पर आफ़त आएगी तो मैं कहकहा लगाऊँगी, जब तुम हौलनाक मुसीबत में फँस जाओगे तो तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाऊँगी। 27 उस वक़्त तुम पर दहशतनाक आँधी टूट पड़ेगी, आफ़त तूफ़ान की तरह तुम पर आएगी, और तुम मुसीबत और तकलीफ़ के सैलाब में डूब जाओगे। 28 तब वह मुझे आवाज़ देंगे, लेकिन मैं उनकी नहीं सुनूँगी, वह मुझे ढूँढ़ेंगे पर पाएँगे नहीं।

- 29 क्योंकि वह इल्म से नफ़रत करके रब का ख़ौफ़ मानने के लिए तैयार नहीं थे। 30 मेरा मशवरा उन्हें कबूल नहीं था बल्कि वह मेरी हर सरज़निश को हकीर जानते थे। 31 चुनाँचे अब वह अपने चाल-चलन का फल खाएँ, अपने मनसूबों की फ़सल खा खाकर सेर हो जाएँ।

- 32 क्योंकि सहीह राह से दूर होने का अमल सादालौह को मार डालता है, और अहमकों की बेपरवाई उन्हें तबाह करती है। 33 लेकिन जो मेरी सुने वह सुक़न से बसेगा, हौलनाक मुसीबत उसे परेशान नहीं करेगी।”

## 2

### हिकमत की अहमियत

1 मेरे बेटे, मेरी बात कबूल करके मेरे अहकाम अपने दिल में महफूज रख। 2 अपना कान हिकमत पर धर, अपना दिल समझ की तरफ मायल कर। 3 बसीरत के लिए आवाज दे, चिल्लाकर समझ माँग। 4 उसे यों तलाश कर गोया चाँदी हो, उसका यों खोज लगा गोया पोशीदा खजाना हो। 5 अगर तू ऐसा करे तो तुझे रब के खौफ की समझ आएगी और अल्लाह का इरफान हासिल होगा। 6 क्योंकि रब ही हिकमत अता करता, उसी के मुँह से इरफान और समझ निकलती है। 7 वह सीधी राह पर चलनेवालों को कामयाबी फराहम करता और बेइलजाम जिंदगी गुजारनेवालों की ढाल बना रहता है। 8 क्योंकि वह इनसाफ पसंदों की राहों की पहरादारी करता है। जहाँ भी उसके इमानदार चलते हैं वहाँ वह उनकी हिफाजत करता है।

9 तब तुझे रास्ती, इनसाफ, दियानतदारी और हर अच्छी राह की समझ आएगी। 10 क्योंकि तेरे दिल में हिकमत दाखिल हो जाएगी, और इल्मो-इरफान तेरी जान को प्यारा हो जाएगा। 11 तमीज़ तेरी हिफाजत और समझ तेरी चौकीदारी करेगी। 12 हिकमत तुझे गलत राह और कजरौ बातें करनेवाले से बचाए रखेगी। 13 ऐसे लोग सीधी राह को छोड़ देते हैं ताकि तारीक रास्तों पर चलें, 14 वह बुरी हरकतें करने से खुश हो जाते हैं, गलत काम की कजरवी देखकर जशन मनाते हैं। 15 उनकी राहें टेढ़ी हैं, और वह जहाँ भी चले आवारा फिरते हैं।

16 हिकमत तुझे नाजायज़ औरत से छुड़ाती है, उस अजनबी औरत से जो चिकनी-चुपड़ी बातें करती, 17 जो अपने जीवनसाथी को तर्क करके अपने खुदा का अहद भूल जाती है। 18 क्योंकि उसके घर में दाखिल होने का अंजाम मौत, उस की राहों की मनज़िले-मकसूद पाताल है। 19 जो भी उसके पास जाए वह वापस नहीं आएगा, वह जिंदगीबखश राहों पर दुबारा नहीं पहुँचेगा।

20 चुनौचे अच्छे लोगों की राह पर चल-फिर, ध्यान दे कि तेरे कदम रास्तबाज़ों के रास्ते पर रहें। 21 क्योंकि सीधी राह पर चलनेवाले मुल्क में आबाद होंगे, आखिरकार बेइलजाम ही उसमें बाकी रहेंगे। 22 लेकिन बेदीन मुल्क से मिट जाएंगे, और बेवफाओं को उखाड़कर मुल्क से खारिज कर दिया जाएगा।

### 3

#### अल्लाह के खौफ और हिकमत की बरकत

1 मेरे बेटे, मेरी हिदायत मत भूलना। मेरे अहकाम तेरे दिल में महफूज रहें। 2 क्योंकि इन्हीं से तेरी जिंदगी के दिनों और सालों में इजाफा होगा और तेरी खुशहाली बढ़ेगी। 3 शफ़क़त और वफ़ा तेरा दामन न छोड़ें। उन्हें अपने गले से बाँधना, अपने दिल की तख़्ती पर कंदा करना। 4 तब तुझे अल्लाह और इनसान के सामने मेहरबानी और कबूलियत हासिल होगी।

5 पूरे दिल से रब पर भरोसा रख, और अपनी अक्ल पर तकिया न कर। 6 जहाँ भी तू चले सिर्फ उसी को जान ले, फिर वह खुद तेरी राहों को हमवार करेगा। 7 अपने आपको दानिशमंद मत समझना बल्कि रब का खौफ मानकर बुराई से दूर रह। 8 इससे तेरा बदन सेहत पाएगा और तेरी हड्डियाँ तरो-ताज़ा हो जाएँगी। 9 अपनी मिलकियत और अपनी तमाम पैदावार के पहले फल से रब का एहतराम कर, 10 फिर तेरे गोदाम अनाज से भर जाएंगे और तेरे बरतन में से छलक उठेंगे।

11 मेरे बेटे, रब की तरबियत को रद्द न कर, जब वह तुझे डाँटे तो रंजीदा न हो। 12 क्योंकि जो रब को प्यारा है उस की वह तादीब करता है, जिस तरह बाप उस बेटे को तंबीह करता है जो उसे पसंद है।

#### हकीकी दौलत

13 मुबारक है वह जो हिकमत पाता है, जिसे समझ हासिल होती है। 14 क्योंकि हिकमत चाँदी से कहीं ज़्यादा सूदमंद है, और उससे सोने से कहीं ज़्यादा कीमती चीज़ें हासिल होती हैं। 15 हिकमत मोतियों से ज़्यादा नफीस है, तेरे तमाम खजाने उसका मुक़ाबला नहीं कर सकते। 16 उसके दहने हाथ में उग्र की दराज़ी और बाएँ हाथ में दौलत और इज़्जत है। 17 उस की राहें खुशगवार, उसके तमाम रास्ते पुरअमन हैं। 18 जो उसका दामन पकड़ ले उसके लिए वह जिंदगी का दरख्त है। मुबारक है वह जो उससे लिपटा रहे। 19 रब ने हिकमत के वसीले से ही ज़मीन की बुनियाद रखी, समझ के ज़रीए ही आसमान को मज़बूती से लगाया। 20 उसके इरफान से ही गहराइयों का पानी फूट निकला और आसमान से शबनम टपककर ज़मीन पर पड़ती है।

21 मेरे बेटे, दानाई और तमीज़ अपने पास महफूज रख और उन्हें अपनी नज़र से दूर न होने दे। 22 उनसे तेरी जान तरो-ताज़ा और तेरा गला आरास्ता रहेगा। 23 तब तू चलते वक़्त महफूज रहेगा, और तेरा पाँव ठोकर नहीं खाएगा। 24 तू पाँव फैलाकर सो सकेगा, कोई सदमा तुझे नहीं पहुँचेगा बल्कि तू लेटकर गहरी नींद सोएगा। 25 नागहाँ आफ़त से मत डरना, न उस तबाही से जो बेदीन पर गालिब आती है, 26 क्योंकि रब पर तेरा एतमाद है, वही तेरे पाँवों को फँस जाने से महफूज रखेगा।

#### दूसरों की मदद करने की नसीहत



27 अगर कोई जरूरतमंद हो और तू उस की मदद कर सके तो उसके साथ भलाई करने से इनकार न कर। 28 अगर तू आज कुछ दे सके तो अपने पड़ोसी से मत कहना, “कल आना तो मैं आपको कुछ दे दूँगा।” 29 जो पड़ोसी बेफिक्र तैरे साथ रहता है उसके खिलाफ बुरे मनसबे मत बाँधना। 30 जिसने तुझे नुकसान नहीं पहुँचाया अदालत में उस पर बेबुनियाद इलजाम न लगाना।

31 न ज़ालिम से हसद कर, न उस की कोई राह इख्तियार कर। 32 क्योंकि बुरी राह पर चलनेवाले से रब घिन खाता है जबकि सीधी राह पर चलनेवालों को वह अपने राजों से आगाह करता है। 33 बेदीन के घर पर रब की लानत आती जबकि रास्तबाज़ के घर को वह बरकत देता है। 34 मज़ाक उड़ानेवालों का वह मज़ाक उड़ाता, लेकिन फ़रीतनों पर मेहरबानी करता है। 35 दानिशमंद मीरास में इज़्जत पाएँगे जबकि अहमक के नसीब में शर्मिंदगी होगी।

## 4

### बाप की नसीहत

1 ऐ बेटो, बाप की नसीहत सुनो, ध्यान दो ताकि तुम सीखकर समझ हासिल कर सको। 2 मैं तुम्हें अच्छी तालीम देता हूँ, इसलिए मेरी हिदायत को तर्क न करो। 3 मैं अभी अपने बाप के घर में नाजूक लडका था, अपनी माँ का वाहिद बच्चा, 4 तो मेरे बाप ने मुझे तालीम देकर कहा,

“पूरे दिल से मेरे अलफ़ाज़ अपना ले और हर वक़्त मेरे अहकाम पर अमल कर तो तू जीता रहेगा। 5 हिकमत हासिल कर, समझ अपना ले! यह चीज़ें मत भूलना, मेरे मुँह के अलफ़ाज़ से दूर न होना। 6 हिकमत तर्क न कर तो वह तुझे महफूज़ रखेगी। उससे मुहब्बत रख तो वह तेरी देख-भाल करेगी। 7 हिकमत इससे शुरू होती है कि तू हिकमत अपना ले। समझ हासिल करने के लिए बाकी तमाम मिलकियत कुरबान करने के लिए तैयार हो। 8 उसे अजीज़ रख तो वह तुझे सरफ़राज़ करेगी, उसे गले लगा तो वह तुझे इज़्जत बख़ोरेगी। 9 तब वह तेरे सर को खूबसूरत सेहरे से आरास्ता करेगी और तुझे शानदार ताज़ से नवाजेगी।”

10 मेरे बेटे, मेरी सुन! मेरी बातें अपना ले तो तेरी उम्र दराज़ होगी। 11 मैं तुझे हिकमत की राह पर चलने की हिदायत देता, तुझे सीधी राहों पर फिरने देता हूँ। 12 जब तू चलेगा तो तेरे कदमों को किसी भी चीज़ से रोका नहीं जाएगा, और दौड़ते वक़्त तू ठोकर नहीं खाएगा। 13 तरबियत का दामन थामे रह! उसे न छोड़ बल्कि महफूज़ रख, क्योंकि वह तेरी ज़िंदगी है।

14 बेदीनों की राह पर कदम न रख, शरि़रों के रास्ते पर मत जा। 15 उससे ग़ुरेज़ कर, उस पर सफ़र न कर बल्कि उससे कतराकर आगे निकल जा। 16 क्योंकि जब तक उनसे बुरा काम सरज़द न हो जाए वह सो ही नहीं सकते, जब तक उन्होंने किसी को ठोकर खिलाकर खाक में मिला न दिया हो वह नींद से महरूम रहते हैं। 17 वह बेदीनी की रोटी खाते और ज़ुल्म की भे पीते हैं। 18 लेकिन रास्तबाज़ की राह तुलूए-सुबह की पहली रौशनी की मानिंद है जो दिन के उरूज तक बढ़ती रहती है। 19 इसके मुकाबले में बेदीन का रास्ता गहरी तारीकी की मानिंद है, उन्हें पता ही नहीं चलता कि किस चीज़ से ठोकर खाकर गिर गए हैं।

20 मेरे बेटे, मेरी बातों पर ध्यान दे, मेरे अलफ़ाज़ पर कान धर। 21 उन्हें अपनी नज़र से ओझल न होने दे बल्कि अपने दिल में महफूज़ रख। 22 क्योंकि जो यह बातें अपनाएँ वह ज़िंदगी और पूरे जिस्म के लिए शफ़ा पाते हैं। 23 तमाम चीज़ों से पहले अपने दिल की हिफ़ाज़त कर, क्योंकि यही ज़िंदगी का सरचश्मा है। 24 अपने मुँह से झूट और अपने होंटों से कजगोई दूर कर। 25 ध्यान दे कि तेरी आँखें सीधा आगे की तरफ़ देखें, कि तेरी नज़र उस रास्ते पर लगी रहे जो सीधा है। 26 अपने पाँवों का रास्ता चलने के काबिल बना दे, ध्यान दे कि तेरी राहें मज़बूत हैं। 27 न दाईं, न बाईं तरफ़ मुड़ बल्कि अपने पाँवों को ग़लत कदम उठाने से बाज़ रख।

## 5

### ज़िनाकारी से खबरदार

1 मेरे बेटे, मेरी हिकमत पर ध्यान दे, मेरी समझ की बातों पर कान धर। 2 फिर तू तमीज़ का दामन थामे रहेगा, और तैरे होंट इल्मो-इस्फ़ान महफूज़ रखेंगे। 3 क्योंकि ज़िनाकार औरत के होंटों से शहद टपकता है, उस की बातें तेल की तरह चिकनी-चूपडी होती हैं। 4 लेकिन अंजाम में वह ज़हर जैसी कड़वी और दोधारी तलवार जैसी तेज़ साबित होती है। 5 उसके पाँव मौत की तरफ़ उतरते, उसके कदम पाताल की जानिब बढ़ते जाते हैं। 6 उसके रास्ते कभी इधर कभी इधर फिरते हैं ताकि तू ज़िंदगी की राह पर तवज़ूह न दे और उस की आवारगी को जान न ले।

7 चुनौंचे मेरे बेटो, मेरी सुनो और मेरे मुँह की बातों से दूर न हो जाओ। 8 अपने रास्ते उससे दूर रख, उसके घर के दरवाज़े के करीब भी न जा। 9 ऐसा न हो कि तू अपनी ताकत किसी और के लिए सर्फ़ करे और अपने साल ज़ालिम के लिए जाया करे। 10 ऐसा न हो कि परदेसी तेरी मिलकियत से सेर हो जाएँ, कि जो कुछ तूने मेहनत-मशक्कत से हासिल किया वह किसी

और के घर में आए। 11 तब आखिरकार तेरा बदन और गोशत घुल जाएंगे, और तू आहें भर भरकर 12 कहेगा, “हाय, मैंने क्यों तरबियत से नफरत की, मेरे दिल ने क्यों सरजनिश को हकीर जाना? 13 हिदायत करनेवालों की मैंने न सुनी, अपने उस्तादों की बातों पर कान न धरा। 14 जमात के दरमियान ही रहते हुए मुझ पर ऐसी आफत आई कि मैं तबाही के दहाने तक पहुँच गया हूँ।”

15 अपने ही हौज़ का पानी और अपने ही कुँसे से फूटनेवाला पानी पी ले। 16 क्या मुनासिब है कि तेरे चश्मे गलियों में और तेरी नदियों चौकों में बह निकलें? 17 जो पानी तेरा अपना है वह तुझ तक महदूद रहे, अजनबी उसमें शरीक न हो जाए। 18 तेरा चश्मा मुबारक हो। हौं, अपनी बीबी से खुश रह। 19 वही तेरी मनमोहन हिरनी और दिलसबा गज़ाल \* है। उसी का प्यार तुझे तरो-ताज़ा करे, उसी की मुहब्बत तुझे हमेशा मस्त रखे।

20 मेरे बेटे, तू अजनबी औरत से क्यों मस्त हो जाए, किसी दूसरे की बीबी से क्यों लिपट जाए? 21 खयाल रख, इनसान की राहें रब को साफ दिखाई देती हैं, जहाँ भी वह चले उस पर वह तबज्जुह देता है। 22 बेदीन की अपनी ही हरकतें उसे फँसा देती हैं, वह अपने ही गुनाह के रस्सों में जकड़ा रहता है। 23 वह तरबियत की कमी के सबब से हलाक हो जाएगा, अपनी बड़ी हमाकत के बाइस डगमगाते हुए अपने अंजाम को पहुँचेगा।

## 6

### जमानत देने, काहिली और झूट से खबरदार

1 मेरे बेटे, क्या तू अपने पड़ोसी का जामिन बना है? क्या तूने हाथ मिलाकर वादा किया है कि मैं किसी दूसरे का ज़िम्मादार ठहरेगा? 2 क्या तू अपने वादे से बाँधा हुआ, अपने मुँह के अलफ़ाज़ से फँसा हुआ है? 3 ऐसा करने से तू अपने पड़ोसी के हाथ में आ गया है, इसलिए अपनी जान को छुड़ाने के लिए उसके सामने औंधे मुँह होकर उसे अपनी मिन्नत-समाजत से तंग कर। 4 अपनी आँखों को सोने न दे, अपने पपोटों को ऊँघने न दे जब तक तू इस ज़िम्मादारी से फारिग न हो जाए। 5 जिस तरह गज़ाल शिकारी के हाथ से और परिदा चिडीमार के हाथ से छूट जाता है उसी तरह सिर-तोड़ कोशिश कर ताकि तेरी जान छूट जाए।

6 ऐ काहिल, चियँटी के पास जाकर उस की राहों पर गौर कर! उसके नमूने से हिकमत सीख ले। 7 उस पर न सरदार, न अफ़सर या हुक्मरान मुकर्रर है, 8 तो भी वह गरमियों में सर्दियों के लिए खाने का ज़ख़ीरा कर रखती, फ़सल के दिनों में खूब खुराक इकट्ठी करती है। 9 ऐ काहिल, तू मज़ीद कब तक सोया रहेगा, कब जाग उठेगा? 10 तू कहता है, “मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने दे ताकि आराम कर सकूँ।” 11 लेकिन खबरदार, जल्द ही गुरबत राहजन की तरह तुझ पर आएगी, मुफ़लिसी हथियार से लेस डाकू की तरह तुझ पर टूट पड़ेगी।

12 बदमाश और कमीना किस तरह पहचाना जाता है? वह मुँह में झूट लिए फिरता है, 13 अपनी आँखों, पाँवों और उँगलियों से इशारा करके तुझे फ़रेब के जाल में फँसाने की कोशिश करता है। 14 उसके दिल में कज़ी है, और वह हर वक्त बुरे मनसूबे बाँधने में लगा रहता है। जहाँ भी जाए वहाँ झगड़े छिड़ जाते हैं। 15 लेकिन ऐसे शख्स पर अचानक ही आफत आएगी। एक ही लमहे में वह पाश पाश हो जाएगा। तब उसका इलाज नामुमकिन होगा।

16 रब छः चीज़ों से नफरत बल्कि सात चीज़ों से घिन खाता है,

17 वह आँखें जो गुर्र से देखती हैं, वह ज़बान जो झूट बोलती है, वह हाथ जो बेगुनाहों को क़त्ल करते हैं, 18 वह दिल जो बुरे मनसूबे बाँधता है, वह पाँव जो दूसरों को नुक़सान पहुँचाने के लिए भागते हैं, 19 वह गवाह जो अदालत में झूट बोलता और वह जो भाइयों में झगड़ा पैदा करता है।

### जिना करने से खबरदार

20 मेरे बेटे, अपने बाप के हुक्म से लिपटा रह, और अपनी माँ की हिदायत नज़रंदार न कर। 21 उन्हें यों अपने दिल के साथ बाँधे रख कि कभी दूर न हो जाएँ। उन्हें हार की तरह अपने गले में डाल ले। 22 चलते वक़्त वह तेरी राहनुमाई करें, आराम करते वक़्त तेरी पहरादारी करें, जागते वक़्त तुझसे हमकलाम हों। 23 क्योंकि बाप का हुक्म चराग और माँ की हिदायत रौशन है, तरबियत की डॉट-डपट ज़िदाबख़्शा राह है। 24 यों तू बदकार औरत और दूसरे की जिनाकार बीबी की चिकनी-चुपड़ी बातों से महफूज़ रहेगा। 25 दिल में उसके हुस्र का लालच न कर, ऐसा न हो कि वह पलक मार मारकर तुझे पकड़ ले। 26 क्योंकि गो कसबी आदमी को उसके पैसे से महरूम करती है, लेकिन दूसरे की जिनाकार बीबी उस की कीमती जान का शिकार करती है।

\* 5:19 लफ़्ज़ी तरजूमा : पहाडी बकरी।

27 क्या इनसान अपनी झोली में भड़कती आग यों उठाकर फिर सकता है कि उसके कपडे न जलें? 28 या क्या कोई दहकते कोयलों पर यों फिर सकता है कि उसके पाँव झुलस न जाएँ? 29 इसी तरह जो किसी दूसरे की बीवी से हमबिसतर हो जाए उसका अंजाम बुरा है, जो भी दूसरे की बीवी को छेडे उसे सज़ा मिलेगी। 30 जो भूक के मारे अपना पेट भरने के लिए चोरी करे उसे लोग हद से ज्यादा हकीर नहीं जानते, 31 हालाँकि उसे चोरी किए हुए माल को सात गुना वापस करना है और उसके घर की दौलत जाती रहेगी। 32 लेकिन जो किसी दूसरे की बीवी के साथ जिना करे वह बेअक़ल है। जो अपनी जान को तबाह करना चाहे वही ऐसा करता है। 33 उस की पिटाई और बेइज़्जती की जाएगी, और उस की शरमिंदगी कभी नहीं मिटेगी। 34 क्योंकि शौहर गैरत खाकर और तैश में आकर बेरहमी से बदला लेगा। 35 न वह कोई मुआवज़ा कबूल करेगा, न रिश्तत लेगा, खाह कितनी ज्यादा क्यों न हो।

## 7

### बेवफ़ा बीवी

1 मेरे बेटे, मेरे अलफ़ाज़ की पैरवी कर, मेरे अहकाम अपने अंदर महफूज़ रख। 2 मेरे अहकाम के ताबे रह तो जीता रहेगा। अपनी आँख की पुतली की तरह मेरी हिदायत की हिफ़ाज़त कर। 3 उन्हें अपनी उँगली के साथ बाँध, अपने दिल की तख़ती पर कंदा कर। 4 हिक्मत से कह, “तू मेरी बहन है,” और समझ से, “तू मेरी करीबी रिश्तेदार है।” 5 यही तुझे जिनाकार औरत से महफूज़ रखेगी, दूसरे की उस बीवी से जो अपनी चिकनी-चूपड़ी बातों से तुझे फुसलाने की कोशिश करती है।

6 एक दिन मैंने अपने घर की खिड़की \* में से बाहर झाँका 7 तो क्या देखता हूँ कि वहाँ कुछ सादालौह नौजवान खडे हैं। उनमें से एक बेअक़ल जवान नज़र आया। 8 वह गली में से गुज़रकर जिनाकार औरत के कोने की तरफ टहलने लगा। चलते चलते वह उस रास्ते पर आ गया जो औरत के घर तक ले जाता है। 9 शाम का धुँधलका था, दिन ढलने और रात का अंधेरा छाने लगा था। 10 तब एक औरत कसबी का लिबास पहने हुए चालाकी से उससे मिलने आई। 11 यह औरत इतनी बेलगाम और खुदसर है कि उसके पाँव उसके घर में नहीं टिकते। 12 कभी वह गली में, कभी चौकों में होती है, हर कोने पर वह ताक में बैठी रहती है।

13 अब उसने नौजवान को पकड़कर उसे बोसा दिया। बेहया नज़र उस पर डालकर उसने कहा, 14 “मुझे सलामती की कुरबानियाँ पेश करनी थीं, और आज ही मैंने अपनी मन्तों पूरी की। 15 इसलिए मैं निकलकर तुझसे मिलने आई, मैंने तेरा पता किया और अब तू मुझे मिल गया है। 16 मैंने अपने बिस्तर पर मिसर के रंगीन कम्बल बिछाए, 17 उस पर मुर, ऊद और दारचीनी की खुशबू छिड़की है। 18 आओ, हम सुबह तक मुहब्बत का प्याला तह तक पी लें, हम इश्कबाज़ी से लुत्फअंदोज़ हों! 19 क्योंकि मेरा खाविद घर में नहीं है, वह लंबे सफ़र के लिए रवाना हुआ है। 20 वह बटवे में पैसे डालकर चला गया है और पूरे चाँद तक वापस नहीं आएगा।”

21 ऐसी बातें करते करते औरत ने नौजवान को तरगीब देकर अपनी चिकनी-चूपड़ी बातों से वरगलाया। 22 नौजवान सीधा उसके पीछे यों हो लिया जिस तरह बैल जबह होने के लिए जाता या हिरन उछलकर फंदे में फँस जाता है। 23 क्योंकि एक वक्रत आया कि तीर उसका दिल चीर डालेगा। लेकिन फ़िलहाल उस की हालत उस चिडिया की मानिंद है जो उड़कर जाल में आ जाती और खयाल तक नहीं करती कि मेरी जान खतरे में है।

24 चुनौचे मेरे बेटो, मेरी सुनो, मेरे मुँह की बातों पर ध्यान दो! 25 तेरा दिल भटककर उस तरफ़ स्रब न करे जहाँ जिनाकार औरत फिरती है, ऐसा न हो कि तू आवारा होकर उस की राहों में उलझ जाए। 26 क्योंकि उनकी तादाद बड़ी है जिन्हें उसने गिराकर मौत के घाट उतारा है, उसने मृतअदिद लोगों को मार डाला है। 27 उसका घर पाताल का रास्ता है जो लोगों को मौत की कोठडियों तक पहुँचाता है।

## 8

### हिक्मत की दावत और वादा

1 सुनो! क्या हिक्मत आवाज़ नहीं देती? हाँ, समझ ऊँची आवाज़ से एलान करती है। 2 वह बुलंदियों पर खड़ी है, उस जगह जहाँ तमाम रास्ते एक दूसरे से मिलते हैं। 3 शहर के दरवाज़ों पर जहाँ लोग निकलते और दाखिल होते हैं वहाँ हिक्मत जोरदार आवाज़ से पुकारती है,

4 “एे मर्दो, मैं तुम्हीं को पुकारती हूँ, तमाम इनसानों को आवाज़ देती हूँ।

5 ऐ सादालौहो, होशियारी सीख लो! ऐ अहमको, समझ अपना लो!

\* 7:6 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : घर की खिड़की के जंगले।

- 6 सुनो, क्योंकि मैं शराफत की बातें करती हूँ, और मेरे हॉट सच्चाई पेश करते हैं।
- 7 मेरा मुँह सच बोलता है, क्योंकि मेरे हॉट बेदीनी से घिन खाते हैं।
- 8 जो भी बात मेरे मुँह से निकले वह रास्त है, एक भी पेचदार या टेढ़ी नहीं है।
- 9 समझदार जानता है कि मेरी बातें सब दुस्त हैं, इल्म रखनेवाले को मालूम है कि वह सही है।
- 10 चाँदी की जगह मेरी तरबियत और खालिस सोने के बजाए इल्मो-इफान अपना लो।
- 11 क्योंकि हिकमत मोतियों से कहीं बेहतर है, कोई भी खजाना उसका मुकाबला नहीं कर सकता।
- 12 मैं जो हिकमत हूँ होशियारी के साथ बसती हूँ, और मैं तमीज़ का इल्म रखती हूँ।
- 13 जो रब का खौफ मानता है वह बुराई से नफरत करता है। मुझे गुस्सा, तकब्बुर, गलत चाल-चलन और टेढ़ी बातों से नफरत है।
- 14 मेरे पास अच्छा मशवरा और कामयाबी है। मेरा दूसरा नाम समझ है, और मुझे कुव्वत हासिल है।
- 15 मेरे वसीले से बादशाह सलतनत और हुक्मरान रास्त फैसले करते हैं।
- 16 मेरे ज़रीए रईस और शुरफा बल्कि तमाम आदिल मुसिफ हुक्मत करते हैं।
- 17 जो मुझे प्यार करते हैं उन्हें मैं प्यार करती हूँ, और जो मुझे ढूँढते हैं वह मुझे पा लेते हैं।
- 18 मेरे पास इज्जतो-दौलत, शानदार माल और रास्ती है।
- 19 मेरा फल सोने बल्कि खालिस सोने से कहीं बेहतर है, मेरी पैदावार खालिस चाँदी पर सबकत रखती है।
- 20 मैं रास्ती की राह पर ही चलती हूँ, वही जहाँ इनसाफ है।
- 21 जो मुझे मुहब्बत रखते हैं उन्हें मैं मीरास में दौलत मुहैया करती हूँ। उनके गोदाम भरे रहते हैं।

### हिकमत का तखलीक में हिस्सा

- 22 जब रब तखलीक का सिलसिला अमल में लाया तो पहले उसने मुझे ही बनाया। कदमी ज़माने में मैं उसके दीगर कामों से पहले ही वुजुद में आई।
- 23 मुझे अज़ल से मुकर्रर किया गया, इब्तिदा ही से जब दुनिया अभी पैदा नहीं हुई थी।
- 24 न समुंदर की गहराइयों, न कसरत से फूटनेवाले चश्मे थे जब मैंने जन्म लिया।
- 25 न पहाड़ अपनी अपनी जगह पर कायम हुए थे, न पहाड़ियाँ थी जब मैं पैदा हुई।
- 26 उस वक़्त अल्लाह ने न ज़मीन, न उसके मैदान, और न दुनिया के पहले ढेले बनाए थे।
- 27 जब उसने आसमान को उस की जगह पर लगाया और समुंदर की गहराइयों पर ज़मीन का इलाका मुकर्रर किया तो मैं साथ थी।
- 28 जब उसने आसमान पर बादलों और गहराइयों में सरचश्मों का इंतज़ाम मजबूत किया तो मैं साथ थी।
- 29 जब उसने समुंदर की हँडे मुकर्रर की और हुक्म दिया कि पानी उनसे तजावुज़ न करे, जब उसने ज़मीन की बुनियादें अपनी अपनी जगह पर रखी
- 30 तो मैं माहिर कारीगर की हैसियत से उसके साथ थी। रोज़ बरोज़ मैं लुत्फ का बाइस थी, हर वक़्त उसके हुज़ूर रंगरलियों मनाती रही।
- 31 मैं उस की ज़मीन की सतह पर रंगरलियाँ मनाती और इनसान से लुत्फअंदोज़ होती रही।
- 32 चुनाँचे मेरे बेटे, मेरी सुनो, क्योंकि मुबारक हैं वह जो मेरी राहों पर चलते हैं।
- 33 मेरी तरबियत मानकर दानिशमंद बन जाओ, उसे नज़रंदाज़ मत करना।
- 34 मुबारक है वह जो मेरी सुने, जो रोज़ बरोज़ मेरे दरवाज़े पर चौकस खड़ा रहे, रोज़ाना मेरी चौखट पर हाज़िर रहे।
- 35 क्योंकि जो मुझे पाए वह ज़िंदगी और रब की मंजूरी पाता है।
- 36 लेकिन जो मुझे पाने से कासिर रहे वह अपनी जान पर जुल्म करता है, जो भी मुझे नफरत करे उसे मौत प्यारी है।”

## 9

### हिकमत की ज़ियाफत

- 1 हिकमत ने अपना घर तामीर करके अपने लिए सात सतून तराश लिए हैं।
- 2 अपने जानवरों को ज़बह करने और अपनी मैं तैयार करने के बाद उसने अपनी मेज़ बिछाई है।<sup>3</sup> अब उसने अपनी नौकरानियों को भेजा है, और खुद भी लोगों को शहर की बुलंदियों से ज़ियाफत करने की दावत देती है,

4 “जो सादालौह है, वह मेरे पास आए।” नासमझ लोगों से वह कहती है, 5 “आओ, मेरी रोटी खाओ, वह मैं पियो जो मैंने तैयार कर रखी है। 6 अपनी सादालौह राहों से बाज़ आओ तो जीते रहोगे, समझ की राह पर चल पड़ो।”

7 जो लान-तान करनेवाले को तालीम दे उस की अपनी स्सवाई हो जाएगी, और जो बेदीन को डॉटि उसे नुकसान पहुँचेगा।

8 लान-तान करनेवाले की मलामत न कर करना वह तुझसे नफरत करेगा। दानिशमंद की मलामत कर तो वह तुझसे मुहब्बत करेगा। 9 दानिशमंद को हिदायत दे तो उस की हिकमत मज़ीद बढ़ेगी, रास्तबाज़ को तालीम दे तो वह अपने इल्म में इज़ाफा करेगा।

10 रब का खौफ मानने से ही हिकमत शुरू होती है, कुदूस खुदा को जानने से ही समझ हासिल होती है। 11 मुझसे ही तेरी उम्र के दिनों और सालों में इज़ाफा होगा। 12 अगर तू दानिशमंद हो तो खुद इससे फायदा उठाएगा, अगर लान-तान करनेवाला हो तो तुझे ही इसका नुकसान झेलना पड़ेगा।

हमाक़त बीबी की ज़ियाफ़त

13 हमाक़त बीबी बेलगाम और नासमझ है, वह कुछ नहीं जानती। 14 उसका घर शहर की बुलंदी पर वाके है। दरवाज़े के पास कुरसी पर बैठी 15 वह गुज़रनेवालों को जो सीधी राह पर चलते हैं ऊँची आवाज़ से दावत देती है, 16 “जो सादालौह है वह मेरे पास आए।”

जो नासमझ है उनसे वह कहती है, 17 “चोरी का पानी मीठा और पोशीदगी में खाई गई रोटी लज़ीज़ होती है।”

18 लेकिन उन्हें मालूम नहीं कि हमाक़त बीबी के घर में सिर्फ़ मुरदों की रूहें बसती हैं, कि उसके मेहमान पाताल की गहराइयों में रहते हैं।

## 10

सुलेमान की हिकमत भरी हिदायत

1 ज़ैल में सुलेमान की अमसाल कलमबंद हैं।

ज़िंदगीबाख़शा बातें

दानिशमंद बेटा अपने बाप को खुशी दिलाता जबकि अहमक बेटा अपनी माँ को दुख पहुँचाता है।

2 ख़जानों का कोई फ़ायदा नहीं अगर वह बेदीन तरीकों से जमा हो गए हों, लेकिन रास्तबाज़ी मौत से बचाए रखती है।

3 रब रास्तबाज़ को भुके मरने नहीं देता, लेकिन बेदीनों का लालच रोक देता है।

4 ढीले हाथ गुरबत और मेहनती हाथ दौलत की तरफ़ ले जाते हैं।

5 जो गरमियों में फ़सल जमा करता है वह दानिशमंद बेटा है जबकि जो फ़सल की कटाई के वक़्त सोया रहता है वह वालिदैन के लिए शर्म का बाइस है।

6 रास्तबाज़ का सर बरकत के ताज से आरास्ता रहता है जबकि बेदीनों के मुँह पर ज़ुल्म का परदा पड़ा रहता है।

7 लोग रास्तबाज़ को याद करके उसे मुबारक कहते हैं, लेकिन बेदीन का नाम सड़कर मिट जाएगा।

8 जो दिल से दानिशमंद है वह अहकाम क़बूल करता है, लेकिन बकवासी तबाह हो जाएगा।

9 जिसका चाल-चलन बेइलज़ाम है वह सुकून से ज़िंदगी गुज़ारता है, लेकिन जो टेढ़ा रास्ता इख़्तियार करे उसे पकड़ा जाएगा।

10 आँख मारनेवाला दुख पहुँचाता है, और बकवासी तबाह हो जाएगा।

11 रास्तबाज़ का मुँह ज़िंदगी का सरचश्मा है, लेकिन बेदीन के मुँह पर ज़ुल्म का परदा पड़ा रहता है।

12 नफ़रत झगड़े छेड़ती रहती जबकि मुहब्बत तमाम ख़ताओं पर परदा डाल देती है।

13 समझदार के होंटों पर हिकमत पाई जाती है, लेकिन नासमझ सिर्फ़ डंडे का पैग़ाम समझता है।

14 दानिशमंद अपना इल्म महफूज़ रखते हैं, लेकिन अहमक का मुँह जल्द ही तबाही की तरफ़ ले जाता है।

15 अमीर की दौलत किलाबंद शहर है जिसमें वह महफूज़ है जबकि गरीब की गुरबत उस की तबाही का बाइस है।

16 जो कुछ रास्तबाज़ कमा लेता है वह ज़िंदगी का बाइस है, लेकिन बेदीन अपनी रोज़ी गुनाह करने के लिए इस्तेमाल करता है।

17 जो तरबियत कबूल करे वह दूसरों को ज़िंदगी की राह पर लाता है, जो नसीहत नज़रंदाज़ करे वह दूसरों को सही राह से दूर ले जाता है।

18 जो अपनी नफ़रत छुपाए रखे वह झूट बोलता है, जो दूसरों के बारे में ग़लत ख़बरें फैलाए वह अहमक है।

19 जहाँ बहुत बातें की जाती हैं वहाँ गुनाह भी आ मौजूद होता है, जो अपनी ज़बान को काबू में रखे वह दानिशमंद है।

- 20 रास्तबाज़ की ज़बान उम्दा चाँदी है जबकि बेदीन के दिल की कोई कदर नहीं।
- 21 रास्तबाज़ की ज़बान बहुतों की परवरिश करती है, \* लेकिन अहमक अपनी बेअकली के बाइस हलाक हो जाते हैं।
- 22 रब की बरकत दौलत का बाइस है, हमारी अपनी मेहनत-मशक़त इसमें इज़ाफ़ा नहीं करती।
- 23 अहमक ग़लत काम से अपना दिल बहलाता, लेकिन समझदार हिकमत से लुफ़अंदोज़ होता है।
- 24 जिस चीज़ से बेदीन दहशत खाता है वही उस पर आएगी, लेकिन रास्तबाज़ की आरजू पूरी हो जाएगी।
- 25 जब तूफ़ान आते हैं तो बेदीन का नामो-निशान मिट जाता जबकि रास्तबाज़ हमेशा तक कायम रहता है।
- 26 जिस तरह दाँत सिरके से और आँखें धुँए से तंग आ जाती हैं उसी तरह वह तंग आ जाता है जो सुस्त आदमी से काम करवाता है।
- 27 जो रब का ख़ौफ़ माने उस की ज़िंदगी के दिनों में इज़ाफ़ा होता है जबकि बेदीन की ज़िंदगी वक़्त से पहले ही ख़त्म हो जाती है।
- 28 रास्तबाज़ आखिरकार खुशी मनाएँगे, क्योंकि उनकी उम्मीद बर आएगी। लेकिन बेदीनों की उम्मीद जाती रहेगी।
- 29 रब की राह बेइलज़ाम शख्स के लिए पनाहगाह, लेकिन बदकार के लिए तबाही का बाइस है।
- 30 रास्तबाज़ कभी डौर्वांडोल नहीं होगा, लेकिन बेदीन मुल्क में आबाद नहीं रहेंगे।
- 31 रास्तबाज़ का मुँह हिकमत का फल लाता रहता है, लेकिन कजगो ज़बान को काट डाला जाएगा।
- 32 रास्तबाज़ के होंट जानते हैं कि अल्लाह को क्या पसंद है, लेकिन बेदीन का मुँह टेढ़ी बातें ही जानता है।

## 11

- 1 रब ग़लत तराजू से घिन खाता है, वह सहीह तराजू ही से ख़ुश होता है।
- 2 जहाँ तकब्रुक है वहाँ बदनामी भी करीब ही रहती है, लेकिन जो हलीम है उसके दामन में हिकमत रहती है।
- 3 सीधी राह पर चलनेवालों की दिशानतदारी उनकी राहनुमाई करती जबकि बेवफ़ाओं की नमकहरामी उन्हें तबाह करती है।
- 4 ग़ज़ब के दिन दौलत का कोई फ़ायदा नहीं जबकि रास्तबाज़ी लोगों की जान को छुड़ाना है।
- 5 बेइलज़ाम की रास्तबाज़ी उसका रास्ता हमवार बना देती है जबकि बेदीन की बुरी हरकतों उसे गिरा देती है।
- 6 सीधी राह पर चलनेवालों की रास्तबाज़ी उन्हें छुड़ा देती जबकि बेवफ़ाओं का लालच उन्हें फँसा देता है।
- 7 दम तोड़ते वक़्त बेदीन की सारी उम्मीद जाती रहती है, जिस दौलत की तवक्क़ो उसने की वह जाती रहती है।
- 8 रास्तबाज़ की जान मुसीबत से छूट जाती है, और उस की जगह बेदीन फँस जाता है।
- 9 काफ़िर अपने मुँह से अपने पड़ोसी को तबाह करता है, लेकिन रास्तबाज़ों का इल्म उन्हें छुड़ाना है।
- 10 जब रास्तबाज़ कामयाब हों तो पूरा शहर जशन मनाता है, जब बेदीन हलाक हों तो खुशी के नारे बुलंद हो जाते हैं।
- 11 सीधी राह पर चलनेवालों की बरकत से शहर तरक्की करता है, लेकिन बेदीन के मुँह से वह मिसमार हो जाता है।
- 12 नासमझ आदमी अपने पड़ोसी को हक़ीर जानता है जबकि समझदार आदमी खामोश रहता है।
- 13 तोहमत लगानेवाला दूसरों के राज़ फ़ाश करता है, लेकिन काबिले-एतमाद शख्स वह भेद पोशीदा रखता है जो उसके सुपुर्द किया गया हो।
- 14 जहाँ कियादत की कमी है वहाँ क़ौम का तनज़्जुल यकीनी है, जहाँ मुशीरों की कसरत है वहाँ क़ौम फतहयाब रहेगी।
- 15 जो अजनबी का ज़ामिन हो जाए उसे यकीनन नुक़सान पहुँचेगा, जो ज़ामिन बनने से इनकार करे वह महफूज़ रहेगा।
- 16 नेक औरत इज़्जत से और ज़ालिम आदमी दौलत से लिपटे रहते हैं।
- 17 शफ़ीक़ का अच्छा सुल्क उसी के लिए फ़ायदामंद है जबकि ज़ालिम का बुरा सुल्क उसी के लिए नुक़सानदेह है।
- 18 जो कुछ बेदीन कमाता है वह फ़रेबदेह है, लेकिन जो रास्ती का बीज बोए उसका अन्न यकीनी है।
- 19 रास्तबाज़ी का फल ज़िंदगी है जबकि बुराई के पीछे भागनेवाले का अंजाम मौत है।
- 20 रब कजदिलों से घिन खाता है, वह बेइलज़ाम राह पर चलनेवालों ही से ख़ुश होता है।
- 21 यकीन करो, बदकार सज़ा से नहीं बचेगा जबकि रास्तबाज़ों के फ़रज़ंद छूट जाएंगे।
- 22 जिस तरह सुअर की थूथनी में सोने का छल्ला खटकता है उसी तरह खबसूरत औरत की बेतमीज़ी खटकती है।
- 23 अल्लाह रास्तबाज़ों की आरजू अच्छी चीज़ों से पूरी करता है, लेकिन उसका ग़ज़ब बेदीनों की उम्मीद पर नाज़िल होता है।
- 24 एक आदमी की दौलत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह फ़ैयाज़दिली से तकसीम करता है। दूसरे की गुरबत में इज़ाफ़ा होता है, गो वह हद से ज़्यादा कंज़स है।

\* 10:21 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : रास्तबाज़ के होंट बहुतों को चराने हैं।

- 25 फ़ैयाज़दिल खुशहाल रहेगा, जो दूसरों को तरो-ताज़ा करे वह खुद ताज़ामद रहेगा।
- 26 लोग गंदुम के जखीराअंदोज़ पर लानत भेजते हैं, लेकिन जो गंदुम को बाज़ार में आने देता है उसके सर पर बरकत आती है।
- 27 जो भलाई की तलाश में रहे वह अल्लाह की मंजूरी चाहता है, लेकिन जो बुराई की तलाश में रहे वह खुद बुराई के फंदे में फँस जाएगा।
- 28 जो अपनी दौलत पर भरोसा रखे वह गिर जाएगा, लेकिन रास्तबाज़ हरे-भरे पत्तों की तरह फले-फूलेगा।
- 29 जो अपने घर में गड़बड़ पैदा करे वह मीरास में हवा ही जाएगा। अहमक दानिशमंद का नौकर बनेगा।
- 30 रास्तबाज़ का फल ज़िंदगी का दरख़्त है, और दानिशमंद आदमी जाने जीतता है।
- 31 रास्तबाज़ को ज़मीन पर ही अज़ मिलता है। तो फिर बेदीन और गुनाहगार सज़ा क्यों न पाएँ?

## 12

- 1 जिसे इल्मो-इरफ़ान प्यारा है उसे तरबियत भी प्यारी है, जिसे नसीहत से नफ़रत है वह बेअम्रत है।
- 2 रब अच्छे आदमी से खुश होता है जबकि वह साज़िश करनेवाले को कुसूरवार ठहराता है।
- 3 इनसान बेदीनी की बुनियाद पर कायम नहीं रह सकता जबकि रास्तबाज़ की जड़ें उखाड़ी नहीं जा सकती।
- 4 सुघड़ बीवी अपने शौहर का ताज है, लेकिन जो शौहर की सस्वाई का बाइस है वह उस की हड्डियों में सडाहट की मानिंद है।
- 5 रास्तबाज़ के खयालात मुंसिफ़ाना हैं जबकि बेदीनों के मनसूबे फ़रेबदेह हैं।
- 6 बेदीनों के अलफ़ाज़ लोगों को कल्ल करने की ताक में रहते हैं जबकि सीधी राह पर चलनेवालों की बातें लोगों को छुड़ा लेती हैं।
- 7 बेदीनों को खाक में यों मिलाया जाता है कि उनका नामो-निशान तक नहीं रहता, लेकिन रास्तबाज़ का घर कायम रहता है।
- 8 किसी की जितनी अक्लो-समझ है उतना ही लोग उस की तारीफ़ करते हैं, लेकिन जिसके ज़हन में फुतूर है उसे हक़ीर जाना जाता है।
- 9 निचले तबके का जो आदमी अपनी जिम्मादारियाँ अदा करता है वह उस आदमी से कहीं बेहतर है जो नखरा बघारता है गो उसके पास रोटी भी नहीं है।
- 10 रास्तबाज़ अपने मवेशी का भी खयाल करता है जबकि बेदीन का दिल ज़ालिम ही ज़ालिम है।
- 11 जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे उसके पास कसरत का खाना होगा, लेकिन जो फ़ज़ूल चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह नासमझ है।
- 12 बेदीन दूसरों को जाल में फँसाने से अपना दिल बहलाता है, लेकिन रास्तबाज़ की जड़ फलदार होती है।
- 13 शरीर अपनी गलत बातों के जाल में उलझ जाता जबकि रास्तबाज़ मुसीबत से बच जाता है।
- 14 इनसान अपने मुँह के फल से ख़ुब सेर हो जाता है, और जो काम उसके हाथों ने किया उसका अज़ उसे ज़रूर मिलेगा।
- 15 अहमक की नज़र में उस की अपनी राह ठीक है, लेकिन दानिशमंद दूसरों के मशवरे पर ध्यान देता है।
- 16 अहमक एकदम अपनी नाराज़ी का इज़हार करता है, लेकिन दाना अपनी बदनामी छुपाए रखता है।
- 17 दियातदार गवाह खुले तौर पर सच्चाई बयान करता है जबकि झूटा गवाह धोका ही धोका पेश करता है।
- 18 ग़पें हॉकनेवाले की बातें तलवार की तरह ज़खमी कर देती हैं जबकि दानिशमंद की ज़बान शफ़ा देती है।
- 19 सच्चे हॉट हमेशा तक कायम रहते हैं जबकि झूटी ज़बान एक ही लमहे के बाद ख़त्म हो जाती है।
- 20 सूर मनसूबे बंधनेवाले का दिल धोके से भरा रहता जबकि सलामती के मशवरे देनेवाले का दिल खुशी से छलकता है।
- 21 कोई भी आफ़त रास्तबाज़ पर नहीं आएगी जबकि दुख तकलीफ़ बेदीनों का दामन कभी नहीं छोड़ेगी।
- 22 रब फ़रेबदेह हॉटों से धिन खाता है, लेकिन जो वफ़ादारी से ज़िंदगी गुज़ारते हैं उनसे वह खुश होता है।
- 23 समझदार अपना इल्म छुपाए रखता जबकि अहमक अपने दिल की हमाक़त बलूंद आवाज़ से सबको पेश करता है।
- 24 जिसके हाथ मेहनती हैं वह हुक़मत करेगा, लेकिन जिसके हाथ ढीले हैं उसे बेगार में काम करना पड़ेगा।
- 25 जिसके दिल में पेशानी है वह दबा रहता है, लेकिन कोई भी अच्छी बात उसे खुशी दिलाती है।
- 26 रास्तबाज़ अपनी चरागाह मालूम कर लेता है, लेकिन बेदीनों की राह उन्हें आवारा फिरने देती है।
- 27 ढीला आदमी अपना शिकार नहीं पकड़ सकता जबकि मेहनती शख्स कसरत का माल हासिल कर लेता है।
- 28 रास्ती की राह में ज़िंदगी है, लेकिन गलत राह मौत तक पहुँचाती है।

## 13

- 1 दानिशमंद बेटा अपने बाप की तरबियत कबूल करता है, लेकिन तानाज्जान परवा ही नहीं करता अगर कोई उसे डाँटे।
- 2 इनसान अपने मुँह के अच्छे फल से खूब सेर हो जाता है, लेकिन बेवफा के दिल में जुल्म का लालच रहता है।
- 3 जो अपनी ज़बान काबू में रखे वह अपनी ज़िंदगी महफूज़ रखता है, जो अपनी ज़बान को बेलगाम छोड़ दे वह तबाह हो जाएगा।
- 4 काहिल आदमी लालच करता है, लेकिन उसे कुछ नहीं मिलता जबकि मेहनती शग्स की आरजू पूरी हो जाती है।
- 5 रास्तबाज़ झूट से नफरत करता है, लेकिन बेदीन शर्म और स्सवाई का बाइस है।
- 6 रास्ती बेइलज़ाम की हिफाज़त करती जबकि बेदीनी गुनाहगार को तबाह कर देती है।
- 7 कुछ लोग अमीर का रूप भरकर फिरते हैं गो गरीब हैं। दूसरे गरीब का रूप भरकर फिरते हैं गो अमीरतरिन हैं।
- 8 कभी अमीर को अपनी जान छुड़ाने के लिए ऐसा तावान देना पड़ता है कि तमाम दौलत जाती रहती है, लेकिन गरीब की जान इस क्रिस्म की धमकी से बची रहती है।
- 9 रास्तबाज़ की रौशनी चमकती रहती \* जबकि बेदीन का चराग़ बुझ जाता है।
- 10 माग़रों में हमेशा झगडा होता है जबकि दानिशमंद सलाह-मशवरे के मुताबिक ही चलते हैं।
- 11 जल्दबाज़ी से हासिलशुदा दौलत जल्द ही खत्म हो जाती है जबकि जो रफ़ता रफ़ता अपना माल जमा करे वह उसे बढ़ाता रहेगा।
- 12 जो उम्मीद वक़्त पर पूरी न हो जाए वह दिल को बीमार कर देती है, लेकिन जो आरजू पूरी हो जाए वह ज़िंदगी का दरख़्त है।
- 13 जो अच्छी हिदायत को हकीर जाने उसे नुक़सान पहुँचेगा, लेकिन जो हुक्म माने उसे अन्न मिलेगा।
- 14 दानिशमंद की हिदायत ज़िंदगी का सरचश्मा है जो इनसान को मोहलक फंदों से बचाए रखती है।
- 15 अच्छी समझ मंजूरी अता करती है, लेकिन बेवफा की राह अबदी तबाही का बाइस है।
- 16 ज़हीन हर काम सोच-समझकर करता, लेकिन अहमक तमाम नज़रों के सामने ही अपनी हमाक़त की नुमाइश करता है।
- 17 बेदीन कासिद मुसीबत में फँस जाता जबकि वफादार कासिद शफा का बाइस है।
- 18 जो तरबियत की परवा न करे उसे ग़ुरबत और शरमिंदगी हासिल होगी, लेकिन जो दूसरे की नसीहत मान जाए उसका एहतराम किया जाएगा।
- 19 जो आरजू पूरी हो जाए वह दिल को तरो-ताज़ा करती है, लेकिन अहमक बुराई से दरेग करने से धिन खाता है।
- 20 जो दानिशमंदों के साथ चले वह खुद दानिशमंद हो जाएगा, लेकिन जो अहमकों के साथ चले उसे नुक़सान पहुँचेगा।
- 21 मुसीबत गुनाहगार का पीछा करती है जबकि रास्तबाज़ों का अन्न खुशहाली है।
- 22 नेक आदमी के बेटे और पोते उस की मीरास पाएँगे, लेकिन गुनाहगार की दौलत रास्तबाज़ के लिए महफूज़ रखी जाएगी।
- 23 गरीब का खेत कसरत की फ़सलें मुहैया कर सकता है, लेकिन जहाँ इनसाफ़ नहीं वहाँ सब कुछ छीन लिया जाता है।
- 24 जो अपने बेटे को तंबीह नहीं करता वह उससे नफरत करता है। जो उससे मुहब्बत रखे वह वक़्त पर उस की तरबियत करता है।
- 25 रास्तबाज़ जी भरकर खाना खाता है, लेकिन बेदीन का पेट खाली रहता है।

## 14

- 1 हिकमत बीबी अपना घर तामीर करती है, लेकिन हमाक़त बीबी अपने ही हाथों से उसे ढा देती है।
- 2 जो सीधी राह पर चलता है वह अल्लाह का ख़ोफ़ मानता है, लेकिन जो ग़लत राह पर चलता है वह उसे हकीर जानता है।
- 3 अहमक की बातों से वह डंडा निकलता है जो उसे उसके तकब्बुर की सज़ा देता है, लेकिन दानिशमंद के होंट उसे महफूज़ रखते हैं।
- 4 जहाँ बैल नहीं वहाँ चरनी खाली रहती है, बैल की ताक़त ही से कसरत की फ़सलें पैदा होती हैं।
- 5 वफादार गवाह झूट नहीं बोलता, लेकिन झूटे गवाह के मुँह से झूट निकलता है।
- 6 तानाज्जान हिकमत को ढूँडता है, लेकिन बेफायदा। समझदार के इल्म में आसानी से इज़ाफा होता है।
- 7 अहमक से दूर रह, क्योंकि तू उस की बातों में इल्म नहीं पाएगा।

\* 13:9 लफ़्ज़ी तरजूमा : ख़ुशी मनाती।



- 8 जहीन की हिकमत इसमें है कि वह सोच-समझकर अपनी राह पर चले, लेकिन अहमक की हमाकत सरासर धोका ही है।
- 9 अहमक अपने कुसूर का मजाक उड़ाते हैं, लेकिन सीधी राह पर चलनेवाले रब को मंज़ूर हैं।
- 10 हर दिल की अपनी ही तलखी होती है जिससे सिर्फ वही वाकिफ है, और उस की खुशी में भी कोई और शरीक नहीं हो सकता।
- 11 बेदीन का घर तबाह हो जाएगा, लेकिन सीधी राह पर चलनेवाले का खैमा फले-फूलेगा।
- 12 पसी राह भी होती है जो देखने में ठीक तो लगती है गो उसका अंजाम मौत है।
- 13 दिल हँसते वक़्त भी रंजीदा हो सकता है, और खुशी के इख़िताम पर दुख ही बाकी रह जाता है।
- 14 जिसका दिल बेवफा है वह जी भरकर अपने चाल-चलन का कड़वा फल खाएगा जबकि नेक आदमी अपने आमाल के मीठे फल से सेर हो जाएगा।
- 15 सादालौह हर एक की बात मान लेता है जबकि जहीन आदमी अपना हर कदम सोच-समझकर उठाता है।
- 16 दानिशमंद डरते डरते गलत काम से दुरा करता है, लेकिन अहमक दुखदएतमाद है और एकदम मुश्तइल हो जाता है।
- 17 गुसीला आदमी अहमकाना हरकतें करता है, और लोग साज़िश शख्स से नफरत करते हैं।
- 18 सादालौह मीरास में हमाकत पाता है जबकि जहीन आदमी का सर इल्म के ताज से आरास्ता रहता है।
- 19 शरीरों को नेकों के सामने झुकना पड़ेगा, और बेदीनों को रास्तबाज़ के दरवाज़े पर औंधे मुँह होना पड़ेगा।
- 20 गरीब के हमसाये भी उससे नफरत करते हैं जबकि अमीर के बेशुमार दोस्त होते हैं।
- 21 जो अपने पड़ोसी को हकीर जाने वह गुनाह करता है। मुबारक है वह जो ज़रतमंद पर तरस खाता है।
- 22 बुरे मनसूबे बाँधनेवाले सब आवारा फिरते हैं। लेकिन अच्छे मनसूबे बाँधनेवाले शफ़क़त और वफा पाएँगे।
- 23 मेहनत-मशक्कत करने में हमेशा फ़ायदा होता है, जबकि खाली बातें करने से लोग गरीब हो जाते हैं।
- 24 दानिशमंदों का अज़्र दौलत का ताज है जबकि अहमकों का अज़्र हमाकत ही है।
- 25 सच्चा गवाह जानें बचाता है जबकि झूटा गवाह फ़रेबदेह है।
- 26 जो रब का ख़ौफ़ माने उसके पास महफूज़ क़िला है जिसमें उस की औलाद भी पनाह ले सकती है।
- 27 रब का ख़ौफ़ ज़िदगी का सरचश्मा है जो इन्सान को मोहलक फंदों से बचाए रखता है।
- 28 जितनी आबादी मुल्क में है उतनी ही बादशाह की शानो-शौकत है। रिआया की कमी हुक्मरान के तनज़ूल का बाइस है।
- 29 तहम्मूल करनेवाला बड़ी समझदारी का मालिक है, लेकिन गुसीला आदमी अपनी हमाकत का इज़हार करता है।
- 30 पुरसुकून दिल जिस्म को ज़िदगी दिलाता जबकि हसद हठियों को गलने देता है।
- 31 जो पस्तहाल पर जुल्म करे वह उसके खालिक की तहकीर करता है जबकि जो ज़रतमंद पर तरस खाए वह अल्लाह का एहतराम करता है।
- 32 बेदीन की बुराई उसे ख़ाक में मिला देती है, लेकिन रास्तबाज़ मरते वक़्त भी अल्लाह में पनाह लेता है।
- 33 हिकमत समझदार के दिल में आराम करती है, और वह अहमकों के दरमियान भी जाहिर हो जाती है।
- 34 रास्ती से हर कौम सरफ़राज़ होती है जबकि गुनाह से उम्मतें स्सवा हो जाती हैं।
- 35 बादशाह दानिशमंद मुलाज़िम से खुश होता है, लेकिन शर्मनाक काम करनेवाला मुलाज़िम उसके गुस्से का निशाना बन जाता है।

## 15

- 1 नरम जवाब गुस्सा ठंडा करता, लेकिन तुरश बात तैश दिलाती है।
- 2 दानिशमंदों की ज़बान इल्मो-इरफ़ान फैलाती है जबकि अहमक का मुँह हमाकत का जोर से उबलनेवाला चश्मा है।
- 3 रब की आँखें हर जगह मौजूद हैं, वह बुरे और भले सब पर ध्यान देती हैं।
- 4 नरम ज़बान ज़िदगी का दरख़्त है जबकि फ़रेबदेह ज़बान शिकस्तादिल कर देती है।
- 5 अहमक अपने बाप की तरबियत को हकीर जानता है, लेकिन जो नसीहत माने वह दानिशमंद है।
- 6 रास्तबाज़ के घर में बड़ा ख़जाना होता है, लेकिन जो कुछ बेदीन हासिल करता है वह तबाही का बाइस है।
- 7 दानिशमंदों के होंट इल्मो-इरफ़ान का बीज बिखेर देते हैं, लेकिन अहमकों का दिल ऐसा नहीं करता।
- 8 रब बेदीनों की कुरखानी से घिन खाता, लेकिन सीधी राह पर चलनेवालों की दुआ से खुश होता है।
- 9 रब बेदीन की राह से घिन खाता, लेकिन रास्ती का पीछा करनेवाले से प्यार करता है।
- 10 जो सहीह राह को तर्क करे उस की सख़्त तादीब की जाएगी, जो नसीहत से नफरत करे वह मर जाएगा।

- 11 पाताल और आलमे-अरवाह रब को साफ नज़र आते हैं। तो फिर इनसानों के दिल उसे क्यों न साफ दिखाई दें?
- 12 तानाज़न को दूसरों की नसीहत पसंद नहीं आती, इसलिए वह दानिशमंदों के पास नहीं जाता।
- 13 जिसका दिल खुश है उसका चेहरा खुला रहता है, लेकिन जिसका दिल पेशान है उस की रूह शिकस्ता रहती है।
- 14 समझदार का दिल इल्मो-इरफान की तलाश में रहता, लेकिन अहमक हमाकत की चरागाह में चरता रहता है।
- 15 मुसीबतबदा के तमाम दिन बुरे हैं, लेकिन जिसका दिल खुश है वह रोजाना जशन मनाता है।
- 16 जो गरीब रब का खौफ मानता है उसका हाल उस करोड़पति से कहीं बेहतर है जो बड़ी बेचैनी से ज़िंदगी गुज़ारता है।
- 17 जहाँ मुहब्बत है वहाँ सब्जी का सालन बहुत है, जहाँ नफ़रत है वहाँ मोटे-ताज़े बछड़े की ज़ियाफत भी बेफायदा है।
- 18 गुसीला आदमी झगड़े छेड़ता रहता जबकि तहम्मूल करनेवाला लोगों के गुस्से को ठंडा कर देता है।
- 19 काहिल का रास्ता कौंटदार बाड़ की मानिंद है, लेकिन दियानतदारों की राह पक्की सड़क ही है।
- 20 दानिशमंद बेटा अपने बाप के लिए खुशी का बाड़स है, लेकिन अहमक अपनी माँ को हक़ीर जानता है।
- 21 नासमझ आदमी हमाकत से लुत्फअंदोज होता, लेकिन समझदार आदमी सीधी राह पर चलता है।
- 22 जहाँ सलाह-मशवरा नहीं होता वहाँ मनसूबे नाकाम रह जाते हैं, जहाँ बहुत-से मुशरीर होते हैं वहाँ कामयाबी होती है।
- 23 इनसान मौजूं जवाब देने से खुश हो जाता है, वक्त पर मुनासिब बात कितनी अच्छी होती है।
- 24 ज़िंदगी की राह चढती रहती है ताकि समझदार उस पर चलते हुए पाताल में उतरने से बच जाए।
- 25 रब मुतकब्बिर का घर ढा देता, लेकिन बेवा की ज़मीन की हद्द महफूज़ रखता है।
- 26 रब बुरे मनसूबों से धिन खाता है, और मेहरबान अलफ़ाज़ उसके नज़दीक पाक हैं।
- 27 जो नाजायज़ नफ़ा कमाए वह अपने घर पर आफ़त लाता है, लेकिन जो रिश्वत से नफ़रत रखे वह जीता रहेगा।
- 28 रास्तबाज़ का दिल सोच-समझकर जवाब देता है, लेकिन बेदीन का मुँह जोर से उबलनेवाला चरमा है जिससे बुरी बातें निकलती रहती हैं।
- 29 रब बेदीनों से दूर रहता, लेकिन रास्तबाज़ की दुआ सुनता है।
- 30 चमकती आँखें दिल को खुशी दिलाती हैं, अच्छी खबर पूरे जिस्म को तरो-ताज़ा कर देती है।
- 31 जो ज़िंदगीबिछ्छ नसीहत पर ध्यान दे वह दानिशमंदों के दरमियान ही सुकूनत करेगा।
- 32 जो तरबियत की परवा न करे वह अपने आपको हक़ीर जानता है, लेकिन जो नसीहत पर ध्यान दे उस की समझ में इज़ाफ़ा होता है।
- 33 रब का खौफ ही वह तरबियत है जिससे इनसान हिकमत सीखता है। पहले फ़रोतनी अपना ले, क्योंकि यही इज़्जत पाने का पहला कदम है।

## 16

- 1 इनसान दिल में मनसूबे बाँधता है, लेकिन ज़बान का जवाब रब की तरफ से आता है।
- 2 इनसान की नज़र में उस की तमाम राहें पाक-साफ हैं, लेकिन रब ही रूहों की जाँच-पड़ताल करता है।
- 3 जो कुछ भी तू करना चाहे उसे रब के सुपुर्द कर। तब ही तेरे मनसूबे कामयाब होंगे।
- 4 रब ने सब कुछ अपने ही मकासिद पूरे करने के लिए बनाया है। वह दिन भी पहले से मुक़र्रर है जब बेदीन पर आफ़त आएगी।
- 5 रब हर मग़रूर दिल से धिन खाता है। यक़ीनन वह सज़ा से नहीं बचेगा।
- 6 शफ़क़त और वफ़ादारी गुनाह का कफ़फ़ारा देती हैं। रब का खौफ मानने से इनसान बुराई से दूर रहता है।
- 7 अगर रब किसी इनसान की राहों से खुश हो तो वह उसके दुश्मनों को भी उससे सुलह कराने देता है।
- 8 इनसाफ से थोड़ा-बहुत कमाना नाइनसाफ़ी से बहुत दौलत जमा करने से कहीं बेहतर है।
- 9 इनसान अपने दिल में मनसूबे बाँधता रहता है, लेकिन रब ही मुक़र्रर करता है कि वह आखिरकार किस राह पर चल पड़े।
- 10 बादशाह के हॉट गोया इलाही फैसले पेश करते हैं, उसका मुँह अदालत करते वक्त बेवफ़ा नहीं होता।
- 11 रब दुस्त तराज़ का मालिक है, उसी ने तमाम बाटों का इंतज़ाम कायम किया।
- 12 बादशाह बेदीनी से धिन खाता है, क्योंकि उसका तख़्त रास्तबाज़ी की बुनियाद पर मज़बूत रहता है।
- 13 बादशाह रास्तबाज़ होंटों से खुश होता और साफ़ बात करनेवाले से मुहब्बत रखता है।
- 14 बादशाह का गुस्सा मौत का पेशखैमा है, लेकिन दानिशमंद उसे ठंडा करने के तरीके जानता है।
- 15 जब बादशाह का चेहरा खिल उठे तो मतलब ज़िंदगी है। उस की मंजूरी मौसमे-बहार के तरो-ताज़ा करनेवाले बादल की मानिंद है।

- 16 हिकमत का हुसूल सोने से कही बेहतर और समझ पाना चाँदी से कही बढकर है।
- 17 दियानतदार की मजबूत राह बुरे काम से दूर रहती है, जो अपनी राह की पहरादारी करे वह अपनी जान बचाए रखता है।
- 18 तबाही से पहले गुस्तर और गिरने से पहले तकबुूर आता है।
- 19 फ़रोतनी से ज़रूरतमंदों के दरमियान बसना धर्मडियों के लूटे हुए माल में शरीक होने से कही बेहतर है।
- 20 जो कलाम पर ध्यान दे वह खुशहाल होगा, मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखे।
- 21 जो दिल से दानिशमंद है उसे समझदार करार दिया जाता है, और मंठि अलफ़ाज़ तालीम में इज़ाफ़ा करते हैं।
- 22 फ़हम अपने मालिक के लिए ज़िंदगी का सरचश्मा है, लेकिन अहमक की अपनी ही हमाक़त उसे सज़ा देती है।
- 23 दानिशमंद का दिल समझ की बातें ज़बान पर लाता और तालीम देने में होंटों का सहारा बनाता है।
- 24 मेहरबान अलफ़ाज़ ख़ालिस शहद है, वह जान के लिए शीरी और पूरे जिस्म को तरो-ताज़ा कर देते हैं।
- 25 पैसी राह भी होती है जो देखने में तो ठीक लगती है गो उसका अंजाम मौत है।
- 26 मजदूर का ख़ाली पेट उसे काम करने पर मजबूर करता, उस की भूक उसे हॉकती रहती है।
- 27 शरीर कुरेद कुरेदकर ग़लत काम निकाल लेता, उसके होंटों पर झुलसानेवाली आग़ रहती है।
- 28 कज़रौ आदमी झगडे छेड़ता रहता, और तोहमत लगानेवाला दिली दोस्तों में भी रखना डालता है।
- 29 ज़ालिम अपने पड़ोसी को बरग़लाकर ग़लत राह पर ले जाता है।
- 30 जो आँख मारे वह ग़लत मनसूखे बाँध रहा है, जो अपने होंट चबाए वह ग़लत काम करने पर तुला हुआ है।
- 31 सफ़ेद बाल एक शानदार ताज हैं जो रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने से हासिल होते हैं।
- 32 लहम्मूल करनेवाला सूरमे से सबक़त लेता है, जो अपने आपको काबू में रखे वह शहर को शिकस्त देनेवाले से बरतर है।
- 33 इनसान तो कुरा डालता है, लेकिन उसका हर फ़ैसला रब की तरफ़ से है।

## 17

- 1 जिस घर में रोटी का बासी टुकड़ा सूकन के साथ खाया जाए वह उस घर से कही बेहतर है जिसमें लड़ाई-झगड़ा है, खाह उसमें कितनी शानदार ज़ियाफ़त क्यों न हो रही हो।
- 2 समझदार मुलाज़िम मालिक के उस बेटे पर काबू पाएगा जो शर्म का बाइस है, और जब भाइयों में मौरूसी मिलकियत तकसीम की जाए तो उसे भी हिस्सा मिलेगा।
- 3 सोना-चाँदी कुठाली में पिघलाकर पाक-साफ़ की जाती है, लेकिन रब ही दिल की जाँच-पड़ताल करता है।
- 4 बदकार शरीर होंटों पर ध्यान और धोकेबाज़ तबाहकुन ज़बान पर तवज्जुह देता है।
- 5 जो ग़रीब का मज़ाक़ उड़ाए वह उसके ख़ालिक की तहक़ीर करता है, जो दूसरे की मुसीबत देखकर ख़ुश हो जाए वह सज़ा से नहीं बचेगा।
- 6 पोते बूढ़ों का ताज और वालिदेन अपने बच्चों के ज़ेवर हैं।
- 7 अहमक के लिए बड़ी बड़ी बातें करना मौजूँ नहीं, लेकिन शरीफ़ होंटों पर फ़रेब कही ज़्यादा ग़ैरमुनासिब है।
- 8 रिश्त देनेवाले की नज़र में रिश्त जादू की मानिंद है। जिस दरवाज़े पर भी खटखटाए वह खुल जाता है।
- 9 जो दूसरे की ग़लती को दरगुज़र करे वह मुहब्बत को फ़रोग देता है, लेकिन जो माज़ी की ग़लतियाँ दोहराता रहे वह करीबी दोस्तों में निफ़ाक़ पैदा करता है।
- 10 अगर समझदार को डाँटा जाए तो वह ख़ब सीख लेता है, लेकिन अगर अहमक को सौ बार मारा जाए तो भी वह इतना नहीं सीखता।
- 11 शरीर सरकशी पर तुला रहता है, लेकिन उसके खिलाफ़ ज़ालिम कासिद भेजा जाएगा।
- 12 जो अहमक अपनी हमाक़त में उलझा हुआ हो उससे दरेग कर, क्योंकि उससे मिलने से बेहतर यह है कि तेरा उस रीछनी से वास्ता पड़े जिसके बच्चे उससे छीन लिए गए हों।
- 13 जो भलाई के एवज़ बुराई करे उसके घर से बुराई कभी दूर नहीं होगी।
- 14 लड़ाई-झगड़ा छेड़ना बंद में रखना डालने के बराबर है। इससे पहले कि मुक़दमाबाज़ी शुरू हो उससे बाज़ आ।
- 15 जो बेदीन को बेकुसूर और रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराए उससे रब धिन खाता है।
- 16 अहमक के हाथ में पैसों का क्या फ़ायदा है? क्या वह हिकमत ख़रीद सकता है जबकि उसमें अक़्ल नहीं? हरगिज़ नहीं!
- 17 पड़ोसी वह है जो हर वक़्त मुहब्बत रखता है, भाई वह है जो मुसीबत में सहारा देने के लिए पैदा हुआ है।
- 18 जो हाथ मिलाकर अपने पड़ोसी का ज़ामिन होने का वादा करे वह नासमझ है।

- 19 जो लडाई-झगड़े से मुहब्बत रखे वह गुनाह से मुहब्बत रखता है, जो अपना दरवाजा हद से ज्यादा बड़ा बनाए वह तबाही को दाखिल होने की दावत देता है।
- 20 जिसका दिल टेढ़ा है वह खुशहाली नहीं पाएगा, और जिसकी ज़बान चालाक है वह मुसीबत में उलझ जाएगा।
- 21 जिसके हों अहमक बेटा पैदा हो जाए उसे दुख पहुँचता है, और अक़ल से ख़ाली बेटा बाप के लिए खुशी का बाइस नहीं होता।
- 22 खुशबाश दिल पूरे जिस्म को शफा देता है, लेकिन शिकस्ता रह हड्डियों को खुशक कर देती है।
- 23 बेदीन चुपके से रिख्त लेकर इनसाफ की राहों को बिगाड़ देता है।
- 24 समझदार अपनी नज़र के सामने हिकमत रखता है, लेकिन अहमक की नज़रें दुनिया की इंतहा तक आवारा फिरती हैं।
- 25 अहमक बेटा बाप के लिए रंज का बाइस और माँ के लिए तलाखी का सबब है।
- 26 बेकुसूर पर ज़रमाना लगाना ग़लत है, और शरीफ़ को उस की दिशानतदारी के सबब से कोड़े लगाना बुरा है।
- 27 जो अपनी ज़बान को क़ाबू में रखे वह इल्मो-इरफ़ान का मालिक है, जो ठंडे दिल से बात करे वह समझदार है।
- 28 अगर अहमक ख़ामोश रहे तो वह भी दानिशमंद लगता है। जब तक वह बात न करे लोग उसे समझदार करार देते हैं।

## 18

- 1 जो दूसरों से अलग हो जाए वह अपने जाती मकासिद पूरे करना चाहता और समझ की हर बात पर झगड़ने लगता है।
- 2 अहमक समझ से लुत्फ़अंदोज़ नहीं होता बल्कि सिर्फ़ अपने दिल की बातें दूसरों पर जाहिर करने से।
- 3 जहाँ बेदीन आए वहाँ हिकारत भी आ मौजूद होती, और जहाँ स्सवाई हो वहाँ तानाज़नी भी होती है।
- 4 इनसान के अलाफ़ाज़ गहरा पानी है, हिकमत का सरचश्मा बहती हुई नदी है।
- 5 बेदीन की जानिबदारी करके रास्तबाज़ का हक़ मारना ग़लत है।
- 6 अहमक के होंट लडाई-झगड़ा पैदा करते हैं, उसका मुँह जोर से पिटाई का मुतालबा करता है।
- 7 अहमक का मुँह उस की तबाही का बाइस है, उसके होंट ऐसा फंदा है जिसमें उस की अपनी जान उलझ जाती है।
- 8 तोहमत लगानेवाले की बातें लज़ीज़ खाने के लुकमों की मानिंद हैं, वह दिल की तह तक उतर जाती हैं।
- 9 जो अपने काम में ज़रा भी ढीला हो जाए, उसे याद रहे कि ढीलेपन का भाई तबाही है।
- 10 रब का नाम मज़बूत बुर्ज़ है जिसमें रास्तबाज़ भागकर महफूज़ रहता है।
- 11 अमीर समझता है कि मेरी दौलत मेरा क़िलाबंद शहर और मेरी क़ुँची चारदीवारी है जिसमें मैं महफूज़ हूँ।
- 12 तबाह होने से पहले इनसान का दिल मग़सूर हो जाता है, इज़्ज़त मिलने से पहले लाज़िम है कि वह फ़रोतन हो जाए।
- 13 दूसरे की बात सुनने से पहले जवाब देना हमाक़त है। जो ऐसा करे उस की स्सवाई हो जाएगी।
- 14 बीमार होते वक़्त इनसान की रह जिस्म की परवरिश करती है, लेकिन अगर रह शिकस्ता हो तो फिर कौन उसको सहारा देगा?
- 15 समझदार का दिल इल्म अपनाता और दानिशमंद का कान इरफ़ान का खोज़ लगाता रहता है।
- 16 तोहफ़ा रास्ता खोलकर देनेवाले को बड़ों तक पहुँचा देता है।
- 17 जो अदालत में पहले अपना मौक़िफ़ पेश करे वह उस वक़्त तक हक़-बजानिब लगता है जब तक दूसरा फ़रीक़ सामने आकर उस की हर बात की तहक़ीक़ न करे।
- 18 कुरा डालने से झगड़े ख़त्म हो जाते और बड़ों का एक दूसरे से लड़ने का खतरा दूर हो जाता है।
- 19 जिस भाई को एक दफा मायूस कर दिया जाए उसे दुबारा जीत लेना क़िलाबंद शहर पर फ़तह पाने से ज्यादा दुश्वार है।
- झगड़े हल करना बुर्ज़ के कुंडे तोड़ने की तरह मुश्किल है।
- 20 इनसान अपने मुँह के फल से सेर हो जाएगा, वह अपने होंटों की पैदावार को जी भरकर खाएगा।
- 21 ज़बान का ज़िंदगी और मौत पर इख़्तियार है, जो उसे प्यार करे वह उसका फल भी खाएगा।
- 22 जिसे बीवी मिली उसे अच्छी नेमत मिली, और उसे रब की मंज़ूरी हासिल हुई।
- 23 ग़रीब मिन्नत करते करते अपना मामला पेश करता है, लेकिन अमीर का जवाब सज़्त होता है।
- 24 कई दोस्त तुझे तबाह करते हैं, लेकिन ऐसे भी हैं जो तुझसे भाई से ज्यादा लिपटे रहते हैं।

## 19

- 1 जो ग़रीब बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे वह टेढ़ी बातें करनेवाले अहमक से कहीं बेहतर है।
- 2 अगर इल्म साथ न हो तो सरग़मी का कोई फ़ायदा नहीं। जल्दबाज़ ग़लत राह पर आता रहता है।
- 3 जो इनसान की अपनी हमाक़त उसे भटका देती है तो भी उसका दिल रब से नाराज़ होता है।

- 4 दौलतमंद के दोस्तों में इजाफा होता है, लेकिन गरीब का एक दोस्त भी उससे अलग हो जाता है।
- 5 झूटा गवाह सजा से नहीं बचेगा, जो झूटी गवाही दे उस की जान नहीं छूटेगी।
- 6 मुतअदिद लोग बड़े आदमी की खुशामद करते हैं, और हर एक उस आदमी का दोस्त है जो तोहफे देता है।
- 7 गरीब के तमाम भाई उससे नफरत करते हैं, तो फिर उसके दोस्त उससे क्यों दूर न रहें। वह बातें करते करते उनका पीछा करता है, लेकिन वह गायब हो जाते हैं।
- 8 जो हिकमत अपना ले वह अपनी जान से मुहब्बत रखता है, जो समझ की परवरिश करे उसे कामयाबी होगी।
- 9 झूटा गवाह सजा से नहीं बचेगा, झूटी गवाही देनेवाला तबाह हो जाएगा।
- 10 अहमक के लिए ऐशो-इशरत से ज़िंदगी गुजारना मौजू नहीं, लेकिन गुलाम की हुक्मरानों पर हुक्मत कहीं ज्यादा गैरमुनासिब है।
- 11 इनसान की हिकमत उसे तहम्मूल सिखाती है, और दूसरों के जरायम से दरगुज़र करना उसका फखर है।
- 12 बादशाह का तैश जवान शेरबबर की दहाड़ों की मानिंद है जबकि उस की मंजूरी घास पर शबनम की तरह तरो-ताज़ा करती है।
- 13 अहमक बेटा बाप की तबाही और झगडालू बीबी मुसलसल टपकनेवाली छत है।
- 14 मौस्सी घर और मिलकियत बापदादा की तरफ से मिलती है, लेकिन समझदार बीबी रब की तरफ से है।
- 15 सुस्त होने से इनसान गहरी नींद सो जाता है, लेकिन ढीला शख्स भुके मरेगा।
- 16 जो वफादारी से हुक्म पर अमल करे वह अपनी जान महफूज़ रखता है, लेकिन जो अपनी राहों की परवा न करे वह मर जाएगा।
- 17 जो गरीब पर मेहरबानी करे वह रब को उधार देता है, वही उसे अज़्र देगा।
- 18 जब तक उम्मीद की किरण बाकी हो अपने बेटे की तादीब कर, लेकिन इतने जोश में न आ कि वह मर जाए।
- 19 जो हद से ज्यादा तैश में आए उसे जुरमाना देना पड़ेगा। उसे बचाने की कोशिश मत कर वरना उसका तैश और बढ़ेगा।
- 20 अच्छा मशवरा अपना और तरबियत क़बूल कर ताकि आइंदा दानिशमंद हो।
- 21 इनसान दिल में मुतअदिद मनसूबे बाँधता रहता है, लेकिन रब का इरादा हमेशा पूरा हो जाता है।
- 22 इनसान का लालच उस की स्सवाई का बाइस है, और गरीब दरोगगो से बेहतर है।
- 23 रब का ख़ौफ़ ज़िंदगी का मंबा है। खुदातरस आदमी सेर होकर सुकून से सो जाता और मुसीबत से महफूज़ रहता है।
- 24 काहिल अपना हाथ खाने के बरतन में डालकर उसे मुँह तक नहीं ला सकता।
- 25 तानाज़न को मार तो सादालौह सबक सीखेगा, समझदार को डौंट तो उसके इल्म में इजाफा होगा।
- 26 जो अपने बाप पर ज़ल्म करे और अपनी माँ को निकाल दे वह वालिदैन के लिए शर्म और स्सवाई का बाइस है।
- 27 भैरे बेटे, तरबियत पर ध्यान देने से बाज़ न आ, वरना तू इल्मो-इरफान की राह से भटक जाएगा।
- 28 शरीर गवाह इनसाफ़ का मज़ाक उड़ाता है, और बेदीन का मुँह आफत की ख़बरे फैलाता है।
- 29 तानाज़न के लिए सज़ा और अहमक की पीठ के लिए कोड़ा तैयार है।

## 20

- 1 मैं तानाज़न का बाप और शराब शोर-शराबा की माँ है। जो यह पी पीकर डगमगाने लगे वह दानिशमंद नहीं।
- 2 बादशाह का कहर जवान शेरबबर की दहाड़ों की मानिंद है, जो उसे तैश दिलाए वह अपनी जान पर खेलता है।
- 3 लडाई-झगडे से बाज़ रहना इज़ज़त का तुर्राए-इम्तियाज़ है जबकि हर अहमक झगडने के लिए तैयार रहता है।
- 4 काहिल वक्रत पर हल नहीं चलाता, चुनौचे जब वह फ़सल पकते वक्रत अपने खेत पर निगाह करे तो कुछ नज़र नहीं आएगा।
- 5 इनसान के दिल का मनसूबा गहरे पानी की मानिंद है, लेकिन समझदार आदमी उसे निकालकर अमल में लाता है।
- 6 बहुत-से लोग अपनी वफादारी पर फ़खर करते हैं, लेकिन काबिले-एतमाद शख्स कहाँ पाया जाता है?
- 7 जो रास्तबाज़ बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे उस की औलाद मुबारक है।
- 8 जब बादशाह तख्ते-अदालत पर बैठ जाए तो वह अपनी आँखों से सब कुछ छानकर हर ग़लत बात एक तरफ़ कर लेता है।
- 9 कौन कह सकता है, "मैंने अपने दिल को पाक-साफ़ कर रखा है, मैं अपने गुनाह से पाक हो गया हूँ"?
- 10 ग़लत बाट और ग़लत पैमाइश, रब दोनों से घिन खाता है।
- 11 लडके का किरदार उसके सुल्क से मालूम होता है। इससे पता चलता है कि उसका चाल-चलन पाक और रास्त है या नहीं।

- 12 सुननेवाले कान और देखनेवाली आँखें दोनों ही रब ने बनाई हैं।
- 13 नींद को प्यार न कर वरना गरीब हो जाएगा। अपनी आँखों को खुला रख तो जी भरकर खाना खाएगा।
- 14 गाहक दुकानदार से कहता है, “यह कैसी नाकिस चीज़ है!” लेकिन फिर जाकर दूसरों के सामने अपने सौदे पर शेखी मारता है।
- 15 सोना और कसरत के मोती पाए जा सकते हैं, लेकिन समझदार होंट उनसे कहीं ज्यादा कीमती हैं।
- 16 ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो किसी ने परदेसी का ज़ामिन बनकर दिया है। अगर वह अजनबी का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उसने दी थी।
- 17 धोके से हासिल की हुई रोटी आदमी को मीठी लगती है, लेकिन उसका अंजाम कंकरों से भरा मुँह है।
- 18 मनसूबे सलाह-मशवरे से मजबूत हो जाते हैं, और जंग करने से पहले दूसरों की हिदायत पर ध्यान दे।
- 19 अगर तू बृहानत लगानेवाले को हमराज़ बनाए तो वह इधर उधर फिरकर बाद फैलाएगा। चुनौचे बातूनी से गुरेज कर।
- 20 जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसका चराग घने अंधेरे में बुझ जाएगा।
- 21 जो मीरास शुरू में बड़ी जल्दी से मिल जाए वह आखिर में बरकत का बाइस नहीं होगी।
- 22 मत कहना, “मैं गलत काम का इंतकाम लूँगा।” रब के इंतज़ार में रह तो वही तेरी मदद करेगा।
- 23 रब झूठे बातों से धिन खाता है, और गलत तराजू उसे अच्छा नहीं लगता।
- 24 रब हर एक के कदम मुक़र्र करता है। तो फिर इनसान किस तरह अपनी राह समझ सकता है?
- 25 इनसान अपने लिए फंदा तैयार करता है जब वह जल्दबाज़ी से मन्नत मानता और बाद में ही मन्नत के नतायज पर गौर करने लगता है।
- 26 दानिशमंद बादशाह बेदीनों को छान छानकर उड़ा लेता है, हों वह गाहने का आला ही उन पर से गुज़रने देता है।
- 27 आदमज़ाद की रूह रब का चराग है जो इनसान के बातिन की तह तक सब कुछ की तहक़ीक करता है।
- 28 शफ़क़त और वफ़ा बादशाह को महफ़ूज़ रखती है, शफ़क़त से वह अपना तख़्त मुस्तहक़म कर लेता है।
- 29 नौजवानों का फ़ख़र उनकी ताक़त और बुज़ुर्गों की शान उनके सफ़ेद बाल हैं।
- 30 ज़ख़म और चोटें बुराई को दूर कर देती हैं, ज़रबें बातिन की तह तक सब कुछ साफ़ कर देती हैं।

## 21

- 1 बादशाह का दिल रब के हाथ में नहर की मानिंद है। वह जिधर चाहे उसका सख़ फेर देता है।
- 2 हर आदमी की राह उस की अपनी नज़र में ठीक़ लगती है, लेकिन रब ही दिलों की ज़ौच-पडताल करता है।
- 3 रास्तबाज़ी और इनसाफ़ करना रब को ज़बह की क़ुरबानियों से कहीं ज्यादा पसंद है।
- 4 मग़सूर आँखें और मुतकब्बिर दिल जो बेदीनों का चराग़ है गुनाह है।
- 5 मेहनती शख्स के मनसूबे नफ़ा का बाइस हैं, लेकिन जल्दबाज़ी गुरबत तक पहुँचा देती है।
- 6 फ़रेबदेह ज़बान से जमा किया हुआ खज़ाना बिखर जानेवाला धुआँ और मोहलक फंदा है।
- 7 बेदीनों का ज़ुल्म ही उन्हें घसीटकर ले जाता है, क्योंकि वह इनसाफ़ करने से इनकार करते हैं।
- 8 कुसूरवार की राह पेचदार है जबकि पाक शख्स सीधी राह पर चलता है।
- 9 झगडालू बीवी के साथ एक ही घर में रहने की निसबत छत के किसी कोने में गुज़ारा करना बेहतर है।
- 10 बेदीन गलत काम करने के लालच में रहता है और अपने किसी भी पड़ोसी पर तरस नहीं खाता।
- 11 तानाज़न पर ज़ुरमाना लगा तो सादालौह सबक सीखेगा, दानिशमंद को तालीम दे तो उसके इल्म में इज़ाफ़ा होगा।
- 12 अल्लाह जो रास्त है बेदीन के घर को ध्यान में रखता है, वही बेदीन को खाक में मिला देता है।
- 13 जो कान में उँगली डालकर गरीब की मदद के लिए चीखें नहीं सुनता वह भी एक दिन चीखें मारेगा, और उस की भी सुनी नहीं जाएगी।
- 14 पोशीदगी में सिला देने से दूसरे का गुस्सा ठंडा हो जाता, किसी की जेब गरम करने से उसका सख़त तैश दूर हो जाता है।
- 15 जब इनसाफ़ किया जाए तो रास्तबाज़ खुश हो जाता, लेकिन बदकार दहशत खाने लगता है।
- 16 जो समझ की राह से भटक जाए वह एक दिन मुरदों की जमात में आराम करेगा।
- 17 जो ऐशो-इशरत की ज़िंदगी पसंद करे वह गरीब हो जाएगा, जिसे मैं और तेल प्यारा हो वह अमीर नहीं हो जाएगा।
- 18 जब रास्तबाज़ का फ़िधा देना है तो बेदीन को दिया जाएगा, और दियानतदार की जगह बेवफ़ा को दिया जाएगा।
- 19 झगडालू और तंग करनेवाली बीवी के साथ बसने की निसबत रेगिस्तान में गुज़ारा करना बेहतर है।
- 20 दानिशमंद के घर में उम्दा खज़ाना और तेल होता है, लेकिन अहमक अपना सारा माल हडप कर लेता है।
- 21 जो इनसाफ़ और शफ़क़त का ताक्कुब करता रहे वह ज़िंदगी, रास्ती और इज़्जत पाएगा।

- 22 दानिशमंद आदमी ताकतवर फौजियों के शहर पर हमला करके वह किलाबंदी ढा देता है जिस पर उनका पूरा एतमाद था।
- 23 जो अपने मुँह और ज़बान की पहरादारी करे वह अपनी जान को मुसीबत से बचाए रखता है।
- 24 मगसूर और घमंडी का नाम 'तानाज़न' है, हर काम वह बेहद तकब्बुर के साथ करता है।
- 25 काहिल का लालच उसे मौत के घाट उतार देता है, क्योंकि उसके हाथ काम करने से इनकार करते हैं।
- 26 लालचची पूरा दिन लालच करता रहता है, लेकिन रास्तबाज़ फ़ैयाज़दिली से देता है।
- 27 बेदीनों की कुरबानी काबिले-धिन है, खासकर जब उसे बुरे मकसद से पेश किया जाए।
- 28 झूटा गवाह तबाह हो जाएगा, लेकिन जो दूसरे की ध्यान से सुने उस की बात हमेशा तक कायम रहेगी।
- 29 बेदीन आदमी गुस्ताख़ अंदाज़ से पेश आता है, लेकिन सीधी राह पर चलनेवाला सोच-समझकर अपनी राह पर चलता है।
- 30 किसी की भी हिकमत, समझ या मनसूबा रब का सामना नहीं कर सकता।
- 31 घोड़े को जंग के दिन के लिए तैयार तो किया जाता है, लेकिन फ़तह रब के हाथ में है।

## 22

- 1 नेक नाम बड़ी दौलत से कीमती, और मज़ुरे-नजर होना सोने-चाँदी से बेहतर है।
- 2 अमीर और गरीब एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, रब उन सबका खालिक है।
- 3 ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भाँपकर छुप जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़कर उस की लपेट में आ जाता है।
- 4 फ़रोतनी और रब का ख़ौफ़ मानने का फल दौलत, एहतराम और जिंदगी है।
- 5 बेदीन की राह में कौंटे और फंदे होते हैं। जो अपनी जान महफूज़ रखना चाहे वह उनसे दूर रहता है।
- 6 छोटे बच्चे को सहीह राह पर चलने की तरबियत कर तो वह बूढ़ा होकर भी उससे नहीं हटेगा।
- 7 अमीर गरीब पर हुकूमत करता, और कर्ज़दार कर्ज़खाह का गुलाम होता है।
- 8 जो नाइनसाफी का बीज बोए वह आफत की फ़सल काटेगा, तब उस की ज़्यादती की लाठी टूट जाएगी।
- 9 फ़ैयाज़दिल को बरकत मिलेगी, क्योंकि वह पस्तहाल को अपने खाने में शरीक करता है।
- 10 तानाज़न को भगा दे तो लडाई-झगडा घर से निकल जाएगा, तू तू में मैं और एक दूसरे की बेइज्जती करने का सिलसिला खत्म हो जाएगा।
- 11 जो दिल की पाकीज़गी को प्यार करे और मेहरबान ज़बान का मालिक हो वह बादशाह का दोस्त बनेगा।
- 12 रब की आँखें इल्मो-इरफ़ान की देख-भाल करती हैं, लेकिन वह बेवफ़ा की बातों को तबाह होने देता है।
- 13 काहिल कहता है, "गली में शेर है, अगर बाहर जाऊँ तो मुझे किसी चौक में फाड़ खाएगा।"
- 14 जिनाकार औरत का मुँह गहरा गढ़ा है। जिससे रब नाराज़ हो वह उसमें गिर जाता है।
- 15 बच्चे के दिल में हमाक़त टिकती है, लेकिन तरबियत की छड़ी उसे भगा देती है।
- 16 एक पस्तहाल पर जुल्म करता है ताकि दौलत पाए, दूसरा अमीर को तोहफ़े देता है लेकिन गरीब हो जाता है।

### दानिशमंदों की 30 कहावतें

- 17 कान लगाकर दानाओं की बातों पर ध्यान दे, दिल से मेरी तालीम अपना ले! 18 क्योंकि अच्छा है कि तू उन्हें अपने दिल में महफूज़ रखे, वह सब तेरे होंटों पर मुस्तैद रहें। 19 आज मैं तुझे, हौं तुझे ही तालीम दे रहा हूँ ताकि तेरा भरोसा रब पर रहे। 20 मैंने तेरे लिए 30 कहावतें क़लामबंद की हैं, ऐसी बातें जो मशवरों और इल्म से भरी हुई हैं। 21 क्योंकि मैं तुझे सच्चाई की काबिले-एतमाद बातें सिखाना चाहता हूँ ताकि तू उन्हें काबिले-एतमाद जवाब दे सके जिन्होंने तुझे भेजा है।

### -1-

- 22 पस्तहाल को इसलिए न लूट कि वह पस्तहाल है, मुसीबतज़दा को अदालत में मत कुचलना। 23 क्योंकि रब खुद उनका दिफा करके उन्हें लूट लेगा जो उन्हें लूट रहे हैं।

### -2-

- 24 गुसीले शख्स का दोस्त न बन, न उससे ज्यादा ताल्लुक रख जो जल्दी से आग-बगूला हो जाता है। 25 ऐसा न हो कि तू उसका चाल-चलन अपनाकर अपनी जान के लिए फंदा लगाए।

### -3-

- 26 कभी हाथ मिलाकर वादा न कर कि मैं दूसरे के कर्ज़ का ज़ामिन हूँगा। 27 कर्ज़दार के पैसे वापस न करने पर अगर तू भी पैसे अदा न कर सके तो तेरी चारपाई भी तेरे नीचे से छीन ली जाएगी।

-4-

28 ज़मीन की जो हृद्द तैरे बापदादा ने मुकर्रर की उन्हें आगे पीछे मत करना।

-5-

29 क्या तुझे ऐसा आदमी नज़र आता है जो अपने काम में माहिर है? वह निचले तबके के लोगों की खिदमत नहीं करेगा बल्कि बादशाहों की।

## 23

-6-

1 अगर तू किसी हुक्मरान के खाने में शरीक हो जाए तो खूब ध्यान दे कि तू किसके हुज़ूर है। 2 अगर तू पेटू हो तो अपने गले पर छुरी रख। 3 उस की उम्दा चीजों का लालच मत कर, क्योंकि यह खाना फ़रेबदेह है।

-7-

4 अपनी पूरी ताकत अमीर बनने में सर्फ़ न कर, अपनी हिकमत ऐसी कोशिशों से जाया मत कर। 5 एक नज़र दौलत पर डाल तो वह ओझल हो जाती है, और पर लगाकर उकाब की तरह आसमान की तरफ़ उड़ जाती है।

-8-

6 जलनेवाले की रोटी मत खा, उसके लज़ीज़ खानों का लालच न कर। 7 क्योंकि यह गले में बाल की तरह होगा। वह तुझसे कहेगा, “खाओ, पियो!” लेकिन उसका दिल तैरे साथ नहीं है। 8 जो लुकमा तूने खा लिया उससे तुझे कै आणी, और तैरी उससे दोस्ताना बातें जाया हो जाएँगी।

-9-

9 अहमक से बात न कर, क्योंकि वह तैरी दानिशमंद बातें हकीर जानेगा।

-10-

10 ज़मीन की जो हृद्द कदीम ज़माने में मुकर्रर हुई उन्हें आगे पीछे मत करना, और यतीमों के खेतों पर कब्ज़ा न कर। 11 क्योंकि उनका छुड़ानेवाला कवी है, वह उनके हक में खुद तैरे खिलाफ़ लडेगा।

-11-

12 अपना दिल तरबियत के हवाले कर और अपने कान इल्म की बातों पर लगा।

-12-

13 बच्चे को तरबियत से महरूम न रख, छड़ी से उसे सज़ा देने से वह नहीं मरेगा। 14 छड़ी से उसे सज़ा दे तो उस की जान मौत से छूट जाएगी।

-13-

15 मेरे बेटे, अगर तेरा दिल दानिशमंद हो तो मेरा दिल भी खुश होगा। 16 मैं अंदर ही अंदर खुशी मनाऊँगा जब तैरे होंट दियानतदार बातें करेंगे।

-14-

17 तेरा दिल गुनाहगारों को देखकर कुहता न रहे बल्कि पूरे दिन रब का खौफ़ रखने में सरगरम रहे। 18 क्योंकि तैरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी बल्कि तेरा मुस्तकबिल यकीनन अच्छा होगा।

-15-

19 मेरे बेटे, सुनकर दानिशमंद हो जा और सहीह राह पर अपने दिल की राहनुमाई कर। 20 शराबी और पेटू से दरेग कर, 21 क्योंकि शराबी और पेटू गरीब हो जाएंगे, और काहिली उन्हें चीथडे पहनाएगी।

-16-

22 अपने बाप की सुन जिसने तुझे पैदा किया, और अपनी माँ को हकीर न जान जब बूढ़ी हो जाए।

23 सच्चाई खरीद ले और कभी फ़रोख़्त न कर, उसमें शामिल हिकमत, तरबियत और समझ अपना ले।

24 रास्तबाज़ का बाप बड़ी खुशी मनाता है, और दानिशमंद बेटे का वालिद उससे लुफ़अंदोज़ होता है।

25 चुनौचे अपने माँ-बाप के लिए खुशी का बाइस हो, ऐसी ज़िंदगी गुज़ार कि तैरी माँ जशन मना सके।

-17-

26 मेरे बेटे, अपना दिल मेरे हवाले कर, तैरी आँखें मेरी राहें पसंद करें। 27 क्योंकि कसबी गहरा गढा और ज़िनाकार औरत तंग कुआँ है, 28 डाकू की तरह वह ताक लगाए बैठकर मर्दों में बेवफ़ाओं का इज़ाफ़ा करती है।



-18-

29 कौन आहें भरता है? कौन हाय हाय करता और लड़ाई-झगड़े में मुलव्स रहता है? किस को बिलावजह चोटें लगती, किसकी आँखें धुंधली-सी रहती हैं? 30 वह जो रात गए तक मै पीने और मसालेदार मै से मजा लेने में मसरूफ रहता है। 31 मै को तकता न रह, खाह उसका सूरख रंग कितनी खूबसूरती से प्याले में क्योँ न चमके, खाह उसे बड़े मजे से क्योँ न पिया जाए। 32 अंजामकार वह तुझे सौंप की तरह काटेगी, नाग की तरह डसेगी। 33 तेरी आँखें अजीबो-गरीब मंजर देखेंगी और तेरा दिल बेतुकी बातें हकलाएगा। 34 तू समुंदर के बीच में लेटनेवाले की मानिद होगा, उस जैसा जो मस्तूल पर चढ़कर लेट गया हो। 35 तू कहेगा, “मेरी पिटाई हुई लेकिन दर्द महसूस न हुआ, मुझे मारा गया लेकिन मालूम न हुआ। मैं कब जाग उठूँगा ताकि दुबारा शराब की तरफ सख कर सकूँ?”

## 24

-19-

1 शरीरों से हसद न कर, न उनसे सोहबत रखने की आरजू रख, 2 क्योँकि उनका दिल जुल्म करने पर तुला रहता है, उनके होंट दूसरों को दुख पहुँचाते हैं।

-20-

3 हिकमत घर को तामीर करती, समझ उसे मजबूत बुनियाद पर खड़ा कर देती, 4 और इल्मो-इरफान उसके कमरों को बेशकीमत और मनमोहन चीजों से भर देता है।

-21-

5 दानिशमंद को ताकत हासिल होती और इल्म रखनेवाले की कुव्वत बढ़ती रहती है, 6 क्योँकि जंग करने के लिए हिदायत और फतह पाने के लिए मुतअदिद मुशीरों की जरूरत होती है।

-22-

7 हिकमत इतनी बुलंदो-बाला है कि अहमक उसे पा नहीं सकता। जब बुजुर्ग शहर के दरवाजे में फ़ैसला करने के लिए जमा होते हैं तो वह कुछ नहीं कह सकता।

-23-

8 बुरे मनसूबे बाँधनेवाला साजिशि कहलाता है। 9 अहमक की चालाकियाँ गुनाह हैं, और लोग तानाजन से यिन खाते हैं।

-24-

10 अगर तू मुसीबत के दिन हिम्मत हारकर ढीला हो जाए तो तेरी ताकत जाती रहेगी।

-25-

11 जिन्हें मौत के हवाले किया जा रहा है उन्हें छोड़ा, जो क़साई की तरफ डगमगाते हुए जा रहे हैं उन्हें रोक दे। 12 शायद तू कहे, “हमें तो इसके बारे में इल्म नहीं था।” लेकिन यकीन जान, जो दिल की जौंच-पडताल करता है वह बात समझता है, जो तेरी जान की देख-भाल करता है उसे मालूम है। वह इनसान को उसके आमाल का बदला देता है।

-26-

13 मेरे बेटे, शहद खा क्योँकि वह अच्छा है, छत्ते का खालिस शहद मीठा है। 14 जान ले कि हिकमत इसी तरह तेरी जान के लिए मीठी है। अगर तू उसे पाए तो तेरी उम्मीद जाती नहीं रहेगी बल्कि तेरा मुस्तकबिल अच्छा होगा।

-27-

15 ऐ बेदीन, रास्तबाज़ के घर की ताक लगाए मत बैठना, उस की रिहाइशगाह तबाह न कर। 16 क्योँकि गो रास्तबाज़ सात बार गिर जाए तो भी हर बार दुबारा उठ खड़ा होगा जबकि बेदीन एक बार ठोकर खाकर मुसीबत में फँसा रहेगा।

-28-

17 अगर तेरा दुश्मन गिर जाए तो खुश न हो, अगर वह ठोकर खाए तो तेरा दिल जशन न मनाए। 18 ऐसा न हो कि रब यह देखकर तेरा रवैया पसंद न करे और अपना गुस्सा दुश्मन पर उतारने से बाज़ आए।

-29-

19 बदकारों को देखकर मुशतइल न हो जा, बेदीनों के बाइस कुढता न रह। 20 क्योँकि शरीरों का कोई मुस्तकबिल नहीं, बेदीनों का चराग बुझ जाएगा।

-30-

21 मेरे बेटे, रब और बादशाह का खौफ मान, और सरकशों में शरीक न हो। 22 क्योँकि अचानक ही उन पर आफत आएगी, किसी को पता ही नहीं चलेगा जब दोनों उन पर हमला करके उन्हें तबाह कर देंगे।

दानिशमंदों की मज़ीद कहावतें

- 23 ज़ैल में दानिशमंदों की मज़ीद कहावतें कलमबंद हैं।  
अदालत में जानिबदारी दिखाना बुरी बात है। 24 जो कुसूरवार से कहे, “तू बेकुसूर है” उस पर क्रौमै लानत भेजेगी, उस की सरजनिश उम्में करेंगी। 25 लेकिन जो कुसूरवार को मुजरिम ठहराए वह खुशहाल होगा, उसे कसरत की बरकत मिलेगी।  
26 सच्चा जवाब दोस्त के बोसे की मानिंद है।  
27 पहले बाहर का काम मुकम्मल करके अपने खेतों को तैयार कर, फिर ही अपना घर तामीर कर।  
28 बिलावजह अपने पड़ोसी के खिलाफ़ गवाही मत दे। या क्या तू अपने होंटों से धोका देना चाहता है?  
29 मत कहना, “जिस तरह उसने मेरे साथ किया उसी तरह मैं उसके साथ करूँगा, मैं उसके हर फेल का मुनासिब जवाब दूँगा।”

30 एक दिन मैं सुस्त और नासमझ आदमी के खेत और अंगूर के बाग में से गुज़रा। 31 हर जगह काँटेदार झाड़ियाँ फैली हुई थीं, खुदरौ पौदे पूरी ज़मीन पर छा गए थे। उस की चारदीवारी भी गिर गई थी। 32 यह देखकर मैंने दिल से ध्यान दिया और सबक सीख लिया,

33 अगर तू कहे, “मुझे थोड़ी देर सोने दे, थोड़ी देर ऊँघने दे, थोड़ी देर हाथ पर हाथ धरे बैठने दे ताकि मैं आराम कर सकूँ” 34 तो खबरदार, जल्द ही गुरबत राहज़न की तरह तुझ पर आएगी, मुफ़लिसी हथियार से लेस डाकू की तरह तुझ पर आ पड़ेगी।

## 25

सुलेमान की मज़ीद कहावतें

- 1 ज़ैल में सुलेमान की मज़ीद कहावतें दर्ज हैं जिन्हें यहदाह के बादशाह हिज़क्रियाह के लोगों ने जमा किया।  
2 अल्लाह का जलाल इसमें जाहिर होता है कि वह मामला पोशीदा रखता है, बादशाह का जलाल इसमें कि वह मामले की तहक़ीक करता है।  
3 जितना आसमान बुलंद और ज़मीन गहरी है उतना ही बादशाहों के दिल का खोज नहीं लगाया जा सकता।  
4 चाँदी से मैल दूर करो तो सुनार बरतन बनाने में कामयाब हो जाएगा, 5 बेदीन को बादशाह के हुज़ूर से दूर करो तो उसका तख़्त रास्ती की बुनियाद पर कायम रहेगा।  
6 बादशाह के हुज़ूर अपने आप पर फ़ख़र न कर, न इज़ज़त की उस जगह पर खड़ा हो जा जो बुचुर्गी के लिए मख़सूस है।  
7 इससे पहले कि शुरफ़ा के सामने ही तेरी बेइज़ज़ती हो जाए बेहतर है कि तू पीछे खड़ा हो जा और बाद में कोई तुझसे कहे, “यहाँ सामने आ जाँएँ।”  
जो कुछ तेरी आँखों ने देखा उसे अदालत में पेश करने में 8 जल्दबाज़ी न कर, क्योंकि तू क्या करेगा अगर तेरा पड़ोसी तेरे मामले को झूटलाकर तुझे शरमिदा करे?  
9 अदालत में अपने पड़ोसी से लडते वक़्त वह बात बयान न कर जो किसी ने पोशीदगी में तेरे सुपुर्द की, 10 ऐसा न हो कि सुननेवाला तेरी बेइज़ज़ती करे। तब तेरी बदनामी कभी नहीं मिटेगी।  
11 वक़्त पर मौज़े बात चाँदी के बरतन में सोने के सेब की मानिंद है। 12 दानिशमंद की नसीहत क़बूल करनेवाले के लिए सोने की बाली और खालिस सोने के गुलबंद की मानिंद है।  
13 काबिले-एतमाद कासिद भेजनेवाले के लिए फ़सल काटते वक़्त बर्फ़ की ठंडक जैसा है, इस तरह वह अपने मालिक की जान को तरो-ताज़ा कर देता है।  
14 जो शेख़ी मारकर तोहफ़ों का वादा करे लेकिन कुछ न दे वह उन तूफ़ानी बादलों की मानिंद है जो बरसे बग़ैर गुज़र जाते हैं।  
15 हुक्मरान को तहम्मूल से कायल किया जा सकता, और नरम ज़बान हड्डियाँ तोड़ने के काबिल है।  
16 अगर शहद मिल जाए तो ज़रूरत से ज़्यादा मत खा, हद से ज़्यादा खाने से तुझे कै आएगी।  
17 अपने पड़ोसी के घर में बार बार जाने से अपने कदमों को रोक, वरना वह तंग आकर तुझसे नफ़रत करने लगेगा।  
18 जो अपने पड़ोसी के खिलाफ़ झूटी गवाही दे वह हथौड़े, तलवार और तेज़ तीर जैसा नुक़सानदेह है।  
19 मुसीबत के वक़्त बेवफ़ा पर एतबार करना ख़राब दाँत या डगमगाते पाँवों की तरह तकलीफ़देह है।  
20 दुख़ते दिल के लिए गीत गाना उतना ही ग़ैरमौज़े है जितना सर्दियों के मौसम में कमीस उतारना या सोड़े पर सिरका डालना।

21 अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना खिला, अगर प्यासान हो तो पानी पिला। 22 क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सर पर जलते हुए कोयलों का ढेर लगाएगा, और रब तुझे अन्न देगा।

23 जिस तरह काले बादल लानेवाली हवा बारिश पैदा करती है उसी तरह बातूनी की चुपके से की गई बातों से लोगों के मुँह बिगड़ जाते हैं।

24 झगड़ातू बीवी के साथ एक ही घर में रहने की निसबत छत के किसी कोने में गुजारा करना बेहतर है।

25 दूर-दराज़ मुल्क की खूशखबरी प्यासे गले में ठंडा पानी है।

26 जो रास्तबाज़ बेदीन के सामने डगमगाने लगे, वह गदला चश्मा और आल्टा कुआँ है।

27 ज़्यादा शहद खाना अच्छा नहीं, और न ही ज़्यादा अपनी इज़्जत की फ़िक्र करना।

28 जो अपने आप पर काबू न पा सके वह उस शहर की मानिंद है जिसकी फ़सील ढा दी गई है।

## 26

1 अहमक की इज़्जत करना उतना ही गैरमौजू है जितना मौसमे-गरमा में बर्फ़ या फसल काटते वक़्त बारिश।

2 बिलावजह भेजी हुई लानत फडफडाती चिडिया या उडती हुई अबाबील की तरह ओझल होकर बेअसर रह जाती है।

3 घोड़े को छड़ी से, गधे को लगाम से और अहमक की पीठ को लाठी से तरबियत दे।

4 जब अहमक अहमकाना बातें करे तो उसे जवाब न दे, वरना तू उसी के बराबर हो जाएगा।

5 जब अहमक अहमकाना बातें करे तो उसे जवाब दे, वरना वह अपनी नज़र में दानिशमंद ठहरेगा।

6 जो अहमक के हाथ पैगाम भेजे वह उस की मानिंद है जो अपने पाँवों पर कुल्हाड़ी मारकर अपने आपसे ज़्यादाती करता है। \*

7 अहमक के मुँह में हिकमत की बात मफलूज की बेहरकत लटकती टाँगों की तरह बेकार है।

8 अहमक का एहतराम करना फ़लाखन के साथ पत्थर बाँधने के बराबर है।

9 अहमक के मुँह में हिकमत की बात नशे में धुत शराबी के हाथ में कौंटदार झाड़ी की मानिंद है।

10 जो अहमक या हर किसी गुज़रनेवाले को काम पर लगाए वह सबको ज़खमी करनेवाले तीरअंदाज़ की मानिंद है।

11 जो अहमक अपनी हमाकत दोहराए वह अपनी कै के पास वापस आनेवाले कुत्ते की मानिंद है।

12 क्या कोई दिखाई देता है जो अपने आपको दानिशमंद समझता है? उस की निसबत अहमक के सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।

13 काहिल कहता है, “रास्ते में शेर है, हाँ चौकों में शेर फिर रहा है!”

14 जिस तरह दरवाज़ा कब्जे पर घूमता है उसी तरह काहिल अपने बिस्तर पर करवटें बदलता है।

15 जब काहिल अपना हाथ खाने के बरतन में डाल दे तो वह इतना सुस्त है कि उसे मुँह तक वापस नहीं ला सकता।

16 काहिल अपनी नज़र में हिकमत से जवाब देनेवाले सात आदमियों से कहीं ज़्यादा दानिशमंद है।

17 जो गुज़रते वक़्त दूसरों के झगड़े में मुदाखलत करे वह उस आदमी की मानिंद है जो कुत्ते को कानों से पकड़ ले।

18-19 जो अपने पड़ोसी को फरेब देकर बाद में कहे, “मैं सिर्फ़ मज़ाक कर रहा था” वह उस दीवाने की मानिंद है जो लोगों पर जलते हुए और मोहलक तीर बरसाता है।

20 लकड़ी के ख़त्म होने पर आग बुझ जाती है, तोहमत लगानेवाले के चले जाने पर झगड़ा बंद हो जाता है।

21 अंगारों में कौयले और आग में लकड़ी डाल तो आग भड़क उठेगी। झगड़ातू को कहीं भी खड़ा कर तो लोग मुश्तइल हो जाएंगे।

22 तोहमत लगानेवाले की बातें लज़ीज़ खाने के लुकमों जैसी हैं, वह दिल की तह तक उतर जाती हैं।

23 जलनेवाले होंट और शरीर दिल मिट्टी के उस बरतन की मानिंद हैं जिसे चमकदार बनाया गया हो।

24 नफ़रत करनेवाला अपने होंटों से अपना असली रूप छुपा लेता है, लेकिन उसका दिल फरेब से भरा रहता है। 25 जब वह मेहरबान बातें करे तो उस पर यकीन न कर, क्योंकि उसके दिल में सात मक़रूह बातें हैं। 26 गो उस की नफ़रत फिलहाल फ़रेब से छुपी रहे, लेकिन एक दिन उसका ग़लत किरदार पूरी ज़मात के सामने ज़ाहिर हो जाएगा।

27 जो दूसरों को फँसाने के लिए गढ़ा खोदे वह उसमें ख़ुद गिर जाएगा, जो पत्थर लुढ़काकर दूसरों पर फेंकना चाहे उस पर ही पत्थर वापस लुढ़क आएगा।

28 झूटी ज़बान उनसे नफ़रत करती है जिन्हें वह कुचल देती है, ख़ुशामद करनेवाला मुँह तबाही मचा देता है।

\* 26:6 लफ्ज़ी तरज़ुमा : ज़्यादाती का प्याला पीता है।

## 27

- 1 उस पर शेखी न मार जो तू कल करेगा, तुझे क्या मालूम कि कल का दिन क्या कुछ फराहम करेगा?
- 2 तेरा अपना मुँह और अपने होंट तेरी तारीफ़ न करें बल्कि वह जो तुझसे वाकिफ़ भी न हो।
- 3 पत्थर भारी और रेत वज्रनी है, लेकिन जो अहमक तुझे तंग करे वह ज्यादा नाकाबिले-बरदाशत है।
- 4 गुस्सा ज़ालिम होता और तैश सैलाब की तरह इनसान पर आ जाता है, लेकिन कौन हसद का मुकाबला कर सकता है?
- 5 खुली मलामत छुपी हुई मुहब्बत से बेहतर है।
- 6 प्यार करनेवाले की ज़रबे वफ़ा का सबूत है, लेकिन नफ़रत करनेवाले के मुतअडिद बोसों से खबरदार रह।
- 7 जो सेर है वह शहद को भी पाँवों तले रौद देता है, लेकिन भूके को कड़वी चीज़ भी मीठी लगती है।
- 8 जो आदमी अपने घर से निकलकर मारा मारा फिरे वह उस परिदे की मानिंद है जो अपने घोंसले से भागकर कभी इधर कभी इधर फड़फड़ाता रहता है।
- 9 तेल और बख़ूर दिल को खुश करते हैं, लेकिन दोस्त अपने अच्छे मशवरों से खुशी दिलाता है।
- 10 अपने दोस्तों को कभी न छोड़, न अपने जाती दोस्तों को न अपने बाप के दोस्तों को। तब तुझे मुसीबत के दिन अपने भाई से मदद नहीं माँगनी पड़ेगी। क्योंकि करीब का पड़ोसी दूर के भाई से बेहतर है।
- 11 मेरे बेटे, दानिशमंद बनकर मेरे दिल को खुश कर ताकि मैं अपने हकीर जाननेवाले को जवाब दे सकूँ।
- 12 ज़हीन आदमी ख़तरा पहले से भौंपकर छुप जाता है, जबकि सादालौह आगे बढ़कर उस की लोपेट में आ जाता है।
- 13 ज़मानत का वह लिबास वापस न कर जो किसी ने परदेसी का ज़ामिन बनकर दिया है। अगर वह अजनबी औरत का ज़ामिन हो तो उस ज़मानत पर ज़रूर क़ब्ज़ा कर जो उसने दी थी।
- 14 जो सुबह-सवेरे बुलंद आवाज़ से अपने पड़ोसी को बरकत दे उस की बरकत लानत ठहराई जाएगी।
- 15 झगडालू बीवी मूसलाधार बारिश के बाइस मुसलसल टपकनेवाली छत की मानिंद है।<sup>16</sup> उसे रोकना हवा को रोकने या तेल को पकड़ने के बराबर है।
- 17 लोहा लोहे को और इनसान इनसान के जहन को तेज़ करता है।
- 18 जो अंजीर के दरख़्त की देख-भाल करे वह उसका फल खाएगा, जो अपने मालिक की वफ़ादारी से खिदमत करे उसका एहतराम किया जाएगा।
- 19 जिस तरह पानी चेहेरे को मुनअकिस करता है उसी तरह इनसान का दिल इनसान को मुनअकिस करता है।
- 20 न मौत और न पाताल कभी सेर होते हैं, न इनसान की आँखें।
- 21 सोना और चाँदी कुठाली में पिघलाकर पाक-साफ़ कर, लेकिन इनसान का किरदार इससे मालूम कर कि लोग उस की कितनी क्रदर करते हैं।
- 22 अगर अहमक को अनाज की तरह ओखली और मूसल से कूटा भी जाए तो भी उस की हमाकत दूर नहीं हो जाएगी।
- 23 एहतियात से अपनी भेड़-बकरियों की हालत पर ध्यान दे, अपने रेवडों पर खूब तवज्जुह दे।<sup>24</sup> क्योंकि कोई भी दौलत हमेशा तक कायम नहीं रहती, कोई भी ताज नसल-दर-नसल बरकरार नहीं रहता।<sup>25</sup> खुले मैदान में घास काटकर जमा कर ताकि नई घास उग सके, चारा पहाड़ों से भी इक़्श कर।<sup>26</sup> तब तू भेड़ों की उन से कपड़े बना सकेगा, बकरों की फ़रोख़्त से खेत खरीद सकेगा,<sup>27</sup> और बकरियाँ इतना दूध देंगी कि तेरे, तेरे खानदान और तेरे नौकर-चाकरों के लिए काफ़ी होगा।

## 28

- 1 बेदीन फ़रार हो जाता है हालाँकि ताक्क़ुब करनेवाला कोई नहीं होता, लेकिन रास्तबाज़ अपने आपको जवान शेरबबर की तरह महफूज़ समझता है।
- 2 मुल्क की खताकारी के सबब से उस की हुक्मत की यागांगत कायम नहीं रहेगी, लेकिन समझदार और दानिशमंद आदमी उसे बड़ी देर तक कायम रखेगा।
- 3 जो गरीब गरीबों पर ज़ुल्म करे वह उस मूसलाधार बारिश की मानिंद है जो सैलाब लाकर फसलों को तबाह कर देती है।
- 4 जिसने शरीअत को तर्क किया वह बेदीन की तारीफ़ करता है, लेकिन जो शरीअत के ताबे रहता है वह उस की मुख़ालफ़त करता है।
- 5 शरीर इनसाफ़ नहीं समझते, लेकिन रब के तालिब सब कुछ समझते हैं।
- 6 बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारनेवाला गरीब टेडी राहों पर चलनेवाले अमीर से बेहतर है।
- 7 जो शरीअत की पैरवी करे वह समझदार बेटा है, लेकिन ऐयाशों का साथी अपने बाप की बेइज़्ज़ती करता है।

8 जो अपनी दौलत नाजायज़ सूद से बढ़ाए वह उसे किसी और के लिए जमा कर रहा है, ऐसे शख्स के लिए जो गरीबों पर रहम करेगा।

9 जो अपने कान में उँगली डाले ताकि शरीरत की बातें न सुने उस की दुआँ भी काबिले-धिन है।

10 जो सीधी राह पर चलनेवालों को गलत राह पर लाए वह अपने ही गढ़े में गिर जाएगा, लेकिन बेइलज़ाम अच्छी मीरास पाएँगे।

11 अमीर अपने आपको दानिशमंद समझता है, लेकिन जो ज़रूरतमंद समझदार है वह उसका असली किरदार मालूम कर लेता है।

12 जब रास्तबाज़ फ़तहयाब हों तो मुल्क की शानो-शौकत बढ़ जाती है, लेकिन जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं।

13 जो अपने गुनाह छुपाए वह नाकाम रहेगा, लेकिन जो उन्हें तसलीम करके तर्क करे वह रहम पाएगा।

14 मुबारक है वह जो हर वक्त रब का ख़ौफ़ माने, लेकिन जो अपना दिल सख़्त करे वह मुसीबत में फँस जाएगा।

15 पस्तहाल कौम पर हुकूमत करनेवाला बेदीन गुराँते हुए शेरबबर और हमलाआवर रीछ की मानिंद है।

16 जहाँ नासमझ हुक्मरान है वहाँ ज़ुल्म होता है, लेकिन जिसे गलत नफ़ा से नफ़रत हो उस की उम्र दराज़ होगी।

17 जो किसी को कल्ल करे वह मौत तक अपने कुसूर के नीचे दबा हुआ मारा मारा फिरेगा। ऐसे शख्स का सहारा न बन।

18 जो बेइलज़ाम ज़िंदगी गुज़ारे वह बचा रहेगा, लेकिन जो टेढ़ी राह पर चले वह अचानक ही गिर जाएगा।

19 जो अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी करे वह जी भरकर रोटी खाएगा, लेकिन जो फ़ज़ूल चीज़ों के पीछे पड़ जाए वह ग़ुरबत से सेरे हो जाएगा।

20 काबिले-एतमाद आदमी को कसरत की बरकतें हासिल होंगी, लेकिन जो भाग भागकर दौलत जमा करने में मसरूफ़ रहे वह सज़ा से नहीं बचेगा।

21 जानिबदारी बुरी बात है, लेकिन इनसान रोटी का टुकड़ा हासिल करने के लिए मुजरिम बन जाता है।

22 लालची भाग भागकर दौलत जमा करता है, उसे मालूम ही नहीं कि इसका अंजाम ग़ुरबत ही है।

23 आखिरकार नसीहत देनेवाला चापलूसी करनेवाले से ज़्यादा मंज़ूर होता है।

24 जो अपने बाप या माँ को लूटकर कहे, “यह जुर्म नहीं है” वह मोहलक कातिल का शरीक-कार होता है।

25 लालची झगड़ों का मंबा रहता है, लेकिन जो रब पर भरोसा रखे वह खुशहाल रहेगा।

26 जो अपने दिल पर भरोसा रखे वह बेवकूफ़ है, लेकिन जो हिकमत की राह पर चले वह महफूज़ रहेगा।

27 गरीबों को देनेवाला ज़रूरतमंद नहीं होगा, लेकिन जो अपनी आँखें बंद करके उन्हें नज़रदाज़ करे उस पर बहुत लानतें आएँगी।

28 जब बेदीन उठ खड़े हों तो लोग छुप जाते हैं, लेकिन जब हलाक हो जाएँ तो रास्तबाज़ों की तादाद बढ़ जाती है।

## 29

1 जो मुतअद्दिद नसीहतों के बावजूद हटधर्म रहे वह अचानक ही बरबाद हो जाएगा, और शफा का इमकान ही नहीं होगा।

2 जब रास्तबाज़ बहुत हैं तो कौम खुश होती, लेकिन जब बेदीन हुकूमत करे तो कौम आहँ भरती है।

3 जिसे हिकमत प्यारी हो वह अपने बाप को खुशी दिलाता है, लेकिन कसबियों का साथी अपनी दौलत उडा देता है।

4 बादशाह इनसाफ़ से मुल्क को मुस्तहकम करता, लेकिन हद से ज़्यादा टैक्स लेने से उसे तबाह करता है।

5 जो अपने पड़ोसी की चापलूसी करे वह उसके कदमों के आगे जाल बिछाता है।

6 शरीर जुर्म करते वक्त अपने आपको फँसा देता, लेकिन रास्तबाज़ खुशी मनाकर शादमान रहता है।

7 रास्तबाज़ पस्तहालों के हुकूक का खयाल रखता है, लेकिन बेदीन परवा ही नहीं करता।

8 तानाज़न शहर में अफ़रा-तफ़री मचा देते जबकि दानिशमंद गुस्सा ठंडा कर देते हैं।

9 जब दानिशमंद आदमी अदालत में अहमक से लड़े तो अहमक तैश में आ जाता या कहकहा लगाता है, सूकून का इमकान ही नहीं होता।

10 खूनख़ार आदमी बेइलज़ाम शख्स से नफ़रत करता, लेकिन सीधी राह पर चलनेवाला उस की बेहतरी चाहता है।

11 अहमक अपना पूरा गुस्सा उतारता, लेकिन दानिशमंद उसे रोककर काबू में रखता है।

12 जो हुक्मरान झूट पर ध्यान दे उसके तमाम मुलाज़िम बेदीन होंगे।

13 जब गरीब और ज़ालिम की मुलाकात होती है तो दोनों की आँखों को रौशन करनेवाला रब ही है।

14 जो बादशाह दियानतदारी से ज़रूरतमंद की अदालत करे उसका तख़्त हमेशा तक कायम रहेगा।

15 छुडी और नसीहत हिकमत पैदा करती है। जिसे बेलगाम छोड़ा जाए वह अपनी माँ के लिए शर्मिंदगी का बाइस होगा।

- 16 जब बेदीन फलें-फूलों तो गुनाह भी फलता-फूलता है, लेकिन रास्तबाज़ उनकी शिकस्त के गवाह होंगे।
- 17 अपने बेटे की तरबियत कर तो वह तुझे सुकून और खुशी दिलाएगा।
- 18 जहाँ रोया नहीं वहाँ कौम बेलगाम हो जाती है, लेकिन मुबारक है वह जो शरीअत के ताबे रहता है।
- 19 नौकर सिर्फ अलफ़ाज़ से नहीं सुधरता। अगर वह बात समझे भी तो भी ध्यान नहीं देगा।
- 20 क्या कोई दिखाई देता है जो बात करने में जल्दबाज़ है? उस की निसबत अहमक के सुधरने की ज़्यादा उम्मीद है।
- 21 जो गुलाम जवानी से नाज़ो-नेमत में पलकर बिगड़ जाए उसका बुरा अंजाम होगा।
- 22 गज़बआलूद आदमी झगड़े छेड़ता रहता है, गुसीले शख्स से मुतअदिद गुनाह सरज़द होते हैं।
- 23 तक़बुर अपने मालिक को पस्त कर देगा जबकि फ़रोतन शख्स इज़ज़त पाएगा।
- 24 जो चोर का साथी हो वह अपनी जान से नफ़रत रखता है। गो उससे हलफ उठवाया जाए कि चोरी के बारे में गवाही दे तो भी कुछ नहीं बताता बल्कि हलफ की लानत की ज़द में आ जाता है।
- 25 जो इनसान से ख़ौफ़ खाए वह फंदे में फँस जाएगा, लेकिन जो रब का ख़ौफ़ माने वह महफूज़ रहेगा।
- 26 बहुत लोग हुक्मरान की मंज़ूरी के तालिब रहते हैं, लेकिन इनसाफ़ रब ही की तरफ से मिलता है।
- 27 रास्तबाज़ बदकार से और बेदीन सीधी राह पर चलनेवाले से घिन खाता है।

## 30

### अज़ूर की कहावतें

1 ज़ैल में अज़ूर बिन याका की कहावतें हैं। वह मस्सा का रहनेवाला था। उसने फरमाया, ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ, ऐ अल्लाह, मैं थक गया हूँ, यह मेरे बस की बात नहीं रही। 2 यकीनन मैं इनसानों में सबसे ज़्यादा नादान हूँ, मुझे इनसान की समझ हासिल नहीं। 3 न मैंने हिकमत सीखी, न कुदूस ख़ुदा के बारे में इल्म रखता हूँ।

4 कौन आसमान पर चढ़कर वापस उतर आया? किसने हवा को अपने हाथों में जमा किया? किसने गहरे पानी को चादर में लपेट लिया? किसने ज़मीन की हदूद को अपनी अपनी जगह पर कायम किया है? उसका नाम क्या है, उसके बेटे का क्या नाम है? अगर तुझे मालूम हो तो मुझे बता।

5 अल्लाह की हर बात आज़मदा है, जो उसमें पनाह ले उसके लिए वह ढाल है।

6 उस की बातों में इज़ाफ़ा मत कर, वरना वह तुझे डॉटिंगा और तू झूटा ठहरेगा।

7 ऐ रब, मैं तुझसे दो चीज़ें माँगता हूँ, मेरे मरने से पहले इनसे इनकार न कर। 8 पहले, दारोगोई और झूट मुझसे दूर रख। दूसरे, न गुरबत न दौलत मुझे दे बल्कि उतनी ही रोटी जितनी मेरा हक है, 9 ऐसा न हो कि मैं दौलत के बाइस सेर होकर तेरा इनकार करूँ और कहूँ, “रब कौन है?” ऐसा भी न हो कि मैं गुरबत के बाइस चोरी करके अपने ख़ुदा के नाम की बेहुरमती करूँ।

10 मालिक के सामने मुलाज़िम पर तोहमत न लगा, ऐसा न हो कि वह तुझ पर लानत भेजे और तुझे इसका बुरा नतीजा भुगतना पड़े।

11 ऐसी नसल भी है जो अपने बाप पर लानत करती और अपनी माँ को बरकत नहीं देती।

12 ऐसी नसल भी है जो अपनी नज़र में पाक-साफ़ है, गो उस की गिलाज़त दूर नहीं हुई।

13 ऐसी नसल भी है जिसकी आँखें बड़े तक़बुर से देखती हैं, जो अपनी पलकें बड़े घमंड से मारती है।

14 ऐसी नसल भी है जिसके दौत तलवारों और जबड़े छुरियाँ हैं ताकि दुनिया के मुसीबतज़दों को खा जाएँ, मुआशरे के ज़स्तरतमंदों को हड़प कर लें।

15 जोंक की दो बेटियाँ हैं, चूसने के दो आज़ा जो चीखते रहते हैं, “और दो, और दो।”

तीन चीज़ें हैं जो कभी सेर नहीं होती बल्कि चार हैं जो कभी नहीं कहती, “अब बस करो, अब काफी है,” 16 पाताल, बाँझ का रहम, ज़मीन जिसकी प्यास कभी नहीं बुझती और आग जो कभी नहीं कहती, “अब बस करो, अब काफी है।”

17 जो आँख बाप का मज़ाक़ उड़ाए और माँ की हिदायत को हक़ीर जाने उसे वादी के कौवे अपनी चोंचों से निकालेंगे और गिद्ध के बच्चे खा जाएंगे।

18 तीन बातें मुझे हैरतजदा करती हैं बल्कि चार हैं जिनकी मुझे समझ नहीं आती, 19 आसमान की बुलंदियों पर उकाव की राह, चटान पर सॉप की राह, समुंद्र के बीच में जहाज की राह और वह राह जो मर्द कुँवारी के साथ चलता है।

20 जिनाकार औरत की यह राह है, वह खा लेती और फिर अपना मुँह पोछकर कहती है, “मुझसे कोई गलती नहीं हुई।”

21 ज़मीन तीन चीज़ों से लरज़ उठती है बल्कि चार चीज़ें बरदाश्त नहीं कर सकती, 22 वह गुलाम जो बादशाह बन जाए, वह अहमक जो जी भरकर खाना खा सके, 23 वह नफ़रतअगेज़ \* औरत जिसकी शादी हो जाए और वह नौकरानी जो अपनी मालिकन की मिलकियत पर कब्ज़ा करे।

24 ज़मीन की चार मखलूक़ात निहायत ही दानिशमंद हैं हालाँकि छोटी हैं। 25 चिर्योटियाँ कमज़ोर नसल हैं लेकिन गरमियों के मौसम में सर्दियों के लिए खुराक जमा करती हैं, 26 बिज्जू कमज़ोर नसल हैं लेकिन चटानों में ही अपने घर बना लेते हैं, 27 टिट्टियों का बादशाह नहीं होता ताहम सब पर बाँधकर निकलती हैं, 28 छिपकलियाँ गो हाथ से पकड़ी जाती हैं, ताहम शाही महलों में पाई जाती हैं।

29 तीन बल्कि चार जानदार पुरवकार अंदाज़ में चलते हैं। 30 पहले, शेरबबर जो जानवरों में जोरावर है और किसी से भी पीछे नहीं हटता, 31 दूसरे, मुरगा जो अकड़कर चलता है, तीसरे, बकरा और चौथे अपनी फ़ौज के साथ चलनेवाला बादशाह।

32 अगर तूने माग़्स होकर हमाक़त की या बुरे मनसूबे बाँधे तो अपने मुँह पर हाथ रखकर ख़ामोश हो जा, 33 क्योंकि दूध बिलोने से मक्खन, नाक को मरोडने † से खून और किसी को गुस्सा दिलाने से लड़ाई-झगडा पैदा होता है।

## 31

### लमुएल की कहावतें

1 ज़ैल में मस्सा के बादशाह लमुएल की कहावतें हैं। उस की माँ ने उसे यह तालीम दी,

2 ऐ मेरे बेटे, मेरे पेट के फल, जो मेरी मन्नतों से पैदा हुआ, मैं तुझे क्या बताऊँ? 3 अपनी पूरी ताकत औरतों पर जाया न कर, उन पर जो बादशाहों की तबाही का बाइस हैं।

4 ऐ लमुएल, बादशाहों के लिए मैं पीना मुनासिब नहीं, हुक्मरानों के लिए शराब की आरज़ू रखना मौजूद नहीं। 5 ऐसा न हो कि वह पी पीकर क़वानीन भूल जाएँ और तमाम मज़लूमों का हक़ मारें। 6 शराब उन्हें पिला जो तबाह होनेवाले हैं, मैं उन्हें पिला जो ग़म खाते हैं, 7 ऐसे ही पी पीकर अपनी गुरबत और मुसीबत भूल जाएँ।

8 अपना मुँह उनके लिए खोल जो बोल नहीं सकते, उनके हक़ में जो ज़रूरतमंद हैं। 9 अपना मुँह खोलकर इनसाफ़ से अदालत कर और मुसीबतजदा और गरीबों के हुकूक़ महफूज़ रख।

### सुघड बीवी की तारीफ़

10 सुघड बीवी कौन पा सकता है? ऐसी औरत मोतियों से कहीं ज़्यादा बेशक़ीमत है। 11 उस पर उसके शौहर को पूरा एतमाद है, और वह नफ़ा से महरूम नहीं रहेगा। 12 उग्र-भर वह उसे नुक़सान नहीं पहुँचाएगी बल्कि बरक़त का बाइस होगी।

13 वह ऊन और सन चुनकर बड़ी मेहनत से धागा बना लेती है। 14 तिजारती जहाज़ों की तरह वह दूर-दराज़ इलाकों से अपनी रोटी ले आती है।

15 वह पौ फटने से पहले ही जाग उठती है ताकि अपने घरवालों के लिए खाना और अपनी नौकरानियों के लिए उनका हिस्सा तैयार करे। 16 सोच-बिचार के बाद वह खेत खरीद लेती, अपने कमाए हुए पैसों से अंगूर का बाग़ लगा लेती है।

17 ताक़त से कमरबस्ता होकर वह अपने बाजूओं को मजबूत करती है। 18 वह महसूस करती है, “मेरा कारोबार फ़ायदामंद है,” इसलिए उसका चरागा रात के वक़्त भी नहीं बुझता। 19 उसके हाथ हर वक़्त ऊन और कतान कातने में मसरूफ़ रहते हैं। 20 वह अपनी मृष्टी मुसीबतजदों और गरीबों के लिए खोलकर उनकी मदद करती है। 21 जब बर्फ़ पड़े तो उसे घरवालों के बारे में कोई डर नहीं, क्योंकि सब गरम गरम कपड़े पहने हुए हैं। 22 अपने बिस्तर के लिए वह अच्छे कम्बल बना लेती, और खुद वह बारीक कतान और अरगवानी रंग के लिबास पहने फिरती है।

23 शहर के दरवाज़े में बैठे मुल्क के बुजुर्ग़ उसके शौहर से खूब वाकिफ़ हैं, और जब कभी कोई फैसला करना हो तो वह भी शरा में शरीक़ होता है।

24 बीवी कपड़ों की सिलाई करके उन्हें फ़रोख़्त करती है, सौदागर उसके कमरबंद खरीद लेते हैं।

25 वह ताक़त और वक़ार से मुल्बबस रहती और हँसकर आनेवाले दिनों का सामना करती है। 26 वह हिक़मत से बात करती, और उस की ज़बान पर शफ़ीक़ तालीम रहती है। 27 वह सुस्ती की रोटी नहीं खाती बल्कि अपने घर में हर मामले की देख-भाल करती है।

\* 30:23 लफ़ज़ी तरकुमा : जिससे नफ़रत की जाती है। † 30:33 लफ़ज़ी तरकुमा : दबाव डालने।

28 उसके बेटे खड़े होकर उसे मुबारक कहते हैं, उसका शौहर भी उस की तारीफ करके कहता है, 29 “बहुत-सी औरतें सुघड़ साबित हुई हैं, लेकिन तू उन सब पर सबकत रखती है!”

30 दिलफरेबी, धोका और हुस्र पल-भर का है, लेकिन जो औरत अल्लाह का खौफ माने वह काबिले-तारीफ है। 31 उसे उस की मेहनत का अज्र दो! शहर के दरवाजों में उसके काम उस की सताइश करें!।



## वाइज़

### हर दुनियावी चीज़ बातिल है

1 जैल में वाइज़ के अलफाज़ कलमबंद हैं, उसके जो दाऊद का बेटा और यरूशालम में बादशाह है,  
 2 वाइज़ फरमाता है, “बातिल ही बातिल, बातिल ही बातिल, सब कुछ बातिल ही बातिल है!” 3 सूरज तले जो मेहनत-मशक़त इनसान करे उसका क्या फ़ायदा है? कुछ नहीं! 4 एक पुरत आती और दूसरी जाती है, लेकिन ज़मीन हमेशा तक कायम रहती है। 5 सूरज तुल और गुरूब हो जाता है, फिर सुरअत से उसी जगह वापस चला जाता है जहाँ से दुबारा तुल होता है। 6 हवा चुनब की तरफ़ चलती, फिर मुड़कर शिमाल की तरफ़ चलने लगती है। यों चक्कर काट काटकर वह बार बार नुक़ताए-आगाज़ पर वापस आती है। 7 तमाम दरिया समुंदर में जा मिलते हैं, तो भी समुंदर की सतह वही रहती है, क्योंकि दरियाओं का पानी मुसलसल उन सरचर्मों के पास वापस आता है जहाँ से बह निकला है। 8 इनसान बातें करते करते थक जाता है और सहीह तौर से कुछ बयान नहीं कर सकता। आँख कभी इतना नहीं देखती कि कहे, “अब बस करो, काफी है!” कान कभी इतना नहीं सुनता कि और न सुनना चाहे। 9 जो कुछ पेश आया वही दुबारा पेश आएगा, जो कुछ किया गया वही दुबारा किया जाएगा। सूरज तले कोई भी बात नई नहीं। 10 क्या कोई बात है जिसके बारे में कहा जा सके, “देखो, यह नई है?” हरगिज़ नहीं, यह भी हमसे बहुत देर पहले ही मौजूद थी। 11 जो पहले जिंदा थे उन्हें कोई याद नहीं करता, और जो आनेवाले हैं उन्हें भी वह याद नहीं करेगा जो उनके बाद आएँगे।

### हिकमत हासिल करना बातिल है

12 मैं जो वाइज़ हूँ यरूशालम में इसराईल का बादशाह था। 13 मैंने अपनी पूरी ज़हनी ताकत इस पर लगाई कि जो कुछ आसमान तले किया जाता है उस की हिकमत के ज़रीए तफ़तीशो-तहक़ीक़ करूँ। यह काम ना-गवार है गो अल्लाह ने खुद इनसान को इसमें मेहनत-मशक़त करने की जिम्मादारी दी है।  
 14 मैंने तमाम कामों का मुलाहज़ा किया जो सूरज तले होते हैं, तो नतीजा यह निकला कि सब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। 15 जो पेचदार है वह सीधा नहीं हो सकता, जिसकी कर्मी है उसे गिना नहीं जा सकता।  
 16 मैंने दिल में कहा, “हिकमत में मैंने इतना इज़ाफ़ा किया और इतनी तरक़की की कि उन सबसे सबकत ले गया जो मुझसे पहले यरूशालम पर हुक़मत करते थे। मेरे दिल ने बहुत हिकमत और इल्म अपना लिया है।” 17 मैंने अपनी पूरी ज़हनी ताकत इस पर लगाई कि हिकमत समझूँ, नीज़ कि मुझे दीवानगी और हमाक़त की समझ भी आए। लेकिन मुझे मालूम हुआ कि यह भी हवा को पकड़ने के बराबर है। 18 क्योंकि जहाँ हिकमत बहुत है वहाँ रंजीदगी भी बहुत है। जो इल्मो-इरफ़ान में इज़ाफ़ा करे, वह दुख में इज़ाफ़ा करता है।

## 2

### दुनिया की ख़ुशियाँ बातिल हैं

1 मैंने अपने आपसे कहा, “आ, ख़ुशी को आज़माकर अच्छी चीज़ों का तजरबा कर!” लेकिन यह भी बातिल ही निकला।  
 2 मैं बोला, “हँसना बेहदा है, और ख़ुशी से क्या हासिल होता है?” 3 मैंने दिल में अपना जिस्म मैं से तरो-ताज़ा करने और हमाक़त अपनाने के तरीक़े ढूँढ़ निकाले। इसके पीछे भी मेरी हिकमत मालूम करने की कोशिश थी, क्योंकि मैं देखना चाहता था कि जब तक इनसान आसमान तले जीता रहे उसके लिए क्या कुछ करना मुफ़ीद है।  
 4 मैंने बड़े बड़े काम अंजाम दिए, अपने लिए मक़ान तामीर किए, ताकिस्तान लगाए, 5 मुतअद्दि बाग़ और पार्क लगाकर उनमें मुख़तलिफ़ किस्म के फलदार दरख़्त लगाए। 6 फलने फूलनेवाले जंगल की आबवाशी के लिए मैंने तालाब बनवाए। 7 मैंने गुलाम और लौडियाँ ख़रीद लीं। ऐसे गुलाम भी बहुत थे जो घर में पैदा हुए थे। मुझे उतने गाय-बैल और भेड़-बकरियाँ मिलीं जितनी मुझसे पहले यरूशालम में किसी को हासिल न थीं। 8 मैंने अपने लिए सोना-चौंदी और बादशाहों और सबुओं के खज़ाने जमा किए। मैंने गुल्कार मर्दों-ख़वातीन हासिल किए, साथ साथ कसरत की ऐसी चीज़ें जिनसे इनसान अपना दिल बहलाता है।  
 9 यों मैंने बहुत तरक़की करके उन सब पर सबकत हासिल की जो मुझसे पहले यरूशालम में थे। और हर काम में मेरी हिकमत मेरे दिल में कायम रही। 10 जो कुछ भी मेरी आँखें चाहती थी वह मैंने उनके लिए मुहैया किया, मैंने अपने दिल से

किसी भी खुशी का इनकार न किया। मेरे दिल ने मेरे हर काम से लुप्त उठाया, और यह मेरी तमाम मेहनत-मशक्कत का अञ्ज रहा।

11 लेकिन जब मैंने अपने हाथों के तमाम कामों का जायजा लिया, उस मेहनत-मशक्कत का जो मैंने की थी तो नतीजा यही निकला कि सब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। सूरज तले किसी भी काम का फायदा नहीं होता।

### सबका एक ही अंजाम है

12 फिर मैं हिकमत, बेहदगी और हमाकत पर गौर करने लगा। मैंने सोचा, जो आदमी बादशाह की वफात पर तख्तनशीन होगा वह क्या करेगा? वही कुछ जो पहले भी किया जा चुका है!

13 मैंने देखा कि जिस तरह रौशनी अंधेरे से बेहतर है उसी तरह हिकमत हमाकत से बेहतर है। 14 दानिशमंद के सर में आँखें हैं जबकि अहमक अंधेरे ही में चलता है। लेकिन मैंने यह भी जान लिया कि दोनों का एक ही अंजाम है। 15 मैंने दिल में कहा, “अहमक का-सा अंजाम मेरा भी होगा। तो फिर इतनी ज्यादा हिकमत हासिल करने का क्या फायदा है? यह भी बातिल है।” 16 क्योंकि अहमक की तरह दानिशमंद की याद भी हमेशा तक नहीं रहेगी। आनेवाले दिनों में सबकी याद मिट जाएगी। अहमक की तरह दानिशमंद को भी मरना ही है!

17 यों सोचते सोचते मैं ज़िंदगी से नफ़रत करने लगा। जो भी काम सूरज तले किया जाता है वह मुझे बुरा लगा, क्योंकि सब कुछ बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। 18 सूरज तले मैंने जो कुछ भी मेहनत-मशक्कत से हासिल किया था उससे मुझे नफ़रत हो गई, क्योंकि मुझे यह सब कुछ उसके लिए छोड़ना है जो मेरे बाद मेरी जगह आएगा। 19 और क्या मालूम कि वह दानिशमंद या अहमक होगा? लेकिन जो भी हो, वह उन तमाम चीज़ों का मालिक होगा जो हासिल करने के लिए मैंने सूरज तले अपनी पूरी ताकत और हिकमत सर्फ़ की है। यह भी बातिल है।

20 तब मेरा दिल मायूस होकर हिम्मत हारने लगा, क्योंकि जो भी मेहनत-मशक्कत मैंने सूरज तले की थी वह बेकार-सी लगी। 21 क्योंकि खाह इनसान अपना काम हिकमत, इल्म और महारत से क्यों न करे, आखिरकार उसे सब कुछ किसी के लिए छोड़ना है जिसने उसके लिए एक उँगली भी नहीं हिलाई। यह भी बातिल और बड़ी मुसीबत है। 22 क्योंकि आखिर में इनसान के लिए क्या कुछ कायम रहता है, जबकि उसने सूरज तले इतनी मेहनत-मशक्कत और कोशिशों के साथ सब कुछ हासिल कर लिया है? 23 उसके तमाम दिन दुख और रंजीदगी से भरे रहते हैं, रात को भी उसका दिल आराम नहीं पाता। यह भी बातिल ही है।

24 इनसान के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि खाए पिए और अपनी मेहनत-मशक्कत के फल से लुप्त-अंदोज़ हो। लेकिन मैंने यह भी जान लिया कि अल्लाह ही यह सब कुछ मुहैया करता है। 25 क्योंकि उसके बग़ैर कौन खाकर खुश हो सकता है? कोई नहीं! 26 जो इनसान अल्लाह को मंज़ूर हो उसे वह हिकमत, इल्मो-इरफ़ान और खुशी अता करता है, लेकिन गुनाहगार को वह जमा करने और जख़ीरा करने की जिम्मादारी देता है ताकि बाद में यह दौलत अल्लाह को मंज़ूर शख्स के हवाले की जाए। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

## 3

### हर बात का अपना वक़्त है

1 हर चीज़ की अपनी घड़ी होती, आसमान तले हर मामले का अपना वक़्त होता है,

2 जन्म लेने और मरने का,  
पौदा लगाने और उखाड़ने का,

3 मार देने और शफ़ा देने का,

ढा देने और तामीर करने का,

4 रोने और हँसने का,

आहें भरने और रक्स करने का,

5 पत्थर फेंकने और पत्थर जमा करने का,

गले मिलने और इससे बाज़ रहने का,

6 तलाश करने और खो देने का,

महफ़ूज़ रखने और फेंकने का,

7 फाड़ने और सीकर जोड़ने का,

ख़ामोश रहने और बोलने का,

8 प्यार करने और नफ़रत करने का,

जंग लड़ने और सलामती से ज़िंदगी गुज़ारने का,

9 चुनौचे क्या फ़ायदा है कि काम करनेवाला मेहनत-मशक्कत करे?

10 मैंने वह तकलीफ़देह काम-काज देखा जो अल्लाह ने इनसान के सुपुर्द किया ताकि वह उसमें उलझा रहे। 11 उसने हर चीज़ को यों बनाया है कि वह अपने वक़्त के लिए ख़ूबसूरत और मुनासिब हो। उसने इनसान के दिल में जाविदानी भी डाली है, गो वह शुरू से लेकर आखिर तक उस काम की तह तक नहीं पहुँच सकता जो अल्लाह ने किया है। 12 मैंने जान लिया कि इनसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं है कि वह खुश रहे और जीते-जी ज़िंदगी का मज़ा ले। 13 क्योंकि अगर कोई खाए पिए और तमाम मेहनत-मशक्कत के साथ साथ ख़ुशहाल भी हो तो यह अल्लाह की बख़्शिश है।

14 मुझे समझ आई कि जो कुछ अल्लाह करे वह अबद तक कायम रहेगा। उसमें न इज़ाफ़ा हो सकता है न कमी। अल्लाह यह सब कुछ इसलिए करता है कि इनसान उसका ख़ौफ़ माने। 15 जो हाल में पेश आ रहा है वह माज़ी में पेश आ चुका है, और जो मुस्तक़बिल में पेश आएगा वह भी पेश आ चुका है। हाँ, जो कुछ गुज़र चुका है उसे अल्लाह दुबारा वापस लाता है।

**इनसान फ़ानी है**

16 मैंने सूरज तले मज़ीद देखा, जहाँ अदालत करनी है वहाँ नाइनसाफ़ी है, जहाँ इनसाफ़ करना है वहाँ बेदीनी है। 17 लेकिन मैं दिल में बोला, “अल्लाह रास्तबाज़ और बेदीन दोनों की अदालत करेगा, क्योंकि हर मामले और काम का अपना वक़्त होता है।”

18 मैंने यह भी सोचा, “जहाँ तक इनसानों का ताल्लुक़ है अल्लाह उनकी ज़ौच-पडताल करता है ताकि उन्हें पता चले कि वह जानवरों की मानिंद हैं। 19 क्योंकि इनसानो-हैवान का एक ही अंजाम है। दोनों दम छोड़ते, दोनों में एक-सा दम है, इसलिए इनसान को हैवान की निसबत ज़्यादा फ़ायदा हासिल नहीं होता। सब कुछ बातिल ही है। 20 सब कुछ एक ही जगह चला जाता है, सब कुछ खाक से बना है और सब कुछ दुबारा खाक में मिल जाएगा। 21 कौन यकीन से कह सकता है कि इनसान की रूह ऊपर की तरफ़ जाती और हैवान की रूह नीचे ज़मीन में उतरती है?”

22 गरज़ मैंने जान लिया कि इनसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं है कि वह अपने कामों में खुश रहे, यही उसके नसीब में है। क्योंकि कौन उसे वह देखने के काबिल बनाएगा जो उसके बाद पेश आएगा? कोई नहीं!

## 4

**मुरदों का हाल बेहतर है**

1 मैंने एक बार फिर नज़र डाली तो मुझे वह तमाम जुल्म नज़र आया जो सूरज तले होता है। मज़लूमों के आँसू बहते हैं, और तसल्ली देनेवाला कोई नहीं होता। ज़ालिम उनसे ज़्यादाती करते हैं, और तसल्ली देनेवाला कोई नहीं होता। 2 यह देखकर मैंने मुरदों को मुबारक कहा, हालाँकि वह अरसे से वफ़ात पा चुके थे। मैंने कहा, “वह हाल के ज़िंदा लोगों से कहीं मुबारक है। 3 लेकिन इनसे ज़्यादा मुबारक वह है जो अब तक वुजूद में नहीं आया, जिसने वह तमाम बुराइयाँ नहीं देखी जो सूरज तले होती हैं।”

**गुरबत में सुकून बेहतर है**

4 मैंने यह भी देखा कि सब लोग इसलिए मेहनत-मशक्कत और महारत से काम करते हैं कि एक दूसरे से हसद करते हैं। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है। 5 एक तरफ़ तो अहमक हाथ पर हाथ धरे बैठने के बाइस अपने आपको तबाही तक पहुँचाता है। 6 लेकिन दूसरी तरफ़ अगर कोई मुठी-भर रोज़ी कमाकर सुकून के साथ ज़िंदगी गुज़ार सके तो यह इससे बेहतर है कि दोनों मुष्टियाँ सिर-तोड़ मेहनत और हवा को पकड़ने की कोशिशों के बाद ही भरें।

**तनहाई की निसबत मिलकर रहना बेहतर है**

7 मैंने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा जो बातिल है। 8 एक आदमी अकेला ही था। न उसके बेटा था, न भाई। वह बेहद मेहनत-मशक्कत करता रहा, लेकिन उस की आँखें कभी अपनी दौलत से मुतमइन न थीं। सवाल यह रहा, “मैं इतनी सिर-तोड़ कोशिश किसके लिए कर रहा हूँ? मैं अपनी जान को ज़िंदगी के मजे लेने से क्यों महरूम रख रहा हूँ?” यह भी बातिल और ना-गवार मामला है।

9 दो एक से बेहतर हैं, क्योंकि उन्हें अपने काम-काज का अच्छा अज़्र मिलेगा। 10 अगर एक गिर जाए तो उसका साथी उसे दुबारा खड़ा करेगा। लेकिन उस पर अफ़सोस जो गिर जाए और कोई साथी न हो जो उसे दुबारा खड़ा करे। 11 नीज़, जब दो सदियों के मौसम में मिलकर बिस्तर पर लेट जाएँ तो वह गरम रहते हैं। जो तनहा है वह किस तरह गरम हो जाएगा?

12 एक शख्स पर काबू पाया जा सकता है जबकि दो मिलकर अपना दिफा कर सकते हैं। तीन लड़ियोंवाली रस्सी जल्दी से नहीं टूटती।

### क्रौम की कबूलियत फ़ज़ूल है

13 जो लडका गरीब लेकिन दानिशमंद है वह उस बुजुर्ग लेकिन अहमक बादशाह से कहीं बेहतर है जो तबीह मानने से इनकार करे। 14 क्योंकि गो वह बड़े बादशाह की हुकूमत के दौरान गुरबत में पैदा हुआ था तो भी वह जेल से निकलकर बादशाह बन गया। 15 लेकिन फिर मैंने देखा कि सूरज तले तमाम लोग एक और लडके के पीछे हो लिए जिसे पहले की जगह तख्तनशीन होना था। 16 उन तमाम लोगों की इंतहा नहीं थी जिनकी क्रियादत वह करता था। तो भी जो बाद में आएँगे वह उससे ख़ुश नहीं होंगे। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

## 5

### अल्लाह का ख़ौफ मानना

1 अल्लाह के घर में जाते वक़्त अपने कदमों का खयाल रख और सुनने के लिए तैयार रह। यह अहमकों की कुरबानियों से कहीं बेहतर है, क्योंकि वह जानते ही नहीं कि ग़लत काम कर रहे हैं।

2 बोलने में जल्दबाज़ी न कर, तेरा दिल अल्लाह के हुज़ूर कुछ बयान करने में जल्दी न करे। अल्लाह आसमान पर है जबकि तू ज़मीन पर ही है। लिहाज़ा बेहतर है कि तू कम बातें करे। 3 क्योंकि जिस तरह हद से ज्यादा मेहनत-मशक्कत से ख़ाब आने लगते हैं उसी तरह बहुत बातें करने से आदमी की हमाकत ज़ाहिर होती है।

4 अगर तू अल्लाह के हुज़ूर मन्नत माने तो उसे पूरा करने में देर मत कर। वह अहमकों से ख़ुश नहीं होता, चुनौचे अपनी मन्नत पूरी कर। 5 मन्नत न मानना मन्नत मानकर उसे पूरा न करने से बेहतर है।

6 अपने मुँह को इजाज़त न दे कि वह तुझे गुनाह में फँसाए, और अल्लाह के पैगंबर के सामने न कह, “मुझसे गैरइरादी ग़लती हुई है।” क्या ज़रूरत है कि अल्लाह तेरी बात से नाराज़ होकर तेरी मेहनत का काम तबाह करे?

7 जहाँ बहुत ख़ाब देखे जाते हैं वहाँ फ़ज़ूल बातें और बेशुमार अलाफ़ाज़ होते हैं। चुनौचे अल्लाह का ख़ौफ मान।

### जालिमों का ज़ुल्म

8 क्या तुझे सूबे में ऐसे लोग नज़र आते हैं जो गरीबों पर ज़ुल्म करते, उनका हक मारते और उन्हें इनसाफ से महसूस रखते हैं? ताज़्जुब न कर, क्योंकि एक सरकारी मुलाज़िम दूसरे की निगहबानी करता है, और उन पर मज़ीद मुलाज़िम मुर्करर होते हैं। 9 चुनौचे मुल्क के लिए हर लिहाज़ से फ़ायदा इसमें है कि ऐसा बादशाह उस पर हुकूमत करे जो काश्तकारी की फ़िकर करता है।

### दौलत ख़ुशहाली की ज़मानत नहीं दे सकती

10 जिसे पैसे प्यारे हों वह कभी मुतमइन नहीं होगा, ख़ाह उसके पास कितने ही पैसे क्यों न हों। जो ज़रदोस्त हो वह कभी आसुदा नहीं होगा, ख़ाह उसके पास कितनी ही दौलत क्यों न हो। यह भी बातिल ही है। 11 जितना माल में इज़ाफ़ा हो उतना ही उनकी तादाद बढ़ती है जो उसे खा जाते हैं। उसके मालिक को उसका क्या फ़ायदा है सिवाए इसके कि वह उसे देख देखकर मज़ा ले? 12 काम-काज करनेवाले की नींद मीठी होती है, ख़ाह उसने कम या ज़्यादा खाना खाया हो, लेकिन अमीर की दौलत उसे सोने नहीं देती।

13 मुझे सूरज तले एक निहायत बुरी बात नज़र आई। जो दौलत किसी ने अपने लिए महफूज़ रखी वह उसके लिए नुक़सान का बाइस बन गई। 14 क्योंकि जब यह दौलत किसी मुसीबत के बाइस तबाह हो गई और आदमी के हॉं बेटा पैदा हुआ तो उसके हाथ में कुछ नहीं था। 15 माँ के पेट से निकलते वक़्त वह गंगा था, और इसी तरह कूच करके चला भी जाएगा। उस की मेहनत का कोई फल नहीं होगा जिसे वह अपने साथ ले जा सके।

16 यह भी बहुत बुरी बात है कि जिस तरह इनसान आया उसी तरह कूच करके चला भी जाता है। उसे क्या फ़ायदा हुआ है कि उसने हवा के लिए मेहनत-मशक्कत की हो? 17 जितने-जी वह हर दिन तारीकी में खाना खाते हुए गुज़ारता, ज़िंदगी-भर वह बड़ी रंजीदगी, बीमारी और गुस्से में मुब्तला रहता है।

18 तब मैंने जान लिया कि इनसान के लिए अच्छा और मुनासिब है कि वह जितने दिन अल्लाह ने उसे दिए हैं ख़ाए पिए और सूरज तले अपनी मेहनत-मशक्कत के फल का मज़ा ले, क्योंकि यही उसके नसीब में है। 19 क्योंकि जब अल्लाह किसी शख्स को मालो-मता अता करके उसे इस काबिल बनाए कि उसका मज़ा ले सके, अपना नसीब क़बूल कर सके और मेहनत-मशक्कत के साथ साथ ख़ुश भी हो सके तो यह अल्लाह की बाख़िश है। 20 ऐसे शख्स को ज़िंदगी के दिनों पर ग़ौरो-ख़ौज़ करने का काम ही वक़्त मिलता है, क्योंकि अल्लाह उसे दिल में ख़ुशी दिलाकर मसरूफ़ रखता है।

## 6

1 मुझे सूरज तले एक और बुरी बात नज़र आई जो इनसान को अपने बोझ तले दबाए रखती है।

2 अल्लाह किसी आदमी को मालो-मता और इज़्ज़त अता करता है। गरज़ उसके पास सब कुछ है जो उसका दिल चाहे। लेकिन अल्लाह उसे इन चीज़ों से लुप्त उठाने नहीं देता बल्कि कोई अजनबी उसका मज़ा लेता है। यह बातिल और एक बड़ी मुसीबत है। 3 हो सकता है कि किसी आदमी के सौ बच्चे पैदा हों और वह उम्रसीदा भी हो जाए, लेकिन खाह वह कितना बूढ़ा क्यों न हो जाए, अगर अपनी ख़ुशहाली का मज़ा न ले सके और आखिरकार सहीह स्मात के साथ दफ़नाया न जाए तो इसका क्या फ़ायदा? मैं कहता हूँ कि उस की निसबत माँ के पेट में जाया हो गए बच्चे का हाल बेहतर है। 4 बेशक ऐसे बच्चे का आना बेमानी है, और वह अंधेरे में ही कूच करके चला जाता बल्कि उसका नाम तक अंधेरे में छुपा रहता है। 5 लेकिन गो उसने न कभी सूरज देखा, न उसे कभी मालूम हुआ कि ऐसी चीज़ है ताहम उसे मज़क़रा आदमी से कहीं ज़्यादा आरामो-सुकून हासिल है। 6 और अगर वह दो हज़ार साल तक जीता रहे, लेकिन अपनी ख़ुशहाली से लुप्तअंदोज़ न हो सके तो क्या फ़ायदा है? सबको तो एक ही जगह जाना है।

7 इनसान की तमाम मेहनत-मशक्कत का यह मक़सद है कि पेट भर जाए, तो भी उस की भूक कभी नहीं मिटती।

8 दानिशमंद को क्या हासिल है जिसके बाइस वह अहमक से बरतर है? इसका क्या फ़ायदा है कि गरीब आदमी ज़िंदों के साथ मुनासिब सुलूक करने का फन सीख ले? 9 दर-दराज़ चीज़ों के आरज़मंद रहने की निसबत बेहतर यह है कि इनसान उन चीज़ों से लुप्त उठाए जो आँखों के सामने ही हैं। यह भी बातिल और हवा को पकड़ने के बराबर है।

अल्लाह का मुकाबला कोई नहीं कर सकता

10 जो कुछ भी पेश आता है उसका नाम पहले ही रखा गया है, जो भी इनसान वुजूद में आता है वह पहले ही मालूम था। कोई भी इनसान उसका मुकाबला नहीं कर सकता जो उससे ताकतवर है। 11 क्योंकि जितनी भी बातें इनसान करे उतना ही ज़्यादा मालूम होगा कि बातिल हैं। इनसान के लिए इसका क्या फ़ायदा?

12 किस को मालूम है कि उन थोड़े और बेकार दिनों के दौरान जो साये की तरह गुज़र जाते हैं इनसान के लिए क्या कुछ फ़ायदायंद है? कौन उसे बता सकता है कि उसके चले जाने पर सूरज तले क्या कुछ पेश आएगा?

## 7

अच्छा क्या है?

1 अच्छा नाम ख़ुशबूदार तेल से और मौत का दिन पैदाइश के दिन से बेहतर है।

2 ज़ियाफ़त करनेवालों के घर में जाने की निसबत मातम करनेवालों के घर में जाना बेहतर है, क्योंकि हर इनसान का अंजाम मौत ही है। जो ज़िंदा है वह इस बात पर खूब ध्यान दें। 3 दुख हँसी से बेहतर है, उतरा हुआ चेहरा दिल की बेहतरी का बाइस है। 4 दानिशमंद का दिल मातम करनेवालों के घर में ठहरता जबकि अहमक का दिल ऐशो-इशरत करनेवालों के घर में टिक जाता है।

5 अहमकों के गीत सुनने की निसबत दानिशमंद की झिड़कियों पर ध्यान देना बेहतर है। 6 अहमक के कहकहे देगची तले चटरखनेवाले कौंटों की आग की मानिंद हैं। यह भी बातिल ही है।

7 नारवा नफ़ा दानिशमंद को अहमक बना देता, रिश्वात दिल को बिगाड़ देती है।

8 किसी मामले का अंजाम उस की इब्तिदा से बेहतर है, सब्र करना मगरा होने से बेहतर है।

9 गुस्सा करने में जल्दी न कर, क्योंकि गुस्सा अहमकों की गोद में ही आराम करता है।

10 यह न पूछ कि आज की निसबत पुराना ज़माना बेहतर क्यों था, क्योंकि यह हिकमत की बात नहीं।

11 अगर हिकमत के अलावा मीरास में मिलकियत भी मिल जाए तो यह अच्छी बात है, यह उनके लिए सूदमंद है जो सूरज देखते हैं। 12 क्योंकि हिकमत पैसों की तरह पनाह देती है, लेकिन हिकमत का ख़ास फ़ायदा यह है कि वह अपने मालिक की जान बचाए रखती है।

13 अल्लाह के काम का मुलाहज़ा कर। जो कुछ उसने पेचदार बनाया कौन उसे सुलझा सकता है?

14 ख़ुशी के दिन ख़ुश हो, लेकिन मुसीबत के दिन खयाल रख कि अल्लाह ने यह दिन भी बनाया और वह भी इसलिए कि इनसान अपने मुस्तक़बिल के बारे में कुछ मालूम न कर सके।

इंतहापसंदों से दरेग कर

15 अपनी अबस ज़िंदगी के दौरान मैंने दो बातें देखी हैं। एक तरफ़ रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी के बावुजूद तबाह हो जाता जबकि दूसरी तरफ़ बेदीन अपनी बेदीनी के बावुजूद उम्रसीदा हो जाता है। 16 न हद से ज़्यादा रास्तबाज़ी दिखा, न हद से

ज्यादा दानिशमंदी। अपने आपको तबाह करने की क्या जरूरत है? 17 न हद से ज्यादा बेदीनी, न हद से ज्यादा हमाकत दिखा। मुकर्रर वक्त से पहले मरने की क्या जरूरत है? 18 अच्छा है कि तू यह बात थामे रखे और दूसरी भी न छोड़े। जो अल्लाह का खौफ माने वह दोनों खतरों से बच निकलेगा।

19 हिकमत दानिशमंद को शहर के दस हुक्मरानों से ज्यादा ताकतवर बना देती है। 20 दुनिया में कोई भी इन्सान इतना रास्तबाज़ नहीं कि हमेशा अच्छा काम करे और कभी गुनाह न करे।

21 लोगों की हर बात पर ध्यान न दे, ऐसा न हो कि तू नौकर की लानत भी सुन ले जो वह तुझ पर करता है। 22 क्योंकि दिल में तू जानता है कि तूने खुद मुतअदिद बार दूसरों पर लानत भेजी है।

### कौन दानिशमंद है?

23 हिकमत के ज़रीए मैंने इन तमाम बातों की जॉच-पड़ताल की। मैं बोला, “मैं दानिशमंद बनना चाहता हूँ,” लेकिन हिकमत मुझे दूर रही। 24 जो कुछ मौजूद है वह दूर और निहायत गहरा है। कौन उस की तह तक पहुँच सकता है? 25 चुनौचे मैं सब बदलकर पूरे ध्यान से इसकी तहकीको-तफतीश करने लगा कि हिकमत और मुख्तलिफ़ बातों के सहीह नतायज क्या हैं। नीज़, मैं बेदीनी की हमाकत और बेहुदगी की दीवानगी मालूम करना चाहता था।

26 मुझे मालूम हुआ कि मौत से कहीं तलख़ वह औरत है जो फंदा है, जिसका दिल जाल और हाथ जंजीरें हैं। जो आदमी अल्लाह को मंज़ूर हो वह बच निकलेगा, लेकिन गुनाहगार उसके जाल में उलझ जाएगा।

27 वाइज़ फ़रमाता है, “यह सब कुछ मुझे मालूम हुआ जब मैंने मुख्तलिफ़ बातें एक दूसरे के साथ मुंसलिक की ताकि सहीह नतायज तक पहुँचूँ। 28 लेकिन जिसे मैं ढूँडता रहा वह न मिला। हजार अफ़राद में से मुझे सिर्फ़ एक ही दियानतदार मर्द मिला, लेकिन एक भी दियानतदार औरत नहीं।” \*

29 मुझे सिर्फ़ इतना ही मालूम हुआ कि गो अल्लाह ने इन्सानों को दियानतदार बनाया, लेकिन वह कई क्रिम की चालाकियों ढूँड निकालते हैं।”

## 8

1 कौन दानिशमंद की मानिंद है? कौन बातों की सहीह तशरीह करने का इल्म रखता है? हिकमत इन्सान का चेहरा रौशन और उसके मुँह का सख़्त अंदाज़ नरम कर देती है।

### हुक्मरान का इख्तियार

2 मैं कहता हूँ, बादशाह के हुक्म पर चल, क्योंकि तूने अल्लाह के सामने हलफ़ उठाया है। 3 बादशाह के हुज़ूर से दूर होने में जल्दबाज़ी न कर। किसी बुरे मामले में मुब्तला न हो जा, क्योंकि उसी की मरज़ी चलती है। 4 बादशाह के फ़रमान के पीछे उसका इख्तियार है, इसलिए कौन उससे पूछे, “तू क्या कर रहा है?” 5 जो उसके हुक्म पर चले उसका किसी बुरे मामले से वास्ता नहीं पड़ेगा, क्योंकि दानिशमंद दिल मुनासिब वक्त और इन्साफ़ की राह जानता है।

6 क्योंकि हर मामले के लिए मुनासिब वक्त और इन्साफ़ की राह होती है। लेकिन मुसीबत इन्सान को दबाए रखती है, 7 क्योंकि वह नहीं जानता कि मुस्तक़बिल कैसा होगा। कोई उसे यह नहीं बता सकता है। 8 कोई भी इन्सान हवा को बंद रखने के काबिल नहीं। \* इसी तरह किसी को भी अपनी मौत का दिन मुकर्रर करने का इख्तियार नहीं। यह उतना यक़ीनी है जितना यह कि फ़ौजियों को जंग के दौरान फ़ारिग़ नहीं किया जाता और बेदीनी बेदीन को नहीं बचाती।

9 मैंने यह सब कुछ देखा जब पूरे दिल से उन तमाम बातों पर ध्यान दिया जो सूज़ तले होती हैं, जहाँ इस वक्त एक आदमी दूसरे को नुक़सान पहुँचाने का इख्तियार रखता है।

### दुनिया में नाइन्साफी

10 फिर मैंने देखा कि बेदीनों को इज़्जत के साथ दफ़नाया गया। यह लोग मक़दिस के पास आते-जाते थे! लेकिन जो रास्तबाज़ थे उनकी याद शहर में मिट गई। यह भी बातिल ही है।

11 मुजरिमों को जल्दी से सज़ा नहीं दी जाती, इसलिए लोगों के दिल बुरे काम करने के मनसूबों से भर जाते हैं।

12 गुनाहगार से सौ गुनाह सरज़द होते हैं, तो भी उम्ररसीदा हो जाता है।

बेशक मैं यह भी जानता हूँ कि ख़ुदातरस लोगों की ख़ैर होगी, उनकी जो अल्लाह के चेहरे से डरते हैं। 13 बेदीन की ख़ैर नहीं होगी, क्योंकि वह अल्लाह का ख़ौफ़ नहीं मानता। उस की ज़िदगी के दिन ज्यादा नहीं बल्कि साये जैसे आरिज़ी होंगे। 14 तो भी एक और बात दुनिया में पेश आती है जो बातिल है, रास्तबाज़ों को वह सज़ा मिलती है जो बेदीनों को मिलनी

\* 7:28 ‘दियानतदार’ इज़ाफ़ा है ताकि अयत का जो मालिबन मतलब है वह साफ़ हो जाए।

जान को निकलने से नहीं रोक सकता।

\* 8:8 एक और मुमकिन तर्ज़ुमा : कोई भी इन्सान अपनी

चाहिए, और बेदीनों को वह अन्न मिलता है जो रास्तबाजों को मिलना चाहिए। यह देखकर मैं बोला, “यह भी बातिल ही है।”

15 चुनौचे मैंने खुशी की तारीफ की, क्योंकि सूरज तले इनसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं है कि वह खाए पिए और खुश रहे। फिर मेहनत-मशक्कत करते वक्त खुशी उतने ही दिन उसके साथ रहेगी जितने अल्लाह ने सूरज तले उसके लिए मुकर्रर किए हैं।

जो कुछ अल्लाह करता है वह नाकाबिले-फहम है

16 मैंने अपनी पूरी ज़हनी ताकत इस पर लगाई कि हिकमत जान लूँ और ज़मीन पर इनसान की मेहनतों का मुआयना कर लूँ, ऐसी मेहनतें कि उसे दिन-रात नींद नहीं आती। 17 तब मैंने अल्लाह का सारा काम देखकर जान लिया कि इनसान उस तमाम काम की तह तक नहीं पहुँच सकता जो सूरज तले होता है। खाह वह उस की कितनी तहक़ीक़ क्यों न करे तो भी वह तह तक नहीं पहुँच सकता। हो सकता है कोई दानिशमंद दावा करे, “मुझे इसकी पूरी समझ आई है,” लेकिन ऐसा नहीं है, वह तह तक नहीं पहुँच सकता।

## 9

1 इन तमाम बातों पर मैंने दिल से गौर किया। इनके मुआयने के बाद मैंने नतीजा निकाला कि रास्तबाज़ और दानिशमंद और जो कुछ वह करें अल्लाह के हाथ में हैं। खाह मुहब्बत हो खाह नफरत, इसकी भी समझ इनसान को नहीं आती, दोनों की जड़ें उससे पहले माज़ी में हैं। 2 सबके नसीब में एक ही अंजाम है, रास्तबाज़ और बेदीन के, नेक और बद के, पाक और नापाक के, कुरबानियों पेश करनेवाले के और उसके जो कुछ नहीं पेश करता। अच्छे शाख्स और गुनाहगार का एक ही अंजाम है, हलफ़ उठानेवाले और इससे डरकर गुरेज़ करनेवाले की एक ही मनज़िल है।

3 सूरज तले हर काम की यही मुसीबत है कि हर एक के नसीब में एक ही अंजाम है। इनसान का मुलाहज़ा कर। उसका दिल बुराई से भरा रहता बल्कि उग्र-भर उसके दिल में बेहुदगी रहती है। लेकिन आख़िरकार उसे मुरदों में ही जा मिलना है।

4 जो अब तक जिंदों में शरीक है उसे उम्मीद है। क्योंकि जिंदा कुते का हाल मुरदा शेर से बेहतर है। 5 कम अज़ कम जो जिंदा है वह जानते हैं कि हम मरेगे। लेकिन मुरदे कुछ नहीं जानते, उन्हें मज़ीद कोई अज़ नहीं मिलना है। उनकी यादे भी मिट जाती हैं। 6 उनकी मुहब्बत, नफरत और ग़ैरत सब कुछ बड़ी देर से जाती रही है। अब वह कभी भी उन कामों में हिस्सा नहीं लेंगे जो सूरज तले होते हैं।

ज़िंदगी के मजे ले!

7 चुनौचे जाकर अपना खाना खुशी के साथ खा, अपनी मै ज़िंदादिली से पी, क्योंकि अल्लाह काफ़ी देर से तेरे कामों से खुश है। 8 तेरे कपड़े हर वक्त सफ़ेद \* हों, तेरा सर तेल से महरूम न रहे। 9 अपने जीवन्सार्थी के साथ जो तुझे प्यार है ज़िंदगी के मजे लेता रह। सूरज तले की बातिल ज़िंदगी के जितने दिन अल्लाह ने तुझे बख़्श दिए हैं उन्हें इसी तरह गुज़ार! क्योंकि ज़िंदगी में और सूरज तले तेरी मेहनत-मशक्कत में यही कुछ तेरे नसीब में है। 10 जिस काम को भी हाथ लगाए उसे पूरे जोशो-खुरोश से कर, क्योंकि पाताल में जहाँ तू जा रहा है न कोई काम है, न मनसूबा, न इल्म और न हिकमत।

दुनिया में हिकमत की कदर नहीं की जाती

11 मैंने सूरज तले मज़ीद कुछ देखा। यकीनी बात नहीं कि मुकाबले में सबसे तेज़ दौड़नेवाला जीत जाए, कि जंग में पहलवान फ़तह पाए, कि दानिशमंद को खुराक हासिल हो, कि समझदार को दौलत मिले या कि आलिम मंजूरी पाए। नहीं, सब कुछ मौके और इत्फ़ाक़ पर मुनहसिर होता है। 12 नीज़, कोई भी इनसान नहीं जानता कि मुसीबत का वक्त कब उस पर आएगा। जिस तरह मछलियों ज़ालिम जाल में उलझ जाती या परिदे फंदे में फँस जाते हैं उसी तरह इनसान मुसीबत में फँस जाता है। मुसीबत अचानक ही उस पर आ जाती है।

13 सूरज तले मैंने हिकमत की एक और मिसाल देखी जो मुझे अहम लगी।

14 कहीं कोई छोटा शहर था जिसमें थोड़े-से अफ़राद बसते थे। एक दिन एक ताकतवर बादशाह उससे लड़ने आया। उसने उसका मुहासरा किया और इस मक़सद से उसके इर्दगिर्द बड़े बड़े बुर्ज खड़े किए। 15 शहर में एक आदमी रहता था जो दानिशमंद अलबत्ता ग़रीब था। इस शाख्स ने अपनी हिकमत से शहर को बचा लिया। लेकिन बाद में किसी ने भी ग़रीब को याद न किया। 16 यह देखकर मैं बोला, “हिकमत ताकत से बेहतर है,” लेकिन ग़रीब की हिकमत हकीर जानी जाती है। कोई भी उस की बातों पर ध्यान नहीं देता। 17 दानिशमंद की जो बातें आराम से सुनी जाएँ वह अहमकों के दरमियान रहनेवाले

\* 9:8 यानी खुशी मनाने के कपड़े।

हुक्मरान के जोरदार एलानात से कहीं बेहतर हैं। 18 हिकमत जंग के हथियारों से बेहतर है, लेकिन एक ही गुनाहगार बहुत कुछ जो अच्छा है तबाह करता है।

## 10

### मुख्तलिफ हिदायात

1 मरी हुई मखिख्यौं खुशबूदार तेल खराब करती हैं, और हिकमत और इज्जत की निसबत थोड़ी-सी हमाकत का ज्यादा असर होता है।

2 दानिशमंद का दिल सहीह राह चुन लेता है जबकि अहमक का दिल गलत राह पर आ जाता है। 3 रास्ते पर चलते वक्त भी अहमक समझ से खाली है, जिससे भी मिले उसे बताता है कि वह बेवुकूफ है। \*

4 अगर हुक्मरान तुझसे नाराज हो जाए तो अपनी जगह मत छोड़, क्योंकि पुरसुकून रवैया बड़ी बड़ी गलतियाँ दूर कर देता है।

5 मुझे सूरज तले एक ऐसी बुरी बात नजर आई जो अकसर हुक्मरानों से सरजद होती है। 6 अहमक को बड़े ओहदों पर फायज किया जाता है जबकि अमीर छोटे ओहदों पर ही रहते हैं। 7 मैंने गुलामों को घोड़े पर सवार और हुक्मरानों को गुलामों की तरह पैदल चलते देखा है।

8 जो गद्दा खोदे वह खुद उसमें गिर सकता है, जो दीवार गिरा दे हो सकता है कि सॉप उसे डसे। 9 जो कान से पत्थर निकाले उसे चोट लग सकती है, जो लकड़ी चीर डाले वह ज़खमी हो जाने के खतरे में है।

10 अगर कुल्हाड़ी कुंद हो और कोई उसे तेज़ न करे तो ज्यादा ताकत दरकार है। लिहाज़ा हिकमत को सहीह तौर से अमल में ला, तब ही कामयाबी हासिल होगी।

11 अगर इससे पहले कि सपेरा सॉप पर काबू पाए वह उसे डसे तो फिर सपेरा होने का क्या फायदा?

12 दानिशमंद अपने मुँह की बातों से दूसरों की मेहरबानी हासिल करता है, लेकिन अहमक के अपने ही होंट उसे हडप कर लेते हैं। 13 उसका बयान अहमकाना बातों से शुरू और खतरनाक बेवुकूफियों से खत्म होता है। 14 ऐसा शख्स बातें करने से बाज़ नहीं आता, जो इनसान मुस्तकबिल के बारे में कुछ नहीं जानता। कौन उसे बता सकता है कि उसके बाद क्या कुछ होगा? 15 अहमक का काम उसे थका देता है, और वह शहर का रास्ता भी नहीं जानता।

16 उस मुल्क पर अफसोस जिसका बादशाह बच्चा है और जिसके बुजुर्ग सुबह ही ज़ियाफत करने लगते हैं। 17 मुबारक है वह मुल्क जिसका बादशाह शरीफ है और जिसके बुजुर्ग नशे में धुत नहीं रहते बल्कि मुनासिब वक्त पर और नज़मी-ज़ब्त के साथ खाना खाते हैं।

18 जो सुस्त है उसके घर के शहतीर झुकने लगते हैं, जिसके हाथ ढीले हैं उस की छत से पानी टपकने लगता है।

19 ज़ियाफत करने से हँसी-ख़ुशी और मै पीने से ज़िंदादिली पैदा होती है, लेकिन पैसा ही सब कुछ मुहैया करता है।

20 खयालों में भी बादशाह पर लानत न कर, अपने सोने के कमरे में भी अमीर पर लानत न भेज, ऐसा न हो कि कोई परिदा तेरे अलफाज़ लेकर उस तक पहुँचाए।

## 11

### मेहनत का फायदा

1 अपनी रोटी पानी पर फेंककर जाने दे तो मुतअदिद दिनों के बाद वह तुझे फिर मिल जाएगी। 2 अपनी मिलकियत सात बल्कि आठ मुख्तलिफ कामों में लगा दे, क्योंकि तुझे क्या मालूम कि मुल्क किस किस मुसीबत से दोचार होगा।

3 अगर बादल पानी से भरे हों तो ज़मीन पर बारिश ज़रूर होगी। दरख्त जुनूब या शिमाल की तरफ गिर जाए तो उसी तरफ पड़ा रहेगा।

4 जो हर वक्त हवा का सख देखता रहे वह कभी बीज नहीं बोएगा। जो बादलों को तकता रहे वह कभी फसल की कटाई नहीं करेगा।

5 जिस तरह न तुझे हवा के चक्कर मालूम हैं, न यह कि माँ के पेट में बच्चा किस तरह तशकील पाता है उसी तरह तु अल्लाह का काम नहीं समझ सकता, जो सब कुछ अमल में लाता है।

6 सुबह के वक्त अपना बीज बो और शाम को भी काम में लगा रह, क्योंकि क्या मालूम कि किस काम में कामयाबी होगी, इसमें, उसमें या दोनों में।

अपनी जवानी से लुत्फअंदोज हो

\* 10:3 इब्रानी ज़मानी है। दूसरा मतलब 'कि मै बेवुकूफ हूँ' हो सकता है।



7 रौशनी कितनी भली है, और सूरज आँखों के लिए कितना खुशगवार है। 8 जितने भी साल इनसान जिंदा रहे उतने साल वह खुशबाश रहे। साथ साथ उसे याद रहे कि तारीक दिन भी आनेवाले हैं, और कि उनकी बड़ी तादाद होगी। जो कुछ आनेवाला है वह बातिल ही है।

9 ऐ नौजवान, जब तक तू जवान है खुश रह और जवानी के मजे लेता रह। जो कुछ तेरा दिल चाहे और तेरी आँखों को पसंद आए वह कर, लेकिन याद रहे कि जो कुछ भी तू करे उसका जवाब अल्लाह तुझसे तलब करेगा। 10 चुनौचे अपने दिल से रंजीदगी और अपने जिस्म से दुख-दर्द दूर रख, क्योंकि जवानी और काले बाल दम-भर के ही हैं।

## 12

1 जवानी में ही अपने खालिक को याद रख, इससे पहले कि मुसीबत के दिन आएँ, वह साल करीब आएँ जिनके बारे में तू कहेगा, “यह मुझे पसंद नहीं।” 2 उसे याद रख इससे पहले कि रौशनी तेरे लिए खत्म हो जाए, सूरज, चाँद और सितारे अंधेरे हो जाएँ और बारिश के बाद बादल लौट आएँ। 3 उसे याद रख, इससे पहले कि घर के पहेदार थरथराने लगें, ताकतवर आदमी कुबड़े हो जाएँ, गंदुम पीसनेवाली नौकरानियाँ कम होने के बाइस काम करना छोड़ दें और खिड़कियों में से देखनेवाली खवातीन धुंधला जाएँ। 4 उसे याद रख, इससे पहले कि गली में पहुँचानेवाला दरवाज़ा बंद हो जाए और चक्की की आवाज़ आहिस्ता हो जाए। जब चिड़ियाँ चहचहाने लगेंगी तो तू जाग उठेगा, लेकिन तमाम गीतों की आवाज़ दबी-सी सुनाई देगी। 5 उसे याद रख, इससे पहले कि तू ऊँची जगहों और गलियों के खतरों से डरने लगे। गो बादाम का फूल खिल जाए, टिट्टी बोझ तले दब जाए और करीर का फूल फूट निकले, लेकिन तू कूच करके अपने अबदी घर में चला जाएगा, और मातम करनेवाले गलियों में घमते फिरेंगे।

6 अल्लाह को याद रख, इससे पहले कि चाँदी का रस्सा टूट जाए, सोने का बरतन टुकड़े टुकड़े हो जाए, चश्मे के पास घड़ा पाश पाश हो जाए और कुएँ का पानी निकालनेवाला पहिया टूटकर उसमें गिर जाए। 7 तब तेरी खाक दुबारा उस खाक में मिल जाएगी जिससे निकल आई और तेरी रूह उस खुदा के पास लौट जाएगी जिसने उसे बरखा था।

8 वाइज़ फरमाता है, “बातिल ही बातिल! सब कुछ बातिल ही बातिल है!”

### खातामा

9 दानिशमंद होने के अलावा वाइज़ कौम को इल्मो-इरफान की तालीम देता रहा। उसने मुतअइदिद अमसाल को सहीह वज़न देकर उनकी जाँच-पड़ताल की और उन्हें तरतीबवार जमा किया। 10 वाइज़ की कोशिश थी कि मुनासिब अलफाज़ इस्तेमाल करे और दियानतदारी से सचची बातें लिखे।

11 दानिशमंदों के अलफाज़ आँकूस की मानिंद हैं, तरतीब से जमाशुदा अमसाल लकड़ी में मज़बूती से ठोंकी गई कीलों जैसी हैं। यह एक ही गल्लाबान की दी हुई हैं।

12 मेरे बेटे, इसके अलावा खबरदार रह। किताबें लिखने का सिलसिला कभी खत्म नहीं हो जाएगा, और हद से ज्यादा कुतुबबीनी से जिस्म थक जाता है।

13 आओ, इखिताम पर हम तमाम तालीम के खुलासे पर ध्यान दें। रब का खौफ मान और उसके अहकाम की पैरवी कर। यह हर इनसान का फर्ज़ है। 14 क्योंकि अल्लाह हर काम को खाह वह छुपा ही हो, खाह बुरा या भला हो अदालत में लाएगा।

## गजलूल-गजलात

तू मेरा बादशाह है

1 सुलेमान की गजलूल-गजलात।

2 वह मुझे अपने मुँह से बोसे दे, क्योंकि तेरी मुहब्बत मैं से कहीं ज्यादा राहतबख्श है।

3 तेरी इत्र की खुशबू कितनी मनमोहन है, तेरा नाम छिड़का गया महकदार तेल ही है। इसलिए कुँवारियाँ तुझे प्यार करती हैं।

4 आ, मुझे खींचकर अपने साथ ले जा! आ, हम दौड़कर चले जाएँ! बादशाह मुझे अपने कमरों में ले जाए, और हम बाग बाग होकर तेरी खुशी मनाएँ। हम मै की निसबत तेरे प्यार की ज्यादा तारीफ करें। मुनासिब है कि लोग तुझसे मुहब्बत करें।

मुझे हकीर न जानो

5 ऐ यस्शालम की बेटियो, मैं स्याहफाम लेकिन मनमोहन हूँ, मैं कीदार के खैमों जैसी, सुलेमान के खैमों के परदों जैसी खूबसूरत हूँ।<sup>6</sup> इसलिए मुझे हकीर न जानो कि मैं स्याहफाम हूँ, कि मेरी जिल्द धूप से झुलस गई है। मेरे सगे भाई मुझसे नाराज़ थे, इसलिए उन्होंने मुझे अंगूर के बागों की देख-भाल करने की ज़िम्मादारी दी, अंगूर के अपने जाती बाग की देख-भाल मैं कर न सकी।

तू कहाँ है?

7 ऐ तू जो मेरी जान का प्यारा है, मुझे बता कि भेड़-बकरियाँ कहाँ चरा रहा है? तू उन्हें दोपहर के वक्त कहाँ आराम करने बिठाता है? मैं क्यों निकाबपोश की तरह तेरे साथियों के रेवडों के पास ठहरी रहूँ?

8 क्या तू नहीं जानती, तू जो औरतों में सबसे खूबसूरत है? फिर घर से निकलकर खोज लगा कि मेरी भेड़-बकरियाँ किस तरफ चली गई है, अपने मेमनों को गल्लाबानों के खैमों के पास चरा।

तू कितनी खूबसूरत है

9 मेरी महबूबा, मैं तुझे किस चीज़ से तशबीह दूँ? तू फिरौन का शानदार रथ खींचनेवाली घोड़ी है!

10 तेरे गाल बालियों से कितने आरास्ता, तेरी गरदन मोती के गुलुबंद से कितनी दिलफरेब लगती है।

11 हम तेरे लिए सोने का ऐसा हार बनवा लेंगे जिसमें चाँदी के मोती लगे होंगे।

12 जितनी देर बादशाह ज़ियाफत में शरीक था मेरे बालछड़ की खुशबू चारों तरफ फैलती रही।

13 मेरा महबूब गोया मुर की डिबिया है, जो मेरी छातियों के दरमियान पड़ी रहती है।

14 मेरा महबूब मेरे लिए मेहँदी के फूलों का गुच्छा है, जो ऐन-जदी के अंगूर के बागों से लाया गया है।

15 मेरी महबूबा, तू कितनी खूबसूरत है, कितनी हसीन! तेरी आँखें कबूतर ही हैं।

16 मेरे महबूब, तू कितना खूबसूरत है, कितना दिलरूबा! सायादार हरियाली हमारा बिस्तर<sup>17</sup> और देवदार के दरख्त हमारे घर के शहतीर हैं। जूनीपर के दरख्त तख्तों का काम देते हैं।

## 2

तू लासानी है

1 मैं मैदाने-शास्न का फूल और वादियों की सोसन हूँ।

2 लड़कियों के दरमियान मेरी महबूबा काँटदार पौदों में सोसन की मानिद है।

3 जवान आदमियों में मेरा महबूब जंगल में सेब के दरख्त की मानिंद है। मैं उसके साये में बैठने की कितनी आरजूमंद हूँ, उसका फल मुझे कितना मीठा लगता है।

मैं इश्क के मारे बीमार हो गई हूँ

4 वह मुझे मैकदे \* में लाया है, मेरे ऊपर उसका झंडा मुहब्बत है।

5 किशमिश की टिक्कियों से मुझे तरो-ताजा करो, सेबों से मुझे तकवियत दो, क्योंकि मैं इश्क के मारे बीमार हो गई हूँ।

6 उसका बायाँ बाजू मेरे सर के नीचे होता और दहना बाजू मुझे गले लगाता है।

7 ऐ यस्-शलम की बेटियो, गजालों और खुले मैदान की हिरनियों की कसम खाओ कि जब तक मुहब्बत खूद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

बहार आ गई है

8 सुनो, मेरा महबूब आ रहा है। वह देखो, वह पहाड़ों पर फलौंगता और टीलों पर से उछलता-कूदता आ रहा है।

9 मेरा महबूब गजाल या जवान हिरन की मानिंद है। अब वह हमारे घर की दीवार के सामने स्क्कर खिडकियों में से झाँक रहा, जंगले में से तक रहा है।

10 वह मुझसे कहता है, “ऐ मेरी खूबसूरत महबूबा, उठकर मेरे साथ चल।

11 देख, सर्दियों का मौसम गुजर गया है, बारिशें भी खत्म हो गई हैं।

12 ज़मीन से फूल फूट निकले हैं और गीत का वक्त आ गया है, कबूतरों की गूँ गूँ हमारे मुल्क में सुनाई देती है।

13 अंजीर के दरख्तों पर पहली फसल का फल पक रहा है, और अंगूर की बेलों के फूल खूशबू फैला रहे हैं। चुनौंचे आ मेरी हसीन महबूबा, उठकर आ जा।

14 ऐ मेरी कबूतरी, चटान की दराडों में छुपी न रह, पहाड़ी पत्थरों में पोशीदा न रह बल्कि मुझे अपनी शकल दिखा, मुझे अपनी आवाज़ सुनने दे, क्योंकि तेरी आवाज़ शीरी, तेरी शकल खूबसूरत है।”

15 हमारे लिए लोमडियों को पकड़ लो, उन छोटी लोमडियों को जो अंगूर के बागों को तबाह करती हैं। क्योंकि हमारी बेलों से फूल फूट निकले हैं।

16 मेरा महबूब मेरा ही है, और मैं उसी की हूँ, उसी की जो सोसनों में चरता है।

17 ऐ मेरे महबूब, इससे पहले कि शाम की हवा चले और साये लंबे होकर फ़रार हो जाएँ गजाल या जवान हिरन की तरह संगलाख पहाड़ों का स्रख कर।

### 3

रात को महबूब की आरजू

1 रात को जब मैं बिस्तर पर लेटी थी तो मैंने उसे ढूँडा जो मेरी जान का प्यारा है, मैंने उसे ढूँडा लेकिन न पाया।

2 मैं बोली, “अब मैं उठकर शहर में घूमती, उस की गलियों और चौकों में फिरकर उसे तलाश करती हूँ जो मेरी जान का प्यारा है।” मैं ढूँडती रही लेकिन वह न मिला।

3 जो चौकीदार शहर में ग़रत करते हैं उन्होंने मुझे देखा। मैंने पूछा, “क्या आपने उसे देखा है जो मेरी जान का प्यारा है?”

4 आगे निकलते ही मुझे वह मिल गया जो मेरी जान का प्यारा है। मैंने उसे पकड़ लिया। अब मैं उसे नहीं छोड़ूँगी जब तक उसे अपनी माँ के घर में न ले जाऊँ, उसके कमरे में न पहुँचाऊँ जिसने मुझे जन्म दिया था।

5 ऐ यस्-शलम की बेटियो, गजालों और खुले मैदान की हिरनियों की कसम खाओ कि जब तक मुहब्बत खूद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

दुल्हा अपने लोगों के साथ आता है

6 यह कौन है जो धुँएँ के सतून की तरह सीधा हमारे पास चला आ रहा है? उससे चारों तरफ़ मुर, बखूर और ताज़िर की तमाम खूशबूँ फैल रही हैं।

7 यह तो सुलेमान की पालकी है जो इसराईल के 60 पहलवानों से घिरी हुई है।

\* 2:4 मैकदे से मुराद गा़ल्लिन महल का वह हिस्सा है जिसमें बादशाह ज़ियाफ़्त करता था।

8 सब तलवार से लैस और तजरबाकार फ़ौजी हैं। हर एक ने अपनी तलवार को रात के हौलनाक खतरों का सामना करने के लिए तैयार कर रखा है।

9 सुलेमान बादशाह ने खुद यह पालकी लुबनान के देवदार की लकड़ी से बनवाई।

10 उसने उसके पाए चाँदी से, पुशत सोने से, और निशस्त अरगवानी रंग के कपड़े से बनवाई। यस्शलम की बेटियों ने बड़े प्यार से उसका अंदरूनी हिस्सा मुस्साकारी से आरास्ता किया है।

11 ऐ सिथ्यून की बेटियों, निकल आओ और सुलेमान बादशाह को देखो। उसके सर पर वह ताज है जो उस की माँ ने उस की शादी के दिन उसके सर पर पहनाया, उस दिन जब उसका दिल बाग बाग हुआ।

## 4

तू कितनी हसीन है!

1 मेरी महबूबा, तू कितनी खूबसूरत, कितनी हसीन है! निकाब के पीछे तेरी आँखों की झलक कबूतरों की मानिंद है। तेरे बाल उन बकरियों की मानिंद हैं जो उछलती-कूदती कोहे-जिलियाद से उतरती हैं।

2 तेरे दाँत अभी अभी कतरी और नहलाई हुई भेड़ों जैसे सफेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं हुआ।

3 तेरे होंट किरमिजी रंग का डोरा हैं, तेरा मुँह कितना प्यारा है। निकाब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार के टुकड़ों की मानिंद दिखाई देती है।

4 तेरी गरदन दाऊद के बुर्ज जैसी दिलफ़ाबा है। जिस तरह इस गोल और मजबूत बुर्ज से पहलवानों की हज़ार ढालें लटकी हैं उस तरह तेरी गरदन भी ज़ेवरात से आरास्ता है।

5 तेरी छातियों सोसनों में चरनेवाले गजाल के जुड़वाँ बच्चों की मानिंद हैं।

6 इससे पहले कि शाम की हवा चले और साये लंबे होकर फ़रार हो जाएँ मैं मुर के पहाड़ और बख़र की पहाड़ी के पास चलाईगा।

7 मेरी महबूबा, तेरा हुस्र कामिल है, तुझमें कोई नुक़स नहीं है।

दुलहन का जादू

8 आ मेरी दुलहन, लुबनान से मेरे साथ आ! हम कोहे-अमना की चोटी से, सनीर और हरमून की चोटियों से उतरे, शेरों की माँदों और चीतों के पहाड़ों से उतरे।

9 मेरी बहन, मेरी दुलहन, तूने मेरा दिल चुरा लिया है, अपनी आँखों की एक ही नज़र से, अपने गुलबंद के एक ही जौहर से तूने मेरा दिल चुरा लिया है।

10 मेरी बहन, मेरी दुलहन, तेरी मुहब्बत कितनी मनमोहन है! तेरा प्यार मैं से कहीं ज़्यादा पसंदीदा है। बलसान की कोई भी ख़ुशबू तेरी महक का मुकाबला नहीं कर सकती।

11 मेरी दुलहन, जिस तरह शहद छत्ते से टपकता है उसी तरह तेरे होंटों से मिठास टपकती है। दूध और शहद तेरी जबान तले रहते हैं। तेरे कपड़ों की ख़ुशबू सूँघकर लुबनान की ख़ुशबू याद आती है।

दुलहन नफ़ीस बाग़ है

12 मेरी बहन, मेरी दुलहन, तू एक बाग़ है जिसकी चारदीवारी किसी और को अंदर आने नहीं देती, एक बंद किया गया चश्मा जिस पर मुहर लगी है।

13 बाग़ में अनार के दरख़्त लगे हैं जिन पर लज़ीज़ फल पक रहा है। मेहँदी के पौदे भी उग रहे हैं।

14 बालछड़, ज़ाफ़रान, ख़ुशबूदार बेद, दारचीनी, बख़र की हर किस्म का दरख़्त, मुर, उद और हर किस्म का बलसान बाग़ में फलता-फूलता है।

15 तू बाग़ का उबलता चश्मा है, एक ऐसा मंबा जिसका ताज़ा पानी लुबनान से बहकर आता है।

16 ऐ शिमाली हवा, जाग उठ! ऐ ज़ूनबी हवा, आ! मेरे बाग़ में से गुज़र जा ताकि वहाँ से चारों तरफ़ बलसान की ख़ुशबू फैल जाए। मेरा महबूब अपने बाग़ में आकर उसके लज़ीज़ फलों से खाए।

## 5

1 मेरी बहन, मेरी दुलहन, अब मैं अपने बाग में दाखिल हो गया हूँ। मैंने अपना मुर अपने बलसान समेत चुन लिया, अपना छत्ता शहद समेत खा लिया, अपनी मैं अपने दूध समेत पी ली है। खाओ, मेरे दोस्तो, खाओ और पियो, मुहब्बत से सरशार हो जाओ!

रात को महबूब की तलाश

2 मैं सो रही थी, लेकिन मेरा दिल बेदार रहा। सुन! मेरा महबूब दस्तक दे रहा है,

“ऐ मेरी बहन, मेरी साथी, मेरे लिए दरवाजा खोल दे! ऐ मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी, मेरा सर ओस से तर हो गया है, मेरी जुल्फें रात की शबनम से भीग गई हैं।”

3 “मैं अपना लिबास उतार चुकी हूँ, अब मैं किस तरह उसे दुबारा पहन लूँ? मैं अपने पाँव धो चुकी हूँ, अब मैं उन्हें किस तरह दुबारा मैला करूँ?”

4 मेरे महबूब ने अपना हाथ दीवार के सूराख में से अंदर डाल दिया। तब मेरा दिल तडप उठा।

5 मैं उठी ताकि अपने महबूब के लिए दरवाजा खोलूँ। मेरे हाथ मुर से, मेरी उँगलियाँ मुर की खुशबू से टपक रही थीं जब मैं कुंडी खोलने आई।

6 मैंने अपने महबूब के लिए दरवाजा खोल दिया, लेकिन वह मुडकर चला गया था। मुझे सख्त सदमा हुआ। मैंने उसे तलाश किया लेकिन न मिला। मैंने उसे आवाज दी, लेकिन जवाब न मिला।

7 जो चौकीदार शहर में गश्त करते हैं उनसे मेरा वास्ता पडा, उन्होंने मेरी पिटाई करके मुझे ज़खमी कर दिया। फ़सील के चौकीदारों ने मेरी चादर भी छीन ली।

8 ऐ यरूशलम की बेटियो, कसम खाओ कि अगर मेरा महबूब मिला तो उसे इतला दोगी, मैं मुहब्बत के मारे बीमार हो गई हूँ।

9 तू जो औरतों में सबसे हसीन है, हमें बता, तेरे महबूब की क्या खासियत है जो दूसरों में नहीं है? तेरा महबूब दूसरों से किस तरह सबकत रखता है कि तू हमें ऐसी कसम खिलाना चाहती है?

10 मेरे महबूब की जिल्द गुलाबी और सफ़ेद है। हज़ारों के साथ उसका मुकाबला करो तो उसका आला किरदार नुमायों तौर पर नज़र आया।

11 उसका सर ख़ालिस सोने का है, उसके बाल खज़र के फूलदार गुच्छों \* की मानिंद और कौवे की तरह स्याह हैं।

12 उस की आँखें नदियों के किनारे के कबूतरों की मानिंद हैं, जो दूध में नहलाए और कसरत के पानी के पास बैठे हैं।

13 उसके गाल बलसान की क्यारी की मानिंद, उसके होंट मुर से टपकते सोसन के फूलों जैसे हैं।

14 उसके बाजू सोने की सलाखें हैं जिनमें पुखराज † जड़े हुए हैं, उसका जिस्म हाथीदँत का शाहकार है जिसमें संगे-लाजवर्द ‡ के पत्थर लगे हैं।

15 उस की राने मरमर के सतून हैं जो ख़ालिस सोने के पाइयों पर लगे हैं। उसका हुलिया लुबनान और देवदार के दरख्तों जैसा उमदा है।

16 उसका मुँह मिठास ही है, गरज़ वह हर लिहाज़ से पसंदीदा है।

ऐ यरूशलम की बेटियो, यह है मेरा महबूब, मेरा दोस्त।

## 6

1 ऐ तू जो औरतों में सबसे खूबसूरत है, तेरा महबूब किधर चला गया है? उसने कौन-सी सिम्त इख्तियार की ताकि हम तेरे साथ उसका खोज लगाएँ?

2 मेरा महबूब यहाँ से उतरकर अपने बाग में चला गया है, वह बलसान की क्यारियों के पास गया है ताकि बागों में चरे और सोसन के फूल चुने।

3 मैं अपने महबूब की ही हूँ, और वह मेरा ही है, वह जो सोसनों में चरता है।

तू कितनी खूबसूरत है

\* 5:11 इब्रानी लफ़्ज़ का मतलब मुबहम-सा है। † 5:14 topas ‡ 5:14 lapis lazuli

4 मेरी महबूबा, तू तिरजा शहर जैसी हसीन, यरूशलम जैसी खूबसूरत और अलमबरदार दस्तों जैसी रोबदार है।

5 अपनी नज़रों को मुझसे हटा ले, क्योंकि वह मुझमें उलझन पैदा कर रही है।

तेरे बाल उन बकरियों की मानिंद हैं जो उछलती-कूदती कोहे-जिलियाद से उतरती हैं।

6 तेरे दाँत अभी अभी नहलाई हुई भेड़ों जैसे सफ़ेद हैं। हर दाँत का जुड़वाँ है, एक भी गुम नहीं हुआ।

7 निक्काब के पीछे तेरे गालों की झलक अनार के टुकड़ों की मानिंद दिखाई देती है।

8 गो बादशाह की 60 बीवियाँ, 80 दाश्ताएँ और बेशमार कुँवारियाँ हों<sup>9</sup> लेकिन मेरी कबूतरी, मेरी कामिल साथी लासानी है। वह अपनी माँ की वाहिद बेटी है, जिसने उसे जन्म दिया उस की पाक लाडली है। बेटियों ने उसे देखकर उसे मुबारक कहा, रानियों और दाश्ताओं ने उस की तारीफ़ की,

10 “यह कौन है जो तुलए-सुबह की तरह चमक उठी, जो चाँद जैसी खूबसूरत, आफताब जैसी पाक और अलमबरदार दस्तों जैसी रोबदार है?”

**महबूबा के लिए आरजू**

11 मैं अखरोट के बाग में उतर आया ताकि वादी में फूटनेवाले पौदों का मुआयना करूँ। मैं यह भी मालूम करना चाहता था कि क्या अंगूर की कोपलें निकल आई या अनार के फूल लग गए हैं।

12 लेकिन चलते चलते न जाने क्या हुआ, मेरी आरजू ने मुझे मेरी शरीफ़ कौम के रथों के पास पहुँचाया।

**महबूबा की दिलकशी**

13 ऐ शूलमीत, लौट आ, लौट आ! मुडकर लौट आ ताकि हम तुझ पर नज़र करें।

तुम शूलमीत को क्यों देखना चाहती हो? हम लशकरगाह का लोकनाच देखना चाहती हैं!

## 7

1 ऐ रईस की बेटी, जूतों में चलने का तेरा अंदाज़ कितना मनमोहन है! तेरी खुशबूज़ा रानें माहिर कारीगर के ज़ेवरत की मानिंद हैं।

2 तेरी नाफ़ प्याला है जो मैं से कभी नहीं महसूस रहती। तेरा जिस्म गंदुम का ढेर है जिसका इहाता सोसन के फूलों से किया गया है।

3 तेरी छातियाँ गज़ाल के जुड़वाँ बच्चों की मानिंद हैं।

4 तेरी गरदन हाथीदाँत का मीनार, तेरी आँखें हसबोन शहर के तालाब हैं, वह जो बत-रब्बीम के दरवाज़े के पास हैं। तेरी नाक मीनारे-लुबनान की मानिंद है जिसका मुँह दमिशक की तरफ़ है।

5 तेरा सर कोहे-करमिल की मानिंद है, तेरे खुले बाल अरगवान की तरह कीमती और दिलकश हैं। बादशाह तेरी जुल्फों की जंजीरों में जकड़ा रहता है।

**महबूबा के लिए आरजू**

6 ऐ खुशियों से लबरेज़ मुहब्बत, तू कितनी हसीन है, कितनी दिलरूबा!

7 तेरा कदो-कामत खजूर के दरख्त सा, तेरी छातियाँ अंगूर के गुच्छों जैसी हैं।

8 मैं बोला, “मैं खजूर के दरख्त पर चढ़कर उसके फूलदार गुच्छों \* पर हाथ लगाऊँगा।” तेरी छातियाँ अंगूर के गुच्छों की मानिंद हों, तेरे सोंस की खुशबू सेबों की खुशबू जैसी हो।

9 तेरा मुँह बेहतरीन मैं हो, ऐसी मैं जो सीधी मेरे महबूब के मुँह में जाकर नरमी से होंटों और दाँतों में से गुज़र जाए।

**महबूब के लिए आरजू**

10 मैं अपने महबूब की ही हूँ, और वह मुझे चाहता है।

11 आ, मेरे महबूब, हम शहर से निकलकर देहात में रात गुज़ारें।

12 आ, हम सुबह-सवेरे अंगूर के बागों में जाकर मालूम करें कि क्या बेलों से कोपलें निकल आई हैं और फूल लगे हैं, कि क्या अनार के दरख्त खिल रहे हैं। वहाँ मैं तुझ पर अपनी मुहब्बत का इज़हार करूँगी।

\* 7:8 इब्रानी लफ़्ज़ का मतलब मुहम्म-सा है।

13 मर्दमगयाह † की खुशबू फैल रही, और हमारे दरवाजे पर हर किस्म का लजीज फल है, नई फसल का भी और गुजरी का भी। क्योंकि मैंने यह चीजें तेरे लिए, अपने महबूब के लिए महफूज रखी हैं।

## 8

काश हम अकेले हों

1 काश तू मेरा सगा भाई \* होता, तब अगर बाहर तुझसे मुलाकात होती तो मैं तुझे बोसा देती और कोई न होता जो यह देखकर मुझे हकीर जानता।

2 मैं तेरी राहनुमाई करके तुझे अपनी माँ के घर में ले जाती, उसके घर में जिसने मुझे तालीम दी। वहाँ मैं तुझे मसालेदार मैं और अपने अनारों का रस पिलाती।

3 उसका बायाँ बाजू मेरे सर के नीचे होता और दायाँ बाजू मुझे गले लगाता है।

4 ऐ यस्-शलम की बेटियो, कसम खाओ कि जब तक मुहब्बत खुद न चाहे तुम उसे न जगाओगी, न बेदार करोगी।

महबूब की आखिरी बात

5 यह कौन है जो अपने महबूब का सहारा लेकर रेगिस्तान से चढ़ी आ रही है?

सेब के दरख्त तले मैंने तुझे जगा दिया, वहाँ जहाँ तेरी माँ ने तुझे जन्म दिया, जहाँ उसने दर्द-ज़ह में मुब्तला होकर तुझे पैदा किया।

6 मुझे मुहर की तरह अपने दिल पर, अपने बाजू पर लगाए रख! क्योंकि मुहब्बत मौत जैसी ताकतवर, और उस की सरगामी पाताल जैसी बे-लचक है। वह दहकती आग, रब का भड़कता शोला है।

7 पानी का बड़ा सैलाब भी मुहब्बत को बुझा नहीं सकता, बड़े दरिया भी उसे बहाकर ले जा नहीं सकते। और अगर कोई मुहब्बत को पाने के लिए अपने घर की तमाम दौलत पेश भी करे तो भी उसे जवाब में हकीर ही जाना जाएगा।

महबूबा की आखिरी बात

8 हमारी छोटी बहन की छातियाँ नहीं हैं। हम अपनी बहन के लिए क्या करें अगर कोई उससे रिश्ता बाँधने आए?

9 अगर वह दीवार हो तो हम उस पर चाँदी का किलाबंद इंतज़ाम बनाएँगे। अगर वह दरवाज़ा हो तो हम उसे देवदार के तख्ते से महफूज रखेंगे।

10 मैं दीवार हूँ, और मेरी छातियाँ मजबूत मीनार हैं। अब मैं उस की नजर में ऐसी खातून बन गई हूँ जिसे सलामती हासिल हुई है।

सुलेमान से ज़्यादा दौलतमंद

11 बाल-हामून में सुलेमान का अंगूर का बाग था। इस बाग को उसने पहरेदारों के हवाले कर दिया। हर एक को उस की फसल के लिए चाँदी के हज़ार सिक्के देने थे।

12 लेकिन मेरा अपना अंगूर का बाग मेरे सामने ही मौजूद है। ऐ सुलेमान, चाँदी के हज़ार सिक्के तेरे लिए हैं, और 200 सिक्के उनके लिए जो उस की फसल की पहरादारी करते हैं।

मुझे ही पुकार

13 ऐ बाग में बसनेवाली, मेरे साथी तेरी आवाज़ पर तबज्जुह दे रहे हैं। मुझे ही अपनी आवाज़ सुनने दे।

14 ऐ मेरे महबूब, गज़ाल या जवान हिरन की तरह बलसान के पहाड़ों की जानिब भाग जा!।

† 7:13 एक पौदा जिसके बारे में सोचा जाता था कि उसे खाकर बौद्ध औरत भी बच्चे को जन्म देगी।  
ने दूध पिलाया होता।

\* 8:1 लफ्ज़ी तरज़ुमा : मेरा भाई होता, जिसे मेरी माँ

## यसायाह

1 जैल में वह रोयाँ दर्ज हैं जो यसायाह बिन आमस ने यहदाह और यस्शलम के बारे में देखीं और जो उन सालों में मुक़शिफ हुई जब उज्जियाह, यताम, आखज़ और हिज़कियाह यहदाह के बादशाह थे।

इसराईली अपने आका को जानने से इनकार करते हैं

2 ऐ आसमान, मेरी बात सुन! ऐ ज़मीन, मेरे अलफ़ाज़ पर कान धर! क्योंकि रब ने फ़रमाया है,

“जिन बच्चों की परवरिश मैंने की है और जो मेरे ज़ेरे-निगरानी परवान चढ़े हैं, उन्होंने मुझे से रिशता तोड़ लिया है।<sup>3</sup> बैल अपने मालिक को जानता और गधा अपने आका की चरनी को पहचानता है, लेकिन इसराईल इतना नहीं जानता, मेरी कौम समझ से खाली है।”

4 ऐ गुनाहगार कौम, तुझ पर अफ़सोस! ऐ संगीन कूसर में फँसी हुई उम्मत, तुझ पर अफ़सोस! शरीर नसल, बदचलन बच्चे! उन्होंने रब को तर्क कर दिया है। हाँ, उन्होंने इसराईल के कुदूस को हक़ीर जानकर रद्द किया, अपना मुँह उससे फेर लिया है।<sup>5</sup> अब तुम्हें मज़ीद कहीं पीटा जाए? तुम्हारी ज़िद तो मज़ीद बढ़ती जा रही है जो पूरा सर ज़ख़मी और पूरा दिल बीमार है।<sup>6</sup> चाँद से लेकर तल्लवे तक पूरा जिस्म मजस्ह है, हर जगह चोटें, घाब और ताज़ा ताज़ा ज़रबें लगी हैं। और न उन्हें साफ़ किया गया, न उनकी मरहम-पट्टी की गई है।

7 तुम्हारा मुल्क वीरानो-सुनसान हो गया है, तुम्हारे शहर भस्म हो गए हैं। तुम्हारे देखते देखते परदेसी तुम्हारे खेतों को लूट रहे हैं, उन्हें यों उजाड़ रहे हैं जिस तरह परदेसी ही कर सकते हैं।<sup>8</sup> सिर्फ़ यस्शलम ही बाकी रह गया है, सिथ्यून बेटी अंगूर के बाग में झोंपड़ी की तरह अकेली रह गई है। अब दूश्मन से घिरा हुआ यह शहर ख़ीर के खेत में लगे छप्पर की मानिंद है।<sup>9</sup> अगर रब्बूल-अफ़वाज़ हममें से चंद एक को ज़िंदा न छोड़ता तो हम सदूम की तरह मिट जाते, हमारा अमूरा की तरह सत्यानास हो जाता।

10 ऐ सदूम के सरदारो, रब का फ़रमान सुन लो! ऐ अमूरा के लोगो, हमारे खुदा की हिदायत पर ध्यान दो!<sup>11</sup> रब फ़रमाता है, “अगर तुम बेशुमार कुरबानियाँ पेश करो तो मुझे क्या? मैं तो भस्म होनेवाले भेड़ों और मोटे-ताज़े बछड़ों की चरबी से उकता गया हूँ। बैलों, लेलों और बकरों का जो खून मुझे पेश किया जाता है वह मुझे पसंद नहीं।<sup>12</sup> किसने तुमसे तकाज़ा किया कि मेरे हुज़ूर आते वक़्त मेरी बारगाहों को पाँवों तले रौंदो? <sup>13</sup> रुक जाओ! अपनी बेमानी कुरबानियाँ मत पेश करो! तुम्हारे बख़र से मुझे घिन आती है। नए चाँद की ईद और सबत का दिन मत मनाओ, लोगों को इबादत के लिए जमा न करो! मैं तुम्हारे बेदीन इजतिमा बरदाशत ही नहीं कर सकता।<sup>14</sup> जब तुम नए चाँद की ईद और बाकी तकरीबात मनाते हो तो मेरे दिल में नफ़रत पैदा होती है। यह मेरे लिए भारी बोझ बन गई है जिनसे मैं तंग आ गया हूँ।

15 बेशक अपने हाथों को दुआ के लिए उठाते जाओ, मैं ध्यान नहीं दूँगा। गो तुम बहुत ज़्यादा नमाज़ भी पढो, मैं तुम्हारी नहीं सुनूँगा, क्योंकि तुम्हारे हाथ खून-अलूदा हैं।<sup>16</sup> पहले नहाकर अपने आपको पाक-साफ़ करो। अपनी शरीर हरकतों से बाज़ आओ ताकि वह मुझे नज़र न आएँ। अपनी गलत राहों को छोड़कर <sup>17</sup> नेक काम करना सीख लो। इनसाफ के तालिब रहो, मज़लूमों का सहारा बनो, यतीमों का इनसाफ़ करो और बेवाओं के हक़ में लड़ो!”

अल्लाह अपनी कौम की अदालत करता है

18 रब फ़रमाता है, “आओ हम अदालत में जाकर एक दूसरे से मुक़दमा लड़ें। अगर तुम्हारे गुनाहों का रंग किरमिज़ी हो जाए तो क्या वह दुबारा बर्फ़ जैसे उजले हो जाएंगे? अगर उनका रंग अरगवानी हो जाए तो क्या वह दुबारा ऊन जैसे सफ़ेद हो जाएंगे? <sup>19</sup> अगर तुम सुनने के लिए तैयार हो तो मुल्क की बेहतरीन पैदावार से लुत्फ़-अंदोज़ होगे। <sup>20</sup> लेकिन अगर इनकार करके सरकश हो जाओ तो तलवार की ज़द में आकर मर जाओगे। इस बात का यक़ीन करो, क्योंकि रब ने यह कुछ फ़रमाया है।”

21 यह कैसे हो गया है कि जो शहर पहले इतना वफ़ादार था वह अब कसबी बन गया है? पहले यस्शलम इनसाफ़ से मामू था, और रास्ती उसमें सुक़नत करती थी। लेकिन अब हर तरफ़ कातिल ही कातिल है! <sup>22</sup> ऐ यस्शलम, तेरी ख़ालिस चाँदी ख़ाम चाँदी में बदल गई है, तेरी बेहतरीन मै में पानी मिलाया गया है। <sup>23</sup> तेरे बुजुर्ग हृदय और चोरों के यार हैं। यह रिश्वतख़ोर सब लोगों के पीछे पड़े रहते हैं ताकि चाय-पानी मिल जाए। न वह परवा करते हैं कि यतीमों को इनसाफ़ मिले, न बेवाओं की फ़रियाद उन तक पहुँचती है।



24 इसलिए कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफवाज जो इसराईल का ज़बरदस्त सूरमा है फरमाता है, “आओ, मैं अपने मुखालिफों और दुश्मनों से इंतकाम लेकर सुकून पाऊँ। 25 मैं तेरे खिलाफ हाथ उठाऊँगा और खाम चाँदी की तरह तुझे पोटाश के साथ पिघलाकर तमाम मैल से पाक-साफ कर दूँगा। 26 मैं तुझे दुबारा कदमी जमाने के-से काजी और इब्तिदा के-से मुशीर अता करूँगा। फिर यरूशलम दुबारा दास्त-इनसाफ और वफादार शहर कहलाएगा।”

27 अल्लाह सिध्दून की अदालत करके उसका फिघा देगा, जो उसमें तौबा करेंगे उनका वह इनसाफ करके उन्हें छुड़ाएगा।

28 लेकिन बागी और गुनाहगार सबके सब पाश पाश हो जाएंगे, रब को तर्क करनेवाले हलाक हो जाएंगे।

29 बलूत के जिन दरख्तों की पूजा से तुम लुत्फ-अंदोज होते हो उनके बाइस तुम शर्मसार होगे, और जिन बागों को तुमने अपनी बूतपरस्ती के लिए चुन लिया है उनके बाइस तुम्हें शर्म आएगी। 30 तुम उस बलूत के दरख्त की मानिंद होगे जिसके पत्ते मुरझा गए हों, तुम्हारी हालत उस बाग की-सी होगी जिसमें पानी नायाब हो। 31 ज़बरदस्त आदमी फूस और उस की गलत हरकतें चिंगारी जैसी होंगी। दोनों मिलकर यों भड़क उठेंगे कि कोई भी बुझा नहीं सकेगा।

## 2

यरूशलम अबदी अमनो-अमान का मरकज़ होगा

1 यसायाह बिन आमस ने यहदाह और यरूशलम के बारे में ज़ैल की रोया देखी,

2 आखिरी ऐयाम में रब के घर का पहाड़ मज़बूती से कायम होगा। सबसे बड़ा यह पहाड़ दीगर तमाम बुलंदियों से कहीं ज़्यादा सरफराज़ होगा। तब तमाम क़ौमों जौक-दर-जौक उसके पास पहुँचेंगी, 3 और बेशमार उम्मतें आकर कहेंगी, “आओ, हम रब के पहाड़ पर चढ़कर याकूब के ख़ुदा के घर के पास जाएँ ताकि वह हमें अपनी मरज़ी की तालीम दे और हम उस की राहों पर चलें।”

क्योंकि सिध्दून पहाड़ से रब की हिदायत निकलेगी, और यरूशलम से उसका कलाम सादिर होगा। 4 रब बैनुल-अक़वामी झगड़ों को निपटाएगा और बेशमार क़ौमों का इनसाफ करेगा। तब वह अपनी तलवारों को कूटकर फाले बनाएँगी और अपने नेज़ों को काँट-छाँट के औज़ार में तबदील करेंगी। अब से न एक कौम दूसरी पर हमला करेगी, न लोग जंग करने की तरबियत हासिल करेंगे।

5 ऐ याकूब के घराने, आओ हम रब के नूर में चलें!

अल्लाह की हैबतनाक अदालत

6 ऐ अल्लाह, तूने अपनी क़ौम, याकूब के घराने को तर्क कर दिया है। और क्या अजब! क्योंकि वह मशरिक्की जादूगारी से भर गए हैं। फिलिस्तियों की तरह हमारे लोग भी किस्मत का हाल पछूते हैं, वह परदेसियों के साथ बग़लगीर रहते हैं।

7 इसराईल सोने-चाँदी से भर गया है, उसके खजानों की हद ही नहीं रही। हर तरफ़ घोड़े ही घोड़े नज़र आते हैं, और उनके रथ गिने नहीं जा सकते। 8 लेकिन साथ साथ उनका मुल्क बुतों से भी भर गया है। जो चीज़ें उनके हाथों ने बनाई उनके सामने वह झुक जाते हैं, जो कुछ उनकी उँगलियों ने तश्कील दिया उसे वह सिजदा करते हैं। 9 चुनौचे अब उन्हें ख़ुद झुकाया जाएगा, उन्हें पस्त किया जाएगा। ऐ रब, उन्हें मुआफ़ न कर!

10 चटानों में घुस जाओ! ख़ाक में छुप जाओ! क्योंकि रब का दहशतअंगेज़ और शानदार जलाल आने को है। 11 तब इनसान की मग़स्र आँखों को नीचा किया जाएगा, मर्दों का तकब्बुर ख़ाक में मिलाया जाएगा। उस दिन सिर्फ़ रब ही सरफराज़ होगा। 12 क्योंकि रब्बुल-अफवाज ने एक ख़ास दिन ठहराया है जिसमें सब कुछ जो मग़स्र, बुलंद या सरफराज़ हो ज़ेर किया जाएगा। 13 लुबनान में देवदार के तमाम बुलंदो-बाला दरख्त, बसन के कुल बलूत, 14 तमाम आली पहाड़ और ऊँची पहाड़ियाँ, 15 हर अज़ीम बुज़ और क़िलाबंद दीवार, 16 समुंदर का हर अज़ीम तिजारती और शानदार जहाज़ ज़ेर हो जाएगा। 17 चुनौचे इनसान का ग़स्र ख़ाक में मिलाया जाएगा और मर्दों का तकब्बुर नीचा कर दिया जाएगा। उस दिन सिर्फ़ रब ही सरफराज़ होगा, 18 और बूत सबके सब फना हो जाएंगे।

19 जब रब ज़मीन को दहशतजदा करने के लिए उठ खड़ा होगा तो लोग मिट्टी के गढ़ों में खिसक जाएंगे। रब की महीब और शानदार तजल्ली को देखकर वह चटानों के गारों में छुप जाएंगे। 20 उस दिन इनसान सोने-चाँदी के उन बुतों को फेंक देगा जिन्हें उसने सिजदा करने के लिए बना लिया था। उन्हें चूहों और चमगादड़ों के आगे फेंककर 21 वह चटानों के शिगाफों और दराइों में घुस जाएंगे ताकि रब की महीब और शानदार तजल्ली से बच जाएँ जब वह ज़मीन को दहशतजदा करने के लिए उठ खड़ा होगा। 22 चुनौचे इनसान पर एतमाद करने से बाज़ आओ जिसकी जिंदगी दम-भर की है। उस की कदर ही क्या है?

## 3

## यहदाह की तबाही

1 कादिरे-मुतलक रब्बूल-अफवाज यस्शलम और यहदाह से सब कुछ छीने को है जिस पर लोग इनहिसार करते हैं। रोटी का हर लुकमा और पानी का हर कतरा, 2 सूरमे और फौजी, काजी और नबी, किस्मत का हाल बतानेवाले और बजुर्ग, 3 फौजी अफसर और असरो-रसूखवाले, मुशीर, जादूगर और मंत्र फूँकनेवाले, सबके सब छीन लिए जाएंगे। 4 मैं लडके उन पर मुकर्र करूँगा, और मुतलखिनमिजाज जालिम उन पर हुक्मत करूँगे। 5 अवाम एक दूसरे पर जुल्म करूँगे, और हर एक अपने पड़ोसी को दबाएगा। नौजवान बजुर्गों पर और कमीने, इज्जतदारों पर हमला करूँगे।

6 तब कोई अपने बाप के घर में अपने भाई को पकड़कर उससे कहेगा, “तेरे पास अब तक चादर है, इसलिए आ, हमारा सरबराह बन जा! खंडरात के इस ढेर को सँभालने की जिम्मादारी उठा ले!”

7 लेकिन वह चीखकर इनकार करेगा, “नहीं, मैं तुम्हारा मुआलजा कर ही नहीं सकता! मेरे घर में न रोटी है, न चादर। मुझे अवाम का सरबराह मत बनाना!”

8 यस्शलम डगमगा रहा है, यहदाह धड़ाम से गिर गया है। और वजह यह है कि वह अपनी बातों और हरकतों से रब की मुखाफलत करते हैं। उसके जलाली हुजूर ही में वह सरकशी का इजहार करते हैं। 9 उनकी जानिबदारी उनके खिलाफ गवाही देती है। और वह सदूम के बाशिंदों की तरह अलानिया अपने गुनाहों पर फखर करते हैं, वह उन्हें छुपाने की कोशिश ही नहीं करते। उन पर अफसोस! वह तो अपने आपको मुसीबत में डाल रहे हैं।

10 रास्तबाजों को मुबारकबाद दो, क्योंकि वह अपने आमाल के अच्छे फल से लुत्फअंदोज होंगे। 11 लेकिन बेदीनों पर अफसोस! उनका अंजाम बुरा होगा, क्योंकि उन्हें गलत काम की मुनासिब सजा मिलेगी।

12 हाय, मेरी कौम! मुतलखिनमिजाज तुझ पर जुल्म करते और औरतें तुझ पर हुक्मत करती हैं।

ऐ मेरी कौम, तेरे राहनूमा तुझे गुमराह कर रहे हैं, वह तुझे उलझाकर सहीह राह से भटक रहे हैं।

## रब अपनी कौम की अदालत करता है

13 रब अदालत में मुकदमा लड़ने के लिए खड़ा हुआ है, वह कौमों की अदालत करने के लिए उठा है। 14 रब अपनी कौम के बजुर्गों और रईसों का फ़ैसला करने के लिए सामने आकर फरमाता है, “तुम ही अंगूर के बाग में चरते हुए सब कुछ खा गए हो, तुम्हारे घर ज़रूरतमंदों के लूटे हुए माल से भरे पड़े हैं। 15 यह तुमने कैसी गुस्ताखी कर दिखाई? यह मेरी ही कौम है जिसे तुम कुचल रहे हो। तुम मुसीबतजदों के चेहरों को चक्की में पीस रहे हो।” कादिरे-मुतलक रब्बूल-अफवाज यों फरमाता है।

## यस्शलम की खवातीन की अदालत

16 रब ने फरमाया, “सिय्यून की बेटियाँ कितनी मगसूर हैं। जब आँख मार मारकर चलती हैं तो अपनी गरदन को कितनी शोखी से इधर उधर घुमाती हैं। और जब मटक मटककर कदम उठाती हैं तो पाँवों पर बँधे हुए घुंघरू बोलते हैं टन टन, टन टन।”

17 जवाब में रब उनके सरो पर फोड़े पैदा करके उनके माथों को गंजा होने देगा। 18 उस दिन रब उनका तमाम सिंगार उतार देगा : उनके घुंघरू, सूरज और चाँद के ज़ेवरात, 19 आवेजे, कड़े, दोपट्टे, 20 सजीली टोपियाँ, पायल, खुशबू की बोटलें, तावीज, 21 अंगुठियाँ, नथ, 22 शानदार कपड़े, चादरें, बटवे, 23 आईने, नफ़ीस लिबास, सरबंद और शाला। 24 खुशबू की बजाए बदबू होगी, कमरबंद के बजाए रस्सी, सुलझे हुए बालों के बजाए गंजापान, शानदार लिबास के बजाए टाट, खूबसूरती की बजाए शरमिंदगी।

25 हाय, यस्शलम! तेरे मर्द तलवार की ज़द में आकर मरेंगे, तेरे सूरमे लडते लडते शहीद हो जाएंगे। 26 शहर के दरवाजे आहं भर भरकर मातम करूँगे, सिय्यून बेटी तनहा रहकर खाक में बैठ जाएगी।

## 4

1 तब सात औरतें एक ही मर्द से लिपटकर कहेंगी, “हमसे शादी करें! बेशक हम खुद ही रोज़मर्रा की ज़रूरियात पूरी करेंगी, खाह खाना हो या कपड़ा। लेकिन हम आपके नाम से कहलाएँ ताकि हमारी शरमिंदगी दूर हो जाए।”

## यस्शलम की बहाली

2 उस दिन जो कुछ रब फूटने देगा वह शानदार और जलाली होगा, मुल्क की पैदावार बचे हुए इसराइलियों के लिए फखर और आबो-ताब का बाइस होगी। 3 तब जो भी सिय्यून में बाक़ी रह गए होंगे वह मुकद्दस कहलाएँगे। यस्शलम के जिन बाशिंदों के नाम जिंदों की फहरिस्त में दर्ज किए गए हैं वह बचकर मुकद्दस कहलाएँगे। 4 रब सिय्यून की फुज्ला से लतपत बेटियों को

धोकर पाक-साफ करेगा, वह अदालत और तबाही की रूह से यस्शलम की खनरेजी के धब्बे दूर कर देगा। <sup>5</sup> फिर रब होने देगा कि दिन को बादल सिय्यून के पूरे पहाड़ और उस पर जमा होनेवालों पर साया डाले जबकि रात को धुआँ और दहकती आग की चमक-दमक उस पर छाई रहे। यों उस पूरे शानदार इलाके पर सायबान होगा <sup>6</sup> जो उसे झूलसती धूप से महफूज रखेगा और तूफान और बारिश से पनाह देगा।

## 5

### बेफल अंगूर का बाग

<sup>1</sup> आओ, मैं अपने महबूब के लिए गीत गाऊँ, एक गीत जो उसके अंगूर के बाग के बारे में है।

मेरे प्यारे का बाग था। अंगूर का यह बाग जरखेज पहाड़ी पर था। <sup>2</sup> उसने गोड़ी करते करते उसमें से तमाम पत्थर निकाल दिए, फिर बेहतरीन अंगूर की कलमें लगाई। बीच में उसने मीनार खड़ा किया ताकि उस की सहीह चौकीदारी कर सके। साथ साथ उसने अंगूर का रस निकालने के लिए पत्थर में हौज तराश लिया। फिर वह पहली फसल का इंतजार करने लगा। बड़ी उम्मीद थी कि अच्छे मीठे अंगूर मिलेंगे। लेकिन अफसोस! जब फसल पक गई तो छोटे और खट्टे अंगूर ही निकले थे।

<sup>3</sup> “ऐ यस्शलम और यहदाह के बाशिंदो, अब खुद फसला करो कि मैं उस बाग के साथ क्या करूँ। <sup>4</sup> क्या मैंने बाग के लिए हर मुमकिन कोशिश नहीं की थी? क्या मुनासिब नहीं था कि मैं अच्छी फसल की उम्मीद रखूँ? क्या वजह है कि सिर्फ छोटे और खट्टे अंगूर निकले?”

<sup>5</sup> पता है कि मैं अपने बाग के साथ क्या करूँगा? मैं उस की काँटेदार बाड़ को खत्म करूँगा और उस की चारदीवारी गिरा दूँगा। उसमें जानवर घुस आएँगे और चरकर सब कुछ तबाह करेंगे, सब कुछ पाँवों तले रौंद डालेंगे!

<sup>6</sup> मैं उस की ज़मीन बंजर बना दूँगा। न उस की बेलों की काँट-छाँट होगी, न गोड़ी की जाएगी। वहाँ काँटेदार और खुदरौ पौदे उगेंगे। न सिर्फ यह बल्कि मैं बादलों को भी उस पर बरसने से रोक दूँगा।”

<sup>7</sup> सुनो, इसराईली कौम अंगूर का बाग है जिसका मालिक रब्बुल-अफवाज है। यहदाह के लोग उसके लगाए हुए पौदे हैं जिनसे वह लुफअंदोज होना चाहता है। वह उम्मीद रखता था कि इनसाफ की फसल पैदा होगी, लेकिन अफसोस! उन्होंने गैरकानूनी हरकतें कीं। रास्ती की तक्को थी, लेकिन मज़लूमों की चीखें ही सुनाई दीं।

### लोगों की गैरकानूनी हरकतें

<sup>8</sup> तुम पर अफसोस जो यके बाद दीगरे घरों और खेतों को अपनाते जा रहे हो। आखिरकार दीगर तमाम लोगों को निकलना पड़ेगा और तुम मुल्क में अकेले ही रहोगे। <sup>9</sup> रब्बुल-अफवाज ने मेरी मौजूदगी में ही कसम खाई है, “यकीनन यह मुतअदिद मकान वीरानो-सुनसान हो जाएंगे, इन बड़े और आलीशान घरों में कोई नहीं बसेगा। <sup>10</sup> दस एकड़ \* ज़मीन के अंगूरों से मैं के सिर्फ 22 लिटर बनेंगे, और बीज के 160 किलोग्राम से गल्ला के सिर्फ 16 किलोग्राम पैदा होंगे।”

<sup>11</sup> तुम पर अफसोस जो सुबह-सवेरे उठकर शराब के पीछे पड़ जाते और रात-भर मैं पी पीकर मस्त हो जाते हो। <sup>12</sup> तुम्हारी ज़ियाफतों में कितनी रौनक होती है! तुम्हारे मेहमान मैं पी पीकर सरोद, सितार, दफ और बाँसरी की सुरीली आवाज़ों से अपना दिल बहलाते हैं। लेकिन अफसोस, तुम्हें खयाल तक नहीं आता कि रब क्या कर रहा है। जो कुछ रब के हाथों हो रहा है उसका तुम लिहाज ही नहीं करते। <sup>13</sup> इसी लिए मेरी कौम जिलावतन हो जाएगी, क्योंकि वह समझ से खाली है। उसके बड़े अफसर भुके मरेंगे, और अवाम प्यास के मारे सूख जाएंगे। <sup>14</sup> पाताल ने अपना मुँह फाड़कर खोला है ताकि कौम की तमाम शानो-शौकत, शोर-शराबा, हंगामा और शादमान अफराद उसके गले में उतर जाएँ। <sup>15</sup> इनसान को पस्त करके खाक में मिलाया जाएगा, और मगरर की आँखें नीची हो जाएँगी।

<sup>16</sup> लेकिन रब्बुल-अफवाज की अदालत उस की अज़मत दिखाएगी, और कुद्स खुदा की रास्ती जाहिर करेगी कि वह कुद्स है। <sup>17</sup> उन दिनों में लेले और मोटी-ताजी भेड़ें जिलावतनों के खंडरात में यों चरेंगी जिस तरह अपनी चरागाहों में।

<sup>18</sup> तुम पर अफसोस जो अपने कुस्सू को धोकेबाज रस्सों के साथ अपने पीछे खींचते और अपने गुनाह को बैलगाड़ी की तरह अपने पीछे घसीटते हो। <sup>19</sup> तुम कहते हो, “अल्लाह जल्दी जल्दी अपना काम निपटाए ताकि हम इसका मुआयना करें। जो मनसूबा इसराईल का कुद्स रखता है वह जल्दी सामने आए ताकि हम उसे जान लें।”

<sup>20</sup> तुम पर अफसोस जो बुराई को भुला और भलाई को बुरा करार देते हो, जो कहते हो कि तारीकी रौशनी और रौशनी तारीकी है, कि कड़वाहट मीठी और मिठास कड़वी है।

<sup>21</sup> तुम पर अफसोस जो अपनी नज़र में दानिशमंद हो और अपने आपको होशियार समझते हो।

\* 5:10 लफ्ज़ी मतलब : जितनी ज़मीन पर बैलों की दस जोड़ियाँ एक दिन में हल चला सकती हैं।

22 तुम पर अफसोस जो मैं पीने में पहलवान हो और शराब मिलाने में अपनी बहादुरी दिखाते हो।

23 तुम रिव्ख खाकर मुजरिमों को बरी करते और बेकुसूरों के हुक्क मारते हो। 24 अब तुम्हें इसकी सजा भगतनी पड़ेगी। जिस तरह भूसा आग की लपेट में आकर राख हो जाता और सूखी घास आग के शोले में चुरमुर हो जाती है उसी तरह तुम खत्म हो जाओगे। तुम्हारी जड़ें सड़ जाएँगी और तुम्हारे फूल गर्द की तरह उड़ जाएँगे, क्योंकि तुमने रब्बूल-अफवाज की शरीरत को रद्द किया है, तुमने इसराईल के कुदूस का फ़रमान हकीर जाना है।

### असूरी फ़ौज का हमला

25 यही वजह है कि रब का ग़ज़ब उस की कौम पर नाज़िल हुआ है, कि उसने अपना हाथ बढ़ाकर उन पर हमला किया है। पहाड़ लरज़ रहे और गलियों में लाशें कचरे की तरह बिखरी हुई हैं। ताहम उसका गुस्सा ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

26 वह एक दूर-दराज़ कौम के लिए फ़ौजी झंडा गाड़कर उसे अपनी कौम के खिलाफ़ खड़ा करेगा, वह सीटी बजाकर उसे दुनिया की इंतहा से बुलाएगा। वह देखो, दुश्मन भागते हुए आ रहे हैं! 27 उनमें से कोई नहीं जो थकामौंदा हो या लड़खड़ाकर चले। कोई नहीं ऊँघता या सोया हुआ है। किसी का भी पटका ढीला नहीं, किसी का भी तसमा टूटा नहीं। 28 उनके तीर तेज़ और कमान तने हुए हैं। उनके घोड़ों के खुर चक्रमाक जैसे, उनके रथों के पहिये आँधी जैसे हैं। 29 वह शेरनी की तरह गरजते हैं बल्कि जवान शेरबबर की तरह दहाड़ते और गुरते हुए अपना शिकार छीनकर वहाँ ले जाते हैं जहाँ उसे कोई नहीं बचा सकता।

30 उस दिन दुश्मन गुरते और मुतलातिम समुंदर का-सा शोर मचाते हुए इसराईल पर टूट पड़ेंगे। जहाँ भी देखो वहाँ अंधेरा ही अंधेरा और मुसीबत ही मुसीबत। बादल छा जाने के सबब से रौशनी तारीक हो जाएगी।

## 6

### यसायाह की बुलाहट

1 जिस साल उज्जियाह बादशाह ने वफ़ात पाई उस साल मैंने रब को आला और जलाली तख़्त पर बैठे देखा। उसके लिबास के दामन से रब का घर भर गया। 2 सराफ़ीम फ़रिश्ते उसके ऊपर खड़े थे। हर एक के छः पर थे। दो से वह अपने मुँह को और दो से अपने पाँवों को ढाँप लेते थे जबकि दो से वह उड़ते थे। 3 बुलंद आवाज़ से वह एक दूसरे को पुकार रहे थे, “कुदूस, कुदूस, कुदूस है रब्बूल-अफ़वाज। तमाम दुनिया उसके जलाल से मामूर है।”

4 उनकी आवाज़ों से दहलीज़ें \* हिल गईं और रब का घर धुँएँ से भर गया। 5 मैं चिल्ला उठा, “मुझ पर अफ़सोस, मैं बरबाद हो गया हूँ! क्योंकि गो मेरे होंट नापाक हैं, और जिस कौम के दरमियान रहता हूँ उसके होंट भी नजिस हैं तो भी मैंने अपनी आँखों से बादशाह रब्बूल-अफ़वाज को देखा है।”

6 तब सराफ़ीम फ़रिश्तों में से एक उड़ता हुआ मेरे पास आया। उसके हाथ में दमकता कोयला था जो उसने चिमटे से कुरबानागह से लिया था। 7 इससे उसने मेरे मुँह को छूकर फ़रमाया, “देख, कोयले ने तेरे होंटों को छू दिया है। अब तेरा कुसूर दूर हो गया, तेरे गुनाह का कफ़ारा दिया गया है।”

8 फिर मैंने रब की आवाज़ सुनी। उसने पूछा, “मैं किस को भेजूँ? कौन हमारी तरफ़ से जाए?” मैं बोला, “मैं हाज़िर हूँ। मुझे ही भेज दे।” 9 तब रब ने फ़रमाया, “जा, इस कौम को बता, ‘अपने कानों से सुनो मगर कुछ न समझना। अपनी आँखों से देखो, मगर कुछ न जानना!’ 10 इस कौम के दिल को बेहिस कर दे, उनके कानों और आँखों को बंद कर। ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें, अपने कानों से सुनें, मेरी तरफ़ रूजू करें और शफ़ा पाएँ।”

11 मैंने सवाल किया, “एरे रब, कब तक?” उसने जवाब दिया, “उस वक़्त तक कि मुल्क के शहर वीरानो-सुनसान, उसके घर रौरआबाद और उसके खेत बंजर न हों। 12 पहले लाज़िम है कि रब लोगों को दूर तक भगा दे, कि पूरा मुल्क तने-तनहा और बेकस रह जाए। 13 अगर कौम का दसवाँ हिस्सा मुल्क में बाकी भी रहे लेकिन उसे भी जला दिया जाएगा। वह किसी बलूत या दीगर लंबे-चौड़े दरख़्त की तरह यों कट जाएगा कि मुठ ही बाकी रहेगा। ताहम यह मुठ एक मुक़द्दस बीज होगा जिससे नए सिरे से ज़िंदगी फूट निकलेगी।”

## 7

### अल्लाह आख़ज को तसल्ली देता है

\* 6:4 लफ़्जी मतलब : दहलीज़ों में घूमनेवाली दरवाज़ों की चूले।

1 जब आख़ज बिन यूताम बिन उज़्जियाह, यहदाह का बादशाह था तो शाम का बादशाह रज़ीन और इसराईल का बादशाह फ़िक्रह बिन रमलियाह यरूशलम के साथ लड़ने के लिए निकले। लेकिन वह शहर पर क़ब्ज़ा करने में नाकाम रहे। 2 जब दाऊद के शाही घराने को इतला मिली कि शाम की फ़ौज ने इफ़राईम के इलाके में अपनी लश्करगाह लगाई है तो आख़ज बादशाह और उस की कौम लत्रज उठे। उनके दिल आँधी के झोंकों से हिलनेवाले दरख़्तों की तरह थरथराने लगे।

3 तब रब यसायाह से हमकलाम हुआ, “अपने बेटे शयार-याशूब \* को अपने साथ लेकर आख़ज बादशाह से मिलने के लिए निकल जा। वह उस नाले के सिरे के पास स्का हुआ है जो पानी को ऊपरवाले तालाब तक पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो धोबियों के घाट तक ले जाता है)। 4 उसे बता कि मुहतात रहकर सूकून का दामन मत छोड़। मत डर। तेरा दिल रज़ीन, शाम और बिन रमलियाह का तैश देखकर हिम्मत न हारे। यह बस जली हुई लकड़ी के दो बचे हुए टुकड़े हैं जो अब तक कुछ धुआँ छोड़ रहे हैं। 5 बेशक शाम और इसराईल के बादशाहों ने तेरे खिलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधे हैं, और वह कहते हैं, 6 ‘आओ हम यहदाह पर हमला करें। हम वहाँ दहशत फैलाकर उस पर फ़तह पाएँ और फिर ताबियेल के बेटे को उसका बादशाह बनाएँ।’ 7 लेकिन रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि उनका मनसूबा नाकाम हो जाएगा। बात नहीं बनेगी! 8 क्योंकि शाम का सर दमिशक और दमिशक का सर महज़ रज़ीन है। जहाँ तक मुल्के-इसराईल का ताल्लुक है, 65 साल के अंदर अंदर वह चकनाचूर हो जाएगा, और कौम नेस्तो-नाबूद हो जाएगी। 9 इसराईल का सर सामरिया और सामरिया का सर महज़ रमलियाह का बेटा है।

अगर ईमान में कायम न रहो, तो खुद कायम नहीं रहोगे।”

रब आख़ज को निशान देता है

10 रब आख़ज बादशाह से एक बार फिर हमकलाम हुआ, 11 “इसकी तसदीक के लिए रब अपने खुदा से कोई इलाही निशान माँग ले, खाह आसमान पर हो या पाताल में।”

12 लेकिन आख़ज ने इनकार किया, “नहीं, मैं निशान माँगकर रब को नहीं आजमाऊँगा।”

13 तब यसायाह ने कहा, “फिर मेरी बात सुनो, ऐ दाऊद के खानदान! क्या यह काफी नहीं कि तुम इनसान को थका दो? क्या लाज़िम है कि अल्लाह को भी थकाने पर मसिर रहो? 14 चलो, फिर रब अपनी ही तरफ़ से तुम्हें निशान देगा। निशान यह होगा कि कुँवारी उम्मीद से हो जाएगी। जब बेटा पैदा होगा तो उसका नाम इम्मानुएल † रखेगी। 15 जिस वक़्त बच्चा इतना बड़ा होगा कि ग़लत काम रद्द करने और अच्छा काम चुनने का इत्म रखेगा उस वक़्त से बालाई और शहद खाएगा। 16 क्योंकि इससे पहले कि लड़का ग़लत काम रद्द करने और अच्छा काम चुनने का इत्म रखे वह मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा जिसके दोनों बादशाहों से तू दहशत खाता है।

यहदाह भी तबाह हो जाएगा

17 रब तुझे भी तेरे आबाई खानदान और कौम समेत बड़ी मुसीबत में डालेगा। क्योंकि वह अस्र के बादशाह को तुम्हारे खिलाफ़ भेजेगा। उस वक़्त तुम्हें ऐसे मुश्किल दिनों का सामना करना पड़ेगा कि इसराईल के यहदाह से अलग हो जाने से लेकर आज तक नहीं गुजरे।”

18 उस दिन रब सीटी बजाकर दुश्मन को बुलाएगा। कुछ मक्खियों के गोल की तरह दरियाए-नील की दूर-दराज़ शाखों से आएँगे, और कुछ शहद की मक्खियों की तरह अस्र से रवाना होकर मुल्क पर धावा बोल देंगे। 19 हर जगह वह टिक जाएँगे, गहरी घाटियों और चटानों की दराडों में, तमाम कौँटदार झाड़ियों में और हर जोहड़ के पास। 20 उस दिन कादिरे-मुतलक दरियाए-फ़ुरात के परती तरफ़ एक उस्तरा किराए पर लेकर तुम पर चलाएगा। यानी अस्र के बादशाह के ज़रीए वह तुम्हारे सर और टोंगों को मुँडवाएगा। हाँ, वह तुम्हारी दाढ़ी-मूँछ का भी सफ़ाया करेगा।

21 उस दिन जो आदमी एक जवान गाय और दो भेड़-बकरियाँ रख सके वह खुशकिसमत होगा। 22 तो भी वह इतना दूध देगी कि वह बालाई खाता रहेगा। हाँ, जो भी मुल्क में बाक़ी रह गया होगा वह बालाई और शहद खाएगा।

23 उस दिन जहाँ जहाँ हाल में अंगूर के हज़ार पौदे चाँदी के हज़ार सिक्कों के लिए बिकते हैं वहाँ कौँटदार झाड़ियाँ और ऊँटकारे ही उगेंगे। 24 पूरा मुल्क कौँटदार झाड़ियों और ऊँटकारों के सबब से इतना जंगली होगा कि लोग तीर और कमान लेकर उसमें शिकार खेलने के लिए जाएँगे। 25 जिन बुलंदियों पर इस वक़्त खेतीबाड़ी की जाती है वहाँ लोग कौँटदार पौदों और ऊँटकारों की वजह से जा नहीं सकेंगे। गाय-बैल उन पर चरेंगे, और भेड़-बकरियाँ सब कुछ पाँवों तले रौँदेंगी।

## 8

जल्द ही लूट-खसोट

\* 7:3 शयार-याशूब से मुराद है ‘एक बचा-खुचा हिस्सा वापस आएगा।’ † 7:14 इम्मानुएल से मुराद है ‘अल्लाह हमारे साथ है।’

1 रब मुझे हमकलाम हुआ, “एक बड़ा तख्ता लेकर उस पर साफ अलफाज़ में लिख दे, ‘जल्द ही लूट-खसोट, सुरअत से गारतगरी!’” 2 मैंने ऊरियाह इमाम और जकरियाह बिन यबरकियाह की मौजूदगी में ऐसा ही लिख दिया, क्योंकि दोनों मोतबर गवाह थे।

3 उस वक़्त जब मैं अपनी बीबी नबिया के पास गया तो वह उम्मीद से हुई। बेटा पैदा हुआ, और रब ने मुझे हुक्म दिया, “इसका नाम ‘जल्द ही लूट-खसोट, सुरअत से गारतगरी’ रख। 4 क्योंकि इससे पहले कि लडका ‘अब्बू’ या ‘अम्मी’ कह सके दमिश्क की दौलत और सामरिया का मालो-असबाब छीन लिया गया होगा, अस्ूर के बादशाह ने सब कुछ लूट लिया होगा।”

शिलोख का पानी रद्द करने का बुरा अंजाम

5 एक बार फिर रब मुझे हमकलाम हुआ, 6 “यह लोग यरूशलम में आराम से बहनेवाले शिलोख नाले का पानी मुस्तरद करके रज़ीन और फ़िक्रह बिन रमलियाह से खुश हैं। 7 इसलिए रब उन पर दरियाए-फ़रात का जबरदस्त सैलाब लाएगा, अस्ूर का बादशाह अपनी तमाम शानो-शौकत के साथ उन पर टूट पड़ेगा। उस की तमाम दरियाई शाखें अपने किनारों से निकल कर 8 सैलाब की सूरत में यहदाह पर से गुज़रेगी। ऐ इम्मानुएल, पानी परिदे की तरह अपने परों को फैलाकर तैरे पूरे मुल्क को ढाँप लेगा, और लोग गले तक उसमें डूब जाएंगे।”

9 ऐ कौमो, बेशक जंग के नारे लगाओ। तुम फिर भी चकनाचूर हो जाओगी। ऐ दूर-दराज़ ममालिक के तमाम बाशिदो, ध्यान दो! बेशक जंग के लिए तैयारियों करो। तुम फिर भी पाश पाश हो जाओगे। क्योंकि जंग के लिए तैयारियों करने के बावजूद भी तुम्हें कूचला जाएगा। 10 जो भी मनसूबा तुम बान्धो, बात नहीं बनेगी। आपस में जो भी फ़ैसला करो, तुम नाकाम हो जाओगे, क्योंकि अल्लाह हमारे साथ है। \*

रब नबी को कौम के बारे में आगाह करता है

11 जिस वक़्त रब ने मुझे मज़बूती से पकड़ लिया उस वक़्त उसने मुझे इस कौम की राहों पर चलने से खबरदार किया। उसने फरमाया, 12 “हर बात को साज़िश मत समझना जो यह कौम साज़िश समझती है। जिससे यह लोग डरते हैं उससे न डरना, न दहशत खाना 13 बल्कि रब्बुल-अफवाज से डरो। उसी से दहशत खाओ और उसी को कुदूस मानो। 14 तब वह इसराईल और यहदाह का मक़दिस होगा, एक ऐसा पत्थर जो ठोकर का बाइस बनेगा, एक चटान जो ठेस लगने का सबब होगी। यरूशलम के बाशिदे उसके फंदे और जाल में उलझ जाएंगे। 15 उनमें से बहुत सारे ठोकर खाएँगे। वह गिरकर पाश पाश हो जाएंगे और फंदे में फँसकर पकड़े जाएंगे।”

रब का कलाम शागिर्दों के हवाले करना है

16 मुझे मुकाशफे को लिफाफे में डालकर महफूज़ रखना है, अपने शागिर्दों के दरमियान ही अल्लाह की हिदायत पर मुहर लगानी है। 17 मैं खुद रब के इंतज़ार में रहूँगा जिसने अपने चेहरे को याकूब के घराने से छुपा लिया है। उसी से मैं उम्मीद रखूँगा।

18 अब मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे जो अल्लाह ने मुझे दिए हैं, हम इसराईल में इलाही और मोजिज़ाना निशान हैं जिनसे रब्बुल-अफवाज जो कोहे-सिय्यून पर सुकूनत करता है लोगों को आगाह कर रहा है।

19 लोग तुम्हें मशवरा देते हैं, “जाओ, मुरदों से राबिता करनेवालों और किस्मत का हाल बतानेवालों से पता करो, उनसे जो बारीक आवाज़ें निकालते और बुड़बुडाते हुए जवाब देते हैं।” लेकिन उनसे कहो, “क्या मुनासिब नहीं कि कौम अपने खुदा से मशवरा करे? हम जिंदों की खातिर मर्दों से बात क्यों करें?”

20 अल्लाह की हिदायत और मुकाशफा की तरफ रूजू करो! जो इनकार करे उस पर सुबह की रौशनी कभी नहीं चमकेगी। 21 ऐसे लोग मायूस और फाकाकश हालत में मुल्क में मारे मारे फिरेंगे। और जब भूके मरने को होंगे तो झुँझलाकर अपने बादशाह और अपने खुदा पर लानत करेंगे। वह ऊपर आसमान 22 और नीचे ज़मीन की तरफ देखेंगे, लेकिन जहाँ भी नज़र पड़े वहाँ मुसीबत, अंधेरा और हौलनाक तारीकी ही दिखाई देगी। उन्हें तारीकी ही तारीकी में डाल दिया जाएगा।

## 9

आनेवाले मसीह की रौशनी

1 लेकिन मुसीबतज़दा तारीकी में नहीं रहेंगे। गो पहले ज़बूलून का इलाका और नफताली का इलाका पस्त हुआ है, लेकिन आइंदा डील के साथ का रास्ता, दरियाए-यरदन के पार, गैरयहूदियों का गलील सरफराज़ होगा।

\* 8:10 इब्रानी में ‘इम्मानुएल’ लिखा है, देखिए 7:14 का फ़ुटनोट।

2 अंधेरे में चलनेवाली कौम ने एक तेज रौशनी देखी, मौत के साये में डूबे हुए मुल्क के बाशिंदों पर रौशनी चमकी। 3 तुने कौम को बढ़ाकर उसे बड़ी खुशी दिलाई है। तेरे हज़र वह यों खुशी मनाते हैं जिस तरह फसल काटते और लूट का माल बाँटते वक्त मनाई जाती है। 4 तुने अपनी कौम को उस दिन की तरह छुटकारा दिया जब तुने मिदियान को शिकस्त दी थी। उसे दबानेवाला जुआ टूट गया, और उस पर ज़ुल्म करनेवाले की लाठी टुकड़े टुकड़े हो गई है। 5 ज़मीन पर जोर से मारे गए फ़ौजी जूते और खून में लतपत फ़ौजी वरदियों सब हवालाए-आतिश होकर भस्म हो जाएँगी।

6 क्योंकि हमारे हाँ बच्चा पैदा हुआ, हमें बेटा बख़्शा गया है। उसके कंधों पर हुकूमत का इख्तियार ठहरा रहेगा। वह अनोखा मुशीर, कबी ख़ुदा, अबदी बाप और सुलह-सलामती का शहज़ादा कहलाएगा। 7 उस की हुकूमत जोर पकड़ती जाएगी, और अमनो-अमान की इंतहा नहीं होगी। वह दाऊद के तख़्त पर बैठकर उस की सलतनत पर हुकूमत करेगा, वह उसे अदलो-इनसाफ से मज़बूत करके अब से अबद तक कायम रखेगा। रब्बुल-अफ़वाज की ग़ैर ही इसे अंजाम देगी।

### रब का गज़ब नाज़िल होगा

8 रब ने याक़ूब के खिलाफ पैग़ाम भेजा, और वह इसराईल पर नाज़िल हो गया है। 9 इसराईल और सामरिया के तमाम बाशिंदे इसे जल्द ही जान जाएँगे, हालाँकि वह इस वक्त बड़ी शेखी मारकर कहते हैं, 10 “बेशक हमारी इंटों की दीवारें गिर गई हैं, लेकिन हम उन्हें तराशे हुए पत्थरों से दुबारा तामीर कर लेंगे। बेशक हमारे अंजीर-तूत के दरख़्त कट गए हैं, लेकिन कोई बात नहीं, हम उनकी जगह देवार के दरख़्त लगा लेंगे।” 11 लेकिन रब इसराईल के दुश्मन रज़ीन को तकवियत देकर उसके खिलाफ भेजेगा बल्कि इसराईल के तमाम दुश्मनों को उस पर हमला करने के लिए उभारेगा। 12 शाम के फ़ौजी मशरिक से और फ़िलिस्ती मग़रिब से मुँह फाड़कर इसराईल को हडप कर लेंगे। ताहम रब का गज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

13 क्योंकि इसके बाबुज़द भी लोग सज़ा देनेवाले के पास वापस नहीं आएँगे और रब्बुल-अफ़वाज के तालिब नहीं होंगे। 14 नतीजे में रब एक ही दिन में इसराईल का न सिर्फ़ सर बल्कि उस की दुम भी काटेगा, न सिर्फ़ खज़र की शानदार शाख़ बल्कि मामूली-सा सरकंडा भी तोड़ेगा। 15 बुज़ुर्ग और असरो-रसूखवाले इसराईल का सर है जबकि झूटी तालीम देनेवाले नबी उस की दुम है। 16 क्योंकि कौम के राहनुमा लोगों को ग़लत राह पर ले गए हैं, और जिनकी राहनुमाई वह कर रहे हैं उनके दिमाग में फ़ुत्ूर आ गया है। 17 इसलिए रब न कौम के जवानों से खुश होगा, न यतीमों और बेवाओ पर रहम करेगा। क्योंकि सबके सब बेदीन और शरीर हैं, हर मुँह कुफ़र बकता है। ताहम रब का गज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

18 क्योंकि उनकी बेदीनी की भडकती हुई आग काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटोरे भस्म कर देती है, बल्कि गुंजान जंगल भी उस की ज़द में आकर धुँएँ के काले बादल छोड़ता है। 19 रब्बुल-अफ़वाज के गज़ब से मुल्क झुलस जाएगा और उसके बाशिंदे आग का लुक्रमा बन जाएँगे। यहाँ तक कि कोई भी अपने भाई पर तरस नहीं खाएगा। 20 और गो हर एक दाई तरफ़ मुड़कर सब कुछ हडप कर जाए तो भी भूका रहेगा, गो बाई तरफ़ सूख करके सब कुछ निगल जाए तो भी सेर नहीं होगा। हर एक अपने पड़ोसी को खाएगा, 21 मनस्सी इफ़राईम को और इफ़राईम मनस्सी को। और दोनों मिलकर यहदाह पर हमला करेंगे। ताहम रब का गज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

## 10

1 तुम पर अफ़सोस जो ग़लत कवानीन सादिर करते और ज़ालिम फ़तवे देते हो 2 ताकि गरीबों का हक़ मारो और मज़लूमों के हुकूक पामाल करो। बेवाएँ तुम्हारा शिकार होती हैं, और तुम यतीमों को लूट लेते हो। 3 लेकिन अदालत के दिन तुम क्या करोगे, जब दूर दूर से ज़बरदस्त तफ़ान तुम पर आन पड़ेगा तो तुम मदद के लिए किसके पास भागोगे और अपना मालो-दौलत कहाँ महफूज़ रख छोड़ोगे? 4 जो झुककर कैदी न बने वह गिरकर हलाक हो जाएगा। ताहम रब का गज़ब ठंडा नहीं होगा बल्कि उसका हाथ मारने के लिए उठा ही रहेगा।

### असूर की भी अदालत होगी

5 असूर पर अफ़सोस जो मेरे गज़ब का आला है, जिसके हाथ में मेरे कहर की लाठी है। 6 मैं उसे एक बेदीन कौम के खिलाफ भेज रहा हूँ, एक कौम के खिलाफ जो मुझे गुस्सा दिलाती है। मैंने असूर को हुक्म दिया है कि उसे लूटकर गली की कीचड़ की तरह पामाल कर।

7 लेकिन उसका अपना इरादा फ़रक़ है। वह ऐसी सोच नहीं रखता बल्कि सब कुछ तबाह करने पर तुला हुआ है, बहुत कौमों को नेस्तो-नाबूद करने पर आमादा है। 8 वह फ़ख़र करता है, “मेरे तमाम अफ़सर तो बादशाह हैं। 9 फिर हमारी फ़ुत्ूहात पर गौर करो। करकिमीस, कलनो, अरफ़ाद, हमात, दमिशक और सामरिया जैसे तमाम शहर यके बाद दीगरे मेरे क़ब्ज़े में आ

गाए हैं। 10 मैंने कई सलतनतों पर काबू पा लिया है जिनके बुत यरूशलम और सामरिया के बुतों से कहीं बेहतर थे। 11 सामरिया और उसके बुतों को मैं बरबाद कर चुका हूँ, और अब मैं यरूशलम और उसके बुतों के साथ भी ऐसा ही करूँगा!”

12 लेकिन कोहे-सिय्यून पर और यरूशलम में अपने तमाम मकासिद पूरे करने के बाद रब फरमाएगा, “मैं शाहे-असूर को भी सजा दूँगा, क्योंकि उसके मगरूर दिल से कितना बुरा काम उभर आया है, और उस की आँखें कितने गुरूर से देखती हैं। 13 वह शेखी मारकर कहता है, ‘मैंने अपने ही ज़ोर-बाज़ और हिकमत से यह सब कुछ कर लिया है, क्योंकि मैं समझदार हूँ। मैंने क्रौमों की हद्द खत्म करके उनके खजानों को लूट लिया और ज़बरदस्त सॉड की तरह उनके बादशाहों को मार मारकर खाक में मिला दिया है। 14 जिस तरह कोई अपना हाथ घोंसले में डालकर अंडे निकाल लेता है उसी तरह मैंने क्रौमों की दौलत छीन ली है। आम आदमी परिदों को भगाकर उनके छोड़े हुए अंडे इकट्ठे कर लेता है जबकि मैंने यही सुलूक दुनिया के तमाम ममालिक के साथ किया। जब मैं उन्हें अपने कब्जे में लाया तो एक ने भी अपने परों को फड़फड़ाने या चोंच खोलकर ची ची करने की जुरत न की।”

15 लेकिन क्या कुल्हाड़ी उसके सामने शेखी बघारती जो उसे चलाता है? क्या आरी उसके सामने अपने आप पर फरख करती जो उसे इस्तेमाल करता है? यह उतना ही नामुमकिन है जितना यह कि लाठी पकड़नेवाले को घुमाए या डंडा आदमी को उठाए।

16 चुनौचे कादिर-मुतलक रब्बूल-अफवाज असूर के मोटे-ताजे फौजियों में एक मरज़ फैला देगा जो उनके जिस्मों को रफ़ता रफ़ता ज़ाया करेगा। असूर की शानो-शौकत के नीचे एक भडकती हुई आग लगाई जाएगी। 17 उस वक़्त इसराईल का नूर आग और इसराईल का कुदूस शोला बनकर असूर की काँटेदार झाड़ियों और ऊँटकटारों को एक ही दिन में भस्म कर देगा। 18 वह उसके शानदार जंगलों और बागों को मुकम्मल तौर पर तबाह कर देगा, और वह मरीज़ की तरह घुल घुलकर ज़ायल हो जाएगा। 19 जंगलों के इतने कम दरख्त बचेगे कि बच्चा भी उन्हें गिनकर किताब में दर्ज कर सकेगा।

### इसराईल का छोटा-सा हिस्सा बच जाएगा

20 उस दिन से इसराईल का बकिया यानी याकूब के घराने का बचा-खुचा हिस्सा उस पर मज़ीद इनहिसार नहीं करेगा जो उसे मारता रहा था, बल्कि वह पूरी वफ़ादारी से इसराईल के कुदूस, रब पर भरोसा रखेगा। 21 बकिया वापस आएगा, याकूब का बचा-खुचा हिस्सा कवी खुदा के हज़ूर लौट आएगा। 22 ऐ इसराईल, गो तू साहिल पर की रेत जैसा बेशमार क्यों न हो तो भी सिर्फ़ एक बचा हुआ हिस्सा वापस आएगा। तेरे बरबाद होने का फैसला हो चुका है, और इनसाफ़ का सैलाब मुल्क पर आनेवाला है। 23 क्योंकि इसका अटल फैसला हो चुका है कि कादिर-मुतलक रब्बूल-अफवाज पूरे मुल्क पर हलाकत लाने को है।

24 इसलिए कादिर-मुतलक रब्बूल-अफवाज फ़रमाता है, “ऐ सिय्यून में बसनेवाली मेरी क्रौम, असूर से मत डरना जो लाठी से तुझे मारता है और तेरे खिलाफ़ लाठी यों उठाता है जिस तरह पहले मिसर किया करता था। 25 मेरा तुझ पर गुरूसा जल्द ही ठंडा हो जाएगा और मेरा गज़ब असूरियों पर नाज़िल होकर उन्हें ख़त्म करेगा।” 26 जिस तरह रब्बूल-अफवाज ने मिदियानियों को मारा जब जिदौन ने ओरेब की चटान पर उन्हें शिकस्त दी उसी तरह वह असूरियों को भी कोड़े से मारेगा। और जिस तरह रब ने अपनी लाठी मसा के ज़रीए समुंदर के ऊपर उठाई और नतीजे में मिसर की फौज उसमें डूब गई बिलकुल उसी तरह वह असूरियों के साथ भी करेगा। 27 उस दिन असूर का बोझ तेरे कंधों पर से उतर जाएगा, और उसका जुआ तेरी गरदन पर से दूर होकर टूट जाएगा।

### यरूशलम की तरफ़ फ़ातेह की तरक्की

फ़ातेह ने यशीमोन की तरफ़ से चढ़कर 28 ऐयात पर हमला किया है। उसने मिजरोन में से गुज़रकर मिकमास में अपना लशकरी सामान छोड़ रखा है। 29 दर्र को पार करके वह कहते हैं, “आज हम रात को जिबा में गुज़रेंगे।” रामा थरथरा रहा और साऊल का शहर जिविया भाग गया है। 30 ऐ जल्लीम बेटी, जोर से चीखें मार! ऐ लैसा, ध्यान दे! ऐ अनतोत, उसे जवाब दे! 31 मदमीना फ़रार हो गया और जेबीम के बाशिंदों ने दूसरी जगहों में पनाह ली है। 32 आज ही फ़ातेह नोब के पास स्क्कर सिथ्यून बेटी के पहाड़ यानी कोहे-यरूशलम के ऊपर हाथ हिलाएगा। \*

33 देखो, कादिर-मुतलक रब्बूल-अफवाज बड़े जोर से शाखों को तोड़नेवाला है। तब ऊँचे ऊँचे दरख्त कटकर गिर जाएंगे, और जो सरफ़राज़ हैं उन्हें खाक में मिलाया जाएगा। 34 वह कुल्हाड़ी लेकर घने जंगल को काट डालेगा बल्कि लुबनान भी जोरावर के हाथों गिर जाएगा।

\* 10:32 एक और मुमकिनता तरजुमा : आज ही फ़ातेह नोब के पास स्क्कर कोहे-यरूशलम के ऊपर हाथ हिलाएगा ताकि उसे बड़ा बनाए।



## 11

मसीह की पुरअमन सलतनत

1 यस्सी \* के मुह में से कोपल फूट निकलेगी, और उस की बची हुई जड़ों से शाख निकलकर फल लाएगी। 2 रब का रूह उस पर ठहरेगा यानी हिकमत और समझ का रूह, मशवरत और कुव्वत का रूह, इरफान और रब के खौफ का रूह। 3 रब का खौफ उसे अजीज होगा। न वह दिखाने की बिना पर फैसला करेगा, न सुनी-सुनाई बातों की बिना पर फतवा देगा 4 बल्कि इनसाफ से बेबसों की अदालत करेगा और गैरजानिबदारी से मुल्क के मुसीबतजदों का फैसला करेगा। अपने कलाम की लाठी से वह जमीन को मारेगा और अपने मुँह की फूँक से बेदीन को हलाक करेगा। 5 वह रास्तबाजी के पटके और वफादारी के जेरजामे से मुल्बस रहेगा।

6 भेड़िया उस वक्त भेड़ के बच्चे के पास ठहरेगा, और चीता भेड़ के बच्चे के पास आराम करेगा। बछड़ा, जवान शेरबबर और मोटा-ताजा बैल मिलकर रहेंगे, और छोटा लड़का उन्हें हौककर सँभालेगा। 7 गाय रीछ के साथ चरेगी, और उनके बच्चे एक दूसरे के साथ आराम करेंगे। शेरबबर बैल की तरह भूसा खाएगा। 8 शीरखार बच्चा नाग की बाँबी के करीब खेलेगा, और जवान बच्चा अपना हाथ जहरीले साँप के बिल में डालेगा।

9 मेरे तमाम मुकद्दस पहाड़ पर न गलत और न तबाहकून काम किया जाएगा। क्योंकि मुल्क रब के इरफान से यों मामू होगा जिस तरह समुंदर पानी से भरा रहता है। 10 उस दिन यस्सी † की जड़ से फूटी हुई कोपल उममतों के लिए झंडा होगा। क्रौमें उस की तालिब होंगी, और उस की सुकूनतगाह जलाली होगी।

रब अपनी क्रौम को वापस लाएगा

11 उस दिन रब एक बार फिर अपना हाथ बढ़ाएगा ताकि अपनी क्रौम का वह बचा-खुचा हिस्सा दुबारा हासिल करे जो अमूर, शिमाली और जुन्बी मिसर, एथोपिया, ऐलाम, बाबल, हमात और साहिली इलाकों में मुंतशिर होगा। 12 वह क्रौमों के लिए झंडा गाड़कर इमराईल के जिलावतनों को इकठ्ठा करेगा। हाँ, वह यहदाह के बिखरे अफराद को दुनिया के चारों कोनों से लाकर जमा करेगा। 13 तब इमराईल का हसद खत्म हो जाएगा, और यहदाह के दुश्मन नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे। न इमराईल यहदाह से हसद करेगा, न यहदाह इमराईल से दुश्मनी रखेगा। 14 फिर दोनों मगरिब में फिलिस्ती मुल्क पर झपट पड़ेंगे और मिलकर मशरिफ के बाशिंदों को लूट लेंगे। अदोम और मोआब उनके कब्जे में आएँगे, और अमोन उनके ताबे हो जाएँगा। 15 रब बहरे-कुलजुम को खूश करेगा और साथ साथ दरियाए-फुरात के ऊपर हाथ हिलाकर उस पर जोरदार हवा चलाएगा। तब दरिया सात ऐसी नहरों में बंट जाएगा जो पैदल ही पार की जा सकेंगी। 16 एक ऐसा रास्ता बनेगा जो रब के बचे हुए अफराद को अमूर से इमराईल तक पहुँचाएगा, बिलकुल उस रास्ते की तरह जिसने इमराईलियों को मिसर से निकलते वक़्त इमराईल तक पहुँचाया था।

## 12

बचे हुआ की हम्दो-सना

1 उस दिन तुम गीत गाओगे,

“ए रब, मैं तेरी सताइश करूँगा! यकीनन तू मुझसे नाराज़ था, लेकिन अब तेरा ग़ज़ब मुझ पर से दूर हो जाए और तू मुझे तसल्ली दे।

2 अल्लाह मेरी नजात है। उस पर भरोसा रखकर मैं दहशत नहीं खाऊँगा। क्योंकि रब खुदा मेरी कुव्वत और मेरा गीत है, वह मेरी नजात बन गया है।”

3 तुम शादमानी से नजात के चश्मों से पानी भरोगे।

4 उस दिन तुम कहोगे, “रब की सताइश करो! उसका नाम लेकर उसे पुकारो! जो कुछ उसने किया है दुनिया को बताओ, उसके नाम की अज़मत का एलान करो।

5 रब की तमजीद का गीत गाओ, क्योंकि उसने ज़बरदस्त काम किया है, और इसका इल्म पूरी दुनिया तक पहुँचे।

6 ऐ यस्शलम की रहनेवाली, शादियाना बजाकर खुशी के नारे लगा! क्योंकि इमराईल का कुद्दस अज़ीम है, और वह तेरे दरमियान ही सुकूनत करता है।”

\* 11:1 यस्सी से मुराद हज़रत दाऊद की नसल है (यस्सी हज़रत दाऊद का बाप था)।

† 11:10 यस्सी से मुराद हज़रत दाऊद की नसल है (यस्सी हज़रत दाऊद का बाप था)।

## 13

बाबल के खिलाफ़ एलान

1 दर्जे-ज़ैल बाबल के बारे में वह एलान है जो यसायाह बिन आमूस ने रोया में देखा।  
2 नंगे पहाड़ पर झंड़ा गाड़ दो। उन्हें बुलंद आवाज़ दो, हाथ हिलाकर उन्हें शरफ़ा के दरवाज़ों में दाखिल होने का हुक्म दो।<sup>3</sup> मैंने अपने मुक़द्दसीन को काम पर लगा दिया है, मैंने अपने सूरमाओं को जो मेरी अज़मत की खुशी मनाते हैं बुला लिया है ताकि मेरे ग़ज़ब का आलाए-कार बनें।

4 सुनो! पहाड़ों पर बड़े हज़म का शोर मच रहा है। सुनो! मुतअद्दिद ममालिक और जमा होनेवाली कौमों का गुल-गपाड़ा सुनाई दे रहा है। रब्बूल-अफ़वाज़ जंग के लिए फ़ौज जमा कर रहा है।<sup>5</sup> उसके फ़ौजी दूर-दराज़ इलाकों बल्कि आसमान की इंतहा से आ रहे हैं। क्योंकि रब अपने ग़ज़ब के आलात के साथ आ रहा है ताकि तमाम मुल्क को बरबाद कर दे।

6 वावैला करो, क्योंकि रब का दिन करीब ही है, वह दिन जब कादिर-मुतलक की तरफ़ से तबाही मचेगी।<sup>7</sup> तब तमाम हाथ बेहिसो-हरकत हो जाएंगे, और हर एक का दिल हिम्मत हार देगा।<sup>8</sup> दहशत उन पर छा जाएगी, और वह जान-कनी और दर्द-ज़ह की-सी गिरिफ्त में आकर जन्म देनेवाली औरत की तरह तड़पेंगे। एक दूसरे को डर के मारे धूर धूरकर उनके चेहरे आग की तरह तमतमा रहे होंगे।

9 देखो, रब का बेरहम दिन आ रहा है जब उसका कहर और शदीद ग़ज़ब नाज़िल होगा। उस वक़्त मुल्क तबाह हो जाएगा और गुनाहगार को उसमें से मिटा दिया जाएगा।<sup>10</sup> आसमान के सितारे और उनके झरमुट नहीं चमकेंगे, सूरज तुलू होते वक़्त तारीक ही रहेगा, और चाँद की रौशनी ख़त्म होगी।

11 मैं दुनिया को उस की बदकारी का अज़ और बेदीनों को उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा, मैं शोखों का घमंड ख़त्म कर दूँगा और ज़ालिमों का गुरुर खाक में मिला दूँगा।<sup>12</sup> लोग ख़ालिस सोने से कहीं ज़्यादा नायाब होंगे, इनसान ओफ़ीर के कीमती सोने की निसबत कहीं ज़्यादा कमयाब होगा।

13 क्योंकि आसमान रब्बूल-अफ़वाज़ के कहर के सामने काँप उठेगा, उसके शदीद ग़ज़ब के नाज़िल होने पर ज़मीन लरज़कर अपनी जगह से खिसक जाएगी।<sup>14</sup> बाबल के तमाम बाशिदे शिकारी के सामने दौड़नेवाले ग़ज़ाल और चरवाहे से महसूम भेड़-बकरियों की तरह इधर उधर भागकर अपने मुल्क और अपनी कौम में वापस आने की कोशिश करेंगे।<sup>15</sup> जो भी दुश्मन के काबू में आया उसे छेदा जाएगा, जिसे भी पकड़ा जाएगा उसे तलवार से मारा जाएगा।<sup>16</sup> उनके देखते देखते दुश्मन उनके बच्चों को ज़मीन पर पटख़ देगा और उनके घरों को लूटकर उनकी औरतों की इसमतदरी करेगा।

17 मैं मादियों को उन पर चढ़ा लाऊँगा, ऐसे लोगों को जिन्हें रिख़्त से नहीं आज़माया जा सकता, जो सोने-चाँदी की परवा ही नहीं करते।<sup>18</sup> उनके तीर नौज़वानों को मार देंगे। न वह शीरखारों पर तरस खाएँगे, न बच्चों पर रहम करेंगे।

बाबल जंगली जानवरों का घर बन जाएगा

19 अल्लाह बाबल को जो तमाम ममालिक का ताज और बाबलियों का खास फ़ख़र है रूए-ज़मीन पर से मिटा डालेगा। उस दिन वह सदूम और अमूरा की तरह तबाह हो जाएगा।<sup>20</sup> आइंदा उसे कभी दुबारा बसाया नहीं जाएगा, नसल-दर-नसल वह वीरान ही रहेगा। न बद् अपना तंबू वहाँ लगाएगा, और न गल्लाबान अपने रेवड़ उसमें ठहराएगा।<sup>21</sup> सिर्फ़ रेगिस्तान के जानवर खंडरात में जा बसेंगे। शहर के घर उनकी आवाज़ों से गूँज उठेंगे, उकाबी उल्लू वहाँ ठहरेंगे, और बकरानुमा जिन उसमें रक्स करेंगे।<sup>22</sup> जंगली कुत्ते उसके महलों में रोएँगे, और गीदड़ एशो-इशरत के कसरों में अपनी दर्द भरी आवाज़ें निकालेंगे। बाबल का खातमा करीब ही है, अब देर नहीं लगेगी।

## 14

इसराईली वापस आएँगे

1 क्योंकि रब याक़ूब पर तरस खाएगा, वह दुबारा इसराईलियों को चुनकर उन्हें उनके अपने मुल्क में बसा देगा। परदेसी भी उनके साथ मिल जाएँगे, वह याक़ूब के घराने से मुंसलिक हो जाएँगे।<sup>2</sup> दीगर कौमों इसराईलियों को लेकर उनके वतन में वापस पहुँचा देंगी। तब इसराईल का घराना इन परदेसियों को विरसे में पाएगा, और यह रब के मुल्क में उनके नौकर-नौकरानियों बनकर उनकी खिदमत करेंगे। जिन्होंने उन्हें जिलावतन किया था उन्हीं को वह जिलावतन किए रखेंगे, जिन्होंने उन पर जुल्म किया था उन्हीं पर वह हुक़मत करेंगे।<sup>3</sup> जिस दिन रब तुझे मुसीबत, बेचैनी और जालिमाना गुलामी से आराम देगा<sup>4</sup> उस दिन तू बाबल के बादशाह पर तंज़ का गीत गाएगा,

बाबल पर तंज़ का गीत

“यह कैसी बात है? जालिम नेस्तो-नाबूद और उसके हमले खत्म हो गए हैं।<sup>5</sup> रब ने बेदीनों की लाठी तोड़कर हुक्मरानों का वह शाही असा टुकड़े टुकड़े कर दिया है<sup>6</sup> जो तैश में आकर कौमों को मुसलसल मारता रहा और गुरसे से उन पर हुक्म करता, बेरहमी से उनके पीछे पड़ा रहा।<sup>7</sup> अब पूरी दुनिया को आरामो-सुकून हासिल हुआ है, अब हर तरफ ख़ुशी के नारे सुनाई दे रहे हैं।<sup>8</sup> ज़नीपर के दरख़्त और लुबनान के देवदार भी तेरे अंजाम पर ख़ुश होकर कहते हैं, ‘शुक्र है! जब से तू गिरा दिया गया कोई यहाँ चढ़कर हमें काटने नहीं आता।’

<sup>9</sup> पाताल तेरे उतरने के बाइस हिल गया है। तेरे इंतज़ार में वह मुरदा रूहों को हरकत में ला रहा है। वहाँ दुनिया के तमाम रईस और अक़वाम के तमाम बादशाह अपने तख़्तों से खड़े होकर तेरा इस्तक़बाल करेंगे।<sup>10</sup> सब मिलकर तुझे सकेहेंगे, ‘अब तू भी हम जैसा कमज़ोर हो गया है, तू भी हमारे बराबर हो गया है!’<sup>11</sup> तेरी तमाम शानो-शौकत पाताल में उतर गई है, तेरे सितार खामोश हो गए हैं। अब कीड़े तेरा गद्दा और केंचुए तेरा कम्बल होंगे।

<sup>12</sup> ऐ सिताराए-सुबह, ऐ इब्ने-सहर, तू आसमान से किस तरह गिर गया है! जिसने दीगर ममालिक को शिकस्त दी थी वह अब खुद पाश पाश हो गया है।<sup>13</sup> दिल में तूने कहा, ‘मैं आसमान पर चढ़कर अपना तख़्त अल्लाह के सितारों के ऊपर लगा लूँगा, मैं इंतहाई शिमाल में उस पहाड़ पर जहाँ देवता जमा होते हैं तख़तनशीन हूँगा।<sup>14</sup> मैं बादलों की बुलंदियों पर चढ़कर कादिर-मुलक के बिलकुल बराबर हो जाऊँगा।’<sup>15</sup> लेकिन तूने तो पाताल में उतारा जाएगा, उसके सबसे गहरे गढ़े में गिराया जाएगा।

<sup>16</sup> जो भी तुझ पर नज़र डालेगा वह गौर से देखकर पूछेगा, ‘क्या यही वह आदमी है जिसने ज़मीन को हिला दिया, जिसके सामने दीगर ममालिक काँप उठे?’<sup>17</sup> क्या इसी ने दुनिया को वीरान कर दिया और उसके शहरों को ढाकर कैदियों को घर वापस जाने की इजाज़त न दी?’

<sup>18</sup> दीगर ममालिक के तमाम बादशाह बड़ी इज़्जत के साथ अपने अपने मक़बरों में पड़े हुए हैं।<sup>19</sup> लेकिन तुझे अपनी कब्र से दूर किसी बेकार कौपल की तरह फेंक दिया जाएगा। तुझे मक़तूलों से ढँका जाएगा, उनसे जिनको तलवार से छेदा गया है, जो पथरीले गढ़ों में उतर गए हैं। तू पाँवों तले रौंदी हुई लाश जैसा होगा,<sup>20</sup> और तदफ़ीन के वक़्त तू दीगर बादशाहों से जा नहीं मिलेगा। क्योंकि तूने अपने मुल्क को तबाह और अपनी क़ौम को हलाक कर दिया है। चुनौचे अब से अबद तक इन बेदीनों की औलाद का ज़िक्र तक नहीं किया जाएगा।<sup>21</sup> इस आदमी के बेटों को फाँसी देने की जगह तैयार करो! क्योंकि उनके बापदादा का कुसर इतना संगीन है कि उन्हें मरना ही है। ऐसा न हो कि वह दुबारा उठकर दुनिया पर कब्ज़ा कर लें, कि रूए-ज़मीन उनके शहरों से भर जाए।”

### रब के हाथों बाबल का अंजाम

<sup>22</sup> रब्बूल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मैं उनके खिलाफ़ यों उठूँगा कि बाबल का नामो-निशान तक नहीं रहेगा। मैं उस की औलाद को रूए-ज़मीन पर से मिटा दूँगा, और एक भी नहीं बचने का।<sup>23</sup> बाबल खारपुश्ट का मसकन और दलदल का इलाका बन जाएगा, क्योंकि मैं खुद उसमें तबाही का झाड़ू फेर दूँगा।” यह रब्बूल-अफ़वाज का फ़रमान है।

### असुरी फ़ौज की तबाही

<sup>24</sup> रब्बूल-अफ़वाज ने क़सम खाकर फ़रमाया है, “यकीनन सब कुछ मेरे मनसूबे के मुताबिक ही होगा, मेरा इरादा ज़रूर पूरा हो जाएगा।<sup>25</sup> मैं असूर को अपने मुल्क में चकनाचूर कर दूँगा और उसे अपने पहाड़ों पर कुचल डालूँगा। तब उसका जुआ मेरी क़ौम पर से दूर हो जाएगा, और उसका बोझ उसके कंधों पर से उतर जाएगा।”<sup>26</sup> पूरी दुनिया के बारे में यह मनसूबा अटल है, और रब अपना हाथ तमाम कौमों के खिलाफ़ बढ़ा चुका है।<sup>27</sup> रब्बूल-अफ़वाज ने फ़ैसला कर लिया है, तो कौन इसे मनसूख करेगा? उसने अपना हाथ बढ़ा दिया है, तो कौन उसे रोकेगा?

### फिलिस्तियों का अंजाम करीब है

<sup>28</sup> ज़ैल का कलाम उस साल नाज़िल हुआ जब आख़ज बादशाह ने वफात पाई।

<sup>29</sup> ऐ तमाम फिलिस्ती मुल्क, इस पर ख़ुशी मत मना कि हमें मारनेवाली लाठी टूट गई है। क्योंकि सॉप की बची हुई जड़ से जहरीला सॉप फूट निकलेगा, और उसका फल शोलाफिशों उडनअज़दहा होगा।<sup>30</sup> तब ज़रूरतमंदों को चरगाह मिलेगी, और गरीब महफूज़ जगह पर आराम करेंगे। लेकिन तेरी जड़ को मैं काल से मार दूँगा, और जो बच जाएँ उन्हें भी हलाक कर दूँगा।

<sup>31</sup> ऐ शहर के दरवाजे, वावैला कर! ऐ शहर, जोर से चीखे मार! ऐ फिलिस्तियो, हिम्मत हारकर लड़खड़ाते जाओ। क्योंकि शिमाल से तुम्हारी तरफ़ धुआँ बढ़ रहा है, और उस की सफ़ों में पीछे रहनेवाला कोई नहीं है।<sup>32</sup> तो फिर हमारे पास

भेजे हुए कासिदों को हम क्या जवाब दें? यह कि रब ने सिय्यून को कायम रखा है, कि उस की कौम के मजलूम उसी में पनाह लेंगे।

## 15

### मोआब के अंजाम का एलान

1 मोआब के बारे में रब का फ़रमान :

एक ही रात में मोआब का शहर आर तबाह हो गया है। एक ही रात में मोआब का शहर कीर बरबाद हो गया है। 2 अब दीबोन के बाशिदे मातम करने के लिए अपने मंदिर और पहाड़ी कुरबानगहों की तरफ चढ़ रहे हैं। मोआब अपने शहरों नबू और मीदबा पर वावैला कर रहा है। हर सर मुंडा हुआ और हर दाढ़ी कट गई है। 3 गलियों में वह टाट से मुलबबस फिर रहे हैं, छतों पर और चौकों में सब रो रोकर आहो-बुका कर रहे हैं। 4 हसबोन और इलियाली मदद के लिए पुकार रहे हैं, और उनकी आवाज़ें यहज़ तक सुनाई दे रही हैं। इसलिए मोआब के मुसल्लह मर्द जंग के नारे लगा रहे हैं, गो वह अंदर ही अंदर कौप रहे हैं।

5 मेरा दिल मोआब को देखकर रो रहा है। उसके मुहाज़िरिन भागकर जुगर और इजलत-शलीशियाह तक पहुँच रहे हैं। लोग रो रोकर लूहीत की तरफ चढ़ रहे हैं, वह होरोनायम तक जानेवाले रास्ते पर चलते हुए अपनी तबाही पर गिर्याओ-ज़ारी कर रहे हैं। 6 निमरीम का पानी सूख गया है, घास झुलस गई है, तमाम हरियाली खत्म हो गई है, सब्ज़ाज़ारों का नामो-निशान तक नहीं रहा। 7 इसलिए लोग अपना सारा जमाशुदा सामान समेटकर वादीए-सफ़ेदा को उबर कर रहे हैं। 8 चीखें मोआब की हृदद तक गूँज रही हैं, हाय हाय की आवाज़ें इजलायम और बैर-एलीम तक सुनाई दे रही हैं। 9 लेकिन गो दीमोन की नहर खून से सुर्ख हो गई है, ताहम मैं उस पर मज़ीद मुसीबत लाऊँगा। मैं शेरबबर भेजूँगा जो उन पर भी धावा बोलेंगे जो मोआब से बच निकले होंगे और उन पर भी जो मुल्क में पीछे रह गए होंगे।

## 16

### मोआब इसराइलियों से मदद माँगेगा

1 मुल्क का जो हुक्मरान रेगिस्तान के पार सिला में है उस की तरफ से सिय्यून बेटी के पहाड़ पर मेंढा भेज दो। 2 मोआब की बेटीयों घोंसले से भगाए हुए परिदों की तरह दरियाए-अरनोन के पायाब मकामों पर इधर उधर फड़फड़ा रही हैं। 3 “हमें कोई मशवरा दे, कोई फ़ैसला पेश कर। हम पर साया डाल ताकि दोपहर की तपती धूप हम पर न पड़े बल्कि रात जैसा अंधेरा हो। मफ़्स्रों को छुपा दे, दुश्मन को पनाहगुज़ीनों के बारे में इतला न दे। 4 मोआबी मुहाज़िरों को अपने पास ठहरने दे, मोआबी मफ़्स्रों के लिए पनाहगाह हो ताकि वह हलाक के हाथ से बच जाएँ।”

लेकिन जालिम का अंजाम आनेवाला है। तबाही का सिलसिला खत्म हो जाएगा, और कुचलनेवाला मुल्क से गायब हो जाएगा। 5 तब अल्लाह अपने फ़ज़ल से दाऊद के घराने के लिए तख़्त कायम करेगा। और जो उस पर बैठेगा वह वफ़ादारी से हुक्मत करेगा। वह इनसाफ़ का तालिब रहकर अदालत करेगा और रास्ती कायम रखने में माहिर होगा।

### मोआब की मुनासिब सज़ा पर अफ़सोस

6 हमने मोआब के तकब्बुर के बारे में सुना है, क्योंकि वह हद से ज़्यादा मुतकब्बिर, मग़्स्र, घमंडी और शोखचश्म है। लेकिन उस की डींगें अबस हैं।

7 इसलिए मोआबी अपने आप पर आहो-ज़ारी कर रहे, सब मिलकर आहें भर रहे हैं। वह सिसक सिसककर कीर-हरासत की किशमिश की टिकियाँ याद कर रहे हैं, उनका निहायत बुरा हाल हो गया है। 8 हसबोन के बाग़ मुरझा गए, सिबमाह के अंगूर खत्म हो गए हैं। पहले तो उनकी अनोखी बेलें याज़ेर बल्कि रेगिस्तान तक फैली हुई थीं, उनकी कौपलें समुंदर को भी पार करती थीं। लेकिन अब गैरकौम हुक्मरानों ने यह उम्दा बेलें तोड़ डाली हैं। 9 इसलिए मैं याज़ेर के साथ मिलकर सिबमाह के अंगूरों के लिए आहो-ज़ारी कर रहा हूँ। ऐ हसबोन, ऐ इलियाली, तुम्हारी हालत देखकर मेरे बेहद आँसू बह रहे हैं। क्योंकि जब तुम्हारा फल पक गया और तुम्हारी फ़सल तैयार हुई तब जंग के नारे तुम्हारे इलाके में गूँज उठे। 10 अब खुशी-ओ-शादमानी बागों से गायब हो गई है, अंगूर के बागों में गीत और खुशी के नारे बंद हो गए हैं। कोई नहीं रहा जो हौज़ों में अंगूर को रौंदकर रस निकाले, क्योंकि मैंने फ़सल की खुशियाँ खत्म कर दी हैं।

11 मेरा दिल सरोद के मातमी सुर निकालकर मोआब के लिए नोहा कर रहा है, मेरी जान कीर-हरासत के लिए आहें भर रही है। 12 जब मोआब अपनी पहाड़ी कुरबानगाह के सामने हाज़िर होकर सिजदा करता है तो बेकार मेहनत करता है। जब वह पूजा करने के लिए अपने मंदिर में दाखिल होता है तो फ़ायदा कोई नहीं होता।

13 रब ने माज़ी में इन बातों का एलान किया। 14 लेकिन अब वह मज़ीद फ़रमाता है, “तीन साल के अंदर अंदर \* मोआब की तमाम शानो-शौकत और धूमधाम जाती रहेगी। जो थोड़े-बहुत बचेंगे, वह निहायत ही कम होंगे।”

## 17

शाम और इसराईल की तबाही

1 दमिश्क शहर के बारे में अल्लाह का फ़रमान :

“दमिश्क मिट जाएगा, मलबे का ढेर ही रह जाएगा। 2 अरोईर के शहर भी वीरानो-सुनसान हो जाएंगे। तब रेवड़ ही उनकी गलियों में चरेगे और आराम करेंगे। कोई नहीं होगा जो उन्हें भगाए। 3 इसराईल के किलाबंद शहर नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे, और दमिश्क की सलतनत जाती रहेगी। शाम के जो लोग बच निकलेंगे उनका और इसराईल की शानो-शौकत का एक ही अंजाम होगा।” यह है रब्बुल-अफवाज का फ़रमान।

4 “उस दिन याकूब की शानो-शौकत कम और उसका मोटा-ताज़ा जिस्म लागर होता जाएगा। 5 फ़सल की कटाई की-सी हालत होगी। जिस तरह काटनेवाला एक हाथ से गंदुम के डंठल को पकड़कर दूसरे से बालों को काटता है उसी तरह इसराईलियों को काटा जाएगा। और जिस तरह वादीए-फ़ाईम में गरीब लोग फ़सल काटनेवालों के पीछे पीछे चलकर बची हुई बालियों को चुनते हैं उसी तरह इसराईल के बचे हुए लोगों को चुना जाएगा। 6 ताहम कुछ न कुछ बचा रहेगा, उन दो-चार जैतूनों की तरह जो चुनते वक़्त दरख़्त की चोटी पर रह जाते हैं। दरख़्त को डंडे से झाड़ने के बावजूद कहीं न कहीं चंद एक लगे रहेंगे।” यह है रब, इसराईल के खुदा का फ़रमान।

7 तब इनसान अपनी नज़र अपने खालिक की तरफ उठाएगा, और उस की आँखें इसराईल के कूदूस की तरफ देखेंगी।

8 आइंदा न वह अपने हाथों से बनी हुई कुरबानगाहों को तकेगा, न अपनी उँगलियों से बने हुए यसरत देवी के खंबों और बख़र की कुरबानगाहों पर ध्यान देगा।

9 उस वक़्त इसराईली अपने किलाबंद शहरों को यों छोड़ेंगे जिस तरह कनानियों ने अपने जंगलों और पहाड़ों की चोटियों को इसराईलियों के आगे आगे छोड़ा था। सब कुछ वीरानो-सुनसान होगा। 10 अफ़सोस, तू अपनी नजात के खुदा को भूल गया है। तुझे वह चटान याद न रही जिस पर तू पनाह ले सकता है। चुनौचे अपने प्यारे देवताओं के बाग़ लगाता जा, और उनमें परदेसी अंगूर की कलमें लगाता जा। 11 शायद ही वह लगाते वक़्त तेज़ी से उगने लगे, शायद ही उनके फूल उसी सुबह खिलने लगे। तो भी तेरी मेहनत अबस है। तू कभी भी उनके फल से लुत्फ़अंदोज़ नहीं होगा बल्कि महज़ बीमारी और लाइलाज दर्द की फ़सल काटेगा।

दीगर कौमों के बेकार हमले

12 बेशमार कौमों का शोर-शराबा सुनो जो तुफानी समुंदर की-सी ठाठें मार रही हैं। उममतों का गुल-गपाड़ा सुनो जो थपेड़े मारनेवाली मौजों की तरह गरज रही हैं। 13 क्योंकि गैरकौम पहाड़नुमा लहरों की तरह मुतलातिम हैं। लेकिन रब उन्हें डौंटगा तो वह दूर दूर भाग जाएंगी। जिस तरह पहाड़ों पर भूसा हवा के झोंकों से उड़ जाता और लुढ़कबूटी आँधी में चक्कर खाने लगती है उसी तरह वह फ़रार हो जाएंगी। 14 शाम को इसराईल सख़्त घबरा जाएगा, लेकिन पौ फटने से पहले पहले उसके दुश्मन मार गए होंगे। यही हमें लूटनेवालों का नसीब, हमारी शारतगरी करनेवालों का अंजाम होगा।

## 18

एथोपिया की अदालत

1 फ़डफ़डाते बादबानों \* के मुल्क पर अफ़सोस! एथोपिया पर अफ़सोस जहाँ कृश के दरिया बहते हैं, 2 और जो अपने कासिदों को आबी नरसल की कशितियों में बिठाकर समुंदरी सफ़रों पर भेजता है। ऐ तेज़रौ कासिदो, लंबे कद और चिकनी-चूपड़ी जिल्दवाली कौम के पास जाओ। उस कौम के पास पहुँचो जिससे दीगर कौमों दूर-दराज़ इलाकों तक डरती हैं, जो जबरदस्ती सब कुछ पाँवों तले कुचल देती है, और जिसका मुल्क दरियाओं से बटा हुआ है।

3 ऐ दुनिया के तमाम बाशिंदो, ज़मीन के तमाम बसनेवालो! जब पहाड़ों पर झंड़ा गाढ़ा जाए तो उस पर ध्यान दो! जब नरसिंगा बजाया जाए तो उस पर गौर करो! 4 क्योंकि रब मुझसे हमकलाम हुआ है, “मैं अपनी सूकनतगाह से खामोशी से देखता रहूँगा। लेकिन मेरी यह खामोशी दोपहर की चिलचिलाती धूप या मौसमे-गरमा में धुंध के बादल की मानिंद होगी।”

5 क्योंकि अंगूर की फ़सल के पकने से पहले ही रब अपना हाथ बढ़ा देगा। फूलों के ख़त्म होने पर जब अंगूर पक रहे होंगे वह कौंपलों को छुरी से काटेगा, फैलती हुई शाखों को तोड़ तोड़कर उनकी काँट-छाँट करेगा। 6 यही एथोपिया की हालत

\* 16:14 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : मज़दूर के-से तीन साल के अंदर अंदर।

\* 18:1 एक और मुमकिन तरज़ुमा : फ़डफ़डाती टिफ़्तियों।

होगी। उस की लाशों को पहाड़ों के शिकारी परिदों और जंगली जानवरों के हवाले किया जाएगा। मौसम-गरमा के दौरान शिकारी परिदे उन्हें खाते जाएंगे, और सर्दियों में जंगली जानवर लाशों से सेर हो जाएंगे।

7 उस वक़्त लंबे कद और चिकनी-चुपड़ी जिल्दवाली यह क्रौम रब्बुल-अफ़वाज के हज़र तोहफ़ा लाएगी। हाँ, जिन लोगों से दीगर क्रौमों दूर-दराज़ इलाकों तक डरती हैं और जो ज़बरदस्ती सब कुछ पाँवों तले कुचल देते हैं वह दरियाओं से बटे हुए अपने मुल्क से आकर अपना तोहफ़ा सिथ्यून पहाड़ पर पेश करेंगे, वहाँ जहाँ रब्बुल-अफ़वाज का नाम सुकूनत करता है।

## 19

### मिसर की अदालत

1 मिसर के बारे में अल्लाह का फ़रमान :

रब तेज़री बादल पर सवार होकर मिसर आ रहा है। उसके सामने मिसर के बुत थरथरा रहे हैं और मिसर की हिम्मत टूट गई है। 2 "मैं मिसरियों को एक दूसरे के साथ लड़ने पर उकसा दूँगा। भाई भाई के साथ, पड़ोसी पड़ोसी के साथ, शहर शहर के साथ, और बादशाही बादशाही के साथ जंग करेगी। 3 मिसर की रूह मुज़तरिब हो जाएगी, और मैं उनके मनसूबों को दरहम-बरहम कर दूँगा। गो वह बुतों, मुरदों की रूहों, उनसे राबिता करनेवालों और किस्मत का हाल बतानेवालों से मशवरा करेंगे, 4 लेकिन मैं उन्हें एक जालिम मालिक के हवाले कर दूँगा, और एक सख्त बादशाह उन पर हुकूमत करेगा।" यह है कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान।

5 दरियाए-नील का पानी खत्म हो जाएगा, वह बिलकुल सूख जाएगा। 6 मिसर की नहरों से बद्बू फैलेगी बल्कि मिसर के नाले घटते घटते खुश्क हो जाएंगे। नरसल और सरकंडे मुरझा जाएंगे। 7 दरियाए-नील के दहाने तक जितनी भी हरियाली और फसलें किनारे पर उगती हैं वह सब पज़मुरदा हो जाएँगी और हवा में बिखरकर गायब हो जाएँगी। 8 मछेरें आहो-जारी करेंगे, दरिया में काँटा और जाल डालनेवाले घटते जाएंगे। 9 सन के रेशों से धागा बनानेवालों को शर्म आएगी, और जूलाहों का रंग फ़क पड़ जाएगा। 10 कपडा बनानेवाले सख्त मायूस होंगे, तमाम मजदूर दिल-बरदाशता होंगे।

11 जुअन के अफसर नासमझ ही हैं, फिरौन के दाना मुशीर उसे अहमकाना मशवरे दे रहे हैं। तुम मिसरी बादशाह के सामने किस तरह दावा कर सकते हो, "मैं दानिशमंदों के हलके में शामिल और कदीम बादशाहों का वारिस हूँ?" 12 ऐ फिरौन, अब तेरे दानिशमंद कहाँ हैं? वह मालूम करके तुझे बताएँ कि रब्बुल-अफ़वाज मिसर के साथ क्या कुछ करने का इरादा रखता है। 13 जुअन के अफसर अहमक बन बैठे हैं, मेफ़िस के बुजुर्गों ने धोका खाया है। उसके क़बायली सरदारों के फ़रेब से मिसर डगमगाने लगा है। 14 क्योंकि रब ने उनमें अबतरी की रूह डाल दी है। जिस तरह नशे में धुत शराबी अपनी कै में लड़खड़ाता रहता है उसी तरह मिसर उनके मशवरों से डौँवाँडोल हो गया है, खाह वह क्या कुछ क्यों न करे। 15 उस की कोई बात नहीं बनती, खाह सर हो या दुम, कोपल हो या तना।

16 मिसरी उस दिन औरतों जैसे कमज़ोर होंगे। जब रब्बुल-अफ़वाज उन्हें मारने के लिए अपना हाथ उठाएगा तो वह घबराकर काँप उठेंगे। 17 मुल्के-यहदाह मिसरियों के लिए शर्म का बाइस बनेगा। जब भी उसका ज़िक्र होगा तो वह दहशत खाएँगे, क्योंकि उन्हें वह मनसूबा याद आएगा जो रब ने उनके खिलाफ बाँधा है।

### मिसर, अस्ूर और इसराईल मिलकर इबादत करेंगे

18 उस दिन मिसर के पाँच शहर कनान की ज़बान अपनाकर रब्बुल-अफ़वाज के नाम पर कसम खाएँगे। उनमें से एक 'तबाही का शहर' कहलाएगा।\*

19 उस दिन मुल्के-मिसर के बीच में रब के लिए कुरबानागह मख़सूस की जाएगी, और उस की सरहद पर रब की याद में सतून खड़ा किया जाएगा। 20 यह दोनों रब्बुल-अफ़वाज की हुजूरी की निशानदेही करेंगे और गवाही देंगे कि वह मौजूद है। चुनौचे जब उन पर ज़ुल्म किया जाएगा तो वह चिल्लाकर उससे फ़रियाद करेंगे, और रब उनके पास नजातदहिदा भेज देगा जो उनकी खातिर लड़कर उन्हें बचाएगा। 21 यों रब अपने आपको मिसरियों पर जाहिर करेगा। उस दिन वह रब को जान लेंगे, और ज़बह और गल्ला की कुरबानियाँ चढ़ाकर उस की परस्तिश करेंगे। वह रब के लिए मन्तै मानकर उनको पूरा करेंगे। 22 रब मिसर को मारेगा भी और उसे शफ़ा भी देगा। मिसरी रब की तरफ रूज़ करेंगे तो वह उनकी इत्तिजाओं के जवाब में उन्हें शफ़ा देगा।

23 उस दिन एक पक्की सड़क मिसर को अस्ूर के साथ मुंसलिक कर देगी। अस्ूरी और मिसरी आजादी से एक दूसरे के मुल्क में आएँगे, और दोनों मिलकर अल्लाह की इबादत करेंगे। 24 उस दिन इसराईल भी मिसर और अस्ूर के इतहाद में

\* 19:18 गाल्लिन इससे मुराद सूरज का शहर यानी Heliopolis है।

शरीक होकर तमाम दुनिया के लिए बरकत का बाइस होगा। 25 क्योंकि रब्बूल-अफ्रवाज उन्हें बरकत देकर फरमाएगा, “मेरी क्रौम मिसर पर बरकत हो, मेरे हाथों से बने मुल्क अस्सूर पर मेरी बरकत हो, मेरी मीरास इसराईल पर बरकत हो।”

## 20

यसायाह की बरहनगी और मिसर और एथोपिया का अंजाम

1 एक दिन असूरी बादशाह सरज़ून ने अपने कर्मांडर को अशदूद से लड़ने भेजा। जब असूरियों ने उस फिलिस्ती शहर पर हमला किया तो वह उनके कब्जे में आ गया।

2 तीन साल पहले रब यसायाह बिन आमूस से हमकलाम हुआ था, “जा, टाट का जो लिबास तू पहने रहा है उतार। अपने जूतों को भी उतार।” नबी ने ऐसा ही किया और इसी हालत में फिरता रहा था। 3 जब अशदूद असूरियों के कब्जे में आ गया तो रब ने फरमाया, “मेरे खादिम यसायाह को बरहना और नंगे पाँव फिरते तीन साल हो गए हैं। इससे उसने अलामती तौर पर इसकी निशानदेही की है कि मिसर और एथोपिया का क्या अंजाम होगा। 4 शाहे-अस्सूर मिसरी कैदियों और एथोपिया के जिलावतनों को इसी हालत में अपने आगे आगे हॉकिगा। नौजवान और बुजुर्ग सब बरहना और नंगे पाँव फिरेंगे, वह कमर से लेकर पाँव तक बरहना होंगे। मिसर कितना शर्मिदा होगा।

5 यह देखकर फिलिस्ती दहशत खाएँगे। उन्हें शर्म आएगी, क्योंकि वह एथोपिया से उम्मीद रखते और अपने मिसरी इतहादी पर फखर करते थे। 6 उस वक़्त इस साहिली इलाके के बाशिंदे कहेंगे, ‘देखो उन लोगों की हालत जिनसे हम उम्मीद रखते थे। उन्हीं के पास हम भागकर आए ताकि मदद और असूरी बादशाह से छुटकारा मिल जाए। अगर उनके साथ ऐसा हुआ तो हम किस तरह बचेंगे?’”

## 21

बाबल की तबाही का एलान

1 दलदल के इलाके \* के बारे में अल्लाह का फरमान :

जिस तरह दशते-नजब में तुफान के तेज़ झोंके बार बार आ पड़ते हैं उसी तरह आफत बयाबान से आएगी, दुश्मन दहशतनाक मुल्क से आकर तुझ पर टूट पड़ेगा। 2 रब ने हौलनाक रोया में मुझ पर जाहिर किया है कि नमकहराम और हलाक हरकत में आ गए हैं। ऐ ऐलाम चल, बाबल पर हमला कर! ऐ मादी उठ, शहर का मुहासरा कर! मैं होने दूँगा कि बाबल के मजलूमों की आँहें बंद हो जाएँगी।

3 इसलिए मेरी कमर शिष्ट से लरजने लगी है। दर्द-जह में मुब्तला औरत की-सी घबराहट मेरी अंतडियों को मरोड़ रही है। जो कुछ मैंने सुना है उससे मैं तडप उठा हूँ, और जो कुछ मैंने देखा है, उससे मैं हवासबाख़ता हो गया हूँ। 4 मेरा दिल धडक रहा है, कपकपी मुझ पर तारी हो गई है। पहले शाम का धुँधलका मुझे प्यारा लगता था, लेकिन अब रोया को देखकर वह मेरे लिए दहशत का बाइस बन गया है।

5 ताहम बाबल में लोग मेज़ लगाकर कालीन बिछा रहे हैं। बेपरवाई से वह खाना खा रहे और मैं पै पी रहे हूँ। ऐ अफसरो, उठो! अपनी ढालों पर तेल लगाकर लड़ने के लिए तैयार हो जाओ!

6 रब ने मुझे हुकम दिया, “जाकर पहरेदार खड़ा कर दे जो तुझे हर नज़र आनेवाली चीज़ की इतला दे। 7 ज्योंही दो घोड़ोंवाले रथ या गाँधों और ऊँटों पर सवार आदमी दिखाई दें तो खबरदार! पहरेदार पूरी तवज्जुह दे।”

8 तब पहरेदार शेरबबर की तरह पुकार उठा, “मेरे आका, रोज़ बरोज़ मैं पूरी वफ़ादारी से अपनी बुज़ीं पर खड़ा रहा हूँ, और रातों में तैयार रहकर यहाँ पहरादारी करता आया हूँ। 9 अब वह देखो! दो घोड़ोंवाला रथ आ रहा है जिस पर आदमी सवार है। अब वह जवाब में कह रहा है, ‘बाबल गिर गया, वह गिर गया है! उसके तमाम बुत चकनाचूर होकर ज़मीन पर बिखर गए हैं!’”

10 ऐ गाहने की जगह पर कुचली हुई † मेरी क्रौम! जो कुछ इसराईल के खूदा, रब्बूल-अफ्रवाज ने मुझे फरमाया है उसे मैंने तुम्हें सुना दिया है।

अदोम की हालत : सुबह होने में कितनी देर है?

11 अदोम के बारे में रब का फरमान :

\* 21:1 यानी बाबल। † 21:10 लफ़्ज़ी तरजूमा : गाही गई।

सईर के पहाड़ी इलाके से कोई मुझे आवाज देता है, “ऐ पहरेदार, सुबह होने में कितनी देर बाकी है? ऐ पहरेदार, सुबह होने में कितनी देर बाकी है?”<sup>12</sup> पहरेदार जवाब देता है, “सुबह होनेवाली है, लेकिन रात भी। अगर आप मज्जीद पृच्छना चाहें तो दुबारा आकर पृच्छ लें।”

### मुल्के-अरब का अंजाम

13 मुल्के-अरब के बारे में रब का फरमान : ऐ ददानियों के काफिलो, मुल्के-अरब के जंगल में रात गुजारो।<sup>14</sup> ऐ मुल्के-तैमा के बाशिंदो, पानी लेकर प्यासों से मिलने जाओ! पनाहगुजीनों के पास जाकर उन्हें रोटी खिलाओ!<sup>15</sup> क्योंकि वह तलवार से लैस दुश्मन से भाग रहे हैं, ऐसे लोगों से जो तलवार थामे और कमान ताने उनसे सख्त लड़ाई लड़े हैं।

16 क्योंकि रब ने मुझसे फरमाया, “एक साल के अंदर अंदर S क्रीदार की तमाम शानो-शौकत खत्म हो जाएगी।<sup>17</sup> क्रीदार के ज़बरदस्त तीरअंदाज़ों में से थोड़े ही बच पाएंगे।” यह रब, इसराईल के ख़ुदा का फरमान है।

## 22

### यस्शलम का अंजाम

1 रोया की वादी यस्शलम के बारे में रब का फरमान :

क्या हुआ है? सब छतों पर क्यों चढ़ गए हैं?<sup>2</sup> हर तरफ़ शोर-शराबा मच रहा है, पूरा शहर बगालें बजा रहा है। यह कैसी बात है? तैरे मकतूल न तलवार से, न मैदाने-जंग में मरे।<sup>3</sup> क्योंकि तैरे तमाम लीडर मिलकर फ़रार हुए और फिर तीर चलाए बौर पकड़े गए। बाकी जितने लोग तुझमें थे वह भी दूर भागना चाहते थे, लेकिन उन्हें भी कैद किया गया।

4 इसलिए मैंने कहा, “अपना मुँह मुझसे फेरकर मुझे ज़ार ज़ार रोने दो। मुझे तसल्ली देने पर बज़िद न रहो जबकि मेरी कौम तबाह हो रही है।”<sup>5</sup> क्योंकि कादिर-मुतलक रब्बूल-अफ़वाज रोया की वादी पर हौलनाक दिन लाया है। हर तरफ़ घबराहट, कुचले हुए लोग और अबतरी नज़र आती है। शहर की चारदीवारी टूटने लगी है, पहाड़ों में चीखें गूँज रही हैं।

6 ऐलाम के फ़ौजी अपने तरकश उठाकर रथों, आदमियों और घोड़ों के साथ आ गए हैं। क्रीर के मर्द भी अपनी ढालें गिलाफ़ से निकालकर तुझसे लड़ने के लिए निकल आए हैं।<sup>7</sup> यस्शलम के गिर्दो-नवाह की बेहतरीन वादियों दुश्मन के रथों से भर गई हैं, और उसके घुड़सवार शहर के दरवाज़े पर हमला करने के लिए उसके सामने खड़े हो गए हैं।<sup>8</sup> जो भी बंदोबस्त यहदाह ने अपने तहफ़फ़ुज़ के लिए कर लिया था वह ख़त्म हो गया है।

उस दिन तुम लोगों ने क्या किया? तुम ‘जंगलघर’ नामी सिलाहखाने में जाकर असला का मुआयना करने लगे।<sup>9-11</sup> तुमने उन मुतअहिद दराडों का जायज़ा लिया जो दाऊद के शहर की फ़सील में पड़ गई थीं। उसे मज़बूत करने के लिए तुमने यस्शलम के मकानों को गिनकर उनमें से कुछ गिरा दिए। साथ साथ तुमने निचले तालाब का पानी जमा किया। ऊपर के पुराने तालाब से निकलनेवाला पानी जमा करने के लिए तुमने अंदरूनी और बैरूनी फ़सील के दरमियान एक और तालाब बना लिया। लेकिन अफ़सोस, तुम उस की परवा नहीं करते जो यह सारा सिलसिला अमल में लाया। उस पर तुम तबज़ुह ही नहीं देते जिसने बड़ी देर पहले इसे तश्क़ील दिया था।

12 उस वक़्त कादिर-मुतलक रब्बूल-अफ़वाज ने हुक़म दिया कि गिर्याओ-ज़ारी करो, अपने बालों को मुँडवाकर टाट का लिबास पहन लो।<sup>13</sup> लेकिन क्या हुआ? तमाम लोग शादियाना बजाकर खुशी मना रहे हैं। हर तरफ़ बैलों और भेड़-बकरियों को ज़बह किया जा रहा है। सब गोशत और मै से लुफ़अंदोज़ होकर कह रहे हैं, “आओ, हम खाएँ पिँ, क्योंकि कल तो मर ही जाना है।”

14 लेकिन रब्बूल-अफ़वाज ने मेरी मौजूदगी में ही जाहिर किया है कि यकीनन यह कुसर तुम्हारे मरते दम तक मुआफ़ नहीं किया जाएगा।\* यह कादिर-मुतलक रब्बूल-अफ़वाज का फरमान है।

### रब शिबनाह की जगह इलियाक्रीम को महल का निगरान मुकर्रर करेगा

15 कादिर-मुतलक रब्बूल-अफ़वाज फ़रमाता है, “उस निगरान शिबनाह के पास चल जो महल का इंचारज है। उसे पैगाम पहुँचा दे,<sup>16</sup> तू यहाँ क्या कर रहा है? किसने तुझे यहाँ अपने लिए मक़बरा तराशने की इजाज़त दी? तू कौन है कि बुलंदी पर अपने लिए मज़ार बनवाए, चटान में आरामगाह ख़ुदवाए? <sup>17</sup> ऐ मर्द, खबरदार! रब तुझे जोर से दूर दूर तक फेंकनेवाला है। वह तुझे पकड़ लेगा<sup>18</sup> और मरोड मरोडकर गंद की तरह एक वसी मुल्क में फेंक देगा। वही तू मरेगा, वही तैरे शानदार रथ पड़े रहेंगे। क्योंकि तू अपने मालिक के घराने के लिए शर्म का बाइस बना है।<sup>19</sup> मैं तुझे बरतरफ़ करूँगा, और तू ज़बरदस्ती अपने ओहदे और मंसब से फ़ारिग कर दिया जाएगा।

‡ 21:13 या बयाबान। § 21:16 लफ़्जी तरज़ुमा : मज़दूर के-से एक साल के अंदर अंदर।

\* 22:14 लफ़्जी तरज़ुमा : यकीनन इस कुसर का कफ़ारा तुम्हारे मरते दम तक नहीं दिया जाएगा।



20 उस दिन मैं अपने खादिम इलियाकीम बिन खिलकियाह को बुलाऊँगा। 21 मैं उसे तेरा ही सरकारी लिबास और कमरबंद पहनाकर तेरा इख्तियार उसे दे दूँगा। उस वक्त वह यहदाह के घराने और यस्शलम के तमाम बाशिनदों का बाप बनेगा। 22 मैं उसके कंधे पर दाऊद के घराने की चाबी रख दूँगा। जो दरवाजा वह खोलेगा उसे कोई बंद नहीं कर सकेगा, और जो दरवाजा वह बंद करेगा उसे कोई खोल नहीं सकेगा। 23 वह खूँटी की मानिंद होगा जिसको मैं जोर से ठोककर मजबूत दीवार में लगा दूँगा। उससे उसके बाप के घराने को शराफत का ऊँचा मकाम हासिल होगा।

24 लेकिन फिर आबाई घराने का पूरा बोझ उसके साथ लटक जाएगा। तमाम औलाद और रिश्तेदार, तमाम छोटे बरतन प्यालों से लेकर मरतबानों तक उसके साथ लटक जाएंगे। 25 रब्बुल-अफ्रवाज फरमाता है कि उस वक्त मजबूत दीवार में लगी यह खूँटी निकल जाएगी। उसे तोड़ा जाएगा तो वह गिर जाएगी, और उसके साथ लटका सारा सामान टूट जाएगा।” यह रब का फरमान है।

## 23

### सूर और सैदा की तबाही

1 सूर के बारे में अल्लाह का फरमान :

ऐ तरसीस के उम्दा जहाजो, \* वावैला करो! क्योंकि सूर तबाह हो गया है, वहाँ टिकने की जगह तक नहीं रही। जजीराए-कुबस्स से वापस आते वक्त उन्हें इतला दी गई। 2 ऐ साहिली इलाके में बसनेवालो, आहो-जारी करो! ऐ सैदा के ताजिरो, मातम करो! तेरे कासिद समुंद्र को पार करते थे, 3 वह गहरे पानी पर सफर करते हुए मिसर † का गल्ला तुझ तक पहुँचाते थे, क्योंकि तू ही दरियाए-नील की फसल से नफा कमाता था। यों तू तमाम कौमों का तिजारती मरकज बना।

4 लेकिन अब शर्मसार हो, ऐ सैदा, क्योंकि समुंद्र का किलाबंद शहर सूर कहता है, “हाय, सब कुछ तबाह हो गया है। अब ऐसा लगता है कि मैंने न कभी दर्द-जह में मुब्तला होकर बच्चे जन्म दिए, न कभी बेटे-बेटियाँ पाले।”

5 जब यह खबर मिसर तक पहुँचेगी तो वहाँ के बाशिंदे तडप उठेंगे।

6 चुनौचे समुंद्र को पार करके तरसीस तक पहुँचो! ऐ साहिली इलाके के बाशिंदो, गिर्याओ-जारी करो! 7 क्या यह वाकई तुम्हारा वह शहर है जिसकी रंगरलियाँ मशहर थीं, वह कदीम शहर जिसके पाँव उसे दूर-दराज इलाकों तक ले गए ताकि वहाँ नई आबादियाँ कायम करे? 8 किसने सूर के खिलाफ यह मनसूबा बाँधा? यह शहर तो पहले बादशाहों को तख्त पर बिठाया करता था, और उसके सौदागर रईस थे, उसके ताजिर दुनिया के शूरफा में गिने जाते थे। 9 रब्बुल-अफ्रवाज ने यह मनसूबा बाँधा ताकि तमाम शानो-शौकत का घमंड पस्त और दुनिया के तमाम ओहदेदार जेर हो जाएँ।

10 ऐ तरसीस बेटी, अब से अपनी ज़मीन की खेतीबाड़ी कर, उन किसानों की तरह काशतकारी कर जो दरियाए-नील के किनारे अपनी फसलें लगाते हैं, क्योंकि तेरी बंदरगाह जाती रही है। 11 रब ने अपने हाथ को समुंद्र के ऊपर उठाकर ममालिक को हिला दिया। उसने हुक्म दिया है कि कनान ‡ के किले बरबाद हो जाएँ। 12 उसने फरमाया, “ऐ सैदा बेटी, अब से तेरी रंगरलियाँ बंद रहेंगी। ऐ कुँवारी जिसकी इसमतदरी हुई है, उठ और समुंद्र को पार करके कुबस्स में पनाह ले। लेकिन वहाँ भी तू आराम नहीं कर पाएगी।”

13 मुल्के-बाबल पर नज़र डालो। यह कौम तो नेस्तो-नाबूद हो गई, उसका मुल्क जंगली जानवरों का घर बन गया है। अमूरियों ने बुर्ज बनाकर उसे घेर लिया और उसके किलों को ढा दिया। मलबे का ढेर ही रह गया है।

14 ऐ तरसीस के उम्दा जहाजो, हाय हाय करो, क्योंकि तुम्हारा कितला तबाह हो गया है!

15 तब सूर इनसान की याद से उतर जाएगा। लेकिन 70 साल यानी एक बादशाह की मुद्तुल-उम्र के बाद सूर उस तरह बहाल हो जाएगा जिस तरह गीत में कसबी के बारे में गाया जाता है,

16 “ऐ फरामोश कसबी, चल! अपना सरोद पकड़कर गलियों में फिर! सरोद को खूब बजा, कई एक गीत गा ताकि लोग तुझे याद करें।”

17 क्योंकि 70 साल के बाद रब सूर को बहाल करेगा। कसबी दुबारा पैसे कमाएगी, दुनिया के तमाम ममालिक उसके ग्राहक बनेंगे। 18 लेकिन जो पैसे वह कमाएगी वह रब के लिए मखसूस होंगे। वह ज़र्रीरा करने के लिए जमा नहीं होंगे बल्कि रब के हज़ूर ठहरनेवालों को दिए जाएंगे ताकि जी भरकर खा सकें और शानदार कपड़े पहन सकें।

\* 23:1 ‘तरसीस का जहाज’ न सिर्फ मुल्के-तरसीस के जहाज के लिए बल्कि हर उम्दा किस्म के तिजारती जहाज के लिए इस्तेमाल होता था। देखिए आयत 14।

† 23:3 इब्रानी में ‘सैहर’ मुस्तामल है जो दरियाए-नील की एक शाख है। ‡ 23:11 कनान से मुराद तुवनान यानी कदीम ज़माने का Phoenicia है।

## 24

रब तमाम दुनिया की अदालत करता है

1 देखो, रब दुनिया को वीरानो-सुनसान कर देगा, रूप-जमीन को उलट-पलट करके उसके बाशिंदों को मुंशिर कर देगा। 2 किसी को भी छोड़ा नहीं जाएगा, खाह इमाम हो या आम शाख्त, मालिक या नौकर, मालिकन या नौकरानी, बेचनेवाला या खरीदार, उधार लेने या देनेवाला, कर्जदार या कर्जखाह। 3 जमीन मुकम्मल तौर पर उजड़ जाएगी, उसे सरसर लूटा जाएगा। रब ही ने यह सब कुछ फरमाया है। 4 जमीन सूख सूखकर सुकड़ जाएगी, दुनिया खुश्क होकर मुरझा जाएगी। उसके बड़े बड़े लोग भी निढाल हो जाएंगे। 5 जमीन के अपने बाशिंदों ने उस की बेहुरमती की है, क्योंकि वह शरीअत के ताबे न रहे बल्कि उसके अहकाम को तबदील करके अल्लाह के साथ का अबदी अहद तोड़ दिया है।

6 इसी लिए जमीन लानत का लुक़मा बन गई है, उस पर बसनेवाले अपनी सज़ा भुगत रहे हैं। इसी लिए दुनिया के बाशिंदे भस्म हो रहे हैं और कम ही बाक़ी रह गए हैं। 7 अंगूर का ताज़ा रस सूखकर ख़त्म हो रहा, अंगूर की बेलें मुरझा रही हैं। जो पहले खुशबाश थे वह अहैं भरने लगे हैं। 8 दफ़ों की खुशकुन आवाज़ें बंद, रंगरलियाँ मनानेवालों का शोर बंद, सरोदों के सुरीले नग़मे बंद हो गए हैं। 9 अब लोग गीत गा गाकर मै नहीं पीते बल्कि शराब उन्हें कडवी ही लगती है। 10 वीरानो-सुनसान शहर तबाह हो गया है, हर घर के दरवाज़े पर कुंडी लगी है ताकि अंदर घुसनेवालों से महफूज़ रहे। 11 गलियों में लोग गिर्याओ-जारी कर रहे हैं कि मै ख़त्म है। हर खुशी दूर हो गई है, हर शादमानी जमीन से गायब है। 12 शहर में मलबे के ढेर ही रह गए हैं, उसके दरवाज़े टुकड़े टुकड़े हो गए हैं।

13 क्योंकि मुल्क के दरमियान और अक़वाम के बीच में यही सूते-हाल होगी कि चंद एक ही बच पाएँगे, बिलकुल उन दो-चार जैतुनों की मानिंद जो दरख़्त को झाड़ने के बावुजूद उस पर रह जाते हैं, या उन दो-चार अंगूरों की तरह जो फ़सल चुनने के बावुजूद बेलों पर लगे रहते हैं। 14 लेकिन यह चंद एक ही पुकारकर खुशी के नारे लगाएँगे। मगरिब से वह रब की अज़मत की सताइश करेंगे। 15 चुनौचे मशारिक में रब को जलाल दो, जज़ीरों में इसराईल के खुदा के नाम की ताज़ीम करो। 16 हमें दुनिया की इंतहा से गीत सुनाई दे रहे हैं, "रास्त ख़ुदा की तारीफ़ हो!"

लेकिन मैं बोल उठा, "हाय, मैं घुल घुलकर मर रहा हूँ, मैं घुल घुलकर मर रहा हूँ! मुझ पर अफ़सोस, क्योंकि बेवफ़ा अपनी बेवफ़ाई दिखा रहे हैं, बेवफ़ा ख़ले तौर पर अपनी बेवफ़ाई दिखा रहे हैं!" 17 ऐ दुनिया के बाशिंदो, तुम दहशतनाक मुसीबत, गढ़ों और फंदों में फँस जाओगे। 18 तब जो हौलनाक आवाज़ों से भागकर बच जाए वह गढ़े में गिर जाएगा, और जो गढ़े से निकल जाए वह फंदे में फँस जाएगा। क्योंकि आसमान के दरिचे ख़ल रहे और ज़मीन की बुनियादें हिल रही हैं। 19 ज़मीन कड़क से फट रही है। वह डगमगा रही, झूम रही, 20 नशे में आए शराबी की तरह लडखड़ा रही और कच्ची झोंपड़ी की तरह झूल रही है। आखिरकार वह अपनी बेवफ़ाई के बोझ तले इतने धड़ाम से गिरेगी कि आइंदा कभी नहीं उठने की।

21 उस दिन रब आसमान के लशकर और ज़मीन के बादशाहों से जवाब तलब करेगा। 22 तब वह गिरिफ़्तार होकर गढ़े में जमा होंगे, उन्हें कैदखाने में डालकर मुतअदिद दिनों के बाद सज़ा मिलेगी। 23 उस वक़्त चौंद नादिम होगा और सूरज शर्म खाएगा, क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज़ कोहे-सिथ्यून पर तख़्तनशीन होगा। वहाँ यस्शलम में वह बड़ी शानो-शौक़त के साथ अपने बुजुर्गों के सामने हुकूमत करेगा।

## 25

नजात के लिए अल्लाह की तारीफ़

1 ऐ रब, तू मेरा ख़ुदा है, मैं तेरी ताज़ीम और तेरे नाम की तारीफ़ करूँगा। क्योंकि तूने बड़ी वफ़ादारी से अनोखा काम करके क़दीम ज़माने में बँधे हुए मनसुबों को पूरा किया है।

2 तूने शहर को मलबे का ढेर बनाकर हमलों से महफूज़ आबादी को खंडरात में तबदील कर दिया। ग़ैरमुल्कियों का क़िलाबंद महल यों ख़ाक में मिलाया गया कि आइंदा कभी शहर नहीं कहलाएगा, कभी अज़ सरे-नो तामीर नहीं होगा।

3 यह देखकर एफ़ जोरावर कौम तेरी ताज़ीम करेगी, ज़बरदस्त अक़वाम के शहर तेरा ख़ौफ़ मानेंगे। 4 क्योंकि तू पस्तहालों के लिए क़िला और मुसीबतज़दा गरीबों के लिए पनाहगाह साबित हुआ है। तेरी आड में इनसान तूफ़ान और गरमी की शिदत से महफूज़ रहता है। गो ज़बरदस्तों की फूँके बारिश की बौछाड़ 5 या रेगिस्तान में तपिश जैसी क्यों न हों, ताहम तू ग़ैरमुल्कियों की गरज को रोक देता है। जिस तरह बादल के साथे से झूलसती गरमी जाती रहती है, उसी तरह ज़बरदस्तों की शेखी को तू बंद कर देता है।

यस्शलम में बैनुल-अक़वामी ज़ियाफ़त

6 यही कोहे-सियून पर रब्बूल-अफवाज तमाम अकवाम की जबरदस्त जियाफत करेगा। बेहतरिन किस्म की कदमी और साफ-शफफाफ में पै जी जाएगी, उम्दा और लजीज़तरिन खाना खाया जाएगा।

7 इसी पहाड़ पर वह तमाम उम्मतों पर का निकाब उतारेगा और तमाम अकवाम पर का परदा हटा देगा। 8 मौत इलाही फतह का लुकमा होकर अबद तक नेस्तो-नाबूद रहेगी। तब रब कादिरे-मुतलक हर चेहेरे के आँसू पोंछकर तमाम दुनिया में से अपनी कौम की म्स्वाई दूर करेगा। रब ही ने यह सब कुछ फरमाया है। 9 उस दिन लोग कहेंगे, “यही हमारा खुदा है जिसकी नजात के इंतज़ार में हम रहे। यही है रब जिससे हम उम्मीद रखते रहे। आओ, हम शादियाना बजाकर उस की नजात की खुशी मनाएँ!”

**रब मोआब के किल्लों को ढा देगा**

10 रब का हाथ इस पहाड़ पर ठहरा रहेगा। लेकिन मोआब को वह यों रौंदेगा जिस तरह भूसा गोबर में मिलाने के लिए रौंदा जाता है। 11 और गो मोआब हाथ फैलाकर उसमें तैरने की कोशिश करे तो भी रब उसका गुस्सू गोबर में दबाए रखेगा, चाहे वह कितनी म्हारत से हाथ-पाँव मारने की कोशिश क्यों न करे। 12 ऐ मोआब, वह तेरी बुलंद और किलाबंद दीवारों को गिराएगा, उन्हें ढाकर खाक में मिलाएगा।

## 26

**हमारा खुदा मज़बूत चटान है**

1 उस दिन मुल्के-यहदाह में गीत गाया जाएगा,

“हमारा शहर मज़बूत है, क्योंकि हम अल्लाह की नजात देनेवाली चारदीवारी और पुरतों से घिरे हुए हैं।

2 शहर के दरवाज़ों को खोलो ताकि रास्त कौम दाखिल हो, वह कौम जो वफ़ादार रही है।

3 ऐ रब, जिसका इरादा मज़बूत है उसे तू महफूज़ रखता है। उसे पूरी सलामती हासिल है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।

4 रब पर अबद तक एतमाद रखो! क्योंकि रब खुदा अबदी चटान है।

5 वह बुलंदियों पर रहनेवालों को ज़ेर और ऊँचे शहर को नीचा करके खाक में मिला देता है।

6 ज़स्तरतमंद और पस्तहाल उसे पाँवों तले कुचल देते हैं।”

**दुआ**

7 ऐ अल्लाह, रास्तबाज़ की राह हमवार है, क्योंकि तू उसका रास्ता चलने के काबिल बना देता है।

8 ऐ रब, हम तेरे इंतज़ार में रहते हैं, उस वक़्त भी जब तू हमारी अदालत करता है। हम तेरे नाम और तेरी तमजीद के आरज़ूमंद रहते हैं।

9 रात के वक़्त मेरी रूह तेरे लिए तड़पती, मेरा दिल तेरा तालिब रहता है। क्योंकि दुनिया के बाशिदे उस वक़्त इनसाफ़ का मतलब सीखते हैं जब तू दुनिया की अदालत करता है।

10 अफ़सोस, जब बेदीन पर रहम किया जाता है तो वह इनसाफ़ का मतलब नहीं सीखता बल्कि इनसाफ़ के मुल्क में भी ग़लत काम करने से बाज़ नहीं रहता, वहाँ भी रब की अज़मत का लिहाज़ नहीं करता।

11 ऐ रब, गो तेरा हाथ उन्हें मारने के लिए उठा हुआ है तो भी वह ध्यान नहीं देते। लेकिन एक दिन उनकी आँखें खुल जाएँगी, और वह तेरी अपनी कौम के लिए ज़ैरत को देखकर शर्मिंदा हो जाएँगे। तब तू अपनी भस्म करनेवाली आग उन पर नाज़िल करेगा।

12 ऐ रब, तू हमें अमनो-अमान मुहैया करता है बल्कि हमारी तमाम कामयाबियाँ तेरे ही हाथ से हासिल हुई हैं।

13 ऐ रब हमारे खुदा, गो तेरे सिवा दीगर मालिक हम पर हुक्मत करते आए हैं तो भी हम तेरे ही फ़जल से तेरे नाम को याद कर पाए। 14 अब यह लोग मर गए हैं और आइंदा कभी जिंदा नहीं होंगे, उनकी रूहें कुच कर गई हैं और आइंदा कभी वापस नहीं आएँगी। क्योंकि तूने उन्हें सज़ा देकर हलाक कर दिया, उनका नामो-निशान मिटा डाला है।

15 ऐ रब, तूने अपनी कौम को फ़रोग दिया है। तूने अपनी कौम को बड़ा बनाकर अपने जलाल का इज़हार किया है। तेरे हाथ से उस की सरहँदे चारों तरफ़ बढ़ गई हैं।

16 ऐ रब, वह मुसीबत में फँसकर तुझे तलाश करने लगे, तेरी तादीब के बाइस मंत्र फूँकने लगे।

17 ऐ रब, तेरे हज़र हम दर्दे-जह में मुब्तला औरत की तरह तडपते और चीखते-चिल्लाते रहे। 18 जनने का दर्द महसूस करके हम पेचो-ताब खा रहे थे। लेकिन अफ़सोस, हवा ही पैदा हुई। न हमने मुल्क को नजात दी, न दुनिया के नए बाशिंदे पैदा हुए।

19 लेकिन तेरे मुरदे दुबारा जिंदा होंगे, उनकी लाशें एक दिन जी उठेंगी। ऐ खाक में बसनेवालो, जाग उठो और ख़ुशी के नारे लगाओ! क्योंकि तेरी ओस नूतों की शबनम है, और ज़मीन मुरदा रूहों को जन्म देगी।

**रब इसराईल के दुश्मनों से बदला लेगा**

20 ऐ मेरी कौम, जा और थोड़ी देर के लिए अपने कमरों में छुपकर कुंडी लगा ले। जब तक रब का गज़ब ठंडा न हो वहाँ ठहरी रह। 21 क्योंकि देख, रब अपनी सूकूनतगाह से निकलने को है ताकि दुनिया के बाशिंदों को सज़ा दे। तब ज़मीन अपने आप पर बहाया हुआ खून फ़ाश करेगी और अपने मकतूलों को मज़ीद छुपाए नहीं रखेगी।

## 27

1 उस दिन रब उस भागने और पेचो-ताब खानेवाले सौंप को सज़ा देगा जो लिवियातान कहलाता है। अपनी सख्त, अज़ीम और ताकतवर तलवार से वह समुंद्र के अज़दहे को मार डालेगा।

**अंगूर के बाग का नया गीत**

2 उस दिन कहा जाएगा,

“अंगूर का कितना खूबसूरत बाग है! उस की तारीफ़ में गीत गाओ! 3 मैं, रब ख़ुद ही उसे सँभालता, उसे मुसलसल पानी देता रहता हूँ। दिन-रात मैं उस की पहरादारी करता हूँ ताकि कोई उसे नुक़सान न पहुँचाए।

4 अब मेरा गुस्ता ठंडा हो गया है। लेकिन अगर बाग में ऊँटकटारे और खारदार झाड़ियाँ मिल जाएँ तो मैं उनसे निपट लूँगा, मैं उनसे जंग करके सबको जला दूँगा। 5 लेकिन अगर वह मान जाएँ तो मेरे पास आकर पनाह लें। वह मेरे साथ सुलह करें, हों मेरे साथ सुलह करें।”

**सज़ा के बावजूद इसराईल पर रहम**

6 एक वक़्त आया कि याक़ूब जड़ पकड़ेगा। इसराईल को फूल लग जाएंगे, उस की कोंपलें निकलेगी और दुनिया उसके फल से भर जाएगी। 7 क्या रब ने अपनी कौम को यों मारा जिस तरह उसने इसराईल को मारनेवालों को मारा है? हरगिज़ नहीं! या क्या इसराईल को यों क़त्ल किया गया जिस तरह उसके क़ातिलों को क़त्ल किया गया है? 8 नहीं, बल्कि तूने उसे डराकर और भगाकर उससे ज़वाब तलब किया, तूने उसके खिलाफ़ मशरिक से तेज़ आँधी भेजकर उसे अपने हज़ूर से निकाल दिया।

9 इस तरह याक़ूब के क़ूसूर का कफ़ारा दिया जाएगा। और जब इसराईल का गुनाह दूर हो जाएगा तो नतीजे में वह तमाम ग़लत क़ुरबानगाहों को चूने के पत्थरों की तरह चकनाचूर करेगा। न यसीरत देवी के खंबे, न बखूर जलाने की ग़लत क़ुरबानगाहें खड़ी रहेंगी। 10 क्योंकि क़िलाबंद शहर तनहा रह गया है। लोगों ने उसे वीरान छोड़कर रेगिस्तान की तरह तर्क कर दिया है। अब से उसमें बछड़े ही चरेंगे। वही उस की गलियों में आराम करके उस की टहनियों को चबा लेंगे। 11 तब उस की शाखें सूख जाएँगी और औरते उन्हें तोड़ तोड़कर जलाएँगी। क्योंकि यह कौम समझ से खाली है, लिहाज़ा उसका खालिक उस पर तरस नहीं खाएगा, जिसने उसे तश्कील दिया वह उस पर मेहरबानी नहीं करेगा।

12 उस दिन तुम इसराईली गल्ला जैसे होगे, और रब तुम्हारी बालियों को दरियाए-फ़ुरात से लेकर मिसर की शिमाली सरहद पर वाके वादीए-मिसर तक काटेगा। फिर वह तुम्हें गाहकर दाना बदाना तमाम गल्ला इक़ठा करेगा। 13 उस दिन नरसिंगा बुलंद आवाज़ से बजेगा। तब अस्ूर में तबाह होनेवाले और मिसर में भगाए हुए लोग वापस आकर यरूशलम के मुक़द्दस पहाड़ पर रब को सिजदा करेंगे।

## 28

**मग़सर शहर सामरिया मुरझानेवाला फूल है**

1 सामरिया पर अफ़सोस जो इसराईली शराबियों का शानदार ताज है। उस शहर पर अफ़सोस जो इसराईल की शानो-शौकत था लेकिन अब मुरझानेवाला फूल है। उस आबादी पर अफ़सोस जो नशे में धुत लोगों की जरखेज़ वादी के ऊपर तख़्तनशीन है। 2 देखो, रब एक ज़बरदस्त सू्रमा भेजेगा जो ओलों के तूफ़ान, तबाहक़ुन आँधी और सैलाब पैदा करनेवाली मूसलाधार बारिश की तरह सामरिया पर टूट पड़ेगा और जोर से उसे ज़मीन पर पटख देगा। 3 तब इसराईली शराबियों का शानदार

ताज सामरिया पाँवों तले रौंदा जाएगा।<sup>4</sup> तब यह मूरझानेवाला फूल जो जरखेज वादी के ऊपर तख्तनशीन है और उस की शानो-शौकत खत्म हो जाएगी। उसका हाल फसल से पहले पकनेवाले अंजीर जैसा होगा। क्योंकि ज्योंही कोई उसे देखे वह उसे तोड़कर हड़प कर लेगा।

<sup>5</sup> उस दिन रब्बूल-अफवाज खूद इसराईल का शानदार ताज होगा, वह अपनी कौम के बचे हुआ का जलाली सेहरा होगा।

<sup>6</sup> वह अदालत करनेवाले को इनसाफ की रूह दिलाएगा और शहर के दरवाजे पर दुश्मन को पीछे धकेलनेवालों के लिए ताकत का बाइस होगा।

### यरूशलम के मत्वले नबी

<sup>7</sup> लेकिन यह लोग भी मैं के असर से डगमगा रहे और शराब पी पीकर लडखडा रहे हैं। इमाम और नबी नशे में डूब रहे हैं। मैं पीने से उनके दिमागों में खलल आ गया है, शराब पी पीकर वह चक्कर खा रहे हैं। रोया देखते वक्त वह झूमते, फ़ैसले करते वक्त झूलते हैं।<sup>8</sup> तमाम मेज़े उनकी कै से गंदी हैं, उनकी गिलाज़त हर तरफ नज़र आती है।

<sup>9</sup> वह आपस में कहते हैं, “यह शख्स हमारे साथ इस किसम की बातें क्यों करता है? हमें तालीम देते और इलाही पैगाम का मतलब सुनाते वक्त वह हमें यों समझाता है गोया हम छोटे बच्चे हों जिनका दूध अभी अभी छुड़ाया गया हो।<sup>10</sup> क्योंकि यह कहता है, ‘सब लासव सब लासव, कव लाकव कव लाकव, थोड़ा-सा इस तरफ थोड़ा-सा उस तरफ।’”

<sup>11</sup> चुनौचे अब अल्लाह हकलाते हुए होंटों और गैरज़बानों की मारिफत इस कौम से बात करेगा।<sup>12</sup> गो उसने उनसे फ़रमाया था, “यह आराम की जगह है। थकेमाँदों को आराम दो, क्योंकि यहीं वह सुकन पाएँगे।” लेकिन वह सुनने के लिए तैयार नहीं थे।<sup>13</sup> इसलिए आइंदा रब उनसे इन्ही अलफ़ाज़ से हमकलाम होगा, “सब लासव सब लासव, कव लाकव कव लाकव, थोड़ा-सा इस तरफ, थोड़ा-सा उस तरफ।” क्योंकि लाज़िम है कि वह चलकर ठोकर खाएँ, और धड़ाम से अपनी पुरत पर गिर जाएँ, कि वह ज़ख्मी हो जाएँ और फंदे में फँसकर गिरिफ्तार हो जाएँ।

### अल्लाह का वाज़िह पैगाम

<sup>14</sup> चुनौचे अब रब का कलाम सुन लो, ऐ मज़ाक उडानेवालो, जो यरूशलम में बसनेवाली इस कौम पर हुकूमत करते हो।

<sup>15</sup> तुम शेखी मारकर कहते हो, “हमने मौत से अहद बाँधा और पाताल से मुआहदा किया है। इसलिए जब सज़ा का सैलाब हम पर से गुज़रे तो हमें नुकसान नहीं पहुँचाएगा। क्योंकि हमने झूट में पनाह ली और धोके में छुप गए हैं।”<sup>16</sup> इसके जवाब में रब कादिर-मुतलक फ़रमाता है, “देखो, मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ, कोने का एक आज़मूदा और कीमती पत्थर जो मज़बूत बुनियाद पर लगा है। जो ईमान लाएगा वह कभी नहीं हिलेगा।<sup>17</sup> इनसाफ मेरा फीता और रास्ती मेरी साहल की डोरी होगी। इनसे मैं सब कुछ परखूँगा।

ओले उस झूट का सफ़ाया करेंगे जिसमें तुमने पनाह ली है, और सैलाब तुम्हारी छुपने की जगह उडाकर अपने साथ बहा ले जाएगा।<sup>18</sup> तब तुम्हारा मौत के साथ अहद मनसूख हो जाएगा, और तुम्हारा पाताल के साथ मुआहदा कायम नहीं रहेगा। सज़ा का सैलाब तुम पर से गुज़रकर तुम्हें पामाल करेगा।<sup>19</sup> वह सुबह बसुबह और दिन-रात गुज़रेगा, और जब भी गुज़रेगा तो तुम्हें अपने साथ बहा ले जाएगा। उस वक्त लोग दहशतज़दा होकर कलाम का मतलब समझेंगे।”<sup>20</sup> चारपाई इतनी छोटी होगी कि तुम पाँव फैलाकर सो नहीं सकोगे। बिस्तर की चौड़ाई इतनी कम होगी कि तुम उसे लपेटकर आराम नहीं कर सकोगे।

<sup>21</sup> क्योंकि रब उठकर यों तुम पर झपट पड़ेगा जिस तरह पराज़ीम पहाड़ के पास फिलिस्तिनों पर झपट पड़ा। जिस तरह वादीए-जिबऊन में अमोरियों पर टूट पड़ा उसी तरह वह तुम पर टूट पड़ेगा। और जो काम वह करेगा वह अजीब होगा, जो क़दम वह उठाएगा वह मामूल से हटकर होगा।<sup>22</sup> चुनौचे अपनी तानाज़नी से बाज़ आओ, वरना तुम्हारी जंजीरें मज़ीद ज़ोर से कस दी जाएँगी। क्योंकि मुझे कादिर-मुतलक रब्बूल-अफवाज से पैगाम मिला है कि तमाम दुनिया की तबाही मुतेयिन है।

### माहिर किसान की तमसील

<sup>23</sup> गौर से मेरी बात सुनो! ध्यान से उस पर कान धरो जो मैं कह रहा हूँ! <sup>24</sup> जब किसान खेत को बीज बोने के लिए तैयार करता है तो क्या वह पूरा दिन हल चलाता रहता है? क्या वह अपना पूरा वक्त ज़मीन खोदने और ढेले तोड़ने में सर्फ़ करता है? <sup>25</sup> हरगिज़ नहीं! जब पूरे खेत की सतह हमवार और तैयार है तो वह अपनी अपनी जगह पर स्याह जीरा और सफ़ेद जीरा, गंदुम, बाज़रा और जो का बीज बोता है। आखिर में वह किनारे पर चारे का बीज बोता है। <sup>26</sup> किसान को खूब मालूम है कि क्या क्या करना होता है, क्योंकि उसके खूदा ने उसे तालीम देकर सहीह तरीका सिखाया। <sup>27</sup> चुनौचे स्याह जीरा और सफ़ेद जीरा को अनाज की तरह गाहा नहीं जाता। दाने निकालने के लिए उन पर वज़नी चीज़ नहीं चलाई जाती बल्कि उन्हें डंडे से मारा जाता है। <sup>28</sup> और क्या अनाज को गाह गाहकर पीसा जाता है? हरगिज़ नहीं! किसान उसे हद से ज्यादा नहीं गाहाता। गो उसके घोड़े कोई वज़नी चीज़ खींचते हुए बालियों पर से गुज़रते हैं ताकि दाने निकलें ताहम किसान ध्यान देता है

कि दाने पिस न जाएँ। 29 उसे यह इल्म भी रब्बूल-अफवाज से मिला है जो जबरदस्त मशवरों और कामिल हिकमत का मंबा है।

## 29

यस्शालम खबरदार रहे

1 ऐ अरियेल, अरियेल, \* तुझ पर अफसोस! ऐ शहर जिसमें दाऊद खैमाज़न था, तुझ पर अफसोस! चलो, साल बसाल अपने तहवार मनाते रहो। 2 लेकिन मैं अरियेल को यों घेरकर तंग करूँगा कि उसमें आहो-जारी सुनाई देगी। तब यस्शालम मेरे नज़दीक सहीह मानों में अरियेल साबित होगा। 3 क्योंकि मैं तुझे हर तरफ से पुरताबंदी से घेरकर बंद रखूँगा, तैरे मुहासरे का पूरा बंदोबस्त करूँगा। 4 तब तू इतना पस्त होगा कि खाक में से बोलेगा, तेरी दबी दबी आवाज़ गर्द में से निकलेगी। जिस तरह मुरदा रूह ज़मीन के अंदर से सरगोशी करती है उसी तरह तेरी धीमी धीमी आवाज़ ज़मीन में से निकलेगी।

5 लेकिन अचानक तैरे मुतअद्दिद दुश्मन बारीक धूल की तरह उड़ जाएंगे, जालिमों का गोल हवा में भूसे की तरह तितर-बितर हो जाएगा। क्योंकि अचानक, एक ही लमहे में 6 रब्बूल-अफवाज उन पर टट पड़ेगा। वह बिजली की कड़कती आवाज़ें, जलजला, बड़ा शोर, तेज़ आँधी, तूफ़ान और भस्म करनेवाली आग के शोले अपने साथ लेकर शहर की मदद करने आएगा। 7 तब अरियेल से लडनेवाली तमाम कौमों के गोल खाब जैसे लगेंगे। जो यस्शालम पर हमला करके उसका मुहासरा कर रहे और उसे तंग कर रहे थे वह रात में रोया जैसे गैरहकीकी लगेंगे। 8 तुम्हारे दुश्मन उस भूके आदमी की मानिंद होंगे जो खाब में देखता है कि मैं खाना खा रहा हूँ, लेकिन फिर जागकर जान लेता है कि मैं वैसे का वैसे भूका हूँ। तुम्हारे मुखालिफ उस प्यासे आदमी की मानिंद होंगे जो खाब में देखता है कि मैं पानी पी रहा हूँ, लेकिन फिर जागकर जान लेता है कि मैं वैसे का वैसे निढाल और प्यासा हूँ। यही उन तमाम बैनुल-अक्रवामी गोलों का हाल होगा जो कोहे-सियून से जंग करेंगे।

अल्लाह का कलाम कौम की समझ से बाहर है

9 हैरतज़दा होकर हक्का-बक्का रह जाओ! अंधे होकर नाबीना हो जाओ! मत्वाले हो जाओ, लेकिन मैं से नहीं। लडखड़ते जाओ, लेकिन शराब से नहीं। 10 क्योंकि रब ने तुम्हें गहरी नींद सुला दिया है, उसने तुम्हारी आँखों यानी नबियों को बंद किया और तुम्हारे सरो यानी रोया देखनेवालों पर परदा डाल दिया है।

11 इसलिए जो भी कलाम नाज़िल हुआ है वह तुम्हारे लिए सर-बमुरह किताब ही है। अगर उसे किसी पढ़े-लिखे आदमी को दिया जाए ताकि पढ़े तो वह जवाब देगा, “यह पढ़ा नहीं जा सकता, क्योंकि इस पर मुहर है।” 12 और अगर उसे किसी अनपढ़ आदमी को दिया जाए तो वह कहेगा, “मैं अनपढ़ हूँ।”

13 रब फरमाता है, “यह कौम मेरे हुज़ूर आकर अपनी ज़बान और होंटों से तो मेरा एहतराम करती है, लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है। उनकी खुदातरसी सिर्फ़ इनसान ही के रटे-रटाए अहकाम पर मबनी है। 14 इसलिए आइंदा भी मेरा इस कौम के साथ सुल्क हैरतअंजेज़ होगा। हाँ, मेरा सुल्क अजीबो-गरीब होगा। तब उसके दानिशमंदों की दानिश जाती रहेगी, और उसके समझदारों की समझ गायब हो जाएगी।”

15 उन पर अफसोस जो अपना मनसूबा ज़मीन की गहराइयों में दबाकर रब से छुपाने की कोशिश करते हैं, जो तारीकी में अपने काम करके कहते हैं, “कौन हमें देख लेगा, कौन हमें पहचान लेगा?” 16 तुम्हारी कजरवी पर लानत! क्या कुम्हार को उसके गारे के बराबर समझा जाता है? क्या बनी हुई चीज़ बनानेवाले के बारे में कहती है, “उसने मुझे नहीं बनाया?” या क्या जिसको तश्कील दिया गया है वह तश्कील देनेवाले के बारे में कहता है, “वह कुछ नहीं समझता?” हरगिज़ नहीं!

बड़ी तबदीलियाँ आनेवाली हैं

17 थोड़ी ही देर के बाद लुबनान का जंगल फलते-फूलते बाग में तबदील होगा जबकि फलता-फूलता बाग जंगल-सा लगेगा। 18 उस दिन बहरे किताब की तिलावत सुनेंगे, और अंधों की आँखें अंधेरे और तारीकी में से निकलकर देख सकेंगी। 19 एक बार फिर फरोतन रब की खुशी मनाएंगे, और मुहताज इसराइल के कुद्स के बाइस शादियाना बजाएंगे। 20 जालिम का नामो-निशान नहीं रहेगा, तानाज़न खत्व हो जाएंगे, और दूसरों की ताक में बैठनेवाले सबके सब रूए-ज़मीन पर से मिट जाएंगे। 21 यही उनका अंजाम होगा जो अदालत में दूसरों को कुसूवार ठहराते, शहर के दरवाज़े में अदालत करनेवाले काज़ी को फँसाने की कोशिश करते और झूठी गवाहियों से बेकुसूर का हक मारते हैं।

22 चुनौचे रब जिसने पहले इज़्राहीम का भी फिद्दा देकर उसे छुड़ाया था याकूब के घराने से फरमाता है, “अब से याकूब शरमिदा नहीं होगा, अब से इसराइलियों का रंग फ़क नहीं पड़ जाएगा। 23 जब वह अपने दरमियान अपने बच्चों को जो

\* 29:1 मुराद है यस्शालम। अरियेल का एक मतलब ‘अल्लाह का शेरबबर’ और दूसरा ‘भस्म होनेवाली कुरबानियों की कुरबानागह’ है। यहाँ दोनों मतलब मुमकिन हैं।

मेरे हाथों का काम है देखेंगे तो वह मेरे नाम को मुकद्दस मानेंगे। वह याकूब के कुद्दस को मुकद्दस जानेंगे और इसराईल के खुदा का खौफ मानेंगे।<sup>24</sup> उस वक़्त जिनकी रूह आवारा है वह समझ हासिल करेंगे, और बुडबुडानेवाले तालीम कबूल करेंगे।”

## 30

मिसर के वादे बेकार हैं

1 रब फ़रमाता है, “ऐ जिद्दी बच्चे, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम मेरे बग़ैर मनसूबे बाँधते और मेरे रूह के बग़ैर मुआहदे कर लेते हो। गुनाहों में इजाफ़ा करते करते<sup>2</sup> तुमने मुझसे मशवरा लिए बग़ैर मिसर की तरफ़ रूज किया ताकि फ़िरौन की आड में पनाह लो और मिसर के साथे में हिफ़ाज़त पाओ।<sup>3</sup> लेकिन खबरदार! फ़िरौन का तहफ़फ़ुज़ तुम्हारे लिए शर्म का बाइस बनेगा, मिसर के साथे में पनाह लेने से तुम्हारी स्सवाई हो जाएगी।<sup>4</sup> क्योंकि गो उसके अफ़सर जुअन में हैं और उसके एलची हनीस तक पहुँच गए हैं<sup>5</sup> तो भी सब इस क़ौम से शर्मिदा हो जाएंगे, क्योंकि इसके साथ मुआहदा बेकार होगा। इससे न मदद और न फ़ायदा हासिल होगा बल्कि यह शर्म और खजालत का बाइस ही होगी।”

6 दशते-नजब के जानवरों के बारे में रब का फ़रमान :

यहूदाह के सफ़ीर एक तकलीफ़देह और परेशानकुन मुल्क में से गुज़र रहे हैं जिसमें शेरबबर, शेरनी, ज़हरीले और उडनसाँप बसते हैं। उनके गधे और ऊँट यहूदाह की दौलत और खज़ानों से लदे हुए हैं, और वह सब कुछ मिसर के पास पहुँचा रहे हैं, गो इस क़ौम का कोई फ़ायदा नहीं।<sup>7</sup> मिसर की मदद फ़ज़ूल ही है! इसलिए मैंने मिसर का नाम ‘रहब अज़दहा जिसका मुँह बंद कर दिया गया है’ रखा है।

8 अब दूसरों के पास जाकर सब कुछ तख़्ते पर लिख। उसे किताब की सुरत में कलमबंद कर ताकि मेरे अलफ़ाज़ आनेवाले दिनों में हमेशा तक गवाही दें।<sup>9</sup> क्योंकि यह क़ौम सरकश है, यह लोग धोकेबाज़ बच्चे हैं जो रब की हिदायात को मानने के लिए तैयार ही नहीं।<sup>10</sup> ग़ैबबीनों को वह कहते हैं, “रोया से बाज़ आओ।” और रोया देखनेवालों को वह हुक़म देते हैं, “हमें सच्ची रोया मत बताना बल्कि हमारी खुशामद करनेवाली बातें। फ़रेबदेह रोया देखकर हमारे आगे बयान करो!”<sup>11</sup> सहीह रास्ते से हट जाओ, सीधी राह को छोड़ दो। हमारे सामने इसराईल के कुद्दस का ज़िक्र करने से बाज़ आओ!”

12 जवाब में इसराईल का कुद्दस फ़रमाता है, “तुमने यह कलाम रद करके जुल्म और चालाकी पर भरोसा बल्कि पूरा एतमाद किया है।<sup>13</sup> अब यह गुनाह तुम्हारे लिए उस ऊँची दीवार की मानिंद होगा जिसमें दराइं पड़ गई है। दराइं फैलती है और दीवार बैठती जाती है। फिर अचानक एक ही लमहे में वह धड़ाम से ज़मीनबोस हो जाती है।<sup>14</sup> वह टुकड़े टुकड़े हो जाती है, बिलकुल मिट्टी के उस बरतन की तरह जो बेरहमी से चकनाचूर किया जाता है और जिसका एक टुकड़ा भी आग से कोयले उठाकर ले जाने या हौज़ से थोड़ा-बहुत पानी निकालने के काबिल नहीं रह जाता।”

सन्न के साथ रब पर भरोसा रखो

15 रब कादिर्-मुतलक जो इसराईल का कुद्दस है फ़रमाता है, “वापस आकर सुकून पाओ, तब ही तुम्हें नजात मिलेगी। ख़मोश रहकर मुझ पर भरोसा रखो, तब ही तुम्हें तकवियत मिलेगी। लेकिन तुम इसके लिए तैयार ही नहीं थे।

16 चूँकि तुम जवाब में बोले, ‘हरगिज़ नहीं, हम अपने घोड़ों पर सवार होकर भागेंगे’ इसलिए तुम भाग जाओगे। चूँकि तुमने कहा, ‘हम तेज़ घोड़ों पर सवार होकर बच निकलेंगे’ इसलिए तुम्हारा ताक्कुब करनेवाले कहीं ज़्यादा तेज़ होंगे।<sup>17</sup> तुम्हारे हज़ार मर्द एक ही आदमी की धमकी पर भाग जाएंगे। और जब दुश्मन के पाँच अफ़राद तुम्हें धमकाएँगे तो तुम सबके सब फ़रार हो जाओगे। आख़िरकार जो बचेंगे वह पहाड़ की चोटी पर परचम के डंडे की तरह तनहा रह जाएंगे, पहाड़ी पर झंडे की तरह अकेले होंगे।”

18 लेकिन रब तुम्हें मेहरबानी दिखाने के इंतज़ार में है, वह तुम पर रहम करने के लिए उठ खड़ा हुआ है। क्योंकि रब इनसाफ़ का खुदा है। मुबारक हैं वह जो उसके इंतज़ार में रहते हैं।

19 ऐ सिय्यून के बाशिंदो जो यरूशलम में रहते हो, आइंदा तुम नहीं रोओगे। जब तुम फ़रियाद करोगे तो वह ज़रूर तुम पर मेहरबानी करेगा। तुम्हारी सुनते ही वह जवाब देगा।<sup>20</sup> गो माज़ी में रब ने तुम्हें तंगी की रोटी खिलाई और जुल्म का पानी पिलाया, लेकिन अब तेरा उस्ताद छुपा नहीं रहेगा बल्कि तेरी अपनी ही आँखें उसे देखेंगी।<sup>21</sup> अगर दाई या बाई तरफ़ मुडना है तो तुम्हें पीछे से हिदायत मिलेगी, “यही रास्ता सहीह है, इसी पर चलो!” तुम्हारे अपने कान यह सुनेंगे।<sup>22</sup> उस वक़्त तुम चाँदी और सोने से सजे हुए अपने बुतों की बेहुरमती करोगे। तुम “उफ़, गंदी चीज़!” कहकर उन्हें नापाक कचरे की तरह बाहर फेंकोगे।

23 बीज़ बोते वक़्त रब तेरे खेतों पर बारिश भेजकर बेहतरीन फ़सलें पकने देगा, गिज़ाइतबख़्श ख़राक मुहैया करेगा। उस दिन तेरी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल वसी चरागाहों में चरेंगे।<sup>24</sup> खेतीबाड़ी के लिए मुस्तामल बैलों और गधों को छाज़ और दोशाखे के ज़रीए साफ़ की गई बेहतरीन ख़राक मिलेगी।<sup>25</sup> उस दिन जब दुश्मन हलाक हो जाएगा और उसके बुर्ज़ गिर

जाएंगे तो हर ऊँचे पहाड़ से नहरें और हर बुलंदी से नाले बहेंगे। 26 चाँद सूरज की मानिंद चमकेगा जबकि सूरज की रौशनी सात गुना ज्यादा तेज होगी। एक दिन की रौशनी सात आम दिनों की रौशनी के बराबर होगी। उस दिन रब अपनी कौम के ज़ख्मों पर मरहम-पट्टी करके उसे शफा देगा।

**रब असूरियों की अदालत करता है**

27 वह देखो, रब का नाम दूर-दराज इलाके से आ रहा है। वह गैजो-गज़ब से और बड़े रोब के साथ क़रीब पहुँच रहा है। उसके हॉट क़हर से हिल रहे हैं, उस की ज़बान के आगे आगे सब कुछ राख हो रहा है। 28 उसका दम किनारों से बाहर आनेवाली नदी है जो सब कुछ गले तक डुबो देती है। वह अक़वाम को हलाकत की छलनी में छान छानकर उनके मुँह में दहाना डालता है ताकि वह भटककर तबाहक़ुन राह पर आएँ।

29 लेकिन तुम गीत गाओगे, ऐसे गीत जैसे मुक़द्दस ईद की रात गाए जाते हैं। इतनी रौनक होगी कि तुम्हारे दिल फूले न समाएँगे। तुम्हारी ख़ुशी उन जायरीन की मानिंद होगी जो बाँसरी बजाते हुए रब के पहाड़ पर चढ़ते और इसराईल की चटान के हज़ूर आते हैं।

30 तब रब अपनी बारोब आवाज़ से लोगों पर अपनी क़ुदरत का इज़हार करेगा। उसका सख़्त ग़ज़ब और भस्म करनेवाली आग नाज़िल होगी, साथ साथ बारिश की तेज़ बौछाड़ और ओलों का तूफ़ान उन पर टूट पड़ेगा। 31 रब की आवाज़ असूर को पाश पाश कर देगी, उस की लाठी उसे मारती रहेगी। 32 और ज्यों-ज्यों रब सज़ा के लठ से असूर को ज़रब लगाएगा त्यों-त्यों दफ़ और सरोद बजेंगे। अपने जोरावर बाजू से वह असूर से लड़ेगा। 33 क्योंकि बड़ी देर से वह गढ़ा तैयार है जहाँ असूरी बादशाह की लाश को जलाना है। उसे गहरा और चौड़ा बनाया गया है, और उसमें लकड़ी का बड़ा ढेर है। रब का दम ही उसे गंधक की तरह जलाएगा।

## 31

**मिसर की मदद बेकार है**

1 उन पर अफ़सोस जो मदद के लिए मिसर जाते हैं। उनकी पूरी उम्मीद घोड़ों से है, और वह अपने मृतअद्विद रथों और ताक़तवर घुड़सवारों पर एतमाद रखते हैं। अफ़सोस, न वह इसराईल के कुद्दूस की तरफ़ नज़र उठाते, न रब की मरज़ी दरियाफ़्त करते हैं। 2 लेकिन अल्लाह भी दाना है। वह तुम पर आफ़त लाएगा और अपना फ़रमान मनसूख़ नहीं करेगा बल्कि शरीरों के घर और उनके मुआविनों के खिलाफ़ उठ खड़ा होगा। 3 मिसरी तो खुदा नहीं बल्कि इनसान हैं। और उनके घोड़े आलम-अरवाह के नहीं बल्कि फ़ानी दुनिया के हैं। जहाँ भी रब अपना हाथ बढ़ाए वहाँ मदद करनेवाले मदद मिलनेवालों समेत ठोकर खाकर गिर जाते हैं, सब मिलकर हलाक हो जाते हैं।

4 रब मुझसे हमक़लाम हुआ, “सिय्यून पर उतरते वक़्त मैं उस जवान शेरबबर की तरह हूँगा जो बकरी मारकर उसके ऊपर खड़ा गुर्राता है। गो मृतअद्विद गल्लाबानों को उसे भगाने के लिए बुलाया जाए तो भी वह उनकी चीखों से दहशत नहीं खाता, न उनके शोर-शराबा से डरकर दबक जाता है। रब्बुल-अफ़वाज़ इसी तरह ही कोहे-सिय्यून पर उतरकर लड़ेगा। 5 रब्बुल-अफ़वाज़ पर फैलाए हुए परिदे की तरह यस्शलम को पनाह देगा, वह उसे महफ़ूज़ रखकर छुटकारा देगा, उसे सज़ा देने के बजाए रिहा करेगा।”

6 ऐ इसराईलियो, जिससे तुम सरकश होकर इतने दूर हो गए हो उसके पास वापस आ जाओ। 7 अब तक तुम अपने हाथों से बने हुए सोने-चाँदी के बुतों की पूजा करते हो, अब तक तुम इस गुनाह में मुलव्वस हो। लेकिन वह दिन आनेवाला है जब हर एक अपने बुतों को रद्द करेगा।

8 “असूर तलवार की ज़द में आकर गिर जाएगा। लेकिन यह किसी मर्द की तलवार नहीं होगी। जो तलवार असूर को खा जाएगी वह फ़ानी इनसान की नहीं होगी। असूर तलवार के आगे आगे भागेगा, और उसके जवानों को बेगार में काम करना पड़ेगा। 9 उस की चटान डर के मोरे जाती रहेगी, उसके अफ़सर लशकरी झंडे को देखकर दहशत खाएँगे।” यह रब का फ़रमान है जिसकी आग सिय्यून में भड़कती और जिसका तनूर यस्शलम में तपता है।

## 32

**रास्त बादशाह की आमद**

1 एक बादशाह आनेवाला है जो इनसाफ़ से हुक़मत करेगा। उसके अफ़सर भी सदाक़त से हुक़मरानी करेंगे। 2 हर एक आँधी और तूफ़ान से पनाह देगा, हर एक रेगिस्तान में नदियों की तरह तरो-ताज़ा करेगा, हर एक तपती धूप में बड़ी चटान का-सा साया देगा।



3 तब देखनेवालों की आँखें अंधी नहीं रहेंगी, और सुननेवालों के कान ध्यान देंगे। 4 जल्दबाजों के दिल समझदार हो जाएंगे, और हकतों की ज़बान रवानी से साफ़ बात करेगी। 5 उस वक़्त न अहमक शरीफ़ कहलाएगा, न बदमाश को मुमताज़ करार दिया जाएगा। 6 क्योंकि अहमक हमाक़त बयान करता है, और उसका ज़हन शरीर मनसूबे बाँधता है। वह बेदीन हरकतों करके रब के बारे में कुफ़र बकता है। भूके को वह भूका छोड़ता और प्यासे को पानी पीने से रोकता है। 7 बदमाश के तरीक़े-कार शरीर है। वह ज़रतमंद को झूट से तबाह करने के मनसूबे बाँधता रहता है, खाह गरीब हक़ पर क्यों न हो। 8 उसके मुकाबले में शरीफ़ आदमी शरीफ़ मनसूबे बाँधता और शरीफ़ काम करने में साबितकदम रहता है।

बेपरवा ज़िंदगी ख़त्म होनेवाली है

9 ऐ बेपरवा औरतो, उठकर मेरी बात सुनो! ऐ बेटियो जो अपने आपको महफूज़ समझती हो, मेरे अलफ़ाज़ पर ध्यान दो! 10 एक साल और चंद एक दिनों के बाद तुम जो अपने आपको महफूज़ समझती हो काँप उठोगी। क्योंकि अंगूर की फ़सल जाया हो जाएगी, और फल की फ़सल पकने नहीं पाएगी। 11 ऐ बेपरवा औरतो, लरज़ उठो! ऐ बेटियो जो अपने आपको महफूज़ समझती हो, थरथराओ! अपने अच्छे कपड़ों को उतारकर टाट के लिबास पहन लो। 12 अपने सीनों को पीट पीटकर अपने खुशगवार खेतों और अंगूर के फलदार बाग़ों पर मातम करो। 13 मेरी कौम की ज़मीन पर आहो-ज़ारी करो, क्योंकि उस पर खारदार झाड़ियाँ छा गई हैं। रंगरलियाँ मनानेवाले शहर के तमाम ख़ुशबाश घरों पर गम खाओ। 14 महल वीरान होगा, रौनकदार शहर सुनसान होगा। किला और बुर्ज़ हमेशा के लिए ग़ार बनेंगे जहाँ जंगली गधे अपने दिल बहालाएँ और भेड़-बकरियाँ चरेंगी।

अल्लाह के रूह से बहाली

15 जब तक अल्लाह अपना रूह हम पर नाज़िल न करे उस वक़्त तक हालात ऐसे ही रहेंगे। लेकिन फिर रेगिस्तान बाग़ में तबदील हो जाएगा, और बाग़ के फलदार दरख़्त जंगल जैसे घने हो जाएंगे। 16 तब इसाफ़ रेगिस्तान में बसेगा, और सदाक़त फलते-फूलते बाग़ में सुकूनत करेगी। 17 इसाफ़ का फल अमनो-अमान होगा, और सदाक़त का असर अबदी सुकून और हिफाज़त होगी।

18 मेरी कौम पुरसुकून और महफूज़ आबादियों में बसेगी, उसके घर आरामदेह और पुरअमन होंगे। 19 गो जंगल तबाह और शहर ज़मीनबोस क्यों न हो, 20 लेकिन तुम मुबारक हो जो हर नदी के पास बीज बो सकोगे और आज़ादी से अपने गाय-बैलों और गधों को चरा सकोगे।

## 33

या रब, मदद!

1 तुझ पर अफ़सोस, जो दूसरों को बरबाद करने के बावजूद बरबाद नहीं हुआ। तुझ पर अफ़सोस, जो दूसरों से बेवफ़ा था, हालाँकि तेरे साथ बेवफ़ाई नहीं हुई। लेकिन तेरी बारी भी आएगी। बरबादी का काम तकमील तक पहुँचाने पर तू खुद बरबाद हो जाएगा। बेवफ़ाई का काम तकमील तक पहुँचाने पर तेरे साथ भी बेवफ़ाई की जाएगी।

2 ऐ रब, हम पर मेहरबानी कर! हम तुझे उम्मीद रखते हैं। हर सुबह हमारी ताक़त बन, मुसीबत के वक़्त हमारी रिहाई का बाइस हो।

3 तेरी गरज़ती आवाज़ सुनकर कौमों में भाग जाती हैं, तेरे उठ खड़े होने पर वह चारों तरफ़ बिखर जाती हैं। 4 ऐ कौमो, जो माल तुमने लूट लिया वह दूसरे छीन लेंगे। जिस तरह टिट्टियों के गोल फसलों पर झपटकर सब कुछ चट कर जाते हैं उसी तरह दूसरे तुम्हारी पूरी मिलकियत पर टूट पड़ेंगे।

5 रब सरफ़राज़ है और बुलंदियों पर सुकूनत करता है। वही सिय्यून को इसाफ़ और सदाक़त से मालामाल करेगा। 6 उन दिनों में वह तेरी हिफाज़त की ज़मानत होगा। तुझे नजात, हिकमत और दानाई का ज़खीरा हासिल होगा, और रब का ख़ौफ़ तेरा खज़ाना होगा।

दुश्मन से धोका, रब से रिहाई

7 सुनो, उनके सूरमे गलियों में चीख रहे हैं, अमन के सफ़ीर तलाख आहें भर रहे हैं। 8 सड़के वीरानो-सुनसान हैं, और मुसाफ़िर उन पर नज़र ही नहीं आते। मुआहदे को तोड़ा गया है, लोगों ने उसके गवाहों को रद्द करके इनसान को हकीर जाना है। 9 ज़मीन ख़ुशक होकर मुरझा गई है, लुबनान कुमलाकर शर्मिंदा हो गया है। शाऊन का मैदान बेशजर बयाबान-सा बन गया है, बसन और करमिल अपने पत्ते झाड़ रहे हैं।

10 लेकिन रब फ़रमाता है, “अब मैं उठ खड़ा हूँगा, अब मैं सरफ़राज़ होकर अपनी कुव्वत का इज़हार करूँगा। 11 तुम उम्मीद से हो, लेकिन पेट में सूखी घास ही है, और जन्म देते वक़्त भूसा ही पैदा होगा। जब तुम फूँक मारोगे तो तुम्हारा दम

आग बनकर तुम्हीं को राख कर देगा। 12 अकवाम यों भस्म हो जाएँगी कि चूना ही रह जाएगा, वह खारदार झाड़ियों की तरह कटकर जल जाएँगी। 13 ऐ दूर-दराज इलाकों के बाशिंदो, वह कुछ सुनो जो मैंने किया है। ऐ करीब के बसनेवालो, मेरी कुदरत जान लो।”

14 सिय्यून में गुनाहगार घबरा गए हैं, बेदीन परेशानी के आलम में थरथराते हुए चिल्ला रहे हैं, “हममें से कौन भस्म करनेवाली इस आग के सामने जिंदा रह सकता है? हममें से कौन हमेशा तक भडकनेवाली इस अंगीठी के करीब कायम रह सकता है?” 15 लेकिन वह शख्स कायम रहेगा जो रास्त जिंदगी गुज़ारे और सच्चाई बोले, जो गैरकानूनी नफ़ा और रिश्वत लेने से इनकार करे, जो कातिलाना साजिशों और ग़लत काम से गुरेज़ करे। 16 वही बुलंदियों पर बसेगा और पहाड़ के किले में महफूज़ रहेगा। उसे रोटी मिलती रहेगी, और पानी की कभी कमी न होगी।

### पुरजलाल बादशाह का मुल्क

17 तेरी आँखें बादशाह और उस की पूरी खूबसूरती का मुशाहदा करेंगी, वह एक वसी और दूर तक फैला हुआ मुल्क देखेगी। 18 तब तू गुज़रे हुए हौलनाक वक़्त पर ग़ौरो-ख़ौज़ करके पड़ेगा, “दुश्मन के बड़े अफ़सर किधर है? टैक्स लेनेवाला कहाँ गायब हुआ? वह अफ़सर किधर है जो बुर्जों का हिसाब-किताब करता था?” 19 आइंदा तुझे यह गुस्ताख़ कौम नज़र नहीं आएगी, यह लोग जो नाकाबिले-फ़हम ज़बान बोलते और हक़लाते हुए ऐसी बातें करते हैं जो समझ में नहीं आती।

20 हमारी ईदों के शहर सिय्यून पर नज़र डाल! तेरी आँखें यस्शलम को देखेगी। उस वक़्त वह महफूज़ सुकूनतगाह होगा, एक ख़ैमा जो आइंदा कभी नहीं हटेगा, जिसकी मेखें कभी नहीं निकलेंगी, और जिसका एक रस्सा भी नहीं टूटेगा।

21 वहाँ रब ही हमारा जोरावर आका होगा, और शहर दरियाओ का मक़ाम होगा, ऐसी चौड़ी नदियों का मक़ाम जिन पर न चप्पूवाली कशती, न शानदार जहाज़ चलेगा। 22 क्योंकि रब ही हमारा काज़ी, रब ही हमारा सरदार और रब ही हमारा बादशाह है। वही हमें छुटकारा देगा। 23 दुश्मन का बेड़ा गरक़ होनेवाला है। बादबान के रस्से ढीले हैं, और न वह मस्तूल को मज़बूत रखने, न बादबान को फैलाए रखने में मदद देते हैं। उस वक़्त कसरत का लूटा हुआ माल बटेगा, बल्कि इतना माल होगा कि लंगड़े भी लूटने में शिरक़त करेंगे। 24 सिय्यून का कोई भी फ़रद नहीं कहेगा, “मैं कमज़ोर हूँ,” क्योंकि उसके बाशिंदों के गुनाह बख़्खो गए होंगे।

## 34

### अदोम पर अदालत का एलान

1 ऐ क़ौमो, करीब आकर सुन लो! ऐ उम्मतो, ध्यान दो! दुनिया और जो भी उसमें है कान लगाए, ज़मीन और जो कुछ उसमें से फूट निकला है तवज्ज़ुह दो! 2 क्योंकि रब को तमाम उम्मतों पर गुस्सा आ गया है, और उसका ग़ज़ब उनके तमाम लशक़रों पर नाज़िल हो रहा है। वह उन्हें मुकम्मल तौर पर तबाह करेगा, इन्हें सफ़फ़ाक़ के हवाले करेगा। 3 उनके मक़तूलों को बाहर फेंका जाएगा, और लाशों की बद्बू चारों तरफ़ फैलेगी। पहाड़ उनके खून से शराबोर होंगे। 4 तमाम सितारो गल जाएंगे, और आसमान को त्मार की तरह लपेटा जाएगा। सितारों का पूरा लशक़र अंगूर के मुरझाए हुए पत्तों की तरह झड़ जाएगा, वह अंजीर के दरख़्त की सूखी हरियाली की तरह गिर जाएगा।

5 क्योंकि आसमान पर मेरी तलवार खून पी पीकर मस्त हो गई है। देखो, अब वह अदोम पर नाज़िल हो रही है ताकि उस की अदालत करे, उस क़ौम की जिसकी मुकम्मल तबाही का फैसला मैं कर चुका हूँ। 6 रब की तलवार खूनआलदा हो गई है, और उससे चरबी टपकती है। भेड़-बकरियों का खून और मेंढों के गुरदों की चरबी उस पर लगी है, क्योंकि रब बसुरा शहर में कुरबानी की ईद और मुल्के-अदोम में कल्ले-आम का तहवार मनाएगा। 7 उस वक़्त जंगली बैल उनके साथ गिर जाएंगे, और बछड़े ताक़तवर सौंदों समेत ख़त्व हो जाएंगे। उनकी ज़मीन खून से मस्त और ख़ाक़ चरबी से शराबोर होगी।

8 क्योंकि वह दिन आ गया है जब रब बदला लेगा, वह साल जब वह अदोम से इसराइल का इंतक़ाम लेगा। 9 अदोम की नदियों में तारकोल ही बहेगा, और गंधक ज़मीन को ढँपेगी। मुल्क भडकती हुई राल से भर जाएगा, 10 जिसकी आग न दिन और न रात बुझेगी बल्कि हमेशा तक धुआँ छोड़ती रहेगी। मुल्क नसल-दर-नसल वीरानो-सुनसान रहेगा, यहाँ तक कि मुसाफ़िर भी हमेशा तक उसमें से गुज़रने से गुरेज़ करेंगे। 11 दशती उल्लू और खारपुशत उस पर कब्ज़ा करेंगे, चिंघाड़नेवाले उल्लू और कौवे उसमें बसेरा करेंगे। क्योंकि रब फ़ीते और साहल से अदोम का पूरा मुल्क नाप नापकर उजाड़ और वीरानी के हवाले करेगा। 12 उसके शरफ़ा का नामो-निशान तक नहीं रहेगा। कुछ नहीं रहेगा जो बादशाही कहलाए, मुल्क के तमाम रईस जाते रहेंगे। 13 कौंटेदार पौदे उसके महलों पर छा जाएंगे, ख़ुदरौ पौदे और ऊँटकटारे उसके क़िलाबंद शहरों में फैल जाएंगे। मुल्क गीढ़ और उकाबी उल्लू का घर बनेगा। 14 वहाँ रेगिस्तान के जानवर जंगली कुत्तों से मिलेंगे, और बकरानुमा

जिन एक दूसरे से मुलाकात करेंगे। लीलीत नामी आसेब भी उसमें ठहरेगा, वहाँ उसे भी आरामगाह मिलेगी। 15 मादा सॉप उसके साथे में बिल बनाकर उसमें अपने अंडे देगी और उन्हें सेकर पालेगी। शिकारी परिदे भी दो दो होकर वहाँ जमा होंगे।

16 रब की किताब में पढकर इसकी तहक्रीक करो! अदोम में यह तमाम चीजें मिल जाएंगी। मुल्क एक से भी महरूम नहीं रहेगा बल्कि सब मिलकर उसमें पाई जाएंगी। क्योंकि रब ही के मुँह ने इसका हुक्म दिया है, और उसी का रूह इन्हें इकट्ठा करेगा। 17 वही सारी ज़मीन की पैमाइश करेगा और फिर कुरा डालकर मज़क़ूरा जानदारों में तकसीम करेगा। तब मुल्क अबद तक उनकी मिलकियत में आएगा, और वह नसल-दर-नसल उसमें आबाद होंगे।

## 35

### कौम की रिहाई

1 रेगिस्तान और प्यासी ज़मीन बाग बाग होंगे, बयाबान ख़ुशी मनाकर खिल उठेगा। उसके फूल सोसन की तरह 2 फूट निकलेंगे, और वह जोर से शादियाना बजाकर ख़ुशी के नारे लगाएगा। उसे लुबनान की शान, करमिल और शारून का पूरा हुस्नो-जमाल दिया जाएगा। लोग रब का जलाल और हमारे ख़ुदा की शानो-शौकत देखेंगे।

3 निढाल हाथों को तकवियत दो, डॉवॉडोल घुटनों को मज़बूत करो! 4 धडकते हुए दिलों से कहो, “हौसला रखो, मत डरो। देखो, तुम्हारा ख़ुदा इंतक़ाम लेने के लिए आ रहा है। वह हर एक को जज़ा-ओ-सज़ा देकर तुम्हें बचाने के लिए आ रहा है।”

5 तब अंधों की आँखों को और बहरों के कानों को खोला जाएगा।

6 लँगड़े हिरन की-सी छल्लोंगे लगाएँगे, और गँगी ख़ुशी के नारे लगाएँगे। रेगिस्तान में चश्मे फूट निकलेंगे, और बयाबान में से नदियाँ गुज़रेगी।

7 झुलसती हुई रेत की जगह जोहड़ बनेगा, और प्यासी ज़मीन की जगह पानी के सोते फूट निकलेंगे। जहाँ पहले गीदड़ आराम करते थे वहाँ हरी घास, सरकंडे और आबी नरसल की नशो-नुमा होगी।

8 मुल्क में से शाहराह गुज़रेगी जो ‘शाहराह-मुक़द्दस’ कहलाएगी। नापाक लोग उस पर सफर नहीं करेंगे, क्योंकि वह सहीह राह पर चलनेवालों के लिए मखसूस है। अहमक उस पर भटकने नहीं पाएँगे।

9 उस पर न शेरबबर होगा, न कोई और वहशी जानवर आएगा या पाया जाएगा। सिर्फ वह उस पर चलेगे जिन्हें अल्लाह ने एवज़ाना देकर छुड़ा लिया है।

10 जितनों को रब ने फिधा देकर रिहा किया है वह वापस आएँगे और गीत गाते हुए सिय्यून में दाखिल होंगे। उनके सर पर अबदी ख़ुशी का ताज होगा, और वह इतने मसूर और शादमान होंगे कि मातम और गिर्याओ-ज़ारी उनके आगे आगे भाग जाएगी।

## 36

### असूरी यस्शलम का मुहासरा करते हैं

1 हिज़क्रियाह बादशाह की हुक्मत के 14वें साल में असूर के बादशाह सनहेरिब ने यहदाह के तमाम किलाबंद शहरों पर धावा बोलकर उन पर कब्ज़ा कर लिया। 2 फिर उसने अपने आला अफसर रबशाकी को बडीं फौज के साथ लकीस से यस्शलम को भेजा। यस्शलम पहुँचकर रबशाकी उस नाले के पास स्क गया जो पानी को ऊपरवाले तालाब तक पहुँचाता है (यह तालाब उस रास्ते पर है जो धोबियों के घाट तक ले जाता है)। 3 यह देखकर महल का इंचार्ज इलियाक्रीम बिन खिलक्रियाह, मीरमुंशी शिबनाह और मुशरि-ख़ास युआख बिन आसफ शहर से निकलकर उससे मिलने आए। 4 रबशाकी ने उनके हाथ हिज़क्रियाह को पैगाम भेजा,

“असूर के अज़मी बादशाह फरमाते हैं, तुम्हारा भरोसा किस चीज़ पर है? 5 तुम समझते हो कि खाली बातें करना फौजी हिक्मते-अम्ली और ताकत के बराबर है। यह कैसी बात है? तुम किस पर एतमाद कर रहे हो कि मुझसे सरकश हो गए हो? 6 क्या तुम मिसर पर भरोसा करते हो? वह तो टूटा हुआ सरकंडा ही है। जो भी उस पर टेक लगाए उसका हाथ वह चीरकर ज़खमी कर देगा। यही कुछ उन सबके साथ हो जाएगा जो मिसर के बादशाह फिरौन पर भरोसा करें! 7 शायद तुम कहो, ‘हम रब अपने ख़ुदा पर तबक्कुल करते हैं।’ लेकिन यह किस तरह हो सकता है? हिज़क्रियाह ने तो उस की बेहुरमती की है। क्योंकि उसने ऊँची जगहों के मंदिरों और कुरबानागहों को ढाकर यहदाह और यस्शलम से कहा है कि सिर्फ यस्शलम की

कुरबानगाह के सामने परस्तिश करें।<sup>8</sup> आओ, मेरे आका अस्त्र के बादशाह से सौदा करो। मैं तुम्हें 2,000 घोड़े दूँगा बशर्तेकि तुम उनके लिए सवार मुहैया कर सको। लेकिन अफसोस, तुम्हारे पास इतने घुड़सवार हैं ही नहीं!<sup>9</sup> तुम मेरे आका अस्त्र के बादशाह के सबसे छोटे अफसर का भी मुकाबला नहीं कर सकते। लिहाजा मिसर के रथों पर भरोसा रखने का क्या फायदा? <sup>10</sup> शायद तुम समझते हो कि मैं रब की मरजी के बगैर ही इस मुल्क पर हमला करने आया हूँ ताकि सब कुछ बरबाद करूँ। लेकिन ऐसा हरगिज नहीं है! रब ने खुद मुझे कहा कि इस मुल्क पर धावा बोलकर इसे तबाह कर दे।”

<sup>11</sup> यह सुनकर इलियाकीम, शिबनाह और युआख ने रबशाकी की तकरीर में दखल देकर कहा, “बराहे-करम अरामी ज़बान में अपने खादिमों के साथ गुफ्तगू कीजिए, क्योंकि हम यह अच्छी तरह बोल लेते हैं। इब्रानी ज़बान इस्तेमाल न करें, वरना शहर की फसील पर खड़े लोग आपकी बातें सुन लेंगे।” <sup>12</sup> लेकिन रबशाकी ने जवाब दिया, “क्या तुम समझते हो कि मेरे मालिक ने यह पैगाम सिर्फ तुम्हें और तुम्हारे मालिक को भेजा है? हरगिज नहीं! वह चाहते हैं कि तमाम लोग यह बातें सुन लें। क्योंकि वह भी तुम्हारी तरह अपना फुज्ला खाने और अपना पेशाब पीने पर मजबूर हो जाएंगे।”

<sup>13</sup> फिर वह फसील की तरफ मुड़कर बुलंद आवाज़ से इब्रानी ज़बान में अवाम से मुख़ातिब हुआ, “सुनो! शहनशाह, अस्त्र के बादशाह के फ़रमान पर ध्यान दो! <sup>14</sup> बादशाह फ़रमाते हैं कि हिज़कियाह तुम्हें धोका न दे। वह तुम्हें बचा नहीं सकता। <sup>15</sup> बेशक वह तुम्हें तसल्ली दिलाने की कोशिश करके कहता है, ‘रब हमें ज़रूर छुटकारा देगा, यह शहर कभी भी अस्त्री बादशाह के कब्ज़े में नहीं आएगा।’ लेकिन इस किस्म की बातों से तसल्ली पाकर रब पर भरोसा मत करना। <sup>16</sup> हिज़कियाह की बातें न मानो बल्कि अस्त्र के बादशाह की। क्योंकि वह फ़रमाते हैं, मेरे साथ सुलह करो और शहर से निकलकर मेरे पास आ जाओ। फिर तुममें से हर एक अंगूर की अपनी बेल और अंजीर के अपने दरख़्त का फल खाएगा और अपने हौज़ का पानी पीएगा। <sup>17</sup> फिर कुछ देर के बाद मैं तुम्हें एक ऐसे मुल्क में ले जाऊँगा जो तुम्हारे अपने मुल्क की मानिंद होगा। उसमें भी अनाज और नई मै, रोटी और अंगूर के बाग हैं। <sup>18</sup> हिज़कियाह की मत सुनना। जब वह कहता है, ‘रब हमें बचाएगा’ तो वह तुम्हें धोका दे रहा है। क्या दीगर अक़वाम के देवता अपने मुल्कों को शाहे-अस्त्र से बचाने के काबिल रहे हैं? <sup>19</sup> हमारा और अरफ़ाद के देवता कहाँ रह गए हैं? सिफ़रायम के देवता क्या कर सके? और क्या किसी देवता ने सामरिया को मेरी गिरफ़्त से बचाया? <sup>20</sup> नहीं, कोई भी देवता अपना मुल्क मुझसे बचा न सका। तो फिर रब यरूशलम को किस तरह मुझसे बचाएगा?”

<sup>21</sup> फ़सील पर खड़े लोग ख़ामोश रहे। उन्होंने कोई जवाब न दिया, क्योंकि बादशाह ने हुक़म दिया था कि जवाब में एक लफ़्ज़ भी न कहें। <sup>22</sup> फिर महल का इंचार्ज इलियाकीम बिन खिलकियाह, मीरसूशी शिबनाह और मुश्रीर-ख़ास युआख बिन आसफ़ रंजिश के मारे अपने लिबास फाड़कर हिज़कियाह के पास वापस गए। दरबार में पहुँचकर उन्होंने बादशाह को सब कुछ कह सुनाया जो रबशाकी ने उन्हें कहा था।

## 37

### रब हिज़कियाह को तसल्ली देता है

<sup>1</sup> यह बातें सुनकर हिज़कियाह ने अपने कपड़े फाड़े और टाट का मातमी लिबास पहनकर रब के घर में गया। <sup>2</sup> साथ साथ उसने महल के इंचार्ज इलियाकीम, मीरसूशी शिबनाह और इमामों के बुजुर्गों को आमस के बेटे यसायाह नबी के पास भेजा। सब टाट के मातमी लिबास पहने हुए थे। <sup>3</sup> नबी के पास पहुँचकर उन्होंने हिज़कियाह का पैगाम सुनाया, “आज हम बड़ी मुसीबत में हैं। सज़ा के इस दिन अस्त्रियों ने हमारी सख़्त बेइज़्जती की है। हमारा हाल दर्द-ज़ह में मुब्तला उस औरत का-सा है जिसके पेट से बच्चा निकलने को है, लेकिन जो इसलिए नहीं निकल सकता कि माँ की ताक़त जाती रही है। <sup>4</sup> लेकिन शायद रब आपके खुदा ने रबशाकी की वह बातें सुनी हों जो उसके आका अस्त्र के बादशाह ने जिंदा खुदा की तौहीन में भेजी हैं। हो सकता है रब आपका खुदा उस की बातें सुनकर उसे सज़ा दे। बराहे-करम हमारे लिए जो अब तक बचे हुए हैं दुआ करें।”

<sup>5</sup> जब हिज़कियाह के अफ़सरों ने यसायाह को बादशाह का पैगाम पहुँचाया <sup>6</sup> तो नबी ने जवाब दिया, “अपने आका को बता देना कि रब फ़रमाता है, ‘उन धमकियों से ख़ौफ़ मत खा जो अस्त्री बादशाह के मुलाज़िमों ने मेरी इहानत करके दी हैं। <sup>7</sup> देख, मैं उसका इरादा बदल दूँगा। वह अफ़वाह सुनकर इतना मुज़तरिब हो जाएगा कि अपने ही मुल्क को वापस चला जाएगा। वहाँ मैं उसे तलवार से मरवा दूँगा।’”

### सन्हेरिब की धमकियाँ और हिज़कियाह की दुआ

<sup>8</sup> रबशाकी यरूशलम को छोड़कर अस्त्र के बादशाह के पास वापस चला गया जो उस वक़्त लकीस से रवाना होकर लिबना पर चढ़ाई कर रहा था।

9 फिर सनहेरिब को इतला मिली, “एथोपिया का बादशाह तिरहाका आपसे लड़ने आ रहा है।” तब उसने अपने कासिदों को दुबारा यरूशलम भेज दिया ताकि हिजकियाह को पैगाम पहुँचाएँ, 10 “जिस देवता पर तुम भरोसा रखते हो उससे फ़रेब न खाओ जब वह कहता है कि यरूशलम अस्सी बादशाह के क़ब्जे में कभी नहीं आएगा। 11 तुम तो सुन चुके हो कि अस्सूर के बादशाहों ने जहाँ भी गए क्या कुछ किया है। हर मुल्क को उन्होंने मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया है। तो फिर तुम किस तरह बच जाओगे? 12 क्या जौज़ान, हारान और रसफ़ के देवता उनकी हिफ़ाज़त कर पाए? क्या मुल्के-अदन में तिलस्सार के बाशिंदे बच सके? नहीं, कोई भी देवता उनकी मदद न कर सका जब मेरे बापदादा ने उन्हें तबाह किया। 13 ध्यान दो, अब हमात, अरफ़ाद, सिफ़रवायम शहर, हेना और इव्वा के बादशाह कहाँ हैं?”

14 ख़त मिलने पर हिजकियाह ने उसे पढ़ लिया और फिर रब के घर के सहन में गया। ख़त को रब के सामने बिछाकर 15 उसने रब से दुआ की,

16 “ऐ रब्बूल-अफ़वाज इसराईल के ख़ुदा जो क़रूबी फ़रिश्तों के दरमियान तख़्तनशीन है, तू अकेला ही दुनिया के तमाम ममालिक का ख़ुदा है। तू ही ने आसमानो-ज़मीन को ख़लक किया है। 17 ऐ रब, मेरी सुन! अपनी आँखें खोलकर देख! सनहेरिब की उन तमाम बातों पर ध्यान दे जो उसने इस मक़सद से हम तक पहुँचाई हैं कि ज़िंदा ख़ुदा की इहानत करे। 18 ऐ रब, यह बात सच है कि अस्सी बादशाहों ने इन तमाम कौमों को उनके मुल्कों समेत तबाह कर दिया है। 19 वह तो उनके बूतों को आग में फेंककर भस्म कर सकते थे, क्योंकि वह ज़िंदा नहीं बल्कि सिर्फ़ इनसान के हाथों से बने हुए लकड़ी और पत्थर के बूत थे। 20 ऐ रब हमारे ख़ुदा, अब मैं तुझसे इलतमास करता हूँ कि हमें अस्सी बादशाह के हाथ से बचा ताकि दुनिया के तमाम ममालिक जान लें कि तू ऐ रब, वाहिद ख़ुदा है।”

### अस्सी की लान-तान पर अल्लाह का जवाब

21 फिर यसायाह बिन आमूस ने हिजकियाह को पैगाम भेजा, “रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि मैंने अस्सी बादशाह सनहेरिब के बारे में तेरी दुआ सुनी है। 22 अब रब का उसके खिलाफ़ फ़रमान सुन,

कुँवारी सिथ्यून बेटी तुझे हकीर जानती है, हौं यरूशलम बेटी अपना सर हिला हिलाकर हिकारतआमेज़ नज़र से तेरे पीछे देखती है। 23 क्या तू नहीं जानता कि किस को गालियों दीं और किसकी इहानत की है? क्या तुझे नेज़ी मालूम कि तूने किसके खिलाफ़ आवाज़ बुलंद की है? जिसकी तरफ़ तू गुस्स की नज़र से देख रहा है वह इसराईल का कुदूस है!

24 अपने कासिदों के ज़रीए तूने रब की इहानत की है। तू डींगें मारकर कहता है, ‘मैं अपने बेशुमार राथों से पहाड़ों की चोटियों और लुबनान की इतहा तक चढ़ गया हूँ। मैं देवदार के बड़े बड़े और ज़नीपर के बेहतरीन दरख़्तों को काटकर लुबनान की दूरतरीन बुलंदियों तक, उसके सबसे घने जंगल तक पहुँच गया हूँ। 25 मैंने गैरमुल्कों में कुएँ ख़ुदवाकर उनका पानी पी लिया है। मेरे तल्वों तले मिसर की तमाम नदियाँ ख़ुश्क हो गईं।’

26 ऐ अस्सी बादशाह, क्या तूने नहीं सुना कि बड़ी देर से मैंने यह सब कुछ मुक़रर किया? क़दीम ज़माने में ही मैंने इसका मनसूबा बाँध लिया, और अब मैं इसे वजुद में लाया। मेरी मरज़ी थी कि तू क़िलाबंद शहरों को खाक में मिलाकर पत्थर के ढेरों में बदल दे। 27 इसी लिए उनके बाशिंदों की ताक़त जाती रही, वह घबराए और शरमिंदा हुए। वह घास की तरह कमज़ोर थे, छत पर उगनेवाली उस हरियाली की मानिंद जो थोड़ी देर के लिए फ़लती-फ़ूलती तो है, लेकिन लू चलते वक़्त एकदम मुरझा जाती है। 28 मैं तो तुझसे खूब वाकिफ़ हूँ। मुझे मालूम है कि तू कहाँ ठहरा हुआ है, और तेरा आना जाना मुझसे पोशीदा नहीं रहता। मुझे पता है कि तू मेरे खिलाफ़ कितने तैश में आ गया है। 29 तेरा तैश और गुस्स देखकर मैं तेरी नाक में नकेल और तेरे मुँह में लगातम डालकर तुझे उस रास्ते पर से वापस घसीट ले जाऊँगा जिस पर से तू यहाँ आ पहुँचा है।

30 ऐ हिजकियाह, मैं तुझे इस निशान से तसल्ली दिलाऊँगा कि इस साल और आनेवाले साल तुम वह कुछ खाओगे जो खेतों में ख़ुद बख़ुद उगेगा। लेकिन तीसरे साल तुम बीज बोकर फसलें काटोगे और अंगूर के बाग़ लगाकर उनका फल खाओगे। 31 यहदाह के बचे हुए बाशिंदे एक बार फिर जड़ पकड़कर फल लाएँगे। 32 क्योंकि यरूशलम से कौम का बकिया निकल आएगा, और कोहे-सिथ्यून का बचा-खुचा हिस्सा दुबारा मुल्क में फैल जाएगा। रब्बूल-अफ़वाज की गैरत यह कुछ संरंजाम देगी।

33 जहाँ तक अस्सी बादशाह का ताल्लुक है रब फ़रमाता है कि वह इस शहर में दाख़िल नहीं होगा। वह एक तीर तक उसमें नहीं चलाएगा। न वह ढाल लेकर उस पर हमला करेगा, न शहर की फ़र्सील के साथ मिट्टी का ढेर लगाएगा। 34 जिस रास्ते से बादशाह यहाँ आया उसी रास्ते पर से वह अपने मुल्क वापस चला जाएगा। इस शहर में वह घुसने नहीं पाएगा। यह रब का फ़रमान है। 35 क्योंकि मैं अपनी और अपने खादिम दाऊद की खातिर इस शहर का दिफा करके उसे बचाऊँगा।”

36 उसी रात रब का फ़रिश्ता निकल आया और अस्सी लशकरगाह में से गुज़रकर 1,85,000 फ़ौजियों को मार डाला। जब लोग सुबह-सवेरे उठे तो चारों तरफ़ लाशें ही लाशें नज़र आईं।

37 यह देखकर सनहेरिब अपने खैमे उखाड़कर अपने मुल्क वापस चला गया। नीनवा शहर पहुँचकर वह वहाँ ठहर गया।  
38 एक दिन जब वह अपने देवता निसस्क के मंदिर में पूजा कर रहा था तो उसके बेटों अद्रम्मलिक और शराज़र ने उसे तलवार से कत्ल कर दिया और फरार होकर मुल्के-अरारात में पनाह ली। फिर उसका बेटा असहँदून तख्तनशीन हुआ।

## 38

अल्लाह हिजकियाह को शफा देता है

1 उन दिनों में हिजकियाह इतना बीमार हुआ कि मरने की नौबत आ पहुँची। आमूस का बेटा यसायाह नबी उससे मिलने आया और कहा, “रब फरमाता है कि अपने घर का बंदोबस्त कर ले, क्योंकि तुझे मरना है। तू इस बीमारी से शफा नहीं पाएगा।”

2 यह सुनकर हिजकियाह ने अपना मुँह दीवार की तरफ फेरकर दुआ की, 3 “ऐ रब, याद कर कि मैं वफादारी और खुलूसदिली से तेरे सामने चलता रहा हूँ, कि मैं वह कुछ करता आया हूँ जो तुझे पसंद है।” फिर वह फट फटकर रोने लगा।

4 तब यसायाह नबी को रब का कलाम मिला, 5 “हिजकियाह के पास जाकर उसे बता देना कि रब तेरे बाप दाऊद का खुदा फरमाता है, “मैंने तेरी दुआ सुन ली और तेरे आँसू देखे हैं। मैं तेरी ज़िंदगी में 15 साल का इज़ाफा करूँगा। 6 साथ साथ मैं तुझे और इस शहर को अस्सूर के बादशाह से बचा लूँगा। मैं ही इस शहर का दिफा करूँगा।”

7 यह पैगाम हिजकियाह को सुनाकर यसायाह ने मज़ीद कहा, “रब तुझे एक निशान देगा जिससे तू जान लेगा कि वह अपना वादा पूरा करेगा। 8 मेरे कहने पर आख़ज की बनाई हुई धूपघड़ी का साया दस दर्जे पीछे जाएगा।” और ऐसा ही हुआ। साया दस दर्जे पीछे हट गया।

शफा पाने पर हिजकियाह का गीत

9 यहूदाह के बादशाह हिजकियाह ने शफा पाने पर ज़ैल का गीत कलमबंद किया,

10 “मैं बोला, क्या मुझे ज़िंदगी के उरूज पर पाताल के दरवाज़ों में दाखिल होना है? बाकीमाँदा साल मुझसे छीन लिए गए हैं।

11 मैं बोला, आइँदा मैं रब को ज़िंदों के मुल्क में नहीं देखूँगा। अब से मैं पाताल के बाशिंदों के साथ रहकर इस दुनिया के लोगों पर नज़र नहीं डालूँगा।

12 मेरे घर को गल्लाबानों के खैमे की तरह उतारा गया है, वह मेरे ऊपर से छीन लिया गया है। मैंने अपनी ज़िंदगी को जूलाहे की तरह इखिताम तक बुन लिया है। अब उसने मुझे काटकर तौंत के धागों से अलग कर दिया है। एक दिन के अंदर अंदर तूने मुझे खत्म किया।

13 सुबह तक मैं चीखकर फरियाद करता रहा, लेकिन उसने शेरबबर की तरह मेरी तमाम हड्डियाँ तोड़ दीं। एक दिन के अंदर अंदर तूने मुझे खत्म किया।

14 मैं बेजान होकर अबाबील या बुलबुल की तरह चीं चीं करने लगा, गूँ गूँ करके कबूतर की-सी आहें भरने लगा। मेरी आँखें मिठाल होकर आसमान की तरफ तकती रहीं। ऐ रब, मुझ पर ज़ुल्म हो रहा है। मेरी मदद के लिए आ!

15 लेकिन मैं क्या कहूँ? उसने खुद मुझसे हमकलाम होकर यह किया है। मैं तलखियों से मगलब होकर ज़िंदगी के आखिर तक दबी हुई हालत में फिर्साँगा।

16 ऐ रब, इन्ही चीज़ों के सबब से इनसान ज़िंदा रहता है, मेरी रूह की ज़िंदगी भी इन्हीं पर मबनी है। तू मुझे बहाल करके जीने देगा।

17 यक़ीनन यह तलख तजरबा मेरी बरकत का बाइस बन गया। तेरी मुहब्बत ने मेरी जान को कब्र से महफूज़ रखा, तूने मेरे तमाम गुनाहों को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया है।

18 क्योंकि पाताल तेरी हमदो-सना नहीं करता, और मौत तेरी सताइश में गीत नहीं गाती, ज़मीन की गहराइयों में उतरे हुए तेरी वफादारी के इंतज़ार में नहीं रहते।

19 नहीं, जो ज़िंदा है वही तेरी तारीफ करता, वही तेरी तमजीद करता है, जिस तरह मैं आज कर रहा हूँ। पुशत-दर-पुशत बाप अपने बच्चों को तेरी वफादारी के बारे में बताते हैं।

20 रब मुझे बचाने के लिए तैयार था। आओ, हम उम्र-भर रब के घर में तारदार साज़ बजाएँ।”

इलाज का तरीके-कार

21 यसायाह ने हिदायत दी थी, “अंजरी की टिक्वी लाकर बादशाह के नासूर पर बाँध दो! तब उसे शफा मिलेगी।”  
22 पहले हिज्रकियाह ने पूछा था, “रब कौन-सा निशान देगा जिससे मुझे यकीन आए कि मैं दुबारा रब के घर की इबादत में शरीक हूँगा?”

## 39

हिज्रकियाह से संगीन गलती होती है

1 थोड़ी देर के बाद बाबल के बादशाह मस्दक-बलदान बिन बलदान ने हिज्रकियाह की बीमारी और शफा की खबर सुनकर वफद के हाथ खत और तोहफे भेजे। 2 हिज्रकियाह ने खुशी से वफद का इस्तकबाल करके उसे वह तमाम खजाने दिखाए जो जखीराखाने में महफूज रखे गए थे यानी तमाम सोना-चाँदी, बलसान का तेल और बाकी कीमती तेल। उसने पूरा असलिहाखाना और बाकी सब कुछ भी दिखाया जो उसके खजानों में था। पूरे महल और पूरे मुल्क में कोई खास चीज न रही जो उसने उन्हें न दिखाई।

3 तब यसायाह नबी हिज्रकियाह बादशाह के पास आया और पूछा, “इन आदमियों ने क्या कहा? कहाँ से आए हैं?” हिज्रकियाह ने जवाब दिया, “दूर-दराज़ मुल्क बाबल से मेरे पास आए हैं।” 4 यसायाह बोला, “उन्होंने महल में क्या कुछ देखा?” हिज्रकियाह ने कहा, “उन्होंने महल में सब कुछ देख लिया है। मेरे खजानों में कोई चीज न रही जो मैंने उन्हें नहीं दिखाई।”

5 तब यसायाह ने कहा, “रब्बूल-अफ़वाज का फ़रमान सुनें! 6 एक दिन आनेवाला है कि तेरे महल का तमाम माल छीन लिया जाएगा। जितने भी खजाने तू और तेरे बापदादा ने आज तक जमा किए हैं उन सबको दुश्मन बाबल ले जाएगा। रब फ़रमाता है कि एक भी चीज़ पीछे नहीं रहेगी। 7 तेरे बेटों में से भी बाज़ छीन लिए जाएंगे, ऐसे जो अब तक पैदा नहीं हुए। तब वह ख्वाजासरा बनकर शाहे-बाबल के महल में खिदमत करेंगे।”

8 हिज्रकियाह बोला, “रब का जो पैग़ाम आपने मुझे दिया है वह ठीक है।” क्योंकि उसने सोचा, “बड़ी बात यह है कि मेरे जीते-जी अमनो-अमान होगा।”

## 40

अल्लाह की कौम को तसल्ली

1 तुम्हारा रब फ़रमाता है, “तसल्ली दो, मेरी कौम को तसल्ली दो! 2 नरमी से यरूशलम से बात करो, बुलंद आवाज़ से उसे बताओ कि तेरी गुलामी के दिन पूरे हो गए हैं, तेरा कुसूर मुआफ़ हो गया है। क्योंकि तुझे रब के हाथ से तमाम गुनाहों की दुगनी सज़ा मिल गई है।”

3 एक आवाज़ पुकार रही है, “रेगिस्तान में रब की राह तैयार करो! बयाबान में हमारे खुदा का रास्ता सीधा बनाओ। 4 लाज़िम है कि हर वादी भर दी जाए, ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलंद जगह मैदान बन जाए। जो टेढ़ा है उसे सीधा किया जाए, जो नाहमवार है उसे हमवार किया जाए। 5 तब अल्लाह का जलाल ज़ाहिर हो जाएगा, और तमाम इनसान मिलकर उसे देखेंगे। यह रब के अपने मुँह का फ़रमान है।”

6 एक आवाज़ ने कहा, “जोर से आवाज़ दे!” मैंने पूछा, “मैं क्या कहूँ?” “यह कि तमाम इनसान घास ही हैं, उनकी तमाम शानो-शौकत जंगली फूल की मनिंद है। 7 जब रब का साँस उन पर से गुज़रे तो घास मुरझा जाती और फूल गिर जाता है, क्योंकि इनसान घास ही है। 8 घास तो मुरझा जाती और फूल गिर जाता है, लेकिन हमारे खुदा का कलाम अबद तक कायम रहता है।”

9 ऐ सिय्यून, ऐ खुशखबरी के पैगंबर, बुलंदियों पर चढ़ जा! ऐ यरूशलम, ऐ खुशखबरी के पैगंबर, जोर से आवाज़ दे! पुकारकर कह और खौफ मत खा। यहदाह के शहरों को बता, “वह देखो, तुम्हारा खुदा!”

10 देखो, रब कादिरे-मुतलक बड़ी कुदरत के साथ आ रहा है, वह बड़ी ताकत के साथ हुकूमत करेगा। देखो, उसका अज़्र उसके पास है, और उसका इनाम उसके आगे आगे चलता है। 11 वह चरवाहे की तरह अपने गल्ले की गल्लबानी करेगा। वह भेड़ के बच्चों को अपने बाजूओं में महफूज रखकर सीने के साथ लगाए फिरेगा और उनकी माओं को बड़े ध्यान से अपने साथ ले चलेगा।

अल्लाह की नाकाबिले-बयान अज़मत

12 किसने अपने हाथ से दुनिया का पानी नाप लिया है? किसने अपने हाथ से आसमान की पैमाइश की है? किसने ज़मीन की मिट्टी की मिक्कर मालूम की या तराजू से पहाड़ों का कुल वज़न मुतैयिन किया है? 13 किसने रब के रूह की तहकीक कर पाई? क्या उसका कोई मुशीर है जो उसे तालीम दे? 14 क्या उसे किसी से मशवरा लेने की ज़रूरत है ताकि उसे समझ

आकर रास्त राह की तालीम मिल जाए? हरगिज नहीं! क्या किसी ने कभी उसे इल्मो-इरफान या समझदार जिंदगी गुजारने का फन सिखाया है? हरगिज नहीं!

15 यकीनन तमाम अक़वाम रब के नज़दीक बालटी के एक कतरे या तराजू में गर्द की मानिंद है। जज़ीरों को वह रेत के ज़र्रों की तरह उठा लेता है। 16 खाह लुबनान के तमाम दरख्त और जानवर रब के लिए कुरबान क्यों न होते तो भी मुनासिब कुरबानों के लिए काफ़ी न होते। 17 उसके सामने तमाम अक़वाम कुछ भी नहीं हैं। उस की नज़र में वह हेच और नाचीज़ है।

18 अल्लाह का मुवाज़ना किससे हो सकता है? उसका मुकाबला किस तस्वीर या मुजस्समे से हो सकता है? 19 बुत तो यों बनता है कि पहले दस्तकार उसे ढाल देता है, फिर सुनार उस पर सोना चढ़ाकर उसे चाँदी की जंजीरों से सजा देता है। 20 जो गुरबत के बाइस यह नहीं करवा सकता वह कम अज़्र कम कोई ऐसी लकड़ी चुन लेता है जो गल-सड़ नहीं जाती। फिर वह किसी माहिर दस्तकार से बुत को यों बनवाता है कि वह अपनी जगह से न हिले।

21 क्या तुमको मालूम नहीं? क्या तुमने बात नहीं सुनी? क्या तुम्हें इब्तिदा से सुनाया नहीं गया? क्या तुम्हें दुनिया के क्रियाम से लेकर आज तक समझ नहीं आई? 22 रब रू-ए-ज़मीन के ऊपर बुलदियों पर तख़्तनशीन है जहाँ से इनसान टिट्टियों जैसे लगते हैं। वह आसमान को परदे की तरह तानकर और हर तरफ़ खींचकर रहने के काबिल ख़ैमा बना देता है। 23 वह सरदारों को नाचीज़ और दुनिया के काज़ियों को हेच बना देता है। 24 वह नए पौदों की मानिंद है जिनकी पनीरी अभी अभी लगी है, बीज अभी अभी बोए गए हैं, पौदों ने अभी अभी जड़ पकड़ी है कि रब उन पर फूँक मारता है और वह मुरझा जाते हैं। तब आँधी उन्हें भूसे की तरह उड़ा ले जाती है।

25 कूदूस खुदा फ़रमाता है, “तुम मेरा मुवाज़ना किससे करना चाहते हो? कौन मेरे बराबर है?” 26 अपनी नज़र उठाकर आसमान की तरफ़ देखो। किसने यह सब कुछ खलक किया? वह जो आसमानी लशकर की पूरी तादाद बाहर लाकर हर एक को नाम लेकर बुलाता है। उस की कुदरत और ज़बरदस्त ताकत इतनी अज़ीम है कि एक भी दूर नहीं रहता।

27 ऐ याक़ूब की क़ौम, तू क्यों कहती है कि मेरी राह रब की नज़र से छुपी रहती है? ऐ इसराईल, तू क्यों शिकायत करता है कि मेरा मामला मेरे खुदा के इल्म में नहीं आता?

28 क्या तुझे मालूम नहीं, क्या तुने नहीं सुना कि रब लाज़वाल खुदा और दुनिया की इंतहा तक का खालिक है? वह कभी नहीं थकता, कभी निढाल नहीं होता। कोई भी उस की समझ की गहराइयों तक नहीं पहुँच सकता। 29 वह थकेमौदों को ताज़गी और बेबसों को तकवियत देता है। 30 गो नौजवान थककर निढाल हो जाएँ और जवान आदमी ठोकर खाकर गिर जाएँ, 31 लेकिन रब से उम्मीद रखनेवाले नई ताकत पाएँगे और उकाब के-से पर फैलाकर बुलदियों तक उडेंगे। न वह दौड़ते हुए थकेंगे, न चलते हुए निढाल हो जाएँगे।

## 41

दुश्मन के हमले रब ही की तरफ से हैं

1 “ऐ जज़ीरों, ख़ामोश रहकर मेरी बात सुनो! अक़वाम अज़ सरे-नौ तकवियत पाएँ और मेरे हुज़ूर आएँ, फिर बात करें। आओ, हम एक दूसरे से मिलकर अदालत में हाज़िर हो जाएँ!

2 कौन उस आदमी को जगाकर मशरिक से लाया है जिसके दामन में इनसाफ है? कौन दीगर कौमों को इस शख्स के हवाले करके बादशाहों को खाक में मिलाता है? उस की तलवार से वह गर्द हो जाते हैं, उस की कमान से लोग हवा में भूसे की तरह उड़कर बिखर जाते हैं। 3 वह उनका ताक़ुब करके सहीह-सलामत आगे निकलता है, भागते हुए उसके पाँव रास्ते को नहीं छूते। 4 किसने यह सब कुछ किया, किसने यह अंजाम दिया? उसी ने जो इब्तिदा ही से नसलों को बुलाता आया है। मैं, रब अब्दल हूँ, और आख़िर में अनेवाल्लों के साथ भी मैं वही हूँ।”

5 जज़ीर यह देखकर डर गए, दुनिया के दूर-दराज़ इलाक़े काँप उठे हैं। वह क़रीब आते हुए 6 एक दूसरे को सहारा देकर कहते हैं, “हौसला रख!” 7 दस्तकार सुनार की हौसलाअफ़ज़ाई करता है, और जो बुत की नाहमवारियों को हथौड़े से ठीक करता है वह अहरन पर काम करनेवाले की हिम्मत बढ़ाता और टाँके का मुआयना करके कहता है, “अब ठीक है!” फिर मिलकर बुत को कीलों से मज़बूत करते हैं ताकि हिले न।

मत डरना, क्योंकि मैं तेरा खुदा हूँ

8 “लेकिन तू मेरे खादिम इसराईल, तू फ़रक है। ऐ याक़ूब की क़ौम, मैंने तुझे चुन लिया, और तू मेरे दोस्त इब्राहीम की औलाद है। 9 मैं तुझे पकड़कर दुनिया की इंतहा से लाया, उसके दूर-दराज़ कोनों से बुलाया। मैंने फ़रमाया, ‘तू मेरा खादिम है।’ मैंने तुझे रद्द नहीं किया बल्कि तुझे चुन लिया है। 10 चुनौचे मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। दहशत मत खा, क्योंकि मैं तेरा खुदा हूँ। मैं तुझे मज़बूत करता, तेरी मदद करता, तुझे अपने दहने हाथ के इनसाफ से कायम रखता हूँ। 11 देख, जितने



भी तैरे खिलाफ तैश में आ गए हैं वह सब शर्मिदा हो जाएंगे, उनका मुँह काला हो जाएगा। तुझसे झगड़नेवाले हेच ही साबित होकर हलाक हो जाएंगे। 12 तब तू अपने मुखालिफों का पता करेगा लेकिन उनका नामो-निशान तक नहीं मिलेगा। तुझसे लड़नेवाले खत्म ही होंगे, ऐसा ही लगेगा कि वह कभी थे नहीं। 13 क्योंकि मैं रब तेरा खुदा हूँ। मैं तेरे दहने हाथ को पकड़कर तुझे बताता हूँ, 'मत डरना, मैं ही तेरी मदद करता हूँ।'

14 ऐ कीड़े याकूब मत डर, ऐ छोटी क्रौम इसराईल खौफ मत खा। क्योंकि मैं ही तेरी मदद करूँगा, और जो एवजाना देकर तुझे छुड़ा रहा है वह इसराईल का कुद्स है।" यह है रब का फरमान। 15 "मेरे हाथ से तू गाहने का नया और मुतअडिद तेज़ नोकें रखनेवाला आला बनेगा। तब तू पहाड़ों को गाहकर रेजा रेजा कर देगा, और पहाड़ियाँ भूसे की मानिद हो जाएँगी। 16 तू उन्हें उछाल उछालकर उड़ाएगा तो हवा उन्हें ले जाएगी, आँधी उन्हें दूर तक बिखेर देगी। लेकिन तू रब की खुशी मनाएगा और इसराईल के कुद्स पर फखर करेगा।

**अल्लाह रेगिस्तान में पानी मुहैया करता है**

17 गरीब और ज़रूरतमंद पानी की तलाश में हैं, लेकिन बेफ़ायदा, उनकी ज़बानें प्यास के मारे ख़ूब हो गई हैं। लेकिन मैं, रब उनकी सुनूँगा, मैं जो इसराईल का खुदा हूँ उन्हें तर्क नहीं करूँगा। 18 मैं बंजर बूलंदियों पर नदियाँ जारी करूँगा और वादियों में चरमे फूटने दूँगा। मैं रेगिस्तान को जोहड़ में और सूखी सूखी ज़मीन को पानी के स्रोतों में बदल दूँगा। 19 मेरे हाथ से रेगिस्तान में देवदार, कीकर, मेहँदी और ज़ैतून के दरख़्त लगेगे, बयाबान में जूनीपर, सनोबर और सरो के दरख़्त मिलकर उगेगे। 20 मैं यह इसलिए करूँगा कि लोग ध्यान देकर जान लें कि रब के हाथ ने यह सब कुछ किया है, कि इसराईल के कुद्स ने यह पैदा किया है।"

**देवता बेकार हैं**

21 रब जो याकूब का बादशाह है फ़रमाता है, "आओ, अदालत में अपना मामला पेश करो, अपने दलायल बयान करो। 22 आओ, अपने बुतों को ले आओ ताकि वह हमें बताएँ कि क्या क्या पेश आना है। माज़ी में क्या क्या हुआ? बताओ, ताकि हम ध्यान दें। या हमें मुस्तक़बिल की बातें सुनाओ, 23 वह कुछ जो आनेवाले दिनों में होगा, ताकि हमें मालूम हो जाए कि तुम देवता हो। कम अज़ कम कुछ न कुछ करो, खाह अच्छा हो या बुरा, ताकि हम घबराकर डर जाएँ। 24 तुम तो कुछ भी नहीं हो, और तुम्हारा काम भी बेकार है। जो तुम्हें चुन लेता है वह काबिले-धिन है।

25 अब मैंने शिमाल से एक आदमी को जगा दिया है, और वह मेरा नाम लेकर मशरिक से आ रहा है। यह शख़्स हुक्मरानों को मिट्टी की तरह कुचल देता है, उन्हें गारे को नरम करनेवाले कुम्हार की तरह रौंद देता है। 26 किसने इब्तिदा से इसका एलान किया ताकि हमें इल्म हो? किसने पहले से इसकी पेशगोई की ताकि हम कहें, 'उसने बिलकुल सहीह कहा है?' कोई नहीं था जिसने पहले से इसका एलान करके इसकी पेशगोई की। कोई नहीं था जिसने तुम्हारे मुँह से इसके बारे में एक लफ़्ज़ भी सुना। 27 किसने सिय्यून को पहले बता दिया, 'वह देखो, तेरा सहारा आने को है।' मैं ही ने यह फ़रमाया, मैं ही ने यस्शालम को खुशख़बरी का पैगंबर अता किया।

28 लेकिन जब मैं अपने इर्दगिर्द देखता हूँ तो कोई नहीं है जो मुझे मशवरा दे, कोई नहीं जो मेरे सवाल का जवाब दे। 29 देखो, यह सब धोका ही धोका है। उनके काम हेच और उनके ढाले हुए मुजस्समे ख़ाली हवा ही हैं।

## 42

**अल्लाह का पैगंबर अक्रवाम के लिए मशाले-राह है**

1 देखो, मेरा खादिम जिसे मैं कायम रखता हूँ, मेरा बरगुज़ीदा जो मुझे पसंद है। मैं अपने रूह को उस पर डालूँगा, और वह अक्रवाम में इनसाफ़ कायम करेगा। 2 वह न तो चीखेगा, न चिल्लाएगा, गलियों में उस की आवाज़ सुनाई नहीं देगी। 3 न वह कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा, न बुझती हुई बत्ती को बुझाएगा। वफ़ादारी से वह इनसाफ़ कायम करेगा। 4 और जब तक उसने दुनिया में इनसाफ़ कायम न कर लिया हो तब तक न उस की बत्ती बुझेगी, न उसे कुचला जाएगा। जज़ीर उस की हिदायत से उम्मीद रखेंगे।"

5 रब खुदा ने आसमान को खलक करके ख़ैमे की तरह ज़मीन के ऊपर तान लिया। उसी ने ज़मीन को और जो कुछ उसमें से फूट निकलता है तशकील दिया, और उसी ने रूए-ज़मीन पर बसने और चलनेवालों में दम फूँककर जान डाली। अब यही खुदा अपने खादिम से फ़रमाता है, 6 "मैं, रब ने इनसाफ़ से तुझे बुलाया है। मैं तेरे हाथ को पकड़कर तुझे महफ़ूज़ रखूँगा। क्योंकि मैं तुझे कौम का अहद और दीगर अक्रवाम की रौशनी बना दूँगा 7 ताकि तू अंधों की आँखें खोले, कैदियों को कोठड़ी से रिहा करे और तारीकी की कैद में बसनेवालों को छुटकारा दे। 8 मैं रब हूँ, यही मेरा नाम है! मैं बरदाशत नहीं करूँगा कि

जो जलाल मुझे मिलना है वह किसी और को दे दिया जाए, कि लोग बुतों की तमजीद करें जबकि उन्हें मेरी तमजीद करनी चाहिए।<sup>9</sup> देखो, जिसकी भी पेशगोई मैंने की थी वह वुकू में आया है। अब मैं नई बातों का एलान करता हूँ। इससे पहले कि वह वुजद में आएँ मैं उन्हें तुम्हें सुना देता हूँ।”

### रब की तमजीद में गीत गाओ!

10 रब की तमजीद में गीत गाओ, दुनिया की इंतहा तक उस की मदहसराई करो! ऐ समुंदर के मुसाफ़िरो और जो कुछ उसमें है, उस की सताइश करो! ऐ जज़ीरो, अपने बाशिंदों समेत उस की तारीफ़ करो! 11 बयाबान और उसके कसबे खुशी के नारे लगाएँ, जिन आबादियों में कीदार बसता है वह शादमान हों। सिला के बाशिंदे बाग बाग होकर पहाड़ों की चोटियों पर जोर से शादियाना बजाएँ। 12 सब रब को जलाल दें और जज़ीरों तक उस की तारीफ़ फैलाएँ।

13 रब सुरमे की तरह लडने के लिए निकलेगा, फ़ौजी की तरह जोश में आएगा और जंग के नारे लगा लगाकर अपने दुश्मनों पर गालिब आएगा।

14 वह फरमाता है, “मैं बड़ी देर से खामोश रहा हूँ। मैं चुप रहा और अपने आपको रोकता रहा। लेकिन अब मैं दर्द-जह में मुब्तला औरत की तरह कराहता हूँ। मेरा साँस फूल जाता और मैं बेताबी से हॉपता रहता हूँ। 15 मैं पहाड़ों और पहाड़ियों को तबाह करके उनकी तमाम हरियाली झुलसा दूँगा। दरिया खुशक ज़मीन बन जाएंगे, और जोहड सूख जाएंगे। 16 मैं अंधों को ऐसी राहों पर ले चलूँगा जिनसे वह वाकिफ़ नहीं होंगे, गैरमानूस रास्तों पर उनकी राहनुमाई करूँगा। उनके आगे मैं अंधेरे को रौशन और नाहमवार ज़मीन को हमवार करूँगा। यह सब कुछ मैं संरजाम दूँगा, एक बात भी अधूरी नहीं रह जाएगी।

17 लेकिन जो बुतों पर भरोसा रखकर उनसे कहते हैं, ‘तुम हमारे देवता हो’ वह सख्त शर्म खाकर पीछे हट जाएंगे।

### सज़ा का सबब अंधापन है

18 ऐ बहरो, सुनो! ऐ अंधो, नज़र उठाओ ताकि देख सको! 19 कौन मेरे खादिम जैसा अंधा है? कौन मेरे पैगंबर जैसा बहरा है, उस जैसा जिसे मैं भेज रहा हूँ? गो मैंने उसके साथ अहद बाँधा तो भी रब के खादिम जैसा अंधा और नाबीना कोई नहीं है। 20 गो तुने बहुत कुछ देखा है तुने तवज्जुह नहीं दी, गो तेरे कान हर बात सुन लेते हैं तू सुनता नहीं।” 21 रब ने अपनी रास्ती की खातिर अपनी शरीअत की अज़मत और जलाल को बढ़ाया है, क्योंकि यह उस की मरज़ी थी। 22 लेकिन अब उस की क्रौम को गारत किया गया, सब कुछ लूट लिया गया है। सबके सब गढों में जकड़े या जेलों में छुपाए हुए हैं। वह लूट का माल बन गए हैं, और कोई नहीं है जो उन्हें बचाए। उन्हें छीन लिया गया है, और कोई नहीं है जो कहे, “उन्हें वापस करो!”

23 काश तुममें से कोई ध्यान दे, कोई आइंदा के लिए तवज्जुह दे। 24 सोच लो! किसने इजाज़त दी कि याक़ूब की औलाद को गारत किया जाए? किसने इसराईल को लुटेरों के हवाले कर दिया? क्या यह रब की तरफ़ से नहीं हुआ, जिसके खिलाफ़ हमने गुनाह किया है? लोग तो उस की राहों पर चलना ही नहीं चाहते थे, वह उस की शरीअत के ताबे रहने के लिए तैयार ही न थे। 25 इसी वजह से उसने उन पर अपना सख्त ग़ज़ब नाज़िल किया, उन्हें शदीद जंग की ज़द में आने दिया। लेकिन अफ़सोस, गो आग ने क्रौम को धेरकर झुलसा दिया ताहम उसे समझ नहीं आई, गो वह भस्म हुई तो भी उसने दिल से सबक नहीं सीखा।

## 43

### रब क्रौम को वतन में वापस लाएगा

1 लेकिन अब रब जिसने तुझे ऐ याक़ूब खलक किया और तुझे ऐ इसराईल तशकील दिया फरमाता है, “ख़ौफ़ मत खा, क्योंकि मैंने एवज़ाना देकर तुझे छुड़ाया है, मैंने तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया है, तू मेरा ही है। 2 पानी की गहराइयों में से गुज़रते वक़्त मैं तेरे साथ हूँगा, दरियाओं को पार करते वक़्त तू नहीं डूबेगा। आग में से गुज़रते वक़्त न तू झुलस जाएगा, न शोलों से भस्म हो जाएगा। 3 क्योंकि मैं रब तेरा ख़ुदा हूँ, मैं इसराईल का क़ुदूस और तेरा नजातदहिदा हूँ। तुझे छुड़ाने के लिए मैं एवज़ाना के तौर पर मिसर देता, तेरी जगह एथोपिया और सिबा अदा करता हूँ। 4 तू मेरी नज़र में कीमती और अज़ीज़ है, तू मुझे प्यारा है, इसलिए मैं तेरे बदले में लोग और तेरी जान के एवज़ क्रौम में अदा करता हूँ।

5 चुनौंके मत डरना, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं तेरी औलाद को मशरिक और मगरिब से जमा करके वापस लाऊँगा। 6 शिमाल को मैं हुकम दूँगा, ‘मुझे दो!’ और जुनूब को, ‘उन्हें मत रोकना!’ मेरे बेटे-बेटियों को दुनिया की इंतहा से वापस ले आओ, 7 उन सबको जो मेरा नाम रखते हैं और जिन्हें मैंने अपने जलाल की खातिर खलक किया, जिन्हें मैंने तशकील देकर बनाया है।”

8 उस क्रौम को निकाल लाओ जो आँखें रखने के बावजूद देख नहीं सकती, जो कान रखने के बावजूद सुन नहीं सकती। 9 तमाम गैरक्रौमों जमा हो जाएँ, तमाम उम्मतें इकट्ठी हो जाएँ। उनमें से कौन इसकी पेशगोई कर सकता, कौन माजी की बातें सुना सकता है? वह अपने गवाहों को पेश करें जो उन्हें दुस्त साबित करें, ताकि लोग सुनकर कहें, “उनकी बात बिलकुल सहीह है।” 10 लेकिन रब फरमाता है, “ऐ इसराईली क्रौम, तुम ही मेरे गवाह हो, तुम ही मेरे खादिम हो जिसे मैंने चुन लिया ताकि तुम जान लो, मुझ पर ईमान लाओ और पचान लो कि मैं ही हूँ। न मुझसे पहले कोई खुदा वुजुद में आया, न मेरे बाद कोई आया। 11 मैं, सिर्फ मैं रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और नजातदहिदा नहीं है। 12 मैं ही ने इसका एलान करके तुम्हें छुटकारा दिया, मैं ही तुम्हें अपना कलाम पहुँचाता रहा। और यह तुम्हारे दरमियान के किसी अजनबी माबूद से कभी नहीं हुआ बल्कि सिर्फ मुझी से। तुम ही मेरे गवाह हो कि मैं ही खुदा हूँ।” यह रब का फरमान है। 13 “अजल से मैं वही हूँ। कोई नहीं है जो मेरे हाथ से छुड़ा सके। जब मैं कुछ अमल में लाता हूँ तो कौन इसे बदल सकता है?”

14 रब जो तुम्हारा छुड़ानेवाला और इसराईल का कुदूस है फरमाता है, “तुम्हारी खातिर मैं बाबल के खिलाफ फौज भेजकर तमाम कुंडे टुडवा दूँगा। तब बाबल की शादमानी गिर्याओ-जारी में बदल जाएगी। 15 मैं रब हूँ, तुम्हारा कुदूस जो इसराईल का खालिक और तुम्हारा बादशाह है।”

16 रब फरमाता है, “मैं ही ने समुंद्र में से गुजरने की राह और गहरे पानी में से रास्ता बना दिया। 17 मेरे कहने पर मिसर की फौज अपने सुरमाओं, रथों और घोड़ों समेत लडने के लिए निकल आई। अब वह मिलकर समुंद्र की तह में पड़े हुए हैं और दुबारा कभी नहीं उठेंगे। वह बत्ती की तरह बुझ गए। 18 लेकिन माजी की बातें छोड़ दो, जो कुछ गुजर गया है उस पर ध्यान न दो। 19 क्योंकि देखो, मैं एक नया काम वुजुद में ला रहा हूँ जो अभी फूट निकलने को है। क्या यह तुम्हें नजर नहीं आ रहा? मैं रेगिस्तान में रास्ता और बयाबान में नहरें बना रहा हूँ। 20 जंगली जानवर, गीदड़ और उकाबी उल्लू मेरा एहताराम करेंगे, क्योंकि मैं रेगिस्तान में पानी मुहैया करूँगा, बयाबान में नहरें बनाऊँगा ताकि अपनी बरगुजीदा क्रौम को पानी पिलाऊँ। 21 जो क्रौम मैंने अपने लिए तशकील दी है वह मेरे काम सुनाकर मेरी तमजीद करे।

**रब इसराईल के गुनाहों से तंग आ गया है**

22 ऐ याकूब की औलाद, ऐ इसराईल, बात यह नहीं कि तूने मुझसे फरियाद की, कि तू मेरी मरजी दरियाफ्त करने के लिए कोशिश रहा। 23 क्योंकि न तूने मेरे लिए अपनी भेड़-बकरियाँ भस्म की, न अपनी जबह की कुरबानियों से मेरा एहताराम किया। न मैंने गल्ला की नजरों से तुझ पर बोझ डाला, न बखूर की कुरबानी से तंग किया। 24 तूने न मेरे लिए कीमती मसाला खरीदा, न मुझे अपनी कुरबानियों की चरबी से खूश किया। इसके बरअक्स तूने अपने गुनाहों से मुझ पर बोझ डाला और अपनी बुरी हरकतों से मुझे तंग किया। 25 ताहम मैं, हूँ मैं ही अपनी खातिर तेरे जरायम को मिटा देता और तेरे गुनाहों को जहन से निकाल देता हूँ।

26 जा, कचहरी में मेरे खिलाफ मुकदमा दायर कर! आ, हम दोनों अदालत में हाज़िर हो जाएँ! अपना मामला पेश कर ताकि तू बेकसूर साबित हो। 27 शुरू में तेरे खानदान के बानी ने गुनाह किया, और उस वक्त से लेकर आज तक तेरे नुमाइंदे मुझसे बेवफा होते आए हैं। 28 इसलिए मैं मकदिस के बुजुर्गों को यों सवा करूँगा कि उनकी मुकदस हालत जाती रहेगी, मैं याकूब की औलाद इसराईल को मुकम्मल तबाही और लान-तान के लिए मखसूस करूँगा।

## 44

**रब की क्रौम के लिए नई जिंदगी**

1 लेकिन अब सुन, ऐ याकूब मेरे खादिम! मेरी बात पर तवज्जुह दे, ऐ इसराईल जिसे मैंने चुन लिया है। 2 रब जिसने तुझे बनाया और माँ के पेट से ही तशकील देकर तेरी मदद करता आया है वह फरमाता है, “ऐ याकूब मेरे खादिम, मत डर! ऐ यसरून जिसे मैंने चुन लिया है, खौफ न खा। 3 क्योंकि मैं प्यासी जमीन पर पानी डालूँगा और खूशकी पर नदियाँ बहने दूँगा। मैं अपना रूह तेरी औलाद पर नाज़िल करूँगा, अपनी बरकत तेरे बच्चों को बख्शूँगा। 4 तब वह पानी के दरमियान की हरियाली की तरह फूट निकलेंगे, नहरों पर सफेदा के दरख्तों की तरह फले-फूलेंगे।”

5 एक कहेगा, “मैं रब का हूँ, दूसरा याकूब का नाम लेकर पुकारेगा और तीसरा अपने हाथ पर ‘रब का बंदा’ लिखकर इसराईल का एजाज़ी नाम रखेगा।”

6 रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराईल का बादशाह और छुड़ानेवाला है फरमाता है, “मैं अब्बल और अखिर हूँ। मेरे सिवा कोई और खुदा नहीं है। 7 कौन मेरी मानिद है? वह आवाज़ देकर बताए और अपने दलायल पेश करे। वह तरतीब से सब कुछ

सुनाए जो उस कर्दमी वक्रत से हुआ है जब मैंने अपनी कौम को कायम किया। वह आनेवाली बातों का एलान करके बताए कि आइंदा क्या कुछ पेश आएगा।

8 घबराकर दहशतजदा न हो। क्या मैंने बहुत देर पहले तुझे इतला नहीं दी थी कि यह कुछ पेश आएगा? तुम खुद मेरे गवाह हो। क्या मेरे सिवा कोई और खुदा है? हरगिज़ नहीं! और कोई चटान नहीं है, मैं किसी और को नहीं जानता।”

### खुदसाखा देवता

9 बुत बनानेवाले सब हेच ही हैं, और जो चीज़ें उन्हें प्यारी लगती हैं वह बेफ़ायदा हैं। उनके गवाह न देख और न जान सकते हैं, लिहाज़ा आखिरकार शर्मिदा हो जाएंगे।

10 यह किस तरह के लोग हैं जो अपने लिए देवता बनाते और बेफ़ायदा बुत ढाल लेते हैं? 11 उनके तमाम साथी शर्मिदा हो जाएंगे। आखिर बुत बनानेवाले इनसान ही तो हैं। आओ, वह सब जमा होकर खुदा के हज़ूर खड़े हो जाएँ। क्योंकि वह दहशत खाकर सख्त शर्मिदा हो जाएंगे।

12 लोहार औरज़ार लेकर उसे जलते हुए कोयलों में इस्तेमाल करता है। फिर वह अपने हथौड़े से ठोंक ठोंककर बुत को तश्कील देता है। पूरे जोर से काम करते करते वह ताकत के जवाब देने तक भुका हो जाता, पानी न पीने की वजह से निढाल हो जाता है। 13 जब बुत को लकड़ी से बनाना है तो कारीगर फ़ीते से नापकर पेंसिल से लकड़ी पर खाका खींचता है। परकार भी काम आ जाता है। फिर कारीगर लकड़ी को छुरी से तराश तराशकर आदमी की शकल बनाता है। यों शानदार आदमी का मुजस्समा किसी के घर में लगने के लिए तैयार हो जाता है।

14 कारीगर बुत बनाने के लिए देवदार का दरख्त काट लेता है। कभी कभी वह बलूत या किसी और क्रिस्म का दरख्त चुनकर उसे जंगल के दीगार दरख्तों के बीच में उगने देता है। या वह सनोबर \* का दरख्त लगाता है, और बारिश उसे फूलने फूलने देती है। 15 ध्यान दो कि इनसान लकड़ी को इंधन के लिए भी इस्तेमाल करता, कुछ लेकर आग तापता, कुछ जलाकर रोटी पकाता है। बाकी हिस्से से वह बुत बनाकर उसे सिजदा करता, देवता का मुजस्समा तैयार करके उसके सामने झुक जाता है। 16 वह लकड़ी का आधा हिस्सा जलाकर उस पर अपना गोशत भून्ता, फिर जी भरकर खाना खाता है। साथ साथ वह आग सेंककर कहता है, “वाह, आग की गरमी कितनी अच्छी लग रही है, अब गरमी महसूस हो रही है।” 17 लेकिन बाकी लकड़ी से वह अपने लिए देवता का बुत बनाता है जिसके सामने वह झुककर पूजा करता है। उससे वह इलतमास करता है, “मुझे बचा, क्योंकि तू मेरा देवता है।”

18 यह लोग कुछ नहीं जानते, कुछ नहीं समझते। उनकी आँखों और दिलों पर परदा पड़ा है, इसलिए न वह देख सकते, न समझ सकते हैं। 19 वह इस पर गौर नहीं करते, उन्हें फ़हम और समझ तक नहीं कि सोचें, “मैंने लकड़ी का आधा हिस्सा आग में झोंककर उसके कोयलों पर रोटी पकाई और गोशत भून लिया। यह चीज़ें खाने के बाद मैं बाकी लकड़ी से काबिले-धिन् बुत क्यों बनाऊँ, लकड़ी के टुकड़े के सामने क्यों झुक जाऊँ?” 20 जो यों राख में मूलव्वस हो जाए उसने धोका खाया, उसके दिल ने उसे फ़रेब दिया है। वह अपनी जान छुड़ाकर नहीं मान सकता कि जो बुत मैं दहने हाथ में थामे हुए हूँ वह झूट है।

### रब अपनी कौम को आज़ाद करता है

21 “ऐ याकूब की औलाद, ऐ इसराईल, याद रख कि तू मेरा खादिम है। मैंने तुझे तश्कील दिया, तू मेरा ही खादिम है। ऐ इसराईल, मैं तुझे कभी नहीं भूलूंगा। 22 मैंने तेरे जरायम और गुनाहों को मिटा डाला है, वह धूप में धुंध या तेज़ हवा से बिखरे बादलों की तरह ओझल हो गए हैं। अब मेरे पास वापस आ, क्योंकि मैंने एवज़ाना देकर तुझे छुड़ाया है।”

23 ऐ आसमान, खुशी के नारे लगा, क्योंकि रब ने सब कुछ किया है। ऐ ज़मीन की गहराइयों, शादियाना बजाओ! ऐ पहाड़ों और जंगलों, अपने तमाम दरख्तों समेत खुशी के गीत गाओ, क्योंकि रब ने एवज़ाना देकर याकूब को छुड़ाया है, इसराईल में उसने अपना जलाल ज़ाहिर किया है।

24 रब तेरा छुड़ानेवाला जिसने तुझे माँ के पेट से ही तश्कील दिया फ़रमाता है, “मैं रब हूँ। मैं ही सब कुछ वजुद में लाया, मैंने अकेले ही आसमान को ज़मीन के ऊपर तान लिया और ज़मीन को बिछाया। 25 मैं ही क्रिस्मत का हाल बतानेवालों के अजीबोगरीब निशान नाकाम होने देता, फ़ाल खोलनेवालों को अहमक साबित करता और दानाओं को पीछे हटाकर उनके इल्म की हमाक़त ज़ाहिर करता हूँ। 26 मैं ही अपने खादिम का कलाम पूरा होने देता और अपने पैग़म्बरों का मनस्बूब तकमील तक पहुँचाता हूँ, मैं ही यस्शालम के बारे में फ़रमाता हूँ, ‘वह दुबारा आबाद हो जाएगा,’ और यहदाह के शहरों के बारे में, ‘वह नए सिरे से तामीर हो जाएंगे, मैं उनके खंडरात दुबारा खड़े करूँगा।’ 27 मैं ही गहरे समुंद्र को हुक्म देता हूँ, ‘सूख जा, मैं तेरी

\* 44:14 शायद इब्रानी लिपज़ से मुराद सनोबर नहीं बल्कि laurel हो, एक छोटा सदाबहार काफ़री दरख्त।

गहराईयों को खुश्क करता हूँ।' 28 और मैं ही न खोरस के बारे में फरमाया, 'यह मेरा गल्लाबान है! यही मेरी मरजी पूरी करके कहेगा कि यस्शलम दुबारा तामीर किया जाए, रब के घर की बुनियाद नए सिरे से रखी जाए!''

## 45

### खोरस रब का आलाए-कार है

1 रब अपने मसह किए हुए खादिम खोरस से फरमाता है, "मैंने तेरे दहने हाथ को पकड़ लिया है, इसलिए जहाँ भी तू जाए वहाँ क्रौमें तेरे ताबे हो जाएँगी, बादशाहों की ताकत जाती रहेगी, दरवाजे खुल जाएंगे और शहर के दरवाजे बंद नहीं रहेंगे। 2 मैं खुद तेरे आगे आगे जाकर किलाबंदियों को जमीनबोस कर दूँगा। मैं पीतल के दरवाजे टुकड़े टुकड़े करके तमाम कुंडे टुडवा दूँगा। 3 मैं तुझे अंधेरे में छुपे खजाने और पोशीदा मालो-दौलत अता करूँगा ताकि तू जान ले कि मैं रब हूँ जो तेरा नाम लेकर तुझे बुलाता है, कि मैं इसराईल का खुदा हूँ। 4 गो तू मुझे नहीं जानता था, लेकिन अपने खादिम याकूब की खातिर मैंने तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया, अपने बरगुजीदा इसराईल के वास्ते तुझे एजाजी नाम से नवाजा है।

5 मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और खुदा नहीं है। गो तू मुझे नहीं जानता था तो भी मैं तुझे कमरबस्ता करता हूँ 6 ताकि मशरिक से मगारिब तक इनसान जान लें कि मेरे सिवा कोई और नहीं है। मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और नहीं है। 7 मैं ही रौशनी को तश्कील देता और अंधेरे को वुजूद में लाता हूँ, मैं ही अच्छे और बुरे हालात पैदा करता, मैं रब ही यह सब कुछ करता हूँ। 8 ऐ आसमान, रास्ती की बूँदा-बौंदी से जमीन को तरो-ताजा कर! ऐ बादलो, सदाकत बरसाओ! जमीन खुलकर नजात का फल लाए और रास्ती का पौदा फूटने दे। मैं रब ही उसे वुजूद में लाया हूँ।"

### अपने खालिक पर इलजाम लगानेवाले पर अफसोस

9 उस पर अफसोस जो अपने खालिक से झगडा करता है, गो वह मिट्टी के टूटे-फूटे बरतनों का ठीकरा ही है। क्या गारा कुम्हार से पूछता है, "तू क्या बना रहा है?" क्या तेरी बनाई हुई कोई चीज तेरे बारे में शिकायत करती है, "उस की कोई ताकत नहीं?" 10 उस पर अफसोस जो बाप से सवाल करे, "तू क्यों बाप बना रहा है?" या औरत से, "तू क्यों बच्चा जन्म दे रही है?"

11 रब जो इसराईल का कुदूस और उसे तश्कील देनेवाला है फरमाता है, "तुम किस तरह मेरे बच्चों के बारे में मेरी पूछ-गछ कर सकते हो? जो कुछ मेरे हाथों ने बनाया उसके बारे में तुम कैसे मुझे हुक्म दे सकते हो? 12 मैं ही ने जमीन को बनाकर इनसान को उस पर खलक किया। मेरे अपने हाथों ने आसमान को छिमे की तरह उसके ऊपर तान लिया और मैं ही ने उसके सितारों के पूरे लश्कर को तरतीब दिया। 13 मैं ही ने खोरस को इनसाफ से जगा दिया, और मैं ही उसके तमाम रास्ते सीधे बना देता हूँ। वह मेरे शहर को नए सिरे से तामीर करेगा और मेरे जिलावतनों को आजाद करेगा। और यह सब कुछ मुफ्त में होगा, न वह पैसे लेगा, न तोहफे।" यह रब्बुल-अफवाज का फरमान है।

### रब वाहिद खुदा है

14 रब फरमाता है, "मिसर की दौलत, एथोपिया का तिजारती माल और सिबा के दराजकद अफराद तेरे मातहत होकर तेरी मिलकियत बन जाएंगे। वह तेरे पीछे चलेंगे, जंजीरों में जकड़े तेरे ताबे हो जाएंगे। तेरे सामने झुककर वह इलतमास करके कहेंगे, 'यकनीन अल्लाह तेरे साथ है। उसके सिवा कोई और खुदा है नहीं।' 15 ऐ इसराईल के खुदा और नजातदहिदा, यकनीन तू अपने आपको छुपाए रखनेवाला खुदा है। 16 बुत बनानेवाला खुदा है। 17 लेकिन इसराईल को छुटकारा मिलेगा, रब उसे अबदी नजात देगा। तब तुम्हारी स्सवाई कभी नहीं होगी, तुम हमेशा तक शरमिदा होने से महफूज रहोगे।

18 क्योंकि रब फरमाता है, "मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और नहीं है! जो यह फरमाता है वह खुदा है, जिसने आसमान को खलक किया और जमीन को तश्कील देकर महफूज बुनियाद पर रखा। और जमीन सुनसान बयाबान न रही बल्कि उसने उसे बसने के काबिल बना दिया ताकि जानदार उसमें रह सकें। 19 मैंने पोशीदागी में या दुनिया के किसी तारीक कोने से बात नहीं की। मैंने याकूब की औलाद से यह भी नहीं कहा, 'बेशक मुझे तलाश करो, लेकिन तुम मुझे नहीं पाओगे।' नहीं, मैं रब ही हूँ, जो इनसाफ बयान करता, सच्चाई का एलान करता है।

20 तुम जो दीगर अक्रवाम से बच निकले हो आओ, जमा हो जाओ। मिलकर मेरे हज़र हाज़िर हो जाओ! जो लकड़ी के बूत उठाकर अपने साथ लिए फिरते हैं वह कुछ नहीं जानते! जो देवता छुटकारा नहीं दे सकते उनसे वह क्यों इलतिजा करते हैं? 21 आओ, अपना मामला सुनाओ, अपने दलायलत पेश करो! बेशक पहले एक दूसरे से मशवरा करो। किस्ने बड़ी देर

पहले यह कुछ सुनाया था? क्या मैं, रब ने तवील अरसा पहले इसका एलान नहीं किया था? क्योंकि मेरे सिवा कोई और खुदा नहीं है। मैं रास्त खुदा और नजातदाहिदा हूँ। मेरे सिवा कोई और नहीं है।

22 ऐ ज़मीन की इंतहाओ, सब मेरी तरफ रूज करके नजात पाओ! क्योंकि मैं ही खुदा हूँ, मेरे सिवा कोई और नहीं है।

23 मैंने अपने नाम की कसम खाकर फरमाया है, और मेरा फ़रमान रास्त है, वह कभी मनसूख नहीं होगा। फ़रमान यह है कि मेरे सामने हर घुटना झुकेगा और हर ज़बान मेरी कसम खा कर 24 कहेगी, 'रब ही रास्ती और कुब्जत्व का मंबा है!'

जो पहले तैश में आकर रब की मुखालफ़त करते थे वह भी सब शरमिदा होकर उसके हज़ूर आएँगे। 25 लेकिन इसराईल की तमाम औलाद रब में रास्तबाज़ ठहरकर उस पर फ़ख़र करेगी।

## 46

### देवता मदद नहीं कर सकते

1 बाबल के देवता बेल और नबू झुककर गिर गए हैं, और लादू जानवर उनके बुतों को उठाए फिर रहे हैं। तुम्हारे जो बुत उठाए जा सकते हैं थकेहारे जानवरों का बोझ बन गए हैं। 2 क्योंकि दोनों देवता झुककर गिर गए हैं। वह बोझ बनने से बच न सके, और अब खुद जिलावतनी में जा रहे हैं।

3 "ऐ याक़ूब के घराने, सुनो! ऐ इसराईल के घराने के बचे हुए अफ़राद, ध्यान दो! माँ के पेट से ही तुम मेरे लिए बोझ रहे हो, पैदाइश से पहले ही मैं तुम्हें उठाए फिर रहा हूँ। 4 तुम्हारे बूढ़े होने तक मैं वही रहूँगा, तुम्हारे बाल के सफ़ेद हो जाने तक तुम्हें उठाए फिरूँगा। यह इब्तिदा से मेरा ही काम रहा है, और आइंदा भी मैं तुझे उठाए फिरूँगा, आइंदा भी तेरा सहारा बनकर तुझे बचाए रखूँगा।

5 तुम मेरा मुकाबला किससे करोगे, मुझे किसके बराबर ठहराओगे? तुम मेरा मुवाज़ना किससे करोगे जो मेरी मानिंद हो? 6 लोग बुत बनवाने के लिए बटवे से कसरत का सोना निकालते और चाँदी तराजू में तोलते हैं। फिर वह सुनार को बुत बनाने का ठेका देते हैं। जब तैयार हो जाए तो वह झुककर मुँह के बल उस की पूजा करते हैं। 7 वह उसे अपने कंधों पर रखकर इधर उधर लिए फिरते हैं, फिर उसे दुबारा उस की जगह पर रख देते हैं। वहाँ वह खड़ा रहता है और ज़रा भी नहीं हिलता। लोग चिल्लाकर उससे फ़रियाद करते हैं, लेकिन वह जवाब नहीं देता, दुआगो को मुसीबत से नहीं बचाता।

8 ऐ बेवफ़ा लोगो, इसका खयाल रखो! मरदानगी दिखाकर संजीदगी से इस पर ध्यान दो! 9 जो कुछ अज़ल से पेश आया है उसे याद रखो। क्योंकि मैं ही रब हूँ, और मेरे सिवा कोई और नहीं। मैं ही रब हूँ, और मेरी मानिंद कोई नहीं।

10 मैं इब्तिदा से अंजाम का एलान, क़दीम ज़माने से आनेवाली बातों की पेशगोई करता आया हूँ। अब मैं फ़रमाता हूँ कि मेरा मनसूबा अटल है, मैं अपनी मरज़ी हर लिहाज़ से पूरी करूँगा। 11 मशरिक से मैं शिकारी परिदा बुला रहा हूँ, दूर-दराज़ मुल्क से एक ऐसा आदमी जो मेरा मनसूबा पूरा करे। ध्यान दो, जो कुछ मैंने फ़रमाया वह तकमील तक पहुँचाऊँगा, जो मनसूबा मैंने बाँधा वह पूरा करूँगा।

12 ऐ ज़िद्दी लोगो जो रास्ती से कही दूर हो, मेरी सुनो! 13 मैं अपनी रास्ती करीब ही लाया हूँ, वह दूर नहीं है। मेरी नजात के आने में देर नहीं होगी। मैं सियून को नजात दूँगा, इसराईल को अपनी शानो-शौकत से नवाज़ूँगा।

## 47

### रब बाबल को सज़ा देगा

1 ऐ कुँवारी बाबल बेटी, उतर जा! खाक में बैठ जा! ऐ बाबलियों की बेटी, ज़मीन पर बैठ जा जहाँ तख़्त नहीं है! अब से लोग तुझसे नहीं कहेंगे, 'ऐ मेरी नाज़-परवर्दा, ऐ मेरी लाडली!'

2 अब चक्की लेकर आटा पीस! अपना निकाब हटा, अपने लिबास का दामन उठा, अपनी टाँगों को उरियाँ करके नदियाँ पार कर। 3 तेरी बरहनगी सब पर जाहिर होगी, सब तेरी शर्मसार हालत देखेंगे। क्योंकि मैं बदला लेकर किसी को नहीं छोड़ूँगा।"

4 जिसने एवज़ाना देकर हमें छुड़ाया है वही यह फ़रमाता है, वह जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज़ है और जो इसराईल का कुदूस है।

5 "ऐ बाबलियों की बेटी, चुपके से बैठ जा! तारीकी में छुप जा! आइंदा तू 'ममालिक की मलिका' नहीं कहलाएगी।

6 जब मुझे अपनी कौम पर गुस्सा आया तो मैंने उसे यों रसवा किया कि उस की मुक़द्दस हालत जाती रही, गो वह मेरा मौस्सी हिस्सा थी। उस वक़्त मैंने उन्हें तेरे हवाले कर दिया, लेकिन तूने उन पर रहम न किया बल्कि बूढ़ों की गरदन पर भी

अपना भारी जुआ रख दिया। 7 तू बोली, 'मैं अबद तक मलिका ही रहूँगी!' तूने संजीदगी से ध्यान न दिया, न इसके अंजाम पर गौर किया।

8 अब सुन, ऐ ऐयाश, तू जो अपने आपको महफूज़ समझकर कहती है, 'मैं ही हूँ, मेरे सिवा कोई और नहीं है। मैं न कभी बेवा, न कभी बेऔलाद हूँगी।' 9 मैं फ़रमाता हूँ कि एक ही दिन और एक ही लमहे में तू बेऔलाद भी बनेगी और बेवा भी। तेरे सारे ज़बरदस्त जादूमंत्र के बावजूद यह आफत पूरे जोर से तुझ पर आएगी।

10 तूने अपनी बदकारी पर एतमाद करके सोचा, 'कोई नहीं मुझे देखता।' लेकिन तेरी 'हिक्मत' और 'इल्म' तुझे गलत राह पर लाया है। उनकी बिना पर तूने दिल में कहा, 'मैं ही हूँ, मेरे सिवा कोई और नहीं है।' 11 अब तुझ पर ऐसी आफत आएगी जिसे तेरे जादूमंत्र दूर करने नहीं पाएँगे, तू ऐसी मुसीबत में फँस जाएगी जिससे निपट नहीं सकेगी। अचानक ही तुझ पर तबाही नाज़िल होगी, और तू उसके लिए तैयार ही नहीं होगी। 12 अब खड़ी हो जा, अपने जादू-टोने का पूरा खज़ाना खोलकर सब कुछ इस्तेमाल में ला जो तूने जवानी से बड़ी मेहनत-मशक्कत के साथ अपना लिया है। शायद फायदा हो, शायद तू लोगों को डराकर भगा सके।

13 लेकिन दूसरों के बेशुमार मशवरे बेकार हैं, उन्होंने तुझे सिर्फ़ थका दिया है। अब तेरे नज़्मी खड़े हो जाएँ, जो सितारों को देख देखकर हर महीने पेशगोइयाँ करते हैं वह सामने आकर तुझे उससे बचाएँ जो तुझ पर आनेवाला है। 14 यकीनन वह आग में जलनेवाला भूसा ही है जो अपनी जान को शोलों से बचा नहीं सकते। और यह कोयलों की आग नहीं होगी जिसके सामने इनसान बैठकर आग ताप सके।

15 यही उन सबका हाल है जिन पर तूने मेहनत की है और जो तेरी जवानी से तेरे साथ तिजारत करते रहे हैं। हर एक लडखड़ाते हुए अपनी अपनी राह इख्तियार करेगा, और एक भी नहीं होगा जो तुझे बचाए।

## 48

### रब अपने नाम की खातिर इसराईल को बचाएगा

1 ऐ याकूब के घराने, सुनो! तुम जो इसराईल कहलाते और यहदाह के कबीले के हो, ध्यान दो! तुम जो रब के नाम की क़सम खाकर इसराईल के ख़ुदा को याद करते हो, अगरचे तुम्हारी बात न सच्चाई, न इनसाफ़ पर मबनी है, गौर करो! 2 हौं तवज्जुह दो, तुम जो मुक़द्दस शहर के लोग कहलाते और इसराईल के ख़ुदा पर एतमाद करते हो, सुनो कि अल्लाह जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज़ है क्या फ़रमाता है।

3 जो कुछ पेश आया है उसका एलान मैंने बड़ी देर पहले किया। मेरे ही मुँह से उस की पेशगोई सादिर हुई, मैं ही ने उस की इतला दी। फिर अचानक ही मैं उसे अमल में लाया और वह वुकूपज़ीर हुआ। 4 मैं जानता था कि तू कितना जिद्दी है। तेरे गले की नसें लोहे जैसी बे-लचक और तेरी पेशानी पीतल जैसी सख्त है। 5 यह जानकर मैंने बड़ी देर पहले इन बातों की पेशगोई की। उनके पेश आने से पहले मैंने तुझे उनकी ख़बर दी ताकि तू दावा न कर सके, 'मेरे बत ने यह कुछ किया, मेरे तराशे और ढाले गए देवता ने इसका हुक्म दिया।' 6 अब जब तूने यह सुन लिया है तो सब कुछ पर गौर कर। तू क्यों इन बातों को मानने के लिए तैयार नहीं?

अब से मैं तुझे नई नई बातें बताऊँगा, ऐसी पोशीदा बातें जो तुझे अब तक मालूम न थीं। 7 यह किसी क़दीम ज़माने में वुज़ुद में नहीं आई बल्कि अभी अभी आज ही तेरे इल्म में आई हैं। क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि तू कहे, 'मुझे पहले से इसका इल्म था।' 8 चुनौचे न यह बातें तेरे कान तक पहुँची हैं, न तू इनका इल्म रखता है, बल्कि क़दीम ज़माने से ही तेरा कान यह सुन नहीं सकता था। क्योंकि मैं जानता था कि तू सरासर बेवफ़ा है, कि पैदाइश से ही नमकहराम कहलाता है। 9 तो भी मैं अपने नाम की खातिर अपना ग़ज़ब नाज़िल करने से बाज़ रहता, अपनी तमज़ीद की खातिर अपने आपको तुझे नेस्ते-नाबूद करने से रोके रखता हूँ। 10 देख, मैंने तुझे पाक-साफ़ कर दिया है, लेकिन चाँदी को साफ़ करने की कुठाली में नहीं बल्कि मुसीबत की भट्टी में। उसी में मैंने तुझे आजमाया है। 11 अपनी खातिर, हौं अपनी ही खातिर मैं यह सब कुछ करता हूँ, ऐसा न हो कि मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए। क्योंकि मैं इज़ाज़त नहीं दूँगा कि किसी और को वह जलाल दिया जाए जिसका सिर्फ़ मैं हक़दार हूँ।

### रब इसराईल का नजातदहिदा है

12 ऐ याकूब की औलाद, मेरी सुन! ऐ मेरे बरगुज़ीदा इसराईल, ध्यान दे! मैं ही वही हूँ। मैं ही अब्वलो-आखिर हूँ। 13 मेरे ही हाथ ने ज़मीन की बुनियाद रखी, मेरे ही दहने हाथ ने आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया। जब मैं आवाज़ देता हूँ तो सब मिलकर खड़े हो जाते हैं। 14 आओ, सब जमा होकर सुनो! बुतों में से किसने इसकी पेशगोई की? किसी ने नहीं! जिस आदमी को रब प्यार करता है वह बाबल के ख़िलाफ़ उस की मरज़ी पूरी करेगा, बाबलियों पर उस की कुव्वत का इज़हार

करेगा। 15 मैं, हाँ मैं ही ने यह फरमाया। मैं ही उसे बुलाकर यहाँ लाया हूँ, इसलिए वह जरूर कामयाब होगा। 16 मेरे करीब आकर सुनो! शुरू से मैंने अलानिया बात की, जब से यह पेश आया मैं हाज़िर हूँ।”

और अब रब कादिरे-मुतलक और उसके रह ने मुझे भेजा है।

17 रब जो तेरा छुड़ानेवाला और इसराईल का कुदूस है फरमाता है, “मैं रब तेरा खुदा हूँ। मैं तुझे वह कुछ सिखाता हूँ जो मुफ़ीद है और तुझे उन राहों पर चलने देता हूँ जिन पर तुझे चलना है। 18 काश तू मेरे अहकाम पर ध्यान देता! तब तेरी सलामती बहते दरिया जैसी और तेरी रास्तबाज़ी समुंद्र की मौजों जैसी होती। 19 तेरी औलाद रेत की मानिंद होती, तेरे पेट का फल रेत के ज़रों जैसा अनगिनत होता। इसका इमकान ही न होता कि तेरा नामो-निशान मेरे सामने से मिट जाए।”

20 बाबल से निकल जाओ! बाबलियों के बीच में से हिजरात करो! खुशी के नारे लगा लगाकर एलान करो, दुनिया की इंतहा तक खुशखबरी फैलाते जाओ कि रब ने एवजाना देकर अपने खादिम याक़ब को छुड़ाया है। 21 उन्हें प्यास न लगी जब उसने उन्हें रेगिस्तान में से गुज़रने दिया। उसके हुकम पर पत्थर में से पानी बह निकला। जब उसने चटान को चीर डाला तो पानी फूट निकला।

22 लेकिन रब फरमाता है कि बेदीन सलामती नहीं पाएँगे।

## 49

रब का पैगंबर अक़वाम का नूर है

1 ऐ जज़ीरो, सुनो! ऐ दूर-दराज़ कौमो, ध्यान दो! रब ने मुझे पैदाइश से पहले ही बुलाया, मेरी माँ के पेट से ही मेरे नाम को याद करता आया है। 2 उसने मेरे मुँह को तेज़ तलवार बनाकर मुझे अपने हाथ के साथे में छुपाए रखा, मुझे तेज़ तीर बनाकर अपने तरक़श में पोशीदा रखा है। 3 वह मुझसे हमकलाम हुआ, “तू मेरा खादिम इसराईल है, जिसके ज़रीए मैं अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा।”

4 मैं तो बोला था, “मेरी मेहनत-मशक्कत बेसूद थी, मैंने अपनी ताकत बेफायदा और बेमकसद जाया कर दी है। ताहम मेरा हक अल्लाह के हाथ में है, मेरा खुदा ही मुझे अज़ देगा।”

5 लेकिन अब रब मुझसे हमकलाम हुआ है, वह जो माँ के पेट से ही मुझे इस मकसद से तशक़ील देता आया है कि मैं उस की खिदमत करके याक़ब की औलाद को उसके पास वापस लाऊँ और इसराईल को उसके हज़र जमा करूँ। रब ही के हज़र मेरा एहताराम किया जाएगा, मेरा खुदा ही मेरी कुव्वत होगा। 6 वही फरमाता है, “तू मेरी खिदमत करके न सिर्फ़ याक़ब के कबीले बहाल करेगा और उन्हें वापस लाएगा जिन्हें मैंने महफूज़ रखा है बल्कि तू इससे कहीं बढ़कर करेगा। क्योंकि मैं तुझे दीगर अक़वाम की रौशनी बना दूँगा ताकि तू मेरी नजात को दुनिया की इंतहा तक पहुँचाए।”

7 रब जो इसराईल का छुड़ानेवाला और उसका कुदूस है उससे हमकलाम हुआ है जिसे लोग हक़ीर जानते हैं, जिससे दीगर अक़वाम घिन खाते हैं और जो हुक्मरानों का गुलाम है। उससे रब फरमाता है, “तुझे देखते ही बादशाह खड़े हो जाएँगे और रईस मुँह के बल झुक जाएँगे। यह रब की खातिर ही पेश आएगा जो वफ़ादार है और इसराईल के कुदूस के बाइस ही वुकूपज़ीर होगा जिसने तुझे चुन लिया है।”

8 रब फरमाता है, “कबूलियत के वक़्त मैं तेरी सुनूँगा, नजात के दिन तेरी मदद करूँगा। तब मैं तुझे महफूज़ रखकर मुकर्रर करूँगा कि तू मेरे और कौम के दरमियान अहद बने, कि तू मुल्क बहाल करके तबाहशुदा मौरूसी ज़मीन को नए सिरे से तक़सीम करे, 9 कि तू कैदियों को कहे, ‘निकल आओ’ और तारीकी में बसनेवालों को, ‘रौशनी में आ जाओ!’ तब मेरी भेड़ें रास्तों के किनारे किनारे चरेगी, और तमाम बंजर बुलदियों पर भी उनकी हरी हरी चरागाहें होंगी। 10 न उन्हें भूक सताएगी न प्यास। न तपती गरमी, न धूप उन्हें झलसाएगी। क्योंकि जो उन पर तरस खाता है वह उनकी क्रियादत करके उन्हें चशमों के पास ले जाएगा। 11 मैं पहाड़ों को हमवार रास्तों में तबदील कर दूँगा जबकि मेरी शाहराहें ऊँची हो जाएँगी। 12 तब वह दूर-दराज़ इलाकों से आएँगे, कुछ शिमाल से, कुछ मगरिब से, और कुछ मिसर के जुन्बी शहर असवान से भी।”

13 ऐ आसमान, खुशी के नारे लगा! ऐ ज़मीन, बाग़ बाग़ हो जा! ऐ पहाड़ो, शादमानी के गीत गाओ! क्योंकि रब ने अपनी कौम को तसल्ली दी है, उसे अपने मुसीबतज़दा लोगों पर तरस आया है।

रब अपनी कौम को कभी नहीं भूलेगा

14 लेकिन सिथ्यून कहती है, “रब ने मुझे तर्क कर दिया है, कादिरे-मुतलक मुझे भूल गया है।”

15 “यह कैसे हो सकता है? क्या माँ अपने शीरखार को भूल सकती है? जिस बच्चे को उसने जन्म दिया, क्या वह उस पर तरस नहीं खाएगी? शायद वह भूल जाए, लेकिन मैं तुझे कभी नहीं भूलूँगा! 16 देख, मैंने तुझे अपनी दोनों हथेलियों में कंदा कर दिया है, तेरी ज़मीनबोस दीवारें हमेशा मेरे सामने हैं।



17 जो तुझे नए सिरे से तामीर करना चाहते हैं वह दौड़कर वापस आ रहे हैं जबकि जिन लोगों ने तुझे ढाकर तबाह किया वह तुझसे निकल रहे हैं। 18 ऐ सिय्यून बेटी, नज़र उठाकर चारों तरफ देख! यह सब जमा होकर तेरे पास आ रहे हैं। मेरी हयात की कसम, यह सब तेरे ज़ेवरात बनेंगे जिनसे तू अपने आपको दुलहन की तरह आरास्ता करेगी।” यह रब का फ़रमान है।

19 “फ़िलहाल तेरे मुल्क में चारों तरफ़ खंडरात, उजाड़ और तबाही नज़र आती है, लेकिन आईदा वह अपने बाशिनदों की कसरत के बाइस छोटा होगा। और जिन्होंने तुझे हड़प कर लिया था वह दूर रहेंगे। 20 पहले तू बेऔलाद थी, लेकिन अब तेरे इतने बच्चे होंगे कि वह तेरे पास आकर कहेंगे, ‘मेरे लिए जगह कम है, मुझे और ज़मीन दें ताकि मैं आराम से ज़िंदगी गुज़ार सकूँ।’ तू अपने कानों से यह सुनेगी।

21 तब तू हैरान होकर दिल में सोचेगी, ‘किसने यह बच्चे मेरे लिए पैदा किए? मैं तो बच्चों से महरूम और बेऔलाद थी, मुझे जिलावतन करके हटाया गया था। किसने इनको पाला? मुझे तो तनहा ही छोड़ दिया गया था। तो फिर यह कहाँ से आ गए हैं?’”

22 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, “देख, मैं दीगर कौमों को हाथ से इशारा देकर उनके सामने अपना झंडा गाड़ दूँगा। तब वह तेरे बेटों को उठाकर अपने बाजूओं में वापस ले आएँगे और तेरी बेटीयों को कंधे पर बिठाकर तेरे पास पहुँचाएँगे। 23 बादशाह तेरे बच्चों की देख-भाल करेंगे, और रानियाँ उनकी दाइयाँ होंगी। वह मुँह के बल झुककर तेरे पाँवों की खाक चाटेंगे। तब तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ, कि जो भी मुझसे उम्मीद रखे वह कभी शरमिदा नहीं होगा।”

24 क्या सूरमे का लूटा हुआ माल उसके हाथ से छीना जा सकता है? या क्या ज़ालिम के कैदी उसके कब्जे से छूट सकते हैं? मुश्किल ही से। 25 लेकिन रब फ़रमाता है, “यक़ीनन सूरमे का कैदी उसके हाथ से छीन लिया जाएगा और ज़ालिम का लूटा हुआ माल उसके कब्जे से छूट जाएगा। जो तुझसे झगड़े उसके साथ मैं खुद झगड़ूँगा, मैं ही तेरे बच्चों को नजात दूँगा।

26 जिन्होंने तुझ पर ज़ुल्म किया उन्हें मैं उनका अपना गोशत खिलाऊँगा, उनका अपना खून यों पिलाऊँगा कि वह उसे नई मैं की तरह पी पीकर मस्त हो जाएँगे। तब तमाम इन्सान जान लेंगे कि मैं रब तेरा नजातदहिदा, तेरा छुड़ानेवाला और याकूब का ज़बरदस्त सूरमा हूँ।”

## 50

तुम अपने ज़ाती गुनाहों की सज़ा भुगत रहे हो

1 रब फ़रमाता है, “आओ, मुझे वह तलाक़नामा दिखाओ जो मैंने देकर तुम्हारी माँ को छोड़ दिया था। वह कहाँ है? या मुझे वह कर्ज़ख़ाह दिखाओ जिसके हवाले मैंने तुम्हें अपना कर्ज़ उतारने के लिए किया। वह कहाँ है? देखो, तुम्हें अपने ही गुनाहों के सबब से फ़रोख़्त किया गया, तुम्हारे अपने ही गुनाहों के सबब से तुम्हारी माँ को फ़ारिग कर दिया गया।

2 जब मैं आया तो कोई नहीं था। क्या वजह? जब मैंने आवाज़ दी तो जवाब देनेवाला कोई नहीं था। क्यों? क्या मैं फ़िघा देकर तुम्हें छुड़ाने के काबिल न था? क्या मेरी इतनी ताकत नहीं कि तुम्हें बचा सकूँ? मेरी तो एक ही धमकी से समुंदर ख़श्क हो जाता और दरिया रीगिस्तान बन जाते हैं। तब उनकी मछलियाँ पानी से महरूम होकर गल जाती हैं, और उनकी बदबू चारों तरफ फैल जाती है। 3 मैं ही असमान को तारीकी का जामा पहनाता, मैं ही उसे टाट के मातमी लिबास में लपेट देता हूँ।”

रब के पैगंबर की स्सवाई

4 रब कादिरे-मुतलक ने मुझे शागिर्द की-सी ज़बान अता की ताकि मैं वह कलाम जान लूँ जिससे थकामौदा तकवियत पाए। सबह बसुबह वह मेरे कान को जगा देता है ताकि मैं शागिर्द की तरह सुन सकूँ। 5 रब कादिरे-मुतलक ने मेरे कान को खोल दिया, और न मैं सरकश हुआ, न पीछे हट गया। 6 मैंने मारनेवालों को अपनी पीठ और बाल नोचनेवालों को अपने गाल पेश किए। मैंने अपना चेहरा उनकी गालियों और थूक से न छुपाया।

7 लेकिन रब कादिरे-मुतलक मेरी मदद करता है, इसलिए मेरी स्सवाई नहीं होगी। चुनाँचे मैंने अपना मुँह चकमाक की तरह सख़्त कर लिया है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं शरमिदा नहीं हो जाऊँगा। 8 जो मुझे रास्त ठहराता है वह करीब ही है। तो फिर कौन मेरे साथ झगड़ेगा? आओ, हम मिलकर अदालत में खड़े हो जाएँ। कौन मुझ पर इलज़ाम लगाने की ज़रत करेगा? वह आकर मेरा सामना करे! 9 रब कादिरे-मुतलक ही मेरी मदद करता है। तो फिर कौन मुझे मुजरिम ठहराएगा? यह तो सब पुराने कपड़े की तरह धिसकर फटेंगे, कीड़े उन्हें खा जाएँगे।

10 तुममें से कौन रब का ख़ौफ़ मानता और उसके खादिम की सुनता है? जब उसे रौशनी के बग़ैर अंधेरे में चलना पड़े तो वह रब के नाम पर भरोसा रखे और अपने खुदा पर इन्हिसार करे। 11 लेकिन तुम बाकी लोग जो आग लगाकर अपने आपको

जलते हुए तीरों से लैस करते हो, अपनी ही आग के शोलों में चले जाओ! खुद उन तीरों की जड़ में आओ जो तुमने दूसरों के लिए जलाए हैं! मेरे हाथ से तुम्हें यही अन्न मिलेगा, तुम सख्त अजियत का शिकार होकर ज़मीन पर तड़पते रहोगे।

## 51

रब अपनी क़ौम को तसल्ली देता है

1 “तुम जो रास्ती के पीछे लगे रहते, जो रब के तालिब हो, मेरी बात सुनो! उस चटान पर ध्यान दो जिसमें से तुम्हें तराशकर निकाला गया है, उस कान पर गौर करो जिसमें से तुम्हें खोदा गया है। 2 यानी अपने बाप इब्राहीम और अपनी माँ सारा पर तबज्जुह दो, जिसने दर्द-ज़ह की तकलीफ उठाकर तुम्हें जन्म दिया। इब्राहीम बेओलाद था जब मैंने उसे बुलाया, लेकिन फिर मैंने उसे बरकत देकर बहुत औलाद बख्शी।”

3 यकीनन रब सिय्यून को तसल्ली देगा। वह उसके तमाम खंडरात को तशफ़की देकर उसके रेगिस्तान को बागे-अदन में और उस की बंजर ज़मीन को रब के बाग में बदल देगा। तब उसमें खुशीओ-शадमानी पाई जाएगी, हर तरफ़ शुक़गुजारी और गीतों की आवाज़ें सुनाई देंगी।

4 “ऐ मेरी क़ौम, मुझ पर ध्यान दे! ऐ मेरी उम्मत, मुझ पर गौर कर! क्योंकि हिदायत मुझसे सादिर होगी, और मेरा इनसाफ़ क़ौमों की रौशनी बनेगा। 5 मेरी रास्ती करीब ही है, मेरी नज़ात रास्ते में है, और मेरा जोरावर बाजू क़ौमों में इनसाफ़ कायम करेगा। जज़ीर मुझसे उम्मीद रखे, वह मेरी कुदरत देखने के इंतज़ार में रहेंगे। 6 अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाओ! नीचे ज़मीन पर नज़र डालो! आसमान धुँएँ की तरह बिखर जाएगा, ज़मीन पुराने कपड़े की तरह धिसे-फटेगी और उसके बाशिंदे मच्छरों की तरह मर जाएंगे। लेकिन मेरी नज़ात अबद तक कायम रहेगी, और मेरी रास्ती कभी ख़त्म नहीं होगी।

7 ऐ सहीह राह को जाननेवालो, ऐ क़ौम जिसके दिल में मेरी शरीअत है, मेरी बात सुनो! जब लोग तुम्हारी बेइज़्जती करते हैं तो उनसे मत डरना, जब वह तुम्हें गालियाँ देते हैं तो मत घबराना। 8 क्योंकि किरम उन्हें कपड़े की तरह खा जाएगा, कीड़ा उन्हें ऊन की तरह हज़म करेगा। लेकिन मेरी रास्ती अबद तक कायम रहेगी, मेरी नज़ात पुशत-दर-पुशत बरकरार रहेगी।”

रब की रिहाई

9 ऐ रब के बाजू, उठ! जाग उठ और कुव्वत का जामा पहन ले! यों अमल में आ जिस तरह क़दीम ज़माने में आया था, जब तूने मुरअदिद नसलों पहले रहब को टुकड़े टुकड़े कर दिया, समुंदरी अजदहे को छेद डाला। 10 क्योंकि तू ही ने समुंदर को ख़रक किया, तू ही ने गहराइयों की तह पर रास्ता बनाया ताकि वह जिन्हें तूने एवज़ाना देकर छुड़ाया था उसमें से गुज़र सकें।

11 जिन्हें रब ने फिघा देकर छुड़ाया है वह वापस आएँगे। वह शादियाना बजाकर सिय्यून में दाख़िल होंगे, और हर एक का सर अबदी खुशी के ताज से आरास्ता होगा। क्योंकि खुशी और शадमानी उन पर गालिब आकर तमाम गम और आहो-ज़ारी भगा देगी।

12 “मैं, सिर्फ़ मैं ही तुझे तसल्ली देता हूँ। तो फिर तू फ़ानी इनसान से क्यों डरती है, जो घास की तरह मुरझाकर ख़त्म हो जाता है? 13 तू रब अपने खालिक को क्यों भूल गई है, जिसने आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया और ज़मीन की बुनियाद रखी? जब ज़ालिम तुझे तबाह करने पर तुला रहता है तो तू उसके तैश से पूरे दिन क्यों ख़ौफ़ खाती रहती है? अब उसका तैश कहाँ रहा? 14 जो जंजीरों में जकड़ा हुआ है वह जल्द ही आज़ाद हो जाएगा। न वह मरकर क़ब्र में उतरेगा, न रोटी से महरूम रहेगा। 15 क्योंकि मैं रब तेरा खुदा हूँ जो समुंदर को यों हरकत में लाता है कि वह मुतलातिम होकर गरजने लगता है। रब्बुन-अफ़वाज़ मेरा नाम है। 16 मैंने अपने अलफ़ाज़ तेरे मुँह में डालकर तुझे अपने हाथ के साये में छुपाए रखा है ताकि नए सिरे से आसमान को तानूँ, ज़मीन की बुनियादें रखूँ और सिय्यून को बताऊँ, ‘तू मेरी क़ौम है!’”

ऐ यस्शालम, जाग उठ!

17 ऐ यस्शालम, उठ! जाग उठ! ऐ शहर जिसने रब के हाथ से उसका ग़ज़ब भरा प्याला पी लिया है, खड़ी हो जा! अब तूने लडखडा देनेवाले प्याले को आखिरी क्रतरे तक चाट लिया है। 18 जितने भी बेटे तूने जन्म दिए उनमें से एक भी नहीं रहा जो तेरी राहनुमाई करे। जितने भी बेटे तूने पाले उनमें से एक भी नहीं जो तेरा हाथ पकड़कर तेरे साथ चले। 19 तुझ पर दो आफ़तें आईं यानी बारबादीओ-तबाही, काल और तलवार। लेकिन किसने हमददीं का इज़हार किया? किसने तुझे तसल्ली दी? 20 तेरे बेटे ग़श खाकर गिर गए हैं। हर गली में वह जाल में फँसे हुए गज़ाल \* की तरह ज़मीन पर तड़प रहे हैं। क्योंकि रब का ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ है, वह इलाही डॉट-डपट का निशाना बन गए हैं।

\* 51:20 गज़ाले-अफ़्रीका, oryx।

21 चुनाँचे मेरी बात सुन, ऐ मुसीबतजदा कौम, ऐ नशे में मत्वली उम्मत, गो तू मै के असर से नही डगमगा रही। 22 रब तेरा आका जो तेरा खुदा है और अपनी कौम के लिए लडता है वह फरमाता है, “देख, मैंने तेरे हाथ से वह प्याला दूर कर दिया जो तेरे लडखडाने का सबब बना। आइंदा तू मेरा गजब भरा प्याला नही पिएगी।” 23 अब मैं इसे उनको पकडा दूँगा जिन्होंने तुझे अजियत पहुँचाई है, जिन्होंने तुझसे कहा, ‘औधे मुँह झुक जा ताकि हम तुझ पर से गुज्रें।’ उस वक्त तेरी पीठ खाक में धँसकर दूसरों के लिए रास्ता बन गई थी।”

## 52

### जंजीरों को तोड़!

1 ऐ सिय्यून, उठ, जाग उठ! अपनी ताकत से मूलब्स हो जा! ऐ मुकद्दस शहर यस्शलम, अपने शानदार कपडे से आरस्ता हो जा! आइंदा कभी भी गैरमखतून या नापाक शख्स तुझमें दाखिल नही होगा। 2 ऐ यस्शलम, अपने आपसे गर्द झाडकर खडी हो जा और तख्त पर बैठ जा। ऐ गिरिफ्तार की हुई सिय्यून बेटी, अपनी गरदन की जंजीरों को खोलकर उनसे आजाद हो जा! 3 क्योंकि रब फरमाता है, “तुम्हें मुफ्त में बेचा गया, और अब तुम्हें पैसे दिए बगैर छुड़ाया जाएगा।”

4 क्योंकि रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, “कदीम ज़माने में मेरी कौम मिसर चली गई ताकि वहाँ परदेस में रहे। बाद में अस्ूर ने बिलावजह उस पर जुलम किया है।” 5 रब फरमाता है, “अब जो ज्यादती मेरी कौम से हो रही है उसका मेरे साथ क्या वास्ता है?” रब फरमाता है, “मेरी कौम तो मुफ्त में छीन ली गई है, और उस पर हकूमत करनेवाले शेखी मारकर पूरा दिन मेरे नाम पर कुफर बकते हैं। 6 चुनाँचे मेरी कौम मेरे नाम को जान लेगी, उस दिन वह पहचान लेगी कि मैं ही वही हूँ जो फरमाता है, ‘मैं हाज़िर हूँ!’”

7 उसके कदम कितने प्यारे हैं जो पहाड़ों पर चलते हुए खुशखबरी सुनाता है। क्योंकि वह अमनो-अमान, खुशी का पैगाम और नजात का एलान करेगा, वह सिय्यून से कहेगा, “तेरा खुदा बादशाह है!” 8 सुन! तेरे पहेदा आवाज़ बुलंद कर रहे हैं, वह मिलकर खुशी के नारे लगा रहे हैं। क्योंकि जब रब कोहे-सिय्यून पर वापस आएगा तो वह अपनी आँखों से इसका मुशाहदा करेंगे।

9 ऐ यस्शलम के खंडरात, शादियाना बजाओ, खुशी के गीत गाओ! क्योंकि रब ने अपनी कौम को तसल्ली दी है, उसने एवजाना देकर यस्शलम को छुड़ाया है। 10 रब अपनी मुकद्दस कुदरत तमाम अक़वाम पर जाहिर करेगा, दुनिया की इंतहा तक सब हमारे खुदा की नजात देखेंगे।

11 जाओ, चले जाओ! वहाँ से निकल जाओ! किसी भी नापाक चीज़ को न छूना। जो रब का सामान उठाए चल रहे हैं वह वहाँ से निकलकर पाक-साफ रहें। 12 लेकिन लाज़िम नही कि तुम भागकर रवाना हो जाओ। तुम्हें अचानक फ़ार होने की ज़रूरत नही होगी, क्योंकि रब तुम्हारे आगे भी चलेगा और तुम्हारे पीछे भी। यों इसराइल का खुदा दोनों तरफ से तुम्हारी हिफाज़त करेगा।

### रब का पैगंबर हमारे गुनाहों को उठाएगा

13 देखो, मेरा खादिम कामयाब होगा। वह सरबलुंद, मुमताज़ और बहुत सरफ़राज़ होगा। 14 तुझे देखकर बहुतों के रोगटे खडे हो गए। क्योंकि उस की शकल इतनी खराब थी, उस की सूरत किसी भी इनसान से कहीं ज्यादा बिगड़ी हुई थी। 15 लेकिन अब बहुत-सी कौमों उसे देखकर हक्का-बक्का हो जाएँगी, बादशाह दम बख़ुद रह जाएंगे। क्योंकि जो कुछ उन्हें नही बताया गया उसे वह देखेंगे, और जो कुछ उन्होंने नही सुना उस की उन्हें समझ आएगी।

## 53

1 लेकिन कौन हमारे पैगाम पर ईमान लाया? और रब की कुदरत किस पर जाहिर हुई? 2 उसके सामने वह कौपल की तरह फूट निकला, उस ताज़ा और मुलायम शिपूके की तरह जो ख़ूबक ज़मीन में छुपी हुई जड से निकलकर फलने फूलने लगती है। न वह खूबसूरत था, न शानदार। हमने उसे देखा तो उस की शकलो-सूरत में कुछ नही था जो हमें पसंद आता। 3 उसे हक़ीर और मरदूद समझा जाता था। दुख और बीमारियों उस की साथी रहीं, और लोग यहाँ तक उस की तहक़ीर करते थे कि उसे देखकर अपना मुँह फेर लेते थे। हम उस की कुछ कदर नही करते थे।

4 लेकिन उसने हमारी ही बीमारियों उठा लीं, हमारा ही दुख भुगत लिया। तो भी हम समझे कि यह उस की मुनासिब सज़ा है, कि अल्लाह ने खुद उसे मारकर खाक में मिला दिया है। 5 लेकिन उसे हमारे ही ज़रायम के सबब से छेदा गया, हमारे ही गुनाहों की खातिर कुचला गया। उसे सज़ा मिली ताकि हमें सलामती हासिल हो, और उसी के ज़ख़मों से हमें शफ़ा मिली। 6 हम सब भेड-बक़रियों की तरह आवारा फिर रहे थे, हर एक ने अपनी अपनी राह इख़्तियार की। लेकिन रब ने उसे हम सबके कुसूर का निशाना बनाया।

7 उस पर जुल्म हुआ, लेकिन उसने सब कुछ बरदाश्त किया और अपना मुँह न खोला, उस भेड़ की तरह जिसे जबह करने के लिए ले जाते हैं। जिस तरह लेला बाल कतरनेवालों के सामने खामोश रहता है उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला। 8 उसे जुल्म और अदालत के हाथ से छीन लिया गया। उस के दौर के लोग—किस ने ध्यान दिया कि उसका जिंदों के मुल्क से ताल्लुक कट गया, कि वह मेरी कौम के जुर्म के सबब से सज़ा का निशाना बन गया? 9 मुकर्रर यह हुआ कि उस की क़ब्र बेदीनों के पास हो, कि वह मरते वक्त एक अमीर के पास दफनाया जाए, गो न उसने तशदुद किया, न उसके मुँह में फ़रेब था।

10 रब ही की मरज़ी थी कि उसे कुचले, उसे दुख पहुँचाए। लेकिन जब वह अपनी जान को कुसूर की कुरबानी के तौर पर देगा तो वह अपने फ़रज़ंदों को देखेगा, अपने दिनों में इज़ाफा करेगा। हाँ, वह रब की मरज़ी को पूरा करने में कामयाब होगा।

11 इतनी तकलीफ़ बरदाश्त करने के बाद उसे फल नज़र आएगा, और वह सेर हो जाएगा। अपने इल्म से मेरा रास्त खादिम बहुतों का इनसाफ़ कायम करेगा, क्योंकि वह उनके गुनाहों को अपने ऊपर उठाकर दूर कर देगा।

12 इसलिए मैं उसे बडों में हिस्सा दूँगा, और वह जोरावरो के साथ लूट का माल तकसीम करेगा। क्योंकि उसने अपनी जान को मौत के हवाले कर दिया, और उसे मुजरिमों में शमार किया गया। हाँ, उसने बहुतों का गुनाह उठाकर दूर कर दिया और मुजरिमों की शफाअत की।

## 54

रब ने यस्शलम को दुबारा कबूल कर लिया है

1 रब फ़रमाता है, “खुशी के नारे लगा, तू जो बेऔलाद है, जो बच्चे को जन्म ही नहीं दे सकती। बुलंद आवाज़ से शादियाना बजा, तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ। क्योंकि अब तर्क की हुई औरत के बच्चे शादीशुदा औरत के बच्चों से ज्यादा हैं।

2 अपने ख़ैमे को बड़ा बना, उसके परदे हर तरफ़ बिछा! बचत मत करना! ख़ैमे के रस्से लंबे लंबे करके मेखें मज़बूती से ज़मीन में ठोक दे। 3 क्योंकि तू तेज़ी से दाईं और बाईं तरफ़ फैल जाएगी, और तेरी औलाद दीगर कौमों पर क़ब्ज़ा करके तबाहशुदा शहरों को अज़ सरे-नौ आबाद करेगी।

4 मत डरना, तेरी ससवाई नहीं होगी। शर्मसार न हो, तेरी बेहरमती नहीं होगी। अब तू अपनी जवानी की शर्मिंदगी भूल जाएगी, तैरे ज़हन से बेवा होने की ज़िल्लत उतर जाएगी। 5 क्योंकि तेरा ख़ालिक तेरा शौहर है, रब्बुल-अफ़वाज़ उसका नाम है, और तेरा छुड़ानेवाला इसराईल का कुद्स है, जो पूरी दुनिया का खुदा कहलाता है।”

6 तेरा खुदा फ़रमाता है, “तू मतरूका और दिल से मज़रूह बीवी की मानिंद है, उस औरत की मानिंद जिसके शौहर ने उसे रद किया, गो उस की शादी उस वक्त हुई जब कुँवारी ही थी। लेकिन अब मैं, रब ने तुझे बुलाया है। 7 एक ही लमहे के लिए मैंने तुझे तर्क किया, लेकिन अब बड़े रहम से तुझे जमा करूँगा। 8 मैंने अपने ग़ज़ब का पूरा जोर तुझ पर नाज़िल करके पल-भर के लिए अपना चेहरा तुझसे छुपा लिया, लेकिन अब अबदी शफ़क़त से तुझ पर रहम करूँगा।” रब तेरा छुड़ानेवाला यह फ़रमाता है।

9 “बड़े सैलाब के बाद मैंने नूह से कसम खाई थी कि आइंदा सैलाब कभी पूरी ज़मीन पर नहीं आएगा। इसी तरह अब मैं कसम खाकर वादा करता हूँ कि आइंदा न मैं कभी तुझसे नाराज़ हूँगा, न तुझे मलामत करूँगा। 10 गो पहाड़ हट जाएँ और पहाड़ियाँ ज़ुबिष खाएँ, लेकिन मेरी शफ़क़त तुझ पर से कभी नहीं हटेगी, मेरा सलामती का अहद कभी नहीं हिलेगा।” यह रब का फ़रमान है जो तुझ पर तरस खाता है।

नया शहर यस्शलम

11 “बेचारी बेटी यस्शलम! शदीद तूफ़ान तुझ पर से गुज़र गए हैं, और कोई नहीं है जो तुझे तसल्ली दे। देख, मैं तेरी दीवारों के पत्थर मज़बूत चूने से जोड़ दूँगा और तेरी बुनियादों को संगे-त्लाजवर्द \* से रख दूँगा। 12 मैं तेरी दीवारों को याकूत, तैरे दरवाज़ों को आबे-बहर † और तेरी तमाम फ़सील को कीमती जवाहर से तामीर करूँगा। 13 तैरे तमाम फ़रज़ंद रब से तालीम पाएँगे, और तेरी औलाद की सलामती अज़ीम होगी। 14 तुझे इनसाफ़ की मज़बूत बुनियाद पर रखा जाएगा, चुनौते दूसरों के जुल्म से दूर रह, क्योंकि डरने की ज़रूरत नहीं होगी। दहशतज़दा न हो, क्योंकि दहशत खाने का सबब तैरे क़रीब नहीं आएगा। 15 अगर कोई तुझ पर हमला करे भी तो यह मेरी तरफ़ से नहीं होगा, इसलिए हर हमलाआवर शिकस्त खाएगा।

16 देख, मैं ही उस लोहार का ख़ालिक हूँ जो हवा देकर कोयलों को दहका देता है ताकि काम के लिए मौजूद हथियार बना ले। और मैं ही ने तबाह करनेवाले को खलक किया ताकि वह बरबादी का काम अंजाम दे। 17 चुनौते जो भी हथियार तुझ पर हमला करने के लिए तैयार हो जाए वह नाकाम होगा, और जो भी ज़बान तुझ पर इलज़ाम लगाए उसे तू मुजरिम साबित करेगी। यही रब के खादिमों का मौस्सी हिस्सा है, मैं ही उनकी रास्तबाज़ी बरकरार रखूँगा।” रब खुद यह फ़रमाता है।

\* 54:11 lapis lazuli † 54:12 beryl

## 55

रब के पास आओ ताकि ज़िंदगी पाओ

1 “क्या तुम प्यासे हो? आओ, सब पानी के पास आओ! क्या तुम्हारे पास पैसे नहीं? इधर आओ, सौदा खरीदकर खाना खाओ। यहाँ की मैं और दूध मुफ्त है। आओ, उसे पैसे दिए बगैर खरीदो। 2 उस पर पैसे क्यों खर्च करते हो जो रोटी नहीं है? जो सेर नहीं करता उसके लिए मेहनत-मशक्कत क्यों करते हो? सुनो, सुनो मेरी बात! फिर तुम अच्छी खुराक खाओगे, बेहतरीन खाने से लुफ्फ़अंदोज़ होगे। 3 कान लगाकर मेरे पास आओ! सुनो तो जीते रहोगे।

मैं तुम्हारे साथ अबदी अहद बाँधूँगा, तुम्हें उन अनमिट मेहरबानियों से नवाज़ूँगा जिनका वादा दाऊद से किया था। 4 देख, मैंने मुक़र्रर किया कि वह अक़वाम के सामने मेरा गवाह हो, कि अक़वाम का रईस और हुक्मरान हो। 5 देख, तू ऐसी क्रौम को बुलाएगा जिसे तू नहीं जानता, और तुझसे नावाक़िफ़ क्रौम रब तेरे खुदा की खातिर तेरे पास दौड़ी चली आएगी। क्योंकि जो इसराईल का कुद्दूस है उसने तुझे शानो-शौकत अता की है।”

मेरा कलाम बेतासीर नहीं रहता

6 अभी रब को तलाश करो जबकि उसे पाया जा सकता है। अभी उसे पुकारो जबकि वह करीब ही है। 7 बेदीन अपनी बुरी राह और शरीर अपने बुरे खयालात छोड़े। वह रब के पास वापस आए तो वह उस पर रहम करेगा। वह हमारे खुदा के पास वापस आए, क्योंकि वह फ़राख़दिली से मुआफ़ कर देता है।

8 क्योंकि रब फ़रमाता है, “मेरे खयालात और तुम्हारे खयालात में और मेरी राहों और तुम्हारी राहों में बड़ा फ़रक़ है।

9 जितना आसमान ज़मीन से ऊँचा है उतनी ही मेरी राहें तुम्हारी राहों और मेरे खयालात तुम्हारे खयालात से बुलंद हैं।

10 बारिश और बर्फ़ पर गौर करो! ज़मीन पर पड़ने के बाद यह खाली हाथ वापस नहीं आती बल्कि ज़मीन को यों सेराब करती है कि पौदे फूटने और फ़लने फूलने लगते हैं बल्कि पकते पकते बीज बोनेवाले को बीज और भूके को रोटी मुहैया करते हैं। 11 मेरे मुँह से निकला हुआ कलाम भी ऐसा ही है। वह खाली हाथ वापस नहीं आएगा बल्कि मेरी मरज़ी पूरी करेगा और उसमें कामयाब होगा जिसके लिए मैंने उसे भेजा था।

12 क्योंकि तुम खुशी से निकलोगे, तुम्हें सलामती से लाया जाएगा। पहाड़ और पहाड़ियाँ तुम्हारे आने पर बाग़ बाग़ होकर शादियाना बजाएँगी, और मैदान के तमाम दरख़त तालियाँ बजाएँगे। 13 कौँदार झाड़ी की बजाएँ ज़नीपर का दरख़त उगेगा, और बिच्छुबूटी की बजाएँ मेहँदी फले-फूलेगी। यों रब के नाम को जलाल मिलेगा, और उस की कुदरत का अबदी और अनमिट निशान कायम होगा।”

## 56

हर शख्स अल्लाह की क्रौम में शामिल हो सकता है

1 रब फ़रमाता है, “इन्साफ़ को कायम रखो और वह कुछ किया करो जो रास्त है, क्योंकि मेरी नजात करीब ही है, और मेरी रास्ती ज़ाहिर होने को है। 2 मुबारक है वह जो यों रास्ती से लिपटा रहे। मुबारक है वह जो सबत के दिन की बेहुरमती न करे बल्कि उसे मनाए, जो हर बुरे काम से गुरज़ करे।”

3 जो परदेसी रब का पैरोकार हो गया है वह न कहे कि बेशक रब मुझे अपनी क्रौम से अलग कर रखेगा। ख्वाजासरा भी न सोचे कि हाय, मैं सूखा हुआ दरख़त ही हूँ!

4 क्योंकि रब फ़रमाता है, “जो ख्वाजासरा मेरे सबत के दिन मनाएँ, ऐसे क़दम उठाएँ जो मुझे पसंद हों और मेरे अहद के साथ लिपटे रहे वह बेफ़िक़र रहें। 5 क्योंकि मैं उन्हें अपने घर और उस की चारदीवारी में ऐसी यादगार और ऐसा नाम अता करूँगा जो बेटे-बेटियाँ मिलने से कहीं बेहतर होगा। और जो नाम मैं उन्हें दूँगा वह अबदी होगा, वह कभी नहीं मिटने का।

6 वह परदेसी भी बेफ़िक़र रहें जो रब के पैरोकार बनकर उस की खिदमत करना चाहते, जो रब का नाम अज़ीज़ रखकर उस की इबादत करते, जो सबत के दिन की बेहुरमती नहीं करते बल्कि उसे मनाते और जो मेरे अहद के साथ लिपटे रहते हैं।

7 क्योंकि मैं उन्हें अपने मुक़द्दस पहाड़ के पास लाकर अपने दूआ के घर में खुशी दिलाऊँगा। जब वह मेरी कुरबानागह पर अपनी भस्म होनेवाली और जबह की कुरबानियाँ चढाएँगे तो वह मुझे पसंद आएँगी। क्योंकि मेरा घर तमाम क्रौमों के लिए दूआ का घर कहलाएगा।”

8 रब कादिर-मुतलक़ जो इसराईल की बिखरी हुई क्रौम जमा कर रहा है फ़रमाता है, “उनमें जो इकट्ठे हो चुके हैं मैं और भी जमा कर दूँगा।”

क्रौम के राहनुमा सुस्त और लालची कुते हैं

9 ऐ मैदान के तमाम हैवानो, आओ! ऐ जंगल के तमाम जानवरो, आकर खाओ! 10 इसराईल के पहरेदार अंधे हैं, सबके सब कुछ भी नहीं जानते। सबके सब बहरे कुत्ते हैं जो भौंक ही नहीं सकते। फर्श पर लेटे हुए वह अच्छे अच्छे खाब देखते रहते हैं। ऊँघना उन्हें कितना पसंद है! 11 लेकिन यह कुत्ते लालची भी हैं और कभी सेर नहीं होते, हालाँकि गल्लाबान कहलाते हैं। वह समझ से खाली हैं, और हर एक अपनी अपनी राह पर ध्यान देकर अपने ही नफा की तलाश में रहता है। 12 हर एक आवाज़ देता है, “आओ, मैं मै ले आता हूँ! आओ, हम जी भरकर शराब पी लें। और कल भी आज की तरह हो बल्कि इससे भी ज्यादा रौनक हो!”

## 57

### रब बेदीनों की अदालत करता है

1 रास्तबाज़ हलाक हो जाता है, लेकिन किसी को परवा नहीं। दियागतदार दुनिया से छीन लिए जाते हैं, लेकिन कोई ध्यान नहीं देता। कोई नहीं समझता कि रास्तबाज़ को बुराई से बचने के लिए छीन लिया जाता है। 2 क्योंकि उस की मनज़िले-मकसूद सलामती है। सीधी राह पर चलनेवाले मरते वक्त पाँव फैलाकर आराम करते हैं।

3 “लेकिन ऐ जादूगरनी की औलाद, जिनाकार और फ़टहाशी के बच्चो, इधर आओ! 4 तुम किसका मज़ाक उडा रहे हो, किस पर ज़बान चलाकर मुँह चिडाते हो? तुम मुजरिमों और धोकेबाज़ों के ही बच्चे हो!

5 तुम बलूत बल्कि हर घने दरख्त के साथे में मस्ती में आ जाते हो, वादियों और चटानों के शिगाफों में अपने बच्चों को ज़बह करते हो। 6 वादियों के रागड़े हुए पत्थर तेरा हिस्सा और तेरा मुक़द्दर बन गए हैं। क्योंकि उन्हीं को तूने मैं और गल्ला की नज़रे पेश की। इसके मदे-नज़र मैं अपना फ़ैसला क्यों बदलूँ? 7 तूने अपना बिस्तर ऊँचे पहाड पर लगाया, उस पर चढकर अपनी कुर्बानियों पेश की। 8 अपने घर के दरवाज़े और चौखट के पीछे तूने अपनी बुतपरस्ती के निशान लगाए। मुझे तर्क करके तू अपना बिस्तर बिछाकर उस पर लेट गई। तूने उसे इतना बडा बना दिया कि दूसरे भी उस पर लेट सके। फिर तूने इसमतफ़रोशी के पैसे मुकर्रर किए। उनकी सोहबत तुझे कितनी प्यारी थी, उनकी बरहनगी से तू कितना लुफ़ उठाती थी! 9 तू कसत का तेल और खुशबूदार क्रीम लेकर मलिक देवता के पास गई। तूने अपने कासिदों को दूर दूर बल्कि पाताल तक भेज दिया। 10 गो तू सफ़र करते करते बहुत थक गई तो भी तूने कभी न कहा, ‘फ़ज़ूल है!’ अब तक तुझे तकवियत मिलती रही, इसलिए तू निढाल न हुई।

11 तुझे किससे इतना खौफो-हिरास था कि तूने झट बोलकर न मुझे याद किया, न परवा की? ऐसा ही है ना, तू इसलिए मेरा खौफ नहीं मानती कि मैं खामोश और छुपा रहा।

12 लेकिन मैं लोगों पर तेरी नाम-निहाद रास्तबाज़ी और तेरे काम ज़ाहिर करूँगा। यकीनन यह तेरे लिए मुफ़ीद नहीं होंगे। 13 आ, मदद के लिए आवाज़ दे! देखते हैं कि तेरे बुतों का मजमुआ तुझे बचा सकेगा कि नहीं। लेकिन ऐसा नहीं होगा बल्कि उन्हें हवा उठा ले जाएगी, एक फूँक उन्हें उडा देगी।

लेकिन जो मुझ पर भरोसा रखे वह मुल्क को मीरास में पाएगा, मुक़द्दस पहाड उस की मौस्सी मिलकियत बनेगा।”

### रब अपनी कौम की मदद करेगा

14 अल्लाह फ़रमाता है, “रास्ता बनाओ, रास्ता बनाओ! उसे साफ़-सुथरा करके हर स्कावट दूर करो ताकि मेरी कौम आ सके!” 15 क्योंकि जो अज़ीम और सरबुलंद है, जो अबद तक तख़तनशीन और जिसका नाम कुद्दूस है वह फ़रमाता है, “मैं न सिर्फ़ बुलदियों के मक़दिस में बल्कि शिक़स्ताहाल और फ़रोतन रूह के साथ भी सुकूनत करता हूँ ताकि फ़रोतन की रूह और शिक़स्ताहाल के दिल को नई जिंदगी बख़्शूँ। 16 क्योंकि मैं हमेशा तक उनके साथ नहीं झगड़ूँगा, अबद तक नाराज़ नहीं रहूँगा। वरना उनकी रूह मेरे हुज़ूर निढाल हो जाती, उन लोगों की जान जिन्हें मैंने खुद खलक किया। 17 मैं इसराईल का नाजायज़ मनाफ़े देखकर तैश में आया और उसे सज़ा देकर अपना मुँह छुपाए रखा। तो भी वह अपने दिल की बरग़शता राहों पर चलता रहा। 18 लेकिन गो मैं उसके चाल-चलन से वाकिफ़ हूँ मैं उसे फिर भी शफ़ा दूँगा, उस की राहनुमाई करके उसे दुबारा तसल्ली दूँगा। और उसके जितने लोग मातम कर रहे हैं 19 उनके लिए मैं हॉटों का फल पैदा करूँगा।” क्योंकि रब फ़रमाता है, “उनकी सलामती हो जो दूर हैं और उनकी जो करीब हैं। मैं ही उन्हें शफ़ा दूँगा।”

20 लेकिन बेदीन मुतलातिम समुंदर की मानिंद हैं जो थम नहीं सकता और जिसकी लहरे गंद और कीचड उछालती रहती हैं। 21 मेरा खुदा फ़रमाता है, “बेदीन सलामती नहीं पाएँगे।

## 58

### रब को पसंदीदा रोज़ा

1 गला फाड़कर आवाज़ दे, स्क स्ककर बात न कर! नरसिंगे की-सी बुलंद आवाज़ के साथ मेरी क्रौम को उस की सरकशी सुना, याक़ब के घराने को उसके गुनाहों की फहरिस्त बयान कर। 2 रोज बरोज़ वह मेरी मरजी दरियापत करते हैं। हाँ, वह मेरी राहों को जानने के शौक्रीन हैं, उस क्रौम की मानिंद जिसने अपने खुदा के अहकाम को तर्क नहीं किया बल्कि रास्तबाज़ है। चुनौचे वह मुझसे मुंसिफाना फ़ैसले माँगकर ज़ाहिरन अल्लाह की कुरबत से लुफ़अंदोज होते हैं। 3 वह शिकायत करते हैं, “जब हम रोज़ा रखते हैं तो तू तबज़ुह क्यों नहीं देता? जब हम अपने आपको खाकसार बनाकर इकिसारी का इज़हार करते हैं तो तू ध्यान क्यों नहीं देता?”

सुनो! रोज़ा रखते वक़्त तुम अपना कारोबार मामूल के मुताबिक चलाकर अपने मजदूरों को दबाए रखते हो। 4 न सिर्फ़ यह बल्कि तुम रोज़ा रखने के साथ साथ झगड़ते और लड़ते भी हो। तुम एक दूसरे को शरारत के मुक्के मारने से भी नहीं चूकते। यह कैसी बात है? अगर तुम यों रोज़ा रखो तो इसकी तबक्को नहीं कर सकते कि तुम्हारी बात आसमान तक पहुँचे। 5 क्या मुझे इस किस्म का रोज़ा पसंद है? क्या यह काफी है कि बंदा अपने आपको कुछ देर के लिए खाकसार बनाकर इकिसारी का इज़हार करे? कि वह अपने सर को आवी नरसल की तरह झुकाकर टाट और राख में लेट जाए? क्या तुम वाकई समझते हो कि यह रोज़ा है, कि ऐसा वक़्त रब को पसंद है?

6 यह किस तरह हो सकता है? जो रोज़ा मैं पसंद करता हूँ वह फ़रक है। हक़ीकी रोज़ा यह है कि तू बेइनसाफी की जंजीरों में जकड़े हुआओं को रिहा करे, मज़लूमों का जुआ हटाए, कुचले हुआओं को आज़ाद करे, हर जुए को तोड़े, 7 भूके को अपने खाने में शरीक करे, बेघर मुसीबतज़दा को पनाह दे, बरहना को कपड़े पहनाए और अपने रिश्तेदार की मदद करने से गुरेज़ न करे!

8 अगर तू ऐसा करे तो तू सुबह की पहली किरणों की तरह चमक उठेगा, और तेरे ज़ख़म जल्द ही भरेंगे। तब तेरी रास्तबाज़ी तेरे आगे आगे चलेगी, और रब का जलाल तेरे पीछे तेरी हिफ़ाज़त करेगा। 9 तब तू फ़रियाद करेगा और रब जवाब देगा। जब तू मदद के लिए पुकारेगा तो वह फ़रमाएगा, “मैं हाज़िर हूँ।”

अपने दरमियान दूसरों पर जुआ डालने, उँगलियाँ उठाने और दूसरों की बदनामी करने का सिलसिला ख़त्म कर! 10 भूके को अपनी रोटी दे और मज़लूमों की ज़रूरियात पूरी कर! फिर तेरी रौशनी अंधेरे में चमक उठेगी और तेरी रात दोपहर की तरह रौशन होगी। 11 रब हमेशा तेरी क्रियादत करेगा, वह झूलसते हुए इलाक़ों में भी तेरी जान की ज़रूरियात पूरी करेगा और तेरे आज्ञा को तक़वियत देगा। तब तू सेराब बाग़ की मानिंद होगा, उस चश्मे की मानिंद जिसका पानी कभी ख़त्म नहीं होता। 12 तेरे लोग क़दीम खंडरात को नए सिरे से तामीर करेंगे। जो बुनियादें गुज़री नसलों ने रखी थीं उन्हें तू दुबारा रखेगा। तब तू ‘रखने को बंद करनेवाला’ और ‘गलियों को दुबारा रहने के काबिल बनानेवाला’ कहलाएगा।

13 सबत के दिन अपने पैरों को काम करने से रोक। मेरे मुक़द्दस दिन के दौरान कारोबार मत करना बल्कि उसे ‘राहतबख़्श’ और ‘मुअज़्ज़ज़’ करार दे। उस दिन न मामूल की राहों पर चल, न अपने कारोबार चला, न ख़ाली गणपे हाँक। यों तू सबत का सहीह एहताराम करेगा। 14 तब रब तेरी राहत का मंबा होगा, और मैं तुझे रथ में बिठाकर मुल्क की बुलंदियों पर से गुज़रने दूँगा, तुझे तेरे बाप याक़ब की मीरास में से सेर करूँगा।” रब के मुँह ने यह फ़रमाया है।

## 59

तुम्हारे कुसर ने तुम्हें रब से दूर कर दिया है

1 यकीनन रब का बाज़ छोटा नहीं कि वह बचा न सके, उसका कान बहरा नहीं कि सुन न सके। 2 हकीकत में तुम्हारे बुरे कामों ने तुम्हें उससे अलग कर दिया, तुम्हारे गुनाहों ने उसका चेहरा तुमसे छुपाए रखा, इसलिए वह तुम्हारी नहीं सुनता। 3 क्योंकि तुम्हारे हाथ खूनअलूदा, तुम्हारी उँगलियाँ गुनाह से नापाक हैं। तुम्हारे होंट झूट बोलते और तुम्हारी ज़बान शरीर बातें फुसफुसाती है। 4 अदालत में कोई मुंसिफाना मुक़दमा नहीं चलाता, कोई सच्चे दलायल पेश नहीं करता। लोग सच्चाई से ख़ाली बातों पर एतबार करके झूट बोलते हैं, वह बदकारी से हामिला होकर बेदीनी को जन्म देते हैं। 5-6 वह ज़हरीले साँपों के अंडों पर बैठ जाते हैं ताकि बच्चे निकलें। जो उनके अंडे खाए वह मर जाता है, और अगर उनके अंडे दबाए तो ज़हरीला साँप निकल आता है। यह लोग मक़ड़ी के जाले तान लेते हैं, ऐसा कपड़ा जो पहनने के लिए बेकार है। अपने हाथों के बनाए हुए इस कपड़े से वह अपने आपको ढाँप नहीं सकते। उनके आमाल बुरे ही हैं, उनके हाथ तशहूद ही करते हैं। 7 जहाँ भी ग़लत काम करने का मौक़ा मिले वहाँ उनके पाँव भागकर पहुँच जाते हैं। वह बेकुसर को कल्ल करने के लिए तैयार रहते हैं। उनके खयालत शरीर ही हैं, अपने पीछे वह तबाहीओ-बरबादी छोड़ जाते हैं। 8 न वह सलामती की राह जानते हैं, न उनके रास्तों में इनसाफ़ पाया जाता है। क्योंकि उन्होंने उन्हें टेढा-मेढा बना रखा है, और जो भी उन पर चले वह सलामती को नहीं जानता।

तौबा की दुआ

9 इसी लिए इनसाफ हमसे दूर है, रास्ती हम तक पहुँचती नहीं। हम रौशनी के इंतज़ार में रहते हैं, लेकिन अफसोस, अंधेरा ही अंधेरा नज़र आता है। हम आबो-ताब की उम्मीद रखते हैं, लेकिन अफसोस, जहाँ भी चलते हैं वहाँ घनी तारीकी छाई रहती है। 10 हम अंधों की तरह दीवार को हाथ से छू छूकर रास्ता मालूम करते हैं, आँखों से महरूम लोगों की तरह टटोल टटोलकर आगे बढ़ते हैं। दोपहर के वक़्त भी हम ठोकर खा खाकर यों फिरते हैं जैसे धुँधलका हो। गो हम तनआवर लोगों के दरमियान रहते हैं, लेकिन ख़ुद मुरदों की मानिंद हैं। 11 हम सब निडाल हालत में रीछों की तरह गुरति, कबूतरों की मानिंद गूँ गूँ करते हैं। हम इनसाफ के इंतज़ार में रहते हैं, लेकिन बेसूद। हम नजात की उम्मीद रखते हैं, लेकिन वह हमसे दूर ही रहती है।

12 क्योंकि हमारे मुतअद्दिद जरायम तैरे सामने हैं, और हमारे गुनाह हमारे खिलाफ गवाही देते हैं। हमें मुतवातिर अपने जरायम का एहसास है, हम अपने गुनाहों से ख़ब वाकिफ हैं। 13 हम मानते हैं कि रब से बेवफा रहे बल्कि उसका इनकार भी किया है। हमने अपना मुँह अपने ख़ुदा से फेरकर जुल्म और धोके की बातें फैलाई हैं। हमारे दिलों में झूट का बीज बढ़ते बढ़ते मुँह में से निकला। 14 नतीजे में इनसाफ पीछे हट गया, और रास्ती दूर खड़ी रहती है। सच्चाई चौक में ठोकर खाकर गिर गई है, और दियातदारी दाखिल ही नहीं हो सकती। 15 चुनौचे सच्चाई कहीं भी पाई नहीं जाती, और गलत काम से गुरेज़ करनेवाले को लूटा जाता है।

### रब का जवाब

यह सब कुछ रब को नज़र आया, और वह नाख़ुश था कि इनसाफ नहीं है। 16 उसने देखा कि कोई नहीं है, वह हैरान हुआ कि मुदाखलत करनेवाला कोई नहीं है। तब उसके जोरावर बाज़ू ने उस की मदद की, और उस की रास्ती ने उसको सहारा दिया। 17 रास्ती के ज़िरा-बक़तर से मुलब्स होकर उसने सर पर नजात का खोद रखा, इंतकाम का लिबास पहनकर उसने गैरत की चादर ओढ़ ली। 18 हर एक को वह उसका मुनासिब मुआबज़ा देगा। वह मुखालिफ़ों पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करेगा और दुश्मनों से बदला लेगा बल्कि जज़ीरों को भी उनकी हरकतों का अज़्र देगा। 19 तब इनसान मग़रिब में रब के नाम का खौफ मानेगे और मशरिक में उसे जलाल देंगे। क्योंकि वह रब की फूँक से चलाए हुए जोरदार सैलाब की तरह उन पर टूट पड़ेगा।

20 रब फ़रमाता है, “छुड़ानेवाला कोहे-सिय्यन पर आएगा। वह याक़ूब के उन फ़रजंदों के पास आएगा जो अपने गुनाहों को छोड़कर वापस आएँगे।”

21 रब फ़रमाता है, “जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, उनके साथ मेरा यह अहद है : मेरा रूह जो तुझ पर ठहरा हुआ है और मेरे अलफ़ाज़ जो मैंने तेरे मुँह में डाले हैं वह अब से अबद तक न तेरे मुँह से, न तेरी औलाद के मुँह से और न तेरी औलाद की औलाद से हटेंगे।” यह रब का फ़रमान है।

## 60

### अक़वाम यस्शलम के नूर के पास आएँगी

1 “उठ, खड़ी होकर चमक उठ! क्योंकि तेरा नूर आ गया है, और रब का जलाल तुझ पर तुलू हुआ है। 2 क्योंकि गो ज़मीन पर तारीकी छाई हुई है और अक़वाम घने अंधेरे में रहती हैं, लेकिन तुझ पर रब का नूर तुलू हो रहा है, और उसका जलाल तुझ पर जाहिर हो रहा है। 3 अक़वाम तेरे नूर के पास और बादशाह उस चमकती-दमकती रौशनी के पास आएँगे जो तुझ पर तुलू होगी।

4 अपनी नज़र उठाकर चारों तरफ देख! सबके सब जमा होकर तेरे पास आ रहे हैं। तेरे बेटे दूर दूर से पहुँच रहे हैं, और तेरी बेटियों को गोद में उठाकर करीब लाया जा रहा है। 5 उस वक़्त तू यह देखकर चमक उठेगी। तेरा दिल खुशी के मारे तेज़ी से धड़कने लगेगा और कुशादा हो जाएगा। क्योंकि समुंदर के ख़जाने तेरे पास लाए जाएँगे, अक़वाम की दौलत तेरे पास पहुँचेगी। 6 ऊँटों का गोल बल्कि मिदियान और ऐफ़ा के जवान ऊँट तेरे मुल्क को ढोंप देंगे। वह सोने और बख़ूर से लदे हुए और रब की हम्दो-सना करते हुए मुल्के-सबा से आएँगे। 7 क़ीदार की तमाम भेड़-बकरियाँ तेरे हवाले की जाएँगी, और नबायत के मेंढे तेरी ख़िदमत के लिए हाज़िर होंगे। उन्हें मेरी क़ुरबानगाह पर चढ़ाया जाएगा और मैं उन्हें पसंद करूँगा। यों मैं अपने जलाल के घर को शानो-शौकत से आरास्ता करूँगा।

8 यह कौन है जो बादलों की तरह और काबुक के पास वापस आनेवाले कबूतरों की मानिंद उड़कर आ रहे हैं? 9 यह तरसीस के ज़बरदस्त बहरी जहाज़ हैं जो तेरे पास पहुँच रहे हैं। क्योंकि जज़ीर मुज़से उम्मीद रखते हैं। यह जहाज़ तेरे बेटों को उनकी सोने-चाँदी समेत दूर-दूराज़ इलाकों से लेकर आ रहे हैं। यों रब तेरे ख़ुदा के नाम और इसराइल के कुदूस की ताज़ीम होगी जिसने तुझे शानो-शौकत से नवाज़ा है।



10 परदेसी तेरी दीवारें अज़ सरे-नौ तामीर करेंगे, और उनके बादशाह तेरी खिदमत करेंगे। क्योंकि गो मैंने अपने गज़ब में तुझे सज़ा दी, लेकिन अब मैं अपने फज़ल से तुझ पर रहम करूँगा। 11 तेरी फसील के दरवाज़े हमेशा खुले रहेंगे। उन्हें न दिन को बंद किया जाएगा, न रात को ताकि अक्रवाम का मालो-दौलत और उनके गिरिफ़्तार किए गए बादशाहों को शहर के अंदर लाया जा सके। 12 क्योंकि जो क्रौम या सलतनत तेरी खिदमत करने से इनकार करे वह बरबाद हो जाएगी, उसे पूरे तौर पर तबाह किया जाएगा।

13 लुबनान की शानो-शौकत तेरे सामने हाज़िर होगी। जूनीपर, सनोबर और सरो के दरख्त मिलकर तेरे पास आएँगे ताकि मेरे मक़दिस को आरास्ता करें। यों मैं अपने पाँवों की चौकी को जलाल दूँगा। 14 तुझ पर ज़ुल्म करनेवालों के बेटे झुक झुककर तेरे हज़ूर आएँगे, तेरी तहकीर करनेवाले तेरे पाँवों के सामने औंधे मुँह हो जाएंगे। वह तुझे 'रब का शहर' और 'इसराईल के कुदूस का सिय्यून' करार देंगे। 15 पहले तुझे तर्क किया गया था, लोग तुझसे नफ़रत रखते थे, और तुझमें से कोई नहीं गुज़रता था। लेकिन अब मैं तुझे अबदी फ़खर का बाइस बना दूँगा, और तमाम नसलें तुझे देखकर खुश होंगी।

16 तू अक्रवाम का दूध पिएगी, और बादशाह तुझे दूध पिलाएँगे। तब तू जान लेगी कि मैं रब तेरा नजातदहिदा हूँ, कि मैं जो याक़ब का ज़बरदस्त सूरमा हूँ तेरा छुड़ानेवाला हूँ।

17 मैं तेरे पीतल को सोने में, तेरे लोहे को चाँदी में, तेरी लकड़ी को पीतल में और तेरे पत्थर को लोहे में बदलूँगा। मैं सलामती को तेरी मुहाफ़िज़ और रास्ती को तेरी निगरान बनाऊँगा। 18 अब से तेरे मुल्क में न तशदुद का ज़िक्र होगा, न बरबादीओ-तबाही का। अब से तेरी चारदीवारी 'नजात' और तेरे दरवाज़े 'हम्दो-सना' कहलाएँगे।

19 आइंदा तुझे न दिन के वक़्त सूरज, न रात के वक़्त चँद की ज़रूरत होगी, क्योंकि रब ही तेरी अबदी रौशनी होगा, तेरा खुदा ही तेरी आबो-ताब होगा। 20 आइंदा तेरा सूरज कभी ग़रूब नहीं होगा, तेरा चँद कभी नहीं घटेगा। क्योंकि रब तेरा अबदी नूर होगा, और मातम के तेरे दिन ख़त्म हो जाएँगे।

21 तब तेरी क्रौम के तमाम अफ़राद रास्तबाज़ होंगे, और मुल्क हमेशा तक उनकी मिलकियत रहेगा। क्योंकि वह मेरे हाथ से लगाई हुई पनीरी होंगे, मेरे हाथ का काम जिससे मैं अपना जलाल जाहिर करूँगा। 22 तब सबसे छोटे खानदान की तादाद बढ़कर हजार अफ़राद पर मुशतमिल होगी, सबसे कमज़ोर कुंबा ताकतवर क्रौम बनेगा। मुकर्ररा वक़्त पर मैं, रब यह सब कुछ तेज़ी से अंजाम दूँगा।"

## 61

### मातम का वक़्त ख़त्म है

1 रब कादिर-मुतलक का रूह मुझ पर है, क्योंकि रब ने मुझे तेल से मसह करके गरीबों को खुशख़बरी सुनाने का इख़्तियार दिया है। उसने मुझे शिकस्तादिलों की मरहम-पट्टी करने के लिए और यह एलान करने के लिए भेजा है कि कैदियों को रिहाई मिलेगी और जंजीरों में जकड़े हुए आज़ाद हो जाएँगे, 2 कि बहाली का साल और हमारे खुदा के इतक़ाम का दिन आ गया है। उसने मुझे भेजा है कि मैं तमाम मातम करनेवालों को तसल्ली दूँ 3 और सिय्यून के सोगवारों को दिलासा देकर राख के बजाए शानदार ताज़, मातम के बजाए खुशी का तेल और शिकस्ता रूह के बजाए हम्दो-सना का लिबास मुहैया करूँ।

तब वह 'रास्ती के दरख्त' कहलाएँगे, ऐसे पौधे जो रब ने अपना जलाल जाहिर करने के लिए लगाए हैं। 4 वह क़दीम खंडरात को अज़ सरे-नौ तामीर करके देर से बरबाद हुए मक़ामों को बहाल करेंगे। वह उन तबाहशुदा शहरों को दुबारा कायम करेंगे जो नसल-दर-नसल वीरानो-सुनसान रहे हैं। 5 ग़ैरमुल्की खडे होकर तुम्हारी भेड़-बकरियों की गल्लाबानी करेंगे, परदेसी तुम्हारे खेतों और बागों में काम करेंगे। 6 उस वक़्त तुम 'रब के इमाम' कहलाओगे, लोग तुम्हें 'हमारे खुदा के खादिम' करार देंगे।

तुम अक्रवाम की दौलत से लुफ़अंदोज़ होगे, उनकी शानो-शौकत अपनाकर उस पर फ़खर करोगे। 7 तुम्हारी शरमिंदगी नहीं रहेगी बल्कि तुम इज़्ज़त का दुगना हिस्सा पाओगे, तुम्हारी स्सवाई नहीं रहेगी बल्कि तुम शानदार हिस्सा मिलने के बाइस शादियाना बजाओगे। क्योंकि तुम्हें वतन में दुगना हिस्सा मिलेगा, और अबदी खुशी तुम्हारी मीरास होगी।

8 क्योंकि रब फ़रमाता है, "मुझे इन्साफ़ पसंद है। मैं ग़ारतगरी और कज़रवी से नफ़रत रखता हूँ। मैं अपने लोगों को वफ़ादारी से उनका अज़ दूँगा, मैं उनके साथ अबदी अहद बाँधूँगा। 9 उनकी नसल अक्रवाम में और उनकी औलाद दीगर उम्मतों में मशहूर होगी। जो भी उन्हें देखे वह जान लेगा कि रब ने उन्हें बरकत दी है।"

10 मैं रब से निहायत ही श़ादमन हूँ, मेरी जान अपने खुदा की तारीफ़ में खुशी के गीत गाती है। क्योंकि जिस तरह दूल्हा अपना सर इमाम की-नी पगड़ी से सज़ाता और दुल्हन अपने आपको अपने ज़ेवरात से आरास्ता करती है उसी तरह अल्लाह ने मुझे नजात का लिबास पहनाकर रास्ती की चादर में लपेटा है। 11 क्योंकि जिस तरह ज़मीन अपनी हरियाली को निकलने

देती और बाग अपने बीजों को फूटने देता है उसी तरह रब कादिरे-मुतलक अक़वाम के सामने अपनी रास्ती और सताइश फूटने देगा।

## 62

यस्शालम की बहाली

1 सिथ्यून की खातिर मैं खामोश नहीं रहूँगा, यस्शालम की खातिर तब तक आराम नहीं करूँगा जब तक उस की रास्ती तुलूए-सुबह की तरह न चमके और उस की नजात मशाल की तरह न भडके।

2 अक़वाम तेरी रास्ती देखेंगी, तमाम बादशाह तेरी शानो-शौकत का मुशाहदा करेंगे। उस वक़्त तुझे नया नाम मिलेगा, ऐसा नाम जो रब का अपना मुँह मुतैयिन करेगा। 3 तू रब के हाथ में शानदार ताज और अपने खुदा के हाथ में शाही कुलाह होगी।

4 आइँदा लोग तुझे न कभी 'मतस्का' न तेरे मुल्क को 'वीरानो-सुनसान' करार देंगे बल्कि तू मेरा लुफ़ और तेरा मुल्क ब्याही कहलाएगा। क्योंकि रब तुझे लुफ़अंदोज़ होगा, और तेरा मुल्क शादीशुदा होगा। 5 जिस तरह जवान आदमी कुँवारी से शादी करता है उसी तरह तेरे फ़रज़ंद तुझे ब्याह लेंगे। और जिस तरह दूल्हा दुल्हन के बाइस खुशी मनाता है उसी तरह तेरा खुदा तेरे सबब से खुशी मनाएगा।

6 ऐ यस्शालम, मैंने तेरी फ़सील पर पहरेदार लगाए हैं जो दिन-रात आवाज़ दें। उन्हें एक लमहे के लिए भी खामोश रहने की इजाज़त नहीं है। ऐ रब को याद दिलानेवालो, उस वक़्त तक न खुद आराम करो, 7 न रब को आराम करने दो जब तक वह यस्शालम को अज़ सरे-नौ कायम न कर ले। जब पूरी दुनिया शहर की तारीफ़ करेगी तब ही तुम सुकून का साँस ले सकते हो। 8 रब ने अपने दाएँ हाथ और ज़ोरावर बाजू की कसम खाकर वादा किया है, "आइँदा न मैं तेरा ग़ल्ला तेरे दुश्मनों को खिलाऊँगा, न बड़ी मेहनत से बनाई गई तेरी मै को अजनबियों को पिलाऊँगा। 9 क्योंकि आइँदा फ़सल की कटाई करनेवाले ही रब की सताइश करते हुए उसे खाएँगे, और अंगूर चुननेवाले ही मेरे मक़दिस के सहनों में आकर उनका रस पीएँगे।"

10 दाखिल हो जाओ, शहर के दरवाज़ों में दाखिल हो जाओ! क़ौम के लिए रास्ता तैयार करो! रास्ता बनाओ, रास्ता बनाओ! उसे पत्थरों से साफ़ करो! तमाम अक़वाम के ऊपर झंडा गाड़ दो!

11 क्योंकि रब ने दुनिया की इतहा तक एलान किया है, "सिथ्यून बेटी को बताओ कि देख, तेरी नजात आनेवाली है। देख, उसका अज़ उसके पास है, उसका इनाम उसके आगे आगे चल रहा है।" 12 तब वह 'मुक़द्दस क़ौम' और 'वह क़ौम जिसे रब ने एवज़ाना देकर छुड़ाया है' कहलाएँगे। ऐ यस्शालम बेटी, तू 'मरग़ब' और 'मैरमतस्का शहर' कहलाएगी।

## 63

अल्लाह अपनी क़ौम की अदालत करता है

1 यह कौन है जो अदोम से आ रहा है, जो सुर्ख़ सुर्ख़ कपड़े पहने बसरा शहर से पहुँच रहा है? यह कौन है जो रोब से मुलब्स बड़ी ताक़त के साथ आगे बढ़ रहा है? "मैं ही हूँ, वह जो इन्साफ़ से बोलता, जो बड़ी कुदरत से तुझे बचाता है।"

2 तेरे कपड़े क्यों इतने लाल हैं? लगता है कि तेरा लिबास हौज़ में अंगूर कुचलने से सुर्ख़ हो गया है।

3 "मैं अंगूरों को अकेला ही कुचलता रहा हूँ, अक़वाम में से कोई मेरे साथ नहीं था। मैंने गुस्से में आकर उन्हें कुचला, तैश में उन्हें रौंदा। उनके खून की छींटे मेरे कपड़ों पर पड़ गई, मेरा सारा लिबास आलदा हुआ। 4 क्योंकि मेरा दिल इतक़ाम लेने पर तुला हुआ था, अपनी क़ौम का एवज़ाना देने का साल आ गया था। 5 मैंने अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ाई, लेकिन कोई नहीं था जो मेरी मदद करता। मैं हैरान था कि किसी ने भी मेरा साथ न दिया। चुनाँचे मेरे अपने बाजू ने मेरी मदद की, और मेरे तैश ने मुझे सहारा दिया। 6 गुस्से में आकर मैंने अक़वाम को पामाल किया, तैश में उन्हें मदहोश करके उनका खून ज़मीन पर गिरा दिया।"

रब की तमज़ीद

7 मैं रब की मेहरबानियाँ सुनाऊँगा, उसके काबिले-तारीफ़ कामों की तमज़ीद करूँगा। जो कुछ रब ने हमारे लिए किया, जो मुतअइद भलाइयाँ उसने अपने रहम और बड़े फ़ज़ल से इसराईल को दिखाई हैं उनकी सताइश करूँगा।

8 उसने फ़रमाया, "यक़ीनन यह मेरी क़ौम के हैं, ऐसे फ़रज़ंद जो बेवफ़ा नहीं होंगे।" यह कहकर वह उनका नजातदहिदा बन गया, 9 वह उनकी तमाम मुसीबत में शरीक हुआ, और उसके हज़ूर के फ़रिश्ते ने उन्हें छुटकारा दिया। वह उन्हें प्यार करता, उन पर तरस खाता था, इसलिए उसने एवज़ाना देकर उन्हें छुड़ाया। हाँ, क़दीम ज़माने से आज तक वह उन्हें उठाए फिरता रहा।

10 लेकिन वह सरकश हुए, उन्होंने उसके कुद्स रूह को दुख़ पहुँचाया। तब वह मुडकर उनका दुश्मन बन गया। खुद वह उनसे लड़ने लगा।

11 फिर उस की कौम को वह कदमी जमाना याद आया जब मूसा अपनी कौम के दरमियान था, और वह पुकार उठे, “वह कहाँ है जो अपनी भेड़-बकरियों को उनके गल्लाबानों समेत समुंद्र में से निकाल लाया? वह कहाँ है जिसने अपने रूहल-रूदस को उनके दरमियान नाज़िल किया, 12 जिसकी जलाली कुदरत मूसा के दाएँ हाथ हाज़िर रही ताकि उसको सहारा दे? वह कहाँ है जिसने पानी को इसराईलियों के सामने तकसीम करके अपने लिए अबदी शोहरत पैदा की 13 और उन्हें गहराड्यों में से गुज़रने दिया? उस वक़्त वह खुले मैदान में चलनेवाले घोड़े की तरह आराम से गुज़रे और कहीं भी ठोकर न खाई। 14 जिस तरह गाय-बैल आराम के लिए वार्दी में उतरते हैं उसी तरह उन्हें रब के रूह से आराम और सुकून हासिल हुआ।”

इसी तरह तूने अपनी कौम की राहनुमाई की ताकि तेरे नाम को जलाल मिले।

### तौबा की दुआ

15 ऐ अल्लाह, आसमान से हम पर नज़र डाल, बुलदियों पर अपनी मुक़द्दस और शानदार सुकूनतगाह से देख! इस वक़्त तेरी ग़ैरत और कुदरत कहाँ है? हम तेरी नरमी और मेहरबानियों से महरूम रह गए हैं! 16 तू तो हमारा बाप है। क्योंकि इब्राहीम हमें नहीं जानता और इसराईल हमें नहीं पहचानता, लेकिन तू, रब हमारा बाप है, कदमी जमाने से ही तेरा नाम ‘हमारा छुड़ानेवाला’ है। 17 ऐ रब, तू हमें अपनी राहों से क्यों भटकने देता है? तूने हमारे दिलों को इतना सख़्त क्यों कर दिया कि हम तेरा ख़ौफ नहीं मान सकते? हमारी खातिर वापस आ! क्योंकि हम तेरे खादिम, तेरी मौसूसी मिलकियत के कबूल हैं। 18 तेरा मक़दिस थोड़ी ही देर के लिए तेरी कौम की मिलकियत रहा, लेकिन अब हमारे मुख़ालिफ़ों ने उसे पाँवों तले रौंद डाला है। 19 लगता है कि हम कभी तेरी हुक़मत के तहत नहीं रहे, कि हम पर कभी तेरे नाम का ठप्पा नहीं लगा था।

## 64

1 काश तू आसमान को फाड़कर उतर आए, कि पहाड़ तेरे सामने थरथराएँ। 2 काश तू डालियों को भड़का देनेवाली आग या पानी को एकदम उबालनेवाली आतिश की तरह नाज़िल हो ताकि तेरे दुश्मन तेरा नाम जान लें और कौमों तेरे सामने लरज़ उठें! 3 क्योंकि कदमी जमाने में जब तू ख़ौफ़नाक और ग़ैरमुतवक़के काम किया करता था तो यों ही नाज़िल हुआ, और पहाड़ यों ही तेरे सामने काँपने लगे। 4 कदमी जमाने से ही किसी ने तेरे सिवा किसी और खुदा को न देखा न सुना है। सिर्फ़ तू ही ऐसा खुदा है जो उनकी मदद करता है जो तेरे इंतज़ार में रहते हैं।

5 तू उनसे मिलता है जो ख़ुशी से रास्त काम करते, जो तेरी राहों पर चलते हुए तुझे याद करते हैं! अफ़सोस, तू हमसे नाराज़ हुआ, क्योंकि हम शुरू से तेरा गुनाह करके तुझसे बेवफ़ा रहे हैं। तो फिर हम किस तरह बच जाएंगे? 6 हम सब नापाक हो गए हैं, हमारे तमाम नाम-निहाद रास्त काम गंदे चीथड़ों की मानिंद हैं। हम सब पत्तों की तरह मुरझा गए हैं, और हमारे गुनाह हमें हवा के झोंकों की तरह उड़ाकर ले जा रहे हैं।

7 कोई नहीं जो तेरा नाम पुकारे या तुझसे लिपटने की कोशिश करे। क्योंकि तूने अपना चेहरा हमसे छुपाकर हमें हमारे कुसूरों के हवाले छोड़ दिया है।

8 ऐ रब, ताहम तू ही हमारा बाप, हमारा कुम्हार है। हम सब मिट्टी ही हैं जिसे तेरे हाथ ने तश्कील दिया है। 9 ऐ रब, हद से ज़्यादा हमसे नाराज़ न हो! हमारे गुनाह तुझे हमेशा तक याद न रहें। ज़रा इसका लिहाज़ कर कि हम सब तेरी कौम हैं। 10 तेरे मुक़द्दस शहर वीरान हो गए हैं, यहाँ तक कि सिय्यून भी बयाबान ही है, यस्शलम वीरानो-सुनसान है। 11 हमारा मुक़द्दस और शानदार घर जहाँ हमारे बापदादा तेरी सताइश करते थे नज़रे-आतिश हो गया है, जो कुछ भी हम अज़ीज़ रखते थे वह खंडर बन गया है।

12 ऐ रब, क्या तू इन वाक़ियात के बावजूद भी अपने आपको हमसे दूर रखेगा? क्या तू खामोश रहकर हमें हद से ज़्यादा पस्त होने देगा?।

## 65

### रब का ग़ज़ब कौम पर नाज़िल होगा

1 “जो मेरे बारे में दरियाफ़्त नहीं करते थे उन्हें मैंने मुझे ढूँडने का मौका दिया। जो मुझे तलाश नहीं करते थे उन्हें मैंने मुझे पाने का मौका दिया। मैं बोला, ‘मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ!’ हालाँकि जिस कौम से मैं मुख़ातिब हुआ वह मेरा नाम नहीं पुकारती थी।

2 दिन-भर मैंने अपने हाथ फैलाए रखे ताकि एक सरकश कौम का इस्तक़बाल करूँ, हालाँकि यह लोग ग़लत राह पर चलते और अपने कज़रौ खयालात के पीछे पड़े रहते हैं। 3 यह मुतवातिर और मेरे रूबूस ही मुझे नाराज़ करते हैं। क्योंकि यह बाग़ों में कुरबानियों चढ़ाकर इंटों की कुरबानग़ाहों पर बख़र जलाते हैं। 4 यह कज़्रिस्तान में बैठकर ख़ुफ़िया गारों में रात गुज़ारते हैं।

यह सुअर का गोशत खाते हैं, उनकी देगों में काबिले-घिन शोरबा होता है।<sup>5</sup> साथ साथ यह एक दूसरे से कहते हैं, 'मुझसे दू रहो, करीब मत आना! क्योंकि मैं तेरी निसबत कही ज्यादा मुकद्दस हूँ।'

इस किस्म के लोग मेरी नाक में धूँएँ की मानिंद हैं, एक आग जो दिन-भर जलती रहती है।<sup>6</sup> देखो, यह बात मेरे सामने ही कलमबंद हुई है कि मैं खामोश नहीं रहूँगा बल्कि पूरा पूरा अज्र दूँगा। मैं उनकी झोली उनके अज्र से भर दूँगा।<sup>7</sup> रब फरमाता है, "उन्हें न सिर्फ उनके अपने गुनाहों की सजा मिलेगी बल्कि बापदादा के गुनाहों की भी। चूँकि उन्होंने पहाड़ों पर बखूर की कुरबानियाँ चढ़ाकर मेरी तहकीर की इसलिए मैं उनकी झोली उनकी हरकतों के मुआबजे से भर दूँगा।"

### मौत न चुनो बल्कि हयात!

<sup>8</sup> रब फरमाता है, "जब तक अंगूर में थोड़ा-सा रस बाकी हो लोग कहते हैं, 'उसे जाया मत करना, क्योंकि अब तक उसमें कुछ न कुछ है जो बरकत का बाइस है।' मैं इसराइल के साथ भी ऐसा ही करूँगा। क्योंकि अपने खादिमों की खातिर मैं सबको नेस्त नहीं करूँगा।<sup>9</sup> मैं याकूब और यहदाह को ऐसी औलाद बख्शा दूँगा जो मेरे पहाड़ों को मीरास में पाएगी। तब पहाड़ मेरे बरगुज्रीदों की मिलकियत होंगे, और मेरे खादिम उन पर बसेंगे।<sup>10</sup> वादीए-शास्त्रन में भेड़-बकरियाँ चरेंगी, वादीए-अकूर में गाय-बैल आराम करेंगे। यह सब कुछ मेरी उस क्रौम को दस्तयाब होगा जो मेरी तालिब रहेगी।

<sup>11</sup> लेकिन तुम जो रब को तर्क करके मेरे मुकद्दस पहाड़ को भूल गए हो, खबरदार! गो इस वक़्त तुम खुशक्रिसमती के देवता जद के लिए मेज़ बिछाते और तकदीर के देवता मनात के लिए मैं का बरतन भर देते हो,<sup>12</sup> लेकिन तुम्हारी तकदीर और है। मैंने तुम्हारे लिए तलवार की तकदीर मुकर्रर की है। तुम सबको कसाई के सामने झुकना पड़ेगा, क्योंकि जब मैंने तुम्हें बुलाया तो तुमने जवाब न दिया। जब मैं तुमसे हमकलाम हुआ तो तुमने न सुना बल्कि वह कुछ किया जो मुझे बुरा लगा। तुमने वह कुछ इख्तियार किया जो मुझे नापसंद है।"

<sup>13</sup> इसलिए रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, "मेरे खादिम खाना खाएँगे, लेकिन तुम भूके रहोगे। मेरे खादिम पानी पिँएँगे, लेकिन तुम प्यासे रहोगे। मेरे खादिम मसूर होंगे, लेकिन तुम शर्मसार होंगे।<sup>14</sup> मेरे खादिम खुरशी के मारे शादियां बजाएँगे, लेकिन तुम रंजीदा होकर रो पड़ोगे, तुम मायूस होकर वावैला करोगे।<sup>15</sup> आखिरकार तुम्हारा नाम ही मेरे बरगुज्रीदों के पास बाकी रहेगा, और वह भी सिर्फ लानत के तौर पर इस्तेमाल होगा। कसम खाते वक़्त वह कहेंगे, 'रब कादिरे-मुतलक तुम्हें इसी तरह क़त्ल करे।' लेकिन मेरे खादिमों का एक और नाम रखा जाएगा।<sup>16</sup> मुल्क में जो भी अपने लिए बरकत माँगे या कसम खाए वह वफ़ादार ख़ुदा का नाम लेगा। क्योंकि गुजरी मुसीबतों की यादें मिट जाएँगी, वह मेरी आँखों से छुप जाएँगी।

### नए ज़माने का आगाज़

<sup>17</sup> क्योंकि मैं नया आसमान और नई ज़मीन खलक करूँगा। तब गुजरी चीज़ें याद नहीं आएँगी, उनका खयाल तक नहीं आएगा।

<sup>18</sup> चुनौचे ख़ुशो-ख़रम हो! जो कुछ मैं खलक करूँगा उस की हमेशा तक ख़ुशी मनाओ! क्योंकि देखो, मैं यरशलम को शादमानी का बाइस और उसके बाशिंदों को ख़ुशी का सबब बनाऊँगा।<sup>19</sup> मैं ख़ुद भी यरशलम की ख़ुशी मनाऊँगा और अपनी क्रौम से लुफ़अंदोज़ हूँगा।

आइंदा उसमें रोना और वावैला सुनाई नहीं देगा।<sup>20</sup> वहाँ कोई भी पैदाइश के थोड़े दिनों बाद फ़ौत नहीं होगा, कोई भी वक़्त से पहले नहीं मरेगा। जो सौ साल का होगा उसे जवान समझा जाएगा, और जो सौ साल की उम्र से पहले ही फ़ौत हो जाए उसे मलऊन समझा जाएगा।

<sup>21</sup> लोग घर बनाकर उनमें बसेंगे, वह अंगूर के बाग़ लगाकर उनका फल खाएँगे।<sup>22</sup> आइंदा ऐसा नहीं होगा कि घर बनाने के बाद कोई और उसमें बसे, कि बाग़ लगाने के बाद कोई और उसका फल खाए। क्योंकि मेरी क्रौम की उम्र दरख्तों जैसी दराज़ होगी, और मेरे बरगुज्रीदा अपने हाथों के काम से लुफ़अंदोज़ होंगे।<sup>23</sup> न उनकी मेहनत-मशक्कत रायगाँ जाएगी, न उनके बच्चे अलानक तशद्दुद का निशाना बनकर मरेंगे। क्योंकि वह रब की मुबारक नसल होंगे, वह ख़ुद और उनकी औलाद भी।<sup>24</sup> इससे पहले कि वह आवाज़ दें मैं जवाब दूँगा, वह अभी बोल रहे होंगे कि मैं उनकी सुनूँगा।"

<sup>25</sup> रब फरमाता है, "भेड़िया और लेला मिलकर चरेंगे, शेरबबर बैल की तरह भूसा खाएगा, और साँप की खुराक खाक ही होगी। मेरे पूरे मुकद्दस पहाड़ पर न गलत काम किया जाएगा, न किसी को नुक़सान पहुँचेगा।"

## 66

### दो मालिकों की खिदमत करना नामुमकिन है

<sup>1</sup> रब फरमाता है, "आसमान मेरा तख़्त है और ज़मीन मेरे पाँवों की चौकी, तो फिर वह घर कहाँ है जो तुम मेरे लिए बनाओगे? वह जगह कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?"<sup>2</sup> रब फरमाता है, "मेरे हाथ ने यह सब कुछ बनाया, तब ही यह सब

कुछ वजुद में आया। और मैं उसी का खयाल रखता हूँ जो मुसीबतजदा और शिकस्तादिल है, जो मेरे कलाम के सामने काँपता है।

3 लेकिन बैल को जबह करनेवाला कातिल के बराबर और लेले को कुरबान करनेवाला कुते की गरदन तोड़नेवाले के बराबर है। गल्ला की नजर पेश करनेवाला सुअर का खून चढ़ानेवाले से बेहतर नहीं, और बखुर जलानेवाला बुतपरस्त की मानिंद है। इन लोगों ने अपनी गलत राहों को इख्तियार किया है, और इनकी जान अपनी धिनौनी चीजों से लुत्फअंदोज होती है। 4 जवाब में मैं भी उनसे बदसलूकी की राह इख्तियार करूँगा, मैं उन पर वह कुछ नाज़िल करूँगा जिससे वह दहशत खाते हैं। क्योंकि जब मैंने उन्हें आवाज़ दी तो किसी ने जवाब न दिया, जब मैं बोला तो उन्होंने न सुना बल्कि वही कुछ करते रहे जो मुझे बुरा लगा, वही करने पर तुले रहे जो मुझे नापसंद है।”

### यस्शलम के साथ खुशी मनाओ

5 ऐ रब के कलाम के सामने लरजनेवालो, उसका फरमान सुनो! “तुम्हारे अपने भाई तुमसे नफरत करते और मेरे नाम के बाइस तुम्हें रूढ़ करते हैं। वह मजाक उड़ाकर कहते हैं, ‘रब अपने जलाल का इज़हार करे ताकि हम तुम्हारी खुशी का मुशाहदा कर सकें।’ लेकिन वह शरमिंदा हो जाएंगे।

6 सुनो! शहर में शोरो-गौगा हो रहा है। सुनो! रब के घर से हलचल की आवाज़ सुनाई दे रही है। सुनो! रब अपने दुश्मनों को उनकी मुनासिब सजा दे रहा है।

7 दर्द-जह में मुब्तला होने से पहले ही यस्शलम ने बच्चा जन्म दिया, जचचगी की ईजा से पहले ही उसके बेटा पैदा हुआ।

8 किसने कभी ऐसी बात सुनी है? किसने कभी इस किस्म का मामला देखा है? क्या कोई मुल्क एक ही दिन के अंदर अंदर पैदा हो सकता है? क्या कोई कौम एक ही लमहे में जन्म ले सकती है? लेकिन सिय्यन के साथ ऐसा ही हुआ है। दर्द-जह अभी शुरू ही होना था कि उसके बच्चे पैदा हुए।” 9 रब फरमाता है, “क्या मैं बच्चे को यहाँ तक लाऊँ कि वह माँ के पेट से निकलनेवाला हो और फिर उसे जन्म लेने न दूँ? हरगिज़ नहीं!” तेरा खुदा फरमाता है, “क्या मैं जो बच्चे को पैदा होने देता हूँ बच्चे को रोक दूँ? कभी नहीं!”

10 “ऐ यस्शलम को प्यार करनेवालो, सब उसके साथ खुशी मनाओ! ऐ शहर पर मातम करनेवालो, सब उसके साथ शादियाना बजाओ! 11 क्योंकि अब तुम उस की तसल्ली दिलानेवाली छाती से जी भरकर दूध पियोगे, तुम उसके शापदाद दूध की कसरत से लुत्फअंदोज होगे।” 12 क्योंकि रब फरमाता है, “मैं यस्शलम में सलामती का दरिया बहने दूँगा और उस पर अक्रवाम की शानो-शौकत का सैलाब आने दूँगा। तब वह तुम्हें अपना दूध पिलाकर उठाए फिरेगी, तुम्हें गोद में बिठाकर प्यार करेगी। 13 मैं तुम्हें माँ की-सी तसल्ली दूँगा, और तुम यस्शलम को देखकर तसल्ली पाओगे। 14 इन बातों का मुशाहदा करके तुम्हारा दिल खुश होगा और तुम ताज़ा हरियाली की तरह फलो-फूलोगे।”

उस वक्त जाहिर हो जाएगा कि रब का हाथ उसके खादिमों के साथ है जबकि उसके दुश्मन उसके गज़ब का निशाना बनेंगे। 15 रब आग की सूरत में आ रहा है, आँधी जैसे रथों के साथ नाज़िल हो रहा है ताकि दहकते कोयलों से अपना गुस्सा ठंडा करे और शोला-अफ़शाँ आग से मलामत करे। 16 क्योंकि रब आग और अपनी तलवार के ज़रीए तमाम इनसानों की अदालत करके अपने हाथ से मृतअदिद लोगों को हलाक करेगा।

17 रब फरमाता है, “जो अपने आपको बुतों के बागों के लिए मखसूस और पाक-साफ करते हैं और दरमियान के राहनुमा की पैरवी करके सुअर, चूहे और दीगर धिनौनी चीजें खाते हैं वह मिलकर हलाक हो जाएंगे।

### दीगर अक्रवाम भी रब की परस्तिश करेंगी

18 चुनौचे में जो उनके आमाल और खयालात से वाकिफ़ हूँ तमाम अक्रवाम और अलग अलग ज़बानें बोलनेवालों को जमा करने के लिए नाज़िल हो रहा हूँ। तब वह आकर मेरे जलाल का मुशाहदा करेंगे। 19 मैं उनके दरमियान इलाही निशान कायम करके बचे हुआँ में से कुछ दीगर अक्रवाम के पास भेज दूँगा। वह तरसीस, लिबिया, तीर चलाने की माहिर कौम लुदिया, तबल, यूनान और उन दूर-दराज़ जज़ीरों के पास जाएंगे जिन्होंने न मेरे बारे में सुना, न मेरे जलाल का मुशाहदा किया है। इन अक्रवाम में वह मेरे जलाल का एलान करेंगे।

20 फिर वह तमाम अक्रवाम में रहनेवाले तुम्हारे भाइयों को घोड़ों, रथों, गाडियों, खचरों और ऊँटों पर सवार करके यस्शलम ले आएँगे। यहाँ मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर वह उन्हें गल्ला की नजर के तौर पर पेश करेंगे। क्योंकि रब फरमाता है कि जिस तरह इसराईली अपनी गल्ला की नजरें पाक बरतनों में रखकर रब के घर में ले आते हैं उसी तरह वह तुम्हारे इसराईली भाइयों को यहाँ पेश करेंगे। 21 उनमें से मैं बाज़ को इमाम और लावी का ओहदा दूँगा।” यह रब का फरमान है।

22 रब फरमाता है, “जितने यक्रीन के साथ मेरा बनाया हुआ नया आसमान और नई जमीन मेरे सामने कायम रहेगा उतने यक्रीन के साथ तुम्हारी नसल और तुम्हारा नाम अबद तक कायम रहेगा। 23 उस वक्त तमाम इनसान मेरे पास आकर मुझे सिजदा करेंगे। हर नए चाँद और हर सबत को वह बाकायदगी से आते रहेंगे।” यह रब का फरमान है। 24 “तब वह शहर से निकलकर उनकी लाशों पर नज़र डालेंगे जो मुझसे सरकश हुए थे। क्योंकि न उन्हें खानेवाले कीड़े कभी मरेँगे, न उन्हें जलानेवाली आग कभी बुझेगी। तमाम इनसान उनसे धिन खाँएँगे।”

## यरमियाह

### रब का नबी यरमियाह

1 जैल में यरमियाह बिन खिलकियाह के पैगामात कलमबंद किए गए हैं। (बिनयमीन के कबायली इलाके के शहर अनतोत में कुछ इमाम रहते थे, और यरमियाह का वालिद उनमें से था)।<sup>2</sup> रब का फरमान पहली बार यहदाह के बादशाह यूसियाह बिन अमून की हुकूमत के 13वें साल में यरमियाह पर नाज़िल हुआ,<sup>3</sup> और यरमियाह को यह पैगामात यह्यकीम बिन यूसियाह के दौरे-हुकूमत से लेकर सिदुकियाह बिन यूसियाह की हुकूमत के 11वें साल के पाँचवें महीने \* तक मिलते रहे। उस वक्त यरुशलम के बाशिंदों को जिलावतन कर दिया गया।

### यरमियाह की बुलाहट

4 एक दिन रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,<sup>5</sup> “मैं तुझे माँ के पेट में तश्कील देने से पहले ही जानता था, तेरी पैदाइश से पहले ही मैंने तुझे मखसूसो-मुकद्दस करके अकवाम के लिए नबी मुकर्रर किया।”

6 मैंने एतराज़ किया, “ऐ रब कादिर-मुतलक, अफ़सोस! मैं तेरा कलाम सुनाने का सहीह इल्म नहीं रखता, मैं तो बच्चा ही हूँ।”<sup>7</sup> लेकिन रब ने मुझसे फ़रमाया, “मत कह ‘मैं बच्चा ही हूँ।’ क्योंकि जिनके पास भी मैं तुझे भेजूँगा उनके पास तू जाएगा, और जो कुछ भी मैं तुझे सुनाने को कहूँगा उसे तू सुनाएगा।<sup>8</sup> लोगों से मत डरना, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं तुझे बचाए रखूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

9 फिर रब ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे होंटों को छू दिया और फ़रमाया, “देख, मैंने अपने अलफ़ाज़ को तेरे मुँह में डाल दिया है।<sup>10</sup> आज मैं तुझे कौमों और सलतनतों पर मुकर्रर कर देता हूँ। कहीं तुझे उन्हें जड़ से उखाड़कर गिरा देना, कहीं बरबाद करके ढा देना और कहीं तामीर करके पौदे की तरह लगा देना है।”

### बादाम की शाख और उबलती देग की रोया

11 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, “ऐ यरमियाह, तुझे क्या नज़र आ रहा है?” मैंने जवाब दिया, “बादाम की एक शाख, उस दरख़्त की जो ‘देखनेवाला’ कहलाता है।”<sup>12</sup> रब ने फ़रमाया, “तूने सहीह देखा है। इसका मतलब है कि मैं अपने कलाम की देख-भाल कर रहा हूँ, मैं ध्यान दे रहा हूँ कि वह पूरा हो जाए।”

13 फिर रब का कलाम दुबारा मुझ पर नाज़िल हुआ, “तुझे क्या नज़र आ रहा है?” मैंने जवाब दिया, “शिमाल में देग दिखाई दे रही है। जो कुछ उसमें है वह उबल रहा है, और उसका मुँह हमारी तरफ़ झुका हुआ है।”<sup>14</sup> तब रब ने मुझसे कहा, “इसी तरह शिमाल से मुल्क के तमाम बाशिंदों पर आफ़त टूट पड़ेगी।”<sup>15</sup> क्योंकि रब फ़रमाता है, “मैं शिमाली ममालिक के तमाम घरानों को बुला लूँगा, और हर एक आकर अपना तख़्त यरुशलम के दरवाज़ों के सामने ही खड़ा करेगा। हाँ, वह उस की पूरी फ़र्सील को घेरकर उस पर बल्कि यहदाह के तमाम शहरों पर छापा मारेगा।<sup>16</sup> यों मैं अपनी कौम पर फ़ैसले सादिर करके उनके ग़लत कामों की सज़ा दूँगा। क्योंकि उन्होंने मुझे तर्क करके अजनबी माबूदों के लिए बख़् जलाया और अपने हाथों से बने हुए बुतों को सिजदा किया है।

17 चुनौचे कमरबस्ता हो जा! उठकर उन्हें सब कुछ सुना दे जो मैं फ़रमाऊँगा। उनसे दहशत मत खाना, वरना मैं तुझे उनके सामने ही दहशतज़दा कर दूँगा।<sup>18</sup> देख, आज मैंने तुझे क़िलाबंद शहर, लोहे के सतून और पीतल की चारदीवारी जैसा मज़बूत बना दिया है ताकि तू पूरे मुल्क का सामना कर सके, खाह यहदाह के बादशाह, अफ़सर, इमाम या अवाम तुझ पर हमला क्यों न करें।<sup>19</sup> तुझसे लड़ने के बावजूद वह तुझ पर गालिब नहीं आएँगे, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं ही तुझे बचाए रखूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

## 2

### अल्लाह की जवान इसराईल के लिए फ़िकर

1 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,<sup>2</sup> “जा, जोर से यरुशलम के कान में पुकार कि रब फ़रमाता है, ‘मुझे तेरी जवानी की वफ़ादारी खूब याद है। जब तेरी शादी करीब आई तो तू मुझे कितना प्यार करती थी, यहाँ तक कि तू रेगिस्तान में भी जहाँ खेतीबाड़ी नामुमकिन थी मेरे पीछे पीछे चलती रही।<sup>3</sup> उस वक्त इसराईल रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस था, वह उस की

\* 1:3 जुलाई ता अगस्त।

फसल का पहला फल था। जिसने भी उसमें से कुछ खाया वह मुजरिम ठहरा, और उस पर आफत नाज़िल हुई। यह रब का फरमान है।”

### इसराईल के बापदादा के गुनाह

4 ऐ याकूब की औलाद, रब का कलाम सुनो! ऐ इसराईल के तमाम घरानो, ध्यान दो! 5 रब फरमाता है, “तुम्हारे बापदादा ने मुझमें कौन-सी नाइनसाफी पाई कि मुझे से इतने दूर हो गए? हेच बुतों के पीछे होकर वह खुद हेच हो गए। 6 उन्होंने पूछा तक नहीं कि रब कहों है जो हमें मिसर से निकाल लाया और रेगिस्तान में सहीह राह दिखाई, गो वह इलाका वीरानो-सुनसान था। हर तरफ घाटियों, पानी की सख्त कमी और तारीकी का सामना करना पड़ा। न कोई उसमें से गुजरता, न कोई वहाँ रहता है। 7 मैं तो तुम्हें बागों से भरे मुल्क में लाया ताकि तुम उसके फल और अच्छी पैदावार से लुत्फअंदोज हो सको। लेकिन तुमने क्या किया? मेरे मुल्क में दाखिल होते ही तुमने उसे नापाक कर दिया, और मैं अपनी मौरूसी मिलकियत से धिन खाने लगा। 8 न इमामों ने पूछा कि रब कहों है, न शरीअत को अमल में लानेवाले मुझे जानते थे। कौम के गल्लाबान मुझे से बेवफा हुए, और नबी बेफायदा बुतों के पीछे लगकर बाल देवता के पैगामात सुनाने लगे।”

### रब का अपनी कौम के खिलाफ मुकदमा

9 रब फरमाता है, “इसी वजह से मैं आइंदा भी अदालत में तुम्हारे साथ लडूंगा। हॉ, न सिर्फ तुम्हारे साथ बल्कि तुम्हारी आनेवाली नसलों के साथ भी। 10 जाओ, समुंदर को पार करके जज़ीराए-कुबूसस की तफतीश करो! अपने कासिदों को मुल्के-कीदार में भेजकर गौर से दरियाफत करो कि क्या वहाँ कभी यहाँ का-सा काम हुआ है? 11 क्या किसी कौम ने कभी अपने देवताओं को तबदील किया, गो वह हकीकत में खुदा नहीं है? हरगिज़ नहीं! लेकिन मेरी कौम अपनी शानो-शौकत के खुदा को छोड़कर बेफायदा बुतों की पूजा करने लगी है।” 12 रब फरमाता है, “ऐ आसमान, यह देखकर हैबतज़दा हो जा, तेरे रोंगटे खड़े हो जाएँ, हक्का-बक्का रह जा! 13 क्योंकि मेरी कौम से दो संगीन ज़ुर्म सरज़द हुए हैं। एक, उन्होंने मुझे तर्क किया, गो मैं जिंदगी के पानी का सरचश्मा हूँ। दूसरे, उन्होंने अपने जाती हौज़ बनाए हैं जो दराइनों की वजह से भर ही नहीं सकते।

### इसराईल की बेवफाई के नतायज

14 क्या इसराईल इन्तिदा से ही गुलाम है? क्या उसके वालिदिन गुलाम थे कि वह अब तक गुलाम है? हरगिज़ नहीं! तो फिर वह क्यों दूसरों का लूटा हुआ माल बन गया है? 15 जवान शेरबबर दहाइते हुए उस पर टूट पड़े हैं, गरजते गरजते उन्होंने मुल्के-इसराईल को बरबाद कर दिया है। उसके शहर नजरे-आतिश होकर वीरानो-सुनसान हो गए हैं। 16 साथ साथ मेंफिस और तहफनहीस के लोग भी तेरे सर को मुँडवा रहे हैं।

17 ऐ इसराईली कौम, क्या यह तेरे गलत काम का नतीजा नहीं? क्योंकि तूने रब अपने खुदा को उस वक़्त तर्क किया जब वह तेरी राहनुमाई कर रहा था। 18 अब मुझे बता कि मिसर को जाकर दरियाए-नील का पानी पीने का क्या फायदा? मुल्के-असूर में जाकर दरियाए-फुरात का पानी पीने से क्या हासिल? 19 तेरा गलत काम तुझे सज़ा दे रहा है, तेरी बेवफा हरकतें ही तेरी सरज़निश कर रही हैं। चुनौचे जान ले और ध्यान दे कि रब अपने खुदा को छोड़कर उसका ख़ौफ न मानने का फल कितना बुरा और कड़वा है!” यह कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफवाज का फरमान है।

20 “क्योंकि शुरू से ही तू अपने जुए और रस्सों को तोड़कर कहती रही, ‘मैं तेरी खिदमत नहीं करूँगी!’ तू हर बुलंदी पर और हर घने दरख्त के साये में लेटकर इसमतफरोशी करती रही। 21 पहले तू अंगूर की मखसूस और काबिले-एतमाद नसल की पनीरी थी जिसे मैंने खुद ज़मीन में लगाया। तो यह क्या हुआ कि तू बिगडकर जंगली \* बेल बन गई? 22 अब तेरे कुसूर का दाग उतर नहीं सकता, खाह तू कितना खारी सोडा और साबुन क्यों न इस्तेमाल करे।” यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

23 “तू किस तरह यह कहने की ज़ुरत कर सकती है कि मैंने अपने आपको आलूदा नहीं किया, मैं बाल देवताओं के पीछे नहीं गई। वादी में अपनी हरकतों पर तो गौर कर! जान ले कि तुझे क्या कुछ सरज़द हुआ है। तू बेमकसद इधर उधर भागनेवाली ऊँटनी है। 24 बल्कि तू रेगिस्तान में रहने की आदी गधी ही है जो शहवत के मारे हाँपती है। मस्ती के इस आलम में कौन उस पर काबू पा सकता है? जो भी उससे मिलना चाहे उसे ज्यादा जिद्दो-जहद की ज़रूरत नहीं, क्योंकि मस्ती के मौसम में वह हर एक के लिए हाज़िर है। 25 ऐ इसराईल, इतना न दौड़ कि तेरे जूते घिसकर फट जाएँ और तेरा गला खुश्क हो जाए। लेकिन अफ़सोस, तू बज़िद है, ‘नहीं, मुझे छोड़ दे! मैं अजन्बी माबूदों को प्यार करती हूँ, और लाज़िम है कि मैं उनके पीछे भागती जाऊँ।’

\* 2:21 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : अजन्बी।



26 सुनो! इसराईली कौम के तमाम अफराद उनके बादशाहों, अफसरों, इमामों और नबियों समेत शरमिदा हो जाएंगे। वह पकड़े हुए चोर की-सी शर्म महसूस करेंगे। 27 यह लोग लकड़ी के बुत से कहते हैं, 'तू मेरा बाप है' और पत्थर के देवता से, 'तूने मुझे जन्म दिया।' लेकिन गो यह मेरी तरफ रूजू नहीं करते बल्कि अपना मुँह मुझसे फेरकर चलते हैं तो भी ज्योंही कोई आफत उन पर आ जाए तो यह मुझसे इल्लिजा करने लगते हैं कि आकर हमें बचा। 28 अब यह बुत कहीं हैं जो तूने अपने लिए बनाए? वही खड़े होकर दिखाएँ कि तुझे मुसीबत से बचा सकते हैं। ऐ यहदाह, आखिर जितने तेरे शहर हैं उतने तेरे देवता भी हैं।" 29 रब फरमाता है, "तुम मुझ पर क्यों इलजाम लगाते हो? तुम तो सब मुझसे बेवफा हो गए हो। 30 मैंने तुम्हारे बच्चों को सजा दी, लेकिन बेफायदा। वह मेरी तरबियत कबूल नहीं करते। बल्कि तुमने फाड़नेवाले शेरबबर की तरह अपने नबियों पर टूटकर उन्हें तलवार से कत्ल किया।

31 ऐ मौजूदा नसल, रब के कलाम पर ध्यान दो! क्या मैं इसराईल के लिए रेगिस्तान या तारीकतरीन इलाके की मानिंद था? मेरी कौम क्यों कहती है, 'अब हम आजादी से इधर उधर फिर सकते हैं, आइंदा हम तेरे हुज़र नहीं आएँगे?' 32 क्या कुँवारी कभी अपने ज़ेवरात को भूल सकती है, या दुलहन अपना उरूसी लिबास? हरगिज़ नहीं! लेकिन मेरी कौम बेशुमार दिनों से मुझे भूल गई है।

33 तू इश्क ढूँढ़ने में कितनी माहिर है! बदकार औरतें भी तुझसे बहुत कुछ सीख लेती हैं। 34 तेरे लिबास का दामन बेगुनाह ग़रीबों के खून से आलूदा है, गो तूने उन्हें नक़बज़नी जैसा ग़लत काम करते वक़्त न पकड़ा। इस सब कुछ के बावजूद भी 35 तू बज़िद है कि मैं बेकुसूर हूँ, अल्लाह का मुझ पर गुस्सा ठंडा हो गया है। लेकिन मैं तेरी अदालत करूँगा, इसलिए कि तू कहती है, 'मुझसे गुनाह सरज़द नहीं हुआ।'

36 तू कभी इधर, कभी इधर जाकर इतनी आसानी से अपना सख़ क्यो बदलती है? यकीन कर कि जिस तरह तू अपने इतहादी अस्र से मायूस होकर शरमिदा हुई है उसी तरह तू नए इतहादी मिसर से भी नादिम हो जाएगी। 37 तू उस जगह से भी अपने हाथों को सर पर रखकर निकलेगी। क्योंकि रब ने उन्हें रद्द किया है जिन पर तू भरोसा रखती है। उनसे तुझे मदद हासिल नहीं होगी।"

### 3

#### इसराईल की रब से बेवफ़ाई

1 रब फ़रमाता है, "अगर कोई अपनी बीवी को तलाक़ दे और अलग होने के बाद बीवी की किसी और से शादी हो जाए तो क्या पहले शौहर को उससे दुबारा शादी करने की इजाज़त है? हरगिज़ नहीं, बल्कि ऐसी हरकत से पूरे मुल्क की बेहुरमती हो जाती है। देख, यही तेरी हालत है। तूने मुतअदिद आशिकों से जिना किया है, और अब तू मेरे पास वापस आना चाहती है। यह कैसी बात है?

2 अपनी नज़र बंजर पहाड़ियों की तरफ उठाकर देख! क्या कोई जगह है जहाँ जिना करने से तेरी बेहुरमती नहीं हुई? रेगिस्तान में तनहा बैठनेवाले बड़ की तरह तू रास्तों के किनारे पर अपने आशिकों की ताक में बैठी रही है। अपनी इसमतफ़रोशी और बदकारी से तूने मुल्क की बेहुरमती की है। 3 इसी वजह से बहार में बरसात का मौसम रोका गया और बारिश नहीं पड़ी। लेकिन अफ़सोस, तू कसबी की-सी पेशानी रखती है, तू शर्म खाने के लिए तैयार ही नहीं। 4 इस वक़्त भी तू चीखती-चिल्लाती आवाज़ देती है, 'ऐ मेरे बाप, जो मेरी जवानी से मेरा दोस्त है, 5 क्या तू हमेशा तक मेरे साथ नाराज़ रहेगा? क्या तेरा क्रहर कभी ठंडा नहीं होगा?' यही तेरे अपने अलफ़ाज़ हैं, लेकिन साथ साथ तू ग़लत काम करने की हर मुमकिन कोशिश करती रहती है।"

6 युसियाह बादशाह की हुक्मत के दौरान रब मुझसे हमकलाम हुआ, "क्या तूने वह कुछ देखा जो बेवफ़ा इसराईल ने किया है? उसने हर बुलंदी पर और हर घने दरख़्त के साये में जिना किया है। 7 मैंने सोचा कि यह सब कुछ करने के बाद वह मेरे पास वापस आएगी। लेकिन अफ़सोस, ऐसा न हुआ। उस की ग़दर बहन यहदाह भी इन तमाम वाक़ियात की गवाह थी। 8 बेवफ़ा इसराईल की जिनाकारी नाक्राबिले-बरदाशत थी, इसलिए मैंने उसे घर से निकालकर तलाक़नामा दे दिया। फिर भी मैंने देखा कि उस की ग़दर बहन यहदाह ने ख़ौफ़ न खाया बल्कि खुद निकलकर जिना करने लगी। 9 इसराईल को इस जुर्म की संजीदागी महसूस न हुई बल्कि उसने पत्थर और लकड़ी के बुतों के साथ जिना करके मुल्क की बेहुरमती की। 10 इसके बावजूद उस की बेवफ़ा बहन यहदाह पूरे दिल से नहीं बल्कि सिर्फ़ जाहिरी तौर पर मेरे पास वापस आई।" यह रब का फ़रमान है।

#### मेरे पास लौट आ

11 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “बेवफा इसराईल गद्गार यहूदाह की निसबत ज्यादा रास्तबाज है। 12 जा, शिमाल की तरफ देखकर बलूंद आवाज से एलान कर, ‘ऐ बेवफा इसराईल, रब फरमाता है कि वापस आ! आइंदा मैं गुस्से से तेरी तरफ नहीं देखूँगा, क्योंकि मैं मेहरबान हूँ। मैं हमेशा तक नाराज नहीं रहूँगा। यह रब का फरमान है।

13 लेकिन लाजिम है कि तू अपना कुसूर तसलीम करे। इक्कार कर कि मैं रब अपने खुदा से सरकश हुई। मैं इधर उधर घूमकर हर घने दरख्त के साये में अजनबी माबूदों की पूजा करती रही, मैंने रब की न सुनी।” यह रब का फरमान है। 14 रब फरमाता है, “ऐ बेवफा बच्चो, वापस आओ, क्योंकि मैं तुम्हारा मालिक हूँ। मैं तुम्हें हर जगह से निकालकर सिय्यून में वापस लाऊँगा। किसी शहर से मैं एक को निकाल लाऊँगा, और किसी खानदान से दो अफ़राद को।

15 तब मैं तुम्हें ऐसे गल्लाबानों से नवाजूँगा जो मेरी सोच रखेंगे और जो समझ और अक्ल के साथ तुम्हारी गल्लाबानी करेंगे। 16 फिर तुम्हारी तादाद बहुत बढ़ेगी और तुम चारों तरफ फैल जाओगे।” रब फरमाता है, “उन दिनों में रब के अहद के संदूक का जिक्र नहीं किया जाएगा। न उसका खयाल आएगा, न उसे याद किया जाएगा। न उस की कमी महसूस होगी, न उसे दुबारा बनाया जाएगा। 17 क्योंकि उस वक्त यरूशालम ‘रब का तख्त’ कहलाएगा, और उसमें तमाम अक़वाम रब के नाम की ताज़ीम में जमा हो जाएँगी। तब वह अपने शरीर और ज़िद्दी दिलों के मुताबिक ज़िंदगी नहीं गुज़ारेगी। 18 तब यहूदाह का घराना इसराईल के घराने के पास आएगा, और वह मिलकर शिमाली मुल्क से उस मुल्क में वापस आएँगे जो मैंने तुम्हारे बापदादा को मीरास में दिया था।

19 मैंने सोचा, काश मैं तेरे साथ बेटों का-सा सुलूक करके तुझे एक खुशगवार मुल्क दे सकूँ, एक ऐसी मीरास जो दीगर अक़वाम की निसबत कहीं शानदार हो। मैं समझा कि तुम मुझे अपना बाप ठहराकर अपना मुँह मुझसे नहीं फेरोगे। 20 लेकिन ऐ इसराईली कौम, तू मुझसे बेवफा रही है, बिलकुल उस औरत की तरह जो अपने शौहर से बेवफा हो गई है।” यह रब का फरमान है।

21 “सुनो! बंजर बलूंदियों पर चीखें और इल्लिजाएँ सुनाई दे रही हैं। इसराईली रो रहे हैं, इसलिए कि वह गलत राह इख्तियार करके रब अपने खुदा को भूल गए हैं। 22 ऐ बेवफा बच्चो, वापस आओ ताकि मैं तुम्हारे बेवफा दिलों को शफा दे सकूँ।”

“ऐ रब, हम हाज़िर हैं। हम तेरे पास आते हैं, क्योंकि तू ही रब हमारा खुदा है। 23 वाकई, पहाड़ियों और पहाड़ों पर बुतपरस्ती का तमाशा फरेब ही है। यकीनन रब हमारा खुदा इसराईल की नजात है। 24 हमारी जवानी से लेकर आज तक शर्मनाक देवता हमारे बापदादा की मेहनत का फल खाते आए हैं, खाह उनकी भेड़-बकरियाँ और गाय-बैल थे, खाह उनके बेटे-बेटियाँ। 25 आओ, हम अपनी शर्म के बिस्तर पर लेट जाएँ और अपनी बेइज़्जती की रज़ाई में छुप जाएँ। क्योंकि हमने अपने बापदादा समेत रब अपने खुदा का गुनाह किया है। अपनी जवानी से लेकर आज तक हमने रब अपने खुदा की नहीं सुनी।”

## 4

### तौबा करो

1 रब फरमाता है, “ऐ इसराईल, अगर तू वापस आना चाहे तो मेरे पास वापस आ! अगर तू अपने धिनौने बुतों को मेरे हज़ूर से दूर करके आवारा न फिरे 2 और रब की हयात की कसम खाते वक़्त दियानतदारी, इनसाफ और सदाक़त से अपना वादा पूरा करे तो ग़ैरअक़वाम मुझसे बरक़त पाकर मुझ पर फ़ख़र करेंगी।”

3 रब यहूदाह और यरूशालम के बाशिंदों से फरमाता है, “अपने दिलों की ग़ैरमुस्तामल ज़मीन पर हल चलाकर उसे काबिले-काशत बनाओ! अपने बीज कौंटदार झाड़ियों में बोकर ज़ाया मत करना। 4 ऐ यहूदाह और यरूशालम के बाशिंदो, अपने आपको रब के लिए मख़सूस करके अपना ख़तना कराओ यानी अपने दिलों का ख़तना कराओ, वरना मेरा कहर तुम्हारे गलत कामों के बाइस कभी न बुझनेवाली आग की तरह तुझ पर नाज़िल होगा।

### शिमाल से आफ़त का एलान

5 यहूदाह में एलान करो और यरूशालम को इतला दो, ‘मुल्क-भर में नरसिंगा बजाओ!’ गला फाड़कर चिल्लाओ, ‘इक़दे हो जाओ! आओ, हम क़िलाबंद शहरों में पनाह लें!’ 6 झंडा गाड़ दो ताकि लोग उसे देखकर सिय्यून में पनाह लें। महफ़ूज़ मक़ाम में भाग जाओ और कहीं न स्को, क्योंकि मैं शिमाल की तरफ से आफ़त ला रहा हूँ, सब कुछ धड़ाम से गिर जाएगा।

7 शेरबबर जंगल में अपनी छुपने की जगह से निकल आया, कौमों को हलाक करनेवाला अपने मक़ाम से रवाना हो चुका है ताकि तेरे मुल्क को तबाह करे। तेरे शहर बरबाद हो जाएँगे, और उनमें कोई नहीं रहेगा।

8 चुनौचे टाट का लिबास पहनकर आहो-ज़ारी करो, क्योंकि रब का सख़्त ग़ज़ब अब तक हम पर नाज़िल हो रहा है।”

9 रब फरमाता है, “उस दिन बादशाह और उसके अफसर हिम्मत हारेंगे, इमारतों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे और नबी खौफ से सुन होकर रह जाएंगे।”

10 तब मैं बोल उठा, “हाय, हाय! ऐ रब कादिर-मुतलक, तूने इस क्रौम और यस्शलम को कितना सख्त फरेब दिया जब तूने फरमाया, तुम्हें अमनो-अमान हासिल होगा हालाँकि हमारे गलों पर तलवार फिरने को है।” 11 उस वक्त इस क्रौम और यस्शलम को इतला दी जाएगी, “रेगिस्तान के बंजर टीलों से सब कुछ झूलसानेवाली लू मेरी क्रौम के पास आ रही है। और यह गंदुम को फटककर भूसे से अलग करनेवाली मुफीद हवा नहीं होगी 12 बल्कि आँधी जैसी तेज हवा मेरी तरफ से आएगी। क्योंकि अब मैं उन पर अपने फैसेले सादिर करूँगा।”

13 देखो, दुश्मन तुफानी बादलों की तरह आगे बढ़ रहा है! उसके रथ आँधी जैसे, और उसके घोड़े उकाब से तेज हैं। हाय, हम पर अफसोस! हमारा अंजाम आ गया है।

14 ऐ यस्शलम, अपने दिल को धोकर बुराई से साफ कर ताकि तुझे छुटकारा मिले। तू अंदर ही अंदर कब तक अपने शरीर मनसूबे बाँधती रहेगी?

15 सुनो! दान से बुरी खबरे आ रही हैं, इफराईम के पहाड़ी इलाके से आफत का पैगाम पहुँच रहा है। 16 गैरअक्रवाम को इतला दो और यस्शलम के बारे में एलान करो, “मुहासरा करनेवाले फौजी दूर-दराज मुल्क से आ रहे हैं! वह जंग के नारे लगा लगाकर यहदाह के शहरों पर टूट पड़ेंगे। 17 तब वह खेतों की चौकीदारी करनेवालों की तरह यस्शलम को घेर लेंगे। क्योंकि यह शहर मुझसे सरकश हो गया है।” यह रब का फरमान है। 18 “यह तेरे अपने ही चाल-चलन और हरकतों का नतीजा है। हाय, तेरी बेदीनी का अंजाम कितना तलख और दिलखराश है!”

### रामियाह का अपनी क्रौम के लिए दुख

19 हाय, मेरी तड़पती जान, मेरी तड़पती जान! मैं दर्द के मारे पेचो-ताब खा रहा हूँ। हाय, मेरा दिल! वह बेकाबू होकर धड़क रहा है। मैं खामोश नहीं रह सकता, क्योंकि नरसिंगे की आवाज़ और जंग के नारे मेरे कान तक पहुँच गए हैं। 20 यके बाद दीगरे शिकस्तों की खबरे मिल रही हैं, चारों तरफ मुल्क की तबाही हुई है। अचानक ही मेरे तंबू बरबाद है, एक ही लमहे में मेरे खैमे खत्म हो गए हैं। 21 मुझे कब तक जंग का झंडा देखना पड़ेगा, कब तक नरसिंगे की आवाज़ सुननी पड़ेगी?

22 “मेरी क्रौम अहमक है और मुझे नहीं जानती। वह बेवकूफ और नासमझ बच्चे हैं। गो वह गलत काम करने में बहुत तेज हैं, लेकिन भलाई करना उनकी समझ से बाहर है।”

23 मैंने मुल्क पर नजर डाली तो वीरानो-सुनसान था। जब आसमान की तरफ देखा तो अंधेरा था। 24 मेरी निगाह पहाड़ों पर पड़ी तो थरथरा रहे थे, तमाम पहाड़ियाँ हिचकोले खा रही थीं। 25 कहीं कोई शख्स नजर न आया, तमाम परिदे भी उड़कर जा चुके थे। 26 मैंने मुल्क पर नजर दौड़ाई तो क्या देखता हूँ कि जरखेज ज़मीन रेगिस्तान बन गई है। रब और उसके शदीद गज़ब के सामने उसके तमाम शहर नेस्तो-नाबूद हो गए हैं। 27 क्योंकि रब फरमाता है, “पूरा मुल्क बरबाद हो जाएगा, अगरचे मैं उसे पूरे तौर पर खत्म नहीं करूँगा। 28 ज़मीन मातम करेगी और आसमान तारीक हो जाएगा, क्योंकि मैं यह फरमा चुका हूँ, और मेरा इरादा अटल है। न मैं यह करने से पछताऊँगा, न इससे बाज़ आऊँगा।”

29 घुडसवारों और तीर चलानेवालों का शोर-शराबा सुनकर लोग तमाम शहरों से निकलकर जंगलों और चटानों में खिसक जाएंगे। तमाम शहर वीरानो-सुनसान होंगे, किसी में भी लोग नहीं बसेंगे।

30 तो फिर तू क्या कर रही है, तू जिसे खाक में मिला दिया गया है? अब किरमिज़ी लिबास और सोने के ज़ेवरात पहनने की क्या ज़रूरत है? इस वक्त अपनी आँखों को सुरमे से सजाने और अपने आपको आरास्ता करने का कोई फ़ायदा नहीं। तेरे आशिक तू तुझे हक़ीर जानने बल्कि तुझे जान से मारने के दरपे है। 31 क्योंकि मुझे दर्द-ज़ह में मुस्तला औरत की आवाज़, पहली बार जन्म देनेवाली की आहो-जारी सुनाई दे रही है। सिय्यून बेटी कराह रही है, वह अपने हाथ फ़ैरलाए हुए कह रही है, “हाय, मुझ पर अफसोस! मेरी जान कातिलों के हाथ में आकर निकल रही है।”

## 5

### अब मुआफी नामुमकिन है

1 “यस्शलम की गलियों में घुमो फिरो! हर जगह का मुलाहज़ा करके पता करो कि क्या हो रहा है। उसके चौकों की तफ़तीश भी करो। अगर तुम्हें एक भी शख्स मिल जाए जो इन्साफ़ करे और दियानतदारी का तालिब रहे तो मैं शहर को मुआफ़ कर दूँगा। 2 वह रब की हयात की क्रम खाते वक्त भी झूट बोलते हैं।”

3 ऐ रब, तेरी आँखें दियानतदारी देखना चाहती हैं। तूने उन्हें मारा, लेकिन उन्हें दुख न हुआ। तूने उन्हें कुचल डाला, लेकिन वह तरबियत पाने के लिए तैयार नहीं। उन्होंने अपने चेहरे को पत्थर से कहीं ज़्यादा सख्त बनाकर तौबा करने से इनकार

किया है। 4 मैंने सोचा, “सिर्फ गरीब लोग ऐसे हैं। यह इसलिए अहमकाना हरकतें कर रहे हैं कि रब की राह और अपने खुदा की शरीअत से वाकिफ नहीं हैं। 5 आओ, मैं बुजुर्गों के पास जाकर उनसे बात करता हूँ। वह तो ज़रूर रब की राह और अल्लाह की शरीअत को जानते होंगे।” लेकिन अफ़सोस, सबके सबने अपने जुए और रस्से तोड़ डाले हैं।

6 इसलिए शेरबबर जंगल से निकलकर उन पर हमला करेगा, भेड़िया बयाबान से आकर उन्हें बरबाद करेगा, चीता उनके शहरों के क़रीब ताक में बैठकर हर निकलनेवाले को फाड़ डालेगा। क्योंकि वह बार बार सरकश हुए हैं, मुतअद्दिद दफा उन्होंने अपनी बेवफ़ाई का इज़हार किया है।

7 “मैं तुझे कैसे मुआफ़ करूँ? तेरी औलाद ने मुझे तर्क करके उनकी क़सम खाई है जो खुदा नहीं है। गो मैंने उनकी हर ज़रूरत पूरी की तो भी उन्होंने जिना किया, चकले के सामने उनकी लंबी क़तारें लगी रहीं। 8 यह लोग मोटे-ताज़े घोड़े हैं जो मस्ती में आ गए हैं। हर एक हिनहिनाता हुआ अपने पड़ोसी की बीवी को आँख मारता है।” 9 रब फ़रमाता है, “क्या मैं जवाब में उन्हें सज़ा न दूँ? क्या मैं ऐसी क़ौम से इतक़ाम न लूँ? 10 जाओ, उसके अंगूर के बाग़ों पर टूट पड़ो और सब कुछ बरबाद कर दो। लेकिन उन्हें मुक़म्मल तौर पर ख़तम मत करना। बेलों की शाखों को दूर करो, क्योंकि वह रब के लोग नहीं हैं।”

### रब अपनी क़ौम से जवाब तलब करेगा

11 क्योंकि रब फ़रमाता है, “इसराइल और यहदाह के बाशिदे हर तरह से मुझसे बेवफ़ा रहे हैं। 12 उन्होंने रब का इनकार करके कहा है, वह कुछ नहीं करेगा। हम पर मुसीबत नहीं आएगी। हमें न तलवार, न काल से नुक़सान पहुँचेगा। 13 नबियों की क्या हैसियत है? वह तो बक़वास ही करते हैं, और रब का क़लाम उन्में नहीं है। बल्कि उन्हीं के साथ ऐसा किया जाएगा।”

14 इसलिए रब लशक़रों का खुदा फ़रमाता है, “ऐ यर्मियाह, चूँकि लोग ऐसी बातें कर रहे हैं इसलिए तेरे मुँह में मेरे अलफ़ाज़ आग बनकर इस क़ौम को लकड़ी की तरह भस्म कर दोगे।” 15 रब फ़रमाता है, “ऐ इसराइल, मैं दूर की क़ौम को तेरे खिलाफ़ भेजूँगा, ऐसी पुख़्ता और क़दमी क़ौम जिसकी ज़बान तू नहीं जानता और जिसकी बातें तू नहीं समझता। 16 उनके तारक़श खुली क़ब्रें हैं, सबके सब ज़बरदस्त सूमे हैं। 17 वह सब कुछ हड़प कर लेंगे: तेरी फ़सलें, तेरी ख़ुराक, तेरे बेटे-बेटियाँ, तेरी भेड़-बक़रियाँ, तेरे गाय-बैल, तेरी अंगूर की बेलें और तेरे अजीर के दरख़्त। जिन क़िलाबंद शहरों पर तुम भरोसा रखते हो उन्हें वह तलवार से खाक में मिला दोगे।

18 फिर भी मैं उस वक़्त तुम्हें मुक़म्मल तौर पर बरबाद नहीं करूँगा।” यह रब का फ़रमान है। 19 “ऐ यर्मियाह, अगर लोग तुझसे पूछें, रब हमारे खुदा ने यह सब कुछ हमारे साथ क्यों किया? तो उन्हें बता, तुम मुझे तर्क करके अपने वतन में अजनबी माबूदों की ख़िदमत करते रहे हो, इसलिए तुम वतन से दूर मुल्क में अजनबियों की ख़िदमत करोगे।

20 इसराइल में एलान करो और यहदाह को इतला दो 21 कि ऐ बेवुकूफ़ और नासमझ क़ौम, सुनो! लेकिन अफ़सोस, उनकी आँखें तो हैं लेकिन वह देख नहीं सकते, उनके कान तो हैं लेकिन वह सुन नहीं सकते।” 22 रब फ़रमाता है, “क्या तुम्हें मेरा ख़ौफ़ नहीं मानना चाहिए, मेरे हज़ूर नहीं काँपना चाहिए? सोच लो! मैं ही ने रेत से समुंद्र की सरहद मुक़र्रर की, एक ऐसी बाड़ बनाई जिस पर से वह कभी नहीं गुज़र सकता। गो वह जोर से लहरें मारे तो भी नाकाम रहता है, गो उस की मौज़ें ख़ुब गरज़ें तो भी मुक़र्ररा हद से आगे नहीं बढ़ सकती।

23 लेकिन अफ़सोस, इस क़ौम का दिल जिद्दी और सरकश है। यह लोग सहीह राह से हटकर अपनी ही राहों पर चल पड़े हैं। 24 वह दिल में कभी नहीं कहते, आओ, हम रब अपने खुदा का ख़ौफ़ मानें। क्योंकि वही हमें वक़्त पर खिज़ाँ और बहार के मौसम में बारिश मुहैया करता है, वही इसकी ज़मानत देता है कि हमारी फ़सलें बाक़ायदगी से पक जाएँ। 25 अब तुम्हारे ग़लत कामों ने तुम्हें इन नेमतों से महरूम कर दिया, तुम्हारे गुनाहों ने तुम्हें इन अच्छी चीज़ों से रोक रखा है।

26 क्योंकि मेरी क़ौम में ऐसे बेदीन अफ़राद पाए जाते हैं जो दूसरों की ताक लगाए रहते हैं। जिस तरह शिकारी परिदे पकड़ने के लिए झुककर छुप जाता है, उसी तरह वह दूसरों की घात में बैठ जाते हैं। वह फंदे लगाकर लोगों को उन्में फँसाते हैं। 27 और जिस तरह शिकारी अपने पिंजरे को चिड़ियों से भर देता है उसी तरह इन शरीर लोगों के घर फ़रेब से भरे रहते हैं। अपनी चालों से वह अमीर, ताक़तवर 28 और मोटे-ताज़े हो गए हैं। उनके ग़लत कार्यों की हद नहीं रहती। वह इनसाफ़ करते ही नहीं। न वह यतीमों की मदद करते हैं ताकि उन्हें वह कुछ मिल जाए जो उनका हक़ है, न ग़रीबों के हुक़क़ कायम रखते हैं।” 29 रब फ़रमाता है, “अब मुझे बताओ, क्या मुझे उन्हें इसकी सज़ा नहीं देनी चाहिए? क्या मुझे इस किस्म की हरकतें करनेवाली क़ौम से बदला नहीं लेना चाहिए?

30 जो कुछ मुल्क में हुआ है वह हौलनाक और काबिले-घिन है। 31 क्योंकि नबी झूठी पेशगोइयाँ सुनाते और इमाम अपनी ही मरजी से हुक़मत करते हैं। और मेरी क़ौम उनका यह रवैया अजीज़ रखती है। लेकिन मुझे बताओ, जब यह सब कुछ ख़तम हो जाएगा तो फिर तुम क्या करोगे?

## 6

यस्शलम दुश्मनों से घिरा हुआ है

1 ऐ बिनयमीनी की औलाद, यस्शलम से निकलकर कहीं और पनाह लो! त्कुअ में नरसिंगा फूँको! बैत-करम में भागने का ऐसा इशारा खड़ा कर जो सबको नज़र आए! क्योंकि शिमाल से आफत नाज़िल हो रही है, सब कुछ धड़ाम से गिर जाएगा।

2 सिय्यून बेटी कितनी मनमोहन और नाज़ुक है। लेकिन मैं उसे हलाक कर दूँगा, <sup>3</sup> और चरवाहे अपने रेवडों को लेकर उस पर टूट पड़ेंगे। वह अपने खैमों को उसके इर्दगिर्द लगा लेंगे, और हर एक कारेवड चर चरकर अपना हिस्सा खा जाएगा।

4 वह कहेंगे, 'आओ, हम उससे लड़ने के लिए तैयार हो जाएँ। आओ, हम दोपहर के वक़्त हमला करें!' लेकिन अफ़सोस, दिन ढल रहा है, और शाम के साये लंबे होते जा रहे हैं। <sup>5</sup> कोई बात नहीं, रात के वक़्त ही हम उस पर छापा मारेगे, उसी वक़्त हम उसके बुर्जों को गिरा देंगे!''

6 रब्बूल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, "दरख्तों को काटो, मिट्टी के ढेरों से यस्शलम का घेराव करो! शहर को सज़ा देनी है, क्योंकि उसमें जुल्म ही जुल्म पाया जाता है। <sup>7</sup> जिस तरह कुएँ से ताज़ा पानी निकलता रहता है उसी तरह यस्शलम की बर्दी भी ताज़ा ताज़ा उससे निकलती रहती है। जुल्मो-तशद्दुद की आवाज़ें उसमें गूँजती रहती हैं, उस की बीमार हालत और ज़ख़म लगातार मेरे सामने रहते हैं।

8 ऐ यस्शलम, मेरी तरबियत को कबूल कर, वरना मैं तंग आकर तुझसे अपना मुँह फेर लूँगा, मैं तुझे तबाह कर दूँगा और तू ग़ैरआबाद हो जाएगी।''

9 रब्बूल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, "जिस तरह अंगूर चुनने के बाद गरीब लोग तमाम बचा-खुचा फल तोड़ लेते हैं उसी तरह इसराइल का बचा-खुचा हिस्सा भी एहतियात से तोड़ लिया जाएगा। चुननेवाले की तरह दुबारा अपने हाथ को अंगूर की शाखों पर से गुज़रने दे।''

10 ऐ रब, मैं किससे बात करूँ, किस को आगाह करूँ? कौन सुनेगा? देख, उनके कान नामख़तून हैं, इसलिए वह सुन ही नहीं सकते। रब का कलाम उन्हें मज़हकाखेज़ लगाता है, वह उन्हें नापसंद है। <sup>11</sup> इसलिए मैं रब के ग़ज़ब से भरा हुआ हूँ, मैं उसे बरदाश्त करते करते इतना थक गया हूँ कि उसे मज़ीद नहीं रोक सकता।

"उसे गलियों में खेलनेवाले बच्चों और जमाशुदा नौजवानों पर नाज़िल कर, क्योंकि सबको गिरिफ़तार किया जाएगा, ख़ाह आदमी हो या औरत, बुज़ुर्ग हो या उप्ररसीदा। <sup>12</sup> उनके घरों को खेतों और बीचियों समेत दूसरों के हवाले किया जाएगा, क्योंकि मैं अपना हाथ मुल्क के बाशिंदों के खिलाफ़ बढ़ाऊँगा।" यह रब का फ़रमान है। <sup>13</sup> "छोटे से लेकर बड़े तक सब ग़लत नफ़ा के पीछे पड़े हैं, नबी से लेकर इमाम तक सब धोकेबाज़ हैं। <sup>14</sup> वह मेरी कौम के ज़ख़म पर आरिज़ी मरहम-पट्टी लगाकर कहते हैं, अब सब कुछ ठीक हो गया है, अब सलामती का दौर आ गया है हालाँकि सलामती है ही नहीं। <sup>15</sup> ऐसा धिनौना रवैया उनके लिए शर्म का बाइस होना चाहिए, लेकिन वह शर्म नहीं करते बल्कि सरासर बेशर्म हैं। इसलिए जब सब कुछ गिर जाएगा तो यह लोग भी गिर जाएंगे। जब मैं इन पर सज़ा नाज़िल करूँगा तो यह ठोकर खाकर खाक में मिल जाएंगे।" यह रब का फ़रमान है।

सहीह रास्ते की तलाश में रहो

16 रब फ़रमाता है, "रास्तों के पास खड़े होकर उनका मुआयना करो! कदीम राहों की तफ़तीश करके पता करो कि उनमें से कौन-सी अच्छी है, फिर उस पर चलो। तब तुम्हारी जान को सूकून मिलेगा। लेकिन अफ़सोस, तुम इनकार करके कहते हो, नहीं, हम यह राह इख़्तियार नहीं करेंगे! <sup>17</sup> देखो, मैंने तुम पर पहरेदार मुकर्रर किए और कहा, 'जब नरसिंगा फूँका जाएगा तो ध्यान दो!' लेकिन तुमने इनकार किया, 'नहीं, हम तबज्जुह नहीं देंगे।'

18 चुनौचे ऐ कौमो, सुनो! ऐ जमात, जान ले कि उनके साथ क्या कुछ किया जाएगा। <sup>19</sup> ऐ ज़मीन, ध्यान दे कि मैं इस कौम पर क्या आफत नाज़िल करूँगा। और यह उनके अपने मनसूबों का फल होगा, क्योंकि उन्होंने मेरी बातों पर तबज्जुह न दी बल्कि मेरी शरीअत को रद्द कर दिया। <sup>20</sup> मुझे सबा के बख़ूर या दूर-दराज़ ममालिक के कीमती मसालों की क्या परवा! तुम्हारी भस्म होनेवाली कुरबानियाँ मुझे पसंद नहीं, तुम्हारी जबह की कुरबानियों से मैं लुत्फ़अंदोज नहीं होता।" <sup>21</sup> रब फ़रमाता है, "मैं इस कौम के रास्ते में ऐसी स्कावेंटें खड़ी कर दूँगा जिनसे बाप और बेटा ठोकर खाकर गिर जाएंगे। पड़ोसी और दोस्त मिलकर हलाक हो जाएंगे।"

शिमाल से दुश्मन का हमला

22 रब फरमाता है, “शिमाली मुल्क से फौज आ रही है, दुनिया की इतहा से एक अजीम कौम को जगाया जा रहा है। 23 उसके जालिम और बेरहम फौजी कमान और शमशेर से लैस है। सुनो उनका शोर! मुत्तालिम समुंदर की-सी आवाज सुनाई दे रही है। ऐ सिय्युन बेटी, वह घोड़ों पर सफ़आरा होकर तुझ पर हमला करने आ रहे हैं।”

24 उनके बारे में इतला पाकर हमारे हाथ हिम्मत हार गए हैं। हम पर खौफ़ तारी हो गया है, हमें दर्द-जह में मुब्तला औरत का-सा दर्द हो रहा है। 25 शहर से निकलकर खेत में या सड़क पर मत चलना, क्योंकि वहाँ दुश्मन तलवार थामे खड़ा है, चारों तरफ़ दहशत ही दहशत फैल गई है।

26 ऐ मेरी कौम, टाट का लिबास पहनकर राख में लोट-पोट हो जा। यों मातम कर जिस तरह इकलौता बेटा मर गया हो। जोर से वावैला कर, क्योंकि अचानक ही हलाक़ हम पर छापा मारेगा।

### यरमियाह कौम को आजमाता है

27 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “मैंने तुझे धातों को जाँचने की ज़िम्मादारी दी है, और मेरी कौम वह धात है जिसका चाल-चलन तुझे मालूम करके परखना है।” 28 ऐ रब, यह तमाम लोग बदतरीन किस्म के सरकश हैं। तोहमत लगाना इनकी रोज़ी बन गया है। यह पीतल और लोहा ही हैं, सबके सब तबाही का बाइस हैं। 29 धौकनी खूब हवा दे रही है ताकि सीसा आग में पिघलकर चाँदी से अलग हो जाए। लेकिन अफ़सोस, सारी मेहनत रायगों है। सीसा यानी बेदीनों को अलग नहीं किया जा सकता, खालिस चाँदी बाक़ी नहीं रहती। 30 चुनाँचे उन्हें ‘रड़ी चाँदी’ करार दिया जाता है, क्योंकि रब ने उन्हें रद कर दिया है।

## 7

### रब के घर के बारे में पैगाम

1 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2 “रब के घर के सहन के दरवाज़े पर खड़ा होकर एलान कर कि ऐ यहदाह के तमाम बाशिंदो, रब का कलाम सुनो! जितने भी रब की परस्तिश करने के लिए इन दरवाज़ों में दाख़िल होते हैं वह सब तबज्जुह दें! 3 रबखुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि अपनी ज़िंदगी और चाल-चलन दुस्स्त करो तो मैं आइंदा भी तुम्हें इस मकाम पर बसने दूँगा। 4 उनके फ़रेबदेह अलफ़ाज़ पर एतमाद मत करो जो कहते हैं, ‘यहाँ हम महफूज़ हैं क्योंकि यह रब का घर, रब का घर, रब का घर है।’ 5 सुनो, शर्त तो यह है कि तुम अपनी ज़िंदगी और चाल-चलन दुस्स्त करो और एक दूसरे के साथ इनसाफ़ का सुल्क करो, 6 कि तुम परदेसी, यतीम और बेवा पर ज़ुल्म न करो, इस जगह बेकुसूर का खून न बहाओ और अजनबी माबदों के पीछे लगकर अपने आपको नुक़सान न पहुँचाओ। 7 अगर तुम ऐसा करो तो मैं आइंदा भी तुम्हें इस जगह बसने दूँगा, उस मुल्क में जो मैंने तुम्हारे बापदादा को हमेशा के लिए बख़्खा दिया था।

8 लेकिन अफ़सोस, तुम फ़रेबदेह अलफ़ाज़ पर भरोसा रखते हो जो फ़ज़ूल ही हैं। 9 तुम चोर, कातिल और जिनाकार हो। नीज़ तुम झूठी क़सम खाते, बाल देवता के हज़ूर बख़र जलाते और अजनबी माबदों के पीछे लग जाते हो, ऐसे देवताओं के पीछे जिनसे तुम पहले वाकिफ़ नहीं थे। 10 लेकिन साथ साथ यहाँ मेरे हज़ूर भी आते हो। जिस मकान पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है उसी में तुम खड़े होकर कहते हो, ‘हम महफूज़ हैं।’ तुम रब के घर में इबादत करने के साथ साथ किस तरह यह तमाम धिनौनी हरकतें जारी रख सकते हो?”

11 रब फ़रमाता है, “क्या तुम्हारे नज़दीक यह मकान जिस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है डाकुओं का अड्डा बन गया है? खबरदार! यह सब कुछ मुझे भी नज़र आता है। 12 सैला शहर का चक्कर लगाओ जहाँ मैंने पहले अपना नाम बसाया था। मालूम करो कि मैंने अपनी कौम इसराईल की बेदीनी के सबब से उस शहर के साथ क्या किया।” 13 रब फ़रमाता है, “तुम यह शरीर हरकतें करते रहे, और मैं बार बार तुमसे हमकलाम होता रहा, लेकिन तुमने मेरी न सुनी। मैं तुम्हें बुलाता रहा, लेकिन तुम जवाब देने के लिए तैयार न हुए। 14 इसलिए अब मैं इस घर के साथ वह कुछ करूँगा जो मैंने सैला के साथ किया था, गो इस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है, यह वह मकान है जिस पर तुम एतमाद रखते हो और जिसे मैंने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को अता किया था। 15 मैं तुम्हें अपने हज़ूर से निकाल दूँगा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मैंने तुम्हारे तमाम भाइयों यानी इसराईल \* की औलाद को निकाल दिया था।

### लोगों की नाफ़रमानी

16 ऐ यरमियाह, इस कौम के लिए दूआ मत कर। इसके लिए न इत्तिजा कर, न मिन्नत। इन लोगों की खातिर मुझे तंग न कर, क्योंकि मैं तेरी नहीं सुनूँगा। 17 क्या तुझे वह कुछ नज़र नहीं आ रहा जो यह यहदाह के शहरों और यस्-शलम की गलियों में कर रहे हैं? 18 और सब इसमें मुल्वबस हैं। बच्चे लकड़ी चुनकर ढेर बनाते हैं, फिर बाप उसे आग लगाते हैं जबकि

\* 7:15 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : इफ़राईम।

औरते आटा गूँध गूँधकर आग पर आसमान की मलिका नामी देवी के लिए टिककियाँ पकाती हैं। मुझे तंग करने के लिए वह अजनबी माबूदों को मैं की नज़रें भी पेश करते हैं।

19 लेकिन हकीकत में यह मुझे उतना तंग नहीं कर रहे जितना अपने आपको। ऐसी हरकतों से वह अपनी ही स्सवाई कर रहे हैं।” 20 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, “मेरा कहर और ग़ज़ब इस मकाम पर, इससानो-हैवान पर, खुले मैदान के दरख्तों पर और ज़मीन की पैदावार पर नाज़िल होगा। सब कुछ नज़रे-आतिश हो जाएगा, और कोई उसे बुझा नहीं सकेगा।”

21 रब्बुल-अफ़वाज़ जो इसराइल का खुदा है फ़रमाता है, “भस्म होनेवाली कुरबानियों को मुझे पेश न करो, बल्कि उनका गोशत दीगर कुरबानियों समेत खुद खा लो। 22 क्योंकि जिस दिन मैं तुम्हारे बापदादा को मिसर से निकाल लाया उस दिन मैंने उन्हें भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और दीगर कुरबानियाँ चढ़ाने का हुक्म न दिया। 23 मैंने उन्हें सिर्फ़ यह हुक्म दिया कि मेरी सुनो! तब ही मैं तुम्हारा खुदा हूँगा और तुम मेरी कौम होगे। पूरे तौर पर उस राह पर चलते रहो जो मैं तुम्हें दिखाता हूँ। तब ही तुम्हारी ख़ैर होगी। 24 लेकिन उन्होंने मेरी न सुनी, न ध्यान दिया बल्कि अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िदागी गुज़ारने लगे। उन्होंने मेरी तरफ़ रज़ू न किया बल्कि अपना मुँह मुझसे फेर लिया। 25 जब से तुम्हारे बापदादा मिसर से निकल आए आज तक मैं रोज़ बरोज़ और बार बार अपने खादिमों यानी नबियों को तुम्हारे पास भेजता रहा। 26 तो भी उन्होंने न मेरी सुनी, न तवज़ूह दी। वह बज़िद रहे बल्कि अपने बापदादा की निसबत ज़्यादा बुरे थे।

27 ऐ रमियाह, तू उन्हें यह तमाम बातें बताएगा, लेकिन वह तेरी नहीं सुनेंगे। तू उन्हें बुलाएगा, लेकिन वह जवाब नहीं देंगे। 28 तब तू उन्हें बताएगा, ‘इस कौम ने न रब अपने खुदा की आवाज़ सुनी, न उस की तरबियत कबूल की। दियातदारी ख़त्म होकर उनके मुँह से मिट गई है।’

### वादीए-बिन-हिन्नुम में काबिले-घिन रस्म

29 अपने बालों को काटकर फेंक दे! जा, बंजर टीलों पर मातम का गीत गा, क्योंकि यह नसल रब के ग़ज़ब का निशाना बन गई है, और उसने इसे रद्द करके छोड़ दिया है।”

30 क्योंकि रब फरमाता है, “जो कुछ यहदाह के बाशिंदों ने किया वह मुझे बहुत बुरा लगता है। उन्होंने अपने धिनौने बुतों को मेरे नाम के लिए मख़सूस घर में रखकर उस की बेहुरमती की है। 31 साथ साथ उन्होंने वादीए-बिन-हिन्नुम में वाके त्फ़त की ऊँची जगहें तामीर की ताकि अपने बेटे-बेटियों को जलाकर कुरबान करें। मैंने कभी भी ऐसी रस्म अदा करने का हुक्म नहीं दिया बल्कि इसका ख़याल मेरे ज़हन में आया तक नहीं।

32 चुनौचे रब का कलाम सुनो! वह दिन आनेवाले हैं जब यह मकाम ‘त्फ़त’ या ‘वादीए-बिन-हिन्नुम’ नहीं कहलाएगा बल्कि ‘कत्लो-गारत की वादी।’ उस वक़्त लोग त्फ़त में इतनी लाशें दफनाएँगे कि आखिरकार ख़ाली जगह नहीं रहेगी। 33 तब इस कौम की लाशें परिदों और जंगली जानवरों की ख़ुराक बन जाएँगी, और कोई नहीं होगा जो उन्हें भगा दे। 34 मैं यहदाह के शहरों और यस्शलम की गलियों में ख़ुशीओ-शादमानी की आवाज़ें ख़त्म कर दूँगा, दूल्हा दुलहन की आवाज़ें बंद हो जाएँगी। क्योंकि मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा।”

## 8

1 रब फरमाता है, “उस वक़्त दुश्मन कब्रों को खेलकर यहदाह के बादशाहों, अफ़सरों, इमामों, नबियों और यस्शलम के आम बाशिंदों की हड्डियों को निकालेगा 2 और ज़मीन पर बिखेर देगा। वहाँ वह उनके सामने पड़ी रहेगी जो उन्हें प्यारे थे यानी सूरज, चाँद और सितारों के तमाम लशकर के सामने। क्योंकि वह उन्हीं की खिदमत करते, उन्हीं के पीछे चलते, उन्हीं के तालिब रहते, और उन्हीं को सिजदा करते थे। उनकी हड्डियाँ दुबारा न इकट्ठी की जाएँगी, न दफ़न की जाएँगी बल्कि खेत में गोबर की तरह बिखरी पड़ी रहेगी। 3 और जहाँ भी मैं इस शरीर कौम के बचे हूँओं को मुंतशिर करूँगा वहाँ वह सब कहेंगे कि काश हम भी ज़िंदा न रहें बल्कि मर जाएँ!” यह रब्बुल-अफ़वाज़ का फ़रमान है।

### कौम तबाहकुन राह से हटने के लिए तैयार नहीं

4 “उन्हें बता, रब फरमाता है कि जब कोई गिर जाता है तो क्या वह दुबारा उठने की कोशिश नहीं करता? ज़रूर। और जब कोई सहीह रास्ते से दूर हो जाता है तो क्या वह दुबारा वापस आ जाने की कोशिश नहीं करता? बेशक। 5 तो फिर यस्शलम के यह लोग सहीह राह से बार बार क्यों भटक जाते हैं? यह फरेब के साथ लिपेट रहते और वापस आने से इनकार ही करते हैं। 6 मैंने ध्यान देकर देखा है कि यह झूट ही बोलते हैं। कोई भी पछताकर नहीं कहता, ‘यह कैसा ग़लत काम है जो मैंने किया!’ जिस तरह जंग में घोड़े दुश्मन पर टूट पड़ते हैं उसी तरह हर एक सीधा अपनी ग़लत राह पर दौड़ता रहता है। 7 फ़िज़ा में उडनेवाले लकलक पर गौर करो जिसे आने जाने के मुकर्रर औकात ख़ूब मालूम होते हैं। फाख़्ता, अबाबील और बुलबुल

पर भी ध्यान दो जो सर्दियों के मौसम में कहीं और होते हैं, गरमियों के मौसम में कहीं और। वह मुकररा औकात से कभी नहीं हटते। लेकिन अफसोस, मेरी कौम रब की शरीअत नहीं जानती।

8 तुम किस तरह कह सकते हो, 'हम दानिशमंद हैं, क्योंकि हमारे पास रब की शरीअत है'? हकीकत में कातिबों के फरेबदेह कलम ने इसे तोड़-मरोड़कर बयान किया है। 9 सुनो, दानिशमंदों की रसवाई हो जाएगी, वह दहशतजदा होकर पकड़े जाएंगे। देखो, रब का कलाम रद्द करने के बाद उनकी अपनी हिकमत कहाँ रही?

10 इसलिए मैं उनकी बीवियों को परदेसियों के हवाले कर दूँगा और उनके खेतों को ऐसे लोगों के सुपर्द जो उन्हें निकाल देंगे। क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक सबके सब नाजायज नफा के पीछे पड़े हैं, नबियों से लेकर इमामों तक सब धोकेबाज हैं। 11 वह मेरी कौम के ज़खम पर आरिज़ी मरहम-पट्टी लगाकर कहते हैं, 'अब सब कुछ ठीक हो गया है, अब सलामती का दौर आ गया है' हालाँकि सलामती है ही नहीं।

12 गो ऐसा धिनौना रवैया उनके लिए शर्म का बाइस होना चाहिए, लेकिन वह शर्म नहीं करते बल्कि सरासर बेशर्म हैं। इसलिए जब सब कुछ गिर जाएगा तो यह लोग भी गिर जाएंगे। जब मैं इन पर सज़ा नाज़िल करूँगा तो यह ठोकर खाकर खाक में मिल जाएंगे।" यह रब का फरमान है।

13 रब फरमाता है, "मैं उनकी पूरी फसल छीन लूँगा। अंगूर की बेल पर एक दाना भी नहीं रहेगा, अंजीर के तमाम दरखत फल से महसूम हो जाएंगे बल्कि तमाम पत्ते भी झड़ जाएंगे। जो कुछ भी मैंने उन्हें अता किया था वह उनसे छीन लिया जाएगा।

14 तब तुम कहोगे, 'हम यहाँ क्यों बैठे रहें? आओ, हम क़िलाबंद शहरों में पनाह लेकर वहीं हलाक हो जाएँ। हमने रब अपने खुदा का गुनाह किया है, और अब हम इसका नतीजा भुगत रहे हैं। क्योंकि उसी ने हमें हलाकत के हवाले करके हमें ज़हरीला पानी पिला दिया है। 15 हम सलामती के इंतज़ार में रहे, लेकिन हालात ठीक न हुए। हम शफा पाने की उम्मीद रखते थे, लेकिन इसके बजाए हम पर दहशत छा गई। 16 सुनो! दुश्मन के घोड़े नथने फुला रहे हैं। दान से उनका शोर हम तक पहुँच रहा है। उनके हिनहिनाने से पूरा मुल्क थरथा रहा है, क्योंकि आते वक़्त यह पूरे मुल्क को उसके शहरों और बाशिदों समेत हडप कर लेंगे।"

### अपनी कौम पर यरमियाह का नोहा

17 रब फरमाता है, "मैं तुम्हारे खिलाफ अफ़ई भेज दूँगा, ऐसे ज़हरीले सौंप जिनके खिलाफ हर जादूमंत्र बेअसर रहेगा। यह तुम्हें काटेंगे।" 18 लाइलाज गम मुझ पर हावी हो गया, मेरा दिल निढाल हो गया है। 19 सुनो! मेरी कौम दूर-दराज मुल्क से चीख चीखकर मदद के लिए आवाज़ दे रही है। लोग पूछते हैं, "क्या रब सियून में नहीं है, क्या यरशलम का बादशाह अब से वहाँ सुकूनत नहीं करता?" "सुनो, उन्होंने अपने मुजस्समों और बेकार अजनबी बुतों की पूजा करके मुझे क्यों तैश दिलाया?"

20 लोग आहें भर भरकर कहते हैं, "फ़सल कट गई है, फल चुना गया है, लेकिन अब तक हमें नजात हासिल नहीं हुई।"

21 मेरी कौम की मुकम्मल तबाही देखकर मेरा दिल टूट गया है। मैं मातम कर रहा हूँ, क्योंकि उस की हालत इतनी बुरी है कि मेरे रोंगटे खड़े हो गए हैं। 22 क्या जिलियाद में मरहम नहीं? क्या वहाँ डाक्टर नहीं मिलता? मुझे बताओ, मेरी कौम का ज़खम क्यों नहीं भरता?

## 9

1 काश मेरा सर पानी का मंबा और मेरी आँखें आँसुओं का चश्मा हों ताकि मैं दिन-रात अपनी कौम के मकतूलों पर आहो-जारी कर सकूँ।

### धोकेबाजों की कौम

2 काश रेगिस्तान में कहीं मुसाफ़िरों के लिए सराय हो ताकि मैं अपनी कौम को छोड़कर वहाँ चला जाऊँ। क्योंकि सब जिनाकार, सब ग़द्ग़रों का जत्था है।

3 रब फरमाता है, "वह अपनी ज़बान से झूट के तीर चलाते हैं, और मुल्क में उनकी ताक़त दियानतदारी पर मबनी नहीं होती। नीज़, वह बदतर होते जा रहे हैं। मुझे तो वह जानते ही नहीं। 4 हर एक अपने पड़ोसी से खबरदार रहे, और अपने किसी भी भाई पर भरोसा मत रखना। क्योंकि हर भाई चालाकी करने में माहिर है, और हर पड़ोसी तोहमत लगाने पर तला रहता है। 5 हर एक अपने पड़ोसी को धोका देता है, कोई भी सच नहीं बोलता। उन्होंने अपनी ज़बान को झूट बोलना सिखाया है, और अब वह ग़लत काम करते करते थक गए हैं। 6 ऐ यरमियाह, तू फ़रेब से घिरा रहता है, और यह लोग फ़रेब के बाइस ही मुझे जानने से इनकार करते हैं।"

7 इसलिए रब्बूल-अफ़वाज़ फरमाता है, "देखो, मैं उन्हें ख़ाम चाँदी की तरह पिघलाकर आजमाऊँगा, क्योंकि मैं अपनी कौम, अपनी बेटी के साथ और क्या कर सकता हूँ? 8 उनकी ज़बानें मोहलक तीर हैं। उनके मुँह पड़ोसी से सुलह-सलामती



की बातें करते हैं जबकि अंदर ही अंदर वह उस की ताक में बैठे हैं।”<sup>9</sup> रब फरमाता है, “क्या मुझे उन्हें इसकी सजा नहीं देनी चाहिए? क्या मुझे ऐसी कौम से बदला नहीं लेना चाहिए?”

### नोहा करो!

10 मैं पहाड़ों के बारे में आहो-जारी करूँगा, बयाबान की चरागाहों पर मातम का गीत गाऊँगा। क्योंकि वह यों तबाह हो गए हैं कि न कोई उनमें से गुजरता, न रेबडों की आवाजें उनमें सुनाई देती हैं। परिदे और जानवर सब भागकर चले गए हैं।  
11 “यस्शालम को मैं मलबे का ढेर बना दूँगा, और आइंदा गीदड़ उसमें जा बसेंगे। यहदाह के शहरों को मैं वीरानो-सुनसान कर दूँगा। एक भी उनमें नहीं बसेगा।”

12 कौन इतना दानिशमंद है कि यह समझ सके? किस को रब से इतनी हिदायत मिली है कि वह बयान कर सके कि मुल्क क्यों बरबाद हो गया है? वह क्यों रेगिस्तान जैसा बन गया है, इतना वीरान कि उसमें से कोई नहीं गुजरता?

13 रब ने फरमाया, “वजह यह है कि उन्होंने मेरी शरीअत को तर्क किया, वह हिदायत जो मैंने खुद उन्हें दी थी। न उन्होंने मेरी सुनी, न मेरी शरीअत की पैरवी की।<sup>14</sup> इसके बजाए वह अपने जिद्दी दिलों की पैरवी करके बाल देवताओं के पीछे लग गए हैं। उन्होंने वही कुछ किया जो उनके बापदादा ने उन्हें सिखाया था।”

15 इसलिए रब्बूल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है, “देखो, मैं इस कौम को कड़वा खाना खिलाकर जहरीला पानी पिला दूँगा।<sup>16</sup> मैं उन्हें ऐसी क्रोमों में मूंतशिर कर दूँगा जिनसे न वह और न उनके बापदादा वाकिफ थे। मेरी तलवार उस वक्त तक उनके पीछे पड़ी रहेगी जब तक हलाक न हो जाएँ।”<sup>17</sup> रब्बूल-अफवाज फरमाता है, “ध्यान देकर गिर्या करनेवाली औरतों को बुलाओ। जो जानाजों पर वावैला करती हैं उनमें से सबसे माहिर औरतों को बुलाओ।

18 वह जल्द आकर हम पर आहो-जारी करें ताकि हमारी आँखों से आँसू बह निकलें, हमारी पलकों से पानी खूब टपकने लगे।

19 क्योंकि सिय्यून से गिर्या की आवाजें बूलंद हो रही हैं, ‘हाय, हमारे साथ कैसी ज्यादती हुई है, हमारी कैसी रसवाई हुई है! हम मुल्क को छोड़ने पर मजबूर हैं, क्योंकि दुश्मन ने हमारे घरों को ढा दिया है।’

20 ऐ औरतो, रब का पैगाम सुनो। अपने कानों को उस की हर बात पर धरो! अपनी बेटियों को नोहा करने की तालीम दो, एक दूसरी को मातम का यह गीत सिखाओ,

21 “मौत फलॉंगकर हमारी खिडकियों में से घुस आई और हमारे किलों में दाखिल हुई है। अब वह बच्चों को गलियों में से और नौजवानों को चौकों में से मिटा डालने जा रही है।”

22 रब फरमाता है, “नाशें खेतों में गोबर की तरह इधर उधर बिखरी पड़ी रहेगी। जिस तरह कटा हुआ गंदम फसल काटनेवाले के पीछे इधर उधर पड़ा रहता है उसी तरह लाशें इधर उधर पड़ी रहेगी। लेकिन उन्हें इकट्ठा करनेवाला कोई नहीं होगा।”

23 रब फरमाता है, “न दानिशमंद अपनी हिकमत पर फखर करे, न जोरावर अपने जोर पर या अमीर अपनी दौलत पर।

24 फखर करनेवाला फखर करे कि उसे समझ हासिल है, कि वह रब को जानता है और कि मैं रब हूँ जो दुनिया में मेहरबानी, इनसाफ और रास्ती को अमल में लाता हूँ। क्योंकि यही चीजें मुझे पसंद हैं।”

25 रब फरमाता है, “ऐसा वक्त आ रहा है जब मैं उन सबको सजा दूँगा जिनका सिर्फ जिस्मानी खतना हुआ है।<sup>26</sup> इनमें मिसर, यहदाह, अदोम, अम्मोन, मोआब और वह शामिल हैं जो रेगिस्तान के किनारे किनारे रहते हैं। क्योंकि गो यह तमाम अकवाम जाहिरी तौर पर खतना की रस्म अदा करती हैं, लेकिन उनका खतना बातिनी तौर पर नहीं हुआ। ध्यान दो कि इसराईल की भी यही हालत है।”

## 10

### बुत बेफायदा है

1 ऐ इसराईल के घराने, रब का पैगाम सुन! 2 रब फरमाता है, “दीगर अकवाम की बुतपरस्ती मत अपनाना। यह लोग इल्मे-नुजूम से मुस्तकबिल जान लेने की कोशिश करते करते परेशान हो जाते हैं, लेकिन तुम उनकी बातों से परेशान न हो जाओ।<sup>3</sup> क्योंकि दीगर कौमों के रस्मो-रिवाज फज़ूल ही हैं। जंगल में दरख्त कट जाता है, फिर कारीगर उसे अपने औजार से तश्कील देता है।<sup>4</sup> लोग उसे अपनी सोना-चौंदी से सजाकर कीलों से कही लगा देते हैं ताकि हिले न।<sup>5</sup> बुत उन पुतलों की मानिंद हैं जो खीरे के खेत में खड़े किए जाते हैं ताकि परिदों को भगा दें। न वह बोल सकते, न चल सकते हैं, इसलिए लोग उन्हें उठाकर अपने साथ ले जाते हैं। उनसे मत डरना, क्योंकि न वह नुकसान का बाइस हैं, न भलाई का।”

6 ऐ रब, तुझ जैसा कोई नहीं है, तू अजीम है, तेरे नाम की अजमत जोरदार तरीके से जाहिर हुई है। 7 ऐ अकवाम के बादशाह, कौन तेरा खोफ नहीं मानेगा? क्योंकि तू इस लायक है। अकवाम के तमाम दानिशमंदों और उनके तमाम ममालिक में तुझ जैसा कोई नहीं है। 8 सब अहमक और बेवकूफ साबित हुए हैं, क्योंकि उनकी तरबियत लकड़ी के बेकार बुतों से हासिल हुई है। 9 तरसीस से चाँदी की चादरें और ऊफ़ाज़ से सोना लाया जाता है। उनसे कारीगर और सुनार बुत बना देते हैं जिसे किरमिज़ी और अरगवानी रंग के कपड़े पहनाए जाते हैं। सब कुछ माहिर उस्तादों के हाथ से बनाया जाता है।

10 लेकिन रब ही हकीकती खुदा है। वही जिंदा खुदा और अबदी बादशाह है। जब वह नाराज़ हो जाता है तो ज़मीन लरज़ने लगती है। अकवाम उसका कहर बरदाश्त नहीं कर सकती।

11 बुतपरस्तों को बताओ कि देवताओं ने न आसमान को बनाया और न ज़मीन को, उनका नामो-निशान तो आसमानो-ज़मीन से मिट जाएगा। 12 देखो, अल्लाह ही ने अपनी क़ुदरत से ज़मीन को खलक किया, उसी ने अपनी हिकमत से दुनिया की बुनियाद रखी, और उसी ने अपनी समझ के मुताबिक आसमान को खैमे की तरह तान लिया। 13 उसके हुकम पर आसमान पर पानी के ज़ख़ीरे गरजने लगते हैं। वह दुनिया की इंतहा से बादल चढ़ने देता, बारिश के साथ बिजली कड़कने देता और अपने गोदामों से हवा निकलने देता है।

14 तमाम इनसान अहमक और समझ से खाली हैं। हर सुनार अपने बुतों के बाइस शरमिदा हुआ है। उसके बुत धोका ही हैं, उनमें दम नहीं। 15 वह फज़ूल और मज़हकाखेज़ हैं। अदालत के वक़्त वह नेस्त हो जाएंगे। 16 अल्लाह जो याकूब का मौरूसी हिस्सा है इनकी मानिद नहीं है। वह सबका खालिक है, और इसराईली कौम उसका मौरूसी हिस्सा है। रब्बुल-अफ़वाज़ ही उसका नाम है।

### आनेवाली जिलावतनी

17 ऐ मुहासराशुदा शहर, अपना सामान समेटकर मुल्क से निकलने की तैयारियाँ कर ले। 18 क्योंकि रब फ़रमाता है, “इस बार मैं मुल्क के बाशिंदों को बाहर फेंक दूँगा। मैं उन्हें तंग करूँगा ताकि उन्हें पकड़ा जाए।”

19 हाय, मेरा बेड़ा गरक हो गया है! हाय, मेरा ज़ख़म भर नहीं सकता। पहले मैंने सोचा कि यह ऐसी बीमारी है जिसे मुझे बरदाश्त ही करना है। 20 लेकिन अब मेरा खैमा तबाह हो गया है, उसके तमाम रस्से टूट गए हैं। मेरे बेटे मेरे पास से चले गए हैं, एक भी नहीं रहा। कोई नहीं है जो मेरा खैमा दुबारा लगाए, जो उसके परदे नए सिरों से लटकाए। 21 क्योंकि कौम के गल्लाबान अहमक हो गए हैं, उन्होंने रब को तलाश नहीं किया। इसलिए वह कामयाब नहीं रहे, और उनका पूरा रेवड़ तित्तर-बित्तर हो गया है।

22 सुनो! एक ख़बर पहुँच रही है, शिमाली मुल्क से शोरो-गौगा सुनाई दे रहा है। यहदाह के शहर उस की ज़द में आकर बरबाद हो जाएंगे। आइंदा गीदूड ही उनमें बसेंगे।

23 ऐ रब, मैंने जान लिया है कि इनसान की राह उसके अपने हाथ में नहीं होती। अपनी मरज़ी से न वह चलता, न कदम उठाता है। 24 ऐ रब, मेरी तंबीह कर, लेकिन मुनासिब हद तक। तैश में आकर मेरी तंबीह न कर, वरना मैं भस्म हो जाऊँगा। 25 अपना गज़ब उन अकवाम पर नाज़िल कर जो तुझे नहीं जानती, उन उम्मतों पर जो तेरा नाम लेकर तुझे नहीं पुकारती। क्योंकि उन्होंने याकूब को हडप कर लिया है। उन्होंने उसे मुकम्मल तौर पर निगलकर उस की चरागाह को तबाह कर दिया है।

## 11

### कौम की अहदशिकनी

1 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2 “यरुशलम और यहदाह के बाशिंदों से कह कि उस अहद की शरायत पर ध्यान दो जो मैंने तुम्हारे साथ बाँधा था। 3 रब जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि उस पर लानत जो उस अहद की शरायत पूरी न करे 4 जो मैंने तुम्हारे बापदादा से बाँधा था जब उन्हें मिसर से निकाल लाया, उस मकाम से जो लोहा पिघलानेवाली भट्टी की मानिद था। उस वक़्त मैं बोला, ‘मेरी सुनो और मेरे हर हुकम पर अमल करो तो तुम मेरी कौम होगे और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा। 5 फिर मैं वह वादा पूरा करूँगा जो मैंने कसम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था, मैं तुम्हें वह मुल्क दूँगा जिसमें दूध और शहद की कसरत है।’ आज तुम उसी मुल्क में रह रहे हो।”

मैं, यरमियाह ने जवाब दिया, “ऐ रब, आमीन, ऐसा ही हो!”

6 तब रब ने मुझे हुकम दिया कि यहदाह के शहरों और यरुशलम की गलियों में फिरकर यह तमाम बातें सुना दे। एलान कर, “अहद की शरायत पर ध्यान देकर उन पर अमल करो। 7 तुम्हारे बापदादा को मिसर से निकालते वक़्त मैंने उन्हें आगाह किया कि मेरी सुनो। आज तक मैं बार बार यही बात दोहराता रहा, 8 लेकिन उन्होंने न मेरी सुनी, न ध्यान दिया बल्कि हर

एक अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारता रहा। अहद की जिन बातों पर मैंने उन्हें अमल करने का हुक्म दिया था उन पर उन्होंने अमल न किया। नतीजे में मैं उन पर वह तमाम लानतें लाया जो अहद में बयान की गई हैं।”

9 रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, “यहदाह और यरूशलम के बाशिंदों ने मेरे खिलाफ साज़िश की है। 10 उनसे वही गुनाह सरज़द हुए हैं जो उनके बापदादा ने किए थे। क्योंकि यह भी मेरी बातें सुनने के लिए तैयार नहीं हैं, यह भी अजनबी माबूदों के पीछे हो लिए हैं ताकि उनकी खिदमत करें। इसराइल और यहदाह ने मिलकर वह अहद तोड़ा है जो मैंने उनके बापदादा से बाँधा था।

11 इसलिए रब फरमाता है कि मैं उन पर ऐसी आफत नाज़िल करूँगा जिससे वह बच नहीं सकेंगे। तब वह मदद के लिए मुझसे फरियाद करेंगे, लेकिन मैं उनकी नहीं सुनूँगा। 12 फिर यहदाह और यरूशलम के बाशिंदे अपने शहरों से निकलकर चीखते-चिल्लाते उन देवताओं से मिन्नत करेंगे जिनके सामने बखूर जलाते रहे हैं। लेकिन अब जब वह मुसीबत में मुब्तला होंगे तो यह उन्हें नहीं बचाएँगे। 13 ऐ यहदाह, तेरे देवता तेरे शहरों जैसे बेशुमार हो गए हैं। शर्मनाक देवता बाल के लिए बखूर जलाने की इतनी कुरबानियाँ खड़ी की गई हैं जितनी यरूशलम में गलियों होती हैं। 14 ऐ यरमियाह, इस कौम के लिए दुआ मत करना! इसके लिए न मिन्नत कर, न समाजत। क्योंकि जब आफत उन पर आएगी और वह चिल्लाकर मुझसे फरियाद करेंगे तो मैं उनकी नहीं सुनूँगा।

15 मेरी प्यारी कौम मेरे घर में क्यों हाज़िर होती है? वह तो अपनी बेशुमार साज़िशों से बाज़ ही नहीं आती। क्या आनेवाली आफत कुरबानी का मुक़द्दस गोशत पेश करने से रुक जाएगी? अगर ऐसा होता तो तू ख़ुशी मना सकती।

16 रब ने तेरा नाम ‘ज़ैतून का फलता-फूलता दरख्त जिसका ख़बसूरत फल है’ रखा, लेकिन अब वह ज़बरदस्त आँधी का शोर मचाकर दरख्त को आग लगाएगा। तब उस की तमाम डालियाँ भस्म हो जाएँगी। 17 ऐ इसराइल और यहदाह, रब्बूल-अफ़वाज़ ने ख़ुद तुम्हें ज़मीन में लगाया। लेकिन अब उसने तुम पर आफत लाने का फ़ैसला किया है। क्यों? तुम्हारे ग़लत काम की वजह से, और इसलिए कि तुमने बाल देवता को बखूर की कुरबानियाँ पेश करके मुझे तैश दिलाया है।”

### यरमियाह के लिए जान का खतरा

18 रब ने मुझे इतला दी तो मुझे मालूम हुआ। हाँ, उस वक़्त तू ही ने मुझे उनके मनसूबों से आगाह किया। 19 पहले मैं उस भूले-भाले भेड़ के बच्चे की मानिंद था जिसे कसाई के पास लाया जा रहा हो। मुझे क्या पता था कि यह मेरे खिलाफ साज़िश कर रहे हैं। आपस में वह कह रहे थे, “आओ, हम दरख्त को फल समेत ख़त्म करें, आओ हम उसे ज़िंदों के मुल्क में से मिटाएँ ताकि उसका नामो-निशान तक याद न रहे।”

20 ऐ रब्बूल-अफ़वाज़, तू आदिल मुंसिफ है जो लोगों के सबसे गहरे खयालत और राज जाँच लेता है। अब बख़्श दे कि मैं अपनी आँखों से वह इंतकाम देखूँ जो तू मेरे मुखालिफों से लेगा। क्योंकि मैंने अपना मामला तेरे ही सुपुर्द कर दिया है।

21 रब फरमाता है, “अनतोट के आदमी तू ज़ेज क़त्ल करना चाहते हैं। वह कहते हैं, ‘रब का नाम लेकर नबुव्वत मत करना, वरना तू हमारे हाथों मार दिया जाएगा।’” 22 चूँकि यह लोग ऐसी बातें करते हैं इसलिए रब्बूल-अफ़वाज़ फरमाता है, “मैं उन्हें सज़ा दूँगा! उनके जवान आदमी तलवार से और उनके बेटे-बेटियाँ काल से हलाक हो जाएँगे। 23 उनमें से एक भी नहीं बचेगा। क्योंकि जिस साल उनकी सज़ा नाज़िल होगी, उस वक़्त मैं अनतोट के आदमियों पर सख़्त आफत लाऊँगा।”

## 12

### बेदीनों को इतनी कामयाबी क्यों हासिल होती है?

1 ऐ रब, तू हमेशा हक़ पर है, लिहाज़ा अदालत में तुझसे शिकायत करने का क्या फायदा? ताहम मैं अपना मामला तुझे पेश करना चाहता हूँ। बेदीनों को इतनी कामयाबी क्यों हासिल होती है? ग़दर इतने सूकून से ज़िंदगी क्यों गुज़ारते हैं? 2 तूने उन्हें ज़मीन में लगा दिया, और अब वह जड़ पकड़कर खूब उगने लगे बल्कि फल भी ला रहे हैं। गो तेरा नाम उनकी ज़बान पर रहता है, लेकिन उनका दिल तुझसे दूर है। 3 लेकिन ऐ रब, तू मुझे जानता है। तू मेरा मुलाहज़ा करके मेरे दिल को परखता रहता है। गुज़ारिश है कि तू उन्हें भेड़ों की तरह घसीटकर ज़बह करने के लिए ले जा। उन्हें क़त्लो-ग़ारत के दिन के लिए मख़सूस कर!

4 मुल्क कब तक काल की गिरिफ़्त में रहेगा? खेतों में हरियाली कब तक मुरझाई हुई नज़र आएगी? बाशिंदों की बुराई के बाइस जानवर और परिदे ग़ायब हो गए हैं। क्योंकि लोग कहते हैं, “अल्लाह को नहीं मालूम कि हमारे साथ क्या हो जाएगा।”

5 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “पैदल चलनेवालों से दौड़ का मुकाबला करना तुझे थका देता है, तो फिर तू किस तरह घोड़ों का मुकाबला करेगा? तू अपने आपको सिर्फ़ वहाँ महफूज़ समझता है जहाँ चारों तरफ़ अमनो-अमान फैला हुआ है, तो फिर तू दरियाए-अरदन के गुंजान जंगल से किस तरह निपटेगा? 6 क्योंकि तेरे सगे भाई, हाँ तेरे बाप का घर भी तुझसे बेवफ़ा

हो गया है। यह भी बुलंद आवाज से तेरे पीछे तुझे गालियाँ देते हैं। उन पर एतमाद मत करना, खाह वह तेरे साथ अच्छी बातें क्यों न करें।

अल्लाह अपने मुल्क पर मातम करता है

7 मैंने अपने घर इसराईल को तर्क कर दिया है। जो मेरी मौरूसी मिलकियत थी उसे मैंने रद्द किया है। मैंने अपने लख्ते-जिगर को उसके दुश्मनों के हवाले कर दिया है।<sup>8</sup> क्योंकि मेरी क्रौम जो मेरी मौरूसी मिलकियत है मेरे साथ बुरा सुल्क करती है। जंगल में शेरबबर की तरह वह मेरे खिलाफ दहाड़ती है, इसलिए मैं उससे नफरत करता हूँ।<sup>9</sup> अब मेरी मौरूसी मिलकियत उस रंगीन शिकारी परिंदे की मानिंद है जिसे दीगर शिकारी परिंदों ने घेर रखा है। जाओ, तमाम दरिंदों को इकट्ठा करो ताकि वह आकर उसे खा जाएँ।<sup>10</sup> मुतअरिद गल्लाबानों ने मेरे अंगूर के बाग को खराब कर दिया है। मेरे प्यारे खेत को उन्होंने पाँवों तले रौदकर रेगिस्तान में बदल दिया है।<sup>11</sup> अब वह बंजर ज़मीन बनकर उजाड़ हालत में मेरे सामने मातम करता है। पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान है, लेकिन कोई परवा नहीं करता।

12 तबाहक़ुन फ़ौजी बयाबान की बंजर बुलंदियों पर से उतरकर करीब पहुँच रहे हैं। क्योंकि रब की तलवार मुल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सब कुछ खा जाएगी। कोई भी नहीं बचेगा।

13 इस क्रौम ने गंदुम का बीज बोया, लेकिन काँटों की फसल पक गई। खूब मेहनत-मशक्कत करने के बावजूद भी कुछ हासिल न हुआ, क्योंकि रब का सख्त ग़ज़ब क्रौम पर नाज़िल हो रहा है। चुनाँचे अब ससवाई की फसल काटो!"

अल्लाह का पड़ोसी ममालिक के लिए पैग़ाम

14 रब फ़रमाता है, "मैं उन तमाम शरीर पड़ोसी ममालिक को जड़ से उखाड़ दूँगा जो मेरी क्रौम इसराईल की मिलकियत को छीनने की कोशिश कर रहे हैं, वह मिलकियत जो मैंने ख़ुद उन्हें मीरास में दी थी। साथ साथ मैं यहदाह को भी जड़ से उनके दरमियान से निकाल दूँगा।<sup>15</sup> लेकिन बाद में मैं उन पर तरस खाकर हर एक को फिर उस की अपनी मौरूसी ज़मीन और अपने मुल्क में पहुँचा दूँगा।<sup>16</sup> पहले उन दीगर क्रौमों ने मेरी क्रौम को बाल देवता की क़सम खाने का तर्ज़ सिखाया। लेकिन अब अगर वह मेरी क्रौम की राहें अच्छी तरह सीखकर मेरे ही नाम और मेरी ही हयात की क़सम खाएँ तो मेरी क्रौम के दरमियान रहकर अज़ सरे-नौ कायम हो जाएँगी।<sup>17</sup> लेकिन जो क्रौम मेरी नहीं सुनेगी उसे मैं हतमी तौर पर जड़ से उखाड़कर नेस्त कर दूँगा।" यह रब का फ़रमान है।

## 13

गली सड़ी लँगोटी

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, "जा, कतान की लँगोटी खरीदकर उसे बाँध ले। लेकिन वह भीग न जाए।"<sup>2</sup> मैंने ऐसा ही किया। लँगोटी खरीदकर मैंने उसे बाँध लिया।<sup>3</sup> तब रब का कलाम दुबारा मुझ पर नाज़िल हुआ, "अब वह लँगोटी ले जो तुने खरीदकर बाँध ली है। दरियाए-फ़ुरात के पास जाकर उसे किसी चटान की दराड में छुपा दे।"<sup>4</sup> चुनाँचे मैं रवाना होकर दरियाए-फ़ुरात के किनारे पहुँच गया। वहाँ मैंने लँगोटी को कहीं छुपा दिया जिस तरह रब ने हुक्म दिया था।<sup>6</sup> बहुत दिन गुज़र गए। फिर रब मुझसे एक बार फिर हमकलाम हुआ, "उठ, दरियाए-फ़ुरात के पास जाकर वह लँगोटी निकाल ला जो मैंने तुझे वहाँ छुपाने को कहा था।"<sup>7</sup> चुनाँचे मैं रवाना होकर दरियाए-फ़ुरात के पास पहुँच गया। वहाँ मैंने खोदकर लँगोटी को उस जगह से निकाल लिया जहाँ मैंने उसे छुपा दिया था। लेकिन अफ़सोस, वह गल-सड़ गई थी, बिलकुल बेकार हो गई थी।

8 तब रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, "जिस तरह यह कपड़ा ज़मीन में दबकर गल-सड़ गया उसी तरह मैं यहदाह और यस्शलाम का बड़ा घमंड खाक में मिला दूँगा।<sup>10</sup> यह खराब लोग मेरी बातें सुनने के लिए तैयार नहीं बल्कि अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारते हैं। अजनबी माबूदों के पीछे लगकर यह उन्हीं की खिदमत और पूजा करते हैं। लेकिन इनका अंजाम लँगोटी की मानिंद ही होगा। यह बेकार हो जाएंगे।<sup>11</sup> क्योंकि जिस तरह लँगोटी आदमी की कमर के साथ लिपटी रहती है उसी तरह मैंने पूरे इसराईल और पूरे यहदाह को अपने साथ लिपटने का मौक़ा फ़राहम किया ताकि वह मेरी क्रौम और मेरी शोहरत, तारीफ़ और इज़ज़त का बाइस बन जाएँ। लेकिन अफ़सोस, वह सुनने के लिए तैयार नहीं थे।" यह रब का फ़रमान है।

मैं के घड़े भरे हुए हैं

12 "उन्हें बता दे कि रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है, 'हर घड़े को मैं से भरना है।' वह जवाब में कहेंगे, 'हम तो ख़ुद जानते हैं कि हर घड़े को मैं से भरना है।'<sup>13</sup> तब उन्हें इसका मतलब बता। 'रब फ़रमाता है कि इस मुल्क के तमाम बाशिंदे घड़े हैं जिन्हें मैं से भर दूँगा। दाऊद के तख़्त पर बैठनेवाले बादशाह, इमाम, नबी और यस्शलाम के तमाम रहनेवाले सबके

सब भर भरकर नशे में धुत हो जाएंगे। 14 तब मैं उन्हें एक दूसरे के साथ टकरा दूँगा, और बाप बेटों के साथ मिलकर टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे। न मैं तरस खाऊँगा, न उन पर रहम करूँगा बल्कि हमदर्दी दिखाएँ बग़ैर उन्हें तबाह करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

### कैद की हैबतनाक हालत

15 ध्यान से सुनो! मगस्स न हो, क्योंकि रब ने खुद फरमाया है। 16 इससे पहले कि तारीकी फैल जाए और तुम्हारे पाँव धूँधलेपन में पहाड़ों के साथ ठोकर खाएँ, रब अपने खुदा को जलाल दो! क्योंकि उस वक्त गो तुम रौशनी के इंतज़ार में रहोगे, लेकिन अल्लाह अंधेरे को मज़ीद बढ़ाएगा, गहरी तारीकी तुम पर छा जाएगी। 17 लेकिन अगर तुम न सुनो तो मैं तुम्हारे तकब्बुर को देखकर पोशीदगी में गिर्याओ-ज़ारी करूँगा। मैं ज़ार ज़ार रोकूँगा, मेरी आँखों से आँसू जोर से टपकेगे, क्योंकि दुश्मन रब के रेवड़ को पकड़कर जिलावतन कर देगा।

18 बादशाह और उस की माँ को इतला दे, “अपने तख्तों से उतरकर ज़मीन पर बैठ जाओ, क्योंकि तुम्हारी शान का ताज़ तुम्हारे सरों से गिर गया है।” 19 दृष्टे-नज़ब के शहर बंद किए जाएंगे, और उन्हें खोलनेवाला कोई नहीं होगा। पूरे यहूदाह को जिलावतन कर दिया जाएगा, एक भी नहीं बचेगा।

20 ऐ यस्शलम, अपनी नज़र उठाकर उन्हें देख जो शिमाल से आ रहे हैं। अब वह रेवड़ कहीं रहा जो तेरे सुपर्द किया गया, तेरी शानदार भेड़-बकरियाँ किधर हैं? 21 तू उस दिन क्या कहेगी जब रब उन्हें तुझ पर मुकर्र करेगा जिन्हें तुने अपने करीबी दोस्त बनाया था? जन्म देनेवाली औरत का-सा दर्द तुझ पर गालिब आएगा। 22 और अगर तेरे दिल में सवाल उभर आए कि मेरे साथ यह क्यों हो रहा है तो सुन! यह तेरे संगीन गुनाहों की वजह से हो रहा है। इन्हीं की वजह से तेरे कपड़े उतारे गए हैं और तेरी इसमतदरी हुई है।

23 क्या काला आदमी अपनी जिल्द का रंग या चीता अपनी खाल के धब्बे बदल सकता है? हरगिज़ नहीं! तुम भी बदल नहीं सकते। तुम गलत काम के इतने आदी हो गए हो कि सही काम कर ही नहीं सकते।

24 “जिस तरह भूसा रेगिस्तान की तेज़ हवा में उड़कर तितर-बितर हो जाता है उसी तरह मैं तेरे बाशियों को मुंशिर कर दूँगा।” 25 रब फरमाता है, “यही तेरा अंजाम होगा, मैंने खुद मुकर्र किया है कि तुझे यह अज़ मिलना है। क्योंकि तुने मुझे भूलकर झूट पर भरोसा रखा है। 26 मैं खुद तेरे कपड़े उतारूँगा ताकि तेरी बरहनगी सबको नज़र आए। 27 मैंने पहाड़ी और मैदानी इलाकों में तेरी धिनौनी हरकतों पर खूब ध्यान दिया है। तेरी जिनाकारी, तेरा मस्ताना हिनहिनाना, तेरी बेशर्म इसमतफ़रोशी, सब कुछ मुझे नज़र आता है। ऐ यस्शलम, तुझ पर अफ़सोस! तू पाक-साफ़ हो जाने के लिए तैयार नहीं। मज़ीद कितनी देर लगेगी?”

## 14

### काल के दौरान रब का पैगाम

1 काल के दौरान रब यर्मियाह से हमकलाम हुआ,

2 “यहूदाह मातम कर रहा है, उसके दरवाज़ों की हालत काबिले-रहम है। लोग सोगवार हालत में फ़र्श पर बैठे हैं, और यस्शलम की चीखें आसमान तक बुलंद हो रही हैं। 3 अमीर अपने नौकरों को पानी भरने भेजते हैं, लेकिन हौज़ों के पास पहुँचकर पता चलता है कि पानी नहीं है, इसलिए वह खाली हाथ वापस आ जाते हैं। शरमिदगी और नदामत के मारे वह अपने सरों को ढाँप लेते हैं। 4 बारिश न होने की वजह से ज़मीन में दराड़े पड़ गई हैं। खेतों में काम करनेवाले भी शर्म के मारे अपने सरों को ढाँप लेते हैं। 5 घास नहीं है, इसलिए हिरनी अपने नौमैलूद बच्चे को छोड़ देती है। 6 जंगली गधे बंजर टीलों पर खड़े गीदड़ों की तरह हाँपते हैं। हरियाली न मिलने की वजह से वह बेजान हो रहे हैं।”

7 ऐ रब, हमारे गुनाह हमारे खिलाफ़ गवाही दे रहे हैं। तो भी अपने नाम की खातिर हम पर रहम कर। हम मानते हैं कि बुरी तरह बेवफ़ा हो गए हैं, हमने तेरा ही गुनाह किया है। 8 ऐ अल्लाह, तू इसराइल की उम्मीद है, तू ही मुसीबत के वक्त उसे छुटकारा देता है। तो फिर हमारे साथ तेरा सलूक मुल्क में अजनबी का-सा क्यों है? तू रात को कभी इधर कभी इधर ठहरेनेवाले मुसाफ़िर जैसा क्यों है? 9 तू क्यों उस आदमी की मानिंद है जो अचानक दम बख़ूद हो जाता है, उस सूरमे की मानिंद जो बेबस होकर बचा नहीं सकता। ऐ रब, तू तो हमारे दरमियान ही रहता है, और हम पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है। हमें तर्क न कर!

### इस कौम के लिए दुआ मत करना

10 लेकिन रब इस कौम के बारे में फरमाता है, “यह लोग आवारा फिरने के शौकीन हैं, यह अपने पाँवों को रोक ही नहीं सकते। मैं उनसे नाख़ुश हूँ। अब मुझे उनके गलत काम याद रहेंगे, अब मैं उनके गुनाहों की सज़ा दूँगा।” 11 रब मज़ीद मुझसे

हमकलाम हुआ, “इस कौम की बहबूदी के लिए दुआ मत करना। 12 गो यह रोजा भी रखें तो भी मैं इनकी इल्तिजाओं पर ध्यान नहीं दूँगा। गो यह भ्रम होनेवाली और गल्ला की कुरबानियाँ पेश भी करें तो भी मैं इनसे खुश नहीं हूँगा बल्कि इन्हें काल, तलवार और बीमारियों से नेस्तो-नाबूद कर दूँगा।”

13 यह सुनकर मैंने एतराज किया, “ऐ रब कादिरे-मुतलक, नबी इन्हें बताते आए हैं, ‘न कल्लो-गारत का खतरा होगा, न काल पड़ेगा बल्कि मैं यही तुम्हारे लिए अमनो-अमान का पक्का बंदोबस्त कर लूँगा।”

14 रब ने जवाब दिया, “नबी मेरा नाम लेकर झूटी पेशगोइयाँ बयान कर रहे हैं। मैंने न उन्हें भेजा, न उन्हें कोई जिम्मादारी दी और न उनसे हमकलाम हुआ। यह तुम्हें झूटी रोयाँ, फ़ज़ूल पेशगोइयाँ और अपने दिल के वहम सुनाते रहे हैं।” 15 चुनौचे रब फ़रमाता है, “यह नबी तलवार और काल की ज़द में आकर मर जाएंगे। क्योंकि गो मैंने उन्हें नहीं भेजा तो भी यह मेरे नाम में नबुव्वत करके कहते हैं कि मुल्क में न कल्लो-गारत का खतरा होगा, न काल पड़ेगा। 16 और जिन लोगों को वह अपनी नबुव्वतें सुनाते रहे हैं वह तलवार और काल का शिकार बन जाएंगे, उनकी लाशें यरूशलम की गलियों में फेंक दी जाएँगी। उन्हें दफनानेवाला कोई नहीं होगा, न उनको, न उनकी बीवियों को और न उनके बेटे-बेटियों को। यों मैं उन पर उनकी अपनी बदकारी नाज़िल करूँगा।

**ऐ रब, हमें मुआफ़ कर!**

17 ऐ यरमियाह, उन्हें यह कलाम सुना, ‘दिन-रात मेरे आँसू बह रहे हैं। वह रुक नहीं सकते, क्योंकि मेरी कौम, मेरी कुँवारी बेटी को गहरी चोट लग गई है, ऐसा ज़ख़म जो भर नहीं सकता। 18 देहात में जाकर मुझे वह सब नज़र आते हैं जो तलवार से कत्ल किए गए हैं। जब मैं शहर में वापस आता हूँ तो चारों तरफ़ काल के बुरे असरात दिखाई देते हैं। नबी और इमाम मुल्क में मारे मारे फिर रहे हैं, और उन्हें मालूम नहीं कि क्या करें।’

19 ऐ रब, क्या तूने यहदाह को सरासर रद्द किया है? क्या तुझे सिस्यून से इतनी धिन आती है? तूने हमें इतनी बार क्यों मारा कि हमारा इलाज़ नामुमकिन हो गया है? हम अमनो-अमान के इंतज़ार में रहे, लेकिन हालात ठीक न हुए। हम शफ़ा पाने की उम्मीद रखते थे, लेकिन इसके बजाए हम पर दहशत छा गई।

20 ऐ रब, हम अपनी बेदीनी और अपने बापदादा का कूसूर तसलीम करते हैं। हमने तेरा ही गुनाह किया है। 21 अपने नाम की खातिर हमें हक़ीर न जान, अपने जलाली तख़्त की बेह्रमती होने न दे! हमारे साथ अपना अहद याद कर, उसे मनसूख न कर। 22 क्या दीगर अक़वाम के देवताओं में से कोई है जो बारिश बरसा सके? या क्या आसमान खुद ही बारिशें ज़मीन पर भेज देता है? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू ही यह सब कुछ करता है, ऐ रब हमारे खुदा। इसी लिए हम तुझ पर उम्मीद रखते हैं। तू ही ने यह सारा इतज़ाम कायम किया है।

## 15

**सज़ा ज़रूर आएगी, क्योंकि देर हो गई है**

1 फिर रब मुझसे हमकलाम हुआ, “अब से मेरा दिल इस कौम की तरफ़ मायल नहीं होगा, खाह मूसा और समुएल मेरे सामने आकर उनकी शफ़ाअत क्यों न करें। उन्हें मेरे हुज़ूर से निकाल दे, वह चले जाएँ। 2 अगर वह तुझसे पूछें, ‘हम किधर जाएँ?’ तो उन्हें जवाब दे, ‘रब फ़रमाता है कि जिसे मरना है वह मरे, जिसे तलवार की ज़द में आना है वह तलवार का लुक़मा बने, जिसे भूके मरना है वह भूके मरे, जिसे कैद में जाना है वह कैद हो जाएँ।’” 3 रब फ़रमाता है, “मैं उन्हें चार किस्म की सज़ा दूँगा। एक, तलवार उन्हें कत्ल करेगी। दूसरे, कुत्ते उनकी लाशें घसीटकर ले जाएंगे। तीसरे और चौथे, परिदे और दरिदे उन्हें खा खाकर ख़त्म कर देंगे। 4 जब मैं अपनी कौम से निपट लूँगा तो दुनिया के तमाम ममालिक उस की हालत देखकर काँप उठेंगे। उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे जब वह यहदाह के बादशाह मनस्सी बिन हिज़कियाह की उन शरीर हरकतों का अंजाम देखेंगे जो उसने यरूशलम में की हैं।

5 ऐ यरूशलम, कौन तुझ पर तरस खाएगा, कौन हमददीं का इज़हार करेगा? कौन तेरे घर आकर तेरा हाल पूछेगा?” 6 रब फ़रमाता है, “तूने मुझे रद्द किया, अपना मुँह मुझसे फेर लिया है। अब मैं अपना हाथ तेरे खिलाफ़ बढ़ाकर तुझे तबाह कर दूँगा। क्योंकि मैं हमददीं दिखाते दिखाते तंग आ गया हूँ।

7 जिस तरह गंदुम को हवा में उछालकर भूसे से अलग किया जाता है उसी तरह मैं उन्हें मुल्क के दरवाज़ों के सामने फटकूँगा। चूँकि मेरी कौम ने अपने ग़लत रास्तों को तर्क न किया इसलिए मैं उसे बेओलाद बनाकर बरबाद कर दूँगा। 8 उस की बेवाएँ समुंदर की रेत जैसी बेशुमार होंगी। दोपहर के वक़्त ही मैं नौजवानों की माओ पर तबाही नाज़िल करूँगा, अचानक ही उन पर पेचो-ताब और दहशत छा जाएगी। 9 सात बच्चों की माँ निहाल होकर जान से हाथ धो बैठेगी। दिन के वक़्त ही

उसका सूरज डूब जाएगा, उसका फखर और इज्जत जाती रहेगी। जो लोग बच जाएंगे उन्हें मैं दुश्मन के आगे आगे तलवार से मार डालूँगा।” यह रब का फरमान है।

सरमियाह रब से शिकायत करता है

10 ऐ मेरी माँ, मुझ पर अफसोस! अफसोस कि तूने मुझे जैसे शाव्स को जन्म दिया जिसके साथ पूरा मुल्क झगड़ता और लड़ता है। गो मैंने न उधार दिया न लिया तो भी सब मुझ पर लानत करते हैं। 11 रब ने जवाब दिया, “यकीनन मैं तुझे मजबूत करके अपना अच्छा मकसद पूरा करूँगा। यकीनन मैं होने दूँगा कि मुसीबत के वक़्त दुश्मन तुझसे निम्नत करे।

12 क्योंकि कोई उस लोहे को तोड़ नहीं सकेगा जो शिमाल से आया, हाँ लोहे और पीतल का वह सरिया तोड़ा नहीं जाएगा। 13 मैं तेरे खजाने दुश्मन को मुफ्त में दूँगा। तुझे तमाम गुनाहों का अज़्र मिलेगा जब वह पूरे मुल्क में तेरी दौलत लूटने आया। 14 तब मैं तुझे दुश्मन के ज़रीए एक मुल्क में पहुँचा दूँगा जिससे तू नवाकिफ़ है। क्योंकि मेरे ग़ज़ब की भडकती आग तुझे भस्म कर देगी।”

15 ऐ रब, तू सब कुछ जानता है। मुझे याद कर, मेरा खयाल कर, ताब्रकुब करनेवालों से मेरा इंतक़ाम ले! उन्हें यहाँ तक बरदाश्त न कर कि आखिरकार मेरा सफ़ाया हो जाए। इसे ध्यान में रख कि मेरी रसवाई तेरी ही खातिर हो रही है। 16 ऐ रब, लशकरों के खुदा, जब भी तेरा कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ तो मैंने उसे हज़म किया, और मेरा दिल उससे खुशो-ख़ुर्म हुआ। क्योंकि मुझ पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है। 17 जब दीगर लोग रंगरलियों में अपने दिल बहलाते थे तो मैं कभी उनके साथ न बैठा, कभी उनकी बातों से लुत्फ़अंदोज़ न हुआ। नहीं, तेरा हाथ मुझ पर था, इसलिए मैं दूसरों से दूर ही बैठा रहा। क्योंकि तूने मेरे दिल को क़ौम पर क्रहर से भर दिया था। 18 क्या वजह है कि मेरा दर्द कभी ख़त्म नहीं होता, कि मेरा ज़ख़म लाइलाज है और कभी नहीं भरता? तू मेरे लिए फ़रेबदेह चरमा बन गया है, ऐसी नदी जिसके पानी पर एतमाद नहीं किया जा सकता।

19 रब जवाब में फ़रमाता है, “अगर तू मेरे पास वापस आए तो मैं तुझे वापस आने दूँगा, और तू दुबारा मेरे सामने हाज़िर हो सकेगा। और अगर तू फ़ज़ूल बातें न करे बल्कि मेरे लायक़ अलफ़ाज़ बोले तो मेरा तरज़ुमान होगा। लाज़िम है कि लोग तेरी तरफ़ रज़ू करें, लेकिन ख़बरदार, कभी उनकी तरफ़ रज़ू न कर!” 20 रब फ़रमाता है, “मैं तुझे पीतल की मज़बूत दीवार बना दूँगा ताकि तू इस क़ौम का सामना कर सके। यह तुझसे लड़ेगे लेकिन तुझ पर ग़ालिब नहीं आएँगे, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, मैं तेरी मदद करके तुझे बचाए रखूँगा। 21 मैं तुझे बेदीनों के हाथ से बचाऊँगा और फ़िघा देकर ज़ालिमों की गिरिफ्त से छुड़ाऊँगा।”

## 16

सरमियाह को शादी करने की इज़ाज़त नहीं

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “इस मक़ाम में न तेरी शादी हो, न तेरे बेटे-बेटियाँ पैदा हो जाएँ।” 3 क्योंकि रब यहाँ पैदा होनेवाले बेटे-बेटियों और उनके माँ-बाप के बारे में फ़रमाता है, 4 “वह मोहलक़ बीमारियों से मरकर खेतों में गोबर की तरह पड़े रहेंगे। न कोई उन पर मातम करेगा, न उन्हें दफ़नाएगा, क्योंकि वह तलवार और काल से हलाक़ हो जाएँगे, और उनकी लशें परिदों और दरिदों की ख़ुराक बन जाएँगी।”

5 रब फ़रमाता है, “ऐसे घर में मत जाना जिसमें कोई फ़ौत हो गया है। \* उसमें न मातम करने के लिए, न अफ़सोस करने के लिए दाख़िल होना। क्योंकि अब से मैं इस क़ौम पर अपनी सलामती, मेहरबानी और रहम का इज़हार नहीं करूँगा।” यह रब का फ़रमान है। 6 “इस मुल्क के बाशिदे मर जाएँगे, खाह बड़े हों या छोटे। और न कोई उन्हें दफ़नाएगा, न मातम करेगा। कोई नहीं होगा जो ग़म के मारे अपनी ज़िन्द को काटे या अपने सर को मुँडवाए। 7 किसी का बाप या माँ भी इंतक़ाल कर जाए तो भी लोग मातम करनेवाले घर में नहीं जाएँगे, न तसल्ली देने के लिए जनाजे के खाने-पीने में शरीक होंगे। 8 ऐसे घर में भी दाख़िल न होना जहाँ लोग ज़ियाफ़त कर रहे हैं। उनके साथ खाने-पीने के लिए मत बैठना।” 9 क्योंकि रब्बूल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, “तुम्हारे ज़िती-ज़ी, हाँ तुम्हारे देखते देखते मैं यहाँ खुशीओ-शादमानी की आवाज़ें बंद कर दूँगा। अब से दुल्हा दुल्हन की आवाज़ें ख़ामोश हो जाएँगी।

10 जब तू इस क़ौम को यह सब कुछ बताएगा तो लोग पछेंगे, ‘रब इतनी बड़ी आफ़त हम पर लाने पर क्यों तुला हुआ है? हमसे क्या ज़ुर्म हुआ है? हमने रब अपने खुदा का क्या गुनाह किया है?’ 11 उन्हें जवाब दे, ‘वजह यह है कि तुम्हारे बापदादा ने मुझे तर्क कर दिया। वह मेरी शरीअत के ताबे न रहे बल्कि मुझे छोड़कर अजनबी माबूदों के पीछे लग गए और उन्हीं की खिदमत और पूजा करने लगे। 12 लेकिन तू अपने बापदादा की निसबत कहीं ज़्यादा ग़लत काम करते हो। देखो, मेरी कोई नहीं सुनता बल्कि हर एक अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक़ ज़िदगी गुज़ारता है। 13 इसलिए मैं तुम्हें इस मुल्क से

\* 16:5 लफ़ज़ी तरज़ुमा : जिसमें जनाजे का खाना खिलाय़ा जा रहा है।

निकालकर एक ऐसे मुल्क में फेंक दूँगा जिससे न तुम और न तुम्हारे बापदादा वाकिफ थे। वहाँ तुम दिन-रात अजनबी माबूदों की खिदमत करोगे, क्योंकि उस वक्त मैं तुम पर रहम नहीं करूँगा।”

### जिलावतनी से वापसी

14 लेकिन रब यह भी फरमाता है, “ऐसा वक्त आनेवाला है कि लोग कसम खाते वक्त नहीं कहेंगे, ‘रब की हयात की कसम जो इसराइलियों को भिसर से निकाल लाया।’ 15 इसके बजाए वह कहेंगे, ‘रब की हयात की कसम जो इसराइलियों को शिमाली मुल्क और उन दीगर ममालिक से निकाल लाया जिनमें उसने उन्हें मुतशिर कर दिया था।’ क्योंकि मैं उन्हें उस मुल्क में वापस लाऊँगा जो मैंने उनके बापदादा को दिया था।”

### आनेवाली सज़ा

16 लेकिन मौजूदा हाल के बारे में रब फरमाता है, “मैं बहुत-से माहीगीर भेज दूँगा जो जाल डालकर उन्हें पकड़ेंगे। इसके बाद मैं मुतअदिद शिकारी भेज दूँगा जो उनका ताक़ूब करके उन्हें हर जगह पकड़ेंगे, खाह वह किसी पहाड़ या टीले पर छुप गए हों, खाह चटानों की किसी दराड़ में। 17 क्योंकि उनकी तमाम हरकतें मुझे नज़र आती हैं। मेरे सामने वह छुप नहीं सकते, और उनका कुसूर मेरे सामने पोशीदा नहीं है। 18 अब मैं उन्हें उनके गुनाहों की दुगानी सज़ा दूँगा, क्योंकि उन्होंने अपने बेजान बुतों और धिनेनी चीज़ों से मेरी मौरूसी ज़मीन को भरकर मेरे मुल्क की बेहुरमती की है।”

### यरमियाह का रब पर एतमाद

19 ऐ रब, तू मेरी कुव्वत और मेरा किला है, मुसीबत के दिन मैं तुझमें पनाह लेता हूँ। दुनिया की इंतहा से अक़्राम तेरे पास आकर कहेंगी, “हमारे बापदादा को मीरास में झूट ही मिला, ऐसे बेकार बुत जो उनकी मदद न कर सके। 20 इनसान किस तरह अपने लिए खुदा बना सकता है? उसके बुत तो खुदा नहीं हैं।”

21 रब फरमाता है, “चुनौते इस बार मैं उन्हें सहीह पहचान अता करूँगा। वह मेरी कुव्वत और ताक़त को पहचान लेंगे, और वह जान लेंगे कि मेरा नाम रब है।

## 17

### यहदाह का गुनाह और उस की सज़ा

1 ऐ यहदाह के लोगो, तुम्हारा गुनाह तुम्हारी ज़िंदगियों का अनमित हिस्सा बन गया है। उसे हीर की नोक रखनेवाले लोहे के आले से तुम्हारे दिलों की तख़्तियों और तुम्हारी कुरबानगाहों के सीगों पर कंदा किया गया है। 2 न सिर्फ़ तुम बल्कि तुम्हारे बच्चे भी अपनी कुरबानगाहों और असीरत देवी के खंबों को याद करते हैं, खाह वह घने दरख्तों के साये में या ऊँची जगहों पर क्यों न हों। 3 ऐ मेरे पहाड़ जो देहात से घिरा हुआ है, तेरे पूरे मुल्क पर गुनाह का असर है, इसलिए मैं होने दूँगा कि सब कुछ लूट लिया जाएगा। तेरा माल, तेरे खज़ाने और तेरी ऊँची जगहों की कुरबानगाहें सब छीन ली जाएँगी।

4 अपने कुसूर के सबब से तुझे अपनी मौरूसी मिलकियत छोड़नी पड़ेगी, वह मिलकियत जो तुझे मेरी तरफ़ से मिली थी। मैं तुझे तेरे दुश्मनों का गुलाम बना दूँगा, और तू एक नामालूम मुल्क में बसेगा। क्योंकि तुम लोगों ने मुझे तैश दिलाया है, और अब तुम पर मेरा ग़ज़ब कभी न बुझनेवाली आग की तरह भडकता रहेगा।”

### मुख़्तलिफ़ फ़रमान

5 रब फरमाता है, “उस पर लानत जिसका दिल रब से दूर होकर सिर्फ़ इनसान और उसी की ताक़त पर भरोसा रखता है। 6 वह रेगिस्तान में झाड़ी की मानिंद होगा, उसे किसी भी अच्छी चीज़ का तज़रबा नहीं होगा बल्कि वह बयाबान के ऐसे पथरीले और कल्चरवाले इलाकों में बसेगा जहाँ कोई और नहीं रहता। 7 लेकिन मुबारक है वह जो रब पर भरोसा रखता है, जिसका एतमाद उसी पर है। 8 वह पानी के किनारे पर लगे उस दरख़्त की मानिंद है जिसकी जड़ें नहर तक फैली हुई हैं। झलसानेवाली गरमी भी आए तो उसे डर नहीं, बल्कि उसके पत्ते हरे-भरे रहते हैं। काल भी पड़े तो वह परेशान नहीं होता बल्कि वक्त पर फल लाता रहता है।

9 दिल हद से ज़्यादा फ़रेबदेह है, और उसका इलाज नामुमकिन है। कौन उसका सहीह इल्म रखता है? 10 मैं, रब ही दिल की तकतीश करता हूँ। मैं हर एक की बातिनी हालत जाँचकर उसे उसके चाल-चलन और अमल का मुनासिब अज़्र देता हूँ।

11 जिस शख्स ने ग़लत तरीके से दौलत जमा की है वह उस तीतर की मानिंद है जो किसी दूसरे के अंडों पर बैठ जाता है। क्योंकि ज़िंदगी के उरुज पर उसे सब कुछ छोड़ना पड़ेगा, और आख़िरकार उस की हमाक़त सब पर ज़ाहिर हो जाएगी।”



12 हमारा मकदिस अल्लाह का जलाली तख्त है जो अजल से अजीम है। 13 ऐ रब, तू ही इसराईल की उम्मीद है। तुझे तर्क करनेवाले सब शर्मिंदा हो जाएंगे। तुझसे दूर होनेवाले खाक में मिलाए जाएंगे, क्योंकि उन्होंने रब को छोड़ दिया है जो ज़िंदगी के पानी का सरचश्मा है।

### मदद के लिए यरमियाह की दरखास्त

14 ऐ रब, तू ही मुझे शफा दे तो मुझे शफा मिलेगी। तू ही मुझे बचा तो मैं बचूँगा। क्योंकि तू ही मेरा फ़ख़र है। 15 लोग मुझसे पूछते रहते हैं, “रब का जो कलाम तूने पेश किया वह कहाँ है? उसे पूरा होने दे!” 16 ऐ अल्लाह, तूने मुझे अपनी क्रौम का गल्लाबान बनाया है, और मैंने यह ज़िम्मादारी कभी नहीं छोड़ी। मैंने कभी खाहिश नहीं रखी कि मुसीबत का दिन आए। तू यह सब कुछ जानता है, जो भी बात मेरे मुँह से निकली है वह तेरे सामने है। 17 अब मेरे लिए दुर्दशत का बाइस न बन! मुसीबत के दिन मैं तुझमें ही पनाह लेता हूँ। 18 मेरा ताक्कुब करनेवाले शर्मिंदा हो जाएँ, लेकिन मेरी स्सवाई न हो। उन पर दहशत छा जाए, लेकिन मैं इससे बचा रहूँ। उन पर मुसीबत का दिन नाज़िल कर, उनको दो बार कुचलकर खाक में मिला दे।

### सबत का दिन मनाओ

19 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “शहर के अवामी दरवाज़े में खड़ा हो जा, जिसे यहदाह के बादशाह इस्तेमाल करते हैं जब शहर में आते और उससे निकलते हैं। इसी तरह यस्शलम के दीगर दरवाज़ों में भी खड़ा हो जा। 20 वहाँ लोगों से कह, ‘ऐ दरवाज़ों में से गुज़रनेवालो, रब का कलाम सुनो! ऐ यहदाह के बादशाहो और यहदाह और यस्शलम के तमाम बाशिंदो, मेरी तरफ़ कान लगाओ!

21 रब फ़रमाता है कि अपनी जान ख़तरे में न डालो बल्कि ध्यान दो कि तुम सबत के दिन मालो-असबाब शहर में न लाओ और उसे उठाकर शहर के दरवाज़ों में दाख़िल न हो। 22 न सबत के दिन बोझ उठाकर अपने घर से कहीं और ले जाओ, न कोई और काम करो, बल्कि उसे इस तरह मनाया कि मख़सूसो-मुक़द्दस हो। मैंने तुम्हारे बापदादा को यह करने का हुक्म दिया था, 23 लेकिन उन्होंने मेरी न सुनी, न तवज्जुह दी बल्कि अपने मौक़िफ़ पर अड़े रहे और न मेरी सुनी, न मेरी तरबियत कबूल की।

24 रब फ़रमाता है कि अगर तुम वाकई मेरी सुनो और सबत के दिन अपना मालो-असबाब इस शहर में न लाओ बल्कि आराम करने से यह दिन मख़सूसो-मुक़द्दस मानो 25 तो फिर आइंदा भी दाऊद की नसल के बादशाह और सरदार इस शहर के दरवाज़ों में से गुज़रेंगे। तब वह घोड़ों और रथों पर सवार होकर अपने अफ़सरों और यहदाह और यस्शलम के बाशिंदों के साथ शहर में आते-जाते रहेंगे। अगर तुम सबत को मानो तो यह शहर हमेशा तक आबाद रहेगा। 26 फिर पूरे मुल्क से लोग यहाँ आएँगे। यहदाह के शहरों और यस्शलम के गिर्दो-नवाह के देहात से, बिनयमीन के कबायली इलाक़े से, मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाक़े से, पहाड़ी इलाक़े से और दशते-नजब से सब अपनी कुरबानियाँ लाकर रब के घर में पेश करेंगे। उनकी तमाम भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, ज़बह, गल्ला, बख़्दूर और सलामती की कुरबानियाँ रब के घर में चढ़ाई जाएँगी। 27 लेकिन अगर तुम मेरी न सुनो और सबत का दिन मख़सूसो-मुक़द्दस न मानो तो फिर तुम्हें सख़्त सज़ा मिलेगी। अगर तुम सबत के दिन अपना मालो-असबाब शहर में लाओ तो मैं इन्हीं दरवाज़ों में एक न बुझनेवाली आग लगा दूँगा जो जलती जलती यस्शलम के महलों को भस्म कर देगी।”

## 18

### अल्लाह अज़ीम कुम्हार है

1 रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, 2 “उठ और कुम्हार के घर में जा! वहाँ मैं तुझसे हमकलाम हूँगा।” 3 चुनौचे मैं कुम्हार के घर में पहुँच गया। उस वक़्त वह चाक पर काम कर रहा था। 4 लेकिन मिट्टी का जो बरतन वह अपने हाथों से तश्कील दे रहा था वह ख़राब हो गया। यह देखकर कुम्हार ने उसी मिट्टी से नया बरतन बना दिया जो उसे ज़्यादा पसंद था।

5 तब रब मुझसे हमकलाम हुआ, 6 “ऐ इसराईल, क्या मैं तुम्हारे साथ वैसा सुल्क नहीं कर सकता जैसा कुम्हार अपने बरतन से करता है? जिस तरह मिट्टी कुम्हार के हाथ में तश्कील पाती है उसी तरह तुम मेरे हाथ में तश्कील पाते हो।” यह रब का फ़रमान है। 7 “कभी मैं एलान करता हूँ कि किसी क्रौम या सलतनत को जड़ से उखाड़ दूँगा, उसे गिराकर तबाह कर दूँगा। 8 लेकिन कई बार यह क्रौम अपनी गलत राह को तर्क कर देती है। इस सूरत में मैं पछताकर उस पर वह आफ़त नहीं लाता जो मैंने लाने को कहा था। 9 कभी मैं किसी क्रौम या सलतनत को पनीरी की तरह लगाने और तामीर करने का एलान भी करता हूँ। 10 लेकिन अफ़सोस, कई दफ़ा यह क्रौम मेरी नहीं सुनती बल्कि ऐसा काम करने लगती है जो मुझे नापसंद है। इस सूरत में मैं पछताकर उस पर वह मेहरबानी नहीं करता जिसका एलान मैंने किया था।

11 अब यहदाह और यस्शलम के बाशिंदों से मुखातिब होकर कह, 'रब फरमाता है कि मैं तुम पर आफत लाने की तैयारियों कर रहा हूँ, मैंने तुम्हारे खिलाफ मनसूबा बाँध लिया है। चुनौचे हर एक अपनी गलत राह से हटकर वापस आए, हर एक अपना चाल-चलन और अपना रवैया दुस्त करे।' 12 लेकिन अफसोस, यह एतराज करेंगे, 'दफा करो! हम अपने ही मनसूबे जारी रखेंगे। हर एक अपने शरीर दिल की ज़िद के मुताबिक ही ज़िंदगी गुज़ारेगा।'

### क्रौम रब को भूल गई है

13 इसलिए रब फरमाता है, "दीगर अक्रवाम से दरियाफत करो कि उनमें कभी ऐसी बात सुनने में आई है। कुँवारी इसराईल से निहायत धिनौना जुर्म हुआ है! 14 क्या लुबनान की पथरीली चोटियों की बर्फ कभी पिघलकर खतम हो जाती है? क्या दूर-दराज चशमों से बहनेवाला बर्फ़ीला पानी कभी थम जाता है? 15 लेकिन मेरी क्रौम मुझे भूल गई है। यह लोग बातिल बुतों के सामने बख़र जलाते हैं, उन चीज़ों के सामने जिनके बाइस वह ठोकर खाकर कदीम राहों से हट गए हैं और अब कच्चे रास्तों पर चल रहे हैं। 16 इसलिए उनका मुल्क वीरान हो जाएगा, एक ऐसी जगह जिसे दूसरे अपने मज़ाक का निशाना बनाएँगे। जो भी गुज़रे उसके रोंगे खड़े हो जाएंगे, वह अफसोस से अपना सर हिलाएगा। 17 दुश्मन आएगा तो मैं अपनी क्रौम को उसके आगे आगे मुंशिर करूँगा। जिस तरह गर्द मशरिकी हवा के तेज़ झोंकों से उड़कर बिखर जाती है उसी तरह वह तितर-बितर हो जाएंगे। जब आफत उन पर नाज़िल होगी तो मैं उनकी तरफ रूजू नहीं करूँगा बल्कि अपना मुँह उनसे फेर लूँगा।"

### यरमियाह के खिलाफ साज़िश

18 यह सुनकर लोग आपस में कहने लगे, "आओ, हम यरमियाह के खिलाफ मनसूबे बाँधें, क्योंकि उस की बातें सहीह नहीं हैं। न इमाम शरीअत की हिदायत से, न दानिशमंद अच्छे मशवरों से, और न नबी अल्लाह के कलाम से महरूम हो जाएँ। आओ, हम ज़बानी उस पर हमला करें और उस की बातों पर ध्यान न दें, खाह वह कुछ भी क्यों न कहे।"

19 ऐ रब, मुझ पर तवज्जुह दे और उस पर गौर कर जो मेरे मुखालिफ कह रहे हैं। 20 क्या इनसान को नेक काम के बदले में बुरा काम करना चाहिए? क्योंकि उन्होंने मुझे फँसाने के लिए गढा खोदकर तैयार कर रखा है। याद कर कि मैंने तेरे हुज़ूर खड़े होकर उनके लिए शफ़ाअत की ताकि तेरा गज़ब उन पर नाज़िल न हो। 21 अब होने दे कि उनके बच्चे भूके मर जाएँ और वह खूद तलवार की ज़द में आएँ। उनकी बीवियाँ बेऔलाद और शौहरों से महरूम हो जाएँ। उनके आदमियों को मौत के घाट उतारा जाए, उनके नौजवान जंग में लड़ते लड़ते हलाक हो जाएँ। 22 अचानक उन पर जंगी दस्ते ला ताकि उनके घरों से चीखों की आवाज़ें बुलंद हों। क्योंकि उन्होंने मुझे पकड़ने के लिए गढा खोदा है, उन्होंने मेरे पाँवों को फँसाने के लिए मेरे रास्ते में फंदे छुपा रखे हैं।

23 ऐ रब, तू उनकी मुझे क़त्ल करने की तमाम साज़िशें जानता है। उनका कुसूर मुआफ न कर, और उनके गुनाहों को न मिटा बल्कि उन्हें हमेशा याद कर। होने दे कि वह ठोकर खाकर तेरे सामने गिर जाएँ। जब तेरा गज़ब नाज़िल होगा तो उनसे भी निपट ले।

## 19

### क्रौम मिट्टी के टूटे हुए बरतन की मानिंद होगी

1 रब ने हुक्म दिया, "कुम्हार के पास जाकर मिट्टी का बरतन खरीद ले। फिर अवाम के कुछ बुजुर्गों और चंद एक बुजुर्ग इमामों को अपने साथ लेकर 2 शहर से निकल जा। वादीए-बिन-हिन्मूम में चला जा जो शहर के दरवाज़े बनाम 'ठीकरे का दरवाज़ा' के सामने है। वहाँ वह कलाम सुना जो मैं तुझे सुनाने को कहूँगा। 3 उन्हें बता,

'ऐ यहदाह के बादशाहो और यस्शलम के बाशिंदो, रब का कलाम सुनो! रब्बुल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है कि मैं इस मक़ाम पर ऐसी आफत नाज़िल करूँगा कि जिसे भी इसकी खबर मिलेगी उसके कान बजेंगे। 4 क्योंकि उन्होंने मुझे तर्क करके इस मक़ाम को अजनबी माबूदों के हवाले कर दिया है। जिन बुतों से न उनके बापदादा और न यहदाह के बादशाह कभी वाक्रिफ थे उनके हुज़ूर उन्होंने कुरबानियाँ पेश कीं। नीज़, उन्होंने इस जगह को बेकुसूरों के खून से भर दिया है। 5 उन्होंने ऊँची जगहों पर बाल देवता के लिए कुरबानगाहें तामीर की ताकि अपने बेटों को उन पर जलाकर उसे पेश करें। मैंने यह करने का कभी हुक्म नहीं दिया था। न मैंने कभी इसका ज़िक्र किया, न कभी मेरे जहन में इसका खयाल तक आया।

6 चुनौचे खबरदार! रब फरमाता है कि ऐसा वक़्त आनेवाला है जब यह वादी "तूफत" या "बिन-हिन्मूम" नहीं कहलाएगी बल्कि "वादीए-क़त्लो-ग़ारत।" 7 इस जगह मैं यहदाह और यस्शलम के मनसूबे खाक में मिला दूँगा। मैं होने दूँगा कि उनके दुश्मन उन्हें मौत के घाट उतारें, कि जो उन्हें जान से मारना चाहें वह इसमें कामयाब हो जाएँ। तब मैं उनकी लाशों को परिदों

और दरिदों को खिला दूँगा। 8 मैं इस शहर को हौलनाक तरीके से तबाह करूँगा। तब दूसरे उसे अपने मज़ाक का निशाना बनाएँगे। जो भी गुज़रे उसके रोंगे खड़े हो जाएँगे। उस की तबाहशुदा हालत देखकर वह “तौबा तौबा” कहेगा। 9 जब उनका जानी दुश्मन शहर का मुहासरा करेगा तो इतना सख्त काल पड़ेगा कि बाशिंदे अपने बच्चों और एक दूसरे को खा जाएँगे।’

10 फिर साथवालों की मौजूदगी में मिट्टी के बरतन को ज़मीन पर पटक दे। 11 साथ साथ उन्हें बता, ‘रब्बूल-अफवाज फ़रमाता है कि जिस तरह मिट्टी का बरतन पाश पाश हो गया है और उस की मरम्मत नामुमकिन है उसी तरह मैं इस कौम और शहर को भी पाश पाश कर दूँगा। उस वक़्त लाशों को तूफ़त में दफ़नाया जाएगा, क्योंकि कहीं और जगह नहीं मिलेगी।

12 इस शहर और इसके बाशिंदों के साथ मैं यही सुलूक करूँगा। मैं इस शहर को तूफ़त की मानिंद बना दूँगा। यह रब का फ़रमान है। 13 यस्शलम के घर यहदाह के शाही महलों समेत तूफ़त की तरह नापाक हो जाएँगे। हाँ, वह तमाम घर नापाक हो जाएँगे जिनकी छतों पर तमाम आसमानी लश्कर के लिए बखूर जलाया जाता और अजनबी माबूदों को मैं की नज़रें पेश की जाती थीं।’

14 इसके बाद यरमियाह वादीए-तूफ़त से वापस आया जहाँ रब ने उसे नबुव्वत करने के लिए भेजा था। फिर वह रब के घर के सहन में खड़े होकर तमाम लोगों से मुखातिब हुआ, 15 “रब्बूल-अफवाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि सुनो! मैं इस शहर और यहदाह के दीगर शहरों पर वह तमाम मुसीबत लाने को हूँ जिसका एलान मैंने किया है। क्योंकि तुम अडग़ाए हो और मेरी बातें सुनने के लिए तैयार ही नहीं।”

## 20

यरमियाह फ़शहर इमाम से टकरा जाता है

1 उस वक़्त एक इमाम रब के घर में था जिसका नाम फ़शहर बिन इम्मेर था। वह रब के घर का आला अफ़सर था। जब यरमियाह की यह पेशगोइयाँ उसके कानों तक पहुँच गईं 2 तो उसने यरमियाह नबी की पिटाई करवाकर उसके पाँव काठ में ठोक दिए। यह काठ रब के घर से मुल्तहिक शहर के ऊपरवाले दरवाज़े बनाम बिनयमीन में था।

3 अगले दिन फ़शहर ने उसे आज़ाद कर दिया। तब यरमियाह ने उससे कहा, “रब ने आपका एक नया नाम रखा है। अब से आपका नाम फ़शहर नहीं है बल्कि ‘चारों तरफ़ दहशत ही दहशत।’ 4 क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं होने दूँगा कि तू अपने लिए और अपने तमाम दोस्तों के लिए दहशत की अलामत बनेगा। क्योंकि तू अपनी आँखों से अपने दोस्तों की क़त्लो-गात देखेगा। मैं यहदाह के तमाम बाशिंदों को बाबल के बादशाह के कब्ज़े में कर दूँगा जो बाज़ को मुल्के-बाबल में ले जाएगा और बाज़ को मौत के घाट उतार देगा। 5 मैं इस शहर की सारी दौलत दुश्मन के हवाले कर दूँगा, और वह इसकी तमाम पैदावार, कीमती चीज़ें और शाही खज़ाने लूटकर मुल्के-बाबल ले जाएगा। 6 ऐ फ़शहर, तू भी अपने घरवालों समेत मुल्के-बाबल में जिलावतन होगा। वहाँ तू मरकर दफ़नाया जाएगा। और न सिर्फ़ तू बल्कि तेरे वह सारे दोस्त भी जिन्हें तूने झूटी पेशगोइयाँ सुनाई है।”

यरमियाह की रब से शिकायत

7 ऐ रब, तूने मुझे मनवाया, और मैं मान गया। तू मुझे अपने काबू में लाकर मुझ पर ग़ालिब आया। अब मैं पूरा दिन मज़ाक का निशाना बना रहता हूँ। हर एक मेरी हँसी उड़ता रहता है। 8 क्योंकि जब भी मैं अपना मुँह खोलता हूँ तो मुझे चिल्लाकर ‘जुल्मो-तबाही’ का नारा लगाना पड़ता है। चुनौचें मैं रब के कलाम के बाइस पूरा दिन ग़ालियों और मज़ाक का निशाना बना रहता हूँ। 9 लेकिन अगर मैं कहूँ, “आइंदा मैं न रब का जिक्र करूँगा, न उसका नाम लेकर बोलूँगा” तो फिर उसका कलाम आग की तरह मेरे दिल में भड़कने लगता है। और यह आग मेरी हड्डियों में बंद रहती और कभी नहीं निकलती। मैं इसे बरदाशत करते करते थक गया हूँ, यह मेरे बस की बात नहीं रही। 10 मुतअडिद लोगों की सरगोशियाँ मेरे कानों तक पहुँचती हैं। वह कहते हैं, “चारों तरफ़ दहशत ही दहशत? यह क्या कह रहा है? उस की रपट लिखवाओ! आओ, हम उस की रिपोर्ट करें।” मेरे तमाम नाम-निहाद दोस्त इस इंतज़ार में हैं कि मैं फ़िसल जाऊँ। वह कहते हैं, “शायद वह धोका खाकर फँस जाए और हम उस पर ग़ालिब आकर उससे इंतकाम ले सकें।”

11 लेकिन रब ज़बरदस्त सुरमे की तरह मेरे साथ है, इसलिए मेरा ताक़तुब करनेवाले मुझ पर ग़ालिब नहीं आएँगे बल्कि खुद ठोकर खाकर गिर जाएँगे। उनके मुँह काले हो जाएँगे, क्योंकि वह नाकाम हो जाएँगे। उनकी स्सवाई हमेशा ही याद रहेगी और कभी नहीं मिटेगी। 12 ऐ रब्बूल-अफवाज, तू रास्तबाज़ का मुआयना करके दिल और जहन को परखता है। अब बरख़ा दे कि मैं अपनी आँखों से वह इंतकाम देखूँ जो तू मेरे मुखालिफ़ों से लेगा। क्योंकि मैंने अपना मामला तेरे ही सुपुर्द कर दिया है। 13 रब की मद्दहसराई करो! रब की तमजीद करो! क्योंकि उसने ज़रस्तमद की जान को शरीरों के हाथ से बचा लिया है।

मैं क्यों पैदा हुआ?

14 उस दिन पर लानत जब मैं पैदा हुआ! वह दिन मुबारक न हो जब मेरी माँ ने मुझे जन्म दिया। 15 उस आदमी पर लानत जिसने मेरे बाप को बड़ी खुशी दिलाकर इतला दी कि तैरे बेटा पैदा हुआ है! 16 वह उन शहरों की मानिंद हो जिनको रब ने बेरहमी से खाक में मिला दिया। अल्लाह करे कि सुबह के वक़्त उसे चीखें सुनाई दें और दोपहर के वक़्त जंग के नारे। 17 क्योंकि उसे मुझे उसी वक़्त मार डालना चाहिए था जब मैं अभी माँ के पेट में था। फिर मेरी माँ मेरी कन्न बन जाती, उसका पाँव हमेशा तक भारी रहता। 18 मैं क्यों माँ के पेट में से निकला? क्या सिर्फ इसलिए कि मुसीबत और ग़म देखूँ और ज़िंदगी के इख़िताम तक ससवाई की ज़िंदगी गुज़ारूँ?

## 21

बाबल की फ़ौज यरूशलम पर फ़तह पाएगी

1 एक दिन सिदकियाह बादशाह ने फ़शहर बिन मलकियाह और मासियाह के बेटे सफ़नियाह इमाम को यरमियाह के पास भेज दिया। उसके पास पहुँचकर उन्होंने कहा, 2 “बाबल का बादशाह नबूकदनज़र हम पर हमला कर रहा है। शायद जिस तरह रब ने माज़ी में कई बार किया इस दफ़ा भी हमारी मदद करके नबूकदनज़र को मोज़िजाना तौर पर यरूशलम को छोड़ने पर मजबूर करे। रब से इसके बारे में दरियाफ़्त करें।”

तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ, 3 और उसने दोनों आदमियों से कहा, “सिदकियाह को बताओ कि 4 रब जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, ‘बेशक शहर से निकलकर बाबल की मुहासरा करनेवाली फ़ौज और उसके बादशाह से लड़ो। लेकिन मैं तुम्हें पीछे धकेलकर शहर में पनाह लेने पर मजबूर करूँगा। वहाँ उसके बीच में ही तुम अपने हथियारों समेत जमा हो जाओगे। 5 मैं खुद अपना हाथ बढ़ाकर बड़ी कुदरत से तुम्हारे साथ लड़ूँगा, मैं अपने गुस्से और तैश का पूरा इज़हार करूँगा, मेरा सख़्त ग़ज़ब तुम पर नाज़िल होगा। 6 शहर के बाशिंदे मेरे हाथ से हलाक हो जाएंगे, खाह इनसान हों या हैवान। मोहलक वबा उन्हें मौत के घाट उतार देगी।’ 7 रब फ़रमाता है, ‘इसके बाद मैं यहदाह के बादशाह सिदकियाह को उसके अफ़सरों और बाकी बाशिंदों समेत बाबल के बादशाह नबूकदनज़र के हवाले कर दूँगा। वबा, तलवार और काल से बचनेवाले सब अपने जानी दुश्मन के काबू में आ जाएंगे। तब नबूकदनज़र बेरहमी से उन्हें तलवार से मार देगा। न उसे उन पर तरस आएगा, न वह हमदर्दी का इज़हार करेगा।’

8 इस क़ौम को बता कि रब फ़रमाता है, ‘मैं तुम्हें अपनी जान को बचाने का मौका फ़राहम करता हूँ। इससे फ़ायदा उठाओ, वरना तुम मरोगे। 9 अगर तुम तलवार, काल या वबा से मरना चाहो तो इस शहर में रहो। लेकिन अगर तुम अपनी जान को बचाना चाहो तो शहर से निकलकर अपने आपको बाबल की मुहासरा करनेवाली फ़ौज के हवाले करो। जो कोई यह करे उस की जान छूट जाएगी।’ \*

10 रब फ़रमाता है, ‘मैंने अटल फ़ैसला किया है कि इस शहर पर मेहरबानी नहीं करूँगा बल्कि इसे नुक़सान पहुँचाऊँगा। इसे शाहे-बाबल के हवाले कर दिया जाएगा जो इसे आग लगाकर तबाह करेगा।’

11 यहदाह के शाही ख़ानदान से कह, ‘रब का कलाम सुनो! 12 ऐ दाऊद के घराने, रब फ़रमाता है कि हर सुबह लोगों का इनसाफ़ करो। जिसे लूट लिया गया हो उसे जालिम के हाथ से बचाओ! ऐसा न हो कि मेरा ग़ज़ब तुम्हारी शरीर हरकतों की वजह से तुम पर नाज़िल होकर आग की तरह भड़क उठे और कोई न हो जो उसे बुझा सके।

13 रब फ़रमाता है कि ऐ यरूशलम, तू वादी के ऊपर ऊँची चटान पर रहकर फ़ख़र करती है कि कौन हम पर हमला करेगा, कौन हमारे घरों में घुस सकता है? लेकिन अब मैं खुद तुझसे निपट लूँगा। 14 रब फ़रमाता है कि मैं तुम्हारी हरकतों का पूरा अज़्र दूँगा। मैं यरूशलम के जंगल में ऐसी आग लगा दूँगा जो इर्दगिर्द सब कुछ भस्म कर देगी।’”

## 22

शाही महल नज़रे-आतिश हो जाएगा

1 रब ने फ़रमाया, “शाहे-यहदाह के महल के पास जाकर मेरा यह कलाम सुना, 2 ‘ऐ यहदाह के बादशाह, रब का फ़रमान सुन! ऐ तू जो दाऊद के तख़्त पर बैठा है, अपने मुलाज़िमों और महल के दरवाज़ों में आनेवाले लोगों समेत मेरी बात पर गौर कर! 3 रब फ़रमाता है कि इनसाफ़ और रास्ती कायम रखो। जिसे लूट लिया गया है उसे जालिम के हाथ से छुड़ाओ। परदेसी, यतीम और बेवा को मत दबाना, न उनसे ज़्यादाती करना, और इस जगह बेक़सूर लोगों की ख़ुन्देजी मत करना। 4 अगर तुम एहतियात से इस पर अमल करो तो आइंदा भी दाऊद की नसल के बादशाह अपने अफ़सरों और रिआया के साथ रथों और

\* 21:9 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : वह गनीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

घोड़ों पर सवार होकर इस महल में दाखिल होंगे। 5 लेकिन अगर तुम मेरी इन बातों की न सुनो तो मेरे नाम की कसम! यह महल मलबे का ढेर बन जाएगा। यह रब का फरमान है।

6 क्योंकि रब शाहे-यहदाह के महल के बारे में फरमाता है कि तू जिलियाद जैसा खशगवार और लुबनान की चोटी जैसा खूबसूरत था। लेकिन अब मैं तुझे बयाबान में बदल दूँगा, तू गैरआबाद शहर की मानिंद हो जाएगा। 7 मैं आदमियों को तुझे तबाह करने के लिए मखसूस करके हर एक को हथियार से लैस करूँगा, और वह देवदार के तेरे उम्दा शहतीरों को काटकर आग में झोंक दूँगे। 8 तब मुतअदिद क्रोमों के अफराद यहाँ से गुजरकर पूछेंगे कि रब ने इस जैसे बड़े शहर के साथ ऐसा सुलूक क्यों किया? 9 उन्हें जवाब दिया जाएगा, वजह यह है कि इन्होंने रब अपने खुदा का अहद तर्क करके अजनबी माबूदों की पूजा और खिदमत की है।”

यहुआख़ज बादशाह वापस नहीं आया

10 इसलिए गिर्याओ-जारी न करो कि यूसियाह बादशाह कूच कर गया है बल्कि उस पर मातम करो जिसे जिलावतन किया गया है, क्योंकि वह कभी वापस नहीं आया, कभी अपना वतन दुबारा नहीं देखेगा।

11 क्योंकि रब यूसियाह के बेटे और जा-नशीन सल्लम यानी यहूआख़ज के बारे में फरमाता है, “यहुआख़ज यहाँ से चला गया है और कभी वापस नहीं आया। 12 जहाँ उसे गिरिफ्तार करके पहुँचाया गया है वही वह वफ़ात पाएगा। वह यह मुल्क दुबारा कभी नहीं देखेगा।

यह्यक्रीम पर इलज़ाम

13 यह्यक्रीम बादशाह पर अफ़सोस जो नाजायज़ तरीक़े से अपना घर तामीर कर रहा है, जो नाइनसाफी से उस की दूसरी मनज़िल बना रहा है। क्योंकि वह अपने हमवतनों को मुफ़्त में काम करने पर मजबूर कर रहा है और उन्हें उनकी मेहनत का मुआवज़ा नहीं दे रहा। 14 वह कहता है, “मैं अपने लिए कुशादा महल बनवा लूँगा जिसकी दूसरी मनज़िल पर बड़े बड़े कमरे होंगे। मैं घर में बड़ी खिडकियाँ बनवाकर दीवारों को देवदार की लकड़ी से ढाँप दूँगा। इसके बाद मैं उसे सुर्ख़ रंग से आरास्ता करूँगा।” 15 क्या देवदार की शानदार इमारतें बनवने से यह साबित होता है कि तू बादशाह है? हरगिज़ नहीं! तेरे बाप को भी खाने-पीने की हर चीज़ मुयस्सर थी, लेकिन उसने इसका खयाल किया कि इनसाफ़ और रास्ती कायम रहे। नतीजे में उसे बरकत मिली। 16 उसने तवज्जुह दी कि गरीबों और ज़रूरतमंदों का हक़ मारा न जाए, इसी लिए उसे कामयाबी हासिल हुई।” रब फ़रमाता है, “जो इसी तरह ज़िंदगी गुज़ारे वही मुझे सहीह तौर पर जानता है। 17 लेकिन तू फ़रक़ है। तेरी आँखें और दिल नाजायज़ नफ़ा कमाने पर तुले रहते हैं। न तू बेक़सूर को क़त्ल करने से, न ज़ुल्म करने या ज़बरन कुछ लेने से झिज़कता है।”

18 चुनौचे रब यहदाह के बादशाह यह्यक्रीम बिन यूसियाह के बारे में फ़रमाता है, “लोग उस पर मातम नहीं करेंगे कि ‘हाय मेरे भाई, हाय मेरी बहन,’ न वह रोकर कहेंगे, ‘हाय, मेरे आका! हाय, उस की शान जाती रही है।’ 19 इसके बजाए उसे गधे की तरह दफ़नाया जाएगा। लोग उसे घसीटकर बाहर यस्शलम के दरवाज़ों से कही दूर फेंक देंगे।

यह्यक्रीम बादशाह को दुश्मन के हवाले किया जाएगा

20 ऐ यस्शलम, लुबनान पर चढ़कर ज़ारो-कतार रो! बसन की बुलदियों पर जाकर चीखें मार! अबारीम के पहाड़ों की चोटियों पर आहो-जारी कर! क्योंकि तेरे तमाम आशिक \* पाश पाश हो गए हैं। 21 मैंने तुझे उस वक़्त आगाह किया था जब तू सुक़न से ज़िंदगी गुज़ार रही थी, लेकिन तूने कहा, ‘मैं नहीं सुनूँगी।’ तेरी जवानी से ही तेरा यही रवैया रहा। उस वक़्त से लेकर आज तक तूने मेरी नहीं सुनी। 22 तेरे तमाम गल्लाबानों को आँधी उड़ा ले जाएगी, और तेरे आशिक जिलावतन हो जाएंगे। तब तू अपनी बुरी हरकतों के बाइस शरमिंदा हो जाएगी, क्योंकि तेरी खूब स्सवाई हो जाएगी। 23 बेशक इस वक़्त तू लुबनान में रहती है और तेरा बसेरा देवदार के दरख्तों में है। लेकिन जल्द ही तू आँह भर भरकर दर्द-जह में मुस्तला हो जाएगी, तू जन्म देनेवाली औरत की तरह पेचो-ताब खाएगी।”

24 रब फ़रमाता है, “ऐ यहदाह के बादशाह यह्यक्रीम बिन यह्यक्रीम, मेरी हयात की कसम! खाह तू मेरे दहने हाथ की मुहरदार अंगूठी क्यों न होता तो भी मैं तुझे उतारकर फेंक देता। † 25 मैं तुझे उस जानी दुश्मन के हवाले करूँगा जिससे तू डरता है यानी बाबल के बादशाह नबूकदनेज़र और उस की कौम के हवाले। 26 मैं तुझे तेरी माँ समेत एक अजनबी मुल्क में फेंक दूँगा। जहाँ तुम पैदा नहीं हुए वही वफ़ात पाओगे। 27 तुम वतन में वापस आने के शर्दीद आरज़ूद होगे लेकिन उसमें कभी नहीं लौटोगे।”

\* 22:20 आशिक से मुराद यहदाह के इतहादी है।

† 22:24 इब्रानी में यह्यक्रीम का मुरादिफ़ क़नियाह मुस्तामल है।

28 लोग एतराज करते हैं, “क्या यह आदमी यह्याकीन † वाकई ऐसा हकीर और टूटा-फूटा बरतन है जो किसी को भी पसंद नहीं आता? उसे अपने बच्चों समेत क्यों जोर से निकालकर किसी नामालूम मुल्क में फेंक दिया जाएगा?”

29 ऐ मुल्क, ऐ मुल्क, ऐ मुल्क! रब का पैगाम सुन! 30 रब फरमाता है, “रजिस्टर में दर्ज करो कि यह आदमी बेऔलाद है, कि यह उग्र-भर नाकाम रहेगा। क्योंकि उसके बच्चों में से कोई दाऊद के तख्त पर बैठकर यहदाह की हुकूमत करने में कामयाब नहीं होगा।”

## 23

रब कौम के सहीह गल्लाबान मुकर्रर करेगा

1 रब फरमाता है, “उन गल्लाबानों पर अफसोस जो मेरी चरागाह की भेड़ों को तबाह करके मुंतशिर कर रहे हैं।” 2 इसलिए रब जो इसराईल का खुदा है फरमाता है, “ऐ मेरी कौम को चरानेवाले गल्लाबानो, मैं तुम्हारी शरीर हरकतों की मुनासिब सजा दूँगा, क्योंकि तुमने मेरी भेड़ों की फिकर नहीं की बल्कि उन्हें मुंतशिर करके तितर-बितर कर दिया है।” रब फरमाता है, “सुनो, मैं तुम्हारी शरीर हरकतों से निपट लूँगा।

3 मैं खुद अपने रेवड की बची हुई भेड़ों को जमा करूँगा। जहाँ भी मैंने उन्हें मुंतशिर कर दिया था, उन तमाम ममालिक से मैं उन्हें उनकी अपनी चरागाह में वापस लाऊँगा। वहाँ वह फलें-फूलेंगे, और उनकी तादाद बढ़ती जाएगी। 4 मैं ऐसे गल्लाबानों को उन पर मुकर्रर करूँगा जो उनकी सहीह गल्लाबानी करेंगे। आईदा न वह ख़ौफ खाएँगे, न घबरा जाएँगे। एक भी गुम नहीं हो जाएगा।” यह रब का फरमान है।

रब सहीह बादशाह मुकर्रर करेगा

5 रब फरमाता है, “वह वक्त आनेवाला है कि मैं दाऊद के लिए एक रास्तबाज कौपल फूटने दूँगा, एक ऐसा बादशाह जो हिकमत से हुकूमत करेगा, जो मुल्क में इनसाफ और रास्ती कायम रखेगा। 6 उसके दौर-हुकूमत में यहदाह को छुटकारा मिलेगा और इसराईल महफूज जिंदगी गुजारेगा। वह ‘रब हमारी रास्तबाजी’ कहलाएगा।

7 चुनौचे वह वक्त आनेवाला है जब लोग कसम खाते वक्त नहीं कहेंगे, ‘रब की हयात की कसम जो इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया।’ 8 इसके बजाए वह कहेंगे, ‘रब की हयात की कसम जो इसराईलियों को शिमाली मुल्क और दीगर उन तमाम ममालिक से निकाल लाया जिनमें उसने उन्हें मुंतशिर कर दिया था।’ उस वक्त वह दुबारा अपने ही मुल्क में बसेंगे।” यह रब का फरमान है।

झूटे नबियों पर यकीन मत करना

9 झूटे नबियों को देखकर मेरा दिल टूट गया है, मेरी तमाम हड्डियाँ लरज रही हैं। मैं नशे में धुत आदमी की मानिंद हूँ। मैं से मगलूब शख्स की तरह मैं रब और उसके मुकद्दस अलफाज के सबब से डगमगा रहा हूँ।

10 यह मुल्क जिनाकारों से भरा हुआ है, इसलिए उस पर अल्लाह की लानत है। ज़मीन झूलस गई है, बयाबान की चरागाहों की हरियाली मुरझा गई है। नबी गलत राह पर दौड़ रहे हैं, और जिसमें वह ताकतवर हैं वह ठीक नहीं। 11 रब फरमाता है, “नबी और इमाम दोनों ही बेदीन हैं। मैंने अपने घर में भी उनका बुरा काम पाया है। 12 इसलिए जहाँ भी चले वह फिसल जाएँगे, वह अंधेर में ठोकर खाकर गिर जाएँगे। क्योंकि मैं मुकर्ररा वक्त पर उन पर आफत लाऊँगा।” यह रब का फरमान है।

13 “मैंने देखा कि सामरिया के नबी बाल के नाम में नबुव्वत करके मेरी कौम इसराईल को गलत राह पर लाए। यह काबिले-घिन है, 14 लेकिन जो कुछ मुझे यस्शलम के नबियों में नज़र आता है वह उतना ही धिनौना है। वह जिना करते और झूट के पैरोकार हैं। साथ साथ वह बदकारों की हौसलाअफ़जाई भी करते हैं, और नतीजे में कोई भी अपनी बर्दी से बाज़ नहीं आता। मेरी नज़र में वह सब सद्म की मानिंद हैं। हाँ, यस्शलम के बाशिदे अमूरा के बराबर हैं।” 15 इसलिए रब इन नबियों के बारे में फरमाता है, “मैं उन्हें कडवा खाना खिलाऊँगा और ज़हरीला पानी पिलाऊँगा, क्योंकि यस्शलम के नबियों ने पूरे मुल्क में बेदीनी फैलाई है।”

16 रब्बूल-अफ़वाज फरमाता है, “नबियों की पेशगोइयों पर ध्यान मत देना। वह तुम्हें फरेब दे रहे हैं। क्योंकि वह रब का कलाम नहीं सुनाते बल्कि महज अपने दिल में से उभरनेवाली रोया पेश करते हैं। 17 जो मुझे हकीर जानते हैं उन्हें वह बताते रहते हैं, ‘रब फरमाता है कि हालात सहीह-सलामत रहेंगे।’ जो अपने दिलों की ज़िद के मुताबिक जिंदगी गुजारेते हैं, उन सबको वह तसल्ली देकर कहते हैं, ‘तुम पर आफत नहीं आएगी।’ 18 लेकिन उनमें से किसने रब की मजलिस में शरीक

† 22:28 इब्रानी में यह्याकीन का मुतरादिफ क्नीयाह मुस्तामल है।

होकर वह कुछ देखा और सुना है जो रब बयान कर रहा है? किसी ने नहीं! किसने तबज्जुह देकर उसका कलाम सुना है? किसी ने नहीं!

19 देखो, रब की गज़बनाक आँधी चलने लगी है, उसका तेज़ी से घूमता हुआ बग़ला बेदीनों के सरो पर मँडला रहा है।

20 और रब का यह गज़ब उस वक़्त तक ठंडा नहीं होगा जब तक उसके दिल का इरादा तक़मील तक न पहुँच जाए। आनेवाले दिनों में तुम्हें इसकी पूरी समझ आएगी।

21 यह नबी दौड़कर अपनी बातें सुनाते रहते हैं अगरचे मैंने उन्हें नहीं भेजा। गो मैं उनसे हमकलाम नहीं हुआ तो भी यह पेशगोइयाँ करते हैं। 22 अगर यह मेरी मजलिस में शरीक होते तो मेरी क्रौम को मेरे अलफ़ाज़ सुनाकर उसे उसके बुरे चाल-चलन और ग़लत हरकतों से हटाने की कोशिश करते।”

23 रब फ़रमाता है, “क्या मैं सिर्फ़ करीब का खुदा हूँ? हरगिज़ नहीं! मैं दूर का खुदा भी हूँ। 24 क्या कोई मेरी नज़र से ग़ायब हो सकता है? नहीं, ऐसी जगह है नहीं जहाँ वह मुझसे छुप सके। आसमानो-ज़मीन मुझसे मामूर रहते हैं।” यह रब का फ़रमान है।

25 “इन नबियों की बातें मुझ तक पहुँच गई हैं। यह मेरा नाम लेकर झूट बोलते हैं कि मैंने खाब देखा है, खाब देखा है!

26 यह नबी झूटी पेशगोइयाँ और अपने दिलों के वसवसे सुनाने से कब बाज़ आएँगे? 27 जो खाब वह एक दूसरे को बताते हैं उनसे वह चाहते हैं कि मेरी क्रौम मेरा नाम यों भूल जाए जिस तरह उनके बापदादा बाल की पूजा करने से मेरा नाम भूल गए थे।” 28 रब फ़रमाता है, “जिस नबी ने खाब देखा हो वह बेशक अपना खाब बयान करे, लेकिन जिस पर मेरा कलाम नाज़िल हुआ हो वह वफ़ादारी से मेरा कलाम सुनाए। भूसे का गंदुम से क्या वास्ता है?”

29 रब फ़रमाता है, “क्या मेरा कलाम आग की मानिंद नहीं? क्या वह हथौड़े की तरह चटान को टुकड़े टुकड़े नहीं करता?” 30 चुनौचे रब फ़रमाता है, “अब मैं उन नबियों से निपट लूँगा जो एक दूसरे के पैगामात चुराकर दावा करते हैं कि वह मेरी तरफ़ से हैं।” 31 रब फ़रमाता है, “मैं उनसे निपट लूँगा जो अपने शख़्सी खयालात सुनाकर दावा करते हैं, ‘यह रब का फ़रमान है।’” 32 रब फ़रमाता है, “मैं उनसे निपट लूँगा जो झूटे खाब सुनाकर मेरी क्रौम को अपनी धोकेबाज़ी और शेखी की बातों से ग़लत राह पर लाते हैं, हालाँकि मैंने उन्हें न भेजा, न कुछ कहने को कहा था। उन लोगों का इस क्रौम के लिए कोई भी फ़ायदा नहीं।” यह रब का फ़रमान है।

रब के लिए तुम बोझ का बाइस हो

33 “ऐ यरमियाह, अगर इस क्रौम के आम लोग या इमाम या नबी तुझसे पूछें, ‘आज रब ने तुझ पर कलाम का क्या बोझ नाज़िल किया है?’ तो जवाब दे, ‘रब फ़रमाता है कि तुम ही मुझ पर बोझ हो! लेकिन मैं तुम्हें उतार फेंकूँगा।’ 34 और अगर कोई नबी, इमाम या आम शख्स दावा करे, ‘रब ने मुझ पर कलाम का बोझ नाज़िल किया है’ तो मैं उसे उसके घराने समेत सज़ा दूँगा।

35 इसके बजाए एक दूसरे से सवाल करो कि ‘रब ने क्या जवाब दिया?’ या ‘रब ने क्या फ़रमाया?’ 36 आइंदा रब के पैगाम के लिए लफ़ज़ ‘बोझ’ इस्तेमाल न करो, क्योंकि जो भी बात तुम करो वह तुम्हारा अपना बोझ होगी। क्योंकि तुम जिंदा खुदा के अलफ़ाज़ को तोड़-मरोड़कर बयान करते हो, उस कलाम को जो रब्बूल-अफ़वाज़ हमारे खुदा ने नाज़िल किया है। 37 चुनौचे आइंदा नबी से सिर्फ़ इतना ही पूछो कि ‘रब ने तुझे क्या जवाब दिया?’ या ‘रब ने क्या फ़रमाया?’ 38 लेकिन अगर तुम ‘रब का बोझ’ कहने पर इस्रार करो तो रब का जवाब सुनो! चूँकि तुम कहते हो कि ‘मुझ पर रब का बोझ नाज़िल हुआ है’ गो मैंने यह मना किया था, 39 इसलिए मैं तुम्हें अपनी याद से मिटाकर यरुशलम समेत अपने हज़र से दूर फेंक दूँगा, गो मैंने खुद यह शहर तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को फ़राहम किया था। 40 मैं तुम्हारी अबदी स़सावी कराऊँगा, और तुम्हारी शरमिंदगी हमेशा तक याद रहेगी।”

## 24

अंजीर की दो टोक़रियाँ

1 एक दिन रब ने मुझे रोया दिखाई। उस वक़्त बाबल का बादशाह नबुकदनेज़र यहदाह के बादशाह यहयाकीन \* बिन यह्यकीम को यहदाह के बुजुर्गों, कारीगरों और लोहारों समेत बाबल में जिलावतन कर चुका था।

रोया में मैंने देखा कि अंजीरों से भरी दो टोक़रियाँ रब के घर के सामने पड़ी हैं। 2 एक टोक़री में मौसम के शुरू में पकनेवाले बेहतरीन अंजीर थे जबकि दूसरी में खराब अंजीर थे जो खाए भी नहीं जा सकते थे।

\* 24:1 इब्रानी में यहयाकीन का मुतरादिफ़ यक्नीयाह मुस्तामल है।

3 रब ने मुझसे सवाल किया, “ऐ यरमियाह, तुझे क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया, “मुझे अंजीर नज़र आते हैं। कुछ बेहतर हैं जबकि दूसरे इतने ख़राब हैं कि उन्हें खाया भी नहीं जा सकता।”

4 तब रब मुझसे हमकलाम हुआ, 5 “रब इसराईल का ख़ुदा फरमाता है कि अच्छे अंजीर यहदाह के वह लोग हैं जिन्हें मैंने जिलावतन करके मुल्के-बाबल में भेजा है। उन्हें मैं मेहरबानी की निगाह से देखता हूँ। 6 क्योंकि उन पर मैं अपने करम का इज़हार करके उन्हें इस मुल्क में वापस लाऊँगा। मैं उन्हें गिराऊँगा नहीं बल्कि तामीर करूँगा, उन्हें जड़ से उखाड़ूँगा नहीं बल्कि पनीरी की तरह लगाऊँगा। 7 मैं उन्हें समझदार दिल अता करूँगा ताकि वह मुझे जान लें, वह पहचान लें कि मैं रब हूँ। तब वह मेरी क़ौम होंगे और मैं उनका ख़ुदा हूँगा, क्योंकि वह पूरे दिल से मेरे पास वापस आएँगे।

8 लेकिन बाकी लोग उन ख़राब अंजीरों की मानिंद हैं जो खाए नहीं जाते। उनके साथ मैं वह सलूक करूँगा जो ख़राब अंजीरों के साथ किया जाता है। उनमें यहदाह का बादशाह सिदकियाह, उसके अफसर, यरशलम और यहदाह में बचे हुए लोग और मिसर में पनाह लेनेवाले सब शामिल हैं। 9 मैं होने दूँगा कि वह दुनिया के तमाम ममालिक के लिए दहशत और आफत की अलामत बन जाएँगे। जहाँ भी मैं उन्हें भूतशिर करूँगा वहाँ वह इबरतअंगेज़ मिसाल बन जाएँगे। हर जगह लोग उनकी बेइज़्जती, उन्हें लान-तान और उन पर लानत करेंगे। 10 जब तक वह उस मुल्क में से मिट न जाएँ जो मैंने उनके बापदादा को दे दिया था उस वक़्त तक मैं उनके दरमियान तलवार, काल और मोहलक बीमारियाँ भेजता रहूँगा।”

## 25

मुल्के-बाबल में 70 साल रहने की पेशगोई

1 यह्यक्रीम बिन यूसियाह की हुक़मत के चौथे साल में अल्लाह का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। उसी साल बाबल का बादशाह नबूकदनज़र तख़्तनशीन हुआ था। यह कलाम यहदाह के तमाम बाशिंदों के बारे में था। 2 चुनौचे यरमियाह नबी ने यरशलम के तमाम बाशिंदों और यहदाह की पूरी क़ौम से मुख़ातिब होकर कहा,

3 “23 साल से रब का कलाम मुझ पर नाज़िल होता रहा है यानी यूसियाह बिन अमून की हुक़मत के तेरहवें साल से लेकर आज तक। बार बार मैं तुम्हें पैगामात सुनाता रहा हूँ, लेकिन तुमने ध्यान नहीं दिया। 4 मेरे अलावा रब दीगर तमाम नबियों को भी बार बार तुम्हारे पास भेजता रहा, लेकिन तुमने न सुना, न तवज्ज़ह दी, 5 गो मेरे खादिम तुम्हें बार बार आगाह करते रहे, ‘तौबा करो! हर एक अपनी गलत राहों और बुरी हरकतों से बाज़ आकर वापस आए। फिर तुम हमेशा तक उस मुल्क में रहोगे जो रब ने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को अता किया था। 6 अजनबी माबूदों की पैरवी करके उनकी खिदमत और पूजा मत करना! अपने हाथों के बनाए हुए बुतों से मुझे तैश न दिलाना, वरना मैं तुम्हें नुकसान पहुँचाऊँगा।”

7 रब फरमाता है, “अफ़सोस! तुमने मेरी न सुनी बल्कि मुझे अपने हाथों के बनाए हुए बुतों से गुस्सा दिलाकर अपने आपको नुकसान पहुँचाया।” 8 रब्बूल-अफ़वाज़ फरमाता है, “चूँकि तुमने मेरे पैगामात पर ध्यान न दिया, 9 इसलिए मैं शिमाल की तमाम क़ौमों और अपने खादिम बाबल के बादशाह नबूकदनज़र को बुला लूँगा ताकि वह इस मुल्क, इसके बाशिंदों और गिर्दो-नवाह के ममालिक पर हमला करें। तब यह सफ़हाए-हस्ती से यों मिट जाएँगे कि लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएँगे और वह उनका मज़ाक उड़ाएँगे। यह इलाके दायमी खंडरात बन जाएँगे। 10 मैं उनके दरमियान ख़ुशीओ-शादमानी और दूल्हे दुल्हन की आवाज़ें बंद कर दूँगा। चक्कियाँ खामोश पड़ जाएँगी और चराग बुझ जाएँगे। 11 पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा, चारों तरफ़ मलबे के ढेर नज़र आएँगे। तब तुम और इर्दगिर्द की क़ौमें 70 साल तक शाहे-बाबल की खिदमत करोगे।

12 लेकिन 70 साल के बाद मैं शाहे-बाबल और उस की क़ौम को मुनासिब सजा दूँगा। मैं मुल्के-बाबल को यों बरबाद करूँगा कि वह हमेशा तक वीरानो-सुनसान रहेगा। 13 उस वक़्त मैं उस मुल्क पर सब कुछ नाज़िल करूँगा जो मैंने उसके बारे में फरमाया है, सब कुछ पूरा हो जाएगा जो इस किताब में दर्ज है और जिसकी पेशगोई यरमियाह ने तमाम अक़वाम के बारे में की है। 14 उस वक़्त उन्हें भी मुतअदिद क़ौमों और बड़े बड़े बादशाहों की खिदमत करनी पड़ेगी। यों मैं उन्हें उनकी हरकतों और आमाल का मुनासिब अज़ दूँगा।”

रब के ग़ज़ब का प्याला

15 रब जो इसराईल का ख़ुदा है मुझसे हमकलाम हुआ, “देख, मेरे हाथ में मेरे ग़ज़ब से भरा हुआ प्याला है। इसे लेकर उन तमाम क़ौमों को पिला दे जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ। 16 जो भी क़ौम यह पिए वह मेरी तलवार के आगे डगमगाती हुई दीवाना हो जाएगी।”

17 चुनौचे मैंने रब के हाथ से प्याला लेकर उसे उन तमाम अक़वाम को पिला दिया जिनके पास रब ने मुझे भेजा। 18 पहले यरशलम और यहदाह के शहरों को उनके बादशाहों और बुजुर्गों समेत ग़ज़ब का प्याला पीना पड़ा। तब मुल्क मलबे का ढेर बन गया जिसे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो गए। आज तक वह मज़ाक और लानत का निशाना है।



- 19 फिर यके बाद दीगरे मुतअद्दिद कौमों को गजब का प्याला पीना पडा। जैल में उनकी फहरिस्त है : मिसर का बादशाह फिरौन, उसके दरबारी, अफसर, पूरी मिसरी कौम 20 और मुल्क में बसनेवाले गैरमुल्की, मुल्के-ऊज के तमाम बादशाह, फिलिस्ती बादशाह और उनके शहर अस्कलून, गज्जा और अकरून, नीज फिलिस्ती शहर अशदूद का बचा-खुचा हिस्सा, 21 अदोम, मोआब और अम्मोन, 22 सूर और सैदा के तमाम बादशाह, बहीराए-रूम के साहिली इलाके, 23 ददान, तैमा और बूज के शहर, वह क्रोमें जो रेगिस्तान के किनारे किनारे रहती हैं, 24 मुल्के-अरब के तमाम बादशाह, रेगिस्तान में मिलकर बसनेवाले गैरमुल्कियों के बादशाह, 25 ज़िमरी, ऐलाम और मादी के तमाम बादशाह, 26 शिमाल के दूरो-नजदीक के तमाम बादशाह।

यके बाद दीगरे दुनिया के तमाम ममालिक को गजब का प्याला पीना पडा। आखिर में शेशक के बादशाह \* को भी यह प्याला पीना पडा।

27 फिर रब ने कहा, “उन्हें बता, ‘रब्बुल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है कि गजब का प्याला खूब पियो! इतना पियो कि नशे में आकर के आने लगे। उस वक्त तक पीते जाओ जब तक तुम मेरी तलवार के आगे गिरकर पड़े न रहो।’ 28 अगर वह तेरे हाथ से प्याला न लें बल्कि उसे पीने से इनकार करें तो उन्हें बता, ‘रब्बुल-अफवाज खुद फरमाता है कि पियो! 29 देखो, जिस शहर पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है उसी पर मैं आफत लाने लगा हूँ। अगर मैंने उसी से शुरू किया तो फिर तुम किस तरह बचे रहोगे? यकीनन तुम्हें सजा मिलेगी, क्योंकि मैंने तय कर लिया है कि दुनिया के तमाम बाशिंदे तलवार की ज़द में आ जाएँ।’” यह रब्बुल-अफवाज का फरमान है।

### तमाम अक्रवाम की अदालत

30 “ऐ यरमियाह, उन्हें यह तमाम पेशगोइयों सुनाकर बता कि रब बुलंदियों से दहाड़ेगा। उस की मुकद्दस सुकूनतगाह से उस की कड़कती आवाज़ निकलेगी, वह जोर से अपनी चरागाह के खिलाफ़ गरजेगा। जिस तरह अंगूर का रस निकालनेवाले अंगूर को रौंदते वक्त जोर से नारे लगाते हैं उसी तरह वह नारे लगाएगा, अलबत्ता जंग के नारे। क्योंकि वह दुनिया के तमाम बाशिंदों के खिलाफ़ जंग के नारे लगाएगा। 31 उसका शोर दुनिया की इंतहा तक गूँजेगा, क्योंकि रब अदालत में अक्रवाम से मुकद्दमा लड़ेगा, वह तमाम इनसानों का इनसाफ़ करके शरीरों को तलवार के हवाले कर देगा।” यह रब का फरमान है। 32 रब्बुल-अफवाज फरमाता है, “देखो, यके बाद दीगरे तमाम कौमों पर आफत नाज़िल हो रही है, ज़मीन की इंतहा से ज़बरदस्त तूफ़ान आ रहा है। 33 उस वक्त रब के मारे हुए लोगों की लाशें दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पड़ी रहेंगी। न कोई उन पर मातम करेगा, न उन्हें उठाकर दफन करेगा। वह खेत में बिखरे गोबर की तरह ज़मीन पर पड़ी रहेंगी।

34 ऐ गल्लाबानो, वावैला करो! ऐ रेवड के राहनुमाओ, राख में लोट-पोट हो जाओ! क्योंकि वक्त आ गया है कि तुम्हें ज़बह किया जाए। तुम गिरकर नाजूक बरतन की तरह पाश पाश हो जाओगे। 35 गल्लाबान कहीं भी भागकर पनाह नहीं ले सकेंगे, रेवड के राहनुमा बच ही नहीं सकेंगे। 36 सुनो! गल्लाबानों की चीखें और रेवड के राहनुमाओं की आहें। क्योंकि रब उनकी चरागाह को तबाह कर रहा है। 37 पुरसुकून मर्गज़ारों का सत्यानास होगा जब रब का सज़त गजब नाज़िल होगा, 38 जब रब जवान शेरबबर की तरह अपनी छुपने की जगह से निकलकर लोगों पर टूट पड़ेगा। तब ज़ालिम की तेज़ तलवार और रब का शदीद कहर उनका मुल्क तबाह करेगा।”

## 26

### रब के घर में यरमियाह का पैगाम

1 जब यहयकीम बिन युसियाह यहदाह के तख़्त पर बैठ गया तो थोड़ी देर के बाद रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। 2 रब ने फरमाया, “ऐ यरमियाह, रब के घर के सहन में खडा होकर उन तमाम लोगों से मुखातिब हो जो रब के घर में सिज्दा करने के लिए यहदाह के दीगर शहरों से आए हैं। उन्हें मेरा पूरा पैगाम सुना दे, एक बात भी न छोड़। 3 शायद वह सुनें और हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आ जाए। इस सूरत में मैं पछताकर उन पर वह सज़ा नाज़िल नहीं करूँगा जिसका मनसूबा मैंने उनके बुरे आमाल देखकर बाँध लिया है।

4 उन्हें बता, ‘रब फरमाता है कि मेरी सुनो और मेरी उस शरीअत पर अमल करो जो मैंने तुम्हें दी है। 5 नीज, नबियों के पैगामात पर ध्यान दो। अफसोस, गो मैं अपने ख़ादियों को बार बार तुम्हारे पास भेजता रहा तो भी तुमने उनकी न सुनी। 6 अगर तुम आइंदा भी न सुनो तो मैं इस घर को यों तबाह करूँगा जिस तरह मैंने सैला का मकदिस तबाह किया था। मैं इस शहर को

\* 25:26 गाल्बिन इससे मुराद बाबल का बादशाह है।

भी यों खाक में मिला दूँगा कि इब्रतअंगेज मिसाल बन जाएगा। दुनिया की तमाम कौमों में जब कोई अपने दुश्मन पर लानत भेजना चाहे तो वह कहेगा कि उसका यरूशलम का-सा अंजाम हो।”

### यरमियाह की अदालत

7 जब यरमियाह ने रब के घर में रब के यह अलफाज़ सुनाए तो इमामों, नबियों और तमाम बाकी लोगों ने गौर से सुना। 8 यरमियाह ने उन्हें सब कुछ पेश किया जो रब ने उसे सुनाने को कहा था। लेकिन ज्योंही वह इखिताम पर पहुँच गया तो इमाम, नबी और बाकी तमाम लोग उसे पकड़कर चीखने लगे, “तुझे मरना ही है! 9 तु रब का नाम लेकर क्यों कह रहा है कि रब का घर सैला की तरह तबाह हो जाएगा, और यरूशलम मलबे का ढेर बनकर गैरआबाद हो जाएगा?” ऐसी बातें कहकर तमाम लोगों ने रब के घर में यरमियाह को धरे रखा।

10 जब यहदाह के बुजुर्गों को इसकी खबर मिली तो वह शाही महल से निकलकर रब के घर के पास पहुँचे। वहाँ वह रब के घर के सहन के नए दरवाजे में बैठ गए ताकि यरमियाह की अदालत करें। 11 तब इमामों और नबियों ने बुजुर्गों और तमाम लोगों के सामने यरमियाह पर इलजाम लगाया, “लाज़िम है कि इस आदमी को सज़ाए-मौत दी जाए! क्योंकि इसने इस शहर यरूशलम के खिलाफ नबुव्वत की है। आपने अपने कानों से यह बात सुनी है।”

12 तब यरमियाह ने बुजुर्गों और बाकी तमाम लोगों से कहा, “रब ने खुद मुझे यहाँ भेजा ताकि मैं रब के घर और यरूशलम के खिलाफ उन तमाम बातों की पेशगोई करूँ जो आपने सुनी हैं। 13 चुनौचे अपनी राहों और आमाल को दुस्त करें! रब अपने खुदा की सुनें ताकि वह पछताकर आप पर वह सज़ा नाज़िल न करे जिसका एलान उसने किया है। 14 जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, मैं तो आपके हाथ में हूँ। मेरे साथ वह सुलूक करें जो आपको अच्छा और मुनासिब लगे। 15 लेकिन एक बात जान लें। अगर आप मुझे सज़ाए-मौत दें तो आप बेकुसूर के कातिल ठहरेंगे। आप और यह शहर उसके तमाम बाशिंदों समेत कुसूरवार ठहरेंगे। क्योंकि रब ही ने मुझे आपके पास भेजा ताकि आपके सामने ही यह बातें करूँ।”

16 यह सुनकर बुजुर्गों और अवाम के तमाम लोगों ने इमामों और नबियों से कहा, “यह आदमी सज़ाए-मौत के लायक नहीं है! क्योंकि उसने रब हमारे खुदा का नाम लेकर हमसे बात की है।”

17 फिर मुल्क के कुछ बुजुर्ग खड़े होकर पूरी जमात से सुखातिब हुए, 18 “जब हिज़क्रियाह यहदाह का बादशाह था तो मोरशत के रहनेवाले नबी मीकाह ने नबुव्वत करके यहदाह के तमाम बाशिंदों से कहा, ‘रबूल-अफवाज़ फ़रमाता है कि सिय्यून पर खेत की तरह हल चलाया जाएगा, और यरूशलम मलबे का ढेर बन जाएगा। रब के घर की पहाड़ी पर गुंजान जंगल उगेगा।’ 19 क्या यहदाह के बादशाह हिज़क्रियाह या यहदाह के किसी और शख्स ने मीकाह को सज़ाए-मौत दी? हरगिज़ नहीं, बल्कि हिज़क्रियाह ने रब का ख़ौफ़ मानकर उसका गुस्सा ठंडा करने की कोशिश की। नतीजे में रब ने पछताकर वह सज़ा उन पर नाज़िल न की जिसका एलान वह कर चुका था। सुनें, अगर हम यरमियाह को सज़ाए-मौत दें तो अपने आप पर सख्त सज़ा लाएँगे।”

### ऊरियाह नबी का क़त्ल

20 उन दिनों में एक और नबी भी यरमियाह की तरह रब का नाम लेकर नबुव्वत करता था। उसका नाम ऊरियाह बिन समायाह था, और वह किरियत-यारीम का रहनेवाला था। उसने भी यरूशलम और यहदाह के खिलाफ वही पेशगोई सुनाई जो यरमियाह सुनाता था।

21 जब यह्यक्रीम बादशाह और उसके तमाम फ़ौजी और सरकारी अफसरों ने उस की बातें सुनी तो बादशाह ने उसे मार डालने की कोशिश की। लेकिन ऊरियाह को इसकी खबर मिली, और वह डरकर भाग गया। चलते चलते वह मिसर पहुँच गया। 22 तब यह्यक्रीम ने इलनातन बिन अकबोर और चंद एक आदमियों को वहाँ भेज दिया। 23 वहाँ पहुँचकर वह ऊरियाह को पकड़कर यह्यक्रीम के पास वापस लाए। बादशाह के हुक्म पर उसका सर क़त्ल कर दिया गया और उस की नाश को निचले तबके के लोगों के क़ब्रिस्तान में दफनाया गया।

24 लेकिन यरमियाह की जान छूट गई। उसे अवाम के हवाले न किया गया, गो वह उसे मार डालना चाहते थे, क्योंकि अखीकाम बिन साफन उसके हक में था।

## 27

### जुए की अलामत

1 जब सिदक्रियाह बिन यूसियाह यहदाह के तख़्त पर बैठ गया तो रब यरमियाह से हमकलाम हुआ। 2 रब ने मुझे फ़रमाया, “अपने लिए जुआ और उसके रस्से बनाकर उसे अपनी गरदन पर रख लो। 3 फिर अदोम, मोआब, अम्मोन, सूर और सैदा के शाही सफ़रों के पास जा जो इस वक़्त यरूशलम में सिदक्रियाह बादशाह के पास जमा है। 4 उनके हाथ उनके बादशाहों

को पैगाम भेज, 'रब्बुल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है कि 5 मैंने अपना हाथ बढ़ाकर बड़ी कुदरत से दुनिया को इनसानो-हैवान समेत खलक किया है, और मैं ही यह चीजें उसे अता करता हूँ जो मेरी नजर में लायक है। 6 इस वक़्त मैं तुम्हारे तमाम ममालिक को अपने खादिम शाहे-बाबल नबूकदनज्जर के हवाले करूँगा। जंगली जानवर तक सब उसके ताबे हो जाएंगे। 7 तमाम अक्रवाम उस की ओर उसके बेटे और पोते की खिदमत करेंगी। फिर एक वक़्त आएगा कि बाबल की हुकूमत ख़तम हो जाएगी। तब मुतअदिद क्रौम और बड़े बड़े बादशाह उसे अपने ही ताबे कर लेंगे। 8 लेकिन इस वक़्त लाजिम है कि हर क्रौम और सलतनत शाहे-बाबल नबूकदनज्जर की खिदमत करके उसका जुआ कबूल करे। जो इनकार करे उसे मैं तलवार, काल और मोहलक बीमारियों से उस वक़्त तक सजा दूँगा जब तक वह पूरे तौर पर नबूकदनज्जर के हाथ से तबाह न हो जाए। यह रब का फरमान है।

9 चुनौचे अपने नबियों, फालगीरों, खाब देखनेवालों, किस्मत का हाल बतानेवालों और जादूगरों पर ध्यान न दो जब वह तुम्हें बताते हैं कि तुम शाहे-बाबल की खिदमत नहीं करोगे। 10 क्योंकि वह तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ पेश कर रहे हैं जिनका सिर्फ़ यह नतीजा निकलेगा कि मैं तुम्हें वतन से निकालकर मुंतशिर करूँगा और तुम हलाक हो जाओगे। 11 लेकिन जो क्रौम शाहे-बाबल का जुआ कबूल करके उस की खिदमत करे उसे मैं उसके अपने मुल्क में रहने दूँगा, और वह उस की खेतीबाड़ी करके उसमें बसेगी। यह रब का फरमान है। 12

12 मैंने यही पैगाम यहदाह के बादशाह सिदक्रियाह को भी सुनाया। मैं बोला, "शाहे-बाबल के जुए को कबूल करके उस की ओर उस की क्रौम की खिदमत करो तो तुम जिंदा रहोगे। 13 क्या ज़रूरत है कि तू अपनी क्रौम समेत तलवार, काल और मोहलक बीमारियों की जद में आकर हलाक हो जाए? क्योंकि रब ने फरमाया है कि हर क्रौम जो शाहे-बाबल की खिदमत करने से इनकार करे उसका यही अंजाम होगा। 14 उन नबियों पर तवज्जुह मत देना जो तुमसे कहते हैं, 'तुम शाहे-बाबल की खिदमत नहीं करोगे।' उनकी यह पेशगोई झूट ही है। 15 रब फरमाता है, 'मैंने उन्हें नहीं भेजा बल्कि वह मेरा नाम लेकर झूटी पेशगोइयाँ सुना रहे हैं। अगर तुम उनकी सुनो तो मैं तुम्हें मुंतशिर कर दूँगा, और तुम नबुवत करनेवाले उन नबियों समेत हलाक हो जाओगे।' 16

16 फिर मैं इमामों और पूरी क्रौम से मुखातिब हुआ, "रब फरमाता है, 'उन नबियों की न सुनो जो नबुवत करके कहते हैं कि अब रब के घर का सामान जल्द ही मुल्के-बाबल से वापस लाया जाएगा। वह तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ बयान कर रहे हैं। 17 उन पर तवज्जुह मत देना। बाबल के बादशाह की खिदमत करो तो तुम जिंदा रहोगे। यह शहर क्यों मलबे का ढेर बन जाए? 18 अगर यह लोग वाकई नबी हों और इन्हें रब का कलाम मिला हो तो इन्हें रब के घर, शाही महल और यरूशलम में अब तक बचे हुए सामान के लिए दुआ करनी चाहिए। वह रब्बुल-अफवाज से शफाअत करें कि यह चीजें मुल्के-बाबल न ले जाई जाएँ बल्कि यहीं रहें।

19-22 अब तक पीतल के सतू, पीतल का हौज बनाम समुंदर, पानी के बासन उठानेवाली हथगाडियाँ और इस शहर का बाकी बचा हुआ सामान यहीं मौजूद है। नबूकदनज्जर ने इन्हें उस वक़्त अपने साथ नहीं लिया था जब वह यहदाह के बादशाह यहयाकीन \* बिन यह्यक्रीम को यरूशलम और यहदाह के तमाम शरफा समेत जिलावतन करके मुल्के-बाबल ले गया था। लेकिन रब्बुल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है इन चीजों के बारे में फरमाता है कि जितनी भी क्रीमती चीजें अब तक रब के घर, शाही महल या यरूशलम में कहीं और बच गई हैं वह भी मुल्के-बाबल में पहुँचाई जाएँगी। वही वह उस वक़्त तक रहेगी जब तक मैं उन पर नज़र डालकर उन्हें इस जगह वापस न लाऊँ।' यह रब का फरमान है।"

## 28

### हननियाह नबी की मुखालफ़त

1 उसी साल के पाँचवें महीने \* में जबऊन का रहनेवाला नबी हननियाह बिन अज्ज़ूर रब के घर में आया। उस वक़्त यानी सिदक्रियाह की हुकूमत के चौथे साल में वह इमामों और क्रौम की मौजूदगी में मुझसे मुखातिब हुआ, 2 "रब्बुल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है कि मैं शाहे-बाबल का जुआ तोड़ डालूँगा। 3 दो साल के अंदर अंदर मैं रब के घर का वह सारा सामान इस जगह वापस पहुँचाऊँगा जो शाहे-बाबल नबूकदनज्जर यहाँ से निकालकर बाबल ले गया था। 4 उस वक़्त मैं यहदाह के बादशाह यहयाकीन † बिन यह्यक्रीम और यहदाह के दीगर तमाम जिलावतनों को भी बाबल से वापस लाऊँगा। क्योंकि मैं यकीनन शाहे-बाबल का जुआ तोड़ डालूँगा। यह रब का फरमान है।"

5 यह सुनकर यरमियाह ने इमामों और रब के घर में खड़े बाकी परस्तारों की मौजूदगी में हननियाह नबी से कहा, 6 "आमीन! रब ऐसा ही करे, वह तेरी पेशगोई पूरी करके रब के घर का सामान और तमाम जिलावतनों को बाबल से इस जगह वापस

\* 27:19-22 इब्रानी में यहयाकीन का मुतरादिफ यक़नियाह मुस्तामल है।

\* 28:1 जुलाई ता अगस्त।

† 28:4 इब्रानी में यहयाकीन का मुतरादिफ

यक़नियाह मुस्तामल है।

लाए।<sup>7</sup> लेकिन उस पर तबज्जुह दे जो मैं तेरी और पूरी कौम की मौजूदगी में बयान करता हूँ! <sup>8</sup> कदीम ज़माने से लेकर आज तक जितने नबी मुझसे और तुझसे पहले खिदमत करते आए हैं उन्होंने मृतअद्दिद मुल्कों और बड़ी बड़ी सलतनतों के बारे में नबुव्वत की थी कि उन पर जंग, आफत और मोहलक बीमारियाँ नाजिल होंगी। <sup>9</sup> चुनौचे खबरदार! जो नबी सलामती की पेशगोई करे उस की तसदीक उस वक़्त होगी जब उस की पेशगोई पूरी हो जाएगी। उसी वक़्त लोग जान लेंगे कि उसे वाकई रब की तरफ से भेजा गया है।”

<sup>10</sup> तब हननियाह ने लकड़ी के जुए को यरमियाह की गरदन पर से उतारकर उसे तोड़ दिया। <sup>11</sup> तमाम लोगों के सामने उसने कहा, “रब फ़रमाता है कि दो साल के अंदर अंदर मैं इसी तरह शाहे-बाबल नबूकदनज़र का जुआ तमाम कौमों की गरदन पर से उतारकर तोड़ डालूँगा।” तब यरमियाह वहाँ से चला गया।

<sup>12</sup> इस वाकिये के थोड़ी देर बाद रब यरमियाह से हमकलाम हुआ, <sup>13</sup> “जा, हननियाह को बता, ‘रब फ़रमाता है कि तूने लकड़ी का जुआ तो तोड़ दिया है, लेकिन उस की जगह तूने अपनी गरदन पर लोहे का जुआ रख लिया है।’ <sup>14</sup> क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि मैंने लोहे का जुआ इन तमाम कौमों पर रख दिया है ताकि वह नबूकदनज़र की खिदमत करें। और न सिर्फ़ यह उस की खिदमत करेंगे बल्कि मैं जंगली जानवरों को भी उसके हाथ में कर दूँगा।”

<sup>15</sup> फिर यरमियाह ने हननियाह से कहा, “ऐ हननियाह, सुन! गो रब ने तुझे नहीं भेजा तो भी तूने इस कौम को झूट पर भरोसा रखने पर आमादा किया है। <sup>16</sup> इसलिए रब फ़रमाता है, ‘मैं तुझे रूप-जमीन पर से मिटाने को हूँ। इसी साल तू मर जाएगा, इसलिए कि तूने रब से सरकश होने का मशवरा दिया है।’”

<sup>17</sup> और ऐसा ही हुआ। उसी साल के सातवें महीने † यानी दो महीने के बाद हननियाह नबी कूच कर गया।

## 29

यरमियाह जिलावतनों को ख़त भेजता है

<sup>1</sup> एक दिन यरमियाह नबी ने यरूशलम से एक ख़त मुल्के-बाबल भेजा। यह ख़त उन बचे हुए बुजुर्गों, इमामों, नबियों और बाकी इसराईलियों के नाम लिखा था जिन्हें नबूकदनज़र बादशाह जिलावतन करके बाबल ले गया था। <sup>2</sup> उनमें यहयाकीन \* बादशाह, उस की माँ और दरबारी, और यहदाह और यरूशलम के बुजुर्ग, कारीगर और लोहार शामिल थे। <sup>3</sup> यह ख़त इलियासा बिन साफ़न और जमरियाह बिन खिलक्रियाह के हाथ बाबल पहुँचा जिन्हें यहदाह के बादशाह सिदक्रियाह ने बाबल में शाहे-बाबल नबूकदनज़र के पास भेजा था। ख़त में लिखा था,

<sup>4</sup> “रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, ‘ऐ तमाम जिलावतनों जिन्हें मैं यरूशलम से निकालकर बाबल ले गया हूँ, ध्यान से सुनो!

<sup>5</sup> बाबल में घर बनाकर उनमें बसने लगे। बाग़ लगाकर उनका फल खाओ। <sup>6</sup> शादी करके बेटे-बेटियाँ पैदा करो। अपने बेटे-बेटियों की शादी कराओ ताकि उनके भी बच्चे पैदा हो जाएँ। ध्यान दो कि मुल्के-बाबल में तुम्हारी तादाद कम न हो जाए बल्कि बढ़ जाए। <sup>7</sup> उस शहर की सलामती के तालिब रहो जिसमें मैं तुम्हें जिलावतन करके ले गया हूँ। रब से उसके लिए दुआ करो! क्योंकि तुम्हारी सलामती उसी की सलामती पर मुनहसिर है।’

<sup>8</sup> रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, ‘खबरदार! तुम्हारे दरमियान रहनेवाले नबी और किरूमत का हाल बतानेवाले तुम्हें फ़रेब न दें। उन ख़ाबों पर तबज्जुह मत देना जो यह देखते हैं।’ <sup>9</sup> रब फ़रमाता है, ‘यह मेरा नाम लेकर तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं, गो मैंने उन्हें नहीं भेजा।’ <sup>10</sup> क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘तुम्हें बाबल में रहते हुए कुल 70 साल गुज़र जाएंगे। लेकिन इसके बाद मैं तुम्हारी तरफ़ रूज करूँगा, मैं अपना पुरफ़ज़ल वादा पूरा करके तुम्हें वापस लाऊँगा।’ <sup>11</sup> क्योंकि रब फ़रमाता है, ‘मैं उन मनसूबों से ख़ुब वाकिफ़ हूँ जो मैंने तुम्हारे लिए बाँधे हैं। यह मनसूबे तुम्हें नुक़सान नहीं पहुँचाएँगे बल्कि तुम्हारी सलामती का बाइस होंगे, तुम्हें उम्मीद दिलाकर एक अच्छा मुस्तक़बिल फ़राहम करेंगे। <sup>12</sup> उस वक़्त तुम मुझे पुकारोगे, तुम आकर मुझसे दुआ करोगे तो मैं तुम्हारी सुनूँगा। <sup>13</sup> तुम मुझे तलाश करके पा लोगे। क्योंकि अगर तुम पूरे दिल से मुझे ढूँढ़ो <sup>14</sup> तो मैं होने दूँगा कि तुम मुझे पाओ।’ यह रब का फ़रमान है। ‘फिर मैं तुम्हें बहाल करके उन तमाम कौमों और मक़ामों से जमा करूँगा जहाँ मैंने तुम्हें मूतशिर कर दिया था। और मैं तुम्हें उस मुल्क में वापस लाऊँगा जिससे मैंने तुम्हें निकालकर जिलावतन कर दिया था।’ यह रब का फ़रमान है।

<sup>15</sup> तुम्हारा दावा है कि रब ने यहाँ बाबल में भी हमारे लिए नबी बरपा किए हैं। <sup>16-17</sup> लेकिन रब का जवाब सुनो! दाऊद के तख़्त पर बैठनेवाले बादशाह और यरूशलम में बचे हुए तमाम बाशिंदों के बारे में रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, ‘तुम्हारे

‡ 28:17 सितंबर ता अन्तक़।

\* 29:2 इब्रानी में यहयाकीन का मुतरादिफ़ यक़्नीयाह मुस्तामल है।

जितने भाई जिलावतनी से बच गए हैं उनके खिलाफ मैं तलवार, काल और मोहलक बीमारियाँ भेज दूँगा। मैं उन्हें गले हुए अंजीरों की मानिंद बना दूँगा, जो खराब होने की वजह से खाए नहीं जाएंगे। 18 मैं तलवार, काल और मोहलक बीमारियों से उनका यों ताकतुक करूँगा कि दुनिया के तमाम ममालिक उनकी हालत देखकर घबरा जाएंगे। जिस क्रौम में भी मैं उन्हें मुंतशिर करूँगा वहाँ लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। किसी पर लानत भेजते वक्त लोग कहेंगे कि उसे यहदाह के बाशिंदों का-सा अंजाम नसीब हो। हर जगह वह मजाक और ससवाई का निशाना बन जाएंगे। 19 क्यों? इसलिए कि उन्होंने मेरी न सुनी, गो मैं अपने खादिमों यानी नबियों के ज़रीए बार बार उन्हें पैगामात भेजता रहा। लेकिन तुमने भी मेरी न सुनी।' यह रब का फ़रमान है।

20 अब रब का फ़रमान सुनो, तुम सब जो जिलावतन हो चुके हो, जिन्हें मैं यरुशलम से निकालकर बाबल भेज चुका हूँ। 21 रबबुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, 'अखियब बिन कौलायाह और सिदकियाह बिन मासियाह मेरा नाम लेकर तुम्हें झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं। इसलिए मैं उन्हें शाहे-बाबल नबुकदनज़र के हाथ में दूँगा जो उन्हें तैरे देखते देखते सज़ाए-मौत देगा। 22 उनका अंजाम इबरतअगेज़ मिसाल बन जाएगा। किसी पर लानत भेजते वक्त यहदाह के जिलावतन कहेंगे, "रब तैरे साथ सिदकियाह और अखियब का-सा सुलक करे जिन्हें शाहे-बाबल ने आग में भून लिया!" 23 क्योंकि उन्होंने इसराईल में बेदीन हरकतें की हैं। अपने पडोसियों की बीवियों के साथ जिना करने के साथ साथ उन्होंने मेरा नाम लेकर ऐसे झूटे पैगाम सुनाए हैं जो मैंने उन्हें सुनाने को नहीं कहा था। मुझे इसका पूरा इल्म है, और मैं इसका गवाह हूँ।' यह रब का फ़रमान है।"

### समायाह के लिए रब का पैगाम

24 रब ने फ़रमाया, "बाबल के रहनेवाले समायाह नखलामी को इतला दे, 25 रबबुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि तूने अपनी ही तरफ से इमाम सफ़नियाह बिन मासियाह को खत भेजा। दीगर इमामों और यरुशलम के बाकी तमाम बाशिंदों को भी इसकी कापियाँ मिल गईं। खत में लिखा था,

26 'रब ने आपको यहोयदा की जगह अपने घर की देख-भाल करने की जिम्मादारी दी है। आपकी जिम्मादारियों में यह भी शामिल है कि हर दीवाने और नबुवत करनेवाले को काठ में डालकर उस की गरदन में लोहे की जंजीरें डालें। 27 तो फिर अपने अनतोत के रहनेवाले यरमियाह के खिलाफ़ कदम क्यों नहीं उठाया जो आपके दरमियान नबुवत करता रहता है? 28 क्योंकि उसने हमें जो बाबल में है खत भेजकर मशवरा दिया है कि दर लगेगी, इसलिए घर बनाकर उनमें बसने लगे, बाग लगाकर उनका फल खाओ'।"

29 जब सफ़नियाह को समायाह का खत मिल गया तो उसने यरमियाह को सब कुछ सुनाया। 30 तब यरमियाह पर रब का कलाम नाज़िल हुआ, 31 "तमाम जिलावतनों को खत भेजकर लिख दे, 'रब समायाह नखलामी के बारे में फ़रमाता है कि गो मैंने समायाह को नहीं भेजा तो भी उसने तुम्हें पेशगोइयाँ सुनाकर झूट पर भरोसा रखने पर आमादा किया है। 32 चुनौचे रब फ़रमाता है कि मैं समायाह नखलामी को उस की औलाद समेत सज़ा दूँगा। इस क्रौम में उस की नसल खत्म हो जाएगी, और वह खुद उन अच्छी चीज़ों से लुफ़अंदोज़ नहीं होगा जो मैं अपनी क्रौम को फ़राहम करूँगा। क्योंकि उसने रब से सरकश होने का मशवरा दिया है'।"

## 30

### इसराईल और यहदाह बहाल हो जाएंगे

1 रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ, 2 "रब इसराईल का खुदा फ़रमाता है कि जो भी पैगाम मैंने तुज़ पर नाज़िल किए उन्हें किताब की सूरत में कलमबंद कर। 3 क्योंकि रब फ़रमाता है कि वह वक्त आनेवाला है जब मैं अपनी क्रौम इसराईल और यहदाह को बहाल करके उस मुल्क में वापस लाऊँगा जो मैंने उनके बापदादा को मीरास में दिया था।"

4 यह इसराईल और यहदाह के बारे में रब के फ़रमान हैं। 5 "रब फ़रमाता है, 'ख़ौफ़ज़दा चीखें सुनाई दे रही हैं। अमन का नामो-निशान तक नहीं बल्कि चारों तरफ़ दहशत ही दहशत फैली हुई है। 6 क्या मर्द बच्चे जन्म दे सकता है? तो फिर तमाम मर्द क्यों अपने हाथ कमर पर रखकर दर्दे-जह में मुब्तला औरतों की तरह तडप रहे हैं? हर एक का रंग फ़क़ पड़ गया है।

7 अफ़सोस! वह दिन कितना हौलनाक होगा! उस जैसा कोई नहीं होगा। याक़ूब की औलाद को बड़ी मुसीबत पेश आएगी, लेकिन आखिरकार उसे रिहाई मिलेगी।' 8 रब फ़रमाता है, 'उस दिन मैं उनकी गरदन पर रखे जुए और उनकी जंजीरों को तोड़ डालूँगा। तब वह ग़ैरमुल्कियों के गुलाम नहीं रहेंगे 9 बल्कि रब अपने खुदा और दाऊद की नसल के उस बादशाह की खिदमत करेंगे जिसे मैं बरपा करके उन पर मुकर्र करूँगा।'

10 चुनौचे रब फरमाता है, 'ऐ याकूब मेरे खादिम, मत डर! ऐ इसराईल, दहशत मत ख! देख, मैं तुझे दूर-दराज इलाकों से और तेरी औलाद को जिलावतनी से छुड़ाकर वापस ले आऊँगा। याकूब वापस आकर सुकून से जिंदगी गुजारेगा, और उसे परेशान करनेवाला कोई नहीं होगा।' 11 क्योंकि रब फरमाता है, 'मैं तेरे साथ हूँ, मैं ही तुझे बचाऊँगा। मैं उन तमाम कौमों को नेस्तो-नाबूद कर दूँगा जिनमें मैंने तुझे मुंशिर कर दिया है, लेकिन तुझे मैं इस तरह सफहाए-हस्ती से नहीं मिटाऊँगा। अलबत्ता मैं मुनासिब हद तक तेरी तंबीह करूँगा, क्योंकि मैं तुझे सजा दिए बगैर नहीं छोड़ सकता।'

12 क्योंकि रब फरमाता है, 'तेरा ज़खम लाइलाज है, तेरी चोट भर ही नहीं सकती। 13 कोई नहीं है जो तेरे हक में बात करे, तेरे फोड़ों का मुआलजा और तेरी शफा मुमकिन ही नहीं! 14 तेरे तमाम आशिक \* तुझे भूल गए हैं और तेरी परवा ही नहीं करते। तेरा कूसूर बहुत संगीन है, तुझसे बेशुमार गुनाह सरज़द हुए हैं। इसी लिए मैंने तुझे दुश्मन की तरह मारा, जालिम की तरह तंबीह दी है।

15 अब जब चोट लग गई है और लाइलाज दर्द महसूस हो रहा है तो तू मदद के लिए क्यों चीखता है? यह मैं ही ने तेरे संगीन कूसूर और मुतअद्दिद गुनाहों की वजह से तेरे साथ किया है।

16 लेकिन जो तुझे हड़प करें उन्हें भी हड़प किया जाएगा। तेरे तमाम दुश्मन जिलावतन हो जाएंगे। जिन्होंने तुझे लूट लिया उन्हें भी लूटा जाएगा, जिन्होंने तुझे गारत किया उन्हें भी गारत किया जाएगा।' 17 क्योंकि रब फरमाता है, 'मैं तेरे ज़खमों को भरकर तुझे शफा दूँगा, क्योंकि लोगों ने तुझे मरदूद करार देकर कहा है कि सिय्यून को देखो जिसकी फिकर कोई नहीं करता।' 18 रब फरमाता है, 'देखो, मैं याकूब के खेमों की बदनसीबी खत्म करूँगा, मैं इसराईल के घरों पर तरस खाऊँगा। तब यस्-शालम को खंडरात पर नए सिरे से तामीर किया जाएगा, और महल को दुबारा उस की पुरानी जगह पर खड़ा किया जाएगा।

19 उस वक़्त वहाँ शुक़ुगुजारी के गीत और खुशी मनानेवालों की आवाज़ें बुलंद हो जाएँगी। और मैं ध्यान दूँगा कि उनकी तादाद कम न हो जाए बल्कि मज़ीद बढ़ जाए। उन्हें हक़ीर नहीं समझा जाएगा बल्कि मैं उनकी इज़ज़त बहुत बढ़ा दूँगा।

20 उनके बच्चे क़दीम ज़माने की तरह महफूज़ जिंदगी गुजारेगे, और उनकी ज़मात मज़बूती से मेरे हज़ूर कायम रहेगी। लेकिन जितनों ने उन पर ज़ुल्म किया है उन्हें मैं सज़ा दूँगा।

21 उनका हुक़मरान उनका अपना हमवतन होगा, वह दुबारा उनमें से उठकर तख़्तनशीन हो जाएगा। मैं खुद उसे अपने करीब लाऊँगा तो वह मेरे करीब आएगा।' क्योंकि रब फरमाता है, 'सिर्फ़ वही अपनी जान ख़तरे में डालकर मेरे करीब आने की ज़ूरत कर सकता है जिसे मैं खुद अपने करीब लाया हूँ। 22 उस वक़्त तुम मेरी क़ौम होगे और मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँगा।'

23 देखो, रब का ग़ज़ब ज़बरदस्त आँधी की तरह नाज़िल हो रहा है। तेज़ बगूले के झोंके बेदीनों के सरो पर उतर रहे हैं। 24 और रब का शदीद क़हर उस वक़्त तक ठंडा नहीं होगा जब तक उसने अपने दिल के मनसूबों को तकमील तक नहीं पहुँचाया। आनेवाले दिनों में तुम्हें इसकी साफ़ समझ आएगी।

## 31

### जिलावतनों की वापसी

1 रब फरमाता है, "उस वक़्त मैं तमाम इसराईली घरानों का ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी क़ौम होंगे।" 2 रब फरमाता है, "तलवार से बचे हुए लोगों को रेगिस्तान में ही मेरा फ़जल हासिल हुआ है, और इसराईल अपनी आरामगह के पास पहुँच रहा है।"

3 रब ने दूर से इसराईल पर जाहिर होकर फरमाया, "मैंने तुझे हमेशा ही प्यार किया है, इसलिए मैं तुझे बड़ी शफ़क़त से अपने पास खींच लाया हूँ। 4 ऐ कुँवारी इसराईल, तेरी नए सिरे से तामीर हो जाएगी, क्योंकि मैं खुद तुझे तामीर करूँगा। तू दुबारा अपने दरफों से आरास्ता होकर खुशी मनानेवालों के लोकनाच के लिए निकलेगी। 5 तू दुबारा सामरिया की पहाड़ियों पर अंगूर के बाग लगाएगी। और जो पौदों को लगाएँगे वह खुद उनके फल से लुफ़्तअंदोज होंगे। 6 क्योंकि वह दिन आनेवाला है जब इफ़राईम के पहाड़ी इलाके के पहरेदार आवाज़ देकर कहेंगे, 'आओ हम सिय्यून के पास जाएँ ताकि रब अपने ख़ुदा को सिज्दा करें।'"

7 क्योंकि रब फरमाता है, "याकूब को देखकर खुशी मनाओ! कौमों के सरबराह को देखकर शादमानी का नारा मारो! बुलंद आवाज़ से अत्लाह की हम्दो-सना करके कहो, 'ऐ रब, अपनी क़ौम को बचा, इसराईल के बचे हुए हिस्से को छुटकारा दे।' 8 क्योंकि मैं उन्हें शिमाली मुल्क से वापस लाऊँगा, उन्हें दुनिया की इंहा से जमा करूँगा। अंधे और लँगडे उनमें शामिल होंगे, हामिला और जन्म देनेवाली औरतें भी साथ चलेगी। उनका बड़ा हुज़ूम वापस आएगा। 9 और जब मैं उन्हें वापस लाऊँगा

\* 30:14 आशिक से मुराद इसराईल के इन्हादी है।

तो वह रोते हुए और इल्लिजाएँ करते हुए मेरे पीछे चलेंगे। मैं उन्हें नदियों के किनारे किनारे और ऐसे हमवार रास्तों पर वापस ले चलूँगा, जहाँ ठोकर खाने का खतरा नहीं होगा। क्योंकि मैं इसराइल का बाप हूँ, और इफराइम\* मेरा पहलौठा है।

10 ऐ कौमो, रब का कलाम सुनो! दूर-दराज जजीरों तक एलान करो, 'जिसने इसराइल को मुंशिर कर दिया है वह उसे दुबारा जमा करेगा और चरवाहे की-सी फिकर रखकर उस की गल्लाबानी करेगा।' 11 क्योंकि रब ने फिघा देकर याकूब को बचाया है, उसने एवजाना देकर उसे जोरावर के हाथ से छुड़ाया है। 12 तब वह आकर सिय्युन की बुलंदी पर खुशी के नारे लगाएँगे, उनके चेहरे रब की बरकतों को देखकर चमक उठेंगे। क्योंकि उस वक़्त वह उन्हें अनाज, नई मै, जैतून के तेल और जवान भेड़-बकरियों और गाय-बैलों की कसरत से नवाजेगा। उनकी जान सेराब बाग की तरह सरसब्ज होगी, और उनकी निडाल हालत सँभल जाएगी। 13 फिर कुँवारियों खुशी के मारे लोकनाच नाचेंगी, जवान और बुजुर्ग आदमी भी उसमें हिस्सा लेंगे। यों मैं उनका मातम खुशी में बदल दूँगा, मैं उनके दिलों से गम निकालकर उन्हें अपनी तसल्ली और शादमानी से भर दूँगा।" 14 रब फरमाता है, "मैं इमामों की जान को तरो-ताज़ा करूँगा, और मेरी कौम मेरी बरकतों से सेर हो जाएगी।"

15 रब फरमाता है, "रामा में शेर मच गया है, रोने पीटने और शदीद मातम की आवाज़ें। राखिल अपने बच्चों के लिए रो रही है और तसल्ली कबूल नहीं कर रही, क्योंकि वह हलाक हो गए हैं।"

16 लेकिन रब फरमाता है, "रोने और आँसू बहाने से बाज़ आ, क्योंकि तुझे अपनी मेहनत का अज़्र मिलेगा। यह रब का वादा है कि वह दुश्मन के मुल्क से लौट आएँगे। 17 तेरा मुस्तकबिल पुरउम्मीद होगा, क्योंकि तेरे बच्चे अपने वतन में वापस आएँगे।" यह रब का फरमान है।

18 "इसराइल † की गिर्याओ-जारी मुज़्र तक पहुँच गई है। क्योंकि वह कहता है, 'हाय, तूने मेरी सख्त तादीब की है। मेरी यों तरबियत हुई है जिस तरह बछड़े की होती है जब उस की गरदन पर पहली बार जुआ रखा जाता है। ऐ रब, मुझे वापस ला ताकि मैं वापस आऊँ, क्योंकि तू ही रब मेरा खुदा है। 19 मेरे वापस आने पर मुझे नदामत महसूस हुई, और समज़ आने पर मैं अपना सीना पीटने लगा। मुझे शर्मिंदगी और स्सवाई का शदीद एहसास हो रहा है, क्योंकि अब मैं अपनी जवानी के शर्मनाक फल की फसल काट रहा हूँ। 20 लेकिन रब फरमाता है कि इसराइल मेरा कीमती बेटा, मेरा लाडला है। गो मैं बार बार उसके खिलाफ बातें करता हूँ तो भी उसे याद करता रहता हूँ। इसलिए मेरा दिल उसके लिए तडपता है, और लाज़िम है कि मैं उस पर तरस खाऊँ।

21 ऐ मेरी कौम, ऐसे निशान खड़े कर जिनसे लोगों को सहीह रास्ते का पता चले! उस पक्की सड़क पर ध्यान दे जिस पर तूने सफ़र किया है। ऐ कुँवारी इसराइल, वापस आ, अपने इन शहरों में लौट आ! 22 ऐ बेवफ़ा बेटी, तू कब तक भटकती फिरेगी? रब ने मुल्क में एक नई चीज़ पैदा की है, यह कि आइंदा औरत आदमी के गिर्द रहेगी।"

### इसराइल और यहदाह दुबारा आबाद हो जाएँगे

23 रब्बुल-अफवाज जो इसराइल का खुदा है फरमाता है, "जब मैं इसराइलियों को बहाल करूँगा तो मुल्के-यहदाह और उसके शहरों के बाशिदे दुबारा कहेंगे, 'ऐ रास्ती के घर, ऐ मुक़द्दस पहाड़, रब तुझे बरकत दे!' 24 तब यहदाह और उसके शहर दुबारा आबाद होंगे। किसान भी मुल्क में बसेंगे, और वह भी जो अपने रेवडों के साथ इधर उधर फिरते हैं। 25 क्योंकि मैं थकेमौदों को नई ताकत दूँगा और ग़श खानेवालों को तरो-ताज़ा करूँगा।"

26 तब मैं जाग उठा और चारों तरफ़ देखा। मेरी नीद कितनी मीठी रही थी!

27 रब फरमाता है, "वह वक़्त आनेवाला है जब मैं इसराइल के घराने और यहदाह के घराने का बीज बोकर इनसानो-हैवान की तादाद बढ़ा दूँगा। 28 पहले मैंने बड़े ध्यान से उन्हें जड़ से उखाड़ दिया, गिरा दिया, ढा दिया, हॉ तबाह करके खाक में मिला दिया। लेकिन आइंदा मैं उतने ही ध्यान से उन्हें तामीर करूँगा, उन्हें पीनीरी की तरह लगा दूँगा।" यह रब का फरमान है। 29 "उस वक़्त लोग यह कहने से बाज़ आएँगे कि वालिदेन ने खट्टे अंगूर खाए, लेकिन दाँत उनके बच्चों के खट्टे हो गए हैं। 30 क्योंकि अब से खट्टे अंगूर खानेवाले के अपने ही दाँत खट्टे होंगे। अब से उसी को सज़ाए-मौत दी जाएगी जो कुसूवार है।"

### नया अहद

31 रब फरमाता है, "ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं इसराइल के घराने और यहदाह के घराने के साथ एक नया अहद बाँधूँगा। 32 यह उस अहद की मानिंद नहीं होगा जो मैंने उनके बापदादा के साथ उस दिन बाँधा था जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिसर से निकाल लाया। क्योंकि उन्होंने वह अहद तोड़ दिया, गो मैं उनका मालिक था।" यह रब का फरमान है।

\* 31:9 यहाँ इफ़राइम इसराइल का दूसरा नाम है। † 31:18 लफ़्ज़ी तरबूमा : इफ़राइम।

33 “जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद इसराईल के घराने के साथ बाँधूँगा उसके तहत मैं अपनी शरीअत उनके अंदर डालकर उनके दिलों पर कंदा करूँगा। तब मैं ही उनका खुदा हूँगा, और वह मेरी कौम होंगे। 34 उस वक्त से इसकी ज़रूरत नहीं रहेगी कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को तालीम देकर कहे, ‘रब को जान लो।’ क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक सब मुझे जानेंगे। क्योंकि मैं उनका कुसूर मुआफ़ करूँगा और आइंदा उनके गुनाहों को याद नहीं करूँगा।” यह रब का फ़रमान है।

35 रब फ़रमाता है, “मैं ही ने मुकर्रर किया है कि दिन के वक्त सूरज चमके और रात के वक्त चाँद सितारों समेत रौशनी दे। मैं ही समुंदर को यों उछाल देता हूँ कि उस की मौजें गरजने लगती हैं। रब्बुल-अफ़वाज ही मेरा नाम है।” 36 रब फ़रमाता है, “जब तक यह कुदरती उसूल मेरे सामने कायम रहेंगे उस वक्त तक इसराईल कौम मेरे सामने कायम रहेगी। 37 क्या इनसान आसमान की पैमाइश कर सकता है? या क्या वह ज़मीन की बुनियादों की तफ़तीश कर सकता है? हरगिज़ नहीं! इसी तरह यह मुमकिन ही नहीं कि मैं इसराईल की पूरी कौम को उसके गुनाहों के सबब से रद्द करूँ।” यह रब का फ़रमान है।

यरुशलम को नए सिरे से तामीर किया जाएगा

38 रब फ़रमाता है, “वह वक्त आनेवाला है जब यरुशलम को रब के लिए नए सिरे से तामीर किया जाएगा। तब उस की फ़सील हननेल के बुर्ज से लेकर कोने के दरवाज़े तक तैयार हो जाएगी। 39 वहाँ से शहर की सरहद सीधी ज़रीब पहाड़ी तक पहुँचेगी, फिर जोआ की तरफ़ मुड़ेगी। 40 उस वक्त जो वादी लाशों और भस्म हुई चरबी की राख से नापाक हुई है वह पूरे तौर पर रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस होगी। उस की ढलानों पर के तमाम खेत भी वादीए-क़िद्रोन तक शामिल होंगे, बल्कि मशरिक में घोड़े के दरवाज़े के कोने तक सब कुछ मुक़द्दस होगा। आइंदा शहर को न कभी दुबारा जड़ से उखाड़ा जाएगा, न तबाह किया जाएगा।”

## 32

यरमियाह मुहासरे के दौरान खेत खरीदता है

1 यहदाह के बादशाह सिदकियाह की हुकूमत के दसवें साल में रब यरमियाह से हमकलाम हुआ। उस वक्त नबूकदनज़र जो 18 साल से बाबल का बादशाह था 2 अपनी फ़ौज के साथ यरुशलम का मुहासरा कर रहा था। यरमियाह उन दिनों में शाही महल के मुहाफ़िज़ों के सहन में कैद था। 3 सिदकियाह ने यह कहकर उसे गिरफ़्तार किया था, “तू क्यों इस किस्म की पेशगोई सुनाता है? तू कहता है, ‘रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर को शाहे-बाबल के हाथ में देनेवाला हूँ। जब वह उस पर कब्ज़ा करेगा 4 तो सिदकियाह बाबल की फ़ौज से नहीं बचेगा। उसे शाहे-बाबल के हवाले कर दिया जाएगा, और वह उसके रूबस उसे बात करेगा, अपनी आँखों से उसे देखेगा। 5 शाहे-बाबल सिदकियाह को बाबल ले जाएगा, और वहाँ वह उस वक्त तक रहेगा जब तक मैं उसे दुबारा कबूल न करूँ। रब फ़रमाता है कि अगर तुम बाबल की फ़ौज से लड़ो तो नाकाम रहोगे।”

6 जब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ तो यरमियाह ने कहा, “रब मुझसे हमकलाम हुआ, 7 ‘तेरा चचाज़ाद भाई हनमेल बिन सल्लूम तेरे पास आकर कहेगा कि अनतोत में मेरा खेत खरीद लें। आप सबसे करीबी रिश्तेदार हैं, इसलिए उसे खरीदना आपका हक़ बल्कि फ़र्ज़ भी है ताकि ज़मीन हमारे खानदान की मिलकियत रहे।’ \* 8 ऐसा ही हुआ जिस तरह रब ने फ़रमाया था। मेरा चचाज़ाद भाई हनमेल शाही मुहाफ़िज़ों के सहन में आया और मुझसे कहा, ‘बिनयमीन के कबीले के शहर अनतोत में मेरा खेत खरीद लें। यह खेत खरीदना आपका मौरूसी हक़ बल्कि फ़र्ज़ भी है ताकि ज़मीन हमारे खानदान की मिलकियत रहे। आँ, उसे खरीद लें।’

तब मैंने जान लिया कि यह वही बात है जो रब ने फ़रमाई थी। 9 चुनौचे मैंने अपने चचाज़ाद भाई हनमेल से अनतोत का खेत खरीदकर उसे चाँदी के 17 सिक्के दे दिए। 10 मैंने इंतकालनामा लिखकर उस पर मुहर लगाई, फिर चाँदी के सिक्के तोलकर अपने भाई को दे दिए। मैंने गवाह भी बुलाए थे ताकि वह पूरी काररवाई की तसदीक करें। 11-12 इसके बाद मैंने मुहरशुदा इंतकालनामा तमाम शरायत और क़वायद समेत बास्क बिन नैरियाह बिन महसियाह के सुपर्द कर दिया। साथ साथ मैंने उसे एक नक़ल भी दी जिस पर मुहर नहीं लगी थी। हनमेल, इंतकालनामे पर दस्तख़त करनेवाले गवाह और सहन में हाज़िर बाकी हमवतन सब इसके गवाह थे। 13 उनके देखते देखते मैंने बास्क को हिदायत दी,

14 “रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि मुहरशुदा इंतकालनामा और उस की नक़ल लेकर मिट्टी के बरतन में डाल दे ताकि लंबे अरसे तक महफूज़ रहें। 15 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है कि एक वक्त आएगा जब इस मुल्क में दुबारा घर, खेत और अंगूर के बाग़ खरीदे जाएंगे।”

\* 32:7 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : एवज़ाना देकर उसे छुड़ाना (ताकि खानदान का हिस्सा रहे) आप ही का हक़ है।



यरमियाह अल्लाह की तमजीद करता है

16 बास्क बिन नैरियाह को इंतकालनामा देने के बाद मैंने रब से दूआ की,

17 'ऐ रब कादिर-मुतलक, तूने अपना हाथ बढ़ाकर बड़ी कुदरत से आसमानो-जमीन को बनाया, तेरे लिए कोई भी काम नामुमकिन नहीं। 18 तू हजारों पर शफ़क़त करता और साथ साथ बच्चों को उनके वालिदैन के गुनाहों की सज़ा देता है। ऐ अज़ीम और कादिर खुदा जिसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है, 19 तेरे मकासिद अज़ीम और तेरे काम ज़बरदस्त हैं, तेरी आँखें इनसान की तमाम राहों को देखती रहती हैं। तू हर एक को उसके चाल-चलन और आमाल का मुनासिब अज़्ज देता है।

20 मिसर में तूने इलाही निशान और मोजिजे दिखाए, और तेरा यह सिलसिला आज तक जारी रहा है, इसराईल में भी और बाकी कौमों में भी। यों तेरे नाम को वह इज़्जतो-जलाल मिला जो तुझे आज तक हासिल है। 21 तू इलाही निशान और मोजिजे दिखाकर अपनी कौम इसराईल को मिसर से निकाल लाया। तूने अपना हाथ बढ़ाकर अपनी अज़ीम कुदरत मिसरियों पर जाहिर की तो उन पर शदीद दहशत तारी हुई। 22 तब तूने अपनी कौम को यह मुल्क बख़्श दिया जिसमें दूध और शहद की कसरत थी और जिसका वादा तूने कसम खाकर उनके बापदादा से किया था।

23 लेकिन जब हमारे बापदादा ने मुल्क में दाखिल होकर उस पर कब्ज़ा किया तो उन्होंने न तेरी सुनी, न तेरी शरीअत के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारी। जो कुछ भी तूने उन्हें करने को कहा था उस पर उन्होंने अमल न किया। नतीजे में तू उन पर यह आफत लाया। 24 दुश्मन मिट्टी के पुरते बनाकर फ़र्सील के करीब पहुँच चुका है। हम तलवार, काल और मोहलक बीमारियों से इतने कमज़ोर हो गए हैं कि जब बाबल की फ़ौज शहर पर हमला करेगी तो वह उसके कब्ज़े में आएगा। जो कुछ भी तूने फ़रमाया था वह पेश आया है। तू खुद इसका गवाह है। 25 लेकिन ऐ रब कादिर-मुतलक, कमाल है कि गो शहर को बाबल की फ़ौज के हवाले किया जाएगा तो भी तू मुझसे हमकलाम हुआ है कि चाँदी देकर खेत खरीद ले और गवाहों से काररवाइ की तसदीक करवा'।"

रब का जवाब

26 तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ, 27 "देख, मैं रब और तमाम इनसानों का खुदा हूँ। तो फिर क्या कोई काम है जो मुझसे नहीं हो सकता?" 28 चुनौते रब फ़रमाता है, "मैं इस शहर को बाबल और उसके बादशाह नबुकदनज़र के हवाले कर दूँगा। वह ज़रूर उस पर कब्ज़ा करेगा। 29 बाबल के जो फ़ौजी इस शहर पर हमला कर रहे हैं इसमें घुसकर सब कुछ जला दोगे, सब कुछ नज़रे-आतिश करोगे। तब वह तमाम घर राख हो जाएंगे जिनकी छतों पर लोगों ने बाल देवता के लिए बखूर जलाकर और अजनबी माबूदों को मैं की नज़रें पेश करके मुझे तैश दिलाया।"

30 रब फ़रमाता है, "इसराईल और यहूदाह के कबीले जवानी से लेकर आज तक वही कुछ करते आए हैं जो मुझे नापसंद है। अपने हाथों के काम से वह मुझे बार बार गुस्सा दिलाते रहे हैं। 31 यरूशलम की बुनियाद डालने से लेकर आज तक इस शहर ने मुझे हद से ज्यादा मुशतल्ल कर दिया है। अब लाज़िम है कि मैं उसे नज़रों से दूर कर दूँ। 32 क्योंकि इसराईल और यहूदाह के बाशिंदों ने अपनी बुरी हरकतों से मुझे तैश दिलाया है, खाह बादशाह हो या मुलाज़िम, खाह इमाम हो या नबी, खाह यहूदाह हो या यरूशलम। 33 उन्होंने अपना मुँह मुझसे फेरकर मेरी तरफ रूज़ करने से इनकार किया है। गो मैं उन्हें बार बार तालीम देता रहा तो भी वह सुनने या मेरी तरबियत क़बूल करने के लिए तैयार नहीं थे। 34 न सिर्फ़ यह बल्कि जिस घर पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है उसमें उन्होंने अपने धिनौने बुतों को रखकर उस की बेहुरमती की है। 35 वादीए-बिन-हिन्नुम की ऊँची जगहों पर उन्होंने बाल देवता की कुरबानागहें तामीर की ताकि वहाँ अपने बेटे-बेटियों को मलिक देवता के लिए कुरबान करें। मैंने उन्हें ऐसी काबिले-धिन हरकतें करने का हुक्म नहीं दिया था, बल्कि मुझे इसका खयाल तक नहीं आया। यों उन्होंने यहूदाह को गुनाह करने पर उकसाया है।

36 इस वक़्त तुम कह रहे हो, 'यह शहर ज़रूर शाहे-बाबल के कब्ज़े में आ जाएगा, क्योंकि तलवार, काल और मोहलक बीमारियों ने हमें कमज़ोर कर दिया है।' लेकिन अब शहर के बारे में रब का फ़रमान सुनो, जो इसराईल का खुदा है!

37 बेशक मैं बड़े तैश में आकर शहर के बाशिंदों को मुख़तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दूँगा, लेकिन मैं उन्हें उन जगहों से फिर जमा करके वापस भी लाऊँगा ताकि वह दुबारा यहाँ सुकून के साथ रह सकें। 38 तब वह मेरी कौम होंगे, और मैं उनका खुदा हूँगा। 39 मैं होने दूँगा कि वह सोच और चाल-चलन में एक होकर हर वक़्त मेरा ख़ौफ़ मानेंगे। क्योंकि उन्हें मालूम होगा कि ऐसा करने से हमें और हमारी औलाद को बरकत मिलेगी।

40 मैं उनके साथ अबदी अहद बाँधकर वादा करूँगा कि उन पर शफ़क़त करने से बाज़ नहीं आऊँगा। साथ साथ मैं अपना ख़ौफ़ उनके दिलों में डाल दूँगा ताकि वह मुझसे दूर न हो जाएँ। 41 उन्हें बरकत देना मेरे लिए खुशी का बाइस होगा, और मैं वफ़ादारी और पूरे दिलो-जान से उन्हें पनीरी की तरह इस मुल्क में दुबारा लगा दूँगा।" 42 क्योंकि रब फ़रमाता है, 'मैं ही ने यह बड़ी आफ़त इस कौम पर नाज़िल की, और मैं ही उन्हें उन तमाम बरकतों से नवाज़ूँगा जिनका वादा मैंने किया है।

43 बेशक तुम इस वक्त कहते हो, 'हाय, हमारा मुल्क वीरानो-सुनसान है, उसमें न इनसान और न हैवान रह गया है, क्योंकि सब कुछ बाबल के हवाले कर दिया गया है।' लेकिन मैं फरमाता हूँ कि पूरे मुल्क में दुबारा खेत खरिदि 44 और फरोख्त किए जाएंगे। लोग मामूल के मुताबिक इतकालनामे लिखकर उन पर मुहर लगाएंगे और काररवाई की तसदीक के लिए गवाह बुलाएंगे। तमाम इलाके यानी बिनयमीन के कबायली इलाके में, यरुशलम के देहात में, यहदाह और पहाडी इलाके के शहरों में, मगरिब के नशेबी पहाडी इलाके के शहरों में और दशते-नजब के शहरों में ऐसा ही किया जाएगा। मैं खुद उनकी बदनसीबी खत्म करूँगा।" यह रब का फरमान है।

## 33

### यरुशलम में दुबारा खुशी होगी

1 यरमियाह अब तक शाही मुहाफिजों के सहन में गिरिफ्तार था कि रब एक बार फिर उससे हमकलाम हुआ, 2 "जो सब कुछ खलक करता, तर्कील देता और कायम रखता है उसका नाम रब है। यही रब फरमाता है, 3 मुझे पुकार तो मैं तुझे जवाब में ऐसी अजीम और नाकबिले-फहम बातें बयान करूँगा जो तू नहीं जानता।

4 क्योंकि रब जो इसराईल का खुदा है फरमाता है कि तुमने इस शहर के मकानों बल्कि चंद एक शाही मकानों को भी ढा दिया है ताकि उनके पत्थरों और लकडी से फसील को मजबूत करो और शहर को दुश्मन के पुरतों और तलवार से बचाए रखो। 5 गो तुम बाबल की फौज से लडना चाहते हो, लेकिन शहर के घर इसराईलियों की लाशों से भर जाएंगे। क्योंकि उन्ही पर मैं अपना गजब नाज़िल करूँगा। यरुशलम की तमाम बेदीनी के बाइस मैंने अपना मुँह उससे छुपा लिया है।

6 लेकिन बाद में मैं उसे शफा देकर तनदुस्ती बख्शाँगा, मैं उसके बाशिदों को सेहत अता करूँगा और उन पर देरपा सलामती और वफादारी का इजहार करूँगा। 7 क्योंकि मैं यहदाह और इसराईल को बहाल करके उन्हें वैसे तामिर करूँगा जैसे पहले थे। 8 मैं उन्हें उनकी तमाम बेदीनी से पाक-साफ करके उनकी तमाम सरकशी और तमाम गुनाहों को मुआफ कर दूँगा। 9 तब यरुशलम पूरी दुनिया में मेरे लिए मुसरत, शोहरत, तारीफ और जलाल का बाइस बनेगा। दुनिया के तमाम ममालिक मेरी उस पर मेहरबानी देखकर मुतअस्सिर हो जाएंगे। वह घबराकर काँप उठेंगे जब उन्हें पता चलेगा कि मैंने यरुशलम को कितनी बरकत और सुकून मुहैया किया है।

10 तुम कहते हो, 'हमारा शहर वीरानो-सुनसान है। उसमें न इनसान, न हैवान रहते हैं।' लेकिन रब फरमाता है कि यरुशलम और यहदाह के दीगर शहरों की जो गलियाँ इस वक्त वीरान और इनसानो-हैवान से खाली हैं, 11 उनमें दुबारा खुशीओ-शादमानी, दूल्हे दुलहन की आवाज़ और रब के घर में शुक्रगुजारी की कुरबानियाँ पहुँचानेवालों के गीत सुनाई देंगे। उस वक्त वह जाएंगे, 'रब्बुल-अफ्रवाज का शुक्र करो, क्योंकि रब भला है, और उस की शफकत अबदी है।' क्योंकि मैं इस मुल्क को पहले की तरह बहाल कर दूँगा। यह रब का फरमान है।

12 रब्बुल-अफ्रवाज फरमाता है कि फिलहाल यह मकाम वीरान और इनसानो-हैवान से खाली है। लेकिन आइदा यहाँ और बाकी तमाम शहरों में दुबारा ऐसी चरागाहें होंगी जहाँ गल्लाबान अपने रेवडों को चराएँगे। 13 तब पूरे मुल्क में चरवाहे अपने रेवडों को गिनते और सँभालते हुए नजर आएँगे, खाह पहाडी इलाके के शहरों या मगरिब के नशेबी पहाडी इलाके में देखो, खाह दशते-नजब या बिनयमीन के कबायली इलाके में मालूम करो, खाह यरुशलम के देहात या यहदाह के बाकी शहरों में दरियाफ्त करो। यह रब का फरमान है।

### अबदी अहद का वादा

14 रब फरमाता है कि ऐसा वक्त आनेवाला है जब मैं वह अच्छा वादा पूरा करूँगा जो मैंने इसराईल के घराने और यहदाह के घराने से किया है। 15 उस वक्त मैं दाऊद की नसल से एक रास्तबाज़ कौपल फूटने दूँगा, और वही मुल्क में इन्साफ और रास्ती कायम करेगा। 16 उन दिनों में यहदाह को छुटकारा मिलेगा और यरुशलम परअमन जिंदागी गुजारेगा। तब यरुशलम 'रब हमारी रास्ती' कहलाएगा। 17 क्योंकि रब फरमाता है कि इसराईल के तख्त पर बैठनेवाला हमेशा ही दाऊद की नसल का होगा। 18 इसी तरह रब के घर में खिदमतगुज़ार इमाम हमेशा ही लावी के कबीले के होंगे। वही मुतवातिर मेरे हुजूर भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और गल्ला और जवह की कुरबानियाँ पेश करेंगे।"

19 रब एक बार फिर यरमियाह से हमकलाम हुआ, 20 "रब फरमाता है कि मैंने दिन और रात से अहद बाँधा है कि वह मुकर्रर वक्त पर और तरतीबवार गुजरे। कोई इस अहद को तोड नहीं सकता। 21 इसी तरह मैंने अपने खादिम दाऊद से भी अहद बाँधकर वादा किया कि इसराईल का बादशाह हमेशा उसी की नसल का होगा। नीज़, मैंने लावी के इमामों से भी अहद बाँधकर वादा किया कि रब के घर में खिदमतगुज़ार इमाम हमेशा लावी के कबीले के ही होंगे। रात और दिन से बंधे हुए अहद

की तरह इन अहदों को भी तोड़ा नहीं जा सकता। <sup>22</sup> मैं अपने खादिम दाऊद की औलाद और अपने खिदमतगुजार लावियों को सितारों और समुंदर की रेत जैसा बेशमार बना दूँगा।”

<sup>23</sup> रब यरमियाह से एक बार फिर हमकलाम हुआ, <sup>24</sup> “क्या तुझे लोगों की बातें मालूम नहीं हुई? यह कह रहे हैं, ‘गो रब ने इसराइल और यहदाह को चुनकर अपनी क्रौम बना लिया था, लेकिन अब उसने दोनों को रद्द कर दिया है।’ यों वह मेरी क्रौम को हक़ीर जानते हैं बल्कि इसे अब से क्रौम ही नहीं समझते।” <sup>25</sup> लेकिन रब फ़रमाता है, “जो अहद मैंने दिन और रात से बाँधा है वह मैं नहीं तोड़ूँगा, न कभी आसमानो-ज़मीन के मुकर्ररा उसूल मनसूख करूँगा। <sup>26</sup> इसी तरह यह मुमकिन ही नहीं कि मैं याक़ूब और अपने खादिम दाऊद की औलाद को कभी रद्द करूँ। नहीं, मैं हमेशा ही दाऊद की नसल में से किसी को तख़्त पर बिठाऊँगा ताकि वह इब्राहीम, इसहाक और याक़ूब की औलाद पर हुकूमत करे, क्योंकि मैं उन्हें बहाल करके उन पर तरस खाऊँगा।”

## 34

### सिदकियाह बाबल की कैद में मर जाएगा

<sup>1</sup> रब उस वक़्त यरमियाह से हमकलाम हुआ जब शाहे-बाबल नबकदनज्ज़र अपनी पूरी फ़ौज लेकर यरुशलम और यहदाह के तमाम शहरों पर हमला कर रहा था। उसके साथ दुनिया के उन तमाम ममालिक और क्रौमों की फ़ौजें थी जिन्हें उसने अपने तबे कर लिया था।

<sup>2</sup> “रब जो इसराइल का खुदा है फ़रमाता है कि यहदाह के बादशाह सिदकियाह के पास जाकर उसे बता, रब फ़रमाता है कि मैं इस शहर यरुशलम को शाहे-बाबल के हवाले करने को हूँ, और वह इसे नज़रे-आतिश कर देगा। <sup>3</sup> तू भी उसके हाथ से नहीं बचेगा बल्कि ज़रूर पकड़ा जाएगा। तुझे उसके हवाले किया जाएगा, और तू शाहे-बाबल को अपनी आँखों से देखेगा, वह तेरे रूबरू तुझसे बात करेगा। फिर तुझे बाबल जाना पड़ेगा। <sup>4</sup> लेकिन ऐ सिदकियाह बादशाह, रब का यह फ़रमान भी सुन! रब तेरे बारे में फ़रमाता है कि तू तलवार से नहीं <sup>5</sup> बल्कि तबई मौत मरेगा, और लोग उसी तरह तेरी ताज़ीम में लकड़ी का बड़ा ढेर बनाकर आग लगाएँगे जिस तरह तेरे बापदादा के लिए करते आए हैं। वह तुझ पर भी मातम करेंगे और कहेंगे, ‘हाय, मेरे आका!’ यह रब का फ़रमान है।”

<sup>6</sup> यरमियाह नबी ने सिदकियाह बादशाह को यरुशलम में यह पैगाम सुनाया। <sup>7</sup> उस वक़्त बाबल की फ़ौज यरुशलम, लकीस और अज़ीका से लड़ रही थी। यहदाह के तमाम क़िलाबंद शहरों में से यही तीन अब तक कायम रहे थे।

### गुलामों के साथ बेवफ़ाई

<sup>8</sup> रब का कलाम एक बार फिर यरमियाह पर नाज़िल हुआ। उस वक़्त सिदकियाह बादशाह ने यरुशलम के बाशिंदों के साथ अहद बाँधा था कि हम अपने हमवतन गुलामों को आज़ाद कर देंगे। <sup>9</sup> हर एक ने अपने हमवतन गुलामों और लौडियों को आज़ाद करने का वादा किया था, क्योंकि सब मुतफ़िक़ हुए थे कि हम अपने हमवतनों को गुलामी में नहीं रखेंगे। <sup>10</sup> तमाम बुजुर्ग और बाक़ी तमाम लोग यह करने पर राज़ी हुए थे। यह अहद करने पर उन्होंने अपने गुलामों को वाकई आज़ाद कर दिया था। <sup>11</sup> लेकिन बाद में वह अपना इरादा बदलकर अपने आज़ाद किए हुए गुलामों को वापस लाए और उन्हें दुबारा अपने गुलाम बना लिया था। <sup>12</sup> तब रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ।

<sup>13</sup> “रब जो इसराइल का खुदा है फ़रमाता है, ‘जब मैं तुम्हारे बापदादा को मिसर की गुलामी से निकाल लाया तो मैंने उनसे अहद बाँधा। उस की एक शर्त यह थी <sup>14</sup> कि जब किसी हमवतन ने अपने आपको बेचकर छः साल तक तेरी खिदमत की है तो लाज़िम है कि सातवें साल तू उसे आज़ाद कर दे। यह शर्त तुम सब पर सादिक़ आती है। लेकिन अफ़्रोस, तुम्हारे बापदादा ने न मेरी सुनी, न मेरी बात पर ध्यान दिया। <sup>15</sup> अब तुमने पछताकर वह कुछ किया जो मुझे पसंद था। हर एक ने एलान किया कि हम अपने हमवतन गुलामों को आज़ाद कर देंगे। तुम उस घर में आए जिस पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है और अहद बाँधकर मेरे हुज़ूर उस वादे की तसदीक़ की। <sup>16</sup> लेकिन अब तुमने अपना इरादा बदलकर मेरे नाम की बेहुरमती की है। अपने गुलामों और लौडियों को आज़ाद कर देने के बाद हर एक उन्हें अपने पास वापस लाया है। पहले तुमने उन्हें बताया कि जहाँ जी चाहो चले जाओ, और अब तुमने उन्हें दुबारा गुलाम बनने पर मजबूर किया है।’

<sup>17</sup> चुनौचे सुनो जो कुछ रब फ़रमाता है! ‘तुमने मेरी नहीं सुनी, क्योंकि तुमने अपने हमवतन गुलामों को आज़ाद नहीं छोड़ा। इसलिए अब रब तुम्हें तलवार, मोहलक बीमारियों और काल के लिए आज़ाद छोड़ देगा। तुम्हें देखकर दुनिया के तमाम ममालिक के रोंगटे खड़े हो जाएँगे।’ यह रब का फ़रमान है। <sup>18-19</sup> देखो, यहदाह और यरुशलम के बुजुर्गों, दरबारियों, इमामों और अवाम ने मेरे साथ अहद बाँधा। इसकी तसदीक़ करने के लिए वह एक बछड़े को दो हिस्सों में तक़सीम करके उनके दरमियास से गुज़र गए। तो भी उन्होंने अहद तोड़कर उस की शरायत पूरी न की। चुनौचे मैं होने दूँगा

कि वह उस बछड़े की मानिंद हो जाएँ जिसके दो हिस्सों में से वह गुजर गए हैं।<sup>20</sup> मैं उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर दूँगा, उन्हीं के हवाले जो उन्हें जान से मारने के दारपै हैं। उनकी लाशें परिदों और जंगली जानवरों की खुराक बन जाएँगी।

<sup>21</sup> मैं यहदाह के बादशाह सिदकियाह और उसके अफसरों को उनके दुश्मन के हवाले कर दूँगा, उन्हीं के हवाले जो उन्हें जान से मारने पर तुले हुए हैं। वह यकीनन शाहे-बाबल नबूकदनज्जर की फौज के कब्जे में आ जाएँगे। क्योंकि गो फौजी इस वक्रत पीछे हट गए हैं,<sup>22</sup> लेकिन मेरे हुक्म पर वह वापस आकर यरूशालम पर हमला करेंगे। और इस मरतबा वह उस पर कब्जा करके उसे नजरे-आतिश कर देंगे। मैं यहदाह के शहरों को भी यों खाक में मिला दूँगा कि कोई उनमें नहीं रह सकेगा।” यह रब का फरमान है।

## 35

यरमियाह रैकाबियों को आजमाता है

<sup>1</sup> जब यहयकीम बिन यूसियाह अभी यहदाह का बादशाह था तो रब मुझसे हमकलाम हुआ,<sup>2</sup> “रैकाबी खानदान के पास जाकर उन्हें रब के घर के सहन के किसी कमरे में आने की दावत दे। जब वह आएँ तो उन्हें मैं पिता दे।”

<sup>3</sup> चुनौचे मैं याज़नियाह बिन यरमियाह बिन हबस्सिनियाह के पास गया और उसे उसके भाइयों और तमाम बेटों यानी रैकाबियों के पूरे घराने समेत <sup>4</sup> रब के घर में लाया। हम हनान के बेटों के कमरे में बैठ गए। हनान मर्दे-खुदा यिज्दलियाह का बेटा था। यह कमरा बुचुर्गों के कमरे से मुलहिक और रब के घर के दरबान मासियाह बिन सल्लूम के कमरे के ऊपर था।<sup>5</sup> वहाँ मैंने मैं के जाम और प्याले रैकाबी आदमियों को पेश करके उनसे कहा, “आएँ, कुछ मैं पी लें।”

<sup>6</sup> लेकिन उन्होंने इनकार करके कहा, “हम मै नहीं पीते, क्योंकि हमारे बाप युन्दब बिन रैकाब ने हमें और हमारी औलाद को मैं पीने से मना किया है।<sup>7</sup> उसने हमें यह हिदायत भी दी, ‘न मकान तामीर करना, न बीज बोना और न अंगूर का बाग लगाना। यह चीजें कभी भी तुम्हारी मिलकियत में शामिल न हों, क्योंकि लाज़िम है कि तुम हमेशा खैमों में ज़िंदगी गुजारो। फिर तुम लंबे अरसे तक उस मुल्क में रहोगे जिसमें तुम मेहमान हो।’<sup>8</sup> चुनौचे हम अपने बाप युन्दब बिन रैकाब की इन तमाम हिदायत के ताबे रहते हैं। न हम और न हमारी बीवियाँ या बच्चे कभी मैं पीते हैं।<sup>9</sup> हम अपनी रिहाइश के लिए मकान नहीं बनाते, और न अंगूर के बाग, न खेत या फसलें हमारी मिलकियत में होती हैं।<sup>10</sup> इसके बजाए हम आज तक खैमों में रहते हैं। जो भी हिदायत हमारे बाप युन्दब ने हमें दी उस पर हम पूरे उतरे हैं।<sup>11</sup> हम सिर्फ आरिजी तौर पर शहर में ठहरे हुए हैं। क्योंकि जब शाहे-बाबल नबूकदनज्जर इस मुल्क में घुस आया तो हम बोले, ‘आएँ, हम यरूशालम शहर में जाएँ ताकि बाबल और शाम की फौजों से बच जाएँ।’ हम सिर्फ इसी लिए यरूशालम में ठहरे हुए हैं।”

<sup>12</sup> तब रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ,<sup>13</sup> “रब्बूल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है कि यहदाह और यरूशालम के बाशिदों के पास जाकर कह, ‘तुम मेरी तरबियत क्यों कबूल नहीं करते? तुम मेरी क्यों नहीं सुनते?’<sup>14</sup> युन्दब बिन रैकाब पर गौर करो। उसने अपनी औलाद को मैं पीने से मना किया, इसलिए उसका घराना आज तक मैं नहीं पीता। यह लोग अपने बाप की हिदायत के ताबे रहते हैं। इसके मुकाबले में तुम लोग क्या कर रहे हो? गो मैं बार बार तुमसे हमकलाम हुआ तो भी तुमने मेरी नहीं सुनी।

<sup>15</sup> बार बार मैं अपने नबियों को तुम्हारे पास भेजता रहा ताकि मेरे खादिम तुम्हें आगाह करते रहें कि हर एक अपनी बुरी राह तर्क करके वापस आए! अपना चाल-चलन दुस्त करो और अजनबी माबूदों की पैरवी करके उनकी खिदमत मत करो! फिर तुम उस मुल्क में रहोगे जो मैंने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को बख्श दिया था। लेकिन तुमने न तबज्जह दी, न मेरी सुनी।<sup>16</sup> युन्दब बिन रैकाब की औलाद अपने बाप की हिदायत पर पूरी उतरी है, लेकिन इस कौम ने मेरी नहीं सुनी।”

<sup>17</sup> इसलिए रब जो लशकरो का और इसराईल का खुदा है फरमाता है, ‘सुनो! मैं यहदाह पर और यरूशालम के हर बाशिदे पर वह तमाम आफत नाज़िल करूँगा जिसका एलान मैंने किया है। गो मैं उनसे हमकलाम हुआ तो भी उन्होंने न सुनी। मैंने उन्हें बुलाया, लेकिन उन्होंने जवाब न दिया।’”

<sup>18</sup> लेकिन रैकाबियों से यरमियाह ने कहा, “रब्बूल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है, ‘तुम अपने बाप युन्दब के हुक्म पर पूरे उतरकर उस की हर हिदायत और हर हुक्म पर अमल करते हो।’<sup>19</sup> इसलिए रब्बूल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है, ‘युन्दब बिन रैकाब की औलाद में से हमेशा कोई न कोई होगा जो मेरे हुजूर खिदमत करेगा।’”

## 36

रब के घर में यरमियाह की किताब की तिलावत

<sup>1</sup> यहदाह के बादशाह यहयकीम बिन यूसियाह की हुक्मत के चौथे साल में रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ,<sup>2</sup> “तुम्हारे लेकर उसमें इसराईल, यहदाह और बाक़ी तमाम कौमों के बारे में वह तमाम पैगामात कलमबंद कर जो मैंने यूसियाह

की हुकूमत से लेकर आज तक तुझ पर नाज़िल किए हैं।<sup>3</sup> शायद यहदाह के घराने में हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आकर वापस आए अगर उस आफत की पूरी खबर उन तक पहुँचे जो मैं इस कौम पर नाज़िल करने को हूँ। फिर मैं उनकी बेदीनी और गुनाह को मुआफ करूँगा।”

<sup>4</sup> चुनौचे यरमियाह ने बास्क बिन नैरियाह को बुलाकर उससे वह तमाम पैगामात त्मार में लिखवाए जो रब ने उस पर नाज़िल किए थे।<sup>5</sup> फिर यरमियाह ने बास्क से कहा, “मुझे नज़रबंद किया गया है, इसलिए मैं रब के घर में नहीं जा सकता।<sup>6</sup> लेकिन आप तो जा सकते हैं। रोजे के दिन यह त्मार अपने साथ लेकर रब के घर में जाँएँ। हाज़िरिनी के सामने रब की उन तमाम बातों को पढ़कर सुनाएँ जो मैंने आपसे लिखवाई हैं। सबको त्मार की बातें सुनाएँ, उन्हें भी जो यहदाह की दीगर आबादियों से यहाँ पहुँचे हैं।<sup>7</sup> शायद वह इल्लिजा करें कि रब उन पर रहम करे। शायद हर एक अपनी बुरी राह से बाज़ आकर वापस आए। क्योंकि जो गज़ब इस कौम पर नाज़िल होनेवाला है और जिसका एलान रब कर चुका है वह बहुत सख्त है।”

<sup>8</sup> बास्क बिन नैरियाह ने ऐसा ही किया। यरमियाह नबी की हिदायत के मुताबिक उसने रब के घर में त्मार में दर्ज रब के कलाम की तिलावत की।<sup>9</sup> उस वक़्त लोग रोज़ा रखे हुए थे, क्योंकि बादशाह यह्यकमी बिन यूसियाह की हुकूमत के पौँचवें साल और नवें महीने<sup>\*</sup> में एलान किया गया था कि यस्शलम के बाशिंदे और यहदाह के दीगर शहरों से आए हुए तमाम लोग रब के हुज़ूर रोज़ा रखें।<sup>10</sup> जब बास्क ने त्मार की तिलावत की तो तमाम लोग हाज़िरि थे। उस वक़्त वह रब के घर में शाही मुहरिरि जमरियाह बिन साफन के कमरे में बैठा था। यह कमरा रब के घर के ऊपरवाले सहन में था, और सहन का नया दरवाज़ा वहाँ से दूर नहीं था।

<sup>11</sup> त्मार में दर्ज रब के तमाम पैगामात सुनकर जमरियाह बिन साफन का बेटा मीकायाह<sup>12</sup> शाही महल में मीरमुंशी के दफ़्तर में चला गया। वहाँ तमाम सरकारी अफ़सर बैठे थे यानी इलीसमा मीरमुंशी, दिलायाह बिन समायाह, इलनातन बिन अकबोर, जमरियाह बिन साफन, सिदकियाह बिन हननियाह और बाक़ी तमाम मुलाज़िम।<sup>13</sup> मीकायाह ने उन्हें सब कुछ सुनाया जो बास्क ने त्मार की तिलावत करके पेश किया था।<sup>14</sup> तब तमाम बुज़ुर्गों ने यहदी बिन नतनियाह बिन सलमियाह बिन कूशी को बास्क के पास भेजकर उसे इतला दी, “जिस त्मार की तिलावत आपने लोगों के सामने की उसे लेकर हमारे पास आएँ।” चुनौचे बास्क बिन नैरियाह हाथ में त्मार को थामे हुए उनके पास आया।

<sup>15</sup> अफ़सरों ने कहा, “ज़रा बैठकर हमारे लिए भी त्मार की तिलावत करें।” चुनौचे बास्क ने उन्हें सब कुछ पढ़कर सुना दिया।<sup>16</sup> यरमियाह की तमाम पेशगोइयाँ सुनते ही वह घबरा गए और डर के मारे एक दूसरे को देखने लगे। फिर उन्होंने बास्क से कहा, “लाज़िम है कि हम बादशाह को इन तमाम बातों से आगाह करें।<sup>17</sup> हमें ज़रा बताएँ, आपने यह तमाम बातें किस तरह कलामबंद की? क्या यरमियाह ने सब कुछ ज़बानी आपको पेश किया?”<sup>18</sup> बास्क ने जवाब दिया, “जी, वह मुझे यह तमाम बातें सुनाता गया, और मैं सब कुछ स्याही से इस त्मार में दर्ज करता गया।”

<sup>19</sup> यह सुनकर अफ़सरों ने बास्क से कहा, “अब चले जाएँ, आप और यरमियाह दोनों छुप जाएँ! किसी को भी पता न चले कि आप कहाँ हैं।”

यह्यकमी त्मार को जला देता है

<sup>20</sup> अफ़सरों ने त्मार को शाही मीरमुंशी इलीसमा के दफ़्तर में महफूज़ रख दिया, फिर दरबार में दाखिल होकर बादशाह को सब कुछ बता दिया।<sup>21</sup> बादशाह ने यहदी को त्मार ले आने का हुक्म दिया। यहदी, इलीसमा मीरमुंशी के दफ़्तर से त्मार को लेकर बादशाह और तमाम अफ़सरों की मौजूदगी में उस की तिलावत करने लगा।

<sup>22</sup> चूँकि नवौं महीना † था इसलिए बादशाह महल के उस हिस्से में बैठा था जो सदियों के मौसम के लिए बनाया गया था। उसके सामने पड़ी अंगीठी में आग जल रही थी।<sup>23</sup> जब भी यहदी तीन या चार कालम पढ़ने से फ़ारिग हुआ तो बादशाह ने मुंशी की छुरी लेकर उन्हें त्मार से काट लिया और आग में फेंक दिया। यहदी पढ़ता और बादशाह काटता गया। आखिरकार पूरा त्मार राख हो गया था।

<sup>24</sup> गो बादशाह और उसके तमाम मुलाज़िमों ने यह तमाम बातें सुनीं तो भी न वह घबराए, न उन्होंने परेशान होकर अपने कपड़े फाड़े।<sup>25</sup> और गो इलनातन, दिलायाह और जमरियाह ने बादशाह से मिन्नत की कि वह त्मार को न जलाए तो भी उसने उनकी न मानी<sup>26</sup> बल्कि बाद में यरहमियेल शाहज़ादा, सिरायाह बिन अज़रियेल और सलमियाह बिन अबदियेल को भेजा ताकि वह बास्क मुंशी और यरमियाह नबी को गिरफ़्तार करें। लेकिन रब ने उन्हें छुपाए रखा था।

अल्लाह का कलाम दुबारा कलामबंद किया जाता है

<sup>27</sup> बादशाह के त्मार को जलाने के बाद रब यरमियाह से दुबारा हमकलाम हुआ,

\* 36:9 नवंबर ता दिसंबर। † 36:22 तकरीबन दिसंबर।

28 “नया त्मार लेकर उसमें वही तमाम पैगामात कलमबंद कर जो उस त्मार में दर्ज थे जिसे शाहे-यहूदाह ने जला दिया था। 29 साथ साथ यह्यकीम के बारे में एलान कर कि रब फरमाता है, ‘तूने त्मार को जलाकर यरमियाह से शिकायत की कि तूने इस किताब में क्यों लिखा है कि शाहे-बाबल जरूर आकर इस मुल्क को तबाह करेगा, और इसमें न इनसान, न हैवान रहेगा?’ 30 चुनौचे यहूदाह के बादशाह के बारे में रब का फैसला सुन!

आइंदा उसके खानदान का कोई भी फरद दाऊद के तख्त पर नहीं बैठेगा। यह्यकीम की लाश बाहर फेंकी जाएगी, और वहाँ वह खुले मैदान में पड़ी रहेगी। कोई भी उसे दिन की तपती गरमी या रात की शदीद सर्दी से बचाए नहीं रखेगा। 31 मैं उसे उसके बच्चों और मुलाजिमीं समेत उनकी बेदीनी का मुनासिब अज्र दूँगा। क्योंकि मैं उन पर और यरूशलम और यहूदाह के बाशिंदों पर वह तमाम आफत नाज़िल करूँगा जिसका एलान मैं कर चुका हूँ। अफ़सोस, उन्होंने मेरी नहीं सुनी।”

32 चुनौचे यरमियाह ने नया त्मार लेकर उसे बास्क बिन नैरियाह को दे दिया। फिर उसने बास्क मुंशी से वह तमाम पैगामात दुबारा लिखवाए जो उस त्मार में दर्ज थे जिसे शाहे-यहूदाह यह्यकीम ने जला दिया था। उनके अलावा मज़ीद बहुत-से पैगामात का इजाफा हुआ।

## 37

मिसर सिदकियाह की मदद नहीं कर सकता

1 यहूदाह के बादशाह यह्यकीम \* बिन यह्यकीम को तख्त से उतारने के बाद शाहे-बाबल नबूकदनज़र ने सिदकियाह बिन यूसियाह को तख्त पर बिठा दिया। 2 लेकिन न सिदकियाह, न उसके अफसरों या अवाग ने उन पैगामात पर ध्यान दिया जो रब ने यरमियाह नबी की मारिफ़त फ़रमाए थे।

3 एक दिन सिदकियाह बादशाह ने यहकल बिन सलमियाह और इमाम सफ़नियाह बिन मासियाह को यरमियाह के पास भेजा ताकि वह गुज़ारिश करें, “मेहरबानी करके रब हमारे खुदा से हमारी शफ़ाअत करें।”

4 यरमियाह को अब तक कैद में डाला नहीं गया था, इसलिए वह आज़ादी से लोगों में चल-फिर सकता था। 5 उस वक़्त फ़िरौन की फ़ौज मिसर से निकलकर इसराईल की तरफ बढ़ रही थी। जब यरूशलम का मुहासरा करनेवाली बाबल की फ़ौज को यह ख़बर मिली तो वह वहाँ से पीछे हट गई। 6 तब रब यरमियाह नबी से हमकलाम हुआ,

7 “रब इसराईल का खुदा फरमाता है कि शाहे-यहूदाह ने तुम्हें मेरी मरज़ी दरियाफ़्त करने भेजा है। उसे ज़वाब दो कि फ़िरौन की जो फ़ौज तुम्हारी मदद करने के लिए निकल आई है वह अपने मुल्क वापस लौटने को है। 8 फिर बाबल के फ़ौजी वापस आकर यरूशलम पर हमला करेंगे। वह इसे अपने क़ब्ज़े में लेकर नज़रे-आतिश कर देंगे। 9 क्योंकि रब फरमाता है कि यह सोचकर धोका मत खाओ कि बाबल की फ़ौज जरूर हमें छोड़कर चली जाएगी। ऐसा कभी नहीं होगा! 10 ख़ाह तुम हमलाआवर पूरी बाबली फ़ौज को शिकस्त क्यों न देते और सिर्फ़ ज़ख़मी आदमी बचे रहते तो भी तुम नाकाम रहते, तो भी यह बाज़ एक आदमी अपने खैमों में से निकलकर यरूशलम को नज़रे-आतिश करते।”

यरमियाह को कैद में डाला जाता है

11 जब फ़िरौन की फ़ौज इसराईल की तरफ बढ़ने लगी तो बाबल के फ़ौजी यरूशलम को छोड़कर पीछे हट गए। 12 उन दिनों में यरमियाह बिनयमीन के क़बायली इलाके के लिए रवाना हुआ, क्योंकि वह अपने रिश्तेदारों के साथ कोई मौससी मिलकियत तकसीम करना चाहता था। लेकिन जब वह शहर से निकलते हुए 13 बिनयमीन के दरवाज़े तक पहुँच गया तो पहरेदारों का एक अफ़सर उसे पकड़कर कहने लगा, “तुम भगोड़े हो! तुम बाबल की फ़ौज के पास जाना चाहते हो!” अफ़सर का नाम इरियाह बिन सलमियाह बिन हननियाह था। 14 यरमियाह ने एतराज़ किया, “यह झूट है, मैं भगोड़ा नहीं हूँ। मैं बाबल की फ़ौज के पास नहीं जा रहा।” लेकिन इरियाह ने माना बल्कि उसे गिरफ़्तार करके सरकारी अफ़सरों के पास ले गया। 15 उसे देखकर उन्हें यरमियाह पर गुस्सा आया, और वह उस की पिटाई कराकर उसे शाही मुहर्रिर यूनतन के घर में लाए जिसे उन्होंने कैदखाना बनाया था। 16 वहाँ उसे एक ज़मीनदोज़ कमरे में डाल दिया गया जो पहले हौज़ था और जिसकी छत मेहराबदार थी। वह मुतअदिद दिन उसमें बंद रहा।

17 एक दिन सिदकियाह ने उसे महल में बुलाया। वहाँ अलहदगी में उससे पूछा, “क्या रब की तरफ से मेरे लिए कोई पैगाम है?” यरमियाह ने जवाब दिया, “जी हाँ। आपको शाहे-बाबल के हवाले किया जाएगा।” 18 तब यरमियाह ने सिदकियाह बादशाह से अपनी बात जारी रखकर कहा, “मुझसे क्या जुर्म हुआ है? मैंने आपके अफ़सरों और अवाग का क्या कुसूर किया है कि मुझे जेल में डलवा दिया? 19 आपके वह नबी कहाँ हैं जिन्होंने आपको पेशगोई सुनाई कि शाहे-बाबल न आप पर, न

\* 37:1 इब्रानी में यह्यकीम का मुतरादिफ़ क़िन्याह मुस्तामल है।

इस मुल्क पर हमला करेगा? 20 ऐ मेरे मालिक और बादशाह, मेहरबानी करके मेरी बात सुनें, मेरी गुजारिश पूरी करें! मुझे युनतन मुहरिर के घर में वापस न भेजें, वरना मैं मर जाऊँगा।”

21 तब सिदक्रियाह बादशाह ने हुक्म दिया कि सरमियाह को शाही मुहाफिजों के सहन में रखा जाए। उसने यह हिदायत भी दी कि जब तक शहर में रोटी दस्तयाब हो सरमियाह को नानबाई-गली से हर रोज एक रोटी मिलती रहे। चुनौचे सरमियाह मुहाफिजों के सहन में रहने लगा।

## 38

सरमियाह को सजाए-मौत देने का इरादा

1 सफतियाह बिन मन्तान, जिदलियाह बिन फ़शहर, यूकल बिन सलमियाह और फ़शहर बिन मलकियाह को मालूम हुआ कि सरमियाह तमाम लोगों को बता रहा है 2 कि रब फ़रमाता है,

“अगर तुम तलवार, काल या वबा से मरना चाहो तो इस शहर में रहो। लेकिन अगर तुम अपनी जान को बचना चाहो तो शहर से निकलकर अपने आपको बाबल की फ़ौज के हवाले करो। जो कोई यह करे उस की जान छूट जाएगी। \* 3 क्योंकि रब फ़रमाता है कि यरूशलम को ज़रूर शाहे-बाबल की फ़ौज के हवाले किया जाएगा। वह यकीनन उस पर कब्ज़ा करेगा।”

4 तब मज़क़रा अफ़सरों ने बादशाह से कहा, “इस आदमी को सजाए-मौत दीनी चाहिए, क्योंकि यह शहर में बचे हुए फ़ौजियों और बाक़ी तमाम लोगों को ऐसी बातें बता रहा है जिनसे वह हिम्मत हार गए हैं। यह आदमी कौम की बहबूदी नहीं चाहता बल्कि उसे मुसीबत में डालने पर तुला रहता है।”

5 सिदक्रियाह बादशाह ने जवाब दिया, “ठीक है, वह आपके हाथ में है। मैं आपको रोक नहीं सकता।” 6 तब उन्होंने सरमियाह को पकड़कर मलकियाह शाहज़ादा के हौज़ में डाल दिया। यह हौज़ शाही मुहाफिजों के सहन में था। रस्सों के ज़रीए उन्होंने सरमियाह को उतार दिया। हौज़ में पानी नहीं था बल्कि सिर्फ़ कीचड़, और सरमियाह कीचड़ में धँस गया।

7 लेकिन एथोपिया के एक दरबारी बनाम अबद-मलिक को पता चला कि सरमियाह के साथ क्या कुछ किया जा रहा है। जब बादशाह शहर के दरवाज़े बनाम बिनयमीन में कचहरी लगाए बैठे था 8 तो अबद-मलिक शाही महल से निकलकर उसके पास गया और कहा, 9 “मेरे आका और बादशाह, जो सुल्क इन आदमियों ने सरमियाह के साथ किया है वह निहायत बुरा है। उन्होंने उसे एक हौज़ में फेंक दिया है जहाँ वह भूका मरेगा। क्योंकि शहर में रोटी ख़त्म हो गई है।”

10 यह सुनकर बादशाह ने अबद-मलिक को हुक्म दिया, “इससे पहले कि सरमियाह मर जाए यहाँ से 30 आदमियों को लेकर नबी को हौज़ से निकाल दें।” 11 अबद-मलिक आदमियों को अपने साथ लेकर शाही महल के गोदाम के नीचे के एक कमरे में गया। वहाँ से उसने कुछ पुराने चीथड़े और धिसे-फटे कपड़े चुनकर उन्हें रस्सों के ज़रीए हौज़ में सरमियाह तक उतार दिया। 12 अबद-मलिक बोला, “रस्से बाँधने से पहले यह पुराने चीथड़े और धिसे-फटे कपड़े बगल में रखें।” सरमियाह ने ऐसा ही किया, 13 तो वह उसे रस्सों से खीचकर हौज़ से निकाल लाए। इसके बाद सरमियाह शाही मुहाफिजों के सहन में रहा।

सिदक्रियाह को आखिरी मरतबा आगाह किया जाता है

14 एक दिन सिदक्रियाह बादशाह ने सरमियाह को रब के घर के तीसरे दरवाज़े के पास बुलाकर उससे कहा, “मैं आपसे एक बात दरियाफ़्त करना चाहता हूँ। मुझे इसका साफ़ जवाब दें, कोई भी बात मुझसे मत छुपाएँ।” 15 सरमियाह ने एतराज़ किया, “अगर मैं आपको साफ़ जवाब दूँ तो आप मुझे मार डालेंगे। और अगर मैं आपको मशवरा दूँ भी तो आप उसे कबूल नहीं करेंगे।” 16 तब सिदक्रियाह बादशाह ने अलहदगी में कसम खाकर सरमियाह से वादा किया, “रब की हयात की कसम जिसने हमें जान दी है, न मैं आपको मार डालूँगा, न आपको जानी दुश्मनों के हवाले करूँगा।”

17 तब सरमियाह बोला, “रब जो लशकरों का और इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, ‘अपने आपको शाहे-बाबल के अफ़सरान के हवाले कर। फिर तेरी जान छूट जाएगी और यह शहर नज़रे-आतिश नहीं हो जाएगा। तू और तेरा खानदान जीता रहेगा। 18 दूसरी सूरत में इस शहर को बाबल के हवाले किया जाएगा और फ़ौजी इसे नज़रे-आतिश करेंगे। तू भी उनके हाथ से नहीं बचेगा।’”

19 लेकिन सिदक्रियाह बादशाह ने एतराज़ किया, “मुझे उन हमवतनों से डर लगता है जो ग़द्दारी करके बाबल की फ़ौज के पास भाग गए हैं। हो सकता है कि बाबल के फ़ौजी मुझे उनके हवाले करें और वह मेरे साथ बदसलूकी करें।” 20 सरमियाह ने जवाब दिया, “वह आपको उनके हवाले नहीं करेंगे। रब की सुनकर वह कुछ करें जो मैंने आपको बताया है। फिर आपकी सलामती होगी और आपकी जान छूट जाएगी। 21 लेकिन अगर आप शहर से निकलकर हथियार डालने के लिए तैयार नहीं

\* 38:2 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : वह ग़नीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

हैं तो फिर यह पैगाम सुनें जो रब ने मुझ पर जाहिर किया है! 22 शाही महल में जितनी खवातीन बच गई हैं उन सबको शाहे-बाबल के अफसरों के पास पहुँचाया जाएगा। तब यह खवातीन आपके बारे में कहेंगी, 'हाय, जिन आदमियों पर तू पूरा एतमाद रखता था वह फरेब देकर तुझ पर गालिब आ गए हैं। तेरे पौब दलदल में धँस गए हैं, लेकिन यह लोग गायब हो गए हैं।' 23 हाँ, तेरे तमाम बाल-बच्चों को बाहर बाबल की फौज के पास लाया जाएगा। तू खुद भी उनके हाथ से नहीं बचेगा बल्कि शाहे-बाबल तुझे पकड़ लेगा। यह शहर नजरे-आतिश हो जाएगा।”

24 फिर सिदकियाह ने यरमियाह से कहा, “खबरदार! किसी को भी यह मालूम न हो कि हमने क्या क्या बातें की हैं, वरना आप मर जाएंगे। 25 जब मेरे अफसरों को पता चले कि मेरी आपसे गुफ्तगू हुई है तो वह आपके पास आकर पूछेंगे, 'तुमने बादशाह से क्या बात की, और बादशाह ने तुमसे क्या कहा? हमें साफ जवाब दो और झूट न बोलो, वरना हम तुम्हें मार डालेंगे।' 26 जब वह इस तरह की बातें करेंगे तो उन्हें सिर्फ इतना-सा बताएँ, 'मैं बादशाह से मिन्नत कर रहा था कि वह मुझे यूतन के घर में वापस न भेजे, वरना मैं मर जाऊँगा।’”

27 ऐसा ही हुआ। तमाम सरकारी अफसर यरमियाह के पास आए और उससे सवाल करने लगे। लेकिन उसने उन्हें सिर्फ वह कुछ बताया जो बादशाह ने उसे कहने को कहा था। तब वह खामोश हो गए, क्योंकि किसी ने भी उस की बादशाह से गुफ्तगू नहीं सुनी थी।

28 इसके बाद यरमियाह यरुशलम की शिकस्त तक शाही मुहाफिजों के सहन में कैदी रहा।

## 39

### यरुशलम की शिकस्त

1 यरुशलम यों दुश्मन के हाथ में आया : यहदाह के बादशाह के नवें साल और 10वें महीने\* में शाहे-बाबल नबूकदनञ्जर अपनी तमाम फौज लेकर यरुशलम पहुँचा और शहर का मुहासरा करने लगा। 2 सिदकियाह के 11वें साल के चौथे महीने और नवें दिन † दुश्मन ने फसील में रखना डाल दिया। 3 तब नबूकदनञ्जर के तमाम आला अफसर शहर में आकर उसके दरमियानी दरवाजे में बैठ गए। उनमें नैरगल-सराजर जो रब-माग था, समगर-नबू, सर-सकीम जो रब-सारीस था और शाहे-बाबल के बाकी बुजुर्ग शामिल थे।

4 उन्हें देखकर यहदाह का बादशाह सिदकियाह और उसके तमाम फौजी भाग गए। रात के वक़्त वह फसील के उस दरवाजे से निकले जो शाही बाग के साथ मुलाहिक दो दीवारों के बीच में था। वह वादीए-यरदन की तरफ दौड़ने लगे, 5 लेकिन बाबल के फौजियों ने उनका ताक़ुक करके सिदकियाह को यरीह के मैदानी इलाके में पकड़ लिया। फिर उसे मुल्के-हमात के शहर रिबला में शाहे-बाबल नबूकदनञ्जर के पास लाया गया, और वही उसने सिदकियाह पर फ़ैसला सादिर किया। 6 सिदकियाह के देखते देखते शाहे-बाबल ने रिबला में उसके बेटों को क्रतल किया। साथ साथ उसने यहदाह के तमाम बुजुर्गों को भी मौत के घाट उतार दिया। 7 फिर उसने सिदकियाह की आँखें निकलवाकर उसे पीतल की ज़ंजीरों में जकड़ लिया और बाबल को ले जाने के लिए महफूज़ रखा।

8 बाबल के फौजियों ने शाही महल और दीगर लोगों के घरों को जलाकर यरुशलम की फसील को गिरा दिया। 9 शाही मुहाफिजों के अफसर नबूज़रादान ने सबको जिलावतन कर दिया जो यरुशलम और यहदाह में पीछे रह गए थे। वह भी उनमें शामिल थे जो जंग के दौरान ग़द्दरी करके शाहे-बाबल के पीछे लग गए थे। 10 लेकिन नबूज़रादान ने सबसे निचले तबके के बाज़ लोगों को मुल्के-यहदाह में छोड़ दिया, ऐसे लोग जिनके पास कुछ नहीं था। उन्हें उसने उस वक़्त अंगूर के बाग और खेत दिए।

11-12 नबूकदनञ्जर बादशाह ने शाही मुहाफिजों के अफसर नबूज़रादान को हुक्म दिया, “यरमियाह को अपने पास रखें। उसका खयाल रखें। उसे नुकसान न पहुँचाएँ बल्कि जो भी दरखास्त वह करे उसे पूरा करें।”

13 चुनौचे शाही मुहाफिजों के अफसर नबूज़रादान ने किसी को यरमियाह के पास भेजा। उस वक़्त नबूशज़बान जो रब-सारीस था, नैरगल-सराजर जो रब-माग था और शाहे-बाबल के बाकी अफसर नबूज़रादान के पास थे। 14 यरमियाह अब तक शाही मुहाफिजों के सहन में गिरिफ्तार था। उन्होंने हुक्म दिया कि उसे वहाँ से निकालकर जिदलियाह बिन अखीकाम बिन साफन के हवाले कर दिया जाए ताकि वह उसे उसके अपने घर पहुँचा दे। यों यरमियाह अपने लोगों के दरमियान बसने लगा।

### अबद-मलिक के लिए ख़ुशख़बरी

15 जब यरमियाह अभी शाही मुहाफिजों के सहन में गिरिफ्तार था तो रब उससे हमकलाम हुआ,

16 “जाकर एथोपिया के अबद-मलिक को बता, ‘रब्बूल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है कि देख, मैं इस शहर के साथ वह सब कुछ करने को हूँ जिसका एलान मैंने किया था। मैं उस पर मेहरबानी नहीं करूँगा बल्कि उसे नुकसान

\* 39:1 दिसंबर ता जनवरी। † 39:2 18 जुलाई।



पहुँचाऊँगा। तू अपनी आँखों से यह देखेगा। 17 लेकिन रब फरमाता है कि तुझे मैं उस दिन छुटकारा दूँगा, तुझे उनके हवाले नहीं किया जाएगा जिनसे तू डरता है। 18 मैं खुद तुझे बचाऊँगा। चूँकि तू मुझ पर भरोसा किया इसलिए तू तलवार की जद्द में नहीं आएगा बल्कि तेरी जान छूट जाएगी। † यह रब का फरमान है।”

## 40

यरमियाह को आज़ाद किया जाता है

1 आज़ाद होने के बाद भी रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। शाही मुहाफ़िज़ों के अफसर नबूज़रादान ने उसे रामा में रिहा किया था। क्योंकि जब यरूशलम और बाकी यहूदाह के कैदियों को मुल्के-बाबल में ले जाने के लिए जमा किया गया तो मालूम हुआ कि यरमियाह भी जंजीरों में जकड़ा हुआ उनमें शामिल है। 2 तब नबूज़रादान ने यरमियाह को बुलाकर उससे कहा, “रब आपके खुदा ने एलान किया था कि इस जगह पर आफत आएगी। 3 और अब वह यह आफत उसी तरह ही लाया जिस तरह उसने फरमाया था। सब कुछ इसलिए हुआ कि आपकी कौम रब का गुनाह करती रही और उस की न सुनी। 4 लेकिन आज मैं वह जंजीरें खोल देता हूँ जिनसे आपके हाथ जकड़े हुए हैं। आप आज़ाद हैं। अगर चाहें तो मेरे साथ बाबल जाएँ। तब मैं ही आपकी निगरानी करूँगा। बाकी आपकी मरजी। अगर यहीं रहना पसंद करेंगे तो यहीं रहें। पूरे मुल्क में जहाँ भी जाना चाहें जाएँ। कोई आपको नहीं रोकेगा।”

5 यरमियाह अब तक झिजक रहा था, इसलिए नबूज़रादान ने कहा, “फिर ज़िदलियाह बिन अखीकाम बिन साफन के पास चले जाएँ। शाहे-बाबल ने उसे सबा यहूदाह के शहरों पर मुकर्रर किया है। उसके साथ रहें। या फिर जहाँ भी रहना पसंद करें वही रहें।”

नबूज़रादान ने यरमियाह को कुछ खुराक और एक तोहफा देकर उसे सखसत कर दिया। 6 ज़िदलियाह मिसफाह में ठहरा हुआ था। यरमियाह उसके पास जाकर मुल्क के बचे हुए लोगों के बीच में बसने लगा।

ज़िदलियाह को कत्ल करने की साज़िशें

7 देहात में अब तक यहूदाह के कुछ फ़ौजी अफसर अपने दस्तों समेत छुपे रहते थे। जब उन्हें खबर मिली कि शाहे-बाबल ने ज़िदलियाह बिन अखीकाम को यहूदाह का गवर्नर बनाकर उन गरीब आदमियों और बाल-बच्चों पर मुकर्रर किया है जो जिलावतन नहीं हुए हैं 8 तो वह मिसफाह में ज़िदलियाह के पास आए। अफसरों के नाम इसमाईल बिन नतनियाह, करीह के बेटे यूहनान और यूनतन, सिरायाह बिन तनहूमत, ईफी नतूफाती के बेटे और याज़नियाह बिन माकाती थे। उनके फ़ौजी भी साथ आए। 9 ज़िदलियाह बिन अखीकाम बिन साफन ने कसम खाकर उनसे वादा किया, “बाबल के ताबे हो जाने से मत डरना! मुल्क में आबाद होकर शाहे-बाबल की खिदमत करें तो आपकी सलामती होगी। 10 मैं खुद मिसफाह में ठहरकर आपकी सिफारिश करूँगा जब बाबल के नुमाइंदे आएँगे। इतने में अंगूर, मौसमे-गरमा का फल और जैतून की फसलें जमा करके अपने बरतनों में महफूज़ रखें। उन शहरों में आबाद रहें जिन पर आपने क़ब्ज़ा कर लिया है।”

11 यहूदाह के मूतअदिद बाशिंदे मोआब, अम्मोन, अदोम और दीगर पड़ोसी ममालिक में हिजरत कर गए थे। अब जब उन्हें इतला मिली कि शाहे-बाबल ने कुछ बचे हुए लोगों को यहूदाह में छोड़कर ज़िदलियाह बिन अखीकाम बिन साफन को गवर्नर बना दिया है 12 तो वह सब यहूदाह में वापस आए। जिन ममालिक में भी वह मूतशिर हुए थे वहाँ से वह मिसफाह आए ताकि ज़िदलियाह से मिलें। उस मौसमे-गरमा में वह अंगूर और बाकी फल की बड़ी फसल जमा कर सके।

13 एक दिन यूहनान बिन करीह और वह तमाम फ़ौजी अफसर जो अब तक देहात में ठहरे हुए थे ज़िदलियाह से मिलने आए। 14 मिसफाह में पहुँचकर वह ज़िदलियाह से कहने लगे, “क्या आपको नहीं मालूम कि अम्मोन के बादशाह बालीस ने इसमाईल बिन नतनियाह को आपको कत्ल करने के लिए भेजा है?” लेकिन ज़िदलियाह बिन अखीकाम ने उनकी बात का यक़ीन न किया। 15 तब यूहनान बिन करीह मिसफाह आया और अलहदगी में ज़िदलियाह से मिला। वह बोला, “मुझे इसमाईल बिन नतनियाह के पास जाकर उसे मार देने की इजाज़त दें। किसी को भी पता नहीं चलेगा। क्या ज़रूरत है कि वह आपको कत्ल करे? अगर वह इसमें कामयाब हो जाए तो आपके पास जमाशुदा हमवतन सबके सब मूतशिर हो जाएंगे और यहूदाह का बचा हुआ हिस्सा हलाक हो जाएगा।” 16 ज़िदलियाह ने यूहनान को डाँटकर कहा, “ऐसा मत करना! जो कुछ आप इसमाईल के बारे में बता रहे हैं वह झूट है।”

## 41

इसमाईल ज़िदलियाह गवर्नर को कत्ल करता है

† 39:18 लफ़्ज़ी तज़्मुमा : तू गनीमत के तौर पर अपनी जान को बचाएगा।

1 इसमाईल बिन नतनियाह बिन इलीसमा शाही नसल का था और पहले शहे-यहदाह का आला अफसर था। सातवें महीने \* में वह दस आदमियों को अपने साथ लेकर मिसफाह में जिदलियाह से मिलने आया। जब वह मिलकर खाना खा रहे थे 2 तो इसमाईल और उसके दस आदमी अचानक उठे और अपनी तलवारों को खींचकर जिदलियाह को मार डाला। यों इसमाईल ने उस आदमी को कत्ल किया जिसे बाबल के बादशाह ने सूबा यहदाह पर मुकर्र किया था। 3 उसने मिसफाह में जिदलियाह के साथ रहनेवाले तमाम हमवतनों को भी कत्ल किया और वहाँ ठहरनेवाले बाबल के फौजियों को भी।

4 अगले दिन जब किसी को मालूम नहीं था कि जिदलियाह को कत्ल किया गया है 5 तो 80 आदमी वहाँ पहुँचे जो सिकम, सैला और सामरिया से आकर रब के तबाहशुदा घर में उस की परस्तिश करने जा रहे थे। उनके पास गल्ला और बखूर की कूरबानियाँ थीं, और उन्होंने गम के मोरे अपनी दाढियाँ मुँडवाकर अपने कपड़े फाड़ लिए और अपनी जिल्द को ज़खमी कर दिया था। 6 इसमाईल रोते रोते मिसफाह से निकलकर उनसे मिलने आया। जब वह उनके पास पहुँचा तो कहने लगा, “जिदलियाह बिन अखीकाम के पास आओ और देखो कि क्या हुआ है!”

7 ज्योंही वह शहर में दाखिल हुए तो इसमाईल और उसके साथियों ने उन्हें कत्ल करके एक हौज़ में फेंक दिया। 8 सिर्फ दस आदमी बच गए जब उन्होंने इसमाईल से कहा, “हमें मत कत्ल करना, क्योंकि हमारे पास गंदुम, जौ और शहद के ज़खीरे हैं जो हमने खुले मैदान में कहीं छुपा रखे हैं।” यह सुनकर उसने उन्हें दूसरों की तरह न मारा बल्कि ज़िंदा छोड़ा।

9 जिस हौज़ में इसमाईल ने मज़क़रा आदमियों की लाशें फेंक दीं वह बहुत बड़ा था। यहदाह के बादशाह आसा ने उसे उस वक्त बनवाया था जब इसराईली बादशाह बाशा से जंग थी और वह मिसफाह को मज़बूत बना रहा था। इसमाईल ने इसी हौज़ को मकतूलों से भर दिया था। 10 मिसफाह के बाकी लोगों को उसने कैदी बना लिया। उनमें यहदाह के बादशाह की बेटियाँ और बाकी वह तमाम लोग शामिल थे जिन पर शाही मुहाफ़िज़ों के सरदार नबूज़रादान ने जिदलियाह बिन अखीकाम को मुकर्र किया था। फिर इसमाईल उन सबको अपने साथ लेकर मुल्के-अम्मोन के लिए रवाना हुआ।

11 लेकिन यूहानन बिन करीह और उसके साथी अफसरों को इतला दी गई कि इसमाईल से क्या जुर्म हुआ है। 12 तब वह अपने तमाम फौजियों को जमा करके इसमाईल से लड़ने के लिए निकले और उसका ताक़तुब करते करते उसे जिबऊन के जोहड के पास जा लिया। 13 ज्योंही इसमाईल के कैदियों ने यूहानन और उसके अफसरों को देखा तो वह ख़ुश हुए। 14 सबने इसमाईल को छोड़ दिया और मुडकर यूहानन के पास भाग आए। 15 इसमाईल आठ साथियों समेत फ़रार हुआ और यूहानन के हाथ से बचकर मुल्के-अम्मोन में चला गया।

16 यों मिसफाह के बचे हुए तमाम लोग जिबऊन में यूहानन और उसके साथी अफसरों के ज़ेरे-निगरानी आए। उनमें वह तमाम फौजी, ख़वातीन, बच्चे और दरबारी शामिल थे जिन्हें इसमाईल ने जिदलियाह को कत्ल करने के बाद कैदी बनाया था। 17 लेकिन वह मिसफाह वापस न गए बल्कि आगे चलते चलते बैत-लहम के करीब के गाँव बनाम सराय-किमहाम में रुक गए। वहाँ वह मिसर के लिए रवाना होने की तैयारियाँ करने लगे, 18 क्योंकि वह बाबल के इंतकाम से डरते थे, इसलिए कि जिदलियाह बिन अखीकाम को कत्ल करने से इसमाईल बिन नतनियाह ने उस आदमी को मौत के घाट उतारा था जिसे शाहे-बाबल ने यहदाह का गवर्नर मुकर्र किया था।

## 42

यरमियाह मिसर न जाने का मशवरा देता है

1 यूहानन बिन करीह, यज़नियाह बिन हसायाह और दीगर फौजी अफसर बाकी तमाम लोगों के साथ छोटे से लेकर बड़े तक 2 यरमियाह नबी के पास आए और कहने लगे, “हमारी मिन्नत क़बूल करें और रब अपने ख़ुदा से हमारे लिए दुआ करें। आप ख़ुद देख सकते हैं कि गो हम पहले मुतअदिद लोग थे, लेकिन अब थोड़े ही रह गए हैं। 3 दुआ करें कि रब आपका ख़ुदा हमें दिखाए कि हम कहाँ जाएँ और क्या कुछ करें।”

4 यरमियाह ने जवाब दिया, “ठीक है, मैं दुआ में ज़रूर रब आपके ख़ुदा को आपकी गुज़ारिश पेश करूँगा। और जो भी जवाब रब दे वह मैं लफ़ज़ बलफ़ज़ आपको बता दूँगा। मैं आपको किसी भी बात से महरूम नहीं रखूँगा।” 5 उन्होंने कहा, “रब हमारा वफ़ादार और क़ाबिले-एतमाद गवाह है। अगर हम हर बात पर अमल न करें जो रब आपका ख़ुदा आपकी मारिफ़त हम पर नाज़िल करेगा तो वही हमारे खिलाफ़ गवाही दे। 6 खाह उस की हिदायत हमें अच्छी लगे या बुरी, हम रब अपने ख़ुदा की सुनेंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि जब हम रब अपने ख़ुदा की सुनें तब ही हमारी सलामती होगी। इसी लिए हम आपको उसके पास भेज रहे हैं।”

7 दस दिन गुज़रने के बाद रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ। 8 उसने यूहानन, उसके साथी अफसरों और बाकी तमाम लोगों को छोटे से लेकर बड़े तक अपने पास बुलाकर 9 कहा, “आपने मुझे रब इसराईल के ख़ुदा के पास भेजा ताकि

\* 41:1 सितंबर ता अक्ताबर।

मैं आपकी गुज़ारिश उसके सामने लाऊँ। अब उसका फ़रमान सुनें! 10 'अगर तुम इस मुल्क में रहो तो मैं तुम्हें नहीं गिराऊँगा बल्कि तामीर करूँगा, तुम्हें जड़ से नहीं उखाड़ूँगा बल्कि पनीरी की तरह लगा दूँगा। क्योंकि मुझे उस मुसीबत पर अफ़सोस है जिसमें मैंने तुम्हें मुब्तला किया है। 11 इस वक़्त तुम शाहे-बाबल से डरते हो, लेकिन उससे ख़ौफ़ मत खाना!' रब फ़रमाता है, 'उससे दहशत न खाओ, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ और तुम्हारी मदद करके उसके हाथ से छुटकारा दूँगा। 12 मैं तुम पर रहम करूँगा, इसलिए वह भी तुम पर रहम करके तुम्हें तुम्हारे मुल्क में वापस आने देगा।

13 लेकिन अगर तुम रब अपने ख़ुदा की सुनने के लिए तैयार न हो बल्कि कहो कि हम इस मुल्क में नहीं रहेंगे 14 बल्कि मिसर जाएंगे जहाँ न जंग देखेंगे, न जंगी नरसिंगे की आवाज़ सुनेंगे और न भूके रहेंगे 15 तो रब का जवाब सुनो! ऐ यहदाह के बच्चे हुए लोगो, रब इसराईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि अगर तुम मिसर में जाकर वहाँ पनाह लेने पर तुले हुए हो 16 तो यकीन जानो कि जिस तलवार और काल से तुम डरते हो वह वही मिसर में तुम्हारा पीछा करता रहेगा। वहाँ जाकर तुम यकीनन मरोगे। 17 जितने भी मिसर जाकर वहाँ रहने पर तुले हुए हों वह सब तलवार, काल और मोहलक बीमारियों की ज़द में आकर मर जाएंगे। जिस मुसीबत में मैं उन्हें डाल दूँगा उससे कोई नहीं बचेगा।'

18 क्योंकि रब्बूल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, 'पहले मेरा सख़्त ग़ज़ब यरूशलम के बाशिंदों पर नाज़िल हुआ। अगर तुम मिसर जाओ तो मेरा ग़ज़ब तुम पर भी नाज़िल होगा। तुम्हें देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और तुम उनकी लान-तान और हिकारत का निशाना बनोगे। लानत करनेवाला अपने दुश्मनों के लिए तुम्हारे जैसा अंजाम चाहेगा। जहाँ तक तुम्हारे वतन का ताल्लुक है, तुम उसे आइंदा कभी नहीं देखोगे।'

19 ऐ यहदाह के बच्चे हुए लोगो, अब रब आपसे हमकलाम हुआ है। उसका जवाब साफ़ है। मिसर को मत जाना! यह बात ख़ूब जान लें कि आज मैंने आपको आगाह कर दिया है। 20 अपने ख़ुद अपनी जान को ख़तरे में डाल दिया जब आपने मुझे रब अपने ख़ुदा के पास भेजकर कहा, 'रब हमारे ख़ुदा से हमारे लिए दुआ करें। उसका पूरा जवाब हमें सुनाएँ, क्योंकि हम उस की तमाम बातों पर अमल करेंगे।' 21 आज मैंने यह किया है, लेकिन आप रब अपने ख़ुदा की सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। जो कुछ भी उसने मुझे आपको सुनाने को कहा है उस पर आप अमल नहीं करना चाहते। 22 चुनौचे अब जान लें कि जहाँ आप जाकर पनाह लेना चाहते हैं वहाँ आप तलवार, काल और मोहलक बीमारियों की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे।''

## 43

यरमियाह की आगाही को नज़रंदाज़ किया जाता है

1 यरमियाह ख़ामोश हुआ। जो कुछ भी रब उनके ख़ुदा ने यरमियाह को उन्हें सुनाने को कहा था उसे उसने उन सब तक पहुँचाया था। 2 फिर अज़रियाह बिन हूसयाह, यहनान बिन अखीकाम और तमाम बदतमीज़ आदमी बोल उठे, 'तुम झूट बोल रहे हो! रब हमारे ख़ुदा ने तुम्हें यह सुनाने को नहीं भेजा कि मिसर को न जाओ, न वहाँ आबाद हो जाओ। 3 इसके पीछे बास्क बिन नैरियाह का हाथ है। वही तुम्हें हमारे खिलाफ़ उकसा रहा है, क्योंकि वह चाहता है कि हम बाबलियों के हाथ में आ जाएँ ताकि वह हमें कल्ल करें या जिलावतन करके मुल्के-बाबल ले जाएँ।''

4 ऐसी बातें करते करते यहनान बिन करीह, दीगर फ़ौजी अफ़सरों और बाकी तमाम लोगों ने रब का हुक्म रद्द किया। वह मुल्के-यहदाह में न रहे 5 बल्कि सब यहनान और बाकी तमाम फ़ौजी अफ़सरों की राहनुमाई में मिसर चले गए। उनमें यहदाह के वह बच्चे हुए सब लोग शामिल थे जो पहले मुख़्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर हुए थे, लेकिन अब यहदाह में दुबारा आबाद होने के लिए वापस आए थे। 6 वह तमाम मर्द, औरतें और बच्चे बादशाह की बेटियों समेत भी उनमें शामिल थे जिन्हें शाही मुहाफ़िज़ों के सरदार नबूज़रादान ने ज़िदलियाह बिन अखीकाम के सुपुर्द किया था। यरमियाह नबी और बास्क बिन नैरियाह को भी साथ जाना पड़ा। 7 यों वह रब की हिदायत रद्द करके रवाना हुए और चलते चलते मिसरी सरहद के शहर तहफनहीस तक पहुँचे।

शाहे-बाबल के मिसर में घुस आने की पेशगोई

8 तहफनहीस में रब का कलाम यरमियाह पर नाज़िल हुआ, 9 'अपने हमवतनों की मौजूदगी में चंद एक बड़े पत्थर फिरौन के महल के दरवाज़े के करीब ले जाकर फ़र्श की कच्ची ईंटों के नीचे दबा दे। 10 फिर उन्हें बता दे, 'रब्बूल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है कि मैं अपने खादिम शाहे-बाबल नबूकदनज़र को बुलाकर यहाँ लाऊँगा और उसका तख़्त उन पत्थरों के ऊपर खड़ा करूँगा जो मैंने यरमियाह के ज़रीए दबाए हैं। नबूकदनज़र उन्हीं के ऊपर अपना शाही तंबू लगाएगा। 11 क्योंकि वह आएगा और मिसर पर हमला करके हर एक के साथ वह कुछ करेगा जो उसके नसीब में है। एक मर जाएगा, दूसरा कैद में जाएगा और तीसरा तलवार की ज़द में आएगा। 12-13 नबूकदनज़र मिसरी देवताओं के मंदिरो को जलाकर राख कर देगा और उनके बुतों पर कब्ज़ा करके उन्हें अपने साथ ले जाएगा। जिस तरह चरवाहा अपने कपड़े से जुएँ

निकाल निकालकर उसे साफ कर लेता है उसी तरह शाहे-बाबल मिसर को मालो-मता से साफ करेगा। मिसर आते वक्त वह सूरज देवता के मंदिर में जाकर उसके सत्तों को ढा देगा और बाकी मिसरी देवताओं के मंदिर भी नजरे-आतिश करेगा। फिर शाहे-बाबल सहीह-सलामत वहाँ से वापस चला जाएगा।”

## 44

तुम बुतपरस्ती से बाज़ क्यों नहीं आते?

1 रब का कलाम एक बार फिर यरमियाह पर नाज़िल हुआ। उसमें वह उन तमाम हमवतनों से हमकलाम हुआ जो शिमाली मिसर के शहरों मिजदाल, तहफनहीस और मेंफिस और जुनूबी मिसर बनाम पतरस में रहते थे।

2 “रब्बूल-अफवाज जो इसराइल का खुदा है फ़रमाता है, ‘तुमने ख़ुद वह बड़ी आफत देखी जो मैं यरूशलम और यहदाह के दीगर तमाम शहरों पर लाया। आज वह वीरानो-सुनसान हैं, और उनमें कोई नहीं बसता। 3 यों उन्हें उनकी बुरी हरकतों का अज़्र मिला। क्योंकि अजनबी माबूदों के लिए बख़ूर जलाकर उनकी ख़िदमत करने से उन्होंने मुझे तैश दिलाया। और यह ऐसे देवता थे जिनसे पहले न वह, न तुम और न तुम्हारे बापदादा वाकिफ़ थे। 4 बार बार मैं नबियों को उनके पास भेजता रहा, और बार बार मेरे खादिम कहते रहे कि ऐसी धिनौनी हरकतें मत करना, क्योंकि मुझे इनसे नफ़रत है! 5 लेकिन उन्होंने न सुनी, न ध्यान दिया। न वह अपनी बेदीनी से बाज़ आए, न अजनबी माबूदों को बख़ूर जलाने का सिलसिला बंद किया।

6 तम मेरा शदीद ग़ज़ब उन पर नाज़िल हुआ। मेरे कहर की ज़बरदस्त आग ने यहदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में फैलते फैलते उन्हें वीरानो-सुनसान कर दिया। आज तक उनका यही हाल है।’

7 अब रब्बूल-अफवाज जो इसराइल का खुदा है फ़रमाता है, ‘तुम अपना सत्यानास क्यों कर रहे हो? ऐसे कदम उठाने से तुम यहदाह से आए हुए मर्दों और औरतों को बच्चों और शीरख़ारों समेत हलाकत की तरफ़ ला रहे हो। इस सूरत में एक भी नहीं बचेगा। 8 मुझे अपने हाथों के काम से तैश क्यों दिलाते हो? यहाँ मिसर में पनाह लेकर तुम अजनबी माबूदों के लिए बख़ूर क्यों जलाते हो? इससे तुम अपने आपको नेस्तो-नाबूद कर रहे हो, तुम दुनिया की तमाम कौमों के लिए लात और मज़ाक़ का निशाना बनोगे। 9 क्या तुम अपनी कौम के संगीन गुनाहों को भूल गए हो? क्या तुम्हें वह कुछ याद नहीं जो तुम्हारे बापदादा, यहदाह के राजे रानियों और तुमसे तुम्हारी बीवियों समेत मुल्के-यहदाह और यरूशलम की गलियों में सरज़द हुआ है? 10 आज तक तुमने न इंकिसारी का इज़हार किया, न मेरा ख़ौफ़ माना, और न मेरी शरीअत के मुताबिक़ ज़िदगी गुज़ारी। तुम उन हिदायात के ताबे न रहे जो मैंने तुम्हें और तुम्हारे बापदादा को अता की थी।’

11 चुनाँचे रब्बूल-अफवाज जो इसराइल का खुदा है फ़रमाता है, ‘मैं तुम पर आफत लाने का अटल इरादा रखता हूँ। तमाम यहदाह ख़त्म हो जाएगा। 12 मैं यहदाह के उस बचे हुए हिस्से को सफ़हाए-हस्ती से मिटा दूँगा जो मिसर में जाकर पनाह लेने पर तुला हुआ था। सब मिसर में हलाक हो जाएंगे, खाह तलवार से, खाह काल से। छोटे से लेकर बड़े तक सबके सब तलवार या काल की ज़द में आकर मर जाएंगे। उन्हें देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह दूसरों की लान-तान और हिक़ारत का निशाना बनेंगे। लानत करनेवाला अपने दुश्मनों के लिए उन्हीं का-सा अंजाम चाहेगा। 13 जिस तरह मैंने यरूशलम को सज़ा दी ऐन उसी तरह मैं मिसर में आनेवाले हमवतनों को तलवार, काल और मोहलक बीमारियों से सज़ा दूँगा। 14 यहदाह के जितने बचे हुए लोग यहाँ मिसर में पनाह लेने के लिए आए हैं वह सब यहीं हलाक हो जाएंगे। कोई भी बचकर मुल्के-यहदाह में नहीं लौटेगा, गो तुम सब वहाँ दुबारा आबाद होने की शदीद आरजू रखते हो। सिर्फ़ चंद एक इसमें कामयाब हो जाएंगे।”

आसमानी मलिका की पूजा पर ज़िद

15 उस वक्त शिमाली और जुनूबी मिसर में रहनेवाले यहदाह के तमाम मर्द और औरतें एक बड़े इजतिमा के लिए जमा हुए थे। मर्दों को ख़ब मालूम था कि हमारी बीवियाँ अजनबी माबूदों को बख़ूर की कुरबानियाँ पेश करती हैं। अब उन्होंने यरमियाह से कहा, 16 “जो बात आपने रब का नाम लेकर हमसे की है वह हम नहीं मानते। 17 हम उन तमाम बातों पर ज़स्र अमल करेंगे जो हमने कही हैं। हम आसमानी मलिका देवी के लिए बख़ूर जलाएंगे और उसे मैं की नज़रें पेश करेंगे। हम वही कुछ करेंगे जो हम, हमारे बापदादा, हमारे बादशाह और हमारे बजुर्ग़ मुल्के-यहदाह और यरूशलम की गलियों में किया करते थे। क्योंकि उस वक्त रोटी की कसरत थी और हमारा अच्छा हाल था। उस वक्त हम किसी भी मुसीबत से दोचार न हुए। 18 लेकिन जब से हम आसमानी मलिका को बख़ूर और मैं की नज़रें पेश करने से बाज़ आए हैं उस वक्त से हर लिहाज़ से हाज़तमंद रहे हैं। उसी वक्त से हम तलवार और काल की ज़द में आकर नेस्त हो रहे हैं।” 19 औरतों ने बात जारी रखकर कहा, “क्या आप समझते हैं कि हमारे शौहरों को इसका इल्म नहीं था कि हम आसमानी मलिका को बख़ूर और मैं की नज़रें पेश करती हैं, कि हम उस की शक़ल की टिकिकियों बनाकर उस की पूजा करती हैं?”

### चंद एक के बचने की पेशगोई

20 यरमियाह एतराज करनेवाले तमाम मर्दों और औरतों से दुबारा सुखातिब हुआ, 21 “देखो, रब ने उस बखूर पर ध्यान दिया जो तुम और तुम्हारे बापदादा ने बादशाहों, बुजुर्गों और अवाग समेत यहदाह के शहरों और यरूशलम की गलियों में जलाया है। यह बात उसे खूब याद है। 22 आखिरकार एक वक्रत आया जब तुम्हारी शरीर और धिनौनी हरकतों काबिले-बरदाशत न रही, और रब को तुम्हें सजा देनी पड़ी। यही वजह है कि आज तुम्हारा मुल्क वीरानो-सुनसान है, कि उसे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लानत करनेवाला अपने दुश्मन के लिए ऐसा ही अंजाम चाहता है। 23 आफ्रत इसी लिए तुम पर आई कि तुमने बुतों के लिए बखूर जलाकर रब की न सुनी। न तुमने उस की शरीअत के मुताबिक ज़िदगी गुजारी, न उस की हिदायात और अहकाम पर अमल किया। आज तक मुल्क का यही हाल रहा है।”

24 फिर यरमियाह ने तमाम लोगों से औरतों समेत कहा, “ऐ मिसर में रहनेवाले यहदाह के तमाम हमवतनो, रब का कलाम सुनो! 25 रब्बूल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है कि तुम और तुम्हारी बीवियों ने इसराय किया है, ‘हम ज़रूर अपनी उन मन्तों को पूरा करेंगे जो हमने मानी हैं, हम ज़रूर आसमानी मलिका को बखूर और मै की नज़रें पेश करेंगे।’ और तुमने अपने अलफ्राज और अपनी हरकतों से साबित कर दिया है कि तुम संजीदगी से अपने इस एलान पर अमल करना चाहते हो। तो ठीक है, अपना वादा और अपनी मन्तें पूरी करो!

26 लेकिन ऐ मिसर में रहनेवाले तमाम हमवतनो, रब के कलाम पर ध्यान दो! रब फरमाता है कि मेरे अज़ीम नाम की कसम, आईदा मिसर में तुममें से कोई मेरा नाम लेकर कसम नहीं खाएगा, कोई नहीं कहेगा, ‘रब कादिरे-मुतलक की हयात की कसम!’ 27 क्योंकि मैं तुम्हारी निगरानी कर रहा हूँ, लेकिन तुम पर मेहरबानी करने के लिए नहीं बल्कि तुम्हें नुकसान पहुँचाने के लिए। मिसर में रहनेवाले यहदाह के तमाम लोग तलवार और काल की ज़द में आ जाएंगे और पिसते पिसते हलाक हो जाएंगे। 28 सिर्फ चंद एक दुश्मन की तलवार से बचकर मुल्के-यहदाह वापस आएंगे। तब यहदाह के जितने बचे हुए लोग मिसर में पनाह लेने के लिए आए हैं वह सब जान लेंगे कि किसकी बात दुस्त निकली है, मेरी या उन की। 29 रब फरमाता है कि मैं तुम्हें निशान भी देता हूँ ताकि तुम्हें यकीन हो जाए कि मैं तुम्हारे खिलाफ खाली बातें नहीं कर रहा बल्कि तुम्हें यकीनन मिसर में सजा दूँगा। 30 निशान यह होगा कि जिस तरह मैंने यहदाह के बादशाह सिदकियाह को उसके जानी दुश्मन नबकदनज़र के हवाले कर दिया उसी तरह मैं हफरा फिरौन को भी उसके जानी दुश्मनों के हवाले कर दूँगा। यह रब का फरमान है।”

## 45

### बास्क के लिए तसल्ली का पैगाम

1 यहदाह के बादशाह यहयकीम बिन यूसियाह की हुकूमत के चौथे साल में यरमियाह नबी को बास्क बिन नैरियाह के लिए रब का पैगाम मिला। उस वक्रत यरमियाह बास्क से वह तमाम बातें लिखवा रहा था जो उस पर नाज़िल हुई थीं। यरमियाह ने कहा, 2 “ऐ बास्क, रब इसराईल का खुदा तेरे बारे में फरमाता है 3 कि तू कहता है, ‘हाय, मुझ पर अफसोस! रब ने मेरे दर्द में इजाफा कर दिया है, अब मुझे रंजो-अलम भी सहना पड़ता है। मैं कराहते कराहते थक गया हूँ। कहीं भी आरामो-सुकून नहीं मिलता।’

4 ऐ बास्क, रब जवाब में फरमाता है कि जो कुछ मैंने खुद तामीर किया उसे मैं गिरा दूँगा, जो पौदा मैंने खुद लगाया उसे जड़ से उखाड़ दूँगा। पूरे मुल्क के साथ ऐसा ही सलूक करूँगा। 5 तो फिर तू अपने लिए क्यों बड़ी कामयाबी हासिल करने का आरजूमंद है? ऐसा खयाल छोड़ दे, क्योंकि मैं तमाम इनसानों पर आफ्रत ला रहा हूँ। यह रब का फरमान है। लेकिन जहाँ भी तू जाए वहाँ मैं होने दूँगा कि तेरी जान छूट जाए।” \*

## 46

### मिसर की शिकस्त की पेशगोई

1 यरमियाह पर मुख्तलिफ़ कौमों के बारे में भी पैगामात नाज़िल हुए। यह ज़ैल में दर्ज हैं।

2 पहला पैगाम मिसर के बारे में है। यहदाह के बादशाह यहयकीम बिन यूसियाह के चौथे साल में शाहे-बाबल नबूकदनज़र ने दरियाए-फ़ुरात पर वाके शहर करकिमीस के पास मिसरी फौज को शिकस्त दी थी। उन दिनों में मिसरी बादशाह निकोह फिरौन की फौज के बारे में रब का कलाम नाज़िल हुआ,

\* 45:5 लफ्ज़ी तरजुमा : मैं तुझे तेरी जान गनीमत के तौर पर बख्शा दूँगा।

3 “अपनी बड़ी और छोटी ढालें तैयार करके जंग के लिए निकलो! 4 घोड़ों को रथों में जोतो! दीगर घोड़ों पर सवार हो जाओ! खोद पहनकर खड़े हो जाओ! अपने नेजों को रौंगन से चमकाकर ज़िरा-बकतर पहन लो! 5 लेकिन मुझे क्या नजर आ रहा है? मिसरी फौजियों पर दहशत तारी हुई है। वह पीछे हट रहे हैं, उनके सूग्माओं ने हथियार डाल दिए हैं। वह भाग भागकर फरार हो रहे हैं और पीछे भी नहीं देखते। रब फरमाता है कि चारों तरफ दहशत ही दहशत फैल गई है। 6 किसी को भी बचने न दो, खाह वह कितनी तेजी से क्यों न भाग रहा हो या कितना जबरदस्त फौजी क्यों न हो। शिमाल में दरियाए-फुरात के किनारे ही वह ठोकर खाकर गिर गए हैं।

7 यह क्या है जो दरियाए-नील की तरह चढ़ रहा है, जो सैलाब बनकर सब कुछ गरक कर रहा है? 8 मिसर दरियाए-नील की तरह चढ़ रहा है, वही सैलाब बनकर सब कुछ गरक कर रहा है। वह कहता है, ‘मैं चढ़कर पूरी ज़मीन को गरक कर दूँगा। मैं शहरों को उनके बाशिंदों समेत तबाह करूँगा।’ 9 ऐ घोड़ो, दुश्मन पर टूट पड़ो! ऐ रथो, दीवानों की तरह दौड़ो! ऐ फौजियो, लड़ने के लिए निकलो! ऐ एथोपिया और लिबिया के सिपाहियो, अपनी ढालें पकड़कर चलो, ऐ लुदिया के तीर चलानेवालो, अपने कमान तानकर आगे बढ़ो!

10 लेकिन आज कादिरे-मुतलक, रब्बूल-अफवाज का ही दिन है। इतकाम के इस दिन वह अपने दुश्मनों से बदला लेगा। उस की तलवार उन्हें खा खाकर सेर हो जाएगी, और उनका खून पी पीकर उस की प्यास बुझेगी। क्योंकि शिमाल में दरियाए-फुरात के किनारे उन्हें कादिरे-मुतलक, रब्बूल-अफवाज को कुरबान किया जाएगा।

11 ऐ कुँवारी मिसर बेटी, मुल्के-जिलियाद में जाकर अपने जखमों के लिए बलसान खरीद ले। लेकिन क्या फायदा? खाह तू कितनी दवाई क्यों न इस्तेमाल करे तेरी चोटें भर ही नहीं सकती! 12 तेरी शरमिदगी की खबर दीगर अक्रवाम में फैल गई है, तेरी चीखें पूरी दुनिया में गूँज रही हैं। क्योंकि तेरे सूग्मे एक दूसरे से ठोकर खाकर गिर गए हैं।”

### शाहे-बाबल के मिसर में घुस आने की पेशगोई

13 जब शाहे-बाबल नबूकदनज़्जर मिसर पर हमला करने आया तो रब इसके बारे में यरमियाह से हमकलाम हुआ,

14 “मिसरी शहरों मिजदाल, मैफिस और तहफनहीस में एलान करो, ‘जंग की तैयारियाँ करके लड़ने के लिए खड़े हो जाओ! क्योंकि तलवार तुम्हारे आस-पास सब कुछ खा रही है।’

15 ऐ मिसर, तेरे सूग्माओं को खाक में क्यों मिलाया गया है? वह खड़े नहीं रह सकते, क्योंकि रब ने उन्हें दबा दिया है।

16 उसने मुतअदिद अफराद को ठोकर खाने दिया, और वह एक दूसरे पर गिर गए। उन्होंने कहा, ‘आओ, हम अपनी ही कौम और अपने वतन में वापस चले जाएँ जहाँ ज़ालिम की तलवार हम तक नहीं पहुँच सकती।’ 17 वहाँ वह पुकार उठे, ‘मिसर का बादशाह शोर तो बहुत मचाता है लेकिन इसके पीछे कुछ भी नहीं। जो सुनहरा मौका उसे मिला वह जाता रहा है।”

18 दुनिया का बादशाह जिसका नाम रब्बूल-अफवाज है फरमाता है, “मेरी हयात की कसम, जो तुम पर हमला करने आ रहा है वह दूसरों से उतना बड़ा है जितना तबूर दीगर पहाड़ों से और करमिल समुंद्र से ऊँचा है। 19 ऐ मिसर के बाशिंदो, अपना मालो-असबाब बाँधकर जिलावतन होने की तैयारियाँ करो। क्योंकि मैफिस मिसमार होकर नजरे-आतिश हो जाएगा। उसमें कोई नहीं रहेगा।

20 मिसर खबसूरत-सी जवान गाय है, लेकिन शिमाल से मोहलक मक्खी आकर उस पर धावा बोल रही है। हाँ, वह आ रही है। 21 मिसरी फौज के भाड़े के फौजी मोटे-ताजे बछड़े हैं, लेकिन वह भी मुडकर फरार हो जाएंगे। एक भी कायम नहीं रहेगा। क्योंकि आफ्रत का दिन उन पर आनेवाला है, वह वक़्त जब उन्हें पूरी सज़ा मिलेगी। 22 मिसर सौंप की तरह फुँकारते हुए पीछे हट जाएगा जब दुश्मन के फौजी पूरे जोर से उस पर हमला करेंगे, जब वह लकड़हारों की तरह अपनी कुल्हाड़ियों पकड़े हुए उस पर टूट पड़ेंगे।” 23 रब फरमाता है, “तब वह मिसर का जंगल काट डालेंगे, गो वह कितना घना क्यों न हो। क्योंकि उनकी तादाद टिड़ियों से ज्यादा होगी बल्कि वह अनगिनत होंगे। 24 मिसर बेटी की बेइज्जती की जाएगी, उसे शिमाली कौम के हवाले किया जाएगा।”

25 रब्बूल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है, “मैं थीबस शहर के देवता आमन, फिरौन और तमाम मिसर को उसके देवताओं और बादशाहों समेत सज़ा दूँगा। हाँ, मैं फिरौन और उस पर एतमाद रखनेवाले तमाम लोगों की अदालत करूँगा।” 26 रब फरमाता है, “मैं उन्हें उनके जानी दुश्मनों के हवाले कर दूँगा, और वह शाहे-बाबल नबूकदनज़्जर और उसके अफसरों के काबू में आ जाएंगे। लेकिन बाद में मिसर पहले की तरह दुबारा आबाद हो जाएगा।

27 जहाँ तक तेरा ताल्लुक है, ऐ याकूब मेरे खादिम, खौफ मत खा! ऐ इसराईल, होसला मत हार! देख, मैं तुझे दूर-दराज़ मुल्क से छुटकारा दूँगा। तेरी औलाद को मैं उस मुल्क से नजात दूँगा जहाँ उसे जिलावतन किया गया है। फिर याकूब वापस आकर आरामो-सुकून की ज़िंदगी गुजारेगा। कोई नहीं होगा जो उसे हैबतज़दा करे।” 28 रब फरमाता है, “ऐ याकूब मेरे खादिम, खौफ न खा, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। मैं उन तमाम कौमों को नेस्तो-नाबूद कर दूँगा जिनमें मैंने तुझे मुंतिशर कर दिया

है, लेकिन तुझे मैं इस तरह सफहाए-हस्ती से नहीं मिटाऊँगा। अलबत्ता मैं मुनासिब हद तक तेरी तंबीह करूँगा, क्योंकि मैं तुझे सजा दिए बगैर नहीं छोड़ सकता।”

## 47

फिलिस्तियों को सफहाए-हस्ती से मिटाया जाएगा

1 फ़िरौन के ग़ज्जा शहर पर हमला करने से पहले यरमियाह नबी पर फिलिस्तियों के बारे में रब का कलाम नाज़िल हुआ,

2 “रब फ़रमाता है कि शिमाल से पानी आ रहा है जो सैलाब बनकर पूरे मुल्क को गरक कर देगा। पूरा मुल्क शहरों और बाशिदों समेत उसमें डूब जाएगा। लोग चीख उठेंगे, और मुल्क के तमाम बाशिदे आहो-जारी करेंगे।<sup>3</sup> क्योंकि सरपट दौड़ते हुए घोड़ों की टाँपें सुनाई देंगी, दुश्मन के रथों का शोर और पहियों की गडगडाहट उनके कानों तक पहुँचेगी। बाप खौफज़दा होकर यों साकित हो जाएंगे कि वह अपने बच्चों की मदद करने के लिए पीछे भी देख नहीं सकेगा।<sup>4</sup> क्योंकि वह दिन आनेवाला है जब तमाम फिलिस्तियों को नेस्तो-नाबूद किया जाएगा ताकि सूर और सैदा के आखिरी मदद करनेवाले भी खत्म हो जाएँ। क्योंकि रब फिलिस्तियों को सफहाए-हस्ती से मिटानेवाला है, जज़ीराए-क्रेते के उन बचे हुएों को जो यहाँ आकर आबाद हुए हैं।

5 ग़ज्जा बेटी मातम के आलम में अपना सर मुँडवाएगी, अस्कलून शहर मिसमार हो जाएगा। ऐ मैदानी इलाके के बचे हुए लोगो, तुम कब तक अपनी जिल्द को ज़खमी करते रहोगे? <sup>6</sup> हाय, ऐ रब की तलवार, क्या तू कभी नहीं आराम करेगी? दुबारा अपने मियान में छुप जा! ख़ामोश होकर आराम कर! <sup>7</sup> लेकिन वह किस तरह आराम कर सकती है जब रब ने खुद उसे चलाया है, जब उसी ने उसे अस्कलून और साहिली इलाके पर धावा बोलने का हुक्म दिया है?”

## 48

मोआब के अंजाम की पेशगोई

1 मोआब के बारे में रब्बूल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है,

“नबू शहर पर अफसोस, क्योंकि वह तबाह हो गया है। दुश्मन ने किरियतयम की बेहरमती करके उस पर कब्ज़ा कर लिया है। चटान के किले की र्सवाई हो गई, वह पाश पाश हो गया है।<sup>2</sup> अब से कोई मोआब की तरीफ नहीं करेगा। हसबोन में आदमी उस की शिकस्त की साज़िश करके कह रहे हैं, आओ, हम मोआबी कौम को नेस्तो-नाबूद करें। ‘ऐ मदमीन, तू भी तबाह हो जाएगा, तलवार तेरे भी पीछे पड़ जाएगी।’

3 सुनो! होरोनायम से चीखें बुलंद हो रही हैं। तबाही और बड़ी शिकस्त का शोर मच रहा है।<sup>4</sup> मोआब चूर चूर हो गया है, उसके बच्चे ज़ोर से चिल्ला रहे हैं।<sup>5</sup> लोग रोते रोते लूहीत की तरफ चढ़ रहे हैं। होरोनायम की तरफ उतरते रास्ते पर शिकस्त की आहो-जारी सुनाई दे रही है।<sup>6</sup> भागकर अपनी जान बचाओ! रेगिस्तान में झाड़ी की मानिंद बन जाओ।

7 चूँकि तुम मोआबियों ने अपनी कामयाबियों और दौलत पर भरोसा रखा, इसलिए तुम भी कैद में जाओगे। तुम्हारा देवता क़मोस भी अपने पुजारियों और बुजुर्गों समेत जिलावतन हो जाएगा।<sup>8</sup> तबाह करनेवाला हर शहर पर हमला करेगा, एक भी नहीं बचेगा। जिस तरह रब ने फरमाया है, वादी भी तबाह हो जाएगी और मैदाने-मुरतफा भी।<sup>9</sup> मोआब पर नमक डाल दो, क्योंकि वह मिसमार हो जाएगा। उसके शहर वीरानो-सुनसान हो जाएंगे, और उनमें कोई नहीं बसेगा।

10 उस पर लानत जो सुस्ती से रब का काम करे! उस पर लानत जो अपनी तलवार को खून बहाने से रोक ले! <sup>11</sup> अपनी जवानी से लेकर आज तक मोआब आरामो-सुकून की ज़िंदगी गुज़ारता आया है, उस मै की मानिंद जो कभी नहीं छेड़ी गई और कभी एक बरतन से दूसरे में उंडेली नहीं गई। इसलिए उसका मज़ा कायम और ज़ायका बेहतरीन रहा है।” <sup>12</sup> लेकिन रब फ़रमाता है, “वह दिन आनेवाला है जब मैं ऐसे आदमियों को उसके पास भेजूँगा जो मैं को बरतनों से निकालकर जाया कर दूँगे, और बरतनों को खाली करने के बाद पाश पाश कर दूँगे। <sup>13</sup> तब मोआब को अपने देवता क़मोस पर यों शर्म आएगी जिस तरह इसराईल को बैतेल के उस फुट पर शर्म आई जिस पर वह भरोसा रखता था।

14 हाय, तुम अपने आप पर कितना फ़ख़र करते हो कि हम सूरमे और ज़बरदस्त जंगजू हैं। <sup>15</sup> लेकिन दुनिया का बादशाह जिसका नाम रब्बूल-अफवाज है फरमाता है कि मोआब तबाह हो जाएगा, और दुश्मन उसके शहरों में घुस आएगा। उसके बेहतरीन जवान कल्लो-ग़ारत की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे।

मोआब की ताकत टूट गई है

16 मोआब का अंजाम करीब ही है, आफत उस पर नाज़िल होनेवाली है। 17 ऐ पड़ोस में बसनेवालो, उस पर मातम करो! जितने उस की शोहरत जानते हो आहो-जारी करो। बोलो, 'हाय, मोआब का जोरदार असाए-शाही टूट गया है, उस की शानो-शौकत की अलामत खाक में मिलाई गई है।'

18 ऐ दीबोन बेटी, अपने शानदार तख्त पर से उतरकर प्यासी ज़मीन पर बैठ जा। क्योंकि मोआब को तबाह करनेवाला तेरे खिलाफ भी चढ़ आया, वह तेरे किलाबंद शहरों को भी मिसमार करेगा। 19 ऐ अरोइर की रहनेवाली, सड़क के किनारे खड़ी होकर गुजरनेवालों पर गौर कर! अपनी जान बचानेवालों से पूछ ले कि क्या हुआ है। 20 तब तुझे जवाब मिलेगा, 'मोआब स्रवा हुआ है, वह पाश पाश हो गया है। बुलंद आवाज़ से वावैला करो! दरियाए-अरनोन के किनारे एलान करो कि मोआब खत्म है।'

21 मैदाने-मुरतफा पर अल्लाह की अदालत नाज़िल हुई है। हौलन, यहज़, मिफात, 22 दीबोन, नबू, बैत-दिबलातायम, 23 किरियतायम, बैत-जमूल, बैत-मऊन, 24 करियोत और बूसरा, गरज़ मोआब के तमाम शहरों की अदालत हुई है, खाह वह दूर हों या करीब।"

25 रब फरमाता है, "मोआब की ताकत टूट गई है, उसका बाजू पाश पाश हो गया है। 26 उसे मैं पिला पिलाकर मतवाला करो, वह अपनी कै में लोट-पोट होकर सबके लिए मज़ाक का निशाना बन जाए। क्योंकि वह मगस्स होकर रब के खिलाफ खड़ा हो गया है।

27 तुम मोआबियों ने इसराइल को अपने मज़ाक का निशाना बनाया था। तुम यों उसे गालियाँ देते रहे जैसे उसे चोरी करते वक़्त पकड़ा गया हो। 28 लेकिन अब तुम्हारी बारी आ गई है। अपने शहरों को छोड़कर चटानों में जा बसो! कब्रतर बनकर चटानों की दराडों में अपने घोंसले बनाओ।

29 हमने मोआब के तकब्बुर के बारे में सुना है, क्योंकि वह हद से ज़्यादा मुतकब्बिर, मगस्स, घमंडी, खुदपसंद और अनापरस्त है।"

30 रब फरमाता है, "मैं उसके तकब्बुर से वाकिफ हूँ। लेकिन उस की डीगें अबस हैं, उनके पीछे कुछ नहीं है। 31 इसलिए मैं मोआब पर आहो-जारी कर रहा, तमाम मोआब के सबब से चिल्ला रहा हूँ। कीर-हरासत के बाशियों का अंजाम देखकर मैं आहें भर रहा हूँ। 32 ऐ सिबमाह की अंगूर की बेल, याज़ेर की निसबत मैं कहीं ज़्यादा तुझ पर मातम कर रहा हूँ। तेरी कोंपलें याज़ेर तक फैली हुई थी बल्कि समुंदर को पार भी करती थी। लेकिन अब तबाह करनेवाला दुश्मन तेरे पके हुए अंगूरों और मौसमे-गरमा के फल पर टूट पड़ा है। 33 अब खुशीओ-शादमानी मोआब के बागों और खेतों से जाती रही है। मैंने अंगूर का रस निकालने का काम रोक दिया है। कोई खुशी के नारे लगा लगाकर अंगूर को पाँवों तले नहीं रौदता। शोर तो मच रहा है, लेकिन खुशी के नारे बुलंद नहीं हो रहे बल्कि जंग के।

34 हसबोन में लोग मदद के लिए पुकार रहे हैं, उनकी आवाज़ इलियाली और यहज़ तक सुनाई दे रही है। इसी तरह ज़गर की चीखें होरोनायम और इजलत-शलीशियाह तक पहुँच गई हैं। क्योंकि निमरीम का पानी भी खुश्क हो जाएगा।" 35 रब फरमाता है, "मोआब में जो ऊँची जगहों पर चढ़कर अपने देवताओं को बखूर और बाकी कुरबानियाँ पेश करते हैं उनका मैं खातमा कर दूँगा।

36 इसलिए मेरा दिल बाँसरी के मातमी सूर निकालकर मोआब और कीर-हरासत के लिए नोहा कर रहा है। क्योंकि उनकी हासिलशुदा दौलत जाती रही है। 37 हर सर गंजा, हर दाढी मुँडवाई गई है। हर हाथ की जिल्द को ज़खमी कर दिया गया है, हर कमर टाट से मुलम्बस है। 38 मोआब की तमाम छतों पर और उसके चौकों में आहो-जारी बुलंद हो रही है।"

क्योंकि रब फरमाता है, "मैंने मोआब को बेकार मिट्टी के बरतन की तरह तोड़ डाला है। 39 हाय, मोआब पाश पाश हो गया है! लोग ज़ारो-कतार रो रहे हैं, और मोआब ने शर्म के मारे अपना मुँह ढाँप लिया है। वह मज़ाक का निशाना बन गया है, उसे देखकर तमाम पड़ोसियों के रोंगटे खड़े हो गए हैं।"

मोआब रब के खिलाफ उठ खड़ा हुआ है

40 रब फरमाता है, "वह देखो! दुश्मन उकाब की तरह मोआब पर झपट्टा मारता है। अपने परो को फैलाकर वह पूरे मुल्क पर साया डालता है। 41 करियोत किलों समेत उसके कब्जे में आ गया है। उस दिन मोआबी सूरमाओं का दिल दर्द-जह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाएगा। 42 क्योंकि मोआबी कौम सफहाए-हस्ती से मिट जाएगी, इसलिए कि वह मगस्स होकर रब के खिलाफ खड़ी हो गई है।

43 ऐ मोआबी कौम, दहशत, गढा और फंदा तेरे नसीब में हैं।" 44 क्योंकि रब फरमाता है, "जो दहशत से भागकर बच जाए वह गढ़े में गिर जाएगा, और जो गढ़े से निकल जाए वह फंदे में फँस जाएगा। क्योंकि मैं मोआब पर उस की अदालत का साल लाऊँगा।



45 पनाहगुजीन थकेहारे हसबोन के साथे में स्क जाते हैं। लेकिन अफसोस, हसबोन से आग निकल आई है और सीहोन बादशाह के शहर में से शोला भडक उठा है जो मोआब की पेशानी को और शोर मचानेवालों के चाँदों को नजरे-आतिश करेगा। 46 ऐ मोआब, तुझ पर अफसोस! कमोस देवता के परस्तार नेस्तो-नाबूद हैं, तेरे बेटे-बेटियाँ कैदी बनकर जिलावतन हो गए हैं।

47 लेकिन आनेवाले दिनों में मैं मोआब को बहाल करूँगा।” यह रब का फरमान है।

यहाँ मोआब पर अदालत का फैसला इखिताम पर पहुँच गया है।

## 49

### अम्मोनियों की अदालत

1 अम्मोनियों के बारे में रब फरमाता है,

“क्या इसराईल की कोई औलाद नहीं, कोई वारिस नहीं जो जद के कबायली इलाके में रह सके? मलिक देवता के परस्तारों ने उस पर क्यों कब्जा किया है? क्या वजह है कि यह लोग जद के शहरों में आबाद हो गए हैं?” 2 चुनौचे रब फरमाता है, “वह वक्त आनेवाला है कि मेरे हुकम पर अम्मोनी दास्ल-हुकमत रब्बा के खिलाफ जंग के नारे लगाए जाएंगे। तब वह मलबे का ढेर बन जाएगा, और गिर्दो-नवाह की आबादियाँ नजरे-आतिश हो जाएँगी। तब इसराईल उन्हें मुल्क-बदर करेगा जिन्होंने उसे मुल्क-बदर किया था।” यह रब का फरमान है।

3 “ऐ हसबोन, वावैला कर, क्योंकि अई शहर बरबाद हुआ है। ऐ रब्बा की बेटियों, मदद के लिए चिल्लाओ! टाट ओढकर मातम करो! फसील के अंदर बेचैनी से इधर उधर फिरो! क्योंकि मलिक देवता अपने पुजारियों और बुजुर्गों समेत जिलावतन हो जाएगा। 4 ऐ बेवफा बेटे, तू अपनी जरखेज वादियों पर इतना फ़खर क्यों करती है? तू अपने मालो-दौलत पर भरोसा करके शेखी मारती है कि अब मुझ पर कोई हमला नहीं करेगा।” 5 कादिर-मुतलक रब्बुल-अफवाज फरमाता है, “मैं तमाम पडोसियों की तरफ से तुझ पर दहशत छा जाने दूँगा। तुम सबको चारों तरफ मुंतिशर कर दिया जाएगा, और तेरे पनाहगुजीनों को कोई जमा नहीं करेगा।

6 लेकिन बाद में मैं अम्मोनियों को बहाल करूँगा।” यह रब का फरमान है।

### अदोम की अदालत

7 रब्बुल-अफवाज अदोम के बारे में फरमाता है, “क्या तेमान में हिकमत का नामो-निशान नहीं रहा? क्या दानिशमंद सहीह मशवरा नहीं दे सकते? क्या उनकी दानाई बेकार हो गई है?”

8 ऐ दूदान के बाशिंदो, भागकर हिजरत करो, जमीन के अंदर छुप जाओ। क्योंकि मैं एसौ की औलाद पर आफत नाज़िल करता हूँ, मेरी सजा का दिन करीब आ गया है। 9 ऐ अदोम, अगर तू अंगूर का बाग होता और मज़दूर फसल चुनने के लिए आते तो थोड़ा-बहुत उनके पीछे रह जाता। अगर डाकू रात के वक्त तुझे लूट लेते तो वह सिर्फ उतना ही छीन लेते जितना उठाकर ले जा सकते हैं। लेकिन तेरा अंजाम इससे कहीं ज्यादा बुरा होगा। 10 क्योंकि मैंने एसौ को गंगा करके उस की तमाम छुपने की जगहें ढूँड निकाली हैं। वह कहीं भी छुप नहीं सकेगा। उस की औलाद, भाई और हमसारे हलाक हो जाएंगे, एक भी बाकी नहीं रहेगा। 11 अपने यतीमों को पीछे छोड़ दे, क्योंकि मैं उनकी जान को बचाए रखूँगा। तुम्हारी बेवाएँ भी मुझ पर भरोसा रखें।”

12 रब फरमाता है, “जिन्हें मेरे गज़ब का प्याला पीने का फैसला नहीं सुनाया गया था उन्हें भी पीना पड़ा। तो फिर तेरी जान किस तरह बचेगी? नहीं, तू यकीनन सजा का प्याला पी लेगा।” 13 रब फरमाता है, “मेरे नाम की कसम, बुरसा शहर गिर्दो-नवाह के तमाम शहरों समेत अबदी खंडरात बन जाएगा। उसे देखकर लोगों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह उसे लान-तान करेंगे। लानत करनेवाला अपने दुश्मन के लिए बुरसा ही का-सा अंजाम चाहेगा।”

14 मैंने रब की तरफ से पैगाम सुना है, “एक कासिद को अक़वाम के पास भेजा गया है जो उन्हें हुकम दे, ‘जमा होकर अदोम पर हमला करने के लिए निकलो! उससे लड़ने के लिए उठो!’”

15 अब मैं तुझे छोटा बना दूँगा, एक ऐसी कौम जिसे दीगर लोग हक़ीर जानेंगे। 16 माज़ी में दूसरे तुझसे दहशत खाते थे, लेकिन इस बात ने और तेरे गुस्से ने तुझे फरेब दिया है। बेशक तू चटानों की दराडों में बसेरा करता है, और पहाड़ी बुलंदियों तेरे कब्जे में हैं। लेकिन ख़ाह तू अपना घोंसला उकाब की-सी ऊँची जगहों पर क्यों न बनाए तो भी मैं तुझे वहाँ से उतारकर खाक में मिला दूँगा।” यह रब का फरमान है।

17 “मुल्के-अदोम यों बरबाद हो जाएगा कि वहाँ से गुज़रनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। उसके ज़खमों को देखकर वह ‘तौबा तौबा’ कहेंगे।” 18 रब फरमाता है, “उसका अंजाम सदम, अमरा और उनके पडोसी शहरों की मानिंद होगा जिन्हें अल्लाह ने उलटाकर नेस्तो-नाबूद कर दिया। वहाँ कोई नहीं बसेगा। 19 जिस तरह शेरबबर यरदन के जंगल से निकलकर शादाब चरागाहों में चरनेवाली भेड़-बकरियों पर टूट पड़ता है उसी तरह मैं अचानक अदोम पर हमला करके उसे उसके अपने

मुल्क से भागा दूँगा। तब वह जिसे मैंने मुकर्र किया है अदोम पर हुक्मत करेगा। क्योंकि कौन मेरी मानिद है? कौन मुझसे जवाब तलब कर सकता है? कौन-सा गल्लाबान मेरा मुकाबला कर सकता है?”

20 चुनौचे अदोम पर रब का फैसला सुनो! तेमान के बाशिंदों के लिए उसके मनसबे पर ध्यान दो! दुश्मन पुरे रेवड को सबसे नन्हे बच्चों से लेकर बड़ों तक घसीटकर ले जाएगा। उस की चरागाह वीरानो-सुनसान हो जाएगी। 21 अदोम इतने धडाम से गिर जाएगा कि ज़मीन थरथरा उठेगी। लोगों की चीखें बहरे-कुलजुम तक सुनाई देंगी। 22 वह देखो! दुश्मन उकाब की तरह उडकर अदोम पर झपट्टा मारता है। वह अपने परो को फैलाकर बसरा पर साया डालता है। उस दिन अदोमी सूम्माओं का दिल दर्द-ज़ह में मुन्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाएगा।

### दमिशक की अदालत

23 रब दमिशक के बारे में फरमाता है,

“हमात और अरफ़ाद शरमिदा हो गए हैं। बुरी खबरे सुनकर वह हिम्मत हार गए हैं। परेशानी ने उन्हें उस मुतलातिम समुंदर जैसा बेचैन कर दिया है जो थम नहीं सकता। 24 दमिशक हिम्मत हारकर भागने के लिए मुड गया है। दहशत उस पर छा गई है, और वह दर्द-ज़ह में मुन्तला औरत की तरह तडप रहा है।

25 हाय, दमिशक को तर्क किया गया है! जिस मशहर शहर से मेरा दिल लुफ़अंदोज़ होता था वह वीरानो-सुनसान है।”

26 रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है, “उस दिन उसके जवान आदमी गलियों में गिरकर रह जाएंगे, उसके तमाम फ़ौजी हलाक हो जाएंगे। 27 मैं दमिशक की फ़सील को आग लगा दूँगा जो फैलते फैलते बिन-हदद बादशाह के महलों को भी अपनी लपेट में ले लेगी।”

### बदू कबीलों की अदालत

28 ज़ैल में कीदार और हसूर के बदू कबीलों के बारे में कलाम दर्ज है। बाद में शाहे-बाबल नबूकदनज़्जर ने उन्हें शिकस्त दी। रब फरमाता है,

“उठो! कीदार पर हमला करो! मशरिक में बसनेवाले बदू कबीलों को तबाह करो! 29 तुम उनके ख़ैमों, भेड-बकरियों और ऊँटों को छीन लो, उनके ख़ैमों के परदों और बाक़ी सामान को लूट लो। चीखें सुनाई देंगी, ‘हाय, चारों तरफ़ दहशत ही दहशत!’”

30 रब फरमाता है, “ऐ हसूर मैं बसनेवाले कबीलो, जल्दी से भाग जाओ, ज़मीन की दराडों में छुप जाओ! क्योंकि शाहे-बाबल ने तुम पर हमला करने का फैसला करके तुम्हारे खिलाफ़ मनसूबा बाँध लिया है।” 31 रब फरमाता है, “ऐ बाबल के फ़ौज़ियो, उठकर उस क़ौम पर हमला करो जो अलहदगी में पुरसुकून और महफूज़ जिंदगी गुज़ारती है, जिसके न दरवाज़े, न कुंडे हैं। 32 उनके ऊँट और बड़े बड़े रेवड लूट का माल बन जाएंगे। क्योंकि मैं रेगिस्तान के किनारे पर रहनेवाले इन कबीलों को चारों तरफ़ मुंतिशर कर दूँगा। उन पर चारों तरफ़ से आफ़त आएगी।” यह रब का फरमान है। 33 “हसूर हमेशा तक वीरानो-सुनसान रहेगा, उसमें कोई नहीं बसेगा। गीदड ही उसमें अपने घर बना लेंगे।”

### मुल्के-ऐलाम की अदालत

34 शाहे-यहदाह सिदाक़ियाह की हुक्मत के इब्तिदाई दिनों में रब यरमियाह नबी से हमकलाम हुआ। पैगाम ऐलाम के मुताल्लिक था।

35 “रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है, ‘मैं ऐलाम की कमान को तोड डालता हूँ, उस हथियार को जिस पर ऐलाम की ताकत मबनी है। 36 आसमान की चारों सिम्तों से मैं ऐलामियों के खिलाफ़ तेज़ हवाएँ चलाऊँगा जो उन्हें उडाकर चारों तरफ़ मुंतिशर कर दूँगी। कोई ऐसा मुल्क नहीं होगा जिस तक ऐलामी ज़िलावतन नहीं पहुँचे।’ 37 रब फरमाता है, ‘मैं ऐलाम को उसके जानी दुश्मनों के सामने पाश पाश कर दूँगा। मैं उन पर आफ़त लाऊँगा, मेरा सख़्त क़हर उन पर नाज़िल होगा। जब तक वह नेस्त न हों मैं तलवार को उनके पीछे चलाता रहूँगा। 38 तब मैं ऐलाम में अपना तख़्त खड्डा करके उसके बादशाह और बुजुर्गों को तबाह कर दूँगा।’ यह रब का फरमान है।

39 लेकिन रब यह भी फरमाता है, ‘आनेवाले दिनों में मैं ऐलाम को बहाल करूँगा।’”

## 50

### बाबल की अदालत

1 मुल्के-बाबल और उसके दासल-हुक्मत बाबल के बारे में रब का कलाम यरमियाह नबी पर नाज़िल हुआ,

2 “अकवाम के सामने एलान करो, हर जगह इतला दो! झंडा गाड़कर कुछ न छुपाओ बल्कि सबको साफ बताओ, ‘बाबल शहर दुश्मन के कब्जे में आ गया है! बेल देवता की बेहुरमती हुई है, मर्दक देवता पाश पाश हो गया है। बाबल के तमाम देवताओं की बेहुरमती हुई है, तमाम बुत चकनाचूर हो गए हैं।’ 3 क्योंकि शिमाल से एक कौम बाबल पर चढ़ आई है जो पूरे मुल्क को बरबाद कर देगी। इनसान और हैवान सब हिजरत कर जाएंगे, मुल्क में कोई नहीं रहेगा।”

4 रब फरमाता है, “जब यह वक्त आएगा तो इसराईल और यहदाह के लोग मिलकर अपने वतन में वापस आएंगे। तब वह रोते हुए रब अपने खुदा को तलाश करने आएंगे। 5 वह सिय्यून का रास्ता पृष्ठ पृष्ठकर अपना सूत्र उस तरफ कर लेंगे और कहेंगे, ‘आओ, हम रब के साथ लिपट जाएँ, हम उसके साथ अबदी अहद बाँध लें जो कभी न भुलाया जाए।’ 6 मेरी कौम की हालत गुमशुदा भेड़-बकरियों की मानिंद थी। क्योंकि उनके गल्लाबानों ने उन्हें गलत राह पर लाकर फरेबदेह पहाड़ों पर आबारा फिरने दिया था। यों पहाड़ों पर इधर उधर घूमते घूमते वह अपनी आरामगाह भूल गए थे। 7 जो भी उनको पाते वह उन्हें पकड़कर खा जाते थे। उनके मुखालिफ कहते थे, ‘इसमें हमारा क्या कुसूर है? उन्होंने तो रब का गुनाह किया है, गो वह उनकी हकीकी चरागाह है और उनके बापदादा उस पर उम्मीद रखते थे।’

**बाबल से हिजरत करो!**

8 ऐ मेरी कौम, मुल्के-बाबल और उसके दास्त-हुकमत से भाग निकलो! उन बकरों की मानिंद बन जाओ जो रेवड की राहनुमाई करते हैं। 9 क्योंकि मैं शिमाली मुल्क में बड़ी कौमों के इतहाद को बाबल पर हमला करने पर उभासूँगा, जो उसके खिलाफ सफ़आरा होकर उस पर कब्ज़ा करेगा। दुश्मन के तीरअंदाज़ इतने माहिर होंगे कि हर तीर निशाने पर लग जाएगा।”

10 रब फरमाता है, “बाबल को यों लूट लिया जाएगा कि तमाम लूटनेवाले सेर हो जाएंगे।

11 ऐ मेरे मौसूसी हिस्से को लूटनेवालो, बेशक तुम इस वक्त शादियाना बजाकर खुशी मनाते हो। बेशक तुम गाहते हुए बछड़ों की तरह उछलते-कूदते और घोड़ों की तरह हिनहिनाते हो। 12 लेकिन आइंदा तुम्हारी माँ बेहद शरमिंदा हो जाएगी, जिसने तुम्हें जन्म दिया वह रसवा हो जाएगी। आइंदा बाबल सबसे जलील कौम होगी, वह खुश्क और वीरान रेगिस्तान ही होगी। 13 जब रब का गज़ब उन पर नाज़िल होगा तो वहाँ कोई आबाद नहीं रहेगा बल्कि मुल्क सरासर वीरानो-सुनसान रहेगा। बाबल से गुज़रनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, उसके ज़खमों को देखकर सब ‘तौबा तौबा’ कहेंगे।

14 ऐ तीरअंदाज़ो, बाबल शहर को घेरकर उस पर तीर बरसाओ! तमाम तीर इस्तेमाल करो, एक भी बाक़ी न रहे, क्योंकि उसने रब का गुनाह किया है। 15 चारों तरफ उसके खिलाफ जंग के नारे लगाओ! देखो, उसने हथियार डाल दिए हैं। उसके बुर्ज गिर गए, उस की दीवारों मिसमार हो गई हैं। रब इतकाम ले रहा है, चुनौचे बाबल से खूब बदला लो। जो सुलूक उसने दूसरों के साथ किया, वही उसके साथ करो। 16 बाबल में जो बीज बोते और फसल के वक्त दरौती चलाते हैं उन्हें रूए-ज़मीन पर से मिटा दो। उस वक्त शहर के परदेसी मोहलक तलवार से भागकर अपने अपने वतन में वापस चले जाएंगे।

17 इसराईली कौम शेरबबरों के हमले से बिखरे हुए रेवड की मानिंद है। क्योंकि पहले शाहे-असूर ने आकर उसे हड़प कर लिया, फिर शाहे-बाबल नबूकदनज़र ने उस की हड्डियों को चबा लिया।” 18 इसलिए रब्बूल-अफवाज जो इसराईल का खुदा है फरमाता है, “पहले मैंने शाहे-असूर को सज़ा दी, और अब मैं शाहे-बाबल को उसके मुल्क समेत वही सज़ा दूँगा।

19 लेकिन इसराईल को मैं उस की अपनी चरागाह में वापस लाऊँगा, और वह दुबारा करमिल और बसन की ढलानों पर चरेगा, वह दुबारा इफ़राईम और जिलियाद के पहाड़ी इलाकों में सेर हो जाएगा।” 20 रब फरमाता है, “उन दिनों में जो इसराईल का कुसूर ढूँड निकालने की कोशिश करे उसे कुछ नहीं मिलेगा। यही यहदाह की हालत भी होगी। उसके गुनाह पाए नहीं जाएंगे, क्योंकि जिन लोगों को मैं जिंदा छोड़ूँगा उन्हें मैं मुआफ़ कर दूँगा।”

**अल्लाह अपने घर का बदला लेता है**

21 रब फरमाता है, “मुल्के-मरातायम और फिकोद के बाशिंदों पर हमला करो! उन्हें मारते मारते सफ़हाए-हस्ती से मिटा दो! जो भी हुक्म मैंने दिया उस पर अमल करो।

22 मुल्के-बाबल में जंग का शोर-शराबा सुनो! बाबल की हौलनाक शिकस्त देखो! 23 जो पहले तमाम दुनिया का हथोडा था उसे तोड़कर टुकड़े टुकड़े कर दिया गया है। बाबल को देखकर लोगों को सख्त धक्का लगता है।

24 ऐ बाबल, मैंने तेरे लिए फंदा लगा दिया, और तुझे पता न चला बल्कि तू उसमें फँस गया। चूँकि तूने रब का मुकाबला किया इसी लिए तेरा खोज लगाया गया और तुझे पकड़ा गया।” 25 कादिरे-मुतलक जो रब्बूल-अफवाज है फरमाता है, “मैं अपना असलिहाखाना खोलकर अपना गज़ब नाज़िल करने के हथियार निकाल लाया हूँ, क्योंकि मुल्के-बाबल में उनकी अशड़ ज़रूरत है।

26 चारों तरफ से बाबल पर चढ़ आओ! उसके अनाज के गोदामों को खोलकर सारे माल का ढेर लगाओ! फिर सब कुछ नेस्तो-नाबूद करो, कुछ बचा न रहे। 27 उसके तमाम बैलों को ज़बह करो! सब कसाई की ज़द में आएँ! उन पर अफ़सोस, क्योंकि उनका मुक़र्रर दिन, उनकी सज़ा का वक़्त आ गया है।

28 सुनो! मुल्के-बाबल से बचे हुए पनाहगुज़ीन सिय्यून में बता रहे हैं कि रब हमारे ख़ुदा ने किस तरह इंतकाम लिया। क्योंकि अब उसने अपने घर का बदला लिया है!

29 तमाम तीरअंदाज़ों को बुलाओ ताकि बाबल पर हमला करें! उसे घेर लो ताकि कोई न बचे। उसे उस की हरकतों का मुनासिब अज़्र दो! जो बुरा सुलूक उसने दूसरों के साथ किया वही उसके साथ करो। क्योंकि उसका रवैया रब, इसराईल के कुदूस के साथ गुस्ताखाना था। 30 इसलिए उसके नौजवान गलियों में गिरकर मर जाएंगे, उसके तमाम फ़ौजी उस दिन हलाक हो जाएंगे।” यह रब का फरमान है।

31 कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है, “ए गुस्ताख़ शहर, मैं तुझसे निपटनेवाला हूँ। क्योंकि वह दिन आ गया है जब तुझे सज़ा मिलनी है। 32 तब गुस्ताख़ शहर ठोकर खाकर गिर जाएगा, और कोई उसे दुबारा खड़ा नहीं करेगा। मैं उसके तमाम शहरों में आग लगा दूँगा जो गिर्दो-नवाह में सब कुछ राख कर देगी।”

### रब अपनी कौम को रिहा करवाता है

33 रब्बुल-अफ़वाज फरमाता है, “इसराईल और यहूदाह के लोगों पर ज़ुल्म हुआ है। जिन्होंने उन्हें असीर करके जिलावतन किया है वह उन्हें रिहा नहीं करना चाहते, उन्हें जाने नहीं देते। 34 लेकिन उनका छुड़ानेवाला कर्वी है, उसका नाम रब्बुल-अफ़वाज है। वह ख़ूब लड़कर उनका मामला दुस्त करेगा ताकि मुल्क को आरामो-सुकून मिल जाए। लेकिन बाबल के बाशिंदों को वह थरथराने देगा।”

35 रब फरमाता है, “तलवार बाबल की कौम पर टूट पड़े! वह बाबल के बाशिंदों, उसके बुजुर्गों और दानिशमंदों पर टूट पड़े! 36 तलवार उसके झूठे नबियों पर टूट पड़े ताकि बेवकूफ़ साबित हों। तलवार उसके सूरमाओं पर टूट पड़े ताकि उन पर दहशत छा जाए। 37 तलवार बाबल के घोड़ों, रथों और परदेसी फ़ौजियों पर टूट पड़े ताकि वह औरतों की मानिद बन जाएँ। तलवार उसके खज़ानों पर टूट पड़े ताकि वह छीन लिए जाएँ। 38 तलवार उसके पानी के ज़ख़ीरों पर टूट पड़े ताकि वह ख़ुशक हो जाएँ। क्योंकि मुल्के-बाबल बुतों से भरा हुआ है, ऐसे बुतों से जिनके बाइस लोग दीवानों की तरह फिरते हैं। 39 आखिर में गलियों में सिर्फ़ रेगिस्तान के जानवर और जंगली कुत्ते फिरेंगे, वहाँ उकाबी उल्लू बसेंगे। वह हमेशा तक इनसान की बस्तियों से महरूम और नसल-दर-नसल ग़ैरआबाद रहेगा।” 40 रब फरमाता है, “उस की हालत सदम और अमुरा की-सी होगी जिन्हें मैंने पड़ोस के शहरों समेत उलटाकर सफ़हाए-हस्ती से मिटा दिया। आइंदा वहाँ कोई नहीं बसेगा, कोई नहीं आबाद होगा।” यह रब का फरमान है।

### शिमाल से दुश्मन आ रहा है

41 “देखो, शिमाल से फ़ौज आ रही है, एक बड़ी कौम और मुतअदिद बादशाह दुनिया की इतहा से रवाना हुए हैं। 42 उसके जालिम और बेरहम फ़ौजी कमान और शमशेर से लैस हैं। जब वह अपने घोड़ों पर सवार होकर चलते हैं तो गरजते समुंदर का-सा शोर बरपा होता है। ऐ बाबल बेटी, वह सब जंग के लिए तैयार होकर तुझसे लड़ने आ रहे हैं। 43 उनकी ख़बर सुनते ही शहे-बाबल हिम्मत हार गया है। ख़ौफ़ज़दा होकर वह दर्द-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह तड़पने लगा है।

44 जिस तरह शेरबबर यरदन के जंगलों से निकलकर शादाब चरागाहों में चरनेवाली भेड़ों पर टूट पड़ता है उसी तरह मैं बाबल को एकदम उसके मुल्क से भगा दूँगा। फिर मैं अपने चुने हुए आदमी को बाबल पर मुक़र्रर करूँगा। क्योंकि कौन मेरे बराबर है? कौन मुझसे जवाब तलब कर सकता है? वह गल्लाबान कहाँ है जो मेरा मुकाबला कर सके?” 45 चुनोंचे बाबल पर रब का फैसला सुनो, मुल्के-बाबल के लिए उसके मनसूबे पर ध्यान दो! “दुश्मन पूरे रेवड को सबसे नन्हे बच्चों से लेकर बड़ों तक घसीटकर ले जाएगा। उस की चरागाह वीरानो-सुनसान हो जाएगी।

46 ज्योंही नारा बुलंद होगा कि बाबल दुश्मन के कब्ज़े में आ गया है तो ज़मीन लरज़ उठेगी। तब मदद के लिए बाबल की चीखें दीगर ममालिक तक पहुँचेंगी।”

## 51

### बाबल का ज़माना ख़त्म है

1 रब फरमाता है, “मैं बाबल और उसके बाशिंदों के खिलाफ़ मोहलक आँधी चलाऊँगा। 2 मैं मुल्के-बाबल में ग़ैरमुल्की भेजूँगा ताकि वह उसे अनाज की तरह फटककर तबाह करें। आफ़त के दिन वह पूरे मुल्क को घेरे रखेंगे। 3 तीरअंदाज़ को

तीर चलाने से रोको! फौजी को ज़िरा-बकतर पहनकर लड़ने के लिए खड़े होने न दो! उनके नौजवानों को ज़िंदा मत छोड़ना बल्कि फौज को सरासर नेस्तो-नाबूद कर देना!

4 तब मुल्के-बाबल में हर तरफ़ लार्शें नज़र आएँगी, तलवार के चिरे हुए उस की गलियों में पड़े रहेंगे। 5 क्योंकि रब्बूल-अफ़वाज ने इसराईल और यहदाह को अकेला \* नहीं छोड़ा, उनके खुदा ने उन्हें तर्क नहीं किया। मुल्के-बाबल का कुस्सू निहायत संगीन है, उसने इसराईल के कुदूस का गुनाह किया है। 6 बाबल से भाग निकलो! दौड़कर अपनी जान बचाओ, बरना तुम्हें भी बाबल के कुस्सू का अन्न मिलेगा। क्योंकि रब के इत्काम का वक़्त आ पहुँचा है, अब बाबल को मुनासिब सज़ा मिलेगी।

7 बाबल रब के हाथ में सोने का प्याला था जिसे उसने पूरी दुनिया को पिला दिया। अक्रवाम उस की मैं पी पीकर मत्वाली हो गई, इसलिए वह दीवानी हो गई है। 8 लेकिन अब यह प्याला अचानक गिरकर टूट गया है। चुनौचे बाबल पर आहो-जारी करो! उसके दर्द और तकलीफ़ को दूर करने के लिए बलसान ले आओ, शायद उसे शफ़ा मिले। 9 लेकिन लोग कहेंगे, 'हम बाबल की मदद करना चाहते थे, लेकिन उसके ज़ख़म भर नहीं सकते। इसलिए आओ, हम उसे छोड़ दें और हर एक अपने अपने मुल्क में जा बसे। क्योंकि उस की सख़्त अदालत हो रही है, जितना आसमान और बादल बुलंद हैं उतनी ही सख़्त उस की सज़ा है।'

10 रब की कौम बोले, 'रब हमारी रास्ती रौशनी में लाया है। आओ, हम सिय्यून में वह कुछ सुनाएँ जो रब हमारे खुदा ने किया है।'

11 तीरों को तेज़ करो! अपना तरक़श उससे भर लो! रब मादी बादशाहों को हरकत में लाया है, क्योंकि वह बाबल को तबाह करने का इरादा रखता है। रब इत्काम लेगा, अपने घर की तबाही का बदला लेगा। 12 बाबल की फ़सील के खिलाफ़ जंग का झंडा गाड़ दो! शहर के इर्दगिर्द पहरादारी का बंदोबस्त मज़बूत करो, हाँ मज़ीद संतरी खड़े करो। क्योंकि रब ने बाबल के बाशिंदों के खिलाफ़ मनसूबा बाँधकर उसका एलान किया है, और अब वह उसे पूरा करेगा।

13 ऐ बाबल बेटी, तू गहरे पानी के पास बसती और निहायत दौलतमंद हो गई है। लेकिन खबरदार! तेरा अंजाम करीब ही है, तेरी ज़िंदागी का धागा कट गया है। 14 रब्बूल-अफ़वाज ने अपने नाम की क़सम खाकर फ़रमाया है कि मैं तुझे दुश्मनों से भर दूँगा, और वह टिठियों के गोल की तरह पूरे शहर को ढँप लेंगे। हर जगह वह तुझ पर फ़तह के नारे लगाएँगे।

15 देखो, अल्लाह ही ने अपनी कुदरत से ज़मीन को खलक किया, उसी ने अपनी हिकमत से दुनिया की बुनियाद रखी, और उसी ने अपनी समझ के मुताबिक़ आसमान को ख़ैमे की तरह तान लिया। 16 उसके हुक्म पर आसमान पर पानी के ज़ख़ीर गरजने लगते हैं। वह दुनिया की इतहा से बादल चढ़ने देता, बारिश के साथ बिजली कड़कने देता और अपने गोदामों से हवा निकलने देता है।

17 तमाम इनसान अहमक और समझ से खाली हैं। हर सुनार अपने बुतों के बाइस शरिंदा हुआ है। उसके बुत धोका ही हैं, उनमें दम नहीं। 18 वह फ़जूल और मज़हकाराखेज हैं। अदालत के वक़्त वह नेस्त हो जाएँगे। 19 अल्लाह जो याक़ूब का मौरूसी हिस्सा है इनकी मानिंद नहीं है। वह सबका खालिक है, और इसराईली कौम उसका मौरूसी हिस्सा है। रब्बूल-अफ़वाज ही उसका नाम है।

अब रब बाबल पर हमला करेगा

20 ऐ बाबल, तू मेरा हथोड़ा, मेरा जंगी हथियार था। तेरे ही ज़रीए मैंने कौमों को पाश पाश कर दिया, सलतनतों को खाक में मिला दिया। 21 तेरे ही ज़रीए मैंने घोड़ों को सवारों समेत और रथों को रथबानों समेत पाश पाश कर दिया। 22 तेरे ही ज़रीए मैंने मर्दों और औरतों, बज्रुगों और बच्चों, नौजवानों और कुंवारियों को पारा पारा कर दिया। 23 तेरे ही ज़रीए मैंने गल्लाबान और उसके रेवड़, किस्मान और उसके बेलों, गवर्नरों और सरकारी मुलाज़िमों को रेज़ा रेज़ा कर दिया।

24 लेकिन अब मैं बाबल और उसके तमाम बाशिंदों को उनकी सिय्यून के साथ बदसुल्की का पूरा अन्न दूँगा। तुम अपनी आँखों से इसके गवाह होगे।" यह रब का फ़रमान है।

25 रब फ़रमाता है, "ऐ बाबल, पहले तू मोहलक पहाड़ था जिसने तमाम दुनिया का सत्यानास कर दिया। लेकिन अब मैं तुझसे निपट लेता हूँ। मैं अपना हाथ तेरे खिलाफ़ बढ़ाकर तुझे ऊँची ऊँची चटानों से पटख दूँगा। आखिरकार मलबे का झुलसा हुआ ढेर ही बाक़ी रहेगा। 26 तू इतना तबाह हो जाएगा कि तेरे पत्थर न किसी मकान के कोनों के लिए, न किसी बुनियाद के लिए इस्तेमाल हो सकेंगे।" यह रब का फ़रमान है।

27 "आओ, मुल्क में जंग का झंडा गाड़ दो! अक्रवाम में नरसिंगा फूँक फूँककर उन्हें बाबल के खिलाफ़ लड़ने के लिए मख़सूस करो! उससे लड़ने के लिए अरारात, मिन्नी और अशकनाज़ की सलतनतों को बुलाओ! बाबल से लड़ने के लिए

कर्माँडर मुकर्रर करो। घोड़े भेज दो जो टिट्टियों के हौलनाक गोल की तरह उस पर टूट पड़ें। 28 अकवाम को बाबल से लड़ने के लिए मखसूस करो! मादी बादशाह अपने गवर्नरों, अफसरों और तमाम मुती ममालिक समेत तैयार हो जाएँ। 29 जमीन लरजती और थरथरती है, क्योंकि रब का मनसूबा अटल है, वह मुल्के-बाबल को यों तबाह करना चाहता है कि आइंदा उसमें कोई न रहे।

30 बाबल के जंगआज़मूदा फ़ौजी लड़ने से बाज़ आकर अपने किलों में छुप गए हैं। उनकी ताकत जाती रही है, वह औरतों की मानिंद हो गए हैं। अब बाबल के घरों को आग लग गई है, फसील के दरवाज़ों के कुंडे टूट गए हैं। 31 यके बाद दीगरे कासिद दौडकर शाहे-बाबल को इतला देते हैं, 'शहर चारों तरफ से दुश्मन के कब्जे में है! 32 दरिया को पार करने के तमाम रास्ते उसके हाथ में हैं, सरकंडे का दलदली इलाका जल रहा है, और फ़ौजी ख़ौफ के मारे बेहिसो-हरकत हो गए हैं।'

33 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का खुदा है फ़रमाता है, "फसल की कटाई से पहले पहले गाहने की जगह के फ़र्श को दबा दबाकर मज़बूत किया जाता है। यही बाबल बेटी की हालत है। फसल की कटाई करीब आ गई है, और थोड़ी देर के बाद बाबल को पाँवों तले खूब दबाया जाएगा।

### रब बाबल से यस्शलम का इंतकाम लेगा

34 सियून बेटी रोती है, 'शाहे-बाबल नबूकदनज़र ने मुझे हडप कर लिया, चूस लिया, खाली बरतन की तरह एक तरफ रख दिया है। उसने अज़दहे की तरह मुझे निगल लिया, अपने पेट को मेरी लज़ीज़ चीज़ों से भर लिया है। फिर उसने मुझे वतन से निकाल दिया।' 35 लेकिन अब सियून की रहनेवाली कहे, 'जो ज़्यादाती मेरे साथ हुई वह बाबल के साथ की जाए। जो कल्लो-गारत मुझमें हुई वह बाबल के बाशिंदों में मच जाए!'

36 रब यस्शलम से फ़रमाता है, "देख, मैं खुद तेरे हक़ में लड़ूँगा, मैं खुद तेरा बदला लूँगा। तब उसका समुंदर ख़ूश्क हो जाएगा, उसके चश्मे बंद हो जाएंगे। 37 बाबल मलबे का ढेर बन जाएगा। गीदड़ ही उसमें अपना घर बना लेंगे। उसे देखकर गुज़रनेवालों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे, और वह 'तौबा तौबा' कहकर आगे निकलेंगे। कोई भी वहाँ नहीं बसेगा।

38 इस वक़्त बाबल के बाशिंदे शेरबबर की तरह दहाड़ रहे हैं, वह शेर के बच्चों की तरह गुर्गुर रहे हैं। 39 लेकिन रब फ़रमाता है कि वह अभी मस्त होंगे कि मैं उनके लिए ज़ियाफ़त तैयार करूँगा, एक ऐसी ज़ियाफ़त जिसमें वह मत्वाले होकर ख़ुशी के नारे मारेंगे, फिर अबदी नींद सो जाएंगे। उस नींद से वह कभी नहीं उठेंगे। 40 मैं उन्हें भेड़ के बच्चों, मेंढों और बकरों की तरह कसाई के पास ले जाऊँगा।

41 हाय, बाबल दुश्मन के कब्जे में आ गया है! जिसकी तारीफ़ पूरी दुनिया करती थी वह डीन लिया गया है! अब उसे देखकर क़ौमों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। 42 समुंदर बाबल पर चढ़ आया है, उस की गरजती लहरों ने उसे ढाँप लिया है। 43 उसके शहर रेगिस्तान बन गए हैं, अब चारों तरफ़ ख़ूश्क और वीरान बयाबान ही नज़र आता है। न कोई उसमें रहता, न उसमें से गुज़रता है।

44 मैं बाबल के देवता बेल को सज़ा देकर उसके मुँह से वह कुछ निकाल दूँगा जो उसने हडप कर लिया था। अब से दीगर अकवाम जौक-दर-जौक उसके पास नहीं आएँगी, क्योंकि बाबल की फसील भी गिर गई है।

45 ऐ मेरी कौम, बाबल से निकल आ! हर एक अपनी जान बचाने के लिए वहाँ से भाग जाए, क्योंकि रब का शदीद ग़ज़ब उस पर नाज़िल होने को है।

46 जब अफ़वाहें मुल्क में फैल जाएँ तो हिम्मत मत हारना, न ख़ौफ़ खाना। क्योंकि हर साल कोई और अफ़वाह फैलेगी, जुल्म पर जुल्म और हुक्मरान पर हुक्मरान आता रहेगा। 47 क्योंकि वह वक़्त करीब ही है जब मैं बाबल के बुतों को सज़ा दूँगा। तब पूरे मुल्क की बेहुरमती हो जाएगी, और उसके मक़तूल उसके बीच में गिरकर पड़े रहेंगे। 48 तब आसमानो-जमीन और जो कुछ उनमें है बाबल पर शादियाना बजाएंगे। क्योंकि तबाहक़ुन दुश्मन शिमाल से उस पर हमला करने आ रहा है।' यह रब का फ़रमान है।

49 "बाबल ने पूरी दुनिया में बेशमार लोगों को कल्ल किया है, लेकिन अब वह खुद हलाक हो जाएगा, इसलिए कि उसने इतने इसराईलियों को कल्ल किया है।

50 ऐ तलवार से बचे हुए इसराईलियों, स्के न रहो बल्कि रवाना हो जाओ! दूर-दराज़ मुल्क में रब को याद करो, यस्शलम का भी खयाल करो! 51 बेशक तुम कहते हो, 'हम शर्मिदा हैं, हमारी सख़्त स्सावाइं हुई है, शर्म के मारे हमने अपने मुँह को ढाँप लिया है। क्योंकि परदेसी रब के घर की मुक़द्दसतरीन जगहों में घुस आए हैं।'

52 लेकिन रब फ़रमाता है कि वह वक़्त आनेवाला है जब मैं बाबल के बुतों को सज़ा दूँगा। तब उसके पूरे मुल्क में मौत के घाट उतरनेवालों की आहें सुनाई देंगी। 53 खाह बाबल की ताकत आसमान तक ऊँची क्यों न हो, खाह वह अपने बुलंद

किले को कितना मजबूत क्यों न करे तो भी वह गिर जाएगा। मैं तबाह करनेवाले फौजी उस पर चढ़ा लाऊँगा।” यह रब का फरमान है।

54 “सुनो! बाबल में चीखें बुलंद हो रही हैं, मुल्के-बाबल धड़ाम से गिर पड़ा है। 55 क्योंकि रब बाबल को बरबाद कर रहा, वह उसका शोर-शराबा बंद कर रहा है। दुश्मन की लहरें मुतलातिम समुंदर की तरह उस पर चढ़ रही हैं, उनकी गरजती आवाज़ फ़िज़ा में गूँज रही है। 56 क्योंकि तबाहकुन दुश्मन बाबल पर हमला करने आ रहा है। तब उसके सूरमाओं को पकड़ा जाएगा और उनकी कमरों टूट जाएँगी। क्योंकि रब इतकाम का खुदा है, वह हर इंसान को उसका मुनासिब अज़ देगा।”

57 दुनिया का बादशाह जिसका नाम रब्बुल-अफवाज़ है फरमाता है, “मैं बाबल के बड़ों को मतवाला करूँगा, खाह वह बुजुर्ग, दानिशमंद, गवर्नर, सरकारी अफसर या फौजी क्यों न हों। तब वह अबदी नीद सो जाएँगे और दुबारा कभी नहीं उठेंगे।”

58 रब फरमाता है, “बाबल की मोटी मोटी फ़सील को खाक में मिलाया जाएगा, और उसके ऊँचे ऊँचे दरवाज़े राख हो जाएँगे। तब यह कहावत बाबल पर सादिक आएगी, ‘अक्रवाम की मेहनत-मशक़त बेफ़ायदा रही, जो कुछ उन्होंने बड़ी मुश्किल से बनाया वह नज़रे-आतिश हो गया है।’”

यर्मियाह अपना पैगाम बाबल भेजता है

59 यहदाह के बादशाह सिदकियाह के चौथे साल में यर्मियाह नबी ने यह कलाम सिरायाह बिन नैरियाह बिन महसियाह के सुपर्द कर दिया जो उस वक्त बादशाह के साथ बाबल के लिए रवाना हुआ। सफर का पूरा बंदोबस्त सिरायाह के हाथ में था।

60 यर्मियाह ने त्मार में बाबल पर नाज़िल होनेवाली आफ़त की पूरी तफ़सील लिख दी थी। उसके बाबल के बारे में तमाम पैगामात उसमें कलमबंद थे। 61 उसने सिरायाह से कहा, “बाबल पहुँचकर ध्यान से त्मार की तमाम बातों की तिलावत करें। 62 तब दूआ करें, ‘ऐ रब, तूने एलान किया है कि मैं बाबल को यों तबाह करूँगा कि आइंदा न इंसान, न हैवान उसमें बसेगा। शहर अबद तक वीरानो-सुनसान रहेगा।’ 63 पूरी किताब की तिलावत के इख़िताम पर उसे पत्थर के साथ बाँध लें, फिर दरिया-फ़ुरात में फेंककर 64 बोलें, ‘बाबल का बेड़ा इस पत्थर की तरह गरक हो जाएगा। जो आफ़त मैं उस पर नाज़िल करूँगा उससे उसे यों खाक में मिलाया जाएगा कि दुबारा कभी नहीं उठेगा। वह सरासर ख़त्म हो जाएगा।’”

यर्मियाह के पैगामात यहाँ इख़िताम पर पहुँच गए हैं।

## 52

शाहे-यहदाह सिदकियाह की हुकूमत

1 सिदकियाह 21 साल की उम्र में बादशाह बना, और यरूशलम में उस की हुकूमत का दौरानिया 11 साल था। उस की माँ हमतूल बित यर्मियाह लिबना शहर की रहनेवाली थी। 2 यह्यकमी की तरह सिदकियाह ऐसा काम करता रहा जो रब को नापसंद था। 3 रब यरूशलम और यहदाह के बाशिंदों से इतना नाराज़ हुआ कि आखिर में उसने उन्हें अपने हज़ूर से ख़ारिज कर दिया।

सिदकियाह का फ़रार और गिरफ़्तारी

एक दिन सिदकियाह बाबल के बादशाह से सरकश हुआ, 4 इसलिए शाहे-बाबल नबूकदनज़र तमाम फौज अपने साथ लेकर दुबारा यरूशलम पहुँचा ताकि उस पर हमला करे।

सिदकियाह की हुकूमत के नवें साल में बाबल की फौज यरूशलम का मुहासरा करने लगी। यह काम दसवें महीने के दसवें दिन \* शुरू हुआ। पूरे शहर के इर्दगिर्द बादशाह ने पुरते बनवाए। 5 सिदकियाह की हुकूमत के 11वें साल तक यरूशलम कायम रहा। 6 लेकिन फिर काल ने शहर में जोर पकड़ा, और अवाम के लिए खाने की चीज़ें न रही।

चौथे महीने के नवें दिन † 7 बाबल के फौजियों ने फ़सील में रखना डाल दिया। उसी रात सिदकियाह अपने तमाम फौजियों समेत फ़रार होने में कामयाब हुआ, अगरचे शहर दुश्मन से घिरा हुआ था। वह फ़सील के उस दरवाज़े से निकले जो शाही बाग़ के साथ मुलहिक दो दीवारों के बीच में था। वह वादीए-यरदन की तरफ़ भागने लगे, 8 लेकिन बाबल की फौज ने बादशाह का ताक़ूब करके उसे यरीह के मैदान में पकड़ लिया। उसके फौजी उससे अलग होकर चारों तरफ़ मुंतशिर हो गए, 9 और वह खुद गिरफ़्तार हो गया। फिर उसे मुल्के-हमात के शहर रिबला में शाहे-बाबल के पास लाया गया, और वहीं उसने सिदकियाह पर फ़ैसला सादिर किया। 10 सिदकियाह के देखते देखते शाहे-बाबल ने रिबला में उसके बेटों को क़त्ल किया। साथ साथ

\* 52:4 15 जनवरी। † 52:6 18 जुलाई।

उसने यहदाह के तमाम बुजुर्गों को भी मौत के घाट उतार दिया। <sup>11</sup> फिर उसने सिदकियाह की आँखें निकलवाकर उसे पीतल की जंजीरों में जकड़ लिया और बाबल ले गया जहाँ वह जीते-जी रहा।

**यरूशलम और रब के घर की तबाही**

<sup>12</sup> शाहे-बाबल नबूकदनञ्जर की हुक्मत के 19वें साल में बादशाह का खास अफसर नबूज़रादान यरूशलम पहुँचा। वह शाही मुहाफिज़ों पर मुकर्रर था। पाँचवें महीने के सातवें दिन † उसने आकर <sup>13</sup> रब के घर, शाही महल और यरूशलम के तमाम मकानों को जला दिया। हर बड़ी इमारत भस्म हो गई। <sup>14</sup> उसने अपने तमाम फ़ौजियों से शहर की पूरी फ़र्सील को भी गिरा दिया। <sup>15</sup> फिर नबूज़रादान ने सबको जिलावतन कर दिया जो यरूशलम में पीछे रह गए थे। वह भी उनमें शामिल थे जो जंग के दौरान ग़दारी करके शाहे-बाबल के पीछे लग गए थे। नबूज़रादान बाक्रीमोंदा कारीगर और गरीबों में से भी कुछ बाबल ले गया। <sup>16</sup> लेकिन उसने सबसे निचले तबके के बाज़ लोगों को मुल्के-यहदाह में छोड़ दिया ताकि वह अंगूर के बागों और खेतों को सँभालें।

<sup>17</sup> बाबल के फ़ौजियों ने रब के घर में जाकर पीतल के दोनों सतनों, पानी के बासनों को उठानेवाली हथगाड़ियों और समुंद्र नामी पीतल के हौज़ को तोड़ दिया और सारा पीतल उठाकर बाबल ले गए। <sup>18</sup> वह रब के घर की खिदमत संरजाम देने के लिए दरकार सामान भी ले गए यानी बालटियाँ, बेलचे, बत्ती कतरने के औज़ार, छिड़काव के कटोरे, प्याले और पीतल का बाक्री सारा सामान। <sup>19</sup> खालिस सोने और चाँदी के बरतन भी इसमें शामिल थे यानी बासन, जलते हुए कोयले के बरतन, छिड़काव के कटोरे, बालटियाँ, शमादान, प्याले और मै की नज़रें पेश करने के बरतन। शाही मुहाफिज़ों का यह अफसर सारा सामान उठाकर बाबल ले गया। <sup>20</sup> जब दोनों सतनों, समुंद्र नामी हौज़, हौज़ को उठानेवाले पीतल के बैलों और बासनों को उठानेवाली हथगाड़ियों का पीतल तुड़वाया गया तो वह इतना वज़नी था कि उसे तोला न जा सका। सुलेमान बादशाह ने यह चीज़ें रब के घर के लिए बनवाई थीं। <sup>21</sup> हर सतन की ऊँचाई 27 फुट और घेरा 18 फुट था। दोनों खोखले थे, और उनकी दीवारों की मोटाई 3 इंच थी। <sup>22</sup> उनके बालाई हिस्सों की ऊँचाई साढ़े सात फुट थी, और वह पीतल की जाली और अनारों से सजे हुए थे। <sup>23</sup> 96 अनार लगे हुए थे। जाली के इर्दगिर्द कुल 100 अनार लगे थे।

<sup>24</sup> शाही मुहाफिज़ों के अफसर नबूज़रादान ने जैल के कैदियों को अलग कर दिया : इमामे-आज़म सिरायाह, उसके बाद आनेवाले इमाम सफनियाह, रब के घर के तीन दरबानों, <sup>25</sup> शहर के बचे हुआओं में से उस अफसर को जो शहर के फ़ौजियों पर मुकर्रर था, सिदकियाह बादशाह के सात मुशीरों, उम्मत की भरती करनेवाले अफसर और शहर में मौजूद उसके 60 मर्दों को। <sup>26</sup> नबूज़रादान इन सबको अलग करके सूबा हमात के शहर रिबला ले गया जहाँ शाहे-बाबल था। <sup>27</sup> वहाँ नबूकदनञ्जर ने उन्हें सज़ाए-मौत दी।

यों यहदाह के बाशिंदों को जिलावतन कर दिया गया। <sup>28</sup> नबूकदनञ्जर ने अपनी हुक्मत के 7वें साल में यहदाह के 3,023 अफ़राद, <sup>29</sup> 18वें साल में यरूशलम के 832 अफ़राद, <sup>30</sup> और 23वें साल में 745 अफ़राद को जिलावतन कर दिया। यह आखिरी लोग शाही मुहाफिज़ों के अफसर नबूज़रादान के ज़रीए बाबल लाए गए। कुल 4,600 अफ़राद जिलावतन हुए।

**यहयाकीन को आज़ाद किया जाता है**

<sup>31</sup> यहदाह के बादशाह यहयाकीन की जिलावतनी के 37वें साल में अवील-मरूदक बाबल का बादशाह बना। उसी साल के 12वें महीने के 25वें दिन † उसने यहयाकीन को कैदखाने से आज़ाद कर दिया। <sup>32</sup> उसने उसके साथ नरम बातें करके उसे इज़्ज़त की ऐसी कुरसी पर बिठाया जो बाबल में जिलावतन किए गए बाक्री बादशाहों की निसबत ज़्यादा अहम थी। <sup>33</sup> यहयाकीन को कैदी के कपड़े उतारने की इजाज़त मिली, और उसे जिंदगी-भर बादशाह की मेज़ पर बाकायदगी से खाना खाने का शरफ हासिल रहा। <sup>34</sup> बादशाह ने मुकर्रर किया कि यहयाकीन को उम्र-भर इतना वज़ीफा मिलता रहे कि उस की रोज़मर्रा ज़रूरियात पूरी होती रहें।



## नोहा

### वीरानो-सुनसान

1 हाय, अफ़सोस! यरूशलम बेटी कितनी तनहा बैठी है, गो उसमें पहले इतनी रौनक थी। जो पहले अक्रवाम में अक्वल दर्जा रखती थी वह बेवा बन गई है, जो पहले ममालिक की रानी थी वह गुलामी में आ गई है।

2 रात को वह रो रोककर गुज़ारती है, उसके गाल आँसुओं से तर रहते हैं। आशिकों में से कोई नहीं रहा जो उसे तसल्ली दे। दोस्त सबके सब बेवफ़ा होकर उसके दुश्मन बन गए हैं।

3 पहले भी यहदाह बेटी बड़ी मुसीबत में फँसी हुई थी, पहले भी उसे सख्त मजदूरी करनी पड़ी। लेकिन अब वह जिलावतन होकर दीगर अक्रवाम के बीच में रहती है, अब उसे कहीं भी ऐसी जगह नहीं मिलती जहाँ सुकून से रह सके। क्योंकि जब वह बड़ी तकलीफ में मुब्तला थी तो दुश्मन ने उसका ताक़ुब करके उसे घेर लिया।

4 सियून की राहें मातमज़दा हैं, क्योंकि कोई ईद मनाने के लिए नहीं आता। शहर के तमाम दरवाज़े वीरानो-सुनसान हैं। उसके इमाम आहें भर रहे, उस की कुँवारियाँ गम खा रही हैं और उसे खुद शदीद तलखी महसूस हो रही है।

5 उसके मुखालिफ़ मालिक बन गए, उसके दुश्मन सुकून से रह रहे हैं। क्योंकि रब ने शहर को उसके मुतअदिद गुनाहों का अज़्र देकर उसे दुख पहुँचाया है। उसके फ़रज़द दुश्मन के आगे आगे चलकर जिलावतन हो गए हैं।

6 सियून बेटी की तमाम शानो-शौकत जाती रही है। उसके बुजुर्ग चरागाह न पानेवाले हिरन हैं जो थकते थकते शिकारियों के आगे आगे भागते हैं।

7 अब जब यरूशलम मुसीबतज़दा और बेवतन है तो उसे वह क़ीमती चीज़ें याद आती हैं जो उसे क़दीम ज़माने से ही हासिल थी। क्योंकि जब उस की क़ौम दुश्मन के हाथ में आई तो कोई नहीं था जो उस की मदद करता बल्कि उसके मुखालिफ़ तमाशा देखने दौड़े आए, वह उस की तबाही से खुश होकर हँस पड़े।

8 यरूशलम बेटी से संगीन गुनाह सरज़द हुआ है, इसी लिए वह लान-तान का निशाना बन गई है। जो पहले उस की इज़ज़त करते थे वह सब उसे हक़ीर जानते हैं, क्योंकि उन्होंने उस की बरहन्गी देखी है। अब वह आहें भर भरकर अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लेती है।

9 गो उसके दामन में बहुत गंदगी थी, तो भी उसने अपने अंजाम का खयाल तक न किया। अब वह धड़ाम से गिर गई है, और कोई नहीं है जो उसे तसल्ली दे। “ऐ रब, मेरी मुसीबत का लिहाज़ कर! क्योंकि दुश्मन शेखी मार रहा है।”

10 जो कुछ भी यरूशलम को प्यारा था उस पर दुश्मन ने हाथ डाला है। हता कि उसे देखना पड़ा कि ग़ैरअक्रवाम उसके मक़दिस में दाख़िल हो रहे हैं, गो तूने ऐसे लोगों को अपनी ज़मात में शरीक होने से मना किया था।

11 तमाम बाशिदे आहें भर भरकर रोटी की तलाश में रहते हैं। हर एक खाने का कोई न कोई टुकड़ा पाने के लिए अपनी बेशक़ीमत चीज़ें बेच रहा है। ज़हन में एक ही खयाल है कि अपनी जान को किसी न किसी तरह बचाए। “ऐ रब, मुझ पर नज़र डालकर ध्यान दे कि मेरी कितनी तज़लील हुई है।

12 ऐ यहाँ से गुज़रनेवालो, क्या यह सब कुछ तुम्हारे नज़दीक़ बेमानी है? ग़ौर से सोच लो, जो ईज़ा मुझे बरदाश्त करनी पड़ती है क्या वह कहीं और पाई जाती है? हरगिज़ नहीं! यह रब की तरफ़ से है, उसी का सख्त ग़ज़ब मुझ पर नाज़िल हुआ है।

13 बुलंदियों से उसने मेरी हड्डियों पर आग नाज़िल करके उन्हें कुचल दिया। उसने मेरे पाँवों के सामने जाल बिछाकर मुझे पीछे हटा दिया। उसी ने मुझे वीरानो-सुनसान करके हमेशा के लिए बीमार कर दिया।

14 मेरे जरायम का जुआ भारी है। रब के हाथ ने उन्हें एक दूसरे के साथ जोड़कर मेरी गरदन पर रख दिया। अब मेरी ताक़त ख़त्म है, रब ने मुझे उन्हीं के हवाले कर दिया जिनका मुक़ाबला मैं कर ही नहीं सकता।

15 रब ने मेरे दरमियान के तमाम सरमाओं को रद्द कर दिया, उसने मेरे ख़िलाफ़ ज़ुलूस निकलवाया जो मेरे जवानों को पाश पाश करे। हाँ, रब ने कुँवारी यहदाह बेटी को अंगूर का रस निकालने के हौज़ में फेंककर कुचल डाला।

16 इसलिए मैं रो रही हूँ, मेरी आँखों से आँसू टपकते रहते हैं। क्योंकि करीब कोई नहीं है जो मुझे तसल्ली देकर मेरी जान को तरो-ताज़ा करे। मेरे बच्चे तबाह हैं, क्योंकि दुश्मन गालिब आ गया है।”

17 सिय्यून बेटी अपने हाथ फैलाती है, लेकिन कोई नहीं है जो उसे तसल्ली दे। रब के हुकम पर याकूब के पडोसी उसके दुश्मन बन गए हैं। यस्शलम उनके दरमियान धिनौनी चीज़ बन गई है।

18 “रब हक-बजानिब है, क्योंकि मैं उसके कलाम से सरकश हुई। ऐ तमाम अकवाम, सुनो! मेरी इज़ा पर गौर करो! मेरे नौजवान और कुँवारियों जिलावतन हो गए हैं।

19 मैंने अपने आशिकों को बुलाया, लेकिन उन्होंने बेवफ़ा होकर मुझे तर्क कर दिया। अब मेरे इमाम और बुजुर्ग अपनी जान बचाने के लिए ख़ुराक ढूँडते ढूँडते शहर में हलाक हो गए हैं।

20 ऐ रब, मेरी तंगदस्ती पर ध्यान दे! बातिन में मैं तडप रही हूँ, मेरा दिल तेज़ी से धड़क रहा है, इसलिए कि मैं इतनी ज़्यादा सरकश रही हूँ। बाहर गली में तलवार ने मुझे बच्चों से महस्म कर दिया, घर के अंदर मौत मेरे पीछे पडी है।

21 मेरी आँहें तो लोगों तक पहुँचती हैं, लेकिन कोई मुझे तसल्ली देने के लिए नहीं आता। इसके बजाए मेरे तमाम दुश्मन मेरी मुसीबत के बारे में सुनकर बगलें बजा रहे हैं। वह ख़ुश हैं कि तुने मेरे साथ ऐसा सुलूक किया है। ऐ रब, वह दिन आने दे जिसका प्लान तुने किया है ताकि वह भी मेरी तरह की मुसीबत में फँस जाएँ।

22 उनकी तमाम बुरी हरकतें तेरे सामने आएँ। उनसे यों निपट ले जिस तरह तुने मेरे गुनाहों के जवाब में मुझसे निपट लिया है। क्योंकि आँहें भरते भरते मेरा दिल निडाल हो गया है।”

## 2

रब का गज़ब यस्शलम पर नाज़िल हुआ है

1 हाय, रब का क्रहर काले बादलों की तरह सिय्यून बेटी पर छा गया है! इसराईल की जो शानो-शौकत पहले आसमान की तरह बुलंद थी उसे अल्लाह ने खाक में मिला दिया है। जब उसका गज़ब नाज़िल हुआ तो उसने अपने घर का भी खयाल न किया, गो वह उसके पाँवों की चौकी है।

2 रब ने बेरहमी से याकूब की आबादियों को मिटा डाला, क्रहर में यहदाह बेटी के किल्लों को ढा दिया। उसने यहदाह की सलतनत और बुजुर्गों को खाक में मिलाकर उनकी बेहुरमती की है।

3 गज़बनाक होकर उसने इसराईल की पूरी ताकत खत्म कर दी। फिर जब दुश्मन करीब आया तो उसने अपने दहने हाथ को इसराईल की मदद करने से रोक लिया। न सिर्फ़ यह बल्कि वह शोलाज़न आग बन गया जिसने याकूब में चारों तरफ़ फैलकर सब कुछ भस्म कर दिया।

4 अपनी कमान को तानकर वह अपने दहने हाथ से तीर चलाने के लिए उठा। दुश्मन की तरह उसने सब कुछ जो मनमोहन था मौत के घाट उतारा। सिय्यून बेटी का ख़ैमा उसके क्रहर के भडकते कोयलों से भर गया।

5 रब ने इसराईल का दुश्मन-सा बनकर मुल्क को उसके महलों और किल्लों समेत तबाह कर दिया है। उसी के हाथों यहदाह बेटी की आहो-जारी में इज़ाफ़ा होता गया।

6 उसने अपनी सुकूनतगाह को बाग़ की झोंपडी की तरह गिरा दिया, उसी मकाम को बरबाद कर दिया जहाँ कौम उससे मिलने के लिए जमा होती थी। रब के हाथों यों हुआ कि अब सिय्यून की ईदों और सबतों की याद ही नहीं रही। उसके शदीद क्रहर ने बादशाह और इमाम दोनों को रड़ कर दिया है।

7 अपनी कु़रबानगाह और मक़दिस को मुस्तरद करके रब ने यस्शलम के महलों की दीवारें दुश्मन के हवाले कर दीं। तब रब के घर में भी ईद के दिन का-सा शोर मच गया।

8 रब ने फ़ैसला किया कि सिय्यून बेटी की फ़सील को गिरा दिया जाए। उसने फ़ीते से दीवारों को नाप नापकर अपने हाथ को न रोका जब तक सब कुछ तबाह न हो गया। तब किलाबंदी के पुशते और फ़सील मातम करते करते जाया हो गए।

9 शहर के दरवाज़े ज़मीन में धँस गए, उनके कुंडे टूटकर बेकार हो गए। यस्शलम के बादशाह और राहनुमा दीगर अकवाम में जिलावतन हो गए हैं। अब न शरीअत रही, न सिय्यून के नबियों को रब की रोया मिलती है।

10 सिय्यून बेटी के बुजुर्ग खामोशी से ज़मीन पर बैठ गए हैं। टाट के लिबास ओढकर उन्होंने अपने सरों पर ख़ाक डाल ली है। यस्शलम की कुँवारियों भी अपने सरों को झुकाए बैठी हैं।

11 मेरी आँखें रो रोककर थक गई हैं, शदीद दर्द ने मेरे दिल को बेहाल कर दिया है। क्योंकि मेरी कौम नेस्त हो गई है। शहर के चौकों में बच्चे पज़मुरदा हालत में फिर रहे हैं, शीरखार बच्चे ग़श खा रहे हैं। यह देखकर मेरा कलेजा फट रहा है।

12 अपनी माँ से वह प्युठे हैं, “रोटी और मै कहाँ है?” लेकिन बेफ़ायदा। वह मौत के घाट उतरनेवाले ज़ख़मी आदमियों की तरह चौकों में भूके मर रहे हैं, उनकी जान माँ की गोद में ही निकल रही है।

13 ऐ यरूशलम बेटी, मैं किससे तेरा मुवाजना करके तेरी हौसलाअफजाई करूँ? ऐ कुँवारी सिय्यून बेटी, मैं किससे तेरा मुकाबला करके तुझे तसल्ली दूँ? क्योंकि तुझे समुंदर जैसा वसी नुकसान पहुँचा है। कौन तुझे शफा दे सकता है?

14 तैरे नबियों ने तुझे झूटी और बेकार रोयाँ पेश की। उन्होंने तेरा कुसूर तुझ पर जाहिर न किया, हालाँकि उन्हें करना चाहिए था ताकि तू इस सजा से बच जाती। इसके बजाए उन्होंने तुझे झूट और फरेबदेह पैगामात सुनाए।

15 अब तैरे पास से गुजरनेवाले ताली बजाकर आवाजे कसते हैं। यरूशलम बेटी को देखकर वह सर हिलाते हुए तौबा तौबा कहते हैं, “क्या यह वह शहर है जो ‘तकमीले-हुस्र’ और ‘तमाम दुनिया की खुशी’ कहलाता था?”

16 तैरे तमाम दुश्मन मुँह पसारकर तैरे खिलाफ बातें करते हैं। वह आवाजे कसते और दौत पीसते हुए कहते हैं, “हमने उसे हड़प कर लिया है। लो, वह दिन आ गया है जिसके इंतज़ार में हम रहे। आखिरकार वह पहुँच गया, आखिरकार हमने अपनी आँखों से उसे देख लिया है।”

17 अब रब ने अपनी मरज़ी पूरी की है। अब उसने सब कुछ पूरा किया है जो बडी देर से फरमाता आया है। बेरहमी से उसने तुझे खाक में मिला दिया। उसी ने होने दिया कि दुश्मन तुझ पर शादियाना बजाता, कि तैरे मुखालिफों की ताकत तुझ पर गालिब आ गई है।

18 लोगो के दिल रब को पुकारते हैं। ऐ सिय्यून बेटी की फरसील, तैरे आँसू दिन-रात बहते बहते नदी बन जाएँ। न इससे बाज़ आ, न अपनी आँखों को रोने से स्कने दे!

19 उठ, रात के हर पहर की इब्तिदा में आहो-जारी कर! अपने दिल की हर बात पानी की तरह रब के हुज़ूर उंडेल दे। अपने हाथों को उस की तरफ उठाकर अपने बच्चों की जानों के लिए इल्तिजा कर जो इस वक़्त गली गली में भूके मर रहे हैं।

20 ऐ रब, ध्यान से देख कि तूने किससे ऐसा सुलूक किया है। क्या यह औरतें अपने पेट का फल, अपने लाडले बच्चों को खाएँ? क्या रब के मक़दिस में ही इमाम और नबी को मार डाला जाए?

21 लड़कों और बुजुर्गों की लाशें मिलकर गलियों में पड़ी हैं। मेरे जवान लड़के-लड़कियाँ तलवार की ज़द में आकर गिर गए हैं। जब तेरा गज़ब नाज़िल हुआ तो तूने उन्हें मार डाला, बेरहमी से उन्हें मौत के घाट उतार दिया।

22 जिनसे मैं दहशत खाता था उन्हें तूने बुलाया। जिस तरह बडी ईदों के मौके पर हुज़ूम शहर में जमा होते हैं उसी तरह दुश्मन चारों तरफ से मुझ पर टूट पड़े। जब रब का गज़ब नाज़िल हुआ तो न कोई बचा, न कोई बाकी रह गया। जिन्हें मैंने पाला और जो मेरे ज़ेरे-निगरानी परवान चढ़े उन्हें दुश्मन ने हलाक कर दिया।

### 3

#### मुसीबत में रब की मेहरबानी पर उम्मीद

1 हाय, मुझे कितना दुख उठाना पडा! और यह सब कुछ इसलिए हो रहा है कि रब का गज़ब मुझ पर नाज़िल हुआ है, उसी की लाठी मुझे तरबियत दे रही है।

2 उसने मुझे हाँक हाँककर तारीकी में चलने दिया, कहीं भी रौशनी नजर नहीं आई।

3 रोज़ाना वह बार बार अपना हाथ मेरे खिलाफ़ उठाता रहता है।

4 उसने मेरे जिस्म और जिल्द को सडने दिया, मेरी हड्डियों को तोड़ डाला।

5 मुझे घेरकर उसने ज़हर और सख़्त मुसीबत की दीवार मेरे इर्दगिर्द खड़ी कर दी।

6 उसने मुझे तारीकी में बसाया। अब मैं उनकी मानिंद हूँ जो बडी देर से कब्र में पड़े हैं।

7 उसने मुझे पीतल की भारी जंजीरों में जकड़कर मेरे इर्दगिर्द ऐसी दीवारें खड़ी कीं जिनसे मैं निकल नहीं सकता।

8 खाह मैं मदद के लिए कितनी चीखें क्यों न मासूँ वह मेरी इल्तिजाएँ अपने हुज़ूर पहुँचने नहीं देता।

9 जहाँ भी मैं चलना चाहूँ वहाँ उसने तराशे पत्थरों की मज़बूत दीवार से मुझे रोक लिया। मेरे तमाम रास्ते भूलभुल्यर्यौ बन गए हैं।

10 अल्लाह रीछ की तरह मेरी घात में बैठ गया, शेरबबर की तरह मेरी ताक लगाए छुप गया।

11 उसने मुझे सहीह रास्ते से भटका दिया, फिर मुझे फाड़कर बेसहारा छोड़ दिया।

12 अपनी कमान को तानकर उसने मुझे अपने तीरों का निशाना बनाया।

13 उसके तीरों ने मेरे गुरदों को चीर डाला।

14 मैं अपनी पूरी क्रोम के लिए मज़ाक का निशाना बन गया हूँ। वह पूरे दिन अपने गीतों में मुझे लान-तान करते हैं।

- 15 अल्लाह ने मुझे कड़वे जहर से सेर किया, मुझे ना-गवार तलाखी का प्याला पिलाया।  
 16 उसने मेरे दाँतों को बजरी चबाने दी, मुझे कुचलकर खाक में मिला दिया।  
 17 मेरी जान से सुकून छीन लिया गया, अब मैं खुशहाली का मजा भूल ही गया हूँ।

- 18 चुनौचें मैं बोला, “मेरी शान और रब पर से मेरी उम्मीद जाती रही है।”  
 19 मेरी तकलीफदेह और बेवतन हालत का खयाल कड़वे जहर की मानिंद है।  
 20 तो भी मेरी जान को उस की याद आती रहती है, सोचते सोचते वह मेरे अंदर दब जाती है।

- 21 लेकिन मुझे एक बात की उम्मीद रही है, और यही मैं बार बार जहन में लाता हूँ,  
 22 रब की मेहरबानी है कि हम नेस्तो-नाबूद नहीं हुए। क्योंकि उस की शफकत कभी खत्म नहीं होती  
 23 बल्कि हर सुबह अज़ सरे-नौ हम पर चमक उठती है। ऐ मेरे आका, तेरी वफादारी अज़ीम है।  
 24 मेरी जान कहती है, “रब मेरा मौसूसी हिस्सा है, इसलिए मैं उसके इंतज़ार में रहूँगी।”  
 25 क्योंकि रब उन पर मेहरबान है जो उस पर उम्मीद रखकर उसके तालिब रहते हैं।  
 26 चुनौचें अच्छा है कि हम ख़ामोशी से रब की नजात के इंतज़ार में रहें।  
 27 अच्छा है कि इनसान जवानी में अल्लाह का जुआ उठाए फिरे।  
 28 जब जुआ उस की गरदन पर रखा जाए तो वह चुपके से तनहाई में बैठ जाए।  
 29 वह खाक में औंधे मुँह हो जाए, शायद अभी तक उम्मीद हो।  
 30 वह मारनेवाले को अपना गाल पेश करे, चुपके से हर तरह की स्सवाई बरदाशत करे।

- 31 क्योंकि रब इनसान को हमेशा तक रद्द नहीं करता।  
 32 उस की शफकत इतनी अज़ीम है कि गो वह कभी इनसान को दुख पहुँचाए तो भी वह आखिरकार उस पर दुबारा रहम करता है।  
 33 क्योंकि वह इनसान को दबाने और ग़म पहुँचाने में खुशी महसूस नहीं करता।

- 34 मुल्क में तमाम कैदियों को पाँवों तले कुचला जा रहा है।  
 35 अल्लाह तआला के देखते देखते इनसान की हकतलफ़ी की जा रही है,  
 36 अदालत में लोगों का हक़ मारा जा रहा है। लेकिन रब को यह सब कुछ नज़र आता है।  
 37 कौन कुछ करवा सकता है अगर रब ने इसका हुक्म न दिया हो?  
 38 आफतें और अच्छी चीज़ें दोनों अल्लाह तआला के फ़रमान पर वुजूद में आती हैं।  
 39 तो फिर इनसानों में से कौन अपने गुनाहों की सज़ा पाने पर शिकायत करे?  
 40 आओ, हम अपने चाल-चलन का जायज़ा लें, उसे अच्छी तरह जाँचकर रब के पास वापस आएँ।  
 41 हम अपने दिल को हाथों समेत आसमान की तरफ़ मायल करें जहाँ अल्लाह है।

- 42 हम इकरार करें, “हम बेवफ़ा होकर सरकश हो गए हैं, और तूने हमें मुआफ़ नहीं किया।  
 43 तू अपने कहर के परदे के पीछे छुपकर हमारा ताक्कुब करने लगा, बेरहमी से हमें मारता गया।  
 44 तू बादल में यों छुप गया है कि कोई भी दूआ तुझ तक नहीं पहुँच सकती।  
 45 तूने हमें अक़वाम के दरमियान कूड़ा-करकट बना दिया।  
 46 हमारे तमाम दुश्मन हमें ताने देते हैं।  
 47 दहशत और गढे हमारे नसीब में हैं, हम धड़ाम से गिरकर तबाह हो गए हैं।”

- 48 आँसू मेरी आँखों से टपक टपककर नदियाँ बन गए हैं, मैं इसलिए रो रहा हूँ कि मेरी कौम तबाह हो गई है।  
 49 मेरे आँसू स्क नहीं सकते बल्कि उस वक़्त तक जारी रहेंगे  
 50 जब तक रब आसमान से झँककर मुझ पर ध्यान न दे।  
 51 अपने शहर की औरतों से दुश्मन का सुलूक देखकर मेरा दिल छलनी हो रहा है।  
 52 जो बिलावजह मेरे दुश्मन हैं उन्होंने परिदे की तरह मेरा शिकार किया।  
 53 उन्होंने मुझे जान से मारने के लिए गढे में डालकर मुझ पर पत्थर फेंक दिए।

54 सैलाब मुझ पर आया, और मेरा सर पानी में डूब गया। मैं बोला, “मेरी जिंदगी का धागा कट गया है।”

55 ऐ रब, जब मैं गढ़े की गहराइयों में था तो मैंने तेरे नाम को पुकारा।

56 मैंने इल्लिजा की, “अपना कान बंद न रख बल्कि मेरी आहं और चीखें सुन!” और तूने मेरी सुनी।

57 जब मैंने तुझे पुकारा तो तूने करीब आकर फरमाया, “खौफ न खा।”

58 ऐ रब, तू अदालत में मेरे हक में मुकदमा लडा, बल्कि तूने मेरी जान का एवजाना भी दिया।

59 ऐ रब, जो जुल्म मुझ पर हुआ वह तुझे साफ नजर आता है। अब मेरा इनसाफ कर!

60 तूने उनकी तमाम कीनापरवरी पर तवज्जुह दी है। जितनी भी साजिशें उन्होंने मेरे खिलाफ की हैं उनसे तू वाकिफ है।

61 ऐ रब, उनकी लान-तान, उनके मेरे खिलाफ तमाम मनसूबे तेरे कान तक पहुँच गए हैं।

62 जो कुछ मेरे मुखालिफ़ पूरा दिन मेरे खिलाफ़ फुसफुसाते और बुडबुडाते हैं उससे तू खूब आग्रा है।

63 देख कि यह क्या करते हैं! खाह बैठे या खड़े हों, हर वक्त वह अपने गीतों में मुझे अपने मज़ाक़ का निशाना बनाते हैं।

64 ऐ रब, उन्हें उनकी हरकतों का मुनासिब अज़ दे!

65 उनके ज़हनों को कुंद कर, तेरी लानत उन पर आ पड़े!

66 उन पर अपना पूरा ग़ज़ब नाज़िल कर! जब तक वह तेरे आसमान के नीचे से गायब न हो जाएँ उनका ताक्कुब करता रह!

## 4

### यस्शालम की मुसीबत

1 हाय, सोने की आबो-ताब न रही, खालिस सोना भी मॉद पड़ गया है। मक़दिस के जवाहर तमाम गलियों में बिखरे पड़े हैं।

2 पहले तो सिय्यून के गिराँदकर फ़रज़द ख़ालिस सोने जैसे क़ीमती थे, लेकिन अब वह गोया मिट्टी के बरतन समझे जाते हैं जो आम कुम्हार ने बनाए हैं।

3 गो गीदड़ भी अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं, लेकिन मेरी क़ौम रेगिस्तान में रहनेवाले उकाबी उल्लू जैसी ज़ालिम हो गई है।

4 शीरखार बच्चे की ज़बान प्यास के मारे तालू से चिपक गई है। छोटे बच्चे भूक के मारे रोटी माँगते हैं, लेकिन खिलानेवाला कोई नहीं है।

5 जो पहले लज़ीज़ खाना खाते थे वह अब गलियों में तबाह हो रहे हैं। जो पहले अरगवानी रंग के शानदार कपड़े पहनते थे वह अब कूडे-करकट में लोट-पोट हो रहे हैं।

6 मेरी क़ौम से सदूम की निसबत कहीं ज़्यादा संगीन गुनाह सरज़द हुआ है। और सदूम का कुसर इतना संगीन था कि वह एक ही लमहे में तबाह हुआ। किसी ने भी मुदरखलत न की।

7 सिय्यून के रईस कितने शानदार थे! ज़िल्द बर्फ़ जैसी निखरी, दूध जैसी सफ़ेद थी। सख़सार मूँगी की तरह गुलाबी, शक्लो-सूरत संगे-लाजवर्द \* जैसी चमकदार थी।

8 लेकिन अब वह कोयले जैसे काले नज़र आते हैं। जब गलियों में घूमते हैं तो उन्हें पहचाना नहीं जाता। उनकी हड्डियों पर की जिल्द सुकड़कर लकड़ी की तरह सूखी हुई है।

9 जो तलवार से हलाक हुए उनका हाल उनसे बेहतर था जो भूके मर गए। क्योंकि खेतों से खुराक न मिलने पर वह घुल घुलकर मर गए।

10 जब मेरी क़ौम तबाह हुई तो इतना सख़्त काल पड़ गया कि नरमदिल माओं ने भी अपने बच्चों को पकाकर खा लिया।

11 रब ने अपना पूरा ग़ज़ब सिय्यून पर नाज़िल किया, उसे अपने शदीद क्रहर का निशाना बनाया। उसने यस्शालम में इतनी ज़बरदस्त आग लगाई कि वह बुनियादों तक भस्म हो गया।

12 अब दुश्मन यस्शालम के दरवाज़ों में दाख़िल हुए हैं, हालाँकि दुनिया के तमाम बादशाह बल्कि सब लोग समझते थे कि यह मुमकिन ही नहीं।

13 लेकिन यह सब कुछ उसके नबियों और इमामों के सबब से हुआ जिन्होंने शहर ही में रास्तबाज़ों की ख़न्ज़ेज़ी की।

\* 4:7 lapis lazuli

14 अब यही लोग अंधों की तरह गलियों में टटोल टटोलकर फिरते हैं। वह खून से इतने आलूदा हैं कि सब लोग उनके कपड़ों से लगने से गुरेज करते हैं।

15 उन्हें देखकर लोग गरजते हैं, “हटो, तुम नापाक हो! भाग जाओ, दफा हो जाओ, हमें हाथ मत लगाना!” फिर जब वह दीगर अक्रवाम में जाकर इधर उधर फिरने लगते हैं तो वहाँ के लोग भी कहते हैं कि यह मज्जीद यहाँ न ठहरें।

16 रब ने खुद उन्हें मुंशिर कर दिया, अब से वह उनका खयाल नहीं करेगा। अब न इमामों की इज्जत होती है, न बुजुर्गों पर मेहरबानी की जाती है।

17 हम चारों तरफ आँख दौड़ाते रहे, लेकिन बेफायदा, कोई मदद न मिली। देखते देखते हमारी नज़र धुँधला गई। क्योंकि हम अपने बुर्जा पर खड़े एक ऐसी कौम के इंतज़ार में रहे जो हमारी मदद कर ही नहीं सकती थी।

18 हम अपने चौकों में जा न सके, क्योंकि वहाँ दुश्मन हमारी ताक में बैठा था। हमारा खातमा करीब आया, हमारा मुकर्रारा वक्त इख़ितामपज़ीर हुआ, हमारा अंजाम आ पहुँचा।

19 जिस तरह आसमान पर मँडलानेवाला उकाब एकदम शिकार पर झपट पड़ता है उसी तरह हमारा ताक्कुब करनेवाले हम पर टूट पड़े, और वह भी कहीं ज़्यादा तेज़ी से। वह पहाड़ों पर हमारे पीछे पीछे भागे और रेगिस्तान में हमारी घात में रहे।

20 हमारा बादशाह भी उनके गढ़ों में फँस गया। जो हमारी जान था और जिसे रब ने मसह करके चुन लिया था उसे भी पकड़ लिया गया, गो हमने सोचा था कि उसके साये में बसकर अक्रवाम के दरमियान महफूज़ रहेंगे।

21 ऐ अदोम बेटी, बेशक शादियाना बजा! बेशक मुल्के-ऊज़ में रहकर खुशी मना! लेकिन खबरदार, अल्लाह के गज़ब का प्याला तुझे भी पिलाया जाएगा। तब तू उसे पी पीकर मस्त हो जाएगी और नशे में अपने कपड़े उतारकर बरहना फ़िरेगी।

22 ऐ सिय्यून बेटी, तेरी सज़ा का वक्त पूरा हो गया है। अब से रब तुझे कैदी बनाकर ज़िलावतन नहीं करेगा। लेकिन ऐ अदोम बेटी, वह तुझे तेरे कुसूर का पूरा अज़्र देगा, वह तेरे गुनाहों पर से परदा उठा लेगा।

## 5

ऐ रब, हमें अपने हुज़ूर वापस ला!

- 1 ऐ रब, याद कर कि हमारे साथ क्या कुछ हुआ! गौर कर कि हमारी कैसी स्सवाई हुई है।
- 2 हमारी मौस्सी मिलकियत परदेसियों के हवाले की गई, हमारे घर अजनबियों के हाथ में आ गए हैं।
- 3 हम वालिदों से महस्म होकर यतीम हो गए हैं, हमारी माँ बेवाओ की तरह गैरमहफूज़ हैं।
- 4 खाह पीने का पानी हो या लकड़ी, हर चीज़ की पूरी कीमत अदा करनी पड़ती है, हालाँकि यह हमारी अपनी ही चीज़ें थीं।

- 5 हमारा ताक्कुब करनेवाले हमारे सर पर चढ़ आए हैं, और हम थक गए हैं। कहीं भी सुकून नहीं मिलता।
- 6 हमने अपने आपको मिसर और अस्ूर के हवाले कर दिया ताकि रोटी मिल जाए और भुके न मरें।
- 7 हमारे बापदादा ने गुनाह किया, लेकिन वह कूच कर गए हैं। अब हम ही उनकी सज़ा भुगत रहे हैं।
- 8 गुलाम हम पर हुक्मत करते हैं, और कोई नहीं है जो हमें उनके हाथ से बचाए।
- 9 हम अपनी जान को खतरे में डालकर रोज़ी कमाते हैं, क्योंकि बयाबान में तलवार हमारी ताक में बैठी रहती है।
- 10 भूक के मारे हमारी ज़िल्द तनूर जैसी गरम होकर चुरमुर हो गई है।
- 11 सिय्यून में औरतों की इसमतदरी, यहदाह के शहरों में कुँवारियों की बेहरमती हुई है।
- 12 दुश्मन ने रईसों को फाँसी देकर बुजुर्गों की बेइज्जती की है।
- 13 नौजवानों को चक्की का पाट उठाए फिरना है, लड़के लकड़ी के बोझ तले डगमगाकर गिर जाते हैं।
- 14 अब बुजुर्ग शहर के दरवाज़े से और जवान अपने साज़ों से बाज़ रहते हैं।
- 15 खुशी हमारे दिलों से जाती रही है, हमारा लोकनाच आहो-ज़ारी में बदल गया है।
- 16 ताज़ हमारे सर पर से गिर गया है। हम पर अफ़सोस, हमसे गुनाह सरजद हुआ है।
- 17 इसी लिए हमारा दिल निढाल हो गया, हमारी नज़र धुँधला गई है।
- 18 क्योंकि कोहे-सिय्यून तबाह हुआ है, लोमडियाँ उस की गलियों में फिरती हैं।

19 ऐ रब, तेरा राज अबदी है, तेरा तख़्त पुशत-दर-पुशत कायम रहता है।

20 तू हमें हमेशा तक क्यों भूलना चाहता है? तूने हमें इतनी देर तक क्यों तर्क किए रखा है?

21 ऐ रब, हमें अपने पास वापस ला ताकि हम वापस आ सकें। हमें बहाल कर ताकि हमारा हाल पहले की तरह हो।

22 या क्या तूने हमें हतमी तौर पर मुस्तरद कर दिया है? क्या तेरा हम पर गुस्सा हद से ज्यादा बढ़ गया है?।

## हिजकियेल

### अल्लाह के रथ की रोया

1-3 जब मैं यानी इमाम हिजकियेल बिन बूजी तीस साल का था तो मैं यहूदाह के जिलावतनों के साथ मुल्के-बाबल के दरिया किबार के किनारे ठहरा हुआ था। यहयाकीन बादशाह को जिलावतन हुए पाँच साल हो गए थे। चौथे महीने के पाँचवें दिन \* आसमान खुल गया और अल्लाह ने मुझ पर मुख्तलिफ रोयाएँ जाहिर कीं। उस वक्त रब मुझसे हमकलाम हुआ, और उसका हाथ मुझ पर आ ठहरा।

4 रोया में मैंने जबरदस्त आँधी देखी जिसने शिमाल से आकर बड़ा बादल मेरे पास पहुँचाया। बादल में चमकती-दमकती आग नज़र आई, और वह तेज़ रौशनी से घिरा हुआ था। आग का मरकज चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था।

5 आग में चार जानदारों जैसे चल रहे थे जिनकी शक्लो-सूरत इनसान की-सी थी। 6 लेकिन हर एक के चार चेहरे और चार पर थे। 7 उनकी टोंगें इनसानों जैसी सीधी थीं, लेकिन पाँवों के तल्वे बछड़ों के-से खुर थे। वह पालिश किए हुए पीतल की तरह जगमगा रहे थे। 8 चारों के चेहरे और पर थे, और चारों परों के नीचे इनसानी हाथ दिखाई दिए। 9 जानदार अपने परों से एक दूसरे को छू रहे थे। चलते वक्त मुडने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि हर एक के चार चेहरे चारों तरफ देखते थे। जब कभी किसी सिम्त जाना होता तो उसी सिम्त का चेहरा चल पड़ता। 10 चारों के चेहरे एक जैसे थे। सामने का चेहरा इनसान का, दाईं तरफ का चेहरा शेरखबर का, बाईं तरफ का चेहरा बैल का और पीछे का चेहरा उकाब का था। 11 उनके पर ऊपर की तरफ फैले हुए थे। दो पर बाएँ और दाएँ हाथ के जानदारों से लगते थे, और दो पर उनके जिस्मों को ढँपे रखते थे। 12 जहाँ भी अल्लाह का रूह जाना चाहता था वहाँ यह जानदार चल पड़ते। उन्हें मुडने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह हमेशा अपने चारों चेहरों में से एक का स्रख इख्तियार करते थे।

13 जानदारों के बीच में ऐसा लग रहा था जैसे कोयले दहक रहे हों, कि उनके दरमियान मशालें इधर उधर चल रही हों। झिलमिलाती आग में से बिजली भी चमककर निकलती थी। 14 जानदार खुद इतनी तेज़ी से इधर उधर घूम रहे थे कि बादल की बिजली जैसे नज़र आ रहे थे।

15 जब मैंने गौर से उन पर नज़र डाली तो देखा कि हर एक जानदार के पास पहिया है जो ज़मीन को छू रहा है। 16 लगता था कि चारों पहिये पुरखराज † से बने हुए हैं। चारों एक जैसे थे। हर पहिये के अंदर एक और पहिया जावियाए-क्रायमा में घूम रहा था, 17 इसलिए वह मुड़े बग़ैर हर स्रख इख्तियार कर सकते थे। 18 उनके लंबे चक्कर खौफनाक थे, और चक्करों की हर जगह पर आँखें ही आँखें थीं। 19 जब चार जानदार चलते तो चारों पहिये भी साथ चलते, जब जानदार ज़मीन से उड़ते तो पहिये भी साथ उड़ते थे। 20 जहाँ भी अल्लाह का रूह जाता वहाँ जानदार भी जाते थे। पहिये भी उड़कर साथ साथ चलते थे, क्योंकि जानदारों की रूह पहियों में थी। 21 जब कभी जानदार चलते तो यह भी चलते, जब रुक जाते तो यह भी रुक जाते, जब उड़ते तो यह भी उड़ते। क्योंकि जानदारों की रूह पहियों में थी।

22 जानदारों के सरों के ऊपर गुंबद-सा फैला हुआ था जो साफ-शफ़फ़ाक बिल्लौर जैसा लग रहा था। उसे देखकर इनसान घबरा जाता था। 23 चारों जानदार इस गुंबद के नीचे थे, और हर एक अपने परों को फैलाकर एक से बाईं तरफ के साथी और दूसरे से दाईं तरफ के साथी को छू रहा था। बाकी दो परों से वह अपने जिस्म को ढँपे रखता था। 24 चलते वक्त उनके परों का शोर मुझ तक पहुँचा। यों लग रहा था जैसे करीब ही जबरदस्त आबशार बह रही हो, कि कादिरि-मुतलक कोई बात फरमा रहा हो, या कि कोई लशकर हरकत में आ गया हो। स्कुते वक्त वह अपने परों को नीचे लटकने देते थे।

25 फिर गुंबद के ऊपर से आवाज़ सुनाई दी, और जानदारों ने स्ककर अपने परों को लटकने दिया। 26 मैंने देखा कि उनके सरों के ऊपर के गुंबद पर संगे-लाजवर्द ‡ का तख़्त-सा नज़र आ रहा है जिस पर कोई बैठा था जिसकी शक्लो-सूरत इनसान की मानिंद है। 27 लेकिन कमर से लेकर सर तक वह चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था, जबकि कमर से लेकर पाँव तक आग की मानिंद भड़क रहा था। तेज़ रौशनी उसके इर्दगिर्द झिलमिला रही थी। 28 उसे देखकर कौसे-कुजह की वह आबो-ताब याद आती थी जो बारिश होते वक्त बादल में दिखाई देती है। यों रब का जलाल नज़र आया। यह देखते ही मैं औंधे मुँह गिर गया। इसी हालत में कोई मुझसे बात करने लगा।

## 2

हिजकियेल की बुलाहट, तूमार की रोया

\* 1:1-3 31 जुलाई † 1:16 topas ‡ 1:26 lapis lazuli



1 वह बोला, “ऐ आदमजाद, खडा हो जा! मैं तुझसे बात करना चाहता हूँ।” 2 ज्योंही वह मुझसे हमकलाम हुआ तो रूह ने मुझमें आकर मुझे खडा कर दिया। फिर मैंने आवाज को यह कहते हुए सुना,

3 “ऐ आदमजाद, मैं तुझे इसराईलियों के पास भेज रहा हूँ, एक ऐसी सरकार कौम के पास जिसने मुझसे बगावत की है। शुरू से लेकर आज तक वह अपने बापदादा समेत मुझसे बेवफा रहे हैं। 4 जिन लोगों के पास मैं तुझे भेज रहा हूँ वह बेशर्म और झिड़ी हैं। उन्हें वह कुछ सुना दे जो रब कादिरे-मुतलक फरमाता है। 5 खाह यह बागी सुनें या न सुनें, वह जरूर जान लेंगे कि हमारे दरमियान नबी बरपा हुआ है। 6 ऐ आदमजाद, उनसे या उनकी बातों से मत डरना। गो तू काँटेदार झाड़ियों से घिरा रहेगा और तुझे बिच्छुओं के दरमियान बसना पड़ेगा तो भी खौफजदा न हो। न उनकी बातों से खौफ खाना, न उनके रक्वये से दहशत खाना। क्योंकि यह कौम सरकार है। 7 खाह यह सुनें या न सुनें लाजिम है कि तू मेरे पैगामात उन्हें सुनाए। क्योंकि वह बागी ही हैं। 8 ऐ आदमजाद, जब मैं तुझसे हमकलाम हूँगा तो ध्यान दे और इस सरकार कौम की तरह बगावत मत करना। अपने मुँह को खोलकर वह कुछ खा जो मैं तुझे खिलाता हूँ।”

9 तब एक हाथ मेरी तरफ बढ़ा हुआ नजर आया जिसमें त्मार था। 10 त्मार को खोला गया तो मैंने देखा कि उसमें आगे भी और पीछे भी मातम और आहो-जारी कलमबंद हुई है।

### 3

1 उसने फरमाया, “ऐ आदमजाद, जो कुछ तुझे दिया जा रहा है उसे खा ले! त्मार को खा, फिर जाकर इसराईली कौम से मुखातिब हो जा।” 2 मैंने अपना मुँह खोला तो उसने मुझे त्मार खिलाया। 3 साथ साथ उसने फरमाया, “आदमजाद, जो त्मार मैं तुझे खिलाता हूँ उसे खा, पेट भरकर खा!” जब मैंने उसे खाया तो शहद की तरह मीठा लगा।

4 तब अल्लाह मुझसे हमकलाम हुआ, “ऐ आदमजाद, अब जाकर इसराईली घराने को मेरे पैगामात सुना दे। 5 मैं तुझे ऐसी कौम के पास नहीं भेज रहा जिसकी अजनबी ज़बान तुझे समझ न आए बल्कि तुझे इसराईली कौम के पास भेज रहा हूँ। 6 बेशक ऐसी बहुत-सी कौम हैं जिनकी अजनबी ज़बानें तुझे नहीं आती, लेकिन उनके पास मैं तुझे नहीं भेज रहा। अगर मैं तुझे उन्हीं के पास भेजता तो वह जरूर तेरी सुनती। 7 लेकिन इसराईली घराना तेरी सुनने के लिए तैयार नहीं होगा, क्योंकि वह मेरी सुनने के लिए तैयार ही नहीं। क्योंकि पूरी कौम का माथा सख्त और दिल अडना हुआ है। 8 लेकिन मैंने तेरा चेहरा भी उनके चेहरे जैसा सख्त कर दिया, तेरा माथा भी उनके माथे जैसा मजबूत कर दिया है। 9 तू उनका मुक्कबला कर सकेगा, क्योंकि मैंने तेरे माथे को हरि जैसा मजबूत, चकमाक जैसा पायदार कर दिया है। गो यह कौम बागी है तो भी उनसे खौफ न खा, न उनके सुलूक से दहशतजदा हो।”

10 अल्लाह ने मज़ीद फरमाया, “ऐ आदमजाद, मेरी हर बात पर ध्यान देकर उसे जहन में बिठा। 11 अब रवाना होकर अपनी कौम के उन अफ़राद के पास जा जो बाबल में जिलावतन हुए हैं। उन्हें वह कुछ सुना दे जो रब कादिरे-मुतलक उन्हें बताना चाहता है, खाह वह सुनें या न सुनें।”

12 फिर अल्लाह के रूह ने मुझे वहाँ से उठाया। जब रब का जलाल अपनी जगह से उठा तो मैंने अपने पीछे एक गडगडाती आवाज सुनी। 13 फिज़ा चारों जानदारों के शोर से गूँज उठी जब उनके पर एक दूसरे से लगने और उनके पहिये घूमने लगे।

14 अल्लाह का रूह मुझे उठाकर वहाँ से ले गया, और मैं तलखमिजाजी और बड़ी सरगरमी से रवाना हुआ। क्योंकि रब का हाथ जोर से मुझ पर ठहरा हुआ था। 15 चलते चलते मैं दरियाए-किबार की आबादी तल-अबीब में रहनेवाले जिलावतनों के पास पहुँच गया। मैं उनके दरमियान बैठ गया। सात दिन तक मेरी हालत गुमसुम रही।

**मेरी कौम को आगाह कर!**

16 सात दिन के बाद रब मुझसे हमकलाम हुआ, 17 “ऐ आदमजाद, मैंने तुझे इसराईली कौम पर पहरेदार बनाया, इसलिए जब भी तुझे मुझसे कलाम मिले तो उन्हें मेरी तरफ से आगाह कर!

18 मैं तेरे ज़रीए बेदीन को इतला दूँगा कि उसे मरना ही है ताकि वह अपनी बुरी राह से हटकर बच जाए। अगर तू उसे यह पैगाम न पहुँचाए, न उसे तंबीह करे और वह अपने कुसर के बाइस मर जाए तो मैं तुझे ही उस की मौत का जिम्मादार ठहराऊँगा। 19 लेकिन अगर वह तेरी तंबीह पर अपनी बेदीनी और बुरी राह से न हटे तो यह अलग बात है। बेशक वह मरेगा, लेकिन तू जिम्मादार नहीं ठहरेगा बल्कि अपनी जान को छुड़ाएगा।

20 जब रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी को छोड़कर बुरी राह पर आ जाएगा तो मैं तुझे उसे आगाह करने की जिम्मादारी दूँगा। अगर तू यह करने से बाज़ रहा तो तू ही जिम्मादार ठहरेगा जब मैं उसे ठोकर खिलाकर मार डालूँगा। उस वक्त उसके रास्त काम याद नहीं रहेंगे बल्कि वह अपने गुनाह के सबब से मरेगा। लेकिन तू ही उस की मौत का जिम्मादार ठहरेगा। 21 लेकिन अगर तू उसे तंबीह करे और वह अपने गुनाह से बाज़ आए तो वह मेरी तंबीह को कबूल करने के बाइस बचेगा, और तू भी अपनी जान को छुड़ाएगा।”

22 वही रब का हाथ दुबारा मुझ पर आ ठहरा। उसने फरमाया, “उठ, यहाँ से निकलकर वादी के खुले मैदान में चला जा! वहाँ मैं तुझसे हमकलाम हूँगा।”

23 मैं उठा और निकलकर वादी के खुले मैदान में चला गया। जब पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि रब का जलाल वहाँ यों मौजूद है जिस तरह पहली रोया में दरियाए-किबार के किनारे पर था। मैं मुँह के बल गिर गया। 24 तब अल्लाह के रूह ने आकर मुझे दुबारा खड़ा किया और फरमाया, “अपने घर में जाकर अपने पीछे कुंडी लगा। 25 ऐ आदमजाद, लोग तुझे रस्सियों में जकड़कर बंद रखेंगे ताकि तू निकलकर दूसरों में न फिर सके। 26 मैं होने दूँगा कि तेरी जवान तालू से चिपक जाए और तू खामोश रहकर उन्हें डॉट न सके। क्योंकि यह क्रौम सरकश है। 27 लेकिन जब भी मैं तुझसे हमकलाम हूँगा तो तेरे मुँह को खोलूँगा। तब तू मेरा कलाम सुनाकर कहेगा, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है!’ तब जो सुनने के लिए तैयार हो वह सुने, और जो तैयार न हो वह न सुने। क्योंकि यह क्रौम सरकश है।

## 4

### यस्शालम का मुहासरा

1 ऐ आदमजाद, अब एक कच्ची ईट ले और उसे अपने सामने रखकर उस पर यस्शालम शहर का नक्शा कंदा कर। 2 फिर यह नक्शा शहर का मुहासरा दिखाने के लिए इस्तेमाल कर। बूर्ज और पुरते बनाकर घेरा डाल। यस्शालम के बाहर लशकरगाह लगाकर शहर के इर्दगिर्द किलाशिकन मशीनें तैयार रख। 3 फिर लोहे की प्लेट लेकर अपने और शहर के दरमियान रख। इससे मुराद लोहे की दीवार है। शहर को घूर घूरकर जाहिर कर कि तू उसका मुहासरा कर रहा है। इस निशान से तू दिखाएगा कि इसराईलियों के साथ क्या कुछ होनेवाला है।

4-5 इसके बाद अपने बाएँ पहलू पर लेटकर अलामती तौर पर मुल्के-इसराईल की सजा पा। जितने भी साल वह गुनाह करते आए हैं उतने ही दिन तुझे इसी हालत में लेटे रहना है। वह 390 साल गुनाह करते रहे हैं, इसलिए तू 390 दिन उनके गुनाहों की सजा पाएगा। 6 इसके बाद अपने दाएँ पहलू पर लेट जा और मुल्के-यहूदाह की सजा पा। मैंने मुकर्रर किया है कि तू 40 दिन यह करे, क्योंकि यहूदाह 40 साल गुनाह करता रहा है। 7 घेरे हुए शहर यस्शालम को घूर घूरकर अपने नंगे बाजू से उसे धमकी दे और उसके खिलाफ पेशगोई कर। 8 साथ साथ मैं तुझे रस्सियों में जकड़ लूँगा ताकि तू उतने दिन करवटें बदल न सके जितने दिन तेरा मुहासरा किया जाएगा।

9 अब कुछ गंदम, जौ, लोबिया, मसूर, बाजरा और यहाँ मुस्तामल घटिया क्रिस्म का गंदम जमा करके एक ही बरतन में डाल। बाएँ पहलू पर लेटते वक़्त यानी पूरे 390 दिन इन्हीं से रोटी बनाकर खा। 10-11 फ़ी दिन तुझे रोटी का एक पाव खाने और पानी का पौना लिटर पीने की इजाज़त है। यह चीज़ें एहतियात से तोलकर मुकर्रर औकात पर खा और पी। 12 रोटी को जो क्री रोटी की तरह तैयार करके खा। ईधन के लिए इनसान का फुज्ला इस्तेमाल कर। ध्यान दे कि सब इसके गवाह हों।” 13 रब ने फरमाया, “जब मैं इसराईलियों को दीगर अक़वाम में मुतशिर करूँगा तो उन्हें नापाक रोटी खानी पड़ेगी।”

14 यह सुनकर मैं बोल उठा, “हाय, हाय! ऐ रब कादिरे-मुतलक, मैं कभी भी नापाक नहीं हुआ। जवानी से लेकर आज तक मैंने कभी ऐसे जानवर का गोशत नहीं खाया जिसे जबह नहीं किया गया था या जिसे जंगली जानवरों ने फाड़ा था। नापाक गोशत कभी मेरे मुँह में नहीं आया।”

15 तब रब ने जवाब दिया, “ठीक है, रोटी को बनाने के लिए तू इनसान के फुज्ले के बजाए गोबर इस्तेमाल कर सकता है। मैं तुझे इसकी इजाज़त देता हूँ।”

16 उसने मज़ीद फरमाया, “ऐ आदमजाद, मैं यस्शालम में रोटी का बंदोबस्त खत्म हो जाने दूँगा। तब लोग अपना खाना बड़ी एहतियात से और पेशानी में तोल तोलकर खाएँगे। वह पानी का कतरा कतरा गिनकर उसे लरजते हुए पिँएँगे। 17 क्योंकि खाने और पानी की किस्लत होगी। सब मिलकर तबाह हो जाएँगे, सब अपने गुनाहों के सबब से सड़ जाएँगे।

## 5

### यस्शालम के खिलाफ तलवार

1 ऐ आदमजाद, तेज़ तलवार लेकर अपने सर के बाल और दाढ़ी मुँडवा। फिर तराजू में बालों को तोलकर तीन हिस्सों में तकसीम कर। 2 कच्ची ईट पर कंदा यस्शालम के नक्शे के ज़रीए जाहिर कर कि शहर का मुहासरा खत्म हो गया है। फिर बालों की एक तिहाई शहर के नक्शे के बीच में जला दे, एक तिहाई तलवार से मार मारकर शहर के इर्दगिर्द ज़मीन पर गिरने दे, और एक तिहाई हवा में उड़ाकर मुतशिर कर। क्योंकि मैं इसी तरह अपनी तलवार को मियान से खीचकर लोगों के पीछे

पड़ जाऊँगा।<sup>3</sup> लेकिन बालों में से थोड़े थोड़े बचा ले और अपनी झोली में लपेटकर महफूज रख।<sup>4</sup> फिर इनमें से कुछ ले और आग में फेंककर भस्म कर। यही आग इसराईल के पूरे घराने में फैल जाएगी।”

<sup>5</sup> रब कादिर-मुतलक फरमाता है, “यही यरूशलम की हालत है! गो मैंने उसे दीगर अक़वाम के दरमियान रखकर दीगर ममालिक का मरकज़ बना दिया<sup>6</sup> तो भी वह मेरे अहकाम और हिदायात से सरकश हो गया है। गिर्दो-नवाह की अक़वामो-ममालिक की निसबत उस की हरकतें कहीं ज़्यादा बुरी हैं। क्योंकि उसके बाशिंदों ने मेरे अहकाम को रद्द करके मेरी हिदायात के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारने से इनकार कर दिया है।”<sup>7</sup> रब कादिर-मुतलक फरमाता है, “तुम्हारी हरकतें इर्दगिर्द की कौमों की निसबत कहीं ज़्यादा बुरी हैं। न तुमने मेरी हिदायात के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारी, न मेरे अहकाम पर अमल किया। बल्कि तुम इतने शरारती थे कि गिर्दो-नवाह की अक़वाम के रस्मो-रिवाज से भी बदतर ज़िंदगी गुज़ारने लगे।”<sup>8</sup> इसलिए रब कादिर-मुतलक फरमाता है, “ऐ यरूशलम, अब मैं खुद तुझसे निपट लूँगा। दीगर अक़वाम के देखते देखते मैं तेरी अदालत करूँगा।<sup>9</sup> तेरी धिनौनी बुतपरस्ती के सबब से मैं तेरे साथ ऐसा सुलूक करूँगा जैसा मैंने पहले कभी नहीं किया है और आईदा भी कभी नहीं करूँगा।<sup>10</sup> तब तैरे दरमियान बाप अपने बेटों को और बेटे अपने बाप को खाएँगे। मैं तेरी अदालत यों करूँगा कि जितने बचेगे वह सब हवा में उड़कर चारों तरफ़ मुंतशिर हो जाएँगे।”

<sup>11</sup> रब कादिर-मुतलक फरमाता है, “मेरी हयात की कसम, तुने अपने धिनौने बुतों और रस्मो-रिवाज से मेरे मक़दिस की बेहुरमती की है, इसलिए मैं तुझे मुँडवाकर तबाह कर दूँगा। न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा।<sup>12</sup> तैरे बाशिंदों की एक तिहाई मोहलक बीमारियों और काल से शहर में हलाक हो जाएगी। दूसरी तिहाई तलवार की ज़द में आकर शहर के इर्दगिर्द मर जाएगी। तीसरी तिहाई को मैं हवा में उड़ाकर मुंतशिर कर दूँगा और फिर तलवार को मियान से खींचकर उनका पीछा करूँगा।<sup>13</sup> यों मेरा कहर डंडा हो जाएगा और मैं इंतक़ाम लेकर अपना गुस्सा उतारूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं, रब गैरत में उनसे हमक़लाम हुआ हूँ।

<sup>14</sup> मैं तुझे मलबे का ढेर और इर्दगिर्द की अक़वाम की लान-तान का निशाना बना दूँगा। हर गुज़रनेवाला तेरी हालत देखकर ‘तौबा तौबा’ कहेगा।<sup>15</sup> जब मेरा ग़ज़ब तुझ पर टूट पड़ेगा और मैं तेरी सख़्त अदालत और सरज़नश करूँगा तो उस वक़्त तू पड़ोस की अक़वाम के लिए मज़ाक़ और लानत-मलामत का निशाना बन जाएगा। तेरी हालत को देखकर उनके रोंगटे खड़े हो जाएँगे और वह मुहतात रहने का सबक सीखेंगे। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

<sup>16</sup> ऐ यरूशलम के बाशिंदो, मैं काल के मोहलक और तबाहक़ुन तीर तुम पर बरसाऊँगा ताकि तुम हलाक हो जाओ। काल यहाँ तक जोर पकड़ेगा कि खाने का बंदोबस्त ख़त्म हो जाएगा।<sup>17</sup> मैं तुम्हारे खिलाफ़ काल और वहशी जानवर भेजूँगा ताकि तू बेऔलाद हो जाए। मोहलक बीमारियाँ और कत्लो-मारत तैरे बीच में से गुज़रेगी, और मैं तैरे खिलाफ़ तलवार चलाऊँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।”

## 6

### बुलंदियों पर मज़ारों की अदालत

<sup>1</sup> रब मुझे हमक़लाम हुआ,<sup>2</sup> “ऐ आदमज़ाद, इसराईल के पहाड़ों की तरफ़ सूख करके उनके खिलाफ़ नबूवत कर।<sup>3</sup> उनसे कह, “ऐ इसराईल के पहाड़ो, रब कादिर-मुतलक का कलाम सुनो! वह पहाड़ों, पहाड़ियों, घाटियों और वादियों के बारे में फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे खिलाफ़ तलवार चलाकर तुम्हारी ऊँची जगहों के मंदिरों को तबाह कर दूँगा।<sup>4</sup> जिन क़ुरबानागहों पर तुम अपने जानवर और बख़ूर जलाते हो वह ढा दूँगा। मैं तैरे मक़तूलों को तैरे बुतों के सामने ही फेंक छोड़ूँगा।<sup>5</sup> मैं इसराईलियों की लाशों को उनके बुतों के सामने डालकर तुम्हारी हड्डियों को तुम्हारी क़ुरबानागहों के इर्दगिर्द बिखेरे दूँगा।<sup>6</sup> जहाँ भी तुम आबाद हो वहाँ तुम्हारे शहर खंडरात बन जाएँगे और ऊँची जगहों के मंदिर मिसमार हो जाएँगे। क्योंकि लाज़िम है कि जिन क़ुरबानागहों पर तुम अपने जानवर और बख़ूर जलाते हो वह ख़ाक़ में मिलाई जाएँ, कि तुम्हारे बुतों को पाश पाश किया जाए, कि तुम्हारी बुतपरस्ती की चीज़ें नेस्तो-नाबूद हो जाएँ।<sup>7</sup> मक़तूल तुम्हारे दरमियान गिरकर पड़े रहेंगे। तब तुम जान लो कि मैं ही रब हूँ।

<sup>8</sup> लेकिन मैं चंद एक को ज़िंदा छोड़ूँगा। क्योंकि जब तुम्हें दीगर ममालिक और अक़वाम में मुंतशिर किया जाएगा तो कुछ तलवार से बचे रहेंगे।<sup>9</sup> जब यह लोग कैदी बनकर मुख़तलिफ़ ममालिक में लाए जाएँगे तो उन्हें मेरा खयाल आएगा। उन्हें याद आएगा कि मुझे कितना ग़म खाना पड़ा जब उनके ज़िनाकार दिल मुझे से दूर हुए और उनकी आँखें अपने बुतों से ज़िना करती रहीं। तब वह यह सोचकर कि हमने कितना बुरा काम किया और कितनी मक़रूह हरकतें की हैं अपने आपसे धिन खाएँगे।<sup>10</sup> उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं रब हूँ, कि उन पर यह आफ़त लाने का एलान करते वक़्त मैं ख़ाली बातें नहीं कर रहा था।”

11 फिर रब कादिरे-मुतलक ने मुझसे फरमाया, “तालियाँ बजाकर पाँव जोर से ज़मीन पर मार! साथ साथ यह कह, इसराइली क्रौम की धिनौनी हरकतों पर अफसोस! वह तलवार, काल और मोहलक बीमारियों की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे। 12 जो दूर है वह मोहलक वबा से मर जाएगा, जो करीब है वह तलवार से कल्ल हो जाएगा, और जो बच जाए वह भूके मरेगा। यों मैं अपना गज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। 13 वह जान लेंगे कि मैं रब हूँ जब उनके मकतूल उनके बुतों के दरमियान, उनकी कुरबानागहों के इर्दगिर्द, हर पहाड़ और पहाड़ की चोटी पर और हर हरे दरख्त और बलतू के घने दरख्त के साये में नज़र आएँगे। जहाँ भी वह अपने बुतों को खुश करने के लिए कौशों रहे वहाँ उनकी लाशें पाई जाएँगी। 14 मैं अपना हाथ उनके खिलाफ उठाकर मुल्क को यहूदाह के रेगिस्तान से लेकर दिबला तक तबाह कर दूँगा। उनकी तमाम आबादियों वीरानो-सुनसान हो जाएँगी। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ!”

## 7

### मुल्क का बुरा अंजाम

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, रब कादिरे-मुतलक मुल्के-इसराइल से फरमाता है कि तेरा अंजाम करीब ही है! जहाँ भी देखो, पूरा मुल्क तबाह हो जाएगा। 3 अब तेरा सत्यानास होनेवाला है, मैं खुद अपना गज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा। मैं तेरे चाल-चलन को परख परखकर तेरी अदालत करूँगा, तेरी मकरूह हरकतों का पूरा अज़्र दूँगा। 4 न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा बल्कि तुझे तेरे चाल-चलन का मुनासिब अज़्र दूँगा। क्योंकि तेरी मकरूह हरकतों का बीज तेरे दरमियान ही उगकर फल लाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ!”

5 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, “आफ़त पर आफ़त ही आ रही है। 6 तेरा अंजाम, हाँ, तेरा अंजाम अ रहा है। अब वह उठकर तुझ पर लपक रहा है। 7 ऐ मुल्क के बाशिदे, तेरी फना पहुँच रही है। अब वह वक़्त करीब ही है, वह दिन जब तेरे पहाड़ों पर ख़ुशी के नारों के बजाए अफ़रा-तफ़री का शोर मचेगा। 8 अब मैं जल्द ही अपना गज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा, जल्द ही अपना गुस्सा तुझ पर उताऊँगा। मैं तेरे चाल-चलन को परख परखकर तेरी अदालत करूँगा, तेरी धिनौनी हरकतों का पूरा अज़्र दूँगा। 9 न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा बल्कि तुझे तेरे चाल-चलन का मुनासिब अज़्र दूँगा। क्योंकि तेरी मकरूह हरकतों का बीज तेरे दरमियान ही उगकर फल लाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं यानी रब ही ज़रब लगा रहा हूँ।

10 देखो, मज़क़रा दिन करीब ही है! तेरी हलाकत पहुँच रही है। नाइनसाफी के फूल और शोखी की कोपलें फूट निकली हैं। 11 लोगों का जुल्म बढ़ बढ़कर लाठी बन गया है जो उन्हें उनकी बेदीनी की सज़ा देगी। कुछ नहीं रहेगा, न वह खुद, न उनकी दौलत, न उनका शोर-शराबा, और न उनकी शानो-शौकत। 12 अदालत का दिन करीब ही है। उस वक़्त जो कुछ ख़रीदे वह खुश न हो, और जो कुछ फ़रोख्त करे वह ग़म न खाए। क्योंकि अब इन चीज़ों का कोई फ़ायदा नहीं, इलाही गज़ब सब पर नाज़िल हो रहा है। 13 बेचनेवाले बच भी जाएँ तो वह अपना कारोबार नहीं कर सकेंगे। क्योंकि सब पर इलाही गज़ब का फैसला अटल है और मनसूख नहीं हो सकता। लोगों के गुनाहों के बाइस एक जान भी नहीं छूटेगी। 14 बेशक लोग बिगुल बजाकर जंग की तैयारियाँ करें, लेकिन क्या फ़ायदा? लडने के लिए कोई नहीं निकलेगा, क्योंकि सबके सब मेरे कहर का निशाना बन जाएंगे।

15 बाहर तलवार, अंदर मोहलक वबा और भूक। क्योंकि देहात में लोग तलवार की ज़द में आ जाएंगे, शहर में काल और मोहलक वबा से हलाक हो जाएंगे। 16 जितने भी बचेंगे वह पहाड़ों में पनाह लेंगे, घाटियों में फ़ाख़ताओ की तरह गूँ गूँ करके अपने गुनाहों पर आहो-ज़ारी करेंगे। 17 हर हाथ से ताक़त जाती रहेगी, हर घुटना डोर्वोडोल हो जाएगा।

18 वह टाट के मातमी कपड़े ओढ़ लेंगे, उन पर कपकपी तारी हो जाएगी। हर चेहरे पर शरमिदगी नज़र आएगी, हर सर मुँडवाया गया होगा। 19 अपनी चाँदी को वह गलियों में फेंक देंगे, अपने सोने को गिलाज़त समझेंगे। क्योंकि जब रब का गज़ब उन पर नाज़िल होगा तो न उनकी चाँदी उन्हें बचा सकेगी, न सोना। उनसे न वह अपनी भूक मिटा सकेंगे, न अपने पेट को भर सकेंगे, क्योंकि यही चीज़ें उनके लिए गुनाह का बाइस बन गई थीं। 20 उन्होंने अपने ख़बसूरत जेवरात पर फ़ख़र करके उनसे अपने धिनौने बुत और मकरूह मुज़स्से बनाए, इसलिए मैं होने दूँगा कि वह अपनी दौलत से धिन खाएँगे।

21 मैं यह सब कुछ परदेसियों के हवाले कर दूँगा, और वह उसे लूट लेंगे। दुनिया के बेदीन उसे छीनकर उस की बेहुरमती करेंगे। 22 मैं अपना मुँह इसराइलियों से फेर लूँगा तो अज़नबी मेरे क़ीमती मक़ाम की बेहुरमती करेंगे। डाकू उसमें घुसकर उसे नापाक करेंगे। 23 जंजीर तैयार कर! क्योंकि मुल्क में कल्लो-गारत आम हो गई है, शहर जुल्मो-तशहूद से भर गया है। 24 मैं दीगर अक़वाम के सबसे शरीर लोगों को बुलाऊँगा ताकि इसराइलियों के घरों पर कब्ज़ा करें, मैं जोरावरों का तकब्बुर ख़ाक में मिला दूँगा। जो भी मक़ाम उन्हें मुक़द्दस हो उस की बेहुरमती की जाएगी।

25 जब दहशत उन पर तारी होगी तो वह अमनो-अमान तलाश करेंगे, लेकिन बेफायदा। अमनो-अमान कहीं भी पाया नहीं जाएगा। 26 आफत पर आफत ही उन पर आएगी, यके बाद दीगरे बुरी खबरे उन तक पहुँचेंगी। वह नबी से रोया मिलने की उम्मीद करेंगे, लेकिन बेफायदा। न इमाम उन्हें शरीअत की तालीम, न बुजुर्ग उन्हें मशवरा दे सकेंगे। 27 बादशाह मातम करेगा, रईस हैबतजदा होगा, और अवािम के हाथ थरथराएँगे। मैं उनके चाल-चलन के मुताबिक उनसे निपटूँगा, उनके अपने ही उसूलों के मुताबिक उनकी अदालत करूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

## 8

### रब के घर में बुतपरस्ती की रोया

1 जिलावतनी के छठे साल के छठे महीने के पाँचवें दिन \* मैं अपने घर में बैठा था। यहदाह के बुजुर्ग पास ही बैठे थे। तब रब कादिरे-मुतलक का हाथ मुझ पर आ ठहरा। 2 रोया में मैंने किसी को देखा जिसकी शक्तो-सूरत इनसान की मानिंद थी। लेकिन कमर से लेकर पाँव तक वह आग की मानिंद भडक रहा था जबकि कमर से लेकर सर तक चमकदार धात की तरह तमतमा रहा था। 3 उसने कुछ आगे बढ़ा दिया जो हाथ-सा लग रहा था और मेरे बालों को पकड़ लिया। फिर रूह ने मुझे उठाया और ज़मीन और आसमान के दरमियान चलते चलते यरूशलम तक पहुँचाया। अभी तक मैं अल्लाह की रोया देख रहा था। मैं रब के घर के अंदरूनी सहन के उस दरवाजे के पास पहुँच गया जिसका स्रख शिमाल की तरफ है। दरवाजे के करीब एक बूत पड़ा था जो रब को मुशतइल करके गैरत दिलाता है।

4 वहाँ इसराईल के खुदा का जलाल मुझ पर उसी तरह जाहिर हुआ जिस तरह पहले मैदान की रोया में मुझ पर जाहिर हुआ था। 5 वह मुझसे हमकलाम हुआ, “ऐ आदमजाद, शिमाल की तरफ नज़र उठा।” मैंने अपनी नज़र शिमाल की तरफ उठाई तो दरवाजे के बाहर कुरबानागाह देखी। साथ साथ दरवाजे के करीब ही वह बूत खड़ा था जो रब को गैरत दिलाता है। 6 फिर रब बोला, “ऐ आदमजाद, क्या तुझे वह कुछ नज़र आता है जो इसराईली कौम यहाँ करती है? यह लोग यहाँ बडी मकरूह हरकतें कर रहे हैं ताकि मैं अपने मक़दिस से दूर हो जाऊँ। लेकिन तू इनसे भी ज्यादा मकरूह चीज़ें देखेगा।”

7 वह मुझे रब के घर के बैरूनी सहन के दरवाजे के पास ले गया तो मैंने दीवार में स्राख देखा। 8 अल्लाह ने फरमाया, “आदमजाद, इस स्राख को बड़ा बना।” मैंने ऐसा किया जो दीवार के पीछे दरवाज़ा नज़र आया। 9 तब उसने फरमाया, “अंदर जाकर वह शरीर और धिनौनी हरकतें देख जो लोग यहाँ कर रहे हैं।”

10 मैं दरवाजे में दाखिल हुआ तो क्या देखा तू कि दीवारों पर चारों तरफ बुतपरस्ती की तस्वीरें कंदा हुई हैं। हर किस्म के रंगेनवाले और दीगर मकरूह जानवर बल्कि इसराईली कौम के तमाम बूत उन पर नज़र आए। 11 इसराईली कौम के 70 बुजुर्ग बख़रदान पकड़े उनके सामने खड़े थे। बख़रदानों में से बख़र का ख़ुशबदार धुआँ उठ रहा था। याज़नियाह बिन साफ़न भी बुजुर्गों में शामिल था।

12 रब मुझसे हमकलाम हुआ, “ऐ आदमजाद, क्या तूने देखा कि इसराईली कौम के बुजुर्ग अंधेरे में क्या कुछ कर रहे हैं? हर एक ने अपने घर में अपने बूतों के लिए कमरा मख़सूस कर रखा है। क्योंकि वह समझते हैं, ‘हम रब को नज़र नहीं आते, उसने हमारे मुल्क को तर्क कर दिया है।’ 13 लेकिन आ, मैं तुझे इससे भी ज्यादा काबिले-धिन हरकतें दिखाता हूँ।”

14 वह मुझे रब के घर के अंदरूनी सहन के शिमाली दरवाजे के पास ले गया। वहाँ औरतें बैठी थी जो रो रोककर तम्मूज़ देवता † का मातम कर रही थीं। 15 रब ने सवाल किया, “आदमजाद, क्या तुझे यह नज़र आता है? लेकिन आ, मैं तुझे इससे भी ज्यादा काबिले-धिन हरकतें दिखाता हूँ।”

16 वह मुझे रब के घर के अंदरूनी सहन में ले गया। रब के घर के दरवाजे पर यानी सामनेवाले बरामदे और कुरबानागाह के दरमियान ही 25 आदमी खड़े थे। उनका स्रख रब के घर की तरफ नहीं बल्कि मशरिक की तरफ था, और वह स्रूज को सिजदा कर रहे थे।

17 रब ने फरमाया, “ऐ आदमजाद, क्या तुझे यह नज़र आता है? और यह मकरूह हरकतें भी यहदाह के बाशिंदों के लिए काफ़ी नहीं हैं बल्कि वह पूरे मुल्क को जुल्मो-तशदुद से भरकर मुझे मुशतइल करने के लिए कोशिश करते हैं। देख, अब वह अपनी नाकों के सामने अंगूर की बेल लहराकर बुतपरस्ती की एक और रस्म अदा कर रहे हैं। 18 चुनूँचे मैं अपना गज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। न मैं उन पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा। खाह वह मदद के लिए कितने जोर से क्यों न चीखें मैं उनकी नहीं सुनूँगा।”

\* 8:11 17 सितंबर। † 8:14 तम्मूज़ मसोपुतामिया का एक देवता था जिसके पैरोकार समझते थे कि वह मौसम-गरमा के इख़िताम पर हरियाली के साथ साथ मर जाता और मौसम-बहार में दुबारा जी उठता है।

## 9

यस्शालम तबाह हो जाएगा

1 फिर मैंने अल्लाह की बुलंद आवाज सुनी, “यस्शालम की अदालत करीब आ गई है! आओ, हर एक अपना तबाहकून हथियार पकड़कर खड़ा हो जाए!” 2 तब छः आदमी रब के घर के शिमाली दरवाजे में दाखिल हुए। हर एक अपना तबाहकून हथियार थामे चल रहा था। उनके साथ एक और आदमी था जिसका लिबास कतान का था। उसके पटके से कातिब का सामान लटका हुआ था। यह आदमी करीब आकर पीतल की कूरबानगाह के पास खड़े हो गए।

3 इसराईल के खुदा का जलाल अब तक कस्बी फरिशतों के ऊपर ठहरा हुआ था। अब वह वहाँ से उड़कर रब के घर की दहलीज के पास रुक गया। फिर रब कतान से मुलब्सस उस मर्द से हमकलाम हुआ जिसके पटके से कातिब का सामान लटका हुआ था। 4 उसने फरमाया, “जा, यस्शालम शहर में से गुजरकर हर एक के माथे पर निशान लगा दे जो बाशिंदों की तमाम मकरूह हरकतों को देखकर आहो-जारी करता है।” 5 मेरे सुनते सुनते रब ने दीगर आदमियों से कहा, “पहले आदमी के पीछे पीछे चलकर लोगों को मार डालो! न किसी पर तरस खाओ, न रहम करो 6 बल्कि बुजुर्गों को कुंवारे-कुंवारियों और बाल-बच्चों समेत मौत के घाट उतारो। सिर्फ उन्हें छोड़ना जिनके माथे पर निशान है। मेरे मकदिस से शुरू करो!”

चुनौचे आदमियों ने उन बुजुर्गों से शुरू किया जो रब के घर के सामने खड़े थे। 7 फिर रब उनसे दुबारा हमकलाम हुआ, “रब के घर के सहनों को मकतूलों से भरकर उस की बेहरमती करो, फिर वहाँ से निकल जाओ!” वह निकल गए और शहर में से गुजरकर लोगों को मार डालने लगे। 8 रब के घर के सहन में सिर्फ मुझे ही जिंदा छोड़ा गया था।

मैं औंधे मुँह गिरकर चीख उठा, “ऐ रब कादिर-मुतलक, क्या तू यस्शालम पर अपना गजब नाज़िल करके इसराईल के तमाम बचे हुएओं को मौत के घाट उतारेगा?” 9 रब ने जवाब दिया, “इसराईल और यहदाह के लोगों का कुसूर निहायत ही संगीन है। मुल्क में कतलो-गारत आम है, और शहर नाइनसाफी से भर गया है। क्योंकि लोग कहते हैं, ‘रब ने मुल्क को तर्क किया है, हम उसे नज़र ही नहीं आते।’ 10 इसलिए न मैं उन पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा बल्कि उनकी हरकतों की मुनासिब सज़ा उनके सरों पर लाऊँगा।”

11 फिर कतान से मुलब्सस वह आदमी लौट आया जिसके पटके से कातिब का सामान लटका हुआ था। उसने इतला दी, “जो कुछ तुने फरमाया वह मैंने पूरा किया है।”

## 10

1 मैंने उस गुंबद पर नज़र डाली जो कस्बी फरिशतों के सरों के ऊपर फैली हुई थी। उस पर संगे-लाजवर्द \* का तख्त-सा नज़र आया। 2 रब ने कतान से मुलब्सस मर्द से फरमाया, “कस्बी फरिशतों के नीचे लगे पहियों के बीच में जा। वहाँ से दो मुठी-भर कोयले लेकर शहर पर बिखेर दे।” आदमी मेरे देखते देखते फरिशतों के बीच में चला गया। 3 उस वक़्त कस्बी फरिशते रब के घर के जूनब में खड़े थे, और अंदरूनी सहन बादल से भरा हुआ था।

4 फिर रब का जलाल जो कस्बी फरिशतों के ऊपर ठहरा हुआ था वहाँ से उठकर रब के घर की दहलीज पर रुक गया। पूरा मकान बादल से भर गया बल्कि सहन भी रब के जलाल की आबो-ताब से भर गया। 5 कस्बी फरिशते अपने परों को इतने जोर से फडफडा रहे थे कि उसका शोर बैरूनी सहन तक सुनाई दे रहा था। यों लग रहा था कि कादिर-मुतलक खुदा बोल रहा है। 6 जब रब ने कतान से मुलब्सस आदमी को हुक्म दिया कि कस्बी फरिशतों के पहियों के बीच में से जलते हुए कोयले ले तो वह उनके दरमियान चलकर एक पहिये के पास खड़ा हुआ। 7 फिर कस्बी फरिशतों में से एक ने अपना हाथ बढ़ाकर बीच में जलनेवाले कोयलों में से कुछ ले लिया और आदमी के हाथों में डाल दिया। कतान से मुलब्सस यह आदमी कोयले लेकर चला गया।

रब अपने घर को छोड़ देता है

8 मैंने देखा कि कस्बी फरिशतों के परों के नीचे कुछ है जो इंसानी हाथ जैसा लग रहा है। 9 हर फरिशते के पास एक पहिया था। पुखराज † से बने यह चार पहिये 10 एक जैसे थे। हर पहिये के अंदर एक और पहिया जावियाए-कायमा में घूम रहा था, 11 इसलिए यह मुड़े बग़ैर हर सड़ इख्तियार कर सकते थे। जिस तरफ एक चल पड़ता उस तरफ बाकी भी मुड़े बग़ैर चलने लगते। 12 फरिशतों के जिस्मों की हर जगह पर आँखें ही आँखें थीं। आँखें न सिर्फ सामने नज़र आई बल्कि उनकी पीठ, हाथों और परों पर भी बल्कि चारों पहियों पर भी। 13 तो भी यह पहिये ही थे, क्योंकि मैंने खुद सुना कि उनके लिए यही नाम इस्तेमाल हुआ।

14 हर फरिशते के चार चेहेरे थे। पहला चेहरा कस्बी का, दूसरा आदमी का, तीसरा शेबबर का और चौथा उकाब का चेहरा था। 15 फिर कस्बी फरिशते उड़ गए। वही जानदार थे जिन्हें मैं दरियाए-किवार के किनारे देख चुका था। 16 जब

\* 10:1 lapis lazuli † 10:9 topas

फरिश्ते हरकत में आ जाते तो पहिये भी चलने लगते, और जब फरिश्ते फडफडाकर उड़ने लगते तो पहिये भी उनके साथ उड़ने लगते। 17 फरिश्तों के स्कने पर पहिये स्क जाते, और उनके उड़ने पर यह भी उड़ जाते, क्योंकि जानदारों की रूह उनमें थी।

18 फिर रब का जलाल अपने घर की दहलीज़ से हट गया और दुबारा कर्बूबी फरिश्तों के ऊपर आकर ठहर गया। 19 मेरे देखते देखते फरिश्ते अपने परों को फैलाकर चल पड़े। चलते चलते वह रब के घर के मशरिकी दरवाजे के पास स्क गए। खुदाए-इसराईल का जलाल उनके ऊपर ठहरा रहा।

20 वही जानदार थे जिन्हें मैंने दरियाए-किबार के किनारे खुदाए-इसराईल के नीचे देखा था। मैंने जान लिया कि यह कर्बूबी फरिश्ते हैं। 21 हर एक के चार चेहरे और चार पर थे, और परों के नीचे कुछ नजर आया जो इनसानी हाथों की मानिंद था। 22 उनके चेहरों की शक्लो-सूरत उन चेहरों की मानिंद थी जो मैंने दरियाए-किबार के किनारे देखे थे। चलते वक़्त हर जानदार सीधा अपने किसी एक चेहरे का स्ख इख्तियार करता था।

## 11

### अल्लाह की यस्शलम के बुजुर्गों के लिए सख्त सज़ा

1 तब रूह मुझे उठाकर रब के घर के मशरिकी दरवाजे के पास ले गया। वहाँ दरवाजे पर 25 मर्द खड़े थे। मैंने देखा कि क्रौम के दो बुजुर्ग याज़नियाह बिन अज़ज़ूर और फ़लतियाह बिन बिनायाह भी उनमें शामिल हैं। 2 रब ने फरमाया, “ऐ आदमज़ाद, यह वही मर्द हैं जो शरीर मनसूबे बाँध रहे और यस्शलम में बुरे मशवरे दे रहे हैं। 3 यह कहते हैं, ‘आनेवाले दिनों में घर तामीर करने की जरूरत नहीं। हमारा शहर तो देग है जबकि हम उसमें पकनेवाला बेहतरीन गोशत हैं।’ 4 आदमज़ाद, चूँकि वह ऐसी बातें करते हैं इसलिए नबुव्वत कर! उनके खिलाफ़ नबुव्वत कर!”

5 तब रब का रूह मुझ पर आ ठहरा, और उसने मुझे यह पेश करने को कहा, “रब फरमाता है, ‘ऐ इसराईली क्रौम, तुम इस किस्म की बातें करते हो। मैं तो उन खयालात से खूब वाकिफ़ हूँ जो तुम्हारे दिलों से उभरते रहते हैं।’ 6 तुमने इस शहर में मुतअद्दिद लोगों को कल्ल करके उस की गलियों को लाशों से भर दिया है।’

7 चुनौंचे रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, ‘बेशक शहर देग है, लेकिन तुम उसमें पकनेवाला अच्छा गोशत नहीं होगे बल्कि वही जिनको तुमने उसके दरमियान कल्ल किया है। तुम्हें मैं इस शहर से निकाल दूँगा। 8 जिस तलवार से तुम डरते हो, उसी को मैं तुम पर नाज़िल करूँगा।’ यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है। 9 मैं तुम्हें शहर से निकालूँगा और परदेसियों के हवाले करके तुम्हारी अदालत करूँगा। 10 तुम तलवार की ज़द में आकर मर जाओगे। इसराईल की हृदूद पर ही मैं तुम्हारी अदालत करूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 11 चुनौंचे न यस्शलम शहर तुम्हारे लिए देग होगा, न तुम उसमें बेहतरीन गोशत होगे बल्कि मैं इसराईल की हृदूद ही पर तुम्हारी अदालत करूँगा। 12 तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ, जिसके अहकाम के मुताबिक़ तुमने ज़िंदगी नहीं गुज़ारी। क्योंकि तुमने मेरे उसलों की पैरवी नहीं की बल्कि अपनी पड़ोसी क्रौमों के उसलों की।’

13 मैं अभी इस पेशगोई का एलान कर रहा था कि फ़लतियाह बिन बिनायाह फ़ौत हुआ। यह देखकर मैं मुँह के बल गिर गया और बुलंद आवाज़ से चीख़ उठा, “हाय, हाय! ऐ रब कादिरे-मुतलक, क्या तु इसराईल के बचे-खुचे हिस्से को सरासर मिटाना चाहता है?”

### अल्लाह इसराईल को बहाल करेगा

14 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 15 “ऐ आदमज़ाद, यस्शलम के बाशिदे तेरे भाइयों, तेरे रिश्तेदारों और बाबल में जिलावतन हुए तमाम इसराईलियों के बारे में कह रहे हैं, ‘यह लोग रब से कहीं दूर हो गए हैं, अब इसराईल हमारे ही कब्ज़े में है।’ 16 जो इस किस्म की बातें करते हैं उन्हें जवाब दे, रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जि ही हैं, मैंने उन्हें दूर दूर भगा दिया, और अब वह दीगर क्रौमों के दरमियान ही रहते हैं। मैंने खुद उन्हें मुख्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर कर दिया, ऐसे इलाकों में जहाँ उन्हें मकदिस में मेरे हज़ूर आने का मौका थोड़ा ही मिलता है। 17 लेकिन रब कादिरे-मुतलक यह भी फरमाता है, ‘मैं तुम्हें दीगर क्रौमों में से निकाल लूँगा, तुम्हें उन मुलकों से जमा करूँगा जहाँ मैंने तुम्हें मुंतशिर कर दिया था। तब मैं तुम्हें मुल्के-इसराईल दुबारा अता करूँगा।’

18 फिर वह यहाँ आकर तमाम मकरूह बत और धिनौनी चीज़ें दूर करेगा। 19 उस वक़्त मैं उन्हें नया दिल बाख़्शकर उनमें नई रूह डालूँगा। मैं उनका संगीन दिल निकालकर उन्हें गोशत-पोस्त का नरम दिल अता करूँगा। 20 तब वह मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेगा और ध्यान से मेरी हिदायात पर अमल करेगा। वह मेरी क्रौम होगा, और मैं उनका खुदा हूँगा।

21 लेकिन जिन लोगों के दिल उनके धिनौने बुतों से लिपटे रहते हैं उनके सर पर मैं उनके गलत काम का मुनासिब अञ्ज लाऊँगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

रब यस्शलम को छोड़ देता है

22 फिर कस्बी फरिशतों ने अपना परो को फैलाया, उनके पहिये हरकत में आ गए और खुदा-इसराईल का जलाल जो उनके ऊपर था 23 उठकर शहर से निकल गया। चलते चलते वह यस्शलम के मशरिक में बाके पहाड पर ठहर गया। 24 अल्लाह के रूह की अताक़रदा इस रोया में रूह मुझे उठाकर मुल्के-बाबल के जिलावतनों के पास वापस ले गया। फिर रोया खत्म हुई, 25 और मैंने जिलावतनों को सब कुछ सुनाया जो रब ने मुझे दिखाया था।

## 12

नबी सामान लपेटकर जिलावतनी की पेशगोई करता है

1 रब मुझे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, तू एक सरकश क्रौम के दरमियान रहता है। गो उनकी आँखें हैं तो भी कुछ नहीं देखते, गो उनके कान हैं तो भी कुछ नहीं सुनते। क्योंकि यह क्रौम हटधर्म है।

3 ऐ आदमजाद, अब अपना सामान यों लपेट ले जिस तरह तुझे जिलावतन किया जा रहा हो। फिर दिन के वक़्त और उनके देखते देखते घर से रवाना होकर किसी और जगह चला जा। शायद उन्हें समझ आए कि उन्हें जिलावतन होना है, हालाँकि यह क्रौम सरकश है। 4 दिन के वक़्त उनके देखते देखते अपना सामान घर से निकाल ले, यों जैसे तू जिलावतनी के लिए तैयारियों कर रहा हो। फिर शाम के वक़्त उनकी मौजूदगी में जिलावतन का-सा किरदार अदा करके रवाना हो जा। 5 घर से निकलने के लिए दीवार में स़राख बना, फिर अपना सारा सामान उसमें से बाहर ले जा। सब इसके गवाह हों। 6 उनके देखते देखते अंधेरे में अपना सामान कंधे पर रखकर वहाँ से निकल जा। लेकिन अपना मुँह ढाँप ले ताकि तू मुल्क को देख न सके। लाज़िम है कि तू यह सब कुछ करे, क्योंकि मैंने मुकर्रर किया है कि तू इसराईली क्रौम को आगाह करने का निशान बन जाए।”

7 मैंने वैसा ही किया जैसा रब ने मुझे हुक्म दिया था। मैंने अपना सामान यों लपेट लिया जैसे मुझे जिलावतन किया जा रहा हो। दिन के वक़्त मैं उसे घर से बाहर ले गया, शाम को मैंने अपने हाथों से दीवार में स़राख बना लिया। लोगों के देखते देखते मैं सामान को अपने कंधे पर उठाकर वहाँ से निकल आया। उतने में अंधेरा हो गया था।

8 सुबह के वक़्त रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 9 “ऐ आदमजाद, इस हटधर्म क्रौम इसराईल ने तुझसे पूछा कि तू क्या कर रहा है? 10 उन्हें जवाब दे, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि इस पैगाम का ताल्लुक यस्शलम के रईस और शहर में बसनेवाले तमाम इसराईलियों से है।’ 11 उन्हें बता, ‘मैं तुम्हें आगाह करने का निशान हूँ। जो कुछ मैंने किया वह तुम्हारे साथ हो जाएगा। तुम कैदी बनकर जिलावतन हो जाओगे।’ 12 जो रईस तुम्हारे दरमियान है वह अंधेरे में अपना सामान कंधे पर उठाकर चला जाएगा। दीवार में स़राख बनाया जाएगा ताकि वह निकल सके। वह अपना मुँह ढाँप लेगा ताकि मुल्क को न देख सके। 13 लेकिन मैं अपना जाल उस पर डाल दूँगा, और वह मेरे फंदे में फँस जाएगा। मैं उसे बाबल लाऊँगा जो बाबलियों के मुल्क में है, अगरचे वह उसे अपनी आँखों से नहीं देखेगा। वही वह वफ़ात पाएगा। 14 जितने भी मुलाज़िम और दस्ते उसके इर्दगिर्द होंगे उन सबको मैं हवा में उड़ाकर चारों तरफ़ मुंतशिर कर दूँगा। अपनी तलवार को मियान से खींचकर मैं उनके पीछे पड़ा रहूँगा। 15 जब मैं उन्हें दीगर अक्रवाम और मुख्तलिफ़ ममालिक में मुंतशिर करूँगा तो वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 16 लेकिन मैं उनमें से चंद एक को बचाकर तलवार, काल और मोहलक वबा की जद में नहीं आने दूँगा। क्योंकि लाज़िम है कि जिन अक्रवाम में भी वह जा बसें वहाँ वह अपनी मकरूह हरकतें बयान करें। तब यह अक्रवाम भी जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ।”

एक और निशान : हिज्रकियेल का काँपना

17 रब मुझे हमकलाम हुआ, 18 “ऐ आदमजाद, खाना खाते वक़्त अपनी रोटी को लरजते हुए खा और अपने पानी को पेशानी के मारे थरथराते हुए पी। 19 साथ साथ उम्मत को बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मुल्के-इसराईल के शहर यस्शलम के बाशिंदे पेशानी में अपना खाना खाएँ और दहशतज़दा हालत में अपना पानी पीएँ, क्योंकि उनका मुल्क तबाह और हर बरकत से खाली हो जाएगा। और सबब उसके बाशिंदों का जुल्मो-तशदुद होगा।’ 20 जिन शहरों में लोग अब तक आबाद हैं वह बरबाद हो जाएँगे, मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।”

अल्लाह का कलाम जल्द ही पूरा हो जाएगा

21 रब मुझे हमकलाम हुआ, 22 “ऐ आदमजाद, यह कैसी कहावत है जो मुल्के-इसराईल में आम हो गई है? लोग कहते हैं, ‘ज्यों-ज्यों दिन गुज़रते जाते हैं त्यों-त्यों हर रोया ग़लत साबित होती जाती है।’ 23 जवाब में उन्हें बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं इस कहावत को खत्म करूँगा, आईदा यह इसराईल में इस्तेमाल नहीं होगी।’ उन्हें यह भी बता, ‘वह वक़्त



करीब ही है जब हर रोया पूरी हो जाएगी। 24 क्योंकि आइंदा इसराईली कौम में न फरेबदेह रोया, न चापलूसी की पेशगोइयाँ पाई जाएँगी। 25 क्योंकि मैं रब हूँ। जो कुछ मैं फरमाता हूँ वह वज्र में आता है। ऐ सरकश कौम, देर नहीं होगी बल्कि तुम्हारे ही ऐयाम में मैं बात भी करूँगा और उसे पूरा भी करूँगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

26 रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, 27 “ऐ आदमज़ाद, इसराईली कौम तेरे बारे में कहती है, ‘जो रोया यह आदमी देखता है वह बड़ी देर के बाद ही पूरी होगी, उस की पेशगोइयाँ दूर के मुस्तकबिल के बारे में हैं।’ 28 लेकिन उन्हें जवाब दे, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जो कुछ भी मैं फरमाता हूँ उसमें मज़ीद देर नहीं होगी बल्कि वह जल्द ही पूरा होगा।’ यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

## 13

झूटे नबी हलाक हो जाएंगे

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, इसराईल के नाम-निहाद नबियों के खिलाफ नबुवत कर! जो नबुवत करते वक्त अपने दिलों से उभरनेवाली बातों ही पेश करते हैं, उनसे कह,

‘रब का फरमान सुनो! 3 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि उन अहमक नबियों पर अफसोस जिन्हें अपनी ही रूह से तहरीक मिलती है और जो हकीकत में रोया नहीं देखते। 4 ऐ इसराईल, तेरे नबी खंडरात में लोमडियों की तरह आवारा फिर रहे हैं। 5 न कोई दीवार के रखनों में खडा हुआ, न किसी ने उस की मरम्मत की ताकि इसराईली कौम रब के उस दिन क्रायम रह सके जब जंग छिड़ जाएगी। 6 उनकी रोयाएँ धोका ही धोका, उनकी पेशगोइयाँ झूट ही झूट हैं। वह कहते हैं, ‘रब फरमाता है’ गो रब ने उन्हें नहीं भेजा। ताज्जुब की बात है कि तो भी वह तवक्को करते हैं कि मैं उनकी पेशगोइयाँ पूरी होने दूँ! 7 हकीकत में तुम्हारी रोयाएँ धोका ही धोका और तुम्हारी पेशगोइयाँ झूट ही झूट हैं। तो भी तुम कहते हो, ‘रब फरमाता है’ हालाँकि मैंने कुछ नहीं फरमाया।

8 चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं तुम्हारी फरेबदेह बातों और झूटी रोयाओं की वजह से तुमसे निपट लूँगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है। 9 मैं अपना हाथ उन नबियों के खिलाफ बढ़ा दूँगा जो धोके की रोयाएँ देखते और झूटी पेशगोइयाँ सुनाते हैं। न वह मेरी कौम की मजलिस में शरीक होंगे, न इसराईली कौम की फहरिस्तों में दर्ज होंगे। मुल्के-इसराईल में वह कभी दाखिल नहीं होंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब कादिरे-मुतलक हूँ। 10 वह मेरी कौम को गलत राह पर लाकर अमनो-अमान का एलान करते हैं अगरचे अमनो-अमान है नहीं। जब कौम अपने लिए कचची-सी दीवार बना लेती है तो यह नबी उस पर सफेदी फेर देते हैं। 11 लेकिन ऐ सफेदी करनेवालो, खबरदार! यह दीवार गिर जाएगी। मुसलाधार बारिश बरसेगी, ओले पड़ेगे और सख्त आँधी उस पर टूट पड़ेगी। 12 तब दीवार गिर जाएगी, और लोग तंजन तुमसे पछेंगे कि अब वह सफेदी कहाँ है जो तुमने दीवार पर फेरी थी?

13 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं तैश में आकर दीवार पर ज़बरदस्त आँधी आने दूँगा, गुस्से में उस पर मुसलाधार बारिश और मोहलक ओले बरसा दूँगा। 14 मैं उस दीवार को ढा दूँगा जिस पर तुमने सफेदी फेरी थी, उसे खाक में यों मिला दूँगा कि उस की बुनियद नज़र आएगी। और जब वह गिर जाएगी तो तुम भी उस की ज़द में आकर तबाह हो जाओगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 15 यों मैं दीवार और उस की सफेदी करनेवालों पर अपना गुस्सा उताऊँगा। तब मैं तुमसे कहूँगा कि दीवार भी ख़तम है और उस की सफेदी करनेवाले भी, 16 यानी इसराईल के वह नबी जिन्होंने यस्शलम को ऐसी पेशगोइयाँ और रोयाएँ सुनाई जिनके मुताबिक अमनो-अमान का दौर करीब ही है, हालाँकि अमनो-अमान का इमकान ही नहीं। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।’

17 ऐ आदमज़ाद, अब अपनी कौम की उन बेटियों का सामना कर जो नबुवत करते वक्त वही बातें पेश करती हैं जो उनके दिलों से उभर आती हैं। उनके खिलाफ नबुवत करके 18 कह,

‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि उन औरतों पर अफसोस जो तमाम लोगों के लिए कलाई से बाँधनेवाले तावीज़-सी लेती हैं, जो लोगों को फँसाने के लिए छोटों और बड़ों के सरों के लिए परदे बना लेती हैं। ऐ औरतों, क्या तुम वाकई समझती हो कि मेरी कौम में से बाज़ को फाँस सकती और बाज़ को अपने लिए जिंदा छोड़ सकती हो? 19 मेरी कौम के दरमियान ही तुमने मेरी बेहुरमती की, और यह सिर्फ़ चंद एक मुष्टी-भर जौ और रोटी के दो-चार टुकड़ों के लिए। अफसोस, मेरी कौम झूट सुनना पसंद करती है। इससे फायदा उठाकर तुमने उसे झूट पेश करके उन्हें मार डाला जिन्हें मरना नहीं था और उन्हें जिंदा छोड़ा जिन्हें जिंदा नहीं रहना था।

20 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं तुम्हारे तावीज़ों से निपट लूँगा जिनके ज़रीए तुम लोगों को परिंदों की तरह पकड़ लेती हो। मैं जादूगरी की यह चीज़ें तुम्हारे बाजूओं से नोचकर फाड़ डालूँगा और उन्हें रिहा करूँगा जिन्हें तुमने

परिदों की तरह पकड़ लिया है। 21 मैं तुम्हारे परदों को फाड़कर हटा लूँगा और अपनी क्रौम को तुम्हारे हाथों से बचा लूँगा। आइंदा वह तुम्हारा शिकार नहीं रहेगी। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ।

22 तुमने अपने झूट से रास्तबाजों को दुख पहुँचाया, हालाँकि यह दुख मेरी तरफ से नहीं था। साथ साथ तुमने बेदीनों की हौसलाअफजाई की कि वह अपनी बुरी राहों से बाज़ न आएँ, हालाँकि वह बाज़ आने से बच जाते। 23 इसलिए आइंदा न तुम फ़रेबदेह रोया देखोगी, न दूसरों की क्रिस्मत का हाल बताओगी। मैं अपनी क्रौम को तुम्हारे हाथों से छुटकारा दूँगा। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ।”

## 14

अल्लाह बुतपरस्ती का मुनासिब जवाब देगा

1 इसराईल के कुछ बुजुर्ग मुझसे मिलने आए और मेरे सामने बैठ गए। 2 तब रब मुझसे हमकलाम हुआ, 3 “ऐ आदमज़ाद, इन आदमियों के दिल अपने बुतों से लिपटे रहते हैं। जो चीज़ें उनके लिए ठोकर और गुनाह का बाइस हैं उन्हें उन्होंने अपने मुँह के सामने ही रखा है। तो फिर क्या मुनासिब है कि मैं उन्हें जवाब दूँ जब वह मुझसे दरियाफ़्त करने आते हैं? 4 उन्हें बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, यह लोग अपने बुतों से लिपटे रहते और वह चीज़ें अपने मुँह के सामने रखते हैं जो ठोकर और गुनाह का बाइस हैं। साथ साथ यह नबी के पास भी जाते हैं ताकि मुझसे मालूमात हासिल करें। जो भी इसराईली ऐसा करे उसे मैं खुद जो रब हूँ जवाब दूँगा, ऐसा जवाब जो उसके मुतअदिद बुतों के ऐन मुताबिक होगा। 5 मैं उनसे ऐसा सलूक करूँगा ताकि इसराईली क्रौम के दिल को मज़बूती से पकड़ लूँ। क्योंकि अपने बुतों की खातिर सबके सब मुझसे दूर हो गए हैं।’

6 चुनौचे इसराईली क्रौम को बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि तौबा करो! अपने बुतों और तमाम मकरूह रस्मो-रिवाज से मुँह मोड़कर मेरे पास वापस आ जाओ। 7 उसके अंजाम पर ध्यान दो जो ऐसा नहीं करेगा, खाह वह इसराईली या इसराईल में रहनेवाला परदेसी हो। अगर वह मुझसे दूर होकर अपने बुतों से लिपट जाए और वह चीज़ें अपने सामने रखे जो ठोकर और गुनाह का बाइस हैं तो जब वह नबी की मारिफ़त मुझसे मालूमात हासिल करने की कोशिश करेगा तो मैं, रब उसे मुनासिब जवाब दूँगा। 8 मैं ऐसे शख्स का सामना करके उससे यों निपट लूँगा कि वह दूसरों के लिए इबतरअंगेज़ मिसाल बन जाएगा। मैं उसे यों मिटा दूँगा कि मेरी क्रौम में उसका नामो-निशान तक नहीं रहेगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।’

9 अगर किसी नबी को कुछ सुनाने पर उकसाया गया जो मेरी तरफ से नहीं था तो यह इसलिए हुआ कि मैं, रब ने खुद उसे उकसाया। ऐसे नबी के खिलाफ मैं अपना हाथ उठाकर उसे यों तबाह करूँगा कि मेरी क्रौम में उसका नामो-निशान तक नहीं रहेगा। 10 दोनों को उनके कुसूर की मुनासिब सज़ा मिलेगी, नबी को भी और उसे भी जो हिदायत पाने के लिए उसके पास आता है। 11 तब इसराईली क्रौम न मुझसे दूर होकर आवाप फ़िरेगी, न अपने आपको इन तमाम गुनाहों से आलूदा करेगी। वह मेरी क्रौम होंगे, और मैं उनका खुदा हूँगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।”

सिर्फ रास्तबाज़ ही बचे रहेंगे

12 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 13 “ऐ आदमज़ाद, फ़र्ज़ कर कि कोई मुल्क बेवफ़ा होकर मेरा गुनाह करे, और मैं काल के ज़रीए उसे सज़ा देकर उसमें से इनसानो-हैवान मिटा डालूँ। 14 खाह मुल्क में नूह, दानियाल और अय्यूब क्यो न बसते तो भी मुल्क न बचता। यह आदमी अपनी रास्तबाज़ी से सिर्फ अपनी ही जानों को बचा सकते। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

15 या फ़र्ज़ कर कि मैं मज़कूरा मुल्क में वहशी दरिदों को भेज दूँ जो इधर उधर फिरकर सबको फाड़ खाएँ। मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाए और जंगली दरिदों की वजह से कोई उसमें से गुज़रने की जूरत न करे। 16 मेरी हयात की कसम, खाह मज़कूरा तीन रास्तबाज़ आदमी मुल्क में क्यो न बसते तो भी अकेले ही बचते। वह अपने बेटे-बेटियों को भी बचा न सकते बल्कि पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान होता। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

17 या फ़र्ज़ कर कि मैं मज़कूरा मुल्क को जंग से तबाह करूँ, मैं तलवार को हुकम दूँ कि मुल्क में से गुज़रकर इनसानो-हैवान को नेस्तो-नाबूद कर दे। 18 मेरी हयात की कसम, खाह मज़कूरा तीन रास्तबाज़ आदमी मुल्क में क्यो न बसते वह अकेले ही बचते। वह अपने बेटे-बेटियों को भी बचा न सकते। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

19 या फ़र्ज़ कर कि मैं अपना गुस्सा मुल्क पर उतारकर उसमें मोहलक वबा यों फैला दूँ कि इनसानो-हैवान सबके सब मर जाएँ। 20 मेरी हयात की कसम, खाह नूह, दानियाल और अय्यूब मुल्क में क्यो न बसते तो भी वह अपने बेटे-बेटियों को बचा न सकते। वह अपनी रास्तबाज़ी से सिर्फ अपनी ही जानों को बचाते। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

21 अब यस्शलम के बारे में रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान सुनो! यस्शलम का कितना बुरा हाल होगा जब मैं अपनी चार सख़्त सज़ाएँ उस पर नाज़िल करूँगा। क्योंकि इनसानो-हैवान जंग, काल, वहशी दरिदों और मोहलक वबा की ज़द में

आकर हलाक हो जाएंगे। 22 तो भी चंद एक बचेगे, कुछ बेटे-बेटियाँ जिलावतन होकर बाबल में तुम्हारे पास आएँगे। जब तुम उनका बुरा चाल-चलन और हरकतें देखोगे तो तुम्हें तसल्ली मिलेगी कि हर आफत मुनासिब थी जो मैं यरूशलम पर लाया। 23 उनका चाल-चलन और हरकतें देखकर तुम्हें तसल्ली मिलेगी, क्योंकि तुम जान लोगे कि जो कुछ भी मैंने यरूशलम के साथ किया वह बिलावजह नहीं था। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।”

## 15

यरूशलम अंगूर की बेल की बेकार लकड़ी है

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, अंगूर की बेल की लकड़ी किस लिहाज़ से जंगल की दीगर लकड़ियों से बेहतर है? 3 क्या यह किसी काम आ जाती है? क्या यह कम अज़ कम खूँटियाँ बनाने के लिए इस्तेमाल हो सकती है जिनसे चीज़ें लटकाई जा सकें? हरगिज़ नहीं! 4 उसे ईंधन के तौर पर आग में फेंका जाता है। इसके बाद जब उसके दोनों सिरे भस्म हुए हैं और बीच में भी आग लग गई है तो क्या वह किसी काम आ जाती है? 5 आग लगने से पहले भी बेकार थी, तो अब वह किस काम आएगी जब उसके दोनों सिरे भस्म हुए हैं बल्कि बीच में भी आग लग गई है?”

6 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि यरूशलम के बाशिंदे अंगूर की बेल की लकड़ी जैसे हैं जिन्हें मैं जंगल के दरख्तों के दरमियान से निकालकर आग में फेंक देता हूँ। 7 क्योंकि मैं उनके खिलाफ उठ खड़ा हूँगा। गो वह आग से बच निकले हैं तो भी आखिरकार आग ही उन्हें भस्म करेगी। जब मैं उनके खिलाफ उठ खड़ा हूँगा तो तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 8 पूरे मुल्क को मैं वीरानो-सुनसान कर दूँगा, इसलिए कि वह बेवफा साबित हुए हैं। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।”

## 16

यरूशलम बेवफा औरत है

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, यरूशलम के जहन में उस की मकरूह हरकतों की संजीदगी बिठाकर 3 एलान कर कि रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, ‘ऐ यरूशलम बेटी, तेरी नसल मुल्के-कनान की है, और वही तू पैदा हुई। तेरा बाप अमोरी, तेरी माँ हिती थी। 4 पैदा होते वक़्त नाफ के साथ लगी नाल को काटकर दूर नहीं किया गया। न तुझे पानी से नहलाया गया, न तेरे जिस्म पर नमक मला गया, और न तुझे कपड़ों में लपेटा गया। 5 न किसी को इतना तरस आया, न किसी ने तुझ पर इतना रहम किया कि इन कामों में से एक भी करता। इसके बजाए तुझे खुले मैदान में फेंककर छोड़ दिया गया। क्योंकि जब तू पैदा हुई तो सब तुझे हकीर जानते थे।

6 तब मैं वहाँ से गुज़रा। उस वक़्त तू अपने खून में तड़प रही थी। तुझे इस हालत में देखकर मैं बोला, “जीती रह!” हॉ, तू अपने खून में तड़प रही थी जब मैं बोला, “जीती रह! 7 खेत में हरियाली की तरह फलती-फूलती जा!” तब तू फलती-फूलती हुई परवान चढ़ी। तू निहायत खूबसूरत बन गई। छायियाँ और बाल देखने में प्यारे लगे। लेकिन अभी तक तू नंगी और बरहना थी।

8 मैं दुबारा तेरे पास से गुज़रा तो देखा कि तू शायी के काबिल हो गई है। मैंने अपने लिबास का दामन तुझ पर बिछाकर तेरी बरहनगी को ढाँप दिया। मैंने क़सम खाकर तेरे साथ अहद बाँधा और यों तेरा मालिक बन गया। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

9 मैंने तुझे नहलाकर खून से साफ़ किया, फिर तेरे जिस्म पर तेल मला। 10 मैंने तुझे शानदार लिबास और चमड़े के नफ़ीस जूते पहनाए, तुझे बारीक कपान और कीमती कपड़े से मुल्बबस किया। 11 फिर मैंने तुझे खूबसूरत जेवरात, चूड़ियों, हार, 12 नथ, बालियों और शानदार ताज से सजाया। 13 यों तू सोने-चाँदी से आरास्ता और बारीक कपान, रेशम और शानदार कपड़े से मुल्बबस हुई। तेरी खुराक बेहतरीन मैदे, शहद और जैतून के तेल पर मुश्तमिल थी। तू निहायत ही खूबसूरत हुई, और होते होते मलिका बन गई। 14 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, ‘तेरे हुस की शोहरत दीगर अक़वाम में फैल गई, क्योंकि मैंने तुझे अपनी शानो-शौकत में यों शरीक किया था कि तेरा हुस कामिल था।

15 लेकिन तूने क्या किया? तूने अपने हुस पर भरोसा रखा। अपनी शोहरत से फायदा उठाकर तू ज़िनाकार बन गई। हर गुज़रनेवाले को तूने अपने आपको पेश किया, हर एक को तेरा हुस हासिल हुआ। 16 तूने अपने कुछ शानदार कपड़े लेकर अपने लिए रंगदार बिस्तर बनाया और उसे ऊँची जगहों पर बिछाकर ज़िना करने लगी। ऐसा न मारजी में कभी हुआ, न आइंदा कभी होगा। 17 तूने वही नफ़ीस जेवरात लिए जो मैंने तुझे दिए थे और मेरी ही सोने-चाँदी से अपने लिए मर्दों के बुत ढालकर उनसे ज़िना करने लगी। 18 उन्हें अपने शानदार कपड़े पहनाकर तूने मेरा ही तेल और बखूर उन्हें पेश किया। 19 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, ‘जो खुराक यानी बेहतरीन मैदा, जैतून का तेल और शहद मैंने तुझे दिया था उसे तूने उन्हें पेश किया ताकि उस की खुशबू उन्हें पसंद आए।

20 जिन बेटे-बेटियों को तुने मेरे हों जन्म दिया था उन्हें तुने कुरबान करके बुतों को खिलाया। क्या तू अपनी जिनाकारी पर इकतिफान कर सकी? 21 क्या ज़रूरत थी कि मेरे बच्चों को भी कत्ल करके बुतों के लिए जला दे? 22 ताज्जुब है कि जब भी तू ऐसी मकरूह हरकतें और जिना करती थी तो तुझे एक बार भी जवानी का खयाल न आया, यानी वह वक़्त जब तू नंगी और बरहना हालत में अपने खून में तड़पती रही।’

23 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘अफ़सोस, तुझ पर अफ़सोस! अपनी बाकी तमाम शरारतों के अलावा 24 तुने हर चौक में बुतों के लिए कुरबानगाह तामीर करके हर एक के साथ जिना करने की जगह भी बनाई। 25 हर गली के कोने में तुने जिना करने का कमरा बनाया। अपने हुस्न की बेहमती करके तू अपनी इसमतफ़रोशी ज़ोरों पर लाई। हर गुज़रनेवाले को तुने अपना बदन पेश किया। 26 पहले तू अपने शहवतपरस्त पड़ोसी मिसर के साथ जिना करने लगी। जब तुने अपनी इसमतफ़रोशी को ज़ोरों पर लाकर मुझे मुशतइल किया 27 तो मैंने अपना हाथ तेरे खिलाफ़ बढ़ाकर तेरे इलाके को छोटा कर दिया। मैंने तुझे फ़िलिस्ती बेटियों के लालच के हवाले कर दिया, उनके हवाले जो तुझसे नफ़रत करती हैं और जिनको तेरे जिनाकाराना चाल-चलन पर शर्म आती है।

28 अब तक तेरी शहवत को तसकीन नहीं मिली थी, इसलिए तू अस्मूरियों से जिना करने लगी। लेकिन यह भी तेरे लिए काफ़ी न था। 29 अपनी जिनाकारी में इज़ाफ़ा करके तू सौदागरों के मुल्क बाबल के पीछे पड़ गई। लेकिन यह भी तेरी शहवत के लिए काफ़ी नहीं था। 30 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘ऐसी हरकतें करके तू कितनी सरग़रम हुई! साफ़ ज़ाहिर हुआ कि तू ज़बरदस्त कसबी है। 31 जब तुने हर चौक में बुतों की कुरबानगाह बनाई और हर गली के कोने में जिना करने का कमरा तामीर किया तो तू आम कसबी से मुख़लिफ़ थी। क्योंकि तुने अपने गाहकों से पैसे लेने से इनकार किया। 32 हाय, तू कैसी बदकार बीवी है! अपने शौहर पर तू दीगर मर्दों को तरज़ीह देती है। 33 हर कसबी को फ़ीस मिलती है, लेकिन तू तो अपने तमाम आशिकों को तोहफ़े देती है ताकि वह हर जगह से आकर तेरे साथ जिना करें। 34 इसमें तू दीगर कसबियों से फ़रक़ है। क्योंकि न गाहक तेरे पीछे भागते, न वह तेरी मुहब्बत का मुआवज़ा देते हैं बल्कि तू खुद उनके पीछे भागती और उन्हें अपने साथ जिना करने का मुआवज़ा देती है।’

35 ऐ कसबी, अब रब का फ़रमान सुन ले! 36 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘तुने अपने आशिकों को अपनी बरहनगी दिखाकर अपनी इसमतफ़रोशी की, तुने मकरूह बुत बनाकर उनकी पूजा की, तुने उन्हें अपने बच्चों का खून कुरबान किया है। 37 इसलिए मैं तेरे तमाम आशिकों को इक़ठा करूँगा, उन सबको जिन्हें तू पसंद आई, उन्हें भी जो तुझे प्यारे थे और उन्हें भी जिनसे तुने नफ़रत की। मैं उन्हें चारों तरफ़ से जमा करके तेरे खिलाफ़ भेजूँगा। तब मैं उनके सामने ही तेरे तमाम कपड़े उतारूँगा ताकि वह तेरी पूरी बरहनगी देखें। 38 मैं तेरी अदालत करके तेरी जिनाकारी और कातिलाना हरकतों का फ़ैसला करूँगा। मेरा गुस्सा और मेरी ग़ैरत तुझे ख़ुनरेज़ी की सज़ा देगी।

39 मैं तुझे तेरे आशिकों के हवाले करूँगा, और वह तेरे बुतों की कुरबानगाहें उन कमरों समेत ढा देंगे जहाँ तू जिनाकारी करती रही है। वह तेरे कपड़े और शानदार ज़ेवरात उतारकर तुझे उरियाँ और बरहना छोड़ देंगे। 40 वह तेरे खिलाफ़ जुल्म निकालेंगे और तुझे संसार करके तलवार से टुकड़े टुकड़े कर देंगे। 41 तेरे घरों को जलाकर वह मृतअहिद औरतों के देखते देखते तुझे सज़ा देंगे। यों मैं तेरी जिनाकारी को रोक दूँगा, और आईदा तू अपने आशिकों को जिना करने के पैसे नहीं दे सकेगी।

42 तब मेरा गुस्सा ठंडा हो जाएगा, और तू मेरी ग़ैरत का निशाना नहीं रहेगी। मेरी नाराज़ी ख़त्म हो जाएगी, और मुझे दुबारा तसकीन मिलेगी।’ 43 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘मैं तेरे सर पर तेरी हरकतों का पूरा नतीजा लाऊँगा, क्योंकि तुझे जवानी में मेरी मदद की याद न रही बल्कि तू मुझे इन तमाम बातों से तैश दिलाती रही। बाकी तमाम धिनौनी हरकतें तेरे लिए काफ़ी नहीं थी बल्कि तू जिना भी करने लगी।

44 तब लोग यह कहावत कहकर तेरा मज़ाक़ उड़ाएँगे, “जैसी माँ, वैसी बेटे!” 45 तू वाकई अपनी माँ की मानिंद है, जो अपने शौहर और बच्चों से सख़्त नफ़रत करती थी। तू अपनी बहनों की मानिंद भी है, क्योंकि वह भी अपने शौहरों और बच्चों से सख़्त नफ़रत करती थी। तेरी माँ हिती और तेरा बाप अमोरी था। 46 तेरी बड़ी बहन सामरिया थी जो अपनी बेटियों के साथ तेरे शिमाल में आबाद थी। और तेरी छोटी बहन सदम थी जो अपनी बेटियों के साथ तेरे चुन्ब में रहती थी। 47 तू न सिर्फ़ उनके ग़लत नमूने पर चल पड़ी और उनकी-सी मकरूह हरकतें करने लगी बल्कि उनसे कहीं ज़्यादा बुरा काम करने लगी।’ 48 रब कादिरे-मुतलक़ फ़रमाता है, ‘मेरी हयात की क़सम, तेरी बहन सदम और उस की बेटियों से कभी इतना ग़लत काम सरज़द न हुआ जितना कि तुझसे और तेरी बेटियों से हुआ है। 49 तेरी बहन सदम का क्या कुसूर था? वह अपनी बेटियों समेत मुतकब्बिर थी। गो उन्हें ख़ुराक की क़सरत और आरामो-सुकून हासिल था तो भी वह मुसीबतज़दों और ग़रीबों का सहारा नहीं बनती थी। 50 वह मग़रूर थी और मेरी मौजूदगी में ही धिनौना काम करती थी। इसी वजह से मैंने उन्हें हटा दिया। तू खुद इसकी ग़वाह है। 51 सामरिया पर भी ग़ौर कर। जितने गुनाह तुझसे सरज़द हुए उनका आधा हिस्सा भी उससे

न हुआ। अपनी बहनों की निसबत तुने कही ज्यादा धिनौनी हरकतें की हैं। तेरे मुकाबले में तेरी बहनें फरिश्ते हैं। 52 चुनाँचे अब अपनी खजालत को बरदाशत कर। क्योंकि अपने गुनाहों से तू अपनी बहनों की जगह खड़ी हो गई है। तुने उनसे कही ज्यादा काबिले-धिन काम किए हैं, और अब वह तेरे मुकाबले में मासूम बच्चे लगती हैं। शर्म खा खाकर अपनी स्सवाई को बरदाशत कर, क्योंकि तुझसे ऐसे संगीन गुनाह सरजद हुए हैं कि तेरी बहनें रास्तबाज़ ही लगती हैं।

तो भी रब वफ़ादार रहेगा

53 लेकिन एक दिन आएगा जब मैं सद्म, सामरिया, तुझे और तुम सबकी बेटीयों को बहाल करूँगा। 54 तब तू अपनी स्सवाई बरदाशत कर सकेगी और अपने सारे गलत काम पर शर्म खाएगी। सद्म और सामरिया यह देखकर तसल्ली पाएँगी। 55 हौं, तेरी बहनें सद्म और सामरिया अपनी बेटीयों समेत दुबारा कायम हो जाएँगी। तू भी अपनी बेटीयों समेत दुबारा कायम हो जाएँगी।

56 पहले तू इतनी मग़्सूर थी कि अपनी बहनें सद्म का जिक्र तक नहीं करती थी। 57 लेकिन फिर तेरी अपनी बुराई पर रौशानी डाली गई, और अब तेरी तमाम पडोसनें तेरा ही मजाक उडाती हैं, खाह अदोमी हों, खाह फिलिस्ती। सब तुझे हकीर जानती हैं। 58 चुनाँचे अब तुझे अपनी जिनाकारी और मकरूह हरकतों का नतीजा भुगतना पड़ेगा। यह रब का फ़रमान है।

59 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, 'मैं तुझे मुनासिब सज़ा दूँगा, क्योंकि तुने मेरा वह अहद तोड़कर उस क़सम को हकीर जाना है जो मैंने तेरे साथ अहद बाँधते वक़्त खाई थी। 60 तो भी मैं वह अहद याद करूँगा जो मैंने तेरी जवानी में तेरे साथ बाँधा था। न सिर्फ़ यह बल्कि मैं तेरे साथ अब्दी अहद कायम करूँगा। 61 तब तुझे वह गलत काम याद आएगा जो पहले तुझसे सरजद हुआ था, और तुझे शर्म आएगी जब मैं तेरी बड़ी और छोटी बहनों को लेकर तेरे हवाले करूँगा ताकि वह तेरी बेटीयों बन जाएँ। लेकिन यह सब कुछ इस वजह से नहीं होगा कि तू अहद के मुताबिक चलती रही है। 62 मैं ख़ुद तेरे साथ अपना अहद कायम करूँगा, और तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ।' 63 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, 'जब मैं तेरे तमाम गुनाहों को मुआफ़ करूँगा तब तुझे उनका खयाल आकर शर्मिंदगी महसूस होगी, और तू शर्म के मारे गुमसूम रहेगी।''

## 17

अंगूर की बेल और उकाब की तमसील

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 'ऐ आदमज़ाद, इसराईली क़ौम को पहेली पेश कर, तमसील सुना दे। 3 उन्हें बता, 'रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि एक बड़ा उकाब उड़कर मुल्के-लुबनान में आया। उसके बड़े बड़े पर और लंबे लंबे पंख थे, उसके घने और रंगीन बालो-पर चमक रहे थे। लुबनान में उसने एक देवदार के दरख़्त की चोटी पकड़ ली 4 और उस की सबसे ऊँची शाख को तोड़कर ताजिरों के मुल्क में ले गया। वहाँ उसने उसे सौदागरों के शहर में लगा दिया। 5 फिर उकाब इसराईल में आया और वहाँ से कुछ बीज लेकर एक बड़े दरिया के किनारे पर ज़रखेज़ ज़मीन में बो दिया। 6 तब अंगूर की बेल फूट निकली जो ज्यादा ऊँची न हुई बल्कि चारों तरफ फैलती गई। शाखों का सख़ उकाब की तरफ रहा जबकि उस की जड़ें ज़मीन में धँसती गईं। चुनाँचे अच्छी बेल बन गई जो फूटती फूटती नई शाखें निकालती गईं।

7 लेकिन फिर एक और बड़ा उकाब आया। उसके भी बड़े बड़े पर और घने घने बालो-पर थे। अब मैं क्या देखता हूँ, बेल दूसरे उकाब की तरफ सख़ करने लगती है। उस की जड़ें और शाखें उस खेत में न रही जिसमें उसे लगाया गया था बल्कि वह दूसरे उकाब से पानी मिलने की उम्मीद रखकर उसी की तरफ फैलने लगी। 8 ताज्जुब यह था कि उसे अच्छी ज़मीन में लगाया गया था, जहाँ उसे कसरत का पानी हासिल था। वहाँ वह ख़ूब फैलकर फल ला सकती थी, वहाँ वह जबरदस्त बेल बन सकती थी।'

9 अब रब कादिरे-मुतलक पूछता है, 'क्या बेल की नशो-नुमा जारी रहेगी? हरगिज़ नहीं! क्या उसे जड़ से उखाड़कर फेंका नहीं जाएगा? ज़स्र! क्या उसका फल छीन नहीं लिया जाएगा? बेशक बल्कि आखिरकार उस की ताज़ा ताज़ा कोपलें भी सबकी सब मुरझाकर ख़त्म हो जाएँगी। तब उसे जड़ से उखाड़ने के लिए न ज्यादा लोगों, न ताकत की ज़रूरत होगी। 10 गो उसे लगाया गया है तो भी बेल की नशो-नुमा जारी नहीं रहेगी। ज्योंही मशरिफी लू उस पर चलेगी वह मुकम्मल तौर पर मुरझा जाएगी। जिस खेत में उसे लगाया गया वही वह ख़त्म हो जाएगी।''

11 रब मुझसे मज़ीद हमकलाम हुआ, 12 'इस सरकश क़ौम से पूछ, 'क्या तुझे इस तमसील की समझ नहीं आई?' तब उन्हें इसका मतलब समझा दे। 'बाबल के बादशाह ने यस्शलम पर हमला किया। वह उसके बादशाह और अफ़सरों को गिरफ़्तार करके अपने मुल्क में ले गया। 13 उसने यहदाह के शाही खानदान में से एक को चुन लिया और उसके साथ अहद बाँधकर उसे तख़्त पर बिठा दिया। नए बादशाह ने बाबल से वफ़ादार रहने की क़सम खाई। बाबल के बादशाह ने यहदाह के राहनुमाओं को भी जिलावतन कर दिया 14 ताकि मुल्के-यहदाह और उसका नया बादशाह कमज़ोर रहकर सरकश होने के

काबिल न बनें बल्कि उसके साथ अहद कायम रखकर खुद कायम रहें। 15 तो भी यहूदाह का बादशाह बागी हो गया और अपने कासिद मिसर भेजे ताकि वहाँ से घोड़े और फौजी मँगवाएँ। क्या उसे कामयाबी हासिल होगी? क्या जिसने ऐसी हरकतों की हैं बच निकलेगा? हरगिज़ नहीं! क्या जिसने अहद तोड़ लिया है वह बचेगा? हरगिज़ नहीं!

16 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मेरी हयात की कसम, उस शख्स ने कसम के तहत शाहे-बाबल से अहद बाँधा है, लेकिन अब उसने यह कसम हकीर जानकर अहद को तोड़ डाला है। इसलिए वह बाबल में वफात पाएगा, उस बादशाह के मुल्क में जिसने उसे तख्त पर बिठाया था। 17 जब बाबल की फौज यरूशलम के इर्दगिर्द पुरते और बुर्ज बनाकर उसका मुहासरा करेगी ताकि बहुतों को मार डाले तो फ़िरौन अपनी बड़ी फौज और मुतअद्दिद फौजियों को लेकर उस की मदद करने नहीं आएगा। 18 क्योंकि यहूदाह के बादशाह ने अहद को तोड़कर वह कसम हकीर जानी है जिसके तहत यह बाँधा गया। गो उसने शाहे-बाबल से हाथ मिलाकर अहद की तसदीक की थी तो भी बेवफा हो गया, इसलिए वह नहीं बचेगा। 19 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मेरी हयात की कसम, उसने मेरे ही अहद को तोड़ डाला, मेरी ही कसम को हकीर जाना है। इसलिए मैं अहद तोड़ने के तमाम नतायज उसके सर पर लाऊँगा। 20 मैं उस पर अपना जाल डाल दूँगा, उसे अपने फंटे में पकड़ लूँगा। चूँकि वह मुझसे बेवफा हो गया है इसलिए मैं उसे बाबल ले जाकर उस की अदालत करूँगा। 21 उसके बेहतरीन फौजी सब मर जाएंगे, और जितने बच जाएंगे वह चारों तरफ मुंतशिर हो जाएंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं, रब ने यह सब कुछ फरमाया है।

22 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि अब मैं खुद देवदार के दरख्त की चोटी से नरमो-नाजूक कॉपल तोड़कर उसे एक बुलंदो-बाला पहाड़ पर लगा दूँगा। 23 और जब मैं उसे इसराईल की बुलंदियों पर लगा दूँगा तो उस की शाखें फूट निकलेंगी, और वह फल लाकर शानदार दरख्त बनेगा। हर किस्म के परिदे उसमें बसेरा करेंगे, सब उस की शाखों के साये में पनाह लेंगे। 24 तब मुल्क के तमाम दरख्त जान लेंगे कि मैं रब हूँ। मैं ही ऊँचे दरख्त को खाक में मिला देता, और मैं ही छोटे दरख्त को बड़ा बना देता हूँ। मैं ही सायादार दरख्त को सूखने देता और मैं ही सूखे दरख्त को फलने फूलने देता हूँ। यह मेरा, रब का फरमान है, और मैं यह करूँगा भी! 1'

## 18

हर एक को सिर्फ़ अपने ही आमाल की सज़ा मिलेगी

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 "तुम लोग मुल्के-इसराईल के लिए यह कहावत क्यों इस्तेमाल करते हो, 'वालिदेन ने खट्टे अंगूर खाए, लेकिन उनके बच्चों ही के दौँत खट्टे हो गए हैं।' 3 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मेरी हयात की कसम, आइंदा तुम यह कहावत इसराईल में इस्तेमाल नहीं करोगे! 4 हर इनसान की जान मेरी ही है, खाह बाप की हो या बेटे की। जिसने गुनाह किया है सिर्फ़ उसी को सज़ाए-मौत मिलेगी।

5 लेकिन उस रास्तबाज़ का मामला फरक है जो रास्ती और इनसाफ़ की राह पर चलते हुए 6 न ऊँची जगहों की नाजायज़ कुरबानियाँ खाता, न इसराईली कौम के बुतों की पूजा करता है। न वह अपने पड़ोसी की बीवी की बेहुरमती करता, न माहवारी के दौरान किसी औरत से हमबिसतर होता है। 7 वह किसी पर जुल्म नहीं करता। अगर कोई ज़मानत देकर उससे कर्ज़ा ले तो पैसे वापस मिलने पर वह ज़मानत वापस कर देता है। वह चोरी नहीं करता बल्कि भूकों को खाना खिलाता और नंगों को कपड़े पहनाता है। 8 वह किसी से भी सूद नहीं लेता। वह गलत काम करने से गुरेज़ करता और झगड़नेवालों का मुंसिफाना फ़ैसला करता है। 9 वह मेरे क़वायद के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारता और वफादारी से मेरे अहकाम पर अमल करता है। ऐसा शख्स रास्तबाज़ है, और वह यकीनन जिंदा रहेगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

10 अब फ़र्ज़ करो कि उसका एक ज़ालिम बेटा है जो कातिल है और वह कुछ करता है 11 जिससे उसका बाप गुरेज़ करता था। वह ऊँची जगहों की नाजायज़ कुरबानियाँ खाता, अपने पड़ोसी की बीवी की बेहुरमती करता, 12 ग़िबो और ज़रूरतमंदों पर जुल्म करता और चोरी करता है। जब कर्ज़दार कर्ज़ा अदा करे तो वह उसे ज़मानत वापस नहीं देता। वह बुतों की पूजा बल्कि कई किस्म की मकरूह हरकतें करता है। 13 वह सूद भी लेता है। क्या ऐसा आदमी जिंदा रहेगा? हरगिज़ नहीं! इन तमाम मकरूह हरकतों की बिना पर उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी। वह खुद अपने गुनाहों का जिम्मादार ठहरेगा।

14 लेकिन फ़र्ज़ करो कि इस बेटे के हाँ बेटा पैदा हो जाए। गो बेटा सब कुछ देखता है जो उसके बाप से सरज़द होता है तो भी वह बाप के गलत नमूने पर नहीं चलता। 15 न वह ऊँची जगहों की नाजायज़ कुरबानियाँ खाता, न इसराईली कौम के बुतों की पूजा करता है। वह अपने पड़ोसी की बीवी की बेहुरमती नहीं करता 16 और किसी पर भी जुल्म नहीं करता। अगर कोई ज़मानत देकर उससे कर्ज़ा ले तो पैसे वापस मिलने पर वह ज़मानत लौटा देता है। वह चोरी नहीं करता बल्कि भूकों को खाना खिलाता और नंगों को कपड़े पहनाता है। 17 वह गलत काम करने से गुरेज़ करके सूद नहीं लेता। वह मेरे क़वायद के

मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारता और मेरे अहकाम पर अमल करता है। ऐसे शख्स को अपने बाप की सज़ा नहीं भुगतनी पड़ेगी। उसे सज़ाए-मौत नहीं मिलेगी, हालाँकि उसके बाप ने मज़क़ूरा गुनाह किए हैं। नहीं, वह यकीनन ज़िंदा रहेगा।<sup>18</sup> लेकिन उसके बाप को ज़रूर उसके गुनाहों की सज़ा मिलेगी, वह यकीनन मरेगा। क्योंकि उसने लोगों पर जुल्म किया, अपने भाई से चोरी की और अपनी ही कौम के दरमियान बुरा काम किया।

<sup>19</sup> लेकिन तुम लोग एतराज़ करते हो, 'बेटा बाप के कुसूर में क्यों न शरीक हो?' उसे भी बाप की सज़ा भुगतनी चाहिए।' जवाब यह है कि बेटा तो रास्तबाज़ और इनसाफ़ की राह पर चलता रहा है, वह एहतियात से मेरे तमाम अहकाम पर अमल करता रहा है। इसलिए लाज़िम है कि वह ज़िंदा रहे।<sup>20</sup> जिससे गुनाह सरज़द हुआ है सिर्फ़ उसे ही मरना है। लिहाज़ा न बेटे को बाप की सज़ा भुगतनी पड़ेगी, न बाप को बेटे की। रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी का अज़्र पाएगा, और बेदीन अपनी बेदीनी का।

<sup>21</sup> तो भी अगर बेदीन आदमी अपने गुनाहों को तर्क करे और मेरे तमाम कवायद के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारकर रास्तबाज़ी और इनसाफ़ की राह पर चल पड़े तो वह यकीनन ज़िंदा रहेगा, वह मरेगा नहीं।<sup>22</sup> जितने भी गलत काम उससे सरज़द हुए हैं उनका हिसाब मैं नहीं लूँगा बल्कि उसके रास्तबाज़ चाल-चलन का लिहाज़ करके उसे ज़िंदा रहने दूँगा।<sup>23</sup> रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि क्या मैं बेदीन की हलाकत देखकर खुश होता हूँ? हरगिज़ नहीं, बल्कि मैं चाहता हूँ कि वह अपनी बुरी राहों को छोड़कर ज़िंदा रहे।

<sup>24</sup> इसके बरअक्स क्या रास्तबाज़ ज़िंदा रहेगा अगर वह अपनी रास्तबाज़ ज़िंदगी तर्क करे और गुनाह करके वही काबिले-धिन् हरकतें करने लगे जो बेदीन करते हैं? हरगिज़ नहीं! जितना भी अच्छा काम उसने किया उसका मैं ख़याल नहीं करूँगा बल्कि उस की बेवफ़ाई और गुनाहों का। उन्हीं की वजह से उसे सज़ाए-मौत दी जाएगी।

<sup>25</sup> लेकिन तुम लोग दावा करते हो कि जो कुछ रब करता है वह ठीक नहीं। ऐ इसराईली कौम, सुनो! यह कैसी बात है कि मेरा अमल ठीक नहीं? अपने ही आमाल पर गौर करो! वही दुस्त नहीं।<sup>26</sup> अगर रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ ज़िंदगी तर्क करके गुनाह करे तो वह इस बिना पर मर जाएगा। अपनी नारास्ती की वजह से ही वह मर जाएगा।<sup>27</sup> इसके बरअक्स अगर बेदीन अपनी बेदीन ज़िंदगी तर्क करके रास्ती और इनसाफ़ की राह पर चलने लगे तो वह अपनी जान को छुड़ाएगा।<sup>28</sup> क्योंकि अगर वह अपना कुसूर तसलीम करके अपने गुनाहों से मुँह मोड़ ले तो वह मरेगा नहीं बल्कि ज़िंदा रहेगा।<sup>29</sup> लेकिन इसराईली कौम दावा करती है कि जो कुछ रब करता है वह ठीक नहीं। ऐ इसराईली कौम, यह कैसी बात है कि मेरा अमल ठीक नहीं? अपने ही आमाल पर गौर करो! वही दुस्त नहीं।

<sup>30</sup> इसलिए रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि ऐ इसराईल की कौम, मैं तेरी अदालत करूँगा, हर एक का उसके कामों के मुवाफ़िक़ फैसला करूँगा। चुनौचे खबरदार! तौबा करके अपनी बेवफ़ा हरकतों से मुँह फेरो, वरना तुम गुनाह में फँसकर गिर जाओगे।<sup>31</sup> अपने तमाम गलत काम तर्क करके नया दिल और नई रूह अपना लो। ऐ इसराईलियो, तुम क्यों मर जाओ? <sup>32</sup> क्योंकि मैं किसी की मौत से खुश नहीं होता। चुनौचे तौबा करो, तब ही तुम ज़िंदा रहोगे। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

## 19

### इसराईली बुजुर्गों पर मातमी गीत

1 ऐ नबी, इसराईल के रईसों पर मातमी गीत गा,

2 'तेरी माँ कितनी ज़बरदस्त शेरनी थी। जवान शेरबबरों के दरमियान ही अपना घर बनाकर उसने अपने बच्चों को पाल लिया।

3 एक बच्चे को उसने खास तरबियत दी। जब बड़ा हुआ तो जानवरों को फाड़ना सीख लिया, बल्कि इनसान भी उस की खुराक बन गए।

4 इसकी खबर दीगर अक्रवाम तक पहुँची तो उन्होंने उसे अपने गढे में पकड़ लिया। वह उस की नाक में कौंटे डालकर उसे मिसर में घसीट ले गए।

5 जब शेरनी के इस बच्चे पर से उम्मीद जाती रही तो उसने दीगर बच्चों में से एक को चुनकर उसे खास तरबियत दी।

6 यह भी ताकतवर होकर दीगर शेरों में घुमने फिरने लगा। उसने जानवरों को फाड़ना सीख लिया, बल्कि इनसान भी उस की खुराक बन गए।

7 उनके किलों को गिराकर उसने उनके शहरों को खाक में मिला दिया। उस की दहाड़ती आवाज़ से मुल्क बाशिंदों समेत ख़ौफ़ज़दा हो गया।

8 तब इर्दगिर्द के सबों में बसनेवाली अक्रवाम उससे लड़ने आई। उन्होंने अपना जाल उस पर डाल दिया, उसे अपने गहे में पकड़ लिया।

9 वह उस की गरदन में पट्टा और नाक में कौंटे डालकर उसे शाहे-बाबल के पास घसीट ले गए। वहाँ उसे कैद में डाला गया ताकि आइंदा इसराईल के पहाड़ों पर उस की गरजती आवाज़ सुनाई न दे।

10 तेरी माँ पानी के किनारे लगाई गई अंगूर की-सी बेल थी। बेल कसरत के पानी के बाइस फलदार और शाखदार थी।

11 उस की शाखें इतनी मजबूत थीं कि उनसे शाही असा बन सकते थे। वह बाकी पौदों से कहीं ज़्यादा ऊँची थी बल्कि उस की शाखें दूर दूर तक नज़र आती थीं।

12 लेकिन आखिरकार लोगों ने तैश में आकर उसे उखाड़कर फेंक दिया। मशरिकी लू ने उसका फल मुरझाने दिया। सब कुछ उतारा गया, लिहाज़ा वह सूख गया और उसका मजबूत तना नज़रे-आतिश हुआ।

13 अब बेल को रेगिस्तान में लगाया गया है, वहाँ जहाँ ख़ुशक और प्यासी ज़मीन होती है।

14 उसके तने की एक टहनी से आग ने निकलकर उसका फल भस्म कर दिया। अब कोई मजबूत शाख नहीं रही जिससे शाही असा बन सके।<sup>1</sup>

दर्जे-बाला गीत मातमी है और आहो-ज़ारी करने के लिए इस्तेमाल हुआ है।

## 20

### इसराईल की मुसलसल बेवफ़ाई

1 यहूदाह के बादशाह यहयाकीन की जिलावतनी के सातवें साल में इसराईली कौम के कुछ बुजुर्ग मेरे पास आए ताकि रब से कुछ दरियाफ़त करें। पाँचवें महीने का दसवाँ दिन \* था। वह मेरे सामने बैठ गए।<sup>2</sup> तब रब मुझसे हमकलाम हुआ,<sup>3</sup> “ऐ आदमज़ाद, इसराईल के बुजुर्गों को बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि क्या तुम मुझसे दरियाफ़त करने आए हो? मेरी हयात की कसम, मैं तुम्हें कोई जवाब नहीं दूँगा! यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।’

4 ऐ आदमज़ाद, क्या तू उनकी अदालत करने के लिए तैयार है? फिर उनकी अदालत कर! उन्हें उनके बापदादा की काबिले-धिन् हरकतों का पहसास दिला।<sup>5</sup> उन्हें बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि इसराईली कौम को चुनते वक़्त मैंने अपना हाथ उठाकर उससे क़सम खाई। मुल्के-मिसर में ही मैंने अपने आपको उन पर जाहिर किया और क़सम खाकर कहा कि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।<sup>6</sup> यह मेरा अटल वादा है कि मैं तुम्हें मिसर से निकालकर एक मुल्क में पहुँचा दूँगा जिसका जायज़ा मैं तुम्हारी खातिर ले चुका हूँ। यह मुल्क दीगर तमाम ममालिक से कहीं ज़्यादा ख़ब्सूरत है, और इसमें दूध और शहद की कसरत है।<sup>7</sup> उस वक़्त मैंने इसराईलियों से कहा, “हर एक अपने धिनौने बुतों को फेंक दे! मिसर के देवताओं से लिपटे न रहो, क्योंकि उनसे तुम अपने आपको नापाक कर रहे हो। मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

8 लेकिन वह मुझसे बागी हुए और मेरी सुनने के लिए तैयार न थे। किसी ने भी अपने बुतों को न फेंका बल्कि वह इन धिनौनी चीज़ों से लिपटे रहे और मिसरी देवताओं को तर्क न किया। यह देखकर मैं वही मिसर में अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करना चाहता था। उसी वक़्त मैं अपना गुस्सा उन पर उतारना चाहता था।<sup>9</sup> लेकिन मैं बाज़ रहा, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि जिन अक्रवाम के दरमियान इसराईली रहते थे उनके सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए। क्योंकि उन कौमों की मौजूदगी में ही मैंने अपने आपको इसराईलियों पर जाहिर करके वादा किया था कि मैं तुम्हें मिसर से निकाल लाऊँगा।

10 चुनौंचे मैं उन्हें मिसर से निकालकर रेगिस्तान में लाया।<sup>11</sup> वहाँ मैंने उन्हें अपनी हिदायात दी, वह अहकाम जिनकी पैरवी करने से इनसान जीता रहता है।<sup>12</sup> मैंने उन्हें सबत का दिन भी अता किया। मैं चाहता था कि आराम का यह दिन मेरे उनके साथ अहद का निशान हो, कि इससे लोग जान लें कि मैं रब ही उन्हें मुक़द्दस बनाता हूँ।

13 लेकिन रेगिस्तान में भी इसराईली मुझसे बागी हुए। उन्होंने मेरी हिदायात के मुताबिक ज़िंदगी न गुज़ारी बल्कि मेरे अहकाम को मुस्तरद कर दिया, हालाँकि इनसान उनकी पैरवी करने से ही जीता रहता है। उन्होंने सबत की भी बड़ी बेहुरमती की। यह देखकर मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करके उन्हें वही रेगिस्तान में हलाक करना चाहता था।<sup>14</sup> ताहम मैं बाज़ रहा, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि उन अक्रवाम के सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए जिनके देखते देखते मैं इसराईलियों को मिसर से निकाल लाया था।<sup>15</sup> चुनौंचे मैंने यह करने के बजाए अपना हाथ उठाकर क़सम खाई, “मैं तुम्हें उस मुल्क में नहीं ले जाऊँगा जो मैंने तुम्हारे लिए मुकर्रर किया था, हालाँकि उसमें दूध और शहद की कसरत है और वह दीगर तमाम

\* 20:1 14 अगस्त।



ममालिक की निसबत कही ज्यादा खबूसरत है। 16 क्योंकि तुमने मेरी हिदायात को रद्द करके मेरे अहकाम के मुताबिक जिंदगी न गुजारी बल्कि सबत के दिन की भी बेहुरमती की। अभी तक तुम्हारे दिल बुतों से लिपटे रहते हैं।”

17 लेकिन एक बार फिर मैंने उन पर तरस खाया। न मैंने उन्हें तबाह किया, न पूरी कौम को रेगिस्तान में मिटा दिया। 18 रेगिस्तान में ही मैंने उनके बेटों को आगाह किया, “अपने बापदादा के क़वायद के मुताबिक जिंदगी मत गुजारना। न उनके अहकाम पर अमल करो, न उनके बुतों की पूजा से अपने आपको नापाक करो। 19 मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ। मेरी हिदायात के मुताबिक जिंदगी गुजारी और एहतियात से मेरे अहकाम पर अमल करो। 20 मेरे सबत के दिन आराम करके उन्हें मुक़द्दस मानो ताकि वह मेरे साथ बँधे हुए अहद का निशान रहें। तब तुम जान लोगे कि मैं रब तुम्हारा खुदा हूँ।”

21 लेकिन यह बच्चे भी मुझसे बागी हुए। न उन्होंने मेरी हिदायात के मुताबिक जिंदगी गुजारी, न एहतियात से मेरे अहकाम पर अमल किया, हालाँकि इनसान उनकी पैरवी करने से ही जीता रहता है। उन्होंने मेरे सबत के दिनों की भी बेहुरमती की। यह देखकर मैं अपना गुस्सा उन पर नाज़िल करके उन्हें वहीं रेगिस्तान में तबाह करना चाहता था। 22 लेकिन एक बार फिर मैं अपने हाथ को रोककर बाज़ रहा, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि उन अक़वाम के सामने मेरे नाम की बेहुरमती हो जाए जिनके देखते देखते मैं इसराइलियों को मिसर से निकाल लाया था। 23 चुनौचे मैंने यह करने के बजाए अपना हाथ उठाकर कसम खाई, “मैं तुम्हें दीगर अक़वामो-ममालिक में मुंतशिर करूँगा, 24 क्योंकि तुमने मेरे अहकाम की पैरवी नहीं की बल्कि मेरी हिदायात को रद्द कर दिया। गो मैंने सबत का दिन मानने का हुक्म दिया था तो भी तुमने आराम के इस दिन की बेहुरमती की। और यह भी काफ़ी नहीं था बल्कि तुम अपने बापदादा के बुतों के भी पीछे लगे रहे।”

25 तब मैंने उन्हें ऐसे अहकाम दिए जो अच्छे नहीं थे, ऐसी हिदायात जो इनसान को जीने नहीं देती। 26 नीज़, मैंने होने दिया कि वह अपने पहलौतों को कुरबान करके अपने आपको नापाक करें। मक़सद यह था कि उनके रोंगटे खड़े हो जाएँ और वह जान लें कि मैं ही रब हूँ।”

27 चुनौचे ऐ आदमज़ाद, इसराइली कौम को बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि तुम्हारे बापदादा ने इसमें भी मेरी तकफ़ीर की कि वह मुझसे बेवफ़ा हुए। 28 मैंने तो उनसे मुल्के-इसराइल देने की कसम खाकर वादा किया था। लेकिन ज्योंही मैं उन्हें उसमें लाया तो जहाँ भी कोई ऊँची जगह या सायादार दरख्त नज़र आया वहाँ वह अपने जानवरों को ज़बह करने, तैश दिलानेवाली कुरबानियाँ चढ़ाने, ख़ुशबूदार बख़्श जलाने और मैं की नज़रें पेश करने लगे। 29 मैंने उनका सामना करके कहा, “यह किस तरह की ऊँची जगहें हैं जहाँ तुम जाते हो?” आज तक यह कुरबानगाहें ऊँची जगहें कहलाती हैं।’

30 ऐ आदमज़ाद, इसराइली कौम को बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि क्या तुम अपने बापदादा की हरकतें अपनाकर अपने आपको नापाक करना चाहते हो? क्या तुम भी उनके धिनौने बुतों के पीछे लगकर ज़िना करना चाहते हो? 31 क्योंकि अपने नज़राने पेश करने और अपने बच्चों को कुरबान करने से तुम अपने आपको अपने बुतों से आलतूदा करते हो। ऐ इसराइली कौम, आज तक यही तुम्हारा रवैया है! तो फिर मैं क्या करूँ? क्या मुझे तुम्हें जवाब देना चाहिए जब तुम मुझसे कुछ दरियापत्त करने के लिए आते हो? हरगिज़ नहीं! मेरी हयात की कसम, मैं तुम्हें जवाब में कुछ नहीं बताऊँगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

अल्लाह अपनी कौम को वापस लाएगा

32 तुम कहते हो, “हम दीगर कौमों की मानिंद होना चाहते, दुनिया के दूसरे ममालिक की तरह लकड़ी और पत्थर की चीज़ों की इबादत करना चाहते हैं।” गो यह खयाल तुम्हारे जहनों में उभर आया है, लेकिन ऐसा कभी नहीं होगा। 33 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मेरी हयात की कसम, मैं बड़े गुस्से और जोरदार तरीके से अपनी क़ुदरत का इज़हार करके तुम पर हुक्मत करूँगा। 34 मैं बड़े गुस्से और जोरदार तरीके से अपनी क़ुदरत का इज़हार करके तुम्हें उन कौमों और ममालिक से निकालकर जमा करूँगा जहाँ तुम मुंतशिर हो गए हो। 35 तब मैं तुम्हें अक़वाम के रेगिस्तान में लाकर तुम्हारे रूबरू तुम्हारी अदालत करूँगा। 36 जिस तरह मैंने तुम्हारे बापदादा की अदालत मिसर के रेगिस्तान में की उसी तरह तुम्हारी भी अदालत करूँगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है। 37 जिस तरह गल्लाम भेड-बकरियों को अपनी लाठी के नीचे से गुज़रने देता है ताकि उन्हें गिन ले उसी तरह मैं तुम्हें अपनी लाठी के नीचे से गुज़रने दूँगा और तुम्हें अहद के बंधन में शरीक करूँगा। 38 जो बेवफ़ा होकर मुझसे बागी हो गए हैं उन्हें मैं तुमसे दूर कर दूँगा ताकि तुम पाक हो जाओ। अगरचे मैं उन्हें भी उन दीगर ममालिक से निकाल लाऊँगा जिनमें वह रह रहे हैं तो भी वह मुल्के-इसराइल में दाखिल नहीं होंगे। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

39 ऐ इसराइली कौम, तुम्हारे बारे में रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि जाओ, हर एक अपने बुतों की इबादत करता जाए! लेकिन एक वन्नत आएगा जब तुम ज़रूर मेरी सुनोगे, जब तुम अपनी कुरबानियों और बुतों की पूजा से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती नहीं करोगे।

40 क्योंकि रब फरमाता है कि आइंदा पूरी इसराइली कौम मेरे मुकद्दस पहाड यानी इसराइल के बुलंद पहाड सिय्यून पर मेरी खिदमत करेगी। वहाँ मैं खुशी से उन्हें कबूल करूँगा, और वहाँ मैं तुम्हारी कुरबानियाँ, तुम्हारे पहले फल और तुम्हारे तमाम मुकद्दस हृदिये तलब करूँगा। 41 मेरे तुम्हें उन अक़वाम और ममालिक से निकालकर जमा करने के बाद जिनमें तुम मुंतशिर हो गए हो तुम इसराइल में मुझे कुरबानियाँ पेश करोगे, और मैं उनकी खुशबू सूँघकर खुशी से तुम्हें कबूल करूँगा। यों मैं तुम्हारे ज़रीए दीगर अक़वाम पर जाहिर करूँगा कि मैं कुद्दूस खुदा हूँ। 42 तब जब मैं तुम्हें मुल्के-इसराइल यानी उस मुल्क में लाऊँगा जिसका वादा मैंने क़सम खाकर तुम्हारे बापदादा से किया था तो तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 43 वहाँ तुम्हें अपना वह चाल-चलन और अपनी वह हरकते याद आँगीं जिनसे तुमने अपने आपको नापाक कर दिया था, और तुम अपने तमाम बुरे आमाल के बाइस अपने आपसे धिन खाओगे। 44 ऐ इसराइली कौम, तुम जान लोगे कि मैं रब हूँ जब मैं अपने नाम की खातिर नरमी से तुमसे पेश आऊँगा, हालाँकि तुम अपने बुरे सुल्क और तबाहकुन हरकतों की वजह से सख्त सज़ा के लायक थे। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

### जंगल में आग लगने की तमसील

45 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 46 “ऐ आदमज़ाद, जुनूब की तरफ़ सख़ करके उसके खिलाफ़ नबुवत कर! दशते-नजब के जंगल के खिलाफ़ नबुवत करके 47 उसे बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं तुझमें ऐसी आग लगानेवाला हूँ जो तेरे तमाम दरख्तों को भस्म करेगी, खाह वह हरे-भरे या सूखे हुए हों। इस आग के भडकते शोले नहीं बुझेगे बल्कि जुनूब से लेकर शिमाल तक हर चेहेरे को झलसा देगे। 48 हर एक को नज़र आएगा कि यह आग मेरे, रब के हाथ ने लगाई है। यह बुझेगी नहीं।”

49 यह सुनकर मैं बोला, “ऐ कादिरे-मुतलक, यह बताने का क्या फ़ायदा है? लोग पहले से मेरे बारे में कहते हैं कि यह हमेशा नाक्राबिले-समझ तमसीलें पेश करता है।”

## 21

### रब इसराइल के खिलाफ़ तलवार चलाने को है

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, यरूशालम की तरफ़ सख़ करके मुकद्दस जगहों और मुल्के-इसराइल के खिलाफ़ नबुवत कर! 3 मुल्क को बता, ‘रब फरमाता है कि अब मैं तुझसे निपट लूँगा! अपनी तलवार मियान से खींचकर मैं तेरे तमाम बाशिंदों को मिटा दूँगा, खाह रास्तबाज़ हों या बेदीन। 4 क्योंकि मैं रास्तबाज़ों को बेदीनों समेत मार डालूँगा, इसलिए मेरी तलवार मियान से निकलकर जुनूब से लेकर शिमाल तक हर शख्स पर टूट पड़ेगी। 5 तब तमाम लोगों को पता चलेगा कि मैं, रब ने अपनी तलवार को मियान से खींच लिया है। तलवार मारती रहेगी और मियान में वापस नहीं आएगी।’

6 ऐ आदमज़ाद, आहें भर भरकर यह पैगाम सुना! लोगों के सामने इतनी तलखी से आहो-जारी कर कि कमर में दर्द होने लगे। 7 जब वह तुझसे पूछें, ‘आप क्यों कराह रहे हैं?’ तो उन्हें जवाब दे, ‘मुझे एक हौलनाक खबर का इल्म है जो अभी आनेवाली है। जब यहाँ पहुँचेगी तो हर एक की हिम्मत टूट जाएगी और हर हाथ बेहिसो-हरकत हो जाएगा। हर जान हौसला हारेगी और हर घुटना डौँवाँडोल हो जाएगा।’ रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि इस खबर का वक्त करीब आ गया है, जो कुछ पेश आना है वह जल्द ही पेश आएगा।”

8 रब एक बार फिर मुझसे हमकलाम हुआ, 9 “ऐ आदमज़ाद, नबुवत करके लोगों को बता,

‘तलवार को रगड़ रगड़कर तेज़ कर दिया गया है। 10 अब वह कत्लो-ग़ारत के लिए तैयार है, बिजली की तरह चमकने लगी है। हम यह देखकर किस तरह खुश हो सकते हैं? ऐ मेरे बेटे, तूने लाठी और हर तरबियत को हक़ीर जाना है। 11 चुनौचे तलवार को तेज़ करवाने के लिए भेजा गया ताकि उसे खूब इस्तेमाल किया जा सके। अब वह रगड़ रगड़कर तेज़ की गई है, अब वह कातिल के हाथ के लिए तैयार है।’

12 ऐ आदमज़ाद, चीख़ उठ! वावैला कर! अफ़सोस से अपना सीना पीट! तलवार मेरी कौम और इसराइल के बुजुर्गों के खिलाफ़ चलने लगी है, और सब उस की ज़द में आ जाएंगे। 13 क्योंकि कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जाँच-पड़ताल का वक्त आ गया है, और लाज़िम है कि वह आए, क्योंकि तूने लाठी की तरबियत को हक़ीर जाना है।

14 चुनौचे ऐ आदमज़ाद, अब ताली बजाकर नबुवत कर! तलवार को दो बल्कि तीन बार उन पर टूटने दे! क्योंकि कत्लो-ग़ारत की यह मोहलक तलवार कब्ज़े तक मकतूलों में घोपी जाएगी। 15 मैंने तलवार को उनके शहरों के हर दरवाज़े पर खड़ा कर दिया है ताकि आने जानेवालों को मार डाले, हर दिल हिम्मत हारे और मुतअहिद अफ़राद हलाक हो जाएँ। अफ़सोस! उसे बिजली की तरह चमकाया गया है, वह कत्लो-ग़ारत के लिए तैयार है।

16 ए तलवार, दाईं और बाईं तरफ घूमती फिर, जिस तरफ भी तू मुड़े उस तरफ मारती जा! 17 मैं भी तालियाँ बजाकर अपना गुस्सा इसराईल पर उताऊँगा। यह मेरा, रब का फरमान है।”

दो रास्तों का नक्शा, बाबल के ज़रीए यरूशलम की तबाही

18 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 19 “ए आदमज़ाद, नक्शा बनाकर उस पर वह दो रास्ते दिखा जो शाहे-बाबल की तलवार इख्तियार कर सकती है। दोनों रास्ते एक ही मुल्क से शुरू हो जाएँ। जहाँ यह एक दूसरे से अलग हो जाते हैं वहाँ दो सायन-बोर्ड खड़े कर जो दो मुख्तलिफ़ शहरों के रास्ते दिखाएँ, 20 एक अम्मोनियों के शहर रब्बा का और दूसरा यहदाह के किलाबंद शहर यरूशलम का।

यह वह दो रास्ते हैं जो शाहे-बाबल की तलवार इख्तियार कर सकती है। 21 क्योंकि जहाँ यह दो रास्ते एक दूसरे से अलग हो जाते हैं वहाँ शाहे-बाबल स्ककर मालूम करेगा कि कौन-सा रास्ता इख्तियार करना है। वह तीरों के ज़रीए कुरा डालेगा, अपने बुतों से इशारा मिलने की कोशिश करेगा और किसी जानवर की कलेजी का मुआयना करेगा। 22 तब उसे यरूशलम का रास्ता इख्तियार करने की हिदायत मिलेगी, चुनौचे वह अपने फ़ौजियों के साथ यरूशलम के पास पहुँचकर कल्लो-गारत का हुक्म देगा। तब वह जोर से जंग के नारे लगा लगाकर शहर को पुरते से घेर लेंगे, मुहासरे के बुर्ज तामीर करेंगे और दरवाज़ों को तोड़ने की किलाशिकन मशीनें खड़ी करेंगे। 23 जिन्होंने शाहे-बाबल से वफ़ादारी की कसम खाई है उन्हें यह पेशगोई गलत लगेगी, लेकिन वह उन्हें उनके कुसूर की याद दिलाकर उन्हें गिरिफ़्तार करेगा।

24 चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, ‘तुम लोगों ने खुद अलानिया तौर पर बेवफ़ा होने से अपने कुसूर की याद दिलाई है। तुम्हारे तमाम आमाल में तुम्हारे गुनाह नज़र आते हैं। इसलिए तुमसे सख्ती से निपटा जाएगा।

25 ए इसराईल के बिगड़े हुए और बेदीन रईस, अब वह वक़्त आ गया है जब तुझे हतमी सज़ा दी जाएगी। 26 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि पगड़ी को उतार, ताज को दूर कर! अब सब कुछ उलट जाएगा। ज़लील को सरफ़राज़ और सरफ़राज़ को ज़लील किया जाएगा।

27 मैं यरूशलम को मलबे का ढेर, मलबे का ढेर, मलबे का ढेर बना दूँगा। और शहर उस वक़्त तक नए सिरे से तामीर नहीं किया जाएगा जब तक वह न आए जो हक़दार है। उसी के हवाले मैं यरूशलम करूँगा।’

अम्मोनी भी तलवार की ज़द में आएँगे

28 ए आदमज़ाद, अम्मोनियों और उनकी लान-तान के जवाब में नबुव्वत कर! उन्हें बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि तलवार कल्लो-गारत के लिए मियान से खींच ली गई है, उसे रगड़ रगड़कर तेज़ किया गया है ताकि बिजली की तरह चमकते हुए मारती जाए।

29 तेरे नबियों ने तुझे फ़रेबदेह रोयाएँ और झूठे पैगामात सुनाए हैं। लेकिन तलवार बेदीनों की गरदन पर नाज़िल होनेवाली है, क्योंकि वह वक़्त आ गया है जब उन्हें हतमी सज़ा दी जाए।

30 लेकिन इसके बाद अपनी तलवार को मियान में वापस डाल, क्योंकि मैं तुझे भी सज़ा दूँगा। जहाँ तू पैदा हुआ, तेरे अपने वतन में मैं तेरी अदालत करूँगा। 31 मैं अपना ग़ज़ब तुझ पर नाज़िल करूँगा, अपने कहर की आग तेरे खिलाफ़ भड़काऊँगा। मैं तुझे ऐसे वहशी आदमियों के हवाले करूँगा जो तबाह करने का फ़न खूब जानते हैं। 32 तू आग का ईंधन बन जाएगा, तेरा खून तेरे अपने मुल्क में बह जाएगा। आइंदा तुझे कोई याद नहीं करेगा। क्योंकि यह मेरा, रब का फ़रमान है।”

## 22

यरूशलम खून्नेज़ी का शहर है

1 रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, 2 “ए आदमज़ाद, क्या तू यरूशलम की अदालत करने के लिए तैयार है? क्या तू इस क्रांतिल शहर पर फ़ैसला करने के लिए मुस्तैद है? फिर उस पर उस की मकरूह हरकतें जाहिर कर। 3 उसे बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि ए यरूशलम बेटी, तेरा अंजाम करीब ही है, और यह तेरा अपना कुसूर है। क्योंकि तुने अपने दरमियान मासूमों का खून बहाया और अपने लिए बुत बनाकर अपने आपको नापाक कर दिया है। 4 अपनी खून्नेज़ी से तू मुजरिम बन गई है, अपनी बुतपरस्ती से नापाक हो गई है। तू खुद अपनी अदालत का दिन करीब लाई है। इसी वजह से तेरा अंजाम करीब आ गया है, इसी लिए मैं तुझे दीगर अक्रवाम की लान-तान और तमाम ममालिक के मज़ाक का निशाना बना दूँगा। 5 सब तुझ पर टूटा मारेगे, खाह वह करीब हों या दूर। तेरे नाम पर दाग़ लग गया है, तुझमें फ़साद हद से ज़्यादा बढ़ गया है।

6 इसराईल का जो भी बुजुर्ग तुझमें रहता है वह अपनी पूरी ताकत से खून बहाने की कोशिश करता है। 7 तेरे बाशिंदे अपने माँ-बाप को हक़ीर जानते हैं। वह परदेसी पर सख़्ती करके यतीमों और बेवाओं पर जुल्म करते हैं। 8 जो मुझे मुक़द्दस है उसे तू पाँवों तले कुचल देती है। तू मेरे सबत के दिनों की बेहुरमती भी करती है।

9 तुझमें ऐसे तोहमत लगानेवाले हैं जो खूनरेजी पर तुले हुए हैं। तेरे बाशिंदे पहाड़ों की नाजायज़ कुरबानागहों के पास कुरबानियाँ खते और तेरे दरमियान शर्मनाक हरकतें करते हैं। 10 बेटा माँ से हमबिसतर होकर बाप की बेहुरमती करता है, शौहर माहवारी के दौरान बीवी से सोहबत करके उससे ज़्यादती करता है। 11 एक अपने पडोसी की बीवी से जिना करता है जबकि दूसरा अपनी बहू की बेहुरमती और तीसरा अपनी सगी बहन की इस्मतदती करता है। 12 तुझमें ऐसे लोग हैं जो रिश्वत के एवज़ क़त्ल करते हैं। सूद काबिले-क़बूल है, और लोग एक दूसरे पर जुल्म करके नाजायज़ नफा कमाते हैं। रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि ऐ यस्शलम, तू मुझे सारास भूल गई है!

13 तेरा नाजायज़ नफ़ा और तेरे बीच में खूनरेजी देखकर मैं गुस्से में ताली बजाता हूँ। 14 सोच ले! जिस दिन मैं तुझसे निपटूँगा तो क्या तेरा हौसला कायम और तेरे हाथ मजबूत रहेंगे? यह मेरा, रब का फ़रमान है, और मैं यह करूँगा भी। 15 मैं तुझे दीगर अक़वामो-ममालिक में मुंशिर करके तेरी नापाकी दूर करूँगा। 16 फिर जब दीगर कौमों के देखते देखते तेरी बेहुरमती हो जाएगी तब तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ।”

### इसराईली कौम भट्टी में घात का मैल है

17 रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, 18 “ऐ आदमज़ाद, इसराईली कौम मेरे नज़दीक उस मैल की मानिंद बन गई है जो चाँदी को ख़ालिस करने के बाद भट्टी में बाक़ी रह जाता है। सबके सब उस तौबे, टीन, लोहे और सीसे की मानिंद हैं जो भट्टी में रह जाता है। वह कचरा ही है। 19 चुनौंचे रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि चूँकि तुम भट्टी में बचा हुआ मैल हो इसलिए मैं तुम्हें यस्शलम में इक़ठा करके 20 भट्टी में फेंक दूँगा। जिस तरह चाँदी, तौबे, लोहे, सीसे और टीन की आमेज़िश को तपती भट्टी में फेंका जाता है ताकि पिघल जाए उसी तरह मैं तुम्हें गुस्से में इक़ठा करूँगा और भट्टी में फेंककर पिघला दूँगा। 21 मैं तुम्हें जमा करके आग में फेंक दूँगा और बड़े गुस्से से हवा देकर तुम्हें पिघला दूँगा। 22 जिस तरह चाँदी भट्टी में पिघल जाती है उसी तरह तुम यस्शलम में पिघल जाओगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब ने अपना ग़ज़ब तुम पर नाज़िल किया है।”

### पूरी कौम कुसूरवार है

23 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 24 “ऐ आदमज़ाद, मुल्के-इसराईल को बता, ‘ग़ज़ब के दिन तुझ पर मेह नहीं बरसेगा बल्कि तू बारिश से महस्म रहेगा।’

25 मुल्क के बीच में साज़िश करनेवाले राहनुमा शेरबबर की मानिंद हैं जो दहाड़ते दहाड़ते अपना शिकार फाड लेते हैं। वह लोगों को हडप करके उनके खज़ाने और क़ीमती चीज़ें छीन लेते और मुल्क के दरमियान ही मुतअदिद औरतों को बेवाएँ बना देते हैं।

26 मुल्क के इमाम मेरी शरीअत से ज़्यादती करके उन चीज़ों की बेहुरमती करते हैं जो मुझे मुक़द्दस हैं। न वह मुक़द्दस और आम चीज़ों में इम्तियाज़ करते, न पाक और नापाक अशया का फ़रक़ सिखाते हैं। नीज़, वह मेरे सबत के दिन अपनी आँखों को बंद रखते हैं ताकि उस की बेहुरमती नज़र न आए। यों उनके दरमियान ही मेरी बेहुरमती की जाती है।

27 मुल्क के दरमियान के बुजुर्ग भेडियों की मानिंद हैं जो अपने शिकार को फाड फाडकर खून बहाते और लोगों को मौत के घाट उतारते हैं ताकि नारवा नफ़ा कमाएँ।

28 मुल्क के नबी फ़रेबदेह रोयाएँ और झूठे पैग़ामात सुनाकर लोगों के बुरे कामों पर सफेदी फेर देते हैं ताकि उनकी ग़लतियाँ नज़र न आएँ। वह कहते हैं, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है’ हालाँकि रब ने उन पर कुछ नाज़िल नहीं किया होता।

29 मुल्क के आम लोग भी एक दूसरे का इस्तेहसाल करते हैं। वह डकैत बनकर ग़रीबों और ज़स्रतमंदों पर जुल्म करते और परदेसियों से बदसलूकी करके उनका हक़ मारते हैं।

30 इसराईल में मैं ऐसे आदमी की तलाश में रहा जो मुल्क के लिए हिफाज़ती चारदीवारी तामीर करे, जो मेरे हुज़ूर आकर दीवार के रखने में खंडा हो जाए ताकि मैं मुल्क को तबाह न करूँ। लेकिन मुझे एक भी न मिला जो इस काबिल हो। 31 चुनौंचे मैं अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा और उन्हें अपने सख़्त क़हर से भस्म करूँगा। तब उनके ग़लत कामों का नतीजा उनके अपने सरोँ पर आएगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।”

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, दो औरतों की कहानी सुन ले। दोनों एक ही माँ की बेटियाँ थीं। 3 वह अभी जवान ही थीं जब मिसर में कसबी बन गईं। वही मर्द दोनों कुँवारियों की छातियाँ सहलाकर अपना दिल बहलाते थे। 4 बड़ी का नाम अहोला और छोटी का नाम अहोलीबा था। अहोला सामरिया और अहोलीबा यरूशलम है। मैं दोनों का मालिक बन गया, और दोनों के बेटे-बेटियाँ पैदा हुए।

5 गो मैं अहोला का मालिक था तो भी वह जिना करने लगी। शहवत से भरकर वह जंगजू अस्ूरियों के पीछे पड़ गई, और यही उसके आशिक बन गए। 6 शानदार कपड़ों से मुलब्सस यह गवर्नर और फौजी अफसर उसे बड़े प्यारे लगे। सब खूबसूरत जवान और अच्छे घुडसवार थे। 7 अस्ूर के चीदा चीदा बेटों से उसने जिना किया। जिसकी भी उसे शहवत थी उससे और उसके बुतों से वह नापाक हुई। 8 लेकिन उसने जवानी में मिसरियों के साथ जो जिनाकारी शुरू हुई वह भी न छोड़ी। वही लोग थे जो उसके साथ उस वक्त हमबिसतर हुए थे जब वह अभी कुँवारी थी, जिन्होंने उस की छातियाँ सहलाकर अपनी गंदी खाहिशात उससे पूरी की थीं।

9 यह देखकर मैंने उसे उसके अस्ूरी आशिकों के हवाले कर दिया, उन्हीं के हवाले जिनकी शदीद शहवत उसे थी। 10 उन्हीं से अहोला की अदालत हुई। उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे बरहना कर दिया और उसके बेटे-बेटियों को उससे छीन लिया। उसे खुद उन्होंने तलवार से मार डाला। यों वह दीगर औरतों के लिए इब्रतअंगेज मिसाल बन गईं।

11 गो उस की बहन अहोलीबा ने यह सब कुछ देखा तो भी वह शहवत और जिनाकारी के लिहाज से अपनी बहन से कहीं ज्यादा आगे बढ़ी। 12 वह भी शहवत के मारे अस्ूरियों के पीछे पड़ गई। यह खूबसूरत जवान सब उसे प्यारे थे, खाह अस्ूरी गवर्नर या अफसर, खाह शानदार कपड़ों से मुलब्सस फौजी या अच्छे घुडसवार थे। 13 मैंने देखा कि उसने भी अपने आपको नापाक कर दिया। इसमें दोनों बेटियाँ एक जैसी थीं।

14 लेकिन अहोलीबा की जिनाकाराना हरकतें कहीं ज्यादा बुरी थीं। एक दिन उसने दीवार पर बाबल के मर्दों की तस्वीर देखी। तस्वीर लाल रंग से खींची हुई थी। 15 मर्दों की कमर में पटका और सर पर पगड़ी बँधी हुई थी। वह बाबल के उन अफसरों की मानिंद लगते थे जो रथों पर सवार लड़ते हैं। 16 मर्दों की तस्वीर देखते ही अहोलीबा के दिल में उनके लिए शदीद आरजू पैदा हुई। चुनौचे उसने अपने कासिदों को बाबल भेजकर उन्हें आने की दावत दी। 17 तब बाबल के मर्द उसके पास आए और उससे हमबिसतर हुए। अपनी जिनाकारी से उन्होंने उसे नापाक कर दिया। लेकिन उसने नापाक होने के बाद उसने तंग आकर अपना मुँह उनसे फेर लिया।

18 जब उसने खुले तौर पर उससे जिना करके अपनी बरहनगी सब पर जाहिर की तो मैंने तंग आकर अपना मुँह उससे फेर लिया, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मैंने अपना मुँह उस की बहन से भी फेर लिया था। 19 लेकिन यह भी उसके लिए काफी न था बल्कि उसने अपनी जिनाकारी में मज्जीद इजाफा किया। उसे जवानी के दिन याद आए जब वह मिसर में कसबी थी। 20 वह शहवत के मारे पहले आशिकों की आरजू करने लगी, उनसे जो गधों और घोड़ों की-सी जिंसी ताकत रखते थे। 21 क्योंकि तू अपनी जवानी की जिनाकारी दोहराने की मुतमन्नी थी। तू एक बार फिर उनसे हमबिसतर होना चाहती थी जो मिसर में तेरी छातियाँ सहलाकर अपना दिल बहलाते थे।

22 चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, ‘ऐ अहोलीबा, मैं तेरे आशिकों को तेरे खिलाफ खड़ा करूँगा। जिनसे तूने तंग आकर अपना मुँह फेर लिया था उन्हें मैं चारों तरफ से तेरे खिलाफ लाऊँगा। 23 बाबल, कसदियों, फिकोद, शोअ और क्रोअ के फौजी मिलकर तुझ पर टूट पड़ेंगे। घुडसवार अस्ूरी भी उनमें शामिल होंगे, ऐसे खूबसूरत जवान जो सब गवर्नर, अफसर, रथसवार फौजी और ऊँचे तबके के अफ़ाद होंगे। 24 शिमाल से वह रथों और मुख्तलिफ कौमों के मुतअदिद फौजियों समेत तुझ पर हमला करेंगे। वह तुझे यों घेर लेंगे कि हर तरफ छोटी और बड़ी ढालें, हर तरफ खोद नज़र आएँ। मैं तुझे उनके हवाले कर दूँगा ताकि वह तुझे सज़ा देकर अपने क़वानीन के मुताबिक तेरी अदालत करें। 25 तू मेरी ग़ैरत का तज़रबा करेगी, क्योंकि यह लोग गुस्से में तुझसे निपट लेंगे। वह तेरी नाक और कानों को काट डालेंगे और बचे हुए को तलवार से मौत के घाट उतारेंगे। तेरे बेटे-बेटियों को वह ले जाएँगे, और जो कुछ उनके पीछे रह जाए वह भस्म हो जाएगा। 26 वह तेरे लिबास और तेरे ज़ेवरात को तुझ पर से उतारेंगे।

27 यों मैं तेरी वह फ़हहाशी और जिनाकारी रोक दूँगा जिसका सिलसिला तूने मिसर में शुरू किया था। तब न तू आरजूमंद नज़रों से इन चीजों की तरफ देखेगी, न मिसर को याद करेगी। 28 क्योंकि रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं तुझे उनके हवाले करने को हूँ जो तुझसे नफरत करते हैं, उनके हवाले जिनसे तूने तंग आकर अपना मुँह फेर लिया था। 29 वह बड़ी नफरत से तेरे साथ पेश आएँगे। जो कुछ तुझे मेहनत से कमाया उसे वह छीनकर तुझे नंगी और बरहना छोड़ेंगे। तब तेरी जिनाकारी का शर्मनाक अंजाम और तेरी फ़हहाशी सब पर जाहिर हो जाएगी। 30 तब तुझे इसका अज़ मिलेगा कि तू कौमों के पीछे पड़कर जिना करती रही, कि तूने उनके बुतों की पूजा करके अपने आपको नापाक कर दिया है।

31 तू अपनी बहन के नमने पर चल पड़ी, इसलिए मैं तुझे वही प्याला पिलाऊँगा जो उसे पीना पड़ा। 32 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि तुझे अपनी बहन का प्याला पीना पड़ेगा जो बड़ा और गहरा है। और तू उस वक्त तक उसे पीती रहेगी जब तक मजाक और लान-तान का निशाना न बन गई हो। 33 दहशत और तबाही का प्याला पी पीकर तू मदहोशी और दुख से भर जाएगी। तू अपनी बहन सामरिया का यह प्याला 34 आखिरी क्रते तक पी लेगी, फिर प्याले को पाश पाश करके उसके टुकड़े चबा लेगी और अपने सीने को फाड़ लेगी।' यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है। 35 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, 'तूने मुझे भूँककर अपना मुँह मुझसे फेर लिया है। अब तुझे अपनी फहहाशी और जिनाकारी का नतीजा भुगतना पड़ेगा।'

36 रब मज्जीद मुझसे हमकलाम हुआ, "ए आदमजाद, क्या तू अहोला और अहोलीबा की अदालत करने के लिए तैयार है? फिर उन पर उनकी मकसूह हरकतें जाहिर कर। 37 उनसे दो जर्म सरजद हुए हैं, जिना और कत्ल। उन्होंने बुतों से जिना किया और अपने बच्चों को जलाकर उन्हें खिलाया, उन बच्चों को जो उन्होंने मेरे हों जन्म दिए थे। 38 लेकिन यह उनके लिए काफी नहीं था। साथ साथ उन्होंने मेरा मकदिस नापाक और मेरे सबत के दिनों की बेहरमती की। 39 क्योंकि जब कभी वह अपने बच्चों को अपने बुतों के हुज़र कुरबान करती थी उसी दिन वह मेरे घर में आकर उस की बेहरमती करती थी। मेरे ही घर में वह ऐसी हरकतें करती थी।

40 यह भी इन दो बहनों के लिए काफी नहीं था बल्कि आदमियों की तलाश में उन्होंने अपने कासिदों को दूर दूर तक भेज दिया। जब मर्द पहुँचे तो तुने उनके लिए नहाकर अपनी आँखों में सुरमा लगाया और अपने जेवरात पहन लिए। 41 फिर तू शानदार सोफे पर बैठ गई। तेरे सामने मेज़ थी जिस पर तुने मेरे लिए मखसूस बखुर और तेल रखा था। 42 रेगिस्तान से सिबा के मुतअदिद आदमी आए गए तो शहर में शोर मच गया, और लोगों ने सूकून का साँस लिया। आदमियों ने दोनों बहनों के बाजूओं में कड़े पहनाए और उनके सरों पर शानदार ताज रखे। 43 तब मैंने जिनाकारी से घिसी-फटी औरत के बारे में कहा, 'अब वह उसके साथ जिना करें, क्योंकि वह जिनाकार ही है।' 44 ऐसा ही हुआ। मर्द उन बेहया बहनों अहोला और अहोलीबा से यों हमबिसतर हुए जिस तरह कसबियों से।

45 लेकिन रास्तबाज़ आदमी उनकी अदालत करके उन्हें जिना और कत्ल के मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि दोनों बहनें जिनाकार और कातिल ही हैं। 46 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि उनके खिलाफ जुलूस निकालकर उन्हें दहशत और लट-मार के हवाले करो। 47 लोग उन्हें संगसार करके तलवार से टुकड़े टुकड़े करें, वह उनके बेटे-बेटियों को मार डालें और उनके घरों को नजरे-आतिश करें।

48 यों मैं मुल्क में जिनाकारी खत्म करूँगा। इससे तमाम औरतों को तंबीह मिलेगी कि वह तुम्हारे शर्मनाक नमने पर न चलें। 49 तुम्हें जिनाकारी और बुतपरस्ती की मुनासिब सजा मिलेगी। तब तुम जान लोगी कि मैं रब कादिरे-मुतलक हूँ।"

## 24

### यस्शलम आग पर जंग आलूदा देग है

1 यह्याकीन बादशाह की जिलावतनी के नवें साल में रब का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ। दसवें महीने का दसवाँ दिन \* था। पैगाम यह था, 2 "ए आदमजाद, इसी दिन की तारीख लिख ले, क्योंकि इसी दिन शाहे-बाबल यस्शलम का मुहासरा करने लगा है। 3 फिर इस सरकश कौम इसराईल को तमसील पेश करके बता,

'रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि आग पर देग रखकर उसमें पानी डाल दे। 4 फिर उसे बेहतरीन गोशत से भर दे। रान और शाने के टुकड़े, नीज़ बेहतरीन हड्डियाँ उसमें डाल दे। 5 सिर्फ बेहतरीन भेड़ों का गोशत इस्तेमाल कर। ध्यान दे कि देग के नीचे आग जोर से भड़कती रहे। गोशत को हड्डियों समेत खूब पकने दे।

6 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि यस्शलम पर अफ़सोस जिसमें इतना खून बहाया गया है! यह शहर देग है जिसमें जंग लगा है, ऐसा जंग जो उतरता नहीं। अब गोशत के टुकड़ों को यके बाद दीगरे देग से निकाल दे। उन्हें किसी तरतीब से मत निकालना बल्कि कुरा डाले बगैर निकाल दे।

7 जो खून यस्शलम ने बहाया वह अब तक उसमें मौजूद है। क्योंकि वह मिट्टी पर न गिरा जो उसे जज़ब कर सकती बल्कि नंगी चटान पर। 8 मैंने खुद यह खून नंगी चटान पर बहने दिया ताकि वह छुप न जाए बल्कि मेरा गज़ब यस्शलम पर नाज़िल हो जाए और मैं बदला लूँ।

9 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि यस्शलम पर अफ़सोस जिसने इतना खून बहाया है! मैं भी तेरे नीचे लकड़ी का बड़ा ढेर लगाऊँगा। 10 आ, लकड़ी का बड़ा ढेर करके आग लगा दे। गोशत को खूब पका, फिर शोरबा निकालकर हड्डियों को भस्म होवे दे। 11 इसके बाद खाली देग को जलते कोयलों पर रख दे ताकि पीतल गरम होकर तमतमाने लगे और देग में मैल पिघल जाए, उसका जंग उतर जाए।

\* 24:1 15 जनवरी।

12 लेकिन बेफायदा! इतना जंग लगा है कि वह आग में भी नहीं उतरता।

13 ऐ यस्शलम, अपनी बेहया हरकतों से तूने अपने आपको नापाक कर दिया है। अगरचे मैं खुद तुझे पाक-साफ करना चाहता था तो भी तू पाक-साफ न हुई। अब तू उस वक्त तक पाक नहीं होगी जब तक मैं अपना पूरा गुस्सा तुझ पर उतार न लूँ। 14 भेरे रब का यह फरमान पूरा होनेवाला है, और मैं ध्यान से उसे अमल में लाऊँगा। न मैं तुझ पर तरस खाऊँगा, न रहम करूँगा। मैं तेरे चाल-चलन और आमाल के मुताबिक तेरी अदालत करूँगा।' यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।"

**बीवी की वफात पर हिजकियेल मातम न करे**

15 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 16 "ऐ आदमजाद, मैं तुझसे अचानक तेरी आँख का तारा छीन लूँगा। लेकिन लाजिम है कि तू न आहो-जारी करे, न आँसू बहाए। 17 बेशक चुपके से कराहता रह, लेकिन अपनी अज़ीज़ा के लिए अलानिया मातम न कर। न सर से पगड़ी उतार और न पाँवों से जूते। न दाढ़ी को ढँपना, न जनाजे का खाना खा।"

18 सुबह को मैंने क्रौम को यह पैगाम सुनाया, और शाम को मेरी बीवी इंतकाल कर गई। अगली सुबह मैंने वह कुछ किया जो रब ने मुझे करने को कहा था। 19 यह देखकर लोगों ने मुझसे पूछा, "आपके रवय्ये का हमारे साथ क्या ताल्लुक है? जरा हमें बताएँ।"

20 मैंने जवाब दिया, "रब ने मुझे 21 आप इसराइलियों को यह पैगाम सुनाने को कहा, 'रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मेरा घर तुम्हारे नजदीक पनाहगाह है जिस पर तुम फखर करते हो। लेकिन यह मकदिस जो तुम्हारी आँख का तारा और जान का प्यारा है तबाह होनेवाला है। मैं उस की बेहुरमती करने को हूँ। और तुम्हारे जितने बेटे-बेटियों यस्शलम में पीछे रह गए थे वह सब तलवार की ज़द में आकर मर जाएंगे। 22 तब तुम वह कुछ करोगे जो हिजकियेल इस वक्त कर रहा है। न तुम अपनी दाढ़ियों को ढँपोगे, न जनाजे का खाना खाओगे। 23 न तुम सर से पगड़ी, न पाँवों से जूते उतारोगे। तुम्हारे हाँ न मातम का शोर, न रोने की आवाज़ सुनाई देगी बल्कि तुम अपने गुनाहों के सबब से जाया होते जाओगे। तुम चुपके से एक दूसरे के साथ बैठकर कराहते रहोगे। 24 हिजकियेल तुम्हारे लिए निशान है। जो कुछ वह इस वक्त कर रहा है वह तुम भी करोगे। तब तुम जान लोगे कि मैं रब कादिरे-मुतलक हूँ।"

25 रब मज़ीद मुझसे हमकलाम हुआ, "ऐ आदमजाद, यह घर इसराइलियों के नजदीक पनाहगाह है जिसके बारे में वह खास खुशी महसूस करते हैं, जिस पर वह फखर करते हैं। लेकिन मैं यह मकदिस जो उनकी आँख का तारा और जान का प्यारा है उनसे छीन लूँगा और साथ साथ उनके बेटे-बेटियों को भी। जिस दिन यह पेश आएगा 26 उस दिन एक आदमी बचकर तुझे इसकी खबर पहुँचाएगा। 27 उसी वक्त तू दुबारा बोल सकेगा। तू गूँगा नहीं रहेगा बल्कि उससे बातें करने लगेगा। यों तू इसराइलियों के लिए निशान होगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।"

## 25

**अम्मोनियों का मुल्क उनसे छीन लिया जाएगा**

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 "ऐ आदमजाद, अम्मोनियों के मुल्क की तरफ सख करके उनके खिलाफ नबुव्वत कर। 3 उन्हें बता,

'सुनो रब कादिरे-मुतलक का कलाम! वह फरमाता है कि ऐ अम्मोन बेटे, तूने खुश होकर कहकहा लगाया जब मेरे मकदिस की बेहुरमती हुई, मुल्के-इसराइल तबाह हुआ और यहदाह के बाशिदे जिलावतन हुए। 4 इसलिए मैं तुझे मशरिकी कबीलों के हवाले करूँगा जो अपने डेरे तुझमें लगाकर पूरी बस्तियाँ कायम करेंगे। वह तेरा ही फल खाएँगे, तेरा ही दूध पिएँगे।

5 रब्बा शहर को मैं ऊँटों की चरागाह में बदल दूँगा और मुल्के-अम्मोन को भेड़-बकरियों की आरामगाह बना दूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

6 क्योंकि रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि तूने तालियों बजा बजाकर और पाँव ज़मीन पर मार मारकर इसराइल के अंजाम पर अपनी दिल्ली खुशी का इजहार किया। तेरी इसराइल के लिए हिकारत साफ तौर पर नज़र आई। 7 इसलिए मैं अपना हाथ तेरे खिलाफ बढ़ाकर तुझे दीगर अक़वाम के हवाले कर दूँगा ताकि वह तुझे लूट लें। मैं तुझे यों मिटा दूँगा कि अक़वामो-ममालिक में तेरा नामो-निशान तक नहीं रहेगा। तब तू जान लेगी कि मैं ही रब हूँ।"

**मोआब के शहर तबाह हो जाएंगे**

8 "रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मोआब और सईर इसराइल का मजाक उडाकर कहते हैं, 'लो, देखो यहदाह के घराने का हाल! अब वह भी बाकी कौमों की तरह बन गया है।' 9 इसलिए मैं मोआब की पहाड़ी ढलानों को उनके शहरों से महरूम करूँगा। मुल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक भी आबादी नहीं रहेगी। गो मोआबी अपने शहरों बैत-यसीमोत, बाल-मऊन और किरियतायम पर खास फखर करते हैं, लेकिन वह भी ज़मीनबोस हो जाएंगे। 10 अम्मोन की तरह मैं मोआब

को भी मशरिकी कबीलों के हवाले करूँगा। आखिरकार अक्रवाम में अम्मोनियों की याद तक नहीं रहेगी, 11 और मोआब को भी मुझसे मुनासिब सजा मिलेगी। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

### अल्लाह अदोमियों से इंतकाम लेगा

12 “रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि यहदाह से इंतकाम लेने से अदोम ने संगीन गुनाह किया है। 13 इसलिए मैं अपना हाथ अदोम के खिलाफ बढ़ाकर उसके इन्सानो-नैवान को मार डालूँगा, और वह तलवार से मारे जाएंगे। तेमान से लेकर ददान तक यह मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाएगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है। 14 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि अपनी कौम के हाथों मैं अदोम से बदला लूँगा, और इसराईल मेरे गजब और कहर के मुताबिक ही अदोम से निपट लेगा। तब वह मेरा इंतकाम जान लेंगे।”

### फिलिस्तियों का खतमा

15 “रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि फिलिस्तियों ने बड़े जुल्म के साथ यहदाह से बदला लिया है। उन्होंने उस पर अपनी दिली हिकारत और दायमी दुश्मनी का इज़हार किया और इंतकाम लेकर उसे तबाह करने की कोशिश की। 16 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं अपना हाथ फिलिस्तियों के खिलाफ बढ़ाने को हूँ। मैं इन करेतियों और साहिली इलाके के बच्चे हुआओ को मिटा दूँगा। 17 मैं अपना गजब उन पर नाज़िल करके सख्ती से उनसे बदला लूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

## 26

### सूर का सत्यानास

1 यहयाकीन बादशाह की जिलावतनी के 11वें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। महीने का पहला दिन था। 2 “ऐ आदमजाद, सूर बेटी यरूशलम की तबाही देखकर खुश हुई है। वह कहती है, ‘लो, अक्रवाम का दरवाज़ा टूट गया है! अब मैं ही इसकी जिम्मादारियाँ निभाऊँगी। अब जब यरूशलम वीरान है तो मैं ही फ़रोग पाऊँगी।’

3 जवाब में रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ सूर, मैं तुझसे निपट लूँगा! मैं मुतअहिद कौमों को तेरे खिलाफ भेजूँगा। समुंद्र की जबरदस्त मौजों की तरह वह तुझ पर टूट पड़ेगी। 4 वह सूर शहर की फसील को ढाकर उसके बुर्जों को खाक में मिला देगी। तब मैं उसे इतने जोर से झाड़ दूँगा कि मिट्टी तक नहीं रहेगी। खाली चटान ही नजर आएगी। 5 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि वह समुंद्र के दरमियान ऐसी जगह रहेगी जहाँ मछरे अपने जालों को सुखाने के लिए बिछा देंगे। दीगर अक्रवाम उसे लूट लेंगे, 6 और ख़ुशकी पर उस की आबादियाँ तलवार की ज़द में आ जाएँगी। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

7 क्योंकि रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं बाबल के बादशाह नबूकदनज़र को तेरे खिलाफ भेजूँगा जो घोड़े, रथ, घुडसवार और बड़ी फौज लेकर शिमाल से तुझ पर हमला करेगा। 8 ख़ुशकी पर तेरी आबादियों को वह तलवार से तबाह करेगा, फिर पुशते और बुर्जों से तुझे घेर लेगा। उसके फौजी अपनी ढालें उठाकर तुझ पर हमला करेंगे। 9 बादशाह अपनी किलाशिकन मशीनों से तेरी फसील को ढा देगा और अपने आलात से तेरे बुर्जों को गिरा देगा। 10 जब उसके बेशमार घोड़े चल पड़ेंगे तो इतनी गर्द उड़ जाएगी कि तू उसमें डूब जाएगी। जब बादशाह तेरी फसील को तोड़ तोड़कर तेरे दरवाज़ों में दाखिल होगा तो तेरी दीवारों घोड़ों और रथों के शोर से लरज़ उठेगी। 11 उसके घोड़ों के खुर तेरी तमाम गलियों को कुचल देंगे, और तेरे बाशिदे तलवार से मर जाएंगे, तेरे मज़बूत सतून ज़मीनबोस हो जाएंगे। 12 दुश्मन तेरी दौलत छीन लेंगे और तेरी तिजारत का माल लूट लेंगे। वह तेरी दीवारों को गिराकर तेरी शानदार इमारतों को मिसमार करेंगे, फिर तेरे पत्थर, लकड़ी और मलबा समुंद्र में फेंक देंगे। 13 मैं तेरे गीतों का शोर बंद करूँगा। आइंदा तेरे सरोदों की आवाज़ सुनाई नहीं देगी। 14 मैं तुझे नंगी चटान में तबदील करूँगा, और मछरे तुझे अपने जाल बिछाकर सुखाने के लिए इस्तेमाल करेंगे। आइंदा तुझे कभी दुबारा तामीर नहीं किया जाएगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

15 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ सूर बेटी, साहिली इलाके काँप उठेंगे जब तू धडाम से गिर जाएगी, जब हर तरफ ज़खमी लोगों की कराहती आवाज़ें सुनाई देंगी, हर गली में कल्लो-गारत का शोर मचेगा। 16 तब साहिली इलाकों के तमाम हुक्मरान अपने तख्तों से उतरकर अपने चोगे और शानदार लिबास उतारेंगे। वह मातमी कपड़े पहनकर ज़मीन पर बैठ जाएंगे और बार बार लरज़ उठेंगे, यहाँ तक वह तेरे अंजाम पर परेशान होंगे। 17 तब वह तुझ पर मातम करके गीत गाएँगे, ‘हाय, तू कितने धडाम से गिरकर तबाह हुई है! ऐ साहिली शहर, ऐ सूर बेटी, पहले तू अपने बाशिदों समेत समुंद्र के दरमियान रहकर कितनी मशहूर और ताकतवर थी। गिर्दो-नवाह के तमाम बाशिदे तुझसे दहशत खाते थे। 18 अब साहिली इलाके तेरे अंजाम को देखकर थरथरा रहे हैं। समुंद्र के जज़ीर तेरे ख़ातमे की ख़बर सुनकर दहशतज़दा हो गए हैं।’



19 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ सूर बेटी, मैं तुझे वीरानो-सुनसान करूँगा। तू उन दीगर शहरों की मानिद बन जाएगी जो नेस्तो-नाबूद हो गए हैं। मैं तुझ पर सैलाब लाऊँगा, और गहरा पानी तुझे ढाँप देगा। 20 मैं तुझे पाताल में उतरने दूँगा, और तू उस क्रौम के पास पहुँचेगी जो कदमी जमाने से ही वहाँ बसती है। तब तुझे जमीन की गहराइयों में रहना पड़ेगा, वहाँ जहाँ कदमी जमानों के खंडरात हैं। तू मुरदों के मुल्क में रहेगी और कभी जिंदगी के मुल्क में वापस नहीं आएगी, न वहाँ अपना मकाम दुबारा हासिल करेगी। 21 मैं होने दूँगा कि तेरा अंजाम दहशतनाक होगा, और तू सरसर तबाह हो जाएगी। लोग तेरा खोज लगाएंगे लेकिन तुझे कभी नहीं पाएँगे। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

## 27

सूर के अंजाम पर मातमी गीत

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, सूर बेटी पर मातमी गीत गा, 3 उस शहर पर जो समुंदर की गुजरगाह पर वाके है और मुतअदिद साहिली क्रौमों से तिजारत करता है। उससे कह,

‘रब फरमाता है कि ऐ सूर बेटी, तू अपने आप पर बहुत फ़खर करके कहती है कि वाह, मेरा हुस्न कमाल का है। 4 और वाकई, तेरा इलाका समुंदर के बीच में ही है, और जिन्होंने तुझे तामीर किया उन्होंने तेरे हुस्न को तकमील तक पहुँचाया, 5 तुझे शानदार बहरी जहाज़ की मानिद बनाया। तेरे तख्ते सनीर में उग्नेवाले जूनीपर के दरख्तों से बनाए गए, तेरा मस्तूल लुबनान का देवदार का दरख्त था। 6 तेरे चप्पू बसन के बलूत के दरख्तों से बनाए गए, जबकि तेरे फ़र्श के लिए कुबस्स से सरो की लकड़ी लाई गई, फिर उसे हाथीदाँत से आरास्ता किया गया। 7 नफीस कतान का तेरा रंगदार बादबान मिसर का था। वह तेरा इम्तियाज़ी निशान बन गया। तेरे तिरपालों का किरमिजी और अरगवानी रंग इलीसा के साहिली इलाके से लाया गया।

8 सैदा और अरवद के मर्द तेरे चप्पू मारते थे, सूर के अपने ही दाना तेरे मल्लाह थे। 9 जबल\* के बुजुर्ग और दानिशमंद आदमी ध्यान देते थे कि तेरी दर्ज़े बंद रहें। तमाम बहरी जहाज़ अपने मल्लाहों समेत तेरे पास आया करते थे ताकि तेरे साथ तिजारत करें। 10 फारस, लुदिया और लिबिया के अफ़राद तेरी फौज में खिदमत करते थे। तेरी दीवारों से लटकी उनकी ढालों और खोदों ने तेरी शान मज़ीद बढ़ा दी। 11 अरवद और खलक † के आदमी तेरी फ़सिल का दिफा करते थे, जम्माद के फौजी तेरे बुर्जे में पहरादारी करते थे। तेरी दीवारों से लटकी हुई उनकी ढालों ने तेरे हुस्न को कमाल तक पहुँचा दिया।

12 तू अमीर थी, तुझमें मालो-असबाब की कसरत की तिजारत की जाती थी। इसलिए तरसीस तुझे चाँदी, लोहा, टीन और सीसा देकर तुझसे सौदा करता था। 13 यूनान, तूबल और मसक तुझसे तिजारत करते, तेरा माल खरीदकर मुआवजे में गुलाम और पीतल का सामान देते थे। 14 बैत-तुजरमा के ताजिर तेरे माल के लिए तुझे आम घोड़े, फौजी घोड़े और खच्चर पहुँचाते थे। 15 ददान के आदमी तेरे साथ तिजारत करते थे, हॉं मुतअदिद साहिली इलाके तेरे गाहक थे। उनके साथ सौदाबाजी करके तुझे हाथीदाँत और आबनूस की लकड़ी मिलती थी। 16 शाम तेरी पैदावार की कसरत की वजह से तेरे साथ तिजारत करता था। मुआवजे में तुझे फ़रीजा, अरगवानी रंग, रंगदार कपड़े, बारीक कतान, मूँगा और याकूत मिलता था। 17 यहदाह और इसराईल तेरे गाहक थे। तेरा माल खरीदकर वह तुझे मिन्नीत का गंदूम, पन्नग की टिकिकियाँ, शहद, जैतून का तेल और बलसान देते थे। 18 दमिशक तेरी वाफ़िर पैदावार और माल की कसरत की वजह से तेरे साथ कारोबार करता था। उससे तुझे हलबून की मै और साहर की ऊन मिलती थी। 19 विदान और यूनान तेरे गाहक थे। वह ऊज़ाल का ढाला हुआ लोहा, दारचीनी और कलमस का मसाला पहुँचाते थे। 20 ददान से तिजारत करने से तुझे ज़ीनपोश मिलती थी। 21 अरब और क्रीदार के तमाम हुक्मरान तेरे गाहक थे। तेरे माल के एवज़ वह भेड़ के बच्चे, भेड़े और बकरे देते थे। 22 सबा और रामा के ताजिर तेरा माल हासिल करने के लिए तुझे बेहतरीन बलसान, हर किस्म के जवाहर और सोना देते थे। 23 हारान, कन्ना, अदन, सबा, अस्सूर और कुल मादी सब तेरे साथ तिजारत करते थे। 24 वह तेरे पास आकर तुझे शानदार लिबास, किरमिजी रंग की चादरें, रंगदार कपड़े और कम्बल, नीज़ मज़बूत रस्से पेश करते थे। 25 तरसीस के उम्दा जहाज़ तेरा माल मुख्तलिफ़ ममालिक में पहुँचाते थे। यों तू जहाज़ की मानिद समुंदर के बीच में रहकर दौलत और शान से मालामाल हो गई। 26 तेरे चप्पू चलानेवाले तुझे दूर तक पहुँचाते हैं।

लेकिन वह वक़्त करीब है जब मशरिक से तेज़ आँधी आकर तुझे समुंदर के दरमियान ही टुकड़े टुकड़े कर देगी। 27 जिस दिन तू गिर जाएगी उस दिन तेरी तमाम मिलकियत समुंदर के बीच में ही डूब जाएगी। तेरी दौलत, तेरा सौदा, तेरे मल्लाह, तेरे बहरी मुसाफ़िर, तेरी दर्ज़े बंद रखनेवाले, तेरे ताजिर, तेरे तमाम फौजी और बाकी जितने भी तुझ पर सवार हैं सबके सब ग़रक हो जाएंगे। 28 तेरे मल्लाहों की चीखती-निल्लती आवाज़ें सुनकर साहिली इलाके कौंप उठेंगे। 29 तमाम चप्पू चलानेवाले, मल्लाह और बहरी मुसाफ़िर अपने जहाज़ों से उतरकर साहिल पर खड़े हो जाएंगे। 30 वह ज़ोर से रो पड़ेंगे, बड़ी तलख़ी से

गिर्याओ-जारी करेंगे। अपने सरों पर खाक डालकर वह राख में लोट-पोट हो जाएंगे। 31 तेरी ही वजह से वह अपने सरों को मुँडवाकर टाट का लिबास ओढ़ लेंगे, वह बड़ी बेचैनी और तलखी से तुझ पर मातम करेंगे। 32 तब वह जारो-कतार रोकर मातम का गीत गाएँगे,

“हाय, कौन समुंदर से घिरे हुए सूर की तरह खमोश हो गया है?”

33 जब तिजारत का माल समुंदर की चारों तरफ से तुझ तक पहुँचता था तो तू मुतअदिद कौमों को सेर करती थी। दुनिया के बादशाह तेरी दौलत और तिजारती सामान की कसरत से अमीर हुए।

34 अफसोस! अब तू पाश पाश होकर समुंदर की गहराइयों में गायब हो गई है। तेरा माल और तेरे तमाम अफराद तेरे साथ डूब गए हैं।

35 साहिली इलाकों में बसनेवाले घबरा गए हैं। उनके बादशाहों के रोंगटे खड़े हो गए, उनके चेहरे परेशान नजर आते हैं।

36 दीगर अक्रवाम के ताजिर तुझे देखकर “तौबा तौबा” कहते हैं। तेरा हौलनाक अंजाम अचानक ही आ गया है। अब से तू कभी नहीं उठेगी!”

## 28

सूर के हुक्मरान के लिए पैगाम

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, सूर के हुक्मरान को बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि तू माग्सर हो गया है। तू कहता है कि मैं खुदा हूँ, मैं समुंदर के दरमियान ही अपने तख्ने-इलाही पर बैठा हूँ। लेकिन तू खुदा नहीं बल्कि इनसान है, गो तू अपने आपको खुदा-सा समझता है। 3 बेशक तू अपने आपको दानियाल से कहीं ज्यादा दानिशमंद समझकर कहता है कि कोई भी भेद मुझसे पोशीदा नहीं रहता। 4 और यह हकीकत भी है कि तूने अपनी हिकमत और समझ से बहुत दौलत हासिल की है, सोने और चाँदी से अपने खजानों को भर दिया है। 5 बड़ी दानिशमंदी से तूने तिजारत के जरीए अपनी दौलत बढ़ाई। लेकिन जितनी तेरी दौलत बढ़ती गई उतना ही तेरा गुस्सा भी बढ़ता गया।

6 चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि चूँकि तू अपने आपको खुदा-सा समझता है 7 इसलिए मैं सबसे जालिम कौमों को तेरे खिलाफ भेजूँगा जो अपनी तलवारों को तेरी खूबसूरती और हिकमत के खिलाफ खींचकर तेरी शानो-शौकत की बेहुरमती करेंगी। 8 वह तुझे पाताल में उतारेंगी। समुंदर के बीच में ही तुझे मार डाला जाएगा। 9 क्या तू उस वक्त अपने कातिलों से कहेगा कि मैं खुदा हूँ? हरगिज़ नहीं! अपने कातिलों के हाथ में होते वक्त तू खुदा नहीं बल्कि इनसान साबित होगा। 10 तू अजनबियों के हाथों नामखतून की-सी वफात पाएगा। यह मेरा, रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

11 रब मजीद मुझसे हमकलाम हुआ, 12 “ऐ आदमजाद, सूर के बादशाह पर मातमी गीत गाकर उससे कह,

‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि तुझ पर कामिलियत का ठप्पा था। तू हिकमत से भरपूर था, तेरा हुस्ब कमाल का था। 13 अल्लाह के बागे-अदन में रहकर तू हर किस्म के जवाहर से सजा हुआ था। लाल, \* जबरजद, † हजस्त-कमर, ‡ पुरखराज, § अक्रीके-अहमर \* और यशब, † संगे-लाजवर्द, ‡ फ़ीरोज़ा और ज़ुमुरद सब तुझे आरास्ता करते थे। सब कुछ सोने के काम से मजीद खूबसूरत बनाया गया था। जिस दिन तुझे खलक किया गया उसी दिन यह चीज़ें तेरे लिए तैयार हुईं।

14 मैंने तुझे अल्लाह के मुकद्दस पहाड़ पर खड़ा किया था। वहाँ तू क़रूबी फरिशते की हैसियत से अपने पर फैलाए पहरादारी करता था, वहाँ तू जलते हुए पत्थरों के दरमियान ही घुमता-फिरता रहा।

15 जिस दिन तुझे खलक किया गया तेरा चाल-चलन बेइलजा़म था, लेकिन अब तुझमें नाइनसाफी पाई गई है। 16 तिजारत में कामयाबी की वजह से तू ज़ल्मो-तशदुद से भर गया और गुनाह करने लगा।

यह देखकर मैंने तुझे अल्लाह के पहाड़ पर से उतार दिया। मैंने तुझे जो पहरादारी करनेवाला फरिशता था तबाह करके जलते हुए पत्थरों के दरमियान से निकाल दिया। 17 तेरी खूबसूरती तेरे लिए गुस्सा का बाइस बन गई, हों तेरी शानो-शौकत ने तुझे इनाम फुला दिया कि तेरी हिकमत जाती रही। इसी लिए मैंने तुझे ज़मीन पर पटरखकर दीगर बादशाहों के सामने तमाशा बना दिया। 18 अपने बेशमार गुनाहों और बेइनसाफ तिजारत से तूने अपने मुकद्दस मकामों की बेहुरमती की है। जवाब में मैंने होने दिया कि आग तेरे दरमियान से निकलकर तुझे भस्म करे। मैंने तुझे तमाशा देखनेवाले तमाम लोगों के सामने ही राख कर दिया। 19 जितनी भी कौमों तुझे जानती थी उनके रोंगटे खड़े हो गए। तेरा हौलनाक अंजाम अचानक ही आ गया है। अब से तू कभी नहीं उठेगी।”

\* 28:13 या एक किस्म का सुर्ख अक्रीक। याद रहे कि चूँकि क़दीम ज़माने के अकसर जवाहरत के नाम मत्सुक हैं या उनका मतलब बदल गया है, इसलिए उनका मुसुल्लिफ़ तरज़ुमा हो सकता है। † 28:13 peridot ‡ 28:13 moonstone § 28:13 topas \* 28:13 carnelian † 28:13 jasper ‡ 28:13 lapis lazuli

सैदा को सजा दी जाएगी

20 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 21 “ऐ आदमजाद, सैदा की तरफ सूख करके उसके खिलाफ नबुव्वत कर! 22 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ सैदा, मैं तुझसे निपट लूँगा। तेरे दरमियान ही मैं अपना जलाल दिखाऊँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ, क्योंकि मैं शहर की अदालत करके अपना मुकद्दस किरदार उन पर जाहिर करूँगा। 23 मैं उसमें मोहलक वबा फैलाकर उस की गलियों में खून बहा दूँगा। उसे चारों तरफ से तलवार घेर लेगी तो उसमें फँसे हुए लोग हलाक हो जाएंगे। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

इसराईल की बहाली

24 इस वक्त इसराईल के पड़ोसी उसे हकीर जानते हैं। अब तक वह उसे चुभनेवाले खार और ज़खमी करनेवाले कौंटे हैं। लेकिन आइंदा ऐसा नहीं होगा। तब वह जान लेंगे कि मैं रब कादिरे-मुतलक हूँ। 25 क्योंकि रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि दीगर अक्रवाम के देखते देखते मैं जाहिर करूँगा कि मैं मुकद्दस हूँ। क्योंकि मैं इसराईलियों को उन अक्रवाम में से निकालकर जमा करूँगा जहाँ मैंने उन्हें मुंतशिर कर दिया था। तब वह अपने वतन में जा बसेंगे, उस मुल्क में जो मैंने अपने खादिम याकूब को दिया था। 26 वह हिफाज़त से उसमें रहकर घर तामीर करेंगे और अंगूर के बाग लगाएँगे। लेकिन जो पड़ोसी उन्हें हकीर जानते थे उनकी मैं अदालत करूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं रब उनका खुदा हूँ।”

## 29

मिसर को सजा मिलेगी

1 यहयाकीन बादशाह की जिलावतनी के दसवें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। दसवें महीने का 11वाँ दिन \* था। रब ने फरमाया, 2 “ऐ आदमजाद, मिसर के बादशाह फिरौन की तरफ सूख करके उसके और तमाम मिसर के खिलाफ नबुव्वत कर!

3 उसे बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ शाहे-मिसर फिरौन, मैं तुझसे निपटने को हूँ। बेशक तू एक बड़ा अज़दहा है जो दरियाए-नील की मुख्तलिफ शाखों के बीच में लेटा हुआ कहता है कि यह दरिया मेरा ही है, मैंने खुद उसे बनाया।

4 लेकिन मैं तेरे मुँह में कौंटे डालकर तुझे दरिया से निकाल लाऊँगा। मेरे कहने पर तेरी नदियों की तमाम मछलियों तेरे छिलकों के साथ लगकर तेरे साथ पकड़ी जाएँगी। 5 मैं तुझे इन तमाम मछलियों समेत रेगिस्तान में फेंक छोड़ूँगा। तू खुले मैदान में गिरकर पड़ा रहेगा। न कोई तुझे इकठ्ठा करेगा, न जमा करेगा बल्कि मैं तुझे दरिदों और परिदों को खिला दूँगा।

6 तब मिसर के तमाम बाशिंदे जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

तू इसराईल के लिए सरकंडे की कच्ची छड़ी साबित हुआ है। 7 जब उन्होंने तुझे पकड़ने की कोशिश की तो तूने टुकडे टुकडे होकर उनके कंधे को ज़खमी कर दिया। जब उन्होंने अपना पूरा वज़न तुझ पर डाला तो तू टूट गया, और उनकी कमर डॉवॉडोल हो गई। 8 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं तेरे खिलाफ तलवार भेजूँगा जो मुल्क में से इनसानो-हैवान मिटा डालेगी। 9 मुल्के-मिसर वीरानो-सुनसान हो जाएगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

चूँकि तूने दावा किया, “दरियाए-नील मेरा ही है, मैंने खुद उसे बनाया” 10 इसलिए मैं तुझसे और तेरी नदियों से निपट लूँगा। मिसर में हर तरफ खंडरात नज़र आएँगे। शिमाल में मिजदाल से लेकर जुनूबी शहर असवान बल्कि एथोपिया की सरहद तक मैं मिसर को वीरानो-सुनसान कर दूँगा। 11 न इनसान और न हैवान का पाँव उसमें से गुज़रेगा। चालीस साल तक उसमें कोई नहीं बसेगा। 12 इर्दगिर्द के दीगर तमाम ममालिक की तरह मैं मिसर को भी उजाड़ूँगा, इर्दगिर्द के दीगर तमाम शहरों की तरह मैं मिसर के शहर भी मलबे के ढेर बना दूँगा। चालीस साल तक उनकी यही हालत रहेगी। साथ साथ मैं मिसरियों को मुख्तलिफ अक्रवामो-ममालिक में मुंतशिर कर दूँगा।

13 लेकिन रब कादिरे-मुतलक यह भी फरमाता है कि चालीस साल के बाद मैं मिसरियों को उन ममालिक से निकालकर जमा करूँगा जहाँ मैंने उन्हें मुंतशिर कर दिया था। 14 मैं मिसर को बहाल करके उन्हें उनके आबाई वतन यानी जुनूबी मिसर में वापस लाऊँगा। वहाँ वह एक ग़ैरअहम सलतनत कायम करेंगे 15 जो बाकी ममालिक की निसबत छोटी होगी। आइंदा वह दीगर कौमों पर अपना रोब नहीं डालेंगे। मैं खुद ध्यान दूँगा कि वह आइंदा इतने कमज़ोर रहें कि दीगर कौमों पर हकूमत न कर सकें। 16 आइंदा इसराईल न मिसर पर भरोसा करने और न उससे लिपट जाने की आजमाइश में पड़ेगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब कादिरे-मुतलक हूँ।”

शाहे-बाबल को मिसर मिलेगा

\* 29:17 जनवरी।

17 यह्याकीन बादशाह की जिलावतनी के 27वें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। पहले महीने का पहला दिन † था। उसने फरमाया, 18 “ऐ आदमजाद, जब शाहे-बाबल नबूकदनञ्जर ने सूर का मुहासरा किया तो उस की फौज को सख्त मेहनत करनी पड़ी। हर सर गंजा हुआ, हर कंधे की जिल्द छिल गई। लेकिन न उसे और न उस की फौज को मेहनत का मुनासिब अन्न मिला।

19 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं शाहे-बाबल नबूकदनञ्जर को मिसर दे दूँगा। उस की दौलत को वह उठाकर ले जाएगा। अपनी फौज को पैसे देने के लिए वह मिसर को लूट लेगा। 20 चूँकि नबूकदनञ्जर और उस की फौज ने मेरे लिए खूब मेहनत-मशकत की इसलिए मैंने उसे मुआवजे के तौर पर मिसर दे दिया है। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

21 जब यह कुछ पेश आया तो मैं इसराईल को नई ताकत दूँगा। ऐ हिज्रकियेल, उस वक्त मैं तेरा मुँह खोल दूँगा, और तू दुबारा उनके दरमियान बोलोगा। तब वह जान लेगे कि मैं ही रब हूँ।”

## 30

### मिसर की ताकत खत्म हो जाएगी

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, नबूकदनञ्जर के करके यह पैगाम सुना दे, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि आहो-जारी करो! उस दिन पर अफसोस 3 जो आनेवाला है। क्योंकि रब का दिन करीब ही है। उस दिन घने बादल छा जाएंगे, और मैं अक्रवाम की अदालत करूँगा। 4 मिसर पर तलवार नाजिल होकर वहाँ के बाशिंदों को मार डालेगी। मुल्क की दौलत छीन ली जाएगी, और उस की बुनियादों को ढा दिया जाएगा। यह देखकर एथोपिया लरज उठेगा, 5 क्योंकि उसके लोग भी तलवार की ज़द में आ जाएंगे। कई कौमों के अफराद मिसरियों के साथ हलाक हो जाएंगे। एथोपिया के, लिबिया के, लुदिया के, मिसर में बसनेवाले तमाम अजनबी कौमों के, कूब के और मेरे अहद की कौम इसराईल के लोग हलाक हो जाएंगे। 6 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मिसर को सहारा देनेवाले सब गिर जाएंगे, और जिस ताकत पर वह फखर करता है वह जाती रहेगी। शिमाल में मिजदाल से लेकर जुनूबी शहर असवान तक उन्हें तलवार मार डालेगी। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है। 7 इर्दगिर्द के दीगर ममालिक की तरह मिसर भी वीरानो-सुनसान होगा, इर्दगिर्द के दीगर शहरों की तरह उसके शहर भी मलबे के ढेर होंगे। 8 जब मैं मिसर में यों आग लगाकर उसके मददगारों को कुचल डालूँगा तो लोग जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।

9 अब तूक एथोपिया अपने आपको महफूज समझता है, लेकिन उस दिन मेरी तरफ से कासिद निकलकर उस मुल्क के बाशिंदों को ऐसी खबर पहुँचाएँ जिससे वह थरथरा उठेगा। क्योंकि कासिद कश्तियों में बैठकर दरियाए-नील के जरीए उन तक पहुँचेंगे और उन्हें इतला देंगे कि मिसर तबाह हो गया है। यह सुनकर वहाँ के लोग काँप उठेंगे। यकीन करो, यह दिन जल्द ही आनेवाला है। 10 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि शाहे-बाबल नबूकदनञ्जर के जरीए मैं मिसर की शानो-शौकत छीन लूँगा। 11 उसे फौज समेत मिसर में लाया जाएगा ताकि उसे तबाह करे। तब अक्रवाम में से सबसे जालिम यह लोग अपनी तलवारों को चलाकर मुल्क को मकतूलों से भर देंगे। 12 मैं दरियाए-नील की शाखों को खूशक करूँगा और मिसर को फरोख्त करके शरीर आदमियों के हवाले कर दूँगा। परदेसियों के जरीए मैं मुल्क और जो कुछ भी उसमें है तबाह कर दूँगा। यह मेरा, रब का फरमान है।

13 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं मिसरी बुतों को बरबाद करूँगा और मेंफिस के मुजस्समे हटा दूँगा। मिसर में हुक्मरान नहीं रहेगा, और मैं मुल्क पर ख़ौफ तारी करूँगा। 14 मेरे हुक्म पर जुनूबी मिसर बरबाद और जुअन नज़रे-आतिश होगा। मैं थीबस की अदालत 15 और मिसरी किले पलूसियम पर अपना गज़ब नाजिल करूँगा। हाँ, थीबस की शानो-शौकत नेस्तो-नाबूद हो जाएगी। 16 मैं मिसर को नज़रे-आतिश करूँगा। तब पलूसियम दर्दे-जह में मुस्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाएगा, थीबस दुश्मन के कब्जे में आएगा और मेंफिस मुसलसल मुसीबत में फँसा रहेगा। 17 दुश्मन की तलवार हीलियोपुलिस और बुबस्तिस् के जवानों को मार डालेगी जबकि बची हुई औरतें गुलाम बनकर जिलावतन हो जाएँगी। 18 तहफनहीस में दिन तारीक हो जाएगा जब मैं वहाँ मिसर के जुए को तोड़ दूँगा। वहीं उस की जबरदस्त ताकत जाती रहेगी। घना बादल शहर पर छा जाएगा, और गिर्दो-नवाह की आबादियाँ कैदी बनकर जिलावतन हो जाएँगी। 19 यों मैं मिसर की अदालत करूँगा और वह जान लेगे कि मैं ही रब हूँ।”

20 यह्याकीन बादशाह की जिलावतनी के ग्यारहवें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। पहले महीने का सातवाँ दिन \* था। उसने फरमाया था, 21 “ऐ आदमजाद, मैंने मिसरी बादशाह फिरौन का बाजू तोड़ डाला है। शफा पाने के लिए लाज़िम

था कि बाजू पर पट्टी बाँधी जाए, कि टूटी हुई हड्डी के साथ खपचची बाँधी जाए ताकि बाजू मज़बूत होकर तलवार चलाने के काबिल हो जाए। लेकिन इस किस्म का इलाज हुआ नहीं।

22 चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मैं मिसरी बादशाह फ़िरौन से निपटकर उसके दोनों बाजूओं को तोड़ डालूँगा, सेहतमंद बाजू को भी और टूटे हुए को भी। तब तलवार उसके हाथ से गिर जाएगी 23 और मैं मिसरियों को मुख्तलिफ़ अक्रवामो-ममालिक में मुंशिर कर दूँगा।

24 मैं शाहे-बाबल के बाजूओं को तकवियत देकर उसे अपनी ही तलवार पकड़ा दूँगा। लेकिन फ़िरौन के बाजूओं को मैं तोड़ डालूँगा, और वह शाहे-बाबल के सामने मरनेवाले ज़ख़मी आदमी की तरह कराह उठेगा। 25 शाहे-बाबल के बाजूओं को मैं तकवियत दूँगा जबकि फ़िरौन के बाजू बेहिसो-हरकत हो जाएंगे। जिस वक़्त मैं अपनी तलवार को शाहे-बाबल को पकड़ा दूँगा और वह उसे मिसर के खिलाफ़ चलाएगा उस वक़्त लोग जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 26 हौँ, जिस वक़्त मैं मिसरियों को दीगर अक्रवामो-ममालिक में मुंशिर कर दूँगा उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

## 31

### मिसरी दरख़्त धडाम से गिर जाएगी

1 यह्याकीन बादशाह की जिलावतनी के ग्यारहवें साल में रब मुझसे हमकलाम हुआ। तीसरे महीने का पहला दिन \* था। उसने फ़रमाया, 2 “ऐ आदमज़ाद, मिसरी बादशाह फ़िरौन और उस की शानो-शौकत से कह,

‘कौन तुझ जैसा अज़ीम था? 3 तू सरो का दरख़्त, लुबनान का देवदार का दरख़्त था, जिसकी ख़ब्सूरत और घनी शाख़ें जंगल को साया देती थीं। वह इतना बड़ा था कि उस की चोटी बादलों में ओझल थी। 4 पानी की कसरत ने उसे इतनी तरक्की दी, गहरे चश्मों ने उसे बड़ा बना दिया। उस की नदियों तने के चारों तरफ़ बहती थीं और फिर आगे जाकर खेत के बाक़ी तमाम दरख़्तों को भी सेराब करती थीं। 5 चुनौचे वह दीगर दरख़्तों से कहीं ज़्यादा बड़ा था। उस की शाख़ें बढ़तीं और उस की टहनियाँ लंबी होती गईं। वाफ़िर पानी के बाइस वह ख़ूब फैलता गया। 6 तमाम परिदे अपने घोंसले उस की शाख़ों में बनाते थे। उस की शाख़ों की आड़ में जंगली जानवरों के बच्चे पैदा होते, उसके साये में तमाम अज़ीम कौमों बसती थीं। 7 चूँकि दरख़्त की जड़ों को पानी की कसरत मिलती थी इसलिए उस की लंबाई और शाख़ें काबिले-तारीफ़ और ख़ब्सूरत बन गईं। 8 बागो-ख़ुदा के देवदार के दरख़्त उसके बराबर नहीं थे। न जूनीपर की टहनियाँ, न चनार की शाख़ें उस की शाख़ों के बराबर थीं। बागो-ख़ुदा में कोई भी दरख़्त उस की ख़ब्सूरती का मुक़ाबला नहीं कर सकता था। 9 मैंने खुद उसे मुतअदिद डालियाँ मूहैया करके ख़ब्सूरत बनाया था। अल्लाह के बागो-अदन के तमाम दीगर दरख़्त उससे रशक खाते थे।

10 लेकिन अब रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि जब दरख़्त इतना बड़ा हो गया कि उस की चोटी बादलों में ओझल हो गई तो वह अपने कद पर फ़ख़र करके मग़्सूर हो गया।

11 यह देखकर मैंने उसे अक्रवाम के सबसे बड़े हुक्मरान के हवाले कर दिया ताकि वह उस की बेदीनी के मुताबिक़ उससे निपट ले। मैंने उसे निकाल दिया, 12 तो अज़नबी अक्रवाम के सबसे ज़ालिम लोगों ने उसे टुकड़े टुकड़े करके ज़मीन पर छोड़ दिया। तब उस की शाख़ें पहाड़ों पर और तमाम वादियों में गिर गईं, उस की टहनियाँ टूटकर मुल्क की तमाम घाटियों में पड़ी रहीं। दुनिया की तमाम अक्रवाम उसके साये में से निकलकर वहाँ से चली गईं। 13 तमाम परिदे उसके कटे हुए तने पर बैठ गए, तमाम जंगली जानवर उस की सूखी हुई शाख़ों पर लेट गए। 14 यह इसलिए हुआ कि आइंदा पानी के किनारे पर लगा कोई भी दरख़्त इतना बड़ा न हो कि उस की चोटी बादलों में ओझल हो जाए और नतीजतन वह अपने आपको दूसरों से बरत समझे। क्योंकि सबके लिए मौत और ज़मीन की गहराइयों मुकर्रर हैं, सबको पाताल में उतरकर मरुदों के दरमियान बसना है।

15 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि जिस वक़्त यह दरख़्त पाताल में उतर गया उस दिन मैंने गहराइयों के चश्मों को उस पर मातम करने दिया और उनकी नदियों को रोक दिया ताकि पानी इतनी कसरत से न बहे। उस की खातिर मैंने लुबनान को मातमी लिबास पहनाए। तब खुले मैदान के तमाम दरख़्त मुरझा गए। 16 वह इतने धडाम से गिर गया जब मैंने उसे पाताल में उनके पास उतार दिया जो गढ़े में उतर चुके थे कि दीगर अक्रवाम को धक्का लगा। लेकिन बागो-अदन के बाक़ी तमाम दरख़्तों को तसल्लूली मिली। क्योंकि गो लुबनान के इन चीदा और बेहतरीन दरख़्तों को पानी की कसरत मिलती रही थी ताहम यह भी पाताल में उतर गए थे। 17 गो यह बड़े दरख़्त की ताकत रहे थे और अक्रवाम के दरमियान रहकर उसके साये में अपना घर बना लिया था तो भी यह बड़े दरख़्त के साथ वहाँ उतर गए जहाँ मकतूल उनके इंतज़ार में थे।

\* 31:12 ज़ना

18 ऐ मिसर, अजमत और शान के लिहाज से बागे-अदन का कौन-सा दरखत तेरा मुकाबला कर सकता है? लेकिन तुझे बागे-अदन के दीगर दरखतों के साथ ज़मीन की गहराइयों में उतारा जाएगा। वहाँ तू नामखतूनों और मकतूलों के दरमियान पड़ा रहेगा। रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि यही फिरौन और उस की शानो-शौकत का अंजाम होगा।”

## 32

अजदहे फिरौन को मारा जाएगा

1 यहूयाकीन बादशाह के 12वें साल में रब मुझे हमकलाम हुआ। 12वें महीने का पहला दिन \* था। मुझे यह पैगाम मिला, 2 “ऐ आदमज़ाद, मिसर के बादशाह फिरौन पर मातमी गीत गाकर उसे बता,

‘गो अक़वाम के दरमियान तुझे जवान शेरबबर समझा जाता है, लेकिन दर-हकीकत तू दरियाए-नील की शाखों में रहनेवाला अजदहा है जो अपनी नदियों को उबलाने देता और पॉवों से पानी को जोर से हरकत में लाकर गदला कर देता है।

3 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मैं मुतअद्दिद कौमों को जमा करके तेरे पास भेजूँगा ताकि तुझ पर जाल डालकर तुझे पानी से खींच निकालें। 4 तब मैं तुझे जोर से खुशकी पर पटख दूँगा, खुले मैदान पर ही तुझे फेंक छोड़ूँगा। तमाम परिदे तुझ पर बैठ जाएंगे, तमाम जंगली जानवर तुझे खा खाकर सेर हो जाएंगे। 5 तेरा गोशत मैं पहाड़ों पर फेंक दूँगा, तेरी लाश से वादियों को भर दूँगा। 6 तेरे बहते खून से मैं ज़मीन को पहाड़ों तक सेराब करूँगा, घाटियाँ तुझसे भर जाएँगी।

7 जिस वक़्त मैं तेरी जिंदगी की बन्ती बुझा दूँगा उस वक़्त मैं आसमान को ढाँप दूँगा। सितारे तारीक हो जाएंगे, सूरज बादलों में छुप जाएगा और चाँद की रौशनी नजर नहीं आएगी। 8 जो कुछ भी आसमान पर चमकता-दमकता है उसे मैं तेरे बाइस तारीक कर दूँगा। तेरे पूरे मुल्क पर तारीकी छा जाएगी। यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

9 बहुत कौमों के दिल घबरा जाएंगे जब मैं तेरे अंजाम की खबर दीगर अक़वाम तक पहुँचाऊँगा, ऐसे ममालिक तक जिनसे तू नावाक़िफ़ है। 10 मुतअद्दिद कौमों के सामने ही मैं तुझ पर तलवार चला दूँगा। यह देखकर उन पर दहशत तारी हो जाएगी, और उनके बादशाहों के रोंगटे खड़े हो जाएंगे। जिस दिन तू धड़ाम से गिर जाएगा उस दिन उन पर मरने का इतना खौफ़ छा जाएगा कि वह बार बार काँप उठेंगे।

11 क्योंकि रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि शाहे-बाबल की तलवार तुझ पर हमला करेगी। 12 तेरी शानदार फ़ौज उसके सूरमाओं की तलवार से गिरकर हलाक हो जाएगी। दुनिया के सबसे ज़ालिम आदमी मिसर का गुर्र और उस की तमाम शानो-शौकत खाक में मिला देंगे। 13 मैं वाफ़िर पानी के पास खड़े उसके मवेशी को भी बरबाद करूँगा। आइँदा यह पानी न इनसान, न हैवान के पॉवों से गदला होगा। 14 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि उस वक़्त मैं होने दूँगा कि उनका पानी साफ़-शफ़ाफ़ हो जाए और नदियाँ तेल की तरह बहने लगेँ। 15 मैं मिसर को वीरानो-सुनसान करके हर चीज़ से महरूम करूँगा, मैं उसके तमाम बाशिंदों को मार डालूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

16 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, “लाज़िम है कि दर्जे-बाला मातमी गीत को गाया जाए। दीगर अक़वाम उसे गाएँ, वह मिसर और उस की शानो-शौकत पर मातम का यह गीत ज़रूर गाएँ।”

पाताल में दीगर अक़वाम मिसर के इतज़ार में हैं

17 यहूयाकीन बादशाह के 12वें साल में रब मुझे हमकलाम हुआ। महीने का 15वाँ दिन था। उसने फ़रमाया, 18 “ऐ आदमज़ाद, मिसर की शानो-शौकत पर वावैला कर। उसे दीगर अजीम अक़वाम के साथ पाताल में उतार दे। उसे उनके पास पहुँचा दे जो पहले गढ़े में पहुँच चुके हैं। 19 मिसर को बता,

‘अब तेरी खूबसूरती कहाँ गई? अब तू इसमें किसका मुकाबला कर सकता है? उतर जा। पाताल में नामखतूनों के पास ही पड़ा रह।’ 20 क्योंकि लाज़िम है कि मिसरी मकतूलों के बीच में ही गिरकर हलाक हो जाएँ। तलवार उन पर हमला करने के लिए खींची जा चुकी है। अब मिसर को उस की तमाम शानो-शौकत के साथ घसीटकर पाताल में ले जाओ! 21 तब पाताल में बड़े सूरमे मिसर और उसके मददगारों का इस्तक़बाल करके कहेंगे, ‘लो, अब यह भी उतर आए हैं, यह भी यहाँ पड़े नामखतूनों और मकतूलों में शामिल हो गए हैं।’

22 वहाँ अस्सूर पहले से अपनी पूरी फ़ौज समेत पड़ा है, और उसके इर्दगिर्द तलवार के मकतूलों की कन्नै हैं। 23 अस्सूर को पाताल के सबसे गहरे गढ़े में कन्नै मिल गई, और इर्दगिर्द उस की फ़ौज दफ़न हुई है। पहले यह जिंदों के मुल्क में चारों तरफ़ दहशत फैलाते थे, लेकिन अब खुद तलवार से हलाक हो गए हैं।

24 वहाँ ऐलाम भी अपनी तमाम शानो-शौकत समेत पड़ा है। उसके इर्दगिर्द दफ़न हुए फ़ौजी तलवार की ज़द में आ गए थे। अब सब उतरकर नामखतूनों में शामिल हो गए हैं, गो जिंदों के मुल्क में लोग उनसे शदीद दहशत खाते थे। अब वह भी

\* 32:1 3 मार्च।

पाताल में उतरे हुए दीगर लोगों की तरह अपनी स्सवाई भुगत रहे हैं।<sup>25</sup> ऐलाम का बिस्तर मकतूलों के दरमियान ही बिछाया गया है, और उसके इर्दगिर्द उस की तमाम शानदार फौज को कब्रें मिल गई हैं। सब नामखतून, सब मकतूल हैं, गो जिंदों के मुल्क में लोग उनसे सख्त दहशत खाते थे। अब वह भी पाताल में उतरे हुए दीगर लोगों की तरह अपनी स्सवाई भुगत रहे हैं। उन्हें मकतूलों के दरमियान ही जगह मिल गई है।

<sup>26</sup> वहाँ मसक-तूबल भी अपनी तमाम शानो-शौकत समेत पड़ा है। उसके इर्दगिर्द दफन हुए फौजी तलवार की ज़द में आ गए थे। अब सब नामखतूनों में शामिल हो गए हैं, गो जिंदों के मुल्क में लोग उनसे शर्दीद दहशत खाते थे।<sup>27</sup> और उन्हें उन सूमाओं के पास जगह नहीं मिली जो क़दीम ज़माने में नामखतूनों के दरमियान फ़ौत होकर अपने हथियारों के साथ पाताल में उतर आए थे और जिनके सरों के नीचे तलवार रखी गई। उनका कुसर उनकी हड्डियों पर पड़ा रहता है, गो जिंदों के मुल्क में लोग इन जंगजुओं से दहशत खाते थे।

<sup>28</sup> ऐ फ़िरौन, तू भी पाश पाश होकर नामखतूनों और मकतूलों के दरमियान पड़ा रहेगा।<sup>29</sup> अदोम पहले से अपने बादशाहों और रईसों समेत वहाँ पहुँच चुका होगा। गो वह पहले इतने ताकतवर थे, लेकिन अब मकतूलों में शामिल हैं, उन नामखतूनों में जो पाताल में उतर गए हैं।<sup>30</sup> इस तरह शिमाल के तमाम हुक्मरान और सैदा के तमाम बाशिंदे भी वहाँ आ मौजूद होंगे। वह भी मकतूलों के साथ पाताल में उतर गए हैं। गो उनकी ज़बरदस्त ताकत लोगों में दहशत फैलाती थी, लेकिन अब वह शर्मिदा हो गए हैं, अब वह नामखतून हालत में मकतूलों के साथ पड़े हैं। वह भी पाताल में उतरे हुए बाकी लोगों के साथ अपनी स्सवाई भुगत रहे हैं।

<sup>31</sup> तब फ़िरौन इन सबको देखकर तसल्ली पाएगा, गो उस की तमाम शानो-शौकत पाताल में उतर गई होगी। रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि फ़िरौन और उस की पूरी फ़ौज तलवार की ज़द में आ जाएंगे।

<sup>32</sup> पहले मेरी मरज़ी थी कि फ़िरौन जिंदों के मुल्क में ख़ौफ़ो-हिरास फैलाए, लेकिन अब उसे उस की तमाम शानो-शौकत के साथ नामखतूनों और मकतूलों के दरमियान रखा जाएगा। यह मेरा रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।”

## 33

### हिजकियेल इसराईल का पहरेदार है

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, <sup>2</sup> ‘ऐ आदमज़ाद, अपने हमवतनों को यह पैगाम पहुँचा दे,

‘रब कभी मैं किसी मुल्क में जंग छेड़ता हूँ तो उस मुल्क के बाशिंदे अपने मर्दों में से एक को चुनकर अपना पहरेदार बना लेते हैं।<sup>3</sup> पहरेदार की जिम्मादारी यह है कि ज्योंही दुश्मन नजर आए त्योंही नरसिंगा बजाकर लोगों को आगाह करे।<sup>4</sup> उस वक़्त जो नरसिंगे की आवाज़ सुनकर परवा न करे वह खुद जिम्मादार ठहरेगा अगर दुश्मन उस पर हमला करके उसे क़त्ल करे।<sup>5</sup> यह उसका अपना कुसर होगा, क्योंकि उसने नरसिंगे की आवाज़ सुनने के बावजूद परवा न की। लेकिन अगर वह पहरेदार की खबर मान ले तो अपनी जान को बचाएगा।

<sup>6</sup> अब फ़र्ज़ करो कि पहरेदार दुश्मन को देखे लेकिन न नरसिंगा बजाए, न लोगों को आगाह करे। अगर नतीजे में कोई क़त्ल हो जाए तो वह अपने गुनाहों के बाइस ही मर जाएगा। लेकिन मैं पहरेदार को उस की मौत का जिम्मादार ठहराऊँगा।’

<sup>7</sup> ऐ आदमज़ाद, मैंने तुझे इसराईलीयों को पहरेदारी करने की जिम्मादारी दी है। इसलिए लाज़िम है कि जब भी मैं कुछ फ़रमाऊँ तो तू मेरी सुनकर इसराईलियों को मेरी तरफ़ से आगाह करे।<sup>8</sup> अगर मैं किसी बेदीन को बताना चाहूँ, ‘तू यकीनन मरेगा’ तो लाज़िम है कि तू उसे यह सुनाकर उस की ग़लत राह से आगाह करे। अगर तू ऐसा न करे तो गो बेदीन अपने गुनाहों के बाइस ही मरेगा ताहम मैं तुझे ही उस की मौत का जिम्मादार ठहराऊँगा।<sup>9</sup> लेकिन अगर तू उसे उस की ग़लत राह से आगाह करे और वह न माने तो वह अपने गुनाहों के बाइस मरेगा, लेकिन तूने अपनी जान को बचाया होगा।

### तौबा करो!

<sup>10</sup> ऐ आदमज़ाद, इसराईलियों को बता, तुम आहें भर भरकर कहते हो, ‘हाय हम अपने जरायम और गुनाहों के बाइस ग़ल-सडकर तबाह हो रहे हैं। हम किस तरह जीते रहें?’<sup>11</sup> लेकिन रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, ‘मेरी हयात की क़सम, मैं बेदीन की मौत से खुश नहीं होता बल्कि मैं चाहता हूँ कि वह अपनी ग़लत राह से हटकर जिंदा रहे। चुनौचे तौबा करो! अपनी ग़लत राहों को तर्क करके वापस आओ! ऐ इसराईलीयों को, क्या ज़रूरत है कि तू मर जाए?’

<sup>12</sup> ऐ आदमज़ाद, अपने हमवतनों को बता,

‘अगर रास्तबाज़ ग़लत काम करे तो यह बात उसे नहीं बचाएगी कि पहले रास्तबाज़ था। अगर वह गुनाह करे तो उसे जिंदा नहीं छोड़ा जाएगा। इसके मुक़ाबले में अगर बेदीन अपनी बेदीनी से तौबा करके वापस आए तो यह बात उस की तबाही का बाइस नहीं बनेगी कि पहले बेदीन था।’<sup>13</sup> हो सकता है मैं रास्तबाज़ को बताऊँ, ‘तू जिंदा रहेगा।’ अगर वह यह सुनकर

समझने लगे, 'मेरी रास्तबाजी मुझे हर सूत्र में बचाएगी' और नतीजे में गलत काम करे तो मैं उसके तमाम रास्त कामों का लिहाज नहीं करूँगा बल्कि उसके गलत काम के बाइस उसे सजाए-मौत दूँगा। 14 लेकिन फर्ज करो मैं किसी बेदीन आदमी को बताऊँ, 'तू यकीनन मरेगा।' हो सकता है वह यह सुनकर अपने गुनाह से तौबा करके इनसाफ और रास्तबाजी करने लगे। 15 वह अपने कर्जदार को वह कुछ वापस करे जो जमानत के तौर पर मिला था, वह चोरी हुई चीजें वापस कर दे, वह जिंदगीबख्श हिदायत के मुताबिक जिंदगी गुजारे, गरज वह हर बुरे काम से गुरेज करे। इस सूत्र में वह मरेगा नहीं बल्कि जिंदा ही रहेगा। 16 जो भी गुनाह उससे सपरजद हुए थे वह मैं याद नहीं करूँगा। चूँकि उसने बाद में वह कुछ किया जो मुंसिफाना और रास्त था इसलिए वह यकीनन जिंदा रहेगा।

17 तैरे हमवतन एतराज करते हैं कि रब का सुल्क सहीह नहीं है जबकि उनका अपना सुल्क सहीह नहीं है। 18 अगर रास्तबाज अपना रास्त चाल-चलन छोड़कर बदी करने लगे तो उसे सजाए-मौत दी जाएगी। 19 इसके मुकाबले में अगर बेदीन अपना बेदीन चाल-चलन छोड़कर वह कुछ करने लगे जो मुंसिफाना और रास्त है तो वह इस बिना पर जिंदा रहेगा।

20 ऐ इसराइलियो, तुम दावा करते हो कि रब का सुल्क सहीह नहीं है। लेकिन ऐसा हरगिज नहीं है! तुम्हारी अदालत करते वक़्त मैं हर एक के चाल-चलन का खयाल करूँगा।”

### यस्शलम पर दुश्मन के कब्जे की खबर

21 यहयाकीन बादशाह की जिलावतनी के 12वें साल में एक आदमी मेरे पास आया। 10वें महीने का पाँचवाँ दिन \* था। यह आदमी यस्शलम से भाग निकला था। उसने कहा, “यस्शलम दुश्मन के कब्जे में आ गया है!”

22 एक दिन पहले रब का हाथ शाम के वक़्त मुझ पर आया था, और अगले दिन जब यह आदमी सुबह के वक़्त पहुँचा तो रब ने मेरे मुँह को खोल दिया, और मैं दुबारा बोल सका।

### बचे हुए इसराइली अपने आप पर गलत एतमाद करते हैं

23 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 24 “ऐ आदमजाद, मुल्के-इसराइल के खंडरात में रहनेवाले लोग कह रहे हैं, ‘गो इब्राहीम सिर्फ एक आदमी था तो भी उसने पूरे मुल्क पर कब्जा किया। उस की निसबत हम बहुत है, इसलिए लाजिम है कि हमें यह मुल्क हासिल हो।’ 25 उन्हें बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि तुम गोशत खाते हो जिसमें खून है, तुम्हारे हाँ बतपरस्ती और खूनरेजी आम है। तो फिर मुल्क किस तरह तुम्हें हासिल हो सकता है? 26 तुम अपनी तलवार पर भरोसा रखकर काबिले-घिन हरकतें करते हो, हत्ता कि हर एक अपने पड़ोसी की बीबी से ज़िना करता है। तो फिर मुल्क किस तरह तुम्हें हासिल हो सकता है?’

27 उन्हें बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मेरी हयात की कसम, जो इसराइल के खंडरात में रहते हैं वह तलवार की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे, जो बचकर खुले मैदान में जा बसे हैं उन्हें मैं दरिदों को खिला दूँगा, और जिन्होंने पहाड़ी किलों और गारों में पनाह ली है वह मोहलक बीमारियों का शिकार हो जाएंगे। 28 मैं मुल्क को वीरानो-सुनसान कर दूँगा। जिस ताकत पर वह फखर करते हैं वह जाती रहेगी। इसराइल का पहाड़ी इलाका भी इतना तबाह हो जाएगा कि लोग उसमें से गुजरने से गुरेज करेंगे। 29 फिर जब मैं मुल्क को उनकी मकसूद हरकतों के बाइस वीरानो-सुनसान कर दूँगा तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।’

### जिलावतन इसराइलियों की बेपरवाई

30 ऐ आदमजाद, तैरे हमवतन अपने घरों की दीवारों और दरवाजों के पास खड़े होकर तेरा जिन्न करते हैं। वह कहते हैं, ‘आओ, हम नबी के पास जाकर वह पैगाम सुनें जो रब की तरफ से आया है।’ 31 लेकिन गो इन लोगों के हुजूम आकर तैरे पैगामात सुनने के लिए तैरे सामने बैठ जाते हैं तो भी वह उन पर अमल नहीं करते। क्योंकि उनकी ज़बान पर इश्क के ही गीत हैं। उन्हीं पर वह अमल करते हैं, जबकि उनका दिल नारवा नफ़ा के पीछे पड़ा रहता है। 32 असल में वह तेरी बातें यों सुनते हैं जिस तरह किसी गुल्कार के गीत जो महारत से साज़ बजाकर सुरीली आवाज़ से इश्क के गीत गाए। गो वह तेरी बातें सुनकर ख़ुश हो जाते हैं तो भी उन पर अमल नहीं करते। 33 लेकिन यकीनन एक दिन आनेवाला है जब वह जान लेंगे कि हमारे दरमियान नबी रहा है।”

## 34

### इसराइल के बेपरवा गल्लाबान

1 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमजाद, इसराइल के गल्लाबानों के खिलाफ नबुवत कर! उन्हें बता,

\* 33:21 8 जनवरी।



‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि इसराईल के गल्लाबानों पर अफसोस जो सिर्फ अपनी ही फिकर करते हैं। क्या गल्लाबान को रेवड की फिकर नहीं करनी चाहिए? 3 तुम भेड-बकरियों का दूध पीते, उनकी ऊन के कपड़े पहनते और बेहतरीन जानवरों का गोशत खाते हो। तो भी तुम रेवड की देख-भाल नहीं करते! 4 न तुमने कमजोरों को तकवियत, न बीमारों को शफा दी या ज़ख्मियों की मरहम-पट्टी की। न तुम आवारा फिरनेवालों को वापस लाए, न गुमशुदा जानवरों को तलाश किया बल्कि सख्ती और ज़ालिमाना तरीके से उन पर हुकूमत करते रहे। 5 गल्लाबान न होने की वजह से भेड-बकरियाँ तितर-बितर होकर दरिदों का शिकार हो गईं। 6 मेरी भेड-बकरियाँ तमाम पहाड़ों और बुलंद जगहों पर आवारा फिरती रही। सारी ज़मीन पर वह मुंतशिर हो गईं, और कोई नहीं था जो उन्हें ढूँडकर वापस लाता।

7 चुनौचे ऐ गल्लाबानो, रब का जवाब सुनो! 8 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मेरी हयात की कसम, मेरी भेड-बकरियाँ लुटेरों का शिकार और तमाम दरिदों की गिज़ा बन गई हैं। उनकी देख-भाल करनेवाला कोई नहीं है। मेरे गल्लाबान मेरे रेवड को ढूँडकर वापस नहीं लाते बल्कि सिर्फ अपना ही खयाल करते हैं। 9 चुनौचे ऐ गल्लाबानो, रब का जवाब सुनो! 10 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं गल्लाबानों से निपटकर उन्हें अपनी भेड-बकरियों के लिए जिम्मादार ठहराऊँगा। तब मैं उन्हें गल्लाबानी की जिम्मादारी से फारिग करूँगा ताकि सिर्फ अपना ही खयाल करने का सिलसिला खत्म हो जाए। मैं अपनी भेड-बकरियों को उनके मुँह से निकालकर बचाऊँगा ताकि आइंदा वह उन्हें न खाएँ।

### अल्लाह अच्छा चरवाहा है

11 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि आइंदा मैं खुद अपनी भेड-बकरियों को ढूँडकर वापस लाऊँगा, खुद उनकी देख-भाल करूँगा। 12 जिस तरह चरवाहा चारों तरफ बिखरी हुई अपनी भेड-बकरियों को इकट्ठा करके उनकी देख-भाल करता है उसी तरह मैं अपनी भेड-बकरियों की देख-भाल करूँगा। मैं उन्हें उन तमाम मकामों से निकालकर बचाऊँगा जहाँ उन्हें घने बादलों और तारीकी के दिन मुंतशिर कर दिया गया था। 13 मैं उन्हें दीगर अक़वाम और ममालिक में से निकालकर जमा करूँगा और उन्हें उनके अपने मुल्क में वापस लाकर इसराईल के पहाड़ों, घाटियों और तमाम आबादियों में चराऊँगा। 14 तब मैं अच्छी चरागाहों में उनकी देख-भाल करूँगा, और वह इसराईल की बुलंदियों पर ही चरेगी। वहाँ वह सरसब्ज मैदानों में आराम करके इसराईल के पहाड़ों पर बेहतरीन घास चरेगी। 15 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं खुद अपनी भेड-बकरियों की देख-भाल करूँगा, खुद उन्हें बिठाऊँगा।

16 मैं गुमशुदा भेड-बकरियों का खोज लगाऊँगा और आवारा फिरनेवालों को वापस लाऊँगा। मैं ज़ख्मियों की मरहम-पट्टी करूँगा और कमजोरों को तकवियत दूँगा। लेकिन मोटे-ताज़े और ताकतवर जानवरों को मैं खत्म करूँगा। मैं इनसाफ से रेवड की गल्लाबानी करूँगा।

17 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ मेरे रेवड, जहाँ भेडों, मेंढों और बकरों के दरमियान नाइनसाफी है वहाँ मैं उनकी अदालत करूँगा। 18 क्या यह तुम्हारे लिए काफी नहीं कि तुम्हें खाने के लिए चरागाह का बेहतरीन हिस्सा और पीने के लिए साफ-शफ़ाफ़ा पानी मिल गया है? तुम बाकी चरागाह को क्यों रौंदते और बाकी पानी को पौवों से गदला करते हो? 19 मेरा रेवड क्यों तुमसे कुचली हुई घास खाए और तुम्हारा गदला किया हुआ पानी पीए?

20 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जहाँ मोटी और दुबली भेड-बकरियों के दरमियान नाइनसाफी है वहाँ मैं खुद फैसला करूँगा। 21 क्योंकि तुम मोटी भेडों ने कमजोरों को कंधों से धक्का देकर और सींगों से मार मारकर अच्छी घास से भगा दिया है। 22 लेकिन मैं अपनी भेड-बकरियों को तुमसे बचा लूँगा। आइंदा उन्हें लूटा नहीं जाएगा बल्कि मैं खुद उनमें इनसाफ कायम रखूँगा।

### अमनो-अमान की सलतनत

23 मैं उन पर एक ही गल्लाबान यानी अपने खादिम दाऊद को मुकर्रर करूँगा जो उन्हें चराकर उनकी देख-भाल करेगा। वही उनका सही चरवाहा रहेगा। 24 मैं, रब उनका खुदा हूँगा और मेरा खादिम दाऊद उनके दरमियान उनका हुक्मरान होगा। यह मेरा, रब का फरमान है।

25 मैं इसराईलियों के साथ सलामती का अहद बाँधकर दरिदों को मुल्क से निकाल दूँगा। फिर वह हिफाज़त से सो सकेंगे, खाह रेगिस्तान में हों या जंगल में। 26 मैं उन्हें और अपने पहाड़ के इर्दगिर्द के इलाके को बरकत दूँगा। मैं मुल्क में वक़्त पर बारिश बरसाता रहूँगा। ऐसी मुबारक बारिशें होंगी 27 कि मुल्क के बागों और खेतों में ज़बरदस्त फसलें पकेंगी। लोग अपने मुल्क में महफूज़ होंगे। फिर जब मैं उनके जुए को तोड़कर उन्हें उनसे रिहाई दूँगा जिन्होंने उन्हें गुलाम बनाया था तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 28 आइंदा न दीगर अक़वाम उन्हें लूटेंगी, न वह दरिदों की खुराक बनें बल्कि वह हिफाज़त से अपने घरों में बसेंगे। डरानेवाला कोई नहीं होगा। 29 मेरे हुक्म पर ज़मीन ऐसी फसलें पैदा करेगी जिनकी शोहरत दूर दूर तक फैलेगी। आइंदा न वह भूके मरेंगे, न उन्हें दीगर अक़वाम की लान-तान सुननी पड़ेगी। 30 रब कादिरे-मुतलक खुदा फरमाता

है कि उस वक़्त वह जान लेंगे कि मैं जो रब उनका खुदा हूँ उनके साथ हूँ, कि इसराईली मेरी कौम हैं। 31 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि तुम मेरा रेवड, मेरी चरागाह की भेड़-बकरियाँ हो। तुम मेरे लोग, और मैं तुम्हारा खुदा हूँ।”

## 35

अदोम रेगिस्तान बनेगा

1 रब मुझे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, सईर के पहाड़ी इलाके की तरफ़ सूख करके उसके खिलाफ़ नबुव्वत कर! 3 उसे बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि ऐ सईर के पहाड़ी इलाके, अब मैं तुझे निपट लूँगा। मैं अपना हाथ तेरे खिलाफ़ उठाकर तुझे वीरानो-सुनसान कर दूँगा। 4 मैं तेरे शहरों को मलबे के ढेर बना दूँगा, और तू सरासर उजड़ जाएगा। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।

5 तू हमेशा इसराईलियों का सख़्त दुश्मन रहा है, और जब उन पर आफ़त आई और उनकी सज़ा उरूज तक पहुँची तो तू भी तलवार लेकर उन पर टूट पड़ा। 6 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मेरी हयात की कसम, मैं तुझे कल्लो-गारत के हवाले करूँगा, और कल्लो-गारत तेरा ताक्कुब करती रहेगी। चूँकि तूने कल्लो-गारत करने से नफ़रत न की, इसलिए कल्लो-गारत तेरे पीछे पड़ी रहेगी। 7 मैं सईर के पहाड़ी इलाके को वीरानो-सुनसान करके वहाँ के तमाम आने जानेवालों को मिटा डालूँगा। 8 तेरे पहाड़ी इलाके को मैं मकतूलों से भर दूँगा। तलवार की ज़द में आनेवाले हर तरफ़ पड़े रहेंगे। तेरी पहाड़ियों, वादियों और तमाम घाटियों में लाशें नज़र आएँगी। 9 मेरे हुक्म पर तू अबद तक वीरान रहेगा, और तेरे शहर ग़ैरआबाद रहेंगे। तब तू जान लेगा कि मैं ही रब हूँ।

10 तू बोला, “इसराईल और यहदाह की दोनों कौमों अपने इलाकों समेत मेरी ही हैं! आओ हम उन पर क़ब्ज़ा करें।” तुझे खयाल तक नहीं आया कि रब वहाँ मौजूद है। 11 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मेरी हयात की कसम, मैं तुझे वही सुलक करूँगा जो तूने उनसे किया जब तूने गुरसे और हसद के आलम में उन पर अपनी पूरी नफ़रत का इज़हार किया। लेकिन उन्हीं पर मैं अपने आपको ज़ाहिर करूँगा जब मैं तेरी अदालत करूँगा। 12 उस वक़्त तू जान लेगा कि मैं, रब ने वह तमाम कुफ़र सुन लिया है जो तूने इसराईल के पहाड़ों के खिलाफ़ बका है। क्योंकि तूने कहा, “यह उजड़ गए हैं, अब यह हमारे क़ब्ज़े में आ गए हैं और हम उन्हें खा सकते हैं।” 13 तूने शेखी मार मारकर मेरे खिलाफ़ कुफ़र बका है, लेकिन खबरदार! मैंने इन तमाम बातों पर तबज़ूह दी है। 14 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि तूने खुशी मनाई कि पूरा मुल्क वीरानो-सुनसान है, लेकिन मैं तुझे भी उतना ही वीरान कर दूँगा। 15 तू कितना खुश हुआ जब इसराईल की मौरूसी ज़मीन उजड़ गई! अब मैं तेरे साथ भी ऐसा ही करूँगा। ऐ सईर के पहाड़ी इलाके, तू पूरे अदोम समेत वीरानो-सुनसान हो जाएगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।’

## 36

इसराईल अपने वतन वापस आएगा

1 ऐ आदमज़ाद, इसराईल के पहाड़ों के बारे में नबुव्वत करके कह,

‘ऐ इसराईल के पहाड़ो, रब का कलाम सुनो! 2 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि दुश्मन बग़लें बजाकर कहता है कि क्या ख़ूब, इसराईल की कदीम बुलदियाँ हमारे क़ब्ज़े में आ गई हैं! 3 कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि उन्होंने तुम्हें उजाड़ दिया, तुम्हें चारों तरफ़ से तंग किया है। नतीजे में तुम दीगर अक़वाम के क़ब्ज़े में आ गई हो और लोग तुम पर कुफ़र बकने लगे हैं। 4 चुनौचे ऐ इसराईल के पहाड़ो, रब कादिरे-मुतलक का कलाम सुनो!

रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो, ऐ घाटियो और वादियो, ऐ खंडरात और इनसान से ख़ाली शहरो, तुम गिर्दो-नवाह की अक़वाम के लिए लूट-मार और मज़ाक का निशाना बन गए हो।

5 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मैंने बड़ी ग़ैरत से इन बाकी अक़वाम की सरज़निश की है, खासकर अदोम की। क्योंकि वह मेरी कौम का नुक़सान देखकर शादियाना बजाने लगी और अपनी हिकारत का इज़हार करके मेरे मुल्क पर क़ब्ज़ा किया ताकि उस की चरागाह को लूट लें। 6 ऐ पहाड़ो और पहाड़ियो, ऐ घाटियो और वादियो, रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि चूँकि दीगर अक़वाम ने तेरी इतनी स्सवाई की है इसलिए मैं अपनी ग़ैरत और अपना ग़ज़ब उन पर नाज़िल करूँगा। 7 मैं रब कादिरे-मुतलक अपना हाथ उठाकर क़सम खाता हूँ कि गिर्दो-नवाह की इन अक़वाम की भी स्सवाई की जाएगी।

8 लेकिन ऐ इसराईल के पहाड़ो, तुम पर दुबारा हरियाली फले-फुलेगी। तुम नए सिरे से मेरी कौम इसराईल के लिए फल लाओगे, क्योंकि वह जल्द ही वापस आनेवाली है। 9 मैं दुबारा तुम्हारी तरफ रूज करूँगा, दुबारा तुम पर मेहरबानी करूँगा। तब लोग नए सिरे से तुम पर हल चलाकर बीज बोएँगे।

10 मैं तुम पर की आबादी बढ़ा दूँगा। क्योंकि तमाम इसराईली आकर तुम्हारी ढलानों पर अपने घर बना लेंगे। तुम्हारे शहर दुबारा आबाद हो जाएंगे, और खंडरात की जगह नए घर बन जाएंगे। 11 मैं तुम पर बसनेवाले इनसानो-हैवान की तादाद बढ़ा दूँगा, और वह बढ़कर फले-फुलेंगे। मैं होने दूँगा कि तुम्हारे इलाके में माँजी की तरह आबादी होगी, पहले की निसबत मैं तुम पर कहीं ज्यादा मेहरबानी करूँगा। तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ।

12 मैं अपनी कौम इसराईल को तुम्हारे पास पहुँचा दूँगा, और वह दुबारा तुम्हारी ढलानों पर घूमते फिरेंगे। वह तुम पर कब्जा करेंगे, और तुम उनकी मौरूसी जमीन होगे। आइंदा कभी तुम उन्हें उनकी औलाद से महरूम नहीं करोगे। 13 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि बेशक लोग तुम्हारे बारे में कहते हैं कि तुम लोगों को हडप करके अपनी कौम को उस की औलाद से महरूम कर देते हो। 14 लेकिन आइंदा ऐसा नहीं होगा। आइंदा तुम न आदमियों को हडप करोगे, न अपनी कौम को उस की औलाद से महरूम करोगे। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है। 15 मैं खुद होने दूँगा कि आइंदा तुम्हें दीगर अकवाम की लान-तान नहीं सुननी पड़ेगी। आइंदा तुम्हें उनका मजाक बरदाश्त नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि ऐसा कभी होगा नहीं कि तुम अपनी कौम के लिए ठोकर का बाइस हो। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

अल्लाह अपनी कौम को नया दिल और नया रूह बख्शेगा

16 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 17 “ऐ आदमजाद, जब इसराईली अपने मुल्क में आबाद थे तो मुल्क उनके चाल-चलन और हरकतों से नापाक हुआ। वह अपने बुरे रवय्ये के बाइस मेरी नज़र में माहवारी में मुब्तला औरत की तरह नापाक थे। 18 उनके हाथों लोग कल्ल हुए, उनकी बुतपरस्ती से मुल्क नापाक हो गया।

जवाब में मैंने उन पर अपना ग़ज़ब नाज़िल किया। 19 मैंने उन्हें मुख़्तलिफ़ अकवामो-ममालिक में मुंतशिर करके उनके चाल-चलन और ग़लत कामों की मुनासिब सज़ा दी। 20 लेकिन जहाँ भी वह पहुँचे वहाँ उन्हीं के सबब से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती हुई। क्योंकि जिनसे भी उनकी मुलाकात हुई उन्हींने कहा, “गो यह रब की कौम है तो भी इन्हें उसके मुल्क को छोड़ना पडा!” 21 यह देखकर कि जिस कौम में भी इसराईली जा बसे वहाँ उन्हींने मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती की मैं अपने नाम की फिकर करने लगा। 22 इसलिए इसराईली कौम को बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जो कुछ मैं करनेवाला हूँ वह मैं तेरी खातिर नहीं करूँगा बल्कि अपने मुक़द्दस नाम की खातिर। क्योंकि तुमने दीगर अकवाम में मुंतशिर होकर उस की बेहुरमती की है। 23 मैं जाहिर करूँगा कि मेरा अज़ीम नाम कितना मुक़द्दस है। तुमने दीगर अकवाम के दरमियान रहकर उस की बेहुरमती की है, लेकिन मैं उनकी मौजूदगी में तुम्हारी मदद करके अपना मुक़द्दस क़िरदार उन पर जाहिर करूँगा। तब वह जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

24 मैं तुम्हें दीगर अकवामो-ममालिक से निकाल दूँगा और तुम्हें जमा करके तुम्हारे अपने मुल्क में वापस लाऊँगा। 25 मैं तुम पर साफ़ पानी छिड़कूँगा तो तुम पाक-साफ़ हो जाओगे। हाँ, मैं तुम्हें तमाम नापाकियों और बुतों से पाक-साफ़ कर दूँगा।

26 तब मैं तुम्हें नया दिल बख्शकर तुममें नई रूह डाल दूँगा। मैं तुम्हारा संगीन दिल निकालकर तुम्हें गोश्त-पोस्त का नरम दिल अता करूँगा। 27 क्योंकि मैं अपना ही रूह तुममें डालकर तुम्हें इस काबिल बना दूँगा कि तुम मेरी हिदायत की पैरवी और मेरे अहकाम पर ध्यान से अमल कर सको। 28 तब तुम दुबारा उस मुल्क में सुक़ूनत करोगे जो मैंने तुम्हारे बापदादा को दिया था। तुम मेरी कौम होगे, और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा। 29 मैं खुद तुम्हें तुम्हारी तमाम नापाकी से छुड़ाऊँगा। आइंदा मैं तुम्हारे मुल्क में काल पडने नहीं दूँगा बल्कि अनाज़ को उगने और बढ़ने का हुक़म दूँगा। 30 मैं बागों और खेतों की पैदावार बढ़ा दूँगा ताकि आइंदा तुम्हें मुल्क में काल पडने के बाइस दीगर कौमों के ताने सुनने न पडें। 31 तब तुम्हारी बुरी राहें और ग़लत हरकतें तुम्हें याद आएँगी, और तुम अपने गुनाहों और बुतपरस्ती के बाइस अपने आपसे धिन खाओगे। 32 लेकिन याद रहे कि मैं यह सब कुछ तुम्हारी खातिर नहीं कर रहा। रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ इसराईली कौम, शर्म करो! अपने चाल-चलन पर शर्मसार हो!

33 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जिस दिन मैं तुम्हें तुम्हारे तमाम गुनाहों से पाक-साफ़ करूँगा उस दिन मैं तुम्हें दुबारा तुम्हारे शहरों में आबाद करूँगा। तब खंडरात पर नए घर बनेंगे। 34 गो इस वक़्त मुल्क में से गुज़रनेवाले हर मुसाफ़िर को उस की तबाहशुदा हालत नज़र आती है, लेकिन उस वक़्त ऐसा नहीं होगा बल्कि जमीन की खेतीबाड़ी की जाएगी। 35 लोग यह देखकर कहेंगे, “पहले सब कुछ वीरानो-सुनसान था, लेकिन अब मुल्क बागो-अदन बन गया है। पहले उसके शहर ज़मीनबोस

थे और उनकी जगह मलबे के ढेर नज़र आते थे। लेकिन अब उनकी नए सिरे से किलाबंदी हो गई है और लोग उनमें आबाद हैं।” 36 फिर इर्दगिर्द की जितनी क्रौमों बच गई होंगी वह जान लेंगी कि मैं, रब ने नए सिरे से वह कुछ तामीर किया है जो पहले ढा दिया गया था, मैंने वीरान ज़मीन में दुबारा पौदे लगाए हैं। यह मेरा, रब का फ़रमान है, और मैं यह करूँगा भी।

37 कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि एक बार फिर मैं इसराईली क्रौम की इल्लिजाएँ सुनकर बाशियों की तादाद रेवड की तरह बढ़ा दूँगा। 38 जिस तरह माज़ी में ईद के दिन यस्शलम में हर तरफ़ कुरबानी की भेड-बकरियों नज़र आती थीं उसी तरह मुल्क के शहरों में दुबारा हज़ूम के हज़ूम नज़र आएँगे। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ।”

## 37

### हड्डियों से भरी वादी की रोया

1 एक दिन रब का हाथ मुझ पर आ ठहरा। रब ने मुझे अपने रूह से बाहर ले जाकर एक खुली वादी के बीच में खड़ा किया। वादी हड्डियों से भरी थी। 2 उसने मुझे उनमें से गुज़रने दिया तो मैंने देखा कि वादी की ज़मीन पर बेशुमार हड्डियाँ बिखरी पड़ी हैं। यह हड्डियाँ सरार सखी हुई थीं।

3 रब ने मुझसे पूछा, “ऐ आदमज़ाद, क्या यह हड्डियाँ दुबारा ज़िंदा हो सकती हैं?” मैंने जवाब दिया, “ऐ रब कादिरे-मुतलक, तू ही जानता है।”

4 तब उसने फ़रमाया, “नबुव्वत करके हड्डियों को बता, ‘ऐ सखी हुई हड्डियो, रब का कलाम सुनो! 5 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मैं तुममें दम डालूँगा तो तुम दुबारा ज़िंदा हो जाओगी। 6 मैं तुम पर नसें और गोशत चढ़ाकर सब कुछ जिल्द से ढाँप दूँगा। मैं तुममें दम डाल दूँगा, और तुम ज़िंदा हो जाओगी। तब तुम जान लोगी कि मैं ही रब हूँ।”

7 मैंने ऐसा ही किया। और ज्योंही मैं नबुव्वत करने लगा तो शोर मच गया। हड्डियाँ खड़खड़ाते हुए एक दूसरी के साथ जुड़ गईं, और होते होते पूरे ढाँचे बन गए। 8 मेरे देखते देखते नसें और गोशत ढाँचों पर चढ़ गया और सब कुछ जिल्द से ढाँपा गया। लेकिन अब तक जिस्मों में दम नहीं था।

9 फिर रब ने फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत करके दम से मुखातिब हो जा, ‘ऐ दम, रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि चारों तरफ़ से आकर मकतलों पर फ़ूँक मार ताकि दुबारा ज़िंदा हो जाएँ।”

10 मैंने ऐसा ही किया तो मकतलों में दम आ गया, और वह ज़िंदा होकर अपने पाँवों पर खड़े हो गए। एक निहायत बड़ी फ़ौज वृज्द में आ गई थी!

11 तब रब ने फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, यह हड्डियाँ इसराईली क्रौम के तमाम अफ़राद हैं। वह कहते हैं, ‘हमारी हड्डियाँ सूख गई हैं, हमारी उम्मीद जाती रही है। हम ख़त्म ही हो गए हैं!’ 12 चुनौचे नबुव्वत करके उन्हें बता,

‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि ऐ मेरी क्रौम, मैं तुम्हारी कब्रों को खोल दूँगा और तुम्हें उनमें से निकालकर मुल्के-इसराईल में वापस लाऊँगा। 13 ऐ मेरी क्रौम, जब मैं तुम्हारी कब्रों को खोल दूँगा और तुम्हें उनमें से निकाल लाऊँगा तब तुम जान लोगे कि मैं ही रब हूँ। 14 मैं अपना रूह तुममें डाल दूँगा तो तुम ज़िंदा हो जाओगे। फिर मैं तुम्हें तुम्हारे अपने मुल्क में बसा दूँगा। तब तुम जान लोगे कि यह मेरा, रब का फ़रमान है और मैं यह करूँगा भी।”

### यहदाह और इसराईल मुतहिद हो जाएँगे

15 रब मुझसे हमकलाम हुआ, 16 “ऐ आदमज़ाद, लकड़ी का टुकड़ा लेकर उस पर लिख दे, ‘ज़ुनबी कबीला यहदाह और जितने इसराईली कबीले उसके साथ मुतहिद हैं।’ फिर लकड़ी का एक और टुकड़ा लेकर उस पर लिख दे, ‘शिमाली कबीला यूसुफ़ यानी इफ़राईम और जितने इसराईली कबीले उसके साथ मुतहिद हैं।’ 17 अब लकड़ी के दोनों टुकड़े एक दूसरे के साथ यों जोड़ दे कि तेरे हाथ में एक हो जाएँ।

18 तेरे हमवतन तुझसे पूछेंगे, ‘क्या आप हमें इसका मतलब नहीं बताएँगे?’ 19 तब उन्हें बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मैं यूसुफ़ यानी लकड़ी के मालिक इफ़राईम और उसके साथ मुतहिद इसराईली कबीलों को लेकर यहदाह की लकड़ी के साथ जोड़ दूँगा। मेरे हाथ में वह लकड़ी का एक ही टुकड़ा बन जाएँगे।’

20 अपने हमवतनों की मौजूदगी में लकड़ी के मज़क़रा टुकड़े हाथ में थामे रख 21 और साथ साथ उन्हें बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि मैं इसराईलियों को उन क्रौमों में से निकाल लाऊँगा जहाँ वह जा बसे हैं। मैं उन्हें जमा करके उनके अपने मुल्क में वापस लाऊँगा। 22 वही इसराईल के पहाड़ों पर मैं उन्हें मुतहिद करके एक ही क्रौम बना दूँगा। उन पर एक ही बादशाह हुक्मत करेगा। आइंदा वह न कभी दो क्रौमों में तकसीम हो जाएँगे, न दो सलतनतों में। 23 आइंदा वह अपने आपको न अपने बुतों या बाक़ी मक़रूह चीज़ों से नापाक करेगे, न उन गुनाहों से जो अब तक करते आए हैं। मैं उन्हें उन

तमाम मकामों से निकालकर छुड़ाऊँगा जिनमें उन्होंने गुनाह किया है। मैं उन्हें पाक-साफ करूँगा। यों वह मेरी क्रीम होंगे और मैं उनका खुदा हूँगा। 24 मेरा खादिम दाऊद उनका बादशाह होगा, उनका एक ही गल्लाबान होगा। तब वह मेरी हिदायात के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारेंगे और ध्यान से मेरे अहकाम पर अमल करेंगे।

25 जो मुल्क मैंने अपने खादिम याकूब को दिया था और जिसमें तुम्हारे बापदादा रहते थे उसमें इसराईली दुबारा बसेंगे। हाँ, वह और उनकी औलाद हमेशा तक उसमें आबाद रहेंगे, और मेरा खादिम दाऊद अबद तक उन पर हुकूमत करेगा। 26 तब मैं उनके साथ सलामती का अहद बाँधूँगा, एक ऐसा अहद जो हमेशा तक कायम रहेगा। मैं उन्हें कायम करके उनकी तादाद बढ़ाता जाऊँगा, और मेरा मकदिस अबद तक उनके दरमियान रहेगा। 27 वह मेरी सुकूनतगाह के साये में बसेंगे। मैं उनका खुदा हूँगा, और वह मेरी क्रीम होंगे। 28 जब मेरा मकदिस अबद तक उनके दरमियान होगा तो दीगर अक़वाम जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ, कि इसराईल को मुक़द्दस करनेवाला मैं ही हूँ।”

## 38

### इसराईल का दुश्मन जूज

1 रब मुझे हमकलाम हुआ, 2 “ऐ आदमज़ाद, मुल्के-माजूज के हुकमरान जूज की तरफ़ सख़ कर जो मसक और तबल का आला रईस है। उसके खिलाफ़ नबुव्वत करके 3 कह,

‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि ऐ मसक और तबल के आला रईस जूज, अब मैं तुझे निपट लूँगा। 4 मैं तेरे मुँह को फेर दूँगा, तेरे मुँह में कौट डालकर तुझे पूरी फ़ौज समेत निकाल दूँगा। शानदार वरदियों से आरास्ता तेरे तमाम घुडसवार और फ़ौजी अपने घोड़ों समेत निकल आएँगे, गो तेरी बड़ी फ़ौज के मर्द छोटी और बड़ी ढालें उठाए फिरेंगे, और हर एक तलवार से लैस होगा। 5 फ़ारस, एथोपिया और लिबिया के मर्द भी फ़ौज में शामिल होंगे। हर एक बड़ी ढाल और ख़ोद से मुसल्लह होगा। 6 ज़मर और शिमाल के दूर-दराज़ इलाके बैत-तुजरमा के तमाम दस्ते भी साथ होंगे। गरज़ उस वक़्त बहुत-सी क्रीमें तेरे साथ निकलेंगी। 7 चुनौचे मुस्तैद हो जा! जितने लशकर तेरे इर्दगिर्द जमा हो गए हैं उनके साथ मिलकर ख़ुब तैयारियाँ कर! उनके लिए पहरादारी कर।

8 मुतअद्दिद दिनों के बाद तुझे मुल्के-इसराईल पर हमला करने के लिए बुलाया जाएगा जिसे अभी जंग से छुटकारा मिला होगा और जिसके जिलावतन दीगर बहुत-सी क्रीमों में से वापस आ गए होंगे। गो इसराईल का पहाड़ी इलाका बड़ी देर से बरबाद हुआ होगा, लेकिन उस वक़्त उसके बाशिदे जिलावतनी से वापस आकर अमनो-अमान से उसमें बसेंगे।

9 तब तू तूफ़ान की तरह आगे बढ़ेगा, तेरे दस्ते बादल की तरह पूरे मुल्क पर छा जाएंगे। तेरे साथ बहुत-सी क्रीमें होंगी। 10 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि उस वक़्त तेरे ज़हन में बुरे खयालात उभर आएँगे और तू शरीर मनसूबे बाँधेगा। 11 तू कहेगा, “यह मुल्क खुला है, और उसके बाशिदे आराम और सुकून के साथ रह रहे हैं। आओ, मैं उन पर हमला करूँ, क्योंकि वह अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते। न उनकी चारदीवारी है, न दरवाज़ा या कुंडा। 12 मैं इसराईलियों को लूट लूँगा। जो शहर पहले खंडरात थे लेकिन अब नए सिरे से आबाद हुए हैं उन पर मैं टूट पड़ूँगा। जो जिलावतन दीगर अक़वाम से वापस आ गए हैं उनकी दौलत मैं छीन लूँगा। क्योंकि उन्हें काफी माल-मवेशी हासिल हुए हैं, और अब वह दुनिया के मरकज़ में आ बसे हैं।” 13 सब्बा, ददान और तरसीस के ताजिर और बुजुर्ग पछेंगे कि क्या तूने वाकई अपने फ़ौजियों को लूट-मार के लिए इक़ठा कर लिया है? क्या तू वाकई सोना-चाँदी, माल-मवेशी और बाकी बहुत-सी दौलत छीनना चाहता है?”

14 ऐ आदमज़ाद, नबुव्वत करके जूज को बता, ‘रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि उस वक़्त तुझे पता चलेगा कि मेरी क्रीम इसराईल सुकून से ज़िंदगी गुज़ार रही है, 15 और तू दूर-दराज़ शिमाल के अपने मुल्क से निकलेगा। तेरी वसी और ताक़तवर फ़ौज में मुतअद्दिद क्रीमें शामिल होंगी, और सब घोड़ों पर सवार 16 मेरी क्रीम इसराईल पर धावा बोल देंगे। वह उस पर बादल की तरह छा जाएंगे। ऐ जूज, उन आखिरी दिनों में मैं ख़ुद तुझे अपने मुल्क पर हमला करने दूँगा ताकि दीगर अक़वाम तुझे जान लें। क्योंकि जो कुछ मैं उनके देखते देखते तेरे साथ करूँगा उससे मेरा मुक़द्दस किरदार उन पर जाहिर हो जाएगा। 17 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि तू वही है जिसका ज़िक्र मैंने माज़ी में किया था। क्योंकि माज़ी में मेरे खादिम यानी इसराईल के नबी काफ़ी सालों से पेशगोई करते रहे कि मैं तुझे इसराईल के खिलाफ़ भेजूँगा।

### अल्लाह ख़ुद जूज को तबाह करेगा

18 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि जिस दिन जूज मुल्के-इसराईल पर हमला करेगा उस दिन मैं आग-बग़ला हो जाऊँगा। 19 मैं फ़रमाता हूँ कि उस दिन मेरी ग़ैरत और शदीद क्रहर यों भडक उठेगा कि यकीनन मुल्के-इसराईल में ज़बरदस्त जलजला आएगा। 20 सब मेरे सामने थरथा उठेंगे, ख़ाह मछलियों हों या परिदे, ख़ाह ज़मीन पर चलने और रेंगनेवाले जानवर हों या इनसान। पहाड़ उनकी गुज़रगाहों समेत ख़ाक में मिलाए जाएंगे, और हर दीवार गिर जाएगी।

21 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि मैं अपने तमाम पहाड़ी इलाके में जूज के खिलाफ तलवार भेजूँगा। तब सब आपस में लड़ने लगेंगे। 22 मैं उनमें मोहलक बीमारियों और कल्लो-गारत फैलाकर उनकी अदालत करूँगा। साथ साथ मैं मूसलाधार बारिश, ओले, आग और गंधक जूज और उस की बैनुल-अकवामी फौज पर बरसा दूँगा। 23 यों मैं अपना अजीम और मुकद्दस किरदार मुतअद्दिद कौमों पर जाहिर करूँगा, उनके देखते देखते अपने आपका इजहार करूँगा। तब वह जान लेंगी कि मैं ही रब हूँ।'

## 39

1 ऐ आदमजाद, जूज के खिलाफ नबुव्वत करके कह,

'रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ मसक और तुबल के आला रईस जूज, अब मैं तुझसे निपट लूँगा। 2 मैं तेरा मुँह फेर दूँगा और तुझे शिमाल के दूर-दराज इलाके से घसीटकर इसराईल के पहाड़ों पर लाऊँगा। 3 वहाँ मैं तेरे बाएँ हाथ से कमान हटाऊँगा और तेरे दाएँ हाथ से तीर गिरा दूँगा। 4 इसराईल के पहाड़ों पर ही तू अपने तमाम बैनुल-अकवामी फौजियों के साथ हलाक हो जाएगा। मैं तुझे हर किस्म के शिकारी परिदों और दरिदों को खिला दूँगा। 5 क्योंकि तेरी लाश खुले मैदान में गिरकर पड़ी रहेगी। यह मेरा, रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

6 मैं माज्ज पर और अपने आपको महफूज समझनेवाले साहिली इलाकों पर आग भेजूँगा। तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। 7 अपनी कौम इसराईल के दरमियान ही मैं अपना मुकद्दस नाम जाहिर करूँगा। आइंदा मैं अपने मुकद्दस नाम की बेहुरमती बरदाशत नहीं करूँगा। तब अकवाम जान लेंगी कि मैं रब और इसराईल का कुद्दूस हूँ। 8 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि यह सब कुछ होनेवाला है, यह ज़रूर पेश आएगा! वही दिन है जिसका जिक्र मैं कर चुका हूँ।

### जूज और उस की फौज की तदफ़ीन

9 फिर इसराईली शहरों के बाशिदे मैदाने-जंग में जाकर दुश्मन के असला को ईंधन के लिए जमा करेंगे। इतनी छोटी और बड़ी ढालें, कमान, तीर, लाठियाँ और नेजे इकठ्ठे हो जाएँगे कि सात साल तक किसी और ईंधन की ज़रूरत नहीं होगी। 10 इसराईलियों को खुले मैदान में लकड़ी चुनने या जंगल में दरख्त काटने की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि वह यह हथियार ईंधन के तौर पर इस्तेमाल करेंगे। अब वह उन्हें लट्टे जिनहोंने उन्हें लूट लिया था, वह उनसे माल-मवेशी छीन लेंगे जिन्होंने उनसे सब कुछ छीन लिया था। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

11 उस दिन मैं इसराईल में जूज के लिए कब्रिस्तान मुकर्रर करूँगा। यह कब्रिस्तान वादीए-अबारीम \* में होगा जो बहीराए-मुरदार के मशरिफ़ में है। जूज के साथ उस की तमाम फौज भी दफन होगी, इसलिए मुसाफिर आइंदा उसमें से नहीं गुजर सकेंगे। तब वह जगह वादीए-हमून जूज † भी कहलाएगी। 12 जब इसराईली तमाम लाशें दफनाकर मुल्क को पाक-साफ़ करेंगे तो सात महीने लगेंगे। 13 तमाम उम्मत इस काम में मसरूफ़ रहेगी। रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि जिस दिन मैं दुनिया पर अपना जलाल जाहिर करूँगा उस दिन यह उनके लिए शोहरत का बाइस होगा।

14 सात महीनों के बाद कुछ आदमियों को अलग करके कहा जाएगा कि पूरे मुल्क में से गुजरकर मालूम करें कि अभी कहाँ कहाँ लाशें पड़ी हैं। क्योंकि लाज़िम है कि सब दफन हो जाएँ ताकि मुल्क दुबारा पाक-साफ़ हो जाए। 15 जहाँ कहीं कोई लाश नजर आए उस जगह की वह निशानदेही करेंगे ताकि दफनानेवाले उसे वादीए-हमून जूज में ले जाकर दफन करें। 16 यों मुल्क को पाक-साफ़ किया जाएगा। उस वक़्त से इसराईल के एक शहर का नाम हमूना ‡ कहलाएगा।'

17 ऐ आदमजाद, रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि हर किस्म के परिदे और दरिदे बलाकर कह, 'आओ, इधर जमा हो जाओ! चारों तरफ़ से आकर इसराईल के पहाड़ी इलाके में जमा हो जाओ! क्योंकि यहाँ मैं तुम्हारे लिए कुरबानी की जबरदस्त ज़ियाफत तैयार कर रहा हूँ। यहाँ तुम्हें गोशत खाने और खून पीने का सुनहरा मौका मिलेगा। 18 तुम सूरमाओ का गोशत खाओगे और दुनिया के हुक्मरानों का खून पियोगे। सब बसन के मोटे-ताजे मेंढों, भेड़ के बच्चों, बकरोँ और बैलों जैसे मजेदार होंगे। 19 क्योंकि जो कुरबानी में तुम्हारे लिए तैयार कर रहा हूँ उस की चरबी तुम जी भरकर खाओगे, उसका खून पी पीकर मस्त हो जाओगे। 20 रब फरमाता है कि तुम मेरी मेज पर बैठकर घोड़ों और घुड़सवारों, सूरमाओ और हर किस्म के फौजियों से सेर हो जाओगे।'

### रब अपनी कौम वापस लाएगा

21 यों मैं दीगर अकवाम पर अपना जलाल जाहिर करूँगा। क्योंकि जब मैं जूज और उस की फौज की अदालत करके उनसे निपट लूँगा तो तमाम अकवाम इसकी गवाह होंगी। 22 तब इसराईली कौम हमेशा के लिए जान लेंगी कि मैं रब उसका

\* 39:11 या गुजरनेवालों की वादी। † 39:11 जूज के फौजी हजूम की वादी। ‡ 39:16 हजूम यानी जूज के।

खुदा हैं। <sup>23</sup> और दीगर अक्रवाम जान लेंगी कि इसराईली अपने गुनाहों के सबब से जिलावतन हुए। वह जान लेंगी कि चूँकि इसराईली मुझसे बेवफा हुए, इसी लिए मैंने अपना मुँह उनसे छुपाकर उन्हें उनके दुश्मनों के हवाले कर दिया, इसी लिए वह सब तलवार की जद में आकर हलाक हुए। <sup>24</sup> क्योंकि मैंने उन्हें उनकी नापाकी और जरायम का मुनासिब बदला देकर अपना चेहरा उनसे छुपा लिया था।

<sup>25</sup> चुनौचे रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि अब मैं याकूब की औलाद को बहाल करके तमाम इसराईली कौम पर तरस खाऊँगा। अब मैं बड़ी गैरत से अपने मुकद्दस नाम का दिफा करूँगा। <sup>26</sup> जब इसराईली सुकून से और खौफ खाए बगैर अपने मुल्क में रहेंगे तो वह अपनी स्सवाई और मेरे साथ बेवफाई का एतराफ करेंगे। <sup>27</sup> मैं उन्हें दीगर अक्रवाम और उनके दुश्मनों के ममालिक में से जमा करके उन्हें वापस लाऊँगा और यों उनके ज़रीए अपना मुकद्दस किरदार मुतअदिद अक्रवाम पर जाहिर करूँगा। <sup>28</sup> तब वह जान लेंगे कि मैं ही रब हूँ। क्योंकि उन्हें अक्रवाम में जिलावतन करने के बाद मैं उन्हें उनके अपने ही मुल्क में दूबारा जमा करूँगा। एक भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा। <sup>29</sup> रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि आइंदा मैं अपना चेहरा उनसे नहीं छुपाऊँगा। क्योंकि मैं अपना रूह इसराईली कौम पर उंडेल दूँगा।”

## 40

### रब के नए घर की रोया

<sup>1</sup> हमारी जिलावतनी के 25वें साल में रब का हाथ मुझ पर आ ठहरा और वह मुझे यरूशलम ले गया। महीने का दसवाँ दिन \* था। उस वक़्त यरूशलम को दुश्मन के क़ब्जे में आए 14 साल हो गए थे। <sup>2</sup> इलाही रोयाओं में अल्लाह ने मुझे मुल्के-इसराईल के एक निहायत बलंद पहाड़ पर पहुँचाया। पहाड़ के जुनूब में मुझे एक शहर-सा नज़र आया। <sup>3</sup> अल्लाह मुझे शहर के करीब ले गया तो मैंने शहर के दरवाजे में खड़े एक आदमी को देखा जो पीतल का बना हुआ लग रहा था। उसके हाथ में कतान की रस्सी और फ़ीता था। <sup>4</sup> उसने मुझसे कहा, “ऐ आदमज़ाद, ध्यान से देख, गौर से सुन! जो कुछ भी मैं तुझे दिखाऊँगा, उस पर तवज़ूह दे। क्योंकि तुझे इसी लिए यहाँ लाया गया है कि मैं तुझे यह दिखाऊँ। जो कुछ भी तू देखे उसे इसराईली कौम को सुना दे!”

### रब के घर के बैस्नी सहन का मशरिक्की दरवाजा

<sup>5</sup> मैंने देखा कि रब के घर का सहन चारदीवारी से घिरा हुआ है। जो फ़ीता मेरे राहनुमा के हाथ में था उस की लंबाई साढ़े 10 फुट थी। इसके ज़रीए उसने चारदीवारी को नाप लिया। दीवार की मोटाई और ऊँचाई दोनों साढ़े दस दस फुट थी।

<sup>6</sup> फिर मेरा राहनुमा मशरिक्की दरवाजे के पास पहुँचानेवाली सीढ़ी पर चढ़कर दरवाजे की दहलीज़ पर स्क गया। जब उसने उस की पैमाइश की तो उस की गहराई साढ़े 10 फुट निकली।

<sup>7</sup> जब वह दरवाजे में खड़ा हुआ तो दाईं और बाईं तरफ़ पहरेदारों के तीन तीन कमरे नज़र आए। हर कमरे की लंबाई और चौड़ाई साढ़े दस दस फुट थी। कमरों के दरमियान की दीवार पौने नौ फुट मोटी थी। इन कमरों के बाद एक और दहलीज़ थी जो साढ़े 10 फुट गहरी थी। उस पर से गुज़रकर हम दरवाजे से मुलहिक एक बरामदे में आए जिसका स्रख रब के घर की तरफ़ था। <sup>8</sup> मेरे राहनुमा ने बरामदे की पैमाइश की <sup>9</sup> तो पता चला कि उस की लंबाई 14 फुट है। दरवाजे के सतन-नुमा बाजू साढ़े तीन तीन फुट मोटे थे। बरामदे का स्रख रब के घर की तरफ़ था। <sup>10</sup> पहरेदारों के मज़क़ूरा कमरे सब एक जैसे बड़े थे, और उनके दरमियानवाली दीवारें सब एक जैसी मोटी थीं।

<sup>11</sup> इसके बाद उसने दरवाजे की गुज़रगाह की चौड़ाई नापी। यह मिल मिलाकर पौने 23 फुट थी, अलबत्ता जब किवाड खुले थे तो उनके दरमियान का फ़ासला साढ़े 17 फुट था। <sup>12</sup> पहरेदारों के हर कमरे के सामने एक छोटी-सी दीवार थी जिसकी ऊँचाई 21 इंच थी जबकि हर कमरे की लंबाई और ऊँचाई साढ़े दस दस फुट थी। <sup>13</sup> फिर मेरे राहनुमा ने वह फ़ासला नापा जो इन कमरों में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुक़ाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था। मालूम हुआ कि पौने 44 फुट है।

<sup>14</sup> सहन में दरवाजे से मुलहिक वह बरामदा था जिसका स्रख रब के घर की तरफ़ था। उस की चौड़ाई 33 फुट थी। † <sup>15</sup> जो बाहर से दरवाजे में दाखिल होता था वह साढ़े 87 फुट के बाद ही सहन में पहुँचता था।

<sup>16</sup> पहरेदारों के तमाम कमरों में छोटी खिड़कियाँ थीं। कुछ बैस्नी दीवार में थीं, कुछ कमरों के दरमियान की दीवारों में। दरवाजे के सतन-नुमा बाजूओं में खज़र के दरख़त मुनक्क़श थे।

### रब के घर का बैस्नी सहन

\* 40:1 28 औल। † 40:14 इब्रानी मतन में इस अयत का मतलब गैरवाज़िह है।

17 फिर मेरा राहनुमा दरवाजे में से गुजरकर मुझे रब के घर के बैरूनी सहन में लाया। चारदीवारी के साथ साथ 30 कमरे बनाए गए थे जिनके सामने पत्थर का फर्श था। 18 यह फर्श चारदीवारी के साथ साथ था। जहाँ दरवाजों की गुजरगाहें थीं वहाँ फर्श उनकी दीवारों से लगता था। जितना लंबा इन गुजरगाहों का वह हिस्सा था जो सहन में था उतना ही चौड़ा फर्श भी था। यह फर्श अंदरूनी सहन की निसबत नीचा था।

19 बैरूनी और अंदरूनी सहनों के दरमियान भी दरवाजा था। यह बैरूनी दरवाजे के मुकाबिल था। जब मेरे राहनुमा ने दोनों दरवाजों का दरमियानी फासला नापा तो मालूम हुआ कि 175 फुट है।

### बैरूनी सहन का शिमाली दरवाजा

20 इसके बाद उसने चारदीवारी के शिमाली दरवाजे की पैमाइश की।

21 इस दरवाजे में भी दाईं और बाईं तरफ तीन तीन कमरे थे जो मशरिकी दरवाजे के कमरों जितने बड़े थे। उसमें से गुजरकर हम वहाँ भी दरवाजे से मुलहिक बरामदे में आए जिसका सख रब के घर की तरफ था। उस की और उसके सतून-नुमा बाजूओं की लंबाई और चौड़ाई उतनी ही थी जितनी मशरिकी दरवाजे के बरामदे और उसके सतून-नुमा बाजूओं की थी। गुजरगाह की पूरी लंबाई साठे 87 फुट थी। जब मेरे राहनुमा ने वह फासला नापा जो पहरेदारों के कमरों में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुकाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फुट है। 22 दरवाजे से मुलहिक बरामदा, खिडकियाँ और कंदा किए गए खजूर के दरख्त उसी तरह बनाए गए थे जिस तरह मशरिकी दरवाजे में। बाहर एक सीढ़ी दरवाजे तक पहुँचाती थी जिसके सात कदमचे थे। मशरिकी दरवाजे की तरह शिमाली दरवाजे के अंदरूनी सिरे के साथ एक बरामदा मुलहिक था जिससे होकर इनसान सहन में पहुँचता था।

23 मशरिकी दरवाजे की तरह इस दरवाजे के मुकाबिल भी अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाला दरवाजा था। दोनों दरवाजों का दरमियानी फासला 175 फुट था।

### बैरूनी सहन का जुनूबी दरवाजा

24 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे बाहर ले गया। चलते चलते हम जुनूबी चारदीवारी के पास पहुँचे। वहाँ भी दरवाजा नजर आया। उसमें से गुजरकर हम वहाँ भी दरवाजे से मुलहिक बरामदे में आए जिसका सख रब के घर की तरफ था। यह बरामदा दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं समेत दीगर दरवाजों के बरामदे जितना बड़ा था। 25 दरवाजे और बरामदे की खिडकियाँ भी दीगर खिडकियों की मानिंद थीं। गुजरगाह की पूरी लंबाई साठे 87 फुट थी। जब उसने वह फासला नापा जो पहरेदारों के कमरों में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुकाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फुट है। 26 बाहर एक सीढ़ी दरवाजे तक पहुँचाती थी जिसके सात कदमचे थे। दीगर दरवाजों की तरह जुनूबी दरवाजे के अंदरूनी सिरे के साथ बरामदा मुलहिक था जिससे होकर इनसान सहन में पहुँचता था। बरामदे के दोनों सतून-नुमा बाजूओं पर खजूर के दरख्त कंदा किए गए थे।

27 इस दरवाजे के मुकाबिल भी अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाला दरवाजा था। दोनों दरवाजों का दरमियानी फासला 175 फुट था।

### अंदरूनी सहन का जुनूबी दरवाजा

28 फिर मेरा राहनुमा जुनूबी दरवाजे में से गुजरकर मुझे अंदरूनी सहन में लाया। जब उसने वहाँ का दरवाजा नापा तो मालूम हुआ कि वह बैरूनी दरवाजों की मानिंद है। 29-30 पहरेदारों के कमरे, बरामदा और उसके सतून-नुमा बाजू सब पैमाइश के हिसाब से दीगर दरवाजों की मानिंद थे। इस दरवाजे और इसके साथ मुलहिक बरामदे में भी खिडकियाँ थीं। गुजरगाह की पूरी लंबाई साठे 87 फुट थी। जब मेरे राहनुमा ने वह फासला नापा जो पहरेदारों के कमरे में से एक की पिछली दीवार से लेकर उसके मुकाबिल के कमरे की पिछली दीवार तक था तो मालूम हुआ कि पौने 44 फुट है। 31 लेकिन उसके बरामदे का सख बैरूनी सहन की तरफ था। उसमें पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिसके आठ कदमचे थे। दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं पर खजूर के दरख्त कंदा किए गए थे।

### अंदरूनी सहन का मशरिकी दरवाजा

32 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे मशरिकी दरवाजे से होकर अंदरूनी सहन में लाया। जब उसने यह दरवाजा नापा तो मालूम हुआ कि यह भी दीगर दरवाजों जितना बड़ा है। 33 पहरेदारों के कमरे, दरवाजे के सतून-नुमा बाजू और बरामदा पैमाइश के हिसाब से दीगर दरवाजों की मानिंद थे। यहाँ भी दरवाजे और बरामदे में खिडकियाँ लगी थीं। गुजरगाह की लंबाई साठे 87 फुट और चौड़ाई पौने 44 फुट थी। 34 इस दरवाजे के बरामदे का सख भी बैरूनी सहन की तरफ था। दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं पर खजूर के दरख्त कंदा किए गए थे। बरामदे में पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिसके आठ कदमचे थे।

### अंदरूनी सहन का शिमाली दरवाजा



35 फिर मेरा राहनुमा मुझे शिमाली दरवाजे के पास लाया। उस की पैमाइश करने पर मालूम हुआ कि यह भी दीगर दरवाजों जितना बड़ा है। 36 पहरेदारों के कमरे, सतून-नुमा बाजू, बरामदा और दीवारों में खिड़कियाँ भी दूसरे दरवाजों की मानिंद थीं। गुजरगाह की लंबाई साढ़े 87 फुट और चौड़ाई पौने 44 फुट थी। 37 उसके बरामदे का सख भी बैस्नी सहन की तरफ था। दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं पर खजूर के दरख्त कंदा किए गए थे। उसमें पहुँचने के लिए एक सीढ़ी बनाई गई थी जिसके आठ कदमचे थे।

अंदरूनी शिमाली दरवाजे के पास ज़बह का बंदोबस्त

38 अंदरूनी शिमाली दरवाजे के बरामदे में दरवाजा था जिसमें से गुजरकर इनसान उस कमरे में दाखिल होता था जहाँ उन ज़बह किए हुए जानवरों को धोया जाता था जिन्हें भस्म करना होता था। 39 बरामदे में चार मेज़ें थीं, कमरे के दोनों तरफ दो दो मेज़ें। इन मेज़ों पर उन जानवरों को ज़बह किया जाता था जो भस्म होनेवाली कुरबानियों, गुनाह की कुरबानियों और कुसूर की कुरबानियों के लिए मखसूस थे। 40 इस बरामदे से बाहर मज़ीद चार ऐसी मेज़ें थीं, दो एक तरफ और दो दूसरी तरफ। 41 मिल मिलाकर आठ मेज़ें थीं जिन पर कुरबानियों के जानवर ज़बह किए जाते थे। चार बरामदे के अंदर और चार उससे बाहर के सहन में थीं।

42 बरामदे की चार मेज़ें तराशे हुए पत्थर से बनाई गई थीं। हर एक की लंबाई और चौड़ाई साढ़े 31 इंच और ऊँचाई 21 इंच थी। उन पर वह तमाम आलात पड़े थे जो जानवरों को भस्म होनेवाली कुरबानी और बाकी कुरबानियों के लिए तैयार करने के लिए दरकार थे। 43 जानवरों का गोशत इन मेज़ों पर रखा जाता था। इर्दगिर्द की दीवारों में तीन तीन इंच लंबी हुकें लगी थीं।

44 फिर हम अंदरूनी सहन में दाखिल हुए। वहाँ शिमाली दरवाजे के साथ एक कमरा मुलहिक था जो अंदरूनी सहन की तरफ खुला था और जिसका सख जुनूब की तरफ था। जुनूबी दरवाजे के साथ भी ऐसा कमरा था। उसका सख शिमाल की तरफ था। 45 मेरे राहनुमा ने मुझसे कहा, “जिस कमरे का सख जुनूब की तरफ है वह उन इमामों के लिए है जो रब के घर की देख-भाल करते हैं, 46 जबकि जिस कमरे का सख शिमाल की तरफ है वह उन इमामों के लिए है जो कुरबानगाह की देख-भाल करते हैं। तमाम इमाम सदोक की औलाद हैं। लावी के कबिले में से सिर्फ उन्हीं को रब के हुजूर आकर उस की खिदमत करने की इजाज़त है।”

अंदरूनी सहन और रब का घर

47 मेरे राहनुमा ने अंदरूनी सहन की पैमाइश की। उस की लंबाई और चौड़ाई पौने दो दो सौ फुट थी। कुरबानगाह इस सहन में रब के घर के सामने ही थी। 48 फिर उसने मुझे रब के घर के बरामदे में ले जाकर दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं की पैमाइश की। मालूम हुआ कि यह पौने 9 फुट मोटे हैं। दरवाजे की चौड़ाई साढ़े 24 फुट थी जबकि दाएँ बाएँ की दीवारों की लंबाई सवा पाँच पाँच फुट थी। 49 चुन्नीचे बरामदे की पूरी चौड़ाई 35 और लंबाई 21 फुट थी। उसमें दाखिल होने के लिए दस कदमचौवाली सीढ़ी बनाई गई थी। दरवाजे के दोनों सतून-नुमा बाजूओं के साथ साथ एक एक सतून खड़ा किया गया था।

## 41

1 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे रब के घर के पहले कमरे यानी ‘मुकद्दस कमरा’ में ले गया। उसने दरवाजे के सतून-नुमा बाजू नापे तो मालूम हुआ कि साढ़े दस दस फुट मोटे हैं। 2 दरवाजे की चौड़ाई साढ़े 17 फुट थी, और दाएँ बाएँ की दीवारें पौने नौ फुट लंबी थीं। कमरे की पूरी लंबाई 70 फुट और चौड़ाई 35 फुट थी।

3 फिर वह आगे बढ़कर सबसे अंदरूनी कमरे में दाखिल हुआ। उसने दरवाजे के सतून-नुमा बाजूओं की पैमाइश की तो मालूम हुआ कि साढ़े तीन तीन फुट मोटे हैं। दरवाजे की चौड़ाई साढ़े 10 फुट थी, और दाएँ बाएँ की दीवारें सवा बारह बारह फुट लंबी थीं। 4 अंदरूनी कमरे की लंबाई और चौड़ाई पैतीस पैतीस फुट थी। वह बोला, “यह मुकद्दसतरीन कमरा है।”

रब के घर से मुलहिक कमरे

5 फिर उसने रब के घर की बैस्नी दीवार नापी। उस की मोटाई साढ़े 10 फुट थी। दीवार के साथ साथ कमरे तामीर किए गए थे। हर कमरे की चौड़ाई 7 फुट थी। 6 कमरों की तीन मनज़िलें थीं, कुल 30 कमरे थे। रब के घर की बैस्नी दीवार दूसरी मनज़िल पर पहली मनज़िल की निसबत कम मोटी और तीसरी मनज़िल पर दूसरी मनज़िल की निसबत कम मोटी थी। नतीजतन हर मनज़िल का वजन उस की बैस्नी दीवार पर था और ज़रूरत नहीं थी कि इस दीवार में शहतीर लगाएँ। 7 चुन्नीचे दूसरी मनज़िल पहली की निसबत चौड़ी और तीसरी दूसरी की निसबत चौड़ी थी। एक सीढ़ी निचली मनज़िल से दूसरी और तीसरी मनज़िल तक पहुँचाती थी।

8-11 इन कमरों की बैस्नी दीवार पौने 9 फुट मोटी थी। जो कमरे रब के घर की शिमाली दीवार में थे उनमें दाखिल होने का एक दरवाजा था, और इसी तरह जुनूबी कमरों में दाखिल होने का एक दरवाजा था। मैंने देखा कि रब का घर एक चबूतरे पर तामीर हुआ है। इसका जितना हिस्सा उसके इर्दगिर्द नज़र आता था वह पौने 9 फुट चौड़ा और साढ़े 10 फुट ऊँचा था। रब के घर की बैस्नी दीवार से मुलहिक कमरे इस पर बनाए गए थे। इस चबूतरे और इमामों से मुस्तामल मकानों के दरमियान खुली जगह थी जिसका फासला 35 फुट था। यह खुली जगह रब के घर के चारों तरफ नज़र आती थी।

### मगरिब में इमारत

12 इस खुली जगह के मगरिब में एक इमारत थी जो साढ़े 157 फुट लंबी और साढ़े 122 फुट चौड़ी थी। उस की दीवारों चारों तरफ पौने नौ नौ फुट मोटी थी।

### रब के घर की बैस्नी पैमाइश

13 फिर मेरे राहनुमा ने बाहर से रब के घर की पैमाइश की। उस की लंबाई 175 फुट थी। रब के घर की पिछली दीवार से मगरिबी इमारत तक का फासला भी 175 फुट था। 14 फिर उसने रब के घर के सामनेवाली यानी मशरिफी दीवार शिमाल और जुनूब में खुली जगह समेत की पैमाइश की। मालूम हुआ कि उसका फासला भी 175 फुट है। 15 उसने मगरिब में उस इमारत की लंबाई नापी जो रब के घर के पीछे थी। मालूम हुआ कि यह भी दोनों पहलुओं की गुज़रगाहों समेत 175 फुट लंबी है।

### रब के घर का अंदरूनी हिस्सा

रब के घर के बरामदे, मुक़द्दस कमरे और मुक़द्दसतरीन कमरे की दीवारों पर 16 फ़र्श से लेकर खिड़कियों तक लकड़ी के तख्ते लगाए गए थे। इन खिड़कियों को बंद किया जा सकता था।

17 रब के घर की अंदरूनी दीवारों पर दरवाज़ों के ऊपर तक तस्वीरें कंदा की गई थीं। 18 खज़ूर के दरख्तों और कस्बी फ़रिशतों की तस्वीरें बारी बारी नज़र आती थीं। हर फ़रिशते के दो चेहरे थे। 19 इनसान का चेहरा एक तरफ़ के दरख्त की तरफ़ देखता था जबकि शेरबबर का चेहरा दूसरी तरफ़ के दरख्त की तरफ़ देखता था। यह दरख्त और कस्बी पूरी दीवार पर बारी बारी मुनक्क़श किए गए थे, 20 फ़र्श से लेकर दरवाज़ों के ऊपर तक। 21 मुक़द्दस कमरे में दाखिल होनेवाले दरवाज़े के दोनों बाजू मुर्बबा थे।

### लकड़ी की कुरबानगाह

मुक़द्दसतरीन कमरे के दरवाज़े के सामने 22 लकड़ी की कुरबानगाह नज़र आई। उस की ऊँचाई सवा 5 फुट और चौड़ाई साढ़े तीन फुट थी। उसके कोने, पाया और चारों पहलू लकड़ी से बने थे। उसने मुझसे कहा, “यह वही मेज़ है जो रब के हज़ूर रहती है।”

### दरवाज़े

23 मुक़द्दस कमरे में दाखिल होने का एक दरवाज़ा था और मुक़द्दसतरीन कमरे का एक। 24 हर दरवाज़े के दो किवाड थे, वह दरमियान में से खुलते थे। 25 दीवारों की तरह मुक़द्दस कमरे के दरवाज़े पर भी खज़ूर के दरख्त और कस्बी फ़रिशते कंदा किए गए थे। और बरामदे के बाहरवाले दरवाज़े के ऊपर लकड़ी की छोटी-सी छत बनाई गई थी।

26 बरामदे के दोनों तरफ़ खिड़कियाँ थीं, और दीवारों पर खज़ूर के दरख्त कंदा किए गए थे।

## 42

### इमामों के लिए मख़सस कमरे

1 इसके बाद हम दुबारा बैस्नी सहन में आए। मेरा राहनुमा मुझे रब के घर के शिमाल में वाक़े एक इमारत के पास ले गया जो रब के घर के पीछे यानी मगरिब में वाक़े इमारत के मुकाबिल थी। 2 यह इमारत 175 फुट लंबी और साढ़े 87 फुट चौड़ी थी।

3 उसका सब अंदरूनी सहन की उस खुली जगह की तरफ़ था जो 35 फुट चौड़ी थी। दूसरा सब बैस्नी सहन के पक्के फ़र्श की तरफ़ था।

मकान की तीन मनज़िलें थीं। दूसरी मनज़िल पहली की निसबत कम चौड़ी और तीसरी दूसरी की निसबत कम चौड़ी थी।

4 मकान के शिमाली पहलू में एक गुज़रगाह थी जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक ले जाती थी। उस की लंबाई 175 फुट और चौड़ाई साढ़े 17 फुट थी। कमरों के दरवाज़े सब शिमाल की तरफ़ खुलते थे। 5-6 दूसरी मनज़िल के कमरे पहली मनज़िल

की निसबत कम चौड़े थे ताकि उनके सामने टैरस हो। इसी तरह तीसरी मनज़िल के कमरे दूसरी की निसबत कम चौड़े थे। इस इमारत में सहन की दूसरी इमारतों की तरह सतून नहीं थे।

7 कमरों के सामने एक बैरूनी दीवार थी जो उन्हें बैरूनी सहन से अलग करती थी। उस की लंबाई साढ़े 87 फुट थी, 8 क्योंकि बैरूनी सहन की तरफ कमरों की मिल मिलाकर लंबाई साढ़े 87 फुट थी अगरचे पूरी दीवार की लंबाई 175 फुट थी। 9 बैरूनी सहन से इस इमारत में दाखिल होने के लिए मशरिक की तरफ से आना पड़ता था। वहाँ एक दरवाज़ा था।

10 रब के घर के जुनूब में उस जैसी एक और इमारत थी जो रब के घर के पीछेवाली यानी मगरिबी इमारत के मुक़ाबिल थी। 11 उसके कमरों के सामने भी मज़क़रा शिमाली इमारत जैसी गुज़रगाह थी। उस की लंबाई और चौड़ाई, डिज़ायन और दरवाज़े, गरज़ सब कुछ शिमाली मकान की मानिंद था। 12 कमरों के दरवाज़े जुनूब की तरफ थे, और उनके सामने भी एक हिफाज़ती दीवार थी। बैरूनी सहन से इस इमारत में दाखिल होने के लिए मशरिक से आना पड़ता था। उसका दरवाज़ा भी गुज़रगाह के शुरू में था।

13 उस आदमी ने मुझसे कहा, “यह दोनों इमारतें मुक़द्दस हैं। जो इमाम रब के हज़ुर आते हैं वह इन्हीं में मुक़द्दसतरीन कुरबानियाँ खाते हैं। चूँकि यह कमरे मुक़द्दस हैं इसलिए इमाम इनमें मुक़द्दसतरीन कुरबानियाँ रखेंगे, खाह ग़ल्ला, गुनाह या कुसूर की कुरबानियाँ क्यों न हों। 14 जो इमाम मक़दिस से निकलकर बैरूनी सहन में जाना चाहें उन्हें इन कमरों में वह मुक़द्दस लिबास उतारकर छोड़ना है जो उन्होंने रब की खिदमत करते वक़्त पहने हुए थे। लाज़िम है कि वह पहले अपने कपड़े बदलें, फिर ही वहाँ जाएँ जहाँ बाकी लोग जमा होते हैं।”

**बाहर से रब के घर की चारदीवारी की पैमाइश**

15 रब के घर के इहाते में सब कुछ नापने के बाद मेरा राहनुमा मुझे मशरिकी दरवाज़े से बाहर ले गया और बाहर से चारदीवारी की पैमाइश करने लगा। 16-20 फ़ीते से पहले मशरिकी दीवार नापी, फिर शिमाली, जुनूबी और मगरिबी दीवार। हर दीवार की लंबाई 875 फुट थी। इस चारदीवारी का मक़सद यह था कि जो कुछ मुक़द्दस है वह उससे अलग किया जाए जो मुक़द्दस नहीं है।

## 43

**रब अपने घर में वापस आ जाता है**

1 मेरा राहनुमा मुझे द्वा़रा रब के घर के मशरिकी दरवाज़े के पास ले गया। 2 अचानक इसराईल के खुदा का जलाल मशरिक से आता हुआ दिखाई दिया। ज़बरदस्त आबशार का-सा शोर सुनाई दिया, और ज़मीन उसके जलाल से चमक रही थी। 3 रब मुझ पर यों जाहिर हुआ जिस तरह दीगर रोयाओ में, पहले दरियाए-किबार के किनारे और फिर उस वक़्त जब वह यरूशलम को तबाह करने आया था।

मैं मुँह के बल गिर गया। 4 रब का जलाल मशरिकी दरवाज़े में से रब के घर में दाखिल हुआ। 5 फिर अल्लाह का रूह मुझे उठाकर अंदरूनी सहन में ले गया। वहाँ मैंने देखा कि पूरा घर रब के जलाल से मामूर है।

6 मेरे पास खड़े आदमी की मौजूदगी में कोई रब के घर में से मुझसे मुखातिब हुआ,

7 “ए आदमज़ाद, यह मेरे तख़्त और मेरे पाँवों के तल्वों का मक़ाम है। यहीं मैं हमेशा तक इसराईलियों के दरमियान सुक़ूनत करूँगा। आइंदा न कभी इसराईली और न उनके बादशाह मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती करेंगे। न वह अपनी जिनाकाराना बतपरस्ती से, न बादशाहों की लाशों से मेरे नाम की बेहुरमती करेंगे। 8 मार्ज़ी मैं इसराईल के बादशाहों ने अपने महलों को मेरे घर के साथ ही तामीर किया। उनकी दहलीज़ मेरी दहलीज़ के साथ और उनके दरवाज़े का बाज़ू मेरे दरवाज़े के बाज़ू के साथ लगता था। एक ही दीवार उन्हें मुझसे अलग रखती थी। यों उन्होंने अपनी मक़रूह हरकतों से मेरे मुक़द्दस नाम की बेहुरमती की, और ज़वाब में मैंने अपने ग़ज़ब में उन्हें हलाक कर दिया। 9 लेकिन अब वह अपनी जिनाकाराना बतपरस्ती और अपने बादशाहों की लाशों मुझसे दूर रखेंगे। तब मैं हमेशा तक उनके दरमियान सुक़ूनत करूँगा।

10 ए आदमज़ाद, इसराईलियों को इस घर के बारे में बता दे ताकि उन्हें अपने गुनाहों पर शर्म आए। वह ध्यान से नए घर के नज़्शे का मुतालआ करें। 11 अगर उन्हें अपनी हरकतों पर शर्म आए तो उन्हें घर की तफ़्सीलात भी दिखा दे, यानी उस की तरतीब, उसके आने जाने के रास्ते और उसका पूरा इंतज़ाम तमाम क़वायद और अहक़ाम समेत। सब कुछ उनके सामने ही लिख दे ताकि वह उसके पूरे इंतज़ाम के पाबंद रहें और उसके तमाम क़वायद की पैरवी करें। 12 रब के घर के लिए मेरी हिदायत सुन! इस पहाड़ की चोटी गिर्दो-नवाह के तमाम इलाके समेत मुक़द्दसतरीन जगह है। यह घर के लिए मेरी हिदायत है।”

**भस्म होनेवाली कुरबानियों की कुरबानागाह**

13 कुरबानगाह यों बनाई गई थी कि उसका पाया नाली से घिरा हुआ था जो 21 इंच गहरी और उतनी ही चौड़ी थी। बाहर की तरफ नाली के किनारे पर छोटी-सी दीवार थी जिसकी ऊँचाई 9 इंच थी। 14 कुरबानगाह के तीन हिस्से थे। सबसे निचला हिस्सा साढ़े तीन फुट ऊँचा था। इस पर बना हुआ हिस्सा 7 फुट ऊँचा था, लेकिन उस की चौड़ाई कुछ कम थी, इसलिए चारों तरफ निचले हिस्से का ऊपरवाला किनारा नज़र आता था। इस किनारे की चौड़ाई 21 इंच थी। तीसरा और सबसे ऊपरवाला हिस्सा भी इसी तरह बनाया गया था। वह दूसरे हिस्से की निसबत कम चौड़ा था, इसलिए चारों तरफ दूसरे हिस्से का ऊपरवाला किनारा नज़र आता था। इस किनारे की चौड़ाई भी 21 इंच थी। 15 तीसरे हिस्से पर कुरबानियों जलाई जाती थी, और चारों कोनों पर सींग लगे थे। यह हिस्सा भी 7 फुट ऊँचा था। 16 कुरबानगाह की ऊपरवाली सतह मुरब्बा शकल की थी। उस की चौड़ाई और लंबाई इक्कीस इक्कीस फुट थी। 17 दूसरा हिस्सा भी मुरब्बा शकल का था। उस की चौड़ाई और लंबाई साढ़े चौबीस चौबीस फुट थी। उसका ऊपरवाला किनारा नज़र आता था, और उस पर 21 इंच चौड़ी नाली थी, यों कि किनारे पर छोटी-सी दीवार थी जिसकी ऊँचाई साढ़े 10 इंच थी। कुरबानगाह पर चढ़ने के लिए उसके मशरिक में सीढ़ी थी।

### कुरबानगाह की मखसूसियत

18 फिर रब मुझे हमकलाम हुआ, “ऐ आदमज़ाद, रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि इस कुरबानगाह को तामीर करने के बाद तुझे इस पर कुरबानियाँ जलाकर इसे मखसूस करना है। साथ साथ इस पर कुरबानियों का खून भी छिड़कना है। इस सिलसिले में मेरी हिदायत सुन!

19 सिर्फ लावी के कबिले के उन इमामों को रब के घर में मेरे हुज़ूर खिदमत करने की इजाज़त है जो सदोक की औलाद हैं।

रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि उन्हें एक जवान बैल दे ताकि वह उसे गुनाह की कुरबानी के तौर पर पेश करें। 20 इस बैल का कुछ खून लेकर कुरबानगाह के चारों सींगों, निचले हिस्से के चारों कोनों और इर्दगिर्द उसके किनारे पर लगा दे। यों तू कुरबानगाह का कफ़ारा देकर उसे पाक-साफ़ करेगा। 21 इसके बाद जवान बैल को मक़दिस से बाहर किसी मुकर्ररा जगह पर ले जा। वहाँ उसे जला देना है।

22 अगले दिन एक बेऐब बकरे को कुरबान कर। यह भी गुनाह की कुरबानी है, और इसके ज़रीए कुरबानगाह को पहली कुरबानी की तरह पाक-साफ़ करना है।

23 पाक-साफ़ करने के इस सिलसिले की तकमील पर एक बेऐब बैल और एक बेऐब मेंढे को चुनकर 24 रब को पेश कर। इमाम इन जानवरों पर नमक छिड़ककर इन्हें रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करें।

25 लाज़िम है कि तू सात दिन तक रोज़ाना एक बकरा, एक जवान बैल और एक मेंढा कुरबान करे। सब जानवर बेऐब हों।

26 सात दिनों की इस कार्रवाई से तुम कुरबानगाह का कफ़ारा देकर उसे पाक-साफ़ और मखसूस करोगे। 27 आठवें दिन से इमाम बाकायदा कुरबानियाँ शुरू कर सकेंगे। उस वक़्त से वह तुम्हारे लिए भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ चढ़ाएँगे। तब तुम मुझे मंज़ूर होगे। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

## 44

### रब के घर का बैरूनी मशरिकी दरवाज़ा बंद किया जाता है

1 मेरा राहनुमा मुझे दुबारा मक़दिस के बैरूनी मशरिकी दरवाज़े के पास ले गया। अब वह बंद था। 2 रब ने फ़रमाया, “अब से यह दरवाज़ा हमेशा तक बंद रहे। इसे कभी नहीं खोलना है। किसी को भी इसमें से दाखिल होने की इजाज़त नहीं, क्योंकि रब जो इसराईल का खुदा है इस दरवाज़े में से होकर रब के घर में दाखिल हुआ है। 3 सिर्फ इसराईल के हुक्मरान को इस दरवाज़े में बैठने और मेरे हुज़ूर कुरबानी का अपना हिस्सा खाने की इजाज़त है। लेकिन इसके लिए वह दरवाज़े में से गुज़र नहीं सकेगा बल्कि बैरूनी सहन की तरफ से उसमें दाखिल होगा। वह दरवाज़े के साथ मुलहिक बरामदे से होकर वहाँ पहुँचेगा और इसी रास्ते से वहाँ से निकलेगा भी।”

### अकसर लावियों की खिदमत को महदद किया जाता है

4 फिर मेरा राहनुमा मुझे शिमाली दरवाज़े में से होकर दुबारा अंदरूनी सहन में ले गया। हम रब के घर के सामने पहुँचे। मैंने देखा कि रब का घर रब के जलाल से मामूर हो रहा है। मैं मुँह के बल गिर गया।

5 रब ने फ़रमाया, “ऐ आदमज़ाद, ध्यान से देख, गौर से सुन! रब के घर के बारे में उन तमाम हिदायत पर तबज्जुह दे जो मैं तुझे बतातेवाला हूँ। ध्यान दे कि कौन कौन उसमें जा सकेगा। 6 इस सरकश क्रोम इसराईल को बता,

‘ऐ इसराईली कौम, रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि तुम्हारी मकरूह हरकतें बहुत हैं, अब बस करो! 7 तुम परदेसियों को मेरे मकदिस में लाए हो, ऐसे लोगों को जो बातिन और जाहिर में नामखतून हैं। और यह तुमने उस वक्त किया जब तुम मुझे मेरी खुराक यानी चरबी और खून पेश कर रहे थे। यों तुमने मेरे घर की बेहुरमती करके अपनी धिनौनी हरकतों से वह अहद तोड़ डाला है जो मैंने तुम्हारे साथ बोधा था। 8 तुम खुद मेरे मकदिस में खिदमत नहीं करना चाहते थे बल्कि तुमने परदेसियों को यह जिम्मादारी दी थी कि वह तुम्हारी जगह यह खिदमत अंजाम दें।

9 इसलिए रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि आइंदा जो भी गैरमुल्की अंदरूनी और बैरूनी तौर पर नामखतून है उसे मेरे मकदिस में दाखिल होने की इजाजत नहीं। इसमें वह अजनबी भी शामिल हैं जो इसराईलियों के दरमियान रहते हैं। 10 जब इसराईली भटक गए और मुझसे दूर होकर बुतों के पीछे लग गए तो अकसर लावी भी मुझसे दूर हुए। अब उन्हें अपने गुनाह की सजा भुगतनी पड़ेगी। 11 आइंदा वह मेरे मकदिस में हर किस्म की खिदमत नहीं करेंगे। उन्हें सिर्फ दरवाजों की पहरादारी करने और जानवरों को ज़बह करने की इजाजत होगी। इन जानवरों में भस्म होनेवाली कुरबानियाँ भी शामिल होंगी और ज़बह की कुरबानियाँ भी। लावी कौम की खिदमत के लिए रब के घर में हाज़िर रहेंगे, 12 लेकिन चूँकि वह अपने हमवतनों के बुतों के सामने लोगों की खिदमत करके उनके लिए गुनाह का बाइस बने रहे इसलिए मैंने अपना हाथ उठाकर कसम खाई है कि उन्हें इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

13 अब से वह इमाम की हैसियत से मेरे करीब आकर मेरी खिदमत नहीं करेंगे, अब से वह उन चीजों के करीब नहीं आएँगे जिनको मैंने मुक़द्दसतरीन करार दिया है। 14 इसके बजाए मैं उन्हें रब के घर के निचले दर्जे की जिम्मादारियाँ दूँगा।

### इमामों के लिए हिदायात

15 लेकिन रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि लावी का एक खानदान उनमें शामिल नहीं है। सदोक का खानदान आइंदा भी मेरी खिदमत करेगा। उसके इमाम उस वक्त भी वफ़ादारी से मेरे मकदिस में मेरी खिदमत करते रहे जब इसराईल के बाकी लोग मुझसे दूर हो गए थे। इसलिए यह आइंदा भी मेरे हुज़ूर आकर मुझे कुरबानियों की चरबी और खून पेश करेंगे। 16 सिर्फ यही इमाम मेरे मकदिस में दाखिल होंगे और मेरी मेज़ पर मेरी खिदमत करके मेरे तमाम फ़रायज़ अदा करेंगे।

17 जब भी इमाम अंदरूनी दरवाजे में दाखिल होते हैं तो लाज़िम है कि वह कतान के कपड़े पहन लें। अंदरूनी सहन और रब के घर में खिदमत करते वक्त उन के कपड़े पहनना मना है। 18 वह कतान की पगड़ी और पाजामा पहनें, क्योंकि उन्हें पसीना दिलानेवाले कपड़ों से गुरेज़ करना है। 19 जब भी इमाम अंदरूनी सहन से दुबारा बैरूनी सहन में जाना चाहें तो लाज़िम है कि वह खिदमत के लिए मुस्तामल कपड़ों को उतारें। वह इन कपड़ों को मुक़द्दस कमरों में छोड़ आएँ और आम कपड़े पहन लें, ऐसा न हो कि मुक़द्दस कपड़े छूने से आम लोगों की जान खतरे में पड़ जाए।

20 न इमाम अपना सर मुँडवाएँ, न उनके बाल लंबे हों बल्कि वह उन्हें कटवाते रहें। 21 इमाम को अंदरूनी सहन में दाखिल होने से पहले मैं पीना मना है।

22 इमाम को किसी तलाक़शुदा औरत या बेवा से शादी करने की इजाजत नहीं है। वह सिर्फ इसराईली कुँवारी से शादी करे। सिर्फ उस वक्त बेवा से शादी करने की इजाजत है जब मरहूम शौहर इमाम था।

23 इमाम अवाम को मुक़द्दस और गैरमुक़द्दस चीजों में फ़रक की तालीम दें। वह उन्हें नापाक और पाक चीजों में इम्तियाज़ करना सिखाएँ। 24 अगर तनाज़ा हो तो इमाम मेरे अहक़ाम के मुताबिक़ ही उस पर फ़ैसला करें। उनका फ़र्ज़ है कि वह मेरी मुक़रर्रा इंदों को मेरी हिदायात और क़वायद के मुताबिक़ ही मनाएँ। वह मेरा सबत का दिन मख़ससो-मुक़द्दस रखें।

25 इमाम अपने आपको किसी लाश के पास जाने से नापाक न करे। इसकी इजाजत सिर्फ़ इसी सूरत में है कि उसके माँ-बाप, बच्चों, भाइयों या गैरशादीशुदा बहनों में से कोई इंतक़ाल कर जाए। 26 अगर कभी ऐसा हो तो वह अपने आपको पाक-साफ़ करने के बाद मज़ीद सात दिन इंतज़ार करे, 27 फिर मक़दिस के अंदरूनी सहन में जाकर अपने लिए गुनाह की कुरबानी पेश करे। तब ही वह दुबारा मक़दिस में खिदमत कर सकता है। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

28 सिर्फ़ मैं ही इमामों का मौरूसी हिस्सा हूँ। उन्हें इसराईल में मौरूसी मिलकियत मत देना, क्योंकि मैं खुद उनकी मौरूसी मिलकियत हूँ। 29 खाने के लिए इमामों को ग़ल्ला, गुनाह और कुसूर की कुरबानियाँ मिलेंगी, नीज़ इसराईल में वह सब कुछ जो रब के लिए मख़सस किया जाता है। 30 इमामों को फसल के पहले फल का बेहतरीन हिस्सा और तुम्हारे तमाम हदिये मिलेंगे। उन्हें अपने गुंथे हुए आटे से भी हिस्सा देना है। तब अल्लाह की बरकत तैरे धराने पर ठहरेगी।

31 जो परिंदा या दीगर जानवर फितरी तौर पर या किसी दूसरे जानवर के हमले से मर जाए उसका गोशत खाना इमाम के लिए मना है।

## 45

## इसराईल में रब का हिस्सा

1 जब तुम मुल्क को कुरा डालकर कबीलों में तकसीम करोगे तो एक हिस्से को रब के लिए मखसूस करना है। उस जमीन की लंबाई साठे 12 किलोमीटर और चौड़ाई 10 किलोमीटर होगी। पूरी जमीन मुकद्दस होगी।

2 इस खिते में एक प्लाट रब के घर के लिए मखसूस होगा। उस की लंबाई भी 875 फुट होगी और उस की चौड़ाई भी। उसके ईर्दगिर्द खुली जगह होगी जिसकी चौड़ाई साठे 87 फुट होगी।<sup>3</sup> खिते का आधा हिस्सा अलग किया जाए। उस की लंबाई साठे 12 किलोमीटर और चौड़ाई 5 किलोमीटर होगी, और उसमें मकदिस यानी मुकद्दसतरीन जगह होगी।<sup>4</sup> यह खिता मुल्क का मुकद्दस इलाका होगा। वह उन इमामों के लिए मखसूस होगा जो मकदिस में उस की खिदमत करते हैं। उसमें उनके घर और मकदिस का मखसूस प्लाट होगा।

5 खिते का दूसरा हिस्सा उन बाकी लावियों को दिया जाएगा जो रब के घर में खिदमत करेंगे। यह उनकी मिलकियत होगी, और उसमें वह अपनी आबादियाँ बना सकेंगे। उस की लंबाई और चौड़ाई पहले हिस्से के बराबर होगी।

6 मुकद्दस खिते से मूलहिक एक और खिता होगा जिसकी लंबाई साठे 12 किलोमीटर और चौड़ाई द्वाइ किलोमीटर होगी। यह एक ऐसे शहर के लिए मखसूस होगा जिसमें कोई भी इसराईली रह सकेगा।

## हुक्मरान के लिए जमीन

7 हुक्मरान के लिए भी जमीन अलग करनी है। यह जमीन मुकद्दस खिते की मशरिकी हद से लेकर मुल्क की मशरिकी सरहद तक और मुकद्दस खिते की मगरिबी हद से लेकर समुंद्र तक होगी। चुन्चे मशरिक से मगरिब तक मुकद्दस खिते और हुक्मरान के इलाके का मिल मिलाकर फासला उतना है जितना कबायली इलाकों का है।<sup>8</sup> यह इलाका मुल्के-इसराईल में हुक्मरान का हिस्सा होगा। फिर वह आइंदा मेरी क्रौम पर जुल्म नहीं करेगा बल्कि मुल्क के बाकी हिस्से को इसराईल के कबीलों पर छोड़ेगा।

## हुक्मरान के लिए हिदायात

9 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि ऐ इसराईली हुक्मरानो, अब बस करो! अपनी गलत हरकतों से बाज्र आओ। अपना जुल्मो-तशद्दुद छोड़कर इनसाफ और रास्तबाज़ी कायम करो। मेरी क्रौम को उस की मौरूसी जमीन से भगाने से बाज्र आओ। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

10 सहीह तराजू इस्तेमाल करो, तुम्हारे बाट और पैमाइश के आलात गलत न हों।<sup>11</sup> गल्ला नापने का बरतन बनाम ऐफा माए नापने के बरतन बनाम बत जितना बड़ा हो। दोनों के लिए कसौटी खोमर है। एक खोमर 10 ऐफा और 10 बत के बराबर है।<sup>12</sup> तुम्हारे बाट यों हों कि 20 जीरह 1 मिसकाल के बराबर और 60 मिसकाल 1 माना के बराबर हों।

13 दर्जे-ज़ैल तुम्हारे बाकायदा हदिये हैं :

अनाज : तुम्हारी फसल का 60वाँ हिस्सा,

जौ : तुम्हारी फसल का 60वाँ हिस्सा,

14 जैतून का तेल : तुम्हारी फसल का 100वाँ हिस्सा (तेल को बत के हिसाब से नापना है। 10 बत 1 खोमर और 1 कोर के बराबर है।),

15 200 भेड़-बकरियों में से एक।

यह चीजें गल्ला की नजरो के लिए, भस्म होनेवाली कुरबानियों और सलामती की कुरबानियों के लिए मुकर्रर हैं। उनसे क्रौम का कफफारा दिया जाएगा। यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

16 लाज़िम है कि तमाम इसराईली यह हदिये मुल्क के हुक्मरान के हवाले करें।<sup>17</sup> हुक्मरान का फर्ज होगा कि वह नए चाँद की ईदों, सबत के दिनों और दीगर ईदों पर तमाम इसराईली क्रौम के लिए कुरबानियाँ मुहैया करे। इनमें भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, गुनाह और सलामती की कुरबानियाँ और गल्ला और मै की नजरे शामिल होंगी। यों वह इसराईल का कफफारा देगा।

## बड़ी ईदों पर कुरबानियाँ

18 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि पहले महीने \* के पहले दिन को एक बेऐब बैल को कुरबान करके मकदिस को पाक-साफ कर।<sup>19</sup> इमाम बैल का खून लेकर उसे रब के घर के दरवाजों के बाजुओं, कुरबानगाह के दरमियानी हिस्से के कोनों और अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाले दरवाजों के बाजुओं पर लगा दे।<sup>20</sup> यही अमल पहले महीने के सातवें दिन भी

\* 45:18 मार्च ता अग़ैल।

कर ताकि उन सबका कफफारा दिया जाए जिन्होंने गैरइरादी तौर पर या बेखबरी से गुनाह किया हो। यों तुम रब के घर का कफफारा दोगे।

21 पहले महीने के चौधवें दिन फसह की ईद का आगाज़ हो। उसे सात दिन मनाओ, और उसके दौरान सिर्फ़ बेखमीरी रोटी खाओ। 22 पहले दिन मुल्क का हुक्मरान अपने और तमाम कौम के लिए गुनाह की कुरबानी के तौर पर एक बैल पेश करे। 23 नीज़, वह ईद के सात दिन के दौरान रोजाना सात बेऐब बैल और सात मेंढे भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर कुरबान करे और गुनाह की कुरबानी के तौर पर एक एक बकरा पेश करे। 24 वह हर बैल और हर मेंढे के साथ साथ गल्ला की नज़र भी पेश करे। इसके लिए वह फ़ी जानवर 16 किलोग्राम मैदा और 4 लिटर तेल मूहैया करे।

25 सातवें महीने † के पंद्रहवें दिन झोंपडियों की ईद शुरू होती है। हुक्मरान इस ईद पर भी सात दिन के दौरान वही कुरबानियाँ पेश करे जो फसह की ईद के लिए दरकार हैं यानी गुनाह की कुरबानियाँ, भस्म होनेवाली कुरबानियाँ, गल्ला की नज़रें और तेल।

## 46

ईदों पर हुक्मरान की जानिब से कुरबानियाँ

1 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि लाज़िम है कि अंदरूनी सहन में पहुँचानेवाला मशरिकी दरवाज़ा इतवार से लेकर जुमे तक बंद रहे। उसे सिर्फ़ सबत और नए चाँद के दिन खोलना है। 2 उस वक़्त हुक्मरान बैरूनी सहन से होकर मशरिकी दरवाज़े के बरामदे में दाखिल हो जाए और उसमें से गुज़रकर दरवाज़े के बाजू के पास खड़ा हो जाए। वहाँ से वह इमामों को उस की भस्म होनेवाली और सलामती की कुरबानियाँ पेश करते हुए देख सकेगा। दरवाज़े की दहलीज़ पर वह सिजदा करेगा, फिर चला जाएगा। यह दरवाज़ा शाम तक खुला रहे। 3 लाज़िम है कि बाकी इसराईली सबत और नए चाँद के दिन बैरूनी सहन में इबादत करें। वह इसी मशरिकी दरवाज़े के पास आकर मेरे हुज़ूर औधे मुँह हो जाएँ।

4 सबत के दिन हुक्मरान छः बेऐब भेड के बच्चे और एक बेऐब मेंढा चुनकर रब को भस्म होनेवाली कुरबानी के तौर पर पेश करे। 5 वह हर मेंढे के साथ गल्ला की नज़र भी पेश करे यानी 16 किलोग्राम मैदा और 4 लिटर जैतून का तेल। हर भेड के बच्चे के साथ वह उतना ही गल्ला दे जितना जी चाहे। 6 नए चाँद के दिन वह एक जवान बैल, छः भेड के बच्चे और एक मेंढा पेश करे। सब बेऐब हों। 7 जवान बैल और मेंढे के साथ गल्ला की नज़र भी पेश की जाए। गल्ला की यह नज़र 16 किलोग्राम मैदे और 4 लिटर जैतून के तेल पर मुशतमिल हो। वह हर भेड के बच्चे के साथ उतना ही गल्ला दे जितना जी चाहे।

8 हुक्मरान अंदरूनी मशरिकी दरवाज़े में बैरूनी सहन से होकर दाखिल हो, और वह इसी रास्ते से निकले भी। 9 जब बाकी इसराईली किसी ईद पर रब को सिजदा करने आएँ तो जो शिमाली दरवाज़े से बैरूनी सहन में दाखिल हों वह इबादत के बाद जुन्बी दरवाज़े से निकलें, और जो जुन्बी दरवाज़े से दाखिल हों वह शिमाली दरवाज़े से निकलें। कोई उस दरवाज़े से न निकले जिसमें से वह दाखिल हुआ बल्कि मुकाबिल के दरवाज़े से। 10 हुक्मरान उस वक़्त सहन में दाखिल हो जब बाकी इसराईली दाखिल हो रहे हों, और वह उस वक़्त रवाना हो जब बाकी इसराईली रवाना हो जाएँ।

11 ईदों और मुकर्ररा तहवारों पर बैल और मेंढे के साथ गल्ला की नज़र पेश की जाए। गल्ला की यह नज़र 16 किलोग्राम मैदे और 4 लिटर जैतून के तेल पर मुशतमिल हो। हुक्मरान भेड के बच्चों के साथ उतना ही गल्ला दे जितना जी चाहे।

12 जब हुक्मरान अपनी खुशी से मुझे कुरबानी पेश करना चाहे खाह भस्म होनेवाली या सलामती की कुरबानी हो, तो उसके लिए अंदरूनी दरवाज़े का मशरिकी दरवाज़ा खोला जाए। वहाँ वह अपनी कुरबानी यों पेश करे जिस तरह सबत के दिन करता है। उसके निकलने पर यह दरवाज़ा बंद कर दिया जाए।

रोजाना की कुरबानी

13 इसराईल रब को हर सुबह एक बेऐब एकसाला भेड का बच्चा पेश करे। भस्म होनेवाली यह कुरबानी रोजाना चढाई जाए। 14 साथ साथ गल्ला की नज़र पेश की जाए। इसके लिए सवा लिटर जैतून का तेल ढाई किलोग्राम मैदे के साथ मिलाया जाए। गल्ला की यह नज़र हमेशा ही मुझे पेश करनी है। 15 लाज़िम है कि हर सुबह भेड का बच्चा, मैदा और तेल मेरे लिए जलाया जाए।

हुक्मरान की मौरूसी ज़मीन

16 कादिरे-मुतलक फ़रमाता है कि अगर इसराईल का हुक्मरान अपने किसी बेटे को कुछ मौरूसी ज़मीन दे तो यह ज़मीन बेटे की मौरूसी ज़मीन बनकर उस की औलाद की मिलकियत रहेगी। 17 लेकिन अगर हुक्मरान कुछ मौरूसी ज़मीन अपने

किसी मुलाजिम को दे तो यह जमीन सिर्फ अगले बहाली के साल तक मुलाजिम के हाथ में रहेगी। फिर यह दुबारा हुक्मरान के कब्जे में वापस आएगी। क्योंकि यह मौस्सी जमीन मुस्तकिल तौर पर उस की और उसके बेटों की मिलकियत है। 18 हुक्मरान को जबरन दूसरे इसराईलियों की मौस्सी जमीन अपनाने की इजाजत नहीं। लाजिम है कि जो भी जमीन वह अपने बेटों में तकसीम करे वह उस की अपनी ही मौस्सी जमीन हो। मेरी कौम में से किसी को निकालकर उस की मौस्सी जमीन से महरूम करना मना है।”

### रब के घर का किचन

19 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे उन कमरों के दरवाजे के पास ले गया जिनका सख शिमाल की तरफ था और जो अंदरूनी सहन के जुनूबी दरवाजे के करीब थे। यह इमामों के मुकद्दस कमरे हैं। उसने मुझे कमरों के मगारिबी सिरे में एक जगह दिखा कर 20 कहा, “यहाँ इमाम वह गोशत उबालेंगे जो गुनाह और कुसर की कुरबानियों में से उनका हिस्सा बनता है। यहाँ वह गल्ला की नजर लेकर रोटी भी बनाएँगे। कुरबानियों में से कोई भी चीज बैरूनी सहन में नहीं लाई जा सकती, ऐसा न हो कि मुकद्दस चीजें छूने से आम लोगों की जान खतरे में पड़ जाए।”

21 फिर मेरा राहनुमा दुबारा मेरे साथ बैरूनी सहन में आ गया। वहाँ उसने मुझे उसके चार कोने दिखाए। हर कोने में एक सहन था 22 जिसकी लंबाई 70 फुट और चौड़ाई साठे 52 फुट थी। हर सहन इतना ही बड़ा था 23 और एक दीवार से घिरा हुआ था। दीवार के साथ साथ चूल्हे थे। 24 मेरे राहनुमा ने मुझे बताया, “यह वह किचन है जिनमें रब के घर के खादिम लोगों की पेशकरदा कुरबानियाँ उबालेंगी।”

## 47

### रब के घर में से निकलनेवाला दरिया

1 इसके बाद मेरा राहनुमा मुझे एक बार फिर रब के घर के दरवाजे के पास ले गया। यह दरवाजा मशरिक में था, क्योंकि रब के घर का सख ही मशरिक की तरफ था। मैंने देखा कि दहलीज के नीचे से पानी निकल रहा है। दरवाजे से निकलकर वह पहले रब के घर की जुनूबी दीवार के साथ साथ बहता था, फिर कुरबानगाह के जुनूब में से गुजरकर मशरिक की तरफ बह निकला। 2 मेरा राहनुमा मेरे साथ बैरूनी सहन के शिमाली दरवाजे में से निकला। बाहर चारदीवारी के साथ साथ चलते चलते हम बैरूनी सहन के मशरिकी दरवाजे के पास पहुँच गए। मैंने देखा कि पानी इस दरवाजे के जुनूबी हिस्से में से निकल रहा है।

3 हम पानी के किनारे किनारे चल पड़े। मेरे राहनुमा ने अपने फ्रिते के साथ आधा किलोमीटर का फासला नापा। फिर उसने मुझे पानी में से गुजरने को कहा। यहाँ पानी टखनों तक पहुँचता था। 4 उसने मज्जीद आधे किलोमीटर का फासला नापा, फिर मुझे दुबारा पानी में से गुजरने को कहा। अब पानी घुटनों तक पहुँचा। जब उसने तीसरी मरतबा आधा किलोमीटर का फासला नापकर मुझे उसमें से गुजरने दिया तो पानी कमर तक पहुँचा। 5 एक आखिरी दफा उसने आधे किलोमीटर का फासला नापा। अब मैं पानी में से गुजर न सका। पानी इतना गहरा था कि उसमें से गुजरने के लिए तैरने की जरूरत थी।

6 उसने मुझे पूछा, “ऐ आदमजाद, क्या तूने गौर किया है?” फिर वह मुझे दरिया के किनारे तक वापस लाया।

7 जब वापस आया तो मैंने देखा कि दरिया के दोनों किनारों पर मुतअदिद दरख्त लगे हैं। 8 वह बोला, “यह पानी मशरिक की तरफ बहकर वादीए-यरदन में पहुँचता है। उसे पार करके वह बहीराए-मुरदार में आ जाता है। उसके असर से बहीराए-मुरदार का नमकीन पानी पीने के काबिल हो जाएगा। 9 जहाँ भी दरिया बहेगा वहाँ के बेशुमार जानदार जीते रहेंगे। बहुत मछलियाँ होंगी, और दरिया बहीराए-मुरदार का नमकीन पानी पीने के काबिल बनाएगा। जहाँ से भी गुजरेगा वहाँ सब कुछ फलता-फूलता रहेगा। 10 ऐन-जदी से लेकर ऐन-अजलैम तक उसके किनारों पर मछेरें खड़े होंगे। हर तरफ उनके जाल सूखने के लिए फैलाए हुए नजर आएँगे। दरिया में हर किस्म की मछलियाँ होंगी, उतनी जितनी बहीराए-रूम में पाई जाती हैं। 11 सिर्फ बहीराए-मुरदार के इर्दगिर्द की दलदली जगहों और जोहडों का पानी नमकीन रहेगा, क्योंकि वह नमक हासिल करने के लिए इस्तेमाल होगा। 12 दरिया के दोनों किनारों पर हर किस्म के फलदार दरख्त उगेंगे। इन दरख्तों के पत्ते न कभी मुरझाएँगे, न कभी उनका फल खत्म होगा। वह हर महीने फल लाएँगे, इसलिए कि मकदिस का पानी उनका अबपाशी करता रहेगा। उनका फल लोगों की खुराक बनेगा, और उनके पत्ते शफा देंगे।”

### इसराईल की सरहदें

13 फिर रब कादिर-मुतलक ने फरमाया, “मैं तुझे उस मुल्क की सरहदें बताता हूँ जो बारह कबीलों में तकसीम करना है। यूसुफ को दो हिस्से देने हैं, बाकी कबीलों को एक एक हिस्सा। 14 मैंने अपना हाथ उठाकर कसम खाई थी कि मैं यह मुल्क तुम्हारे बापदादा को अता करूँगा, इसलिए तुम यह मुल्क मीरास में पाओगे। अब उसे आपस में बराबर तकसीम कर लो।

15 शिमाली सरहद बहीराए-रूम से शुरू होकर मशरिक की तरफ हतलून, लबो-हमात और सिदाद के पास से गुजरती है। 16 वहाँ से वह बेरोता और सिबैरम के पास पहुँचती है (सिबैरम मुल्के-दमिश्क और मुल्के-हमात के दरमियान वाके है)। फिर



सरहद हसर-एनान शहर तक आगे निकलती है जो हौरान की सरहद पर वाके है। 17 गरज शिमाली सरहद बहीराए-रूम से लेकर हसर-एनान तक पहुँचती है। दमिशक और हमात की सरहदें उसके शिमाल में हैं।

18 मुल्क की मशरिकी सरहद वहाँ शुरू होती है जहाँ दमिशक का इलाका हौरान के पहाड़ी इलाके से मिलता है। वहाँ से सरहद दरियाए-यरदन के साथ साथ चलती हुई जुनूब में बहीराए-रूम के पास तमर शहर तक पहुँचती है। यों दरियाए-यरदन मुल्के-इसराईल की मशरिकी सरहद और मुल्के-जिलियाद की मगरिबी सरहद है।

19 जुनूबी सरहद तमर से शुरू होकर जुनूब-मगरिब की तरफ चलती चलती मरीबा-कादिस के चरमों तक पहुँचती है। फिर वह शिमाल-मगरिब की तरफ खूब करके मिसर की सरहद यानी वादीए-मिसर के साथ साथ बहीराए-रूम तक पहुँचती है।

20 मगरिबी सरहद बहीराए-रूम है जो शिमाल में लबो-हमात के मुकाबिल खत्म होती है।

21 मुल्क को अपने कबीलों में तकसीम करो! 22 यह तुम्हारी मौरूसी जमीन होगी। जब तुम कुरा डालकर उसे आपस में तकसीम करो तो उन गैरमुल्कियों को भी जमीन मिलनी है जो तुम्हारे दरमियान रहते और जिनके बच्चे यहाँ पैदा हुए हैं। तुम्हारा उनके साथ वैसा सलूक हो जैसा इसराईलियों के साथ। कुरा डालते वक़्त उन्हें इसराईली कबीलों के साथ जमीन मिलनी है। 23 रब कादिर-मुतलक फरमाता है कि जिस कबीले में भी परदेसी आबाद हों वहाँ तुम्हें उन्हें मौरूसी जमीन देनी है।

## 48

### कबीलों में मुल्क की तकसीम

1-7 इसराईल की शिमाली सरहद बहीराए-रूम से शुरू होकर मशरिक की तरफ हतलून, लबो-हमात और हसर-एनान के पास से गुजरती है। दमिशक और हमात सरहद के शिमाल में हैं। हर कबीले को मुल्क का एक हिस्सा मिलेगा। हर खिते का एक सिरा मुल्क की मशरिकी सरहद और दूसरा सिरा मगरिबी सरहद होगा। शिमाल से लेकर जुनूब तक कबायली इलाकों की यह तरतीब होगी : दान, आशर, नफ़ताली, मनस्सी, इफ़राईम, रूबिन और यहदाह।

### मुल्क के बीच में मखसूस इलाका

8 यहदाह के जुनूब में वह इलाका होगा जो तुम्हें मेरे लिए अलग करना है। कबायली इलाकों की तरह उसका भी एक सिरा मुल्क की मशरिकी सरहद और दूसरा सिरा मगरिबी सरहद होगा। शिमाल से जुनूब तक का फ़ासला साठे 12 किलोमीटर है। उसके बीच में मकदिस है।

9 इस इलाके के दरमियान एक खास खिता होगा। मशरिक से मगरिब तक उसका फ़ासला साठे 12 किलोमीटर होगा जबकि शिमाल से जुनूब तक फ़ासला 10 किलोमीटर होगा। रब के लिए मखसूस इस खिते 10 का एक हिस्सा इमामों के लिए मखसूस होगा। इस हिस्से का फ़ासला मशरिक से मगरिब तक साठे 12 किलोमीटर और शिमाल से जुनूब तक 5 किलोमीटर होगा। इसके बीच में ही रब का मकदिस होगा। 11 यह मुक़द्दस इलाका लावी के खानदान सदोक के मखसूस-मुक़द्दस किए गए इमामों को दिया जाएगा। क्योंकि जब इसराईली मुझसे बरग़्शता हुए तो बाकी लावी उनके साथ भटक गए, लेकिन सदोक का खानदान वफ़ादारी से मेरी खिदमत करता रहा। 12 इसलिए उन्हें मेरे लिए मखसूस इलाके का मुक़द्दसतरीन हिस्सा मिलेगा। यह लावियों के खिते के शिमाल में होगा। 13 इमामों के जुनूब में बाकी लावियों का खिता होगा। मशरिक से मगरिब तक उसका फ़ासला साठे 12 किलोमीटर और शिमाल से जुनूब तक 5 किलोमीटर होगा।

14 रब के लिए मखसूस यह इलाका पूरे मुल्क का बेहतरीन हिस्सा है। उसका कोई भी प्लाट किसी दूसरे के हाथ में देने की इजाज़त नहीं। उसे न बेचा जाए, न किसी दूसरे को किसी प्लाट के एवज़ में दिया जाए। क्योंकि यह इलाका रब के लिए मखसूस-मुक़द्दस है।

15 रब के मकदिस के इस खास इलाके के जुनूब में एक और खिता होगा जिसकी लंबाई साठे 12 किलोमीटर और चौड़ाई अढ़ाई किलोमीटर है। वह मुक़द्दस नहीं है बल्कि आम लोगों की रिहाइश के लिए होगा। इसके बीच में शहर होगा, जिसके इर्दगिर्द चरागाहें होंगी। 16 यह शहर मुरब्बा शक़्त का होगा। लंबाई और चौड़ाई दोनों सवा दो दो किलोमीटर होगी।

17 शहर के चारों तरफ़ जानवरों को चराने की खुली जगह होगी जिसकी चौड़ाई 133 मीटर होगी। 18 चूँकि शहर अपने खिते के बीच में होगा इसलिए मज़क़ूरा खुली जगह के मशरिक में एक खिता बाकी रह जाएगा जिसका मशरिक से शहर तक फ़ासला 5 किलोमीटर और शिमाल से जुनूब तक फ़ासला अढ़ाई किलोमीटर होगा। शहर के मगरिब में भी इतना ही बड़ा खिता होगा। इन दो खितों में खेतीबाड़ी की जाएगी जिसकी पैदावार शहर में काम करनेवालों की ख़ुराक होगी। 19 शहर में काम करनेवाले तमाम कबीलों के होंगे। वही इन खेतों की खेतीबाड़ी करेंगे।

20 चुन्चें मेरे लिए अलग किया गया यह पूरा इलाका मुरब्बा शक़्त का है। उस की लंबाई और चौड़ाई साठे बारह बारह किलोमीटर है। इसमें शहर भी शामिल है।

21-22 मजकुरा मुकद्दस खिते में मकदिस, इमामों और बाकी लावियों की ज़मीनें हैं। उसके मशरिक और मगरिब में बाकीमाँदा ज़मीन हुक्मरान की मिलकियत है। मुकद्दस खिते के मशरिक में हुक्मरान की ज़मीन मुल्क की मशरिकी सरहद तक होगी और मुकद्दस खिते के मगरिब में वह समुंदर तक होगी। शिमाल से जुनूब तक वह मुकद्दस खिते जितनी चौड़ी यानी साढ़े 12 किलोमीटर होगी। शिमाल में यहदाह का कबायली इलाका होगा और जुनूब में बिनयमीन का।

### दीगर कबीलों की ज़मीन

23-27 मुल्क के इस खास दरमियानी हिस्से के जुनूब में बाकी कबीलों को एक एक इलाका मिलेगा। हर इलाके का एक सिरा मुल्क की मशरिकी सरहद और दूसरा सिरा बहीराए-रूम होगा। शिमाल से लेकर जुनूब तक कबायली इलाकों की यह तरतीब होगी : बिनयमीन, शमौन, इशकार, ज़बूलून और जद।

28 जद के कबीले की जुनूबी सरहद मुल्क की सरहद भी है। वह तमर से जुनूब-मगरिब में मरीबा-कादिस के चशमों तक चलती है, फिर मिसर की सरहद यानी वादीए-मिसर के साथ साथ शिमाल-मगरिब का स्रु करके बहीराए-रूम तक पहुँचती है।

29 रब कादिर-मुतलक फरमाता है कि यही तुम्हारा मुल्क होगा! उसे इसराईली कबीलों में तकसीम करो। जो कुछ भी उन्हें कुरा डालकर मिले वह उनकी मौरूसी ज़मीन होगी।

### यस्शलम के दरवाजे

30-34 यस्शलम शहर के 12 दरवाजे होंगे। फसील की चारों दीवारों सवा दो दो किलोमीटर लंबी होंगी। हर दीवार के तीन दरवाजे होंगे, गरज कुल बारह दरवाजे होंगे। हर एक का नाम किसी कबीले का नाम होगा। चुनोंचे शिमाल में रबिन का दरवाजा, यहदाह का दरवाजा और लावी का दरवाजा होगा, मशरिक में यूसुफ का दरवाजा, बिनयमीन का दरवाजा और दान का दरवाजा होगा, जुनूब में शमौन का दरवाजा, इशकार का दरवाजा और ज़बूलून का दरवाजा होगा, और मगरिब में जद का दरवाजा, आशर का दरवाजा और नफताली का दरवाजा होगा। 35 फसील की पूरी लंबाई 9 किलोमीटर है।

तब शहर 'यहाँ रब है' कहलाएगा!!"

## दानियाल

दानियाल और उसके दोस्त शाहे-बाबल के दरबार में

1 शाहे-यहूदाह यहूयकीम की सलतनत के तीसरे साल में शाहे-बाबल नबूकदनञ्जर ने यरूशलम आकर उसका मुहासरा किया। 2 उस वक़्त रब ने यहूयकीम और अल्लाह के घर का काफी सामान नबूकदनञ्जर के हवाले कर दिया। नबूकदनञ्जर ने यह चीज़ें मुल्के-बाबल में ले जाकर अपने देवता के मंदिर के खजाने में महफूज़ कर दीं।

3 फिर उसने अपने दरबार के आला अफ़सर अशपनाज़ को हुक़म दिया, “यहूदाह के शाही खानदान और ऊँचे तबके के खानदानों की तफ़तीश करो। उनमें से कुछ ऐसे नौजवानों को चुनकर ले आओ 4 जो बेऐब, ख़बसूरत, हिक़मत के हर लिहाज़ से समझदार, तालीमयाफ़ता और समझने में तेज़ हों। गरज़ यह आदमी शाही महल में ख़िदमत करने के काबिल हों। उन्हें बाबल की ज़बान लिखने और बोलने की तालीम दो।” 5 बादशाह ने मुक़र्रर किया कि रोज़ाना उन्हें शाही बावरचीख़ाने से कितना खाना और पै मिलनी है। तीन साल की तरबियत के बाद उन्हें बादशाह की ख़िदमत के लिए हाज़िर होना था।

6 जब इन नौजवानों को चुना गया तो चार आदमी उनमें शामिल थे जिनके नाम दानियाल, हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह थे। 7 दरबार के आला अफ़सर ने उनके नए नाम रखे। दानियाल बेल्टशञ्जर में बदल गया, हननियाह सदूक में, मीसाएल मीसक में और अज़रियाह अबद-नज़् में।

8 लेकिन दानियाल ने मुसम्मम इरादा कर लिया कि मैं अपने आपको शाही खाना खाने और शाही पै पीने से नापाक नहीं करूँगा। उसने दरबार के आला अफ़सर से इन चीज़ों से परहेज़ करने की इजाज़त माँगी। 9 अल्लाह ने पहले से इस अफ़सर का दिल नरम कर दिया था, इसलिए वह दानियाल का ख़ास लिहाज़ करता और उस पर मेहरबानी करता था। 10 लेकिन दानियाल की दरखास्त सुनकर उसने जवाब दिया, “मुझे अपने आका बादशाह से डर है। उन्हीं ने मुतैयिन किया कि तुम्हें क्या क्या खाना और पीना है। अगर उन्हें पता चले कि तुम दूसरे नौजवानों की निसबत दुबले-पतले और कमज़ोर लगे तो वह मेरा सर कलम करेंगे।” 11 तब दानियाल ने उस निगरान से बात की जिसे दरबार के आला अफ़सर ने दानियाल, हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह पर मुक़र्रर किया था। वह बोला, 12 “ज़रा दस दिन तक अपने खादिमों को आजमाएँ। इतने में हमें खाने के लिए सिर्फ़ साग-पात और पीने के लिए पानी दीजिए। 13 इसके बाद हमारी सूरत का मुकाबला उन दीगर नौजवानों के साथ करें जो शाही खाना खाते हैं। फिर ही फैसला करें कि आइंदा अपने खादिमों के साथ कैसा सुलूक करेंगे।”

14 निगरान मान गया। दस दिन तक वह उन्हें साग-पात खिलाकर और पानी पिलाकर आजमाता रहा। 15 दस दिन के बाद क्या देखता है कि दानियाल और उसके तीन दोस्त शाही खाना खानेवाले दीगर नौजवानों की निसबत कहीं ज़्यादा सेहतमंद और मोटे-ताज़े लग रहे हैं। 16 तब निगरान उनके लिए मुक़र्ररा शाही खाने और पै का इंतज़ाम बंद करके उन्हें सिर्फ़ साग-पात खिलाने लगा। 17 अल्लाह ने इन चार आदमियों को अदब और हिक़मत के हर शोबे में इल्म और समझ अता की। नीज़, दानियाल हर किस्म की रोया और ख़ाब की ताबीर कर सकता था।

18 मुक़र्ररा तीन साल के बाद दरबार के आला अफ़सर ने तमाम नौजवानों को नबूकदनञ्जर के सामने पेश किया। 19 जब बादशाह ने उनसे गुफ़्तगू की तो मालूम हुआ कि दानियाल, हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह दूसरों पर सबकत रखते हैं। चुनौचे चारों बादशाह के मुलाज़िम बन गए। 20 जब भी किसी मामले में ख़ास हिक़मत और समझ दरकार होती तो बादशाह ने देखा कि यह चार नौजवान मशवरा देने में पूरी सलतनत के तमाम किस्मत का हाल बतानेवालों और जादूगरों से दस गुना ज़्यादा काबिल हैं।

21 दानियाल ख़ोरस की हुक़मत के पहले साल तक शाही दरबार में ख़िदमत करता रहा।

## 2

नबूकदनञ्जर का ख़ाब

1 अपनी हुक़मत के दूसरे साल में नबूकदनञ्जर ने ख़ाब देखा। ख़ाब इतना हौलनाक था कि वह घबराकर जाग उठा। 2 उसने हुक़म दिया कि तमाम किस्मत का हाल बतानेवाले, जादूगर, अफ़सूंगर और नज़्मी भेरे पास आकर ख़ाब का मतलब बताएँ। जब वह हाज़िर हुए 3 तो बादशाह बोला, “मैंने एक ख़ाब देखा है जो मुझे बहुत परेशान कर रहा है। अब मैं उसका मतलब जानना चाहता हूँ।”

4 नज़्मियों ने अरामी ज़बान में जवाब दिया, “बादशाह सलामत अपने खादिमों के सामने यह ख़ाब बयान करें तो हम उस की ताबीर करेंगे।”

5 लेकिन बादशाह बोला, “नहीं, तुम ही मुझे वह कुछ बताओ और उस की ताबीर करो जो मैंने ख़ाब में देखा। अगर तुम यह न कर सको तो मैं हुक़्म दूँगा कि तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए और तुम्हारे घर कचरे के ढेर हो जाएँ। यह मेरा मुसम्मम इरादा है।” 6 लेकिन अगर तुम मुझे वह कुछ बताकर उस की ताबीर करो जो मैंने ख़ाब में देखा तो मैं तुम्हें अच्छे तोहफे और इनाम दूँगा, नीज़ तुम्हारी ख़ास इज़्जत करूँगा। अब शुरू करो! मुझे वह कुछ बताओ और उस की ताबीर करो जो मैंने ख़ाब में देखा।”

7 एक बार फिर उन्होंने मिन्नत की, “बादशाह अपने ख़ादिमों के सामने अपना ख़ाब बताएँ तो हम ज़रूर उस की ताबीर करेंगे।”

8 बादशाह ने ज़वाब दिया, “मुझे साफ़ पता है कि तुम क्या कर रहे हो! तुम सिर्फ़ टाल-मटोल कर रहे हो, क्योंकि तुम समझ गए हो कि मेरा इरादा पक्का है।” 9 अगर तुम मुझे ख़ाब न बताओ तो तुम सबको एक ही सज़ा दी जाएगी। क्योंकि तुम सब झूट और ग़लत बातें पेश करने पर मुतफ़िक़ हो गए हो, यह उम्मीद रखते हुए कि हालात किसी वक़्त बदल जाएंगे। मुझे ख़ाब बताओ तो मुझे पता चल जाएगा कि तुम मुझे उस की सहीह ताबीर पेश कर सकते हो।”

10 नुजूमियों ने एतराज़ किया, “दुनिया में कोई भी इनसान वह कुछ नहीं कर पाता जो बादशाह माँंगते हैं। यह कभी हुआ भी नहीं कि किसी बादशाह ने ऐसी बात किसी किस्मत का हाल बतानेवाले, जादूगर या नज़मी से तलब की, ख़ाह बादशाह कितना अज़ीम क्यों न था।” 11 जिस चीज़ का तकाज़ा बादशाह करते हैं वह हद से ज़्यादा मुश्किल है। सिर्फ़ देवता ही यह बात बादशाह पर ज़ाहिर कर सकते हैं, लेकिन वह तो इनसान के दरमियान रहते नहीं।”

12 यह सुनकर बादशाह आग-बग़ला हो गया। बड़े गुस्से में उसने हुक़्म दिया कि बाबल के तमाम दानिशमंदों को सज़ाए-मौत दी जाए। 13 फ़रमान सादिर हुआ कि दानिशमंदों को मार डालना है। चुनौचे दानियाल और उसके दोस्तों को भी तलाश किया गया ताकि उन्हें सज़ाए-मौत दें।

14 शाही मुहाफिज़ों का अफ़सर बनाम अरयूक अभी दानिशमंदों को मार डालने के लिए रवाना हुआ कि दानियाल बड़ी हिक्मत और मौक़ाशानासी से उससे मुखातिब हुआ। 15 उसने अफ़सर से पूछा, “बादशाह ने इतना सख़्त फ़रमान क्यों जारी किया?” अरयूक ने दानियाल को सारा मामला बयान किया। 16 दानियाल फ़ौरन बादशाह के पास गया और उससे दरखास्त की, “ज़रा मुझे कुछ मोहलत दीजिए ताकि मैं बादशाह के ख़ाब की ताबीर कर सकूँ।” 17 फिर वह अपने घर वापस गया और अपने दोस्तों हननियाह, मीसाएल और अज़रियाह को तमाम सूरते-हाल सुनाई। 18 वह बोला, “आसमान के ख़ुदा से इस्तिज़ा करें कि वह मुझ पर रहम करे। मिन्नत करें कि वह मेरे लिए भेद खोले ताकि हम दीगर दानिशमंदों के साथ हलाक न हो जाएँ।”

19 रात के वक़्त दानियाल ने रोया देखी जिसमें उसके लिए भेद खोला गया। तब उसने आसमान के ख़ुदा की हम्दो-सना की,

20 “अल्लाह के नाम की तमज़ीद अज़ल से अबद तक हो। वही हिक्मत और कुव्वत का मालिक है। 21 वही औकात और ज़माने बदलने देता है। वही बादशाहों को तख़्त पर बिठा देता और उन्हें तख़्त पर से उतार देता है। वही दानिशमंदों को दानाई और समझदारों को समझ अता करता है। 22 वही ग़हरी और पोशीदा बातें ज़ाहिर करता है। जो कुछ अंधेरे में छुपा रहता है उसका इल्म वह रखता है, क्योंकि वह रौशनी से धिरा रहता है। 23 ऐ मेरे बापदादा के ख़ुदा, मैं तेरी हम्दो-सना करता हूँ! तूने मुझे हिक्मत और ताक़त अता की है। जो बात हमने तुझसे माँगी वह तूने हम पर ज़ाहिर की, क्योंकि तूने हम पर बादशाह का ख़ाब ज़ाहिर किया है।”

24 फिर दानियाल अरयूक के पास गया जिसे बादशाह ने बाबल के दानिशमंदों को सज़ाए-मौत देने की जिम्मादारी दी थी। उसने उससे दरखास्त की, “बाबल के दानिशमंदों को मौत के घाट न उतारें, क्योंकि मैं बादशाह के ख़ाब की ताबीर कर सकता हूँ। मुझे बादशाह के हुज़ूर पहुँचा दें तो मैं उन्हें सब कुछ बता दूँगा।”

25 यह सुनकर अरयूक भागकर दानियाल को बादशाह के हुज़ूर ले गया। वह बोला, “मुझे यहदाह के जिलावतनों में से एक आदमी मिल गया जो बादशाह को ख़ाब का मतलब बता सकता है।” 26 तब नबूकदनज़्ज़र ने दानियाल से जो बेल्लतशज़्ज़र कहलाता था पूछा, “क्या तुम मुझे वह कुछ बता सकते हो जो मैंने ख़ाब में देखा? क्या तुम उस की ताबीर कर सकते हो?”

27 दानियाल ने ज़वाब दिया, “जो भेद बादशाह जानना चाहते हैं उसे खोलने की कुज़ी किसी भी दानिशमंद, जादूगर, किस्मत का हाल बतानेवाले या ग़ैबदान के पास नहीं होती। 28 लेकिन आसमान पर एक ख़ुदा है जो भेदों का मतलब इनसान पर ज़ाहिर कर देता है। उसी ने नबूकदनज़्ज़र बादशाह को दिखाया कि आनेवाले दिनों में क्या कुछ पेश आएगा। सोते वक़्त आपने ख़ाब में रोया देखी। 29 ऐ बादशाह, जब आप पलंग पर लेटे हुए थे तो आपके ज़हन में आनेवाले दिनों के बारे में खयालत उभर आए। तब भेदों को खोलनेवाले ख़ुदा ने आप पर ज़ाहिर किया कि आनेवाले दिनों में क्या कुछ पेश आएगा। 30 इस भेद का मतलब मुझ पर ज़ाहिर हुआ है, लेकिन इसलिए नहीं कि मुझे दीगर तमाम दानिशमंदों से ज़्यादा हिक्मत

हासिल है बल्कि इसलिए कि आपको भेद का मतलब मालूम हो जाए और आप समझ सकें कि आपके जहन में क्या कुछ उभर आया है।

31 ऐ बादशाह, रोया में आपने अपने सामने एक बड़ा और लंबा-तडंगा मुजस्समा देखा जो तेज़ी से चमक रहा था। शकलो-सूरत ऐसी थी कि इनसान के रोंगटे खड़े हो जाते थे। 32 सर खालिस सोने का था जबकि सीना और बाजू चाँदी के, पेट और रान पीतल की 33 और पिडलियों लोहे की थीं। उसके पाँवों का आधा हिस्सा लोहा और आधा हिस्सा पकी हुई मिट्टी था। 34 आप इस मंज़र पर गौर ही कर रहे थे कि अचानक किसी पहाड़ी ढलान से पत्थर का बड़ा टुकड़ा अलग हुआ। यह बग़ैर किसी इनसानी हाथ के हुआ। पत्थर ने धड़ाम से मुजस्समे के लोहे और मिट्टी के पाँवों पर गिरकर दोनों को चूर चूर कर दिया। 35 नतीजे में पूरा मुजस्समा पाश पाश हो गया। जितना भी लोहा, मिट्टी, पीतल, चाँदी और सोना था वह उस भूसे की मानिंद बन गया जो गाहते वक्त बाकी रह जाता है। हवा ने सब कुछ यों उड़ा दिया कि इन चीजों का नामो-निशान तक न रहा। लेकिन जिस पत्थर ने मुजस्समे को गिरा दिया वह ज़बरदस्त पहाड़ बनकर इतना बढ़ गया कि पूरी दुनिया उससे भर गई।

36 यही बादशाह का ख़ाब था। अब हम बादशाह को ख़ाब का मतलब बताते हैं। 37 ऐ बादशाह, आप शहनशाह हैं। आसमान के खुदा ने आपको सलतनत, कुव्वत, ताकत और इज़्जत से नवाज़ा है। 38 उसने इनसान को जंगली जानवरों और परिंदों समेत आप ही के हवाले कर दिया है। जहाँ भी वह बसते हैं उसने आपको ही उन पर मुकर्रर किया है। आप ही मज़क़ूरा सोने का सर हैं। 39 आपके बाद एक और सलतनत कायम हो जाएगी, लेकिन उस की ताकत आपकी सलतनत से कम होगी। फिर पीतल की एक तीसरी सलतनत वुज़द में आएगी जो पूरी दुनिया पर हुकूमत करेगी। 40 आखिर में एक चौथी सलतनत आएगी जो लोहे जैसी ताकतवर होगी। जिस तरह लोहा सब कुछ तोड़कर पाश पाश कर देता है उसी तरह वह दीगर सबको तोड़कर पाश पाश करेगी। 41 आपने देखा कि मुजस्समे के पाँवों और उँगलियों में कुछ लोहा और कुछ पकी हुई मिट्टी थी। इसका मतलब है, इस सलतनत के दो अलग हिस्से होंगे। लेकिन जिस तरह ख़ाब में मिट्टी के साथ लोहा मिलाया गया था उसी तरह चौथी सलतनत में लोहे की कुछ न कुछ ताकत होगी। 42 ख़ाब में पाँवों की उँगलियों में कुछ लोहा भी था और कुछ मिट्टी भी। इसका मतलब है, चौथी सलतनत का एक हिस्सा ताकतवर और दूसरा नाज़ुक होगा। 43 लोहे और मिट्टी की मिलावट का मतलब है कि जो लोग आपस में शादी करने से एक दूसरे के साथ मुतहिद होने की कोशिश करेंगे तो भी वह एक दूसरे से पैवस्त नहीं रहेंगे, बिलकुल उसी तरह जिस तरह लोहा मिट्टी के साथ पैवस्त नहीं रह सकता।

44 जब यह बादशाह हुकूमत करेगा, उन्हीं दिनों में आसमान का खुदा एक बादशाही कायम करेगा जो न कभी तबाह होगी, न किसी दूसरी कौम के हाथ में आएगी। यह बादशाही इन दीगर तमाम सलतनतों को पाश पाश करके ख़त्म करेगी, लेकिन खुद अबद तक कायम रहेगी। 45 यही ख़ाब में उस पत्थर का मतलब है जिसने बग़ैर किसी इनसानी हाथ के पहाड़ी ढलान से अलग होकर मुजस्समे के लोहे, पीतल, मिट्टी, चाँदी और सोने को पाश पाश कर दिया। इस तरीके से अज़ीम खुदा ने बादशाह पर जाहिर किया है कि मुस्तकबिल में क्या कुछ पेश आएगा। यह ख़ाब काबिले-एतमाद और उस की ताबीर सही है।”

46 यह सुनकर नबूकदनज़र बादशाह ने औंधे मुँह होकर दानियाल को सिजदा किया और हुकम दिया कि दानियाल को गल्ला और बख़्क की कुरबानियाँ पेश की जाएँ। 47 दानियाल से उसने कहा, “यकीनन, तुम्हारा खुदा खुदाओं का खुदा और बादशाहों का मालिक है। वह वाकई भेदों को खोलता है, वरना तुम यह भेद मेरे लिए खोल न पाते।” 48 नबूकदनज़र ने दानियाल को बड़ा ओहदा और मुतअदिद बेशकीमत तोहफे दिए। उसने उसे पूरे सूबा बाबल का गवर्नर बना दिया। साथ साथ दानियाल बाबल के तमाम दानिशमंदों पर मुकर्रर हुआ। 49 उस की गुज़ारिश पर बादशाह ने सदृक, मीसक और अबद-नज़ू को सूबा बाबल की इंतज़ामिया पर मुकर्रर किया। दानियाल खुद शाही दरबार में हाज़िर रहता था।

## 3

सोने के बुत की पूजा करने का हुकम

1 एक दिन नबूकदनज़र ने सोने का मुजस्समा बनवाया। उस की ऊँचाई 90 फुट और चौड़ाई 9 फुट थी। उसने हुकम दिया कि बुत को सूबा बाबल के मैदान बनाम दूर में खड़ा किया जाए। 2 फिर उसने तमाम सूबेदारों, गवर्नरों, मुन्तज़िमों, मूशीरों, खज़ानचियों, जजों, मजिस्ट्रेटों, और सबों के दीगर तमाम बड़े बड़े सरकारी मुलाज़िमों को पैगाम भेजा कि मुजस्समे की मखसूसियत के लिए आकर जमा हो जाओ। 3 चुनौचे सब बुत की मखसूसियत के लिए जमा हो गए। जब सब उसके सामने खड़े थे 4 तो शाही नकीब ने बुलंद आवाज़ से एलान किया,

“ऐ मुख्तलिफ़ कौमों, उम्मतों और ज़बानों के लोगो, सुनो! बादशाह फ़रमाता है, 5 ‘ज्योंही नरसिंगा, शहनाई, संतर, सरोद, ऊद, वीन और दीगर तमाम साज़ बजेंगे तो लाज़िम है कि सब औंधे मुँह होकर बादशाह के खड़े किए गए सोने के बुत को सिजदा करें। 6 जो भी सिजदा न करे उसे फ़ौरन भड़कती भट्टी में फेंका जाएगा।”

7 चुनौचे ज्योंही साज बजने लगे तो मुख्तलिफ कौमों, उम्मतों और ज़बानों के तमाम लोग मुँह के बल होकर नबूकदनज़्जर के खड़े किए गए बुत को सिजदा करने लगे।

8 उस वक़्त कुछ नज़मी बादशाह के पास आकर यहदियों पर इलज़ाम लगाने लगे।<sup>9</sup> वह बोले, “बादशाह सलामत अबद तक जीते रहें! 10 ऐ बादशाह, आपने फ़रमाया, ‘ज्योंही नरसिंगा, शहनाई, संतूर, सरोद, ऊद, बीन और दीगर तमाम साज़ बजेंगे तो लाज़िम है कि सब औंधे मुँह होकर बादशाह के खड़े किए गए इस सोने के बुत को सिजदा करें। 11 जो भी सिजदा न करे उसे भडकती भट्टी में फेंका जाएगा।’ 12 लेकिन कुछ यहदी आदमी हैं जो आपकी परवा ही नहीं करते, हालाँकि आपने उन्हें सूबा बाबल की इंतज़ामिया पर मुक़रर किया था। यह आदमी बनाम सदक, मीसक और अबद-नजू न आपके देवताओं की पूजा करते, न सोने के उस बुत की परस्तिश करते हैं जो आपने खड़ा किया है।”

13 यह सुनकर नबूकदनज़्जर आपे से बाहर हो गया। उसने सीधा सदक, मीसक और अबद-नजू को बुलाया। जब पहुँचे 14 तो बोला, “ऐ सदक, मीसक और अबद-नजू, क्या यह सहीह है कि न तुम मेरे देवताओं की पूजा करते, न मेरे खड़े किए गए मुजस्समे की परस्तिश करते हो? 15 मैं तुम्हें एक आखिरी मौका देता हूँ। साज़ दुबारा बजेंगे तो तुम्हें मुँह के बल होकर मेरे बनवाए हुए मुजस्समे को सिजदा करना है। अगर तुम ऐसा न करो तो तुम्हें सीधा भडकती भट्टी में फेंका जाएगा। तब कौन-सा ख़ुदा तुम्हें मेरे हाथ से बचा सकेगा?”

16 सदक, मीसक और अबद-नजू ने जवाब दिया, “ऐ नबूकदनज़्जर, इस मामले में हमें अपना दिफ़ा करने की ज़रूरत नहीं है। 17 जिस ख़ुदा की खिदमत हम करते हैं वह हमें बचा सकता है, ख़ाह हमें भडकती भट्टी में क्यों न फेंका जाए। ऐ बादशाह, वह हमें ज़रूर आपके हाथ से बचाएगा। 18 लेकिन अगर वह हमें न भी बचाए तो भी आपको मालूम हो कि न हम आपके देवताओं की पूजा करेंगे, न आपके खड़े किए गए सोने के मुजस्समे की परस्तिश करेंगे।”

19 यह सुनकर नबूकदनज़्जर आग-बग़ला हो गया। सदक, मीसक और अबद-नजू के सामने उसका चेहरा बिगड़ गया और उसने हुक़म दिया कि भट्टी को मामूल की निसबत सात गुना ज़्यादा गरम किया जाए। 20 फिर उसने कहा कि बेहतरीन फ़ौजियों में से चंद एक सदक, मीसक और अबद-नजू को बाँधकर भडकती भट्टी में फेंक दे। 21 तीनों को बाँधकर भडकती भट्टी में फेंका गया। उनके चोगे, पाजामे और टोपियाँ उतारी न गईं। 22 चूँकि बादशाह ने भट्टी को गरम करने पर ख़ास ज़ोर दिया था इसलिए आग इतनी तेज़ हुई कि जो फ़ौजी सदक, मीसक और अबद-नजू को लेकर भट्टी के मुँह तक चढ़ गए वह फ़ौरन नज़रे-आतिश हो गए। 23 उनके कैदी बँधी हुई हालत में शोलाज़न आग में गिर गए।

24 अचानक नबूकदनज़्जर बादशाह चौंक उठा। उसने उछलकर अपने मुशर्रों से पूछा, “हमने तो तीन आदमियों को बाँधकर भट्टी में फेंकवाया कि नहीं?” उन्होंने जवाब दिया, “जी, ऐ बादशाह।” 25 वह बोला, “तो फिर यह क्या है? मुझे चार आदमी आग में इधर उधर फिरते हुए नज़र आ रहे हैं। न वह बँधे हुए हैं, न उन्हें नुक़सान पहुँच रहा है। चौथा आदमी देवताओं का बेटा-सा लग रहा है।”

26 नबूकदनज़्जर जलती हुई भट्टी के मुँह के करीब गया और पुकारा, “ऐ सदक, मीसक और अबद-नजू, ऐ अल्लाह तआला के बंदो, निकल आओ! इधर आओ।” तब सदक, मीसक और अबद-नजू आग से निकल आए। 27 सूबेदार, गवर्नर, मुन्तज़िम और शाही मुशर्र उनके गिर्द जमा हुए तो देखा कि आग ने उनके जिस्मों को नुक़सान नहीं पहुँचाया। बालों में से एक भी झुलस नहीं गया था, न उनके लिबास आग से मुतअस्सिर हुए थे। आग और धुँएँ की बू तक नहीं थी।

28 तब नबूकदनज़्जर बोला, “सदक, मीसक और अबद-नजू के ख़ुदा की तमजीद हो जिसने अपने फ़रिश्ते को भेजकर अपने बंदों को बचाया। उन्होंने उस पर भरोसा रखकर बादशाह के हुक़म की नाफरमानी की। अपने ख़ुदा के सिवा किसी और की खिदमत या परस्तिश करने से पहले वह अपनी जान को देने के लिए तैयार थे। 29 चुनौचे मेरा हुक़म सुनो! सदक, मीसक और अबद-नजू के ख़ुदा के ख़िलाफ़ कुफ़र बकना तमाम कौमों, उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद के लिए सख़्त मना है। जो भी ऐसा करे उसे टुकड़े टुकड़े कर दिया जाएगा और उसके घर को कचरे का ढेर बनाया जाएगा। क्योंकि कोई भी देवता इस तरह नहीं बचा सकता।” 30 फिर बादशाह ने तीनों आदमियों को सूबा बाबल में सरफ़राज़ किया।

## 4

### नबूकदनज़्जर के दूसरे ख़ाब की ताबीर

1 नबूकदनज़्जर दुनिया की तमाम कौमों, उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद को ज़ैल का पैगाम भेजता है, सबकी सलामती हो! 2 मैंने सबको उन इलाही निशानात और मोजिज़ात से आगाह करने का फैसला किया है जो अल्लाह तआला ने मेरे लिए किए हैं। 3 उसके निशान कितने अज़ीम, उसके मोजिज़ात कितने ज़बरदस्त हैं! उस की बादशाही अबदी है, उस की सलतनत नसल-दर-नसल कायम रहती है।

4 मैं, नबुकदनञ्जर खूशी और सुकून से अपने महल में रहता था। 5 लेकिन एक दिन मैं एक खाब देखकर बहुत घबरा गया। मैं पलंग पर लेटा हुआ था कि इतनी हौलनाक बातें और रोयाँ मेरे सामने से गुज़रीं कि मैं डर गया। 6 तब मैंने हुकम दिया कि बाबल के तमाम दानिशमंद मेरे पास आँ ताकि मेरे लिए खाब की ताबीर करें। 7 क्रिस्मत का हाल बतानेवाले, जादूगर, नज्मी और गैबदान पहुँचे तो मैंने उन्हें अपना खाब बयान किया, लेकिन वह उस की ताबीर करने में नाकाम रहे।

8 आखिरकार दानियाल मेरे हज़ूर आया जिसका नाम बेल्लतशञ्जर रखा गया है (मेरे देवता का नाम बेल है)। दानियाल में मुक़द्दस देवताओं की रूह है। उसे भी मैंने अपना खाब सुनाया। 9 मैं बोला, “ए बेल्लतशञ्जर, तुम जादूगरों के सरदार हो, और मैं जानता हूँ कि मुक़द्दस देवताओं की रूह तुममें है। कोई भी भेद तुम्हारे लिए इतना मुश्किल नहीं है कि तुम उसे खोल न सको। अब मेरा खाब सुनकर उस की ताबीर करो!”

10 पलंग पर लेटे हुए मैंने रोया में देखा कि दुनिया के बीच में निहायत लंबा-सा दरख्त लगा है। 11 यह दरख्त इतना ऊँचा और तनावर होता गया कि आखिरकार उस की चोटी आसमान तक पहुँच गई और वह दुनिया की इंतहा तक नज़र आया। 12 उसके पत्ते खूबसूरत थे, और वह बहुत फल लाता था। उसके साये में जंगली जानवर पनाह लेते, उस की शाखों में परिदे बसेरा करते थे। हर इन्सानो-हैवान को उससे खुराक मिलती थी।

13 मैं अभी दरख्त को देख रहा था कि एक मुक़द्दस फ़रिश्ता आसमान से उतर आया। 14 उसने बड़े जोर से आवाज़ दी, ‘दरख्त को काट डालो! उस की शाखें तोड़ दो, उसके पत्ते झाड़ दो, उसका फल बिखेर दो! जानवर उसके साये में से निकलकर भाग जाएँ, परिदे उस की शाखों से उड़ जाएँ। 15 लेकिन उसका मुह जड़ों समेत ज़मीन में रहने दो। उसे लोहे और पीतल की जंजीरों में जकड़कर खुले मैदान की घास में छोड़ दो। वहाँ उसे आसमान की ओस तर करे, और जानवरों के साथ ज़मीन की घास ही उसको नसीब हो। 16 सात साल तक उसका इन्सानी दिल जानवर के दिल में बदल जाए। 17 क्योंकि मुक़द्दस फ़रिश्तों ने फ़तवा दिया है कि ऐसा ही हो ताकि इन्सान जान ले कि अल्लाह तआला का इख्तियार इन्सानी सलतनतों पर है। वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है, खाह वह कितने ज़लील क्यों न हों।’

18 मैं, नबुकदनञ्जर ने खाब में यह कुछ देखा। ए बेल्लतशञ्जर, अब मुझे इसकी ताबीर पेश करो। मेरी सलतनत के तमाम दानिशमंद इसमें नाकाम रहे हैं। लेकिन तुम यह कर पाओगे, क्योंकि तुममें मुक़द्दस देवताओं की रूह है।”

19 तब बेल्लतशञ्जर यानी दानियाल के रोंगटे खड़े हो गए, और जो खयालात उभर आए उनसे उस पर काफी देर तक सख्त दहशत तारी रही। आखिरकार बादशाह बोला, “ए बेल्लतशञ्जर, खाब और उसका मतलब तुझे इतना दहशतज़दा न करे।” बेल्लतशञ्जर ने जवाब दिया, “मेरे आका, काश खाब की बातें आपके दुश्मनों और मुखालिफ़ों को पेश आऊँ। 20 आपने एक दरख्त देखा जो इतना ऊँचा और तनावर हो गया कि उस की चोटी आसमान तक पहुँची और वह पूरी दुनिया को नज़र आया। 21 उसके पत्ते खूबसूरत थे, और वह बहुत-सा फल लाता था। उसके साये में जंगली जानवर पनाह लेते, उस की शाखों में परिदे बसेरा करते थे। हर इन्सानो-हैवान को उससे खुराक मिलती थी।

22 ए बादशाह, आप ही यह दरख्त हैं! आप ही बड़े और ताकतवर हो गए हैं बल्कि आपकी अज़मत बढ़ते बढ़ते आसमान से बातें करने लगी, आपकी सलतनत दुनिया की इंतहा तक फैल गई है। 23 ए बादशाह, इसके बाद आपने एक मुक़द्दस फ़रिश्ते को देखा जो आसमान से उतरकर बोला, दरख्त को काट डालो! उसे तबाह करो, लेकिन उसका मुह जड़ों समेत ज़मीन में रहने दो। उसे लोहे और पीतल की जंजीरों में जकड़कर खुले मैदान की घास में छोड़ दो। वहाँ उसे आसमान की ओस तर करे, और जानवरों के साथ ज़मीन की घास ही उसको नसीब हो। सात साल यों ही गुज़र जाएँ।

24 ए बादशाह, इसका मतलब यह है, अल्लाह तआला ने मेरे आका बादशाह के बारे में फ़ैसला किया है 25 कि आपको इन्सानी संगत से निकालकर भगाया जाएगा। तब आप जंगली जानवरों के साथ रहकर बैलों की तरह घास चरेंगे और आसमान की ओस से तर हो जाएँगे। सात साल यों ही गुज़रेंगे। फिर आखिरकार आप इकरार करेंगे कि अल्लाह तआला का इन्सानी सलतनतों पर इख्तियार है, वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्रर करता है। 26 लेकिन खाब में यह भी कहा गया कि दरख्त के मुह को जड़ों समेत ज़मीन में छोड़ा जाए। इसका मतलब है कि आपकी सलतनत ताहम कायम रहेगी। जब आप एतराफ़ करेंगे कि तमाम इख्तियार आसमान के हाथ में है तो आपको सलतनत वापस मिलेगी। 27 ए बादशाह, अब मेहरबानी से मेरा मशवरा कबूल फ़रमाएँ। इन्साफ़ करके और मज़लूमों पर करम फ़रमाकर अपने गुनाहों को दूर करें। शायद ऐसा करने से आपकी ख़ुशहाली कायम रहे।”

28 दानियाल की हर बात नबुकदनञ्जर को पेश आई। 29 बारह महीने के बाद बादशाह बाबल में अपने शाही महल की छत पर टहल रहा था। 30 तब वह कहने लगा, “लो, यह अज़ीम शहर देखो जो मैंने अपनी रिहाइश के लिए तामीर किया है! यह सब कुछ मैंने अपनी ही ज़बरदस्त कुव्वत से बना लिया है ताकि मेरी शानो-शौकत मज़ीद बढ़ती जाए।”

31 बादशाह यह बात बोल ही रहा था कि आसमान से आवाज़ सुनाई दी, “ऐ नबूकदनज़्जर बादशाह, सुन! सलतनत तुझसे छीन ली गई है।” 32 तुझे इनसानी संगत से निकालकर भगाया जाएगा, और तू जंगली जानवरों के साथ रहकर बैल की तरह घास चरेगा। सात साल यों ही गुज़र जाएंगे। फिर आखिरकार तू इकरार करेगा कि अल्लाह तआला का इनसानी सलतनतों पर इख्तियार है, वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुकर्रर करता है।”

33 ज्योंही आवाज़ बंद हुई तो ऐसा ही हुआ। नबूकदनज़्जर को इनसानी संगत से निकालकर भगाया गया, और वह बैलों की तरह घास चरने लगा। उसका जिस्म आसमान की ओस से तर होता रहा। होते होते उसके बाल उकाब के परों जितने लंबे और उसके नाखून परिदे के चंगुल की मानिंद हुए। 34 लेकिन सात साल गुज़रने के बाद मैं, नबूकदनज़्जर अपनी आँखों को आसमान की तरफ उठाकर दुबारा होश में आया। तब मैंने अल्लाह तआला की तमजीद की, मैंने उस की हम्दो-सना की जो हमेशा तक जिंदा है। उस की हुक्मत अबदी है, उस की सलतनत नसल-दर-नसल कायम रहती है। 35 उस की निसबत दुनिया के तमाम बाशिदे सिफर के बराबर हैं। वह आसमानी फौज और दुनिया के बाशिदों के साथ जो जी चाहे करता है। उसे कुछ करने से कोई नहीं रोक सकता, कोई उससे जवाब तलब करके पूछ नहीं सकता, “तूने क्या किया?”

36 ज्योंही मैं दुबारा होश में आया तो मुझे पहली शाही इज़्जत और शानो-शौकत भी अज़ सरे-नौ हासिल हुई। मेरे मुरीर और शूरफा दुबारा मेरे सामने हाज़िर हुए, और मुझे दुबारा तख्त पर बिठाया गया। पहले की निसबत मेरी अज़मत में इज़ाफा हुआ।

37 अब मैं, नबूकदनज़्जर आसमान के बादशाह की हम्दो-सना करता हूँ। मैं उसी को जलाल देता हूँ, क्योंकि जो कुछ भी वह करे वह सहीह है। उस की तमाम राहें मुसिफाना हैं। जो मग़स्र होकर जिंदगी गुज़ारते हैं उन्हें वह पस्त करने के काबिल है।

## 5

### बेलशज्जर की जियाफत

1 एक दिन बेलशज्जर बादशाह अपने बड़ों के हजार अफ़राद के लिए जबरदस्त जियाफत करके उनके साथ मैं पीने लगा। 2 नशे में उसने हुक्म दिया, “सोने-चाँदी के जो प्याले मेरे बाप नबूकदनज़्जर ने यस्शालम में वाके अल्लाह के घर से छीन लिए थे वह मेरे पास ले आओ ताकि मैं अपने बड़ों, बीवियों और दाशताओं के साथ उनसे मैं पी लूँ।” 3 चुनौचे यस्शालम में वाके अल्लाह के घर से लूटे हुए प्याले उसके पाद लाए गए, और सब उनसे मैं पी कर 4 सोने, चाँदी, पीतल, लोहे, लकड़ी और पत्थर के अपने बुतों की तमजीद करने लगे।

5 उसी लमहे शाही महल के हाल में इनसानी हाथ की उँगलियाँ नज़र आईं जो शमादान के मुकाबिल दीवार के पलस्तर पर कुछ लिखने लगीं। जब बादशाह ने हाथ को लिखते हुए देखा 6 तो उसका चेहरा डर के मारे फ़क हो गया। उस की कमर के जोड़ ढीले पड़ गए, और उसके घटने एक दूसरे से टकराने लगे।

7 वह जोर से चीखा, “जादूगरों, नुज़्मियों और ग़ैबदानों को बुलाओ!” बाबल के दानिशमंद पहुँचे तो वह बोला, “जो भी लिखे हुए अलफाज़ पढ़कर मुझे उनका मतलब बता सके उसे अरगवानी रंग का लिबास पहनाया जाएगा। उसके गले में सोने की जंजीर पहनाई जाएगी, और हुक्मत में सिर्फ़ दो लोग उससे बड़े होंगे।”

8 बादशाह के दानिशमंद करीब आए, लेकिन न वह लिखे हुए अलफाज़ पढ़ सके, न उनका मतलब बादशाह को बता सके। 9 तब बेलशज्जर बादशाह निहायत परेशान हुआ, और उसका चेहरा मज़ीद मौँद पड़ गया। उसके शूरफा भी सख्त परेशान हो गए।

10 बादशाह और शूरफा की बातें मलिका तक पहुँच गईं तो वह जियाफत के हाल में दाखिल हुई। कहने लगी, “बादशाह अबद तक जीते रहें! घबराये या मौँद पड़ने की क्या ज़रूरत है? 11 आपकी बादशाही में एक आदमी है जिसमें मुक़द्दस देवताओं की रूह है। आपके बाप के दौरे-हुक्मत में साबित हुआ कि वह देवताओं की-सी बसीरत, फ़हम और हिकमत का मालिक है। आपके बाप नबूकदनज़्जर बादशाह ने उसे किस्मत का हाल बतानेवालों, जादूगरों, नुज़्मियों और ग़ैबदानों पर मुकर्रर किया था, 12 क्योंकि उसमें गैरमामूली जिहानत, इल्म और समझ पाई जाती है। वह खाबों की ताबीर करने और पहेलियों और पेचीदा मसले हल करने में माहिर साबित हुआ है। आदमी का नाम दानियाल है, जो बादशाह ने उसका नाम बेलतशज्जर रखा था। मेरा मशवरा है कि आप उसे बुलाएँ, क्योंकि वह आपको ज़रूर लिखे हुए अलफाज़ का मतलब बताएगा।”

13 यह सुनकर बादशाह ने दानियाल को फ़ौरन बुला लिया। जब पहुँचा तो बादशाह उससे मुखातिब हुआ, “क्या तुम वह दानियाल हो जिसे मेरे बाप नबूकदनज़्जर बादशाह यहदाह के जिलावतनों के साथ यहदाह से यहाँ लाए थे? 14 सुना है कि देवताओं की रूह तुममें है, कि तुम बसीरत, फ़हम और गैरमामूली हिकमत के मालिक हो। 15 दानिशमंदों और नुज़्मियों को मेरे सामने लाया गया है ताकि दीवार पर लिखे हुए अलफाज़ पढ़कर मुझे उनका मतलब बताएँ, लेकिन वह नाकाम रहे हैं।



16 अब मुझे बताया गया कि तुम खाबों की ताबीर और पेचीदा मसलों को हल करने में माहिर हो। अगर तुम यह अलफाज़ पढ़कर मुझे इनका मतलब बता सको तो तुम्हें अरगवानी रंग का लिबास पहनाया जाएगा। तुम्हारे गले में सोने की जंजीर पहनाई जाएगी, और हुकूमत में सिर्फ़ दो लोग तुमसे बड़े होंगे।”

17 दानियाल ने जवाब दिया, “मुझे अज्ञ न दें, अपने तोहफे किसी और को दीजिए। मैं बादशाह को यह अलफाज़ और इनका मतलब वैसे ही बता दूँगा। 18 ऐ बादशाह, जो सलतनत, अज़मत और शानो-शौकत आपके बाप नबूकदनज़र को हासिल थी वह अल्लाह तआला से मिली थी। 19 उसी ने उन्हें वह अज़मत अता की थी जिसके बाइस तमाम कौमों, उम्मतों और ज़बानों के अफ़राद उनसे डरते और उनके सामने काँपते थे। जिसे वह मार डालना चाहते थे उसे मारा गया, जिसे वह ज़िंदा छोड़ना चाहते थे वह ज़िंदा रहा। जिसे वह सरफ़राज़ करना चाहते थे वह सरफ़राज़ हुआ और जिसे पस्त करना चाहते थे वह पस्त हुआ। 20 लेकिन वह फूलकर हद से ज्यादा मग़र्र हो गए, इसलिए उन्हें तख़्त से उतारा गया, और वह अपनी क़दरो-मनज़िलत खो बैठे। 21 उन्हें इनसानी संगत से निकालकर भगाया गया, और उनका दिल जानवर के दिल की मानिंद बन गया। उनका रहन-सहन जंगली गधों के साथ था, और वह बैलों की तरह घास चरने लगे। उनका जिस्म आसमान की ओस से तर रहता था। यह हालत उस वक़्त तक रही जब तक कि उन्होंने इकरार न किया कि अल्लाह तआला का इनसानी सलतनतों पर इख़्तियार है, वह अपनी ही मरज़ी से लोगों को उन पर मुक़र्र करता है।

22 ऐ बेलशज़र बादशाह, गो आप उनके बेटे हैं और इस बात का इल्म रखते हैं तो भी आप फ़रोतन न रहे 23 बल्कि आसमान के मालिक के खिलाफ़ उठ खड़े हो गए हैं। आपने हुक़्म दिया कि उसके घर के प्याले आपके हज़ूर लाए जाएँ, और आपने अपने बड़ों, बीवियों और दाशताओं के साथ उन्हें मै पीने के लिए इस्तेमाल किया। साथ साथ आपने अपने देवताओं की तमज़ीद की गो वह चाँदी, सोने, पीतल, लोहे, लकड़ी और पत्थर के बतु ही हैं। न वह देख सकते, न सुन या समझ सकते हैं। लेकिन जिस ख़ुदा के हाथ में आपकी जान और आपकी तमाम राहें हैं उसका एहतमाम आपने नहीं किया।

24 इसी लिए उसने हाथ भेजकर दीवार पर यह अलफाज़ लिखवा दिए। 25 और लिखा यह है, ‘मिने मिने तकेल्लो-फ़रसीन।’

26 ‘मिने’ का मतलब ‘गिना हुआ’ है। यानी आपकी सलतनत के दिन गिने हुए हैं, अल्लाह ने उन्हें इख़िताम तक पहुँचाया है।

27 ‘तकेल्ल’ का मतलब ‘तोला हुआ’ है। यानी अल्लाह ने आपको तोलकर मालूम किया है कि आपका वज़न कम है।

28 ‘फ़रसीन’ का मतलब ‘तक़सीम हुआ’ है। यानी आपकी बादशाही को मादियों और फ़ारसियों में तक़सीम किया जाएगा।”

29 दानियाल ख़ामोश हुआ तो बेलशज़र ने हुक़्म दिया कि उसे अरगवानी रंग का लिबास पहनाया जाए और उसके गले में सोने की जंजीर पहनाई जाए। साथ साथ एलान किया गया कि अब से हुक़ूमत में सिर्फ़ दो आदमी दानियाल से बड़े हैं।

30 उसी रात शाहे-बाबल बेलशज़र को क़त्ल किया गया, 31 और दारा मादी तख़्त पर बैठ गया। उस की उम्र 62 साल थी।

## 6

### दानियाल शेरबबर की माँद में

1 दारा ने सलतनत के तमाम सबों पर 120 सूबेदार मुतैयिन करने का फ़ैसला किया। 2 उन पर तीन वज़ीर मुक़र्र थे जिनमें से एक दानियाल था। गवर्नर उनके सामने जवाबदेह थे ताकि बादशाह को नुक़सान न पहुँचे। 3 जल्द ही पता चला कि दानियाल दूसरे वज़ीरों और सूबेदारों पर सबक़त रखता था, क्योंकि वह गैरमातली ज़िहानत का मालिक था। नतीजतन बादशाह ने उसे पूरी सलतनत पर मुक़र्र करने का इरादा किया। 4 जब दीगर वज़ीरों और सूबेदारों को यह बात मालूम हुई तो वह दानियाल पर इलज़ाम लगाने का बहाना ढूँढ़ने लगे। लेकिन वह अपनी जिम्मादारियों को निभाने में इतना काबिले-एतमाद था कि वह नाकाम रहे। क्योंकि न वह रिश्तख़ोर था, न किसी काम में सुस्त।

5 आख़िरकार वह आदमी आपस में कहने लगे, “इस तरीक़े से हमें दानियाल पर इलज़ाम लगाने का मौक़ा नहीं मिलेगा। लेकिन एक बात है जो इलज़ाम का बाइस बन सकती है यानी उसके ख़ुदा की शरीअत।” 6 तब वह ग़ुरोह की सूत में बादशाह के सामने हाज़िर हुए और कहने लगे, “दारा बादशाह अबद तक जीते रहें! 7 सलतनत के तमाम वज़ीर, गवर्नर, सूबेदार, मुशीर और मुन्तज़िम आपस में मशवरा करके मुतफ़िक़ हुए हैं कि अगले 30 दिन के दौरान सबको सिर्फ़ बादशाह से दुआ करनी चाहिए। बादशाह एक फ़रमान सादिर करें कि जो भी किसी और माबूद या इनसान से इल्तिजा करे उसे शेरों की माँद में फेंका जाएगा। ध्यान देना चाहिए कि सब ही इस पर अमल करें। 8 ऐ बादशाह, गुज़ारिश है कि आप यह फ़रमान ज़रूर सादिर करें बल्कि लिखकर उस की तसदीक़ भी करें ताकि उसे तबदील न किया जा सके। तब वह मादियों और फ़ारसियों के कवानीन का हिस्सा बनकर मनसूख़ नहीं किया जा सकेगा।”

9 दारा बादशाह मान गया। उसने फरमान लिखवाकर उस की तसदीक की।

10 जब दानियाल को मालूम हुआ कि फरमान सादिर हुआ है तो वह सीधा अपने घर में चला गया। छत पर एक कमरा था जिसकी खुली खिड़कियों का स्रख यस्शलम की तरफ था। इस कमरे में दानियाल रोज़ाना तीन बार अपने घुटने टेककर दुआ और अपने खुदा की सताइश करता था। अब भी उसने यह सिलसिला जारी रखा। 11 ज्योंही दानियाल अपने खुदा से दुआ और इल्लिजा कर रहा था तो उसके दुश्मनों ने गुरोह की सूरत में घर में घुसकर उसे यह करते हुए पाया।

12 तब वह बादशाह के पास गए और उसे शाही फरमान की याद दिलाई, “क्या आपने फरमान सादिर नहीं किया था कि अगले 30 दिन के दौरान सबको सिर्फ बादशाह से दुआ करनी है, और जो किसी और माबूद या इनसान से इल्लिजा करे उसे शेरों की माँद में फेंका जाएगा?” बादशाह ने जवाब दिया, “जी, यह फरमान कायम है बल्कि मादियों और फारसियों के कवानीन का हिस्सा है जो मनसूख नहीं किया जा सकता।” 13 उन्होंने कहा, “ऐ बादशाह, दानियाल जो यहदाह के जिलावतनों में से है न आपकी परवा करता, न उस फरमान की जिसकी आपने लिखकर तसदीक की। अभी तक वह रोज़ाना तीन बार अपने खुदा से दुआ करता है।”

14 यह सुनकर बादशाह को बड़ी दिक्कत महसूस हुई। पूरा दिन वह सोचता रहा कि मैं दानियाल को किस तरह बचाऊँ। सूरज के गुरूब होने तक वह उसे छुड़ाने के लिए कोशिशें रहा। 15 लेकिन आखिरकार वह आदमी गुरोह की सूरत में दूबारा बादशाह के हज़ूर आए और कहने लगे, “बादशाह को याद रहे कि मादियों और फारसियों के कवानीन के मुताबिक जो भी फरमान बादशाह सादिर करे उसे तबदील नहीं किया जा सकता।” 16 चुनौचे बादशाह ने हुकम दिया कि दानियाल को पकड़कर शेरों की माँद में फेंका जाए। ऐसा ही हुआ। बादशाह बोला, “ऐ दानियाल, जिस खुदा की इबादत तुम बिलानागा करते आए हो वह तुम्हें बचाए।” 17 फिर माँद के मुँह पर पत्थर रखा गया, और बादशाह ने अपनी मुहर और अपने बडों की मुहरें उस पर लगाई ताकि कोई भी उसे खोलकर दानियाल की मदद न करे।

18 इसके बाद बादशाह शाही महल में वापस चला गया और पूरी रात रोज़ा रखे हुए गुज़ारी। न कुछ उसका दिल बहलाने के लिए उसके पास लाया गया, न उसे नींद आई।

19 जब पौ फटने लगी तो वह उठकर शेरों की माँद के पास गया। 20 उसके करीब पहुँचकर बादशाह ने गमगीन आवाज़ से पुकारा, “ऐ जिंदा खुदा के बंदे दानियाल, क्या तुम्हारे खुदा जिसकी तुम बिलानागा इबादत करते रहे हो तुम्हें शेरों से बचा सका?” 21 दानियाल ने जवाब दिया, “बादशाह अबद तक जीते रहें! 22 मेरे खुदा ने अपने फरिशते को भेज दिया जिसने शेरों के मुँह को बंद किए रखा। उन्होंने मुझे कोई भी नुकसान न पहुँचाया, क्योंकि अल्लाह के सामने मैं बेकसूर हूँ। बादशाह सलामत के खिलाफ भी मुझसे जुर्म नहीं हुआ।”

23 यह सुनकर बादशाह आपे में न समाया। उसने दानियाल को माँद से निकालने का हुकम दिया। जब उसे खींचकर निकाला गया तो मालूम हुआ कि उसे कोई भी नुकसान नहीं पहुँचा। यों उसे अल्लाह पर भरोसा रखने का अज़ मिले। 24 लेकिन जिन आदमियों ने दानियाल पर इलज़ाम लगाया था उनका बुरा अंजाम हुआ। बादशाह के हुकम पर उन्हें उनके बाल-बच्चों समेत शेरों की माँद में फेंका गया। माँद के फर्श पर गिरने से पहले ही शेर उन पर झपट पड़े और उन्हें फाड़कर उनकी हड्डियों को चबा लिया।

25 फिर दारा बादशाह ने सलतनत की तमाम कौमों, उम्मतों और अहले-जबान को ज़ैल का पैगाम भेजा, “सबकी सलामती हो! 26 मेरा फरमान सुनो! लाज़िम है कि मेरी सलतनत की हर जगह लोग दानियाल के खुदा के सामने थरथराएँ और उसका ख़ौफ मानें। क्योंकि वह जिंदा खुदा और अबद तक कायम है। न कभी उस की बादशाही तबाह, न उस की हुकूमत खतम होगी। 27 वही बचाता और नजात देता है, वही आसमानो-ज़मीन पर इलाही निशान और मोजिजे दिखाता है। उसी ने दानियाल को शेरों के कब्जे से बचाया।”

28 चुनौचे दानियाल को दारा बादशाह और फारस के बादशाह खोरस के दौरे-हुकूमत में बहुत कामयाबी हासिल हुई।

## 7

दानियाल की पहली रोया : चार जानवर

1 शाहे-बाबल बेलशज़्ज़र की हुकूमत के पहले साल में दानियाल ने खाब में रोया देखी। जाग उठने पर उसने वह कुछ कलमबंद कर लिया जो खाब में देखा था। ज़ैल में इसका बयान है,

2 रात के वक्त मैं, दानियाल ने रोया में देखा कि आसमान की चारों हवाएँ जोर से बड़े समुंदर को मुतलातिम कर रही हैं।

3 फिर चार बड़े जानवर समुंदर से निकल आए जो एक दूसरे से मुख्तलिफ थे।

4 पहला जानवर शेरबबर जैसा था, लेकिन उसके उकाब के पर थे। मेरे देखते ही उसके परों को नेच लिया गया और उसे उठाकर इनसान की तरह पिछले दो पैरों पर खड़ा किया गया। उसे इनसान का दिल भी मिल गया।

5 दूसरा जानवर रीछ जैसा था। उसका एक पहलू खड़ा किया गया था, और वह अपने दाँतों में तीन पसलियाँ पकड़े हुए था। उसे बताया गया, “उठ, जी भरकर गोश्त खा ले!”

6 फिर मैंने तीसरे जानवर को देखा। वह चीते जैसा था, लेकिन उसके चार सर थे। उसे हुकूमत करने का इख्तियार दिया गया।

7 इसके बाद रात की रोया में एक चौथा जानवर नज़र आया जो डरावना, हौलनाक और निहायत ही ताकतवर था। अपने लोहे के बड़े बड़े दाँतों से वह सब कुछ खाता और चूर चूर करता था। जो कुछ बच जाता उसे वह पाँवों तले रौंद देता था। यह जानवर दीगर जानवरों से मुख्तलिफ़ था। उसके दस सींग थे। 8 मैं सींगों पर गौर ही कर रहा था कि एक और छोटा-सा सींग उनके दरमियान से निकल आया। पहले दस सींगों में से तीन को नोच लिया गया ताकि उसे जगह मिल जाए। छोटे सींग पर इनसानी आँखें थीं, और उसका मुँह बड़ी बड़ी बातें करता था।

9 मैं देख ही रहा था कि तख़्त लगाए गए और कद्दीमूल-ऐयाम बैठ गया। उसका लिबास बर्फ़ जैसा सफ़ेद और उसके बाल खालिस उन की मानिंद थे। जिस तख़्त पर वह बैठा था वह आग की तरह भड़क रहा था, और उस पर शोलाज़न पहिये लगे थे। 10 उसके सामने से आग की नहर बहकर निकल रही थी। बेशुमार हस्तियाँ उस की खिदमत के लिए खड़ी थीं। लोग अदालत के लिए बैठ गए, और किताबें खोली गईं।

11 मैंने गौर किया कि छोटा सींग बड़ी बड़ी बातें कर रहा है। मैं देखता रहा तो चौथे जानवर को कल्ल किया गया। उसका जिस्म तबाह हुआ और भड़कती आग में फेंका गया। 12 दीगर तीन जानवरों की हुकूमत उनसे छीन ली गई, लेकिन उन्हें कुछ देर के लिए ज़िंदा रहने की इजाज़त दी गई।

13 रात की रोया में मैंने यह भी देखा कि आसमान के बादलों के साथ साथ कोई आ रहा है जो इन्ने-आदम-सा लग रहा है। जब कद्दीमूल-ऐयाम के करीब पहुँचा तो उसके हज़ूर लाया गया। 14 उसे सलतनत, इज़्ज़त और बादशाही दी गई, और हर क्रौम, उम्मत और ज़बान के अफ़राद ने उस की परस्तिश की। उस की हुकूमत अबदी है और कभी ख़तम नहीं होगी। उस की बादशाही कभी तबाह नहीं होगी।

15 मैं, दानियाल सख़्त परेशान हुआ, क्योंकि रोया से मुझ पर दहशत छा गई थी। 16 इसलिए मैंने वहाँ खड़े किसी के पास जाकर उससे गुज़ारिश की कि वह मुझे इन तमाम बातों का मतलब बताए। उसने मुझे इनका मतलब बताया, 17 “चार बड़े जानवर चार सलतनतें हैं जो ज़मीन से निकलकर कायम हो जाएँगी। 18 लेकिन अल्लाह तआला के मुक़द्दसीन को हकीक़ी बादशाही मिलेगी, वह बादशाही जो अबद तक हासिल रहेगी।”

19 मैं चौथे जानवर के बारे में मज़ीद जानना चाहता था, उस जानवर के बारे में जो दीगर जानवरों से इतना मुख्तलिफ़ और इतना हौलनाक था। क्योंकि उसके दाँत लोहे और पंजे पीतल के थे, और वह सब कुछ खाता और चूर चूर करता था। जो बच जाता उसे वह पाँवों तले रौंद देता था। 20 मैं उसके सर के दस सींगों और उनमें से निकले हुए छोटे सींग के बारे में भी मज़ीद जानना चाहता था। क्योंकि छोटे सींग के निकलने पर दस सींगों में से तीन निकलकर गिर गए, और यह सींग बढ़कर साथवाले सींगों से कहीं बड़ा नज़र आया। उस की आँखें थीं, और उसका मुँह बड़ी बड़ी बातें करता था। 21 रोया में मैंने देखा कि छोटे सींग ने मुक़द्दसीन से जंग करके उन्हें शिकस्त दी। 22 लेकिन फिर कद्दीमूल-ऐयाम आ पहुँचा और अल्लाह तआला के मुक़द्दसीन के लिए इनसाफ़ कायम किया। फिर वह वक़्त आया जब मुक़द्दसीन को बादशाही हासिल हुई।

23 जिससे मैंने रोया का मतलब पूछा था उसने कहा, “चौथे जानवर से मुराद ज़मीन पर एक चौथी बादशाही है जो दीगर तमाम बादशाहियों से मुख्तलिफ़ होगी। वह तमाम दुनिया को खा जाएगी, उसे रौंदकर चूर चूर कर देगी। 24 दस सींगों से मुराद दस बादशाह हैं जो इस बादशाही से निकल आएँगे। उनके बाद एक और बादशाह आएगा जो गुज़रे बादशाहों से मुख्तलिफ़ होगा और तीन बादशाहों को खाक में मिला देगा। 25 वह अल्लाह तआला के खिलाफ़ कुफ़र बकेगा, और मुक़द्दसीन उसके तहत पिसते रहेंगे, यहाँ तक कि वह ईदों के मुकर्रर औकात और शरीअत को तबदील करने की कोशिश करेगा। मुक़द्दसीन को एक अरसे, दो अरसों और आधे अरसे के लिए उसके हवाले किया जाएगा।

26 लेकिन फिर लोग उस की अदालत के लिए बैठ जाएंगे। उस की हुकूमत उससे छीन ली जाएगी, और वह मुकम्मल तौर पर तबाह हो जाएगी। 27 तब आसमान तले की तमाम सलतनतों की बादशाहत, सलतनत और अज़मत अल्लाह तआला की मुक़द्दसीन के हवाले कर दी जाएगी। अल्लाह तआला की बादशाही अबदी होगी, और तमाम हुक़मरान उस की खिदमत करके उसके ताबे रहेंगे।”

28 मुझे मज़ीद कुछ नहीं बताया गया। मैं, दानियाल इन बातों से बहुत परेशान हुआ, और मेरा चेहरा माँद पड़ गया, लेकिन मैंने मामला अपने दिल में महफूज़ रखा।

## 8

दानियाल की दूसरी रोया : मेंढा और बकरा

1 बेलशज्जर बादशाह के दौरे-हुकूमत के तीसरे साल में मैं, दानियाल ने एक और रोया देखी। 2 रोया में मैं सब्बा ऐलाम के किलाबंद शहर सोसन की नहर उलाई के किनारे पर खड़ा था। 3 जब मैंने अपनी निगाह उठाई तो किनारे पर मेरे सामने ही एक मेंढा खड़ा था। उसके दो बड़े सींग थे जिनमें से एक ज्यादा बड़ा था। लेकिन वह दूसरे के बाद ही बड़ा हो गया था। 4 मेरी नजरों के सामने मेंढा मगरिब, शिमाल और जुनूब की तरफ सींग मारने लगा। न कोई जानवर उसका मुकाबला कर सका, न कोई उसके काबू से बचा सका। जो जी चाहे करता था और होते होते बहुत बड़ा हो गया।

5 मैं उस पर गौर ही कर रहा था कि अचानक मगरिब से आते हुए एक बकरा दिखाई दिया। उस की आँखों के दरमियान ज़बरदस्त सींग था, और वह ज़मीन को छुए बगैर चल रहा था। पूरी दुनिया को उभूर करके 6 वह दो सींगोंवाले उस मेंढे के पास पहुँच गया जो मैंने नहर के किनारे खड़ा देखा था। बड़े तैश में आकर वह उस पर टूट पड़ा। 7 मैंने देखा कि वह मेंढे के पहलू से टकरा गया। बड़े गुस्से में उसने उसे यों मारा कि मेंढे के दोनों सींग टुकड़े टुकड़े हो गए। इस बेबस हालत में मेंढा उसका मुकाबला न कर सका। बकरे ने उसे ज़मीन पर पटखकर पाँवों तले कुचल दिया। कोई नहीं था जो मेंढे को बकरे के काबू से बचाए।

8 बकरा निहायत ताकतवर हो गया। लेकिन ताकत के उरूज पर ही उसका बड़ा सींग टूट गया, और उस की जगह मज़ीद चार ज़बरदस्त सींग निकल आए जिनका सख आसमान की चार सिम्तों की तरफ था। 9 उनके एक सींग में से एक और सींग निकल आया जो इन्दिदा में छोटा था। लेकिन वह जुनूब, मशरिफ और ख़बसूरत मुल्क इसराईल की तरफ बढ़ते बढ़ते बहुत ताकतवर हो गया। 10 फिर वह आसमानी फौज तक बढ़ गया। वहाँ उसने कुछ फौजियों और सितारों को ज़मीन पर फेंककर पाँवों तले कुचल दिया। 11 वह बढ़ते बढ़ते आसमानी फौज के कर्माँडर तक भी पहुँच गया और उसे उन कुरबानियों से महरूम कर दिया जो उसे रोज़ाना पेश की जाती थीं। साथ साथ सींग ने उसके मकदिस के मक़ाम को तबाह कर दिया। 12 उस की फौज से रोज़ाना की कुरबानियों की बेहरमती हुई, और सींग ने सच्चाई को ज़मीन पर पटख दिया। जो कुछ भी उसने किया उसमें वह कामयाब रहा।

13 फिर मैंने दो मुक़द्दस हस्तियों को आपस में बात करते हुए सुना। एक ने पूछा, “इस रोया में पेश किए गए हालात कब तक कायम रहेंगे, यानी जो कुछ रोज़ाना की कुरबानियों के साथ हो रहा है, यह तबाहक़ुन बेहरमती और यह बात कि मकदिस को पामाल किया जा रहा है?” 14 दूसरे ने जवाब में मुझे बताया, “हालात 2,300 शामों और सुबहों तक यों ही रहेंगे। इसके बाद मकदिस को नए सिरे से मखसूसो-मुक़द्दस किया जाएगा।”

15 मैं देखे हुए वाक़ियात को समझने की कोशिश कर ही रहा था कि कोई मेरे सामने खड़ा हुआ जो मर्द जैसा लग रहा था। 16 साथ साथ मैंने नहर उलाई की तरफ से किसी शख्स की आवाज़ सुनी जिसने कहा, “ए ज़िबराईल, इस आदमी को रोया का मतलब बता दे।” 17 फ़रिशता मेरे करीब आया तो मैं सख्त घबराकर मुँह के बल गिर गया। लेकिन वह बोला, “ए आदमज़ाद, जान ले कि इस रोया का ताल्लुक आखिरी ज़माने से है।”

18 जब वह मुझे बात कर रहा था तो मैं मदहोश हालत में मुँह के बल पड़ा रहा। अब फ़रिशते ने मुझे छूकर पाँवों पर खड़ा किया। 19 वह बोला, “मैं तुझे समझा देता हूँ कि उस आखिरी ज़माने में क्या कुछ पेश आएगा जब अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा। क्योंकि रोया का ताल्लुक आखिरी ज़माने से है। 20 दो सींगों के जिस मेंढे को तुने देखा वह मादी और फ़ारस के बादशाहों की नुमाईदगी करता है। 21 लंबे बालों का बकरा यूनान का बादशाह है। उस की आँखों के दरमियान लगा बड़ा सींग यूनानी शहनशाही का पहला बादशाह है। 22 तुने देखा कि यह सींग टूट गया और उस की जगह चार सींग निकल आए। इसका मतलब है कि पहली बादशाही से चार और निकल आएँगी। लेकिन चारों की ताकत पहली की निसबत कम होगी। 23 उनकी हुकूमत के आखिरी ऐयाम में बेवफ़ाओं की बदकिरदारी उरूज तक पहुँच गई होगी।

उस वक़्त एक गुस्ताख और साज़िश का माहिर बादशाह तख़्त पर बैठेगा। 24 वह बहुत ताकतवर हो जाएगा, लेकिन यह उस की अपनी ताकत नहीं होगी। वह हैरतअंगेज़ बरबादी का बाइस बनेगा, और जो कुछ भी करेगा उसमें कामयाब होगा। वह जोरावरों और मुक़द्दस क़ौम को तबाह करेगा। 25 अपनी समझ और फ़रेब के ज़रीए वह कामयाब रहेगा। तब वह मुतकब्बिर हो जाएगा। जब लोग अपने आपको महफूज़ समझेंगे तो वह उन्हें मौत के घाट उतारेगा। आखिरकार वह हुक़मरानों के हुक़मरान के खिलाफ भी उठेगा। लेकिन वह पाश पाश हो जाएगा, अलबत्ता इनसामी हाथ से नहीं।

26 ऐ दानियाल, शामों और सुबहों के बारे में जो रोया तुझ पर जाहिर हुई वह सच्ची है। लेकिन फ़िलहाल उसे पोशीदा रख, क्योंकि यह वाक़ियात अभी पेश नहीं आएँगे बल्कि बहुत दिनों के गुज़र जाने के बाद ही।”

27 इसके बाद मैं, दानियाल निढाल होकर कई दिनों तक बीमार रहा। फिर मैं उठा और बादशाह की खिदमत में दुबारा अपने फरायज़ अदा करने लगा। मैं रोया से सख्त परेशान था, और कोई नहीं था जो मुझे उसका मतलब बता सके।

## 9

दानियाल अपनी कौम की शफ़ाअत करता है

1 दारा बिन अखस्वेस्स बाबल के तख़्त पर बैठ गया था। इस मादी बादशाह 2 की हुक़मत के पहले साल में मैं, दानियाल ने पाक नविशतों की तहक़ीक़ की। मैंने खासकर उस पर गौर किया जो रब ने यरमियाह नबी की मारिफ़त फ़रमाया था। उसके मुताबिक़ यरूशालम की तबाहशुदा हालत 70 साल तक कायम रहेगी। 3 चुनौचे मैंने रब अपने खुदा की तरफ़ रूजू किया ताकि अपनी दुआ और इल्तिजाओं से उस की मरज़ी दरियाफ़्त करूँ। साथ साथ मैंने रोज़ा रखा, टाट का लिबास ओढ़ लिया और अपने सर पर राख डाल ली। 4 मैंने रब अपने खुदा से दुआ करके इकरार किया,

“ए रब, तू कितना अज़ीम और महीब खुदा है! जो भी तुझे प्यार करता और तेरे अहकाम के ताबे रहता है उसके साथ तू अपना अहद कायम रखता और उस पर मेहरबानी करता है। 5 लेकिन हमने गुनाह और बदी की है। हम बेदीन और बागी होकर तेरे अहकाम और हिदायात से भटक गए हैं। 6 हमने नबियों की नहीं सुनी, हालाँकि तेरे खादिम तेरा नाम लेकर हमारे बादशाहों, बुज़ुर्गों, बापदादा बल्कि मुल्क के तमाम बाशिंदों से मुख़ातिब हुए। 7 ए रब, तू हक़-बजानिब है जबकि इस दिन हम सब शर्मसार हैं, खाह यहूदाह, यरूशालम या इसराईल के हों, खाह करीब या उन तमाम दूर-दराज़ ममालिक में रहते हों जहाँ तूने हमें हमारी बेवफ़ाई के सबब से मुंतशिर कर दिया है। क्योंकि हम तेरे ही साथ बेवफ़ा रहे हैं। 8 ए रब, हम अपने बादशाहों, बुज़ुर्गों और बापदादा समेत बहुत शर्मसार हैं, क्योंकि हमने तेरा ही गुनाह किया है।

9 लेकिन रब हमारा खुदा रहीम है और ख़ुशी से मुआफ़ करता है, गो हम उससे सरकश हुए हैं। 10 न हम रब अपने खुदा के ताबे रहे, न उसके उन अहकाम के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारी जो उसने हमें अपने खादिमों यानी नबियों की मारिफ़त दिए थे। 11 तमाम इसराईल तेरी शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी करके सहीह राह से भटक गया है, कोई तेरी सुनने के लिए तैयार नहीं था।

अल्लाह के खादिम मूसा ने शरीअत में कसम खाकर लानतें भेजी थीं, और अब यह लानतें हम पर नाज़िल हुई हैं, इसलिए कि हमने तेरा गुनाह किया। 12 जो कुछ तूने हमारे और हमारे हुक्मरानों के ख़िलाफ़ फ़रमाया था वह पूरा हुआ, और हम पर बड़ी आफ़त आई। आसमान तले कहीं भी ऐसी मुसीबत नहीं आई जिस तरह यरूशालम को पेश आई है। 13 मूसा की शरीअत में मज़कूर हर वह लानत हम पर नाज़िल हुई जो नाफ़रमानों पर भेजी गई है। तो भी न हमने अपने गुनाहों को छोड़ा, न तेरी सच्चाई पर ध्यान दिया, हालाँकि इससे हम रब अपने खुदा का ग़ज़ब ठंडा कर सकते थे। 14 इसी लिए रब हम पर आफ़त लाने से न झिजका। क्योंकि जो कुछ भी रब हमारा खुदा करता है उसमें वह हक़-बजानिब होता है। लेकिन हमने उस की न सुनी।

15 ए रब हमारे खुदा, तू बड़ी क़ुदरत का इज़हार करके अपनी कौम को मिसर से निकाल लाया। यों तेरे नाम को वह इज़त-जलाल मिला जो आज तक कायम रहा है। इसके बावजूद हमने गुनाह किया, हमसे बेदीन हरकतें सरज़द हुई हैं। 16 ए रब, तू अपने मुंसिफ़ाना कामों में वफ़ादार रहा है! अब भी इसका लिहाज़ कर और अपने सख्त ग़ज़ब को अपने शहर और मुक़द्दस पहाड़ यरूशालम से दूर कर! यरूशालम और तेरी कौम गिर्दों-नवाह की कौमों के लिए मज़ाक़ का निशाना बन गई है, गो हम मानते हैं कि यह हमारे गुनाहों और हमारे बापदादा की ख़ताओं की वजह से हो रहा है।

17 ए हमारे खुदा, अब अपने खादिम की दुआओं और इल्तिजाओं को सुन! ए रब, अपनी ही खातिर अपने तबाहशुदा मक़दिस पर अपने चेहरे का मेहरबान नूर चमका। 18 ए मेरे खुदा, कान लगाकर मेरी सुन! अपनी आँखें खोल! उस शहर के खंडहरत पर नज़र कर जिस पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है। हम इसलिए तुझसे इल्तिजाएँ नहीं कर रहे कि हम रास्तबाज़ हैं बल्कि इसलिए कि तू निहायत मेहरबान है। 19 ए रब, हमारी सुन! ए रब, हमें मुआफ़ कर! ए मेरे खुदा, अपनी खातिर देर न कर, क्योंकि तेरे शहर और कौम पर तेरे ही नाम का ठप्पा लगा है।”

70 हफ़्तों का भेद

20 यों मैं दुआ करता और अपने और अपनी कौम इसराईल के गुनाहों का इकरार करता गया। मैं खासकर अपने खुदा के मुक़द्दस पहाड़ यरूशालम के लिए रब अपने खुदा के हज़ूर फ़रियाद कर रहा था।

21 मैं दुआ कर ही रहा था कि जिबराईल जिसे मैंने दूसरी रोया में देखा था मेरे पास आ पहुँचा। रब के घर में शाम की क़ुरबानी पेश करने का वक़्त था। मैं बहुत ही थक गया था। 22 उसने मुझे समझाकर कहा, “ए दानियाल, अब मैं तुझे समझ और बसीरत देने के लिए आया हूँ। 23 ज्योंही तू दुआ करने लगा तो अल्लाह ने जवाब दिया, क्योंकि तू उस की नज़र में

गिराँकदर है। मैं तुझे यह जवाब सुनाने आया हूँ। अब ध्यान से रोया को समझ ले! 24 तेरी कौम और तेरे मुकद्दस शहर के लिए 70 हफ्ते मुकर्रर किए गए हैं ताकि उनमें जरायम और गुनाहों का सिलसिला खत्म किया जाए, कुस्र का कफफारा दिया जाए, अबदी रास्ती कायम की जाए, रोया और पेशगोई की तसदीक की जाए और मुकद्दसतरिन जगह को मसह करके मखसूसो-मुकद्दस किया जाए।

25 अब जान ले और समझ ले कि यस्शलम को दुबारा तामीर करने का हुकम दिया जाएगा, लेकिन मज्जीद सात हफ्ते गुजरेगे, फिर ही अल्लाह एक हुक्मरान को इस काम के लिए चुनकर मसह करेगा। तब शहर को 62 हफ्तों के अंदर चौकों और खंदकों समेत नए सिरे से तामीर किया जाएगा, गो इस दौरान वह काफी मुसीबत से दोचार होगा। 26 इन 62 हफ्तों के बाद अल्लाह के मसह किए गए बंदे को कत्ल किया जाएगा, और उसके पास कुछ भी नहीं होगा। उस वक्त एक और हुक्मरान की कौम आकर शहर और मकदिस को तबाह करेगी। इख्तिताम सैलाब की सूरत में आएगा, और आखिर तक जंग जारी रहेगी, ऐसी तबाही होगी जिसका फ़ैसला हो चुका है। 27 एक हफ्ते तक यह हुक्मरान मुतअद्दिद लोगों को एक अहद के तहत रहने पर मजबूर करेगा। इस हफ्ते के बीच में वह जबह और गल्ला की कुरबानियों का इंतज़ाम बंद करेगा और मकदिस के एक तरफ वह कुछ खड़ा करेगा जो बेहमती और तबाही का बाइस है। लेकिन तबाह करनेवाले का ख़ातमा भी मुकर्रर किया गया है, और आखिरकार वह भी तबाह हो जाएगा।”

## 10

### दानियाल की आखिरी रोया

1 फ़ारस के बादशाह खोरस की हुकमत के तीसरे साल में बेलतशज्जर यानी दानियाल पर एक बात जाहिर हुई जो यकीनी है और जिसका ताल्लुक एक बड़ी मुसीबत से है। उसे रोया में इस पैगाम की समझ हासिल हुई।

2 उन दिनों में मैं, दानियाल तीन पूरे हफ्ते मातम कर रहा था। 3 न मैंने उम्दा खाना खाया, न गोश्त या मैं मेरे होंटों तक पहुँची। तीन पूरे हफ्ते मैंने हर खुशबूदार तेल से परहेज किया। 4 पहले महीने के 24वें दिन \* मैं बड़े दरिया दिजला के किनारे पर खड़ा था। 5 मैंने निगाह उठाई तो क्या देखा कि मैं मेरे सामने कतान से मुत्नबस आदमी खड़ा है जिसकी कमर में खालिस सोने का पटका बाँधा हुआ है। 6 उसका जिस्म पुरखराज † जैसा था, उसका चेहरा आसमानी बिजली की तरह चमक रहा था, और उस की आँखें भडकती मशालों की मानिंद थीं। उसके बाजू और पाँव पालिश किए हुए पीतल की तरह दमक रहे थे। बोलते वक्त यों लग रहा था कि बड़ा हुजूम शोर मचा रहा है।

7 सिर्फ मैं, दानियाल ने यह रोया देखी। मेरे साथियों ने उसे न देखा। तो भी अचानक उन पर इतनी दहशत तारी हुई कि वह भागकर छुप गए। 8 चुन्चेंचें मैं अकेला ही रह गया। लेकिन यह अज़ीम रोया देखकर मेरी सारी ताकत जाती रही। मेरे चेहरे का रंग मॉद पड़ गया और मैं बेबस हुआ। 9 फिर वह बोलने लगा। उसे सुनते ही मैं मुँह के बल गिरकर मदहोश हालत में ज़मीन पर पड़ा रहा। 10 तब एक हाथ ने मुझे छूकर हिलाया। उस की मदद से मैं अपने हाथों और घुटनों के बल हो सका।

11 वह आदमी बोला, “ऐ दानियाल, तू अल्लाह के नजदीक बहुत गिराँकदर है! जो बातें मैं तुझसे करूँगा उन पर गौर कर। खड़ा हो जा, क्योंकि इस वक्त मुझे तेरे ही पास भेजा गया है।” तब मैं थरथरते हुए खड़ा हो गया। 12 उसने अपनी बात जारी रखी, “ऐ दानियाल, मत डरना! जब से तूने समझ हासिल करने और अपने खुदा के सामने झुकने का पूरा इरादा कर रखा है, उसी दिन से तेरी सुनी गई है। मैं तेरी दुआओं के जवाब में आ गया हूँ। 13 लेकिन फ़ारसी बादशाही का सरदार 21 दिन तक मेरे रास्ते में खड़ा रहा। फिर मीकाएल जो अल्लाह के सरदार फ़रिशतों में से एक है मेरी मदद करने आया, और मेरी जान फ़ारसी बादशाही के उस सरदार के साथ लड़ने से छूट गई। 14 मैं तुझे वह कुछ सुनाने को आया हूँ जो आखिरी दिनों में तेरी कौम को पेश आएगा। क्योंकि रोया का ताल्लुक आनेवाले वक्त से है।”

15 जब वह मेरे साथ यह बातें कर रहा था तो मैं खामोशी से नीचे ज़मीन की तरफ देखता रहा। 16 फिर जो आदमी-सा लग रहा था उसने मेरे होंटों को छू दिया, और मैं मुँह खोलकर बोलने लगा। मैंने अपने सामने खड़े फ़रिशते से कहा, “ऐ मेरे आका, यह रोया देखकर मैं दर्द-जहम में मुस्तला औरत की तरह पेचो-ताब खाने लगा हूँ। मेरी ताकत जाती रही है। 17 ऐ मेरे आका, आपका खादिम किस तरह आपसे बात कर सकता है? मेरी ताकत तो जवाब दे गई है, सौंस लेना भी मुश्किल हो गया है।”

18 जो आदमी-सा लग रहा था उसने मुझे एक बार फिर छूकर तकवियत दी 19 और बोला, “ऐ तू जो अल्लाह की नज़र में गिराँकदर है, मत डरना! तेरी सलामती हो। हौसला रख, मज़बूत हो जा!” ज्योंही उसने मुझसे बात की मुझे तकवियत मिली, और मैं बोला, “अब मेरे आका बात करें, क्योंकि आपने मुझे तकवियत दी है।”

\* 10:4 23 अंग्रेज़ी † 10:6 topas

20 उसने कहा, “क्या तू मेरे आने का मकसद जानता है? जल्द ही मैं दुबारा फारस के सरदार से लड़ने चला जाऊँगा। और उससे निपटने के बाद यूनान का सरदार आएगा। 21 लेकिन पहले मैं तेरे सामने वह कुछ बयान करता हूँ जो ‘सच्चाई की किताब’ में लिखा है। (इन सरदारों से लड़ने में मेरी मदद कोई नहीं करता सिवाए तुम्हारे सरदार फरिश्ते मीकाएल के।

## 11

1 मादी बादशाह दारा की हुकूमत के पहले साल से ही मैं मीकाएल के साथ खड़ा रहा हूँ ताकि उसको सहारा दूँ और उस की हिफाजत करूँ।)

शिमाली और जुनूबी सलतनतों की जंगें

2 अब मैं तुझे वह कुछ बताता हूँ जो यकीनन पेश आएगा। फारस में मज्जीद तीन बादशाह तख्त पर बैठेंगे। इसके बाद एक चौथा आदमी बादशाह बनेगा जो तमाम दूसरों से कहीं ज्यादा दौलतमंद होगा। जब वह दौलत के बाइस ताकतवर हो जाएगा तो वह यूनानी ममलकत से लड़ने के लिए सब कुछ जमा करेगा।

3 फिर एक जोरावर बादशाह बरपा हो जाएगा जो बड़ी कुव्वत से हुकूमत करेगा और जो जी चाहे करेगा। 4 लेकिन ज्योंही वह बरपा हो जाए उस की सलतनत टुकड़े टुकड़े होकर एक शिमाली, एक जुनूबी, एक मगरिबी और एक मशरिकी हिस्से में तक्रसीम हो जाएगी। न यह चार हिस्से पहली सलतनत जितने ताकतवर होंगे, न बादशाह की औलाद तख्त पर बैठेगी, क्योंकि उस की सलतनत जड़ से उखाड़कर दूसरों को दी जाएगी। 5 जुनूबी मुल्क का बादशाह तकवियत पाएगा, लेकिन उसका एक अफसर कहीं ज्यादा ताकतवर हो जाएगा, उस की हुकूमत कहीं ज्यादा मजबूत होगी।

6 चंद साल के बाद दोनों सलतनतें मुतहिद हो जाएँगीं। अहद को मजबूत करने के लिए जुनूबी बादशाह की बेटी की शादी शिमाली बादशाह से कराई जाएगी। लेकिन न बेटी कामयाब होगी, न उसका शौहर और न उस की ताकत कायम रहेगी। उन दिनों में उसे उसके साथियों, बाप और शौहर समेत दुश्मन के हवाले किया जाएगा। 7 बेटी की जगह उसका एक रिश्तेदार खड़ा हो जाएगा जो शिमाली बादशाह की फौज पर हमला करके उसके किले में घुस आएगा। वह उनसे निपटकर फतह पाएगा 8 और उनके ढाले हुए बूतों को सोने-चाँदी की कीमती चीजों समेत छीनकर मिसर ले जाएगा। वह कुछ साल तक शिमाली बादशाह को नहीं छोड़ेगा। 9 फिर शिमाली बादशाह जुनूबी बादशाह के मुल्क में घुस आएगा, लेकिन उसे अपने मुल्क में वापस जाना पड़ेगा। 10 इसके बाद उसके बेटे जंग की तैयारियों करके बड़ी बड़ी फौजें जमा करेंगे। उनमें से एक जुनूबी बादशाह की तरफ बढ़कर सैलाब की तरह जुनूबी मुल्क पर आएगी और लड़ते लड़ते उसके किले तक पहुँचेगी।

11 फिर जुनूबी बादशाह तैश में आकर शिमाली बादशाह से लड़ने के लिए निकलेगा। शिमाली बादशाह जवाब में बड़ी फौज खड़ी करेगा, लेकिन वह शिकस्त खा कर 12 तबाह हो जाएगी। तब जुनूबी बादशाह का दिल गुस्से से भर जाएगा, और वह बेशमार अफराद को मौत के घाट उतारेगा। तो भी वह ताकतवर नहीं रहेगा। 13 क्योंकि शिमाली बादशाह एक और फौज जमा करेगा जो पहली की निसबत कहीं ज्यादा बड़ी होगी। चंद साल के बाद वह इस बड़ी और हथियारों से लैस फौज के साथ जुनूबी बादशाह से लड़ने आएगा।

14 उस वक्त बहुत-से लोग जुनूबी बादशाह के खिलाफ उठ खड़े होंगे। तेरी कौम के बेदीन लोग भी उसके खिलाफ खड़े हो जाएंगे और यों रोया को पूरा करेंगे। लेकिन वह ठोकर खाकर गिर जाएंगे। 15 फिर शिमाली बादशाह आकर एक किलाबंद शहर का मुहासरा करेगा। वह पुरता बनाकर शहर पर कब्जा कर लेगा। जुनूब की फौजें उसे रोक नहीं सकेंगीं, उनके बेहतरिन दस्ते भी बेबस होकर उसका सामना नहीं कर सकेंगे। 16 हमलाआवर बादशाह जो जी चाहे करेगा, और कोई उसका सामना नहीं कर सकेगा।

उस वक्त वह खूबसूरत मुल्क इसराईल में टिक जाएगा और उसे तबाह करने का इख्तियार रखेगा। 17 तब वह अपनी पूरी सलतनत पर काबू पाने का मनसूबा बाँधेगा। इस जिम्न में वह जुनूबी बादशाह के साथ अहद बाँधकर उससे अपनी बेटी की शादी कराएगा ताकि जुनूबी मुल्क को तबाह करे, लेकिन बेफायदा। मनसूबा नाकाम हो जाएगा।

18 इसके बाद वह साहिली इलाकों की तरफ स्रख करेगा। उनमें से वह बहुतों पर कब्जा भी करेगा, लेकिन आखिरकार एक हुम्भरान उसके गुस्ताखाना रवय्ये का ख़ातमा करेगा, और उसे शर्मिंदा होकर पीछे हटना पड़ेगा। 19 फिर शिमाली बादशाह अपने मुल्क के किलों के पास वापस आएगा, लेकिन इतने में ठोकर खाकर गिर जाएगा। तब उसका नामो-निशान तक नहीं रहेगा।

20 उस की जगह एक बादशाह बरपा हो जाएगा जो अपने अफसर को शानदार मुल्क इसराईल में भेजेगा ताकि वहाँ से गुजरकर लोगों से टैक्स ले। लेकिन थोड़े दिनों के बाद वह तबाह हो जाएगा। न वह किसी झगड़े के सबब से हलाक होगा, न किसी जंग में।

इसराईली कौम का बड़ा दुश्मन

21 उस की जगह एक काबिले-मज्जमत आदमी खड़ा हो जाएगा। वह तख्त के लिए मुकर्रर नहीं हुआ होगा बल्कि गैरमुतवक्के तौर पर आकर साजिशों के वसीले से बादशाह बनेगा। 22 मुखालिफ फौजें उस पर टूट पड़ेगी, लेकिन वह सैलाब की तरह उन पर आकर उन्हें बहा ले जाएगा। वह और अहद का एक रईस तबाह हो जाएगा। 23 क्योंकि उसके साथ अहद बाँधने के बाद वह उसे फरेब देगा और सिर्फ थोड़े ही अफ़राद के ज़रीए इक़तदार हासिल कर लेगा। 24 वह गैरमुतवक्के तौर पर दौलतमंद सूबों में घुसकर वह कुछ करेगा जो न उसके बाप और न उसके बापदादा से कभी सरज़द हुआ होगा। लूटा हुआ माल और मिलकियत वह अपने लोगों में तकसीम करेगा। वह क़िलाबंद शहरों पर कब्ज़ा करने के मनसूबे भी बाँधेगा, लेकिन सिर्फ महदूद अरसे के लिए।

25 फिर वह हिम्मत बाँधकर और पूरा जोर लगाकर बड़ी फौज के साथ जुन्बी बादशाह से लड़ने जाएगा। जवाब में जुन्बी बादशाह एक बड़ी और निहायत ही ताकतवर फौज को लड़ने के लिए तैयार करेगा। तो भी वह शिमाली बादशाह का सामना नहीं कर पाएगा, इसलिए कि उसके खिलाफ साजिशें कामयाब हो जाएँगी। 26 उस की रोटी खानेवाले ही उसे तबाह करेंगे। तब उस की फौज मुंतिशिर हो जाएगी, और बहुत-से अफ़राद मैदाने-जंग में खेत आँपें।

27 दोनों बादशाह मुजाकरात के लिए एक ही मेज़ पर बैठ जाएँगे। वहाँ दोनों झूट बोलते हुए एक दूसरे को नुकसान पहुँचाने के लिए कोशिशें रहेंगे। लेकिन किसी को कामयाबी हासिल नहीं होगी, क्योंकि मुकर्ररा आखिरी वक़्त अभी नहीं आना है। 28 शिमाली बादशाह बड़ी दौलत के साथ अपने मुल्क में वापस चला जाएगा। रास्ते में वह मुकद्दस अहद की कौम इसराईल पर ध्यान देकर उसे नुकसान पहुँचाएगा, फिर अपने वतन वापस जाएगा।

29 मुकर्ररा वक़्त पर वह दुबारा जुन्बी मुल्क में घुस आएगा, लेकिन पहले की निसबत इस बार नतीजा फरक होगा। 30 क्योंकि किन्तीम के बहरी जहाज़ उस की मुखालफत करेंगे, और वह हौसला हारेगा।

तब वह मुडकर मुकद्दस अहद की कौम पर अपना पूरा गुस्सा उतारेगा। जो मुकद्दस अहद को तर्क करेंगे उन पर वह मेहरबानी करेगा। 31 उसके फौजी आकर क़िलाबंद मक़दिस की बेहुरमती करेंगे। वह रोज़ाना की क़ुरबानियों का इंतज़ाम बंद करके तबाही का मकरूह बूत खड़ा करेगा। 32 जो यहूदी पहले से अहद की ख़िलाफ़वज़ी कर रहे होंगे उन्हें वह चिकनी-चुपड़ी बातों से मरुतद हो जाने पर आमादा करेगा। लेकिन जो लोग अपने ख़ुदा को जानते हैं वह मज़बूत रहकर उस की मुखालफत करेंगे। 33 कौम के समझदार बहुतों को सही राह की तालीम देंगे। लेकिन कुछ अरसे के लिए वह तलवार, आग, बैद और लूट-मार के बाइस डौवाँडोल रहेंगे। 34 उस वक़्त उन्हें थोड़ी-बहुत मदद हासिल तो होगी, लेकिन बहुत-से ऐसे लोग उनके साथ मिल जाएँगे जो मुखलिस नहीं होंगे। 35 समझदारों में से कुछ डौवाँडोल हो जाएँगे ताकि लोगों को आजमाकर आखिरी वक़्त तक ख़ालिस और पाक-साफ़ किया जाए। क्योंकि मुकर्ररा वक़्त कुछ देर के बाद आएगा।

36 बादशाह जो जी चाहे करेगा। वह सरफ़राज़ होकर अपने आपको तमाम माबूदों से अज़ीम करार देगा। ख़ुदाओं के ख़ुदा के ख़िलाफ़ वह नाकाबिले-बयान कुफ़र बकेगा। उसे कामयाबी भी हासिल होगी, लेकिन सिर्फ़ उस वक़्त तक जब तक इलाही ग़ज़ब ठंडा न हो जाए। क्योंकि जो कुछ मुकर्रर हुआ है उसे पूरा होना है। 37 बादशाह न अपने बापदादा के देवताओं की परवा करेगा, न औरतों के अज़ीज़ देवता की, न किसी और की। क्योंकि वह अपने आपको सब पर सरफ़राज़ करेगा। 38 इन देवताओं के बजाए वह क़िलों के देवता की पूजा करेगा जिससे उसके बापदादा वाकिफ़ ही नहीं थे। वह सोने-चाँदी, जवाहरात और कीमती तोहफ़ों से देवता का एहताराम करेगा। 39 चुनौचे वह अज़नबी माबूद की मदद से मज़बूत क़िलों पर हमला करेगा। जो उस की हुकूमत मानें उनकी वह बड़ी इज़्ज़त करेगा, इन्हें बहुतों पर मुकर्रर करेगा और उनमें अज़ के तौर पर ज़मीन तकसीम करेगा।

40 लेकिन फिर आखिरी वक़्त आएगा। जुन्बी बादशाह जंग में उससे टकराएगा, तो जवाब में शिमाली बादशाह रथ, घुडसवार और मुतअद्दि बहरी जहाज़ लेकर उस पर टूट पड़ेगा। तब वह बहुत-से मुल्कों में घुस आएगा और सैलाब की तरह सब कुछ गरक़ करके आगे बढ़ेगा। 41 इस दौरान वह ख़ब्सूरत मुल्क इसराईल में भी घुस आएगा। बहुत-से ममालिक शिकस्त खाएँगे, लेकिन अदोम और मोआब अम्मीन के मरकज़ी हिस्से समेत बच जाएँगे। 42 उस वक़्त उसका इक़तदार बहुत-से ममालिक पर छा जाएगा, मिसर भी नहीं बचेगा। 43 शिमाली बादशाह मिसर की सोने-चाँदी और बाक़ी दौलत पर कब्ज़ा करेगा, और लिबिया और एथोपिया भी उसके नक़्शे-क़दम पर चलेंगे। 44 लेकिन फिर मशरिक और शिमाल की तरफ़ से अफ़वाहें उसे सदमा पहुँचाएँगी, और वह बड़े तैश में आकर बहुतों को तबाह और हलाक करने के लिए निकलेगा। 45 रास्ते में वह समुंदर और ख़ब्सूरत मुकद्दस पहाड़ के दरमियान अपने शाही ख़ैमे लगा लेगा। लेकिन फिर उसका अंजाम आएगा, और कोई उस की मदद नहीं करेगा।



1 उस वक्त फरिशतों का अजीम सरदार मीकाएल उठ खड़ा होगा, वह जो तेरी क्रीम की शफाअत करता है। मुसीबत का ऐसा वक्त होगा कि क्रीमों के पैदा होने से लेकर उस वक्त तक नहीं हुआ होगा। लेकिन साथ साथ तेरी क्रीम को नजात मिलेगी। जिसका भी नाम अल्लाह की किताब में दर्ज है वह नजात पाएगा। 2 तब खाक में सोए हुए मुतअद्दिद लोग जाग उठेंगे, कुछ अबदी जिंदगी पाने के लिए और कुछ अबदी स्सवाई और धिन का निशाना बनने के लिए। 3 जो समझदार हैं वह आसमान की आबो-ताब की मानिंद चमकेंगे, और जो बहुतों को रास्त राह पर लाए हैं वह हमेशा तक सितारों की तरह जगमगाएँगे।

4 लेकिन तू, ऐ दानियाल, इन बातों को छुपाए रख! इस किताब पर आखिरी वक्त तक मुहर लगा दे! बहुत लोग इधर उधर घूमते फिरेंगे, और इल्म में इजाफा होता जाएगा।”

#### आखिरी वक्त

5 फिर मैं, दानियाल ने दरिया के पास दो आदमियों को देखा। एक इस किनारे पर खड़ा था जबकि दूसरा दूसरे किनारे पर। 6 कतान से मुलब्स आदमी बहते हुए पानी के ऊपर था। किनारों पर खड़े आदमियों में से एक ने उससे पूछा, “इन हैरतअंगेज बातों की तकमील तक मज्जीद कितनी देर लगेगी?”

7 कतान से मुलब्स आदमी ने दोनों हाथ आसमान की तरफ उठाए और अबद तक जिंदा खुदा की कसम खाकर बोला, “पहले एक अरसा, फिर दो अरसे, फिर आधा अरसा गुजरेगा। पहले मुकद्दस क्रीम की ताकत को पाश पाश करने का सिलसिला इख्तिताम पर पहुँचना है। इसके बाद ही यह तमाम बातें तकमील तक पहुँचेंगी।”

8 गो मैंने उस की यह बात सुनी, लेकिन वह मेरी समझ में न आई। चुनौचे मैंने पूछा, “मेरे आका, इन तमाम बातों का क्या अंजाम होगा?”

9 वह बोला, “ऐ दानियाल, अब चला जा! क्योंकि इन बातों को आखिरी वक्त तक छुपाए रखना है। उस वक्त तक इन पर मुहर लगी रहेगी। 10 बहुतों को आजमाकर पाक-साफ और खालिस किया जाएगा। लेकिन बेदीन बेदीन ही रहेंगे। कोई भी बेदीन यह नहीं समझेगा, लेकिन समझदारों को समझ आएगी। 11 जिस वक्त से रोजाना की कुरबानी का इंतजाम बंद किया जाएगा और तबाही के मकरूह बतु को मकदिस में खड़ा किया जाएगा उस वक्त से 1,290 दिन गुजरेंगे। 12 जो सन्न करके 1,335 दिनों के इख्तिताम तक कायम रहे वह मुबारक है!

13 जहाँ तक तेरा ताल्लुक है, आखिरी वक्त की तरफ बढ़ता चला जा! तू आराम करेगा और फिर दिनों के इख्तिताम पर जी उठकर अपनी मीरास पाएगा।”

## होसेअ

नबी का खानदान इसराईल की अलामत है

1 जैल में रब का वह कलाम दर्ज है जो उन दिनों में होसेअ बिन बैरी पर नाज़िल हुआ जब उज्जियाह, यूताम, आखज़ और हिज़क्रियाह यहदाह के बादशाह और यरुबियाम बिन युआस इसराईल का बादशाह था।

2 जब रब पहली बार होसेअ से हमकलाम हुआ तो उसने हुक्म दिया, “जा, जिनाकार औरत से शादी कर और जिनाकार बच्चे पैदा कर, क्योंकि मुल्क रब की पैरवी छोड़कर मुसलसल जिना करता रहता है।” 3 चुनोंचे होसेअ की जुमर बित दिबलायम से शादी हुई। उसका पाँव भारी हुआ, और बेटा पैदा हुआ। 4 तब रब ने होसेअ से कहा, “उसका नाम यज़्ज़एल रखना। क्योंकि जल्द ही मैं याहू के खानदान को यज़्ज़एल में उस कल्लो-गारत की सजा दूँगा जो उससे सरज़द हुई। साथ साथ मैं इसराईली बादशाही को भी ख़त्म करूँगा। 5 उस दिन मैं मैदाने-यज़्ज़एल में इसराईल की कमान को तोड़ डालूँगा।”

6 इसके बाद जुमर दुबारा उम्मीद से हुई। इस बार बेटा पैदा हुई। रब ने होसेअ से कहा, “इसका नाम लोस्हामा यानी ‘जिस पर रहम न हुआ हो’ रखना, क्योंकि आइंदा मैं इसराईलियों पर रहम नहीं करूँगा बल्कि वह मेरे रहम से सरासर महरूम रहेंगे।

7 लेकिन यहदाह के बाशियों पर मैं रहम करके उन्हें छुटकारा दूँगा। मैं उन्हें कमान, तलवार, जंग के हथियारों, घोड़ों या घुड़सवारों की मारिफत छुटकारा नहीं दूँगा बल्कि मैं जो रब उनका ख़ुदा हूँ ख़ुद ही उन्हें नजात दूँगा।”

8 लोस्हामा का दूध छुड़ाने पर जुमर फिर हामिला हुई। इस मरतबा बेटा पैदा हुआ। 9 तब रब ने फरमाया, “इसका नाम लोअम्मी यानी ‘मेरी कौम नहीं’ रखना। क्योंकि तुम मेरी कौम नहीं, और मैं तुम्हारा ख़ुदा नहीं हूँगा।

10 लेकिन वह वक्त आएगा जब इसराईली समुंदर की रेत जैसे बेशमार होंगे। न उनकी पैमाइश की जा सकेगी, न उन्हें गिना जा सकेगा। तब जहाँ उनसे कहा गया कि ‘तुम मेरी कौम नहीं’ वहाँ वह ‘जिंदा ख़ुदा के फ़रज़ंद’ कहलाएँगे। 11 तब यहदाह और इसराईल के लोग मुतहिद हो जाएँगे और मिलकर एक राहनुमा मुकरर करेंगे। फिर वह मुल्क में से निकल आएँगे, क्योंकि यज़्ज़एल \* का दिन अज़ीम होगा!

## 2

1 उस वक्त अपने भाइयों का नाम अम्मी यानी ‘मेरी कौम’ और अपनी बहनों का नाम स्हामा यानी ‘जिस पर रहम किया गया हो’ रखो।

इसराईल बेवफ़ा जुमर की मानिंद है

2 अपनी माँ इसराईल पर इलज़ाम लगाओ, हॉ उस पर इलज़ाम लगाओ! क्योंकि न वह मेरी बीवी है, न मैं उसका शौहर हूँ। वह अपने चेहरे से और अपनी छातियों के दरमियान से जिनाकारी के निशान दूर करे, 3 वरना मैं उसके कपड़े उतारकर उसे उस नंगी हालत में छोड़ूँगा जिसमें वह पैदा हुई। मैं होने दूँगा कि वह रेगिस्तान और झुलसती ज़मीन में तबदील हो जाए, कि वह प्यास के मारे मर जाए। 4 मैं उसके बच्चों पर भी रहम नहीं करूँगा, क्योंकि वह जिनाकार बच्चे है। 5 उनकी माँ ने जिना किया, उन्हें जन्म देनेवाली ने शर्मनाक हरकतें की हैं। वह बोली, ‘मैं अपने आशिकों के पीछे भाग जाऊँगी। आखिर मेरी रोटी, पानी, ऊन, कतान, तेल और पीने की चीज़ें वही मुहैया करते हैं।’

6 इसलिए जहाँ भी वह चलना चाहे वहाँ मैं उसे काँटदार झाड़ियों से रोक दूँगा, मैं ऐसी दीवार खड़ी करूँगा कि उसे रास्ते का पता न चले। 7 वह अपने आशिकों का पीछा करते करते थक जाएगी और कभी उन तक पहुँचेगी नहीं, वह उनका खोज लगाती रहेगी लेकिन उन्हें पाएगी नहीं। फिर वह बोलेगी, ‘मैं अपने पहले शौहर के पास वापस जाऊँ, क्योंकि उस वक्त मेरा हाल आज की निसबत कहीं बेहतर था।’ 8 लेकिन वह यह बात जानने के लिए तैयार नहीं कि उसे अल्लाह ही की तरफ से सब कुछ मुहैया हुआ है। मैं ही ने उसे वह अनाज, मै, तेल और कसरत की सोना-चाँदी दे दी जो लोगों ने बाल देवता को पेश की। 9 इसलिए मैं अपने अनाज और अपने अंगूर को फ़सल की कटाई से पहले पहले वापस लूँगा। जो ऊन और कतान मैं उसे देता रहा ताकि उस की बरहन्गी नज़र न आए उसे मैं उसके छीन लूँगा। 10 उसके आशिकों के देखते देखते मैं उसके सारे कपड़े उताऊँगा, और कोई उसे मेरे हाथ से नहीं बचाएगा। 11 मैं उस की तमाम खुशियाँ बंद कर दूँगा। न कोई ईद, न नए चाँद का तहवार, न सबत का दिन या बाक़ी कोई मुकरर जशन मनाया जाएगा। 12 मैं उसके अंगूर और अंजीर के बागों को तबाह

\* 1:11 यानी अल्लाह बीज बोता है।

करूँगा, उन चीजों को जिनके बारे में उसने कहा, 'यह मुझे आशिकों की खिदमत करने के एवज मिल गई है।' मैं यह बाग जंगल बनने दूँगा, और जंगली जानवर उनका फल खाएँगे।

13 रब फरमाता है कि मैं उसे उन दिनों की सजा दूँगा जब उसने बाल के बुतों को बखर की कुरबानियाँ पेश की। उस वक्त वह अपने आपको बालियों और जेवरात से सजाकर अपने आशिकों के पीछे भाग गई। मुझे वह भूल गई।

अल्लाह वफादार रहता है

14 चुनौचे अब मैं उसे मनाने की कोशिश करूँगा, उसे रेगिस्तान में ले जाकर उससे नरमी से बात करूँगा। 15 फिर मैं उसे वहाँ से होकर उसके अंगूर के बाग वापस करूँगा और वादीए-अकूर \* को उम्मीद के दरवाजे में बदल दूँगा। उस वक्त वह खुशी से मेरे पीछे होकर वहाँ चलेगी, बिलकुल उसी तरह जिस तरह जवानी में करती थी जब मेरे पीछे होकर मिसर से निकल आई।”

16 रब फरमाता है, “उस दिन तू मुझे पुकारते वक्त ‘ऐ मेरे बाल’ † नहीं कहेगी बल्कि ‘ऐ मेरे खाविद।’ 17 मैं बाल देवताओं के नाम तैरे मुँह से निकाल दूँगा, और तू आइदा उनके नामों का जिक्र तक नहीं करेगी। 18 उस दिन मैं जंगली जानवरों, परिदों और रंगनेवाले जानदारों के साथ अहद बाँधूँगा ताकि वह इसराईल को नुकसान न पहुँचाएँ। कमान और तलवार को तोड़कर मैं जंग का खतरा मुल्क से दूर कर दूँगा। सब आरामो-सुकून से जिंदगी गुजारेंगे।

19 मैं तैरे साथ अबदी रिश्ता बाँधूँगा, ऐसा रिश्ता जो रास्ती, इनसाफ, फजल और रहम पर मबनी होगा। 20 हूँ, जो रिश्ता मैं तैरे साथ बाँधूँगा उस की बुनियाद वफादारी होगी। तब तू रब को जान लेगी।”

21 रब फरमाता है, “उस दिन मैं सुनूँगा। मैं आसमान की सुनकर बादल पैदा करूँगा, आसमान जमीन की सुनकर बारिश बरसाएगा, 22 जमीन अनाज, अंगूर और जैतून की सुनकर उन्हें तकवियत देगी, और यह चीजें मैदाने-यज़्रएल ‡ की सुनकर कसरत से पैदा हो जाएँगी। 23 उस वक्त मैं अपनी खातिर इसराईल का बीज मुल्क में बो दूँगा। ‘लोस्हामा’ § पर मैं रहम करूँगा, और ‘लोअम्मी’ \* से मैं कहूँगा, ‘तू मेरी कौम है।’ जवाब में वह बोलेगी, ‘तू मेरा खुदा है।’”

### 3

जुमर की तरह इसराईल को वापस खरीदा जाएगा

1 रब मुझे हमकलाम हुआ, “जा, अपनी बीवी को दुबारा प्यार कर, हालाँकि उसका आशिक है जिससे उसने जिना किया है। उसे यों प्यार कर जिस तरह रब इसराईलियों को प्यार करता है, हालाँकि उनका सख दीगर माबूदों की तरफ है और उन्हें उन्हीं की अंगूर की टिक्कियाँ पसंद हैं।”

2 तब मैंने चाँदी के 15 सिक्के और जौ के 195 किलोग्राम देकर उसे वापस खरीद लिया। 3 मैंने उससे कहा, “अब तुझे बड़े अरसे तक मेरे साथ रहना है। इतने में न जिना कर, न किसी आदमी से सोहबत रख। मैं भी बड़ी देर तक तुझसे हमबिसतर नहीं हूँगा।”

4 इसराईल का यही हाल होगा। बड़ी देर तक न उनका बादशाह होगा, न राहनूमा, न कुरबानी का इंतज़ाम, न यादगार पत्थर, न इमाम का बालापोश। उनके पास बुत तक भी नहीं होंगे। 5 इसके बाद इसराईली वापस आकर रब अपने खुदा और दाऊद अपने बादशाह को तलाश करेंगे। आखिरी दिनों में वह लरजते हुए रब और उस की भलाई की तरफ रुजू करेंगे।

### 4

इमामों पर रब का इलजाम

1 ऐ इसराईलियो, रब का कलाम सुनो! क्योंकि रब का मुल्क के बाशिंदों से मुकदमा है। “इलजाम यह है कि मुल्क में न वफादारी, न मेहरबानी और न अल्लाह का इरफान है। 2 कोसना, झूट बोलना, चोरी और जिना करना आम हो गया है। रोज बरोज कतलो-गारत की नई खबरें मिलती रहती हैं। 3 इसी लिए मुल्क में काल है और उसके तमाम बाशिदे पज़मुरदा हो गए हैं। जंगली जानवर, परिदे और मछलियाँ भी फना हो रही हैं।

4 लेकिन खिलावजह किसी पर इलजाम मत लगाना, न खाहमख़ाह किसी की तबीह करो! ऐ इमामो, मैं तुम्हरी पर इलजाम लगाता हूँ। 5 ऐ इमाम, दिन के वक्त तू ठोकर खाकर गिरेगा, और रात के वक्त नबी गिरकर तैरे साथ पड़ा रहेगा। मैं तेरी माँ को भी तबाह करूँगा। 6 अफसोस, मेरी कौम इसलिए तबाह हो रही है कि वह सहीह इल्म नहीं रखती। और क्या अजब जब

\* 2:15 यानी मुसीबत की वादी। † 2:16 बाल का मतलब ‘मात्लिक’ है। ‡ 2:22 अल्लाह बीज बोता है। § 2:23 जिस पर रहम न हुआ हो। \* 2:23 मेरी कौम नहीं।

तुम इमामों ने यह इल्म रद्द कर दिया है। अब मैं तुम्हें भी रद्द करता हूँ। आइंदा तुम इमाम की खिदमत अदा नहीं करोगे। चूँकि तुम अपने खुदा की शरीअत भूल गए हो इसलिए मैं तुम्हारी औलाद को भी भूल जाऊँगा।

7 इमामों की तादाद जितनी बढ़ती गई उतना ही वह मेरा गुनाह करते गए। उन्होंने अपनी इज्जत ऐसी चीज के एवज छोड़ दी जो स्सवाई का बाइस है। 8 मेरी कौम के गुनाह उनकी खुराक है, और वह इस लालच में रहते हैं कि लोगों का कुसूर मज्जीद बढ जाए। 9 चुनौचे इमामों और कौम के साथ एक जैसा सुलूक किया जाएगा। दोनों को मैं उनके चाल-चलन की सज़ा दूँगा, दोनों को उनकी हरकतों का अज़ दूँगा। 10 खाना तो वह खाएँगे लेकिन सेर नहीं होंगे। जिना भी करते रहेंगे, लेकिन बेफायदा। इससे उनकी तादाद नहीं बढ़ेगी। क्योंकि उन्होंने रब का खयाल करना छोड़ दिया है।

11 जिना करने और नई और पुरानी मै पैसे से लोगों की अक्ल जाती रहती है। 12 मेरी कौम लकड़ी से दरियाफ्त करती है कि क्या करना है, और उस की लाठी उसे हिदायत देती है। क्योंकि जिनाकारी की रूह ने उन्हें भटका दिया है, जिना करते करते वह अपने खुदा से कहीं दूर हो गए हैं। 13 वह पहाड़ों की चोटियों पर अपने जानवरों को कुरबान करते हैं और पहाड़ियों पर चढकर बलूत, सफेदा या किसी और दरख्त के खुशगवार साये में बखुर की कुरबानियाँ पेश करते हैं। इसी लिए तुम्हारी बेटियाँ इसमतफरोश बन गई हैं, और तुम्हारी बहूएँ जिना करती हैं। 14 लेकिन मैं उन्हें उनकी इसमतफरोशी और जिनाकारी की सज़ा क्यों दूँ जबकि तुम मर्द कसबियों से सोहबत रखते और देवताओं की खिदमत में इसमतफरोशी करनेवाली औरतों के साथ कुरबानियाँ चढाते हो? ऐसी हरकतों से नासमझ कौम तबाह हो रही है।

15 ऐ इसराईल, तू इसमतफरोश है, लेकिन यहदाह खबरदार रहे कि वह इस जुर्म में मुलव्वस न हो जाए। इसराईल के शहरों जिलजाल और बैत-आवन \* की कुरबानगाहों के पास मत जाना। ऐसी जगहों पर रब का नाम लेकर उस की हयात की कसम खाना मना है। 16 इसराईल तो जिद्दी गाय की तरह अड गया है। तो फिर रब उन्हें किस तरह सब्जाजार में भेड के बच्चों की तरह चरा सकता है?

17 इसराईल † तो बुतों का इतहादी है, उसे छोड़ दे! 18 यह लोग शराब की महफिल से फारिग होकर जिनाकारी में लग जाते हैं। वह नाजायज़ मुहब्बत करते करते कभी नहीं थकते। लेकिन इसका अज़ उनकी अपनी बेइज्जती है। 19 आँधी उन्हें अपनी लपेट में लेकर उडा ले जाएगी, और वह अपनी कुरबानियों के बाइस शरमिदा हो जाएँगे।

## 5

### इसराईल और यहदाह दोनों कुसूरवार हैं

1 ऐ इमामो, सुनो मेरी बात! ऐ इसराईल के घराने, तबज्जुह दे! ऐ शाही खानदान, मेरे पैगाम पर गौर कर!

तुम पर फैसला है, क्योंकि अपनी बुतपरस्ती से तुमने मिसफाह में फंदा लगा दिया, तबूर पहाड पर जाल बिछा दिया 2 और शितील में गढा खुदाव लिया है। खबरदार! मैं तुम सबको सज़ा दूँगा।

3 मैं तो इसराईल को खूब जानता हूँ, वह मुझे छुपा नहीं रह सकता। इसराईल अब इसमतफरोश बन गया है, वह नापाक है। 4 उनकी बुरी हरकतें उन्हें उनके खुदा के पास वापस आने नहीं देती। क्योंकि उनके अंदर जिनाकारी की रूह है, और वह रब को नहीं जानते। 5 इसराईल का तकबूर उसके खिलाफ गवाही देता है, और वह अपने कुसूर के बाइस गिर जाएगा। यहदाह भी उसके साथ गिर जाएगा।

6 तब वह अपनी भेड-बकरियों और गाय-बैलों को लेकर रब को तलाश करेंगे, लेकिन बेफायदा। वह उसे पा नहीं सकेंगे, क्योंकि वह उन्हें छोड़कर चला गया है। 7 उन्होंने रब से बेवफा होकर नाजायज़ औलाद पैदा की है। अब नया चाँद उन्हें उनकी मौरूसी ज़मीनों समेत हडप कर लेगा।

### अपनी कौम पर अल्लाह का इल्जाम

8 जिबिया में नरसिगा फूँको, रामा में तुर्म बजाओ! बैत-आवन में जंग के नारे बुलंद करो। ऐ बिनयमीन, दुश्मन तैरे पीछे पड गया है! 9 जिस दिन मैं सज़ा दूँगा उस दिन इसराईल वीरानो-सुनसान हो जाएगा। ध्यान दो कि मैंने इसराईली कबीलों के बारे में काबिले-एतमाद बातें बताई हैं।

10 यहदाह के राहनुमा उन जैसे बन गए हैं जो नाजायज़ तौर पर अपनी ज़मीन की हद्द बढ़ा देते हैं। जवाब में मैं अपना गज़ब मसलाथाार बारिश की तरह उन पर नाज़िल करूँगा। 11 इसराईल पर इसलिए ज़ुल्म हो रहा है और उसका हक मारा जा रहा है कि वह बेमानी बुतों के पीछे भागने पर तुला हुआ है। 12 मैं इसराईल के लिए पीप और यहदाह के लिए सडाहट का बाइस बनूँगा।

\* 4:15 बैत-आवन यानी 'गुनाह का घर' से मुराद बैतेल है। † 4:17 होसेअ के इबरानी मतन में यहाँ और मुतअहिद दीगर आयत में 'इफ़राईम' मुस्तामल है जिससे मुराद शिमाली मुल्के-इसराईल है।

13 इसराईल ने अपनी बीमारी देखी और यहदाह ने अपने नासूर पर गौर किया। तब इसराईल ने अस्सूर की तरफ रुजू किया और अस्सूर के अज़मी बादशाह को पैगाम भेजकर उससे मदद माँगी। लेकिन वह तुम्हें शफा नहीं दे सकता, वह तुम्हारे नासूर का इलाज नहीं कर सकता।

14 क्योंकि मैं शेरबबर की तरह इसराईल पर टूट पड़ूँगा और जवान शेरबबर की तरह यहदाह पर झपट पड़ूँगा। मैं उन्हें फाड़कर अपने साथ घसीट ले जाऊँगा, और कोई उन्हें नहीं बचाएगा। 15 फिर मैं अपने घर वापस जाकर उस वक्त तक उनसे दूर रहूँगा जब तक वह अपना कुसूर तसलीम करके मेरे चेहरे को तलाश न करे। क्योंकि जब वह मुसीबत में फँस जाये तो वह ही मुझे तलाश करेंगे।”

## 6

1 उस वक्त वह कहेंगे, “आओ, हम रब के पास वापस चलें। क्योंकि उसी ने हमें फाड़ा, और वही हमें शफा भी देगा। उसी ने हमारी पिटाई की, और वही हमारी मरहम-पट्टी भी करेगा। 2 दो दिन के बाद वह हमें नए सिरे से जिंदा करेगा और तीसरे दिन हमें दुबारा उठा खड़ा करेगा ताकि हम उसके हज़र जिंदगी गुज़रें। 3 आओ, हम उसे जान लें, हम पूरी जिद्दो-जहद के साथ रब को जानने के लिए कोशिश करें। वह ज़रूर हम पर जाहिर होगा। यह उतना यकीनी है जितना सूरज का रोज़ाना तूल होना यकीनी है। जिस तरह मौसमे-बहार की तेज़ बारिश ज़मीन को सेराब करती है उसी तरह अल्लाह भी हमारे पास आएगा।”

4 “ऐ इसराईल, मैं तेरे साथ क्या करूँ? ऐ यहदाह, मैं तेरे साथ क्या करूँ? तुम्हारी मुहब्बत सुबह की धुंध जैसी आरिजी है। धूप में ओस की तरह वह जल्द ही काफ़ूर हो जाती है। 5 इसी लिए मैंने अपने नबियों की मारिफ़त तुम्हें पटख दिया, अपने मुँह के अलफ़ाज़ से तुम्हें मार डाला है। मेरे इनसाफ़ का नूर सूरज की तरह ही तूल होता है। 6 क्योंकि मैं कुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ, भ्रम होनेवाली कुरबानियों की निसबत मुझे यह पसंद है कि तुम अल्लाह को जान लो।

### अदालत की फसल पक गई है

7 वह आदम शहर में अहद तोड़कर मुझसे बेवफा हो गए। 8 जिलियाद शहर मुजरिमों से भर गया है, हर तरफ़ खून के दाग़ हैं। 9 इमामों के जत्थे डाकुओं की मानिंद बन गए हैं। क्योंकि वह सिकम को पहुँचानेवाले रास्ते पर मुसाफ़ि़रों की ताक लगाकर उन्हें कत्ल करते हैं। हाँ, वह शर्मनाक हरकतों से गुरेज़ नहीं करते। 10 मैंने इसराईल में ऐसी बातें देखी हैं जिनसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्योंकि इसराईल जिना करता है, वह अपने आपको नापाक करता है। 11 लेकिन यहदाह पर भी अदालत की फसल पकनेवाली है।

जब कभी मैं अपनी क़ौम को बहाल करके

## 7

1 इसराईल को शफा देना चाहता हूँ तो इसराईल का कुसूर और सामरिया की बुराई साफ़ जाहिर हो जाती है। क्योंकि फ़रेब देना उनका पेशा ही बन गया है। चोर घरों में नक़ब लगाते जबकि बाहर गली में डाकुओं के जत्थे लोगों को लूट लेते हैं। 2 लेकिन वह खयाल नहीं करते कि मुझे उनकी तमाम बुरी हरकतों की याद रहती है। वह नहीं समझते कि अब वह अपने ग़लत कामों से घिरे रहते हैं, कि यह गुनाह हर वक्त मुझे नज़र आते हैं। 3 अपनी बुराई से वह बादशाह को खुश रखते हैं, उनके झूट से बुज़ुर्ग लुफ़अंदोज़ होते हैं। 4 सबके सब जिनाकार हैं। वह उस तपते तनूर की मानिंद हैं जो इतना गरम है कि नाबाई को उसे मज़ीद छेड़ने की ज़रूरत नहीं। अगर वह आटा गूँधकर उसके खमीर होने तक इंतज़ार भी करे तो भी तनूर इतना गरम रहता है कि रोटी पक जाएगी। 5 हमारे बादशाह के ज़शन पर राहनुमा मैं पै पीकर मस्त हो जाते हैं, और वह कुफ़र बकनेवालों से हाथ मिलाता है। 6 यह लोग करीब आकर ताक में बैठ जाते हैं जबकि उनके दिल तनूर की तरह तपते हैं। पूरी रात को उनका गुस्सा सोया रहता है, लेकिन सुबह के वक्त वह बेदार होकर शोलाज़न आग की तरह दहकने लगता है। 7 सब तनूर की तरह तपते तपते अपने राहनुमाओं को हड़प कर लेते हैं। उनके तमाम बादशाह गिर जाते हैं, और एक भी मुझे नहीं पुकारता।

8 इसराईल दीगर अक़वाम के साथ मिलकर एक हो गया है। अब वह उस रोटी की मानिंद है जो तवे पर सिर्फ़ एक तरफ़ से पक गई है, दूसरी तरफ़ से कच्ची ही है। 9 ग़ैरमुल्की उस की ताक़त खा खाकर उसे कमज़ोर कर रहे हैं, लेकिन अभी तक उसे पता नहीं चला। उसके बाल सफ़ेद हो गए हैं, लेकिन अभी तक उसे मालूम नहीं हुआ। 10 इसराईल का तकब्बुर उसके खिलाफ़ गवाही देता है। तो भी न वह रब अपने ख़ुदा के पास वापस आ जाता, न उसे तलाश करता है।

11 इसराईल नासमज़ कबूतर की मानिंद है जिसे आसानी से वरगलाया जा सकता है। पहले वह मिसर को मदद के लिए बुलाता, फिर अस्सूर के पास भाग जाता है। 12 लेकिन ज्योंही वह कभी इधर कभी इधर दौड़ेगे तो मैं उन पर अपना जाल

डालूँगा, उन्हें उड़ते हुए परिदों की तरह नीचे उतारूँगा। मैं उनकी यों तादीब करूँगा जिस तरह उनकी जमात को आगाह किया गया है।

13 उन पर अफसोस, क्योंकि वह मुझसे भाग गए हैं। उन पर तबाही आए, क्योंकि वह मुझसे सरकश हो गए हैं। मैं फिद्या देकर उन्हें छुड़ाना चाहता था, लेकिन जबब मैं वह मेरे बारे में झूट बोलते हैं। 14 वह खुलसदिली से मुझसे इल्लिजा नहीं करते। वह बिस्तर पर लेटे लेटे 'हाय हाय' करते और गल्ला और अंगूर को हासिल करने के लिए अपने आपको ज़खमी करते हैं। लेकिन मुझसे वह दूर रहते हैं।

15 मैं ही ने उन्हें तरबियत दी, मैं ही ने उन्हें तकवियत दी, लेकिन वह मेरे खिलाफ बुरे मनसूबे बाँधते हैं। 16 वह तौबा करके वापस आ जाते हैं, लेकिन मेरे पास नहीं, लिहाज़ा वह ढीली कमान जैसे बेकार हो गए हैं। चुनौचे उनके राहनुमा कुफ़र बकने के सबब से तलवार की ज़द में आकर हलाक हो जाएंगे। इस बात के बाइस वह मिसर में मज़ाक का निशाना बन जाएंगे।

## 8

### अल्लाह की बेवफा क्रौम पर अदालत

1 नरसिगा बजाओ! दुश्मन उकाब की तरह रब के घर पर झपट्टा मारने को है। क्योंकि लोगों ने मेरे अहद को तोड़कर मेरी शरीअत की खिलाफ़रजी की है। 2 बेशक वह मदद के लिए चीखते-चिल्लाते हैं, 'ऐ हमारे खुदा, हम तो तुझे जानते हैं, हम तो इसराईल हैं।' 3 लेकिन हकीकत में इसराईल ने वह कुछ मुस्तरद कर दिया है जो अच्छा है। चुनौचे दुश्मन उसका ताक़्क़ुब करे! 4 उन्होंने मेरी मरजी पूछे बग़ैर अपने बादशाह मुकर्रर किए, मेरी मंजूरी के बग़ैर अपने राहनुमाओं को चुन लिया है। अपने सोने-चाँदी से अपने लिए बूत बनाकर वह अपनी तबाही अपने सर पर लाए हैं।

5 ऐ सामरिया, मैंने तेरे बछड़े को रू कर दिया है! मेरा गजब तेरे बाशिंदों पर नाज़िल होनेवाला है, क्योंकि वह पाक-साफ़ हो जाने के काबिल ही नहीं! यह हालत कब तक जारी रहेगी? 6 ऐ इसराईल, जिस बछड़े की पूजा तू करता है उसे दस्तकार ही ने बनाया है। सामरिया का बछड़ा खुदा नहीं है बल्कि पाश पाश हो जाएगा।

7 वह हवा का बीज बो रहे हैं और आँधी की फसल काटेंगे। अनाज की फसल तैयार है, लेकिन बालियाँ कहीं नज़र नहीं आती। इससे आटा मिलने का इमकान ही नहीं। और अगर थोड़ा-बहुत गंदुम मिले भी तो गैरमुल्की उसे हडप कर लेंगे।

8 हँसे, तमाम इसराईल को हडप कर लिया गया है। अब वह क्रौमों में ऐसा बरतन बन गया है जो कोई पसंद नहीं करता। 9 क्योंकि उसके लोग असूर के पास चले गए हैं। जंगली गधा तो अकेला रहता है, लेकिन इसराईल अपने आशिक को तोहफे देकर खुश रखने पर तुला रहता है। 10 लेकिन खाह वह दीगर क्रौमों में कितने तोहफे क्यों न तकरसीम करें अब मैं उन्हें सज़ा देने के लिए जमा करूँगा। जल्द ही वह शहनशाह के बोझ तले पेचो-ताब खाने लगेंगे। 11 गो इसराईल ने गुनाहों को दूर करने के लिए मुतअद्दिद कुरबानगाहें तामीर कीं, लेकिन वह उसके लिए गुनाह का बाइस बन गई हैं। 12 खाह मैं अपने अहकाम को इसराईलियों के लिए हजारों दफ़ा क्यों न कलमबंद करता, तो भी फ़रक़ न पड़ता, वह समझते कि यह अहकाम अजनबी हैं, यह हम पर लागू नहीं होते। 13 गो वह मुझे कुरबानियाँ पेश करके उनका गोशत खाते हैं, लेकिन मैं, रब इनसे खुश नहीं होता बल्कि उनके गुनाहों को याद करके उन्हें सज़ा दूँगा। तब उन्हें दुबारा मिसर जाना पड़ेगा। 14 इसराईल ने अपने खालिक को भूलकर बड़े महल बना लिए हैं, और यहदाह ने मुतअद्दिद शहरों को किन्लाबंद बना लिया है। लेकिन मैं उनके शहरों पर आग नाज़िल करके उनके महलों को भस्म कर दूँगा।”

## 9

### इसराईल का अंजाम

1 ऐ इसराईल, खुशी न मना, दीगर अक़वाम की तरह शादियाना मत बजा। क्योंकि तू जिना करते करते अपने खुदा से दूर होता जा रहा है। जहाँ भी लोग गंदुम गाहते हैं वहाँ तू जाकर अपनी इसमतफ़रोशी के पैसे जमा करता है, यही कुछ तुझे प्यारा है। 2 इसलिए आइँदा गंदुम गाहने और अंगूर का रस निकालने की जगहें उन्हें ख़राक मुहैया नहीं करेगी, और अंगूर की फसल उन्हें रस मुहैया नहीं करेगी।

3 इसराईली रब के मुल्क में नहीं रहेंगे बल्कि उन्हें मिसर वापस जाना पड़ेगा, उन्हें असूर में नापाक चीज़ें खानी पड़ेगी। 4 वहाँ वह रब को न मैं की और न जबह की कुरबानियाँ पेश कर सकेंगे। उनकी रोटी मातम करनेवालों की रोटी जैसी होगी यानी जो भी उसे खाए वह नापाक हो जाएगा। हाँ, उनका खाना सिर्फ़ उनकी अपनी भूक मिटाने के लिए होगा, और वह रब के घर में नहीं आएगा। 5 उस वक़्त तुम इँदों पर क्या करोगे? रब के तहवारों को तुम कैसे मनाओगे? 6 जो तबाहशुदा मुल्क से निकलेंगे उन्हें मिसर इक़श करेगा, उन्हें मैफिस दफ़नाएगा। ख़ुदरो पौदे उनकी कीमती चाँदी पर कब्ज़ा करेगे, कौटिदार झाड़ियाँ उनके घरों पर छा जाएँगी।

7 सज़ा के दिन आ गए हैं, हिसाब-किताब के दिन पहुँच गए हैं। इसराइल यह बात जान ले। तुम कहते हो, “यह नबी अहमक है, रूह का यह बंदा पागल है।” क्योंकि जितना संगीन तुम्हारा गुनाह है उतने ही जोर से तुम मेरी मुखालफत करते हो।

8 नबी मेरे ख़ुदा की तरफ से इसराइल का पहरेदार बनाया गया है। लेकिन जहाँ भी वह जाए वहाँ उसे फँसाने के फंदे लगाए गए हैं, बल्कि उसे उसके ख़ुदा के घर में भी सताया जाता है। 9 उनसे निहायत ही खराब काम सरज़द हुआ है, ऐसा शरीर काम जैसा जिबिया के बाशिंदों से हुआ था। अल्लाह उनका कुसूर याद करके उनके गुनाहों की मुनासिब सज़ा देगा।

### इसराइल शुरू से ही शरीर है

10 रब फ़रमाता है, “जब मेरा इसराइल से पहला वास्ता पड़ा तो रेगिस्तान में अंगूर जैसा लग रहा था। तुम्हारे बापदादा अज़ीर के दरख़्त पर लगे पहले पकनेवाले फल जैसे नज़र आए। लेकिन बाल-फ़गूर के पास पहुँचते ही उन्होंने अपने आपको उस शर्मनाक बुत के लिए मख़सूस कर लिया। तब वह अपने आशिक जैसे मक़रूह हो गए। 11 अब इसराइल की शानो-शौकत परिदे की तरह उड़कर गायब हो जाएगी। आइंदा न कोई उम्मीद से होगी, न बच्चा जनेगी। 12 अगर वह अपने बच्चों को परवान चढ़ने तक पालें भी तो भी मैं उन्हें बेऔलाद कर दूँगा। एक भी नहीं रहेगा। उन पर अफ़सोस जब मैं उनसे दूर हो जाऊँगा। 13 पहले जब मैंने इसराइल पर नज़र डाली तो वह सूँ की मानिंद शानदार था, उसे शादाब जगह पर पौदे की तरह लगाया गया था। लेकिन अब उसे अपनी औलाद को बाहर लाकर कातिल के हवाले करना पड़ेगा।”

14 ऐ रब, उन्हें दे! क्या दे? होने दे कि उनके बच्चे पेट में जाया हो जाएँ, कि औरतें दूध न पिना सकें।

15 रब फ़रमाता है, “जब उनकी तमाम बेदीनी जिलजाल में जाहिर हुई तो मैंने उनसे नफ़रत की। उनकी बुरी हरकतों की वजह से मैं उन्हें अपने घर से निकाल दूँगा। आइंदा मैं उन्हें प्यार नहीं करूँगा। उनके तमाम राहनुमा सरकश हैं। 16 इसराइल को मारा गया, लोगों की जड़ सूख गई है, और वह फल नहीं ला सकते। उनके बच्चे पैदा हो भी जाएँ तो मैं उनकी कीमती औलाद को मार डालूँगा।” 17 मेरा ख़ुदा उन्हें रड़ करेगा, इसलिए कि उन्होंने उस की नहीं सुनी। चुनाँचे उन्हें दीगर अक़वाम में मारे मारे फिरना पड़ेगा।

## 10

### बुतपरस्ती के नतायज

1 इसराइल अंगूर की फलती-फूलती बेल था जो काफी फल लाती रही। लेकिन जितना उसका फल बढ़ता गया उतना ही वह बुतों के लिए कुरबानागहें बनाता गया। जितना उसका मुल्क तरक्की करता गया उतना ही वह देवताओं के मख़सूस सतूनों को सज़ाता गया। 2 लोग दौदिले हैं, और अब उन्हें उनके कुसूर का अज़ भ्रगतना पड़ेगा। रब उनकी कुरबानागहों को गिरा देगा, उनके सतूनों को मिसमार करेगा। 3 जल्द ही वह कहेंगे, “हम इसलिए बादशाह से महरूम हैं कि हमने रब का ख़ौफ न माना। लेकिन अगर बादशाह होता भी तो वह हमारे लिए क्या कर सकता?” 4 वह बड़ी बातें करते, झूठी कसमें खाते और ख़ाली अहद बाँधते हैं। उनका इनसाफ उन ज़हरीले ख़ुदरौ पौदों की मानिंद है जो बीज के लिए तैयारशुदा ज़मीन से फूट निकलते हैं।

5 सामरिया के बाशिंदे परेशान हैं कि बैत-आवन \* में बछड़े के बुत के साथ क्या किया जाएगा। उसके परस्तार उस पर मातम करेंगे, उसके पुजारी उस की शानो-शौकत याद करके वावैला करेंगे, क्योंकि वह उनसे छिनकर परदेस में ले जाया जाएगा। 6 हाँ, बछड़े को मुल्के-असूर में ले जाकर शहनशाह को ख़राज के तौर पर पेश किया जाएगा। इसराइल की स्वसाई हो जाएगी, वह अपने मनसूबे के बाइस शर्मिंदा हो जाएगा।

7 सामरिया नेस्तो-नाबूद, उसका बादशाह पानी पर तैरती हुई टहनी की तरह बेबस होगा। 8 बैत-आवन † की वह ऊँची जगहें तबाह हो जाएँगी जहाँ इसराइल गुनाह करता रहा है। उनकी कुरबानागहों पर काँटेदार झाड़ियाँ और ऊँटकटरे छा जाएँगे। तब लोग पहाड़ों से कहेंगे, “हमें छुपा लो!” और पहाड़ियों को “हम पर गिर पड़ो!”

9 रब फ़रमाता है, “ऐ इसराइल, जिबिया के वाक़िये से लेकर आज तक तू गुनाह करता आया है, लोग वही के वही रह गए हैं। क्या मुनासिब नहीं कि जिबिया में जंग उन पर टूट पड़े जो इतने शरीर हैं? 10 अब मैं अपनी मरज़ी से उनकी तादीब करूँगा। अक़वाम उनके ख़िलाफ जमा हो जाएँगी जब उन्हें उनके दुगने कुसूर के लिए जंजीरों में जकड़ लिया जाएगा।

11 इसराइल जवान गाय था जिसे गंदुम गाहने की तरबियत दी गई थी और जो शौक से यह काम करती थी। तब मैंने उसके ख़ुबसूरत गले पर जुआ रखकर उसे जोत लिया। यहदाह को हल खींचना और याक़ूब ‡ को ज़मीन पर सुहागा फेरना था। 12 मैंने फ़रमाया, ‘इनसाफ का बीज बोकर शफ़क़त की फसल काटो। जिस ज़मीन पर हल कभी नहीं चलाया गया उस पर

\* 10:5 बैत-आवन यानी ‘गुनाह का घर’ से मुराद बैतल है।

† 10:8 बैत-आवन यानी ‘गुनाह का घर’ से मुराद बैतल है।

‡ 10:11 याक़ूब से मुराद इसराइल है।

ठीक तरह हल चलाओ! जब तक रब को तलाश करने का मौका है उसे तलाश करो, और जब तक वह आकर तुम पर इनसाफ की बारिश न बरसाए उसे ढूँढो।'

13 लेकिन जवाब में तुमने हल चलाकर बेदीनी का बीज बोया, तुमने बुराई की फसल काटकर फ़रेब का फल खाया है। चूँकि तुने अपनी राह और अपने सूत्रों की बड़ी तादाद पर भरोसा रखा है 14 इसलिए तेरी क्रीम में जंग का शोर मचेगा, तेरे तमाम किले खाक में मिलाए जाएंगे। शलमन के बैत-अरबेल पर हमले के-से हालात होंगे जिसने उस शहर को ज़मीनबोस करके माओ को बच्चों समेत ज़मीन पर पटक दिया। 15 ऐ बैतेल के बाशिंदो, तुम्हारे साथ भी ऐसा ही किया जाएगा, क्योंकि तुम्हारी बदकारी हद से ज्यादा है। पौ फटते ही इसराईल का बादशाह नेस्त हो जाएगा।”

## 11

बेवफ़ाई के बावजूद अल्लाह की शफ़कत

1 रब फ़रमाता है, “इसराईल अभी लडका था जब मैंने उसे प्यार किया, जब मैंने अपने बेटे को मिसर से बुलाया। 2 लेकिन बाद में जितना ही मैं उन्हें बुलाता रहा उतना ही वह मुझसे दूर होते गए। वह बाल देवताओं के लिए जानवर चढ़ाने, बुतों के लिए बख़र जलाने लगे। 3 मैंने खुद इसराईल को चलने की तरबियत दी, बार बार उन्हें गोद में उठाकर लिए फिरा। लेकिन वह न समझे कि मैं ही उन्हें शफ़ा देनेवाला हूँ। 4 मैं उन्हें खींचता रहा, लेकिन ऐसे रस्सों से नहीं जो इनसान बरदाशत न कर सके बल्कि शफ़कत भरे रस्सों से। मैंने उनके गले पर का जुआ हलका कर दिया और नरमी से उन्हें खुराक खिलाई।

5 क्या उन्हें मुल्के-मिसर वापस नहीं जाना पड़ेगा? बल्कि असूर ही उनका बादशाह बनेगा, इसलिए कि वह मेरे पास वापस आने के लिए तैयार नहीं। 6 तलवार उनके शहरों में घूम घूमकर ग़ैबदानों को हलाक करेगी और लोगों को उनके गलत मशवरों के सबब से खाती जाएगी। 7 लेकिन मेरी कौम मुझे तर्क करने पर तुली हुई है। जब उसे ऊपर अल्लाह की तरफ़ देखने को कहा जाए तो उसमें से कोई भी उस तरफ़ रज़ू नहीं करता।

8 ऐ इसराईल, मैं तुझे किस तरह छोड़ सकता हूँ? मैं तुझे किस तरह दुश्मन के हवाले कर सकता, किस तरह अदमा की तरह दूसरों के कब्ज़े में छोड़ सकता, किस तरह ज़बोईम की तरह तबाह कर सकता हूँ? मेरा इरादा सरार बदल गया है, मैं तुझ पर शफ़कत करने के लिए बेचैन हूँ। 9 न मैं अपना सख़्त ग़ज़ब नाज़िल करूँगा, न दुबारा इसराईल को बरबाद करूँगा। क्योंकि मैं इनसान नहीं बल्कि खुदा हूँ, वह कुदूस जो तेरे दरमियान सुकूनत करता है। मैं ग़ज़ब में नहीं आऊँगा। 10 उस वक़्त वह रब के पीछे ही चलेंगे। तब वह शेरबबर की तरह दहाड़ेगा। और जब दहाड़ेगा तो उसके फ़रज़ंद मगरिब से लरज़ते हुए वापस आएँगे। 11 वह परिदों की तरह फडफडाते हुए मिसर से आएँगे, थरथराते कबूतरों की तरह असूर से लौटेंगे। फिर मैं उन्हें उनके घरों में बसा दूँगा। यह मेरा, रब का फ़रमान है।

12 इसराईल ने मुझे झूट से घेर लिया, फ़रेब से मेरा मुहासरा कर लिया है। लेकिन यहदाह भी मज़बूती से अल्लाह के साथ नहीं है बल्कि आवारा फिरता है, हालाँकि कुदूस खुदा वफ़ादार है।”

## 12

सरकशी की राम कहानी

1 इसराईल हवा चरने की कोशिश कर रहा है, पूरा दिन वह मशरिकी लू के पीछे भागता रहता है। उसके झूट और ज़ुल्म में इज़ाफ़ा होता जा रहा है। असूर से अहद बाँधने के साथ साथ वह मिसर को भी ज़ैतून का तेल भेज देता है।

2 रब अदालत में यहदाह से भी लड़ेगा। वह याक़ूब \* को उसके चाल-चलन की सज़ा, उसके आमाल का मुनासिब अज़्र देगा। 3 क्योंकि माँ के पेट में ही उसने अपने भाई की एडी पकड़कर उसे धोका दिया। जब बालिग हुआ तो अल्लाह से लडा 4 बल्कि फ़रिश्ते से लडते लडते उस पर ग़ालिब आया। फिर उसने रोते रोते उससे इल्तिजा की कि मुझ पर रहम कर। बाद में याक़ूब ने अल्लाह को बैतेल में पाया, और वहाँ खुदा उससे हमकलाम हुआ। 5 रब जो लशकरों का खुदा है और जिसका नाम रब ही है, उसने फ़रमाया, 6 “अपने खुदा के पास वापस आकर रहम और इनसाफ़ कायम रख! कभी अपने खुदा पर उम्मीद रखने से बाज़ न आ।”

7 इसराईल ताजिर है जिसके हाथ में गलत तराजू है और जिसे लोगों से नाजायज़ फायदा उठाने का बड़ा शौक है। 8 वह कहता है, “मैं अमीर हो गया हूँ, मैंने कसरत की दौलत पाई है। कोई साबित नहीं कर सकेगा कि मुझसे यह तमाम मिलकियत हासिल करने में कोई कुसूर या गुनाह सरज़द हुआ है।”

\* 12:2 याक़ूब से मुराद इसराईल है।



9 “लेकिन मैं, रब जो मिसर से तुझे निकालते वक्त आज तक तेरा खुदा हूँ मैं यह नजरंदाज नहीं करूँगा। मैं तुझे दुबारा खैमों में बसने दूँगा। यों होगा जिस तरह उन पहले दिनों में हुआ जब इसराईली मेरी परस्तिश करने के लिए रेगिस्तान में जमा होते थे। 10 मैं बार बार नबियों की मारिफत तुमसे हमकलाम हुआ, मैंने उन्हें मुतअहिद रोयाएँ दिखाई और उनके जरीए तुम्हें तमसिलें सुनाई।”

**बुतपरस्ती का अञ्ज जवाल है**

11 क्या जिलियाद बेदीन है? उसके लोग नाकारा ही है! जिलजाल में लोगों ने सॉड कुरबान किए हैं, इसलिए उनकी कुरबानगाहें मलबे के ढेर बन जाएँगी। वह बीज बोने के लिए तैयारशुदा खेत के किनारे पर लगे पत्थर के ढेर जैसी बनेगी।

12 याकूब को भागकर मुल्के-अराम में पनाह लेनी पड़ी। वहाँ वह बीवी मिलने के लिए मुलाजिम बन गया, औरत के बाइस उसने भेड़-बकरियों की गल्लाबानी की। 13 लेकिन बाद में रब नबी की मारिफत इसराईल को मिसर से निकाल लाया और नबी के जरीए उस की गल्लाबानी की। 14 तो भी इसराईल ने उसे बड़ा तैश दिलाया। अब उन्हें उनकी कल्लो-गारत का अञ्ज भुगतना पड़ेगा। उन्होंने अपने आका की तौहीन की है, और अब वह उन्हें मुनासिब सजा देगा।

## 13

**अल्लाह की तरफ से इसराईल की अदालत**

1 पहले जब इसराईल ने बात की तो लोग कौंप उठे, क्योंकि मुल्के-इसराईल में वह सरफराज था। लेकिन फिर वह बाल की बुतपरस्ती में मुलव्स होकर हलाक हुआ। 2 अब वह अपने गुनाहों में बहुत इजाफा कर रहे हैं। वह अपनी चाँदी लेकर महारत से बुत ढाल लेते हैं। फिर दस्तकारों के हाथ से बने इन बुतों के बारे में कहा जाता है, “जो बछड़े के बुतों को चूमना चाहे वह किसी इनसान को कुरबान करे!” 3 इसलिए वह सुबह-सवेंरे की धूध जैसे आरिजी और धूप में जल्द ही खत्म होनेवाली ओस की मानिंद होंगे। वह गाहते वक्त गंतुम से अलग होनेवाले भूसे की मानिंद हवा में उड़ जाएंगे, घर में से निकलनेवाले धुएँ की तरह जाया हो जाएंगे।

4 “लेकिन मैं, रब तुझे मिसर से निकालते वक्त से लेकर आज तक तेरा खुदा हूँ। तुझे मेरे सिवा किसी और को खुदा नहीं जानना है। मेरे सिवा और कोई नजातदहिदा नहीं है। 5 रेगिस्तान में मैंने तेरी देख-भाल की, वहाँ जहाँ तपती गरमी थी। 6 वहाँ उन्हें अच्छी खुराक मिली। लेकिन जब वह जी भरकर खा सके और सेर हुए तो मगसर होकर मुझे भूल गए। 7 यह देखकर मैं उनके लिए शेरबबर बन गया हूँ। अब मैं चीते की तरह रास्ते के किनारे उनकी ताक में बैठूँगा। 8 उस रीछनी की तरह जिसके बच्चों को छीन लिया गया हो मैं उन पर झपट्टा मारकर उनकी अंतडियों को फाड़ निकालूँगा। मैं उन्हें शेरबबर की तरह हडप कर लूँगा, और जंगली जानवर उन्हें टुकड़े टुकड़े कर देंगे।

9 ऐ इसराईल, तू इसलिए तबाह हो गया है कि तू मेरे खिलाफ है, उसके खिलाफ जो तेरी मदद कर सकता है। 10 अब तेरा बादशाह कहाँ है कि वह तेरे तमाम शहरों में आकर तुझे छुटकारा दे? अब तेरे राहुनुमा किधर है जिनसे तूने कहा था, ‘मुझे बादशाह और राहुनुमा दे दे।’ 11 मैंने गुस्से में तुझे बादशाह दे दिया और गुस्से में उसे तुझसे छीन भी लिया।

12 इसराईल का कुसूर लपेटकर गोदाम में रखा गया है, उसके गुनाह हिसाब-किताब के लिए महफूज रखे गए हैं। 13 दर्द-जह शूस् हो गया है, लेकिन वह नासमझ बच्चा है। वह माँ के पेट से निकलना नहीं चाहता।

14 मैं फिधा देकर उन्हें पाताल से क्यों रिहा करूँ? मैं उन्हें मौत की गिरिफत से क्यों छुड़ाऊँ? ऐ मौत, तेरे काँटे कहाँ रहे? ऐ पाताल, तेरा डंक कहाँ रहा? उसे काम में ला, क्योंकि मैं तरस नहीं खाऊँगा। 15 खाह वह अपने भाइयों के दरमियान फलता-फलता क्यों न हो तो भी रब की तरफ से मशरिकी लू उस पर चलेगी। और जब रेगिस्तान से आएगी तो इसराईल के कुएँ और चश्मे खुश्क हो जाएंगे। हर खजाना, हर कीमती चीज लूट का माल बन जाएगी। 16 सामरिया के बाशिंदों को उनके कुसूर की सजा भुगतनी पड़ेगी, क्योंकि वह अपने खुदा से सरकश हो गए हैं। दुश्मन उन्हें तलवार से मारकर उनके बच्चों को ज़मीन पर पटक देगा और उनकी हामिला औरतों के पेट चीर डालेगा।”

## 14

**रब के पास वापस आओ!**

1 ऐ इसराईल, तौबा करके रब अपने खुदा के पास वापस आ! क्योंकि तेरा कुसूर तेरे जवाल का सबब बन गया है। 2 अपने गुनाहों का इकरार करते हुए रब के पास वापस आओ। उससे कहो, “हमारे तमाम गुनाहों को मुआफ करके हमें मेहरबानी से क़बूल फ़रमा ताकि हम अपने होंटों से तेरी तारीफ़ करके तुझे मुनासिब कुरबानी अदा कर सकें। 3 अस्सु हमें न बचाए। आईदा न हम घोड़ों पर सवार हो जाएंगे, न कहेंगे कि हमारे हाथों की चीज़ें हमारा खुदा हैं। क्योंकि तू ही यतीम पर रहम करता है।”

4 तब रब फरमाएगा, “मैं उनकी बेवफाई के असरात खत्म करके उन्हें शफा दूँगा, हाँ मैं उन्हें खुले दिल से प्यार करूँगा, क्योंकि मेरा उन पर ग़ज़ब ठंडा हो गया है। 5 इसराईल के लिए मैं शबनम की मानिंद हूँगा। तब वह सोसन की मानिंद फूल निकालेगा, लुबनान के देवदार के दरख्त की तरह जड़ पकड़ेगा, 6 उस की कोंपलें फूट निकलेंगी, और शाखें बनकर फैलती जाएँगी। उस की शान जैतून के दरख्त की मानिंद होगी, उस की खुशबू लुबनान के देवदार के दरख्त की खुशबू की तरह फैल जाएगी।

7 लोग दुबारा उसके साये में जा बसेंगे। वहाँ वह अनाज की तरह फलें-फूलेंगे, अंगूर के-से फूल निकालेंगे। दूसरे उनकी यों तारीफ करेंगे जिस तरह लुबनान की उम्दा मैं की। 8 तब इसराईल कहेगा, “मेरा बुतों से क्या वास्ता?” मैं ही तेरी सुनकर तेरी देख-भाल करूँगा। मैं जूनीपर का सायादार दरख्त हूँ, और तू मुझसे ही फल पाएगा।”

9 कौन दानिशमंद है? वह समझ ले। कौन साहबे-फहम है? वह मतलब जान ले। क्योंकि रब की राहें दुस्त हैं। रास्तबाज़ उन पर चलते रहेंगे, लेकिन सरकश उन पर चलते वक्त ठोकर खाकर गिर जाएंगे।

## योएल

- 1 जैल में रब का वह कलाम है जो योएल बिन फतुएल पर नाज़िल हुआ।
- 2 ऐ बुजुर्गो, सुनो! ऐ मुल्क के तमाम बाशिदो, तवज्जुह दो! जो कुछ इन दिनों में तुम्हें पेश आया है क्या वह पहले कभी तुम्हें या तुम्हारे बापदादा को पेश आया? 3 अपने बच्चों को इसके बारे में बताओ, जो कुछ पेश आया है उस की याद नसल-दर-नसल ताज़ा रहे।
- 4 जो कुछ टिट्टी के लार्वे ने छोड़ दिया उसे बालिग टिट्टी खा गई, जो बालिग टिट्टी छोड़ गई उसे टिट्टी का बच्चा खा गया, और जो टिट्टी का बच्चा छोड़ गया उसे जवान टिट्टी खा गई। 5 ऐ नशे में धुत लोगो, जाग उठो और रो पड़ो! ऐ मेरे पीनिवालो, वावैला करो! क्योंकि नई मैं तुम्हारे मुँह से छीन ली गई है। 6 टिट्टियों की जबरदस्त और अनगिनत कौम मेरे मुल्क पर टूट पड़ी है। उनके शेर के-से दाँत और शेरनी का-सा जबड़ा है। 7 नतीजे में मेरे अंगूर की बेलें तबाह, मेरे अंजीर के दरख्त जाया हो गए हैं। टिट्टियों ने छाल को भी उतार लिया, अब शाखें सफेद सफेद नज़र आती हैं।
- 8 आहो-जारी करो, टाट से मुल्बस उस कुँवारी की तरह गिर्या करो जिसका मंगेतर इंतकाल कर गया हो। 9 रब के घर में गल्ला और मै की नज़रें बंद हो गई हैं। इमाम जो रब के खादिम हैं मातम कर रहे हैं। 10 खेत तबाह हुए, ज़मीन झुलस गई है। अनाज खत्म, अंगूर खत्म, ज़ैतून खत्म।
- 11 ऐ काशतकारो, शर्मसार हो जाओ! ऐ अंगूर के बागबानो, आहो-बुका करो! क्योंकि खेत की फसल बरबाद हो गई है, गंदुम और जौ की फसल खत्म ही है। 12 अंगूर की बेल सूख गई, अंजीर का दरख्त मुरझा गया है। अनार, खजूर, सेब बल्कि फल लानेवाले तमाम दरख्त पजमुरदा हो गए हैं। इनसान की तमाम ख़ुशी खाक में मिलाई गई है।
- 13 ऐ इमामो, टाट का लिबास ओढकर मातम करो! ऐ कुरबानगाह के खादिमो, वावैला करो! ऐ मेरे खुदा के खादिमो, आओ, रात को भी टाट ओढकर गुज़ारो! क्योंकि तुम्हारे खुदा का घर गल्ला और मै की नज़रों से महरूम हो गया है।
- 14 मुकद्दस रोज़े का एलान करो। लोगों को खास इजतिमा के लिए बुलाओ। बुजुर्गो और मुल्क के तमाम बाशिदों को रब अपने खुदा के घर में जमा करके बुलंद आवाज़ से रब से इल्लिजा करो।
- 15 उस दिन पर अफ़सोस! क्योंकि रब का वह दिन करीब ही है जब कादिरे-मुतलक हम पर तबाही नाज़िल करेगा।
- 16 क्या ऐसा नहीं हुआ कि हमारे देखते देखते हमसे ख़ुराक छीन ली गई, कि अल्लाह के घर में ख़ुशीओ-शादमानी बंद हो गई है? 17 ढेलों में छुपे बीज झुलस गए हैं, इसलिए खाली गोदाम खस्ताहाल और अनाज को महफूज़ रखने के मकान टूट फूट गए हैं। उनकी ज़रूरत नहीं रही, क्योंकि गल्ला सूख गया है। 18 हाय, मवेशी कैसी दर्दनाक आवाज़ निकाल रहे हैं! गाय-बैल पेशानी से इधर उधर फिर रहे हैं, क्योंकि कहीं भी चरागाह नहीं मिलती। भेड़-बकरियों को भी तकलीफ है।
- 19 ऐ रब, मैं तुझे पुकारता हूँ, क्योंकि खुले मैदान की चरागाहें नज़रे-आतिश हो गई हैं, तमाम दरख्त भस्म हो गए हैं।
- 20 जंगली जानवर भी हाँपते हाँपते तेरे इंतज़ार में हैं, क्योंकि नदियाँ सूख गई हैं, और खुले मैदान की चरागाहें नज़रे-आतिश हो गई हैं।

## 2

### रब का अदालती दिन

1 कोहे-सिय्यून पर नरसिंगा फूँको, मेरे मुकद्दस पहाड़ पर जंग का नारा लगाओ। मुल्क के तमाम बाशिदे लरज़ उठें, क्योंकि रब का दिन आनेवाला है बल्कि करीब ही है। 2 जुल्मत और तारीकी का दिन, घने बादलों और घुप अंधेरे का दिन होगा। जिस तरह पौ फटते ही रौशनी पहाड़ों पर फैल जाती है उसी तरह एक बड़ी और ताकतवर कौम आ रही है, ऐसी कौम जैसी न माज़ी में कभी थी, न मुस्तकबिल में कभी होगी। 3 उसके आगे आगे आतिश सब कुछ भस्म करती है, उसके पीछे पीछे झुलसानेवाला शोला चलता है। जहाँ भी वह पहुँचे वहाँ मुल्क वीरानो-सुनसान हो जाता है, खाह वह बागे-अदन क्यों न होता। उससे कुछ नहीं बचता। 4 देखने में वह घोड़े जैसे लगते हैं, फ़ौजी घोड़ों की तरह सरपट दौड़ते हैं। 5 रथों का-सा शोर मचाते हुए वह उछल उछलकर पहाड़ की चोटियों पर से गुज़रते हैं। भूसे को भस्म करनेवाली आग की चटखनी आवाज़ सुनाई देती है जब वह जंग के लिए तैयार बड़ी बड़ी फ़ौज की तरह आगे बढ़ते हैं। 6 उन्हें देखकर कौम डर के मारे पेचो-ताब खाने लगती हैं, हर चेहरा मोंद पड़ जाता है।

7 वह सूमाओ की तरह हमला करते, फ़ौजियों की तरह दीवारों पर छल्लों लगाते हैं। सब सफ़ बाँधकर आगे बढ़ते हैं, एक भी मुक़ररा रास्ते से नहीं हटता। 8 वह एक दूसरे को धक्का नहीं देते बल्कि हर एक सीधा अपनी राह पर आगे बढ़ता है।

यों सफ़बस्ता होकर वह दुश्मन की दिफ़ाई सफ़ों में से गुज़र जाते हैं<sup>9</sup> और शहर पर झपट्टा मारकर फ़सील पर छल्लों लगाते हैं, घरों की दीवारों पर चढकर चोर की तरह खिडकियों में से घुस आते हैं।

10 उनके आगे आगे ज़मीन काँप उठती, आसमान थरथराता, सूरज और चाँद तारीक हो जाते और सितारों की चमक-दमक जाती रहती है।<sup>11</sup> रब खुद अपनी फ़ौज के आगे आगे गरजता रहता है। उसका लशकर निहायत बड़ा है, और जो फ़ौजी उसके हुकम पर चलते हैं वह ताकतवर हैं। क्योंकि रब का दिन अज़ीम और निहायत हौलनाक है, कौन उसे बरदाश्त कर सकता है?

**तौबा करके वापस आओ**

12 रब फ़रमाता है, “अब भी तुम तौबा कर सकते हो। पूरे दिल से मेरे पास वापस आओ! रोज़ा रखो, आहो-ज़ारी करो, मातम करो! 13 रंजिश का इज़हार करने के लिए अपने कपड़ों को मत फाड़ो बल्कि अपने दिल को।”

रब अपने खुदा के पास वापस आओ, क्योंकि वह मेहरबान और रहीम है। वह तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है और जल्द ही सज़ा देने से पछताता है।<sup>14</sup> कौन जाने, शायद वह इस बार भी पछताकर अपने पीछे बरकत छोड़ जाए और तुम नए सिरे से रब अपने खुदा को ग़ल्ला और मै की नज़रें पेश कर सको।

15 कोहे-सिय्यून पर नरसिंगा फ़ूँको, मुक़द्दस रोज़े का एलान करो, लोगों को ख़ास इजतिमा के लिए बुलाओ! 16 लोगों को जमा करो, फिर जमात को मख़सूसो-मुक़द्दस करो। न सिर्फ़ बुजुर्गों को बल्कि बच्चों को भी शीरख़ारों समेत इक़्श करो। दूल्हा और दूल्हन भी अपने अपने उरसी कमरों से निकलकर आएँ। 17 लाज़िम है कि इमाम जो अल्लाह के खादिम हैं रब के घर के बरामदे और क़ुरबानगाह के दरमियान खड़े होकर आहो-ज़ारी करें। वह इकरार करें, “ऐ रब, अपनी क़ौम पर तरस की निगाह डाल! अपनी मौस्सी मिलकियत को लान-तान का निशाना बनने न दे। ऐसा न हो कि दीगर अक़वाम उसका मज़ाक़ उड़ाकर कहें, ‘उनका खुदा कहाँ है?’”

**रब अपनी क़ौम पर रहम करता है**

18 तब रब अपने मुल्क के लिए ग़ैरत खाकर अपनी क़ौम पर तरस खाएगा।<sup>19</sup> वह अपनी क़ौम से वादा करेगा, “मैं तुम्हें इतना अनाज, अंगूर और ज़ैतून भेज देता हूँ कि तुम सेर हो जाओगे। आइंदा मैं तुम्हें दीगर अक़वाम के मज़ाक़ का निशाना नहीं बनाऊँगा।<sup>20</sup> मैं शिमाल से आए हुए दुश्मन को तुमसे दूर करके वीरानो-सुनसान मुल्क में भगा दूँगा। वहाँ उसके अगले दस्ते मशरिकी समुंदर में और उसके पिछले दस्ते मग़रिबी समुंदर में डूब जाएंगे। तब उनकी गली सड़ी नाशों की बद्बू चारों तरफ़ फैल जाएगी।” क्योंकि उस \* ने अज़ीम काम किए हैं।

21 ऐ मुल्क, मत डरना बल्कि शादियाना बजाकर खुशी मना! क्योंकि रब ने अज़ीम काम किए हैं।

22 ऐ जंगली जानवरो, मत डरना, क्योंकि खले मैदान की हरियाली दुबारा उगने लगी है। दरख़्त नए सिरे से फल ला रहे हैं, अंजीर और अंगूर की बड़ी फ़सल पक रही है।

23 ऐ सिय्यून के बाशिंदो, तुम भी शादियाना बजाकर रब अपने खुदा की खुशी मनाओ। क्योंकि वह अपनी रास्ती के मुताबिक़ तुम पर मेह बरसाता, पहले की तरह खिजों और बहार की बारिशें बाख़्श देता है।<sup>24</sup> अनाज की कसरत से गाहने की जगहें भर जाएँगी, अंगूर और ज़ैतून की कसरत से हौज़ छलक उठेंगे।

25 रब फ़रमाता है, “मैं तुम्हें सब कुछ वापस कर दूँगा जो टिड्डियों की बड़ी फ़ौज ने खा लिया है। तुम्हें सब कुछ वापस मिल जाएगा जो बालिग़ टिड्डी, टिड्डी के बच्चे, जवान टिड्डी और टिड्डियों के लार्वा ने खा लिया जब मैंने उन्हें तुम्हारे खिलाफ़ भेजा था।<sup>26</sup> तुम दुबारा जी भरकर खा सकोगे। तब तुम रब अपने खुदा के नाम की सताइश करोगे जिसने तुम्हारी खातिर इतने बड़े मोजिजे किए हैं। आइंदा मेरी क़ौम कभी शरमिंदा न होगी।<sup>27</sup> तब तुम जान लोगे कि मैं इसराईल के दरमियान मौजूद हूँ, कि मैं, रब तुम्हारा खुदा हूँ और मेरे सिवा और कोई नहीं है। आइंदा मेरी क़ौम कभी भी शर्मसार नहीं होगी।

**अल्लाह अपने रूह का वादा करता है**

28 इसके बाद मैं अपने रूह को तमाम इनसानों पर उंडेल दूँगा। तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबूवत करेंगे, तुम्हारे बुजुर्ग़ ख़ाब और तुम्हारे नौजवान रोयाँ देखेंगे।<sup>29</sup> उन दिनों में मैं अपने रूह को खादिमों और खादिमाओं पर भी उंडेल दूँगा।<sup>30</sup> मैं आसमान पर मोजिजे दिखाऊँगा और ज़मीन पर इलाही निशान जाहिर करूँगा, खून, आग और धुएँ के बादल।<sup>31</sup> सूरज तारीक हो जाएगा, चाँद का रंग खून-सा हो जाएगा, और फिर रब का अज़ीम और जलाली दिन आएगा।<sup>32</sup> उस वक़्त जो भी रब का नाम लेगा नज़ात पाएगा। क्योंकि कोहे-सिय्यून पर और यम्शलम में नज़ात मिलेगी, बिलकुल उसी तरह जिस तरह रब ने फ़रमाया है। जिन बच्चे हुआँ को रब ने बुलाया है उन्हीं में नज़ात पाई जाएगी।

\* 2:30 ग़ालिबन ‘उस’ से मुराद खुदा है, लेकिन दुश्मन भी हो सकता है।

## 3

## दुश्मन की सजा

1 उन दिनों में, हों उस वक्त जब मैं यहदाह और यरूशलम को बहाल करूँगा 2 मैं तमाम दीगर अक्रवाम को जमा करके वादीए-यहसफत \* में ले जाऊँगा। वहाँ मैं अपनी क्रौम और मौरूसी मिलकियत की खातिर उनसे मुकदमा लडूँगा। क्योंकि उन्होंने मेरी क्रौम को दीगर अक्रवाम में मंतशिर करके मेरे मुल्क को आपस में तकसीम कर लिया, 3 कुरा डालकर मेरी क्रौम को आपस में बाँट लिया है। उन्होंने इसराईली लडकों को कसबियों के बदले में दे दिया और इसराईली लडकियों को फरोख्त किया ताकि मैं खरीदकर पी सकें।

4 ऐ सूर, सैदा और तमाम फिलिस्ती इलाको, मेरा तुमसे क्या वास्ता? क्या तुम मुझसे इंतकाम लेना या मुझे सजा देना चाहते हो? जल्द ही मैं तेज़ी से तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो तुमने दूसरों के साथ किया है। 5 क्योंकि तुमने मेरी सोना-चाँदी और मेरे बेशकीमत ख़जाने लूटकर अपने मंदिरों में रख लिए हैं। 6 यहदाह और यरूशलम के बाशिंदों को तुमने यूनानियों के हाथ बेच डाला ताकि वह अपने वतन से दूर रहें।

7 लेकिन मैं उन्हें जगाकर उन मकामों से वापस लाऊँगा जहाँ तुमने उन्हें फरोख्त कर दिया था। साथ साथ मैं तुम्हारे साथ वह कुछ करूँगा जो तुमने उनके साथ किया था। 8 रब फरमाता है कि मैं तुम्हारे बेटे-बेटियों को यहदाह के बाशिंदों के हाथ बेच डालूँगा, और वह उन्हें दूर-दराज़ क्रौम सबा के हवाले करके फरोख्त करेंगे।

9 बुलंद आवाज़ से दीगर अक्रवाम में एलान करो कि जंग की तैयारियाँ करो। अपने बेहतरीन फौजियों को खडा करो। लडने के काबिल तमाम मर्द आकर हमला करें। 10 अपने हल की फालियों को कूट कूटकर तलवारों बना लो, काँट-छाँट के औज़ारों को नेज़ों में तबदील करो। कमज़ोर आदमी भी कहे, 'मैं सूरमा हूँ।' 11 ऐ तमाम अक्रवाम, चारों तरफ से आकर वादी में जमा हो जाओ! जल्दी करो!"

ऐ रब, अपने सूरमाओं को वहाँ उतरने दे!

12 "दीगर अक्रवाम हरकत में आकर वादीए-यहसफत में आ जाएँ। क्योंकि वहाँ मैं तख्त पर बैठकर इर्दगिर्द की तमाम अक्रवाम का फ़ैसला करूँगा। 13 आओ, दारौती चलाओ, क्योंकि फ़सल पक गई है। आओ, अंगूर को कुचल दो, क्योंकि उसका रस निकालने का हौज़ भरा हुआ है, और तमाम बरतन रस से छलकने लगे हैं। क्योंकि उनकी बुराई बहुत है।"

14 फ़ैसले की वादी में हंगामा ही हंगामा है, क्योंकि फ़ैसले की वादी में रब का दिन करीब आ गया है। 15 सूरज और चाँद तारीक हो जाएंगे, सितारों की चमक-दमक जाती रहेगी। 16 रब कोहे-सियून पर से दहाडेगा, यरूशलम से उस की गरजती आवाज़ यों सुनाई देगी कि आसमानो-ज़मीन लरज़ उठेंगे।

## इसराईल का जलाली मुस्तक़बिल

लेकिन रब अपनी क्रौम की पनाहगाह और इसराईलियों का किला होगा। 17 "तब तुम जान लोगे कि मैं, रब तुम्हारा खुदा हूँ और अपने मुकद्दस पहाड सियून पर सुकूनत करता हूँ। यरूशलम मुकद्दस होगा, और आइंदा परदेसी उसमें से नहीं गुज़रेंगे।

18 उस दिन हर चीज़ कसरत से दस्तयाब होगी। पहाडों से अंगूर का रस टपकेगा, पहाडियों से दूध की नदियाँ बहेगी, और यहदाह के तमाम नदी-नाले पानी से भरे रहेंगे। नीज़, रब के घर में से एक चश्मा फूट निकलेगा और बहता हुआ वादीए-शित्तीम की आबपाशी करेगा। 19 लेकिन मिसर तबाह और अदोम वीरानो-सुनसान हो जाएगा, क्योंकि उन्होंने यहदाह के बाशिंदों पर जुल्मो-तशद्दुद किया, उनके अपने ही मुल्क में बेकूसूर लोगों को कत्ल किया है। 20 लेकिन यहदाह हमेशा तक आबाद रहेगा, यरूशलम नसल-दर-नसल कायम रहेगा। 21 जो कत्लो-गारत उनके दरमियान हुई है उस की सजा मैं जरूर दूँगा।"

रब कोहे-सियून पर सुकूनत करता है!

\* 3:2 यहसफत का मतलब : 'रब अदालत करता है।'

## आमूस

### इसराईल के पड़ोसियों की अदालत

1 जैल में आमूस के पैगामात कलमबंद हैं। आमूस तकुअ शहर का गल्लाबान था। जलजले से दो साल पहले उसने इसराईल के बारे में रोया में यह कुछ देखा। उस वक़्त उज्जियाह यहदाह का और यरुबियाम बिन युआस इसराईल का बादशाह था।

2 आमूस बोला, “रब कोहे-सियून पर से दहाडता है, उस की गरजती आवाज़ यरुशलम से सुनाई देती है। तब गल्लाबानों की चरागाहें सूख जाती हैं और करमिल की चोटी पर जंगल मुरझा जाता है।”

3 रब फरमाता है, “दमिशक के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सजा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने जिलियाद को गाहने के आहनी औज़ार से ख़ूब कूटकर गाह लिया है। 4 चुनौचे मैं हज़ाएल के घराने पर आग नाज़िल करूँगा, और बिन-हदद के महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे। 5 मैं दमिशक के कुंडे को तोड़कर बिकअत-आवन और बैत-अदन के हुक्मरानों को मौत के घाट उतारूँगा। अराम की कौम जिलावतन होकर क़ीर में जा बसेगी।” यह रब का फरमान है।

6 रब फरमाता है, “गज्जा के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सजा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने पूरी आबादियों को जिलावतन करके अदोम के हवाले कर दिया है। 7 चुनौचे मैं गज्जा की फ़सील पर आग नाज़िल करूँगा, और उसके महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे। 8 अशदूद और अस्कलून के हुक्मरानों को मैं मार डालूँगा, अकरून पर भी हमला करूँगा। तब बचे-खुचे फिलिस्ती भी हलाक हो जाएंगे।” यह रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।

9 रब फरमाता है, “सूर के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सजा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने बरादाराना अहद का लिहाज़ न किया बल्कि पूरी आबादियों को जिलावतन करके अदोम के हवाले कर दिया। 10 चुनौचे मैं सूर की फ़सील पर आग नाज़िल करूँगा, और उसके महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे।”

11 रब फरमाता है, “अदोम के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सजा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने अपने इसराईली भाइयों को तलवार से मार मारकर उनका ताक्कुब किया और सख्ती से उन पर रहम करने से इनकार किया। उनका क़हर भडकता रहा, उनका तैश कभी ठंडा न हुआ। 12 चुनौचे मैं तेमान पर आग नाज़िल करूँगा, और बुरसा के महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे।”

13 रब फरमाता है, “अम्मोन के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सजा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि अपनी सरहदों को बढ़ाने के लिए उन्होंने जिलियाद की हामिला औरतों के पेट चीर डाले। 14 चुनौचे मैं रब्बा की फ़सील को आग लगा दूँगा, और उसके महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे। जंग के उस दिन हर तरफ़ फ़ौजियों के नारे बुलंद हो जाएंगे, तूफ़ान के उस दिन उन पर सख़्त आँधी टूट पड़ेगी। 15 उनका बादशाह अपने अफ़सरों समेत कैदी बनकर जिलावतन हो जाएगा।” यह रब का फरमान है।

## 2

1 रब फरमाता है, “मोआब के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सजा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने अदोम के बादशाह की हड्डियों को जलाकर राख कर दिया है। 2 चुनौचे मैं मुल्के-मोआब पर आग नाज़िल करूँगा, और करियेत के महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे। जंग का शोर-शराबा मचेगा, फ़ौजियों के नारे बुलंद हो जाएंगे, नरसिगा फूँका जाएगा। तब मोआब हलाक हो जाएगा। 3 मैं उसके हुक्मरान को उसके तमाम अफ़सरों समेत हलाक कर दूँगा।” यह रब का फरमान है।

### यहदाह की अदालत

4 रब फरमाता है, “यहदाह के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सजा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि उन्होंने रब की शरीअत को रड़ करके उसके अहकाम पर अमल नहीं किया। उनके झूठे देवता उन्हें गलत राह पर ले गए हैं, वह देवता जिनकी पैरवी उनके बापदादा भी करते रहे। 5 चुनौचे मैं यहदाह पर आग नाज़िल करूँगा, और यरुशलम के महल नज़रे-आतिश हो जाएंगे।”

### इसराईल की अदालत

6 रब फरमाता है, “इसराईल के बाशिंदों ने बार बार गुनाह किया है, इसलिए मैं उन्हें सजा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। क्योंकि वह शरीफ़ लोगों को पैसे के लिए बेचते और ज़रूरतमंदों को फरोख़्त करते हैं ताकि एक जोड़ी जूता मिल जाए। 7 वह ग़रीबों

के सर को ज़मीन पर कुचल देते, मुसीबतजदों को इनसाफ मिलने से रोकते हैं। बाप और बेटा दोनों एक ही कसबी के पास जाकर मेरे नाम की बेहुरमती करते हैं।<sup>8</sup> जब कभी किसी कुरबानगाह के पास पूजा करने जाते हैं तो ऐसे कपड़ों पर आराम करते हैं जो कर्जदारों ने ज़मानत के तौर पर दिए थे। जब कभी अपने देवता के मंदिर में जाते तो ऐसे पैसों से मैं खरीदकर पीते हैं जो ज़रमाना के तौर पर ज़रूरतमंदों से मिल गए थे।

<sup>9</sup> यह कैसी बात है? मैं ही ने अमोरियों को उनके आगे आगे नेस्त कर दिया था, हालाँकि वह देवदार के दरख्तों जैसे लंबे और बलूत के दरख्तों जैसे ताकतवर थे। मैं ही ने अमोरियों को जड़ों और फल समेत मिटा दिया था।<sup>10</sup> इससे पहले मैं ही तुम्हें मिसर से निकाल लाया, मैं ही ने चालीस साल तक रेगिस्तान में तुम्हारी राहनुमाई करते करते तुम्हें अमोरियों के मुल्क तक पहुँचाया ताकि उस पर कब्जा करो।<sup>11</sup> मैं ही ने तुम्हारे बेटों में से नबी बरपा किए, और मैं ही ने तुम्हारे नौजवानों में से कुछ चुन लिए ताकि अपनी खिदमत के लिए मखसूस करूँ।” रब फरमाता है, “ऐ इसराईलियो, क्या ऐसा नहीं था?<sup>12</sup> लेकिन तुमने मेरे लिए मखसूस आदमियों को मैं पिलाई और नबियों को हुक्म दिया कि नबुवत मत करो।

<sup>13</sup> अब मैं होने दूँगा कि तुम अनाज से खूब लदी हुई बैलगाड़ी की तरह झूलने लगोगे।<sup>14</sup> न तेज़रौ शख्स भागकर बचेगा, न ताकतवर आदमी कुछ कर पाएगा। न सूमा अपनी जान बचाएगा,<sup>15</sup> न तीर चलानेवाला कायम रहेगा। कोई नहीं बचेगा, खाह पैदल दौड़नेवाला हो या घोड़े पर सवार।<sup>16</sup> उस दिन सबसे बहादुर सूमा भी हथियार डालकर नंगी हालत में भाग जाएगा।” यह रब का फरमान है।

### 3

<sup>1</sup> ऐ इसराईलियो, वह कलाम सुनो जो रब तुम्हारे खिलाफ फरमाता है, उस पूरी कौम के खिलाफ जिसे मैं मिसर से निकाल लाया था।<sup>2</sup> “दुनिया की तमाम कौमों में से मैंने सिर्फ तुम्हीं को जान लिया, इसलिए मैं तुम्हीं को तुम्हारे तमाम गुनाहों की सज़ा दूँगा।”

#### नबी की ज़िम्मादारी

<sup>3</sup> क्या दो अफ़राद मिलकर सफ़र कर सकते हैं अगर वह मुतफ़िक न हों? <sup>4</sup> क्या शेरबबर दहाड़ता है अगर उसे शिकार न मिला हो? क्या जवान शेर अपनी माँद में गरजता है अगर उसने कुछ पकड़ा न हो? <sup>5</sup> क्या परिदा फंदे में फँस जाता है अगर फंदे को लगाया न गया हो? या फंदा कुछ फँसा सकता है अगर शिकार न हो? <sup>6</sup> जब शहर में नरसिंगा फूँका जाता है ताकि लोगों को किसी ख़तरे से आगाह करे तो क्या वह नहीं घबराते? जब आफ़त शहर पर आती है तो क्या रब की तरफ से नहीं होती?

<sup>7</sup> यक़ीनन जो भी मनसूबा रब कादिरे-मुतलक बाँधे उस पर अमल करने से पहले वह उसे अपने ख़ादिमों यानी नबियों पर जाहिर करता है।

<sup>8</sup> शेरबबर दहाड़ उठा है तो कौन है जो डर न जाए? रब कादिरे-मुतलक बोल उठा है तो कौन है जो नबुवत न करे?

#### सामरिया को रिहाई नहीं मिलेगी

<sup>9</sup> अशदूद और मिसर के महलों को इतला दो, “सामरिया के पहाड़ों पर जमा होकर उस पर नज़र डालो जो कुछ शहर में हो रहा है। कितनी बड़ी हलचल मच गई है, कितना ज़ुल्म हो रहा है।”<sup>10</sup> रब फरमाता है, “यह लोग सहीह काम करना जानते ही नहीं बल्कि ज़ालिम और तबाहकुन तरीकों से अपने महलों में ख़जाने जमा करते हैं।”

<sup>11</sup> चुन्चें रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, “दुश्मन मुल्क को घेरकर तेरी किलाबंदियों को ढा देगा और तेरे महलों को लूट लेगा।”<sup>12</sup> रब फरमाता है, “अगर चरवाहा अपनी भेड़ को शेरबबर के मुँह से निकालने की कोशिश करे तो शायद दो पिंडलियाँ या कान का टुकड़ा बच जाए। सामरिया के इसराईली भी इसी तरह ही बच जाएंगे, खाह वह इस वक़्त अपने शानदार सोफ़ों और खूबसूरत गढ़ियों पर आराम क्यों न करें।”

<sup>13</sup> रब कादिरे-मुतलक जो आसमानी लशकरों का ख़ुदा है फरमाता है, “सुनो, याक़ब के घराने के खिलाफ़ गवाही दो!<sup>14</sup> जिस दिन मैं इसराईल को उसके गुनाहों की सज़ा दूँगा उस दिन मैं बैतल की कुरबानगाहों को मिसमार करूँगा। तब कुरबानगाह के कोनों पर लगे सींग टूटकर ज़मीन पर गिर जाएंगे।<sup>15</sup> मैं सदियों और गरमियों के मौसम के लिए तामीर किए गए घरों को ढा दूँगा। हाथीदाँत से आरास्ता इमारतें खाक में मिलाई जाएँगी, और जहाँ इस वक़्त मुतअदिद मकान नज़र आते हैं वहाँ कुछ नहीं रहेगा।” यह रब का फरमान है।

### 4

#### सामरिया की ज़ालिम औरतें

1 ए कोहे-सामरिया की मोटी-ताजी गायो, \* सुनो मेरी बात! तुम गरीबों पर जुल्म करती और ज़रूरतमंदों को कुचल देती, तुम अपने शौहरों को कहती हो, “जाकर मैं ले आओ, हम और पीना चाहती हैं।” 2 रब ने अपनी कृदसियत की कसम खाकर फरमाया है, “वह दिन आनेवाला है जब दुश्मन तुम्हें काँटों के ज़रीए घसीटकर अपने साथ ले जाएगा। जो बचेगा उसे मछली के काँटे से पकड़ा जाएगा। 3 हर एक को फ़सल के रखनों में से सीधा निकलना पड़ेगा, हर एक को हरमून पहाड़ की तरफ़ भगा दिया जाएगा।” यह रब का फ़रमान है।

इसराईल को समझाया नहीं जा सकता

4 “चलो, बैतेल जाकर गुनाह करो, जिलजाल जाकर अपने गुनाहों में इज़ाफ़ा करो! सुबह के वक़्त अपनी कुरबानियों को चढाओ, तीसरे दिन आमदनी का दसवाँ हिस्सा पेश करो। 5 खमीरी रोटी जलाकर अपनी शक्रगुजारी का इज़हार करो, बुलंद आवाज़ से उन कुरबानियों का एलान करो जो तुम अपनी खुशी से अदा कर रहे हो। क्योंकि ऐसी हरकतें तुम इसराईलियों को बहुत पसंद हैं।” यह रब कादिरे-मुतलक का फ़रमान है।

6 रब फ़रमाता है, “मैंने काल पड़ने दिया। हर शहर और आबादी में रोटी ख़त्म हुई। तो भी तुम मेरे पास वापस नहीं आए। 7 अभी फ़सल के पकने तक तीन माह बाकी थे कि मैंने तुम्हारे मुल्क में बारिशों को रोक दिया। मैंने होने दिया कि एक शहर में बारिश हुई जबकि साथवाला शहर उससे महसूम रहा, एक खेत बारिश से सेराब हुआ जबकि दूसरा झुलस गया। 8 जिस शहर में थोड़ा-बहुत पानी बाकी था वहाँ दीगर कई शहरों के बाशिदे लड़खड़ाते हुए पहुँचे, लेकिन उनके लिए काफी नहीं था। तो भी तुम मेरे पास वापस न आए!” यह रब का फ़रमान है।

9 रब फ़रमाता है, “मैंने तुम्हारी फ़सलों को पतरोग और फ़फ़ूँदी से तबाह कर दिया। जो भी तुम्हारे मुतअदिद अंगूर, अंजीर, जैतून और बाकी फ़ल के बाग़ों में उगता था उसे टिड्डियों खा गई। तो भी तुम मेरे पास वापस न आए।”

10 रब फ़रमाता है, “मैंने तुम्हारे दरमियान ऐसी मोहलक बीमारी फैला दी जैसी क़दीम ज़माने में मिस्र में फैल गई थी। तुम्हारे नौजवानों को मैंने तलवार से मार डाला, तुम्हारे घोड़े तुमसे छीन लिए गए। तुम्हारी लशकरगाहों में लाशों का तापफ़ुन इतना फैल गया कि तुम बहुत तंग हुए। तो भी तुम मेरे पास वापस न आए।”

11 रब फ़रमाता है, “मैंने तुम्हारे दरमियान ऐसी तबाही मचाई जैसी उस दिन हुई जब मैंने सदूम और अमुरा को तबाह किया। तुम्हारी हालत बिलकुल उस लकड़ी की मानिंद थी जो आग से निकालकर बचाई तो गई लेकिन फिर भी काफी झुलस गई थी। तो भी तुम वापस न आए। 12 चुनाँचे ए इसराईल, अब मैं आइंदा भी तेरे साथ ऐसा ही करूँगा। और चूँकि मैं तेरे साथ ऐसा करूँगा, इसलिए अपने खुदा से मिलने के लिए तैयार हो जा, ए इसराईल!”

13 क्योंकि अल्लाह ही पहाड़ों को तशकील देता, हवा को खलक करता और अपने खयालालत को इनसान पर जाहिर करता है। वही तड़का और अंधेरा पैदा करता और वही ज़मीन की बुलंदियों पर चलता है। उसका नाम ‘रब, लशकरों का खुदा’ है।

## 5

मेरे पास लौट आओ!

1 ए इसराईली कौम, मेरी बात सुनो, तुम्हारे बारे में मेरे नोहा पर ध्यान दो!

2 “कुँवारी इसराईल गिर गई है और आइंदा कभी नहीं उठेगी। उसे उस की अपनी ज़मीन पर पटख दिया गया है, और कोई उसे दुबारा खड़ा नहीं करेगा।”

3 रब कादिरे-मुतलक फ़रमाता है, “इसराईल के जिस शहर से 1,000 मर्द लड़ने के लिए निकलेंगे उसके सिर्फ़ 100 अफ़राद वापस आएँगे। और जिस शहर से 100 निकलेंगे, उसके सिर्फ़ 10 मर्द वापस आएँगे।” 4 क्योंकि रब इसराईली कौम से फ़रमाता है, “मुझे तलाश करो तो तुम जीते रहोगे। 5 न बैतेल के तालिब हो, न जिलजाल के पास जाओ, और न बैर-सबा के लिए ख़ाना हो जाओ! क्योंकि जिलजाल के बाशिदे यकनीन जिलावतन हो जाएँगे, और बैतेल नेस्तो-नाबूद हो जाएगा।”

6 रब को तलाश करो तो तुम जीते रहोगे। वरना वह आग की तरह यूसुफ़ के घराने में से गुज़रकर बैतेल को भस्म करेगा, और उसे कोई नहीं बुझा सकेगा।

हर तरफ़ नाइनसाफी

7 उन पर अफ़सोस जो इनसाफ़ को उलटकर ज़हर में बदल देते, जो रास्ती को ज़मीन पर पटख देते हैं!

\* 4:1 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : ‘बसन की गायो।’ बसन एक पहाड़ी इलाका था जिसके मवेशी मशहूर थे।



8 अल्लाह सात सहेलियों के झमके और जौजे का खालिक है। अंधेरे को वह सुबह की रौशनी में और दिन को रात में बदल देता है। जो समुंद्र के पानी को बुलाकर रूए-जमीन पर उंडेल देता है उसका नाम रब है! 9 अचानक ही वह जोरावरों पर आफत लाता है, और उसके कहने पर किलाबंद शहर तबाह हो जाता है।

10 तुम उससे नफरत करते हो जो अदालत में इनसाफ करे, तुम्हें उससे घिन आती है जो सच बोले। 11 तुम गरीबों को कुचलकर उनके अनाज पर हद से ज्यादा टैक्स लगाते हो। इसलिए गो तुमने तराशे हुए पत्थरों से शानदार घर बनाए हैं तो भी उनमें नहीं रहोगे, गो तुमने अंगूर के फलते-फूलते बाग लगाए हैं तो भी उनकी मैं से महजुज नहीं होगे। 12 मैं तो तुम्हारे मृतअद्दिद जरायम और संगीन गुनाहों से खूब वाकिफ हूँ। तुम रास्तबाजों पर जल्म करते और रिख्त लेकर गरीबों को अदालत में इनसाफ से महरूम रखते हो। 13 इसलिए समझदार शख्स इस वक्त खामोश रहता है, वक्त इतना ही बुरा है।

14 बुराई को तलाश न करो बल्कि अच्छाई को, तब ही जीते रहोगे। तब ही तुम्हारा दावा दुस्त होगा कि रब जो लशकरोँ का खुदा है हमारे साथ है। 15 बुराई से नफरत करो और जो कुछ अच्छा है उसे प्यार करो। अदालतों में इनसाफ कायम रखो, शायद रब जो लशकरोँ का खुदा है यूसुफ के बचे-खुचे हिस्से पर रहम करे।

16 चुनौचे रब जो लशकरोँ का खुदा और हमारा आका है फरमाता है, “तमाम चौकों में आहो-बुका होगी, तमाम गलियों में लोग ‘हाय, हाय’ करेंगे। खेतीबाड़ी करनेवालों को भी बुलाया जाएगा ताकि पेशावराना तौर पर सोग मनावेवालों के साथ गिर्याओ-जारी करें। 17 अंगूर के तमाम बागों में वावैला मचेगा, क्योंकि मैं खुद तुम्हारे दरमियान से गुजरूँगा।” यह रब का फरमान है।

### रब का दिन हौलनाक है

18 उन पर अफसोस जो कहते हैं, “काश रब का दिन आ जाए!” तुम्हारे लिए रब के दिन का क्या फायदा होगा? वह तो तुम्हारे लिए रौशनी का नहीं बल्कि तारीकी का बाइस होगा। 19 तब तुम उन आदमी की मारिंद होगे जो शेरबखर से भागकर रीछ से टकरा जाता है। जब घर में पनाह लेकर हाथ से दीवार का सहारा लेता है तो सौंप उसे डस लेता है।

20 हाँ, रब का दिन तुम्हारे लिए रौशनी का नहीं बल्कि तारीकी का बाइस होगा। ऐसा अंधेरा होगा कि उम्मीद की किरण तक नज़र नहीं आएगी।

21 रब फरमाता है, “मुझे तुम्हारे मजहबी तहवारों से नफरत है, मैं उन्हें हकीर जानता हूँ। तुम्हारे इजतिमाओं से मुझे घिन आती है। 22 जो भस्म होनेवाली और गल्ला की कुरबानियाँ तुम मुझे पेश करते हो उन्हें मैं पसंद नहीं करता, जो मोटे-ताजे बैल तुम मुझे सलामती की कुरबानी के तौर पर चढ़ाते हो उन पर मैं नज़र भी नहीं डालना चाहता। 23 दफा करो अपने गीतों का शोर! मैं तुम्हारे सितारों की मौसीकी सुनना नहीं चाहता। 24 इन चीजों की बजाए इनसाफ का चश्मा फूट निकले और रास्ती की कभी बंद न होनेवाली नहर बह निकले।

25 ऐ इसराईल के घराने, जब तुम रेगिस्तान में घुमते-फिरते थे तो क्या तुमने उन 40 सालों के दौरान कभी मुझे ज़बह और गल्ला की कुरबानियाँ पेश की? 26 नहीं, उस वक्त भी तुम अपने बादशाह सक्कत देवता और अपने सितारे कीवान देवता को उठाए फिरते थे, गो तुमने अपने हाथों से यह बुत अपने लिए बना लिए थे। 27 इसलिए रब जिसका नाम लशकरोँ का खुदा है फरमाता है कि मैं तुम्हें जिलावतन करके दमिश्क के पार बसा दूँगा।”

## 6

### राहनुमाओं की खुदएतमादी और ऐयाशी

1 कोहे-सिय्यून के बेपरवा बाशिंदों पर अफसोस! कोहे-सामरिया के बाशिंदों पर अफसोस जो अपने आपको महफूज समझते हैं। हाँ, सबसे आला कौम के उन शुरफा पर अफसोस जिनके पास इसराईली कौम मदद के लिए आती है। 2 कलना शहर के पास जाकर उस पर गौर करो, वहाँ से अज़ीम शहर हमात के पास पहुँचो, फिर फिलिस्ती मुल्क के शहर जात के पास उतरो। क्या तुम इन ममालिक से बेहतर हो? क्या तुम्हारा इलाका इनकी निसबत बड़ा है?

3 तुम अपने आपको आफत के दिन से दूर समझकर अपनी जालिम हुकूमत दूसरों पर जताते हो। 4 तुम हाथीदाँत से आरास्ता पलंगों पर सोते और अपने शानदार सोफों पर पाँव फैलाते हो। खाने के लिए तुम अपने रेवडों से अच्छे अच्छे भेड के बच्चे और मोटे-ताजे बछड़े चुन लेते हो। 5 तुम अपने सितारों को बजा बजाकर दाऊद की तरह मुख्तलिफ किस्म के गीत तैयार करते हो। 6 मैं को तुम बड़े बड़े प्यालों से पी लेते, बेहतरीन किस्म के तेल अपने जिस्म पर मिलते हो। अफसोस, तुम परवा ही नहीं करते कि यूसुफ का घराना तबाह होनेवाला है।

7 इसलिए तुम उन लोगों में से होगे जो पहले कैदी बनकर जिलावतन हो जाओगे। तब तुम्हारी रंगरलियाँ बंद हो जाएँगी, तुम्हारी आवारागर्द और काहिल जिंदगी खत्म हो जाएँगी।

8 रब जो लशकरोँ का खुदा है फरमाता है, “मुझे याकूब का गुरूर देखकर घिन आती है, उसके महलों से मैं मुतनाफिर हूँ। मैं शहर और जो कुछ उसमें है दुश्मन के हवाले कर दूँगा। मेरे नाम की कसम, यह मेरा, रब कादिरे-मुतलक का फरमान है।”

9 उस वक्त अगार एक घर में दस आदमी रह जाँए तो वह भी मर जाएंगे। 10 फिर जब कोई रिशतेदार आए ताकि लाशों को उठाकर दफनाने जाए और देखे कि घर के किसी कोने में अभी कोई छुपकर बच गया है तो वह उससे पूछेगा, “क्या आपके अलावा कोई और भी बचा है?” तो वह जवाब देगा, “नहीं, एक भी नहीं।” तब रिशतेदार कहेगा, “चुप! रब के नाम का जिक्र मत करना, ऐसा न हो कि वह तुझे भी मौत के घाट उतारे।” \*

11 क्योंकि रब ने हुक्म दिया है कि शानदार घरों को टुकड़े टुकड़े और छोटे घरों को रेज़ा रेज़ा किया जाए।

12 क्या घोड़े चटानों पर सरपट दौड़ते हैं? क्या इनसान बैल लेकर उन पर हल चलाता है? लेकिन तुम इतनी ही गैरफितरी हरकतें करते हो। क्योंकि तुम इनसाफ को जहर में और रास्ती का मीठा फल कड़वाहट में बदल देते हो। 13 तुम लो-दिवार की फतह पर शादियाना बजा बजाकर फरखर करते हो, “हमने अपनी ही ताकत से कर्नैम पर कब्ज़ा कर लिया!” 14 चुनौचे रब जो लशकरोँ का खुदा है फरमाता है, “ऐ इसराईली कौम, मैं तेरे खिलाफ एक कौम को तहरीक दूँगा जो तुझे शिमाल के शहर लबो-हमात से लेकर जुनूब की वादी अराबा तक अजियत पहुँचाएगी।”

## 7

### टिड्डियों की रोया

1 रब कादिरे-मुतलक ने मुझे रोया दिखाई। मैंने देखा कि अल्लाह टिड्डियों के गोल पैदा कर रहा है। उस वक्त पहली घास की कटाई हो चुकी थी, वह घास जो बादशाह के लिए मुकर्रर थी। अब घास दुबारा उगने लगी थी। 2 तब टिड्डियाँ मुल्क की पूरी हरियाली पर टूट पड़ी और सब कुछ खा गईं। मैं चिल्ला उठा, “ऐ रब कादिरे-मुतलक, मेहरबानी करके मुआफ कर, वरना याकूब किस तरह कायम रहेगा? वह पहले से इतनी छोटी कौम है।” 3 तब रब पछताया और फरमाया, “जो कुछ तूने देखा वह पेश नहीं आएगा।”

### आग की रोया

4 फिर रब कादिरे-मुतलक ने मुझे एक और रोया दिखाई। मैंने देखा कि रब कादिरे-मुतलक आग की बारिश बुला रहा है ताकि मुल्क पर बरसे। आग ने समुंद्र की गहराइयों को खुश्क कर दिया, फिर मुल्क में फैलने लगी। 5 तब मैं चिल्ला उठा, “ऐ रब कादिरे-मुतलक, मेहरबानी करके इससे बाज आ, वरना याकूब किस तरह कायम रहेगा? वह पहले से इतनी छोटी कौम है।” 6 तब रब दुबारा पछताया और फरमाया, “यह भी पेश नहीं आएगा।”

### साहल की रोया

7 इसके बाद रब ने मुझे एक तीसरी रोया दिखाई। मैंने देखा कि कादिरे-मुतलक एक ऐसी दीवार पर खड़ा है जो साहल से नाप नापकर तामीर की गई है। उसके हाथ में साहल था। 8 रब ने मुझसे पूछा, “ऐ अमूस, तुझे क्या नजर आता है?” मैंने जवाब दिया, “साहल।” तब रब ने फरमाया, “मैं अपनी कौम इसराईल के दरमियान साहल लगानेवाला हूँ। आइँदा मैं उनके गुनाहों को नजरंदाज नहीं करूँगा बल्कि नाप नापकर उनको सजा दूँगा। 9 उन बुलंदियों की कुरबानगाहें तबाह हो जाएँगी जहाँ इसहाक की औलाद अपनी कुरबानियाँ पेश करती है। इसराईल के मकदिस खाक में मिलाए जाएंगे, और मैं अपनी तलवार को पकड़कर यरुबियाम के खानदान पर टूट पड़ूँगा।”

### अमूस को इसराईल से निकलने का हुक्म दिया जाता है

10 यह सुनकर बैतल के इमाम अमसियाह ने इसराईल के बादशाह यरुबियाम को इतला दी, “अमूस इसराईल के दरमियान ही आपके खिलाफ साजिशें कर रहा है। मुल्क उसके पैगाम बरदाशत नहीं कर सकता, 11 क्योंकि वह कहता है, ‘यरुबियाम तलवार की ज़द में आकर मर जाएगा, और इसराईली कौम यकीनन कैदी बनकर जिलावतन हो जाएगी।’”

12 अमसियाह ने अमूस से कहा, “ऐ रोया देखनेवाले, यहाँ से निकल जा! मुल्के-यहदाह में भागकर वहाँ रोजी कमा, वहीं नबुवत कर। 13 आइँदा बैतल में नबुवत मत करना, क्योंकि यह बादशाह का मकदिस और बादशाही की मरकज़ी इबादतगाह है।”

14 अमूस ने जवाब दिया, “पेशा के लिहाज़ से न मैं नबी हूँ, न किसी नबी का शागिर्द बल्कि गल्लाबान और अजीर-तूत का बागाबान। 15 तो भी रब ने मुझे भेड-बकरियों की गल्लाबानी करने से हटाकर हुक्म दिया कि मेरी कौम इसराईल के पास जा और नबुवत करके उसे मेरा कलाम पेश कर। 16 अब रब का कलाम सुन! तू कहता है, ‘इसराईल के खिलाफ नबुवत

\* 6:10 ‘ऐसा न हो कि वह . . . घाट उतारे’ इजाफा है ताकि मतलब साफ हो।

मत करना, इसहाक की कौम के खिलाफ बात मत करना।' 17 जवाब में रब फरमाता है, 'तेरी बीवी शहर में कसबी बनेगी, तेरे बेटे-बेटियाँ सब तलवार से कल्ल हो जाएंगे, तेरी ज़मीन नापकर दूसरों में तकसीम की जाएगी, और तू खुद एक नापाक मुल्क में वफात पाएगा। यकीनन इसराईली कौम कैदी बनकर जिलावतन हो जाएगी।'

## 8

पके फल से भरी टोकरी

1 एक बार फिर रब कादिरे-मुतलक ने मुझे रोया दिखाई। मैंने पके हुए फल से भरी हुई टोकरी देखी। 2 रब ने पूछा, "ऐ आमस, तुझे क्या नजर आता है?" मैंने जवाब दिया, "पके हुए फल से भरी हुई टोकरी।" तब रब ने मुझसे फरमाया, "मेरी कौम का अंजाम पक गया है। अब से मैं उन्हें सजा दिए बग़ैर नहीं छोड़ूँगा। 3 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है कि उस दिन महल में गीत सुनाई नहीं देंगे बल्कि आहो-जारी। चारों तरफ़ नाशें नजर आएँगी, क्योंकि दुश्मन उन्हें हर जगह फेंकेगा। खामोश!"

अवाम का इस्तेहसाल

4 ऐ गरीबों को कुचलनेवालो, ऐ ज़रूरतमंदों को तबाह करनेवालो, सुनो! 5-6 तुम कहते हो, "नए चाँद की ईद कब गुज़र जाएगी, सबत का दिन कब खत्म है ताकि हम अनाज के गोदाम खोलकर गल्ला बेच सकें? तब हम पैमाइश के बरतन छोटे और तराजू के बाट हलके बनाएँगे, साथ साथ सौदे का भाव बढ़ाएँगे। हम फरोख़्त करते वक़्त अनाज के साथ उसका भूसा भी मिलाएँगे।" अपने नाजायज़ तरीकों से तुम थोड़े पैसों में बल्कि एक जोड़ी जूतों के एवज़ गरीबों को खरीदते हो।

7 रब ने याक़ूब के फ़ख़र की कसम खाकर वादा किया है, "जो कुछ उनसे सरज़द हुआ है उसे मैं कभी नहीं भूलूँगा।

8 उन्हीं की वजह से ज़मीन लरज़ उठेगी और उसके तमाम बाशिदे मातम करेंगे। जिस तरह मिसर में दरियाए-नील बरसात के मौसम में सैलाबी सरत इख़्तियार कर लेता है उसी तरह पूरी ज़मीन उठेगी। वह नील की तरह जोश में आएगी, फिर दुबारा उतर जाएगी।"

9 रब कादिरे-मुतलक फरमाता है, "उस दिन मैं होने दूँगा कि सरज़ दोपहर के वक़्त ग़रूब हो जाए। दिन उरूज पर ही होगा तो ज़मीन पर अंधेरा छा जाएगा। 10 मैं तुम्हारे तहवारों को मातम में और तुम्हारे गीतों को आहो-बुका में बदल दूँगा। मैं सबको टाट के मातमी लिबास पहनाकर हर एक का सर मुँडवाऊँगा। लोग यों मातम करेंगे जैसा उनका वाहिद बेटा कूच कर गया हो। अंजाम का वह दिन कितना तलख़ होगा।"

अल्लाह आइंदा जवाब नहीं देगा

11 कादिरे-मुतलक फरमाता है, "ऐसे दिन आनेवाले हैं जब मैं मुल्क में काल भेजूँगा। लेकिन लोग न रोटी और न पानी से बल्कि अल्लाह का कलाम सुनने से महरूम रहेंगे। 12 लोग लड़खड़ाते हुए एक समुंदर से दूसरे तक और शिमाल से मशरिक तक फिरेंगे ताकि रब का कलाम मिल जाए, लेकिन बेसूद।

13 उस दिन ख़बसरत कुँवारियों और जवान मर्द प्यास के मोरे बेहोश हो जाएंगे। 14 जो इस वक़्त सामरिया के मकरूह बुत की कसम खाते और कहते हैं, 'ऐ दान, तेरे देवता की हयात की कसम' या 'ऐ बैर-सबा, तेरे देवता की कसम!' वह उस वक़्त गिर जाएंगे और दुबारा कभी नहीं उठेंगे।"

## 9

आखिरी रोया : इसराईल की तबाही

1 मैंने रब को कुरबानागाह के पास खड़ा देखा। उसने फरमाया, "मक़दिस के सतनों के बालाई हिस्सों को इतने जोर से मार कि दहलीज़ें लरज़ उठें और उनके टुकड़े हाज़िरिन के सरों पर गिर जाएँ। उनमें से जितने जिंदा रहें उन्हें मैं तलवार से मार डालूँगा। एक भी भाग जाने में कामयाब नहीं होगा, एक भी नहीं बचेगा। 2 खाह वह ज़मीन में खोद खोदकर पाताल तक क्यों न पहुँचें तो भी मेरा हाथ उन्हें पकड़कर वहाँ से वापस लाएगा। और खाह वह आसमान तक क्यों न चढ़ जाएँ तो भी मैं उन्हें वहाँ से उतारूँगा। 3 खाह वह करमिल की चोटी पर क्यों न छुप जाएँ तो भी मैं उनका खोज लगाकर उन्हें छीन लूँगा। गो वह समुंदर की तह तक उतरकर मुझसे पोशीदा होने की कोशिश क्यों न करें तो भी बेफायदा होगा, क्योंकि मैं समुंदरी सोंप को उन्हें डसने का हुक्म दूँगा। 4 अगर उनके दुश्मन उन्हें भगाकर जिलावतन करें तो मैं तलवार को उन्हें कल्ल करने का हुक्म दूँगा। मैं ध्यान से उनको तकता रहूँगा, लेकिन बरकत देने के लिए नहीं बल्कि नुकसान पहुँचाने के लिए।"

5 कादिरे-मुतलक रब्बुल-अफवाज है। जब वह ज़मीन को छू देता है तो वह लरज उठती और उसके तमाम बाशिदे मातम करने लगते हैं। तब जिस तरह मिसर में दरियाए-नील बरसात के मौसम में सैलाब की सूरत इख्तियार कर लेता है उसी तरह पूरी ज़मीन उठती, फिर दुबारा उतर जाती है।

6 वह आसमान पर अपना बालाखाना तामीर करता और ज़मीन पर अपने तहखाने की बुनियाद डालता है। वह समुंदर का पानी बुलाकर रूप-ज़मीन पर उंडेल देता है। उसी का नाम रब है।

तुम दूसरों से बेहतर नहीं

7 रब फ़रमाता है, “ऐ इसराईलियो, यह मत समझना कि मेरे नज़दीक तुम एथोपिया के बाशिंदों से बेहतर हो। बेशक मैं इसराईल को मिसर से निकाल लाया, लेकिन बिलकुल इसी तरह मैं फिलिस्तियों को क्रेते\* से और अरामियों को कीर से निकाल लाया। 8 मैं, रब कादिरे-मुतलक ध्यान से इसराईल की गुनाह-आलूदा बादशाही पर गौर कर रहा हूँ। यकीनन मैं उसे रूप-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा।”

ताहम रब फ़रमाता है, “मैं याकूब के घराने को सरासर तबाह नहीं करूँगा। 9 मेरे हुकम पर इसराईली कौम को तमाम अक़वाम के दरमियान ही यों हिलाया जाएगा जिस तरह अनाज को छलनी में हिला हिलाकर पाक-साफ़ किया जाता है। आखिर में एक भी पत्थर अनाज में बाकी नहीं रहेगा। 10 मेरी कौम के तमाम गुनाहगार तलवार की ज़द में आकर मर जाएंगे, गो वह इस वक़्त कहते हैं कि न हम पर आफ़त आएगी, न हम उस की ज़द में आएँगे।

इसराईल के लिए नई उम्मीद

11 उस दिन मैं दाऊद के गिरे हुए घर को नए सिरे से खड़ा करूँगा। मैं उसके रखनों को बंद और उसके खंडरात को बहाल करूँगा। मैं सब कुछ यों तामीर करूँगा जिस तरह क़दीम ज़माने में था। 12 तब इसराईली अदोम के बचे-खुचे हिस्से और उन तमाम कौमों पर क़ब्ज़ा करेंगे जिन पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है।” यह रब का फ़रमान है, और वह यह करेगा भी।

13 रब फ़रमाता है, “ऐसे दिन आनेवाले हैं जब फसलें बहुत ही ज्यादा होंगी। फसल की कटाई के लिए इतना वक़्त दरकार होगा कि आखिरकार हल चलानेवाला कटाई करनेवालों के पीछे पीछे खेत को अगली फसल के लिए तैयार करता जाएगा। अंगूर की फसल भी ऐसी ही होगी। अंगूर की कसरत के बाइस उनसे रस निकालने के लिए इतना वक़्त लगेगा कि आखिरकार बीज बोनेवाला साथ साथ बीज बोने का काम शुरू करेगा। कसरत के बाइस नई मैं पहाड़ों से टपकेगी और तमाम पहाड़ियों से बहेगी।

14 उस वक़्त मैं अपनी कौम इसराईल को बहाल करूँगा। तब वह तबाहशुदा शहरों को नए सिरे से तामीर करके उनमें आबाद हो जाएंगे। वह अंगूर के बाग़ लगाकर उनकी मैं पिऐंगे, दीगर फलों के बाग़ लगाकर उनका फल खाएंगे। 15 मैं उन्हें पनीरी की तरह उनके अपने मुल्क में लगा दूँगा। तब वह आईदा उस मुल्क से कभी जड़ से नहीं उखाड़े जाएंगे जो मैंने उन्हें अता किया है।” यह रब तैरे खुदा का फ़रमान है।

\* 9:7 क्रेते : इब्रानी कफ़तूर।

## अब्दियाह

### रब अदोम की अदालत करेगा

1 जैल में वह रोया कलमबंद है जो अब्दियाह ने देखी। उसमें वह कुछ बयान किया गया है जो रब कादिरे-मुतलक ने अदोम के बारे में फरमाया।

हमने रब की तरफ से पैगाम सुना है, एक कासिद को अक्रवाम के पास भेजा गया है जो उन्हें हुक्म दे, “उठो! आओ, हम अदोम से लड़ने के लिए तैयार हो जाएँ।”

2 रब अदोम से फरमाता है, “मैं तुझे कौमों में छोटा बना दूँगा, और तुझे बहुत हकीर जाना जाएगा। 3 तेरे दिल के गुस्से ने तुझे फरेब दिया है। चूँकि तू चटानों की दराडों में और बुलंदियों पर रहता है इसलिए तू दिल में सोचता है, ‘कौन मुझे यहाँ से उतार देगा?’” 4 लेकिन रब फरमाता है, “खाह तू अपना घोंसला उकाब की तरह बुलंदी पर क्यों न बनाए बल्कि उसे सितारों के दरमियान लगा ले, तो भी मैं तुझे वहाँ से उतारकर खाक में मिला दूँगा।

5 अगर डाकू रात के वक्त तुझे लूट लेते तो वह सिर्फ उतना ही छीन लेते जितना उठाकर ले जा सकते हैं। अगर तू अंगूर का बाग होता और मजदूर फसल चुनने के लिए आते तो थोड़ा-बहुत उनके पीछे रह जाता। लेकिन तेरा अंजाम इससे कहीं ज्यादा बुरा होगा। 6 दुश्मन एसौ\* के कोने कोने का खोज लगा लगाकर उसके तमाम पोशीदा खजाने लूट लेगा। 7 तेरे तमाम इतहादी तुझे मुल्क की सरहद तक भगा देंगे, तेरे दोस्त तुझे फरेब देकर तुझ पर गालिब आएँगे। बल्कि तेरी रोटी खानेवाले ही तेरे लिए फंदा लगाएँगे, और तुझे पता नहीं चलेगा।” 8 रब फरमाता है, “उस दिन मैं अदोम के दानिशमंदों को तबाह कर दूँगा। तब एसौ के पहाड़ी इलाके में समझ और अक्ल का नामो-निशान नहीं रहेगा। 9 ऐ तेमान, तेरे सरमे भी सख्त दहशत खाएँगे, क्योंकि उस वक्त एसौ के पहाड़ी इलाके में कल्लो-गारत आम होगी, कोई नहीं बचेगा।

10 तूने अपने भाई याकूब † पर जुल्मो-तशद्दुद किया, इसलिए तेरी खूब ससवाई हो जाएगी, तुझे यों मिटाया जाएगा कि आईदा तेरा नामो-निशान तक नहीं रहेगा। 11 जब अजनबी फौजी यस्शलम के दरवाजों में घुस आए तो तू फासले पर खड़ा होकर उन जैसा था। जब उन्होंने तमाम मालो-दौलत छीन लिया, जब उन्होंने कुरा डालकर आपस में यस्शलम को बाँट लिया तो तूने उनका ही रवैया अपना लिया। 12 तुझे तेरे भाई की बदकिस्मती पर खुशी नहीं मनानी चाहिए थी। मुनासिब नहीं था कि तू यहदाह के बाशिंदों की तबाही पर शादियाना बजाता। उनकी मुसीबत देखकर तुझे शेखी नहीं मारनी चाहिए थी। 13 यह ठीक नहीं था कि तू उस दिन तबाहशदा शहर में घुस आया ताकि यस्शलम की मुसीबत से लुत्फ उठाए और उनका बचा-खुचा माल लूट ले। 14 कितनी बुरी बात थी कि तू शहर से निकलनेवाले रास्तों पर ताक में बैठ गया ताकि वहाँ से भागनेवालों को तबाह करे और बचे हुएओं को दुश्मन के हवाले करे। 15 क्योंकि रब का दिन तमाम अक्रवाम के लिए करीब आ गया है। जो सुल्क तूने दूसरों के साथ किया वही सुल्क तेरे साथ किया जाएगा। तेरा गलत काम तेरे अपने ही सर पर आएगा।

### अल्लाह की कौम नजात पाएँगी

16 पहले तुम्हें मेरे मुकद्दस पहाड़ पर मेरे गजब का प्याला पीना पड़ा, लेकिन अब तमाम दीगर अक्रवाम उसे पीती रहेंगी। बल्कि वह उसे पी पीकर खाली करेंगी, उन्हें उसके आखिरी कतरे भी चाटने पड़ेंगे। फिर उनका नामो-निशान नहीं रहेगा, ऐसा लगेगा कि वह कभी थी नहीं।

17 लेकिन कोहे-सिय्यून पर नजात होगी, यस्शलम मुकद्दस होगा।

तब याकूब का घराना ‡ दुबारा अपनी मौस्सी जमीन पर कब्जा करेगा, 18 और इसराईली कौम § भडकती आग बनकर अदोम को भूसे की तरह भस्म करेगी। अदोम का एक शख्स भी नहीं बचेगा। क्योंकि रब ने यह फरमाया है।

19 तब नजब यानी जुनब के बाशिदे अदोम के पहाड़ी इलाके पर कब्जा करेंगे, और मगरिब के नशेबी पहाड़ी इलाके के बाशिदे फिलिस्तियों का इलाका अपना लेंगे। वह इफराईम और सामरिया के इलाकों पर भी कब्जा करेंगे। जिलियाद का इलाका बिनयमीन के कबीले की मिलकियत बनेगा। 20 इसराईल के जिलावतनों को कनानियों का मुल्क शिमाली शहर सारपत तक हासिल होगा जबकि यस्शलम के जो बाशिदे जिलावतन होकर सिफाराद में जा बसे वह जुन्बी इलाके नजब पर कब्जा करेंगे। 21 नजात देनेवाले कोहे-सिय्यून पर आकर अदोम के पहाड़ी इलाके पर हुक्मत करेंगे। तब रब ही बादशाह होगा!”

\* 1:6 एसौ से मुराद अदोम है। † 1:10 याकूब से मुराद इसराईल है। ‡ 1:17 याकूब का घराना से मुराद इसराईल है। § 1:18 लफ्जी तरकूमा : याकूब और यूसुफ के घराने।

## यूस

यूस अल्लाह से फ़रार हो जाता है

1 रब यूस बिन अमिती से हमकलाम हुआ, 2 “बड़े शहर नीनवा जाकर उस पर मेरी अदालत का एलान कर, क्योंकि उनकी बुराई मेरे हुज़ूर तक पहुँच गई है।”

3 यूस रवाना हुआ, लेकिन मशरिकी शहर नीनवा के लिए नहीं बल्कि मगरिबी शहर तरसीस के लिए। रब के हुज़ूर से फ़रार होने के लिए वह याफ़ा शहर पहुँच गया जहाँ एक बहरी जहाज़ तरसीस को जानेवाला था। सफ़र का किराया अदा करके यूस जहाज़ में बैठ गया ताकि रब के हुज़ूर से भाग निकले।

4 लेकिन रब ने समुंद्र पर ज़बरदस्त आँधी भेजी। तूफ़ान इतना शदीद था कि जहाज़ के टुकड़े टुकड़े होने का खतरा था। 5 मल्लाह सहम गए, और हर एक चीखता-चिल्लाता अपने देवता से इल्लिजा करने लगा। जहाज़ को हलका करने के लिए उन्होंने सामान को समुंद्र में फेंक दिया।

लेकिन यूस जहाज़ के निचले हिस्से में लेट गया था। अब वह गहरी नींद सो रहा था। 6 फिर कप्तान उसके पास आया और कहने लगा, “आप किस तरह सो सकते हैं? उठें, अपने देवता से इल्लिजा करें! शायद वह हम पर ध्यान दे और हम हलाक न हों।”

7 मल्लाह आपस में कहने लगे, “आओ, हम कुरा डालकर मालूम करें कि कौन हमारी मुसीबत का बाइस है।” उन्होंने कुरा डाला तो यूस का नाम निकला। 8 तब उन्होंने उससे पूछा, “हमें बताएँ कि यह आफ़त किसके कुसूर के बाइस हम पर नाज़िल हुई है? आप क्या करते हैं, कहाँ से आए हैं, किस मुल्क और किस कौम से हैं?”

9 यूस ने जवाब दिया, “मैं इब्रानी हूँ, और रब का परस्तार हूँ जो आसमान का खुदा है। समुंद्र और ख़रकी दोनों उसी ने बनाए हैं।” 10 यूस ने उन्हें यह भी बताया कि मैं रब के हुज़ूर से फ़रार हो रहा हूँ। यह सब कुछ सुनकर दीगर मुसाफ़िरों पर शदीद दहशत तारी हुई। उन्होंने कहा, “यह आपने क्या किया है?” 11 इतने में समुंद्र मज़ीद मुतलातिम होता जा रहा था। चुनौचे उन्होंने पूछा, “अब हम आपके साथ क्या करें ताकि समुंद्र थम जाए और हमारा पीछा छोड़ दे?” 12 यूस ने जवाब दिया, “मुझे उठाकर समुंद्र में फेंक दें तो वह थम जाएगा। क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह बड़ा तूफ़ान मेरी ही वजह से आप पर टूट पड़ा है।”

13 पहले मल्लाहों ने उसका मशवरा न माना बल्कि चप्पू मार मारकर साहिल पर पहुँचने की सिर-तोड़ कोशिश करते रहे। लेकिन बेफ़ायदा, समुंद्र पहले की निसबत कहीं ज्यादा मुतलातिम हो गया। 14 तब वह बुलंद आवाज़ से रब से इल्लिजा करने लगे, “ऐ रब, ऐसा न हो कि हम इस आदमी की जिंदगी के सबब से हलाक हो जाएँ। और जब हम उसे समुंद्र में फेंकेंगे तो हमें बेगुनाह आदमी की जान लेने के ज़िम्मादार न ठहरा। क्योंकि जो कुछ हो रहा है वह तेरी ही मरज़ी से हो रहा है।” 15 यह कहकर उन्होंने यूस को उठाकर समुंद्र में फेंक दिया। पानी में गिरते ही समुंद्र ठाठे मारने से बाज़ आकर थम गया। 16 यह देखकर मुसाफ़िरों पर सख़्त दहशत छा गई, और उन्होंने रब को जबह की कुरबानी पेश की और मन्नतें मानीं।

17 लेकिन रब ने एक बड़ी मछली को यूस के पास भेजा जिसने उसे निगल लिया। यूस तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में रहा।

## 2

यूस की दुआ

1 मछली के पेट में यूस ने रब अपने खुदा से ज़ैल की दुआ की,

2 “मैंने बड़ी मुसीबत में आकर रब से इल्लिजा की, और उसने मुझे जवाब दिया। मैंने पाताल की गहराइयों से चीखकर फ़रियाद की तो तूने मेरी सुनी।

3 तूने मुझे गहरे पानी बल्कि समुंद्र के बीच में ही फेंक दिया। पानी के जोरदार बहाव ने मुझे घेर लिया, तेरी तमाम लहरें और मौजें मुझ पर से गुज़र गईं।

4 तब मैं बोला, ‘मुझे तेरे हुज़ूर से खारिज कर दिया गया है, लेकिन मैं तेरे मुक़द्दस घर की तरफ़ तकता रहूँगा।’

5 पानी मेरे गले तक पहुँच गया, समुंद्र की गहराइयों ने मुझे छुपा लिया। मेरे सर से समुंदरी पौदे लिपट गए।

6 पानी में उतरते उतरते मैं पहाड़ों की बुनियादों तक पहुँच गया। मैं ज़मीन में धँसकर एक ऐसे मुल्क में आ गया जिसके दावाज़े हमेशा के लिए मेरे पीछे बंद हो गए। लेकिन ऐ रब, मेरे खुदा, तू ही मेरी जान को ग़्द से निकाल लाया!

7 जब मेरी जान निकलने लगी तो तू, ऐ रब मुझे याद आया, और मेरी दुआ तेरे मुकद्दस घर में तेरे हुज़ूर पहुँची।

8 जो बूतों की पूजा करते हैं उन्होंने अल्लाह से वफादार रहने का वादा तोड़ दिया है।

9 लेकिन मैं शुक्रगुजारी की गीत गाते हुए तुझे कुरबानी पेश करूँगा। जो मन्नत मैंने मानी उसे पूरा करूँगा। रब ही नजात देता है।”

10 तब रब ने मछली को हुक्म दिया कि वह यूस को ख़ुशकी पर उगल दे।

### 3

यूस नीनवा में

1 रब एक बार फिर यूस से हमकलाम हुआ, 2 “बड़े शहर नीनवा जाकर उसे वह पैगाम सुना दे जो मैं तुझे दूँगा।”

3 इस मरतबा यूस रब की सुनकर नीनवा के लिए रवाना हुआ। रब के नजदीक नीनवा अहम शहर था। उसमें से गुजरने के लिए तीन दिन दरकार थे। 4 पहले दिन यूस शहर में दाखिल हुआ और चलते चलते लोगों को पैगाम सुनाने लगा, “ऐन 40 दिन के बाद नीनवा तबाह हो जाएगा।”

5 यह सुनकर नीनवा के बाशिरे अल्लाह पर ईमान लाए। उन्होंने रोज़े का एलान किया, और छोटे से लेकर बड़े तक सब टाट ओढ़कर मातम करने लगे।

6 जब यूस का पैगाम नीनवा के बादशाह तक पहुँचा तो उसने तख़्त पर से उतरकर अपने शाही कपड़ों को उतार दिया और टाट ओढ़कर खाक में बैठ गया। 7 उसने शहर में एलान किया, “बादशाह और उसके शुरफ़ा का फ़रमान सुनो! किसी को भी खाने या पीने की इजाज़त नहीं। गाय-बैल और भेड़-बकरियों समेत तमाम जानवर भी इसमें शामिल हैं। न उन्हें चरने दो, न पानी पीने दो। 8 लाज़िम है कि सब लोग जानवरों समेत टाट ओढ़ लें। हर एक पूरे जोर से अल्लाह से इत्तिजा करे, हर एक अपनी बुरी राहों और अपने जुल्मो-तशदुद से बाज़ आए। 9 क्या मालूम, शायद अल्लाह पछताए। शायद उसका शदीद ग़ज़ब टल जाए और हम हलाक न हों।”

10 जब अल्लाह ने उनका यह रवैया देखा, कि वह वाकई अपनी बुरी राहों से बाज़ आए तो वह पछताया और उन पर वह आफ़त न लाया जिसका एलान उसने किया था।

### 4

यूस अल्लाह की मेहरबानी देखकर नाराज़ हो जाता है

1 यह बात यूस को निहायत बुरी लगी, और वह गुस्से हुआ। 2 उसने रब से दुआ की, “ऐ रब, क्या यह वही बात नहीं जो मैंने उस वक़्त की जब अभी अपने वतन में था? इसी लिए मैं इतनी तेज़ी से भागकर तरसीस के लिए रवाना हुआ था। मैं जानता था कि तू मेहरबान और रहीम ख़ुदा है। तू तहम्मूल और शफ़क़त से भरपूर है और जल्द ही सज़ा देने से पछताता है। 3 ऐ रब, अब मुझे जान से मार दे! जीने से बेहतर यही है कि मैं कूच कर जाऊँ।”

4 लेकिन रब ने जवाब दिया, “क्या तू गुस्से होने में हक़-बजानिब है?”

5 यूस शहर से निकलकर उसके मशरिक में स्क़ गया। वहाँ वह अपने लिए झोंपड़ी बनाकर उसके साये में बैठ गया। क्योंकि वह देखना चाहता था कि शहर के साथ क्या कुछ हो जाएगा।

6 तब रब ख़ुदा ने एक बेल को फूटने दिया जो बढ़ते बढ़ते यूस के ऊपर फैल गई ताकि साया देकर उस की नाराज़ी दूर करे। यह देखकर यूस बहुत ख़ुश हुआ। 7 लेकिन अगले दिन जब पौ फूटने लगी तो अल्लाह ने एक कीड़ा भेजा जिसने बेल पर हमला किया। बेल जल्द ही मुरझा गई।

8 जब सूरज तलू हुआ तो अल्लाह ने मशरिक से झूलसती लू भेजी। धूप इतनी शदीद थी कि यूस ग़श खाने लगा। आखिरकार वह मरना ही चाहता था। वह बोला, “जीने से बेहतर यही है कि मैं कूच कर जाऊँ।”

9 तब अल्लाह ने उससे पूछा, “क्या तू बेल के सबब से गुस्से होने में हक़-बजानिब है?” यूस ने जवाब दिया, “जी हाँ, मैं मरने तक गुस्से हूँ, और इसमें मैं हक़-बजानिब भी हूँ।”

10 रब ने जवाब दिया, “तू इस बेल पर ग़म खाता है, हालाँकि तूने उसके फलने फूलने के लिए एक उँगली भी नहीं हिलाई। यह बेल एक रात में पैदा हुई और अगली रात ख़त्म हुई 11 जबकि नीनवा बहुत बड़ा शहर है, उसमें 1,20,000 अफ़राद और मृतअहिद जानवर बसते हैं। और यह लोग इतने जाहिल हैं कि अपने दाएँ और बाएँ हाथ में इम्तियाज़ नहीं कर पाते। क्या मुझे इस बड़े शहर पर ग़म नहीं खाना चाहिए?”

## मीकाह

### सामरिया की तबाही

1 जैल में रब का वह कलाम दर्ज है जो मीकाह मोरशती पर यहूदाह के बादशाहों यताम, आखज और हिजकियाह के दौरे-हुकूमत में नाज़िल हुआ। उसने सामरिया और यरूशलम के बारे में यह बातें रोया में देखीं।

2 ऐ तमाम अक्रवाम, सुनो! ऐ ज़मीन और जो कुछ उस पर है, ध्यान दो! रब कादिरे-मुतलक तुम्हारे खिलाफ गवाही दे, कादिरे-मुतलक अपने मुक़द्दस घर की तरफ से गवाही दे। 3 क्योंकि देखो, रब अपनी सुकूनतगाह से निकल रहा है ताकि उतरकर ज़मीन की बुलंदियों पर चले। 4 उसके पाँवों तले पहाड़ पिघल जाएंगे और वादियाँ फट जाएँगी, वह आग के सामने पिघलनेवाले मोम या ढलान पर उंडेले गए पानी की मानिद होंगे।

5 यह सब कुछ याकूब के जुर्म, इसराईली कौम के गुनाहों के सबब से हो रहा है। कौन याकूब के जुर्म का जिम्मादार है? सामरिया! किसने यहूदाह को बुलंद जगहों पर बुतपरस्ती करने की तहरीक दी? यरूशलम ने!

6 इसलिए रब फरमाता है, 'मैं सामरिया को खुले मैदान में मलबे का ढेर बना दूँगा, इतनी खाली जगह कि लोग वहाँ अंगूर के बाग लगाएँगे। मैं उसके पत्थर वादी में फेंक दूँगा, उसे इतने धड़ाम से गिरा दूँगा कि उस की बुनियादें ही नज़र आएँगी। 7 उसके तमाम बुत टुकड़े टुकड़े हो जाएंगे, उस की इसमतफरोशी का पूरा अन्न नज़रे-आतिश हो जाएगा। मैं उसके देवताओं के तमाम मुजस्समों को तबाह कर दूँगा। क्योंकि सामरिया ने यह तमाम चीज़ें अपनी इसमतफरोशी से हासिल की हैं, और अब यह सब उससे छीन ली जाएँगी और दीगर इसमतफरोशों को मुआवज़े के तौर पर दी जाएँगी।'

### अपनी कौम पर मातम

8 इसलिए मैं आहो-ज़ारी करूँगा, नंगे पाँव और बरहना फिरूँगा, गीदड़ों की तरह वावैला करूँगा, उकाबी उल्लू की तरह आहूँ भरूँगा। 9 क्योंकि सामरिया का ज़खम लाइलाज है, और वह मुल्के-यहूदाह में भी फैल गया है, वह मेरी कौम के दरवाज़े यानी यरूशलम तक पहुँच गया है।

10 फिलिस्ती शहर जात में यह बात न बताओ, उन्हें अपने आँसू न दिखाओ। बैत-लाफरा \* में खाक में लोट-पोट हो जाओ। 11 ऐ सफ़ीर † के रहनेवालो, बरहना और शर्मसार होकर यहाँ से गुज़र जाओ। जानान ‡ के बाशिदे निकलेंगे नहीं। बैत-एज़ल § मातम करेगा जब तुमसे हर सहारा छीन लिया जाएगा। 12 मारोत \* के बसनेवाले अपने माल के लिए पेचो-ताब खा रहे हैं, क्योंकि रब की तरफ से आफत नाज़िल होकर यरूशलम के दरवाज़े तक पहुँच गई है।

13 ऐ लकीस † के बाशिदे, घोड़ों को रथ में जोतकर भाग जाओ। क्योंकि इब्तिदा में तुम ही सिय्यून बेटी के लिए गुनाह का बाइस बन गए, तुम्हीं में वह जरायम मौजूद थे जो इसराईल से सरज़द हो रहे हैं। 14 इसलिए तुम्हें तोहफे देकर मोरशत-जात ‡ को ख़ुशत करनी पड़ेगी। अकज़ीब § के घर इसराईल के बादशाहों के लिए फ़रेबदेह साबित होंगे।

15 ऐ मेरसा \* के लोगो, मैं होने दूँगा कि एक कब्ज़ा करनेवाला तुम पर हमला करेगा। तब इसराईल का जलाल अदुल्लाम तक पहुँचेगा। 16 ऐ सिय्यून बेटी, अपने बाल कटवाकर गिट्टे जैसी गंजी हो जा। अपने लाडले बच्चों पर मातम कर, क्योंकि वह कैदी बनकर तुझसे दूर हो जाएँगे।

## 2

### कौम पर ज़ुल्म करनेवालों पर अफ़सोस

1 उन पर अफ़सोस जो दूसरों को नुक़सान पहुँचाने के मनसूबे बाँधते और अपने बिस्तर पर ही साज़िशें करते हैं। पौ फटते ही वह उठकर उन्हें पूरा करते हैं, क्योंकि वह यह करने का इख़्तियार रखते हैं। 2 जब वह किसी खेत या मकान के लालच में आ जाते हैं तो उसे छीन लेते हैं। वह लोगों पर ज़ुल्म करके उनके घर और मोरूसी मिलकियत उनसे लूट लेते हैं।

\* 1:10 बैत-लाफरा = खाक का घर। † 1:11 सफ़ीर = खबसूरत। ‡ 1:11 जानान = निकलनेवाला। § 1:11 बैत-एज़ल = साथवाला यानी सहारा देनेवाला घर। \* 1:12 मारोत = तलखी। † 1:13 लकीस के क़िताबद शहर में जंगी रथ रखे जाते थे। ‡ 1:14 'मोरशत' तोहफे और जहेज़ के लिए मुस्तामल इब्रानी लफ़्ज़ से मिलता-जुलता है। § 1:14 अकज़ीब = फरेब है। \* 1:15 'मेरसा' फ़ातेह और काबिज़ के लिए मुस्तामल इब्रानी लफ़्ज़ से मिलता-जुलता है।



3 चुनौचे रब फरमाता है, “मैं इस कौम पर आफत का मनसूबा बाँध रहा हूँ, ऐसा फंदा जिसमें से तुम अपनी गरदनों को निकाल नहीं सकोगे। तब तुम सर उठाकर नहीं फिरोगे, क्योंकि वक्त बुरा ही होगा। 4 उस दिन लोग अपने गीतों में तुम्हारा मजाक उड़ाएँगे, वह मातम का तलख गीत गाकर तुम्हें लान-तान करेंगे,

‘हाय, हम सراسर तबाह हो गए हैं। मेरी कौम की मौरूसी ज़मीन दूसरों के हाथ में आ गई है। वह किस तरह मुझसे छीन ली गई है! हमारे काम के जवाब में हमारे खेत दूसरों में तकसीम हो रहे हैं।’”

5 चुनौचे आइंदा तुममें से कोई नहीं होगा जो रब की जमात में कुरा डालकर मौरूसी ज़मीन तकसीम करे।

6 वह नबुव्वत करते हैं, “नबुव्वत मत करो! नबुव्वत करते वक्त इनसान को इस किस्म की बातें नहीं सुनानी चाहिएँ। यह सहीह नहीं कि हमारी रसवाई हो जाएगी।” 7 ऐ याकूब के घराने, क्या तुझे इस तरह की बातें करनी चाहिएँ, “क्या रब नाराज़ है? क्या वह ऐसा काम करेगा?”

रब फरमाता है, “यह बात दुस्त है कि मैं उससे मेहरबान बातें करता हूँ जो सहीह राह पर चले। 8 लेकिन काफी देर से मेरी कौम दुश्मन बनकर उठ खड़ी हुई है। जिन लोगों का जंग करने से ताल्लुक ही नहीं उनसे तुम चादर तक सब कुछ छीन लेते हो जब वह अपने आपको महफूज समझकर तुम्हारे पास से गुज़रते हैं। 9 मेरी कौम की औरतों को तुम उनके खुशनुमा घरों से भगाकर उनके बच्चों को हमेशा के लिए मेरी शानदार बरकतों से महरूम कर देते हो। 10 अब उठकर चले जाओ! आइंदा तुम्हें यहाँ सुकून हासिल नहीं होगा। क्योंकि नापाकी के सबब से यह मकाम अज़ियतनाक तरीके से तबाह हो जाएगा। 11 हकीकत में यह कौम ऐसा फरेबदेह नबी चाहती है जो खाली हाथ आकर \* उससे कहे, ‘तुम्हें कसरत की मैं और शराब हासिल होगी!’”

अल्लाह कौम को वापस लाएगा

12 ऐ याकूब की औलाद, एक दिन मैं तुम सबको यकीनन जमा करूँगा। तब मैं इसराईल का बचा हुआ हिस्सा यों इकट्ठा करूँगा जिस तरह भेड़-बकरियों को बाड़े में या रेवड़ को चरागाह में। मुल्क में चारों तरफ हज़ूमों का शोर मचेगा। 13 एक राहनुमा उनके आगे आगे चलेगा जो उनके लिए रास्ता खोलेगा। तब वह शहर के दरवाज़े को तोड़कर उसमें से निकलेंगे। उनका बादशाह उनके आगे आगे चलेगा, रब खुद उनकी राहनुमाई करेगा।”

### 3

राहनुमाओं और झूठे नबियों पर इलाही फैसला

1 मैं बोला, “ऐ याकूब के राहनुमाओ, ऐ इसराईल के बुजुर्गों, सुनो! तुम्हें इनसाफ को जानना चाहिए। 2 लेकिन जो अच्छा है उससे तुम नफरत करते और जो गलत है उसे प्यार करते हो। तुम मेरी कौम की खाल उतारकर उसका गोशत हड्डियों से जुदा कर लेते हो। 3 क्योंकि तुम मेरी कौम का गोशत खा लेते हो। उनकी खाल उतारकर तुम उनकी हड्डियों और गोशत को टुकड़े टुकड़े करके देग में फेंक देते हो।” 4 तब वह चिल्लाकर रब से इल्लिजा करेंगे, लेकिन वह उनकी नहीं सुनेगा। उनके गलत कार्यों के सबब से वह अपना चेहरा उनसे छुपा लेगा।

5 रब फरमाता है, “ऐ नबियों, तुम मेरी कौम को भटका रहे हो। अगर तुम्हें कुछ खिलाया जाए तो तुम एलान करते हो कि अमनो-अमान होगा। लेकिन जो तुम्हें कुछ न खिलाए उस पर तुम जिहाद का फतवा देते हो। 6 चुनौचे तुम पर ऐसी रात छा जाएगी जिसमें तुम रोया नहीं देखोगे, ऐसी तारीकी जिसमें तुम्हें मुस्तकबिल के बारे में कोई भी बात नहीं मिलेगी। नबियों पर सूरज डूब जाएगा, उनके चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा छा जाएगा। 7 तब रोया देखनेवाले शर्मसार और किस्मत का हाल बतानेवाले शरमिदा हो जाएंगे। शर्म के मारे वह अपने मुँह को छुपा लेंगे, \* क्योंकि अल्लाह से कोई भी जवाब नहीं मिलेगा।”

8 लेकिन मैं खुद कुव्वत से, रब के रूह से और इनसाफ और ताकत से भरा हुआ हूँ ताकि याकूब की औलाद को उसके जरायम और इसराईल को उसके गुनाह सुना सकूँ।

9 ऐ याकूब के राहनुमाओ, ऐ इसराईल के बुजुर्गों, सुनो! तुम इनसाफ से धिन खाकर हर सीधी बात को टेढ़ी बना लेते हो।

10 तुम सिय्यून को खूनरेजी से और यरूशलम को नाइनसाफी से तामीर कर रहे हो। 11 यरूशलम के बुजुर्ग अदालत करते वक्त रिश्तत लेते हैं। उसके इमाम तालीम देते हैं लेकिन सिर्फ कुछ मिलने के लिए। उसके नबी पेशगोई सुना देते हैं लेकिन सिर्फ पैसों के मुआवज़े में। ताहम यह लोग रब पर इनहिसार करके कहते हैं, “हम पर आफत आ ही नहीं सकती, क्योंकि रब हमारे दरमियान है।”

12 तुम्हारी वजह से सिय्यून पर हल चलाया जाएगा और यरूशलम मलबे का ढेर बन जाएगा। जिस पहाड़ पर रब का घर है उस पर जंगल छा जाएगा।

\* 2:11 लफ्ज़ी तरजुमा : जो हवा यानी कुछ नहीं अपने साथ लेकर आए।

\* 3:7 मुँह का लफ्ज़ी तरजुमा ‘मुँह’ है।

## 4

यस्शलम एक नई बादशाही का मरकज बन जाएगा

1 आखिरी ऐयाम में रब के घर का पहाड़ मजबूती से कायम होगा। सबसे बड़ा यह पहाड़ दीगर तमाम बूलंदियों से कही ज्यादा सरफराज़ होगा। तब उम्मतें जौक-दर-जौक उसके पास पहुँचेंगी, 2 और बेशमार कौमों आकर कहेंगी, “आओ, हम रब के पहाड़ पर चढ़कर याक़ब के खुदा के घर के पास जाएँ ताकि वह हमें अपनी मरज़ी की तालीम दे और हम उस की राहों पर चलें।”

क्योंकि सिय्यून पहाड़ से रब की हिदायत निकलेगी, और यस्शलम से उसका कलाम सादिर होगा। 3 रब बैनुल-अक़वामी झगड़ों को निपटाएगा और दूर तक की जोरावर कौमों का इनसाफ करेगा। तब वह अपनी तलवारों को कूटकर फाले बनाएँगी और अपने नेज़ों को काँट-छाँट के औज़ार में तबदील करेंगी। अब से न एक कौम दूसरी पर हमला करेगी, न लोग जंग करने की तरबियत हासिल करेंगे। 4 हर एक अपनी अंगूर की बेल और अपने अंजीर के दरख्त के साये में बैठकर आराम करेगा। कोई नहीं रहेगा जो उन्हें अचानक दहशतजदा करे। क्योंकि रब्बूल-अफ़वाज़ ने यह कुछ फरमाया है।

5 हर दूसरी कौम अपने देवता का नाम लेकर फिरती है, लेकिन हम हमेशा तक रब अपने खुदा का नाम लेकर फिरेंगे।

6 रब फरमाता है, “उस दिन मैं लँगडों को जमा करूँगा और उन्हें इक़ठा करूँगा जिन्हें मैंने मुंतशिर करके दुख पहुँचाया था। 7 मैं लँगडों को कौम का बचा हुआ हिस्सा बना दूँगा और जो दूर तक भटक गए थे उन्हें ताक़तवर उम्मत में तबदील करूँगा। तब रब उनका बादशाह बनकर अबद तक सिय्यून पहाड़ पर उन पर हुकूमत करेगा। 8 जहाँ तक तेरा ताल्लुक है, ऐ रेवड के बुर्ज़, ऐ सिय्यून बेटी के पहाड़, तुझे पहले की-सी सलतनत हासिल होगी। यस्शलम बेटी को दुबारा बादशाहत मिलेगी।”

यस्शलम अभी तक खतरे में है

9 ऐ यस्शलम बेटी, इस वक़्त तू इतने जोर से क्यों चीख रही है? क्या तेरा कोई बादशाह नहीं? क्या तेरे मुशीर सब ख़तम हो गए हैं कि तू दर्द-ज़ह में मुब्तला औरत की तरह पेचो-ताब खा रही है?

10 ऐ सिय्यून बेटी, जन्म देनेवाली औरत की तरह तडपती और चीखती जा! क्योंकि अब तुझे शहर से निकलकर खुले मैदान में रहना पड़ेगा, आखिर में तू बाबल तक पहुँचेगी। लेकिन वहाँ रब तुझे बचाएगा, वहाँ वह एबज़ाना देकर तुझे दुश्मन के हाथ से छुड़ाएगा।

11 इस वक़्त तो मुतअद़िद कौमों तेरे खिलाफ जमा हो गई हैं। आपस में वह कह रही हैं, “आओ, यस्शलम की बेहुरमती हो जाए, हम सिय्यून की हालत देखकर लुफ़अंदोज़ हो जाएँ।” 12 लेकिन वह रब के खयालात को नहीं जानते, उसका मनसूबा नहीं समझते। उन्हें मालूम नहीं कि वह उन्हें गंदूम के पूलों की तरह इक़ठा कर रहा है ताकि उन्हें गाह ले।

13 “ऐ सिय्यून बेटी, उठकर गाह ले! क्योंकि मैं तुझे लोहे के सीगों और पीतल के खुरों से नवाज़ूँगा ताकि तू बहुत-सी कौमों को चूर चूर कर सके। तब मैं उनका लूटा हुआ माल रब के लिए मख़सूस करूँगा, उनकी दौलत पूरी दुनिया के मालिक के हवाले करूँगा।”

## 5

नजातदहिदा की उम्मीद

1 ऐ शहर जिस पर हमला हो रहा है, अब अपने आपको छुरी से ज़खमी कर, क्योंकि हमारा मुहासरा हो रहा है। दुश्मन लाठी से इसराईल के हुक्मरान के गाल पर मारेगा।

2 लेकिन तू, ऐ बैत-लहम इफ़राता, जो यहदाह के दीगर खानदानों की निसबत छोटा है, तुझमें से वह निकलेगा जो इसराईल का हुक्मरान होगा और जो कदीम ज़माने बल्कि अज़ल से सादिर हुआ है। 3 लेकिन जब तक हामिला औरत उसे जन्म न दे, उस वक़्त तक रब अपनी कौम को दुश्मन के हवाले छोड़ेगा। लेकिन फिर उसके भाइयों का बचा हुआ हिस्सा इसराईलियों के पास वापस आएगा।

4 यह हुक्मरान खड़े होकर रब की कुव्वत के साथ अपने रेवड की गल्लाबानी करेगा। उसे रब अपने खुदा के नाम का अज़ीम इख़्तियार हासिल होगा। तब कौम सलामती से बसेगी, क्योंकि उस की अज़मत दुनिया की इंतहा तक फैलेगी। 5 वही सलामती का मंबा होगा। जब अस्ूर की फौज़ हमारे मुल्क में दाखिल होकर हमारे महलों में घुस आए तो हम उसके खिलाफ सात चरवाहे और आठ रईस खड़े करेंगे 6 जो तलवार से मुल्के-अस्ूर की गल्लाबानी करेंगे, हाँ तलवार को मियान से खींचकर नमस्द के मुल्क पर हुकूमत करेंगे। यों हुक्मरान हमें अस्ूर से बचाएगा जब यह हमारे मुल्क और हमारी सरहद में घुस आएगा।

7 तब याक़ब के जितने लोग बचकर मुतअद़िद अक़वाम के बीच में रहेंगे वह रब की भेजी हुई ओस या हरियाली पर पड़नेवाली बारिश की मानिद होंगे यानी ऐसी चीज़ों की मानिद जो न किसी इन्सान के इतज़ार में रहती, न किसी इन्सान के

हुकम पर पड़ती हैं। 8 याकूब के जितने लोग बचकर मुतअद्दिद अक़वाम के बीच में रहेंगे वह जंगली जानवरों के दरमियान शेरबबर और भेड़-बकरियों के बीच में जवान शेर की मानिंद होंगे यानी ऐसे जानवर की मानिंद जो जहाँ से भी गुज़रे जानवरों को रौंदकर फाड़ लेता है। उसके हाथ से कोई बचा नहीं सकता। 9 तेरा हाथ तेरे तमाम मुखालिफ़ों पर फतह पाएगा, तेरे तमाम दुश्मन नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे।

रब इसराईल के बुतों को खत्म करेगा

10 रब फरमाता है, “उस दिन मैं तेरे घोड़ों को नेस्त और तेरे रथों को नाबूद करूँगा। 11 मैं तेरे मुल्क के शहरों को खाक में मिलाकर तेरे तमाम किलों को गिरा दूँगा। 12 तेरी जादूगारी को मैं मिटा डालूँगा, किस्मत का हाल बतानेवाले तेरे बीच में नहीं रहेंगे। 13 तेरे बुत और तेरे मखसूस सतूनों को मैं यों तबाह करूँगा कि तू आइंदा अपने हाथ की बनाई हुई चीजों की पूजा नहीं करेगा। 14 तेरे असीरत देवी के खंबे मैं उखाड़कर तेरे शहरों को मिसमार करूँगा। 15 उस वक़्त मैं बड़े गुस्से से उन कौमों से इंतक़ाम लूँगा जिन्होंने मेरी नहीं सुनी।”

## 6

अल्लाह इसराईल पर इलज़ाम लगाता है

1 ऐ इसराईल, रब का फ़रमान सुन, “अदालत में खड़े होकर अपना मामला बयान कर! पहाड़ और पहाड़ियाँ तेरे गवाह हों, उन्हें अपनी बात सुना दे।”

2 ऐ पहाड़ो, अब रब का अपनी कौम पर इलज़ाम सुनो! ऐ दुनिया की कदीम बुनियादो, तबज्जुह दो! क्योंकि रब अदालत में अपनी कौम पर इलज़ाम लगा रहा है, वह इसराईल से मुकदमा उठा रहा है।

3 वह सवाल करता है, “ऐ मेरी कौम, मैंने तेरे साथ क्या ग़लत सुलूक किया? मैंने क्या किया कि तू इतनी थक गई है? बता तो सही! 4 हकीकत तो यह है कि मैं तुझे मुल्के-मिसर से निकाल लाया, मैंने फ़िधा देकर तुझे गुलामी से रिहा कर दिया। साथ साथ मैंने मूसा, हारून और मरियम को भेजा ताकि तेरे आगे चलकर तेरी राहनुमाई करें। 5 ऐ मेरी कौम, वह वक़्त याद कर जब मोआब के बादशाह बलक ने बिलाम बिन बओर को बुलाया ताकि तुझ पर लानत भेजे। लानत की बजाए उसने तुझे बरकत दी! वह सफ़र भी याद कर जब तू शिलीम से रवाना होकर जिलजाल पहुँची। अगर तू इन तमाम बातों पर गौर करे तो जान लेगी कि रब ने कितनी वफ़ादारी और इन्साफ़ से तेरे साथ सुलूक किया है।”

6 जब हम रब के हुज़ूर आते हैं ताकि अल्लाह तआला को सिजदा करें तो हमें अपने साथ क्या लाना चाहिए? क्या हमें यकसाला बछड़े उसके हुज़ूर लाकर भस्म करने चाहिए? 7 क्या रब हज़ारों मेंदों या तेल की बेशमार नदियों से खुश हो जाएगा? क्या मुझे अपने पहलौठे को अपने जरायम के एवज़ चढाना चाहिए, अपने जिस्म के फल को अपने गुनाहों को मिटाने के लिए पेश करना चाहिए? हरगिज़ नहीं!

8 ऐ इन्सान, उसने तुझे साफ़ बताया है कि क्या कुछ अच्छा है। रब तुझसे चाहता है कि तू इन्साफ़ कायम रखे, मेहरबानी करने में लगा रहे और फ़रोतनी से अपने खुदा के हुज़ूर चलता रहे।

यरूशलम को भी सामरिया की-सी सज़ा मिलेगी

9 सुनो! रब यरूशलम को आवाज़ दे रहा है। तबज्जुह दो, क्योंकि दानिशमंद उसके नाम का खौफ़ मानता है। ऐ कबीले, ध्यान दो कि किसने यह मुकर्रर किया है,

10 “अब तक नाजायज़ नफ़ा की दौलत बेदीन आदमी के घर में जमा हो रही है, अब तक लोग गंदुम बेचते वक़्त पूरा तोल नहीं तोलते, उनकी ग़लत पैमाइश पर लानत! 11 क्या मैं उस आदमी को बरी करार दूँ जो ग़लत तराजू इस्तेमाल करता है और जिसकी थैली में हलके बाट पड़े रहते हैं? हरगिज़ नहीं! 12 यरूशलम के अमीर बड़े ज़ालिम हैं, लेकिन बाक़ी बाशिंदे भी झूट बोलते हैं, उनकी हर बात धोका ही धोका है!

13 इसलिए मैं तुझे मार कर जखमी करूँगा। मैं तुझे तेरे गुनाहों के बदले में तबाह करूँगा। 14 तू खाना खाएगा लेकिन सेर नहीं होगा बल्कि पेट खाली रहेगा। तू माल महफूज़ रखने की कोशिश करेगा, लेकिन कुछ नहीं बचेगा। क्योंकि जो कुछ तू बचाने की कोशिश करेगा उसे मैं तलवार के हवाले करूँगा। 15 तू बीज बोएगा लेकिन फसल नहीं कोटेगा, जैतून का तेल निकालेगा लेकिन उसे इस्तेमाल नहीं करेगा, अंगूर का रस निकालेगा लेकिन उसे नहीं पिएगा। 16 तू इसराईल के बादशाहों उमरी और अखियब के नमूने पर चल पड़ा है, आज तक उन्हीं के मनसूबों की पैरवी करता आया है। इसलिए मैं तुझे तबाही के हवाले कर दूँगा, तेरे लोगों को मज़ाक़ का निशाना बनाऊँगा। तुझे दीगर अक़वाम की लान-तान बरदाशत करनी पड़ेगी।”

## 7

अपनी कौम पर अफसोस

1 हाय, मुझ पर अफसोस! मैं उस शख्स की मानिंद हूँ जो फसल के जमा होने पर अंगूर के बाग में से गुजर जाता है ताकि बचा हुआ थोड़ा-बहुत फल मिल जाए, लेकिन एक गुच्छा तक बाक़ी नहीं। मैं उस आदमी की मानिंद हूँ जो अंजीर का पहला फल मिलने की उम्मीद रखता है लेकिन एक भी नहीं मिलता। 2 मुल्क में से दियानतदार मिट गए हैं, एक भी ईमानदार नहीं रहा। सब ताक में बैठे हैं ताकि एक दूसरे को कल्ल करें, हर एक अपना जाल बिछाकर अपने भाई को पकड़ने की कोशिश करता है। 3 दोनों हाथ गलत काम करने में एक जैसे माहिर हैं। हुक्मरान और काज़ी रिश्त ख़ाते, बड़े लोग मुतलख्विनमिजाज़ी से कभी यह, कभी वह तलब करते हैं। सब मिलकर साजिशें करने में मसरूफ़ रहते हैं। 4 उनमें से सबसे शरीफ़ शख्स खारदार झाड़ी की मानिंद है, सबसे ईमानदार आदमी काँटेदार बाड़ से अच्छा नहीं।

लेकिन वह दिन आनेवाला है जिसका एलान तुम्हारे पहरेदारों ने किया है। तब अल्लाह तुझसे निपट लेगा, सब कुछ उलट-पलट हो जाएगा।

5 किसी पर भी भरोसा मत रखना, न अपने पड़ोसी पर, न अपने दोस्त पर। अपनी बीबी से भी बात करने से मुहतात रहो।

6 क्योंकि बेटा अपने बाप की हैसियत नहीं मानता, बेटी अपनी माँ के खिलाफ़ खड़ी हो जाती और बहू अपनी सास की मुखालफ़त करती है। तुम्हारे अपने ही घरवाले तुम्हारे दुश्मन हैं।

7 लेकिन मैं ख़ुद रब की राह देखूँगा, अपनी नजात के ख़ुदा के इंतज़ार में रहूँगा। क्योंकि मेरा ख़ुदा मेरी सुनेगा।

रब हमें रिहा करेगा

8 ऐ मेरे दुश्मन, मुझे देखकर शादियाना मत बजा! गो मैं गिर गया हूँ ताहम दुबारा खड़ा हो जाऊँगा, गो अंधेरे में बैठा हूँ ताहम रब मेरी रौशनी है। 9 मैंने रब का ही गुनाह किया है, इसलिए मुझे उसका गज़ब भुगतना पड़ेगा। क्योंकि जब तक वह मेरे हक में मुकदमा लड़कर मेरा इनसाफ़ न करे उस वक़्त तक मैं उसका क़हर बरदाश्त करूँगा। तब वह मुझे तारीकी से निकालकर रौशनी में लाएगा, और मैं अपनी आँखों से उसके इनसाफ़ और वफ़ादारी का मुशाहदा करूँगा।

10 मेरा दुश्मन यह देखकर सरासर शरमिंदा हो जाएगा, हालाँकि इस वक़्त वह कह रहा है, “रब तेरा ख़ुदा कहाँ है?” मेरी अपनी आँखें उस की शरमिंदगी देखेंगी, क्योंकि उस वक़्त उसे गली में कचरे की तरह पाँवों तले रौंदा जाएगा।

11 ऐ इसराइल, वह दिन आनेवाला है जब तेरी दीवारें नए सिरे से तामीर हो जाएँगी। उस दिन तेरी सरहदें वसी हो जाएँगी।

12 लोग चारों तरफ़ से तेरे पास आएँगे। वह असूर से, मिसर के शहरों से, दरियाए-फुरात के इलाक़े से बल्कि दूर-दराज़ साहिली और पहाड़ी इलाक़ों से भी आएँगे। 13 ज़मीन अपने बाशिंदों के बाइस वीरानो-सुनसान हो जाएगी, आखिरकार उनकी हरकतों का कड़वा फल निकल आएगा।

14 ऐ रब, अपनी लाठी से अपनी कौम की गल्लाबानी कर! क्योंकि तेरी मीरास का यह रेवड़ इस वक़्त जंगल में तनहा रहता है, हालाँकि गिर्दो-नवाह की ज़मीन जरखेज़ है। कदीम ज़माने की तरह उन्हें बसन और जिलियाद की शादाब चरागाहों में चरने दे! 15 रब फ़रमाता है, “मिसर से निकलते वक़्त की तरह मैं तुझे मोज़िज़ात दिखा दूँगा।” 16 यह देखकर अक़वाम शरमिंदा हो जाएँगी और अपनी तमाम ताक़त के बावजूद कुछ नहीं कर पाएँगी। वह धबराकर मुँह पर हाथ रखेंगी, उनके कान बहरे हो जाएँगे। 17 सोंप और रेंगनेवाले जानवरों की तरह वह ख़ाक चाटेंगी और धरथराते हुए अपने किल्लों से निकल आएँगी। वह डर के मारे रब हमारे ख़ुदा की तरफ़ रज़ू करेंगी, हौं तुझसे दहशत खाएँगी।

18 ऐ रब, तुझ जैसा ख़ुदा कहाँ है? तू ही गुनाहों को मुआफ़ कर देता, तू ही अपनी मीरास के बचे हुएओं के जरायम से दरगुज़र करता है। तू हमेशा तक गुस्से नहीं रहता बल्कि शफ़क़त पसंद करता है। 19 तू दुबारा हम पर रहम करेगा, दुबारा हमारे गुनाहों को पाँवों तले कुचलकर समुंदर की गहराइयों में फेंक देगा। 20 तू याक़ूब और इब्राहीम की औलाद पर अपनी वफ़ा और शफ़क़त दिखाकर वह वादा पूरा करेगा जो तूने कसम खाकर कदीम ज़माने में हमारे बापदादा से किया था।

## नाहम

अल्लाह के ग़ज़ब का इज़हार

- 1 ज़ैल में नीनवा के बारे में वह कलाम कलमबंद है जो अल्लाह ने रोया में नाहम इलक़्शी को दिखाया।
- 2 रब ग़ैरतमंद और इंतक़ाम लेनेवाला खुदा है। इंतक़ाम लेते वक़्त रब अपना पूरा गुस्सा उतारता है। रब अपने मुखालिफ़ों से बदला लेता और अपने दुश्मनों से नाराज़ रहता है।
- 3 रब तहम्मूल से भरपूर है, और उस की क़ुदरत अज़ीम है। वह कुस्स्वार को कभी भी सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ता।

वह आँधी और तूफ़ान से घिरा हुआ चलता है, और बादल उसके पाँवों तले की गर्द होते हैं।

4 वह समुंदर को डौंटता तो वह सूख जाता, उसके हुक्म पर तमाम दरिया खुशक हो जाते हैं। तब बसन और करमिल की शादाब हरियाली मुरझा जाती और लुबनान के फूल कुमला जाते हैं।

5 उसके सामने पहाड़ लरज़ उठते, पहाड़ियाँ पिघल जाती हैं। उसके हज़ूर पूरी ज़मीन अपने बाशिंदों समेत लरज़ उठती है।

6 कौन उस की नाराज़ी और उसके शदीद क़हर का सामना कर सकता है? उसका ग़ज़ब आग की तरह भडककर ज़मीन पर नाज़िल होता है, उसके आने पर पत्थर फटकर टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं।

7 रब मेहरबान है। मुसीबत के दिन वह मज़बूत क़िला है, और जो उसमें पनाह लेते हैं उन्हें वह जानता है।

8 लेकिन अपने दुश्मनों पर वह सैलाब लाएगा जो उनके मक़ाम को ग़रक करेगा। जहाँ भी दुश्मन भाग जाए वहाँ उस पर तारीकी छा जाने देगा।

9 रब के खिलाफ़ मनसूबा बाँधने का क्या फ़ायदा? वह तो तुम्हें एकदम तबाह कर देगा, दूसरी बार तुम पर आफ़त लाने की ज़रूरत ही नहीं होगी।

10 क्योंकि गो दुश्मन घनी और खारदार झाड़ियों और नशे में धुत शराबी की मानिंद हैं, लेकिन वह जल्द ही खुशक भूसे की तरह भस्म हो जाएंगे।

11 ऐ नीनवा, तुझसे वह निकल आया जिसने रब के खिलाफ़ बुरे मनसूबे बाँधे, जिसने शैतानी मशवरे दिए।

12 लेकिन अपनी क़ौम से रब फ़रमाता है, “गो दुश्मन ताक़तवर और बेशुमार क्यों न हों तो भी उन्हें मिटाया जाएगा और वह ग़ायब हो जाएंगे। बेशक मैंने तुझे पस्त कर दिया, लेकिन आइंदा ऐसा नहीं करूँगा।” 13 अब मैं वह जुआ तोड़ डालूँगा जो उन्होंने तेरी गरदन पर रख दिया था, मैं तेरी ज़ंजीरों को फाड़ डालूँगा।”

14 लेकिन नीनवा से रब फ़रमाता है, “आइंदा तेरी कोई औलाद कायम नहीं रहेगी जो तेरा नाम रखे। जितने भी बुत और मुजस्समे तेरे मंदिर में पड़े हैं उन सबको मैं नेस्तो-नाबूद कर दूँगा। मैं तेरी क़ब्र तैयार कर रहा हूँ, क्योंकि तू कुछ भी नहीं है।”

नीनवा की शिकस्त

15 वह देखो, पहाड़ों पर उसके कदम चल रहे हैं जो अमनो-अमान की खुशख़बरी सुनाता है। ऐ यहदाह, अब अपनी ईदें मना, अपनी मन्तें पूरी कर! क्योंकि आइंदा शैतानी आदमी तुझमें नहीं घुसेगा, वह सारास मित गया है।

## 2

1 ऐ नीनवा, सब कुछ मुंतशिर करनेवाला तुज़ पर हमला करने आ रहा है, चुनौचे किले की पहरादारी कर! रास्ते पर ध्यान दे, कमरबस्ता हो जा, जहाँ तक मुमकिन है दिफ़ा की तैयारियाँ कर!

2 गो याक़ूब तबाह और उसके अंगरों के बाग़ नाबूद हो गए हैं, लेकिन अब रब इसराईल की शानो-शौकत बहाल करेगा।

3 वह देखो, नीनवा पर हमला करनेवाले सूरमाओं की ढालें सुर्ख हैं, फ़ौजी किरमिज़ी रंग की वरदियाँ पहने हुए हैं। दुश्मन ने अपने रथों को तैयार कर रखा है, और वह भडकती मशालों की तरह चमक रहे हैं। साथ साथ सिपाही अपने नेज़े लहरा रहे हैं। 4 अब रथ गलियों में से अंधा-धुंध गुज़र रहे हैं। चौकों में वह इधर उधर भाग रहे हैं। यों लग रहा है कि भडकती मशालें या बादल की बिजलियाँ इधर उधर चमक रही हैं।

5 हुक्मरान अपने चीदा अफसरों को बुला लेता है, और वह ठोकर खा खाकर आगे बढ़ते हैं। वह दौड़कर फसील के पास पहुँच जाते, जल्दी से हिफाजती ढाल खड़ी करते हैं। 6 फिर दरिया के दरवाजे खुल जाते और शाही महल लड़खड़ाने लगता है। 7 तब दुश्मन मलिका के कपड़े उतारकर उसे ले जाते हैं। उस की लौडियाँ छाती पीट पीटकर कबूतरों की तरह गूँ गूँ करती हैं। 8 नीनवा बड़ी देर से अच्छे-खासे तालाब की मानिंद था, लेकिन अब लोग उससे भाग रहे हैं। लोगों को कहा जाता है, “स्क जाओ, स्को तो सही!” लेकिन कोई नहीं सकता। सब सर पर पॉव रखकर शहर से भाग रहे हैं, और कोई नहीं मुड़ता।

9 आओ, नीनवा की चाँदी लूट लो, उसका सोना छीन लो! क्योंकि ज़ख़िर की इंतहा नहीं, उसके खजानों की दौलत लामहदूद है। 10 लूटनेवाले कुछ नहीं छोड़ते। जल्द ही शहर खाली और वीरानो-सुनसान हो जाता है। हर दिल होसला हार जाता, हर घटना काँप उठता, हर कमर थरथराने लगती और हर चेहरे का रंग मॉद पड़ जाता है।

11 अब नीनवा बेटी की क्या हैसियत रही? पहले वह शेरबबर की माँद थी, ऐसी जगह जहाँ जवान शेरों को गोशत खिलाया जाता, जहाँ शेर और शेरनी अपने बच्चों समेत टहलते थे। कोई उन्हें डराकर भगा नहीं सकता था। 12 उस वक़्त शेर अपने बच्चों के लिए बहुत कुछ फाड़ लेता और अपनी शेरनियों के लिए भी गला घूँटकर मार डालता था। उस की माँदें और छुपने की जगहें फाड़े हुए शिकार से भरी रहती थीं।

13 रब्बूल-अफ़वाज फरमाता है, “ऐ नीनवा, अब मैं तुझसे निपट लेता हूँ। मैं तेरे रथों को नजरे-आतिश कर दूँगा, और तेरे जवान शेर तलवार की ज़द में आकर मर जाएंगे। मैं होने दूँगा कि आइंदा तुझे ज़मीन पर कुछ न मिले जिसे फाड़कर खा सके। आइंदा तेरे कासिदों की आवाज़ कभी सुनाई नहीं देगी।”

### 3

#### नीनवा की स्सवाईं

1 उस कातिल शहर पर अफ़सोस जो झूट और लूटे हुए माल से भरा हुआ है। वह लूट-मार से कभी बाज़ नहीं आता।

2 सुनो! चाबुक की आवाज़, चलते हुए रथों का शोर! घोड़े सरपट दौड़ रहे, रथ भाग भागकर उछल रहे हैं। 3 घुड़सवार आगे बढ़ रहे, शोलाज़न तलवारों और चमकते नेजे नज़र आ रहे हैं। हर तरफ़ मकतूल ही मकतूल, बेशुमार लाशों के ढेर पड़े हैं। इतनी हैं कि लोग ठोकर खा खाकर उन पर से गुज़रते हैं। 4 यह होगा नीनवा का अंजाम, उस दिलफ़रेब कसबी और जादूगरनी का जिसने अपनी जादूगरी और इसमतफ़रोशी से अक्रवाम और उम्मतों को गुलामी में बेच डाला।

5 रब्बूल-अफ़वाज फरमाता है, “ऐ नीनवा बेटी, अब मैं तुझसे निपट लेता हूँ। मैं तेरा लिबास तेरे सर के ऊपर उठाऊँगा कि तेरा नंगापन अक्रवाम को नज़र आए और तेरा मुँह दीगर ममालिक के सामने काला हो जाए। 6 मैं तुझ पर कूड़ा-करकट फेंककर तेरी तहकीर करूँगा। तू दूसरों के लिए तमाशा बन जाएगी। 7 तब सब तुझे देखकर भाग जाएंगे। वह कहेंगे, ‘नीनवा तबाह हो गई है!’ अब उस पर अफ़सोस करनेवाला कौन रहा? अब मुझे कहाँ से लोग मिलेंगे जो तुझे तसल्ली दें?”

8 क्या तू थीबस \* शहर से बेहतर है, जो दरियाए-नील पर वाके था? वह तो पानी से घिरा हुआ था, और पानी ही उसे हमलों से महफूज़ रखता था। 9 एशोपिया और मिसर के फ़ौजी उसके लिए लामहदूद ताकत का बाइस थे, फूट और लिबिया उसके इतहादी थे। 10 तो भी वह कैदी बनकर जिलावतन हुआ। हर गली के कोने में उसके शीरख़ार बच्चों को ज़मीन पर पटरा दिया गया। उसके शुरफ़ा कुरा-अंदाजी के ज़रीए तकसीम हुए, उसके तमाम बुजुर्ग जंजीरों में जकड़े गए।

11 ऐ नीनवा बेटी, तू भी नशे में धुत हो जाएगी। तू भी हवासबाख़ता होकर दुश्मन से पनाह लेने की कोशिश करेगी। 12 तेरे तमाम किले पके फल से लदे हुए अंजीर के दरख़त हैं। जब उन्हें हिलाया जाए तो अंजीर फ़ौरन खानेवाले के मुँह में गिर जाते हैं। 13 लो, तेरे तमाम दस्ते औरतें बन गए हैं। तेरे मुल्क के दरवाजे दुश्मन के लिए पूरे तौर पर खोले गए, तेरे कुंडे नजरे-आतिश हो गए हैं।

14 खूब पानी जमा कर ताकि मुहासरे के दौरान काफी हो। अपनी किलाबंदी मज़ीद मज़बूत कर! गारे को पाँवों से लताड़ लताड़कर ईंट बना ले! 15 ताहम आग तुझे भस्म करेगी, तलवार तुझे मार डालेगी, हाँ वह तुझे टिड्डियों की तरह खा जाएगी। बचने का कोई इमकान नहीं होगा, खाह तू टिड्डियों की तरह बेशुमार क्यों न हो जाए। 16 बेशक तेरे ताजिर सितारों जितने लातादाद हो गए हैं, लेकिन अचानक वह टिड्डियों के बच्चों की तरह अपनी केंचली को उतार लेंगे और उड़कर गायब हो जाएंगे। 17 तेरे दरबारी टिड्डियों जैसे और तेरे अफ़सर टिड्डि दलों की मानिंद हैं जो सर्दियों के मौसम में दीवारों के साथ चिपक जाती लेकिन धूप निकलते ही उड़कर ओझल हो जाती हैं। किसी को भी पता नहीं कि वह कहाँ चली गई हैं।

\* 3:8 Thebes। इब्रानी मतन में इसका मुतरादिफ़ नो-आमन मुस्तामल है।

18 ऐ असूर के बादशाह, तेरे चरवाहे गहरी नींद सो रहे, तेरे शुरफा आराम कर रहे हैं। तेरी क़ौम पहाड़ों पर मुंतशिर हो गई है, और कोई नहीं जो उन्हें दुबारा जमा करे। 19 तेरी चोट भर ही नहीं सकती, तेरा ज़खम लाइलाज है। जिसे भी तेरे अंजाम की खबर मिले वह ताली बजाएगा। क्योंकि सबको तेरा मुसलसल जुल्मो-तशदुद बरदाश्त करना पडा।

## हबक्कूक

नबी की शिकायत : हर तरफ नाइनसाफी

1 जैल में वह कलाम कलमबंद है जो हबक्कूक नबी को रोया देखकर मिला।

2 ऐ रब, मैं मज्जीद कब तक मदद के लिए पुकारूँ? अब तक तूने मेरी नहीं सुनी। मैं मज्जीद कब तक चीखें मार मारकर कहूँ कि फसाद हो रहा है? अब तक तूने हमें छुटकारा नहीं दिया। 3 तू क्यों होने देता है कि मुझे इतनी नाइनसाफी देखनी पड़े? लोगों को इतना नुकसान पहुँचाया जा रहा है, लेकिन तू खामोशी से सब कुछ देखता रहता है। जहाँ भी मैं नजर डालूँ, वहाँ जुल्मो-तशद्दुद ही नजर आता है, मुकदमाबाजी और झगड़े सर उठाते हैं। 4 नतीजे में शरीअत बेअसर हो गई है, और बा-इनसाफ फ़ैसले कभी जारी नहीं होते। बेदीनों ने रास्तबाजों को घेर लिया है, इसलिए अदालत में बेहदा फ़ैसले किए जाते हैं।

अल्लाह का जवाब

5 “दीगर अक्रवाम पर निगाह डालो, हाँ उन पर ध्यान दो तो हक्का-बक्का रह जाओगे। क्योंकि मैं तुम्हारे जीते-जी एक ऐसा काम करूँगा जिसकी जब खबर सुनोगे तो तुम्हें यकीन नहीं आएगा। 6 मैं बाबलियों को खड़ा करूँगा। यह जालिम और तलखरू क्रौम पूरी दुनिया को उबूर करके दूसरे ममालिक पर कब्जा करेगी। 7 लोग उससे सख्त दहशत खाएँगे, हर तरफ उसी के कवानीन और अज़मत माननी पडेगी। 8 उनके घोड़े चीतों से तेज़ हैं, और शाम के वक्त शिकार करनेवाले भेड़ीए भी उन जैसे फुरतीले नहीं होते। वह सरपट दौड़कर दूर दूर से आते हैं। जिस तरह उकाब लाश पर झपट्टा मारता है उसी तरह वह अपने शिकार पर हमला करते हैं। 9 सब इसी मकसद से आते हैं कि जुल्मो-तशद्दुद करें। जहाँ भी जाएँ वहाँ आगे बढ़ते जाते हैं। रेत जैसे बेशमार कैदी उनके हाथ में जमा होते हैं। 10 वह दीगर बादशाहों का मज़ाक उडाते हैं, और दूसरों के बुजुर्ग उनके तमस्खुर का निशाना बन जाते हैं। हर किले को देखकर वह हँस उठते हैं। जल्द ही वह उनकी दीवारों के साथ मिट्टी के ढेर लगाकर उन पर कब्जा करते हैं। 11 फिर वह तेज़ हवा की तरह वहाँ से गुज़रकर आगे बढ़ जाते हैं। लेकिन वह कुसूरवार ठहरेंगे, क्योंकि उनकी अपनी ताकत उनका खुदा है।”

ऐ रब, तू क्यों खामोश रहता है?

12 ऐ रब, क्या तू कदीम ज़माने से ही मेरा खुदा, मेरा कुदूस नहीं है? हम नहीं मरेंगे। ऐ रब, तूने उन्हें सज़ा देने के लिए मुकर्रर किया है। ऐ चटान, तेरी मरज़ी है कि वह हमारी तरबियत करें। 13 तेरी आँखें बिलकुल पाक हैं, इसलिए तू बुरा काम बरदाशत नहीं कर सकता, तू खामोशी से जुल्मो-तशद्दुद पर नजर नहीं डाल सकता। तो फिर तू इन बेवफाओं की हरकतों को किस तरह बरदाशत करता है? जब बेदीन उसे हडप कर लेता जो उससे कहीं ज़्यादा रास्तबाज है तो तू खामोश क्यों रहता है? 14 तूने होने दिया है कि इनसान से मछलियों का-सा सुलूक किया जाए, कि उसे उन समुंदरी जानवरों की तरह पकड़ा जाए, जिनका कोई मालिक नहीं। 15 दुश्मन उन सबको कौंटे के ज़रीए पानी से निकाल लेता है, अपना जाल डालकर उन्हें पकड़ लेता है। जब उनका बड़ा ढेर जमा हो जाता है तो वह खुश होकर शादियाना बजाता है। 16 तब वह अपने जाल के सामने बखूर जलाकर उसे जानवर कुरबान करता है। क्योंकि उसी के वसीले से वह ऐशो-इशरत की ज़िंदगी गुज़ार सकता है। 17 क्या वह मुसलसल अपना जाल डालता और क्रौमों को बेरहमी से मौत के घाट उतारता रहे?

## 2

1 अब मैं पहरा देने के लिए अपनी बुर्जी पर चढ़ जाऊँगा, किले की ऊँची जगह पर खड़ा होकर चारों तरफ देखता रहूँगा। क्योंकि मैं जानना चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे क्या कुछ बताएगा, कि वह मेरी शिकायत का क्या जवाब देगा।

रब का जवाब

2 रब ने मुझे जवाब दिया, “जो कुछ तूने रोया मैं देखा है उसे तख्तों पर यों लिख दे कि हर गुज़रनेवाला उसे खानी से पढ़ सके। 3 क्योंकि वह फ़ौरन पूरी नहीं हो जाएगी बल्कि मुकर्ररा वक्त पर आखिरकार जाहिर होगी, वह झूटी साबित नहीं होगी। गो देर भी लगे तो भी सब्र कर। क्योंकि आनेवाला पहुँचेगा, वह देर नहीं करेगा।

4 मग़सर आदमी फूला हुआ है और अंदर से सीधी राह पर नहीं चलता। लेकिन रास्तबाज ईमान ही से जीता रहेगा। 5 यकीनन मैं एक बेवफा साथी हूँ। मग़सर शख्स जीता नहीं रहेगा, गो वह अपने मुँह को पाताल की तरह खुला रखता और उस की भूक मौत की तरह कभी नहीं मिटती, वह तमाम अक्रवाम और उम्मतें अपने पास जमा करता है।



### बेदीनों का अंजाम

6 लेकिन यह सब उसका मज़ाक उड़ाकर उसे लान-तान करेगी। वह कहेगी, 'उस पर अफ़सोस जो दूसरों की चीज़ें छीनकर अपनी मिलकियत में इज़ाफ़ा करता है, जो कर्ज़दारों की ज़मानत पर कब्ज़ा करने से दौलतमंद हो गया है। यह काररवाई कब तक जारी रहेगी?' 7 क्योंकि अचानक ही ऐसे लोग उठेंगे जो तुझे काटेंगे, ऐसे लोग जाग उठेंगे जिनके सामने तू थरथराने लगेगा। तब तू खुद उनका शिकार बन जाएगा। 8 चूंकि तूने दीगर मुतअद्दिद अक़वाम को लूट लिया है इसलिए अब बची हुई उम्मतें तुझे ही लूट लेंगी। क्योंकि तुझसे कल्लो-गारत सरज़द हुई है, तूने देहात और शहर पर उनके बाशिंदों समेत शदीद ज़ुल्म किया है।

9 उस पर अफ़सोस जो नाजायज़ नफ़ा कमाकर अपने घर पर आफ़त लाता है, हालाँकि वह आफ़त से बचने के लिए अपना घोंसला बुलंदियों पर बना लेता है। 10 तेरे मनसूबों से मुतअद्दिद कौम तबाह हुई हैं, लेकिन यह तेरे ही घराने के लिए शर्म का बाइस बन गया है। इस गुनाह से तू अपने आप पर मौत की सज़ा लाया है। 11 यकीनन दीवारों के पत्थर चीख़कर इल्तिजा करेंगे और लकड़ी के शहतीर जवाब में आहो-जारी करेंगे।

12 उस पर अफ़सोस जो शहर को कल्लो-गारत के ज़रीए तामीर करता, जो आबादी को नाइन्साफ़ी की बुनियाद पर कायम करता है। 13 रब्बुल-अफ़वाज ने मुकर्रर किया है कि जो कुछ कौमों ने बड़ी मेहनत-मशक्कत से हासिल किया उसे नज़रे-आतिश होना है, जो कुछ पाने के लिए उम्मतें थक जाती हैं वह बेकार ही है। 14 क्योंकि जिस तरह समुंद्र पानी से भरा हुआ है, उसी तरह दुनिया एक दिन रब के जलाल के इरफ़ान से भर जाएगी।

15 उस पर अफ़सोस जो अपना प्याला ज़हरीली शराब से भरकर उसे अपने पड़ोसियों को पिला देता है ताकि उन्हें नशे में लाकर उनकी बरहन्गी से लुत्फ़अंदोज़ हो जाए। 16 लेकिन अब तेरी बारी भी आ गई है! तेरी शानो-शौकत ख़त्म हो जाएगी, और तेरा मुँह काला हो जाएगा। अब खूद पी ले! नशे में आकर अपने कपड़े उतार ले। ग़ज़ब का जो प्याला रब के दहने हाथ में है वह तेरे पास भी पहुँचेगा। तब तेरी इतनी स्सवाई हो जाएगी कि तेरी शान का नामो-निशान तक नहीं रहेगा।

17 जो ज़ुल्म तूने लुबलान पर किया वह तुझ पर ही ग़ालिब आएगा, जिन जानवरों को तूने वहाँ तबाह किया उनकी दहशत तुझी पर तारी हो जाएगी। क्योंकि तुझसे कल्लो-गारत सरज़द हुई है, तूने देहात और शहरों पर उनके बाशिंदों समेत शदीद ज़ुल्म किया है।

18 बूत का क्या फ़ायदा? आखिर किसी माहिर कारीगर ने उसे तराशा या ढाल लिया है, और वह झूट ही झूट की हिदायत देता है। कारीगर अपने हाथों के बूत पर भरोसा रखता है, हालाँकि वह बोल भी नहीं सकता!

19 उस पर अफ़सोस जो लकड़ी से कहता है, 'जाग उठ!' और ख़ामोश पत्थर से, 'खड़ा हो जा!' क्या यह चीज़ें हिदायत दे सकती हैं? हरगिज़ नहीं! उनमें जान ही नहीं, खाह उन पर सोना या चाँदी क्यों न चढ़ाई गई हो। 20 लेकिन रब अपने मुकद्दस घर में मौजूद है। उसके हुज़ूर पूरी दुनिया ख़ामोश रहे।"

## 3

### हबक्कुक की दुआ

1 ज़ैल में हबक्कुक नबी की दुआ है। इसे 'शिगियनोत' के तर्ज़ पर गाना है।

2 ऐ रब, मैंने तेरा पैगाम सुना है। ऐ रब, तेरा काम देखकर मैं डर गया हूँ। हमारे जीते-जी उसे वुज़द में ला, जल्द ही उसे हम पर जाहिर कर। जब तुझे हम पर गुस्सा आए तो अपना रहम याद कर।

3 अल्लाह तेमान से आ रहा है, कुद्दस फ़ारान के पहाड़ी इलाके से पहुँच रहा है। (सिलाह) \* उसका जलाल पूरे आसमान पर छा गया है, ज़मीन उस की हम्दो-सना से भरी हुई है।

4 तब उस की शान सूरज की तरह चमकती, उसके हाथ से तेज़ किरणें निकलती हैं जिनमें उस की कुदरत पिन्हाँ होती है।

5 मोहलक बीमारी उसके आगे आगे फैलती, वबाई मरज़ उसके नक्शे-क़दम पर चलता है।

6 जहाँ भी क़दम उठाए, वहाँ ज़मीन हिल जाती, जहाँ भी नज़र डाले वहाँ अक़वाम लरज़ उठती हैं। तब क़दीम पहाड़ फट जाते, पुरानी पहाड़ियाँ दबक जाती हैं। उस की राहें अज़ल से ऐसी ही रही हैं।

7 मैंने क़ूशन के ख़ैमों को मुसीबत में देखा, मिदिदान के तंबू काँप रहे थे।

8 ऐ रब, क्या तू दरियाओ और नदियों से गुस्से था? क्या तेरा ग़ज़ब समुंद्र पर नाज़िल हुआ जब तू अपने घोड़ों और फ़तहमंद रथों पर सवार होकर निकला?

\* 3:3 सिलाह ग़ालिब गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरिन में इसके मतलब के बारे में इत्फ़ाके-राय नहीं होती।

9 तूने अपनी कमान को निकाल लिया, तेरी लानतें तीरों की तरह बरसने लगी हैं। (सिलाह) तू जमीन को फाड़कर उन जगहों पर दरिया बहने देता है।

10 तुझे देखकर पहाड़ काँप उठते, मूसलाधार बारिश बरसने लगती और पानी की गहराइयों गंजरती हुई अपने हाथ आसमान की तरफ उठाती हैं।

11 सूरज और चाँद अपनी बुलंद रिहाइशगाह में रुक जाते हैं। तेरे चमकते तीरों के सामने वह मँद पड़ जाते, तेरे नेत्रों की झिलमिलाती रौशनी में ओझल हो जाते हैं।

12 तू गुस्से में दुनिया में से गुजरता, तैश से दीगर अकवाम को मारकर गाह लेता है।

13 तू अपनी कौम को रिहा करने के लिए निकला, अपने मसह किए हुए खादिम की मदद करने आया है। तूने बेदीन का घर छत से लेकर बुनियाद तक गिरा दिया, अब कुछ नज़र नहीं आता। (सिलाह)

14 उसके अपने नेत्रों से तूने उसके सर को छेद डाला। पहले उसके दस्ते कितनी खुशी से हम पर टूट पड़े ताकि हमें मुंशिर करके मुसीबतज़दा को पोशीदगी में खा सकें! लेकिन अब वह खुद भूसे की तरह हवा में उड़ गए हैं।

15 तूने अपने घोड़ों से समुंदर को यों कुचल दिया कि गहरा पानी झाग निकालने लगा।

अल्लाह मुझे तकवियत देता है

16 यह सब कुछ सुनकर मेरा जिस्म लरज़ उठा। इतना शोर था कि मेरे दौंत बजने लगे, † मेरी हड्डियाँ सड़ने लगीं, मेरे घुटने काँप उठे। अब मैं उस दिन के इंतज़ार में रहूँगा जब आफ़त उस कौम पर आएगी जो हम पर हमला कर रही है।

17 अभी तक कोपलें अंजीर के दरख़्त पर नज़र नहीं आती, अंगूर की बेलें बेफल हैं। अभी तक जैतून के दरख़्त फल से महरूम हैं और खेतों में फसलें नहीं उगतीं। बाड़ों में न भेड़-बकरियाँ, न मवेशी हैं।

18 ताहम मैं रब की खुशी मनाऊँगा, अपने नजातदहिदा अल्लाह के बाइस शादियाना बजाऊँगा।

19 रब कादिरे-मुतलक मेरी कुव्वत है। वही मुझे हिरनों के-से तेज़रौ पाँव मुहैया करता है, वही मुझे बुलंदियों पर से गुज़रने देता है।

दर्जे-बाला गीत मौसीकी के राहनुमा के लिए है। इसे मेरे दर्जे के तारदार साज़ों के साथ गाना है।

† 3:16 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : होंट हिलने लगे।

## सफ़नियाह

1 जैल में रब का वह कलाम कलामबंद है जो सफ़नियाह बिन कृशी बिन जिदलियाह बिन अमरियाह बिन हिज़क्रियाह पर नाज़िल हुआ। उस वक़्त यूसियाह बिन अमन यहदाह का बादशाह था।

2 रब फ़रमाता है, “मैं रूए-ज़मीन पर से सब कुछ मिटा डालूँगा, 3 इनसानो-हैवान, परिदों, मछलियों, ठोकर खिलानेवाली चीज़ों और बेदीनों को। तब ज़मीन पर इनसान का नामो-निशान तक नहीं रहेगा।” यह रब का फ़रमान है।

4 “यहदाह और यस्शलम के तमाम बाशिदों पर मेरी सज़ा नाज़िल होगी। बाल देवता की जितनी भी बुतपरस्ती अब तक रह गई है उसे नेस्तो-नाबूद कर दूँगा। न बुतपरस्त पुजारियों का नामो-निशान रहेगा, 5 न उनका जो छतों पर सूरज, चाँद बल्कि आसमान के पूरे लशकर को सिजदा करते हैं, जो रब की कसम खाने के साथ साथ मिलक़्म देवता की भी कसम खाते हैं।

6 जो रब की पैरवी छोड़कर न उसे तलाश करते, न उस की मरज़ी दरियाफ़्त करते हैं वह सबके सब तबाह हो जाएंगे।

7 अब रब का दिरि-मुतलक़ के सामने खामोश हो जाओ, क्योंकि रब का दिन करीब ही है। रब ने इसके लिए ज़बह की कुरबानी तैयार करके अपने मेहमानों को मख़सूसो-मुक़द्दस कर दिया है।” 8 रब फ़रमाता है, “जिस दिन मैं यह कुरबानी चढ़ाऊँगा उस दिन बुजुर्गों, शहज़ादों और अजनबी लिबास पहननेवालों को सज़ा दूँगा। 9 उस दिन मैं उन पर सज़ा नाज़िल करूँगा जो तवहहमपरस्ती के बाइस दहलीज़ पर क़दम रखने से गुरेज़ करते हैं, जो अपने मालिक के घर को ज़ुल्म और फ़रेब से भर देते हैं।”

10 रब फ़रमाता है, “उस दिन मख़ली के दरवाज़े से जोर की चीखें, नए शहर से आहो-ज़ारी और पहाड़ियों से कड़कती आवाज़ें सुनाई देंगी। 11 ऐ मक़तीस मुहल्ले के बाशिदो, वावैला करो, क्योंकि तुम्हारे तमाम ताज़िर हलाक हो जाएंगे। वहाँ के जितने भी सौदागर चाँदी तोलते हैं वह नेस्तो-नाबूद हो जाएंगे।

12 तब मैं चराग लेकर यस्शलम के कोने कोने में उनका खोज लगाऊँगा जो इस वक़्त बड़े आराम से बैठे हैं, खाह हालात कितने बुरे क्यों न हों। मैं उनसे निपट लूँगा जो सोचते हैं, ‘रब कुछ नहीं करेगा, न अच्छा काम और न बुरा।’ 13 ऐसे लोगों का माल लूट लिया जाएगा, उनके घर मिसमार हो जाएंगे। वह नए मकान तामीर तो करेंगे लेकिन उनमें रहेंगे नहीं, अंगूर के बाग लगाएँगे लेकिन उनकी मैं पिँएँगे नहीं।”

14 रब का अज़ीम दिन करीब ही है, वह बड़ी तेज़ी से हम पर नाज़िल हो रहा है। सुनो! वह दिन तलख होगा। हालात ऐसे होंगे कि बहादुर फ़ौजी भी चीखकर मदद के लिए पुकारेंगे। 15 रब का पूरा ग़ज़ब नाज़िल होगा, और लोग परेशानी और मुसीबत में मुब्तला रहेंगे। हर तरफ़ तबाहीओ-बर्बादी, हर तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा, हर तरफ़ घने बादल छाए रहेंगे। 16 उस दिन दुश्मन नरसिगा फूँककर और जंग के नारे लगाकर क़िलाबंद शहरों और बुर्जों पर टूट पड़ेगा। 17 रब फ़रमाता है, “चूँकि लोगों ने मेरा गुनाह किया है इसलिए मैं उनको बड़ी मुसीबत में उलझा दूँगा। वह अंधों की तरह टटोल टटोलकर इधर उधर फिरेंगे, उनका खून ख़ाक की तरह गिराया जाएगा और उनकी नाशें गोबर की तरह ज़मीन पर फेंकी जाएँगी।” 18 जब रब का ग़ज़ब नाज़िल होगा तो न उनका सोना, न चाँदी उन्हें बचा सकेगी। उस की गैरत पूरे मुल्क को आग की तरह भस्म कर देगी। वह मुल्क के तमाम बाशिदों को हलाक करेगा, हाँ उनका अंजाम हौलनाक होगा।

## 2

### होश में आओ!

1 ऐ बेहया क़ौम, जमा होकर हाज़िरी के लिए खड़ी हो जा, 2 इससे पहले कि मुक़र्रर दिन आकर तुझे भूसे की तरह उड़ा ले जाए। ऐसा न हो कि तुम रब के सख़्त गुस्से का निशाना बन जाओ, कि रब का ग़ज़बनाक दिन तुम पर नाज़िल हो जाए।

3 ऐ मुल्क के तमाम फ़रोतनो, ऐ उसके अहकाम पर अमल करनेवालो, रब को तलाश करो! रास्तबाज़ी के तालिब हो, हलीमी हूँडो। शायद तुम उस दिन रब के ग़ज़ब से बच जाओ। \*

### इसराईल के दुश्मनों का अंजाम

4 ग़ज़्ज़ा को छोड़ दिया जाएगा, अस्क़रून वीरानो-सुनसान हो जाएगा। दोपहर के वक़्त ही अशदूद के बाशिदों को निकाला जाएगा, अस्क़रून को जड़ से उखाड़ा जाएगा। 5 क़ेते से आई हुई क़ौम पर अफ़सोस जो साहिली इलाके में रहती है। क्योंकि रब तुम्हारे बारे में फ़रमाता है, “ऐ फ़िलिस्तिनियों की सरज़मीन, ऐ मुल्के-कनान, मैं तुझे तबाह करूँगा, एक भी बाकी नहीं

\* 2:3 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : छुपे रह सको।

रहेगा।” 6 तब यह साहिली इलाका चराने के लिए इस्तेमाल होगा, और चरवाहे उसमें अपनी भेड़-बकरियों के लिए बाड़े बना लेंगे। 7 मुल्क यहूदाह के घराने के बच्चे हुआओं के कब्जे में आएगा, और वही वहाँ चरेंगे, वही शाम के वक्त अस्कलून के घरों में आराम करेंगे। क्योंकि रब उनका खुदा उनकी देख-भाल करेगा, वही उन्हें बहाल करेगा।

8 “मैंने मोआबियों की लान-तान और अम्मोनियों की इहानत पर गौर किया है। उन्होंने मेरी क्रौम की ससवाई और उसके मुल्क के खिलाफ बड़ी बड़ी बातें की हैं।” 9 इसलिए रब्बूल-अफवाज जो इसराइल का खुदा है फरमाता है, “मेरी हयात की कसम, मोआब और अम्मोन के इलाके सद्म और अमूरा की मार्निद बन जाएंगे। उनमें खुदारी पौदे और नमक के गढे ही पाए जाएंगे, और वह अबद तक वीरानो-सुनसान रहेंगे। तब मेरी क्रौम का बचा हुआ हिस्सा उन्हें लूटकर उनकी जमीन पर कब्जा कर लेगा।”

10 यही उनके तकब्बुर का अज्र होगा। क्योंकि उन्होंने रब्बूल-अफवाज की क्रौम को लान-तान करके क्रौम के खिलाफ बड़ी बड़ी बातें की हैं। 11 जब रब मुल्क के तमाम देवताओं को तबाह करेगा तो उनके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। तमाम साहिली इलाकों की अकवाम उसके सामने झुक जाएँगी, हर एक अपने अपने मकाम पर उसे सिजदा करेगा।

12 रब फरमाता है, “ऐ एथोपिया के बाशिंदो, मेरी तलवार तुम्हें भी मार डालेगी।”

13 वह अपना हाथ शिमाल की तरफ भी बढ़ाकर असूर को तबाह करेगा। नीनवा वीरानो-सुनसान होकर रेगिस्तान जैसा खुश्क हो जाएगा। 14 शहर के बीच में रेवड और दीगर कई किस्म के जानवर आराम करेंगे। दशती उल्लू और खारपुशत उसके टूटे-फूटे सत्यों में बसेरा करेंगे, और जंगली जानवरों की चीखें खिडकियों में से गूँजेगी। घरों की दहलीजें मलबे के ढेरों में छुपी रहेंगी जबकि उनकी देवदार की लकड़ी हर गुजरनेवाले को दिखाई देगी। 15 यही उस खुशबाश शहर का अंजाम होगा जो पहले इतनी हिफाजत से बसता था और जो दिल में कहता था, “मैं ही हूँ, मेरे सिवा कोई और है ही नहीं।” आइंदा वह रेगिस्तान होगा, ऐसी जगह जहाँ जानवर ही आराम करेंगे। हर मुसाफिर “तौबा तौबा” कहकर वहाँ से गुजरेगा।

### 3

#### यस्शलम का अंजाम

1 उस सरकश, नापाक और ज़ालिम शहर पर अफसोस जो यस्शलम कहलाता है। 2 न वह सुनता, न तरबियत कबूल करता है। न वह रब पर भरोसा रखता, न अपने खुदा के करीब आता है। 3 जो बुजुर्ग उसके बीच में हैं वह दहाड़ते हुए शेरबबर हैं। उसके काज़ी शाम के वक्त भूके फिरनेवाले भेड़ीए हैं जो तुलूए-सुबह तक शिकार की एक हड्डी तक नहीं छोड़ते। 4 उसके नबी गुस्ताख और गद्दर हैं। उसके इमाम मकदिस की बेहरमती और शरीअत से ज्यादती करते हैं।

5 लेकिन रब भी शहर के बीच में है, और वह रास्त है, वह बेइनसाफी नहीं करता। सुबह बसुबह वह अपना इनसाफ कायम रखता है, हम कभी उससे महस्म नहीं रहते। लेकिन बेदीन शर्म से वाकिफ ही नहीं होता।

6 रब फरमाता है, “मैंने क्रौमों को नेस्तो-नाबूद कर दिया है। उनके किले तबाह, उनकी गलियों सुनसान हैं। अब उनमें से कोई नहीं गुजरता। उनके शहर इतने बरबाद हैं कि कोई भी उनमें नहीं रहता। 7 मैं बोला, ‘बेशक यस्शलम मेरा ख़ौफ मानकर मेरी तरबियत कबूल करेगा। क्योंकि क्या ज़रूरत है कि उस की रिहाइशगाह मिट जाए और मेरी तमाम सजाएँ उस पर नाज़िल हो जाएँ।’ लेकिन उसके बाशिंदे मज़िद जोश के साथ अपनी बुरी हरकतों में लग गए।” 8 चुन्चें रब फरमाता है, “अब मेरे इंतज़ार में रहो, उस दिन के इंतज़ार में जब मैं शिकार करने के लिए उठूँगा। \* क्योंकि मैंने अकवाम को जमा करने का फैसला किया है। मैं ममालिक को इकठ्ठा करके उन पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करूँगा। तब वह मेरे सख्त कहर का निशाना बन जाएंगे, पूरी दुनिया मेरी ग़ैरत की आग से भस्म हो जाएगी।

#### इसराइल के लिए नई उम्मीद

9 लेकिन इसके बाद मैं अकवाम के होंटों को पाक-साफ करूँगा ताकि वह आइंदा रब का नाम लेकर इबादत करें, कि वह शाना बशाना खड़ी होकर मेरी खिदमत करें। 10 उस वक्त मेरे परस्ता, मेरी मुंतिशर हुई क्रौम एथोपिया के दरियाओं के पार से भी आकर मुझे कुरबानियाँ पेश करेगी।

11 ऐ सिय्यून बेटी, उस दिन तुझे शर्मसार नहीं होना पड़ेगा हालाँकि तूने मुझसे बेवफा होकर निहायत बुरे काम किए हैं। क्योंकि मैं तेरे दरमियान से तेरे मुतकब्बिर शेखीबाजों को निकालूँगा। आइंदा तू मेरे मुक़द्दस पहाड़ पर मग़रर नहीं होगी। 12 मैं तुझमें सिर्फ क्रौम के ग़रीबों और ज़रूरतमंदों को छोड़ूँगा, उन सबको जो रब के नाम में पनाह लेंगे। 13 इसराइल का यह बचा हुआ हिस्सा न गलत काम करेगा, न झूट बोलेगा। उनकी ज़बान पर फ़रेब नहीं होगा। तब वह भेड़ों की तरह चरागाह में चरेंगे और आराम करेंगे। उन्हें डरानेवाला कोई नहीं होगा।”

\* 3:8 एक और मुमकिन तरज़ुमा : गवाही देने के लिए।

14 ऐ सिध्यून बेटी, खुशी के नारे लगा! ऐ इसराईल, खुशी मना! ऐ यरूशालम बेटी, शादमान हो, पूरे दिल से शादियाना बजा। 15 क्योंकि रब ने तेरी सजा मिटाकर तेरे दुश्मन को भगा दिया है। रब जो इसराईल का बादशाह है तेरे दरमियान ही है। आइंदा तुझे किसी नुकसान से डरने की जरूरत नहीं होगी।

16 उस दिन लोग यरूशालम से कहेंगे, “ऐ सिध्यून, मत डरना! हौसला न हार, तेरे हाथ ढीले न हों। 17 रब तेरा खुदा तेरे दरमियान है, तेरा पहलवान तुझे नजात देगा। वह शादमान होकर तेरी खुशी मनाएगा। उस की मुहब्बत तेरे कुसूर का जिक्र ही नहीं करेगी बल्कि वह तुझसे इंतहाई खुश होकर शादियाना बजाएगा।”

18 रब फरमाता है, “मैं ईद को तर्क करनेवालों को तुझसे दूर कर दूँगा, क्योंकि वह तेरी ससवाई का बाइस थे। 19 मैं उनसे भी निपट लूँगा जो तुझे कुचल रहे हैं। जो लँगड़ाता है उसे मैं बचाऊँगा, जो मुंताशिर है उन्हें जमा करूँगा। जिस मुल्क में भी उनकी ससवाई हुईं वहाँ मैं उनकी तारीफ और एहताराम कराऊँगा। 20 उस वक्त मैं तुम्हें जमा करके वतन में वापस लाऊँगा। मैं तुम्हारे देखते देखते तुम्हें बहाल करूँगा और दुनिया की तमाम अकवाम में तुम्हारी तारीफ और एहताराम कराऊँगा।” यह रब का फरमान है।

## हज्जी

रब के घर को दुबारा बनाने का हुक्म

1 फारस के बादशाह दारा की हुक्मत के दूसरे साल में हज्जी नबी पर रब का कलाम नाज़िल हुआ। छठे महीने का पहला दिन \* था। कलाम में अल्लाह यहदाह के गवर्नर ज़रूबाबल बिन सियालतियेल और इमामे-आज़म यशुअ बिन यहसदक से मुखातिब हुआ।

2-3 रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, “यह कौम कहती है, ‘अभी रब के घर को दुबारा तामीर करने का वक़्त नहीं आया।’ 4 क्या यह ठीक है कि तुम खुद लकड़ी से सजे हुए घरों में रहते हो जबकि मेरा घर अब तक मलबे का ढेर है?” 5 रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, “अपने हाल पर गौर करो। 6 तुमने बहुत बीज बोया लेकिन कम फसल काटी है। तुम खाना तो खाते हो लेकिन भूके रहते हो, पानी तो पीते हो लेकिन प्यासे रहते हो, कपड़े तो पहनते हो लेकिन सदीं लगती है। और जब कोई पैसे कमाकर उन्हें अपने बटवे में डालता है तो उसमें सूरख हैं।”

7 रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, “अपने हाल पर ध्यान देकर उसका सहीह नतीजा निकालो! 8 पहाड़ों पर चढ़कर लकड़ी ले आओ और रब के घर की तामीर शुरू करो। ऐसा ही रवैया मुझे पसंद होगा, और इस तरह ही तुम मुझे जलाल दोगे।” यह रब का फ़रमान है। 9 “देखो, तुमने बहुत बरकत पाने की तवक्को की, लेकिन क्या हुआ? कम ही हासिल हुआ। और जो कुछ तुम अपने घर वापस लाए उसे मैंने हवा में उड़ा दिया। क्यों? मैं, रब्बुल-अफ़वाज़ तुम्हें इसकी असल वजह बताता हूँ। मेरा घर अब तक मलबे का ढेर है जबकि तुममें से हर एक अपना अपना घर मजबूत करने के लिए भाग-दौड़ कर रहा है। 10 इसी लिए आसमान ने तुम्हें ओस से और ज़मीन ने तुम्हें फसलों से महरूम कर रखा है। 11 इसी लिए मैंने हुक्म दिया कि खेतों में और पहाड़ों पर काल पड़े, कि मुल्क का अनाज, अंगूर, जैतून बल्कि ज़मीन की हर पैदावार उस की लपेट में आ जाए। इनसानो-हैवान उस की जद में आ गए हैं, और तुम्हारी मेहनत-मशक़त जाया हो रही है।”

12 तब ज़रूबाबल बिन सियालतियेल, इमामे-आज़म यशुअ बिन यहसदक और कौम के पूरे बचे हुए हिस्से ने रब अपने खुदा की सुनी। जो भी बात रब उनके खुदा ने हज्जी नबी को सुनाने को कहा था उसे उन्होंने मान लिया। रब का ख़ौफ़ पूरी कौम पर तारी हुआ। 13 तब रब ने अपने पैगंबर हज्जी की मारिफ़त उन्हें यह पैगाम दिया, “रब फ़रमाता है, मैं तुम्हारे साथ हूँ।”

14-15 यों रब ने यहदाह के गवर्नर ज़रूबाबल बिन सियालतियेल, इमामे-आज़म यशुअ बिन यहसदक और कौम के बचे हुए हिस्से को रब के घर की तामीर करने की तहरीक दी। दारा बादशाह की हुक्मत के दूसरे साल में वह आकर रब्बुल-अफ़वाज़ अपने खुदा के घर पर काम करने लगे। छठे महीने का 24वाँ दिन † था।

## 2

रब का नया घर शानदार होगा

1 उसी साल के सातवें महीने के 21वें दिन \* हज्जी नबी पर रब का कलाम नाज़िल हुआ, 2 “यहदाह के गवर्नर ज़रूबाबल बिन सियालतियेल, इमामे-आज़म यशुअ बिन यहसदक और कौम के बचे हुए हिस्से को बता देना,

3 “तुममें से किस को याद है कि रब का घर तबाह होने से पहले कितना शानदार था? जो इस वक़्त उस की जगह तामीर हो रहा है वह तुम्हें कैसा लगता है? रब के पहले घर की निसबत यह कुछ भी नहीं लगता। 4 लेकिन रब फ़रमाता है कि ऐ ज़रूबाबल, हौसला रख! ऐ इमामे-आज़म यशुअ बिन यहसदक हौसला रख! ऐ मुल्क के तमाम बाशिंदो, हौसला रखकर अपना काम जारी रखो। क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। 5 जो अहद मैंने मिसर से निकलते वक़्त तुमसे बाँधा था वह कायम रहेगा। मेरा रूह तुम्हारे दरमियान ही रहेगा। डरो मत!

6 रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है कि थोड़ी देर के बाद मैं एक बार फिर आसमानो-ज़मीन और बहरो-बर्द को हिला दूँगा। 7 तब तमाम अक्रवाम लरज़ उठेंगी, उनके बेशक़ीमत खज़ाने इधर लाए जाएंगे, और मैं इस घर को अपने जलाल से भर दूँगा। 8 रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है कि चौंटी मेरी है और सोना मेरा है। 9 नया घर पुराने घर से कहीं ज़्यादा शानदार होगा, और मैं इस जगह को सलामती अता करूँगा।” यह रब्बुल-अफ़वाज़ का फ़रमान है।”

\* 1:1 29 अस्त। † 1:14-15 21 सितंबर। \* 2:1 17 अक्टूबर।

मैं तुम्हें दुबारा बरकत दूँगा

10 दारा बादशाह की हुक्मत के दूसरे साल में हज्जी पर रब का एक और कलाम नाज़िल हुआ। नवें महीने का 24वाँ दिन † था।

11 “रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, ‘इमामों से सवाल कर कि शरीअत ज़ैल के मामले के बारे में क्या फ़रमाती है, 12 अगर कोई शख्स मख़सूसो-मुक़द्दस गोशत अपनी झोली में डालकर कहीं ले जाए और रास्ते में झोली मैं, ज़ैतून के तेल, रोटी या मज़ीद किसी खानेवाली चीज़ से लग जाए तो क्या खानेवाली यह चीज़ गोशत से मख़सूसो-मुक़द्दस हो जाती है?’”

हज्जी ने इमामों को यह सवाल पेश किया तो उन्होंने जवाब दिया, “नहीं।”

13 तब उसने मज़ीद पूछा, “अगर कोई किसी लाश को छूने से नापाक होकर इन खानेवाली चीज़ों में से कुछ छुए तो क्या खानेवाली चीज़ उससे नापाक हो जाती है?”

इमामों ने जवाब दिया, “जी हाँ।”

14 फिर हज्जी ने कहा, “रब फ़रमाता है कि मेरी नज़र में इस क़ौम का यही हाल है। जो कुछ भी यह करते और क़ुरबान करते हैं वह नापाक है।

15 लेकिन अब इस बात पर ध्यान दो कि आज से हालात कैसे होंगे। रब के घर की नए सिरे से बुनियाद रखने से पहले हालात कैसे थे? 16 जहाँ तुम फ़सल की 20 बोरियों की उम्मीद रखते थे वहाँ सिर्फ़ 10 हासिल हुईं। जहाँ तुम अंगूरों को कुचलकर रस के 100 लिटर की तबक़को रखते थे वहाँ सिर्फ़ 40 लिटर निकले।” 17 रब फ़रमाता है, “तेरी मेहनत-मशक्कत जाया हुई, क्योंकि मैंने पत्तरी, फ़फ़ूँदी और ओलों से तुम्हारी पैदावार को नुक़सान पहुँचाया। तो भी तुमने तौबा करके मेरी तरफ़ रज़ू न किया। 18 लेकिन अब तबज्ज़ुह दो कि तुम्हारा हाल आज यानी नवें महीने के 24वें दिन से कैसा होगा। इस दिन रब के घर की बुनियाद रखी गई, इसलिए गौर करो 19 कि क्या आइंदा भी गोदाम में जमाशुदा बीज जाया हो जाएगा, कि क्या आइंदा भी अंगूर, अंजीर, अनार और ज़ैतून का फल न होने के बराबर होगा। क्योंकि आज से मैं तुम्हें बरकत दूँगा।”

ज़म्बाबल से अल्लाह का वादा

20 उसी दिन हज्जी पर रब का एक और कलाम नाज़िल हुआ, 21 “यहदाह के गवर्नर ज़म्बाबल को बता दे कि मैं आसमानो-ज़मीन को हिला दूँगा। 22 मैं शाही तख्तों को उलटकर अज़नबी सलतनतों की ताक़त तबाह कर दूँगा। मैं रथों को उनके रथबानों समेत उलट दूँगा, और घोड़े अपने सवारों समेत गिर जाएंगे। हर एक अपने भाई की तलवार से मरेगा।”

23 रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, “उस दिन मैं तुझे, अपने खादिम ज़म्बाबल बिन सियालतियेल को लेकर मुहर की अंगूठी की मानिंद बना दूँगा, क्योंकि मैंने तुझे चुन लिया है।” यह रब्बुल-अफ़वाज़ का फ़रमान है।

## जकरियाह

तौबा करो!

1 फ़ारस के बादशाह दारा की हुकूमत के दूसरे साल और आठवें महीने \* में रब का कलाम नबी ज़करियाह बिन बरकियाह बिन इद्रू पर नाज़िल हुआ,

2-3 “लोगों से कह कि रब तुम्हारे बापदादा से निहायत ही नाराज़ था। अब रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है कि मेरे पास वापस आओ तो मैं भी तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 4 अपने बापदादा की मानिंद न हो जिन्होंने न मेरी सुनी, न मेरी तरफ़ तवज्जुह दी, गो मैंने उस वक़्त के नबियों की मारिफ़त उन्हें आगाह किया था कि अपनी बुरी राहों और शरीर हरकतों से बाज़ आओ। 5 अब तुम्हारे बापदादा कहाँ हैं? और क्या नबी अबद तक जिंदा रहते हैं? दोनों बहुत देर हुई वफ़ात पा चुके हैं। † 6 लेकिन तुम्हारे बापदादा के बारे में जितनी भी बातें और फैसले मैंने अपने खादिमों यानी नबियों की मारिफ़त फ़रमाए वह सब पूरे हुए। तब उन्होंने तौबा करके इकरार किया, ‘रब्बुल-अफ़वाज़ ने हमारी बुरी राहों और हरकतों के सबब से वह कुछ किया है जो उसने करने को कहा था।’”

जकरियाह रोया देखता है

7 तीन माह के बाद रब ने नबी ज़करियाह बिन बरकियाह बिन इद्रू पर एक और कलाम नाज़िल किया। सबात यानी 11वें महीने का 24वाँ दिन ‡ था।

पहली रोया : घुडसवार

8 उस रात मैंने रोया में एक आदमी को सुर्ख रंग के घोड़े पर सवार देखा। वह घाटी के दरमियान उगनेवाली मेहँदी की झाड़ियों के बीच में स्का हुआ था। उसके पीछे सुर्ख, भूरे और सफ़ेद रंग के घोड़े खड़े थे। उन पर भी आदमी बैठे थे। § 9 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उससे मैंने पूछा, “मेरे आका, इन घुडसवारों से क्या मुराद है?” उसने जवाब दिया, “मैं तुझे उनका मतलब दिखाता हूँ।” 10 तब मेहँदी की झाड़ियों में स्के हुए आदमी ने जवाब दिया, “यह वह हैं जिन्हें रब ने पूरी दुनिया की ग़रत करने के लिए भेजा है।” 11 अब दीगर घुडसवार रब के उस फ़रिश्ते के पास आए जो मेहँदी की झाड़ियों के दरमियान स्का हुआ था। उन्होंने इत्ला दी, “हमने दुनिया की ग़रत लगाई तो मालूम हुआ कि पूरी दुनिया में अमनो-अमान है।” 12 तब रब का फ़रिश्ता बोला, “ऐ रब्बुल-अफ़वाज़, अब तू 70 सालों से यरूशलम और यहदाह की आबादियों से नाराज़ रहा है। तू कब तक उन पर रहम न करेगा?”

13 जवाब में रब ने मेरे साथ गुफ़्तगू करनेवाले फ़रिश्ते से नरम और तसल्ली देनेवाली बातें कीं। 14 फ़रिश्ता दुबारा मुझसे मुखातिब हुआ, “एलान कर कि रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, ‘मैं बड़ी ग़ैरत से यरूशलम और कोहे-सिय्यून के लिए लड़ूँगा। 15 मैं उन दीगर अक़वाम से निहायत नाराज़ हूँ जो इस वक़्त अपने आपको महफूज़ समझती हैं। बेशक मैं अपनी कौम से कुछ नाराज़ था, लेकिन इन दीगर कौमों ने उसे हद से ज्यादा तबाह कर दिया है। यह कभी भी मेरा मक़सद नहीं था।’ 16 रब फ़रमाता है, ‘अब मैं दुबारा यरूशलम की तरफ़ माथल होकर उस पर रहम करूँगा। मेरा घर नए सिरे से उसमें तामीर हो जाएगा बल्कि पूरे शहर की पैमाइश की जाएगी ताकि उसे दुबारा तामीर किया जाए।’ यह रब्बुल-अफ़वाज़ का फ़रमान है।

17 मज़ीद एलान कर कि रब्बुल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, ‘मेरे शहरों में दुबारा कस्रत का माल पाया जाएगा। रब दुबारा कोहे-सिय्यून को तसल्ली देगा, दुबारा यरूशलम को चुन लेगा।’”

दूसरी रोया : सींग और कारीगर

18 मैंने अपनी निगाह उठाई तो क्या देखाता हूँ कि चार सींग मेरे सामने हैं। 19 जो फ़रिश्ता मुझसे बात कर रहा था उससे मैंने पूछा, “इनका क्या मतलब है?” उसने जवाब दिया, “यह वह सींग हैं जिन्होंने यहदाह और इसराईल को यरूशलम समेत मुंशिर कर दिया था।”

20 फिर रब ने मुझे चार कारीगर दिखाए। 21 मैंने सवाल किया, “यह क्या करने आ रहे हैं?” उसने जवाब दिया, “मजक़रा सींगों ने यहदाह को इतने जोर से मुंशिर कर दिया कि आखिरकार एक भी अपना सर नहीं उठा सका। लेकिन अब यह

\* 1:1 अन्तुबर ता नक्बर। † 1:5 ‘दोनों . . . चुके हैं’ इजाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो। ‡ 1:7 15 फ़रवरी। § 1:8 ‘उन . . . बैठे थे’ इजाफ़ा है ताकि मतलब साफ़ हो।



कारिगर उनमें दहशत फैलाने आए हैं। यह उन कौमों के सीगों को खाक में मिला देंगे जिन्होंने उनसे यहदाह के बाशिदों को मुंतशिर कर दिया था।”

## 2

तीसरी रोया : आदमी यरूशलम की पैमाइश करता है

1 मैंने अपनी नजर दुबारा उठाई तो एक आदमी को देखा जिसके हाथ में फ्रीता था। 2 मैंने पूछा, “आप कहाँ जा रहे हैं?” उसने जवाब दिया, “यरूशलम की पैमाइश करने जा रहा हूँ। मैं मालूम करना चाहता हूँ कि शहर की लंबाई और चौड़ाई कितनी होनी चाहिए।” 3 तब वह फरिशता रवाना हुआ जो अब तक मुझसे बात कर रहा था। लेकिन रास्ते में एक और फरिशता उससे मिलने आया। 4 इस दूसरे फरिशते ने कहा, “भागकर पैमाइश करनेवाले नौजवान को बता दे, ‘इनसानो-हैवान की इतनी बड़ी तादाद होगी कि आइंदा यरूशलम की फसील नहीं होगी।’ 5 रब फरमाता है कि उस वक़्त मैं आग की चारदीवारी बनकर उस की हिफ़ाज़त करूँगा, मैं उसके दरमियान रहकर उस की इज़्ज़तो-जलाल का बाइस हूँगा।”

6 रब फरमाता है, “उठो, उठो! शिमाली मुल्क से भाग आओ। क्योंकि मैंने खुद तुम्हें चारों तरफ मुंतशिर कर दिया था। 7 लेकिन अब मैं फरमाता हूँ कि वहाँ से निकल आओ। सिय्युन के जितने लोग बाबल \* में रहते हैं वहाँ से बच निकलो!” 8 क्योंकि रब्बुल-अफवाज जिसने मुझे भेजा वह उन कौमों के बारे में जिन्होंने तुम्हें लूट लिया फरमाता है, “जो तुम्हें छेडे वह मेरी आँख की पुतली को छेडेगा। 9 इसलिए यक़ीन करो कि मैं अपना हाथ उनके खिलाफ उठाऊँगा। उनके अपने गुलाम उन्हें लूट लेंगे।”

तब तुम जान लोगे कि रब्बुल-अफवाज ने मुझे भेजा है। 10 रब फरमाता है, “ऐ सिय्युन बेटी, खुशी के नारे लगा! क्योंकि मैं आ रहा हूँ, मैं तेरे दरमियान सुकूनत करूँगा। 11 उस दिन बहुत-सी अक्रवाम मेरे साथ पैवस्त होकर मेरी क्रौम का हिस्सा बन जाएँगी। मैं खुद तेरे दरमियान सुकूनत करूँगा।”

तब तू जान लेगी कि रब्बुल-अफवाज ने मुझे तेरे पास भेजा है।

12 मुकद्दस मुल्क में यहदाह रब की मौरूसी ज़मीन बनेगा, और वह यरूशलम को दुबारा चुन लेगा। 13 तमाम इनसान रब के सामने खोमोश हो जाएँ, क्योंकि वह उठकर अपनी मुकद्दस सुकूनतगाह से निकल आया है।

## 3

चौथी रोया : इमामे-आज़म यशुअ

1 इसके बाद रब ने मुझे रोया में इमामे-आज़म यशुअ को दिखाया। वह रब के फरिशते के सामने खड़ा था, और इबलीस उस पर इलज़ाम लगाने के लिए उसके दाएँ हाथ खड़ा हो गया था। 2 रब ने इबलीस से फरमाया, “ऐ इबलीस, रब तुझे मलामत करता है! रब जिसने यरूशलम को चुन लिया वह तुझे डौंटता है! यह आदमी तो बाल बाल बच गया है, उस लकड़ी की तरह जो भडकती आग में से छीन ली गई है।”

3 यशुअ गदे कपडे पहने हुए फरिशते के सामने खड़ा था। 4 जो अफ़राद साथ खड़े थे उन्हें फरिशते ने हुक्म दिया, “उसके मैले कपडे उतार दो।” फिर यशुअ से मुखातिब हुआ, “देख, मैंने तेरा कुसर तुझसे दूर कर दिया है, और अब मैं तुझे शानदार सफ़ेद कपडे पहना देता हूँ।” 5 मैंने कहा, “वह उसके सर पर पाक-साफ पगड़ी बाँधे।” चुनौचे उन्होंने यशुअ के सर पर पाक-साफ पगड़ी बाँधकर उसे नए कपडे पहनाए। रब का फरिशता साथ खड़ा रहा। 6 यशुअ से उसने बड़ी संजीदगी से कहा,

7 “रब्बुल-अफवाज फरमाता है, ‘मेरी राहों पर चलकर मेरे अहकाम पर अमल कर तो तू मेरे घर की राहनुमाई और उस की बारगाहों की देख-भाल करेगा। फिर मैं तेरे लिए यहाँ आने और हाज़िरिन में खड़े होने का रास्ता कायम रखूँगा।’

8 ऐ इमामे-आज़म यशुअ, सुन! तू और तेरे सामने बैठे तेरे इमाम भाई मिलकर उस वक़्त की तरफ इशारा हैं जब मैं अपने खादिम को जो कौंपल कहलाता है आने दूँगा। 9 देखो वह जौहर जो मैंने यशुअ के सामने रखा है। उस एक ही पत्थर पर सात आँखें हैं।” रब्बुल-अफवाज फरमाता है, “मैं उस पर कतबा कंदा करके एक ही दिन में इस मुल्क का गुनाह मिटा दूँगा। 10 उस दिन तुम एक दूसरे को अपनी अंगूर की बेल और अपने अंजीर के दरख्त के साये में बैठने की दावत दोगे।” यह रब्बुल-अफवाज का फरमान है।”

## 4

पाँचवी रोया : सोने का शमादान और जैतून के दरख्त

\* 2:7 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : बाबल बेटी।

1 जिस फरिश्ते ने मुझसे बात की थी वह अब मेरे पास वापस आया। उसने मुझे यों जगा दिया जिस तरह गहरी नींद सोनेवाले को जगाया जाता है।<sup>2</sup> उसने पूछा, “तुझे क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया, “खालिस सोने का शमादान जिस पर तेल का प्याला और सात चराग हैं। हर चराग के सात मुँह हैं।<sup>3</sup> जैतून के दो दरख्त भी दिखाई देते हैं। एक दरख्त तेल के प्याले के दाईं तरफ़ और दूसरा उसके बाईं तरफ़ है।<sup>4</sup> लेकिन मेरे आका, इन चीज़ों का मतलब क्या है?”

5 फरिश्ता बोला, “क्या यह तुझे मालूम नहीं?” मैंने जवाब दिया, “नहीं, मेरे आका।”

6 फरिश्ते ने मुझसे कहा, “जम्बूबाबल के लिए रब का यह पैगाम है, ‘रब्बूल-अफ़वाज़ फ़रमाता है कि तू न अपनी ताकत, न अपनी कुव्वत से बल्कि मेरे रूह से ही कामयाब होगा।’<sup>7</sup> क्या रास्ते में बड़ा पहाड़ हायल है? जम्बूबाबल के सामने वह हमवार मैदान बन जाएगा। और जब जम्बूबाबल रब के घर का आखिरी पत्थर लगाएगा तो हाज़िरीन पुकार उठेंगे, ‘मुबारक हो! मुबारक हो!’”

8 रब का कलाम एक बार फिर मुझ पर नाज़िल हुआ,<sup>9</sup> “जम्बूबाबल के हाथों ने इस घर की बुनियाद डाली, और उसी के हाथ उसे तकमील तक पहुँचाएँगे। तब तू जान लेगा कि रब्बूल-अफ़वाज़ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।<sup>10</sup> गो तामीर के आगाज़ में बहुत कम नज़र आता है तो भी उस पर हिकारत की निगाह न डालो। क्योंकि लोग खुशी मनाएँगे जब जम्बूबाबल के हाथ में साहल देखेंगे। (मज़क़रा सात चराग रब की आँखें हैं जो पूरी दुनिया की ग़रत लगाती रहती हैं)।”

11 मैंने मज़ीद पूछा, “शमादान के दाएँ बाएँ के जैतून के दो दरख्तों से क्या मुराद है?<sup>12</sup> यहाँ सोने के दो पायप भी नज़र आते हैं जिनसे जैतून का सुनहरा तेल बह निकलता है। जैतून की जो दो टहनियाँ उनके साथ हैं उनका मतलब क्या है?”

13 फरिश्ते ने कहा, “क्या तू यह नहीं जानता?” मैं बोला, “नहीं, मेरे आका।”<sup>14</sup> तब उसने फ़रमाया, “यह वह दो मसह किए हुए आदमी हैं जो पूरी दुनिया के मालिक के हज़ूर खड़े होते हैं।”

## 5

### छटी रोया : उडनेवाला त्मार

1 मैंने एक बार फिर अपनी नज़र उठाई तो एक उडता हुआ त्मार देखा।<sup>2</sup> फरिश्ते ने पूछा, “तुझे क्या नज़र आता है?” मैंने जवाब दिया, “एक उडता हुआ त्मार जो 30 फुट लंबा और 15 फुट चौड़ा है।”<sup>3</sup> वह बोला, “इससे मुराद एक लानत है जो पूरे मुल्क पर भेजी जाएगी। इस त्मार के एक तरफ़ लिखा है कि हर चोर को मिटा दिया जाएगा और दूसरी तरफ़ यह कि झूठी कसम खानेवाले को नेस्त किया जाएगा।<sup>4</sup> रब्बूल-अफ़वाज़ फ़रमाता है, ‘मैं यह भेजूँगा तो चोर और मेरे नाम की झूठी कसम खानेवाले के घर में लानत दाखिल होगी और उसके बीच में रहकर उसे लकड़ी और पत्थर समेत तबाह कर देगी।’”

### सातवीं रोया : टोकरी में औरत

5 जो फरिश्ता मुझसे बात कर रहा था उसने आकर मुझसे कहा, “अपनी निगाह उठाकर वह देख जो निकलकर आ रहा है।”<sup>6</sup> मैंने पूछा, “यह क्या है?” उसने जवाब दिया, “यह अनाज की पैमाइश करने की टोकरी है। यह पूरे मुल्क में नज़र आती है।”<sup>7</sup> टोकरी पर सीसे का ढकना था। अब वह खुल गया, और टोकरी में बैठी हुई एक औरत दिखाई दी।<sup>8</sup> फरिश्ता बोला, “इस औरत से मुराद बेदीनी है।” उसने औरत को धक्का देकर टोकरी में वापस कर दिया और सीसे का ढकना जोर से बंद कर दिया।

9 मैंने दुबारा अपनी नज़र उठाई तो दो औरतों को देखा। उनके लकलक के-से पर थे, और उड़ते वक़्त हवा उनके साथ थी। टोकरी के पास पहुँचकर वह उसे उठाकर आसमानो-ज़मीन के दरमियान ले गईं।<sup>10</sup> जो फरिश्ता मुझसे गुफ़्तगू कर रहा था उससे मैंने पूछा, “औरतें टोकरी को किधर ले जा रही हैं?”<sup>11</sup> उसने जवाब दिया, “मुल्के-बाबल में। वहाँ वह उसके लिए घर बना देंगी। जब घर तैयार होगा तो टोकरी वहाँ उस की अपनी जगह पर रखी जाएगी।”

## 6

### चार रथ

1 मैंने फिर अपनी निगाह उठाई तो क्या देखता हूँ कि चार रथ पीतल के दो पहाड़ों के बीच में से निकल रहे हैं।<sup>2</sup> पहले रथ के घोड़े सुर्रद, दूसरे के स्याह,<sup>3</sup> तीसरे के सफ़ेद और चौथे के धब्बेदार थे। सब ताकतवर थे।

4 जो फरिश्ता मुझसे बात कर रहा था उससे मैंने सवाल किया, “मेरे आका, इनका क्या मतलब है?”<sup>5</sup> उसने जवाब दिया, “यह आसमान की चार रूहे\* हैं। पहले यह पूरी दुनिया के मालिक के हज़ूर खड़ी थी, लेकिन अब वहाँ से निकल रही हैं।

\* 6:5 या हवाएँ।

6 स्याह घोड़ों का रथ शिमाली मुल्क की तरफ जा रहा है, सफेद घोड़ों का मगारिब की तरफ, और धब्बेदार घोड़ों का जुन्ब की तरफ।”

7 यह ताकतवर घोड़े बड़ी बेताबी से इस इंतजार में थे कि दुनिया की गश्त करें। फिर उसने हुक्म दिया, “चलो, दुनिया की गश्त करो।” वह फौरन निकलकर दुनिया की गश्त करने लगे। 8 फरिशते ने मुझे आवाज देकर कहा, “उन घोड़ों पर खास ध्यान दो जो शिमाली मुल्क की तरफ बढ़ रहे हैं। यह उस मुल्क पर मेरा गुस्सा उतारेंगे।”

### इसराईल का आनेवाला बादशाह

9 रब का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ, 10 “आज ही यूसियाह बिन सफनियाह के घर में जा! वहाँ तेरी मुलाकात बाबल में जिलावतन किए हुए इसराईलियों खलदी, त्बियाह और यदायाह से होगी जो इस वक्त वहाँ पहुँच चुके हैं। जो हदिये वह अपने साथ लाए हैं उन्हें कबूल कर। 11 उनकी यह सोना-चाँदी लेकर ताज बना ले, फिर ताज को इमामे-आजम यशुअ बिन यहसदक के सर पर रखकर 12 उसे बता, ‘रब्बुल-अफवाज फरमाता है कि एक आदमी आनेवाला है जिसका नाम कौपल है। उसके साथे में बहुत कौपलें फूट निकलेंगी, और वह रब का घर तामीर करेगा। 13 हौं, वही रब का घर बनाएगा और शानो-शौकत के साथ तख्त पर बैठकर हुक्मत करेगा। वह इमाम की हैसियत से भी तख्त पर बैठेगा, और दोनों ओहदों में इत्फाक और सलामती होगी।’ 14 ताज को हीलम, त्बियाह, यदायाह और हेन बिन सफनियाह की याद में रब के घर में महफूज रखा जा। 15 लोग दूर-दराज इलाकों से आकर रब का घर तामीर करने में मदद करेंगे।”

तब तुम जान लोगे कि रब्बुल-अफवाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। अगर तुम ध्यान से रब अपने खुदा की सुनो तो यह सब कुछ पूरा हो जाएगा।

## 7

### तुम मेरी सुनने से इनकार करते हो

1 दारा बादशाह की हुक्मत के चौथे साल में रब जकरियाह से हमकलाम हुआ। किसलेव यानी नवें महीने का चौथा दिन \* था। 2 उस वक्त बैतल शहर ने सराजर और रजम-मलिक को उसके आदमियों समेत यरूशलम भेजा था ताकि रब से इलतमास करें। 3 साथ साथ उन्हें रब्बुल-अफवाज के घर के इमामों को यह सवाल पेश करना था, “अब हम कई साल से पाँचवें महीने में रोजा रखकर रब के घर की तबाही पर मातम करते आए हैं। क्या लाजिम है कि हम यह दस्त्र आईदा भी जारी रखें?”

4 तब मुझे रब्बुल-अफवाज से जवाब मिला, 5 “मुल्क के तमाम बाशिंदों और इमामों से कह, ‘बेशक तुम 70 साल से पाँचवें और सातवें महीने में रोजा रखकर मातम करते आए हो। लेकिन क्या तुमने यह दस्त्र वाकई मेरी खातिर अदा किया? हरगिज नहीं! 6 इंदों पर भी तुम खाते-पीते वक्त सिर्फ अपनी ही खातिर खुशी मनाते हो। 7 यह वही बात है जो मैंने माजी में भी नबियों की मारिफत तुम्हें बताई, उस वक्त जब यरूशलम में आबादी और सुकून था, जब गिर्दो-नवाह के शहर दशते-नजब और मगारिब के नशेबी पहाड़ी इलाके तक आबाद थे।’”

8 इस नाते से जकरियाह पर रब का एक और कलाम नाजिल हुआ, 9 “रब्बुल-अफवाज फरमाता है, ‘अदालत में मुंसिफाना फैसले करो, एक दूसरे पर मेहरबानी और रहम करो! 10 बेवाओं, यतीमों, अजनबियों और गरीबों पर जुल्म मत करना। अपने दिल में एक दूसरे के खिलाफ बुरे मनसूबे न बांधो।’ 11 जब तुम्हारे बापदादा ने यह कुछ सुना तो वह इस पर ध्यान देने के लिए तैयार नहीं थे बल्कि अकड़ गए। उन्होंने अपना मुँह दूसरी तरफ फेरकर अपने कानों को बंद किए रखा। 12 उन्होंने अपने दिलों को हीरे की तरह सख्त कर लिया ताकि शरीअत और वह बातें उन पर असरअंदाज न हो सकें जो रब्बुल-अफवाज ने अपने रूह के वसीले से गुज्रशता नबियों को बताने को कहा था। तब रब्बुल-अफवाज का शदीद गजब उन पर नाजिल हुआ। 13 वह फरमाता है, ‘चूँकि उन्होंने मेरी न सुनी इसलिए मैंने फैसला किया कि जब वह मदद के लिए मुझसे इल्तिजा करें तो मैं भी उनकी नहीं सुनूँगा। 14 मैंने उन्हें आँधी से उडाकर तमाम दीगर अकवाम में मूतशिर कर दिया, ऐसी कौमों में जिनसे वह नावाक़िफ थे। उनके जाने पर वतन इतना वीरानो-सुनसान हुआ कि कोई न रहा जो उसमें आए या वहाँ से जाए। यों उन्होंने उस ख़ुशगवार मुल्क को तबाह कर दिया।’”

## 8

### एक नया आगाज

1 एक बार फिर रब्बुल-अफवाज का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ, 2 “रब्बुल-अफवाज फरमाता है कि मैं बड़ी गैरत से सिय्यून के लिए लड़ रहा हूँ, बड़े गुस्से में उसके लिए जिद्दे-जहद कर रहा हूँ। 3 रब फरमाता है कि मैं सिय्यून के पास वापस आऊँगा, दुबारा यरूशलम के बीच में सुकूनत करूँगा। तब यरूशलम ‘वफ़ादारी का शहर’ और रब्बुल-अफवाज का

\* 7:1 4 दिखंदा।

पहाड 'कोहे-मुकद्दस' कहलाएगा।<sup>4</sup> क्योंकि रब्बुल-अफवाज फरमाता है, 'बुजुर्ग मर्दों-खवातीन दुबारा यरूशलम के चौकों में बैठेंगे, और हर एक इतना उमरसीदा होगा कि उसे छडी का सहारा लेना पड़ेगा।<sup>5</sup> साथ साथ चौक खेल-कूद में मसरूफ लडके-लडकियों से भरे रहेंगे।'

<sup>6</sup> रब्बुल-अफवाज फरमाता है, 'शायद यह उस वक्त बचे हुए इसराइलियों को नामुमकिन लगे। लेकिन क्या ऐसा काम मेरे लिए जो रब्बुल-अफवाज हूँ नामुमकिन है? हरगिज नहीं!' <sup>7</sup> रब्बुल-अफवाज फरमाता है, 'मैं अपनी क्रौम को मशरिक और मगरिब के ममालिक से बचाकर <sup>8</sup> वापस लाऊँगा, और वह यरूशलम में बसेंगे। वहाँ वह मेरी क्रौम होंगे और मैं वफादारी और इनसाफ के साथ उनका खुदा हूँगा।'

<sup>9</sup> रब्बुल-अफवाज फरमाता है, 'हौसला रखकर तामीरी काम तकमील तक पहुँचाओ! आज भी तुम उन बातों पर एतमाद कर सकते हो जो नबियों ने रब्बुल-अफवाज के घर की बुनियाद डालते वक्त सुनाई थी। <sup>10</sup> याद रहे कि उस वक्त से पहले न इनसान और न हैवान को मेहनत की मजदूरी मिलती थी। आने जानेवाले कहीं भी दुश्मन के हमलों से महफूज नहीं थे, क्योंकि मैंने हर आदमी को उसके हमसाये का दुश्मन बना दिया था।' <sup>11</sup> लेकिन रब्बुल-अफवाज फरमाता है, 'अब से मैं तुमसे जो बचे हुए हो ऐसा सुलक नहीं करूँगा। <sup>12</sup> लोग सलामती से बीज बोएँगे, अंगूर की बेल वक्त पर अपना फल लाएँगी, खेतों में फसलें पकेगी और आसमान ओस पड़ने देगा। यह तमाम चीजें मैं यहदाह के बचे हुएों को मीरास में दूँगा। <sup>13</sup> ऐ यहदाह और इसराइल, पहले तुम दीगर अक़वाम में लानत का निशाना बन गए थे, लेकिन अब जब मैं तुम्हें रिहा करूँगा तो तुम बरकत का बाइस होंगे। डरो मत! हौसला रखो!'

<sup>14</sup> रब्बुल-अफवाज फरमाता है, 'पहले जब तुम्हारे बापदादा ने मुझे तैश दिलाया तो मैंने तुम पर आफत लाने का मुसम्मम इरादा कर लिया था और कभी न पछताया। <sup>15</sup> लेकिन अब मैं यरूशलम और यहदाह को बरकत देना चाहता हूँ। इसमें मेरा इरादा उतना ही पक्का है जितना पहले तुम्हें नुकसान पहुँचाने में पक्का था। चुनौचे डरो मत! <sup>16</sup> लेकिन इन बातों पर ध्यान दो, एक दूसरे से सच बात करो, अदालत में सच्चाई और सलामती पर मबनी फैसले करो, <sup>17</sup> अपने पड़ोसी के खिलाफ बुरे मनसूबे मत बान्धो और झूटी कसम खाने के शौक से बाज आओ। इन तमाम चीजों से मैं नफरत करता हूँ।' यह रब का फरमान है।"

<sup>18</sup> एक बार फिर रब्बुल-अफवाज का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ, <sup>19</sup> "रब्बुल-अफवाज फरमाता है कि आज तक यहदाह के लोग चौथे, पाँचवें, सातवें और दसवें महीने में रोज़ा रखकर मातम करते आए हैं। लेकिन अब से यह औकात खुशी-ओ-शादमानी के मौके होंगे जिन पर जशन मनाओगे। लेकिन सच्चाई और सलामती को प्यार करो!

<sup>20</sup> रब्बुल-अफवाज फरमाता है कि ऐसा वक्त आएगा जब दीगर अक़वाम और मुतअद्दिद शहरों के लोग यहाँ आएँगे। <sup>21</sup> एक शहर के बाशिंदे दूसरे शहर में जाकर कहेंगे, 'आओ, हम यरूशलम जाकर रब से इलतमास करें, रब्बुल-अफवाज की मरज़ी दरियाफ़्त करें। हम भी जाएँगे।' <sup>22</sup> हाँ, मुतअद्दिद अक़वाम और ताकतवर उम्में यरूशलम आएँगी ताकि रब्बुल-अफवाज की मरज़ी मालूम करें और उससे इलतमास करें।

<sup>23</sup> रब्बुल-अफवाज फरमाता है कि उन दिनों में मुख्तलिफ़ अक़वाम और अहले-जबान के दस आदमी एक यहदी के दामन को पकड़कर कहेंगे, 'हमें अपने साथ चलने दें, क्योंकि हमने सुना है कि अल्लाह आपके साथ है।'।"

## 9

### इसराइल के दुश्मनों की अदालत

<sup>1</sup> रब का कलाम मुल्के-हद्राक के खिलाफ है, और वह दमिशक पर नाज़िल होगा। क्योंकि इनसान और इसराइल के तमाम कबीलों की आँखें रब की तरफ देखती हैं। <sup>2</sup> दमिशक की सरहद पर वाके हमात बल्कि सूर और सैदा भी इस कलाम से मुतअस्सिर हो जाएँगे, खाह वह कितने दानिशमंद क्यों न हों। <sup>3</sup> बेशक सूर ने अपने लिए मजबूत किला बना लिया है, बेशक उसने सोने-चाँदी के ऐसे ढेर लगाए हैं जैसे आम तौर पर गलियों में रेत या कचरे के ढेर लगा लिए जाते हैं। <sup>4</sup> लेकिन रब उस पर कब्ज़ा करके उस की फौज को समुंदर में फेंक देगा। तब शहर नजरे-आतिश हो जाएगा। <sup>5</sup> यह देखकर अस्कलून घबरा जाएगा और गज्ज़ा तडप उठेगा। अक़रून भी लरज़ उठेगा, क्योंकि उस की उम्मीद जाती रहेगी। गज्ज़ा का बादशाह हलाक और अस्कलून गैरआबाद हो जाएगा। <sup>6</sup> अशदूद में दो नसलों के लोग बसेंगे। रब फरमाता है, "जो कुछ फिलिस्तीयों के लिए फ़खर का बाइस है उसे मैं मिटा दूँगा। <sup>7</sup> मैं उनकी बूतपरस्ती खत्म करूँगा। आइदा वह गोशत को खून के साथ और अपनी धिनौनी कुरबानियों नहीं खाएँगे। तब जो बच जाएँगे मेरे परस्तार होंगे और यहदाह के खानदानों में शामिल हो जाएँगे। अक़रून के फिलिस्ती यों मेरी क्रौम में शामिल हो जाएँगे जिस तरह कर्दीम ज़माने में यबूसी मेरी क्रौम में शामिल हो गए। <sup>8</sup> मैं

खुद अपने घर की पहरादारी करूँगा ताकि आइंदा जो भी आते या जाते वक़्त वहाँ से गुज़रे उस पर हमला न करे, कोई भी जालिम मेरी कौम को तंग न करे। अब से मैं खुद उस की देख-भाल करूँगा।

नया बादशाह आनेवाला है

9 ऐ सिय्यून बेटी, शादियाना बजा! ऐ यरूशलम बेटी, शादमानी के नारे लगा! देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है। वह रास्तबाज़ और फ़तहमंद है, वह हलीम है और गधे पर, हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।

10 मैं इफ़राईम से रथ और यरूशलम से घोड़े दूर कर दूँगा। जंग की कमान टूट जाएगी। मौऊदा बादशाह \* के कहने पर तमाम अक्रवाम में सलामती कायम हो जाएगी। उस की हुकूमत एक समुंदर से दूसरे तक और दरियाए-फ़ुरात से दुनिया की इतहा तक मानी जाएगी।

रब अपनी कौम की हिफ़ाज़त करेगा

11 ऐ मेरी कौम, मैंने तेरे साथ एक अहद बाँधा जिसकी तसदीक कुरबानियों के खून से हुई, इसलिए मैं तेरे कैदियों को पानी से महरूम गढे से रिहा करूँगा। 12 ऐ पुरउम्मीद कैदियों, किले के पास वापस आओ! क्योंकि आज ही मैं एलान करता हूँ कि तुम्हारी हर तकलीफ़ के एवज़ मैं तुम्हें दो बरकतें बख़्श दूँगा।

13 यहदाह मेरी कमान है और इसराईल मेरे तीर जो मैं दुश्मन के खिलाफ़ चलाऊँगा। ऐ सिय्यून बेटी, मैं तेरे बेटों को यूनान के फ़ौज़ियों से लड़ने के लिए भेजूँगा, मैं तुझे सूरे की तलवार की मानिद बना दूँगा।”

14 तब रब उन पर जाहिर होकर बिजली की तरह अपना तीर चलाएगा। रब कादिरे-मुतलक नरसिंगा फूँककर जुन्वी आँधियों में आएगा। 15 रब्बूल-अफ़वाज खुद इसराईलियों को पनाह देगा। तब वह दुश्मन को खा खाकर उसके फेंके हुए पत्थरों को खाक में मिला देगा और खून को मे की तरह पी पीकर शोर मचाएँगे। वह कुरबानी के खून से भरे कटोरे की तरह भर जाएँगे, कुरबानगाह के कोनों जैसे खूनआलूदा हो जाएँगे।

16 उस दिन रब उनका खुदा उन्हें जो उस की कौम का रेवड है छुटकारा देगा। तब वह उसके मुल्क में ताज के जवाहर की मानिद चमक उठेंगे। 17 वह कितने दिलकश और खूबसूरत लगेंगे! अनाज और मै की कसरत से कुँवारे-कुँवारियाँ फलने फूलने लगेंगे।

## 10

रब ही मदद कर सकता है

1 बहार के मौसम में रब से बारिश माँगे। क्योंकि वही घने बादल बनाता है, वही बारिश बरसाकर हर एक को खेत की हरियाली मुहैया करता है। 2 तुम्हारे घरों के बुत फरेब देते, तुम्हारे गैबदान झूटी रोया देखते और फरेबदेह ख़ाब सुनाते हैं। उनकी तसल्ली अबस है। इसी लिए कौम को भेड-बकरियों की तरह यहाँ से चला जाना पडा। गल्लाबान नहीं है, इसलिए वह मुसीबत में उलझे रहते हैं।

रब अपनी कौम को वापस लाएगा

3 रब फरमाता है, “मेरी कौम के गल्लाबानों पर मेरा गज़ब भडक उठा है, और जो बक़रे उस की राहनुमाई कर रहे हैं उन्हें मैं सज़ा दूँगा। क्योंकि रब्बूल-अफ़वाज अपने रेवड यहदाह के घराने की देख-भाल करेगा, उसे जंगी घोड़े जैसा शानदार बना देगा। 4 यहदाह से कोने का बुनियादी पत्थर, मेख, जंग की कमान और तमाम हुक्मरान निकल आएँगे। 5 सब सूरे की मानिद होंगे जो लड़ते वक़्त दुश्मन को गली के कचरे में कुचल देंगे। रब्बूल-अफ़वाज उनके साथ होगा, इसलिए वह लडकर गालिब आएँगे। मुख़ालिफ़ घुडसवारों की बडी स्सवाई होगी।

6 मैं यहदाह के घराने को तकवियत दूँगा, यूसुफ़ के घराने को छुटकारा दूँगा, हाँ उन पर रहम करके उन्हें दुबारा वतन में बसा दूँगा। तब उनकी हालत से पता नहीं चलेगा कि मैंने कभी उन्हें रड किया था। क्योंकि मैं रब उनका खुदा हूँ, मैं ही उनकी सुरूँगा। 7 इफ़राईम के अफ़राद सूरे से बन जाएँगे, वह यों खुश हो जाएँगे जिस तरह दिल मै पीने से खुश हो जाता है। उनके बच्चे यह देखकर बाग बाग हो जाएँगे, उनके दिल रब की खुशी मनाएँगे।

8 मैं सीटी बजाकर उन्हें जमा करूँगा, क्योंकि मैंने फिघा देकर उन्हें आज़ाद कर दिया है। तब वह पहले की तरह बेशमार हो जाएँगे। 9 मैं उन्हें बीज की तरह मुख़तलिफ़ कौमों में बोक़र मुंतशिर कर दूँगा, लेकिन दूर-दराज़ इलाकों में वह मुझे याद करेंगे। और एक दिन वह अपनी औलाद समेत बचकर वापस आएँगे। 10 मैं उन्हें मिसर से वापस लाऊँगा, असूर से इक़श करूँगा। मैं उन्हें जिलियदा और लुबनान में लाऊँगा, तो भी उनके लिए जगह काफी नहीं होगी। 11 जब वह मुसीबत के समुंदर

\* 9:10 लफ़्ज़ी तज़ुमा : उसके कहने पर।

में से गुजरेंगे तो रब मौजों को यों मारेगा कि सब कुछ पानी की गहराइयों तक खुशक हो जाएगा। असूर का फखर खाक में मिल जाएगा, और मिसर का शाही असा दर हो जाएगा। <sup>12</sup> मैं अपनी कौम को रब में तकवियत दूँगा, और वह उसका ही नाम लेकर ज़िंदगी गुज़ारेंगे।” यह रब का फरमान है।

## 11

बड़ों को नीचा किया जाएगा

- 1 ऐ लुबनान, अपने दरवाजों को खोल दे ताकि तेरे देवदार के दरख्त नज़रे-आतिश हो जाएँ।
- 2 ऐ ज़नीपर के दरखतो, वावैला करो! क्योंकि देवदार के दरख्त गिर गए हैं, यह ज़बरदस्त दरख्त तबाह हो गए हैं। ऐ बसन के बल्लो, आहो-जारी करो! जो जंगल इतना घना था कि कोई उसमें से गुज़र न सकता था उसे काटा गया है।
- 3 सुनो, चरवाहे रो रहे हैं, क्योंकि उनकी शानदार चरागाहें बरबाद हो गई हैं। सुनो, जवान शेरबबर दहाड रहे हैं, क्योंकि वादीए-यरदन का गुंजान जंगल ख़त्म हो गया है।

दो किस्म के गल्लाबान

- 4 रब मेरा खुदा मुझसे हमकलाम हुआ, “ज़बह होनेवाली भेड़-बकरियों की गल्लाबानी कर! <sup>5</sup> जो उन्हें ख़रीद लेते वह उन्हें ज़बह करते हैं और कुसूरवार नहीं ठहरते। और जो उन्हें बेचते वह कहते हैं, ‘अल्लाह की हम्द हो, मैं अमीर हो गया हूँ!’ उनके अपने चरवाहे उन पर तरस नहीं खाते।
- 6 इसलिए रब फरमाता है कि मैं भी मुल्क के बाशिंदों पर तरस नहीं खाऊँगा। मैं हर एक को उसके पड़ोसी और उसके बादशाह के हवाले करूँगा। वह मुल्क को टुकड़े टुकड़े करेंगे, और मैं उन्हें उनके हाथ से नहीं छुड़ाऊँगा।”
- 7 चुनौचें मैं, ज़करियाह ने सौदागरों के लिए ज़बह होनेवाली भेड़-बकरियों की गल्लाबानी की। मैंने उस काम के लिए दो लाठियाँ लीं। एक का नाम ‘मेहरबानी’ और दूसरी का नाम ‘यगांगत’ था। उनके साथ मैंने रेवड की गल्लाबानी की। <sup>8</sup> एक ही महीने में मैंने तीन गल्लाबानों को मिटा दिया। लेकिन जल्द ही मैं भेड़-बकरियों से तंग आ गया, और उन्होंने मुझे भी हक़ीर जाना।
- 9 तब मैं बोला, “आइंदा मैं तुम्हारी गल्लाबानी नहीं करूँगा। जिसे मरना है वह मरे, जिसे जाया होना है वह जाया हो जाए। और जो बच जाएँ वह एक दूसरे का गोशत खाएँ। मैं ज़िम्मादार नहीं हूँगा!” \* <sup>10</sup> मैंने लाठी बनाम ‘मेहरबानी’ को तोड़कर जाहिर किया कि जो अहद मैंने तमाम अक़वाम के साथ बाँधा था वह मनसूख है। <sup>11</sup> उसी दिन वह मनसूख हुआ।
- तब भेड़-बकरियों के जो सौदागर मुझ पर ध्यान दे रहे थे उन्होंने जान लिया कि यह पैग़ाम रब की तरफ से है। <sup>12</sup> फिर मैंने उनसे कहा, “अगर यह आपको मुनासिब लगे तो मुझे मज़दूरी के पैसे दे दें, वरना रहने दें।” उन्होंने मज़दूरी के लिए मुझे चौँदी के 30 सिक्के दे दिए।

<sup>13</sup> तब रब ने मुझे हुक्म दिया, “अब यह रकम कुम्हार † के सामने फेंक दे। कितनी शानदार रकम है! यह मेरी इतनी ही कदर करते हैं।” मैंने चौँदी के 30 सिक्के लेकर रब के घर में कुम्हार के सामने फेंक दिए। <sup>14</sup> इसके बाद मैंने दूसरी लाठी बनाम ‘यगांगत’ को तोड़कर जाहिर किया कि यहदाह और इसराईल की अखुव्वत मनसूख हो गई है।

<sup>15</sup> फिर रब ने मुझे बताया, “अब दुबारा गल्लाबान का सामान ले ले। लेकिन इस बार अहमक चरवाहे का-सा रवैया अपना ले। <sup>16</sup> क्योंकि मैं मुल्क पर ऐसा गल्लाबान मुक़र्रर करूँगा जो न हलाक होनेवालों की देख-भाल करेगा, न छोटों को तलाश करेगा, न ज़ख़मियों को शफ़ा देगा, न सेहतमंदों को ख़राक मुहैया करेगा। इसके बजाए वह बेहतरीन जानवरों का गोशत खा लेगा बल्कि इतना ज़ालिम होगा कि उनके खुरों को फाड़कर तोड़ेगा। <sup>17</sup> उस बेकार चरवाहे पर अफ़सोस जो अपने रेवड को छोड़ देता है। तलवार उसके बाजू और दहनी आँख को ज़ख़मी करे। उसका बाजू सूख जाए और उस की दहनी आँख अंधी हो जाए।”

## 12

अल्लाह यस्शलम की हिफ़ाज़त करेगा

- 1 ज़ैल में रब का इसराईल के लिए कलाम है। रब जिसने आसमान को ख़ैमे की तरह तानकर ज़मीन की बुनियादें रखी और इनसान के अंदर उस की रूह को तश्कील दिया वह फरमाता है,
- 2 “मैं यस्शलम को गर्दो-नवाह की कौमों के लिए शराब का प्याला बना दूँगा जिसे वह पीकर लडखडाने लगेंगी। यहदाह भी मुसीबत में आएगा जब यस्शलम का मुहासरा किया जाएगा। <sup>3</sup> उस दिन दुनिया की तमाम अक़वाम यस्शलम के खिलाफ

\* **11:9** ‘मैं ज़िम्मादार नहीं हूँगा’ इज़ाफ़ा है ताकि मत्लब साफ़ हो। † **11:13** या घात ढालनेवाले।

जमा हो जाएँगी। तब मैं यरूशलम को एक ऐसा पत्थर बनाऊँगा जो कोई नहीं उठा सकेगा। जो भी उसे उठाकर ले जाना चाहे वह ज़खमी हो जाएगा।”<sup>4</sup> रब फ़रमाता है, “उस दिन मैं तमाम घोड़ों में अबतरी और उनके सवारों में दीवानगी पैदा करूँगा। मैं दीगर अक्रवाम के तमाम घोड़ों को अंधा कर दूँगा।

साथ साथ मैं खुली आँखों से यहदाह के घराने की देख-भाल करूँगा।<sup>5</sup> तब यहदाह के खानदान दिल में कहेंगे, ‘यरूशलम के बाशिंदे इसलिए हमारे लिए कुव्वत का बाइस हैं कि रब्बुल-अफ़वाज उनका खुदा है।’<sup>6</sup> उस दिन मैं यहदाह के खानदानों को जलते हुए कोयले बना दूँगा जो दुश्मन की सूखी लकड़ी को जला देंगे। वह भड़कती हुई मशाल होंगे जो दुश्मन की पूलों को भस्म करेगी। उनके दाईं और बाईं तरफ़ जितनी भी कौमों गिर्दा-नवाह में रहती हैं वह सब नज़रे-आतिश हो जाएँगी। लेकिन यरूशलम अपनी ही जगह महफूज़ रहेगा।

<sup>7</sup> पहले रब यहदाह के घरों को बचाएगा ताकि दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिंदों की शानो-शौकत यहदाह से बड़ी न हो।<sup>8</sup> लेकिन रब यरूशलम के बाशिंदों को भी पनाह देगा। तब उनमें से कमज़ोर आदमी दाऊद जैसा सुरमा होगा जबकि दाऊद का घराना खुदा की मानिंद, उनके आगे चलनेवाले रब के फ़रिश्ते की मानिंद होगा।<sup>9</sup> उस दिन मैं यरूशलम पर हमलाआवर तमाम अक्रवाम को तबाह करने के लिए निकलूँगा।

### यरूशलम का मातम

<sup>10</sup> मैं दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिंदों पर मेहरबानी और इलतमास का रूह उंडेलूँगा। तब वह मुझ पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है, और वह उसके लिए ऐसा मातम करेंगे जैसे अपने इकलौते बेटे के लिए, उसके लिए ऐसा शदीद ग़म खाएंगे जिस तरह अपने पहलौठे के लिए।<sup>11</sup> उस दिन लोग यरूशलम में शिड़त से मातम करेंगे। ऐसा मातम होगा जैसा मैदाने-मजिद्दे में हदद-रिम्मोन पर किया जाता था।<sup>12-14</sup> पूरे का पूरा मुल्क बावैला करेगा। तमाम खानदान एक दूसरे से अलग और तमाम औरतें दूसरों से अलग आहो-बुका करेंगी। दाऊद का खानदान, नातन का खानदान, लार्बी का खानदान, सिमई का खानदान और मुल्क के बाक़ी तमाम खानदान अलग मातम करेंगे।

## 13

### बुतपरस्ती और झूटी नबुव्वत का ख़ातमा

<sup>1</sup> उस दिन दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिंदों के लिए चश्मा खोला जाएगा जिसके ज़रीए वह अपने गुनाहों और नापाकी को दूर कर सकेंगे।”

<sup>2</sup> रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “उस दिन मैं तमाम बुतों को मुल्क में से मिटा दूँगा। उनका नामो-निशान तक नहीं रहेगा, और वह किसी को याद नहीं रहेंगे।

नबियों और नापाकी की रूह को भी मैं मुल्क से दूर करूँगा।<sup>3</sup> इसके बाद अगर कोई नबुव्वत करे तो उसके अपने माँ-बाप उससे कहेंगे, ‘तू ज़िंदा नहीं रह सकता, क्योंकि तूने रब का नाम लेकर झूट बोला है।’ जब वह पेशगोइयों सुनाएगा तो उसके अपने वालिंदन उसे छेद डालेंगे।<sup>4</sup> उस वक़्त हर नबी को अपनी रोया पर शर्म आएगी जब नबुव्वत करेगा। वह नबी का बालों से बना लिबास नहीं पहनेगा ताकि फ़रेब दे<sup>5</sup> बल्कि कहेगा, ‘मैं नबी नहीं बल्कि काशतकार हूँ। जवानी से ही मेरा पेशा खेतीबाडी रहा है।’<sup>6</sup> अगर कोई पूछे, ‘तो फिर तेरे सीने पर ज़ख़मों के निशान किस तरह लगे? तो जवाब देगा, मैं अपने दोस्तों के घर में ज़ख़मी हुआ।’”

### लोगों की जाँच-पड़ताल

<sup>7</sup> रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ तलवार, जाग उठ! मेरे गल्लाबान पर हमला कर, उस पर जो मेरे करीब है। गल्लाबान को मार डाल ताकि भेड़-बक़रियाँ तितर-बित्तर हो जाएँ। मैं खुद अपने हाथ को छोटों के खिलाफ़ उठाऊँगा।”<sup>8</sup> रब फ़रमाता है, “पूरे मुल्क में लोगों के तीन हिस्सों में से दो हिस्सों को मिटाया जाएगा। दो हिस्से हलाक हो जाएंगे और सिर्फ़ एक ही हिस्सा बचा रहेगा।<sup>9</sup> इस बचे हुए हिस्से को मैं आग में डालकर चाँदी या सोने की तरह पाक-साफ़ करूँगा। तब वह मेरा नाम पुकारेंगे, और मैं उनकी सुँऊँ। मैं कहूँगा, ‘यह मेरी कौम है,’ और वह कहेंगे, ‘रब हमारा खुदा है।’”

## 14

### रब खुद यरूशलम में बादशाह होगा

<sup>1</sup> ऐ यरूशलम, रब का वह दिन आनेवाला है जब दुश्मन तेरा माल लूटकर तेरे दरमियान ही उसे आपस में तकसीम करेगा।  
<sup>2</sup> क्योंकि मैं तमाम अक्रवाम को यरूशलम से लडने के लिए जमा करूँगा। शहर दुश्मन के क़ब्ज़े में आएगा, घरों को लूट

लिया जाएगा और औरतों की इसमतदरी की जाएगी। शहर के आधे बाशिदे जिलावतन हो जाएंगे, लेकिन बाकी हिस्सा उसमें ज़िंदा छोड़ा जाएगा।

3 लेकिन फिर रब खुद निकलकर इन अक्रवाम से यों लड़ेगा जिस तरह तब लडता है जब कभी मैदाने-जंग में आ जाता है। 4 उस दिन उसके पाँव यरूशलम के मशरिक में जैतून के पहाड़ पर खड़े होंगे। तब पहाड़ फट जाएगा। उसका एक हिस्सा शिमाल की तरफ और दूसरा जूब की तरफ खिसक जाएगा। बीच में मशरिक से मगरिब की तरफ एक बड़ी वादी पैदा हो जाएगी। 5 तुम मेरे पहाड़ों की इस वादी में भागकर पनाह लो, क्योंकि यह आजल तक पहुँचाएगी। जिस तरह तुम यहदाह के बादशाह उज्जियाह के ऐयाम में अपने आपको जलजले से बचाने के लिए यरूशलम से भाग निकले थे उसी तरह तुम मजकूरा वादी में दौड़ आओगे। तब रब मेरा खुदा आएगा, और तमाम मुकद्दसीन उसके साथ होंगे।

6 उस दिन न तपती गरमी होगी, न सर्दी या पाला। 7 वह एक मुन्फरिद दिन होगा जो रब ही को मालूम होगा। न दिन होगा और न रात बल्कि शाम को भी रोशनी होगी। 8 उस दिन यरूशलम से ज़िंदगी का पानी बह निकलेगा। उस की एक शाख मशरिक के बहीराए-मुरदार की तरफ और दूसरी शाख मगरिब के समुंदर की तरफ बहेगी। इस पानी में न गरमियों में, न सर्दियों में कभी कमी होगी।

9 रब पूरी दुनिया का बादशाह होगा। उस दिन रब वाहिद खुदा होगा, लोग सिर्फ उसी के नाम की परस्तिश करेंगे। 10 पूरा मुल्क शिमाली शहर जिबा से लेकर यरूशलम के जुन्ब में वाके शहर रिम्मोन तक खुला मैदान बन जाएगा। सिर्फ यरूशलम अपनी ही ऊँची जगह पर रहेगा। उस की पुरानी हद्द भी कायम रहेगी यानी बिनयमीन के दरवाजे से लेकर पुराने दरवाजे और कोने के दरवाजे तक, फिर हनेल के बुर्ज से लेकर उस जगह तक जहाँ शाही मै बनाई जाती है। 11 लोग उसमें बसेंगे, और आइंदा उसे कभी पूरी तबाही के लिए मखसूस नहीं किया जाएगा। यरूशलम महफूज जाह रहेगी।

12 लेकिन जो कौमों यरूशलम से लडने निकलें उन पर रब एक हौलनाक बीमारी लाएगा। लोग अभी खडे हो सकेंगे कि उनके जिस्म सड जाएंगे। आँखें अपने खानों में और ज़बान मुँह में गल जाएगी। 13 उस दिन रब उनमें बड़ी अबतरी पैदा करेगा। हर एक अपने साथी का हाथ पकड़कर उस पर हमला करेगा। 14 यहदाह भी यरूशलम से \* लड़ेगा। तमाम पडोसी अक्रवाम की दौलत वहाँ जमा हो जाएगी यानी कसरत का सोना, चाँदी और कपड़े। 15 न सिर्फ इनसान मोहलक बीमारी की ज़द में आएगा बल्कि जानवर भी। घोड़े, खच्चर, ऊँट, गधे और बाकी जितने जानवर उन लशकरगाहों में होंगे उन सब पर यही आफत आएगी।

### तमाम अक्रवाम यरूशलम में ईद मनाएँगी

16 तो भी उन तमाम अक्रवाम के कुछ लोग बच जाएंगे जिन्होंने यरूशलम पर हमला किया था। अब वह साल बसाल यरूशलम आते रहेंगे ताकि हमारे बादशाह रब्बुल-अफवाज की परस्तिश करें और झोपड़ियों की ईद मनाएँ। 17 जब कभी दुनिया की तमाम अक्रवाम में से कोई हमारे बादशाह रब्बुल-अफवाज को सिजदा करने के लिए यरूशलम न आए तो उसका मुल्क बारिश से महरूम रहेगा। 18 अगर मिसरी कौम यरूशलम न आए और हिस्सा न ले तो वह बारिश से महरूम रहेगी। यों रब उन कौमों को सजा देगा जो झोपड़ियों की ईद मनाने के लिए यरूशलम नहीं आएँगी। 19 जितनी भी कौमों झोपड़ियों की ईद मनाने के लिए यरूशलम न आएँ उन्हें यही सजा मिलेगी, खाह मिसर हो या कोई और कौम।

20 उस दिन घोड़ों की घंटियों पर लिखा होगा, “रब के लिए मखसूसो-मुकद्दस।” और रब के घर की देगें उन मुकद्दस कटोरों के बराबर होंगी जो कुरबानगाह के सामने इस्तेमाल होते हैं। 21 हों, यरूशलम और यहदाह में मौजूद हर देग रब्बुल-अफवाज के लिए मखसूसो-मुकद्दस होगी। जो भी कुरबानियों पेश करने के लिए यरूशलम आए वह उन्हें अपनी कुरबानियों पकाने के लिए इस्तेमाल करेगा। उस दिन से रब्बुल-अफवाज के घर में कोई भी सौदागर पाया नहीं जाएगा।

\* 14:14 या मे।



## मलाकी

1 जैल में इसराइल के लिए रब का वह कलाम है जो उसने मलाकी पर नाज़िल किया।

2 रब फ़रमाता है, “तुम मुझे प्यारे हो।” लेकिन तुम कहते हो, “किस तरह? तेरी हमसे मुहब्बत कहाँ जाहिर हुई है?”

सुनो रब का जवाब! “क्या एसौ और याकूब सगे भाई नहीं थे? तो भी सिर्फ़ याकूब मुझे प्यारा था<sup>3</sup> जबकि एसौ से मैं मुतनाफ़िर रहा। उसके पहाड़ी इलाके अदोम को मैंने वीरानो-सुनसान कर दिया, उस की मौस्सी ज़मीन को रेगिस्तान के गीदड़ों के हवाले कर दिया है।”<sup>4</sup> अदोमी कहते हैं, “गो हम चकनाचूर हो गए हैं तो भी खंडरात की जगह नए घर बना लेंगे।” लेकिन रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “बेशक तामीर का काम करते जाओ, लेकिन मैं सब कुछ दुबारा ढा दूँगा। उनका मुल्क ‘बेदीनी का मुल्क’ और उनकी कौम ‘वह कौम जिस पर रब की अबदी लानत है’ कहलाएगी।<sup>5</sup> तुम इसराईली अपनी आँखों से यह देखोगे। तब तुम कहोगे, ‘रब अपनी अज़मत इसराइल की सरहदों से बाहर भी जाहिर करता है।’”

### इमामों पर इलज़ाम

6 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ऐ इमामो, बेटा अपने बाप का और नौकर अपने मालिक का एहताराम करता है। लेकिन मेरा एहताराम कौन करता है, गो मैं तुम्हारा बाप हूँ? मेरा ख़ौफ़ कौन मानता है, गो मैं तुम्हारा मालिक हूँ? हकीकत यह है कि तुम मेरे नाम को हकीर जानते हो। लेकिन तुम एतराज़ करते हो, ‘हम किस तरह तेरे नाम को हकीर जानते हैं?’<sup>7</sup> इसमें कि तुम मेरी कुरबानगाह पर नापाक ख़ुराक रख देते हो। तुम पृछते हो, ‘हमने तुझे किस बात में नापाक किया है?’ इसमें कि तुम रब की मेज़ को काबिले-तहकीर करार देते हो।<sup>8</sup> क्योंकि गो अंधे जानवरों को कुरबान करना सख़्त मना है, तो भी तुम यह बात नज़रंदाज़ करके ऐसे जानवरों को कुरबान करते हो। लँगड़े या बीमार जानवर चढाना भी ममनू है, तो भी तुम कहते हो, ‘कोई बात नहीं’ और ऐसे ही जानवरों को पेश करते हो।” रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “अगर वाकई इसकी कोई बात नहीं तो अपने मुल्क के गवर्नर को ऐसे जानवरों को पेश करो। क्या वह तुमसे ख़ुश होगा? क्या वह तुम्हें कबूल करेगा? हरगिज़ नहीं!<sup>9</sup> चुनौचे अब अल्लाह से इलतमास करो कि हम पर मेहरबानी कर।” रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “ख़ुद सोच लो, क्या हमारे हाथों से ऐसी कुरबानियाँ मिलने पर अल्लाह हमें कबूल करेगा?<sup>10</sup> काश तुममें से कोई मेरे घर के दरवाज़ों को बंद करे ताकि मेरी कुरबानगाह पर बेफ़ायदा आग न लगा सके! मैं तुमसे ख़ुश नहीं, और तुम्हारे हाथों से कुरबानियाँ मुझे बिलकुल पसंद नहीं।” यह रब्बुल-अफ़वाज का फ़रमान है।

11 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “पूरी दुनिया में मशरिफ़ तक मेरा नाम अज़ीम है। हर जगह मेरे नाम को बख़ूर और पाक कुरबानियाँ पेश की जाती हैं। क्योंकि दीगर अक़्रवाम में मेरा नाम अज़ीम है।<sup>12</sup> लेकिन तुम अपनी हरकतों से मेरे नाम की बेहुरमती करते हो। तुम कहते हो, ‘रब की मेज़ को नापाक किया जा सकता है, उस की कुरबानियों को हकीर जाना जा सकता है।’<sup>13</sup> तुम शिकायत करते हो, ‘हाय, यह ख़िदमत कितनी तकलीफ़देह है!’ और कुरबानी की आग को हिकारत की नज़रों से देखते हुए तेज़ करते हो। हर किसम का जानवर पेश किया जाता है, ख़ाह वह ज़ख़मी, लँगड़ा या बीमार क्यों न हो।” रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “क्या मैं तुम्हारे हाथों से ऐसी कुरबानियाँ कबूल कर सकता हूँ? हरगिज़ नहीं!<sup>14</sup> उस धोकेबाज़ पर लानत जो मन्नत मानकर कहे, ‘मैं रब को अपने रेवड का अच्छा मैदा कुरबान करूँगा’ लेकिन इसके बजाए नाकिस जानवर पेश करे।” क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मैं अज़ीम बादशाह हूँ, और अक़्रवाम में मेरे नाम का ख़ौफ़ माना जाता है।

## 2

1 ऐ इमामो, अब मेरे फैसले पर ध्यान दो!”<sup>2</sup> रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मेरी सुनो, पूरे दिल से मेरे नाम का एहताराम करो, वरना मैं तुम पर लानत भेजूँगा, मैं तुम्हारी बरकतों को लानतों में तबदील कर दूँगा। बल्कि मैं यह कर भी चुका हूँ, क्योंकि तुमने पूरे दिल से मेरे नाम का एहताराम नहीं किया।<sup>3</sup> तुम्हारे चाल-चलन के सबब से मैं तुम्हारी औलाद को डोंटूँगा। मैं तुम्हारी ईद की कुरबानियों का गोबर तुम्हारे मुँह पर फेंक दूँगा, और तुम्हें उसके समेत बाहर फेंका जाएगा।”

4 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “तब तुम जान लोगे कि मैंने तुम पर यह फैसला किया है ताकि मेरा लावी के कबीले के साथ अहद कायम रहे।<sup>5</sup> क्योंकि मैंने अहद बाँधकर लावियों से ज़िंदगी और सलामती का वादा किया था, और मैंने वादे को पूरा भी किया। उस वक़्त लावी मेरा ख़ौफ़ मानते बल्कि मेरे नाम से दहशत खाते थे।<sup>6</sup> वह काबिले-एतमाद तालीम देते थे, और उनकी ज़बान पर झूट नहीं होता था। वह सलामती से और सीधी राह पर मेरे साथ चलते थे, और बहुत-से लोग उनके बाइस गुनाह से दूर हो गए।

7 इमामों का फ़र्ज़ है कि वह सहीह तालीम महफ़ज़ रखें, और लोगों को उनसे हिदायत हासिल करनी चाहिए। क्योंकि इमाम रब्बुल-अफ़वाज का पैग़ंबर है।<sup>8</sup> लेकिन तुम सहीह राह से हट गए हो। तुम्हारी तालीम बहुतों के लिए ठोकर का बाइस बन गई है।” रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “तुमने लावियों के साथ मेरे अहद को खाक में मिला दिया है।<sup>9</sup> इसलिए मैंने तुम्हें तमाम क़ौम के सामने ज़लील कर दिया है, सब तुम्हें हकीर जानते हैं। क्योंकि तुम मेरी राहों पर नहीं रहते बल्कि तालीम देते वक्त जानिबदारी दिखाते हो।”

### नाजायज़ शादियाँ और तलाक़ पर मलामत

10 क्या हम सबका एक ही बाप नहीं? एक ही ख़ुदा ने हमें ख़लक किया है। तो फिर हम एक दूसरे से बेवफ़ाई करके अपने बापदादा के अहद की बेहुरमती क्यों कर रहे हैं?

11 यहदाह बेवफ़ा हो गया है। इसराईल और यस्शलम में मक़रूह हरकतें सरज़द हुई हैं, क्योंकि यहदाह के आदमियों ने रब के घर की बेहुरमती की है, उस मक़दिस की जो रब को प्यारा है। किस तरह? उन्होंने दीगर अक़वाम की बुतपरस्त औरतों से शादी की है।<sup>\*</sup> 12 लेकिन जिसने भी ऐसा किया है उसे रब ज़ड से याक़ूब के ख़ैमों से निकाल फेंकेगा, खाह वह रब्बुल-अफ़वाज को कितनी क़ुरबानियाँ पेश क्यों न करे।

13 तुमसे एक और ख़ता भी सरज़द होती है। बेशक रब की क़ुरबानगाह को अपने आँसुओं से तर करो, बेशक रोते और कराहते रहो कि रब न हमारी क़ुरबानियों पर तवज़ूह देता, न उन्हें ख़ुशी से हमारे हाथ से क़बूल करता है। लेकिन यह करने से कोई फ़रक़ नहीं पड़ेगा। 14 तुम पृछते हो, “क्यों?” इसलिए कि शादी करते वक्त रब ख़ुद गवाह होता है। और अब तू अपनी बीवी से बेवफ़ा हो गया है, गो वह तेरी जीवनसाथी है जिससे तूने शादी का अहद बाँधा था। 15 क्या रब ने शौहर और बीवी को एक नहीं बनाया, एक जिस्म जिसमें रूह है? और यह एक जिस्म क्या चाहता है? अल्लाह की तरफ़ से औलाद। चुनौचे अपनी रूह में ख़बरदार रहो! अपनी बीवी से बेवफ़ा न हो जा! 16 क्योंकि रब्बुल-अफ़वाज जो इसराईल का ख़ुदा है फ़रमाता है, “मैं तलाक़ से नफ़रत करता हूँ और उससे मुतनाफ़िर हूँ जो ज़ुल्म से मुलब्बस होता है। चुनौचे अपनी रूह में ख़बरदार रहकर इस तरह का बेवफ़ा रवैया इख़्तियार न करो!”

### रब लोगों की अदालत करेगा

17 तुम्हारी बातों को सुन सुनकर रब थक गया है। तुम पृछते हो, “हमने उसे किस तरह थका दिया है?” इसमें कि तुम दावा करते हो, “बदी करनेवाला रब की नज़र में ठीक है, वह ऐसे लोगों को पसंद करता है।” तुम यह भी कहते हो, “अल्लाह कहाँ है? वह इनसाफ़ क्यों नहीं करता?”

## 3

1 रब्बुल-अफ़वाज ज़वाब में फ़रमाता है, “देख, मैं अपने पैग़ंबर को भेज देता हूँ जो मेरे आगे आगे चलकर मेरा रास्ता तैयार करेगा। तब जिस रब को तुम तलाश कर रहे हो वह अचानक अपने घर में आ मौजूद होगा। हाँ, अहद का पैग़ंबर जिसकी तुम शिद्दत से आरज़ करते हो वह आनेवाला है!”

2 लेकिन जब वह आए तो कौन यह बरदाशत कर सकेगा? कौन कायम रह सकेगा जब वह हम पर जाहिर हो जाएगा? वह तो धात ढालनेवाले की आग या धोबी के तेज़ साबुन की मानिंद होगा। 3 वह बैठकर चाँदी को पिघलाकर पाक-साफ़ करेगा। जिस तरह सोने-चाँदी को पिघलाकर पाक-साफ़ किया जाता है उसी तरह वह लावी के कबीले को पाक-साफ़ करेगा। तब वह रब को रास्त क़ुरबानियाँ पेश करेगा। 4 फिर यहदाह और यस्शलम की क़ुरबानियाँ क़दीम ज़माने की तरह दुबारा रब को क़बूल होगी।

5 रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है, “मैं तुम्हारी अदालत करने के लिए तुम्हारे पास आऊँगा। जल्द ही मैं उनके खिलाफ़ गवाही दूँगा जो मेरा ख़ौफ़ नहीं मानते, जो जादूगर और जिनाकार हैं, जो झूटी क़सम खाते, मज़दूरों का हक़ मारते, बेवाओं और यतीमों पर ज़ुल्म करते और अजनबियों का हक़ मारते हैं।

### तुम अल्लाह को धोका देते हो

6 मैं, रब तबदील नहीं होता, लेकिन तुम अब तक याक़ूब की औलाद रहे हो। 7 अपने बापदादा के ज़माने से लेकर आज तक तुमने मेरे अहकाम से दूर रहकर उन पर ध्यान नहीं दिया। रब्बुल-अफ़वाज फ़रमाता है कि मेरे पास वापस आओ! तब मैं भी तुम्हारे पास वापस आऊँगा।

लेकिन तुम एतराज़ करते हो, ‘हम क्यों वापस आऊँ, हमसे क्या सरज़द हुआ है?’<sup>\*</sup> 8 क्या मुनासिब है कि इनसान अल्लाह को ठगे? हरगिज़ नहीं! लेकिन तुम लोग यही कुछ कर रहे हो। तुम पृछते हो, ‘हम किस तरह तुझे ठगते हैं?’ इसमें कि

\* 2:11 लफ़ज़ी तरज़ुमा : यहदाह ने अज़नबी माबदों की बेटियों से शादी की है।

तुम मुझे अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा नहीं देते। नीज़, तुम इमामों को कुरबानियों का वह हिस्सा नहीं देते जो उनका हक बनता है। 9 पूरी क्रौम मुझे ठगती रहती है, इसलिए मैंने तुम पर लानत भेजी है।”

10 रब्बुल-अफवाज फरमाता है, “मेरे घर के गोदाम में अपनी पैदावार का पूरा दसवाँ हिस्सा जमा करो ताकि इसमें खुराक दस्तयाब हो। मुझे इसमें आज्ञाकार देखो कि मैं अपने वादे को पूरा करता हूँ कि नहीं। क्योंकि मैं तुमसे वादा करता हूँ कि जवाब में मैं आसमान के दरीचे खोलकर तुम पर हद से ज्यादा बरकत बरसा दूँगा।” 11 रब्बुल-अफवाज फरमाता है, “मैं कीड़ों को तुम्हारी फसलों से दूर रखूँगा ताकि तुम्हारे खेतों की पैदावार और तुम्हारे अंगूर खराब न हो जाएँ बल्कि पक जाएँ। 12 तब तुम्हारा मुल्क इतना राहतबख्श होगा कि तमाम अक़वाम तुम्हें मुबारक कहेंगी।” यह रब्बुल-अफवाज का फरमान है।

जिस दिन अल्लाह फैसला करेगा

13 रब फरमाता है, “तुम मेरे बारे में कुफ़र बकते हो। तुम कहते हो, ‘हम क्योंकर कुफ़र बकते हैं?’ 14 इसमें कि तुम कहते हो, ‘अल्लाह की खिदमत करना अबस है। क्योंकि रब्बुल-अफवाज की हिदायात पर ध्यान देने और मुँह लटकाकर उसके हुज़ूर फिरने से हमें क्या फायदा हुआ है? 15 चुनौचे गुस्ताख़ लोगों को मुबारक हो, क्योंकि बेदीन फलते-फूलते और अल्लाह को आजमानेवाले ही बचे रहते हैं।”

16 लेकिन फिर रब का खौफ माननेवाले आपस में बात करने लगे, और रब ने गौर से उनकी सुनी। उसके हुज़ूर यादगारी की किताब लिखी गई जिसमें उनके नाम दर्ज हैं जो रब का खौफ मानते और उसके नाम का एहताराम करते हैं। 17 रब्बुल-अफवाज फरमाता है, “जिस दिन मैं हरकत में आऊँगा उस दिन वह मेरी ख़ास मिलकियत होंगे। मैं उन पर यों रहम करूँगा, जिस तरह बाप अपने उस बेटे पर तरस खाता है जो उस की खिदमत करता है। 18 उस वक़्त तुम्हें रास्तबाज़ और बेदीन का फ़रक़ दुबारा नज़र आएगा। साफ़ ज़ाहिर हो जाएगा कि अल्लाह की खिदमत करनेवालों और दूसरों में क्या फ़रक़ है।”

## 4

1 रब्बुल-अफवाज फरमाता है, “यक़ीनन वह दिन आनेवाला है जब मेरा ग़ज़ब भडकती भट्टी की तरह नाज़िल होकर हर गुस्ताख़ और बेदीन शाख़्स को भूसे की तरह भस्म कर देगा। वह जड़ से लेकर शाख़ तक मिट जाएगा।

2 लेकिन तुम पर जो मेरे नाम का खौफ मानते हो रास्ती का सूरज तुलू होगा, और उसके परों तले शफ़ा होगी। तब तुम बाहर निकलकर खूले छोड़े हुए बछड़ों की तरह खुशी से कूदते फौंदते फिरोगे। 3 जिस दिन मैं यह कुछ करूँगा उस दिन तुम बेदीनों को यों कुचल डालोगे कि वह पाँवों तले की खाक बन जाएंगे।” यह रब्बुल-अफवाज का फरमान है।

4 “मेरे ख़ादिम मूसा की शरीअत को याद रखो यानी वह तमाम अहक़ाम और हिदायात जो मैंने उसे होरिब यानी सीना पहाड़ पर इसराईली क्रौम के लिए दी थी। 5 रब के उस अज़ीम और हौलनाक दिन से पहले मैं तुम्हारे पास इलियास नबी को भेजूँगा। 6 जब वह आएगा तो बाप का दिल बेटे और बेटे का दिल बाप की तरफ़ मायल करेगा ताकि मैं आकर मुल्क को अपने लिए मख़सूस करके नेस्तो-नाबूद न करूँ।”

## मती

ईसा मसीह का नसबनामा

1 ईसा मसीह बिन दाऊद बिन इब्राहीम का नसबनामा :

2 इब्राहीम इसहाक का बाप था, इसहाक याकूब का बाप और याकूब यहूदा और उसके भाइयों का बाप। 3 यहूदा के दो बेटे फारस और ज़ारथ थे (उनकी माँ तमर थी)। फारस हसरोन का बाप और हसरोन राम का बाप था। 4 राम अम्मिनदाब का बाप, अम्मिनदाब नहसोन का बाप और नहसोन सलमोन का बाप था। 5 सलमोन बोअज़ का बाप था (बोअज़ की माँ राहब थी)। बोअज़ ओबेद का बाप था (ओबेद की माँ रूत थी)। ओबेद यस्सी का बाप और 6 यस्सी दाऊद बादशाह का बाप था।

दाऊद सुलेमान का बाप था (सुलेमान की माँ पहले ऊरिय्याह की बीवी थी)। 7 सुलेमान रहुबियाम का बाप, रहुबियाम अबियाह का बाप और अबियाह आसा का बाप था। 8 आसा यहसफ़त का बाप, यहसफ़त यूराम का बाप और यूराम उज्जियाह का बाप था। 9 उज्जियाह यूताम का बाप, यूताम आखज़ का बाप और आखज़ हिज़क्रियाह का बाप था। 10 हिज़क्रियाह मनस्सी का बाप, मनस्सी अमून का बाप और अमून यूसियाह का बाप था। 11 यूसियाह यह्याकीन\* और उसके भाइयों का बाप था (यह बाबल की जिलावतनी के दौरान पैदा हुए)।

12 बाबल की जिलावतनी के बाद यह्याकीन † सियालतियेल का बाप और सियालतियेल ज़रूबाबल का बाप था।

13 ज़रूबाबल अबीहूद का बाप, अबीहूद इलियाकीम का बाप और इलियाकीम आजोर का बाप था। 14 आजोर सदोक का बाप, सदोक अरखीम का बाप और अरखीम इलीहूद का बाप था। 15 इलीहूद इलियज़र का बाप, अलियज़र मतान का बाप और मतान का बाप याकूब था। 16 याकूब मरियम के शौहर यूसुफ़ का बाप था। इस मरियम से ईसा पैदा हुआ, जो मसीह कहलाता है।

17 यों इब्राहीम से दाऊद तक 14 नसलें हैं, दाऊद से बाबल की जिलावतनी तक 14 नसलें हैं और जिलावतनी से मसीह तक 14 नसलें हैं।

ईसा मसीह की पैदाइश

18 ईसा मसीह की पैदाइश यों हुई : उस वक्त उस की माँ मरियम की मँगनी यूसुफ़ के साथ हो चुकी थी कि वह रूहल-कुदूस से हामिला पाई गई। अभी उनकी शादी नहीं हुई थी। 19 उसका मंगेतर यूसुफ़ रास्तबाज़ था, वह अलानिया मरियम को बदनाम नहीं करना चाहता था। इसलिए उसने खामोशी से यह रिश्ता तोड़ने का इरादा कर लिया। 20 वह इस बात पर अभी ग़ौरो-फ़िक़र कर ही रहा था कि रब का फ़रिश्ता ख़ाब में उस पर जाहिर हुआ और फ़रमाया, “यूसुफ़ बिन दाऊद, मरियम से शादी करके उसे अपने घर ले आने से मत डर, क्योंकि पैदा होनेवाला बच्चा रूहल-कुदूस से है। 21 उसके बेटा होगा और उसका नाम ईसा रखना, क्योंकि वह अपनी क़ौम को उसके गुनाहों से रिहाई देगा।”

22 यह सब कुछ इसलिए हुआ ताकि रब की वह बात पूरी हो जाए जो उसने अपने नबी की मारिफ़त फ़रमाई थी, 23 “देखो एक कुँवारी हामिला होगी। उससे बेटा पैदा होगा और वह उसका नाम इम्मानुएल रखेंगे।” (इम्मानुएल का मतलब ‘ख़ुदा हमारे साथ’ है।)

24 जब यूसुफ़ जाग उठा तो उसने रब के फ़रिश्ते के फ़रमान के मुताबिक़ मरियम से शादी कर ली और उसे अपने घर ले गया। 25 लेकिन जब तक उसके बेटा पैदा न हुआ वह मरियम से हमबिसतर न हुआ। और यूसुफ़ ने बच्चे का नाम ईसा रखा।

## 2

मशरि़क़ से मजूसी आलि़म

1 ईसा हेरोदेस बादशाह के ज़माने में सब यहूदिया के शहर बैत-लहम में पैदा हुआ। उन दिनों में कुछ मजूसी आलि़म मशरि़क़ से आकर यरूशलम पहुँच गए। 2 उन्होंने पूछा, “यहूदियों का वह बादशाह कहाँ है जो हाल ही में पैदा हुआ है? क्योंकि हमने मशरि़क़ में उसका सितारा देखा है और हम उसे सिजदा करने आए हैं।”

3 यह सुनकर हेरोदेस बादशाह पूरे यरूशलम समेत घबरा गया। 4 तमाम राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा को जमा करके उसने उनसे दरियाफ़त किया कि मसीह कहाँ पैदा होगा।

\* 1:11 यूनानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ यक़्नीयाह मुस्तामल है। † 1:12 यूनानी में यह्याकीन का मुतरादिफ़ यक़्नीयाह मुस्तामल है।

5 उन्होंने जबब दिया, “यहदिया के शहर बैत-लहम में, क्योंकि नबी की मारिफत यों लिखा है, 6 ‘ऐ मुल्के-यहदिया में वाके बैत-लहम, त यहदिया के हुक्मरानों में हरगिज सबसे छोटा नहीं। क्योंकि तुझमें से एक हुक्मरान निकलेगा जो मेरी क्रौम इसराईल की गल्लाबानी करेगा।’”

7 इस पर हेरोदेस ने खुफिया तौर पर मजूसी आलिमों को बुलाकर तफसील से पूछा कि वह सितारा किस वक़्त दिखाई दिया था। 8 फिर उसने उन्हें बताया, “बैत-लहम जाएँ और तफसील से बच्चे का पता लगाएँ। जब आप उसे पा लें तो मुझे इतला दें ताकि मैं भी जाकर उसे सिजदा करूँ।”

9 बादशाह के इन अलफाज़ के बाद वह चले गए। और देखो जो सितारा उन्होंने मशरिक में देखा था वह उनके आगे आगे चलता गया और चलते चलते उस मक़ाम के ऊपर ठहर गया जहाँ बच्चा था। 10 सितारे को देखकर वह बहुत ख़ुश हुए। 11 वह घर में दाखिल हुए और बच्चे को माँ के साथ देखकर उन्होंने औंधे मुँह गिरकर उसे सिजदा किया। फिर अपने डिब्बे खोलकर उसे सोने, लुबान और मुर के तोहफे पेश किए।

12 जब ख़ानगी का वक़्त आया तो वह यरूशलम से होकर न गए बल्कि एक और रास्ते से अपने मुल्क चले गए, क्योंकि उन्हें ख़ाब में आगाह किया गया था कि हेरोदेस के पास वापस न जाओ।

### मिसर की जानिब हिज्रत

13 उनके चले जाने के बाद रब का फ़रिश्ता ख़ाब में यूसुफ़ पर जाहिर हुआ और कहा, “उठ, बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मिसर को हिज्रत कर जा। जब तक मैं तुझे इतला न दूँ वही ठहरा रह, क्योंकि हेरोदेस बच्चे को तलाश करेगा ताकि उसे क़त्ल करे।”

14 यूसुफ़ उठा और उसी रात बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मिसर के लिए रवाना हुआ। 15 वहाँ वह हेरोदेस के इंतकाल तक रहा। यों वह बात पूरी हुई जो रब ने नबी की मारिफ़त फ़रमाई थी, “मैंने अपने फ़रज़द को मिसर से बुलाया।”

### बच्चों का क़त्ल

16 जब हेरोदेस को मालूम हुआ कि मजूसी आलिमों ने मुझे फ़रेब दिया है तो उसे बड़ा तैश आया। उसने अपने फ़ौजियों को बैत-लहम भेजकर उन्हें हुक्म दिया कि बैत-लहम और इर्दगिर्द के इलाके के उन तमाम लड़कों को क़त्ल करें जिनकी उम्र दो साल तक हो। क्योंकि उसने मजूसियों से बच्चे की उम्र के बारे में यह मालूम कर लिया था।

17 यों यरमियाह नबी की पेशगोई पूरी हुई, 18 “रामा में शोर मच गया है, रोने पीटने और शदीद मातम की आवाज़ें। राखिल अपने बच्चों के लिए रो रही है और तसल्लू कबूल नहीं कर रही, क्योंकि वह हलाक हो गए हैं।”

### मिसर से वापसी

19 जब हेरोदेस इंतकाल कर गया तो रब का फ़रिश्ता ख़ाब में यूसुफ़ पर जाहिर हुआ जो अभी मिसर ही में था। 20 फ़रिश्ते ने उसे बताया, “उठ, बच्चे को उस की माँ समेत लेकर मुल्के-इसराईल वापस चला जा, क्योंकि जो बच्चे को जान से मारने के दरपे थे वह मर गए हैं।” 21 चुनौचे यूसुफ़ उठा और बच्चे और उस की माँ को लेकर मुल्के-इसराईल में लौट आया।

22 लेकिन जब उसने सुना कि अरखिलाउस अपने बाप हेरोदेस की जगह यहदिया में तख़्तनशीन हो गया है तो वह वहाँ जाने से डर गया। फिर ख़ाब में हिदायत पाकर वह गलील के इलाके के लिए रवाना हुआ। 23 वहाँ वह एक शहर में जा बसा जिसका नाम नासरत था। यों नबियों की बात पूरी हुई कि ‘वह नासरी कहलाएगा।’

## 3

### यहया बपतिस्मा देनेवाले की खिदमत

1 उन दिनों में यहया बपतिस्मा देनेवाला आया और यहदिया के रेगिस्तान में एलान करने लगा, 2 “तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही करीब आ गई है।” 3 यहया वही है जिसके बारे में यसायाह नबी ने फ़रमाया, ‘रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है, रब की राह तैयार करो! उसके रास्ते सीधे बनाओ।’

4 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर पर चमड़े का पटका बाँधे रहता था। ख़ुराक के तौर पर वह टिट्टियाँ और जंगली शहद खाता था। 5 लोग यरूशलम, पूरे यहदिया और दरियाए-यरदन के पूरे इलाके से निकलकर उसके पास आए।

6 और अपने गुनाहों को तसलीम करके उन्होंने दरियाए-यरदन में यहया से बपतिस्मा लिया।

7 बहुत-से फ़रीसी और सदूकी भी वहाँ आए जहाँ वह बपतिस्मा दे रहा था। उन्हें देखकर उसने कहा, “ऐ ज़हरीले सोंप के बच्चो! किसने तुम्हें आनेवाले ग़ज़ब से बचने की हिदायत की? 8 अपनी जिंदगी से जाहिर करो कि तुमने वाकई तौबा की है। 9 यह खयाल मत करो कि हम तो बच जाएँगे क्योंकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुमको बताता हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए औलाद पैदा कर सकता है। 10 अब तो अदालत की कुल्हाड़ी दरख्तों की जड़ों पर रखी हुई है। हर

दारख्त जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में झोंका जाएगा। 11 मैं तो तुम तौबा करनेवालों को पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन एक आनेवाला है जो मुझे से बड़ा है। मैं उसके जूतों को उठाने के भी लायक नहीं। वह तुम्हें रूहल-रूदस और आग से बपतिस्मा देगा। 12 वह हाथ में छाज पकड़े हुए अनाज को भूसे से अलग करने के लिए तैयार खड़ा है। वह गाहने की जगह बिलकुल साफ करके अनाज को अपने गोदाम में जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह ऐसी आग में झोंकेगा जो बुझने की नहीं।”

### ईसा का बपतिस्मा

13 फिर ईसा गलील से दरियाए-यरदन के किनारे आया ताकि यहया से बपतिस्मा ले। 14 लेकिन यहया ने उसे रोकने की कोशिश करके कहा, “मुझे तो आपसे बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है, तो फिर आप मेरे पास क्यों आए हैं?”

15 ईसा ने जवाब दिया, “अब होने ही दे, क्योंकि मुनासिब है कि हम यह करते हुए अल्लाह की रास्त मरज़ी पूरी करें।”

\* इस पर यहया मान गया।

16 बपतिस्मा लेने पर ईसा फौरन पानी से निकला। उसी लमहे आसमान खुल गया और उसने अल्लाह के रूह को देखा जो कबूतर की तरह उतरकर उस पर ठहर गया। 17 साथ साथ आसमान से एक आवाज सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फरजंद है, इससे मैं खुश हूँ।”

## 4

### ईसा को आजमाया जाता है

1 फिर रूहल-रूदस ईसा को रेगिस्तान में ले गया ताकि उसे इबलीस से आजमाया जाए। 2 चालीस दिन और चालीस रात रोज़ा रखने के बाद उसे आखिरकार भूक लगी। 3 फिर आजमानेवाला उसके पास आकर कहने लगा, “अगर तू अल्लाह का फरजंद है तो इन पत्थरों को हुकम दे कि रोटी बन जाएँ।”

4 लेकिन ईसा ने इनकार करके कहा, “हरगिज़ नहीं, क्योंकि कलामे-मुकद्दस में लिखा है कि इनसान की ज़िंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती बल्कि हर उस बात पर जो रब के मुँह से निकलती है।”

5 इस पर इबलीस ने उसे मुकद्दस शहर यरूशलम ले जाकर बैतुल-मुकद्दस की सबसे ऊँची जगह पर खड़ा किया और कहा,

6 “अगर तू अल्लाह का फरजंद है तो यहाँ से छलाँग लगा दे। क्योंकि कलामे-मुकद्दस में लिखा है, ‘वह तेरी खातिर अपने फरिशतों को हुकम देगा, और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न लगे।’”

7 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “कलामे-मुकद्दस यह भी फरमाता है, ‘रब अपने खुदा को न आजमाना।’”

8 फिर इबलीस ने उसे एक निहायत ऊँचे पहाड़ पर ले जाकर उसे दुनिया के तमाम ममालिक और उनकी शानो-शौकत दिखाई। 9 वह बोला, “यह सब कुछ मैं तुझे दे दूँगा, शर्त यह है कि तू गिरकर मुझे सिजदा करे।”

10 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इनकार किया और कहा, “इबलीस, दफा हो जा! क्योंकि कलामे-मुकद्दस में यों लिखा है, ‘रब अपने खुदा को सिजदा कर और सिर्फ़ उसी की इबादत कर।’”

11 इस पर इबलीस उसे छोड़कर चला गया और फरिश्ते आकर उस की खिदमत करने लगे।

### गलील में ईसा की खिदमत का आगाज़

12 जब ईसा को खबर मिली कि यहया को जेल में डाल दिया गया है तो वह वहाँ से चला गया और गलील में आया।

13 नासरत को छोड़कर वह झील के किनारे पर वाके शहर कफ़र्नहूम में रहने लगा, यानी जबूलन और नफ़ताली के इलाके में। 14 यों यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

15 “जबूलन का इलाका, नफ़ताली का इलाका,

झील के साथ का रास्ता, दरियाए-यरदन के पार,

गैरयहूदियों का गलील :

16 अंधेरे में बैठी कौम ने एक तेज़ रौशनी देखी,

मौत के साये में डूबे हुए मुल्क के बाशिंदों पर रौशनी चमकी।”

17 उस वक़्त से ईसा इस पैगाम की मुनादी करने लगा, “तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही करीब आ गई है।”

### ईसा चार मछेरों को बुलाता है

\* 3:15 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : हम तमाम रास्तबाज़ी पूरी करें।

18 एक दिन जब ईसा गलील की झील के किनारे किनारे चल रहा था तो उसने दो भाइयों को देखा—शमौन जो पतरस भी कहलाता था और अंदरियास को। वह पानी में जाल डाल रहे थे, क्योंकि वह माहीगीर थे। 19 उसने कहा, “आओ, मेरे पीछे हो लो, मैं तुमको आदमगीर बनाऊँगा।” 20 यह सुनते ही वह अपने जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

21 आगे जाकर ईसा ने दो और भाइयों को देखा, याकूब बिन ज़बदी और उसके भाई यहून्ना को। वह कश्ती में बैठे अपने बाप ज़बदी के साथ अपने जालों की मरम्मत कर रहे थे। ईसा ने उन्हें बुलाया 22 तो वह फ़ौरन कश्ती और अपने बाप को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

ईसा तालीम देता, मुनादी करता और शफ़ा देता है

23 और ईसा गलील के पूरे इलाके में फिरता रहा। जहाँ भी वह जाता वह यहूदी इबादतखानों में तालीम देता, बादशाही की ख़ुशख़बरी सुनाता और हर क्रिस्म की बीमारी और अलालत से शफ़ा देता था। 24 उस की ख़बर मुल्के-शाम के कोने कोने तक पहुँच गई, और लोग अपने तमाम मरीजों को उसके पास लाने लगे। क्रिस्म क्रिस्म की बीमारियों तले दबे लोग, ऐसे जो शदीद दर्द का शिकार थे, बदर्सुहों की गिरिफ्त में मुस्तला, मिरगीवाले और फालिजज़दा, गरज़ जो भी आया ईसा ने उसे शफ़ा बख़्शी। 25 गलील, दिकपुलिस, यरूशलम, यहूदिया और दरियाए-यरदन के पार के इलाके से बड़े बड़े हुज़ूम उसके पीछे चलते रहे।

## 5

पहाड़ी वाज़

1 भीड़ को देखकर ईसा पहाड़ पर चढ़कर बैठ गया। उसके शागिर्द उसके पास आए 2 और वह उन्हें यह तालीम देने लगा

हकीकी ख़ुशी

3 “मुबारक है वह जिनकी रूह ज़रतमंद है, क्योंकि आसमान की बादशाही उन्हीं की है।

4 मुबारक है वह जो मातम करते हैं, क्योंकि उन्हें तसल्लि दी जाएगी।

5 मुबारक है वह जो हलीम हैं, क्योंकि वह ज़मीन विरसे में पाएँगे।

6 मुबारक है वह जिन्हें रास्तबाज़ी की भूक और प्यास है, क्योंकि वह सेर हो जाएँगे।

7 मुबारक है वह जो रहमदिल हैं, क्योंकि उन पर रहम किया जाएगा।

8 मुबारक है वह जो ख़ालिस दिल हैं, क्योंकि वह अल्लाह को देखेंगे।

9 मुबारक है वह जो सुलह कराते हैं, क्योंकि वह अल्लाह के फ़रज़द कहलाएँगे।

10 मुबारक है वह जिनको रास्तबाज़ होने के सबब से सताया जाता है, क्योंकि उन्हें आसमान की बादशाही विरसे में मिलेगी।

11 मुबारक हो तुम जब लोग मेरी वज़ह से तुम्हें लान-तान करते, तुम्हें सताते और तुम्हारे बारे में हर क्रिस्म की बुरी और झूटी बात करते हैं। 12 ख़ुशी मनाओ और बाग़ बाग़ हो जाओ, तुमको आसमान पर बड़ा अज़्र मिलेगा। क्योंकि इसी तरह उन्होंने तुमसे पहले नबियों को भी ईजा पहुँचाई थी।

तुम नमक और रौशनी हो

13 तुम दुनिया का नमक हो। लेकिन अगर नमक का जायका जाता रहे तो फिर उसे क्योंकर दुबारा नमकीन किया जा सकता है? वह किसी भी काम का नहीं रहा बल्कि बाहर फेंका जाएगा जहाँ वह लोगों के पाँवों तले रौदा जाएगा।

14 तुम दुनिया की रौशनी हो। पहाड़ पर वाके शहर की तरह तुमको छुपाया नहीं जा सकता। 15 जब कोई चरागा जलाता है तो वह उसे बरतन के नीचे नहीं रखता बल्कि शमादान पर रख देता है जहाँ से वह घर के तमाम अफ़राद को रौशनी देता है। 16 इसी तरह तुम्हारी रौशनी भी लोगों के सामने चमके ताकि वह तुम्हारे नेक काम देखकर तुम्हारे आसमानी बाप को जलाल दें।

शरीअत

17 यह न समझो कि मैं मूसवी शरीअत और नबियों की बातों को मनसूख करने आया हूँ। मनसूख करने नहीं बल्कि उनकी तकमील करने आया हूँ। 18 मैं तुमको सच बताता हूँ, जब तक आसमानो-ज़मीन कायम रहेंगे तब तक शरीअत भी कायम रहेगी—न उसका कोई हरफ़, न उसका कोई जेर या ज़बर मनसूख होगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। 19 जो इन सबसे छोटे अहकाम में से एक को भी मनसूख करे और लोगों को ऐसा करना सिखाए उसे आसमान की बादशाही में सबसे छोटा करार दिया जाएगा। इसके मुकाबले में जो इन अहकाम पर अमल करके इन्हें सिखाता है उसे आसमान की बादशाही में

बड़ा करार दिया जाएगा। 20 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम्हारी रास्तबाजी शरीर के उल्टा और फ़रीसियों की रास्तबाजी से ज्यादा नहीं तो तुम आसमान की बादशाही में दाखिल होने के लायक नहीं।

### गुस्सा

21 तुमने सुना है कि बापदादा को फ़रमाया गया, 'कत्ल न करना। और जो कत्ल करे उसे अदालत में जवाब देना होगा।' 22 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि जो भी अपने भाई पर गुस्सा करे उसे अदालत में जवाब देना होगा। इसी तरह जो अपने भाई को 'अहमक' कहे उसे यहूदी अदालत-आलिया में जवाब देना होगा। और जो उसको 'बेवुकूफ़!' कहे वह जहन्नुम की आग में फेंके जाने के लायक ठहरेगा। 23 लिहाजा अगर तुझे बैतुल-मुक़द्दस में कुरबानी पेश करते वक़्त याद आए कि तेरे भाई को तुझसे कोई शिकायत है 24 तो अपनी कुरबानी को वहीं कुरबानगाह के सामने ही छोड़कर अपने भाई के पास चला जा। पहले उससे सुलह कर और फिर वापस आकर अल्लाह को अपनी कुरबानी पेश कर।

25 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुक़दमा चलाया है। अगर ऐसा हो तो कचहरी में दाखिल होने से पहले पहले जल्दी से झगडा ख़त्म कर। ऐसा न हो कि वह तुझे जज के हवाले करे, जज तुझे पुलिस अफ़सर के हवाले करे और नतीजे में तुझको जेल में डाला जाए। 26 मैं तुझे सच बताता हूँ, वहाँ से तू उस वक़्त तक नहीं निकल पाएगा जब तक जुर्माने की पूरी पूरी रकम अदा न कर दे।

### ज़िनाकारी

27 तुमने यह हुक़म सुन लिया है कि 'ज़िना न करना।' 28 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, जो किसी औरत को बुरी खाहिश से देखता है वह अपने दिल में उसके साथ ज़िना कर चुका है। 29 अगर तेरी दाई आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकालकर फेंक दे। इससे पहले कि तेरे पूरे जिस्म को जहन्नुम में डाला जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही अंजु जाता रहे। 30 और अगर तेरा दहना हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काटकर फेंक दे। इससे पहले कि तेरा पूरा जिस्म जहन्नुम में जाए बेहतर यह है कि तेरा एक ही अंजु जाता रहे।

### तलाक

31 यह भी फ़रमाया गया है, 'जो भी अपनी बीवी को तलाक दे वह उसे तलाकनामा लिख दे।' 32 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि अगर किसी की बीवी ने ज़िना न किया हो तो भी शौहर उसे तलाक दे तो वह उससे ज़िना करता है। और जो तलाक़शुदा औरत से शादी करे वह ज़िना करता है।

### कसम मत खाना

33 तुमने यह भी सुना है कि बापदादा को फ़रमाया गया, 'झूठी कसम मत खाना बल्कि जो वादे तूने रब से कसम खाकर किए हों उन्हें पूरा करना।' 34 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, कसम बिलकुल न खाना। न 'आसमान की कसम' क्योंकि आसमान अल्लाह का तख़्त है, 35 न 'ज़मीन की' क्योंकि ज़मीन उसके पाँवों की चौकी है। 'यरूशालम की कसम' भी न खाना क्योंकि यरूशालम अज़ीम बादशाह का शहर है। 36 यहाँ तक कि अपने सर की कसम भी न खाना, क्योंकि तू अपना एक बाल भी काला या सफ़ेद नहीं कर सकता। 37 सिर्फ़ इतना ही कहना, 'जी हाँ' या 'जी नहीं।' अगर इससे ज्यादा कहो तो यह इबलीस की तरफ़ से है।

### बदला लेना

38 तुमने सुना है कि यह फ़रमाया गया है, 'आँख के बदले आँख, दाँत के बदले दाँत।' 39 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि बदकार का मुक़ाबला मत करना। अगर कोई तेरे दहने गाल पर थप्पड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश कर दे। 40 अगर कोई तेरी कमीस लेने के लिए तुझ पर मुक़दमा करना चाहे तो उसे अपनी चादर भी दे देना। 41 अगर कोई तुझको उसका सामान उठाकर एक किलोमीटर जाने पर मजबूर करे तो उसके साथ दो किलोमीटर चला जाना। 42 जो तुझसे कुछ माँगे उसे दे देना और जो तुझसे कर्ज़ लेना चाहे उससे इनकार न करना।

### दुश्मन से मुहब्बत

43 तुमने सुना है कि फ़रमाया गया है, 'अपने पड़ोसी से मुहब्बत रखना और अपने दुश्मन से नफ़रत करना।' 44 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और उनके लिए दुआ करो जो तुमको सताते हैं। 45 फिर तुम अपने आसमानी बाप के फ़रज़द ठहरोगे, क्योंकि वह अपना सूरज सब पर तुलू होने देता है, खाह वह अच्छे हों या बुरे। और वह सब पर बारिश बरसने देता है, खाह वह रास्तबाज़ हों या नारास्त। 46 अगर तुम सिर्फ़ उन्हीं से मुहब्बत करो जो तुमसे करते हैं तो तुमको क्या अज़ मिलेगा? टैक्स लेनेवाले भी तो ऐसा ही करते हैं। 47 और अगर तुम सिर्फ़ अपने भाइयों के लिए सलामती



की दुआ करो तो कौन-सी खास बात करते हो? गैरयहूदी भी तो ऐसा ही करते हैं। 48 चुनाँचे वैसे ही कामिल हो जैसा तुम्हारा आसमानी बाप कामिल है।

## 6

### खैरात

1 खबरदार! अपने नेक काम लोगों के सामने दिखावे के लिए न करो, वरना तुमको अपने आसमानी बाप से कोई अन्न नहीं मिलेगा।

2 चुनाँचे खैरात देते वक़्त रियाकारों की तरह न कर जो इबादतखानों और गलियों में बिगुल बजाकर इसका एलान करते हैं ताकि लोग उनकी इज़्ज़त करें। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अन्न उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 3 इसके बजाए जब तू खैरात दे तो तैरे दाएँ हाथ को पता न चले कि बायाँ हाथ क्या कर रहा है। 4 तेरी खैरात यों पोशीदगी में दी जाए तो तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

### दुआ

5 दुआ करते वक़्त रियाकारों की तरह न करना जो इबादतखानों और चौकों में जाकर दुआ करना पसंद करते हैं, जहाँ सब उन्हें देख सके। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अन्न उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 6 इसके बजाए जब तू दुआ करता है तो अंदर के कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर और फिर अपने बाप से दुआ कर जो पोशीदगी में है। फिर तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

7 दुआ करते वक़्त गैरयहूदियों की तरह तवील और बेमानी बातें न दोहराते रहो। वह समझते हैं कि हमारी बहुत-सी बातों के सबब से हमारी सुनी जाएगी। 8 उनकी मानिंद न बनो, क्योंकि तुम्हारा बाप पहले से तुम्हारी ज़रूरियत से वाकिफ़ है, 9 बल्कि यों दुआ किया करो,

ऐ हमारे आसमानी बाप,  
तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।

10 तेरी बादशाही आए।

तेरी मरज़ी जिस तरह आसमान में पूरी होती है ज़मीन पर भी पूरी हो।

11 हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे।

12 हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर

जिस तरह हमने उन्हें मुआफ़ किया \*

जिन्होंने हमारा गुनाह किया है।

13 और हमें आजमाइश में न पड़ने दे

बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख।

[क्योंकि बादशाही, कुदरत और जलाल अबद तक तेरे ही हैं।]

14 क्योंकि जब तू लोगों के गुनाह मुआफ़ करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुमको मुआफ़ करेगा। 15 लेकिन अगर तू उन्हें मुआफ़ न करो तो तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाह मुआफ़ नहीं करेगा।

### रोज़ा

16 रोज़ा रखते वक़्त रियाकारों की तरह मुँह लटकाए न फिरो, क्योंकि वह ऐसा रूप भरते हैं ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि वह रोज़ा से हैं। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अन्न उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। 17 ऐसा मत करना बल्कि रोज़े के वक़्त अपने बालों में तेल डाल और अपना मुँह धो। 18 फिर लोगों को मालूम नहीं होगा कि तू रोज़ा से है बल्कि सिर्फ़ तेरे बाप को जो पोशीदगी में है। और तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

### आसमान पर खज़ाना

19 इस दुनिया में अपने लिए खज़ाने जमा न करो, जहाँ कीड़ा और जंग उन्हें खा जाते और चोर नक़ब लगाकर चुरा लेते हैं। 20 इसके बजाए अपने खज़ाने आसमान पर जमा करो जहाँ कीड़ा और जंग उन्हें तबाह नहीं कर सकते, न चोर नक़ब लगाकर चुरा सकते हैं। 21 क्योंकि जहाँ तेरा खज़ाना है वही तेरा दिल भी लगा रहेगा।

### जिस्म की रौशानी

\* 6:12 लफ्ज़ी तरज़ुमा : हमारे कर्ज़ हमें मुआफ़ कर जिस तरह हमने अपने कर्ज़दारों को मुआफ़ किया।

22 बदन का चराग आँख है। अगर तेरी आँख ठीक हो तो फिर तेरा पूरा बदन रौशन होगा। 23 लेकिन अगर तेरी आँख खराब हो तो तेरा पूरा बदन अंधेरा ही अंधेरा होगा। और अगर तेरे अंदर की रौशनी तारीकी हो तो यह तारीकी कितनी शदीद होगी!

### बेफिकर होना

24 कोई भी दो मालिकों की खिदमत नहीं कर सकता। या तो वह एक से नफरत करके दूसरे से मुहब्बत रखेगा या एक से लिपटकर दूसरे को हकीर जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और दौलत की खिदमत नहीं कर सकते।

25 इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ, अपनी जिंदगी की ज़रूरियात पूरी करने के लिए परेशान न रहो कि हाय, मैं क्या खाऊँ और क्या पिऊँ। और जिस्म के लिए फिकरमंद न रहो कि हाय, मैं क्या पहनूँ। क्या जिंदगी खाने-पिने से अहम नहीं है? और क्या जिस्म पोशाक से ज्यादा अहमियत नहीं रखता? 26 परिंदों पर गौर करो। न वह बीज बोते, न फसलें काटकर उन्हें गोदाम में जमा करते हैं। तुम्हारा आसमानी बाप खुद उन्हें खाना खिलाता है। क्या तुम्हारी उनकी निस्वत ज्यादा कदरो-कीमत नहीं है? 27 क्या तुममें से कोई फिकर करते करते अपनी जिंदगी में एक लमहे का भी इज़ाफा कर सकता है?

28 और तुम अपने कपड़ों के लिए क्यों फिकरमंद होते हो? गौर करो कि सोसन के फूल किस तरह उगते हैं। न वह मेहनत करते, न कातते हैं। 29 लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शानो-शौकत के बाबुजूद ऐसे शानदार कपड़ों से मुलब्स नहीं था जैसे उनमें से एक। 30 अगर अल्लाह उस घास को जो आज मैदान में है और कल आग में झोंकी जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ कमएतकादो, वह तुमको पहनाने के लिए क्या कुछ नहीं करेगा?

31 चूनोंचे परेशानी के आलम में फिकर करते करते यह न कहते रहो, 'हम क्या खाएँ? हम क्या पिएँ? हम क्या पहनें?' 32 क्योंकि जो ईमान नहीं रखते वही इन तमाम चीज़ों के पीछे भागते रहते हैं जबकि तुम्हारे आसमानी बाप को पहले से मालूम है कि तुमको इन तमाम चीज़ों की ज़रूरत है। 33 पहले अल्लाह की बादशाही और उस की रास्तबाज़ी की तलाश में रहो। फिर यह तमाम चीज़ें भी तुमको मिल जाएंगी। 34 इसलिए कल के बारे में फिकर करते करते परेशान न हो क्योंकि कल का दिन अपने लिए आप फिकर कर लेगा। हर दिन की अपनी मुसीबतें काफी हैं।

## 7

### औरों का मुंसिफ बनना

1 दूसरों की अदालत मत करना, वरना तुम्हारी अदालत भी की जाएगी। 2 क्योंकि जितनी सख्ती से तुम दूसरों का फैसला करते हो उतनी सख्ती से तुम्हारा भी फैसला किया जाएगा। और जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी पैमाने से तुम भी नापे जाओगे। 3 तू क्यों गौर से अपने भाई की आँख में पड़े तिनके पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं आता जो तेरी अपनी आँख में है? 4 तू क्योंकर अपने भाई से कह सकता है, 'ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख में पड़ा तिनका निकालने दो,' जबकि तेरी अपनी आँख में शहतीर है। 5 रियाकार! पहले अपनी आँख के शहतीर को निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका साफ नज़र आएगा और तू उसे अच्छी तरह से देखकर निकाल सकेगा।

6 कुत्तों को मुकड़स खुराक मत खिलाना और सुअरों के आगे अपने मोती न फेंकना। ऐसा न हो कि वह उन्हें पाँवों तले रौंदें और मुडकर तुमको फाड़ डालें।

### मॉंगते रहना

7 मॉंगते रहो तो तुमको दिया जाएगा। ढूँडते रहो तो तुमको मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा। 8 क्योंकि जो भी मॉंगता है वह पाता है, जो ढूँडता है उसे मिलता है, और जो खटखटाता है उसके लिए दरवाज़ा खोल दिया जाता है। 9 तुममें से कौन अपने बेटे को पत्थर देगा अगर वह रोटी मॉंगे? 10 या कौन उसे साँप देगा अगर वह मछली मॉंगे? कोई नहीं! 11 जब तुम बुरे होने के बाबुजूद इतने समझदार हो कि अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें दे सकते हो तो फिर कितनी ज्यादा यकीनी बात है कि तुम्हारा आसमानी बाप मॉंगनेवालों को अच्छी चीज़ें देगा।

12 हर बात में दूसरों के साथ वही सुलूक करो जो तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें। क्योंकि यही शरीअत और नबियों की तालीमात का लुब्बे-लुबाब है।

### तंग दरवाज़ा

13 तंग दरवाज़े से दाखिल हो, क्योंकि हलाकत की तरफ ले जानेवाला रास्ता कुशादा और उसका दरवाज़ा चौड़ा है। बहुत-से लोग उसमें दाखिल हो जाते हैं। 14 लेकिन जिंदगी की तरफ ले जानेवाला रास्ता तंग है और उसका दरवाज़ा छोटा। कम ही लोग उसे पाते हैं।

### हर दरख्त का अपना फल होता है

15 झूठे नबियों से खबरदार रहो! गो वह भेड़ों का भेस बदलकर तुम्हारे पास आते हैं, लेकिन अंदर से वह गारतगर भेड़िये होते हैं। 16 उनका फल देखकर तुम उन्हें पहचान लोगे। क्या खारदार झाड़ियों से अंगूर तोड़े जाते हैं या ऊँटकटारों से अंजीर? हरगिज़ नहीं। 17 इसी तरह अच्छा दरख्त अच्छा फल लाता है और खराब दरख्त खराब फल। 18 न अच्छा दरख्त खराब फल ला सकता है, न खराब दरख्त अच्छा फल। 19 जो भी दरख्त अच्छा फल नहीं लाता उसे काटकर आग में झोंका जाता है। 20 यों तुम उनका फल देखकर उन्हें पहचान लोगे।

सिर्फ असल पैरोकार दाखिल होंगे

21 जो मुझे 'खुदावंद, खुदावंद' कहते हैं उनमें से सब आसमान की बादशाही में दाखिल न होंगे बल्कि सिर्फ वह जो मेरे आसमानी बाप की मरज़ी पर अमल करते हैं। 22 अदालत के दिन बहुत-से लोग मुझसे कहेंगे, 'ऐ खुदावंद, खुदावंद! क्या हमने तेरे ही नाम में नबुव्वत नहीं की, तेरे ही नाम से बदरूहें नहीं निकालीं, तेरे ही नाम से मोजिज़े नहीं किए?' 23 उस वक़्त मैं उनसे साफ साफ कह दूँगा, 'मेरी कभी तुमसे जान पहचान न थी। ऐ बदकारो! मेरे सामने से चले जाओ।'

दो किस्म के मकान

24 लिहाज़ा जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर अमल करता है वह उस समझदार आदमी की मानिंद है जिसने अपने मकान की बुनियाद चटान पर रखी। 25 बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोडने लगी। लेकिन वह न गिरा, क्योंकि उस की बुनियाद चटान पर रखी गई थी।

26 लेकिन जो भी मेरी यह बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता वह उस अहमक़ की मानिंद है जिसने अपना मकान सहीह बुनियाद डाले बगैर रेत पर तामीर किया। 27 जब बारिश होने लगी, सैलाब आया और आँधी मकान को झँझोडने लगी तो यह मकान धडाम से गिर गया।"

ईसा का इख्तियार

28 जब ईसा ने यह बातें खत्म कर लीं तो लोग उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए, 29 क्योंकि वह उनके उलमा की तरह नहीं बल्कि इख्तियार के साथ सिखाता था।

## 8

कोढ़ से शफा

1 ईसा पहाड़ से उतरा तो बड़ी भीड़ उसके पीछे चलने लगी। 2 फिर एक आदमी उसके पास आया जो कोढ़ का मरीज़ था। मुँह के बल गिरकर उसने कहा, "खुदावंद, अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ कर सकते हैं।"

3 ईसा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, "मैं चाहता हूँ, पाक-साफ हो जा।" इस पर वह फौरन उस बीमारी से पाक-साफ हो गया। 4 ईसा ने उससे कहा, "खबरदार! यह बात किसी को न बताना बल्कि बैतुल-मुकद्दस में इमाम के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ वह कुरबानी ले जा जिसका तकाज़ा मूसा की शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोढ़ से शफा मिली है। यों अलानिया तसदीक हो जाएगी कि तू वाकई पाक-साफ हो गया है।"

रोमी अफ़सर के गुलाम की शफा

5 जब ईसा कफ़र्नहम में दाखिल हुआ तो सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर एक अफ़सर उसके पास आकर उस की मिनत करने लगा, 6 "खुदावंद, मेरा गुलाम मफ़लूज हालत में घर में पड़ा है, और उसे शदीद दर्द हो रहा है।"

7 ईसा ने उससे कहा, "मैं आकर उसे शफा दूँगा।"

8 अफ़सर ने जवाब दिया, "नहीं खुदावंद, मैं इस लायक नहीं कि आप मेरे घर जाएँ। बस यहीं से हुक्म करें तो मेरा गुलाम शफा पा जाएगा। 9 क्योंकि मुझे ख़ुद आला अफ़सरों के हुक्म पर चलना पड़ता है और मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ, 'जा!' तो वह जाता है और दूसरे को 'आ!' तो वह आता है। इसी तरह मैं अपने नौकर को हुक्म देता हूँ, 'यह कर' तो वह करता है।"

10 यह सुनकर ईसा निहायत हैरान हुआ। उसने मुड़कर अपने पीछे आनेवालों से कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ, मैंने इसराईल में भी इस किस्म का इमान नहीं पाया। 11 मैं तुम्हें बताता हूँ, बहुत-से लोग मशरिक और मग़रिब से आकर इब्राहीम, इसहाक और याक़ूब के साथ आसमान की बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे। 12 लेकिन बादशाही के असल वारिसों को निकालकर अंधेरे में डाल दिया जाएगा, उस जगह जहाँ लोग रोते और दौँत पीसते रहेंगे।" 13 फिर ईसा अफ़सर से मुखातिब हुआ, "जा, तेरे साथ वैसा ही हो जैसा तेरा इमान है।"

और अफ़सर के गुलाम को उसी घड़ी शफा मिल गई।

### बहुत-से मरीजों की शफा

14 ईसा पतरस के घर में आया। वहाँ उसने पतरस की सास को बिस्तर पर पड़े देखा। उसे बुखार था। 15 उसने उसका हाथ छू लिया तो बुखार उतर गया और वह उठकर उस की खिदमत करने लगी।

16 शाम हुई तो बदरूहों की गिरिफ्त में पड़े बहुत-से लोगों को ईसा के पास लाया गया। उसने बदरूहों को हुक्म देकर निकाल दिया और तमाम मरीजों को शफा दी। 17 यों यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि “उसने हमारी कमज़ोरियाँ ले लीं और हमारी बीमारियाँ उठा लीं।”

### पैरवी की संजीदगी

18 जब ईसा ने अपने गिर्द बड़ा हुजूम देखा तो उसने शागिर्दों को झील पार करने का हुक्म दिया। 19 रवाना होने से पहले शरीअत का एक आलिम उसके पास आकर कहने लगा, “उस्ताद, जहाँ भी आप जाएंगे मैं आपके पीछे चलता रहूँगा।”

20 ईसा ने जवाब दिया, “लोमडियाँ अपने भटों में और परिदे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं, लेकिन इब्ने-आदम के पास सर रखकर आराम करने की कोई जगह नहीं।”

21 किसी और शागिर्द ने उससे कहा, “खुदावंद, मुझे पहले जाकर अपने बाप को दफन करने की इजाज़त दें।”

22 लेकिन ईसा ने उसे बताया, “मेरे पीछे हो ले और मुरदों को अपने मुरदे दफन करने दें।”

### ईसा आँधी को थमा देता है

23 फिर वह क़रती पर सवार हुआ और उसके पीछे उसके शागिर्द भी। 24 अचानक झील पर सख्त आँधी चलने लगी और क़रती लहरों में डूबने लगी। लेकिन ईसा सो रहा था। 25 शागिर्द उसके पास गए और उसे जगाकर कहने लगे, “खुदावंद, हमें बचा, हम तबाह हो रहे हैं।”

26 उसने जवाब दिया, “एरे कमएतकादो! घबराते क्यों हो?” खड़े होकर उसने आँधी और मौजों को डौंटा तो लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 27 शागिर्द हैरान होकर कहने लगे, “यह किस किसम का शख्स है? हवा और झील भी उसका हुक्म मानती हैं।”

### दो बदरूह-गिरिफ्ता आदमियों की शफा

28 वह झील के पार गदरीनियों के इलाके में पहुँचे तो बदरूह-गिरिफ्ता दो आदमी क़ब्रों में से निकलकर ईसा को मिले। वह इतने खतरनाक थे कि वहाँ से कोई गुजर नहीं सकता था। 29 चीखें मार मारकर उन्होंने कहा, “अल्लाह के फ़रज़ंद, हमारा आपके साथ क्या वास्ता? क्या आप हमें मुकर्रर वक्त से पहले अज़ाब में डालने आए हैं?”

30 कुछ फ़ासले पर सुअरों का बड़ा गोल चर रहा था। 31 बदरूहों ने ईसा से इल्लिजा की, “अगर आप हमें निकालते हैं तो सुअरों के उस गोल में भेज दें।”

32 ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, “जाओ।” बदरूहें निकलकर सुअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे का पूरा गोल भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरा और झील में झपटकर डूब मरा। 33 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। शहर में जाकर उन्होंने लोगों को सब कुछ सुनाया और वह भी जो बदरूह-गिरिफ्ता आदमियों के साथ हुआ था। 34 फिर पूरा शहर निकलकर ईसा को मिलने आया। उसे देखकर उन्होंने उस की मिन्नत की कि हमारे इलाके से चले जाएँ।

## 9

### मफ़लूज आदमी की शफा

1 क़रती में बैठकर ईसा ने झील को पार किया और अपने शहर पहुँच गया। 2 वहाँ एक मफ़लूज आदमी को चारपाई पर डालकर उसके पास लाया गया। उनका ईमान देखकर ईसा ने कहा, “बेटा, हौसला रख। तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।”

3 यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा दिल में कहने लगे, “यह कुफ़र बक रहा है!”

4 ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा, 5 “तुम दिल में बुरी बातें क्यों सोच रहे हो? क्या मफ़लूज से यह कहना ज़्यादा आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठ और चल-फिर?’” 6 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाकई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख्तियार है।” यह कहकर वह मफ़लूज से मुखातिब हुआ, “उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।”

7 वह आदमी खड़ा हुआ और अपने घर चला गया। 8 यह देखकर हुजूम पर अल्लाह का ख़ौफ़ तारी हो गया और वह अल्लाह की तमज़ीद करने लगे कि उसने इनसान को इस किसम का इख्तियार दिया है।

### मती की बुलाहट

9 आगे जाकर ईसा ने एक आदमी को देखा जो टैक्स लेनेवालों की चौकी पर बैठा था। उसका नाम मती था। ईसा ने उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” और मती उठकर उसके पीछे हो लिया।

10 बाद में ईसा मती के घर में खाना खा रहा था। बहुत-से टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार भी आकर ईसा और उसके शिगिर्दों के साथ खाने में शरीक हुए। 11 यह देखकर फ़रीसियों ने उसके शिगिर्दों से पूछा, “आपका उस्ताद टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाता है?”

12 यह सुनकर ईसा ने कहा, “सेहतमंदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीजों को। 13 पहले जाओ और कलामे-मुकद्दस की इस बात का मतलब जान लो कि ‘मैं कुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ।’ क्योंकि मैं रास्तबाजों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।”

### शिगिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

14 फिर यहया के शिगिर्द उसके पास आए और पूछा, “आपके शिगिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते जबकि हम और फ़रीसी रोज़ा रखते हैं?”

15 ईसा ने जवाब दिया, “शादी के मेहमान किस तरह मातम कर सकते हैं जब तक दूल्हा उनके दरमियान है? लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।

16 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो नया टुकड़ा बाद में सुकड़कर पुराने लिबास से अलग हो जाएगा। यों पुराने लिबास की फटी हुई जगह पहले की निसबत ज़्यादा खराब हो जाएगी। 17 इसी तरह अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं डाला जाता। अगर ऐसा किया जाए तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मैं और मशकें दोनों ज़ाया हो जाएँगी। इसलिए अंगूर का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं। यों रस और मशकें दोनों ही महफूज़ रहते हैं।”

### याईर की बेटी और बीमार औरत

18 ईसा अभी यह बयान कर रहा था कि एक यहूदी राहनुमा ने गिरकर उसे सिजदा किया और कहा, “मेरी बेटी अभी अभी मरी है। लेकिन आकर अपना हाथ उस पर रखें तो वह दुबारा जिंदा हो जाएगी।”

19 ईसा उठकर अपने शिगिर्दों समेत उसके साथ हो लिया।

20 चलते चलते एक औरत ने पीछे से आकर ईसा के लिबास का किनारा छुआ। यह औरत बारह साल से खून बहने की मरीज़ा थी 21 और वह सोच रही थी, “अगर मैं सिर्फ उसके लिबास को ही छू लूँ तो शफा पा लूँगी।”

22 ईसा ने मुड़कर उसे देखा और कहा, “बेटी, हौसला रख! तेरे इमान ने तुझे बचा लिया है।” और औरत को उसी वक़्त शफा मिल गई।

23 फिर ईसा राहनुमा के घर में दाखिल हुआ। बाँसरी बजानेवाले और बहुत-से लोग पहुँच चुके थे और बहुत शोर-शराबा था। यह देखकर 24 ईसा ने कहा, “निकल जाओ! लड़की मर नहीं गई बल्कि सो रही है।” लोग हँसकर उसका मज़ाक उड़ाने लगे। 25 लेकिन जब सबको निकाल दिया गया तो वह अंदर गया। उसने लड़की का हाथ पकड़ा तो वह उठ खड़ी हुई। 26 इस मौजिज़े की खबर उस पूरे इलाके में फैल गई।

### दो अंधों की शफा

27 जब ईसा वहाँ से रवाना हुआ तो दो अंधे उसके पीछे चलकर चिल्लाने लगे, “इन्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”

28 जब ईसा किसी के घर में दाखिल हुआ तो वह उसके पास आए। ईसा ने उनसे पूछा, “क्या तुम्हारा इमान है कि मैं यह कर सकता हूँ?”

उन्होंने जवाब दिया, “जी, खुदावंद।”

29 फिर उसने उनकी आँखें छूकर कहा, “तुम्हारे साथ तुम्हारे इमान के मुताबिक हो जाए।” 30 उनकी आँखें बहाल हो गईं और ईसा ने सख्ती से उन्हें कहा, “खबरदार, किसी को भी इसका पता न चले!”

31 लेकिन वह निकलकर पूरे इलाके में उस की खबर फैलाने लगे।

### ग़ौंगी आदमी की शफा

32 जब वह निकल रहे थे तो एक ग़ौंगी आदमी ईसा के पास लाया गया जो किसी बदर्ह के कब्जे में था। 33 जब बदर्ह को निकाला गया तो ग़ौंगी बोलने लगा। हज़म हैरान रह गया। उन्होंने कहा, “ऐसा काम इसराईल में कभी नहीं देखा गया।”

34 लेकिन फ़रीसियों ने कहा, “वह बदर्हों के सरदार ही की मदद से बदर्हों को निकालता है।”

ईसा को लोगों पर तरस आता है

35 और ईसा सफ़र करते करते तमाम शहरों और गाँवों में से गुज़रा। जहाँ भी वह पहुँचा वहाँ उसने उनके इबादतखानों में तालीम दी, बादशाही की खुशखबरी सुनाई और हर क्रिस्म के मरज़ और अलालत से शफा दी। 36 हुज़म को देखकर उसे उन पर बड़ा तरस आया, क्योंकि वह पिसे हुए और बेबस थे, ऐसी भेड़ों की तरह जिनका चरवाहा न हो। 37 उसने अपने शागिर्दों से कहा, “फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर कम। 38 इसलिए फ़सल के मालिक से गुज़ारिश करो कि वह अपनी फ़सल काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे।”

## 10

बारह रसूलों को इख्तियार दिया जाता है

1 फिर ईसा ने अपने बारह रसूलों को बुलाकर उन्हें नापाक रूहें निकालने और हर क्रिस्म के मरज़ और अलालत से शफा देने का इख्तियार दिया। 2 बारह रसूलों के नाम यह हैं: पहला शमौन जो पतरस भी कहलाता है, फिर उसका भाई अंदरियास, याक़ब बिन ज़बदी और उसका भाई यहन्ना, 3 फ़िलिप्पस, बरतुलमाई, तोमा, मती (जो टैक्स लेनेवाला था), याक़ब बिन हलफई, तदी, 4 शमौन मुजाहिद और यहदाह इस्करियोती जिनसे बाद में उसे दुश्मनों के हवाले कर दिया।

रसूलों को तबलीग के लिए भेजा जाता है

5 इन बारह मर्दों को ईसा ने भेज दिया। साथ साथ उसने उन्हें हिदायत दी, “गैरयहूदी आबादियों में न जाना, न किसी सामरी शहर में, 6 बल्कि सिर्फ़ इसराइल की खोई हुई भेड़ों के पास। 7 और चलते चलते मुनादी करते जाओ कि ‘आसमान की बादशाही करीब आ चुकी है।’ 8 बीमारों को शफा दो, मुरदों को ज़िंदा करो, कोठियों को पाक-साफ़ करो, बदरूहों को निकालो। तुमको मुफ्त में मिला है, मुफ्त में ही बाँटना। 9 अपने कमरबंद में पैसे न रखना—न सोने, न चाँदी और न तौबे के सिक्के। 10 न सफ़र के लिए बैग हो, न एक से ज़्यादा सूट, न जूते, न लाठी। क्योंकि मज़दूर अपनी रोज़ी का हक़दार है।

11 जिस शहर या गाँव में दाखिल होते हो उसमें किसी लायक शख्स का पता करो और रवाना होते वक़्त तक उसी के घर में ठहरो। 12 घर में दाखिल होते वक़्त उसे दूआए-खैर दो। 13 अगर वह घर इस लायक होगा तो जो सलामती तुमने उसके लिए माँगी है वह उस पर आकर ठहरी रहेगी। अगर नहीं तो यह सलामती तुम्हारे पास लौट आएगी। 14 अगर कोई घराना या शहर तुमको क़बूल न करे, न तुम्हारी सुने तो रवाना होते वक़्त उस जगह की गर्द अपने पाँवों से झाड़ देना। 15 मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अदालत के दिन उस शहर की निसबत सद्म और अमूरा के इलाके का हाल ज़्यादा काबिले-बरदाशत होगा।

अनेवाली ईज़ारसानियाँ

16 देखो, मैं तुम भेड़ों को भेड़ियों में भेज रहा हूँ। इसलिए साँपों की तरह होशियार और कबूतरों की तरह मासूम बनो। 17 लोगों से खबरदार रहो, क्योंकि वह तुमको मकामी अदालतों के हवाले करके अपने इबादतखानों में कोड़े लगावाएँगे। 18 मेरी खातिर तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के सामने पेश किया जाएगा और यों तुमको उन्हें और गैरयहूदियों को गवाही देने का मौका मिलेगा। 19 जब वह तुम्हें गिरफ़्तार करेंगे तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ या किस तरह बात करूँ। उस वक़्त तुमको बताया जाएगा कि क्या कहना है, 20 क्योंकि तुम खुद बात नहीं करोगे बल्कि तुम्हारे बाप का रूह तुम्हारी मारिफ़त बोलेगा।

21 भाई अपने भाई को और बाप अपने बच्चे को मौत के हवाले करेगा। बच्चे अपने वालिदैन के खिलाफ़ खड़े होकर उन्हें क़त्ल करवाएँगे। 22 सब तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार हो। लेकिन जो आखिर तक कायम रहेगा उसे नजात मिलेगी। 23 जब वह एक शहर में तुम्हें सताएँगे तो किसी दूसरे शहर को हिज़रत कर जाना। मैं तुमको सच बताता हूँ कि इब्ने-आदम की आमद तक तुम इसराइल के तमाम शहरों तक नहीं पहुँच पाओगे।

24 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता, न गुलाम अपने मालिक से। 25 शागिर्द को इस पर इकतिफ़ा करना है कि वह अपने उस्ताद की मानिंद हो, और इसी तरह गुलाम को कि वह अपने मालिक की मानिंद हो। घराने के सरपरस्त को अगर बदरूहों का सरदार बाल-ज़बूल करार दिया गया है तो उसके घरवालों को क्या कुछ न कहा जाएगा।

किससे डरना है?

26 उनसे मत डरना, क्योंकि जो कुछ अभी छुपा हुआ है उसे आखिर में जाहिर किया जाएगा, और जो कुछ भी इस वक़्त पोशीदा है उसका राज़ आखिर में खुल जाएगा। 27 जो कुछ मैं तुम्हें अंधेरे में सुना रहा हूँ उसे रोज़े-रौशन में सुना देना। और जो कुछ आहिस्ता आहिस्ता तुम्हारे कान में बताया गया है उसका छतों से एलान करो। 28 उनसे खौफ़ मत खाना जो तुम्हारी रूह को नहीं बल्कि सिर्फ़ तुम्हारे जिस्म को क़त्ल कर सकते हैं। अल्लाह से डरो जो रूह और जिस्म दोनों को जहन्नुम में डालकर हलाक कर सकता है। 29 क्या चिड़ियों का जोड़ा कम पैसों में नहीं बिकता? ताहम उनमें से एक भी तुम्हारे बाप

की इजाजत के बगैर ज़मीन पर नहीं गिर सकती। 30 न सिर्फ़ यह बल्कि तुम्हारे सर के सब बाल भी गिने हुए हैं। 31 लिहाज़ा मत डरो। तुम्हारी कदरो-कीमत बहुत-सी चिड़ियों से कहीं ज्यादा है।

मसीह का इकरार या इनकार करने का नतीजा

32 जो भी लोगों के सामने मेरा इकरार करे उसका इकरार मैं खुद भी अपने आसमानी बाप के सामने करूँगा। 33 लेकिन जो भी लोगों के सामने मेरा इनकार करे उसका मैं भी अपने आसमानी बाप के सामने इनकार करूँगा।

ईसा सुलह-सलामती का बाइस नहीं

34 यह मत समझो कि मैं दुनिया में सुलह-सलामती कायम करने आया हूँ। मैं सुलह-सलामती नहीं बल्कि तलवार चलवाने आया हूँ। 35 मैं बेटे को उसके बाप के खिलाफ़ खड़ा करने आया हूँ, बेटी को उस की माँ के खिलाफ़ और बहू को उस की सास के खिलाफ़। 36 इनसान के दुश्मन उसके अपने घरवाले होंगे।

37 जो अपने बाप या माँ को मुझसे ज्यादा प्यार करे वह मेरे लायक नहीं। जो अपने बेटे या बेटी को मुझसे ज्यादा प्यार करे वह मेरे लायक नहीं। 38 जो अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न हो ले वह मेरे लायक नहीं। 39 जो भी अपनी जान को बचाए वह उसे खो देगा, लेकिन जो अपनी जान को मेरी खातिर खो दे वह उसे पाएगा।

ईसा और उसके पैरोकारों को कबूल करने का अज़

40 जो तुम्हें कबूल करे वह मुझे कबूल करता है, और जो मुझे कबूल करता है वह उसको कबूल करता है जिसने मुझे भेजा है। 41 जो किसी नबी को कबूल करे उसे नबी का-सा अज़ मिलेगा। और जो किसी रास्तबाज़ शख्स को उस की रास्तबाज़ी के सबब से कबूल करे उसे रास्तबाज़ शख्स का-सा अज़ मिलेगा। 42 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो इन छोटों में से किसी एक को मेरा शागिर्द होने के बाइस ठंडे पानी का गलास भी पिलाए उसका अज़ कायम रहेगा।”

## 11

यहया का ईसा से सवाल

1 अपने शागिर्दों को यह हिदायत देने के बाद ईसा उनके शहरों में तालीम देने और मुनादी करने के लिए रवाना हुआ।

2 यहया ने जो उस वक़्त जेल में था सुना कि ईसा क्या क्या कर रहा है। इस पर उसने अपने शागिर्दों को उसके पास भेज दिया 3 ताकि वह उससे पूछे, “क्या आप वही हैं जिसे आना है या हम किसी और के इंतज़ार में रहें?”

4 ईसा ने जवाब दिया, “यहया के पास वापस जाकर उसे सब कुछ बता देना जो तुमने देखा और सुना है। 5 ‘अंधे देखते, लँगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया जाता है, बहरे सुनते हैं, मुरदों को जिंदा किया जाता है और गरीबों को अल्लाह की खुशख़बरी सुनाई जाती है।’ 6 मुबारक है वह जो मेरे सबब से ठोकर खाकर बरग़्शता नहीं होता।”

7 यहया के यह शागिर्द चले गए तो ईसा हज़ूम से यहया के बारे में बात करने लगा, “तुम रेगिस्तान में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो हवा के हर झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 8 या क्या वहाँ जाकर ऐसे आदमी की तवक्को कर रहे थे जो नफ़ीस और मुलायम लिबास पहने हुए हैं? नहीं, जो शानदार कपड़े पहनते हैं वह शाही महलों में पाए जाते हैं। 9 तो फिर तुम क्या देखने गए थे? एक नबी को? बिलकुल सहीह, बल्कि मैं तुमको बताता हूँ कि वह नबी से भी बड़ा है। 10 उसी के बारे में कलामे-मुकद्दस में लिखा है, ‘देख, मैं अपने पैग़म्बर को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ जो तेरे सामने रास्ता तैयार करेगा।’ 11 मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस दुनिया में पैदा होनेवाला कोई भी शख्स यहया से बड़ा नहीं है। तो भी आसमान की बादशाही में दाखिल होनेवाला सबसे छोटा शख्स उससे बड़ा है। 12 यहया बपतिस्मा देनेवाले की खिदमत से लेकर आज तक आसमान की बादशाही पर ज़बरदस्ती की जा रही है, और ज़बरदस्त उसे छीन रहे हैं। 13 क्योंकि तमाम नबी और तौरत ने यहया के दौर तक इसके बारे में पेशगोई की है। 14 और अगर तुम यह मानने के लिए तैयार हो तो मानो कि वह इलियास नबी है जिसे आना था। 15 जो सुन सकता है वह सुन ले।

16 मैं इस नसल को किससे तशबीह दूँ? वह उन बच्चों की मानिंद हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं। उनमें से कुछ ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों से शिकायत कर रहे हैं, 17 ‘हमने बाँसरी बजाई तो तुम न नाचे। फिर हमने नोहा के गीत गाए, लेकिन तुमने छाती पीटकर मातम न किया।’ 18 देखो, यहया आया और न खाया, न पिया। यह देखकर लोग कहते हैं कि उसमें बदस्ह है। 19 फिर इब्ने-आदम खाता और पीता हुआ आया। अब कहते हैं, ‘देखो यह कैसा पेटू और शराबी है। और वह टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों का दोस्त भी है।’ लेकिन हिकमत अपने आमाल से ही सहीह साबित हुई है।”

तौबा न करनेवाले शहरों पर अफ़सोस

20 फिर ईसा उन शहरों को डाँटने लगा जिनमें उसने ज्यादा मोजिजे किए थे, क्योंकि उन्होंने तौबा नहीं की थी। 21 “ऐ खुराजीन, तुझ पर अफसोस! बैत-सैदा, तुझ पर अफसोस! अगर सूर और सैदा में वह मोजिजे किए गए होते जो तुममें हुए तो वहाँ के लोग कब के टाट ओढ़कर और सर पर राख डालकर तौबा कर चुके होते। 22 जी हों, अदालत के दिन तुम्हारी निसबत सूर और सैदा का हाल ज्यादा काबिले-बरदाशत होगा। 23 और ऐ कफर्नहम, क्या तुझे आसमान तक सरफराज किया जाएगा? हरगिज नहीं, बल्कि तू उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा। अगर सद्म में वह मोजिजे किए गए होते जो तुझमें हुए हैं तो वह आज तक कायम रहता। 24 हों, अदालत के दिन तेरी निसबत सद्म का हाल ज्यादा काबिले-बरदाशत होगा।”

### बाप की तमजीद

25 उस वक़्त ईसा ने कहा, “ऐ बाप, आसमानो-जमीन के मालिक! मैं तेरी तमजीद करता हूँ कि तूने यह बातें दानाओं और अक्लमंदों से छुपाकर छोटे बच्चों पर जाहिर कर दी हैं। 26 हों मेरे बाप, यही तुझे पसंद आया।

27 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है। कोई भी फ़रजंद को नहीं जानता सिवाए बाप के। और कोई बाप को नहीं जानता सिवाए फ़रजंद के और उन लोगों के जिन पर फ़रजंद बाप को जाहिर करना चाहता है।

28 ऐ थकेमैदि और बोझ तले दबे हुए लोगो, सब मेरे पास आओ! मैं तुमको आराम दूँगा। 29 मेरा जुआ अपने ऊपर उठाकर मुझसे सीखो, क्योंकि मैं हलीम और नरमदिल हूँ। यों करने से तुम्हारी जानें आराम पाएँगी, 30 क्योंकि मेरा जुआ मुलायम और मेरा बोझ हलका है।”

## 12

### सबत के बारे में सवाल

1 उन दिनों में ईसा अनाज के खेतों में से गुजर रहा था। सबत का दिन था। चलते चलते उसके शागिर्दों को भूक लगी और वह अनाज की बालें तोड़ तोड़कर खाने लगे। 2 यह देखकर फ़रीसियों ने ईसा से शिकायत की, “देखो, आपके शागिर्द ऐसा काम कर रहे हैं जो सबत के दिन मना है।”

3 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके साथियों को भूक लगी? 4 वह अल्लाह के घर में दाखिल हुआ और अपने साथियों समेत रब के लिए मखसूसशुदा रोटियाँ खाई, अगरचे उन्हें इसकी इजाजत नहीं थी बल्कि सिर्फ़ इमामों को? 5 या क्या तुमने तौरत में नहीं पढ़ा कि गो इमाम सबत के दिन बैतुल-मुक़द्दस में खिदमत करते हुए आराम करने का हुक्म तोड़ते हैं तो भी वह बेइलज़ाम ठहरते हैं? 6 मैं तुम्हें बताता हूँ कि यहाँ वह है जो बैतुल-मुक़द्दस से अफ़ज़ल है। 7 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘मैं कुरबानी नहीं बल्कि रहम पसंद करता हूँ।’ अगर तुम इसका मतलब समझते तो बेकूसूरों को मुजरिम न ठहराते। 8 क्योंकि इब्ने-आदम सबत का मालिक है।”

### सूखे हाथवाले आदमी की शफा

9 वहाँ से चलते चलते वह उनके इबादतखाने में दाखिल हुआ। 10 उसमें एक आदमी था जिसका हाथ सूखा हुआ था। लोग ईसा पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश कर रहे थे, इसलिए उन्होंने उससे पूछा, “क्या शरीअत सबत के दिन शफा देने की इजाजत देती है?”

11 ईसा ने जवाब दिया, “अगर तुममें से किसी की भेड़ सबत के दिन गड़े में गिर जाए तो क्या उसे नहीं निकालोगे? 12 और भेड़ की निसबत इनसान की कितनी ज्यादा कदरो-क़ीमत है! गरज शरीअत नेक काम करने की इजाजत देती है।” 13 फिर उसने उस आदमी से जिसका हाथ सूखा हुआ था कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।”

उसने ऐसा किया तो उसका हाथ दूसरे हाथ की मानिद तनदुस्त हो गया। 14 इस पर फ़रीसी निकलकर आपस में ईसा को कत्ल करने की साज़िशें करने लगे।

### अल्लाह का चुना हुआ खादिम

15 जब ईसा ने यह जान लिया तो वह वहाँ से चला गया। बहुत-से लोग उसके पीछे चल रहे थे। उसने उनके तमाम मरीजों को शफा देकर 16 उन्हें तार्कीद की, “किसी को मेरे बारे में न बताओ।” 17 यों यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,

18 ‘देखो, मेरा ख़ादिम जिसे मैंने चुन लिया है,

मेरा प्यारा जो मुझे पसंद है।

मैं अपने रूह को उस पर डालूँगा,

और वह अक़वाम में इनसाफ़ का एलान करेगा।

19 वह न तो झगड़ेगा, न चिल्लाएगा।

गलियों में उस की आवाज़ सुनाई नहीं देगी।



20 न वह कुचले हुए सरकंडे को तोड़ेगा,  
न बुझती हुई बत्ती को बुझाएगा  
जब तक वह इनसाफ को गलबा न बखो।  
21 उसी के नाम से क्रौंभें उम्मीद रखेंगी।'

### ईसा और बदरूहों का सरदार

22 फिर एक आदमी को ईसा के पास लाया गया जो बदरूह की गिरिफ्त में था। वह अंधा और गूँगा था। ईसा ने उसे शफा दी तो गूँगा बोलने और देखने लगा। 23 हुजूम के तमाम लोग हक्का-बक्का रह गए और पूछने लगे, "क्या यह इब्ने-दाऊद नहीं?"

24 लेकिन जब फ़रीसियों ने यह सुना तो उन्होंने कहा, "यह सिर्फ़ बदरूहों के सरदार बाल-जबूल की मारिफ़त बदरूहों को निकालता है।"

25 उनके यह खयालात जानकर ईसा ने उनसे कहा, "जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह तबाह हो जाएगी। और जिस शहर या घराने की ऐसी हालत हो वह भी कायम नहीं रह सकता। 26 इसी तरह अगर इबलीस अपने आपको निकाले तो फिर उसमें फूट पड़ गई है। इस सूरत में उस की बादशाही किस तरह कायम रह सकती है? 27 और अगर मैं बदरूहों को बाल-जबूल की मदद से निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे उन्हें किसके ज़रीए निकालते हैं? चुनौंचे वही इस बात में तुम्हारे मुसिफ़ होंगे। 28 लेकिन अगर मैं अल्लाह के रूह की मारिफ़त बदरूहों को निकाल देता हूँ तो फिर अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच चुकी है।

29 किसी जोरावर आदमी के घर में घुसकर उसका मालो-असबाब लूटना किस तरह मुमकिन है जब तक कि उसे बाँधा न जाए? फिर ही उसे लूटा जा सकता है।

30 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे खिलाफ़ है और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है। 31 गरज़ मैं तुमको बताता हूँ कि इनसान का हर गुनाह और कुफ़र मुआफ़ किया जा सकेगा सिवाए रूहल-कुदूस के खिलाफ़ कुफ़र बकने के। इसे मुआफ़ नहीं किया जाएगा। 32 जो इब्ने-आदम के खिलाफ़ बात करे उसे मुआफ़ किया जा सकेगा, लेकिन जो रूहल-कुदूस के खिलाफ़ बात करे उसे न इस जहान में और न आनेवाले जहान में मुआफ़ किया जाएगा।

### दरख्त उसके फल से पहचाना जाता है

33 अच्छे फल के लिए अच्छे दरख्त की ज़रूरत होती है। खराब दरख्त से खराब फल मिलता है। दरख्त उसके फल से ही पहचाना जाता है। 34 ऐ सॉफ़ के बच्चो! तुम जो बुरे हो किस तरह अच्छी बातें कर सकते हो? क्योंकि जिस चीज़ से दिल लबरेज़ होता है वह छलककर ज़बान पर आ जाती है। 35 अच्छा शख्स अपने दिल के अच्छे ख़जाने से अच्छी चीज़ें निकालता है जबकि बुरा शख्स अपने बुरे ख़जाने से बुरी चीज़ें।

36 मैं तुमको बताता हूँ कि क्रियामत के दिन लोगों को बेपरवाई से की गई हर बात का हिसाब देना पड़ेगा। 37 तुम्हारी अपनी बातों की बिना पर तुमको रास्त या नारास्त ठहराया जाएगा।"

### इलाही निशान का तकाज़ा

38 फिर शरीअत के कुछ उलमा और फ़रीसियों ने ईसा से बात की, "उस्ताद, हम आपकी तरफ़ से इलाही निशान देखना चाहते हैं।"

39 उसने जवाब दिया, "सिर्फ़ शरीर और जिनाकार नसल इलाही निशान का तकाज़ा करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूसुस नबी के निशान के। 40 क्योंकि जिस तरह यूसुस तीन दिन और तीन रात मछली के पेट में रहा उसी तरह इब्ने-आदम भी तीन दिन और तीन रात ज़मीन की गोद में पड़ा रहेगा। 41 क्रियामत के दिन नीनवा के बाशिदे इस नसल के साथ खड़े होकर इसे मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि यूसुस के एलान पर उन्होंने तौबा की थी जबकि यहाँ वह है जो यूसुस से भी बड़ा है। 42 उस दिन जुनूबी मुल्क सबा की मलिका भी इस नसल के साथ खड़ी होकर इसे मुजरिम करार देगी। क्योंकि वह दूर-दराज़ मुल्क से सुलेमान की हिकमत सुनने के लिए आई थी जबकि यहाँ वह है जो सुलेमान से भी बड़ा है।

### बदरूह की वापसी

43 जब कोई बदरूह किसी शख्स से निकलती है तो वह वीरान इलाकों में से गुज़रती हुई आराम की जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा मकाम नहीं मिलता 44 तो वह कहती है, 'मैं अपने उस घर में वापस चली जाऊँगी जिसमें से निकली थी।' वह वापस आकर देखती है कि घर खाली है और किसी ने झाड़ू देकर सब कुछ सलीके से रख दिया है। 45 फिर

वह जाकर सात और बदरहें ढूँड लाती है जो उससे बदतर होती हैं, और वह सब उस शख्स में घुसकर रहने लगती हैं। चुनौचे अब उस आदमी की हालत पहले की निसबत ज्यादा बुरी हो जाती है। इस शरीर नसल का भी यही हाल होगा।”

### ईसा की माँ और भाई

46 ईसा अभी हजूम से बात कर ही रहा था कि उस की माँ और भाई बाहर खडे उससे बात करने की कोशिश करने लगे। 47 किसी ने ईसा से कहा, “आपकी माँ और भाई बाहर खडे है और आपसे बात करना चाहते है।” 48 ईसा ने पूछा, “कौन है मेरी माँ और कौन है मेरे भाई?” 49 फिर अपने हाथ से शागिर्दों की तरफ इशारा करके उसने कहा, “देखो, यह मेरी माँ और मेरे भाई हैं। 50 क्योंकि जो भी मेरे आसमानी बाप की मरजी पूरी करता है वह मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।”

## 13

### बीज बोनेवाले की तमसील

1 उसी दिन ईसा घर से निकलकर झील के किनारे बैठ गया। 2 इतना बड़ा हजूम उसके गिर्द जमा हो गया कि आखिरकार वह एक कशती में बैठ गया जबकि लोग किनारे पर खडे रहे। 3 फिर उसने उन्हें बहुत-सी बातें तमसीलों में सुनाई। “एक किसान बीज बोने के लिए निकला। 4 जब बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर गिरे और परिदों ने आकर उन्हें चुग लिया। 5 कुछ पथरीली जमीन पर गिरे जहाँ मिट्टी की कमी थी। वह जल्द उग आए क्योंकि मिट्टी गहरी नहीं थी। 6 लेकिन जब सूरज निकला तो पौदे झलस गए और चूँकि वह जड़ न पकड़ सके इसलिए सूख गए। 7 कुछ खुदरौ कोंटदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन खुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने फूलने न दिया। चुनौचे वह भी खत्म हो गए। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो जरखेज जमीन में गिरे और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक ज्यादा फल लाए। 9 जो सुन सकता है वह सुन ले!”

### तमसीलों का मकसद

10 शागिर्द उसके पास आकर पूछने लगे, “आप लोगों से तमसीलों में बात क्यों करते है?” 11 उसने जवाब दिया, “तुमको तो आसमान की बादशाही के भेद समझने की लियाकत दी गई है, लेकिन उन्हें यह लियाकत नहीं दी गई। 12 जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा और उसके पास कसरत की चीजे होंगी। लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है। 13 इसलिए मैं तमसीलों में उनसे बात करता हूँ। क्योंकि वह देखते हुए कुछ नहीं देखते, वह सुनते हुए कुछ नहीं सुनते और कुछ नहीं समझते। 14 उनमें यसायाह नबी की यह पेशगोई पूरी हो रही है :

‘तुम अपने कानों से सुनोगे  
मगर कुछ नहीं समझोगे,  
तुम अपनी आँखों से देखोगे  
मगर कुछ नहीं जानोगे।

15 क्योंकि इस कौम का दिल बेहिस हो गया है।  
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,  
उन्होंने अपनी आँखों को बंद कर रखा है,  
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,  
अपने कानों से सुनें,  
अपने दिल से समझें,  
मेरी तरफ रूजू करें  
और मैं उन्हें शफा दूँ।’

16 लेकिन तुम्हारी आँखें मुबारक हैं क्योंकि वह देख सकती है और तुम्हारे कान मुबारक हैं क्योंकि वह सुन सकते हैं। 17 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम देख रहे हो बहुत-से नबी और रास्तबाज इसे देख न पाए अगरचे वह इसके आरजूमंद थे। और जो कुछ तुम सुन रहे हो इसे वह सुनने न पाए, अगरचे वह इसके खाहिशामंद थे।

### बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

18 अब सुनो कि बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब क्या है। 19 रास्ते पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो बादशाही का कलाम सुनते तो हैं, लेकिन उसे समझते नहीं। फिर इबलीस आकर वह कलाम छीन लेता है जो उनके दिलों में बोया गया है।

20 पथरीली जमीन पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे खुशी से कबूल तो कर लेते हैं, 21 लेकिन वह जड़ नहीं पकड़ते और इसलिए ज्यादा देर तक कायम नहीं रहते। ज्योंही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस किसी मुसीबत या ईजासानी से दोचार हो जाएँ तो वह बरगशता हो जाते हैं। 22 खुदरौ काँटदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते तो हैं, लेकिन फिर रोजमर्रा की परेशानियाँ और दौलत का फरेब कलाम को फलने फूलने नहीं देता। नतीजे में वह फल लाने तक नहीं पहुँचता। 23 इसके मुकाबले में ज़रखेज जमीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम को सुनकर उसे समझ लेते और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाते हैं।”

### खुदरौ पौदों की तमसील

24 ईसा ने उन्हें एक और तमसील सुनाई। “आसमान की बादशाही उस किसान से सुताबिकत रखती है जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बो दिया। 25 लेकिन जब लोग सो रहे थे तो उसके दुश्मन ने आकर अनाज के पौदों के दरमियान खुदरौ पौदों का बीज बो दिया। फिर वह चला गया। 26 जब अनाज फूट निकला और फसल पकने लगी तो खुदरौ पौदे भी नजर आए। 27 नौकर मालिक के पास आए और कहने लगे, ‘जनाब, क्या आपने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था? तो फिर यह खुदरौ पौदे कहाँ से आ गए हैं?’

28 उसने जवाब दिया, ‘किसी दुश्मन ने यह कर दिया है।’

नौकरों ने पूछा, ‘क्या हम जाकर उन्हें उखाड़ें?’

29 ‘नहीं,’ उसने कहा। ‘ऐसा न हो कि खुदरौ पौदों के साथ साथ तुम अनाज के पौदे भी उखाड़ डालो। 30 उन्हें फसल की कटाई तक मिलकर बढ़ने दो। उस वक्त मैं फसल की कटाई करनेवालों से कहूँगा कि पहले खुदरौ पौदों को चुन लो और उन्हें जलाने के लिए गठों में बाँध लो। फिर ही अनाज को जमा करके गोदाम में लाओ।’”

### राई के दाने की तमसील

31 ईसा ने उन्हें एक और तमसील सुनाई। “आसमान की बादशाही राई के दाने की मानिंद है जो किसी ने लेकर अपने खेत में बो दिया। 32 गो यह बीजों में सबसे छोटा दाना है, लेकिन बढ़ते बढ़ते यह सब्जियों में सबसे बड़ा हो जाता है। बल्कि यह दरखन-सा बन जाता है और परिदे आकर उस की शाखों में घोंसले बना लेते हैं।”

### खमीर की तमसील

33 उसने उन्हें एक और तमसील भी सुनाई। “आसमान की बादशाही खमीर की मानिंद है जो किसी औरत ने लेकर तकरीबन 27 किलोग्राम आटे में मिला दिया। गो वह उसमें छुप गया तो भी होते होते पूरे गुंधे हुए आटे को खमीर बना दिया।”

### तमसीलों में बात करने का सबब

34 ईसा ने यह तमाम बातें हजूम के सामने तमसीलों की सूत में की। तमसील के बगैर उसने उनसे बात ही नहीं की। 35 यों नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि “मैं तमसीलों में बात करूँगा, मैं दुनिया की तखलीक से लेकर आज तक छुपी हुई बातें बयान करूँगा।”

### खुदरौ पौदों की तमसील का मतलब

36 फिर ईसा हजूम को सूखसत करके घर के अंदर चला गया। उसके शागिर्द उसके पास आकर कहने लगे, “खेत में खुदरौ पौदों की तमसील का मतलब हमें समझाएँ।”

37 उसने जवाब दिया, “अच्छा बीज बोनेवाला इब्ने-आदम है। 38 खेत दुनिया है जबकि अच्छे बीज से मुराद बादशाही के फ़रज़ंद हैं। खुदरौ पौदे इबलीस के फ़रज़ंद हैं 39 और उन्हें बोनेवाला दुश्मन इबलीस है। फ़सल की कटाई का मतलब दुनिया का इख़िताम है जबकि फ़सल की कटाई करनेवाले फ़रिश्ते हैं। 40 जिस तरह तमसील में खुदरौ पौदे उखाड़े जाते और आग में जलाए जाते हैं उसी तरह दुनिया के इख़िताम पर भी क्रिया जाएगा। 41 इब्ने-आदम अपने फ़रिश्तों को भेज देगा, और वह उस की बादशाही से बरग़शतगी का हर सबब और शरीअत की खिलाफ़वर्ज़ी करनेवाले हर शख्स को निकालते जाएंगे। 42 वह उन्हें भडकती भट्टी में फेंक देगे जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे। 43 फिर रास्तबाज़ अपने बाप की बादशाही में सूरज की तरह चमकेंगे। जो सुन सकता है वह सुन ले!”

### छुपे हुए खजाने की तमसील

44 आसमान की बादशाही खेत में छुपे खजाने की मानिंद है। जब किसी आदमी को उसके बारे में मालूम हुआ तो उसने उसे दुबारा छुपा दिया। फिर वह खुशी के मारे चला गया, अपनी तमाम मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस खेत को खरीद लिया।

### मोती की तमसील

45 नीज़, आसमान की बादशाही ऐसे सौदागर की मानिंद है जो अच्छे मोतियों की तलाश में था। 46 जब उसे एक निहायत कीमती मोती के बारे में मालूम हुआ तो वह चला गया, अपनी तमाम मिलकियत फ़रोख़्त कर दी और उस मोती को ख़रीद लिया।

### जाल की तमसील

47 आसमान की बादशाही जाल की मानिंद भी है। उसे झील में डाला गया तो हर किस्म की मछलियाँ पकड़ी गईं। 48 जब वह भर गया तो मछेरों ने उसे किनारे पर खींच लिया। फिर उन्होंने बैठकर काबिले-इस्तेमाल मछलियाँ चुनकर टोक़रियों में डाल दीं और नाकाबिले-इस्तेमाल मछलियाँ फेंक दीं। 49 दुनिया के इख़िताम पर ऐसा ही होगा। फ़रिश्ते आएंगे और बुरे लोगों को रास्तबाज़ों से अलग करके 50 उन्हें भडकती भट्टी में फेंक देंगे जहाँ लोग रोते और दाँत पीसते रहेंगे।”

### नई और पुरानी सच्चाइयाँ

51 ईसा ने पूछा, “क्या तुमको इन तमाम बातों की समझ आ गई है?”

“जी,” शागिर्दों ने जवाब दिया।

52 उसने उनसे कहा, “इसलिए शरीरत का हर आलिम जो आसमान की बादशाही में शागिर्द बन गया है ऐसे मालिके-मकान की मानिंद है जो अपने खज़ाने से नए और पुराने जवाहर निकालता है।”

### ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

53 यह तमसीलें सुनाने के बाद ईसा वहाँ से चला गया। 54 अपने वतनी शहर नासरत पहुँचकर वह इबादतखाने में लोगों को तालीम देने लगा। उस की बातें सुनकर वह हैरतज़दा हुए। उन्होंने पूछा, “उसे यह हिकमत और मोज़िजे करने की यह कुदरत कहाँ से हासिल हुई है? 55 क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं है? क्या उस की माँ का नाम मरियम नहीं है, और क्या उसके भाई याक़ूब, यूसूफ़, शमौन और यहूदा नहीं हैं? 56 क्या उस की बहनें हमारे साथ नहीं रहती? तो फिर उसे यह सब कुछ कहाँ से मिल गया?” 57 यों वह उससे ठोकर खाकर उसे क़बूल करने से कासिर रहे।

ईसा ने उनसे कहा, “नबी की इज़ज़त हर जगह की जाती है सिवाए उसके वतनी शहर और उसके अपने खानदान के।” 58 और उनके इमान की कर्मी के बाइस उसने वहाँ ज़्यादा मोज़िजे न किए।

## 14

### यहया का कल्ल

1 उस वक़्त गलील के हुक्मरान हेरोदेस अतिपास को ईसा के बारे में इतला मिली। 2 इस पर उसने अपने दरबारियों से कहा, “यह यहया बपतिस्मा देनेवाला है जो मुरदों में से जी उठा है, इसलिए उस की मोज़िजाना ताक़तें इसमें नज़र आती हैं।”

3 वजह यह थी कि हेरोदेस ने यहया को गिरफ़्तार करके जेल में डाला था। यह हेरोदियास की खातिर हुआ था जो पहले हेरोदेस के भाई फिलिप्पस की बीवी थी। 4 यहया ने हेरोदेस को बताया था, “हेरोदियास से तेरी शादी नाजायज़ है।” 5 हेरोदेस यहया को कल्ल करना चाहता था, लेकिन अवाम से डरता था क्योंकि वह उसे नबी समझते थे।

6 हेरोदेस की सालगिरह के मौके पर हेरोदियास की बेटी उनके सामने नाची। हेरोदेस को उसका नाचना इतना पसंद आया 7 कि उसने कसम खाकर उससे वादा किया, “जो भी तू मॉंगेगी मैं तुझे दूँगा।”

8 अपनी माँ के सिखाने पर बेटी ने कहा, “मुझे यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर ट्रे में मॉंगवा दें।”

9 यह सुनकर बादशाह को दुख हुआ। लेकिन अपनी कसमों और मेहमानों की मौजूदगी की वजह से उसने उसे देने का हुक्म दे दिया। 10 चुनौचे यहया का सर कलम कर दिया गया। 11 फिर ट्रे में रखकर अंदर लाया गया और लडकी को दे दिया गया। लडकी उसे अपनी माँ के पास ले गई। 12 बाद में यहया के शागिर्द आए और उस की लाश लेकर उसे दफनाया। फिर वह ईसा के पास गए और उसे इतला दी।

### ईसा 5000 मर्दों को खाना खिलाता है

13 यह ख़बर सुनकर ईसा लोगों से अलग होकर कश्ती पर सवार हुआ और किसी वीरान जगह चला गया। लेकिन हज़ूम को उस की ख़बर मिली। लोग पैदल चलकर शहरों से निकल आए और उसके पीछे लग गए। 14 जब ईसा ने कश्ती पर से उतरकर बड़े हज़ूम को देखा तो उसे लोगों पर बड़ा तरस आया। वहाँ उसने उनके मरीज़ों को शफा दी।

15 जब दिन ढलने लगा तो उसके शागिर्द उसके पास आए और कहा, “यह जगह वीरान है और दिन ढलने लगा है। इनको ख़सत कर दें ताकि यह इर्दगिर्द के देहातों में जाकर खाने के लिए कुछ खरीद लें।”

16 ईसा ने जवाब दिया, “इन्हें जाने की ज़रूरत नहीं, तुम खुद इन्हें खाने को दो।”

17 उन्होंने जवाब दिया, “हमारे पास सिर्फ पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।”

18 उसने कहा, “उन्हें यहाँ भरे पास ले आओ,” 19 और लोगों को घास पर बैठने का हुक्म दिया। ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ देखा और शक्रगुजारी की दुआ की। फिर उसने रोटियों को तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया, और शागिर्दों ने यह रोटियाँ लोगों में तकसीम कर दी। 20 सबने जी भरकर खाया। जब शागिर्दों ने बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह टोकरे भर गए। 21 खवातीन और बच्चों के अलावा खानेवाले तकरीबन 5,000 मर्द थे।

### ईसा पानी पर चलता है

22 इसके ऐन बाद ईसा ने शागिर्दों को मजबूर किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे निकलें और झील के पार चले जाएँ। इतने में वह हजूम को सखसत करना चाहता था। 23 उन्हें खैरबाद कहने के बाद वह दुआ करने के लिए अकेला पहाड़ पर चढ़ गया। शाम के वक्त वह वहाँ अकेला था 24 जबकि कश्ती किनारे से काफी दूर हो गई थी। लहरें कश्ती को बहुत तंग कर रही थी क्योंकि हवा उसके खिलाफ चल रही थी।

25 तकरीबन तीन बजे रात के वक्त ईसा पानी पर चलते हुए उनके पास आया। 26 जब शागिर्दों ने उसे झील की सतह पर चलते हुए देखा तो उन्होंने दहशत खाई। “यह कोई भूत है,” उन्होंने कहा और डर के मारे चीखें मारने लगे।

27 लेकिन ईसा फौरन उनसे मुखातिब होकर बोला, “हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।”

28 इस पर पतरस बोल उठा, “खुदावंद, अगर आप ही हैं तो मुझे पानी पर अपने पास आने का हुक्म दें।”

29 ईसा ने जवाब दिया, “आ।” पतरस कश्ती पर से उतरकर पानी पर चलते चलते ईसा की तरफ बढ़ने लगा। 30 लेकिन जब उसने तेज हवा पर गौर किया तो वह घबरा गया और डूबने लगा। वह चिल्ला उठा, “खुदावंद, मुझे बचाएँ!”

31 ईसा ने फौरन अपना हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ लिया। उसने कहा, “ऐ कमएतकाद! तू शक में क्यों पड़ गया था?”

32 दोनों कश्ती पर सवार हुए तो हवा थम गई। 33 फिर कश्ती में मौजूद शागिर्दों ने उसे सिजदा करके कहा, “यक्रीनन आप अल्लाह के फरजंद हैं!”

### गन्नेसरत में मरीजों की शफा

34 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के पास पहुँच गए। 35 जब उस जगह के लोगों ने ईसा को पहचान लिया तो उन्होंने इर्दीर्द के पूरे इलाके में इसकी खबर फैलाई। उन्होंने अपने तमाम मरीजों को उसके पास लाकर 36 उससे मिनन्त की कि वह उन्हें सिर्फ अपने लिबास के दामन को छूने दे। और जिसने भी उसे छुआ उसे शफा मिली।

## 15

### बापदादा की तालीम

1 फिर कुछ फरीसी और शरीअत के आलिम यरूशालम से आकर ईसा से पूछने लगे, 2 “आपके शागिर्द बापदादा की रिवायत क्यों तोड़ते हैं? क्योंकि वह हाथ धोए बगैर रोटी खाते हैं।”

3 ईसा ने जवाब दिया, “और तुम अपनी रिवायत की खातिर अल्लाह का हुक्म क्यों तोड़ते हो? 4 क्योंकि अल्लाह ने फरमाया, ‘अपने बाप और अपनी माँ की इज्जत करना’ और ‘जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सजाए-मौत दी जाए।’

5 लेकिन जब कोई अपने वालिदिन से कहे, ‘मैं आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने मन्न्त मानी है कि जो कुछ मुझे आपको देना था वह अल्लाह के लिए वक्फ है’ तो तुम इसे जायज करार देते हो। 6 यों तुम कहते हो कि उसे अपने माँ-बाप की इज्जत करने की जरूरत नहीं है। और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम को अपनी रिवायत की खातिर मनसूख कर लेते हो। 7 रियाकारो! यसायाह नबी ने तुम्हारे बारे में क्या खूब नबुव्वत की है,

8 ‘यह क्रौम अपने होंटों से तो मेरा एहतराम करती है

लेकिन उसका दिल मुझे दूर है।

9 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफायदा।

क्योंकि वह सिर्फ इनसान ही के अहकाम सिखाते हैं।”

### इनसान को क्या कुछ नापाक कर देता है?

10 फिर ईसा ने हजूम को अपने पास बुलाकर कहा, “सब मेरी बात सुनो और इसे समझने की कोशिश करो। 11 कोई ऐसी चीज है नहीं जो इनसान के मुँह में दाखिल होकर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता है वही उसे नापाक कर देता है।”

12 इस पर शागिर्दों ने उसके पास आकर पूछा, “क्या आपको मालूम है कि फरीसी यह बात सुनकर नाराज हुए हैं?”

13 उसने जवाब दिया, “जो भी पौदा मेरे आसमानी बाप ने नहीं लगाया उसे जड़ से उखाड़ा जाएगा। 14 उन्हें छोड़ दो, वह अंधे राह दिखातेवाले हैं। अगर एक अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई करे तो दोनों गढे में गिर जाएंगे।”

15 पतरस बोल उठा, “इस तमसील का मतलब हमें बताएँ।”

16 ईसा ने कहा, “क्या तुम अभी तक इतने नासमझ हो? 17 क्या तुम नहीं समझ सकते कि जो कुछ इनसान के मुँह में दाखिल हो जाता है वह उसके भेदे में जाता है और वहाँ से निकलकर जाए-ज़रूरत में? 18 लेकिन जो कुछ इनसान के मुँह से निकलता है वह दिल से आता है। वही इनसान को नापाक करता है। 19 दिल ही से बुरे खयालात, क्रत्लो-गारत, जिनाकारी, हरामकारी, चोरी, झूटी गवाही और बूहतान निकलते हैं। 20 यही कुछ इनसान को नापाक कर देता है, लेकिन हाथ धोए बगैर खाना खाने से वह नापाक नहीं होता।”

### गैरयहूदी औरत का ईमान

21 फिर ईसा गलील से रवाना होकर शिमाल में सूर और सैदा के इलाके में आया। 22 इस इलाके की एक कनानी खतून उसके पास आकर चिल्लाने लगी, “खुदावंद, इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें। एक बदरूह मेरी बेटी को बहुत सताती है।”

23 लेकिन ईसा ने जवाब में एक लफ्ज़ भी न कहा। इस पर उसके शागिर्द उसके पास आकर उससे गुज़ारिश करने लगे, “उसे फ़ारिग कर दें, क्योंकि वह हमारे पीछे पीछे चीखती-चिल्लाती है।”

24 ईसा ने जवाब दिया, “मुझे सिर्फ़ इसराईल की खोई हुई भेडों के पास भेजा गया है।”

25 औरत उसके पास आकर मुँह के बल झुक गई और कहा, “खुदावंद, मेरी मदद करें!”

26 उसने उसे बताया, “यह मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना लेकर कुतों के सामने फेंक दिया जाए।”

27 उसने जवाब दिया, “जी खुदावंद, लेकिन कुतों भी वह टुकड़े खाते हैं जो उनके मालिक की मेज़ पर से फ़र्श पर गिर जाते हैं।”

28 ईसा ने कहा, “ऐ औरत, तेरा ईमान बड़ा है। तेरी दरखास्त पूरी हो जाए।” उसी लमहे औरत की बेटी को शफ़ा मिल गई।

### ईसा बहुत-से मरीजों को शफ़ा देता है

29 फिर ईसा वहाँ से रवाना होकर गलील की झील के किनारे पहुँच गया। वहाँ वह पहाड़ पर चढ़कर बैठ गया। 30 लोगों की बड़ी तादाद उसके पास आई। वह अपने लँगड़े, अंधे, मफ़लूज़, गूँगे और कई और किस्म के मरीज़ भी साथ ले आए। उन्होंने उन्हें ईसा के सामने रखा तो उसने उन्हें शफ़ा दी। 31 हुज़म हैरतज़दा हो गया। क्योंकि गूँगे बोल रहे थे, अपाहजों के आज्ञा बहाल हो गए, लँगड़े चलने और अंधे देखने लगे थे। यह देखकर भीड़ ने इसराईल के खुदा की तमज़ीद की।

### ईसा 4000 मर्दों को खाना खिलाता है

32 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को बुलाकर उनसे कहा, “मुझे इन लोगों पर तरस आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन दिन हो चुके हैं और इनके पास खाने की कोई चीज़ नहीं है। लेकिन मैं इन्हें इस भूकी हालत में स्रखसत नहीं करना चाहता। ऐसा न हो कि वह रास्ते में थककर चूर हो जाएँ।”

33 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान इलाके में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह लोग खाकर सेर हो जाएँ?”

34 ईसा ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने जवाब दिया, “सात, और चंद एक छोटी मछलियाँ।”

35 ईसा ने हुज़म को ज़मीन पर बैठने को कहा। 36 फिर सात रोटियों और मछलियों को लेकर उसने शुकगुज़ारी की दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़कर अपने शागिर्दों को तक्रसीम करने के लिए दे दिया। 37 सबने जी भरकर खाया। बाद में जब खाने के बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोकरे भर गए। 38 खवातीन और बच्चों के अलावा खानेवाले 4,000 मर्द थे।

39 फिर ईसा लोगों को स्रखसत करके कश्ती पर सवार हुआ और मगदन के इलाके में चला गया।

## 16

### फ़रीसी इलाही निशान का तकाज़ा करते हैं

1 एक दिन फ़रीसी और सदूकी ईसा के पास आए। उसे परखने के लिए उन्होंने मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान की तरफ़ से कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उसका इख़्तियार साबित हो जाए। 2 लेकिन उसने जवाब दिया, “शाम को तुम कहते हो, ‘कल मौसम साफ़ होगा क्योंकि आसमान सुर्ख़ नज़र आता है।’ 3 और सुबह के वक़्त कहते हो, ‘आज तूफ़ान होगा क्योंकि आसमान सुर्ख़ है और बादल छाए हुए हैं।’ !रज़ तुम आसमान की हालत पर गौर करके सहीह नतीजा निकाल लेते हो, लेकिन ज़मानों की अलामतों पर गौर करके सहीह नतीजे तक पहुँचना तुम्हारे बस की बात नहीं है। 4 सिर्फ़ शरीर और

जिनाकार नसल इलाही निशान का तकाजा करती है। लेकिन उसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूनस नबी के निशान के।”

यह कहकर ईसा उन्हें छोड़कर चला गया।

### फरीसियों और सदकियों का खमीर

5 झील को पार करते वक्त शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल गए थे। 6 ईसा ने उनसे कहा, “खबरदार, फरीसियों और सदकियों के खमीर से होशियार रहना।”

7 शागिर्द आपस में बहस करने लगे, “वह इसलिए कह रहे होंगे कि हम खाना साथ नहीं लाए।”

8 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं। उसने कहा, “तुम आपस में क्यों बहस कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं है? 9 क्या तुम अभी तक नहीं समझते? क्या तुम्हें याद नहीं कि मैंने पाँच रोटियाँ लेकर 5,000 आदमियों को खाना खिला दिया और कि तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे? 10 या क्या तुम भूल गए हो कि मैंने सात रोटियाँ लेकर 4,000 आदमियों को खाना खिलाया और कि तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे? 11 तुम क्यों नहीं समझते कि मैं तुमसे खाने की बात नहीं कर रहा? सुनो मेरी बात! फरीसियों और सदकियों के खमीर से होशियार रहो!”

12 फिर उन्हें समझ आई कि ईसा उन्हें रोटी के खमीर से आगाह नहीं कर रहा था बल्कि फरीसियों और सदकियों की तालीम से।

### पतरस का इकरार

13 जब ईसा कैसरिया-फिलिप्पी के इलाके में पहुँचा तो उसने शागिर्दों से पूछा, “इब्ने-आदम लोगों के नज़दीक कौन है?”

14 उन्होंने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि यरमियाह या नबियों में से एक।”

15 उसने पूछा, “लेकिन तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?”

16 पतरस ने जवाब दिया, “आप जिंदा ख़ुदा के फ़रज़द मसीह हैं।”

17 ईसा ने कहा, “शमौन बिन यूनस, तू सुबारक है, क्योंकि किसी इनसान ने तुझ पर यह जाहिर नहीं किया बल्कि मेरे आसमानी बाप ने। 18 मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि तू पतरस यानी पत्थर है, और इसी पत्थर पर मैं अपनी जमात को तामीर करूँगा, ऐसी जमात जिस पर पाताल के दरवाज़े भी गालिब नहीं आएँगे। 19 मैं तुझे आसमान की बादशाही की कुंजियाँ दे दूँगा। जो कुछ तू ज़मीन पर बाँधेगा वह आसमान पर भी बाँधेगा। और जो कुछ तू ज़मीन पर खोलेगा वह आसमान पर भी खुलेगा।”

20 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया, “किसी को भी न बताओ कि मैं मसीह हूँ।”

### ईसा अपनी मौत का जिक्र करता है

21 उस वक्त से ईसा अपने शागिर्दों पर वाज़िह करने लगा, “लाज़िम है कि मैं यरूशलम जाकर कौम के बुज़ुर्गों, राहुनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हाथों बहुत दुख उठाऊँ। मुझे कत्ल किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन मैं जी उठूँगा।”

22 इस पर पतरस उसे एक तरफ ले जाकर समझाने लगा। “ऐ ख़ुदावंद, अल्लाह न करे कि यह कभी भी आपके साथ हो।”

23 ईसा ने मुड़कर पतरस से कहा, “शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू मेरे लिए ठोकर का बाइस है, क्योंकि तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इनसान की।”

24 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। 25 क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी खातिर अपनी जान खो दे शरी उसे पा लेगा। 26 क्या फ़ायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी जान से महसूम हो जाए? इनसान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है? 27 क्योंकि इब्ने-आदम अपने बाप के जलाल में अपने फ़रिश्तों के साथ आएगा, और उस वक्त वह हर एक को उसके काम का बदला देगा। 28 मैं तुम्हें सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही इब्ने-आदम को उस की बादशाही में आते हुए देखेंगे।”

## 17

### पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है

1 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ पतरस और यूहन्ना को अपने साथ लेकर ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। 2 वहाँ उस की शक्तो-सूरत उनके सामने बदल गई। उसका चेहरा सूरज की तरह चमकने लगा, और उसके कपड़े नूर की मानिंद सफ़ेद हो

गाए।<sup>3</sup> अचानक इलियास और मूसा जाहिर हुए और ईसा से बातें करने लगे।<sup>4</sup> पतरस बोल उठा, “खुदावंद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। अगर आप चाहें तो मैं तीन झोंपड़ियाँ बनाऊँगा, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक इलियास के लिए।”

<sup>5</sup> वह अभी बात कर ही रहा था कि एक चमकदार बादल आकर उन पर छा गया और बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, जिससे मैं खुश हूँ। इसकी सुनो।”

<sup>6</sup> वह सुनकर शागिर्द दहशत खाकर औंधे मुँह गिर गए।<sup>7</sup> लेकिन ईसा ने आकर उन्हें छुआ। उसने कहा, “उठो, मत डरो।”

<sup>8</sup> जब उन्होंने नज़र उठाई तो ईसा ने सिवा किसी को न देखा।

<sup>9</sup> वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, “जो कुछ तुमने देखा है उसे उस वक़्त तक किसी को न बताना जब तक कि इब्ने-आदम मुरदों में से जी न उठे।”

<sup>10</sup> शागिर्दों ने उससे पूछा, “शरीअत के उलमा क्यों कहते हैं कि मसीह की आमद से पहले इलियास का आना ज़रूरी है?”

<sup>11</sup> ईसा ने जवाब दिया, “इलियास तो ज़रूर सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा।<sup>12</sup> लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि इलियास तो आ चुका है और उन्होंने उसे नहीं पहचाना बल्कि उसके साथ जो चाहा किया। इसी तरह इब्ने-आदम भी उनके हाथों दुख उठाएगा।”

<sup>13</sup> फिर शागिर्दों को समझ आई कि वह उनके साथ यहया बपतिस्मा देनेवाले की बात कर रहा था।

**ईसा लडके में से बदरूह निकालता है**

<sup>14</sup> जब वह नीचे हज़म के पास पहुँचे तो एक आदमी ने ईसा के सामने आकर घूटने टेके<sup>15</sup> और कहा, “खुदावंद, मेरे बेटे पर रहम करें, उसे मिरगी के दौर पडते हैं और उसे शदीद तकलीफ़ उठानी पडती है। कई बार वह आग या पानी में गिर जाता है।<sup>16</sup> मैं उसे आपके शागिर्दों के पास लाया था, लेकिन वह उसे शफ़ा न दे सके।”

<sup>17</sup> ईसा ने जवाब दिया, “ईमान से ख़ाली और टेढ़ी नसल! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक तुम्हें बरदाश्त करूँ? लडके को मेरे पास ले आओ।”<sup>18</sup> ईसा ने बदरूह को डॉटा, तो वह लडके में से निकल गई। उसी लमहे उसे शफ़ा मिल गई।

<sup>19</sup> बाद में शागिर्दों ने अलहदगी में ईसा के पास आकर पूछा, “हम बदरूह को क्यों न निकाल सके?”

<sup>20</sup> उसने जवाब दिया, “अपने ईमान की कमी के सबब से। मैं तुम्हें सच बताता हूँ, अगर तुम्हारा ईमान राई के दाने के बराबर भी हो तो फिर तुम इस पहाड़ को कह सकोगे, ‘इधर से उधर खिसक जा,’ तो वह खिसक जाएगा। और तुम्हारे लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं होगा।<sup>21</sup> [लेकिन इस किस्म की बदरूह दुआ और रोज़े के बग़ैर नहीं निकलती।]”

**ईसा दूसरी बार अपनी मौत का ज़िक्र करता है**

<sup>22</sup> जब वह गलील में जमा हुए तो ईसा ने उन्हें बताया, “इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा।<sup>23</sup> वह उसे कत्ल करेंगे, लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

यह सुनकर शागिर्द निहायत गमगीन हुए।

**बैतुल-मुक़द्दस का टैक्स**

<sup>24</sup> वह कफ़र्नहूम पहुँचे तो बैतुल-मुक़द्दस का टैक्स जमा करनेवाले पतरस के पास आकर पूछने लगे, “क्या आपका उस्ताद बैतुल-मुक़द्दस का टैक्स अदा नहीं करता?”

<sup>25</sup> “जी, वह करता है,” पतरस ने जवाब दिया। वह घर में आया तो ईसा पहले ही बोलने लगा, “क्या ख़याल है शमौन, दुनिया के बादशाह किनसे झूटी और टैक्स लेते हैं, अपने फ़रज़ंदों से या अजनबियों से?”

<sup>26</sup> पतरस ने जवाब दिया, “अजनबियों से।”

ईसा बोला “तो फिर उनके फ़रज़ंद टैक्स देने से बरी हुए।<sup>27</sup> लेकिन हम उन्हें नाराज़ नहीं करना चाहते। इसलिए झील पर जाकर उसमें डोरी डाल देना। जो मछली तू पहले पकड़ेगा उसका मुँह खोलना तो उसमें से चाँदी का सिक्का निकलेगा। उसे लेकर उन्हें मेरे और अपने लिए अदा कर दे।”

## 18

**कौन सबसे बड़ा है?**

<sup>1</sup> उस वक़्त शागिर्द ईसा के पास आकर पूछने लगे, “आसमान की बादशाही में कौन सबसे बड़ा है?”

<sup>2</sup> जवाब में ईसा ने एक छोटे बच्चे को बुलाकर उनके दरमियान खड़ा किया<sup>3</sup> और कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ अगर तुम बदलकर छोटे बच्चों की मानिद न बनो तो तुम कभी आसमान की बादशाही में दाखिल नहीं होगे।<sup>4</sup> इसलिए जो भी



अपने आपको इस बच्चे की तरह छोटा बनाएगा वह आसमान में सबसे बड़ा होगा।<sup>5</sup> और जो भी मेरे नाम में इस जैसे छोटे बच्चे को कबूल करे वह मुझे कबूल करता है।

### आज़माइशें

6 लेकिन जो कोई इन छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए उसके लिए बेहतर है कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधकर उसे समुंद्र की गहराइयों में डुबो दिया जाए।<sup>7</sup> दुनिया पर उन चीजों की वजह से अफसोस जो गुनाह करने पर उकसाती हैं। लाज़िम है कि ऐसी आज़माइशें आएँ, लेकिन उस शख्स पर अफसोस जिसकी मारिफत वह आएँ।

8 अगर तेरा हाथ या पाँव तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काटकर फेंक देना। इससे पहले कि तुझे दो हाथों या दो पाँवों समेत जहन्नुम की अबदी आग में फेंका जाए, बेहतर यह है कि एक हाथ या पाँव से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाखिल हो।<sup>9</sup> और अगर तेरी आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकालकर फेंक देना। इससे पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम की आग में फेंका जाए बेहतर यह है कि एक आँख से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाखिल हो।

### खोई हुई भेड़ की तमसील

10 खबरदार! तुम इन छोटों में से किसी को भी हकीर न जानना। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि आसमान पर इनके फ़रिश्ते हर वक़्त मेरे बाप के चेहरे को देखते रहते हैं।<sup>11</sup> [क्योंकि इब्ने-आदम खोए हुआँ को ढूँडने और नजात देने आया है।]

12 तुम्हारा क्या खयाल है? अगर किसी आदमी की 100 भेड़ें हों और एक भटककर गुम हो जाए तो वह क्या करेगा? क्या वह बाकी 99 भेड़ें पहाड़ी इलाके में छोड़कर भटकी हुई भेड़ को ढूँडने नहीं जाएगा? <sup>13</sup> और मैं तुमको सच बताता हूँ कि भटकी हुई भेड़ के मिलने पर वह उसके बारे में उन बाकी 99 भेड़ों की निसबत कहीं ज्यादा ख़ुशी मनाएगा जो भटकी नहीं।<sup>14</sup> बिलकुल इसी तरह आसमान पर तुम्हारा बाप नहीं चाहता कि इन छोटों में से एक भी हलाक हो जाए।

### गुनाह में पड़े भाई से सुलूक

15 अगर तेरे भाई ने तेरा गुनाह किया हो तो अकेले उसके पास जाकर उस पर उसका गुनाह जाहिर कर। अगर वह तेरी बात माने तो तूने अपने भाई को जीत लिया।<sup>16</sup> लेकिन अगर वह न माने तो एक या दो और लोगों को अपने साथ ले जा ताकि तुम्हारी हर बात की दो या तीन गवाहों से तसदीक हो जाए।<sup>17</sup> अगर वह उनकी बात भी न माने तो जमात को बता देना। और अगर वह जमात की भी न माने तो उसके साथ गैरईमानदार या टैक्स लेनेवाले का-सा सुलूक कर।

### बाँधने और खोलने का इख्तियार

18 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ भी तुम ज़मीन पर बान्धोगे आसमान पर भी बाँधेगा, और जो कुछ ज़मीन पर खोलोगे आसमान पर भी खुलेगा।

19 मैं तुमको यह भी बताता हूँ कि अगर तुममें से दो शख्स किसी बात को माँगने पर मुत्फ़िक़ हो जाएँ तो मेरा आसमानी बाप तुमको बख़्शेगा।<sup>20</sup> क्योंकि जहाँ भी दो या तीन अफ़राद मेरे नाम में जमा हो जाएँ वहाँ मैं उनके दरमियान हूँगा।”

### मुआफ़ न करनेवाले नौकर की तमसील

21 फिर पतरस ने ईसा के पास आकर पूछा, “ख़ुदावंद, जब मेरा भाई मेरा गुनाह करे तो मैं कितनी बार उसे मुआफ़ करूँ? सात बार तक?”

22 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे बताता हूँ, सात बार नहीं बल्कि 77 बार।<sup>23</sup> इसलिए आसमान की बादशाही एक बादशाह की मानिंद है जो अपने नौकरों के कर्ज़ों का हिसाब-किताब करना चाहता था।<sup>24</sup> हिसाब-किताब शुरू करते वक़्त एक आदमी उसके सामने पेश किया गया जो अरबों के हिसाब से उसका कर्ज़दार था।<sup>25</sup> वह यह रकम अदा न कर सका, इसलिए उसके मालिक ने यह कर्ज़ वसूल करने के लिए हुक्म दिया कि उसे बाल-बच्चों और तमाम मिलकियत समेत फ़रोख्त कर दिया जाए।<sup>26</sup> यह सुनकर नौकर सँह के बल गिरा और मिन्नत करने लगा, ‘मुझे मोहलत दें, मैं पूरी रकम अदा कर दूँगा।’<sup>27</sup> बादशाह को उस पर तरस आया। उसने उसका कर्ज़ मुआफ़ करके उसे जाने दिया।

28 लेकिन जब यही नौकर बाहर निकला तो एक हमखिदमत मिला जो उसका चंद हजार रुपों का कर्ज़दार था। उसे पकड़कर वह उसका गला दबाकर कहने लगा, ‘अपना कर्ज़ अदा कर!’<sup>29</sup> दूसरा नौकर गिरकर मिन्नत करने लगा, ‘मुझे मोहलत दें, मैं आपको सारी रकम अदा कर दूँगा।’<sup>30</sup> लेकिन वह इसके लिए तैयार न हुआ, बल्कि जाकर उसे उस वक़्त तक जेल में डलवाया जब तक वह पूरी रकम अदा न कर दे।<sup>31</sup> जब बाकी नौकरों ने यह देखा तो उन्हें शदीद दुख हुआ और उन्होंने अपने मालिक के पास जाकर सब कुछ बता दिया जो हुआ था।<sup>32</sup> इस पर मालिक ने उस नौकर को अपने पास बुला लिया और कहा, ‘शरीर नौकर! जब तूने मेरी मिन्नत की तो मैंने तेरा पूरा कर्ज़ मुआफ़ कर दिया।<sup>33</sup> क्या लाज़िम न था कि

तु भी अपने साथी नौकर पर उतना रहम करता जितना मैंने तुझ पर किया था?' 34 गुस्से में मालिक ने उसे जेल के अफसरों के हवाले कर दिया ताकि उस पर उस वक्त तक तशद्द किया जाए जब तक वह कर्ज की पूरी रकम अदा न कर दे।

35 मेरा आसमानी बाप तुममें से हर एक के साथ भी ऐसा ही करेगा अगर तुमने अपने भाई को पूरे दिल से मुआफ़ न किया।"

## 19

तलाक के बारे में तालीम

1 यह कहने के बाद ईसा गलील को छोड़कर यहूदिया में दरियाए-यरदन के पार चला गया। 2 बड़ा हुजूम उसके पीछे हो लिया और उसने उन्हें वहाँ शफा दी।

3 कुछ फरीसी आए और उसे फँसाने की गरज़ से सवाल किया, "क्या जायज़ है कि मर्द अपनी बीवी को किसी भी वजह से तलाक दे?"

4 ईसा ने जवाब दिया, "क्या तुमने कलामे-मुकद्दस में नहीं पढा कि इब्तिदा में खालिक ने उन्हें मर्द और औरत बनाया?"

5 और उसने फरमाया, 'इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते हैं।' 6 यों वह कलामे-मुकद्दस के मुताबिक दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। जिसे अल्लाह ने जोड़ा है उसे इनसान जुदा न करे।"

7 उन्होंने एतराज़ किया, "तो फिर मूसा ने यह क्यों फरमाया कि आदमी तलाकनामा लिखकर बीवी को सखसत कर दे?"

8 ईसा ने जवाब दिया, "मूसा ने तुम्हारी सखतदिली की वजह से तुमको अपनी बीवी को तलाक देने की इजाज़त दी। लेकिन इब्तिदा में ऐसा न था। 9 मैं तुम्हें बताता हूँ, जो अपनी बीवी को जिसने जिना न किया हो तलाक दे और किसी और से शादी करे, वह जिना करता है।"

10 शागिर्दों ने उससे कहा, "अगर शौहर और बीवी का आपस का ताल्लुक ऐसा है तो शादी न करना बेहतर है।"

11 ईसा ने जवाब दिया, "हर कोई यह बात समझ नहीं सकता बल्कि सिर्फ वह जिसे इस काबिल बना दिया गया हो।

12 क्योंकि कुछ पैदाइश ही से शादी करने के काबिल नहीं होते, बाज़ को दूसरों ने यों बनाया है और बाज़ ने आसमान की बादशाही की खातिर शादी करने से इनकार किया है। लिहाज़ा जो यह समझ सके वह समझ ले।"

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन छोटे बच्चों को ईसा के पास लाया गया ताकि वह उन पर अपने हाथ रखकर दुआ करे। लेकिन शागिर्दों ने लानेवालों को मलामत की। 14 यह देखकर ईसा ने कहा, "बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि आसमान की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है।"

15 उसने उन पर अपने हाथ रखे और फिर वहाँ से चला गया।

अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाखिल हो सकते हैं

16 फिर एक आदमी ईसा के पास आया। उसने कहा, "उस्ताद, मैं कौन-सा नेक काम करूँ ताकि अबदी ज़िंदगी मिल जाए?"

17 ईसा ने जवाब दिया, "तू मुझे नेकी के बारे में क्यों पूछ रहा है? सिर्फ एक ही नेक है। लेकिन अगर तू अबदी ज़िंदगी में दाखिल होना चाहता है तो अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ार।"

18 आदमी ने पूछा, "कौन-से अहकाम?"

ईसा ने जवाब दिया, "कत्ल न करना, जिना न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना, 19 अपने बाप और अपनी माँ की इज़्जत करना और अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।"

20 जवान आदमी ने जवाब दिया, "मैंने इन तमाम अहकाम की पैरवी की है, अब क्या रह गया है?"

21 ईसा ने उसे बताया, "अगर तू कामिल होना चाहता है तो जा और अपनी पूरी जायदाद फरोख्त करके पैसे गरीबों में तक्रसीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान पर खज़ाना जमा हो जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।"

22 यह सुनकर नौजवान मायूस होकर चला गया, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।

23 इस पर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि दौलतमंद के लिए आसमान की बादशाही में दाखिल होना मुश्किल है। 24 मैं यह दुबारा कहता हूँ, अमीर के आसमान की बादशाही में दाखिल होने की निसबत ज़्यादा आसान यह है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।"

25 यह सुनकर शागिर्द निहायत हैरतज़दा हुए और पूछने लगे, "फिर किस को नजात हासिल हो सकती है?"

26 ईसा ने गौर से उनकी तरफ देखकर जवाब दिया, "यह इनसान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन अल्लाह के लिए सब कुछ मुमकिन है।"

27 फिर पतरस बोल उठा, “हम तो अपना सब कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं। हमें क्या मिलेगा?”

28 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, दुनिया की नई तखलीक पर जब इब्ने-आदम अपने जलाली तख्त पर बैठेगा तो तुम भी जिन्होंने मेरी पैरवी की है बारह तख्तों पर बैठकर इसराईल के बारह कबीलों की अदालत करोगे। 29 और जिसने भी मेरी खातिर अपने घरों, भाइयों, बहनों, बाप, माँ, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है उसे सौ गुना ज्यादा मिल जाएगा और मीरास में अबदी जिंदगी पाएगा। 30 लेकिन बहुत-से लोग जो अब अव्वल हैं उस वक़्त आखिर होंगे और जो अब आखिर हैं वह अव्वल होंगे।

## 20

### अंगूर के बाग में मज़दूर

1 क्योंकि आसमान की बादशाही उस ज़मीनदार से मुताबिकत रखती है जो एक दिन सुबह-सवेरे निकला ताकि अपने अंगूर के बाग के लिए मज़दूर ढूँढ़े। 2 वह उनसे दिहाड़ी के लिए चाँदी का एक सिक्का देने पर मुतफ़िक़ हुआ और उन्हें अपने अंगूर के बाग में भेज दिया। 3 नौ बजे वह दुबारा निकला तो देखा कि कुछ लोग अभी तक मंडी में फ़ारिग बैठे हैं। 4 उसने उनसे कहा, ‘तुम भी जाकर मेरे अंगूर के बाग में काम करो। मैं तुम्हें मुनासिब उजरत दूँगा।’ 5 चुनौचे वह काम करने के लिए चले गए। बारह बजे और तीन बजे दोपहर के वक़्त भी वह निकला और इस तरह के फ़ारिग मज़दूरों को काम पर लगाया। 6 फिर शाम के पाँच बजे गए। वह निकला तो देखा कि अभी तक कुछ लोग फ़ारिग बैठे हैं। उसने उनसे पूछा, ‘तुम क्यों पूरा दिन फ़ारिग बैठे रहे हो?’ 7 उन्होंने जवाब दिया, ‘इसलिए कि किसी ने हमें काम पर नहीं लगाया।’ उसने उनसे कहा, ‘तुम भी जाकर मेरे अंगूर के बाग में काम करो।’

8 दिन ढल गया तो ज़मीनदार ने अपने अफसर को बताया, ‘मज़दूरों को बुलाकर उन्हें मज़दूरी दे दे, आखिर में आनेवालों से शुरू करके पहले आनेवालों तक।’ 9 जो मज़दूर पाँच बजे आए थे उन्हें चाँदी का एक एक सिक्का मिल गया। 10 इसलिए जब वह आए जो पहले काम पर लगाए गए थे तो उन्होंने ज्यादा मिलने की तवक्को की। लेकिन उन्हें भी चाँदी का एक एक सिक्का मिला। 11 इस पर वह ज़मीनदार के खिलाफ़ बुडबुडाने लगे, 12 ‘यह आदमी जिन्हें आखिर में लगाया गया उन्होंने सिर्फ़ एक घंटा काम किया। तो भी आपने उन्हें हमारे बराबर की मज़दूरी दी हालाँकि हमें दिन का पूरा बोझ और धूप की शिष्ट बरदाश्त करनी पड़ी।’

13 लेकिन ज़मीनदार ने उनमें से एक से बात की, ‘यार, मैंने गलत काम नहीं किया। क्या तू चाँदी के एक सिक्के के लिए मज़दूरी करने पर मुतफ़िक़ न हुआ था? 14 अपने पैसे लेकर चला जा। मैं आखिर में काम पर लगनेवालों को उतना ही देना चाहता हूँ जितना तुझे। 15 क्या मेरा हक़ नहीं कि मैं जैसा चाहूँ अपने पैसे खर्च करूँ? या क्या तू इसलिए हसद करता है कि मैं फ़ैयाज़दिल हूँ?’

16 यों अव्वल आखिर में आएँगे और जो आखिरी हैं वह अव्वल हो जाएँगे।”

### ईसा तीसरी मरतबा अपनी मौत का जिक्र करता है

17 अब जब ईसा यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहा था तो बारह शागिर्दों को एक तरफ़ ले जाकर उसने उनसे कहा, 18 “हम यरूशलम की तरफ़ बढ़ रहे हैं। वहाँ इब्ने-आदम को राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हवाले कर दिया जाएगा। वह उस पर सजाए-मौत का फतवा देकर 19 उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले कर देंगे ताकि वह उसका मज़ाक़ उड़ाएँ, उसको कोड़े मारें और उसे मसलूब करें। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

### याक़ूब और यहन्ना की माँ की गुज़ारिश

20 फिर जबदी के बेटों याक़ूब और यहन्ना की माँ अपने बेटों को साथ लेकर ईसा के पास आई और सिजदा करके कहा, “आपसे एक गुज़ारिश है।”

21 ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहती है?”

उसने जवाब दिया, “अपनी बादशाही में मेरे इन बेटों में से एक को अपने दाएँ हाथ बैठने दें और दूसरे को बाएँ हाथ।”

22 ईसा ने कहा, “तुमको नहीं मालूम कि क्या माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने को हूँ?”

“जी, हम पी सकते हैं,” उन्होंने जवाब दिया।

23 फिर ईसा ने उनसे कहा, “तुम मेरा प्याला तो जरूर पीयोगे, लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा काम नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा और कौन बाएँ हाथ। मेरे बाप ने यह मक़ाम उन्हीं के लिए तैयार किया है जिनको उसने खुद मुकर्रर किया है।”

24 जब बाकी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें याकूब और यहन्ना पर गुस्सा आया। 25 इस पर ईसा ने उन सबको बुलाकर कहा, “तुम जानते हो कि कौमों के हुक्मरान अपनी रिआया पर रोब डालते हैं और उनके बड़े अफसर उन पर अपने इख्तियार का गलत इस्तेमाल करते हैं। 26 लेकिन तुम्हारे दरमियान ऐसा नहीं है। जो तुममें बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा खादिम बने 27 और जो तुममें अब्बल होना चाहे वह तुम्हारा गुलाम बने। 28 क्योंकि इब्ने-आदम भी इसलिए नहीं आया कि खिदमत ले बल्कि इसलिए कि खिदमत करे और अपनी जान फिघा के तौर पर देकर बहुतों को छुड़ाए।”

### दो अंधों की शफा

29 जब वह यरीह शहर से निकलने लगे तो एक बड़ा हजूम उनके पीछे चल रहा था। 30 दो अंधे रास्ते के किनारे बैठे थे। जब उन्होंने सुना कि ईसा गुज़र रहा है तो वह चिल्लाने लगे, “खुदावंद, इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”

31 हजूम ने उन्हें डौटकर कहा, “खामोश!” लेकिन वह और भी ऊँची आवाज़ से पुकारते रहे, “खुदावंद, इब्ने-दाऊद, हम पर रहम करें।”

32 ईसा रुक गया। उसने उन्हें अपने पास बुलाया और पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?”

33 उन्होंने जवाब दिया, “खुदावंद, यह कि हम देख सकें।”

34 ईसा को उन पर तरस आया। उसने उनकी आँखों को छुआ तो वह फौरन बहाल हो गईं। फिर वह उसके पीछे चलने लगे।

## 21

### यरूशालम में पुरजोश इस्तक्रबाल

1 वह यरूशालम के करीब बैत-फगे पहुँचे। यह गाँव जैतून के पहाड़ पर वाके था। ईसा ने दो शागिर्दों को भेजा 2 और कहा, “सामनेवाले गाँव में जाओ। वहाँ तुमको फौरन एक गधी नज़र आएगी जो अपने बच्चे के साथ बँधी हुई होगी। उन्हें खोलकर यहाँ ले आओ। 3 अगर कोई यह देखकर तुमसे कुछ कहे तो उसे बता देना, ‘खुदावंद को इनकी ज़रूरत है।’ यह सुनकर वह फौरन इन्हें भेज देगा।”

4 यों नबी की यह पेशगोई पूरी हुई,

5 “सियून बेटी को बता देना,

देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है।

वह हलीम है और गधे पर,

हाँ गधी के बच्चे पर सवार है।”

6 दोनों शागिर्द चले गए। उन्होंने वैया ही किया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 7 वह गधी को बच्चे समेत ले आए और अपने कपड़े उन पर रख दिए। फिर ईसा उन पर बैठ गया। 8 जब वह चल पड़ा तो बहुत ज्यादा लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए। बाज़ ने शाखें भी उसके आगे आगे रास्ते में बिछा दीं जो उन्होंने दरख्तों से काट ली थीं।

9 लोग ईसा के आगे और पीछे चल रहे थे और चिल्लाकर यह नारे लगा रहे थे,

“इब्ने-दाऊद को होशाना! \*

मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।

आसमान की बुलंदियों पर होशाना।” †

10 जब ईसा यरूशालम में दाखिल हुआ तो पूरा शहर हिल गया। सबने पूछा, “यह कौन है?”

11 हजूम ने जवाब दिया, “यह ईसा है, वह नबी जो गलील के नासरत से है।”

### ईसा बैतूल-मुक़द्दस में जाता है

12 और ईसा बैतूल-मुक़द्दस में जाकर उन सबको निकालने लगा जो वहाँ कुरबानियों के लिए दरकार चीज़ों की खरीदो-फरोख्त कर रहे थे। उसने सिक्कों का तबादला करनेवालों की मेज़ें और कबूतर बेचनेवालों की कुरसियों उलट दीं 13 और उनसे कहा, “कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘मेरा घर दुआ का घर कहलाएगा।’ लेकिन तुमने उसे डाकुओं के अड्डे में बदल दिया है।”

14 अंधे और लँगड़े बैतूल-मुक़द्दस में उसके पास आए और उसने उन्हें शफा दी। 15 लेकिन राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा नाराज़ हुए जब उन्होंने उसके हैरतअंगेज़ काम देखे और यह कि बच्चे बैतूल-मुक़द्दस में “इब्ने-दाऊद को होशाना” चिल्ला रहे हैं। 16 उन्होंने उससे पूछा, “क्या आप सुन रहे हैं कि यह बच्चे क्या कह रहे हैं?”

\* 21:9 होशाना (इब्रानी: मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उम्सूर भी पाया जाता है।

† 21:9 होशाना (इब्रानी: मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उम्सूर भी पाया जाता है।

“जी,” ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कलामे-मुकद्दस में कभी नहीं पढा कि ‘तूने छोटे बच्चों और शीरखारों की ज़बाब को तैयार किया है ताकि वह तेरी तमजीद करें?’”

17 फिर वह उन्हें छोड़कर शहर से निकला और बैत-अनियाह पहुँचा जहाँ उसने रात गुज़ारी।

अंजीर के दरख्त पर लानत

18 अगले दिन सुबह-सवेरे जब वह यरूशलम लौट रहा था तो ईसा को भूक लगी। 19 रास्ते के करीब अंजीर का एक दरख्त देखकर वह उसके पास गया। लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि फल नहीं लगा बल्कि सिर्फ पत्ते ही पत्ते हैं। इस पर उसने दरख्त से कहा, “अब से कभी भी तुझमें फल न लगे!” दरख्त फ़ौरन सूख गया।

20 यह देखकर शागिर्द हैरान हुए और कहा, “अंजीर का दरख्त इतनी जल्दी से किस तरह सूख गया?”

21 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, अगर तुम शक न करो बल्कि ईमान रखो तो फिर तुम न सिर्फ ऐसा काम कर सकोगे बल्कि इससे भी बड़ा। तुम इस पहाड़ से कहोगे, ‘उठ, अपने आपको समुंद्र में गिरा दे’ तो यह हो जाएगा।

22 अगर तुम ईमान रखो तो जो कुछ भी तुम दुआ में माँगोगे वह तुमको मिल जाएगा।”

किसने ईसा को इख्तियार दिया?

23 ईसा बैतुल-मुकद्दस में दाखिल होकर तालीम देने लगा। इतने में राहुनमा इमाम और क़ौम के बुज़ुर्ग उसके पास आए और पूछा, “आप यह सब कुछ किस इख्तियार से कर रहे हैं? किसने आपको यह इख्तियार दिया है?”

24 ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको बता दूँगा कि मैं यह किस इख्तियार से कर रहा हूँ। 25 मुझे बताओ कि यहया का बपतिस्मा कहाँ से था—क्या वह आसमानी था या इनसानी?”

वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें ‘आसमानी’ तो वह पड़ेगा, ‘तो फिर तुम उस पर ईमान क्यों न लाए?’

26 लेकिन हम कैसे कह सकते हैं कि वह इनसानी था? हम तो आम लोगों से डरते हैं, क्योंकि वह सब मानते हैं कि यहया नबी था।” 27 चुनौचे उन्होंने जवाब दिया, “हम नहीं जानते।”

ईसा ने कहा, “फिर मैं भी तुमको नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख्तियार से कर रहा हूँ।

दो बेटों की तमसील

28 तुम्हारा क्या खयाल है? एक आदमी के दो बेटे थे। बाप बड़े बेटे के पास गया और कहा, ‘बेटा, आज अंगूर के बाग में जाकर काम कर।’ 29 बेटे ने जवाब दिया, ‘मैं जाना नहीं चाहता,’ लेकिन बाद में उसने अपना खयाल बदल लिया और बाग में चला गया। 30 इतने में बाप छोटे बेटे के पास भी गया और उसे बाग में जाने को कहा। ‘जी जनाब, मैं जाऊँगा,’ छोटे बेटे ने कहा। लेकिन वह न गया। 31 अब मुझे बताओ कि किस बेटे ने अपने बाप की मरज़ी पूरी की?”

“पहले बेटे ने,” उन्होंने जवाब दिया।

ईसा ने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि टैक्स लेनेवाले और कसबियाँ तुमसे पहले अल्लाह की बादशाही में दाखिल हो रहे हैं। 32 क्योंकि यहया तुमको रास्तबाज़ी की राह दिखाने आया और तुम उस पर ईमान न लाए। लेकिन टैक्स लेनेवाले और कसबियाँ उस पर ईमान लाए। और यह देखकर भी तुमने अपना खयाल न बदला और उस पर ईमान न लाए।

अंगूर के बाग में मुज़ारेओ की बगावत

33 एक और तमसील सुनो। एक ज़मीनदार था जिसने अंगूर का बाग लगाया। उसने उस की चारदीवारी बनाई, अंगूरों का रस निकालने के लिए एक गढ़े की खुदाई की और पहरेदारों के लिए बुर्ज़ तामीर किया। फिर वह उसे मुज़ारेओ के सुपुर्द करके बैस्ने-मुल्क चला गया। 34 जब अंगूर को तोड़ने का वक़्त करीब आ गया तो उसने अपने नौकरों को मुज़ारेओ के पास भेज दिया ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा वसूल करें। 35 लेकिन मुज़ारेओ ने उसके नौकरों को पकड़ लिया। उन्होंने एक की पिटाई की, दूसरे को कल्ल किया और तीसरे को संगसार किया। 36 फिर मालिक ने मज़ीद नौकरों को उनके पास भेज दिया जो पहले की निसबत ज्यादा थे। लेकिन मुज़ारेओ ने उनके साथ भी वही सलूक किया। 37 आखिरकार ज़मीनदार ने अपने बेटे को उनके पास भेजा। उसने कहा, ‘आखिर मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे।’ 38 लेकिन बेटे को देखकर मुज़ारेओ एक दूसरे से कहने लगे, ‘यह ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे कल्ल करके उस की मीरास पर कब्ज़ा कर लें।’ 39 उन्होंने उसे पकड़कर बाग से बाहर फेंक दिया और कल्ल किया।”

40 इतने में पूछा, “अब बताओ, बाग का मालिक जब आएगा तो उन मुज़ारेओ के साथ क्या करेगा?”

41 उन्होंने जवाब दिया, “वह उन्हें बुरी तरह तबाह करेगा और बाग को दूसरों के सुपुर्द कर देगा, ऐसे मुज़ारेओ के सुपुर्द जो वक़्त पर उसे फ़सल का उसका हिस्सा देंगे।”

42 ईसा ने उनसे कहा, “क्या तुमने कभी कलाम का यह हवाला नहीं पढा,

‘जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद किया,

वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।

यह रब ने किया

और देखने में कितना हैरतअंगेज है’?

43 इसलिए मैं तुम्हें बताता हूँ कि अल्लाह की बादशाही तुमसे ले ली जाएगी और एक ऐसी कौम को दी जाएगी जो इसके मुताबिक फल लाएगी। 44 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो जाएगा, जबकि जिस पर वह खुद गिरेगा उसे वह पीस डालेगा।”

45 ईसा की तमसीलें सुनकर राहनुमा इमाम और फ़रीसी समझ गए कि वह हमारे बारे में बात कर रहा है। 46 उन्होंने ईसा को गिरिफ्तार करने की कोशिश की, लेकिन वह अवाम से उरते थे क्योंकि वह समझते थे कि ईसा नहीं है।

## 22

### बड़ी ज़ियाफत की तमसील

1 ईसा ने एक बार फिर तमसीलों में उनसे बात की। 2 “आसमान की बादशाही एक बादशाह से मुताबिकत रखती है जिसने अपने बेटे की शादी की ज़ियाफत की तैयारियाँ करवाई। 3 जब ज़ियाफत का वक्त आ गया तो उसने अपने नौकरों को मेहमानों के पास यह इतला देने के लिए भेजा कि वह आएँ, लेकिन वह आना नहीं चाहते थे। 4 फिर उसने मज़ीद कुछ नौकरों को भेजकर कहा, ‘मेहमानों को बताना कि मैंने अपना खाना तैयार कर रखा है। बैलों और मोटे-ताजे बछड़ों को जबह किया गया है, 5 सब कुछ तैयार है। आएँ, ज़ियाफत में शरीक हो जाएँ।’ लेकिन मेहमानों ने परवा न की बल्कि अपने मुख्तलिफ कामों में लग गए। एक अपने खेत को चला गया, दूसरा अपने कारोबार में मसरूफ़ हो गया। 6 बाकियों ने बादशाह के नौकरों को पकड़ लिया और उनसे बुरा सुलूक करके उन्हें कत्ल किया। 7 बादशाह बड़े तैश में आ गया। उसने अपनी फौज को भेजकर कातिलों को तबाह कर दिया और उनका शहर जला दिया। 8 फिर उसने अपने नौकरों से कहा, ‘शादी की ज़ियाफत तो तैयार है, लेकिन जिन मेहमानों को मैंने दावत दी थी वह आने के लायक नहीं थे। 9 अब वहाँ जाओ जहाँ सड़के शहर से निकलती हैं और जिससे भी मुलाकात हो जाए उसे ज़ियाफत के लिए दावत दे देना।’ 10 चुनौचे नौकर सड़कों पर निकले और जिससे भी मुलाकात हुई उसे लाए, खाह वह अच्छा था या बुरा। यों शादी हाल मेहमानों से भर गया।

11 लेकिन जब बादशाह मेहमानों से मिलने के लिए अंदर आया तो उसे एक आदमी नज़र आया जिसने शादी के लिए मुनासिब कपड़े नहीं पहने थे। 12 बादशाह ने पूछा, ‘दोस्त, तुम शादी का लिबास पहने बग़ैर अंदर किस तरह आए?’ वह आदमी कोई जवाब न दे सका। 13 फिर बादशाह ने अपने दरबारियों को हुक्म दिया, ‘इसके हाथ और पाँव बाँधकर इसे बाहर तारीकी में फेंक दो, वहाँ जहाँ लोग रोते और दौंत पीसते रहेंगे।’

14 क्योंकि बुलाए हुए तो बहुत हैं, लेकिन चुने हुए कम।”

### क्या टैक्स देना जायज़ है?

15 फिर फ़रीसियों ने जाकर आपस में मशवरा किया कि हम ईसा को किस तरह ऐसी बात करने के लिए उभारें जिससे उसे पकड़ा जा सके। 16 इस मक़सद के तहत उन्होंने अपने शागिर्दों को हेरोदेस के पैरोकारों समेत ईसा के पास भेजा। उन्होंने कहा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और दियानतदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं। आप किसी की परवा नहीं करते क्योंकि आप ग़ैरजानिबदार हैं। 17 अब हमें अपनी राय बताएँ। क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़?”

18 लेकिन ईसा ने उनकी बुरी नीयत पहचान ली। उसने कहा, “रियाकारो, तुम मुझे क्यों फँसाना चाहते हो? 19 मुझे वह सिक्का दिखाओ जो टैक्स अदा करने के लिए इस्तेमाल होता है।”

वह उसके पास चाँदी का एक रोमी सिक्का ले आए 20 तो उसने पूछा, “किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा है?”

21 उन्होंने जवाब दिया, “शहनशाह का।”

उसने कहा, “तो जो शहनशाह का है शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।”

22 उसका यह जवाब सुनकर वह हक्का-बक्का रह गए और उसे छोड़कर चले गए।

### क्या हम जी उठेंगे?

23 उस दिन सदकी ईसा के पास आए। सदकी नहीं मानते कि रोज़े-क्रियामत मुरदे जी उठेंगे। उन्होंने ईसा से एक सवाल किया। 24 “उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो तो भाई का फ़र्ज़ है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 25 अब फ़र्ज़ करें कि हमारे दरमियान सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फ़ौत हुआ। इसलिए दूसरे भाई ने बेवा से शादी की। 26 लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद दग़िरे हर भाई बेवा से शादी

करने के बाद मर गया। 27 आखिर में बेवा भी फौत हो गई। 28 अब बताएँ कि क्रियामत के दिन वह किसकी बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की थी।”

29 ईसा ने जवाब दिया, “तुम इसलिए गलती पर हो कि न तुम कलामे-मुकद्दस से वाकिफ हो, न अल्लाह की कुदरत से।

30 क्योंकि क्रियामत के दिन लोग न शादी करेंगे न उनकी शादी कराई जाएगी बल्कि वह आसमान पर फरिश्तों की मानिंद होंगे। 31 रही यह बात कि मुरदे जी उठेंगे, क्या तुमने वह बात नहीं पढ़ी जो अल्लाह ने तुमसे कही? 32 उसने फरमाया, ‘मैं इब्राहिम का खुदा, इसहाक का खुदा और याकूब का खुदा हूँ,’ हालाँकि उस वक्त तीनों काफ़ी अरसे से मर चुके थे। इसका मतलब है कि यह हकीकत में ज़िदा है। क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं बल्कि ज़िंदों का खुदा है।”

33 यह सुनकर हुजूम उस की तालीम के बाइस हैरान रह गया।

### अव्वल हुक्म

34 जब फ़रीसियों ने सुना कि ईसा ने सदूकियों को लाजवाब कर दिया है तो वह जमा हुए। 35 उनमें से एक ने जो शरीअत का आलिम था उसे फँसाने के लिए सवाल किया, 36 “उस्ताद, शरीअत में सबसे बड़ा हुक्म कौन-सा है?”

37 ईसा ने जवाब दिया, “ ‘रब अपने खुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे जहन से प्यार करना।’

38 यह अव्वल और सबसे बड़ा हुक्म है। 39 और दूसरा हुक्म इसके बराबर यह है, ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ 40 तमाम शरीअत और नबियों की तालीमत इन दो अहकाम पर मबनी है।”

### मसीह के बारे में सवाल

41 जब फ़रीसी इकट्ठे थे तो ईसा ने उनसे पूछा, 42 “तुम्हारा मसीह के बारे में क्या खयाल है? वह किसका फ़रजंद है?” उन्होंने जवाब दिया, “वह दाऊद का फ़रजंद है।”

43 ईसा ने कहा, “तो फिर दाऊद रूहुल-कुद्स की मारिफ़त उसे किस तरह ‘रब’ कहता है? क्योंकि वह फ़रमाता है,

44 ‘रब ने मेरे रब से कहा,

मेरे दहने हाथ बैठ,

जब तक मैं तेरे दुश्मनों को

तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।’

45 दाऊद तो खुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह उसका फ़रजंद हो सकता है?”

46 कोई भी जवाब न दे सका, और उस दिन से किसी ने भी उससे मज़ीद कुछ पूछने की ज़रत न की।

## 23

### उलमा और फ़रीसियों से खबरदार

1 फिर ईसा हुजूम और अपने शागिर्दों से मुखातिब हुआ, 2 “शरीअत के उलमा और फ़रीसी मूसा की कुरसी पर बैठे हैं। 3 चुनौचे जो कुछ वह तुमको बताते हैं वह करो और उसके मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारो। लेकिन जो कुछ वह करते हैं वह न करो, क्योंकि वह खुद अपनी तालीम के मुताबिक ज़िंदगी नहीं गुज़ारते। 4 वह भारी गठडियों बौध बौधकर लोगों के कंधों पर रख देते हैं, लेकिन खुद उन्हें उठाने के लिए एक उँगली तक हिलाने को तैयार नहीं होते। 5 जो भी करते हैं दिखावे के लिए करते हैं। जो तावीज़ \* वह अपने बाजूओं और पेशानियों पर बाँधते और जो फुँदने अपने लिबास से लगाते हैं वह खास बड़े होते हैं। 6 उनकी बस एक ही खाहिश होती है कि ज़ियाफ़तों और इबादतखानों में इज़्जत की कुरसियों पर बैठ जाएँ। 7 जब लोग बाजारों में सलाम करके उनकी इज़्जत करते और ‘उस्ताद’ कहकर उनसे बात करते हैं तो फिर वह खुश हो जाते हैं। 8 लेकिन तुमको उस्ताद नहीं कहलाना चाहिए, क्योंकि तुम्हारा सिर्फ़ एक ही उस्ताद है जबकि तुम सब भाई हो। 9 और दुनिया में किसी को ‘बाप’ कहकर उससे बात न करो, क्योंकि तुम्हारा एक ही बाप है और वह आसमान पर है। 10 हादी न कहलाना क्योंकि तुम्हारा सिर्फ़ एक ही हादी है यानी अल-मसीह। 11 तुममें से सबसे बड़ा शख्स तुम्हारा खादिम होगा। 12 क्योंकि जो भी अपने आपको सरफ़राज़ करेगा उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आपको पस्त करेगा उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।

### उनकी रियाकारी पर अफ़सोस

13 शरीअत के आलिमों और फ़रीसियों, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम लोगों के सामने आसमान की बादशाही पर ताला लगाते हो। न तुम खुद दाखिल होते हो, न उन्हें दाखिल होने देते हो जो अंदर जाना चाहते हैं।

14 [शरीअत के आलिमों और फ़रीसियों, तुम पर अफ़सोस! रियाकारो! तुम बेवाओं के घरों पर कब्ज़ा कर लेते और दिखावे के लिए लंबी लंबी नमाज़ पढते हो। इसलिए तुम्हें ज़्यादा सज़ा मिलेगी।]

\* 23:5 तावीज़ों में तैरत के हवालागत लिखकर रखे जाते थे।

15 श्रीअत के आलिमो और फरीसियो, तुम पर अफसोस! रियाकारो! तुम एक नौमरीद बनाने की खातिर खूशकी और तरी के लंबे सफर करते हो। और जब इसमें कामयाब हो जाते हो तो तुम उस शख्स को अपनी निसबत जहन्नुम का दुगना शरीर फरजंद बना देते हो। 16 अंधे राहनुमाओ, तुम पर अफसोस! तुम कहते हो, 'अगर कोई बैतुल-मुकद्दस की कसम खाए तो जरूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन अगर वह बैतुल-मुकद्दस के सोने की कसम खाए तो लाजिम है कि उसे पूरा करे।' 17 अंधे अहमको! ज्यादा अहम किया है, सोना या बैतुल-मुकद्दस जो सोने को मखसूसो-मुकद्दस बनाता है? 18 तुम यह भी कहते हो, 'अगर कोई कुरबानगाह की कसम खाए तो जरूरी नहीं कि वह उसे पूरा करे। लेकिन अगर वह कुरबानगाह पर पड़े हदिये की कसम खाए तो लाजिम है कि वह उसे पूरा करे।' 19 अंधो! ज्यादा अहम किया है, हदिया या कुरबानगाह जो हदिये को मखसूसो-मुकद्दस बनाती है? 20 गरज, जो कुरबानगाह की कसम खाता है वह उन तमाम चीजों की कसम भी खाता है जो उस पर पड़ी हैं। 21 और जो बैतुल-मुकद्दस की कसम खाता है वह उस की भी कसम खाता है जो उसमें सुकूनत करता है। 22 और जो आसमान की कसम खाता है वह अल्लाह के तख्त की और उस पर बैठनेवाले की कसम भी खाता है।

23 श्रीअत के आलिमो और फरीसियो, तुम पर अफसोस! रियाकारो! गो तुम बड़ी एहतियात से पौदीने, अजवायन और जर्री का दसवों हिस्सा हदिये के लिए मखसूस करते हो, लेकिन तुमने श्रीअत की ज्यादा अहम बातों को नजरंदाज कर दिया है यानी इनसाफ, रहम और वफादारी को। लाजिम है कि तुम यह काम भी करो और पहला भी न छोड़ो। 24 अंधे राहनुमाओ! तुम अपने मशरूब छानते हो ताकि गलती से मच्छर न पी लिया जाए, लेकिन साथ साथ ऊँट को निगल लेते हो।

25 श्रीअत के आलिमो और फरीसियो, तुम पर अफसोस! रियाकारो! तुम बाहर से हर प्याले और बरतन की सफाई करते हो, लेकिन अंदर से वह लूट-मार और ऐशपरस्ती से भरे होते हैं। 26 अंधे फरीसियो, पहले अंदर से प्याले और बरतन की सफाई करो, और फिर वह बाहर से भी पाक-साफ हो जाएंगे।

27 श्रीअत के आलिमो और फरीसियो, तुम पर अफसोस! रियाकारो! तुम ऐसी कब्रों से मुताबिकत रखते हो जिन पर सफेदी की गई हो। गो वह बाहर से दिलकश नजर आती हैं, लेकिन अंदर से वह मुरदों की हड्डियों और हर किस्म की नापाकी से भरी होती हैं। 28 तुम भी बाहर से रास्तबाज दिखाई देते हो जबकि अंदर से तुम रियाकारी और बेदीनी से मामूर होते हो।

29 श्रीअत के आलिमो और फरीसियो, तुम पर अफसोस! रियाकारो! तुम नबियों के लिए कब्रें तामीर करते और रास्तबाजों के मज़ार सजाते हो। 30 और तुम कहते हो, 'अगर हम अपने बापदादा के जमाने में जिंदा होते तो नबियों को कत्ल करने में शरीक न होते।' 31 लेकिन यह कहने से तुम अपने खिलाफ गवाही देते हो कि तुम नबियों के क्रातिलों की औलाद हो। 32 अब जाओ, वह काम मुकम्मल करो जो तुम्हारे बापदादा ने अधूरा छोड़ दिया था। 33 सॉपो, ज़हरीले सॉपों के बच्चो! तुम किस तरह जहन्नुम की सजा से बच पाओगे? 34 इसलिए मैं नबियों, दानिशमंदों और श्रीअत के आलिमों को तुम्हारे पास भेज देता हूँ। उनमें से बाज को तुम कत्ल और मसलूब करोगे और बाज को अपने इबादतखानों में ले जाकर कोड़े लगावाओगे और शहर बशहर उनका ताक़ुब करोगे। 35 नतीजे में तुम तमाम रास्तबाजों के कत्ल के जिम्मादार ठहरोगे —रास्तबाज हाबील के कत्ल से लेकर जकारियाह बिन बरकियाह के कत्ल तक जिसे तुमने बैतुल-मुकद्दस के दरवाजे और उसके सहन में मौजूद कुरबानगाह के दरमियान मार डाला। 36 मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह सब कुछ इसी नसल पर आएगा।

### यस्शलम पर अफसोस

37 हाय यस्शलम, यस्शलम! तू जो नबियों को कत्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैगंबरों को संगसार करती है। मैंने कितनी ही बार तेरी औलाद को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मुरगी अपने बच्चों को अपने परों तले जमा करके महफूज कर लेती है। लेकिन तुमने न चाहा। 38 अब तुम्हारे घर को वीरानो-सुनसान छोड़ा जाएगा। 39 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ, तुम मुझे उस वक़्त तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो कि मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।”

## 24

### बैतुल-मुकद्दस पर आनेवाली तबाही

1 ईसा बैतुल-मुकद्दस को छोड़कर निकल रहा था कि उसके शागिर्द उसके पास आए और बैतुल-मुकद्दस की मुख्तलिफ इमारतों की तरफ उस की तबज्जुह दिलाने लगे। 2 लेकिन ईसा ने जवाब में कहा, “क्या तुमको यह सब कुछ नजर आता है? मैं तुमको सच बताता हूँ कि यहाँ पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा बल्कि सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

### मुसीबतों और इंजारसानियों की पेशगोई

3 बाद में ईसा जैतून के पहाड़ पर बैठ गया। शागिर्द अकेले उसके पास आए। उन्होंने कहा, “हमें ज़रा बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नजर आएगा जिससे पता चलेगा कि आप आनेवाले हैं और यह दुनिया खत्म होनेवाली है?”



4 ईसा ने जवाब दिया, “खबरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। 5 क्योंकि बहुत-से लोग मेरा नाम लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ।’ यों वह बहुतों को गुमराह कर देंगे। 6 जंगों की खबरें और अफवाहें तुम तक पहुँचेंगी, लेकिन मुहतात रहो ताकि तुम धरना न जाओ। क्योंकि लाजिम है कि यह सब कुछ पेश आए। तो भी अभी आखिरत नहीं होगी। 7 एक क्रौम दूसरी के खिलाफ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही दूसरी के खिलाफ। काल पड़ेंगे और जगह जगह जलजले आएँगे। 8 लेकिन यह सिर्फ दर्द-ज़ह की इब्तिदा ही होगी।

9 फिर वह तुमको बड़ी मुसीबत में डाल देंगे और तुमको कत्ल करेंगे। तमाम क्रौमों में तुमसे इसलिये नफरत करेंगी कि तुम मेरे पैरोकार हो। 10 उस वक़्त बहुत-से लोग ईमान से बरग़शता होकर एक दूसरे को दुश्मन के हवाले करेंगे और एक दूसरे से नफरत करेंगे। 11 बहुत-से झूठे नबी खड़े होकर बहुत-से लोगों को गुमराह कर देंगे। 12 बेदीनी के बह जाने की वजह से बेशतर लोगों की मुहब्बत ठंडी पड़ जाएगी। 13 लेकिन जो आखिर तक कायम रहेगा उसे नजात मिलेगी। 14 और बादशाही की इस खुशखबरी के पैगाम का एलान पूरी दुनिया में किया जाएगा ताकि तमाम क्रौमों के सामने उस की गवाही दी जाए। फिर ही आखिरत आएगी।

### बैतुल-मुक़द्दस की बेहुरमती

15 एक दिन आएगा जब तुम मुक़द्दस मक़ाम में वह कुछ खड़ा देखोगे जिसका ज़िक्र दानियाल नबी ने किया और जो बेहुरमती और तबाही का बाइस है।” (कारी इस पर ध्यान दे!) 16 “उस वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भागकर पहाड़ी इलाके में पनाह लें। 17 जो अपने घर की छत पर हो वह घर में से कुछ साथ ले जाने के लिए न उतरे। 18 जो खेत में हो वह अपनी चादर साथ ले जाने के लिए वापस न जाए। 19 उन खवातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों। 20 दूआ करो कि तुमको सर्दियों के मौसम में या सबत के दिन हिजरत न करनी पड़े। 21 क्योंकि उस वक़्त ऐसी शदीद मुसीबत होगी कि दुनिया की तखलीक से आज तक देखने में न आई होगी। इस क्रिम की मुसीबत बाद में भी कभी नहीं आएगी। 22 और अगर इस मुसीबत का दौरानिया मुख़तसर न किया जाता तो कोई न बचता। लेकिन अल्लाह के चुने हुएों की खातिर इसका दौरानिया मुख़तसर कर दिया जाएगा।

23 उस वक़्त अगर कोई तुमको बताए, ‘देखो, मसीह यहाँ है’ या ‘वह वहाँ है’ तो उस की बात न मानना। 24 क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठ खड़े होंगे जो बड़े अजीबो-ग़रीब निशान और मोजिजे दिखाएँगे ताकि अल्लाह के चुने हुए लोगों को भी ग़लत रास्ते पर डाल दें—अगर यह मुमकिन होता। 25 देखो, मैंने तुम्हें पहले से इससे आगाह कर दिया है।

26 चुनौचे अगर कोई तुमको बताए, ‘देखो, वह रेगिस्तान में है’ तो वहाँ जाने के लिए न निकलना। और अगर कोई कहे, ‘देखो, वह अंदरूनी कमरों में है’ तो उसका यकीन न करना। 27 क्योंकि जिस तरह बादल की बिजली मशरिफ़ में कड़ककर मगरिब तक चमकती है उसी तरह इब्ने-आदम की आमद भी होगी।

28 जहाँ भी लाश पड़ी हो वहाँ गिद्ध जमा हो जाएँगे।

### इब्ने-आदम की आमद

29 मुसीबत के उन दिनों के ऐन बाद सूरज तारीक हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो जाएगी। सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे और आसमान की कुव्वतें हिलाई जाएँगी। 30 उस वक़्त इब्ने-आदम का निशान आसमान पर नज़र आएगा। तब दुनिया की तमाम क्रौमों मातम करेंगी। वह इब्ने-आदम को बड़ी क़ुदरत और जलाल के साथ आसमान के बादलों पर आते हुए देखेगी। 31 और वह अपने फ़रिश्तों को बिगुल की ऊँची आवाज़ के साथ भेज देगा ताकि उसके चुने हुएों को चारों तरफ से जमा करें, आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक इक़ठा करें।

### अंज़ीर के दरख़्त से सबक

32 अंज़ीर के दरख़्त से सबक सीखो। ज्योंही उस की शाखें नरम और लचकदार हो जाती हैं और उनसे कोपलें फ़ूट निकलती हैं तो तुमको मालूम हो जाता है कि गरमियों का मौसम करीब आ गया है। 33 इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात देखोगे तो जान लो कि इब्ने-आदम की आमद करीब बल्कि दरवाज़े पर है। 34 मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस नसल के ख़त्व होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 35 आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक कायम रहेगीं।

### किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

36 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस दिन या कौन-सी घड़ी रूनुमा होगा। आसमान के फ़रिश्तों और फ़रज़ंद को भी इल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को। 37 जब इब्ने-आदम आएगा तो हालात नूह के दिनों जैसे होंगे। 38 क्योंकि सैलाब से पहले के दिनों में लोग उस वक़्त तक खाते-पीते और शादियाँ करते करते रहे जब तक नूह क़शती में दाख़िल न हो गया।

39 वह उस वक़्त तक आनेवाली मूसीबत के बारे में लाइलूम रहे जब तक सैलाब आकर उन सबको बहा न ले गया। जब इब्ने-आदम आया तो इसी किस्म के हालात होंगे। 40 उस वक़्त दो अफ़रद खेत में होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा। 41 दो खवातीन चक्की पर गंदुम पीस रही होंगी, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे छोड़ दिया जाएगा।

42 इसलिए चौकस रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा ख़ुदाबंद किस दिन आ जाएगा। 43 यकीन जानो, अगर किसी घर के मालिक को मालूम होता कि चोर कब आएगा तो वह ज़रूर चौकस रहता और उसे अपने घर में नक़ब लगाने न देता। 44 तुम भी तैयार रहो, क्योंकि इब्ने-आदम ऐसे वक़्त आएगा जब तुम उस की तवक्को नहीं करोगे।

### वफ़ादार नौकर

45 चुनौचे कौन-सा नौकर वफ़ादार और समझदार है? फ़र्ज़ करो कि घर के मालिक ने किसी नौकर को बाकी नौकरों पर मुक़र्र किया हो। उस की एक जिम्मादारी यह भी है कि उन्हें वक़्त पर खाना खिलाए। 46 वह नौकर मुबारक होगा जो मालिक की वापसी पर यह सब कुछ कर रहा होगा। 47 मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक उसे अपनी पूरी जायदाद पर मुक़र्र करेगा। 48 लेकिन फ़र्ज़ करो कि नौकर अपने दिल में सोचे, 'मालिक की वापसी में अभी देर है।' 49 वह अपने साथी नौकरों को पीटने और शराबियों के साथ खाने-पीने लगे। 50 अगर वह ऐसा करे तो मालिक ऐसे दिन और वक़्त आएगा जिसकी तवक्को नौकर को नहीं होगी। 51 इन हालात को देखकर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा और उसे रियाकारों में शामिल करेगा, वहाँ जहाँ लोग रोते और दौंत पीसते रहेंगे।

## 25

### दस कुँवारियों की तमसील

1 उस वक़्त आसमान की बादशाही दस कुँवारियों से मुताबिकत रखेगी जो अपने चराग लीकर दूल्हे को मिलने के लिए निकले। 2 उनमें से पाँच नासमझ थीं और पाँच समझदार। 3 नासमझ कुँवारियों ने अपने पास चरागों के लिए फालतू तेल न रखा। 4 लेकिन समझदार कुँवारियों ने कुप्पी में तेल डालकर अपने साथ ले लिया। 5 दूल्हे को आने में बड़ी देर लगी, इसलिए वह सब ऊँधकर सो गई।

6 आधी रात को शोर मच गया, 'देखो, दूल्हा पहुँच रहा है, उसे मिलने के लिए निकलो!' 7 इस पर तमाम कुँवारियाँ जाग उठीं और अपने चरागों को द्रुस्त करने लगीं। 8 नासमझ कुँवारियों ने समझदार कुँवारियों से कहा, 'अपने तेल में से हमें भी कुछ दे दो। हमारे चराग बूझनेवाले हैं।' 9 दूसरी कुँवारियों ने जवाब दिया, 'नहीं, ऐसा न हो कि न सिर्फ़ तुम्हारे लिए बल्कि हमारे लिए भी तेल काफ़ी न हो। दुकान पर जाकर अपने लिए खरीद लो।' 10 चुनौचे नासमझ कुँवारियाँ चली गईं। लेकिन इस दौरान दूल्हा पहुँच गया। जो कुँवारियाँ तैयार थीं वह उसके साथ शादी हाल में दाखिल हुईं। फिर दरवाज़े को बंद कर दिया गया।

11 कुछ देर के बाद बाकी कुँवारियाँ आईं और चिल्लाने लगीं, 'जनाब! हमारे लिए दरवाज़ा खोल दें।' 12 लेकिन उसने जवाब दिया, 'यकीन जानो, मैं तुमको नहीं जानता।'

13 इसलिए चौकस रहो, क्योंकि तुम इब्ने-आदम के आने का दिन या वक़्त नहीं जानते।

### तीन नौकरों की तमसील

14 उस वक़्त आसमान की बादशाही यों होगी : एक आदमी को बैस्ने-मुल्क जाना था। उसने अपने नौकरों को बुलाकर अपनी मिलकियत उनके सुपर्द कर दी। 15 पहले को उसने सोने के 5,000 सिक्के दिए, दूसरे को 2,000 और तीसरे को 1,000। हर एक को उसने उस की काबिलियत के मुताबिक़ पैसे दिए। फिर वह रवाना हुआ। 16 जिस नौकर को 5,000 सिक्के मिले थे उसने सीधा जाकर उन्हें किसी कारोबार में लगाया। इससे उसे मज़ीद 5,000 सिक्के हासिल हुए। 17 इसी तरह दूसरे को भी जिसे 2,000 सिक्के मिले थे मज़ीद 2,000 सिक्के हासिल हुए। 18 लेकिन जिस आदमी को 1,000 सिक्के मिले थे वह चला गया और कहीं ज़मीन में गड्ढा खोदकर अपने मालिक के पैसे उसमें छुपा दिए।

19 बड़ी देर के बाद उनका मालिक लौट आया। जब उसने उनके साथ हिसाब-किताब किया 20 तो पहला नौकर जिसे 5,000 सिक्के मिले थे मज़ीद 5,000 सिक्के लेकर आया। उसने कहा, 'जनाब, आपने 5,000 सिक्के मेरे सुपर्द किए थे। यह देखें, मैंने मज़ीद 5,000 सिक्के हासिल किए हैं।' 21 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शाबाश, मेरे अच्छे और वफ़ादार नौकर। तुम थोड़े में वफ़ादार रहे, इसलिए मैं तुम्हें बहुत कुछ पर मुक़र्र करूँगा। अंदर आओ और अपने मालिक की ख़ुशी में शरीक हो जाओ।'

22 फिर दूसरा नौकर आया जिसे 2,000 सिक्के मिले थे। उसने कहा, 'जनाब, आपने 2,000 सिक्के मेरे सुपुर्द किए थे। यह देखें, मैंने मज़ीद 2,000 सिक्के हासिल किए हैं।' 23 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शाबाश, मेरे अच्छे और वफादार नौकर। तुम थोड़े में वफादार रहे, इसलिए मैं तुम्हें बहुत कुछ पर मुक़र्र करूँगा। अंदर आओ और अपने मालिक की खुशी में शरीक हो जाओ।'

24 फिर तीसरा नौकर आया जिसे 1,000 सिक्के मिले थे। उसने कहा, 'जनाब, मैं जानता था कि आप सख्त आदमी हैं। जो बीज आपने नहीं बोया उस की फ़सल आप काटते हैं और जो कुछ आपने नहीं लगाया उस की पैदावार जमा करते हैं। 25 इसलिए मैं डर गया और जाकर आपके पैसे ज़मीन में छुपा दिए। अब आप अपने पैसे वापस ले सकते हैं।'

26 उसके मालिक ने जवाब दिया, 'शरीर और सुस्त नौकर! क्या तू जानता था कि जो बीज मैंने नहीं बोया उस की फ़सल काटता हूँ और जो कुछ मैंने नहीं लगाया उस की पैदावार जमा करता हूँ? 27 तो फिर तुने मेरे पैसे बैंक में क्यों न जमा करा दिए? अगर ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम अज़ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।' 28 यह कहकर मालिक दूसरों से मुखातिब हुआ, 'यह पैसे इससे लेकर उस नौकर को दे दो जिसके पास 10,000 सिक्के हैं। 29 क्योंकि जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा और उसके पास कसरत की चीज़ें होंगी। लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है। 30 अब इस बेकार नौकर को निकालकर बाहर की तारीकी में फेंक दो, वहाँ जहाँ लोग रोते और दौंत पीसते रहेंगे।'

### आखिरी अदालत

31 जब इब्ने-आदम अपने जलाल के साथ आया और तमाम फ़रिश्ते उसके साथ होंगे तो वह अपने जलाली तख़्त पर बैठ जाएगा। 32 तब तमाम कौमों उसके सामने जमा की जाएँगी। और जिस तरह चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है उसी तरह वह लोगों को एक दूसरे से अलग करेगा। 33 वह भेड़ों को अपने दहने हाथ खड़ा करेगा और बकरियों को अपने बाएँ हाथ। 34 फिर बादशाह दहने हाथवालों से कहेगा, 'आओ, मेरे बाप के मुबारक लोगो! जो बादशाही दुनिया की तख़लीक से तुम्हारे लिए तैयार है उसे मीरास में ले लो। 35 क्योंकि मैं भूका था और तुमने मुझे खाना खिलाया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी पिलाया, मैं अजनबी था और तुमने मेरी मेहमान-नवाजी की, 36 मैं गंगा था और तुमने मुझे कपड़े पहनाए, मैं बीमार था और तुमने मेरी देख-भाल की, मैं जेल में था और तुम मुझसे मिलने आए।'

37 फिर यह रास्तबाज़ लोग जवाब में कहेंगे, 'ख़ुदावंद, हमने आपको कब भूका देखकर खाना खिलाया, आपको कब प्यासा देखकर पानी पिलाया? 38 हमने आपको कब अजनबी की हैसियत से देखकर आपकी मेहमान-नवाजी की, आपको कब गंगा देखकर कपड़े पहनाए? 39 हम आपको कब बीमार हालत में या जेल में पड़ा देखकर आपसे मिलने गए?' 40 बादशाह जवाब देगा, 'मैं तुम्हें सच बताता हूँ कि जो कुछ तुमने मेरे इन सबसे छोटे भाइयों में से एक के लिए किया वह तुमने मेरे ही लिए किया।'

41 फिर वह बाएँ हाथवालों से कहेगा, 'लानती लोगो, मुझसे दूर हो जाओ और उस अबदी आग में चले जाओ जो इबलीस और उसके फ़रिश्तों के लिए तैयार है। 42 क्योंकि मैं भूका था और तुमने मुझे कुछ न खिलाया, मैं प्यासा था और तुमने मुझे पानी न पिलाया, 43 मैं अजनबी था और तुमने मेरी मेहमान-नवाजी न की, मैं गंगा था और तुमने मुझे कपड़े न पहनाए, मैं बीमार और जेल में था और तुम मुझसे मिलने न आए।'

44 फिर वह जवाब में पछेंगे, 'ख़ुदावंद, हमने आपको कब भूका, प्यासा, अजनबी, गंगा, बीमार या जेल में पड़ा देखा और आपकी खिदमत न की?' 45 वह जवाब देगा, 'मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब कभी तुमने इन सबसे छोटों में से एक की मदद करने से इनकार किया तो तुमने मेरी खिदमत करने से इनकार किया।' 46 फिर यह अबदी सज़ा भुगतने के लिए जाएंगे जबकि रास्तबाज़ अबदी ज़िंदगी में दाखिल होंगे।''

## 26

### ईसा के खिलाफ़ मनसूबाबदियाँ

1 यह बातें ख़त्म करने पर ईसा शागिर्दों से मुखातिब हुआ, 2 'तुम जानते हो कि दो दिन के बाद फ़सह की ईद शुरू होगी। उस वक़्त इब्ने-आदम को दुश्मन के हवाले किया जाएगा ताकि उसे मसलूब किया जाए।'

3 फिर राहनुमा इमाम और क्रौम के बुजुर्ग कायफ़ा नामी इमामे-आज़म के महल में जमा हुए 4 और ईसा को किसी चालाकी से गिरफ़्तार करके क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे। 5 उन्होंने कहा, 'लेकिन यह ईद के दौरान नहीं होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाग़म में हलचल मच जाए।'

### खातून ईसा पर खुशबू उड़ेलती है

6 इतने में ईसा बैत-अनियाह आकर एक आदमी के घर में दाखिल हुआ जो किसी वक्त कोढ़ का मरीज था। उसका नाम शमौन था। 7 ईसा खाना खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत आई जिसके पास निहायत कीमती इत्र का इत्रदान था। उसने उसे ईसा के सर पर उंडेल दिया। 8 शागिर्द यह देखकर नाराज हुए। उन्होंने कहा, “इतना कीमती इत्र जाया करने की क्या ज़रूरत थी? 9 यह बहुत महँगी चीज़ है। अगर इसे बेचा जाता तो इसके पैसे गरीबों को दिए जा सकते थे।”

10 लेकिन उनके खयाल पहचानकर ईसा ने उनसे कहा, “तुम इसे क्यों तंग कर रहे हो? इसने तो मेरे लिए एक नेक काम किया है। 11 गरीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तक तुम्हारे पास नहीं रहूँगा। 12 मुझ पर इत्र उंडेलने से उसने मेरे बदन को दफन होने के लिए तैयार किया है। 13 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में जहाँ भी अल्लाह की खुशखबरी का प्लान किया जाएगा वहाँ लोग इस खातून को याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इसने किया है।”

### ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

14 फिर यहूदाह इस्करियोती जो बारह शागिर्दों में से एक था राहनुमा इमामों के पास गया। 15 उसने पूछा, “आप मुझे ईसा को आपके हवाले करने के एवज़ कितने पैसे देने के लिए तैयार हैं?” उन्होंने उसके लिए चाँदी के 30 सिक्के मुतैयिन किए। 16 उस वक्त से यहूदा ईसा को उनके हवाले करने का मौका ढूँढने लगा।

### फसह की ईद के लिए तैयारियाँ

17 बेखमीरी रोटी की ईद आई। पहले दिन ईसा के शागिर्दों ने उसके पास आकर पूछा, “हम कहाँ आपके लिए फसह का खाना तैयार करें?”

18 उसने जवाब दिया, “यरूशालम शहर में फुल्लों आदमी के पास जाओ और उसे बताओ, ‘उस्ताद ने कहा है कि मेरा मुकर्रर वक्त करीब आ गया है। मैं अपने शागिर्दों के साथ फसह की ईद का खाना आपके घर में खाऊँगा।’”

19 शागिर्दों ने वह कुछ किया जो ईसा ने उन्हें बताया था और फसह की ईद का खाना तैयार किया।

### कौन गद्दार है?

20 शाम के वक्त ईसा बारह शागिर्दों के साथ खाना खाने के लिए बैठ गया। 21 जब वह खाना खा रहे थे तो उसने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।”

22 शागिर्द यह सुनकर निहायत गमगीन हुए। बारी बारी वह उससे पछने लगे, “खुदावंद, मैं तो नहीं हूँ?”

23 ईसा ने जवाब दिया, “जिसने मेरे साथ अपना हाथ सालन के बरतन में डाला है वही मुझे दुश्मन के हवाले करेगा।

24 इन्हे-आदम तो कूच कर जाएगा जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन उस शख्स पर अफसोस जिसके वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा। उसके लिए बेहतर यह होता कि वह कभी पैदा ही न होता।”

25 फिर यहूदा ने जो उसे दुश्मन के हवाले करने को था पूछा, “उस्ताद, मैं तो नहीं हूँ?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, तुमने खुद कहा है।”

### फसह का आखिरी खाना

26 खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर शक्रगुजारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे दिया। उसने कहा, “यह लो और खाओ। यह मेरा बदन है।”

27 फिर उसने मै का प्याला लेकर शक्रगुजारी की दुआ की और उसे उन्हें देकर कहा, “तुम सब इसमें से पियो। 28 यह मेरा खून है, नए अहद का वह खून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है ताकि उनके गुनाहों को मुआफ कर दिया जाए। 29 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का यह रस नहीं पिऊँगा, क्योंकि अगली दफा इसे तुम्हारे साथ अपने बाप की बादशाही में ही पिऊँगा।”

30 फिर एक ज़बूर गाकर वह निकले और जैतून के पहाड़ के पास पहुँचे।

### पतरस के इनकार की पेशगोई

31 ईसा ने उन्हें बताया, “आज रात तुम सब मेरी बाबत बरगशता हो जाओगे, क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में अल्लाह फरमाता है, ‘मैं चरवाहे को मार डालूँगा और रेवड़ की भेड़ें तितर-बितर हो जाएँगी।’ 32 लेकिन अपने जी उठने के बाद मैं तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँचूँगा।”

33 पतरस ने एतराज़ किया, “दूसरे बेशक सब आपकी बाबत बरगशता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा।”

34 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, इसी रात मुराग के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”

35 पतरस ने कहा, “हरगिज़ नहीं! मैं आपको जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे मुझे आपके साथ मरना भी पड़े।” दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

### गत्समनी बाग में ईसा की दुआ

36 ईसा अपने शागिर्दों के साथ एक बाग में पहुँचा जिसका नाम गत्समनी था। उसने उनसे कहा, “यहाँ बैठकर मेरा इंतज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए आगे जाता हूँ।” 37 उसने पतरस और जबदी के दो बेटों याक़ब और यहन्ना को साथ लिया। वहाँ वह गम्गीन और बेकरार होने लगा। 38 उसने उनसे कहा, “मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि मरने को हूँ। यहाँ ठहरकर मेरे साथ जागते रहो।”

39 कुछ आगे जाकर वह औधे मुँह ज़मीन पर गिरकर यों दुआ करने लगा, “ऐ मेरे बाप, अगर मुमकिन हो तो दुख का यह प्याला मुझसे हट जाए। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी हो।”

40 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह सो रहे हैं। उसने पतरस से पूछा, “क्या तुम लोग एक घंटा भी मेरे साथ नहीं जाग सके? 41 जागते और दुआ करते रहो ताकि आजमाइश में न पड़ो। क्योंकि रूह तो तैयार है लेकिन जिस्म कमज़ोर।”

42 एक बार फिर उसने जाकर दुआ की, “मेरे बाप, अगर यह प्याला मेरे लिए बग़ैर हट नहीं सकता तो फिर तेरी मरज़ी पूरी हो।” 43 जब वह वापस आया तो दुबारा देखा कि वह सो रहे हैं, क्योंकि नींद की बदौलत उनकी आँखें बोझिल थीं।

44 चुनौचे वह उन्हें दुबारा छोड़कर चला गया और तीसरी बार यही दुआ करने लगा। 45 फिर ईसा शागिर्दों के पास वापस आया और उनसे कहा, “अभी तक सो और आराम कर रहे हो? देखो, वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम गुनाहगारों के हवाले किया जाए। 46 उठो! आओ, चलें। देखो, मुझे दुश्मन के हवाले करनेवाला करीब आ चुका है।”

### ईसा की गिरफ्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहूदा पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उसके साथ तलवारों और लाठियों से लैस आदमियों का बड़ा हुज़म था। उन्हें राहनूमा इमामों और कौम के बुजुर्गों ने भेजा था। 48 इस ग़दर यहूदा ने उन्हें एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिसको मैं बोसा दूँ वही ईसा है। उसे गिरफ्तार कर लेना।

49 ज्योंही वह पहुँचे यहूदा ईसा के पास गया और “उस्ताद, अस्सलामु अलैकुम!” कहकर उसे बोसा दिया।

50 ईसा ने कहा, “दोस्त, क्या तू इसी मक़सद से आया है?”

फिर उन्होंने उसे पकड़कर गिरफ्तार कर लिया। 51 इस पर ईसा के एक साथी ने अपनी तलवार मियान से निकाली और इमामे-आज़म के गुलाम को मारकर उसका कान उड़ा दिया। 52 लेकिन ईसा ने कहा, “अपनी तलवार को मियान में रख, क्योंकि जो भी तलवार चलाता है उसे तलवार से मारा जाएगा। 53 या क्या तू नहीं समझता कि मेरा बाप मुझे हज़ारों फ़रिश्ते फ़ौरन भेज देगा अगर मैं उन्हें तलब करूँ? 54 लेकिन अगर मैं ऐसा करता तो फिर कलामे-मुक़द्दस की पेशगोइयाँ किस तरह पूरी होती जिनके मुताबिक़ यह ऐसा ही होना है?”

55 उस वक़्त ईसा ने हुज़म से कहा, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारों और लाठियों लिए मुझे गिरफ्तार करने निकले हो? मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में बैठकर तालीम देता रहा, मगर तुमने मुझे गिरफ्तार नहीं किया। 56 लेकिन यह सब कुछ इसलिए हो रहा है ताकि नबियों के सहीफ़ों में दर्ज़ पेशगोइयाँ पूरी हो जाएँ।”

फिर तमाम शागिर्द उसे छोड़कर भाग गए।

### ईसा यहूदी अदालते-आलिया के सामने

57 जिन्होंने ईसा को गिरफ्तार किया था वह उसे कायफ़ा इमामे-आज़म के घर ले गए जहाँ शरीअत के तमाम उलमा और कौम के बुजुर्ग जमा थे। 58 इतने में पतरस कुछ फ़ासले पर ईसा के पीछे पीछे इमामे-आज़म के सहन तक पहुँच गया। उसमें दाखिल होकर वह मुलाज़िमों के साथ आग के पास बैठ गया ताकि इस सिलसिले का अंजाम देख सके। 59 मक़ान के अंदर राहनूमा इमाम और यहूदी अदालते-आलिया के तमाम अफ़राद ईसा के खिलाफ़ झूठी गवाहियाँ दूँद रहे थे ताकि उसे सज़ाए-मौत दिलवा सके। 60 बहुत-से झूटे गवाह सामने आए, लेकिन कोई ऐसी गवाही न मिली। आखिरकार दो आदमियों ने सामने आकर 61 यह बात पेश की, “इसने कहा है कि मैं अल्लाह के बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर सकता हूँ।”

62 फिर इमामे-आज़म ने खड़े होकर ईसा से कहा, “क्या तू कोई जवाब नहीं देगा? यह क्या गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे खिलाफ़ दे रहे हैं?”

63 लेकिन ईसा खामोश रहा। इमामे-आज़म ने उससे एक और सवाल किया, “मैं तुझे जिंदा खुदा की कसम देकर पूछता हूँ कि क्या तू अल्लाह का फरज़द मसीह है?”

64 ईसा ने कहा, “जी, तूने खुद कह दिया है। और मैं तुम सबको बताता हूँ कि आइंदा तुम इब्ने-आदम को कादिरे-मुतलक के दहने हाथ बैठे और आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।”

65 इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, “इसने कुफ़र बका है! हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत रही! आपने खुद सुन लिया है कि इसने कुफ़र बका है। 66 आपका क्या फ़ैसला है?”

उन्होंने जवाब दिया, “यह सज़ाए-मौत के लायक है।”

67 फिर वह उस पर थूकने और उसके मुक्के मारने लगे। बाज़ ने उसके थप्पड़ मार मारकर 68 कहा, “ऐ मसीह, नबुव्वत करके हमें बता कि तुझे किसने मारा।”

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

69 इस दौरान पतरस बाहर सहन में बैठा था। एक नौकरानी उसके पास आई। उसने कहा, “तुम भी गलील के उस आदमी ईसा के साथ थे।”

70 लेकिन पतरस ने उन सबके सामने इनकार किया, “मैं नहीं जानता कि तू क्या बात कर रही है।” यह कहकर 71 वह बाहर गेट तक गया। वहाँ एक और नौकरानी ने उसे देखा और पास खड़े लोगों से कहा, “यह आदमी ईसा नासरी के साथ था।”

72 दुबारा पतरस ने इनकार किया। इस दफ़ा उसने कसम खाकर कहा, “मैं इस आदमी को नहीं जानता।”

73 थोड़ी देर के बाद वहाँ खड़े कुछ लोगों ने पतरस के पास आकर कहा, “तुम ज़रूर उनमें से हो क्योंकि तुम्हारी बोली से साफ़ पता चलता है।”

74 इस पर पतरस ने कसम खाकर कहा, “मुझ पर लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं इस आदमी को नहीं जानता।” फ़ौरन मुरा की बाँग सुनाई दी। 75 फिर पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कही थी, “मुरा के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।” इस पर वह बाहर निकला और टूटे दिल से खूब रोया।

## 27

ईसा को पीलातस के सामने पेश किया जाता है

1 सुबह-सवरे तमाम राहनुमा इमाम और क़ौम के तमाम बुजुर्ग इस फ़ैसले तक पहुँच गए कि ईसा को सज़ाए-मौत दी जाए। 2 वह उसे बाँधकर वहाँ से ले गए और रोमी गवर्नर पीलातस के हवाले कर दिया।

यह्दा की खूदकुशी

3 जब यह्दा ने जिसने उसे दुश्मन के हवाले कर दिया था देखा कि उस पर सज़ाए-मौत का फतवा दे दिया गया है तो उसने पछताकर चाँदी के 30 सिक्के राहनुमा इमामों और क़ौम के बुजुर्गों को वापस कर दिए। 4 उसने कहा, “मैंने गुनाह किया है, क्योंकि एक बेकुसूर आदमी को सज़ाए-मौत दी गई है और मैं ही ने उसे आपके हवाले किया है।”

उन्होंने जवाब दिया, “हमें क्या! यह तेरा मसला है।” 5 यह्दा चाँदी के सिक्के बैतुल-मुक़द्दस में फेंककर चला गया। फिर उसने जाकर फाँसी ले ली।

6 राहनुमा इमामों ने सिक्कों को जमा करके कहा, “शरीअत यह पैसे बैतुल-मुक़द्दस के खज़ाने में डालने की इजाज़त नहीं देती, क्योंकि यह ख़ुन्नेज़ी का मुआवज़ा है।” 7 आपस में मशवरा करने के बाद उन्होंने कुम्हार का खेत खरीदने का फ़ैसला किया ताकि परदेसियों को दफनाने के लिए जगह हो। 8 इसलिए यह खेत आज तक खून का खेत कहलाता है।

9 यों यरमियाह नबी की यह पेशगोई पूरी हुई कि “उन्होंने चाँदी के 30 सिक्के लिए यानी वह रकम जो इसराईलियों ने उसके लिए लगाई थी। 10 इनसे उन्होंने कुम्हार का खेत खरीद लिया, बिलकुल ऐसा जिस तरह रब ने मुझे हुक्म दिया था।”

पीलातस ईसा की पूछ-गछ करता है

11 इतने में ईसा को रोमी गवर्नर पीलातस के सामने पेश किया गया। उसने उससे पूछा, “क्या तुम यहदियों के बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप खुद कहते हैं।” 12 लेकिन जब राहनुमा इमामों और क़ौम के बुजुर्गों ने उस पर इलज़ाम लगाए तो ईसा खामोश रहा।

13 चुनौचे पीलातस ने दुबारा उससे सवाल किया, “क्या तुम यह तमाम इलज़ामात नहीं सुन रहे जो तुम पर लगाए जा रहे हैं?”

14 लेकिन ईसा ने एक इलजाम का भी जवाब न दिया, इसलिए गवर्नर निहायत हैरान हुआ।

**सजाए-मौत का फैसला**

15 उन दिनों यह रिवाज था कि गवर्नर हर साल फसल की ईद पर एक कैदी को आजाद कर देता था। यह कैदी हजूम से मुंतखब किया जाता था। 16 उस वक्त जेल में एक बदनाम कैदी था। उसका नाम बर-अब्बा था। 17 चुनौचे जब हजूम जमा हुआ तो पीलातुस ने उससे पूछा, “तुम क्या चाहते हो? मैं बर-अब्बा को आजाद करूँ या ईसा को जो मसीह कहलाता है?”

18 वह तो जानता था कि उन्होंने ईसा को सिर्फ हसद की बिना पर उसके हवाले किया है।

19 जब पीलातुस यों अदालत के तख्त पर बैठा था तो उस की बीवी ने उसे पैगाम भेजा, “इस बेकुसूर आदमी को हाथ न लगाएँ, क्योंकि मुझे पिछली रात इसके बाइस ख़ाब में शदीद तकलीफ हुई।”

20 लेकिन राहनुमा इमामों और क्रौम के बुजुर्गों ने हजूम को उकसाया कि वह बर-अब्बा को माँगें और ईसा की मौत तलब करें। गवर्नर ने दुबारा पूछा, 21 “मैं इन दोनों में से किस को तुम्हारे लिए आजाद करूँ?”

वह चिल्लाए, “बर-अब्बा को।”

22 पीलातुस ने पूछा, “फिर मैं ईसा के साथ क्या करूँ जो मसीह कहलाता है?”

वह चीखे, “उसे मसलूब करें।”

23 पीलातुस ने पूछा, “क्यों? उसने क्या जर्म किया है?”

लेकिन लोग मज़ीद शोर मचाकर चीखते रहे, “उसे मसलूब करें।”

24 पीलातुस ने देखा कि वह किसी नतीजे तक नहीं पहुँच रहा बल्कि हंगामा बरपा हो रहा है। इसलिए उसने पानी लेकर हजूम के सामने अपने हाथ धोए। उसने कहा, “अगर इस आदमी को कल्ल किया जाए तो मैं बेकुसूर हूँ, तुम ही उसके लिए जवाबदेह ठहरो।”

25 तमाम लोगों ने जवाब दिया, “हम और हमारी औलाद उसके खून के जवाबदेह हैं।”

26 फिर उसने बर-अब्बा को आजाद करके उन्हें दे दिया। लेकिन ईसा को उसने कोड़े लगाने का हुकम दिया, फिर उसे मसलूब करने के लिए फौजियों के हवाले कर दिया।

**फौजी ईसा का मज़ाक उडाते हैं**

27 गवर्नर के फौजी ईसा को महल बनाम प्रैटोरियम के सहन में ले गए और पूरी पलटन को उसके इर्दगिर्द इकठ्ठा किया।

28 उसके कपड़े उतारकर उन्होंने उसे अरगवानी रंग का लिबास पहनाया, 29 फिर काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। उसके दहने हाथ में छड़ी पकड़ाकर उन्होंने उसके सामने घुटने टेककर उसका मज़ाक उड़ाया, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” 30 वह उस पर थूकते रहे, छड़ी लेकर बार बार उसके सर को मारा। 31 फिर उसका मज़ाक उड़ाने से थककर उन्होंने अरगवानी लिबास उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े पहनाए और उसे मसलूब करने के लिए ले गए।

**ईसा को मसलूब किया जाता है**

32 शहर से निकलते वक्त उन्होंने एक आदमी को देखा जो लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला था। उसका नाम शमौन था। उसे उन्होंने सलीब उठाकर ले जाने पर मजबूर किया। 33 यों चलते चलते वह एक मकाम तक पहुँच गए जिसका नाम गुलगुता (यानी खोपड़ी का मकाम) था। 34 वहाँ उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें कोई कड़वी चीज मिलाई गई थी। लेकिन चखकर ईसा ने उसे पीने से इनकार कर दिया।

35 फिर फौजियों ने उसे मसलूब किया और उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फैसला करने के लिए कि किस को क्या क्या मिले उन्होंने कुरा डाला। 36 यों वहाँ बैठकर उस की पहरादारी करते रहे। 37 सलीब पर ईसा के सर के ऊपर एक तख्ती लगा दी गई जिस पर यह इलजाम लिखा था, “यह यहूदियों का बादशाह ईसा है।” 38 दो डाकुओं को भी ईसा के साथ मसलूब किया गया, एक को उसके दहने हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ।

39 जो वहाँ से गुजरे उन्होंने कुफर बककर उस की तज़लील की और सर हिला हिलाकर अपनी हिकारत का इज़हार किया। 40 उन्होंने कहा, “तूने तो कहा था कि मैं बैतुल-मुक़द्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा। अब अपने आपको बचा! अगर तू वाकई अल्लाह का फरज़द है तो सलीब पर से उतर आ।”

41 राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा और क्रौम के बुजुर्गों ने भी ईसा का मज़ाक उड़ाया, 42 “इसने औरों को बचाया, लेकिन अपने आपको नहीं बचा सकता। यह इसराईल का बादशाह है! अभी यह सलीब पर से उतर आए तो हम इस पर ईमान ले आएँगे। 43 इसने अल्लाह पर भरोसा रखा है। अब अल्लाह इसे बचाए अगर वह इसे चाहता है, क्योंकि इसने कहा, ‘मैं अल्लाह का फरज़द हूँ।’”

44 और जिन डाकुओं को उसके साथ मसलब किया गया था उन्होंने भी उसे लान-तान की।

### ईसा की मौत

45 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 46 फिर तीन बजे ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “एली, एली, लमा शबक्तनी!” जिसका मतलब है, “ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है?”

47 यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे, “वह इलियास नबी को बुला रहा है।” 48 उनमें से एक ने फौरन दौड़कर एक इस्फ़ंज को मैं के सिरके में डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा को चुसाने की कोशिश की।

49 दूसरों ने कहा, “आओ, हम देखें, शायद इलियास आकर उसे बचाए।”

50 लेकिन ईसा ने दुबारा बड़े जोर से चिल्लाकर दम छोड़ दिया।

51 उसी वक्त बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से लेकर नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। ज़लजला आया, चटानें फट गईं 52 और कब्रें खुल गईं। कई मरहम मुक़द्दसीन के जिस्मों को ज़िंदा कर दिया गया।

53 वह ईसा के जी उठने के बाद कब्रों में से निकलकर मुक़द्दस शहर में दाखिल हुए और बहुतों को नजर आए।

54 जब पास खड़े रोमी अफसर \* और ईसा की पहरादारी करनेवाले फ़ौजियों ने ज़लजला और यह तमाम वाकियात देखे तो वह निहायत दहशतज़दा हो गए। उन्होंने कहा, “यह वाकई अल्लाह का फ़रज़द था।”

55 बहुत-सी खवातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासले पर इसका मुशाहदा कर रही थीं। वह गलील में ईसा के पीछे चलकर यहाँ तक उस की खिदमत करती आई थीं। 56 उनमें मरियम मगदलीनी, याकूब और यूसुफ की माँ मरियम और ज़बदी के बेटों याकूब और यहून्ना की माँ भी थीं।

### ईसा को दफन किया जाता है

57 जब शाम होने को थी तो अरिमतियाह का एक दौलतमंद आदमी बनाम यूसुफ आया। वह भी ईसा का शागिर्द था। 58 उसने पीलातुस के पास जाकर ईसा की लाश माँगी, और पीलातुस ने हुक्म दिया कि वह उसे दे दी जाए। 59 यूसुफ ने लाश को लेकर उसे कतान के एक साफ कफ़न में लपेटा 60 और अपनी ज़ाती ग़ैरइस्तेमालशुदा कब्र में रख दिया जो चटान में तराशी गई थी। आखिर में उसने एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर कब्र का मुँह बंद कर दिया और चला गया। 61 उस वक्त मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र के मुकाबिल बैठी थी।

### कब्र की पहरादारी

62 अगले दिन, जो सबत का दिन था, राहनुमा इमाम और फ़रीसी पीलातुस के पास आए। 63 “जनाब,” उन्होंने कहा, “हमें याद आया कि जब वह धोकेबाज़ अभी ज़िंदा था तो उसने कहा था, ‘तीन दिन के बाद मैं जी उठूँगा।’ 64 इसलिए हुक्म दें कि कब्र को तीसरे दिन तक महफूज़ रखा जाए। ऐसा न हो कि उसके शागिर्द आकर उस की लाश को चुरा ले जाएँ और लोगों को बताएँ कि वह मुरदों में से जी उठा है। अगर ऐसा हुआ तो यह आखिरी धोका पहले धोके से भी ज्यादा बड़ा होगा।”

65 पीलातुस ने जवाब दिया, “पहरेदारों को लेकर कब्र को इतना महफूज़ कर दो जितना तुम कर सकते हो।”

66 चुनौचे उन्होंने जाकर कब्र को महफूज़ कर लिया। कब्र के मुँह पर पड़े पत्थर पर मुहर लगाकर उन्होंने उस पर पहरेदार मुकर्रर कर दिए।

## 28

### ईसा जी उठता है

1 इतवार को सुबह-सवेरे ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने के लिए निकलीं। सुरज तुल हो रहा था।

2 अचानक एक शदीद ज़लजला आया, क्योंकि रब का एक फ़रिशता आसमान से उतर आया और कब्र के पास जाकर उस पर पड़े पत्थर को एक तरफ़ लुढ़का दिया। फिर वह उस पर बैठ गया। 3 उस की शक्लो-सूरत बिजली की तरह चमक रही थी और उसका लिबास बर्फ़ की मानिंद सफ़ेद था। 4 पहरेदार इतने डर गए कि वह लरज़ते लरज़ते मुरदा से हो गए।

5 फ़रिशते ने खवातीन से कहा, “मत डरो। मुझे मालूम है कि तुम ईसा को ढूँड रही हो जो मसलब हुआ था। 6 वह यहाँ नहीं है। वह जी उठा है, जिस तरह उसने फ़रमाया था। आओ, उस जगह को खुद देख लो जहाँ वह पड़ा था। 7 और अब जल्दी से जाकर उसके शागिर्दों को बता दो कि वह जी उठा है और तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वही तुम उसे देखोगे। अब मैंने तुमको इससे आगाह किया है।”

\* 27:54 वो सिपाहियों पर मुकर्रर अफ़सर।



8 खवातीन जल्दी से कब्र से चली गई। वह सहमी हुई लेकिन बड़ी खुश थी और दौड़ी दौड़ी उसके शागिर्दों को यह खबर सुनाने गई।

9 अचानक ईसा उनसे मिला। उसने कहा, “सलाम!” वह उसके पास आई, उसके पाँव पकड़े और उसे सिजदा किया।

10 ईसा ने उनसे कहा, “मत डरो। जाओ, मेरे भाइयों को बता दो कि वह गलील को चले जाएँ। वहाँ वह मुझे देखेंगे।”

#### पहरेदारों की रिपोर्ट

11 खवातीन अभी रास्ते में थी कि पहरेदारों में से कुछ शहर में गए और राहनुमा इमामों को सब कुछ बता दिया। 12 राहनुमा इमामों ने क्रौम के बुजुर्गों के साथ एक मीटिंग मुनअक़िद की और पहरेदारों को रिश्त की बड़ी रकम देने का फैसला किया।

13 उन्होंने उन्हें बताया, “तुमको कहना है, ‘जब हम रात के वक्त सो रहे थे तो उसके शागिर्द आए और उसे चुरा ले गए।’

14 अगर यह खबर गवर्नर तक पहुँचे तो हम उसे समझा लेंगे। तुमको फिकर करने की ज़रूरत नहीं।”

15 चुनाँचे पहरेदारों ने रिश्त लेकर वह कुछ किया जो उन्हें सिखाया गया था। उनकी यह कहानी यहूदियों के दरमियान बहुत फैलाई गई और आज तक उनमें राज है।

#### ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है

16 फिर ग्यारह शागिर्द गलील के उस पहाड़ के पास पहुँचे जहाँ ईसा ने उन्हें जाने को कहा था। 17 वहाँ उसे देखकर उन्होंने उसे सिजदा किया। लेकिन कुछ शक में पड़ गए। 18 फिर ईसा ने उनके पास आकर कहा, “आसमान और ज़मीन का कुल इख्तियार मुझे दे दिया गया है। 19 इसलिए जाओ, तमाम कौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप, फरज़ंद और रूहल-कुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। 20 और उन्हें यह सिखाओ कि वह उन तमाम अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारें जो मैंने तुम्हें दिए हैं। और देखो, मैं दुनिया के इख्तिताम तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।”

## मरकुस

यहया बपतिस्मा देनेवाले की खिदमत

1 यह अल्लाह के फरजंद ईसा मसीह के बारे में खुशखबरी है, 2 जो यसायाह नबी की पेशगोई के मुताबिक यों शुरू हुई : 'देख, मैं अपने पैगंबर को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ

जो तेरे लिए रास्ता तैयार करेगा।

3 रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,

रब की राह तैयार करो!

उसके रास्ते सीधे बनाओ।'

4 यह पैगंबर यहया बपतिस्मा देनेवाला था। रेगिस्तान में रहकर उसने एलान किया कि लोग तौबा करके बपतिस्मा लें ताकि उन्हें अपने गुनाहों की मुआफी मिल जाए। 5 यहूदिया के पूरे इलाके के लोग यरूशलेम के तमाम बाशिंदों समेत निकलकर उसके पास आए। और अपने गुनाहों को तसलीम करके उन्होंने दरियाए-यरदन में यहया से बपतिस्मा लिया।

6 यहया ऊँटों के बालों का लिबास पहने और कमर पर चमड़े का पटका बाँधे रहता था। खुराक के तौर पर वह टिट्टियाँ और जंगली शहद खाता था। 7 उसने एलान किया, "मेरे बाद एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं झुककर उसके जूतों के तसमे खोलने के भी लायक नहीं। 8 मैं तुमको पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन वह तुम्हें रूहल-कुद्स से बपतिस्मा देगा।"

ईसा का बपतिस्मा और आजमाइश

9 उन दिनों में ईसा नासरत से आया और यहया ने उसे दरियाए-यरदन में बपतिस्मा दिया। 10 पानी से निकलते ही ईसा ने देखा कि आसमान फट रहा है और रूहल-कुद्स कबूतर की तरह मुझ पर उतर रहा है। 11 साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, "तू मेरा प्यारा फरजंद है, तुझसे मैं खुश हूँ।"

12 इसके फौरन बाद रूहल-कुद्स ने उसे रेगिस्तान में भेज दिया। 13 वहाँ वह चालीस दिन रहा जिसके दौरान इबलीस उस की आजमाइश करता रहा। वह जंगली जानवरों के दरमियान रहता और फरिश्ते उस की खिदमत करते थे।

ईसा चार मछेरों को बुलाता है

14 जब यहया को जेल में डाल दिया गया तो ईसा गलील के इलाके में आया और अल्लाह की खुशखबरी का एलान करने लगा। 15 वह बोला, "मुकर्रर वक़्त आ गया है, अल्लाह की बादशाही करीब आ गई है। तौबा करो और अल्लाह की खुशखबरी पर ईमान लाओ।"

16 एक दिन जब ईसा गलील की झील के किनारे किनारे चल रहा था तो उसने शमौन और उसके भाई अंदरियास को देखा। वह झील में जाल डाल रहे थे क्योंकि वह माहीगीर थे। 17 उसने कहा, "आओ, मेरे पीछे हो लो, मैं तुमको आदमगीर बनाऊँगा।" 18 यह सुनते ही वह अपने जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

19 थोड़ा-सा आगे जाकर ईसा ने जबदी के बेटों याक़ब और यहन्ना को देखा। वह कशती में बैठे अपने जालों की मरम्मत कर रहे थे। 20 उसने उन्हें फ़ौरन बुलाया तो वह अपने बाप को मज़दूरों समेत कशती में छोड़कर उसके पीछे हो लिए।

आदमी की बदरूह के क़ब्जे से रिहाई

21 वह कफ़र्नहम शहर में दाखिल हुए। और सबत के दिन ईसा इबादतखाने में जाकर लोगों को सिखाने लगा। 22 वह उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए क्योंकि वह उन्हें शरीअत के आलियों की तरह नहीं बल्कि इख्तियार के साथ सिखाता था।

23 उनके इबादतखाने में एक आदमी था जो किसी नापाक रूह के क़ब्जे में था। ईसा को देखते ही वह चीख चीखकर बोलने लगा, 24 "ऐ नासरत के ईसा, हमारा आपके साथ क्या वास्ता है? क्या आप हमें हलाक करने आए हैं? मैं तो जानता हूँ कि आप कौन हैं, आप अल्लाह के कुद्स हैं।"

25 ईसा ने उसे डॉटकर कहा, "खामोश! आदमी से निकल जा!" 26 इस पर बदरूह आदमी को झँझोड़कर और चीखें मार मारकर उसमें से निकल गई।

27 तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से कहने लगे, "यह क्या है? एक नई तालीम जो इख्तियार के साथ दी जा रही है। और वह बदरूहों को हुक्म देता है तो वह उस की मानती है।"

28 और ईसा के बारे में चर्चा जल्दी से गलील के पूरे इलाके में फैल गया।

बहुत-से मरीजों की शफा

29 इबादतखाने से निकलने के ऐन बाद वह याकूब और यहन्ना के साथ शमौन और अंदरियास के घर गए। 30 वहाँ शमौन की सास बिस्तर पर पड़ी थी, क्योंकि उसे बुखार था। उन्होंने ईसा को बता दिया 31 तो वह उसके नजदीक गया। उसका हाथ पकड़कर उसने उठने में उस की मदद की। इस पर बुखार उतर गया और वह उनकी खिदमत करने लगी।

32 जब शाम हुई और सूरज गुरूब हुआ तो लोग तमाम मरीजों और बदरूह-गिरिफता अशाखास को ईसा के पास लाए। 33 पूरा शहर दरवाजे पर जमा हो गया 34 और ईसा ने बहुत-से मरीजों को मुख्तलिफ किस्म की बीमारियों से शफा दी। उसने बहुत-सी बदरूहें भी निकाल दीं, लेकिन उसने उन्हें बोलने न दिया, क्योंकि वह जानती थी कि वह कौन है।

गलील में मुनादी

35 अगले दिन सुबह-सवेंरे जब अभी अंधेरा ही था तो ईसा उठकर दुआ करने के लिए किसी वीरान जगह चला गया। 36 बाद में शमौन और उसके साथी उसे ढूँडने निकले। 37 जब मालूम हुआ कि वह कहाँ है तो उन्होंने उससे कहा, “तमाम लोग आपको तलाश कर रहे हैं!”

38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “आओ, हम साथवाली आबादियों में जाएँ ताकि मैं वहाँ भी मुनादी करूँ। क्योंकि मैं इसी मकसद से निकल आया हूँ।”

39 चुनौचे वह पूरे गलील में से गुजरता हुआ इबादतखानों में मुनादी करता और बदरूहों को निकालता रहा।

कोड से शफा

40 एक आदमी ईसा के पास आया जो कोड का मरीज था। घुटनों के बल झुककर उसने मिन्नत की, “अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ कर सकते हैं।”

41 ईसा को तरस आया। उसने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, पाक-साफ हो जा।” 42 इस पर बीमारी फौरन दूर हो गई और वह पाक-साफ हो गया। 43 ईसा ने उसे फौरन स्रखत करके सख्ती से समझाया, 44 “खबरदार! यह बात किसी को न बताना बल्कि बैतुल-मुकद्दस में इमाम के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ वह कुरबानी ले जा जिसका तक्राजा मूसा की शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोड से शफा मिली हो। यों अलानिया तसदीक हो जाएगी कि तू वाकई पाक-साफ हो गया है।”

45 आदमी चला गया, लेकिन वह हर जगह अपनी कहानी सुनाने लगा। उसने यह खबर इतनी फैलाई कि ईसा खुले तौर पर किसी भी शहर में दाखिल न हो सका बल्कि उसे वीरान जगहों में रहना पड़ा। लेकिन वहाँ भी लोग हर जगह से उसके पास पहुँच गए।

## 2

मफलूज के लिए छत खोली जाती है

1 कुछ दिनों के बाद ईसा कफर्नहम में वापस आया। जल्द ही खबर फैल गई कि वह घर में है। 2 इस पर इतने लोग जमा हो गए कि पूरा घर भर गया बल्कि दरवाजे के सामने भी जगह न रही। वह उन्हें कलामे-मुकद्दस सुनाने लगा। 3 इतने में कुछ लोग पहुँचे। उनमें से चार आदमी एक मफलूज को उठाए ईसा के पास लाना चाहते थे। 4 मगर वह उसे हुजूम की वजह से ईसा तक न पहुँचा सके, इसलिए उन्होंने छत खोल दी। ईसा के ऊपर का हिस्सा उधेड़कर उन्होंने चारपाई को जिस पर मफलूज लेटा था उतार दिया। 5 जब ईसा ने उनका इमान देखा तो उसने मफलूज से कहा, “बेटा, तेरे गुनाह मुआफ कर दिए गए हैं।”

6 शरीअत के कुछ आलिम वहाँ बैठे थे। वह यह सुनकर सोच-बिचार में पड़ गए। 7 “यह किस तरह ऐसी बातें कर सकता है? कुफर बक रहा है। सिर्फ अल्लाह ही गुनाह मुआफ कर सकता है।”

8 ईसा ने अपनी रूह में फौरन जान लिया कि वह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा, “तुम दिल में इस तरह की बातें क्यों सोच रहे हो? 9 क्या मफलूज से यह कहना आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठ, अपनी चारपाई उठाकर चल-फिर’? 10 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाकई दुनिया में गुनाह मुआफ करने का इख्तियार है।” यह कहकर वह मफलूज से मुखातिब हुआ, 11 “मैं तुझसे कहता हूँ कि उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।”

12 वह आदमी खड़ा हुआ और फौरन अपनी चारपाई उठाकर उनके देखते देखते चला गया। सब सख्त हैरतजदा हुए और अल्लाह की तमजीद करके कहने लगे, “ऐसा काम हमने कभी नहीं देखा।”

ईसा मत्ती को बुलाता है

13 फिर ईसा निकलकर दुबारा झील के किनारे गया। एक बड़ी भीड़ उसके पास आई तो वह उन्हें सिखाने लगा। 14 चलते चलते उसने हलफई के बेटे लावी को देखा जो टैक्स लेने के लिए अपनी चौकी पर बैठा था। ईसा ने उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” और लावी उठकर उसके पीछे हो लिया।

15 बाद में ईसा लावी के घर में खाना खा रहा था। उसके साथ न सिर्फ उसके शागिर्द बल्कि बहुत-से टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार भी थे, क्योंकि उनमें से बहुतेरे उसके पैरोकार बन चुके थे। 16 शरीअत के कुछ फरीसी आलिमों ने उसे यों टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ खाते देखा तो उसके शागिर्दों से पूछा, “यह टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाता है?”

17 यह सुनकर ईसा ने जवाब दिया, “सेहतमंदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीजों को। मैं रास्तबाजों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।”

### शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

18 यहया के शागिर्द और फरीसी रोज़ा रखा करते थे। एक मौके पर कुछ लोग ईसा के पास आए और पूछा, “आपके शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते जबकि यहया और फरीसियों के शागिर्द रोज़ा रखते हैं?”

19 ईसा ने जवाब दिया, “शादी के मेहमान किस तरह रोज़ा रख सकते हैं जब दूल्हा उनके दरमियान है? जब तक दूल्हा उनके साथ है वह रोज़ा नहीं रख सकते। 20 लेकिन एक दिन आया जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।

21 कोई भी नए कपड़े का टुकड़ा किसी पुराने लिबास में नहीं लगाता। अगर वह ऐसा करे तो नया टुकड़ा बाद में सुकड़कर पुराने लिबास से अलग हो जाएगा। यों पुराने लिबास की फटी हुई जगह पहले की निसबत ज्यादा खराब हो जाएगी। 22 इसी तरह कोई भी अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं डालता। अगर वह ऐसा करे तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मैं और मशकें दोनों जाया हो जाएँगी। इसलिए अंगूर का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं।”

### सबत के बारे में सवाल

23 एक दिन ईसा अनाज़ के खेतों में से गुज़र रहा था। चलते चलते उसके शागिर्द खाने के लिए अनाज़ की बालें तोड़ने लगे। सबत का दिन था। 24 यह देखकर फरीसियों ने ईसा से पूछा, “देखो, यह क्यों ऐसा कर रहे हैं? सबत के दिन ऐसा करना मना है।”

25 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके साथियों को भूक लगी और उनके पास खुराक नहीं थी? 26 उस वक़्त अबियातर इमामे-आज़म था। दाऊद अल्लाह के घर में दाखिल हुआ और रब के लिए मखसूसशुदा रोटियों लेकर खाई, अगरचे सिर्फ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त है। और उसने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ खिलाई।”

27 फिर उसने कहा, “इनसान को सबत के दिन के लिए नहीं बनाया गया बल्कि सबत का दिन इनसान के लिए। 28 चुनौचे इब्ने-आदम सबत का भी मालिक है।”

## 3

### सूखे हुए हाथ की शफा

1 किसी और वक़्त जब ईसा इबादतरखाने में गया तो वहाँ एक आदमी था जिसका हाथ सूखा हुआ था। 2 सबत का दिन था और लोग बड़े गौर से देख रहे थे कि क्या ईसा उस आदमी को आज भी शफा देगा। क्योंकि वह इस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना तलाश कर रहे थे। 3 ईसा ने सूखे हाथवाले आदमी से कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा हो।” 4 फिर ईसा ने उनसे पूछा, “सूझे बताओ, शरीअत हमें सबत के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने की या गलत काम करने की, किसी की जान बचाने की या उसे तबाह करने की?”

सब खामोश रहे। 5 वह गुस्से से अपने इर्दगिर्द के लोगों की तरफ देखने लगा। उनकी सख्तादिली उसके लिए बड़े दुख का बाइस बन रही थी। फिर उसने आदमी से कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।” उसने ऐसा किया तो उसका हाथ बहाल हो गया। 6 इस पर फरीसी बाहर निकलकर सीधे हेरोदेस की पार्टी के अफ़राद के साथ मिलकर ईसा को कल्ल करने की साज़िशें करने लगे।

### झील के किनारे पर हज़ूम

7 लेकिन ईसा वहाँ से हटकर अपने शागिर्दों के साथ झील के पास गया। एक बड़ा हज़ूम उसके पीछे हो लिया। लोग न सिर्फ गलील के इलाके से आए बल्कि बहुत-सी और जगहों यानी यहूदिया, 8 यरूशलम, इद्मूया, दरियाए-यरदन के पार और

सूर और सैदा के इलाके से भी। वजह यह थी कि ईसा के काम की खबर उन इलाकों तक भी पहुँच चुकी थी और नतीजे में बहुत-से लोग वहाँ से भी आए।<sup>9</sup> ईसा ने शागिर्दों से कहा, “एहतियातन एक कश्ती उस वक़्त के लिए तैयार कर रखो जब हज़म मुझे हद से ज़्यादा दबाने लगेगा।”<sup>10</sup> क्योंकि उस दिन उसने बहुतों को शफ़ा दी थी, इसलिए जिसे भी कोई तकलीफ़ थी वह धक्के दे देकर उसके पास आया ताकि उसे छू सके।<sup>11</sup> और जब भी नापाक रूहों ने ईसा को देखा तो वह उसके सामने गिरकर चीखें मारने लगी, “आप अल्लाह के फ़रज़द है।”

<sup>12</sup> लेकिन ईसा ने उन्हें सख्ती से डॉटकर कहा कि वह उसे जाहिर न करें।

**ईसा बारह रसूलों को मुकर्रर करता है**

<sup>13</sup> इसके बाद ईसा ने पहाड़ पर चढ़कर जिन्हें वह चाहता था उन्हें अपने पास बुला लिया। और वह उसके पास आए।<sup>14</sup> उसने उनमें से बारह को चुन लिया। उन्हें उसने अपने रसूल मुकर्रर कर लिया ताकि वह उसके साथ चलें और वह उन्हें मुनादी करने के लिए भेज सके।<sup>15</sup> उसने उन्हें बदरूहें निकालने का इख्तियार भी दिया।

<sup>16</sup> जिन बारह को उसने मुकर्रर किया उनके नाम यह हैं : शमौन जिसका लकब उसने पतरस रखा,<sup>17</sup> ज़बदी के बेटे याकूब और यहून्ना जिनका लकब ईसा ने ‘बादल की गरज के बेटे’ रखा,<sup>18</sup> अंदरियास, फिलिप्पुस, बरतुलमाई, मर्ती, तोमा, याकूब बिन हलफ़ई, तदी, शमौन मुजाहिद<sup>19</sup> और यहूदाह इस्करियोती जिसने बाद में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।

**ईसा और बदरूहों का सरदार**

<sup>20</sup> फिर ईसा किसी घर में दाखिल हुआ। इस बार भी इतना हज़म जमा हो गया कि ईसा को अपने शागिर्दों समेत खाना खाने का मौक़ा भी न मिला।<sup>21</sup> जब उसके खानदान के अफ़राद ने यह सुना तो वह उसे पकड़कर ले जाने के लिए आए, क्योंकि उन्होंने कहा, “वह होश में नहीं है।”

<sup>22</sup> लेकिन शरीअत के जो आलिम यरूशलम से आए थे उन्होंने कहा, “यह बदरूहों के सरदार बाल-ज़बल के कब्ज़े में है। उसी की मदद से बदरूहों को निकाल रहा है।”

<sup>23</sup> फिर ईसा ने उन्हें अपने पास बुलाकर तमसीलों में जवाब दिया। “इबलीस किस तरह इबलीस को निकाल सकता है?<sup>24</sup> जिस बादशाही में फूट पड़ जाए वह कायम नहीं रह सकती।<sup>25</sup> और जिस घराने की ऐसी हालत हो वह भी कायम नहीं रह सकता।<sup>26</sup> इसी तरह अगर इबलीस अपने आपकी मुखालफ़त करे और यों उसमें फूट पड़ जाए तो वह कायम नहीं रह सकता बल्कि खत्म हो चुका है।

<sup>27</sup> किसी जोरावर आदमी के घर में घुसकर उसका मालो-असबाब लूटना उस वक़्त तक मुमकिन नहीं है जब तक उस आदमी को बाँधा न जाए। फिर ही उसे लूटा जा सकता है।

<sup>28</sup> मैं तुमसे सच कहता हूँ कि लोगों के तमाम गुनाह और कुफ़र की बातें मुआफ़ की जा सकेंगी, खाह वह कितना ही कुफ़र क्यों न बँके।<sup>29</sup> लेकिन जो क-हल-कुद्स के खिलाफ़ कुफ़र बके उसे अबद तक मुआफ़ी नहीं मिलेगी। वह एक अबदी गुनाह का कुसूरवार ठहरेगा।”<sup>30</sup> ईसा ने यह इसलिए कहा क्योंकि आलिम कह रहे थे कि वह किसी बदरूह की गिरिफ्त में है।

**ईसा की माँ और भाई**

<sup>31</sup> फिर ईसा की माँ और भाई पहुँच गए। बाहर खड़े होकर उन्होंने किसी को उसे बुलाने को भेज दिया।<sup>32</sup> उसके इर्दगिर्द हज़म बैठा था। उन्होंने कहा, “आपकी माँ और भाई बाहर आपको बुला रहे हैं।”

<sup>33</sup> ईसा ने पूछा, “कौन मेरी माँ और कौन मेरे भाई हैं?”<sup>34</sup> और अपने गिर्द बैठे लोगों पर नज़र डालकर उसने कहा, “देखो, यह मेरी माँ और मेरे भाई हैं।<sup>35</sup> जो भी अल्लाह की मरज़ी पूरी करता है वह मेरा भाई, मेरी बहन और मेरी माँ है।”

## 4

**बीज बोनेवाले की तमसील**

<sup>1</sup> फिर ईसा दुबारा झील के किनारे तालीम देने लगा। और इतनी बड़ी भीड़ उसके पास जमा हुई कि वह झील में खड़ी एक कश्ती में बैठ गया। बाकी लोग झील के किनारे पर खड़े रहे।<sup>2</sup> उसने उन्हें बहुत-सी बातें तमसीलों में सिखाई। उनमें से एक यह थी :

<sup>3</sup> “सुनो! एक किसान बीज बोने के लिए निकला।<sup>4</sup> जब बीज इधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर गिरे और परिदों ने आकर उन्हें चुग लिया।<sup>5</sup> कुछ पथरीली ज़मीन पर गिरे जहाँ मिट्टी की कमी थी। वह जल्द उग आए क्योंकि मिट्टी गहरी नहीं थी।<sup>6</sup> लेकिन जब सूरज निकला तो पौदे झुलस गए और चूँकि वह जड़ न पकड़ सके इसलिए सूख गए।<sup>7</sup> कुछ दाने खुदरो कँटदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन खुदरो पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने

फूलने की जगह न दी। चुनौचे वह भी खत्म हो गए और फल न ला सके।<sup>8</sup> लेकिन ऐसे दाने भी थे जो जरखेज ज़मीन में गिरे। वहाँ वह फूट निकले और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाए।”

<sup>9</sup> फिर उसने कहा, “जो सुन सकता है वह सुन ले!”

### तमसीलों का मरकुसद

<sup>10</sup> जब वह अकेला था तो जो लोग उसके इर्दगिर्द जमा थे उन्होंने बारह शागिर्दों समेत उससे पूछा कि इस तमसील का क्या मतलब है? <sup>11</sup> उसने जवाब दिया, “तुमको तो अल्लाह की बादशाही का भेद समझने की लियाकत दी गई है। लेकिन मैं इस दायरे से बाहर के लोगों को हर बात समझाने के लिए तमसीलें इस्तेमाल करता हूँ <sup>12</sup> ताकि पाक कलाम पूरा हो जाए कि

‘वह अपनी आँखों से देखेंगे मगर कुछ नहीं जानेंगे,

वह अपने कानों से सुनेंगे मगर कुछ नहीं समझेंगे,

ऐसा न हो कि वह मेरी तरफ रूजू करें

और उन्हें मुआफ कर दिया जाए।”

### बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

<sup>13</sup> फिर ईसा ने उनसे कहा, “क्या तुम यह तमसील नहीं समझते? तो फिर बाकी तमाम तमसीलें किस तरह समझ पाओगे? <sup>14</sup> बीज बोनेवाला अल्लाह का कलाम बो देता है। <sup>15</sup> रास्ते पर गिरनेवाले दाने वह लोग हैं जो कलाम को सुनते तो हैं, लेकिन फिर इबलीस फौरन आकर वह कलाम छीन लेता है जो उनमें बोया गया है। <sup>16</sup> पथरीली ज़मीन पर गिरनेवाले दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते ही उसे खुरी से कबूल तो कर लेते हैं, <sup>17</sup> लेकिन वह जड़ नहीं पकड़ते और इसलिए ज्यादा देर तक कायम नहीं रहते। ज्योंही वह कलाम पर ईमान लाने के बाइस किसी मुसीबत या इंज़ारसानी से दोचार हो जाऊँ, तो वह बरग़शता हो जाते हैं। <sup>18</sup> खुदरो कौंटदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते तो हैं, <sup>19</sup> लेकिन फिर रोज़मर्रा की परेशानियाँ, दौलत का फ़रेब और दीगर चीज़ों का लालच कलाम को फलने फूलने नहीं देते। नतीजे में वह फल लाने तक नहीं पहुँचता। <sup>20</sup> इसके मुकाबले में जरखेज ज़मीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनकर उसे कबूल करते और बढ़ते बढ़ते तीस गुना, साठ गुना बल्कि सौ गुना तक फल लाते हैं।”

### कोई चराग को बरतन के नीचे नहीं छुपाता

<sup>21</sup> ईसा ने बात जारी रखी और कहा, “क्या चराग को इसलिए जलाकर लाया जाता है कि वह किसी बरतन या चारपाई के नीचे रखा जाए? हरगिज़ नहीं! उसे शमादान पर रखा जाता है। <sup>22</sup> क्योंकि जो कुछ भी इस वक्त पोशीदा है उसे आखिरकार ज़ाहिर हो जाना है और तमाम भेदों को एक दिन ख़ुल जाना है। <sup>23</sup> अगर कोई सुन सके तो सुन ले!”

<sup>24</sup> उसने उनसे यह भी कहा, “इस पर ध्यान दो कि तुम क्या सुनते हो। जिस हिसाब से तुम दूसरों को देते हो उसी हिसाब से तुमको भी दिया जाएगा बल्कि तुमको उससे बढ़कर मिलेगा। <sup>25</sup> क्योंकि जिसे कुछ हासिल हुआ है उसे और भी दिया जाएगा, जबकि जिसे कुछ हासिल नहीं हुआ उससे वह थोड़ा-बहुत भी छीन लिया जाएगा जो उसे हासिल है।”

### ख़ुद बख़ुद उगनेवाले बीज की तमसील

<sup>26</sup> फिर ईसा ने कहा, “अल्लाह की बादशाही यों समझ लो : एक किसान ज़मीन में बीज बिखेर देता है। <sup>27</sup> यह बीज फूटकर दिन-रात उगता रहता है, ख़ाह किसान सो रहा या जाग रहा हो। उसे मालूम नहीं कि यह क्योंकर होता है। <sup>28</sup> ज़मीन ख़ुद बख़ुद अनाज की फ़सल पैदा करती है। पहले पत्ते निकलते हैं, फिर बालें नज़र आने लगती हैं और आखिर में दाने पैदा हो जाते हैं। <sup>29</sup> और ज्योंही अनाज की फ़सल पक जाती है किसान आकर दरौंती से उसे काट लेता है, क्योंकि फ़सल की कटाई का वक्त आ चुका होता है।”

### राई के दाने की तमसील

<sup>30</sup> फिर ईसा ने कहा, “हम अल्लाह की बादशाही का मुवाज़ना किस चीज़ से करें? या हम कौन-सी तमसील से इसे बयान करें? <sup>31</sup> वह राई के दाने की मानिंद है जो ज़मीन में डाला गया हो। राई बीजों में सबसे छोटा दाना है <sup>32</sup> लेकिन बढ़ते बढ़ते सब्जियों में सबसे बड़ा हो जाता है। उस की शाखें इतनी लंबी हो जाती हैं कि परिदे उसके साये में अपने घोंसले बना सकते हैं।”

<sup>33</sup> ईसा इसी किस्म की बहुत-सी तमसीलों की मदद से उन्हें कलाम यों सुनाता था कि वह इसे समझ सकते थे। <sup>34</sup> हौं, अवाम को वह सिर्फ तमसीलों के जर्रीए सिखाता था। लेकिन जब वह अपने शागिर्दों के साथ अकेला होता तो वह हर बात की तशरीह करता था।

ईसा आँधी को थमा देता है

35 उस दिन जब शाम हुई तो ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “आओ, हम झील के पार चले।” 36 चुनौचे वह भीड़ को रखत करके उसे लेकर चल पड़े। बाज़ और कशियाँ भी साथ गईं। 37 अचानक सख्त आँधी आई। लहरें करती से टकराकर उसे पानी से भरने लगी, 38 लेकिन ईसा अभी तक करती के पिछले हिस्से में अपना सर गद्दी पर रखे सो रहा था। शागिर्दों ने उसे जगाकर कहा, “उस्ताद, क्या आपको परवा नहीं कि हम तबाह हो रहे हैं?”

39 वह जाग उठा, आँधी को डाँटा और झील से कहा, “खामोश! चुप कर!” इस पर आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 40 फिर ईसा ने शागिर्दों से पूछा, “तुम क्यों घबराते हो? क्या तुम अभी तक ईमान नहीं रखते?”

41 उन पर सख्त ख़ौफ़ तारी हो गया और वह एक दूसरे से कहने लगे, “आखिर यह कौन है? हवा और झील भी उसका हुकम मानती हैं।”

## 5

ईसा एक गारासीनी आदमी से बदरूहें निकाल देता है

1 फिर वह झील के पार गारासा के इलाके में पहुँचे। 2 जब ईसा करती से उतरा तो एक आदमी जो नापाक रूह की गिरिफ्त में था कब्रों में से निकलकर ईसा को मिला। 3 यह आदमी कब्रों में रहता और इस नौबत तक पहुँच गया था कि कोई भी उसे बाँध न सकता था, चाहे उसे जंजीरों से भी बाँधा जाता। 4 उसे बहुत दफा बेडियों और जंजीरों से बाँधा गया था, लेकिन जब भी ऐसा हुआ तो उसने जंजीरों को तोड़कर बेडियों को टुकड़े टुकड़े कर दिया था। कोई भी उसे कंट्रोल नहीं कर सकता था। 5 दिन-रात वह चीखें मार मारकर कब्रों और पहाड़ी इलाके में घुमता-फिरता और अपने आपको पत्थरों से जखमी कर लेता था।

6 ईसा को दूर से देखकर वह दौड़ा और उसके सामने मुँह के बल गिरा। 7 वह जोर से चीखा, “ऐ ईसा अल्लाह तआला के फ़रज़द, मेरा आपके साथ क्या वास्ता है? अल्लाह के नाम में आपको कसम देता हूँ कि मुझे अज़ाब में न डालें।” 8 क्योंकि ईसा ने उसे कहा था, “ऐ नापाक रूह, आदमी में से निकल जा!”

9 फिर ईसा ने पूछा, “तेरा नाम क्या है?”

उसने जवाब दिया, “लशकर, क्योंकि हम बहुत-से हैं।” 10 और वह बार बार मिन्नत करता रहा कि ईसा उन्हें इस इलाके से न निकाले।

11 उस वक़्त करीब की पहाड़ी पर सुअरों का बड़ा गोल चर रहा था। 12 बदरूहों ने ईसा से इलतमास की, “हमें सुअरों में भेज दें, हमें उनमें दाखिल होने दें।” 13 उसने उन्हें इजाज़त दी तो बदरूहें उस आदमी में से निकलकर सुअरों में जा घुसीं। इस पर पूरे गोल के तकरीबन 2,000 सुअर भाग भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में झपटकर डूब रहे।

14 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्होंने शहर और देहात में इस बात का चर्चा किया तो लोग यह मालूम करने के लिए कि क्या हुआ है अपनी जगहों से निकलकर ईसा के पास आए। 15 उसके पास पहुँचे तो वह आदमी मिला जिसमें पहले बदरूहों का लशकर था। अब वह कपड़े पहने वहाँ बैठा था और उस की ज़हनी हालत ठीक थी। यह देखकर वह डर गए। 16 जिन्होंने सब कुछ देखा था उन्होंने लोगों को बताया कि बदरूह-गिरिफ़ता आदमी और सुअरों के साथ क्या हुआ है।

17 फिर लोग ईसा की मिन्नत करने लगे कि वह उनके इलाके से चला जाए।

18 ईसा करती पर सवार होने लगा तो बदरूहों से आज्ञाद किए गए आदमी ने उससे इलतमास की, “मुझे भी अपने साथ जाने दें।”

19 लेकिन ईसा ने उसे साथ जाने न दिया बल्कि कहा, “अपने घर वापस चला जा और अपने अज़ीज़ों को सब कुछ बता जो रब ने तेरे लिए किया है, कि उसने तुझ पर कितना रहम किया है।”

20 चुनौचे आदमी चला गया और दिकपुलिस के इलाके में लोगों को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए क्या कुछ किया है। और सब हैरतज़दा हुए।

याईर की बेटी और बीमार औरत

21 ईसा ने करती में बैठे झील को दुबारा पार किया। जब दूसरे किनारे पहुँचा तो एक हज़ूम उसके गिर्द जमा हो गया। वह अभी झील के पास ही था 22 कि मक़ामी इबादतखाने का एक राहनुमा उसके पास आया। उसका नाम याईर था। ईसा को देखकर वह उसके पाँवों में गिर गया 23 और बहुत मिन्नत करने लगा, “मेरी छोटी बेटी मरनेवाली है, बराहे-करम आकर उस पर अपने हाथ रखें ताकि वह शफ़ा पाकर जिंदा रहे।”

24 चुनौचे ईसा उसके साथ चल पड़ा। एक बड़ी भीड़ उसके पीछे लग गई और लोग उसे घेरकर हर तरफ से दबाने लगे।

25 हूज्म में एक औरत थी जो बारह साल से खून बहने के मरज से रिहाई न पा सकी थी। 26 बहुत डाक्टरों से अपना इलाज करवा करवा कर उसे कई तरह की मूसीबत झेलनी पड़ी थी और इतने में उसके तमाम पैसे भी खर्च हो गए थे। तो भी कोई फायदा न हुआ था बल्कि उस की हालत मज्जीद खराब होती गई। 27 ईसा के बारे में सुनकर वह भीड़ में शामिल हो गई थी। अब पीछे से आकर उसने उसके लिबास को छुआ, 28 क्योंकि उसने सोचा, “अगर मैं सिर्फ उसके लिबास को ही छू लूँ तो मैं शफा पा लूँगी।”

29 खून बहना फौरन बंद हो गया और उसने अपने जिस्म में महसूस किया कि मुझे इस अजियतनाक हालत से रिहाई मिल गई है। 30 लेकिन उसी लम्हे ईसा को खुद महसूस हुआ कि मुझमें से तवानाई निकली है। उसने मुड़कर पूछा, “किसने मेरे कपड़ों को छुआ है?”

31 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “आप खुद देख रहे हैं कि हूज्म आपको घेरकर दबा रहा है। तो फिर आप किस तरह पूछ सकते हैं कि किसने मुझे छुआ?”

32 लेकिन ईसा अपने चारों तरफ देखता रहा कि किसने यह किया है। 33 इस पर वह औरत यह जानकर कि मेरे साथ क्या हुआ है खोफ के मारे लरजती हुई उसके पास आई। वह उसके सामने गिर पड़ी और उसे पूरी हक़ीकत खोलकर बयान की। 34 ईसा ने उससे कहा, “बेटी, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से जा और अपनी अजियतनाक हालत से बची रह।”

35 ईसा ने यह बात अभी खत्म नहीं की थी कि इबादतखाने के राहनुमा याईर के घर की तरफ से कुछ लोग पहुँचे और कहा, “आपकी बेटी फ़ौत हो चुकी है, अब उस्ताद को मज्जीद तकलीफ़ देने की क्या ज़रूरत?”

36 उनकी यह बात नज़रदाज़ करके ईसा ने याईर से कहा, “मत घबराओ, फ़क़त ईमान रखो।” 37 फिर ईसा ने हूज्म को रोक लिया और सिर्फ़ पतरस, याक़ूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने साथ जाने की इजाज़त दी। 38 जब इबादतखाने के राहनुमा के घर पहुँचे तो वहाँ बड़ी अफ़रा-तफ़री नज़र आई। लोग खूब गिर्याओ-ज़ारी कर रहे थे। 39 अंदर जाकर ईसा ने उनसे कहा, “यह कैसा शोर-शराबा है? क्यों रो रहे हो? लड़की मर नहीं गई बल्कि सो रही है।”

40 लोग हँसकर उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे। लेकिन उसने सबको बाहर निकाल दिया। फिर सिर्फ़ लड़की के वालिदिन और अपने तीन शागिर्दों को साथ लेकर वह उस कमरे में दाख़िल हुआ जिसमें लड़की पड़ी थी। 41 उसने उसका हाथ पकड़कर कहा, “तलिथा कूम!” इसका मतलब है, “छोटी लड़की, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि जाग उठ।”

42 लड़की फ़ौरन उठकर चलने-फिरने लगी। उस की उम्र बारह साल थी। यह देखकर लोग घबराकर हैरान रह गए। 43 ईसा ने उन्हें संजीदगी से समझाया कि वह किसी को भी इसके बारे में न बताएँ। फिर उसने उन्हें कहा कि उसे खाने को कुछ दो।

## 6

ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

1 फिर ईसा वहाँ से चला गया और अपने वतनी शहर नासरत में आया। उसके शागिर्द उसके साथ थे। 2 सबत के दिन वह इबादतखाने में तालीम देने लगा। बेशतर लोग उस की बातें सुनकर हैरतज़दा हुए। उन्होंने पूछा, “इसे यह कहाँ से हासिल हुआ है? यह हिकमत जो इसे मिली है, और यह मोजिजे जो इसके हाथों से होते हैं, यह क्या है? 3 क्या यह वह बढई नहीं है जो मरियम का बेटा है और जिसके भाई याक़ूब, यूसुफ़, यहदाह और शमौन हैं? और क्या इसकी बहनें यहीं नहीं रहती?” यों उन्होंने उससे ठोकर खाकर उसे कबूल न किया।

4 ईसा ने उनसे कहा, “नबी की हर जगह इज़ज़त होती है सिवाए उसके वतनी शहर, उसके रिश्तेदारों और उसके अपने खानदान के।”

5 वहाँ वह कोई मोजिजा न कर सका। उसने सिर्फ़ चंद एक मरीजों पर हाथ रखकर उनको शफा दी। 6 और वह उनकी बेएतकादी के सबब से बहुत हैरान था।

ईसा बारह शागिर्दों को तबलीग़ करने भेजता है

इसके बाद ईसा ने इर्दगिर्द के इलाक़े में गाँव गाँव जाकर लोगों को तालीम दी। 7 बारह शागिर्दों को बुलाकर वह उन्हें दो दो करके मुख़ालिफ़ जगहों पर भेजने लगा। इसके लिए उसने उन्हें नापाक रूहों को निकालने का इख़्तियार देकर 8 यह हिदायत की, “सफ़र पर अपने साथ कुछ न लेना सिवाए एक लाठी के। न रोटी, न सामान के लिए कोई बैग, न कमरबंद में कोई पैसा, 9 न एक से ज़्यादा सूट। तुम जूते पहन सकते हो। 10 जिस घर में भी दाख़िल हो उसमें उस मक़ाम से चले जाने तक ठहरो। 11 और अगर कोई मक़ाम तुमको कबूल न करे या तुम्हारी न सुने तो फिर रवाना होते वक़्त अपने पाँवों से गर्द झाड़ दो। यों तुम उनके खिलाफ़ गवाही दोगे।”



12 चुनौचे शागिर्द वहाँ से निकलकर मुनादी करने लगे कि लोग तौबा करें। 13 उन्होंने बहुत-सी बदरूहे निकाल दी और बहुत-से मरीजों पर जैतून का तेल मलकर उन्हें शफा दी।

यहया बपतिस्मा देनेवाले का कत्ल

14 बादशाह हेरोदेस अतिपास ने ईसा के बारे में सुना, क्योंकि उसका नाम मशहर हो गया था। कुछ कह रहे थे, “यहया बपतिस्मा देनेवाला मुरदों में से जी उठा है, इसलिए इस किस्म की मोजिजाना ताकतें उसमें नजर आती हैं।”

औरों ने सोचा, “यह इलियास नबी है।”

15 यह खयाल भी पेश किया जा रहा था कि वह कदीम ज़माने के नबियों जैसा कोई नबी है।

16 लेकिन जब हेरोदेस ने उसके बारे में सुना तो उसने कहा, “यहया जिसका मैंने सर कलम करवाया है मुरदों में से जी उठा है।” 17 वजह यह थी कि हेरोदेस के हुक्म पर ही यहया को गिरफ्तार करके जेल में डाला गया था। यह हेरोदियास की खातिर हुआ था जो पहले हेरोदेस के भाई फिलिप्पस की बीवी थी, लेकिन जिससे उसने अब खुद शादी कर ली थी। 18 यहया ने हेरोदेस को बताया था, “अपने भाई की बीवी से तेरी शादी नाजायज़ है।”

19 इस वजह से हेरोदियास उससे कीना रखती और उसे कत्ल कराना चाहती थी। लेकिन इसमें वह नाकाम रही 20 क्योंकि हेरोदेस यहया से डरता था। वह जानता था कि यह आदमी रास्तबाज़ और मुकद्दस है, इसलिए वह उस की हिफाज़त करता था। जब भी उससे बात होती तो हेरोदेस सुन सुनकर बड़ी उलझन में पड़ जाता। तो भी वह उस की बातें सुनना पसंद करता था।

21 आखिरकार हेरोदियास को हेरोदेस की सालगिरह पर अच्छा मौका मिल गया। सालगिरह को मनाने के लिए हेरोदेस ने अपने बड़े सरकारी अफसरों, मिलट्री कमांडरों और गलील के अब्बल दर्जे के शहरियों की ज़ियाफत की। 22 ज़ियाफत के दौरान हेरोदियास की बेटी अंदर आकर नाचने लगी। हेरोदेस और उसके मेहमानों को यह बहुत पसंद आया और उसने लडकी से कहा, “जो जी चाहे मुझसे माँग तो मैं वह तुझे दूँगा।” 23 बल्कि उसने कसम खाकर कहा, “जो भी तू माँगगी मैं तुझे दूँगा, खाह बादशाही का आधा हिस्सा ही क्यों न हो।”

24 लडकी ने निकलकर अपनी माँ से पूछा, “मैं क्या माँगूँ?”

माँ ने जवाब दिया, “यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर।”

25 लडकी फुरती से अंदर जाकर बादशाह के पास वापस आई और कहा, “मैं चाहती हूँ कि आप मुझे अभी अभी यहया बपतिस्मा देनेवाले का सर ट्रे में माँगा दें।”

26 यह सुनकर बादशाह को बहुत दुख हुआ। लेकिन अपनी कसमों और मेहमानों की मौजूदगी की वजह से वह इनकार करने के लिए भी तैयार नहीं था। 27 चुनौचे उसने फ़ौरन जल्लाद को भेजकर हुक्म दिया कि वह यहया का सर ले आए। जल्लाद ने जेल में जाकर यहया का सर कलम कर दिया। 28 फिर वह उसे ट्रे में रखकर ले आया और लडकी को दे दिया। लडकी ने उसे अपनी माँ के सुपुर्द किया। 29 जब यहया के शागिर्दों को यह खबर पहुँची तो वह आए और उस की लाश लेकर उसे कब्र में रख दिया।

ईसा 5000 अफराद को खाना खिलाता है

30 रसूल वापस आकर ईसा के पास जमा हुए और उसे सब कुछ सुनाने लगे जो उन्होंने किया और सिखाया था। 31 इस दौरान इतने लोग आ और जा रहे थे कि उन्हें खाना खाने का मौका भी न मिला। इसलिए ईसा ने बारह शागिर्दों से कहा, “आओ, हम लोगों से अलग होकर किसी गैरआबाद जगह जाएँ और आराम करें।” 32 चुनौचे वह करती पर सवार होकर किसी वीरान जगह चले गए।

33 लेकिन बहुत-से लोगों ने उन्हें जाते वक़्त पहचान लिया। वह पैदल चलकर तमाम शहरों से निकल आए और दौड़ दौड़कर उनसे पहले मनज़िले-मक़सूद तक पहुँच गए। 34 जब ईसा ने करती पर से उतरकर बड़े हज़म को देखा तो उसे लोगों पर तरस आया, क्योंकि वह उन भेड़ों की मानिंद थे जिनका कोई चरवाहा न हो। वही वह उन्हें बहुत-सी बातें सिखाने लगा।

35 जब दिन ढलने लगा तो उसके शागिर्दों उसके पास आए और कहा, “यह जगह वीरान है और दिन ढलने लगा है। 36 इनको ख़सत कर दें ताकि यह इर्दगिर्द की बस्तियों और देहातों में जाकर खाने के लिए कुछ ख़रीद लें।”

37 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, “तुम ख़ुद इन्हें कुछ खाने को दो।”

उन्होंने पूछा, “हम इसके लिए दरकार चाँदी के 200 सिक्के कहाँ से लेकर रोटी ख़रीदने जाएँ और इन्हें खिलाएँ?”

38 उसने कहा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं? जाकर पता करो!”

उन्होंने मालूम किया। फिर दुबारा उसके पास आकर कहने लगे, “हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं।”

39 इस पर ईसा ने उन्हें हिदायत दी, “तमाम लोगों को गुरोहों में हरी घास पर बिठा दो।” 40 चुनौचे लोग सौ सौ और पचास पचास की सूरत में बैठ गए। 41 फिर ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ देखा

और शुकृगुजारी की दुआ की। फिर उसने रोटियों को तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया ताकि वह लोगों में तकसीम करें। उसने दो मछलियों को भी टुकड़े टुकड़े करके शागिर्दों के जरीए उनमें तकसीम करवाया। 42 और सबने जी भरकर खाया। 43 जब शागिर्दों ने रोटियों और मछलियों के बचे हुए टुकड़े जमा किए तो बारह टोकरे भर गए। 44 खानेवाले मर्दों की कुल तादाद 5,000 थी।

### ईसा पानी पर चलता है

45 इसके ऐन बाद ईसा ने अपने शागिर्दों को मजबूर किया कि वह कश्ती पर सवार होकर आगे निकलें और झील के पार के शहर बैत-सैदा जाएँ। इतने में वह हुजूम को स्रखसत करना चाहता था। 46 उन्हें खैरबाद कहने के बाद वह दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। 47 शाम के वक़्त शागिर्दों की कश्ती झील के बीच तक पहुँच गई थी जबकि ईसा खुद ख़ुशकी पर अकेला रह गया था। 48 वहाँ से उसने देखा कि शागिर्द कश्ती को खेने में बड़ी जिदो-जहद कर रहे हैं, क्योंकि हवा उनके खिलाफ चल रही थी। तकरीबन तीन बजे रात के वक़्त ईसा पानी पर चलते हुए उनके पास आया। वह उनसे आगे निकलना चाहता था, 49 लेकिन जब उन्होंने उसे झील की सतह पर चलते हुए देखा तो सोचने लगे, “यह कोई भूत है” और चीखें मारने लगे। 50 क्योंकि सबने उसे देखकर दहशत खाई।

लेकिन ईसा फ़ौरन उनसे मुखातिब होकर बोला, “हौसला रखो! मैं ही हूँ। मत घबराओ।” 51 फिर वह उनके पास आया और कश्ती में बैठ गया। उसी वक़्त हवा थम गई। शागिर्द निहायत ही हैरतजदा हुए। 52 क्योंकि जब रोटियों का मोजिजा किया गया था तो वह इसका मतलब नहीं समझे थे बल्कि उनके दिल बेहिस हो गए थे।

### गन्नेसरत में मरीजों की शफा

53 झील को पार करके वह गन्नेसरत शहर के पास पहुँच गए और लंगर डाल दिया। 54 ज्योंही वह कश्ती से उतरे लोगों ने ईसा को पहचान लिया। 55 वह भाग भागकर उस पूरे इलाके में से गुजरे और मरीजों को चारपाइयों पर उठा उठाकर वहाँ ले आए जहाँ कहीं उन्होंने खबर मिली कि वह ठहरा हुआ है। 56 जहाँ भी वह गया चाहे गाँव, शहर या बस्ती में, वहाँ लोगों ने बीमारों को चौकों में रखकर उससे मिन्नत की कि वह कम अज़ कम उन्हें अपने लिबास के दामन को छूने दे। और जिसने भी उसे छुआ उसे शफा मिली।

## 7

### बापदादा की तालीम

1 एक दिन फ़रीसी और शरीअत के कुछ आलिम यस्शलम से ईसा से मिलने आए। 2 जब वह वहाँ थे तो उन्होंने देखा कि उसके कुछ शागिर्द अपने हाथ पाक-साफ किए बग़ैर यानी धोए बग़ैर खाना खा रहे हैं।

3 (क्योंकि यहूदी और ख़ासकर फ़रीसी फ़िरके के लोग इस मामले में अपने बापदादा की रिवायत को मानते हैं। वह अपने हाथ अच्छी तरह धोए बग़ैर खाना नहीं खाते। 4 इसी तरह जब वह कभी बाज़ार से आते हैं तो वह गुस्ल करके ही खाना खाते हैं। वह बहुत-सी और रिवायतों पर भी अमल करते हैं, मसलन कप, जग और केतली को धोकर पाक-साफ करने की रस्म पर।)

5 चुनौचे फ़रीसियों और शरीअत के आलिमों ने ईसा से पूछा, “आपके शागिर्द बापदादा की रिवायतों के मुताबिक ज़िंदगी क्यों नहीं गुज़ारते बल्कि रोटी भी हाथ पाक-साफ किए बग़ैर खाते हैं?”

6 ईसा ने जवाब दिया, “यसायाह नबी ने तुम रियाकारों के बारे में ठीक कहा जब उसने यह नबूवत की, ‘यह कौम अपने होंटों से तो मेरा एहतराम करती है लेकिन उसका दिल मुझसे दूर है।’

7 वह मेरी परस्तिश करते तो हैं, लेकिन बेफ़ायदा।

क्योंकि वह सिर्फ़ इनसान ही के अहकाम सिखाते हैं।’

8 तुम अल्लाह के अहकाम को छोड़कर इनसानी रिवायात की पैरवी करते हो।”

9 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, “तुम कितने सलीके से अल्लाह का हुकम मनसूख करते हो ताकि अपनी रिवायात को कायम रख सको। 10 मसलन मूसा ने फ़रमाया, ‘अपने बाप और अपनी माँ की इज़्त करना’ और ‘जो अपने बाप या माँ पर लानत करे उसे सज़ाए-मौत दी जाए।’ 11 लेकिन जब कोई अपने वालिदैन से कहे, ‘मैं आपकी मदद नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने मन्नत मानी है कि जो मुझे आपको देना था वह अल्लाह के लिए कुरबानी है’ तो तुम इसे जायज़ करार देते हो। 12 यों तुम उसे अपने माँ-बाप की मदद करने से रोक लेते हो। 13 और इसी तरह तुम अल्लाह के कलाम को अपनी उस रिवायत से मनसूख कर लेते हो जो तुमने नसल-दर-नसल मुंतकिल की है। तुम इस किस्म की बहुत-सी हरकतें करते हो।”

क्या कुछ इनसान को नापाक कर देता है?

14 फिर ईसा ने दुबारा हजूम को अपने पास बुलाया और कहा, “सब मेरी बात सुनो और इसे समझने की कोशिश करो। 15 कोई ऐसी चीज है नहीं जो इनसान में दाखिल होकर उसे नापाक कर सके, बल्कि जो कुछ इनसान के अंदर से निकलता है वही उसे नापाक कर देता है।” 16 [अगर कोई सुन सकता है तो वह सुन ले।]

17 फिर वह हजूम को छोड़कर किसी घर में दाखिल हुआ। वहाँ उसके शागिर्दों ने पूछा, “इस तमसील का क्या मतलब है?”

18 उसने कहा, “क्या तुम भी इतने नासमझ हो? क्या तुम नहीं समझते कि जो कुछ बाहर से इनसान में दाखिल होता है वह उसे नापाक नहीं कर सकता? 19 वह तो उसके दिल में नहीं जाता बल्कि उसके मेदे में और वहाँ से निकलकर जाए-जरूरत में।” (यह कहकर ईसा ने हर क्रिस्म का खाना पाक-साफ करार दिया।)

20 उसने यह भी कहा, “जो कुछ इनसान के अंदर से निकलता है वही उसे नापाक करता है। 21 क्योंकि लोगों के अंदर से, उनके दिलों ही से बुरे खयालात, हारामकारी, चोरी, कत्लो-गारत, 22 जिनाकारी, लालच, बदकारी, धोका, शहवतपरस्ती, हसद, बुहतान, गुस्तर और हमाकत निकलते हैं। 23 यह तमाम बुराइयाँ अंदर ही से निकलकर इनसान को नापाक कर देती हैं।”

### गैरयहूदी औरत का ईमान

24 फिर ईसा गलील से रवाना होकर शिमाल में सूर के इलाके में आया। वहाँ वह किसी घर में दाखिल हुआ। वह नहीं चाहता था कि किसी को पता चले, लेकिन वह पोशीदा न रह सका। 25 फौरन एक औरत उसके पास आई जिसने उसके बारे में सुन रखा था। वह उसके पाँवों में गिर गई। उस की छोटी बेटी किसी नापाक रूह के कब्जे में थी, 26 और उसने ईसा से गुजारिश की, “बदरूह को मेरी बेटी में से निकाल दें।” लेकिन वह औरत यूनानी थी और सुस्फेनीके के इलाके में पैदा हुई थी, 27 इसलिए ईसा ने उसे बताया, “पहले बच्चों को जी भरकर खाने दे, क्योंकि यह मुनासिब नहीं कि बच्चों से खाना लेकर कुत्तों के सामने फेंक दिया जाए।”

28 उसने जवाब दिया, “जी खुदावंद, लेकिन मेज़ के नीचे के कुत्ते भी बच्चों के गिरे हुए टुकड़े खाते हैं।”

29 ईसा ने कहा, “तूने अच्छा जवाब दिया, इसलिए जा, बदरूह तेरी बेटी में से निकल गई है।”

30 औरत अपने घर वापस चली गई तो देखा कि लड़की बिस्तर पर पड़ी है और बदरूह उसमें से निकल चुकी है।

### गौरी-बहरे की शफा

31 जब ईसा सूर से रवाना हुआ तो वह पहले शिमाल में वाके शहर सैदा को चला गया। फिर वहाँ से भी फ़ारिग होकर वह दुबारा गलील की झील के किनारे वाके दिकपुलिस के इलाके में पहुँच गया। 32 वहाँ उसके पास एक बहरा आदमी लाया गया जो मुश्किल ही से बोल सकता था। उन्होंने मिन्नत की कि वह अपना हाथ उस पर रखे। 33 ईसा उसे हजूम से दूर ले गया। उसने अपनी उँगलियाँ उसके कानों में डाली और थूककर आदमी की ज़बान को छुआ। 34 फिर आसमान की तरफ नज़र उठाकर उसने आह भरी और उससे कहा, “इफ़तह!” (इसका मतलब है “खुल जा!”)

35 फ़ौरन आदमी के कान खुल गए, ज़बान का बंधन टूट गया और वह ठीक ठीक बोलने लगा। 36 ईसा ने हाज़िरीन को हुक्म दिया कि वह किसी को यह बात न बताएँ। लेकिन जितना वह मना करता था उतना ही लोग इसकी खबर फैलाते थे। 37 वह निहायत ही हैरान हुए और कहने लगे, “इसने सब कुछ अच्छा किया है, यह बहरों को सुनने की ताकत देता है और गौरी को बोलने की।”

## 8

### ईसा 4000 अफ़राद को खाना खिलाता है

1 उन दिनों में एक और मरतबा ऐसा हुआ कि बहुत-से लोग जमा हुए जिनके पास खाने का बंदोबस्त नहीं था। चुनौचे ईसा ने अपने शागिर्दों को बुलाकर उनसे कहा, 2 “मुझे इन लोगों पर तरस आता है। इन्हें मेरे साथ ठहरे तीन दिन हो चुके हैं और इनके पास खाने की कोई चीज नहीं है। 3 लेकिन अगर मैं इन्हें रखसत कर दूँ और वह इस भूकी हालत में अपने अपने घर चले जाएँ तो वह रास्ते में थककर चूर हो जाएंगे। और इनमें से कई दूर-दराज़ से आए हैं।”

4 उसके शागिर्दों ने जवाब दिया, “इस वीरान इलाके में कहाँ से इतना खाना मिल सकेगा कि यह खाकर सेर हो जाएँ?”

5 ईसा ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?”

उन्होंने जवाब दिया, “सात।”

6 ईसा ने हजूम को ज़मीन पर बैठने को कहा। फिर सात रोटियों को लेकर उसने शुक़रुज़ारी की दुआ की और उन्हें तोड़ तोड़कर अपने शागिर्दों को तकसीम करने के लिए दे दिया। 7 उनके पास दो-चार छोटी मछलियाँ भी थी। ईसा ने उन पर भी

शुक्रगुजारी की दूआ की और शागिर्दों को उन्हें बाँटने को कहा।<sup>8</sup> लोगों ने जी भरकर खाया। बाद में जब खाने के बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो सात बड़े टोकरे भर गए।<sup>9</sup> तकरीबन 4,000 आदमी हाज़िर थे। खाने के बाद ईसा ने उन्हें सखसत कर दिया<sup>10</sup> और फ़ौरन कशती पर सवार होकर अपने शागिर्दों के साथ दल्मनूता के इलाक़े में पहुँच गया।

**फ़रीसी इलाही निशान तलब करते हैं**

11 इस पर फ़रीसी निकलकर ईसा के पास आए और उससे बहस करने लगे। उसे आजमाने के लिए उन्होंने मुतालबा किया कि वह उन्हें आसमान की तरफ से कोई इलाही निशान दिखाए ताकि उसका इख्तियार साबित हो जाए।<sup>12</sup> लेकिन उसने ठंडी आह भरकर कहा, “यह नसल क्यों इलाही निशान का मुतालबा करती है? मैं तुमको सच बताता हूँ कि इसे कोई निशान नहीं दिया जाएगा।”

13 और उन्हें छोड़कर वह दुबारा कशती में बैठ गया और झील को पार करने लगा।

**फ़रीसियों और हेरोदेस का खमीर**

14 लेकिन शागिर्द अपने साथ खाना लाना भूल गए थे। कशती में उनके पास सिर्फ़ एक रोटी थी।<sup>15</sup> ईसा ने उन्हें हिदायत की, “खबरदार, फ़रीसियों और हेरोदेस के खमीर से होशियार रहना।”

16 शागिर्द आपस में बहस करने लगे, “वह इसलिए कह रहे होंगे कि हमारे पास रोटी नहीं है।”

17 ईसा को मालूम हुआ कि वह क्या सोच रहे हैं। उसने कहा, “तुम आपस में क्यों बहस कर रहे हो कि हमारे पास रोटी नहीं है? क्या तुम अब तक न जानते, न समझते हो? क्या तुम्हारे दिल इतने बेहिस हो गए हैं? 18 तुम्हारी आँखें तो हैं, क्या तुम देख नहीं सकते? तुम्हारे कान तो हैं, क्या तुम सुन नहीं सकते? और क्या तुम्हें याद नहीं<sup>19</sup> जब मैंने 5,000 आदमियों को पाँच रोटियों से सेर कर दिया तो तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे?”

उन्होंने जवाब दिया, “बारह”।

20 “और जब मैंने 4,000 आदमियों को सात रोटियों से सेर कर दिया तो तुमने बचे हुए टुकड़ों के कितने टोकरे उठाए थे?”

उन्होंने जवाब दिया, “सात।”

21 उसने पूछा, “क्या तुम अभी तक नहीं समझते?”

**बैत-सैदा में अंधे की शफ़ा**

22 वह बैत-सैदा पहुँचे तो लोग ईसा के पास एक अंधे आदमी को लाए। उन्होंने इलतमास की कि वह उसे छुए।<sup>23</sup> ईसा अंधे का हाथ पकड़कर उसे गाँव से बाहर ले गया। वहाँ उसने उस की आँखों पर थूककर अपने हाथ उस पर रख दिए और पूछा, “क्या तू कुछ देख सकता है?”

24 आदमी ने नज़र उठाकर कहा, “हाँ, मैं लोगों को देख सकता हूँ। वह फिरते हुए दरख्तों की मानिंद दिखाई दे रहे हैं।”

25 ईसा ने दुबारा अपने हाथ उस की आँखों पर रखे। इस पर आदमी की आँखें पूरे तौर पर खुल गईं, उस की नज़र बहाल हो गईं और वह सब कुछ साफ़ साफ़ देख सकता था।<sup>26</sup> ईसा ने उसे सखसत करके कहा, “इस गाँव में वापस न जाना बल्कि सीधा अपने घर चला जा।”

**पतरस का इकरार**

27 फिर ईसा वहाँ से निकलकर अपने शागिर्दों के साथ कैसरिया-फिलिप्पी के करीब के देहातों में गया। चलते चलते उसने उनसे पूछा, “मैं लोगों के नज़दीक कौन हूँ?”

28 उन्होंने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि नबियों में से एक।”

29 उसने पूछा, “लेकिन तुम क्या कहते हो? तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?”

पतरस ने जवाब दिया, “आप मसीह हैं।”

30 यह सुनकर ईसा ने उन्हें किसी को भी यह बात बताने से मना किया।

**ईसा अपनी मौत का जिक्र करता है**

31 फिर ईसा उन्हें तालीम देने लगा, “लाज़िम है कि इब्ने-आदम बहुत दूख उठाकर बुजुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द किया जाए। उसे क़ल्ल भी किया जाएगा, लेकिन वह तीसरे दिन जी उठेगा।”<sup>32</sup> उसने उन्हें यह बात साफ़ साफ़ बताई। इस पर पतरस उसे एक तरफ़ ले जाकर समझाने लगा।<sup>33</sup> ईसा मुड़कर शागिर्दों की तरफ़ देखने लगा। उसने पतरस को डाँटा, “शैतान, मेरे सामने से हट जा! तू अल्लाह की सोच नहीं रखता बल्कि इनसान की।”

34 फिर उसने शागिर्दों के अलावा हजूम को भी अपने पास बुलाया। उसने कहा, “जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। 35 क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी और अल्लाह की खुशखबरी की खातिर अपनी जान खो दे वही उसे बचाएगा। 36 क्या फायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए, लेकिन वह अपनी जान से महरूम हो जाए? 37 इनसान अपनी जान के बदले क्या दे सकता है? 38 जो भी इस जिनाकार और गुनाहआल्ला नसल के सामने मेरे और मेरी बातों के सबब से शरमाए उससे इब्ने-आदम भी उस वक़्त शरमाएगा जब वह अपने बाप के जलाल में मुकद्दस फ़रिशतों के साथ आएगा।”

## 9

1 ईसा ने उन्हें यह भी बताया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही अल्लाह की बादशाही को कुदरत के साथ आते हुए देखेंगे।”

**पहाड़ पर ईसा की सूरत बदल जाती है**

2 छः दिन के बाद ईसा सिर्फ़ पतरस, याक़ूब और यहन्ना को अपने साथ लेकर ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया। वहाँ उस की शक़्लो-सूरत उनके सामने बदल गई। 3 उसके कपड़े चमकने लगे और निहायत सफ़ेद हो गए। दुनिया में कोई भी धोबी कपड़े इतने सफ़ेद नहीं कर सकता। 4 फिर इलियास और मूसा जाहिर हुए और ईसा से बात करने लगे। 5 पतरस बोल उठा, “उस्ताद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आएँ, हम तीन झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक इलियास के लिए।” 6 उसने यह इसलिए कहा कि तीनों शागिर्द सहमे हुए थे और वह नहीं जानता था कि क्या कहे।

7 इस पर एक बादल आकर उन पर छा गया और बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है। इसकी सुनो।” 8 अचानक मूसा और इलियास गायब हो गए। शागिर्दों ने चारों तरफ़ देखा, लेकिन सिर्फ़ ईसा नज़र आया।

9 वह पहाड़ से उतरने लगे तो ईसा ने उन्हें हुक्म दिया, “जो कुछ तुमने देखा है उसे उस वक़्त तक किसी को न बताना जब तक कि इब्ने-आदम मूरदों में से जी न उठे।”

10 चुनौचे उन्होंने यह बात अपने तक महदूद रखी। लेकिन वह कई बार आपस में बहस करने लगे कि मूरदों में से जी उठने से क्या मुराद हो सकती है। 11 फिर उन्होंने उससे पूछा, “शरीअत के उलामा क्यों कहते हैं कि मसीह की आमद से पहले इलियास का आना ज़रूरी है?”

12 ईसा ने जवाब दिया, “इलियास तो ज़रूर पहले सब कुछ बहाल करने के लिए आएगा। लेकिन कलामे-मुकद्दस में इब्ने-आदम के बारे में यह क्यों लिखा है कि उसे बहुत दुख उठाना और हकीर समझा जाना है? 13 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ, इलियास तो आ चुका है और उन्होंने उसके साथ जो चाहा किया। यह भी कलामे-मुकद्दस के मुताबिक ही हुआ है।”

**ईसा लडके में से बद्रूह निकालता है**

14 जब वह बाकी शागिर्दों के पास वापस पहुँचे तो उन्होंने देखा कि उनके गिर्द एक बड़ा हजूम जमा है और शरीअत के कुछ उलामा उनके साथ बहस कर रहे हैं। 15 ईसा को देखते ही लोगों ने बड़ी बेचैनी से उस की तरफ़ दौड़कर उसे सलाम किया। 16 उसने शागिर्दों से सवाल किया, “तुम उनके साथ किसके बारे में बहस कर रहे हो?”

17 हजूम में से एक आदमी ने जवाब दिया, “उस्ताद, मैं अपने बेटे को आपके पास लाया था। वह ऐसी बद्रूह के कब्जे में है जो उसे बोलने नहीं देती। 18 और जब भी वह उस पर गालिब आती है वह उसे ज़मीन पर पटक देती है। बेटे के मुँह से झाग निकलने लगता और वह दौँत पीसने लगता है। फिर उसका जिस्म अकड़ जाता है। मैंने आपके शागिर्दों से कहा तो था कि वह बद्रूह को निकाल दें, लेकिन वह न निकाल सके।”

19 ईसा ने उनसे कहा, “ईमान से खाली नसल! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँ, कब तक तुम्हें बरदाशत करूँ? लडके को मेरे पास ले आओ।” 20 वह उसे ईसा के पास ले आए।

ईसा को देखते ही बद्रूह लडके को झँझोडने लगी। वह ज़मीन पर गिर गया और इधर उधर लुडकते हुए मुँह से झाग निकालने लगा। 21 ईसा ने बाप से पूछा, “इसके साथ कब से ऐसा हो रहा है?”

उसने जवाब दिया, “बचपन से। 22 बहुत दफ़ा उसने इसे हलाक करने की खातिर आग या पानी में गिराया है। अगर आप कुछ कर सकते हैं तो तरस खाकर हमारी मदद करें।”

23 ईसा ने पूछा, “क्या मतलब, ‘अगर आप कुछ कर सकते हैं’? जो ईमान रखता है उसके लिए सब कुछ मुमकिन है।”

24 लडके का बाप फ़ौरन चिल्ला उठा, “मैं ईमान रखता हूँ। मेरी बेएतकादी का इलाज करें।”

25 ईसा ने देखा कि बहुत-से लोग दौड़ दौड़कर देखने आ रहे हैं, इसलिए उसने नापाक रूह को डाँटा, “ऐ ग़ौरी और बहरी बद्रूह, मैं तुझे हुक्म देता हूँ कि इसमें से निकल जा। कभी भी इसमें दुबारा दाखिल न होना।”

26 इस पर बदरूह चीख उठी और लड़के को शिष्ट से झँडोड़कर निकल गई। लड़का लाश की तरह ज़मीन पर पड़ा रहा, इसलिए सबने कहा, “वह मर गया है।” 27 लेकिन ईसा ने उसका हाथ पकड़कर उठने में उस की मदद की और वह खड़ा हो गया।

28 बाद में जब ईसा किसी घर में जाकर अपने शागिर्दों के साथ अकेला था तो उन्होंने उससे पूछा, “हम बदरूह को क्यों न निकाल सके?”

29 उसने जवाब दिया, “इस क्रिस्म की बदरूह सिर्फ़ दुआ से निकाली जा सकती है।”

**ईसा दूसरी दफ़ा अपनी मौत का जिक्र करता है**

30 वहाँ से निकलकर वह गलील में से गुज़रे। ईसा नहीं चाहता था कि किसी को पता चले कि वह कहाँ है, 31 क्योंकि वह अपने शागिर्दों को तालीम दे रहा था। उसने उनसे कहा, “इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा। वह उसे कत्ल करेंगे, लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

32 लेकिन शागिर्द इसका मतलब न समझे और वह ईसा से इसके बारे में पूछने से डरते भी थे।

**कौन सबसे बड़ा है?**

33 चलते चलते वह कफ़र्नहम पहुँचे। जब वह किसी घर में थे तो ईसा ने शागिर्दों से सवाल किया, “रास्ते में तुम किस बात पर बहस कर रहे थे?”

34 लेकिन वह खामोश रहे, क्योंकि वह रास्ते में इस पर बहस कर रहे थे कि हममें से बड़ा कौन है? 35 ईसा बैठ गया और बारह शागिर्दों को बुलाकर कहा, “जो अब्बल होना चाहता है वह सबसे आखिर में आए और सबका खादिम हो।” 36 फिर उसने एक छोटे बच्चे को लेकर उनके दरमियान खड़ा किया। उसे गले लगाकर उसने उनसे कहा, 37 “जो मेरे नाम में इन बच्चों में से किसी को कबूल करता है वह मुझे ही कबूल करता है। और जो मुझे कबूल करता है वह मुझे नहीं बल्कि उसे कबूल करता है जिसने मुझे भेजा है।”

**जो हमारे खिलाफ नहीं वह हमारे हक में है**

38 यूहन्ना बोल उठा, “उस्ताद, हमने एक शाव्स को देखा जो आपका नाम लेकर बदरूहें निकाल रहा था। हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारी पैरवी नहीं करता।”

39 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे मना न करना। जो भी मेरे नाम में मोजिज़ा करे वह अगले लमहे मेरे बारे में बुरी बातें नहीं कह सकेगा। 40 क्योंकि जो हमारे खिलाफ नहीं वह हमारे हक में है। 41 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी तुम्हें इस वजह से पानी का ग्लास पिलाए कि तुम मसीह के पैरोकार हो उसे ज़रूर अन्न मिलेगा।

**आज़माइशें**

42 और जो कोई मुझ पर ईमान रखनेवाले इन छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए उसके लिए बेहतर है कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधकर उसे समुंद्र में फेंक दिया जाए। 43-44 अगर तेरा हाथ तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काट डालना। इससे पहले कि तू दो हाथों समेत जहन्नुम की कभी न बुझनेवाली आग में चला जाए [यानी वहाँ जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि तू एक हाथ से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाखिल हो। 45-46 अगर तेरा पाँव तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे काट डालना। इससे पहले कि तुझे दो पाँवों समेत जहन्नुम में फेंका जाए [जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती] बेहतर यह है कि तू एक पाँव से महरूम होकर अबदी ज़िंदगी में दाखिल हो। 47-48 और अगर तेरी आँख तुझे गुनाह करने पर उकसाए तो उसे निकाल देना। इससे पहले कि तुझे दो आँखों समेत जहन्नुम में फेंका जाए जहाँ लोगों को खानेवाले कीड़े कभी नहीं मरते और आग कभी नहीं बुझती बेहतर यह है कि तू एक आँख से महरूम होकर अल्लाह की बादशाही में दाखिल हो।

49 क्योंकि हर एक को आग से नमकीन किया जाएगा [और हर एक कुरबानी नमक से नमकीन की जाएगी]।

50 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उसका जायका जाता रहे तो उसे क्योंकिर दुबारा नमकीन किया जा सकता है? अपने दरमियान नमक की खूबियाँ बरकरार रखो और सुलह-सलामती से एक दूसरे के साथ ज़िंदगी गुज़ारो।”

## 10

**तलाक के बारे में तालीम**

1 फिर ईसा उस जगह को छोड़कर यहूदिया के इलाके में और दरियाए-यरदन के पार चला गया। वहाँ भी हज़म जमा हो गया। उसने उन्हें मामूल के मुताबिक तालीम दी।

2 कुछ फ़रीसी आए और उसे फँसाने की गरज़ से सवाल किया, “क्या जायज़ है कि मर्द अपनी बीवी को तलाक दे?”

3 ईसा ने उनसे पूछा, “मूसा ने शरीअत में तुमको क्या हिदायत की है?”

4 उन्होंने कहा, “उसने इजाजत दी है कि आदमी तलाकनामा लिखकर बीवी को रखसत कर दे।”

5 ईसा ने जवाब दिया, “मूसा ने तुम्हारी सख्तदिली की वजह से तुम्हारे लिए यह हुक्म लिखा था। 6 लेकिन इब्तिदा में ऐसा नहीं था। दुनिया की तखलीक के वक़्त अल्लाह ने उन्हें मर्द और औरत बनाया। 7 इसलिये मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। 8 वह दोनों एक हो जाते हैं।” यों वह कलामे-मुक़द्स के मुताबिक दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। 9 तो जिसे अल्लाह ने खुद जोड़ा है उसे इनसान जुदा न करे।”

10 किसी घर में आकर शागिर्दों ने यह बात दुबारा छेड़कर ईसा से मज़ीद दरियाफ्त किया। 11 उसने उन्हें बताया, “जो अपनी बीवी को तलाक देकर किसी और से शादी करे वह उसके साथ जिना करता है। 12 और जो औरत अपने खाविद को तलाक देकर किसी और से शादी करे वह भी जिना करती है।”

ईसा छोटे बच्चों को बरकत देता है

13 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को ईसा के पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। लेकिन शागिर्दों ने उनको मलामत की।

14 यह देखकर ईसा नाराज़ हुआ। उसने उनसे कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि अल्लाह की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है। 15 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो अल्लाह की बादशाही को बच्चे की तरह कबूल न करे वह उसमें दाखिल नहीं होगा।” 16 यह कहकर उसने उन्हें गले लगाया और अपने हाथ उन पर रखकर उन्हें बरकत दी।

अमीर मुश्किल से बादशाही में दाखिल हो सकते हैं

17 जब ईसा रवाना होने लगा तो एक आदमी दौड़कर उसके पास आया और उसके सामने घुटने टेककर पूछा, “नेक उस्ताद, मैं क्या करूँ ताकि अबदी जिंदगी मीरास में पाऊँ?”

18 ईसा ने पूछा, “तू मुझे नेक क्यों कहता है? कोई नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह। 19 तू शरीअत के अहकाम से तो वाकिफ है। क़त्ल न करना, जिना न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, धोका न देना, अपने बाप और अपनी माँ की इज़ज़त करना।”

20 आदमी ने जवाब दिया, “उस्ताद, मैंने जवानी से आज तक इन तमाम अहकाम की पैरवी की है।”

21 ईसा ने गौर से उस की तरफ देखा। उसके दिल में उसके लिए प्यार उभर आया। वह बोला, “एक काम रह गया है। जा, अपनी पूरी जायदाद फ़रोख्त करके पैसे गरीबों में तकसीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान पर खजाना जमा हो जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।” 22 यह सुनकर आदमी का मुँह लटक गया और वह मायूस होकर चला गया, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।

23 ईसा ने अपने इर्दगिर्द देखकर शागिर्दों से कहा, “दौलतमंदों के लिए अल्लाह की बादशाही में दाखिल होना कितना मुश्किल है!”

24 शागिर्द उसके यह अलफाज़ सुनकर हैरान हुए। लेकिन ईसा ने दुबारा कहा, “बच्चो! अल्लाह की बादशाही में दाखिल होना कितना मुश्किल है। 25 अमीर के अल्लाह की बादशाही में दाखिल होने की निसबत ज़्यादा आसान यह है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।”

26 इस पर शागिर्द मज़ीद हैरतज़दा हुए और एक दूसरे से कहने लगे, “फिर किस को नजात मिल सकती है?”

27 ईसा ने गौर से उनकी तरफ देखकर जवाब दिया, “यह इनसान के लिए तो नामुमकिन है, लेकिन अल्लाह के लिए नहीं। उसके लिए सब कुछ मुमकिन है।”

28 फिर पतरस बोल उठा, “हम तो अपना सब कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं।”

29 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, जिसने भी मेरी और अल्लाह की खुशखबरी की खातिर अपने घर, भाइयों, बहनो, माँ, बाप, बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है 30 उसे इस ज़माने में ईज़ारसानी के साथ साथ सौ गुना ज़्यादा घर, भाई, बहन, माँ, बच्चे और खेत मिल जाएंगे। और आनेवाले ज़माने में उसे अबदी जिंदगी मिलेगी। 31 लेकिन बहुत-से लोग जो अब अब्बल हैं उस वक़्त आखिर होंगे और जो अब आखिर हैं वह अब्बल होंगे।”

ईसा तीसरी दफा अपनी मौत का जिक्र करता है

32 अब वह यरूशलम की तरफ बढ़ रहे थे और ईसा उनके आगे आगे चल रहा था। शागिर्द हैरतज़दा थे जबकि उनके पीछे चलनेवाले लोग सहमे हुए थे। एक और दफा बारह शागिर्दों को एक तरफ ले जाकर ईसा उन्हें वह कुछ बताने लगा जो उसके साथ होने को था। 33 उसने कहा, “हम यरूशलम की तरफ बढ़ रहे हैं। वहाँ इब्ने-आदम को राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा के हवाले कर दिया जाएगा। वह उस पर सज़ाए-मौत का फतवा देकर उसे ग़ैरयहूदियों के हवाले कर देंगे, 34 जो उसका मज़ाक उड़ाएँगे, उस पर थूकेँगे, उसको कोड़े मारेँगे और उसे क़त्ल करेँगे। लेकिन तीन दिन के बाद वह जी उठेगा।”

याकूब और यहन्ना की गुजारिश

35 फिर जबदी के बेटे याकूब और यहन्ना उसके पास आए। वह कहने लगे, “उस्ताद, आपसे एक गुजारिश है।”

36 उसने पूछा, “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?”

37 उन्होंने जवाब दिया, “जब आप अपने जलाली तख्त पर बैठेंगे तो हममें से एक को अपने दाएँ हाथ बैठने दें और दूसरे को बाएँ हाथ।”

38 ईसा ने कहा, “तुमको नहीं मालूम कि क्या माँग रहे हो। क्या तुम वह प्याला पी सकते हो जो मैं पीने को हूँ या वह बपतिस्मा ले सकते हो जो मैं लेने को हूँ?”

39 उन्होंने जवाब दिया, “जी, हम कर सकते हैं।” फिर ईसा ने उनसे कहा, “तुम ज़रूर वह प्याला पियोगे जो मैं पीने को हूँ और वह बपतिस्मा लोगे जो मैं लेने को हूँ। 40 लेकिन यह फ़ैसला करना मेरा काम नहीं कि कौन मेरे दाएँ हाथ बैठेगा और कौन बाएँ हाथ। अल्लाह ने यह मक़ाम सिर्फ़ उन्हीं के लिए तैयार किया है जिनको उसने खुद मुकर्रर किया है।”

41 जब बाकी दस शागिर्दों ने यह सुना तो उन्हें याकूब और यहन्ना पर गुस्सा आया। 42 इस पर ईसा ने उन सबको बुलाकर कहा, “तुम जानते हो कि कौमों के हुक्मरान अपनी रिआया पर रोब डालते हैं, और उनके बड़े अफसर उन पर अपने इख्तियार का ग़लत इस्तेमाल करते हैं। 43 लेकिन तुम्हारे दरमियान ऐसा नहीं है। जो तुममें बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा खादिम बने 44 और जो तुममें अब्बल होना चाहे वह सबका गुलाम बने। 45 क्योंकि इब्ने-आदम भी इसलिए नहीं आया कि खिदमत ले बल्कि इसलिए कि खिदमत करे और अपनी जान फ़िधा के तौर पर देकर बहुतां को छुड़ाए।”

अंधे बरतिमाई की शफा

46 वह यरीह पहुँच गए। उसमें से गुजरकर ईसा शागिर्दों और एक बड़े हुजूम के साथ बाहर निकलने लगा। वहाँ एक अंधा भीक माँगनेवाला रास्ते के किनारे बैठा था। उसका नाम बरतिमाई (तिमाई का बेटा) था। 47 जब उसने सुना कि ईसा नासरी करीब ही है तो वह चिल्लाने लगा, “ईसा इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”

48 बहुत-से लोगों ने उसे डाँटकर कहा, “ख़ामोश!” लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से पुकारता रहा, “इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें!”

49 ईसा स्क्रकर बोला, “उसे बुलाओ।”

चुनौचे उन्होंने उसे बुलाकर कहा, “हौसला रख। उठ, वह तुझे बुला रहा है।”

50 बरतिमाई ने अपनी चादर ज़मीन पर फेंक दी और उछलकर ईसा के पास आया।

51 ईसा ने पूछा, “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?”

उसने जवाब दिया, “उस्ताद, यह कि मैं देख सकूँ।”

52 ईसा ने कहा, “जा, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।”

ज्योंही ईसा ने यह कहा अंधे की आँखें बहाल हो गईं और वह ईसा के पीछे चलने लगा।

## 11

यस्शलम में ईसा का पुरजोश इस्तकबाल

1 वह यस्शलम के करीब बैत-फ़गे और बैत-अनियाह पहुँचने लगे। यह गाँव जैतून के पहाड़ पर वाके थे। ईसा ने अपने शागिर्दों में से दो को भेजा 2 और कहा, “सामनेवाले गाँव में जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बँधा हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ है। उसे खोलकर यहाँ ले आओ। 3 अगर कोई पूछे कि यह क्या कर रहे हो तो उसे बता देना, ‘ख़ुदावंद को इसकी ज़रूरत है। वह जल्द ही इसे वापस भेज देंगे।’”

4 दोनों शागिर्द वहाँ गए तो एक जवान गधा देखा जो बाहर गली में किसी दरवाज़े के साथ बँधा हुआ था। जब वह उस की रस्सी खोलने लगे 5 तो वहाँ खड़े कुछ लोगों ने पूछा, “तुम यह क्या कर रहे हो? जवान गधे को क्यों खोल रहे हो?”

6 उन्होंने जवाब में वह कुछ बता दिया जो ईसा ने उन्हें कहा था। इस पर लोगों ने उन्हें खोलने दिया। 7 वह जवान गधे को ईसा के पास ले आए और अपने कपड़े उस पर रख दिए। फिर ईसा उस पर सवार हुआ। 8 जब वह चल पडा तो बहुत-से लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए। बाज़ ने हरी शाखें भी उसके आगे बिछा दी जो उन्होंने खेतों के दरख्तों से काट ली थीं। 9 लोग ईसा के आगे और पीछे चल रहे थे और चिल्ला चिल्लाकर नारे लगा रहे थे, “होशाना! \*

मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है। 10 मुबारक है हमारे बाप दाऊद की बादशाही जो आ रही है।

\* 11:9 होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उन्सूर भी पाया जाता है।



आसमान की बुलंदियों पर होशाना।” †

11 यों ईसा यरूशलम में दाखिल हुआ। वह बैतुल-मुकद्दस में गया और अपने इर्दगिर्द नजर दौड़ाकर सब कुछ देखने के बाद चला गया। चूँकि शाम का पिछला वक़्त था इसलिए वह बारह शागिर्दों समेत शहर से निकलकर बैत-अनियाह वापस गया।

### अंजीर के दरख़्त पर लानत

12 अगले दिन जब वह बैत-अनियाह से निकल रहे थे तो ईसा को भूक लगी। 13 उसने कुछ फ़ासले पर अंजीर का एक दरख़्त देखा जिस पर पते थे। इसलिए वह यह देखने के लिए उसके पास गया कि आया कोई फल लगा है या नहीं। लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो देखा कि पते ही पते हैं। वजह यह थी कि अंजीर का मौसम नहीं था। 14 इस पर ईसा ने दरख़्त से कहा, “अब से हमेशा तक तुझसे फल खाया न जा सके!” उसके शागिर्दों ने उस की यह बात सुन ली।

### ईसा बैतुल-मुकद्दस में जाता है

15 वह यरूशलम पहुँच गए। और ईसा बैतुल-मुकद्दस में जाकर उन्हें निकालने लगा जो वहाँ कुरबानियों के लिए दरका चीज़ों की खरीदो-फ़रोख़्त कर रहे थे। उसने सिक्कों का तबादला करनेवालों की मेज़ें और कबूतर बेचनेवालों की कुरसियाँ उलट दी 16 और जो तिजारती माल लेकर बैतुल-मुकद्दस के सहनों में से गुज़र रहे थे उन्हें रोक लिया। 17 तालीम देकर उसने कहा, “क्या कलामे-मुकद्दस में नहीं लिखा है, ‘मेरा घर तमाम क़ौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा’? लेकिन तुमने उसे डाकुओं के अंठे में बदल दिया है।”

18 राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा ने जब यह सुना तो उसे क़त्ल करने का मौक़ा ढूँढने लगे। क्योंकि वह उससे डरते थे इसलिए कि पूरा हुज़ूम उस की तालीम से निहायत हैरान था।

19 जब शाम हुई तो ईसा और उसके शागिर्द शहर से निकल गए।

### अंजीर के दरख़्त से सबक

20 अगले दिन वह सुबह-सवेरे अंजीर के उस दरख़्त के पास से गुज़रे जिस पर ईसा ने लानत भेजी थी। जब उन्होंने उस पर गौर किया तो मालूम हुआ कि वह जड़ों तक सूख गया है। 21 तब पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने कल अंजीर के दरख़्त से की थी। उसने कहा, “उस्ताद, यह देखें! अंजीर के जिस दरख़्त पर आपने लानत भेजी थी वह सूख गया है।”

22 ईसा ने जवाब दिया, “अल्लाह पर ईमान रखो। 23 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अगर कोई इस पहाड़ से कहे, ‘उठ, अपने आपको समुंद्र में गिरा दे’ तो यह हो जाएगा। शर्त सिर्फ़ यह है कि वह शक न करे बल्कि ईमान रखे कि जो कुछ उसने कहा है वह उसके लिए हो जाएगा। 24 इसलिए मैं तुमको बताता हूँ, जब भी तुम दुआ करके कुछ माँगते हो तो ईमान रखो कि तुमको मिल गया है। फिर वह तुम्हें ज़रूर मिल जाएगा। 25 और जब तुम खड़े होकर दुआ करते हो तो अगर तुम्हें किसी से शिकायत हो तो पहले उसे मुआफ़ करो ताकि आसमान पर तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाहों को मुआफ़ करे। 26 [और अगर तुम मुआफ़ न करो तो तुम्हारा आसमानी बाप तुम्हारे गुनाह भी मुआफ़ नहीं करेगा।]”

### किसने ईसा को इख़्तियार दिया?

27 वह एक और दफ़ा यरूशलम पहुँच गए। और जब ईसा बैतुल-मुकद्दस में फिर रहा था तो राहनुमा इमाम, शरीअत के उलमा और बुसुर्ग उसके पास आए। 28 उन्होंने पूछा, “आप यह सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहे हैं? किसने आपको यह करने का इख़्तियार दिया है?”

29 ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक सवाल है। इसका जवाब दो तो फिर तुमको बता दूँगा कि मैं यह किस इख़्तियार से कर रहा हूँ। 30 मुझे बताओ, क्या यहया का बपतिस्मा आसमानी था या इनसानी?”

31 वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें ‘आसमानी’ तो वह पृछेगा, ‘तो फिर तुम उस पर ईमान क्यों न लाए?’ 32 लेकिन हम कैसे कह सकते हैं कि वह इनसानी था?” वजह यह थी कि वह आम लोगों से डरते थे, क्योंकि सब मानते थे कि यहया वाकई नबी था। 33 चुनौचे उन्होंने जवाब दिया, “हम नहीं जानते।”

ईसा ने कहा, “तो फिर मैं भी तुमको नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख़्तियार से कर रहा हूँ।”

## 12

### अंगूर के बाग़ के मुज़ारेओ की बगावत

† 11:10 होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उन्सूर भी पाया जाता है।

1 फिर वह तमसीलों में उनसे बात करने लगा। “किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग लगाया। उसने उस की चारदीवारी बनाई, अंगूरों का रस निकालने के लिए एक गढे की खुदाई की और पहरेदारों के लिए बर्ज तामीर किया। फिर वह उसे मुजारेओं के सुपुर्द करके बैरूने-मुल्क चला गया। 2 जब अंगूर पक गए तो उसने अपने नौकर को मुजारेओं के पास भेज दिया ताकि वह उनसे मालिक का हिस्सा वसूल करे। 3 लेकिन मुजारेओं ने उसे पकड़कर उस की पिटाई की और उसे खाली हाथ लौटा दिया। 4 फिर मालिक ने एक और नौकर को भेज दिया। लेकिन उन्होंने उस की भी बेइज्जती करके उसका सर फोड़ दिया। 5 जब मालिक ने तीसरे नौकर को भेजा तो उन्होंने उसे मार डाला। यों उसने कई एक को भेजा। बाज को उन्होंने मारा पीटा, बाज को कत्ल किया। 6 आखिरकार सिर्फ एक बाकी रह गया था। वह था उसका प्यारा बेटा। अब उसने उसे भेजकर कहा, ‘आखिर मेरे बेटे का तो लिहाज करेंगे।’ 7 लेकिन मुजारे एक दूसरे से कहने लगे, ‘यह जमीन का वारिस है। आओ हम इसे मार डालें तो फिर इसकी मीरास हमारी ही होगी।’ 8 उन्होंने उसे पकड़कर कत्ल किया और बाग से बाहर फेंक दिया।

9 अब बताओ, बाग का मालिक क्या करेगा? वह जाकर मुजारेओं को हलाक करेगा और बाग को दूसरों के सुपुर्द कर देगा। 10 क्या तुमने कलामे-मुकद्दस का यह हवाला नहीं पढ़ा,

‘जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद्द किया वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।

11 यह रब ने किया

और देखने में कितना हैरतअंगेज है।’

12 इस पर दीनी राहनुमाओं ने ईसा को गिरिफ्तार करने की कोशिश की, क्योंकि वह समझ गए थे कि तमसील में बयानशुदा मुजारे हम ही हैं। लेकिन वह हजूम से डरते थे, इसलिए वह उसे छोड़कर चले गए।

**क्या टैक्स देना जायज़ है?**

13 बाद में उन्होंने कुछ फरीसियों और हेरोदेस के पैरोकारों को उसके पास भेज दिया ताकि वह उसे कोई ऐसी बात करने पर उभारे जिससे उसे पकड़ा जा सके। 14 वह उसके पास आकर कहने लगे, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप सच्चे हैं और किसी की परवा नहीं करते। आप जानिबदार नहीं होते बल्कि दियानतदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं। अब हमें बताएँ कि क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़? क्या हम अदा करें या न करें?”

15 लेकिन ईसा ने उनकी रियाकारी जानकर उनसे कहा, “मुझे क्यों फँसाना चाहते हो? चाँदी का एक रोमी सिक्का मेरे पास ले आओ।”

16 वह एक सिक्का उसके पास ले आए तो उसने पूछा, “किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा है?” उन्होंने जवाब दिया, “शहनशाह का।”

17 उसने कहा, “तो जो शहनशाह का है शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।”

उसका यह जवाब सुनकर उन्होंने बड़ा ताज्जुब किया।

**क्या हम जी उठेंगे?**

18 फिर कुछ सदूकी ईसा के पास आए। सदूकी नहीं मानते कि रोजे-क्रियामत मुरदे जी उठेंगे। उन्होंने ईसा से एक सवाल किया, 19 “उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो तो भाई का फर्ज है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 20 अब फर्ज करें कि सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फौत हुआ। 21 इस पर दूसरे ने उससे शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। फिर तीसरे भाई ने उससे शादी की। 22 यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। यके बाद दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया। आखिर में बेवा भी फौत हो गई। 23 अब बताएँ कि क्रियामत के दिन वह किसकी बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की थी।”

24 ईसा ने जवाब दिया, “तुम इसलिए गलती पर हो कि न तुम कलामे-मुकद्दस से वाकिफ हो, न अल्लाह की कुदरत से।

25 क्योंकि जब मुरदे जी उठेंगे तो न वह शादी करेंगे न उनकी शादी कराई जाएगी बल्कि वह आसमान पर फरिशतों की मानिंद होंगे। 26 रही यह बात कि मुरदे जी उठेंगे। क्या तुमने मूसा की किताब में नहीं पढ़ा कि अल्लाह जलती हुई झाड़ी में से किस तरह मूसा से हमकलाम हुआ? उसने फरमाया, ‘मैं इब्राहीम का खुदा, इसहाक का खुदा और याकूब का खुदा हूँ,’ हालाँकि उस वक्त तीनों काफ़ी अरसे से मर चुके थे। 27 इसका मतलब है कि यह हकीकत में जिंदा है, क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं, बल्कि जिंदों का खुदा है। तुमसे बड़ी गलती हुई है।”

**अव्वल हुक्म**

28 इतने में शरीअत का एक आलिम उनके पास आया। उसने उन्हें बहस करते हुए सुना था और जान लिया कि ईसा ने अच्छा जवाब दिया, इसलिए उसने पूछा, “तमाम अहकाम में से कौन-सा हुक्म सबसे अहम है?”

29 ईसा ने जवाब दिया, “अव्वल हुकम यह है : ‘सून ऐ इसराईल! रब हमारा खुदा एक ही रब है।’ 30 रब अपने खुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपने पूरे जहन और अपनी पूरी ताकत से प्यार करना।’ 31 दूसरा हुकम यह है : ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ दीगर कोई भी हुकम इन दो अहकाम से अहम नहीं है।”

32 उस आलिम ने कहा, “शाबाश, उस्ताद! आपने सच कहा है कि अल्लाह सिर्फ एक ही है और उसके सिवा कोई और नहीं है। 33 हमें उसे अपने पूरे दिल, अपने पूरे जहन और अपनी पूरी ताकत से प्यार करना चाहिए और साथ साथ अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखनी चाहिए जैसी अपने आपसे रखते हैं। यह दो अहकाम भ्रम होनेवाली तमाम कुरबानियों और दीगर नजरों से ज्यादा अहमियत रखते हैं।”

34 जब ईसा ने उसका यह जवाब सुना तो उससे कहा, “तू अल्लाह की बादशाही से दूर नहीं है।”

इसके बाद किसी ने भी उससे सवाल पूछने की ज़रूरत न की।

**मसीह के बारे में सवाल**

35 जब ईसा बैतुल-मुकद्दस में तालीम दे रहा था तो उसने पूछा, “शरीअत के उलमा क्यों दावा करते हैं कि मसीह दाऊद का फरजंद है? 36 क्योंकि दाऊद ने तो खुद रूहल-कुद्स की मारिफत यह फरमाया,

‘रब ने मेरे रब से कहा,

मेरे दहने हाथ बैठ,

जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों के नीचे न कर दूँ।’

37 दाऊद तो खुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह दाऊद का फरजंद हो सकता है?”

**शरीअत के उलमा से खबरदार रहना**

एक बड़ा हुजूम मजे से ईसा की बातें सुन रहा था। 38 उन्हें तालीम देते वक्त उसने कहा, “उलमा से खबरदार रहो! क्योंकि वह शानदार चोगे पहनकर इधर उधर फिरना पसंद करते हैं। जब लोग बाजारों में सलाम करके उनकी इज्जत करते हैं तो फिर वह खुश हो जाते हैं। 39 उनकी बस एक ही खाहिश होती है कि इबादतखानों और ज़ियाफतों में इज्जत की कुरसियों पर बैठ जाएँ। 40 यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लंबी लंबी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख्त सज़ा मिलेगी।”

**बेवा का चंदा**

41 ईसा बैतुल-मुकद्दस के चंदे के बक्स के मुकाबिल बैठ गया और हुजूम को हदिये डालते हुए देखने लगा। कई अमीर बड़ी बड़ी रकमें डाल रहे थे। 42 फिर एक गरीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिसने उसमें तौबे के दो मामूली-से सिक्के डाल दिए। 43 ईसा ने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस गरीब बेवा ने तमाम लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है। 44 क्योंकि इन सबने अपनी दौलत की कसरत से दे दिया जबकि उसने ज़रूरतमंद होने के बावजूद भी अपने गुजारे के सारे पैसे दे दिए हैं।”

## 13

**बैतुल-मुकद्दस पर आनेवाली तबाही**

1 उस दिन जब ईसा बैतुल-मुकद्दस से निकल रहा था तो उसके शागिर्दों ने कहा, “उस्ताद, देखें कितने शानदार पत्थर और इमारतें हैं!”

2 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमको यह बड़ी बड़ी इमारतें नजर आती हैं? पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा। सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

**मुसीबतों और इंजारसानी की पेशगोई**

3 बाद में ईसा जैतून के पहाड़ पर बैतुल-मुकद्दस के मुकाबिल बैठ गया। पतरस, याकूब, यूहन्ना और अंदरियास अकेले उसके पास आए। उन्होंने कहा, 4 “हमें जरा बताएँ, यह कब होगा? क्या क्या नजर आएगा जिससे मालूम होगा कि यह अब पूरा होने को है?”

5 ईसा ने जवाब दिया, “खबरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। 6 बहुत-से लोग मेरा नाम लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ!’ यों वह बहुतों को गुमराह कर देंगे। 7 जब जंगों की खबरेँ और अफवाहें तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्योंकि लाज़िम है कि यह सब कुछ पेश आए। तो भी अभी आखिरत नहीं होगी। 8 एक क्रौम दूसरी के खिलाफ उठ खड़ी होगी और एक बादशाही दूसरी के खिलाफ। जगह जगह जलजले आएँगे, काल पड़ेंगे। लेकिन यह सिर्फ दर्द-ज़ह की इन्तिदा ही होगी।

9 तुम खुद खबरदार रहो। तुमको मकामी अदालतों के हवाले कर दिया जाएगा और लोग यहूदी इबादतखानों में तुम्हें कोड़े लगवाएंगे। मेरी खातिर तुम्हें हुक्मरानों और बादशाहों के सामने पेश किया जाएगा। यों तुम उन्हें मेरी गवाही दोगे। 10 लाज़िम है कि आखिरत से पहले अल्लाह की खुशखबरी तमाम अक़वाम को सुनाई जाए। 11 लेकिन जब लोग तुमको गिरफ़्तार करके अदालत में पेश करेंगे तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं क्या कहूँ। बस वही कुछ कहना जो अल्लाह तुम्हें उस वक़्त बताएगा। क्योंकि उस वक़्त तुम नहीं बल्कि रूहुल-कुदूस बोलनेवाला होगा। 12 भाई अपने भाई को और बाप अपने बच्चे को मौत के हवाले कर देगा। बच्चे अपने वालिदिन के खिलाफ़ खड़े होकर उन्हें क़त्ल करवाएंगे। 13 सब तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार हो। लेकिन जो आख़िर तक कायम रहेगा उसे नजात मिलेगी।

### बैतुल-मुक़द्दस की बेहरमती

14 एक दिन आया जब तुम वहाँ जहाँ उसे नहीं होना चाहिए वह कुछ खड़ा देखोगे जो बेहरमती और तबाही का बाइस है।” (कारी इस पर ध्यान दे!) “उस वक़्त यहूदिया के रहनेवाले भागकर पहाड़ी इलाके में पनाह लें। 15 जो अपने घर की छत पर हो वह न उतरे, न कुछ साथ ले जाने के लिए घर में दाखिल हो जाए। 16 जो खेत में हो वह अपनी चादर साथ ले जाने के लिए वापस न जाए। 17 उन खवातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों। 18 दूआ करो कि यह वाक़िया सदीयों के मौसम में पेश न आए। 19 क्योंकि उन दिनों में ऐसी मुसीबत होगी कि दुनिया की तखलीक से आज तक देखने में न आई होगी। इस किस्म की मुसीबत बाद में भी कभी नहीं आएगी। 20 और अगर खुदावंद इस मुसीबत का दौरानिया मुख़तसर न करता तो कोई न बचता। लेकिन उसने अपने चुने हुएों की खातिर उसका दौरानिया मुख़तसर कर दिया है।

21 उस वक़्त अगर कोई तुमको बताए, ‘देखो, मसीह यहाँ है,’ या ‘वह वहाँ है’ तो उस की बात न मानना। 22 क्योंकि झूटे मसीह और झूटे नबी उठ खड़े होंगे जो अजीबो-ग़रीब निशान और मोज़िजे दिखाएंगे ताकि अल्लाह के चुने हुए लोगों को ग़लत रास्ते पर डाल दें—अगर यह मुमकिन होता। 23 इसलिए खबरदार! मैंने तुमको पहले ही इन सब बातों से आगाह कर दिया है।

### इब्ने-आदम की आमद

24 मुसीबत के उन दिनों के बाद सूरज तारीक हो जाएगा और चाँद की रौशनी ख़त्म हो जाएगी। 25 सितारे आसमान पर से गिर पड़ेंगे और आसमान की कुव्वतें हिलाई जाएँगी। 26 उस वक़्त लोग इब्ने-आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ बादलों में आते हुए देखेंगे। 27 और वह अपने फ़रिशतों को भेज देगा ताकि उसके चुने हुएों को चारों तरफ़ से जमा करें, दुनिया के कोने कोने से आसमान की इतहा तक इक़ठा करें।

### अंज़ीर के दरख़्त से सबक

28 अंज़ीर के दरख़्त से सबक सीखो। ज्योंही उस की शाखें नरम और लचकदार हो जाती हैं और उनसे कोंपलें फूट निकलती हैं तो तुमको मालूम हो जाता है कि गरमियों का मौसम करीब आ गया है। 29 इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात देखोगे तो जान लो कि इब्ने-आदम की आमद करीब बल्कि दरवाज़े पर है। 30 मैं तुमको सच बताता हूँ, इस नसल के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ बाक़े होगा। 31 आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक कायम रहेगी।

### किसी को भी उस की आमद का वक़्त मालूम नहीं

32 लेकिन किसी को भी इल्म नहीं कि यह किस दिन या कौन-सी घड़ी रून्मा होगा। आसमान के फ़रिशतों और फ़रजंद को भी इल्म नहीं बल्कि सिर्फ़ बाप को। 33 चुन्चें खबरदार और चौकन्ने रहो! क्योंकि तुमको नहीं मालूम कि यह वक़्त कब आएगा। 34 इब्ने-आदम की आमद उस आदमी से मुताबिक़त रखती है जिसे किसी सफ़र पर जाना था। घर छोड़ते वक़्त उसने अपने नौकरों को इंतज़ाम चलाने का इख़्तियार देकर हर एक को उस की अपनी जिम्मादारी सौंप दी। दरबान को उसने हुक्म दिया कि वह चौकस रहे। 35 तुम भी इसी तरह चौकस रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का मालिक कब वापस आएगा, शाम को, आधी रात को, मुरग़ के बाँग़ देते या पौ फटते वक़्त। 36 ऐसा न हो कि वह अचानक आकर तुमको सोते पाए। 37 यह बात मैं न सिर्फ़ तुमको बल्कि सबको बताता हूँ, चौकस रहो!”

1 फ़सह और बेखमीरी रोटी की ईद करीब आ गई थी। सिर्फ़ दो दिन रह गए थे। राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा ईसा को किसी चालाकी से गिरफ़्तार करके कत्ल करने की तलाश में थे। 2 उन्होंने कहा, “लेकिन यह ईद के दौरान नहीं होना चाहिए, ऐसा न हो कि अवाम में हलचल मच जाए।”

**खातून ईसा पर खुशबू उंडेलती है**

3 इतने में ईसा बैत-अनियाह आकर एक आदमी के घर में दाखिल हुआ जो किसी वक़्त कोढ़ का मरीज़ था। उसका नाम शमौन था। ईसा खाना खाने के लिए बैठ गया तो एक औरत आई। उसके पास खालिस जटामासी के निहायत कीमती इत्र का इत्रदान था। उसका सर तोड़कर उसने इत्र ईसा के सर पर उंडेल दिया। 4 हाज़िरिन में से कुछ नाराज़ हुए। “इतना कीमती इत्र जाया करने की क्या ज़रूरत थी?” 5 इसकी कीमत कम अज़ कम चाँदी के 300 सिक्के थी। अगर इसे बेचा जाता तो इसके पैसे ग़रीबों को दिए जा सकते थे।” ऐसी बातें करते हुए उन्होंने उसे झिड़का।

6 लेकिन ईसा ने कहा, “इसे छोड़ दो, तुम इसे क्यों तंग कर रहे हो? इसने तो मेरे लिए एक नेक काम किया है। 7 ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, और तुम जब भी चाहो उनकी मदद कर सकोगे। लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा। 8 जो कुछ वह कर सकती थी उसने किया है। मुझ पर इत्र उंडेलने से वह मुक़ररा वक़्त से पहले मेरे बदन को दफ़नाने के लिए तैयार कर चुकी है। 9 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तमाम दुनिया में जहाँ भी अल्लाह की खुशख़बरी का एलान किया जाएगा वहाँ लोग इस खातून को याद करके वह कुछ सुनाएँगे जो इसने किया है।”

**ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनस्वा**

10 फिर यहूदाह इस्करियोती जो बारह शागिर्दों में से एक था राहनुमा इमामों के पास गया ताकि ईसा को उनके हवाले करने की बात करे। 11 उसके आने का मक़सद सुनकर वह खुश हुए और उसे पैसे देने का वादा किया। चुनौचे वह ईसा को उनके हवाले करने का मौका ढूँढ़ने लगा।

**फ़सह की ईद के लिए तैयारियाँ**

12 बेखमीरी रोटी की ईद आई जब लोग फ़सह के लेले को कुरबान करते थे। ईसा के शागिर्दों ने उससे पूछा, “हम कहाँ आपके लिए फ़सह का खाना तैयार करें?”

13 चुनौचे ईसा ने उनमें से दो को यह हिदायत देकर यरूशलम भेज दिया कि “जब तुम शहर में दाखिल होगे तो तुम्हारी मुलाकात एक आदमी से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उसके पीछे हो लेना। 14 जिस घर में वह दाखिल हो उसके मालिक से कहना, ‘उस्ताद आपसे पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?’ 15 वह तुम्हें दूसरी मनज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। वह तैयार होगा। हमारे लिए फ़सह का खाना वही तैयार करना।”

16 दोनों चले गए तो शहर में दाखिल होकर सब कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया।

**ग़दर कौन है?**

17 शाम के वक़्त ईसा बारह शागिर्दों समेत वहाँ पहुँच गया। 18 जब वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे तो उसने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, तुममें से एक जो मेरे साथ खाना खा रहा है मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।”

19 शागिर्द यह सुनकर ग़मगीन हुए। बारी बारी उन्होंने उससे पूछा, “मैं तो नहीं हूँ?”

20 ईसा ने जवाब दिया, “तुम बारह में से एक है। वह मेरे साथ अपनी रोटी सालन के बरतन में डाल रहा है। 21 इब्ने-आदम तो कूच कर जाएगा जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, लेकिन उस शाब्द पर अफ़सोस जिसके वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा। उसके लिए बेहतर यह होता कि वह कभी पैदा ही न होता।”

**फ़सह का आखिरी खाना**

22 खाने के दौरान ईसा ने रोटी लेकर शक़गुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके शागिर्दों को दे दिया। उसने कहा, “यह लो, यह मेरा बदन है।”

23 फिर उसने मै का प्याला लेकर शक़गुज़ारी की दुआ की और उसे उन्हें दे दिया। सबने उसमें से पी लिया। 24 उसने उससे कहा, “यह मेरा खून है, नए अहद का वह खून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है। 25 मैं तुमको सच बताता हूँ कि अब से मैं अंगूठ का रस नहीं पिउँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे नए सिरे से अल्लाह की बादशाही में ही पिउँगा।”

26 फिर वह एक ज़ब्र गाकर निकले और ज़ैतून के पहाड़ के पास पहुँचे।

### पतरस के इनकार की पेशगोई

27 ईसा ने उन्हें बताया, “तुम सब बरगशता हो जाओगे, क्योंकि कलामे-मुकद्दस में अल्लाह फरमाता है, ‘मैं चरवाहे को मार डालूँगा और भेड़ें तित्तर-बित्तर हो जाएँगी।’” 28 लेकिन अपने जी उठने के बाद मैं तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँचूँगा।”

29 पतरस ने एतराज किया, “दूसरे बेशक सब बरगशता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा।”

30 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, इसी रात मुरग के दूसरी दफा बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”

31 पतरस ने इसरार किया, “हरगिज़ नहीं! मैं आपको जानने से कभी इनकार नहीं करूँगा, चाहे मुझे आपके साथ मरना भी पड़े।”

दूसरों ने भी यही कुछ कहा।

### गत्समनी बाग में ईसा की दुआ

32 वह एक बाग में पहुँचे जिसका नाम गत्समनी था। ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “यहाँ बैठकर मेरा इंतज़ार करो। मैं दुआ करने के लिए आगे जाता हूँ।” 33 उसने पतरस, याक़ब और यहन्ना को साथ लिया। वहाँ वह घबराकर बेकरार होने लगा। 34 उसने उनसे कहा, “मैं दुख से इतना दबा हुआ हूँ कि मरने को हूँ। यहाँ ठहरकर जागते रहो।”

35 कुछ आगे जाकर वह ज़मीन पर गिर गया और दुआ करने लगा कि अगर मुमकिन हो तो मुझे आनेवाली घड़ियों की तकलीफ़ से गुज़रना न पड़े। 36 उसने कहा, “ऐ अब्बा, ऐ बाप! तैरे लिए सब कुछ मुमकिन है। दुख का यह प्याला मुझसे हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरज़ी पूरी हो।”

37 वह अपने शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह सो रहे हैं। उसने पतरस से कहा, “शमौन, क्या तू सो रहा है? क्या तू एक घंटा भी नहीं जाग सका? 38 जागते और दुआ करते रहो ताकि तुम आजमाइश में न पड़ो। क्योंकि रूह तो तैयार है, लेकिन जिस्म कमज़ोर।”

39 एक बार फिर उसने जाकर वही दुआ की जो पहले की थी। 40 जब वापस आया तो दुबारा देखा कि वह सो रहे हैं, क्योंकि नींद की बदौलत उनकी आँखें बोझिल थीं। वह नहीं जानते थे कि क्या जवाब दें।

41 जब ईसा तीसरी बार वापस आया तो उसने उनसे कहा, “तुम अभी तक सो और आराम कर रहे हो? बस काफ़ी है। वक्त आ गया है। देखो, इब्ने-आदम को गुनाहगारों के हवाले किया जा रहा है। 42 उठो। आओ, चलें। देखो, मुझे दुश्मन के हवाले करनेवाला करीब आ चुका है।”

### ईसा की गिरफ्तारी

43 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि यहदाह पहुँच गया, जो बारह शागिर्दों में से एक था। उसके साथ तलवारों और लाठियों से लैस आदमियों का हज़म था। उन्हें राहनुमा इमामों, शरीअत के उलमा और बुजुर्गों ने भेजा था। 44 इस गद्दार यहदाह ने उन्हें एक इम्तियाज़ी निशान दिया था कि जिसको मैं बोसा दूँ वही ईसा है। उसे गिरफ्तार करके ले जाएँ।

45 ज्योंही वह पहुँचे यहदाह ईसा के पास गया और “उस्ताद!” कहकर उसे बोसा दिया। 46 इस पर उन्होंने उसे पकड़कर गिरफ्तार कर लिया। 47 लेकिन ईसा के पास खड़े एक शख्स ने अपनी तलवार मियान से निकाली और इमामे-आज़म के गुलाम को मारकर उसका कान उड़ा दिया। 48 ईसा ने उनसे पूछा, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारों और लाठियों लिए मुझे गिरफ्तार करने निकले हो? 49 मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुकद्दस में तुम्हारे पास था और तालीम देता रहा, मगर तुमने मुझे गिरफ्तार नहीं किया। लेकिन यह इसलिए हो रहा है ताकि कलामे-मुकद्दस की बातें पूरी हो जाएँ।”

50 फिर सबके सब उसे छोड़कर भाग गए।

51 लेकिन एक नौजवान ईसा के पीछे पीछे चलता रहा जो सिर्फ़ चादर ओढ़े हुए था। लोगों ने उसे पकड़ने की कोशिश की, 52 लेकिन वह चादर छोड़कर नंगी हालत में भाग गया।

### यहदी अदालते-आलिया के सामने

53 वह ईसा को इमामे-आज़म के पास ले गए जहाँ तमाम राहनुमा इमाम, बुजुर्ग और शरीअत के उलमा भी जमा थे। 54 इतने में पतरस कुछ फ़ासले पर ईसा के पीछे पीछे इमामे-आज़म के सहन तक पहुँच गया। वहाँ वह मुलाज़िमों के साथ बैठकर आग तापने लगा। 55 मकान के अंदर राहनुमा इमाम और यहदी अदालते-आलिया के तमाम अफ़रद ईसा के खिलाफ़ गवाहियाँ ढूँढ़ रहे थे ताकि उसे सज़ाए-मौत दिलवा सकें। लेकिन कोई गवाही न मिली। 56 काफ़ी लोगों ने उसके खिलाफ़ झूठी गवाही तो दी, लेकिन उनके बयान एक दूसरे के मुताज़ाद थे।

57 आखिरकार बाज़ ने खड़े होकर यह झूठी गवाही दी, 58 “हमने इसे यह कहते सुना है कि मैं इनसान के हाथों के बने इस बैतुल-मुकद्दस को ढाकर तीन दिन के अंदर अंदर नया मकदिस तामीर कर दूँगा, एक ऐसा मकदिस जो इनसान के हाथ नहीं बनाएँगे।” 59 लेकिन उनकी गवाहियाँ भी एक दूसरी से मुतज़ाद थीं।

60 फिर इमामे-आज़म ने हाज़िरिन के सामने खड़े होकर ईसा से पूछा, “क्या तू कोई जवाब नहीं देगा? यह क्या गवाहियाँ हैं जो यह लोग तेरे खिलाफ़ दे रहे हैं?”

61 लेकिन ईसा खामोश रहा। उसने कोई जवाब न दिया। इमामे-आज़म ने उससे एक और सवाल किया, “क्या तू अल-हमीद का फ़रज़द मसीह है?”

62 ईसा ने कहा, “जी, मैं हूँ। और आइंदा तुम इब्ने-आदम को कादिरे-मुतलक के दहने हाथ बैठे और आसमान के बादलों पर आते हुए देखोगे।”

63 इमामे-आज़म ने रंजिश का इज़हार करके अपने कपड़े फाड़ लिए और कहा, “हमें मज़ीद गवाहों की क्या ज़रूरत रही! 64 आपने खुद सुन लिया है कि इसने कुफ़र बका है। आपका क्या फ़ैसला है?”

सबने उसे सज़ाए-मौत के लायक करार दिया।

65 फिर कुछ उस पर थकने लगे। उन्होंने उस की आँखों पर पट्टी बाँधी और उसे मुक्के मार मारकर कहने लगे, “नबुव्वत कर!” मुलाज़िमों ने भी उसे थप्पड़ मारे।

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

66 इस दौरान पतरस नीचे सहन में था। इमामे-आज़म की एक नौकरानी वहाँ से गुज़री 67 और देखा कि पतरस वहाँ आग ताप रहा है। उसने गौर से उस पर नज़र की और कहा, “तुम भी नासरत के उस आदमी ईसा के साथ थे।”

68 लेकिन उसने इनकार किया, “मैं नहीं जानता या समझता कि तू क्या बात कर रही है।” यह कहकर वह गेट के करीब चला गया। [उसी लमहे मुरग ने बाँग दी।]

69 जब नौकरानी ने उसे वहाँ देखा तो उसने दुबारा पास खड़े लोगों से कहा, “यह बंदा उनमें से है।” 70 दुबारा पतरस ने इनकार किया।

थोड़ी देर के बाद पतरस के साथ खड़े लोगों ने भी उससे कहा, “तुम ज़रूर उनमें से हो क्योंकि तुम गलील के रहनेवाले हो।”

71 इस पर पतरस ने क्रम खाकर कहा, “मुझ पर लानत अगर मैं झूट बोल रहा हूँ। मैं उस आदमी को नहीं जानता जिसका जिक्र तुम कर रहे हो।”

72 फ़ौरन मुरग की बाँग दूसरी मरतबा सुनाई दी। फिर पतरस को वह बात याद आई जो ईसा ने उससे कही थी, “मुरग के दूसरी दफा बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।” इस पर वह रो पड़ा।

## 15

पीलातस के सामने

1 सुबह-सवेरे ही राहनुमा इमाम बुजुर्गों, शरीअत के उलमा और पूरी यहदी अदालते-आलिया के साथ मिलकर फ़ैसले तक पहुँच गए। वह ईसा को बाँधकर वहाँ से ले गए और रोमी गवर्नर पीलातस के हवाले कर दिया। 2 पीलातस ने उससे पूछा, “क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप खुद कहते हैं।”

3 राहनुमा इमामों ने उस पर बहुत इलज़ाम लगाए। 4 चुनौचे पीलातस ने दुबारा उससे सवाल किया, “क्या तुम कोई जवाब नहीं देगे? यह तो तुम पर बहुत-से इलज़ामात लगा रहे हैं।”

5 लेकिन ईसा ने इस पर भी कोई जवाब न दिया, और पीलातस बड़ा हैरान हुआ।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

6 उन दिनों यह रिवाज था कि हर साल फ़सह की ईद पर एक कैदी को रिहा कर दिया जाता था। यह कैदी अवाम से मुंतखब किया जाता था। 7 उस वक्त कुछ आदमी जेल में थे जो हुकूमत के खिलाफ़ किसी इंकलाबी तरीक में शरीक हुए थे और जिन्होंने बगावत के मौके पर कल्लो-गारत की थी। उनमें से एक का नाम बर-अब्बा था। 8 अब हुजूम ने पीलातस के पास आकर उससे गुज़ारिश की कि वह मामूल के मुताबिक एक कैदी को आज़ाद कर दे। 9 पीलातस ने पूछा, “क्या तुम चाहते हो कि मैं यहूदियों के बादशाह को आज़ाद कर दूँ?” 10 वह जानता था कि राहनुमा इमामों ने ईसा को सिर्फ़ हसद की बिना पर उसके हवाले किया है।

11 लेकिन राहनूमा इमामों ने हज़ूम को उकसाया कि वह ईसा के बजाए बर-अब्बा को मोंगें। 12 पीलातुस ने सवाल किया, “फिर मैं इसके साथ क्या करूँ जिसका नाम तुमने यहूदियों का बादशाह रखा है?”

13 वह चीखे, “उसे मसलूब करें।”

14 पीलातुस ने पूछा, “क्यों? उसने क्या जुर्म किया है?”

लेकिन लोग मज्जीद शोर मचाकर चीखते रहे, “उसे मसलूब करें!”

15 चुनौते पीलातुस ने हज़ूम को मुतमइन करने की खातिर बर-अब्बा को आज़ाद कर दिया। उसने ईसा को कोड़े लगाने को कहा, फिर उसे मसलूब करने के लिए फौजियों के हवाले कर दिया।

### फौजी ईसा का मज़ाक उड़ाने हैं

16 फौजी ईसा को गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियम के सहन में ले गए और पूरी पलटन को इकट्ठा किया। 17 उन्होंने उसे अरगवानी रंग का लिबास पहनाया और काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। 18 फिर वह उसे सलाम करने लगे, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” 19 लाठी से उसके सर पर मार मारकर वह उस पर थकते रहे। घुटने टेककर उन्होंने उसे सिजदा किया। 20 फिर उसका मज़ाक उड़ाने से थककर उन्होंने अरगवानी लिबास उतारकर उसे दुबारा उसके अपने कपड़े पहनाए। फिर वह उसे मसलूब करने के लिए बाहर ले गए।

### ईसा को मसलूब किया जाता है

21 उस वक़्त लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला एक आदमी बनाम शमौन देहात से शहर को आ रहा था। वह सिकंदर और स्फुस का बाप था। जब वह ईसा और फौजियों के पास से गुज़रने लगा तो फौजियों ने उसे सलीब उठाने पर मजबूर किया। 22 यों चलते चलते वह ईसा को एक मकाम पर ले गए जिसका नाम गुल्गुता (यानी खोपड़ी का मकाम) था। 23 वहाँ उन्होंने उसे मै पेश की जिसमें मूर मिलाया गया था, लेकिन उसने पीने से इनकार किया। 24 फिर फौजियों ने उसे मसलूब किया और उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। यह फ़ैसला करने के लिए कि किस को क्या क्या मिलेगा उन्होंने कुरा डाला। 25 नौ बजे सुबह का वक़्त था जब उन्होंने उसे मसलूब किया। 26 एक तख्ती सलीब पर लगा दी गई जिस पर यह इलज़ाम लिखा था, “यहूदियों का बादशाह।” 27 दो डाकुओं को भी ईसा के साथ मसलूब किया गया, एक को उसके दहने हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ। 28 [यों मुकद्दस कलाम का वह हवाला पूरा हुआ जिसमें लिखा है, ‘उसे मुज्रिमों में शुमार किया गया।’]

29 जो वहाँ से गुज़रे उन्होंने कुफ़र बककर उस की तज़लील की और सर हिला हिलाकर अपनी हिकारत का इज़हार किया। उन्होंने कहा, “तू तो कहा था कि मैं बैतूल-मुकद्दस को ढाकर उसे तीन दिन के अंदर अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा। 30 अब सलीब पर से उतरकर अपने आपको बचा!”

31 राहनूमा इमामों और शरीअत के उलमा ने भी ईसा का मज़ाक उड़ाकर कहा, “इसने औरों को बचाया, लेकिन अपने आपको नहीं बचा सकता। 32 इसराईल का यह बादशाह मसीह अब सलीब पर से उतर आए ताकि हम यह देखकर इमान लाएँ।” और जिन आदमियों को उसके साथ मसलूब किया गया था उन्होंने भी उसे लान-तान की।

### ईसा की मौत

33 दोपहर बारह बजे पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। यह तारीकी तीन घंटों तक रही। 34 फिर तीन बजे ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “एली, एली, लमा शबक़तनी?” जिसका मतलब है, “ऐ मेरे ख़ुदा, ऐ मेरे ख़ुदा, तूने मुझे क्यों तर्क कर दिया है?”

35 यह सुनकर पास खड़े कुछ लोग कहने लगे, “वह इलियास नबी को बुला रहा है।” 36 किसी ने दौड़कर मै के सिरके में एक इस्फ़ंज डुबोया और उसे डंडे पर लगाकर ईसा को चुसाने की कोशिश की। वह बोला, “आओ हम देखें, शायद इलियास आकर उसे सलीब पर से उतार ले।”

37 लेकिन ईसा ने बड़े जोर से चिल्लाकर दम छोड़ दिया।

38 उसी वक़्त बैतूल-मुकद्दस के मुकद्दसतरीन कमरे के सामने लटका हुआ परदा ऊपर से लेकर नीचे तक दो हिस्सों में फट गया। 39 जब ईसा के मुकाबिल खड़े रोमी अफ़सर \* ने देखा कि वह किस तरह मरा तो उसने कहा, “यह आदमी वाक़ई अल्लाह का फ़रज़द था।”

40 कुछ ख़वातीन भी वहाँ थीं जो कुछ फ़ासले पर उसका मुशाहदा कर रही थीं। उनमें मरियम मग्दलीनी, छोटे याक़ूब और योसेस की माँ मरियम और सलोमी भी थीं। 41 गलील में यह औरतें ईसा के पीछे चलकर इसकी खिदमत करती रही थीं। कई और ख़वातीन भी वहाँ थीं जो उसके साथ यस्शलम आ गई थीं।

\* 15:39 वो सिपाहियों पर मुक़र्र अफ़सर।



ईसा को दफन किया जाता है

42 यह सब कुछ जुमे को हुआ जो अगले दिन के सबत के लिए तैयारी का दिन था। जब शाम होने को थी 43 तो अरिमतियाह का एक आदमी बनाम यूसुफ हिम्मत करके पीलातुस के पास गया और उससे ईसा की लाश माँगी। (यूसुफ यहूदी अदालते-आलिया का नामवर मेंबर था और अल्लाह की बादशाही के आने के इंतजार में था।) 44 पीलातुस यह सुनकर हैरान हुआ कि ईसा मर चुका है। उसने रोमी अफसर को बुलाकर उससे पूछा कि क्या ईसा वाकई मर चुका है? 45 जब अफसर ने इसकी तसदीक की तो पीलातुस ने यूसुफ को लाश दे दी। 46 यूसुफ ने कफन खरीद लिया, फिर ईसा की लाश उतारकर उसे कतान के कफन में लपेटा और एक कब्र में रख दिया जो चटान में तराशी गई थी। आखिर में उसने एक बड़ा पत्थर लुढकाकर कब्र का मुँह बंद कर दिया। 47 मरियम मगदलीनी और योसेस की माँ मरियम ने देख लिया कि ईसा की लाश कहाँ रखी गई है।

## 16

ईसा जी उठता है

1 हफते की शाम को जब सबत का दिन गुजर गया तो मरियम मगदलीनी, याकूब की माँ मरियम और सलोमी ने खूशबूदा मसाले खरीद लिए, क्योंकि वह कब्र के पास जाकर उन्हें ईसा की लाश पर लगाना चाहती थी। 2 चुन्चेंचे वह इतवार को सुबह-सवेरे ही कब्र पर गई। सूरज तुल हो रहा था। 3 रास्ते में वह एक दूसरे से पूछने लगी, “कौन हमारे लिए कब्र के मुँह से पत्थर को लुढकाएगा?” 4 लेकिन जब वहाँ पहुँची और नज़र उठाकर कब्र पर गौर किया तो देखा कि पत्थर को एक तरफ लुढकाया जा चुका है। यह पत्थर बहुत बड़ा था। 5 वह कब्र में दाखिल हुई। वहाँ एक जवान आदमी नज़र आया जो सफेद लिबास पहने हुए दाईं तरफ बैठा था। वह घबरा गई।

6 उसने कहा, “मत घबराओ। तुम ईसा नासरी को ढूँड रही हो जो मसलूब हुआ था। वह जी उठा है, वह यहाँ नहीं है। उस जगह को खुद देख लो जहाँ उसे रखा गया था। 7 अब जाओ, उसके शागिर्दों और पतरस को बता दो कि वह तुम्हारे आगे आगे गलील पहुँच जाएगा। वही तुम उसे देखोगे, जिस तरह उसने तुमको बताया था।”

8 खवातीन लरजती और उलझी हुई हालत में कब्र से निकलकर भाग गईं। उन्होंने किसी को भी कुछ न बताया, क्योंकि वह निहायत सहमी हुई थीं।

ईसा मरियम मगदलीनी पर जाहिर होता है

9 जब ईसा इतवार को सुबह-सवेरे जी उठा तो पहला शख्स जिस पर वह जाहिर हुआ मरियम मगदलीनी थी जिससे उसने सात बद्रूहें निकाली थीं। 10 मरियम ईसा के साथियों के पास गई जो मातम कर रहे और रो रहे थे। उसने उन्हें जो कुछ हुआ था बताया। 11 लेकिन गो उन्होंने सुना कि ईसा जिंदा है और कि मरियम ने उसे देखा है तो भी उन्हें यकीन न आया।

ईसा मज्जीद दो शागिर्दों पर जाहिर होता है

12 इसके बाद ईसा दूसरी सूरत में उनमें से दो पर जाहिर हुआ जब वह यरूशलम से देहात की तरफ पैदल चल रहे थे।

13 दोनों ने वापस जाकर यह बात बाकी लोगों को बताई। लेकिन उन्हें इनका भी यकीन न आया।

ईसा ग्यारह रसूलों पर जाहिर होता है

14 आखिर में ईसा ग्यारह शागिर्दों पर भी जाहिर हुआ। उस वक्त वह मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे। उसने उन्हें उनकी बेएतकादी और सख्तदिली के सबब से डाँटा, कि उन्होंने उनका यकीन न किया जिन्होंने उसे जिंदा देखा था। 15 फिर उसने उनसे कहा, “पूरी दुनिया में जाकर तमाम मखलक़ात को अल्लाह की खूशखबरी सुनाओ। 16 जो भी ईमान लाकर बपतिस्मा ले उसे नजात मिलेगी। लेकिन जो ईमान न लाए उसे मुजरिम करार दिया जाएगा। 17 और जहाँ जहाँ लोग ईमान रखेंगे वहाँ यह इलाही निशान जाहिर होंगे : वह मेरे नाम से बद्रूहें निकाल देंगे, नई नई ज़बानें बोलेंगे 18 और साँपों को उठाकर महफूज़ रहेंगे। मोहलक ज़हर पीने से उन्हें नुकसान नहीं पहुँचेगा और जब वह अपने हाथ मरीज़ों पर रखेंगे तो शफा पाएँगे।”

ईसा को आसमान पर उठाया जाता है

19 उनसे बात करने के बाद ख़ुदावंद ईसा को आसमान पर उठा लिया गया और वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया।

20 इस पर शागिर्दों ने निकलकर हर जगह मुनादी की। और ख़ुदावंद ने उनकी हिमायत करके इलाही निशानों से कलाम की तसदीक की।

## लुका

### पेशलफज

1 यहतरम थियुफिल्स, बहुत-से लोग वह सब कुछ लिख चुके हैं जो हमारे दरमियान वाक़े हुआ है।<sup>2</sup> उनकी कोशिश यह थी कि वही कुछ बयान किया जाए जिसकी गवाही वह देते हैं जो शुरू ही से साथ थे और आज तक अल्लाह का कलाम सुनाने की खिदमत सरंजाम दे रहे हैं।<sup>3</sup> मैंने भी हर मुमकिन कोशिश की है कि सब कुछ शुरू से और ऐन हकीकत के मुताबिक मालूम करूँ। अब मैं यह बातें तरतीब से आपके लिए लिखना चाहता हूँ।<sup>4</sup> आप यह पढ़कर जान लेंगे कि जो बातें आपको सिखाई गई हैं वह सच और दुस्त हैं।

### यहया के बारे में पेशगोई

5 यहदिया के बादशाह हेरोदेस के जमाने में एक इमाम था जिसका नाम ज़करियाह था। बैतुल-मुक़द्दस में इमामों के मुख्तलिफ़ गुरोह खिदमत सरंजाम देते थे, और ज़करियाह का ताल्लुक अबियाह के गुरोह से था। उस की बीवी इमामे-आज़म हासून की नसल से थी और उसका नाम इलीशिबा था।<sup>6</sup> मियाँ-बीवी अल्लाह के नज़दीक रास्तबाज़ थे और रब के तमाम अहकाम और हिदायात के मुताबिक बेइलज़ाम जिंदगी गुज़ारते थे।<sup>7</sup> लेकिन वह बेऔलाद थे। इलीशिबा के बच्चे पैदा नहीं हो सकते थे। अब वह दोनों बूढ़े हो चुके थे।

8 एक दिन बैतुल-मुक़द्दस में अबियाह के गुरोह की बारी थी और ज़करियाह अल्लाह के हुज़ूर अपनी खिदमत सरंजाम दे रहा था।<sup>9</sup> दस्तूर के मुताबिक उन्होंने कुरा डाला ताकि मालूम करें कि रब के मक़दिस में जाकर बखूर की कुरबानी कौन जलाए। ज़करियाह को चुना गया।<sup>10</sup> जब वह मुक़र्ररा वक़्त पर बखूर जलाने के लिए बैतुल-मुक़द्दस में दाखिल हुआ तो जमा होनेवाले तमाम परस्तार सहन में दूआ कर रहे थे।

11 अचानक रब का एक फ़रिशत ज़ाहिर हुआ जो बखूर जलाने की कुरबानगाह के दहनी तरफ़ खड़ा था।<sup>12</sup> उसे देखकर ज़करियाह घबराया और बहुत डर गया।<sup>13</sup> लेकिन फ़रिशते ने उससे कहा, “ज़करियाह, मत डर! अल्लाह ने तेरी दूआ सुन ली है। तेरी बीवी इलीशिबा के बेटा होगा। उसका नाम यहया रखना।<sup>14</sup> वह न सिर्फ़ तेरे लिए खुशी और मुसरत का बाइस होगा, बल्कि बहुत-से लोग उस की पैदाइश पर खुशी मनाएँगे।<sup>15</sup> क्योंकि वह रब के नज़दीक अज़ीम होगा। लाज़िम है कि वह मैं और शराब से परहेज़ करे। वह पैदा होने से पहले ही रूहल-कुदूस से मामूर होगा<sup>16</sup> और इसराईली क़ौम में से बहुतों को रब उनके ख़ुदा के पास वापस लाएगा।<sup>17</sup> वह इलियास की रूह और कुव्वत से ख़ुदावंद के आगे आगे चलेगा। उस की खिदमत से वालिदों के दिल अपने बच्चों की तरफ़ मायल हो जाएँगे और नाफ़रमान लोग रास्तबाज़ों की दानाई की तरफ़ रूज़ करेंगे। यों वह इस क़ौम को रब के लिए तैयार करेगा।”

18 ज़करियाह ने फ़रिशते से पूछा, “मैं किस तरह जानूँ कि यह बात सच है? मैं ख़ुद बूढ़ा हूँ और मेरी बीवी भी उम्ररसीदा है।”

19 फ़रिशते ने जवाब दिया, “मैं जिबराईल हूँ जो अल्लाह के हुज़ूर खड़ा रहता हूँ। मुझे इसी मक़सद के लिए भेजा गया है कि तुझे यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ।<sup>20</sup> लेकिन चूँकि तुने मेरी बात का यक़ीन नहीं किया इसलिए तू ख़ामोश रहेगा और उस वक़्त तक बोल नहीं सकेगा जब तक तेरे बेटा पैदा न हो। मेरी यह बातें मुक़र्ररा वक़्त पर ही पूरी होंगी।”

21 इस दौरान बाहर के लोग ज़करियाह के इंतज़ार में थे। वह हैरान होते जा रहे थे कि उसे वापस आने में क्यों इतनी देर हो रही है।<sup>22</sup> आख़िरकार वह बाहर आया, लेकिन वह उनसे बात न कर सका। तब उन्होंने जान लिया कि उसने बैतुल-मुक़द्दस में रोया देखी है। उसने हाथों से इशारे तो किए, लेकिन ख़ामोश रहा।

23 ज़करियाह मुक़र्ररा वक़्त तक बैतुल-मुक़द्दस में अपनी खिदमत अंजाम देता रहा, फिर अपने घर वापस चला गया।<sup>24</sup> थोड़े दिनों के बाद उस की बीवी इलीशिबा हामिला हो गई और वह पाँच माह तक घर में छुपी रही।<sup>25</sup> उसने कहा, “ख़ुदावंद ने मेरे लिए कितना बड़ा काम किया है, क्योंकि अब उसने मेरी फ़िकर की और लोगों के सामने से मेरी स्ववाई दूर कर दी।”

### इंसा की पैदाइश की पेशगोई

26-27 इलीशिबा छः माह से उम्मीद से थी जब अल्लाह ने जिबराईल फ़रिशते को एक कुँवारी के पास भेजा जो नासरत में रहती थी। नासरत गलील का एक शहर है और कुँवारी का नाम मरियम था। उस की मँगनी एक मर्द के साथ हो चुकी थी जो

दाऊद बादशाह की नसल से था और जिसका नाम यूसुफ था। 28 फरिश्ते ने उसके पास आकर कहा, “ऐ ख़ातून जिस पर रब का ख़ास फ़जल हुआ है, सलाम! रब तेरे साथ है।”

29 मरियम यह सुनकर घबरा गई और सोचा, “यह किस तरह का सलाम है?” 30 लेकिन फरिश्ते ने अपनी बात जारी रखी और कहा, “ऐ मरियम, मत डर, क्योंकि तूज़ पर अल्लाह का फ़जल हुआ है। 31 तू उम्मीद से होकर एक बेटे को जन्म देगी। तुझे उसका नाम ईसा (नजात देनेवाला) रखना है। 32 वह अज़ीम होगा और अल्लाह तआला का फ़रज़द कहलाएगा। रब हमारा खुदा उसे उसके बाप दाऊद के तख़्त पर बिठाएगा 33 और वह हमेशा तक इसराईल पर हुकूमत करेगा। उस की सलतनत कभी ख़त्म न होगी।”

34 मरियम ने फरिश्ते से कहा, “यह क्योंकर हो सकता है? अभी तो मैं कुँवारी हूँ।”

35 फरिश्ते ने जवाब दिया, “रूहुल-कुदूस तूज़ पर नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की कुदरत का साया तूज़ पर छा जाएगा। इसलिए यह बच्चा कुदूस होगा और अल्लाह का फ़रज़द कहलाएगा। 36 और देख, तेरी रिश्तेदार इलीशिबा के भी बेटा होगा हालाँकि वह उम्रसिद्धा है। गो उसे बौझ करार दिया गया था, लेकिन वह छः माह से उम्मीद से है। 37 क्योंकि अल्लाह के नज़दीक कोई काम नामुमकिन नहीं है।”

38 मरियम ने जवाब दिया, “मैं रब की ख़िदमत के लिए हाज़िर हूँ। मेरे साथ वैसा ही हो जैसा आपने कहा है।” इस पर फरिश्ता चला गया।

**मरियम इलीशिबा से मिलती है**

39 उन दिनों में मरियम यहूदिया के पहाड़ी इलाके के एक शहर के लिए रवाना हुई। उसने जल्दी जल्दी सफ़र किया। 40 वहाँ पहुँचकर वह ज़करियाह के घर में दाख़िल हुई और इलीशिबा को सलाम किया। 41 मरियम का यह सलाम सुनकर इलीशिबा का बच्चा उसके पेट में उछल पड़ा और इलीशिबा खुद रूहुल-कुदूस से भर गई। 42 उसने बुलंद आवाज़ से कहा, “तू तमाम औरतों में मुबारक है और मुबारक है तेरा बच्चा! 43 मैं कौन हूँ कि मेरे खुदावन्द की माँ मेरे पास आई! 44 ज्योंही मैंने तेरा सलाम सुना बच्चा मेरे पेट में खुशी से उछल पड़ा। 45 तू कितनी मुबारक है, क्योंकि तू ईमान लाई कि जो कुछ रब ने फ़रमाया है वह तक़मील तक पहुँचेगा।”

**मरियम का गीत**

46 इस पर मरियम ने कहा,

“मेरी जान रब की ताज़ीम करती है

47 और मेरी रूह अपने नजातदहिदा अल्लाह से निहायत खुश है।

48 क्योंकि उसने अपनी खादिमा की पस्ती पर नज़र की है।

हाँ, अब से तमाम नसलें मुझे मुबारक कहेंगी,

49 क्योंकि कादिर-मुतलक ने मेरे लिए बड़े बड़े काम किए हैं।

उसका नाम कुदूस है।

50 जो उसका ख़ौफ़ मानते हैं

उन पर वह पुशत-दर-पुशत अपनी रहमत ज़ाहिर करेगा।

51 उस की कुदरत ने अज़ीम काम कर दिखाए हैं,

और दिल से मग़ासूर लोग तितर-बितर हो गए हैं।

52 उसने हुक्मरानों को उनके तख़्त से हटाकर

पस्तहाल लोगों को सरफ़राज़ कर दिया है।

53 भूकों को उसने अच्छी चीज़ों से मालामाल करके

अमीरों को ख़ाली हाथ लौटा दिया है।

54 वह अपने खादिम इसराईल की मदद के लिए आ गया है।

हाँ, उसने अपनी रहमत को याद किया है,

55 यानी वह दायमी वादा जो उसने हमारे बुज़ुर्गों के साथ किया था,

इब्राहीम और उस की औलाद के साथ।”

56 मरियम तक़रीबन तीन माह इलीशिबा के हॉ ठहरी रही, फिर अपने घर लौट गई।

**यहया बपतिस्मा देनेवाले की पैदाइश**

57 फिर इलीशिबा का बच्चे को जन्म देने का दिन आ पहुँचा और उसके बेटा हुआ। 58 जब उसके हमसायों और रिश्तेदारों को इतला मिली कि रब की उस पर कितनी बड़ी रहमत हुई है तो उन्होंने उसके साथ खुशी मनाई।

59 जब बच्चा आठ दिन का था तो वह उसका खतना करवाने की रस्म के लिए आए। वह बच्चे का नाम उसके बाप के नाम पर ज़करियाह रखना चाहते थे, 60 लेकिन उस की माँ ने एतराज़ किया। उसने कहा, “नहीं, उसका नाम यहया हो।”

61 उन्होंने कहा, “आपके रिश्तेदारों में तो ऐसा नाम कहीं भी नहीं पाया जाता।” 62 तब उन्होंने इशारों से बच्चे के बाप से पूछा कि वह क्या नाम रखना चाहता है।

63 जवाब में ज़करियाह ने तख्ती मँगवाकर उस पर लिखा, “इसका नाम यहया है।” यह देखकर सब हैरान हुए। 64 उसी लमहे ज़करियाह दुबारा बोलने के काबिल हो गया, और वह अल्लाह की तमजीद करने लगा। 65 तमाम हमसायों पर ख़ौफ़ छा गया और इस बात का चर्चा यहूदिया के पूरे इलाके में फैल गया। 66 जिसने भी सुना उसने संजीदगी से इस पर गौर किया और सोचा, “इस बच्चे का क्या बनेगा?” क्योंकि रब की कुदरत उसके साथ थी।

### ज़करियाह की नबुव्वत

67 उसका बाप ज़करियाह रूहल-कुदूस से मामूर हो गया और नबुव्वत करके कहा,

68 “रब इसराईल के अल्लाह की तमजीद हो!  
क्योंकि वह अपनी कौम की मदद के लिए आया है,  
उसने फ़िघा देकर उसे छुड़ाया है।

69 उसने अपने ख़ादिम दाऊद के घराने में  
हमारे लिए एक अजीम नजातदहिदा खड़ा किया है।

70 ऐसा ही हुआ जिस तरह उसने कदीम ज़मानों में  
अपने मुक़द्दस नबियों की मारिफ़त फ़रमाया था,

71 कि वह हमें हमारे दुश्मनों से नजात दिलाएगा,  
उन सबके हाथ से  
जो हमसे नफ़रत रखते हैं।

72 क्योंकि उसने फ़रमाया था कि वह हमारे बापदादा पर रहम करेगा

73 और अपने मुक़द्दस अहद को याद रखेगा,  
उस वादे को जो उसने कसम खा कर  
इब्राहीम के साथ किया था।

74 अब उसका यह वादा पूरा हो जाएगा :  
हम अपने दुश्मनों से मख़लसी पाकर

ख़ौफ़ के बग़ैर अल्लाह की ख़िदमत कर सकेंगे,  
75 जीते-जी उसके हज़ूर मुक़द्दस और रास्त ज़िंदगी गुज़ार सकेंगे।

76 और तू, मेरे बच्चे, अल्लाह तआला का नबी कहलाएगा।  
क्योंकि तू ख़ुदावंद के आगे आगे

उसके रास्ते तैयार करेगा।  
77 तू उस की कौम को नजात का रास्ता दिखाएगा,  
कि वह किस तरह अपने गुनाहों की मुआफ़ी पाएगी।

78 हमारे अल्लाह की बड़ी रहमत की वजह से  
हम पर इलाही नूर चमकेगा।

79 उस की रौशनी उन पर फैल जाएगी  
जो अंधेरे और मौत के साये में बैठे हैं,  
हाँ वह हमारे क़दमों को सलामती की राह पर पहुँचाएगी।”

80 यहया परवान चढ़ा और उस की रूह ने तकवियत पाई। उसने उस वक़्त तक रेगिस्तान में ज़िंदगी गुज़ारी जब तक उसे इसराईल की ख़िदमत करने के लिए बुलाया न गया।

## 2

### ईसा की पैदाइश

1 उन ऐयाम में रोम के शहनशाह औरिगुस्तस ने फ़रमान जारी किया कि पूरी सलतनत की मर्दुमशुमारी की जाए। 2 यह पहली मर्दुमशुमारी उस वक़्त हुई जब कूरिनियुस शाम का गवर्नर था। 3 हर किसी को अपने वतनी शहर में जाना पड़ा ताकि वहाँ रजिस्टर में अपना नाम दर्ज करवाए।

4 चुनौचे यूसुफ गलील के शहर नासरत से रवाना होकर यहूदिया के शहर बैत-लहम पहुँचा। वजह यह थी कि वह दाऊद बादशाह के घराने और नसल से था, और बैत-लहम दाऊद का शहर था। 5 चुनौचे वह अपने नाम को रजिस्टर में दर्ज करवाने के लिए वहाँ गया। उस की मंगेतर मरियम भी साथ थी। उस वक़्त वह उम्मीद से थी। 6 जब वह वहाँ ठहरे हुए थे तो बच्चे को जन्म देने का वक़्त आ पहुँचा। 7 बेटा पैदा हुआ। यह मरियम का पहला बच्चा था। उसने उसे कपड़ों \* में लपेटकर एक चरनी में लिटा दिया, क्योंकि उन्हें सराय में रहने की जगह नहीं मिली थी।

### चरवाहों को खुशख़बरी

8 उस रात कुछ चरवाहे करीब के खुले मैदान में अपने रेवड़ों की पहरादारी कर रहे थे। 9 अचानक रब का एक फ़रिश्ता उन पर जाहिर हुआ, और उनके इर्दगिर्द रब का जलाल चमका। यह देखकर वह सख़्त डर गए। 10 लेकिन फ़रिश्ते ने उनसे कहा, “डरो मत! देखो मैं तुमको बड़ी ख़ुशी की ख़बर देता हूँ जो तमाम लोगों के लिए होगी। 11 आज ही दाऊद के शहर में तुम्हारे लिए नजातदहिदा पैदा हुआ है यानी मसीह खुदावंद। 12 और तुम उसे इस निशान से पहचान लो, तुम एक शीरखार बच्चे को कपड़ों में लिपटा हुआ पाओगे। वह चरनी में पड़ा हुआ होगा।”

13 अचानक आसमानी लशकरों के बेशमार फ़रिश्ते उस फ़रिश्ते के साथ जाहिर हुए जो अल्लाह की हम्दो-सना करके कह रहे थे,

14 “आसमान की बुलंदियों पर अल्लाह की इज्जतो-जलाल, ज़मीन पर उन लोगों की सलामती जो उसे मंज़ूर है।”

15 फ़रिश्ते उन्हें छोड़कर आसमान पर वापस चले गए तो चरवाहे आपस में कहने लगे, “आओ, हम बैत-लहम जाकर यह बात देखें जो हुई है और जो रब ने हम पर जाहिर की है।”

16 वह भागकर बैत-लहम पहुँचे। वहाँ उन्हें मरियम और यूसुफ मिले और साथ ही छोटा बच्चा जो चरनी में पड़ा हुआ था। 17 यह देखकर उन्होंने सब कुछ बयान किया जो उन्हें इस बच्चे के बारे में बताया गया था। 18 जिसने भी उनकी बात सुनी वह हैरतज़दा हुआ। 19 लेकिन मरियम को यह तमाम बातें याद रही और वह अपने दिल में उन पर गौर करती रही।

20 फिर चरवाहे लौट गए और चलते चलते उन तमाम बातों के लिए अल्लाह की ताज़ीमो-तारीफ़ करते रहे जो उन्होंने सुनी और देखी थीं, क्योंकि सब कुछ वैसा ही पाया था जैसा फ़रिश्ते ने उन्हें बताया था।

### बच्चे का नाम ईसा रखा जाता है

21 आठ दिन के बाद बच्चे का खतना करवाने का वक़्त आ गया। उसका नाम ईसा रखा गया, यानी वही नाम जो फ़रिश्ते ने मरियम को उसके हामिला होने से पहले बताया था।

### ईसा को बैतुल-मुक़द्दस में पेश किया जाता है

22 जब मुसा की शरीअत के मुताबिक तहारत के दिन पूरे हुए तब वह बच्चे को यस्शलम ले गए ताकि उसे रब के हुज़ूर पेश किया जाए, 23 जैसे रब की शरीअत में लिखा है, “हर पहलौठे को रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस करना है।” 24 साथ ही उन्होंने मरियम की तहारत की रस्म के लिए वह कुरबानी पेश की जो रब की शरीअत बयान करती है, यानी “दो कुप्रियाँ या दो जवान कबूतर।”

25 उस वक़्त यस्शलम में एक आदमी बनाम शमौन रहता था। वह रास्तबाज़ और खुदातरस था और इस इंतज़ार में था कि मसीह आकर इसराईल को सुकून बख़ो। रूहुल-कुद्स उस पर था, 26 और उसने उस पर यह बात जाहिर की थी कि वह जीते-जी रब के मसीह को देखेगा। 27 उस दिन रूहुल-कुद्स ने उसे तहरीक दी कि वह बैतुल-मुक़द्दस में जाए। चुनौचे जब मरियम और यूसुफ बच्चे को रब की शरीअत के मुताबिक पेश करने के लिए बैतुल-मुक़द्दस में आए 28 तो शमौन मौजूद था। उसने बच्चे को अपने बाजूओं में लेकर अल्लाह की हम्दो-सना करते हुए कहा,

29 “ऐ आका, अब तू अपने बंदे को इजाज़त देता है

कि वह सलामती से रहेलत कर जाए, जिस तरह तूने फरमाया है।

30 क्योंकि मैंने अपनी आँखों से तेरी उस नजात का मुशाहदा कर लिया है

31 जो तूने तमाम क्रौमों की मौजूदगी में तैयार की है।

32 यह एक ऐसी रौशनी है जिससे गैरयहूदियों की आँखें खुल जाएँगी

और तेरी कौम इसराईल को जलाल हासिल होगा।”

33 बच्चे के माँ-बाप अपने बेटे के बारे में इन अलफ़ाज़ पर हैरान हुए। 34 शमौन ने उन्हें बरकत दी और मरियम से कहा, “यह बच्चा मुकर्रर हुआ है कि इसराईल के बहुत-से लोग इससे ठोकर खाकर गिर जाएँ, लेकिन बहुत-से इससे अपने पाँवों

\* 2:7 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : पोतडों

पर खड़े भी हो जाएंगे। गो यह अल्लाह की तरफ से एक इशारा है तो भी इसकी मुवालाफत की जाएगी। 35 यों बहुतों के दिली खयालात जाहिर हो जाएंगे। इस सिलसिले में तलवार तेरी जान में से भी गुजर जाएगी।”

36 वहाँ बैतुल-मुकद्दस में एक उप्रसदीदा नबिया भी थी जिसका नाम हन्नाह था। वह फनुएल की बेटी और आशर के कबीले से थी। शादी के सात साल बाद उसका शौहर मर गया था। 37 अब वह बेवा की हैसियत से 84 साल की हो चुकी थी। वह कभी बैतुल-मुकद्दस को नहीं छोड़ती थी, बल्कि दिन-रात अल्लाह को सिजदा करती, रोज़ा रखती और दुआ करती थी। 38 उस वक़्त वह मरियम और यूसुफ के पास आकर अल्लाह की तमजीद करने लगी। साथ साथ वह हर एक को जो इस इंतज़ार में था कि अल्लाह फ़िद्या देकर यरूशालम को छुड़ाए, बच्चे के बारे में बताती रही।

वह नासरत वापस चले जाते हैं

39 जब ईसा के वालिदिन ने रब की शरीअत में दर्ज तमाम फ़रायज़ अदा कर लिए तो वह गलील में अपने शहर नासरत को लौट गए। 40 वहाँ बच्चा परवान चढ़ा और तकवियत पाता गया। वह हिकमतो-दानाई से मामू था, और अल्लाह का फ़ज़ल उस पर था।

बारह साल की उम्र में बैतुल-मुकद्दस में

41 ईसा के वालिदिन हर साल फ़सह की ईद के लिए यरूशालम जाया करते थे। 42 उस साल भी वह मामूल के मुताबिक ईद के लिए गए जब ईसा बारह साल का था। 43 ईद के इख़िताम पर वह नासरत वापस जाने लगे, लेकिन ईसा यरूशालम में रह गया। पहले उसके वालिदिन को मालूम न था, 44 क्योंकि वह समझते थे कि वह काफ़िले में कही मौजूद है। लेकिन चलते चलते पहला दिन गुज़र गया और वह अब तक नज़र न आया था। इस पर वालिदिन उसे अपने रिश्तेदारों और अजीजों में ढूँढ़ने लगे। 45 जब वह वहाँ न मिला तो मरियम और यूसुफ़ यरूशालम वापस गए और वहाँ ढूँढ़ने लगे। 46 तीन दिन के बाद वह आख़िरकार बैतुल-मुकद्दस में पहुँचे। वहाँ ईसा दीनी उस्तादों के दरमियान बैठा उनकी बातें सुन रहा और उनसे सवालात पूछ रहा था। 47 जिसने भी उस की बातें सुनी वह उस की समझ और जवाबों से दंग रह गया। 48 उसे देखकर उसके वालिदिन घबरा गए। उस की माँ ने कहा, “बेटा, तूने हमारे साथ यह क्यों किया? तेरा बाप और मैं तुझे ढूँढ़ते ढूँढ़ते शदीद कोफ़त का शिकार हुए।”

49 ईसा ने जवाब दिया, “आपको मुझे तलाश करने की क्या ज़रूरत थी? क्या आपको मालूम न था कि मुझे अपने बाप के घर में होना ज़रूर है?” 50 लेकिन वह उस की बात न समझे।

51 फिर वह उनके साथ खाना होकर नासरत वापस आया और उनके ताबे रहा। लेकिन उस की माँ ने यह तमाम बातें अपने दिल में महफूज़ रखे। 52 यों ईसा जवान हुआ। उस की समझ और हिकमत बढ़ती गई, और उसे अल्लाह और इनसान की मकबूलियत हासिल थी।

### 3

यहया बपतिस्मा देनेवाले की खिदमत

1 फिर रोम के शहनशाह तिरियुस की हुकूमत का पंद्रहवाँ साल आ गया। उस वक़्त पुंतियुस पीलातुस सूबा यहूदिया का गवर्नर था, हेरोदेस अतिपास गलील का हाकिम था, उसका भाई फिलिपुस इत्रिया और ब्रखोनीतिस के इलाके का, जबकि लिसानियास अबिलेने का। 2 हन्ना और कायफा दोनों इमामे-आज़म थे। उन दिनों में अल्लाह यहया बिन ज़करियाह से हमकलाम हुआ जब वह रेगिस्तान में था। 3 फिर वह दरियाए-यरदन के पूरे इलाके में से गुज़रा। हर जगह उसने एलान किया कि तौबा करके बपतिस्मा लो ताकि तुम्हें अपने गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाए। 4 यों यसायाह नबी के अलफ़ाज़ पूरे हुए जो उस की किताब में दर्ज हैं :

‘रेगिस्तान में एक आवाज़ पुकार रही है,

रब की राह तैयार करो!

उसके रास्ते सीधे बनाओ।

5 लाज़िम है कि हर वादी भर दी जाए,

ज़रूरी है कि हर पहाड़ और बुलंद जगह मैदान बन जाए।

जो टेढ़ा है उसे सीधा किया जाए,

जो नाहमवार है उसे हमवार किया जाए।

6 और तमाम इनसान अल्लाह की नज़ात देखेंगे।’

7 जब बहुत-से लोग यहया के पास आए ताकि उससे बपतिस्मा लें तो उसने उनसे कहा, “ए ज़हरीले साँप के बच्चो! किसने तुमको आनेवाले ग़ज़ब से बचने की हिदायत की? 8 अपनी ज़िंदगी से जाहिर करो कि तुमने वाकई तौबा की है। यह खयाल

मत करो कि हम तो बच जाएंगे क्योंकि इब्राहीम हमारा बाप है। मैं तुमको बताता हूँ कि अल्लाह इन पत्थरों से भी इब्राहीम के लिए औलाद पैदा कर सकता है।<sup>9</sup> अब तो अदालत की कुल्हाड़ी दरख्तों की जड़ों पर रखी हुई है। हर दरख्त जो अच्छा फल न लाए काटा और आग में झोंका जाएगा।”

10 लोगों ने उससे पूछा, “फिर हम क्या करें?”

11 उसने जवाब दिया, “जिसके पास दो कुरते हैं वह एक उसको दे दे जिसके पास कुछ न हो। और जिसके पास खाना है वह उसे खिला दे जिसके पास कुछ न हो।”

12 टैक्स लेनेवाले भी बपतिस्मा लेने के लिए आए तो उन्होंने पूछा, “उस्ताद, हम क्या करें?”

13 उसने जवाब दिया, “सिर्फ उतने टैक्स लेना जितने हुकूमत ने मुकर्रर किए हैं।”

14 कुछ फौजियों ने पूछा, “हमें क्या करना चाहिए?”

उसने जवाब दिया, “किसी से जबनर या गलत इलजाम लगाकर पैसे न लेना बल्कि अपनी जायज़ आमदनी पर इकतिफ़ा करना।”

15 लोगों की तबक्कोआत बहुत बढ़ गई। वह अपने दिलों में सोचने लगे कि क्या यह मसीह तो नहीं है? 16 इस पर यहया उन सबसे मुखातिब होकर कहने लगा, “मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन एक आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है। मैं उसके जूतों के तसमे खोलने के भी लायक नहीं। वह तुम्हें रूहल-कुद्स और आग से बपतिस्मा देगा। 17 वह हाथ में छाज पकड़े हुए अनाज को भूसे से अलग करने के लिए तैयार खड़ा है। वह गाहने की जगह को बिलकुल साफ़ करके अनाज को अपने गोदाम में जमा करेगा। लेकिन भूसे को वह ऐसी आग में झोंकेगा जो बुझने की नहीं।”

18 इस क्रिस्म की बहुत-सी और बातों से उसने क्रौम को नसीहत की और उसे अल्लाह की खुशखबरी सुनाई। 19 लेकिन एक दिन यों हुआ कि यहया ने गलील के हाकिम हेरोदेस अंतिपास को डॉटा। वजह यह थी कि हेरोदेस ने अपने भाई की बीवी हेरोदियास से शादी कर ली थी और इसके अलावा और बहुत-से गलत काम किए थे। 20 यह मलामत सुनकर हेरोदेस ने अपने गलत कामों में और इज़ाफ़ा यह किया कि यहया को जेल में डाल दिया।

### ईसा का बपतिस्मा

21 एक दिन जब बहुत-से लोगों को बपतिस्मा दिया जा रहा था तो ईसा ने भी बपतिस्मा लिया। जब वह हुआ कर रहा था तो आसमान खुल गया 22 और रूहल-कुद्स जिस्मानी सूत में कबूतर की तरह उस पर उतर आया। साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, तुझसे मैं खुश हूँ।”

### ईसा का नसबनामा

23 ईसा तक्ररीबन तीस साल का था जब उसने ख़िदमत शुरू की। उसे यूसुफ़ का बेटा समझा जाता था। उसका नसबनामा यह है : यूसुफ़ बिन एली 24 बिन मत्तात बिन लावी बिन मलकी बिन यन्ना बिन यूसुफ़ 25 बिन मत्तितियाह बिन आमूस बिन नाहम बिन असलियाह बिन नोगा 26 बिन माअत बिन मत्तितियाह बिन शमई बिन योसेख़ बिन यूदाह 27 बिन यहन्नाह बिन रसा बिन ज़ब्बाबल बिन सियालतियेल बिन नेरी 28 बिन मलिकी बिन अदी बिन क्रोसाम बिन इलमोदाम बिन एर 29 बिन यशअ बिन इलियज़र बिन योरिम बिन मत्तात बिन लावी 30 बिन शमौन बिन यहदाह बिन यूसुफ़ बिन योनाम बिन इलियाक्रीम 31 बिन मलेआह बिन मिन्नाह बिन मत्तितियाह बिन नातन बिन दाऊद 32 बिन यस्सी बिन ओबेद बिन बोअज़ बिन सलमोन बिन नहसोन 33 बिन अम्मीनदाब बिन अदमीन बिन अरनी बिन हसरोन बिन फ़ारस बिन यहदाह 34 बिन याक़ूब बिन इसहाक़ बिन इब्राहीम बिन तारह बिन नहर 35 बिन सरूज बिन रऊ बिन फ़लज बिन इबर बिन सिलह 36 बिन क्रीनान बिन अरफ़क्सद बिन सिम बिन नूह बिन लमक 37 बिन मत्सिलह बिन हनूक़ बिन यारिद बिन महललेल बिन क्रीनान 38 बिन अनूस बिन सेत बिन आदम। आदम को अल्लाह ने पैदा किया था।

## 4

### ईसा को आजमाया जाता है

1 ईसा दरियाए-यरदन से वापस आया। वह रूहल-कुद्स से मामूर था जिसने उसे रेगिस्तान में लाकर उस की राहनुमाई की।

2 वहाँ उसे चालीस दिन तक इबलीस से आजमाया गया। इस पूरे अरसे में उसने कुछ न खाया। आखिरकार उसे भूक़ लगी।

3 फिर इबलीस ने उससे कहा, “अगर तू अल्लाह का फ़रज़ंद है तो इस पत्थर को हुक्म दे कि रोटी बन जाए।”

4 लेकिन ईसा ने इनकार करके कहा, “हरगिज़ नहीं, क्योंकि कलामे-मुक़द्स में लिखा है कि इनसान की जिंदगी सिर्फ़ रोटी पर मुनहसिर नहीं होती।”

5 इस पर इबलीस ने उसे किसी बुलंद जगह पर ले जाकर एक लामहे में दुनिया के तमाम ममालिक दिखाए। 6 वह बोला, “मैं तुझे इन ममालिक की शानो-शौकत और इन पर तमाम इख्तियार दूँगा। क्योंकि यह मेरे सुपुर्द किए गए हैं और जिसे चाहें दे सकता हूँ। 7 लिहाजा यह सब कुछ तेरा ही होगा। शर्त यह है कि तू मुझे सिजदा करे।”

8 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “हरगिज नहीं, क्योंकि कलामे-मुकद्दस में यों लिखा है, ‘रब अपने अल्लाह को सिजदा कर और सिर्फ उसी की इबादत कर’।”

9 फिर इबलीस ने उसे यरूशालम ले जाकर बैतूल-मुकद्दस की सबसे ऊँची जगह पर खड़ा किया और कहा, “अगर तू अल्लाह का फरजंद है तो यहाँ से छलौंग लगा दे। 10 क्योंकि कलामे-मुकद्दस में लिखा है, ‘वह अपने फरिश्तों को तेरी हिफाजत करने का हुक्म देगा, 11 और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि तेरे पाँवों को पत्थर से ठेस न लगे’।”

12 लेकिन ईसा ने तीसरी बार इनकार किया और कहा, “कलामे-मुकद्दस यह भी फरमाता है, ‘रब अपने अल्लाह को न आज्ञामाना’।”

13 इन आज्ञामाइशों के बाद इबलीस ने ईसा को कुछ देर के लिए छोड़ दिया।

### खिदमत का आगाज

14 फिर ईसा वापस गलील में आया। उसमें रूहल-कुद्दस की कुव्वत थी, और उस की शोहरत उस पूरे इलाके में फैल गई।

15 वहाँ वह उनके इबादतखानों में तालीम देने लगा, और सबने उस की तारीफ की।

### ईसा को नासरत में रद्द किया जाता है

16 एक दिन वह नासरत पहुँचा जहाँ वह परवान चढ़ा था। वहाँ भी वह मामूल के मुताबिक सबत के दिन मकामी इबादतखाने में जाकर कलामे-मुकद्दस में से पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। 17 उसे यसायाह नबी की किताब दी गई तो उसने तूमार को खोलकर यह हवाला दूँड निकाला,

18 “रब का रूह मुझ पर है,

क्योंकि उसने मुझे तेल से मसह करके

गरीबों को खूशखबरी सुनाने का इख्तियार दिया है।

उसने मुझे यह एलान करने के लिए भेजा है

कि कैदियों को रिहाई मिलेगी और अंधे देखेंगे।

उसने मुझे भेजा है

कि मैं कुचले हुआओं को आज्ञाद कराऊँ

19 और रब की तरफ से बहाली के साल का एलान करूँ।”

20 यह कहकर ईसा ने तूमार को लपेटकर इबादतखाने के मुलाजिम को वापस कर दिया और बैठ गया। सारी जमात की आँखें उस पर लगी थीं। 21 फिर वह बोल उठा, “आज अल्लाह का यह फरमान तुम्हारे सुनते ही पूरा हो गया है।”

22 सब ईसा के हक में बातें करने लगे। वह उन पुरफ़ज़ल बातों पर हैरतज़दा थे जो उसके मुँह से निकलीं, और वह कहने लगे, “क्या यह यूसुफ का बेटा नहीं है?”

23 उसने उनसे कहा, “बेशक तुम मुझे यह कहावत बताओगे, ‘ऐ डाक्टर, पहले अपने आपका इलाज कर।’ यानी सुनने में आया है कि आपने कफ़र्नहम में मोजिजे किए हैं। अब ऐसे मोजिजे यहाँ अपने वतनी शहर में भी दिखाएँ। 24 लेकिन मैं तुमको सच बताता हूँ कि कोई भी नबी अपने वतनी शहर में मकबूल नहीं होता।

25 यह हकीकत है कि इलियास नबी के ज़माने में इसराईल में बहुत-सी ज़रूरतमंद बेवाएँ थीं, उस वक़्त जब साठे तीन साल तक बारिश न हुई और पूरे मुल्क में सख्त काल पड़ा। 26 इसके बावजूद इलियास को उनमें से किसी के पास नहीं भेजा गया बल्कि एक ग़ैरयहूदी बेवा के पास जो सैदा के शहर सारपत में रहती थी। 27 इसी तरह इलीशा नबी के ज़माने में इसराईल में कोठ के बहुत-से मरीज़ थे। लेकिन उनमें से किसी को शफ़ा न मिली बल्कि सिर्फ़ नामान को जो मुल्के-शाम का शहरी था।”

28 जब इबादतखाने में जमा लोगों ने यह बातें सुनीं तो वह बड़े तैश में आ गए। 29 वह उठे और उसे शहर से निकालकर उस पहाड़ी के किनारे ले गए जिस पर शहर को तामीर किया गया था। वहाँ से वह उसे नीचे गिराना चाहते थे, 30 लेकिन ईसा उनमें से गुज़रकर वहाँ से चला गया।

### आदमी का बदरूह की गिरिफ्त से रिहाई

31 इसके बाद वह गलील के शहर कफ़र्नहम को गया और सबत के दिन इबादतखाने में लोगों को सिखाने लगा। 32 वह उस की तालीम सुनकर हक्का-बक्का रह गए, क्योंकि वह इख्तियार के साथ तालीम देता था। 33 इबादतखाने में एक आदमी



था जो किसी नापाक रूह के कब्जे में था। अब वह चीख चीखकर बोलने लगा, <sup>34</sup> “अरे नासरत के ईसा, हमारा आपके साथ क्या वास्ता है? क्या आप हमें हलाक करने आए हैं? मैं तो जानता हूँ कि आप कौन हैं, आप अल्लाह के कुटूस हैं।”

<sup>35</sup> ईसा ने उसे डाँटकर कहा, “खामोश! आदमी में से निकल जा!” इस पर बदरूह आदमी को जमात के बीच में फर्श पर पटककर उसमें से निकल गई। लेकिन वह आदमी ज़खमी न हुआ।

<sup>36</sup> तमाम लोग घबरा गए और एक दूसरे से कहने लगे, “उस आदमी के अलफ़ाज़ में क्या इख़्तियार और कुव्वत है कि बदरूहें उसका हुक्म मानती और उसके कहने पर निकल जाती हैं?” <sup>37</sup> और ईसा के बारे में चर्चा उस पूरे इलाक़े में फैल गया।

### बहुत-से मरीजों की शफ़ायगी

<sup>38</sup> फिर ईसा इबादतख़ाने को छोड़कर शमौन के घर गया। वहाँ शमौन की सास शदीद बुखार में मुब्तला थी। उन्होंने ईसा से गुज़ारिश की कि वह उस की मदद करे। <sup>39</sup> उसने उसके सिरहाने खड़े होकर बुखार को डौंटा तो वह उतर गया और शमौन की सास उसी वक़्त उठकर उनकी खिदमत करने लगी।

<sup>40</sup> जब दिन ढल गया तो सब मक़ामी लोग अपने मरीजों को ईसा के पास लाए। खाह उनकी बीमारियाँ कुछ भी क्यों न थी, उसने हर एक पर अपने हाथ रखकर उसे शफ़ा दी। <sup>41</sup> बहुतों में बदरूहें भी थीं जिन्होंने निकलते वक़्त चिल्लाकर कहा, “तू अल्लाह का फ़रज़द है।” लेकिन चूँकि वह जानती थी कि वह मसीह है इसलिए उसने उन्हें डाँटकर बोलने न दिया।

### ख़ुशख़बरी हर एक के लिए है

<sup>42</sup> जब अगला दिन चढ़ा तो ईसा शहर से निकलकर किसी वीरान जगह चला गया। लेकिन हुज़म उसे ढूँडते ढूँडते आख़िरकार उसके पास पहुँचा। लोग उसे अपने पास से जाने नहीं देना चाहते थे। <sup>43</sup> लेकिन उसने उनसे कहा, “लाज़िम है कि मैं दूसरे शहरों में भी जाकर अल्लाह की बादशाही की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ, क्योंकि मुझे इसी मक़सद के लिए भेजा गया है।”

<sup>44</sup> चुनौचे वह यहदिया के इबादतख़ानों में मुनादी करता रहा।

## 5

### पहले शागिर्दों की बुलाहट

<sup>1</sup> एक दिन ईसा गलील की झील गननेसरत के किनारे पर खड़ा हुज़म को अल्लाह का कलाम सुना रहा था। लोग सुनते सुनते इतने करीब आ गए कि उसके लिए जगह कम हो गई। <sup>2</sup> फिर उसे दो कश्तियाँ नज़र आईं जो झील के किनारे लगी थीं। मछिरे उनमें से उतर चुके थे और अब अपने जालों को धो रहे थे। <sup>3</sup> ईसा एक कश्ती पर सवार हुआ। उसने कश्ती के मालिक शमौन से दरखास्त की कि वह कश्ती को किनारे से थोड़ा-सा दूर ले चले। फिर वह कश्ती में बैठा और हुज़म को तालीम देने लगा।

<sup>4</sup> तालीम देने के इख़्तिताम पर उसने शमौन से कहा, “अब कश्ती को वहाँ ले जा जहाँ पानी गहरा है और अपने जालों को मछलियों पकड़ने के लिए डाल दो।”

<sup>5</sup> लेकिन शमौन ने एतराज़ किया, “उस्ताद, हमने तो पूरी रात बड़ी कोशिश की, लेकिन एक भी न पकड़ी। ताहम आपके कहने पर मैं जालों को दुबारा डालूँगा।” <sup>6</sup> यह कहकर उन्होंने गहरे पानी में जाकर अपने जाल डाल दिए। और वाकई, मछलियों का इतना बड़ा गोल जालों में फँस गया कि वह फटने लगे। <sup>7</sup> यह देखकर उन्होंने अपने साथियों को इशारा करके बुलाया ताकि वह दूसरी कश्ती में आकर उनकी मदद करें। वह आए और सबने मिलकर दोनों कश्तियों को इतनी मछलियों से भर दिया कि आख़िरकार दोनों डूबने के खतरे में थीं। <sup>8</sup> जब शमौन पतरस ने यह सब कुछ देखा तो उसने ईसा के सामने मुँह के बल गिरकर कहा, “ख़ुदावंद, मुझसे दूर चले जाएँ। मैं तो गुनाहगार हूँ।” <sup>9</sup> क्योंकि वह और उसके साथी इतनी मछलियाँ पकड़ने की वजह से सख्त हैरान थे। <sup>10</sup> और जबदी के बेटे याक़ूब और यूहन्ना की हालत भी यही थी जो शमौन के साथ मिलकर काम करते थे।

लेकिन ईसा ने शमौन से कहा, “मत डर। अब से तू आदमियों को पकड़ा करेगा।”

<sup>11</sup> वह अपनी कश्तियों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर ईसा के पीछे हो लिए।

### कोठ से शफ़ा

<sup>12</sup> एक दिन ईसा किसी शहर में से गुज़र रहा था कि वहाँ एक मरीज़ मिला जिसका पूरा जिस्म कोठ से मुतअस्सिर था। जब उसने ईसा को देखा तो वह मुँह के बल गिर पड़ा और इल्तिजा की, “ऐ ख़ुदावंद, अगर आप चाहें तो मुझे पाक-साफ़ कर सकते हैं।”

13 ईसा ने अपना हाथ बढ़ाकर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, पाक-साफ हो जा।” इस पर बीमारी फौरन दूर हो गई।  
 14 ईसा ने उसे हिदायत की कि वह किसी को न बताए कि क्या हुआ है। उसने कहा, “सीधा बैतुल-मुकद्दस में इमाम के पास जा ताकि वह तेरा मुआयना करे। अपने साथ वह कुरबानी ले जा जिसका तकाज़ा मूसा की शरीअत उनसे करती है जिन्हें कोढ़ से शफा मिलती है। यों अलानिया तसदीक हो जाएगी कि तू वाकई पाक-साफ हो गया है।”

15 ताहम ईसा के बारे में खबर और ज़्यादा तेज़ी से फैलती गई। लोगों के बड़े गुरोह उसके पास आते रहे ताकि उस की बातें सुनें और उसके हाथ से शफा पाएँ। 16 फिर भी वह कई बार उन्हें छोड़कर दुआ करने के लिए वीरान जगहों पर जाया करता था।

### मफ्लूज के लिए छत खोली जाती है

17 एक दिन वह लोगों को तालीम दे रहा था। फरीसी और शरीअत के आलिम भी गलील और यहूदिया के हर गाँव और यरूश्लम से आकर उसके पास बैठे थे। और रब की क़ुदरत उसे शफा देने के लिए तहरीक दे रही थी। 18 इतने में कुछ आदमी एक मफ्लूज को चारपाई पर डालकर वहाँ पहुँचे। उन्होंने उसे घर के अंदर ईसा के सामने रखने की कोशिश की, 19 लेकिन बेफायदा। घर में इतने लोग थे कि अंदर जाना नामुमकिन था। इसलिए वह आखिरकार छत पर चढ़ गए और कुछ टायलें उधेड़कर छत का एक हिस्सा खोल दिया। फिर उन्होंने चारपाई को मफ्लूज समेत हुजूम के दरमियान ईसा के सामने उतारा। 20 जब ईसा ने उनका ईमान देखा तो उसने मफ्लूज से कहा, “ऐ आदमी, तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं।”

21 यह सुनकर शरीअत के आलिम और फरीसी सोच-बिचार में पड़ गए, “यह किस तरह का बंदा है जो इस किस्म का कुफ़र बकता है? सिर्फ अल्लाह ही गुनाह मुआफ़ कर सकता है।”

22 लेकिन ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने पूछा, “तुम दिल में इस तरह की बातें क्यों सोच रहे हो? 23 क्या मफ्लूज से यह कहना ज़्यादा आसान है कि ‘तेरे गुनाह मुआफ़ कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठकर चल-फिर’? 24 लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इन्हे-आदम को वाकई दुनिया में गुनाह मुआफ़ करने का इख़्तियार है।” यह कहकर वह मफ्लूज से मुखातिब हुआ, “उठ, अपनी चारपाई उठाकर अपने घर चला जा।”

25 लोगों के देखते देखते वह आदमी खड़ा हुआ और अपनी चारपाई उठाकर अल्लाह की हम्दो-सना करते हुए अपने घर चला गया। 26 यह देखकर सब सख़्त हैरतज़दा हुए और अल्लाह की तमज़ीद करने लगे। उन पर ख़ौफ़ छा गया और वह कह उठे, “आज हमने नाकाबिले-यकीन बातें देखी हैं।”

### ईसा मत्ती को बुलाता है

27 इसके बाद ईसा निकलकर एक टैक्स लेनेवाले के पास से गुज़रा जो अपनी चौकी पर बैठा था। उसका नाम लावी था। उसे देखकर ईसा ने कहा, “भरे पीछे हो ले।” 28 वह उठा और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिया।

29 बाद में उसने अपने घर में ईसा की बड़ी ज़ियाफ़त की। बहुत-से टैक्स लेनेवाले और दीगर मेहमान इसमें शरीक हुए। 30 यह देखकर कुछ फ़रीसियों और उनसे ताल्लुक रखनेवाले शरीअत के आलिमों ने ईसा के शागिर्दों से शिकायत की। उन्होंने कहा, “तुम टैक्स लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ क्यों खाते-पीते हो?”

31 ईसा ने जवाब दिया, “सेहतमदों को डाक्टर की ज़रूरत नहीं होती बल्कि मरीज़ों को। 32 मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ ताकि वह तौबा करें।”

### शागिर्द रोज़ा क्यों नहीं रखते?

33 कुछ लोगों ने ईसा से एक और सवाल पूछा, “यहया के शागिर्द अकसर रोज़ा रखते हैं। और साथ साथ वह दुआ भी करते रहते हैं। फ़रीसियों के शागिर्द भी इसी तरह करते हैं। लेकिन आपके शागिर्द खाने-पीने का सिलसिला जारी रखते हैं।”

34 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुम शादी के मेहमानों को रोज़ा रखने को कह सकते हो जब दूल्हा उनके दरमियान है? हरगिज़ नहीं! 35 लेकिन एक दिन आएगा जब दूल्हा उनसे ले लिया जाएगा। उस वक़्त वह ज़रूर रोज़ा रखेंगे।”

36 उसने उन्हें यह मिसाल भी दी, “कौन किसी नए लिबास को फाड़कर उसका एक टुकड़ा किसी पुराने लिबास में लगाएगा? कोई भी नहीं! अगर वह ऐसा करे तो न सिर्फ नया लिबास खराब होगा बल्कि उससे लिया गया टुकड़ा पुराने लिबास को भी खराब कर देगा। 37 इसी तरह कोई भी अंगूर का ताज़ा रस पुरानी और बे-लचक मशकों में नहीं डालेगा। अगर वह ऐसा करे तो पुरानी मशकें पैदा होनेवाली गैस के बाइस फट जाएँगी। नतीजे में मैं और मशकें दोनों जाया हो जाएँगी। 38 इसलिए अंगूर का ताज़ा रस नई मशकों में डाला जाता है जो लचकदार होती हैं। 39 लेकिन जो भी पुरानी मै पीना पसंद करे वह अंगूर का नया और ताज़ा रस पसंद नहीं करेगा। वह कहेगा कि पुरानी ही बेहतर है।”

## 6

सबत के बारे में सवाल

1 एक दिन ईसा अनाज के खेतों में से गुजर रहा था। चलते चलते उसके शागिर्द अनाज की बालें तोड़ने और अपने हाथों से मलकर खाने लगे। सबत का दिन था। 2 यह देखकर कुछ फ़रीसियों ने कहा, “तुम यह क्यों कर रहे हो? सबत के दिन ऐसा करना मना है।”

3 ईसा ने जवाब दिया, “क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उसे और उसके साथियों को भूक लगी थी? 4 वह अल्लाह के घर में दाखिल हुआ और रब के लिए मखसूसशुदा रोटियाँ लेकर खाई, अगरचे सिर्फ़ इमामों को इन्हें खाने की इजाज़त है। और उसने अपने साथियों को भी यह रोटियाँ खिलाई।” 5 फिर ईसा ने उनसे कहा, “इब्ने-आदम सबत का मालिक है।”

सूखे हाथ की शफ़ा

6 सबत के एक और दिन ईसा इबादतखाने में जाकर सिखाने लगा। वहाँ एक आदमी था जिसका दहना हाथ सूखा हुआ था। 7 शरीअत के आलिम और फ़रीसी बड़े गौर से देख रहे थे कि क्या ईसा इस आदमी को आज भी शफ़ा देगा? क्योंकि वह उस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना ढूँड रहे थे। 8 लेकिन ईसा ने उनकी सोच को जान लिया और उस सूखे हाथवाले आदमी से कहा, “उठ, दरमियान में खड़ा हो।” चुनौचे वह आदमी खड़ा हुआ। 9 फिर ईसा ने उनसे पूछा, “मुझे बताओ, शरीअत हमें सबत के दिन क्या करने की इजाज़त देती है, नेक काम करने की या गलत काम करने की, किसी की जान बचाने की या उसे तबाह करने की?” 10 वह खामोश होकर अपने इर्दगिर्द के तमाम लोगों की तरफ़ देखने लगा। फिर उसने कहा, “अपना हाथ आगे बढ़ा।” उसने ऐसा किया तो उसका हाथ बहाल हो गया।

11 लेकिन वह आपे में न रहे और एक दूसरे से बात करने लगे कि हम ईसा से किस तरह निपट सकते हैं?

ईसा बारह रसूलों को मुकर्रर करता है

12 उन्हीं दिनों में ईसा निकलकर दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। दुआ करते करते पूरी रात गुजर गई। 13 फिर उसने अपने शागिर्दों को अपने पास बुलाकर उनमें से बारह को चुन लिया, जिन्हें उसने अपने रसूल मुकर्रर किया। उनके नाम यह हैं : 14 शमौन जिसका लकब उसने पतरस रखा, उसका भाई अंदरियास, याकूब, यहन्ना, फिलिप्पस, बरतुलमाई, 15 मन्ती, तोमा, याकूब बिन हलफ़ई, शमौन मुजाहिद, 16 यहदाह बिन याकूब और यहदाह इस्करियोती जिसने बाद में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।

ईसा तालीम और शफ़ा देता है

17 फिर वह उनके साथ पहाड़ से उतरकर एक खुले और हमवार मैदान में खड़ा हुआ। वहाँ शागिर्दों की बड़ी तादाद ने उसे घेर लिया। साथ ही बहुत-से लोग यहूदिया, यरूशलम और सूर और सैदा के साहिली इलाके से 18 उस की तालीम सुनने और बीमारियों से शफ़ा पाने के लिए आए थे। और जिन्हें बदर्हें तंग कर रही थीं उन्हें भी शफ़ा मिली। 19 तमाम लोग उसे छूने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि उसमें से कुव्वत निकलकर सबको शफ़ा दे रही थी।

कौन मुबारक है?

20 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों की तरफ़ देखकर कहा,

“मुबारक हो तुम जो ज़रूरतमंद हो,

क्योंकि अल्लाह की बादशाही तुमको ही हासिल है।

21 मुबारक हो तुम जो इस वक़्त भूके हो,

क्योंकि सेर हो जाओगे।

मुबारक हो तुम जो इस वक़्त रोते हो,

क्योंकि खुशी से हँसोगे।

22 मुबारक हो तुम जब लोग इसलिए तुमसे नफ़रत करते और तुम्हारा हुक्का-पानी बंद करते हैं कि तुम इब्ने-आदम के पैरोकार बन गए हो। हाँ, मुबारक हो तुम जब वह इसी वजह से तुम्हें लान-तान करते और तुम्हारी बदनामी करते हैं। 23 जब वह ऐसा करते हैं तो शादमान होकर खुशी से नाचो, क्योंकि आसमान पर तुमको बड़ा अज़्र मिलेगा। उनके बापदादा ने यही सुलूक नबियों के साथ किया था।

24 मगर तुम पर अफ़सोस जो अब दौलतमंद हो,

क्योंकि तुम्हारा सुकून यही ख़त्म हो जाएगा।

25 तुम पर अफ़सोस जो इस वक़्त ख़ूब सेर हो,

क्योंकि बाद में तुम भुके होगे।  
तुम पर अफसोस जो अब हँस रहे हो,  
क्योंकि एक वक्रत आया कि रो रोकर मातम करोगे।

26 तुम पर अफसोस जिनकी तमाम लोग तारीफ करते हैं, क्योंकि उनके बापदादा ने यही सुलूक झूटे नबियों के साथ किया था।

### अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखना

27 लेकिन तुमको जो सुन रहे हो मैं यह बताता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो, और उनसे भलाई करो जो तुमसे नफरत करते हैं। 28 जो तुम पर लानत करते हैं उन्हें बरकत दो, और जो तुमसे बुरा सुलूक करते हैं उनके लिए दुआ करो। 29 अगर कोई तुम्हारे एक गाल पर थपपड़ मारे तो उसे दूसरा गाल भी पेश कर दो। इसी तरह अगर कोई तुम्हारी चादर छीन ले तो उसे कमीस लेने से भी न रोको। 30 जो भी तुमसे कुछ माँगता है उसे दो। और जिसने तुमसे कुछ लिया है उससे उसे वापस देने का तकाजा न करो। 31 लोगों के साथ वैसा सुलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें।

32 अगर तुम सिर्फ उन्हीं से मुहब्बत करो जो तुमसे करते हैं तो इसमें तुम्हारी क्या खास मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी ऐसा ही करते हैं। 33 और अगर तुम सिर्फ उन्हीं से भलाई करो जो तुमसे भलाई करते हैं तो इसमें तुम्हारी क्या खास मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी ऐसा ही करते हैं। 34 इसी तरह अगर तुम सिर्फ उन्हीं को उधार दो जिनके बारे में तुम्हें अंदाजा है कि वह वापस कर देंगे तो इसमें तुम्हारी क्या खास मेहरबानी होगी? गुनाहगार भी गुनाहगारों को उधार देते हैं जब उन्हें सब कुछ वापस मिलने का यकीन होता है। 35 नहीं, अपने दुश्मनों से मुहब्बत करो और उन्हीं से भलाई करो। उन्हें उधार दो जिनके बारे में तुम्हें वापस मिलने की उम्मीद नहीं है। फिर तुमको बड़ा अज्र मिलेगा और तुम अल्लाह तआला के फरजंद साबित होगे, क्योंकि वह भी नाशुक्रों और बुरे लोगों पर नेकी का इजहार करता है। 36 लाज़िम है कि तुम रहमदिल हो क्योंकि तुम्हारा बाप भी रहमदिल है।

### मुसिफ न बनना

37 दूसरों की अदालत न करना तो तुम्हारी भी अदालत नहीं की जाएगी। दूसरों को मुजरिम करार न देना तो तुमको भी मुजरिम करार नहीं दिया जाएगा। मुआफ करो तो तुमको भी मुआफ कर दिया जाएगा। 38 दो तो तुमको भी दिया जाएगा। हाँ, जिस हिसाब से तुमने दिया उसी हिसाब से तुमको दिया जाएगा, बल्कि पैमाना दबा दबा और हिला हिलाकर और लबरेज करके तुम्हारी झोली में डाल दिया जाएगा। क्योंकि जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा।”

39 फिर ईसा ने यह मिसाल पेश की। “क्या एक अंधा दूसरे अंधे की राहनुमाई कर सकता है? हरगिज़ नहीं! अगर वह ऐसा करे तो दोनों गढे में गिर जाएंगे। 40 शागिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता बल्कि जब उसे पूरी ट्रेनिंग मिली हो तो वह अपने उस्ताद ही की मानिंद होगा।

41 तू क्यों गौर से अपने भाई की आँख में पड़े तिनके पर नज़र करता है जबकि तुझे वह शहतीर नज़र नहीं आता जो तेरी अपनी आँख में है? 42 तू क्योंकर अपने भाई से कह सकता है, ‘भाई, ठहरो, मुझे तुम्हारी आँख में पड़ा तिनका निकालने दो’ जबकि तुझे अपनी आँख का शहतीर नज़र नहीं आता? रियाकार! पहले अपनी आँख के शहतीर को निकाल। तब ही तुझे भाई का तिनका साफ नज़र आया और तू उसे अच्छी तरह से देखकर निकाल सकेगा।

### दरख्त उसके फल से पहचाना जाता है

43 न अच्छा दरख्त खराब फल लाता है, न खराब दरख्त अच्छा फल। 44 हर क्रिस्म का दरख्त उसके फल से पहचाना जाता है। खारदार झाड़ियों से अंजीर या अंगूर नहीं तोड़े जाते। 45 नेक शख्स का अच्छा फल उसके दिल के अच्छे खजाने से निकलता है जबकि बुरे शख्स का खराब फल उसके दिल की बुराई से निकलता है। क्योंकि जिस चीज़ से दिल भरा होता है वही छलककर मुँह से निकलती है।

### दो क्रिस्म के मकान

46 तुम क्यों मुझे ‘खुदावंद, खुदावंद’ कहकर पुकारते हो? मेरी बात पर तो तुम अमल नहीं करते। 47 लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि वह शख्स किसकी मानिंद है जो मेरे पास आकर मेरी बात सुन लेता और उस पर अमल करता है। 48 वह उस आदमी की मानिंद है जिसने अपना मकान बनाने के लिए गहरी बुनियाद की खुदाई करवाई। खोद खोदकर वह चटान तक पहुँच गया। उसी पर उसने मकान की बुनियाद रखी। मकान मुकम्मल हुआ तो एक दिन सैलाब आया। जोर से बहता हुआ पानी मकान से टकराया, लेकिन वह उसे हिला न सका क्योंकि वह मज़बूती से बनाया गया था। 49 लेकिन जो मेरी बात

सुनाता और उस पर अमल नहीं करता वह उस शख्स की मानिंद है जिसने अपना मकान बुनियाद के बगैर ज़मीन पर ही तामीर किया। ज्योंही जोर से बहता हुआ पानी उससे टकराया तो वह गिर गया और सरासर तबाह हो गया।”

## 7

### रोमी अफसर के गुलाम की शफा

1 यह सब कुछ लोगों को सुनाने के बाद ईसा कफ़रनहम चला गया। 2 वहाँ सौ फ़ौजियों पर मुकर्रर एक अफसर रहता था। उन दिनों में उसका एक गुलाम जो उसे बहुत अज़ीज़ था बीमार पड़ गया। अब वह मरने को था। 3 चूँकि अफसर ने ईसा के बारे में सुना था इसलिए उसने यहूदियों के कुछ बुजुर्ग यह दरखास्त करने के लिए उसके पास भेज दिए कि वह आकर गुलाम को शफा दे। 4 वह ईसा के पास पहुँचकर बड़े जोर से इल्तिजा करने लगे, “यह आदमी इस लायक है कि आप उस की दरखास्त पूरी करें, 5 क्योंकि वह हमारी कौम से प्यार करता है, यहाँ तक कि उसने हमारे लिए इबादतखाना भी तामीर करवाया है।”

6 चुनौचे ईसा उनके साथ चल पड़ा। लेकिन जब वह घर के करीब पहुँच गया तो अफसर ने अपने कुछ दोस्त यह कहकर उसके पास भेज दिए कि “ख़ुदावंद, मेरे घर में आने की तकलीफ़ न करें, क्योंकि मैं इस लायक नहीं हूँ। 7 इसलिए मैंने ख़ुद को आपके पास आने के लायक भी न समझा। बस वही से कह दें तो मेरा गुलाम शफा पा जाएगा। 8 क्योंकि मुझे ख़ुद आला अफसरों के हुक़म पर चलना पड़ता है और मेरे मातहत भी फ़ौजी हैं। एक को कहता हूँ, ‘जा!’ तो वह जाता है और दूसरे को ‘आ!’ तो वह आता है। इसी तरह मैं अपने नौकर को हुक़म देता हूँ, ‘यह कर!’ तो वह करता है।”

9 यह सुनकर ईसा निहायत हैरान हुआ। उसने मुडकर अपने पीछे आनेवाले हज़म से कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, मैंने इसराईल में भी इस किस्म का ईमान नहीं पाया।”

10 जब अफसर का पैगाम पहुँचानेवाले घर वापस आए तो उन्होंने देखा कि गुलाम की सेहत बहाल हो चुकी है।

### बेवा का बेटा ज़िंदा किया जाता है

11 कुछ देर के बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ नायन शहर के लिए रवाना हुआ। एक बड़ा हज़म भी साथ चल रहा था। 12 जब वह शहर के दरवाजे के करीब पहुँचा तो एक जनाज़ा निकला। जो नौजवान फ़ौत हुआ था उस की माँ बेवा थी और वह उसका इकलौता बेटा था। माँ के साथ शहर के बहुत-से लोग चल रहे थे। 13 उसे देखकर ख़ुदावंद को उस पर बड़ा तरस आया। उसने उससे कहा, “मत रो।” 14 फिर वह जनाज़े के पास गया और उसे छुआ। उसे उठानेवाले स्क्र गए तो ईसा ने कहा, “ऐ नौजवान, मैं तुझे कहता हूँ कि उठ!” 15 मुरदा उठ बैठा और बोलने लगा। ईसा ने उसे उस की माँ के सुपुर्द कर दिया।

16 यह देखकर तमाम लोगों पर ख़ौफ़ तारी हो गया और वह अल्लाह की तमज़ीद करके कहने लगे, “हमारे दरमियान एक बड़ा नबी बरपा हुआ है। अल्लाह ने अपनी कौम पर नज़र की है।”

17 और ईसा के बारे में यह खबर पूरे यहूदिया और इर्दगिर्द के इलाके में फैल गई।

### यहया का ईसा से सवाल

18 यहया को भी अपने शागिर्दों की मारिफ़त इन तमाम वाकियात के बारे में पता चला। इस पर उसने दो शागिर्दों को बुलाकर 19 उन्हें यह पढ़ने के लिए ख़ुदावंद के पास भेजा, “क्या आप वही हैं जिसे आना है या हम किसी और के इंतज़ार में रहे?”

20 चुनौचे यह शागिर्द ईसा के पास पहुँचकर कहने लगे, “यहया बपतिस्मा देनेवाले ने हमें यह पढ़ने के लिए भेजा है कि क्या आप वही हैं जिसे आना है या हम किसी और का इंतज़ार करें?”

21 ईसा ने उसी वक्त बहुत-से लोगों को शफा दी थी जो मुख़्तलिफ़ किस्म की बीमारियों, मुसीबतों और बदस्हों की गिरिफ़्त में थे। अंधों की आँखें भी बहाल हो गई थीं। 22 इसलिए उसने जवाब में यहया के कासिदों से कहा, “यहया के पास वापस जाकर उसे सब कुछ बता देना जो तुमने देखा और सुना है।” अंधे देखते, लँगड़े चलते-फिरते हैं, कोढ़ियों को पाक-साफ़ किया जाता है, बहरे सुनते हैं, मुरदों को ज़िंदा किया जाता है और गरीबों को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई जाती है। 23 यहया को बताओ, ‘मुबारक है वह जो मेरे सबब से ठोकर खाकर बरग़शता नहीं होता।’”

24 यहया के यह कासिद चले गए तो ईसा हज़म से यहया के बारे में बात करने लगा, “तुम रेगिस्तान में क्या देखने गए थे? एक सरकंडा जो हवा के हर झोंके से हिलता है? बेशक नहीं। 25 या क्या वहाँ जाकर ऐसे आदमी की तवक्को कर रहे थे जो नफ़ीस और मुलायम लिबास पहने हुए हैं? नहीं, जो शानदार कपड़े पहनते और ऐशो-इशरत में ज़िंदा गुज़ारते हैं वह शाही महलों में पाए जाते हैं। 26 तो फिर तुम क्या देखने गए थे? एक नबी को? बिलकुल सहीह, बल्कि मैं तुमको बताता हूँ

कि वह नबी से भी बड़ा है। 27 उसी के बारे में कलामे-मुकद्दस में लिखा है, 'देख मैं अपने पैगंबर को तेरे आगे आगे भेज देता हूँ जो तेरे सामने रास्ता तैयार करेगा।' 28 मैं तुमको बताता हूँ कि इस दुनिया में पैदा होनेवाला कोई भी शख्स यहया से बड़ा नहीं है। तो भी अल्लाह की बादशाही में दाखिल होनेवाला सबसे छोटा शख्स उससे बड़ा है।"

29 बात यह थी कि तमाम क्रोम बशमूल टेक्स लेनेवालों ने यहया का पैगाम सुनकर अल्लाह का इनसाफ मान लिया और यहया से बपतिस्मा लिया था। 30 सिर्फ फरीसी और शरीअत के उलमाने ने अपने बारे में अल्लाह की मरजी को रद्द करके यहया का बपतिस्मा लेने से इनकार किया था।

31 ईसा ने बात जारी रखी, "चुनौचे मैं इस नसल के लोगों को किससे तशबीह दूँ? वह किससे मुताबिकत रखते हैं? 32 वह उन बच्चों की मानिंद हैं जो बाज़ार में बैठे खेल रहे हैं। उनमें से कुछ ऊँची आवाज़ से दूसरे बच्चों से शिकायत कर रहे हैं, 'हमने बाँसरी बजाई तो तुम न नाचे। फिर हमने नोहा के गीत गाए, लेकिन तुम न रोए।' 33 देखो, यहया बपतिस्मा देनेवाला आया और न रोटी खाई, न मै पी। यह देखकर तुम कहते हो कि उसमें बदरूह है। 34 फिर इब्ने-आदम खाता और पीता हुआ आया। अब तुम कहते हो, 'देखो यह कैसा पेटू और शराबी है। और वह टेक्स लेनेवालों और गुनाहगारों का दोस्त भी है।' 35 लेकिन हिक्मत अपने तमाम बच्चों से ही सहीह साबित हुई है।"

### ईसा शमौन फरीसी के घर में

36 एक फरीसी ने ईसा को खाना खाने की दावत दी। ईसा उसके घर जाकर खाना खाने के लिए बैठ गया। 37 उस शहर में एक बदचलन औरत रहती थी। जब उसे पता चला कि ईसा उस फरीसी के घर में खाना खा रहा है तो वह इन्नदान में बेशकीमत इत्र लाकर 38 पीछे से उसके पाँवों के पास खडी हो गई। वह रो पड़ी और उसके आँसू टपक टपककर ईसा के पाँवों को तर करने लगे। फिर उसने उसके पाँवों को अपने बालों से पोछकर उन्हें चूमा और उन पर इत्र डाला। 39 जब ईसा के फरीसी मेज़बान ने यह देखा तो उसने दिल में कहा, "अगर यह आदमी नबी होता तो उसे मालूम होता कि यह किस किसम की औरत है जो उसे छू रही है, कि यह गुनाहगार है।"

40 ईसा ने इन खयालात के जवाब में उससे कहा, "शमौन, मैं तुझे कुछ बताना चाहता हूँ।"

उसने कहा, "जी उस्ताद, बताएँ।"

41 ईसा ने कहा, "एक साहकार के दो कर्जदार थे। एक को उसने चाँदी के 500 सिक्के दिए थे और दूसरे को 50 सिक्के। 42 लेकिन दोनों अपना कर्ज अदा न कर सके। यह देखकर उसने दोनों का कर्ज मुआफ कर दिया। अब मुझे बता, दोनों कर्जदारों में से कौन उसे ज्यादा अजीज़ रखेगा?"

43 शमौन ने जवाब दिया, "मेरे खयाल में वह जिसे ज्यादा मुआफ किया गया।"

ईसा ने कहा, "तूने ठीक अंदाज़ा लगाया है।" 44 और औरत की तरफ मुड़कर उसने शमौन से बात जारी रखी, "क्या तू इस औरत को देखता है? 45 जब मैं इस घर में आया तो तूने मुझे पाँव धोने के लिए पानी न दिया। लेकिन इसने मेरे पाँवों को अपने आँसूओं से तर करके अपने बालों से पोछकर खूशक कर दिया है। तूने मुझे बोसा न दिया, लेकिन यह मेरे अंदर आने से लेकर अब तक मेरे पाँवों को चूमने से बाज़ नहीं रही। 46 तूने मेरे सर पर जैतून का तेल न डाला, लेकिन इसने मेरे पाँवों पर इत्र डाला। 47 इसलिए मैं तुझे बताता हूँ कि इसके गुनाहों को गो वह बहुत है मुआफ कर दिया गया है, क्योंकि इसने बहुत मुहब्बत का इज़हार किया है। लेकिन जिसे कम मुआफ किया गया हो वह कम मुहब्बत रखता है।"

48 फिर ईसा ने औरत से कहा, "तेरे गुनाहों को मुआफ कर दिया गया है।"

49 यह सुनकर जो साथ बैठे थे आपस में कहने लगे, "यह किस किसम का शख्स है जो गुनाहों को भी मुआफ करता है?"

50 लेकिन ईसा ने ख़ातून से कहा, "तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से चली जा।"

## 8

### ख़िदमतगुज़ार ख़वातीन ईसा के साथ सफ़र करती हैं

1 इसके कुछ देर बाद ईसा मुख़्तलिफ़ शहरों और देहातों में से गुज़रकर सफ़र करने लगा। हर जगह उसने अल्लाह की बादशाही के बारे में ख़ुशाख़बरी सुनाई। उसके बारह शागिर्द उसके साथ थे, 2 नीज़ कुछ ख़वातीन भी जिन्हें उसने बदरूहों से रिहाई और बीमारियों से शफ़ा दी थी। इनमें से एक मरियम थी जो मग्दलीनी कहलाती थी जिसमें से सात बदरूहें निकाली गई थी। 3 फिर युअन्ना जो ख़ूज़ा की बीवी थी (ख़ूज़ा हेरोदेस बादशाह का एक अफ़सर था)। ससन्ना और दीगर कई ख़वातीन भी थी जो अपने माली वसायल से उनकी ख़िदमत करती थी।

### बीज़ बोनेवाले की तमसील

4 एक दिन ईसा ने एक बड़े हज़म को एक तमसील सुनाई। लोग मुख़्तलिफ़ शहरों से उसे सुनने के लिए जमा हो गए थे।

5 “एक किसान बीज बोने के लिए निकला। जब बीज उधर उधर बिखर गया तो कुछ दाने रास्ते पर गिरे। वहाँ उन्हें पौवों तले कुचला गया और परिदों ने उन्हें चुग लिया। 6 कुछ पथरीली जमीन पर गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन नमी की कमी थी, इसलिए पौदे कुछ देर के बाद सूख गए। 7 कुछ दाने खुदरौ कौंटेदार पौदों के दरमियान भी गिरे। वहाँ वह उगने तो लगे, लेकिन खुदरौ पौदों ने साथ साथ बढ़कर उन्हें फलने फूलने की जगह न दी। चुनौचे वह भी खत्म हो गए। 8 लेकिन ऐसे दाने भी थे जो जरखेज जमीन पर गिरे। वहाँ वह उग सके और जब फसल पक गई तो सौ गुना ज्यादा फल पैदा हुआ।”

यह कहकर ईसा पुकार उठा, “जो सुन सकता है वह सुन ले!”

### तमसीलों का मकसद

9 उसके शागिर्दों ने उससे पूछा कि इस तमसील का क्या मतलब है? 10 जवाब में उसने कहा, “तुमको तो अल्लाह की बादशाही के भेद समझने की लियाकत दी गई है। लेकिन मैं दूसरों को समझाने के लिए तमसीलें इस्तेमाल करता हूँ ताकि पाक कलाम पूरा हो जाए कि ‘वह अपनी आँखों से देखेगे मगर कुछ नहीं जानेंगे, वह अपने कानों से सुनेगे मगर कुछ नहीं समझेंगे।’

### बीज बोनेवाले की तमसील का मतलब

11 तमसील का मतलब यह है : बीज से मुराद अल्लाह का कलाम है। 12 राह पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनते तो हैं, लेकिन फिर इबलीस आकर उसे उनके दिलों से छीन लेता है, ऐसा न हो कि वह ईमान लाकर नजात पाएँ। 13 पथरीली जमीन पर गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो कलाम सुनकर उसे खूशी से कबूल तो कर लेते हैं, लेकिन जड़ नहीं पकड़ते। नतीजे में अगरचे वह कुछ देर के लिए ईमान रखते हैं तो भी जब किसी आजमाइश का सामना करना पड़ता है तो वह बरगशता हो जाते हैं। 14 खुदरौ कौंटेदार पौदों के दरमियान गिरे हुए दाने वह लोग हैं जो सुनते तो हैं, लेकिन जब वह चले जाते हैं तो रोजमर्रा की परेशानियाँ, दौलत और जिंदगी की ऐशो-इशरत उन्हें फलने फूलने नहीं देती। नतीजे में वह फल लाने तक नहीं पहुँचते। 15 इसके मुकामले में जरखेज जमीन में गिरे हुए दाने वह लोग हैं जिनका दिल दियातददार और अच्छा है। जब वह कलाम सुनते हैं तो वह उसे अपनाते और साबितकदमी से तरक्की करते करते फल लाते हैं।

### कोई चराग को बरतन के नीचे नहीं छुपाता

16 जब कोई चराग जलता है तो वह उसे किसी बरतन या चारपाई के नीचे नहीं रखता, बल्कि उसे शमादान पर रख देता है ताकि उस की रौशनी अंदर आनेवालों को नजर आए।

17 जो कुछ भी इस वक्त पोशीदा है वह आखिर में जाहिर हो जाएगा, और जो कुछ भी छुपा हुआ है वह मालूम हो जाएगा और रौशनी में लाया जाएगा।

18 चुनौचे इस पर ध्यान दो कि तुम किस तरह सुनते हो। क्योंकि जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा, जबकि जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जिसके बारे में वह खयाल करता है कि उसका है।”

### ईसा की माँ और भाई

19 एक दिन ईसा की माँ और भाई उसके पास आए, लेकिन वह हजूम की वजह से उस तक न पहुँच सके। 20 चुनौचे ईसा को इतला दी गई, “आपकी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और आपसे मिलना चाहते हैं।”

21 उसने जवाब दिया, “मेरी माँ और भाई वह सब हैं जो अल्लाह का कलाम सुनकर उस पर अमल करते हैं।”

### ईसा आँधी को थमा देता है

22 एक दिन ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “आओ, हम झील को पार करें।” चुनौचे वह कशती पर सवार होकर रवाना हुए। 23 जब कशती चली जा रही थी तो ईसा सो गया। अचानक झील पर आँधी आई। कशती पानी से भरने लगी और डूबने का खतरा था। 24 फिर उन्होंने ईसा के पास जाकर उसे जगा दिया और कहा, “उस्ताद, उस्ताद, हम तबाह हो रहे हैं।”

वह जाग उठा और आँधी और मौजों को डाँटा। आँधी थम गई और लहरें बिलकुल साकित हो गईं। 25 फिर उसने शागिर्दों से पूछा, “तुम्हारा ईमान कहाँ है?”

उन पर खौफ़ तारी हो गया और वह सख्त हैरान होकर आपस में कहने लगे, “आखिर यह कौन है? वह हवा और पानी को भी हुक्म देता है, और वह उस की मानते हैं।”

### ईसा एक गरासीनी आदमी से बदरूहें निकाल देता है

26 फिर वह सफर जारी रखते हुए गरासा के इलाके के किनारे पर पहुँचे जो झील के पार गलील के मुकाबिल है। 27 जब ईसा कशती से उतरा तो शहर का एक आदमी ईसा को मिला जो बदरूहों की गिरिफ्त में था। वह काफी देर से कपड़े पहने बगैर चलता-फिरता था और अपने घर के बजाए कब्रों में रहता था। 28 ईसा को देखकर वह चिल्लाया और उसके सामने गिर

गया। ऊँची आवाज़ से उसने कहा, “ईसा अल्लाह तआला के फ़रज़ंद, मेरा आपके साथ क्या वास्ता है? मैं मिनन्त करता हूँ, मुझे अज़ाब में न डालें।” 29 क्योंकि ईसा ने नापाक रूह को हुक्म दिया था, “आदमी में से निकल जा!” इस बदरूह ने बड़ी देर से उस पर कब्ज़ा किया हुआ था, इसलिए लोगों ने उसके हाथ-पॉव जंजीरों से बाँधकर उस की पहरादारी करने की कोशिश की थी, लेकिन बेक़ायदा। वह जंजीरों को तोड़ डालता और बदरूह उसे वीरान इलाकों में भगाए फिरती थी।

30 ईसा ने उससे पूछा, “तेरा नाम क्या है?” उसने जवाब दिया, “लशकर।” इस नाम की वजह यह थी कि उसमें बहुत-सी बदरूहें घुसी हुई थीं। 31 अब यह मिनन्त करने लगी, “हमें अथाह गढ़े में जाने को न कहें।”

32 उस वक़्त करीब की पहाड़ी पर सुअरों का बड़ा गोल चर रहा था। बदरूहों ने ईसा से इलतमास की, “हमें उन सुअरों में दाख़िल होने दें।” उसने इज़ाज़त दे दी। 33 चुनौचे वह उस आदमी में से निकलकर सुअरों में जा घुसी। इस पर पूरे गोल के सुअर भागकर पहाड़ी की ढलान पर से उतरे और झील में झपटकर डूब मरे।

34 यह देखकर सुअरों के गल्लाबान भाग गए। उन्होंने शहर और देहात में इस बात का चर्चा किया 35 तो लोग यह मालूम करने के लिए कि क्या हुआ है अपनी जगहों से निकलकर ईसा के पास आए। उसके पास पहुँचे तो वह आदमी मिला जिससे बदरूहें निकल गई थीं। अब वह कपड़े पहने ईसा के पाँवों में बैठा था और उस की जहनी हालत ठीक थी। यह देखकर वह डर गए। 36 जिन्होंने सब कुछ देखा था उन्होंने लोगों को बताया कि इस बदरूह-गिरिफ़ता आदमी को किस तरह रिहाई मिली है। 37 फिर उस इलाके के तमाम लोगों ने ईसा से दरखास्त की कि वह उन्हें छोड़कर चला जाए, क्योंकि उन पर बड़ा ख़ौफ़ छा गया था। चुनौचे ईसा क़शती पर सवार होकर वापस चला गया। 38 जिस आदमी से बदरूहें निकल गई थीं उसने उससे इलतमास की, “मुझे भी अपने साथ जाने दें।”

लेकिन ईसा ने उसे इज़ाज़त न दी बल्कि कहा, 39 “अपने घर वापस चला जा और दूसरों को वह सब कुछ बता जो अल्लाह ने तेरे लिए किया है।”

चुनौचे वह वापस चला गया और पूरे शहर में लोगों को बताने लगा कि ईसा ने मेरे लिए क्या कुछ किया है।

### याईर की बेटी और बीमार ख़ातून

40 जब ईसा झील के दूसरे किनारे पर वापस पहुँचा तो लोगों ने उसका इस्तक़बाल किया, क्योंकि वह उसके इंतज़ार में थे। 41 इतने में एक आदमी ईसा के पास आया जिसका नाम याईर था। वह मक़ामी इबादतख़ाने का राहनुमा था। वह ईसा के पाँवों में गिरकर मिनन्त करने लगा, “मेरे घर चले।” 42 क्योंकि उस की इकलौती बेटी जो तक़रीबन बारह साल की थी मरने को थी।

ईसा चल पड़ा। हुज़ूम ने उसे यों घेरा हुआ था कि सौंस लेना भी मुश्किल था। 43 हुज़ूम में एक ख़ातून थी जो बारह साल से खून बहने के मरज़ से रिहाई न पा सकी थी। कोई उसे शफ़ा न दे सका था। 44 अब उसने पीछे से आकर ईसा के लिबास के किनारे को छुआ। खून बहना फ़ौरन बंद हो गया। 45 लेकिन ईसा ने पूछा, “किसने मुझे छुआ है?”

सबने इनकार किया और पतरस ने कहा, “उस्ताद, यह तमाम लोग तो आपको घेरकर दबा रहे हैं।”

46 लेकिन ईसा ने इसरार किया, “किसी ने ज़रूर मुझे छुआ है, क्योंकि मुझे महसूस हुआ है कि मुझमें से तवानाई निकली है।” 47 जब उस ख़ातून ने देखा कि भेद खुल गया तो वह लरज़ती हुई आई और उसके सामने गिर गई। पूरे हुज़ूम की मौजूदगी में उसने बयान किया कि उसने ईसा को क्यों छुआ था और कि छूते ही उसे शफ़ा मिल गई थी। 48 ईसा ने कहा, “बेटी, तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है। सलामती से चली जा।”

49 ईसा ने यह बात अभी ख़त्म नहीं की थी कि इबादतख़ाने के राहनुमा याईर के घर से कोई शख्स आ पहुँचा। उसने कहा, “आपकी बेटी फ़ौत हो चुकी है, अब उस्ताद को मज़ीद तकलीफ़ न दें।”

50 लेकिन ईसा ने यह सुनकर कहा, “मत घबरा। फ़क़त ईमान रख तो वह बच जाएगी।”

51 वह घर पहुँच गए तो ईसा ने किसी को भी सिवाए पतरस, यहन्ना, याक़ूब और बेटी के वालिदिन के अंदर आने की इज़ाज़त न दी। 52 तमाम लोग रो रहे और छाती पीट पीटकर मातम कर रहे थे। ईसा ने कहा, “ख़ामोश! वह मर नहीं गई बल्कि सो रही है।”

53 लोग हँसकर उसका मज़ाक़ उड़ाने लगे, क्योंकि वह जानते थे कि लड़की मर गई है। 54 लेकिन ईसा ने लड़की का हाथ पकड़कर ऊँची आवाज़ से कहा, “बेटी, जाग उठ!” 55 लड़की की जान वापस आ गई और वह फ़ौरन उठ खड़ी हुई। फिर ईसा ने हुक्म दिया कि उसे कुछ खाने को दिया जाए। 56 यह सब कुछ देखकर उसके वालिदिन हैरतज़दा हुए। लेकिन उसने उन्हें कहा कि इसके बारे में किसी को भी न बताना।



1 इसके बाद ईसा ने अपने बारह शागिर्दों को इकट्ठा करके उन्हें बद्रूहों को निकालने और मरीजों को शफा देने की कुव्वत और इख्तियार दिया। 2 फिर उसने उन्हें अल्लाह की बादशाही की मुनादी करने और शफा देने के लिए भेज दिया। 3 उसने कहा, “सफर पर कुछ साथ न लेना। न लाठी, न सामान के लिए बैग, न रोटी, न पैसे और न एक से ज्यादा सूट। 4 जिस घर में भी तुम जाते हो उसमें उस मकाम से चले जाने तक ठहरो। 5 और अगर मकामी लोग तुमको कबूल न करें तो फिर उस शहर से निकलते वक़्त उस की गर्द अपने पाँवों से झाड़ दो। यों तुम उनके खिलाफ़ गवाही दोगे।”

6 चुनौचे वह निकलकर गाँव गाँव जाकर अल्लाह की खुशख़बरी सुनाने और मरीजों को शफा देने लगे।

**हेरोदेस अतिपास परेशान हो जाता है**

7 जब गलील के हुक्मरान हेरोदेस अतिपास ने सब कुछ सुना जो ईसा कर रहा था तो वह उलझन में पड़ गया। बाज़ तो कह रहे थे कि यहया बपतिस्मा देनेवाला जी उठा है। 8 औरों का खयाल था कि इलियास नबी ईसा में जाहिर हुआ है या कि क़दीम ज़माने का कोई और नबी जी उठा है। 9 लेकिन हेरोदेस ने कहा, “मैंने खुद यहया का सर कलम करवाया था। तो फिर यह कौन है जिसके बारे में मैं इस किस्म की बातें सुनता हूँ?” और वह उससे मिलने की कोशिश करने लगा।

**ईसा 5000 अफ़राद को खाना खिलाता है**

10 रसूल वापस आए तो उन्होंने ईसा को सब कुछ सुनाया जो उन्होंने किया था। फिर वह उन्हें अलग ले जाकर बैत-सैदा नामी शहर में आया। 11 लेकिन जब लोगों को पता चला तो वह उनके पीछे वहाँ पहुँच गए। ईसा ने उन्हें आने दिया और अल्लाह की बादशाही के बारे में तालीम दी। साथ साथ उसने मरीजों को शफा भी दी। 12 जब दिन ढलने लगा तो बारह शागिर्दों ने पास आकर उससे कहा, “लोगों को ख़सत कर दें ताकि वह इर्दगिर्द के देहातों और बस्तियों में जाकर रात ठहरने और खाने का बंदोबस्त कर सके, क्योंकि इस वीरान जगह में कुछ नहीं मिलेगा।”

13 लेकिन ईसा ने उन्हें कहा, “तुम खुद इन्हें कुछ खाने को दो।”

उन्होंने जवाब दिया, “हमारे पास सिर्फ पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। या क्या हम जाकर इन तमाम लोगों के लिए खाना खरीद लाएँ?” 14 (वहाँ तकरीबन 5,000 मर्द थे।)

ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “तमाम लोगों को गुरोहों में तकसीम करके बिठा दो। हर गुरोह पचास अफ़राद पर मुशतमिल हो।”

15 शागिर्दों ने ऐसा ही किया और सबको बिठा दिया। 16 इस पर ईसा ने उन पाँच रोटियों और दो मछलियों को लेकर आसमान की तरफ नज़र उठाई और उनके लिए शक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उसने उन्हें तोड़ तोड़कर शागिर्दों को दिया ताकि वह लोगों में तकसीम करें। 17 और सबने जी भरकर खाया। इसके बाद जब बचे हुए टुकड़े जमा किए गए तो बारह टोकरे भर गए।

**पतरस का इकरार**

18 एक दिन ईसा अकेला दुआ कर रहा था। सिर्फ शागिर्द उसके साथ थे। उसने उनसे पूछा, “मैं आम लोगों के नज़दीक कौन हूँ?”

19 उन्होंने जवाब दिया, “कुछ कहते हैं यहया बपतिस्मा देनेवाला, कुछ यह कि आप इलियास नबी हैं। कुछ यह भी कहते हैं कि क़दीम ज़माने का कोई नबी जी उठा है।”

20 उसने पूछा, “लेकिन तुम क्या कहते हो? तुम्हारे नज़दीक मैं कौन हूँ?”

पतरस ने जवाब दिया, “आप अल्लाह के मसीह हैं।”

**ईसा अपनी मौत का जिक्र करता है**

21 यह सुनकर ईसा ने उन्हें यह बात किसी को भी बताने से मना किया। 22 उसने कहा, “लाज़िम है कि इब्ने-आदम बहुत दुख उठाकर बुज़ुर्गों, राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा से रद्द किया जाए। उसे क़त्ल भी किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

23 फिर उसने सबसे कहा, “जो मेरे पीछे आना चाहे वह अपने आपका इनकार करे और हर रोज़ अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे हो ले। 24 क्योंकि जो अपनी जान को बचाए रखना चाहे वह उसे खो देगा। लेकिन जो मेरी खातिर अपनी जान खो दे वही उसे बचाएगा। 25 क्या फ़ायदा है अगर किसी को पूरी दुनिया हासिल हो जाए मगर वह अपनी जान से महसूम हो जाए या उसे इसका नुक़सान उठाना पड़े? 26 जो भी मेरे और मेरी बातों के सबब से शरमाए उससे इब्ने-आदम भी उस वक़्त शरमाएगा जब वह अपने और अपने बाप के और मुक़द्दस फ़रिश्तों के जलाल में आएगा। 27 मैं तुमको सच बताता हूँ, यहाँ कुछ ऐसे लोग खड़े हैं जो मरने से पहले ही अल्लाह की बादशाही को देखेंगे।”

ईसा की सूत बदल जाती है

28 तकरीबन आठ दिन गुजर गए। फिर ईसा पतरस, याकूब और यहन्ना को साथ लेकर दूआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया। 29 वहाँ दूआ करते करते उसके चेहरे की सूत बदल गई और उसके कपड़े सफेद होकर बिजली की तरह चमकने लगे। 30 अचानक दो मर्द जाहिर होकर उससे मुखातिब हुए। एक मूसा और दूसरा इलियास था। 31 उनकी शक्लो-सूत पुरजलाल थी। वह ईसा से इसके बारे में बात करने लगे कि वह किस तरह अल्लाह का मकसद पूरा करके यरूशलम में इस दुनिया से कूच कर जाएगा। 32 पतरस और उसके साथियों को गहरी नींद आ गई थी, लेकिन जब वह जाग उठे तो ईसा का जलाल देखा और यह कि दो आदमी उसके साथ खड़े हैं। 33 जब वह मर्द ईसा को छोड़कर रवाना होने लगे तो पतरस ने कहा, “उस्ताद, कितनी अच्छी बात है कि हम यहाँ हैं। आँ, हम तीन झोंपड़ियाँ बनाएँ, एक आपके लिए, एक मूसा के लिए और एक इलियास के लिए।” लेकिन वह नहीं जानता था कि क्या कह रहा है।

34 यह कहते ही एक बादल आकर उन पर छा गया। जब वह उसमें दाखिल हुए तो दहशतजदा हो गए। 35 फिर बादल से एक आवाज़ सुनाई दी, “यह मेरा चुना हुआ फरजंद है, इसकी सुनो।”

36 आवाज़ खत्म हुई तो ईसा अकेला ही था। और उन दिनों में शागिर्दों ने किसी को भी इस वाकिये के बारे में न बताया बल्कि खामोश रहे।

ईसा लडके में से बदरूह निकालता है

37 अगले दिन वह पहाड़ से उतर आए तो एक बड़ा हूजूम ईसा से मिलने आया। 38 हूजूम में से एक आदमी ने ऊँची आवाज़ से कहा, “उस्ताद, मेहरबानी करके मेरे बेटे पर नज़र करें। वह मेरा इकलौता बेटा है। 39 एक बदरूह उसे बार बार अपनी गिरिफ्त में ले लेती है। फिर वह अचानक चीखें मारने लगता है। बदरूह उसे झँझोड़कर इतना तंग करती है कि उसके मुँह से झाग निकलने लगता है। वह उसे कुचल कुचलकर मुश्किल से छोड़ती है। 40 मैंने आपके शागिर्दों से दरखास्त की थी कि वह उसे निकालें, लेकिन वह नाकाम रहे।”

41 ईसा ने कहा, “ईमान से खाली और टेढ़ी नसल! मैं कब तक तुम्हारे पास रहूँ, कब तक तुम्हें बरदाश्त करूँ?” फिर उसने आदमी से कहा, “अपने बेटे को ले आ।”

42 बेटा ईसा के पास आ रहा था तो बदरूह उसे ज़मीन पर पटखकर झँझोड़ने लगी। लेकिन ईसा ने नापाक रूह को डॉक्टर बच्चे को शाफ़ा दी। फिर उसने उसे वापस बाप के सुपुर्द कर दिया। 43 तमाम लोग अल्लाह की अज़ीम कुदरत को देखकर हक्का-बक्का रह गए।

ईसा की मौत का दूसरा प्लान

अभी सब उन तमाम कामों पर ताज्जुब कर रहे थे जो ईसा ने हाल ही में किए थे कि उसने अपने शागिर्दों से कहा, 44 “मेरी इस बात पर खूब ध्यान दो, इब्ने-आदम को आदमियों के हवाले कर दिया जाएगा।” 45 लेकिन शागिर्द इसका मतलब न समझे। यह बात उनसे पोशीदा रही और वह इसे समझ न सके। नीज़, वह ईसा से इसके बारे में पूछने से डरते भी थे।

कौन सबसे बड़ा है?

46 फिर शागिर्द बहस करने लगे कि हममें से कौन सबसे बड़ा है। 47 लेकिन ईसा जानता था कि वह क्या सोच रहे हैं। उसने एक छोटे बच्चे को लेकर अपने पास खड़ा किया 48 और उनसे कहा, “जो मेरे नाम में इस बच्चे को कबूल करता है वह मुझे ही कबूल करता है। और जो मुझे कबूल करता है वह उसे कबूल करता है जिसने मुझे भेजा है। चुनाँचे तुममें से जो सबसे छोटा है वही बड़ा है।”

जो तुम्हारे खिलाफ नहीं वह तुम्हारे हक में है

49 यहन्ना बोल उठा, “उस्ताद, हमने किसी को देखा जो आपका नाम लेकर बदरूहें निकाल रहा था। हमने उसे मना किया, क्योंकि वह हमारे साथ मिलकर आपकी पैरवी नहीं करता।”

50 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे मना न करना, क्योंकि जो तुम्हारे खिलाफ नहीं वह तुम्हारे हक में है।”

एक सामरी गाँव ईसा को ठहरने नहीं देता

51 जब वह वक्त करीब आया कि ईसा को आसमान पर उठा लिया जाए तो वह बड़े अज़म के साथ यरूशलम की तरफ सफर करने लगा। 52 इस मकसद के तहत उसने अपने आगे कासिद भेज दिए। चलते चलते वह सामरियों के एक गाँव में पहुँचे जहाँ वह उसके लिए ठहरने की जगह तैयार करना चाहते थे। 53 लेकिन गाँव के लोगों ने ईसा को टिकने न दिया, क्योंकि उस की मनज़िले-मकसद यरूशलम थी। 54 यह देखकर उसके शागिर्द याकूब और यहन्ना ने कहा, “खुदावंद, क्या [इलियास की तरह] हम कहें कि आसमान पर से आग नाज़िल होकर इनको भस्म कर दे?”

55 लेकिन ईसा ने मुड़कर उन्हें डॉटा [और कहा, “तुम नहीं जानते कि तुम किस किस्म की रूह के हो। इब्ने-आदम इसलिए नहीं आया कि लोगों को हलाक करे बल्कि इसलिए कि उन्हें बचाए।”] 56 चुनौचे वह किसी और गाँव में चले गए।

### पेरवी की संजीदगी

57 सफ़र करते करते किसी ने रास्ते में ईसा से कहा, “जहाँ भी आप जाएँ मैं आपके पीछे चलता रहूँगा।”

58 ईसा ने जवाब दिया, “लौमडियों अपने भटों में और परिदे अपने घोंसलों में आराम कर सकते हैं, लेकिन इब्ने-आदम के पास सर रखकर आराम करने की कोई जगह नहीं।”

59 किसी और से उसने कहा, “मेरे पीछे हो ले।”

लेकिन उस आदमी ने कहा, “खुदावंद, मुझे पहले जाकर अपने बाप को दफन करने की इजाज़त दें।”

60 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “सुरदों को अपने मुरदे दफनाने दे। तू जाकर अल्लाह की बादशाही की मुनादी कर।”

61 एक और आदमी ने यह माज़रत चाही, “खुदावंद, मैं जरूर आपके पीछे हो लूँगा। लेकिन पहले मुझे अपने घरवालों को खेरबाद कहने दें।”

62 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “जो भी हल चलाते हुए पीछे की तरफ़ देखे वह अल्लाह की बादशाही के लायक नहीं है।”

## 10

### ईसा 72 शागिर्दों को मुनादी के लिए भेजता है

1 इसके बाद खुदावंद ने मज़ीद 72 शागिर्दों को मुकर्रर किया और उन्हें दो दो करके अपने आगे हर उस शहर और जगह भेज दिया जहाँ वह अभी जाने को था। 2 उसने उनसे कहा, “फ़सल बहुत है, लेकिन मज़दूर थोड़े। इसलिए फ़सल के मालिक से दरखास्त करो कि वह फ़सल काटने के लिए मज़ीद मज़दूर भेज दे। 3 अब रवाना हो जाओ, लेकिन ज़हन में यह बात रखो कि तुम भेड़ के बच्चों की मानिंद हो जिन्हें मैं भेड़ियों के दरमियान भेज रहा हूँ। 4 अपने साथ न बटवा ले जाना, न सामान के लिए बैग, न जूते। और रास्ते में किसी को भी सलाम न करना। 5 जब भी तुम किसी के घर में दाखिल हो तो पहले यह कहना, ‘इस घर की सलामती हो।’ 6 अगर उसमें सलामती का कोई बंदा होगा तो तुम्हारी बरकत उस पर ठहरेगी, वरना वह तुम पर लौट आएगी। 7 सलामती के ऐसे घर में ठहरो और वह कुछ खाओ पियो जो तुमको दिया जाए, क्योंकि मज़दूर अपनी मज़दूरी का हकदार है। मुख्तलिफ़ घरों में घूमते न फिरो बल्कि एक ही घर में रहो। 8 जब भी तुम किसी शहर में दाखिल हो और लोग तुमको कबूल करें तो जो कुछ वह तुमको खाने को दें उसे खाओ। 9 वहाँ के मरीज़ों को शफा देकर बताओ कि अल्लाह की बादशाही करीब आ गई है। 10 लेकिन अगर तुम किसी शहर में जाओ और लोग तुमको कबूल न करें तो फिर शहर की सड़कों पर खड़े होकर कहो, 11 ‘हम अपने ज़तों से तुम्हारे शहर की गर्द भी झाड़ देते हैं। यों हम तुम्हारे खिलाफ़ गवाही देते हैं। लेकिन यह जान लो कि अल्लाह की बादशाही करीब आ गई है।’ 12 मैं तुमको बताता हूँ कि उस दिन उस शहर की निसबत सदूम का हाल ज़्यादा काबिले-बरदाशत होगा।

### तौबा न करनेवाले शहरों पर अफ़सोस

13 ऐ खुराज़ीन, तुझ पर अफ़सोस! बैत-सैदा, तुझ पर अफ़सोस! अगर सूर और सैदा में वह मोजिजे किए गए होते जो तुममें हुए तो वहाँ के लोग कब के टाट ओढकर और सर पर राख डालकर तौबा कर चुके होते। 14 जी हों, अदालत के दिन तुम्हारी निसबत सूर और सैदा का हाल ज़्यादा काबिले-बरदाशत होगा। 15 और तू ऐ कफ़र्नहम, क्या तुझे आसमान तक सरफ़राज़ किया जाएगा? हरगिज़ नहीं, बल्कि तू उतरता उतरता पाताल तक पहुँचेगा।

16 जिसने तुम्हारी सुनी उसने मेरी भी सुनी। और जिसने तुमको रड़ किया उसने मुझे भी रड़ किया। और मुझे रड़ करनेवाले ने उसे भी रड़ किया जिसने मुझे भेजा है।”

### 72 शागिर्दों की वापसी

17 72 शागिर्द लौट आए। वह बहुत ख़ुश थे और कहने लगे, “खुदावंद, जब हम आपका नाम लेते हैं तो बदरूहें भी हमारे ताबे हो जाती हैं।”

18 ईसा ने जवाब दिया, “इबलीस मुझे नज़र आया और वह बिजली की तरह आसमान से गिर रहा था। 19 देखो, मैंने तुमको सौंपों और बिछुओ पर चलने का इख्तियार दिया है। तुमको दुश्मन की पूरी ताक़त पर इख्तियार हासिल है। कुछ भी तुमको नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा। 20 लेकिन इस वजह से ख़ुशी न मनाओ कि बदरूहें तुम्हारे ताबे हैं, बल्कि इस वजह से कि तुम्हारे नाम आसमान पर दर्ज़ किए गए हैं।”

### बाप की तमजीद

21 उसी वक़्त ईसा रूहल-कुदूस में खुशी मनाने लगा। उसने कहा, “ऐ बाप, आसमानो-जमीन के मालिक! मैं तेरी तमजीद करता हूँ कि तूने यह बात दानाओं और अक्लमंदों से छुपाकर छोटे बच्चों पर जाहिर कर दी है। हॉं मेरे बाप, क्योंकि यही तुझे फ़संद आया।

22 मेरे बाप ने सब कुछ मेरे सुपर्द कर दिया है। कोई नहीं जानता कि फ़रज़ंद कौन है सिवाए बाप के। और कोई नहीं जानता कि बाप कौन है सिवाए फ़रज़ंद के और उन लोगों के जिन पर फ़रज़ंद यह जाहिर करना चाहता है।”

23 फिर ईसा शागिर्दों की तरफ मुड़ा और अलहदगी में उनसे कहने लगा, “मुबारक हैं वह आँखें जो वह कुछ देखती हैं जो तुमने देखा है। 24 मैं तुमको बताता हूँ कि बहुत-से नबी और बादशाह यह देखना चाहते थे जो तुम देखते हो, लेकिन उन्होंने न देखा। और वह यह सुनने के आरज़ुमंद थे जो तुम सुनते हो, लेकिन उन्होंने न सुना।”

### नेक सामरी की तमसील

25 एक मौक़े पर शरीअत का एक आलिम ईसा को फँसाने की खातिर खड़ा हुआ। उसने पूछा, “उस्ताद, मैं क्या क्या करने से मीरास में अबदी जिंदगी पा सकता हूँ?”

26 ईसा ने उससे कहा, “शरीअत में क्या लिखा है? तू उसमें क्या पढता है?”

27 आदमी ने जवाब दिया, “रब अपने खुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपनी पूरी ताकत और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।” और ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है’।”

28 ईसा ने कहा, “तूने ठीक जवाब दिया। ऐसा ही कर तो जिंदा रहेगा।”

29 लेकिन आलिम ने अपने आपको दुस्त साबित करने की गरज़ से पूछा, “तो मेरा पड़ोसी कौन है?”

30 ईसा ने जवाब में कहा, “एक आदमी यरूशलम से यरीह की तरफ जा रहा था कि वह डाकुओं के हाथों में पड़ गया। उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे खूब मारा और अधमुआ छोड़कर चले गए। 31 इतफ़ाक़ से एक इमाम भी उसी रास्ते पर यरीह की तरफ चल रहा था। लेकिन जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो रास्ते की परली तरफ होकर आगे निकल गया। 32 लावी कबीले का एक खादिम भी वहाँ से गुज़रा। लेकिन वह भी रास्ते की परली तरफ से आगे निकल गया। 33 फिर सामरिया का एक मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रा। जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो उसे उस पर तरस आया। 34 वह उसके पास गया और उसके ज़ख़मों पर तेल और मै लगाकर उन पर पट्टियाँ बाँध दीं। फिर उसको अपने गधे पर बिठाकर सराय तक ले गया। वहाँ उसने उस की मज़ीद देख-भाल की। 35 अगले दिन उसने चौंटी के दो सिक्के निकालकर सराय के मालिक को दिए और कहा, ‘इसकी देख-भाल करना। अगर खर्चा इससे बढ़कर हुआ तो मैं वापसी पर अदा कर दूँगा।’”

36 फिर ईसा ने पूछा, “अब तेरा क्या खयाल है, डाकुओं की ज़द में आनेवाले आदमी का पड़ोसी कौन था? इमाम, लावी या सामरी?”

37 आलिम ने जवाब दिया, “वह जिसने उस पर रहम किया।”

ईसा ने कहा, “बिलकुल ठीक। अब तू भी जाकर ऐसा ही कर।”

### ईसा मरियम और मर्था के घर जाता है

38 फिर ईसा शागिर्दों के साथ आगे निकला। चलते चलते वह एक गाँव में पहुँचा। वहाँ की एक औरत बनाम मर्था ने उसे अपने घर में खुशआमदीद कहा। 39 मर्था की एक बहन थी जिसका नाम मरियम था। वह खुदावंद के पाँवों में बैठकर उस की बातें सुनने लगी 40 जबकि मर्था मेहमानों की खिदमत करते करते थक गई। आखिरकार वह ईसा के पास आकर कहने लगी, “खुदावंद, क्या आपको परवा नहीं कि मेरी बहन ने मेहमानों की खिदमत का पूरा इंतज़ाम मुझ पर छोड़ दिया है? उससे कहें कि वह मेरी मदद करे।”

41 लेकिन खुदावंद ईसा ने जवाब में कहा, “मर्था, मर्था, तू बहुत-सी फ़िकरों और परेशानियों में पड़ गई है। 42 लेकिन एक बात ज़रूरी है। मरियम ने बेहतर हिस्सा चुन लिया है और यह उससे छीना नहीं जाएगा।”

## 11

### दुआ किस तरह करनी है

1 एक दिन ईसा कहीं दुआ कर रहा था। जब वह फ़ारिग हुआ तो उसके किसी शागिर्द ने कहा, “खुदावंद, हमें दुआ करना सिखाएँ, जिस तरह यहया ने भी अपने शागिर्दों को दुआ करने की तालीम दी।”

2 ईसा ने कहा, “दुआ करते वक़्त यों कहना,

ऐ बाप,

तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए।

तेरी बादशाही आए।

3 हर रोज हमें हमारी रोज की रोटी दे।

4 हमारे गुनाहों को मुआफ कर।

क्योंकि हम भी हर एक को मुआफ करते हैं

जो हमारा गुनाह करता है।\*

और हमें आजमाइश में न पड़ने दे।”

**माँगते रहो**

5 फिर उसने उनसे कहा, “अगर तुममें से कोई आधी रात के वक्त अपने दोस्त के घर जाकर कहे, ‘भाई, मुझे तीन रोटियाँ दे, बाद में मैं यह वापस कर दूँगा।’ 6 क्योंकि मेरा दोस्त सफ़र करके मेरे पास आया है और मैं उसे खाने के लिए कुछ नहीं दे सकता।’ 7 अब फर्ज करो कि यह दोस्त अंदर से जवाब दे, ‘मेहरबानी करके मुझे तंग न कर। दरवाजे पर ताला लगा है और मेरे बच्चे मेरे साथ बिस्तर पर हैं, इसलिए मैं तुझे देने के लिए उठ नहीं सकता।’ 8 लेकिन मैं तुमको यह बताता हूँ कि अगर वह दोस्ती की खातिर न भी उठे, तो भी वह अपने दोस्त के बेजा इस्सरार की वजह से उस की तमाम ज़रूरत पूरी करेगा।

9 चुनाँचे माँगते रहो तो तुमको दिया जाएगा, ढूँढते रहो तो तुमको मिल जाएगा। खटखटाते रहो तो तुम्हारे लिए दरवाजा खोल दिया जाएगा। 10 क्योंकि जो भी माँगता है वह पाता है, जो ढूँढता है उसे मिलता है और जो खटखटाता है उसके लिए दरवाजा खोल दिया जाता है। 11 तुम बापों में से कौन अपने बेटे को साँप देगा अगर वह मछली माँगे? 12 या कौन उसे बिच्छू देगा अगर वह अंडा माँगे? कोई नहीं! 13 जब तुम बुरे होने के बालूजद इतने समझदार हो कि अपने बच्चों को अच्छी चीज़ें दे सकते हो तो फिर कितनी ज़्यादा यकीनी बात है कि आसमानी बाप अपने माँगनेवालों को रूहल-कुदस देगा।”

**ईसा और बदरूहों का सरदार**

14 एक दिन ईसा ने एक ऐसी बदरूह निकाल दी जो गूँगी थी। जब वह गूँगी आदमी में से निकली तो वह बोलने लगा। वहाँ पर जमा लोग हक्का-बक्का रह गए। 15 लेकिन बाज ने कहा, “यह तो बदरूहों के सरदार बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता है।”

16 औरों ने उसे आजमाने के लिए किसी इलाही निशान का मुतालबा किया। 17 लेकिन ईसा ने उनके खयालात जानकर कहा, “जिस बादशाही में भी फूट पड़ जाए वह तबाह हो जाएगी, और जिस घराने की ऐसी हालत हो वह भी खाक में मिल जाएगा। 18 तुम कहते हो कि मैं बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ। लेकिन अगर इबलीस में फूट पड़ गई है तो फिर उस की बादशाही किस तरह कायम रह सकती है? 19 दूसरा सवाल यह है, अगर मैं बाल-ज़बूल की मदद से बदरूहों को निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे उन्हें किसके ज़रीए निकालते हैं? चुनाँचे वही इस बात में तुम्हारे मुंसिफ होंगे। 20 लेकिन अगर मैं अल्लाह की क़ुदरत से बदरूहों को निकालता हूँ तो फिर अल्लाह की बादशाही तुम्हारे पास पहुँच चुकी है।

21 जब तक कोई जोरावर आदमी हथियारों से लैस अपने डेरे की पहरादारी करे उस वक्त तक उस की मिलकियत महफूज़ रहती है। 22 लेकिन अगर कोई ज़्यादा ताकतवर शख्स हमला करके उस पर गालिब आए तो वह उसके असला पर कब्ज़ा करेगा जिस पर उसका भरोसा था, और लूटा हुआ माल अपने लोगों में तकसीम कर देगा।

23 जो मेरे साथ नहीं वह मेरे खिलाफ है और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वह बिखेरता है।

**बदरूह की वापसी**

24 जब कोई बदरूह किसी शख्स में से निकलती है तो वह वीरान इलाकों में से गुज़रती हुई आराम की जगह तलाश करती है। लेकिन जब उसे कोई ऐसा मकाम नहीं मिलता तो वह कहती है, ‘मैं अपने उस घर में वापस चली जाऊँगी जिसमें से निकली थी।’ 25 वह वापस आकर देखती है कि किसी ने झाड़ू देकर सब कुछ सलीके से रख दिया है। 26 फिर वह जाकर सात और बदरूहें ढूँढ लाती है जो उससे बदतर होती हैं, और वह सब उस शख्स में घुसकर रहने लगती हैं। चुनाँचे अब उस आदमी की हालत पहले की निसबत ज़्यादा बुरी हो जाती है।”

**कौन मुबारक है?**

27 ईसा अभी यह बात कर ही रहा था कि एक औरत ने ऊँची आवाज़ से कहा, “आपकी माँ मुबारक है जिसने आपको जन्म दिया और आपको दूध पिलाया।”

28 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “बात यह नहीं है। हकीकत में वह मुबारक है जो अल्लाह का कलाम सुनकर उस पर अमल करते हैं।”

\* 11:4 लफ्ज़ी तरज़ुमा : जो हमारा कर्ज़दार है।

### इलाही निशान का तकाजा

29 सुननेवालों की तादाद बहुत बढ़ गई तो वह कहने लगा, “यह नसल शरीर है, क्योंकि यह मुझे इलाही निशान का तकाजा करती है। लेकिन इसे कोई भी इलाही निशान पेश नहीं किया जाएगा सिवाए यूसुस के निशान के। 30 क्योंकि जिस तरह यूसुस नीनवा शहर के बाशिंदों के लिए निशान था बिलकुल उसी तरह इब्ने-आदम इस नसल के लिए निशान होगा। 31 क्रियामत के दिन जुनबी मुल्क सबा की मलिका इस नसल के लोगों के साथ खड़ी होकर उन्हें मुजरिम करार देगी। क्योंकि वह दूर-दराज मुल्क से सुलेमान की हिकमत सुनने के लिए आई थी जबकि यहाँ वह है जो सुलेमान से भी बड़ा है। 32 उस दिन नीनवा के बाशिंदे भी इस नसल के लोगों के साथ खड़े होकर उन्हें मुजरिम ठहराएँगे। क्योंकि यूसुस के एलान पर उन्होंने तौबा की थी जबकि यहाँ वह है जो यूसुस से भी बड़ा है।

### बदन की रौशनी

33 जब कोई शख्स चराग जलाता है तो न वह उसे छुपाता, न बरतन के नीचे रखता बल्कि उसे शमादान पर रख देता है ताकि उस की रौशनी अंदर आनेवालों को नज़र आए। 34 तेरी आँख तेरे बदन का चराग है। अगर तेरी आँख ठीक हो तो तेरा पूरा जिस्म रौशन होगा। लेकिन अगर आँख खराब हो तो पूरा जिस्म अंधेरा ही अंधेरा होगा। 35 खबरदार! ऐसा न हो कि जो रौशनी तेरे अंदर है वह हक़ीकत में तारीकी हो। 36 चुनौचे अगर तेरा पूरा जिस्म रौशन हो और कोई भी हिस्सा तारीक न हो तो फिर वह बिलकुल रौशन होगा, ऐसा जैसा उस वक़्त होता है जब चराग तुझे अपने चमकने-दमकने से रौशन कर देता है।”

### फ़रीसियों पर अफ़सोस

37 ईसा अभी बात कर रहा था कि किसी फ़रीसी ने उसे खाने की दावत दी। चुनौचे वह उसके घर में जाकर खाने के लिए बैठ गया। 38 मेज़बान बड़ा हैरान हुआ, क्योंकि उसने देखा कि ईसा हाथ धोए बग़ैर खाने के लिए बैठ गया है। 39 लेकिन खुदावंद ने उससे कहा, “देखो, तुम फ़रीसी बाहर से हर प्याले और बरतन की सफ़ाई करते हो, लेकिन अंदर से तुम लूट-मार और शरारत से भरे होते हो। 40 नादानो! अल्लाह ने बाहरवाले हिस्से को खलक किया, तो क्या उसने अंदरवाले हिस्से को नहीं बनाया? 41 चुनौचे जो कुछ बरतन के अंदर है उसे ग़रीबों को दे दो। फिर तुम्हारे लिए सब कुछ पाक-साफ़ होगा।

42 फ़रीसियों, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि एक तरफ़ तुम पौदीना, सदाब और बाग़ की हर किस्म की तरकारी का दसवाँ हिस्सा अल्लाह के लिए मख़सूस करते हो, लेकिन दूसरी तरफ़ तुम इनसाफ़ और अल्लाह की मुहब्बत को नज़रंदाज़ करते हो। लाज़िम है कि तुम यह काम भी करो और पहला भी न छोड़ो।

43 फ़रीसियों, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम इबादतख़ानों की इज़्जत की कुरसियों पर बैठने के लिए बेचैन रहते और बाज़ार में लोगों का सलाम सुनने के लिए तड़पते हो। 44 हाँ, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम पोशीदा कब्रों की मानिंद हो जिन पर से लोग नादानिस्ता तौर पर गुज़रते हैं।”

45 शरीअत के एक आलिम ने एतराज़ किया, “उस्ताद, आप यह कहकर हमारी भी बेइज़्जती करते हैं।”

46 ईसा ने जवाब दिया, “तुम शरीअत के आलिमों पर भी अफ़सोस! क्योंकि तुम लोगों पर भारी बोझ डाल देते हो जो मुश्किल से उठाया जा सकता है। न सिर्फ़ यह बल्कि तुम खुद इस बोझ को अपनी एक उँगली भी नहीं लगाते। 47 तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुम नबियों के मज़ार बना देते हो, उनके जिन्हें तुम्हारे बापदादा ने मार डाला। 48 इससे तुम गवाही देते हो कि तुम वह कुछ पसंद करते हो जो तुम्हारे बापदादा ने किया। उन्होंने नबियों को कत्ल किया जबकि तुम उनके मज़ार तामीर करते हो। 49 इसलिए अल्लाह की हिकमत ने कहा, ‘मैं उनमें नबी और रसूल भेज दूँगी। उनमें से बाज़ को वह कत्ल करेंगे और बाज़ को सताएँगे।’ 50 नतीजे में यह नसल तमाम नबियों के कत्ल की जिम्मादार ठहरेगी—दुनिया की तख़लीक से लेकर आज तक, 51 यानी हाबील के कत्ल से लेकर ज़करियाह के कत्ल तक, जिसे बैतुल-मुक़द्दस के सहन में मौजूद कुरबानगाह और बैतुल-मुक़द्दस के दरवाज़े के दरमियान कत्ल किया गया। हाँ, मैं तुमको बताता हूँ कि यह नसल ज़रूर उनकी जिम्मादार ठहरेगी।

52 शरीअत के आलिमो, तुम पर अफ़सोस! क्योंकि तुमने इल्म की कुंजी को छीन लिया है। न सिर्फ़ यह कि तुम खुद दाख़िल नहीं हुए, बल्कि तुमने दाख़िल होनेवालों को भी रोक लिया।”

53 जब ईसा वहाँ से निकला तो आलिम और फ़रीसी उसके सख़्त मुख़ालिफ़ हो गए और बड़े ग़ौर से उस की पूछ-गछ करने लगे। 54 वह इस ताक में रहे कि उसे मुँह से निकली किसी बात की वजह से पकड़ें।

1 इतने में कई हजार लोग जमा हो गए थे। बड़ी तादाद की वजह से वह एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे। फिर ईसा अपने शागिर्दों से यह बात करने लगा, “फरीसियों के खमीर यानी रियाकारी से खबरदार! 2 जो कुछ भी अभी छुपा हुआ है उसे आखिर में जाहिर किया जाएगा और जो कुछ भी इस वक्त पोशीदा है उसका राज आखिर में खुल जाएगा। 3 इसलिए जो कुछ तुमने अंधेरे में कहा है वह रोशनी-रोशन में सुनाया जाएगा और जो कुछ तुमने अंदरूनी कमरों का दरवाजा बंद करके आहिस्ता आहिस्ता कान में बयान किया है उसका छतों से एलान किया जाएगा।

### किससे डरना चाहिए?

4 मेरे अजीजो, उनसे मत डरना जो सिर्फ जिस्म को कल्ल करते हैं और मज्जीद नुकसान नहीं पहुँचा सकते। 5 मैं तुमको बताता हूँ कि किससे डरना है। अल्लाह से डरो, जो तुम्हें हलाक करने के बाद जहन्नुम में फेंकने का इख्तियार भी रखता है। जी हाँ, उसी से खौफ खाओ।

6 क्या पाँच चिड़ियाँ दो पैसों में नहीं बिकती? तो भी अल्लाह हर एक की फिकर करके एक को भी नहीं भूलता। 7 हाँ, बल्कि तुम्हारे सर के सब बाल भी गिने हुए हैं। लिहाजा मत डरो। तुम्हारी कदरो-क्रीमत बहुत-सी चिड़ियों से कहीं ज्यादा है।

### मसीह का इकरार या इनकार करने के नतीजे

8 मैं तुमको बताता हूँ, जो भी लोगों के सामने मेरा इकरार करे उसका इकरार इब्ने-आदम भी फरिश्तों के सामने करेगा। 9 लेकिन जो लोगों के सामने मेरा इनकार करे उसका भी अल्लाह के फरिश्तों के सामने इनकार किया जाएगा।

10 और जो भी इब्ने-आदम के खिलाफ बात करे उसे मुआफ़ किया जा सकता है। लेकिन जो रूहल-कुदूस के खिलाफ़ कुफ़र बके उसे मुआफ़ नहीं किया जाएगा।

11 जब लोग तुमको इबादतख़ानों में और हाकिमों और इख्तियारवालों के सामने घसीटकर ले जाएंगे तो यह सोचते सोचते परेशान न हो जाना कि मैं किस तरह अपना दिफ़ा करूँ या क्या कहूँ, 12 क्योंकि रूहल-कुदूस तुमको उसी वक्त सिखा देगा कि तुमको क्या कहना है।”

### नादान अमीर की तमसील

13 किसि ने भीड़ में से कहा, “उस्ताद, मेरे भाई से कहें कि मीरास का मेरा हिस्सा मुझे दे।”

14 ईसा ने जवाब दिया, “भई, किसने मुझे तुम पर जज या तक्सीम करनेवाला मुकर्रर किया है?” 15 फिर उसने उनसे मज्जीद कहा, “खुबरदार! हर क्रिस्म के लालच से बचे रहना, क्योंकि इनसान की जिंदगी उसके मालो-दौलत की कसरत पर मुनहसिर नहीं।”

16 उसने उन्हें एक तमसील सुनाई। “किसि अमीर आदमी की जमीन में अच्छी फसल पैदा हुई। 17 चुनाँचे वह सोचने लगा, ‘अब मैं क्या करूँ? मेरे पास तो इतनी जगह नहीं जहाँ मैं सब कुछ जमा करके रखूँ।’ 18 फिर उसने कहा, ‘मैं यह करूँगा कि अपने गोदामों को ढाकर इनसे बड़े तामीर करूँगा। उनमें अपना तमाम अनाज और बाकी पैदावार जमा कर लूँगा। 19 फिर मैं अपने आपसे कहूँगा कि लो, इन अच्छी चीजों से तेरी जरूरियात बहुत सालों तक पूरी होती रहेंगी। अब आराम कर। खा, पी और खुशी मना।’ 20 लेकिन अल्लाह ने उससे कहा, ‘अहमक! इसी रात तू मर जाएगा। तो फिर जो चीजें तूने जमा की हैं वह किसकी होंगी?’

21 यही उस शख्स का अंजाम है जो सिर्फ़ अपने लिए चीजें जमा करता है जबकि वह अल्लाह के सामने गरीब है।”

### अल्लाह पर भरोसा

22 फिर ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “इसलिए अपनी जिंदगी की जरूरियात पूरी करने के लिए परेशान न रहो कि हाय, मैं क्या खाऊँ और जिस्म के लिए फिकरमंद न रहो कि हाय, मैं क्या पहनूँ। 23 जिंदगी तो खाने से ज्यादा अहम है और जिस्म पोशाक से ज्यादा। 24 कौवों पर गौर करो। न वह बीज बोते, न फसलें काटते हैं। उनके पास न स्टोर होता है, न गोदाम। तो भी अल्लाह खुद उन्हें खाना खिलाता है। और तुम्हारी कदरो-क्रीमत तो परिदों से कहीं ज्यादा है। 25 क्या तुममें से कोई फिकर करते करते अपनी जिंदगी में एक लमहे का भी इजाफ़ा कर सकता है? 26 अगर तुम फिकर करने से इतनी छोटी-सी तबदीली भी नहीं ला सकते तो फिर तुम बाकी बातों के बारे में क्यों फिकरमंद हो? 27 गौर करो कि सोसन के फूल किस तरह उगते हैं। न वह मेहनत करते, न कातते हैं। लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ कि सुलेमान बादशाह अपनी पूरी शानो-शौकत के बावजूद ऐसे शानदार कपड़ों से मुलब्स नहीं था जैसे उनमें से एक। 28 अगर अल्लाह उस घास को जो आज मैदान में है और कल आग में झोंकी जाएगी ऐसा शानदार लिबास पहनाता है तो ऐ कमएतकादो, वह तुमको पहनाने के लिए क्या कुछ नहीं करेगा?

29 इसकी तलाश में न रहना कि क्या खाओगे या क्या पियोगे। ऐसी बातों की वजह से बेचैन न रहो। 30 क्योंकि दुनिया में जो ईमान नहीं रखते वही इन तमाम चीजों के पीछे भागते रहते हैं, जबकि तुम्हारे बाप को पहले से मालूम है कि तुमको इनकी जरूरत है। 31 चुनौतें उसी की बादशाही की तलाश में रहो। फिर यह तमाम चीजें भी तुमको मिल जाएँगी।

### आसमान पर दौलत जमा करना

32 ऐ छोटे वाले, मत डरना, क्योंकि तुम्हारे बाप ने तुमको बादशाही देना पसंद किया। 33 अपनी मिलकियत बेचकर गरीबों को दे देना। अपने लिए ऐसे बटवें बनवाओ जो नहीं घिसते। अपने लिए आसमान पर ऐसा खजाना जमा करो जो कभी खत्म नहीं होगा और जहाँ न कोई चोर आएगा, न कोई कीड़ा उसे खराब करेगा। 34 क्योंकि जहाँ तुम्हारा खजाना है वही तुम्हारा दिल भी लगा रहेगा।

### हर वक्त तैयार नौकर

35 खियमत के लिए तैयार खड़े रहो और इस पर ध्यान दो कि तुम्हारे चराग जलते रहें। 36 यानी ऐसे नौकरों की मानिंद जिनका मालिक किसी शादी से वापस आनेवाला है और वह उसके लिए तैयार खड़े हैं। ज्योंही वह आकर दस्तक दे वह दरवाजे को खोल देंगे। 37 वह नौकर मुबारक हैं जिन्हें मालिक आकर जागते हुए और चौकस पाएगा। मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक अपने कपड़े बदलकर उन्हें बिठाएगा और मेज़ पर उनकी खिदमत करेगा। 38 हो सकता है मालिक आधी रात या इसके बाद आए। अगर वह इस सूरत में भी उन्हें मुस्तैद पाए तो वह मुबारक है। 39 यकीन जानो, अगर किसी घर के मालिक को पता होता कि चोर कब आएगा तो वह जरूर उसे घर में नकब लगाने न देता। 40 तुम भी तैयार रहो, क्योंकि इब्ने-आदम ऐसे वक्त आएगा जब तुम इसकी तबक्को नहीं करोगे।”

### वफादार नौकर

41 पतरस ने पूछा, “खुदावंद, क्या यह तमसील सिर्फ हमारे लिए है या सबके लिए?”

42 खुदावंद ने जवाब दिया, “कौन-सा नौकर वफादार और समझदार है? फर्ज करो कि घर के मालिक ने किसी नौकर को बाकी नौकरों पर मुकर्र किया हो। उस की एक जिम्मादारी यह भी है कि उन्हें वक्त पर मुनासिब खाना खिलाए। 43 वह नौकर मुबारक होगा जो मालिक की वापसी पर यह सब कुछ कर रहा होगा। 44 मैं तुमको सच बताता हूँ कि यह देखकर मालिक उसे अपनी पूरी जायदाद पर मुकर्र करेगा। 45 लेकिन फर्ज करो कि नौकर अपने दिल में सोचे, ‘मालिक की वापसी में अभी देर है।’ वह नौकरों और नौकरानियों को पीटने लगे और खाते-पीते वह नशे में रहे। 46 अगर वह ऐसा करे तो मालिक ऐसे दिन और वक्त आएगा जिसकी तबक्को नौकर को नहीं होगी। इन हालात को देखकर वह नौकर को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा और उसे गैरईमानदारों में शामिल करेगा।

47 जो नौकर अपने मालिक की मरजी को जानता है, लेकिन उसके लिए तैयारियाँ नहीं करता, न उसे पूरी करने की कोशिश करता है, उस की खूब पिटाई की जाएगी। 48 इसके मुकाबले में वह जो मालिक की मरजी को नहीं जानता और इस बिना पर कोई काबिले-सजा काम करे उस की कम पिटाई की जाएगी। क्योंकि जिसे बहुत दिया गया हो उससे बहुत तलब किया जाएगा। और जिसके सुपुर्द बहुत कुछ किया गया हो उससे कहीं ज्यादा माँग जाएगा।

### ईसा की वजह से इख्तिलाफ पैदा होगा

49 मैं जमीन पर आग लगाने आया हूँ, और काश वह पहले ही भड़क रही होती! 50 लेकिन अब तक मेरे सामने एक बपतिस्मा है जिसे लेना जरूरी है। और मुझ पर कितना दबाव है जब तक उस की तकमील न हो जाए। 51 क्या तुम समझते हो कि मैं दुनिया में सुलह-सलामती कायम करने आया हूँ? नहीं, मैं तुमको बताता हूँ कि इसकी बजाए मैं इख्तिलाफ पैदा करूँगा। 52 क्योंकि अब से एक घराने के पाँच अफराद में इख्तिलाफ होगा। तीन दो के खिलाफ और दो तीन के खिलाफ होंगे। 53 बाप बेटे के खिलाफ होगा और बेटा बाप के खिलाफ, माँ बेटे के खिलाफ और बेटे माँ के खिलाफ, सास बहू के खिलाफ और बहू सास के खिलाफ।”

### मौजूदा हालात का सहीह नतीजा निकालना चाहिए

54 ईसा ने हजूम से यह भी कहा, “ज्योंही कोई बादल मगरिबी उफक से चढ़ता हुआ नजर आए तो तुम कहते हो कि बारिश होगी। और ऐसा ही होता है। 55 और जब जुन्बी लू चलती है तो तुम कहते हो कि सख्त गरमी होगी। और ऐसा ही होता है। 56 ऐ रियाकारो! तुम आसमानो-जमीन के हालात पर गौर करके सहीह नतीजा निकाल लेते हो। तो फिर तुम मौजूदा जमाने के हालात पर गौर करके सहीह नतीजा क्यों नहीं निकाल सकते?”

### अपने मुखालिफ से समझौता करना



57 तुम खुद सहीह फैसला क्यों नहीं कर सकते? 58 फ़र्ज़ करो कि किसी ने तुझ पर मुकदमा चलाया है। अगर ऐसा हो तो पूरी कोशिश कर कि कचहरी में पहुँचने से पहले पहले मामला हल करके मुखालिफ़ से फ़ारिग हो जाए। ऐसा न हो कि वह तुझको जज के सामने घसीटकर ले जाए, जज तुझे पुलिस अफ़सर के हवाले करे और पुलिस अफ़सर तुझे जेल में डाल दे। 59 मैं तुझे बताता हूँ, वहाँ से तू उस वक़्त तक नहीं निकल पाएगा जब तक जुमनि की पूरी पूरी रक़म अदा न कर दे।”

## 13

**तौबा करो वरना हलाक हो जाओगे**

1 उस वक़्त कुछ लोग ईसा के पास पहुँचे। उन्होंने उसे गलील के कुछ लोगों के बारे में बताया जिन्हें पीलातुस ने उस वक़्त क़त्ल करवाया था जब वह बैतुल-मुक़द्दस में कुरबानियाँ पेश कर रहे थे। यों उनका खून कुरबानियों के खून के साथ मिलाया गया था। 2 ईसा ने यह सुनकर पूछा, “क्या तुम्हारे खयाल में यह लोग गलील के बाक़ी लोगों से ज्यादा गुनाहगार थे कि इन्हें इतना दुख उठाना पडा? 3 हरगिज़ नहीं! बल्कि मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम तौबा न करो तो तुम भी इसी तरह तबाह हो जाओगे। 4 या उन 18 अफ़रार के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है जो मर गए जब शिलोख़ का बुर्ज़ उन पर गिरा? क्या वह यरूशालम के बाक़ी बाशिदों की निसबत ज्यादा गुनाहगार थे? 5 हरगिज़ नहीं! मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम तौबा न करो तो तुम भी तबाह हो जाओगे।”

**बेफल अंजीर का दरख़्त**

6 फिर ईसा ने उन्हें यह तमसील सुनाई, “किसी ने अपने बाग़ में अंजीर का दरख़्त लगाया। जब वह उसका फल तोड़ने के लिए आया तो कोई फल नहीं था। 7 यह देखकर उसने माली से कहा, “मैं तीन साल से इसका फल तोड़ने आता हूँ, लेकिन आज तक कुछ भी नहीं मिला। इसे काट डाल। यह ज़मीन की ताक़त क्यों ख़त्म करे?” 8 लेकिन माली ने कहा, “जनाब, इसे एक साल और रहने दें। मैं इसके इर्दगिर्द गोडी करके खाद डालूँगा। 9 फिर अगर वह अगले साल फल लाया तो ठीक, वरना इसे कटवा डालना।”

**सबत के दिन कुबडी औरत की शफ़ा**

10 सबत के दिन ईसा किसी इबादतख़ाने में तालीम दे रहा था। 11 वहाँ एक औरत थी जो 18 साल से बदर्ह के बाइस बीमार थी। वह कुबडी हो गई थी और सीधी खडी होने के बिलकुल काबिल न थी। 12 जब ईसा ने उसे देखा तो पुकारकर कहा, “ऐ औरत, तू अपनी बीमारी से छूट गई है!” 13 उसने अपने हाथ उस पर रखे तो वह फ़ौरन सीधी खडी होकर अल्लाह की तमज़ीद करने लगी।

14 लेकिन इबादतख़ाने का राहनुमा नाराज़ हुआ क्योंकि ईसा ने सबत के दिन शफ़ा दी थी। उसने लोगों से कहा, “हफ़ते के छः दिन काम करने के लिए होते हैं। इसलिए इतवार से लेकर जुमे तक शफ़ा पाने के लिए आओ, न कि सबत के दिन।”

15 खुदावंद ने जवाब में उससे कहा, “तुम कितने रियाकार हो! क्या तुममें से हर कोई सबत के दिन अपने बैल या गधे को खोलकर उसे थान से बाहर नहीं ले जाता ताकि उसे पानी पिलाए? 16 अब इस औरत को देखो जो इज़ाहीम की बेटी है और जो 18 साल से इबलीस के बंधन में थी। जब तुम सबत के दिन अपने जानवरों की मदद करते हो तो क्या यह ठीक नहीं कि औरत को इस बंधन से रिहाई दिलाई जाती, चाहे यह काम सबत के दिन ही क्यों न किया जाए?” 17 ईसा के इस जवाब से उसके मुखालिफ़ शरमिदा हो गए। लेकिन आम लोग उसके इन तमाम शानदार कामों से खुश हुए।

**राई के दाने की तमसील**

18 ईसा ने कहा, “अल्लाह की बादशाही किस चीज़ की मानिंद है? मैं इसका मुवाज़ना किससे करूँ? 19 वह राई के एक दाने की मानिंद है जो किसी ने अपने बाग़ में बो दिया। बढ़ते बढ़ते वह दरख़्त-सा बन गया और परिदों ने उस की शाखों में अपने घोंसले बना लिए।”

**खमीर की मिसाल**

20 उसने दुबारा पूछा, “अल्लाह की बादशाही का किस चीज़ से मुवाज़ना करूँ? 21 वह उस खमीर की मानिंद है जो किसी औरत ने लेकर तकरीबन 27 किलोग्राम आटे में मिला दिया। गो वह उसमें छुप गया तो भी होते होते पूरे गूंधे हुए आटे को खमीर कर गया।”

**तंग दरवाज़ा**

22 ईसा तालीम देते देते मुख़्तलिफ़ शहरों और देहातों में से गुज़रा। अब उसका स्रख़ यरूशालम ही की तरफ़ था। 23 इतने में किसी ने उससे पूछा, “खुदावंद, क्या कम लोगों को नजात मिलेगी?”

उसने जवाब दिया, 24 “तंग दरवाजे में से दाखिल होने की सिर-तोड़ कोशिश करो। क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि बहुत-से लोग अंदर जाने की कोशिश करेंगे, लेकिन बेफायदा। 25 एक वक्त्र आया कि घर का मालिक उठकर दरवाजा बंद कर देगा। फिर तुम बाहर खड़े रहोगे और खटखटाते खटखटाते इलतमास करोगे, ‘खुदावंद, हमारे लिए दरवाजा खोल दे।’ लेकिन वह जवाब देगा, ‘न मैं तुमको जानता हूँ, न यह कि तुम कहाँ के हो।’ 26 फिर तुम कहोगे, ‘हमने तो आपके सामने ही खाया और पिया और आप ही हमारी सड़कों पर तालीम देते रहे।’ 27 लेकिन वह जवाब देगा, ‘न मैं तुमको जानता हूँ, न यह कि तुम कहाँ के हो। ऐ तमाम बदकारो, मुझसे दूर हो जाओ।’ 28 वहाँ तुम रोते और दाँत पीसते रहोगे। क्योंकि तुम देखोगे कि इब्राहीम, इसहाक, याकूब और तमाम नबी अल्लाह की बादशाही में हैं जबकि तुमको निकाल दिया गया है। 29 और लोग मशरिक, मगरिब, शिमाल और जुनूब से आकर अल्लाह की बादशाही की ज़ियाफत में शरीक होंगे। 30 उस वक्त्र कुछ ऐसे होंगे जो पहले आखिर थे, लेकिन अब अक्वल होंगे। और कुछ ऐसे भी होंगे जो पहले अक्वल थे, लेकिन अब आखिर होंगे।”

### यरूशलम पर अफसोस

31 उस वक्त्र कुछ फरीसी ईसा के पास आकर उससे कहने लगे, “इस मकाम को छोड़कर कहीं और चले जाऊँ, क्योंकि हेरोदेस आपको कत्ल करने का इरादा रखता है।”

32 ईसा ने जवाब दिया, “जाओ, उस लोमड़ी को बता दो, ‘आज और कल मैं बद्रूहें निकालता और मरीजों को शफा देता रहूँगा। फिर तीसरे दिन मैं पाया-तकमील को पहुँचूँगा।’ 33 इसलिए लाज़िम है कि मैं आज, कल और परसों आगे चलता रहूँ। क्योंकि मुमकिन नहीं कि कोई नबी यरूशलम से बाहर हलाक हो।

34 हाय यरूशलम, यरूशलम! तू जो नबियों को कत्ल करती और अपने पास भेजे हुए पैगंबरों को संगसार करती है। मैंने कितनी ही बार तेरी औलाद को जमा करना चाहा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मुरगी अपने बच्चों को अपने परों तले जमा करके महफूज़ कर लेती है। लेकिन तूने न चाहा। 35 अब तेरे घर को वीरानो-सुनसान छोड़ा जाएगा। और मैं तुमको बताता हूँ, तुम मुझे उस वक्त्र तक दुबारा नहीं देखोगे जब तक तुम न कहो कि मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है।”

## 14

### सबत के दिन मरीज़ की शफा

1 सबत के एक दिन ईसा खाने के लिए फरीसियों के किसी राहनुमा के घर आया। लोग उसे पकड़ने के लिए उस की हर हरकत पर नज़र रखे हुए थे। 2 वहाँ एक आदमी ईसा के सामने था जिसके बाजू और टोंगें फूले हुए थे। 3 यह देखकर वह फरीसियों और शरीअत के आलिमों से पूछने लगा, “क्या शरीअत सबत के दिन शफा देने की इजाज़त देती है?”

4 लेकिन वह खामोश रहे। फिर उसने उस आदमी पर हाथ रखा और उसे शफा देकर स्रखसत कर दिया। 5 हाज़िरिन से वह कहने लगा, “अगर तुममें से किसी का बेटा या बैल सबत के दिन कुएँ में गिर जाए तो क्या तुम उसे फौन नहीं निकालोगे?”

6 इस पर वह कोई जवाब न दे सके।

### इज्जत और अन्न हासिल करने का तरीका

7 जब ईसा ने देखा कि मेहमान मेज़ पर इज्जत की कुरसियाँ चुन रहे हैं तो उसने उन्हें यह तमसील सुनाई, 8 “जब तुझे किसी शादी की ज़ियाफत में शरीक होने की दावत दी जाए तो वहाँ जाकर इज्जत की कुरसी पर न बैठना। ऐसा न हो कि किसी और को भी दावत दी गई हो जो तुझसे ज्यादा इज्जतदार है। 9 क्योंकि जब वह पहुँचेगा तो मेज़बान तेरे पास आकर कहेगा, ‘जरा इस आदमी को यहाँ बैठने दे।’ यों तेरी बेइज्जती हो जाएगी और तुझे वहाँ से उठकर आखिरी कुरसी पर बैठना पड़ेगा। 10 इसलिए ऐसा मत करना बल्कि जब तुझे दावत दी जाए तो जाकर आखिरी कुरसी पर बैठ जा। फिर जब मेज़बान तुझे वहाँ बैठा हुआ देखेगा तो वह कहेगा, ‘दोस्त, सामनेवाली कुरसी पर बैठ।’ इस तरह तमाम मेहमानों के सामने तेरी इज्जत हो जाएगी। 11 क्योंकि जो भी अपने आपको सरफराज़ करे उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आपको पस्त करे उसे सरफराज़ किया जाएगा।”

12 फिर ईसा ने मेज़बान से बात की, “जब तू लोगों को दोपहर या शाम का खाना खाने की दावत देना चाहता है तो अपने दोस्तों, भाइयों, रिश्तेदारों या अमीर हमसायों को न बुला। ऐसा न हो कि वह इसके एवज़ तुझे भी दावत दें। क्योंकि अगर वह ऐसा करें तो यही तेरा मुआवज़ा होगा। 13 इसके बजाए ज़ियाफत करते वक्त्र गरीबों, लँगडों, मफल्जों और अंधों को दावत दे। 14 ऐसा करने से तुझे बरकत मिलेगी। क्योंकि वह तुझे इसके एवज़ कुछ नहीं दे सकेंगे, बल्कि तुझे इसका मुआवज़ा उस वक्त्र मिलेगा जब रास्तबाज़ जी उठेगा।”

### बड़ी ज़ियाफत की तमसील

15 यह सुनकर मेहमानों में से एक ने उससे कहा, “मुबारक है वह जो अल्लाह की बादशाही में खाना खाए।”

16 ईसा ने जवाब में कहा, “किसी आदमी ने एक बड़ी ज़ियाफत का इंतज़ाम किया। इसके लिए उसने बहुत-से लोगों को दावत दी। 17 जब ज़ियाफत का वक़्त आया तो उसने अपने नौकर को मेहमानों को इतला देने के लिए भेजा कि ‘आएँ, सब कुछ तैयार है।’ 18 लेकिन वह सबके सब माज़रत चाहने लगे। पहले ने कहा, ‘मैंने खेत ख़रीदा है और अब ज़रूरी है कि निकलकर उसका मुआयना करूँ। मैं माज़रत चाहता हूँ।’ 19 दूसरे ने कहा, ‘मैंने बैलों के पाँच जोड़े ख़रीदे हैं। अब मैं उन्हें आजमाने जा रहा हूँ। मैं माज़रत चाहता हूँ।’ 20 तीसरे ने कहा, ‘मैंने शादी की है, इसलिए नहीं आ सकता।’

21 नौकर ने वापस आकर मालिक को सब कुछ बताया। वह गुस्से होकर नौकर से कहने लगा, ‘जा, सीधे शहर की सड़कों और गलियों में जाकर वहाँ के गरीबों, लँगडों, अंधों और मफ़लूजों को ले आ।’ नौकर ने ऐसा ही किया। 22 फिर वापस आकर उसने मालिक को इतला दी, ‘जनाब, जो कुछ आपने कहा था पूरा हो चुका है। लेकिन अब भी मज़ीद लोगों के लिए गुंजाइश है।’ 23 मालिक ने उससे कहा, फिर शहर से निकलकर देहात की सड़कों पर और बाड़ों के पास जा। जो भी मिल जाए उसे हमारी ख़ुशी में शरीक होने पर मजबूर कर ताकि मेरा घर भर जाए। 24 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि जिनको पहले दावत दी गई थी उनमें से कोई भी मेरी ज़ियाफत में शरीक न होगा।”

### शागिर्द होने की कीमत

25 एक बड़ा हज़म ईसा के साथ चल रहा था। उनकी तरफ़ मुड़कर उसने कहा, 26 “अगर कोई मेरे पास आकर अपने बाप, माँ, बीवी, बच्चों, भाइयों, बहनों बल्कि अपने आपसे भी दुश्मनी न रखे तो वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता। 27 और जो अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न हो ले वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।

28 अगर तुममें से कोई बुर्ज़ तामीर करना चाहे तो क्या वह पहले बैठकर पूरे अख़राजात का अंदाज़ा नहीं लगाएगा ताकि मालूम हो जाए कि वह उसे तकमील तक पहुँचा सकेगा या नहीं? 29 वरना ख़तरा है कि उस की बुनियाद डालने के बाद पैसे ख़त्म हो जाएँ और वह आगे कुछ न बना सके। फिर जो कोई भी देखेगा वह उसका मज़ाक़ उड़ाकर 30 कहेगा, ‘उसने इमारत को शुरू तो किया, लेकिन अब उसे मुक़म्मल नहीं कर पाया।’

31 या अगर कोई बादशाह किसी दूसरे बादशाह के साथ जंग के लिए निकले तो क्या वह पहले बैठकर अंदाज़ा नहीं लगाएगा कि वह अपने दस हज़ार फ़ौजियों से उन बीस हज़ार फ़ौजियों पर गालिब आ सकता है जो उससे लड़ने आ रहे हैं? 32 अगर वह इस नतीजे पर पहुँचे कि गालिब नहीं आ सकता तो वह सुलह करने के लिए अपने नुमाइंदा दुश्मन के पास भेजेगा जब वह अभी दूर ही हो। 33 इसी तरह तुममें से जो भी अपना सब कुछ न छोड़े वह मेरा शागिर्द नहीं हो सकता।

### बेकार नमक

34 नमक अच्छी चीज़ है। लेकिन अगर उसका ज़ायका जाता रहे तो फिर उसे क्योंकि दुबारा नमकीन किया जा सकता है? 35 न वह ज़मीन के लिए मुफ़्रीद है, न खाद के लिए बल्कि उसे निकालकर बाहर फेंका जाएगा। जो सुन सकता है वह सुन ले।”

## 15

### खोई हुई भेड़

1 अब ऐसा था कि तमाम टैक्स लेनेवाले और गुनाहगार ईसा की बातें सुनने के लिए उसके पास आते थे। 2 यह देखकर फ़रीसी और शरीअत के आलिम बुडबुडाने लगे, “यह आदमी गुनाहगारों को ख़ुशआमदीद कहकर उनके साथ खाना खाता है।” 3 इस पर ईसा ने उन्हें यह तमसील सुनाई,

4 “फ़र्ज़ करो कि तुममें से किसी की सौ भेड़ें हैं। लेकिन एक गुम हो जाती है। अब मालिक क्या करेगा? क्या वह बाकी 99 भेड़ें ख़ले मैदान में छोड़कर गुमशुदा भेड़ को ढूँढने नहीं जाएगा? ज़रूर जाएगा, बल्कि जब तक उसे वह भेड़ मिल न जाए वह उस की तलाश में रहेगा। 5 फिर वह ख़ुश होकर उसे अपने कंधों पर उठा लेगा। 6 यों चलते चलते वह अपने घर पहुँच जाएगा और वहाँ अपने दोस्तों और हमसाथियों को बुलाकर उनसे कहेगा, ‘मेरे साथ ख़ुशी मनाओ! क्योंकि मुझे अपनी खोई हुई भेड़ मिल गई है।’ 7 मैं तुमको बताता हूँ कि आसमान पर बिलकुल इसी तरह ख़ुशी मनाई जाएगी जब एक ही गुनाहगार तौबा करेगा। और यह ख़ुशी उस ख़ुशी की निसबत ज़्यादा होगी जो उन 99 अफ़राद के बाइस मनाई जाएगी जिन्हें तौबा करने की ज़रूरत ही नहीं थी।

### गुमशुदा सिक्का

8 या फ़र्ज़ करो कि किसी औरत के पास दस सिक्के हों लेकिन एक सिक्का गुम हो जाए। अब औरत क्या करेगी? क्या वह चराग़ जलाकर और घर में झाड़ू दे देकर बड़ी एहतियात से सिक्के को तलाश नहीं करेगी? ज़रूर करेगी, बल्कि वह उस वक़्त तक ढूँढती रहेगी जब तक उसे सिक्का मिल न जाए। 9 जब उसे सिक्का मिल जाएगा तो वह अपनी सहेलियों और

हमसायों को बुलाकर उनसे कहेगी, 'मेरे साथ खुशी मनाओ! क्योंकि मुझे अपना गुमशुदा सिक्का मिल गया है।' 10 मैं तुमको बताता हूँ कि बिलकुल इसी तरह अल्लाह के फरिश्तों के सामने खुशी मनाई जाती है जब एक भी गुनाहगार तौबा करता है।'

### गुमशुदा बेटा

11 ईसा ने अपनी बात जारी रखी। "किसी आदमी के दो बेटे थे। 12 इनमें से छोटे ने बाप से कहा, 'ऐ बाप, मीरसा का मेरा हिस्सा दे दें।' इस पर बाप ने दोनों में अपनी मिलकियत तकसीम कर दी। 13 थोड़े दिनों के बाद छोटा बेटा अपना सारा सामान समेटकर अपने साथ किसी दूर-दराज़ मुल्क में ले गया। वहाँ उसने ऐयाशी में अपना पूरा मालो-मता उड़ा दिया। 14 सब कुछ जाया हो गया तो उस मुल्क में सख्त काल पड़ा। अब वह जरूरतमंद होने लगा। 15 नतीजे में वह उस मुल्क के किसी बाशिंदे के हाँ जा पड़ा जिसने उसे सुअरों को चराने के लिए अपने खेतों में भेज दिया। 16 वहाँ वह अपना पेट उन फलियों से भरने की शर्दीद खाहिश रखता था जो सुअर खाते थे, लेकिन उसे इसकी भी इजाज़त न मिली। 17 फिर वह होश में आया। वह कहने लगा, 'मेरे बाप के कितने मजदूरों को कसरत से खाना मिलता है जबकि मैं यहाँ भुका मर रहा हूँ। 18 मैं उठकर अपने बाप के पास वापस चला जाऊँगा और उससे कहूँगा, 'ऐ बाप, मैंने आसमान का और आपका गुनाह किया है। 19 अब मैं इस लायक नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ। मेहरबानी करके मुझे अपने मजदूरों में रख लें।' 20 फिर वह उठकर अपने बाप के पास वापस चला गया।

लेकिन वह घर से अभी दूर ही था कि उसके बाप ने उसे देख लिया। उसे तरस आया और वह भागकर बेटे के पास आया और गले लगाकर उसे बोसा दिया। 21 बेटे ने कहा, 'ऐ बाप, मैंने आसमान का और आपका गुनाह किया है। अब मैं इस लायक नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ।' 22 लेकिन बाप ने अपने नौकरों को बुलाया और कहा, 'जल्दी करो, बेहतरीन सूट लाकर इसे पहनाओ। इसके हाथ में अंगुठी और पाँवों में जूते पहना दो। 23 फिर मोटा-ताज़ा बछड़ा लाकर उसे ज़बह करो ताकि हम खाएँ और खुशी मनाएँ, 24 क्योंकि यह मेरा बेटा मुरदा था अब जिंदा हो गया है, गुम हो गया था अब मिल गया है।' इस पर वह खुशी मनाने लगे।

25 इस दौरान बाप का बड़ा बेटा खेत में था। अब वह घर लौटा। जब वह घर के करीब पहुँचा तो अंदर से मौसीकी और नाचने की आवाज़ें सुनाई दीं। 26 उसने किसी नौकर को बुलाकर पूछा, 'यह क्या हो रहा है?' 27 नौकर ने जवाब दिया, 'आपका भाई आ गया है और आपके बाप ने मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़बह करवाया है, क्योंकि उसे अपना बेटा सहीह-सलामत वापस मिल गया है।'

28 यह सुनकर बड़ा बेटा गुस्से हुआ और अंदर जाने से इनकार कर दिया। फिर बाप घर से निकलकर उसे समझाने लगा। 29 लेकिन उसने जवाब में अपने बाप से कहा, 'देखें, मैंने इतने साल आपकी खिदमत में सख्त मेहनत-मशक्कत की है और एक दफ़ा भी आपकी मरज़ी की खिलाफ़ मरज़ी नहीं की। तो भी आपने मुझे इस पूरे अरसे में एक छोटा बकरा भी नहीं दिया कि उसे ज़बह करके अपने दोस्तों के साथ ज़ियाफ़त करता। 30 लेकिन ज्योंही आपका यह बेटा आया जिसने आपकी दौलत कसबियों में उड़ा दी, आपने उसके लिए मोटा-ताज़ा बछड़ा ज़बह करवाया।' 31 बाप ने जवाब दिया, 'बेटा, आप तो हर वक्त मेरे पास रहे हैं, और जो कुछ मेरा है वह आप ही का है। 32 लेकिन अब ज़स्ती था कि हम जशन मनाएँ और खुश हों। क्योंकि आपका यह भाई जो मुरदा था अब जिंदा हो गया है, जो गुम हो गया था अब मिल गया है।''

## 16

### चालाक मुलाज़िम

1 ईसा ने शागिर्दों से कहा, "किसी अमीर आदमी ने एक मुलाज़िम रखा था जो उस की जायदाद की देख-भाल करता था। ऐसा हुआ कि एक दिन उस पर इलज़ाम लगाया गया कि वह अपने मालिक की दौलत जाया कर रहा है। 2 मालिक ने उसे बुलाकर कहा, 'यह क्या है जो मैं तेरे बारे में सुनता हूँ? अपनी तमाम ज़िम्मादारियों का हिसाब दे, क्योंकि मैं तुझे बरखास्त कर दूँगा।' 3 मुलाज़िम ने दिल में कहा, 'अब मैं क्या करूँ जबकि मेरा मालिक यह ज़िम्मादारी मुझसे छीन लेगा? खुदाई जैसा सख्त काम मुझसे नहीं होता और भीक माँगने से शर्म आती है। 4 हाँ, मैं जानता हूँ कि क्या करूँ ताकि लोग मुझे बरखास्त किए जाने के बाद अपने घरों में खुशआमदीद कहें।'

5 यह कहकर उसने अपने मालिक के तमाम कर्ज़दारों को बुलाया। पहले से उसने पूछा, 'तुम्हारा कर्ज़ा कितना है?' 6 उसने जवाब दिया, 'मुझे मालिक को ज़ैतून के तेल के सौ कनस्तर वापस करने हैं।' मुलाज़िम ने कहा, 'अपना बिल ले लो और बैठकर जल्दी से सौ कनस्तर पचास में बदल लो।' 7 दूसरे से उसने पूछा, 'तुम्हारा कितना कर्ज़ा है?' उसने जवाब दिया, 'मुझे गंदुम की हज़ार बोरीयों वापस करनी हैं।' मुलाज़िम ने कहा, 'अपना बिल ले लो और हज़ार के बदले आठ सौ लिख लो।'

8 यह देखकर मालिक ने बेईमान मुलाज़िम की तारीफ़ की कि उसने अक्ल से काम लिया है। क्योंकि इस दुनिया के फ़रज़द अपनी नसल के लोगों से निपटने में नूर के फ़रज़दों से ज़्यादा होशियार होते हैं।

9 मैं तुमको बताता हूँ कि दुनिया की नारास्त दौलत से अपने लिए दोस्त बना लो ताकि जब यह खत्म हो जाए तो लोग तुमको अबदी रिहाइशगारों में खुशआमदीद कहें। 10 जो थोड़े में वफ़ादार है वह ज़्यादा में भी वफ़ादार होगा। और जो थोड़े में बेईमान है वह ज़्यादा में भी बेईमानी करेगा। 11 अगर तुम दुनिया की नारास्त दौलत को सँभालने में वफ़ादार न रहे तो फिर कौन हकीकती दौलत तुम्हारे सुपुर्द करेगा? 12 और अगर तुमने दूसरों की दौलत सँभालने में बेईमानी दिखाई है तो फिर कौन तुमको तुम्हारे जाती इस्तेमाल के लिए कुछ देगा?

13 कोई भी गुलाम दो मालिकों की खिदमत नहीं कर सकता। या तो वह एक से नफ़रत करके दूसरे से मुहब्बत रखेगा, या एक से लिपटकर दूसरे को हक़ीर जानेगा। तुम एक ही वक़्त में अल्लाह और दौलत की खिदमत नहीं कर सकते।”

### ईसा की चंद कहावतें

14 फ़रीसियों ने यह सब कुछ सुना तो वह उसका मज़ाक उड़ाने लगे, क्योंकि वह लालची थे। 15 उसने उनसे कहा, “तुम ही वह हो जो अपने आपको लोगों के सामने रास्तबाज़ करार देते हो, लेकिन अल्लाह तुम्हारे दिलों से वाकिफ़ है। क्योंकि लोग जिस चीज़ की बहुत कदर करते हैं वह अल्लाह के नज़दीक मक़रूह है।

16 यहया के आने तक तुम्हारे राहनुमा मूसा की शरीअत और नबियों के पैग़ामात थे। लेकिन अब अल्लाह की बादशाही की खुशख़बरी का एलान किया जा रहा है और तमाम लोग ज़बरदस्ती इसमें दाख़िल हो रहे हैं। 17 लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि शरीअत मनसूख़ हो गई है बल्कि आसामानो-ज़मीन जाते रहेंगे, लेकिन शरीअत की ज़ेर ज़बर तक कोई भी बात नहीं बदलेगी।

18 चुनौचे जो आदमी अपनी बीवी को तलाक़ देकर किसी और से शादी करे वह ज़िना करता है। इसी तरह जो किसी तलाक़शुदा औरत से शादी करे वह भी ज़िना करता है।

### अमीर आदमी और लाज़र

19 एक अमीर आदमी का ज़िक्र है जो अरगवानी रंग के कपड़े और नफ़ीस कतान पहनता और हर रोज़ ऐशो-इशरत में गुज़ारता था। 20 अमीर के गेट पर एक गरीब आदमी पड़ा था जिसके पूरे जिस्म पर नासूर थे। उसका नाम लाज़र था 21 और उस की बस एक ही ख़ाहिश थी कि वह अमीर की मेज़ से गिरे हुए टुकड़े खाकर सेर हो जाए। कुत्ते उसके पास आकर उसके नासूर चाटते थे।

22 फिर ऐसा हुआ कि गरीब आदमी मर गया। फ़रिश्तों ने उसे उठाकर इब्राहीम की गोद में बिठा दिया। अमीर आदमी भी फ़ौत हुआ और दफ़नाया गया। 23 वह जहन्नुम में पहुँचा। अज़ाब की हालत में उसने अपनी नज़र उठाई तो दूर से इब्राहीम और उस की गोद में लाज़र को देखा। 24 वह पुकार उठा, ‘ऐ मेरे बाप इब्राहीम, मुझ पर रहम करें। मेहरबानी करके लाज़र को मेरे पास भेज दें ताकि वह अपनी उँगली को पानी में डुबोकर मेरी ज़बान को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस आग में तड़पता हूँ।’

25 लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, ‘बेटा, याद रख कि तुझे अपनी ज़िंदगी में बेहतरीन चीज़ें मिल चुकी हैं जबकि लाज़र को बदतरनी चीज़ें। लेकिन अब उसे आराम और तसल्ली मिल गई है जबकि तुझे अज़ियत। 26 नीज़, हमारे और तुम्हारे दरमियान एक वसी खलीज़ कायम है। अगर कोई चाहे भी तो उसे पार करके यहाँ से तुम्हारे पास नहीं जा सकता, न वहाँ से कोई यहाँ आ सकता है।’ 27 अमीर आदमी ने कहा, ‘मेरे बाप, फिर मेरी एक और गुज़ारिश है, मेहरबानी करके लाज़र को मेरे वालिद के घर भेज दें। 28 मेरे पाँच भाई हैं। वह वहाँ जाकर उन्हें आगाह करे, ऐसा न हो कि उनका अंजाम भी यह अज़ियतनाक मक़ाम हो।’

29 लेकिन इब्राहीम ने जवाब दिया, ‘उनके पास मूसा की तौरत और नबियों के सहीफ़ी तो हैं। वह उनकी सुनें।’ 30 अमीर ने अर्ज़ की, ‘नहीं, मेरे बाप इब्राहीम, अगर कोई मुरदों में से उनके पास जाए तो फिर वह ज़रूर तौबा करेंगे।’ 31 इब्राहीम ने कहा, ‘अगर वह मूसा और नबियों की नहीं सुनते तो वह उस वक़्त भी कायल नहीं होंगे जब कोई मुरदों में से जी उठकर उनके पास जाएगा।’”

## 17

### गुनाह

1 ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा, “आज़माइशों को तो आना ही आना है, लेकिन उस पर अफ़सोस जिसकी मारिफ़त वह आएँ। 2 अगर वह इन छोटों में से किसी को गुनाह करने पर उकसाए तो उसके लिए बेहतर है कि उसके गले में बड़ी चक्की का पाट बाँधा जाए और उसे समुंद्र में फेंक दिया जाए। 3 ख़बरदार रहो!”

अगर तुम्हारा भाई गुनाह करे तो उसे समझाओ। अगर वह इस पर तौबा करे तो उसे मुआफ़ कर दो।<sup>4</sup> अब फ़र्ज़ करो कि वह एक दिन के अंदर सात बार तुम्हारा गुनाह करे, लेकिन हर दफ़ा वापस आकर तौबा का इज़हार करे, तो भी उसे हर दफ़ा मुआफ़ कर दो।”

### ईमान

5 रसूलों ने खुदावंद से कहा, “हमारे ईमान को बढ़ा दें।”

6 खुदावंद ने जवाब दिया, “अगर तुम्हारा ईमान राई के दाने जैसा छोटा भी हो तो तुम शहतूत के इस दरख्त को कह सकते हो, ‘उखड़कर समुंद्र में जा लग’ तो वह तुम्हारी बात पर अमल करेगा।

### गुलाम का फ़र्ज़

7 फ़र्ज़ करो कि तुममें से किसी ने हल चलाने या जानवर चराने के लिए एक गुलाम रखा है। जब यह गुलाम खेत से घर आया तो क्या उसका मालिक कहेगा, ‘इधर आओ, खाने के लिए बैठ जाओ?’<sup>8</sup> हरगिज़ नहीं, बल्कि वह यह कहेगा, ‘मेरा खाना तैयार करो, झूटी के कपड़े पहनकर मेरी खिदमत करो जब तक मैं खा-पी न लूँ। इसके बाद तुम भी खा और पी सकोगे।’<sup>9</sup> और क्या वह अपने गुलाम की उस खिदमत का शुक्रिया अदा करेगा जो उसने उसे करने को कहा था? हरगिज़ नहीं!<sup>10</sup> इसी तरह जब तुम सब कुछ जो तुम्हें करने को कहा गया है कर चुको तब तुमको यह कहना चाहिए, ‘हम नालायक नौकर हैं। हमने सिर्फ़ अपना फ़र्ज़ अदा किया है।’”

### कोढ़ के दस मरीज़ों की शफ़ा

11 ऐसा हुआ कि यरूशलम की तरफ़ सफ़र करते करते ईसा सामरिया और गलील में से गुज़रा।<sup>12</sup> एक दिन वह किसी गाँव में दाखिल हो रहा था कि कोढ़ के दस मरीज़ उसको मिलने आए। वह कुछ फासले पर खड़े होकर<sup>13</sup> ऊँची आवाज़ से कहने लगे, “ऐ ईसा, उस्ताद, हम पर रहम करें।”

14 उसने उन्हें देखा तो कहा, “जाओ, अपने आपको इमामों को दिखाओ ताकि वह तुम्हारा मुआयना करें।”

और ऐसा हुआ कि वह चलते चलते अपनी बीमारी से पाक-साफ़ हो गए।<sup>15</sup> उनमें से एक ने जब देखा कि शफ़ा मिल गई है तो वह मुड़कर ऊँची आवाज़ से अल्लाह की तमजीद करने लगा,<sup>16</sup> और ईसा के सामने मुँह के बल गिरकर शुक्रिया अदा किया। यह आदमी सामरिया का बाशिंदा था।<sup>17</sup> ईसा ने पूछा, “क्या दस के दस आदमी अपनी बीमारी से पाक-साफ़ नहीं हुए? बाकी नौ कहाँ हैं?”<sup>18</sup> क्या इस ग़ैरमुल्की के अलावा कोई और वापस आकर अल्लाह की तमजीद करने के लिए तैयार नहीं था?”<sup>19</sup> फिर उसने उससे कहा, “उठकर चला जा। तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया है।”

### अल्लाह की बादशाही कब आएगी

20 कुछ फ़रीसियों ने ईसा से पूछा, “अल्लाह की बादशाही कब आएगी?” उसने जवाब दिया, “अल्लाह की बादशाही यों नहीं आ रही कि उसे जाहिरी निशानों से पहचाना जाए।<sup>21</sup> लोग यह भी नहीं कह सकेंगे, ‘वह यहाँ है’ या ‘वह वहाँ है’ क्योंकि अल्लाह की बादशाही तुम्हारे दरमियान है।”

22 फिर उसने अपने शागिदों से कहा, “ऐसे दिन आएँगे कि तुम इब्ने-आदम का कम अज़ कम एक दिन देखने की तमन्ना करोगे, लेकिन नहीं देखोगे।<sup>23</sup> लोग तुमको बताएँगे, ‘वह वहाँ है’ या ‘वह यहाँ है।’ लेकिन मत जाना और उनके पीछे न लगना।<sup>24</sup> क्योंकि जब इब्ने-आदम का दिन आएगा तो वह बिजली की मानिंद होगा जिसकी चमक आसमान को एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक रौशन कर देती है।<sup>25</sup> लेकिन पहले लाज़िम है कि वह बहुत दुख उठाए और इस नसल के हाथों रूढ़ किया जाए।<sup>26</sup> जब इब्ने-आदम का वक्त आएगा तो हालात नूह के दिनों जैसे होंगे।<sup>27</sup> लोग उस दिन तक खाने-पीने और शादी करने करवाने में लगे रहे जब तक नूह कश्ती में दाखिल न हो गया। फिर सैलाब ने आकर उन सबको तबाह कर दिया।<sup>28</sup> बिलकुल यही कुछ लूत के ऐयाम में हुआ। लोग खाने-पीने, खरीदो-फ़रोख्त, काशतकारी और तामीर के काम में लगे रहे।<sup>29</sup> लेकिन जब लूत सद्दूम को छोड़कर निकला तो आग और गंधक ने आसमान से बरसकर उन सबको तबाह कर दिया।<sup>30</sup> इब्ने-आदम के ज़हर के वक्त ऐसे ही हालात होंगे।

31 जो शाख्स उस दिन छत पर हो वह घर का सामान साथ ले जाने के लिए नीचे न उतरे। इसी तरह जो खेत में हो वह अपने पीछे पड़ी चीज़ों को साथ ले जाने के लिए घर न लौटे।<sup>32</sup> लूत की बीवी को याद रखो।<sup>33</sup> जो अपनी जान बचाने की कोशिश करेगा वह उसे खो देगा, और जो अपनी जान खो देगा वही उसे बचाए रखेगा।<sup>34</sup> मैं तुमको बताता हूँ कि उस रात दो अफ़राद एक बिस्तर में सोए होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा।<sup>35</sup> दो ख़वातीन चक्की पर गंदुम पीस रही होंगी, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरी को पीछे छोड़ दिया जाएगा।<sup>36</sup> [दो अफ़राद खेत में होंगे, एक को साथ ले लिया जाएगा जबकि दूसरे को पीछे छोड़ दिया जाएगा।]”

37 उन्होंने पूछा, “ख़ुदावंद, यह कहाँ होगा?”

उसने जवाब दिया, “जहाँ लाश पड़ी हो वहाँ गिद्ध जमा हो जाएंगे।”

## 18

### बेवा और जज की तमसील

1 फिर ईसा ने उन्हें एक तमसील सुनाई जो मुसलसल दुआ करने और हिम्मत न हारने की ज़रूरत को ज़ाहिर करती है।  
2 उसने कहा, “फ़्रीसी शहर में एक जज रहता था जो न खुदा का ख़ौफ़ मानता, न किसी इंसान का लिहाज़ करता था।<sup>3</sup> अब उस शहर में एक बेवा भी थी जो यह कहकर उसके पास आती रही कि ‘मेरे मुखालिफ़ को जीतने न दें बल्कि मेरा इन्साफ़ करें।’<sup>4</sup> कुछ देर के लिए जज ने इनकार किया। लेकिन फिर वह दिल में कहने लगा, ‘बेशक मैं खुदा का ख़ौफ़ नहीं मानता, न लोगों की परवा करता हूँ,<sup>5</sup> लेकिन यह बेवा मुझे बार बार तंग कर रही है। इसलिए मैं उसका इन्साफ़ करूँगा। ऐसा न हो कि आखिरकार वह आकर मेरे मुँह पर थपड़ मारे।’”

6 खुदावंद ने बात जारी रखी। “इस पर ध्यान दो जो बेइन्साफ़ जज ने कहा।<sup>7</sup> अगर उसने आखिरकार इन्साफ़ किया तो क्या अल्लाह अपने चुने हुए लोगों का इन्साफ़ नहीं करेगा जो दिन-रात उसे मदद के लिए पुकारते हैं? क्या वह उनकी बात मुलतवी करता रहेगा? <sup>8</sup> हरगिज़ नहीं! मैं तुमको बताता हूँ कि वह जल्दी से उनका इन्साफ़ करेगा। लेकिन क्या इब्ने-आदम जब दुनिया में आया तो ईमान देख पाएगा?”

### फ़्रीसी और टैक्स लेनेवाले की तमसील

9 बाज़ लोग मौजूद थे जो अपनी रास्तबाज़ी पर भरोसा रखते और दूसरों को हकीर जानते थे। उन्हें ईसा ने यह तमसील सुनाई,<sup>10</sup> “दो आदमी बैतुल-मुक़द्दस में दुआ करने आए। एक फ़्रीसी था और दूसरा टैक्स लेनेवाला।

11 फ़्रीसी खड़ा होकर यह दुआ करने लगा, ‘ऐ खुदा, मैं तेरा शुक़ करता हूँ कि मैं बाक़ी लोगों की तरह नहीं हूँ। न मैं डाकू हूँ, न बेइन्साफ़, न ज़िनाकार। मैं इस टैक्स लेनेवाले की मानिंद भी नहीं हूँ।<sup>12</sup> मैं हफ़ते में दो मरतबा रोज़ा रखता हूँ और तमाम आमदनी का दसवाँ हिस्सा तेरे लिए मख़सूस करता हूँ।’

13 लेकिन टैक्स लेनेवाला दूर ही खड़ा रहा। उसने अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाते तक की ज़ूरत न की बल्कि अपनी छाती पीट पीटकर कहने लगा, ‘ऐ खुदा, मुझ गुनाहगार पर रहम कर!’<sup>14</sup> मैं तुमको बताता हूँ कि जब दोनों अपने अपने घर लौटे तो फ़्रीसी नहीं बल्कि यह आदमी अल्लाह के नज़दीक़ रास्तबाज़ ठहरा। क्योंकि जो भी अपने आपको सरफ़राज़ करे उसे पस्त किया जाएगा और जो अपने आपको पस्त करे उसे सरफ़राज़ किया जाएगा।”

### ईसा छोटे बच्चों को प्यार करता है

15 एक दिन लोग अपने छोटे बच्चों को भी ईसा के पास लाए ताकि वह उन्हें छुए। यह देखकर शागिर्दों ने उनको मलामत की।<sup>16</sup> लेकिन ईसा ने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें न रोको, क्योंकि अल्लाह की बादशाही इन जैसे लोगों को हासिल है।<sup>17</sup> मैं तुमको सच बताता हूँ, जो अल्लाह की बादशाही को बच्चे की तरह कबूल न करे वह उसमें दाखिल नहीं होगा।”

### अमीर मुश्किल से अल्लाह की बादशाही में दाखिल हो सकते हैं

18 किसी राहनूमा ने उससे पूछा, “नेक उस्ताद, मैं क्या करूँ ताकि मीरास में अबदी ज़िंदगी पाऊँ?”

19 ईसा ने जवाब दिया, “तुझे नेक क्यों कहता है? कोई नेक नहीं सिवाए एक के और वह है अल्लाह।<sup>20</sup> तू शरीअत के अहकाम से तो वाकिफ़ है कि ज़िना न करना, कल्ल न करना, चोरी न करना, झूटी गवाही न देना, अपने बाप और अपनी माँ की इज़ज़त करना।”

21 आदमी ने जवाब दिया, “मैंने जवानी से आज तक इन तमाम अहकाम की पैरवी की है।”

22 यह सुनकर ईसा ने कहा, “एक काम अब तक रह गया है। अपनी पूरी जायदाद फ़रोख़्त करके पैसे गरीबों में तकसीम कर दे। फिर तेरे लिए आसमान पर खज़ाना जमा हो जाएगा। इसके बाद आकर मेरे पीछे हो ले।”<sup>23</sup> यह सुनकर आदमी को बहुत दुख हुआ, क्योंकि वह निहायत दौलतमंद था।

24 यह देखकर ईसा ने कहा, “दौलतमंदों के लिए अल्लाह की बादशाही में दाखिल होना कितना मुश्किल है! <sup>25</sup> अमीर के अल्लाह की बादशाही में दाखिल होने की निसबत यह ज़्यादा आसान है कि ऊँट सूई के नाके में से गुज़र जाए।”

26 यह बात सुनकर सुननेवालों ने पूछा, “फिर किस को नज़ात मिल सकती है?”

27 ईसा ने जवाब दिया, “जो इंसान के लिए नामुमकिन है वह अल्लाह के लिए मुमकिन है।”

28 पतरस ने उससे कहा, “हम तो अपना सब कुछ छोड़कर आपके पीछे हो लिए हैं।”

29 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि जिसने भी अल्लाह की बादशाही की खातिर अपने घर, बीवी, भाइयों, वालिदेन या बच्चों को छोड़ दिया है 30 उसे इस ज़माने में कई गुना ज़्यादा और आनेवाले ज़माने में अबदी जिंदगी मिलेगी।”

### ईसा की मौत की तीसरी पेशगोई

31 ईसा शागिर्दों को एक तरफ ले जाकर उनसे कहने लगा, “सुनो, हम यरूशलम की तरफ बढ़ रहे हैं। वहाँ सब कुछ पूरा हो जाएगा जो नबियों की मारिफ़त इब्ने-आदम के बारे में लिखा गया है। 32 उसे गैरयहूदियों के हवाले कर दिया जाएगा जो उसका मज़ाक़ उड़ाएंगे, उस की बेइज़्ज़ती करेंगे, उस पर थूकेंगे, 33 उसको कोड़े मारेंगे और उसे कल्ल करेंगे। लेकिन तीसरे दिन वह जी उठेगा।”

34 लेकिन शागिर्दों की समझ में कुछ न आया। इस बात का मतलब उनसे छुपा रहा और वह न समझे कि वह क्या कह रहा है।

### अंधे की शफ़ा

35 ईसा यरीह के करीब पहुँचा। वहाँ रास्ते के किनारे एक अंधा बैठा भीक माँग रहा था। 36 बहुत-से लोग उसके सामने से गुज़रने लगे तो उसने यह सुनकर पूछा कि क्या हो रहा है।

37 उन्होंने कहा, “ईसा नासरी यहाँ से गुज़र रहा है।”

38 अंधा चिल्लाने लगा, “ऐ ईसा इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें।”

39 आगे चलनेवालों ने उसे डाँटकर कहा, “खामोश!” लेकिन वह मज़ीद ऊँची आवाज़ से पुकारता रहा, “ऐ इब्ने-दाऊद, मुझ पर रहम करें।”

40 ईसा रुक गया और हुक़म दिया, “उसे मेरे पास लाओ।” जब वह करीब आया तो ईसा ने उससे पूछा, 41 “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?”

उसने जवाब दिया, “खुदावंद, यह कि मैं देख सकूँ।”

42 ईसा ने उससे कहा, “तो फिर देख! तेरे इमान ने तुझे बचा लिया है।”

43 ज्योंही उसने यह कहा अंधे की आँखें बहाल हो गईं और वह अल्लाह की तमज़ीद करते हुए उसके पीछे हो लिया। यह देखकर पूरे हज़म ने अल्लाह को जलाल दिया।

## 19

### ईसा और ज़क्काई

1 फिर ईसा यरीह में दाखिल हुआ और उसमें से गुज़रने लगा। 2 उस शहर में एक अमीर आदमी बनाम ज़क्काई रहता था जो टैक्स लेनेवालों का अफसर था। 3 वह जानना चाहता था कि यह ईसा कौन है, लेकिन पूरी कोशिश करने के बावजूद उसे देख न सका, क्योंकि ईसा के इर्दगिर्द बड़ा हज़म था और ज़क्काई का कद छोटा था। 4 इसलिए वह दौड़कर आगे निकला और उसे देखने के लिए अंजीर-तूत\* के दरख़्त पर चढ़ गया जो रास्ते में था। 5 जब ईसा वहाँ पहुँचा तो उसने नज़र उठाकर कहा, “ज़क्काई, जल्दी से उतर आ, क्योंकि आज मुझे तेरे घर में ठहरना है।”

6 ज़क्काई फ़ौरन उतर आया और खुशी से उस की मेहमान-नवाज़ी की। 7 यह देखकर बाकी तमाम लोग बुड़बुड़ाने लगे, “इसके घर में जाकर वह एक गुनाहगर के मेहमान बन गए हैं।”

8 लेकिन ज़क्काई ने खुदावंद के सामने खड़े होकर कहा, “खुदावंद, मैं अपने माल का आधा हिस्सा गरीबों को दे देता हूँ। और जिससे मैंने नाजायज़ तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना वापस करता हूँ।”

9 ईसा ने उससे कहा, “आज इस घराने को नजात मिल गई है, इसलिए कि यह भी इब्राहीम का बेटा है। 10 क्योंकि इब्ने-आदम गुमशुदा को ढूँढ़ने और नजात देने के लिए आया है।”

### पैसों में इज़ाफ़ा

11 अब ईसा यरूशलम के करीब आ चुका था, इसलिए लोग अंदाज़ा लगाने लगे कि अल्लाह की बादशाही जाहिर होनेवाली है। इसके पेशे-नज़र ईसा ने अपनी यह बातें सुननेवालों को एक तमसील सुनाई। 12 उसने कहा, “एक नवाब किसी दूर-दराज़ मुल्क को चला गया ताकि उसे बादशाह मुक़र्रर किया जाए। फिर उसे वापस आना था। 13 रवाना होने से पहले उसने अपने नौकरों में से दस को बुलाकर उन्हें सोने का एक एक सिक्का दिया। साथ साथ उसने कहा, ‘यह पैसे लेकर उस

\* 19:4 एक सायादार दरख़्त जिसमें अंजीर की तरह का ख़ुरदनी फल लगता है। इसके फल ज़रद और अराइशी होते हैं। मिसरी तूत। ज़मीज़। ficus sycomorus।



वक्त तक कारोबार में लगाओ जब तक मैं वापस न आऊँ।' 14 लेकिन उस की रिआया उससे नफरत रखती थी, इसलिए उसने उसके पीछे वफ़द भेजकर इतला दी, 'हम नहीं चाहते कि यह आदमी हमारा बादशाह बने।'

15 तो भी उसे बादशाह मुकर्रर किया गया। इसके बाद जब वापस आया तो उसने उन नौकरों को बुलाया जिन्हें उसने पैसे दिए थे ताकि मालूम करे कि उन्होंने यह पैसे कारोबार में लगाकर कितना इजाफ़ा किया है। 16 पहला नौकर आया। उसने कहा, 'जनाब, आपके एक सिक्के से दस हो गए हैं।' 17 मालिक ने कहा, 'शाबाश, अच्छे नौकर। तू थोड़े में वफ़ादार रहा, इसलिए अब तुझे दस शहरों पर इख्तियार मिलेगा।' 18 फिर दूसरा नौकर आया। उसने कहा, 'जनाब, आपके एक सिक्के से पाँच हो गए हैं।' 19 मालिक ने उससे कहा, 'तुझे पाँच शहरों पर इख्तियार मिलेगा।'

20 फिर एक और नौकर आकर कहने लगा, 'जनाब, यह आपका सिक्का है। मैंने इसे कपड़े में लपेटकर महफूज़ रखा, 21 क्योंकि मैं आपसे डरता था, इसलिए कि आप सख्त आदमी हैं। जो पैसे आपने नहीं लगाए उन्हें ले लेते हैं और जो बीज आपने नहीं बोया उस की फसल काटते हैं।' 22 मालिक ने कहा, 'शरीर नौकर! मैं तेरे अपने अलफ़ाज़ के मुताबिक तेरी अदालत करूँगा। जब तू जानता था कि मैं सख्त आदमी हूँ, कि वह पैसे ले लेता हूँ जो खुद नहीं लगाए और वह फसल काटता हूँ जिसका बीज नहीं बोया, 23 तो फिर तूने मेरे पैसे बैंक में क्यों न जमा कराए? अगर तू ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम अज़ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।'

24 यह कहकर वह हाज़िरीन से मुख़ातिब हुआ, 'यह सिक्का इससे लेकर उस नौकर को दे दो जिसके पास दस सिक्के हैं।' 25 उन्होंने एतराज़ किया, 'जनाब, उसके पास तो पहले ही दस सिक्के हैं।' 26 उसने जवाब दिया, 'मैं तुम्हें बताता हूँ कि हर शख्स जिसके पास कुछ है उसे और दिया जाएगा, लेकिन जिसके पास कुछ नहीं है उससे वह भी छीन लिया जाएगा जो उसके पास है। 27 अब उन दुश्मनों को ले आओ जो नहीं चाहते थे कि मैं उनका बादशाह बनूँ। उन्हें मेरे सामने फाँसी दे दो।'

यस्-शलम में ईसा का पुरजोश इस्तकबाल

28 इन बातों के बाद ईसा दूसरों के आगे आगे यस्-शलम की तरफ बढ़ने लगा। 29 जब वह बैत-फगे और बैत-अनियाह के करीब पहुँचा जो ज़ैतून के पहाड़ पर थे तो उसने दो शागिर्दों को अपने आगे भेजकर 30 कहा, "सामनेवाले गाँव में जाओ। वहाँ तुम एक जवान गधा देखोगे। वह बँधा हुआ होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ है। उसे खोलकर ले आओ। 31 अगर कोई पछे कि गधे को क्यों खोल रहे हो तो उसे बता देना कि खुदाबंद को इसकी ज़रूरत है।"

32 दोनों शागिर्द गए तो देखा कि सब कुछ वैसा ही है जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 33 जब वह जवान गधे को खोलने लगे तो उसके मालिकों ने पूछा, "तुम गधे को क्यों खोल रहे हो?"

34 उन्होंने जवाब दिया, "खुदाबंद को इसकी ज़रूरत है।" 35 वह उसे ईसा के पास ले आए, और अपने कपड़े गधे पर रखकर उसको उस पर सवार किया। 36 जब वह चल पड़ा तो लोगों ने उसके आगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए।

37 चलते चलते वह उस जगह के करीब पहुँचा जहाँ रास्ता ज़ैतून के पहाड़ पर से उतरने लगता है। इस पर शागिर्दों का पूरा हुज़म ख़ुशी के मारे ऊँची आवाज़ से उन मोजिज़ों के लिए अल्लाह की तमज़ीद करने लगा जो उन्होंने देखे थे,

38 "मुबारक है वह बादशाह

जो रब के नाम से आता है।

आसमान पर सलामती हो और बुलंदियों पर इज़त-जलाल।"

39 कुछ फ़रीसी भीड़ में थे। उन्होंने ईसा से कहा, "उस्ताद, अपने शागिर्दों को समझाएँ।"

40 उसने जवाब दिया, "मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर यह चुप हो जाएँ तो पत्थर पुकार उठेंगे।"

ईसा शहर को देखकर रो पड़ता है

41 जब वह यस्-शलम के करीब पहुँचा तो शहर को देखकर रो पड़ा 42 और कहा, "काश तू भी इस दिन जान लेती कि तेरी सलामती किसमें है। लेकिन अब यह बात तेरी आँखों से छुपी हुई है। 43 क्योंकि तुझ पर ऐसा वक्त आएगा कि तेरे दुश्मन तेरे इर्दगिर्द बंद बाँधकर तेरा मुहासरा करेंगे और यों तुझे चारों तरफ से घेरकर तंग करेंगे। 44 वह तुझे तेरे बच्चों समेत ज़मीन पर पटकेंगे और तेरे अंदर एक भी पत्थर दूसरे पर नहीं छोड़ेंगे। और वजह यही होगी कि तूने वह वक्त नहीं पहचाना जब अल्लाह ने तेरी नजात के लिए तुझ पर नज़र की।"

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

45 फिर ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उन्हें निकालने लगा जो वहाँ कुरबानियों के लिए दरकार चीज़ें बेच रहे थे। उसने कहा, 46 "कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, 'मेरा घर दुआ का घर होगा' जबकि तुमने उसे डाकुओं के अट्टे में बदल दिया है।"

47 और वह रोजाना बैतुल-मुकद्दस में तालीम देता रहा। लेकिन बैतुल-मुकद्दस के राहनुमा इमाम, शरीअत के आलिम और अवामी राहनुमा उसे कत्ल करने के लिए कोशिशें रहे, 48 अलबन्ता उन्हें कोई मौका न मिला, क्योंकि तमाम लोग ईसा की हर बात सुन सुनकर उससे लिपटे रहते थे।

## 20

### ईसा का इख्तियार

1 एक दिन जब वह बैतुल-मुकद्दस में लोगों को तालीम दे रहा और अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुना रहा था तो राहनुमा इमाम, शरीअत के उलमा और बुज़ुर्ग उसके पास आए। 2 उन्होंने कहा, “हमें बताएँ, आप यह किस इख्तियार से कर रहे हैं? किसने आपको यह इख्तियार दिया है?”

3 ईसा ने जवाब दिया, “मेरा भी तुमसे एक सवाल है। तुम मुझे बताओ कि 4 क्या यहया का बपतिस्मा आसमानी था या इनसानी?”

5 वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें ‘आसमानी’ तो वह पूछेगा, ‘तो फिर तुम उस पर ईमान क्यों न लाए?’”

6 लेकिन अगर हम कहें ‘इनसानी’ तो तमाम लोग हमें संगसार करेंगे, क्योंकि वह तो यकीन रखते हैं कि यहया नबी था।”

7 इसलिए उन्होंने जवाब दिया, “हम नहीं जानते कि वह कहाँ से था।”

8 ईसा ने कहा, “तो फिर मैं भी तुमको नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इख्तियार से कर रहा हूँ।”

### अंगूर के बाग के मुज़ारेओ की बगावत

9 फिर ईसा लोगों को यह तमसील सुनाने लगा, “किसी आदमी ने अंगूर का एक बाग लगाया। फिर वह उसे मुज़ारेओ के सुपर्द करके बहुत देर के लिए बैरुने-मुल्क चला गया। 10 जब अंगूर पक गए तो उसने अपने नौकर को उनके पास भेज दिया ताकि वह मालिक का हिस्सा वसूल करे। लेकिन मुज़ारेओ ने उस की पिटाई करके उसे खाली हाथ लौटा दिया। 11 इस पर मालिक ने एक और नौकर को उनके पास भेजा। लेकिन मुज़ारेओ ने उसे भी मार मारकर उस की बेइज्जती की और खाली हाथ निकाल दिया। 12 फिर मालिक ने तीसरे नौकर को भेज दिया। उसे भी उन्होंने मारकर ज़खमी कर दिया और निकाल दिया। 13 बाग के मालिक ने कहा, ‘अब मैं क्या करूँ? मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा, शायद वह उसका लिहाज़ करे।’ 14 लेकिन मालिक के बेटे को देखकर मुज़ारे आपस में कहने लगे, ‘यह ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे मार डालें। फिर इसकी मीरास हमारी ही होगी।’ 15 उन्होंने उसे बाग से बाहर फेंककर कत्ल किया।”

ईसा ने पूछा, “अब बताओ, बाग का मालिक क्या करेगा? 16 वह वहाँ जाकर मुज़ारेओ को हलाक करेगा और बाग को दूसरों के सुपर्द कर देगा।”

यह सुनकर लोगों ने कहा, “ख़ुदा ऐसा कभी न करे।”

17 ईसा ने उन पर नज़र डालकर पूछा, “तो फिर कलामे-मुकद्दस के इस हवाले का क्या मतलब है कि

‘जिस पत्थर को मकान बानेवालों ने रड़ किया,

वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया?’

18 जो इस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े टुकड़े हो जाएगा, जबकि जिस पर वह ख़ुद गिरेगा उसे पीस डालेगा।”

### क्या टैक्स देना जायज़ है?

19 शरीअत के उलमा और राहनुमा इमामों ने उसी वक़्त उसे पकड़ने की कोशिश की, क्योंकि वह समझ गए थे कि तमसील में बयानशुदा मुज़ारे हम ही हैं। लेकिन वह अवाम से डरते थे। 20 चूँकि वह उसे पकड़ने का मौका ढूँढ़ते रहे। इस मकसद के तहत उन्होंने उसके पास जासूस भेज दिए। यह लोग अपने आपको दियानतदार जाहिर करके ईसा के पास आए ताकि उस की कोई बात पकड़कर उसे रोमी गवर्नर के हवाले कर सकें। 21 इन जासूसों ने उससे पूछा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप वही कुछ बयान करते और सिखाते हैं जो सही है। आप जानिबदार नहीं होते बल्कि दियानतदारी से अल्लाह की राह की तालीम देते हैं। 22 अब हमें बताएँ कि क्या रोमी शहनशाह को टैक्स देना जायज़ है या नाजायज़?”

23 लेकिन ईसा ने उनकी चालाकी भाँप ली और कहा, 24 “मुझे चाँदी का एक रोमी सिक्का दिखाओ। किसकी सूरत और नाम इस पर कंदा है?”

उन्होंने जवाब दिया, “शहनशाह का।”

25 उसने कहा, “तो जो शहनशाह का है शहनशाह को दो और जो अल्लाह का है अल्लाह को।”

26 यों वह अवाम के सामने उस की कोई बात पकड़ने में नाकाम रहे। उसका जवाब सुनकर वह हक्का-बक्का रह गए और मज़ीद कोई बात न कर सके।

### क्या हम जी उठेंगे?

27 फिर कुछ सदूकी उसके पास आए। सदूकी नहीं मानते कि रोजे-क्रियामत मुरदे जी उठेंगे। उन्होंने ईसा से एक सवाल किया, 28 “उस्ताद, मूसा ने हमें हुक्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उसका भाई हो तो भाई का फर्ज है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 29 अब फर्ज करें कि सात भाई थे। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद फौत हुआ। 30 इस पर दूसरे ने उससे शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। 31 फिर तीसरे ने उससे शादी की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। थके बाद दीगरे हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया। 32 आखिर में बेवा भी फौत हो गई। 33 अब बताएँ कि क्रियामत के दिन वह किसकी बीवी होगी? क्योंकि सात के सात भाइयों ने उससे शादी की थी।”

34 ईसा ने जवाब दिया, “इस ज़माने में लोग ब्याह-शादी करते और कराते हैं। 35 लेकिन जिन्हें अल्लाह आनेवाले ज़माने में शरीक होने और मुरदों में से जी उठने के लायक समझता है वह उस वक्त शादी नहीं करेंगे, न उनकी शादी किसी से कराई जाएगी। 36 वह मर भी नहीं सकेंगे, क्योंकि वह फरिशतों की मानिंद होंगे और क्रियामत के फ़रज़द होने के बाइस अल्लाह के फ़रज़द होंगे। 37 और यह बात कि मुरदे जी उठेंगे मूसा से भी जाहिर की गई है। क्योंकि जब वह कौटुंबिक झाड़ी के पास आया तो उसने रब को यह नाम दिया, ‘इब्राहीम का खुदा, इसहाक का खुदा और याकूब का खुदा,’ हालाँकि उस वक्त तीनों बहुत पहले मर चुके थे। इसका मतलब है कि यह हकीकत में ज़िंदा है। 38 क्योंकि अल्लाह मुरदों का नहीं बल्कि ज़िंदों का खुदा है। उसके नज़दीक यह सब ज़िंदा है।”

39 यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा ने कहा, “शाबाश उस्ताद, आपने अच्छा कहा है।” 40 इसके बाद उन्होंने उससे कोई भी सवाल करने की ज़रत न की।

### मसीह के बारे में सवाल

41 फिर ईसा ने उनसे पूछा, “मसीह के बारे में क्यों कहा जाता है कि वह दाऊद का फ़रज़द है? 42 क्योंकि दाऊद खुद ज़बूर की किताब में फ़रमाता है,

‘रब ने मेरे रब से कहा,  
मेरे दहने हाथ बैठ,

43 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।’

44 दाऊद तो खुद मसीह को रब कहता है। तो फिर वह किस तरह दाऊद का फ़रज़द हो सकता है?”

### शरीअत के उलमा से खबरदार

45 जब लोग सुन रहे थे तो उसने अपने शागिर्दों से कहा, 46 “शरीअत के उलमा से खबरदार रहो! क्योंकि वह शानदार चोगे पहनकर इधर उधर फिरना पसंद करते हैं। जब लोग बाज़ारों में सलाम करके उनकी इज्जत करते हैं तो फिर वह खुश हो जाते हैं। उनकी बस एक ही खाहिश होती है कि इबादतखानों और ज़ियाफ़तों में इज्जत की कुरसियों पर बैठ जाएँ। 47 यह लोग बेवाओं के घर हड़प कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लंबी लंबी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख्त सज़ा मिलेगी।”

## 21

### बेवा का चंदा

1 ईसा ने नज़र उठाकर देखा कि अमीर लोग अपने हदिये बैतूल-मुक़द्दस के चंदे के बक्स में डाल रहे हैं। 2 एक ग़रीब बेवा भी वहाँ से गुज़री जिसने उसमें तौंबे के दो मामूली-से सिक्के डाल दिए। 3 ईसा ने कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस ग़रीब बेवा ने तमाम लोगों की निसबत ज़्यादा डाला है। 4 क्योंकि इन सबने तो अपनी दौलत की कसरत से कुछ डाला जबकि इसने ज़रूरतमंद होने के बावजूद भी अपने गुज़ारे के सारे पैसे दे दिए हैं।”

### बैतूल-मुक़द्दस पर आनेवाली तबाही

5 उस वक्त कुछ लोग बैतूल-मुक़द्दस की तारीफ़ में कहने लगे कि वह कितने ख़बसूरत पत्थरों और मन्त के तोहफ़ों से सजी हुई है। यह सुनकर ईसा ने कहा, 6 “जो कुछ तुमको यहाँ नज़र आता है उसका पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा। आनेवाले दिनों में सब कुछ ढा दिया जाएगा।”

### मुसीबतों और इज़ारसानी की पेशगोई

7 उन्होंने पूछा, “उस्ताद, यह कब होगा? क्या क्या नज़र आएगा जिससे मालूम हो कि यह अब होने को है?”

8 ईसा ने जवाब दिया, “खबरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। क्योंकि बहुत-से लोग मेरा नाम लेकर आएँगे और कहेंगे, ‘मैं ही मसीह हूँ’ और कि ‘वक्त करीब आ चुका है।’ लेकिन उनके पीछे न लगना। 9 और जब जंगों और फ़ितनों की खबरें तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्योंकि लाज़िम है कि यह सब कुछ पहले पेश आए। तो भी अभी आख़िरत न होगी।”

10 उसने अपनी बात जारी रखी, “एक क्रौम दूसरी के खिलाफ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही दूसरी के खिलाफ। 11 शहीद जलजले आएँगे, जगह जगह काल पड़ेंगे और वबाई बीमारियाँ फैल जाएँगी। हैबतनाक वाक़ियात और आसमान पर बड़े निशान देखने में आएँगे। 12 लेकिन इन तमाम वाक़ियात से पहले लोग तुमको पकड़कर सताएँगे। वह तुमको यहदी इबादतखानों के हवाले करेंगे, कैदखानों में डलवाएँगे और बादशाहों और हुक्मरानों के सामने पेश करेंगे। और यह इसलिए होगा कि तुम मेरे पैरोकार हो। 13 नतीजे में तुम्हें मेरी गवाही देने का मौका मिलेगा। 14 लेकिन ठान लो कि तुम पहले से अपना दिफ़ा करने की तैयारी न करो, 15 क्योंकि मैं तुमको ऐसे अलफ़ाज़ और हिकमत अता करूँगा कि तुम्हारे तमाम मुखालिफ़ न उसका मुकाबला और न उस की तरदीद कर सकेंगे। 16 तुम्हारे वालिदैन, भाई, रिश्तेदार और दोस्त भी तुमको दुश्मन के हवाले कर देंगे, बल्कि तुममें से बाज़ को कल्ल किया जाएगा। 17 सब तुमसे नफ़रत करेंगे, इसलिए कि तुम मेरे पैरोकार हो। 18 तो भी तुम्हारा एक बाल भी बीका नहीं होगा। 19 साबितकदम रहने से ही तुम अपनी जान बचा लोगे।

### यरूशलम की तबाही

20 जब तुम यरूशलम को फ़ौजों से घिरा हुआ देखो तो जान लो कि उस की तबाही करीब आ चुकी है। 21 उस वक्त यहूदिया के बाशिंदे भागकर पहाड़ी इलाके में पनाह लें। शहर के रहनेवाले उससे निकल जाएँ और देहात में आबाद लोग शहर में दाख़िल न हों। 22 क्योंकि यह इलाही ग़ज़ब के दिन होंगे जिनमें वह सब कुछ पूरा हो जाएगा जो कलामे-मुक़द्दस में लिखा है। 23 उन ख़वातीन पर अफ़सोस जो उन दिनों में हामिला हों या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों, क्योंकि मुल्क में बहुत मुसीबत होगी और इस क्रौम पर अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा। 24 लोग उन्हें तलवार से कल्ल करेंगे और कैद करके तमाम ग़ैरयहूदी ममालिक में ले जाएँगे। ग़ैरयहूदी यरूशलम को पाँवों तले कुचल डालेंगे। यह सिलसिला उस वक्त तक जारी रहेगा जब तक ग़ैरयहूदियों का दौर पूरा न हो जाए।

### इब्ने-आदम की आमद

25 सूरज, चाँद और सितारों में अजीबो-ग़रीब निशान जाहिर होंगे। क्रौमें समुंदर के शोर और ठाठे मारने से हैरानो-पेशान होगी। 26 लोग इस अदेशे से कि क्या क्या मुसीबत दुनिया पर आएगी इस क़दर ख़ौफ़ खाएँगे कि उनकी जान में जान न रहेगी, क्योंकि आसमान की कुव्वतें हिलाई जाएँगी। 27 और फिर वह इब्ने-आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ बादल में आते हुए देखेंगे। 28 चुनौचे जब यह कुछ पेश आने लगे तो सीधे खड़े होकर अपनी नज़र उठाओ, क्योंकि तुम्हारी नजात नज़दीक होगी।”

### अंज़ीर के दरख़्त की तमसील

29 इस सिलसिले में ईसा ने उन्हें एक तमसील सुनाई। “अंज़ीर के दरख़्त और बाकी दरख़्तों पर गौर करो। 30 ज्योंही कौपले निकलने लगती हैं तुम जान लेते हो कि गरमियों का मौसम नज़दीक है। 31 इसी तरह जब तुम यह वाक़ियात देखोगे तो जान लोगे कि अल्लाह की बादशाही करीब ही है।

32 मैं तुमको सच बताता हूँ कि इस नसल के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ वाक़े होगा। 33 आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक कायम रहेंगी।

### खबरदार रहना

34 खबरदार रहो ताकि तुम्हारे दिल ऐयाशी, नशाबाज़ी और रोज़ाना की फ़िकरों तले दब न जाएँ। वरना यह दिन अचानक तुम पर आन पड़ेगा, 35 और फंदे की तरह तुम्हें जकड़ लेगा। क्योंकि वह दुनिया के तमाम बाशिंदों पर आएगा। 36 हर वक्त चौकस रहो और दूआ करते रहो कि तुमको आनेवाली इन सब बातों से बच निकलने की तौफ़ीक़ मिल जाए और तुम इब्ने-आदम के सामने खड़े हो सको।”

37 हर रोज़ ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा और हर शाम वह निकलकर उस पहाड़ पर रात गुज़ारता था जिसका नाम ज़ैतून का पहाड़ है। 38 और तमाम लोग उस की बातें सुनने के लिए सुबह-सवेरे बैतुल-मुक़द्दस में उसके पास आते थे।

1 बेखमीरी रोटी की ईद यानी फसह की ईद करीब आ गई थी। 2 राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा ईसा को कत्ल करने का कोई मौजूँ मौका ढूँड रहे थे, क्योंकि वह अवाग के रदे-अमल से डरते थे।

ईसा को दुश्मन के हवाले करने का मनसूबा

3 उस वक़्त इबलीस यहदाह इस्करियोती में समा गया जो बारह रसूलों में से था। 4 अब वह राहनुमा इमामों और बैतुल-मुकद्दस के पहेदाओं के अफ़सरों से मिला और उनसे बात करने लगा कि वह ईसा को किस तरह उनके हवाले कर सकेगा। 5 वह खुश हुए और उसे पैसे देने पर मुतफ़िक हुए। 6 यहदाह रज़ामंद हुआ। अब से वह इस तलाश में रहा कि ईसा को ऐसे मौके पर उनके हवाले करे जब हुजूम उसके पास न हो।

फसह की ईद के लिए तैयारियाँ

7 बेखमीरी रोटी की ईद आई जब फसह के लेले को क़ुरबान करना था। 8 ईसा ने पतरस और यहन्ना को आगे भेजकर हिदायत की, “जाओ, हमारे लिए फसह का खाना तैयार करो ताकि हम जाकर उसे खा सकें।” 9 उन्होंने पूछा, “हम उसे कहाँ तैयार करें?”

10 उसने जवाब दिया, “जब तुम शहर में दाखिल होंगे तो तुम्हारी मुलाकात एक आदमी से होगी जो पानी का घड़ा उठाए चल रहा होगा। उसके पीछे चलकर उस घर में दाखिल हो जाओ जिसमें वह जाएगा। 11 वहाँ के मालिक से कहना, ‘उस्ताद आपसे पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फसह का खाना खाऊँ?’ 12 वह तुमको दूसरी मनज़िल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। फसह का खाना वही तैयार करना।”

13 दोनों चले गए तो सब कुछ वैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फसह का खाना तैयार किया।

फसह का आखिरी खाना

14 मुकर्रर वक़्त पर ईसा अपने शागिर्दों के साथ खाने के लिए बैठ गया। 15 उसने उनसे कहा, “मेरी शदीद आरज़ू थी कि दुख उठाने से पहले तुम्हारे साथ मिलकर फसह का यह खाना खाऊँ। 16 क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि उस वक़्त तक इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इसका मक़सद अल्लाह की बादशाही में पूरा न हो गया हो।”

17 फिर उसने मैं का प्याला लेकर शक़रगुज़ारी की दूआ की और कहा, “इसको लेकर आपस में बाँट लो। 18 मैं तुमको बताता हूँ कि अब से मैं अंगर का रस नहीं पिऊँगा, क्योंकि अगली दफ़ा इसे अल्लाह की बादशाही के आने पर पिऊँगा।”

19 फिर उसने रोटी लेकर शक़रगुज़ारी की दूआ की और उसे टुकड़े करके उन्हें दे दिया। उसने कहा, “यह मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।” 20 इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला लेकर कहा, “मैं का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे खून के ज़रिए कायम किया जाता है, वह खून जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है।

21 लेकिन जिस शख्स का हाथ मेरे साथ खाना खाने में शरीक है वह मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा। 22 इब्ने-आदम तो अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक कूच कर जाएगा, लेकिन उस शख्स पर अफ़सोस जिसके वसीले से उसे दुश्मन के हवाले कर दिया जाएगा।”

23 यह सुनकर शागिर्द एक दूसरे से बहस करने लगे कि हममें से यह कौन हो सकता है जो इस किस्म की हरकत करेगा।

कौन बड़ा है?

24 फिर एक और बात भी छिड़ गई। वह एक दूसरे से बहस करने लगे कि हममें से कौन सबसे बड़ा समझा जाए। 25 लेकिन ईसा ने उनसे कहा, “गैरयहदी कौमों में बादशाह वही हैं जो दूसरों पर हुक़मत करते हैं, और इख़्तियारवाले वही हैं जिन्हें ‘मोहसिन’ का लक़ब दिया जाता है। 26 लेकिन तुमको ऐसा नहीं होना चाहिए। इसके बजाए जो सबसे बड़ा है वह सबसे छोटे लड़के की मानिंद हो और जो राहनुमाई करता है वह नौकर जैसा हो। 27 क्योंकि आम तौर पर कौन ज्यादा बड़ा होता है, वह जो खाने के लिए बैठा है या वह जो लोगों की खिदमत के लिए हाज़िर होता है? क्या वह नहीं जो खाने के लिए बैठा है? बेशक। लेकिन मैं खिदमत करनेवाले की हैसियत से ही तुम्हारे दरमियान हूँ।

28 देखो, तुम वही हो जो मेरी तमाम आज़माइशों के दौरान मेरे साथ रहे हो। 29 चुनौचे मैं तुमको बादशाही अता करता हूँ जिस तरह बाप ने मुझे भी बादशाही अता की है। 30 तुम मेरी बादशाही में मेरी मेज़ पर बैठकर मेरे साथ खाओ और पियो, और तख़्तों पर बैठकर इसराईल के बारह कबीलों का इन्साफ़ करोगे।

पतरस के इनकार की पेशगोई

31 शमौन, शमौन! इबलीस ने तुम लोगों को गंदम की तरह फटकने का मुतालबा किया है। 32 लेकिन मैंने तेरे लिए दुआ की है ताकि तेरा इमान जाता न रहे। और जब तू मुडकर वापस आए तो उस वक़्त अपने भाइयों को मज़बूत करना।”

33 पतरस ने जवाब दिया, “खुदावंद, मैं तो आपके साथ जेल में भी जाने बल्कि मरने को तैयार हूँ।”

34 ईसा ने कहा, “पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि कल सुबह मुरग के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।”

अब बटवे, बैग और तलवार की ज़रूरत है

35 फिर उसने उनसे पूछा, “जब मैंने तुमको बटवे, सामान के लिए बैग और जूतों के बगैर भेज दिया तो क्या तुम किसी भी चीज़ से महरूम रहे?”

उन्होंने जवाब दिया, “किसी से नहीं।”

36 उसने कहा, “लेकिन अब जिसके पास बटवा या बैग हो वह उसे साथ ले जाए, बल्कि जिसके पास तलवार न हो वह अपनी चादर बेचकर तलवार खरीद ले। 37 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘उसे मुजरिमों में शुमार किया गया’ और मैं तुमको बताता हूँ, लाज़िम है कि यह बात मुझमें पूरी हो जाए। क्योंकि जो कुछ मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा ही होना है।”

38 उन्होंने कहा, “खुदावंद, यहाँ दो तलवारें हैं।” उसने कहा, “बस! काफी है!”

जैतून के पहाड़ पर ईसा की दुआ

39 फिर वह शहर से निकलकर मामूल के मुताबिक जैतून के पहाड़ की तरफ चल दिया। उसके शागिर्द उसके पीछे हो लिए। 40 वहाँ पहुँचकर उसने उनसे कहा, “दुआ करो ताकि आजमाइश में न पड़ो।”

41 फिर वह उन्हें छोड़कर कुछ आगे निकला, तकरीबन इतने फासले पर जितनी दूर तक पत्थर फेंका जा सकता है। वहाँ वह झुककर दुआ करने लगा, 42 “ऐ बाप, अगर तू चाहे तो यह प्याला मुझसे हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मरजी पूरी हो।” 43 उस वक्त एक फरिशते ने आसमान पर से उस पर जाहिर होकर उसको तकवियत दी। 44 वह सख्त परेशान होकर ज़्यादा दिलसोज़ी से दुआ करने लगा। साथ साथ उसका पसीना खून की बूँदों की तरह ज़मीन पर टपकने लगा।

45 जब वह दुआ से फ़ारिग होकर खड़ा हुआ और शागिर्दों के पास वापस आया तो देखा कि वह ग़म के मारे सो गए हैं।

46 उसने उनसे कहा, “तुम क्यों सो रहे हो? उठकर दुआ करते रहो ताकि आजमाइश में न पड़ो।”

ईसा की गिरफ्तारी

47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि एक हज़म आ पहुँचा जिसके आगे आगे यहूदाह चल रहा था। वह ईसा को बोसा देने के लिए उसके पास आया। 48 लेकिन उसने कहा, “यहूदाह, क्या तू इब्ने-आदम को बोसा देकर दुश्मन के हवाले कर रहा है?”

49 जब उसके साथियों ने भौंप लिया कि अब क्या होनेवाला है तो उन्होंने कहा, “खुदावंद, क्या हम तलवार चलाएँ?”

50 और उनमें से एक ने अपनी तलवार से इमामे-आज़म के गुलाम का दहना कान उड़ा दिया।

51 लेकिन ईसा ने कहा, “बस कर!” उसने गुलाम का कान छूकर उसे शफ़ा दी। 52 फिर वह उन राहनुमा इमामों, बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों के अफ़सरों और बुजुर्गों से मुखातिब हुआ जो उसके पास आए थे, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवारों और लाठियों लिए मेरे खिलाफ निकले हो? 53 मैं तो रोज़ाना बैतुल-मुक़द्दस में तुम्हारे पास था, मगर तुमने वहाँ मुझे हाथ नहीं लगाया। लेकिन अब यह तुम्हारा वक्त है, वह वक्त जब तारीकी हुकूमत करती है।”

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

54 फिर वह उसे गिरफ्तार करके इमामे-आज़म के घर ले गए। पतरस कुछ फासले पर उनके पीछे पीछे वहाँ पहुँच गया।

55 लोग सहन में आग जलाकर उसके इर्दगिर्द बैठ गए। पतरस भी उनके दरमि्यान बैठ गया। 56 किसी नौकरानी ने उसे वहाँ आग के पास बैठे हुए देखा। उसने उसे घूरकर कहा, “यह भी उसके साथ था।”

57 लेकिन उसने इनकार किया, “ख़ातून, मैं उसे नहीं जानता।”

58 थोड़ी देर के बाद किसी आदमी ने उसे देखा और कहा, “तुम भी उनमें से हो।”

लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “नहीं भई! मैं नहीं हूँ।”

59 तकरीबन एक घंटा गुज़र गया तो किसी और ने इसरार करके कहा, “यह आदमी यक़ीनन उसके साथ था, क्योंकि यह भी गलील का रहनेवाला है।”

60 लेकिन पतरस ने जवाब दिया, “यार, मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो!”

वह अभी बात कर ही रहा था कि अचानक मुरग की बाँग सुनाई दी। 61 खुदावंद ने मुडकर पतरस पर नज़र डाली। फिर पतरस को खुदावंद की वह बात याद आई जो उसने उससे कही थी कि “कल सुबह मुरग के बाँग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।” 62 पतरस वहाँ से निकलकर दूटे दिल से खूब रोया।

### लान-तान और पिटाई

63 पहरोदार ईसा का मजाक उडाने और उस की पिटाई करने लगे। 64 उन्होंने उस की आँखों पर पट्टी बाँधकर पूछा, “नबुव्वत कर कि किसने तुझे मारा?” 65 इस तरह की और बहुत-सी बातों से वह उस की बेइज्जती करते रहे।

### यहूदी अदालते-आलिया के सामने पेशी

66 जब दिन चढ़ा तो राहनुमा इमामों और शरीअत के उलमा पर मुश्तमिल कौम की मजलिस ने जमा होकर उसे यहूदी अदालते-आलिया में पेश किया। 67 उन्होंने कहा, “अगर तू मसीह है तो हमें बता!”

ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं तुमको बताऊँ तो तुम मेरी बात नहीं मानोगे, 68 और अगर तुमसे पूछूँ तो तुम जवाब नहीं दोगे। 69 लेकिन अब से इब्ने-आदम अल्लाह तआला के दहने हाथ बैठा होगा।”

70 सबने पूछा, “तो फिर क्या तू अल्लाह का फरजंद है?”

उसने जवाब दिया, “जी, तुम खुद कहते हो।”

71 इस पर उन्होंने कहा, “अब हमें किसी और गवाही की क्या जरूरत रही? क्योंकि हमने यह बात उसके अपने मुँह से सुन ली है।”

## 23

### पीलातस के सामने

1 फिर पूरी मजलिस उठी और उसे पीलातस के पास ले आई। 2 वहाँ वह उस पर इलजाम लगाकर कहने लगे, “हमने मालूम किया है कि यह आदमी हमारी कौम को गुमराह कर रहा है। यह शहनशाह को टैक्स देने से मना करता और दावा करता है कि मैं मसीह और बादशाह हूँ।”

3 पीलातस ने उससे पूछा, “अच्छा, तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “जी, आप खुद कहते हैं।”

4 फिर पीलातस ने राहनुमा इमामों और हजूम से कहा, “मुझे इस आदमी पर इलजाम लगाने की कोई वजह नजर नहीं आती।”

5 लेकिन वह अड़े रहे। उन्होंने कहा, “वह पूरे यहूदिया में तालीम देते हुए कौम को उकसाता है। वह गलील से शुरू करके यहाँ तक आ पहुँचा है।”

### हेरोदेस के सामने

6 यह सुनकर पीलातस ने पूछा, “क्या यह शख्स गलील का है?” 7 जब उसे मालूम हुआ कि ईसा गलील यानी उस इलाके से है जिस पर हेरोदेस अतिपास की हुकूमत है तो उसने उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्योंकि वह भी उस वक्त यरूशलम में था। 8 हेरोदेस ईसा को देखकर बहुत खुश हुआ, क्योंकि उसने उसके बारे में बहुत कुछ सुना था और इसलिए काफ़ी देर से उससे मिलना चाहता था। अब उस की बड़ी खाहिश थी कि ईसा को कोई मौजिजा करते हुए देख सके। 9 उसने उससे बहुत सारे सवाल किए, लेकिन ईसा ने एक का भी जवाब न दिया। 10 राहनुमा इमाम और शरीअत के उलमा साथ खड़े बड़े जोश से उस पर इलजाम लगाते रहे। 11 फिर हेरोदेस और उसके फौजियों ने उस की तहकीर करते हुए उसका मजाक उड़ाया और उसे चमकदार लिबास पहनाकर पीलातस के पास वापस भेज दिया। 12 उसी दिन हेरोदेस और पीलातस दोस्त बन गए, क्योंकि इससे पहले उनकी दुश्मनी चल रही थी।

### सजाए-मौत का फैसला

13 फिर पीलातस ने राहनुमा इमामों, सरदारों और अवाम को जमा करके 14 उनसे कहा, “तुमने इस शख्स को मेरे पास लाकर इस पर इलजाम लगाया है कि यह कौम को उकसा रहा है। मैंने तुम्हारी मौजूदगी में इसका जायज़ा लेकर ऐसा कुछ नहीं पाया जो तुम्हारे इलजामात की तसदीक करे। 15 हेरोदेस भी कुछ नहीं मालूम कर सका, इसलिए उसने इसे हमारे पास वापस भेज दिया है। इस आदमी से कोई भी ऐसा कुसूर नहीं हुआ कि यह सजाए-मौत के लायक है। 16 इसलिए मैं इसे कोड़ों की सजा देकर रिहा कर देता हूँ।”

17 [असल में यह उसका फ़र्ज़ था कि वह ईद के मौके पर उनकी खातिर एक कैदी को रिहा कर दे।]

18 लेकिन सब मिलकर शोर मचाकर कहने लगे, “इसे ले जाएँ! इसे नहीं बल्कि बर-अब्बा को रिहा करके हमें दें।”

19 (बर-अब्बा को इसलिए जेल में डाला गया था कि वह कातिल था और उसने शहर में हुकूमत के खिलाफ़ बगावत की थी।)

20 पीलातुस ईसा को रिहा करना चाहता था, इसलिए वह दुबारा उनसे मुखातिब हुआ। 21 लेकिन वह चिल्लाते रहे, “इसे मसलब करें, इसे मसलब करें।”

22 फिर पीलातुस ने तीसरी दफा उनसे कहा, “क्यों? उसने क्या जुर्म किया है? मुझे इसे सजाए-मौत देने की कोई वजह नजर नहीं आती। इसलिए मैं इसे कोड़े लगावाकर रिहा कर देता हूँ।”

23 लेकिन वह बड़ा शोर मचाकर उसे मसलब करने का तकाजा करते रहे, और आखिरकार उनकी आवाज़ें गालिब आ गई। 24 फिर पीलातुस ने फैसला किया कि उनका मुतालबा पूरा किया जाए। 25 उसने उस आदमी को रिहा कर दिया जो अपनी बागियाना हरकतों और कत्ल की वजह से जेल में डाल दिया गया था जबकि ईसा को उसने उनकी मरजी के मुताबिक उनके हवाले कर दिया।

### ईसा को मसलब किया जाता है

26 जब फौजी ईसा को ले जा रहे थे तो उन्होंने एक आदमी को पकड़ लिया जो लिबिया के शहर कुरेन का रहनेवाला था। उसका नाम शमौन था। उस वक़्त वह देहात से शहर में दाखिल हो रहा था। उन्होंने सलीब को उसके कंधों पर रखकर उसे ईसा के पीछे चलने का हुक्म दिया।

27 एक बड़ा हज़ूम उसके पीछे हो लिया जिसमें कुछ ऐसी औरतें भी शामिल थीं जो सीना पीट पीटकर उसका मातम कर रही थीं। 28 ईसा ने मुड़कर उनसे कहा, “यश्शलम की बेटियो! मेरे वास्ते न रोओ बल्कि अपने और अपने बच्चों के वास्ते रोओ। 29 क्योंकि ऐसे दिन आएँगे जब लोग कहेंगे, ‘मुबारक है वह जो बाँझ है, जिन्होंने न तो बच्चों को जन्म दिया, न दूध पिलाया।’ 30 फिर लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे, ‘हम पर गिर पड़ो,’ और पहाड़ियों से कि ‘हमें छुपा लो।’ 31 क्योंकि अगर हरी लकड़ी से ऐसा सुलूक किया जाता है तो फिर सूखी लकड़ी का क्या बनेगा?”

32 दो और मर्दों को भी फाँसी देने के लिए बाहर ले जाया जा रहा था। दोनों मुजरिम थे। 33 चलते चलते वह उस जगह पहुँचे जिसका नाम खोपड़ी था। वहाँ उन्होंने ईसा को दोनों मुजरिमों समेत मसलब किया। एक मुजरिम को उसके दाएँ हाथ और दूसरे को उसके बाएँ हाथ लटका दिया गया। 34 ईसा ने कहा, “ऐ बाप, इन्हें मुआफ़ कर, क्योंकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।”

उन्होंने कुरा डालकर उसके कपड़े आपस में बाँट लिए। 35 हज़ूम वहाँ खड़ा तमाशा देखता रहा जबकि क्रौम के सरदारों ने उसका मज़ाक भी उड़ाया। उन्होंने कहा, “उसने औरों को बचाया है। अगर यह अल्लाह का चुना हुआ और मसीह है तो अपने आपको बचाए।”

36 फौजियों ने भी उसे लान-तान की। उसके पास आकर उन्होंने उसे मै का सिरका पेश किया 37 और कहा, “अगर तू यहदियों का बादशाह है तो अपने आपको बचा ले।”

38 उसके सर के ऊपर एक तख़्ती लगाई गई थी जिस पर लिखा था, “यह यहदियों का बादशाह है।”

39 जो मुजरिम उसके साथ मसलब हुए थे उनमें से एक ने कुफ़र बकते हुए कहा, “क्या तू मसीह नहीं है? तो फिर अपने आपको और हमें भी बचा ले।”

40 लेकिन दूसरे ने यह सुनकर उसे डाँटा, “क्या तू अल्लाह से भी नहीं डरता? जो सज़ा उसे दी गई है वह तुझे भी मिली है। 41 हमारी सज़ा तो वाजिबी है, क्योंकि हमें अपने कामों का बदला मिल रहा है, लेकिन इसने कोई बुरा काम नहीं किया।”

42 फिर उसने ईसा से कहा, “जब आप अपनी बादशाही में आएँ तो मुझे याद करें।”

43 ईसा ने उससे कहा, “मैं तुझे सच बताता हूँ कि तू आज ही मेरे साथ फ़िर्दौस में होगा।”

### ईसा की मौत

44 बारह बजे से दोपहर तीन बजे तक पूरा मुल्क अंधेरे में डूब गया। 45 सूरज तारीक हो गया और बैतुल-मुक़द्दस के मुक़द्दसतरीन क़मरे के सामने लटका हुआ परदा दो हिस्सों में फट गया। 46 ईसा ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “ऐ बाप, मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ।” यह कहकर उसने दम छोड़ दिया।

47 यह देखकर वहाँ खड़े फौजी अफ़सर \* ने अल्लाह की तमज़ीद करके कहा, “यह आदमी वाकई रास्तबाज़ था।”

48 और हज़ूम के तमाम लोग जो यह तमाशा देखने के लिए जमा हुए थे यह सब कुछ देखकर छाती पीटने लगे और शहर में वापस चले गए। 49 लेकिन ईसा के जाननेवाले कुछ फ़ासले पर खड़े देखते रहे। उनमें वह खवातीन भी शामिल थीं जो गलील में उसके पीछे चलकर यहाँ तक उसके साथ आई थीं।

### ईसा को दफन किया जाता है

\* 23:47 सौ सिपाहियों पर मुक़रर अफ़सर।



50 वहाँ एक नेक और रास्तबाज़ आदमी बनाम यूसुफ़ था। वह यहूदी अदालते-आलिया का स्कन था 51 लेकिन दूसरों के फ़ैसले और हरकतों पर रज़ामंद नहीं हुआ था। यह आदमी यहूदिया के शहर अरिमतियाहा का रहनेवाला था और इस इंतज़ार में था कि अल्लहाह की बादशाही आए। 52 अब उसने पीलातुस के पास जाकर उससे ईसा की लाश ले जाने की इजाज़त माँगी। 53 फिर लाश को उतारकर उसने उसे कतान के कफ़न में लपेटकर चटान में तराशी हुई एक कब्र में रख दिया जिसमें अब तक किसी को दफ़नाया नहीं गया था। 54 यह तैयारी का दिन यानी जुमा था, लेकिन सबत का दिन शुरू होने को था। † 55 जो औरतें ईसा के साथ गलील से आई थीं वह यूसुफ़ के पीछे हो लीं। उन्होंने कब्र को देखा और यह भी कि ईसा की लाश किस तरह उसमें रखी गई है। 56 फिर वह शहर में वापस चली गई और उस की लाश के लिए ख़ुशबूदार मसाले तैयार करने लगीं। लेकिन बीच में सबत का दिन शुरू हुआ, इसलिए उन्होंने शरीअत के मुताबिक़ आराम किया।

## 24

### ईसा जी उठता है

1 इतवार के दिन यह औरतें अपने तैयारशुदा मसाले लेकर सुबह-सवेरे कब्र पर गईं। 2 वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा कि कब्र पर का पत्थर एक तरफ़ लुढ़का हुआ है। 3 लेकिन जब वह कब्र में गई तो वहाँ ख़ुदावंद ईसा की लाश न पाई। 4 वह अभी उलझन में वहाँ खड़ी थी कि अचानक दो मर्द उनके पास आ खड़े हुए जिनके लिबास बिजली की तरह चमक रहे थे। 5 औरतें दहशत खाकर मुँह के बल झुक गईं, लेकिन उन मर्दों ने कहा, “तुम क्यों ज़िंदा को मुरदों में ढूँड रही हो? 6 वह यहाँ नहीं है, वह तो जी उठा है। वह बात याद करो जो उसने तुमसे उस वक़्त कही जब वह गलील में था। 7 ‘लाज़िम है कि इब्ने-आदम को गुनाहगारों के हवाले कर दिया जाए, मसलूब किया जाए और कि वह तीसरे दिन जी उठे’।”

8 फिर उन्हें यह बात याद आई। 9 और कब्र से वापस आकर उन्होंने यह सब कुछ ग्यारह रसूलों और बाकी शागिर्दों को सुना दिया। 10 मरियम मग्दलीनी, युजान्ना, याकूब की माँ मरियम और चंद एक और औरतें उनमें शामिल थीं जिन्होंने यह बातें रसूलों को बताईं। 11 लेकिन उनको यह बातें बेतुकी-सी लग रही थी, इसलिए उन्हें यकीन न आया। 12 तो भी पतरस उठा और भागकर कब्र के पास आया। जब पहुँचा तो झुककर अंदर झाँका, लेकिन सिर्फ़ कफ़न \* ही नज़र आया। यह हालात देखकर वह हैरान हुआ और चला गया।

### इम्माउस के रास्ते में ईसा से मुलाकात

13 उसी दिन ईसा के दो पैरोकार एक गाँव बनाम इम्माउस की तरफ़ चल रहे थे। यह गाँव यरूशलम से तकरीबन दस किलोमीटर दूर था। 14 चलते चलते वह आपस में उन वाकियात का जिक्र कर रहे थे जो हुए थे। 15 और ऐसा हुआ कि जब वह बातें और एक दूसरे के साथ बहस-मुबाहसा कर रहे थे तो ईसा ख़ुद करीब आकर उनके साथ चलने लगा। 16 लेकिन उनकी आँखों पर परदा डाला गया था, इसलिए वह उसे पहचान न सके। 17 ईसा ने कहा, “यह कैसी बातें हैं जिनके बारे में तुम चलते चलते तबादलाए-खयाल कर रहे हो?”

यह सुनकर वह गमगीन से खड़े हो गए। 18 उनमें से एक बनाम क्लियुपास ने उससे पूछा, “क्या आप यरूशलम में वाहिद शख्स हैं जिसे मालूम नहीं कि इन दिनों में क्या कुछ हुआ है?”

19 उसने कहा, “क्या हुआ है?”

उन्होंने जवाब दिया, “वह जो ईसा नासरी के साथ हुआ है। वह नबी था जिसे कलाम और काम में अल्लहाह और तमाम क्रौम के सामने ज़बरदस्त कुव्वत हासिल थी। 20 लेकिन हमारे राहनुमा इमामों और सरदारों ने उसे हुक्मरानों के हवाले कर दिया ताकि उसे सज़ाए-मौत दी जाए, और उन्होंने उसे मसलूब किया। 21 लेकिन हमें तो उम्मीद थी कि वही इसराइल को नजात देगा। इन वाकियात को तीन दिन हो गए हैं। 22 लेकिन हममें से कुछ खवातीन ने भी हमें हैरान कर दिया है। वह आज सुबह-सवेरे कब्र पर गईं 23 तो देखा कि लाश वहाँ नहीं है। उन्होंने लौटकर हमें बताया कि हम पर फरिशते जाहिर हुए जिन्होंने कहा कि ईसा ज़िंदा है। 24 हममें से कुछ कब्र पर गए और उसे वैसा ही पाया जिस तरह उन औरतों ने कहा था। लेकिन उसे ख़ुद उन्होंने नहीं देखा।”

25 फिर ईसा ने उनसे कहा, “अरे नादानो! तुम कितने कुंदज़हन हो कि तुम्हें उन तमाम बातों पर यकीन नहीं आया जो नबियों ने फरमाई हैं। 26 क्या लाज़िम नहीं था कि मसीह यह सब कुछ झेलकर अपने जलाल में दाखिल हो जाए?” 27 फिर मूसा और तमाम नबियों से शुरू करके ईसा ने कलामे-मुक़द्दस की हर बात की तशरीह की जहाँ जहाँ उसका जिक्र है।

28 चलते चलते वह उस गाँव के करीब पहुँचे जहाँ उन्हें जाना था। ईसा ने ऐसा किया गोया कि वह आगे बढ़ना चाहता है, 29 लेकिन उन्होंने उसे मजबूर करके कहा, “हमारे पास ठहरें, क्योंकि शाम होने को है और दिन ढल गया है।” चुनौचे

† 23:54 यहूदी दिन सूरज के ग़रूब होने से शुरू होता है।

\* 24:12 लफ़्जी तरज़ुमा : कतान की पड़ियों जो कफ़न के लिए इस्तेमाल होती थीं।

वह उनके साथ ठहरने के लिए अंदर गया। 30 और ऐसा हुआ कि जब वह खाने के लिए बैठ गए तो उसने रोटी लेकर उसके लिए शक्रगुजारी की दूआ की। फिर उसने उसे टुकड़े करके उन्हें दिया। 31 अचानक उनकी आँखें खुल गईं और उन्होंने उसे पहचान लिया। लेकिन उसी लमहे वह ओझल हो गया। 32 फिर वह एक दूसरे से कहने लगे, “क्या हमारे दिल जोश से न भर गए थे जब वह रास्ते में हमसे बातें करते करते हमें सहीफों का मतलब समझा रहा था?”

33 और वह उसी वक़्त उठकर यरूशलम वापस चले गए। जब वह वहाँ पहुँचे तो ग्यारह रसूल अपने साथियों समेत पहले से जमा थे 34 और यह कह रहे थे, “खुदावंद वाकई जी उठा है! वह शमौन पर ज़ाहिर हुआ है।”

35 फिर इम्मास के दो शागिर्दों ने उन्हें बताया कि गाँव की तरफ जाते हुए क्या हुआ था और कि ईसा के रोटी तोड़ते वक़्त उन्होंने उसे कैसे पहचाना।

**ईसा अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होता है**

36 वह अभी यह बातें सुना रहे थे कि ईसा खुद उनके दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी सलामती हो।”

37 वह घबराकर बहुत डर गए, क्योंकि उनका खयाल था कि कोई भूत-प्रेत देख रहे हैं। 38 उसने उनसे कहा, “तुम क्यों परेशान हो गए हो? क्या वजह है कि तुम्हारे दिलों में शक उभर आया है? 39 मेरे हाथों और पाँवों को देखो कि मैं ही हूँ। मुझे टटोलकर देखो, क्योंकि भूत के गोश्त और हड्डियाँ नहीं होती जबकि तुम देख रहे हो कि मेरा जिस्म है।”

40 यह कहकर उसने उन्हें अपने हाथ और पाँव दिखाए। 41 जब उन्हें खुशी के मारे यक़ीन नहीं आ रहा था और ताज्जुब कर रहे थे तो ईसा ने पूछा, “क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की चीज़ है?” 42 उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया। 43 उसने उसे लेकर उनके सामने ही खा लिया।

44 फिर उसने उनसे कहा, “यही है जो मैंने तुमको उस वक़्त बताया था जब तुम्हारे साथ था कि जो कुछ भी मूसा की शरीअत, नबियों के सहीफों और ज़बूर की किताब में मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा होना है।”

45 फिर उसने उनके जहन को खोल दिया ताकि वह अल्लाह का कलाम समझ सकें। 46 उसने उनसे कहा, “कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, मसीह दुख उठाकर तीसरे दिन मुरदों में से जी उठेगा। 47 फिर यरूशलम से शुरू करके उसके नाम में यह पैगाम तमाम क्रौमों को सुनाया जाएगा कि वह तौबा करके गुनाहों की मुआफ़ी पाएँ। 48 तुम इन बातों के गवाह हो। 49 और मैं तुम्हारे पास उसे भेज दूँगा जिसका वादा मेरे बाप ने किया है। फिर तुमको आसमान की कुव्वत से मूलब्स किया जाएगा। उस वक़्त तक शहर से बाहर न निकलना।”

**ईसा को आसमान पर उठाया जाता है**

50 फिर वह शहर से निकलकर उन्हें बैत-अनियाह तक ले गया। वहाँ उसने अपने हाथ उठाकर उन्हें बरकत दी। 51 और ऐसा हुआ कि बरकत देते हुए वह उनसे जुदा होकर आसमान पर उठा लिया गया। 52 उन्होंने उसे सिजदा किया और फिर बड़ी खुशी से यरूशलम वापस चले गए। 53 वहाँ वह अपना पूरा वक़्त बैतुल-मुक़द्दस में गुज़ारकर अल्लाह की तमज़ीद करते रहे।

## यहन्ना

### जिंदगी का कलाम

1 इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के साथ था और कलाम अल्लाह था। 2 यही इब्तिदा में अल्लाह के साथ था। 3 सब कुछ कलाम के वसीले से पैदा हुआ। मखलकात की एक भी चीज़ उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई। 4 उसमें जिंदगी थी, और यह जिंदगी इनसानों का नूर थी। 5 यह नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने उस पर काबू न पाया।

6 एक दिन अल्लाह ने अपना पैग़ंबर भेज दिया, एक आदमी जिसका नाम यहया था। 7 वह नूर की गवाही देने के लिए आया। मकसद यह था कि लोग उस की गवाही की बिना पर ईमान लाएँ। 8 वह खुद तो नूर न था बल्कि उसे सिर्फ़ नूर की गवाही देनी थी। 9 हकीकी नूर जो हर शख्स को रौशन करता है दुनिया में आने को था।

10 गो कलाम दुनिया में था और दुनिया उसके वसीले से पैदा हुई तो भी दुनिया ने उसे न पहचाना। 11 वह उसमें आया जो उसका अपना था, लेकिन उसके अपनों ने उसे कबूल न किया। 12 तो भी कुछ उसे कबूल करके उसके नाम पर ईमान लाए। उन्हें उसने अल्लाह के फ़रज़द बनने का हक़ बख़्श दिया, 13 ऐसे फ़रज़द जो न फ़ितरी तौर पर, न किसी इनसान के मनसूबे के तहत पैदा हुए बल्कि अल्लाह से।

14 कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान रिहाइशपज़ीर हुआ और हमने उसके जलाल का मुशाहदा किया। वह फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर था और उसका जलाल बाप के इकलौते फ़रज़द का-सा था।

15 यहया उसके बारे में गवाही देकर पुकार उठा, “यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, एक मेरे बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।”

16 उस की कसरत से हम सबने फ़ज़ल पर फ़ज़ल पाया। 17 क्योंकि शरीअत मूसा की मारिफ़त दी गई, लेकिन अल्लाह का फ़ज़ल और सच्चाई ईसा मसीह के वसीले से कायम हुई। 18 किसी ने कभी भी अल्लाह को नहीं देखा। लेकिन इकलौता फ़रज़द जो अल्लाह की गोद में है उसी ने अल्लाह को हम पर जाहिर किया है।

### यहया बपतिस्मा देनेवाले का पैग़ाम

19 यह यहया की गवाही है जब यरूशलम के यहूदियों ने इमामों और लावियों को उसके पास भेजकर पूछा, “आप कौन हैं?”

20 उसने इनकार न किया बल्कि साफ़ तसलीम किया, “मैं मसीह नहीं हूँ।”

21 उन्होंने पूछा, “तो फिर आप कौन हैं? क्या आप इलियास हैं?”

उसने जवाब दिया, “नहीं, मैं वह नहीं हूँ।”

उन्होंने सवाल किया, “क्या आप आनेवाला नबी हैं?”

उसने कहा, “नहीं।”

22 “तो फिर हमें बताएँ कि आप कौन हैं? जिन्होंने हमें भेजा है उन्हें हमें कोई न कोई जवाब देना है। आप खुद अपने बारे में क्या कहते हैं?”

23 यहया ने यसायाह नबी का हवाला देकर जवाब दिया, “मैं रेगिस्तान में वह आवाज़ हूँ जो पुकार रही है, रब का रास्ता सीधा बनाओ।”

24 भेजे गए लोग फ़रीसी फिरके से ताल्लुक रखते थे। 25 उन्होंने पूछा, “अगर आप न मसीह हैं, न इलियास या आनेवाला नबी तो फिर आप बपतिस्मा क्यों दे रहे हैं?”

26 यहया ने जवाब दिया, “मैं तो पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन तुम्हारे दरमियान ही एक खड़ा है जिसको तुम नहीं जानते। 27 वही मेरे बाद आनेवाला है और मैं उसके जूतों के तसमे भी खोलने के लायक नहीं।”

28 यह यरदन के पार बैत-अनियाह में हुआ जहाँ यहया बपतिस्मा दे रहा था।

### अल्लाह का लेला

29 अगले दिन यहया ने ईसा को अपने पास आते देखा। उसने कहा, “देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है। 30 यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, ‘एक मेरे बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।’ 31 मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन मैं इसलिए आकर पानी से बपतिस्मा देने लगा ताकि वह इसराईल पर जाहिर हो जाए।”

32 और यहया ने यह गवाही दी, “मैंने देखा कि र्हल-कुदूस कबूतर की तरह आसमान पर से उतरकर उस पर ठहर गया। 33 मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए भेजा तो उसने मुझे बताया, ‘तू देखेगा कि र्हल-कुदूस उतरकर किसी पर ठहर जाएगा। यह वही होगा जो र्हल-कुदूस से बपतिस्मा देगा।’ 34 अब मैंने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का फ़रज़द है।”

### ईसा के पहले शागिर्द

35 अगले दिन यहया दुबारा वही खड़ा था। उसके दो शागिर्द साथ थे। 36 उसने ईसा को वहाँ से गुज़रते हुए देखा तो कहा, “देखो, यह अल्लाह का लोला है!”

37 उस की यह बात सुनकर उसके दो शागिर्द ईसा के पीछे हो लिए। 38 ईसा ने मुड़कर देखा कि यह मेरे पीछे चल रहे हैं तो उसने पूछा, “तुम क्या चाहते हो?”

उन्होंने कहा, “उस्ताद, आप कहीं ठहरे हुए हैं?”

39 उसने जवाब दिया, “आओ, खुद देख लो।” चुनौचे वह उसके साथ गए। उन्होंने वह जगह देखी जहाँ वह ठहरा हुआ था और दिन के बाकी वक्त उसके पास रहे। शाम के तकर्रीबन चार बज गए थे।

40 शमौन पतरस का भाई अंदरियास उन दो शागिर्दों में से एक था जो यहया की बात सुनकर ईसा के पीछे हो लिए थे।

41 अब उस की पहली मुलाकात उसके अपने भाई शमौन से हुई। उसने उसे बताया, “हमें मसीह मिल गया है।” (मसीह का मतलब ‘मसह किया हुआ शख्स’ है।) 42 फिर वह उसे ईसा के पास ले गया।

उसे देखकर ईसा ने कहा, “तू यहन्ना का बेटा शमौन है। तू कैफ़ा कहलाएगा।” (इसका यूनानी तरज़ुमा पतरस यानी पत्थर है।)

### ईसा फिलिप्पस और नतेल को बुलता है

43 अगले दिन ईसा ने गलील जाने का इरादा किया। फिलिप्पस से मिला तो उससे कहा, “मेरे पीछे हो लो।” 44 अंदरियास और पतरस की तरह फिलिप्पस का वतनी शहर बैत-सैदा था। 45 फिलिप्पस नतेल से मिला, और उसने उससे कहा, “हमें वही शख्स मिल गया जिसका जिज़्र मसा ने तौरत और नबियों ने अपने सहीफ़ों में किया है। उसका नाम ईसा बिन यूसुफ़ है और वह नासरत का रहनेवाला है।”

46 नतेल ने कहा, “नासरत? क्या नासरत से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती है?”

फिलिप्पस ने जवाब दिया, “आ और खुद देख लो।”

47 जब ईसा ने नतेल को आते देखा तो उसने कहा, “लो, यह सचचा इसराईली है जिसमें मकर नहीं।”

48 नतेल ने पूछा, “आप मुझे कहीं से जानते हैं?”

ईसा ने जवाब दिया, “इससे पहले कि फिलिप्पस ने तुझे बुलाया मैंने तुझे देखा। तू अंजीर के दरख्त के साये में था।”

49 नतेल ने कहा, “उस्ताद, आप अल्लाह के फ़रज़द है, आप इसराईल के बादशह है।”

50 ईसा ने उससे पूछा, “अच्छा, मेरी यह बात सुनकर कि मैंने तुझे अंजीर के दरख्त के साये में देखा तू ईमान लाया है? तू इससे कहीं बड़ी बातें देखेगा।” 51 उसने बात जारी रखी, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम आसमान को खुला और अल्लाह के फ़रिशतों को ऊपर चढ़ते और इब्ने-आदम पर उतरते देखोगे।”

## 2

### काना में शादी

1 तीसरे दिन गलील के गाँव काना में एक शादी हुई। ईसा की माँ वहाँ थी 2 और ईसा और उसके शागिर्दों को भी दावत दी गई थी। 3 मै ख़त्म हो गई तो ईसा की माँ ने उससे कहा, “उनके पास मै नहीं रही।”

4 ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, मेरा आपसे क्या वास्ता? मेरा वक्त अभी नहीं आया।”

5 लेकिन उस की माँ ने नौकरों को बताया, “जो कुछ वह तुमको बताए वह करो।” 6 वहाँ पत्थर के छः मटके पड़े थे जिन्हें यहूदी दीनी गुस्ल के लिए इस्तेमाल करते थे। हर एक में तकर्रीबन 100 लिटर की गुंजाइश थी। 7 ईसा ने नौकरों से कहा, “मटकों को पानी से भर दो।” चुनौचे उन्होंने उन्हें लबालब भर दिया। 8 फिर उसने कहा, “अब कुछ निकालकर ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जाओ।” उन्होंने ऐसा ही किया। 9 ज्योंही ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले ने वह पानी चखा जो मै में बदल गया था तो उसने दूल्हे को बुलाया। (उसे मालूम न था कि यह कहीं से आई है, अगरचे उन नौकरों को पता था जो उसे निकालकर लाए थे।) 10 उसने कहा, “हर मेज़बान पहले अच्छी क्रिस्म की मै पीने के लिए पेश

करता है। फिर जब लोगों को नशा चढ़ने लगे तो वह निसबतन घटिया किस्म की मै पिलाने लगता है। लेकिन आपने अच्छी मै अब तक रख छोड़ी है।”

11 यों ईसा ने गलील के काना में यह पहला इलाही निशान दिखाकर अपने जलाल का इज़हार किया। यह देखकर उसके शागिर्द उस पर ईमान लाए।

12 इसके बाद वह अपनी माँ, अपने भाइयों और अपने शागिर्दों के साथ कफ़र्नहूम को चला गया। वहाँ वह थोड़े दिन रहे।

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाता है

13 जब यहूदी ईद-फ़सह करीब आ गई तो ईसा यरूशलम चला गया। 14 बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उसने देखा कि कई लोग उसमें गाय-बैल, भेड़ें और कबूतर बेच रहे हैं। दूसरे मेज़ पर बैठे ग़ैरमुल्की सिक्के बैतुल-मुक़द्दस के सिक्कों में बदल रहे हैं।

15 फिर ईसा ने रस्सियों का कोड़ा बनाकर सबको बैतुल-मुक़द्दस से निकाल दिया। उसने भेड़ों और गाय-बैलों को बाहर हॉक दिया, पैसे बदलनेवालों के सिक्के बिखेर दिए और उनकी मेज़ें उलट दीं। 16 कबूतर बेचनेवालों को उसने कहा, “इसे ले जाओ। मेरे बाप के घर को मंडी में मत बदलो।” 17 यह देखकर ईसा के शागिर्दों को कलामे-मुक़द्दस का यह हवाला याद आया कि “तैरे घर की ग़ैरत मुझे खा जाएगी।”

18 यहूदियों ने जवाब में पूछा, “आप हमें क्या इलाही निशान दिखा सकते हैं ताकि हमें यकीन आए कि आपको यह करने का इख्तियार है?”

19 ईसा ने जवाब दिया, “इस मक़दिस को ढा दो तो मैं इसे तीन दिन के अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा।”

20 यहूदियों ने कहा, “बैतुल-मुक़द्दस को तामीर करने में 46 साल लग गए थे और आप उसे तीन दिन में तामीर करना चाहते हैं?”

21 लेकिन जब ईसा ने “इस मक़दिस” के अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए तो इसका मतलब उसका अपना बदन था। 22 उसके मुरदों में से जी उठने के बाद उसके शागिर्दों को उस की यह बात याद आई। फिर वह कलामे-मुक़द्दस और उन बातों पर ईमान लाए जो ईसा ने की थीं।

ईसा इनसानी फ़ितरत से वाकिफ़ है

23 जब ईसा फ़सह की ईद के लिए यरूशलम में था तो बहुत-से लोग उसके पेशकरदा इलाही निशानों को देखकर उसके नाम पर ईमान लाने लगे। 24 लेकिन उसको उन पर एतमाद नहीं था, क्योंकि वह सबको जानता था। 25 और उसे इनसान के बारे में किसी की गवाही की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि इनसान के अंदर क्या कुछ है।

### 3

नीकुदेमुस के साथ मुलाकात

1 फ़रीसी फिरके का एक आदमी बनाम नीकुदेमुस था जो यहूदी अदालते-आलिया का स्कन था। 2 वह रात के वक़्त ईसा के पास आया और कहा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप ऐसे उस्ताद हैं जो अल्लाह की तरफ़ से आए हैं, क्योंकि जो इलाही निशान आप दिखाते हैं वह सिर्फ़ ऐसा शख्स ही दिखा सकता है जिसके साथ अल्लाह हो।”

3 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख्स अल्लाह की बादशाही को देख सकता है जो नए सिरे से पैदा हुआ हो।”

4 नीकुदेमुस ने एतराज़ किया, “क्या मतलब? बूढ़ा आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता है? क्या वह दुबारा अपनी माँ के पेट में जाकर पैदा हो सकता है?”

5 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख्स अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकता है जो पानी और रूह से पैदा हुआ हो। 6 जो कुछ जिस्म से पैदा होता है वह जिस्मानी है, लेकिन जो रूह से पैदा होता है वह रूहानी है। 7 इसलिए तू ताज़ुब न कर कि मैं कहता हूँ, ‘तुम्हें नए सिरे से पैदा होना ज़रूर है।’ 8 हवा जहाँ चाहे चलती है। तू उस की आवाज़ तो सुनता है, लेकिन यह नहीं जानता कि कहाँ से आती और कहाँ को जाती है। यही हालत हर उस शख्स की है जो रूह से पैदा हुआ है।”

9 नीकुदेमुस ने पूछा, “यह किस तरह हो सकता है?”

10 ईसा ने जवाब दिया, “तू तो इसराईल का उस्ताद है। क्या इसके बावजूद भी यह बातें नहीं समझता? 11 मैं तुझको सच बताता हूँ, हम वह कुछ बयान करते हैं जो हम जानते हैं और उस की गवाही देते हैं जो हमने ख़ुद देखा है। तो भी तुम लोग हमारी गवाही कबूल नहीं करते। 12 मैंने तुमको दुनियावी बातें सुनाई हैं और तुम उन पर ईमान नहीं रखते। तो फिर तुम

क्योंकर ईमान लाओगे अगर तुम्हें आसमानी बातों के बारे में बताऊँ? 13 आसमान पर कोई नहीं चढ़ा सिवाए इब्ने-आदम के, जो आसमान से उतरा है।

14 और जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में सोंप को लकड़ी पर लटकाकर ऊँचा कर दिया उसी तरह ज़रूर है कि इब्ने-आदम को भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए, 15 ताकि हर एक को जो उस पर ईमान लाएगा अबदी ज़िंदगी मिल जाए। 16 क्योंकि अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। 17 क्योंकि अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को इसलिए दुनिया में नहीं भेजा कि वह दुनिया को मुज़रिम ठहराए बल्कि इसलिए कि वह उसे नजात दे।

18 जो भी उस पर ईमान लाया है उसे मुज़रिम नहीं करार दिया जाएगा, लेकिन जो ईमान नहीं रखता उसे मुज़रिम ठहराया जा चुका है। वजह यह है कि वह अल्लाह के इकलौते फ़रज़ंद के नाम पर ईमान नहीं लाया। 19 और लोगों को मुज़रिम ठहराने का सबब यह है कि गो अल्लाह का नूर इस दुनिया में आया, लेकिन लोगों ने नूर की निसबत अंधेरे को ज्यादा प्यार किया, क्योंकि उनके काम बुरे थे। 20 जो भी ग़लत काम करता है वह नूर से दुश्मनी रखता है और उसके करीब नहीं आता ताकि उसके बुरे कामों का पोल न खुल जाए। 21 लेकिन जो सच्चा काम करता है वह नूर के पास आता है ताकि जाहिर हो जाए कि उसके काम अल्लाह के वसीले से हुए हैं।”

### ईसा और यहया

22 इसके बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ यहूदिया के इलाक़े में गया। वहाँ वह कुछ देर के लिए उनके साथ ठहरा और लोगों को बपतिस्मा देने लगा। 23 उस वक़्त यहया भी शालेम के करीब वाके मक़ाम ऐनोन में बपतिस्मा दे रहा था, क्योंकि वहाँ पानी बहुत था। उस जगह पर लोग बपतिस्मा लेने के लिए आते रहे। 24 (यहया को अब तक जेल में नहीं डाला गया था।)

25 एक दिन यहया के शागिर्दों का किसी यहूदी के साथ मुबाहसा छिड़ गया। ज़ेरे-गौर मज़मून दीनी गुस्त था। 26 वह यहया के पास आए और कहने लगे, “उस्ताद, जिस आदमी से आपकी दरियाए-यरदन के पार मुलाक़ात हुई और जिसके बारे में आपने गवाही दी कि वह मसीह है, वह भी लोगों को बपतिस्मा दे रहा है। अब सब लोग उसी के पास जा रहे हैं।”

27 यहया ने जवाब दिया, “हर एक को सिर्फ़ वह कुछ मिलता है जो उसे आसमान से दिया जाता है। 28 तुम खुद इसके गवाह हो कि मैंने कहा, ‘मैं मसीह नहीं हूँ बल्कि मुझे उसके आगे आगे भेजा गया है।’ 29 दूल्हा ही दुल्हन से शादी करता है, और दुल्हन उसी की है। उसका दोस्त सिर्फ़ साथ खड़ा होता है। और दूल्हे की आवाज़ सुन सुनकर दोस्त की ख़ुशी की इंतहा नहीं होती। मैं भी ऐसा ही दोस्त हूँ जिसकी ख़ुशी पूरी हो गई है। 30 लाज़िम है कि वह बढ़ता जाए जबकि मैं घटता जाऊँ।”

### आसमान से आनेवाला

31 जो आसमान पर से आया है उसका इख़्तियार सब पर है। जो दुनिया से है उसका ताल्लुक़ दुनिया से ही है और वह दुनियावी बातें करता है। लेकिन जो आसमान पर से आया है उसका इख़्तियार सब पर है। 32 जो कुछ उसने खुद देखा और सुना है उसी की गवाही देता है। तो भी कोई उस की गवाही को कबूल नहीं करता। 33 लेकिन जिसने उसे कबूल किया उसने इसकी तसदीक़ की है कि अल्लाह सच्चा है। 34 जिसे अल्लाह ने भेजा है वह अल्लाह की बातें सुनाता है, क्योंकि अल्लाह अपना रूह नाप-तोलकर नहीं देता। 35 बाप अपने फ़रज़ंद को प्यार करता है, और उसने सब कुछ उसके सुपुर्द कर दिया है। 36 चुन्नें-चे जो अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान लाता है अबदी ज़िंदगी उस की है। लेकिन जो फ़रज़ंद को रद करे वह इस ज़िंदगी को नहीं देखेगा बल्कि अल्लाह का ग़ज़ब उस पर ठहरा रहेगा।”

## 4

### ईसा और सामरी औरत

1 फ़रीसियों को इतना मिली कि ईसा यहया की निसबत ज्यादा शागिर्द बना रहा और लोगों को बपतिस्मा दे रहा है, 2 हालाँकि वह खुद बपतिस्मा नहीं देता था बल्कि उसके शागिर्द। 3 जब ख़ुदावंद ईसा को यह बात मालूम हुई तो वह यहूदिया को छोड़कर गलील को वापस चला गया। 4 वहाँ पहुँचने के लिए उसे सामरिया में से गुज़रना था।

5 चलते चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया जिसका नाम सूरखार था। यह उस ज़मीन के करीब था जो याकूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी। 6 वहाँ याकूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक गया था, इसलिए वह कुएँ पर बैठ गया। दोपहर के तकरीबन बारह बज गए थे।

7 एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने उससे कहा, “मुझे ज़रा पानी पिला।” 8 (उसके शागिर्द खाना खरीदने के लिए शहर गए हुए थे।)

9 सामरी औरत ने ताज्जुब किया, क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक रखने से इनकार करते हैं। उसने कहा, “आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी पिलाने की दरखास्त कर सकते हैं?”

10 ईसा ने जवाब दिया, “अगर तू उस बख्शिश से वाकिफ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता है और तू उसे जानती जो तुझसे पानी माँग रहा है तो तू उससे माँगती और वह तुझे जिंदगी का पानी देता।”

11 खातून ने कहा, “खुदावंद, आपके पास तो बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको जिंदगी का यह पानी कहाँ से मिला? 12 क्या आप हमारे बाप याकूब से बड़े हैं जिसने हमें यह कुआँ दिया और जो खुद भी अपने बेटों और रेवडों समेत उसके पानी से लुत्फअंदोज़ हुआ?”

13 ईसा ने जवाब दिया, “जो भी इस पानी में से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। 14 लेकिन जिसे मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर अबदी जिंदगी मुँहैया करेगा।”

15 औरत ने उससे कहा, “खुदावंद, मुझे यह पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आकर पानी भरना नहीं पड़ेगा।”

16 ईसा ने कहा, “जा, अपने खाविंद को बुला ला।”

17 औरत ने जवाब दिया, “मेरा कोई खाविंद नहीं है।”

ईसा ने कहा, “तूने सहीह कहा कि मेरा खाविंद नहीं है, 18 क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिल्कुल दुस्त है।”

19 औरत ने कहा, “खुदावंद, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं। 20 हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत करते थे जबकि आप यहूदी लोग झरारा करते हैं कि यरूशालम वह मरकज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।”

21 ईसा ने जवाब दिया, “एरे खातून, यकीन जान कि वह वक्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशालम में। 22 तुम सामरी उस की परास्तिश करते हो जिसे नहीं जानते। इसके मुकाबले में हम उस की परास्तिश करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि नजात यहूदियों में से है। 23 लेकिन वह वक्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब हक्कीकी परस्तार रूह और सच्चवाई से बाप की परास्तिश करेंगे, क्योंकि बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। 24 अल्लाह रूह है, इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और सच्चवाई से उस की परास्तिश करें।”

25 औरत ने उससे कहा, “मुझे मालूम है कि मसीह यानी मसह किया हुआ शख्स आ रहा है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।”

26 इस पर ईसा ने उसे बताया, “मैं ही मसीह हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।”

27 उसी लमहे शागिर्द पहुँच गए। उन्होंने जब देखा कि ईसा एक औरत से बात कर रहा है तो ताज्जुब किया। लेकिन किसी ने पूछने की जुरत न की कि “आप क्या चाहते हैं?” या “आप इस औरत से क्यों बातें कर रहे हैं?”

28 औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली गई और वहाँ लोगों से कहने लगी, 29 “आओ, एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बता दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?” 30 चुनौचे वह शहर से निकलकर ईसा के पास आए।

31 इतने में शागिर्द जोर देकर ईसा से कहने लगे, “उस्ताद, कुछ खाना खा लें।”

32 लेकिन उसने जवाब दिया, “मेरे पास खाने की ऐसी चीज़ है जिससे तुम वाकिफ नहीं हो।”

33 शागिर्द आपस में कहने लगे, “क्या कोई उसके पास खाना लेकर आया?”

34 लेकिन ईसा ने उनसे कहा, “मेरा खाना यह है कि उस की मरज़ी पूरी करूँ जिसने मुझे भेजा है और उसका काम तकमील तक पहुँचाऊँ। 35 तुम तो खुद कहते हो, ‘मज़ीद चार महीने तक फसल पक जाएगी।’ लेकिन मैं तुमको बताता हूँ, अपनी नज़र उठाकर खेतों पर गौर करो। फसल पक गई है और कटाई के लिए तैयार है। 36 फसल की कटाई शुरू हो चुकी है। कटाई करनेवाले को मजदूरी मिल रही है और वह फसल को अबदी जिंदगी के लिए जमा कर रहा है ताकि बीज बोनेवाला और कटाई करनेवाला दोनों मिलकर खुशी मना सकें। 37 यों यह कहावत दुस्त साबित हो जाती है कि ‘एक बीज बोता और दूसरा फसल काटता है।’ 38 मैंने तुमको उस फसल की कटाई करने के लिए भेज दिया है जिसे तैयार करने के लिए तुमने मेहनत नहीं की। औरों ने खूब मेहनत की है और तुम इससे फायदा उठाकर फसल जमा कर सकते हो।”

39 उस शहर के बहुत-से सामरी ईसा पर ईमान आए। वजह यह थी कि उस औरत ने उसके बारे में यह गवाही दी थी, “उसने मुझे सब कुछ बता दिया जो मैंने किया है।” 40 जब वह उसके पास आए तो उन्होंने मिन्नत की, “हमारे पास ठहरें।” चुनौचे वह दो दिन वहाँ रहा।

41 और उस की बातें सुनकर मज़ीद बहुत-से लोग ईमान लाए। 42 उन्होंने औरत से कहा, “अब हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इसलिए कि हमने खुद सुन और जान लिया है कि वाकई दुनिया का नजातदहिदा यही है।”

अफ़सर के बेटे की शफ़ा

43 वहाँ दो दिन गुज़ारने के बाद ईसा गलील को चला गया। 44 उसने खुद गवाही देकर कहा था कि नबी की उसके अपने वतन में इज़्जत नहीं होती। 45 अब जब वह गलील पहुँचा तो मकामी लोगों ने उसे खुशआमदीद कहा, क्योंकि वह फसह की ईद मनाने के लिए यरूशालम आए थे और उन्होंने सब कुछ देखा जो ईसा ने वहाँ किया था।

46 फिर वह दुबारा कानान में आया जहाँ उसने पानी को मै में बदल दिया था। उस इलाके में एक शाही अफसर था जिसका बेटा कफ़र्नहम में बीमार पड़ा था। 47 जब उसे इतला मिली कि ईसा यहूदिया से गलील पहुँच गया है तो वह उसके पास गया और गुज़ारिश की, “कानान से मेरे पास आकर मेरे बेटे को शफ़ा दें, क्योंकि वह मरने को है।” 48 ईसा ने उससे कहा, “जब तक तुम लोग इलाही निशान और मोजिज़े नहीं देखते ईमान नहीं लाते।”

49 शाही अफसर ने कहा, “खुदावंद आएँ, इससे पहले कि मेरा लडका मर जाए।”

50 ईसा ने जवाब दिया, “जा, तेरा बेटा जिंदा रहेगा।”

आदमी ईसा की बात पर ईमान लाया और अपने घर चला गया। 51 वह अभी रास्ते में था कि उसके नौकर उससे मिले। उन्होंने उसे इतला दी कि बेटा जिंदा है।

52 उसने उनसे पूछ-गछ की कि उस की तबियत किस वक़्त से बेहतर होने लगी थी। उन्होंने जवाब दिया, “बुखार कल दोपहर एक बजे उतर गया।” 53 फिर बाप ने जान लिया कि उसी वक़्त ईसा ने उसे बताया था, “तुम्हारा बेटा जिंदा रहेगा।” और वह अपने पूरे घराने समेत उस पर ईमान लाया।

54 यों ईसा ने अपना दूसरा इलाही निशान उस वक़्त दिखाया जब वह यहूदिया से गलील में आया था।

## 5

बैतुल-मुक़द्दस के हौज़ पर शफ़ा

1 कुछ देर के बाद ईसा किसी यहूदी ईद के मौके पर यरूशालम गया। 2 शहर में एक हौज़ था जिसका नाम अरामी ज़बान में बैत-हसदा था। उसके पाँच बड़े बरामदे थे और वह शहर के उस दरवाज़े के करीब था जिसका नाम ‘भेड़ों का दरवाज़ा’ है। 3 इन बरामदों में बेशुमार माज़ूर लोग पड़े रहते थे। यह अंधे, लँगड़े और मफ़्लूज़ पानी के हिलने के इंतज़ार में रहते थे। 4 [क्योंकि गाहे बगाहे रब का फ़रिशता उतरकर पानी को हिला देता था। जो भी उस वक़्त उसमें पहले दाखिल हो जाता उसे शफ़ा मिल जाती थी खाह उस की बीमारी कोई भी क्यों न होती।] 5 मरीज़ों में से एक आदमी 38 साल से माज़ूर था। 6 जब ईसा ने उसे वहाँ पड़ा देखा और उसे मालूम हुआ कि यह इतनी देर से इस हालत में है तो उसने पूछा, “क्या तू तनदुस्त होना चाहता है?”

7 उसने जवाब दिया, “खुदावंद, यह मुश्किल है। मेरा कोई साथी नहीं जो मुझे उठाकर पानी में जब उसे हिलाया जाता है ले जाए। इसलिए मेरे वहाँ पहुँचने में इतनी देर लग जाती है कि कोई और मुझसे पहले पानी में उतर जाता है।”

8 ईसा ने कहा, “उठ, अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर!” 9 वह आदमी फौरन बहाल हो गया। उसने अपना बिस्तर उठाया और चलने-फिरने लगा।

यह वाकिया सबत के दिन हुआ। 10 इसलिए यहूदियों ने शफ़ायाब आदमी को बताया, “आज सबत का दिन है। आज बिस्तर उठाना मना है।”

11 लेकिन उसने जवाब दिया, “जिस आदमी ने मुझे शफ़ा दी उसने मुझे बताया, ‘अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर।’”

12 उन्होंने सवाल किया, “वह कौन है जिसने तुझे यह कुछ बताया?” 13 लेकिन शफ़ायाब आदमी को मालूम न था, क्योंकि ईसा हज़ूम के सबब से चुपके से वहाँ से चला गया था।

14 बाद में ईसा उसे बैतुल-मुक़द्दस में मिला। उसने कहा, “अब तू बहाल हो गया है। फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो कि तेरा हाल पहले से भी बदतर हो जाए।”

15 उस आदमी ने उसे छोड़कर यहूदियों को इतला दी, “ईसा ने मुझे शफ़ा दी।” 16 इस पर यहूदी उसको सताने लगे, क्योंकि उसने उस आदमी को सबत के दिन बहाल किया था। 17 लेकिन ईसा ने उन्हें जवाब दिया, “मेरा बाप आज तक काम करता आया है, और मैं भी ऐसा करता हूँ।”

18 यह सुनकर यहूदी उसे कत्ल करने की मज़ीद कोशिश करने लगे, क्योंकि उसने न सिर्फ़ सबत के दिन को मनसूख़ करार दिया था बल्कि अल्लाह को अपना बाप कहकर अपने आपको अल्लाह के बराबर ठहराया था।

फ़रज़ंद का इख़्तियार



19 ईसा ने उन्हें जवाब दिया, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि फ़रज़ंद अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता। वह सिर्फ़ वह कुछ करता है जो वह बाप को करते देखता है। जो कुछ बाप करता है वही फ़रज़ंद भी करता है, 20 क्योंकि बाप फ़रज़ंद को प्यार करता और उसे सब कुछ दिखाता है जो वह ख़ुद करता है। हाँ, वह फ़रज़ंद को इनसे भी अज़ीम काम दिखाएगा। फिर तुम और भी ज़्यादा हैरतज़दा होगे। 21 क्योंकि जिस तरह बाप मुरदों को ज़िंदा करता है उसी तरह फ़रज़ंद भी जिन्हें चाहता है ज़िंदा कर देता है। 22 और बाप किसी की भी अदालत नहीं करता बल्कि उसने अदालत का पूरा इंतज़ाम फ़रज़ंद के सुपर्द कर दिया है 23 ताकि सब उसी तरह फ़रज़ंद की इज़्ज़त करें जिस तरह वह बाप की इज़्ज़त करते हैं। जो फ़रज़ंद की इज़्ज़त नहीं करता वह बाप की भी इज़्ज़त नहीं करता जिसने उसे भेजा है।

24 मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी मेरी बात सुनकर उस पर इमान लाता है जिसने मुझे भेजा है अबदी ज़िंदगी उस की है। उसे मुज़रिम नहीं ठहराया जाएगा बल्कि वह मौत की गिरिफ्त से निकलकर ज़िंदगी में दाखिल हो गया है। 25 मैं तुमको सच बताता हूँ कि एक वक्त आनेवाला है बल्कि आ चुका है जब मुरदे अल्लाह के फ़रज़ंद की आवाज़ सुनेंगे। और जितने सुनेंगे वह ज़िंदा हो जाएंगे। 26 क्योंकि जिस तरह बाप ज़िंदगी का मंबा है उसी तरह उसने अपने फ़रज़ंद को ज़िंदगी का मंबा बना दिया है। 27 साथ साथ उसने उसे अदालत करने का इख्तियार भी दे दिया है, क्योंकि वह इन्ने-आदम है। 28 यह सुनकर ताञ्जुब न करो क्योंकि एक वक्त आ रहा है जब तमाम मुरदे उस की आवाज़ सुनकर 29 कब्रों में से निकल आएंगे। जिन्होंने नेक काम किया वह जी उठकर ज़िंदगी पाएँगे जबकि जिन्होंने बुरा काम किया वह जी तो उठेंगे लेकिन उनकी अदालत की जाएगी।

### ईसा के गवाह

30 मैं अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता बल्कि जो कुछ बाप से सुनता हूँ उसके मुताबिक अदालत करता हूँ। और मेरी अदालत रास्त है क्योंकि मैं अपनी मरज़ी करने की कोशिश नहीं करता बल्कि उसी की जिसने मुझे भेजा है।

31 अगर मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता तो मेरी गवाही मोतबर न होती। 32 लेकिन एक और है जो मेरे बारे में गवाही दे रहा है और मैं जानता हूँ कि मेरे बारे में उस की गवाही सच्ची और मोतबर है। 33 तुमने पता करने के लिए अपने लोगों को यहया के पास भेजा है और उसने हकीकत की तसदीक की है। 34 बेशक मुझे किसी इंसानी गवाह की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं यह इसलिए बता रहा हूँ ताकि तुमको नजात मिल जाए। 35 यहया एक जलता हुआ चरागा था जो रौशनी देता था, और कुछ देर के लिए तुमने उस की रौशनी में खुशी मनाना पसंद किया। 36 लेकिन मेरे पास एक और गवाह है जो यहया की निसबत ज़्यादा अहम है यानी वह काम जो बाप ने मुझे मुकम्मल करने के लिए दे दिया। यही काम जो मैं कर रहा हूँ मेरे बारे में गवाही देता है कि बाप ने मुझे भेजा है। 37 इसके अलावा बाप ने ख़ुद जिसने मुझे भेजा है मेरे बारे में गवाही दी है। अफ़सोस, तुमने कभी उस की आवाज़ नहीं सुनी, न उस की शक्लो-सूरत देखी, 38 और उसका कलाम तुम्हारे अंदर नहीं रहता, क्योंकि तुम उस पर इमान नहीं रखते जिसे उसने भेजा है। 39 तुम अपने सहीफ़ों में ढूँढ़ते रहते हो क्योंकि समझते हो कि उनसे तुम्हें अबदी ज़िंदगी हासिल है। लेकिन यही मेरे बारे में गवाही देते हैं! 40 तो भी तुम ज़िंदगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते।

41 मैं इनसानों से इज़्ज़त नहीं चाहता, 42 लेकिन मैं तुमको जानता हूँ कि तुममें अल्लाह की मुहब्बत नहीं। 43 अगरचे मैं अपने बाप के नाम में आया हूँ तो भी तुम मुझे क़बूल नहीं करते। इसके मुक़ाबले में अगर कोई अपने नाम में आया तो तुम उसे क़बूल करोगे। 44 कोई अजब नहीं कि तुम इमान नहीं ला सकते। क्योंकि तुम एक दूसरे से इज़्ज़त चाहते हो जबकि तुम वह इज़्ज़त पाने की कोशिश ही नहीं करते जो वाहिद ख़ुदा से मिलती है। 45 लेकिन यह न समझो कि मैं बाप के सामने तुम पर इलज़ाम लगाऊँगा। एक और है जो तुम पर इलज़ाम लगा रहा है यानी मूसा, जिससे तुम उम्मीद रखते हो। 46 अगर तुम वाकई मूसा पर इमान रखते तो ज़रूर मुझ पर भी इमान रखते, क्योंकि उसने मेरे ही बारे में लिखा। 47 लेकिन चूँकि तुम वह कुछ नहीं मानते जो उसने लिखा है तो मेरी बातें क्योंकर मान सकते हो!"

## 6

### ईसा बड़े हुज़म को खाना खिलाता है

1 इसके बाद ईसा ने गलील की झील को पार किया। (झील का दूसरा नाम तिबरियास था।) 2 एक बड़ा हुज़म उसके पीछे लग गया था, क्योंकि उसने इलाही निशान दिखाकर मरीजों को शफा दी थी और लोगों ने इसका मुशाहदा किया था। 3 फिर ईसा पहाड़ पर चढ़कर अपने शागिर्दों के साथ बैठ गया। 4 (यहूदी ईद-फ़सह करीब आ गई थी।) 5 वहाँ बैठे ईसा ने अपनी नज़र उठाई तो देखा कि एक बड़ा हुज़म पहुँच रहा है। उसने फिलिप्पस से पूछा, "हम कहाँ से खाना खरीदें ताकि उन्हें खिलाएँ?" 6 (यह उसने फिलिप्पस को आजमाने के लिए कहा। ख़ुद तो वह जानता था कि क्या करेगा।)

7 फिलिप्पस ने जवाब दिया, "अगर हर एक को सिर्फ़ थोड़ा-सा मिले तो भी चौंकी के 200 सिक्के काफ़ी नहीं होंगे।"

8 फिर शमीन पतरस का भाई अंदरियास बोल उठा, 9 “यहाँ एक लडका है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। मगर इतने लोगों में यह क्या है!”

10 ईसा ने कहा, “लोगों को बिठा दो।” उस जगह बहुत घास थी। चुनौचे सब बैठ गए। (सिर्फ मर्दों की तादाद 5,000 थी।) 11 ईसा ने रोटियाँ लेकर शुक्रगुजारी की दुआ की और उन्हें बँटे हुए लोगों में तकसीम करवाया। यही कुछ उसने मछलियों के साथ भी किया। और सबने जी भरकर रोटी खाई। 12 जब सब सेर हो गए तो ईसा ने शागिर्दों को बताया, “अब बचे हुए टुकड़े जमा करो ताकि कुछ जाया न हो जाए।” 13 जब उन्होंने बचा हुआ खाना इकट्ठा किया तो जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से बारह टोकरे भर गए।

14 जब लोगों ने ईसा को यह इलाही निशान दिखाते देखा तो उन्होंने कहा, “यकीनन यह वही नबी है जिसे दुनिया में आना था।” 15 ईसा को मालूम हुआ कि वह आकर उसे जबरदस्ती बादशाह बनाना चाहते हैं, इसलिए वह दुबारा उनसे अलग होकर अकेला ही किसी पहाड़ पर चढ़ गया।

### ईसा पानी पर चलता है

16 शाम को शागिर्द झील के पास गए 17 और करती पर सवार होकर झील के पार शहर कफ़र्नहम के लिए रवाना हुए। अधेरा हो चुका था और ईसा अब तक उनके पास वापस नहीं आया था। 18 तेज़ हवा के बाइस झील में लहरें उठने लगीं। 19 करती को खेते खेते शागिर्द चार या पाँच किलोमीटर का सफ़र तय कर चुके थे कि अचानक ईसा नज़र आया। वह पानी पर चलता हुआ करती की तरफ़ बढ़ रहा था। शागिर्द दहशतज़दा हो गए। 20 लेकिन उसने उनसे कहा, “मैं ही हूँ। खौफ न करो।” 21 वह उसे करती में बिठाने पर आमदा हुए। और करती उसी लमहे उस जगह पहुँच गई जहाँ वह जाना चाहते थे।

### लोग ईसा को ढूँढते हैं

22 हज़म तो झील के पार रह गया था। अगले दिन लोगों को पता चला कि शागिर्द एक ही करती लेकर चले गए हैं और कि उस वक़्त ईसा करती में नहीं था। 23 फिर कुछ कश्तियों तिबरियास से उस मक़ाम के करीब पहुँची जहाँ खुदावंद ईसा ने रोटी के लिए शुक्रगुजारी की दुआ करके उसे लोगों को खिलाया था। 24 जब लोगों ने देखा कि न ईसा और न उसके शागिर्द वहाँ हैं तो वह कश्तियों पर सवार होकर ईसा को ढूँढते ढूँढते कफ़र्नहम पहुँचे।

### ईसा जिंदगी की रोटी है

25 जब उन्होंने उसे झील के पार पाया तो पूछा, “उस्ताद, आप किस तरह यहाँ पहुँच गए?”

26 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँढ रहे कि इलाही निशान देखे हैं बल्कि इसलिए कि तुमने जी भरकर रोटी खाई है। 27 ऐसी खुराक के लिए जिद्द-जहद न करो जो गल-सड़ जाती है, बल्कि ऐसी के लिए जो अब्दी जिंदगी तक कायम रहती है और जो इब्ने-आदम तुमको देगा, क्योंकि खुदा बाप ने उस पर अपनी तसदीक की मुहर लगाई है।”

28 इस पर उन्होंने पूछा, “हमें क्या करना चाहिए ताकि अल्लाह का मतलबा काम करें?”

29 ईसा ने जवाब दिया, “अल्लाह का काम यह है कि तुम उस पर ईमान लाओ जिसे उसने भेजा है।”

30 उन्होंने कहा, “तो फिर आप क्या इलाही निशान दिखाएँगे जिसे देखकर हम आप पर ईमान लाएँ? आप क्या काम सरंजाम देंगे? 31 हमारे बापदादा ने तो रेगिस्तान में मन खयाया। चुनौचे कलामे-मुकद्दस में लिखा है कि मूसा ने उन्हें आसमान से रोटी खिलाई।”

32 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि खुद मूसा ने तुमको आसमान से रोटी नहीं खिलाई बल्कि मेरे बाप ने। वही तुमको आसमान से हकीक़ी रोटी देता है। 33 क्योंकि अल्लाह की रोटी वह शख्स है जो आसमान पर से उतरकर दुनिया को जिंदगी बरख़शा है।”

34 उन्होंने कहा, “खुदावंद, हमें यह रोटी हर वक़्त दिया करें।”

35 जवाब में ईसा ने कहा, “मैं ही जिंदगी की रोटी हूँ। जो मेरे पास आए उसे फिर कभी भूक नहीं लगेगी। और जो मुझ पर ईमान लाए उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी। 36 लेकिन जिस तरह मैं तुमको बता चुका हूँ, तुमने मुझे देखा और फिर भी ईमान नहीं लाए। 37 जितने भी बाप ने मुझे दिए हैं वह मेरे पास आएँगे और जो भी मेरे पास आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल न दूँगा। 38 क्योंकि मैं अपनी मरजी पूरी करने के लिए आसमान से नहीं उतरा बल्कि उस की जिसने मुझे भेजा है। 39 और जिसने मुझे भेजा उस की मरजी यह है कि जितने भी उसने मुझे दिए हैं उनमें से मैं एक को भी खो न दूँ बल्कि सबको क्रियामत के दिन मुरदों में से फिर जिंदा करूँ। 40 क्योंकि मेरे बाप की मरजी यही है कि जो भी फ़रज़द को देखकर उस पर ईमान लाए उसे अब्दी जिंदगी हासिल हो। ऐसे शख्स को मैं क्रियामत के दिन मुरदों में से फिर जिंदा करूँगा।”

41 यह सुनकर यहदी इसलिए बुड़बुडाने लगे कि उसने कहा था, “मैं ही वह रोटी हूँ जो आसमान पर से उतर आई है।”  
42 उन्होंने एतराज किया, “क्या यह ईसा बिन यूसुफ नहीं, जिसके बाप और माँ से हम वाकिफ हैं? वह क्योंकर कह सकता है कि मैं आसमान से उतरा हूँ?”

43 ईसा ने जवाब में कहा, “आपस में मत बुड़बुडाओ। 44 सिर्फ वह शख्स मेरे पास आ सकता है जिसे बाप जिसने मुझे भेजा है मेरे पास खीच लाया है। ऐसे शख्स को मैं क्रियामत के दिन मरदों में से फिर जिंदा करूँगा। 45 नबियों के सहीफों में लिखा है, ‘सब अल्लाह से तालीम पाएँगे।’ जो भी अल्लाह की सुनकर उससे सीखता है वह मेरे पास आ जाता है। 46 इसका मतलब यह नहीं कि किसी ने कभी बाप को देखा। सिर्फ एक ही ने बाप को देखा है, वही जो अल्लाह की तरफ से है। 47 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो ईमान रखता है उसे अबदी जिंदगी हासिल है। 48 जिंदगी की रोटी मैं हूँ। 49 तुम्हारे बापदादा रेगिस्तान में मन खाते रहे, तो भी वह मर गए। 50 लेकिन यहाँ आसमान से उतरनेवाली ऐसी रोटी है जिसे खाकर इनसान नहीं मरता। 51 मैं ही जिंदगी की वह रोटी हूँ जो आसमान से उतर आई है। जो इस रोटी से खाए वह अबद तक जिंदा रहेगा। और यह रोटी मेरा गोश्त है जो मैं दुनिया को जिंदगी मुहैया करने की खातिर पेश करूँगा।”

52 यहदी बड़ी सरगर्मी से एक दूसरे से बहस करने लगे, “यह आदमी हमें किस तरह अपना गोश्त खिला सकता है?”

53 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि सिर्फ इन्ने-आदम का गोश्त खाने और उसका खून पीने ही से तुममें जिंदगी होगी। 54 जो मेरा गोश्त खाए और मेरा खून पीए अबदी जिंदगी उस की है और मैं उसे क्रियामत के दिन मरदों में से फिर जिंदा करूँगा। 55 क्योंकि मेरा गोश्त हकीकी खुराक और मेरा खून हकीकी पीने की चीज है। 56 जो मेरा गोश्त खाता और मेरा खून पीता है वह मुझमें कायम रहता है और मैं उसमें। 57 मैं उस जिंदा बाप की वजह से जिंदा हूँ जिसने मुझे भेजा। इसी तरह जो मुझे खाता है वह मेरी ही वजह से जिंदा रहेगा। 58 यही वह रोटी है जो आसमान से उतरी है। तुम्हारे बापदादा मन खाने के बावजूद मर गए, लेकिन जो यह रोटी खाएगा वह अबद तक जिंदा रहेगा।”

59 ईसा ने यह बातें उस वक़्त की जब वह कफ़र्नहम में यहदी इबादतखाने में तालीम दे रहा था।

### अबदी जिंदगी की बातें

60 यह सुनकर उसके बहुत-से शागिर्दों ने कहा, “यह बातें ना-गवार हैं। कौन इन्हें सुन सकता है!”

61 ईसा को मालूम था कि मेरे शागिर्दों में बरे में बुड़बुडा रहे हैं, इसलिए उसने कहा, “क्या तुमको इन बातों से ठेस लगी है? 62 तो फिर तुम क्या सोचोगे जब इन्ने-आदम को ऊपर जाते देखोगे जहाँ वह पहले था? 63 अल्लाह का रूह ही जिंदा करता है जबकि जिस्मानी ताकत का कोई फायदा नहीं होता। जो बातें मैंने तुमको बताई हैं वह रूह और जिंदगी हैं। 64 लेकिन तुममें से कुछ हैं जो ईमान नहीं रखते।” (ईसा तो शुरू से ही जानता था कि कौन कौन ईमान नहीं रखते और कौन मुझे दुश्मन के हवाले करेगा।) 65 फिर उसने कहा, “इसलिए मैंने तुमको बताया कि सिर्फ वह शख्स मेरे पास आ सकता है जिसे बाप की तरफ से यह तौफ़ीक़ मिले।”

66 उस वक़्त से उसके बहुत-से शागिर्द उलटे पाँव फिर गए और आइंदा को उसके साथ न चले। 67 तब ईसा ने बारह शागिर्दों से पूछा, “क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?”

68 शमौन पतरस ने जवाब दिया, “खुदावंद, हम किसके पास जाएँ? अबदी जिंदगी की बातें तो आप ही के पास हैं। 69 और हमने ईमान लाकर जान लिया है कि आप अल्लाह के कुदूस हैं।”

70 जवाब में ईसा ने कहा, “क्या मैंने तुम बारह को नहीं चुना? तो भी तुममें से एक शख्स शैतान है।” 71 (वह शमौन इस्करियोती के बेटे यहदाह की तरफ इशारा कर रहा था जो बारह शागिर्दों में से एक था और जिसने बाद में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।)

## 7

### ईसा और उसके भाई

1 इसके बाद ईसा ने गलील के इलाके में इधर उधर सफ़र किया। वह यहदिया में फिरना नहीं चाहता था क्योंकि वहाँ के यहदी उसे कत्ल करने का मौका ढूँढ रहे थे। 2 लेकिन जब यहदी ईद बनाम झोंपडियों की ईद करीब आई 3 तो उसके भाइयों ने उससे कहा, “यह जगह छोड़कर यहदिया चला जा ताकि तेरे पैरोकार भी वह मोजिजे देख लें जो तू करता है। 4 जो शख्स चाहता है कि अवािम उसे जाने वह पोशीदीगी में काम नहीं करता। अगर तू इस किस्म का मोजिजाना काम करता है तो अपने आपको दुनिया पर जाहिर कर।” 5 (असल में ईसा के भाई भी उस पर ईमान नहीं रखते थे।)

6 ईसा ने उन्हें बताया, “अभी वह वक़्त नहीं आया जो मेरे लिए मौजूद है। लेकिन तुम जा सकते हो, तुम्हारे लिए हर वक़्त मौजूद है। 7 दुनिया तुमसे दुश्मनी नहीं रख सकती। लेकिन मुझसे वह दुश्मनी रखती है, क्योंकि मैं उसके बारे में यह गवाही

देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं। 8 तुम खुद ईद पर जाओ। मैं नहीं जाऊँगा, क्योंकि अभी वह वक्त नहीं आया जो मेरे लिए मौजूद है।” 9 यह कहकर वह गलील में ठहरा रहा।

### इसा झोंपड़ियों की ईद पर

10 लेकिन बाद में, जब उसके भाई ईद पर जा चुके थे तो वह भी गया, अगरचे अलानिया नहीं बल्कि खूफ्रिया तौर पर। 11 यहूदी ईद के मौके पर उसे तलाश कर रहे थे। वह पूछते रहे, “वह आदमी कहाँ है?”

12 हुजूम में से कई लोग ईसा के बारे में बुड़बुड़ा रहे थे। बाज़ ने कहा, “वह अच्छा बंदा है।” लेकिन दूसरों ने एतराज़ किया, “नहीं, वह अवाग को बहकाता है।” 13 लेकिन किसी ने भी उसके बारे में खुलकर बात न की, क्योंकि वह यहूदियों से डरते थे।

14 ईद का आधा हिस्सा गुज़र चुका था जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर तालीम देने लगा। 15 उसे सुनकर यहूदी हैरतज़दा हुए और कहा, “यह आदमी किस तरह इतना इल्म रखता है हालाँकि इसने कहीं से भी तालीम हासिल नहीं की!”

16 ईसा ने जवाब दिया, “जो तालीम मैं देता हूँ वह मेरी अपनी नहीं बल्कि उस की है जिसने मुझे भेजा। 17 जो उस की मरज़ी पूरी करने के लिए तैयार है वह जान लेगा कि मेरी तालीम अल्लाह की तरफ से है या कि मेरी अपनी तरफ से। 18 जो अपनी तरफ से बोलता है वह अपनी ही इज़ज़त चाहता है। लेकिन जो अपने भेजनेवाले की इज़ज़तो-जलाल बढ़ाने की कोशिश करता है वह सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं है। 19 क्या मूसा ने तुमको शरीअत नहीं दी? तो फिर तुम मुझे कत्ल करने की कोशिश क्यों कर रहे हो?”

20 हुजूम ने जवाब दिया, “तुम किसी बदरूह की गिरिफ्त में हो। कौन तुम्हें कत्ल करने की कोशिश कर रहा है?”

21 ईसा ने उनसे कहा, “मैंने सबत के दिन एक ही मोजिज़ा किया और तुम सब हैरतज़दा हुए। 22 लेकिन तुम भी सबत के दिन काम करते हो। तुम उस दिन अपने बच्चों का खतना करवाते हो। और यह रस्म मूसा की शरीअत के मुताबिक ही है, अगरचे यह मूसा से नहीं बल्कि हमारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक और याकूब से शुरू हुई। 23 क्योंकि शरीअत के मुताबिक लाज़िम है कि बच्चे का खतना आठवें दिन करवाया जाए, और अगर यह दिन सबत हो तो तुम फिर भी अपने बच्चे का खतना करवाते हो ताकि शरीअत की खिलाफ़वर्ज़ी न हो जाए। तो फिर तुम मुझसे क्यों नाराज़ हो कि मैंने सबत के दिन एक आदमी के पूरे जिस्म को शफ़ा दी? 24 जाहिरी सरत की बिना पर फ़ैसला न करो बल्कि बातिनी हालत पहचानकर मुंसिफाना फ़ैसला करो।”

### क्या ईसा ही मसीह है?

25 उस वक्त यरूशालम के कुछ रहनेवाले कहने लगे, “क्या यह वह आदमी नहीं है जिसे लोग कत्ल करने की कोशिश कर रहे हैं? 26 ताहम वह यहाँ खुलकर बात कर रहा है और कोई भी उसे रोकने की कोशिश नहीं कर रहा। क्या हमारे राहनुमाओं ने हक़ीक़त में जान लिया है कि यह मसीह है? 27 लेकिन जब मसीह आया तो किसी को भी मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से है। यह आदमी फ़रक़ है। हम तो जानते हैं कि यह कहाँ से है।”

28 ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था। अब वह पुकार उठा, “तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ। लेकिन मैं अपनी तरफ से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है वह सच्चा है और उसे तुम नहीं जानते। 29 लेकिन मैं उसे जानता हूँ, क्योंकि मैं उस की तरफ से हूँ और उसने मुझे भेजा है।”

30 तब उन्होंने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश की। लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका, क्योंकि अभी उसका वक्त नहीं आया था। 31 तो भी हुजूम के कई लोग उस पर ईमान लाए, क्योंकि उन्होंने कहा, “जब मसीह आया तो क्या वह इस आदमी से ज़्यादा इलाही निशान दिखाएगा?”

### पहरेदार उसे गिरिफ़्तार करने आते हैं

32 फ़रीसियों ने देखा कि हुजूम में इस किस्म की बातें धीमी धीमी आवाज़ के साथ फैल रही हैं। चुनौचे उन्होंने राहनुमा इमामों के साथ मिलकर बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार ईसा को गिरिफ़्तार करने के लिए भेजे। 33 लेकिन ईसा ने कहा, “मैं सिर्फ़ थोड़ी देर और तुम्हारे साथ रहूँगा, फिर मैं उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है। 34 उस वक्त तुम मुझे ढूँडोगे, मगर नहीं पाओगे, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।”

35 यहूदी आपस में कहने लगे, “यह कहाँ जाना चाहता है जहाँ हम उसे नहीं पा सकेंगे? क्या वह बैरुसे-मुल्क जाना चाहता है, वहाँ जहाँ हमारे लोग यूनानियों में बिखरी हालत में रहते हैं? क्या वह यूनानियों को तालीम देना चाहता है? 36 मतलब क्या है जब वह कहता है, ‘तुम मुझे ढूँडोगे मगर नहीं पाओगे’ और ‘जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।’”

### ज़िंदगी के पानी की नहरें

37 ईद के आखिरी दिन जो सबसे अहम है ईसा खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “जो प्यासा हो वह मेरे पास आए, 38 और जो मुझ पर ईमान लाए वह पिए। कलामे-मुकद्दस के मुताबिक ‘उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की नहरें बह निकलेंगी।’” 39 (“ज़िंदगी के पानी” से वह रूहल-कुदूस की तरफ़ इशारा कर रहा था जो उनको हासिल होता है जो ईसा पर ईमान लाते हैं। लेकिन वह उस वक़्त तक नाज़िल नहीं हुआ था, क्योंकि ईसा अब तक अपने जलाल को न पहुँचा था।)

सुननेवालों में नाइतफ़ाक़ी

40 ईसा की यह बातें सुनकर हज़म के कुछ लोगों ने कहा, “यह आदमी वाक़ई वह नबी है जिसके इंतज़ार में हम हैं।”

41 दूसरों ने कहा, “यह मसीह है।”

लेकिन बाज़ ने एतराज़ किया, “मसीह गलील से किस तरह आ सकता है! 42 पाक कलाम तो बयान करता है कि मसीह दाऊद के खानदान और बैत-लहम से आएगा, उस गाँव से जहाँ दाऊद बादशाह पैदा हुआ।” 43 यों ईसा की वजह से लोगों में फूट पड़ गई। 44 कुछ तो उसे गिरिफ़्तार करना चाहते थे, लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका।

यहूदी राहनुमा ईसा पर ईमान नहीं रखते

45 इतने में बैतुल-मुकद्दस के पहरेदार राहनुमा इमामों और फ़रीसियों के पास वापस आए। वह ईसा को लेकर नहीं आए थे, इसलिए राहनुमाओं ने पूछा, “तुम उसे क्यों नहीं लाए?”

46 पहरेदारों ने जवाब दिया, “किस्ती ने कभी इस आदमी की तरह बात नहीं की।”

47 फ़रीसियों ने तंज़न कहा, “क्या तुमको भी बहका दिया गया है? 48 क्या राहनुमाओ या फ़रीसियों में कोई है जो उस पर ईमान लाया हो? कोई भी नहीं! 49 लेकिन शरीअत से नावाकिफ़ यह हज़म लानती है!”

50 इन राहनुमाओं में नीकुदेमुस भी शामिल था जो कुछ देर पहले ईसा के पास गया था। अब वह बोल उठा, 51 “क्या हमारी शरीअत किसी पर यों फ़ैसला देने की इजाज़त देती है? नहीं, लाज़िम है कि उसे पहले अदालत में पेश किया जाए ताकि मालूम हो जाए कि उससे क्या कुछ सरज़द हुआ है।”

52 दूसरों ने एतराज़ किया, “क्या तुम भी गलील के रहनेवाले हो? कलामे-मुकद्दस में तफ़तीश करके खुद देख लो कि गलील से कोई नबी नहीं आया।” 53 यह कहकर हर एक अपने अपने घर चला गया।

## 8

ज़िनाकार औरत पर पहला पत्थर

1 ईसा खुद ज़ैतून के पहाड़ पर चला गया। 2 अगले दिन पौ फटते वक़्त वह दुबारा बैतुल-मुकद्दस में आया। वहाँ सब लोग उसके गिर्द जमा हुए और वह बैठकर उन्हें तालीम देने लगा। 3 इस दौरान शरीअत के उलमा और फ़रीसी एक औरत को लेकर आए जिसे ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया था। उसे बीच में खड़ा करके 4 उन्होंने ईसा से कहा, “उस्ताद, इस औरत को ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया है। 5 मूसाने शरीअत में हमें हुकम दिया है कि ऐसे लोगों को संगसार करना है। आप क्या कहते हैं?” 6 इस सवाल से वह उसे फ़ैसला चाहते थे ताकि उस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना उनके हाथ आ जाए। लेकिन ईसा झुक गया और अपनी उँगली से ज़मीन पर लिखने लगा।

7 जब वह उससे जवाब का तकाज़ा करते रहे तो वह खड़ा होकर उनसे मुखातिब हुआ, “तुममें से जिसने कभी गुनाह नहीं किया, वह पहला पत्थर मारे।” 8 फिर वह दुबारा झुककर ज़मीन पर लिखने लगा। 9 यह जवाब सुनकर इलज़ाम लगानेवाले यके बाद दीगरे वहाँ से खिसक गए, पहले बुजुर्ग, फिर बाक़ी सब। आखिरकार ईसा और दरमियान में खड़ी वह औरत अकेले रह गए। 10 फिर उसने खड़े होकर कहा, “ऐ औरत, वह सब कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर फ़तवा नहीं लगाया?”

11 औरत ने जवाब दिया, “नहीं खुदावंद।”

ईसा ने कहा, “मैं भी तुझ पर फ़तवा नहीं लगाता। जा, आइंदा गुनाह न करना।”

ईसा दुनिया का नूर है

12 फिर ईसा दुबारा लोगों से मुखातिब हुआ, “दुनिया का नूर मैं हूँ। जो मेरी पैरवी करे वह तारीकी में नहीं चलेगा, क्योंकि उसे ज़िंदगी का नूर हासिल होगा।”

13 फ़रीसियों ने एतराज़ किया, “आप तो अपने बारे में गवाही दे रहे हैं। ऐसी गवाही मोतबर नहीं होती।”

14 ईसा ने जवाब दिया, “अगरचे मैं अपने बारे में ही गवाही दे रहा हूँ तो भी वह मोतबर है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जा रहा हूँ। लेकिन तुमको तो मालूम नहीं कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। 15 तुम इनसानी सोच के मुताबिक लोगों का फ़ैसला करते हो, लेकिन मैं किसी का भी फ़ैसला नहीं करता। 16 और अगर फ़ैसला करूँ भी तो मेरा फ़ैसला दुस्त है, क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ। बाप जिसने मुझे भेजा है मेरे साथ है। 17 तुम्हारी शरीअत में

लिखा है कि दो आदमियों की गवाही मोतबर है। 18 मैं खुद अपने बारे में गवाही देता हूँ जबकि दूसरा गवाह बाप है जिसने मुझे भेजा।”

19 उन्होंने पूछा, “आपका बाप कहाँ है?” ईसा ने जवाब दिया, “तुम न मुझे जानते हो, न मेरे बाप को। अगर तुम मुझे जानते तो फिर मेरे बाप को भी जानते।”

20 ईसा ने यह बातें उस वक्त की जब वह उस जगह के करीब तालीम दे रहा था जहाँ लोग अपना हृदय डालते थे। लेकिन किसी ने उसे गिरिफ्तार न किया क्योंकि अभी उसका वक्त नहीं आया था।

जहाँ मैं जा रहा हूँ तुम वहाँ नहीं जा सकते

21 एक और बार ईसा उनसे मुख़ातिब हुआ, “मैं जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँढ ढूँढकर अपने गुनाहों में मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते।”

22 यहदियों ने पूछा, “क्या वह खुदकुशी करना चाहता है? क्या वह इसी वजह से कहता है, ‘जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते?’”

23 ईसा ने अपनी बात जारी रखी, “तुम नीचे से हो जबकि मैं ऊपर से हूँ। तुम इस दुनिया के हो जबकि मैं इस दुनिया का नहीं हूँ। 24 मैं तुमको बता चुका हूँ कि तुम अपने गुनाहों में मर जाओगे। क्योंकि अगर तुम ईमान नहीं लाते कि मैं वही हूँ तो तुम यकीनन अपने गुनाहों में मर जाओगे।”

25 उन्होंने सवाल किया, “आप कौन हैं?”

ईसा ने जवाब दिया, “मैं वही हूँ जो मैं शुरू से ही बताता आया हूँ। 26 मैं तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कह सकता हूँ। बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनकी बिना पर मैं तुमको मुजरिम ठहरा सकता हूँ। लेकिन जिसने मुझे भेजा है वही सच्चा और मोतबर है और मैं दुनिया को सिर्फ़ वह कुछ सुनाता हूँ जो मैंने उससे सुना है।”

27 सुननेवाले न समझे कि ईसा बाप का जिक्र कर रहा है। 28 चुनौचे उसने कहा, “जब तुम इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढाओगे तब ही तुम जान लोगे कि मैं वही हूँ, कि मैं अपनी तरफ़ से कुछ नहीं करता बल्कि सिर्फ़ वही सुनाता हूँ जो बाप ने मुझे सिखाया है। 29 और जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं हर वक्त वही कुछ करता हूँ जो उसे पसंद आता है।”

30 यह बातें सुनकर बहुत-से लोग उस पर ईमान लाए।

सच्चाई तुमको आज़ाद करेगी

31 जो यहदी उसका यकीन करते थे ईसा अब उनसे हमकलाम हुआ, “अगर तुम मेरी तालीम के तबे रहोगे तब ही तुम मेरे सच्चे शागिर्द होगे। 32 फिर तुम सच्चाई को जान लोगे और सच्चाई तुमको आज़ाद कर देगी।”

33 उन्होंने एतराज़ किया, “हम तो इब्राहीम की औलाद हैं, हम कभी भी किसी के गुलाम नहीं रहे। फिर आप किस तरह कह सकते हैं कि हम आज़ाद हो जाएँगे?”

34 ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो भी गुनाह करता है वह गुनाह का गुलाम है। 35 गुलाम तो आरिज़ी तौर पर घर में रहता है, लेकिन मालिक का बेटा हमेशा तक। 36 इसलिए अगर फ़रज़ंद तुमको आज़ाद करे तो तुम हकीकतन आज़ाद होगे। 37 मुझे मालूम है कि तुम इब्राहीम की औलाद हो। लेकिन तुम मुझे कल्ल करने के दरपै हो, क्योंकि तुम्हारे अंदर मेरे पैगाम के लिए गुंजाइश नहीं है। 38 मैं तुमको वही कुछ बताता हूँ जो मैंने बाप के हाँ देखा है, जबकि तुम वही कुछ सुनाते हो जो तुमने अपने बाप से सुना है।”

39 उन्होंने कहा, “हमारा बाप इब्राहीम है।” ईसा ने जवाब दिया, “अगर तुम इब्राहीम की औलाद होते तो तुम उसके नमूने पर चलते। 40 इसके बजाए तुम मुझे कल्ल करने की तलाश में हो, इसलिए कि मैंने तुमको वही सच्चाई सुनाई है जो मैंने अल्लाह के हज़ूर सुनी है। इब्राहीम ने कभी भी इस किस्म का काम न किया। 41 नहीं, तुम अपने बाप का काम कर रहे हो।”

उन्होंने एतराज़ किया, “हम हरामज़ादे नहीं हैं। अल्लाह ही हमारा वाहिद बाप है।”

42 ईसा ने उनसे कहा, “अगर अल्लाह तुम्हारा बाप होता तो तुम मुझसे मुहब्बत रखते, क्योंकि मैं अल्लाह में से निकल आया हूँ। मैं अपनी तरफ़ से नहीं आया बल्कि उसी ने मुझे भेजा है। 43 तुम मेरी ज़बान क्यों नहीं समझते? इसलिए कि तुम मेरी बात सुन नहीं सकते। 44 तुम अपने बाप इबलीस से हो और अपने बाप की खाहिशों पर अमल करने के खाहों रहते हो। वह शुरू ही से क्रातिल है और सच्चाई पर क्रायम न रहा, क्योंकि उसमें सच्चाई है नहीं। जब वह झूट बोलता है तो यह फ़ितरी बात है, क्योंकि वह झूट बोलनेवाला और झूट का बाप है। 45 लेकिन मैं सच्ची बातें सुनाता हूँ और यही वजह है कि तुमको मुझ पर यकीन नहीं आता। 46 क्या तुममें से कोई साबित कर सकता है कि मुझसे कोई गुनाह सरज़द हुआ है? मैं तो

तुमको हकीकत बता रहा हूँ। फिर तुमको मुझ पर यकीन क्यों नहीं आता? 47 जो अल्लाह से है वह अल्लाह की बातें सुनता है। तुम यह इसलिए नहीं सुनते कि तुम अल्लाह से नहीं हो।”

### ईसा और इब्राहीम

48 यहदियों ने जवाब दिया, “क्या हमने ठीक नहीं कहा कि तुम सामरी हो और किसी बदरूह के कब्जे में हो?”

49 ईसा ने कहा, “मैं बदरूह के कब्जे में नहीं हूँ बल्कि अपने बाप की इज्जत करता हूँ जबकि तुम मेरी बेइज्जती करते हो। 50 मैं खुद अपनी इज्जत का खाहों नहीं हूँ। लेकिन एक है जो मेरी इज्जत और जलाल का खयाल रखता और इनसाफ करता है। 51 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो भी मेरे कलाम पर अमल करता रहे वह मौत को कभी नहीं देखेगा।”

52 यह सुनकर लोगों ने कहा, “अब हमें पता चल गया है कि तुम किसी बदरूह के कब्जे में हो। इब्राहीम और नबी सब इंतकाल कर गए जबकि तुम दावा करते हो, ‘जो भी मेरे कलाम पर अमल करता रहे वह मौत का मजा कभी नहीं चखेगा।’ 53 क्या तुम हमारे बाप इब्राहीम से बड़े हो? वह मर गया, और नबी भी मर गए। तुम अपने आपको क्या समझते हो?”

54 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं अपनी इज्जत और जलाल बढ़ाता तो मेरा जलाल बातिल होता। लेकिन मेरा बाप ही मेरी इज्जत-जलाल बढ़ाता है, वही जिसके बारे में तुम दावा करते हो कि ‘वह हमारा खुदा है।’ 55 लेकिन हकीकत में तुमने उसे नहीं जाना जबकि मैं उसे जानता हूँ। अगर मैं कहता कि मैं उसे नहीं जानता तो मैं तुम्हारी तरह झूटा होता। लेकिन मैं उसे जानता और उसके कलाम पर अमल करता हूँ। 56 तुम्हारे बाप इब्राहीम ने खुशी मनाई जब उसे मालूम हुआ कि वह मेरी आमद का दिन देखेगा, और वह उसे देखकर मस्रर हुआ।”

57 यहदियों ने एतराज किया, “तुम्हारी उम्र तो अभी पचास साल भी नहीं, तो फिर तुम किस तरह कह सकते हो कि तुमने इब्राहीम को देखा है?”

58 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ, इब्राहीम की पैदाइश से पेशतर ‘मैं हूँ।’”

59 इस पर लोग उसे संगसार करने के लिए पत्थर उठाने लगे। लेकिन ईसा गायब होकर बैतुल-मुकद्दस से निकल गया।

## 9

### अंधे की शफा

1 चलते चलते ईसा ने एक आदमी को देखा जो पैदाइश का अंधा था। 2 उसके शागिर्दों ने उससे पूछा, “उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यों पैदा हुआ? क्या इसका कोई गुनाह है या इसके वालिदेन का?”

3 ईसा ने जवाब दिया, “न इसका कोई गुनाह है और न इसके वालिदेन का। यह इसलिए हुआ कि इसकी जिंदगी में अल्लाह का काम जाहिर हो जाए। 4 अभी दिन है। लाजिम है कि हम जितनी देर तक दिन है उसका काम करते रहें जिसने मुझे भेजा है। क्योंकि रात आनेवाली है, उस वक्त कोई काम नहीं कर सकेगा। 5 लेकिन जितनी देर तक मैं दुनिया में हूँ उतनी देर तक मैं दुनिया का नूर हूँ।”

6 यह कहकर उसने जमीन पर थककर मिट्टी सानी और उस की आँखों पर लगा दी। 7 उसने उससे कहा, “जा, शिलोख के हौज में नहा ले।” (शिलोख का मतलब ‘भेजा हुआ’ है।) अंधे ने जाकर नहा लिया। जब वापस आया तो वह देख सकता था।

8 उसके हमसाये और वह जिन्होंने पहले उसे भीक माँगते देखा था पूछने लगे, “क्या यह वही नहीं जो बैठा भीक माँग करता था?”

9 बाज़ ने कहा, “हाँ, वही है।”

औरों ने इनकार किया, “नहीं, यह सिर्फ उसका हमशक्ल है।”

लेकिन आदमी ने खुद इसरार किया, “मैं वही हूँ।”

10 उन्होंने उससे सवाल किया, “तेरी आँखें किस तरह बहाल हुईं?”

11 उसने जवाब दिया, “वह आदमी जो ईसा कहलाता है उसने मिट्टी सानकर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उसने मुझे कहा, ‘शिलोख के हौज पर जा और नहा ले।’ मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी आँखें बहाल हो गईं।”

12 उन्होंने पूछा, “वह कहाँ है?”

उसने जवाब दिया, “मुझे नहीं मालूम।”

### फरीसी शफा की तफ्तीश करते हैं

13 तब वह शफायाब अंधे को फरीसियों के पास ले गए। 14 जिस दिन ईसा ने मिट्टी सानकर उस की आँखों को बहाल किया था वह सबत का दिन था। 15 इसलिए फरीसियों ने भी उससे पूछ-गछ की कि उसे किस तरह बसारात मिल गई। आदमी ने जवाब दिया, “उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैंने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।”

- 16 फ़रीसियों में से बाज़ ने कहा, “यह शरख अल्लाह की तरफ से नहीं है, क्योंकि सबत के दिन काम करता है।” दूसरों ने एतराज़ किया, “गुनाहगार इस क्रिस्म के इलाही निशान किस तरह दिखा सकता है?” यों उनमें फूट पड़ गई।
- 17 फिर वह दुबारा उस आदमी से मुखातिब हुए जो पहले अंधा था, “तू खुद इसके बारे में क्या कहता है? उसने तो तेरी ही आँखों को बहाल किया है।” उसने जवाब दिया, “वह नबी है।”
- 18 यहूदियों को यकीन नहीं आ रहा था कि वह वाकई अंधा था और फिर बहाल हो गया है। इसलिए उन्होंने उसके वालिदेन को बुलाया। 19 उन्होंने उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता है?”
- 20 उसके वालिदेन ने जवाब दिया, “हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक्त अंधा था। 21 लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह किस तरह देख सकता है या कि किसने इसकी आँखों को बहाल किया है। इससे खुद पता करें, यह बालिग है। यह खुद अपने बारे में बता सकता है।” 22 उसके वालिदेन ने यह इसलिए कहा कि वह यहूदियों से डरते थे। क्योंकि वह फ़ैसला कर चुके थे कि जो भी ईसा को मसीह करार दे उसे यहूदी जमात से निकाल दिया जाए। 23 यही वजह थी कि उसके वालिदेन ने कहा था, “यह बालिग है, इससे खुद पूछ लें।”
- 24 एक बार फिर उन्होंने शफ़ायाम अंधे को बुलाया, “अल्लाह को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।”
- 25 आदमी ने जवाब दिया, “मुझे क्या पता है कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ।”
- 26 फिर उन्होंने उससे सवाल किया, “उसने तेरे साथ क्या किया? उसने किस तरह तेरी आँखों को बहाल कर दिया?”
- 27 उसने जवाब दिया, “मैं पहले भी आपको बता चुका हूँ और आपने सुना नहीं। क्या आप भी उसके शागिर्द बनना चाहते हैं?”
- 28 इस पर उन्होंने उसे बुरा-भला कहा, “तू ही उसका शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं। 29 हम तो जानते हैं कि अल्लाह ने मूसा से बात की है, लेकिन इसके बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।”
- 30 आदमी ने जवाब दिया, “अजीब बात है, उसने मेरी आँखों को शफ़ा दी है और फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है। 31 हम जानते हैं कि अल्लाह गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उस की सुनता है जो उसका ख़ौफ़ मानता और उस की मरज़ी के मुताबिक चलता है। 32 इब्रित्ता ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की आँखों को बहाल कर दिया हो। 33 अगर यह आदमी अल्लाह की तरफ से न होता तो कुछ न कर सकता।”
- 34 जवाब में उन्होंने उसे बताया, “तू जो गुनाहगार आल्लाहालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा उस्ताद बनना चाहता है?” यह कहकर उन्होंने उसे जमात में से निकाल दिया।
- रहानी अध्यापन**
- 35 जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल दिया गया है तो वह उसको मिला और पूछा, “क्या तू इब्ने-आदम पर ईमान रखता है?”
- 36 उसने कहा, “खुदावंद, वह कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।”
- 37 ईसा ने जवाब दिया, “तूने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझसे बात कर रहा है।”
- 38 उसने कहा, “खुदावंद, मैं ईमान रखता हूँ” और उसे सिजदा किया।
- 39 ईसा ने कहा, “मैं अदालत करने के लिए इस दुनिया में आया हूँ, इसलिए कि अंधे देखें और देखनेवाले अंधे हो जाएँ।”
- 40 कुछ फ़रीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ सुनकर पछने लगे, “अच्छा, हम भी अंधे हैं?”
- 41 ईसा ने उनसे कहा, “अगर तुम अंधे होते तो तुम कुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि तुम दावा करते हो कि हम देख सकते हैं इसलिए तुम्हारा गुनाह कायम रहता है।

## 10

### चरवाहे की तमसील

- 1 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो दरवाज़े से भेड़ों के बाड़े में दाखिल नहीं होता बल्कि फलॉगकर अंदर घुस आता है वह चोर और डाकू है। 2 लेकिन जो दरवाज़े से दाखिल होता है वह भेड़ों का चरवाहा है। 3 चौकीदार उसके लिए दरवाज़ा खोल देता है और भेड़ें उस की आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी हर एक भेड़ का नाम लेकर उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है। 4 अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने के बाद वह उनके आगे आगे चलने लगता है और भेड़ें उसके पीछे पीछे चल पड़ती



हैं, क्योंकि वह उस की आवाज़ पहचानती है।<sup>5</sup> लेकिन वह किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेगी बल्कि उससे भाग जाएगी, क्योंकि वह उस की आवाज़ नहीं पहचानती।”

<sup>6</sup> ईसा ने उन्हें यह तमसील पेश की, लेकिन वह न समझे कि वह उन्हें क्या बताना चाहता है।

### अच्छा चरवाहा

<sup>7</sup> इसलिए ईसा दुबारा इस पर बात करने लगा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि भेड़ों के लिए दरवाज़ा मैं हूँ।<sup>8</sup> जितने भी मुझसे पहले आए वह चोर और डाकू हैं। लेकिन भेड़ों ने उनकी न सुनी।<sup>9</sup> मैं ही दरवाज़ा हूँ। जो भी मेरे ज़रीए अंदर आए उसे नज़ात मिलेगी। वह आता जाता और हरी चरागाहें पाता रहेगा।<sup>10</sup> चोर तो सिर्फ़ चोरी करने, जबह करने और तबाह करने आता है। लेकिन मैं इसलिए आया हूँ कि वह ज़िंदगी पाएँ, बल्कि कसरत की ज़िंदगी पाएँ।

<sup>11</sup> अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है।<sup>12</sup> मज़दूर चरवाहे का किरदार अदा नहीं करता, क्योंकि भेड़ें उस की अपनी नहीं होती। इसलिए ज्योंही कोई भेडिया आता है तो मज़दूर उसे देखते ही भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है। नतीजे में भेडिया कुछ भेड़ें पकड़ लेता और बाकियों को मुंतशिर कर देता है।<sup>13</sup> वजह यह है कि वह मज़दूर ही है और भेड़ों की फिकर नहीं करता।<sup>14</sup> अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और वह मुझे जानती हैं,<sup>15</sup> बिलकुल उसी तरह जिस तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। और मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ।<sup>16</sup> मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। लाज़िम है कि उन्हें भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेगी। फिर एक ही गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा।

<sup>17</sup> मेरा बाप मुझे इसलिए प्यार करता है कि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ।<sup>18</sup> कोई मेरी जान मुझसे छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी मरज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इख्तियार है और उसे वापस लेने का भी। यह हुक्म मुझे अपने बाप की तरफ से मिला है।”

<sup>19</sup> इन बातों पर यहूदियों में दुबारा फूट पड़ गई।<sup>20</sup> बहुतें ने कहा, “यह बदरूह की गिरिफ्त में है, यह दीवाना है। इसकी क्यों सुनें!”

<sup>21</sup> लेकिन औरों ने कहा, “यह ऐसी बातें नहीं हैं जो बदरूह-गिरिफ्तार शख्स कर सके। क्या बदरूहें अंधों की आँखें बहाल कर सकती हैं?”

### ईसा को रद्द किया जाता है

<sup>22</sup> सर्दियों का मौसम था और ईसा बैतूल-मुकद्दस की मखसूसियत की ईद बनाम हनुका के दौरान यरूशलम में था।<sup>23</sup> वह बैतूल-मुकद्दस के उस बरामदे में फिर रहा था जिसका नाम सुलेमान का बरामदा था।<sup>24</sup> यहूदी उसे घेरकर कहने लगे, “आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप मसीह हैं तो हमें साफ साफ बता दें।”

<sup>25</sup> ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको बता चुका हूँ, लेकिन तुमको यकीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह हैं।<sup>26</sup> लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो।<sup>27</sup> मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती हैं।<sup>28</sup> मैं उन्हें अबदी ज़िंदगी देता हूँ, इसलिए वह कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा,<sup>29</sup> क्योंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सुपर्द किया है और वही सबसे बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता।<sup>30</sup> मैं और बाप एक हैं।”

<sup>31</sup> यह सुनकर यहूदी दुबारा पत्थर उठाने लगे ताकि ईसा को संगसार करें।<sup>32</sup> उसने उनसे कहा, “मैंने तुम्हें बाप की तरफ से कई इलाही निशान दिखाए हैं। तुम मुझे इनमें से किस निशान की वजह से संगसार कर रहे हो?”

<sup>33</sup> यहूदियों ने जवाब दिया, “हम तुमको किसी अच्छे काम की वजह से संगसार नहीं कर रहे बल्कि कुफर बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़ इनसान हो अल्लाह होने का दावा करते हो।”

<sup>34</sup> ईसा ने कहा, “क्या यह तुम्हारी शरीअत में नहीं लिखा है कि अल्लाह ने फरमाया, ‘तुम खुदा हो’? <sup>35</sup> उन्हें ‘खुदा’ कहा गया जिन तक अल्लाह का यह पैगाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलामे-मुकद्दस को मनसूख नहीं किया जा सकता।<sup>36</sup> तो फिर तुम कुफर बकने की बात क्यों करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं अल्लाह का फरजंद हूँ? आखिर बाप ने खुद मुझे मखसूस करके दुनिया में भेजा है।<sup>37</sup> अगर मैं अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो।<sup>38</sup> लेकिन अगर उसके काम करूँ तो बेशक मेरी बात न मानो, लेकिन कम अज़ कम उन कामों की गवाही तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे कि बाप मुझमें है और मैं बाप में हूँ।”

<sup>39</sup> एक बार फिर उन्होंने उसे गिरिफ्तार करने की कोशिश की, लेकिन वह उनके हाथ से निकल गया।

40 फिर ईसा दुबारा दरियाए-यरदन के पार उस जगह चला गया जहाँ यहया शुरू में बपतिस्मा दिया करता था। वहाँ वह कुछ देर ठहरा। 41 बहुत-से लोग उसके पास आते रहे। उन्होंने कहा, “यहया ने कभी कोई इलाही निशान न दिखाया, लेकिन जो कुछ उसने इसके बारे में बयान किया, वह बिलकुल सहीह निकला।” 42 और वहाँ बहुत-से लोग ईसा पर ईमान लाए।

## 11

### लाज़र की मौत

1 उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया जिसका नाम लाज़र था। वह अपनी बहनो मरियम और मर्था के साथ बैत-अनियाह में रहता था। 2 यह वही मरियम थी जिसने बाद में खुदावंद पर खुशबू उंडेलकर उसके पाँव अपने बालों से खुरक किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था। 3 चुनाँचे बहनो ने ईसा को इत्ला दी, “खुदावंद, जिसे आप प्यार करते हैं वह बीमार है।”

4 जब ईसा को यह खबर मिली तो उसने कहा, “इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं है, बल्कि यह अल्लाह के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इससे अल्लाह के फरज़द को जलाल मिले।”

5 ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता था। 6 तो भी वह लाज़र के बारे में इत्ला मिलने के बाद दो दिन और वही ठहरा। 7 फिर उसने अपने शागिर्दों से बात की, “आओ, हम दुबारा यहदिया चले जाएँ।”

8 शागिर्दों ने एतराज़ किया, “उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहदी आपको संगसार करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?”

9 ईसा ने जवाब दिया, “क्या दिन में रौशनी के बारह घंटे नहीं होते? जो शख्स दिन के वक़्त चलता-फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्योंकि वह इस दुनिया की रौशनी के ज़रीए देख सकता है। 10 लेकिन जो रात के वक़्त चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्योंकि उसके पास रौशनी नहीं है।” 11 फिर उसने कहा, “हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जाकर उसे जगा दूँगा।”

12 शागिर्दों ने कहा, “खुदावंद, अगर वह सो रहा है तो वह बच जाएगा।”

13 उनका खयाल था कि ईसा लाज़र की फ़ितरी नींद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हकीकत में वह उस की मौत की तरफ इशारा कर रहा था। 14 इसलिए उसने उन्हें साफ़ बता दिया, “लाज़र वफ़ात पा गया है। 15 और तुम्हारी खातिर मैं खुश हूँ कि मैं उसके मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्योंकि अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उसके पास जाएँ।”

16 तोमा ने जिसका लकब जुडवॉ था अपने साथी शागिर्दों से कहा, “चलो, हम भी वहाँ जाकर उसके साथ मर जाएँ।”

### ईसा क्रियामत और ज़िंदगी है

17 वहाँ पहुँचकर ईसा को मालूम हुआ कि लाज़र को कब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। 18 बैत-अनियाह का यस्शलम से फ़ासला तीन किलोमीटर से कम था, 19 और बहुत-से यहदी मर्था और मरियम को उनके भाई के बारे में तसल्ली देने के लिए आए हुए थे।

20 यह सुनकर कि ईसा आ रहा है मर्था उसे मिलने गईं। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। 21 मर्था ने कहा, “खुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। 22 लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह आपको जो भी मॉगिगे देगा।”

23 ईसा ने उसे बताया, “तेरा भाई जी उठेगा।”

24 मर्था ने जवाब दिया, “जी, मुझे मालूम है कि वह क्रियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।”

25 ईसा ने उसे बताया, “क्रियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए।

26 और जो ज़िंदा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे इस बात का यकीन है?”

27 मर्था ने जवाब दिया, “जी खुदावंद, मैं ईमान रखती हूँ कि आप खुदा के फ़रज़द मसीह हैं, जिसे दुनिया में आना था।”

### ईसा रोता है

28 यह कहकर मर्था वापस चली गई और चुपके से मरियम को बुलाया, “उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।” 29 यह सुनते ही मरियम उठकर ईसा के पास गई। 30 वह अभी गाँव के बाहर उसी जगह ठहरा था जहाँ उस की मुलाकात मर्था से हुई थी। 31 जो यहदी घर में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि वह जल्दी से उठकर निकल गई है तो वह उसके पीछे हो लिए। क्योंकि वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए अपने भाई की कब्र पर जा रही है।

32 मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे देखते ही वह उसके पाँवों में गिर गई और कहने लगी, “खुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।”

33 जब ईसा ने मरियम और उसके साथियों को रोते देखा तो उसे बड़ी रंजिश हुई। मुजतरिब हालत में 34 उसने पूछा, “तुमने उसे कहाँ रखा है?”

उन्होंने जवाब दिया, “आएँ खुदावंद, और देख लें।”

35 ईसा रो पड़ा। 36 यहूदियों ने कहा, “देखो, वह उसे कितना अजीब था।”

37 लेकिन उनमें से बाज़ ने कहा, “इस आदमी ने अंधे को शफ़ा दी। क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?”

लाज़र को ज़िंदा कर दिया जाता है

38 फिर ईसा दुबारा निहायत रंजीदा होकर कब्र पर आया। कब्र एक गार थी जिसके मुँह पर पत्थर रखा गया था। 39 ईसा ने कहा, “पत्थर को हटा दो।”

लेकिन मरहम की बहन मर्या ने एतराज़ किया, “खुदावंद, बदबू आएगी, क्योंकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।”

40 ईसा ने उससे कहा, “क्या मैंने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का जलाल देखेगी?” 41 चुनौचे उन्होंने पत्थर को हटा दिया। फिर ईसा ने अपनी नज़र उठाकर कहा, “ऐ बाप, मैं तेरा शुक़ करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है। 42 मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैंने यह बात पास खड़े लोगों की खातिर की, ताकि वह ईमान लाएँ कि तूने मुझे भेजा है।” 43 फिर ईसा जोर से पुकार उठा, “लाज़र, निकल आ!” 44 और मुरदा निकल आया। अभी तक उसके हाथ और पाँव पट्टियों से बँधे हुए थे जबकि उसका चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा ने उनसे कहा, “इसके कफ़न को खोलकर इसे जाने दो।”

ईसा के खिलाफ़ मनसूबाबंदी

45 उन यहूदियों में से जो मरियम के पास आए थे बहुत-से ईसा पर ईमान लाए जब उन्होंने वह देखा जो उसने किया। 46 लेकिन बाज़ फ़रीसियों के पास गए और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या किया है। 47 तब राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदी अदालते-आलिया का इजलास मुनअक़िद किया। उन्होंने एक दूसरे से पूछा, “हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी बहुत-से इलाही निशान दिखा रहा है। 48 अगर हम उसे खुला छोड़ें तो आखिरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे। फिर रोमी आकर हमारे बैतुल-मुक़द्दस और हमारे मुल्क को तबाह कर देंगे।”

49 उनमें से एक कायफ़ा था जो उस साल इमामे-आज़म था। उसने कहा, “आप कुछ नहीं समझते 50 और इसका खयाल भी नहीं करते कि इससे पहले कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।” 51 उसने यह बात अपनी तरफ़ से नहीं की थी। उस साल के इमामे-आज़म की हैसियत से ही उसने यह पेशगोई की कि ईसा यहूदी क़ौम के लिए मरेगा। 52 और न सिर्फ़ इसके लिए बल्कि अल्लाह के बिखरे हुए फ़रज़ंदों को जमा करके एक करने के लिए भी।

53 उस दिन से उन्होंने ईसा को कत्ल करने का इरादा कर लिया। 54 इसलिए उसने अब से अलानिया यहूदियों के दरमियान वक्त न गुज़ारा, बल्कि उस जगह को छोड़कर रेगिस्तान के करीब एक इलाके में गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत एक गाँव बनाम इफ़राईम में रहने लगा।

55 फिर यहूदियों की ईंदे-फ़सह करीब आ गई। देहात से बहुत-से लोग अपने आपको पाक करवाने के लिए ईद से पहले पहले यरूशलम पहुँचे। 56 वहाँ वह ईसा का पता करते और बैतुल-मुक़द्दस में खड़े आपस में बात करते रहे, “क्या खयाल है? क्या वह तहवार पर नहीं आएगा?” 57 लेकिन राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने हुक्म दिया था, “अगर किसी को मालूम हो जाए कि ईसा कहाँ है तो वह इतला दे ताकि हम उसे गिरफ़्तार कर लें।”

## 12

ईसा को बैत-अनियाह में मसह किया जाता है

1 फ़सह की ईद में अभी छः दिन बाक़ी थे कि ईसा बैत-अनियाह पहुँचा। यह वह जगह थी जहाँ उस लाज़र का घर था जिसे ईसा ने मुरदों में से ज़िंदा किया था। 2 वहाँ उसके लिए एक खास खाना बनाया गया। मर्या खानेवालों की खिदमत कर रही थी जबकि लाज़र ईसा और बाक़ी मेहमानों के साथ खाने में शरीक था। 3 फिर मरियम ने आधा लिटर खालिस जटामासी का निहायत कीमती इत्र लेकर ईसा के पाँवों पर उंडेल दिया और उन्हें अपने बालों से पोंछकर खुशक किया। खुशबू पूरे घर में फैल गई। 4 लेकिन ईसा के शागिर्द यहूदाह इस्क़रियोती ने एतराज़ किया (बाद में उसी ने ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया)। उसने कहा, 5 “इस इत्र की कीमत चाँदी के 300 सिक्के थी। इसे क्यों नहीं बेचा गया ताकि इसके पैसे गरीबों को दिए जाते?” 6 उसने यह बात इसलिए नहीं की कि उसे गरीबों की फ़िकर थी। असल में वह चोर था। वह शागिर्दों का खज़ानची था और जमाशुदा पैसों में से बददियानती करता रहता था।

7 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे छोड़ दे! उसने मेरी तदफ्रीन की तैयारी के लिए यह किया है।<sup>8</sup> गरीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।”

### लाज़र के खिलाफ मनसूबाबंदी

9 इतने में यहूदियों की बड़ी तादाद को मालूम हुआ कि ईसा वहाँ है। वह न सिर्फ़ ईसा से मिलने के लिए आए बल्कि लाज़र से भी जिसे उसने मुरदों में से ज़िंदा किया था।<sup>10</sup> इसलिए राहनुमा इमामों ने लाज़र को भी कत्ल करने का मनसूबा बनाया।  
11 क्योंकि उस की वजह से बहुत-से यहूदी उनमें से चले गए और ईसा पर ईमान ले आए थे।

### यरूशलम में ईसा का पुरजोश इस्तकबाल

12 अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को पता चला कि ईसा यरूशलम आ रहा है। एक बड़ा हज़ूम<sup>13</sup> खज़ूर की डालियाँ पकड़े शहर से निकलकर उससे मिलने आया। चलते चलते वह चिल्लाकर नारे लगा रहे थे,

“होशाना! \*

मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!

इसराईल का बादशाह मुबारक है!”

14 ईसा को कहीं से एक जवान गधा मिल गया और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलामे-मुकद्दस में लिखा है,

15 “ऐ सियून बेटी, मत डर!

देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।”

16 उस वक़्त उसके शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन बाद में जब ईसा अपने जलाल को पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों ने उसके साथ यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलामे-मुकद्दस में इसका ज़िक्र भी है।

17 जो हज़ूम उस वक़्त ईसा के साथ था जब उसने लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा किया था, वह दूसरों को इसके बारे में बताता रहा था।<sup>18</sup> इसी वजह से इतने लोग ईसा से मिलने के लिए आए थे, उन्होंने उसके इस इलाही निशान के बारे में सुना था।<sup>19</sup> यह देखकर फ़रीसी आपस में कहने लगे, “आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनिया उसके पीछे हो ली है।”

### कुछ यूनानी ईसा को तलाश करते हैं

20 कुछ यूनानी भी उनमें थे जो फ़सह की ईद के मौके पर परस्तिश करने के लिए आए हुए थे।<sup>21</sup> अब वह फिलिप्पुस से मिलने आए जो गलील के बैत-सैदा से था। उन्होंने कहा, “जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।”

22 फिलिप्पुस ने अंदरियास को यह बात बताई और फिर वह मिलकर ईसा के पास गए और उसे यह खबर पहुँचाई।  
23 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “अब वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम को जलाल मिले।<sup>24</sup> मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब तक गंदुम का दाना ज़मीन में गिरकर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत-सा फल लाता है।<sup>25</sup> जो अपनी जान को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनिया में अपनी जान से दुश्मनी रखता है वह उसे अबद तक महफ़ूज़ रखेगा।<sup>26</sup> अगर कोई मेरी खिदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा खादिम भी होगा। और जो मेरी खिदमत करे मेरा बाप उस की इज़ज़त करेगा।

### ईसा अपनी मौत का ज़िक्र करता है

27 अब मेरा दिल मुज़तरिब है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, ‘ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख’? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ।<sup>28</sup> ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे।”

तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, “मैं उसे जलाल दे चुका हूँ और दूसरा भी जलाल दूँगा।”

29 हज़ूम के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने यह सुनकर कहा, “बादल गरज रहे हैं।” औरों ने खयाल पेश किया, “कोई फ़रिश्ता उससे हमकलाम हुआ है।”

30 ईसा ने उन्हें बताया, “यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी।<sup>31</sup> अब दुनिया की अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनिया के हुक्मरान को निकाल दिया जाएगा।<sup>32</sup> और मैं खुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सबको अपने पास खींच लूँगा।”<sup>33</sup> इन अलफ़ाज़ से उसने इस तरह इशारा किया कि वह किस तरह की मौत मरेगा।

34 हज़ूम बोल उठा, “कलामे-मुकद्दस से हमने सुना है कि मसीह अबद तक कायम रहेगा। तो फिर आपकी यह कैसी बात है कि इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आखिर इब्ने-आदम है कौन?”

\* 12:13 होशाना (इब्रानी : मेहरबानी करके हमें बचा)। यहाँ इसमें हम्दो-सना का उन्सूर भी पाया जाता है।

35 ईसा ने जवाब दिया, “नूर थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस नूर में चलते रहो ताकि तारीकी तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। 36 नूर के तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि तुम नूर के फ़रजंद बन जाओ।”

लोग ईमान नहीं रखते

यह कहने के बाद ईसा चला गया और गायब हो गया। 37 अगरचे ईसा ने यह तमाम इलाही निशान उनके सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान न लाए। 38 यों यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

“ऐ रब, कौन हमारे पैगाम पर ईमान लाया?

और रब की कुदरत किस पर जाहिर हुई?”

39 चुनौचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह यसायाह नबी ने कहीं और फरमाया है,

40 “अल्लाह ने उनकी आँखों को अंधा

और उनके दिल को बेहिस कर दिया है,

ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,

अपने दिल से समझें,

मेरी तरफ रूजू करें

और मैं उन्हें शफा दूँ।”

41 यसायाह ने यह इसलिए फरमाया क्योंकि उसने ईसा का जलाल देखकर उसके बारे में बात की।

42 तो भी बहुत-से लोग ईसा पर ईमान रखते थे। उनमें कुछ राहनुमा भी शामिल थे। लेकिन वह इसका अलानिया इकरार नहीं करते थे, क्योंकि वह डरते थे कि फरीसी हमें यहूदी जमात से खारिज कर देंगे। 43 असल में वह अल्लाह की इज्जत की निसबत इनसान की इज्जत को ज्यादा अर्जीज़ रखते थे।

ईसा का कलाम लोगों की अदालत करेगा

44 फिर ईसा पुकार उठा, “जो मुझ पर ईमान रखता है वह न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान रखता है जिसने मुझे भेजा है। 45 और जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। 46 मैं नूर की हैसियत से इस दुनिया में आया हूँ ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह तारीकी में न रहे। 47 जो मेरी बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता मैं उस की अदालत नहीं करूँगा, क्योंकि मैं दुनिया की अदालत करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के लिए। 48 तो भी एक है जो उस की अदालत करता है। जो मुझे रद्द करके मेरी बातें कबूल नहीं करता मेरा पेश किया गया कलाम ही क्रियामत के दिन उस की अदालत करेगा। 49 क्योंकि जो कुछ मैंने बयान किया है वह मेरी तरफ से नहीं है। मेरे भेजेजनेवाले बाप ही ने मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या सुनाना है। 50 और मैं जानता हूँ कि उसका हुक्म अबदी ज़िंदगी तक पहुँचाता है। चुनौचे जो कुछ मैं सुनाता हूँ वही कुछ है जो बाप ने मुझे बताया है।”

## 13

ईसा अपने शागिर्दों के पाँव धोता है

1 फ़सह की ईद अब शुरू होनेवाली थी। ईसा जानता था कि वह वक्त आ गया है कि मुझे इस दुनिया को छोड़कर बाप के पास जाना है। गो उसने हमेशा दुनिया में अपने लोगों से मुहब्बत रखी थी, लेकिन अब उसने आखिरी हद तक उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार किया।

2 फिर शाम का खाना तैयार हुआ। उस वक्त इबलीस शमौन इस्करियोती के बेटे यहूदाह के दिल में ईसा को दुश्मन के हवाले करने का इरादा डाल चुका था। 3 ईसा जानता था कि बाप ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है और कि मैं अल्लाह में से निकल आया और अब उसके पास वापस जा रहा हूँ। 4 चुनौचे उसने दस्तरखान से उठकर अपना लिबास उतार दिया और कमर पर तौलिया बाँध लिया। 5 फिर वह बासन में पानी डालकर शागिर्दों के पाँव धोने और बंधे हुए तौलिये से पोंछकर ख़ुश करने लगा। 6 जब पतरस की बारी आई तो उसने कहा, “ख़ुदावंद, आप मेरे पाँव धोना चाहते हैं?”

7 ईसा ने जवाब दिया, “इस वक्त तू नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में यह तेरी समझ में आ जाएगा।”

8 पतरस ने एतराज़ किया, “मैं कभी भी आपको मेरे पाँव धोने नहीं दूँगा।”

ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरा कोई हिस्सा नहीं होगा।”

9 यह सुनकर पतरस ने कहा, “तो फिर ख़ुदावंद, न सिर्फ़ मेरे पाँवों बल्कि मेरे हाथों और सर को भी धोएँ।”

10 ईसा ने जवाब दिया, “जिस शख्स ने नहा लिया है उसे सिर्फ अपने पाँवों को धोने की जरूरत होती है, क्योंकि वह पूरे तौर पर पाक-साफ है। तुम पाक-साफ हो, लेकिन सबके सब नहीं।” 11 (ईसा को मालूम था कि कौन उसे दुश्मन के हवाले करेगा। इसलिए उसने कहा कि सबके सब पाक-साफ नहीं हैं।)

12 उन सबके पाँव धोने के बाद ईसा दुबारा अपना लिबास पहनकर बैठ गया। उसने सवाल किया, “क्या तुम समझते हो कि मैंने तुम्हारे लिए क्या किया है? 13 तुम मुझे ‘उस्ताद’ और ‘खुदावंद’ कहकर मुखातिब करते हो और यह सही है, क्योंकि मैं यही कुछ हूँ। 14 मैं, तुम्हारे खुदावंद और उस्ताद ने तुम्हारे पाँव धोए। इसलिए अब तुम्हारा फर्ज भी है कि एक दूसरे के पाँव धोया करो। 15 मैंने तुमको एक नमूना दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैंने तुम्हारे साथ किया है। 16 मैं तुमको सच बताता हूँ कि गुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैगंबर अपने भेजेवाले से। 17 अगर तुम यह जानते हो तो इस पर अमल भी करो, फिर ही तुम मुबारक होगे।

18 मैं तुम सबकी बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने चुन लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलामे-मुकद्दस की उस बात का पूरा होना जरूर है, ‘जो मेरी रोटी खाता है उसने मुझ पर लात उठाई है।’ 19 मैं तुमको इससे पहले कि वह पेश आए यह अभी बता रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो तुम ईमान लाओ कि मैं वही हूँ। 20 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो शख्स उसे कबूल करता है जिसे मैंने भेजा है वह मुझे कबूल करता है। और जो मुझे कबूल करता है वह उसे कबूल करता है जिसने मुझे भेजा है।”

**ईसा को दुश्मन के हवाले किया जाता है**

21 इन अलफाज के बाद ईसा निहायत मुजतरिब हुआ और कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।”

22 शागिर्द उलझन में एक दूसरे को देखकर सोचने लगे कि ईसा किसकी बात कर रहा है। 23 एक शागिर्द जिसे ईसा प्यार करता था उसके करीबतरीन बैठा था। 24 पतरस ने उसे इशारा किया कि वह उससे दरियाफ्त करे कि वह किसकी बात कर रहा है।

25 उस शागिर्द ने ईसा की तरफ सर झुकाकर पूछा, “खुदावंद, यह कौन है?”

26 ईसा ने जवाब दिया, “जिसे मैं रोटी का लुकमा शोर्ब में डुबोकर दूँ, वही है।” फिर लुकमे को डुबोकर उसने शमीन इस्करियोती के बेटे यहदाह को दे दिया। 27 ज्योंही यहदाह ने यह लुकमा ले लिया इबलीस उसमें समा गया। ईसा ने उसे बताया, “जो कुछ करना है वह जल्दी से कर ले।” 28 लेकिन मेज़ पर बैठे लोगों में से किसी को मालूम न हुआ कि ईसा ने यह क्यों कहा। 29 बाज़ का खयाल था कि चूँकि यहदाह खजानची था इसलिए वह उसे बता रहा है कि ईद के लिए दरकार चीज़ें खरीद ले या गरीबों में कुछ तक्सीम कर दे।

30 चुनौचे ईसा से यह लुकमा लेते ही यहदाह बाहर निकल गया। रात का वक़्त था।

**ईसा का नया हुक्म**

31 यहदाह के चले जाने के बाद ईसा ने कहा, “अब इब्ने-आदम ने जलाल पाया और अल्लाह ने उसमें जलाल पाया है। 32 हौं, चूँकि अल्लाह को उसमें जलाल मिल गया है इसलिए अल्लाह अपने में फ़रज़द को जलाल देगा। और वह यह जलाल फ़ौरन देगा। 33 मेरे बच्चो, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे पास ठहरूँगा। तुम मुझे तलाश करोगे, और जो कुछ मैं यहदियों को बता चुका हूँ वह अब तुमको भी बताता हूँ, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते। 34 मैं तुमको एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैंने तुमसे मुहब्बत रखी उसी तरह तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत करो। 35 अगर तुम एक दूसरे से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो।”

**पतरस के इनकार की पेशगोई**

36 पतरस ने पूछा, “खुदावंद, आप कहाँ जा रहे हैं?”

ईसा ने जवाब दिया, “जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तू मेरे पीछे नहीं आ सकता। लेकिन बाद में तू मेरे पीछे आ जाएगा।”

37 पतरस ने सवाल किया, “खुदावंद, मैं आपके पीछे अभी क्यों नहीं जा सकता? मैं आपके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।”

38 लेकिन ईसा ने जवाब दिया, “तू मेरे लिए अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुरग के बाँग देने से पहले पहले तू तीन मरतबा मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।

## 14

ईसा बाप के पास जाने की राह है

1 तुम्हारा दिल न घबराए। तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो। 2 मेरे बाप के घर में बेशुमार मकान है। अगर ऐसा न होता तो क्या मैं तुमको बताता कि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के लिए वहाँ जा रहा हूँ? 3 और अगर मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ तो वापस आकर तुमको अपने साथ ले जाऊँगा ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो। 4 और जहाँ मैं जा रहा हूँ उस की राह तुम जानते हो।”

5 तोमा बोल उठा, “खुदावंद, हमें मालूम नहीं कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उस की राह किस तरह जानें?”

6 ईसा ने जवाब दिया, “राह और हक और जिंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बगैर बाप के पास नहीं आ सकता। 7 अगर तुमने मुझे जान लिया है तो इसका मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और अब से ऐसा है भी। तुम उसे जानते हो और तुमने उसको देख लिया है।”

8 फिलिप्पुस ने कहा, “ऐ खुदावंद, बाप को हमें दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफी है।”

9 ईसा ने जवाब दिया, “फिलिप्पुस, मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इसके बावजूद तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा उसने बाप को देखा है। तो फिर तू क्योंकर कहता है, ‘बाप को हमें दिखाएँ’? 10 क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है? जो बातों में तुमको बताता हूँ वह मेरी नहीं बल्कि मुझमें रहनेवाले बाप की तरफ से है। वही अपना काम कर रहा है। 11 मेरी बात का यकीन करो कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है। या कम अज कम उन कामों की बिना पर यकीन करो जो मैंने किए हैं। 12 मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे वह वही कुछ करेगा जो मैं करता हूँ। न सिर्फ यह बल्कि वह इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं बाप के पास जा रहा हूँ। 13 और जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को फरजंद में जलाल मिल जाए। 14 जो कुछ तुम मेरे नाम में मुझसे चाहो वह मैं करूँगा।

रूहल-कुदूस देने का वादा

15 अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे अहकाम के मुताबिक जिंदगी गुज़ारोगे। 16 और मैं बाप से गुज़ारिश करूँगा तो वह तुमको एक और मददगार देगा जो अबद तक तुम्हारे साथ रहेगा 17 यानी सच्चाई का रूह, जिसे दुनिया पा नहीं सकती, क्योंकि वह न तो उसे देखती न जानती है। लेकिन तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और आइंदा तुम्हारे अंदर रहेगा।

18 मैं तुमको यतीम छोड़कर नहीं जाऊँगा बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 19 थोड़ी देर के बाद दुनिया मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे। चूँकि मैं जिंदा हूँ इसलिए तुम भी जिंदा रहोगे। 20 जब वह दिन आएगा तो तुम जान लोगे कि मैं अपने बाप में हूँ, तुम मुझमें हो और मैं तुममें।

21 जिसके पास मेरे अहकाम हैं और जो उनके मुताबिक जिंदगी गुज़ारता है, वही मुझे प्यार करता है। और जो मुझे प्यार करता है उसे मेरा बाप प्यार करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और अपने आपको उस पर जाहिर करूँगा।”

22 यहदाह (यहदाह इस्करियोती नहीं) ने पूछा, “खुदावंद, क्या वजह है कि आप अपने आपको सिर्फ हम पर जाहिर करेंगे और दुनिया पर नहीं?”

23 ईसा ने जवाब दिया, “अगर कोई मुझे प्यार करे तो वह मेरे कलाम के मुताबिक जिंदगी गुज़ारेगा। मेरा बाप ऐसे शख्स को प्यार करेगा और हम उसके पास आकर उसके साथ सुकूनत करेंगे। 24 जो मुझसे मुहब्बत नहीं करता वह मेरी बातों के मुताबिक जिंदगी नहीं गुज़ारता। और जो कलाम तुम मुझसे सुनते हो वह मेरा अपना कलाम नहीं है बल्कि बाप का है जिसने मुझे भेजा है।

25 यह सब कुछ मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुमको बताया है। 26 लेकिन बाद में रूहल-कुदूस, जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा तुमको सब कुछ सिखाएगा। यह मददगार तुमको हर बात की याद दिलाएगा जो मैंने तुमको बताई है।

27 मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी ही सलामती तुमको दे देता हूँ। और मैं इसे यों नहीं देता जिस तरह दुनिया देती है। तुम्हारा दिल न घबराए और न डरे। 28 तुमने मुझसे सुन लिया है कि ‘मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास वापस आऊँगा।’ अगर तुम मुझसे मुहब्बत रखते तो तुम इस बात पर खुश होते कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ, क्योंकि बाप मुझसे बड़ा है। 29 मैंने तुमको पहले से बता दिया है, इससे पेशतर कि यह हो, ताकि जब पेश आए तो तुम ईमान लाओ। 30 अब से मैं तुमसे ज़्यादा बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस दुनिया का हुक्मरान आ रहा है। उसे मुझ पर कोई काबू नहीं है, 31 लेकिन दुनिया यह जान ले कि मैं बाप को प्यार करता हूँ और वही कुछ करता हूँ जिसका हुक्म वह मुझे देता है।

अब उठो, हम यहाँ से चलें।

## 15

## ईसा अंगूर की हकीकी बेल है

1 मैं अंगूर की हकीकी बेल हूँ और मेरा बाप माली है। 2 वह मेरी हर शाख को जो फल नहीं लाती काटकर फेंक देता है। लेकिन जो शाख फल लाती है उस की वह काँट-छाँट करता है ताकि ज्यादा फल लाए। 3 उस कलाम के ज़रीए जो मैंने तुमको सुनाया है तुम तो पाक-साफ हो चुके हो। 4 मुझमें कायम रहो तो मैं भी तुममें कायम रहूँगा। जो शाख बेल से कट गई है वह फल नहीं ला सकती। बिल्कुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझमें कायम नहीं रहते फल नहीं ला सकते।

5 मैं ही अंगूर की बेल हूँ, और तुम उस की शाखें हो। जो मुझमें कायम रहता है और मैं उसमें वह बहुत-सा फल लाता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते। 6 जो मुझमें कायम नहीं रहता और न मैं उसमें उसे बेफायदा शाख की तरह बाहर फेंक दिया जाता है। ऐसी शाखें सूख जाती हैं और लोग उनका ढेर लगाकर उन्हें आग में झोंक देते हैं जहाँ वह जल जाती हैं। 7 अगर तुम मुझमें कायम रहो और मैं तुममें तो जो जी चाहे माँगो, वह तुमको दिया जाएगा। 8 जब तुम बहुत-सा फल लाते और यों मेरे शागिर्द साबित होते हो तो इससे मेरे बाप को जलाल मिलता है। 9 जिस तरह बाप ने मुझसे मुहब्बत रखी है उसी तरह मैंने तुमसे भी मुहब्बत रखी है। अब मेरी मुहब्बत में कायम रहो। 10 जब तुम मेरे अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारते हो तो तुम मेरी मुहब्बत में कायम रहते हो। मैं भी इसी तरह अपने बाप के अहकाम के मुताबिक चलता हूँ और यों उस की मुहब्बत में कायम रहता हूँ।

11 मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि मेरी ख़ुशी तुममें हो बल्कि तुम्हारा दिल ख़ुशी से भरकर छलक उठे। 12 मेरा हुक्म यह है कि एक दूसरे को वैसे प्यार करो जैसे मैंने तुमको प्यार किया है। 13 इससे बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे। 14 तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुमको बताता हूँ। 15 अब से मैं नहीं कहता कि तुम गुलाम हो, क्योंकि गुलाम नहीं जानता कि उसका मालिक क्या करता है। इसके बजाए मैंने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्योंकि मैंने तुमको सब कुछ बताया है जो मैंने अपने बाप से सुना है। 16 तुमने मुझे नहीं चुना बल्कि मैंने तुमको चुन लिया है। मैंने तुमको मुक़र्रर किया कि जाकर फल लाओ, ऐसा फल जो कायम रहे। फिर बाप तुमको वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम में माँगोगे। 17 मेरा हुक्म यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।

## दुनिया की दुश्मनी

18 अगर दुनिया तुमसे दुश्मनी रखे तो यह बात जहन में रखो कि उसने तुमसे पहले मुझसे दुश्मनी रखी है। 19 अगर तुम दुनिया के होते तो दुनिया तुमको अपना समझकर प्यार करती। लेकिन तुम दुनिया के नहीं हो। मैंने तुमको दुनिया से अलग करके चुन लिया है। इसलिए दुनिया तुमसे दुश्मनी रखती है। 20 वह बात याद करो जो मैंने तुमको बताई कि गुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। अगर उन्होंने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएँगे। और अगर उन्होंने मेरे कलाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारी तो वह तुम्हारी बातों पर भी अमल करेंगे। 21 लेकिन तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेंगे, मेरे नाम की वजह से करेंगे, क्योंकि वह उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है। 22 अगर मैं आया न होता और उनसे बात न की होती तो वह कुस्स्वार न ठहरते। लेकिन अब उनके गुनाह का कोई भी उज़्र बाक़ी नहीं रहा। 23 जो मुझसे दुश्मनी रखता है वह मेरे बाप से भी दुश्मनी रखता है। 24 अगर मैंने उनके दरमियान ऐसा काम न किया होता जो किस्ती और ने नहीं किया तो वह कुस्स्वार न ठहरते। लेकिन अब उन्होंने सब कुछ देखा है और फिर भी मुझसे और मेरे बाप से दुश्मनी रखी है। 25 और ऐसा होना भी था ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए कि “उन्होंने बिलावजह मुझसे कीना रखा है।”

26 जब वह मददगार आएगा जिससे मैं बाप की तरफ से तुम्हारे पास भेजूँगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा। वह सच्चाई का रूह है जो बाप में से निकलता है। 27 तुमको भी मेरे बारे में गवाही देना है, क्योंकि तुम इत्तिदा से मेरे साथ रहे हो।

## 16

1 मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि तुम गुमराह न हो जाओ। 2 वह तुमको यहूदी जमातों से निकाल देंगे, बल्कि वह वक्त भी आनेवाला है कि जो भी तुमको मार डालेगा वह समझेगा, ‘मैंने अल्लाह की खिदमत की है।’ 3 वह इस किस्म की हरकतें इसलिए करेंगे कि उन्होंने न बाप को जाना है, न मुझे। 4 मैंने तुमको यह बातें इसलिए बताई हैं कि जब उनका वक्त आ जाए तो तुमको याद आए कि मैंने तुम्हें आगाह कर दिया था।

## रूहल-कुद्दस की खिदमत

मैंने अब तक तुमको यह नहीं बताया क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। 5 लेकिन अब मैं उसके पास जा रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है। तो भी तुममें से कोई मुझसे नहीं पूछता, ‘आप कहाँ जा रहे हैं?’ 6 इसके बजाए तुम्हारे दिल गमज़दा हैं कि मैंने तुमको ऐसी



बातें बताई हैं।<sup>7</sup> लेकिन मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम्हारे लिए फ़ायदामंद है कि मैं जा रहा हूँ। अगर मैं न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।<sup>8</sup> और जब वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाजी और अदालत के बारे में दुनिया की गलती को बेनकाब करके यह जाहिर करेगा : 9 गुनाह के बारे में यह कि लोग मुझ पर ईमान नहीं रखते, 10 रास्तबाजी के बारे में यह कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से नहीं देखोगे, 11 और अदालत के बारे में यह कि इस दुनिया के हुक्मरान की अदालत हो चुकी है।

12 मुझे तुमको मज़ीद बहुत कुछ बताना है, लेकिन इस वक़्त तुम उसे बरदाश्त नहीं कर सकते। 13 जब सच्चाई का रूह आएगा तो वह पूरी सच्चाई की तरफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगा। वह अपनी मरज़ी से बात नहीं करेगा बल्कि सिर्फ़ वही कुछ कहेगा जो वह ख़ुद सुनेगा। वही तुमको मुस्तक़बिल के बारे में भी बताएगा। 14 और वह इसमें मुझे जलाल देगा कि वह तुमको वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझसे मिला होगा। 15 जो कुछ भी बाप का है वह मेरा है। इसलिए मैंने कहा, 'रूह तुमको वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझसे मिला होगा।'

### अब दुख फिर सुख

16 थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे।”

17 उसके कुछ शागिर्द आपस में बात करने लगे, “ईसा के यह कहने से क्या मुराद है कि 'थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे'? और इसका क्या मतलब है, 'मैं बाप के पास जा रहा हूँ?'" 18 और वह सोचते रहे, “यह किस किस की 'थोड़ी देर' है जिसका ज़िक्र वह कर रहे हैं? हम उनकी बात नहीं समझते।”

19 ईसा ने जान लिया कि वह मुझसे इसके बारे में सवाल करना चाहते हैं। इसलिए उसने कहा, “क्या तुम एक दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरी इस बात का क्या मतलब है कि 'थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे'? 20 मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम रो रोकर मातम करोगे जबकि दुनिया ख़ुश होगी। तुम गम करोगे, लेकिन तुम्हारा गम ख़ुशी में बदल जाएगा। 21 जब किसी औरत के बच्चा पैदा होनेवाला होता है तो उसे गम और तकलीफ़ होती है क्योंकि उसका वक़्त आ गया है। लेकिन ज्योंही बच्चा पैदा हो जाता है तो माँ ख़ुशी के मोरे कि एक इनसान दुनिया में आ गया है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है। 22 यही तुम्हारी हालत है। क्योंकि अब तुम गमजदा हो, लेकिन मैं तुमसे दुबारा मिलूँगा। उस वक़्त तुमको ख़ुशी होगी, ऐसी ख़ुशी जो तुमसे कोई छीन न लेगा।

23 उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप से माँगोगे वह तुमको देगा। 24 अब तक तुमने मेरे नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुमको मिलेगा। फिर तुम्हारी ख़ुशी पूरी हो जाएगी।

### दुनिया पर फ़तह

25 मैंने तुमको यह तमसीलों में बताया है। लेकिन एक दिन आएगा जब मैं ऐसा नहीं करूँगा। उस वक़्त मैं तमसीलों में बात नहीं करूँगा बल्कि तुमको बाप के बारे में साफ़ साफ़ बता दूँगा। 26 उस दिन तुम मेरा नाम लेकर माँगोगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि मैं ही तुम्हारी खातिर बाप से दरखास्त करूँगा। 27 क्योंकि बाप ख़ुद तुमको प्यार करता है, इसलिए कि तुमने मुझे प्यार किया है और ईमान लाए हो कि मैं अल्लाह में से निकल आया हूँ। 28 मैं बाप में से निकलकर दुनिया में आया हूँ। और अब मैं दुनिया को छोड़कर बाप के पास वापस जाता हूँ।”

29 इस पर उसके शागिर्दों ने कहा, “अब आप तमसीलों में नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात कर रहे हैं। 30 अब हमें समझ आई है कि आप सब कुछ जानते हैं और कि इसकी ज़रूरत नहीं कि कोई आपकी पूछ-गछ करे। इसलिए हम ईमान रखते हैं कि आप अल्लाह में से निकलकर आए हैं।”

31 ईसा ने जवाब दिया, “अब तुम ईमान रखते हो? 32 देखो, वह वक़्त आ रहा है बल्कि आ चुका है जब तुम तितर-बितर हो जाओगे। मुझे अकेला छोड़कर हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी मैं अकेला नहीं हूँगा क्योंकि बाप मेरे साथ है। 33 मैंने तुमको इसलिए यह बात बताई ताकि तुम मुझमें सलामती पाओ। दुनिया में तुम मुसीबत में फँसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनिया पर गालिब आया हूँ।”

## 17

### ईसा अपने शागिर्दों के लिए दुआ करता है

1 यह कहकर ईसा ने अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाई और दुआ की, “ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने फ़रजंद को जलाल दे ताकि फ़रजंद तुझे जलाल दे। 2 क्योंकि तूने उसे तमाम इनसानों पर इख़्तियार दिया है ताकि वह उन सबको अबदी ज़िंदगी दे जो तूने उसे दिए हैं। 3 और अबदी ज़िंदगी यह है कि वह तुझे जान लें जो वाहिद और सच्चा ख़ुदा है और ईसा मसीह

को भी जान लें जिसे तूने भेजा है। 4 मैंने तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और उस काम की तकमील की जिसकी जिम्मादारी तूने मुझे दी थी। 5 और अब मुझे अपने हुज़ूर जलाल दे, ऐ बाप, वही जलाल जो मैं दुनिया की तखलीक से पेशतर तेरे हुज़ूर रखता था।

6 मैंने तेरा नाम उन लोगों पर जाहिर किया जिन्हें तूने दुनिया से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे कलाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारी है। 7 अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तूने मुझे दिया है वह तेरी तरफ से है। 8 क्योंकि जो बातें तूने मुझे दीं मैंने उन्हें दी हैं। नतीजे में उन्होंने यह बातें कबूल करके हकीकी तौर पर जान लिया कि मैं तुझमें से निकलकर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तूने मुझे भेजा है।

9 मैं उनके लिए दुआ करता हूँ, दुनिया के लिए नहीं बल्कि उनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वह तेरे ही हैं। 10 जो भी मेरा है वह तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे मुझे उनमें जलाल मिला है। 11 अब से मैं दुनिया में नहीं हूँगा। लेकिन यह दुनिया में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। क़ुद्दस बाप, अपने नाम में उन्हें महफूज़ रख, उस नाम में जो तूने मुझे दिया है, ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं। 12 जितनी देर मैं उनके साथ रहा मैंने उन्हें तेरे नाम में महफूज़ रखा, उसी नाम में जो तूने मुझे दिया था। मैंने यों उनकी निगहबानी की कि उनमें से एक भी हलाक नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फ़रज़द के। यों कलाम की पेशगोई पूरी हुई। 13 अब तो मैं तेरे पास आ रहा हूँ। लेकिन मैं दुनिया में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ ताकि उनके दिल मेरी खुशी से भरकर छलक उठें। 14 मैंने उन्हें तेरा कलाम दिया है और दुनिया ने उनसे दुश्मनी रखी, क्योंकि यह दुनिया के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। 15 मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनिया से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इबलीस से महफूज़ रखे। 16 वह दुनिया के नहीं हैं जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। 17 उन्हें सच्चाई के वसीले से मखसूसो-मुकद्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है। 18 जिस तरह तूने मुझे दुनिया में भेजा है उसी तरह मैंने भी उन्हें दुनिया में भेजा है। 19 उनकी खातिर मैं अपने आपको मखसूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के वसीले से मखसूसो-मुकद्दस किया जाए।

20 मेरी दुआ न सिर्फ़ इन्हीं के लिए है, बल्कि उन सबके लिए भी जो इनका पैगाम सुनकर मुझ पर ईमान लाएँगे 21 ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ बाप, मुझमें है और मैं तुझमें हूँ उसी तरह वह भी हममें हों ताकि दुनिया यकीन करे कि तूने मुझे भेजा है। 22 मैंने उन्हें वह जलाल दिया है जो तूने मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं, 23 मैं उनमें और तू मुझमें। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि दुनिया जान ले कि तूने मुझे भेजा और कि तूने उनसे मुहब्बत रखी है जिस तरह मुझसे रखी है।

24 ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तूने मुझे दिए हैं वह भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखें, वह जलाल जो तूने इसलिए मुझे दिया है कि तूने मुझे दुनिया की तखलीक से पेशतर प्यार किया है। 25 ऐ रास्त बाप, दुनिया तुझे नहीं जानती, लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और यह शागिर्द जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है। 26 मैंने तेरा नाम उन पर जाहिर किया और इसे जाहिर करता रहूँगा ताकि तेरी मुझसे मुहब्बत उनमें हो और मैं उनमें हूँ।”

## 18

### ईसा की गिरफ्तारी

1 यह कहकर ईसा अपने शागिर्दों के साथ निकला और वादीए-किदरोन को पार करके एक बाग में दाखिल हुआ। 2 यहदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करनेवाला था वह भी इस जगह से वाकिफ़ था, क्योंकि ईसा वहाँ अपने शागिर्दों के साथ जाया करता था। 3 राहनुमा इमामों और फरीसियों ने यहदाह को रोमी फौजियों का दस्ता और बैतुल-मुकद्दस के कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशालें, लालटैन और हथियार लिए बाग में पहुँचे। 4 ईसा को मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनाँचे उसने निकलकर उनसे पूछा, “तुम किस को ढूँढ़ रहे हो?”

5 उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”

ईसा ने उन्हें बताया, “मैं ही हूँ।”

यहदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता था, वह भी उनके साथ खड़ा था। 6 जब ईसा ने एलान किया, “मैं ही हूँ,” तो सब पीछे हटकर ज़मीन पर गिर पड़े। 7 एक और बार ईसा ने उनसे सवाल किया, “तुम किस को ढूँढ़ रहे हो?”

उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”

8 उसने कहा, “मैं तुमको बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँढ़ रहे हो तो इनको जाने दो।” 9 यों उस की यह बात पूरी हुई, “मैंने उनमें से जो तूने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।”

10 शमौन पतरस के पास तलवार थी। अब उसने उसे मियान से निकालकर इमामे-आज़म के गुलाम का दहना कान उडा दिया (गुलाम का नाम मलखूस था)। 11 लेकिन ईसा ने पतरस से कहा, “तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पिचूँ जो बाप ने मुझे दिया है?”

ईसा हन्ना के सामने

12 फिर फ़ौजी दस्ते, उनके अफसर और बैतुल-मुक़द्दस के यहूदी पहरेदारों ने ईसा को गिरफ्तार करके बाँध लिया। 13 पहले वह उसे हन्ना के पास ले गए। हन्ना उस साल के इमामे-आज़म कायफ़ा का सुसर था। 14 कायफ़ा ही ने यहूदियों को यह मशवरा दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्मत के लिए मर जाए।

पतरस ईसा को जानने से इनकार करता है

15 शमौन पतरस किसी और शागिर्द के साथ ईसा के पीछे हो लिया था। यह दूसरा शागिर्द इमामे-आज़म का जानेवाला था, इसलिए वह ईसा के साथ इमामे-आज़म के सहन में दाखिल हुआ। 16 पतरस बाहर दरवाजे पर खड़ा रहा। फिर इमामे-आज़म का जानेवाला शागिर्द दुबारा निकल आया। उसने गेट की निगरानी करनेवाली औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ अंदर ले जाने की इजाज़त मिली। 17 उस औरत ने पतरस से पूछा, “तुम भी इस आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?”

उसने जवाब दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

18 ठंड थी, इसलिए गुलामों और पहरेदारों ने लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उसके पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा ताप रहा था।

इमामे-आज़म ईसा की पूछ-गछ करता है

19 इतने में इमामे-आज़म ईसा की पूछ-गछ करके उसके शागिर्दों और तालीम के बारे में तफ़्तीश करने लगा। 20 ईसा ने जवाब में कहा, “मैंने दुनिया में खुलकर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतख़ानों और बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैंने कुछ नहीं कहा। 21 आप मुझे क्यों पूछ रहे हैं? उनसे दरियाफ्त करें जिन्होंने मेरी बातें सुनी हैं। उनको मालूम है कि मैंने क्या कुछ कहा है।”

22 इस पर साथ खड़े बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़ मारकर कहा, “क्या यह इमामे-आज़म से बात करने का तरीका है जब वह तुमसे कुछ पूछे?”

23 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैंने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तूने मुझे क्यों मारा?”

24 फिर हन्ना ने ईसा को बाँधी हुई हालत में इमामे-आज़म कायफ़ा के पास भेज दिया।

पतरस दुबारा ईसा को जानने से इनकार करता है

25 शमौन पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में दूसरे उससे पूछने लगे, “तुम भी उसके शागिर्द हो कि नहीं?”

लेकिन पतरस ने इनकार किया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

26 फिर इमामे-आज़म का एक गुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिसका कान पतरस ने उडा दिया था, “क्या मैंने तुमको बाग में उसके साथ नहीं देखा था?”

27 पतरस ने एक बार फिर इनकार किया, और इनकार करते ही मुरग की बाँग सुनाई दी।

ईसा को पीलातुस के सामने पेश किया जाता है

28 फिर यहूदी ईसा को कायफ़ा से लेकर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियम के पास पहुँच गए। अब सुबह हो चुकी थी और चूँकि यहूदी फसह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इसलिए वह महल में दाखिल न हुए, बरना वह नापाक हो जाते। 29 चुनौचे पीलातुस निकलकर उनके पास आया और पूछा, “तुम इस आदमी पर क्या इलज़ाम लगा रहे हो?”

30 उन्होंने जवाब दिया, “अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आपके हवाले न करते।”

31 पीलातुस ने कहा, “फिर इसे ले जाओ और अपनी शरई अदालतों में पेश करो।”

लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया, “हमें किसी को सज़ाए-मौत देने की इजाज़त नहीं।” 32 ईसा ने इस तरफ़ इशारा किया था कि वह किस तरह मरेगा और अब उस की यह बात पूरी हुई।

33 तब पीलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से उसने ईसा को बुलाया और उससे पूछा, “क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

34 ईसा ने पूछा, “क्या आप अपनी तरफ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आपको मेरे बारे में बताया है?”

35 पीलातुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी अपनी क्रौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया है। तुमसे क्या कुछ सरजद हुआ है?”

36 ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं है। अगर वह इस दुनिया की होती तो मेरे खादिम सख्त जिद्दो-जहद करते ताकि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है।”

37 पीलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाकई बादशाह हो?”

ईसा ने जवाब दिया, “आप सहीह कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी मकसद के लिए पैदा होकर दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी सच्चाई की तरफ से है वह मेरी सुनता है।”

38 पीलातुस ने पूछा, “सच्चाई क्या है?”

**ईसा को सज़ाए-मौत सुनाई जाती है**

फिर वह दुबारा निकलकर यहूदियों के पास गया। उसने एलान किया, “मुझे उसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली। 39 लेकिन तुम्हारी एक रस्म है जिसके मुताबिक मुझे ईद-फसह के मौके पर तुम्हारे लिए एक कैदी को रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं ‘यहूदियों के बादशाह’ को रिहा कर दूँ?”

40 लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, “नहीं, इसको नहीं बल्कि बर-अब्बा को।” (बर-अब्बा डाकू था।)

## 19

1 फिर पीलातुस ने ईसा को कोड़े लगावाए। 2 फौजियों ने काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। उन्होंने उसे अरगवानी रंग का लिबास भी पहनाया। 3 फिर उसके सामने आकर वह कहते, “ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!” और उसे थप्पड़ मारते थे।

4 एक बार फिर पीलातुस निकल आया और यहूदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।” 5 फिर ईसा काँटेदार ताज और अरगवानी रंग का लिबास पहने बाहर आया। पीलातुस ने उनसे कहा, “लो यह है वह आदमी।”

6 उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उनके मुलाजिम चीखने लगे, “इसे मसलूब करें, इसे मसलूब करें!”

पीलातुस ने उनसे कहा, “तुम ही इसे ले जाकर मसलूब करो। क्योंकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।”

7 यहूदियों ने इसरार किया, “हमारे पास शरीअत है और इस शरीअत के मुताबिक लाजिम है कि वह मारा जाए। क्योंकि इसने अपने आपको अल्लाह का फरजंद करार दिया है।”

8 यह सुनकर पीलातुस मज़ीद डर गया। 9 दुबारा महल में जाकर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?”

लेकिन ईसा खामोश रहा। 10 पीलातुस ने उससे कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मसलूब करने का इख्तियार है?”

11 ईसा ने जवाब दिया, “आपको मुझ पर इख्तियार न होता अगर वह आपको ऊपर से न दिया गया होता। इस वजह से उस शख्स से ज्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिसने मुझे दुश्मन के हवाले कर दिया है।”

12 इसके बाद पीलातुस ने उसे आज़ाद करने की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख चीखकर कहने लगे, “अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहनशाह कैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह शहनशाह की मुखालफत करता है।”

13 इस तरह की बातें सुनकर पीलातुस ईसा को बाहर ले आया। फिर वह जज की कुरसी पर बैठ गया। उस जगह का नाम “पच्छीकारी” था। (अरामी ज़बान में वह गबत्ता कहलाती थी।) 14 अब दोपहर के तकर्रीबन बारह बज गए थे। उस दिन ईद के लिए तैयारियों की जाती थी, क्योंकि अगले दिन ईद का आगाज़ था। पीलातुस बोल उठा, “लो, तुम्हारा बादशाह!”

15 लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले जाएँ! इसे मसलूब करें!”

पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब पर चढ़ाऊँ?”

राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवाए शहनशाह के हमारा कोई बादशाह नहीं है।”

16 फिर पीलातुस ने ईसा को उनके हवाले कर दिया ताकि उसे मसलूब किया जाए।

**ईसा को मसलूब किया जाता है**

चुनौचे वह ईसा को लेकर चले गए। 17 वह अपनी सलीब उठाए शहर से निकला और उस जगह पहुँचा जिसका नाम खोपड़ी (अरामी ज़बान में गुलगुता) था। 18 वहाँ उन्होंने उसे सलीब पर चढ़ा दिया। साथ साथ उन्होंने उसके बाएँ और दाएँ

हाथ दो और आदमियों को मसलब किया। 19 पीलातुस ने एक तख्ती बनवाकर उसे ईसा की सलीब पर लगवा दिया। तख्ती पर लिखा था, 'ईसा नासरी, यहदियों का बादशाह।' 20 बहुत-से यहदियों ने यह पढ लिया, क्योंकि मसलूबियत का मकाम शहर के करीब था और यह जुमला अरामी, लातीनी और यूनानी ज़बानों में लिखा था। 21 यह देखकर यहदियों के राहनुमा इमामों ने एतराज़ किया, " 'यहदियों का बादशाह' न लिखें बल्कि यह कि 'इस आदमी ने यहदियों का बादशाह होने का दावा किया।' "

22 पीलातुस ने जवाब दिया, "जो कुछ मैंने लिख दिया सो लिख दिया।"

23 ईसा को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों ने उसके कपड़े लेकर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर फ़ौजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोगा बेजोड़ था। वह ऊपर से लेकर नीचे तक बुना हुआ एक ही टुकड़े का था। 24 इसलिए फ़ौजियों ने कहा, "आओ, इसे फाड़कर तकसीम न करें बल्कि इस पर कुरा डालें।" यों कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हुई, "उन्होंने आपस में मेरे कपड़े बाँट लिए और मेरे लिबास पर कुरा डाला।" फ़ौजियों ने यही कुछ किया।

25 कुछ खवातीन भी ईसा की सलीब के करीब खड़ी थीं : उस की माँ, उस की खाला, क्लोपास की बीवी मरियम और मरियम मगदलीनी। 26 जब ईसा ने अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े देखा जो उसे प्यारा था तो उसने कहा, "ऐ खातून, देखें आपका बेटा यह है।"

27 और उस शागिर्द से उसने कहा, "देख, तेरी माँ यह है।" उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा की माँ को अपने घर रखा।

### ईसा की मौत

28 इसके बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा मिशन तकमील तक पहुँच चुका है तो उसने कहा, "मुझे प्यास लगी है।" (इससे भी कलामे-मुक़द्दस की एक पेशगोई पूरी हुई।)

29 करीब मैं के सिरके से भरा बरतन पड़ा था। उन्होंने एक इस्पंज सिरके में डुबोकर उसे जूफ़े की शाख़ पर लगा दिया और उठाकर ईसा के मुँह तक पहुँचाया। 30 यह सिरका पीने के बाद ईसा बोल उठा, "काम मुकम्मल हो गया है।" और सड़काकर उसने अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द कर दी।

### ईसा का पहलू छेदा जाता है

31 फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आगाज़ और एक खास सबत था। इसलिए यहदी नहीं चाहते थे कि मसलूब हुई लाशें अगले दिन तक सलीबों पर लटकती रहें। चुनाँचे उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की कि वह उनकी टाँगें तुड़वाकर उन्हें सलीबों से उतारने दे। 32 तब फ़ौजियों ने आकर ईसा के साथ मसलूब किए जानेवाले आदमियों की टाँगें तोड़ दीं, पहले एक की फिर दूसरे की। 33 जब वह ईसा के पास आए तो उन्होंने देखा कि वह फ़ौत हो चुका है, इसलिए उन्होंने उस की टाँगें न तोड़ीं। 34 इसके बजाए एक ने नेजे से ईसा का पहलू छेद दिया। ज़ख़म से फ़ौरन खून और पानी बह निकला। 35 (जिसने यह देखा है उसने गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हकीकत बयान कर रहा है और उस की गवाही का मक़सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ।) 36 यह यों हुआ ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए, "उस की एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।" 37 कलामे-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, "वह उस पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है।"

### ईसा को दफ़नाया जाता है

38 बाद में अरिमतियाह के रहनेवाले यूसुफ ने पीलातुस से ईसा की लाश उतारने की इजाज़त माँगी। (यूसुफ़ ईसा का खुफ़िया शागिर्द था, क्योंकि वह यहदियों से डरता था।) इसकी इजाज़त मिलने पर वह आया और लाश को उतार लिया। 39 नीकुदेमस भी साथ था, वह आदमी जो गुज़रे दिनों में रात के वक़्त ईसा से मिलने आया था। नीकुदेमस अपने साथ मुर और ऊद की तकर्रीबन 34 किलोग्राम ख़ुशबू लेकर आया था। 40 यहदी जनाज़े की रस्मात के मुताबिक़ उन्होंने लाश पर ख़ुशबू लगाकर उसे पट्टियों से लपेट दिया। 41 सलीबों के करीब एक बाग़ था और बाग़ में एक नई कब्र थी जो अब तक इस्तेमाल नहीं की गई थी। 42 उसके करीब होने के सबब से उन्होंने ईसा को उसमें रख दिया, क्योंकि फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आगाज़ था।

## 20

### खाली कब्र

1 हफ़ते का दिन गुज़र गया तो इतवार को मरियम मगदलीनी सुबह-सवेरे कब्र के पास आई। अभी अंधेरा था। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि कब्र के मुँह पर का पत्थर एक तरफ़ हटाया गया है। 2 मरियम दौड़कर शमौन पतरस और ईसा को प्यारे शागिर्द के पास आई। उसने इतला दी, "वह खुदाबंद को कब्र से ले गए हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।"

3 तब पतरस दूसरे शागिर्द समेत कब्र की तरफ चल पड़ा। 4 दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शागिर्द ज्यादा तेज़रफ़तार था। वह पहले कब्र पर पहुँच गया। 5 उसने झुककर अंदर झाँका तो कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह अंदर न गया। 6 फिर शमौन पतरस उसके पीछे पहुँचकर कब्र में दाखिल हुआ। उसने भी देखा कि कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी हैं 7 और साथ वह कपड़ा भी जिसमें ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह कपड़ा तह किया गया था और पट्टियों से अलग पड़ा था। 8 फिर दूसरा शागिर्द जो पहले पहुँच गया था, वह भी दाखिल हुआ। जब उसने यह देखा तो वह ईमान लाया। 9 (लेकिन अब भी वह कलामे-मुकद्दस की यह पेशगोई नहीं समझते थे कि उसे मुरदों में से जी उठना है।) 10 फिर दोनों शागिर्द घर वापस चले गए।

### ईसा मरियम मग्दलीनी पर जाहिर होता है

11 लेकिन मरियम रो रोकर कब्र के सामने खड़ी रही। और रोते हुए उसने झुककर कब्र में झाँका 12 तो क्या देखती है कि दो फरिशते सफेद लिबास पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले ईसा की लाश पड़ी थी, एक उसके सिरहाने और दूसरा वहाँ जहाँ पहले उसके पाँव थे। 13 उन्होंने मरियम से पूछा, “ऐ खातून, तू क्यों रो रही है?”

उसने कहा, “वह मेरे खुदावंद को ले गए हैं, और मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।”

14 फिर उसने पीछे मुड़कर ईसा को वहाँ खड़े देखा, लेकिन उसने उसे न पहचाना। 15 ईसा ने पूछा, “ऐ खातून, तू क्यों रो रही है, किस को ढूँढ़ रही है?”

यह सोचकर कि वह माली है उसने कहा, “जनाब, अगर आप उसे ले गए हैं तो मुझे बता दें कि उसे कहाँ रख दिया है ताकि उसे ले जाऊँ।”

16 ईसा ने उससे कहा, “मरियम!”

वह उस की तरफ मुड़ी और बोल उठी, “रब्बूनी!” (इसका मतलब अरामी ज़बान में उस्ताद है।)

17 ईसा ने कहा, “मेरे साथ चिमटी न रह, क्योंकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने खुदा और तुम्हारे खुदा के पास।”

18 चुनौचे मरियम मग्दलीनी शागिर्दों के पास गई और उन्हें इतला दी, “मैंने खुदावंद को देखा है और उसने मुझसे यह बातें कही।”

### ईसा अपने शागिर्दों पर जाहिर होता है

19 उस इतवार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्होंने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्योंकि वह यहदियों से डरते थे। अचानक ईसा उनके दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी सलामती हो,” 20 और उन्हें अपने हाथों और पहलू को दिखाया। खुदावंद को देखकर वह निहायत खुश हुए। 21 ईसा ने दुबारा कहा, “तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह मैं तुमको भेज रहा हूँ।” 22 फिर उन पर फूँककर उसने फरमाया, “रूहुल-कुद्दूस को पा लो। 23 अगर तुम किसी के गुनाहों को मुआफ़ करो तो वह मुआफ़ किए जाएंगे। और अगर तुम उन्हें मुआफ़ न करो तो वह मुआफ़ नहीं किए जाएंगे।”

### तोमा शक करता है

24 बारह शागिर्दों में से तोमा जिसका लकब जुड़वाँ था ईसा के आने पर मौजूद न था। 25 चुनौचे दूसरे शागिर्दों ने उसे बताया, “हमने खुदावंद को देखा है!” लेकिन तोमा ने कहा, “मुझे यकीन नहीं आता। पहले मुझे उसके हाथों में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उनमें अपनी उँगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उसके पहलू के जख़म में डालूँ। फिर ही मुझे यकीन आएगा।”

26 एक हफ़ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा मकान में जमा थे। इस मरतबा तोमा भी साथ था। अगरचे दरवाज़ों पर ताले लगे थे फिर भी ईसा उनके दरमियान आकर खड़ा हुआ। उसने कहा, “तुम्हारी सलामती हो!” 27 फिर वह तोमा से मुखातिब हुआ, “अपनी उँगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू के जख़म में डाल और बेएतकाद न हो बल्कि ईमान रख।”

28 तोमा ने जवाब में उससे कहा, “ऐ मेरे खुदावंद! ऐ मेरे खुदा!”

29 फिर ईसा ने उसे बताया, “क्या तू इसलिए ईमान लाया है कि तूने मुझे देखा है? मुबारक है वह जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।”

### इस किताब का मकसद

30 ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद बहुत-से ऐसे इलाही निशान दिखाए जो इस किताब में दर्ज नहीं हैं। 31 लेकिन जितने दर्ज हैं उनका मकसद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी अल्लाह का फ़रज़द है और आपको इस ईमान के वसीले से उसके नाम से ज़िंदगी हासिल हो।

## 21

ईसा झील पर शागिर्दों पर जाहिर होता है

1 इसके बाद ईसा एक बार फिर अपने शागिर्दों पर जाहिर हुआ जब वह तिबेरियास यानी गलील की झील पर थे। यह यों हुआ। 2 कुछ शागिर्द शमौन पतरस के साथ जमा थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतनेल जो गलील के काना से था, जबदी के दो बेटे और मज्जीद दो शागिर्द।

3 शमौन पतरस ने कहा, “मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।”

दूसरों ने कहा, “हम भी साथ जाएँगे।” चुनौते वह निकलकर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी रात एक भी मछली हाथ न आई। 4 सुबह-सवेरे ईसा झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शागिर्दों को मालूम नहीं था कि वह ईसा ही है। 5 उसने उनसे पूछा, “बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?”

उन्होंने जवाब दिया, “नहीं।”

6 उसने कहा, “अपना जाल कश्ती के दाँएँ हाथ डालो, फिर तुमको कुछ मिलेगा।” उन्होंने ऐसा किया तो मछलियों की झतनी बड़ी तादाद थी कि वह जाल कश्ती तक न ला सके।

7 इस पर खुदावंद के प्यारे शागिर्द ने पतरस से कहा, “यह तो खुदावंद है।” यह सुनते ही कि खुदावंद है शमौन पतरस अपनी चादर ओढ़कर पानी में कूद पड़ा (उसने चादर को काम करने के लिए उतार लिया था।) 8 दूसरे शागिर्द कश्ती पर सवार उसके पीछे आए। वह किनारे से ज्यादा दूर नहीं थे, तकरीबन सौ मीटर के फासले पर थे। इसलिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी में खींच खींचकर खुशकी तक लाए। 9 जब वह कश्ती से उतरे तो देखा कि लकड़ी के कोयलों की आग पर मछलियाँ भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी है। 10 ईसा ने उनसे कहा, “उन मछलियों में से कुछ ले आओ जो तुमने अभी पकड़ी हैं।”

11 शमौन पतरस कश्ती पर गया और जाल को खुशकी पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा। 12 ईसा ने उनसे कहा, “आओ, नाश्ता कर लो।” किसी भी शागिर्द ने सवाल करने की जुरत न की कि “आप कौन हैं?” क्योंकि वह तो जानते थे कि यह खुदावंद ही है। 13 फिर ईसा आया और रोटी लेकर उन्हें दी और इसी तरह मछली भी उन्हें खिलाई।

14 ईसा के जी उठने के बाद यह तीसरी बार थी कि वह अपने शागिर्दों पर जाहिर हुआ।

**ईसा का पतरस से सवाल**

15 नाश्ते के बाद ईसा शमौन पतरस से मुखातिब हुआ, “यहून्ना के बेटे शमौन, क्या तू इनकी निसबत मुझसे ज्यादा मुहब्बत करता है?”

उसने जवाब दिया, “जी खुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा बोला, “फिर मेरे लेलों को चरा।” 16 तब ईसा ने एक और मरतबा पूछा, “शमौन यहून्ना के बेटे, क्या तू मुझसे मुहब्बत करता है?”

उसने जवाब दिया, “जी खुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा बोला, “फिर मेरी भेड़ों की गल्लाबानी कर।” 17 तीसरी बार ईसा ने उससे पूछा, “शमौन यहून्ना के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता है?”

तीसरी दफा यह सवाल सुनने से पतरस को बड़ा दुख हुआ। उसने कहा, “खुदावंद, आपको सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा ने उससे कहा, “मेरी भेड़ों को चरा।

18 मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू खुद अपनी कमर बाँधकर जहाँ जी चाहता घुमता-फिरता था। लेकिन जब तू बड़ा होगा तो तू अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बाँधकर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।” 19 (ईसा की यह बात इस तरह इशारा था कि पतरस किस किस की मौत से अल्लाह को जलाल देगा।) फिर उसने उसे बताया, “मैं पीछे चला।”

**ईसा और दूसरा शागिर्द**

20 पतरस ने मुड़कर देखा कि जो शागिर्द ईसा को प्यारा था वह उनके पीछे चल रहा है। यह वही शागिर्द था जिसने शाम के खाने के दौरान ईसा की तरफ सर झुकाकर पूछा था, “खुदावंद, कौन आपको दुश्मन के हवाले करेगा?” 21 अब उसे देखकर पतरस ने सवाल किया, “खुदावंद, इसके साथ क्या होगा?”

22 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या? बस तू मेरे पीछे चलता रह।”

23 नतीजे में भाइयों में यह खयाल फैल गया कि यह शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह बात नहीं की थी। उसने सिर्फ यह कहा था, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या?”

24 यह वह शागिर्द है जिसने इन बातों की गवाही देकर इन्हें कलमबंद कर दिया है। और हम जानते हैं कि उस की गवाही सच्ची है।

#### खुलासा

25 ईसा ने इसके अलावा भी बहुत कुछ किया। अगर उसका हर काम कलमबंद किया जाता तो मेरे खयाल में पूरी दुनिया में यह किताबें रखने की गुंजाइश न होती।



## अमाल

1 मुअज़ज़त्र थियुफ़िल्लुस, पहली किताब में मैंने सब कुछ बयान किया जो ईसा ने शुरू से लेकर 2 उस दिन तक किया और सिखाया, जब उसे आसमान पर उठाया गया। जाने से पहले उसने अपने चुने हुए रसूलों को रूहल-कुदूस की मारिफत मज़ीद हिदायात दी। 3 अपने दुख उठाने और मौत सहने के बाद उसने अपने आपको जाहिर करके उन्हें बहुत-सी दलीलों से कायल किया कि वह वाकई जिंदा है। वह चालीस दिन के दौरान उन पर जाहिर होता और उन्हें अल्लाह की बादशाही के बारे में बताता रहा। 4 जब वह अभी उनके साथ था उसने उन्हें हुक्म दिया, “यस्शलम को न छोड़ना बल्कि इस इंतज़ार में यहीं ठहरो कि बाप का वादा पूरा हो जाए, वह वादा जिसके बारे में मैंने तुमको आगाह किया है। 5 क्योंकि यहया ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन तुमको थोड़े दिनों के बाद रूहल-कुदूस से बपतिस्मा दिया जाएगा।”

ईसा को उठाया जाता है

6 जो वहाँ जमा थे उन्होंने उससे पूछा, “खुदावंद, क्या आप इसी वक्त इसराईल के लिए उस की बादशाही दुबारा कायम करेंगे?”

7 ईसा ने जवाब दिया, “यह जानना तुम्हारा काम नहीं है बल्कि सिर्फ़ बाप का जो ऐसे औकात और तारीखें मुकर्रर करने का इख्तियार रखता है। 8 लेकिन तुम्हें रूहल-कुदूस की कुव्वत मिलेगी जो तुम पर नाज़िल होगा। फिर तुम यस्शलम, पूरे यहूदिया और सामरिया बल्कि दुनिया की इंतहा तक भेरे गवाह होगे।” 9 यह कहकर वह उनके देखते देखते उठा लिया गया। और एक बादल ने उसे उनकी नज़रों से ओझल कर दिया।

10 वह अभी आसमान की तरफ देख ही रहे थे कि अचानक दो आदमी उनके पास आ खड़े हुए। दोनों सफेद लिबास पहने हुए थे। 11 उन्होंने कहा, “गलील के मर्दों, आप क्यों खड़े आसमान की तरफ देख रहे हैं? यही ईसा जिसे आपके पास से आसमान पर उठाया गया है उसी तरह वापस आया जिस तरह आपने उसे ऊपर जाते हुए देखा है।”

यहूदाह का जा-नशीन

12 फिर वह जैतून के पहाड़ से यस्शलम शहर वापस चले गए। (यह पहाड़ शहर से तकरीबन एक किलोमीटर दूर है।)

13 वहाँ पहुँचकर वह उस बालाखाने में दाखिल हुए जिसमें वह ठहरे हुए थे, यानी पतरस, यहून्ना, याकूब और अंदरियास, फिलिप्पस और तोमा, बरतुत्नाई और मर्ती, याकूब बिन हलफई, शमीन मुजाहिद और यहूदाह बिन याकूब। 14 यह सब यकदिल होकर दुआ में लगे रहे। कुछ औरतें, ईसा की माँ मरियम और उसके भाई भी साथ थे।

15 उन दिनों में पतरस भाइयों में खड़ा हुआ। उस वक़्त तकरीबन 120 लोग जमा थे। उसने कहा, 16 “भाइयो, लाज़िम था कि कलामे-मुक़द्दस की वह पेशगोई पूरी हो जो रूहल-कुदूस ने दाऊद की मारिफत यहूदाह के बारे में की। यहूदाह उनका राहनुमा बन गया जिन्होंने ईसा को गिरिफ्तार किया, 17 गो उसे हममें शुमार किया जाता था और वह इसी खिदमत में हमारे साथ शरीक था।”

18 (जो कैसे यहूदाह को उसके गलत काम के लिए मिल गए थे उनसे उसने एक खेत खरीद लिया था। वहाँ वह सर के बल गिर गया, उसका पेट फट गया और उस की तमाम अंतर्दियों बाहर निकल पड़ी। 19 इसका चर्चा यस्शलम के तमाम बाशिंदों में फैल गया, इसलिए यह खेत उनकी मादरी ज़बान में हक़ल-दमा के नाम से मशहूर हुआ जिसका मतलब है खून का खेत।)

20 पतरस ने अपनी बात जारी रखी, “यही बात जबूर की किताब में लिखी है, “उस की रिहाइशगाह सुनसान हो जाए, कोई उसमें आबाद न हो।” यह भी लिखा है, “कोई और उस की जिम्मादारी उठाए।” 21 चुनाँचे अब ज़रूरी है कि हम यहूदाह की जगह किसी और को चुन लें। यह शख्स उन मर्दों में से एक हो जो उस पूरे वक़्त के दौरान हमारे साथ सफ़र करते रहे जब खुदावंद ईसा हमारे साथ था, 22 यानी उसके यहया के हाथ से बपतिस्मा लेने से लेकर उस वक़्त तक जब उसे हमारे पास से उठाया गया। लाज़िम है कि उनमें से एक हमारे साथ ईसा के जी उठने का गवाह हो।”

23 चुनाँचे उन्होंने दो आदमी पेश किए, यूसुफ़ जो बरसब्बा कहलाता था (उसका दूसरा नाम यूसुस था) और मत्तियाह।

24 फिर उन्होंने दुआ की, “ऐ खुदावंद, तू हर एक के दिल से वाकिफ़ है। हम पर जाहिर कर कि तूने इन दोनों में से किस को चुना है 25 ताकि वह उस खिदमत की जिम्मादारी उठाए जो यहूदाह छोड़कर वहाँ चला गया जहाँ उसे जाना ही था।” 26 यह कहकर उन्होंने दोनों का नाम लेकर कुरा डाला तो मत्तियाह का नाम निकला। लिहाज़ा उसे भी ग्यारह रसूलों में शामिल कर लिया गया।

## 2

## रुहल-कुदूस की आमद

1 फिर ईद-पतिकुस्त का दिन आया। सब एक जगह जमा थे <sup>2</sup> कि अचानक आसमान से ऐसी आवाज़ आई जैसे शदीद आँधी चल रही हो। पूरा मकान जिसमें वह बैठे थे इस आवाज़ से गूँज उठा। <sup>3</sup> और उन्हें शोले की लौएँ जैसी नज़र आईं जो अलग अलग होकर उनमें से हर एक पर उतरकर ठहर गई। <sup>4</sup> सब रुहल-कुदूस से भर गए और मुखलिफ गैरमुल्की ज़बानों में बोलने लगे, हर एक उस ज़बान में जो बोलने की रुहल-कुदूस ने उसे तौफ़ीक दी।

<sup>5</sup> उस वक़्त यरूशलम में ऐसे खुदातरस यहदी ठहरे हुए थे जो आसमान तले की हर क्रौम में से थे। <sup>6</sup> जब यह आवाज़ सुनाई दी तो एक बड़ा हज़ूम जमा हुआ। सब घबरा गए क्योंकि हर एक ने ईमानदारों को अपनी मादरी ज़बान में बोलते सुना। <sup>7</sup> सख़्त हैरतज़दा होकर वह कहने लगे, “क्या यह सब गलील के रहनेवाले नहीं हैं?” <sup>8</sup> तो फिर यह किस तरह हो सकता है कि हममें से हर एक उन्हें अपनी मादरी ज़बान में बातें करते सुन रहा है <sup>9</sup> जबकि हमारे ममालिक यह है : पारथिया, मादिया, ऐलाम, मसोपुतामिया, यहूदिया, कप्पदुकिया, पुंतुस, आसिया, <sup>10</sup> फ़रुगिया, पंफ़ीलिया, मिसर और लिबिया का वह इलाका जो कुरेन के इर्दगिर्द है। रोम से भी लोग मौजूद हैं। <sup>11</sup> यहाँ यहदी भी हैं और गैरयहदी नौमुरीद भी, क्रेते के लोग और अरब के बाशिंदे भी। और अब हम सबके सब इनको अपनी अपनी ज़बान में अल्लाह के अज़ीम कामों का जिक्र करते सुन रहे हैं।” <sup>12</sup> सब दंग रह गए। उलझन में पड़कर वह एक दूसरे से पूछने लगे, “इसका क्या मतलब है?”

<sup>13</sup> लेकिन कुछ लोग उनका मज़ाक उड़ाकर कहने लगे, “यह बस नई मैं पीकर नशे में धुत हो गए हैं।”

## पतरस का पैगाम

<sup>14</sup> फिर पतरस बाकी ग्यारह रसूलों समेत खड़ा होकर ऊँची आवाज़ से उनसे मुखातिब हुआ, “सुनें, यहदी भाइयों और यरूशलम के तमाम रहनेवालों! जान लें और गौर से मेरी बात सुन लें! <sup>15</sup> आपका खयाल है कि यह लोग नशे में हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। देखें, अभी तो सुबह के नौ बजे का वक़्त है। <sup>16</sup> अब वह कुछ हो रहा है जिसकी पेशगोई योएल नबी ने की थी,

<sup>17</sup> ‘अल्लाह फ़रमाता है कि आखिरी दिनों में

मैं अपने रूह को तमाम इनसानों पर उंडेल दूँगा।

तुम्हारे बेटे-बेटियाँ नबुव्वत करेंगे,

तुम्हारे नौजवान रोयाएँ और तुम्हारे बुजुर्ग ख़ाब देखेंगे।

<sup>18</sup> उन दिनों में

मैं अपने रूह को अपने खादिमों और खादिमाओं पर भी उंडेल दूँगा,

और वह नबुव्वत करेंगे।

<sup>19</sup> मैं ऊपर आसमान पर मोज़िजे दिखाऊँगा

और नीचे ज़मीन पर इलाही निशान जाहिर करूँगा,

खून, आग और धुएँ के बादल।

<sup>20</sup> सूरज तारीक हो जाएगा,

चाँद का रंग खून-सा हो जाएगा,

और फिर रब का अज़ीम और जलाली दिन आएगा।

<sup>21</sup> उस वक़्त जो भी रब का नाम लेगा

नजात पाएगा।’

<sup>22</sup> इसराइल के मर्दों, मेरी बात सुनें! अल्लाह ने आपके सामने ही ईसा नासरी की तसदीक की, क्योंकि उसने उसके वसीले से आपके दरमियान अज़बे, मोज़िजे और इलाही निशान दिखाए। आप खुद इस बात से वाकिफ़ हैं। <sup>23</sup> लेकिन अल्लाह को पहले ही इल्म था कि क्या होना है, क्योंकि उसने खुद अपनी मरज़ी से मुकर्रर किया था कि ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया जाए। चुनाँचे आपने बेदीन लोगों के ज़रीए उसे सलीब पर चढ़वाकर कल्ल किया। <sup>24</sup> लेकिन अल्लाह ने उसे मौत की अज़ियतनाक गिरिफ़्त से आज़ाद करके जिंदा कर दिया, क्योंकि मुमकिन ही नहीं था कि मौत उसे अपने कब्ज़े में रखे।

<sup>25</sup> चुनाँचे दाऊद ने उसके बारे में कहा,

‘रब हर वक़्त मेरी आँखों के सामने रहा।

वह मेरे दहने हाथ रहता है

ताकि मैं न डगमगाऊँ।

<sup>26</sup> इसलिए मेरा दिल शादमान है,

और मेरी ज़बान खुशी के नारे लगाती है।

हाँ, मेरा बदन पुर उम्मीद जिंदगी गुज़रेगा।

27 क्योंकि तू मेरी जान को पाताल में नहीं छोड़ेगा,

और न अपने मुकद्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने देगा।

28 तूने मुझे जिंदगी की राहों से आगाह कर दिया है,

और तू अपने हज़ूर मुझे खुशी से सरशार करेगा।'

29 मेरे भाइयो, अगर इजाज़त हो तो मैं आपको दिलेरी से अपने बुजुर्ग दाऊद के बारे में कुछ बताऊँ। वह तो फ़ौत होकर दफनाया गया और उस की कब्र आज तक हमारे दरमियान मौजूद है। 30 लेकिन वह नबी था और जानता था कि अल्लाह ने कसम खाकर मुझे वादा किया है कि वह मेरी औलाद में से एक को मेरे तख्त पर बिठाएगा। 31 मज़क़रा आयात में दाऊद मुस्तक़बिल में देखकर मसीह के जी उठने का ज़िक्र कर रहा है, यानी कि न उसे पाताल में छोड़ा गया, न उसका बदन गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचा। 32 अल्लाह ने इसी ईसा को ज़िंदा कर दिया है और हम सब इसके गवाह हैं। 33 अब उसे सरफ़राज़ करके खुदा के दहने हाथ बिठाया गया और बाप की तरफ से उसे मौजूदा स्हुल-कुदूस मिल गया है। इसी को उसने हम पर उडेल दिया, जिस तरह आप देख और सुन रहे हैं। 34 दाऊद खुद तो आसमान पर नहीं चढ़ा, तो भी उसने फ़रमाया, 'रब ने मेरे रब से कहा,

मेरे दहने हाथ बैठ

35 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को

तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।'

36 चुनौचे पूरा इसराईल यकीन जाने कि जिस ईसा को आपने मसलूब किया है उसे ही अल्लाह ने खुदावंद और मसीह बना दिया है।"

37 पतरस की यह बातें सुनकर लोगों के दिल छिद गए। उन्होंने पतरस और बाक़ी रसूलों से पूछा, "भाइयो, फिर हम क्या करें?"

38 पतरस ने जवाब दिया, "आपमें से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह मुआफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको स्हुल-कुदूस की नेमत मिल जाएगी। 39 क्योंकि यह देने का वादा आपसे और आपके बच्चों से किया गया है, बल्कि उनसे भी जो दूर के हैं, उन सबसे जिन्हें रब हमारा खुदा अपने पास बुलाएगा।"

40 पतरस ने मज़ीद बहुत-सी बातों से उन्हें नसीहत की और समझाया कि "इस टेढ़ी नसल से निकलकर नजात पाएँ।"

41 जिन्होंने पतरस की बात कबूल की उनका बपतिस्मा हुआ। यों उस दिन जमात में तकरीबन 3,000 अफ़राद का इज़ाफ़ा हुआ। 42 यह ईमानदार रसूलों से तालीम पाने, रिफ़ाक़त रखने और रिफ़ाक़ती खानों और दुआओं में शरीक होते रहे।

### ईमानदारों की हैरतअंगेज़ जिंदगी

43 सब पर ख़ौफ़ छा गया और रसूलों की तरफ से बहुत-से मोज़िजे और इलाही निशान दिखाए गए। 44 जो भी ईमान लाते थे वह एक जगह जमा होते थे। उनकी हर चीज़ मुशतरका होती थी। 45 अपनी मिलकियत और माल फ़रोख्त करके उन्होंने हर एक को उस की ज़रूरत के मुताबिक़ दिया। 46 रोज़ाना वह एकदिली से बैतुल-मुक़द्दस में जमा होते रहे। साथ साथ वह मसीह की याद में अपने घरों में रोटी तोड़ते, बडीं खुशी और सादगी से रिफ़ाक़ती खाना खाते 47 और अल्लाह की तमज़ीद करते रहे। उस वक़्त वह तमाम लोगों के मज़ुरे-नज़र थे। और खुदावंद रोज़ बरोज़ जमात में नजातयाफ़ता लोगों का इज़ाफ़ा करता रहा।

## 3

### लँगड़े आदमी की शफ़ा

1 एक दोपहर पतरस और यहून्ना दुआ करने के लिए बैतुल-मुक़द्दस की तरफ़ चल पड़े। तीन बज गए थे। 2 उस वक़्त लोग एक पैदाइशी लँगड़े को उठाकर वहाँ ला रहे थे। रोज़ाना उसे सहन के उस दरवाज़े के पास लाया जाता था जो 'ख़ुबसूरत दरवाज़ा' कहलाता था ताकि वह बैतुल-मुक़द्दस के सहनों में दाख़िल होनेवालों से भीक माँगे सके। 3 पतरस और यहून्ना बैतुल-मुक़द्दस में दाख़िल होनेवाले थे तो लँगड़ा उनसे भीक माँगने लगा। 4 पतरस और यहून्ना गौर से उस की तरफ़ देखने लगे। फिर पतरस ने कहा, "हमारी तरफ़ देखें।" 5 इस तवक्को से कि उसे कुछ मिलेगा लँगड़ा उनकी तरफ़ मुतवज्जिह हुआ। 6 लेकिन पतरस ने कहा, "मेरे पास न तो चाँदी है, न सोना, लेकिन जो कुछ है वह आपको दे देता हूँ। नासरत के ईसा मसीह के नाम से उठें और चलें-फिरें!" 7 उसने उसका दहना हाथ पकड़कर उसे खड़ा किया। उसी वक़्त लँगड़े के पाँव और टखने मज़बूत हो गए। 8 वह उछलकर खड़ा हुआ और चलने-फिरने लगा। फिर वह चलते, क़दते और अल्लाह की तमज़ीद करते हुए उनके साथ बैतुल-मुक़द्दस में दाख़िल हुआ। 9 और तमाम लोगों ने उसे चलते-फिरते और अल्लाह की तमज़ीद करते हुए

देखा। 10 जब उन्होंने जान लिया कि यह वही आदमी है जो खबसूरत नामी दरवाजे पर बैठा भीक माँगा करता था तो वह उस की तबदीली देखकर दंग रह गए।

### बैतुल-मुकद्दस में पतरस का पैगाम

11 वह सब दौड़कर सुलेमान के बरामदे में आए जहाँ भीक माँगनेवाला अब तक पतरस और यहन्ना से लिपटा हुआ था। 12 यह देखकर पतरस उनसे मुखातिब हुआ, “इसराईल के हज़रत, आप यह देखकर क्यों हैरान हैं? आप क्यों घूर घूरकर हमारी तरफ़ देख रहे हैं गोया हमने अपनी जाती ताकत या दीनदारी के बाइस यह किया है कि यह आदमी चल-फिर सके? 13 यह हमारे बापदादा के खुदा, इब्राहीम, इसहाक और याक़ूब के खुदा की तरफ़ से है जिसने अपने बंदे ईसा को जलाल दिया है। यह वही ईसा है जिसे आपने दुश्मन के हवाले करके पीलातुस के सामने रद किया, अगरचे वह उसे रिहा करने का फ़ैसला कर चुका था। 14 आपने उस कुद्दस और रास्तबाज़ को रद करके तकाज़ा किया कि पीलातुस उसके एवज़ एक कातिल को रिहा करके आपको दे दे। 15 आपने जिंदगी के सरदार को क़त्ल किया, लेकिन अल्लाह ने उसे मुरदों में से जिंदा कर दिया। हम इस बात के ग्वाह हैं। 16 आप तो इस आदमी से वाकिफ़ हैं जिसे देख रहे हैं। अब वह ईसा के नाम पर ईमान लाने से बहाल हो गया है, क्योंकि जो ईमान ईसा के ज़रीए मिलता है उसी ने इस आदमी को आपके सामने पूरी सेहतमंदी अता की।

17 मेरे भाइयो, मैं जानता हूँ कि आप और आपके राहनुमाओ को सहीह इल्म नहीं था, इसलिए आपने ऐसा किया। 18 लेकिन अल्लाह ने वह कुछ पूरा किया जिसकी पेशगोई उसने तमाम नबियों की मारिफ़त की थी, यानी यह कि उसका मसीह दुख उठाएगा। 19 अब तौबा करें और अल्लाह की तरफ़ रुज़ लाएँ ताकि आपके गुनाहों को मिटाया जाए। 20 फिर आपको रब के हज़र से ताज़गी के दिन मुयस्सर आएँगे और वह दुबारा ईसा यानी मसीह को भेज देगा जिसे आपके लिए मुक़र्रर किया गया है। 21 लाज़िम है कि वह उस वक़्त तक आसमान पर रहे जब तक अल्लाह सब कुछ बहाल न कर दे, जिस तरह वह इब्तिदा से अपने मुक़द्दस नबियों की ज़बानी फ़रमाता आया है। 22 क्योंकि मूसा ने कहा, ‘रब तुम्हारा खुदा तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुज़्र जैसे नबी को बरपा करेगा। जो भी बात वह कहे उस की सुनना। 23 जो नहीं सुनेगा उसे मिटाकर कौम से निकाल दिया जाएगा।’ 24 और समुएल से लेकर हर नबी ने इन दिनों की पेशगोई की है। 25 आप तो इन नबियों की औलाद और उस अहद के वारिस हैं जो अल्लाह ने आपके बापदादा से कायम किया था, क्योंकि उसने इब्राहीम से कहा था, ‘तेरी औलाद से दुनिया की तमाम कौमों बरकत पाएँगी।’ 26 जब अल्लाह ने अपने बंदे ईसा को बरपा किया तो पहले उसे आपके पास भेज दिया ताकि वह आपमें से हर एक को उस की बुरी राहों से फेरकर बरकत दे।”

## 4

### पतरस और यहन्ना यहदी अदालते-आलिया के सामने

1 पतरस और यहन्ना लोगों से बात कर ही रहे थे कि इमाम, बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों का कप्तान और सदक्की उनके पास पहुँचे। 2 वह नाराज़ थे कि रसूल ईसा के जी उठने की मुनादी करके लोगों को मुरदों में से जी उठने की तालीम दे रहे हैं। 3 उन्होंने उन्हें गिरफ़्तार करके अगले दिन तक जेल में डाल दिया, क्योंकि शाम हो चुकी थी। 4 लेकिन जिन्होंने उनका पैगाम सुन लिया था उनमें से बहुत-से लोग ईमान लाए। यों ईमानदारों में मर्दों की तादाद बढ़कर तक़रीबन 5,000 तक पहुँच गई।

5 अगले दिन यरूशलम में यहदी अदालते-आलिया के सरदारों, बुजुर्गों और शरीअत के उलमा का इजलास मुनअक़िद हुआ। 6 इमामे-आज़म हन्ना और इसी तरह कायफ़ा, यहन्ना, सिक्ंदर और इमामे-आज़म के खानदान के दीगर मर्द भी शामिल थे। 7 उन्होंने दोनों को अपने दरमियान खड़ा करके पूछा, “तुमने यह काम किस कुव्वत और नाम से किया?”

8 पतरस ने रूह्ल-कुद्दस से मामूर होकर उनसे कहा, “कौम के राहनुमाओ और बुजुर्गों, 9 आज हमारी पूछ-गछ की जा रही है कि हमने माज़ूर आदमी पर रहम का इज़हार किसके वसीले से किया कि उसे शफ़ा मिल गई है। 10 तो फिर आप सब और पूरी कौम इसराईल जान ले कि यह नासरत के ईसा मसीह के नाम से हुआ है, जिसे आपने महसलूब किया और जिसे अल्लाह ने मुरदों में से जिंदा कर दिया। यह आदमी उसी के वसीले से सेहत पाकर यहाँ आपके सामने खड़ा है। 11 ईसा वह पत्थर है जिसके बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, ‘जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद किया वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।’ और आप ही ने उसे रद कर दिया है। 12 किसी दूसरे के वसीले से नजात हासिल नहीं होती, क्योंकि आसमान के तले हम इनसानों को कोई और नाम नहीं बख़्शा गया जिसके वसीले से हम नजात पा सकें।”

13 पतरस और यहन्ना की बातें सुनकर लोग हैरान हुए क्योंकि वह दिलेरी से बात कर रहे थे अगरचे वह न तो आलिम थे, न उन्होंने शरीअत की ख़ास तालीम पाई थी। साथ साथ सुननेवालों ने यह भी जान लिया कि दोनों ईसा के साथी हैं। 14 लेकिन चूँकि वह अपनी आँखों से उस आदमी को देख रहे थे जो शफ़ा पाकर उनके साथ खड़ा था इसलिए वह इसके खिलाफ़ कोई

बात न कर सके। 15 चुनौचे उन्होंने उन दोनों को इजलास में से बाहर जाने को कहा और आपस में सलाह-मशवरा करने लगे, 16 “हम इन लोगों के साथ क्या सुलक करें? बात वाजिह है कि उनके जरीए एक इलाही निशान दिखाया गया है। इसका यस्शलम के तमाम बाशिंदों को इल्म हुआ है। हम इसका इनकार नहीं कर सकते। 17 लेकिन लाज़िम है कि उन्हें धमकी देकर हुक्म दें कि वह किसी भी शख्स से यह नाम लेकर बात न करें, वरना यह मामला कौम में मज़ीद फैल जाएगा।”

18 चुनौचे उन्होंने दोनों को बुलाकर हुक्म दिया कि वह आइंदा ईसा के नाम से न कभी बोलें और न तालीम दें।

19 लेकिन पतरस और यूहन्ना ने जवाब में कहा, “आप खूद फ़ैसला कर लें, क्या यह अल्लाह के नज़दीक ठीक है कि हम उस की निसबत आपकी बात मानें? 20 मुमकिन ही नहीं कि जो कुछ हमने देख और सुन लिया है उसे दूसरों को सुनाने से बाज़ रहें।”

21 तब इजलास के मेंबरान ने दोनों को मज़ीद धमकियाँ देकर छोड़ दिया। वह फ़ैसला न कर सके कि क्या सज़ा दें, क्योंकि तमाम लोग पतरस और यूहन्ना के इस काम की वजह से अल्लाह की तमज़ीद कर रहे थे। 22 क्योंकि जिस आदमी को मोज़िज़ाना तौर पर शफा मिली थी वह चालीस साल से ज्यादा लँगड़ा रहा था।

### दिलेरी के लिए दुआ

23 उनकी रिहाई के बाद पतरस और यूहन्ना अपने साथियों के पास वापस गए और सब कुछ सुनाया जो राहनुमा इमामों और बुजुर्गों ने उन्हें बताया था। 24 यह सुनकर तमाम ईमानदारों ने मिलकर ऊँची आवाज़ से दुआ की, “ए आका, तूने आसमानो-ज़मीन और समुंदर को और जो कुछ उनमें है खलक किया है। 25 और तूने अपने खादिम हमारे बाप दाऊद के मुँह से रूहल-कुदूस की मारिफत कहा,

‘अक़वाम क्यो तैश में आ गई हैं?’

उम्में क्यो बेकार साज़िशें कर रही हैं?’

26 दुनिया के बादशाह उठ खड़े हुए,

हुक्मरान रब और उसके मसीह के खिलाफ जमा हो गए हैं।’

27 और वाकई यही कुछ इस शहर में हुआ। हेरोदेस अतिपास, पुंतियुस पीलातुस, गैरयहूदी और यहूदी सब तरे मुकद्दस खादिम ईसा के खिलाफ जमा हुए जिसे तूने मसह किया था। 28 लेकिन जो कुछ उन्होंने किया वह तूने अपनी कुदरत और मरज़ी से पहले ही से मुक़रर किया था। 29 ए रब, अब उनकी धमकियों पर गौर कर। अपने खादिमों को अपना कलाम सुनाने की बड़ी दिलेरी अता फ़रमा। 30 अपनी कुदरत का इज़हार कर ताकि हम तरे मुकद्दस खादिम ईसा के नाम से शफा, इलाही निशान और मोज़िज़े दिखा सकें।’

31 दुआ के इख़िताम पर वह जगह हिल गई जहाँ वह जमा थे। सब रूहल-कुदूस से मामूर हो गए और दिलेरी से अल्लाह का कलाम सुनाने लगे।

### ईमानदारों की मुशतरका मिलकियत

32 ईमानदारों की पूरी जमात एकदिल थी। किसी ने भी अपनी मिलकियत की किसी चीज़ के बारे में नहीं कहा कि यह मेरी है बल्कि उनकी हर चीज़ मुशतरका थी। 33 और रसूल बड़े इख़्तियार के साथ खुदावंद ईसा के जी उठने की गवाही देते रहे। अल्लाह की बड़ी मेहरबानी उन सब पर थी। 34 उनमें से कोई भी ज़ररतमंद नहीं था, क्योंकि जिसके पास भी ज़मीन या मकान थे उसने उन्हें फ़रोख़्त करके रकम 35 रसूलों के पाँवों में रख दी। यों जमाशुदा पैसों में से हर एक को उतने दिए जाते जितनों की उसे ज़ररत होती थी।

36 मसलन यूसुफ नामी एक आदमी था जिसका नाम रसूलों ने बरनबास (हौसलाअफ़ज़ाई का बेटा) रखा था। वह लावी कबीले से और जज़ीराए-कुबस्स का रहनेवाला था। 37 उसने अपना एक खेत फ़रोख़्त करके पैसे रसूलों के पाँवों में रख दिए।

## 5

### हननियाह और सफ़ीरा

1 एक और आदमी था जिसने अपनी बीवी के साथ मिलकर अपनी कोई ज़मीन बेच दी। उनके नाम हननियाह और सफ़ीरा थे। 2 लेकिन हननियाह पूरी रकम रसूलों के पास न लाया बल्कि उसमें से कुछ अपने लिए रख छोड़ा और बाकी रसूलों के पाँवों में रख दिया। उस की बीवी भी इस बात से वाकिफ़ थी। 3 लेकिन पतरस ने कहा, “हननियाह, इबलीस ने आपके दिल को यों क्यो धर दिया है कि आपने रूहल-कुदूस से झूट बोला है? क्योकि आपने ज़मीन की रकम के कुछ पैसे अपने पास रख लिए हैं। 4 क्या यह ज़मीन फ़रोख़्त करने से पहले आपकी नहीं थी? और उसे बेचकर क्या आप पैसे जैसे चाहते

इस्तेमाल नहीं कर सकते थे? आपने क्यों अपने दिल में यह ठान लिया? आपने हमें नहीं बल्कि अल्लाह को धोका दिया है।”

5 यह सुनते ही हननियाह फर्श पर गिरकर मर गया। और तमाम सुननेवालों पर बड़ी दहशत तारी हो गई। 6 जमात के नौजवानों ने उठकर लाश को कफ़न में लपेट दिया और उसे बाहर ले जाकर दफ़न कर दिया।

7 तकरीबन तीन घंटे गुज़र गए तो उस की बीवी अंदर आई। उसे मालूम न था कि शौहर को क्या हुआ है।

8 पतरस ने उससे पूछा, “मुझे बताएँ, क्या आपको अपनी ज़मीन के लिए इतनी ही रकम मिली थी?”

सफ़ीरा ने जवाब दिया, “जी, इतनी ही रकम थी।”

9 पतरस ने कहा, “क्यों आप दोनों रब के रूह को आजमाने पर मुत्तफ़िक़ हुए? देखो, जिन्होंने आपके खाबिंद को दफ़नाया है वह दरवाज़े पर खड़े हैं और आपको भी उठाकर बाहर ले जाएंगे।” 10 उसी लमहे सफ़ीरा पतरस के पाँवों में गिरकर मर गई। नौजवान अंदर आए तो उस की लाश देखकर उसे भी बाहर ले गए और उसके शौहर के पास दफ़न कर दिया। 11 पूरी जमात बल्कि हर सुननेवाले पर बड़ा ख़ौफ़ तारी हो गया।

### मोज़िज़े

12 रसूलों की मारिफ़त अवाम में बहुत-से इलाही निशान और मोज़िज़े जाहिर हुए। उस वक़्त तमाम ईमानदार यकदिली से बैतुल-मुक़द्दस में सुलेमान के बरामदे में जमा हुआ करते थे। 13 बाकी लोग उनसे करीबी ताल्लुक़ रखने की ज़ुरत नहीं करते थे, अगरचे अवाम उनकी बहुत इज़्जत करते थे। 14 तो भी ख़ुदावंद पर ईमान रखनेवाले मर्दाने-ख़वातीन की तादाद बढ़ती गई। 15 लोग अपने मरीज़ों को चारपाइयों और चटाइयों पर रखकर सड़कों पर लाते थे ताकि जब पतरस वहाँ से गुज़रे तो कम अज़्र कम उसका साया किसी न किसी पर पड़ जाए। 16 बहुत-से लोग यस्-शलम के इर्दगिर्द की आबादियों से भी अपने मरीज़ों और बदर्ह-गिरिफ़ता अजीज़ों को लाते, और सब शफ़ा पाते थे।

### रसूलों की इज़ारसानी

17 फिर इमामे-आज़म सद्क़ी फ़िरके के तमाम साथियों के साथ हरकत में आया। हसद से जलकर 18 उन्होंने रसूलों को गिरिफ़तार करके अवामी जेल में डाल दिया। 19 लेकिन रात को रब का एक फ़रिश्ता कैदख़ाने के दरवाज़ों को खोलकर उन्हें बाहर लाया। उसने कहा, 20 “जाओ, बैतुल-मुक़द्दस में खड़े होकर लोगों को इस नई ज़िंदगी से मुताल्लिक़ सब बातें सुनाओ।” 21 फ़रिश्ते की सुनकर रसूल सुबह-सवेरे बैतुल-मुक़द्दस में जाकर तालीम देने लगे।

अब ऐसा हुआ कि इमामे-आज़म अपने साथियों समेत पहुँचा और यहदी अदालते-आलिया का इजलास मुनअक़िद किया। इसमें इसराईल के तमाम बुज़ुर्ग़ शरीक हुए। फिर उन्होंने अपने मुलाज़िमों को कैदख़ाने में भेज दिया ताकि रसूलों को लाकर उनके सामने पेश किया जाए। 22 लेकिन जब वह वहाँ पहुँचे तो पता चला कि रसूल जेल में नहीं हैं। वह वापस आए और कहने लगे, 23 “जब हम पहुँचे तो जेल बड़ी एहतियात से बंद थी और दरवाज़ों पर पहरेदार खड़े थे। लेकिन जब हम दरवाज़ों को खोलकर अंदर गए तो वहाँ कोई नहीं था।” 24 यह सुनकर बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों का कप्तान और राहमुमा इमाम बड़ी उलझन में पड़ गए और सोचने लगे कि अब क्या होगा? 25 इतने में कोई आकर कहने लगा, “बात सुनें, जिन आदमियों को आपने जेल में डाला था वह बैतुल-मुक़द्दस में खड़े लोगों को तालीम दे रहे हैं।” 26 तब बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों का कप्तान अपने मुलाज़िमों के साथ रसूलों के पास गया और उन्हें लाया, लेकिन ज़बरदस्ती नहीं, क्योंकि वह डरते थे कि जमाशुदा लोग उन्हें संगसार न कर दें।

27 चुनौचे उन्होंने रसूलों को लाकर इजलास के सामने खड़ा किया। इमामे-आज़म उनसे मुखातिब हुआ, 28 “हमने तो तुमको सख़्ती से मना किया था कि इस आदमी का नाम लेकर तालीम न दो। इसके बरअक्स तुमने न सिर्फ़ अपनी तालीम यस्-शलम की हर जगह तक पहुँचा दी है बल्कि हमें इस आदमी की मौत के जिम्मादार भी ठहराना चाहते हो।”

29 पतरस और बाकी रसूलों ने जवाब दिया, “लाज़िम है कि हम पहले अल्लाह की सुनें, फिर इनसान की। 30 हमारे बापदादा के ख़ुदा ने ईसा को ज़िंदा कर दिया, उसी शख्स को जिसे आपने सलीब पर चढ़वाकर मार डाला था। 31 अल्लाह ने उसी को हुज़मरान और नजातदहिदा की हैसियत से सरफ़राज़ करके अपने दहने हाथ बिठा लिया ताकि वह इसराईल को तौबा और गुनाहों की मुआफ़ी का मौक़ा फ़राहम करे। 32 हम खुद इन बातों के गवाह हैं और स्हूल-कुद्स भी, जिसे अल्लाह ने अपने फ़रमाँबरदारों को दे दिया है।”

33 यह सुनकर अदालत के लोग तैश में आकर उन्हें क़त्ल करना चाहते थे। 34 लेकिन एक फ़रीसी आलिम इजलास में खड़ा हुआ जिसका नाम जमलियेल था। पूरी क़ौम में वह इज़्जतदार था। उसने हुक़म दिया कि रसूलों को थोड़ी देर के लिए इजलास से निकाल दिया जाए। 35 फिर उसने कहा, “मेरे इसराईली भाइयो, गौर से सोचें कि आप इन आदमियों के साथ क्या करेंगे। 36 क्योंकि कुछ देर हुई थियूदास उठकर कहने लगा कि मैं कोई ख़ास शख्स हूँ। तकरीबन 400 आदमी उसके पीछे लग गए। लेकिन उसे क़त्ल किया गया और उसके पैरोकार बिखर गए। उनकी सरग़रमियों से कुछ न हुआ। 37 इसके बाद

मर्दमशमारी के दिनों में यहदाह गलीली उठा। उसने भी काफी लोगों को अपने पैरोकार बनाकर बगावत करने पर उकसाया। लेकिन उसे भी मार दिया गया और उसके पैरोकार मुंतशिर हुए।<sup>38</sup> यह पेशे-नज़र रखकर मेरा मशवरा यह है कि इन लोगों को छोड़ दें, इन्हें जाने दें। अगर इनका इरादा या सरगरमियाँ इनसानी हैं तो सब कुछ खुद बखुद खत्म हो जाएगा।<sup>39</sup> लेकिन अगर यह अल्लाह की तरफ से है तो आप इन्हें खत्म नहीं कर सकेंगे। ऐसा न हो कि आखिरकार आप अल्लाह ही के खिलाफ लड़ रहे हों।”

हाज़िराने ने उस की बात मान ली।<sup>40</sup> उन्होंने रसूलों को बुलाकर उनको कोड़े लगवाए। फिर उन्होंने उन्हें ईसा का नाम लेकर बोलने से मना किया और फिर जाने दिया।<sup>41</sup> रसूल यहदी अदालते-आलिया से निकलकर चले गए। यह बात उनके लिए बड़ी खुशी का बाइस थी कि अल्लाह ने हमें इस लायक समझा है कि ईसा के नाम की खातिर बेइज़्जत हो जाएँ।<sup>42</sup> इसके बाद भी वह रोज़ाना बैतुल-मुकद्दस और मुख्तलिफ़ घरों में जा जाकर सिखाते और इस ख़ुशख़बरी की मुनादी करते रहे कि ईसा ही मसीह है।

## 6

### रसूलों के सात मददगार

1 उन दिनों में जब ईसा के शागिर्दों की तादाद बढ़ती गई तो यूनानी जबान बोलनेवाले ईमानदार इब्रानी बोलनेवाले ईमानदारों के बारे में बुडबुडाने लगे। उन्होंने कहा, “जब रोज़मर्रा का खाना तकसीम होता है तो हमारी बेवाओं को नज़रंदाज़ किया जाता है।”<sup>2</sup> तब बारह रसूलों ने शागिर्दों की पूरी जमात को इकट्ठा करके कहा, “यह ठीक नहीं कि हम अल्लाह का कलाम सिखाने की खिदमत को छोड़कर खाना तकसीम करने में मसरूफ़ रहें।<sup>3</sup> भाइयो, यह बात पेशे-नज़र रखकर अपने में से सात आदमी चुन लें, जिनके नेक किरदार की आप तसदीक कर सकते हैं और जो रूहुल-कुद्स और हिकमत से मामूर हैं। फिर हम उन्हें खाना तकसीम करने की यह जिम्मादारी देकर<sup>4</sup> अपना पूरा वक़्त दुआ और कलाम की खिदमत में सर्फ़ कर सकेंगे।”

5 यह बात पूरी जमात को पसंद आई और उन्होंने सात आदमी चुन लिए : स्तिफ़नुस (जो ईमान और रूहुल-कुद्स से मामूर था), फिलिप्पुस, प्रूख़ुस्स, नीकानोर, तीमोन, परमिनास और अंताकिया का नीकुलाउस। (नीकुलाओस गैरयहदी था जिसने ईसा पर ईमान लाने से पहले यहदी मज़हब को अपना लिया था।)<sup>6</sup> इन सात आदमियों को रसूलों के सामने पेश किया गया तो उन्होंने इन पर हाथ रखकर दुआ की।

7 यों अल्लाह का पैग़ाम फैलता गया। यरूशालम में ईमानदारों की तादाद निहायत बढ़ती गई और बैतुल-मुकद्दस के बहुत-से इमाम भी ईमान ले आए।

### स्तिफ़नुस की गिरफ्तारी

8 स्तिफ़नुस अल्लाह के फ़ज़ल और कुव्वत से मामूर था और लोगों के दरमियान बड़े बड़े मोजिज़े और इलाही निशान दिखाता था।<sup>9</sup> एक दिन कुछ यहदी स्तिफ़नुस से बहस करने लगे। (वह कुरेन, इस्कंदरिया, किलिकिया और सूबा आसिया के रहनेवाले थे और उनके इबादतखाने का नाम लिबरतीनियों यानी आज्ञाद किए गए गुलामों का इबादतखाना था।)<sup>10</sup> लेकिन वह न उस की हिकमत का सामना कर सके, न उस रूह का जो कलाम करते वक़्त उस की मदद करता था।<sup>11</sup> इसलिए उन्होंने बाज़ आदमियों को यह कहने को उकसाया कि “इसने मूसा और अल्लाह के बारे में कुफ़र बका है। हम खुद इसके गवाह हैं।”<sup>12</sup> यों आम लोगों, बुज़ुर्गों और शरीअत के उलामा में हलचल मच गई। वह स्तिफ़नुस पर चढ़ आए और उसे घसीटकर यहदी अदालते-आलिया के पास लाए।<sup>13</sup> वहाँ उन्होंने झूठे गवाह खड़े किए जिन्होंने कहा, “यह आदमी बैतुल-मुकद्दस और शरीअत के खिलाफ़ बातें करने से बाज़ नहीं आता।<sup>14</sup> हमने इसके मुँह से सुना है कि ईसा नासरी यह मक़ाम तबाह करेगा और वह रस्मो-रिवाज़ बदल देगा जो मूसा ने हमारे सुपुर्द किए हैं।”<sup>15</sup> जब इज़लास में बैठे तमाम लोग धूर धूरकर स्तिफ़नुस की तरफ़ देखने लगे तो उसका चेहरा फरिस्ते का-सा नज़र आया।

## 7

### स्तिफ़नुस की तकरीर

1 इमामे-आज़म ने पूछा, “क्या यह सच है?”

2 स्तिफ़नुस ने जवाब दिया, “भाइयो और बुज़ुर्गों, मेरी बात सुनें। जलाल का खुदा हमारे बाप इब्राहीम पर जाहिर हुआ जब वह अभी मसोपुतामिया में आबाद था। उस वक़्त वह हारान में मुंतकिल नहीं हुआ था।<sup>3</sup> अल्लाह ने उससे कहा, ‘अपने वतन और अपनी क़ौम को छोड़कर इस मुल्क में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।’<sup>4</sup> चुनौते वह कसदियों के मुल्क को छोड़कर हारान में रहने लगा। वहाँ उसका बाप फ़ौत हुआ तो अल्लाह ने उसे इस मुल्क में मुंतकिल किया जिसमें आप आज

तक आबाद है।<sup>5</sup> उस वक्त अल्लाह ने उसे इस मुल्क में कोई भी मौस्सी जमीन न दी थी, एक मुरब्बा फुट तक भी नहीं। लेकिन उसने उससे वादा किया, 'मैं इस मुल्क को तेरे और तेरी औलाद के कब्जे में कर दूँगा,' अगरच उस वक्त इब्राहीम के हों कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ था।<sup>6</sup> अल्लाह ने उसे यह भी बताया, 'तेरी औलाद ऐसे मुल्क में रहेगी जो उसका नहीं होगा। वहाँ वह अजनबी और गुलाम होगी, और उस पर 400 साल तक बहुत जुल्म किया जाएगा।<sup>7</sup> लेकिन मैं उस कौम की अदालत करूँगा जिसने उसे गुलाम बनाया होगा। इसके बाद वह उस मुल्क में से निकलकर इस मकाम पर मेरी इबादत करेगा।'<sup>8</sup> फिर अल्लाह ने इब्राहीम को खतना का अहद दिया। चुनौचे जब इब्राहीम का बेटा इसहाक पैदा हुआ तो बाप ने आठवें दिन उसका खतना किया। यह सिलसिला जारी रहा जब इसहाक का बेटा याकूब पैदा हुआ और याकूब के बारह बेटे, हमारे बारह कबीलों के सरदार।

<sup>9</sup> यह सरदार अपने भाई यूसुफ से हसद करने लगे और इसलिए उसे बेच दिया। यों वह गुलाम बनकर मिसर पहुँचा। लेकिन अल्लाह उसके साथ रहा<sup>10</sup> और उसे उस की तमाम मुसीबतों से रिहाई दी। उसने उसे दानाई अता करके इस काबिल बना दिया कि वह मिसर के बादशाह फिरौन का मंजूरे-नजर हो जाए। यों फिरौन ने उसे मिसर और अपने पूरे घराने पर हुक्मरान मुकर्रर किया।<sup>11</sup> फिर तमाम मिसर और कनान में काल पड़ा। लोग बड़ी मुसीबत में पड़ गए और हमारे बापदादा के पास भी खुराक खत्म हो गई।<sup>12</sup> याकूब को पता चला कि मिसर में अब तक अनाज है, इसलिए उसने अपने बेटों को अनाज खरीदने को वहाँ भेज दिया।<sup>13</sup> जब उन्हें दूसरी बार वहाँ जाना पड़ा तो यूसुफ ने अपने आपको अपने भाइयों पर जाहिर किया, और फिरौन को यूसुफ के खानदान के बारे में आगाह किया गया।<sup>14</sup> इसके बाद यूसुफ ने अपने बाप याकूब और तमाम रिश्तेदारों को बुला लिया। कुल 75 अफ़राद आए।<sup>15</sup> यों याकूब मिसर पहुँचा। वहाँ वह और हमारे बापदादा मर गए।<sup>16</sup> उन्हें सिकम में लाकर उस कब्र में दफनाया गया जो इब्राहीम ने हमोर की औलाद से पैसे देकर खरीदी थी।

<sup>17</sup> फिर वह वक्त करीब आ गया जिसका वादा अल्लाह ने इब्राहीम से किया था। मिसर में हमारी कौम की तादाद बहुत बढ़ चुकी थी।<sup>18</sup> लेकिन होते होते एक नया बादशाह तख्तनशीन हुआ जो यूसुफ से नावाकिफ़ था।<sup>19</sup> उसने हमारी कौम का इस्तेस्साल करके उनसे बदसलुकी की और उन्हें अपने शीरखार बच्चों को जाया करने पर मजबूर किया।<sup>20</sup> उस वक्त मूसा पैदा हुआ। वह अल्लाह के नज़दीक खबसूरत बच्चा था और तीन माह तक अपने बाप के घर में पाला गया।<sup>21</sup> इसके बाद वाल्टिदन को उसे छोड़ना पड़ा, लेकिन फिरौन की बेटी ने उसे लेपालक बनाकर अपने बेटे के तौर पर पाला।<sup>22</sup> और मूसा को मिसरियों की हिकमत के हर शोबे में तरबियत मिली। उसे बोलने और अमल करने की जबरदस्त काबिलियत हासिल थी।

<sup>23</sup> जब वह चालीस साल का था तो उसे अपनी कौम इसराईल के लोगों से मिलने का खयाल आया।<sup>24</sup> जब उसने उनके पास जाकर देखा कि एक मिसरी किसी इसराईली पर तशद्द कर रहा है तो उसने इसराईली की हिमायत करके मज़लूम का बदला लिया और मिसरी को मार डाला।<sup>25</sup> उसका खयाल तो यह था कि मेरे भाइयों को समझ आएगी कि अल्लाह मेरे वसीले से उन्हें रिहाई देगा, लेकिन ऐसा नहीं था।<sup>26</sup> अगले दिन वह दो इसराईलियों के पास से गुज़रा जो आपस में लड़ रहे थे। उसने सुलह कराने की कोशिश में कहा, 'मर्दों, आप तो भाई हैं। आप क्यों एक दूसरे से गलत सुलूक कर रहे हैं?'<sup>27</sup> लेकिन जो आदमी दूसरे से बदसलुकी कर रहा था उसने मूसा को एक तरफ धकेलकर कहा, 'किसने आपको हम पर हुक्मरान और काज़ी मुकर्रर किया है?'<sup>28</sup> क्या आप मुझे भी कत्ल करना चाहते हैं जिस तरह कल मिसरी को मार डाला था?'<sup>29</sup> यह सुनकर मूसा फ़ार होकर मुल्के-मिदियान में अजनबी के तौर पर रहने लगा। वहाँ उसके दो बेटे पैदा हुए।

<sup>30</sup> चालीस साल के बाद एक फरिशता जलती हुई कौंटेदार झाड़ी के शोले में उस पर जाहिर हुआ। उस वक्त मूसा सीना पहाड़ के करीब रेगिस्तान में था।<sup>31</sup> यह मंज़र देखकर मूसा हैरान हुआ। जब वह उसका मुआयना करने के लिए करीब पहुँचा तो रब की आवाज़ सुनाई दी,<sup>32</sup> 'मैं तेरे बापदादा का खुदा, इब्राहीम, इसहाक और याकूब का खुदा हूँ।' मूसा थरथराने लगा और उस तरफ देखने की ज़रत न की।<sup>33</sup> फिर रब ने उससे कहा, 'अपनी ज़तियाँ उतार, क्योंकि तू मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है।<sup>34</sup> मैंने मिसर में अपनी कौम की बुरी हालत देखी और उनकी आहें सुनी हैं, इसलिए उन्हें बचाने के लिए उतर आया हूँ। अब जा, मैं तुझे मिसर भेजता हूँ।'

<sup>35</sup> यों अल्लाह ने उस शासक को उनके पास भेज दिया जिसे वह यह कहकर रद्द कर चुके थे कि 'किसने आपको हम पर हुक्मरान और काज़ी मुकर्रर किया है?' जलती हुई कौंटेदार झाड़ी में मौजूद फरिशते की मारिफ़त अल्लाह ने मूसा को उनके पास भेज दिया ताकि वह उनका हुक्मरान और नजातदाहिदा बन जाए।<sup>36</sup> और वह मोज़िजे और इलाही निशान दिखाकर उन्हें मिसर से निकाल लाया, फिर बहरे-कुलजुम से गुज़रकर 40 साल के दौरान रेगिस्तान में उनकी राहनुमाई की।<sup>37</sup> मूसा ने खुद इसराईलियों को बताया, 'अल्लाह तुम्हारे वास्ते तुम्हारे भाइयों में से मुज़ जैसे नबी को बरपा करेगा।'<sup>38</sup> मूसा रेगिस्तान में कौम की जमात में शरीक था। एक तरफ वह उस फरिशते के साथ था जो सीना पहाड़ पर उससे बातें करता था, दूसरी तरफ हमारे बापदादा के साथ। फरिशते से उसे ज़िंदाबाख़्शा बातें मिल गई जो उसे हमारे सुपुर्द करनी थीं।



39 लेकिन हमारे बापदादा ने उस की सुनने से इनकार करके उसे रद्द कर दिया। दिल ही दिल में वह मिसर की तरफ रुज़ कर चुके थे। 40 वह हासन से कहने लगे, 'आएँ, हमारे लिए देवता बना दें जो हमारे आगे आगे चलते हुए हमारी राहनुमाई करें। क्योंकि क्या मालूम कि उस बंदे मूसा को क्या हुआ है जो हमें मिसर से निकाल लाया।' 41 उसी वक़्त उन्होंने बछड़े का बूत बनाकर उसे कुरबानियाँ पेश कीं और अपने हाथों के काम की खुशी मनाई। 42 इस पर अल्लाह ने अपना मुँह फेर लिया और उन्हें सितारों की पूजा की गिरिफ्त में छोड़ दिया, बिलकुल उसी तरह जिस तरह नबियों के सहीफ़े में लिखा है,

'ऐ इसराईल के घराने,

जब तुम रेगिस्तान में घुमते-फिरते थे

तो क्या तुमने उन 40 सालों के दौरान

कभी मुझे ज़बह और गल्ला की कुरबानियाँ पेश कीं?

43 नहीं, उस वक़्त भी तुम मलिक देवता का ताबूत

और रिफ़ान देवता का सितारा उठाए फिरते थे,

गो तुमने अपने हाथों से यह बूत

पूजा करने के लिए बना लिए थे।

इसलिए मैं तुम्हें जिलावतन करके

बाबल के पार बसा दूँगा।'

44 रेगिस्तान में हमारे बापदादा के पास मुलाकात का ख़ैमा था। उसे उस नमूने के मुताबिक़ बनाया गया था जो अल्लाह ने मूसा को दिखाया था। 45 मूसा की मौत के बाद हमारे बापदादा ने उसे विरसे में पाकर अपने साथ ले लिया जब उन्होंने यशुअ की राहनुमाई में इस मुल्क में दाखिल होकर उस पर क़ब्ज़ा कर लिया। उस वक़्त अल्लाह उसमें आबाद क़ौमों को उनके आगे आगे निकालता गया। यों मुलाकात का ख़ैमा दाऊद बादशाह के ज़माने तक मुल्क में रहा। 46 दाऊद अल्लाह का मंज़ुरे-नज़र था। उसने याक़ूब के ख़ुदा को एक सूकनतगाह मुहैया करने की इजाज़त माँगी। 47 लेकिन सुलेमान को उसके लिए मकान बनाने का एजाज़ हासिल हुआ।

48 हक़ीक़त में अल्लाह तआला इनसान के हाथ के बनाए हुए मकानों में नहीं रहता। नबी रब का फ़रमान यों बयान करता है,

49 'आसमान मेरा तख़्त है

और ज़मीन मेरे पाँवों की चौकी,

तो फिर तुम मेरे लिए किस किस्म का घर बनाओगे?

वह जगह कहाँ है जहाँ मैं आराम करूँगा?

50 क्या मेरे हाथ ने यह सब कुछ नहीं बनाया?'

51 ऐ गरदनकश लोगो! बेशक आपका खतना हुआ है जो अल्लाह की क़ौम का ज़ाहिरी निशान है। लेकिन उसका आपके दिलों और कानों पर कुछ भी असर नहीं हुआ। आप अपने बापदादा की तरह हमेशा रूहल-कुदूस की मुख़ालफ़त करते रहते हैं। 52 क्या कभी कोई नबी था जिसे आपके बापदादा ने न सताया? उन्होंने उन्हें भी क़त्ल किया जिन्होंने रास्तबाज़ मसीह की पेशगोई की, उस शख्स की जिसे आपने दुश्मनों के हवाले करके मार डाला। 53 आप ही को फ़रिशतों के हाथ से अल्लाह की शरीअत हासिल हुई मगर उस पर अमल नहीं किया।"

**स्तिफ़नुस को संगसार किया जाता है**

54 स्तिफ़नुस की यह बातें सुनकर इजलास के लोग तैश में आकर दौँत पीसने लगे। 55 लेकिन स्तिफ़नुस रूहल-कुदूस से मामूर अपनी नज़र उठाकर आसमान की तरफ़ तकने लगा। वहाँ उसे अल्लाह का जलाल नज़र आया, और ईसा अल्लाह के दहने हाथ खड़ा था। 56 उसने कहा, "देखो, मुझे आसमान खुला हुआ दिखाई दे रहा है और इब्ने-आदम अल्लाह के दहने हाथ खड़ा है!"

57 यह सुनते ही उन्होंने चीख़ चीख़कर हाथों से अपने कानों को बंद कर लिया और मिलकर उस पर झपट पड़े। 58 फिर वह उसे शहर से निकालकर संगसार करने लगे। और जिन लोगों ने उसके खिलाफ़ गवाही दी थी उन्होंने अपनी चादरें उतारकर एक जवान आदमी के पाँवों में रख दी। उस आदमी का नाम साऊल था। 59 जब वह स्तिफ़नुस को संगसार कर रहे थे तो उसने दुआ करके कहा, "ऐ ख़ुदावंद ईसा, मेरी रूह को कबूल कर।" 60 फिर घुटने टेककर उसने ऊँची आवाज़ से कहा, "ऐ ख़ुदावंद, उन्हें इस गुनाह के ज़िम्मादार न ठहरा।" यह कहकर वह इतकाल कर गया।

## 8

1 और साऊल को भी स्तिफनस का कत्ल मंजूर था।

साऊल जमात को सताता है

उस दिन यरूशलम में मौजूद जमात सख्त ईजाजत की जद में आ गई। इसलिए सिवाए रसूलों के तमाम ईमानदार यहूदिया और सामरिया के इलाकों में तितर-बितर हो गए।<sup>2</sup> कुछ ख़ुदातरस आदमियों ने स्तिफनस को दफन करके रोकर उसका मातम किया।

<sup>3</sup> लेकिन साऊल ईसा की जमात को तबाह करने पर तुला हुआ था। उसने घर घर जाकर ईमानदार मर्दों-खवातीन को निकाल दिया और उन्हें घसीटकर कैदखाने में डलवा दिया।

ख़ुशख़बरी सामरिया में फैल जाती है

<sup>4</sup> जो ईमानदार बिखर गए थे वह जगह जगह जाकर अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते फिरे।<sup>5</sup> इस तरह फिलिप्पस सामरिया के किसी शहर को गया और वहाँ के लोगों को मसीह के बारे में बताया।<sup>6</sup> जो कुछ भी फिलिप्पस ने कहा और जो भी इलाही निशान उसने दिखाए, उस पर सुननेवाले हज़म ने एकदिल होकर तवज़ूह दी।<sup>7</sup> बहुत-से लोगों में से बदरूहें जोरदार चीखें मार मारकर निकल गईं, और बहुत-से मफ़्लज़ों और लँगडों को शफा मिल गई।<sup>8</sup> यों उस शहर में बड़ी शादमानी फैल गई।

<sup>9</sup> वहाँ काफ़ी अरसे से एक आदमी रहता था जिसका नाम शमौन था। वह जादूगर था और उसके हैरतअंगेज़ काम से सामरिया के लोग बहुत मुतअस्सिर थे। उसका अपना दावा था कि मैं कोई ख़ास शख्स हूँ।<sup>10</sup> इसलिए सब लोग छोटे से लेकर बड़े तक उस पर ख़ास तवज़ूह देते थे। उनका कहना था, 'यह आदमी वह इलाही कुव्वत है जो अज़ीम कहलाती है।' <sup>11</sup> वह इसलिए उसके पीछे लग गए थे कि उसने उन्हें बड़ी देर से अपने हैरतअंगेज़ कामों से मुतअस्सिर कर रखा था। <sup>12</sup> लेकिन अब लोग फिलिप्पस की अल्लाह की बादशाही और ईसा के नाम के बारे में ख़ुशख़बरी पर ईमान ले आए, और मर्दों-खवातीन ने बपतिस्मा लिया। <sup>13</sup> ख़ुद शमौन ने भी ईमान लाकर बपतिस्मा लिया और फिलिप्पस के साथ रहा। जब उसने वह बड़े इलाही निशान और मौजिज़े देखे जो फिलिप्पस के हाथ से जाहिर हुए तो वह हक्का-बक्का रह गया।

<sup>14</sup> जब यरूशलम में रसूलों ने सुना कि सामरिया ने अल्लाह का कलाम क़बूल कर लिया है तो उन्होंने पतरस और यहून्ना को उनके पास भेज दिया।<sup>15</sup> वहाँ पहुँचकर उन्होंने उनके लिए दुआ की कि उन्हें र्हूल-कुदूस मिल जाए, <sup>16</sup> क्योंकि अभी र्हूल-कुदूस उन पर नाज़िल नहीं हुआ था बल्कि उन्हें सिर्फ़ ख़ुदावंद ईसा के नाम में बपतिस्मा दिया गया था। <sup>17</sup> अब जब पतरस और यहून्ना ने अपने हाथ उन पर रखे तो उन्हें र्हूल-कुदूस मिल गया।

<sup>18</sup> शमौन ने देखा कि जब रसूल लोगों पर हाथ रखते हैं तो उनको र्हूल-कुदूस मिलता है। इसलिए उसने उन्हें पैसे पेश करके <sup>19</sup> कहा, "मुझे भी यह इख़्तियार दे दें कि जिस पर मैं हाथ रखूँ उसे र्हूल-कुदूस मिल जाए।"

<sup>20</sup> लेकिन पतरस ने जवाब दिया, "आपके पैसे आपके साथ गारत हो जाएँ, क्योंकि आपने सोचा कि अल्लाह की नेमत पैसों से खरीदी जा सकती है। <sup>21</sup> इस खिदमत में आपका कोई हिस्सा नहीं है, क्योंकि आपका दिल अल्लाह के सामने खालिस नहीं है। <sup>22</sup> अपनी इस शरारत से तौबा करके ख़ुदावंद से दूआ करें। शायद वह आपको इस इरादे की मुआफ़ी दे जो आपने दिल में रखा है। <sup>23</sup> क्योंकि मैं देखता हूँ कि आप कड़वे पित से भरे और नारास्ती के बंधन में जकड़े हुए हैं।"

<sup>24</sup> शमौन ने कहा, "फिर ख़ुदावंद से मेरे लिए दूआ करें कि आपकी मज़क़रा मुसीबतों में से मुझ पर कोई न आए।"

<sup>25</sup> ख़ुदावंद के कलाम की गवाही देने और उस की मुनादी करने के बाद पतरस और यहून्ना वापस यरूशलम के लिए रवाना हुए। रास्ते में उन्होंने सामरिया के बहुत-से देहातों में अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाई।

फिलिप्पस और एथोपिया का अफ़सर

<sup>26</sup> एक दिन रब के फ़रिश्ते ने फिलिप्पस से कहा, "उठकर जुनूब की तरफ़ उस राह पर जा जो रेगिस्तान में से गुज़रकर यरूशलम से गज़्जा को जाती है।" <sup>27</sup> फिलिप्पस उठकर रवाना हुआ। चलते चलते उस की मुलाकात एथोपिया की मलिका कंदाके के एक ख्वाजासरा से हुई। मलिका के पूरे खज़ाने पर मुक़रर यह दरबारी इबादत करने के लिए यरूशलम गया था <sup>28</sup> और अब अपने मुल्क में वापस जा रहा था। उस वक़्त वह रथ में सवार यसायाह नबी की किताब की तिलावत कर रहा था। <sup>29</sup> र्हूल-कुदूस ने फिलिप्पस से कहा, "उसके पास जाकर रथ के साथ हो ले।" <sup>30</sup> फिलिप्पस दौड़कर रथ के पास पहुँचा तो सुना कि वह यसायाह नबी की किताब की तिलावत कर रहा है। उसने पूछा, "क्या आपको उस सबकी समझ आती है जो आप पढ़ रहे हैं?"

<sup>31</sup> दरबारी ने जवाब दिया, "मैं क्योंकि समझूँ जब तक कोई मेरी राहनुमाई न करे?" और उसने फिलिप्पस को रथ में सवार होने की दावत दी। <sup>32</sup> कलामे-मुक़द्दस का जो हवाला वह पढ़ रहा था यह था,

'उसे भेड़ की तरह ज़बह करने के लिए ले गए।

जिस तरह लेला बाल कतरनेवाले के सामने खामोश रहता है,  
उसी तरह उसने अपना मुँह न खोला।

33 उस की तज़लील की गई और उसे इनसाफ़ न मिला।

कौन उस की नसल बयान कर सकता है?  
क्योंकि उस की जान दुनिया से छीन ली गई।’

34 दरबारी ने फिलिप्पुस से पूछा, “मेहरबानी करके मुझे बता दीजिए कि नबी यहाँ किसका जिक्र कर रहा है, अपना या किसी और का?” 35 जवाब में फिलिप्पुस ने कलामे-मुकद्दस के इसी हवाले से शुरु करके उसे ईसा के बारे में खुशाखबरी सुनाई। 36 सड़क पर सफ़र करते करते वह एक जगह से गुज़रे जहाँ पानी था। ख्वाजासरा ने कहा, “देखें, यहाँ पानी है। अब मुझे बपतिस्मा लेने से कौन-सी चीज़ रोक सकती है?” 37 [फिलिप्पुस ने कहा, “अगर आप पूरे दिल से ईमान लाएँ तो ले सकते हैं।” उसने जवाब दिया, “मैं ईमान रखता हूँ कि ईसा मसीह अल्लाह का फ़रज़द है।”]

38 उसने रथ को रोकने का हुक़्म दिया। दोनों पानी में उतर गए और फिलिप्पुस ने उसे बपतिस्मा दिया। 39 जब वह पानी से निकल आए तो खुदावंद का रूह फिलिप्पुस को उठा ले गया। इसके बाद ख्वाजासरा ने उसे फिर कभी न देखा, लेकिन उसने खुशी मनाते हुए अपना सफ़र जारी रखा। 40 इतने में फिलिप्पुस को अशदूद शहर में पाया गया। वह वहाँ और कैसरिया तक के तमाम शहरों में से गुज़रकर अल्लाह की खुशाखबरी सुनाता गया।

## 9

### पौलुस की तबदीली

1 अब तक साऊल खुदावंद के शागिर्दों को धमकाने और क़त्ल करने के दरपै था। उसने इमामे-आज़म के पास जाकर 2 उससे गुज़ारिश की कि “मुझे दमिशक में यहूदी इबादतखानों के लिए सिफ़ारिशि ख़त लिखकर दें ताकि वह मेरे साथ तावुन करें। क्योंकि मैं वहाँ मसीह की राह पर चलनेवालों को खाह वह मर्द हों या ख्वातीन ढूँडकर और बाँधकर यरूशलम लाना चाहता हूँ।”

3 वह इस मक़सद से सफ़र करके दमिशक के करीब पहुँचा ही था कि अचानक आसमान की तरफ़ से एक तेज़ रौशनी उसके गिर्द चमकी। 4 वह ज़मीन पर गिर पड़ा तो एक आवाज़ सुनाई दी, “साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता है?”

5 उसने पूछा, “खुदावंद, आप कौन हैं?”

आवाज़ ने जवाब दिया, “मैं ईसा हूँ जिसे तू सताता है। 6 अब उठकर शहर में जा। वहाँ तुझे बताया जाएगा कि तुझे क्या करना है।”

7 साऊल के पास खड़े हमसफ़र दम बख़ुद रह गए। आवाज़ तो वह सुन रहे थे, लेकिन उन्हें कोई नज़र न आया। 8 साऊल ज़मीन पर से उठा, लेकिन जब उसने अपनी आँखें खोली तो मालूम हुआ कि वह अंधा है। चुनौचे उसके साथी उसका हाथ पकड़कर उसे दमिशक ले गए। 9 वहाँ तीन दिन के दौरान वह अंधा रहा। इतने में उसने न कुछ खाया, न पिया।

10 उस वक़्त दमिशक में ईसा का एक शागिर्द रहता था जिसका नाम हननियाह था। अब खुदावंद रोया में उससे हमकलाम हुआ, “हननियाह!”

उसने जवाब दिया, “जी खुदावंद, मैं हाज़िर हूँ।”

11 खुदावंद ने फ़रमाया, “उठ, उस गली में जा जो ‘सीधी’ कहलाती है। वहाँ यहदाह के घर में तरसुस के एक आदमी का पता करना जिसका नाम साऊल है। क्योंकि देख, वह दुआ कर रहा है। 12 और रोया में उसने देख लिया है कि एक आदमी बनाम हननियाह मेरे पास आकर अपने हाथ मुझ पर रखेगा। इससे मेरी आँखें बहाल हो जाएँगी।”

13 हननियाह ने एतराज़ किया, “ऐ खुदावंद, मैंने बहुत-से लोगों से उस शख्स की शरीर हरकतों के बारे में सुना है। यरूशलम में उसने तेरे मुकद्दसों के साथ बहुत ज्यादती की है। 14 अब उसे राहनुमा इमामों से इख्तियार मिल गया है कि यहाँ भी हर एक को गिरफ़्तार करे जो तेरी इबादत करता है।”

15 लेकिन खुदावंद ने कहा, “जा, यह आदमी मेरा चुना हुआ वसीला है जो मेरा नाम ग़ैरयहूदियों, बादशाहों और इसराइलियों तक पहुँचाएगा। 16 और मैं उसे दिखा दूँगा कि उसे मेरे नाम की खातिर कितना दुख उठाना पड़ेगा।”

17 चुनौचे हननियाह मज़क़ूरा घर के पास गया, उसमें दाखिल हुआ और अपने हाथ साऊल पर रख दिए। उसने कहा, “साऊल भाई, खुदावंद ईसा जो आप पर जाहिर हुआ जब आप यहाँ आ रहे थे उसी ने मुझे भेजा है ताकि आप दुबारा देख पाएँ और रूहल-कुदूस से मामूर हो जाएँ।” 18 यह कहते ही छिलकों जैसी कोई चीज़ साऊल की आँखों पर से गिरी और वह दुबारा देखने लगा। उसने उठकर बपतिस्मा लिया, 19 फिर कुछ खाना खाकर नए सिर से तक्रवियत पाई।

साऊल दमिश्क में अल्लाह की खुशखबरी सुनाता है

साऊल कई दिन शागिर्दों के साथ दमिश्क में रहा।<sup>20</sup> उसी वक्त वह सीधा यहूदी इबादतखानों में जाकर एलान करने लगा कि ईसा अल्लाह का फ़रज़द है।

21 और जिसने भी उसे सुना वह हैरान रह गया और पूछा, “क्या यह वह आदमी नहीं जो यरूशलम में ईसा की इबादत करनेवालों को हत्ता कर रहा था? और क्या वह इस मक़सद से यहाँ नहीं आया कि ऐसे लोगों को बाँधकर राहनुमा इमामों के पास ले जाए?”

22 लेकिन साऊल रोज़ बरोज़ जोर पकड़ता गया, और चूँकि उसने साबित किया कि ईसा वादा किया हुआ मसीह है इसलिए दमिश्क में आबाद यहूदी उलझन में पड़ गए।

23 चुनौचे काफ़ी दिनों के बाद उन्होंने मिलकर उसे कत्ल करने का मनसूबा बनाया।<sup>24</sup> लेकिन साऊल को पता चल गया। यहूदी दिन-रात शहर के दरवाज़ों की पहरादारी करते रहे ताकि उसे कत्ल करें,<sup>25</sup> इसलिए उसके शागिर्दों ने उसे रात के वक्त टोकरे में बिठाकर शहर की चारदीवारी के एक स्राख में से उतार दिया।

साऊल यरूशलम में

26 साऊल यरूशलम वापस चला गया। वहाँ उसने शागिर्दों से राबिता करने की कोशिश की, लेकिन सब उससे डरते थे, क्योंकि उन्हें यकीन नहीं आया था कि वह वाकई ईसा का शागिर्द बन गया है।<sup>27</sup> फिर बरनबास उसे रसूलों के पास ले आया। उसने उन्हें साऊल के बारे में सब कुछ बताया, कि उसने दमिश्क की तरफ़ सफ़र करते वक्त रास्ते में खुदावंद को देखा, कि खुदावंद उससे हमकलाम हुआ था और उसने दमिश्क में दिलेरी से ईसा के नाम से बात की थी।<sup>28</sup> चुनौचे साऊल उनके साथ रहकर आज़ादी से यरूशलम में फिरने और दिलेरी से खुदावंद ईसा के नाम से कलाम करने लगा।<sup>29</sup> उसने यूनानी ज़बान बोलनेवाले यहूदियों से भी मुखातिब होकर बहस की, लेकिन जबाब में वह उसे कत्ल करने की कोशिश करने लगे।<sup>30</sup> जब भाइयों को मालूम हुआ तो उन्होंने उसे कैसरिया पहुँचा दिया और जहाज़ में बिठाकर तरसुस के लिए रवाना कर दिया।

31 इस पर यहूदिया, गलील और सामरिया के पूरे इलाके में फैली हुई जमात को अमनो-अमान हासिल हुआ। रूहुल-कुदूस की हिमायत से उस की तामीरो-तकवियत हुई, वह खुदा का खौफ़ मानकर चलती रही और तादाद में भी बढ़ती गई।

पतरस लुद्दा और याफ़ा में

32 एक दिन जब पतरस जगह जगह सफ़र कर रहा था तो वह लुद्दा में आबाद मुक़द्दसों के पास भी आया।<sup>33</sup> वहाँ उस की मुलाकात एक आदमी बनाम ऐनियास से हुई। ऐनियास मफ़लूज़ था। वह आठ साल से बिस्तर से उठ न सका था।<sup>34</sup> पतरस ने उससे कहा, “ऐनियास, ईसा मसीह आपको शफ़ा देता है। उठकर अपना बिस्तर समेट लें।” ऐनियास फ़ौरन उठ खड़ा हुआ।

35 जब लुद्दा और मैदानी इलाके शासन के तमाम रहनेवालों ने उसे देखा तो उन्होंने खुदावंद की तरफ़ रूज़ किया।

36 याफ़ा में एक औरत थी जो शागिर्द थी और नेक काम करने और ख़ैरात देने में बहुत आगे थी। उसका नाम तबीता (गज़ाला) था।<sup>37</sup> उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर फ़ौत हो गई। लोगों ने उसे गुस्ल देकर बालाख़ाने में रख दिया।<sup>38</sup> लुद्दा याफ़ा के करीब है, इसलिए जब शागिर्दों ने सुना कि पतरस लुद्दा में है तो उन्होंने उसके पास दो आदमियों को भेजकर इलतमास की, “सीधे हमारे पास आएं और देर न करें।”<sup>39</sup> पतरस उठकर उनके साथ चला गया। वहाँ पहुँचकर लोग उसे बालाख़ाने में ले गए। तमाम बेवाओं ने उसे घेर लिया और रोते चिल्लाते वह सारी कर्माँ और बाक़ी लिबास दिखाने लगीं जो तबीता ने उनके लिए बनाए थे जब वह अभी जिंदा थी।<sup>40</sup> लेकिन पतरस ने उन सबको कमरे से निकाल दिया और घुटने टेककर दुआ की। फिर लाश की तरफ़ मुड़कर उसने कहा, “तबीता, उठें!” औरत ने अपनी आँखें खोल दीं। पतरस को देखकर वह बैठ गई।<sup>41</sup> पतरस ने उसका हाथ पकड़ लिया और उठने में उस की मदद की। फिर उसने मुक़द्दसों और बेवाओं को बुलाकर तबीता को जिंदा उनके सुपर्द किया।<sup>42</sup> यह वाक़िया पूरे याफ़ा में मशहूर हुआ, और बहुत-से लोग खुदावंद ईसा पर ईमान लाए।<sup>43</sup> पतरस काफ़ी दिनों तक याफ़ा में रहा। वहाँ वह चमड़ा रंगनेवाले एक आदमी के घर ठहरा जिसका नाम शमौन था।

## 10

पतरस और कुरनेलियुस

1 कैसरिया में एक रोमी अफ़सर\* रहता था जिसका नाम कुरनेलियुस था। वह उस पलटन के सौ फ़ौजियों पर मुक़र्रर था जो इतालवी कहलाती थी।<sup>2</sup> कुरनेलियुस अपने पूरे घराने समेत दीनदार और खुदातरस था। वह फ़ैयाज़ी से ख़ैरात देता और मुतवातिर दुआ में लगा रहता था।<sup>3</sup> एक दिन उसने तीन बजे दोपहर के वक्त रोया देखी। उसमें उसने साफ़ तौर पर अल्लाह का एक फरिश्ता देखा जो उसके पास आया और कहा, “कुरनेलियुस!”

\* 10:1 सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर।

4 वह घबरा गया और उसे गौर से देखते हुए कहा, “मेरे आका, फरमाएँ।”

फरिश्ते ने कहा, “तुम्हारी दुआओं और खैरात की कुरबानी अल्लाह के हज़र पहुँच गई है और मंज़ूर है। 5 अब कुछ आदमी याफा भेज दो। वहाँ एक आदमी बनाम शमौन है जो पतरस कहलाता है। उसे बुलाकर ले आओ। 6 पतरस एक चमड़ा रंगनेवाले का मेहमान है जिसका नाम शमौन है। उसका घर समुंद्र के करीब वाक्रे है।”

7 ज्योंही फरिश्ता चला गया कुरनेलियुस ने दो नौकरों और अपने खिदमतगार फौजियों में से एक खुदातरस आदमी को बुलाया। 8 सब कुछ सुनाकर उसने उन्हें याफा भेज दिया।

9 अगले दिन पतरस दोपहर तकरीबन बारह बजे दुआ करने के लिए छत पर चढ़ गया। उस वक्त कुरनेलियुस के भेजे हुए आदमी याफा शहर के करीब पहुँच गए थे। 10 पतरस को भूक लगी और वह कुछ खाना चाहता था। जब उसके लिए खाना तैयार किया जा रहा था तो वह वज्र की हालत में आ गया। 11 उसने देखा कि आसमान खुल गया है और एक चीज़ जमीन पर उतर रही है, कतान की बड़ी चादर जैसी जो अपने चार कोनों से नीचे उतारी जा रही है। 12 चादर में तमाम किस्म के जानवर हैं : चार पाँव रखनेवाले, रंगेनेवाले और परिदे। 13 फिर एक आवाज़ उससे मुखातिब हुई, “उठ, पतरस। कुछ जबह करके खा!”

14 पतरस ने एतराज़ किया, “हरगिज़ नहीं खुदावंद, मैंने कभी भी हराम या नापाक खाना नहीं खाया।”

15 लेकिन यह आवाज़ दुबारा उससे हमकलाम हुई, “जो कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया है उसे नापाक करार न दे।”

16 यही कुछ तीन मरतबा हुआ, फिर चादर को अचानक आसमान पर वापस उठा लिया गया।

17 पतरस बड़ी उलझन में पड़ गया। वह अभी सोच रहा था कि इस रोया का क्या मतलब है तो कुरनेलियुस के भेजे हुए आदमी शमौन के घर का पता करके उसके गेट पर पहुँच गए। 18 आवाज़ देकर उन्होंने पूछा, “क्या शमौन जो पतरस कहलाता है आपके मेहमान है?”

19 पतरस अभी रोया पर गौर कर ही रहा था कि स्हूल-कुदूस उससे हमकलाम हुआ, “शमौन, तीन मर्द तेरी तलाश में हैं।

20 उठ और छत से उतरकर उनके साथ चला जा। मत झिजकना, क्योंकि मैं ही ने उन्हें तेरे पास भेजा है।” 21 चुनौचे पतरस उन आदमियों के पास गया और उनसे कहा, “मैं वही हूँ जिसे आप ढूँड रहे हैं। आप क्यों मेरे पास आए हैं?”

22 उन्होंने जवाब दिया, “हम सौ फौजियों पर मुकरर अफसर कुरनेलियुस के घर से आए हैं। वह इनसाफपरवर और खुदातरस आदमी है। पूरी यहूदी कौम इसकी तसदीक कर सकती है। एक मुकद्दस फरिश्ते ने उन्हें हिदायत दी कि वह आपको अपने घर बुलाकर आपका पैगाम सुनें।” 23 यह सुनकर पतरस उन्हें अंदर ले गया और उनकी मेहमान-नवाजी की। अगले दिन वह उठकर उनके साथ रवाना हुआ। याफा के कुछ भाई भी साथ गए। 24 एक दिन के बाद वह कैसरिया पहुँच गया। कुरनेलियुस उनके इंतज़ार में था। उसने अपने रिश्तेदारों और करीबी दोस्तों को भी अपने घर जमा कर रखा था। 25 जब पतरस घर में दाखिल हुआ तो कुरनेलियुस ने उसके सामने गिरकर उसे सिजदा किया। 26 लेकिन पतरस ने उसे उठाकर कहा, “उठें। मैं भी इनसान ही हूँ।” 27 और उससे बातें करते करते वह अंदर गया और देखा कि बहुत-से लोग जमा हो गए हैं। 28 उसने उनसे कहा, “आप जानते हैं कि किसी यहूदी के लिए किसी गैरयहूदी से रिफाकत रखना या उसके घर में जाना मना है। लेकिन अल्लाह ने मुझे दिखाया है कि मैं किसी को भी हराम या नापाक करार न दूँ। 29 इस वजह से जब मुझे बुलाया गया तो मैं एतराज़ किए बगैर चला आया। अब मुझे बता दीजिए कि आपने मुझे क्यों बुलाया है?”

30 कुरनेलियुस ने जवाब दिया, “चार दिन की बात है कि मैं इसी वक्त दोपहर तीन बजे दुआ कर रहा था। अचानक एक आदमी मेरे सामने आ खड़ा हुआ। उसके कपड़े चमक रहे थे। 31 उसने कहा, ‘कुरनेलियुस, अल्लाह ने तुम्हारी दुआ सुन ली और तुम्हारी खैरात का खयाल किया है। 32 अब किसी को याफा भेजकर शमौन को बुला लो जो पतरस कहलाता है। वह चमड़ा रंगनेवाले शमौन का मेहमान है। शमौन का घर समुंद्र के करीब वाक्रे है।’ 33 यह सुनते ही मैंने अपने लोगों को आपको बुलाने के लिए भेज दिया। अच्छा हुआ कि आप आ गए हैं। अब हम सब अल्लाह के हज़र हाज़िर हैं ताकि वह कुछ सुने जो रब ने आपको हमें बताने को कहा है।”

### पतरस की तकरीर

34 फिर पतरस बोल उठा, “अब मैं समझ गया हूँ कि अल्लाह वाकई जानिबदार नहीं, 35 बल्कि हर किसी को कबूल करता है जो उसका खौफ मानता और रास्त काम करता है। 36 आप अल्लाह की उस खुशखबरी से वाकिफ हैं जो उसने इसराईलियों को भेजी, यह खुशखबरी कि ईसा मसीह के वसीले से सलामती आई है। ईसा मसीह सबका खुदावंद है। 37 आपको वह कुछ मालूम है जो गलील से शुरू होकर यहूदिया के पूरे इलाके में हुआ यानी उस बपतिस्मे के बाद जिसकी मुनादी यहया ने की। 38 और आप जानते हैं कि अल्लाह ने ईसा नासरी को स्हूल-कुदूस और कुव्वत से मसह किया और कि इस पर उसने जगह जगह जाकर नेक काम किया और इबलीस के दवे हुए तमाम लोगों को शफा दी, क्योंकि अल्लाह उसके साथ था। 39 जो

कुछ भी उसने मुल्के-यहद और यस्शलम में किया, उसके गवाह हम खुद हैं। गो लोगों ने उसे लकड़ी पर लटकाकर कल्ल कर दिया 40 लेकिन अल्लाह ने तीसरे दिन उसे मुरदों में से ज़िंदा किया और उसे लोगों पर जाहिर किया। 41 वह पूरी कौम पर तो जाहिर नहीं हुआ बल्कि हम पर जिनको अल्लाह ने पहले से चुन लिया था ताकि हम उसके गवाह हों। हमने उसके जी उठने के बाद उसके साथ खाने-पीने की रिफ़ाक़त भी रखी। 42 उस वक़्त उसने हमें हुक्म दिया कि मुनादी करके कौम को गवाही दो कि ईसा वही है जिसे अल्लाह ने ज़िंदों और मुरदों पर मुसिफ़ मुकरर किया है। 43 तमाम नबी उस की गवाही देते हैं कि जो भी उस पर ईमान लाए उसे उसके नाम के वसीले से गुनाहों की मुआफ़ी मिल जाएगी।”

### रूहल-कुदूस गैरयहदियों पर नाज़िल होता है

44 पतरस अभी यह बात कर ही रहा था कि तमाम सुननेवालों पर रूहल-कुदूस नाज़िल हुआ। 45 जो यहदी ईमानदार पतरस के साथ आए थे वह हक्का-बक्का रह गए कि रूहल-कुदूस की नेमत गैरयहदियों पर भी उंडेली गई है, 46 क्योंकि उन्होंने देखा कि वह गैरज़बानें बोल रहे और अल्लाह की तमज़ीद कर रहे हैं। तब पतरस ने कहा, 47 “अब कौन इनको बपतिस्मा लेने से रोक सकता है? इन्हें तो हमारी तरह रूहल-कुदूस हासिल हुआ है।” 48 और उसने हुक्म दिया कि उन्हें ईसा मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया जाए। इसके बाद उन्होंने पतरस से गुज़ारिश की कि कुछ दिन हमारे पास ठहरें।

## 11

### यस्शलम की ज़मात में पतरस की रिपोर्ट

1 यह खबर रसूलों और यहदियों के बाकी भाइयों तक पहुँची कि गैरयहदियों ने भी अल्लाह का कलाम कबूल किया है। 2 चुनौचे जब पतरस यस्शलम वापस आया तो यहदी ईमानदार उस पर एतराज़ करने लगे, 3 “आप गैरयहदियों के घर में गए और उनके साथ खाना भी खाया।” 4 फिर पतरस ने उनके सामने तरतीब से सब कुछ बयान किया जो हुआ था।

5 “मैं याफ़ा शहर में दूआ कर रहा था कि वज्द की हालत में आकर रोया देखी। आसमान से एक चीज़ ज़मीन पर उतर रही है, कतान की बड़ी चादर जैसी जो अपने चारों कोनों से उतारी जा रही है। उतरती उतरती वह मुझ तक पहुँच गई। 6 जब मैंने गौर से देखा तो पता चला कि उसमें तमाम किस्म के जानवर हैं : चार पाँववाले, रंगेवाले और परिदे। 7 फिर एक आवाज़ मुझसे मुखातिब हुई, ‘पतरस, उठ! कुछ ज़बह करके खा!’ 8 मैंने एतराज़ किया, ‘हरगिज़ नहीं, ख़ुदावंद, मैंने कभी भी हराम या नापाक खाना नहीं खाया।’ 9 लेकिन यह आवाज़ दुबारा मुझसे हमकलाम हुई, ‘जो कुछ अल्लाह ने पाक कर दिया है उसे नापाक करार न दे।’ 10 तीन मरतबा ऐसा हुआ, फिर चादर को जानवरों समेत वापस आसमान पर उठा लिया गया। 11 उसी वक़्त तीन आदमी उस घर के सामने रुक गए जहाँ मैं ठहरा हुआ था। उन्हें कैसरिया से मेरे पास भेजा गया था। 12 रूहल-कुदूस ने मुझे बताया कि मैं बग़ैर झिंके उनके साथ चला जाऊँ। यह मेरे छ: भाई भी मेरे साथ गए। हम रवाना होकर उस आदमी के घर में दाखिल हुए जिसने मुझे बुलाया था। 13 उसने हमें बताया कि एक फ़रिश्ता घर में उस पर जाहिर हुआ था जिसने उसे कहा था, ‘किसी को याफ़ा भेजकर शमौन को बुला लो जो पतरस कहलाता है।’ 14 उसके पास वह पैगाम है जिसके ज़रीए तुम अपने पूरे घराने समेत नजात पाओगे।’ 15 जब मैं वहाँ बोलने लगा तो रूहल-कुदूस उन पर नाज़िल हुआ, बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह शुरू में हम पर हुआ था। 16 फिर मुझे वह बात याद आई जो ख़ुदावंद ने कही थी, ‘यहया ने तुमको पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन तुम्हें रूहल-कुदूस से बपतिस्मा दिया जाएगा।’ 17 अल्लाह ने उन्हें वही नेमत दी जो उसने हमें भी दी थी जो ख़ुदावंद ईसा मसीह पर ईमान लाए थे। तो फिर मैं कौन था कि अल्लाह को रोकता?”

18 पतरस की यह बातें सुनकर यस्शलम के ईमानदार एतराज़ करने से बाज़ आए और अल्लाह की तमज़ीद करने लगे। उन्होंने कहा, “तो इसका मतलब है कि अल्लाह ने गैरयहदियों को भी तौबा करने और अबदी ज़िंदगी पाने का मौका दिया है।”

### अंताकिया में ज़मात

19 जो ईमानदार स्तिफ़नुस की मौत के बाद की इज़ारसानी से बिखर गए थे वह फ़ेनीके, कुबस्स और अंताकिया तक पहुँच गए। जहाँ भी वह जाते वहाँ अल्लाह का पैगाम सुनाते अलबत्ता सिर्फ़ यहदियों को। 20 लेकिन उनमें से कुरेन और कुबस्स के कुछ आदमी अंताकिया शहर जाकर यूनानियों को भी ख़ुदावंद ईसा के बारे में ख़ुशख़बरी सुनाने लगे। 21 ख़ुदावंद की क़ुदरत उनके साथ थी, और बहुत-से लोगों ने ईमान लाकर ख़ुदावंद की तरफ़ रुज़ किया। 22 इसकी खबर यस्शलम की ज़मात तक पहुँच गई तो उन्होंने बरनबास को अंताकिया भेज दिया। 23 जब वह वहाँ पहुँचा और देखा कि अल्लाह के फ़ज़ल से क्या कुछ हुआ है तो वह ख़ुश हुआ। उसने उन सबकी हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह पूरी लग्न से ख़ुदावंद के साथ लिपटे रहें। 24 बरनबास नेक आदमी था जो रूहल-कुदूस और ईमान से मामूर था। चुनौचे उस वक़्त बहुत-से लोग ख़ुदावंद की ज़मात में शामिल हुए।

25 इसके बाद वह साऊल की तलाश में तरसूस चला गया। 26 जब उसे मिला तो वह उसे अंताकिया ले आया। वहाँ वह दोनों एक पूरे साल तक जमात में शामिल होते और बहुत-से लोगों को सिखाते रहे। अंताकिया पहला मकाम था जहाँ ईमानदार मसीही कहलाने लगे।

27 उन दिनों कुछ नबी यरूशलम से आकर अंताकिया पहुँच गए। 28 एक का नाम अगबुस था। वह खडा हुआ और रूहल-रूदूस की मारिफत पेशगोई की कि रोम की पूरी ममलकत में सख्त काल पड़ेगा। (यह बात उस वक़्त पूरी हुई जब शहनशाह कतौदियुस की हुकूमत थी।) 29 अगबुस की बात सुनकर अंताकिया के शागिर्दों ने फैसला किया कि हममें से हर एक अपनी माली गुंजाइश के मुताबिक कुछ दे ताकि उसे यहदिया में रहनेवाले भाइयों की इमदाद के लिए भेजा जा सके। 30 उन्होंने अपने इस हदिये को बरनबास और साऊल के सुपर्द करके वहाँ के बुजुर्गों को भेज दिया।

## 12

### मजीद ईज़ारसानी

1 उन दिनों में बादशाह हेरोदेस अग्रिप्पा जमात के कुछ ईमानदारों को गिरिफ्तार करके उनसे बदसलूकी करने लगा। 2 इस सिलसिले में उसने याकूब रसूल (यहन्ना के भाई) को तलवार से कत्ल करवाया। 3 जब उसने देखा कि यह हरकत यहदियों को पसंद आई है तो उसने पतरस को भी गिरिफ्तार कर लिया। उस वक़्त बेखमीरी रोटी की ईद मनाई जा रही थी। 4 उसने उसे जेल में डालकर चार दस्तों के हवाले कर दिया कि उस की पहरादारी करें (हर दस्ते में चार फौजी थे)। खयाल था कि ईद के बाद ही पतरस को अवाम के सामने खडा करके उस की अदालत की जाए। 5 यों पतरस कैदखाने में रहा। लेकिन ईमानदारों की जमात लगातार उसके लिए दुआ करती रही।

### पतरस की रिहाई

6 फिर अदालत का दिन करीब आ गया। पतरस रात के वक़्त सो रहा था। अगले दिन हेरोदेस उसे पेश करना चाहता था। पतरस दो फौजियों के दरमियान लेटा हुआ था जो दो जंजीरों से उसके साथ बंधे हुए थे। दीगर फौजी दरवाजे के सामने पहरा दे रहे थे। 7 अचानक एक तेज़ रौशनी कोठड़ी में चमक उठी और रब का एक फ़रिश्ता पतरस के सामने आ खडा हुआ। उसने उसके पहलू को झटका देकर उसे जगा दिया और कहा, “जल्दी करो! उठो!” तब पतरस की कलाइयों पर की जंजीरें गिर गईं। 8 फिर फ़रिश्ते ने उसे बताया, “अपने कपड़े और जूते पहन लो।” पतरस ने ऐसा ही किया। फ़रिश्ते ने कहा, “अब अपनी चादर ओढकर मेरे पीछे हो लो।” 9 चुनौचे पतरस कोठड़ी से निकलकर फ़रिश्ते के पीछे हो लिया अगरचे उसे अब तक समझ नहीं आई थी कि जो कुछ हो रहा है हकीकी है। उसका खयाल था कि मैं रोया देख रहा हूँ। 10 दोनों पहले पहले से गुज़र गए, फिर दूसरे से और यों शहर में पहुँचानेवाले लोहे के गेट के पास आए। यह खूद बखूद खुल गया और वह दोनों निकलकर एक गली में चलने लगे। चलते चलते फ़रिश्ते ने अचानक पतरस को छोड़ दिया।

11 फिर पतरस होश में आ गया। उसने कहा, “वाक़ई, खूदावंद ने अपने फ़रिश्ते को मेरे पास भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से बचाया है। अब यहूदी क्रौम की तवक्को पूरी नहीं होगी।”

12 जब यह बात उसे समझ आई तो वह यहन्ना मरकुस की माँ मरियम के घर चला गया। वहाँ बहुत-से अफ़रदा जमा होकर दुआ कर रहे थे। 13 पतरस ने गेट खटखटाया तो एक नौकरानी देखने के लिए आई। उसका नाम स्टी था। 14 जब उसने पतरस की आवाज़ पहचान ली तो वह खुशी के मोरे गेट को खोलने के बजाए दौड़कर अंदर चली गई और बताया, “पतरस गेट पर खडे हैं!” 15 हाज़िरिन ने कहा, “होश में आओ!” लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी रही। फिर उन्होंने कहा, “यह उसका फ़रिश्ता होगा।”

16 अब तक पतरस बाहर खडा खटखटा रहा था। चुनौचे उन्होंने गेट को खोल दिया। पतरस को देखकर वह हैरान रह गए। 17 लेकिन उसने अपने हाथ से खामोश रहने का इशारा किया और उन्हें सारा वाकिया सुनाया कि खूदावंद मुझे किस तरह जेल से निकाल लाया है। “याकूब और बाकी भाइयों को भी यह बताना,” यह कहकर वह कहीं और चला गया।

18 अगली सुबह जेल के फौजियों में बड़ी हलचल मच गई कि पतरस का क्या हुआ है। 19 जब हेरोदेस ने उसे ढूँडा और न पाया तो उसने पहरेदारों का बयान लेकर उन्हें सज़ाए-मौत दे दी।

इसके बाद वह यहदिया से चला गया और कैसरिया में रहने लगा।

### हेरोदेस अग्रिप्पा की मौत

20 उस वक़्त वह सूर और सैदा के बाशिंदों से निहायत नाराज़ था। इसलिए दोनों शहरों के नुमाइंदे मिलकर सुलह की दरखास्त करने के लिए उसके पास आए। वजह यह थी कि उनकी खुराक हेरोदेस के मुल्क से हासिल होती थी। उन्होंने बादशाह के महल के इंचार्ज ब्लम्स्तुस को इस पर आमादा किया कि वह उनकी मदद करे 21 और बादशाह से मिलने का दिन

मुकर्रर किया। जब वह दिन आया तो हेरोदेस अपना शाही लिबास पहनकर तख्त पर बैठ गया और एक अलानिया तकरीर की। 22 अवाम ने नारे लगा लगाकर पुकारा, “यह अल्लाह की आवाज़ है, इनसान की नहीं।” 23 वह अभी यह कह रहे थे कि ख के फरिशते ने हेरोदेस को मारा, क्योंकि उसने लोगों की परस्तिश कबूल करके अल्लाह को जलाल नहीं दिया था। वह बीमार हुआ और कीड़ों ने उसके जिस्म को खा खाकर खत्म कर दिया। इसी हालत में वह मर गया।

24 लेकिन अल्लाह का कलाम बढ़ता और फैलता गया।

25 इतने में बरनबास और साऊल अंतकिया का हदिया लेकर यरूशलम पहुँच चुके थे। उन्होंने पैसे वहाँ के बुजुर्गों के सुपर्द कर दिए और फिर यहून्ना मरकुस को साथ लेकर वापस चले गए।

## 13

बरनबास और साऊल को तबलीगी खिदमत के लिए चुना जाता है

1 अंतकिया की जमात में कई नबी और उस्ताद थे : बरनबास, शमौन जो काला कहलाता था, लुकियुस कुरेनी, मनाहेम जिसने बादशाह हेरोदेस अतिपास के साथ परवरिश पाई थी और साऊल। 2 एक दिन जब वह रोज़ा रखकर ख़ुदावंद की परस्तिश कर रहे थे तो रूहल-कुदस उनसे हमकलाम हुआ, “बरनबास और साऊल को उस ख़ास काम के लिए अलग करो जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया है।”

3 इस पर उन्होंने मज़ीद रोज़े रखे और दुआ की, फिर उन पर अपने हाथ रखकर उन्हें सख़सत कर दिया।

कुबस्स में

4 यों बरनबास और साऊल को रूहल-कुदस की तरफ़ से भेजा गया। पहले वह साहिली शहर सलूकिया गए और वहाँ जहाज़ में बैठकर जज़ीराए-कुबस्स के लिए रवाना हुए। 5 जब वह सलमीस शहर पहुँचे तो उन्होंने यहदियों के इबादतख़ानों में जाकर अल्लाह का कलाम सुनाया। यहून्ना मरकुस मददगार के तौर पर उनके साथ था।

6 पूरे जज़ीरे में से सफ़र करते करते वह पाफ़ुस शहर तक पहुँच गए। वहाँ उनकी मुलाकात एक यहूदी जादूगर से हुई जिसका नाम बर-ईसा था। वह झूठा नबी था 7 और जज़ीरे के गवर्नर सिरगियुस पौलुस की खिदमत के लिए हाज़िर रहता था। सिरगियुस एक समझदार आदमी था। उसने बरनबास और साऊल को अपने पास बुला लिया क्योंकि वह अल्लाह का कलाम सुनने का खाहिशमंद था। 8 लेकिन जादूगर इलीमास (बर-ईसा का दूसरा नाम) ने उनकी मुखालफ़त करके गवर्नर को ईमान से बाज़ रखने की कोशिश की। 9 फिर साऊल जो पौलुस भी कहलाता है रूहल-कुदस से मामूर हुआ और गौर से उस की तरफ़ देखने लगा। 10 उसने कहा, “इबलीस के फ़रज़ंद! तू हर किस्म के धोके और बदी से भरा हुआ है और हर इनसाफ़ का दुश्मन है। क्या तू ख़ुदावंद की सीधी राहों को बिगाड़ने की कोशिश से बाज़ न आएगा? 11 अब ख़ुदावंद तुझे सज़ा देगा। तू अंधा होकर कुछ देर के लिए सूरज की रौशनी नहीं देखेगा।”

उसी लमहे धुंध और तारीकी जादूगर पर छा गई और वह टटोल टटोलकर किसी को तलाश करने लगा जो उस की राहनुमाई करे। 12 यह माजरा देखकर गवर्नर ईमान लाया, क्योंकि ख़ुदावंद की तालीम ने उसे हैरतज़दा कर दिया था।

पिसिदिया के शहर अंतकिया में मुनादी

13 फिर पौलुस और उसके साथी जहाज़ पर सवार हुए और पाफ़ुस से रवाना होकर फिरगा शहर पहुँच गए जो पंफ़ीलिया में है। वहाँ यहून्ना मरकुस उन्हें छोड़कर यरूशलम वापस चला गया। 14 लेकिन पौलुस और बरनबास आगे निकलकर पिसिदिया में वाके शहर अंतकिया पहुँचे जहाँ वह सबत के दिन यहूदी इबादतख़ाने में जाकर बैठ गए। 15 तौरत और नबियों के सहीफ़ों की तिलावत के बाद इबादतख़ाने के राहनुमाओं ने उन्हें कहला भेजा, “भाइयो, अगर आपके पास लोगों के लिए कोई नसीहत की बात है तो उसे पेश करें।” 16 पौलुस खड़ा हुआ और हाथ का इशारा करके बोलने लगा,

“इसराईल के मर्दों और ख़ुदातरस ग़ैरयहूदियों, मेरी बात सुनें! 17 इस कौम इसराईल के ख़ुदा ने हमारे बापदादा को चुनकर उन्हें मिसर में ही ताक़तवर बना दिया जहाँ वह अजनबी थे। फिर वह उन्हें बड़ी कुदरत के साथ वहाँ से निकाल लाया। 18 जब वह रेगिस्तान में फिर रहे थे तो वह चालीस साल तक उन्हें बरदाशत करता रहा। 19 इसके बाद उसने मुल्के-कनान में सात कौमों को तबाह करके उनकी ज़मीन इसराईल को विरसे में दी। 20 इतने में तकरीबन 450 साल गुज़र गए।

यशुअ की मौत पर अल्लाह ने उन्हें समूएल नबी के दौर तक काज़ी दिए ताकि उनकी राहनुमाई करें। 21 फिर इनसे तंग आकर उन्होंने बादशाह मॉगा, इसलिए उसने उन्हें साऊल बिन क्रीस दे दिया जो बिनयमीन के कबीले का था। साऊल चालीस साल तक उनका बादशाह रहा, 22 फिर अल्लाह ने उसे हटाकर दाऊद को तख्त पर बिठा दिया। दाऊद वही आदमी है जिसके बारे में अल्लाह ने गवाही दी, “मैंने दाऊद बिन यस्सी में एक ऐसा आदमी पाया है जो मेरी सोच रखता है। जो कुछ भी मैं चाहता



हैं उसे वह करेगा।' 23 इसी बादशाह की औलाद में से ईसा निकला जिसका वादा अल्लाह कर चुका था और जिसे उसने इसराईल को नजात देने के लिए भेज दिया। 24 उसके आने से पेशतर यहया बपतिस्मा देनेवाले ने एलान किया कि इसराईल की पूरी क्रौम को तौबा करके बपतिस्मा लेने की जरूरत है। 25 अपनी खिदमत के इखिताम पर उसने कहा, 'तुम्हारे नजदीक मैं कौन हूँ? मैं वह नहीं हूँ जो तुम समझते हो। लेकिन मेरे बाद वह आ रहा है जिसके जूतों के तसमें मैं खेलने के लायक भी नहीं हूँ।'

26 भाइयो, इब्राहीम के फ़रजंदो और ख़ुदा का ख़ौफ़ माननेवाले ग़ैरयहूदियो! नजात का पैगाम हमें ही भेज दिया गया है। 27 यरूशलम के रहनेवालों और उनके राहनुमाओं ने ईसा को न पहचाना बल्कि उसे मुजरिम ठहराया। यों उनकी मारिफ़त नबियों की वह पेशगोइयों पूरी हुई जिनकी तिलावत हर सबत को की जाती है। 28 और अगरचे उन्हें सज़ाए-मौत देने की वजह न मिली तो भी उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की कि वह उसे सज़ाए-मौत दे। 29 जब उनकी मारिफ़त ईसा के बारे में तमाम पेशगोइयों पूरी हुई तो उन्होंने उसे सलीब से उतारकर कब्र में रख दिया। 30 लेकिन अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया 31 और वह बहुत दिनों तक अपने उन पैरोकारों पर जाहिर होता रहा जो उसके साथ गलील से यरूशलम आए थे। यह अब हमारी क्रौम के सामने उसके गवाह हैं। 32 और अब हम आपको यह ख़ुशख़बरी सुनाने आए हैं कि जो वादा अल्लाह ने हमारे बापदादा के साथ किया, 33 उसे उसने ईसा को ज़िंदा करके हमारे लिए जो उनकी औलाद है पूरा कर दिया है। यों दूसरे ज़बूर में लिखा है, 'तू मेरा फ़रजंद है, आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।' 34 इस हकीकत का ज़िक्र भी कलामे-मुक़द्दस में किया गया है कि अल्लाह उसे मुरदों में से ज़िंदा करके कभी गलने-सड़ने नहीं देगा : 'मैं तुम्हें उन मुक़द्दस और अनमित मेहरबानियों से नवाज़ूंगा जिनका वादा दाऊद से किया था।' 35 यह बात एक और हवाले में पेश की गई है, 'तू अपने मुक़द्दस को गलने-सड़ने की नौबत तक पहुँचने नहीं देगा।' 36 इस हवाले का ताल्लुक दाऊद के साथ नहीं है, क्योंकि दाऊद अपने ज़माने में अल्लाह की मरजी की खिदमत करने के बाद फ़ौत होकर अपने बापदादा से जा मिला। उस की लाश गलकर ख़तम हो गई। 37 बल्कि यह हवाला किसी और का ज़िक्र करता है, उसका जिसे अल्लाह ने ज़िंदा कर दिया और जिसका जिस्म गलने-सड़ने से दोचार न हुआ। 38 भाइयो, अब मेरी यह बात जान लें, हम इसकी मुनादी करने आए हैं कि आपको इस शख्स ईसा के वसीले से अपने गुनाहों की मुआफ़ी मिलती है। मूसा की शरीअत आपको किसी तरह भी रास्तबाज़ करार नहीं दे सकती थी, 39 लेकिन अब जो भी ईसा पर इमान लाए उसे हर लिहाज़ से रास्तबाज़ करार दिया जाता है। 40 इसलिए ख़बरदार! ऐसा न हो कि वह बात आप पर पूरी उतरे जो नबियों के सहीफों में लिखी है,

41 'गौर करो, मज़ाक उड़ानेवालो!

हैरतज़दा होकर हलाक हो जाओ।

क्योंकि मैं तुम्हारे जीते-जी एक ऐसा काम करूँगा

जिसकी जब ख़बर सुनेगे

तो तुम्हें यकीन नहीं आएगा।'

42 जब पौलुस और बरनबास इबादतरखाने से निकलने लगे तो लोगों ने उनसे गुज़ारिश की, "अगले सबत हमें इन बातों के बारे में मज़ीद कुछ बताएँ।" 43 इबादत के बाद बहुत-से यहूदी और यहूदी इमान के नौमुरीद पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए, और दोनों ने उनसे बात करके उनकी हौसलाअफ़ज़ाई की कि अल्लाह के फ़ज़ल पर कायम रहें।

44 अगले सबत के दिन तकरीबन तमाम शहर ख़ुदावंद का कलाम सुनने को जमा हुआ। 45 लेकिन जब यहूदियों ने हुज़म को देखा तो वह हसद से जल गए और पौलुस की बातों की तरदीद करके कुफ़र बकने लगे। 46 इस पर पौलुस और बरनबास ने उनसे साफ़ साफ़ कह दिया, "लाज़िम था कि अल्लाह का कलाम पहले आपको सुनाया जाए। लेकिन चूँकि आप उसे मुस्तरद करके अपने आपको अबदी ज़िंदागी के लायक नहीं समझते इसलिए हम अब ग़ैरयहूदियों की तरफ़ स़ख़ करते हैं। 47 क्योंकि ख़ुदावंद ने हमें यही हुक्म दिया जब उसने फ़रमाया, 'मैंने तुझे दीगर अक़वाम की रौशनी बना दी है ताकि तू मेरी नजात को दुनिया की इंतहा तक पहुँचाएँ।'

48 यह सुनकर ग़ैरयहूदी ख़श हुए और ख़ुदावंद के कलाम की तमज़ीद करने लगे। और जितने अबदी ज़िंदागी के लिए मुक़र्रर किए गए थे वह इमान लाए।

49 यों ख़ुदावंद का कलाम पूरे इलाके में फैल गया। 50 फिर यहूदियों ने शहर के लीडरों और यहूदी इमान रखनेवाली कुछ बारसख़ ग़ैरयहूदी ख़वातीन को उकसाकर लोगों को पौलुस और बरनबास को सताने पर उभारा। आखिरकार उन्हें शहर की सरहदों से निकाल दिया गया। 51 इस पर वह उनके खिलाफ़ गवाही के तौर पर अपने जूतों से गर्द झाड़कर आगे बढ़े और इकुनियुम शहर पहुँच गए। 52 और अंताकिया के शागिर्द ख़ुशी और स्हूल-कुद्दस से भरे रहे।

## 14

### इकुनियुम में

1 इकुनियुम में पौलुस और बरनबास यहूदी इबादतखाने में जाकर इतने इख्तियार से बोले कि यहूदियों और गैरयहूदियों की बड़ी तादाद ईमान ले आईं।<sup>2</sup> लेकिन जिन यहूदियों ने ईमान लाने से इनकार किया उन्होंने गैरयहूदियों को उकसाकर भाइयों के बारे में उनके खयालता खराब कर दिए।<sup>3</sup> तो भी रसूल काफ़ी देर तक वहाँ ठहरे। उन्होंने दिलेरी से खुदावंद के बारे में तालीम दी और खुदावंद ने अपने फ़ज़ल के पैगाम की तसदीक की। उसने उनके हाथों इलाही निशान और मोज़िजे स्तुमा होने दिए।<sup>4</sup> लेकिन शहर में आबाद लोग दो गुरोहों में बट गए। कुछ यहूदियों के हक में थे और कुछ रसूलों के हक में।

5 फिर कुछ गैरयहूदियों और यहूदियों में जोश आ गया। उन्होंने अपने लीडरों समेत फ़ैसला किया कि हम पौलुस और बरनबास की तज़लील करके उन्हें संगसार करेंगे।<sup>6</sup> लेकिन जब रसूलों को पता चला तो वह हिज्रत करके लुकाउनिया के शहरों लुस्तरा, दिरबे और इर्दगिर्द के इलाके में<sup>7</sup> अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाते रहे।

### लुस्तरा और दिरबे

8 लुस्तरा में पौलुस और बरनबास की मुलाकात एक आदमी से हुई जिसके पाँवों में ताकत नहीं थी। वह पैदाइश ही से लँगड़ा था और कभी भी चल-फिर न सका था। वह वहाँ बैठा<sup>9</sup> उनकी बातें सुन रहा था कि पौलुस ने गौर से उस की तरफ़ देखा। उसने जान लिया कि उस आदमी में रिहाई पाने के लायक ईमान है।<sup>10</sup> इसलिए वह ऊँची आवाज़ से बोला, “अपने पाँवों पर खड़े हो जाएँ!” वह उछलकर खड़ा हुआ और चलने-फिरने लगा।<sup>11</sup> पौलुस का यह काम देखकर हुज़ूम अपनी मकामी ज़बान में चिल्ला उठा, “इन आदमियों की शकल में देवता हमारे पास उतर आए हैं।”<sup>12</sup> उन्होंने बरनबास को यूनानी देवता ज़ियूस करार दिया और पौलुस को देवता हिरमस, क्योंकि कलाम सुनाने की खिदमत ज्यादातर वह अंजाम देता था।<sup>13</sup> इस पर शहर से बाहर वाके ज़ियूस के मंदिर का पुजारी शहर के दरवाज़े पर बैल और फूलों के हार ले आया और हुज़ूम के साथ कुरबानियाँ चढ़ाने की तैयारियाँ करने लगा।

14 यह सुनकर बरनबास और साक़ल रसूल अपने कपड़ों को फाड़कर हुज़ूम में जा घुसे और चिल्लाने लगे,<sup>15</sup> “मर्दों, यह आप क्या कर रहे हैं? हम भी आप जैसे इन्सान हैं। हम तो आपको अल्लाह की यह ख़ुशख़बरी सुनाने आए हैं कि आप इन बेकार चीज़ों को छोड़कर जिंदा खुदा की तरफ़ रूज़ फ़रमाएँ जिसने आसमानो-ज़मीन, समुंदर और जो कुछ उनमें है पैदा किया है।<sup>16</sup> माज़ी में उसने तमाम गैरयहूदी कौमों को खुला छोड़ दिया था कि वह अपनी अपनी राह पर चले।<sup>17</sup> तो भी उसने ऐसी चीज़ें आपके पास रहने दी हैं जो उस की गवाही देती हैं। उस की मेहरबानी इससे जाहिर होती है कि वह आपको बारिश भेजकर हर मौसम की फ़सलों मुहैया करता है और आप सेर होकर ख़ुशी से भर जाते हैं।”<sup>18</sup> इन अलफ़ाज़ के बावजूद पौलुस और बरनबास ने बड़ी मुश्किल से हुज़ूम को उन्हें कुरबानियाँ चढ़ाने से रोका।

19 फिर कुछ यहूदी पिसिदिया के अंताकिया और इकुनियुम से वहाँ आए और हुज़ूम को अपनी तरफ़ मायल किया। उन्होंने पौलुस को संगसार किया और शहर से बाहर घसीटकर ले गए। उनका खयाल था कि वह मर गया है,<sup>20</sup> लेकिन जब शागिर्द उसके गिर्द जमा हुए तो वह उठकर शहर की तरफ़ वापस चल पड़ा। अगले दिन वह बरनबास समेत दिरबे चला गया।

### शाम के अंताकिया में वापसी

21 दिरबे में उन्होंने अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाकर बहुत-से शागिर्द बनाए। फिर वह मुड़कर लुस्तरा, इकुनियुम और पिसिदिया के अंताकिया वापस आए।<sup>22</sup> हर जगह उन्होंने शागिर्दों के दिल मज़बूत करके उनकी हौसलाअफ़जाई की कि वह ईमान में साबितक़दम रहें। उन्होंने कहा, “लाज़िम है कि हम बहुत-सी मुसीबतों में से गुज़रकर अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हों।”<sup>23</sup> पौलुस और बरनबास ने हर ज़मात में बुज़ुर्ग़ भी मुकर्रर किए। उन्होंने रोज़े रखकर दूआ की और उन्हें उस खुदावंद के सुपर्द किया जिस पर वह ईमान लाए थे।

24 यों पिसिदिया के इलाके में से सफ़र करते करते वह पंफ़ीलिया पहुँचे।<sup>25</sup> उन्होंने पिरगा में कलामे-मुक़द्दस सुनाया और फिर उतरकर अतलिया पहुँचे।<sup>26</sup> वहाँ से वह जहाज़ में बैठकर शाम के शहर अंताकिया के लिए रवाना हुए, उस शहर के लिए जहाँ ईमानदारों ने उन्हें इस तबलीगी सफ़र के लिए अल्लाह के फ़ज़ल के सुपर्द किया था। यों उन्होंने अपनी इस खिदमत को पूरा किया।

27 अंताकिया पहुँचकर उन्होंने ईमानदारों को जमा करके उन तमाम कामों का बयान किया जो अल्लाह ने उनके वसीले से किए थे। साथ साथ उन्होंने यह भी बताया कि अल्लाह ने किस तरह गैरयहूदियों के लिए भी ईमान का दरवाज़ा खोल दिया है।<sup>28</sup> और वह काफ़ी देर तक वहाँ के शागिर्दों के पास ठहरे रहे।

## 15

## यरूशलम में मुशावरती इजतिमा

1 उस वक़्त कुछ आदमी यहूदिया से आकर शाम के अंताकिया में भाइयों को यह तालीम देने लगे, “लाज़िम है कि आपका मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ख़तना किया जाए, वरना आप नजात नहीं पा सकेगे।” 2 इससे उनके और बरनबास और पौलुस के दरमियान नाइतफ़ाकी पैदा हो गई और दोनों उनके साथ खूब बहस-मुबाहसा करने लगे। आख़िरकार ज़मात ने पौलुस और बरनबास को मुकर्रर किया कि वह चंद एक और मक़ामी ईमानदारों के साथ यरूशलम जाएँ और वहाँ के रसूलों और बुजुर्गों को यह मामला पेश करें।

3 चुनौचे ज़मात ने उन्हें रवाना किया और वह फ़ेनीके और सामरिया में से गुज़रे। रास्ते में उन्होंने मक़ामी ईमानदारों को तफ़सील से बताया कि ग़ैरयहूदी किस तरह ख़ुदावंद की तरफ़ रूजू ला रहे हैं। यह सुनकर तमाम भाई निहायत खुश हुए। 4 जब वह यरूशलम पहुँच गए तो ज़मात ने अपने रसूलों और बुजुर्गों समेत उनका इस्तक़बाल किया। फिर पौलुस और बरनबास ने सब कुछ बयान किया जो उनकी मारिफ़त हुआ था। 5 यह सुनकर कुछ ईमानदार खड़े हुए जो फ़रीसी फ़िरके में से थे। उन्होंने कहा, “लाज़िम है कि ग़ैरयहूदियों का ख़तना किया जाए और उन्हें हुक्म दिया जाए कि वह मूसा की शरीअत के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारें।”

6 रसूल और बुजुर्ग इस मामले पर गौर करने के लिए जमा हुए। 7 बहुत बहस-मुबाहसा के बाद पतरस खड़ा हुआ और कहा, “भाइयो, आप जानते हैं कि अल्लाह ने बहुत देर हुई आपमें से मुझे चुन लिया कि ग़ैरयहूदियों को अल्लाह की खुशख़बरी सुनाऊँ ताकि वह ईमान लाएँ। 8 और अल्लाह ने जो दिलों को जानता है इस बात की तसदीक़ की है, क्योंकि उसने उन्हें वही रूहल-कुदस बरखा है जो उसने हमें भी दिया था। 9 उसने हममें और उनमें कोई भी फ़रक़ न रखा बल्कि ईमान से उनके दिलों को भी पाक कर दिया। 10 चुनौचे आप अल्लाह को इसमें क्यों आजमा रहे हैं कि आप ग़ैरयहूदी शागिर्दों की गरदन पर एक ऐसा ज़ुआ रखना चाहते हैं जो न हम और न हमारे बापदादा उठा सकते थे? 11 देखें, हम तो ईमान रखते हैं कि हम सब एक ही तरीके यानी ख़ुदावंद ईसा के फ़ज़ल ही से नजात पाते हैं।”

12 तमाम लोग चुप रहे तो पौलुस और बरनबास उन्हें इन इलाही निशानों और मोजिज़ों के बारे में बताने लगे जो अल्लाह ने उनकी मारिफ़त ग़ैरयहूदियों के दरमियान किए थे। 13 जब उनकी बात ख़त्म हुई तो याक़ूब ने कहा, “भाइयो, मेरी बात सुनें! 14 शमौन ने बयान किया है कि अल्लाह ने किस तरह पहला क़दम उठाकर ग़ैरयहूदियों पर अपनी फ़िकरमंदी का इज़हार किया और उनमें से अपने लिए एक क़ौम चुन ली। 15 और यह बात नबियों की पेशगोइयों के भी मुताबिक़ है। चुनौचे लिखा है,

16 ‘इसके बाद मैं वापस आकर

दाऊद के तबाहशुदा घर को नए सिरे से तामीर करूँगा,

मैं उसके खंडरत दुबारा तामीर करके बहाल करूँगा

17 ताकि लोगों का बचा-खुचा हिस्सा और वह तमाम क़ौम

मुझे ढूँढ़ें जिन पर मेरे नाम का ठप्पा लगा है।

यह रब का फ़रमान है, और वह यह करेगा भी’

18 बल्कि यह उसे अज़ल से मालूम है।

19 यही पेशे-नज़र रखकर मेरी राय यह है कि हम उन ग़ैरयहूदियों को जो अल्लाह की तरफ़ रूजू कर रहे हैं ग़ैरज़रूरी तकलीफ़ न दें। 20 इसके बजाए बेहतर यह है कि हम उन्हें लिखकर हिदायत दें कि वह इन चीज़ों से परहेज़ करें : ऐसे खानों से जो बुतों को पेश किए जाने से नापाक हैं, जिनाकारी से, ऐसे जानवरों का गोशत खाने से जिन्हें गला घँटकर मार दिया गया हो और खून खाने से। 21 क्योंकि मुसवी शरीअत की मूनादी करनेवाले कई नसलों से हर शहर में रह रहे हैं। जिस शहर में भी जाएँ हर सबत के दिन शरीअत की तिलावत की जाती है।”

## ग़ैरयहूदी ईमानदारों के नाम खत

22 फिर रसूलों और बुजुर्गों ने पूरी ज़मात समेत फ़ैसला किया कि हम अपने में से कुछ आदमी चुनकर पौलुस और बरनबास के हमराह शाम के शहर अंताकिया भेज दें। दो को चुना गया जो भाइयों में राहनुमा थे, यहदाह बरसब्बा और सीलास। 23 उनके हाथ उन्होंने यह खत भेजा,

“यरूशलम के रसूलों और बुजुर्गों की तरफ़ से जो आपके भाई हैं।

अज़ीज़ ग़ैरयहूदी भाइयो जो अंताकिया, शाम और किलिकिया में रहते हैं, अस्सलामु अलैकुम!

24 सुना है कि हममें से कुछ लोगों ने आपके पास आकर आपको पेशान करके बेचैन कर दिया है, हालाँकि हमने उन्हें नहीं भेजा था। 25 इसलिए हम सब इस पर मुतफिक हुए कि कुछ आदमियों को चुनकर अपने प्यारे भाइयों बरनबास और पौलुस के हमराह आपके पास भेजें। 26 बरनबास और पौलुस ऐसे लोग हैं जिन्होंने हमारे खुदावंद ईसा मसीह की खातिर अपनी जान खतरे में डाल दी है। 27 उनके साथी यहदाह और सीलास हैं जिनको हमने इसलिए भेजा कि वह जबानी भी उन बातों की तसदीक करें जो हमने लिखी हैं।

28 हम और रहूल-कुदस इस पर मुतफिक हुए हैं कि आप पर सिवाए इन जरूरी बातों के कोई बोझ न डालें : 29 बुतों को पेश किया गया खाना मत खाना, खून मत खाना, ऐसे जानवरों का गोशत मत खाना जो गला घूँटकर मार दिए गए हों। इसके अलावा जिनाकारी न करें। इन चीजों से बाज़ रहेंगे तो अच्छा करेंगे। खुदा हाफिज़।”

30 पौलुस, बरनबास और उनके साथी रखसत होकर अंताकिया चले गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने जमात इकट्ठी करके उसे खत दे दिया। 31 उसे पढ़कर ईमानदार उसके हौसलाअफजा पैगाम पर खुश हुए। 32 यहदाह और सीलास ने भी जो खुद नबी थे भाइयों की हौसलाअफजाई और मजबूती के लिए काफ़ी बातें कीं। 33 वह कुछ देर के लिए वहाँ ठहरे, फिर मकामी भाइयों ने उन्हें सलामती से अलविदा कहा ताकि वह भेजेनेवालों के पास वापस जा सकें। 34 [लेकिन सीलास को वहाँ ठहरना अच्छा लगा।]

35 पौलुस और बरनबास खुद कुछ और देर अंताकिया में रहे। वहाँ वह बहुत-से और लोगों के साथ खुदावंद के कलाम की तालीम देते और उस की मुनादी करते रहे।

पौलुस और बरनबास जुदा हो जाते हैं

36 कुछ दिनों के बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, “आओ, हम मुडकर उन तमाम शहरों में जाएँ जहाँ हमने खुदावंद के कलाम की मुनादी की है और वहाँ के भाइयों से मुलाकात करके उनका हाल मालूम करें।” 37 बरनबास मुतफिक होकर यहूना मरकुस को साथ ले जाना चाहता था, 38 लेकिन पौलुस ने इसराय किया कि वह साथ न जाए, क्योंकि यहूना मरकुस पहले दौर के दौरान ही पंफीलिया में उन्हें छोड़कर उनके साथ खिदमत करने से बाज़ आया था। 39 इससे उनमें इतना सख्त इखिलाफ पैदा हुआ कि वह एक दूसरे से जुदा हो गए। बरनबास यहूना मरकुस को साथ लेकर जहाज़ में बैठ गया और कुबस्स चला गया, 40 जबकि पौलुस ने सीलास को खिदमत के लिए चुन लिया। मकामी भाइयों ने उन्हें खुदावंद के फजल के सुपर्द किया और वह रवाना हुए। 41 यों पौलुस जमातों को मजबूत करते करते शाम और किलिकिया में से गुज़रा।

## 16

तीमुथियुस का चुनाव

1 चलते चलते वह दिरेबे पहुँचा, फिर लुस्त्रा। वहाँ एक शागिर्द बनाम तीमुथियुस रहता था। उस की यहदी माँ ईमान लाई थी जबकि बाप यूनानी था। 2 लुस्त्रा और इकुनियुम के भाइयों ने उस की अच्छी रिपोर्ट दी, 3 इसलिए पौलुस उसे सफ़र पर अपने साथ ले जाना चाहता था। उस इलाके के यहूदियों का लिहाज़ करके उसने तीमुथियुस का खतना करवाया, क्योंकि सब लोग इससे वाकिफ थे कि उसका बाप यूनानी है। 4 फिर शहर बशहर जाकर उन्होंने मकामी जमातों को यस्शलम के रसूलों और बुजुर्गों के वह फ़ैसले पहुँचाए जिनके मुताबिक ज़िदगी गुज़ारनी थी। 5 यों जमातें ईमान में मजबूत हुईं और तादाद में रोज़ बरोज़ बढ़ती गई।

त्रोआस में पौलुस की रोया

6 रहूल-कुदस ने उन्हें सूबा आसिया में कलामे-मुक़दस की मुनादी करने से रोक लिया, इसलिए वह फ़रुगिया और गलतिया के इलाके में से गुज़रे। 7 मूसिया के करीब आकर उन्होंने शिमाल की तरफ सूबा बिथुनिया में दाखिल होने की कोशिश की। लेकिन ईसा के रूह ने उन्हें वहाँ भी जाने न दिया, 8 इसलिए वह मूसिया में से गुज़रकर बंदरगाह त्रोआस पहुँचे। 9 वहाँ पौलुस ने रात के वक़्त रोया देखी जिसमें शिमाली यूनान में वाके सूबा मकिदुनिया का एक आदमी खड़ा उससे इलतमास कर रहा था, “समुंद्र को पार करके मकिदुनिया आँ और हमारी मदद करें!” 10 ज्योंही उसने यह रोया देखी हम मकिदुनिया जाने की तैयारियाँ करने लगे। क्योंकि हमने रोया से यह नतीजा निकाला कि अल्लाह ने हमें उस इलाके के लोगों को खुशख़बरी सुनाने के लिए बुलाया है।

फिलिपी में लुदिया की तबदीली

11 हम त्रोआस में जहाज़ पर सवार होकर सीधे जज़ीराए-समुतराके के लिए रवाना हुए। फिर अगले दिन आगे निकलकर नयापुलिस पहुँचे। 12 वहाँ जहाज़ से उतरकर हम फिलिपी चले गए, जो सूबा मकिदुनिया के उस ज़िले का सदर शहर था

और रोमी नौआबादी था। इस शहर में हम कुछ दिन ठहरे।<sup>13</sup> सबत के दिन हम शहर से निकलकर दरिया के किनारे गए, जहाँ हमारी तवक्को थी कि यहदी दुआ के लिए जमा होंगे। वहाँ हम बैठकर कुछ खवातीन से बात करने लगे जो इकट्टी हुई थी।<sup>14</sup> उनमें से थुआतीरा शहर की एक औरत थी जिसका नाम लुदिया था। उसका पेशा कीमती अरगवानी रंग के कपडे की तिजारत था और वह अल्लाह की परस्तिश करनेवाली यैरयहदी थी। खुदावंद ने उसके दिल को खोल दिया, और उसने पौलुस की बातों पर तवज्जुह दी।<sup>15</sup> उसके और उसके घरवालों के बपतिस्मा लेने के बाद उसने हमें अपने घर में ठहरने की दावत दी। उसने कहा, “अगर आप समझते हैं कि मैं वाकई खुदावंद पर ईमान लाई हूँ तो मेरे घर आकर ठहरो!” यों उसने हमें मजबूर किया।

### फिलिप्पी की जेल में

<sup>16</sup> एक दिन हम दुआ की जगह की तरफ जा रहे थे कि हमारी मुलाकात एक लौडी से हुई जो एक बदरूह के जरीए लोगों की किस्मत का हाल बताती थी। इससे वह अपने मालिकों के लिए बहुत-से पैसे कमाती थी।<sup>17</sup> वह पौलुस और हमारे पीछे पडकर चीख चीखकर कहने लगी, “यह आदमी अल्लाह तआला के खादिम हैं जो आपको नजात की राह बताते आए हैं।”<sup>18</sup> यह सिलसिला रोज बरोज जारी रहा। आखिरकार पौलुस तंग आकर मुडा और बदरूह से कहा, “मैं तुझे ईसा मसीह के नाम से हुक्म देता हूँ कि लडकी में से निकल जा!” उसी लमहे वह निकल गई।

<sup>19</sup> उसके मालिकों को मालूम हुआ कि पैसे कमाने की उम्मीद जाती रही तो वह पौलुस और सीलास को पकडकर चौक में बैठे इकतिदार रखनेवालों के सामने घसीट ले गए।<sup>20</sup> उन्हें मजिस्ट्रेटों के सामने पेश करके वह चिल्लाने लगे, “यह आदमी हमारे शहर में हलचल पैदा कर रहे हैं। यह यहदी है<sup>21</sup> और ऐसे रस्मो-रिवाज का प्रचार कर रहे हैं जिन्हें कबूल करना और अदा करना हम रोमियों के लिए जायज नहीं।”<sup>22</sup> हुजूम भी आ मिला और पौलुस और सीलास के खिलाफ बातें करने लगा।

इस पर मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया कि उनके कपडे उतारे और उन्हें लाठी से मारा जाए।<sup>23</sup> उन्होंने उनकी खूब पिटाई करवाकर उन्हें कैदखाने में डाल दिया और दारोगे से कहा कि एहतियात से उनकी पहरादारी करो।<sup>24</sup> चुनौचे उसने उन्हें जेल के सबसे अंदरूनी हिस्से में ले जाकर उनके पाँव काठ में डाल दिए।

<sup>25</sup> अब ऐसा हुआ कि पौलुस और सीलास आधी रात के करीब दुआ कर रहे और अल्लाह की तमजीद के गीत गा रहे थे और बाकी कैदी सुन रहे थे।<sup>26</sup> अचानक बड़ा जलजला आया और कैदखाने की पूरी इमारत बुनियादों तक हिल गई। फौरन तमाम दरवाजे खुल गए और तमाम कैदियों की जंजीरें खुल गईं।<sup>27</sup> दारोगा जाग उठा। जब उसने देखा कि जेल के दरवाजे खुले हैं तो वह अपनी तलवार निकालकर खुदकुशी करने लगा, क्योंकि ऐसा लग रहा था कि कैदी फरार हो गए हैं।<sup>28</sup> लेकिन पौलुस चिल्ला उठा, “मत करो! अपने आपको नुकसान न पहुँचाएँ। हम सब यहीं हैं।”

<sup>29</sup> दारोगे ने चराग मँगवा लिया और भागकर अंदर आया। लरजते लरजते वह पौलुस और सीलास के सामने गिर गया।<sup>30</sup> फिर उन्हें बाहर ले जाकर उसने पूछा, “साहबो, मुझे नजात पाने के लिए क्या करना है?”

<sup>31</sup> उन्होंने जवाब दिया, “खुदावंद ईसा पर ईमान लाएँ तो आप और आपके घराने को नजात मिलेगी।”<sup>32</sup> फिर उन्होंने उसे और उसके तमाम घरवालों को खुदावंद का कलाम सुनाया।<sup>33</sup> और रात की उसी घडी दारोगे ने उन्हें ले जाकर उनके जखमों को धोया। इसके बाद उसका और उसके सारे घरवालों का बपतिस्मा हुआ।<sup>34</sup> फिर उसने उन्हें अपने घर में लाकर खाना खिलाया। अल्लाह पर ईमान लाने के बाइस उसने और उसके तमाम घरवालों ने बडी खुशी मनाई।

<sup>35</sup> जब दिन चढा तो मजिस्ट्रेटों ने अपने अफसरों को दारोगे के पास भिजवा दिया कि वह पौलुस और सीलास को रिहा करे।

<sup>36</sup> चुनौचे दारोगे ने पौलुस को उनका पैगाम पहुँचा दिया, “मजिस्ट्रेटों ने हुक्म दिया है कि आप और सीलास को रिहा कर दिया जाए। अब निकलकर सलामती से चले जाएँ।”

<sup>37</sup> लेकिन पौलुस ने एतराज किया। उसने उनसे कहा, “उन्होंने हमें अवाग के सामने ही और अदालत में पेश किए बगैर मारकर जेल में डाल दिया है हालाँकि हम रोमी शहरी हैं। और अब वह हमें चुपके से निकालना चाहते हैं? हरगिज नहीं! अब वह खुद आएँ और हमें बाहर ले जाएँ।”

<sup>38</sup> अफसरों ने मजिस्ट्रेटों को यह खबर पहुँचाई। जब उन्हें मालूम हुआ कि पौलुस और सीलास रोमी शहरी हैं तो वह घबरा गए।<sup>39</sup> वह खुद उन्हें समझाने के लिए आए और जेल से बाहर लाकर गुजारिश की कि शहर को छोड़ दें।<sup>40</sup> चुनौचे पौलुस और सीलास जेल से निकल आए। लेकिन पहले वह लुदिया के घर गए जहाँ वह भाइयों से मिले और उनकी हौसलाअफजाई की। फिर वह चले गए।

## 17

## थिस्सलूनीके में

1 अफिपुलिस और अपुल्लोनिया से होकर पौलूस और सीलास थिस्सलूनीके शहर पहुँच गए जहाँ यहूदी इबादतखाना था। 2 अपनी आदत के मुताबिक पौलूस उसमें गया और लगातार तीन सबतों के दौरान कलामे-मुक़द्दस से दलायल दे देकर यहूदियों को कायल करने की कोशिश करता रहा। 3 उसने कलामे-मुक़द्दस की तशरीह करके साबित किया कि मसीह का दुख उठाना और मरदों में से जी उठना लाज़िम था। उसने कहा, “जिस ईसा की मैं खबर दे रहा हूँ, वही मसीह है।” 4 यहूदियों में से कुछ कायल होकर पौलूस और सीलास से वाबस्ता हो गए, जिनमें खुदातरस यूनानियों की बड़ी तादाद और बारसूख खवातीन भी शरीक थीं।

5 यह देखकर बाक़ी यहूदी हसद करने लगे। उन्होंने गलियों में आवाज़ फिरनेवाले कुछ शरीर आदमी इकट्ठे करके ज़लूस निकाला और शहर में हलचल मचा दी। फिर यासोन के घर पर हमला करके उन्होंने पौलूस और सीलास को ढूँढा ताकि उन्हें अवामी इजलास के सामने पेश करें। 6 लेकिन वह वहाँ नहीं थे, इसलिए वह यासोन और चंद एक और ईमानदार भाइयों को शहर के मजिस्ट्रेटों के सामने लाए। उन्होंने चीखकर कहा, “यह लोग पूरी दुनिया में गडबड़ पैदा कर रहे हैं और अब यहाँ भी आ गए हैं। 7 यासोन ने उन्हें अपने घर में ठहराया है। यह सब शहनशाह के अहकाम की खिलाफ़वर्ज़ी कर रहे हैं, क्योंकि यह किसी और को बादशाह मानते हैं जिसका नाम ईसा है।” 8 इस तरह की बातों से उन्होंने हज़ूम और मजिस्ट्रेटों में बड़ा हंगामा पैदा किया। 9 चुनौचे मजिस्ट्रेटों ने यासोन और दूसरों से ज़मानत ली और फिर उन्हें छोड़ दिया।

## बेरिया में

10 उसी रात भाइयों ने पौलूस और सीलास को बेरिया भेज दिया। वहाँ पहुँचकर वह यहूदी इबादतखाने में गए। 11 यह लोग थिस्सलूनीके के यहूदियों की निसबत ज़्यादा खुले ज़हन के थे। यह बड़े शौक से पौलूस और सीलास की बातें सुनते और रोज़ बरोज़ कलामे-मुक़द्दस की तफ़तीश करते रहे कि क्या वाक़ई ऐसा है जैसा हमें बताया जा रहा है? 12 नतीजे में इनमें से बहुत-से यहूदी ईमान लाए और साथ साथ बहुत-सी बारसूख यूनानी खवातीन और मर्द भी। 13 लेकिन फिर थिस्सलूनीके के यहूदियों को यह खबर मिली कि पौलूस बेरिया में अल्लाह का कलाम सुना रहा है। वह वहाँ भी पहुँचे और लोगों को उकसाकर हलचल मचा दी। 14 इस पर भाइयों ने पौलूस को फ़ौरन साहिल पर भेज दिया, लेकिन सीलास और तीमुथियुस बेरिया में पीछे रह गए। 15 जो आदमी पौलूस को साहिल तक पहुँचाने आए थे वह उसके साथ अथेने तक गए। वहाँ वह उसे छोड़कर वापस चले गए। उनके हाथ पौलूस ने सीलास और तीमुथियुस को खबर भेजी कि जितनी जल्दी हो सके बेरिया को छोड़कर मेरे पास आ जाएँ।

## अथेने में

16 अथेने शहर में सीलास और तीमुथियुस का इंतज़ार करते करते पौलूस बड़े जोश में आ गया, क्योंकि उसने देखा कि पूरा शहर बुतों से भरा हुआ है। 17 वह यहूदी इबादतखाने में जाकर यहूदियों और खुदातरस ग़ैरयहूदियों से बहस करने लगा। साथ साथ वह रोज़ाना चौक में भी जाकर वहाँ पर मौजूद लोगों से गुफ़्तगु करता रहा। 18 इपिकूरी और स्तोयकी फ़लसफ़ी \* भी उससे बहस करने लगे। जब पौलूस ने उन्हें ईसा और उसके जी उठने की ख़ुशख़बरी सुनाई तो बाज़ न पृछा, “यह बकवासी इन बातों से क्या कहना चाहता है जो इसने इधर उधर से चुनकर जोड़ दी हैं?”

दूसरों ने कहा, “लगत है कि वह अज़नबी देवताओं की खबर दे रहा है।” 19 वह उसे साथ लेकर शहर की मजलिसे-शूआ में गए जो अरियोपगुस नामी पहाड़ी पर मुनअक़िद होती थी। उन्होंने दरबास्त की, “क्या हमें मालूम हो सकता है कि आप कौन-सी नई तालीम पेश कर रहे हैं? 20 आप तो हमें अजीबो-ग़रीब बातें सुना रहे हैं। अब हम उनका सहीह मतलब जानना चाहते हैं।” 21 (बात यह थी कि अथेने के तमाम बाशिंदे शहर में रहनेवाले परदेसियों समेत अपना पूरा वक्त इसमें सर्फ़ करते थे कि ताज़ा ताज़ा खयालात सुनें या सुनाएँ।)

22 पौलूस मजलिसे में खड़ा हुआ और कहा, “अथेने के हज़रत, मैं देखा हूँ कि आप हर लिहाज़ से बहुत मज़हबी लोग हैं। 23 क्योंकि जब मैं शहर में से गुज़र रहा था तो उन चीज़ों पर गौर किया जिनकी पूजा आप करते हैं। चलते चलते मैंने एक ऐसी क़ुरबानगाह भी देखी जिस पर लिखा था, ‘नामालूम खुदा की क़ुरबानगाह।’ अब मैं आपको उस खुदा की खबर देता हूँ जिसकी पूजा आप करते तो हैं मगर आप उसे जानते नहीं। 24 यह वह खुदा है जिसने दुनिया और उसमें मौजूद हर चीज़ की तखलीक की। वह आसमानो-ज़मीन का मालिक है, इसलिए वह इनसानी हाथों के बनाए हुए मंदिरों में सुकूनत नहीं करता। 25 और इनसानी हाथ उस की खिदमत नहीं कर सकते, क्योंकि उसे कोई भी चीज़ दरकार नहीं होती। इसके बजाए

\* 17:18 यानी रवाक़ियत के फ़लसफ़ी।

वही सबको जिंदागी और सॉस मुहैया करके उनकी तमाम ज़रूरियात पूरी करता है। 26 उसी ने एक शख्स को खलक किया ताकि दुनिया की तमाम क्रौमों उससे निकलकर पूरी दुनिया में फैल जाएँ। उसने हर क्रौम के औकात और सरहदें भी मुकर्रर कीं। 27 मकसद यह था कि वह खुदा को तलाश करें। उम्मीद यह थी कि वह टटोल टटोलकर उसे पाएँ, अगरचे वह हममें से किसी से दूर नहीं होता। 28 क्योंकि उसमें हम जीते, हरकत करते और वजुद रखते हैं। आपके अपने कुछ शायरों ने भी फ़रमाया है, 'हम भी उसके फ़रज़द हैं।' 29 अब चूँकि हम अल्लाह के फ़रज़द हैं इसलिए हमारा उसके बारे में तसब्बूह रह नहीं होना चाहिए कि वह सोने, चाँदी या पत्थर का कोई मुजस्समा हो जो इनसान की महारत और डिजायन से बनाया गया हो। 30 माज़ी में खुदा ने इस किस्म की जहालत को नज़रदाज़ किया, लेकिन अब वह हर जगह के लोगों को तोबा का हुकम देता है। 31 क्योंकि उसने एक दिन मुकर्रर किया है जब वह इनसाफ से दुनिया की अदालत करेगा। और वह यह अदालत एक शख्स की मारिफ़त करेगा जिसको वह मुतैयिन कर चुका है और जिसकी तसदीक उसने इससे की है कि उसने उसे मुर्दों में से जिंदा कर दिया है।”

32 मुर्दों की क्रियामत का जिक्र सुनकर बाज़ ने पौलुस का मज़ाक उड़ाया। लेकिन बाज़ ने कहा, “हम किसी और वक्त इसके बारे में आपसे मज़ीद सुनना चाहते हैं।” 33 फिर पौलुस मजलिस से निकलकर चला गया। 34 कुछ लोग उससे वाबस्ता होकर इमान ले आए। उनमें से मजलिसे-शरा का मेंबर दियोनीसियुस था और एक औरत बनाम दमरिस। कुछ और भी थे।

## 18

### कुरिथुस में

1 इसके बाद पौलुस अथेने को छोड़कर कुरिथुस शहर आया। 2 वहाँ उस की मुलाकात एक यहूदी से हुई जिसका नाम अकविला था। वह पुंतुस का रहनेवाला था और थोड़ी देर पहले अपनी बीवी प्रिसकिल्ला समेत इटली से आया था। वजह यह थी कि शहनशाह क्लौदियुस ने हुकम सादिर किया था कि तमाम यहूदी रोम को छोड़कर चले जाएँ। उन लोगों के पास पौलुस गया 3 और चूँकि उनका पेशा भी ख़ैमे सिलाई करना था इसलिए वह उनके घर ठहरकर रोज़ी कमाने लगा। 4 साथ साथ उसने हर सबब को यहूदी इबादतखाने में तालीम देकर यहूदियों और यूनानियों को कायल करने की कोशिश की।

5 जब सीलास और तीमुथियुस मकिदुनिया से आए तो पौलुस अपना पूरा वक्त कलाम सुनाने में सर्फ़ करने लगा। उसने यहूदियों को गवाही दी कि ईसा कलामे-मुक़द्दस में बयान किया गया मसीह है। 6 लेकिन जब वह उस की मुखालफ़त करके उस की तज़लील करने लगे तो उसने एहतजाज में अपने कपड़ों से गर्द झाड़कर कहा, “आप खुद अपनी हलाकत के जिम्मादार हैं, मैं बेक़ुसूर हूँ। अब से मैं ग़ैरयहूदियों के पास जाया करूँगा।” 7 फिर वह वहाँ से निकलकर इबादतखाने के साथवाले घर में गया। वहाँ तितुस यस्तुस रहता था जो यहूदी नहीं था, लेकिन खुदा का ख़ौफ़ मानता था। 8 और क्रिसपुस जो इबादतखाने का राहनुमा था अपने घराने समेत खुदावंद पर इमान लाया। कुरिथुस के बहुत सारे और लोगों ने भी जब पौलुस की बातें सुनी तो इमान लाए और बपतिस्मा लिया।

9 एक रात खुदावंद रोया में पौलुस से हमकलाम हुआ, “मत डर! कलाम करता जा और ख़ामोश न हो, 10 क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ। कोई हमला करके तुझे नुकसान नहीं पहुँचाएगा, क्योंकि इस शहर में मेरे बहुत-से लोग हैं।” 11 फिर पौलुस मज़ीद डेढ़ साल वहाँ ठहरकर लोगों को अल्लाह का कलाम सिखाता रहा।

12 उन दिनों में जब गल्लियो सब्बा अख़या का गवर्नर था तो यहूदी मुत्तहिद होकर पौलुस के खिलाफ़ जमा हुए और उसे अदालत में गल्लियो के सामने लाए। 13 उन्होंने कहा, “यह आदमी लोगों को ऐसे तरीके से अल्लाह की इबादत करने पर उकसा रहा है जो हमारी शरीअत के खिलाफ़ है।”

14 पौलुस जवाब में कुछ कहने को था कि गल्लियो खुद यहूदियों से मुखातिब हुआ, “सुनें, यहूदी मर्दा! अगर आपका इलज़ाम कोई नाइनसाफ़ी या संगीन ज़ुर्म होता तो आपकी बात काबिले-बरदाश्त होती। 15 लेकिन आपका झगडा मज़हबी तालीम, नामों और आपकी यहूदी शरीअत से ताल्लुक रखता है, इसलिए उसे खुद हल करें। मैं इस मामले में फैसला करने के लिए तैयार नहीं हूँ।” 16 यह कहकर उसने उन्हें अदालत से भगा दिया। 17 इस पर हज़ूम ने यहूदी इबादतखाने के राहनुमा सोसथिनेस को पकड़कर अदालत के सामने उस की पिटाई की। लेकिन गल्लियो ने परवा न की।

### अंतकिया तक वापसी का सफ़र

18 इसके बाद भी पौलुस बहुत दिन कुरिथुस में रहा। फिर भाइयों को ख़ैरबाद कहकर वह करीब के शहर किखरिया गया जहाँ उसने किसी मन्नत के पूरे होने पर अपने सर के बाल मुँडवा दिए। इसके बाद वह प्रिसकिल्ला और अकविला के साथ जहाज़ पर सवार होकर मुल्के-शाम के लिए रवाना हुआ। 19 पहले वह इफ़िसुस पहुँचे जहाँ पौलुस ने प्रिसकिल्ला और अकविला को छोड़ दिया। वहाँ भी उसने यहूदी इबादतखाने में जाकर यहूदियों से बहस की। 20 उन्होंने उससे दरखास्त की

कि मज़ीद वक्त उनके साथ गुज़ारे, लेकिन उसने इनकार किया <sup>21</sup> और उन्हें खैरबाद कहकर कहा, “अगर अल्लाह की मरजी हो तो मैं आपके पास वापस आऊँगा।” फिर वह जहाज़ पर सवार होकर इफिसस से रवाना हुआ।

<sup>22</sup> सफ़र करते करते वह कैसरिया पहुँच गया, जहाँ से वह यरूशलम जाकर मक़ामी जमात से मिला। इसके बाद वह अंतकिया वापस चला गया <sup>23</sup> जहाँ वह कुछ देर ठहरा। फिर आगे निकलकर वह गलतिया और फ़रुगिया के इलाक़े में से गुज़रते हुए वहाँ के तमाम ईमानदारों को मज़बूत करता गया।

### अपुल्लोस इफिसस और कुरिथस में

<sup>24</sup> इतने में एक फ़सीह यहूदी जिसे कलामे-मुक़द्दस का ज़बरदस्त इल्म था इफिसस पहुँच गया था। उसका नाम अपुल्लोस था। वह मिसर के शहर इस्कंदरिया का रहनेवाला था। <sup>25</sup> उसे खुदावंद की राह के बारे में तालीम दी गई थी और वह बड़ी सरगर्मी से लोगों को ईसा के बारे में सिखाता रहा। उस की यह तालीम सही थी अगरचे वह अभी तक सिर्फ़ यहया का बपतिस्मा जानता था। <sup>26</sup> इफिसस के यहूदी इबादतखाने में वह बड़ी दिलेरी से कलामे करने लगा। यह सुनकर प्रिसकिल्ला और अकविला ने उसे एक तरफ़ ले जाकर उसके सामने अल्लाह की राह को मज़ीद तफ़रील से बयान किया। <sup>27</sup> अपुल्लोस सूबा अख़या जाने का ख़याल रखता था तो इफिसस के भाइयों ने उस की हौसलाअफ़जाई की। उन्होंने वहाँ के शागिर्दों को खत लिखा कि वह उसका इस्तक़बाल करें। जब वह वहाँ पहुँचा तो उनके लिए बड़ी मदद का बाइस बना जो अल्लाह के फ़ज़ल से ईमान लाए थे, <sup>28</sup> क्योंकि वह अलानिया मुबाहसों में ज़बरदस्त दलायल से यहूदियों पर गालिब आया और कलामे-मुक़द्दस से साबित किया कि ईसा मसीह है।

## 19

### पौलस इफिसस में

<sup>1</sup> जब अपुल्लोस कुरिथस में ठहरा हुआ था तो पौलस एशियाए-कूचक के अंदरूनी इलाक़े में से सफ़र करते करते साहिली शहर इफिसस में आया। वहाँ उसे कुछ शागिर्द मिले <sup>2</sup> जिनसे उसने पूछा, “क्या आपको ईमान लाते वक्त रूहल-कूदस मिला?”

उन्होंने जवाब दिया, “नहीं, हमने तो रूहल-कूदस का ज़िक्र तक नहीं सुना।”

<sup>3</sup> उसने पूछा, “तो आपको कौन-सा बपतिस्मा दिया गया?”

उन्होंने जवाब दिया, “यहया का।”

<sup>4</sup> पौलस ने कहा, “यहया ने बपतिस्मा दिया जब लोगों ने तौबा की। लेकिन उसने ख़ुद उन्हें बताया, ‘मेरे बाद आनेवाले पर ईमान लाओ, यानी ईसा पर।’”

<sup>5</sup> यह सुनकर उन्होंने ख़ुदावंद ईसा के नाम पर बपतिस्मा लिया। <sup>6</sup> और जब पौलस ने अपने हाथ उन पर रखे तो उन पर रूहल-कूदस नाज़िल हुआ, और वह ग़ैरज़बाने बोलने और नबुव्वत करने लगे। <sup>7</sup> इन आदमियों की कुल तादाद तक़रीबन बारह थी।

<sup>8</sup> पौलस यहूदी इबादतखाने में गया और तीन महीने के दौरान यहूदियों से दिलेरी से बात करता रहा। उनके साथ बहस करके उसने उन्हें अल्लाह की बादशाही के बारे में कायल करने की कोशिश की। <sup>9</sup> लेकिन कुछ अड़ गए। वह अल्लाह के ताबे न हुए बल्कि अवाम के सामने ही अल्लाह की राह को बुरा-भला कहने लगे। इस पर पौलस ने उन्हें छोड़ दिया। शागिर्दों को भी अलग करके वह उनके साथ तुर्नुस के लैक्चर हाल में जमा हुआ करता था जहाँ वह रोज़ाना उन्हें तालीम देता रहा। <sup>10</sup> यह सिलसिला दो साल तक जारी रहा। यों सूबा आसिया के तमाम लोगों को ख़ुदावंद का कलामे सुनने का मौक़ा मिला, खाह वह यहूदी थे या यूनानी।

### राहनुमा इमाम स्किवा के सात बेटे

<sup>11</sup> अल्लाह ने पौलस की मारिफ़त ग़ैरमामूली मोजिजे किए, <sup>12</sup> यहाँ तक कि जब रूमाल या एप्रन उसके बदन से लगाने के बाद मरीज़ों पर रखे जाते तो उनकी बीमारियाँ जाती रहती और बदर्हें निकल जाती। <sup>13</sup> वहाँ कुछ ऐसे यहूदी भी थे जो जगह जगह जाकर बदर्हें निकालते थे। अब वह बदर्हों के बंधन में फँसे लोगों पर ख़ुदावंद ईसा का नाम इस्तेमाल करने की कोशिश करके कहने लगे, “मैं तुझे उस ईसा के नाम से निकलने का हुक़म देता हूँ जिसकी मुनादी पौलस करता है।” <sup>14</sup> एक यहूदी राहनुमा इमाम बनाम स्किवा के सात बेटे ऐसा करते थे।

<sup>15</sup> लेकिन एक दफ़ा जब यही कोशिश कर रहे थे तो बदर्ह ने जवाब दिया, “ईसा को तो मैं जानती हूँ और पौलस को भी, लेकिन तुम कौन हो?”



16 फिर वह आदमी जिसमें बदरूह थी उन पर झपटकर सब पर गालिब आ गया। उसका उन पर इतना सख्त हमला हुआ कि वह नंगे और ज़खमी हालत में भागकर उस घर से निकल गए। 17 इस वाकिए की खबर इफिसस के तमाम रहनेवाले यहूदियों और यूनानियों में फैल गई। उन पर खौफ़ तारी हुआ और खुदावंद ईसा के नाम की ताज़ीम हुई। 18 जो ईमान लाए थे उनमें से बहुतेरों ने आकर अलानिया अपने गुनाहों का इकरार किया। 19 जादूगरी करनेवालों की बड़ी तादाद ने अपनी जादूमंत्र की किताबें इकट्ठी करके अवाग के सामने जला दी। पूरी किताबों का हिसाब किया गया तो उनकी कुल रकम चाँदी के पचास हजार सिक्के थी। 20 यों खुदावंद का कलाम ज़बरदस्त तरीके से बढ़ता और ज़ोर पकड़ता गया।

### इफिसस में हंगामा

21 इन वाकियात के बाद पौलस ने मकिदुनिया और अखया में से गुजरकर यरूशलम जाने का फैसला किया। उसने कहा, “इसके बाद लाज़िम है कि मैं रोम भी जाऊँ।” 22 उसने अपने दो मददगारों तीमुथियुस और इरास्तुस को आगे मकिदुनिया भेज दिया जबकि वह खुद मज़ीद कुछ देर के लिए सूबा आसिया में ठहरा रहा।

23 तक्ररीबन उस वक़्त अल्लाह की राह एक शदीद हंगामे का बाइस हो गई। 24 यह यों हुआ, इफिसस में एक चाँदी की अशया बनानेवाला रहता था जिसका नाम देमेटेरियुस था। वह चाँदी से अरतमिस देवी के मंदिर बनवाता था, और उसके काम से दस्तकारों का कारोबार खूब चलता था। 25 अब उसने इस काम से ताल्लुक रखनेवाले दीगर दस्तकारों को जमा करके उनसे कहा, “हज़रात, आपको मालूम है कि हमारी दौलत इस कारोबार पर मुनहसिर है। 26 आपने यह भी देख और सुन लिया है कि इस आदमी पौलस ने न सिर्फ़ इफिसस बल्कि तक्ररीबन पूरे सूबा आसिया में बहुत-से लोगों को भटककर कायल कर लिया है कि हाथों के बने देवता हकीकत में देवता नहीं होते। 27 न सिर्फ़ यह खतरा है कि हमारे कारोबार की बदनामी हो बल्कि यह भी कि अज़ीम देवी अरतमिस के मंदिर का असरो-रखसू जाता रहेगा, कि अरतमिस खुद जिसकी पूजा सूबा आसिया और पूरी दुनिया में की जाती है अपनी अज़मत खो बैठे।”

28 यह सुनकर वह तैश में आकर चीखने-चिल्लाने लगे, “इफिसियों की अरतमिस देवी अज़ीम है!” 29 पूरे शहर में हलचल मच गई। लोगों ने पौलस के मकिदुनी हमसफ़र गयुस और अरिस्तरखुस को पकड़ लिया और मिलकर तमाशागाह में दौड़े आए। 30 यह देखकर पौलस भी अवाग के इस इजलास में जाना चाहता था, लेकिन शागिर्दों ने उसे रोक लिया। 31 इसी तरह उसके कुछ दोस्तों ने भी जो सूबा आसिया के अफसर थे उसे खबर भेजकर मिनत की कि वह न जाए। 32 इजलास में बड़ी अफ़रा-तफ़री थी। कुछ यह चीख रहे थे, कुछ वह। ज़्यादातर लोग जमा होने की वजह जानते भी न थे। 33 यहूदियों ने सिकंदर को आगे कर दिया। साथ साथ हुज़ूम के कुछ लोग उसे हिदायात देते रहे। उसने हाथ से खामोश हो जाने का इशारा किया ताकि वह इजलास के सामने अपना दिफा करे। 34 लेकिन जब उन्होंने जान लिया कि वह यहूदी है तो वह तक्ररीबन दो घंटों तक चिल्लाकर नारा लगाते रहे, “इफिसस की अरतमिस देवी अज़ीम है!”

35 आखिरकार बलदिया का चीफ़ सैक्रेटरी उन्हें खामोश कराने में कामयाब हुआ। फिर उसने कहा, “इफिसस के हज़रात, किस को मालूम नहीं कि इफिसस अज़ीम अरतमिस देवी के मंदिर का मुहाफिज़ है! पूरी दुनिया जानती है कि हम उसके उस मुजस्समे के निगरान हैं जो आसमान से गिरकर हमारे पास पहुँच गया। 36 यह हकीकत तो नाकाबिले-इनकार है। चुनाँचे लाज़िम है कि आप चुप-चाप रहें और जल्दबाज़ी न करें। 37 आप यह आदमी यहाँ लाए हैं हालाँकि न तो वह मंदिरों को लूटनेवाले हैं, न उन्होंने देवी की बेहुरमती की है। 38 अगर देमेटेरियुस और उसके साथवाले दस्तकारों का किसी पर इलज़ाम है तो इसके लिए कचहरियाँ और गवर्नर होते हैं। वहाँ जाकर वह एक दूसरे से मुकदमा लड़ें। 39 अगर आप मज़ीद कोई मामला पेश करना चाहते हैं तो उसे हल करने के लिए कानूनी मजलिस होती है। 40 अब हम इस ख़तरे में हैं कि आज के वाकियात के बाइस हम पर फ़साद का इलज़ाम लगाया जाएगा। क्योंकि जब हमसे पूछा जाएगा तो हम इस किस्म के बेतरतीब और नाजायज़ इजतिमा का कोई जवाज़ पेश नहीं कर सकेगे।” 41 यह कहकर उसने इजलास को बरखास्त कर दिया।

## 20

### मकिदुनिया और अखया में

1 जब शहर में अफ़रा-तफ़री ख़त्म हुई तो पौलस ने शागिर्दों को बुलाकर उनकी हौसलाअफ़ज़ाई की। फिर वह उन्हें ख़ैरबाद कहकर मकिदुनिया के लिए रवाना हुआ। 2 वहाँ पहुँचकर उसने जगह बजगह जाकर बहुत-सी बातों से ईमानदारों की हौसलाअफ़ज़ाई की। यों चलते चलते वह यूनान पहुँच गया 3 जहाँ वह तीन माह तक ठहरा। वह मुल्के-शाम के लिए जहाज़ पर सवार होनेवाला था कि पता चला कि यहूदियों ने उसके खिलाफ़ साज़िश की है। इस पर उसने मकिदुनिया से होकर वापस जाने का फैसला किया। 4 उसके कई हमसफ़र थे: बेरिया से पुम्स का बेटा सोपतम्स, थिस्सलूनिकी से अरिस्तरखुस और सिकुंदुस, दिरबे से गयुस, तीमुथियुस और सूबा आसिया से तुखिकुस और त्रुफ़िम्स। 5 यह आदमी आगे निकलकर ज़ोआस

चले गए जहाँ उन्होंने हमारा इंतजार किया। 6 बेखमीरी रोटी की ईद के बाद हम फिलिप्पी के करीब जहाज़ पर सवार हुए और पाँच दिन के बाद उनके पास त्रोआस पहुँच गए। वहाँ हम सात दिन रहे।

### त्रोआस में पौलुस की अलविदाई मीटिंग

7 इतवार को हम अशाए-रब्बानी मनाने के लिए जमा हुए। पौलुस लोगों से बात करने लगा और चूँकि वह अगले दिन रवाना होनेवाला था इसलिए वह आधी रात तक बोलता रहा। 8 ऊपर की मनज़िल में जिस कमरे में हम जमा थे वहाँ बहुत-से चराग जल रहे थे। 9 एक जवान खिड़की की दहलीज़ पर बैठा था। उसका नाम यूतिखुस था। ज्यों-ज्यों पौलुस की बातें लंबी होती जा रही थीं उस पर नीद गालिब आती जा रही थी। आखिरकार वह गहरी नींद में तीसरी मनज़िल से ज़मीन पर गिर गया। जब लोगों ने नीचे पहुँचकर उसे ज़मीन पर से उठाया तो वह जान-बूझकर हो चुका था। 10 लेकिन पौलुस उतरकर उस पर झुक गया और उसे अपने बाजूओं में ले लिया। उसने कहा, “मत घबराएँ, वह ज़िंदा है।” 11 फिर वह वापस ऊपर आ गया, अशाए-रब्बानी मनाई और खाना खाया। उसने अपनी बातें पौ फटने तक जारी रखीं, फिर रवाना हुआ। 12 और उन्होंने जवान को ज़िंदा हालत में वहाँ से लेकर बहुत तसल्ली पाई।

### त्रोआस से मिलेतुस तक

13 हम आगे निकलकर अस्सुस के लिए जहाज़ पर सवार हुए। खुद पौलुस ने इंतज़ाम करवाया था कि वह पैदल जाकर अस्सुस में हमारे जहाज़ पर आएगा। 14 वहाँ वह हमसे मिला और हम उसे जहाज़ पर लाकर मतुलेने पहुँचे। 15 अगले दिन हम खियुस के जज़ीर से गुज़रे। उससे अगले दिन हम सामुस के जज़ीर के करीब आए। इसके बाद के दिन हम मिलेतुस पहुँच गए। 16 पौलुस पहले से फ़ैसला कर चुका था कि मैं इफ़िसुस में नहीं ठहरूँगा बल्कि आगे निकलूँगा, क्योंकि वह जल्दी में था। वह जहाँ तक मुमकिन था पंतिकुस्त की ईद से पहले पहले यरूशलम पहुँचना चाहता था।

### इफ़िसुस के बुज़ुर्गों के लिए पौलुस की अलविदाई तक्ररी

17 मिलेतुस से पौलुस ने इफ़िसुस की जमात के बुज़ुर्गों को बुला लिया। 18 जब वह पहुँचे तो उसने उनसे कहा, “आप जानते हैं कि मैं सूबा आसिया में पहला क़दम उठाने से लेकर पूरा वक्त आपके साथ किस तरह रहा। 19 मैंने बड़ी इंकिसारी से खुदावंद की खिदमत की है। मुझे बहुत आँसू बहाने पड़े और यहदियों की साज़िशों से मुझ पर बहुत आजमाइशें आईं। 20 मैंने आपके फ़ायदे की कोई भी बात आपसे छुपाए न रखी बल्कि आपको अलानिया और घर घर जाकर तालीम देता रहा। 21 मैंने यहदियों को यूनानियों समेत गवाही दी कि उन्हें तौबा करके अल्लाह की तरफ़ रूज़ करने और हमारे खुदावंद ईसा पर ईमान लाने की ज़रूरत है। 22 और अब मैं रूहल-कुदूस से बँधा हुआ यरूशलम जा रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या कुछ होगा, 23 लेकिन इतना मुझे मालूम है कि रूहल-कुदूस मुझे शहर बशहर इस बात से आगाह कर रहा है कि मुझे कैद और मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। 24 ख़ैर, मैं अपनी ज़िंदगी को किसी तरह भी अहम नहीं समझता। अहम बात सिर्फ़ यह है कि मैं अपना वह मिशन और ज़िम्मादारी पूरी करूँ जो खुदावंद ईसा ने मेरे सुपुर्द की है। और वह ज़िम्मादारी यह है कि मैं लोगों को गवाही देकर यह ख़ुशख़बरी सुनाऊँ कि अल्लाह ने अपने फ़जल से उनके लिए क्या कुछ किया है।

25 और अब मैं जानता हूँ कि आप सब जिन्हें मैंने अल्लाह की बादशाही का पैग़ाम सुना दिया है मुझे इसके बाद कभी नहीं देखेंगे। 26 इसलिए मैं आज ही आपको बताता हूँ कि अगर आपमें से कोई भी हलाक हो जाए तो मैं बेकुसूर हूँ, 27 क्योंकि मैं आपको अल्लाह की पूरी मरज़ी बताने से न झिंजका। 28 चुनौचे खबरदार रहकर अपना और उस पुरे गल्ले का खयाल रखना जिस पर रूहल-कुदूस ने आपको मुक़र्र किया है। निगरानों और चरवाहों की हैसियत से अल्लाह की जमात की खिदमत करें, उस जमात की जिसे उसने अपने ही फ़रज़ंद के खून से हासिल किया है। 29 मुझे मालूम है कि मेरे जाने के बाद वहशी भेड़िये आपमें घुस आएंगे जो गल्ले को नहीं छोड़ेंगे। 30 आपके दरमियान से भी आदमी उठकर सच्चाई को तोड़-मरोड़कर बयान करेंगे ताकि शागिर्दों को अपने पीछे लगा लें। 31 इसलिए जागते रहें! यह बात ज़हन में रखें कि मैं तीन साल के दौरान दिन-रात हर एक को समझाने से बाज़ न आया। मेरे आँसुओं को याद रखें जो मैंने आपके लिए बहाए हैं।

32 और अब मैं आपको अल्लाह और उसके फ़जल के कलाम के सुपुर्द करता हूँ। यही कलाम आपकी तामीर करके आपको वह मीरास मुहैया करने के क़ाबिल है जो अल्लाह तमाम मुक़द्दस किए गए लोगों को देता है। 33 मैंने किसी के भी सोने, चाँदी या कपड़ों का लालच न किया। 34 आप खुद जानते हैं कि मैंने अपने इन हाथों से काम करके न सिर्फ़ अपनी बल्कि अपने साथियों की ज़रूरियात भी पूरी की। 35 अपने हर काम में मैं आपको दिखाता रहा कि लाज़िम है कि हम इस किस्म की मेहनत करके कमजोरों की मदद करें। क्योंकि हमारे सामने खुदावंद ईसा के यह अलफ़ाज़ होने चाहिए कि देना लेने से मुबारक है।”

36 यह सब कुछ कहकर पौलुस ने घुटने टेककर उन सबके साथ दूआ की। 37 सब खूब रोए और उसको गले लगा लगाकर बोसे दिए। 38 उन्हें खासकर पौलुस की इस बात से तकलीफ हुई कि 'आप इसके बाद मुझे कभी नहीं देखेंगे।' फिर वह उसके साथ जहाज़ तक गए।

## 21

### पौलुस यरूशलम जाता है

1 मुश्केल से इफ्रिसुस के बुजुर्गों से अलग होकर हम रवाना हुए और सीधे जज़ीराए-कोस पहुँच गए। अगले दिन हम स्टुस आए और वहाँ से पतरा पहुँचे। 2 पतरा में फेनीके के लिए जहाज़ मिल गया तो हम उस पर सवार होकर रवाना हुए। 3 जब कुबस्स दूर से नज़र आया तो हम उसके ज़नूब में से गुज़रकर शाम के शहर सूर पहुँच गए जहाँ जहाज़ को अपना सामान उतारना था। 4 जहाज़ से उतरकर हमने मकामी शागिर्दों को तलाश किया और सात दिन उनके साथ ठहरे। उन ईमानदारों ने रूहल-कुदूस की हिदायत से पौलुस को समझाने की कोशिश की कि वह यरूशलम न जाए। 5 जब हम एक हफ्ते के बाद जहाज़ पर वापस चले गए तो पूरी जमात बाल-बच्चों समेत हमारे साथ शहर से निकलकर साहिल तक आई। वहाँ हमने घुटने टेककर दूआ की 6 और एक दूसरे को अलविदा कहा। फिर हम दुबारा जहाज़ पर सवार हुए जबकि वह अपने घरों को लौट गए।

7 सूर से अपना सफर जारी रखकर हम पतुलिमयिस पहुँचे जहाँ हमने मकामी ईमानदारों को सलाम किया और एक दिन उनके साथ गुज़ारा। 8 अगले दिन हम रवाना होकर कैसरिया पहुँच गए। वहाँ हम फिलिप्पुस के घर ठहरे। यह वही फिलिप्पुस था जो अल्लाह की ख़ुशख़बरी का मुनाद था और जिसे इब्तिदाई दिनों में यरूशलम में खाना तकसीम करने के लिए छः और आदमियों के साथ मुकर्र किया गया था। 9 उस की चार गैरशादीशुदा बेटियाँ थीं जो नबुव्वत की नेमत रखती थीं। 10 कई दिन गुज़र गए तो यहूदिया से एक नबी आया जिसका नाम अगबुस था। 11 जब वह हमसे मिलने आया तो उसने पौलुस की पेट्टी लेकर अपने पाँवों और हाथों को बाँध लिया और कहा, "रूहल-कुदूस फरमाता है कि यरूशलम में यहूदी इस पेट्टी के मालिक को यों बाँधकर गैरयहूदियों के हवाले करेंगे।"

12 यह सुनकर हमने मकामी ईमानदारों समेत पौलुस को समझाने की खूब कोशिश की कि वह यरूशलम न जाए। 13 लेकिन उसने जवाब दिया, "आप क्यों रोते और मेरा दिल तोड़ते हैं? देखें, मैं खुदावंद ईसा के नाम की खातिर यरूशलम में न सिर्फ़ बाँधे जाने बल्कि उसके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।"

14 हम उसे कायल न कर सके, इसलिए हम यह कहते हुए खामोश हो गए कि "खुदावंद की मरज़ी पूरी हो।"

15 इसके बाद हम तैयारियाँ करके यरूशलम चले गए। 16 कैसरिया के कुछ शागिर्द भी हमारे साथ चले और हमें मनासोन के घर पहुँचा दिया जहाँ हमें ठहरना था। मनासोन कुबस्स का था और जमात के इब्तिदाई दिनों में ईमान लाया था।

### पौलुस याकूब से मिलता है

17 जब हम यरूशलम पहुँचे तो मकामी भाइयों ने गरमजोशी से हमारा इस्तकबाल किया। 18 अगले दिन पौलुस हमारे साथ याकूब से मिलने गया। तमाम मकामी बुजुर्ग भी हाज़िर हुए। 19 उन्हें सलाम करके पौलुस ने तफसील से बयान किया कि अल्लाह ने उस की खिदमत की मारिफत गैरयहूदियों में क्या किया था। 20 यह सुनकर उन्होंने अल्लाह की तमजीद की। फिर उन्होंने कहा, "भाई, आपको मालूम है कि हज़ारों यहूदी ईमान लाए हैं। और सब बड़ी सरगर्मी से शरीअत पर अमल करते हैं। 21 उन्हें आपके बारे में खबर दी गई है कि आप गैरयहूदियों के दरमियान रहनेवाले यहूदियों को तालीम देते हैं कि वह मूसा की शरीअत को छोड़कर न अपने बच्चों का खतना करवाएँ और न हमारे रस्मों-रिवाज के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारें। 22 अब हम क्या करें? वह तो ज़रूर सुनेंगे कि आप यहाँ आ गए हैं। 23 इसलिए हम चाहते हैं कि आप यह करें : हमारे पास चार मर्द हैं जिन्होंने मन्नत मानकर उसे पूरा कर लिया है। 24 अब उन्हें साथ लेकर उनकी तहारत की रस्मात में शरीक हो जाएँ। उनके अखराजात भी आप बरदाश्त करें ताकि वह अपने सरों को मूँडवा सकें। फिर सब जान लेंगे कि जो कुछ आपके बारे में कहा जाता है वह झूट है और कि आप भी शरीअत के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। 25 जहाँ तक गैरयहूदी ईमानदारों की बात है हम उन्हें अपना फ़ैसला खत के ज़रीए भेज चुके हैं कि वह इन चीज़ों से परहेज़ करें : बुतों को पेश किया गया खाना, खून, ऐसे जानवरों का गोशत जिन्हें गला घूँटकर मार दिया गया हो और जिनाकारी।"

26 चुनौचे अगले दिन पौलुस उन आदमियों को साथ लेकर उनकी तहारत की रस्मात में शरीक हुआ। फिर वह बैतुल-मुकद्दस में उस दिन का एलान करने गया जब तहारत के दिन पूरे हो जाएँ और उन सबके लिए कुरबानी पेश की जाएगी।

### बैतुल-मुकद्दस में पौलुस की गिरिफ्तारी

27 इस रस्म के लिए मुकर्रां सात दिन खत्म होने को थे कि सबा आसिया के कुछ यहूदियों ने पौलुस को बैतुल-मुकद्दस में देखा। उन्होंने पूरे हुजूम में हलचल मचाकर उसे पकड़ लिया 28 और चीखने लगे, “इसराईल के हजरात, हमारी मदद करें! यह वही आदमी है जो हर जगह तमाम लोगों को हमारी कौम, हमारी शरीअत और इस मकाम के खिलाफ तालीम देता है। न सिर्फ यह बल्कि इसने बैतुल-मुकद्दस में गैरयहूदियों को लाकर इस मुकद्दस जगह की बेहुरमती भी की है।” 29 (यह आखिरी बात उन्होंने इसलिए की क्योंकि उन्होंने शहर में इफ्रिसुस के गैरयहूदी नुफिसुस को पौलुस के साथ देखा और खयाल किया था कि वह उसे बैतुल-मुकद्दस में लाया है।)

30 पूरे शहर में हंगामा बरपा हुआ और लोग चारों तरफ से दौड़कर आए। पौलुस को पकड़कर उन्होंने उसे बैतुल-मुकद्दस से बाहर घसीट लिया। ज्योंही वह निकल गए बैतुल-मुकद्दस के सहन के दरवाजों को बंद कर दिया गया। 31 वह उसे मार डालने की कोशिश कर रहे थे कि रोमी पलटन के कमाँडर को खबर मिल गई, “पूरे यरूशलम में हलचल मच गई है।” 32 यह सुनते ही उसने अपने फौजियों और अफसरों को इकट्ठा किया और दौड़कर उनके साथ हुजूम के पास उतर गया। जब हुजूम ने कमाँडर और उसके फौजियों को देखा तो वह पौलुस की पिटाई करने से रुक गया। 33 कमाँडर ने नजदीक आकर उसे गिरफ्तार किया और दो जंजीरों से बाँधने का हुक्म दिया। फिर उसने पूछा, “यह कौन है? इसने क्या किया है?” 34 हुजूम में से बाज़ कुछ चिल्लाए और बाज़ कुछ। कमाँडर कोई यकीनी बात मालूम न कर सका, क्योंकि अफरा-तफरी और शोर-शराबा बहुत था। इसलिए उसने हुक्म दिया कि पौलुस को किले में ले जाया जाए। 35 वह किले की सीढ़ी तक पहुँच तो गए, लेकिन फिर हुजूम इतना बेकाबू हो गया कि फौजियों को उसे अपने कंधों पर उठाकर चलना पड़ा। 36 लोग उनके पीछे पीछे चलते और चीखते-चिल्लाते रहे, “उसे मार डालो! उसे मार डालो!”

पौलुस अपना दिफा करता है

37 वह पौलुस को किले में ले जा रहे थे कि उसने कमाँडर से पूछा, “क्या आपसे एक बात करने की इजाज़त है?” कमाँडर ने कहा, “अच्छा, आप यूनानी बोल लेते हैं? 38 तो क्या आप वही मिसरी नहीं हैं जो कुछ देर पहले हुक्मत के खिलाफ उठकर चार हज़ार दहशतगारदों को रेगिस्तान में लाया था?”

39 पौलुस ने जवाब दिया, “मैं यहूदी और किलिकिया के मरकज़ी शहर तरसुस का शहरी हूँ। मेहरबानी करके मुझे लोगों से बात करने दें।”

40 कमाँडर मान गया और पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर हाथ से इशारा किया। जब सब खामोश हो गए तो पौलुस अरामी ज़बान में उनसे मुखातिब हुआ,

## 22

1 “भाइयो और बूजुर्गो, मेरी बात सुनें कि मैं अपने दिफा में कुछ बताऊँ।” 2 जब उन्होंने सुना कि वह अरामी ज़बान में बोल रहा है तो वह मज़ीद खामोश हो गए। पौलुस ने अपनी बात जारी रखी।

3 “मैं यहूदी हूँ और किलिकिया के शहर तरसुस में पैदा हुआ। लेकिन मैंने इसी शहर यरूशलम में परवरिश पाई और जमलियेल के ज़ेरे-निगरानी तालीम हासिल की। उन्होंने मुझे तफसील और एहतियात से हमारे बापदादा की शरीअत सिखाई। उस वक्त मैं भी आपकी तरह अल्लाह के लिए सरगरम था। 4 इसलिए मैंने इस नई राह के पैरोकारों का पीछा किया और मर्दों और खवातीन को गिरफ्तार करके जेल में डलवा दिया यहाँ तक कि मरवा भी दिया। 5 इमामे-आज़म और यहूदी अदालते-आलिया के मेंबरान इस बात की तसदीक कर सकते हैं। उन्हीं से मुझे दमिशक़ में रहनेवाले यहूदी भाइयों के लिए सिफारिशें खत मिल गए ताकि मैं वहाँ भी जाकर इस नए फिरके के लोगों को गिरफ्तार करके सज़ा देने के लिए यरूशलम लाऊँ।

पौलुस की तबदीली का बयान

6 मैं इस मकसद के लिए दमिशक़ के करीब पहुँच गया था कि अचानक आसमान की तरफ से एक तेज़ रौशनी मेरे गिर्द चमकी। 7 मैं ज़मीन पर गिर पड़ा तो एक आवाज़ सुनाई दी, ‘साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता है?’ 8 मैंने पूछा, ‘खुदाबंद, आप कौन हैं?’ आवाज़ ने जवाब दिया, ‘मैं ईसा नासरी हूँ जिसे तू सताता है।’ 9 मेरे हमसफ़रों ने रौशनी को तो देखा, लेकिन मुझसे मुखातिब होनेवाले की आवाज़ न सुनी। 10 मैंने पूछा, ‘खुदाबंद, मैं क्या करूँ?’ खुदाबंद ने जवाब दिया, ‘उठकर दमिशक़ में जा। वहाँ तुझे वह सारा काम बताया जाएगा जो अल्लाह तेरे जिम्मे लगाने का इरादा रखता है।’ 11 रौशनी की तेज़ी ने मुझे अंधा कर दिया था, इसलिए मेरे साथी मेरा हाथ पकड़कर मुझे दमिशक़ ले गए।

12 वहाँ एक आदमी रहता था जिसका नाम हननियाह था। वह शरीअत का कटर पैरोकार था और वहाँ के रहनेवाले यहूदियों में नेकनाम। 13 वह आया और मेरे पास खड़े होकर कहा, ‘साऊल भाई, दुबारा बीना हो जाएँ!’ उसी लमहे मैं उसे

देख सका। 14 फिर उसने कहा, 'हमारे बापदादा के खुदा ने आपको इस मकसद के लिए चुन लिया है कि आप उस की मरजी जानकर उसके रास्त खादिम को देखें और उसके अपने मुँह से उस की आवाज सुनें। 15 जो कुछ आपने देख और सुन लिया है उस की गवाही आप तमाम लोगों को देंगे। 16 चुनौचे आप क्यों देर कर रहे हैं? उठें और उसके नाम में बपतिस्मा लें ताकि आपके गुनाह धुल जाएँ।'

**पौलुस की गैरयहूदियों में खिदमत का बुलावा**

17 जब मैं यरूशलम वापस आया तो मैं एक दिन बैतुल-मुकद्दस में गया। वहाँ दूआ करते करते मैं वज्द की हालत में आ गया 18 और खुदावंद को देखा। उसने फरमाया, 'जल्दी कर! यरूशलम को फौरन छोड़ दे क्योंकि लोग मेरे बारे में तेरी गवाही को कबूल नहीं करेंगे।' 19 मैंने एतराज किया, 'ऐ खुदावंद, वह तो जानते हैं कि मैंने जगह बजगह इबादतखाने में जाकर तुझ पर ईमान रखनेवालों को गिरफ्तार किया और उनकी पिटाई करवाई।' 20 और उस वक्त भी जब तेरे शहीद स्तिफनुस को कत्ल किया जा रहा था मैं साथ खड़ा था। मैं राजी था और उन लोगों के कपड़ों की निगरानी कर रहा था जो उसे संगसार कर रहे थे। 21 लेकिन खुदावंद ने कहा, 'जा, क्योंकि मैं तुझे दूर-दराज इलाकों में गैरयहूदियों के पास भेज दूँगा।'

22 यहाँ तक हजूम पौलुस की बातें सुना रहा। लेकिन अब वह चिल्ला उठे, "इसे हटा दो! इसे जान से मार दो! यह जिंदा रहने के लायक नहीं!" 23 वह चीखें मार मारकर अपनी चादरें उतारने और हवा में गर्द उड़ाने लगे। 24 इस पर कर्माँडर ने हुक्म दिया कि पौलुस को किले में ले जाया जाए और कोड़े लगाकर उस की पूछ-गछ की जाए। क्योंकि वह मालूम करना चाहता था कि लोग किस वजह से पौलुस के खिलाफ यों चीखें मार रहे हैं। 25 जब वह उसे कोड़े लगाने के लिए लेकर जा रहे थे तो पौलुस ने साथ खड़े अफसर \* से कहा, "क्या आपके लिए जायज़ है कि एक रोमी शहरी के कोड़े लगवाएँ और वह भी अदालत में पेश किए बगैर?"

26 अफसर ने जब यह सुना तो कर्माँडर के पास जाकर उसे इतला दी, "आप क्या करने को हैं? यह आदमी तो रोमी शहरी है!"

27 कर्माँडर पौलुस के पास आया और पूछा, "मुझे सहीह बताएँ, क्या आप रोमी शहरी हैं?"

पौलुस ने जवाब दिया, "जी हाँ।"

28 कर्माँडर ने कहा, "मैं तो बड़ी रकम देकर शहरी बना हूँ।"

पौलुस ने जवाब दिया, "लेकिन मैं तो पैदाइशी शहरी हूँ।"

29 यह सुनते ही वह फौजी जो उस की पूछ-गछ करने को थे पीछे हट गए। कर्माँडर खुद घबरा गया कि मैंने एक रोमी शहरी को जंजीरों में जकड़ रखा है।

**पौलुस यहूदी अदालते-आलिया के सामने**

30 अगले दिन कर्माँडर साफ मालूम करना चाहता था कि यहूदी पौलुस पर क्यों इलज़ाम लगा रहे हैं। इसलिए उसने राहनुमा इमामों और यहूदी अदालते-आलिया के तमाम मेंबरान का इजलास मुनअक़िद करने का हुक्म दिया। फिर पौलुस को आज्ञाद करके किले से नीचे लाया और उनके सामने खड़ा किया।

## 23

1 पौलुस ने गौर से अदालते-आलिया के मेंबरान की तरफ देखकर कहा, "भाइयो, आज तक मैंने साफ ज़मीर के साथ अल्लाह के सामने जिंदगी गुज़ारी है।" 2 इस पर इमामे-आज़म हननियाह ने पौलुस के करीब खड़े लोगों से कहा कि वह उसके मुँह पर थपड़ मारें। 3 पौलुस ने उससे कहा, "मक्कार! \* अल्लाह तुमको ही मारेगा, क्योंकि तुम यहाँ बैठे शरीअत के मुताबिक मेरा फैसला करना चाहते हो जबकि मुझे मारने का हुक्म देकर खुद शरीअत की खिलाफ़वर्ज़ी कर रहे हो!"

4 पौलुस के करीब खड़े आदमियों ने कहा, "तुम अल्लाह के इमामे-आज़म को बुरा कहने की ज़ुरत क्योंकर करते हो?"

5 पौलुस ने जवाब दिया, "भाइयो, मुझे मालूम न था कि वह इमामे-आज़म हैं, वरना ऐसे अलफ़ाज़ इस्तेमाल न करता। क्योंकि कलामे-मुकद्दस में लिखा है कि अपनी कौम के हाकिमों को बुरा-भला मत कहना।"

6 पौलुस को इल्म था कि अदालते-आलिया के कुछ लोग सदक्की हैं जबकि दीगर फ़रीसी हैं। इसलिए वह इजलास में पुकार उठा, "भाइयो, मैं फ़रीसी बल्कि फ़रीसी का बेटा भी हूँ। मुझे इसलिए अदालत में पेश किया गया है कि मैं मुरदों में से जी उठने की उम्मीद रखता हूँ।"

7 इस बात से फ़रीसी और सदक्की एक दूसरे से झगड़ने लगे और इजलास के अफ़राद दो ग़ुरोहों में बंट गए। 8 वजह यह थी कि सदक्की नहीं मानते कि हम जी उठेंगे। वह फ़रिश्तों और रूहों का भी इनकार करते हैं। इसके मुक़ाबले में फ़रीसी यह

\* 22:25 सौ सिपाहियों पर मुक़र्र अफसर।

\* 23:3 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : सफ़ेदी की हुई दीवार।

सब कुछ मानते हैं।<sup>9</sup> होते होते बड़ा शोर मच गया। फरीसी फिरके के कुछ आलिम खड़े होकर जोश से बहस करने लगे, “हमें इस आदमी में कोई गलती नजर नहीं आती, शायद कोई रूह या फरिश्ता इससे हमकलाम हुआ हो।”

10 झगड़े ने इतना जोर पकड़ा कि कर्माँडर डर गया, क्योंकि खतरा था कि वह पौलुस के टुकड़े कर डालें। इसलिए उसने अपने फौजियों को हुक्म दिया कि वह उतरें और पौलुस को यहदियों के बीच में से छीनकर किले में वापस लाएँ।

11 उसी रात खुदावंद पौलुस के पास आ खड़ा हुआ और कहा, “हौसला रख, क्योंकि जिस तरह तूने यरूशालम में मेरे बारे में गवाही दी है लाज़िम है कि इसी तरह रोम शहर में भी गवाही दे।”

### पौलुस के खिलाफ साज़िश

12 अगले दिन कुछ यहदियों ने साज़िश करके कसम खाई, “हम न तो कुछ खाएँगे, न पिँएँगे जब तक पौलुस को कत्ल न कर लें।”<sup>13</sup> चालीस से ज्यादा मर्दों ने इस साज़िश में हिस्सा लिया।<sup>14</sup> वह राहुनुमा इमारतों और बुजुर्गों के पास गए और कहा, “हमने पक्की कसम खाई है कि कुछ नहीं खाएँगे जब तक पौलुस को कत्ल न कर लें।<sup>15</sup> अब ज़रा यहदी अदालते-आलिया के साथ मिलकर कर्माँडर से गुज़ारिश करें कि वह उसे दुबारा आपके पास लाएँ। बहाना यह पेश करें कि आप मज़ीद तफसील से उसके मामले का जायज़ा लेना चाहते हैं। जब उसे लाया जाएगा तो हम उसके यहाँ पहुँचने से पहले पहले उसे मार डालने के लिए तैयार होंगे।”

16 लेकिन पौलुस के भानजे को इस बात का पता चल गया। उसने किले में जाकर पौलुस को इतला दी।<sup>17</sup> इस पर पौलुस ने रोमी अफसरों † में से एक को बुलाकर कहा, “इस जवान को कर्माँडर के पास ले जाएँ। इसके पास उनके लिए खबर है।”

18 अफसर भानजे को कर्माँडर के पास ले गया और कहा, “कैदी पौलुस ने मुझे बुलाकर मुझसे गुज़ारिश की कि इस नौजवान को आपके पास ले आऊँ। उसके पास आपके लिए खबर है।”

19 कर्माँडर नौजवान का हाथ पकड़कर दूसरों से अलग हो गया। फिर उसने पूछा, “क्या खबर है जो आप मुझे बताना चाहते हैं?”

20 उसने जवाब दिया, “यहदी आपसे दरखास्त करने पर मुत्फिक हो गए हैं कि आप कल पौलुस को दुबारा यहदी अदालते-आलिया के सामने लाएँ। बहाना यह होगा कि वह और ज्यादा तफसील से उसके बारे में मालुमात हासिल करना चाहते हैं।<sup>21</sup> लेकिन उनकी बात न मानें, क्योंकि उनमें से चालीस से ज्यादा आदमी उस की ताक में बैठे हैं। उन्होंने कसम खाई है कि हम न कुछ खाएँगे न पिँएँगे जब तक उसे कत्ल न कर लें। वह अभी तैयार बैठे हैं और सिर्फ इस इंतज़ार में हैं कि आप उनकी बात मानें।”

22 कर्माँडर ने नौजवान को खसत करके कहा, “जो कुछ आपने मुझे बता दिया है उसका किसी से जिक्र न करना।”

### पौलुस को गवर्नर फेलिक्स के पास भेजा जाता है

23 फिर कर्माँडर ने अपने अफसरों में से दो को बुलाया जो सौ सौ फौजियों पर मुकर्र थे। उसने हुक्म दिया, “दो सौ फौजी, सत्तर घुडसवार और दो सौ नेज़ाबाज़ तैयार करें। उन्हें आज रात को नौ बजे कैसरिया जाना है।<sup>24</sup> पौलुस के लिए भी घोड़े तैयार रखना ताकि वह सहीह-सलामत गवर्नर के पास पहुँचे।”<sup>25</sup> फिर उसने यह खत लिखा,

26 “अज़ : कलौदियुस लूसियास

मुअज़ज़ गवर्नर फेलिक्स को सलाम।<sup>27</sup> यहदी इस आदमी को पकड़कर कत्ल करने को थे। मुझे पता चला कि यह रोमी शहरी है, इसलिए मैंने अपने दस्तों के साथ आकर इसे निकालकर बचा लिया।<sup>28</sup> मैं मालूम करना चाहता था कि वह क्यों इस पर इलज़ाम लगा रहे हैं, इसलिए मैं उतरकर इसे उनकी अदालते-आलिया के सामने लाया।<sup>29</sup> मुझे मालूम हुआ कि उनका इलज़ाम उनकी शरीअत से ताल्लुक रखता है। लेकिन इसने ऐसा कुछ नहीं किया जिसकी बिना पर यह जेल में डालने या सज़ाए-मौत के लायक हो।<sup>30</sup> फिर मुझे इतला दी गई कि इस आदमी को कत्ल करने की साज़िश की गई है, इसलिए मैंने इसे फ़ौरन आपके पास भेज दिया। मैंने इलज़ाम लगानेवालों को भी हुक्म दिया कि वह इस पर अपना इलज़ाम आपको ही पेश करें।”

31 फौजियों ने उसी रात कर्माँडर का हुक्म पूरा किया। पौलुस को साथ लेकर वह अतीपतरिस तक पहुँच गए।<sup>32</sup> अगले दिन प्यादे किले को वापस चले जबकि घुडसवारों ने पौलुस को लेकर सफ़र जारी रखा।<sup>33</sup> कैसरिया पहुँचकर उन्होंने पौलुस को खत समेत गवर्नर फेलिक्स के सामने पेश किया।<sup>34</sup> उसने खत पढ़ लिया और फिर पौलुस से पूछा, “आप किस सबे के हैं?” पौलुस ने कहा, “किलिकिया का।”<sup>35</sup> इस पर गवर्नर ने कहा, “मैं आपकी समाअत उस वक़्त करूँगा जब आप पर इलज़ाम लगानेवाले पहुँचेंगे।” और उसने हुक्म दिया कि हेरोदेस के महल में पौलुस की पहरादारी की जाए।

† 23:17 सौ सिपाहियों पर मुकर्र अफसर।

## 24

### पौलुस पर मुकदमा

1 पाँच दिन के बाद इमारे-आज़म हननियाह, कुछ यहूदी बुजुर्ग और एक वकील बनाम तिरतुल्लुस कैसोरिया आए ताकि गवर्नर के सामने पौलुस पर अपना इलज़ाम पेश करें। 2 पौलुस को बुलाया गया तो तिरतुल्लुस ने फेलिक्स को यहूदियों का इलज़ाम पेश किया,

“आपके ज़ेरे-हुकूमत हमें बड़ा अमनो-अमान हासिल है, और आपकी दूरअंदेशी से इस मुल्क में बहुत तरक्की हुई है। 3 मुअज़ज़ फेलिक्स, इन तमाम बातों के लिए हम आपके ख़ास ममनून हैं। 4 लेकिन मैं नहीं चाहता कि आप मेरी बातों से हद से ज़्यादा थक जाएँ। अज़्ज़ सिर्फ़ यह है कि आप हम पर मेहरबानी का इज़हार करके एक लमहे के लिए हमारे मामले पर तवज़ूह दें। 5 हमने इस आदमी को अवाम दुश्मन पाया है जो पूरी दुनिया के यहूदियों में फ़साद पैदा करता रहता है। यह नासरी फिरके का एक सरगना है 6 और हमारे बैतुल-मुक़द्स की बेहुरमती करने की कोशिश कर रहा था जब हमने इसे पकड़ा [ताकि अपनी शरीअत के मुताबिक इस पर मुक़दमा चलाएँ] 7 मगर लूसियास कर्माँडर आकर इसे ज़बरदस्ती हमसे छीनकर ले गया और हुक्म दिया कि इसके मुद्दे आपके पास हाज़िर हों। 8 इसकी पूछ-गछ करके आप खुद हमारे इलज़ामात की तसदीक करा सकते हैं।” 9 फिर बाकी यहूदियों ने उस की हॉं में हॉं मिलाकर कहा कि यह वाकई ऐसा ही है।

### पौलुस का दिफा

10 गवर्नर ने इशारा किया कि पौलुस अपनी बात पेश करे। उसने जवाब में कहा,

“मैं जानता हूँ कि आप कई सालों से इस कौम के जज मुक़रर हैं, इसलिए ख़ुशी से आपको अपना दिफा पेश करता हूँ।

11 आप खुद मालूम कर सकते हैं कि मुझे यस्शलम गए सिर्फ़ बारह दिन हुए हैं। जाने का मकसद इबादत में शरीक होना था। 12 वहाँ न मैंने बैतुल-मुक़द्स में किसी से बहस-मुबाहसा किया, न शहर के किसी इबादतखाने में या किसी और जगह हलचल मचाई। इन लोगों ने भी मेरी कोई ऐसी हरकत नहीं देखी। 13 जो इलज़ाम यह मुझ पर लगा रहे हैं उसका कोई भी सबूत पेश नहीं कर सकते। 14 बेशक मैं तसलीम करता हूँ कि मैं उसी राह पर चलता हूँ जिसे यह बिदअत करार देते हैं। लेकिन मैं अपने बापदादा के खुदा की परस्तिश करता हूँ। जो कुछ भी शरीअत और नबियों के सहीफों में लिखा है उसे मैं मानता हूँ। 15 और मैं अल्लाह पर वही उम्मीद रखता हूँ जो यह भी रखते हैं, कि क्रियामत का एक दिन होगा जब वह रास्तबाज़ों और नारास्तों को मुरदों में से ज़िदा कर देगा। 16 इसलिए मेरी पूरी कोशिश यही होती है कि हर वक़्त मेरा ज़मीर अल्लाह और इनसान के सामने साफ हो।

17 कई सालों के बाद मैं यस्शलम वापस आया। मेरे पास कौम के गरीबों के लिए ख़ैरत थी और मैं बैतुल-मुक़द्स में क़ुरबानियाँ भी पेश करना चाहता था। 18 मुझ पर इलज़ाम लगानेवालों ने मुझे बैतुल-मुक़द्स में देखा जब मैं तहारत की स्मूमात अदा कर रहा था। उस वक़्त न कोई हुज़ूम था, न फ़साद। 19 लेकिन सूबा आसिया के कुछ यहूदी वहाँ थे। अगर उन्हें मेरे खिलाफ़ कोई शिकायत है तो उन्हें ही यहाँ हाज़िर होकर मुझ पर इलज़ाम लगाना चाहिए। 20 या यह लोग खुद बताएँ कि जब मैं यहूदी अदालते-आलिया के सामने खड़ा था तो उन्होंने मेरा क्या ज़ुर्म मालूम किया। 21 सिर्फ़ यह एक ज़ुर्म हो सकती है कि मैंने उस वक़्त उनके हुज़ूर पुकारकर यह बात बयान की, ‘आज मुझ पर इसलिए इलज़ाम लगाया जा रहा है कि मैं ईमान रखता हूँ कि मुरदे जी उठेंगे।’”

22 फेलिक्स ने जो ईसा की राह से ख़ूब वाकिफ़ था मुक़दमा मुलतवी कर दिया। उसने कहा, “जब कर्माँडर लूसियास आएँगे फिर मैं फ़ैसला दूँगा।” 23 उसने पौलुस पर मुक़रर अफ़सर \* को हुक्म दिया कि वह उस की पहरादारी तो करे लेकिन उसे कुछ सहलियात भी दे और उसके अज़ीज़ों को उससे मिलने और उस की खिदमत करने से न रोके।

### पौलुस फेलिक्स और दूसिल्ला के सामने

24 कुछ दिनों के बाद फेलिक्स अपनी अहलिया दूसिल्ला के हमराह वापस आया। दूसिल्ला यहूदी थी। पौलुस को बुलाकर उन्होंने ईसा पर ईमान के बारे में उस की बातें सुनीं। 25 लेकिन जब रास्तबाज़ी, ज़ब्ते-नफ़स और आनेवाली अदालत के मज़ामीन छिड़ गए तो फेलिक्स ने घबराकर उस की बात काटी, “फिलहाल काफी है। अब इजाज़त है, जब मेरे पास वक़्त होगा मैं आपको बुला लूँगा।” 26 साथ साथ वह यह उम्मीद भी रखता था कि पौलुस रिश्त देगा, इसलिए वह कई बार उसे बुलाकर उससे बात करता रहा।

27 दो साल गुज़र गए तो फेलिक्स की जगह पुरकियुस फेस्तुस आ गया। ताहम उसने पौलुस को कैदखाने में छोड़ दिया, क्योंकि वह यहूदियों के साथ रिआयत बरतना चाहता था।

\* 24:23 सौ सिपाहियों पर मुक़रर अफ़सर।

## 25

## पौलुस शहनशाह से अपील करता है

1 कैसरिया पहुँचने के तीन दिन बाद फेस्तुस यरूशलम चला गया। 2 वहाँ राहनुमा इमामों और बाकी यहूदी राहनुमाओं ने उसके सामने पौलुस पर अपने इलज़ामात पेश किए। उन्होंने बड़े जोर से 3 मिनन्त की कि वह उनकी रियायत करके पौलुस को यरूशलम मुंतक्रिल करे। बजह यह थी कि वह घात में बैठकर रास्ते में पौलुस को कत्ल करना चाहते थे। 4 लेकिन फेस्तुस ने जवाब दिया, “पौलुस को कैसरिया में रखा गया है और मैं खुद वहाँ जाने को हूँ। 5 अगर उससे कोई जुर्म सरज़द हुआ है तो आपके कुछ राहनुमा मेरे साथ वहाँ जाकर उस पर इलज़ाम लगाएँ।”

6 फेस्तुस ने मज़ीद आठ दस दिन उनके साथ गुज़ारे, फिर कैसरिया चला गया। अगले दिन वह अदालत करने के लिए बैठा और पौलुस को लाने का हुक्म दिया। 7 जब पौलुस पहुँचा तो यरूशलम से आए हुए यहूदी उसके इर्दगिर्द खड़े हुए और उस पर कई संजीदा इलज़ामात लगाए, लेकिन वह कोई भी बात साबित न कर सके। 8 पौलुस ने अपना दिफा करके कहा, “मुझसे न यहूदी शरीअत, न बैतुल-मुक़द्दस और न शहनशाह के खिलाफ़ जुर्म सरज़द हुआ है।”

9 लेकिन फेस्तुस यहूदियों के साथ रियायत बरतना चाहता था, इसलिए उसने पूछा, “क्या आप यरूशलम जाकर वहाँ की अदालत में मेरे सामने पेश किए जाने के लिए तैयार हैं?”

10 पौलुस ने जवाब दिया, “मैं शहनशाह की रोमी अदालत में खड़ा हूँ और लाज़िम है कि यही मेरा फैसला किया जाए। आप भी इससे खूब वाकिफ़ हैं कि मैंने यहूदियों से कोई नाइन्साफ़ी नहीं की। 11 अगर मुझसे कोई ऐसा काम सरज़द हुआ हो जो सज़ाए-मौत के लायक हो तो मैं मरने से इनकार नहीं करूँगा। लेकिन अगर बेक़सूर हूँ तो किसी को भी मुझे इन आदमियों के हवाले करने का हक़ नहीं है। मैं शहनशाह से अपील करता हूँ।”

12 यह सुनकर फेस्तुस ने अपनी कौसल से मशवरा करके कहा, “आपने शहनशाह से अपील की है, इसलिए आप शहनशाह ही के पास जाएँ।”

## पौलुस अग्रिप्पा और बिरनीके के सामने

13 कुछ दिन गुज़र गए तो अग्रिप्पा बादशाह अपनी बहन बिरनीके के साथ फेस्तुस से मिलने आया। 14 वह कई दिन वहाँ ठहरे रहे। इतने में फेस्तुस ने पौलुस के मामले पर बादशाह के साथ बात की। उसने कहा, “यहाँ एक कैदी है जिसे फेलिक्स छोड़कर चला गया है। 15 जब मैं यरूशलम गया तो राहनुमा इमामों और यहूदी बुज़ुर्गों ने उस पर इलज़ामात लगाकर उसे मुज़रिम करार देने का तकाज़ा किया। 16 मैंने उन्हें जवाब दिया, ‘रोमी कानून किसी को अदालत में पेश किए बगैर मुज़रिम करार नहीं देता। लाज़िम है कि उसे पहले इलज़ाम लगानेवालों का सामना करने का मौक़ा दिया जाए ताकि अपना दिफा कर सके।’ 17 जब उस पर इलज़ाम लगानेवाले यहाँ पहुँचे तो मैंने ताखीर न की। मैंने अगले ही दिन अदालत मुनअक़िद करके पौलुस को पेश करने का हुक्म दिया। 18 लेकिन जब उसके मुखालिफ़ इलज़ाम लगाने के लिए खड़े हुए तो वह ऐसे जुर्म नहीं थे जिनकी तवक्को मैं कर रहा था। 19 उनका उसके साथ कोई और झगडा था जो उनके अपने मज़हब और एक मुरदा आदमी बनाम ईसा से ताल्लुक़ रखता है। इस ईसा के बारे में पौलुस दावा करता है कि वह जिंदा है। 20 मैं उलज़ान में पड़ गया क्योंकि मुझे मालूम नहीं था कि किस तरह इस मामले का सहीह जायज़ा लूँ। चुनौचे मैंने पूछा, ‘क्या आप यरूशलम जाकर वहाँ अदालत में पेश किए जाने के लिए तैयार हैं?’ 21 लेकिन पौलुस ने अपील की, ‘शहनशाह ही मेरा फैसला करे।’ फिर मैंने हुक्म दिया कि उसे उस वक़्त तक कैद में रखा जाए जब तक उसे शहनशाह के पास भेजने का इंतज़ाम न करवा सकूँ।”

22 अग्रिप्पा ने फेस्तुस से कहा, “मैं भी उस शख्स को सुनना चाहता हूँ।”

उसने जवाब दिया, “कल ही आप उसको सुन लेंगे।”

23 अगले दिन अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम के साथ आए और बड़े फौजी अफ़सरो और शहर के नामवर आदमियों के साथ दीवाने-आम में दाख़िल हुए। फेस्तुस के हुक्म पर पौलुस को अंदर लाया गया। 24 फेस्तुस ने कहा, “अग्रिप्पा बादशाह और तमाम ख़वातीनो-हज़रत! आप यहाँ एक आदमी को देखते हैं जिसके बारे में तमाम यहूदी खाह वह यरूशलम के रहनेवाले हों, खाह यहाँ के, शोर मचाकर सज़ाए-मौत का तकाज़ा कर रहे हैं। 25 मेरी दानिस्त में तो इसने कोई ऐसा काम नहीं किया जो सज़ाए-मौत के लायक हो। लेकिन इसने शहनशाह से अपील की है, इसलिए मैंने इसे रोम भेजने का फैसला किया है। 26 लेकिन मैं शहनशाह को क्या लिख दूँ? क्योंकि इस पर कोई साफ़ इलज़ाम नहीं लगाया गया। इसलिए मैं इसे आप सबके सामने लाया हूँ, खासकर अग्रिप्पा बादशाह आपके सामने, ताकि आप इसकी तफ़तीश करें और मैं कुछ लिख सकूँ। 27 क्योंकि मुझे बेतुकी-सी बात लग रही है कि हम एक कैदी को रोम भेजें जिस पर अब तक साफ़ इलज़ामात नहीं लगाए गए हैं।”



## 26

## पौलुस का अग्रिप्पा के सामने दिफा

1 अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, “आपको अपने दिफा में बोलने की इजाजत है।” पौलुस ने हाथ से इशारा करके अपने दिफा में बोलने का आगाज़ किया,

2 “अग्रिप्पा बादशाह, मैं अपने आपको खुशनसीब समझता हूँ कि आज आप ही मेरा यह दिफाई बयान सुन रहे हैं जो मुझे यहूदियों के तमाम इलज़ामात के जवाब में देना पड़ रहा है।<sup>3</sup> खासकर इसलिए कि आप यहूदियों के रस्मों-रिवाज और तनाज़ों से वाकिफ़ हैं। मेरी अज़ है कि आप सब से मेरी बात सुनें।

4 तमाम यहूदी जानते हैं कि मैंने जवानी से लेकर अब तक अपनी कौम बल्कि यरूशलम में किस तरह ज़िंदगी गुज़ारी।  
5 वह मुझे बड़ी देर से जानते हैं और अगर चाहें तो इसकी गवाही भी दे सकते हैं कि मैं फ़रीसी की ज़िंदगी गुज़ारता था, हमारे मज़हब के उसी फिरके की जो सबसे कटर है।<sup>6</sup> और आज मेरी अदालत इस वजह से की जा रही है कि मैं उस वादे पर उम्मीद रखता हूँ जो अल्लाह ने हमारे बापदादा से किया।<sup>7</sup> हकीकत में यह वही उम्मीद है जिसकी वजह से हमारे बारह कबीले दिन-रात और बड़ी लग्न से अल्लाह की इबादत करते रहते हैं और जिसकी तकमील के लिए वह तडपते हैं। तो भी ऐ बादशाह, यह लोग मुझ पर यह उम्मीद रखने का इलज़ाम लगा रहे हैं।<sup>8</sup> लेकिन आप सबको यह खयाल क्यों नाक्राबिले-यक्रीन लगता है कि अल्लाह मुरदों को ज़िंदा कर देता है?

9 पहले मैं भी समझता था कि हर मुमकिन तरीके से ईसा नासरी की मुखालफत करना मेरा फ़र्ज है।<sup>10</sup> और यह मैंने यरूशलम में किया भी। राहनुमा इमामों से इख्तियार लेकर मैंने वहाँ के बहुत-से मुकद्दसों को जेल में डलवा दिया। और जब कभी उन्हें सज़ाए-मौत देने का फैसला करना था तो मैंने भी इस हक़ में वोट दिया।<sup>11</sup> मैं तमाम इबादतखानों में गया और बहुत दफा उन्हें सज़ा दिलाकर ईसा के बारे में कुफ़र बकने पर मजबूर करने की कोशिश करता रहा। मैं इतने तैश में आ गया था कि उनकी ईज़ारसानी की गरज़ से बैरूने-मुल्क भी गया।

## पौलुस अपनी तबदीली का जिक्र करता है

12 एक दिन मैं राहनुमा इमामों से इख्तियार और इजाज़तनामा लेकर दमिशक जा रहा था।<sup>13</sup> दोपहर तकरीबन बारह बजे मैं सड़क पर चल रहा था कि एक रौशनी देखी जो सूरज से ज़्यादा तेज़ थी। वह आसमान से आकर मेरे और मेरे हमसफ़रों के गिर्दागिर्द चमकी।<sup>14</sup> हम सब ज़मीन पर गिर गए और मैंने अरामी ज़बान में एक आवाज़ सुनी, ‘साऊल, साऊल, तू मुझे क्यों सताता है? यों मेरे आँक़ुस के खिलाफ़ पाँव मारना तेरे लिए ही दुश्चारी का बाइस है।’<sup>15</sup> मैंने पूछा, ‘ख़ुदावंद, आप कौन हैं?’ ख़ुदावंद ने जवाब दिया, ‘मैं ईसा हूँ, वही जिसे तू सताता है।’<sup>16</sup> लेकिन अब उठकर खड़ा हो जा, क्योंकि मैं तुझे अपना खादिम और गवाह मुक़र्र करने के लिए तुझ पर ज़ाहिर हुआ हूँ। जो कुछ तूने देखा है उस की तुझे गवाही देनी है और उस की भी जो मैं आइंदा तुझ पर ज़ाहिर करूँगा।<sup>17</sup> मैं तुझे तेरी अपनी कौम से बचाए रखूँगा और उन ग़ैरयहूदी कौमों से भी जिनके पास तुझे भेजूँगा।<sup>18</sup> तू उनकी आँखों को खोल देगा ताकि वह तारीकी और इबलीस के इख्तियार से नूर और अल्लाह की तरफ़ रूज़ करें। फिर उनके गुनाहों को मुआफ़ कर दिया जाएगा और वह उनके साथ आसमानी मीरास में शरीक होंगे जो मुझ पर ईमान लाने से मुक़द्दस किए गए हैं।’

## पौलुस अपनी ख़िदमत का बयान करता है

19 ऐ अग्रिप्पा बादशाह, जब मैंने यह सुना तो मैंने इस आसमानी रोया की नाफ़रमानी न की<sup>20</sup> बल्कि इस बात की मुनादी की कि लोग तौबा करके अल्लाह की तरफ़ रूज़ करें और अपने अमल से अपनी तबदीली का इज़हार भी करें। मैंने इसकी तबलीग़ पहले दमिशक में की, फिर यरूशलम और पूरे यहूदिया में और इसके बाद ग़ैरयहूदी कौमों में भी।<sup>21</sup> इसी वजह से यहूदियों ने मुझे बैतुल-मुक़द्दस में पकड़कर क़त्ल करने की कोशिश की।<sup>22</sup> लेकिन अल्लाह ने आज तक मेरी मदद की है, इसलिए मैं यहाँ खड़ा होकर छोटों और बड़ों को अपनी गवाही दे सकता हूँ। जो कुछ मैं सुनाता हूँ वह वही कुछ है जो मुसा और नबियों ने कहा है,<sup>23</sup> कि मसीह दुख उठाकर पहला शाख्स होगा जो मुरदों में से जी उठेगा और कि वह यों अपनी कौम और ग़ैरयहूदियों के सामने अल्लाह के नूर का प्रचार करेगा।”

24 अचानक फेस्तुस पौलुस की बात काटकर चिल्ला उठा, “पौलुस, होश में आओ! इल्म की ज़्यादाती ने तुम्हें दीवाना कर दिया है।”

25 पौलुस ने जवाब दिया, “मुअज़ज़ज़ फेस्तुस, मैं दीवाना नहीं हूँ। मेरी यह बातें हकीकी और माकूल हैं।<sup>26</sup> बादशाह सलामत इनसे वाकिफ़ है, इसलिए मैं उनसे खुलकर बात कर सकता हूँ। मुझे यकीन है कि यह सब कुछ उनसे छुपा नहीं रहा,

क्योंकि यह पोशीदगी में या किसी कोने में नहीं हुआ। 27 ऐ अग्रिप्पा बादशाह, क्या आप नबियों पर ईमान रखते हैं? बल्कि मैं जानता हूँ कि आप उन पर ईमान रखते हैं।”

28 अग्रिप्पा ने कहा, “आप तो बड़ी जल्दी से मुझे कायल करके मसीही बनाना चाहते हैं।”

29 पौलुस ने जवाब दिया, “जल्द या बदेर मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि न सिर्फ आप बल्कि तमाम हाज़िरीन मेरी मानिंद बन जाएँ, सिवाए मेरी जंजीरों के।”

30 फिर बादशाह, गवर्नर, बिरनीके और बाक़ी सब उठकर चले गए। 31 वहाँ से निकलकर वह एक दूसरे से बात करने लगे। सब इस पर मुताफ़िक़ थे कि “इस आदमी ने कुछ नहीं किया जो सज़ाए-मौत या कैद के लायक हो।” 32 और अग्रिप्पा ने फ़ेस्तुस से कहा, “अगर इसने शहनशाह से अपील न की होती तो इसे रिहा किया जा सकता था।”

## 27

### पौलुस का रोम की तरफ़ सफ़र

1 जब हमारा इटली के लिए सफ़र मुतैयिन किया गया तो पौलुस को चंद एक और कैदियों समेत एक रोमी अफ़सर \* के हवाले किया गया जिसका नाम यूलियुस था जो शाही पलटन पर मुक़र्रर था। 2 अरिस्तरख़ुस भी हमारे साथ था। वह थिस्सलूनीके शहर का मकिदुनी आदमी था। हम अद्रमिन्तियुम शहर के एक जहाज़ पर सवार हुए जिसे सूबा आसिया की चंद बंदरगाहों को जाना था। 3 अगले दिन हम सैदा पहुँचे तो यूलियुस ने मेहरबानी करके पौलुस को शहर में उसके दोस्तों के पास जाने की इजाज़त दी ताकि वह उस की ज़रूरियात पूरी कर सके। 4 जब हम वहाँ से रवाना हुए तो मुख़ालिफ़ हवाओं की वजह से जज़ीराए-कुबक्स और सूबा आसिया के दरमियान से गुज़रे। 5 फिर खुले समुंदर पर चलते चलते हम किलिकिया और पंफ़ीलिया के समुंदर से गुज़रकर सूबा लुकिया के शहर मूरा पहुँचे। 6 वहाँ कैदियों पर मुक़र्रर अफ़सर को पता चला कि इस्कंदरिया का एक मिसरी जहाज़ इटली जा रहा है। उस पर उसने हमें सवार किया।

7 कई दिन हम आहिस्ता आहिस्ता चले और बड़ी मुश्किल से कनिदुस के करीब पहुँचे। लेकिन मुख़ालिफ़ हवा की वजह से हमने जज़ीराए-क्रेते की तरफ़ सूख़ किया और सलमोने शहर के करीब से गुज़रकर क्रेते की आड में सफ़र किया। 8 लेकिन वहाँ हम साहिल के साथ साथ चलते हुए बड़ी मुश्किल से एक जगह पहुँचे जिसका नाम ‘हसीन- बंदर’ था। शहर लसया उसके करीब वाके था।

9 बहुत वक्त जाया हो गया था और अब बहरी सफ़र खतरनाक भी हो चुका था, क्योंकि कफ़फ़ारा का दिन (तक़रीबन नवंबर के शुरू में) गुज़र चुका था। इसलिए पौलुस ने उन्हें आगाह किया, 10 “हज़रत, मुझे पता है कि आगे जाकर हम पर बड़ी मुसीबत आएगी। हमें जहाज़, मालो-असबाब और जानों का नुक़सान उठाना पड़ेगा।” 11 लेकिन कैदियों पर मुक़र्रर रोमी अफ़सर ने उस की बात नज़रंदाज़ करके जहाज़ के नाख़ुदा और मालिक की बात मानी। 12 चूँकि ‘हसीन- बंदर’ में जहाज़ को सदियों के मौसम के लिए रखना मुश्किल था इसलिए अक़सर लोग आगे फेनिक्स तक पहुँचकर सदियों का मौसम गुज़ारना चाहते थे। क्योंकि फेनिक्स जज़ीराए-क्रेते की अच्छी बंदरगाह थी जो सिर्फ़ जुनूब-मगरिब और शिमाल-मगरिब की तरफ़ खुली थी।

### समुंदर पर तूफ़ान

13 चुनौचे एक दिन जब जुनूब की सिम्त से हलकी-सी हवा चलने लगी तो मल्लाहों ने सोचा कि हमारा इरादा पूरा हो गया है। वह लंगर उठाकर क्रेते के साहिल के साथ साथ चलने लगे। 14 लेकिन थोड़ी ही देर के बाद मौसम बदल गया और उन पर जज़ीर की तरफ़ से एक तूफ़ानी हवा टूट पड़ी जो बादे-शिमाल-मशरिक्की कहलाती है। 15 जहाज़ हवा के काबू में आ गया और हवा की तरफ़ सूख़ न कर सका, इसलिए हमने हार मानकर जहाज़ को हवा के साथ साथ चलने दिया। 16 जब हम एक छोटे जज़ीरा बनाम कौदा की आड में से गुज़रने लगे तो हमने बड़ी मुश्किल से बचाव-क़शती को जहाज़ पर उठाकर महफूज़ रखा। (अब तक वह रस्से से जहाज़ के साथ खीची जा रही थी।) 17 फिर मल्लाहों ने जहाज़ के ढाँचे को ज़्यादा मज़बूत बनाने की खातिर उसके इर्दगिर्द रस्से बाँधे। ख़ौफ़ यह था कि जहाज़ शिमाली अफ़्रीका के करीब पड़े चोरबालू में धँस जाए। (इन रेतों का नाम सूरतिस था।) इससे बचने के लिए उन्होंने लंगर डाल दिया † ताकि जहाज़ कुछ आहिस्ता चले। यों जहाज़ हवा के साथ चलते चलते आगे बढ़ा। 18 अगले दिन भी तूफ़ान जहाज़ को इतनी शिदत से झँझोड़ रहा था कि मल्लाह मालो-असबाब को समुंदर में फेंकने लगे। 19 तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों से जहाज़ चलाने का कुछ सामान समुंदर में फेंक दिया। 20 तूफ़ान की शिदत बहुत दिनों के बाद भी ख़त्म न हुई। न सूरज और न सितारे नज़र आए यहाँ तक कि आख़िरकार हमारे बचने की हर उम्मीद जाती रही।

\* 27:1 सौ सिपाहियों पर मुक़र्रर अफ़सर। † 27:17 लंगर यानी छोटा लंगर जिसकी मदद से जहाज़ का सूख़ एक ही सिम्त में रखा जाता है।

21 काफ़ी देर से दिल नहीं चाहता था कि खाना खाया जाए। आखिरकार पौलुस ने लोगों के बीच में खड़े होकर कहा, “हज़रत, बेहतर होता कि आप मेरी बात मानकर क्रेते से रवाना न होते। फिर आप इस मुसीबत और ख़सारे से बच जाते। 22 लेकिन अब मैं आपको नसीहत करता हूँ कि हौसला रखें। आपमें से एक भी नहीं मरेगा। सिर्फ़ जहाज़ तबाह हो जाएगा। 23 क्योंकि पिछली रात एक फ़रिश्ता मेरे पास आ खड़ा हुआ, उसी ख़ुदा का फ़रिश्ता जिसका मैं बंदा हूँ और जिसकी इबादत मैं करता हूँ। 24 उसने कहा, ‘पौलुस, मत डर। लाज़िम है कि तुझे शहनशाह के सामने पेश किया जाए। और अल्लाह अपनी मेहरबानी से तेरे वास्ते तमाम हमसफ़रों की जानें भी बचाए रखेगा।’ 25 इसलिए हौसला रखें, क्योंकि मेरा अल्लाह पर ईमान है कि ऐसा ही होगा जिस तरह उसने फ़रमाया है। 26 लेकिन जहाज़ को किसी जज़ीरे के साहिल पर चढ़ जाना है।”

27 तूफ़ान की चौधवीं रात जहाज़ बहीराए-अदरिया पर बहे चला जा रहा था कि तकरीबन आधी रात को मल्लाहों ने महसूस किया कि साहिल नज़दीक आ रहा है। 28 पानी की गहराई की पैमाइश करके उन्हें मालूम हुआ कि वह 120 फ़ुट थी। थोड़ी देर के बाद उस की गहराई 90 फ़ुट हो चुकी थी। 29 वह डर गए, क्योंकि उन्होंने अंदाज़ा लगाया कि खतरा है कि हम साहिल पर पड़ी चटानों से टकरा जाएँ। इसलिए उन्होंने जहाज़ के पिछले हिस्से से चार लंगर डालकर दुआ की कि दिन जल्दी से चढ़ जाए। 30 उस वक़्त मल्लाहों ने जहाज़ से फ़रार होने की कोशिश की। उन्होंने यह बहाना बनाकर कि हम जहाज़ के सामने से भी लंगर डालना चाहते हैं बचाव-क़स्ती पानी में उतरने दी। 31 इस पर पौलुस ने कैदियों पर मुकर्रर अफ़सर और फ़ौज़ियों से कहा, “अगर यह आदमी जहाज़ पर न रहें तो आप सब मर जाएंगे।” 32 चुनौचे उन्होंने बचाव-क़स्ती के रस्से को काटकर उसे खुला छोड़ दिया।

33 चौ फटनेवाली थी कि पौलुस ने सबको समझाया कि वह कुछ खा लें। उसने कहा, “आपने चौदह दिन से इज़तिराब की हालत में रहकर कुछ नहीं खाया। 34 अब मेहरबानी करके कुछ खा लें। यह आपके बचाव के लिए ज़रूरी है, क्योंकि आप न सिर्फ़ बच जाएंगे बल्कि आपका एक बाल भी बीका नहीं होगा।” 35 यह कहकर उसने कुछ रोटी ली और उन सबके सामने अल्लाह से शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उसे तोड़कर खाने लगा। 36 इससे दूसरों की हौसलाअफ़ज़ाई हुई और उन्होंने भी कुछ खाना खाया। 37 जहाज़ पर हम 276 अफ़राद थे। 38 जब सब सेर हो गए तो गंदुम को भी समुंद्र में फेंका गया ताकि जहाज़ और हलका हो जाए।

### जहाज़ टुकड़े टुकड़े हो जाता है

39 जब दिन चढ़ गया तो मल्लाहों ने साहिली इलाके को न पहचाना। लेकिन एक खलीज नज़र आई जिसका साहिल अच्छा था। उन्हें खयाल आया कि शायद हम जहाज़ को वहाँ ख़ूशकी पर चढ़ा सकें। 40 चुनौचे उन्होंने लंगरों के रस्से काटकर उन्हें समुंद्र में छोड़ दिया। फिर उन्होंने वह रस्से खोल दिए जिनसे पतवार बँधे होते थे और सामनेवाले बादबान को चढ़ाकर हवा के जोर से साहिल की तरफ़ सख़ किया। 41 लेकिन चलते चलते जहाज़ एक चोरबालू से टकराकर उस पर चढ़ गया। जहाज़ का माथा धँस गया यहाँ तक कि वह हिल भी न सका जबकि उसका पिछला हिस्सा मौजों की टक्करों से टुकड़े टुकड़े होने लगा।

42 फ़ौज़ी कैदियों को क़त्ल करना चाहते थे ताकि वह जहाज़ से तैरकर फ़रार न हो सकें। 43 लेकिन उन पर मुकर्रर अफ़सर पौलुस को बचाना चाहता था, इसलिए उसने उन्हें ऐसा करने न दिया। उसने हुक़म दिया कि पहले वह सब जो तैर सकते हैं पानी में छलौंग लगाकर किनारे तक पहुँचें। 44 बाकियों को तख़्तों या जहाज़ के किसी टुकड़े को पकड़कर पहुँचना था। यों सब सहीह-सलामत साहिल तक पहुँचे।

## 28

### जज़ीराए-मिलिते में

1 तूफ़ान से बचने पर हमें मालूम हुआ कि जज़ीरे का नाम मिलिते है। 2 मक़ामी लोगों ने हमें तैरामालूमी मेहरबानी दिखाई। उन्होंने आग जलाकर हमारा इस्तक़बाल किया, क्योंकि बारिश शुरू हो चुकी थी और ठंड थी। 3 पौलुस ने भी लकड़ी का ढेर जमा किया। लेकिन ज्योंही उसने उसे आग में फेंका एक ज़हरीला साँप आग की तपिश से भागकर निकल आया और पौलुस के हाथ से चिमटकर उसे डस लिया। 4 मक़ामी लोगों ने साँप को पौलुस के हाथ से लगे देखा तो एक दूसरे से कहने लगे, “यह आदमी ज़रूर कातिल होगा। गो यह समुंद्र से बच गया, लेकिन इनसाफ़ की देवी इसे जीने नहीं देती।” 5 लेकिन पौलुस ने साँप को झटककर आग में फेंक दिया, और साँप का कोई बुरा असर उस पर न हुआ। 6 लोग इस इतज़ार में रहे कि वह सज़ जाए या अचानक गिर पड़े, लेकिन काफ़ी देर के बाद भी कुछ न हुआ। इस पर उन्होंने अपना खयाल बदलकर उसे देवता करार दिया।

7 करीब ही जज़ीरे के सबसे बड़े आदमी की ज़मीन थी। उसका नाम पुबलियुस था। उसने अपने घर में हमारा इस्तक्रबाल किया और तीन दिन तक हमारी खूब मेहमान-नवाज़ी की। 8 उसका बाप बीमार पड़ा था, वह बुखार और पेचिश के मरज़ में मुब्तला था। पौलुस उसके कमरे में गया, उसके लिए दूआ की और अपने हाथ उस पर रख दिए। इस पर मरीज़ को शफ़ा मिली। 9 जब यह हुआ तो जज़ीरे के बाक़ी तमाम मरीज़ों ने पौलुस के पास आकर शफ़ा पाई। 10 नतीजे में उन्होंने कई तरह से हमारी इज़्जत की। और जब रवाना होने का वक़्त आ गया तो उन्होंने हमें वह सब कुछ मुहैया किया जो सफ़र के लिए दरकार था।

### जज़ीराए-मिलिते से रोम तक

11 जज़ीर पर तीन माह गुज़र गए। फिर हम एक जहाज़ पर सवार हुए जो सदियों के मौसम के लिए वहाँ ठहर गया था। यह जहाज़ इस्कंदरिया का था और उसके माथे पर जुड़वाँ देवताओं 'कास्टर' और 'पोल्लुक्स' की मूरत नसब थी। हम वहाँ से सूखतत होकर 12 सुरकुसा शहर पहुँचे। तीन दिन के बाद 13 हम वहाँ से रेगियुम शहर गए जहाँ हम सिर्फ़ एक दिन ठहरे। फिर जुनूब से हवा उठी, इसलिए हम अगले दिन पुतियोली पहुँचे। 14 इस शहर में हमारी मुलाकात कुछ भाइयों से हुई। उन्होंने हमें अपने पास एक हफ़ता रहने की दावत दी। यों हम रोम पहुँच गए। 15 रोम के भाइयों ने हमारे बारे में सुन रखा था, और कुछ हमारा इस्तक्रबाल करने के लिए कसबा बनाम अप्पियुस के चौक तक आए जबकि कुछ सिर्फ़ 'तीन-सराय' तक आ सके। उन्हें देखकर पौलुस ने अल्लाह का शुक़ किया और नया हौसला पाया।

### रोम में

16 हमारे रोम में पहुँचने पर पौलुस को अपने किराए के मकान में रहने की इजाज़त मिली, गो एक फ़ौजी उस की पहरादारी करने के लिए उसके साथ रहा।

17 तीन दिन गुज़र गए तो पौलुस ने यहूदी राहनुमाओं को बुलाया। जब वह जमा हुए तो उसने उनसे कहा, "भाइयो, मुझे यस्-शतम में गिरफ़्तार करके रोमियों के हवाले कर दिया गया हालाँकि मैंने अपनी क़ौम या अपने बापदादा के रस्मो-रिवाज़ के खिलाफ़ कुछ नहीं किया था। 18 रोमी मेरा जायज़ा लेकर मुझे रिहा करना चाहते थे, क्योंकि उन्हें मुझे सज़ाए-मौत देने का कोई सबब न मिला था। 19 लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया और यों मुझे शहनशाह से अपील करने पर मजबूर कर दिया गया, गो मेरा यह इरादा नहीं है कि मैं अपनी क़ौम पर कोई इलज़ाम लगाऊँ। 20 मैंने इसलिए आपको बुलाया ताकि आपसे मिलूँ और गुफ्तगू करूँ। मैं उस शख्स की खातिर इन जंजीरों से जकड़ा हुआ हूँ जिसके आने की उम्मीद इसराईल रखता है।"

21 यहूदियों ने उसे जवाब दिया, "हमें यहूदिया से आपके बारे में कोई भी ख़त नहीं मिला। और जितने भाई वहाँ से आए हैं उनमें से एक ने भी आपके बारे में न तो कोई मनफ़ी रिपोर्ट दी न कोई बुरी बात बताई। 22 लेकिन हम आपसे सुनना चाहते हैं कि आपके खयालात क्या हैं, क्योंकि हम इतना जानते हैं कि हर जगह लोग इस फ़िरके के खिलाफ़ बातें कर रहे हैं।"

23 चुनौचे उन्होंने मिलने का एक दिन मुक़र्रर किया। जब यहूदी दुबारा उस जगह आए जहाँ पौलुस रहता था तो उनकी तादाद बहुत ज़्यादा थी। सबह से लेकर शाम तक उसने अल्लाह की बादशाही बयान की और उस की गवाही दी। उसने उन्हें मुसा की शरीअत और नबियों के हवालाजात पेश कर करके ईसा के बारे में कायल करने की कोशिश की। 24 कुछ तो कायल हो गए, लेकिन बाक़ी ईमान न लाए। 25 उनमें नाइतफ़ाकी पैदा हुई तो वह चले गए। जब वह जाने लगे तो पौलुस ने उनसे कहा, "रूहल-कुदूस ने यसायाह नबी की मारिफ़त आपके बापदादा से ठीक कहा कि

26 जा, इस क़ौम को बता,  
'तुम अपने कानों से सुनोगे  
मगर कुछ नहीं समझोगे,  
तुम अपनी आँखों से देखोगे  
मगर कुछ नहीं जानोगे।

27 क्योंकि इस क़ौम का दिल बेहिस हो गया है।  
वह मुश्किल से अपने कानों से सुनते हैं,  
उन्होंने अपनी आँखों को बंद कर रखा है,  
ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,  
अपने कानों से सुनें,  
अपने दिल से समझें,  
मेरी तरफ़ रूजू करें  
और मैं उन्हें शफ़ा दूँ।"

28 पौलुस ने अपनी बात इन अलफ़ाज़ से ख़त्म की, “अब जान लें कि अल्लाह की तरफ़ से यह नजात ग़ैरयहूदियों को भी पेश की गई है और वह सुनेंगे भी!”

29 [जब उसने यह कहा तो यहूदी आपस में बहस-मुबाहसा करते हुए चले गए।]

30 पौलुस पूरे दो साल अपने किराए के घर में रहा। जो भी उसके पास आया उसका उसने इस्तक़बाल करके <sup>31</sup> दिलेरी से अल्लाह की बादशाही की मुनादी की और ख़ुदाबंद ईसा मसीह की तालीम दी। और किसी ने मुदाख़लत न की।

## रोमियों

### सलाम

1 यह खूब मसीह ईसा के गुलाम पौलुस की तरफ से है जिसे रसूल होने के लिए बुलाया और अल्लाह की खुशखबरी की मुनादी करने के लिए अलग किया गया है।

2 पाक नविशतों में दर्ज इस खुशखबरी का वादा अल्लाह ने पहले ही अपने नबियों से कर रखा था। 3 और यह पैगाम उसके फरजंद ईसा के बारे में है। इनसानी लिहाज से वह दाऊद की नसल से पैदा हुआ, 4 जबकि रुहल-कुदूस के लिहाज से वह कुदरत के साथ अल्लाह का फरजंद ठहरा जब वह मुरदों में से जी उठा। यह है हमारे खुदावंद ईसा मसीह के बारे में अल्लाह की खुशखबरी। 5 मसीह से हमें रसूली इख्तियार का यह फजल हासिल हुआ है कि हम तमाम गैरयहूदियों में मुनादी करें ताकि वह ईमान लाकर उसके तबे हो जाएँ और यों मसीह के नाम को जलाल मिले। 6 आप भी उन गैरयहूदियों में से हैं, जो ईसा मसीह के बुलाए हुए हैं।

7 मैं आप सबको लिख रहा हूँ जो रोम में अल्लाह के प्यारे हैं और मखसूसो-मुकद्दस होने के लिए बुलाए गए हैं।

खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फजल और सलामती अता करें।

### रोम जाने की आरज़ू

8 अब्वल, मैं आप सबके लिए ईसा मसीह के वसीले से अपने खुदा का शुक्र करता हूँ, क्योंकि पूरी दुनिया में आपके ईमान का चर्चा हो रहा है। 9 खुदा ही मेरा गवाह है जिसकी खिदमत मैं अपनी रूह में करता हूँ जब मैं उसके फरजंद के बारे में खुशखबरी फैलाता हूँ, मैं लगातार आपको याद करता रहता हूँ 10 और हर वक़्त अपनी दुआओं में मिनन करता हूँ कि अल्लाह मुझे आखिरकार आपके पास आने की कामयाबी अता करे। 11 क्योंकि मैं आपसे मिलने का आरज़ूद हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरे ज़रीए आपको कुछ रूहानी बरकत मिल जाए और यों आप मज़बूत हो जाएँ। 12 यानी आने का मकसद यह है कि मेरे ईमान से आपकी हौसला-अफ़जाई की जाए और इसी तरह आपके ईमान से मेरा हौसला भी बढ़ जाए।

13 भाइयो, आपके इल्म में हो कि मैंने बहुत दफ़ा आपके पास आने का इरादा किया। क्योंकि जिस तरह दीगर गैरयहूदी अक़वाम में मेरी खिदमत से फल पैदा हुआ है उसी तरह आपमें भी फल देखना चाहता हूँ। लेकिन आज तक मुझे रोका गया है। 14 बात यह है कि यह खिदमत सरंजाम देना मेरा फर्ज़ है, खाह यूनानियों में हो या गैरयूनानियों में, खाह दानाओ में हो या नादानों में। 15 यही वजह है कि मैं आपको भी जो रोम में रहते हैं अल्लाह की खुशखबरी सुनाने का मुशताक हूँ।

### अल्लाह की खुशखबरी की कुदरत

16 मैं तो खुशखबरी के सबब से शर्माता नहीं, क्योंकि यह अल्लाह की कुदरत है जो हर एक को जो ईमान लाता है नजात देती है, पहले यहूदियों को, फिर गैरयहूदियों को। 17 क्योंकि इस खुशखबरी में अल्लाह की ही रास्तबाज़ी जाहिर होती है, वह रास्तबाज़ी जो शुरू से आखिर तक ईमान पर मबनी है। यही बात कलामे-मुकद्दस में दर्ज है जब लिखा है, “रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा।”

### इनसान पर अल्लाह का ग़ज़ब

18 लेकिन अल्लाह का ग़ज़ब आसमान पर से उन तमाम बेदीन और नारास्त लोगों पर नाज़िल होता है जो सच्चाई को अपनी नारास्ती से दबाए रखते हैं। 19 जो कुछ अल्लाह के बारे में मालूम हो सकता है वह तो उन पर जाहिर है, हौं अल्लाह ने खुद यह उन पर जाहिर किया है। 20 क्योंकि दुनिया की तखलीक से लेकर आज तक इनसान अल्लाह की अनदेखी फ़ितरत यानी उस की अज़ली कुदरत और उल्हियत मख़लूक़ात का मुशाहदा करने से पहचान सकता है। इसलिए उनके पास कोई उज़्र नहीं। 21 अल्लाह को जानने के बावजूद उन्होंने उसे वह जलाल न दिया जो उसका हक़ है, न उसका शुक्र अदा किया बल्कि वह बातिल ख़यालात में पड़ गए और उनके बेसमझ दिलों पर तारीकी छा गई। 22 वह दावा तो करते थे कि हम दाना हैं, लेकिन अहमक़ साबित हुए। 23 यों उन्होंने गैरफ़ानी खुदा को जलाल देने के बजाए ऐसे बुतों की पूजा की जो फ़ानी इनसान, परितों, चौपाइयों और रेंगेवाले जानवरों की सूरत में बनाए गए थे।

24 इसलिए अल्लाह ने उन्हें उन नजिस कामों में छोड़ दिया जो उनके दिल करना चाहते थे। नतीजे में उनके जिस्म एक दूसरे से बेहुर्मत होते रहे। 25 हौं, उन्होंने अल्लाह के बारे में सच्चाई को रद्द करके झूट को अपना लिया और मख़लूक़ात की परस्तिश और खिदमत की, न कि ख़ालिक की, जिसकी तारीफ़ अबद तक होती रहे, आमीन।

26 यही वजह है कि अल्लाह ने उन्हें उनकी शर्मनाक शहवतों में छोड़ दिया। उनकी खवातीन ने फितरती जिंसी ताल्लुकात के बजाए गैरफितरती ताल्लुकात रखे। 27 इसी तरह मर्द खवातीन के साथ फितरती ताल्लुकात छोड़कर एक दूसरे की शहवत में मस्त हो गए। मर्दों ने मर्दों के साथ बेहया हरकतें करके अपने बदनों में अपनी इस गुमराही का मुनासिब बदला पाया।

28 और चूँकि उन्होंने अल्लाह को जानने से इनकार कर दिया इसलिए उसने उन्हें उनकी मकरूह सोच में छोड़ दिया। और इसलिए वह ऐसी हरकतें करते रहते हैं जो कभी नहीं करनी चाहिएँ। 29 वह हर तरह की नारास्ती, शर, लालच और बुराई से भरे हुए हैं। वह हसद, खूनेजी, झगड़े, फरेब और कीनावरी से लबरेज हैं। वह चुगली खानेवाले, 30 तोहमत लगानेवाले, अल्लाह से नफरत करनेवाले, सरकश, मगस्त्र, शेखीबाज़, बर्दी को ईजाद करनेवाले, मॉ-बाप के नाफरमान, 31 बेसमझ, बेवफा, संगदिल और बेरहम हैं। 32 अगरचे वह अल्लाह का फरमान जानते हैं कि ऐसा करनेवाले सजाए-मौत के मुस्तहिक हैं तो भी वह ऐसा करते हैं। न सिर्फ यह बल्कि वह ऐसा करनेवाले दीगर लोगों को शाबाश भी देते हैं।

## 2

### अल्लाह की रास्त अदालत

1 ऐ इन्सान, क्या तू दूसरों को मुजरिम ठहराता है? तू जो कोई भी हो तेरा कोई उज़्र नहीं। क्योंकि तू खुद भी वही कुछ करता है जिसमें तू दूसरों को मुजरिम ठहराता है और यों अपने आपको भी मुजरिम करार देता है। 2 अब हम जानते हैं कि ऐसे काम करनेवालों पर अल्लाह का फ़ैसला मुसिफ़ाना है। 3 ताहम तू वही कुछ करता है जिसमें तू दूसरों को मुजरिम ठहराता है। क्या तू समझता है कि खुद अल्लाह की अदालत से बच जाएगा? 4 या क्या तू उस की वसी मेहरबानी, तहम्मूल और सब्र को हक़ीर जानता है? क्या तुझे मालूम नहीं कि अल्लाह की मेहरबानी तुझे तौबा तक ले जाना चाहती है? 5 लेकिन तू हटधर्म है, तू तौबा करने के लिए तैयार नहीं और यों अपनी सज़ा में इज़ाफ़ा करता जा रहा है, वह सज़ा जो उस दिन दी जाएगी जब अल्लाह का ग़ज़ब नाज़िल होगा, जब उस की रास्त अदालत जाहिर होगी। 6 अल्लाह हर एक को उसके कामों का बदला देगा। 7 कुछ लोग साबितकदमी से नेक काम करते और जलाल, इज़्ज़त और बका के तालिब रहते हैं। उन्हें अल्लाह अबदी जिंदगी अता करेगा। 8 लेकिन कुछ लोग खुदग़रज़ हैं और सच्चाई की नहीं बल्कि नारास्ती की पैरवी करते हैं। उन पर अल्लाह का ग़ज़ब और क़हर नाज़िल होगा। 9 मुसीबत और पेशानी हर उस इन्सान पर आएगी जो बुराई करता है, पहले यहूदी पर, फिर यूनानी पर। 10 लेकिन जलाल, इज़्ज़त और सलामती हर उस इन्सान को हासिल होगी जो नेकी करता है, पहले यहूदी को, फिर यूनानी को। 11 क्योंकि अल्लाह किसी का भी तरफ़दार नहीं।

12 ग़ैरयहूदियों के पास मूसवी शरीअत नहीं है, इसलिए वह शरीअत के बग़ैर ही गुनाह करके हलाक हो जाते हैं। यहूदियों के पास शरीअत है, लेकिन वह भी नहीं बचेंगे। क्योंकि जब वह गुनाह करते हैं तो शरीअत ही उन्हें मुजरिम ठहराती है। 13 क्योंकि अल्लाह के नज़दीक यह काफ़ी नहीं कि हम शरीअत की बातें सुनें बल्कि वह हमें उस वक़्त ही रास्तबाज़ करार देता है जब शरीअत पर अमल भी करते हैं। 14 और गो ग़ैरयहूदियों के पास शरीअत नहीं होती लेकिन जब भी वह फितरती तौर पर वह कुछ करते हैं जो शरीअत फरमाती है तो जाहिर करते हैं कि गो हमारे पास शरीअत नहीं तो भी हम अपने आपके लिए खुद शरीअत हैं। 15 इसमें वह साबित करते हैं कि शरीअत के तकाज़े उनके दिल पर लिखे हुए हैं। उनका ज़मीर भी इसकी गवाही देता है, क्योंकि उनके खयालात कभी एक दूसरे की मज़म्मत और कभी एक दूसरे का दिफा भी करते हैं। 16 गरज़, मेरी खुशख़बरी के मुताबिक़ हर एक को उस दिन अपना अज़्र मिलेगा जब अल्लाह ईसा मसीह की मारिफ़त इन्सानों की पोशीदा बातों की अदालत करेगा।

### यहूदी और शरीअत

17 अच्छा, तू अपने आपको यहूदी कहता है। तू शरीअत पर इन्हिसार करता और अल्लाह के साथ अपने ताल्लुक पर फ़ख़र करता है। 18 तू उस की मरज़ी को जानता है और शरीअत की तालीम पाने के बाइस सहीह राह की पहचान रखता है। 19 तुझे पूरा यक़ीन है, 'मैं अंधों का कायद, तारीकी में बसनेवालों की रौशनी, 20 बेसमझों का मुअल्लिम और बच्चों का उस्ताद हूँ।' एक लिहाज़ से यह दुस्त भी है, क्योंकि शरीअत की सरत में तेरे पास इल्मो-इरफ़ान और सच्चाई मौजूद है। 21 अब बता, तू जो औरों को सिखाता है अपने आपको क्यों नहीं सिखाता? तू जो चोरी न करने की मुनादी करता है, खुद चोरी क्यों करता है? 22 तू जो औरों को जिना करने से मना करता है, खुद जिना क्यों करता है? तू जो बुर्तों से घिन खाता है, खुद मंदिरों को क्यों लूटता है? 23 तू जो शरीअत पर फ़ख़र करता है, क्यों इसकी खिलाफ़रजी करके अल्लाह की बेइज़्ज़ती करता है? 24 यह वही बात है जो कलामे-मुक़द्दस में लिखी है, "तुम्हारे सबब से ग़ैरयहूदियों में अल्लाह के नाम पर कुफ़र बका जाता है।"

25 खतने का फायदा तो उस वक़्त होता है जब तू शरीअत पर अमल करता है। लेकिन अगर तू उस की हुक्मअदुली करता है तो तू नामखतून जैसा है। 26 इसके बरअक्स अगर नामखतून गैरयहूदी शरीअत के तकाज़ों को पूरा करता है तो क्या अल्लाह उसे मखतून यहूदी के बराबर नहीं ठहराएगा? 27 चुनोंचे जो नामखतून गैरयहूदी शरीअत पर अमल करते हैं वह आप यहूदियों को मुजरिम ठहराएँगे जिनका खतना हुआ है और जिनके पास शरीअत है, क्योंकि आप शरीअत पर अमल नहीं करते। 28 आप इस बिना पर हकीकी यहूदी नहीं हैं कि आपके वालिदिन यहूदी थे या आपके बदन का खतना जाहिरी तौर पर हुआ है। 29 बल्कि हकीकी यहूदी वह है जो बातिन में यहूदी है। और हकीकी खतना उस वक़्त होता है जब दिल का खतना हुआ है। ऐसा खतना शरीअत से नहीं बल्कि रूहल-कुदूस के वसीले से किया जाता है। और ऐसे यहूदी को इनसान की तरफ से नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ से तारीफ मिलती है।

### 3

1 तो क्या यहूदी होने का या खतना का कोई फायदा है? 2 जी हाँ, हर तरह का! अब्वल तो यह कि अल्लाह का कलाम उनके सुपर्द किया गया है। 3 अगर उनमें से बाज़ बेवफा निकले तो क्या हुआ? क्या इससे अल्लाह की वफादारी भी खत्म हो जाएगी? 4 कभी नहीं! लाज़िम है कि अल्लाह सच्चा ठहरे गो हर इनसान झूटा है। यों कलामे-मुक़दस में लिखा है, “लाज़िम है कि तू बोलते वक़्त रास्त ठहरे और अदालत करते वक़्त ग़ालिब आए।”

5 कोई कह सकता है, “हमारी नारास्ती का एक अच्छा मक़सद होता है, क्योंकि इससे लोगों पर अल्लाह की रास्ती जाहिर होती है। तो क्या अल्लाह बेइनसाफ नहीं होगा अगर वह अपना ग़ज़ब हम पर नाज़िल करे?” (मैं इनसानी खयाल पेश कर रहा हूँ)। 6 हरगिज़ नहीं! अगर अल्लाह रास्त न होता तो फिर वह दुनिया की अदालत किस तरह कर सकता?

7 शायद कोई और एतराज़ करे, “अगर मेरा झूट अल्लाह की सच्चाई को कसतर से नुमायाँ करता है और यों उसका जलाल बढ़ता है तो वह मुझे क्योंकर गुनाहगार करार दे सकता है?” 8 कुछ लोग हम पर यह कुफ़र भी बकते हैं कि हम कहते हैं, “आओ, हम बुराई करें ताकि भलाई निकले।” इनसाफ का तकाज़ा है कि ऐसे लोगों को मुजरिम ठहराया जाए।

#### कोई रास्तबाज़ नहीं

9 अब हम क्या कहें? क्या हम यहूदी दूसरों से बरतर हैं? बिलकुल नहीं। हम तो पहले ही यह इलज़ाम लगा चुके हैं कि यहूदी और यूनानी सब ही गुनाह के कब्जे में हैं। 10 कलामे-मुक़दस में यों लिखा है,

“कोई नहीं जो रास्तबाज़ है, एक भी नहीं।

11 कोई नहीं जो समझदार है,

कोई नहीं जो अल्लाह का तालिब है।

12 अफ़सोस, सब सहीह राह से भटक गए,

सबके सब बिगड गए हैं।

कोई नहीं जो भलाई करता हो, एक भी नहीं।

13 उनका गला खुली कब्र है,

उनकी ज़बान फरेब देती है।

उनके होंटों में सोंप का ज़हर है।

14 उनका मुँह लानत और कडवाहट से भरा है।

15 उनके पाँव खून बहाने के लिए जल्दी करते हैं।

16 अपने पीछे वह तबाहीओ-बरबादी छोड़ जाते हैं,

17 और वह सलामती की राह नहीं जानते।

18 उनकी आँखों के सामने खुदा का खौफ नहीं होता।”

19 अब हम जानते हैं कि शरीअत जो कुछ फ़रमाती है उन्हें फ़रमाती है जिनके सुपर्द वह की गई है। मक़सद यह है कि हर इनसान के बहाने खत्म किए जाएँ और तमाम दुनिया अल्लाह के सामने मुजरिम ठहरे। 20 क्योंकि शरीअत के तकाज़े पूरे करने से कोई भी उसके सामने रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता, बल्कि शरीअत का काम यह है कि हमारे अंदर गुनाहगार होने का एहसास पैदा करे।

#### रास्तबाज़ होने के लिए ईमान ज़रूरी है

21 लेकिन अब अल्लाह ने हम पर एक राह का इनकिशाफ किया है जिससे हम शरीअत के बग़ैर ही उसके सामने रास्तबाज़ ठहर सकते हैं। तौरत और नबियों के सहीफ भी इसकी तसदीक करते हैं। 22 राह यह है कि जब हम ईसा मसीह पर ईमान लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ करार देता है। और यह राह सबके लिए है। क्योंकि कोई भी फ़रक नहीं, 23 सबने गुनाह



किया, सब अल्लाह के उस जलाल से महसूस हैं जिसका वह तकाज़ा करता है, <sup>24</sup> और सब मुफ्त में अल्लाह के फ़ज़ल ही से रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं, उस फ़िदिये के वसीले से जो मसीह ईसा ने दिया। <sup>25</sup> क्योंकि अल्लाह ने ईसा को उसके खून के बाइस कफ़फ़ारा का वसीला बनाकर पेश किया, ऐसा कफ़फ़ारा जिससे ईमान लानेवालों को गुनाहों की मुआफ़ी मिलती है। यों अल्लाह ने अपनी रास्ती जाहिर की, पहले माज़ी में जब वह अपने सन्नो-तहम्मूल में गुनाहों की सज़ा देने से बाज़ रहा <sup>26</sup> और अब मौजूदा ज़माने में भी। इससे वह जाहिर करता है कि वह रास्त है और हर एक को रास्तबाज़ ठहराता है जो ईसा पर ईमान लाया है।

<sup>27</sup> अब हमारा फ़ख़र कहाँ रहा? उसे तो खत्म कर दिया गया है। किस शरीअत से? क्या आमाल की शरीअत से? नहीं, बल्कि ईमान की शरीअत से। <sup>28</sup> क्योंकि हम कहते हैं कि इनसान को ईमान से रास्तबाज़ ठहराया जाता है, न कि आमाल से। <sup>29</sup> क्या अल्लाह सिर्फ़ यहदियों का खुदा है? ग़ैरयहदियों का नहीं? हाँ, ग़ैरयहदियों का भी है। <sup>30</sup> क्योंकि अल्लाह एक ही है जो मख़तून और नामख़तून दोनों को ईमान ही से रास्तबाज़ ठहराएगा। <sup>31</sup> फिर क्या हम शरीअत को ईमान से मनसूख़ करते हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि हम शरीअत को कायम रखते हैं।

## 4

### इब्राहीम ईमान से रास्तबाज़ ठहरा

<sup>1</sup> इब्राहीम जिस्मानी लिहाज़ से हमारा बाप था। तो रास्तबाज़ ठहरने के सिलसिले में उसका क्या तज़रबा था? <sup>2</sup> हम कह सकते हैं कि अगर वह शरीअत पर अमल करने से रास्तबाज़ ठहरता तो वह अपने आप पर फ़ख़र कर सकता था। लेकिन अल्लाह के नज़दीक उसके पास अपने आप पर फ़ख़र करने का कोई सबब न था। <sup>3</sup> क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “इब्राहीम ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया।” <sup>4</sup> जब लोग काम करते हैं तो उनकी मज़दूरी कोई ख़ास मेहरबानी करार नहीं दी जाती, बल्कि यह तो उनका हक़ बनता है। <sup>5</sup> लेकिन जब लोग काम नहीं करते बल्कि अल्लाह पर ईमान रखते हैं जो बेदीनों को रास्तबाज़ करार देता है तो उनका कोई हक़ नहीं बनता। वह उनके ईमान ही की बिना पर रास्तबाज़ करार दिए जाते हैं। <sup>6</sup> दाऊद यही बात बयान करता है जब वह उस शख्स को मुबारक कहता है जिसे अल्लाह बग़ैर आमाल के रास्तबाज़ ठहराता है,

<sup>7</sup> “मुबारक है वह जिनके ज़रायम मुआफ़ किए गए,

जिनके गुनाह ढॉपे गए हैं।

<sup>8</sup> मुबारक है वह जिसका गुनाह रब हिसाब में नहीं लाएगा।”

<sup>9</sup> क्या यह मुबारकबादी सिर्फ़ मख़तूनों के लिए है या नामख़तूनों के लिए भी? हम तो बयान कर चुके हैं कि इब्राहीम ईमान की बिना पर रास्तबाज़ ठहरा। <sup>10</sup> उसे किस हालत में रास्तबाज़ ठहराया गया? ख़तना कराने के बाद या पहले? ख़तने के बाद नहीं बल्कि पहले। <sup>11</sup> और ख़तना का जो निशान उसे मिला वह उस की रास्तबाज़ी की मुहर थी, वह रास्तबाज़ी जो उसे ख़तना कराने से पेशतर मिली, उस वक़्त जब वह ईमान लाया। यों वह उन सबका बाप है जो बग़ैर ख़तना कराए ईमान लाए हैं और इस बिना पर रास्तबाज़ ठहरते हैं। <sup>12</sup> साथ ही वह ख़तना करानेवालों का बाप भी है, लेकिन उनका जिनका न सिर्फ़ ख़तना हुआ है बल्कि जो हमारे बाप इब्राहीम के उस ईमान के नक्शे-क़दम पर चलते हैं जो वह ख़तना कराने से पेशतर रखता था।

### अल्लाह का वादा ईमान से हासिल होता है

<sup>13</sup> जब अल्लाह ने इब्राहीम और उस की औलाद से वादा किया कि वह दुनिया का वारिस होगा तो उसने यह इसलिए नहीं किया कि इब्राहीम ने शरीअत की पैरवी की बल्कि इसलिए कि वह ईमान लाया और यों रास्तबाज़ ठहराया गया। <sup>14</sup> क्योंकि अगर वह वारिस हैं जो शरीअत के पैरोकार हैं तो फिर ईमान बेअसर ठहरा और अल्लाह का वादा मिट गया। <sup>15</sup> शरीअत अल्लाह का ग़ज़ब ही पैदा करती है। लेकिन जहाँ कोई शरीअत नहीं वहाँ उस की खिलाफ़वरज़ी भी नहीं।

<sup>16</sup> चुनौचे यह मीरास ईमान से मिलती है ताकि इसकी बुनियाद अल्लाह का फ़ज़ल हो और इसका वादा इब्राहीम की तमाम नसल के लिए हो, न सिर्फ़ शरीअत के पैरोकारों के लिए बल्कि उनके लिए भी जो इब्राहीम का-सा ईमान रखते हैं। यही हम सबका बाप है। <sup>17</sup> यों अल्लाह कलामे-मुक़द्दस में उससे वादा करता है, “मैंने तुझे बहुत कौमों का बाप बना दिया है।” अल्लाह ही के नज़दीक इब्राहीम हम सबका बाप है। क्योंकि उसका ईमान उस खुदा पर था जो मुरदों को ज़िंदा करता और जिसके हुक़म पर वह कुछ पैदा होता है जो पहले नहीं था। <sup>18</sup> उम्मीद की कोई किरण दिखाई नहीं देती थी, फिर भी इब्राहीम उम्मीद के साथ ईमान रखता रहा कि मैं ज़रूर बहुत कौमों का बाप बनूँगा। और आख़िरकार ऐसा ही हुआ, जैसा कलामे-मुक़द्दस में वादा किया गया था कि “तेरी औलाद इतनी ही बेशुमार होगी।” <sup>19</sup> और इब्राहीम का ईमान कमज़ोर न पड़ा, हालाँकि उसे मालूम था कि मैं तक़रीबन सौ साल का हूँ और मेरा और सारा के बदन गोया मुरदा हैं, अब बच्चे पैदा करने की उम्र सारा के

लिए गुजर चुकी है। 20 तो भी इब्राहीम का ईमान खत्म न हुआ, न उसने अल्लाह के वादे पर शक किया बल्कि ईमान में वह मज्जीद मजबूत हुआ और अल्लाह को जलाल देता रहा। 21 उसे पुख्ता यकीन था कि अल्लाह अपने वादे को पूरा करने की कुदरत रखता है। 22 उसके इस ईमान की वजह से अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया। 23 कलामे-मुकद्दस में यह बात कि अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया न सिर्फ उस की खातिर लिखी गई 24 बल्कि हमारी खातिर भी। क्योंकि अल्लाह हमें भी रास्तबाज़ करार देगा अगर हम उस पर ईमान रखें जिसने हमारे ख़ुदावंद ईसा को मुरदों में से ज़िंदा किया। 25 हमारी ही खताओं की वजह से उसे मौत के हवाले किया गया, और हमें ही रास्तबाज़ करार देने के लिए उसे ज़िंदा किया गया।

## 5

### रास्तबाज़ी का अंजाम

1 अब चूँकि हमें ईमान से रास्तबाज़ करार दिया गया है इसलिए अल्लाह के साथ हमारी सुलह है। इस सुलह का वसीला हमारा ख़ुदावंद ईसा मसीह है। 2 हमारे ईमान लाने पर उसने हमें फ़ज़ल के उस मक़ाम तक पहुँचाया जहाँ हम आज कायम हैं। और यों हम इस उम्मीद पर फ़ख़र करते हैं कि हम अल्लाह के जलाल में शरीक होंगे। 3 न सिर्फ़ यह बल्कि हम उस वक़्त भी फ़ख़र करते हैं जब हम मुसीबतों में फँसे होते हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि मुसीबत से साबितकदमी पैदा होती है, 4 साबितकदमी से पुख्तगी और पुख्तगी से उम्मीद। 5 और उम्मीद हमें शर्मिंदा होने नहीं देती, क्योंकि अल्लाह ने हमें रूहल-कुदूस देकर उसके वसीले से हमारे दिलों में अपनी मुहब्बत उंडेली है।

6 क्योंकि हम अभी कमज़ोर ही थे तो मसीह ने हम बेदीनों की खातिर अपनी जान दे दी। 7 मुश्किल से ही कोई किसी रास्तबाज़ की खातिर अपनी जान देगा। हाँ, मुमकिन है कि कोई किसी नेकोकार के लिए अपनी जान देने की ज़ुरत करे। 8 लेकिन अल्लाह ने हमसे अपनी मुहब्बत का इज़हार यों किया कि मसीह ने उस वक़्त हमारी खातिर अपनी जान दी जब हम गुनाहगार ही थे। 9 हमें मसीह के खून से रास्तबाज़ ठहराया गया है। तो यह बात कितनी यकीनी है कि हम उसके वसीले से अल्लाह के ग़ज़ब से बचेगे। 10 हम अभी अल्लाह के दुश्मन ही थे जब उसके फ़रज़द की मौत के वसीले से हमारी उसके साथ सुलह हो गई। तो फिर यह बात कितनी यकीनी है कि हम उस की ज़िंदगी के वसीले से नजात भी पाएँगे। 11 न सिर्फ़ यह बल्कि अब हम अल्लाह पर फ़ख़र करते हैं और यह हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से है, जिसने हमारी सुलह कराई है।

### आदम और मसीह

12 जब आदम ने गुनाह किया तो उस एक ही शख्स से गुनाह दुनिया में आया। इस गुनाह के साथ साथ मौत भी आकर सब आदमियों में फैल गई, क्योंकि सबने गुनाह किया। 13 शरीअत के इनकिशाफ से पहले गुनाह तो दुनिया में था, लेकिन जहाँ शरीअत नहीं होती वहाँ गुनाह का हिसाब नहीं किया जाता। 14 ताहम आदम से लेकर मूसा तक मौत की हुकूमत जारी रही, उन पर भी जिन्होंने आदम की-सी हुकमअदूली न की।

अब आदम आनेवाले ईसा मसीह की तरफ इशारा था। 15 लेकिन इन दोनों में बड़ा फ़रक है। जो नेमत अल्लाह मुफ़्त में देता है वह आदम के गुनाह से मुताबिकत नहीं रखती। क्योंकि इस एक शख्स आदम की ख़िलाफ़वरज़ी से बहुत-से लोग मौत की ज़द में आ गए, लेकिन अल्लाह का फ़ज़ल कहीं ज़्यादा मुअस्सिर है, वह मुफ़्त नेमत जो बहुतों को उस एक शख्स ईसा मसीह में मिली है। 16 हाँ, अल्लाह की इस नेमत और आदम के गुनाह में बहुत फ़रक है। उस एक शख्स आदम के गुनाह के नतीजे में हमें तो मुजरिम करार दिया गया, लेकिन अल्लाह की मुफ़्त नेमत का असर यह है कि हमें रास्तबाज़ करार दिया जाता है, गो हमसे बेशुमार गुनाह सरज़द हुए हैं। 17 इस एक शख्स आदम के गुनाह के नतीजे में मौत सब पर हुकूमत करने लगी। लेकिन इस एक शख्स ईसा मसीह का काम कितना ज़्यादा मुअस्सिर था। जितने भी अल्लाह का वाफ़िर फ़ज़ल और रास्तबाज़ी की नेमत पाते हैं वह मसीह के वसीले से अबदी ज़िंदगी में हुकूमत करेंगे।

18 चुनौंचे जिस तरह एक ही शख्स के गुनाह के बाइस सब लोग मुजरिम ठहरे उसी तरह एक ही शख्स के रास्त अमल से वह दरवाज़ा खुल गया जिसमें दाख़िल होकर सब लोग रास्तबाज़ ठहर सकते और ज़िंदगी पा सकते हैं। 19 जिस तरह एक ही शख्स की नाफ़रमानी से बहुत-से लोग गुनाहगार बन गए, उसी तरह एक ही शख्स की फ़रमाँबरदारी से बहुत-से लोग रास्तबाज़ बन जाएंगे।

20 शरीअत इसलिए दरमियान में आ गई कि ख़िलाफ़वरज़ी बढ जाए। लेकिन जहाँ गुनाह ज़्यादा हुआ वहाँ अल्लाह का फ़ज़ल इससे भी ज़्यादा हो गया। 21 चुनौंचे जिस तरह गुनाह मौत की सूत में हुकूमत करता था उसी तरह अब अल्लाह का फ़ज़ल हमें रास्तबाज़ ठहराकर हुकूमत करता है। यों हमें अपने ख़ुदावंद ईसा मसीह की बदौलत अबदी ज़िंदगी हासिल होती है।

## 6

## मसीह में नई ज़िंदगी

1 क्या इसका मतलब यह है कि हम गुनाह करते रहें ताकि अल्लाह के फ़ज़ल में इज़ाफ़ा हो? 2 हरगिज़ नहीं! हम तो मरकर गुनाह से लाताल्लुक हो गए हैं। तो फिर हम किस तरह गुनाह को अपने आप पर हुकूमत करने दे सकते हैं? 3 या क्या आपको मालूम नहीं कि हम सब जिन्हें बपतिस्मा दिया गया है इससे मसीह ईसा की मौत में शामिल हो गए हैं? 4 क्योंकि बपतिस्मे से हमें दफ़नाया गया और उस की मौत में शामिल किया गया ताकि हम मसीह की तरह नई ज़िंदगी गुज़ारें, जिसे बाप की जलाली कुदरत ने मुरदों में से ज़िंदा किया।

5 चूँकि इस तरह हम उस की मौत में उसके साथ पैवस्त हो गए हैं इसलिए हम उसके जी उठने में भी उसके साथ पैवस्त होंगे। 6 क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना इनसान मसीह के साथ मसलूब हो गया ताकि गुनाह के क़ब्ज़े में यह जिस्म नेस्त हो जाए और यों हम गुनाह के गुलाम न रहें। 7 क्योंकि जो मर गया वह गुनाह से आज़ाद हो गया है। 8 और हमारा ईमान है कि चूँकि हम मसीह के साथ मर गए हैं इसलिए हम उसके साथ ज़िंदा भी होंगे, 9 क्योंकि हम जानते हैं कि मसीह मुरदों में से जी उठा है और अब क़र्मी नहीं मरेगा। अब मौत का उस पर कोई इख़्तियार नहीं। 10 मरते वक़्त वह हमेशा के लिए गुनाह की हुकूमत से निकल गया, और अब जब वह दुबारा ज़िंदा है तो उस की ज़िंदगी अल्लाह के लिए मख़सूस है। 11 आप भी अपने आपको ऐसा समझें। आप भी मरकर गुनाह की हुकूमत से निकल गए हैं और अब आपकी मसीह में ज़िंदगी अल्लाह के लिए मख़सूस है।

12 चूँचें गुनाह आपके फ़ानी बदन में हुकूमत न करे। ध्यान दें कि आप उस की बुरी खाहिशात के ताबे न हो जाएँ। 13 अपने बदन के किसी भी अज़ू को गुनाह की खिदमत के लिए पेश न करें, न उसे नारास्ती का हथियार बनने दें। इसके बजाए अपने आपको अल्लाह की खिदमत के लिए पेश करें। क्योंकि पहले आप मुरदा थे, लेकिन अब आप ज़िंदा हो गए हैं। चूँचें अपने तमाम आज़ा को अल्लाह की खिदमत के लिए पेश करें और उन्हें रास्ती के हथियार बनने दें। 14 आइंदा गुनाह आप पर हुकूमत नहीं करेगा, क्योंकि आप अपनी ज़िंदगी शरीअत के तहत नहीं गुज़ारते बल्कि अल्लाह के फ़ज़ल के तहत।

## रास्तबाज़ी के गुलाम

15 अब सवाल यह है, चूँकि हम शरीअत के तहत नहीं बल्कि फ़ज़ल के तहत हैं तो क्या इसका मतलब यह है कि हमें गुनाह करने के लिए खुला छोड़ दिया गया है? हरगिज़ नहीं! 16 क्या आपको मालूम नहीं कि जब आप अपने आपको किसी के ताबे करके उसके गुलाम बन जाते हैं तो आप उस मालिक के गुलाम हैं जिसके ताबे आप हैं? या तो गुनाह आपका मालिक बनकर आपको मौत तक ले जाएगा, या फ़रमाँबरदारी आपकी मालिकन बनकर आपको रास्तबाज़ी तक ले जाएगी। 17 दर-हक़ीक़त आप पहले गुनाह के गुलाम थे, लेकिन खुदा का शुक्र है कि अब आप पूरे दिल से उसी तालीम के ताबे हो गए हैं जो आपके सुपर्द की गई है। 18 अब आपको गुनाह से आज़ाद कर दिया गया है, रास्तबाज़ी ही आपकी मालिकन बन गई है। 19 (आपकी फ़ितरती कमज़ोरी की वजह से मैं गुलामी की यह मिसाल दे रहा हूँ ताकि आप मेरी बात समझ पाएँ।) पहले आपने अपने आज़ा को नजासत और बेदीनी की गुलामी में दे रखा था जिसके नतीजे में आपकी बेदीनी बढ़ती गई। लेकिन अब आप अपने आज़ा को रास्तबाज़ी की गुलामी में दे दें ताकि आप मुक़द्दस बन जाएँ।

20 जब गुनाह आपका मालिक था तो आप रास्तबाज़ी से आज़ाद थे। 21 और इसका नतीजा क्या था? जो कुछ आपने उस वक़्त किया उससे आपको आज शर्म आती है और उसका अंजाम मौत है। 22 लेकिन अब आप गुनाह की गुलामी से आज़ाद होकर अल्लाह के गुलाम बन गए हैं, जिसके नतीजे में आप मख़सूसो-मुक़द्दस बन जाते हैं और जिसका अंजाम अबदी ज़िंदगी है। 23 क्योंकि गुनाह का अज़्र मौत है जबकि अल्लाह हमारे खुदावंद मसीह ईसा के वसीले से हमें अबदी ज़िंदगी की मुफ़्त नेमत अता करता है।

## 7

## शादी की मिसाल

1 भाइयो, आप तो शरीअत से वाकिफ़ हैं। तो क्या आप नहीं जानते कि शरीअत उस वक़्त तक इनसान पर इख़्तियार रखती है जब तक वह ज़िंदा है? 2 शादी की मिसाल लें। जब किसी औरत की शादी होती है तो शरीअत उसका शौहर के साथ बंधन उस वक़्त तक कायम रखती है जब तक शौहर ज़िंदा है। अगर शौहर मर जाए तो फिर वह इस बंधन से आज़ाद हो गई। 3 चूँचें अगर वह अपने ख़ाविंद के जीते-जी किसी और मर्द की बीवी बन जाए तो उसे ज़िनाकार करार दिया जाता है। लेकिन अगर उसका शौहर मर जाए तो वह शरीअत से आज़ाद हुई। अब वह किसी दूसरे मर्द की बीवी बने तो ज़िनाकार नहीं

ठहरती। 4 मेरे भाइयों, यह बात आप पर भी सादिक आती है। जब आप मसीह के बदन का हिस्सा बन गए तो आप मरकर शरीरअत के इख्तियार से आजाद हो गए। अब आप उसके साथ पैवस्त हो गए हैं जिसे मुरदों में से ज़िंदा किया गया ताकि हम अल्लाह की खिदमत में फल लाएँ। 5 क्योंकि जब हम अपनी पुरानी फ़ितरत के तहत ज़िंदगी गुज़ारते थे तो शरीरअत हमारी गुनाहआलूदा रगबतों को उकसाती थीं। फिर यही रगबतें हमारे आज़ा पर असरअंदाज़ होती थीं और नतीजे में हम ऐसा फल लाते थे जिसका अंजाम मौत है। 6 लेकिन अब हम मरकर शरीरअत के बंधन से आजाद हो गए हैं। अब हम शरीरअत की पुरानी ज़िंदगी के तहत खिदमत नहीं करते बल्कि रूहल-कुदूस की नई ज़िंदगी के तहत।

### शरीरअत और गुनाह

7 क्या इसका मतलब यह है कि शरीरअत ख़ुद गुनाह है? हरगिज़ नहीं! बात तो यह है कि अगर शरीरअत मुझ पर मेरे गुनाह जाहिर न करती तो मुझे इनका कुछ पता न चलता। मसलन अगर शरीरअत न बताती, “लालच न करना” तो मुझे दर-हक़ीक़त मालूम न होता कि लालच क्या है। 8 लेकिन गुनाह ने इस हुक्म से फ़ायदा उठाकर मुझमें हर तरह का लालच पैदा कर दिया। इसके बरअक्स जहाँ शरीरअत नहीं होती वहाँ गुनाह मुरदा है और ऐसा काम नहीं कर पाता। 9 एक वक़्त था जब मैं शरीरअत के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारता था। लेकिन ज्योंही हुक्म मेरे सामने आया तो गुनाह में जान आ गई 10 और मैं मर गया। इस तरह मालूम हुआ कि जिस हुक्म का मक़सद मेरी ज़िंदगी को कायम रखना था वही मेरी मौत का बाइस बन गया। 11 क्योंकि गुनाह ने हुक्म से फ़ायदा उठाकर मुझे बहकाया और हुक्म से ही मुझे मार डाला।

12 लेकिन शरीरअत ख़ुद मुक़द्दस है और इसके अहक़ाम मुक़द्दस, रास्त और अच्छे हैं। 13 क्या इसका मतलब यह है कि जो अच्छा है वही मेरे लिए मौत का बाइस बन गया? हरगिज़ नहीं! गुनाह ही ने यह किया। इस अच्छी चीज़ को इस्तेमाल करके उसने मेरे लिए मौत पैदा कर दी ताकि गुनाह जाहिर हो जाए। यों हुक्म के ज़रीए गुनाह की संजीदगी हद से ज्यादा बढ़ जाती है।

### हमारे अंदर की कश-म-कश

14 हम जानते हैं कि शरीरअत रूहानी है। लेकिन मेरी फ़ितरत इनसानी है, मुझे गुनाह की गुलामी में बेचा गया है। 15 दर-हक़ीक़त मैं नहीं समझता कि क्या करता हूँ। क्योंकि मैं वह काम नहीं करता जो करना चाहता हूँ बल्कि वह जिससे मुझे नफ़रत है। 16 लेकिन अगर मैं वह करता हूँ जो नहीं करना चाहता तो जाहिर है कि मैं मुतफ़िक़ हूँ कि शरीरअत अच्छी है। 17 और अगर ऐसा है तो फिर मैं यह काम ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि गुनाह जो मेरे अंदर सुकूनत करता है। 18 मुझे मालूम है कि मेरे अंदर यानी मेरी पुरानी फ़ितरत में कोई अच्छी चीज़ नहीं बसती। अगरचे मुझमें नेक काम करने का इरादा तो मौजूद है लेकिन मैं उसे अमली जामा नहीं पहना सकता। 19 जो नेक काम मैं करना चाहता हूँ वह नहीं करता बल्कि वह बुरा काम करता हूँ जो करना नहीं चाहता। 20 अब अगर मैं वह काम करता हूँ जो मैं नहीं करना चाहता तो इसका मतलब है कि मैं ख़ुद नहीं कर रहा बल्कि वह गुनाह जो मेरे अंदर बसता है।

21 चुनौचे मुझे एक और तरह की शरीरअत काम करती हुई नज़र आती है, और वह यह है कि जब मैं नेक काम करने का इरादा रखता हूँ तो बुराई आ मौजूद होती है। 22 हाँ, अपने बातिन में तो मैं ख़ुशी से अल्लाह की शरीरअत को मानता हूँ। 23 लेकिन मुझे अपने आज़ा में एक और तरह की शरीरअत दिखाई देती है, ऐसी शरीरअत जो मेरी समझ की शरीरअत के खिलाफ़ लड़कर मुझे गुनाह की शरीरअत का कैदी बना देती है, उस शरीरअत का जो मेरे आज़ा में मौजूद है। 24 हाय, मेरी हालत कितनी बुरी है! मुझे इस बदन से जिसका अंजाम मौत है कौन छुड़ाएगा? 25 ख़ुदा का शुक्र है जो हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के वसीले से यह काम करता है।

गरज़ यही मेरी हालत है, मसीह के बग़ैर मैं अल्लाह की शरीरअत की खिदमत सिर्फ़ अपनी समझ से कर सकता हूँ जबकि मेरी पुरानी फ़ितरत गुनाह की शरीरअत की गुलाम रहकर उसी की खिदमत करती है।

## 8

### रूह में ज़िंदगी

1 अब जो मसीह ईसा में हैं उन्हें मुजरिम नहीं ठहराया जाता। 2 क्योंकि रूह की शरीरअत ने जो हमें मसीह में ज़िंदगी अता करती है तुझे गुनाह और मौत की शरीरअत से आजाद कर दिया है। 3 मसवी शरीरअत हमारी पुरानी फ़ितरत की कमज़ोर हालत की वजह से हमें न बचा सकी। इसलिए अल्लाह ने वह कुछ किया जो शरीरअत के बस में न था। उसने अपना फ़रज़ंद भेज दिया ताकि वह गुनाहगार का-सा जिस्म इख्तियार करके हमारे गुनाहों का कफ़फ़ारा दे। इस तरह अल्लाह ने पुरानी फ़ितरत में मौजूद गुनाह को मुजरिम ठहराया 4 ताकि हममें शरीरअत का तकाज़ा पूरा हो जाए, हम जो पुरानी फ़ितरत के मुताबिक नहीं बल्कि रूह के मुताबिक चलते हैं। 5 जो पुरानी फ़ितरत के इख्तियार में हैं वह पुरानी सोच रखते हैं जबकि जो रूह के इख्तियार

में हैं वह स्थानी सोच रखते हैं।<sup>6</sup> पुरानी फितरत की सोच का अंजाम मौत है जबकि रह की सोच जिंदगी और सलामती पैदा करती है।<sup>7</sup> पुरानी फितरत की सोच अल्लाह से दुश्मनी रखती है। यह अपने आपको अल्लाह की शरीअत के ताबे नहीं रखती, न ही ऐसा कर सकती है।<sup>8</sup> इसलिए वह लोग अल्लाह को पसंद नहीं आ सकते जो पुरानी फितरत के इच्छियार में हैं।

<sup>9</sup> लेकिन आप पुरानी फितरत के इच्छियार में नहीं बल्कि रह के इच्छियार में हैं। शर्त यह है कि रहूल-कुदूस आपमें बसा हुआ हो। अगर किसी में मसीह का रह नहीं तो वह मसीह का नहीं।<sup>10</sup> लेकिन अगर मसीह आपमें है तो फिर आपका बदन गुनाह की वजह से मुरदा है जबकि रहूल-कुदूस आपको रास्तबाज ठहराने की वजह से आपके लिए जिंदगी का बाइस है।<sup>11</sup> उसका रह आपमें बसता है जिसने ईसा को मुरदों में से जिंदा किया। और चूँकि रहूल-कुदूस आपमें बसता है इसलिए अल्लाह इसके ज़रीए आपके फ़ानी बदनों को भी मसीह की तरह जिंदा करेगा।

<sup>12</sup> चुनौचे मेरे भाइयो, हमारी पुरानी फितरत का कोई हक न रहा कि हमें अपने मुताबिक जिंदगी गुज़ारने पर मजबूर करे।<sup>13</sup> क्योंकि अगर आप अपनी पुरानी फितरत के मुताबिक जिंदगी गुज़ारें तो आप हलाक हो जाएंगे। लेकिन अगर आप रहूल-कुदूस की कुव्वत से अपनी पुरानी फितरत के ग़लत कामों को नेस्तोनाबूद करें तो फिर आप जिंदा रहेंगे।<sup>14</sup> जिसकी भी राहनुमाई रहूल-कुदूस करता है वह अल्लाह का फ़रज़ंद है।<sup>15</sup> क्योंकि अल्लाह ने जो रह आपको दिया है उसने आपको गुलाम बनाकर ख़ौफ़ज़दा हालत में नहीं रखा बल्कि आपको अल्लाह के फ़रज़ंद बना दिया है, और उसी के ज़रीए हम पुकारकर अल्लाह को “अब्बा” यानी “ऐ बाप” कह सकते हैं।<sup>16</sup> रहूल-कुदूस खुद हमारी रह के साथ मिलकर गवाही देता है कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं।<sup>17</sup> और चूँकि हम उसके फ़रज़ंद हैं इसलिए हम वारिस हैं, अल्लाह के वारिस और मसीह के हममीरास। क्योंकि अगर हम मसीह के दुख में शरीक हों तो उसके जलाल में भी शरीक होंगे।

### आइंदा का जलाल

<sup>18</sup> मेरे खयाल में हमारा मौजूदा दुख उस आनेवाले जलाल की निसबत कुछ भी नहीं जो हम पर जाहिर होगा।<sup>19</sup> हों, तमाम कायनात यह देखने के लिए तडपती है कि अल्लाह के फ़रज़ंद जाहिर हो जाएँ,<sup>20</sup> क्योंकि कायनात अल्लाह की लानत के तहत आकर फ़ानी हो गई है। यह उस की अपनी नहीं बल्कि अल्लाह की मरज़ी थी जिसने उस पर यह लानत भेजी। तो भी यह उम्मीद दिलाई गई<sup>21</sup> कि एक दिन कायनात को खुद उस की फ़ानी हालत की गुलामी से छुड़ाया जाएगा। उस वक़्त वह अल्लाह के फ़रज़ंदों की जलाली आज़ादी में शरीक हो जाएगी।<sup>22</sup> क्योंकि हम जानते हैं कि आज तक तमाम कायनात कराहती और दर्द-ज़ह में तडपती रहती है।<sup>23</sup> न सिर्फ़ कायनात बल्कि हम खुद भी अंदर ही अंदर कराहते हैं, गो हमें आनेवाले जलाल का पहला फल रहूल-कुदूस की सूरत में मिल चुका है। हम कराहते कराहते शिदत से इस इंतज़ार में हैं कि यह बात जाहिर हो जाए कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं और हमारे बदनों को नजात मिले।<sup>24</sup> क्योंकि नजात पाते वक़्त हमें यह उम्मीद दिलाई गई। लेकिन अगर वह कुछ नज़र आ चुका होता जिसकी उम्मीद हम रखते तो यह दर-हकीकत उम्मीद न होती। कौन उस की उम्मीद रखे जो उसे नज़र आ चुका है? <sup>25</sup> लेकिन चूँकि हम उस की उम्मीद रखते हैं जो अभी नज़र नहीं आया तो लाज़िम है कि हम सब्र से उसका इंतज़ार करें।

<sup>26</sup> इसी तरह रहूल-कुदूस भी हमारी कमज़ोर हालत में हमारी मदद करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि किस तरह मुनासिब दूआ माँगें। लेकिन रहूल-कुदूस खुद नाकाबिले-बयान आहें भरते हुए हमारी शफ़ाअत करता है।<sup>27</sup> और खुदा बाप जो तमाम दिलों की तहकीकत करता है रहूल-कुदूस की सोच को जानता है, क्योंकि पाक रह अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक मुक़द्दसीन की शफ़ाअत करता है।

<sup>28</sup> और हम जानते हैं कि जो अल्लाह से मुहब्बत रखते हैं उनके लिए सब कुछ मिलकर भलाई का बाइस बनता है, उनके लिए जो उसके इरादे के मुताबिक बुलाए गए हैं।<sup>29</sup> क्योंकि अल्लाह ने पहले से अपने लोगों को चुन लिया, उसने पहले से उन्हें इसके लिए मुक़र्र किया कि वह उसके फ़रज़ंद के हमशकल बन जाएँ और यों मसीह बहुत-से भाइयों में पहलौटा हो।<sup>30</sup> लेकिन जिन्हें उसने पहले से मुक़र्र किया उन्हें उसने बुलाया भी, जिन्हें उसने बुलाया उन्हें उसने रास्तबाज भी ठहराया और जिन्हें उसने रास्तबाज ठहराया उन्हें उसने जलाल भी बख़्शा।

### अल्लाह की मसीह में मुहब्बत

<sup>31</sup> इन तमाम बातों के जवाब में हम क्या कहें? अगर अल्लाह हमारे हक में है तो कौन हमारे खिलाफ हो सकता है? <sup>32</sup> उसने अपने फ़रज़ंद को भी दोग न किया बल्कि उसे हम सबके लिए दुश्मन के हवाले कर दिया। जिसने हमें अपने फ़रज़ंद को दे दिया क्या वह हमें उसके साथ सब कुछ मुफ़्त नहीं देगा? <sup>33</sup> अब कौन अल्लाह के चुने हुए लोगों पर इलज़ाम लगाएगा जब अल्लाह खुद उन्हें रास्तबाज करार देता है? <sup>34</sup> कौन हमें मुजरिम ठहराएगा जब मसीह ईसा ने हमारे लिए अपनी जान दी? बल्कि हमारी खातिर इससे भी ज़्यादा हुआ। उसे जिंदा किया गया और वह अल्लाह के दत्ते हाथ बैठ गया, जहाँ वह हमारी शफ़ाअत करता है। <sup>35</sup> गरज़ कौन हमें मसीह की मुहब्बत से जुदा करेगा? क्या कोई मुसीबत, तंगी, इज़ारसानी, काल,

नंगापन, खतरा या तलवार? 36 जैसे कलामे-मुकद्दस में लिखा है, “तेरी खातिर हमें दिन-भर मौत का सामना करना पड़ता है, लोग हमें जबह होनेवाली भेड़ों के बराबर समझते हैं।” 37 कोई बात नहीं, क्योंकि मसीह हमारे साथ है और हमसे मुहब्बत रखता है। उसके वसीले से हम इन सब खतरों के रूबरू ज़बरदस्त फ़तह पाते हैं। 38 क्योंकि मुझे यकीन है कि हमें उस की मुहब्बत से कोई चीज़ जुदा नहीं कर सकती : न मौत और न ज़िंदगी, न फ़रिश्ते और न हुक्मरान, न हाल और न मुस्तक़बिल, न ताकतें, 39 न नशेब और न फ़राज़, न कोई और मख़लूक हमें अल्लाह की उस मुहब्बत से जुदा कर सकेगी जो हमें हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा में हासिल है।

## 9

### अल्लाह और उस की कौम

1 मैं मसीह में सच कहता हूँ, झूट नहीं बोलता, और मेरा ज़मीर भी स्तुल-कुदूस में इसकी गवाही देता है 2 कि मैं दिल में अपने यहूदी हमवतनों के लिए शदीद ग़म और मुसलसल दर्द महसूस करता हूँ। 3 काश मेरे भाई और खुनी रिश्तेदार नजात पाएँ! इसके लिए मैं खुद मलऊन और मसीह से जुदा होने के लिए भी तैयार हूँ। 4 अल्लाह ने उन्हीं को जो इसराईली हैं अपने फ़रज़ंद बनने के लिए मुकर्रर किया था। उन्हीं पर उसने अपना जलाल ज़ाहिर किया, उन्हीं के साथ अपने अहद बाँधे और उन्हीं को शरीअत अता की। वही हकीकी इबादत और अल्लाह के वादों के हक़दार हैं, 5 वही इब्राहीम और याक़ूब की औलाद हैं और उन्हीं में से जिस्मानी लिहाज़ से मसीह आया। अल्लाह की तमज़ीदो-तारीफ़ अबद तक हो जो सब पर हुकूमत करता है! आमीन।

6 कहने का मतलब यह नहीं कि अल्लाह अपना वादा पूरा न कर सका। बात यह नहीं है बल्कि यह कि वह सब हकीकी इसराईली नहीं हैं जो इसराईली कौम से हैं। 7 और सब इब्राहीम की हकीकी औलाद नहीं हैं जो उस की नसल से हैं। क्योंकि अल्लाह ने कलामे-मुकद्दस में इब्राहीम से फ़रमाया, “तेरी नसल इसहाक ही से कायम रहेगी।” 8 चुनौचे लाज़िम नहीं कि इब्राहीम की तमाम फ़ितरती औलाद अल्लाह के फ़रज़ंद हों बल्कि सिर्फ़ वही इब्राहीम की हकीकी औलाद समझे जाते हैं जो अल्लाह के वादे के मुताबिक़ उसके फ़रज़ंद बन गए हैं। 9 और वादा यह था, “मुकर्ररा वक्त पर मैं वापस आऊंगा तो सारा के बेटा होगा।”

10 लेकिन न सिर्फ़ सारा के साथ ऐसा हुआ बल्कि इसहाक की बीवी रिबका के साथ भी। एक ही मर्द यानी हमारे बाप इसहाक से उसके जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए। 11 लेकिन बच्चे अभी पैदा नहीं हुए थे न उन्होंने कोई नेक या बुरा काम किया था कि माँ को अल्लाह से एक पैगाम मिला। इस पैगाम से ज़ाहिर होता है कि अल्लाह लोगों को अपने इरादे के मुताबिक़ चुन लेता है। 12 और उसका यह चुनाव उनके नेक आमाल पर मबनी नहीं होता बल्कि उसके बुलावे पर। पैगाम यह था, “बड़ा छोटे की ख़िदमत करेगा।” 13 यह भी कलामे-मुकद्दस में लिखा है, “याक़ूब मुझे प्यारा था, जबकि एसी से मैं मुतनफ़िफ़र रहा।”

14 क्या इसका मतलब यह है कि अल्लाह बेइन्साफ़ है? हरगिज़ नहीं! 15 क्योंकि उसने मूसा से कहा, “मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ उस पर मेहरबान होता हूँ और जिस पर रहम करना चाहूँ उस पर रहम करता हूँ।” 16 चुनौचे सब कुछ अल्लाह के रहम पर ही मबनी है। इसमें इनसान की मरज़ी या कोशिश का कोई दरखल नहीं। 17 यों अल्लाह अपने कलाम में मिसर के बादशाह फ़िरोन से मुख़ातिब होकर फ़रमाता है, “मैंने तुझे इसलिए बरपा किया है कि तुझमें अपनी कुदरत का इज़हार करूँ और यों तमाम दुनिया में मेरे नाम का प्रचार किया जाए।” 18 गरज़, यह अल्लाह ही की मरज़ी है कि वह किस पर रहम करे और किस को सख़्त कर दे।

### अल्लाह का ग़ज़ब और रहम

19 शायद कोई कहे, “आगर यह बात है तो फिर अल्लाह किस तरह हम पर इलज़ाम लगा सकता है जब हमसे ग़लतियाँ होती हैं? हम तो उस की मरज़ी का मुकाबला नहीं कर सकते।” 20 यह न कहें। आप इनसान होते हुए कौन हैं कि अल्लाह के साथ बहस-मुबाहसा करें? क्या जिसको तश्कील दिया गया है वह तश्कील देनेवाले से कहता है, “तूने मुझे इस तरह क्यों बना दिया?” 21 क्या कुम्हार का हक़ नहीं है कि गारे के एक ही लौड़े से मुख़्तलिफ़ किस्म के बरतन बनाए, कुछ बाइज़्जत इस्तेमाल के लिए और कुछ ज़िल्लतआमेज़ इस्तेमाल के लिए? 22 यह बात अल्लाह पर भी सादिक़ आती है। वो ग़व अर्पना ग़ज़ब नाज़िल करना और अपनी कुदरत ज़ाहिर करना चाहता था, लेकिन उसने बड़े सब्रो-तहम्मूल से वह बरतन बरदाश्त किए जिन पर उसका ग़ज़ब आना है और जो हलाकत के लिए तैयार किए गए हैं। 23 उसने यह इसलिए किया ताकि अपना जलाल कसरत से उन बरतनों पर ज़ाहिर करे जिन पर उसका फ़ज़ल है और जो पहले से जलाल पाने के लिए तैयार किए गए हैं। 24 और हम उनमें से हैं जिनको उसने चुन लिया है, न सिर्फ़ यहूदियों में से बल्कि ग़ैरयहूदियों में से भी। 25 यों वह ग़ैरयहूदियों के नाते से होसेअ की किताब में फ़रमाता है,

“मैं उसे ‘मेरी कौम’ कहूँगा  
जो मेरी कौम न थी,  
और उसे ‘मेरी प्यारी’ कहूँगा  
जो मुझे प्यारी न थी।”

26 और “जहाँ उन्हें बताया गया कि ‘तुम मेरी कौम नहीं’  
वहाँ वह ‘ज़िंदा खुदा के फ़रज़ंद’ कहलाएँगे।”

27 और यसायाह नबी इसराईल के बारे में पुकारता है, “गो इसराईली साहिल पर की रेत जैसे बेशमार क्यों न हों तो भी सिर्फ़ एक बच्चे हुए हिस्से को नजात मिलेगी। 28 क्योंकि रब अपना फ़रमान मुकम्मल तौर पर और तेज़ी से दुनिया में पूरा करेगा।” 29 यसायाह ने यह बात एक और पेशगोई में भी की, “अगर रब्बुली-अफ़वाज हमारी कुछ औलाद ज़िंदा न छोड़ता तो हम सद्म की तरह मिट जाते, हमारा अम्रूा जैसा सत्यानास हो जाता।”

### इसराईल के लिए पौलस की दुआ

30 इससे हम क्या कहना चाहते हैं? यह कि गो गैरयहूदी रास्तबाज़ी की तलाश में न थे तो भी उन्हें रास्तबाज़ी हासिल हुई, ऐसी रास्तबाज़ी जो ईमान से पैदा हुई। 31 इसके बरअक्स इसराईलियों को यह हासिल न हुई, हालाँकि वह ऐसी शरीअत की तलाश में रहे जो उन्हें रास्तबाज़ ठहराए। 32 इसकी क्या वजह थी? यह कि वह अपनी तमाम कोशिशों में ईमान पर इनहिंसा नहीं करते थे बल्कि अपने नेक आमाल पर। उन्होंने राह में पड़े पत्थर से ठोकर खाई। 33 यह बात कलामे-मुक़द्दस में लिखी भी है,

“देखो मैं सिय्यून में एक पत्थर रख देता हूँ  
जो ठोकर का बाइस बनेगा,  
एक चटान जो ठेस लगने का सबब होगी।  
लेकिन जो उस पर ईमान लाएगा  
उसे शरमिंदा नहीं किया जाएगा।”

## 10

1 भाइयो, मेरी दिली आरजू और मेरी अल्लाह से दुआ यह है कि इसराईलियों को नजात मिले। 2 मैं इसकी तसदीक कर सकता हूँ कि वह अल्लाह की ग़ैरत रखते हैं। लेकिन इस ग़ैरत के पीछे स्थानी समझ नहीं होती। 3 वह उस रास्तबाज़ी से नावाक़िफ़ रहे हैं जो अल्लाह की तरफ़ से है। इसकी बजाए वह अपनी जाती रास्तबाज़ी कायम करने की कोशिश करते रहे हैं। यों उन्होंने अपने आपको अल्लाह की रास्तबाज़ी के ताबे नहीं किया। 4 क्योंकि मसीह में शरीअत का मक़सद पूरा हो गया, हाँ वह अंजाम तक पहुँच गई है। चुनोंचे जो भी मसीह पर ईमान रखता है वही रास्तबाज़ ठहरता है।

### सबके लिए रास्तबाज़ी

5 मूसा ने उस रास्तबाज़ी के बारे में लिखा जो शरीअत से हासिल होती है, “जो शख्स यों करेगा वह जीता रहेगा।” 6 लेकिन जो रास्तबाज़ी ईमान से हासिल होती है वह कहती है, “अपने दिल में न कहना कि ‘कौन आसमान पर चढ़ेगा?’ (ताकि मसीह को नीचे ले आए)। 7 यह भी न कहना कि ‘कौन पाताल में उतरेगा?’ (ताकि मसीह को मुरदों में से वापस ले आए)।” 8 तो फिर क्या करना चाहिए? ईमान की रास्तबाज़ी फ़रमाती है, “यह कलाम तेरे करीब बल्कि तेरे मुँह और दिल में मौजूद है।” कलाम से मुराद ईमान का वह पैग़ाम है जो हम सुनाते हैं। 9 यानी यह कि अगर तू अपने मुँह से इकरार करे कि ईसा खुदावंद है और दिल से ईमान लाए कि अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया तो तुझे नजात मिलेगी। 10 क्योंकि जब हम दिल से ईमान लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ करार देता है, और जब हम अपने मुँह से इकरार करते हैं तो हमें नजात मिलती है। 11 यों कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “जो भी उस पर ईमान लाए उसे शरमिंदा नहीं किया जाएगा।” 12 इसमें कोई फ़रक नहीं कि वह यहूदी हो या गैरयहूदी। क्योंकि सबका एक ही खुदावंद है, जो फ़ैयाज़ी से हर एक को देता है जो उसे पुकारता है। 13 क्योंकि “जो भी खुदावंद का नाम लेगा नजात पाएगा।”

14 लेकिन वह किस तरह उसे पुकार सकेंगे अगर वह उस पर कभी ईमान नहीं लाए? और वह किस तरह उस पर ईमान ला सकते हैं अगर उन्होंने कभी उसके बारे में सुना नहीं? और वह किस तरह उसके बारे में सुन सकते हैं अगर किसी ने उन्हें यह पैग़ाम सुनाया नहीं? 15 और सुनानेवाले किस तरह दूसरों के पास जाएँगे अगर उन्हें भेजा न गया? इसलिए कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “उनके कदम कितने प्यारे हैं जो खुशख़बरी सुनाते हैं।” 16 लेकिन सबने अल्लाह की यह खुशख़बरी कबूल नहीं

की। यों यसायाह नबी फरमाता है, “ऐ रब, कौन हमारे पैगाम पर ईमान लाया?” 17 गरज, ईमान पैगाम सुनने से पैदा होता है, यानी मसीह का कलाम सुनने से।

18 तो फिर सवाल यह है कि क्या इसराईलियों ने यह पैगाम नहीं सुना? उन्होंने इसे ज़रूर सुना। कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

“उनकी आवाज़ निकलकर पूरी दुनिया में सुनाई दी,  
उनके अलफ़ाज़ दुनिया की इतहा तक पहुँच गए।”

19 तो क्या इसराईल को इस बात की समझ न आई? नहीं, उसे ज़रूर समझ आई। पहले मूसा इसका जवाब देता है,

“मैं खुद ही तुम्हें ग़ैरत दिलाऊँगा,  
एक ऐसी कौम के ज़रीए जो हकीकत में कौम नहीं है।  
एक नादान कौम के ज़रीए मैं तुम्हें गुस्सा दिलाऊँगा।”

20 और यसायाह नबी यह कहने की ज़रूरत करता है,  
“जो मुझे तलाश नहीं करते थे  
उन्हें मैंने मुझे पाने का मौका दिया,  
जो मेरे बारे में दरियाफ़्त नहीं करते थे  
उन पर मैं ज़ाहिर हुआ।”

21 लेकिन इसराईल के बारे में वह फरमाता है,  
“दिन-भर मैंने अपने हाथ फैलाए रखे  
ताकि एक नाफरमान और सरकश कौम का इस्तक़बाल करूँ।”

## 11

### इसराईल पर अल्लाह का रहम

1 तो क्या इसका यह मतलब है कि अल्लाह ने अपनी कौम को रद्द किया है? हरगिज़ नहीं! मैं तो खुद इसराईली हूँ। इब्राहीम मेरा भी बाप है, और मैं बिनयमीन के कबीले का हूँ। 2 अल्लाह ने अपनी कौम को पहले से चुन लिया था। वह किस तरह उसे रद्द करेगा! क्या आपको मालूम नहीं कि कलामे-मुक़द्दस में इलियास नबी के बारे में क्या लिखा है? इलियास ने अल्लाह के सामने इसराईली कौम की शिकायत करके कहा, 3 “ऐ रब, उन्होंने तेरे नबियों को कत्ल किया और तेरी कुरबानागाहों को गिरा दिया है। मैं अकेला ही बचा हूँ, और वह मुझे भी मार डालने के दरपे हैं।” 4 इस पर अल्लाह ने उसे क्या जवाब दिया? “मैंने अपने लिए 7,000 मर्दों को बचा लिया है जिन्होंने अपने घुटने बाल देवता के सामने नहीं टेके।” 5 आज भी यही हालत है। इसराईल का एक छोटा हिस्सा बच गया है जिसे अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से चुन लिया है। 6 और चूँकि यह अल्लाह के फ़ज़ल से हुआ है इसलिए यह उनकी अपनी कोशिशों से नहीं हुआ। वरना फ़ज़ल फ़ज़ल ही न रहता।

7 गरज, जिस चीज़ की तलाश में इसराईल रहा वह पूरी कौम को हासिल नहीं हुई बल्कि सिर्फ़ उसके एक चुने हुए हिस्से को। बाकी सबको फ़ज़ल के बारे में बेहिस कर दिया गया, 8 जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

“आज तक अल्लाह ने उन्हें ऐसी हालत में रखा है

कि उनकी रूह मदहोश है,  
उनकी आँखें देख नहीं सकतीं  
और उनके कान सुन नहीं सकते।”

9 और दाऊद फरमाता है,  
“उनकी मेज़ उनके लिए फंदा और जाल बन जाए,  
इससे वह ठोकर खाकर अपने ग़लत कामों का मुआवज़ा पाएँ।

10 उनकी आँखें तारीक हो जाएँ ताकि वह देख न सकें,  
उनकी कमर हमेशा झुकी रहे।”

11 तो क्या अल्लाह की कौम ठोकर खाकर यों गिर गई कि कभी बहाल नहीं होगी? हरगिज़ नहीं! उस की खताओं की वजह से अल्लाह ने ग़ैरयहूदियों को नजात पाने का मौका दिया ताकि इसराईली ग़ैरत खाएँ। 12 यों यहूदियों की खताएँ दुनिया के लिए भरपूर बरकत का बाइस बन गईं, और उनका नुक़सान ग़ैरयहूदियों के लिए भरपूर बरकत का बाइस बन गया। तो फिर यह बरकत कितनी और ज़्यादा होगी जब यहूदियों की पूरी तादाद इसमें शामिल हो जाएगी!



### गैरयहूदियों की नजात

13 आपको जो गैरयहूदी हैं मैं यह बताता हूँ, अल्लाह ने मुझे गैरयहूदियों के लिए रसूल बनाया है, इसलिए मैं अपनी इस खिदमत पर जोर देता हूँ। 14 क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरी कौम के लोग यह देखकर गैरत खाएँ और उनमें से कुछ बच जाएँ। 15 जब उन्हें रद्द किया गया तो बाकी दुनिया की अल्लाह के साथ सुलह हो गई। तो फिर क्या होगा जब उन्हें दुबारा कबूल किया जाएगा? यह मुर्दों में से जी उठने के बराबर होगा।

16 जब आप फसल के पहले आटे से रोटी बनाकर अल्लाह के लिए मखसूसो-मुकद्दस करते हैं तो बाकी सारा आटा भी मखसूसो-मुकद्दस है। और जब दरख्त की जड़ें मुकद्दस हैं तो उस की शाखें भी मुकद्दस हैं। 17 जैतून के दरख्त की कुछ शाखें तोड़ दी गई हैं और उनकी जगह जंगली जैतून के दरख्त की एक शाख पैवंद की गई है। आप गैरयहूदी इस जंगली शाख से मुताबिकत रखते हैं। जिस तरह यह दूसरे दरख्त की जड़ से रस और तकवियत पाती है उसी तरह आप भी यहूदी कौम की रूहानी जड़ से तकवियत पाते हैं। 18 चुनौचे आपका दूसरी शाखों के सामने शेखी मारने का हक नहीं। और अगर आप शेखी मारें तो यह खयाल करें कि आप जड़ को कायम नहीं रखते बल्कि जड़ आपको।

19 शायद आप इस पर एतराज करें, “हाँ, लेकिन दूसरी शाखें तोड़ी गईं ताकि मैं पैवंद किया जाऊँ।” 20 बेशक, लेकिन याद रखें, दूसरी शाखें इसलिए तोड़ी गईं कि वह ईमान नहीं रखती थी और आप इसलिए उनकी जगह लगे हैं कि आप ईमान रखते हैं। चुनौचे अपने आप पर फ़खर न करें बल्कि खौफ़ रखें। 21 अल्लाह ने असली शाखें बचने न दी। अगर आप इस तरह की हरकतें करें तो क्या वह आपको छोड़ देगा? 22 यहाँ हमें अल्लाह की मेहरबानी और सरखती नज़र आती है—जो गिर गए हैं उनके सिलसिले में उस की सरखती, लेकिन आपके सिलसिले में उस की मेहरबानी। और यह मेहरबानी रहेगी जब तक आप उस की मेहरबानी से लिपटे रहेंगे। वरना आपको भी दरख्त से काट डाला जाएगा। 23 और अगर यहूदी अपने कुफ़र से बाज़ आएँ तो उनकी पैवंदकारी दुबारा दरख्त के साथ की जाएगी, क्योंकि अल्लाह ऐसा करने पर कादिर है। 24 आखिर आप खुद कुदरती तौर पर जैतून के जंगली दरख्त की शाख थे जिसे अल्लाह ने तोड़कर कुदरती कवानीन के खिलाफ़ जैतून के असल दरख्त पर लगाया। तो फिर वह कितनी ज्यादा आसानी से यहूदियों की तोड़ी गईं शाखें दुबारा उनके अपने दरख्त में लगा देगा!

### अल्लाह का रहम सब पर

25 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप एक भेद से वाकिफ़ हो जाएँ, क्योंकि यह आपको अपने आपको दाना समझने से बाज़ रखेगा। भेद यह है कि इसराईल का एक हिस्सा अल्लाह के फ़जल के बारे में बेहिस हो गया है, और उस की यह हालत उस वक़्त तक रहेगी जब तक गैरयहूदियों की पूरी तादाद अल्लाह की बादशाही में दाखिल न हो जाए। 26 फिर पूरा इसराईल नजात पाएगा। यह कलामे-मुकद्दस में भी लिखा है,

“छुड़ानेवाला सिध्दून से आएगा।

वह बेदीनी को याक़ूब से हटा देगा।

27 और यह मेरा उनके साथ अहद होगा

जब मैं उनके गुनाहों को उनसे दूर करूँगा।”

28 चूँकि यहूदी अल्लाह की खुशख़बरी कबूल नहीं करते इसलिए वह अल्लाह के दुश्मन हैं, और यह बात आपके लिए फ़ायदे का बाइस बन गई है। तो भी वह अल्लाह को प्यारे हैं, इसलिए कि उसने उनके बापदादा इज़ाहीम, इसहाक और याक़ूब को चुन लिया था। 29 क्योंकि जब भी अल्लाह किसी को अपनी नेमतों से नवाज़कर बुलाता है तो उस की यह नेमतें और बुलावे कभी नहीं मिटने की। 30 माज़ी में गैरयहूदी अल्लाह के ताबे नहीं थे, लेकिन अब अल्लाह ने आप पर यहूदियों की नाफरमानी की वजह से रहम किया है। 31 अब इसके उलट है कि यहूदी खुद आप पर किए गए रहम की वजह से अल्लाह के ताबे नहीं हैं, और लाज़िम है कि अल्लाह उन पर भी रहम करे। 32 क्योंकि उसने सबको नाफरमानी के कैदी बना दिया है ताकि सब पर रहम करे।

### अल्लाह की तमज़ीद

33 वाह! अल्लाह की दौलत, हिकमत और इल्म क्या ही गहरा है। कौन उसके फैसलों की तह तक पहुँच सकता है! कौन उस की राहों का खोज लगा सकता है! 34 कलामे-मुकद्दस यों फ़रमाता है,

“किसने रब की सोच को जाना?

या कौन इतना इल्म रखता है

कि वह उसे मशवरा दे?

35 क्या किसी ने कभी उसे कुछ दिया

कि उसे इसका मुआवजा देना पड़े?"

36 क्योंकि सब कुछ उसी ने पैदा किया है, सब कुछ उसी के जरीए और उसी के जलाल के लिए कायम है। उसी की तमजीद अबद तक होती रहे! आमीन।

## 12

पूरी जिंदगी अल्लाह की खिदमत में

1 भाइयो, अल्लाह ने आप पर कितना रहम किया है! अब ज़रूरी है कि आप अपने बदनों को अल्लाह के लिए मखसूस करें, कि वह एक ऐसी जिंदा और मुकद्दस कुरबानी बन जाएँ जो उसे पसंद आए। ऐसा करने से आप उस की माकूल इबादत करेंगे। 2 इस दुनिया के सॉंचे में न ढल जाएँ बल्कि अल्लाह को आपकी सोच की तजदीद करने दें ताकि आप वह शक्लो-सूरत अपना सकें जो उसे पसंद है। फिर आप अल्लाह की मरज़ी को पहचान सकेंगे, वह कुछ जो अच्छा, पसंदीदा और कामिल है।

3 उस रहम की बिना पर जो अल्लाह ने मुझ पर किया मैं आपमें से हर एक को हिदायत देता हूँ कि अपनी हकीकी हैसियत को जानकर अपने आपको इससे ज्यादा न समझें। क्योंकि जिस पैमाने से अल्लाह ने हर एक को ईमान बख्शा है उसी के मुताबिक वह समझदारी से अपनी हकीकी हैसियत को जान ले। 4 हमारे एक ही जिस्म में बहुत-से आजा हैं, और हर एक अजू का फरक फरक काम होता है। 5 इसी तरह गो हम बहुत हैं, लेकिन मसीह में एक ही बदन हैं, जिसमें हर अजू दूसरों के साथ जुड़ा हुआ है। 6 अल्लाह ने अपने फ़जल से हर एक को मुख़लिफ़ नेमतों से नवाजा है। अगर आपकी नेमत नबूव्वत करना है तो अपने ईमान के मुताबिक नबूव्वत करें। 7 अगर आपकी नेमत खिदमत करना है तो खिदमत करें। अगर आपकी नेमत तालीम देना है तो तालीम दें। 8 अगर आपकी नेमत हौसलाअफ़ज़ाई करना है तो हौसलाअफ़ज़ाई करें। अगर आपकी नेमत दूसरों की ज़रूरियात पूरी करना है तो ख़ुलूसदिली से यही करें। अगर आपकी नेमत राहनुमाई करना है तो सरगर्मी से राहनुमाई करें। अगर आपकी नेमत रहम करना है तो ख़ुशी से रहम करें।

9 आपकी मुहब्बत महज़ दिखावे की न हो। जो कुछ बुरा है उससे नफ़रत करें और जो कुछ अच्छा है उसके साथ लिपटे रहें। 10 आपकी एक दूसरे के लिए बरादराना मुहब्बत सरगर्म हो। एक दूसरे की इज़्जत करने में आप ख़ुद पहला कदम उठाएँ। 11 आपका जोश ढीला न पड़ जाए बल्कि रूहानी सरगर्मी से ख़ुदावंद की खिदमत करें। 12 उम्मीद में ख़ुश, मुसीबत में साबितकदम और दुआ में लगे रहें। 13 जब मुकद्दसीन ज़रूरतमंद हैं तो उनकी मदद करने में शरीक हों। मेहमान-नवाज़ी में लगे रहें।

14 जो आपको ईज़ा पहुँचाएँ उनको बरकत दें। उन पर लानत मत करें बल्कि बरकत चाहें। 15 ख़ुशी मनानेवालों के साथ ख़ुशी मनाएँ और रोनेवालों के साथ रोएँ। 16 एक दूसरे के साथ अच्छे ताल्लुकात रखें। ऊँची सोच न रखें बल्कि दबे हुआँ से रिफ़ाक़त रखें। अपने आपको दाना मत समझें।

17 अगर कोई आपसे बुरा सुलूक करे तो बदले में उससे बुरा सुलूक न करना। ध्यान रखें कि जो कुछ सबकी नज़र में अच्छा है वही अमल में लाएँ। 18 अपनी तरफ से पूरी कोशिश करें कि जहाँ तक मुमकिन हो सबके साथ मेल-मिलाप रखें। 19 अज़ीजो, इंतक़ाम मत लें बल्कि अल्लाह के ग़ज़ब को बदला लेने का मौक़ा दें। क्योंकि कलामे-मुकद्दस में लिखा है, "रब फ़रमाता है, इंतक़ाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।" 20 इसके बजाएँ "अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे खाना खिला, अगर प्यासा हो तो पानी पिला। क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सर पर जलते हुए कोयलों का ढेर लगाएगा।" 21 अपने पर बुराई को गालिब न आने दें बल्कि भलाई से आप बुराई पर गालिब आएँ।

## 13

रिआया के फ़रायज़

1 हर शख्स इख़्तियार रखनेवाले हुक्मरानों के ताबे रहे, क्योंकि तमाम इख़्तियार अल्लाह की तरफ से है। जो इख़्तियार रखते हैं उन्हें अल्लाह की तरफ से मुक़र्र किया गया है। 2 चुनौचे जो हुक्मरान की मुख़ालफ़त करता है वह अल्लाह के फ़रमान की मुख़ालफ़त करता और यों अपने आप पर अल्लाह की अदालत लाता है। 3 क्योंकि हुक्मरान उनके लिए ख़ौफ़ का बाइस नहीं होते जो सही काम करते हैं बल्कि उनके लिए जो ग़लत काम करते हैं। क्या आप हुक्मरान से ख़ौफ़ खाए बौर जिंदगी गुज़ारना चाहते हैं? तो फिर वह कुछ करें जो अच्छा है तो वह आपको शाबाश देगा। 4 क्योंकि वह अल्लाह का खादिम है जो आपकी बेहतरी के लिए खिदमत करता है। लेकिन अगर आप ग़लत काम करें तो डरें, क्योंकि वह अपनी तलवार को ख़ाहमख़ाह थामे नहीं रखता। वह अल्लाह का खादिम है और उसका ग़ज़ब ग़लत काम करनेवाले पर नाज़िल

होता है। <sup>5</sup> इसलिए लाजिम है कि आप हुकूमत के ताबे रहें, न सिर्फ सज़ा से बचने के लिए बल्कि इसलिए भी कि आपके ज़मीर पर दाग न लगे।

<sup>6</sup> यही वजह है कि आप टैक्स अदा करते हैं, क्योंकि सरकारी मुलाज़िम अल्लाह के खादिम हैं जो इस ख़िदमत को संरजाम देने में लगे रहते हैं। <sup>7</sup> चुनौचे हर एक को वह कुछ दें जो उसका हक है, टैक्स लेनेवाले को टैक्स और कस्टम झूटी लेनेवाले को कस्टम झूटी। जिसका ख़ौफ़ रखना आप पर फ़र्ज़ है उसका ख़ौफ़ मानें और जिसका एहताराम करना आप पर फ़र्ज़ है उसका एहताराम करें।

### एक दूसरे के लिए फ़रायज़

<sup>8</sup> किसी के भी कर्ज़दार न रहें। सिर्फ़ एक कर्ज़ है जो आप कभी नहीं उतार सकते, एक दूसरे से मुहब्बत रखने का कर्ज़। यह करते रहें क्योंकि जो दूसरों से मुहब्बत रखता है उसने शरीअत के तमाम तकाज़े पूरे किए हैं। <sup>9</sup> मसलन शरीअत में लिखा है, “कल्ल न करना, ज़िना न करना, चोरी न करना, लालच न करना।” और दीगर जितने अहकाम हैं इस एक ही हुकम में समाए हुए हैं कि “अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।” <sup>10</sup> जो किसी से मुहब्बत रखता है वह उससे गलत सुलूक नहीं करता। यों मुहब्बत शरीअत के तमाम तकाज़े पूरे करती है।

<sup>11</sup> ऐसा करना लाजिम है, क्योंकि आप खुद इस वक़्त की अहमियत को जानते हैं कि नीद से जाग उठने की घड़ी आ चुकी है। क्योंकि जब हम इमान लाए थे तो हमारी नजात इतनी करीब नहीं थी जितनी कि अब है। <sup>12</sup> रात ढलनेवाली है और दिन निकलनेवाला है। इसलिए आएँ, हम तारीकी के काम गंदे कपड़ों की तरह उतारकर नूर के हथियार बाँध लें। <sup>13</sup> हम शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ारें, ऐसे लोगों की तरह जो दिन की रौशनी में चलते हैं। इसलिए लाजिम है कि हम इन चीज़ों से बाज़ रहें : बदमस्तों की रंगरलियों और शराबनोशी से, ज़िनाकारी और ऐयाशी से, और झगड़े और हसद से। <sup>14</sup> इसके बजाए खुदावंद ईसा मसीह को पहन लें और अपनी पुरानी फ़ितरत की परवरिश यों न करें कि गुनाहआलदा खाहिशात बेदार हो जाएँ।

## 14

### एक दूसरे को मुजरिम मत ठहराना

<sup>1</sup> जिसका इमान कमज़ोर है उसे कबूल करें, और उसके साथ बहस-मुबाहसा न करें। <sup>2</sup> एक का इमान तो उसे हर चीज़ खाने की इजाज़त देता है जबकि कमज़ोर इमान रखनेवाला सिर्फ़ सब्जियाँ खाता है। <sup>3</sup> जो सब कुछ खाता है वह उसे हकीर न जाने जो यह नहीं कर सकता। और जो यह नहीं कर सकता वह उसे मुजरिम न ठहराए जो सब कुछ खाता है, क्योंकि अल्लाह ने उसे कबूल किया है। <sup>4</sup> आप कौन हैं कि किसी और के गुलाम का फ़ैसला करें? उसका अपना मालिक फ़ैसला करेगा कि वह खड़ा रहे या गिर जाए। और वह ज़रूर खड़ा रहेगा, क्योंकि खुदावंद उसे कायम रखने पर कादिर है।

<sup>5</sup> कुछ लोग एक दिन को दूसरे दिनों की निसबत ज्यादा अहम करार देते हैं जबकि दूसरे तमाम दिनों की अहमियत बराबर समझते हैं। आप जो भी खयाल रखें, हर एक उसे पूरे यक़ीन के साथ रखे। <sup>6</sup> जो एक दिन को ख़ास करार देता है वह इससे खुदावंद की ताज़ीम करना चाहता है। इसी तरह जो सब कुछ खाता है वह इससे खुदावंद को जलाल देना चाहता है। यह इससे जाहिर होता है कि वह इसके लिए खुदा का शुक्र करता है। लेकिन जो कुछ खानों से परहेज़ करता है वह भी खुदा का शुक्र करके इससे उस की ताज़ीम करना चाहता है। <sup>7</sup> बात यह है कि हममें से कोई नहीं जो सिर्फ़ अपने वास्ते ज़िंदगी गुज़ारता है और कोई नहीं जो सिर्फ़ अपने वास्ते मरता है। <sup>8</sup> अगर हम ज़िंदा हैं तो इसलिए कि खुदावंद को जलाल दें, और अगर हम मरें तो इसलिए कि हम खुदावंद को जलाल दें। गरज़ हम खुदावंद ही के हैं, खाह ज़िंदा हों या मुरदा। <sup>9</sup> क्योंकि मसीह इसी मक़सद के लिए मूआ और जी उठा कि वह मुरदों और ज़िंदों दोनों का मालिक हो। <sup>10</sup> तो फिर आप जो सिर्फ़ सब्ज़ी खाते हैं अपने भाई को मुजरिम क्यों ठहराते हैं? और आप जो सब कुछ खाते हैं अपने भाई को हकीर क्यों जानते हैं? याद रखें कि एक दिन हम सब अल्लाह के तख़्ते-अदालत के सामने खड़े होंगे। <sup>11</sup> कलामे-मुक़द्दस में यही लिखा है,

रब फ़रमाता है, “मेरी हयात की कसम,

हर घुटना मेरे सामने झुकेगा

और हर ज़बान अल्लाह की तमज़ीद करेगी।”

<sup>12</sup> हाँ, हममें से हर एक को अल्लाह के सामने अपनी ज़िंदगी का जवाब देना पड़ेगा।

### दूसरों के लिए गिरने का बाइस न बनना

<sup>13</sup> चुनौचे आएँ, हम एक दूसरे को मुजरिम न ठहराएँ। पूरे अज़म के साथ इसका खयाल रखें कि आप अपने भाई के लिए ठोकर खाने या गुनाह में गिरने का बाइस न बनें। <sup>14</sup> मुझे खुदावंद मसीह में इल्म और यक़ीन है कि कोई भी खाना बजाते-खुद नापाक नहीं है। लेकिन जो किसी खाने को नापाक समझता है उसके लिए वह खाना नापाक ही है। <sup>15</sup> अगर आप अपने

भाई को अपने किसी खाने के बाइस परेशान कर रहे हैं तो आप मुहब्बत की रूह में जिंदगी नहीं गुज़ार रहे। अपने भाई को अपने खाने से हलाक न करें। याद रखें कि मसीह ने उसके लिए अपनी जान दी है। 16 ऐसा न हो कि लोग उस अच्छी चीज़ पर कुफ़र बकें जो आपको मिल गई है। 17 क्योंकि अल्लाह की बादशाही खाने-पीने की चीज़ों पर कायम नहीं है बल्कि रास्तबाज़ी, सुलह-सलामती और रूहल-कुदूस में खुशी पर। 18 जो यों मसीह की खिदमत करता है वह अल्लाह को पसंद और इनसानों को मंज़ूर है।

19 चुनौचे आएँ, हम पूरी जिद्दो-जहद के साथ वह कुछ करने की कोशिश करें जो सुलह-सलामती और एक दूसरे की रूहानी तामीरो-तरक्की का बाइस है। 20 अल्लाह का काम किसी खाने की खातिर बरबाद न करें। हर खाना पाक है, लेकिन अगर आप कुछ खाते हैं जिससे दूसरे को ठेस लगे तो यह गलत है। 21 बेहतर यह है कि न आप गोशत खाएँ, न मै पिएँ और न कोई और कदम उठाएँ जिससे आपका भाई ठोकर खाए। 22 जो भी ईमान आप इस नाते से रखते हैं वह आप और अल्लाह तक महदद रहे। मुबारक है वह जो किसी चीज़ को जायज़ करार देकर अपने आपको मुजरिम नहीं ठहराता। 23 लेकिन जो शक करते हुए कोई खाना खाता है उसे मुजरिम ठहराया जाता है, क्योंकि उसका यह अमल ईमान पर मबनी नहीं है। और जो भी अमल ईमान पर मबनी नहीं होता वह गुनाह है।

## 15

### बुर्दबारी

1 हम ताक़तवरों का फ़र्ज़ है कि कमज़ोरों की कमज़ोरियाँ बरदाश्त करें। हम सिर्फ़ अपने आपको खुश करने की खातिर जिंदगी न गुज़ारें 2 बल्कि हर एक अपने पड़ोसी को उस की बेहतरी और रूहानी तामीरो-तरक्की के लिए खुश करे। 3 क्योंकि मसीह ने भी खुद को खुश रखने के लिए जिंदगी नहीं गुज़ारी। कलामे-मुक़द्दस में उसके बारे में यही लिखा है, “जो तुझे गालियाँ देते हैं उनकी गालियाँ मुझ पर आ गई हैं।” 4 यह सब कुछ हमें हमारी नसीहत के लिए लिखा गया ताकि हम साबितकदमी और कलामे-मुक़द्दस की हौसलाअफ़जा बातों से उम्मीद पाएँ। 5 अब साबितकदमी और हौसला देनेवाला खुदा आपको तौफ़ीक़ दे कि आप मसीह ईसा का नमूना अपनाकर यगांगत की रूह में एक दूसरे के साथ जिंदगी गुज़ारें। 6 तब ही आप मिलकर एक ही आवाज़ के साथ खुदा, हमारे खुदावंद ईसा मसीह के बाप को जलाल दे सकेंगे।

### गैरयहूदियों के लिए खुशख़बरी

7 चुनौचे जिस तरह मसीह ने आपको कबूल किया है उसी तरह एक दूसरे को भी कबूल करें ताकि अल्लाह को जलाल मिले। 8 याद रखें कि मसीह अल्लाह की सदाक़त का इज़हार करके यहूदियों का खादिम बना ताकि उन वादों की तसदीक़ करे जो इब्नाहीम, इसहाक़ और याक़ूब से किए गए थे। 9 वह इसलिए भी खादिम बना कि गैरयहूदी अल्लाह को उस रहम के लिए जलाल दें जो उसने उन पर किया है। कलामे-मुक़द्दस में यही लिखा है,

“इसलिए मैं अक़वाम में तेरी हम्दो-सना करूँगा,

तेरे नाम की तारीफ़ में गीत गाऊँगा।”

10 यह भी लिखा है,

“ऐ दीगर कौमो, उस की उम्मत के साथ खुशी मनाओ!”

11 फिर लिखा है,

“ऐ तमाम अक़वाम, रब की तमज़ीद करो!

ऐ तमाम उम्मतो, उस की सताइश करो!”

12 और यसायाह नबी यह फ़रमाता है,

“यस्सी की जड़ से एक कौंपल फूट निकलेगी,

एक ऐसा आदमी उठेगा

जो कौमों पर हुकूमत करेगा।

गैरयहूदी उस पर आस रखेंगे।”

13 उम्मीद का खुदा आपको ईमान रखने के बाइस हर खुशी और सलामती से मामूर करे ताकि रूहल-कुदूस की कुदरत से आपकी उम्मीद बढ़कर दिल से छलक जाए।

### दिलेरी से लिखने की वजह

14 मेरे भाइयो, मुझे पूरा यकीन है कि आप खुद भलाई से मामूर हैं, कि आप हर तरह का इल्मो-इरफ़ान रखते हैं और एक दूसरे को नसीहत करने के क़ाबिल भी हैं। 15 तो भी मैंने याद दिलाने की खातिर आपको कई बातें लिखने की दिलेरी की है।

क्योंकि मैं अल्लाह के फ़ज़ल से 16 आप ग़ैरयहूदियों के लिए मसीह ईसा का खादिम हूँ। और मैं अल्लाह की खुशख़बरी फैलाने में बैतुल-मुक़द्दस के इमाम की-सी ख़िदमत संरंजाम देता हूँ ताकि आप एक ऐसी क़ुरबानी बन जाएँ जो अल्लाह को पसंद आए और जिसे रूहल-कु़दूस ने उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस किया हो। 17 चुनौचे मैं मसीह ईसा में अल्लाह के सामने अपनी ख़िदमत पर फ़ख़र कर सकता हूँ। 18 क्योंकि मैं सिर्फ़ उस काम के बारे में बात करने की ज़रत करूँगा जो मसीह ने मेरी मारिफ़त किया है और जिससे ग़ैरयहूदी अल्लाह के ताबे हो गए हैं। हाँ, मसीह ही ने यह काम कलाम और अमल से, 19 इलाही निशानों और मोज़िजों की कुव्वत से और अल्लाह के रूह की कुदरत से संरंजाम दिया है। यों मैंने यरूशालम से लेकर सब्बा इल्लुरिकुम तक सफ़र करते करते अल्लाह की खुशख़बरी फैलाने की ख़िदमत पूरी की है। 20 और मैं इसे अपनी इज़्जत का बाइस समझा कि खुशख़बरी वहाँ सुनाऊँ जहाँ मसीह के बारे में ख़बर नहीं पहुँची। क्योंकि मैं ऐसी बुनियाद पर तामीर नहीं करना चाहता था जो किसी और ने डाली थी। 21 कलामे-मुक़द्दस यही फ़रमाता है,

“जिन्हें उसके बारे में नहीं बताया गया

वह देखेंगे,

और जिन्होंने नहीं सुना

उन्हें समझ आएगी।”

### पौलस का रोम जाने का इरादा

22 यही वजह है कि मुझे इतनी दफ़ा आपके पास आने से रोका गया है। 23 लेकिन अब मेरी इन इलाक़ों में ख़िदमत पूरी हो चुकी है। और चूँकि मैं इतने सालों से आपके पास आने का आरज़ुमंद रहा हूँ 24 इसलिए अब यह खाहिश पूरी करने की उम्मीद रखता हूँ। क्योंकि मैंने स्पेन जाने का मनसूबा बनाया है। उम्मीद है कि रास्ते में आपसे मिलूँगा और आप आगे के सफ़र के लिए मेरी मदद कर सकेंगे। लेकिन पहले मैं कुछ देर के लिए आपकी रिफ़ाक़त से लुत्फ़अंदोज़ होना चाहता हूँ। 25 इस वक़्त मैं यरूशालम जा रहा हूँ ताकि वहाँ के मुक़द्दसीन की ख़िदमत करूँ। 26 क्योंकि मकिदुनिया और अरबिया की जमातों ने यरूशालम के उन मुक़द्दसीन के लिए हदिया जमा करने का फ़ैसला किया है जो ग़रीब हैं। 27 उन्होंने यह खुशी से किया और दरअसल यह उनका फ़र्ज़ भी है। ग़ैरयहूदी तो यहूदियों की रूहानी बरकतों में शरीक हुए हैं, इसलिए ग़ैरयहूदियों का फ़र्ज़ है कि वह यहूदियों को भी अपनी माली बरकतों में शरीक करके उनकी ख़िदमत करें। 28 चुनौचे अपना यह फ़र्ज़ अदा करने और मकामी भाइयों का यह सारा फल यरूशालम के ईमानदारों तक पहुँचाने के बाद मैं आपके पास से होता हुआ स्पेन जाऊँगा। 29 और मैं जानता हूँ कि जब मैं आपके पास आऊँगा तो मसीह की पूरी बरकत लेकर आऊँगा।

30 भाइयो, मैं हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह और रूहल-कु़दूस की मुहब्बत को याद दिलाकर आपसे मिन्नत करता हूँ कि आप मेरे लिए अल्लाह से दुआ करें और यों मेरी रूहानी जंग में शरीक हो जाएँ। 31 इसके लिए दुआ करें कि मैं सब्बा यहूदिया के ग़ैरईमानदारों से बचा रहूँ और कि मेरी यरूशालम में ख़िदमत वहाँ के मुक़द्दसीन को पसंद आए। 32 क्योंकि मैं चाहता हूँ कि जब मैं अल्लाह की मरज़ी से आपके पास आऊँगा तो मेरे दिल में खुशी हो और हम एक दूसरे की रिफ़ाक़त से तरो-ताज़ा हो जाएँ। 33 सलामती का ख़ुदा आप सबके साथ हो। आमीन।

## 16

### सलामो-दुआ

1 हमारी बहन फ़ीबे आपके पास आ रही है। वह किख़रिया शहर की जमात में खादिमा है। मैं उस की सिफ़ारिश करता हूँ 2 बल्कि ख़ुदावंद में अर्ज़ है कि आप उसका वैसे ही इस्तक़बाल करें जैसे कि मुक़द्दसीन को करना चाहिए। जिस मामले में भी उसे आपकी मदद की ज़रूरत हो उसमें उसका साथ दें, क्योंकि उसने बहुत लोगों की बल्कि मेरी भी मदद की है।

3 प्रिसकिल्ला और अकविला को मेरा सलाम देना जो मसीह ईसा में मेरे हमख़िदमत रहे हैं। 4 उन्होंने मेरे लिए अपनी जान पर खेला। न सिर्फ़ मैं बल्कि ग़ैरयहूदियों की जमातें उनकी एहसानमंद हैं। 5 उनके घर में जमा होनेवाली जमात को भी मेरा सलाम देना।

मेरे अज़ीज़ दोस्त इपिनेतुस को मेरा सलाम देना। वह सब्बा आसिया में मसीह का पहला पैरोकार यानी उस इलाके की फ़सल का पहला फल था। 6 मरियम को मेरा सलाम जिसने आपके लिए बड़ी मेहनत-मशक्कत की है। 7 अंदरूनीकुस और युनिया को मेरा सलाम। वह मेरे हमवतन हैं और जेल में मेरे साथ वक़्त गुज़ारा है। रसूलों में वह नुमार्यों हैसियत रखते हैं, और वह मुझसे पहले मसीह के पीछे हो लिए थे।

8 अपलियातुस को सलाम। वह ख़ुदावंद में मुझे अज़ीज़ है। 9 मसीह में हमारे हमख़िदमत उर्बानुस को सलाम और इसी तरह मेरे अज़ीज़ दोस्त इस्तख़ुस को भी। 10 अपेल्लिस को सलाम जिसकी मसीह के साथ वफ़ादारी को आजमाया गया है।

अरिस्तुब्लुस के घरवालों को सलाम। 11 मेरे हमवतन हेरोदियोन को सलाम और इसी तरह नरकिस्सुस के उन घरवालों को भी जो मसीह के पीछे हो लिए हैं।

12 त्रूफेना और त्रूफोसा को सलाम जो ख़ुदावंद की खिदमत में मेहनत-मशक़क़त करती हैं। मेरी अजीज़ बहन परसिस को सलाम जिसने ख़ुदावंद की खिदमत में बड़ी मेहनत-मशक़क़त की है। 13 हमारे ख़ुदावंद के चुने हुए भाई स्फ़ुस को सलाम और इसी तरह उस की माँ को भी जो मेरी माँ भी है। 14 असिंकरितुस, फ़लिगोन, हिरमेस, पतरोबास, हिरमास और उनके साथी भाइयों को मेरा सलाम देना। 15 फ़िल्लुगुस और यूलिया, नेरियूस और उस की बहन, उलिपास और उनके साथ तमाम मुक़द्दसीन को सलाम।

16 एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देकर सलाम करें। मसीह की तमाम जमातों की तरफ़ से आपको सलाम।

### आखिरी हिदायात

17 भाइयो, मैं आपको ताक़ीद करता हूँ कि आप उनसे ख़बरदार रहें जो पाटींबाजी और ठोकर का बाइस बनते हैं। यह उस तालीम के खिलाफ़ है जो आपको दी गई है। उनसे किनारा करें 18 क्योंकि ऐसे लोग हमारे ख़ुदावंद मसीह की खिदमत नहीं कर रहे बल्कि अपने पेट की। वह अपनी मीठी और चिकनी-चूपड़ी बातों से सादालौह लोगों के दिलों को धोका देते हैं। 19 आपकी फ़रमाँबरदारी की ख़बर सब तक पहुँच गई है। यह देखकर मैं आपके बारे में ख़ुश हूँ। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप अच्छा काम करने के लिहाज़ से दानिशमंद और बुरा काम करने के लिहाज़ से बेक़ुसूर हों। 20 सलामती का ख़ुदा जल्द ही इब्रलीस को आपके पाँवों तले कुचलवा डालेगा। हमारे ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल आपके साथ हो।

21 मेरा हमखिदमत तीमुथियुस आपको सलाम देता है, और इसी तरह मेरे हमवतन लकियुस, यासोन और सोसिपातस्स।

22 मैं, तिरतियुस इस ख़त का कातिब हूँ। मेरी तरफ़ से भी ख़ुदावंद में आपको सलाम।

23 ग्युस की तरफ़ से आपको सलाम। मैं और पूरी जमात उसके मेहमान रहे हैं। शहर के ख़ज़ानची इरास्तुस और हमारे भाई क्वारतुस भी आपको सलाम कहते हैं। 24 [हमारे ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल आप सबके साथ होता रहे।]

### आखिरी दुआ

25 अल्लाह की तमज़ीद हो, जो आपको मज़बूत करने पर कादिर है, क्योंकि ईसा मसीह के बारे में उस ख़ुशख़बरी से जो मैं सुनाता हूँ और उस भेद के इनकिशाफ़ से जो अज़ल से पोशीदा रहा वह आपको कायम रख सकता है। 26 अब इस भेद की हकीकत नबियों के सहीफों से जाहिर की गई है और अबदी ख़ुदा के हुक्म पर तमाम कौमों को मालूम हो गई है ताकि सब ईमान लाकर अल्लाह के ताबे हो जाएँ।

27 अल्लाह की तमज़ीद हो जो वाहिद दानिशमंद है। उसी का ईसा मसीह के वसीले से अबद तक जलाल होता रहे! अमीन।

## 1 कुरिथियों

### सलाम

1 यह खत पौलुस की तरफ से है, जो अल्लाह के इरादे से मसीह ईसा का बुलाया हुआ रसूल है, और हमारे भाई सोसथिनेस की तरफ से।

2 मैं कुरिथुस में मौजूद अल्लाह की जमात को लिख रहा हूँ, आपको जिन्हें मसीह ईसा में मुकद्दस किया गया है, जिन्हें मुकद्दस होने के लिए बुलाया गया है। साथ ही यह खत उन तमाम लोगों के नाम भी है जो हर जगह हमारे खुदावंद ईसा मसीह का नाम लेते हैं जो उनका और हमारा खुदावंद है।

3 हमारा खुदा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़जल और सलामती अता करें।

### शुक्र

4 मैं हमेशा आपके लिए खुदा का शुक्र करता हूँ कि उसने आपको मसीह ईसा में इतना फ़जल बख़्शा है। 5 आपको उसमें हर लिहाज से दौलतमंद किया गया है, हर किस्म की तकरीर और इल्मो-इरफ़ान में। 6 क्योंकि मसीह की गवाही ने आपके दरमियान जोर पकड़ लिया है, 7 इसलिए आपको हमारे खुदावंद ईसा मसीह के ज़ुहर का इंतज़ार करते करते किसी भी बरकत में कमी नहीं। 8 वही आपको आखिर तक मजबूत बनाए रखेगा, इसलिए आप हमारे खुदावंद ईसा मसीह की दूसरी आमद के दिन बेइलजाम ठहरेंगे। 9 अल्लाह पर पूरा एतमाद किया जा सकता है जिसने आपको बुलाकर अपने फ़रज़ंद हमारे खुदावंद ईसा मसीह की रिफ़ाक़त में शरीक किया है।

### कुरिथियों की पार्टीबाज़ी

10 भाइयो, मैं अपने खुदावंद ईसा मसीह के नाम में आपको ताक़ीद करता हूँ कि आप सब एक ही बात कहें। आपके दरमियान पार्टीबाज़ी नहीं बल्कि एक ही सोच और एक ही राय होनी चाहिए। 11 क्योंकि मेरे भाइयो, आपके बारे में मुझे खलोए के घरवालों से मालूम हुआ है कि आप झगड़ों में उलझ गए हैं। 12 मतलब यह है कि आपमें से कोई कहता है, “मैं पौलुस की पार्टी का हूँ,” कोई “मैं अपुल्लोस की पार्टी का हूँ,” कोई “मैं कैफ़ा की पार्टी का हूँ” और कोई कि “मैं मसीह की पार्टी का हूँ।” 13 क्या मसीह बट गया? क्या आपकी खातिर पौलुस को सलीब पर चढ़ाया गया? या क्या आपको पौलुस के नाम से बपतिस्मा दिया गया?

14 खुदा का शुक्र है कि मैंने आपमें से किसी को बपतिस्मा नहीं दिया सिवाए क्रिसपुस और गयुस के। 15 इसलिए कोई नहीं कह सकता कि मैंने पौलुस के नाम से बपतिस्मा पाया है। 16 हों मैंने स्तिफ़नास के घराने को भी बपतिस्मा दिया। लेकिन जहाँ तक मेरा खयाल है इसके अलावा किसी और को बपतिस्मा नहीं दिया। 17 मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए रसूल बनाकर नहीं भेजा बल्कि इसलिए कि अल्लाह की खुशखबरी सुनाऊँ। और यह काम मुझे दुनियावी हिकमत से आरास्ता तकरीर से नहीं करना है ताकि मसीह की सलीब की ताक़त बेअसर न हो जाए।

### सलीब का पैगाम

18 क्योंकि सलीब का पैगाम उनके लिए जिनका अंजाम हलाक़त है बेवुकूफ़ी है जबकि हमारे लिए जिनका अंजाम नजात है यह अल्लाह की कुदरत है। 19 चुनौचे पाक नविशतों में लिखा है,

“मैं दानिशमंदों की दानिश को तबाह करूँगा  
और समझदारों की समझ को रूढ़ करूँगा।”

20 अब दानिशमंद शख्स कहाँ है? आलिम कहाँ है? इस जहान का मुनाज़रे का माहिर कहाँ है? क्या अल्लाह ने दुनिया की हिकमतो-दानाई को बेवुकूफ़ी साबित नहीं किया?

21 क्योंकि अगरचे दुनिया अल्लाह की दानाई से घिरी हुई है तो भी दुनिया ने अपनी दानाई की बदौलत अल्लाह को न पहचाना। इसलिए अल्लाह को पसंद आया कि वह सलीब के पैगाम की बेवुकूफ़ी के ज़रीए ही ईमान रखनेवालों को नजात दे। 22 यहदी तकाज़ा करते हैं कि इलाही बातों की तसदीक इलाही निशानों से की जाए जबकि यूनानी दानाई के वसीले से इनकी तसदीक के खाहों हैं। 23 इसके मुकाबले में हम मसीहे-मसलूब की मुनादी करते हैं। यहदी इससे ठोकर खाकर नाराज़ हो जाते हैं जबकि ग़ैरयहदी इसे बेवुकूफ़ी करार देते हैं। 24 लेकिन जो अल्लाह के बुलाए हुए हैं, खाह वह यहदी हों खाह यूनानी, उनके लिए मसीह अल्लाह की कुदरत और अल्लाह की दानाई होता है। 25 क्योंकि अल्लाह की जो बात बेवुकूफ़ी

लगती है वह इनसान की दानाई से ज्यादा दानिशमंद है। और अल्लाह की जो बात कमज़ोर लगती है वह इनसान की ताकत से ज्यादा ताकतवर है।

26 भाइयो, इस पर गौर करें कि आपका क्या हाल था जब खुदा ने आपको बुलाया। आपमें से कम हैं जो दुनिया के मेयार के मुताबिक दाना हैं, कम हैं जो ताकतवर हैं, कम हैं जो आली खानदान से हैं। 27 बल्कि जो दुनिया की निगाह में बेवकूफ है उसे अल्लाह ने चुन लिया ताकि दानाओं को शरमिदा करे। और जो दुनिया में कमज़ोर है उसे अल्लाह ने चुन लिया ताकि ताकतवरों को शरमिदा करे। 28 इसी तरह जो दुनिया के नज़दीक जलील और हकीर है उसे अल्लाह ने चुन लिया। हाँ, जो कुछ भी नहीं है उसे उसने चुन लिया ताकि उसे नेस्त करे जो बज़ाहिर कुछ है। 29 चुनौचे कोई भी अल्लाह के सामने अपने पर फ़खर नहीं कर सकता। 30 यह अल्लाह की तरफ से है कि आप मसीह ईसा में हैं। अल्लाह की बख़्शिश से ईसा खुद हमारी दानाई, हमारी रास्तबाजी, हमारी तकदीस और हमारी मख़लसी बन गया है। 31 इसलिए जिस तरह कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “फ़खर करनेवाला खुदावंद ही पर फ़खर करे।”

## 2

### पौलुस की सादा मुनादी

1 भाइयो, मुझ पर भी गौर करें। जब मैं आपके पास आया तो मैंने आपको अल्लाह का भेद मोटे मोटे अलफ़ाज़ में या फ़लसफ़ियाना हिकमत का इज़हार करते हुए न सुनाया। 2 वजह क्या थी? यह कि मैंने इरादा कर रखा था कि आपके दरमियान होते हुए मैं ईसा मसीह के सिवा और कुछ न जानूँ, खासकर यह कि उसे मसलूब किया गया। 3 हाँ मैं कमज़ोरहाल, ख़ौफ़ खाते और बहुत थरथरते हुए आपके पास आया। 4 और गुफ्तगू और मुनादी करते हुए मैंने दुनियावादी हिकमत के बड़े जोरदार अलफ़ाज़ की मारिफ़त आपके कायल करने की कोशिश न की, बल्कि रूहुल-कुद्स और अल्लाह की कुदरत ने मेरी बातों की तसदीक की, 5 ताकि आपका इमान इनसानी हिकमत पर मबनी न हो बल्कि अल्लाह की कुदरत पर।

### ग़लत और सहीह दानाई

6 दानाई की बातें हम उस वक़्त करते हैं जब कामिल इमान रखनेवालों के दरमियान होते हैं। लेकिन यह दानाई मौजूदा ज़हान की नहीं और न इस ज़हान के हाकिमों ही की है जो मिटनेवाले हैं। 7 बल्कि हम खुदा ही की दानाई की बातें करते हैं जो भेद की सूरत में छुपी रही है। अल्लाह ने तमाम ज़मानों से पेशतर मुक़रर किया है कि यह दानाई हमारे जलाल का बाइस बने। 8 इस ज़हान के किसी भी हाकिम ने इस दानाई को न पहचाना, क्योंकि अगर वह पहचान लेते तो फिर वह हमारे जलाली खुदावंद को मसलूब न करते। 9 दानाई के बारे में पाक नविशते भी यही कहते हैं,

“जो न किसी आँख ने देखा,

न किसी कान ने सुना,

और न इनसान के ज़हन में आया,

उसे अल्लाह ने उनके लिए तैयार कर दिया

जो उससे मुहब्बत रखते हैं।”

10 लेकिन अल्लाह ने यही कुछ अपने रूह की मारिफ़त हम पर ज़ाहिर किया क्योंकि उसका रूह हर चीज़ का खोज़ लगाता है, यहाँ तक कि अल्लाह की गहराइयों का भी। 11 इनसान के बातिन से कौन वाकिफ़ है सिवाए इनसान की रूह के जो उसके अंदर है? इसी तरह अल्लाह से ताल्लुक रखनेवाली बातों को कोई नहीं जानता सिवाए अल्लाह के रूह के। 12 और हमें दुनिया की रूह नहीं मिली बल्कि वह रूह जो अल्लाह की तरफ से है ताकि हम उस की अताकरदा बातों को जान सकें।

13 यही कुछ हम बयान करते हैं, लेकिन ऐसे अलफ़ाज़ में नहीं जो इनसानी हिकमत से हमें सिखाया गया बल्कि रूहुल-कुद्स से। यों हम रूहानी हकीकतों की तशरीह रूहानी लोगों के लिए करते हैं। 14 जो शख्स रूहानी नहीं है वह अल्लाह के रूह की बातों को कबूल नहीं करता क्योंकि वह उसके नज़दीक बेवकूफ़ी है। वह उन्हें पहचान नहीं सकता क्योंकि उनकी परख सिर्फ़ रूहानी शख्स ही कर सकता है। 15 वही हर चीज़ परख लेता है जबकि उस की अपनी परख कोई नहीं कर सकता। 16 चुनौचे पाक कलाम में लिखा है,

“किसने रब की सोच को जाना?

कौन उसको तालीम देगा?”

लेकिन हम मसीह की सोच रखते हैं।



## 3

## कुरिथुस की बचगाना हालत

1 भाइयो, मैं आपसे रूहानी लोगों की बातों न कर सका बल्कि सिर्फ जिस्मानी लोगों की। क्योंकि आप अब तक मसीह में छोटे बच्चे हैं। 2 मैंने आपको दूध पिलाया, ठोस गिज्ञा न खिलाई, क्योंकि आप उस वक्त इस काबिल नहीं थे बल्कि अब तक नहीं हैं। 3 अभी तक आप जिस्मानी हैं, क्योंकि आपमें हसद और झगडा पाया जाता है। क्या इससे यह साबित नहीं होता कि आप जिस्मानी हैं और रूह के बगैर चलते हैं? 4 जब कोई कहता है, “मैं पौलस की पार्टी का हूँ” और दूसरा, “मैं अपुल्लोस की पार्टी का हूँ” तो क्या इससे यह जाहिर नहीं होता कि आप रूहानी नहीं बल्कि इनसानी सोच रखते हैं?

## पौलस और अपुल्लोस की हैसियत

5 अपुल्लोस की क्या हैसियत है और पौलस की क्या? दोनों नौकर हैं जिनके वसीले से आप ईमान लाए। और हममें से हर एक ने वही खिदमत अंजाम दी जो खुदावंद ने उसके सुपर्द की। 6 मैंने पौदे लगाए, अपुल्लोस पानी देता रहा, लेकिन अल्लाह ने उन्हें उगने दिया। 7 लिहाजा पौदा लगानेवाला और आबपाशी करनेवाला दोनों कुछ भी नहीं, बल्कि खुदा ही सब कुछ है जो पौदे को फलने फूलने देता है। 8 पौदा लगाने और पानी देनेवाला एक जैसे हैं, अलबत्ता हर एक को उस की मेहनत के मुताबिक मजदूरी मिलेगी। 9 क्योंकि हम अल्लाह के मुआविन हैं जबकि आप अल्लाह का खेत और उस की इमारत हैं।

10 अल्लाह के उस फजल के मुताबिक जो मुझे बख्शा गया मैंने एक दानिशमंद ठेकेदार की तरह बुनियाद रखी। इसके बाद कोई और उस पर इमारत तामीर कर रहा है। लेकिन हर एक ध्यान रखे कि वह बुनियाद पर इमारत किस तरह बना रहा है। 11 क्योंकि बुनियाद रखी जा चुकी है और वह है ईसा मसीह। इसके अलावा कोई भी मज्जीद कोई बुनियाद नहीं रख सकता। 12 जो भी इस बुनियाद पर कुछ तामीर करे वह मुख्तलिफ मवाद तो इस्तेमाल कर सकता है, मसलन सोना, चाँदी, कीमती पत्थर, लकड़ी, सूखी घास या भूसा, 13 लेकिन आखिर में हर एक का काम जाहिर हो जाएगा। क्रियामत के दिन कुछ पोशीदा नहीं रहेगा बल्कि आग सब कुछ जाहिर कर देगी। वह साबित कर देगी कि हर किसी ने कैसा काम किया है। 14 अगर उसका तामीरी काम न जला जो उसने इस बुनियाद पर किया तो उसे अज्र मिलेगा। 15 अगर उसका काम जल गया तो उसे नुकसान पहुँचेगा। खुद तो वह बच जाएगा मगर जलते जलते।

16 क्या आपको मालूम नहीं कि आप अल्लाह का घर हैं, और आपमें अल्लाह का रूह सुकूनत करता है? 17 अगर कोई अल्लाह के घर को तबाह करे तो अल्लाह उसे तबाह करेगा, क्योंकि अल्लाह का घर मख्सूसी-मुकद्दस है और यह घर आप ही हैं।

## अपने बारे में शेखी न मारना

18 कोई अपने आपको फरेब न दे। अगर आपमें से कोई समझे कि वह इस दुनिया की नज़र में दानिशमंद है तो फिर ज़रूरी है कि वह बेवुकूफ़ बने ताकि वाकई दानिशमंद हो जाए। 19 क्योंकि इस दुनिया की हिकमत अल्लाह की नज़र में बेवुकूफ़ी है। चुनौचे मुकद्दस नविशतों में लिखा है, “वह दानिशमंदों को उनकी अपनी चालाकी के फंदे में फँसा देता है।” 20 यह भी लिखा है, “एब दानिशमंदों के खयालत को जानता है कि वह बातिल हैं।” 21 गरज़ कोई किसी इनसान के बारे में शेखी न मारे। सब कुछ तो आपका है। 22 पौलस, अपुल्लोस, कैफा, दुनिया, जिदगी, मौत, मौजूदा जहान के और मुस्तकबिल के उम्र सब कुछ आपका है। 23 लेकिन आप मसीह के हैं और मसीह अल्लाह का है।

## 4

## खुदावंद के खादिम और उनका काम

1 गरज़ लोग हमें मसीह के खादिम समझें, ऐसे निगरान जिन्हें अल्लाह के भेदों को खोलने की जिम्मादारी दी गई है। 2 अब निगरानों का फर्ज़ यह है कि उन पर पूरा एतमाद किया जा सके। 3 मुझे इस बात की ज्यादा फिकर नहीं कि आप या कोई दुनियावावी अदालत मेरा एहतसाब करे, बल्कि मैं खुद भी अपना एहतसाब नहीं करता। 4 मुझे किसी गलती का इल्म नहीं है अगरचे यह बात मुझे रास्तबाज़ करार देने के लिए काफी नहीं है। खुदावंद खुद मेरा एहतसाब करता है। 5 इसलिए वक्त से पहले किसी बात का फैसला न करें। उस वक्त तक इंतज़ार करें जब तक खुदावंद न आए। क्योंकि वही तारीकी में छुपी हुई चीज़ों को रौशनी में लाएगा और दिलों की मनसूबाबदियों को जाहिर कर देगा। उस वक्त अल्लाह खुद हर फ़रद की मुनासिब तारीफ़ करेगा।

## कुरिथियों की शेखीबाज़ी

6 भाइयो, मैंने इन बातों का इतलाक अपने और अपुल्लोस पर किया ताकि आप हम पर गौर करते हुए अल्लाह के कलाम की हदूद जान लें जिनसे तजावुज करना मुनासिब नहीं। फिर आप फूलकर एक शख्स की हिमायत करके दूसरे की मुखाफलत नहीं करेंगे। 7 क्योंकि कौन आपको किसी दूसरे से अफजल करार देता है? जो कुछ आपके पास है क्या वह आपको मुफ्त नहीं मिला? और अगर मुफ्त मिला तो इस पर शेखी क्यों मारते हैं गोया कि आपने उसे अपनी मेहनत से हासिल किया हो?

8 वाह जी वाह! आप सेर हो चुके हैं। आप अमीर बन चुके हैं। आप हमारे बगैर बादशाह बन चुके हैं। काश आप बादशाह बन चुके होते ताकि हम भी आपके साथ हुकूमत करते। 9 इसके बजाए मुझे लगता है कि अल्लाह ने हमारे लिए जो उसके रसूल हैं रोमी तमाशागाह में सबसे निचला दर्जा मुकर्रर किया है, जो उन लोगों के लिए मखसूस होता है जिन्हें सजाए-मौत का फ़ैसला सुनाया गया हो। हाँ, हम दुनिया, फ़रिशतो और इनसानों के सामने तमाशा बन गए हैं। 10 हम तो मसीह की खातिर बेवकूफ बन गए हैं जबकि आप मसीह में समझदार खयाल किए जाते हैं। हम कमजोर हैं जबकि आप ताकतवर। आपकी इज्जत की जाती है जबकि हमारी बेइज्जती। 11 अब तक हमें भूक और प्यास सताती है। हम चीथड़ों में मलबूस गोया नंगे फिरते हैं। हमें मुक्के मारे जाते हैं। हमारी कोई मुस्तकिल रिहाइशगाह नहीं। 12 और बड़ी मशक़त से हम अपने हाथों से रोज़ी कमाते हैं। लान-तान करनेवालों को हम बरकत देते हैं, ईजा देनेवालों को बरदाशत करते हैं। 13 जो हमें बुरा-भला कहते हैं उन्हें हम दुआ देते हैं। अब तक हम दुनिया का कूड़ा-करकट और गिलाजत बने फिरते हैं।

### पौलस कुरिथियों का रूहानी बाप है

14 मैं आपको शरमिदा करने के लिए यह नहीं लिख रहा, बल्कि अपने प्यारे बच्चे जानकर समझाने की गरज से। 15 बेशक मसीह ईसा में आपके उस्ताद तो बेशमार हैं, लेकिन बाप कम हैं। क्योंकि मसीह ईसा में मैं ही आपको अल्लाह की खुशखबरी सुनाकर आपका बाप बना। 16 अब मैं ताकीद करता हूँ कि आप मेरे नमूने पर चलें। 17 इसलिए मैंने तीमुथियूस को आपके पास भेज दिया जो खुदावंद में मेरा प्यारा और वफादार बेटा है। वह आपको मसीह ईसा में मेरी उन हिदायात की याद दिलाएगा जो मैं हर जगह और ईमानदारों की हर जमात में देता हूँ।

18 आपमें से बाज़ यों फूल गए हैं जैसे मैं अब आपके पास कभी नहीं आऊँगा। 19 लेकिन अगर खुदावंद की मरजी हुई तो जल्द आकर मालूम करूँगा कि क्या यह फूले हुए लोग सिर्फ बाते कर रहे हैं या कि अल्लाह की कुदरत उनमें काम कर रही है। 20 क्योंकि अल्लाह की बादशाही खाली बातों से जाहिर नहीं होती बल्कि अल्लाह की कुदरत से। 21 क्या आप चाहते हैं कि मैं छडी लेकर आपके पास आऊँ या प्यार और हलीमी की रूह में?

## 5

### जिनाकारी

1 यह बात हमारे कानों तक पहुँची है कि आपके दरमियान जिनाकारी हो रही है, बल्कि ऐसी जिनाकारी जिसे गैरयहूदी भी रवा नहीं समझते। कहते हैं कि आपमें से किसी ने अपनी सौतेली माँ \* से शादी कर रखी है। 2 कमाल है कि आप इस फ़ेल पर नादिम नहीं बल्कि फूले फिर रहे हैं! क्या मुनासिब न होता कि आप दुख महसूस करके इस बदी के मुरतकिब को अपने दरमियान से खारिज कर देते? 3 गो मैं जिसम के लिहाज़ से आपके पास नहीं, लेकिन रूह के लिहाज़ से ज़रूर हूँ। और मैं उस शख्स पर फ़तवा इस तरह दे चुका हूँ जैसे कि मैं आपके दरमियान मौजूद हूँ। 4 जब आप हमारे खुदावंद ईसा के नाम में जमा होंगे तो मैं रूह में आपके साथ हूँगा और हमारे खुदावंद ईसा की कुदरत भी। 5 उस वक़्त ऐसे शख्स को इबलीस के हवाले करें ताकि सिर्फ उसका जिस्म हलाक हो जाए, लेकिन उस की रूह खुदावंद के दिन रिहाई पाए।

6 आपका फ़रखर करना अच्छा नहीं। क्या आपको मालूम नहीं कि जब हम थोड़ा-सा खमीर ताज़ा गुंधे हुए आटे में मिलाते हैं तो वह सारे आटे को खमीर कर देता है? 7 अपने आपको खमीर से पाक-साफ़ करके ताज़ा गुंधा हुआ आटा बन जाएँ। दर-हकीकत आप हैं भी पाक, क्योंकि हमारा ईदे-फ़रसह का लेला मसीह हमारे लिए ज़बह हो चुका है। 8 इसलिए आइए हम पुराने खमीरी आटे यानी बुराई और बदी को दूर करके ताज़ा गुंधे हुए आटे यानी खुलूस और सच्चाई की रोटीयों बनाकर फ़सह की ईद मनाएँ।

9 मैंने ख़त में लिखा था कि आप जिनाकारों से ताल्लुक न रखें। 10 मेरा मतलब यह नहीं था कि आप इस दुनिया के जिनाकारों से ताल्लुक मुक़ते कर लें या इस दुनिया के लालचियों, लुटेरों और बुतपरस्तों से। अगर आप ऐसा करते तो लाज़िम होता कि आप दुनिया ही से कूच कर जाते। 11 नहीं, मेरा मतलब यह था कि आप ऐसे शख्स से ताल्लुक न रखें जो मसीह में तो भाई कहलाता है मगर है वह जिनाकार या लालची या बुतपरस्त या गाली-गलोच करनेवाला या शराबी या लुटेरा। ऐसे शख्स के साथ खाना तक भी न खाएँ।

\* 5:1 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : बाप की बीवी, लेकिन गालिबन इससे मुराद सौतेली माँ है।

12 मैं उन लोगों की अदालत क्यों करता फिर्न जो ईमानदारों की जमात से बाहर हैं? क्या आप खुद भी सिर्फ उनकी अदालत नहीं करते जो जमात के अंदर हैं? 13 बाहरवालों की अदालत तो खुदा ही करेगा। कलामे-मुकद्दस में यों लिखा है, 'शरीर को अपने दरमियान से निकाल दो!'

## 6

### मुकदमाबाजी

1 आपमें यह जूरत कैसे पैदा हुई कि जब किसी का किसी दूसरे ईमानदार के साथ तनाजा हो तो वह अपना झगड़ा बेदीनों के सामने ले जाता है न कि मुकद्दसों के सामने? 2 क्या आप नहीं जानते कि मुकद्दसीन दुनिया की अदालत करेंगे? और अगर आप दुनिया की अदालत करेंगे तो क्या आप इस काबिल नहीं कि छोटे मोटे झगड़ों का फैसला कर सकें? 3 क्या आपको मालूम नहीं कि हम फरिश्तों की अदालत करेंगे? तो फिर क्या हम रोजमर्रा के मामलात को नहीं निपटा सकते? 4 और इस किस्म के मामलात को फैसल करने के लिए आप ऐसे लोगों को क्यों मुकर्रर करते हैं जो जमात की निगाह में कोई हैसियत नहीं रखते? 5 यह बात मैं आपको शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ। क्या आपमें एक भी सयाना शख्स नहीं जो अपने भाइयों के माबैन फैसला करने के काबिल हो? 6 लेकिन नहीं। भाई अपने ही भाई पर मुकदमा चलाता है और वह भी गैरईमानदारों के सामने।

7 अब्बल तो आपसे यह गलती हुई कि आप एक दूसरे से मुकदमाबाजी करते हैं। अगर कोई आपसे नाइनसाफी कर रहा हो तो क्या बेहतर नहीं कि आप उसे ऐसा करने दें? और अगर कोई आपको ठग रहा हो तो क्या यह बेहतर नहीं कि आप उसे ठगने दें? 8 इसके बरअक्स आपका यह हाल है कि आप खुद ही नाइनसाफी करते और ठगते हैं और वह भी अपने भाइयों को। 9 क्या आप नहीं जानते कि नाइनसाफ अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे? फरेब न खाएँ! हरामकार, बूतपरस्त, जिनाकार, हमजिसपरस्त, लौडेबाज, 10 चोर, लालची, शराबी, बदजबान, लुटेरे, यह सब अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे। 11 आपमें से कुछ ऐसे थे भी। लेकिन आपको धोया गया, आपको मुकद्दस किया गया, आपको खुदावंद ईसा मसीह के नाम और हमारे खुदा के रूह से रास्तबाज बनाया गया है।

### जिस्म अल्लाह का घर है

12 मेरे लिए सब कुछ जायज है, लेकिन सब कुछ मुफ्रीद नहीं। मेरे लिए सब कुछ जायज तो है, लेकिन मैं किसी भी चीज को इजाजत नहीं दूँगा कि मुझ पर हुकूमत करे। 13 बेशक खुराक पेट के लिए और पेट खुराक के लिए है, मगर अल्लाह दोनों को नेस्त कर देगा। लेकिन हम इससे यह नतीजा नहीं निकाल सकते कि जिस्म जिनाकारी के लिए है। हरगिज नहीं! जिस्म खुदावंद के लिए है और खुदावंद जिस्म के लिए। 14 अल्लाह ने अपनी कुदरत से खुदावंद ईसा को जिंदा किया और इसी तरह वह हमें भी जिंदा करेगा।

15 क्या आप नहीं जानते कि आपके जिस्म मसीह के आज्ञा हैं? तो क्या मैं मसीह के आज्ञा को लेकर फाहिशा के आज्ञा बनाऊँ? हरगिज नहीं। 16 क्या आपको मालूम नहीं कि जो फाहिशा से लिपट जाता है वह उसके साथ एक तन हो जाता है? जैसे पाक नविशतों में लिखा है, "वह दोनों एक हो जाते हैं।" 17 इसके बरअक्स जो खुदावंद से लिपट जाता है वह उसके साथ एक रूह हो जाता है।

18 जिनाकारी से भागें! इनसान से सरजद होनेवाला हर गुनाह उसके जिस्म से बाहर होता है सिवाए जिना के। जिनाकार तो अपने ही जिस्म का गुनाह करता है। 19 क्या आप नहीं जानते कि आपका बदन रूहल-कुद्दस का घर है जो आपके अंदर सुकूनत करता है और जो आपको अल्लाह की तरफ से मिला है? आप अपने मालिक नहीं हैं? 20 क्योंकि आपको कीमत अदा करके खरीदा गया है। अब अपने बदन से अल्लाह को जलाल दें।

## 7

### इज्जदिवाजी जिंदगी

1 अब मैं आपके सवालात का जवाब देता हूँ। बेशक अच्छा है कि मर्द शादी न करे। 2 लेकिन जिनाकारी से बचने की खातिर हर मर्द की अपनी बीवी और हर औरत का अपना शौहर हो। 3 शौहर अपनी बीवी का हक अदा करे और इसी तरह बीवी अपने शौहर का। 4 बीवी अपने जिस्म पर इख्तियार नहीं रखती बल्कि उसका शौहर। इसी तरह शौहर भी अपने जिस्म पर इख्तियार नहीं रखता बल्कि उस की बीवी। 5 चुनौचे एक दूसरे से जुदा न हों सिवाए इसके कि आप दोनों बाहमी रजामंदी से एक वक्रत मुकर्रर कर लें ताकि दुआ के लिए ज्यादा फुरसत मिल सके। लेकिन इसके बाद आप दुबारा इकट्ठे हो जाएँ ताकि इब्लीस आपके बेज्बत नफ़स से फायदा उठाकर आपको आज्ञामाइश में न डाले।

6 यह मैं हुक्म के तौर पर नहीं बल्कि आपके हालात के पेशे-नज़र रिआयतन कह रहा हूँ। 7 मैं चाहता हूँ कि तमाम लोग मुझ जैसे ही हों। लेकिन हर एक को अल्लाह की तरफ से अलग नेमत मिली है, एक को यह नेमत, दूसरे को वह।

### तलाक और गैरईमानदार से शादी

8 मैं गैरशादीशुदा अफ़राद और बेवाओं से यह कहता हूँ कि अच्छा हो अगर आप मेरी तरह गैरशादीशुदा रहें। 9 लेकिन अगर आप अपने आप पर काबू न रख सकें तो शादी कर लें। क्योंकि इससे पेशतर कि आपके शहवानी जज़बत बेलगाम होने लगे बेहतर यह है कि आप शादी कर लें।

10 शादीशुदा जोड़ों को मैं नहीं बल्कि खुदावंद हुक्म देता है कि बीवी अपने शौहर से ताल्लुक मुंक्ते न करे। 11 अगर वह ऐसा कर चुकी हो तो दूसरी शादी न करे या अपने शौहर से सुलह कर ले। इसी तरह शौहर भी अपनी बीवी को तलाक न दे।

12 दीगर लोगों को खुदावंद नहीं बल्कि मैं नसीहत करता हूँ कि अगर किसी ईमानदार भाई की बीवी ईमान नहीं लाई, लेकिन वह शौहर के साथ रहने पर राज़ी हो तो फिर वह अपनी बीवी को तलाक न दे। 13 इसी तरह अगर किसी ईमानदार खातून का शौहर ईमान नहीं लाया, लेकिन वह बीवी के साथ रहने पर रज़ामंद हो तो वह अपने शौहर को तलाक न दे। 14 क्योंकि जो शौहर ईमान नहीं लाया उसे उस की ईमानदार बीवी की मारिफ़त मुक़द्दस ठहराया गया है और जो बीवी ईमान नहीं लाई उसे उसके ईमानदार शौहर की मारिफ़त मुक़द्दस करार दिया गया है। अगर ऐसा न होता तो आपके बच्चे नापाक होते, मगर अब वह मुक़द्दस है। 15 लेकिन अगर गैरईमानदार शौहर या बीवी अपना ताल्लुक मुंक्ते कर ले तो उसे जाने दें। ऐसी सूरत में ईमानदार भाई या बहन इस बंधन से आज़ाद हो गए। मगर अल्लाह ने आपको सुलह-सलामती की ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बुलाया है। 16 बहन, मुमकिन है आप अपने खाविंद की नजात का बाइस बन जाएँ। या भाई, मुमकिन है आप अपनी बीवी की नजात का बाइस बन जाएँ।

### अल्लाह की तरफ से मुक़र्ररा राह पर रहे

17 हर शख्स उसी राह पर चले जो खुदावंद ने उसके लिए मुक़र्रर की और उस हालत में जिसमें अल्लाह ने उसे बुलाया है। ईमानदारों की तमाम जमातों के लिए मेरी यही हिदायत है। 18 अगर किसी को मख़तून हालत में बुलाया गया तो वह नामख़तून होने की कोशिश न करे। अगर किसी को नामख़तूनी की हालत में बुलाया गया तो वह अपना खतना न करवाए। 19 न खतना कुछ चीज़ है और न खतने का न होना, बल्कि अल्लाह के अहकाम के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारना ही सब कुछ है। 20 हर शख्स उसी हैसियत में रहे जिसमें उसे बुलाया गया था। 21 क्या आप गुलाम थे जब खुदावंद ने आपको बुलाया? यह बात आपको पेशान न करे। अलबता अगर आपको आज़ाद होने का मौक़ा मिले तो इससे ज़रूर फ़ायदा उठाएँ। 22 क्योंकि जो उस वक्त गुलाम था जब खुदावंद ने उसे बुलाया वह अब खुदावंद का आज़ाद किया हुआ है। इसी तरह जो आज़ाद था जब उसे बुलाया गया वह अब मसीह का गुलाम है। 23 आपको कीमत देकर खरीदा गया है, इसलिए इनसान के गुलाम न बनें। 24 भाइयो, हर शख्स जिस हालत में बुलाया गया उसी में वह अल्लाह के सामने कायम रहे।

### गैरशादीशुदा लोग

25 कुँवारियों के बारे में मुझे खुदावंद की तरफ से कोई ख़ास हुक्म नहीं मिला। तो भी मैं जिसे अल्लाह ने अपनी रहमत से काबिले-एतमाद बनाया है आप पर अपनी राय का इज़हार करता हूँ।

26 मेरी दानिस्त में मौजूदा मुसीबत के पेशे-नज़र इनसान के लिए अच्छा है कि गैरशादीशुदा रहे। 27 अगर आप किसी खातून के साथ शादी के बंधन में बंध चुके हैं तो फिर इस बंधन को तोड़ने की कोशिश न करें। लेकिन अगर आप शादी के बंधन में नहीं बंधें तो फिर इसके लिए कोशिश न करें। 28 ताहम अगर आपने शादी कर ही ली है तो आपने गुनाह नहीं किया। इसी तरह अगर कुँवारी शादी कर चुकी है तो यह गुनाह नहीं। मगर ऐसे लोग जिस्मानी तौर पर मुसीबत में पड़ जाएंगे जबकि मैं आपको इससे बचाना चाहता हूँ।

29 भाइयो, मैं तो यह कहता हूँ कि वक्त थोड़ा है। आइंदा शादीशुदा ऐसे ज़िंदगी बसर करें जैसे कि गैरशादीशुदा हैं। 30 रोनेवाले ऐसे हों जैसे नहीं रो रहे। खुशी मनानेवाले ऐसे हों जैसे खुशी नहीं मना रहे। खरीदनेवाले ऐसे हों जैसे उनके पास कुछ भी नहीं। 31 दुनिया से फ़ायदा उठानेवाले ऐसे हों जैसे इसका कोई फ़ायदा नहीं। क्योंकि इस दुनिया की मौजूदा शक्लो-सूरत ख़त्म होती जा रही है।

32 मैं तो चाहता हूँ कि आप फ़िकरों से आज़ाद रहें। गैरशादीशुदा शख्स खुदावंद के मामलों की फ़िकर में रहता है कि किस तरह उसे खुश करे। 33 इसके बरअक्स शादीशुदा शख्स दुनियावादी फ़िकर में रहता है कि किस तरह अपनी बीवी को खुश करे। 34 यों वह बड़ी कश-म-कश में मुब्तला रहता है। इसी तरह गैरशादीशुदा खातून और कुँवारी खुदावंद की फ़िकर में

रहती है कि वह जिस्मानी और रूहानी तौर पर उसके लिए मखसूसो-मुकद्दस हो। इसके मुकाबले में शादीशुदा खातून दुनियावी फिकर में रहती है कि अपने खाविंद को किस तरह खुश करे।

35 मैं यह आप ही के फायदे के लिए कहता हूँ। मकसद यह नहीं कि आप पर पाबंदियाँ लगाई जाएँ बल्कि यह कि आप शराफत, साबितकदमी और यकसूई के साथ खुदावंद की हुजूरी में चलें।

36 अगर कोई समझता है, 'मैं अपनी कुँवारी मंगेतर से शादी न करने से उसका हक मार रहा हूँ' या यह कि 'मेरी उसके लिए खाहिश हद से ज्यादा है, इसलिए शादी होनी चाहिए' तो फिर वह अपने इरादे को पूरा करे, यह गुनाह नहीं। वह शादी कर ले। 37 लेकिन इसके बरअक्स अगर उसने शादी न करने का पुख्ता अजम कर लिया है और वह मजबूर नहीं बल्कि अपने इरादे पर इख्तियार रखता है और उसने अपने दिल में फ़ैसला कर लिया है कि अपनी कुँवारी लडकी को ऐसे ही रहने दे तो उसने अच्छा किया। 38 गरज जिसने अपनी कुँवारी मंगेतर से शादी कर ली है उसने अच्छा किया है, लेकिन जिसने नहीं की उसने और भी अच्छा किया है।

39 जब तक खाविंद जिंदा है बीवी को उससे रिशता तोड़ने की इजाजत नहीं। खाविंद की वफात के बाद वह आज़ाद है कि जिससे चाहे शादी कर ले, अगर सिर्फ़ खुदावंद में। 40 लेकिन मेरी दानिस्त में अगर वह ऐसे ही रहे तो ज्यादा मुबारक होगी। और मैं समझता हूँ कि मुझमें भी अल्लाह का रूह है।

## 8

### बुतों की कुरबानियाँ

1 अब मैं बुतों की कुरबानी के बारे में बात करता हूँ। हम जानते हैं कि हम सब साहबे-इल्म हैं। इल्म इनसान के फूलने का बाइस बनता है जबकि मुहब्बत उस की तामीर करती है। 2 जो समझता है कि उसने कुछ जान लिया है उसने अब तक उस तरह नहीं जाना जिस तरह उसको जानना चाहिए। 3 लेकिन जो अल्लाह से मुहब्बत रखता है उसे अल्लाह ने जान लिया है।

4 बुतों की कुरबानी खाने के जिन्न में हम जानते हैं कि दुनिया में बुत कोई चीज़ नहीं और कि रब के सिवा कोई और खुदा नहीं है। 5 बेशक आसमानो-ज़मीन पर कई नाम-निहाद देवता होते हैं, हाँ दरअसल बहुतेरे देवताओं और खुदावंदों की पूजा की जाती है। 6 तो भी हम जानते हैं कि फकत एक ही खुदा है, हमारा बाप जिसने सब कुछ पैदा किया है और जिसके लिए हम जिंदगी गुज़ारते हैं। और एक ही खुदावंद है यानी ईसा मसीह जिसके वसीले से सब कुछ वजूद में आया है और जिससे हमें जिंदगी हासिल है।

7 लेकिन हर किसी को इसका इल्म नहीं। बाज़ ईमानदार तो अब तक यह सोचने के आदी हैं कि बुत का वजूद है। इसलिए जब वह किसी बुत की कुरबानी का गोशत खाते हैं तो वह समझते हैं कि हम ऐसा करने से उस बुत की पूजा कर रहे हैं। यों उनका ज़मीर कमज़ोर होने की वजह से आलूदा हो जाता है। 8 हकीकत तो यह है कि हमारा अल्लाह को पसंद आना इस बात पर मबनी नहीं कि हम क्या खाते हैं और क्या नहीं खाते। न परहेज करने से हमें कोई नुकसान पहुँचता है और न खा लेने से कोई फायदा।

9 लेकिन खबरदार रहें कि आपकी यह आज़ादी कमज़ोरों के लिए ठोकर का बाइस न बने। 10 क्योंकि अगर कोई कमज़ोरज़मीर शख्स आपको बुतखाने में खाना खाते हुए देखे तो क्या उसे उसके ज़मीर के खिलाफ़ बुतों की कुरबानियाँ खाने पर उभारा नहीं जाएगा? 11 इस तरह आपका कमज़ोर भाई जिसकी खातिर मसीह कुरबान हुआ आपके इल्मो-इफ़ान की वजह से हलाक हो जाएगा। 12 जब आप इस तरह अपने भाइयों का गुनाह करते और उनके कमज़ोर ज़मीर को मजसूह करते हैं तो आप मसीह का ही गुनाह करते हैं। 13 इसलिए अगर ऐसा खाना मेरे भाई को सहीह राह से भटकाने का बाइस बने तो मैं कभी गोशत नहीं खाऊँगा ताकि अपने भाई की गुमराही का बाइस न बनूँ।

## 9

### रसूल का हक

1 क्या मैं आज़ाद नहीं? क्या मैं मसीह का रसूल नहीं? क्या मैंने ईसा को नहीं देखा जो हमारा खुदावंद है? क्या आप खुदावंद में मेरी मेहनत का फल नहीं है? 2 अगरचे मैं दूसरों के नज़दीक मसीह का रसूल नहीं, लेकिन आपके नज़दीक तो ज़रूर हूँ। खुदावंद में आप ही मेरी रिसालत पर मुहर हैं।

3 जो मेरी बाज़पुर्स करना चाहते हैं उन्हें मैं अपने दिफा में कहता हूँ, 4 क्या हमें खाने-पीने का हक नहीं? 5 क्या हमें हक नहीं कि शादी करके अपनी बीवी को साथ लिए फिरें? दूसरे रसूल और खुदावंद के भाई और कैफ़ा तो ऐसा ही करते हैं।

6 क्या मुझे और बरनबास ही को अपनी खिदमत के अज़्र में कुछ पाने का हक नहीं? 7 कौन-सा फौज़ी अपने खर्च पर जंग

लडता है? कौन अंगूर का बाग लगाकर उसके फल से अपना हिस्सा नहीं पाता? या कौन रेवड़ की गल्लाबानी करके उसके दूध से अपना हिस्सा नहीं पाता?

8 क्या मैं यह फ़कत इनसानी सोच के तहत कह रहा हूँ? क्या शरीरअत भी यही नहीं कहती? 9 तौरत में लिखा है, “जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह बाँधकर न रखना।” क्या अल्लाह सिर्फ़ बैलों की फ़िकर करता है 10 या वह हमारी खातिर यह फ़रमाता है? हाँ, ज़रूर हमारी खातिर क्योंकि हल चलानेवाला इस उम्मीद पर चलाता है कि उसे कुछ मिलेगा। इसी तरह गाहनेवाला इस उम्मीद पर गाहता है कि वह पैदावार में से अपना हिस्सा पाएगा। 11 हमने आपके लिए रूहानी बीज बोया है। तो क्या यह नामुनासिब है अगर हम आपसे जिम्मानी फ़सल काटें? 12 अगर दूसरों को आपसे अपना हिस्सा लेने का हक है तो क्या हमारा उनसे ज्यादा हक नहीं बनता?

लेकिन हमने इस हक से फ़ायदा नहीं उठाया। हम सब कुछ बरदाश्त करते हैं ताकि मसीह की खुशख़बरी के लिए किसी भी तरह से स्कावट का बाइस न बनें। 13 क्या आप नहीं जानते कि बैतूल-मुकद्दस में खिदमत करनेवालों की ज़रूरियात बैतूल-मुकद्दस ही से पूरी की जाती हैं? जो कुरबानियाँ चढ़ाने के काम में मसूफ़ रहते हैं उन्हें कुरबानियों से ही हिस्सा मिलता है। 14 इसी तरह खुदावंद ने मुक़र्रर किया है कि इंजील की खुशख़बरी की मुनादी करनेवालों की ज़रूरियात उनसे पूरी की जाएँ जो इस खिदमत से फ़ायदा उठाते हैं।

15 लेकिन मैंने किसी तरह भी इससे फ़ायदा नहीं उठाया, और न इसलिए लिखा है कि मेरे साथ ऐसा सुलूक किया जाए। नहीं, इससे पहले कि फ़खर करने का मेरा यह हक मुझसे छीन लिया जाए बेहतर यह है कि मैं मर जाऊँ। 16 लेकिन अल्लाह की खुशख़बरी की मुनादी करना मेरे लिए फ़खर का बाइस नहीं। मैं तो यह करने पर मजबूर हूँ। मुझ पर अफ़सोस अगर इस खुशख़बरी की मुनादी न करूँ। 17 अगर मैं यह अपनी मरज़ी से करता तो फिर अज़्र का मेरा हक बनता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि खुदा ही ने मुझे यह जिम्मादारी दी है। 18 तो फिर मेरा अज़्र क्या है? यह कि मैं इंजील की खुशख़बरी मुफ़्त सुनाऊँ और अपने उस हक से फ़ायदा न उठाऊँ जो मुझे उस की मुनादी करने से हासिल है।

19 अगरचे मैं सब लोगों से आज़ाद हूँ फिर भी मैंने अपने आपको सबका गुलाम बना लिया ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को जीत लूँ। 20 मैं यहूदियों के दरमियान यहूदी की मानिंद बना ताकि यहूदियों को जीत लूँ। मूसवी शरीअत के तहत ज़िंदगी गुज़ारनेवालों के दरमियान मैं उनकी मानिंद बना ताकि उन्हें जीत लूँ, गो मैं शरीअत के मातहत नहीं। 21 मूसवी शरीअत के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारनेवालों के दरमियान मैं उन्हीं की मानिंद बना ताकि उन्हें जीत लूँ। इसका मतलब यह नहीं कि मैं अल्लाह की शरीअत के ताबे नहीं हूँ। हकीकत में मैं मसीह की शरीअत के तहत ज़िंदगी गुज़ारता हूँ। 22 मैं कमज़ोरों के लिए कमज़ोर बना ताकि उन्हें जीत लूँ। सबके लिए मैं सब कुछ बना ताकि हर मुमकिन तरीके से बाज़ को बचा सकूँ। 23 जो कुछ भी करता हूँ अल्लाह की खुशख़बरी के वास्ते करता हूँ ताकि इसकी बरकात में शरीक हो जाऊँ।

24 क्या आप नहीं जानते कि स्टैडियम में दौड़ते तो सब ही हैं, लेकिन इनाम एक ही शख्स हासिल करता है? चुनौचे ऐसे दौड़ें कि आप ही जीतें। 25 खेलों में शरीक होनेवाला हर शख्स अपने आपको सब्त नज़मो-ज़ब्त का पाबंद रखता है। वह फ़ानी ताज पाने के लिए ऐसा करते हैं, लेकिन हम ग़ैरफ़ानी ताज पाने के लिए। 26 चुनौचे मैं हर वक़्त मनज़िले-मक़सूद को पेशे-नज़र रखते हुए दौड़ता हूँ। और मैं इसी तरह बाक्सिंग भी करता हूँ, मैं हवा में मुक्के नहीं मारता बल्कि निशाने को। 27 मैं अपने बदन को मारता कूटता और इसे अपना गुलाम बनाता हूँ, ऐसा न हो कि दूसरों में मुनादी करके खुद नामक़बूल ठहरूँ।

## 10

### इसराईल का इब्रतनाक तज़रबा

1 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप इस बात से नावाक़िफ़ रहें कि हमारे बापदादा सब बादल के नीचे थे। वह सब समुंदर में से गुज़रे। 2 उन सबने बादल और समुंदर में मूसा का बपतिस्मा लिया। 3 सबने एक ही रूहानी ख़राक खाई 4 और सबने एक ही रूहानी पानी पिया। क्योंकि मसीह रूहानी चटान की सूरत में उनके साथ साथ चलता रहा और वही उन सबको पानी पिलाता रहा। 5 इसके बावजूद उनमें से बेशर लोग अल्लाह को पसंद न आए, इसलिए वह रेगिस्तान में हलाक हो गए।

6 यह सब कुछ हमारी इब्रत के लिए वाके हुआ ताकि हम उन लोगों की तरह बुरी चीज़ों की हवस न करें। 7 उनमें से बाज़ की तरह बुतपरस्त न बनें, जैसे मुक़द्दस नबिशतों में लिखा है, “लोग खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।” 8 हम जिना भी न करें जैसे उनमें से बाज़ ने किया और नतीजे में एक ही दिन में 23,000 अफ़राद ढेर हो गए। 9 हम खुदावंद की आजमाइश भी न करें जिस तरह उनमें से बाज़ ने की और नतीजे में सौंपों से हलाक हुए। 10 और न बुडबुडाएँ जिस तरह उनमें से बाज़ बुडबुडाने लगे और नतीजे में हलाक करनेवाले फ़रिशते के हाथों मारे गए।

11 यह माज़रे इब्रत की खातिर उन पर वाके हुए और हम अख़ीर ज़माने में रहनेवालों की नसीहत के लिए लिखे गए।

12 गरज जो समझता है कि वह मजबूती से खड़ा है, खबरदार रहे कि गिर न पड़े। 13 आप सिर्फ़ ऐसी आजमाइशों में पड़े हैं जो इन्सान के लिए आम होती हैं। और अल्लाह वफ़ादार है। वह आपको आपकी ताकत से ज़्यादा आजमाइश में नहीं पड़ने देगा। जब आप आजमाइश में पड़ जाएंगे तो वह उसमें से निकलने की राह भी पैदा कर देगा ताकि आप उसे बरदाश्त कर सकें।

### अशाए-रब्बानी और बुतपरस्ती में तज़ाद

14 गरज मेरे प्यारो, बुतपरस्ती से भागें। 15 मैं आपको समझदार जानकर बात कर रहा हूँ। आप खुद मेरी इस बात का फ़ैसला करें। 16 जब हम अशाए-रब्बानी के मौके पर बरकत के प्याले को बरकत देकर उसमें से पीते हैं तो क्या हम यों मसीह के खून में शरीक नहीं होते? और जब हम रोटी तोड़कर खाते हैं तो क्या मसीह के बदन में शरीक नहीं होते? 17 रोटी तो एक ही है, इसलिए हम जो बहुत-से हैं एक ही बदन हैं, क्योंकि हम सब एक ही रोटी में शरीक होते हैं।

18 बनी इसराइल पर गौर करें। क्या बैतूल-मुकद्दस में कुरबानियाँ खानेवाले कुरबानगाह की रिफ़ाकत में शरीक नहीं होते? 19 क्या मैं यह कहना चाहता हूँ कि बुतों के चढ़ावे की कोई हैसियत है? या कि बुत की कोई हैसियत है? हरगिज़ नहीं। 20 मैं यह कहता हूँ कि जो कुरबानियाँ वह गुज़रते हैं अल्लाह को नहीं बल्कि शयातीन को गुज़रते हैं। और मैं नहीं चाहता कि आप शयातीन की रिफ़ाकत में शरीक हों। 21 आप खुदावंद के प्याले और साथ ही शयातीन के प्याले से नहीं पी सकते। आप खुदावंद के रिफ़ाकती खाने और साथ ही शयातीन के रिफ़ाकती खाने में शरीक नहीं हो सकते। 22 या क्या हम अल्लाह की ग़ैरत को उकसाना चाहते हैं? क्या हम उससे ताकतवर हैं?

### दूसरों के ज़मीर का लिहाज़ करना

23 सब कुछ रवा तो है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद नहीं। सब कुछ जायज़ तो है, लेकिन सब कुछ हमारी तामीरो-तरक्की का बाइस नहीं होता। 24 हर कोई अपने ही फ़ायदे की तलाश में न रहे बल्कि दूसरे के।

25 बाज़ार में जो कुछ बिकता है उसे खाएँ और अपने ज़मीर को मुतमइन करने की खातिर पूछ-गछ न करें, 26 क्योंकि “ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का है।”

27 अगर कोई ग़ैरईमानदार आपकी दावत करे और आप उस दावत को कबूल कर लें तो आपके सामने जो कुछ भी रखा जाए उसे खाएँ। अपने ज़मीर के इतमीनान के लिए तफ़तीश न करें। 28 लेकिन अगर कोई आपको बता दे, “यह बुतों का चढ़ावा है” तो फिर उस शख्स की खातिर जिसने आपको आगाह किया है और ज़मीर की खातिर उसे न खाएँ। 29 मतलब है अपने ज़मीर की खातिर नहीं बल्कि दूसरे के ज़मीर की खातिर। क्योंकि यह किस तरह हो सकता है कि किसी दूसरे का ज़मीर मेरी आज़ादी के बारे में फ़ैसला करे? 30 अगर मैं खुदा का शुक़ करके किसी खाने में शरीक होता हूँ तो फिर मुझे क्यों बुरा कहा जाए? मैं तो उसे खुदा का शुक़ करके खाता हूँ।

31 चुनौचे सब कुछ अल्लाह के जलाल की खातिर करें, खाह आप खाएँ, पीएँ या और कुछ करें। 32 किसी के लिए ठोकर का बाइस न बनें, न यहदियों के लिए, न यूनानियों के लिए और न अल्लाह की जमात के लिए। 33 इसी तरह मैं भी सबको पसंद आने की हर मुमकिन कोशिश करता हूँ। मैं अपने ही फ़ायदे के ख़याल में नहीं रहता बल्कि दूसरों के ताकि बहुतेरे नजात पाएँ।

## 11

1 मेरे नमूने पर चले जिस तरह मैं मसीह के नमूने पर चलता हूँ।

### इबादत में ख़वातीन का किरदार

2 शाबाश कि आप हर तरह से मुझे याद रखते हैं। आपने रिवायात को यों महफूज़ रखा है जिस तरह मैंने उन्हें आपके सुपुर्द किया था। 3 लेकिन मैं आपको एक और बात से आगाह करना चाहता हूँ। हर मर्द का सर मसीह है जबकि औरत का सर मर्द और मसीह का सर अल्लाह है। 4 अगर कोई मर्द सर ढाँककर दुआ या नबूवत करे तो वह अपने सर की बेइज़्जती करता है। 5 और अगर कोई ख़ातून गंगे सर दुआ या नबूवत करे तो वह अपने सर की बेइज़्जती करती है, गोया वह सर मुंडी है। 6 जो औरत अपने सर पर दोपट्टा नहीं लेती वह टिंड करवाए। लेकिन अगर टिंड करवाना या सर मुँडवाना उसके लिए बेइज़्जती का बाइस है तो फिर वह अपने सर को ज़रूर ढाँके। 7 लेकिन मर्द के लिए लाज़िम है कि वह अपने सर को न ढाँके क्योंकि वह अल्लाह की सरत और जलाल को मुनअकिस करता है। लेकिन औरत मर्द का जलाल मुनअकिस करती है, 8 क्योंकि पहला मर्द औरत से नहीं निकला बल्कि औरत मर्द से निकली है। 9 मर्द को औरत के लिए खलक नहीं किया गया बल्कि औरत को मर्द के लिए। 10 इस वजह से औरत फरिशतों को पेशे-नज़र रखकर अपने सर पर दोपट्टा ले जो उस पर इब्ज़िया

का निशान है। 11 लेकिन याद रहे कि ख़ुदावंद में न औरत मर्द के बग़ैर कुछ है और न मर्द औरत के बग़ैर। 12 क्योंकि अगरचे इब्तिदा में औरत मर्द से निकली, लेकिन अब मर्द औरत ही से पैदा होता है। और हर शै अल्लाह से निकलती है।

13 आप ख़ुद फैसला करें। क्या मुनासिब है कि कोई औरत अल्लाह के सामने नंगे सर दूआ करे? 14 क्या फ़ितरत भी यह नहीं सिखाती कि लंबे बाल मर्द की बेइज्जती का बाइस हैं 15 जबकि औरत के लंबे बाल उस की इज्जत का मूजिब हैं? क्योंकि बाल उसे ढाँपने के लिए दिए गए हैं। 16 लेकिन इस सिलसिले में अगर कोई झगड़ने का शौक रखे तो जान ले कि न हमारा यह दस्तूर है, न अल्लाह की जमातों का।

### अशाए-रब्बानी

17 मैं आपको एक और हिदायत देता हूँ। लेकिन इस सिलसिले में मेरे पास आपके लिए तारीफ़ी अलफ़ाज़ नहीं, क्योंकि आपका जमा होना आपकी बेहतरी का बाइस नहीं होता बल्कि नुक़सान का बाइस। 18 अब्बल तो मैं सुनता हूँ कि जब आप जमात की सूरत में इकठ्ठे होते हैं तो आपके दरमियान पाटीं बाज़ी नज़र आती है। और किसी हद तक मुझे इसका यकीन भी है। 19 लाज़िम है कि आपके दरमियान मुख़्तलिफ़ पाटींयों नज़र आएँ ताकि आपमें से वह जाहिर हो जाएँ जो आज़माने के बाद भी सच्चे निकलें। 20 जब आप जमा होते हैं तो जो खाना आप खाते हैं उसका अशाए-रब्बानी से कोई ताल्लुक नहीं रहा। 21 क्योंकि हर शख्स दूसरों का इंतज़ार किए बग़ैर अपना खाना खाने लगता है। नतीजे में एक भूका रहता है जबकि दूसरे को नशा हो जाता है। 22 ताज्ज़ुब है! क्या खाने-पीने के लिए आपके घर नहीं? या क्या आप अल्लाह की जमात को हकीर जानकर उनको जो खाली हाथ आए हैं शरमिदा करना चाहते हैं? मैं क्या कहूँ? क्या आपको शाबाश दूँ? इसमें मैं आपको शाबाश नहीं दे सकता।

23 क्योंकि जो कुछ मैंने आपके सुपुर्द किया है वह मुझे ख़ुदावंद ही से मिला है। जिस रात ख़ुदावंद ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया गया उसने रोटी लेकर 24 शुक़्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके कहा, “यह मेरा बदन है जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।” 25 इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला लेकर कहा, “मैं का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे खून के ज़रीए कायम किया जाता है। जब कभी इसे पियो तो मुझे याद करने के लिए पियो।” 26 क्योंकि जब भी आप यह रोटी खाते और यह प्याला पीते हैं तो ख़ुदावंद की मौत का एलान करते हैं, जब तक वह वापस न आए।

27 चुनौचे जो नालायक तौर पर ख़ुदावंद की रोटी खाए और उसका प्याला पिए वह ख़ुदावंद के बदन और खून का गुनाह करता है और कुसूरवार ठहरेगा। 28 हर शख्स अपने आपको परखकर ही इस रोटी में से खाए और प्याले में से पिए। 29 जो रोटी खाते और प्याला पीते वन्नत ख़ुदावंद के बदन का एहताराम नहीं करता वह अपने आप पर अल्लाह की अदालत लाता है। 30 इसी लिए आपके दरमियान बहुतेरे कमज़ोर और बीमार हैं बल्कि बहुत-से मौत की नींद सो चुके हैं। 31 अगर हम अपने आपको जाँचते तो अल्लाह की अदालत से बचे रहते। 32 लेकिन ख़ुदावंद हमारी अदालत करने से हमारी तरबियत करता है ताकि हम दुनिया के साथ मुजरिम न ठहरें।

33 गरज़ मेरे भाइयो, जब आप खाने के लिए जमा होते हैं तो एक दूसरे का इंतज़ार करें। 34 अगर किसी को भूक लगी हो तो वह अपने घर में ही खाना खा ले ताकि आपका जमा होना आपकी अदालत का बाइस न ठहरे। दीगर हिदायत मैं आपको उस वन्नत दूँगा जब आपके पास आऊँगा।

## 12

### एक रूह और मुख़्तलिफ़ नेमतें

1 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप रूहानी नेमतों के बारे में नावाक़िफ़ रहें। 2 आप जानते हैं कि ईमान लाने से पेशतर आपको बार बार बहकाया और गूँगे बुतों की तरफ़ खींचा जाता था। 3 इसी के पेशे-नज़र मैं आपको आगाह करता हूँ कि अल्लाह के रूह की हिदायत से बोलनेवाला कभी नहीं कहेगा, “ईसा पर लानत।” और रूहल-कुदूस की हिदायत से बोलनेवाले के सिवा कोई नहीं कहेगा, “ईसा ख़ुदावंद है।”

4 गो तरह तरह की नेमतें होती हैं, लेकिन रूह एक ही है। 5 तरह तरह की खिदमतें होती हैं, लेकिन ख़ुदावंद एक ही है। 6 अल्लाह अपनी कुदरत का इज़हार मुख़्तलिफ़ अंदाज़ से करता है, लेकिन ख़ुदा एक ही है जो सबमें हर तरह का काम करता है। 7 हममें से हर एक में रूहल-कुदूस का इज़हार किसी नेमत से होता है। यह नेमतें इसलिए दी जाती हैं ताकि हम एक दूसरे की मदद करें। 8 एक को रूहल-कुदूस हिकमत का कलाम अता करता है, दूसरे को वही रूह इल्मो-इरफ़ान का कलाम। 9 तीसरे को वही रूह पुख़्ता ईमान देता है और चौथे को वही एक रूह शफ़ा देने की नेमतें। 10 वह एक को मोजिज़े करने की ताक़त देता है, दूसरे को नबुव्वत करने की सलाहियत और तीसरे को मुख़्तलिफ़ रूहों में इम्तियाज़ करने की नेमत। एक को



उससे गैरजबानों बोलने की नेमत मिलती है और दूसरे को इनका तरजुमा करने की। 11 वही एक रूह यह तमाम नेमतें तकसीम करता है। और वही फैसला करता है कि किस को क्या नेमत मिलनी है।

### एक जिस्म और मुख्तलिफ आज़ा

12 इनसानो जिस्म के बहुत-से आज़ा होते हैं, लेकिन यह तमाम आज़ा एक ही बदन को तशकिल देते हैं। मसीह का बदन भी ऐसा है। 13 खाह हम यहूदी थे या यूनानी, गुलाम थे या आज़ाद, बपतिस्मे से हम सबको एक ही रूह की मारिफत एक ही बदन में शामिल किया गया है, हम सबको एक ही रूह पिलाया गया है।

14 बदन के बहुत-से हिस्से होते हैं, न सिर्फ एक। 15 फ़र्ज़ करें कि पाँव कहे, “मैं हाथ नहीं हूँ इसलिए बदन का हिस्सा नहीं।” क्या यह कहने पर उसका बदन से ताल्लुक खत्म हो जाएगा? 16 या फ़र्ज़ करें कि कान कहे, “मैं आँख नहीं हूँ इसलिए बदन का हिस्सा नहीं।” क्या यह कहने पर उसका बदन से नाता टूट जाएगा? 17 अगर पूरा जिस्म आँख ही होता तो फिर सुनने की सलाहियत कहाँ होती? अगर सारा बदन कान ही होता तो फिर सूँघने का क्या बनता? 18 लेकिन अल्लाह ने जिस्म के मुख्तलिफ आज़ा बनाकर हर एक को वहाँ लगाया जहाँ वह चाहता था। 19 अगर एक ही अञ्जु पूरा जिस्म होता तो फिर यह किस किस्म का जिस्म होता? 20 नहीं, बहुत-से आज़ा होते हैं, लेकिन जिस्म एक ही है।

21 आँख हाथ से नहीं कह सकती, “मुझे तेरी ज़रूरत नहीं,” न सर पाँवों से कह सकता है, “मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं।” 22 बल्कि अगर देखा जाए तो अकसर ऐसा होता है कि जिस्म के जो आज़ा ज़्यादा कमज़ोर लगते हैं उनकी ज़्यादा ज़रूरत होती है। 23 वह आज़ा जिन्हें हम कम इज़्जत के लायक समझते हैं उन्हें हम ज़्यादा इज़्जत के साथ ढॉप लेते हैं, और वह आज़ा जिन्हें हम शर्म से छुपाकर रखते हैं उन्हीं का हम ज़्यादा एहताराम करते हैं। 24 इसके बरअक्स हमारे इज़्जतदार आज़ा को इसकी ज़रूरत ही नहीं होती कि हम उनका ख़ास एहताराम करें। लेकिन अल्लाह ने जिस्म को इस तरह तरतीब दिया कि उसने कमकदर आज़ा को ज़्यादा इज़्जतदार ठहराया, 25 ताकि जिस्म के आज़ा में तफ़रक़ान न हो बल्कि वह एक दूसरे की फ़िकर करें। 26 अगर एक अञ्जु दुख में हो तो उसके साथ दीगर तमाम आज़ा भी दुख महसूस करते हैं। अगर एक अञ्जु सरफ़राज़ हो जाए तो उसके साथ बाक़ी तमाम आज़ा भी मसूर होते हैं।

27 आप सब मिलकर मसीह का बदन हैं और इनफ़िरादी तौर पर उसके मुख्तलिफ आज़ा। 28 और अल्लाह ने अपनी ज़मात में पहले रसूल, दूसरे नबी और तीसरे उस्ताद मुकर्रर किए हैं। फिर उसने ऐसे लोग भी मुकर्रर किए हैं जो मोज़िजे करते, शफा देते, दूसरों की मदद करते, इंतज़ाम चलाते और मुख्तलिफ किस्म की गैरजबानों बोलते हैं। 29 क्या सब रसूल हैं? क्या सब नबी हैं? क्या सब उस्ताद हैं? क्या सब मोज़िजे करते हैं? 30 क्या सबको शफा देने की नेमतें हासिल हैं? क्या सब गैरजबानों बोलते हैं? क्या सब इनका तरजुमा करते हैं? 31 लेकिन आप उन नेमतों की तलाश में रहें जो अफ़ज़ल हैं।

अब मैं आपको इससे कहीं उम्दा राह बताता हूँ।

## 13

### मुहब्बत

1 अगर मैं इनसानों और फ़रिशतों की ज़बानों बोलूँ, लेकिन मुहब्बत न रखूँ तो फिर मैं बस गूँजता हुआ घड़ियाल या ठनठनाती हुई झोंझ ही हूँ। 2 अगर मेरी नबुव्वत की नेमत हो और मुझे तमाम भेदों और हर इल्म से वाकिफ़ियत हो, साथ ही मेरा ऐसा ईमान हो कि पहाड़ों को खिसका सकूँ, लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से ख़ाली हो तो मैं कुछ भी नहीं। 3 अगर मैं अपना सारा माल ग़रीबों में तकसीम कर दूँ बल्कि अपना बदन जलाए जाने के लिए दे दूँ, लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से ख़ाली हो तो मुझे कुछ फायदा नहीं।

4 मुहब्बत सब्र से काम लेती है, मुहब्बत मेहरबान है। न यह हसद करती है न डींगें मारती है। यह फूलती भी नहीं। 5 मुहब्बत बदतमीज़ी नहीं करती न अपने ही फायदे की तलाश में रहती है। यह जल्दी से गुस्से में नहीं आ जाती और दूसरों की ग़लतियों का रिकार्ड नहीं रखती। 6 यह नाइन्साफ़ी देखकर ख़ुश नहीं होती बल्कि सच्चाई के ग़ालिब आने पर ही ख़ुशी मनाती है। 7 यह हमेशा दूसरों की कमज़ोरियाँ बरदाश्त करती है, हमेशा एतमाद करती है, हमेशा उम्मीद रखती है, हमेशा साबितकदम रहती है।

8 मुहब्बत कभी खत्म नहीं होती। इसके मुकाबले में नबुव्वतें खत्म हो जाएँगी, गैरजबानें जाती रहेंगी, इल्म मिट जाएगा। 9 क्योंकि इस वक़्त हमारा इल्म नामुक्म्मल है और हमारी नबुव्वत सब कुछ जाहिर नहीं करती। 10 लेकिन जब वह कुछ आएगा जो कामिल है तो यह अधूरी चीज़ें जाती रहेंगी।

11 जब मैं बच्चा था तो बच्चे की तरह बोलता, बच्चे की-सी सोच रखता और बच्चे की-सी समझ से काम लेता था। लेकिन अब मैं बालिग हूँ, इसलिए मैंने बच्चे का-सा अंदाज़ छोड़ दिया है। 12 इस वक़्त हमें आइने में धुंधला-सा दिखाई देता

है, लेकिन उस वक़्त हम रूबरू देखेंगे। अब मैं जुजवी तौर पर जानता हूँ, लेकिन उस वक़्त कामिल तौर से जान लूँगा, ऐसे ही जैसे अल्लाह ने मुझे पहले से जान लिया है।

13 गरज़ ईमान, उम्मीद और मुहब्बत तीनों कायम रहते हैं, लेकिन इनमें अफज़ल मुहब्बत है।

## 14

### नबूवत और ग़ैरज़बाने

1 मुहब्बत का दामन थामे रखें। लेकिन साथ ही रूहानी नेमतों को सरगर्मी से इस्तेमाल में लाएँ, खुसूसन नबूवत की नेमत को। 2 ग़ैरज़बान बोलनेवाला लोगों से नहीं बल्कि अल्लाह से बात करता है। कोई उस की बात नहीं समझता क्योंकि वह रूह में भेद की बातें करता है। 3 इसके बरअक्स नबूवत करनेवाला लोगों से ऐसी बातें करता है जो उनकी तामीरो-तरक्की, हौसलाअफज़ाई और तसल्ली का बाइस बनती हैं। 4 ग़ैरज़बान बोलनेवाला अपनी तामीरो-तरक्की करता है जबकि नबूवत करनेवाला जमात की।

5 मैं चाहता हूँ कि आप सब ग़ैरज़बानों बोलें, लेकिन इससे ज्यादा यह खाहिश रखता हूँ कि आप नबूवत करें। नबूवत करनेवाला ग़ैरज़बानों बोलनेवाले से अहम है। हाँ, ग़ैरज़बानों बोलनेवाला भी अहम है बशर्तेकि अपनी ज़बान का तरजुमा करे, क्योंकि इससे खुदा की जमात की तामीरो-तरक्की होती है।

6 भाइयो, अगर मैं आपके पास आकर ग़ैरज़बानों बोलूँ, लेकिन मुकाशफे, इल्म, नबूवत और तालीम की कोई बात न करूँ तो आपको क्या फ़ायदा होगा? 7 बेजान साज़ों पर ग़ौर करने से भी यही बात सामने आती है। अगर बॉसरी या सरोद को किसी खास सुर के मुताबिक न बजाया जाए तो फिर सुननेवाले किस तरह पहचान सकेंगे कि इन पर क्या क्या पेश किया जा रहा है? 8 इसी तरह अगर बिगूल की आवाज़ जंग के लिए तैयार हो जाने के लिए साफ़ तौर से न बजे तो क्या फ़ौजी कमरबस्ता हो जाएंगे? 9 अगर आप साफ़ साफ़ बात न करें तो आपकी हालत भी ऐसी ही होगी। फिर आपकी बात कौन समझेगा? क्योंकि आप लोगों से नहीं बल्कि हवा से बातें करेंगे। 10 इस दुनिया में बहुत ज्यादा ज़बानों बोली जाती हैं और इनमें से कोई भी नहीं जो बेमानी हो। 11 अगर मैं किसी ज़बान से वाकिफ़ नहीं तो मैं उस ज़बान में बोलनेवाले के नज़दीक अजनबी ठहरूँगा और वह मेरे नज़दीक। 12 यह उसूल आप पर भी लागू होता है। चूँकि आप रूहानी नेमतों के लिए तड़पते हैं तो फिर खासकर उन नेमतों में माहिर बनने की कोशिश करें जो खुदा की जमात को तामीर करती हैं।

13 चुनौतें ग़ैरज़बान बोलनेवाला दुआ करे कि इसका तरजुमा भी कर सके। 14 क्योंकि अगर मैं ग़ैरज़बान में दुआ करूँ तो मेरी रूह तो दुआ करती है मगर मेरी अक्ल बेअमल रहती है। 15 तो फिर क्या करूँ? मैं रूह में दुआ करूँगा, लेकिन अक्ल को भी इस्तेमाल करूँगा। मैं रूह में हम्दो-सना करूँगा, लेकिन अक्ल को भी इस्तेमाल में लाऊँगा। 16 अगर आप सिर्फ़ रूह में हम्दो-सना करें तो हाज़िरिन में से जो आपकी बात नहीं समझता वह किस तरह आपकी शुक़गुजारी पर "आमीन" कह सकेगा? उसे तो आपकी बातों की समझ ही नहीं आई। 17 बेशक आप अच्छी तरह खुदा का शुक़ कर रहे होंगे, लेकिन इससे दूसरे शख्स की तामीरो-तरक्की नहीं होगी।

18 मैं खुदा का शुक़ करता हूँ कि आप सबकी निसबत ज्यादा ग़ैरज़बानों में बात करता हूँ। 19 फिर भी मैं खुदा की जमात में ऐसी बातें पेश करना चाहता हूँ जो दूसरे समझ सकें और जिनसे वह तरबियत हासिल कर सकें। क्योंकि ग़ैरज़बानों में बोली गई बेशुमार बातों की निसबत पाँच तरबियत देनेवाले अलफ़ाज़ कहीं बेहतर हैं।

20 भाइयो, बच्चों जैसी सोच से बाज़ आएँ। बुराई के लिहाज़ से तो ज़रूर बच्चे बने रहें, लेकिन समझ में बालिग़ बन जाएँ। 21 शरीअत में लिखा है, "रब फ़रमाता है कि मैं ग़ैरज़बानों और अजनबियों के होंटों की मारिफ़त इस क़ौम से बात करूँगा। लेकिन वह फिर भी मेरी नहीं सुनेंगे।" 22 इससे जाहिर होता है कि ग़ैरज़बानों ईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान नहीं होती बल्कि ग़ैरईमानदारों के लिए। इसके बरअक्स नबूवत ग़ैरईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान नहीं होती बल्कि ईमानदारों के लिए।

23 अब फ़र्ज़ करें कि ईमानदार एक जगह जमा हैं और तमाम हाज़िरिन ग़ैरज़बानों बोल रहे हैं। इसी असना में ग़ैरज़बान को न समझनेवाले या ग़ैरईमानदार आ शामिल होते हैं। आपको इस हालत में देखकर क्या वह आपको दीवाना करार नहीं देंगे? 24 इसके मुक़ाबले मैं अगर तमाम लोग नबूवत कर रहे हों और कोई ग़ैरईमानदार अंदर आए तो क्या होगा? वह सब उसे कायल कर लेंगे कि गुनाहगार है और सब उसे परख लेंगे। 25 यों उसके दिल की पोशीदा बातें जाहिर हो जाएँगी, वह गिरकर अल्लाह को सिजदा करेगा और तसलीम करेगा कि फ़िलहकीकत अल्लाह आपके दरमियान मौजूद है।

### जमात में तरतीब की ज़रूरत

26 भाइयो, फिर क्या होना चाहिए? जब आप जमा होते हैं तो हर एक के पास कोई गीत या तालीम या मुकाशफ़ा या ग़ैरज़बान या इसका तरजुमा हो। इन सबका मक़सद खुदा की जमात की तामीरो-तरक्की हो। 27 ग़ैरज़बान में बोलते वक़्त

सिर्फ दो या ज्यादा से ज्यादा तीन अशख़ास बोलें और वह भी बारी बारी। साथ ही कोई उनका तरजूमा भी करे। 28 अगर कोई तरजूमा करनेवाला न हो तो गैरजबान बोलनेवाला जमात में खामोश रहे, अलबत्ता उसे अपने आपसे और अल्लाह से बात करने की आज़ादी है। 29 नबियों में से दो या तीन नबुवत करें और दूसरे उनकी बातों की सेहत को परखें। 30 अगर इस दौरान किसी बैठे हुए शख़्स को कोई मुकाशफ़ा मिले तो पहला शख़्स खामोश हो जाए। 31 क्योंकि आप सब बारी बारी नबुवत कर सकते हैं ताकि तमाम लोग सीखें और उनकी हौसलाअफ़जाई हो। 32 नबियों की रूहें नबियों के ताबे रहती हैं, 33 क्योंकि अल्लाह बेतरतीबी का नहीं बल्कि सलामती का खुदा है।

जैसा मुक़द्दसीन की तमाम जमातों का दस्तूर है 34 ख़वातीन जमात में खामोश रहें। उन्हें बोलने की इजाज़त नहीं, बल्कि वह फ़रमाँबरदार रहें। शरीअत भी यही फ़रमाती है। 35 अगर वह कुछ सीखना चाहें तो अपने घर पर अपने शौहर से पूछ लें, क्योंकि औरत का खुदा की जमात में बोलना शर्म की बात है।

36 क्या अल्लाह का कलाम आपमें से निकला है, या क्या वह सिर्फ़ आप ही तक पहुँचा है? 37 अगर कोई खयाल करे कि मैं नबी हूँ या ख़ास रूहानी हैसियत रखता हूँ तो वह जान ले कि जो कुछ मैं आपको लिख रहा हूँ वह खुदावंद का हुक्म है। 38 जो यह नज़रंदाज़ करता है उसे खुद भी नज़रंदाज़ किया जाएगा।

39 गरज़ भाइयो, नबुवत करने के लिए तडपते रहें, अलबत्ता किसी को गैरजबानें बोलने से न रोके। 40 लेकिन सब कुछ शायस्तगी और तरतीब से अमल में आए।

## 15

### मसीह का जी उठना

1 भाइयो, मैं आपकी तवज़ूह उस ख़ुशख़बरी की तरफ़ दिलाता हूँ जो मैंने आपको सुनाई, वही ख़ुशख़बरी जिसे आपने क़बूल किया और जिस पर आप कायम भी हैं। 2 इसी पैग़ाम के वसीले से आपको नजात मिलती है। शर्त यह है कि आप वह बातें ज्यों की त्यों थामे रखें जिस तरह मैंने आप तक पहुँचाई है। बेशक़ यह बात इस पर मुनहसिर है कि आपका इमान लाना बेमक़सद नहीं था।

3 क्योंकि मैंने इस पर ख़ास जोर दिया कि वही कुछ आपके सुपुर्द करूँ जो मुझे भी मिला है। यह कि मसीह ने पाक नविशतों के मुताबिक़ हमारे गुनाहों की खातिर अपनी जान दी, 4 फिर वह दफ़न हुआ और तीसरे दिन पाक नविशतों के मुताबिक़ जी उठा। 5 वह पतरस को दिखाई दिया, फिर बारह शागिर्दों को। 6 इसके बाद वह एक ही वक़्त पाँच सौ से ज्यादा भाइयों पर जाहिर हुआ। उनमें से बेशतर अब तक जिंदा हैं अगरचे चंद एक इंतक़ाल कर चुके हैं। 7 फिर याक़ूब ने उसे देखा, फिर तमाम रसूलों ने।

8 और सबके बाद वह मुझ पर भी जाहिर हुआ, मुझ पर जो गोया क़बल अज़ वक़्त पैदा हुआ। 9 क्योंकि रसूलों में मेरा दर्जा सबसे छोटा है, बल्कि मैं तो रसूल कहलाने के भी लायक़ नहीं, इसलिए कि मैंने अल्लाह की जमात को ईजा पहुँचाई। 10 लेकिन मैं जो कुछ हूँ अल्लाह के फ़ज़ल ही से हूँ। और जो फ़ज़ल उसने मुझ पर किया वह बेअसर न रहा, क्योंकि मैंने उन सबसे ज्यादा जॉफ़िशानी से काम किया है। अलबत्ता यह काम मैंने खुद नहीं बल्कि अल्लाह के फ़ज़ल ने किया है जो मेरे साथ था। 11 ख़ैर, यह काम मैंने किया या उन्होंने, हम सब उसी पैग़ाम की मुनादी करते हैं जिस पर आप इमान लाए हैं।

### जी उठने पर एतराज़

12 अब मुझे यह बताएँ, हम तो मुनादी करते हैं कि मसीह मुरदों में से जी उठा है। तो फिर आपमें से कुछ लोग कैसे कह सकते हैं कि मुरदे जी नहीं उठते? 13 अगर मुरदे जी नहीं उठते तो मतलब यह हुआ कि मसीह भी नहीं जी उठा। 14 और अगर मसीह जी नहीं उठा तो फिर हमारी मुनादी अबस होती और आपका इमान लाना भी बेफ़ायदा होता। 15 नीज़ हम अल्लाह के बारे में झूठे गवाह साबित होते। क्योंकि हम गवाही देते हैं कि अल्लाह ने मसीह को जिंदा किया जबकि अगर वाकई मुरदे नहीं जी उठते तो वह भी जिंदा नहीं हुआ। 16 गरज़ अगर मुरदे जी नहीं उठते तो फिर मसीह भी नहीं जी उठा। 17 और अगर मसीह नहीं जी उठा तो आपका इमान बेफ़ायदा है और आप अब तक अपने गुनाहों में गिरफ़्तार हैं। 18 हों, इसके मुताबिक़ जिन्होंने मसीह में होते हुए इंतक़ाल किया है वह सब हलाक़ हो गए हैं। 19 चुनौचे अगर मसीह पर हमारी उम्मीद सिर्फ़ इसी जिंदगी तक महदूद है तो हम इनसानों में सबसे ज्यादा काबिले-रहम हैं।

### मसीह वाकई जी उठा है

20 लेकिन मसीह वाकई मुरदों में से जी उठा है। वह इंतक़ाल किए हुआ की फ़सल का पहला फल है। 21 चूँकि इनसान के वसीले से मौत आई, इसलिए इनसान ही के वसीले से मुरदों के जी उठने की भी राह खुली। 22 जिस तरह सब इसलिए मरते हैं कि वह आदम के फ़रज़ंद हैं उसी तरह सब जिंदा किए जाएंगे जो मसीह के हैं। 23 लेकिन जी उठने की एक तरतीब है।

मसीह तो फसल के पहले फल की हैसियत से जी उठ चुका है जबकि उसके लोग उस वक़्त जी उठेंगे जब वह वापस आएगा। 24 इसके बाद खातमा होगा। तब हर हुकूमत, इख्तियार और कुव्वत को नेस्त करके वह बादशाही को खुदा बाप के हवाले कर देगा। 25 क्योंकि लाज़िम है कि मसीह उस वक़्त तक हुकूमत करे जब तक अल्लाह तमाम दुश्मनों को उसके पाँवों के नीचे न कर दे। 26 आखिरी दुश्मन जिसे नेस्त किया जाएगा मौत होगी। 27 क्योंकि अल्लाह के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “उसने सब कुछ उस (यानी मसीह) के पाँवों के नीचे कर दिया।” जब कहा गया है कि सब कुछ मसीह के मातहत कर दिया गया है, तो ज़ाहिर है कि इसमें अल्लाह शामिल नहीं जिसने सब कुछ मसीह के मातहत किया है। 28 जब सब कुछ मसीह के मातहत कर दिया गया तब फ़रज़ंद खुद भी उसी के मातहत हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके मातहत किया। यों अल्लाह सबमें सब कुछ होगा।

### जी उठने के पेशे-नज़र ज़िंदगी गुज़ारना

29 अगर मुरदे वाकई जी नहीं उठते तो फिर वह लोग क्या करेंगे जो मुरदों की खातिर बपतिस्मा लेते हैं? अगर मुरदे जी नहीं उठेंगे तो फिर वह उनकी खातिर क्यों बपतिस्मा लेते हैं? 30 और हम भी हर वक़्त अपनी जान खतरे में क्यों डाले हुए हैं? 31 भाइयो, मैं रोज़ाना मरता हूँ। यह बात उतनी ही यक़ीनी है जितनी यह कि आप हमारे खुदावंद मसीह ईसा में मेरा फ़ख़र हैं। 32 अगर मैं सिर्फ़ इसी ज़िंदगी की उम्मीद रखते हुए इफ़िसस में वहरशी दरिदों से लड़ा तो मुझे क्या फ़ायदा हुआ? अगर मुरदे जी नहीं उठते तो इस कौल के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना बेहतर होगा कि “आओ, हम खाएँ, पीएँ, क्योंकि कल तो मर ही जाना है।”

33 फ़रेब न खाएँ, बुरी सोहबत अच्छी आदतों को बिगाड़ देती है। 34 पूरे तौर पर होश में आएँ और गुनाह न करें। आपमें से बाज़ ऐसे हैं जो अल्लाह के बारे में कुछ नहीं जानते। यह बात मैं आपको शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ।

### मुरदे किस तरह जी उठेंगे

35 शायद कोई सवाल उठाए, “मुरदे किस तरह जी उठते हैं? और जी उठने के बाद उनका जिस्म कैसा होगा?” 36 भई, अक़ल से काम लें। जो बीज आप बोते हैं वह उस वक़्त तक नहीं उगता जब तक कि मर न जाए। 37 जो आप बोते हैं वह वही पौदा नहीं है जो बाद में उगेगा बल्कि महज़ एक गंगा-सा दाना है, खाह गंदुम का हो या किसी और चीज़ का। 38 लेकिन अल्लाह उसे ऐसा जिस्म देता है जैसा वह मुनासिब समझता है। हर किस्म के बीज को वह उसका ख़ास जिस्म अता करता है।

39 तमाम जानदारों को एक जैसा जिस्म नहीं मिला बल्कि इन्सानों को और किस्म का, मवेशियों को और किस्म का, पिरिदों को और किस्म का, और मछलियों को और किस्म का।

40 इसके अलावा आसमानी जिस्म भी हैं और ज़मीनी जिस्म भी। आसमानी जिस्मों की शान और है और ज़मीनी जिस्मों की शान और। 41 सूरज की शान और है, चाँद की शान और, और सितारों की शान और, बल्कि एक सितारा शान में दूसरे सितारे से फ़रक है।

42 मुरदों का जी उठना भी ऐसा ही है। जिस्म फ़ानी हालत में बोया जाता है और लाफ़ानी हालत में जी उठता है। 43 वह ज़लील हालत में बोया जाता है और जलाली हालत में जी उठता है। वह कमज़ोर हालत में बोया जाता है और कवी हालत में जी उठता है। 44 फ़ितरती जिस्म बोया जाता है और रूहानी जिस्म जी उठता है। जहाँ फ़ितरती जिस्म है वहाँ रूहानी जिस्म भी होता है। 45 पाक नविशतों में भी लिखा है कि पहले इन्सान आदम में जान आ गई। लेकिन आखिरी आदम ज़िंदा करनेवाली रूह बना। 46 रूहानी जिस्म पहले नहीं था बल्कि फ़ितरती जिस्म, फिर रूहानी जिस्म हुआ। 47 पहला इन्सान ज़मीनी की मिट्टी से बना था, लेकिन दूसरा आसमान से आया। 48 जैसा पहला खाकी इन्सान था वैसे ही दीगर खाकी इन्सान भी हैं, और जैसा आसमान से आया हुआ इन्सान है वैसे ही दीगर आसमानी इन्सान भी हैं। 49 यों हम इस वक़्त खाकी इन्सान की शक्लो-सूरत रखते हैं जबकि हम उस वक़्त आसमानी इन्सान की शक्लो-सूरत रखेंगे।

### मौत पर फ़तह

50 भाइयो, मैं यह कहना चाहता हूँ कि खाकी इन्सान का मौजूदा जिस्म अल्लाह की बादशाही को मीरास में नहीं पा सकता। जो कुछ फ़ानी है वह लाफ़ानी चीज़ों को मीरास में नहीं पा सकता।

51 देखो मैं आपको एक भेद बताता हूँ। हम सब वफ़ात नहीं पाएँगे, लेकिन सब ही बदल जाएंगे। 52 और यह अचानक, आँख झपकते में, आखिरी बिगुल बजते ही रूनुमा होगा। क्योंकि बिगुल बजने पर मुरदे लाफ़ानी हालत में जी उठेंगे और हम बदल जाएंगे। 53 क्योंकि लाज़िम है कि यह फ़ानी जिस्म बका का लिबास पहन ले और मरनेवाला जिस्म अबदी ज़िंदगी का। 54 जब इस फ़ानी और मरनेवाले जिस्म ने बका और अबदी ज़िंदगी का लिबास पहन लिया होगा तो फिर वह कलाम पूरा होगा जो पाक नविशतों में लिखा है कि

“मौत इलाही फ़तह का लुक़मा हो गई है।

55 ऐ मौत, तेरी फतह कहाँ रही?

ऐ मौत, तेरा डंक कहाँ रहा?"

56 मौत का डंक गुनाह है और गुनाह शरीरत से तकवियत पाता है। 57 लेकिन खुदा का शक्र है जो हमें हमारे खुदावंद ईसा मसीह के वसीले से फतह बख्शता है।

58 गरज़, मेरे प्यारे भाइयो, मज़बूत बने रहें। कोई चीज़ आपको डॉक्टरों के हाथों में न कर दे। हमेशा खुदावंद की खिदमत जॉफिशानी से करें, यह जानते हुए कि खुदावंद के लिए आपकी मेहनत-मशक्कत रायगों नहीं जाएगी।

## 16

यरूशलम की जमात के लिए चंदा

1 रही चंदे की बात जो यरूशलम के मुकद्दसीन के लिए जमा किया जा रहा है तो उसी हिदायत पर अमल करें जो मैं गलतिया की जमातों को दे चुका हूँ। 2 हर इतवार को आपमें से हर कोई अपने कमाए हुए पैसों में से कुछ इस चंदे के लिए मखसूस करके अपने पास रख छोड़े। फिर मेरे आने पर हदियाजात जमा करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। 3 जब मैं आऊँगा तो ऐसे अफ़रद को जो आपके नज़दीक काबिले-एतमाद हैं ख़त देकर यरूशलम भेजूँगा ताकि वह आपका हदिया वहाँ तक पहुँचा दें। 4 अगर मुनासिब हो कि मैं भी जाऊँ तो वह मेरे साथ जाएँगे।

5 मैं मकिदुनिया से होकर आपके पास आऊँगा क्योंकि मकिदुनिया में से सफ़र करने का इरादा रखता हूँ। 6 शायद आपके पास थोड़े अरसे के लिए ठहरूँ, लेकिन यह भी मुमकिन है कि सदियों का मौसम आप ही के साथ काटूँ ताकि मेरे बाद के सफ़र के लिए आप मेरी मदद कर सकें। 7 मैं नहीं चाहता कि इस दफ़ा मुख़तसर मुलाक़ात के बाद चलता बनूँ, बल्कि मेरी खाहिश है कि कुछ वक़्त आपके साथ गुज़ारूँ। शर्त यह है कि खुदावंद मुझे इजाज़त दे।

8 लेकिन ईद-पंतिकुस्त तक मैं इफ़िसस में ही ठहरूँगा, 9 क्योंकि यहाँ मेरे सामने मुआस्सिर काम के लिए एक बड़ा दरवाज़ा खुल गया है और साथ ही बहुत-से सुखालिफ़ भी पैदा हो गए हैं।

10 अगर तीमथियुस आए तो इसका खयाल रखें कि वह बिलाखौफ़ आपके पास रह सके। मेरी तरह वह भी खुदावंद के खेत में फ़सल काट रहा है। 11 इसलिए कोई उसे हकीर न जाने। उसे सलामती से सफ़र पर रवाना करें ताकि वह मुझ तक पहुँचे, क्योंकि मैं और दीगर भाई उसके मुतज़िर हैं।

12 भाई अपुल्लोस की मैंने बड़ी हौसलाअफ़ज़ाई की है कि वह दीगर भाइयों के साथ आपके पास आए, लेकिन अल्लाह को कतअन मंज़ूर न था। ताहम मौका मिलने पर वह जरूर आएगा।

नसीहतें और सलाम

13 जागते रहें, ईमान में साबितकदम रहें, मरदानगी दिखाएँ, मज़बूत बने रहें। 14 सब कुछ मुहब्बत से करें।

15 भाइयो, मैं एक बात में आपको नसीहत करना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि स्तिफ़नास का घराना अख़या का पहला फ़ल है और कि उन्होंने अपने आपको मुकद्दसीन की खिदमत के लिए वक्फ़ कर रखा है। 16 आप ऐसे लोगों के ताबे रहें और साथ ही हर उस शख्स के जो उनके साथ खिदमत के काम में जॉफिशानी करता है।

17 स्तिफ़नास, फ़ुरतनातुस और अखीकुस के पहुँचने पर मैं बहुत खुश हुआ, क्योंकि उन्होंने वह कमी पूरी कर दी जो आपकी ग़ैरहाज़िरी से पैदा हुई थी। 18 उन्होंने मेरी रूह को और साथ ही आपकी रूह को भी ताज़ा किया है। ऐसे लोगों की कदर करें।

19 आसिया की जमातें आपको सलाम कहती हैं। अकविला और प्रिसकिल्ला आपको खुदावंद में पुरजोश सलाम कहते हैं और उनके साथ वह जमात भी जो उनके घर में जमा होती है। 20 तमाम भाई आपको सलाम कहते हैं। एक दूसरे को मुकद्दस बोसा देते हुए सलाम कहें।

21 यह सलाम मैं यानी पौलुस अपने हाथ से लिखता हूँ।

22 लानत उस शख्स पर जो खुदावंद से मुहब्बत नहीं रखता।

ऐ हमारे खुदावंद, आ! 23 खुदावंद ईसा का फ़ज़ल आपके साथ रहे।

24 मसीह ईसा मैं आप सबको मेरा प्यार।

## 2 कुरिथियों

1 यह खत पौलुस की तरफ से है, जो अल्लाह की मरज़ी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह भाई तीमुथियुस की तरफ से भी है।

मैं कुरिथुस में अल्लाह की जमात और सब्बा अखिया में मौजूद तमाम मुकद्दसीन को यह लिख रहा हूँ।

2 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें।

अल्लाह की हम्दो-सना

3 हमारे खुदावंद ईसा मसीह के खुदा और बाप की तमज़ीद हो, जो रहम का बाप और तमाम तरह की तसल्ली का खुदा है।

4 जब भी हम मुसीबत में फँस जाते हैं तो वह हमें तसल्ली देता है ताकि हम औरों को भी तसल्ली दे सकें। फिर जब वह किसी मुसीबत से दोचार होते हैं तो हम भी उनको उसी तरह तसल्ली दे सकते हैं जिस तरह अल्लाह ने हमें तसल्ली दी है। 5 क्योंकि जितनी कसरत से मसीह की-सी मुसीबतें हम पर आ जाती हैं उतनी कसरत से अल्लाह मसीह के ज़रीए हमें तसल्ली देता है। 6 जब हम मुसीबतों से दोचार होते हैं तो यह बात आपकी तसल्ली और नज़ात का बाइस बनती है। जब हमारी तसल्ली होती है तो यह आपकी भी तसल्ली का बाइस बनती है। यों आप भी सब्र से वह कुछ बरदाश्त करने के काबिल बन जाते हैं जो हम बरदाश्त कर रहे हैं। 7 चुनौचे हमारी आपके बारे में उम्मीद पुञ्जा रहती है। क्योंकि हम जानते हैं कि जिस तरह आप हमारी मुसीबतों में शरीक हैं उसी तरह आप उस तसल्ली में भी शरीक हैं जो हमें हासिल होती है।

8 भाइयो, हम आपको उस मुसीबत से आगाह करना चाहते हैं जिसमें हम सब्बा आसिया में फँस गए। हम पर दबाव इतना शदीद था कि उसे बरदाश्त करना नामुमकिन-सा हो गया और हम जान से हाथ धो बैठे। 9 हमने महसूस किया कि हमें सज़ाए-मौत दी गई है। लेकिन यह इसलिए हुआ ताकि हम अपने आप पर भरोसा न करें बल्कि अल्लाह पर जो मुर्दों को जिंदा कर देता है। 10 उसी ने हमें ऐसी हैबतनाक मौत से बचाया और वह आइंदा भी हमें बचाएगा। और हमने उस पर उम्मीद रखी है कि वह हमें एक बार फिर बचाएगा। 11 आप भी अपनी दुआओं से हमारी मदद कर रहे हैं। यह कितनी खूबसूरत बात है कि अल्लाह बहुतों की दुआओं को सुनकर हम पर मेहरबानी करेगा और नतीजे में बहुतेरे हमारे लिए शुक्र करेंगे।

पौलुस के मनसूबों में तबदीली

12 यह बात हमारे लिए फ़ख़र का बाइस है कि हमारा ज़मीर साफ़ है। क्योंकि हमने अल्लाह के सामने सादादिली और ख़ुलूस से ज़िंदगी गुज़ारी है, और हमने अपनी इनसानी हिकमत पर इनाहिसार नहीं किया बल्कि अल्लाह के फ़ज़ल पर। दुनिया में और ख़ासकर आपके साथ हमारा रवैया ऐसा ही रहा है। 13 हम तो आपको ऐसी कोई बात नहीं लिखते जो आप पढ़ या समझ नहीं सकते। और मुझे उम्मीद है कि आपको पूरे तौर पर समझ आएगी, 14 अगरचे आप फ़िलहाल सब कुछ नहीं समझते। क्योंकि जब आपको सब कुछ समझ आएगा तब आप खुदावंद ईसा के दिन हम पर उतना फ़ख़र कर सकेंगे जितना हम आप पर।

15 चूँकि मुझे इसका पूरा यकीन था इसलिए मैं पहले आपके पास आना चाहता था ताकि आपको दुगनी बरकत मिल जाए। 16 ख़याल यह था कि मैं आपके हाँ से होकर मकिदुनिया जाऊँ और वहाँ से आपके पास वापस आऊँ। फिर आप सब्बा यहूदिया के सफ़र के लिए तैयारियों करने में मेरी मदद करके मुझे आगे भेज सकते थे। 17 आप मुझे बताएँ कि क्या मैंने यह मनसूबा यों ही बनाया था? क्या मैं दुनियावी लोगों की तरह मनसूबे बना लेता हूँ जो एक ही लामहे में “जी हाँ” और “जी नहीं” कहते हैं? 18 लेकिन अल्लाह वफ़ादार है और वह मेरा गवाह है कि हम आपके साथ बात करते वक़्त “नहीं” को “हाँ” के साथ नहीं मिलाते। 19 क्योंकि अल्लाह का फ़रज़ंद ईसा मसीह जिसकी मुनादी मैं, सीलास और तीमुथियुस ने की वह भी ऐसा नहीं है। उसने कभी भी “हाँ” को “नहीं” के साथ नहीं मिलाया बल्कि उसमें अल्लाह की हतमी “जी हाँ” वुज़ूद में आई। 20 क्योंकि वही अल्लाह के तमाम वादों की “हाँ” है। इसलिए हम उसी के वसीले से “आमीन” (जी हाँ) कहकर अल्लाह को जलाल देते हैं। 21 और अल्लाह खुद हमें और आपको मसीह में मज़बूत कर देता है। उसी ने हमें मसह करके मख़सूस किया है। 22 उसी ने हम पर अपनी मुहर लगाकर ज़ाहिर किया है कि हम उस की मिलकियत हैं और उसी ने हमें रूहल-कुदूस देकर अपने वादों का बयाना अदा किया है।

23 अगर मैं झूट बोलूँ तो अल्लाह मेरे खिलाफ़ गवाही दे। बात यह है कि मैं आपको बचाने के लिए कुरिथुस वापस न आया। 24 मतलब यह नहीं कि हम ईमान के मामले में आप पर हुकूमत करना चाहते हैं। नहीं, हम आपके साथ मिलकर ख़िदमत करते हैं ताकि आप ख़ुशी से भर जाएँ, क्योंकि आप तो ईमान की मारिफ़त कायम हैं।

## 2

1 चुनौचे मैंने फ़ैसला किया कि मैं दुबारा आपके पास नहीं आऊँगा, वरना आपको बहुत गम खाना पड़ेगा। 2 क्योंकि अगर मैं आपको दुख पहुँचाऊँ तो कौन मुझे खुश करेगा? यह वह शख्स नहीं करेगा जिसे मैंने दुख पहुँचाया है। 3 यही वजह है कि मैंने आपको यह लिख दिया। मैं नहीं चाहता था कि आपके पास आकर उन्हीं लोगों से गम खाऊँ जिन्हें मुझे खुश करना चाहिए। क्योंकि मुझे आप सबके बारे में यकीन है कि मेरी खुशी आप सबकी खुशी है। 4 मैंने आपको निहायत रंजीदा और परेशान हालत में आँसू बहा बहाकर लिख दिया। मकसद यह नहीं था कि आप गमगीन हो जाएँ बल्कि मैं चाहता था कि आप जान लें कि मैं आपसे कितनी गहरी मुहब्बत रखता हूँ।

## मुजरिम को मुआफ़ कर दिया जाए

5 अगर किसी ने दुख पहुँचाया है तो मुझे नहीं बल्कि किसी हद तक आप सबको (मैं ज़्यादा सख्ती से बात नहीं करना चाहता)। 6 लेकिन मज़कूर शख्स के लिए यह काफ़ी है कि उसे ज़मात के अकसर लोगों ने सज़ा दी है। 7 अब ज़रूरी है कि आप उसे मुआफ़ करके तसल्ली दें, वरना वह गम खा खाकर तबाह हो जाएगा। 8 चुनौचे मैं इस पर जोर देना चाहता हूँ कि आप उसे अपनी मुहब्बत का एहसास दिलाएँ। 9 मैंने यह मालूम करने के लिए आपको लिखा कि क्या आप इमतहान में पूरे उतरेंगे और हर बात में ताबे रहेंगे। 10 जिसे आप कुछ मुआफ़ करते हैं उसे मैं भी मुआफ़ करता हूँ। और जो कुछ मैंने मुआफ़ किया, अगर मुझे कुछ मुआफ़ करने की ज़रूरत थी, वह मैंने आपकी खातिर मसीह के हुज़ूर मुआफ़ किया है 11 ताकि इबलीस हमसे फ़ायदा न उठाए। क्योंकि हम उस की चालों से ख़ुब वाकिफ़ हैं।

## त्रोआस में पौलुस की परेशानी

12 जब मैं मसीह की खुशख़बरी सुनाने के लिए त्रोआस गया तो खुदाबंद ने मेरे लिए आगे ख़िदमत करने का एक दरवाज़ा खोल दिया। 13 लेकिन जब मुझे अपना भाई तितुस वहाँ न मिला तो मैं बेचैन हो गया और उन्हें ख़ैरबाद कहकर सूबा मकिदुनिया चला गया।

## मसीह में फ़तह

14 लेकिन खुदा का शुक़ है! वही हमारे आगे चलता है और हम मसीह के कैदी बनकर उस की फ़तह मनाते हुए उसके पीछे पीछे चलते हैं। यों अल्लाह हमारे वसीले से हर जगह मसीह के बारे में इल्म खुशबू की तरह फैलाता है। 15 क्योंकि हम मसीह की खुशबू हैं जो अल्लाह तक पहुँचती है और साथ साथ लोगों में भी फैलती है, नज़ात पानेवालों में भी और हलाक होनेवालों में भी। 16 बाज़ लोगों के लिए हम मौत की मोहलक बू हैं जबकि बाज़ के लिए हम ज़िंदगीबख़्श खुशबू हैं। तो कौन यह ज़िम्मादारी निभाने के लायक है? 17 क्योंकि हम अकसर लोगों की तरह अल्लाह के कलाम की तिज़ारत नहीं करते, बल्कि यह जानकर कि हम अल्लाह के हुज़ूर में हैं और उसके भेजे हुए हैं हम खुलूसदिली से लोगों से बात करते हैं।

## 3

## नए अहद के खादिम

1 क्या हम दुबारा अपनी ख़बियों का ढंडोरा पीट रहे हैं? या क्या हम बाज़ लोगों की मानिंद हैं जिन्हें आपको सिफ़ारिशी ख़त देने या आपसे ऐसे ख़त लिखवाने की ज़रूरत होती है? 2 नहीं, आप तो ख़ुद हमारा ख़त हैं जो हमारे दिलों पर लिखा हुआ है। सब इसे पहचान और पढ़ सकते हैं। 3 यह साफ़ ज़ाहिर है कि आप मसीह का ख़त हैं जो उसने हमारी ख़िदमत के ज़रिए लिख दिया है। और यह ख़त स्याही से नहीं बल्कि ज़िंदा ख़ुदा के रूह से लिखा गया, पत्थर की तख़्तियों पर नहीं बल्कि इनसानी दिलों पर।

4 हम यह इसलिए यकीन से कह सकते हैं क्योंकि हम मसीह के वसीले से अल्लाह पर एतमाद रखते हैं। 5 हमारे अंदर तो कुछ नहीं है जिसकी बिना पर हम दावा कर सकते कि हम यह काम करने के लायक हैं। नहीं, हमारी लियाक़त अल्लाह की तरफ़ से है। 6 उसी ने हमें नए अहद के खादिम होने के लायक बना दिया है। और यह अहद लिखी हुई शरीअत पर मबनी नहीं है बल्कि रूह पर, क्योंकि लिखी हुई शरीअत के असर से हम मर जाते हैं जबकि रूह हमें ज़िंदा कर देता है।

7 शरीअत के हुरूफ़ पत्थर की तख़्तियों पर कंदा किए गए और जब उसे दिया गया तो अल्लाह का जलाल ज़ाहिर हुआ। यह जलाल इतना तेज़ था कि इसराईली मुसा के चेहरे को लगातार देख न सके। अगर उस चीज़ का जलाल इतना तेज़ था जो अब मनसूख़ है 8 तो क्या रूह के निज़ाम का जलाल इससे कहीं ज़्यादा नहीं होगा? 9 अगर पुराना निज़ाम जो हमें मुजरिम ठहराता था जलाली था तो फिर नया निज़ाम जो हमें रास्तबाज़ करार देता है कहीं ज़्यादा जलाली होगा। 10 हाँ, पहले निज़ाम का जलाल नए निज़ाम के ज़बरदस्त जलाल की निसबत कुछ भी नहीं है। 11 और अगर उस पुराने निज़ाम का जलाल बहुत था जो अब मनसूख़ है तो फिर उस नए निज़ाम का जलाल कहीं ज़्यादा होगा जो कायम रहेगा।

12 पस चूँकि हम ऐसी उम्मीद रखते हैं इसलिए बड़ी दिलेरी से खिदमत करते हैं। 13 हम मूसा की मानिद नहीं हैं जिसने शरीअत सुनाने के इख़िताम पर अपने चेहरे पर निकाब डाल लिया ताकि इसराईली उसे तकते न रहें जो अब मनसूख है। 14 तो भी वह जहनी तौर पर अड गए, क्योंकि आज तक जब पुराने अहदनामे की तिलावत की जाती है तो यही निकाब कायम है। आज तक निकाब को हटाया नहीं गया क्योंकि यह अहद सिर्फ़ मसीह में मनसूख होता है। 15 हौं, आज तक जब मूसा की शरीअत पढ़ी जाती है तो यह निकाब उनके दिलों पर पड़ा रहता है। 16 लेकिन जब भी कोई खुदावंद की तरफ़ रूजू करता है तो यह निकाब हटाया जाता है, 17 क्योंकि खुदावंद रूह है और जहाँ खुदावंद का रूह है वहाँ आज़ादी है। 18 चुनौचे हम सब जिनके चेहरों से निकाब हटाया गया है खुदावंद का जलाल मुनअकिस करते और क़दम बकदम जलाल पाते हुए मसीह की सूरत में बदलते जाते हैं। यह खुदावंद ही का काम है जो रूह है।

## 4

### मिट्टी के बरतनों में रूहानी ख़ज़ाना

1 पस चूँकि हमें अल्लाह के रहम से यह खिदमत सौंपी गई है इसलिए हम बेदिल नहीं हो जाते। 2 हमने छुपी हुई शर्मनाक बातें मुस्तरद कर दी हैं। न हम चालाकी से काम करते, न अल्लाह के कलाम में तहरीफ़ करते हैं। बल्कि हमें अपनी सिफ़ारिश की ज़रूरत भी नहीं, क्योंकि जब हम अल्लाह के हुज़ूर लोगों पर हकीकत को जाहिर करते हैं तो हमारी नेकनामी खुद बख़ुद हर एक के ज़मीर पर जाहिर हो जाती है। 3 और अगर हमारी ख़ुशख़बरी निकाब तले छुपी हुई भी हो तो वह सिर्फ़ उनके लिए छुपी हुई है जो हलाक हो रहे हैं। 4 इस जहान के शरीर खुदा ने उनके जहनों को अंधा कर दिया है जो ईमान नहीं रखते। इसलिए वह अल्लाह की ख़ुशख़बरी की जलाली रौशनी नहीं देख सकते। वह यह पैग़ाम नहीं समझ सकते जो मसीह के जलाल के बारे में है, उसके बारे में जो अल्लाह की सूरत है। 5 क्योंकि हम अपना प्रचार नहीं करते बल्कि ईसा मसीह का पैग़ाम सुनाते हैं कि वह खुदावंद है। अपने आपको हम ईसा की खातिर आपके खादिम करार देते हैं। 6 क्योंकि जिस खुदा ने फ़रमाया, “अंधेरे में से रौशनी चमके,” उसने हमारे दिलों में अपनी रौशनी चमकने दी ताकि हम अल्लाह का वह जलाल जान लें जो ईसा मसीह के चेहरे से चमकता है।

7 लेकिन हम जिनके अंदर यह ख़ज़ाना है आम मिट्टी के बरतनों की मानिद हैं ताकि जाहिर हो कि यह जबरदस्त कुव्वत हमारी तरफ़ से नहीं बल्कि अल्लाह की तरफ़ से है। 8 लोग हमें चारों तरफ़ से दबाते हैं, लेकिन कोई हमें कुचलकर ख़त्म नहीं कर सकता। हम उलझन में पड़ जाते हैं, लेकिन उम्मीद का दामन हाथ से जाने नहीं देते। 9 लोग हमें ईज़ा देते हैं, लेकिन हमें अकेला नहीं छोड़ा जाता। लोगों के धक्कों से हम ज़मीन पर गिर जाते हैं, लेकिन हम तबाह नहीं होते। 10 हर वक़्त हम अपने बदन में ईसा की मौत लिए फिरते हैं ताकि ईसा की ज़िंदगी भी हमारे बदन में जाहिर हो जाए। 11 क्योंकि हर वक़्त हमें ज़िंदा हालत में ईसा की खातिर मौत के हवाले कर दिया जाता है ताकि उस की ज़िंदगी हमारे फ़ानी बदन में जाहिर हो जाए। 12 यों हममें मौत का असर काम करता है जबकि आपमें ज़िंदगी का असर।

13 कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “मैं ईमान लाया और इसलिए बोला।” हमें ईमान का यही रूह हासिल है इसलिए हम भी ईमान लाने की वजह से बोलते हैं। 14 क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने खुदावंद ईसा को मुरदों में से ज़िंदा कर दिया है वह ईसा के साथ हमें भी ज़िंदा करके आप लोगों समेत अपने हुज़ूर खड़ा करेगा। 15 यह सब कुछ आपके फ़ायदे के लिए है। यों अल्लाह का फ़ज़ल आगे बढ़ते बढ़ते मज़ीद बहुत-से लोगों तक पहुँच रहा है और नतीजे में वह अल्लाह को जलाल देकर शुक़रगुज़ारी की दुआओं में बहुत इज़ाफ़ा कर रहे हैं।

### ईमान की ज़िंदगी

16 इसी वजह से हम बेदिल नहीं हो जाते। बेशक जाहिरि तौर पर हम ख़त्म हो रहे हैं, लेकिन अंदर ही अंदर रोज़ बरोज़ हमारी तजदीद होती जा रही है। 17 क्योंकि हमारी मौजूदा मुसीबत हलकी और पल-भर की है, और वह हमारे लिए एक ऐसा अबदी जलाल पैदा कर रही है जिसकी निसबत मौजूदा मुसीबत कुछ भी नहीं। 18 इसलिए हम देखी हुई चीज़ों पर गौर नहीं करते बल्कि अनदेखी चीज़ों पर। क्योंकि देखी हुई चीज़ें आरिजी हैं, जबकि अनदेखी चीज़ें अबदी हैं।

## 5

1 हम तो जानते हैं कि जब हमारी दुनियावी झोंपड़ी जिसमें हम रहते हैं गिराई जाएगी तो अल्लाह हमें आसमान पर एक मकान देगा, एक ऐसा अबदी घर जिसे इनसानी हाथों ने नहीं बनाया होगा। 2 इसलिए हम इस झोंपड़ी में कराहते हैं और आसमानी घर पहन लेने की शदीद आरज़ू रखते हैं, 3 क्योंकि जब हम उसे पहन लेंगे तो हम नंगे नहीं पाए जाएंगे। 4 इस झोंपड़ी में रहते हुए हम बोझ तले कराहते हैं। क्योंकि हम अपना फ़ानी लिबास उतारना नहीं चाहते बल्कि उस पर आसमानी



घर का लिबास पहन लेना चाहते हैं ताकि जिंदगी वह कुछ निगल जाए जो फानी है। 5 अल्लाह ने खुद हमें इस मकसद के लिए तैयार किया है और उसी ने हमें स्हुल-कुदूस को आनेवाले जलाल के बैआने के तौर पर दे दिया है।

6 चुनौचे हम हमेशा हौसला रखते हैं। हम जानते हैं कि जब तक अपने बदन में रिहाइशपज्जीर हैं उस वक्त तक खुदावंद के घर से दूर हैं। 7 हम जाहिरी चीजों पर भरोसा नहीं करते बल्कि ईमान पर चलते हैं। 8 हौं, हमारा हौसला बुलंद है बल्कि हम ज़्यादा यह चाहते हैं कि अपने जिस्मानी घर से रवाना होकर खुदावंद के घर में रहें। 9 लेकिन खाह हम अपने बदन में हों या न, हम इसी कोशिश में रहते हैं कि खुदावंद को पसंद आएँ। 10 क्योंकि लाज़िम है कि हम सब मसीह के तख्ते-अदालत के सामने हाज़िर हो जाएँ। वहाँ हर एक को उस काम का अज़्र मिलेगा जो उसने अपने बदन में रहते हुए किया है, खाह वह अच्छा था या बुरा।

**मसीह के वसीले से हमारी अल्लाह के साथ दोस्ती**

11 अब हम खुदावंद के ख़ौफ़ को जानकर लोगों को समझाने की कोशिश करते हैं। हम तो अल्लाह के सामने पूरे तौर पर जाहिर हैं। और मैं उम्मीद रखता हूँ कि हम आपके ज़मीर के सामने भी जाहिर हैं। 12 क्या हम यह बात करके दुबारा अपनी सिफ़ारिश कर रहे हैं? नहीं, आपको हम पर फ़ख़र करने का मौका दे रहे हैं ताकि आप उनके जवाब में कुछ कह सकें जो जाहिरी बातों पर शेखी मारते और दिली बातें नज़रंदाज़ करते हैं। 13 क्योंकि अगर हम बेखुद हुए तो अल्लाह की खातिर, और अगर होश में हैं तो आपकी खातिर। 14 बात यह है कि मसीह की मुहब्बत हमें मजबूर कर देती है, क्योंकि हम इस नतीजे पर पहुँच गए हैं कि एक सबके लिए मुआ। इसका मतलब है कि सब ही मर गए हैं। 15 और वह सबके लिए इसलिए मुआ ताकि जो जिंदा है वह अपने लिए न जिएँ बल्कि उसके लिए जो उनकी खातिर मुआ और फिर जी उठा।

16 इस वजह से हम अब से किसी को भी दुनियावी निगाह से नहीं देखते। पहले तो हम मसीह को भी इस जावीए से देखते थे, लेकिन यह वक्त गुज़र गया है। 17 चुनौचे जो मसीह में है वह नया मखलूक है। पुरानी जिंदगी जाती रही और नई जिंदगी शुरु हो गई है। 18 यह सब कुछ अल्लाह की तरफ़ से है जिसने मसीह के वसीले से अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया है। और उसी ने हमें मेल-मिलाप कराने की खिदमत की जिम्मादारी दी है। 19 इस खिदमत के तहत हम यह पैगाम सुनाते हैं कि अल्लाह ने मसीह के वसीले से अपने साथ दुनिया की सुलह कराई और लोगों के गुनाहों को उनके ज़िम्मे न लगाया। सुलह कराने का यह पैगाम उसने हमारे सुपुर्द कर दिया।

20 पस हम मसीह के एलची हैं और अल्लाह हमारे वसीले से लोगों को समझाता है। हम मसीह के वास्ते आपसे मिन्नत करते हैं कि अल्लाह की सुलह की पेशकश को कबूल करें ताकि उस की आपके साथ सुलह हो जाए। 21 मसीह बेगुनाह था, लेकिन अल्लाह ने उसे हमारी खातिर गुनाह ठहराया ताकि हमें उसमें रास्तबाज़ करार दिया जाए।

## 6

1 अल्लाह के हमखिदमत होते हुए हम आपसे मिन्नत करते हैं कि जो फ़जल आपको मिला है वह जाया न जाए। 2 क्योंकि अल्लाह फ़रमाता है, “क़बूलियत के वक्त मैंने तेरी सुनी, नजात के दिन तेरी मदद की।” सुनें! अब क़बूलियत का वक्त आ गया है, अब नजात का दिन है।

3 हम किसी के लिए भी ठोकर का बाइस नहीं बनते ताकि लोग हमारी खिदमत में नुक्स न निकाल सकें। 4 हौं, हमें सिफ़ारिश की ज़रूरत ही नहीं, क्योंकि अल्लाह के खादिम होते हुए हम हर हालत में अपनी नेकनामी जाहिर करते हैं : जब हम सन्न से मुसीबतें, मुश्किलत और आफ़तें बरदाशत करते हैं, 5 जब लोग हमें मारते और कैद में डालते हैं, जब हम बेकाबू हज़ूमों का सामना करते हैं, जब हम मेहनत-मशक्कत करते, रात के वक्त जागते और भूके रहते हैं, 6 जब हम अपनी पाकीज़गी, इल्म, सन्न और मेहरबान सुलूक का इज़हार करते हैं, जब हम स्हुल-कुदूस के वसीले से हक़ीक़ी मुहब्बत रखते, 7 सच्ची बातें करते और अल्लाह की कुदरत से लोगों की खिदमत करते हैं। हम अपनी नेकनामी इसमें भी जाहिर करते हैं कि हम दोनों हाथों से रास्तबाज़ी के हथियार थामे रखते हैं। 8 हम अपनी खिदमत जारी रखते हैं, चाहे लोग हमारी इज़ज़त करें चाहे बेइज़ज़ती, चाहे वह हमारी बुरी रिपोर्ट दें चाहे अच्छी। अगरचे हमारी खिदमत सच्ची है, लेकिन लोग हमें दगाबाज़ करार देते हैं। 9 अगरचे लोग हमें जानते हैं तो भी हमें नज़रंदाज़ किया जाता है। हम मरते मरते जिंदा रहते हैं और लोग हमें मार मारकर कत्ल नहीं कर सकते। 10 हम गम खा खाकर हर वक्त खुश रहते हैं, हम ग़रीब हालत में बहूतों को दौलतमंद बना देते हैं। हमारे पास कुछ नहीं है, तो भी हमें सब कुछ हासिल है।

11 कुरियुस के अजीज़ो, हमने खलकर आपसे बात की है, हमारा दिल आपके लिए कुशादा हो गया है। 12 जो जगह हमने दिल में आपको दी है वह अब तक कम नहीं हुई। लेकिन आपके दिलों में हमारे लिए कोई जगह नहीं रही। 13 अब मैं आपसे जो मेरे बच्चे हैं दूरखास्त करता हूँ कि जवाब में हमें भी अपने दिलों में जगह दें।

गैरमसीही असरात से खबरदार

14 गैरईमानदारों के साथ मिलकर एक जुए तले जिंदगी न गुज़ारो, क्योंकि रास्ती का नारास्ती से क्या वास्ता है? या रौशनी तारीकी के साथ क्या ताल्लुक रख सकती है? 15 मसीह और इबलीस के दरमियान क्या मुताबिकत हो सकती है? ईमानदार का गैरईमानदार के साथ क्या वास्ता है? 16 अल्लाह के मकदिस और बुतों में क्या इत्तफाक हो सकता है? हम तो जिंदा खुदा का घर हैं। अल्लाह ने यों फरमाया है,

“मैं उनके दरमियान सुकूनत करूँगा

और उनमें फिरूँगा।

मैं उनका खुदा हूँगा,

और वह मेरी कौम होंगे।”

17 चुनौचे रब फरमाता है,

“इसलिए उनमें से निकल आओ

और उनसे अलग हो जाओ।

किसी नापाक चीज़ को न छूना,

तो फिर मैं तुम्हें कबूल करूँगा।

18 मैं तुम्हारा बाप हूँगा

और तुम मेरे बेटे-बेटियाँ होंगे,

रब कादिरे-मुतलक फरमाता है।”

## 7

1 मेरे अजीजो, यह तमाम वादे हमसे किए गए हैं। इसलिए आएँ, हम अपने आपको हर उस चीज़ से पाक-साफ़ करें जो जिस्म और रूह को आलूदा कर देती है। और हम खुदा के ख़ौफ़ में मुकम्मल तौर पर मुकद्दस बनने के लिए कोशिशें करें।

पौलुस की ख़ुशी

2 हमें अपने दिल में जगह दें। न हमने किसी से नाइनसाफी की, न किसी को बिगाड़ा या उससे गलत फ़ायदा उठाया। 3 मैं यह बात आपको मुज़रिम ठहराने के लिए नहीं कह रहा। मैं आपको पहले बता चुका हूँ कि आप हमें इतने अजीज हैं कि हम आपके साथ मरने और जीने के लिए तैयार हैं। 4 इसलिए मैं आपसे खुलकर बात करता हूँ और मैं आप पर बड़ा फ़ख़र भी करता हूँ। इस नाते से मुझे पूरी तसल्ली है, और हमारी तमाम मुसीबतों के बावजूद मेरी ख़ुशी की इतहा नहीं।

5 क्योंकि जब हम मकिदुनिया पहुँचे तो हम जिस्म के लिहाज़ से आराम न कर सके। मुसीबतों ने हमें हर तरफ़ से घेर लिया। दूसरों की तरफ़ से झगड़ों से और दिल में तरह तरह के डर से निपटना पड़ा। 6 लेकिन अल्लाह ने जो दबे हूँओं को तसल्ली बख़्शाता है तितुस के आने से हमारी हौसलाअफ़ज़ाई की। 7 हमारा हौसला न सिर्फ़ उसके आने से बढ़ गया बल्कि उन हौसलाअफ़ज़ा बातों से भी जिनसे आपने उसे तसल्ली दी। उसने हमें आपकी आरज़, आपकी आहो-ज़ारी और मेरे लिए आपकी सरगामी के बारे में रिपोर्ट दी। यह सुनकर मेरी ख़ुशी मज़ीद बढ़ गई।

8 क्योंकि अगरचे मैंने आपको अपने ख़त से दुख पहुँचाया तो भी मैं पछताता नहीं। पहले तो मैं ख़त लिखने से पछताया, लेकिन अब मैं देखता हूँ कि जो दुख उसने आपको पहुँचाया वह सिर्फ़ आरिज़ी था 9 और उसने आपको तौबा तक पहुँचाया। यह सुनकर मैं अब ख़ुशी मनाता हूँ, इसलिए नहीं कि आपको दुख उठाना पड़ा है बल्कि इसलिए कि इस दुख ने आपको तौबा तक पहुँचाया। अल्लाह ने यह दुख अपनी मरज़ी पूरी कराने के लिए इस्तेमाल किया, इसलिए आपको हमारी तरफ़ से कोई नुक़सान न पहुँचा। 10 क्योंकि जो दुख अल्लाह अपनी मरज़ी पूरी कराने के लिए इस्तेमाल करता है उससे तौबा पैदा होती है और उसका अंजाम नजात है। इसमें पछताने की गुंजाइश ही नहीं। इसके बरअक्स दुनियावी दुख का अंजाम मौत है। 11 आप खुद देखें कि अल्लाह के इस दुख ने आपमें क्या पैदा किया है : कितनी संजीदगी, अपना दिफ़ा करने का कितना जोश, ग़लत हरकतों पर कितना गुस्सा, कितना ख़ौफ़, कितनी चाहत, कितनी सरगामी। आप सज़ा देने के लिए कितने तैयार थे! आपने हर लिहाज़ से साबित किया है कि आप इस मामले में बेकुसूर हैं।

12 गरज़, अगरचे मैंने आपको लिखा, लेकिन मक़सद यह नहीं था कि ग़लत हरकतें करनेवाले के बारे में लिखूँ या उसके बारे में जिसके साथ ग़लत काम किया गया। नहीं, मक़सद यह था कि अल्लाह के हुज़ूर आप पर जाहिर हो जाए कि आप हमारे लिए कितने सरग़म हैं। 13 यही वजह है कि हमारा हौसला बढ़ गया है।

लेकिन न सिर्फ़ हमारी हौसलाअफ़ज़ाई हुई है बल्कि हम यह देखकर बेइतहा खुश हुए कि तितुस कितना ख़ुश था। वह क्यों ख़ुश था? इसलिए कि उस की रूह आप सबसे तरो-ताज़ा हुई। 14 उसके सामने मैंने आप पर फ़ख़र किया था, और मैं शर्मिदा

नहीं हुआ क्योंकि यह बात दुस्त साबित हुई है। जिस तरह हमने आपको हमेशा सच्ची बातें बताई हैं उसी तरह तितुस के सामने आप पर हमारा फ़खर भी दुस्त निकला। <sup>15</sup> आप उसे निहायत अजीज़ हैं क्योंकि वह आप सबकी फ़रमाँबरदारी याद करता है, कि आपने डरते और काँपते हुए उसे खुशआमदीद कहा। <sup>16</sup> मैं खुश हूँ कि मैं हर लिहाज़ से आप पर एतमाद कर सकता हूँ।

## 8

### यहूदिया के गरीबों के लिए हदिया

<sup>1</sup> भाइयो, हम आपकी तबज़ूह उस फ़ज़ल की तरफ़ दिलाना चाहते हैं जो अल्लाह ने सब्बा मकिदुनिया की जमातों पर किया। <sup>2</sup> जिस मुसीबत में वह फँसे हुए हैं उससे उनकी सख़्त आजमाइश हुई। तो भी उनकी बेइंतहा खुशी और शदीद ग़ुरबत का नतीजा यह निकला कि उन्होंने बड़ी फ़ैयाज़दिली से हदिया दिया। <sup>3</sup> मैं गवाह हूँ कि जितना वह दे सके उतना उन्होंने दे दिया बल्कि इससे भी ज़्यादा। अपनी ही तरफ़ से <sup>4</sup> उन्होंने बड़े ज़ोर से हमसे मिन्नत की कि हमें भी यहूदिया के मुक़द्दसीन की ख़िदमत करने का मौक़ा दें, हम भी देने के फ़ज़ल में शरीक होना चाहते हैं। <sup>5</sup> और उन्होंने हमारी उम्मीद से कहीं ज़्यादा किया! अल्लाह की मरज़ी से उनका पहला क़दम यह था कि उन्होंने अपने आपको खुदावंद के लिए मख़सूस किया। उनका दूसरा क़दम यह था कि उन्होंने अपने आपको हमारे लिए मख़सूस किया। <sup>6</sup> इस पर हमने तितुस की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह आपके पास भी हदिया जमा करने का वह सिलसिला अंजाम तक पहुँचाए जो उसने शुरू किया था। <sup>7</sup> आपके पास सब कुछ कसरत से पाया जाता है, खाह ईमान हो, खाह कलाम, इल्म, मुकम्मल सरगरमी या हमसे मुहब्बत हो। अब इस बात का खयाल रखें कि आप यह हदिया देने में भी अपनी कसीर दौलत का इज़हार करें।

<sup>8</sup> मेरी तरफ़ से यह कोई हुक्म नहीं है। लेकिन दूसरों की सरगरमी के पेशे-नज़र मैं आपकी भी मुहब्बत पर ख रहा हूँ कि वह कितनी हकीकती है। <sup>9</sup> आप तो जानते हैं कि हमारे खुदावंद ईसा मसीह ने आप पर कैसा फ़ज़ल किया है, कि अगरचे वह दौलतमंद था तो भी वह आपकी खातिर गरीब बन गया ताकि आप उस की ग़ुरबत से दौलतमंद बन जाएँ।

<sup>10</sup> इस मामले में मेरा मशवरा सुनें, क्योंकि वह आपके लिए मुफ़ीद साबित होगा। पिछले साल आप पहली जमात थे जो न सिर्फ़ हदिया देने लगी बल्कि इसे देना भी चाहती थी। <sup>11</sup> अब उसे तकमील तक पहुँचाएँ जो आपने शुरू कर रखा है। देने का जो शौक आप रखते हैं वह अमल में लाया जाए। उतना दें जितना आप दे सकें। <sup>12</sup> क्योंकि अगर आप देने का शौक रखते हैं तो फिर अल्लाह आपका हदिया उस बिना पर क़बूल करेगा जो आप दे सकते हैं, उस बिना पर नहीं जो आप नहीं दे सकते।

<sup>13</sup> कहने का मतलब यह नहीं कि दूसरों को आराम दिलाने के बाइस आप खुद मुसीबत में पड़ जाएँ। बात सिर्फ़ यह है कि लोगों के हालात कुछ बराबर होने चाहिएँ। <sup>14</sup> इस वक़्त तो आपके पास बहुत है और आप उनकी ज़रूरत पूरी कर सकते हैं। बाद में किसी वक़्त जब उनके पास बहुत होगा तो वह आपकी ज़रूरत भी पूरी कर सकेंगे। यों आपके हालात कुछ बराबर रहेंगे, <sup>15</sup> जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में भी लिखा है, “जिसने ज़्यादा जमा किया था उसके पास कुछ न बचा। लेकिन जिसने कम जमा किया था उसके पास भी काफ़ी था।”

### तितुस और उसके साथी

<sup>16</sup> खुदा का शुक़ है जिसने तितुस के दिल में वही जोश पैदा किया है जो मैं आपके लिए रखता हूँ। <sup>17</sup> जब हमने उस की हौसलाअफ़ज़ाई की कि वह आपके पास जाए तो वह न सिर्फ़ इसके लिए तैयार हुआ बल्कि बड़ा सरगरम होकर खुद बख़ुद आपके पास जाने के लिए रवाना हुआ। <sup>18</sup> हमने उसके साथ उस भाई को भेज दिया जिसकी ख़िदमत की तारीफ़ तमाम जमातों करती है, क्योंकि उसे अल्लाह की खुशख़बरी सुनाने की नेमत मिली है। <sup>19</sup> उसे न सिर्फ़ आपके पास जाना है बल्कि जमातों ने उसे मुक़र्रर किया है कि जब हम हदिये को यश्ख़लम ले जाएंगे तो वह हमारे साथ जाए। यों हम यह ख़िदमत अदा करते वक़्त खुदावंद को जलाल देंगे और अपनी सरगरमी का इज़हार करेंगे।

<sup>20</sup> क्योंकि उन बड़े हदिये के पेशे-नज़र जो हम ले जाएंगे हम इससे बचना चाहते हैं कि किसी को हम पर शक़ करने का मौक़ा मिले। <sup>21</sup> हमारी पूरी कोशिश यह है कि वही कुछ करें जो न सिर्फ़ खुदावंद की नज़र में दुस्त है बल्कि इन्सान की नज़र में भी।

<sup>22</sup> उनके साथ हमने एक और भाई को भी भेज दिया जिसकी सरगरमी हमने कई मौक़ों पर परखी है। अब वह मज़ीद सरगरम हो गया है, क्योंकि वह आप पर बड़ा एतमाद करता है। <sup>23</sup> जहाँ तक तितुस का ताल्लुक़ है, वह मेरा साथी और हमखिदमत है। और जो भाई उसके साथ हैं उन्हें जमातों ने भेजा है। वह मसीह के लिए इज़्जत का बाइस है। <sup>24</sup> उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार करके यह जाहिर करें कि हम आप पर क्यों फ़खर करते हैं। फिर यह बात खुदा की दीगर जमातों को भी नज़र आएगी।

## 9

## मुकद्दसीन की मदद

1 असल में इसकी जरूरत नहीं कि मैं आपको उस काम के बारे में लिखूँ जो हमें यहूदिया के मुकद्दसीन की खिदमत में करना है। 2 क्योंकि मैं आपकी गरमजोशी जानता हूँ, और मैं मकिदूनिया के ईमानदारों के सामने आप पर फ़खर करता रहा हूँ कि “अख़या के लोग पिछले साल से देने के लिए तैयार थे।” यों आपकी सरगर्मी ने ज़्यादातर लोगों को खुद देने के लिए उभारा। 3 अब मैंने इन भाइयों को भेज दिया है ताकि हमारा आप पर फ़खर बेबूनियाद न निकले बल्कि जिस तरह मैंने कहा था आप तैयार रहें। 4 ऐसा न हो कि जब मैं मकिदूनिया के कुछ भाइयों को साथ लेकर आपके पास पहुँचूँगा तो आप तैयार न हों। उस वक़्त मैं, बल्कि आप भी शरमिदा होंगे कि मैंने आप पर इतना एतमाद किया है। 5 इसलिए मैंने इस बात पर जोर देना जरूरी समझा कि भाई पहले ही आपके पास आकर उस हदिये का इतज़ाम करें जिसका वादा आपने किया है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मेरे आने तक यह हदिया जमा किया गया हो और ऐसा न लगे जैसा इसे मुश्किल से आपसे निकालना पड़ा। इसके बजाए आपकी सखावत ज़ाहिर हो जाए।

6 याद रहे कि जो शख्स बीज को बचा बचाकर बोता है उस की फसल भी उतनी कम होगी। लेकिन जो बहुत बीज बोता है उस की फसल भी बहुत ज़्यादा होगी। 7 हर एक उतना दे जितना देने के लिए उसने पहले अपने दिल में ठहरा लिया है। वह इसमें तकलीफ़ या मजबूरी महसूस न करे, क्योंकि अल्लाह उससे मुहब्बत रखता है जो ख़ुशी से देता है। 8 और अल्लाह इस काबिल है कि आपको आपकी जरूरियात से कहीं ज़्यादा दे। फिर आपके पास हर वक़्त और हर लिहाज़ से काफ़ी होगा बल्कि इतना ज़्यादा कि आप हर किस्म का नेक काम कर सकेंगे। 9 चुनौचे कलामे-मुकद्दस में यह भी लिखा है, “उसने फ़ैयाज़ी से जरूरतमंदों में ख़ैरात बिखेर दी, उस की रास्तबाज़ी हमेशा तक कायम रहेगी।” 10 खुदा ही बीज बोनेवाले को बीज मुहैया करता और उसे खाने के लिए रोटी देता है। और वह आपको भी बीज देकर उसमें इज़ाफ़ा करेगा और आपकी रास्तबाज़ी की फसल उगने देगा। 11 हाँ, वह आपको हर लिहाज़ से दौलतमंद बना देगा और आप हर मौके पर फ़ैयाज़ी से दे सकेंगे। चुनौचे जब हम आपका हदिया उनके पास ले जाएंगे जो जरूरतमंद है तो वह खुदा का शुक्र करेंगे। 12 यों आप न सिर्फ़ मुकद्दसीन की जरूरियात पूरी करेंगे बल्कि वह आपकी इस खिदमत से इतने मुतअस्सिर हो जाएंगे कि वह बड़े जोश से खुदा का भी शुक्रिया अदा करेंगे। 13 आपकी खिदमत के नतीजे में वह अल्लाह को जलाल देंगे। क्योंकि आपकी उन पर और तमाम ईमानदारों पर सखावत का इज़हार साबित करेगा कि आप मसीह की ख़ुशख़बरी न सिर्फ़ तसलीम करते हैं बल्कि उसके ताबे भी रहते हैं। 14 और जब वह आपके लिए दूआ करेंगे तो आपके आरज़ूदम रहेंगे, इसलिए कि अल्लाह ने आपको कितना बड़ा फ़ज़ल दे दिया है। 15 अल्लाह का उस की नाकाबिले-बयान बख़्शिश के लिए शुक्र हो!

## 10

## पौलुस अपनी खिदमत का दिफ़ा करता है

1 मैं आपसे अपील करता हूँ, मैं पौलुस जिसके बारे में कहा जाता है कि मैं आपके रूबरू आजिज़ होता हूँ और सिर्फ़ आपसे दूर होकर दिलेर होता हूँ। मसीह की हलीमी और नरमी के नाम में 2 मैं आपसे मिन्यत करता हूँ कि मुझे आपके पास आकर इतनी दिलेरी से उन लोगों से निपटना न पड़े जो समझते हैं कि हमारा चाल-चलन दुनियावादी है। क्योंकि फ़िलहाल ऐसा लगता है कि इसकी जरूरत होगी। 3 बेशक हम इन्सान ही हैं, लेकिन हम दुनिया की तरह जंग नहीं लड़ते। 4 और जो हथियार हम इस जंग में इस्तेमाल करते हैं वह इस दुनिया के नहीं हैं, बल्कि उन्हें अल्लाह की तरफ़ से किले ढा देने की कुव्वत हासिल है। इनसे हम ग़लत खयालात के ढोंचे 5 और हर ऊँची चीज़ ढा देते हैं जो अल्लाह के इल्मो-इरफ़ान के खिलाफ़ खड़ी हो जाती है। और हम हर खयाल को कैद करके मसीह के ताबे कर देते हैं। 6 हाँ, आपके पूरे तौर पर ताबे हो जाने पर हम हर नाफ़रमानी की सज़ा देने के लिए तैयार होंगे।

7 आप सिर्फ़ ज़ाहिरि बातों पर गौर कर रहे हैं। अगर किसी को इस बात का एतमाद हो कि वह मसीह का है तो वह इसका भी खयाल करे कि हम भी उसी की तरह मसीह के हैं। 8 क्योंकि अगर मैं उस इख़्तियार पर मज़ीद फ़खर भी करूँ जो खुदावंद ने हमें दिया है तो भी मैं शरमिदा नहीं हूँगा। गौर करें कि उसने हमें आपको ढा देने का नहीं बल्कि आपकी रूहानी तामीर करने का इख़्तियार दिया है। 9 मैं नहीं चाहता कि ऐसा लगे जैसे मैं आपको अपने खतों से डराने की कोशिश कर रहा हूँ। 10 क्योंकि बाज़ कहते हैं, “पौलुस के खत ज़ोरदार और ज़बरदस्त हैं, लेकिन जब वह खुद हाज़िर होता है तो वह कमजोर और उसके बोलने का तर्ज़ हिकारतआमेज़ है।” 11 ऐसे लोग इस बात का खयाल करें कि जो बातें हम आपसे दूर होते हुए अपने खतों में पेश करते हैं उन्हीं बातों पर हम अमल करेंगे जब आपके पास आएँ।

12 हम तो अपने आपको उनमें शमार नहीं करते जो अपनी तारीफ करके अपनी सिफारिश करते रहते हैं, न अपना उनके साथ मुवाजना करते हैं। वह कितने बेसमझ हैं जब वह अपने आपको मेयार बनाकर उसी पर अपने आपको जाँचते हैं और अपना मुवाजना अपने आपसे करते हैं। 13 लेकिन हम मुनासिब हद से ज्यादा फखर नहीं करेंगे बल्कि सिर्फ उस हद तक जो अल्लाह ने हमारे लिए मुकर्रर किया है। और आप भी इस हद के अंदर आ जाते हैं। 14 इसमें हम मुनासिब हद से ज्यादा फखर नहीं कर रहे, क्योंकि हम तो मसीह की खुशखबरी लेकर आप तक पहुँच गए हैं। अगर ऐसा न होता तो फिर और बात होती। 15 हम ऐसे काम पर फखर नहीं करते जो दूसरों की मेहनत से संजाम दिया गया है। इसमें भी हम मुनासिब हदों के अंदर रहते हैं, बल्कि हम यह उम्मीद रखते हैं कि आपका ईमान बढ़ जाए और यों हमारी कदरो-क्रीमत भी अल्लाह की मुकर्ररा हद तक बढ़ जाए। खुदा करे कि आपमें हमारा यह काम इतना बढ़ जाए 16 कि हम अल्लाह की खुशखबरी आपसे आगे जाकर भी सुना सकें। क्योंकि हम उस काम पर फखर नहीं करना चाहते जिसे दूसरे कर चुके हैं।

17 कलामे-मुकद्दस में लिखा है, “फखर करनेवाला खुदावंद ही पर फखर करे।” 18 जब लोग अपनी तारीफ करके अपनी सिफारिश करते हैं तो इसमें क्या है! इससे वह सहीह साबित नहीं होते, बल्कि अहम बात यह है कि खुदावंद ही इसकी तसदीक करे।

## 11

### पौलस और झटे रसल

1 खुदा करे कि जब मैं अपनी हमाकत का कुछ इज़हार करता हूँ तो आप मुझे बरदाशत करें। हाँ, ज़रूर मुझे बरदाशत करें, 2 क्योंकि मैं आपके लिए अल्लाह की-सी गैरत रखता हूँ। मैंने आपका रिशता एक ही मद के साथ बाँधा, और मैं आपको पाकदामन कुँवारी की हैसियत से उस मद मसीह के हुज़ूर पेश करना चाहता था। 3 लेकिन अफ़सोस, मुझे डर है कि आप हव्वा की तरह गुनाह में गिर जाएंगे, कि जिस तरह सौंप ने अपनी चालाकी से हव्वा को धोका दिया उसी तरह आपकी सोच भी बिगड़ जाएगी और वह खुलूसदिली और पाक लग्न खत्म हो जाएगी जो आप मसीह के लिए महसूस करते हैं। 4 क्योंकि आप खुशी से हर एक को बरदाशत करते हैं जो आपके पास आकर एक फरक किसम का ईसा पेश करता है, एक ऐसा ईसा जो हमने आपको पेश नहीं किया था। और आप एक ऐसी रूह और ऐसी “खुशखबरी” कबूल करते हैं जो उस रूह और खुशखबरी से बिलकुल फरक है जो आपको हमसे मिली थी।

5 मेरा नहीं खयाल कि मैं इन नाम-निहाद ‘ख़ास’ रसलों की निसबत कम हूँ। 6 हो सकता है कि मैं बोलने में माहिर नहीं हूँ, लेकिन यह मेरे इल्म के बारे में नहीं कहा जा सकता। यह हमने आपको साफ़ साफ़ और हर लिहाज़ से दिखाया है।

7 मैंने अल्लाह की खुशखबरी सुनाने के लिए आपसे कोई भी मुआवज़ा न लिया। यों मैंने अपने आपको नीचा कर दिया ताकि आपको सरफ़राज़ कर दिया जाए। क्या इसमें मुझसे गलती हुई? 8 जब मैं आपकी छिदमत कर रहा था तो मुझे खुदा की दीगर जमातों से पैसे मिल रहे थे, यानी आपकी मदद करने के लिए मैं उन्हें लूट रहा था। 9 और जब मैं आपके पास था और ज़रूरतमंद था तो मैं किसी पर बोझ न बना, क्योंकि जो भाई मकिदूनिया से आए उन्होंने मेरी ज़रूरियात पूरी की। माज़ी में मैं आप पर बोझ न बना और आइंदा भी नहीं बनूँगा। 10 मसीह की उस सच्चाई की कसम जो मेरे अंदर है, अख़या के पुरे सबे में कोई मुझे इस पर फखर करने से नहीं रोकेगा। 11 मैं यह क्यों कह रहा हूँ? इसलिए कि मैं आपसे मुहब्बत नहीं रखता? खुदा ही जानता है कि मैं आपसे मुहब्बत रखता हूँ।

12 और जो कुछ मैं अब कर रहा हूँ वही करता रहूँगा, ताकि मैं नाम-निहाद रसलों को वह मौक़ाना न दूँ जो वह हूँड रहे हैं। क्योंकि यही उनका मक़सद है कि वह फखर करके यह कह सकें कि वह हम जैसे हैं। 13 ऐसे लोग तो झटे रसल हैं, धोकेबाज़ मज़दूर जिन्होंने मसीह के रसलों का रूप धार लिया है। 14 और क्या अज़ब, क्योंकि इबलीस भी नूर के फ़रिशते का रूप धारकर घुमता-फिरता है। 15 तो फिर यह बड़ी बात नहीं कि उसके चले रास्तबाज़ी के खादिम का रूप धारकर घुमते-फिरते हैं। उनका अंजाम उनके आमाल के मुताबिक ही होगा।

### रसल होने की वजह से पौलस की ईज़ारसानी

16 मैं दुबारा कहता हूँ कि कोई मुझे अहमक न समझे। लेकिन अगर आप यह सोचें भी तो कम अज़ब कम मुझे अहमक की हैसियत से कबूल करें ताकि मैं भी थोड़ा-बहुत अपने आप पर फखर करूँ। 17 असल में जो कुछ मैं अब बयान कर रहा हूँ वह खुदावंद को पसंद नहीं है, बल्कि मैं अहमक की तरह बात कर रहा हूँ। 18 लेकिन चूँकि इतने लोग जिस्मानी तौर पर फखर कर रहे हैं इसलिए मैं भी फखर करूँगा। 19 बेशक आप खुद इतने दानिशमंद हैं कि आप अहमकों को खुशी से बरदाशत करते हैं। 20 हाँ, बल्कि आप यह भी बरदाशत करते हैं जब लोग आपको गुलाम बनाते, आपको लूटते, आपसे गलत फ़ायदा उठाते, नख़रे करते और आपको थपपड़ मारते हैं। 21 यह कहकर मुझे शर्म आती है कि हम इतने कमज़ोर थे कि हम ऐसा न कर सके।

लेकिन अगर कोई किसी बात पर फ़खर करने की ज़रूरत करे (मैं अहमक की-सी बात कर रहा हूँ) तो मैं भी उतनी ही ज़रूरत करूँगा। 22 क्या वह इब्रानी है? मैं भी हूँ। क्या वह इसराईली है? मैं भी हूँ। क्या वह इब्राहीम की औलाद है? मैं भी हूँ। 23 क्या वह मसीह के खादिम है? (अब तो मैं गोया बेखुद हो गया हूँ कि इस तरह की बातें कर रहा हूँ!) मैं उनसे ज़्यादा मसीह की खिदमत करता हूँ। मैंने उनसे कहीं ज़्यादा मेहनत-मशक्कत की, ज़्यादा दफ़ा जेल में रहा, मेरे ज़्यादा सख्ती से कोड़े लगाए गए और मैं बार बार मरने के खतरों में रहा हूँ। 24 मुझे यहूदियों से पाँच दफ़ा 39 कोड़ों की सज़ा मिली है। 25 तीन दफ़ा रोमियों ने मुझे लाठी से मारा। एक बार मुझे संगसार किया गया। जब मैं समुंद्र में सफ़र कर रहा था तो तीन मरतबा मेरा जहाज़ तबाह हुआ। हाँ, एक दफ़ा मुझे जहाज़ के तबाह होने पर एक पूरी रात और दिन समुंद्र में गुज़ारना पड़ा। 26 मेरे बेशुमार सफ़रों के दौरान मुझे कई तरह के खतरों का सामना करना पड़ा, दरियाओं और डाकुओं का खतरा, अपने हमवतनों और ग़ैरयहूदियों के हमलों का खतरा। जहाँ भी मैं गया हूँ वहाँ यह खतरे मौजूद रहे, खाह मैं शहर में था, खाह ग़ैरआबाद इलाके में या समुंद्र में। झूटे भाइयों की तरफ से भी खतरे रहे हैं। 27 मैंने जॉफ़िशानी से सख्त मेहनत-मशक्कत की है और कई रात जागता रहा हूँ, मैं भूका और प्यासा रहा हूँ, मैंने बहुत रोजे रखे हैं। मुझे सर्दी और नंगेपन का तजरबा हुआ है। 28 और यह उन फ़िक्रों के अलावा है जो मैं खुदा की तमाम जमातों के लिए महसूस करता हूँ और जो मुझे दबाती रहती हैं। 29 जब कोई कमज़ोर है तो मैं अपने आपको भी कमज़ोर महसूस करता हूँ। जब किसी को ग़लत राह पर लाया जाता है तो मैं उसके लिए शर्दीद रज़िश महसूस करता हूँ।

30 अगर मुझे फ़खर करना पड़े तो मैं उन चीज़ों पर फ़खर करूँगा जो मेरी कमज़ोर हालत जाहिर करती हैं। 31 हमारा खुदा और खुदावंद ईसा का बाप (उस की हम्दो-सना अबद तक हो) जानता है कि मैं झूट नहीं बोल रहा। 32 जब मैं दमिशक शहर में था तो बादशाह अरितास के गवर्नर ने शहर के तमाम दरवाज़ों पर अपने पहरेदार मुकर्र किए ताकि वह मुझे गिरिफ़्तार करें। 33 लेकिन शहर की फ़सिल में एक दरिचा था, और मुझे एक टोकरे में रखकर वहाँ से उतारा गया। यों मैं उसके हाथों से बच निकला।

## 12

### पौलस पर कई बातों का इनकिशाफ़

1 लाज़िम है कि मैं कुछ और फ़खर करूँ। अगरचे इसका कोई फ़ायदा नहीं, लेकिन अब मैं उन रोयाओं और इनकिशाफ़ात का जिक्र करूँगा जो खुदावंद ने मुझ पर जाहिर किए। 2 मैं मसीह में एक आदमी को जानता हूँ जिसे चौदह साल हुए छीनकर तीसरे आसमान तक पहुँचाया गया। मुझे नहीं पता कि उसे यह तजरबा जिसमें या इसके बाहर हुआ। खुदा जानता है। 3 हाँ, खुदा ही जानता है कि वह जिसमें था या नहीं। लेकिन यह मैं जानता हूँ 4 कि उसे छीनकर फ़िर्दौस में लाया गया जहाँ उसने नाक्राबिले-बयान बातें सुनी, ऐसी बातें जिनका जिक्र करना इनसान के लिए रवा नहीं। 5 इस क्रिस्म के आदमी पर मैं फ़खर करूँगा, लेकिन अपने आप पर नहीं। मैं सिर्फ़ उन बातों पर फ़खर करूँगा जो मेरी कमज़ोर हालत को जाहिर करती हैं। 6 अगर मैं फ़खर करना चाहता तो इसमें अहमक न होता, क्योंकि मैं हकीकत बयान करता। लेकिन मैं यह नहीं करूँगा, क्योंकि मैं चाहता हूँ कि सबकी मेरे बारे में राय सिर्फ़ उस पर मुनहसिर हो जो मैं करता या बयान करता हूँ। कोई मुझे इससे ज़्यादा न समझे।

7 लेकिन मुझे इन आला इनकिशाफ़ात की वजह से एक काँटा चुभो दिया गया, एक तकलीफ़देह चीज़ जो मेरे जिस्म में धँसी रहती है ताकि मैं फूल न जाऊँ। इब्रलीस का यह पैगंबर मेरे मुक्के मारता रहता है ताकि मैं मग़रूर न हो जाऊँ। 8 तीन बार मैंने खुदावंद से इल्लिजा की कि वह इसे मुझसे दूर करे। 9 लेकिन उसने मुझे यही जवाब दिया, “मेरा फ़जल तैरे लिए काफ़ी है, क्योंकि मेरी कुदरत का पूरा इज़हार तेरी कमज़ोर हालत ही में होता है।” इसलिए मैं मज़ीद खुशी से अपनी कमज़ोरियों पर फ़खर करूँगा ताकि मसीह की कुदरत मुझ पर ठहरी रहे। 10 यही वजह है कि मैं मसीह की खातिर कमज़ोरियों, गालियों, मजबूरियों, इज़ारसानियों और पेशानियों में खुश हूँ, क्योंकि जब मैं कमज़ोर होता हूँ तब ही मैं ताक़तवर होता हूँ।

### पौलस की कुरिथियों के लिए फ़िक्र

11 मैं बेवुकूफ़ बन गया हूँ, लेकिन आपने मुझे मजबूर कर दिया है। चाहिए था कि आप ही दूसरों के सामने मेरे हक़ में बात करते। क्योंकि बेशक मैं कुछ भी नहीं हूँ, लेकिन इन नाम-निहाद खास रसूलों के मुकाबले में मैं किसी भी लिहाज़ से कम नहीं हूँ। 12 जो मुतअदिद इलाही निशान, मोजिज़ और ज़बरदस्त काम मेरे वसीले से हुए वह साबित करते हैं कि मैं रसूल हूँ। हाँ, वह बड़ी साबितक़दमी से आपके दरमियान किए गए। 13 जो खिदमत मैंने आपके दरमियान की, क्या वह खुदा की दीगर जमातों में मेरी खिदमत की निसबत कम थी? हरगिज़ नहीं! इसमें फ़रक सिर्फ़ यह था कि मैं आपके लिए माली बोझ न बना। मुझे मुआफ़ करें अगर मुझसे इसमें गलती हुई है।

14 अब मैं तीसरी बार आपके पास आने के लिए तैयार हूँ। इस मरतबा भी मैं आपके लिए बोझ का बाइस नहीं बनूँगा, क्योंकि मैं आपका माल नहीं बल्कि आप ही को चाहता हूँ। आखिर बच्चों को माँ-बाप की मदद के लिए माल जमा नहीं करना चाहिए बल्कि माँ-बाप को बच्चों के लिए। 15 मैं तो बड़ी खुशी से आपके लिए हर खर्चा उठा लूँगा बल्कि अपने आपको भी खर्च कर दूँगा। क्या आप मुझे कम प्यार करेंगे अगर मैं आपसे ज्यादा मुहब्बत रखूँ?

16 ठीक है, मैं आपके लिए बोझ न बना। लेकिन बाज़ सोचते हैं कि मैं चालाक हूँ और आपको धोके से अपने जाल में फँसा लिया। 17 किस तरह? जिन लोगों को मैंने आपके पास भेजा क्या मैंने उनमें से किसी के ज़रीए आपसे गलत फायदा उठाया? 18 मैंने तितुस की हौसलाअफ़जाई की कि वह आपके पास जाए और दूसरे भाई को भी साथ भेज दिया। क्या तितुस ने आपसे गलत फायदा उठाया? हरगिज़ नहीं! क्योंकि हम दोनों एक ही रूह में एक ही राह पर चलते हैं।

19 आप काफ़ी देर से सोच रहे होंगे कि हम आपके सामने अपना दिफ़ा कर रहे हैं। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि हम मसीह में होते हुए अल्लाह के हज़ूर ही यह कुछ बयान कर रहे हैं। और मेरे अजीजो, जो कुछ भी हम करते हैं हम आपकी तामीर करने के लिए करते हैं। 20 मुझे डर है कि जब मैं आऊँगा तो न आपकी हालत मुझे पसंद आएगी, न मेरी हालत आपको। मुझे डर है कि आपमें झगड़ा, हसद, गुस्सा, खुदगर्ज़ी, बुहतान, गपबाज़ी, गुस्र और बेतरतीबी पाई जाएगी। 21 हों, मुझे डर है कि अगली दफ़ा जब आऊँगा तो अल्लाह मुझे आपके सामने नीचा दिखाएगा, और मैं उन बहुतों के लिए ग़म खाऊँगा जिन्होंने माज़ी में गुनाह करके अब तक अपनी नापाकी, जिनाकारी और ऐयाशी से तौबा नहीं की।

## 13

### आखिरी तंबीह और सलाम

1 अब मैं तीसरी दफ़ा आपके पास आ रहा हूँ। कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ लाज़िम है कि हर इलज़ाम की तसदीक़ दो या तीन गवाहों से की जाए। 2 जब मैं दूसरी दफ़ा आपके पास आया था तो मैंने पहले से आपको आगाह किया था। अब मैं आपसे दूर यह बात दुबारा कहता हूँ कि जब मैं वापस आऊँगा तो न वह बचेंगे जिन्होंने पहले गुनाह किया था न दीगर लोग। 3 जो भी सबूत आप माँग रहे हैं कि मसीह मेरे ज़रीए बोलता है वह मैं आपको दूँगा। आपके साथ सुलूक मैं मसीह कमज़ोर नहीं है। नहीं, वह आपके दरमियान ही अपनी कुव्वत का इज़हार करता है। 4 क्योंकि अगरच उसे कमज़ोर हालत में मसलूब किया गया, लेकिन अब वह अल्लाह की कुदरत से ज़िंदा है। इसी तरह हम भी उसमें कमज़ोर हैं, लेकिन अल्लाह की कुदरत से हम आपकी ख़िदमत करते वक़्त उसके साथ ज़िंदा हैं।

5 अपने आपको जौंचकर मालूम करें कि क्या आपका इमान कायम है? खुद अपने आपको परखें। क्या आप नहीं जानते कि ईसा मसीह आपमें है? अगर नहीं तो इसका मतलब होता कि आपका इमान नामकबूल साबित होता। 6 लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप इतना पहचान लेंगे कि जहाँ तक हमारा ताल्लुक है हम नामकबूल साबित नहीं हुए हैं। 7 हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि आपसे कोई ग़लती न हो जाए। बात यह नहीं कि लोगों के सामने हम सहीह निकलें बल्कि यह कि आप सहीह काम करें, चाहे लोग हमें खुद नाकाम क्यों न करार दें। 8 क्योंकि हम हकीकत के खिलाफ़ खड़े नहीं हो सकते बल्कि सिर्फ़ उसके हक़ में। 9 हम खुश हैं जब आप ताकतवर हैं गो हम खुद कमज़ोर हैं। और हमारी दुआ यह है कि आप कामिल हो जाएँ। 10 यही वजह है कि मैं आपसे दूर रहकर लिखता हूँ। फिर जब मैं आऊँगा तो मुझे अपना इख़्तियार इस्तेमाल करके आप पर सख़्ती नहीं करनी पड़ेगी। क्योंकि खुदावंद ने मुझे यह इख़्तियार आपको ढा देने के लिए नहीं बल्कि आपको तामीर करने के लिए दिया है।

11 भाइयो, आखिर में मैं आपको सलाम कहता हूँ। सुधर जाएँ, एक दूसरे की हौसलाअफ़जाई करें, एक ही सोच रखें और सुलह-सलामती के साथ ज़िंदगी गुज़ारें। फिर मुहब्बत और सलामती का खुदा आपके साथ होगा।

12 एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देना। तमाम मुक़द्दसीन आपको सलाम कहते हैं।

13 खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल, अल्लाह की मुहब्बत और रूहल-कुदूस की रिफ़ाक़त आप सबके साथ होती रहे।

## गलतियों

1 यह खत पौलस रसूल की तरफ से है। मुझे न किसी गुरोह ने मुकर्रर किया न किसी शख्स ने बल्कि ईसा मसीह और खुदा बाप ने जिसने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया। 2 तमाम भाई भी जो मेरे साथ हैं गलतिया की जमातों को सलाम कहते हैं। 3 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती अता करें। 4 मसीह वही है जिसने अपने आपको हमारे गुनाहों की खातिर क़ुरबान कर दिया और यों हमें इस मौजूदा शरीर जहान से बचा लिया है, क्योंकि यह अल्लाह हमारे बाप की मरज़ी थी। 5 उसी का जलाल अबद तक होता रहे! अमीन।

### एक ही ख़ुशख़बरी

6 मैं हैरान हूँ! आप इतनी जल्दी से उसे तर्क कर रहे हैं जिसने मसीह के फ़ज़ल से आपको बुलाया। और अब आप एक फ़रक किस्म की “ख़ुशख़बरी” के पीछे लग गए हैं। 7 असल में यह अल्लाह की ख़ुशख़बरी है नहीं। बस कुछ लोग आपको उलझन में डालकर मसीह की ख़ुशख़बरी में तबदीली लाना चाहते हैं। 8 हमने तो असली ख़ुशख़बरी सुनाई और जो इससे फ़रक पैगाम सुनाता है उस पर लानत, ख़ाह हम खुद ऐसा करें ख़ाह आसमान से कोई फ़रिश्ता उतरकर यह गलत पैगाम सुनाए। 9 हम यह पहले बयान कर चुके हैं और अब मैं दुबारा कहता हूँ कि अगर कोई आपको ऐसी “ख़ुशख़बरी” सुनाए जो उससे फ़रक है जिसे आपने क़बूल किया है तो उस पर लानत!

10 क्या मैं इसमें यह कोशिश कर रहा हूँ कि लोग मुझे क़बूल करें? हरगिज़ नहीं! मैं चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे क़बूल करे। क्या मेरी कोशिश यह है कि मैं लोगों को पसंद आऊँ? अगर मैं अब तक ऐसा करता तो मसीह का खादिम न होता।

### पौलस किस तरह रसूल बन गया

11 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि जो ख़ुशख़बरी मैंने सुनाई वह इनसान की तरफ से नहीं है। 12 न मुझे यह पैगाम किसी इनसान से मिला, न यह मुझे किसी ने सिखाया है बल्कि ईसा मसीह ने खुद मुझ पर यह पैगाम ज़ाहिर किया।

13 आपने तो खुद सुन लिया है कि मैं उस वक़्त किस तरह ज़िंदगी गुज़ारता था जब यहूदी मज़हब का पैरोकार था। उस वक़्त मैंने कितने जोश और शिद्दत से अल्लाह की जमात को ईज़ा पहुँचाई। मेरी पूरी कोशिश यह थी कि यह जमात ख़त्म हो जाए। 14 यहूदी मज़हब के लिहाज़ से मैं अकसर दीगर हमउम्र यहूदियों पर सबकत ले गया था। हाँ, मैं अपने बापदादा की रिवायतों की पैरवी में हद से ज्यादा सरगम था।

15 लेकिन अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से मुझे पैदा होने से पेशतर ही चुनकर अपनी खिदमत करने के लिए बुलाया। और जब उसने अपनी मरज़ी से 16 अपने फ़रज़द को मुझ पर ज़ाहिर किया ताकि मैं उसके बारे में ग़ैरयहूदियों को ख़ुशख़बरी सुनाऊँ तो मैंने किसी भी शख्स से मशवरा न लिया। 17 उस वक़्त मैं यरूशलम भी न गया ताकि उनसे मिलूँ जो मुझसे पहले रसूल थे बल्कि मैं सीधा अरब चला गया और बाद में दमिश्क वापस आया। 18 इसके तीन साल बाद ही मैं पतरस से शनासा होने के लिए यरूशलम गया। वहाँ मैं पंद्रह दिन उसके साथ रहा। 19 इसके अलावा मैंने सिर्फ़ खुदावंद के भाई याक़ूब को देखा, किसी और रसूल को नहीं।

20 जो कुछ मैं लिख रहा हूँ अल्लाह गवाह है कि वह सहीह है। मैं झूट नहीं बोल रहा।

21 बाद में मैं मुल्के-शाम और किलिकिया चला गया। 22 उस वक़्त सब्बा यहूदिया में मसीह की जमातें मुझे नहीं जानती थीं। 23 उन तक सिर्फ़ यह ख़बर पहुँची थी कि जो आदमी पहले हमें ईज़ा पहुँचा रहा था वह अब खुद उस इमान की ख़ुशख़बरी सुनाता है जिसे वह पहले ख़त्म करना चाहता था। 24 यह सुनकर उन्होंने मेरी वजह से अल्लाह की तमज़ीद की।

## 2

### पौलस और दीगर रसूल

1 चौदह साल के बाद मैं दुबारा यरूशलम गया। इस दफा बरनबास साथ था। मैं तितुस को भी साथ लेकर गया। 2 मैं एक मुकाशफे की वजह से गया जो अल्लाह ने मुझ पर ज़ाहिर किया था। मेरी अलहदगी में उनके साथ मीटिंग हुई जो असरो-रसूख रखते हैं। इसमें मैंने उन्हें वह ख़ुशख़बरी पेश की जो मैं ग़ैरयहूदियों को सुनाता हूँ। मैं नहीं चाहता था कि जो दौड़ मैं दौड़ रहा हूँ या माज़ी में दौड़ा था वह आखिरकार बेफायदा निकले। 3 उस वक़्त वह यहाँ तक मेरे हक में थे कि उन्होंने तितुस को भी अपना ख़तना करवाने पर मजबूर नहीं किया, अगरचे वह ग़ैरयहूदी है। 4 और चंद यही चाहते थे। लेकिन यह झूटे भाई थे जो चुपके से अंदर घुस आए थे ताकि जासूस बनकर हमारी उस आज़ादी के बारे में मालूमात हासिल कर लें जो हमें मसीह में मिली



है। यह हमें गुलाम बनाना चाहते थे, <sup>5</sup> लेकिन हमने लमहा-भर उनकी बात न मानी और न उनके ताबे हुए ताकि अल्लाह की खुशखबरी की सच्चाई आपके दरमियान कायम रहे।

<sup>6</sup> और जो राहनुमा समझे जाते थे उन्होंने मेरी बात में कोई इजाफा न किया। (असल में मुझे कोई परवा नहीं कि उनका असरो-रसूख था कि नहीं। अल्लाह तो इनसान की जाहिरी हालत का लिहाज नहीं करता।) <sup>7</sup> बहरहाल उन्होंने देखा कि अल्लाह ने मुझे गैरयहूदियों को मसीह की खुशखबरी सुनाने की जिम्मादारी दी थी, बिलकुल उसी तरह जिस तरह उसने पतरस को यहूदियों को यह पैगाम सुनाने की जिम्मादारी दी थी। <sup>8</sup> क्योंकि जो काम अल्लाह यहूदियों के रसूल पतरस की खिदमत के वसीले से कर रहा था वही काम वह मेरे वसीले से भी कर रहा था, जो गैरयहूदियों का रसूल हूँ। <sup>9</sup> याकूब, पतरस और यहन्ना को जमात के सत्न माना जाता था। जब उन्होंने जान लिया कि अल्लाह ने इस नाते से मुझे खास फ़जल दिया है तो उन्होंने मुझसे और बरनबास से दहना हाथ मिलाकर इसका इजहार किया कि वह हमारे साथ हैं। यों हम मुतफ़िक हुए कि बरनबास और मैं गैरयहूदियों में खिदमत करेंगे और वह यहूदियों में। <sup>10</sup> उन्होंने सिर्फ़ एक बात पर जोर दिया कि हम ज़रूरतमंदों को याद रखें, वही बात जिसे मैं हमेशा करने के लिए कोशिशें रहा हूँ।

**अंताकिया में पौलुस पतरस को मलामत करता है**

<sup>11</sup> लेकिन जब पतरस अंताकिया शहर आया तो मैंने स्बस् उस की मुखालफत की, क्योंकि वह अपने रक्ये के सबब से मुजरिम ठहरा। <sup>12</sup> जब वह आया तो पहले वह गैरयहूदी ईमानदारों के साथ खाना खाता रहा। लेकिन फिर याकूब के कुछ अजीज आए। उसी वक्त पतरस पीछे हटकर गैरयहूदियों से अलग हुआ, क्योंकि वह उनसे डरता था जो गैरयहूदियों का खतना करवाने के हक़ में थे। <sup>13</sup> बाकी यहूदी भी इस रियाकारी में शामिल हुए, यहाँ तक कि बरनबास को भी उनकी रियाकारी से बहकाया गया। <sup>14</sup> जब मैंने देखा कि वह उस सीधी राह पर नहीं चल रहे हैं जो अल्लाह की खुशखबरी की सच्चाई पर मबनी है तो मैंने सबके सामने पतरस से कहा, “आप यहूदी हैं। लेकिन आप गैरयहूदी की तरह ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं, यहूदी की तरह नहीं। तो फिर यह कैसी बात है कि आप गैरयहूदियों को यहूदी रिवायत की पैरवी करने पर मजबूर कर रहे हैं?”

**सब ईमान से नजात पाते हैं**

<sup>15</sup> बेशक हम पैदाइशी यहूदी हैं और ‘गैरयहूदी गुनाहगार’ नहीं हैं। <sup>16</sup> लेकिन हम जानते हैं कि इनसान को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ नहीं ठहराया जाता बल्कि ईसा मसीह पर ईमान लाने से। हम भी मसीह ईसा पर ईमान लाए हैं ताकि हमें रास्तबाज़ करार दिया जाए, शरीअत की पैरवी करने से नहीं बल्कि मसीह पर ईमान लाने से। क्योंकि शरीअत की पैरवी करने से किसी को भी रास्तबाज़ करार नहीं दिया जाएगा। <sup>17</sup> लेकिन अगर मसीह में रास्तबाज़ ठहरने की कोशिश करते करते हम खुद गुनाहगार साबित हो जाएँ तो क्या इसका मतलब यह है कि मसीह गुनाह का खादिम है? हरगिज़ नहीं! <sup>18</sup> अगर मैं शरीअत के उस निज़ाम को दुबारा तामीर करूँ जो मैंने ढा दिया तो फिर मैं जाहिर करता हूँ कि मैं मुजरिम हूँ। <sup>19</sup> क्योंकि जहाँ तक शरीअत का ताल्लुक है मैं मुरदा हूँ। मुझे शरीअत ही से मारा गया है ताकि अल्लाह के लिए जी सकूँ। मुझे मसीह के साथ मसलूब किया गया <sup>20</sup> और यों मैं खुद ज़िंदा न रहा बल्कि मसीह मुझमें ज़िंदा है। अब जो ज़िंदगी मैं इस जिस्म में गुज़ारता हूँ वह अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान लाने से गुज़ारता हूँ। उसी ने मुझसे मुहब्बत रखकर मेरे लिए अपनी जान दी। <sup>21</sup> मैं अल्लाह का फ़जल रद्द करने से इनकार करता हूँ। क्योंकि अगर किसी को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहराया जा सकता तो इसका मतलब यह होता कि मसीह का मरना अबस था।

## 3

**शरीअत या ईमान**

<sup>1</sup> नासमझ गलतियों! किसने आप पर जादू कर दिया? आपको आँखों के सामने ही ईसा मसीह और उस की सलीबी मौत को साफ़ साफ़ पेश किया गया। <sup>2</sup> मुझे एक बात बताएँ, क्या आपको शरीअत की पैरवी करने से स्हुल-कुदूस मिला? हरगिज़ नहीं! वह आपको उस वक्त मिला जब आप मसीह के बारे में पैगाम सुनकर उस पर ईमान लाए। <sup>3</sup> क्या आप इतने बेसमझ हैं? आपको स्थानी ज़िंदगी स्हुल-कुदूस के वसीले से शुरु हुई। तो अब आप यह काम अपनी इनसानी कोशिशों से किस तरह तकमील तक पहुँचाना चाहते हैं? <sup>4</sup> आपको कई तरह के तज़रबे हासिल हुए हैं। क्या यह सब बेफ़ायदा थे? यकीनन यह बेफ़ायदा नहीं थे। <sup>5</sup> क्या अल्लाह इसलिए आपको अपना रूह देता और आपके दरमियान मोजिज़े करता है कि आप शरीअत की पैरवी करते हैं? हरगिज़ नहीं, बल्कि इसलिए कि आप मसीह के बारे में पैगाम सुनकर ईमान लाए हैं।

<sup>6</sup> इब्राहीम की मिसाल लें। उसने अल्लाह पर भरोसा किया और इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया। <sup>7</sup> तो फिर आपको जान लेना चाहिए कि इब्राहीम की हकीकी औलाद वह लोग हैं जो ईमान रखते हैं। <sup>8</sup> कलामे-मुक़द्दस ने इस बात

की पेशगोई की कि अल्लाह गैरयहूदियों को ईमान के ज़रीए रास्तबाज़ करार देगा। यों उसने इब्राहीम को यह खुशखबरी सुनाई, “तमाम कौमें तुझसे बरकत पाएँगी।”<sup>9</sup> इब्राहीम ईमान लाया, इसलिए उसे बरकत मिली। इसी तरह सबको ईमान लाने पर इब्राहीम की-सी बरकत मिलती है।

10 लेकिन जो भी इस पर तकिया करते हैं कि हमें शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ करार दिया जाएगा उन पर अल्लाह की लानत है। क्योंकि कलामे-मुकद्दस फरमाता है, “हर एक पर लानत जो शरीअत की किताब की तमाम बातें कायम न रखे, न इन पर अमल करे।”<sup>11</sup> यह बात तो साफ है कि अल्लाह किसी को भी शरीअत की पैरवी करने की बिना पर रास्तबाज़ नहीं ठहराता, क्योंकि कलामे-मुकद्दस के मुताबिक रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा।<sup>12</sup> ईमान की यह राह शरीअत की राह से बिलकुल फ़रक है जो कहती है, “जो यों करेगा वह जीता रहेगा।”

13 लेकिन मसीह ने हमारा फ़िदा देकर हमें शरीअत की लानत से आज़ाद कर दिया है। यह उसने इस तरह किया कि वह हमारी खातिर खुद लानत बना। क्योंकि कलामे-मुकद्दस में लिखा है, “जिसे भी दरख्त से लटकाया गया है उस पर अल्लाह की लानत है।”<sup>14</sup> इसका मक़सद यह था कि जो बरकत इब्राहीम को हासिल हुई वह मसीह के वसीले से गैरयहूदियों को भी मिले और यों हम ईमान लाकर वादा किया हुआ रूह पाएँ।

### शरीअत और वादा

15 भाइयो, इनसानी ज़िंदगी की एक मिसाल लें। जब दो पार्टियाँ किसी मामले में मुतफ़िक होकर मुआहदा करती हैं तो कोई इस मुआहदे को मनसूख या इसमें इज़ाफ़ा नहीं कर सकता।<sup>16</sup> अब गौर करें कि अल्लाह ने अपने वादे इब्राहीम और उस की औलाद से ही किए। लेकिन जो लफ़ज़ इब्रानी में औलाद के लिए इस्तेमाल हुआ है इससे मुराद बहुत-से अफ़राद नहीं बल्कि एक फ़रद है और वह है मसीह।<sup>17</sup> कहने से मुराद यह है कि अल्लाह ने इब्राहीम से अहद बाँधकर उसे कायम रखने का वादा किया। शरीअत जो 430 साल के बाद दी गई इस अहद को रद्द करके अल्लाह का वादा मनसूख नहीं कर सकती।<sup>18</sup> क्योंकि अगर इब्राहीम की मीरास शरीअत की पैरवी करने से मिलती तो फिर वह अल्लाह के वादे पर मुनहसिर न होती। लेकिन ऐसा नहीं था। अल्लाह ने इसे अपने वादे की बिना पर इब्राहीम को दे दिया।

19 तो फिर शरीअत का क्या मक़सद था? उसे इसलिए वादे के अलावा दिया गया ताकि लोगों के गुनाहों को जाहिर करे। और उसे उस वक़्त तक कायम रहना था जब तक इब्राहीम की वह औलाद न आ जाती जिससे वादा किया गया था। अल्लाह ने अपनी शरीअत फ़रिशतों के वसीले से मूसा को दे दी जो अल्लाह और लोगों के बीच में दरमियानी रहा।<sup>20</sup> अब दरमियानी उस वक़्त ज़रूरी होता है जब एक से ज्यादा पार्टियों में इतफ़ाक़ कराने की ज़रूरत है। लेकिन अल्लाह जो एक ही है उसने दरमियानी इस्तेमाल न किया जब उसने इब्राहीम से वादा किया।

### शरीअत का मक़सद

21 तो क्या इसका मतलब यह है कि शरीअत अल्लाह के वादों के खिलाफ़ है? हरगिज़ नहीं! अगर इनसान को ऐसी शरीअत मिली होती जो ज़िंदगी दिला सकती तो फिर सब उस की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहरते।<sup>22</sup> लेकिन कलामे-मुकद्दस फ़रमाता है कि पूरी दुनिया गुनाह के कब्ज़े में है। चुनौचे हमें अल्लाह का वादा सिर्फ़ ईसा मसीह पर ईमान लाने से हासिल होता है।

23 इससे पहले कि ईमान की यह राह दस्तयाब हुई शरीअत ने हमें कैद करके महफूज़ रखा था। इस कैद में हम उस वक़्त तक रहे जब तक ईमान की राह जाहिर नहीं हुई थी।<sup>24</sup> यों शरीअत को हमारी तरबियत करने की जिम्मादारी दी गई। उसे हमें मसीह तक पहुँचाना था ताकि हमें ईमान से रास्तबाज़ करार दिया जाए।<sup>25</sup> अब चूँकि ईमान की राह आ गई है इसलिए हम शरीअत की तरबियत के तहत नहीं रहे।

26 क्योंकि मसीह ईसा पर ईमान लाने से आप सब अल्लाह के फ़रज़द बन गए हैं।<sup>27</sup> आपमें से जितनों को मसीह में बपतिस्मा दिया गया उन्होंने मसीह को पहन लिया।<sup>28</sup> अब न यहूदी रहा न गैरयहूदी, न गुलाम रहा न आज़ाद, न मर्द रहा न औरत। मसीह ईसा में आप सबके सब एक हैं।<sup>29</sup> शर्त यह है कि आप मसीह के हों। तब आप इब्राहीम की औलाद और उन चीज़ों के वारिस हैं जिनका वादा अल्लाह ने किया है।

## 4

1 देखें, जो बेटा अपने बाप की मिलकियत का वारिस है वह उस वक़्त तक गुलामों से फ़रक नहीं जब तक वह बालिग न हो, हालाँकि वह पूरी मिलकियत का मालिक है।<sup>2</sup> बाप की तरफ से मुक़रर की हुई उम्र तक दूसरे उस की देख-भाल करते और उस की मिलकियत संभालते हैं।<sup>3</sup> इसी तरह हम भी जब बच्चे थे दुनिया की कुव्वतों के गुलाम थे।<sup>4</sup> लेकिन जब मुक़रर वक़्त आ गया तो अल्लाह ने अपने फ़रज़द को भेज दिया। एक औरत से पैदा होकर वह शरीअत के ताबे हुआ<sup>5</sup> ताकि फ़िदा देकर हमें जो शरीअत के ताबे थे आज़ाद कर दे। यों हमें अल्लाह के फ़रज़द होने का मरतबा मिला है।

6 अब चूँकि आप उसके फ़रज़ंद हैं इसलिए अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद के रूह को हमारे दिलों में भेज दिया, वह रूह जो “अब्बा” यानी “ऐ बाप” कहकर पुकारता रहता है। 7 गरज़ अब आप गुलाम न रहे बल्कि बेटे की हैसियत रखते हैं। और बेटा होने का यह मतलब है कि अल्लाह ने आपको वारिस भी बना दिया है।

### पौलस की गलतियों के लिए फ़िक्र

8 माज़ी में जब आप अल्लाह को नहीं जानते थे तो आप उनके गुलाम थे जो हकीकत में खुदा नहीं है। 9 लेकिन अब आप अल्लाह को जानते हैं, बल्कि अब अल्लाह ने आपको जान लिया है। तो फिर आप मुड़कर इन कमज़ोर और घटिया उसूलों की तरफ़ क्यों वापस जाने लगे हैं? क्या आप दुबारा इनकी गुलामी में आना चाहते हैं? 10 आप बड़ी फ़िक्रमंदी से खास दिन, माह, मौसम और साल मनाते हैं। 11 मुझे आपके बारे में डर है, कहीं मेरी आप पर मेहनत-मशक्कत जाया न जाए।

12 भाइयो, मैं आपसे इल्तिजा करता हूँ कि मेरी मानिंद बन जाएँ, क्योंकि मैं तो आपकी मानिंद बन गया हूँ। आपने मेरे साथ कोई ग़लत सुलूक नहीं किया। 13 आपको मालूम है कि जब मैंने पहली दफा आपको अल्लाह की खुशख़बरी सुनाई तो इसकी वजह मेरे जिस्म की कमज़ोर हालत थी। 14 लेकिन अगरचे मेरी यह हालत आपके लिए आजमाइश का बाइस थी तो भी आपने मुझे हकीर न जाना, न मुझे नीच समझा, बल्कि आपने मुझे यों खुशआमदीद कहा जैसा कि मैं अल्लाह का कोई फ़रिश्ता या मसीह ईसा खुद हूँ। 15 उस वक़्त आप इतने खुश थे! अब क्या हुआ है? मैं ग़वाह हूँ, उस वक़्त अगर आपको मौका मिलता तो आप अपनी आँखें निकालकर मुझे दे देते। 16 तो क्या अब मैं आपको हकीकत बताने की वजह से आपको दुश्मन बन गया हूँ?

17 वह दूसरे लोग आपकी दोस्ती पाने की पूरी जिद्दो-जहद कर रहे हैं, लेकिन उनकी नीयत साफ़ नहीं है। बस वह आपको मुझसे जुदा करना चाहते हैं ताकि आप उन्हीं के हक़ में जिद्दो-जहद करते रहें। 18 जब लोग आपकी दोस्ती पाने की जिद्दो-जहद करते हैं तो यह है तो ठीक, लेकिन इसका मक़सद अच्छा होना चाहिए। हाँ, सहीह जिद्दो-जहद हर वक़्त अच्छी होती है, न सिर्फ़ इस वक़्त जब मैं आपके दरमियान हूँ। 19 मेरे प्यारे बच्चो! अब मैं दुबारा आपको जन्म देने का-सा दर्द महसूस कर रहा हूँ और उस वक़्त तक करता रहूँगा जब तक मसीह आपमें सरत न पकड़े। 20 काश मैं उस वक़्त आपके पास होता ताकि फ़रक अंदाज़ में आपसे बात कर सकता, क्योंकि मैं आपके सबब से बड़ी उलझन में हूँ।

### हाजिरा और सारा की मिसाल

21 आप जो शरीअत के तबे रहना चाहते हैं मुझे एक बात बताएँ, क्या आप वह बात नहीं सुनते जो शरीअत कहती है? 22 वह कहती है कि इब्राहीम के दो बेटे थे। एक लौंडी का बेटा था, एक आज़ाद औरत का। 23 लौंडी के बेटे की पैदाइश हसबे-मामूल थी, लेकिन आज़ाद औरत के बेटे की पैदाइश ग़ैरमामूली थी, क्योंकि उसमें अल्लाह का वादा पूरा हुआ। 24 जब यह किनायतन समझा जाए तो यह दो खवातीन अल्लाह के दो अहदों की नुमाइंदगी करती हैं। पहली ख़ातून हाजिरा सीना पहाड़ पर बँधे हुए अहद की नुमाइंदगी करती है, और जो बच्चे उससे पैदा होते हैं वह गुलामी के लिए मुकर्रर हैं। 25 हाजिरा जो अरब में वाके पहाड़ सीना की अलामत है मौजूदा शहर यरूशलम से मुताबिकत रखती है। वह और उसके तमाम बच्चे गुलामी में ज़िंदगी गुज़ारते हैं। 26 लेकिन आसमानी यरूशलम आज़ाद है और वही हमारी माँ है। 27 क्योंकि कलामे-मुक़द्स में लिखा है,

“खुश हो जा, तू जो बेऔलाद है,  
जो बच्चे को जन्म ही नहीं दे सकती।  
बुलंद आवाज़ से शадियाना बजा,  
तू जिसे पैदाइश का दर्द न हुआ।  
क्योंकि अब तर्क की हुई औरत के बच्चे  
शादीशुदा औरत के बच्चों से ज्यादा हैं।”

28 भाइयो, आप इसहाक की तरह अल्लाह के वादे के फ़रज़ंद हैं। 29 उस वक़्त इसमाईल ने जो हसबे-मामूल पैदा हुआ था इसहाक को सताया जो रूहूल-कुद्स की कुदरत से पैदा हुआ था। आज भी ऐसा ही है। 30 लेकिन कलामे-मुक़द्स में क्या फ़रमाया गया है? “इस लौंडी और इसके बेटे को घर से निकाल दें, क्योंकि वह आज़ाद औरत के बेटे के साथ विरसा नहीं पाएगा।” 31 गरज़ भाइयो, हम लौंडी के फ़रज़ंद नहीं हैं बल्कि आज़ाद औरत के।

1 मसीह ने हमें आज़ाद रहने के लिए ही आज़ाद किया है। तो अब कायम रहें और दुबारा अपने गले में गुलामी का जुआ डालने न दें।

2 सुनें! मैं पौलस आपको बताता हूँ कि अगर आप अपना खतना करवाएँ तो आपको मसीह का कोई फायदा नहीं होगा। 3 मैं एक बार फिर इस बात की तसदीक करता हूँ कि जिसने भी अपना खतना करवाया उसका फ़र्ज़ है कि वह पूरी शरीरत की पैरवी करे। 4 आप जो शरीरत की पैरवी करने से रास्तबाज़ बनना चाहते हैं आपका मसीह के साथ कोई वास्ता न रहा। हाँ, आप अल्लाह के फ़जल से दूर हो गए हैं। 5 लेकिन हमें एक फ़रक उम्मीद दिलाई गई है। उम्मीद यह है कि ख़ुदा ही हमें रास्तबाज़ करार देता है। चुनौती हम स्हूल-कुदूस के बाइस इमान रखकर इसी रास्तबाज़ी के लिए तडपते रहते हैं। 6 क्योंकि जब हम मसीह ईसा में होते हैं तो खतना करवाने या न करवाने से कोई फ़रक नहीं पड़ता। फ़रक सिर्फ़ उस इमान से पड़ता है जो मुहब्बत करने से जाहिर होता है।

7 आप इमान की दौड़ में अच्छी तरक्की कर रहे थे! तो फिर किसने आपको सच्चाई की पैरवी करने से रोक लिया? 8 किसने आपको उभारा? अल्लाह तो नहीं था जो आपको बुलाता है। 9 देखें, थोड़ा-सा ख़मीर तमाम गुंधे हुए आटे को ख़मीर कर देता है। 10 मुझे ख़ुदावंद में आप पर इतना एतमाद है कि आप यही सोच रखते हैं। जो भी आपमें अफ़रा-तफ़री पैदा कर रहा है उसे सज़ा मिलेगी।

11 भाइयो, जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, अगर मैं यह पैग़ाम देता कि अब तक खतना करवाने की ज़रूरत है तो मेरी इज़ारसानी क्यों हो रही होती? अगर ऐसा होता तो लोग मसीह के मसलूब होने के बारे में सुनकर ठोकर न खाते। 12 बेहतर है कि आपको परेशान करनेवाले न सिर्फ़ अपना खतना करवाएँ बल्कि खोजे बन जाएँ।

13 भाइयो, आपको आज़ाद होने के लिए बुलाया गया है। लेकिन खबरदार रहें कि इस आज़ादी से आपकी गुनाहआलूदा फ़ितरत को अमल में आने का मौक़ा न मिले। इसके बजाएँ मुहब्बत की रूह में एक दूसरे की खिदमत करें। 14 क्योंकि पूरी शरीरत एक ही हुक़म में समाई हुई है, “अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।” 15 अगर आप एक दूसरे को काटते और फाड़ते हैं तो खबरदार! ऐसा न हो कि आप एक दूसरे को खत्म करके सबके सब तबाह हो जाएँ।

### स्हूल-कुदूस और इनसानी फ़ितरत

16 मैं तो यह कहता हूँ कि स्हूल-कुदूस में ज़िंदगी गुज़ारें। फिर आप अपनी पुरानी फ़ितरत की खाहिशात पूरी नहीं करेंगे। 17 क्योंकि जो कुछ हमारी पुरानी फ़ितरत चाहती है वह उसके खिलाफ़ है जो रूह चाहता है, और जो कुछ रूह चाहता है वह उसके खिलाफ़ है जो हमारी पुरानी फ़ितरत चाहती है। यह दोनों एक दूसरे के दुश्मन हैं, इसलिए आप वह कुछ नहीं कर पाते जो आप करना चाहते हैं। 18 लेकिन जब स्हूल-कुदूस आपकी राहनुमाई करता है तो आप शरीरत के ताबे नहीं होते।

19 जो काम पुरानी फ़ितरत करती है वह साफ़ जाहिर होता है। मसलन ज़िनाकारी, नापाकी, ऐयाशी, 20 बृतपरस्ती, जादूगरी, दुश्मनी, झगडा, हसद, गुस्सा, ख़ुदगारज़ी, अनबन, पाटीबाज़ी, 21 जलन, नशाबाज़ी, रंगरलियों वगैरा। मैं पहले भी आपको आगाह कर चुका हूँ, लेकिन अब एक बार फिर कहता हूँ कि जो इस तरह की ज़िंदगी गुज़ारते हैं वह अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे।

22 स्हूल-कुदूस का फल फ़रक है। वह मुहब्बत, खुशी, सुलह-सलामती, सब्र, मेहरबानी, नेकी, वफ़ादारी, 23 नरमी और ज़ब्त-नफ़स पैदा करता है। शरीरत ऐसी चीज़ों के खिलाफ़ नहीं होती। 24 और जो मसीह ईसा के हैं उन्होंने अपनी पुरानी फ़ितरत को उस की रगबतों और बुरी खाहिशों समेत मसलूब कर दिया है। 25 चूँकि हम रूह में ज़िंदगी गुज़ारते हैं इसलिए आएँ, हम कदम बकदम उसके मुताबिक चलते भी रहें। 26 न हम मग़र्र हों, न एक दूसरे को मुशतइल करें या एक दूसरे से हसद करें।

## 6

### एक दूसरे के बोझ उठाना

1 भाइयो, अगर कोई किसी गुनाह में फँस जाए तो आप जो स्हानी हैं उसे नरमदिली से बहाल करें। लेकिन अपना भी खयाल रखें, ऐसा न हो कि आप भी आज़माइश में फँस जाएँ। 2 बोझ उठाने में एक दूसरे की मदद करें, क्योंकि इस तरह आप मसीह की शरीरत पूरी करेंगे। 3 जो समझता है कि मैं कुछ हूँ अगरचे वह हकीकत में कुछ भी नहीं है तो वह अपने आपको फ़रेब दे रहा है। 4 हर एक अपना ज़ाती अमल परखे। फिर ही उसे अपने आप पर फ़रख कर मौक़ा होगा और उसे किसी दूसरे से अपना मुवाज़ना करने की ज़रूरत न होगी। 5 क्योंकि हर एक को अपना ज़ाती बोझ उठाना होता है।

6 जिसे कलामे-मुक़द्दस की तालीम दी जाती है उसका फ़र्ज़ है कि वह अपने उस्ताद को अपनी तमाम अच्छी चीज़ों में शरीक करे।

7 फरेब मत खाना, अल्लाह इनसान को अपना मजाक उडाने नहीं देता। जो कुछ भी इनसान बोता है उसी की फसल वह काटेगा। 8 जो अपनी पुरानी फितरत के खेत में बीज बोए वह हलाकत की फसल काटेगा। और जो रूहल-कुदूस के खेत में बीज बोए वह अबदी जिंदगी की फसल काटेगा। 9 चुनौचे हम नेक काम करने में बेदिल न हो जाएँ, क्योंकि हम मुकर्ररा वक्त पर ज़रूर फसल की कटाई करेंगे। शर्त सिर्फ यह है कि हम हथियार न डालें। 10 इसलिए आएँ, जितना वक्त रह गया है सबके साथ नेकी करें, खासकर उनके साथ जो ईमान में हमारे भाई और बहनें हैं।

### आखिरी आगाही और सलाम

11 देखें, मैं बड़े बड़े हुरूफ के साथ अपने हाथ से आपको लिख रहा हूँ। 12 यह लोग जो दुनिया के सामने इज़्जत हासिल करना चाहते हैं आपको खतना करवाने पर मजबूर करना चाहते हैं। मकसद उनका सिर्फ एक ही है, कि वह उस ईज़ारसानी से बचे रहें जो तब पैदा होती है जब हम मसीह की सलीबी मौत की तालीम देते हैं। 13 बात यह है कि जो अपना खतना कराते हैं वह खुद शरीअत की पैरवी नहीं करते। तो भी यह चाहते हैं कि आप अपना खतना करवाएँ ताकि आपके जिस्म की हालत पर वह फखर कर सकें। 14 लेकिन खुदा करे कि मैं सिर्फ हमारे खुदावंद ईसा मसीह की सलीब ही पर फखर करूँ। क्योंकि उस की सलीब से दुनिया मेरे लिए मसलूब हुई है और मैं दुनिया के लिए। 15 खतना करवाने या न करवाने से कोई फरक नहीं पडता बल्कि फरक उस वक्त पडता है जब अल्लाह किसी को नए सिरे से खलक करता है। 16 जो भी इस उसूल पर अमल करते हैं उन्हें सलामती और रहम हासिल होता रहे, उन्हें भी और अल्लाह की कौम इसराईल को भी।

17 आइंदा कोई मुझे तकलीफ न दे, क्योंकि मेरे जिस्म पर ज़खमों के निशान ज़ाहिर करते हैं कि मैं ईसा का गुलाम हूँ।

18 भाइयो, हमारे खुदावंद ईसा मसीह का फज़ल आपकी रूह के साथ होता रहे। आमीन।

## इफिसियों

1 यह खत पौलस की तरफ से है, जो अल्लाह की मरजी से मसीह ईसा का रसूल है।

मैं इफिसस शहर के मुकद्दसीन को लिख रहा हूँ, उन्हें जो मसीह ईसा में ईमानदार हैं।

2 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फज़ल और सलामती बख्शें।

मसीह में रहानी बरकतें

3 खुदा हमारे खुदावंद ईसा मसीह के बाप की हम्दो-सना हो! क्योंकि मसीह में उसने हमें आसमान पर हर रहानी बरकत से नवाजा है। 4 दुनिया की तखलीक से पेशतर ही उसने मसीह में हमें चुन लिया ताकि हम मुकद्दस और बेऐब हालत में उसके सामने ज़िंदगी गुज़ारें।

यह कितनी अज़ीम मुहब्बत थी! 5 पहले ही से उसने फैसला कर लिया कि वह हमें मसीह में अपने बेटे-बेटियाँ बना लेगा। यही उस की मरजी और खुशी थी 6 ताकि हम उसके जलाली फज़ल की तमजीद करें, उस मुफ्त नेमत के लिए जो उसने हमें अपने प्यारे फ़रज़द में दे दी। 7 क्योंकि उसने मसीह के खून से हमारा फ़िघा देकर हमें आज़ाद और हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। अल्लाह का यह फज़ल कितना वसी है 8 जो उसने कसरत से हमें अता किया है।

अपनी पूरी हिकमत और दानाई का इज़हार करके 9 अल्लाह ने हम पर अपनी पोशीदा मरजी जाहिर कर दी, यानी वह मनसूबा जो उसे पसंद था और जो उसने मसीह में पहले से बना रखा था। 10 मनसूबा यह है कि जब मुकर्ररा वक़्त आया तो अल्लाह मसीह में तमाम कायनात को जमा कर देगा। उस वक़्त सब कुछ मिलकर मसीह के तहत हो जाएगा, खाह वह आसमान पर हो या ज़मीन पर।

11 मसीह में हम आसमानी बादशाही के वारिस भी बन गए हैं। अल्लाह ने पहले से हमें इसके लिए मुकर्रर किया, क्योंकि वह सब कुछ यों संरजाम देता है कि उस की मरजी का इरादा पूरा हो जाए। 12 और वह चाहता है कि हम उसके जलाल की सताइश का बाइस बनें, हम जिन्होंने पहले से मसीह पर उम्मीद रखी।

13 आप भी मसीह में हैं, क्योंकि आप सच्चाई का कलाम और अपनी नजात की खुशखबरी सुनकर ईमान लाए। और अल्लाह ने आप पर भी रहूल-कुदूस की मुहर लगा दी जिसका वादा उसने किया था। 14 रहूल-कुदूस हमारी मीरास का बयाना है। वह हमें यह ज़मानत देता है कि अल्लाह हमारा जो उस की मिलकियत है फ़िघा देकर हमें पूरी मखलसी तक पहुँचाएगा। क्योंकि हमारी ज़िंदगी का मकसद यह है कि उसके जलाल की सताइश की जाए।

पौलस की दुआ

15 भाइयो, मैं खुदावंद ईसा पर आपके ईमान और आपकी तमाम मुकद्दसीन से मुहब्बत के बारे में सुनकर 16 आपके लिए खुदा का शुक्र करने से बाज़ नहीं आता बल्कि आपको अपनी दुआओं में याद करता रहता हूँ। 17 मेरी खास दुआ यह है कि हमारे खुदावंद ईसा मसीह का खुदा और जलाली बाप आपको दानाई और मुकाशफा की रह दे ताकि आप उसे बेहतर तौर पर जान सकें। 18 वह करे कि आपको दिलों की आँखें रौशन हो जाएँ। क्योंकि फिर ही आप जान लेंगे कि यह कैसी उम्मीद है जिसके लिए उसने आपको बुलाया है, कि यह जलाली मीरास कैसी दौलत है जो मुकद्दसीन को हासिल है, 19 और कि हम ईमान रखनेवालों पर उस की कुदरत का इज़हार कितना जबरदस्त है। यह वही बेहद कुदरत है 20 जिससे उसने मसीह को मुरदों में से ज़िंदा करके आसमान पर अपने दहने हाथ बिठाया। 21 वहाँ मसीह हर हुक्मरान, इख्तियार, कुव्वत, हुक्मत, हौ हर नाम से कही सरफराज़ है, खाह इस दुनिया में हो या आनेवाली दुनिया में। 22 अल्लाह ने सब कुछ उसके पाँवों के नीचे करके उसे सबका सर बना दिया। यह उसने अपनी जमात की खातिर किया 23 जो मसीह का बदन है और जिसे मसीह से पूरी मामूरी हासिल होती है यानी उससे जो हर तरह से सब कुछ मामूर कर देता है।

## 2

मौत से ज़िंदगी तक

1 आप भी अपनी खताओं और गुनाहों की वजह से रहानी तौर पर मुरदा थे। 2 क्योंकि पहले आप इनमें फँसे हुए इस दुनिया के तौर-तरीकों के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारते थे। आप हवा की कुव्वतों के सरदार के ताबे थे, उस रह के जो इस वक़्त उनमें सरगरमे-अमल है जो अल्लाह के नाफ़रमान हैं। 3 पहले तो हम भी सब उनमें ज़िंदगी गुज़ारते थे। हम भी अपनी पुरानी

फितरत की शहवतें, मरजी और सोच पूरी करने की कोशिश करते रहे। दूसरों की तरह हम पर भी फितरी तौर पर अल्लाह का गजब नाज़िल होना था।

4 लेकिन अल्लाह का रहम इतना बर्सी है और वह इतनी शिद्दत से हमसे मुहब्बत रखता है 5 कि अगरचे हम अपने गुनाहों में मुरदा थे तो भी उसने हमें मसीह के साथ जिंदा कर दिया। हाँ, आपको अल्लाह के फज़ल ही से नजात मिली है। 6 जब हम मसीह ईसा पर ईमान लाए तो उसने हमें मसीह के साथ जिंदा करके आसमान पर बिठा दिया। 7 ईसा मसीह में हम पर मेहरबानी करने से अल्लाह आनेवाले ज़मानों में अपने फज़ल की लामहदूद दौलत दिखाना चाहता था। 8 क्योंकि यह उसका फज़ल ही है कि आपको ईमान लाने पर नजात मिली है। यह आपकी तरफ से नहीं है बल्कि अल्लाह की बख़्शिश है। 9 और यह नजात हमें अपने किसी काम के नतीजे में नहीं मिली, इसलिए कोई अपने आप पर फ़ख़र नहीं कर सकता। 10 हाँ, हम उसी की मख़लूक हैं जिन्हें उसने मसीह में नेक काम करने के लिए ख़लक किया है। और यह काम उसने पहले से हमारे लिए तैयार कर रखे हैं, क्योंकि वह चाहता है कि हम उन्हें संरजाम देते हुए जिंदगी गुज़ारें।

### मसीह में एक

11 यह बात ज़हन में रखें कि माज़ी में आप क्या थे। यहदी सिर्फ़ अपने लिए लफ़्ज़ मख़तून इस्तेमाल करते थे अगरचे वह अपना खतना सिर्फ़ इनसानी हाथों से करवाते हैं। आपको जो ग़ैरयहदी है वह नामख़तून करार देते थे। 12 उस वक़्त आप मसीह के बग़ैर ही चलते थे। आप इसराइल क़ौम के शहरी न बन सके और जो वादे अल्लाह ने अहदों के ज़रीए अपनी क़ौम से किए थे वह आपके लिए नहीं थे। इस दुनिया में आपकी कोई उम्मीद नहीं थी, आप अल्लाह के बग़ैर ही जिंदगी गुज़ारते थे। 13 लेकिन अब आप मसीह में हैं। पहले आप दूर थे, लेकिन अब आपको मसीह के खून के वसीले से करीब लाया गया है। 14 क्योंकि मसीह हमारी सुलह है और उसी ने यहदियों और ग़ैरयहदियों को मिलाकर एक क़ौम बना दिया है। अपने जिस्म को क़ुरबान करके उसने वह दीवार गिरा दी जिसने उन्हें अलग करके एक दूसरे के दुश्मन बना रखा था। 15 उसने शरीअत को उसके अहक़ाम और ज़वाबित समेत मनसूख़ कर दिया ताकि दोनों ग़ुरोहों को मिलाकर एक नया इनसान खलक करे, ऐसा इनसान जो उसमें एक हो और सुलह-सलामती के साथ जिंदगी गुज़ारे। 16 अपनी सलीबी मौत से उसने दोनों ग़ुरोहों को एक बदन में मिलाकर उनकी अल्लाह के साथ सुलह कराई। हाँ, उसने अपने आपमें यह दुश्मनी ख़त्म कर दी। 17 उसने आकर दोनों ग़ुरोहों को सुलह-सलामती की ख़ुशख़बरी सुनाई, आप ग़ैरयहदियों को जो अल्लाह से दूर थे और आप यहदियों को भी जो उसके करीब थे। 18 अब हम दोनों मसीह के ज़रीए एक ही रूह में बाप के हज़ूर आ सकते हैं।

19 नतीजे में अब आप परदेसी और अज़नबी नहीं रहे बल्कि मुक़द्दसीन के हमवतन और अल्लाह के घराने के हैं। 20 आपको रसूलों और नबियों की बुनियाद पर तामीर किया गया है जिसके कोने का बुनियादी पत्थर मसीह ईसा खुद है। 21 उसमें पूरी इमारत जुड़ जाती और बढ़ती बढ़ती खुदावंद में अल्लाह का मुक़द्दस घर बन जाती है। 22 दूसरों के साथ साथ उसमें आपकी भी तामीर हो रही है ताकि आप रूह में अल्लाह की सूकूनतगाह बन जाएँ।

## 3

### पौलस की ग़ैरयहदियों में ख़िदमत

1 इस वजह से मैं पौलस को आप ग़ैरयहदियों की खातिर मसीह ईसा का कैदी हूँ अल्लाह से दुआ करता हूँ। 2 आपने तो सून लिया है कि मुझे आपमें अल्लाह के फज़ल का इंतज़ाम चलाने \* की ख़ास जिम्मादारी दी गई है। 3 जिस तरह मैंने पहले ही मुख़तसर तौर पर लिखा है, अल्लाह ने खुद मुझ पर यह राज़ ज़ाहिर कर दिया। 4 जब आप वह पढ़ेंगे जो मैंने लिखा तो आप जान लेंगे कि मुझे मसीह के राज़ के बारे में क्या क्या समझ आई है। 5 गुज़रे ज़मानों में अल्लाह ने यह बात ज़ाहिर नहीं की, लेकिन अब उसने इसे स्हूल-कुदूस के ज़रीए अपने मुक़द्दस रसूलों और नबियों पर ज़ाहिर कर दिया। 6 और अल्लाह का राज़ यह है कि उस की ख़ुशख़बरी के ज़रीए ग़ैरयहदी इसराइल के साथ आसमानी बादशाही के वारिस, एक ही बदन के आज्ञा और उसी वादे में शरीक हैं जो अल्लाह ने मसीह ईसा में किया है।

7 मैं अल्लाह के मुफ़्त फज़ल और उस की क़ुदरत के इज़हार से ख़ुशख़बरी का ख़ादिम बन गया। 8 अगरचे मैं अल्लाह के तमाम मुक़द्दसीन से कमतर हूँ तो भी उसने मुझे यह फज़ल बख़्शा कि मैं ग़ैरयहदियों को उस लामहदूद दौलत की ख़ुशख़बरी सुनाऊँ जो मसीह में दस्तयाब है। 9 यही मेरी जिम्मादारी बन गई कि मैं सब पर उस राज़ का इंतज़ाम ज़ाहिर करूँ जो गुज़रे ज़मानों में सब चीज़ों के ख़ालिक खुदा में पोश़िदा रहा। 10 क्योंकि अल्लाह चाहता था कि अब मसीह की ज़मात ही आसमानी हुक्मरानों और कुव्वतों को अल्लाह की वसी हिकमत के बारे में इल्म पहुँचाए। 11 यही उसका अज़ली मनसूबा था जो उसने हमारे खुदावंद मसीह ईसा के वसीले से तकमील तक पहुँचाया। 12 उसमें और उस पर ईमान रखकर हम पूरी आज़ादी और

\* 3:2 यानी ख़ुशख़बरी सुनाने।

एतमाद के साथ अल्लाह के हज़ूर आ सकते हैं। 13 इसलिए मेरी आपसे गुजारिश है कि आप मेरी मुसीबतें देखकर बेदिल न हो जाएँ। यह मैं आपकी खातिर बरदाशत कर रहा हूँ, और यह आपकी इज़्जत का बाइस है।

### मसीह की मुहब्बत

14 इस वजह से मैं बाप के हज़ूर अपने घटने टेकता हूँ, 15 उस बाप के सामने जिससे आसमानो-ज़मीन का हर खानदान नामज़द है। 16 मेरी दुआ है कि वह अपने जलाल की दौलत के मुवाफ़िक़ यह बख़्शे कि आप उसके रूह के वसीले से बातिनी तौर पर ज़बरदस्त तकवियत पाएँ, 17 कि मसीह ईमान के ज़रीए आपके दिलों में सुकूनत करे। हाँ, मेरी दुआ है कि आप मुहब्बत में जड़ पकड़ें और इस बुनियाद पर ज़िंदगी यों गुज़ारें 18 कि आप बाकी तमाम मुक़द्दसीन के साथ यह समझने के काबिल बन जाएँ कि मसीह की मुहब्बत कितनी चौड़ी, कितनी लंबी, कितनी ऊँची और कितनी गहरी है। 19 खुदा करे कि आप मसीह की यह मुहब्बत जान लें जो हर इल्म से कहीं अफ़ज़ल है और यों अल्लाह की पूरी मामूरी से भर जाएँ।

20 अल्लाह की तमज़ीद हो जो अपनी उस कुदरत के मुवाफ़िक़ जो हममें काम कर रही है ऐसा ज़बरदस्त काम कर सकता है जो हमारी हर सोच और दुआ से कहीं बाहर है। 21 हाँ, मसीह ईसा और उस की जमात में अल्लाह की तमज़ीद पुरत-दर-पुरत और अज़ल से अबद तक होती रहे। आमीन।

## 4

### बदन की यागांत

1 चुनौचे मैं जो खुदावंद में कैदी हूँ आपको ताकीद करता हूँ कि उस ज़िंदगी के मुताबिक़ चलें जिसके लिए खुदा ने आपको बुलाया है। 2 हर वक़्त हलीम और नरमदिल रहें, सब्र से काम लें और एक दूसरे से मुहब्बत रखकर उसे बरदाशत करें। 3 सुलह-सलामती के बंधन में रहकर रूह की यागांत कायम रखने की पूरी कोशिश करें। 4 एक ही बदन और एक ही रूह है। यों आपको भी एक ही उम्मीद के लिए बुलाया गया। 5 एक खुदावंद, एक ईमान, एक बपतिस्मा है। 6 एक खुदा है, जो सबका वाहिद बाप है। वह सबका मालिक है, सबके ज़रीए काम करता है और सबमें मौजूद है।

7 अब हम सबको अल्लाह का फ़ज़ल बख़्शा गया। लेकिन मसीह हर एक को मुख़्तलिफ़ पैमाने से यह फ़ज़ल अता करता है। 8 इसलिए कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “उसने बुलंदी पर चढ़कर कैदियों का हुज़ूम गिरिफ़्तार कर लिया और आदमियों को तोहफ़े दिए।” 9 अब गौर करें कि चढ़ने का ज़िक्र किया गया है। इसका मतलब है कि पहले वह ज़मीन की गहराइयों में उतरा। 10 जो उतरा वह वही है जो तमाम आसमानों से ऊँचा चढ़ गया ताकि तमाम कायनात को अपने आपसे मामूर करे। 11 उसी ने अपनी जमात को तरह तरह के खादिमों से नवाज़ा। बाज़ रसूल, बाज़ नबी, बाज़ मुबशिशर, बाज़ चरवाहे और बाज़ उस्ताद हैं। 12 इनका मक़सद यह है कि मुक़द्दसीन को खिदमत करने के लिए तैयार किया जाए और यों मसीह के बदन की तामीरो-तरक्की हो जाए। 13 इस तरीके से हम सब ईमान और अल्लाह के फ़रज़द की पहचान में एक होकर बालिग़ हो जाएंगे, और हम मिलकर मसीह की मामूरी और बलूगत को मुनअकिस करेंगे। 14 फिर हम बच्चे नहीं रहेंगे, और तालीम के हर एक झोंके से उछलते फिरते नहीं रहेंगे जब लोग अपनी चालाकी और धोकेबाज़ी से हमें अपने जालों में फँसाने की कोशिश करेंगे। 15 इसके बजाए हम मुहब्बत की रूह में सच्ची बात करके हर लिहाज़ से मसीह की तरफ़ बढ़ते जाएंगे जो हमारा सर है। 16 वही नसों के ज़रीए पूरे बदन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों को एक दूसरे के साथ जोड़कर मुतहिद कर देता है। हर हिस्सा अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ काम करता है, और यों पूरा बदन मुहब्बत की रूह में बढ़ता और अपनी तामीर करता रहता है।

### मसीह में नई ज़िंदगी

17 पस मैं खुदावंद के नाम में आपको आगाह करता हूँ कि अब से ग़ैरईमानदारों की तरह ज़िंदगी न गुज़ारें जिनकी सोच बेकार है 18 और जिनकी समझ अंधेरे की गिरिफ़्त में है। उनका उस ज़िंदगी में कोई हिस्सा नहीं जो अल्लाह देता है, क्योंकि वह जाहिल है और उनके दिल सख़्त हो गए हैं। 19 बेहिस होकर उन्होंने अपने आपको ऐश्याशी के हवाले कर दिया। यों वह न बुझनेवाली प्यास के साथ हर किस्म की नापाक हरकतें करते हैं।

20 लेकिन आपने मसीह को यों नहीं जाना। 21 आपने तो उसके बारे में सुन लिया है, और उसमें होकर आपको वह सच्चाई सिखाई गई जो ईसा में है। 22 चुनौचे अपने पुराने इनसान को उसके पुराने चाल-चलन समेत उतार देना, क्योंकि वह अपनी धोकेबाज़ शहवतों से बिगड़ता जा रहा है। 23 अल्लाह को आपकी सोच की तजदीद करने दें 24 और नए इनसान को पहन लें जो यों बनाया गया है कि वह हक़ीकी रास्तबाज़ी और कूदूसियत में अल्लाह के मुशाबेह है।

25 इसलिए हर शख्स डूट से बाज़ रहकर दूसरों से सच बात करे, क्योंकि हम सब एक ही बदन के आज्ञा हैं। 26 गुस्से में आते वक़्त गुनाह मत करना। आपका गुस्सा सूरज के ग़ुस्ब होने तक ठंडा हो जाए, 27 वरना आप इबलीस को अपनी



जिंदगी में काम करने का मौका देंगे। 28 चोर अब से चोरी न करे बल्कि खूब मेहनत-मशक़त करके अपने हाथों से अच्छा काम करे। हाँ, वह इतना कमाए कि ज़रूरतमंदों को भी कुछ दे सके। 29 कोई भी बुरी बात आपके मुँह से न निकले बल्कि सिर्फ़ ऐसी बातें जो दूसरों की ज़रूरियात के मुताबिक़ उनकी तामीर करें। यों सुननेवालों को बरकत मिलेगी। 30 अल्लाह के मुक़द्दस रूह को दुख न पहुँचाना, क्योंकि उसी से अल्लाह ने आप पर मुहर लगाकर यह ज़मानत दे दी है कि आप उसी के हैं और नज़ात के दिन बच जाएंगे। 31 तमाम तरह की तलछी, तैश, गुस्से, शोर-शराबा, गाली-गलोच बल्कि हर किस्म के बुरे ख़वबे से बाज़ आएं। 32 एक दूसरे पर मेहरबान और रहमदिल हों और एक दूसरे को यों मुआफ़ करें जिस तरह अल्लाह ने आपको भी मसीह में मुआफ़ कर दिया है।

## 5

### रौशनी में जिंदगी गुज़ारना

1 चूँकि आप अल्लाह के प्यारे बच्चे हैं इसलिए उसके नमूने पर चलें। 2 मुहब्बत की रूह में जिंदगी यों गुज़ारें जैसे मसीह ने गुज़ारी। क्योंकि उसने हमसे मुहब्बत रखकर अपने आपको हमारे लिए अल्लाह के हज़ूर क़ुरबान कर दिया और यों ऐसी क़ुरबानी बन गया जिसकी ख़ुशबू अल्लाह को पसंद आई।

3 आपके दरमियान ज़िनाकार, हर तरह की नापाकी या लालच का ज़िक्र तक न हो, क्योंकि यह अल्लाह के मुक़द्दसीन के लिए मुनासिब नहीं है। 4 इसी तरह शर्मनाक, अहमक़ाना या गंदी बातें भी ठीक नहीं। इनकी जगह शुक्रगुज़ारी होनी चाहिए। 5 क्योंकि यक़ीन जानें कि ज़िनाकार, नापाक या लालची मसीह और अल्लाह की बादशाही में मीरास नहीं पाएँगे (लालच तो एक किस्म की बुरपरस्ती है)।

6 कोई आपको बेमानी अलफ़ाज़ से धोका न दे। ऐसी ही बातों की वजह से अल्लाह का ग़ज़ब उन पर जो नाफ़रमान हैं नाज़िल होता है। 7 चुनौचे उनमें शरीक न हो जाएँ जो यह करते हैं। 8 क्योंकि पहले आप तारीकी थे, लेकिन अब आप ख़ुदावंद में रौशनी हैं। रौशनी के फ़रज़ंद की तरह जिंदगी गुज़ारें, 9 क्योंकि रौशनी का फल हर तरह की भलाई, रास्तबाज़ी और सच्चाई है। 10 और मालूम करते रहें कि ख़ुदावंद को क्या कुछ पसंद है। 11 तारीकी के बेफल कामों में हिस्सा न लें बल्कि उन्हें रौशनी में लाएँ। 12 क्योंकि जो कुछ यह लोग पोशीदगी में करते हैं उसका ज़िक्र करना भी शर्म की बात है। 13 लेकिन सब कुछ बेनिकाब हो जाता है जब उसे रौशनी में लाया जाता है। 14 क्योंकि जो रौशनी में लाया जाता है वह रौशन हो जाता है। इसलिए कहा जाता है,

“ऐ सोनेवाले, जाग उठ!

मुरदों में से जी उठ,

तो मसीह तुझ पर चमकेगा।”

15 चुनौचे बड़ी एहतियात से इस पर ध्यान दें कि आप जिंदगी किस तरह गुज़ारते हैं—बेसमझ या समझदार लोगों की तरह।

16 हर मौके से पूरा फ़ायदा उठाएँ, क्योंकि दिन बुरे हैं। 17 इसलिए अहमक़ न बनें बल्कि ख़ुदावंद की मरज़ी को समझें।

18 शराब में मत्वाले न हो जाएँ, क्योंकि इसका अंजाम ऐयाशी है। इसके बजाएँ रूहल-कुदूस से मामूर होते जाएँ। 19 ज़ब्रों, हम्दो-सना और रूहानी गीतों से एक दूसरे की हौसलाअफ़ज़ाई करें। अपने दिलों में ख़ुदावंद के लिए गीत गाएँ और नगमासराई करें। 20 हाँ, हर वक़्त हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के नाम में हर चीज़ के लिए ख़ुदा बाप का शुक्र करें।

### मियाँ-बीवी का ताल्लुक़

21 मसीह के ख़ौफ़ में एक दूसरे के ताबे रहें। 22 बीवियों, जिस तरह आप ख़ुदावंद के ताबे हैं उसी तरह अपने शौहर के ताबे भी रहें। 23 क्योंकि शौहर वैसे ही अपनी बीवी का सर है जैसे मसीह अपनी जमात का। हाँ, जमात मसीह का बदन है जिसे उसने नज़ात दी है। 24 अब जिस तरह जमात मसीह के ताबे है उसी तरह बीवियाँ भी अपने शौहरों के ताबे रहें।

25 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मसीह ने अपनी जमात से मुहब्बत रखकर अपने आपको उसके लिए क़ुरबान किया 26 ताकि उसे अल्लाह के लिए मख़सूस-मुक़द्दस करे। उसने उसे कलामे-याक़ से धोकर पाक-साफ़ कर दिया 27 ताकि अपने आपको एक ऐसी जमात पेश करे जो जलाली, मुक़द्दस और बेइलज़ाम हो, जिसमें न कोई दाग़ हो, न कोई झुर्री, न किसी और किस्म का नुक्स। 28 शौहरों का फ़र्ज़ है कि वह अपनी बीवियों से ऐसी ही मुहब्बत रखें। हाँ, वह उनसे वैसी मुहब्बत रखें जैसी अपने जिस्म से रखते हैं। क्योंकि जो अपनी बीवी से मुहब्बत रखता है वह अपने आपसे ही मुहब्बत रखता है। 29 आखिर कोई भी अपने जिस्म से नफ़रत नहीं करता बल्कि उसे ख़राक़ मुहैया करता और पालता है। मसीह भी अपनी जमात के लिए यही कुछ करता है। 30 क्योंकि हम उसके बदन के आज़ा हैं। 31 कलामे-मुक़द्दस में भी लिखा है, “इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते

हैं।” <sup>32</sup> यह राज बहुत गहरा है। मैं तो उसका इतलाक मसीह और उस की जमात पर करता हूँ। <sup>33</sup> लेकिन इसका इतलाक आप पर भी है। हर शौहर अपनी बीवी से इस तरह मुहब्बत रखे जिस तरह वह अपने आपसे रखता है। और हर बीवी अपने शौहर की इज्जत करे।

## 6

### बच्चों और वालिदैन का ताल्लुक

<sup>1</sup> बच्चो, खुदावंद में अपने माँ-बाप के ताबे रहें, क्योंकि यही रास्तबाजी का तकाजा है। <sup>2</sup> कलामे-मुकद्दस में लिखा है, “अपने बाप और अपनी माँ की इज्जत करना।” यह पहला हुक्म है जिसके साथ एक वादा भी किया गया है, <sup>3</sup> “फिर तु खुशहाल और ज़मीन पर देर तक जीता रहेगा।”

<sup>4</sup> ए वालिदो, अपने बच्चों से ऐसा सुलूक मत करे कि वह गुस्से हो जाएँ बल्कि उन्हें खुदावंद की तरफ से तरबियत और हिदायत देकर पालें।

### गुलाम और मालिक

<sup>5</sup> गुलामो, डरते और काँपते हुए अपने इनसानी मालिकों के ताबे रहें। खुलूसदिली से उनकी खिदमत यों करे जैसे मसीह की। <sup>6</sup> न सिर्फ उनके सामने ही और उन्हें खुश रखने के लिए खिदमत करे बल्कि मसीह के गुलामों की हैसियत से जो पूरी लान से अल्लाह की मरज़ी पूरी करना चाहते हैं। <sup>7</sup> खुशी से खिदमत करे, इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ इनसानों की बल्कि खुदावंद की खिदमत कर रहे हों। <sup>8</sup> आप तो जानते हैं कि जो भी अच्छा काम हमने किया उसका अज़्र खुदावंद देगा, खाह हम गुलाम हों या आज़ाद।

<sup>9</sup> और मालिको, आप भी अपने गुलामों से ऐसा ही सुलूक करें। उन्हें धमकियाँ न दें। आपको तो मालूम है कि आसमान पर आपका भी मालिक है और कि वह जानिबदार नहीं होता।

### रहानी ज़िरा-बकतर

<sup>10</sup> एक आखिरी बात, खुदावंद और उस की ज़बरदस्त कुव्वत में ताकतवर बन जाएँ। <sup>11</sup> अल्लाह का पूरा ज़िरा-बकतर पहन लें ताकि इब्लीस की चालों का सामना कर सकें। <sup>12</sup> क्योंकि हमारी जंग इनसान के साथ नहीं है बल्कि हुक्मरानों और इज्जियारवालों के साथ, इस तारीक दुनिया के हाकिमों के साथ और आसमानी दुनिया की शैतानी कुव्वतों के साथ है। <sup>13</sup> चुनौचे अल्लाह का पूरा ज़िरा-बकतर पहन लें ताकि आप मुसीबत के दिन इब्लीस के हमलों का सामना कर सकें बल्कि सब कुछ सरंजाम देने के बाद कायम रह सकें।

<sup>14</sup> अब यों खड़े हो जाएँ कि आपकी कमर में सच्चाई का पटका बँधा हुआ हो, आपके सीने पर रास्तबाजी का सीनाबंद लगा हो <sup>15</sup> और आपके पाँवों में ऐसे जूते हों जो सुलह-सलामती की खुशखबरी सुनाने के लिए तैयार रहें। <sup>16</sup> इसके अलावा ईमान की ढाल भी उठाए रखें, क्योंकि इससे आप इब्लीस के जलते हुए तीर बुझा सकते हैं। <sup>17</sup> अपने सर पर नजात का खोद पहनकर हाथ में रूह की तलवार जो अल्लाह का कलाम है थामे रखें। <sup>18</sup> और हर मौके पर रूह में हर तरह की दुआ और मिन्नत करते रहें। जागते और साबितकदमी से तमाम मुकद्दसीन के लिए दुआ करते रहें। <sup>19</sup> मेरे लिए भी दुआ करें कि जब भी मैं अपना मुँह खोलूँ अल्लाह मुझे ऐसे अलफाज़ अता करे कि पूरी दिलेरी से उस की खुशखबरी का राज सुना सकूँ। <sup>20</sup> क्योंकि मैं इसी पैगाम की खातिर कैदी, हों जंजीरों में जकड़ा हुआ मसीह का एलची हूँ। दुआ करें कि मैं मसीह में उतनी दिलेरी से यह पैगाम सुनाऊँ जितना मुझे करना चाहिए।

### आखिरी सलाम

<sup>21</sup> आप मेरे हाल और काम के बारे में भी जानना चाहेंगे। खुदावंद में हमारा अजीज़ भाई और वफादार खादिम तुखिक्स आपको यह सब कुछ बता देगा। <sup>22</sup> मैंने उसे इसी लिए आपके पास भेज दिया कि आपको हमारे हाल का पता चले और आपको तसल्ली मिले।

<sup>23</sup> खुदा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आप भाइयों को सलामती और ईमान के साथ मुहब्बत अता करें। <sup>24</sup> अल्लाह का फज़ल उन सबके साथ हो जो अनमित मुहब्बत के साथ हमारे खुदावंद ईसा मसीह को प्यार करते हैं।

## फिलिपियों

### सलाम

1 यह खत मसीह ईसा के गुलामों पौलस और तीमुथियस की तरफ से है।

मैं फिलिप्पी में मौजूद उन तमाम लोगों को लिख रहा हूँ जिन्हें अल्लाह ने मसीह ईसा के जरीए मखसूसो-मुकद्दस किया है। मैं उनके बुजुर्गों और खादिमों को भी लिख रहा हूँ।

2 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़जल और सलामती अता करें।

### जमात के लिए शुक्रो-दुआ

3 जब भी मैं आपको याद करता हूँ तो अपने खुदा का शुक्र करता हूँ। 4 आपके लिए तमाम दुआओं में मैं हमेशा खुशी से दुआ करता हूँ, 5 इसलिए कि आप पहले दिन से लेकर आज तक अल्लाह की खुशखबरी फैलाने में मेरे शरीक रहे हैं। 6 और मुझे यकीन है कि अल्लाह जिसने आपमें यह अच्छा काम शुरू किया है इसे उस दिन तकमील तक पहुँचाएगा जब मसीह ईसा वापस आएगा। 7 और मुनासिब है कि आप सबके बारे में मेरा यही खयाल हो, क्योंकि आप मुझे अजीज़ रखते हैं। हाँ, जब मुझे जेल में डाला गया या मैं अल्लाह की खुशखबरी का दिफा या उस की तसदीक कर रहा था तो आप भी मेरे इस खास फ़जल में शरीक हुए। 8 अल्लाह मेरा गवाह है कि मैं कितनी शिद्दत से आप सबका आरज़ुमंद हूँ। हाँ, मैं मसीह की-सी दिली शफ़क़त के साथ आपका खाहिशमंद हूँ।

9 और मेरी दुआ है कि आपकी मुहब्बत में इल्मो-इरफान और हर तरह की रूहानी बसीरत का यहाँ तक इज़ाफ़ा हो जाए कि वह बढ़ती बढ़ती दिल से छलक उठे। 10 क्योंकि यह ज़रूरी है ताकि आप वह बातें कबूल करें जो बुनियादी अहमियत की हामिल हैं और आप मसीह की आमद तक बेलौस और बेइलजाम ज़िंदगी गुज़ारें। 11 और यों आप उस रास्तबाज़ी के फल से भरे रहेंगे जो आपको ईसा मसीह के वसीले से हासिल होती है। फिर आप अपनी ज़िंदगी से अल्लाह को जलाल देंगे और उस की तमजीद करेंगे।

### हर एक को मालूम हो जाए कि मसीह कौन है

12 भाइयो, मैं चाहता हूँ कि यह बात आपके इल्म में हो कि जो कुछ भी मुझ पर गुज़रा है वह हकीकत में अल्लाह की खुशखबरी के फैलाव का बाइस बन गया है। 13 क्योंकि प्रैटोरियुम \* के तमाम अफ़राद और बाकी सबको मालूम हो गया है कि मैं मसीह की खातिर कैदी हूँ। 14 और मेरे कैद में होने की वजह से खुदावंद में ज्यादातर भाइयों का एतमाद इतना बढ़ गया है कि वह मज़ीद दिलेरी के साथ बिलाखौफ़ अल्लाह का कलाम सुनाते हैं।

15 बेशक बाज़ तो हसद और मुखालफ़त के बाइस मसीह की मुनादी कर रहे हैं, लेकिन बाकियों की नीयत अच्छी है, 16 क्योंकि वह जानते हैं कि मैं अल्लाह की खुशखबरी के दिफा की वजह से यहाँ पडा हूँ। इसलिए वह मुहब्बत की रूह में तबलीग करते हैं। 17 इसके मुकाबले में दूसरे खुलूसदिली से मसीह के बारे में पैगाम नहीं सुनाते बल्कि खुदागरजी से। यह समझते हैं कि हम इस तरह पौलस की गिरिफ्तारी को मज़ीद तकलीफ़देह बना सकते हैं।

18 लेकिन इससे क्या फ़रक़ पडता है! अहम बात तो यह है कि मसीह की मुनादी हर तरह से की जा रही है, खाह मुनाद की नीयत पुरखुलूस हो या न। और इस वजह से मैं खुश हूँ। और खुश रहूँगा भी, 19 क्योंकि मैं जानता हूँ कि यह मेरे लिए रिहाई का बाइस बनेगा, इसलिए कि आप मेरे लिए दुआ कर रहे हैं और ईसा मसीह का रूह मेरी हिमायत कर रहा है। 20 हाँ, यह मेरी पूरी तवक्को और उम्मीद है। मैं यह भी जानता हूँ कि मुझे किसी भी बात में शरमिदा नहीं किया जाएगा बल्कि जैसा माज़ी में हमेशा हुआ अब भी मुझे बड़ी दिलेरी से मसीह को जलाल देने का फ़जल मिलेगा, खाह मैं ज़िंदा रहूँ या मर जाऊँ। 21 क्योंकि मेरे लिए मसीह ज़िंदगी है और मौत नफ़ा का बाइस। 22 अगर मैं ज़िंदा रहूँ तो इसका फ़ायदा यह होगा कि मैं मेहनत करके मज़ीद फल ला सकूँगा। चुनाँचे मैं नहीं कह सकता कि क्या बेहतर है। 23 मैं बड़ी क़श-म-क़श में रहता हूँ। एक तरफ़ मैं कूच करके मसीह के पास होने की आरज़ु रखता हूँ, क्योंकि यह मेरे लिए सबसे बेहतर होता। 24 लेकिन दूसरी तरफ़ ज़्यादा ज़रूरी यह है कि मैं आपकी खातिर ज़िंदा रहूँ। 25 और चूँकि मुझे इस ज़रूरत का यकीन है, इसलिए मैं जानता हूँ कि मैं ज़िंदा रहकर दुबारा आप सबके साथ रहूँगा ताकि आप तरक्की करें और इमान में खुश रहें। 26 हाँ, मेरे आपके पास वापस आने से आप मेरे सबब से मसीह ईसा पर हद से ज़्यादा फ़ख़र करेंगे।

\* 1:13 गवर्नर का सरकारी महल प्रैटोरियुम कहलाता था। यहाँ इसका मतलब शाहनशाह के पहरेदारों के क्वार्टर भी हो सकता है।

27 लेकिन आप हर सूरत में मसीह की खुशखबरी और आसमान के शहरियों के लायक जिंदगी गुजारें। फिर खाह मैं आकर आपको देखूँ, खाह गैरमौजूदगी में आपके बारे में सुनूँ, मुझे मालूम होगा कि आप एक रूह में कायम हैं, आप मिलकर एकदिली से उस ईमान के लिए जाँफिशानी कर रहे हैं जो अल्लाह की खुशखबरी से पैदा हुआ है, 28 और आप किसी सूरत में अपने मुखालिफों से देहशत नहीं खाते। यह उनके लिए एक निशान होगा कि वह हलाक हो जाएंगे जबकि आपको नजात हासिल होगी, और वह भी अल्लाह से। 29 क्योंकि आपको न सिर्फ मसीह पर ईमान लाने का फजल हासिल हुआ है बल्कि उस की खातिर दुख उठाने का भी। 30 आप भी उस मुकाबले में जाँफिशानी कर रहे हैं जिसमें आपने मुझे देखा है और जिसके बारे में आपने अब सुन लिया है कि मैं अब तक उसमें मसरूफ हूँ।

## 2

### यागांत की जरूरत

1 क्या आपके दरमियान मसीह में हौसलाअफजाई, मुहब्बत की तसल्ली, रूहुल-कुदूस की रिफाकत, नरमदिली और रहमत पाई जाती है? 2 अगर ऐसा है तो मेरी खुशी इसमें पूरी करें कि आप एक जैसी सोच रखें और एक जैसी मुहब्बत रखें, एक जान और एक जहन हो जाएँ। 3 खुदगारज़ न हों, न बातिल इज्जत के पीछे पड़ें बल्कि फ़रोतनी से दूसरों को अपने से बेहतर समझें। 4 हर एक न सिर्फ अपना फ़ायदा सोचे बल्कि दूसरों का भी।

### मसीह की राहे-सलीब

5 वही सोच रखें जो मसीह ईसा की भी थी।

6 वह जो अल्लाह की सूरत पर था

नहीं समझता था कि मेरा अल्लाह के बराबर होना

कोई ऐसी चीज़ है

जिसके साथ ज़बरदस्ती चिमटे रहने की जरूरत है।

7 नहीं, उसने अपने आपको इससे महरूम करके

गुलाम की सूरत अपनाई

और इनसानों की मानिंद बन गया।

शक्लो-सूरत में वह इनसान पाया गया।

8 उसने अपने आपको पस्त कर दिया

और मौत तक ताबे रहा,

बल्कि सलीबी मौत तक।

9 इसलिए अल्लाह ने उसे सबसे आला मक़ाम पर सरफ़राज़ कर दिया

और उसे वह नाम बख़्शा जो हर नाम से आला है,

10 ताकि ईसा के इस नाम के सामने हर घुटना झुके,

खाह वह घुटना आसमान पर, ज़मीन पर या इसके नीचे हो,

11 और हर ज़बान तसलीम करे कि ईसा मसीह खुदावंद है।

यों खुदा बाप को जलाल दिया जाएगा।

### रुहानी तरक्की का राज

12 मेरे अज़ीजो, जब मैं आपके पास था तो आप हमेशा फ़रमाँबरदार रहे। अब जब मैं गैरहाज़िर हूँ तो इसकी कहीं ज़्यादा ज़रूरत है। चुनौचे डरते और काँपते हुए जाँफिशानी करते रहें ताकि आपकी नजात तकमील तक पहुँचे। 13 क्योंकि खुदा ही आपमें वह कुछ करने की खाहिश पैदा करता है जो उसे पसंद है, और वही आपको यह पूरा करने की ताकत देता है।

14 सब कुछ बुडबुडाए और बहस-मुबाहसा किए बग़ैर करें 15 ताकि आप बेइलज़ाम और पाक होकर अल्लाह के बेदाग फ़रज़ंद साबित हो जाएँ, ऐसे लोग जो एक टेढ़ी और उलटी नसल के दरमियान ही आसमान के सितारों की तरह चमकते-दमकते 16 और जिंदगी का कलाम थामे रखते हैं। फिर मैं मसीह की आमद के दिन फ़रखर कर सकूँगा कि न मैं रायगों दौड़ा, न बेफ़ायदा जिद्दो-जहद की।

17 देखें, जो खिदमत आप ईमान से सरंजाम दे रहे हैं वह एक ऐसी कुरबानी है जो अल्लाह को पसंद है। खुदा करे कि जो दुख मैं उठा रहा हूँ वह मैं की उस नज़र की मानिंद हो जो बैतुल-मुक़द्दस में कुरबानी पर उंडेली जाती है। अगर मेरी नज़र वाकई आपकी कुरबानी यों मुकम्मल करे तो मैं खुश हूँ और आपके साथ खुशी मनाता हूँ। 18 आप भी इसी वजह से खुश हों और मेरे साथ खुशी मनाएँ।

तीमथियुस और इपफ्रुदितुस को फिलिपियों के पास भेजा जाएगा

19 मुझे उम्मीद है कि अगर खुदावंद ईसा ने चाहा तो मैं जल्द ही तीमथियुस को आपके पास भेज दूँगा ताकि आपके बारे में खबर पाकर मेरा हौसला भी बढ जाए। 20 क्योंकि मेरे पास कोई और नहीं जिसकी सोच बिलकुल मेरी जैसी है और जो इतनी खुलसदिली से आपकी फिकर करे। 21 दूसरे सब अपने मफाद की तलाश में रहते हैं और वह कुछ नजरंदाज करते हैं जो ईसा मसीह का काम बढ़ाता है। 22 लेकिन आपको तो मालूम है कि तीमथियुस काबिले-एतमाद साबित हुआ, कि उसने मेरा बेटा बनकर मेरे साथ अल्लाह की खुशखबरी फैलाने की खिदमत संरंजाम दी। 23 चुनौचे उम्मीद है कि ज्योंही मुझे पता चले कि मेरा क्या बनेगा मैं उसे आपके पास भेज दूँगा। 24 और मेरा खुदावंद में ईमान है कि मैं भी जल्द ही आपके पास आऊँगा।

25 लेकिन मैंने जरूरी समझा कि इतने में इपफ्रुदितुस को आपके पास वापस भेज दूँ जिसे आपने कासिद के तौर पर मेरी जरूरियात पूरी करने के लिए मेरे पास भेज दिया था। वह मेरा सच्चा भाई, हमखिदमत और साथी सिपाही साबित हुआ। 26 मैं उसे इसलिए भेज रहा हूँ क्योंकि वह आप सबका निहायत आरजूमंद है और इसलिए बेचैन है कि आपको उसके बीमार होने की खबर मिल गई थी। 27 और वह था भी बीमार बल्कि मरने को था। लेकिन अल्लाह ने उस पर रहम किया, और न सिर्फ उस पर बल्कि मुझ पर भी ताकि मेरे दुख में इजाफा न हो जाए। 28 इसलिए मैं उसे और जल्दी से आपके पास भेजूँगा ताकि आप उसे देखकर खुश हो जाएँ और मेरी पेशानी भी दूर हो जाए। 29 चुनौचे खुदावंद में बड़ी खुशी से उसका इस्तकबाल करें। उस जैसे लोगों की इज्जत करें, 30 क्योंकि वह मसीह के काम के बाइस मरने की नौबत तक पहुँच गया था। उसने अपनी जान खतरे में डाल दी ताकि आपकी जगह मेरी वह खिदमत करे जो आप न कर सके।

### 3

अल्लाह में खुशी

1 मेरे भाइयो, जो कुछ भी हो, खुदावंद में खुश रहें। मैं आपको यह बात बताते रहने से कभी थकता नहीं, क्योंकि ऐसा करने से आप महफूज रहते हैं।

यहदियों से खबरदार

2 कुतों से खबरदार! उन शरीर मजदूरों से होशियार रहना जो जिस्म की काँट-छाँट यानी खतना करवाते हैं। 3 क्योंकि हम ही हकीकी खतना के पैरोकार हैं, हम ही हैं जो अल्लाह के रूह में परस्तिश करते, मसीह ईसा पर फरख करते और इनसानी खूबियों पर भरोसा नहीं करते।

पौलुस की शख्सी गवाही

4 बात यह नहीं कि मेरा अपनी इनसानी खूबियों पर भरोसा करने का कोई जवाज न होता। जब दूसरे अपनी इनसानी खूबियों पर फरख करते हैं तो मैं उनकी निसबत ज्यादा कर सकता हूँ। 5 मेरा खतना हुआ जब मैं अभी आठ दिन का बच्चा था। मैं इसराइल कौम के कबीले बिनयमीन का हूँ, ऐसा इब्रानी जिसके वालिदिन भी इब्रानी थे। मैं फरीसियों का मेंबर था जो यहूदी शरीअत के कटर पैरोकार हैं। 6 मैं इतना सरगरम था कि मसीह की जमातों को इजा पहुँचाई। हाँ, मैं शरीअत पर अमल करने में रास्तबाज और बेइलजाम था।

हकीकी फायदा

7 उस वकत यह सब कुछ मेरे नजदीक नफा का बाइस था, लेकिन अब मैं इसे मसीह में होने के बाइस नुकसान ही समझता हूँ। 8 हाँ, बल्कि मैं सब कुछ इस अजीमतरनी बात के सबब से नुकसान समझता हूँ कि मैं अपने खुदावंद मसीह ईसा को जानता हूँ। उसी की खातिर मुझे तमाम चीजों का नुकसान पहुँचा है। मैं उन्हें कूड़ा ही समझता हूँ ताकि मसीह को हासिल करूँ 9 और उसमें पाया जाऊँ। लेकिन मैं इस नौबत तक अपनी उस रास्तबाजी के जर्रीए नहीं पहुँच सकता जो शरीअत के ताबे रहने से हासिल होती है। इसके लिए वह रास्तबाजी जरूरी है जो मसीह पर ईमान लाने से मिलती है, जो अल्लाह की तरफ से है और जो ईमान पर मबनी होती है। 10 हाँ, मैं सब कुछ कूड़ा ही समझता हूँ ताकि मसीह को, उसके जी उठने की कुदरत और उसके दुखों में शरीक होने का फजल जान लूँ। यों मैं उस की मौत का हमशकल बनता जा रहा हूँ, 11 इस उम्मीद में कि मैं किसी न किसी तरह मुरदों में से जी उठने की नौबत तक पहुँचूँगा।

इनाम हासिल करने के लिए दौड़ें

12 मतलब यह नहीं कि मैं यह सब कुछ हासिल कर चुका या कामिल हो चुका हूँ। लेकिन मैं मनजिले-मकसूद की तरफ दौड़ा हुआ जाता हूँ ताकि वह कुछ पकड़ लूँ जिसके लिए मसीह ईसा ने मुझे पकड़ लिया है। 13 भाइयो, मैं अपने बारे में यह

खयाल नहीं करता कि मैं इसे हासिल कर चुका हूँ। लेकिन मैं इस एक ही बात पर ध्यान देता हूँ, जो कुछ मेरे पीछे है वह मैं भूलकर सख्त तगो-दौ के साथ उस तरफ बढ़ता हूँ जो आगे पडा है। 14 मैं सीधा मनजिले-मकसूद की तरफ दौड़ा हुआ जाता हूँ ताकि वह इनाम हासिल करूँ जिसके लिए अल्लाह ने मुझे मसीह ईसा में आसमान पर बुलाया है।

### मसीह में पुख्ता होना

15 चुनौचे हममें से जितने कामिल हैं आँ, हम ऐसी सोच रखें। और अगर आप किसी बात में फरक सोचते हैं तो अल्लाह आप पर यह भी जाहिर करेगा। 16 जो भी हो, जिस मरहले तक हम पहुँच गए हैं आँ, हम उसके मुताबिक जिंदगी गुज़ारें।

17 भाइयो, मिलकर मेरे नक्शे-कदम पर चलें। और उन पर खूब ध्यान दें जो हमारे नमूने पर चलते हैं। 18 क्योंकि जिस तरह मैंने आपको कई बार बताया है और अब रो रोकर बता रहा हूँ, बहुत-से लोग अपने चाल-चलन से जाहिर करते हैं कि वह मसीह की सलीब के दुश्मन हैं। 19 ऐसे लोगों का अंजाम हलाकत है। खाने-पिने की पाबंदियाँ और खतने पर फखर उनका खुदा बन गया है। \* हाँ, वह सिर्फ दुनियावी सोच रखते हैं। 20 लेकिन हम आसमान के शहरी हैं, और हम शिदत से इस इंतजार में हैं कि हमारा नजातदहिदा और खुदावंद ईसा मसीह वही से आए। 21 उस वक़्त वह हमारे पस्तहाल बदनों को बदलकर अपने जलाली बदन के हमशक्ल बना देगा। और यह वह उस कुव्वत के ज़रीए करेगा जिससे वह तमाम चीज़ें अपने ताबे कर सकता है।

## 4

### हिदायत

1 चुनौचे मेरे प्यारे भाइयो, जिनका आरज़मंद मैं हूँ और जो मेरी मुररत का बाइस और मेरा ताज हैं, खुदावंद में साबितकदम रहें। अज़ीजो, 2 मैं युवदिया और संतुखे से अपील करता हूँ कि वह खुदावंद में एक जैसी सोच रखें। 3 हाँ मेरे हमखिदमत भाई, मेरी आपसे गुज़ारिश है कि आप उनकी मदद करें। क्योंकि वह अल्लाह की खुशखबरी फैलाने की जिदो-जहद में मेरे साथ खिदमत करती रही है, उस मुकाबले में जिसमें क्लेमेंस और मेरे वह बाकी मददगार भी शरीक थे जिनके नाम किताबे-हयात में दर्ज हैं।

4 हर वक़्त खुदावंद में खुशी मनाएँ। एक बार फिर कहता हूँ, खुशी मनाएँ।

5 आपकी नरमदिली तमाम लोगों पर जाहिर हो। याद रखें कि खुदावंद आने को है। 6 अपनी किसी भी फ़िकर में उलझकर परेशान न हो जाएँ बल्कि हर हालत में दुआ और इल्तिजा करके अपनी दरखास्तें अल्लाह के सामने पेश करें। ध्यान रखें कि आप यह शक्रगुज़ारी की रूह में करें। 7 फिर अल्लाह की सलामती जो समझ से बाहर है आपके दिलों और खयालात को मसीह ईसा में महफूज़ रखेगी।

8 भाइयो, एक आखिरी बात, जो कुछ सच्चा है, जो कुछ शरीफ है, जो कुछ रास्त है, जो कुछ मुकद्दस है, जो कुछ पसंदीदा है, जो कुछ उम्दा है, गरज़, अगर कोई अखलाकी या काबिले-तारीफ बात हो तो उसका खयाल रखें। 9 जो कुछ आपने मेरे वर्सीले से सीख लिया, हासिल कर लिया, सुन लिया या देख लिया है उस पर अमल करें। फिर सलामती का खुदा आपके साथ होगा।

### जमात की माली इमदाद के लिए शुक़िया

10 मैं खुदावंद में निहायत ही खुश हुआ कि अब आखिरकार आपकी मेरे लिए फ़िकरमंदी दुबारा जाग उठी है। हाँ, मुझे पता है कि आप पहले भी फ़िकरमंद थे, लेकिन आपको इसका इज़हार करने का मौका नहीं मिला था। 11 मैं यह अपनी किसी ज़रूरत की वजह से नहीं कह रहा, क्योंकि मैंने हर हालत में खुश रहने का राज सीख लिया है। 12 मुझे दबाए जाने का तजरबा हुआ है और हर चीज़ कसरत से मुयस्सर होने का भी। मुझे हर हालत से खूब वाकिफ़ किया गया है, सर होने से और भूका रहने से भी, हर चीज़ कसरत से मुयस्सर होने से और ज़रूरतमंद होने से भी। 13 मसीह में मैं सब कुछ करने के काबिल हूँ, क्योंकि वही मुझे तकवियत देता रहता है।

14 तो भी अच्छा था कि आप मेरी मुसीबत में शरीक हुए। 15 आप जो फिलिप्पी के रहनेवाले हैं खुद जानते हैं कि उस वक़्त जब मसीह की मुनादी का काम आपके इलाके में शुरू हुआ था और मैं सूबा मकिदुनिया से निकल आया था तो सिर्फ़ आपकी जमात परे हिसाब-किताब के साथ पैसे देकर मेरी खिदमत में शरीक हुई। 16 उस वक़्त भी जब मैं थिस्सलुनीके शहर में था आपने कई बार मेरी ज़रूरियात पूरी करने के लिए कुछ भेज दिया। 17 कहने का मतलब यह नहीं कि मैं आपसे कुछ पाना चाहता हूँ, बल्कि मेरी शदीद खाहिश यह है कि आपके देने से आप ही को अल्लाह से कसरत का सूद मिल जाए। 18 यही

\* 3:19 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : उनका पेट और उनका अपनी शर्म पर फ़खर उनका खुदा बन गया है।

मेरी रसीद है। मैंने पूरी रकम वसूल पाई है बल्कि अब मेरे पास ज़रूरत से ज्यादा है। जब से मुझे इपफ़ूदितुस के हाथ आपका हदिया मिल गया है मेरे पास बहुत कुछ है। यह खुशबूदार और काबिले-कबूल कुरबानी अल्लाह को पसंदीदा है। <sup>19</sup> जवाब में मेरा खुदा अपनी उस जलाली दौलत के मुवाफ़िक जो मसीह ईसा में है आपकी तमाम ज़रूरियात पूरी करे। <sup>20</sup> अल्लाह हमारे बाप का जलाल अज़ल से अबद तक हो। आमीन।

#### सलाम और बरकत

<sup>21</sup> तमाम मक़ामी मुक़द्दसीन को मसीह ईसा में मेरा सलाम देना। जो भाई मेरे साथ हैं वह आपको सलाम कहते हैं। <sup>22</sup> यहाँ के तमाम मुक़द्दसीन आपको सलाम कहते हैं, खासकर शहनशाह के घराने के भाई और बहनें। <sup>23</sup> खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आपकी रूह के साथ रहे। आमीन।

## कुलुसियों

1 यह खत पौलुस की तरफ से है जो अल्लाह की मरजी से मसीह ईसा का रसूल है। साथ ही यह भाई तीमुथियुस की तरफ से भी है।

2 मैं कुलुससे शहर के मुकद्दस भाइयों को लिख रहा हूँ जो मसीह पर ईमान लाए हैं :

खुदा हमारा बाप आपको फजल और सलामती बख्यो।

### शुकुगुजारी की दुआ

3 जब हम आपके लिए दुआ करते हैं तो हर वक्त खुदा अपने खुदावंद ईसा मसीह के बाप का शुक करते हैं, 4 क्योंकि हमने आपके मसीह ईसा पर ईमान और आपकी तमाम मुकद्दसीन से मुहब्बत के बारे में सुन लिया है। 5 आपका यह ईमान और मुहब्बत वह कुछ जाहिर करते हैं जिसकी आप उम्मीद रखते हैं और जो आसमान पर आपके लिए महफूज रखा गया है। और आपने यह उम्मीद उस वक्त से रखी है जब से आपने पहली मरतबा सच्चाई का कलाम यानी अल्लाह की खुशखबरी सुनी। 6 यह पैगाम जो आपके पास पहुँच गया पूरी दुनिया में फल ला रहा और बढ़ रहा है, बिलकुल उसी तरह जिस तरह यह आपमें भी उस दिन से काम कर रहा है जब आपने पहली बार इसे सुनकर अल्लाह के फजल की पूरी हकीकत समझ ली। 7 आपने हमारे अजीज हमखिदमत इफ्रास से इस खुशखबरी की तालीम पा ली थी। मसीह का यह वफादार खादिम हमारी जगह आपकी खिदमत कर रहा है। 8 उसी ने हमें आपकी उस मुहब्बत के बारे में बताया जो रूहल-कुदूस ने आपके दिलों में डाल दी है।

9 इस वजह से हम आपके लिए दुआ करने से बाज नहीं आए बल्कि यह माँगते रहते हैं कि अल्लाह आपको हर रूहानी हिकमत और समझ से नवाजकर अपनी मरजी के इल्म से भर दे। 10 क्योंकि फिर ही आप अपनी जिंदगी खुदावंद के लायक गुजार सकेंगे और हर तरह से उसे पसंद आएँगे। हाँ, आप हर किस्म का अच्छा काम करके फल लाएँगे और अल्लाह के इन्मो-इफ्रान में तरक्की करेंगे। 11 और आप उस की जलाली कुदरत से मिलनेवाली हर किस्म की कुव्वत से तकवियत पाकर हर वक्त साबितकदमी और सब्र से चल सकेंगे। आप खुशी से 12 बाप का शुक करेंगे जिसने आपको उस मीरास में हिस्सा लेने के लायक बना दिया जो उसके रौशनी में रहनेवाले मुकद्दसीन को हासिल है। 13 क्योंकि वही हमें तारीकी के इख्तियार से रिहाई देकर अपने प्यारे फरजंद की बादशाही में लाया, 14 उस वाहिद शख्स के इख्तियार में जिसने हमारा फिद्या देकर हमारे गुनाहों को मुआफ कर दिया।

### मसीह की शख्सियत और काम

15 अल्लाह को देखा नहीं जा सकता, लेकिन हम मसीह को देख सकते हैं जो अल्लाह की सूरत और कायनात का पहलौठा है। 16 क्योंकि अल्लाह ने उसी में सब कुछ खलक किया, खाह आसमान पर हो या ज़मीन पर, आँखों को नजर आए या न, खाह शाही तख्त, कुव्वतें, हुक्मरान या इख्तियारवाले हूँ। सब कुछ मसीह के ज़रीए और उसी के लिए खलक हुआ। 17 वही सब चीजों से पहले है और उसी में सब कुछ कायम रहता है। 18 और वह बदन यानी अपनी जमात का सर भी है। वही इब्तिदा है, और चूँकि पहले वही मुरदों में से जी उठा इसलिए वही उनमें से पहलौठा भी है ताकि वह सब बातों में अब्वल हो। 19 क्योंकि अल्लाह को पसंद आया कि मसीह में उस की पूरी मामूरी सुकूनत करे 20 और वह मसीह के ज़रीए सब बातों की अपने साथ सुलह करा ले, खाह वह ज़मीन की हूँ खाह आसमान की। क्योंकि उसने मसीह के सलीब पर बहाए गए खून के वसीले से सुलह-सलामती कायम की।

21 आप भी पहले अल्लाह के सामने अजनबी थे और दुश्मन की-सी सोच रखकर बुरे काम करते थे। 22 लेकिन अब उसने मसीह के इनसानी बदन की मौत से आपके साथ सुलह कर ली है ताकि वह आपको मुकद्दस, बेदाग और बेइलजाम हालत में अपने हुज़ूर खड़ा करे। 23 बेशक अब ज़रूरी है कि आप ईमान में कायम रहें, कि आप ठोस बुनियाद पर मजबूती से खड़े रहें और उस खुशखबरी की उम्मीद से हट न जाएँ जो आपने सुन ली है। यह वही पैगाम है जिसकी मुनादी दुनिया में हर माखलक के सामने कर दी गई है और जिसका खादिम मैं पौलुस बन गया हूँ।

### जमात के खादिम की हैसियत से पौलुस की खिदमत

24 अब मैं उन दुखों के बाइस खुशी मनाता हूँ जो मैं आपकी खातिर उठा रहा हूँ। क्योंकि मैं अपने जिस्म में मसीह के बदन यानी उस की जमात की खातिर मसीह की मुसीबतों की वह कमियाँ पूरी कर रहा हूँ जो अब तक रह गई हैं। 25 हाँ, अल्लाह



ने मुझे अपनी जमात का खादिम बनाकर यह जिम्मादारी दी कि मैं आपको अल्लाह का पूरा कलाम सुना दूँ, 26 वह राज जो अज़ल से तमाम गुज़री नसलों से पोशीदा रहा था लेकिन अब मुकद्दसीन पर जाहिर किया गया है। 27 क्योंकि अल्लाह चाहता था कि वह जान लें कि ग़ैरयहूदियों में यह राज कितना बेशकीमत और जलाली है। और यह राज है क्या? यह कि मसीह आपमें है। वही आपमें है जिसके बाइस हम अल्लाह के जलाल में शरीक होने की उम्मीद रखते हैं। 28 यों हम सबको मसीह का पैगाम सुनाते हैं। हर मुमकिन हिक्मत से हम उन्हें समझाते और तालीम देते हैं ताकि हर एक को मसीह में कामिल हालत में अल्लाह के हुज़ूर पेश करें। 29 यही मकसद पूरा करने के लिए मैं सख्त मेहनत करता हूँ। हाँ, मैं पूरी जिद्दो-जहद करके मसीह की उस कुव्वत का सहारा लेता हूँ जो बड़े जोर से मेरे अंदर काम कर रही है।

## 2

1 मैं चाहता हूँ कि आप जान लें कि मैं आपके लिए किस कदर जाँफ़िशानी कर रहा हूँ—आपके लिए, लौदीकियावालों के लिए और उन तमाम ईमानदारों के लिए भी जिनकी मेरे साथ मुलाकात नहीं हुई। 2 मेरी कोशिश यह है कि उनकी दिली हौसलाअफ़ज़ाई की जाए और वह मुहब्बत में एक हो जाएँ, कि उन्हें वह ठोस एतमाद हासिल हो जाए जो पूरी समझ से पैदा होता है। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि वह अल्लाह का राज जान लें। राज क्या है? मसीह खुद। 3 उसी में हिक्मत और इल्मो-इरफ़ान के तमाम खज़ाने पोशीदा हैं।

4 गरज़ ख़बरदार रहें कि कोई आपको बज़ाहिर सहीह और मीठि मीठि अलफ़ाज़ से धोका न दे। 5 क्योंकि गो मैं जिस्म के लिहाज़ से हाज़िर नहीं हूँ, लेकिन रूह में मैं आपके साथ हूँ। और मैं यह देखकर खुश हूँ कि आप कितनी मुनज़्जम जिंदगी गुज़ारते हैं, कि आपका मसीह पर ईमान कितना पुख़्ता है।

### मसीह में जिंदगी

6 आपने ईसा मसीह को खुदावंद के तौर पर कबूल कर लिया है। अब उसमें जिंदगी गुज़ारें। 7 उसमें जड पकड़ें, उस पर अपनी जिंदगी तामीर करें, उस ईमान में मज़बूत रहें जिसकी आपको तालीम दी गई है और शुक्रगुज़ारी से लबरेज़ हो जाएँ।

8 मुहतात रहें कि कोई आपको फलसफ़ियाना और महज़ फ़रेब देनेवाली बातों से अपने जाल में न फँसा ले। ऐसी बातों का सरचरमा मसीह नहीं बल्कि इंसानी रिवायतें और इस दुनिया की कुव्वतें हैं। 9 क्योंकि मसीह में उल्हियत की सारी मामूरी मुजस्सम होकर सुकूनत करती है। 10 और आपको जो मसीह में है उस की मामूरी में शरीक कर दिया गया है। वही हर हुक्मरान और इख्तियारवाले का सर है।

11 उसमें आते वक़्त आपका खतना भी करवाया गया। लेकिन यह खतना इंसानी हाथों से नहीं किया गया बल्कि मसीह के वसीले से। उस वक़्त आपकी पुरानी फ़िरतत उतार दी गई, 12 आपको बपतिस्मा देकर मसीह के साथ दफ़नाया गया और आपको ईमान से जिंदा कर दिया गया। क्योंकि आप अल्लाह की कुदरत पर ईमान लाए थे, उसी कुदरत पर जिसने मसीह को मुरदों में से जिंदा कर दिया था। 13 पहले आप अपने गुनाहों और नामख़तून जिस्मानी हालत के सबब से मुरदा थे, लेकिन अब अल्लाह ने आपको मसीह के साथ जिंदा कर दिया है। उसने हमारे तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। 14 हमारे कर्ज़ की जो रसीद अपनी शरायत की बिना पर हमारे खिलाफ़ थी उसे उसने मनसूख़ कर दिया। हाँ, उसने हमसे दूर करके उसे कीलों से सलीब पर जड दिया। 15 उसने हुक्मरानों और इख्तियारवालों से उनका असला छीनकर सबके सामने उनकी ससवाई की। हाँ, मसीह की सलीबी मौत से वह अल्लाह के कैदी बन गए और उन्हें फ़तह के जुल्स में उसके पीछे पीछे चलना पड़ा।

16 चुनाँचे कोई आपको इस वजह से मुज़रिम न ठहराए कि आप क्या क्या खाते-पीते या कौन कौन-सी ईदें मनाते हैं। इसी तरह कोई आपकी अदालत न करे अगर आप हिलाल की ईद या सबत का दिन नहीं मनाते। 17 यह चीज़ें तो सिर्फ़ आनेवाली हक़ीक़त का साया ही हैं जबकि यह हक़ीक़त खुद मसीह में पाई जाती है। 18 ऐसे लोग आपको मुज़रिम न ठहराएँ जो जाहिरि फ़रोतनी और फ़रिशतों की पूजा पर इस्मार करते हैं। बड़ी तफ़सील से अपनी रोयाओं में देखी हुई बातें बयान करते करते उनके ग़ैररूहानी ज़हन खाहमखाह फूल जाते हैं। 19 यों उन्होंने मसीह के साथ लगे रहना छोड़ दिया अगरचे वह बदन का सर है। वही जोड़ों और पट्टों के ज़रीए पूरे बदन को सहारा देकर उसके मुख़तलिफ़ हिस्सों को जोड़ देता है। यों पूरा बदन अल्लाह की मदद से तरक्की करता जाता है।

### मसीह के साथ मरना और जिंदगी गुज़ारना

20 आप तो मसीह के साथ मरकर दुनिया की कुव्वतों से आज़ाद हो गए हैं। अगर ऐसा है तो आप जिंदगी ऐसे क्यों गुज़ारते हैं जैसे कि आप अभी तक इस दुनिया की मिलकियत हैं? आप क्यों इसके अहकाम के ताबे रहते हैं? 21 मसलन “इसे हाथ न लगाना, वह न चखना, यह न छूना।” 22 इन तमाम चीज़ों का मकसद तो यह है कि इस्तेमाल होकर ख़त्म हो जाएँ। यह सिर्फ़ इंसानी अहकाम और तालीमात है। 23 बेशक यह अहकाम जो घड़े हुए मज़हबी फ़रायज़, नाम-निहाद फ़रोतनी

और जिस्म के सख्त दबाव का तकाजा करते हैं हिकमत पर मबनी तो लगते हैं, लेकिन यह बेकार है और सिर्फ जिस्म ही की खाहिशात पूरी करते हैं।

### 3

1 आपको मसीह के साथ जिंदा कर दिया गया है, इसलिए वह कुछ तलाश करें जो आसमान पर है जहाँ मसीह अल्लाह के दहने हाथ बैठा है। 2 दुनियावी चीजों को अपने खयालों का मरकज न बनाएँ बल्कि आसमानी चीजों को। 3 क्योंकि आप मर गए हैं और अब आपकी जिंदगी मसीह के साथ अल्लाह में पोशीदा है। 4 मसीह ही आपकी जिंदगी है। जब वह जाहिर हो जाएगा तो आप भी उसके साथ जाहिर होकर उसके जलाल में शरीक हो जाएंगे।

#### पुरानी और नई जिंदगी

5 चुनौचे उन दुनियावी चीजों को मार डालें जो आपके अंदर काम कर रही हैं : जिनाकारी, नापाकी, शहवतपरस्ती, बुड़ी खाहिशात और लालच (लालच तो एक किस्म की बुतपरस्ती है)। 6 अल्लाह का गजब ऐसी ही बातों की वजह से नाज़िल होगा। 7 एक वक्त था जब आप भी इनके मुताबिक जिंदगी गुज़ारते थे, जब आपकी जिंदगी इनके काबू में थी।

8 लेकिन अब वक्त आ गया है कि आप यह सब कुछ यानी गुस्सा, तैश, बदसलूकी, बुहतान और गंदी ज़बान खस्ताहाल कपड़े की तरह उतारकर फेंक दें। 9 एक दूसरे से बात करते वक्त झूट मत बोलना, क्योंकि आपने अपनी पुरानी फ़ितरत उस की हरकतों समेत उतार दी है। 10 साथ साथ आपने नई फ़ितरत पहन ली है, वह फ़ितरत जिसकी तजदीद हमारा खालिक अपनी सूरत पर करता जा रहा है ताकि आप उसे और बेहतर तौर पर जान लें। 11 जहाँ यह काम हो रहा है वहाँ लोगों में कोई फ़रक नहीं है, खाह कोई ग़ैरयहूदी हो या यहूदी, मख़तून हो या नामख़तून, ग़ैरयूनानी हो या स्कूती, \* गुलाम हो या आज़ाद। कोई फ़रक नहीं पडता, सिर्फ़ मसीह ही सब कुछ और सबमें है।

12 अल्लाह ने आपको चुनकर अपने लिए मख़सूसी-मुक़द्दस कर लिया है। वह आपसे मुहब्बत रखता है। इसलिए अब तरस, नेकी, फ़रोतनी, नरामदिली और सब्र को पहन लें। 13 एक दूसरे को बरदाशत करें, और अगर आपकी किसी से शिकायत हो तो उसे मुआफ़ कर दें। हौं, यों मुआफ़ करें जिस तरह खुदावंद ने आपको मुआफ़ कर दिया है। 14 इनके अलावा मुहब्बत भी पहन लें जो सब कुछ बाँधकर कामिलियत की तरफ़ ले जाती है। 15 मसीह की सलामती आपके दिलों में हुक्मत करे। क्योंकि अल्लाह ने आपको इसी सलामती की जिंदगी गुज़ारने के लिए बुलाकर एक बदन में शामिल कर दिया है। शक्रगुज़ार भी रहें। 16 आपकी जिंदगी में मसीह के कलाम की पूरी दौलत घर कर जाए। एक दूसरे को हर तरह की हिकमत से तालीम देते और समझाते रहें। साथ साथ अपने दिलों में अल्लाह के लिए शक्रगुज़ारी के साथ ज़बूर, हम्दो-सना और रूहानी गीत गाते रहें। 17 और जो कुछ भी आप करें खाह ज़बानी हो या अमली वह खुदावंद ईसा का नाम लेकर करें। हर काम में उसी के वसीले से खुदा बाप का शक्र करें।

#### नई जिंदगी में ताल्लुकात कैसे हूँ

18 बीवियों, अपने शौहर के ताबे रहें, क्योंकि जो खुदावंद में है उसके लिए यही मुनासिब है।  
19 शौहरो, अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें। उनसे तलखमिजाजी से पेश न आएँ।  
20 बच्चो, हर बात में अपने माँ-बाप के ताबे रहें, क्योंकि यही खुदावंद को पसंद है।  
21 वालिदो, अपने बच्चों को मश्रतइल न करें, वरना वह बेदिल हो जाएंगे।  
22 गुलामो, हर बात में अपने दुनियावी मालिकों के ताबे रहें। न सिर्फ़ उनके सामने ही और उन्हें खुश रखने के लिए खिदमत करें बल्कि ख़ुलूसदिली और खुदावंद का ख़ौफ़ मानकर काम करें। 23 जो कुछ भी आप करते हैं उसे पूरी लग्न के साथ करें, इस तरह जैसा कि आप न सिर्फ़ इनसानों की बल्कि खुदावंद की खिदमत कर रहे हूँ। 24 आप तो जानते हैं कि खुदावंद आपको इसके मुआवजे में वह मीरास देगा जिसका वादा उसने किया है। हकीकत में आप खुदावंद मसीह की ही खिदमत कर रहे हैं। 25 लेकिन जो ग़लत काम करे उसे अपनी ग़लतियों का मुआवजा भी मिलेगा। अल्लाह तो किसी की भी जानिबदारी नहीं करता।

### 4

1 मालिको, अपने गुलामों के साथ मुंसिफाना और जायज़ सुलूक करें। आप तो जानते हैं कि आसमान पर आपका भी मालिक है।

#### हिदायात

\* 3:11 एक क़बीला जो ज़लील समझा जाता था।

2 दुआ में लगे रहें। और दुआ करते वक्त शुकगुजारी के साथ जागते रहें। 3 साथ साथ हमारे लिए भी दुआ करें ताकि अल्लाह हमारे लिए कलाम सुनाने का दरवाजा खोले और हम मसीह का राज पेश कर सकें। आखिर मैं इसी राज की वजह से कैद में हूँ। 4 दुआ करें कि मैं इसे यों पेश करूँ जिस तरह करना चाहिए, कि इसे साफ समझा जा सके।

5 जो अब तक ईमान न लाए हों उनके साथ दानिशमंदाना सुलूक करें। इस सिलसिले में हर मौके से फायदा उठाएँ। 6 आपकी गुफ्तगू हर वक्त मेहरबान हो, ऐसी कि मजा आए और आप हर एक को मुनासिब जवाब दे सकें।

### आखिरी सलामो-दुआ

7 जहाँ तक मेरा ताल्लुक है हमारा अजीज भाई तुखिकुस आपको सब कुछ बता देगा। वह एक वफादार खादिम और खुदावंद में हमखिदमत रहा है। 8 मैंने उसे खासकर इसलिए आपके पास भेज दिया ताकि आपको हमारा हाल मालूम हो जाए और वह आपकी हौसलाअफजाई करे। 9 वह हमारे वफादार और अजीज भाई उनेसिमस के साथ आपके पास आ रहा है, वही जो आपकी जमात से है। दोनों आपको वह सब कुछ सुना देंगे जो यहाँ हो रहा है।

10 अरिस्तरखुस जो मेरे साथ कैद में है आपको सलाम कहता है और इसी तरह बरनबास का कजन \* मरकुस भी। (आपको उसके बारे में हिदायात दी गई है। जब वह आपके पास आए तो उसे खुशआमदीद कहना।) 11 ईसा जो यूस्तुस कहलाता है भी आपको सलाम कहता है। उनमें से जो मेरे साथ अल्लाह की बादशाही में खिदमत कर रहे हैं सिर्फ यह तीन मर्द यहूदी हैं। और यह मेरे लिए तसल्ली का बाइस रहे हैं।

12 मसीह ईसा का खादिम इपफ्रास भी जो आपकी जमात से है सलाम कहता है। वह हर वक्त बडी जिद्दो-जहद के साथ आपके लिए दुआ करता है। उस की खास दुआ यह है कि आप मजबूती के साथ खड़े रहें, कि आप बालिग मसीही बनकर हर बात में अल्लाह की मरजी के मुताबिक चलें। 13 मैं खुद इसकी तसदीक कर सकता हूँ कि उसने आपके लिए सख्त मेहनत की है बल्कि लौदीकिया और हियरापुलिस की जमातों के लिए भी। 14 हमारे अजीज डाक्टर लूका और देमास आपको सलाम कहते हैं।

15 मेरा सलाम लौदीकिया की जमात को देना और इसी तरह नुंफास को उस जमात समेत जो उसके घर में जमा होती है।

16 यह पढ़ने के बाद ध्यान दें कि लौदीकिया की जमात में भी यह खत पढा जाए और आप लौदीकिया का खत भी पढ़ें।

17 अरखिप्पुस को बता देना, खबरदार कि आप वह खिदमत तकमील तक पहुँचाएँ जो आपको खुदावंद में सौंपी गई है।

18 मैं अपने हाथ से यह अलफाज लिख रहा हूँ। मेरी यानी पौलुस की तरफ से सलाम। मेरी जंजीर मत भूलना! अल्लाह का फज़ल आपके साथ होता रहे।

\* 4:10 यूनानी लफ्ज़ से जाहिर नहीं होता कि मरकुस चचा, मार्म, फूफी या खाला का लडका है।

## 1 थिस्सलुनीकियों

1 यह खत पौलस, सिलवानुस और तीमुथियुस की तरफ से है।

हम थिस्सलुनीकियों की जमात को लिख रहे हैं, उन्हें जो खुदा बाप और खुदावंद ईसा मसीह पर ईमान लाए हैं। अल्लाह आपको फज़ल और सलामती बख़्शे।

थिस्सलुनीकियों की ज़िंदगी और ईमान

2 हम हर वक़्त आप सबके लिए खुदा का शुक्र करते और अपनी दुआओं में आपको याद करते रहते हैं।<sup>3</sup> हमें अपने खुदा बाप के हज़ूर खासकर आपका अमल, मेहनत-मशक्कत और साबितकदमी याद आती रहती है। आप अपना ईमान कितनी अच्छी तरह अमल में लाए, आपने मुहब्बत की रूह में कितनी मेहनत-मशक्कत की और आपने कितनी साबितकदमी दिखाई, ऐसी साबितकदमी जो सिर्फ़ हमारे खुदावंद ईसा मसीह पर उम्मीद ही दिला सकती है।<sup>4</sup> भाइयो, अल्लाह आपसे मुहब्बत रखता है, और हमें पूरा इल्म है कि उसने आपको वाकई चुन लिया है।<sup>5</sup> क्योंकि जब हमने अल्लाह की खुशख़बरी आप तक पहुँचाई तो न सिर्फ़ बातें करके बल्कि क़ुव्वत के साथ, रूहल-क़ुदस में और पूरे एतमाद के साथ। आप जानते हैं कि जब हम आपके पास थे तो हमने किस तरह की ज़िंदगी गुज़ारी। जो कुछ हमने किया वह आपकी खातिर किया।<sup>6</sup> उस वक़्त आप हमारे और खुदावंद के नमूने पर चलने लगे। अगरचे आप बड़ी मुसीबत में पड़ गए तो भी आपने हमारे पैग़ाम को उस खुशी के साथ कबूल किया जो सिर्फ़ रूहल-क़ुदस दे सकता है।<sup>7</sup> यों आप सबा मकिदुनिया और सबा अख़या के तमाम ईमानदारों के लिए नमूना बन गए।<sup>8</sup> खुदावंद के पैग़ाम की आवाज़ आपमें से निकलकर न सिर्फ़ मकिदुनिया और अख़या में सुनाई दी, बल्कि यह ख़बर कि आप अल्लाह पर ईमान रखते हैं हर जगह तक पहुँच गई है। नतीजे में हमें कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रही,<sup>9</sup> क्योंकि लोग हर जगह बात कर रहे हैं कि आपने हमें किस तरह खुशआमदीद कहा है, कि आपने किस तरह बुतों से मुँह फेरकर अल्लाह की तरफ़ रुज़ किया ताकि ज़िंदा और हकीकी खुदा की खिदमत करें।<sup>10</sup> लोग यह भी कह रहे हैं कि अब आप इस इंतज़ार में हैं कि अल्लाह का फ़रज़द आसमान पर से आए यानी ईसा जिसे अल्लाह ने मुरदों में से ज़िंदा कर दिया और जो हमें आनेवाले ग़ज़ब से बचाएगा।

## 2

थिस्सलुनीके में पौलुस का काम

1 भाइयो, आप जानते हैं कि हमारा आपके पास आना बेफ़ायदा न हुआ।<sup>2</sup> आप उस दुख से भी वाकिफ़ हैं जो हमें आपके पास आने से पहले सहना पड़ा, कि फिलिपी शहर में हमारे साथ कितनी बदसलुकी हुई थी। तो भी हमने अपने खुदा की मदद से आपको उस की खुशख़बरी सुनाने की ज़रूरत की हालाँकि बहुत मुख़ालफ़त का सामना करना पड़ा।<sup>3</sup> क्योंकि जब हम आपको उभारते हैं तो इसके पीछे न तो कोई ग़लत नीयत होती है, न कोई नापाक मक़सद या चालाकी।<sup>4</sup> नहीं, अल्लाह ने खुद हमें ज़ौक़र इस लायक समझा कि हम उस की खुशख़बरी सुनाने की ज़िम्मादारी सँभालें। इसी बिना पर हम बोलते हैं, इन्सानों को खुश रखने के लिए नहीं बल्कि अल्लाह को जो हमारे दिलों को परखता है।<sup>5</sup> आपको भी मालूम है कि हमने न खुशामद से काम लिया, न हम पसे-परदा लालची थे—अल्लाह हमारा ग़वाह है!<sup>6</sup> हम इस मक़सद से काम नहीं कर रहे थे कि लोग हमारी इज़्जत करें, ख़ाह आप हों या दीगर लोग।<sup>7</sup> मसीह के रसूलों की हैसियत से हम आपके लिए माली बोझ बन सकते थे, लेकिन हम आपके दरमियान होते हुए नरमादिल रहे, ऐसी माँ की तरह जो अपने छोटे बच्चों की परवरिश करती है।<sup>8</sup> हमारी आपके लिए चाहत इतनी शदीद थी कि हम आपको न सिर्फ़ अल्लाह की खुशख़बरी की बरकत में शरीक करने को तैयार थे बल्कि अपनी ज़िंदगियों में भी। हाँ, आप हमें इतने अज़ीज़ थे! <sup>9</sup> भाइयो, बेशक आपको याद है कि हमने कितनी सख़्त मेहनत-मशक्कत की। दिन-रात हम काम करते रहे ताकि अल्लाह की खुशख़बरी सुनाते वक़्त किसी पर बोझ न बनें।

<sup>10</sup> आप और अल्लाह हमारे ग़वाह हैं कि आप ईमान लानेवालों के साथ हमारा सलुक कितना मुक़द्दस, रास्त और बेज़लजाम था।<sup>11</sup> क्योंकि आप जानते हैं कि हमने आपमें से हर एक से ऐसा सलुक किया जैसा बाप अपने बच्चों के साथ करता है।<sup>12</sup> हम आपकी हौसलाअफ़जाई करते, आपको तसल्ली देते और आपको समझाते रहे कि आप अल्लाह के लायक ज़िंदगी गुज़ारें, क्योंकि वह आपको अपनी बादशाही और जलाल में हिस्सा लेने के लिए बुलाता है।

<sup>13</sup> एक और वजह है कि हम हर वक़्त खुदा का शुक्र करते हैं। जब हमने आप तक अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाया तो आपने उसे सुनकर यों कबूल किया जैसा यह हकीकत में है यानी अल्लाह का कलाम जो इन्सानों की तरफ़ से नहीं है और जो आप

ईमानदारों में काम कर रहा है। 14 भाइयो, न सिर्फ यह बल्कि आप यहूदिया में अल्लाह की उन जमातों के नम्ने पर चल पड़े जो मसीह ईसा में हैं। क्योंकि आपको अपने हमवतनों के हाथों वह कुछ सहना पड़ा जो उन्हें पहले ही अपने हमवतन यहूदियों से सहना पड़ा था। 15 हाँ, यहूदियों ने न सिर्फ खुदावंद ईसा और नबियों को क़त्ल किया बल्कि हमें भी अपने बीच में से निकाल दिया। यह लोग अल्लाह को पसंद नहीं आते और तमाम लोगों के खिलाफ़ होकर 16 हमें इससे रोकने की कोशिश करते हैं कि ग़ैरयहूदियों को अल्लाह की खुशख़बरी सुनाएँ, ऐसा न हो कि वह नजात पाएँ। यों वह हर वक़्त अपने गुनाहों का प्याला किनारे तक भरते जा रहे हैं। लेकिन अल्लाह का पूरा ग़ज़ब उन पर नाज़िल हो चुका है।

**पौलस की उनसे दुबारा मिलने की खाहिश**

17 भाइयो, जब हमें कुछ देर के लिए आपसे अलग कर दिया गया (गो हम दिल से आपके साथ रहे) तो हमने बड़ी आरज़ू से आपसे मिलने की पूरी कोशिश की। 18 क्योंकि हम आपके पास आना चाहते थे। हाँ, मैं पौलस ने बार बार आने की कोशिश की, लेकिन इबलीस ने हमें रोक लिया। 19 आखिर आप ही हमारी उम्मीद और खुशी का बाइस हैं। आप ही हमारा इनाम और हमारा ताज हैं जिस पर हम अपने खुदावंद ईसा के हज़ूर फ़ख़र करेंगे जब वह आएगा। 20 हाँ, आप हमारा जलाल और खुशी हैं।

### 3

1 आखिरकार हम यह हालत मज़ीद बरदाश्त न कर सके। हमने फैसला किया कि अकेले ही अथेने में रहकर 2 तीमुथियुस को भेज देंगे जो हमारा भाई और मसीह की खुशख़बरी फैलाने में हमारे साथ अल्लाह की खिदमत करता है। हमने उसे भेज दिया ताकि वह आपको मज़बूत करे और ईमान में आपकी हौसलाअफ़जाई करे 3 ताकि कोई इन मुसीबतों से बेचैन न हो जाए। क्योंकि आप खुद जानते हैं कि इनका सामना करना हमारे लिए अल्लाह की मरज़ी है। 4 बल्कि जब हम आपके पास थे तो हमने इसकी पेशगोई की कि हमें मुसीबत बरदाश्त करनी पड़ेगी। और ऐसा ही हुआ जैसा कि आप ख़ब जानते हैं। 5 यही वजह थी कि मैंने तीमुथियुस को भेज दिया। मैं यह हालात बरदाश्त न कर सका, इसलिए मैंने उसे आपके ईमान को मालूम करने के लिए भेज दिया। ऐसा न हो कि आज़मानेवाले ने आपको यों आज़माइश में डाल दिया हो कि हमारी आप पर मेहनत जाया जाए।

6 लेकिन अब तीमुथियुस लौट आया है, और वह आपके ईमान और मुहब्बत के बारे में अच्छी ख़बर लेकर आया है। उसने हमें बताया कि आप हमें बहुत याद करते हैं और हमसे उतना ही मिलने के आरज़ुमंद हैं जितना कि हम आप से। 7 भाइयो, आप और आपके ईमान के बारे में यह सुनकर हमारी हौसलाअफ़जाई हुई, हालाँकि हम खुद तरह तरह के दबाव और मुसीबतों में फँसे हुए हैं। 8 अब हमारी जान में जान आ गई है, क्योंकि आप मज़बूती से खुदावंद में कायम हैं। 9 हम आपकी वजह से अल्लाह के कितने शक्रगुज़ार हैं! यह खुशी नाकाबिले-बयान है जो हम आपकी वजह से अल्लाह के हज़ूर महसूस करते हैं। 10 दिन-रात हम बड़ी संजीदगी से दुआ करते रहते हैं कि आपसे दुबारा मिलकर वह कमियाँ पूरी करें जो आपके ईमान में अब तक रह गई हैं।

11 अब हमारा खुदा और बाप खुद और हमारा खुदावंद ईसा रास्ता खोले ताकि हम आप तक पहुँच सकें। 12 खुदावंद करे कि आपकी एक दूसरे और दीगर तमाम लोगों से मुहब्बत इतनी बढ़ जाए कि वह यों दिल से छलक उठे जिस तरह आपके लिए हमारी मुहब्बत भी छलक रही है। 13 क्योंकि इस तरह अल्लाह आपके दिलों को मज़बूत करेगा और आप उस वक़्त हमारे खुदा और बाप के हज़ूर बेइलज़ाम और मुक़द्दस साबित होंगे जब हमारा खुदावंद ईसा अपने तमाम मुक़द्दसीन के साथ आएगा। आमीन।

### 4

**अल्लाह को पसंदीदा ज़िंदगी**

1 भाइयो, एक आखिरी बात, आपने हमसे सीख लिया था कि हमारी ज़िंदगी किस तरह होनी चाहिए ताकि वह अल्लाह को पसंद आए। और आप इसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते भी हैं। अब हम खुदावंद ईसा में आपसे दरखास्त और आपकी हौसलाअफ़जाई करते हैं कि आप इसमें मज़ीद तरक्की करते जाएँ। 2 आप तो उन हिदायात से वाकिफ़ हैं जो हमने आपको खुदावंद ईसा के वसीले से दी थी। 3 क्योंकि अल्लाह की मरज़ी है कि आप उसके लिए मख़सूसो-मुक़द्दस हों, कि आप जिनाकारी से बाज़ रहें। 4 हर एक अपने बदन पर यों काबू पाना सीख ले कि वह मुक़द्दस और शरीफ़ ज़िंदगी गुज़ार सके। 5 वह ग़ैरईमानदारों की तरह जो अल्लाह से नावाकिफ़ हैं शहवतपरस्ती का शिकार न हो। 6 इस मामले में कोई अपने भाई का गुनाह न करे, न उससे ग़लत फ़ायदा उठाए। खुदावंद ऐसे गुनाहों की सज़ा देता है। हम यह सब कुछ बता चुके और आपको आगाह कर चुके हैं। 7 क्योंकि अल्लाह ने हमें नापाक ज़िंदगी गुज़ारने के लिए नहीं बुलाया बल्कि मख़सूसो-मुक़द्दस ज़िंदगी

गुजारने के लिए।<sup>8</sup> इसलिए जो यह हिदायत रद्द करता है वह इनसान को नहीं बल्कि अल्लाह को रद्द करता है जो आपको अपना मुकद्दस रूह दे देता है।

<sup>9</sup> यह लिखने की ज़रूरत नहीं कि आप दूसरे ईमानदारों से मुहब्बत रखें। अल्लाह ने खुद आपको एक दूसरे से मुहब्बत रखना सिखाया है।<sup>10</sup> और हकीकतन आप मकिदुनिया के तमाम भाइयों से ऐसी ही मुहब्बत रखते हैं। तो भी भाइयो, हम आपकी हौसला-अफ़जाई करना चाहते हैं कि आप इसमें मज़ीद तरक्की करते जाएँ।<sup>11</sup> अपनी इज़्जत इसमें बरकरार रखें कि आप सुकून से ज़िंदगी गुज़ारें, अपने फ़रायज़ अदा करें और अपने हाथों से काम करें, जिस तरह हमने आपको कह दिया था।<sup>12</sup> जब आप ऐसा करेंगे तो गैरईमानदार आपकी कदर करेंगे और आप किसी भी चीज़ के मुहताज नहीं रहेंगे।

### खुदावंद की आमद

<sup>13</sup> भाइयो, हम चाहते हैं कि आप उनके बारे में हकीकत जान लें जो सो गए हैं ताकि आप दूसरों की तरह जिनकी कोई उम्मीद नहीं मातम न करें।<sup>14</sup> हमारा ईमान है कि ईसा मर गया और दुबारा जी उठा, इसलिए हमारा यह भी ईमान है कि जब ईसा वापस आएगा तो अल्लाह उसके साथ उन ईमानदारों को भी वापस लाएगा जो मौत की नींद सो गए हैं।

<sup>15</sup> जो कुछ हम अब आपको बता रहे हैं वह खुदावंद की तालीम है। खुदावंद की आमद पर हम जो ज़िंदा होंगे सोए हुए लोगों से पहले खुदावंद से नहीं मिलेंगे।<sup>16</sup> उस वक़्त ऊँची आवाज़ से हुक्म दिया जाएगा, फ़रिश्ताएँ-आज़म की आवाज़ सुनाई देगी, अल्लाह का तुरम बजेगा और खुदावंद खुद आसमान पर से उतर आएगा। तब पहले वह जी उठेंगे जो मसीह में मर गए थे।<sup>17</sup> इनके बाद ही हमें जो ज़िंदा होंगे बादलों पर उठा लिया जाएगा ताकि हवा में खुदावंद से मिलें। फिर हम हमेशा खुदावंद के साथ रहेंगे।<sup>18</sup> चुनाँचे इन अलफ़ाज़ से एक दूसरे को तसल्ली दिया करें।

## 5

### खुदावंद की आमद के लिए तैयार रहना

<sup>1</sup> भाइयो, इसकी ज़रूरत नहीं कि हम आपको लिखें कि यह सब कुछ कब और किस मौक़े पर होगा।<sup>2</sup> क्योंकि आप खुद ख़ुब जानते हैं कि खुदावंद का दिन यों आएगा जिस तरह चोर रात के वक़्त घर में घुस आता है।<sup>3</sup> जब लोग कहेंगे, “अब अमनो-अमान है,” तो हलाकत अचानक ही उन पर आन पड़ेगी। वह इस तरह मूसीबत में पड़ जाएंगे जिस तरह वह औरत जिसका बच्चा पैदा हो रहा है। वह हरगिज़ नहीं बच सकेंगे।<sup>4</sup> लेकिन आप भाइयो तारीकी की गिरिफ़्त में नहीं हैं, इसलिए यह दिन चोर की तरह आप पर ग़ालिब नहीं आना चाहिए।<sup>5</sup> क्योंकि आप सब रौशनी और दिन के फ़रज़ंद हैं। हमारा रात या तारीकी से कोई वास्ता नहीं।<sup>6</sup> गरज़ आएँ, हम दूसरों की मानिंद न हों जो सोए हुए हैं बल्कि जागते रहें, होशमंद रहें।<sup>7</sup> क्योंकि रात के वक़्त ही लोग सो जाते हैं, रात के वक़्त ही लोग नशे में धुत हो जाते हैं।<sup>8</sup> लेकिन चूँकि हम दिन के हैं इसलिए आएँ हम होश में रहें। लाज़िम है कि हम ईमान और मुहब्बत को ज़िंदा-बक़तर के तौर पर और नजात की उम्मीद को ख़ोद के तौर पर पहन लें।<sup>9</sup> क्योंकि अल्लाह ने हमें इसलिए नहीं चुना कि हम पर अपना ग़ज़ब नाज़िल करे बल्कि इसलिए कि हम अपने खुदावंद ईसा मसीह के वसीले से नजात पाएँ।<sup>10</sup> उसने हमारी खातिर अपनी जान दे दी ताकि हम उसके साथ जिंएँ, खाह हम उस की आमद के दिन मुरदा हों या ज़िंदा।<sup>11</sup> इसलिए एक दूसरे की हौसला-अफ़जाई और तामीर करते रहें, जैसा कि आप कर भी रहे हैं।

### आखिरी हिदायत और सलाम

<sup>12</sup> भाइयो, हमारी दरखास्त है कि आप उनकी कदर करें जो आपके दरमियान सख़्त मेहनत करके खुदावंद में आपकी राहनुमाई और हिदायत करते हैं।<sup>13</sup> उनकी खिदमत को सामने रखकर प्यार से उनकी बड़ी इज़्जत करें। और एक दूसरे के साथ मेल-मिलाप से ज़िंदगी गुज़ारें।

<sup>14</sup> भाइयो, हम इस पर जोर देना चाहते हैं कि उन्हें समझाएँ जो बेक्रायदा ज़िंदगी गुज़ारते हैं, उन्हें तसल्ली दें जो जल्दी से मायूस हो जाते हैं, कमज़ोरों का खयाल रखें और सबको सब से बरदाश्त करें।<sup>15</sup> इस पर ध्यान दें कि कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे बल्कि आप हर वक़्त एक दूसरे और तमाम लोगों के साथ नेक काम करने में लगे रहें।

<sup>16</sup> हर वक़्त ख़ुश रहें, <sup>17</sup> बिलानागा दुआ करें, <sup>18</sup> और हर हालत में खुदा का शुक़ करें। क्योंकि जब आप मसीह में हैं तो अल्लाह यही कुछ आपसे चाहता है।

<sup>19</sup> रूहल-कुदूस को मत बुझाएँ। <sup>20</sup> नसुब्बतों की तहकीर न करें। <sup>21</sup> सब कुछ परखकर वह थामे रखें जो अच्छा है, <sup>22</sup> और हर किस्म की बुराई से बाज़ रहें।

- 23 अल्लाह खुद जो सलामती का खुदा है आपको पूरे तौर पर मखसूसो-मुकद्दस करे। वह करे कि आप पूरे तौर पर रह, जान और बदन समेत उस वक़्त तक महफूज़ और बेइलज़ाम रहें जब तक हमारा खुदावंद ईसा मसीह वापस नहीं आ जाता।
- 24 जो आपको बुलाता है वह वफ़ादार है और वह ऐसा करेगा भी।
- 25 भाइयो, हमारे लिए दुआ करें।
- 26 तमाम भाइयों को हमारी तरफ़ से बोसा देना।
- 27 खुदावंद के हुज़ूर मैं आपको ताकीद करता हूँ कि यह खत तमाम भाइयों के सामने पढा जाए।
- 28 हमारे खुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल आपके साथ होता रहे।

## 2 थिस्सलूनीकियों

1 यह खत पौलुस, सिल्वानुस और तीमुथियुस की तरफ से है।

हम थिस्सलूनीकियों की जमात को लिख रहे हैं, उन्हें जो अल्लाह हमारे बाप और खुदावंद ईसा मसीह पर ईमान लाए हैं।

2 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़ज़ल और सलामती बख़्शें।

### मसीह की आमद पर अदालत

3 भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त आपके लिए खुदा का शुक्र करें। हाँ, यह मौज़ू है, क्योंकि आपका ईमान हैरतअंगेज़ तरक्की कर रहा है और आप सबकी एक दूसरे से मुहब्बत बढ़ रही है। 4 यही वजह है कि हम अल्लाह की दीगर जमातों में आप पर फ़ख़र करते हैं। हाँ, हम फ़ख़र करते हैं कि आप इन दिनों में कितनी साबितकदमी और ईमान दिखा रहे हैं हालाँकि आप बहुत ईज़ारसानियाँ और मुसीबतें बरदाश्त कर रहे हैं।

5 यह सब कुछ साबित करता है कि अल्लाह की अदालत रास्त है, और नतीजे में आप उस की बादशाही के लायक ठहरेंगे, जिसके लिए आप अब दुख उठा रहे हैं। 6 अल्लाह वही कुछ करेगा जो रास्त है। वह उन्हें मुसीबतों में डाल देगा जो आपको मुसीबत में डाल रहे हैं, 7 और आपको जो मुसीबत में हैं हमारे समेत आराम देगा। वह यह उस वक़्त करेगा जब खुदावंद ईसा अपने कर्वी फ़रिशतों के साथ आसमान पर से आकर जाहिर होगा 8 और भडकती हुई आग में उन्हें सज़ा देगा जो न अल्लाह को जानते हैं, न हमारे खुदावंद ईसा की ख़ुशख़बरी के ताबे हैं। 9 ऐसे लोग अबदी हलाकत की सज़ा पाएँगे, वह हमेशा तक खुदावंद की हज़ूरी और उस की जलाली कुदरत से दूर हो जाएँगे। 10 लेकिन उस दिन खुदावंद इसलिए भी आएगा कि अपने मुक़द्दसीन में जलाल पाएँ और तमाम ईमानदारों में हैरत का बाइस हो। आप भी उनमें शामिल होंगे, क्योंकि आप उस पर ईमान लाए जिसकी ग़वाही हमने आपको दी।

11 यह पेशे-नज़र रखकर हम लगातार आपके लिए दुआ करते हैं। हमारा खुदा आपको उस बुलावे के लायक ठहराए जिसके लिए आपको बुलाया गया है। और वह अपनी कुदरत से आपकी नेकी करने की हर खाहिश और आपके ईमान का हर काम तकमील तक पहुँचाए। 12 क्योंकि इस तरह ही हमारे खुदावंद ईसा का नाम आपमें जलाल पाएगा और आप भी उसमें जलाल पाएँगे, उस फ़ज़ल के मुताबिक जो हमारे खुदा और खुदावंद ईसा मसीह ने आपको दिया है।

## 2

### बेदीनी का आदमी

1 भाइयो, यह सवाल उठा है कि हमारे खुदावंद ईसा मसीह की आमद कैसी होगी? हम किस तरह उसके साथ जमा हो जाएँगे? इस नाते से हमारी आपसे दरखास्त है 2 कि जब लोग कहते हैं कि खुदावंद का दिन आ चुका है तो आप जल्दी से बेचैन या परेशान न हो जाएँ। उनकी बात न मानें, चाहे वह यह दावा भी करें कि उनके पास हमारी तरफ से कोई नबुव्वत, पैगाम या ख़त है। 3 कोई भी आपको किसी भी चाल से फ़रेब न दे, क्योंकि यह दिन उस वक़्त तक नहीं आएगा जब तक आखिरी बगावत पेश न आए और “बेदीनी का आदमी” जाहिर न हो जाए, वह जिसका अंजाम हलाकत होगा। 4 वह हर एक की मुख़ालफ़त करेगा जो खुदा और माबूद कहलाता है और अपने आपको उन सबसे बड़ा ठहराएगा। हाँ, वह अल्लाह के घर में बैठकर एलान करेगा, “मैं अल्लाह हूँ।”

5 क्या आपको याद नहीं कि मैं आपको यह बताता रहा जब अभी आपके पास था? 6 और अब आप जानते हैं कि क्या कुछ उसे रोक रहा है ताकि वह अपने मुक़र्रर वक़्त पर जाहिर हो जाए। 7 क्योंकि यह पुरअसरार बेदीनी अब भी असर कर रही है। लेकिन यह उस वक़्त तक जाहिर नहीं होगी जब तक वह शख्स हट न जाए जो अब तक उसे रोक रहा है। 8 फिर ही “बेदीनी का आदमी” जाहिर होगा। लेकिन जब खुदावंद ईसा आएगा तो वह उसे अपने मुँह की फूँक से मार डालेगा, जाहिर होने पर ही वह उसे हलाक कर देगा। 9 “बेदीनी के आदमी” में इब्लीस काम करेगा। जब वह आएगा तो हर किस्म की ताकत का इज़हार करेगा। वह झूटे निशान और मोजिजे पेश करेगा। 10 यों वह उन्हें हर तरह के शरीर फ़रेब में फँसाएगा जो हलाक होनेवाले हैं। लोग इसलिए हलाक हो जाएँगे कि उन्होंने सच्चाई से मुहब्बत करने से इनकार किया, वरना वह बच जाते। 11 इस वजह से अल्लाह उन्हें बुरी तरह से फ़रेब में फँसे देता है ताकि वह इस झूट पर ईमान लाएँ। 12 नतीजे में सब जो सच्चाई पर ईमान न लाए बल्कि नारास्ती से लुत्फ़अंदोज़ हुए मुजरिम ठहरेंगे।

आपको नजात के लिए चुन लिया गया है



13 मेरे भाइयो, वाजिब है कि हम हर वक़्त आपके लिए खुदा का शुक्र करें जिन्हें खुदावंद प्यार करता है। क्योंकि अल्लाह ने आपको शुरू ही से नजात पाने के लिए चुन लिया, ऐसी नजात के लिए जो रूहल-कुदूस से पाकीज़गी पाकर सच्चाई पर ईमान लाने से हासिल होती है। 14 अल्लाह ने आपको उस वक़्त यह नजात पाने के लिए बुला लिया जब हमने आपको उस की खुशख़बरी सुनाई। और अब आप हमारे खुदावंद ईसा मसीह के जलाल में शरीक हो सकते हैं। 15 भाइयो, इसलिए साबितक़दम रहें और उन रिवायत को धामे रखें जो हमने आपको सिखाई हैं, खाह ज़बानी या ख़त के ज़रीए।

16 हमारा खुदावंद ईसा मसीह खुद और खुदा हमारा बाप जिसने हमसे मुहब्बत रखी और अपने फ़जल से हमें अबदी तसल्ली और ठोस उम्मीद बख़्शी 17 आपको हौसलाअफ़ज़ाई करे और यों मज़बूत करे कि आप हमेशा वह कुछ बोलें और करें जो अच्छा है।

### 3

हमारे लिए दुआ करना

1 भाइयो, एक आख़िरी बात, हमारे लिए दुआ करें कि खुदावंद का पैग़ाम जल्दी से फैल जाए और इज़्जत पाए, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह आपके दरमियान हुआ। 2 इसके लिए भी दुआ करें कि अल्लाह हमें ग़लत और शरीर लोगों से बचाए रखे, क्योंकि सब तो ईमान नहीं रखते।

3 लेकिन खुदावंद वफ़ादार है, और वही आपको मज़बूत करके इबलीस से महफूज़ रखेगा। 4 हम खुदावंद में आप पर एतमाद रखते हैं कि आप वह कुछ कर रहे हैं बल्कि करते रहेंगे जो हमने आपको करने को कहा था।

5 खुदावंद आपके दिलों को अल्लाह की मुहब्बत और मसीह की साबितक़दमी की तरफ़ मायल करता रहे।

काम करने का फ़र्ज़

6 भाइयो, अपने खुदावंद ईसा मसीह के नाम में हम आपको हुक्म देते हैं कि हर उस भाई से किनारा करें जो बेकायदा चलता और जो हमसे पाई हुई रिवायत के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारता। 7 आप खुद जानते हैं कि आपको किस तरह हमारे नमूने पर चलना चाहिए। जब हम आपके पास थे तो हमारी ज़िंदगी में बेतरतीबी नहीं पाई जाती थी। 8 हमने किसी का खाना भी पैसे दिए बग़ैर न खाया, बल्कि दिन-रात सख़्त मेहनत-मशक्कत करते रहे ताकि आपमें से किसी के लिए बोझ न बनें। 9 बात यह नहीं कि हमें आपसे मुआवज़ा मिलने का हक़ नहीं था। नहीं, हमने ऐसा किया ताकि हम आपके लिए अच्छा नमूना बनें और आप इस नमूने पर चलें। 10 जब हम अभी आपके पास थे तो हमने आपको हुक्म दिया, “जो काम नहीं करना चाहता वह खाना भी न खाए।”

11 अब हमें यह ख़बर मिली है कि आपमें से बाज़ बेकायदा ज़िंदगी गुज़ारते हैं। वह काम नहीं करते बल्कि दूसरों के कामों में ख़ाहमख़ाह दाख़ल देते हैं। 12 खुदावंद ईसा मसीह के नाम में हम ऐसे लोगों को हुक्म देते और समझाते हैं कि आराम से काम करके अपनी रोज़ी कमाएँ।

13 भाइयो, आप भलाई करने से कभी हिम्मत न हारें। 14 अगर कोई इस ख़त में दर्ज़ हमारी हिदायत पर अमल न करे तो उससे ताल्लुक़ न रखना ताकि उसे शर्म आए। 15 लेकिन उसे दुश्मन मत समझना बल्कि उसे भाई जानकर समझाना।

आख़िरी अलफ़ाज़

16 खुदावंद खुद जो सलामती का सरचश्मा है आपको हर वक़्त और हर तरह से सलामती बख़्शे। खुदावंद आप सबके साथ हो।

17 मैं, पौलस अपने हाथ से यह लिख रहा हूँ। मेरी तरफ़ से सलाम। मैं इसी तरीक़े से अपने हर ख़त पर दस्तख़त करता और इसी तरह लिखता हूँ।

18 हमारे खुदावंद ईसा मसीह का फ़जल आप सबके साथ रहे।

## 1 तीमथियुस

1 यह खत पौलुस की तरफ से है जो हमारे नजातदहिदा अल्लाह और हमारी उम्मीद मसीह ईसा के हुक्म पर मसीह ईसा का रसूल है।

2 मैं तीमथियुस को लिख रहा हूँ जो ईमान में मेरा सच्चा बेटा है।

खुदा बाप और हमारा खुदावंद मसीह ईसा आपको फज़ल, रहम और सलामती अता करें।

गलत तालीम से खबरदार

3 मैंने आपको मकिदुनिया जाते वक़्त नसीहत की थी कि इफ़िसुस में रहें ताकि आप वहाँ के कुछ लोगों को गलत तालीम देने से रोके। 4 उन्हें फ़रज़ी कहानियों और ख़तम न होनेवाले नसबनामे के पीछे न लगने दें। इनसे महज़ बहस-मुबाहसा पैदा होता है और अल्लाह का नजातबख़्श मनसूबा पूरा नहीं होता। क्योंकि यह मनसूबा सिर्फ़ ईमान से तकमील तक पहुँचता है।

5 मेरी इस हिदायत का मक़सद यह है कि मुहब्बत उभर आए, ऐसी मुहब्बत जो ख़ालिस दिल, साफ़ ज़मीर और बेरिया ईमान से पैदा होती है। 6 कुछ लोग इन चीज़ों से भटककर बेमानी बातों में गुम हो गए हैं। 7 यह शरीअत के उस्ताद बनना चाहते हैं, लेकिन उन्हें उन बातों की समझ नहीं आती जो वह कर रहे हैं और जिन पर वह इतने एतमाद से इस्सारा कर रहे हैं।

8 लेकिन हम तो जानते हैं कि शरीअत अच्छी है बशर्तकि इसे सहीह तौर पर इस्तेमाल किया जाए। 9 और याद रहे कि यह रास्तबाज़ों के लिए नहीं दी गई। क्योंकि यह उनके लिए है जो बग़ैर शरीअत के और सरकश ज़िदगी गुज़ारते हैं, जो बेदीन और गुनाहगार हैं, जो मुक़द्दस और स़हानी बातों से खाली हैं, जो अपने माँ-बाप के कातिल हैं, जो ख़ूनी, 10 ज़िनाकार, हमज़िसपरस्त और गुलामों के ताजिर हैं, जो झूट बोलते, झूटी कसम खाते और मज़ीद बहुत कुछ करते हैं जो सेहतबख़्श तालीम के खिलाफ़ है। 11 और सेहतबख़्श तालीम क्या है? वह जो मुबारक खुदा की उस जलाली खुशख़बरी में पाई जाती है जो मेरे सुपुर्द की गई है।

अल्लाह के रहम के लिए शुक्रगुज़ारी

12 मैं अपने खुदावंद मसीह ईसा का शुक्र करता हूँ जिसने मेरी तकवियत की है। मैं उसका शुक्र करता हूँ कि उसने मुझे वफ़ादार समझकर खिदमत के लिए मुक़र्र किया। 13 गो मैं पहले कुफ़र बकनेवाला और गुस्ताख़ आदमी था, जो लोगों को ईज़ा देता था, लेकिन अल्लाह ने मुझ पर रहम किया। क्योंकि उस वक़्त मैं ईमान नहीं लाया था और इसलिए नहीं जानता था कि क्या कर रहा हूँ। 14 हाँ, हमारे खुदावंद ने मुझ पर अपना फ़ज़ल कसरत से उंडेल दिया और मुझे वह ईमान और मुहब्बत अता की जो हमें मसीह ईसा में होते हुए मिलती है। 15 हम इस काबिले-क़बूल बात पर पूरा भरोसा रख सकते हैं कि मसीह ईसा गुनाहगारों को नजात देने के लिए इस दुनिया में आया। उनमें से मैं सबसे बड़ा गुनाहगार हूँ, 16 लेकिन यही वजह है कि अल्लाह ने मुझ पर रहम किया। क्योंकि वह चाहता था कि मसीह ईसा मुझमें जो अब्बल गुनाहगार हूँ अपना वसी सज़्र ज़ाहिर करे और मैं यों उनके लिए नमूना बन जाऊँ जो उस पर ईमान लाकर अबदी ज़िदगी पानेवाले हैं। 17 हाँ, हमारे अज़लीओ-अबदी शहनशाह की हमेशा तक इज़ज़तो-जलाल हो! वही लाफ़ानी, अनदेखा और वाहिद खुदा है। आमीन।

18 तीमथियुस मेरे बेटे, मैं आपको यह हिदायत उन पेशगोइयों के मुताबिक़ देता हूँ जो पहले आपके बारे में की गई थी। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि आप इनकी पैरवी करके अच्छी तरह लड़ सकें 19 और ईमान और साफ़ ज़मीर के साथ ज़िदगी गुज़ार सकें। क्योंकि बाज़ ने यह बातें रद्द कर दी हैं और नतीजे में उनके ईमान का बेटा गरक हो गया। 20 हुमिनयुस और सिंकंदर भी इनमें शामिल हैं। अब मैंने इन्हें इबलीस के हवाले कर दिया है ताकि वह कुफ़र बकने से बाज़ आना सीखें।

## 2

जमात की परस्तिश

1 पहले मैं इस पर जोर देना चाहता हूँ कि आप सबके लिए दरखास्तें, दुआएँ, सिफारिशें और शुक्रगुज़ारियाँ पेश करें, 2 बादशाहों और इख़्तियारवालों के लिए भी ताकि हम आराम और सुकून से खुदातरस और शरीफ़ ज़िदगी गुज़ार सकें। 3 यह अच्छा और हमारे नजातदहिदा अल्लाह को पसंदीदा है। 4 हाँ, वह चाहता है कि तमाम इनसान नजात पाकर सच्चाई को जान लें। 5 क्योंकि एक ही खुदा है और अल्लाह और इनसान के बीच में एक ही दरमियानी है यानी मसीह ईसा, वह इनसान 6 जिसने अपने आपको फ़िघा के तौर पर सबके लिए दे दिया ताकि वह मख़लसी पाएँ। यों उसने मुक़र्ररा वक़्त पर गवाही दी

7 और यह गवाही सुनाने के लिए मुझे मुनाद, रसूल और गैरयहूदियों का उस्ताद मुकर्रर किया ताकि उन्हें ईमान और सच्चाई का पैगाम सुनाऊँ। मैं झूट नहीं बोल रहा बल्कि सच कह रहा हूँ।

8 अब मैं चाहता हूँ कि हर मकामी जमात के मर्द मुकद्दस हाथ उठाकर दूआ करें। वह गुस्से या बहस-मुबाहसा की हालत में ऐसा न करें। 9 इसी तरह मैं चाहता हूँ कि खवातीन मुनासिब कपड़े पहनकर शराफत और शायस्तगी से अपने आपको आरास्ता करें। वह गुंथे हुए बाल, सोना, मोती या हद से ज्यादा महँगे कपड़ों से अपने आपको आरास्ता न करें 10 बल्कि नेक कामों से। क्योंकि यही ऐसी खवातीन के लिए मुनासिब है जो खुदातरस होने का दावा करती हैं। 11 खातून खामोशी से और पूरी फरमाँबरदारी के साथ सीखें। 12 मैं खवातीन को तालीम देने या आदमियों पर हुक्मत करने की इजाजत नहीं देता। वह खामोश रहें। 13 क्योंकि पहले आदम को तश्कील दिया गया, फिर हव्वा को। 14 और आदम ने इबलीस से धोका न खाया बल्कि हव्वा ने, जिसका नतीजा गुनाह था। 15 लेकिन खवातीन बच्चे जन्म देने से नजात पाएँगी। शर्त यह है कि वह समझ के साथ ईमान, मुहब्बत और मुकद्दस हालत में जिंदगी गुजारती रहें।

### 3

#### खुदा की जमात के निगरान

1 यह बात यकीनी है कि जो जमात का निगरान बनना चाहता है वह एक अच्छी जिम्मादारी की आरजू रखता है। 2 लाजिम है कि निगरान बेइलजाम हो। उस की एक ही बीवी हो। वह होशमंद, समझदार, \* शरीफ, मेहमान-नवाज और तालीम देने के काबिल हो। 3 वह शराबी न हो, न लडाका बल्कि नरमदिल और अमनपसंद। वह पैसों का लालच करनेवाला न हो। 4 लाजिम है कि वह अपने खानदान को अच्छी तरह सँभाल सके और कि उसके बच्चे शराफत के साथ उस की बात मानें। 5 क्योंकि अगर वह अपना खानदान न सँभाल सके तो वह किस तरह अल्लाह की जमात की देख-भाल कर सकेगा? 6 वह नौमुरीद न हो वरना खतरा है कि वह फूलकर इबलीस के जाल में उलझ जाए और यों उस की अदालत की जाए। 7 लाजिम है कि जमात से बाहर के लोग उस की अच्छी गवाही दे सकें, ऐसा न हो कि वह बदनाम होकर इबलीस के फंदे में फँस जाए।

#### जमात के मददगार

8 इसी तरह जमात के मददगार भी शरीफ हों। वह रियाकार न हों, न हद से ज्यादा पै पिएँ। वह लालची भी न हों। 9 लाजिम है कि वह साफ जमीर रखकर ईमान की पुरअसरार सच्चाइयाँ महफूज रखें। 10 यह भी जरूरी है कि उन्हें पहले परखा जाए। अगर वह इसके बाद बेइलजाम निकलें तो फिर वह खिदमत करें। 11 उनकी बीवियाँ भी शरीफ हों। वह बूहतान लगानेवाली न हों बल्कि होशमंद और हर बात में वफादार। 12 मददगार की एक ही बीवी हो। लाजिम है कि वह अपने बच्चों और खानदान को अच्छी तरह सँभाल सके। 13 जो मददगार अच्छी तरह अपनी खिदमत सँभालते हैं उनकी हैसियत बढ़ जाएगी और मसीह ईसा पर उनका ईमान इतना पुख्ता हो जाएगा कि वह बड़े एतमाद के साथ जिंदगी गुजार सकेंगे।

#### एक अजीम भेद

14 अगरचे मैं जल्द आपके पास आने की उम्मीद रखता हूँ तो भी आपको यह खत लिख रहा हूँ। 15 लेकिन अगर देर भी लगे तो यह पढ़कर आपको मालूम होगा कि अल्लाह के घराने में हमारा बरताव कैसा होना चाहिए। अल्लाह का घराना क्या है? जिंदा खुदा की जमात, जो सच्चाई का सतून और बुनियाद है। 16 यकीनन हमारे ईमान का भेद अजीम है।

वह जिस्म में जाहिर हुआ,

रूह में रास्तबाज ठहरा

और फरिश्तों को दिखाई दिया।

उस की गैरयहूदियों में मुनादी की गई,

उस पर दुनिया में ईमान लाया गया

और उसे आसमान के जलाल में उठा लिया गया।

### 4

#### झूटे उस्ताद

1 स्हूल-कुदूस साफ फरमाता है कि आखिरी दिनों में कुछ ईमान से हटकर फरेबदेह रूहों और शैतानी तालीमात की पैरवी करेंगे। 2 ऐसी तालीमात झूट बोलनेवालों की रियाकार बातों से आती हैं, जिनके जमीर पर इबलीस ने अपना निशान लगाकर जाहिर कर दिया है कि यह उसके अपने हैं। 3 यह शादी करने की इजाजत नहीं देते और लोगों को कहते हैं कि वह मुख्तलिफ

\* 3:2 यूनानी लफ्ज में जब्ते-नफस का उनसूर भी पाया जाता है।

खाने की चीजों से परहेज करें। लेकिन अल्लाह ने यह चीजें इसलिए बनाई हैं कि जो ईमान रखते हैं और सच्चाई से वाकिफ हैं इन्हें शुक़रगुजारी के साथ खाएँ।<sup>4</sup> जो कुछ भी अल्लाह ने खलक किया है वह अच्छा है, और हमें उसे रद्द नहीं करना चाहिए बल्कि खुदा का शुक़र करके उसे खा लेना चाहिए।<sup>5</sup> क्योंकि उसे अल्लाह के कलाम और दुआ से मखसूसो-मुक़द़स किया गया है।

### मसीह ईसा का अच्छा खादिम

<sup>6</sup> अगर आप भाइयों को यह तालीम दें तो आप मसीह ईसा के अच्छे खादिम होंगे। फिर यह साबित हो जाएगा कि आपको ईमान और उस अच्छी तालीम की सच्चाइयों में तरबियत दी गई है जिसकी पैरवी आप करते रहे हैं।<sup>7</sup> लेकिन दादी-अम्माँ की इन बेमानी फ़रज़ी कहानियों से बाज़ रहें। इनकी बजाएँ ऐसी तरबियत हासिल करें जिससे आपकी रूहानी ज़िंदगी मजबूत हो जाए।<sup>8</sup> क्योंकि जिस्म की तरबियत का थोड़ा ही फ़ायदा है, लेकिन रूहानी तरबियत हर लिहाज़ से मुफ़ीद है, इसलिए कि अगर हम इस क्रिस्म की तरबियत हासिल करें तो हमसे हाल और मुस्तक़बिल में ज़िंदगी पाने का वादा किया गया है।<sup>9</sup> यह बात काबिले-एतमाद है और इसे पूरे तौर पर कबूल करना चाहिए।<sup>10</sup> यही वजह है कि हम मेहनत-मशक्कत और जॉफ़िशानी करते रहते हैं, क्योंकि हमने अपनी उम्मीद ज़िंदा खुदा पर रखी है जो तमाम इन्सानों का नजातदाहिदा है, खासकर ईमान रखनेवालों का।

<sup>11</sup> लोगों को यह हिदायात दें और सिखाएँ।<sup>12</sup> कोई भी आपको इसलिए हकीर न जाने कि आप जवान हैं। लेकिन जरूरी है कि आप कलाम में, चाल-चलन में, मुहब्बत में, ईमान में और पाकीज़गी में ईमानदारों के लिए नमूना बन जाएँ।<sup>13</sup> जब तक मैं नहीं आता इस पर खास ध्यान दें कि जमात में बाकायदगी से कलाम की तिलावत की जाए, लोगों को नसीहत की जाए और उन्हें तालीम दी जाए।<sup>14</sup> अपनी उस नेमत को नज़रंदाज़ न करें जो आपको उस वक़्त पेशगोई के ज़रीए मिली जब बुजुर्गों ने आप पर अपने हाथ रखे।<sup>15</sup> इन बातों को फ़रोग दें और इनके पीछे लगे रहें ताकि आपकी तरक्की सबको नज़र आए।<sup>16</sup> अपना और तालीम का खास खयाल रखें। इनमें साबितक़दम रहें, क्योंकि ऐसा करने से आप अपने आपको और अपने सुननेवालों को बचा लेंगे।

## 5

### ईमानदारों से सुलूक

<sup>1</sup> बुजुर्ग भाइयों को सख़्ती से न डाँटना बल्कि उन्हें यों समझाना जिस तरह कि वह आपके बाप हों। इसी तरह जवान आदमियों को यों समझाना जैसे वह आपके भाई हों,<sup>2</sup> बुजुर्ग बहनों को यों जैसे वह आपकी माँ हों और जवान खवातीन को तमाम पाकीज़गी के साथ यों जैसे वह आपकी बहनें हों।

<sup>3</sup> उन बेवाओं की मदद करके उनकी इज़्जत करें जो वाकई ज़रूरतमंद हैं।<sup>4</sup> अगर किसी बेवा के बच्चे या पोते-नवासे हों तो उस की मदद करना उन्हीं का फ़र्ज़ है। हों, वह सीखें कि खुदातरस होने का पहला फ़र्ज़ यह है कि हम अपने घरवालों की फ़िकर करें और यों अपने माँ-बाप, दादा-दादी और नाना-नानी को वह कुछ वापस करें जो हमें उनसे मिला है, क्योंकि ऐसा अमल अल्लाह को पसंद है।<sup>5</sup> जो औरत वाकई ज़रूरतमंद बेवा और तनहा रह गई है वह अपनी उम्मीद अल्लाह पर रखकर दिन-रात अपनी इल्तिजाओ और दुआओं में लगी रहती है।<sup>6</sup> लेकिन जो बेवा ऐशो-इशरत में ज़िंदगी गुज़ारती है वह ज़िंदा हालत में ही मुरदा है।<sup>7</sup> यह हिदायात लोगों तक पहुँचाएँ ताकि उन पर इलज़ाम न लगाया जा सके।<sup>8</sup> क्योंकि अगर कोई अपनों और खासकर अपने घरवालों की फ़िकर न करे तो उसने अपने ईमान का इनकार कर दिया। ऐसा शख्स ग़ैर-ईमानदारों से बदतर है।

<sup>9</sup> जिस बेवा की उम्र 60 साल से कम है उसे बेवाओं की फ़हरिस्त में दर्ज न किया जाए। शर्त यह भी है कि जब उसका शौहर ज़िंदा था तो वह उस की वफ़ादार रही हो<sup>10</sup> और कि लोग उसके नेक कामों की अच्छी गवाही दे सकें, मसलन क्या उसने अपने बच्चों को अच्छी तरह पाला है? क्या उसने मेहमान-नवाज़ी की और मुक़द़सीन के पाँव धोकर उनकी खिदमत की है? क्या वह मुसीबत में फँसे हुआओं की मदद करती रही है? क्या वह हर नेक काम के लिए कोशिश रही है?

<sup>11</sup> लेकिन जवान बेवाएँ इस फ़हरिस्त में शामिल मत करना, क्योंकि जब उनकी जिस्मानी खाहिशात उन पर गालिब आती हैं तो वह मसीह से दूर होकर शादी करना चाहती हैं।<sup>12</sup> यों वह अपना पहला ईमान छोड़कर मुज़रिम ठहरती हैं।<sup>13</sup> इसके अलावा वह सुस्त होने और इधर उधर घरों में फिरने की आदी बन जाती हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि वह बात्नी भी बन जाती हैं और दूसरों के मामलात में दखल देकर नामुआसिब बातें करती हैं।<sup>14</sup> इसलिए मैं चाहता हूँ कि जवान बेवाएँ दुबारा शादी करके बच्चों को जन्म दें और अपने घरों को संभालें। फिर वह दुश्मन को बदगोई करने का मौका नहीं देंगी।<sup>15</sup> क्योंकि बाज़ तो सहीह राह से हटकर इबलीस के पीछे लग चुकी हैं।<sup>16</sup> लेकिन जिस ईमानदार औरत के खानदान में बेवाएँ हैं उसका फ़र्ज़ है

कि वह उनकी मदद करे ताकि वह खुदा की जमात के लिए बोझ न बनें। वरना जमात उन बेवाओं की सहीह मदद नहीं कर सकेगी जो वाकई ज़रूरतमंद हैं।

17 जो बुजुर्ग जमात को अच्छी तरह सँभालते हैं उन्हें दुगानी इज़्जत के लायक समझा जाए।\* मैं खासकर उनकी बात कर रहा हूँ जो पाक कलाम सुनाने और तालीम देने में मेहनत-मशक्कत करते हैं। 18 क्योंकि कलामे-मुकद्दस फ़रमाता है, “जब तु फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह बौंधकर न रखना।” यह भी लिखा है, “मज़दूर अपनी मज़दूरी का हक़दार है।” 19 जब किसी बुजुर्ग पर इलज़ाम लगाया जाए तो यह बात सिर्फ़ इस सूत में मानें कि दो या इससे ज़्यादा गवाह इसकी तसदीक करें। 20 लेकिन जिन्होंने वाकई गुनाह किया हो उन्हें पूरी जमात के सामने समझाएँ ताकि दूसरे ऐसी हरकतें करने से डर जाएँ।

21 अल्लाह और मसीह ईसा और उसके चुनीदा फ़रिश्तों के सामने मैं संजीदगी से ताकीद करता हूँ कि इन हिदायत की यों पैरवी करें कि आप किसी मामले से सहीह तौर पर वाकिफ़ होने से पेशतर फ़ैसला न करें, न जानिबदारी का शिकार हो जाएँ। 22 जल्दी से किसी पर हाथ रखकर उसे किसी खिदमत के लिए मख़सूस मत करना, न दूसरों के गुनाहों में शरीक होना। अपने आपको पाक रखें।

23 चूँकि आप अक़सर बीमार रहते हैं इसलिए अपने मेदे का लिहाज़ करके न सिर्फ़ पानी ही पिया करें बल्कि साथ साथ कुछ मै भी इस्तेमाल करें।

24 कुछ लोगों के गुनाह साफ़ साफ़ नज़र आते हैं, और वह उनसे पहले ही अदालत के तख़्त के सामने आ पहुँचते हैं। लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिनके गुनाह गोया उनके पीछे चलकर बाद में जाहिर होते हैं। 25 इसी तरह कुछ लोगों के अच्छे काम साफ़ नज़र आते हैं जबकि बाज़ के अच्छे काम अभी नज़र नहीं आते। लेकिन यह भी पोशीदा नहीं रहेंगे बल्कि किसी वक़्त जाहिर हो जाएंगे।

## 6

1 जो भी गुलामी के जुए में हैं वह अपने मालिकों को पूरी इज़्जत के लायक समझें ताकि लोग अल्लाह के नाम और हमारी तालीम पर कुफ़र न बनें। 2 जब मालिक ईमान लाते हैं तो गुलामों को उनकी इसलिए कम इज़्जत नहीं करना चाहिए कि वह अब मसीह में भाई हैं। बल्कि वह उनकी और ज़्यादा खिदमत करें, क्योंकि अब जो उनकी अच्छी खिदमत से फ़ायदा उठा रहे हैं वह ईमानदार और अज़ीज़ हैं।

### ग़लत तालीम और हकीकी दौलत

लाज़िम है कि आप लोगों को इन बातों की तालीम दें और इसमें उनकी हौसलाअफ़ज़ाई करें। 3 जो भी इससे फ़रक़ तालीम देकर हमारे खुदावंद ईसा मसीह के सेहतबख़्श अलफ़ाज़ और इस खुदातरस ज़िंदगी की तालीम से वाबस्ता नहीं रहता 4 वह खुदपसंदी से फ़ूला हुआ है और कुछ नहीं समझता। ऐसा शख्स बहस-मुबाहसा करने और ख़ाली बातों पर झगड़ने में ग़ैरसेहतमंद दिलचस्पी लेता है। नतीजे में हसद, झगड़े, कुफ़र और बदगुमानी पैदा होती है। 5 यह लोग आपस में झगड़ने की वजह से हमेशा कुद्वते रहते हैं। उनके ज़हन बिगड़ गए हैं और सच्चाई उनसे छीन ली गई है। हाँ, यह समझते हैं कि खुदातरस ज़िंदगी गुज़ारने से माली नफ़ा हासिल किया जा सकता है।

6 खुदातरस ज़िंदगी वाकई बहुत नफ़ा का बाइस है, लेकिन शर्त यह है कि इनसान को जो कुछ भी मिल जाए वह उस पर इक़तिया करे। 7 हम दुनिया में अपने साथ क्या लाए? कुछ नहीं! तो हम दुनिया से निकलते वक़्त क्या कुछ साथ ले जा सकेंगे? कुछ भी नहीं! 8 चुनौचे अगर हमारे पास ख़ुराक और लिबास हो तो यह हमारे लिए काफ़ी होना चाहिए। 9 जो अमीर बनने के खाहों रहते हैं वह कई तरह की आजमाइशों और फ़ंदों में फँस जाते हैं। बहुत-सी नासमझ और नुक़सानदेह खाहिशात उन्हें हलाक़त और तबाही में गरक़ हो जाने देती हैं। 10 क्योंकि पैसों का लालच हर ग़लत काम का सरचश्मा है। कई लोगों ने इसी लालच के बाइस ईमान से भटककर अपने आपको बहुत अज़ियत पहुँचाई है।

### शख़सी हिदायत

11 लेकिन आप जो अल्लाह के बंदे हैं इन चीज़ों से भागते रहें। इनकी बजाए रास्तबाज़ी, खुदातरसी, ईमान, मुहब्बत, साबितक़दमी और नरमदिली के पीछे लगे रहें। 12 ईमान की अच्छी कुशती लड़ें। अबदी ज़िंदगी से खूब लिपट जाएँ, क्योंकि अल्लाह ने आपको यही ज़िंदगी पाने के लिए बुलाया, और अपने अपनी तरफ़ से बहुत-से गवाहों के सामने इस बात का इकरार भी किया। 13 मेरे दो गवाह हैं, अल्लाह जो सब कुछ ज़िंदा रखता है और मसीह ईसा जिसने पुतियुस पीलातुस के सामने अपने ईमान की अच्छी गवाही दी। इन्ही के सामने मैं आपको कहता हूँ कि 14 यह हुक्म यों पूरा करें कि आप पर न

\* 5:17 यहाँ मतलब है कि उनकी इज़्जत खासकर माली लिहाज़ से की जाए।

दाग लगे, न इलज़ाम। और इस हुकम पर उस दिन तक अमल करते रहें जब तक हमारा खुदावंद ईसा मसीह जाहिर नहीं हो जाता। <sup>15</sup> क्योंकि अल्लाह मसीह को मुकर्ररा वक़्त पर जाहिर करेगा। हाँ, जो मुबारक और वाह़िद हुक़मरान, बादशाहों का बादशाह और मालिकों का मालिक है वह उसे मुकर्ररा वक़्त पर जाहिर करेगा। <sup>16</sup> सिर्फ़ वही लाफ़ानी है, वही ऐसी रौशनी में रहता है जिसके करीब कोई नहीं आ सकता। न किसी इन्सान ने उसे कभी देखा, न वह उसे देख सकता है। उस की इज़्जत और क़ुदरत अबद तक रहे। आमीन।

<sup>17</sup> जो मौजूदा दुनिया में अमीर हैं उन्हें समझाएँ कि वह मग़्सूर न हों, न दौलत जैसी गैरयकीनी चीज़ पर उम्मीद रखें। इसकी बजाए वह अल्लाह पर उम्मीद रखें जो हमें फ़ैयाज़ी से सब कुछ मुहैया करता है ताकि हम उससे लुफ़अंदोज़ हो जाएँ। <sup>18</sup> यह पेशे-नज़र रखकर अमीर नेक काम करें और भलाई करने में ही अमीर हों। वह खुशी से दूसरों को देने और अपनी दौलत में शरीक करने के लिए तैयार हों। <sup>19</sup> यों वह अपने लिए एक अच्छा खज़ाना जमा करेंगे यानी आनेवाले ज़हान के लिए एक ठोस बुनियाद जिस पर खड़े होकर वह हकीकी ज़िंदगी पा सकेंगे।

<sup>20</sup> तीमथियुस बेटे, जो कुछ आपके हवाले किया गया है उसे महफ़ूज़ रखें। दुनियावी बकवास और उन मुतज़ाद खयालात से कतराते रहें जिन्हें ग़लती से इल्म का नाम दिया गया है। <sup>21</sup> कुछ तो इस इल्म के माहिर होने का दावा करके ईमान की सहीह राह से हट गए हैं।

अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ रहे।

## 2 तीमथियुस

1 यह खत पौलुस की तरफ से है जो अल्लाह की मरजी से मसीह ईसा का रसूल है ताकि उस वादा की हुई जिंदगी का पैगाम सुनाए जो हमें मसीह ईसा में हासिल होती है।

2 मैं अपने प्यारे बेटे तीमथियुस को लिख रहा हूँ।

खुदा बाप और हमारा खुदावंद मसीह ईसा आपको फजल, रहम और सलामती अता करें।

### शुक्रगुजारी और हौसलाअफजाई

3 मैं आपके लिए खुदा का शुक्र करता हूँ जिसकी खिदमत मैं अपने बापदादा की तरह साफ जमीर से करता हूँ। दिन-रात मैं लगातार आपको अपनी दुआओं में याद रखता हूँ। 4 मुझे आपके आँसू याद आते हैं, और मैं आपसे मिलने का आरजूमंद हूँ ताकि खुशी से भर जाऊँ। 5 मुझे खासकर आपका मुखलिस ईमान याद है जो पहले आपकी नानी लूइस और माँ यूनीके रखती थीं। और मुझे यकीन है कि आप भी यही ईमान रखते हैं। 6 यही वजह है कि मैं आपको एक बात याद दिलाता हूँ। अल्लाह ने आपको उस वक्त एक नेमत से नवाजा जब मैंने आप पर हाथ रखे। आपको उस नेमत की आग को नए सिरे से भडकाने की जरूरत है। 7 क्योंकि जिस रूह से अल्लाह ने हमें नवाजा है वह हमें बुजदिल नहीं बनाता बल्कि हमें कुव्वत, मुहब्बत और नजमो-जब्त दिलाता है।

8 इसलिए हमारे खुदावंद के बारे में गवाही देने से न शर्माएँ, न मुझसे जो मसीह की खातिर कैदी हूँ। इसके बजाए मेरे साथ अल्लाह की कुव्वत से मदद लेकर उस की खुशखबरी की खातिर दुख उठाएँ। 9 क्योंकि उसने हमें नजात देकर मुकद्दस जिंदगी गुजारने के लिए बुलाया। और यह चीजें हमें अपनी मेहनत से नहीं मिली बल्कि अल्लाह के इरादे और फजल से। यह फजल जमानों की इब्तेदा से पहले हमें मसीह में दिया गया 10 लेकिन अब हमारे नजातदहिदा मसीह ईसा की आमद से जाहिर हुआ। मसीह ही ने मौत को नेस्त कर दिया। उसी ने अपनी खुशखबरी के जर्रीए लाफनानी जिंदगी रौशनी में लाकर हम पर जाहिर कर दी है।

11 अल्लाह ने मुझे यही खुशखबरी सुनाने के लिए मुनाद, रसूल और उस्ताद मुकर्रर किया है। 12 इसी वजह से मैं दुख उठा रहा हूँ। तो भी मैं शर्माता नहीं, क्योंकि मैं उसे जानता हूँ जिस पर मैं ईमान लाया हूँ, और मुझे पुरा यकीन है कि जो कुछ मैंने उसके हवाले कर दिया है उसे वह अपनी आमद के दिन तक महफूज रखने के काबिल है। 13 उन सेहतबख्श बातों के मुताबिक चलते रहें जो आपने मुझसे सुन ली हैं, और यों ईमान और मुहब्बत के साथ मसीह ईसा में जिंदगी गुजारें। 14 जो बेशकीमत चीज आपके हवाले कर दी गई है उसे रूहल-कुदूस की मदद से जो हममें सुकूनत करता है महफूज रखें।

15 आपको मालूम है कि सूबा आसिया में तमाम लोगों ने मुझे तर्क कर दिया है। इनमें फूगिलुस और हिरमुगिनेस भी शामिल हैं। 16 खुदावंद उनेसिफुस के घराने पर रहम करे, क्योंकि उसने कई दफा मुझे तरो-ताजा किया। हाँ, वह इससे कभी न शर्माया कि मैं कैदी हूँ। 17 बल्कि जब वह रोम शहर पहुँचा तो बड़ी कोशिशों से मेरा खोज लगाकर मुझे मिला। 18 खुदावंद करे कि वह क्रियामत के दिन खुदावंद से रहम पाए। आप खुद बेहतर जानते हैं कि उसने इफिसुस में कितनी खिदमत की।

## 2

### मसीह ईसा का वफादार सिपाही

1 लेकिन आप, मेरे बेटे, उस फजल से तकवियत पाएँ जो आपको मसीह ईसा में मिल गया है। 2 जो कुछ आपने बहुत गवाहों की मौजूदगी में मुझसे सुना है उसे मोतबर लोगों के सुपुर्द करें। यह ऐसे लोग हों जो औरों को सिखाने के काबिल हों।

3 मसीह ईसा के अच्छे सिपाही की तरह हमारे साथ दुख उठाते रहें। 4 जिस सिपाही की ड्यूटी है वह आम रिआया के मामलात में फँसे से बाज रहता है, क्योंकि वह अपने अफसर को पसंद आना चाहता है। 5 इसी तरह खेल के मुकाबले में हिस्सा लेनेवाले को सिर्फ इस सर्त में इनाम मिल सकता है कि वह कवायद के मुताबिक ही मुकाबला करे। 6 और लाजिम है कि फसल की कटाई के वक्त पहले उसको फसल का हिस्सा मिले जिसने खेत में मेहनत की है। 7 उस पर ध्यान देना जो मैं आपको बता रहा हूँ, क्योंकि खुदावंद आपको इन तमाम बातों की समझ अता करेगा।

8 मसीह ईसा को याद रखें, जो दाऊद की औलाद में से है और जिसे मुरदों में से जिंदा कर दिया गया। यही मेरी खुशखबरी है 9 जिसकी खातिर मैं दुख उठा रहा हूँ, यहाँ तक कि मुझे आम मुजरिम की तरह जंजीरों से बाँधा गया है। लेकिन अल्लाह का कलाम जंजीरों से बाँधा नहीं जा सकता। 10 इसलिए मैं सब कुछ अल्लाह के चुने हुए लोगों की खातिर बरदाश्त करता

हैं ताकि वह भी नजात पाएँ—वह नजात जो मसीह ईसा से मिलती है और जो अबदी जलाल का बाइस बनती है। 11 यह कौल काबिले-एतमाद है,

अगर हम उसके साथ मर गए

तो हम उसके साथ जिएँगे भी।

12 अगर हम बरदाशत करते रहें

तो हम उसके साथ हुकूमत भी करेंगे।

अगर हम उसे जानने से इनकार करें

तो वह भी हमें जानने से इनकार करेगा।

13 अगर हम बेवफा निकलें

तो भी वह वफादार रहेगा।

क्योंकि वह अपना इनकार नहीं कर सकता।

### काबिले-कबूल खिदमतगुजार

14 लोगों को इन बातों की याद दिलाते रहें और उन्हें संजीदगी से अल्लाह के हुजूर समझाएँ कि वह बाल की खाल उतारकर एक दूसरे से न झगड़ें। यह बेफायदा है बल्कि सुननेवालों को बिगाड़ देता है। 15 अपने आपको अल्लाह के सामने यों पेश करने की पूरी कोशिश करें कि आप मकबूल साबित हों, कि आप ऐसा मजदूर निकलें जिसे अपने काम से शर्माने की जरूरत न हो बल्कि जो सहीह तौर पर अल्लाह का सच्चा कलाम पेश करे। 16 दुनियावी बकवास से बाज़ रहें। क्योंकि जितना यह लोग इसमें फँस जायेंगे उतना ही बेदीनी का असर बढ़ेगा 17 और उनकी तालीम कैसर की तरह फैल जाएगी। इन लोगों में हुमिनयुस और फिलेतुस भी शामिल हैं 18 जो सच्चाई से हट गए हैं। यह दावा करते हैं कि मुरदों के जी उठने का अमल हो चुका है और यों बाज़ एक का ईमान तबाह हो गया है। 19 लेकिन अल्लाह की ठोस बुनियाद कायम रहती है और उस पर इन दो बातों की मुहर लगी है, “खुदावंद ने अपने लोगों को जान लिया है” और “जो भी समझे कि मैं खुदावंद का पैरोकार हूँ वह नारास्ती से बाज़ रहे।”

20 बड़े घरों में न सिर्फ सोने और चाँदी के बरतन होते हैं बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी। यानी कुछ शरीफ कामों के लिए इस्तेमाल होते हैं और कुछ कमकदर कामों के लिए। 21 अगर कोई अपने आपको इन बुरी चीजों से पाक-साफ करे तो वह शरीफ कामों के लिए इस्तेमाल होनेवाला बरतन होगा। वह मखसूसो-मुकद्दस, मालिक के लिए मुफ़ीद और हर नेक काम के लिए तैयार होगा। 22 जवानी की बुरी खाहिशत से भागकर रास्तबाजी, ईमान, मुहब्बत और सुलह-सलामती के पीछे लगे रहें। और यह उनके साथ मिलकर करें जो खुलूसदिली से खुदावंद की परस्तिश करते हैं। 23 हमाक़त और जहालत की बहमों से किनारा करें। आप तो जानते हैं कि इनसे सिर्फ झगड़े पैदा होते हैं। 24 लाज़िम है कि खुदावंद का खादिम न झगड़े बल्कि हर एक से मेहरबानी का सुलूक करे। वह तालीम देने के काबिल हो और सब्र से गलत सुलूक बरदाशत करे। 25 जो मुखालफ़त करते हैं उन्हें वह नरमदिली से तरबियत दे, क्योंकि हो सकता है कि अल्लाह उन्हें तौबा करने की तौफ़ीक दे और वह सच्चाई को जान लें, 26 होश में आएँ और इबलीस के फंदे से बच निकलें। क्योंकि इबलीस ने उन्हें कैद कर लिया है ताकि वह उस की मरज़ी पूरी करें।

## 3

### आखिरी दिन

1 लेकिन यह बात जान लें कि आखिरी दिनों में हौलनाक लमहे आएँगे। 2 लोग खुदपसंद और पैसों के लालची होंगे। वह शेखीबाज़, मग़रर, कुफ़र बकनेवाले, माँ-बाप के नाफरमान, नाशुकरे, बेदीन 3 और मुहब्बत से खाली होंगे। वह सुलह करने के लिए तैयार नहीं होंगे, दूसरों पर तोहमत लगायेंगे, ऐयाश और वहशी होंगे और भलाई से नफरत रखेंगे। 4 वह नमकहराम, गैरमुहतात और गुस्से से फूले हुए होंगे। अल्लाह से मुहब्बत रखने के बजाएँ उन्हें ऐशो-इशरत प्यारी होगी। 5 वह बजाहिर खुदातरस जिंदगी गुज़ारेंगे, लेकिन हकीकती खुदातरस जिंदगी की कुव्वत का इनकार करेंगे। ऐसों से किनारा करें। 6 उनमें से कुछ लोग घरों में घुसकर कमज़ोर खवातीन को अपने जाल में फँसा लेते हैं, ऐसी खवातीन को जो अपने गुनाहों तले दबी हुई हैं और जिनहें कई तरह की शहवतें चलाती हैं। 7 गो यह हर वक़्त तालीम हासिल करती रहती हैं तो भी सच्चाई को जानने तक कभी नहीं पहुँच सकती। 8 जिस तरह यन्नेस और यंबरेस मूसा की मुखालफ़त करते थे उसी तरह यह लोग भी सच्चाई की मुखालफ़त करते हैं। इनका ज़हन बिगडा हुआ है और इनका ईमान नामकबूल निकला। 9 लेकिन यह ज़्यादा तरक्की नहीं करेंगे क्योंकि इनकी हमाक़त सब पर जाहिर हो जाएगी, बिलकुल उसी तरह जिस तरह यन्नेस और यंबरेस के साथ भी हुआ।

### आखिरी हिदायत



10 लेकिन आप हर लिहाज से मेरे शागिर्द रहे हैं, चाल-चलन में, इरादे में, ईमान में, सब्र में, मुहब्बत में, साबितकदमी में, 11 ईजाारसानियों में और दुखों में। अंताकिया, इकुनियुम और लुस्तरा में मेरे साथ क्या कुछ न हुआ! वहाँ मुझे कितनी सख्त ईजाारसानियों का सामना करना पड़ा। लेकिन खुदावंद ने मुझे इन सबसे रिहाई दी। 12 बात यह है कि सब जो मसीह ईसा में खुदातरस जिंदगी गुजारना चाहते हैं उन्हें सताया जाएगा। 13 साथ साथ शरीर और धोकेबाज लोग अपने गलत कामों में तरक्की करते जाएंगे। वह दूसरों को गलत राह पर ले जाएंगे और उन्हें खुद भी गलत राह पर लाया जाएगा। 14 लेकिन आप खुद उस पर कायम रहें जो आपने सीख लिया और जिस पर आपको यकीन आया है। क्योंकि आप अपने उस्तादों को जानते हैं 15 और आप बचपन से मुकद्दस सहीफों से वाकिफ हैं। अल्लाह का यह कलाम आपको वह हिकमत अता कर सकता है जो मसीह ईसा पर ईमान लाने से नजात तक पहुँचाती है। 16 क्योंकि हर पाक नविशता अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है और तालीम देने, मलामत करने, इसलाह करने और रास्तबाज जिंदगी गुजारने की तरबियत देने के लिए मुफ़ीद है। 17 कलामे-मुकद्दस का मकसद यही है कि अल्लाह का बंदा हर लिहाज से काबिल और हर नेक काम के लिए तैयार हो।

#### 4

1 मैं अल्लाह और मसीह ईसा के सामने जो जिंदों और मुरदों की अदालत करेगा और उस की आमद और बादशाही की याद दिलाकर सजीदगी से इसकी ताकीद करता हूँ, 2 कि वक़्त बेवक़्त कलामे-मुकद्दस की मुनादी करने के लिए तैयार रहें। बड़े सब्र से ईमानदारों को तालीम देकर उन्हें समझाएँ, मलामत करें और उनकी हौसलाअफ़जाई भी करें। 3 क्योंकि एक वक़्त आया जब लोग सेहतबख़्श तालीम बरदाशत नहीं करेंगे बल्कि अपने पास अपनी बुरी खाहिशात से मुताबिकत रखनेवाले उस्तादों का ढेर लगा लेंगे। यह उस्ताद उन्हें सिर्फ़ दिल बहलानेवाली बातें सुनाएँगे, सिर्फ़ वह कुछ जो वह सुनना चाहते हैं। 4 वह सच्चाई को सुनने से बाज़ आकर फ़रज़ी कहानियों के पीछे पड़ जाएंगे। 5 लेकिन आप खुद हर हालत में होश में रहें। दुख को बरदाशत करें, अल्लाह की खुशख़बरी सुनाते रहें और अपनी ख़िदमत के तमाम फ़रायज़ अदा करें।

6 जहाँ तक मेरा ताल्लुक है, वह वक़्त आ चुका है कि मुझे मैं की नज़र की तरह कुरबानगाह पर उंडेला जाए। मेरे कूच का वक़्त आ गया है। 7 मैंने अच्छी कुश्ती लड़ी है, मैं दौड़ के इख़िताम तक पहुँच गया हूँ, मैंने ईमान को महफूज़ रखा है। 8 और अब एक इनाम तैयार पड़ा है, रास्तबाज़ी का वह ताज़ जो खुदावंद हमारा रास्त मुसिफ़ मुझे अपनी आमद के दिन देगा। और न सिर्फ़ मुझे बल्कि उन सबको जो उस की आमद के आरज़ूमंद रहे हैं।

#### कुछ शाख़सी बातें

9 मेरे पास आने में जल्दी करें। 10 क्योंकि देमास न इस दुनिया को प्यार करके मुझे छोड़ दिया है। वह थिस्सलुनीके चला गया। क्रैसकेंस गलतिया और तितुस दल्मतिया चले गए हैं। 11 सिर्फ़ लूका मेरे पास है। मरकुस को अपने साथ ले आना, क्योंकि वह ख़िदमत के लिए मुफ़ीद साबित होगा। 12 तुखिकुस को मैंने इफ़िसुस भेज दिया है। 13 आते वक़्त मेरा वह कोट अपने साथ ले आएँ जो मैं ब्रोआस में करपुस के पास छोड़ आया था। मेरी किताबें भी ले आएँ, खासकर चरमी कागज़वाली।

14 सिकंदर लोहार ने मुझे बहुत नुक़सान पहुँचाया है। खुदावंद उसे उसके काम का बदला देगा। 15 उससे मुहतात रहें क्योंकि उसने बड़ी शिष्ट से हमारी बातों की मुख़ालफ़त की।

16 जब मुझे पहली दफ़ा अपने दिफ़ा के लिए अदालत में पेश किया गया तो सबने मुझे तर्क कर दिया। अल्लाह उनसे इस बात का हिसाब न ले बल्कि इसे नज़रंदाज़ कर दे। 17 लेकिन खुदावंद मेरे साथ था। उसी ने मुझे तकवियत दी, क्योंकि उस की मरज़ी थी कि मेरे वसली से उसका पूरा पैगाम सुनाया जाए और तमाम ग़ैरयहूदी उसे सुनें। यों अल्लाह ने मुझे शेरबबर के मुँह से निकालकर बचा लिया। 18 और आगे भी खुदावंद मुझे हर शरीर हमले से बचाएगा और अपनी आसमानी बादशाही में लाकर नजात देगा। उसका जलाल अज़ल से अबद तक होता रहे। आमीन।

#### आखिरी सलाम

19 प्रिसकिल्ला, अकविला और उनेसिफ़ुस के घराने को हमारा सलाम कहना। 20 इरास्तुस कुरिथुस में रहा, और मुझे वृफ़िमस को मीलेतुस में छोड़ना पड़ा, क्योंकि वह बीमार था। 21 जल्दी करें ताकि सर्दियों के मौसम से पहले यहाँ पहुँचें।

यबलुस, प्रदेस, लीनुस, क्लौदिया और तमाम भाई आपको सलाम कहते हैं।

22 खुदावंद आपकी रूह के साथ हो। अल्लाह का फ़ज़ल आपको साथ होता रहे।

## तित्स

1 यह खत पौलस की तरफ से है जो अल्लाह का खादिम और ईसा मसीह का रसूल है।

मुझे चुनकर भेजा गया ताकि मैं ईमान लाने और खुदातरस जिंदगी की सच्चाई जान लेने में अल्लाह के चुने हुए लोगों की मदद करूँ। 2 क्योंकि उससे उन्हें अबदी जिंदगी की उम्मीद दिलाई जाती है, ऐसी जिंदगी की जिसका वादा अल्लाह ने दुनिया के ज़मानों से पेशतर ही किया था। और वह झूट नहीं बोलता। 3 अपने मुकर्ररा वक़्त पर अल्लाह ने अपने कलाम का एलान करके उसे जाहिर कर दिया। यही एलान मेरे सुपुर्द किया गया है और मैं इसे हमारे नजातदहिदा अल्लाह के हुक्म के मुताबिक सुनाता हूँ।

4 मैं तित्स को लिख रहा हूँ जो हमारे मुशतरका ईमान के मुताबिक मेरा हकीकी बेटा है।

खुदा बाप और हमारा नजातदहिदा मसीह ईसा आपको फ़जल और सलामती अता करें।

### क्रेते में तित्स की खिदमत

5 मैंने आपको क्रेते में इसलिए छोड़ा था कि आप वह कमियाँ दुस्त करों जो अब तक रह गई थीं। यह भी एक मकसद था कि आप हर शहर की जमात में बुजुर्ग मुकर्रर करें, जिस तरह मैंने आपको कहा था। 6 बुजुर्ग बेइलज़ाम हो। उस की सिर्फ़ एक बीवी हो। उसके बच्चे ईमानदार हों और लोग उन पर ऐयाश या सरकश होने का इलज़ाम न लगा सकें। 7 निगरान को तो अल्लाह का घराना सँभालने की जिम्मादारी दी गई है, इसलिए लाज़िम है कि वह बेइलज़ाम हो। वह खुदसर, गुसीला, शराबी, लडाका या लालची न हो। 8 इसके बजाए वह मेहमान-नवाज़ हो और सब अच्छी चीज़ों से प्यार करनेवाला हो। वह समझदार, रास्तबाज़ और मुक़द्दस हो। वह अपने आप पर काबू रख सके। 9 वह उस कलाम के साथ लिपटा रहे जो काबिले-एतमाद और हमारी तालीम के मुताबिक है। क्योंकि इस तरह ही वह सेहतबख़श तालीम देकर दूसरों की हौसलाअफ़जाई कर सकेगा और मुखालफ़त करनेवालों को समझा भी सकेगा।

10 बात यह है कि बहुत-से ऐसे लोग हैं जो सरकश हैं, जो फ़ज़ूल बातें करके दूसरों को धोका देते हैं। यह बात ख़ासकर उन पर सादिक आती है जो यहदियों में से हैं। 11 लाज़िम है कि उन्हें चुप करा दिया जाए, क्योंकि यह लालच में आकर कई लोगों के पुरे घर अपनी गलत तालीम से ख़राब कर रहे हैं। 12 उनके अपने एक नबी ने कहा है, “क्रेते के बाशिंदे हमेशा झूट बोलनेवाले, वहशी जानवर और सुस्त पेट होते हैं।” 13 उस की यह गवाही दुस्त है। इस वजह से लाज़िम है कि आप उन्हें सख्ती से समझाएँ ताकि उनका ईमान सेहतमंद रहे 14 और वह यहदी फ़रज़ी कहानियों या उन इनसानों के अहकाम पर ध्यान न दें जो सच्चाई से हट गए हैं। 15 जो लोग पाक-साफ़ हैं उनके लिए सब कुछ पाक है। लेकिन जो नापाक और ईमान से खाली हैं उनके लिए कुछ भी पाक नहीं होता बल्कि उनका जहन और उनका ज़मीर दोनों नापाक हो गए हैं। 16 यह अल्लाह को जानने का दावा तो करते हैं, लेकिन उनकी हरकतें इस बात का इनकार करती हैं। यह धिनौने, नाफरमान और कोई भी अच्छा काम करने के काबिल नहीं हैं।

## 2

### सेहतबख़श तालीम

1 लेकिन आप वह कुछ सुनाएँ जो सेहतबख़श तालीम से मुताबिकत रखता है। 2 बुजुर्ग मर्दों को बता देना कि वह होशमंद, शरीफ़ और समझदार हों। उनका ईमान, मुहब्बत और साबितकदमी सेहतमंद हों।

3 इसी तरह बुजुर्ग ख़वातीन को हिदायत देना कि वह मुक़द्दसीन की-सी जिंदगी गुज़ारें। न वह तोहमत लगाएँ न शराब की गुलाम हों। इसके बजाए वह अच्छी तालीम देने के लायक हों 4 ताकि वह जवान औरतों को समझदार जिंदगी गुज़ारने की तरबियत दे सकें, कि वह अपने शौहरों और बच्चों से मुहब्बत रखें, 5 कि वह समझदार \* और मुक़द्दस हों, कि वह घर के फ़रायज़ अदा करने में लगी रहें, कि वह नेक हों, कि वह अपने शौहरों के ताबे रहें। अगर वह ऐसी जिंदगी गुज़ारें तो वह दूसरों को अल्लाह के कलाम पर कुफ़र बकने का मौक़ा फ़राहम नहीं करेंगी।

6 इसी तरह जवान आदमियों की हौसलाअफ़जाई करें कि वह हर लिहाज़ से समझदार जिंदगी गुज़ारें। 7 आप खुद नेक काम करने में उनके लिए नमूना बनें। तालीम देते वक़्त आपकी खुलूसदिली, शराफ़त 8 और अलफ़ाज़ की बेइलज़ाम सेहत साफ़ नज़र आए। फिर आपके मुखालिफ़ शरमिदा हो जाएंगे, क्योंकि वह हमारे बारे में कोई बुरी बात नहीं कह सकेंगे।

\* 2:5 यूनानी लफ़ज़ में ज़न्ने-नफ़स का उन्सू भी पाया जाता है।

9 गुलामों को कह देना कि वह हर लिहाज से अपने मालिकों के ताबे रहें। वह उन्हें पसंद आएँ, बहस-मुबाहसा किए बगैर उनकी बात मानें 10 और उनकी चीजें चोरी न करें बल्कि साबित करें कि उन पर हर तरह का एतमाद किया जा सकता है। क्योंकि इस तरीके से वह हमारे नजातदहिदा अल्लाह के बारे में तालीम को हर तरह से दिलकश बना देंगे।

11 क्योंकि अल्लाह का नजातबख्श फ़जल तमाम इनसानों पर जाहिर हुआ है। 12 और यह फ़जल हमें तरबियत देकर इस काबिल बना देता है कि हम बेदीनी और दुनियावी खाहिशात का इनकार करके इस दुनिया में समझदार, रास्तबाज़ और खुदातरस जिंदगी गुज़ार सकें। 13 साथ साथ यह तरबियत उस मुबारक दिन का इंतज़ार करने में हमारी मदद करती है जिसकी उम्मीद हम रखते हैं और जब हमारे अज़ीम खुदा और नजातदहिदा ईसा मसीह का जलाल जाहिर हो जाएगा। 14 क्योंकि मसीह ने हमारे लिए अपनी जान दे दी ताकि फ़िघा देकर हमें हर तरह की बेदीनी से छुड़ाकर अपने लिए एक पाक और माख़सस क़ौम बनाए जो नेक काम करने में सरग़रम हो।

15 इन्हीं बातों की तालीम देकर पूरे इख़्तियार के साथ लोगों को समझाएँ और उनकी इसलाह करें। कोई भी आपको हक़ीर न जाने।

### 3

#### मसीही क़िरदार

1 उन्हें याद दिलाना कि वह हुक़मरानों और इख़्तियारवालों के ताबे और फ़रमाँबरदार रहें। वह हर नेक काम करने के लिए तैयार रहें, 2 किसी पर तोहमत न लगाएँ, अमनपसंद और नरमदिल हों और तमाम लोगों के साथ नरममिज़ाज़ी से पेश आएँ। 3 क्योंकि एक वक़्त था जब हम भी नासमझ, नाफ़रमान और सहीह राह से भटके हुए थे। उस वक़्त हम कई तरह की शहवतों और ग़लत खाहिशों की गुलामी में थे। हम बुरे कामों और हसद करने में जिंदगी गुज़ारते थे। दूसरे हमसे नफ़रत करते थे और हम भी उनसे नफ़रत करते थे। 4 लेकिन जब हमारे नजातदहिदा अल्लाह की मेहरबानी और मुहब्बत जाहिर हुई 5 तो उसने हमें बचाया। यह नहीं कि हमने रास्त काम करने के बाइस नजात हासिल की बल्कि उसके रहम ही ने हमें रूहल-कुदूस के वसिले से बचाया जिसने हमें धोकर नए सिरे से जन्म दिया और नई जिंदगी अता की। 6 अल्लाह ने अपने इस रूह को बर्डी फ़ैयाज़ी से हमारे नजातदहिदा ईसा मसीह के वसिले से हम पर उंडेल दिया 7 ताकि हमें उसके फ़जल से रास्तबाज़ करार दिया जाए और हम उस अबदी जिंदगी के वारिस बन जाएँ जिसकी उम्मीद हम रखते हैं। 8 इस बात पर पूरा एतमाद किया जा सकता है।

मैं चाहता हूँ कि आप इन बातों पर खास जोर दें ताकि जो अल्लाह पर ईमान लाए हैं वह ध्यान से नेक काम करने में लगे रहें। यह बातें सबके लिए अच्छी और मुफ़ीद हैं। 9 लेकिन बेहदा बहसों, नसबनामों, झगड़ों और शरीअत के बारे में तनाज़ों से बाज़ रहें, क्योंकि ऐसा करना बेफ़ायदा और फ़ज़ूल है। 10 जो शख्स पार्टीबाज़ है उसे दो बार समझाएँ। अगर वह इसके बाद भी न माने तो उसे रिफ़ाक़त से ख़ारिज करें। 11 क्योंकि आपको पता होगा कि ऐसा शख्स ग़लत राह पर है और गुनाह में फँसा हुआ होता है। उसने अपनी हरकतों से अपने आपको मुज़रिम ठहराया है।

#### आखिरी हिदायात

12 जब मैं अरतिमास या तुख़िक़ूस को आपके पास भेज दूँगा तो मेरे पास आने में जल्दी करें। मैं नीकुपुलिस शहर में हूँ, क्योंकि मैंने फ़ैसला कर लिया है कि सर्दियों का मौसम यहाँ गुज़ाएँ। 13 जब ज़ेनास वकील और अपुल्लोस सफ़र की तैयारियाँ कर रहे हैं तो उनकी मदद करें। ख़याल रखें कि उनकी हर ज़रूरत पूरी की जाए। 14 लाज़िम है कि हमारे लोग नेक काम करने में लगे रहना सीखें, खासकर जहाँ बहुत ज़रूरत है, ऐसा न हो कि आखिरकार वह बेफ़ल निकलें। 15 सब जो मेरे साथ हैं आपको सलाम कहते हैं। उन्हें मेरा सलाम देना जो ईमान में हमसे मुहब्बत रखते हैं।

अल्लाह का फ़जल आप सबके साथ होता रहे।

## फिलेमोन

1 यह खत मसीह ईसा के कैदी पौलस और तीमुथियुस की तरफ से है।

मैं अपने अजीज दोस्त और हमखिदमत फिलेमोन को लिख रहा हूँ<sup>2</sup> और साथ साथ अपनी बहन अफ्रिया, अपने हमसिपाह अरखिप्पुस और उस जमात को जो आपके घर में जमा होती है।

3 खुदा हमारा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फजल और सलामती अता करें।

### फिलेमोन की मुहब्बत और ईमान

4 जब भी मैं दुआ करता हूँ तो आपको याद करके अपने खुदा का शुक़ करता हूँ।<sup>5</sup> क्योंकि मुझे खुदावंद ईसा के बारे में आपके ईमान और आपकी तमाम मुकद्दसीन से मुहब्बत की खबर मिलती रहती है।<sup>6</sup> मेरी दुआ है कि आपकी जो रिफ़ाक़त ईमान से पैदा हुई है वह आपमें यों जोर पकड़े कि आपको बेहतर तौर पर हर उस अच्छी चीज़ की समझ आए जो हमें मसीह में हासिल है।<sup>7</sup> भाई, आपकी मुहब्बत देखकर मुझे बड़ी खुशी और तसल्ली हुई है, क्योंकि आपने मुकद्दसीन के दिलों को तरो-ताज़ा कर दिया है।

### उनेसिमस की सिफारिश

8 इस वजह से मैं मसीह में इतनी दिलेरी महसूस करता हूँ कि आपको वह कुछ करने का हुक्म दूँ जो अब मुनासिब है।<sup>9</sup> तो भी मैं ऐसा नहीं करना चाहता बल्कि मुहब्बत की बिना पर आपसे अपील ही करता हूँ। गो मैं पौलस मसीह ईसा का एलची बल्कि अब उसका कैदी भी हूँ<sup>10</sup> तो भी भिन्नत करके अपने बेटे उनेसिमस की सिफारिश करता हूँ। क्योंकि मेरे कैद में होते हुए वह मेरा बेटा बन गया।<sup>11</sup> पहले तो वह आपके काम नहीं आ सकता था, लेकिन अब वह आपके लिए और मेरे लिए काफी मुफ़ीद साबित हुआ है। \*

12 अब मैं इसको गोया अपनी जान को आपके पास वापस भेज रहा हूँ।<sup>13</sup> असल में मैं उसे अपने पास रखना चाहता था ताकि जब तक मैं खुशखबरी की खातिर कैद में हूँ वह आपकी जगह मेरी खिदमत करे।<sup>14</sup> लेकिन मैं आपकी इजाज़त के बौर कुछ नहीं करना चाहता था। क्योंकि मैं चाहता हूँ कि जो भी मेहरबानी आप करेंगे वह आप मजबूर होकर न करें बल्कि खुशी से।

15 हो सकता है कि उनेसिमस इसलिए कुछ देर के लिए आपसे जुदा हो गया कि वह आपको हमेशा के लिए दुबारा मिल जाए।<sup>16</sup> क्योंकि अब वह न सिर्फ़ गुलाम है बल्कि गुलाम से कहीं ज्यादा। अब वह एक अजीज भाई है जो मुझे खास अजीज है। लेकिन वह आपको कहीं ज्यादा अजीज होगा, गुलाम की हैसियत से भी और खुदावंद में भाई की हैसियत से भी।

17 गरज़, अगर आप मुझे अपना साथी समझें तो उसे यों खुशआमदीद कहें जैसे मैं खुद आकर हाज़िर होता।<sup>18</sup> अगर उसने आपको कोई नुक़सान पहुँचाया या आपका कर्ज़दार हुआ तो मैं इसका मुआवज़ा देने के लिए तैयार हूँ।<sup>19</sup> यहाँ मैं पौलस अपने ही हाथ से इस बात की तसदीक करता हूँ : मैं इसका मुआवज़ा दूँगा अगरचे मुझे आपको याद दिलाने की ज़रूरत नहीं करे कि आप खुद मेरे कर्ज़दार हैं। क्योंकि मेरा कर्ज़ जो आप पर है वह आप खुद है।<sup>20</sup> चुनौचे मेरे भाई, मुझ पर यह मेहरबानी करें कि मुझे खुदावंद में आपसे कुछ फ़ायदा मिले। मसीह में मेरी जान को ताज़ा करें।

21 मैं आपकी फ़रमौबर्दारी पर एतबार करके आपको यह लिख रहा हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप न सिर्फ़ मेरी सुनेगे बल्कि इससे कहीं ज्यादा मेरे लिए करेंगे।<sup>22</sup> एक और गुज़ारिश भी है, मेरे लिए एक कमरा तैयार करें, क्योंकि मुझे उम्मीद है कि आपकी दुआओं के जवाब में मुझे आपको वापस दिया जाएगा।

### आखिरी सलाम

23 इफ़्रास जो मसीह ईसा में मेरे साथ कैदी है आपको सलाम कहता है।<sup>24</sup> इसी तरह मरकुस, अरिस्तरखुस, देमास और लूका भी आपको सलाम कहते हैं।

25 खुदावंद ईसा का फ़जल आप सबके साथ होता रहे।

\* 1:11 उनेसिमस का मतलब कारामद, फ़ायदामंद है।

## इबरानियों

अल्लाह का अपने फ़रज़ंद के ज़रीए कलाम

1 माज़ी में अल्लाह मुख़लिफ़ मौकों पर और कई तरीकों से हमारे बापदादा से हमकलाम हुआ। उस वक़्त उसने यह नबियों के वसीले से किया <sup>2</sup> लेकिन इन आखिरी दिनों में वह अपने फ़रज़ंद के वसीले से हमसे हमकलाम हुआ, उसी के वसीले से जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस बना दिया और जिसके वसीले से उसने कायनात को भी खलक किया। <sup>3</sup> फ़रज़ंद अल्लाह का शानदार जलाल मुनअकिस करता और उस की जात की ऐन शबीह \* है। वह अपने कवी कलाम से सब कुछ सँभाले रखता है। जब वह दुनिया में था तो उसने हमारे लिए गुनाहों से पाक-साफ़ हो जाने का इंतज़ाम कायम किया। इसके बाद वह आसमान पर कादिरे-मुतलक के दहने हाथ जा बैठा।

अल्लाह के फ़रज़ंद की अज़मत

4 फ़रज़ंद फ़रिशतों से कही अज़ीम है, इतना जितना उसका मीरास में पाया हुआ नाम उनके नामों से अज़ीम है। <sup>5</sup> क्योंकि अल्लाह ने किस फ़रिशते से कभी कहा,

“तू मेरा फ़रज़ंद है,

आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।”

यह भी उसने किसी फ़रिशते के बारे में कभी नहीं कहा,

“मैं उसका बाप हूँगा

और वह मेरा फ़रज़ंद होगा।”

6 और जब अल्लाह अपने पहलौठे फ़रज़ंद को आसमानी दुनिया में लाता है तो वह फ़रमाता है,

“अल्लाह के तमाम फ़रिशते उस की परस्तिश करें।”

7 फ़रिशतों के बारे में वह फ़रमाता है,

“वह अपने फ़रिशतों को हवाएँ

और अपने खादिमों को आग के शोले बना देता है।”

8 लेकिन फ़रज़ंद के बारे में वह कहता है,

“ऐ ख़ुदा, तेरा तख़्त अज़ल से अबद तक कायमो-दायम रहेगा,

और इनसाफ़ का शाही असा तेरी बादशाही पर हुकूमत करेगा।

9 तूने रास्तबाज़ी से मुहब्बत

और बेदीनी से नफ़रत की,

इसलिए अल्लाह तेरे ख़ुदा ने तुझे ख़ुशी के तेल से मसह करके

तुझे तेरे साथियों से कहीं ज्यादा सरफ़राज़ कर दिया।”

10 वह यह भी फ़रमाता है,

“ऐ रब, तूने इब्तिदा में दुनिया की बुनियाद रखी,

और तेरे ही हाथों ने आसमानों को बनाया।

11 यह तो तबाह हो जाएँगे,

लेकिन तू कायम रहेगा।

यह सब लिबास की तरह घिस फट जाएँगे

12 और तू इन्हें चादर की तरह लपेटेगा,

पुराने कपड़े की तरह यह बदले जाएँगे।

लेकिन तू वही का वही रहता है,

और तेरी ज़िंदगी कभी ख़त्म नहीं होती।”

13 अल्लाह ने कभी भी अपने किसी फ़रिशते से यह बात न कही,

“मेरे दहने हाथ बैठ,

जब तक मैं तेरे दुश्मनों को

\* 1:3 या नक़श।

तेरे पाँवों की चौकी न बना दूँ।”

14 फिर फरिश्ते क्या हैं? वह तो सब खिदमतगुजार रूहें हैं जिन्हें अल्लाह उनकी खिदमत करने के लिए भेज देता है जिन्हें मीरास में नजात पानी है।

## 2

### नजात की अजमत

1 इसलिए लाज़िम है कि हम और ज्यादा ध्यान से कलामे-मुकद्दस की उन बातों पर गौर करें जो हमने सुन ली हैं। ऐसा न हो कि हम समुंदर पर बेकाबू कश्ती की तरह बेमकसद इधर उधर फिरें।<sup>2</sup> जो कलाम फरिश्तों ने इनसान तक पहुँचाया वह तो अनमिट रहा, और जिससे भी कोई खता या नाफरमानी हुई उसे उस की मुनासिब सज़ा मिली।<sup>3</sup> तो फिर हम किस तरह अल्लाह के गज़ब से बच सकेंगे अगर हम मसीह की इतनी अज़ीम नजात को नज़रंदाज़ करें? पहले खुदावंद ने खुद इस नजात का एलान किया, और फिर ऐसे लोगों ने हमारे पास आकर इसकी तसदीक की जिन्होंने उसे सुन लिया था।<sup>4</sup> साथ साथ अल्लाह ने इस बात की इस तरह तसदीक भी की कि उसने अपनी मरजी के मुताबिक इलाही निशान, मोजिजे और मुख्तलिफ़ क्रिस्म के ज़ोरदार काम दिखाए और रूहल-कुद्स की नेमतें लोगों में तकसीम की।

### मसीह का नजातबख़्श काम

5 अब ऐसा है कि अल्लाह ने मज़क़ूरा आनेवाली दुनिया को फरिश्तों के ताबे नहीं किया।<sup>6</sup> क्योंकि कलामे-मुकद्दस में किसी ने कहीं यह गवाही दी है,

“इनसान कौन है कि तू उसे याद करे

या आदमज़ाद कि तू उसका खयाल रखे?

7 तूने उसे थोड़ी देर के लिए फरिश्तों से कम कर दिया,

तूने उसे जलाल और इज़ज़त का ताज़ पहनाकर

8 सब कुछ उसके पाँवों के नीचे कर दिया।”

जब लिखा है कि सब कुछ उसके पाँवों तले कर दिया गया तो इसका मतलब है कि कोई चीज़ न रही जो उसके ताबे नहीं है। बेशक हमें हाल में यह बात नज़र नहीं आती कि सब कुछ उसके ताबे है,<sup>9</sup> लेकिन हम उसे ज़रूर देखते हैं जो “थोड़ी देर के लिए फरिश्तों से कम” था यानी ईसा को जिसे उस की मौत तक के दुख की वजह से “जलाल और इज़ज़त का ताज़” पहनाया गया है। हाँ, अल्लाह के फ़ज़ल से उसने सबकी खातिर मौत बरदाश्त की।<sup>10</sup> क्योंकि यही मुनासिब था कि अल्लाह जिसके लिए और जिसके वसीले से सब कुछ है यों बहुत-से बेटों को अपने जलाल में शरीक करे कि वह उनकी नजात के बानी ईसा को दुख उठाने से कामिलियत तक पहुँचाए।

11 ईसा और वह जिन्हें वह मख़ससो-मुकद्दस कर देता है दोनों का एक ही बाप है। यही वजह है कि ईसा यह कहने से नहीं शर्माता कि मुकद्दसीन मेरे भाई हैं।<sup>12</sup> मसलान वह अल्लाह से कहता है,

“मैं अपने भाइयों के सामने तेरे नाम का एलान करूँगा,

जमात के दरमियान ही तेरी मद्दहसराई करूँगा।”

13 वह यह भी कहता है, “मैं उस पर भरोसा रखूँगा।” और फिर “मैं हाज़िर हूँ, मैं और वह बच्चे जो अल्लाह ने मुझे दिए हैं।”

14 अब चूँकि यह बच्चे गोश्त-पोस्त और खून के इनसान हैं इसलिए ईसा खुद उनकी मानिंद बन गया और उनकी इनसानी फ़िरतर में शरीक हुआ। क्योंकि इस तरह ही वह अपनी मौत से मौत के मालिक इबलीस को तबाह कर सका,<sup>15</sup> और इस तरह ही वह उन्हें छुड़ा सका जो मौत से डरने की वजह से ज़िंदगी-भर गुलामी में थे।<sup>16</sup> ज़ाहिर है कि जिनकी मदद वह करता है वह फरिश्ते नहीं हैं बल्कि इब्राहीम की औलाद।<sup>17</sup> इसलिए लाज़िम था कि वह हर लिहाज़ से अपने भाइयों की मानिंद बन जाए। सिर्फ़ इससे उसका यह मकसद पूरा हो सका कि वह अल्लाह के हज़ूर एक रहींम और वफ़ादार इमामे-आज़म बनकर लोगों के गुनाहों का कफ़फ़ारा दे सके।<sup>18</sup> और अब वह उनकी मदद कर सकता है जो आजमाइश में उलझे हुए हैं, क्योंकि उस की भी आजमाइश हुई और उसने खुद दुख उठाया है।

## 3

ईसा मूसा से बड़ा है

1 मुकद्दस भाइयो, जो मेरे साथ अल्लाह के बुलाए हुए हैं! ईसा पर गौरो-खोज़ करते रहें जो अल्लाह का पैगंबर और इमामे-आज़म है और जिसका हम इकरार करते हैं। 2 ईसा अल्लाह का वफ़ादार रहा जब उसने उसे यह काम करने के लिए मुक़र्रर किया, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह मूसा भी वफ़ादार रहा जब अल्लाह का पूरा घर उसके सुपर्द किया गया। 3 अब जो किसी घर को तामीर करता है उसे घर की निसबत ज्यादा इज़ज़त हासिल होती है। इसी तरह ईसा मूसा की निसबत ज्यादा इज़ज़त के लायक है। 4 क्योंकि हर घर को किसी ने किसी ने बनाया होता है, जबकि अल्लाह ने सब कुछ बनाया है। 5 मूसा तो अल्लाह के पूरे घर में खिदमत करते वक़्त वफ़ादार रहा, लेकिन मुलाज़िम की हैसियत से ताकि कलामे-मुक़द्दस की आनेवाली बातों की गवाही देता रहे। 6 मसीह फ़रक है। उसे फ़रज़ंद की हैसियत से अल्लाह के घर पर इख़्तियार है और इसी में वह वफ़ादार है। हम उसका घर है बशर्तकि हम अपनी दिलेरी और वह उम्मीद कायम रखें जिस पर हम फ़ख़र करते हैं।

अल्लाह की कौम के लिए सुकून

7 चुनाँचे जिस तरह रूहल-कुदस फ़रमाता है,

“अगर तू आज अल्लाह की आवाज़ सुनो

8 तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह बगावत के दिन हुआ,

जब तुम्हारे बापदादा ने रेगिस्तान में मुझे आजमाया।

9 वहाँ उन्होंने मुझे आजमाया और जौंचा,

हालाँकि उन्होंने चालीस साल के दौरान मेरे काम देख लिए थे।

10 इसलिए मुझे उस नसल पर गुस्सा आया और मैं बोला,

‘उनके दिल हमेशा सहीह राह से हट जाते हैं

और वह मेरी राहें नहीं जानते।’

11 अपने गज़ब में मैंने कसम खाई,

‘यह कभी उस मुल्क में दाखिल नहीं होंगे

जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।’”

12 भाइयो, खबरदार रहें ताकि आपमें से किसी का दिल बुराई और कुफ़र से भरकर जिंदा खुदा से बरग़रत न हो जाए।

13 इसके बजाए जब तक अल्लाह का यह फ़रमान कायम है रोज़ाना एक दूसरे की हौसलाअफ़ज़ाई करें ताकि आपमें से कोई भी गुनाह के फ़रेब में आकर सख़्तदिल न हो। 14 बात यह है कि हम मसीह के शरीके-कार बन गए हैं। लेकिन इस शर्त पर कि हम आखिर तक वह एतमाद मज़बूती से कायम रखें जो हम आगाज़ में रखते थे।

15 मज़क़ूरा कलाम में लिखा है,

“अगर तू आज अल्लाह की आवाज़ सुनो,

तो अपने दिलों को सख़्त न करो जिस तरह बगावत के दिन हुआ।”

16 यह कौन थे जो अल्लाह की आवाज़ सुनकर बागी हो गए? वह सब जिन्हें मूसा मिसर से निकालकर बाहर लाया।

17 और यह कौन थे जिनसे अल्लाह चालीस साल के दौरान नाराज़ रहा? यह वही थे जिन्होंने गुनाह किया और जो रेगिस्तान में मरकर वहाँ पड़े रहे। 18 अल्लाह ने किनकी बाबत कसम खाई कि “यह कभी भी उस मुल्क में दाखिल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून देता”? जाहिर है उनकी बाबत जिन्होंने नाफ़रमानी की थी। 19 चुनाँचे हम देखते हैं कि वह ईमान न रखने की वजह से मुल्क में दाखिल न हो सके।

## 4

1 देखें, अब तक अल्लाह का यह वादा कायम है, और अब तक हम सुकून के मुल्क में दाखिल हो सकते हैं। इसलिए आँ, हम खबरदार रहें। ऐसा न हो कि आपमें से कोई पीछे रहकर उसमें दाखिल न होने पाए। 2 क्योंकि हमें भी उनकी तरह एक ख़शख़बरी सुनाई गई। लेकिन यह पैगाम उनके लिए बेफ़ायदा था, क्योंकि वह उसे सुनकर ईमान न लाए। 3 उनकी निसबत हम जो ईमान लाए हैं सुकून के इस मुल्क में दाखिल हो सकते हैं।

गरज़, यह ऐसा ही है जिस तरह अल्लाह ने फ़रमाया,

“अपने गज़ब में मैंने कसम खाई,

‘यह कभी उस मुल्क में दाखिल नहीं होंगे

जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।’”

अब गौर करें कि उसने यह कहा अगरचे उसका काम दुनिया की तख़लीक़ पर इख़िताम तक पहुँच गया था। 4 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस में सातवें दिन के बारे में लिखा है, “सातवें दिन अल्लाह का सारा काम तकमील तक पहुँच गया। इससे फ़ारिग़ होकर उसने आराम किया।” 5 अब इसका मुकाबला मज़क़ूरा आयत से करें,

“यह कभी उस मुल्क में दाखिल नहीं होंगे जहाँ मैं उन्हें सुकून देता।”

6 जिन्होंने पहले अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनी उन्हें नाफ़रमान होने की वजह से यह सुकून न मिला। तो भी यह बात कायम रही कि कुछ तो सुकून के इस मुल्क में दाखिल हो जाएंगे। 7 यह मद्दे-नज़र रखकर अल्लाह ने एक और दिन मुक़र्रर किया, मज़क़ूरा “आज” का दिन। कई सालों के बाद ही उसने दाऊद की मारिफ़त वह बात की जिस पर हम गौर कर रहे हैं,

“अगर तुम आज अल्लाह की आवाज़ सुनो तो अपने दिलों को सख़्त न करो।”

8 जब यशुअ उन्हें मुल्के-कनान में लाया तब उसने इसराईलियों को यह सुकून न दिया, वरना अल्लाह इसके बाद के किसी और दिन का ज़िक्र न करता। 9 चुनौचे अल्लाह की क़ौम के लिए एक ख़ास सुकून बाक़ी रह गया है, ऐसा सुकून जो अल्लाह के सातवें दिन आराम करने से मुताबिक़त रखता है। 10 क्योंकि जो भी वह सुकून पाता है जिसका वादा अल्लाह ने किया वह अल्लाह की तरह अपने कामों से फ़ारिग़ होकर आराम करेगा। 11 इसलिए आँ, हम इस सुकून में दाखिल होने की पूरी कोशिश करें ताकि हममें से कोई भी बापदादा के नाफ़रमान नमूने पर चलकर गुनाह में न गिर जाए।

12 क्योंकि अल्लाह का कलाम ज़िंदा, मुअस्सिर और हर दोधारी तलवार से ज़्यादा तेज़ है। वह इनसान में से गुज़रकर उस की जान रूह से और उसके जोड़ों को गूदे से अलग कर लेता है। वही दिल के खयालात और सोच को ज़ाँचकर उन पर फ़ैसला करने के क़ाबिल है। 13 कोई मख़लक़ भी अल्लाह की नज़र से नहीं छुप सकती। उस की आँखों के सामने जिसके जवाबदेह हम होते हैं सब कुछ अयों और बेनिकाब है।

### ईसा हमारा इमामे-आज़म है

14 गरज़ आँ, हम उस इमान से लिपटे रहे जिसका इकरार हम करते हैं। क्योंकि हमारा ऐसा अज़ीम इमामे-आज़म है जो आसमानों में से गुज़र गया यानी ईसा अल्लाह का फ़रज़द। 15 और वह ऐसा इमामे-आज़म नहीं है जो हमारी कमज़ोरियों को देखकर हमददीं न दिखाए बल्कि अगरचे वह बेगुनाह रहा तो भी हमारी तरह उसे हर किस्म की आजमाइश का सामना करना पड़ा। 16 अब आँ, हम पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के तख़्त के सामने हाज़िर हो जाएँ जहाँ फ़ज़ल पाया जाता है। क्योंकि वही हम वह रहम और फ़ज़ल पाएँगे जो ज़रूरत के वक़्त हमारी मदद कर सकता है।

## 5

1 अब इनसानों में से चुने गए इमामे-आज़म को इसलिए मुक़र्रर किया जाता है कि वह उनकी खातिर अल्लाह की खिदमत करे, ताकि वह गुनाहों के लिए नज़राने और क़ुरबानियाँ पेश करे। 2 वह जाहिल और आबारा लोगों के साथ नरम सुल्क रख सकता है, क्योंकि वह खुद कई तरह की कमज़ोरियों की गिरिफ़्त में होता है। 3 यही वजह है कि उसे न सिर्फ़ क़ौम के गुनाहों के लिए बल्कि अपने गुनाहों के लिए भी क़ुरबानियाँ चढ़ानी पड़ती हैं। 4 और कोई अपनी मरज़ी से इमामे-आज़म का पुरवकार ओहदा नहीं अपना सकता बल्कि लाज़िम है कि अल्लाह उसे हास्न की तरह बुलाकर मुक़र्रर करे।

5 इसी तरह मसीह ने भी अपनी मरज़ी से इमामे-आज़म का पुरवकार ओहदा नहीं अपनाया। इसके बजाए अल्लाह ने उससे कहा,

“तू मेरा फ़रज़द है,  
आज मैं तेरा बाप बन गया हूँ।”

6 कहीं और वह फ़रमाता है,  
“तू अबद तक इमाम है,  
ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क था।”

7 जब ईसा इस दुनिया में था तो उसने जोर जोर से पुकारकर और आँसू बहा बहाकर उसे दुआँ और इत्तिजाँ पेश की \* जो उसे मौत से बचा सकता था। और अल्लाह ने उस की सुनी, क्योंकि वह खुदा का ख़ौफ़ रखता था। 8 वह अल्लाह का फ़रज़द तो था, तो भी उसने दुख उठाने से फ़रमाँबरदारी सीखी। 9 जब वह कामिलियत तक पहुँच गया तो वह उन सबकी अबदी नज़ात का सरचश्मा बन गया जो उस की सुन्ते हैं। 10 उस वक़्त अल्लाह ने उसे इमामे-आज़म भी मुतैयिन किया, ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क था।

### इमान तर्क करने की बाबत आगाही

\* 5:7 यानी इमाम की हैसियत से उसने यह दुआँ और इत्तिजाँ क़ुरबानी के तौर पर पेश की।



11 इसके बारे में हम मज्जीद बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन हम मुश्किल से इसकी तशरीह कर सकते हैं, क्योंकि आप सुनने में सुस्त हैं। 12 असल में इतना वक्त गुजर गया है कि अब आपको खुद उस्ताद होना चाहिए। अफसोस कि ऐसा नहीं है बल्कि आपको इसकी ज़रूरत है कि कोई आपके पास आकर आपको अल्लाह के कलाम की बुनियादी सच्चाइयाँ दुबारा सिखाए। आप अब तक ठोस खाना नहीं खा सकते बल्कि आपको दूध की ज़रूरत है। 13 जो दूध ही पी सकता है वह अभी छोटा बच्चा ही है और वह रास्तबाज़ी की तालीम से नावाकिफ़ है। 14 इसके मुकाबले में ठोस खाना बालियों के लिए है जिन्होंने अपनी बलूत के बाइस अपनी रूहानी बसारात को इतनी तरबियत दी है कि वह भलाई और बुराई में इन्तियाज़ कर सकते हैं।

## 6

1 इसलिए आँ, हम मसीह के बारे में बुनियादी तालीम को छोड़कर बलूत की तरफ़ आगे बढ़ें। क्योंकि ऐसी बातें दोहराने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए जिनसे ईमान की बुनियाद रखी जाती है, मसलन मौत तक पहुँचानेवाले काम से तौबा, 2 बपतिस्मा क्या है, किसी पर हाथ रखने की तालीम, मुरदों के जी उठने और अबदी सज़ा पाने की तालीम। 3 चुनौतें अल्लाह की मरज़ी हुई तो हम यह छोड़कर आगे बढ़ेंगे।

4 नामुमकिन है कि उन्हें बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाया जाए जिन्होंने अपना ईमान तर्क कर दिया हो। उन्हें तो एक बार अल्लाह के नूर में लाया गया था, उन्होंने आसमान की नेमत चख ली थी, वह रूहल-कुदूस में शरीक हुए, 5 उन्होंने अल्लाह के कलाम की भलाई और आनेवाले ज़माने की कुव्वतों का तजरबा किया था। 6 और फिर उन्होंने अपना ईमान तर्क कर दिया! ऐसे लोगों को बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाना नामुमकिन है। क्योंकि ऐसा करने से वह अल्लाह के फ़रज़द को दुबारा मसलूब करके उसे लान-तान का निशाना बना देते हैं।

7 अल्लाह उस ज़मीन को बरकत देता है जो अपने पर बार बार पड़नेवाली बारिश को जज़ब करके ऐसी फ़सल पैदा करती है जो खेतीबाड़ी करनेवाले के लिए मुफ़ीद हो। 8 लेकिन अगर वह सिर्फ़ ख़ारदार पौदे और ऊँटकटोरे पैदा करे तो वह बेकार है और इस ख़तरे में है कि उस पर लानत भेजी जाए। अंजामे-कार उस पर का सब कुछ जलाया जाएगा।

9 अज़ीज़ो, गो हम इस तरह की बातों कर रहे हैं तो भी हमारा एतमाद यह है कि आपको वह बेहतरीन बरकतें हासिल हैं जो नजात से मिलती हैं। 10 क्योंकि अल्लाह बेइन्साफ़ नहीं है। वह आपका काम और वह मुहब्बत नहीं भूलेगा जो आपने उसका नाम लेकर जाहिर की जब आपने मुक़द्सीन की ख़िदमत की बल्कि आज तक कर रहे हैं। 11 लेकिन हमारी बड़ी खाहिश यह है कि आपमें से हर एक इसी सरगरमी का इज़हार आख़िर तक करता रहे ताकि जिन बातों की उम्मीद आप रखते हैं वह वाक़ई पूरी हो जाएँ। 12 हम नहीं चाहते कि आप सुस्त हो जाएँ बल्कि यह कि आप उनके नम्ने पर चलें जो ईमान और सब्र से वह कुछ मीरास में पा रहे हैं जिसका वादा अल्लाह ने किया है।

### अल्लाह का यक़ीनी वादा

13 जब अल्लाह ने क़सम खाकर इब्राहीम से वादा किया तो उसने अपनी ही क़सम खाकर यह वादा किया। क्योंकि कोई और नहीं था जो उससे बड़ा था जिसकी क़सम वह खा सकता। 14 उस वक्त उसने कहा, "मैं ज़रूर तुझे बहुत बरकत दूँगा, और मैं यक़ीनन तुझे क़सरत की औलाद दूँगा।" 15 इस पर इब्राहीम ने सब्र से इंतज़ार करके वह कुछ पाया जिसका वादा किया गया था। 16 क़सम खाते वक्त लोग उस की क़सम खाते हैं जो उनसे बड़ा होता है। इस तरह से क़सम में बयानक़रदा बात की तसदीक़ बहस-मुबाहसा की हर गुंजाइश को ख़त्म कर देती है। 17 अल्लाह ने भी क़सम खाकर अपने वादे की तसदीक़ की। क्योंकि वह अपने वादे के वारिसों पर साफ़ जाहिर करना चाहता था कि उसका इरादा कभी नहीं बदलेगा। 18 गरज़, यह दो बातें क़ायम रही हैं, अल्लाह का वादा और उस की क़सम। वह इन्हें न तो बदल सकता न इनके बारे में झूट बोल सकता है। यों हम जिन्होंने उसके पास पनाह ली है बड़ी तसल्ली पाकर उस उम्मीद को मज़बूती से थामे रख सकते हैं जो हमें पेश की गई है। 19 क्योंकि यह उम्मीद हमारी जान के लिए मज़बूत लंगर है। और यह आसमानी बैतुल-मुक़द्स के मुक़द्सतरीन कमरे के परदे में से गुज़रकर उसमें दाख़िल होती है। 20 वही ईसा हमारे आगे आगे जाकर हमारी ख़ातिर दाख़िल हुआ है। यों वह मलिके-सिद्क़ की मानिद हमेशा के लिए इमामे-आज़म बन गया है।

## 7

### मलिके-सिद्क़

1 यह मलिके-सिद्क़, सालिम का बादशाह और अल्लाह तआला का इमाम था। जब इब्राहीम चार बादशाहों को शिक़स्त देने के बाद वापस आ रहा था तो मलिके-सिद्क़ उससे मिला और उसे बरकत दी। 2 इस पर इब्राहीम ने उसे तमाम लूट के

माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। अब मलिके-सिद्क का मतलब “रास्तबाजी का बादशाह” है। दूसरे, “सालिम का बादशाह” का मतलब “सलामती का बादशाह” है।<sup>3</sup> न उसका बाप या माँ है, न कोई नसबनामा। उस की ज़िंदगी का न तो आगाज़ है, न इख़ितामा। अल्लाह के फ़रज़द की तरह वह अबद तक इमाम रहता है।

4 ग़ौर करें कि वह कितना अज़ीम था। हमारे बापदादा इब्राहीम ने उसे लूटे हुए माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया।<sup>5</sup> अब शरीअत तलब करती है कि लावी की वह औलाद जो इमाम बन जाती है क्रौम यानी अपने भाइयों से पैदावार का दसवाँ हिस्सा ले, हालाँकि उनके भाई इब्राहीम की औलाद हैं।<sup>6</sup> लेकिन मलिके-सिद्क लावी की औलाद में से नहीं था। तो भी उसने इब्राहीम से दसवाँ हिस्सा लेकर उसे बरकत दी जिससे अल्लाह ने वादा किया था।<sup>7</sup> इसमें कोई शक नहीं कि कमहैसियत शख्स को उससे बरकत मिलती है जो ज्यादा हैसियत का हो।<sup>8</sup> जहाँ लावी इमामों का ताल्लुक है फ़ानी इनसान दसवाँ हिस्सा लेते हैं। लेकिन मलिके-सिद्क के मामले में यह हिस्सा उसको मिला जिसके बारे में गवाही दी गई है कि वह ज़िंदा रहता है।<sup>9</sup> यह भी कहा जा सकता है कि जब इब्राहीम ने माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया तो लावी ने उसके ज़रीए भी यह हिस्सा दिया, हालाँकि वह खुद दसवाँ हिस्सा लेता है।<sup>10</sup> क्योंकि जो लावी उस वक़्त पैदा नहीं हुआ था तो भी वह एक तरह से इब्राहीम के जिस्म में मौजूद था जब मलिके-सिद्क उससे मिला।

11 अगर लावी की कहानत (जिस पर शरीअत मबनी थी) कामिलियत पैदा कर सकती तो फिर एक और क्रिस्म के इमाम की क्या ज़रूरत होती, उस की जो हारून जैसा न हो बल्कि मलिके-सिद्क जैसा? 12 क्योंकि जब भी कहानत बदल जाती है तो लाज़िम है कि शरीअत में भी तबदीली आए।<sup>13</sup> और हमारा खुदावंद जिसके बारे में यह बयान किया गया है वह एक फ़रक कबीले का फ़रद था। उसके कबीले के किसी भी फ़रद ने इमाम की खिदमत अदा नहीं की।<sup>14</sup> क्योंकि साफ़ मालूम है कि खुदावंद मसीह यहूदाह कबीले का फ़रद था, और मूसा ने इस कबीले को इमामों की खिदमत में शामिल न किया।

#### मलिके-सिद्क जैसा एक और इमाम

15 मामला मज़ीद साफ़ हो जाता है। एक फ़रक इमाम जाहिर हुआ है जो मलिके-सिद्क जैसा है।<sup>16</sup> वह लावी के कबीले का फ़रद होने से इमाम न बना जिस तरह शरीअत तकाज़ा करती थी, बल्कि वह लाफ़ानी ज़िंदगी की कुव्वत ही से इमाम बन गया।<sup>17</sup> क्योंकि कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है,

“तू अबद तक इमाम है,  
ऐसा इमाम जैसा मलिके-सिद्क था।”

18 यों पुराने हुक्म को मनसूख़ कर दिया जाता है, क्योंकि वह कमज़ोर और बेकार था<sup>19</sup> (मूसा की शरीअत तो किसी चीज़ को कामिल नहीं बना सकती थी) और अब एक बेहतर उम्मीद मुहैया की गई है जिससे हम अल्लाह के करीब आ जाते हैं।

20 और यह नया निज़ाम अल्लाह की कसम से कायम हुआ। ऐसी कोई कसम न खाई गई जब दूसरे इमाम बने।<sup>21</sup> लेकिन ईसा एक कसम के ज़रीए इमाम बन गया जब अल्लाह ने फ़रमाया,

“रब ने कसम खाई है  
और इससे पछताएगा नहीं,  
‘तू अबद तक इमाम है’।”

22 इस कसम की वजह से ईसा एक बेहतर अहद की ज़मानत देता है।

23 एक और फ़रक, पुराने निज़ाम में बहुत-से इमाम थे, क्योंकि मौत ने हर एक की खिदमत महदूद किए रखी।<sup>24</sup> लेकिन चूँकि ईसा अबद तक ज़िंदा है इसलिए उस की कहानत कभी भी ख़त्म नहीं होगी।<sup>25</sup> यों वह उन्हें अबदी नजात दे सकता है जो उसके वसीले से अल्लाह के पास आते हैं, क्योंकि वह अबद तक ज़िंदा है और उनकी शफ़ाअत करता रहता है।

26 हमें ऐसे ही इमामे-आज़म की ज़रूरत थी। हाँ, ऐसा इमाम जो मुक़द्दस, बेकुसूर, बेदाग़, गुनाहगारों से अलग और आसमानों से बुलंद हुआ है।<sup>27</sup> उसे दूसरे इमामों की तरह इसकी ज़रूरत नहीं कि हर रोज़ कुरबानियों पेश करे, पहले अपने लिए फिर क्रौम के लिए। बल्कि उसने अपने आपको पेश करके अपनी इस कुरबानी से उनके गुनाहों को एक बार सदा के लिए मिटा दिया।<sup>28</sup> मूसवी शरीअत ऐसे लोगों को इमामे-आज़म मुक़र्र करती है जो कमज़ोर हैं। लेकिन शरीअत के बाद अल्लाह की कसम फ़रज़द को इमामे-आज़म मुक़र्र करती है, और यह फ़रज़द अबद तक कामिल है।

1 जो कुछ हम कह रहे हैं उस की मरकजी बात यह है, हमारा एक ऐसा इमामे-आज़म है जो आसमान पर जलाली खुदा के तख्त के दहने हाथ बैठा है।<sup>2</sup> वहाँ वह मकदिस में खिदमत करता है, उस हकीकी मुलाकात के खैमे में जिसे इनसानी हाथों ने खडा नहीं किया बल्कि रब ने।

3 हर इमामे-आज़म को नज़राने और कुरबानियाँ पेश करने के लिए मुकर्रर किया जाता है। इसलिए लाज़िम है कि हमारे इमामे-आज़म के पास भी कुछ हो जो वह पेश कर सके।<sup>4</sup> अगर यह दुनिया में होता तो इमामे-आज़म न होता, क्योंकि यहाँ इमाम तो हैं जो शरीअत के मतलूबा नज़राने पेश करते हैं।<sup>5</sup> जिस मकदिस में वह खिदमत करते हैं वह उस मकदिस की सिर्फ़ नकली सूरत और साया है जो आसमान पर है। यही वजह है कि अल्लाह ने मुसा को मुलाकात का खैमा बनाने से पहले आगाह करके यह कहा, “गौर कर कि सब कुछ ऐन उस नमूने के मुताबिक बनाया जाए जो मैं तुझे यहाँ पहाड पर दिखाता हूँ।”<sup>6</sup> लेकिन जो खिदमत ईसा को मिल गई है वह दुनिया के इमामों की खिदमत से कहीं बेहतर है, उतनी बेहतर जितना वह अहद जिसका दरमियानी ईसा है पुराने अहद से बेहतर है। क्योंकि यह अहद बेहतर वादों की बुनियाद पर बाँधा गया।

7 अगर पहला अहद बेइलज़ाम होता तो फिर नए अहद की ज़रूरत न होती।<sup>8</sup> लेकिन अल्लाह को अपनी क्रौम पर इलज़ाम लगाना पडा। उसने कहा,

“रब का फ़रमान है, ऐसे दिन आ रहे हैं

जब मैं इसराईल के घराने और यहूदाह के घराने से एक नया अहद बाँधूँगा।

9 यह उस अहद की मानिंद नहीं होगा

जो मैंने उनके बापदादा के साथ

उस दिन बाँधा था जब मैं उनका हाथ पकड़कर

उन्हें मिसर से निकाल लाया।

क्योंकि वह उस अहद के वफ़ादार न रहे

जो मैंने उनसे बाँधा था।

नतीजे में मेरी उनके लिए फ़िकर न रही।

10 खुदावंद फ़रमाता है कि

जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद उनसे बाँधूँगा

उसके तहत मैं अपनी शरीअत

उनके ज़हनों में डालकर

उनके दिलों पर कंदा करूँगा।

तब मैं ही उनका खुदा हूँगा, और वह मेरी क्रौम होंगे।

11 उस वक़्त से इसकी ज़रूरत नहीं रहेगी

कि कोई अपने पड़ोसी या भाई को तालीम देकर कहे,

‘रब को जान लो।’

क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक

सब मुझे जानेंगे,

12 क्योंकि मैं उनका कूसूर मुआफ़ करूँगा

और आइंदा उनके गुनाहों को याद नहीं करूँगा।”

13 इन अलफ़ाज़ में अल्लाह एक नए अहद का ज़िक्र करता है और यों पुराने अहद को मतस्क करार देता है। और जो मतस्क और पुराना है उसका अंजाम करीब ही है।

## 9

### दुनियावी और आसमानी इबादत

1 जब पहला अहद बाँधा गया तो इबादत करने के लिए हिदायात दी गई। ज़मीन पर एक मकदिस भी बनाया गया,<sup>2</sup> एक खैमा जिसके पहले कमरे में शमादान, मेज़ और उस पर पड़ी मखसूस की गई रोटियों थीं। उसका नाम “मुक़द्दस कमरा” था।<sup>3</sup> उसके पीछे एक और कमरा था जिसका नाम “मुक़द्दसतरीन कमरा” था। पहले और दूसरे कमरे के दरमियान वाक़े दरवाज़े पर परदा लगा था।<sup>4</sup> इस पिछले कमरे में बख़ूर जलाने के लिए सोने की कुरबानागाह और अहद का संदूक था। अहद के संदूक पर सोना मँडा हुआ था और उसमें तीन चीज़ें थीं : सोने का मरतबान जिसमें मन भरा था, हासून का वह असा जिससे कोपलेन फूट निकली थी और पत्थर की वह दो तख्तियाँ जिन पर अहद के अहकाम लिखे थे।<sup>5</sup> संदूक पर इलाही जलाल

के दो कस्बी फरिश्ते लगे थे जो संदूक के ढकने को साया देते थे जिसका नाम “कफफारा का ढकना” था। लेकिन इस जगह पर हम सब कुछ मज़ीद तफसील से बयान नहीं करना चाहते।

6 यह चीज़ें इसी तरीक़े से रखी जाती हैं। जब इमाम अपनी खिदमत के फ़रायज़ अदा करते हैं तो बाकायदागी से पहले कमरे में जाते हैं। 7 लेकिन सिर्फ़ इमामे-आज़म ही दूसरे कमरे में दाखिल होता है, और वह भी साल में सिर्फ़ एक दफ़ा। जब भी वह जाता है वह अपने साथ खून लेकर जाता है जिसे वह अपने और क़ौम के लिए पेश करता है ताकि वह गुनाह मिट जाएँ जो लोगों ने ग़ैरइ़दादी तौर पर किए होते हैं। 8 इससे रूहल-कुदस दिखाता है कि मुक़द्दसतरीन कमरे तक रसाई उस वक़्त तक जाहिर नहीं की गई थी जब तक पहला कमरा इस्तेमाल में था। 9 यह मजाज़न मौजूदा ज़माने की तरफ़ इशारा है। इसका मतलब यह है कि जो नज़राने और क़ुरबानियाँ पेश की जा रही हैं वह परस्तार के ज़मीर को पाक-साफ़ करके कामिल नहीं बना सकती। 10 क्योंकि इनका ताल्लुक़ सिर्फ़ खाने-पीनेवाली चीज़ों और गुस्त की मुख्तलिफ़ रस्मों से होता है, ऐसी जाहिरी हिदायात जो सिर्फ़ नए निज़ाम के आने तक लागू हैं।

11 लेकिन अब मसीह आ चुका है, उन अच्छी चीज़ों का इमामे-आज़म जो अब हासिल हुई हैं। जिस ख़ैमे में वह खिदमत करता है वह कहीं ज़्यादा अज़ीम और कामिल है। यह ख़ैमा इनसानी हाथों से नहीं बनाया गया यानी यह इस कायनात का हिस्सा नहीं है। 12 जब मसीह एक बार सदा के लिए ख़ैमे के मुक़द्दसतरीन कमरे में दाखिल हुआ तो उसने क़ुरबानियाँ पेश करने के लिए बकरों और बछड़ों का खून इस्तेमाल न किया। इसके बजाए उसने अपना ही खून पेश किया और यों हमारे लिए अबदी नजात हासिल की। 13 पुराने निज़ाम में बैल-बकरों का खून और जवान गाय की राख नापाक लोगों पर छिड़के जाते थे ताकि उनके जिस्म पाक-साफ़ हो जाएँ। 14 अगर इन चीज़ों का यह असर था तो फिर मसीह के खून का क्या ज़बरदस्त असर होगा! अज़ली रूह के ज़रीए उसने अपने आपको बेदाग़ क़ुरबानी के तौर पर पेश किया। यों उसका खून हमारे ज़मीर को मौत तक पहुँचानेवाले कामों से पाक-साफ़ करता है ताकि हम ज़िंदा खुदा की खिदमत कर सकें।

15 यही वजह है कि मसीह एक नए अहद का दरमियानी है। मक़सद यह था कि जितने लोगों को अल्लाह ने बुलाया है उन्हें अल्लाह की मौऊदा और अबदी मीरास मिले। और यह सिर्फ़ इसलिए मुमकिन हुआ है कि मसीह ने मरकर फ़िदा दिया ताकि लोग उन गुनाहों से छुटकारा पाएँ जो उनसे उस वक़्त सरज़द हुए जब वह पहले अहद के तहत थे।

16 जहाँ वसियत है वहाँ ज़रूरी है कि वसियत करनेवाले की मौत की तसदीक़ की जाए। 17 क्योंकि जब तक वसियत करनेवाला ज़िंदा हो वसियत बेअसर होती है। इसका असर वसियत करनेवाले की मौत ही से शुरू होता है। 18 यही वजह है कि पहला अहद बाँधते वक़्त भी खून इस्तेमाल हुआ। 19 क्योंकि पूरी क़ौम को शरीअत का हर हुक्म सुनाने के बाद मूसा ने बछड़ों का खून पानी से मिलाकर उसे जूफ़े के गुच्छे और क़िरमिज़ी रंग के धागे के ज़रीए शरीअत की किताब और पूरी क़ौम पर छिड़का। 20 उसने कहा, “यह खून उस अहद की तसदीक़ करता है जिसकी पैरवी करने का हुक्म अल्लाह ने तुम्हें दिया है।” 21 इसी तरह मूसा ने यह खून मुलाकात के ख़ैमे और इबादत के तमाम सामान पर छिड़का। 22 न सिर्फ़ यह बल्कि शरीअत तकाज़ा करती है कि तकरीबन हर चीज़ को खून ही से पाक-साफ़ किया जाए बल्कि अल्लाह के हुज़ूर खून पेश किए बग़ैर मुआफ़ी मिल ही नहीं सकती।

### मसीह की क़ुरबानी गुनाहों को मिटा देती है

23 गरज़, लाज़िम था कि यह चीज़ें जो आसमान की असली चीज़ों की नकली सूरतें हैं पाक-साफ़ की जाएँ। लेकिन आसमानी चीज़ें खुद ऐसी क़ुरबानियों का मुतालबा करती हैं जो इनसे कहीं बेहतर हों। 24 क्योंकि मसीह सिर्फ़ इनसानी हाथों से बने मक़दिस में दाखिल नहीं हुआ जो असली मक़दिस की सिर्फ़ नकली सूरत थी बल्कि वह आसमान में ही दाखिल हुआ ताकि अब से हमारी खातिर अल्लाह के सामने हाज़िर हो। 25 दुनिया का इमामे-आज़म तो सालाना किसी और (यानी जानवर) का खून लेकर मुक़द्दसतरीन कमरे में दाखिल होता है। लेकिन मसीह इसलिए आसमान में दाखिल न हुआ कि वह अपने आपको बार बार क़ुरबानी के तौर पर पेश करे। 26 अगर ऐसा होता तो उसे दुनिया की तखलीक़ से लेकर आज तक बहुत दफ़ा दुख सहना पड़ता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि अब वह ज़मानों के इख़िताम पर एक ही बार सदा के लिए जाहिर हुआ ताकि अपने आपको क़ुरबान करने से गुनाह को दूर करे। 27 एक बार मरना और अल्लाह की अदालत में हाज़िर होना हर इनसान के लिए मुकरर है। 28 इसी तरह मसीह को भी एक ही बार बहुतों के गुनाहों को उठाकर ले जाने के लिए क़ुरबान किया गया। दूसरी बार जब वह जाहिर होगा तो गुनाहों को दूर करने के लिए जाहिर नहीं होगा बल्कि उन्हें नजात देने के लिए जो शिद्दत से उसका इतज़ार कर रहे हैं।

## 10

1 मूसवी शरीर अत आनेवाली अच्छी और असली चीजों की सिर्फ नकली सूत और साया है। यह उन चीजों की असली शकल नहीं है। इसलिए यह उन्हें कभी भी कामिल नहीं कर सकती जो साल बसाल और बार बार अल्लाह के हुज़ूर आकर वही कुरबानियाँ पेश करते रहते हैं। 2 अगर वह कामिल कर सकती तो कुरबानियाँ पेश करने की ज़रूरत न रहती। क्योंकि इस सूत में परस्ता एक बार सदा के लिए पाक-साफ हो जाते और उन्हें गुनाहगार होने का शऊर न रहता। 3 लेकिन इसके बजाए यह कुरबानियाँ साल बसाल लोगों को उनके गुनाहों की याद दिलाती हैं। 4 क्योंकि मुमकिन ही नहीं कि बैल-बकरों का खून गुनाहों को दूर करे।

5 इसलिए मसीह दुनिया में आते वक़्त अल्लाह से कहता है,

“तू कुरबानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था  
लेकिन तूने मेरे लिए एक जिस्म तैयार किया।

6 भस्म होनेवाली कुरबानियाँ और गुनाह की कुरबानियाँ  
तुझे पसंद नहीं थी।

7 फिर मैं बोल उठा, ‘ऐ खुदा, मैं हाज़िर हूँ  
ताकि तेरी मरज़ी पूरी करूँ,

जिस तरह मेरे बारे में कलामे-मुक़द्दस में \* लिखा है’।”

8 पहले मसीह कहता है, “न तू कुरबानियाँ, नज़रें, भस्म होनेवाली कुरबानियाँ या गुनाह की कुरबानियाँ चाहता था, न उन्हें पसंद करता था” गो शरीर अत इन्हें पेश करने का मुतालबा करती है। 9 फिर वह फ़रमाता है, “मैं हाज़िर हूँ ताकि तेरी मरज़ी पूरी करूँ।” यों वह पहला निज़ाम ख़त्म करके उस की जगह दूसरा निज़ाम कायम करता है। 10 और उस की मरज़ी पूरी हो जाने से हमें ईसा मसीह के बदन के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया है। क्योंकि उसे एक ही बार सदा के लिए हमारे लिए कुरबान किया गया।

11 हर इमाम रोज़ बरोज़ मक़दिस में खड़ा अपनी खिदमत के फ़रायज़ अदा करता है। रोज़ाना और बार बार वह वही कुरबानियाँ पेश करता रहता है जो कभी भी गुनाहों को दूर नहीं कर सकती। 12 लेकिन मसीह ने गुनाहों को दूर करने के लिए एक ही कुरबानी पेश की, एक ऐसी कुरबानी जिसका असर सदा के लिए रहेगा। फिर वह अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया। 13 वही वह अब इंतज़ार करता है जब तक अल्लाह उसके दुश्मनों को उसके पाँवों की चौकी न बना दे। 14 यों उसने एक ही कुरबानी से उन्हें सदा के लिए कामिल बना दिया है जिन्हें मुक़द्दस किया जा रहा है।

15 रूहल-कुदूस भी हमें इसके बारे में गवाही देता है। पहले वह कहता है,

16 “रब फ़रमाता है कि  
जो नया अहद मैं उन दिनों के बाद उनसे बाँधूँगा  
उसके तहत मैं अपनी शरीर अत  
उन्के दिलों में डालकर  
उन्के ज़हनों पर कंदा करूँगा।”

17 फिर वह कहता है, “उस वक़्त से मैं उनके गुनाहों और बुराइयों को याद नहीं करूँगा।” 18 और जहाँ इन गुनाहों की मुआफ़ी हुई है वहाँ गुनाहों को दूर करने की कुरबानियाँ की ज़रूरत ही नहीं रही।

आएँ, हम अल्लाह के हुज़ूर आएँ

19 चुनौचे भाइयो, अब हम ईसा के खून के वसीले से पूरे एतमाद के साथ मुक़द्दसतरीन कमरे में दाखिल हो सकते हैं। 20 अपने बदन की कुरबानी से ईसा ने उस कमरे के परदे में से गुज़रने का एक नया और ज़िंदागीबख़्श रास्ता खोल दिया। 21 हमारा एक अज़ीम इमामे-आज़म है जो अल्लाह के घर पर मुक़रर है। 22 इसलिए आएँ, हम खुलसुदिली और इमान के पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के हुज़ूर आएँ। क्योंकि हमारे दिलों पर मसीह का खून छिड़का गया है ताकि हमारे मुज़रिम ज़मीर साफ़ हो जाएँ। नीज़, हमारे बदनो को पाक-साफ़ पानी से धोया गया है। 23 आएँ, हम मज़बूती से उस उम्मीद को थामे रखें जिसका इक्रार हम करते हैं। हम डॉक्टोरील न हो जाएँ, क्योंकि जिसने इस उम्मीद का वादा किया है वह वफ़ादार है। 24 और आएँ, हम इस पर ध्यान दें कि हम एक दूसरे को किस तरह मुहब्बत दिखाने और नेक काम करने पर उभार सकें। 25 हम बाहम जमा होने से बाज़ न आएँ, जिस तरह बाज़ की आदत बन गई है। इसके बजाए हम एक दूसरे की हौसलाअफ़जाई करें, खासकर यह बात मदे-नज़र रखकर कि खुदावद का दिन करीब आ रहा है।

\* 10:7 लफ्ज़ी तरज़ुमा : किताब के त्फ़ार में।

26 खबरदार! अगर हम सच्चाई जान लेने के बाद भी जान-बूझकर गुनाह करते रहें तो मसीह की कुरबानी इन गुनाहों को दूर नहीं कर सकेगी। 27 फिर सिर्फ अल्लाह की अदालत की हौलनाक तवक्को बाकी रहेगी, उस भडकती हुई आग की जो अल्लाह के मुखालिफों को भस्म कर डालेगी। 28 जो मूसा की शरीअत रद्द करता है उस पर रहम नहीं किया जा सकता बल्कि अगर दो या इससे जायद लोग इस जुर्म की गवाही दें तो उसे सजाए-मौत दी जाए। 29 तो फिर क्या खयाल है, वह कितनी सख्त सजा के लायक होगा जिसने अल्लाह के फ़रज़द को पाँवों तले रौंदा? जिसने अहद का वह खून हकीर जाना जिससे उसे मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया था? और जिसने फ़ज़ल के रूह की बेइज़ज़ती की? 30 क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने फ़रमाया, “इंतकाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।” उसने यह भी कहा, “रब अपनी कौम का इन्साफ़ करेगा।” 31 यह एक हौलनाक बात है अगर जिंदा ख़ुदा हमें सजा देने के लिए पकड़े।

32 ईमान के पहले दिन याद करें जब अल्लाह ने आपको रौशन कर दिया था। उस वक़्त के सख्त मुक़ाबले में आपको कई तरह का दुख सहना पड़ा, लेकिन आप साबितकदम रहे। 33 कभी कभी आपको बेइज़ज़ती और अवाम के सामने ही ईज़ारसानी होती थी, कभी कभी आप उनके साथी थे जिनसे ऐसा सुलूक हो रहा था। 34 जिन्हें जेल में डाला गया आप उनके दुख में शरीक हुए और जब आपका मालो-मता लूटा गया तो आपने यह बात खुशी से बरदाश्त की। क्योंकि आप जानते थे कि वह माल हमसे नहीं छीन लिया गया जो पहले की निसबत कहीं बेहतर है और हर सूरत में कायम रहेगा। 35 चुनौचे अपने इस एतमाद को हाथ से जाने न दें क्योंकि इसका बड़ा अज़्र मिलेगा। 36 लेकिन इसके लिए आपको साबितकदमी की ज़रूरत है ताकि आप अल्लाह की मरज़ी पूरी कर सकें और यों आपको वह कुछ मिल जाए जिसका वादा उसने किया है। 37 क्योंकि कलामे-मुक़द्दस यह फ़रमाता है,

“थोड़ी ही देर बाकी है  
तो आनेवाला पहुँचेगा, वह देर नहीं करेगा।

38 लेकिन मेरा रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा,  
और अगर वह पीछे हट जाए  
तो मैं उससे ख़ुश नहीं हूँगा।”

39 लेकिन हम उनमें से नहीं हैं जो पीछे हटकर तबाह हो जाएंगे बल्कि हम उनमें से हैं जो ईमान रखकर नजात पाते हैं।

## 11

### ईमान

1 ईमान क्या है? यह कि हम उसमें कायम रहें जिस पर हम उम्मीद रखते हैं और कि हम उसका यकीन रखें जो हम नहीं देख सकते। 2 ईमान ही से पुराने ज़मानों के लोगों को अल्लाह की कबूलियत हासिल हुई।

3 ईमान के ज़रीए हम जान लेते हैं कि कायनात को अल्लाह के कलाम से खलक किया गया, कि जो कुछ हम देख सकते हैं नज़र आनेवाली चीज़ों से नहीं बना।

4 यह ईमान का काम था कि हाबील ने अल्लाह को एक ऐसी कुरबानी पेश की जो काबील की कुरबानी से बेहतर थी। इस ईमान की बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ ठहराकर उस की अच्छी गवाही दी, जब उसने उस की कुरबानियों को कबूल किया। और ईमान के ज़रीए वह अब तक बोलता रहता है हालाँकि वह मुरदा है। 5 यह ईमान का काम था कि हनुक न मरा बल्कि जिंदा हालत में आसमान पर उठाया गया। कोई भी उसे ढूँडकर पा न सका क्योंकि अल्लाह उसे आसमान पर उठा ले गया था। वजह यह थी कि उठाए जाने से पहले उसे यह गवाही मिली कि वह अल्लाह को पसंद आया। 6 और ईमान रखे बौर हम अल्लाह को पसंद नहीं आ सकते। क्योंकि लाज़िम है कि अल्लाह के हज़ूर आनेवाला ईमान रखे कि वह है और कि वह उन्हें अज़्र देता है जो उसके तालिब हैं।

7 यह ईमान का काम था कि नूह ने अल्लाह की सुनी जब उसने उसे आनेवाली बातों के बारे में आगाह किया, ऐसी बातों के बारे में जो अभी देखने में नहीं आई थीं। नूह ने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानकर एक क़रती बनाई ताकि उसका खानदान बच जाए। यों उसने अपने ईमान के ज़रीए दुनिया को मुज़रिम करार दिया और उस रास्तबाज़ी का वारिस बन गया जो ईमान से हासिल होती है।

8 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने अल्लाह की सुनी जब उसने उसे बुलाकर कहा कि वह एक ऐसे मुल्क में जाए जो उसे बाद में मीरास में मिलेगा। हाँ, वह अपने मुल्क को छोड़कर रवाना हुआ, हालाँकि उसे मालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है। 9 ईमान के ज़रीए वह वादा किए हुए मुल्क में अजनबी की हैसियत से रहने लगा। वह ख़ैमों में रहता था और इसी तरह इसहाक और याक़ूब भी जो उसके साथ उसी वादे के वारिस थे। 10 क्योंकि इब्राहीम उस शहर के इंतज़ार में था जिसकी मज़बूत बुनियाद है और जिसका नक्श बनाने और तामीर करनेवाला ख़ुद अल्लाह है।

11 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम बाप बनने के काबिल हो गया, हालाँकि वह बुढ़ापे की वजह से बाप नहीं बन सकता था। इसी तरह सारा भी बच्चे जन्म नहीं दे सकती थी। लेकिन इब्राहीम समझता था कि अल्लाह जिसने वादा किया है वफादार है। 12 गो इब्राहीम तक्ररीबन मर चुका था तो भी उसी एक शब्द से बेशुमार औलाद निकली, तादाद में आसमान पर के सितारों और साहिल पर की रेत के ज़रों के बराबर।

13 यह तमाम लोग ईमान रखते रखते मर गए। उन्हें वह कुछ न मिला जिसका वादा किया गया था। उन्होंने उसे सिर्फ़ दूर ही से देखकर खुशआमदीद \* कहा। और उन्होंने तसलीम किया कि हम ज़मीन पर † सिर्फ़ मेहमान और आरिज़ी तौर पर रहनेवाले अजनबी हैं। 14 जो इस क्रिस्म की बातें करते हैं वह जाहिर करते हैं कि हम अब तक अपने वतन की तलाश में हैं। 15 अगर उनके ज़हन में वह मुल्क होता जिससे वह निकल आए थे तो वह अब भी वापस जा सकते थे। 16 इसके बजाए वह एक बेहतर मुल्क यानी एक आसमानी मुल्क की आरजू कर रहे थे। इसलिए अल्लाह उनका खुदा कहलाने से नहीं शर्माता, क्योंकि उसने उनके लिए एक शहर तैयार किया है।

17 यह ईमान का काम था कि इब्राहीम ने उस वक्त इसहाक को कुरबानी के तौर पर पेश किया जब अल्लाह ने उसे आजमाया। हाँ, वह अपने इकलौते बेटे को कुरबान करने के लिए तैयार था अगरचे उसे अल्लाह के वादे मिल गए थे 18 कि “तेरी नसल इसहाक ही से कायम रहेगी।” 19 इब्राहीम ने सोचा, “अल्लाह मुरदों को भी जिंदा कर सकता है,” और मजाज़न उसे वाकई इसहाक मुरदों में से वापस मिल गया।

20 यह ईमान का काम था कि इसहाक ने आनेवाली चीज़ों के लिहाज़ से याकूब और एसौ को बरकत दी।

21 यह ईमान का काम था कि याकूब ने मरते वक्त यूसुफ के दोनों बेटों को बरकत दी और अपनी लाठी के सिरे पर टेक लगाकर अल्लाह को सिजदा किया।

22 यह ईमान का काम था कि यूसुफ ने मरते वक्त यह पेशगोई की कि इसराइली मिसर से निकलेंगे बल्कि यह भी कहा कि निकलते वक्त मेरी हड्डियाँ भी अपने साथ ले जाओ।

23 यह ईमान का काम था कि मूसा के माँ-बाप ने उसे पैदाइश के बाद तीन माह तक छुपाए रखा, क्योंकि उन्होंने देखा कि वह ख़ब्रसरत है। वह बादशाह के हुक्म की खिलाफ़वरज़ी करने से न डरे।

24 यह ईमान का काम था कि मूसा ने परवान चढ़कर इनकार किया कि उसे फ़िरौन की बेटी का बेटा ठहराया जाए।

25 आरिज़ी तौर पर गुनाह से लुफ़अंदोज़ होने के बजाए उसने अल्लाह की क़ौम के साथ बदसलूकी का निशाना बनने को तरज़ीह दी। 26 वह समझा कि जब मेरी मसीह की खातिर ससवाई की जाती है तो यह मिसर के तमाम ख़ज़ानों से ज़्यादा कीमती है, क्योंकि उस की आँखें आनेवाले अज़्र पर लगी रहीं।

27 यह ईमान का काम था कि मूसा ने बादशाह के गुस्से से डरे बग़ैर मिसर को छोड़ दिया, क्योंकि वह गोया अनदेखे खुदा को मुसलसल अपनी आँखों के सामने रखता रहा। 28 यह ईमान का काम था कि उसने फ़सह की ईद मनाकर हुक्म दिया कि खून को चौखटों पर लगाया जाए ताकि हलाक करनेवाला फ़रिश्ता उनके पहलौंठे बेटों को न छुए।

29 यह ईमान का काम था कि इसराइली बहरे-कुलज़ुम में से यों गुज़र सके जैसे कि यह ख़ुशक ज़मीन थी। जब मिसरियों ने यह करने की कोशिश की तो वह डूब गए।

30 यह ईमान का काम था कि सात दिन तक यरीह शहर की फ़सील के गिर्द चक्कर लगाने के बाद पूरी दीवार गिर गई।

31 यह भी ईमान का काम था कि राहब फ़ाहिशा अपने शहर के बाकी नाफ़रमान बाशिंदों के साथ हलाक न हुई, क्योंकि उसने इसराइली जासूसों को सलामती के साथ ख़ुशआमदीद कहा था।

32 मैं मज़ीद क्या कुछ कहूँ? मेरे पास इतना वक्त नहीं कि मैं ज़िंदान, बरक़, समसून, इफ़ताह, दाऊद, समुएल और नबियों के बारे में सुनाता रहूँ। 33 यह सब ईमान के सबब से ही कामयाब रहे। वह बादशाहियों पर ग़ालिब आए और इनसाफ़ करते रहे। उन्हें अल्लाह के वादे हासिल हुए। उन्होंने शेरबबरोँ के मुँह बंद कर दिए 34 और आग के भड़कते शोलों को बुझा दिया। वह तलवार की ज़द से बच निकले। वह कमज़ोर थे लेकिन उन्हें कुव्वत हासिल हुई। जब जंग छिड़ गई तो वह इतने ताकतवर साबित हुए कि उन्होंने गैरमुल्की लश्करों को शिकस्त दी। 35 ईमान रखने के बाइस ख़वातीन को उनके मुरदा अज़ीज़ जिंदा हालत में वापस मिले।

लेकिन ऐसे भी थे जिन्हें तशहूद बरदाशत करना पड़ा और जिन्होंने आज़ाद हो जाने से इनकार किया ताकि उन्हें एक बेहतर चीज़ यानी जी उठने का तज़रबा हासिल हो जाए। 36 बाज़ को लान-तान और कोड़ों बल्कि जंजीरों और कैद का भी सामना करना पड़ा। 37 उन्हें संगसार किया गया, उन्हें ओरे से चीरा गया, उन्हें तलवार से मार डाला गया। बाज़ को भेड़-बक़रियों की खालों में घूमना फिरना पड़ा। ज़रतमदत हालत में उन्हें दबाया और उन पर ज़ुल्म किया जाता रहा। 38 दुनिया उनके लायक नहीं थी! वह वीरान जगहों में, पहाड़ों पर, गारों और गढ़ों में आवारा फिरते रहे।

\* 11:13 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : सलामी दी। सलाम देकर इज़त का इज़हार किया। सल्यूट किया। † 11:13 ज़मीन पर या मुल्क (यानी कानान) में।

39 इन सबको ईमान की वजह से अच्छी गवाही मिली। तो भी इन्हें वह कुछ हासिल न हुआ जिसका वादा अल्लाह ने किया था। 40 क्योंकि उसने हमारे लिए एक ऐसा मनस्वा बनाया था जो कहीं बेहतर है। वह चाहता था कि यह लोग हमारे बगैर कामिलियत तक न पहुँचें।

## 12

अल्लाह हमारा बाप

1 गरज़, हम गवाहों के इतने बड़े लशकर से घेरे रहते हैं! इसलिए आँ, हम सब कुछ उतारों जो हमारे लिए स्कावट का बाइस बन गया है, हर गुनाह को जो हमें आसानी से उलझा लेता है। आँ, हम साबितकदमी से उस दौड़ में दौड़ते रहें जो हमारे लिए मुकरर की गई है। 2 और दौड़ते हुए हम ईसा को तकते रहें, उसे जो ईमान का बानी भी है और उसे तकमील तक पहुँचानेवाला भी। याद रह कि गो वह खुशी हासिल कर सकता था तो भी उसने सलीबी मौत की शर्मनाक बेइज़्जती की परवा न की बल्कि उसे बरदाशत किया। और अब वह अल्लाह के तख्त के दहने हाथ जा बैठा है!

3 उस पर ध्यान दें जिसने गुनाहगारों की इतनी मुखालफत बरदाशत की। फिर आप थकते थकते बेदिल नहीं हो जाएंगे। 4 देखें, आप गुनाह से लड़े तो हैं, लेकिन अभी तक आपको जान देने तक इसकी मुखालफत नहीं करनी पड़ी। 5 क्या आप कलामे-मुकद्दस की यह हौसलाअफ़ज़ा बात भूल गए हैं जो आपको अल्लाह के फ़रज़द ठहराकर बयान करती है,

“मेरे बेटे, रब की तरबियत को हक़ीर मत जान,  
जब वह तुझे डॉट तो न बेदिल हो।

6 क्योंकि जो रब को प्यारा है उस की वह तादीब करता है,  
वह हर एक को सज़ा देता है  
जिसे उसने बेटे के तौर पर कबूल किया है।”

7 अपनी मुसीबतों को इलाही तरबियत समझकर बरदाशत करें। इसमें अल्लाह आपसे बेटों का-सा सुल्क कर रहा है। क्या कभी कोई बेटा था जिसकी उसके बाप ने तरबियत न की? 8 अगर आपकी तरबियत सबकी तरह न की जाती तो इसका मतलब यह होता कि आप अल्लाह के हक़ीकी फ़रज़द न होते बल्कि नाजायज़ औलाद। 9 देखें, जब हमारे इनसानी बाप ने हमारी तरबियत की तो हमने उस की इज़्जत की। अगर ऐसा है तो कितना ज़्यादा ज़रूरी है कि हम अपने र्हानी बाप के ताबे होकर जिंदागी पाएँ। 10 हमारे इनसानी बापों ने हमें अपनी समझ के मुताबिक थोड़ी देर के लिए तरबियत दी। लेकिन अल्लाह हमारी ऐसी तरबियत करता है जो फ़ायदे का बाइस है और जिससे हम उस की कुदूसियत में शरीक होने के काबिल हो जाते हैं। 11 जब हमारी तरबियत की जाती है तो उस वक़्त हम खुशी महसूस नहीं करते बल्कि ग़म। लेकिन जिनकी तरबियत इस तरह होती है वह बाद में रास्तबाज़ी और सलामती की फ़सल काटते हैं।

हिदायात

12 चुनौचे अपने थकेहारे बाजूओं और कमज़ोर घुटनों को मज़बूत करें। 13 अपने रास्ते चलने के काबिल बना दें ताकि जो अज़ु लँगडा है उसका जोड़ उतर न जाए \* बल्कि शफ़ा पाए।

14 सबके साथ मिलकर सुलह-सलामती और कुदूसियत के लिए जिद्दो-जहद करते रहें, क्योंकि जो मुकद्दस नहीं है वह खुदावंद को कभी नहीं देखेगा। 15 इस पर ध्यान देना कि कोई अल्लाह के फ़ज़ल से महसूम न रहे। ऐसा न हो कि कोई कड़वी जड़ फूट निकले और बढ़कर तकलीफ़ का बाइस बन जाए और बहुतों को नापाक कर दे। 16 ध्यान दें कि कोई भी जिनाकार या एसी जैसा दुनियावी शख्स न हो जिसने एक ही खाने के एवज़ अपने वह मोरूसी हक़क बेच डाले जो उसे बड़े बेटे की हैसियत से हासिल थे। 17 आपको भी मालूम है कि बाद में जब वह यह बरकत विरासत में पाना चाहता था तो उसे रद किया गया। उस वक़्त उसे तौबा का मौका न मिला हालाँकि उसने आँसू बहा बहाकर यह बरकत हासिल करने की कोशिश की।

18 आप उस तरह अल्लाह के हज़ूर नहीं आए जिस तरह इसराईली जब वह सीना पहाड़ पर पहुँचे, उस पहाड़ के पास जिसे छुआ जा सकता था। वहाँ आग भडक रही थी, अंधेरा ही अंधेरा था और आँधी चल रही थी। 19 जब नरसिंगे की आवाज़ सुनाई दी और अल्लाह उससे हमकलाम हुआ तो सुननेवालों ने उससे इल्तिज़ा की कि हमें मज़ीद कोई बात न बता। 20 क्योंकि वह यह हुक़म बरदाशत नहीं कर सकते थे कि “अगर कोई जानवर भी पहाड़ को छू ले तो उसे संगसार करना है।” 21 यह मंज़र इतना हैबतनाक था कि मुसा ने कहा, “मैं ख़ौफ़ के मोरे काँप रहा हूँ।”

22 नहीं, आप सिय्यून पहाड़ के पास आ गए हैं, यानी जिंदा खुदा के शहर आसमानी यस्शालम के पास। आप बेशुमार फ़रिशतों और जशन मनानेवाली जमात के पास आ गए हैं, 23 उन पहलौठों की जमात के पास जिनके नाम आसमान पर दर्ज़

\* 12:13 एक और मुमकिनता तरज़ुमा : जो लँगडा है वह भटक न जाए।



किए गए हैं। आप तमाम इनसानों के मुंसिफ अल्लाह के पास आ गए हैं और कामिल किए गए रास्तबाजों की रूहों के पास। 24 नीज़ आप नए अहद के दरमियानी ईसा के पास आ गए हैं और उस छिड़काए गए खून के पास जो हाबील के खून की तरह बदला लेने की बात नहीं करता बल्कि एक ऐसी मुआफ़ी देता है जो कहीं ज्यादा मुअस्सिर है।

25 चुनौचे खबरदार रहें कि आप उस की सुनने से इनकार न करें जो इस वक़्त आपसे हमकलाम हो रहा है। क्योंकि अगर इसराईली न बचे जब उन्होंने दुनियावी पैगंबर मूसा की सुनने से इनकार किया तो फिर हम किस तरह बचेंगे अगर हम उस की सुनने से इनकार करें जो आसमान से हमसे हमकलाम होता है। 26 जब अल्लाह सीना पहाड़ पर से बोल उठा तो ज़मीन काँप गई, लेकिन अब उसने वादा किया है, “एक बार फिर मैं न सिर्फ़ ज़मीन को हिला दूँगा बल्कि आसमान को भी।” 27 “एक बार फिर” के अलफ़ाज़ इस तरफ़ इशारा करते हैं कि ख़लक की गई चीज़ों को हिलाकर दूर किया जाएगा और नतीजे में सिर्फ़ वह चीज़ें कायम रहेंगी जिन्हें हिलाया नहीं जा सकता।

28 चुनौचे आएँ, हम शक्रगुज़ार हों। क्योंकि हमें एक ऐसी बादशाही हासिल हो रही है जिसे हिलाया नहीं जा सकता। हाँ, हम शक्रगुज़ारी की इस रूह में एहताराम और ख़ौफ़ के साथ अल्लाह की पसंदीदा परस्तिश करें, 29 क्योंकि हमारा ख़ुदा हकीकतन भयम कर देनेवाली आग है।

## 13

हम अल्लाह को किस तरह पसंद आएँ

1 एक दूसरे से भाइयों की-सी मुहब्बत रखते रहें। 2 मेहमान-नवाज़ी मत भूलना, क्योंकि ऐसा करने से बाज़ ने नादानिस्ता तौर पर फ़रिशतों की मेहमान-नवाज़ी की है। 3 जो कैद में हैं, उन्हें यों याद रखना जैसे आप खुद उनके साथ कैद में हों। और जिनके के साथ बदसलूकी हो रही है उन्हें यों याद रखना जैसे आपसे यह बदसलूकी हो रही हो।

4 लाज़िम है कि सबके सब इज़दिव़ाज़ी ज़िंदगी का एहताराम करें। शौहर और बीवी एक दूसरे के वफ़ादार रहें, क्योंकि अल्लाह जिनाकारों और शादी का बंधन तोड़नेवालों की अदालत करेगा।

5 आपकी ज़िंदगी पैसों के लालच से आज़ाद हो। उसी पर इकतियाफ़ करें जो आपके पास है, क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है, “मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, मैं तुझे कभी तर्क नहीं करूँगा।” 6 इसलिए हम एतमाद से कह सकते हैं,

“रब मेरी मदद करनेवाला है,

इसलिए मैं नहीं डरूँगा।

इनसान मेरा क्या बिगाड़ सकता है?”

7 अपने राहनुमाओं को याद रखें जिन्होंने आपको अल्लाह का कलाम सुनाया। इस पर गौर करें कि उनके चाल-चलन से कितनी भलाई पैदा हुई है, और उनके ईमान के नमूने पर चलें। 8 ईसा मसीह माज़ी में, आज और अब तक एकसाँ है। 9 तरह तरह की और बेगाना तालीमात आपको इधर उधर न भटकाएँ। आप तो अल्लाह के फ़ज़ल से तकवियत पाते हैं और इससे नहीं कि आप मुख़्तलिफ़ खानों से परहेज़ करते हैं। इसमें कोई ख़ास फ़ायदा नहीं है।

10 हमारे पास एक ऐसी कुरबानागार है जिसकी कुरबानी खाना मुलाकात के ख़ैमे में खिदमत करनेवालों के लिए मना है।

11 क्योंकि गो इमामे-आज़म जानवरों का खून गुनाह की कुरबानी के तौर पर मुक़द्दसरतीन कमरे में ले जाता है, लेकिन उनकी लाशों को ख़ैमागार के बाहर जलाया जाता है। 12 इस वजह से ईसा को भी शहर के बाहर सलीबी मौत सहनी पड़ी ताकि क़ौम को अपने खून से मख़सूसो-मुक़द्दस करे। 13 इसलिए आएँ, हम ख़ैमागार से निकलकर उसके पास जाएँ और उस की बेइज़्जती में शरीक हो जाएँ। 14 क्योंकि यहाँ हमारा कोई कायम रहनेवाला शहर नहीं है बल्कि हम आनेवाले शहर की शदीद आरज़ू रखते हैं। 15 चुनौचे आएँ, हम ईसा के वसीले से अल्लाह को हम्दो-सना की कुरबानी पेश करें, यानी हमारे होंटों से उसके नाम की तारीफ़ करनेवाला फल निकले। 16 नीज़, भलाई करना और दूसरों को अपनी बरकात में शरीक करना मत भूलना, क्योंकि ऐसी कुरबानियाँ अल्लाह को पसंद हैं।

17 अपने राहनुमाओं की सुनें और उनकी बात मानें। क्योंकि वह आपकी देख-भाल करते करते जागते रहते हैं, और इसमें वह अल्लाह के सामने जवाबदेह हैं। उनकी बात मानें ताकि वह खुशी से अपनी खिदमत संरजाम दें। वरना वह कराहते कराहते अपनी जिम्मादारी निभाएँगे, और यह आपके लिए मुफ़ीद नहीं होगा।

18 हमारे लिए दुआ करें, गो हमें यकीन है कि हमारा ज़मीर साफ़ है और हम हर लिहाज़ से अच्छी ज़िंदगी गुज़ारने के खाहिशमंद हैं।

19 मैं ख़ासकर इस पर जोर देना चाहता हूँ कि आप दुआ करें कि अल्लाह मुझे आपके पास जल्द वापस आने की तौफ़ीक़ बख़्शे।

## आखिरी दुआ

20 अब सलामती का खुदा जो अबदी अहद के खून से हमारे खुदाबंद और भेड़ों के अजीम चरवाहे ईसा को मुरदों में से वापस लाया 21 वह आपको हर अच्छी चीज़ से नवाजे ताकि आप उस की मरज़ी पूरी कर सकें। और वह ईसा मसीह के ज़रीए हममें वह कुछ पैदा करे जो उसे पसंद आए। उसका जलाल अज़ल से अबद तक होता रहे! आमीन।

## आखिरी अलफ़ाज़

22 भाइयो, मेहरबानी करके नसीहत की इन बातों पर संजीदगी से गौर करें, क्योंकि मैंने आपको सिर्फ़ चंद अलफ़ाज़ लिखे हैं। 23 यह बात आपके इल्म में होनी चाहिए कि हमारे भाई तीमुथियुस को रिहा कर दिया गया है। अगर वह जल्दी पहुँचे तो उसे साथ लेकर आपसे मिलने आऊँगा।

24 अपने तमाम राहनुमाओं और तमाम मुक़द्दसीन को मेरा सलाम कहना। इटली के ईमानदार आपको सलाम कहते हैं।

25 अल्लाह का फ़ज़ल आप सबके साथ रहे।

## याकूब

1 यह खत अल्लाह और खुदावंद ईसा मसीह के खादिम याकूब की तरफ से है।  
गैरयहूदी क्रीमों में बिखरे हुए बारह इसराईली कबीलों को सलाम।

### ईमान और हिकमत

2 मेरे भाइयो, जब आपको तरह तरह की आजमाइशों का सामना करना पड़े तो अपने आपको खुशकिसमत समझें, 3 क्योंकि आप जानते हैं कि आपके ईमान के आजमाए जाने से साबितकदमी पैदा होती है। 4 चुनौचे साबितकदमी को बढने दें, क्योंकि जब वह तकमील तक पहुँचेगी तो आप बालिग और कामिल बन जाएंगे, और आपमें कोई भी कमी नहीं पाई जाएगी। 5 लेकिन अगर आपमें से किसी में हिकमत की कमी हो तो अल्लाह से माँगे जो सबको फ़ैयाजी से और बगैर झिड़की दिए देता है। वह जरूर आपको हिकमत देगा। 6 लेकिन अपनी गुज़ारिश ईमान के साथ पेश करें और शक न करें, क्योंकि शक करनेवाला समुंदर की मौज की मानिंद होता है जो हवा से इधर उधर उछलती बहती जाती है। 7 ऐसा शख्स न समझे कि मुझे खुदावंद से कुछ मिलेगा, 8 क्योंकि वह दोदिला और अपने हर काम में गैरमुस्तकिलमिजाज है।

### गुरबत और दौलत

9 परतहाल भाई मसीह में अपने ऊँचे मरतबे पर फ़खर करे 10 जबकि दौलतमंद शख्स अपने अदना मरतबे पर फ़खर करे, क्योंकि वह जंगली फूल की तरह जल्द ही जाता रहेगा। 11 जब सूरज तुल होता है तो उस की झलसा देनेवाली धूप में पौदा मुरझा जाता, उसका फूल गिर जाता और उस की तमाम खूबसूरती खत्म हो जाती है। उस तरह दौलतमंद शख्स भी काम करते करते मुरझा जाएगा।

### आज़माइश

12 मुबारक है वह जो आजमाइश के वक्त साबितकदम रहता है, क्योंकि कायम रहने पर उसे जिंदगी का वह ताज मिलेगा जिसका वादा अल्लाह ने उनसे किया है जो उससे मुहब्बत रखते हैं। 13 आजमाइश के वक्त कोई न कहे कि अल्लाह मुझे आजमाइश में फँसा रहा है। न तो अल्लाह को बुराई से आजमाइश में फँसाया जा सकता है, न वह किसी को फँसाता है। 14 बल्कि हर एक की अपनी बुरी खाहिशात उसे खीचकर और उकसाकर आजमाइश में फँसा देती है। 15 फिर यह खाहिशात हामिला होकर गुनाह को जन्म देती है और गुनाह बालिग होकर मौत को जन्म देता है।

16 मेरे अज़ीज़ भाइयो, फ़रेब मत खाना! 17 हर अच्छी नेमत और हर अच्छा तोहफ़ा आसमान से नाज़िल होता है, नूरों के बाप से, जिसमें न कभी तबदीली आती है, न बदलते हुए सायों की-सी हालत पाई जाती है। 18 उसी ने अपनी मरज़ी से हमें सचचाई के कलाम के वसीले से पैदा किया। यों हम एक तरह से उस की तमाम मखलूक़ात का पहला फल है।

### सुनना काफ़ी नहीं है

19 मेरे अज़ीज़ भाइयो, इसका खयाल रखना, हर शख्स सुनने में तेज़ हो, लेकिन बोलने और गुस्सा करने में धीमा। 20 क्योंकि इन्सान का गुस्सा वह रास्तबाज़ी पैदा नहीं करता जो अल्लाह चाहता है। 21 चुनौचे अपनी जिंदगी की गंदी आदतें और शरीर चाल-चलन दूर करके हलीमी से कलामे-मुक़द्दस का वह बीज क़बूल करें जो आपके अंदर बोया गया है, क्योंकि यही आपको नजात दे सकता है।

22 कलामे-मुक़द्दस को न सिर्फ़ सुने बल्कि उस पर अमल भी करें, वरना आप अपने आपको फ़रेब देंगे। 23 जो कलाम को सुनकर उस पर अमल नहीं करता वह उस आदमी की मानिंद है जो आईने में अपने चेहरे पर नज़र डालता है। 24 अपने आपको देखकर वह चला जाता है और फ़ौरन भूल जाता है कि मैंने क्या कुछ देखा। 25 इसकी निसबत वह मुबारक है जो आज्ञाद करनेवाली कामिल शरीअत में गौर से नज़र डालकर उसमें कायम रहता है और उसे सुनने के बाद नहीं भूलता बल्कि उस पर अमल करता है।

26 क्या आप अपने आपको दीनदार समझते हैं? अगर आप अपनी ज़बान पर काबू नहीं रख सकते तो आप अपने आपको फ़रेब देते हैं। फिर आपकी दीनदारी का इज़हार बेकार है। 27 खुदा बाप की नज़र में दीनदारी का पाक और बेदाग़ इज़हार यह है, यतीमों और बेवाओं की देख-भाल करना जब वह मुसीबत में हों और अपने आपको दुनिया की आलूदगी से बचाए रखना।

1 मेरे भाइयो, लाज़िम है कि आप जो हमारे जलाली खुदावंद ईसा मसीह पर ईमान रखते हैं जानिबदारी न दिखाएँ। 2 फ़र्ज़ करें कि एक आदमी सोने की अंगूठी और शानदार कपड़े पहने हुए आपकी जमात में आ जाए और साथ साथ एक गरीब आदमी भी मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए अंदर आए। 3 और आप शानदार कपड़े पहने हुए आदमी पर ख़ास ध्यान देकर उससे कहें, “यहाँ इस अच्छी कुर्सी पर तशीफ़ रखें,” लेकिन गरीब आदमी को कहें, “वहाँ खड़ा हो जा” या “आ, मेरे पाँवों के पास फ़र्श पर बैठ जा।” 4 क्या आप ऐसा करने से मुजरिमाना खयालातवाले मुसिफ़ नहीं साबित हुए? क्योंकि आपने लोगों में नारवा फ़रक़ किया है।

5 मेरे अज़ीज़ भाइयो, सुनें! क्या अल्लाह ने उन्हें नहीं चुना जो दुनिया की नज़र में गरीब हैं ताकि वह ईमान में दौलतमंद हो जाएँ? यही लोग वह बादशाही मीरास में पाएँगे जिसका वादा अल्लाह ने उनसे किया है जो उसे प्यार करते हैं। 6 लेकिन आपने ज़रूरतमंदों की बेइज़्जती की है। ज़रा सोच लें, वह कौन हैं जो आपको दबाते और अदालत में घसीटकर ले जाते हैं? क्या यह दौलतमंद ही नहीं हैं? 7 वही तो ईसा पर कुफ़र बकते हैं, उस अज़ीम नाम पर जिसके पैरोकार आप बन गए हैं।

8 अल्लाह चाहता है कि आप कलामे-मुक़द्दस में मज़कूर शाही शरीअत पूरी करें, “अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।” 9 चुनौचे जब आप जानिबदारी दिखाते हैं तो गुनाह करते हैं और शरीअत आपको मुजरिम ठहराती है। 10 मत भूलना कि जिसने शरीअत का सिर्फ़ एक हुक़म तोड़ा है वह पूरी शरीअत का कुसूरवार ठहरता है। 11 क्योंकि जिसने फ़रमाया, “ज़िना न करना” उसने यह भी कहा, “क़त्ल न करना।” हो सकता है कि आपने ज़िना तो न किया हो, लेकिन किसी को क़त्ल किया हो। तो भी आप उस एक ज़ुर्म की वजह से पूरी शरीअत तोड़ने के मुजरिम बन गए हैं। 12 चुनौचे जो कुछ भी आप कहते और करते हैं याद रखें कि आज़ाद करनेवाली शरीअत आपकी अदालत करेगी। 13 क्योंकि अल्लाह अदालत करते वक़्त उस पर रहम नहीं करेगा जिसने खुद रहम नहीं दिखाया। लेकिन रहम अदालत पर ग़ालिब आ जाता है। जब आप रहम करेंगे तो अल्लाह आप पर रहम करेगा।

### ईमान नेक कामों के बग़ैर मुरदा है

14 मेरे भाइयो, अगर कोई ईमान रखने का दावा करे, लेकिन उसके मुताबिक़ ज़िंदगी न गुज़ारे तो उसका क्या फ़ायदा है? क्या ऐसा ईमान उसे नजात दिला सकता है? 15 फ़र्ज़ करें कि कोई भाई या बहन कपड़ों और रोज़मर्रा रोटी की ज़रूरतमंद हो। 16 यह देखकर आपमें से कोई उससे कहे, “अच्छा जी, खुदा हाफ़िज़। गरम कपड़े पहनो और जी भरकर खाना खाओ।” लेकिन वह खुद यह ज़रूरियात पूरी करने में मदद न करे। क्या इसका कोई फ़ायदा है? 17 गरज़, महज़ ईमान काफ़ी नहीं। अगर वह नेक कामों से अमल में न लाया जाए तो वह मुरदा है।

18 हो सकता है कोई एतराज़ करे, “एक शख्स के पास तो ईमान होता है, दूसरे के पास नेक काम।” आएँ, मुझे दिखाएँ कि आप नेक कामों के बग़ैर किस तरह ईमान रख सकते हैं। यह तो नामुमकिन है। लेकिन मैं ज़रूर आपको अपने नेक कामों से दिखा सकता हूँ कि मैं ईमान रखता हूँ। 19 अच्छा, आप कहते हैं, “हम ईमान रखते हैं कि एक ही खुदा है।” शाबाश, यह बिलकुल सहीह है। शयातीन भी यह ईमान रखते हैं, गो वह यह जानकर ख़ौफ़ के मारे थरथरते हैं। 20 होश में आएँ! क्या आप नहीं समझते कि नेक आमाल के बग़ैर ईमान बेकार है? 21 हमारे बाप इब्राहीम पर गौर करें। वह तो इसी वजह से रास्तबाज़ ठहराया गया कि उसने अपने बेटे इसहाक़ को क़ुरबानगाह पर पेश किया। 22 आप खुद देख सकते हैं कि उसका ईमान और नेक काम मिलकर अमल कर रहे थे। उसका ईमान तो उससे मुक़म्मल हुआ जो कुछ उसने किया 23 और इस तरह ही कलामे-मुक़द्दस की यह बात पूरी हुई, “इब्राहीम ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ करार दिया।” इसी वजह से वह “अल्लाह का दोस्त” कहलाया। 24 यों आप खुद देख सकते हैं कि इनसान अपने नेक आमाल की बिना पर रास्तबाज़ करार दिया जाता है, न कि सिर्फ़ ईमान रखने की वजह से।

25 राहब फ़ाहिशा की मिसाल भी लें। उसे भी अपने कामों की बिना पर रास्तबाज़ करार दिया गया जब उसने इसराईली जासूसों की मेहमान-नवाज़ी की और उन्हें शहर से निकलने का दूसरा रास्ता दिखाकर बचाया।

26 गरज़, जिस तरह बदन रूह के बग़ैर मुरदा है उसी तरह ईमान भी नेक आमाल के बग़ैर मुरदा है।

## 3

### जबान

1 मेरे भाइयो, आपमें से ज़्यादा उस्ताद न बनें। आपको मालूम है कि हम उस्तादों की ज़्यादा सख्ती से अदालत की जाएगी। 2 हम सबसे तो कई तरह की ग़लतियाँ सरज़द होती हैं। लेकिन जिस शख्स से बोलने में कभी ग़लती नहीं होती वह कामिल है और अपने पूरे बदन को काबू में रखने के काबिल है। 3 हम थोड़े के मुँह में लगाव का दहाना रख देते हैं ताकि वह हमारे हुक़म पर चले, और इस तरह हम अपनी मरज़ी से उसका पूरा जिस्म चला लेते हैं। 4 या बादबानी जहाज़ की मिसाल लें। जितना

भी बड़ा वह हो और जितनी भी तेज हवा चलती हो नाखुदा एक छोटी-सी पतवार के ज़रीए उसका सब ठीक रखता है। यों ही वह उसे अपनी मरज़ी से चला लेता है।<sup>5</sup> इसी तरह जबान एक छोटा-सा अजू है, लेकिन वह बड़ी बड़ी बातें करती है।

देखें, एक बड़े जंगल को भस्म करने के लिए एक ही चिंगारी काफ़ी होती है।<sup>6</sup> जबान भी आग की मानिंद है। बदन के दीगर आज्ञा के दरमियान रहकर उसमें नारास्ती की पूरी दुनिया पाई जाती है। वह पूरे बदन को आलूदा कर देती है, हों इससान की पूरी जिंदगी को आग लगा देती है, क्योंकि वह खुद जहन्नुम की आग से सुलगाई गई है।<sup>7</sup> देखें, इससान हर किसम के जानवरों पर काबू पा लेता है और उसने ऐसा किया भी है, खाह जंगली जानवर हों या परिते, रेगनेवाले हों या समुंदरी जानवर।<sup>8</sup> लेकिन जबान पर कोई काबू नहीं पा सकता, इस बेताब और शरीर चीज़ पर जो मोहलक ज़हर से लबालब भरी है।<sup>9</sup> जबान से हम अपने खुदावंद और बाप की सताइश भी करते हैं और दूसरों पर लानत भी भेजते हैं, जिन्हें अल्लाह की सूरत पर बनाया गया है।<sup>10</sup> एक ही मुँह से सताइश और लानत निकलती है। मेरे भाइयो, ऐसा नहीं होना चाहिए।<sup>11</sup> यह कैसे हो सकता है कि एक ही चश्मे से मीठा और कड़वा पानी फूट निकले।<sup>12</sup> मेरे भाइयो, क्या अंजीर के दरख्त पर जैतून लग सकते हैं या अंगूर की बेल पर अंजीर? हरगिज़ नहीं! इसी तरह नमकीन चश्मे से मीठा पानी नहीं निकल सकता।

### आसमान से हिकमत

<sup>13</sup> क्या आपमें से कोई दाना और समझदार है? वह यह बात अपने अच्छे चाल-चलन से जाहिर करे, हिकमत से पैदा होनेवाली हलीमी के नेक कामों से।<sup>14</sup> लेकिन खबरदार! अगर आप दिल में हसद की कड़वाहट और खुदगर्ज़ी पाल रहे हैं तो इस पर शेखी मत मारना, न सच्चाई के खिलाफ झूट बोलें।<sup>15</sup> ऐसा फ़ख़र आसमान की तरफ से नहीं है, बल्कि दुनियावादी, गैररूहानी और इबलीस से है।<sup>16</sup> क्योंकि जहाँ हसद और खुदगर्ज़ी है वहाँ फ़साद और हर शरीर काम पाया जाता है।<sup>17</sup> आसमान की हिकमत फ़रक है। अञ्जल तो वह पाक और मुक़द्दस है। नीज़ वह अमनपसंद, नरमदिल, फरमाँबरदार, रहम और अच्छे फल से भरी हुई, गैरजानिबदार और खुलूसदिल है।<sup>18</sup> और जो सुलह कराते हैं उनके लिए रास्तबाज़ी का फल सलामती से बोया जाता है।

## 4

### दुनिया से दोस्ती

<sup>1</sup> यह लड़ाइयाँ और झगड़े जो आपके दरमियान हैं कहाँ से आते हैं? क्या इनका सरचश्मा वह बुरी खाहिशात नहीं जो आपके आज्ञा में लडती रहती है? <sup>2</sup> आप किसी चीज़ की खाहिश रखते हैं, लेकिन उसे हासिल नहीं कर सकते। आप क़त्ल और हसद करते हैं, लेकिन जो कुछ आप चाहते हैं वह पा नहीं सकते। आप झगड़ते और लडते हैं। तो भी आपके पास कुछ नहीं है, क्योंकि आप अल्लाह से माँगते नहीं।<sup>3</sup> और जब आप माँगते हैं तो आपको कुछ नहीं मिलता। वजह यह है कि आप ग़लत नीयत से माँगते हैं। आप इससे अपनी खुदगर्ज़ खाहिशात पूरी करना चाहते हैं।<sup>4</sup> बेवफ़ा लोगो! क्या आपको नहीं मालूम कि दुनिया का दोस्त अल्लाह का दुश्मन होता है? जो दुनिया का दोस्त बना चाहता है वह अल्लाह का दुश्मन बन जाता है।<sup>5</sup> या क्या आप समझते हैं कि कलामे-मुक़द्दस की यह बात बेतुकी-सी है कि अल्लाह ग़ैरत से उस रूह का आरज़ुमंद है जिसको उसने हमारे अंदर सूकूनत करने दिया? <sup>6</sup> लेकिन वह हमें इससे कहीं ज़्यादा फ़ज़ल बख़शाता है। कलामे-मुक़द्दस यों फ़रमाता है, “अल्लाह मगरसों का मुकाबला करता लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है।”

<sup>7</sup> ग़रज़, अल्लाह के ताबे हो जाएँ। इबलीस का मुकाबला करें तो वह भाग जाएगा।<sup>8</sup> अल्लाह के करीब आ जाएँ तो वह आपके करीब आएगा। गुनाहगारो, अपने हाथों को पाक-साफ़ करें। दोदिलो, अपने दिलों को मख़सूसो-मुक़द्दस करें।<sup>9</sup> अफ़सोस करें, मातम करें, ख़ब रोएँ। आपकी हँसी मातम में बदल जाए और आपकी ख़ुशी मायूसी में।<sup>10</sup> अपने आपको खुदावंद के सामने नीचा करें तो वह आपको सरफ़राज़ करेगा।

### एक दूसरे का मुंसिफ़ मत बनना

<sup>11</sup> भाइयो, एक दूसरे पर तोहमत मत लगाना। जो अपने भाई पर तोहमत लगाता या उसे मुज़रिम ठहराता है वह शरीअत पर तोहमत लगाता है और शरीअत को मुज़रिम ठहराता है। और जब आप शरीअत पर तोहमत लगाते हैं तो आप उसके पैरोकार नहीं रहते बल्कि उसके मुंसिफ़ बन गए हैं।<sup>12</sup> शरीअत देनेवाला और मुंसिफ़ सिर्फ़ एक ही है और वह है अल्लाह जो नजात देने और हलाक करने के काबिल है। तो फिर आप कौन हैं जो अपने आपको मुंसिफ़ समझकर अपने पडोसी को मुज़रिम ठहरा रहे हैं!

### शेखी मत मारना

<sup>13</sup> और अब मेरी बात सुनें, आप जो कहते हैं, “आज या कल हम फुल्लों फुल्लों शहर में जाएंगे। वहाँ हम एक साल ठहरकर कारोबार करके पैसे कमाएंगे।”<sup>14</sup> देखें, आप यह भी नहीं जानते कि कल क्या होगा। आपकी जिंदगी चीज़ ही किया है!

आप भाप ही हैं जो थोड़ी देर के लिए नज़र आती, फिर गायब हो जाती है। <sup>15</sup> बल्कि आपको यह कहना चाहिए, “अगर खुदावंद की मरजी हुई तो हम जिंएंगे और यह या वह करेंगे।” <sup>16</sup> लेकिन फिलहाल आप शेखी मारकर अपने गुरू का इज़हार करते हैं। इस क्रिस्म की तमाम शेखीबाजी बुरी है।

<sup>17</sup> चुनौचे जो जानता है कि उसे क्या क्या नेक काम करना है, लेकिन फिर भी कुछ नहीं करता वह गुनाह करता है।

## 5

### दौलतमंदो, खबरदार!

<sup>1</sup> दौलतमंदो, अब मेरी बात सुनें! खूब रोएँ और गिर्याओ-जारी करें, क्योंकि आप पर मुसीबत आनेवाली है। <sup>2</sup> आपकी दौलत सड़ गई है और कीड़े आपके शानदार कपड़े खा गए हैं। <sup>3</sup> आपके सोने और चाँदी को जंग लग गया है। और उनकी जंगआलूदा हालत आपके खिलाफ गवाही देगी और आपके जिस्मों को आग की तरह खा जाएगी। क्योंकि आपने इन आखिरी दिनों में अपने लिए खजाने जमा कर लिए हैं। <sup>4</sup> देखें, जो मज़दूरी आपने फसल की कटाई करनेवालों से बाज़ रखी है वह आपके खिलाफ चिल्ला रही है। और आपकी फसल जमा करनेवालों की चीखें आसमानी लश्करोँ के रब के कानों तक पहुँच गई हैं। <sup>5</sup> आपने दुनिया में ऐयाशी और ऐशो-इशरत की जिंदगी गुजारी है। जबह के दिन आपने अपने आपको मोटा-ताजा कर दिया है। <sup>6</sup> आपने रास्तबाज़ को मुजरिम ठहराकर कल्ल किया है, और उसने आपका मुकाबला नहीं किया।

### सब्र और दुआ

<sup>7</sup> भाइयो, अब सब्र से खुदावंद की आमद के इंतज़ार में रहें। किसान पर गौर करें जो इस इंतज़ार में रहता है कि ज़मीन अपनी क्रीमती फसल पैदा करे। वह कितने सब्र से खरीफ और बहार की बारिशों का इंतज़ार करता है! <sup>8</sup> आप भी सब्र करें और अपने दिलों को मज़बूत रखें, क्योंकि खुदावंद की आमद करीब आ गई है।

<sup>9</sup> भाइयो, एक दूसरे पर मत बुड़बुड़ाना, वरना आपकी अदालत की जाएगी। मुंसिफ तो दरवाजे पर खड़ा है। <sup>10</sup> भाइयो, उन नबियों के नमूने पर चलें जिन्होंने रब के नाम में कलाम पेश करके सब्र से दुख उठाया। <sup>11</sup> देखें, हम उन्हें मुबारक कहते हैं जो सब्र से दुख बरदाश्त करते थे। आपने अय्यूब की साबितकदमी के बारे में सुना है और यह भी देख लिया कि रब ने आखिर में क्या कुछ किया, क्योंकि रब बहुत मेहरबान और रहीम है।

<sup>12</sup> मेरे भाइयो, सबसे बढ़कर यह कि आप कसम न खाएँ, न आसमान की कसम, न ज़मीन की, न किसी और चीज़ की। जब आप “हाँ” कहना चाहते हैं तो बस “हाँ” ही काफी है। और अगर इनकार करना चाहें तो बस “नहीं” कहना काफी है, वरना आप मुजरिम ठहरेंगे।

<sup>13</sup> क्या आपमें से कोई मुसीबत में फँसा हुआ है? वह दुआ करे। क्या कोई खुश है? वह सताइश के गीत गाए। <sup>14</sup> क्या आपमें से कोई बीमार है? वह जमात के बुजुर्गों को बुलाए ताकि वह आकर उसके लिए दुआ करें और खुदावंद के नाम में उस पर तेल मलें। <sup>15</sup> फिर इमान से की गई दुआ मरीज़ को बचाएगी और खुदावंद उसे उठा खड़ा करेगा। और अगर उसने गुनाह किया हो तो उसे मुआफ किया जाएगा। <sup>16</sup> चुनौचे एक दूसरे के सामने अपने गुनाहों का इकरार करें और एक दूसरे के लिए दुआ करें ताकि आप शफा पाएँ। रास्त शख्स की मुअस्सिर दुआ से बहुत कुछ हो सकता है। <sup>17</sup> इलियास हम जैसा इनसान था। लेकिन जब उसने जोर से दुआ की कि बारिश न हो तो साढ़े तीन साल तक बारिश न हुई। <sup>18</sup> फिर उसने दुबारा दुआ की तो आसमान ने बारिश अता की और ज़मीन ने अपनी फसलें पैदा की।

<sup>19</sup> मेरे भाइयो, अगर आपमें से कोई सच्चाई से भटक जाए और कोई उसे सहीह राह पर वापस लाए <sup>20</sup> तो यकीन ज़में, जो किसी गुनाहगार को उस की गलत राह से वापस लाता है वह उस की जान को मौत से बचाएगा और गुनाहों की बड़ी तादाद को छुपा देगा।

## 1 पतरस

1 यह खत ईसा मसीह के रसूल पतरस की तरफ से है।

मैं अल्लाह के चुने हुएों को लिख रहा हूँ, दुनिया के उन मेहमानों को जो पुंतुस, गलतिया, कप्पटुकिया, आसिया और बिथुनिया के सबों में बिखरे हुए हैं। 2 खुदा बाप ने आपको बहुत देर पहले जानकर चुन लिया और उसके रूह ने आपको मखसूसो-मुकद्दस कर दिया। नतीजे में आप ईसा मसीह के ताबे और उसके छिडकाए गए खून से पाक-साफ हो गए हैं।

अल्लाह आपको भरपूर फ़ज़ल और सलामती बख्खो।

### ज़िंदा उम्मीद

3 खुदा हमारे खुदावंद ईसा मसीह के बाप की तारीफ़ हो! अपने अज़ीम रहम से उसने ईसा मसीह को ज़िंदा करने के वसीले से हमें नए सिरे से पैदा किया है। इससे हमें एक ज़िंदा उम्मीद मिली है, 4 एक ऐसी मीरास जो कभी नहीं सडेगी, कभी नहीं नापाक हो जाएगी और कभी नहीं मुरझाएगी। क्योंकि यह आसमान पर आपके लिए महफूज़ रखी गई है। 5 और अल्लाह आपके इमान के ज़रीए अपनी कुदरत से आपकी उस वक़्त तक हिफ़ाज़त करता रहेगा जब तक आपको नजात न मिल जाए, वह नजात जो आखिरत के दिन सब पर ज़ाहिर होने के लिए तैयार है।

6 उस वक़्त आप खुशी मनाएँगे, गो फ़िलहाल आपको थोड़ी देर के लिए तरह तरह की आजमाइशों का सामना करके गम खाना पडता है 7 ताकि आपका इमान असली साबित हो जाए। क्योंकि जिस तरह आग सोने को आजमाकर खालिस बना देती है उसी तरह आपका इमान भी आजमाया जा रहा है, हालाँकि यह फ़ानी सोने से कहीं ज्यादा कीमती है। क्योंकि अल्लाह चाहता है कि आपको उस दिन तारीफ़, जलाल और इज़्ज़त मिल जाए जब ईसा मसीह ज़ाहिर होगा। 8 उसी को आप प्यार करते हैं अगरचे आपने उसे देखा नहीं, और उसी पर आप इमान रखते हैं गो वह आपको इस वक़्त नज़र नहीं आता। हाँ, आप दिल में नाक़ाबिले-बयान और जलाली खुशी मनाएँगे, 9 जब आप वह कुछ पाएँगे जो इमान की मनज़िले-मक़सूद है यानी अपनी जानों की नजात।

10 नबी इसी नजात की तलाश और तफ़तीश में लगे रहे, और उन्होंने उस फ़ज़ल की पेशगोई की जो अल्लाह आपको देनेवाला था। 11 उन्होंने मालूम करने की कोशिश की कि मसीह का रूह जो उनमें था किस वक़्त या किन हालात के बारे में बात कर रहा था जब उसने मसीह के दुख और बाद के जलाल की पेशगोई की। 12 उन पर इतना ज़ाहिर किया गया कि उनकी यह पेशगोइयाँ उनके अपने लिए नहीं थीं, बल्कि आपके लिए। और अब यह सब कुछ आपको उन्हीं के वसीले से पेश किया गया है जिन्होंने आसमान से भेजे गए रूहूल-कुदूस के ज़रीए आपको अल्लाह की खुशाख़बरी सुनाई है। यह ऐसी बातें हैं जिन पर फ़रिश्ते भी नज़र डालने के आरज़ूद हैं।

### मुकद्दस ज़िंदागी गुज़ारना

13 चुनौचे ज़हनी तौर पर कमरबस्ता हो जाएँ। होशमंदी से अपनी पूरी उम्मीद उस फ़ज़ल पर रखें जो आपको ईसा मसीह के ज़ुहर पर बख्शा जाएगा। 14 आप अल्लाह के ताबेफ़रमान फ़रज़ंद हैं, इसलिए उन बुरी खाहिशत को अपनी ज़िंदागी में जगह न दें जो आप जाहिल होते वक़्त रखते थे। वरना वह आपकी ज़िंदागी को अपने साँचे में ढाल लेगी। 15 इसके बजाए अल्लाह की मानिंद बनें जिसने आपको बुलाया है। जिस तरह वह कुदूस है उसी तरह आप भी हर वक़्त मुकद्दस ज़िंदागी गुज़ारें। 16 क्योंकि कलामे-मुकद्दस में लिखा है, “अपने आपको मखसूसो-मुकद्दस रखो क्योंकि मैं मुकद्दस हूँ।”

17 और याद रखें कि आसमानी बाप जिससे आप दुआ करते हैं जानिवदारी नहीं करता बल्कि आपके अमल के मुताबिक आपका फ़ैसला करेगा। चुनौचे जब तक आप इस दुनिया के मेहमान रहेंगे खुदा के ख़ौफ़ में ज़िंदागी गुज़ारें। 18 क्योंकि आप खुद जानते हैं कि आपको बापदादा की बेमानी ज़िंदागी से छुड़ाने के लिए क्या फ़िघा दिया गया। यह सोने या चाँदी जैसी फ़ानी चीज़ नहीं थी 19 बल्कि मसीह का कीमती खून था। उसी को बेनुक्स और बेदाग लेले की हैसियत से हमारे लिए क़ुरबान किया गया। 20 उसे दुनिया की तखलीक से पेशतर चुना गया, लेकिन इन आखिरी दिनों में आपकी खातिर ज़ाहिर किया गया। 21 और उसके वसीले से आप अल्लाह पर इमान रखते हैं जिसने उसे मुरदों में से ज़िंदा करके इज़्ज़तो-जलाल दिया ताकि आपका इमान और उम्मीद अल्लाह पर हो।

22 सच्चाई के ताबे हो जाने से आपको मखसूसो-मुकद्दस कर दिया गया और आपके दिलों में भाइयों के लिए बेरिया मुहब्बत डाली गई है। चुनौचे अब एक दूसरे को खुलूसदिली और लगन से प्यार करते रहें। 23 क्योंकि आपकी नए सिरे से

पैदाइश हुई है। और यह किसी फ़ानी बीज का फल नहीं है बल्कि अल्लाह के लाफ़ानी, जिंदा और कायम रहनेवाले कलाम का फल है। 24 यों कलामे-मुकद्दस फ़रमाता है,

“तमाम इनसान घास ही है,

उनकी तमाम शानो-शौकत जंगली फूल की मानिंद है।

घास तो मुरझा जाती और फूल गिर जाता है,

25 लेकिन रब का कलाम अबद तक कायम रहता है।”

मज़कूरा कलाम अल्लाह की ख़ुशख़बरी है जो आपको सुनाई गई है।

## 2

### जिंदा पत्थर और मुकद्दस कौम

1 चुँक आप अपनी जिंदगी से तमाम तरह की बुराई, धोकेबाज़ी, रियाकारी, हसद और बूहतान निकालें। 2 चुँक आप नौमौलद बच्चे हैं इसलिए ख़ालिस रूहानी दूध पीने के आरज़ुमंद रहें, क्योंकि इसे पीने से ही आप बढ़ते बढ़ते नजात की नौबत तक पहुँचेंगे। 3 जिन्होंने ख़ुदावंद की भलाई का तज़रबा किया है उनके लिए ऐसा करना ज़रूरी है।

4 ख़ुदावंद के पास आँ, उस जिंदा पत्थर के पास जिसे इनसानों ने रद किया है, लेकिन जो अल्लाह के नज़दीक चुनीदा और क़ीमती है। 5 और आप भी जिंदा पत्थर हैं जिनको अल्लाह अपने रूहानी मक़दिस को तामीर करने के लिए इस्तेमाल कर रहा है। न सिर्फ़ यह बल्कि आप उसके मख़सूसो-मुकद्दस इमाम हैं। ईसा मसीह के वसीले से आप ऐसी रूहानी क़ुरबानियों पेश कर रहे हैं जो अल्लाह को पसंद है। 6 क्योंकि कलामे-मुकद्दस फ़रमाता है,

“देखो, मैं सियून में एक पत्थर रख देता हूँ,

कोने का एक चुनीदा और क़ीमती पत्थर।

जो उस पर ईमान लाएगा

उसे शरमिदा नहीं किया जाएगा।”

7 यह पत्थर आपके नज़दीक जो ईमान रखते हैं बेशक़ीमत है। लेकिन जो ईमान नहीं लाए उन्होंने उसे रद किया।

“जिस पत्थर को मकान बनानेवालों ने रद किया

वह कोने का बुनियादी पत्थर बन गया।”

8 नीज़ वह एक ऐसा पत्थर है

“जो ठोकर का बाइस बनेगा,

एक चटान जो ठेस लगने का सबब होगी।”

वह इसलिए ठोकर खाते हैं क्योंकि वह कलामे-मुकद्दस के ताबे नहीं होते। यही कुछ अल्लाह की उनके लिए मरज़ी थी।

9 लेकिन आप अल्लाह की चुनी हुई नसल हैं, आप आसमानी बादशाह के इमाम और उस की मख़सूसो-मुकद्दस कौम हैं। आप उस की मिलकियत बन गए हैं ताकि अल्लाह के क़वी कामों का एलान करें, क्योंकि वह आपको तारीकी से अपनी हैरतअंगेज़ रौशनी में लाया है। 10 एक वक़्त था जब आप उस की कौम नहीं थे, लेकिन अब आप अल्लाह की कौम हैं। पहले आप पर रहम नहीं हुआ था, लेकिन अब अल्लाह ने आप पर अपने रहम का इज़हार किया है।

### अल्लाह के ख़ादिम

11 अज़ीज़ो, आप इस दुनिया में अजनबी और मेहमान हैं। इसलिए मैं आपको ताकीद करता हूँ कि आप जिस्मानी ख़ाहिशात का इनकार करें। क्योंकि यह आपकी जान से लडती है। 12 ग़ैरईमानदारों के दरमियान रहते हुए इतनी अच्छी जिंदगी गुज़ारें कि गो वह आप पर ग़लत काम करने की तोहमत भी लगाएँ तो भी उन्हें आपके नेक काम नज़र आएँ और उन्हें अल्लाह की आमद के दिन उस की तमज़ीद करनी पड़े।

13 ख़ुदावंद की खातिर हर इनसानी इख़्तियार के ताबे रहें, ख़ाह बादशाह हो जो सबसे आला इख़्तियार रखनेवाला है, 14 ख़ाह उसके वज़ीर जिन्हें उसने इसलिए मुक़र्रर किया है कि वह ग़लत काम करनेवालों को सज़ा और अच्छा काम करनेवालों को शाबाश दें। 15 क्योंकि अल्लाह की मरज़ी है कि आप अच्छा काम करने से नासमझ लोगों की जाहिल बातों को बंद करें। 16 आप आज़ाद हैं, इसलिए आज़ादाना जिंदगी गुज़ारें। लेकिन अपनी आज़ादी को ग़लत काम छुपाने के लिए इस्तेमाल न करें, क्योंकि आप अल्लाह के ख़ादिम हैं। 17 हर एक का मुनासिब एहताराम करें, अपने बहन-भाइयों से मुहब्बत रखें, ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें, बादशाह का एहताराम करें।

### मसीह के दुख का नमूना



18 ऐ गुलामो, हर लिहाज से अपने मालिकों का एहताराम करके उनके ताबे रहें। और यह सुलूक न सिर्फ उनके साथ हो जो नेक और नरमदिल हैं बल्कि उनके साथ भी जो ज़ालिम हैं। 19 क्योंकि अगर कोई अल्लाह की मरजी का खयाल करके बेइन्साफ तकलीफ का गम सब्र से बरदाश्त करे तो यह अल्लाह का फ़ज़ल है। 20 बेशक इसमें फ़ख़र की कोई बात नहीं अगर आप सब्र से पिटाई की वह सज़ा बरदाश्त करें जो आपको ग़लत काम करने की वजह से मिली हो। लेकिन अगर आपको अच्छा काम करने की वजह से दुख सहना पड़े और आप यह सज़ा सब्र से बरदाश्त करें तो यह अल्लाह का फ़ज़ल है। 21 आपको इसी के लिए बुलाया गया है। क्योंकि मसीह ने आपकी खातिर दुख सहने में आपके लिए एक नमूना छोड़ा है। और वह चाहता है कि आप उसके नक़्शे-कदम पर चलें। 22 उसने तो कोई गुनाह न किया, और न कोई फ़रेब की बात उसके मुँह से निकली। 23 जब लोगों ने उसे गालियाँ दीं तो उसने जवाब में गालियाँ न दीं। जब उसे दुख सहना पड़ा तो उसने किसी को धमकी न दी बल्कि उसने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया जो इन्साफ से अदालत करता है। 24 मसीह खुद अपने बदन पर हमारे गुनाहों को सलीब पर ले गया ताकि हम गुनाहों के एतबार से मर जाएँ और यों हमारा गुनाह से ताल्लुक खत्म हो जाए। अब वह चाहता है कि हम रास्तबाज़ी की ज़िंदगी गुज़ारें। क्योंकि आपको उसी के ज़ख़मों के वसीले से शफ़ा मिली है। 25 पहले आप आबारा भेड़ों की तरह आबारा फिर रहे थे, लेकिन अब आप अपनी जानों के चरवाहे और निगरान के पास लौट आए हैं।

### 3

#### बीवी और शौहर

1 इसी तरह आप बीवियों को भी अपने अपने शौहर के ताबे रहना है। क्योंकि इस तरह वह जो ईमान नहीं रखते अपनी बीवी के चाल-चलन से जिते जा सकते हैं। कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रहेगी 2 क्योंकि वह देखेंगे कि आप कितनी पाकीज़गी से खुदा के ख़ौफ़ में ज़िंदगी गुज़ारती हैं। 3 इसकी फ़िक्र मत करना कि आप ज़ाहिरी तौर पर आरास्ता हों, मसलन खास तौर-तरीकों से गुंथे हुए बालों से या सोने के ज़ेवर और शानदार लिबास पहनने से। 4 इसके बजाए इसकी फ़िक्र करें कि आपकी बातिनी शख्सियत आरास्ता हो। क्योंकि जो रूह नरमदिली और सूकन के लाफ़ानी जेवरों से सजी हुई है वही अल्लाह के नज़दीक बेशकीमत है। 5 माज़ी में अल्लाह पर उम्मीद रखनेवाली मुक़द्दस खवातीन भी इसी तरह अपना सिंगार किया करती थीं। यों वह अपने शौहरों के ताबे रही, 6 सारा की तरह जो अपने शौहर इब्राहीम को आका कहकर उस की मानती थीं। आप तो सारा की बेटियाँ बन गई हैं। चुनौते नेक काम करें और किसी भी चीज़ से न डरें, खाह वह कितनी ही डरावनी क्यों न हो।

7 इस तरह लाज़िम है कि आप जो शौहर हैं समझ के साथ अपनी बीवियों के साथ ज़िंदगी गुज़ारें, यह जानकर कि यह आपकी निसबत कमज़ोर हैं। उनकी इज़्जत करें, क्योंकि यह भी आपके साथ ज़िंदगी के फ़ज़ल की वारिस है। ऐसा न हो कि इसमें बेपरवाई करने से आपकी दुआइया ज़िंदगी में स्कावट पैदा हो जाए।

#### नेक ज़िंदगी गुज़ारने की वजह से दुख

8 आख़िर में एक और बात, आप सब एक ही सोच रखें और एक दूसरे से ताल्लुकात में हमददी, प्यार, रहम और हलीमी का इज़हार करें। 9 किसी के ग़लत काम के जवाब में ग़लत काम मत करना, न किसी की गालियों के जवाब में गाली देना। इसके बजाए जवाब में ऐसे शख्स को बरकत दें, क्योंकि अल्लाह ने आपको भी इसलिए बुलाया है कि आप उस की बरकत विरासत में पाएँ। 10 कलामे-मुक़द्दस यों फरमाता है,

“कौन मजे से ज़िंदगी गुज़ारना

और अच्छे दिन देखना चाहता है?

वह अपनी ज़बान को शरीर बातें करने से रोके

और अपने होंटों को झूट बोलने से।

11 वह बुराई से मुँह फेरकर नेक काम करे,

सुलह-सलामती का तालिब होकर

उसके पीछे लगा रहे।

12 क्योंकि रब की आँखें रास्तबाज़ों पर लगी रहती हैं,

और उसके कान उनकी दुआओं की तरफ मायल हैं।

लेकिन रब का चेहरा उनके खिलाफ है जो ग़लत काम करते हैं।”

13 अगर आप नेक काम करने में सरगम हों तो कौन आपको नुक़सान पहुँचाएगा? 14 लेकिन अगर आपको रास्त काम करने की वजह से दुख भी उठाना पड़े तो आप मुबारक हैं। उनकी धमकियों से मत डरना और मत घबराना 15 बल्कि अपने

दिलों में खुदावंद मसीह को मुखसूसो-मुकद्दस जानें। और जो भी आपसे आपकी मसीह पर उम्मीद के बारे में पूछे हर वक्त उसे जवाब देने के लिए तैयार रहें। लेकिन नरमदिली से और खुदा के खौफ के साथ जवाब दें। 16 साथ साथ आपका जमीर साफ हो। फिर जो लोग आपके मसीह में अच्छे चाल-चलन के बारे में गलत बातें कर रहे हैं उन्हें अपनी तोहमत पर शर्म आएगी। 17 याद रहे कि गलत काम करने की वजह से दुख सहने की निसबत बेहतर यह है कि हम नेक काम करने की वजह से तकलीफ उठाएँ, बशर्तकि यह अल्लाह की मरजी हो। 18 क्योंकि मसीह ने हमारे गुनाहों को मिटाने की खातिर एक बार सदा के लिए मौत सही। हाँ, जो रास्तबाज है उसने यह नारास्तों के लिए किया ताकि आपको अल्लाह के पास पहुँचाए। उसे बदन के एतबार से सजाए-मौत दी गई, लेकिन रूह के एतबार से उसे जिंदा कर दिया गया। 19 इस रूह के जरीए उसने जाकर कैदी रूहों को पैगाम दिया। 20 यह उनकी रूहें थी जो उन दिनों में नाफरमान थे जब नूह अपनी कशती बना रहा था। उस वक्त अल्लाह सब से इंतज़ार करता रहा, लेकिन आखिरकार सिर्फ चंद एक लोग यानी आठ अफ़राद पानी में से गुज़रकर बच निकले। 21 यह पानी उस बपतिस्मे की तरफ इशारा है जो इस वक्त आपको नजात दिलाता है। इससे जिस्म की गंदगी दूर नहीं की जाती बल्कि बपतिस्मा लेते वक्त हम अल्लाह से अर्ज करते हैं कि वह हमारा जमीर पाक-साफ़ कर दे। फिर यह आपको ईसा मसीह के जी उठने से नजात दिलाता है। 22 अब मसीह आसमान पर जाकर अल्लाह के दहने हाथ बैठ गया है जहाँ फ़रिश्ते, इख्तियारवाले और कुव्वतें उसके ताबे हैं।

## 4

### तबदीलशुदा जिंदगियाँ

1 अब चूँकि मसीह ने जिस्मानी तौर पर दुख उठाया इसलिए आप भी अपने आपको उस की-सी सोच से लैस करें। क्योंकि जिसने मसीह की खातिर जिस्मानी तौर पर दुख सह लिया है उसने गुनाह से निपट लिया है। 2 नतीजे में वह जमीन पर अपनी बाकी जिंदगी इनसान की बुरी खाहिशात पूरी करने में नहीं गुज़ारेगा बल्कि अल्लाह की मरजी पूरी करने में। 3 मार्जी में आपने काफ़ी वक्त वह कुछ करने में गुज़ारा जो ग़ैरईमानदार पसंद करते हैं यानी ऐयाशी, शहवतपरस्ती, नशाबाजी, शराबनोशी, रंगरलियों, नाच-रंग और धिनौनी बुतपरस्ती में। 4 अब आपके ग़ैरईमानदार दोस्त ताज्जुब करते हैं कि आप उनके साथ मिलकर ऐयाशी के इस तेज़ धारे में छलौंग नहीं लगाते। इसलिए वह आप पर कुफ़र बकते हैं। 5 लेकिन उन्हें अल्लाह को जवाब देना पड़ेगा जो जिंदों और मुरदों की अदालत करने के लिए तैयार खड़ा है। 6 यही वजह है कि अल्लाह की खुशखबरी उन्हें भी सुनाई गई जो अब मुरदा हैं। मकसद यह था कि वह अल्लाह के सामने रूह में जिंदगी गुज़ार सकें अगरचे इनसानी लिहाज़ से उनके जिस्म की अदालत की गई है।

### अपनी नेमतों से एक दूसरे की खिदमत करें

7 तमाम चीज़ों का खातमा करीब आ गया है। चुनौचे दुआ करने के लिए चुस्त और होशमंद रहें। 8 सबसे जरूरी बात यह है कि आप एक दूसरे से लगातार मुहब्बत रखें, क्योंकि मुहब्बत गुनाहों की बड़ी तादाद पर परदा डाल देती है। 9 बुडबुडाए बग़ैर एक दूसरे की मेहमान-नवाजी करें। 10 अल्लाह अपना फ़ज़ल मुख्तलिफ़ नेमतों से ज़ाहिर करता है। फ़ज़ल का यह इंतज़ाम वफ़ादारी से चलाते हुए एक दूसरे की खिदमत करें, हर एक उस नेमत से जो उसे मिली है। 11 अगर कोई बोले तो अल्लाह के-से अलफ़ाज़ के साथ बोले। अगर कोई खिदमत करे तो उस ताकत के जरीए जो अल्लाह उसे मुहैया करता है, क्योंकि इस तरह ही अल्लाह को ईसा मसीह के वसीले से जलाल दिया जाएगा। अज़ल से अबद तक जलाल और कुदरत उसी की हो! आमीन।

### आपकी मुसीबत ग़ैरमामूली नहीं है

12 अज़ीज़ो, इज़ारसानी की उस आग पर ताज्जुब न करें जो आपको आजमाने के लिए आप पर आन पड़ी है। यह मत सोचना कि मेरे साथ कैसी ग़ैरमामूली बात हो रही है। 13 बल्कि खुशी मनाएँ कि आप मसीह के दुखों में शरीक हो रहे हैं। क्योंकि फिर आप उस वक्त भी खुशी मनाएँगे जब मसीह का जलाल ज़ाहिर होगा। 14 अगर लोग इसलिए आपकी बेइज्जती करते हैं कि आप मसीह के पैरोकार हैं तो आप मुबारक हैं। क्योंकि इसका मतलब है कि अल्लाह का जलाली रूह आप पर ठहरा हुआ है। 15 अगर आपमें से किसी को दुख उठाना पड़े तो यह इसलिए नहीं होना चाहिए कि आप कातिल, चोर, मुजरिम या फ़सादी हैं। 16 लेकिन अगर आपको मसीह के पैरोकार होने की वजह से दुख उठाना पड़े तो न शर्माएँ बल्कि मसीह के नाम में अल्लाह की हम्दो-सना करें।

17 क्योंकि अब वक्त आ गया है कि अल्लाह की अदालत शुरू हो जाए, और पहले उसके घरवालों की अदालत की जाएगी। अगर ऐसा है तो फिर इसका अंजाम उनके लिए क्या होगा जो अल्लाह की खुशखबरी के ताबे नहीं हैं? 18 और

अगर रास्तबाज़ मुश्किल से बचेंगे तो फिर बेदीन और गुनाहगार का क्या होगा? 19 चुनौंचे जो अल्लाह की मरज़ी से दुख उठा रहे हैं वह नेक काम करने से बाज़ न आएँ बल्कि अपनी जानों को उसी के हवाले करें जो उनका वफादार खालिक है।

## 5

### अल्लाह का गल्ला

1 अब मैं आपको जो जमातों के बुजुर्ग हैं नसीहत करना चाहता हूँ। मैं खुद भी बुजुर्ग हूँ बल्कि मसीह के दुखों का गवाह भी हूँ, और मैं आपके साथ उस आनेवाले जलाल में शरीक हो जाऊँगा जो जाहिर हो जाएगा। इस हैसियत से मैं आपसे अपील करता हूँ, 2 गल्लाबान होते हुए अल्लाह के उस गल्ले की देख-भाल करें जो आपके सुपुर्द किया गया है। यह खिदमत मजबूरन न करें बल्कि खुशी से, क्योंकि यह अल्लाह की मरज़ी है। लालच के बग़ैर पूरी लगन से यह खिदमत संजाम दें। 3 जिन्हें आपके सुपुर्द किया गया है उन पर हुक्मत मत करना बल्कि गल्ले के लिए अच्छा नमूना बनें। 4 फिर जब हमारा सरदार गल्लाबान जाहिर होगा तो आपको जलाल का गैरफ़ानी ताज मिलेगा।

5 इसी तरह लाज़िम है कि आप जो जवान हैं बुजुर्गों के ताबे रहें। सब इंकिसारी का लिबास पहनकर एक दूसरे की खिदमत करें, क्योंकि अल्लाह मगररों का मुकाबला करता लेकिन फ़रोतनों पर मेहरबानी करता है। 6 चुनौंचे अल्लाह के कादिर हाथ के नीचे झुक जाएँ ताकि वह मौजूँ वक़्त पर आपको सरफ़राज़ करे। 7 अपनी तमाम परेशानियाँ उस पर डाल दें, क्योंकि वह आपकी फ़िकर करता है।

8 होशमंद रहें, जागते रहें। आपका दुश्मन इबलीस गरजते हुए शेरबबर की तरह घुमता-फिरता और किसी को हड़प कर लेने की तलाश में रहता है। 9 ईमान में मज़बूत रहकर उसका मुकाबला करें। आपको तो मालूम है कि पूरी दुनिया में आपके भाई इसी किस्म का दुख उठा रहे हैं। 10 लेकिन आपको ज़्यादा देर के लिए दुख उठाना नहीं पड़ेगा। क्योंकि हर तरह के फ़ज़ल का खुदा जिसने आपको मसीह में अपने अबदी जलाल में शरीक होने के लिए बुलाया है वह खुद आपको कामिलियत तक पहुँचाएगा, मज़बूत बनाएगा, तक्रवियत देगा और एक ठोस बुनियाद पर खड़ा करेगा। 11 अबद तक कुदरत उसी को हासिल रहे। आमीन।

### आखिरी सलाम

12 मैं आपको यह मुखतसर खत सिलवानुस की मदद से लिख रहा हूँ जिसे मैं वफादार भाई समझता हूँ। मैं इससे आपकी हौसलाअफ़ज़ाई और इसकी तसदीक करना चाहता हूँ कि यही अल्लाह का हकीकी फ़ज़ल है। इस पर कायम रहें।

13 बाबल में जो जमात अल्लाह ने आपकी तरह चुनी है वह आपको सलाम कहती है, और इसी तरह मेरा बेटा मरकुस भी। 14 एक दूसरे को मुहब्बत का बोसा देना।

आप सबकी जो मसीह में है सलामती हो।

## 2 पतरस

1 यह ख़त ईसा मसीह के खादिम और रसूल शमौन पतरस की तरफ से है।

मैं उन सबको लिख रहा हूँ जिन्हें हमारे ख़ुदा और नजातदहिदा ईसा मसीह की रास्तबाज़ी के वसीले से वही बेशकीमत ईमान बख़्शा गया है जो हमें भी मिला।

2 ख़ुदा करे कि आप उसे और हमारे ख़ुदावंद ईसा को जानने में तरक्की करते करते कसरत से फ़ज़ल और सलामती पाते जाएँ।

### अल्लाह का बुलावा

3 अल्लाह ने अपनी इलाही कुदरत से हमें वह सब कुछ अता किया है जो ख़ुदातरस जिंदगी गुज़ारने के लिए ज़रूरी है। और हमें यह उसे जान लेने से हासिल हुआ है। क्योंकि उसने हमें अपने जाती जलाल और कुदरत के ज़रीए बुलाया है। 4 इस जलाल और कुदरत से उसने हमें वह अज़ीम और बेशकीमत चीज़ें दी हैं जिनका वादा उसने किया था। क्योंकि वह चाहता था कि आप इनसे दुनिया की बुरी खाहिशात से पैदा होनेवाले फ़साद से बचकर उस की इलाही जात में शरीक हो जाएँ। 5 यह सब कुछ पेशे-नज़र रखकर पूरी लग्न से कोशिश करें कि आपके ईमान से अख़लाक पैदा हो जाए, अख़लाक से इल्म, 6 इल्म से ज़ब्त-नफ़स, ज़ब्त-नफ़स से साबितकदमी, साबितकदमी से ख़ुदातरस जिंदगी, 7 ख़ुदातरस जिंदगी से बरादराना शफ़क़त और बरादराना शफ़क़त से सबके लिए मुहब्बत। 8 क्योंकि जितना ही आप इन ख़ूबियों में बढ़ते जाएंगे उतना ही यह आपको इससे महफूज़ रखेगी कि आप हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह को जानने में सुस्त और बेफ़ल रहें। 9 लेकिन जिसमें यह ख़ूबियाँ नहीं हैं उस की नज़र इतनी कमज़ोर है कि वह अंधा है। वह भूल गया है कि उसे उसके गुज़रे गुनाहों से पाक-साफ़ किया गया है।

10 चुनौचे भाड़यो, मज़ीद लग्न से अपने बुलावे और चुनाव की तसदीक करने में कोशिशें रहें। क्योंकि यह करने से आप गिर जाने से बचेगे 11 और अल्लाह बड़ी ख़ुशी से आपको हमारे ख़ुदावंद और नजातदहिदा ईसा मसीह की बादशाही में दाख़िल होने की इजाज़त देगा।

12 इसलिये मैं हमेशा आपको इन बातों की याद दिलाता रहूँगा, हालाँकि आप इनसे वाकिफ़ हैं और मज़बूती से उस सच्चाई पर कायम हैं जो आपको मिली है। 13 बल्कि मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ कि जितनी और देर मैं जिस्म की इस झोंपड़ी में रहता हूँ आपको इन बातों की याद दिलाने से उभारता रहूँ। 14 क्योंकि मुझे मालूम है कि अब मेरी यह झोंपड़ी जल्द ही ढा दी जाएगी। हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह ने भी मुझ पर यह जाहिर किया था। 15 लेकिन मैं पूरी कोशिश करूँगा कि मेरे कूच कर जाने के बाद भी आप हर वक़्त इन बातों को याद रख सकें।

### मसीह के जलाल के गवाह

16 क्योंकि जब हमने आपको अपने और आपके ख़ुदावंद मसीह की कुदरत और आमद के बारे में बताया तो हम चालाकी से घडे़ किस्से-कहानियों पर इनहिसार नहीं कर रहे थे बल्कि हमने यह गवाहों की हैसियत से बताया। क्योंकि हमने अपनी ही आँखों से उस की अज़मत देखी थी। 17 हम मौजूद थे जब उसे ख़ुदा बाप से इज़्जतो-जलाल मिला, जब एक आवाज़ ने अल्लाह की पुरजलाल शान से आकर कहा, “यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है जिससे मैं खुश हूँ।” 18 जब हम उसके साथ मुक़द्दस पहाड़ पर थे तो हमने ख़ुद यह आवाज़ आसमान से आती सुनी।

19 इस तज़रबे की बिना पर हमारा नबियों के पैग़ाम पर एतमाद ज़्यादा मज़बूत है। आप अच्छा करेंगे अगर इस पर ख़ुब ध्यान दें। क्योंकि यह किसी तारीक़ जगह में रौशनी की मानिंद है जो उस वक़्त तक चमकती रहेगी जब तक पौ फटकर सुबह का सितारा आपके दिलों में तुलू न हो जाए। 20 सबसे बढकर आपको यह समझने की ज़रूरत है कि कलामे-मुक़द्दस की कोई भी पेशगोई नबी की अपनी ही तफ़रीर से पैदा नहीं होती। 21 क्योंकि कोई भी पेशगोई कभी भी इनसान की तहरीक से वुज़द में नहीं आई बल्कि पेशगोई करते वक़्त इनसानों ने रूहुल-कुद्दस से तहरीक पाकर अल्लाह की तरफ से बात की।

## 2

### झूटे उस्ताद

1 लेकिन जिस तरह माज़ी में इसराईल कौम में झूटे नबी भी थे, उसी तरह आपमें से भी झूटे उस्ताद खडे़ हो जाएंगे। यह ख़ुदा की जमातों में मोहलक तालीमात फैलाएंगे बल्कि अपने मालिक को जानने से इनकार भी करेंगे जिसने उन्हें ख़रीद लिया था। ऐसी हरकतों से यह जल्द ही अपने आप पर हलाकत लाएंगे। 2 बहुत-से लोग उनकी ऐयाश हरकतों की पैरवी करेंगे, और इस वजह से दूसरे सच्चाई की राह पर कुफ़र बकेंगे। 3 लालच के सबब से यह उस्ताद आपको फ़रज़ी कहानियाँ सुनाकर

आपकी लूट-खसोट करेंगे। लेकिन अल्लाह ने बड़ी देर से उन्हें मुजरिम ठहराया, और उसका फैसला सुस्तरफ़्तार नहीं है। हाँ, उनका मुंसिफ ऊँच नहीं रहा बल्कि उन्हें हलाक करने के लिए तैयार खड़ा है।

4 देखें, अल्लाह ने उन फ़रिश्तों को बचने न दिया जिन्होंने गुनाह किया बल्कि उन्हें तारीकी की जंजीरों में बाँधकर जहन्नुम में डाल दिया जहाँ वह अदालत के दिन तक महफूज़ रहेंगे। 5 इसी तरह उसने क़दीम दुनिया को बचने न दिया बल्कि उसके बेदीन बाशिंदों पर सैलाब को आने दिया। उसने सिर्फ़ रास्तबाज़ी के पैगंबर नूह को सात और जानों समेत बचाया। 6 और उसने सदूम और अम्मूरा के शहरों को मुजरिम करार देकर राख कर दिया। यों अल्लाह ने उन्हें इब्रत बनाकर दिखाया कि बेदीनों के साथ क्या कुछ किया जाएगा। 7 साथ साथ उसने लूट को बचाया जो रास्तबाज़ था और बेसुलम लोगों के गंदे चाल-चलन देख देखकर पिसता रहा। 8 क्योंकि यह रास्तबाज़ आदमी उनके दरमियान बसता था, और उस की रास्तबाज़ जान रोज़ बरोज़ उनकी शरीर हरकतें देख और सुनकर सख़्त अज़ाब में फँसी रही। 9 यों जाहिर है कि रब दीनदार लोगों को आजमाइश से बचाना और बेदीनों को अदालत के दिन तक सज़ा के तहत रखना जानता है, 10 खासकर उन्हें जो अपने जिस्म की गंदी खाहिशात के पीछे लगे रहते और खुदावंद के इख़्तियार को हक़ीर जानते हैं।

यह लोग गुस्ताख़ और माग़र हैं और जलाली हस्तियों पर कुफ़र बकने से नहीं डरते। 11 इसके मुकाबले में फ़रिश्ते भी जो कहीं ज़्यादा ताकतवर और क़वी हैं रब के हुज़ूर ऐसी हस्तियों पर बुहतान और इलज़ामात लगाने की ज़ुरत नहीं करते। 12 लेकिन यह झूटे उस्ताद बेअक़्रल जानवरों की मानिंद हैं, जो फ़ितरी तौर पर इसलिए पैदा हुए हैं कि उन्हें पकड़ा और ख़त्म किया जाए। जो कुछ वह नहीं समझते उस पर वह कुफ़र बकते हैं। और जंगली जानवरों की तरह वह भी हलाक हो जाएंगे। 13 यों जो नुक़सान उन्होंने दूसरों को पहुँचाया वही उन्हें ख़ुद भुगतना पड़ेगा। उनके नज़दीक लुफ़ उठाने से मुराद यह है कि दिन के वक़्त ख़लक एश करें। वह दाग़ और धब्बे हैं जो आपकी ज़ियाफ़तों में शरीक होकर अपनी दगाबाज़ियों की रंगरलियाँ मनाते हैं। 14 उनकी आँखें हर वक़्त किसी बदकार औरत से ज़िना करने की तलाश में रहती हैं और गुनाह करने से कभी नहीं स्कर्ती। वह कमज़ोर लोगों को ग़लत काम करने के लिए उकसाते और लालच करने में माहिर हैं। उन पर अल्लाह की लानत! 15 वह सहीह राह से हटकर आवार फिर रहे और बिलाम बिन बओर के नक्रशे-क़दम पर चल रहे हैं, क्योंकि बिलाम ने पैसों के लालच में ग़लत काम किया। 16 लेकिन ग़धी ने उसे इस गुनाह के सबब से डौंटा। इस जानवर ने जो बोलने के काबिल नहीं था इनसान की-सी आवाज़ में बात की और नबी को उस की दीवानगी से रोक दिया।

17 यह लोग सूखे हुए चरमे और आँधी से धकेले हुए बादल हैं। इनकी तकदीर अंधेरे का तारीक़तरन हिस्सा है। 18 यह माग़र बातें करते हैं जिनके पीछे कुछ नहीं है और गैरअख़लाकी जिस्मानी शहवतों से ऐसे लोगों को उकसाते हैं जो हाल ही में धोके की ज़िंदगी गुज़ारनेवालों में से बच निकले हैं। 19 यह उन्हें आज़ाद करने का वादा करते हैं जबकि ख़ुद बदकारी के ग़ुलाम हैं। क्योंकि इनसान उसी का ग़ुलाम है जो उस पर ग़ालिब आ गया है। 20 और जो हमारे ख़ुदावंद और नजातदहिदा ईसा मसीह को जान लेने से इस दुनिया की आलदुगी से बच निकलते हैं, लेकिन बाद में एक बार फिर इसमें फँसकर मग़ालूब हो जाते हैं उनका अंजाम पहले की निसबत ज़्यादा बुरा हो जाता है। 21 हाँ, जिन लोगों ने रास्तबाज़ी की राह को जान लिया, लेकिन बाद में उस मुक़द्दस हुक्म से मुँह फेर लिया जो उनके हवाले किया गया था, उनके लिए बेहतर होता कि वह इस राह से कभी वाकिफ़ न होते। 22 उन पर यह मुहावरा सादिक़ आता है कि “कुत्ता अपनी कै के पास वापस आ जाता है।” और यह भी कि “सुअरनी नहाने के बाद दुबारा कीचड़ में लोटने लगती है।”

### 3

#### ख़ुदावंद की आमद का वादा

1 अज़ीज़ो, यह अब दूसरा ख़त है जो मैंने आपको लिख दिया है। दोनों ख़तों में मैंने कई बातों की याद दिलाकर आपके ज़हन में पाक सोच उभारने की कोशिश की। 2 मैं चाहता हूँ कि आप वह कुछ याद रखें जिसकी पेशगोई मुक़द्दस नबियों ने की थी और साथ साथ हमारे ख़ुदावंद और नजातदहिदा का वह हुक्म भी जो आपको अपने रसूलों की मारिफ़त मिला। 3 अब्वल आपको यह बात समझने की ज़रूरत है कि इन आखिरी दिनों में ऐसे लोग आँगेंगे जो मज़ाक़ उडाकर अपनी शहवतों के कब्ज़े में रहेंगे। 4 वह पछेंगे, “ईसा ने आने का वादा तो किया, लेकिन वह कहाँ है? हमारे बापदादा तो मर चुके हैं, और दुनिया की तख़लीक़ से लेकर आज तक सब कुछ वैसे का वैसे ही है।” 5 लेकिन यह लोग नज़रंदाज़ करते हैं कि क़दीम ज़माने में अल्लाह के हुक्म पर आसमानों की तख़लीक़ हुई और ज़मीन पानी में से और पानी के ज़रीए वुजूद में आई। 6 इसी पानी के ज़रीए क़दीम ज़माने की दुनिया पर सैलाब आया और सब कुछ तबाह हुआ। 7 और अल्लाह के इसी हुक्म ने मौजूदा आसमान और ज़मीन को आग के लिए महफूज़ कर रखा है, उस दिन के लिए जब बेदीन लोगों की अदालत की जाएगी और वह हलाक हो जाएंगे।

8 लेकिन मेरे अजीजो, एक बात आपसे पोशीदा न रहे। खुदावंद के नज़दीक एक दिन हजार साल के बराबर है और हजार साल एक दिन के बराबर। 9 खुदावंद अपना वादा पूरा करने में देर नहीं करता जिस तरह कुछ लोग समझते हैं बल्कि वह तो आपकी खातिर सब्र कर रहा है। क्योंकि वह नहीं चाहता कि कोई हलाक हो जाए बल्कि यह कि सब तौबा की नौबत तक पहुँचें।

10 लेकिन खुदावंद का दिन चोर की तरह आया। आसमान बड़े शोर के साथ खत्म हो जाएंगे, अजरामे-फलकी आग में पिघल जाएंगे और ज़मीन उसके कामों समेत जाहिर होकर अदालत में पेश की जाएगी। 11 अब सोचें, अगर सब कुछ इस तरह खत्म हो जाएगा तो फिर आप किस क्रिस्म के लोग होने चाहिएँ? आपको मुक़द्दस और खुदातरस जिंदगी गुज़ारते हुए 12 अल्लाह के दिन की राह देखनी चाहिए। हाँ, आपको यह कोशिश करनी चाहिए कि वह दिन जल्दी आए जब आसमान जल जाएगा और अजरामे-फलकी आग में पिघल जाएंगे। 13 लेकिन हम उन नए आसमानों और नई ज़मीन के इंतज़ार में हैं जिनका वादा अल्लाह ने किया है। और वहाँ रास्ती सुकूनत करेगी।

14 चुनौचे अजीजो, चूँकि आप इस इंतज़ार में हैं इसलिए पूरी लग्न के साथ कोशाँ रहें कि आप अल्लाह के नज़दीक बेदाग और बेइलज़ाम ठहरें और आपकी उसके साथ सुलह हो। 15 याद रखें कि हमारे खुदावंद का सब्र लोगों को नजात पाने का मौका देता है। हमारे अजीज भाई पौलुस ने भी उस हिकमत के मुताबिक जो अल्लाह ने उसे अता की है आपको यही कुछ लिखा है। 16 वह यही कुछ अपने तमाम खतों में लिखता है जब वह इस मज़मून का जिक्र करता है। उसके खतों में कुछ ऐसी बातें हैं जो समझने में मुश्किल हैं और जिन्हें जाहिल और कमज़ोर लोग तोड़-मरोड़कर बयान करते हैं, बिलकुल उसी तरह जिस तरह वह बाकी सहीफों के साथ भी करते हैं। लेकिन इससे वह अपने आपको ही हलाक कर रहे हैं।

17 मेरे अजीजो, मैं आपको वक़्त से पहले इन बातों से आगाह कर रहा हूँ। इसलिए खबरदार रहें ताकि बेउसूल लोगों की ग़लत सोच आपको बहकाकर आपको महफूज़ मकाम से हटा न दे। 18 इसके बजाए हमारे खुदावंद और नजातदहिदा ईसा मसीह के फज़ल और इल्म में तरक्की करते रहें। उसे अब और अबद तक जलाल हासिल होता रहे! आमीन।

## 1 यूहन्ना

### जिंदगी का कलाम

1 हम आपको उस की मुनादी करते हैं जो इब्तिदा से था, जिसे हमने अपने कानों से सुना, अपनी आँखों से देखा, जिसका मुशाहदा हमने किया और जिसे हमने अपने हाथों से छुआ। वही जिंदगी का कलाम है। 2 वह जो खुद जिंदगी था जाहिर हुआ, हमने उसे देखा। और अब हम गवाही देकर आपको उस अबदी जिंदगी की मुनादी करते हैं जो खुदा बाप के पास थी और हम पर जाहिर हुई है। 3 हम आपको वह कुछ सुनाते हैं जो हमने खुद देख और सुन लिया है ताकि आप भी हमारी रिफाकत में शरीक हो जाएँ। और हमारी रिफाकत खुदा बाप और उसके फरजंद ईसा मसीह के साथ है। 4 हम यह इसलिए लिख रहे हैं ताकि हमारी ख़ुशी पूरी हो जाए।

### अल्लाह नूर है

5 जो पैगाम हमने उससे सुना और आपको सुना रहे हैं वह यह है, अल्लाह नूर है और उसमें तारीकी है ही नहीं। 6 जब हम तारीकी में चलते हुए अल्लाह के साथ रिफाकत रखने का दावा करते हैं तो हम झूट बोल रहे और सच्चाई के मुताबिक जिंदगी नहीं गुज़ार रहे। 7 लेकिन जब हम नूर में चलते हैं, बिलकुल उसी तरह जिस तरह अल्लाह नूर में है, तो फिर हम एक दूसरे के साथ रिफाकत रखते हैं और उसके फरजंद ईसा का खून हमें तमाम गुनाहों से पाक-साफ़ कर देता है।

8 अगर हम गुनाह से पाक होने का दावा करें तो हम अपने आपको फ़रेब देते हैं और हममें सच्चाई नहीं है। 9 लेकिन अगर हम अपने गुनाहों का इक्कार करें तो वह वफ़ादार और रास्त साबित होगा। वह हमारे गुनाहों को मुआफ़ करके हमें तमाम नारास्ती से पाक-साफ़ करेगा। 10 अगर हम दावा करें कि हमने गुनाह नहीं किया तो हम उसे झूटा करार देते हैं और उसका कलाम हमारे अंदर नहीं है।

## 2

### मसीह हमारी शफ़ात करता है

1 मेरे बच्चो, मैं आपको यह इसलिए लिख रहा हूँ कि आप गुनाह न करें। लेकिन अगर कोई गुनाह करे तो एक है जो खुदा बाप के सामने हमारी शफ़ात करता है, ईसा मसीह जो रास्त है। 2 वही हमारे गुनाहों का कफ़ारा देनेवाली कुदबानी है, और न सिर्फ़ हमारे गुनाहों का बल्कि पूरी दुनिया के गुनाहों का भी।

3 इससे हमें पता चलता है कि हमने उसे जान लिया है, जब हम उसके अहकाम पर अमल करते हैं। 4 जो कहता है, “मैं उसे जानता हूँ” लेकिन उसके अहकाम पर अमल नहीं करता वह झूटा है और सच्चाई उसमें नहीं है। 5 लेकिन जो उसके कलाम की पैरवी करता है उसमें अल्लाह की मुहब्बत हकीकतन तकमील तक पहुँच गई है। इससे हमें पता चलता है कि हम उसमें हैं। 6 जो कहता है कि वह उसमें कायम है उसके लिए लाज़िम है कि वह यों चले जिस तरह ईसा चलता था।

### एक नया हुक्म

7 अज़ीजो, मैं आपको कोई नया हुक्म नहीं लिख रहा, बल्कि वही पुराना हुक्म जो आपको शुरू से मिला है। यह पुराना हुक्म वही पैगाम है जो आपने सुन लिया है। 8 लेकिन दूसरी तरफ़ से यह हुक्म नया भी है, और इसकी सच्चाई मसीह और आपमें जाहिर हुई है। क्योंकि तारीकी ख़त्म होनेवाली है और हकीकी रौशनी चमकने लग गई है।

9 जो नूर में होने का दावा करके अपने भाई से नफ़रत करता है वह अब तक तारीकी में है। 10 जो अपने भाई से मुहब्बत रखता है वह नूर में रहता है और उसमें कोई भी चीज़ नहीं पाई जाती जो ठोकर का बाइस बन सके। 11 लेकिन जो अपने भाई से नफ़रत करता है वह तारीकी ही में है और अंधेरे में चलता-फिरता है। उसको यह नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है, क्योंकि तारीकी ने उसे अंधा कर रखा है।

12 प्यारे बच्चो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपके गुनाहों को उसके नाम की खातिर मुआफ़ कर दिया गया है। 13 वालिदो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने उसे जान लिया है जो इब्तिदा ही से है। जवान मर्दों, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आप इबलीस पर गालिब आ गए हैं। बच्चो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने बाप को जान लिया है। 14 वालिदो, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आपने उसे जान लिया है जो इब्तिदा ही से है। जवान मर्दों, मैं आपको इसलिए लिख रहा हूँ कि आप मज़बूत हैं। अल्लाह का कलाम आपमें बसता है और आप इबलीस पर गालिब आ गए हैं।

15 दुनिया को प्यार मत करना, न किसी चीज को जो दुनिया में है। अगर कोई दुनिया को प्यार करे तो खुदा बाप की मुहब्बत उसमें नहीं है। 16 क्योंकि जो भी चीज दुनिया में है वह बाप की तरफ से नहीं बल्कि दुनिया की तरफ से है, खाह वह जिस्म की बुरी खाहिशत, आँखों का लालच या अपनी मिलकियत पर फ़ख़र हो। 17 दुनिया और उस की वह चीजें जो इनसान चाहता है ख़त्म हो रही हैं, लेकिन जो अल्लाह की मरज़ी पूरी करता है वह अबद तक जीता रहेगा।

### मसीह का दुश्मन

18 बच्चो, अब आखिरी घड़ी आ पहुँची है। आपने ख़ुद सुन लिया है कि मुखालिफे-मसीह आ रहा है, और हकीकतन बहुत-से ऐसे मुखालिफे-मसीह आ चुके हैं। इससे हमें पता चलता है कि आखिरी घड़ी आ गई है। 19 यह लोग हममें से निकले तो हैं, लेकिन हकीकत में हममें से नहीं थे। क्योंकि अगर वह हममें से होते तो वह हमारे साथ ही रहते। लेकिन हमें छोड़ने से जाहिर हुआ कि सब हममें से नहीं हैं।

20 लेकिन आप फ़रक़ है। आपको उससे जो कूटूस है रूह का मसह मिल गया है, और आप पूरी सच्चाई को जानते हैं। 21 मैं आपको इसलिए नहीं लिख रहा कि आप सच्चाई को नहीं जानते बल्कि इसलिए कि आप सच्चाई जानते हैं और कि कोई भी झूट सच्चाई की तरफ़ से नहीं आ सकता।

22 कौन झूटा है? वह जो ईसा के मसीह होने का इनकार करता है। मुखालिफे-मसीह ऐसा शख्स है। वह बाप और फ़रज़ंद का इनकार करता है। 23 जो फ़रज़ंद का इनकार करता है उसके पास बाप भी नहीं है, और जो फ़रज़ंद का इकरार करता है उसके पास बाप भी है।

24 चुनौचे लाज़िम है कि जो कुछ आपने इब्तिदा से सुना वह आपमें रहे। अगर वह आपमें रहे तो आप भी फ़रज़ंद और बाप में रहेंगे। 25 और जो वादा उसने हमसे किया है वह है अबदी ज़िंदागी।

26 मैं आपको यह उनके बारे में लिख रहा हूँ जो आपको सहीह राह से हटाने की कोशिश कर रहे हैं। 27 लेकिन आपको उससे रूह का मसह मिल गया है। वह आपके अंदर बसता है, इसलिए आपको इसकी ज़रूरत ही नहीं कि कोई आपको तालीम दे। क्योंकि मसीह का रूह आपको सब बातों के बारे में तालीम देता है और जो कुछ भी वह सिखाता है वह सच है, झूट नहीं। चुनौचे जिस तरह उसने आपको तालीम दी है, उसी तरह मसीह में रहें।

28 और अब प्यारे बच्चो, उसमें कायम रहें ताकि उसके जाहिर होने पर हम पूरे एतमाद के साथ उसके सामने खड़े हो सकें और उस की आमद पर शरमिदा न होना पड़े। 29 अगर आप जानते हैं कि मसीह रास्तबाज़ है तो आप यह भी जानते हैं कि जो भी रास्त काम करता है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है।

## 3

### अल्लाह के फ़रज़ंद

1 ध्यान दें कि बाप ने हमसे कितनी मुहब्बत की है, यहाँ तक कि हम अल्लाह के फ़रज़ंद कहलाते हैं। और हम वाकई हैं भी। इसलिए दुनिया हमें नहीं जानती। वह तो उसे भी नहीं जानती। 2 अज़ीजो, अब हम अल्लाह के फ़रज़ंद हैं, और जो कुछ हम होंगे वह अभी तक जाहिर नहीं हुआ है। लेकिन इतना हम जानते हैं कि जब वह जाहिर हो जाएगा तो हम उस की मानिंद होंगे। क्योंकि हम उसका मुशाहदा वैसे ही करेंगे जैसा वह है। 3 जो भी मसीह में यह उम्मीद रखता है वह अपने आपको पाक-साफ़ रखता है, वैसे ही जैसा मसीह ख़ुद है।

4 जो गुनाह करता है वह शरीअत की खिलाफ़वरज़ी करता है। हाँ, गुनाह शरीअत की खिलाफ़वरज़ी ही है। 5 लेकिन आप जानते हैं कि ईसा हमारे गुनाहों को उठा ले जाने के लिए जाहिर हुआ। और उसमें गुनाह नहीं है। 6 जो उसमें कायम रहता है वह गुनाह नहीं करता। और जो गुनाह करता रहता है न तो उसने उसे देखा है, न उसे जाना है।

7 प्यारे बच्चो, किसी को इज़ाज़त न दें कि वह आपको सहीह राह से हटा दे। जो रास्त काम करता है वह रास्तबाज़, हाँ मसीह जैसा रास्तबाज़ है। 8 जो गुनाह करता है वह इबलीस से है, क्योंकि इबलीस शुरू ही से गुनाह करता आया है। अल्लाह का फ़रज़ंद इसी लिए जाहिर हुआ कि इबलीस का काम तबाह करे।

9 जो भी अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है वह गुनाह नहीं करेगा, क्योंकि अल्लाह की फ़ितरत उसमें रहती है। वह गुनाह कर ही नहीं सकता क्योंकि वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़ंद बन गया है। 10 इससे पता चलता है कि अल्लाह के फ़रज़ंद कौन हैं और इबलीस के फ़रज़ंद कौन : जो रास्त काम नहीं करता, न अपने भाई से मुहब्बत रखता है, वह अल्लाह का फ़रज़ंद नहीं है।

एक दूसरे से मुहब्बत रखना



11 क्योंकि यही वह पैगाम है जो आपने शुरू से सुन रखा है, कि हमें एक दूसरे से मुहब्बत रखना है। 12 काबिल की तरह न हों, जो इबलीस का था और जिसने अपने भाई को कत्ल किया। और उसने उसको कत्ल क्यों किया? इसलिए कि उसका काम बुरा था जबकि भाई का काम रास्त था।

13 चुनौचे भाइयो, जब दुनिया आपसे नफरत करती है तो हैरान न हो जाँ। 14 हम तो जानते हैं कि हम मौत से निकलकर जिंदगी में दाखिल हो गए हैं। हम यह इसलिए जानते हैं कि हम अपने भाइयों से मुहब्बत रखते हैं। जो मुहब्बत नहीं रखता वह अब तक मौत की हालत में है। 15 जो भी अपने भाई से नफरत रखता है वह कातिल है। और आप जानते हैं कि जो कातिल है उसमें अबदी जिंदगी नहीं रहती। 16 इससे ही हमने मुहब्बत को जाना है कि मसीह ने हमारी खातिर अपनी जान दे दी। और हमारा भी फर्ज यही है कि अपने भाइयों की खातिर अपनी जान दें। 17 अगर किसी के माली हालत ठीक हों और वह अपने भाई की ज़रूरतमंद हालत को देखकर रहम न करे तो उसमें अल्लाह की मुहब्बत किस तरह कायम रह सकती है? 18 प्यारे बच्चो, आएँ हम अलफाज़ और बातों से मुहब्बत का इज़हार न करें बल्कि हमारी मुहब्बत अमली और हकीकी हो।

### अल्लाह के हज़ूर पूरा एतमाद

19 गरज़ इससे हम जान लेते हैं कि हम सच्चाई की तरफ से हैं, और यों ही हम अपने दिल को तसल्ली दे सकते हैं 20 जब वह हमें मुजरिम ठहराता है। क्योंकि अल्लाह हमारे दिल से बड़ा है और सब कुछ जानता है। 21 और अज़ीज़ो, जब हमारा दिल हमें मुजरिम नहीं ठहराता तो हम पूरे एतमाद के साथ अल्लाह के हज़ूर आ सकते हैं 22 और वह कुछ पाते हैं जो उससे मांगते हैं। क्योंकि हम उसके अहकाम पर चलते हैं और वही कुछ करते हैं जो उसे पसंद है। 23 और उसका यह हुक्म है कि हम उसके फ़रज़द ईसा मसीह के नाम पर ईमान लाकर एक दूसरे से मुहब्बत रखें, जिस तरह मसीह ने हमें हुक्म दिया था। 24 जो अल्लाह के अहकाम के ताबे रहता है वह अल्लाह में बसता है और अल्लाह उसमें। हम किस तरह जान लेते हैं कि वह हममें बसता है? उस रूह के वसीले से जो उसने हमें दिया है।

## 4

### हकीकी और झूटी रूह

1 अज़ीज़ो, हर एक रूह का यकीन मत करना बल्कि रूहों को परखकर मालूम करें कि वह अल्लाह से है या नहीं, क्योंकि मुतअद्दिद झूटे नबी दुनिया में निकले हैं। 2 इससे आप अल्लाह के रूह को पहचान लेते हैं : जो भी रूह इसका एतराफ़ करती है कि ईसा मसीह मुजस्सम होकर आया है वह अल्लाह से है। 3 लेकिन जो भी रूह ईसा के बारे में यह तसलीम न करे वह अल्लाह से नहीं है। यह मुखालिफ़े-मसीह की रूह है जिसके बारे में आपको खबर मिली कि वह आनेवाला है बल्कि इस वक़्त दुनिया में आ चुका है।

4 लेकिन आप प्यारे बच्चो, अल्लाह से हैं और उन पर ग़ालिब आ गए हैं। क्योंकि जो आपमें है वह उससे बड़ा है जो दुनिया में है। 5 यह लोग दुनिया से हैं और इसलिए दुनिया की बातें करते हैं और दुनिया उनकी सुनती है। 6 हम तो अल्लाह से हैं और जो अल्लाह को जानता है वह हमारी सुनता है। लेकिन जो अल्लाह से नहीं है वह हमारी नहीं सुनता। यों हम सच्चाई की रूह और फ़रेब देनेवाली रूह में इन्तियाज़ कर सकते हैं।

### अल्लाह मुहब्बत है

7 अज़ीज़ो, आएँ हम एक दूसरे से मुहब्बत रखें। क्योंकि मुहब्बत अल्लाह की तरफ से है, और जो मुहब्बत रखता है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़द बन गया है और अल्लाह को जानता है। 8 जो मुहब्बत नहीं रखता वह अल्लाह को नहीं जानता, क्योंकि अल्लाह मुहब्बत है। 9 इसमें अल्लाह की मुहब्बत हमारे दरमियान जाहिर हुई कि उसने अपने इकलौते फ़रज़द को दुनिया में भेज दिया ताकि हम उसके ज़रीए जिएँ। 10 यही मुहब्बत है, यह नहीं कि हमने अल्लाह से मुहब्बत की बल्कि यह कि उसने हमसे मुहब्बत करके अपने फ़रज़द को भेज दिया ताकि वह हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए कफ़फ़ारा दे।

11 अज़ीज़ो, चूँकि अल्लाह ने हमें इतना प्यार किया इसलिए लाज़िम है कि हम भी एक दूसरे को प्यार करें। 12 किसी ने भी अल्लाह को नहीं देखा। लेकिन जब हम एक दूसरे को प्यार करते हैं तो अल्लाह हमारे अंदर बसता है और उस की मुहब्बत हमारे अंदर तकमिल पाती है।

13 हम किस तरह जान लेते हैं कि हम उसमें रहते हैं और वह हममें? इस तरह कि उसने हमें अपना रूह बख़्श दिया है। 14 और हमने यह बात देख ली और इसकी गवाही देते हैं कि खुदा बाप ने अपने फ़रज़द को दुनिया का नजातदहिदा बनने के लिए भेज दिया है। 15 अगर कोई इकरार करे कि ईसा अल्लाह का फ़रज़द है तो अल्लाह उसमें रहता है और वह अल्लाह में। 16 और खुद हमने वह मुहब्बत जान ली है और उस पर ईमान लाए हैं जो अल्लाह हमसे रखता है।

अल्लाह मुहब्बत ही है। जो भी मुहब्बत में कायम रहता है वह अल्लाह में रहता है और अल्लाह उसमें। 17 इसी तरह मुहब्बत हमारे दरमियान तकमील तक पहुँचती है, और यों हम अदालत के दिन पूरे एतमाद के साथ खड़े हो सकेंगे, क्योंकि जैसे वह है वैसे ही हम भी इस दुनिया में हैं। 18 मुहब्बत में खौफ नहीं होता बल्कि कामिल मुहब्बत खौफ को भगा देती है, क्योंकि खौफ के पीछे सज़ा का डर है। जो डरता है उस की मुहब्बत तकमील तक नहीं पहुँची।

19 हम इसलिए मुहब्बत रखते हैं कि अल्लाह ने पहले हमसे मुहब्बत रखी। 20 अगर कोई कहे, “मैं अल्लाह से मुहब्बत रखता हूँ” लेकिन अपने भाई से नफ़रत करे तो वह झूठा है। क्योंकि जो अपने भाई से जिसे उसने देखा है मुहब्बत नहीं रखता वह किस तरह अल्लाह से मुहब्बत रख सकता है जिसे उसने नहीं देखा? 21 जो हुकूम मसीह ने हमें दिया है वह यह है, जो अल्लाह से मुहब्बत रखता है वह अपने भाई से भी मुहब्बत रखे।

## 5

### दुनिया पर हमारी फ़तह

1 जो भी ईमान रखता है कि ईसा ही मसीह है वह अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़द बन गया है। और जो बाप से मुहब्बत रखता है वह उसके फ़रज़द से भी मुहब्बत रखता है। 2 हम किस तरह जान लेते हैं कि हम अल्लाह के फ़रज़द से मुहब्बत रखते हैं? इससे कि हम अल्लाह से मुहब्बत रखते और उसके अहकाम पर अमल करते हैं। 3 क्योंकि अल्लाह से मुहब्बत से मुराद यह है कि हम उसके अहकाम पर अमल करें। और उसके अहकाम हमारे लिए बोझ का बाइस नहीं हैं, 4 क्योंकि जो भी अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़द बन गया है वह दुनिया पर ग़ालिब आ जाता है। और हम यह फ़तह अपने ईमान के ज़रिए पाते हैं। 5 कौन दुनिया पर ग़ालिब आ सकता है? सिर्फ़ वह जो ईमान रखता है कि ईसा अल्लाह का फ़रज़द है।

### ईसा मसीह के बारे में गवाही

6 ईसा मसीह वह है जो अपने बपतिस्मे के पानी और अपनी मौत के खून के ज़रिए जाहिर हुआ, न सिर्फ़ पानी के ज़रिए बल्कि पानी और खून दोनों ही के ज़रिए। और रूहल-कुदस जो सच्चाई है इसकी गवाही देता है। 7 क्योंकि इसके तीन गवाह हैं, 8 रूहल-कुदस, पानी और खून। और तीनों एक ही बात की तसदीक करते हैं। 9 हम तो इनसान की गवाही कबूल करते हैं, लेकिन अल्लाह की गवाही इससे कहीं अफ़ज़ल है। और अल्लाह की गवाही यह है कि उसने अपने फ़रज़द की तसदीक की है। 10 जो अल्लाह के फ़रज़द पर ईमान रखता है उसके दिल में यह गवाही है। और जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखता उसने उसे झूठा करार दिया है। क्योंकि उसने वह गवाही न मानी जो अल्लाह ने अपने फ़रज़द के बारे में दी। 11 और गवाही यह है, अल्लाह ने हमें अबदी ज़िंदगी अता की है, और यह ज़िंदगी उसके फ़रज़द में है। 12 जिसके पास फ़रज़द है उसके पास ज़िंदगी है, और जिसके पास अल्लाह का फ़रज़द नहीं है उसके पास ज़िंदगी भी नहीं है।

### अबदी ज़िंदगी

13 मैं आपको जो अल्लाह के फ़रज़द के नाम पर ईमान रखते हैं इसलिए लिख रहा हूँ कि आप जान लें कि आपको अबदी ज़िंदगी हासिल है। 14 हमारा अल्लाह पर यह एतमाद है कि जब भी हम उस की मरज़ी के मुताबिक कुछ माँगते हैं तो वह हमारी सुनता है। 15 और चूँकि हम जानते हैं कि जब माँगते हैं तो वह हमारी सुनता है इसलिए हम यह इल्म भी रखते हैं कि हमें वह कुछ हासिल भी है जो हमने उससे माँगा था।

16 अगर कोई अपने भाई को ऐसा गुनाह करते देखे जिसका अंजाम मौत न हो तो वह दुआ करे, और अल्लाह उसे ज़िंदगी अता करेगा। मैं उन गुनाहों की बात कर रहा हूँ जिनका अंजाम मौत नहीं। लेकिन एक ऐसा गुनाह भी है जिसका अंजाम मौत है। मैं नहीं कह रहा कि ऐसे शरख के लिए दुआ की जाए जिससे ऐसा गुनाह सरज़द हुआ हो। 17 हर नारास्त हरकत गुनाह है, लेकिन हर गुनाह का अंजाम मौत नहीं होता।

18 हम जानते हैं कि जो अल्लाह से पैदा होकर उसका फ़रज़द बन गया है वह गुनाह करता नहीं रहता, क्योंकि अल्लाह का फ़रज़द ऐसे शरख को महफूज़ रखता है और इबलीस उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकता।

19 हम जानते हैं कि हम अल्लाह के फ़रज़द हैं और कि तमाम दुनिया इबलीस के कब्जे में है।

20 हम जानते हैं कि अल्लाह का फ़रज़द आ गया है और हमें समझ अता की है ताकि हम उसे जान लें जो हकीकी है। और हम उसमें हैं जो हकीकी है यानी उसके फ़रज़द ईसा मसीह में। वही हकीकी खुदा और अबदी ज़िंदगी है।

21 प्यारे बचचो, अपने आपको बुतों से महफूज़ रखें!

## 2 यूहन्ना

1 यह खत बुजुर्ग यूहन्ना की तरफ से है।

मैं चुनीदा ख़ातून और उसके बच्चों को लिख रहा हूँ जिन्हें मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ, और न सिर्फ़ मैं बल्कि सब जो सच्चाई को जानते हैं। 2 क्योंकि सच्चाई हममें रहती है और अबद तक हमारे साथ रहेगी।

3 खुदा बाप और बाप का फ़रज़द ईसा मसीह हमें फ़ज़ल, रहम और सलामती अता करे। और यह चीज़ें सच्चाई और मुहब्बत की रूह में हमें हासिल हों।

### सच्चाई और मुहब्बत

4 मैं निहायत ही खुश हुआ कि मैंने आपके बच्चों में से बाज़ ऐसे पाए जो उसी तरह सच्चाई में चलते हैं जिस तरह खुदा बाप ने हमें हुक्म दिया था। 5 और अब अजीज़ ख़ातून, मैं आपसे दरखास्त करता हूँ कि आँ, हम सब एक दूसरे से मुहब्बत रखें। यह कोई नया हुक्म नहीं है जो मैं आपको लिख रहा हूँ बल्कि वही जो हमें शुरू ही से मिला है। 6 मुहब्बत का मतलब यह है कि हम उसके अहकाम के मुताबिक़ जिंदगी गुज़ारें। जिस तरह आपने शुरू ही से सुना है, उसका हुक्म यह है कि आप मुहब्बत की रूह में चलें।

7 क्योंकि बहुत-से ऐसे लोग दुनिया में निकल खड़े हुए हैं जो आपको सही राह से हटाने की कोशिश में लगे रहते हैं। यह लोग नहीं मानते कि ईसा मसीह मुजस्सम होकर आया है। हर ऐसा शख्स फ़रेब देनेवाला और मुखालिफ़े-मसीह है। 8 चुनौचे ख़बरदार रहें। ऐसा न हो कि आपने जो कुछ मेहनत करके हासिल किया है वह जाता रहे बल्कि खुदा करे कि आपको इसका पूरा अज़ मिल जाए।

9 जो भी मसीह की तालीम पर कायम नहीं रहता बल्कि इससे आगे निकल जाता है उसके पास अल्लाह नहीं। जो मसीह की तालीम पर कायम रहता है उसके पास बाप भी है और फ़रज़द भी। 10 चुनौचे अगर कोई आपके पास आकर यह तालीम पेश नहीं करता तो न उसे अपने घरों में आने दें, न उसको सलाम करें। 11 क्योंकि जो उसके लिए सलामती की दुआ करता है वह उसके शरीर कामों में शरीक हो जाता है।

### आखिरी बातें

12 मैं आपको बहुत कुछ बताना चाहता हूँ, लेकिन कागज़ और स्याही के ज़रीए नहीं। इसके बजाए मैं आपसे मिलने और आपके स्बस् बात करने की उम्मीद रखता हूँ। फिर हमारी खुशी मुकम्मल हो जाएगी।

13 आपकी चुनीदा बहन के बच्चे आपको सलाम कहते हैं।

## 3 यूहन्ना

1 यह खत बुजुर्ग यूहन्ना की तरफ से है।

मैं अपने अज़ीज़ ग्युस को लिख रहा हूँ जिसे मैं सच्चाई से प्यार करता हूँ।

2 मेरे अज़ीज़, मेरी दुआ है कि आपका हाल हर तरह से ठीक हो और आप जिस्मानी तौर पर उतने ही तनदुस्त हों जितने आप रूहानी लिहाज़ से हैं। 3 क्योंकि मैं निहायत खुश हुआ जब भाइयों ने आकर गवाही दी कि आप किस तरह सच्चाई के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारते हैं। और यकीनन आप हमेशा सच्चाई के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारते हैं। 4 जब मैं सुनता हूँ कि मेरे बच्चे सच्चाई के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं तो यह मेरे लिए सबसे ज्यादा खुशी का बाइस होता है।

### ग्युस की तारीफ़

5 मेरे अज़ीज़, जो कुछ आप भाइयों के लिए कर रहे हैं उसमें आप वफ़ादारी दिखा रहे हैं, हालाँकि वह आपके जाननेवाले नहीं हैं। 6 उन्होंने खुदा की जमात के सामने ही आपकी मुहब्बत की गवाही दी है। मेहरबानी करके उनकी सफ़र के लिए यों मदद करें कि अल्लाह खुश हो। 7 क्योंकि वह मसीह के नाम की खातिर सफ़र के लिए निकले हैं और ग़ैरईमानदारों से मदद नहीं लेते। 8 चुनाँचे यह हमारा फ़र्ज है कि हम ऐसे लोगों की मेहमान-नवाज़ी करें, क्योंकि यों हम भी सच्चाई के हमखिदमत बन जाते हैं।

### दियुतरिफ़ेस और देमेतरियुस

9 मैंने तो जमात को कुछ लिख दिया था, लेकिन दियुतरिफ़ेस जो उनमें अब्बल होने की खाहिश रखता है हमें कबूल नहीं करता। 10 चुनाँचे मैं जब आऊँगा तो उसे उन बुरी हरकतों की याद दिलाऊँगा जो वह कर रहा है, क्योंकि वह हमारे खिलाफ़ बुरी बातें बक रहा है। और न सिर्फ़ यह बल्कि वह भाइयों को खुशआमदीद कहने से भी इनकार करता है। जब दूसरे यह करना चाहते हैं तो वह उन्हें रोककर जमात से निकाल देता है।

11 मेरे अज़ीज़, जो बुरा है उस की नक़ल मत करना बल्कि उस की करना जो अच्छा है। जो अच्छा काम करता है वह अल्लाह से है। लेकिन जो बुरा काम करता है उसने अल्लाह को नहीं देखा।

12 सब लोग देमेतरियुस की अच्छी गवाही देते हैं बल्कि सच्चाई खुद भी उस की अच्छी गवाही देती है। हम भी इसके गवाह हैं, और आप जानते हैं कि हमारी गवाही सच्ची है।

### आखिरी सलाम

13 मुझे आपको बहुत कुछ लिखना था, लेकिन यह ऐसी बातें हैं जो मैं कलम और स्याही के ज़रीए आपको नहीं बता सकता। 14 मैं जल्द ही आपसे मिलने की उम्मीद रखता हूँ। फिर हम रूबरू बात करेंगे।

15 सलामती आपके साथ होती रहे।

यहाँ के दोस्त आपको सलाम कहते हैं। वहाँ के हर दोस्त को शख़्सी तौर पर हमारा सलाम दें।

## यहदाह

1 यह खत ईसा मसीह के खादिम और याकूब के भाई यहदाह की तरफ से है।

मैं उन्हें लिख रहा हूँ जिन्हें बुलाया गया है, जो खुदा बाप में प्यारे हैं और ईसा मसीह के लिए महफूज रखे गए हैं।

2 अल्लाह आपको रहम, सलामती और मुहब्बत कसरत से अता करे।

### झूटे उस्ताद

3 अजीजो, गो मैं आपको उस नजात के बारे में लिखने का बड़ा शौक रखता हूँ जिसमें हम सब शरीक हैं, लेकिन अब मैं आपको एक और बात के बारे में लिखना चाहता हूँ। मैं इसमें आपको नसीहत करने की ज़रूरत महसूस करता हूँ कि आप उस ईमान की खातिर जिद्द-जहद करें जो एक ही बार सदा के लिए मुकद्दसीन के सुपुर्द कर दिया गया है। 4 क्योंकि कुछ लोग आपके दरमियान घुस आए हैं जिन्हें बहुत अरसा पहले मुजरिम ठहराया जा चुका है। उनके बारे में यह लिखा गया है कि वह बेदीन है जो हमारे खुदा के फजल को तोड़-मरोड़कर ऐयाशी का बाइस बना देते हैं और हमारे वाहिद आका और खुदावंद ईसा मसीह का इनकार करते हैं।

5 गो आप यह सब कुछ जानते हैं, फिर भी मैं आपको इसकी याद दिलाना चाहता हूँ कि अगरचे खुदावंद ने अपनी कौम को मिसर से निकालकर बचा लिया था तो भी उसने बाद में उन्हें हलाक कर दिया जो ईमान नहीं रखते थे। 6 उन फरिशतों को याद करें जो उस दायबाए-इख्तियार के अंदर न रहे जो अल्लाह ने उनके लिए मुकर्रर किया था बल्कि जिन्होंने अपनी रिहाइशगाह को तर्क कर दिया। उन्हें उसने तारीकी में महफूज रखा है जहाँ वह अबदी जंजीरों में जकड़े हुए रोजे-अजीम की अदातत का इंतजार कर रहे हैं। 7 सदम, अमूरा और उनके इर्दगिर्द के शहरों को भी मत भूलना, जिनके बाशिदे इन फरिशतों की तरह जिनाकारी और गैरफितरी सोहबत के पीछे पड़े रहे। यह लोग अबदी आग की सजा भुगतते हुए सबके लिए एक इबरतनाक मिसाल हैं।

8 तो भी इन लोगों ने उनका-सा रवैया अपना लिया है। अपने खबाबों की बिना पर वह अपने बदनों को आलूदा कर लेते, खुदावंद का इख्तियार रद्द करते और जलाली हस्तियों पर कुफर बकते हैं। 9 इनके मुकाबले में सरदार फरिशते मीकाएल के रवय्ये पर गौर करें। जब वह इबलीस से झगड़ते वक्त मूसा की लाश के बारे में बहस-मुबाहसा कर रहा था तो उसने इबलीस पर कुफर बकने का फ़ैसला करने की ज़रूरत न की बल्कि सिर्फ इतना ही कहा, “एब आपको डौट!” 10 लेकिन यह लोग हर ऐसी बात के बारे में कुफर बकते हैं जो उनकी समझ में नहीं आती। और जो कुछ वह फितरी तौर पर बेसमझ जानवरों की तरह समझते हैं वही उन्हें तबाह कर देता है। 11 उन पर अफसोस! उन्होंने काबील की राह इख्तियार की है। पैसों के लालच में उन्होंने अपने आपको पूरे तौर पर उस गलती के हवाले कर दिया है जो बिलाम ने की। वह कोरह की तरह बागी होकर हलाक हुए हैं। 12 जब यह लोग खुदावंद की मुहब्बत को याद करनेवाले रिफ़ाकती खानों में शरीक होते हैं तो रिफ़ाकत के लिए धब्बे बन जाते हैं। यह डरे बग़ैर खाना खा खाकर उससे महज़ूज़ होते हैं। यह ऐसे चरवाहे हैं जो सिर्फ अपनी गल्लाबानी करते हैं। यह ऐसे बादल हैं जो हवाओं के जोर से चलते तो हैं लेकिन बरसते नहीं। यह सर्दियों के मौसम में ऐसे दरख्तों की मानिंद हैं जो दो लिहाज से मुरदा हैं। वह फल नहीं लाते और जड़ से उखड़े हुए हैं। 13 यह समुंदर की बेकाबू लहरों की मानिंद हैं जो अपनी शर्मनाक हरकतों की झाग उछालती हैं। यह आवारा सितारे हैं जिनके लिए अल्लाह ने सबसे गहरी तारीकी में एक दायमी जगह मखसूस की है।

14 आदम के बाद सातवें आदमी हनुक ने इन लोगों के बारे में यह पेशगोई की, “देखो, खुदावंद अपने बेशुमार मुकद्दस फरिशतों के साथ 15 सबकी अदालत करने आएगा। वह उन्हें उन तमाम बेदीन हरकतों के सबब से मुजरिम ठहराएगा जो उनसे सरजद हुई हैं और उन तमाम सख्त बातों की वजह से जो बेदीन गुनाहगारों ने उसके खिलाफ की हैं।”

16 यह लोग बुड़बुडाते और शिकायत करते रहते हैं। यह सिर्फ अपनी जाती खाहिशात पूरी करने के लिए जिंदगी गुजारते हैं। यह अपने बारे में शेखी मारते और अपने फायदे के लिए दूसरों की खुशामद करते हैं।

### आगाही और हिदायात

17 लेकिन आप मेरे अजीजो, वह कुछ याद रखें जिसकी पेशगोई हमारे खुदावंद ईसा मसीह के रसूलों ने की थी। 18 उन्होंने आपसे कहा था, “आखिरी दिनों में मज़ाक उड़ानेवाले होंगे जो अपनी बेदीन खाहिशात पूरी करने के लिए ही जिंदगी गुज़ारेंगे।”

19 यह वह हैं जो पाटीबाजी करते, जो दुनियावी सोच रखते हैं और जिनके पास रूहुल-कुद्स नहीं है। 20 लेकिन आप मेरे अजीजो, अपने आपको अपने मुकद्दसतरीन ईमान की बुनियाद पर तामीर करें और रूहुल-कुद्स में दुआ करें। 21 अपने आपको

अल्लाह की मुहब्बत में कायम रखें और इस इंतज़ार में रहें कि हमारे खुदावंद ईसा मसीह का रहम आपको अबदी जिंदगी तक पहुँचाए।

22 उन पर रहम करें जो शक में पड़े हैं। 23 बाज़ को आग में से छीनकर बचाएँ और बाज़ पर रहम करें, लेकिन खौफ़ के साथ। बल्कि उस शख्स के लिबास से भी नफ़रत करें जो अपनी हरकतों से गुनाह से आलूदा हो गया है।

#### सताइश की दुआ

24 उस की तमज़ीद हो जो आपको ठोकर खाने से महफूज़ रख सकता है और आपको अपने जलाल के सामने बेदाग और बड़ी ख़ुशी से मामू करके खड़ा कर सकता है। 25 उस वाहिद खुदा यानी हमारे नजातदहिदा का जलाल हो। हाँ, हमारे खुदावंद ईसा मसीह के वसीले से उसे जलाल, अज़मत, कुदरत और इख़्तियार अज़ल से अब भी हो और अबद तक रहे। आमीन।

## मुकाशफा

1 यह ईसा मसीह की तरफ से मुकाशफा है जो अल्लाह ने उसे अता किया ताकि वह अपने खादिमों को वह कुछ दिखाए जिसे जल्द ही पेश आना है। उसने अपने फरिश्ते को भेजकर यह मुकाशफा अपने खादिम यूहन्ना तक पहुँचा दिया।<sup>2</sup> और जो कुछ भी यूहन्ना ने देखा है उस की गवाही उसने दी है, खाह अल्लाह का कलाम हो या ईसा मसीह की गवाही।<sup>3</sup> मुबारक है वह जो इस नबूवत की तिलावत करता है। हाँ, मुबारक है वह जो सुनकर अपने दिलों में इस किताब में दर्ज बातें महफूज रखते हैं, क्योंकि यह जल्द ही पूरी हो जाएगी।

### सात जमातों को सलाम

4 यह खत यहन्ना की तरफ से सब्बा आसिया की सात जमातों के लिए है।

आपको अल्लाह की तरफ से फजल और सलामती हासिल रहे, उस की तरफ से जो है, जो था और जो आनेवाला है, उन सात रूहों की तरफ से जो उसके तख्त के सामने होती हैं,<sup>5</sup> और ईसा मसीह की तरफ से यानी उससे जो इन बातों का वफादार गवाह, मुरदों में से पहला जी उठनेवाला और दुनिया के बादशाहों का सरदार है।

उस की तमजीद हो जो हमें प्यार करता है, जिसने अपने खून से हमें हमारे गुनाहों से खलासी बख्शी है<sup>6</sup> और जिसने हमें शाही इख्तियार देकर अपने खुदा और बाप के इमाम बना दिया है। उसे अज़ल से अबद तक जलाल और कुदरत हासिल रहे! आमीन।

7 देखें, वह बादलों के साथ आ रहा है। हर एक उसे देखेगा, वह भी जिन्होंने उसे छेदा था। और दुनिया की तमाम क्रौमें उसे देखकर आहो-जारी करेंगी। हाँ, ऐसा ही हो! आमीन।

8 रब खुदा फरमाता है, "मैं अक्वल और आखिर हूँ, वह जो है, जो था और जो आनेवाला है, यानी कादिर-मुतलक खुदा।"

### मसीह की रोया

9 मैं यहन्ना आपका भाई और शरीके-हाल हूँ। मुझ पर भी आपकी तरह जुल्म किया जा रहा है। मैं आपके साथ अल्लाह की बादशाही में शरीक हूँ और ईसा में आपके साथ साबितकदम रहता हूँ। मुझे अल्लाह का कलाम सुनाने और ईसा के बारे में गवाही देने की वजह से इस जज़ीर में जो पतमूस कहलाता है छोड़ दिया गया।<sup>10</sup> रब के दिन यानी इतवार को मैं रूहल-कुदूस की गिरिफ्त में आ गया और मैंने अपने पीछे तुरम की-सी एक ऊँची आवाज़ सुनी।<sup>11</sup> उसने कहा, "जो कुछ तू देख रहा है उसे एक किताब में लिखकर उन सात जमातों को भेज देना जो इफिसस, स्मुरना, पिरगमुन, थुआतीरा, सरदीस, फ्रिलदिलफ्रिया और लौदीक्रिया में हैं।"

12 मैंने बोलनेवाले को देखने के लिए अपने पीछे नज़र डाली तो सोने के सात शमादान देखे।<sup>13</sup> इन शमादानों के दरमियान कोई खडा था जो इब्ने-आदम की मानिंद था। उसने पाँवों तक का लंबा चोगा पहन रखा था और सीने पर सोने का सीनाबंद बाँधा हुआ था।<sup>14</sup> उसका सर और बाल ऊन या बर्फ जैसे सफेद थे और उस की आँखें आग के शोले की मानिंद थीं।<sup>15</sup> उसके पाँव भट्टे में दमकते पीतल की मानिंद थे और उस की आवाज़ आबशार के शोर जैसी थी।<sup>16</sup> अपने दहने हाथ में उसने सात सितारे थाम रखे थे और उसके मुँह से एक तेज़ और दोधारी तलवार निकल रही थी। उसका चेहरा पूरे ज़ोर से चमकनेवाले सूरज की तरह चमक रहा था।<sup>17</sup> उसे देखते ही मैं उसके पाँवों में गिर गया। मैं मुरदा-सा था। फिर उसने अपना दहना हाथ मुझ पर रखकर कहा, "मत डर। मैं अक्वल और आखिर हूँ।<sup>18</sup> मैं वह हूँ जो जिंदा है। मैं तो मर गया था लेकिन अब देख, मैं अबद तक जिंदा हूँ। और मौत और पाताल की कुंजियाँ मेरे हाथ में हैं।<sup>19</sup> चुनौचे जो कुछ तूने देखा है, जो अभी है और जो आइंदा होगा उसे लिख दे।<sup>20</sup> मेरे दहने हाथ में सात सितारों और सात शमादानों का पोशीदा मतलब यह है : यह सात सितारे आसिया की सात जमातों के फरिश्ते हैं, और यह सात शमादान यह सात जमातें हैं।

## 2

### इफिसस के लिए पैगाम

1 इफिसस में मौजूद जमात के फरिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फरमान है जो अपने दहने हाथ में सात सितारे थामे रखता और सोने के सात शमादानों के दरमियान चलता-फिरता है।<sup>2</sup> मैं तेरे कामों को जानता हूँ, तेरी सख्त मेहनत और तेरी साबितकदमी को। मैं जानता हूँ कि तू बुरे लोगों को बरदाशत नहीं कर सकता, कि तूने उनकी पडताली की है जो रसूल होने का दावा करते हैं, हालाँकि वह रसूल नहीं हैं। तूझे तो पता चल गया है कि वह झूठे थे।<sup>3</sup> तू मेरे नाम की खातिर साबितकदम रहा और बरदाशत करते करते थका नहीं।<sup>4</sup> लेकिन मुझे तुझसे यह

शिकायत है, तू मुझे उस तरह प्यार नहीं करता जिस तरह पहले करता था।<sup>5</sup> अब खयाल कर कि तू कहाँ से गिर गया है। तौबा करके वह कुछ कर जो तू पहले करता था, वरना मैं आकर तेरे शमादान को उस की जगह से हटा दूँगा।<sup>6</sup> लेकिन यह बात तेरे हक में है, तू मेरी तरह नीकूलियों के कामों से नफरत करता है।

7 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहल-कुदूस जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो गालिब आएगा उसे मैं जिंदगी के दरख्त का फल खाने को दूँगा, उस दरख्त का फल जो अल्लाह के फिर्दौस में है।

### स्मुरना के लिए पैगाम

8 स्मुरना में मौजूद जमात के फरिशते को यह लिख देना : यह उसका फरमान है जो अब्वल और आखिर है, जो मर गया था और दुबारा जिंदा हुआ।<sup>9</sup> मैं तेरी मुसीबत और गुरबत को जानता हूँ। लेकिन हकीकत में तू दौलतमंद है। मैं उन लोगों के बुहतान से वाकिफ हूँ जो कहते हैं कि वह यहदी है हालाँकि है नहीं। असल में वह इबलीस की जमात है।<sup>10</sup> जो कुछ तुझे झेलना पड़ेगा उससे मत डरना। देख, इबलीस तुझे आजमाने के लिए तुममें से बाज को जेल में डाल देगा, और दस दिन तक तुझे ईजा पहुँचाई जाएगी। मौत तक वफादार रह तो मैं तुझे जिंदगी का ताज दूँगा।

11 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहल-कुदूस जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो गालिब आएगा उसे दूसरी मौत से नुकसान नहीं पहुँचेगा।

### पिर्गमुन के लिए पैगाम

12 पिर्गमुन में मौजूद जमात के फरिशते को यह लिख देना :

यह उसका फरमान है जिसके पास दोधारी तेज तलवार है।<sup>13</sup> मैं जानता हूँ कि तू कहाँ रहता है, वहाँ जहाँ इबलीस का तख्त है। ताहम तू मेरे नाम का वफादार रहा है। तूने उन दिनों में भी मुझ पर ईमान रखने का इनकार न किया जब मेरा वफादार गवाह अतिपास तुम्हारे पास शहीद हुआ, वहाँ जहाँ इबलीस बसता है।<sup>14</sup> लेकिन मुझे तुझसे कई बातों की शिकायत है। तेरे पास ऐसे लोग हैं जो बिलाम की तालीम की पैरवी करते हैं। क्योंकि बिलाम ने बलक को सिखाया कि वह किस तरह इसराइलियों को गुनाह करने पर उकसा सकता है यानी बुतों को पेश की गई कुरबानियाँ खाने और जिना करने से।<sup>15</sup> इसी तरह तेरे पास भी ऐसे लोग हैं, जो नीकूलियों की तालीम की पैरवी करते हैं।<sup>16</sup> अब तौबा कर! वरना मैं जल्द ही तेरे पास आकर अपने मुँह की तलवार से उनके साथ लड़ूँगा।

17 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहल-कुदूस जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

जो गालिब आएगा उसे मैं पोशीदा मन में से दूँगा। मैं उसे एक सफेद पत्थर भी दूँगा जिस पर एक नया नाम लिखा होगा, ऐसा नाम जो सिर्फ मिलनेवाले को मालूम होगा।

### थुआतीरा के लिए पैगाम

18 थुआतीरा में मौजूद जमात के फरिशते को यह लिख देना :

यह अल्लाह के फरजंद का फरमान है जिसकी आँखें आग के शोलों और पाँव दमकते पीतल की मानिंद हैं।<sup>19</sup> मैं तेरे कामों को जानता हूँ यानी तेरी मुहब्बत और ईमान, तेरी खिदमत और साबितकदमी, और यह कि इस वक़्त तू पहले की निसबत कही ज्यादा कर रहा है।<sup>20</sup> लेकिन मुझे तुझसे यह शिकायत है, तू उस औरत इज़बिल को जो अपने आपको नबिया कहती है काम करने देता है, हालाँकि यह अपनी तालीम से मेरे खादिमों को सही राह से दूर करके उन्हें जिना करने और बुतों को पेश की गई कुरबानियाँ खाने पर उकसाती है।<sup>21</sup> मैंने उसे काफ़ी देर से तौबा करने का मौका दिया है, लेकिन वह इसके लिए तैयार नहीं है।<sup>22</sup> चुनौचे मैं उसे यों मारूँगा कि वह बिस्तर पर पड़ी रहेगी। और अगर वह जो उसके साथ जिना कर रहे हैं अपनी गलत हरकतों से तौबा न करें तो मैं उन्हें शहीद मुसीबत में फँसाऊँगा।<sup>23</sup> हाँ, मैं उसके फरजंदों को मार डालूँगा। फिर तमाम जमातें जान लेंगी कि मैं ही ज़हनों और दिलों को परखता हूँ, और मैं ही तुममें से हर एक को उसके कामों का बदला दूँगा।

24 लेकिन थुआतीरा की जमात के ऐसे लोग भी हैं जो इस तालीम की पैरवी नहीं करते, और जिन्होंने वह कुछ नहीं जाना जिसे इन लोगों ने 'इबलीस के गहरे भेद' का नाम दिया है। तुम्हें मैं बताता हूँ कि मैं तुम पर कोई और बोझ नहीं डालूँगा।

25 लेकिन इतना ज़रूर करो कि जो कुछ तुम्हारे पास है उसे मेरे आने तक मजबूती से थामे रखना।<sup>26</sup> जो गालिब आएगा और आखिर तक मेरे कामों पर कायम रहेगा उसे मैं कौमों पर इख्तियार दूँगा।<sup>27</sup> हाँ, वह लोहे के शाही असा से उन पर हुकूमत करेगा, उन्हें मिट्टी के बरतनों की तरह फोड़ डालेगा।<sup>28</sup> यानी उसे वही इख्तियार मिलेगा जो मुझे भी अपने बाप से मिला है। ऐसे शाख्स को मैं सुबह का सितारा भी दूँगा।



29 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहल-कुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

### 3

#### सरदीस के लिए पैगाम

1 सरदीस में मौजूद जमात के फरिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फरमान है जो अल्लाह की सात रूहों और सात सितारों को अपने हाथ में थामे रखता है। मैं तेरे कामों को जानता हूँ। तू जिंदा तो कहलाता है लेकिन है मुरदा। 2 जाग उठ! जो बाकी रह गया है और मरनेवाला है उसे मजबूत कर। क्योंकि मैंने तेरे काम अपने खुदा की नजर में मुकम्मल नहीं पाए। 3 चुनौचे जो कुछ तुझे मिला है और जो तूने सुना है उसे याद रखना। उसे महफूज़ रख और तौबा कर। अगर तू बेदार न हो तो मैं चोर की तरह आऊँगा और तुझे मालूम नहीं होगा कि मैं कब तुझ पर आन पड़ूँगा। 4 लेकिन सरदीस में तेरे कुछ ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने लिबास आलूदा नहीं किए। वह सफेद कपड़े पहने हुए मेरे साथ चलें-फिरेंगे, क्योंकि वह इसके लायक हैं। 5 जो गालिब आएगा वह भी उनकी तरह सफेद कपड़े पहने हुए फिरेगा। मैं उसका नाम किताबे-हयात से नहीं मिटाऊँगा बल्कि अपने बाप और उसके फरिश्तों के सामने इकरार करूँगा कि यह मेरा है।

6 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहल-कुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

#### फिलदिलफिया के लिए पैगाम

7 फिलदिलफिया में मौजूद जमात के फरिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फरमान है जो कूद्स और सच्चा है, जिसके हाथ में दाऊद की चाबी है। जो कुछ वह खोलता है उसे कोई बंद नहीं कर सकता, और जो कुछ वह बंद कर देता है उसे कोई खोल नहीं सकता। 8 मैं तेरे कामों को जानता हूँ। देख, मैंने तेरे सामने एक ऐसा दरवाज़ा खोल रखा है जिसे कोई बंद नहीं कर सकता। मुझे मालूम है कि तेरी ताकत कम है। लेकिन तूने मेरे कलाम को महफूज़ रखा है और मेरे नाम का इनकार नहीं किया। 9 देख, जहाँ तक उनका ताल्लुक है जो इबलीस की जमात से हैं, वह जो यहूदी होने का दावा करते हैं हालाँकि वह झूट बोलते हैं, मैं उन्हें तेरे पास आने दूँगा, उन्हें तेरे पाँवों में झुककर यह तसलीम करने पर मजबूर करूँगा कि मैंने तुझे प्यार किया है। 10 तूने मेरा साबितकदम रहने का हुकम पूरा किया, इसलिए मैं तुझे आजमाइश की उस घड़ी से बचाए रखूँगा जो पूरी दुनिया पर आकर उसमें बसनेवालों को आजमाएगी।

11 मैं जल्द आ रहा हूँ। जो कुछ तेरे पास है उसे मजबूती से थामे रखना ताकि कोई तुझसे तेरा ताज छीन न ले। 12 जो गालिब आएगा उसे मैं अपने खुदा के घर में सतून बनाऊँगा, ऐसा सतून जो उसे कभी नहीं छोड़ेगा। मैं उस पर अपने खुदा का नाम और अपने खुदा के शहर का नाम लिख दूँगा, उस नए यरूशलम का नाम जो मेरे खुदा के हाँ से उतरनेवाला है। हाँ, मैं उस पर अपना नया नाम भी लिख दूँगा।

13 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहल-कुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।

#### लौदीकिया के लिए पैगाम

14 लौदीकिया में मौजूद जमात के फरिश्ते को यह लिख देना :

यह उसका फरमान है जो आमीन है, वह जो वफादार और सच्चा गवाह और अल्लाह की कायनात का मंबा है। 15 मैं तेरे कामों को जानता हूँ। तू न तो सर्द है, न गरम। काश तू इनमें से एक होता! 16 लेकिन चूँकि तू नीमगरम है, न गरम, न सर्द, इसलिए मैं तुझे कै करके अपने मुँह से निकाल फेंकूँगा। 17 तू कहता है, 'मैं आमीर हूँ, मैंने बहुत दौलत हासिल कर ली है और मुझे किसी भी चीज की ज़रूरत नहीं।' और तू नहीं जानता कि तू असल में बदबख्त, काबिले-रहम, गरीब, अंधा और नंगा है। 18 मैं तुझे मशवरा देता हूँ कि मुझसे आग में खालिस किया गया सोना खरीद ले। तब ही तू दौलतमंद बनेगा। और मुझसे सफेद लिबास खरीद ले जिसको पहनने से तेरे नंगेपन की शर्म जाहिर नहीं होगी। इसके अलावा मुझसे आँखों में लगाने के लिए मरहम खरीद ले ताकि तू देख सके। 19 जिनको मैं प्यार करता हूँ उनकी मैं सज़ा देकर तरबियत करता हूँ। अब सजीदा हो जा और तौबा कर। 20 देख, मैं दरवाज़े पर खड़ा खटखटा रहा हूँ। अगर कोई मेरी आवाज़ सुनकर दरवाज़ा खोले तो मैं अंदर आकर उसके साथ खाना खाऊँगा और वह मेरे साथ। 21 जो गालिब आए उसे मैं अपने साथ अपने तख़्त पर बैठने का हक दूँगा, बिलकुल उसी तरह जिस तरह मैं खुद भी गालिब आकर अपने बाप के साथ उसके तख़्त पर बैठ गया।

22 जो सुन सकता है वह सुन ले कि रूहल-कुद्स जमातों को क्या कुछ बता रहा है।''

## 4

आसमान पर अल्लाह की परस्तिश

1 इसके बाद मैंने देखा कि आसमान में एक दरवाजा खुला हुआ है और तुरम की-सी आवाज ने जो मैंने पहले सुनी थी कहा, “इधर ऊपर आ। फिर मैं तुझे वह कुछ दिखाऊँगा जिसे इसके बाद पेश आना है।” 2 तब रूहल-कुदूस ने मुझे फौरन अपनी गिरिफ्त में ले लिया। वहाँ आसमान पर एक तख्त था जिस पर कोई बैठा था। 3 और बैठनेवाला देखने में यशब और अक्रीक से मुताबिकत रखता था। तख्त के इर्दगिर्द कौसे-कूजह थी जो देखने में ज़ुमुरद की मानिंद थी। 4 यह तख्त 24 तख्तों से घिरा हुआ था जिन पर 24 बुजुर्ग बैठे थे। बुजुर्गों के लिबास सफेद थे और हर एक के सर पर सोने का ताज था। 5 दरमियानी तख्त से बिजली की चमकें, आवाज़ें और बादल की गरजें निकल रही थीं। और तख्त के सामने सात मशालें जल रही थीं। यह अल्लाह की सात रूहें हैं। 6 तख्त के सामने शीशे का-सा समुंदर भी था जो बिल्लौर से मुताबिकत रखता था।

बीच में तख्त के इर्दगिर्द चार जानदार थे जिनके जिस्मों पर हर जगह आँखें ही आँखें थीं, सामनेवाले हिस्से पर भी और पीछेवाले हिस्से पर भी। 7 पहला जानदार शेरबबर जैसा था, दूसरा बैल जैसा, तीसरे का इनसान जैसा चेहरा था और चौथा उड़ते हुए उकाब की मानिंद था। 8 इन चार जानदारों में से हर एक के छः पर थे और जिस्म पर हर जगह आँखें ही आँखें थीं, बाहर भी और अंदर भी। दिन-रात वह बिलानामा कहते रहते हैं,

“कुदूस, कुदूस, कुदूस है रब कादिर-मुतलक खुदा,  
जो था, जो है और जो आनेवाला है।”

9 यों यह जानदार उस की तमजीद, इज्जत और शूक करते हैं जो तख्त पर बैठा है और अबद तक जिंदा है। जब भी वह यह करते हैं 10 तो 24 बुजुर्ग तख्त पर बैठनेवाले के सामने मुँह के बल होकर उसे सिजदा करते हैं जो अजल से अबद तक जिंदा है। साथ साथ वह अपने सोने के ताज तख्त के सामने रखकर कहते हैं,

11 “ऐ रब हमारे खुदा,

तू जलाल, इज्जत और कुदरत के लायक है।

क्योंकि तूने सब कुछ खलक किया।

तमाम चीजें तेरी ही मरजी से थीं और पैदा हुईं।”

## 5

सात मुहरोंवाला तूमार

1 फिर मैंने तख्त पर बैठनेवाले के दहने हाथ में एक तूमार देखा जिस पर दोनों तरफ लिखा हुआ था और जिस पर सात मुहरे लगी थीं। 2 और मैंने एक ताकतवर फरिशता देखा जिसने ऊँची आवाज़ से एलान किया, “कौन मुहरों को तोड़कर तूमार को खोलने के लायक है?” 3 लेकिन न आसमान पर, न ज़मीन पर और न ज़मीन के नीचे कोई था जो तूमार को खोलकर उसमें नज़र डाल सकता। 4 मैं खूब रो पड़ा, क्योंकि कोई इस लायक न पाया गया कि वह तूमार को खोलकर उसमें नज़र डाल सकता। 5 लेकिन बुजुर्गों में से एक ने मुझसे कहा, “मत रो। देख, यहदाह कबीले के शेरबबर और दाऊद की जड़ ने फतह पाई है, और वही तूमार की सात मुहरों को खोल सकता है।”

6 फिर मैंने एक लेला देखा जो तख्त के दरमियान खड़ा था। वह चार जानदारों और बुजुर्गों से घिरा हुआ था और यों लगता था कि उसे ज़बह किया गया हो। उसके सात सींग और सात आँखें थीं। इनसे मुराद अल्लाह की वह सात रूहें हैं जिन्हें दुनिया की हर जगह भेजा गया है। 7 लेले ने आकर तख्त पर बैठनेवाले के दहने हाथ से तूमार को ले लिया। 8 और लेते वक्त चार जानदार और 24 बुजुर्ग लेले के सामने मुँह के बल गिर गए। हर एक के पास एक सरोद और बखूर से भरे सोने के प्याले थे। इनसे मुराद मुकद्सीन की दुआएँ हैं। 9 साथ साथ वह एक नया गीत गाने लगे,

“तू तूमार को लेकर

उस की मुहरों को खोलने के लायक है।

क्योंकि तुझे ज़बह किया गया, और अपने खून से

तूने लोगों को हर कबीले, हर अहले-ज़बान, हर मिल्लत और हर कौम से

अल्लाह के लिए खरीद लिया है।

10 तूने उन्हें शाही इख्तियार देकर

हमारे खुदा के इमाम बना दिया है।

और वह दुनिया में हुकूमत करेंगे।”

11 मैंने दुबारा देखा तो बेशुमार फरिशतों की आवाज़ सुनी। वह तख्त, चार जानदारों और बुजुर्गों के इर्दगिर्द खड़े 12 ऊँची आवाज़ से कह रहे थे,

“लायक है वह लेला जो ज़बह किया गया है।  
वह कुदरत, दौलत, हिकमत और ताकत,  
इज्जत, जलाल और सताइश पाने के लायक है।”

13 फिर मैंने आसमान पर, ज़मीन पर, ज़मीन के नीचे और समुंदर की हर मखलूक की आवाज़ें सुनीं। हाँ, कायनात की सब मखलूकात यह गा रहे थे,

“तख्त पर बैठनेवाले और लेले की सताइश और इज्जत,  
जलाल और कुदरत अज़ल से अबद तक रहे।”

14 चार जानदारों ने जवाब में “आमीन” कहा, और बुजुर्गों ने गिरकर सिजदा किया।

## 6

मुह्रें तोड़ी जाती हैं

1 फिर मैंने देखा, लेले ने सात मुह्रों में से पहली मुहर को खोला। इस पर मैंने चार जानदारों में से एक को जिसकी आवाज़ कड़कते बादलों की मानिंद थी यह कहते हुए सुना, “आ!” 2 मेरे देखते देखते एक सफ़ेद घोड़ा नज़र आया। उसके सवार के हाथ में कमान थी, और उसे एक ताज दिया गया। यों वह फ़ातेह की हैसियत से और फ़तह पाने के लिए वहाँ से निकला।

3 लेले ने दूसरी मुहर खोली तो मैंने दूसरे जानदार को कहते हुए सुना कि “आ!” 4 इस पर एक और घोड़ा निकला जो आग जैसा सुर्ख था। उसके सवार को दुनिया से सुलह-सलामती छीनने का इख्तियार दिया गया ताकि लोग एक दूसरे को क़त्ल करें। उसे एक बड़ी तलवार पकड़ाई गई।

5 लेले ने तीसरी मुहर खोली तो मैंने तीसरे जानदार को कहते हुए सुना कि “आ!” मेरे देखते देखते एक काला घोड़ा नज़र आया। उसके सवार के हाथ में तराजू था। 6 और मैंने चारों जानदारों में से गोया एक आवाज़ सुनी जिसने कहा, “एक दिन की मज़दूरी के लिए एक किलोग्राम गंदुम, और एक दिन की मज़दूरी के लिए तीन किलोग्राम जौ। लेकिन तेल और मै को नुक़सान मत पहुँचाना।”

7 लेले ने चौथी मुहर खोली तो मैंने चौथे जानदार को कहते सुना कि “आ!” 8 मेरे देखते देखते एक घोड़ा नज़र आया जिसका रंग हलका पीला-सा था। उसके सवार का नाम मौत था, और पाताल उसके पीछे पीछे चल रही थी। उन्हें ज़मीन का चौथा हिस्सा क़त्ल करने का इख्तियार दिया गया, खाह तलवार, काल, मोहलक वबा या वहशी जानवरों के ज़रीए से हो।

9 लेले ने पाँचवीं मुहर खोली तो मैंने क़ुरबानगाह के नीचे उनकी रूहें देखीं जो अल्लाह के कलाम और अपनी गवाही कायम रखने की वजह से शहीद हो गए थे। 10 उन्होंने ऊँची आवाज़ से चिल्लाकर कहा, “ऐ कादिरे-मुतलक, कुदूस और सच्चे रब, कितनी देर और लगेगी? तू कब तक ज़मीन के बाशिंदों की अदालत करके हमारे शहीद होने का इंतकाम न लेगा?” 11 तब उनमें से हर एक को एक सफ़ेद लिबास दिया गया, और उन्हें समझाया गया कि “मज़ीद थोड़ी देर आराम करो, क्योंकि पहले तुम्हारे हमखिदमत भाइयों में से उतनों को शहीद हो जाना है जितनों के लिए यह मुकर्रर है।”

12 लेले ने छठी मुहर खोली तो मैंने एक शहीद जलज़ला देखा। सूरज बकरी के बालों से बने टाट की मानिंद काला हो गया, पूरा चाँद खून जैसा नज़र आने लगा 13 और आसमान के सितारे ज़मीन पर यों गिर गए जिस तरह अंजीर के दरख्त पर लगे आखिरी अंजीर तेज़ हवा के झोंकों से गिर जाते हैं। 14 आसमान तूमर की तरह जब उसे लपेटकर बंद किया जाता है पीछे हट गया। और हर पहाड़ और जज़ीरा अपनी अपनी जगह से खिसक गया। 15 फिर ज़मीन के बादशाह, शहज़ादे, ज़रनैल, अमीर, असरो-रसूखवाले, गुलाम और आज़ाद सबके सब गारों में और पहाड़ी चटानों के दरमियान छुप गए। 16 उन्होंने चिल्लाकर पहाड़ों और चटानों से मिन्नत की, “हम पर गिरकर हमें तख्त पर बैठे हुए के चेहरे और लेले के ग़ज़ब से छुपा लो। 17 क्योंकि उनके ग़ज़ब का अज़ीम दिन आ गया है, और कौन कायम रह सकता है?”

## 7

इसराईल के 1,44,000 चुने हुए अफ़राद

1 इसके बाद मैंने चार फरिशतों को ज़मीन के चार कोनों पर खड़े देखा। वह ज़मीन की चार हवाओं को चलने से रोक रहे थे ताकि न ज़मीन पर, न समुंदर या किसी दरख्त पर कोई हवा चले। 2 फिर मैंने एक और फरिशता मशरिक से चढ़ते हुए देखा जिसके पास जिंदा ख़ुदा की मुहर थी। उसने ऊँची आवाज़ से उन चार फरिशतों से बात की जिन्हें ज़मीन और समुंदर को नुक़सान पहुँचाने का इख्तियार दिया गया था। उसने कहा, 3 “ज़मीन, समुंदर या दरख्तों को उस वक़्त तक नुक़सान मत

पहुँचाना जब तक हम अपने खुदा के खादिमों के माथों पर मुहर न लगा लें।”<sup>4</sup> और मैंने सुना कि जिन पर मुहर लगाई गई थी वह 1,44,000 अफराद थे और वह इसराईल के हर एक कबीले से थे: <sup>5</sup> 12,000 यहूदाह से, 12,000 रबिन से, 12,000 जद से, <sup>6</sup> 12,000 आशर से, 12,000 नफताली से, 12,000 मनस्सी से, <sup>7</sup> 12,000 शमौन से, 12,000 लावी से, 12,000 इशकार से, <sup>8</sup> 12,000 जबूलन से, 12,000 यूसुफ से और 12,000 बिनयमीन से।

### अल्लाह के हुज़ूर एक बड़ा हुज़ूम

<sup>9</sup> इसके बाद मैंने एक हुज़ूम देखा जो इतना बड़ा था कि उसे गिना नहीं जा सकता था। उसमें हर मिल्लत, हर कबीले, हर कौम और हर ज़बान के अफ़राद सफ़ेद लिबास पहने हुए तख़्त और लेले के सामने खड़े थे। उनके हाथों में खजूर की डालियों थीं। <sup>10</sup> और वह ऊँची आवाज़ से चिल्ला चिल्लाकर कह रहे थे, “नजात तख़्त पर बैठे हुए हमारे खुदा और लेले की तरफ से है।” <sup>11</sup> तमाम फ़रिश्ते तख़्त, बुजुर्गों और चार जानदारों के इर्दगिर्द खड़े थे। उन्होंने तख़्त के सामने गिरकर अल्लाह को सिजदा किया <sup>12</sup> और कहा, “आमीन! हमारे खुदा की अज़ल से अबद तक सताइश, जलाल, हिकमत, शुकुमुज़ारी, इज़ज़त, कुदरत और ताक़त हासिल रहे। आमीन!”

<sup>13</sup> बुजुर्गों में से एक ने मुझसे पूछा, “सफ़ेद लिबास पहने हुए यह लोग कौन हैं और कहाँ से आए हैं?”

<sup>14</sup> मैंने जवाब दिया, “मेरे आका, आप ही जानते हैं।”

उसने कहा, “यह वही हैं जो बड़ी इज़ारसानी से निकलकर आए हैं। उन्होंने अपने लिबास लेले के खून में धोकर सफ़ेद कर लिए हैं। <sup>15</sup> इसलिए वह अल्लाह के तख़्त के सामने खड़े हैं और दिन-रात उसके घर में उस की खिदमत करते हैं। और तख़्त पर बैठा हुआ उनको पनाह देगा। <sup>16</sup> इसके बाद न कभी भूक उन्हें सताएगी न प्यास। न धूप, न किसी और क्रिस्म की तपती गर्मी उन्हें झुलसाएगी। <sup>17</sup> क्योंकि जो लेला तख़्त के दरमियान बैठा है वह उनकी गल्लबानी करेगा और उन्हें जिद्दीगी के चशमों के पास ले जाएगा। और अल्लाह उनकी आँखों से तमाम आँसू पोंछ डालेगा।”

## 8

### सातवीं मुहर

<sup>1</sup> जब लेले ने सातवीं मुहर खोली तो आसमान पर खामोशी छा गई। यह खामोशी तकरीबन आधे घंटे तक रही। <sup>2</sup> फिर मैंने अल्लाह के सामने खड़े सात फ़रिश्तों को देखा। उन्हें सात तुरम दिए गए।

<sup>3</sup> एक और फ़रिश्ता जिसके पास सोने का बख़रदान था आकर कुरबानगाह के पास खड़ा हो गया। उसे बहुत-सा बख़ूर दिया गया ताकि वह उसे मुक़द्दसीन की दूआओं के साथ तख़्त के सामने की सोने की कुरबानगाह पर पेश करे। <sup>4</sup> बख़ूर का धुँआँ मुक़द्दसीन की दूआओं के साथ फ़रिश्ते के हाथ से उठते उठते अल्लाह के सामने पहुँचा। <sup>5</sup> फिर फ़रिश्ते ने बख़ूरदान को लिया और उसे कुरबानगाह की आग से भरकर ज़मीन पर फेंक दिया। तब कड़कती और गरजती आवाज़ें सुनाई दीं, बिजली चमकने लगी और ज़लज़ला आ गया।

### तुरमों का असर

<sup>6</sup> फिर जिन सात फ़रिश्तों के पास सात तुरम थे वह उन्हें बजाने के लिए तैयार हुए।

<sup>7</sup> पहले फ़रिश्ते ने अपने तुरम को बजा दिया। इस पर ओले और खून के साथ मिलाई गई आग पैदा होकर ज़मीन पर बरसाई गई। इससे ज़मीन का तीसरा हिस्सा, दरख़्तों का तीसरा हिस्सा और तमाम हरी घास भस्म हो गई।

<sup>8</sup> फिर दूसरे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर जलती हुई एक बड़ी पहाड़नुमा चीज़ को समुंद्र में फेंका गया। समुंद्र का तीसरा हिस्सा खून में बदल गया, <sup>9</sup> समुंद्र में मौजूद जिंदा मख़लूक़ात का तीसरा हिस्सा हलाक और बहरी जहाज़ों का तीसरा हिस्सा तबाह हो गया।

<sup>10</sup> फिर तीसरे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर मशाल की तरह भड़कता हुआ एक बड़ा सितारा आसमान से दरियाओं के तीसरे हिस्से और पानी के चशमों पर गिर गया। <sup>11</sup> इस सितारे का नाम अफ़संतीन था और इससे पानी का तीसरा हिस्सा अफ़संतीन जैसा कड़वा हो गया। बहुत-से लोग यह कड़वा पानी पीने से मर गए।

<sup>12</sup> फिर चौथे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर सूरज का तीसरा हिस्सा, चाँद का तीसरा हिस्सा और सितारों का तीसरा हिस्सा रौशनी से महस्म हो गया। दिन का तीसरा हिस्सा रौशनी से महस्म हुआ और इसी तरह रात का तीसरा हिस्सा भी।

<sup>13</sup> फिर देखते देखते मैंने एक उकाब को सुना जिसने मेरे सर के ऊपर ही बुलदियों पर उड़ते हुए ऊँची आवाज़ से पुकारा, “अफ़सोस! अफ़सोस! ज़मीन के बाशिंदों पर अफ़सोस! क्योंकि तीन फ़रिश्तों के तुरमों की आवाज़ें अभी बाकी हैं।”

## 9

1 फिर पाँचवें फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर मैंने एक सितारा देखा जो आसमान से ज़मीन पर गिर गया था। इस सितारे को अथाह गढ़े के रास्ते की चाबी दी गई। 2 उसने अथाह गढ़े का रास्ता खोल दिया तो उससे धुआँ निकलकर ऊपर आया, यों जैसे धुआँ किसी बड़े भट्टे से निकलता है। सूरज और चाँद अथाह गढ़े के इस धुएँ से तारीक हो गए। 3 और धुएँ में से टिड्डियाँ निकलकर ज़मीन पर उतर आईं। उन्हें ज़मीन के बिछुआँ जैसा इख्तियार दिया गया। 4 उन्हें बताया गया, “न ज़मीन की घास, न किसी पौधे या दरख्त को नुकसान पहुँचाओ बल्कि सिर्फ़ उन लोगों को जिनके माथों पर अल्लाह की मुहर नहीं लगी है।” 5 टिड्डियों को इन लोगों को मार डालने का इख्तियार न दिया गया बल्कि उन्हें बताया गया कि वह पाँच महीनों तक इनको अज़ियत दें। और यह अज़ियत उस तकलीफ़ की मानिद है जो तब पैदा होती है जब बिच्छू किसी को डंक मारता है। 6 उन पाँच महीनों के दौरान लोग मौत की तलाश में रहेंगे, लेकिन उसे पाएँगे नहीं। वह मर जाने की शदीद आरजू करेंगे, लेकिन मौत उनसे भागकर दूर रहेगी।

7 टिड्डियों की शक्ल-सूरत जंग के लिए तैयार घोड़ों की मानिद थी। उनके सरों पर सोने के ताज़ों जैसी चीज़ें थीं और उनके चेहरे इनसानों के चेहरों की मानिद थे। 8 उनके बाल ख़वातीन के बालों की मानिद और उनके दाँत शेरबबर के दाँतों जैसे थे। 9 यों लगा जैसे उनके सीनों पर लोहे के-से ज़िरा-बकतर लगे हुए थे, और उनके परो की आवाज़ बेशुमार रथों और घोड़ों के शोर जैसी थी जब वह मुख़ालिफ़ पर झपट रहे होते हों। 10 उनकी दुम पर बिच्छू का-सा डंक लगा था और उन्हें इन्हीं दुमों से लोगों को पाँच महीनों तक नुक़सान पहुँचाने का इख्तियार था। 11 उनका बादशाह अथाह गढ़े का फ़रिश्ता है जिसका इब्रानी नाम अबद्रोन और यूनानी नाम अपुल्लियोन (हलाक़) है।

12 यों पहला अफ़सोस गुज़र गया, लेकिन इसके बाद दो मज़ीद अफ़सोस होनेवाले हैं।

13 छठे फ़रिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर मैंने एक आवाज़ सुनी जो अल्लाह के सामने वाके सोने की कुरबानगाह के चार कोनों पर लगे सींगों से आई। 14 इस आवाज़ ने छटा तुरम पकड़े हुए फ़रिश्ते से कहा, “उन चार फ़रिश्तों को खुला छोड़ देना जो बड़े दरिया बनाम फ़ुरात के पास बँधे हुए हैं।” 15 इन चार फ़रिश्तों को इसी महीने के इसी दिन के इसी घंटे के लिए तैयार किया गया था। अब इन्हें खुला छोड़ दिया गया ताकि वह इनसानों का तीसरा हिस्सा मार डालें। 16 मुझे बताया गया कि घोड़ों पर सवार फ़ौज़ी बीस करोड़ थे। 17 रोया में घोड़े और सवार यों नज़र आए : सीनों पर लगे ज़िरा-बकतर आग जैसे सुर्ख़, नीले और गंधक जैसे पीले थे। घोड़ों के सर शेरबबर के सरों से मुताबिकत रखते थे और उनके मुँह से आग, धुआँ और गंधक निकलती थी। 18 आग, धुआँ और गंधक की इन तीन बलाओं से इनसानों का तीसरा हिस्सा हलाक़ हुआ। 19 हर घोड़े की ताकत उसके मुँह और दुम में थी, क्योंकि उनकी दुमों साँप की मानिद थीं जिनके सर नुक़सान पहुँचाते थे।

20 जो इन बलाओं से हलाक़ नहीं हुए थे बल्कि अभी बाक़ी थे उन्होंने फिर भी अपने हाथों के कामों से तौबा न की। वह बदरूहों और सोने, चाँदी, पीतल, पत्थर और लकड़ी के बुतों की पूजा से बाज़ न आए हालाँकि ऐसी चीज़ें न तो देख सकती हैं, न सुनने या चलने के काबिल होती हैं। 21 वह कल्लो-गारत, जादुगरी, जिनाकारी और चोरियों से भी तौबा करके बाज़ न आए।

## 10

## फ़रिश्ता और छोटा त्मार

1 फिर मैंने एक और ताक़तवर फ़रिश्ता देखा। वह बादल ओढ़े हुए आसमान से उतर रहा था और उसके सर के ऊपर क़ौसे-कुज़ह थी। उसका चेहरा सूरज जैसा था और उसके पाँव आग के सतून जैसे। 2 उसके हाथ में एक छोटा त्मार था जो खुला था। अपने एक पाँव को उसने समुंदर पर रख दिया और दूसरे को ज़मीन पर। 3 फिर वह ऊँची आवाज़ से पुकार उठा। ऐसे लगा जैसे शेरबबर गरज रहा है। इस पर कड़क की सात आवाज़ें बोलने लगीं। 4 उनके बोलने पर मैं उनकी बातें लिखने को था कि एक आवाज़ ने कहा, “कड़क की सात आवाज़ों की बातों पर मुहर लगा और उन्हें मत लिखना।”

5 फिर उस फ़रिश्ते ने जिसे मैंने समुंदर और ज़मीन पर खड़ा देखा अपने दहने हाथ को आसमान की तरफ़ उठाकर 6 अल्लाह के नाम की क़सम खाई, उसके नाम की जो अज़ल से अबद तक जिंदा है और जिसने आसमानों, ज़मीन और समुंदर को उन तमाम चीज़ों समेत खलक़ किया जो उनमें हैं। फ़रिश्ते ने कहा, “अब देर नहीं होगी। 7 जब सातवाँ फ़रिश्ता अपने तुरम में फूँक मारने को होगा तब अल्लाह का भेद जो उसने अपने नबुव्वत करनेवाले खादिमों को बताया था तकमील तक पहुँचेगा।”

8 फिर जो आवाज़ आसमान से सुनाई दी थी उसने एक बार फिर मुझसे बात की, “जा, वह त्मार ले लेना जो समुंदर और ज़मीन पर खड़े फ़रिश्ते के हाथ में खुला पड़ा है।”

9 चुनौचे मैने फरिश्ते के पास जाकर उससे गुजारिश की कि वह मुझे छोटा तमार दे। उसने मुझेसे कहा, “इसे ले और खा ले। यह तेरे मुँह में शहद की तरह मीठा लगेगा, लेकिन तेरे मेदे में कड़वाहट पैदा करेगा।”

10 मैने छोटे तमार को फरिश्ते के हाथ से लेकर उसे खा लिया। मेरे मुँह में तो वह शहद की तरह मीठा लग रहा था, लेकिन मेदे में जाकर उसने कड़वाहट पैदा कर दी। 11 फिर मुझे बताया गया, “लाज़िम है कि तू बहुत उम्मतों, क्रौमों, ज़बानों और बादशाहों के बारे में मज़ीद नबुव्वत करे।”

## 11

### दो गवाह

1 मुझे गज़ की तरह का सरकंडा दिया गया और बताया गया, “जा, अल्लाह के घर और कुरबानागह की पैमाइश कर। उसमें परस्तारों की तादाद भी गिन। 2 लेकिन बैरूनी सहन को छोड़ दे। उसे मत नाप, क्योंकि उसे गैरइमानदारों को दिया गया है जो मुकद्दस शहर को 42 महीनों तक कुचलते रहेंगे। 3 और मैं अपने दो गवाहों को इख्तियार दूँगा, और वह टाट ओढ़कर 1,260 दिनों के दौरान नबुव्वत करेंगे।”

4 यह दो गवाह जैतून के वह दो दरख्त और वह दो शमादान हैं जो दुनिया के आका के सामने खड़े हैं। 5 अगर कोई उन्हें नुकसान पहुँचाना चाहे तो उनके मुँह में से आग निकलकर उनके दुश्मनों को भस्म कर देती है। जो भी उन्हें नुकसान पहुँचाना चाहे उसे इस तरह मरना पड़ता है। 6 इन गवाहों को आसमान को बंद रखने का इख्तियार है ताकि जितना वक़्त वह नबुव्वत करें बारिश न हो। उन्हें पानी को खून में बदलने और ज़मीन को हर किस्म की अज़ियत पहुँचाने का इख्तियार भी है। और वह जितनी दफ़ा जी चाहे यह कर सकते हैं।

7 उनकी गवाही का मुक़र्रर वक़्त पूरा होने पर अथाह गढे में से निकलनेवाला हैवान उनसे जंग करना शुरू करेगा और उन पर गालिब आकर उन्हें मार डालेगा। 8 उनकी लाशें उस बड़े शहर की सड़क पर पड़ी रहेंगी जिसका अलामती नाम सदूम और मिसर है। वहाँ उनका आका भी मसलूब हुआ था। 9 और साढे तीन दिनों के दौरान हर उम्मत, कबीले, ज़बान और क्रौम के लोग इन लाशों को धूरकर देखेंगे और इन्हें दफन करने नहीं देंगे। 10 ज़मीन के बाशिंदे उनकी वजह से मसूर होंगे और खूशी मनाकर एक दूसरे को तोहफे भेजेंगे, क्योंकि इन दो नबियों ने ज़मीन पर रहनेवालों को काफी ईजा पहुँचाई थी। 11 लेकिन इन साढे तीन दिनों के बाद अल्लाह ने उनमें ज़िदगी का दम फूँक दिया, और वह अपने पाँवों पर खड़े हुए। जो उन्हें देख रहे थे वह सख्त दहशतज़दा हुए। 12 फिर उन्होंने आसमान से एक ऊँची आवाज़ सुनी जिसने उनसे कहा, “यहाँ ऊपर आओ!” और उनके दुश्मनों के देखते देखते दोनों एक बादल में आसमान पर चले गए। 13 उसी वक़्त एक शदीद जलजला आया और शहर का दसवाँ हिस्सा गिरकर तबाह हो गया। 7,000 अफ़राद उस की ज़द में आकर मर गए। बचे हुए लोगों में दहशत फैल गई और वह आसमान के ख़ुदा को जलाल देने लगे।

14 दूसरा अफ़सोस गुज़र गया, लेकिन अब तीसरा अफ़सोस जल्द होनेवाला है।

### सातवाँ तुरम

15 सातवें फरिश्ते ने अपने तुरम में फूँक मारी। इस पर आसमान पर से ऊँची आवाज़ें सुनाई दें जो कह रही थी, “ज़मीन की बादशाही हमारे आका और उसके मसीह की हो गई है। वही अज़ल से अबद तक हुकूमत करेगा।” 16 और अल्लाह के तख्त के सामने बैठे 24 बुजुर्गों ने गिरकर अल्लाह को सिजदा किया 17 और कहा, “ऐ रब कादिर-मुतलक ख़ुदा, हम तेरा शुक़र करते हैं, तू जो है और जो था। क्योंकि तू अपनी अज़ीम कुदरत को काम में लाकर हुकूमत करने लगा है। 18 क्रौमों गुस्से में आई तो तेरा गज़ब नाज़िल हुआ। अब मुरदों की अदालत करने और अपने खादिमों को अज़्र देने का वक़्त आ गया है। हाँ, तेरे नबियों, मुक़द्दसीन और तेरा ख़ौफ़ माननेवालों को अज़्र मिलेगा, खाह वह छोटे हों या बड़े। अब वह वक़्त भी आ गया है कि ज़मीन को तबाह करनेवालों को तबाह किया जाए।”

19 आसमान पर अल्लाह के घर को खोला गया और उसमें उसके अहद का संदूक नज़र आया। बिजली चमकने लगी, शोर मच गया, बादल गरजने और बड़े बड़े ओले पड़ने लगे।

## 12

### खातून और अज़दहा

1 फिर आसमान पर एक अज़ीम निशान जाहिर हुआ, एक खातून जिसका लिबास सूरज था। उसके पाँवों तले चाँद और सर पर बारह सितारों का ताज था। 2 उसका पाँव भारी था, और जन्म देने के शदीद दर्द में मुब्तला होने की वजह से वह चिल्ला रही थी।

3 फिर आसमान पर एक और निशान नज़र आया, एक बड़ा और आग जैसा सुर्ख अज़दहा। उसके सात सर और दस सींग थे, और हर सर पर एक ताज था। 4 उस की दूम ने सितारों के तीसरे हिस्से को आसमान पर से उतारकर ज़मीन पर फेंक दिया। फिर अज़दहा जन्म देनेवाली खातून के सामने खड़ा हुआ ताकि उस बच्चे को जन्म लेते ही हडप कर ले। 5 खातून के बेटा पैदा हुआ, वह बच्चा जो लोहे के शाही असा से कौमों पर हुकूमत करेगा। और खातून के इस बच्चे को छीनकर अल्लाह और उसके तख्त के सामने लाया गया। 6 खातून खुद रेगिस्तान में हिज़रत करके एक ऐसी जगह पहुँच गई जो अल्लाह ने उसके लिए तैयार कर रखी थी, ताकि वहाँ 1,260 दिन तक उस की परवरिश की जाए।

7 फिर आसमान पर जंग छिड़ गई। मीकाएल और उसके फ़रिश्ते अज़दहे से लड़े। अज़दहा और उसके फ़रिश्ते उनसे लड़ते रहे, 8 लेकिन वह ग़ालिब न आ सके बल्कि आसमान पर अपने मक़ाम से महरूम हो गए। 9 बड़े अज़दहे को निकाल दिया गया, उस क़दमी अज़दहे को जो इबलीस या शैतान कहलाता है और जो पूरी दुनिया को गुमराह कर देता है। उसे उसके फ़रिश्तों समेत ज़मीन पर फेंका गया।

10 फिर आसमान पर एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी, “अब हमारे खुदा की नज़ात, कुदरत और बादशाही आ गई है, अब उसके मसीह का इख़्तियार आ गया है। क्योंकि हमारे भाइयों और बहनों पर इलज़ाम लगानेवाला जो दिन-रात अल्लाह के हुज़ूर उन पर इलज़ाम लगाता रहता था उसे ज़मीन पर फेंका गया है। 11 ईमानदार लेले के खून और अपनी गवाही सुनाने के ज़रीए ही उस पर ग़ालिब आए हैं। उन्होंने अपनी जान अज़ीज़ न रखी बल्कि उसे देने तक तैयार थे। 12 चुनौते ख़ुशी मनाओ, ऐ आसमानो! ख़ुशी मनाओ, उनमें बसनेवालो! लेकिन ज़मीन और समुंदर पर अफ़सोस! क्योंकि इबलीस तुम पर उतर आया है। वह बड़े गुस्से में है, क्योंकि वह जानता है कि अब उसके पास वक़्त कम है।”

13 जब अज़दहे ने देखा कि उसे ज़मीन पर गिरा दिया गया है तो वह उस खातून के पीछे पड़ गया जिसने बच्चे को जन्म दिया था। 14 लेकिन खातून को बड़े उकाब के-से दो पर दिए गए ताकि वह उड़कर रेगिस्तान में उस जगह पहुँचे जो उसके लिए तैयार की गई थी और जहाँ वह साढ़े तीन साल तक अज़दहे की पहुँच से महफूज़ रहकर परवरिश पाएगी। 15 इस पर अज़दहे ने अपने मुँह से पानी निकालकर दरिया की सूरत में खातून के पीछे पीछे बहा दिया ताकि उसे बहा ले जाए। 16 लेकिन ज़मीन ने खातून की मदद करके अपना मुँह खोल दिया और उस दरिया को निगल लिया जो अज़दहे ने अपने मुँह से निकाल दिया था। 17 फिर अज़दहे को खातून पर गुस्सा आया, और वह उस की बाकी औलाद से जंग करने के लिए चला गया। (खातून की औलाद वह हैं जो अल्लाह के अहक़ाम पूरे करके ईसा की गवाही को कायम रखते हैं)। 18 और अज़दहा समुंदर के साहिल पर खड़ा हो गया।

## 13

### दो हैवान

1 फिर मैंने देखा कि समुंदर में से एक हैवान निकल रहा है। उसके दस सींग और सात सर थे। हर सींग पर एक ताज और हर सर पर कुफ़र का एक नाम था। 2 यह हैवान चीते की मानिंद था। लेकिन उसके रीछ के-से पाँव और शेरबबर का-सा मुँह था। अज़दहे ने इस हैवान को अपनी कुव्वत, अपना तख्त और बड़ा इख़्तियार दे दिया। 3 लगता था कि हैवान के सरों में से एक पर लाइलाज ज़ख़म लगा है। लेकिन इस ज़ख़म को शफ़ा दी गई। पूरी दुनिया यह देखकर हैरतज़दा हुई और हैवान के पीछे लग गई। 4 लोगों ने अज़दहे को सिज़दा किया, क्योंकि उसी ने हैवान को इख़्तियार दिया था। और उन्होंने यह कहकर हैवान को भी सिज़दा किया, “कौन इस हैवान की मानिंद है? कौन इससे लड़ सकता है?”

5 इस हैवान को बड़ी बड़ी बातें और कुफ़र बकने का इख़्तियार दिया गया। और उसे यह करने का इख़्तियार 42 महीने के लिए मिल गया। 6 यों वह अपना मुँह खोलकर अल्लाह, उसके नाम, उस की सुकूनतगाह और आसमान के बाशिंदों पर कुफ़र बकने लगा। 7 उसे मुक़द्सीन से जंग करके उन पर फ़तह पाने का इख़्तियार भी दिया गया। और उसे हर कबीले, हर उम्मत, हर ज़बान और हर कौम पर इख़्तियार दिया गया। 8 ज़मीन के तमाम बाशिंदे इस हैवान को सिज़दा करेंगे यानी वह सब जिनके नाम दुनिया की इब्तिदा से लेले की किताब-हयात में दर्ज़ नहीं हैं, उस लेले की किताब में जो ज़बह किया गया है।

9 जो सुन सकता है वह सुन ले! 10 अगर किसी को कैदी बनना है तो वह कैदी ही बनेगा। अगर किसी को तलवार की ज़द में आकर मरना है तो वह ऐसे ही मरेगा। अब मुक़द्सीन को साबितक़दमी और वफ़ादार ईमान की ख़ास ज़रूरत है।

11 फिर मैंने एक और हैवान को देखा। वह ज़मीन में से निकल रहा था। उसके लेले के-से दो सींग थे, लेकिन उसके बोलने का अंदाज़ अज़दहे का-सा था। 12 उसने पहले हैवान का पूरा इख़्तियार उस की खातिर इस्तेमाल करके ज़मीन और उसके बाशिंदों को पहले हैवान को सिज़दा करने पर उकसाया, यानी उस हैवान को जिसका लाइलाज ज़ख़म भर गया था। 13 और उसने बड़े मोज़िज़ाना निशान दिखाए, यहाँ तक कि उसने लोगों के देखते देखते आसमान से ज़मीन पर आग नाज़िल होने दी। 14 यों उसे पहले हैवान की खातिर मोज़िज़ाना निशान दिखाने का इख़्तियार दिया गया, और इनके ज़रीए उसने ज़मीन के

बाशिंदों को सही राह से बहकाया। उसने उन्हें कहा कि वह उस हैवान की ताज़ीम में एक मुजस्समा बना दें जो तलवार से ज़ख्मी होने के बावजूद दुबारा जिंदा हुआ था। 15 फिर उसे पहले हैवान के मुजस्समे में जान डालने का इख्तियार दिया गया ताकि मुजस्समा बोल सके और उन्हें कत्ल करवा सके जो उसे सिजदा करने से इनकार करते थे। 16 उसने यह भी करवाया कि हर एक के दहने हाथ या माथे पर एक खास निशान लगाया जाए, खाह वह छोटा हो या बड़ा, अमीर हो या गरीब, आज्ञाद हो या गुलाम। 17 सिर्फ़ वह शख्स कुछ खरीद या बेच सकता था जिस पर यह निशान लगा था। यह निशान हैवान का नाम या उसके नाम का नंबर था।

18 यहाँ हिकमत की ज़रूरत है। जो समझदार है वह हैवान के नंबर का हिसाब करे, क्योंकि यह एक मर्द का नंबर है। उसका नंबर 666 है।

## 14

### लेला और उस की कौम

1 फिर मैंने देखा कि लेला मेरे सामने ही सिय्यून के पहाड़ पर खड़ा है। उसके साथ 1,44,000 अफ़राद खड़े थे जिनके माथों पर उसका और उसके बाप का नाम लिखा था। 2 और मैंने आसमान से एक ऐसी आवाज़ सुनी जो किसी बड़े आबशार और गरजते बादलों की ऊँची कड़क की मानिंद थी। यह उस आवाज़ की मानिंद थी जो सरोद बजानेवाले अपने साज़ों से निकालते हैं। 3 यह 1,44,000 अफ़राद तख़्त, चार जानदारों और बुजुर्गों के सामने खड़े एक नया गीत गा रहे थे, एक ऐसा गीत जो सिर्फ़ वही सीख सके जिन्हें लेले ने ज़मीन से खरीद लिया था। 4 यह वह मर्द है जिन्होंने अपने आपको खवातीन के साथ आलूदा नहीं किया, क्योंकि वह कुँवारे हैं। जहाँ भी लेला जाता है वहाँ वह भी जाते हैं। उन्हें बाक़ी इनसानों में से फ़सल के पहले फल की हैसियत से अल्लाह और लेले के लिए खरीदा गया है। 5 उनके मुँह से कभी झूट नहीं निकला बल्कि वह बेइलज़ाम हैं।

### तीन फ़रिशते

6 फिर मैंने एक और फ़रिशता देखा। वह मेरे सर के ऊपर ही हवा में उड़ रहा था। उसके पास अल्लाह की अबदी खुशख़बरी थी ताकि वह उसे ज़मीन के बाशिंदों यानी हर कौम, क़बीले, अहले-ज़बान और उम्मत को सुनाए। 7 उसने ऊँची आवाज़ से कहा, “ख़ुदा का ख़ोफ़ मानकर उसे जलाल दो, क्योंकि उस की अदालत का वक़्त आ गया है। उसे सिजदा करो जिसने आसमानों, ज़मीन, समुंदर और पानी के चश्मों को ख़लक किया है।”

8 एक दूसरे फ़रिशते ने पहले के पीछे पीछे चलते हुए कहा, “वह गिर गया है! हाँ, अज़ीम बाबल गिर गया है, जिसने तमाम कौमों को अपनी हरामकारी और मस्ती की मै पिलाई है।”

9 इन दो फ़रिशतों के पीछे एक तीसरा फ़रिशता चल रहा था। उसने ऊँची आवाज़ से कहा, “जो भी हैवान और उसके मुजस्समे को सिजदा करे और जिसे भी उसका निशान अपने माथे या हाथ पर मिल जाए 10 वह अल्लाह के ग़ज़ब की मै से पिआ, ऐसी मै जो मिलावट के बग़ैर ही अल्लाह के ग़ज़ब के प्याले में डाली गई है। मुक़द्दस फ़रिशतों और लेले के हज़र उसे आग और गंधक का अज़ाब सहना पड़ेगा। 11 और इन लोगों को सतानेवाली यह आग जलती रहेगी, इसका धुआँ अबद तक चढ़ता रहेगा। जो हैवान और उसके मुजस्समे को सिजदा करते हैं या जिन्होंने उसके नाम का निशान लिया है वह न दिन, न रात को आराम पाएँगे।”

12 यहाँ मुक़द्दसीन को साबितकदम रहने की ज़रूरत है, उन्हें जो अल्लाह के अहकाम पूरे करते और ईसा के वफ़ादार रहते हैं।

13 फिर मैंने आसमान से एक आवाज़ यह कहती हुई सुनी, “लिख, सुबारक हैं वह मुरदे जो अब से ख़ुदावंद में वफ़ात पाते हैं।”

“जी हाँ,” रूह फ़रमाता है, “वह अपनी मेहनत-मशक्क़त से आराम पाएँगे, क्योंकि उनके नेक काम उनके पीछे होकर उनके साथ चलेँगे।”

### ज़मीन पर फ़सल की कटाई

14 फिर मैंने एक सफ़ेद बादल देखा, और उस पर कोई बैठा था जो इब्ने-आदम की मानिंद था। उसके सर पर सोने का ताज और हाथ में तेज़ दरौती थी। 15 एक और फ़रिशता अल्लाह के घर से निकलकर ऊँची आवाज़ से पुकारकर उससे मुखातिब हुआ जो बादल पर बैठा था, “अपनी दरौती लेकर फ़सल की कटाई कर! क्योंकि फ़सल काटने का वक़्त आ गया है और ज़मीन पर की फ़सल पक गई है।” 16 चुनाँचे बादल पर बैठनेवाले ने अपनी दरौती ज़मीन पर चलाई और ज़मीन की फ़सल की कटाई हुई।



17 इसके बाद एक और फरिश्ता अल्लाह के उस घर से निकल आया जो आसमान पर है, और उसके पास भी तेज दर्राँती थी।

18 फिर एक तीसरा फरिश्ता आया। उसे आग पर इख्तियार था। वह कुरबानगाह से आया और ऊँची आवाज़ से पुकारकर तेज दर्राँती पकड़े हुए फरिश्ते से मुखातिब हुआ, “अपनी तेज दर्राँती लेकर ज़मीन की अंगूर की बेल से अंगूर के गुच्छे जमा कर, क्योंकि उसके अंगूर पक गए हैं।” 19 फरिश्ते ने ज़मीन पर अपनी दर्राँती चलाई, उसके अंगूर जमा किए और उन्हें अल्लाह के गज़ब के उस बड़े हौज़ में फेंक दिया जिसमें अंगूर का रस निकाला जाता है। 20 यह हौज़ शहर से बाहर वाके था। उसमें पड़े अंगूरों को इतना रौंदा गया कि हौज़ में से खून बह निकला। खून का यह सैलाब 300 किलोमीटर दूर तक पहुँच गया और वह इतना ज्यादा था कि घोड़ों की लगामों तक पहुँच गया।

## 15

### आखिरी बलाओं के फरिश्ते

1 फिर मैंने आसमान पर एक और इलाही निशान देखा, जो अज़ीम और हैरतअगेज़ था। सात फरिश्ते सात आखिरी बलाएँ अपने पास रखकर खड़े थे। इनसे अल्लाह का गज़ब तकमील तक पहुँच गया।

2 मैंने शीशे का-सा एक समुंद्र भी देखा जिसमें आग मिलाई गई थी। इस समुंद्र के पास वह खड़े थे जो हैवान, उसके मुजस्समे और उसके नाम के नंबर पर गालिब आ गए थे। वह अल्लाह के दिए हुए सरोद पकड़े 3 अल्लाह के खादिम मूसा और लेले का गीत गा रहे थे,

“ऐ रब कादिरे-मुतलक खुदा,  
तेरे काम कितने अज़ीम और हैरतअगेज़ हैं।  
ऐ ज़मानों के बादशाह,  
तेरी राहें कितनी रास्त और सच्ची हैं।

4 ऐ रब, कौन तेरा खौफ नहीं मानेगा?  
कौन तेरे नाम को जलाल नहीं देगा?  
क्योंकि तू ही कुद्स है।

तमाम क़ौमों आकर तेरे हुज़ूर सिजदा करेंगी,  
क्योंकि तेरे रास्त काम ज़ाहिर हो गए हैं।”

5 इसके बाद मैंने देखा कि अल्लाह के घर यानी आसमान पर के शरीअत के छैमे को \* खोल दिया गया। 6 अल्लाह के घर से वह सात फरिश्ते निकल आए जिनके पास सात बलाएँ थीं। उनके कतान के कपड़े साफ-सुथरे और चमक रहे थे। यह कपड़े सीनों पर सोने के कमरबंद से बँधे हुए थे। 7 फिर चार जानदारों में से एक ने इन सात फरिश्तों को सोने के सात प्याले दिए। यह प्याले उस खुदा के गज़ब से भरे हुए थे जो अज़ल से अबद तक जिंदा है। 8 उस वक़्त अल्लाह का घर उसके जलाल और कुदरत से पैदा होनेवाले धुएँ से भर गया। और जब तक सात फरिश्तों की सात बलाएँ तकमील तक न पहुँची उस वक़्त तक कोई भी अल्लाह के घर में दाखिल न हो सका।

## 16

### अल्लाह के गज़ब के प्याले

1 फिर मैंने एक ऊँची आवाज़ सुनी जिसने अल्लाह के घर में से सात फरिश्तों से कहा, “जाओ, अल्लाह के गज़ब से भरे सात प्यालों को ज़मीन पर उंडेल दो।”

2 पहले फरिश्ते ने जाकर अपना प्याला ज़मीन पर उंडेल दिया। इस पर उन लोगों के जिस्मों पर भेड़े और तकलीफ़देह फोड़े निकल आए जिन पर हैवान का निशान था और जो उसके मुजस्समे को सिजदा करते थे।

3 दूसरे फरिश्ते ने अपना प्याला समुंद्र पर उंडेल दिया। इस पर समुंद्र का पानी लाश के-से खून में बदल गया, और उसमें हर जिंदा मखलूक मर गई।

4 तीसरे फरिश्ते ने अपना प्याला दरियाओं और पानी के चशमों पर उंडेल दिया तो उनका पानी खून बन गया। 5 फिर मैंने पानियों पर मुकर्रर फरिश्ते को यह कहते सुना, “तू यह फैसला करने में रास्त है, तू जो है और जो था, तू जो कुद्स है। 6 चूँकि उन्होंने तेरे मुकद्दसीन और नबियों की खूनरेज़ी की है, इसलिए तूने उन्हें वह कुछ दे दिया जिसके लायक वह हैं। तूने उन्हें

\* 15:5 यानी मुलाक़त के छैमे को।

खून पिला दिया।” 7 फिर मैंने कुरबानगाह को यह जवाब देते सुना, “हाँ, ऐ रब कादिरे-मुतलक खुदा, हकीकतन तैरे फैसले सच्चे और रास्त हैं।”

8 चौथे फ़रिश्ते ने अपना प्याला सूरज पर उंडेल दिया। इस पर सूरज को लोगों को आग से झूलसाने का इख्तियार दिया गया। 9 लोग शदीद तपिश से झुलस गए, और उन्होंने अल्लाह के नाम पर कुफ़र बका जिसे इन बलाओं पर इख्तियार था। उन्होंने तौबा करने और उसे जलाल देने से इनकार किया।

10 पाँचवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हैवान के तख़्त पर उंडेल दिया। इस पर उस की बादशाही में अंधेरा छा गया। लोग अज़ियत के मारे अपनी जबानें काटते रहे। 11 उन्होंने अपनी तकलीफ़ों और फोड़ों की वजह से आसमान पर कुफ़र बका और अपने कामों से इनकार न किया।

12 छठे फ़रिश्ते ने अपना प्याला बड़े दरिया फ़ुरात पर उंडेल दिया। इस पर उसका पानी सूख गया ताकि मशरिक के बादशाहों के लिए रास्ता तैयार हो जाए। 13 फिर मैंने तीन बदरूहें देखीं जो मेंढकों की मानिंद थीं। वह अज़दहे के मुँह, हैवान के मुँह और झूटे नबी के मुँह में से निकल आईं। 14 यह मेंढक शयातीन की रूहें हैं जो मोजिजे दिखाती हैं और निकलकर पूरी दुनिया के बादशाहों के पास जाती हैं ताकि उन्हें अल्लाह कादिरे-मुतलक के अज़ीम दिन पर जंग के लिए इकट्ठा करें।

15 “देखो, मैं चोर की तरह आऊँगा। मुबारक है वह जो जागता रहता और अपने कपड़े पहने हुए रहता है ताकि उसे गंगी हालत में चलना न पड़े और लोग उस की शर्मगाह न देखें।”

16 फिर उन्होंने बादशाहों को उस जगह पर इकट्ठा किया जिसका नाम इब्रानी ज़बान में हर्मज़िदोन है।

17 सातवें फ़रिश्ते ने अपना प्याला हवा में उंडेल दिया। इस पर अल्लाह के घर में तख़्त की तरफ से एक ऊँची आवाज़ सुनाई दी जिसे कहा, “अब काम तकमील तक पहुँच गया है!” 18 बिजलियाँ चमकने लगीं, शोर मच गया, बादल गरजने लगे और एक शदीद जलजला आया। इस किस्म का जलजला ज़मीन पर इनसान की तख़लीक से लेकर आज तक नहीं आया, इतना सख़्त जलजला कि 19 अज़ीम शहर तीन हिस्सों में बट गया और कौमों के शहर तबाह हो गए। अल्लाह ने अज़ीम बाबल को याद करके उसे अपने सख़्त ग़ज़ब की मैं से भरा प्याला पिला दिया। 20 तमाम जज़ीर ग़ायब हो गए और पहाड़ कहीं नज़र न आए। 21 लोगों पर आसमान से मन मन-भर के बड़े बड़े ओले गिर गए। और लोगों ने ओलों की बला की वजह से अल्लाह पर कुफ़र बका, क्योंकि यह बला निहायत सख़्त थी।

## 17

### मशहर कसबी

1 फिर सात प्याले अपने पास रखनेवाले इन सात फ़रिश्तों में से एक मेरे पास आया। उसने कहा, “आ, मैं तुझे उस बड़ी कसबी की सज़ा दिखा दूँ जो गहरे पानी के पास बैठी है। 2 ज़मीन के बादशाहों ने उसके साथ ज़िना किया। हाँ, उस की ज़िनाकारी की मैं से ज़मीन के बाशिंदे मस्त हो गए।”

3 फिर फ़रिश्ता मुझे रूह में एक रेगिस्तान में ले गया। वहाँ मैंने एक औरत को देखा। वह एक किरमिज़ी रंग के हैवान पर सवार थी जिसके पूरे जिस्म पर कुफ़र के नाम लिखे थे और जिसके सात सर और दस सींग थे। 4 यह औरत अरगवानी और किरमिज़ी रंग के कपड़े पहने और सोने, बेशक्रीमत जवाहर और मोतियों से सजी हुई थी। उसके हाथ में सोने का एक प्याला था जो धिनौनी चीज़ों और उस की ज़िनाकारी की गंदगी से भरा हुआ था। 5 उसके माथे पर यह नाम लिखा था, जो एक भेद है, “अज़ीम बाबल, कसबियों और ज़मीन की धिनौनी चीज़ों की मौँ।” 6 और मैंने देखा कि यह औरत उन मुक़द्सीन के खून से मस्त हो गई थी जिन्होंने ईसा की गवाही दी थी।

उसे देखकर मैं निहायत हैरान हुआ। 7 फ़रिश्ते ने मुझसे पूछा, “तू क्यों हैरान है? मैं तुझ पर औरत और उस हैवान का भेद खोल दूँगा जिस पर औरत सवार है और जिसके सात सर और दस सींग हैं। 8 जिस हैवान को तूने देखा वह पहले था, इस वक़्त नहीं है और दुबारा अथाह गढ़े में से निकलकर हलाकत की तरफ बढ़ेगा। ज़मीन के जिन बाशिंदों के नाम दुनिया की तख़लीक से ही किताबे-हयात में दर्ज नहीं हैं वह हैवान को देखकर हैरतज़दा हो जाएंगे। क्योंकि वह पहले था, इस वक़्त नहीं है लेकिन दुबारा आएगा।

9 यहाँ समझदार ज़हन की ज़रूरत है। सात सरों से मुराद सात पहाड़ हैं जिन पर यह औरत बैठी है। यह सात बादशाहों की नुमाइंदगी भी करते हैं। 10 इनमें से पाँच गिर गए हैं, छटा मौजूद है और सातवाँ अभी आनेवाला है। लेकिन जब वह आएगा तो उसे थोड़ी देर के लिए रहना है। 11 जो हैवान पहले था और इस वक़्त नहीं है वह आठवाँ बादशाह है, जो वह सात बादशाहों में से भी एक है। वह हलाकत की तरफ बढ़ रहा है।

12 जो दस सींग तूने देखे वह दस बादशाह हैं जिन्हें अभी कोई बादशाही नहीं मिली। लेकिन उन्हें घंटे-भर के लिए हैवान के साथ बादशाह का इख्तियार मिलेगा। 13 यह एक ही सोच रखकर अपनी ताकत और इख्तियार हैवान को दे देगे और लेते

से जंग करेंगे, 14 लेकिन लेला अपने बुलाए गए, चुने हुए और वफादार पैरोकारों के साथ उन पर गालिब आएगा, क्योंकि वह रब्बों का रब और बादशाहों का बादशाह है।”

15 फिर फरिश्ते ने मुझसे कहा, “जिस पानी के पास तूने कसबी को बैठी देखा वह उम्मतें, हजूम, क्रौम और जवानें हैं। 16 जो हैवान और दस सींग तूने देखे वह कसबी से नफरत करेंगे। वह उसे वीरान करके नंगा छोड़ देंगे और उसका गोशत खाकर उसे भस्म करेंगे। 17 क्योंकि अल्लाह ने उनके दिलों में यह डाल दिया है कि वह उसका मकसद पूरा करें और उस वक़्त तक हुक्मत करने का अपना इख्तियार हैवान के सुपुर्द कर दें जब तक अल्लाह के फरमान तकमील तक न पहुँच जाएँ।

18 जिस औरत को तूने देखा वह वही बड़ा शहर है जो ज़मीन के बादशाहों पर हुक्मत करता है।”

## 18

### बाबल शहर की शिकस्त

1 इसके बाद मैंने एक और फरिश्ता देखा जो आसमान पर से उतर रहा था। उसे बहुत इख्तियार हासिल था और ज़मीन उसके जलाल से रौशन हो गई। 2 उसने ऊँची आवाज़ से पुकारकर कहा, “वह गिर गई है! हाँ, अज़ीम कसबी बाबल गिर गई है! अब वह शयातीन का घर और हर बदरूह का बसेरा बन गई है, हर नापाक और धिनैने परिदे का बसेरा। 3 क्योंकि तमाम क्रौमों ने उस की हुरामकारी और मस्ती की मैं पी ली है। ज़मीन के बादशाहों ने उसके साथ ज़िना किया और ज़मीन के सौदागर उस की बेलगाम ऐयाशी से अमीर हो गए हैं।” 4 फिर मैंने एक और आवाज़ सुनी। उसने आसमान की तरफ से कहा,

“ऐ मेरी क्रौम, उसमें से निकल आ,

ताकि तुम उसके गुनाहों में शरीक न हो जाओ

और उस की बलाएँ तुम पर न आएँ।

5 क्योंकि उसके गुनाह आसमान तक पहुँच गए हैं,

और अल्लाह उनकी बदियों को याद करता है।

6 उसके साथ वही सुलूक करो

जो उसने तुम्हारे साथ किया है।

जो कुछ उसने किया है

उसका दुगना बदला उसे देना।

जो शराब उसने दूसरों को पिलाने के लिए तैयार की है

उसका दुगना बदला उसे दे देना।

7 उसे उतनी ही अज़ियत और गम पहुँचा दो

जितना उसने अपने आपको शानदार बनाया और ऐयाशी की।

क्योंकि अपने दिल में वह कहती है,

‘मैं यहाँ अपने तख्त पर रानी हूँ।

न मैं बेवा हूँ, न मैं कभी मातम करूँगी।’

8 इस वजह से एक दिन यह बलाएँ

यानी मौत, मातम और काल उस पर आन पड़ेगी।

वह भस्म हो जाएगी,

क्योंकि उस की अदालत करनेवाला रब खुदा कबी है।”

9 और ज़मीन के जिन बादशाहों ने उसके साथ ज़िना और ऐयाशी की वह उसके जलने का धुआँ देखकर रो पड़ेगे और आहो-जारी करेंगे। 10 वह उस की अज़ियत को देखकर खौफ खाएँगे और दूर दूर खड़े होकर कहेंगे, “अफसोस! तुझ पर अफसोस, ऐ अज़ीम और ताकतवर शहर बाबल! एक ही घंटे के अंदर अंदर अल्लाह की अदालत तुझ पर आ गई है।”

11 ज़मीन के सौदागर भी उसे देखकर रो पड़ेगे और आहो-जारी करेंगे, क्योंकि कोई नहीं रहा होगा जो उनका माल खरीदे : 12 उनका सोना, चाँदी, बेशकीमत जवाहर, मोती, बारीक कतान, अरगवानी और किरमिज़ी रंग का कपड़ा, रेशम, हर किस्म की खुशबूदार लकड़ी, हाथीदंत की हर चीज़ और क्रीमती लकड़ी, पीतल, लोहे और संगे-मरमर की हर चीज़, 13 दारचीनी, मसाला, अरगबत्ती, मुर, बखूर, मै, जैतून का तेल, बेहतरीन मैदा, गंदूम, गाय-बैल, भेड़ें, घोड़े, रथ और गुलाम यानी इन्सान। 14 सौदागर उससे कहेंगे, “जो फल तू चाहती थी वह तुझसे दूर हो गया है। तेरी तमाम दौलत और शानो-शौकत गायब हो गई है और आइंदा कभी भी तेरे पास पाई नहीं जाएगी।” 15 जो सौदागर उसे यह चीज़ें फरोख्त करने से दौलतमंद हुए वह उस की अज़ियत देखकर खौफ के मारे दूर दूर खड़े हो जाएँगे। वह रो रोकर मातम करेंगे 16 और कहेंगे, “हाय! तुझ

पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर, ऐ खातून जो पहले बारीक कतान, अरगवानी और किरमिज़ी रंग के कपड़े पहने फिरती थी और जो सोने, कीमती जवाहर और मोतियों से सजी हुई थी। 17 एक ही घंटे के अंदर अंदर सारी दौलत तबाह हो गई है!”

हर बहरी जहाज़ का कप्तान, हर समुंदरी मुसाफ़िर, हर मल्लाह और वह तमाम लोग जो समुंदर पर सफ़र करने से अपनी रोज़ी कमाते हैं वह सब दूर दूर खड़े हो जाएंगे। 18 उसके जलने का धुआँ देखकर वह कहेंगे, “क्या कभी कोई इतना अज़ीम शहर था?” 19 वह अपने सरों पर खाक डाल लेंगे और चिल्ला चिल्लाकर रोएँगे और आहो-ज़ारी करेंगे। वह कहेंगे, “हाय! तुझ पर अफ़सोस, ऐ अज़ीम शहर, जिसकी दौलत से तमाम बहरी जहाज़ों के मालिक अमीर हुए। एक ही घंटे के अंदर अंदर वह वीरान हो गया है।”

20 ऐ आसमान, उसे देखकर खुशी मना!

ऐ मुक़द्दसो, रसूलो और नबियो, खुशी मनाओ!

क्योंकि अल्लाह ने तुम्हारी खातिर उस की अदालत की है।

21 फिर एक ताक़तवर फ़रिश्ते ने बड़ी चक्की के पाट की मानिंद एक बड़े पत्थर को उठाकर समुंदर में फेंक दिया। उसने कहा, “अज़ीम शहर बाबल को इतनी ही ज़बरदस्ती से पटक दिया जाएगा। बाद में उसे कहीं नहीं पाया जाएगा। 22 अब से न मौसीकारों की आवाज़ें तुझमें कभी सुनाई देंगी, न सरोद, बाँसरी या तुरम बजानेवालों की। अब से किसी भी काम का कारीगर तुझमें पाया नहीं जाएगा। हाँ, चक्की की आवाज़ हमेशा के लिए बंद हो जाएगी। 23 अब से चराग तुझे रौशन नहीं करेगा, दुलहन-दुल्हे की आवाज़ तुझमें सुनाई नहीं देगी। हाय, तेरे सौदागर दुनिया के बड़े बड़े अफ़सर थे, और तेरी जादूगरी से तमाम कौमों को बहकाया गया।”

24 हाँ, बाबल में नबियों, मुक़द्दसीन और उन तमाम लोगों का खून पाया गया है जो ज़मीन पर शहीद हो गए हैं।

## 19

1 इसके बाद मैंने आसमान पर एक बड़े हुज़म की-सी आवाज़ सुनी जिसने कहा, “अल्लाह की तमज़ीद हो! नजात, जलाल और कुदरत हमारे ख़ुदा को हासिल है। 2 क्योंकि उस की अदालतें सच्ची और रास्त हैं। उसने उस बड़ी कसबी को मुजरिम ठहराया है जिसने ज़मीन को अपनी जिनाकारी से बिगाड़ दिया। उसने उससे अपने ख़ादिमों की कल्लो-गारत का बदला ले लिया है।” 3 और वह दुबारा बोल उठे, “अल्लाह की तमज़ीद हो! इस शहर का धुआँ अब तक चढ़ता रहता है।” 4 चौबीस बुजुर्गों और चार जानदारों ने गिरकर तख़्त पर बैठे अल्लाह को सिजदा किया। उन्होंने कहा, “आमीन, अल्लाह की तमज़ीद हो।”

### लेले की ज़ियाफ़त

5 फिर तख़्त की तरफ़ से एक आवाज़ सुनाई दी। उसने कहा, “ऐ उसके तमाम ख़ादिमो, हमारे ख़ुदा की तमज़ीद करो। ऐ उसका ख़ौफ़ माननेवालो, ख़ाह बड़े हो या छोटे उस की सताइश करो।” 6 फिर मैंने एक बड़े हुज़म की-सी आवाज़ सुनी, जो बड़ी आबशार के शोर और गरजते बादलों की कड़क की मानिंद थी। इन लोगों ने कहा, “अल्लाह की तमज़ीद हो! क्योंकि हमारा रब कादिरे-मुतलक ख़ुदा तख़तनशीन हो गया है। 7 आओ, हम मसूर हों, खुशी मनाएँ और उसे जलाल दें, क्योंकि लेले की शादी का वक़्त आ गया है। उस की दुलहन ने अपने आपको तैयार कर लिया है, 8 और उसे पहनने के लिए बारीक कतान का चमकता और पाक-साफ़ लिबास दे दिया गया।” (बारीक कतान से मुराद मुक़द्दसीन के रास्त काम हैं।)

9 फिर फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, “लिख, मुबारक है वह जिन्हें लेले की शादी की ज़ियाफ़त के लिए दावत मिल गई है।” उसने मज़ीद कहा, “यह अल्लाह के सच्चे अलफ़ाज़ हैं।”

10 इस पर मैं उसे सिजदा करने के लिए उसके पाँवों में गिर गया। लेकिन उसने मुझसे कहा, “ऐसा मत कर! मैं भी तेरा और तेरे उन भाइयों का हमखिदमत हूँ जो ईसा की गवाही देने पर कायम हैं। सिर्फ़ अल्लाह को सिजदा कर। क्योंकि जो ईसा के बारे में गवाही देता है वह यह नबुवत की रूह में करता है।”

### सफ़ेद घोड़े का सवार

11 फिर मैंने आसमान को खुला देखा। एक सफ़ेद घोड़ा नज़र आया जिसके सवार का नाम “वफ़ादार और सच्चा” है, क्योंकि वह इनसाफ़ से अदालत और जंग करता है। 12 उस की आँखें भड़कते शोले की मानिंद हैं और उसके सर पर बहुत-से ताज हैं। उस पर एक नाम लिखा है जिसे सिर्फ़ वही जानता है, कोई और उसे नहीं जानता। 13 वह एक लिबास से मुल्बबस था जिसे खून में डुबोया गया था। उसका नाम “अल्लाह का कलाम” है। 14 आसमान की फ़ौज़ें उसके पीछे पीछे चल रही थीं। सब सफ़ेद घोड़ों पर सवार थे और बारीक कतान के चमकते और पाक-साफ़ कपड़े पहने हुए थे। 15 उसके मुँह से एक तेज़ तलवार निकलती है जिससे वह कौमों को मार देगा। वह लोहे के शाही असा से उन पर हुकूमत करेगा। हाँ, वह अंगूर

का रस निकालने के हौज में उन्हें कुचल डालेगा। यह हौज क्या है? अल्लाह का दिरे-मुतलक का सख्त गजब। 16 उसके लिबास और रान पर यह नाम लिखा है, “बादशाहों का बादशाह और रबबों का रब।”

17 फिर मैंने एक फरिशता सूज पर खड़ा देखा। उसने ऊँची आवाज़ से पुकारकर उन तमाम परिदों से जो मेरे सर पर मँडला रहे थे कहा, “आओ, अल्लाह की बड़ी ज़ियाफत के लिए जमा हो जाओ। 18 फिर तुम बादशाहों, जर्नैलों, बड़े बड़े अफसरों, घोड़ों और उनके सवारों का गोशत खाओगे, हों तमाम लोगों का गोशत, खाह आज़ाद हों या गुलाम, छोटे हों या बड़े।”

19 फिर मैंने हैवान और बादशाहों को उनकी फौजों समेत देखा। वह घोड़े पर “अल्लाह का कलाम” नामी सवार और उस की फौज से जंग करने के लिए जमा हुए थे। 20 लेकिन हैवान को गिरिफ्तार किया गया। उसके साथ उस झूठे नबी को भी गिरिफ्तार किया गया जिसने हैवान की खातिर मौजिज़ाना निशान दिखाए थे। इन मौजिज़ों के वर्सीले से उसने उनको फरेब दिया था जिन्हें हैवान का निशान मिल गया था और जो उसके मुजस्समे को सिजदा करते थे। दोनों को जलती हुई गंधक की शोलाखेज झील में फेंका गया। 21 बाकी लोगों को उस तलवार से मार डाला गया जो घोड़े पर सवार के मुँह से निकलती थी। और तमाम परिदे लाशों का गोशत खाकर सेर हो गए।

## 20

### हज़ार साल का दौर

1 फिर मैंने एक फरिशता देखा जो आसमान से उतर रहा था। उसके हाथ में अथाह गढ़े की चाबी और एक भारी जंजीर थी। 2 उसने अज़दहे यानी कदीम सॉप को जो शैतान या इबलीस कहलाता है पकड़कर हज़ार साल के लिए बाँध लिया। 3 उसने उसे अथाह गढ़े में फेंककर ताला लगा दिया और उस पर मुहर लगा दी ताकि वह हज़ार साल तक क़ौमों को गुमराह न कर सके। उसके बाद ज़स्री है कि उसे थोड़ी देर के लिए आज़ाद कर दिया जाए।

4 फिर मैंने तख़्त देखे जिन पर वह बैठे थे जिन्हें अदालत करने का इख्तियार दिया गया था। और मैंने उनकी रूहें देखीं जिन्हें ईसा के बारे में गवाही देने और जिनका अल्लाह का कलाम पेश करने की वजह से सर कलम किया गया था। उन्होंने हैवान या उसके मुजस्समे को सिजदा नहीं किया था, न उसका निशान अपने माथों या हाथों पर लगवाया था। अब यह लोग जिंदा हुए और हज़ार साल तक मसीह के साथ हुकूमत करते रहे। 5 (बाकी मुरदे हज़ार साल के इख्तिताम पर ही जिंदा हुए)। यह पहली क्रियामत है। 6 मुबारक और मुकद्दस है वह जो इस पहली क्रियामत में शरीक है। इन पर दूसरी मौत का कोई इख्तियार नहीं है बल्कि यह अल्लाह और मसीह के इमाम होकर हज़ार साल तक उसके साथ हुकूमत करेंगे।

### इबलीस की शिकस्त

7 हज़ार साल गुज़र जाने के बाद इबलीस को उस की कैद से आज़ाद कर दिया जाएगा। 8 तब वह निकलकर ज़मीन के चारों कोनों में मौजूद क़ौमों बनाम जूज और माजूज को बहकाएगा और उन्हें जंग करने के लिए जमा करेगा। लड़नेवालों की तादाद साहिल पर की रेत के ज़र्रों जैसी बेशमार होगी। 9 उन्होंने ज़मीन पर फैलकर मुकद्दसीन की लशकरगाह को घेर लिया, यानी उस शहर को जिसे अल्लाह प्यार करता है। लेकिन आग ने आसमान से नाज़िल होकर उन्हें हड़प कर लिया। 10 और इबलीस को जिसे उनको फरेब दिया था जलती हुई गंधक की झील में फेंका गया, वहाँ जहाँ हैवान और झूठे नबी को पहले फेंका गया था। उस जगह पर उन्हें दिन-रात बल्कि अबद तक अज़ाब सहना पड़ेगा।

### आखिरी अदालत

11 फिर मैंने एक बड़ा सफेद तख़्त देखा और उसे जो उस पर बैठा है। आसमानो-ज़मीन उसके हज़ूर से भागकर गायब हो गए। 12 और मैंने तमाम मुरदों को तख़्त के सामने खड़े देखा, खाह वह छोटे थे या बड़े। किताबें खोली गईं। फिर एक और किताब को खोल दिया गया जो किताबे-हयात थी। मुरदों का उसके मुताबिक़ फैसला किया गया जो कुछ उन्होंने किया था और जो किताबों में दर्ज था। 13 समुंदर ने उन तमाम मुरदों को पेश कर दिया जो उसमें थे, और मौत और पाताल ने भी उन मुरदों को पेश कर दिया जो उनमें थे। चुनौचे हर शख्स का उसके मुताबिक़ फैसला किया गया जो उसने किया था। 14 फिर मौत और पाताल को जलती हुई झील में फेंका गया। यह झील दूसरी मौत है। 15 जिस किसी का नाम किताबे-हयात में दर्ज नहीं था उसे जलती हुई झील में फेंका गया।

## 21

### नया आसमान और नई ज़मीन

1 फिर मैंने एक नया आसमान और एक नई ज़मीन देखी। क्योंकि पहला आसमान और पहली ज़मीन ख़त्म हो गए थे और समुंदर भी नेस्त था। 2 मैंने नए यस्शलम को भी देखा। यह मुकद्दस शहर दुलहन की सूत में अल्लाह के पास से आसमान पर

से उतर रहा था। और यह दूल्हन अपने दूल्हे के लिए तैयार और सजी हुई थी।<sup>3</sup> मैंने एक आवाज़ सुनी जिसने तख़्त पर से कहा, “अब अल्लाह की सुकूनतगाह इनसानों के दरमियान है। वह उनके साथ सुकूनत करेगा और वह उस की क़ौम होंगे। अल्लाह खुद उनका खुदा होगा।<sup>4</sup> वह उनकी आँखों से तमाम आँसू पोंछ डालेगा। अब से न मौत होगी न मातम, न रोना होगा न दर्द, क्योंकि जो भी पहले था वह जाता रहा है।”

<sup>5</sup> जो तख़्त पर बैठा था उसने कहा, “मैं सब कुछ नए सिरे से बना रहा हूँ।” उसने यह भी कहा, “यह लिख दे, क्योंकि यह अलफ़ाज़ क़ाबिले-एतमाद और सच्चे है।”<sup>6</sup> फिर उसने कहा, “काम मुकम्मल हो गया है। मैं अलिफ़ और ये, अव्वल और आखिर हूँ। जो प्यासा है उसे मैं ज़िंदगी के चश्मे से मुफ़्त पानी पिलाऊँगा।<sup>7</sup> जो ग़ालिब आया वह यह सब कुछ विरासत में पाएगा। मैं उसका खुदा हूँगा और वह मेरा फ़रज़द होगा।<sup>8</sup> लेकिन बुज़दिलों, ग़ैरइमानदारों, धिनौनों, क़ातिलों, जिनाकारों, जादूगरों, बुतपरस्तों और तमाम झूठे लोगों का अंजाम जलती हुई गंधक की शोलाखेज़ झील है। यह दूसरी मौत है।”

### नया यरूशलम

<sup>9</sup> जिन सात फ़रिश्तों के पास सात आखिरी बलाओं से भरे प्याले थे उनमें से एक ने मेरे पास आकर कहा, “आ, मैं तुझे दूल्हन यानी लेले की बीवी दिखाऊँ।”<sup>10</sup> वह मुझे रूह में उठाकर एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया। वहाँ से उसने मुझे मुकद्दस शहर यरूशलम दिखाया जो अल्लाह की तरफ़ से आसमान पर से उतर रहा था।<sup>11</sup> उसे अल्लाह का जलाल हासिल था और वह अनमोल जौहर बल्कि बिल्लौर जैसे साफ़-शफ़फ़ाफ़ यशब की तरह चमक रहा था।<sup>12</sup> उस की बड़ी और ऊँची फ़सील में बारह दरवाज़े थे, और हर दरवाज़े पर एक फ़रिश्ता खड़ा था। दरवाज़ों पर इसराईल के बारह क़बीलों के नाम लिखे थे।<sup>13</sup> तीन दरवाज़े मशरिफ़ की तरफ़ थे, तीन शिमाल की तरफ़, तीन जुनूब की तरफ़ और तीन मगरिब की तरफ़।<sup>14</sup> शहर की फ़सील की बारह बुनियादें थीं जिन पर लेले के बारह रसूलों के नाम लिखे थे।<sup>15</sup> जिस फ़रिश्ते ने मुझसे बात की थी उसके पास सोने का गज़ था ताकि शहर, उसके दरवाज़ों और उस की फ़सील की पैमाइश करे।<sup>16</sup> शहर चौकोर था। उस की लंबाई उतनी ही थी जितनी उस की चौड़ाई। फ़रिश्ते ने गज़ से शहर की पैमाइश की तो पता चला कि उस की लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई 2,400 किलोमीटर है।<sup>17</sup> जब उसने फ़सील की पैमाइश की तो चौड़ाई 60 मीटर थी यानी उस पैमाने के हिसाब से जो वह इस्तेमाल कर रहा था।<sup>18</sup> फ़सील यशब की थी जबकि शहर ख़ालिस सोने का था, यानी साफ़-शफ़फ़ाफ़ शीशे जैसे सोने का।<sup>19</sup> शहर की बुनियादें हर क्रिस्म के कीमती जवाहर से सजी हुई थीं : पहली यशब \* से, दूसरी संगे-लाजवर्द † से, तीसरी संगे-यमानी ‡ से, चौथी ज़ुमुरद से, <sup>20</sup> पाँचवीं संगे-सुलेमानी § से, छठी अक़ीकि-अहमर \* से, सातवीं ज़बरजद † से, आठवीं आबे-बहर ‡ से, नव्वी पुखराज § से, दसवीं अक़ीकि-सब्ज़ \* से, ग्यारहवीं नीले रंग के ज़रक्रोन † से और बारहवीं याकूते-अररावानी ‡ से।<sup>21</sup> बारह दरवाज़े बारह मोती थे और हर दरवाज़ा एक मोती का था। शहर की बड़ी सड़क ख़ालिस सोने की थी, यानी साफ़-शफ़फ़ाफ़ शीशे जैसे सोने की।

<sup>22</sup> मैंने शहर में अल्लाह का घर न देखा, क्योंकि रब कादिर-मुतलक खुदा और लेला ही उसका मक़दिस है।<sup>23</sup> शहर को सूरज या चाँद की ज़रूरत नहीं जो उसे रौशन करे, क्योंकि अल्लाह का जलाल उसे रौशन कर देता है और लेला उसका चराग़ है।<sup>24</sup> क़ौम उस की रौशनी में चलेंगी, और ज़मीन के बादशाह अपनी शानो-शौकत उसमें लाएँगे।<sup>25</sup> उसके दरवाज़े किसी भी दिन बंद नहीं होंगे क्योंकि वहाँ कभी भी रात का वक़्त नहीं आएगा।<sup>26</sup> क़ौमों की शानो-शौकत उसमें लाई जाएगी।<sup>27</sup> कोई नापाक चीज़ उसमें दाख़िल नहीं होगी, न वह जो धिनौनी हरकतें करता और झूट बोलता है। सिर्फ़ वह दाख़िल होंगे जिनके नाम लेले की किताबे-हयात में दर्ज हैं।

## 22

### मुकाशफा

<sup>1</sup> फिर फ़रिश्ते ने मुझे ज़िंदगी के पानी का दरिया दिखाया। वह बिल्लौर जैसा साफ़-शफ़फ़ाफ़ था और अल्लाह और लेले के तख़्त से निकल कर <sup>2</sup> शहर की बड़ी सड़क के बीच में से बह रहा था। दरिया के दोनों किनारों पर ज़िंदगी का दरख़्त था। यह दरख़्त साल में बारह दफ़ा फल लाता था, हर महीने में एक बार। और दरख़्त के पत्ते क़ौमों की शफ़ा के लिए इस्तेमाल होते थे।<sup>3</sup> वहाँ कोई भी मलऊन चीज़ नहीं होगी।

\* 21:19 jasper † 21:19 lapis lazuli ‡ 21:19 chalcedony § 21:20 sardonyx। यानी संगे-सुलेमानी की एक क्रिस्म जिसमें नारंगी और संफेद अक़ीकि के परत यके बाद दीगरे होते हैं। \* 21:20 carnelian † 21:20 peridot ‡ 21:20 beryl § 21:20 topaz \* 21:20 chrysoprase † 21:20 यूनानी लफ़्ज़ कुछ मुबहम-सा है। ‡ 21:20 amethyst

अल्लाह और लेले का तख़्त शहर में होंगे और उसके खादिम उस की खिदमत करेंगे।<sup>4</sup> वह उसका चेहरा देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर होगा।<sup>5</sup> वहाँ रात नहीं होगी और उन्हें किसी चराग या सूरज की रौशनी की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि रब खुदा उन्हें रौशनी देगा। वहाँ वह अबद तक हुकूमत करेंगे।

### ईसा की आमद

<sup>6</sup> फ़रिश्ते ने मुझसे कहा, “यह बातें काबिले-एतमाद और सच्ची हैं। रब ने जो नबियों की रूहों का खुदा है अपने फ़रिश्ते को भेज दिया ताकि अपने खादिमों को वह कुछ दिखाए जो जल्द होनेवाला है।”

<sup>7</sup> ईसा फ़रमाता है, “देखो, मैं जल्द आऊँगा। मुबारक है वह जो इस किताब की पेशगोइयों के मुताबिक ज़िंदगी गुज़ारता है।”

<sup>8</sup> मैं यूहन्ना ने खुद यह कुछ सुना और देखा है। और उसे सुनने और देखने के बाद मैं उस फ़रिश्ते के पाँवों में गिर गया जिसने मुझे यह दिखाया था और उसे सिजदा करना चाहता था।<sup>9</sup> लेकिन उसने मुझसे कहा, “ऐसा मत कर! मैं भी उसी का खादिम हूँ जिसका तू, तेरे भाई नबी और किताब की पैरवी करनेवाले हैं। खुदा ही को सिजदा कर!”<sup>10</sup> फिर उसने मझे बताया, “इस किताब की पेशगोइयों पर मुहर मत लगाना, क्योंकि वक़्त करीब आ गया है।<sup>11</sup> जो ग़लत काम कर रहा है वह ग़लत काम करता रहे। जो धिनौना है वह धिनौना होता जाए। जो रास्तबाज़ है वह रास्तबाज़ी करता रहे। जो मुक़द्दस है वह मुक़द्दस होता जाए।”

<sup>12</sup> ईसा फ़रमाता है, “देखो, मैं जल्द आने को हूँ। मैं अज़्र लेकर आऊँगा और मैं हर एक को उसके कामों के मुवाफ़िक अज़्र दूँगा।<sup>13</sup> मैं अलिफ और ये, अक्वल और आख़िर, इब्तिदा और इंतहा हूँ।”

<sup>14</sup> मुबारक है वह जो अपने लिबास को धोते हैं। क्योंकि वह ज़िंदगी के दरख़्त के फल से खाने और दरवाज़ों के ज़रीए शहर में दाख़िल होने का हक़ रखते हैं।<sup>15</sup> लेकिन बाकी सब शहर के बाहर रहेंगे। कुत्ते, ज़िनाकार, कातिल, बुतपरस्त और तमाम वह लोग जो झूट को प्यार करते और उस पर अमल करते हैं सबके सब बाहर रहेंगे।

<sup>16</sup> “मैं ईसा ने अपने फ़रिश्ते को तुम्हारे पास भेजा है ताकि वह जमातों के लिए तुम्हें इन बातों की गवाही दे। मैं दाऊद की जड़ और औलाद हूँ, मैं ही चमकता हुआ सुबह का सितारा हूँ।”

<sup>17</sup> रूह और दुलहन कहती है, “आ!”

हर सुननेवाला भी यही कहे, “आ!”

जो प्यासा हो वह आए और जो चाहे वह ज़िंदगी का पानी मुफ़्त ले ले।

### खुलासा

<sup>18</sup> मैं, यूहन्ना हर एक को जो इस किताब की पेशगोइयों सुनता है आगाह करता हूँ, अगर कोई इस किताब में किसी भी बात का इज़ाफ़ा करे तो अल्लाह उस की ज़िंदगी में उन बलाओं का इज़ाफ़ा करेगा जो इस किताब में बयान की गई हैं।<sup>19</sup> और अगर कोई नबुव्वत की इस किताब से बातें निकाले तो अल्लाह उससे किताब में मज़कूर ज़िंदगी के दरख़्त के फल से खाने और मुक़द्दस शहर में रहने का हक़ छीन लेगा।

<sup>20</sup> जो इन बातों की गवाही देता है वह फ़रमाता है, “जी हाँ! मैं जल्द ही आने को हूँ।” “आमीन! ऐ खुदावंद ईसा आ!”

<sup>21</sup> खुदावंद ईसा का फ़ज़ल सबके साथ रहे।